PĀIA-SADDA-MAHAṆṆAVO

A COMPREHENSIVE PRAKRIT-HINDI DICTIONARY

with Sanskrit equivalents, quotations

AND

complete references

BY

PANDIT HARGOVIND DAS T. SHETH

MOTILAL BANARSIDASS

Delhi Varanasi Patna Madras

पाइअ-सद्द-महण्णवो

(प्राकृत-शब्द-महार्णवः)

अर्थात्

विविध प्राकृत भाषाओ के शब्दो का संस्कृत प्रतिशब्दो से युक्त, हिन्दी अर्थो से अलकृत, प्राचीन ग्रन्थो के अनल्प अवतरणो और परिपूर्ण प्रमाणो से विभूपित बृहत्कोश

कर्ता

पडित हरगोविन्ददास त्रिकमचंद सेठ

मुख्य कार्यालय बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली ११० ००७

शाखाएँ चौक, वाराणसी २२१ ००१
अशोक राजपथ, पटना ८०० ००४
१२० रायपेट्टा हाई रोड, मैलापुर, मद्रास ६०० ००४

प्राकृत ग्रन्थ परिषद् ग्रन्थाङ्क ७
द्वितीय संस्करण वाराणसी, १९६३
पुनर्मुद्रण दिल्ली, १९८९

ISBN 81-208-0239-x

नरेन्द्रप्रकाश जैन, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली ७
द्वारा प्रकाशित तथा जैनेन्द्रप्रकाश जैन, श्री जैनेन्द्र प्रेस, ए-४५,
फेज-१, नारायणा, नई दिल्ली २८ द्वारा मुद्रित।

PUBLISHER'S NOTE

The present *Pāia-sadd-mahannavo* or 'The Great Ocean of Prākrit Words' is a comprehensive Prākrit-Hindī Dictionary compiled by Pt. Hargovind Das Trikam Chand Sheth and was first published slightly less than six decades ago in 1928 It is a pioneer work, being the result of several years' single-minded devotion and indefatigable labour on the part of the compiler, to whom the students and scholars of the Prākrit language will ever remain grateful

The work is of immense value since in addition to serving the needs of the students of Prākrit it has also proved very much helpful to researchers in understanding Old-Hindi words of obscure origin as well as all the other languages of the Middle Indo-Aryan group including Old-Rajasthani, Old-Gujarati, Old Marathi, Old-Bengali, Old-Maithili etc

After its first appearance in 1928 the work remained out of print for a number of years when its rare copies were sold at fabulous prices–a fact further attesting to its importance, utility and popularity To fulfil a pressing need a long awaited second edition was brought out by the Prākrit Text Society in 1963 and in view of a persistent demand this reprint is being issued after a long gap for the benefit of the interested scholars

The Publishers hope that the work will inspire talented scholars for further intensive research in the field culminating, so we wish, in a more comprehensive dictionary of the language including also the cognate Apabhramśa language and literature

संकेत—सूची

अ	=	अव्यय।
अक	=	अकर्मक धातु।
(अप)	=	अपभ्रंश भाषा।
(अशो)	=	अशोक शिलालेख।
उभ	=	सकर्मक तथा अकर्मक धातु।
कर्म	=	कर्मणि-वाच्य।
कवकृ	=	कर्मणि-वर्तमान-कृदन्त।
कृ	=	कृत्य-प्रत्ययान्त।
क्रि	=	क्रियापद।
क्रिवि	=	क्रिया-विशेषण।
गु०	=	गुजराती।
(चूपै)	=	चूलिकापैशाची भाषा।
त्रि	=	त्रिलिङ्ग।
[दे]	=	देश्य-शब्द।
न	=	नपुंसकलिङ्ग।
पुं	=	पुंलिङ्ग।
पुंन	=	पुंलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग।
पुंस्त्री	=	पुंलिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग।
(पै)	=	पैशाची भाषा।
प्रयो	=	प्रेरणार्थक णिजन्त।
ब	=	बहुवचन।
भकृ	=	भविष्यत्कृदन्त।
भवि	=	भविष्यत्काल।
भूका	=	भूतकाल।
भूकृ	=	भूत-कृदन्त।
(मा)	=	मागधी भाषा।
वकृ	=	वर्तमान कृदन्त।
वि	=	विशेषण।
(शौ)	=	शौरसेनी भाषा।
स	=	सर्वनाम।
संकृ	=	संबन्धक कृदन्त।
सक	=	सकर्मक धातु।
स्त्री	=	स्त्रीलिङ्ग।
स्त्रीन	=	स्त्रीलिंग तथा नपुंसकलिङ्ग
हेकृ	=	हेत्वर्थ कृदन्त।

प्रमाण-ग्रन्थों [रेफ़रेन्सेज़] के संकेतों का विवरण

संकेत		ग्रन्थ का नाम	संस्करण आदि		जिसके अंक दिए गए हैं वह
अंग	=	अंगविज्जा	प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, वाराणसी—५, १९५७		
अंग	=	अंगचूलिआ	हस्तलिखित।		
अंत	=	अंतगडदसाओ	❀ १ रॉयल एसियाटिक सोसाइटी, लंडन, १९०७	...	
			२ आगमोदय-समिति, बंबई, १९२०	...	पत्र
अच्चु	=	अच्चुअसअअं	वाणीविलास प्रेस, मद्रास, १८७२	.	गाथा
अजि	=	अजिअसंतिथव	स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७८	...	,,
अज्झ	=	अध्यात्ममतपरीक्षा	१ भीमसिंह माणक, संवत् १९३३	...	,,
			२ जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर	...	,,
अणु	=	अणुओगदारसुत्त	१ राय धनपतिसिंहजी बहादुर, कलकत्ता, संवत् १९३६	...	
			२ आगमोदय समिति, १९२४ बम्बई,	...	पत्र
अनु	=	अणुत्तरोववाइअदसा	❀ १ रॉयल एसियाटिक सोसाइटी, लंडन, १९०७	.	
			२ आगमोदय-समिति, बम्बई, १९२०	...	पत्र
अभि	=	अभिज्ञानशाकुन्तल	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९१६	...	पृष्ठ
अवि	=	अविमारक	त्रिवेन्द्र संस्कृत सिरीज़	...	,,
आउ	=	आउरपच्चक्खाणपयन्नो	१ जैन-धर्म-प्रसारक सभा, भावनगर, संवत् १९६६	...	गाथा
			२ शा. बालाभाई ककलभाई, अहमदाबाद, संवत् १९६२	..	,,
आक	=	१ आवश्यककथा	हस्तलिखित ..	...	
		२ आवश्यक-एर्ज़ेलुंगन्	डॉ इ. ल्युमेन्-संपादित, लाइपज़िग, १८९७	..	पृष्ठ
आख्या	=	आख्यानकमणिकोश	प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, वाराणसी—५		
आचा	=	आचारांगसूत्र	❀ १ डॉ. डबल्यु शुब्रिंग् संपादित, लाइपज़िग, १९१०	...	
			+ २ आगमोदय-समिति, बम्बई, १९१६		श्रुतस्कन्ध, अध्य०
			३ प्रो. रवजीभाई देवराज-संपादित, राजकोट, १९०६		,,
आचानि	=	आचारांग-निर्युक्ति	आगमोदय-समिति, बम्बई, १९१६	...	गाथा
आचू	=	आवश्यकचूर्णि	हस्तलिखित .	...	अध्ययन
आत्म	=	आत्मसंबोधकुलक	† हस्तलिखित ..	..	गाथा
आत्महि	=	आत्महितोपदेश-कुलक	,, ..	...	,,
आत्मानु	=	आत्मानुशास्ति-कुलक	,, .	...	,,
आनि	=	आवश्यकनिर्युक्ति	१ यशोविजय-जैन-ग्रंथमाला, बनारस। २ हस्तलिखित।		

❀ ऐसी निशानी वाले संस्करणों में अकारादि क्रम से शब्द-सूची छपी हुई है, इससे ऐसे संस्करणों के पृष्ठ आदि के अंकों का उल्लेख प्रस्तुत कोश में बहुधा नहीं किया गया है, क्योंकि पाठक उस शब्द सूची से ही अभिलषित शब्द के स्थल को तुरन्त पा सकते हैं। जहाँ किसी विशेष प्रयोजन से अंक देने की आवश्यकता प्रतीत भी हुई है, वहाँ पर उसी ग्रन्थ की पद्धति के अनुसार अंक दिए गए हैं, जिससे जिज्ञासु को अभीष्ट स्थल पाने में विशेष सुविधा हो।

+ इन संस्करणों में श्रुतस्कन्ध, अध्ययन और उद्देश के अङ्क समान होने पर भी सूत्रों के अङ्क भिन्न-भिन्न हैं। इससे इस कोष में जिस संस्करण से जो शब्द लिया गया है उसी का सूत्राङ्क वहाँ पर दिया गया है। अंक की गिनती उसी उद्देश्य या अध्ययन के प्रथम सूत्र से आरम्भ की गई है।

† श्रद्धेय श्रीयुत केशवलालभाई प्रेमचन्द मोदी, बी. ए., एल् एल्., बी. से प्राप्त।

संकेत		ग्रंथ का नाम	संस्करण आदि			जिसके अंक दिए गए हैं वह
आप	=	आराधनाप्रकरण	शा. बालाभाई ककलभाई, अहमदाबाद, संवत् १९६२			गाथा
आरा	=	आराधनासार	मानिकचंद-दिगंबर-जैन-ग्रंथमाला, संवत् १९७३			,,
आव	=	आवश्यकसूत्र	हस्तलिखित	...	...	
आवटि	=	आवश्यक टिप्पण	देवचन्द लालभाई			
आवदी	=	आवश्यक दीपिका	विजयदानसूरि ग्रंथमाला			
आवपगा	=	आवश्यकसूत्रे पत्रे गाथा	(हरिभद्र टीका)			
आवम	=	आवश्यकसूत्र मलयगिरि टीका	हस्तलिखित	...	...	
इंदि	=	इन्द्रियपराजयशतक	भीमसिंह माणेक, बंबई, संवत् १९६८		.	गाथा
इक	=	दि कोम्मोग्राफी देर् इंदेर्	* डॉ. डबल्यु. किर्फेल-कृत, लाइपजिग, १९२०			
उत्त	=	उत्तराध्ययनसूत्र	१ राय धनपतिसिंह बहादुर, कलकत्ता, संवत् १९३६			अध्ययन, गाथा
			२ स्व-संपादित, कलकत्ता, १९२३		...	,,
			+ ३ हस्तलिखित	..	..	,,
उत्त	=	उत्तराध्ययन सूत्र	देवचन्द लालभाई			
उत्त का	=	,,	डो. जे कारपेंटिअर-संपादित, १९२१		..	,,
उत्तनि	=	उत्तराध्ययननिर्युक्ति	हस्तलिखित	.	...	,,
उत्तर	=	उत्तररामचरित	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९१५		...	पृष्ठ
उप	=	उपदेशपद	हस्तलिखित	..	..	गाथा
उप टी	=	उपदेशपद-टीका	हस्तलिखित	...	..	मूल-गाथा
उपपं	=	उपदेशपंचाशिका	† ,,	.	..	गाथा
उप पृ	=	उपदेशपद	जैन विद्या-प्रचारक वर्ग, पालीताणा			पृष्ठ
उर	=	उपदेशरत्नाकर	देवचन्द लालभाई पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९१४		.	अंश, तरंग
उव	=	उवएसमाला	* डॉ. एल्. पी. टेसेटोरि-संपादित, १९१३		..	
उवकु	=	उवदेशकुलक	† हस्तलिखित		...	गाथा
उवर	=	उपदेशरहस्य	मनसुखभाई भगुभाई, अहमदाबाद, संवत् १९६७		...	,,
उवा	=	उवासगदसाओ	* एसियाटिक सोसाइटी, बंगाल, कलकत्ता, १८९०		...	
ऊरु	—	ऊरुभंग	त्रिवेन्द्र संस्कृत-सिरीज	...	...	पृष्ठ
ओघ	=	ओघनिर्युक्ति	आगमोदय समिति, बम्बई, १९१९		...	गाथा
ओघ भा	=	ओघनिर्युक्ति-भाष्य	,,	...	...	,,
ओप	=	औपपातिकसूत्र	* डॉ इ. ल्युमेन्-संपादित, लाइपजिग, १८८३		...	
कप्प	=	कल्पसूत्र	* डॉ. एच्. जेकोबी-संपादित, लाइपजिग, १८७९		.	
कप्पू	=	कर्पूरमञ्जरी	* हार्वर्ड् ओरिएन्टल् सिरीज, १९०१		...	
कम्म १	=	कर्मग्रंथ पहला	* आत्मानन्द-जैन-पुस्तक-प्रचारक मण्डल, आगरा,		१९१८	गाथा
कम्म २	=	,, दूसरा	* ,, ,,		,,	,,
कम्म ३	=	,, तीसरा	* ,, ,,		१९१९	,,
कम्म ४	=	,, चौथा	* ,, ,,		१९२३	,,

+ सुखबोधा नामक प्राकृत-बहुल टीका से विभूषित यह उत्तराध्ययन सूत्र की हस्त-लिखित प्रति आचार्य श्रीविजय-मेघसूरिजी के भंडार से श्रद्धेय श्रीयुत् के. प्रे. मोदी द्वारा प्राप्त हुई थी, इस प्रति के पत्र १८६ हैं।

† श्रद्धेय श्रीयुत के. प्रे. मोदी द्वारा प्राप्त।

संकेत ।		ग्रन्थ का नाम	संस्करण आदि		जिसके अंक दिए गए हैं वह
कम्म ५	=	कर्मग्रन्थ पाँचवा	१ भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १९६८	..	गाथा
			२ जैन-धर्म-प्रसारक सभा, भावनगर, संवत् १९६८	..	"
कम्म ६	=	" छठवाँ	"	..	"
कम्मप	=	कर्मप्रकृति	जैन-धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, १९१७	..	पत्र
करु	=	करुणावज्रायुधम्	आत्मानन्द जैन-सभा, भावनगर, १९१६	..	पृष्ठ
कर्ण	=	कर्णभार	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरीज	..	"
कप्पूर	=	कर्पूरचरित (भाण)	गायकवाड ओरिएन्टल् सिरीज, नं. ८, १९१८		"
कर्म	=	कर्मकुलक	† हस्त-लिखित		गाथा
कल्पभाष्य	=	बृहत्कल्प-भाष्य	आत्मानन्द सभा		
" गा०	=	" गाथा	"		
कस	=	(बृहत्) कल्पसूत्र	* डॉ डब्ल्यु शुब्रिं संपादित, लाइपजिग, १९०५	.	
कहा	=	कहावली	अमुद्रित		
काप्र	=	काव्यप्रकाश	वामनाचार्यकृत टीका-युक्त, निर्णयसागर प्रेस, बम्बई	..	पृष्ठ
काल	=	कालकाचार्यकथानक	* डॉ एच् जेकोबी-संपादित, जेड्-डी-एम्-जी, खंड ३४, १८८०		
किरात	=	किराताजुनीय (व्यायोग)	गायकवाड ओरिएन्टल् सिरीज, नं ८, १९१८		पृष्ठ
कुप्र	=	कुमारपालप्रतिबोध	गायकवाड ओरिएण्टल सिरीज, १९२०	...	"
कुमा	=	कुमारपालचरित	* बंबई-संस्कृत सिरीज, १९००	...	"
कुम्मा	=	कुम्मापुत्तचरिअ	स्व-संपादित, कलकत्ता, १९१९	..	पृष्ठ
कुलक	=	कुलकसंग्रह	जैन श्रेयस्कर मंडल, म्हेसाणा, १९१४		"
खा	=	खामणाकुलक	† हस्तलिखित		गाथा
खेत्त	=	लघुक्षेत्रसमास	भीमसिंह माणेक, बंबई, संवत् १९६८	.	"
गउड	=	गउडवहो	* बंबई-संस्कृत-सिरीज, १८८७	...	
गच्छ	=	गच्छाचारपयन्नो	१ हस्तलिखित	..	अधिकार, गाथा
			२ चंदुलाल मोहोलाला कोठारी, अहमदाबाद, संवत् १९८०		"
			३ सेठ जमनाभाई भगूभाई, अहमदाबाद, १९२४		"
गण	=	गणधरस्मरण	स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७८		गाथा
गणि	=	गणिविज्जापयन्नो	राय धनपतिसिंह बहादुर, कलकत्ता, १८४२	.	"
गा	=	गाथासप्तशती	+ १ डॉ. ए. वेबर्-संपादित, लाइपजिग, १८८१	.	"
			२ निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९११	.	"
गु	=	गुरुपारतन्त्र्य-स्मरण	स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७८		गाथा
गुण	=	गुणानुरागकुलक	अंबालाल गोवर्धनदास, बम्बई, १९१३	.	"
गुभा	=	गुरुवन्दनभाष्य	भीमसिंह माणेक, बम्बई संवत् १९६२	..	गाथा

† श्रद्धेय के. प्रे. मोदी द्वारा प्राप्त।

+ लाइपजिगवाले संस्करण का नाम "सप्तशतक डेस हाल" है और बम्बईवाले का "गाथासप्तशती"। ग्रन्थ एक ही है, परन्तु बम्बईवाले संस्करण में सात शतकों के विभाग में करीब ७०० गाथाएँ छपी हैं और लाइपजिगवाले में सीधे नंबर से ठीक १०००। एक से ७०० तक की गाथाएँ दोनों संस्करणों में एक सी हैं, परन्तु गाथाओं के क्रम में कहीं कहीं दो चार नंबरों का आगा-पीछा है। ७०० के बाद का और ७०० के भीतर भी जहाँ गाथांक के अनन्तर 'अ' दिया है वह नंबर केवल लाइपजिग के ही संस्करण का है।

संकेत		ग्रंथ का नाम	संस्करण आदि		जिसके अंक दिए गए हैं वह
गुरु	=	गुरुप्रदक्षिणाकुलक	अमालाल गोवर्धनदास, बम्बई, १९६२	·	गाथा
गोय	=	गीतमकुलक	भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १९६५	...	,,
चउ	=	चउसरणपयन्नो	१ जैन-धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, संवत् १९६६	..	,,
			२ शा. बालाभाई ककलभाई, अहमदाबाद, संवत् १९६२	..	,,
चउ	=	चउप्पन्नमहापुरिसचरियं	प्राकृत ग्रंथ-परिषद्, वाराणसी—५, १९६१	..	,,
चंड	=	प्राकृतलक्षण	* एसियाटिक सोसायटी, बंगाल, कलकत्ता, १८८०	...	
चंद	=	चंदपन्नत्ति	हस्तलिखित	...	पाहुड
चारु	=	चारुदत्त	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरीज	...	पृष्ठ
चेइय	=	चेइयवंदणमहाभास	जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, संवत् १९६२	...	गाथा
चैत्य	=	चैत्यवन्दन भाष्य	भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १९६२	...	,,
जं	=	जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति	१ देवचंद लालभाई पु० फंड, बम्बई, १९१०		वक्षस्कार
			२ हस्तलिखित	...	,,
जय	=	जयतिहुअण स्तोत्र	जैन प्रभाकर प्रिंटिंग प्रेस, रतलाम, प्रथमावृत्ति	...	गाथा
जिन	=	जिनदत्ताख्यान	सिंघी जैन सिरीज		
जी	=	जीवविचार	आत्मानन्द जैन-पुस्तक-प्रचारक मंडल, आगरा, संवत् १९७८		,,
जीत	=	जीतकल्प	हस्तलिखित ...	...	
जीव	=	जीवाजीवाभिगमसूत्र	देवचंद लालभाई पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९१९	...	प्रतिपत्ति
जीवस	=	जीवसमासप्रकरण	† हस्तलिखित	...	गाथा
जीवा	=	जीवानुशासनकुलक	अंबालाल गोवर्धनदास, बम्बई, १९१३	...	,,
जो	=	ज्योतिष्करण्डक	हस्तलिखित	...	पाहुड
टि	=	+ टिप्पण (पाठान्तर)	... ...	...	
टी	=	‡ टीका	... ...	...	
ठा	=	ठाणंगसुत्त (स्थानांगसूत्र)	आगमोदय-समिति, बम्बई, १९१८—१९२०	...	ठाण०
णंदि	=	णंदिसूत्र	१ हस्तलिखित	...	
			२ आगमोदय समिति, बम्बई, १९२४	...	पत्र
णमि	=	णमिऊण स्मरण	स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७८	...	गाथा
णाया	=	णायाधम्मकहासुत्त	आगमोदय समिति, बम्बई, १९१९	...	श्रुतस्कन्ध, अध्य०
तंदु	=	तंदुलवेयालियपयन्नो	१ हस्तलिखित	...	
			२ दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९६२	...	पत्र
ति	=	तिजयपहुत्त	जैन-ज्ञान-प्रसारक-मंडल, बम्बई, १९११	...	गाथा
तित्थ	=	तित्थुग्गालियपयन्नो	हस्तलिखित ...	...	
ती	=	तीर्थकल्प	हस्तलिखित	...	कल्प
त्रि	=	त्रिपुरदाह (डिम)	गायकवाड ओरिएण्टल् सिरीज, नं० ८ १९१८	...	पृष्ठ

† श्रद्धेय श्रीयुत् के० प्रे० मोदी द्वारा प्राप्त ।

+ पाठान्तर वाले संस्करणों में जो पाठान्तर हमें उपादेय मालूम पड़े हैं उन्हें भी इस कोष में स्थान दिया है और प्रमाण के पास 'टि' शब्द जोड़ दिया है जिससे उस शब्द को उसी स्थान के टिप्पन का समझना चाहिए ।

‡ जहाँ पर प्रमाण में ग्रंथ संकेत और स्थान-निर्देश के अनन्तर 'टी' शब्द लिखा है वहाँ उस ग्रंथ के उसी स्थान की टीका के प्राकृतांश से मतलब है ।

संकेत		ग्रंथ का नाम	संस्करण आदि		जिसके अंक दिए गए हैं वह
द	=	दंडकप्रकरण	१ जैन-ज्ञान-प्रसारक-मंडल, बम्बई, १९११	...	गाथा
			२ भीमसिंह माणेक, बम्बई, १९०८	...	”
दस	=	दर्शनशुद्धिप्रकरण	हस्तलिखित	..	तत्त्व
दशअगस्त्य दशवैचू	=	दशवैकालिक अगस्त्य सिंहचूर्णि	P. T. S. ..	...	
दस	=	दसवैकालिकसूत्र	१ भीमसिंह माणेक, बम्बई, १९००	...	अध्ययन०
			२ डॉ० जीवराज घेलाभाई, अहमदाबाद, १९१२	...	”
दसचू	=	दशवैकालिकचूलिका	” ” ”	...	चूलिका०
दसनि	=	दशवैकालिकनिर्युक्ति	१ भीमसिंह माणेक, बम्बई, १९००	.	अध्ययन, गाथा
			२ देवचन्द लालभाई		
दशवैवृद्ध	=	दशवैकालिक वृद्ध विवरण	मुद्रित चूर्णि, ऋषभदेव केसरीमल		
दसा	=	दशाश्रुतस्कन्ध	हस्तलिखित	..	”
दीव	=	दीवसागरपन्नत्ति	”	...	
दूत	=	दूतघटोत्कच	त्रिवेन्द्र संस्कृत-सिरीज		पृष्ठ
दे	=	देशीनाममाला	बम्बई-संस्कृत-सिरीज, १८८०		वर्ग, गाथा
देव	=	देवेन्द्रस्तवप्रकीर्णक	हस्तलिखित	..	
देवदिन्न	=	देवदिन्न कथानक	”		
देवेन्द्र	=	देवेन्द्रनरकेन्द्रप्रकरण	जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, १९२२	...	गाथा
द्र	=	द्रव्यसित्तरी	१ जैन धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, संवत् १९५८	...	”
			२ शा० वेणीचंद सूरचंद, म्हेसाणा, १९०९	...	.
द्रव्य	=	द्रव्यसंग्रह	जैन-ग्रंथ रत्नाकर-कार्यालय, बंबई, १९०६	...	”
धण	=	ऋषभपचाशिका	काव्यमाला, सप्तम गुच्छक, बंबई, १८९०		”
धम्म	=	धर्मरत्नप्रकरण सटीक	१ जैन विद्या-प्रचारक वर्ग, पालीताणा, १९०५	..	मूल-गाथा
	.		२ हस्तलिखित	...	”
धम्मि	=	धम्मिलहिंडी (वसुदेवहिंडी अन्तर्गत)	आत्मानन्द सभा	..	
धम्मो	=	धम्मोवएसकुलक	†हस्तलिखित	...	गाथा
धर्म	=	धर्मसंग्रह	जैन-विद्या-प्रचारक-वर्ग, पालीताणा, १९०५	...	अधिकार
धर्मर	=	धर्मरत्नलघुवृत्ति	आत्मानन्द सभा		
धर्मवि	=	धर्मविधिप्रकरण सटीक	जेसंगभाई छोटालाल सुतरीया, अहमदाबाद, १९२४	...	पत्र
धर्मस	=	धर्मसंग्रहणी	दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बंबई, १९१६–१८	...	गाथा
धर्मा	=	धर्माभ्युदय	जैन-आत्मानन्द-सभा, भावनगर, १९१८	...	पृष्ठ
धात्वा	=	प्राकृतधात्वादेश	एसियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, १९२४	..	पृष्ठ
ध्व	=	ध्वन्यालोक	निर्णयसागर प्रेस, बंबई	...	”
नंदीटिप्प	=	नन्दीटिप्पण	P T S		
नलदवरास	=	नलदवदंतीरास (ऋषिवर्धन),	वेन्डर संपादित		

---

†श्रद्धेय श्रीयुत के० प्रे० मोदी द्वारा प्राप्त ।

संकेत		ग्रन्थ का नाम	संस्करण आदि		जिसके अंक दिए गए हैं वह
नव	=	नवतत्त्वप्रकरण	१ आत्मानन्द-जैन-सभा, भावनगर	..	गाथा
			२ आत्म-जैन धर्म-प्रवर्तक-सभा, अहमदाबाद, १६०६	...	,,
नाट	=	‡ नाटकीयप्राकृतशब्दसूची			
निचू	=	निशीथचूर्णि	हस्तलिखित	...	उद्देश
निर	=	निरयावलीसूत्र	१ हस्तलिखित	...	वर्ग, अध्य०
			२ आगमोदय-समिति, बम्बई, १६२२		,,
निसा	=	निशाविरामकुलक	† हस्तलिखित	...	गाथा
निसी	=	निशीथसूत्र	हस्तलिखित	...	उद्देश
पउम	=	पउमचरिअ	जैन-धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, प्रथमावृत्ति		पर्व, गाथा
पउम	=	पउमचरिय	प्राकृत-ग्रंथ-परिषद्, वाराणसी—५	...	,,
पंच	=	पंचसंग्रह	१ हस्तलिखित		द्वार, गाथा
			२ जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, १६१६	..	,,
पंचभा	=	पंचकल्पभाष्य	हस्तलिखित	...	
पंचव	=	पंचवस्तु	,, ..	.	द्वार
पंचा	=	पंचाशकप्रकरण	जैन-धर्म-प्रसारक सभा, भावनगर, प्रथमावृत्ति	...	पंचाशक
पंचू	=	पंचकल्पचूर्णि	हस्तलिखित	...	
पनि	=	पंचनिर्ग्रन्थीप्रकरण	आत्मानन्द-जैन सभा, भावनगर, संवत् १६७४	...	गाथा
पंरा	=	पंचरात्र	त्रिवेन्द्र संस्कृत-सिरीज	...	पृष्ठ
पंसू	=	पंचसूत्र	हस्तलिखित ..	...	सूत्र

‡ सेंट्रल लाइब्रेरी, वडोदा में स्थित एक मुखपृष्ठ-हीन पुस्तक में गृहीत, जिसके पूर्व भाग में क्रमदीश्वर का प्राकृत व्याकरण और उत्तर भागमें 'प्राकृताभिधानम्' शीर्षक से कतिपय ग्रंथो से उद्धृत प्राकृत शब्दों की एक छोटी सी सूची छपी हुई है। इस सूची मे उन ग्रंथो के जो संक्षिप्त नाम और पृष्ठाङ्क दिए गये हैं वे ही नाम तथा पृष्ठाङ्क ज्यों के त्यों प्रस्तुत कोष मे भी यथास्थान 'नाट' के बाद रखे गये हैं। उक्त पुस्तक मे उन ग्रंथों के संक्षिप्त नामो तथा संस्करणों का विवरण इस तरह है,—

मालती	for	मालतीमाधवम्	Calcutta Edition of 1830
चैत	,,	चैतन्यचन्द्रोदयम्	,, 1854
विक्र	,,	विक्रमोर्वशी	,, 1830
साहित्य	,,	साहित्यदर्पण	Edition of Asiatic Society
उत्तर	,,	उत्तररामचरित	Calcutta Edition of 1831
रत्ना	,,	रत्नावली	,, 1832
मृच्छ	,,	मृच्छकटिक	,, 1832
प्राप्र	,,	प्राकृतप्रकाश	Mr Cowell's Edition of 1854
शकु	,,	शकुन्तला	Calcutta Edition of 1840
मालवि	,,	मालविकाग्निमित्र	Tulberg's Edition of 1850
वेणि	,,	वेणिसंहार	Muktaram's Edition of 1855
पाप्र	,,	संक्षिप्तसारस्य प्राकृताध्याय·	
महावी	,,	महावीरचरितम्	Trithen's Edition of 1848
पिंग	,,	पिंगल.	Ms.

† श्रद्धेय के. प्रे. मोदी द्वारा प्राप्त।

सकेत		ग्रन्थ का नाम	सस्करण आदि		जिसके अंक दिए गए हैं वह
पक्खि	=	पक्खिसूत्र	भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १९६२	...	
पच्च	=	महापच्चक्खाणपयन्नो	शा वालाभाई ककलभाई, अहमदाबाद, सवत् १९६२		गाथा
पडि	=	पंचप्रतिक्रमणसूत्र	१ जैन-ज्ञान-प्रसारक-मंडल, बम्बई, १९१?		
			२ आत्मानन्द-जैन-पुस्तक-प्रचारक मंडल, आगरा, १९२१		
पण्ण	=	पण्णवणासुत्त	राय धनपतिसिंह बहादुर, बनारस, सवत् १९४०	..	पद
पण्ह	=	प्रश्नव्याकरणसूत्र	आगमोदय समिति, बम्बई, १९१९		श्रुतस्कन्ध, द्वार
पभा	=	पच्चक्खाणभाष्य	भीमसिंह माणेक, बम्बई, सवत् १९६२	...	गाथा
पव	=	प्रवचनसारोद्धार	१ ,, संवत् १९३४		+ द्वार
			२ दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९२२–२५		,,
पस	=	प्रज्ञापनोपाङ्ग तृतीयपदसग्रहणी	आत्मानन्द-जैन सभा, भावनगर, संवत् १९७४		गाथा
पाअ	=	पाइअलच्छीनाममाला	* बी बी एण्ड कंपनी, भावनगर, सवत् १९७३	..	
पार्थ	=	पार्थपराक्रम	गायकवाड ओरिएण्टल सिरीज, न ४, १९१७		पृष्ठ
पि	=	ग्रामेटिक् देर् प्राकृत स्प्राखन्	डा. आर्. पिशेल् कृत, १९००		पैरा
पिंग	=	प्राकृतपिंगल	* एसियाटिक् सोसाइटी, बंगाल, कलकत्ता, १९०२	...	
पिंड	=	पिंडनिर्युक्ति	१ हस्तलिखित	...	गाथा
			२ दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९२२		,,
पिंडभा	=	पिंडनिर्युक्तिभाष्य	,,	...	,,
पुप्फ	=	पुष्पमालाप्रकरण	जैन-श्रेयस्कर-मंडल, म्हेसाणा, १९११	...	,,
प्रति	=	प्रतिमानाटक	त्रिवेन्द्र सस्कृत-सिरीज	..	पृष्ठ
प्रबो	=	प्रबोधचन्द्रोदय	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९१०	.	,,
प्रयौ	=	प्रतिज्ञायौगन्धरायण	त्रिवेन्द्र सस्कृत सिरीज	..	,,
प्रवि	=	प्रव्रज्या-विधान-कुलक	† हस्तलिखित	...	गाथा
प्राकृ	=	प्राकृतसर्वस्व (मार्कण्डेयकृत)	विझागापटम्, विशाखापट्टणम्		पृष्ठ
प्राप	=	इन्ट्रडक्शन् टु दि प्राकृत	* पंजाब युनिवर्सिटी, लाहौर, १९१७	.	
प्राप्र	=	प्राकृतप्रकाश	* १ डा. कावल्-सपादित, लंडन, १८ ८	...	
			* २ बंगीय-साहित्य-परिषद्, कलकत्ता, १९१४		
प्रामा	=	प्राकृतमार्गोपदेशिका	* शाह हर्षचन्द्र भूराभाई, बनारस, १९११	..	
प्रारू	=	प्राकृतशब्दरूपावली	* सेठ मनसुखभाई भगुभाई, अहमदावाद, सवत् १९६८		
प्रासू	=	प्राकृतसूक्तरत्नमाला	जैन-विविध-साहित्य शास्त्र-माला, बनारस, १९१९	.	गाथा
बाल	=	बालचरित	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरीज	...	पृष्ठ
बृह	=	बृहत्कल्पभाष्य	हस्तलिखित	.	उद्देश
भग	=	भगवतीसूत्र	* १ जिनागमप्रकाश सभा, बम्बई, सवत् १९७४	...	
			२ हस्तलिखित		शतक, उद्देश
			३ आगमोदय समिति, बम्बई, १९१८-१९१९-१९२१		,,
भत्त	=	भत्तपरिण्णापयन्नो	१ जैन-धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, सवत् १९६६	..	गाथा
			२ शा. वालाभाई ककलभाई, अहमदावाद, सवत् १९६२		,,
भववृकथा	=	भवभावनावृत्तिकथा	देवचन्द लालभाई		

+ द्वार—प्रारम्भ के पूर्व के प्रस्ताव के लिए 'पव' के बाद केवल गाथा के अंक दिए गए हैं।

† श्रद्धेय श्रीयुत के प्रो. मोदी द्वारा प्राप्त।

संकेत		ग्रन्थ का नाम	संस्करण आदि		जिसके अंक दिए गए हैं वह
भवि	=	भविसत्तकहा	* १ डा एच्. जेकोबी-संपादित १९१८		
			* २ गायकवाड ओरिएण्टल सिरीज, १९२३		
भाव	=	भावकुलक	अंबालाल गोवर्धनदास, बम्बई १९१३		गाथा
भास	=	भाषारहस्य	सेठ मनसुखभाई भगुभाई, अहमदाबाद		,,
मगल	=	मंगलकुलक	† हस्तलिखित		,,
मध्य	=	मध्यमव्यायोग	त्रिवेन्द्र संस्कृत-सिरीज	...	पृष्ठ
मन	=	मनोनिग्रहभावना	† हस्तलिखित		गाथा
महा	=	आउसगेव्यालते एरस्यालुंगन् इन् महाराष्ट्री	* डॉ. एच जेकोबी-संपादित, लाइपजिग, १८८६		
महानि	=	महानिशीथसूत्र	हस्तलिखित		अध्ययन
मा	=	मालविकाग्निमित्र	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई १९१५	.	पृष्ठ
माल	=	मालतीमाधव	,, ,,	..	,,
मुणि	=	मुनिसुव्रतस्वामिचरित	हस्तलिखित	.	गाथा
मुद्रा	=	मुद्राराक्षस	बम्बई-संस्कृत-सिरीज, १९१५		पृष्ठ
मृच्छ	=	मृच्छकटिक	१ निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९१६		,,
			२ बम्बई-संस्कृत-सिरीज, १८९६		,,
मै	=	मैथिलीकल्याण	माणिकचन्द-दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला, बम्बई, १९७३	.	,,
मोह	=	मोहराजपराजय	गायकवाड ओरिएन्टल सिरीज, नं. ९, १९१८	.	,,
यति	=	यतिशिक्षापंचाशिका	† हस्तलिखित	.	गाथा
रंभा	=	रंभामंजरी	* निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १८८९		,,
रत्न	=	रत्नत्रयकुलक	† हस्तलिखित		गाथा
रयण	=	रयणसेहरनिवकहा	स्व-संपादित, बनारस, १९१८		पृष्ठ
राज	=	अभिधानराजेन्द्र	* जैन-प्रभाकर प्रिंटिंग प्रेस, रतलाम		
राय	=	रायपसेणीसुत्त	१ हस्तलिखित	.	
			२ आगमोदय-समिति बम्बई, १९२५	.	पत्र
रुक्मि	=	रुक्मिणी-हरण (ईहामृग)	गायकवाड ओरिएन्टल सिरीज, नं ८, १९१८		पृष्ठ
लघु	=	लघुसंग्रहणी	भीमसिंह माणेक, बम्बई, १९०८	..	गाथा
लहुअ	=	लघुअजितशान्ति स्मरण	स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७८	..	,,
लोक	=	लोकप्रकाश	देवचन्द लालभाई		
वज्जा	=	वज्जालग्ग	एसियाटिक सोसाइटी, बंगाल, कलकत्ता		पृष्ठ
वव	=	व्यवहारसूत्र, सभाष्य	१ हस्तलिखित	.	उद्देश्य
			२ मुनि माणेक संपादित, भावनगर, १९२६	.	,,
वसु	=	वसुदेवहिंडी	१ हस्तलिखित	.	
			२ आत्मानन्द सभा		
वा	=	वाग्भटकाव्यानुशासन	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९१५		पृष्ठ
वाग्भ	=	वाग्भटालंकार	,, १९१६		,,
वि	=	विषयत्यागोपदेशकुलक	† हस्तलिखित	...	गाथा

---

† श्रद्धेय श्रीयुत के. प्रे. मोदी द्वारा प्राप्त ।

संकेत		ग्रन्थ का नाम	संस्करण आदि	जिसके अंक दिए गए हैं वह
विक्र	=	विक्रमोर्वशीय	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९१४	पृष्ठ
विक्र	=	विक्रान्तकौरव	माणिकचन्द-दिगम्बर-जैन-ग्रन्थ-माला, संवत् १९७२	,,
विचार	=	विचारसारप्रकरण	आगमोदय-समिति, बम्बई, १९२३	गाथा
विपा	=	विपाकश्रुत	स्व-संपादित, कलकत्ता संवत् १९७६	श्रुतस्कन्ध, अध्य०
विवे	=	विवेकमंजरीप्रकरण	स्व-संपादित, बनारस, संवत् १९७५-७६	गाथा
विसे	=	विशेषावश्यकभाष्य	स्व संपादित, बनारस, वीर-संवत् २४२१	,,
वृष	=	वृषभानुजा	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १८९५	पृष्ठ
वेणी	=	वेणीसंहार	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९१५	,,
वै	=	वैराग्यशतक	विट्ठलभाई जीवाभाई पटेल, अहमदाबाद, १९२०	गाथा
श्रा	=	श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्रवृत्ति	दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९१९	मूलगाथा
श्रावक	=	श्रावकप्रज्ञप्ति	१ श्रीयुत केशवलाल प्रेमचन्द संपादित, १९०५	गाथा
			२ जैन धर्म शाखा	
श्रु	=	श्रुतास्वाद	† हस्तलिखित	,,
षड्	=	षड्भाषाचन्द्रिका	* बम्बई संस्कृत एन्ड् प्राकृत सिरीज, १९१६	
स	=	समराइच्चकहा	एसियाटिक सोसाइटी, बंगाल, कलकत्ता, १९०८-२३	पृष्ठ
सं	=	संबोधसत्तरी	विट्ठलभाई जीवाभाई पटेल, अहमदाबाद, १९२०	गाथा
संक्षि	=	संक्षिप्तसार	१ हस्तलिखित	
			२ संस्कृत प्रेस डिपोजिटरी, कलकत्ता, १८८९	पृष्ठ
संग	=	बृहत्संग्रहणी	१ भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १९६८	गाथा
			२ आत्मानन्द जैन सभा, भावनगर, संवत् १९७३	,,
संघ	=	संघाचारभाष्य	हस्तलिखित	प्रस्ताव
संच	=	शान्तिनाथचरित्र (देवचन्द्रसूरि-कृत)	,,	
संति	=	संतिकरस्तोत्र	१ जैन-ज्ञान-प्रसारक-मंडल, बम्बई, १९११	गाथा
			२ आत्मानन्द-जैन-पुस्तक-प्रचारक-मंडल, आगरा, १९२१	,,
संथा	=	संथारगपयन्नो	१ हस्तलिखित	,,
			२ जैन-धर्म-प्रचारक-सभा, भावनगर, संवत् १९६६	,,
संबोध	=	संबोधप्रकरण	जैन ग्रन्थ-प्रकाशक-सभा, अहमदाबाद, १९१६	पत्र
संवे	=	संवेगचूलिकाकुलक	† हस्तलिखित	गाथा
संवेग	=	संवेगमंजरी	,,	,,
सट्ठि	=	सट्ठिसयपयरण	१ स्व-संपादित, बनारस, १९१७	,,
			२ सत्यविजय-जैन-ग्रन्थमाला, नं ६, अहमदाबाद, १९२५	,,
सण	=	सनत्कुमारचरित	* डॉ. एच. जेकोबी-संपादित, १९२१	
सत्त	=	उपदेशसप्ततिका	जैन धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, संवत् १९७६	गाथा
सम	=	समवायांगसूत्र	आगमोदय समिति, बम्बई, १९१८	पृष्ठ
समु	=	समुद्रमन्थन (समवकार)	गायकवाड ओरिएन्टल सिरीज, नं. ८, १९१८	,,
सम्म	=	सम्मतिसूत्र	जैन-धर्म प्रसारक-सभा, भावनगर, संवत् १९६५	गाथा

† श्रद्धेय श्रीयुत के. प्रे. मोदी द्वारा प्राप्त ।

संकेत		ग्रन्थ का नाम	संस्करण आदि	जिसके अंक दिए गए हैं वह
सम्मत्त	=	सम्यक्त्वसप्तति सटीक	दे० ला० पुस्तकोद्धार-फड, बम्बई, १६१६	पत्र
सम्य	=	सम्यक्त्वस्वरूप पचीसी	अंबालाल गोवर्धनदास, बम्बई, १६१३	गाथा
सम्यक्त्वो	=	सम्यक्त्वोत्पादविधिकुलक	† हस्तलिखित	„
सा	=	सामान्यगुणोपदेशकुलक	„	„
सार्ध	=	गणधरसार्धशतकप्रकरण	जौहरी चुन्नीलाल पन्नालाल, बम्बई, १६१६	„
सिक्खा	=	शिक्षाशतक	† हस्तलिखित	„
सिग्घ	=	सिग्घमवहरउ-स्मरण	स्व संपादित, कलकत्ता, संवत् १६७८	„
सिरि	=	सिरिसिरिवालकहा	दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १६२३	„
सुख	=	सुखबोधा टीका (उत्तराध्ययनस्य)	‡ हस्तलिखित	अध्ययन, गाथा
सुज्ज	=	सूर्यप्रज्ञप्ति	आगमोदय-समिति, बम्बई, १६१६	पाहुड
सुपा	=	सुपासनाहचरिअ	स्व-संपादित बनारस, १६१८-१६	पृष्ठ
सुर	=	सुरसुंदरीचरिअ	जैन-विविध-साहित्य-शास्त्र-माला, बनारस, १६१६	परिच्छेद, गाथा
सूअ	—	सूअगडांगसुत्त	+ १ भीमसिंह माणेक, बंबई, १६३६	श्रुतस्कंध, अध्य०
			२ आगमोदय समिति, बंबई, संवत् १६१७	„
सूअनि	=	सूत्रकृताङ्गनिर्युक्ति	१ हस्तलिखित	श्रुतस्कंध
			२ आगमोदय-समिति, बंबई, संवत् १६७३	गाथा
			३ भीमसिंह माणेक „ „ १६३६	„
सूक्त	=	सूक्तमुक्तावली	दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बंबई, १६२२	पत्र
सूत्रचू	=	सूत्रकृतांगचूर्णि	P T S	
से	=	सेतुबंध	निर्णयसागर प्रेस, बंबई, १८६५	आश्वासक, पत्र
स्वप्न	=	स्वप्नवासवदत्त	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरीज	पृष्ठ
हम्मीर	=	हम्मीरमदमर्दन	गायकवाड ओरिएन्टल सिरीज, नं. १०, १६२०	„
हास्य	=	हास्यचूडामणि (प्रहसन)	„	„
हि	=	हितोपदेशकुलक	† हस्तलिखित	गाथा
हित	=	हितोपदेशसारकुलक	„	„
हे	=	हेमचन्द्र-प्राकृत-व्याकरण	* १ डॉ. आर् पिशेल्-संपादित, १८७७	पद, सूत्र
			२ बंबई-संस्कृत-सिरीज, १६००	„
हेका	=	हेमचन्द्र-काव्यानुशासन	निर्णयसागर प्रेस, बंबई, १६०१	पृष्ठ

---

† श्रद्धेय श्रीयुत के प्रे. मोदी द्वारा प्राप्त।

‡ देखो 'उत्त' के नीचे की टिप्पणी।

+ सूत्र के अंक इन दोनों में भिन्न भिन्न हैं, प्रस्तुत कोष मे सूत्रांक केवल भी. मा. के संस्करण के दिए गये है।

प्रथम संस्करण में लेखक का निवेदन

कोई भी भाषा के ज्ञान के लिए उस भाषा का व्याकरण और कोष प्रधान साधन है। प्राकृत भाषा के प्राचीन व्याकरण अनेक हैं, जिनमे चंड का प्राकृतलक्षण, वररुचि का प्राकृतप्रकाश, हेमाचार्य का सिद्धहेम (अष्टम अध्याय), मार्कण्डेय का प्राकृतसर्वस्व और लक्ष्मीधर की षड्भाषाचन्द्रिका मुख्य हैं। और अर्वाचीन प्राकृत व्याकरणो की संख्या अल्प होने पर भी उनमे जर्मनी के सुप्रसिद्ध प्राकृत-विद्वान् डॉ पिशल् का प्राकृतव्याकरण सर्वश्रेष्ठ है जो अतिविस्तृत और तुलनात्मक है। परन्तु प्राकृत-कोष के विषय मे यह बात नही है। प्राकृत के प्राचीन कोषो मे अद्यापि पर्यन्त केवल दो ही कोष उपलब्ध हुए हैं—पण्डित धनपाल-कृत पाइअलच्छीनाममाला और हेमाचार्य-प्रणीत देशीनाममाला। इनमे पहला अतिसक्षिप्त—दो सौ से भी कम पद्यो में ही समाप्त और दूसरा केवल देश्य शब्दो का कोष है। इनके सिवा अन्य कोई भी प्राकृत का कोष न होनेसे प्राकृत के हरएक अभ्यासी को अपने अभ्यास में बहुत असुविधा होती थी, खुद मुझे भी अपने प्राकृत-ग्रन्थो के अनुशीलन-काल मे इस अभाव का कटु अनुभव हुआ करता था। इससे आज से करीब पनरह साल पहले पूज्यपाद, प्रात -स्मरणीय, गुरुवर्य शास्त्र-विशारद जैनाचार्य श्री १००८ श्री विजयधर्मसूरीश्वरजी महाराज की प्रेरणा से प्राकृत का एक उपयुक्त कोष बनाने का मैंने विचार किया था।

इसी अरसे में श्री राजेन्द्र सूरिजी का अभिधानराजेन्द्र नामक कोष का प्रथम भाग प्रकाशित हुआ और अभी दो वर्ष हुए इसका अन्तिम भाग भी बाहर हो गया है। बडी बडी सात जिल्दों में यह कोष समाप्त हुआ है। इस सपूर्ण कोष का मूल्य २६०) रुपये हैं जो परिश्रम और ग्रन्थ-परिमाण में अधिक नही कहे जा सकते। यद्यपि इस कोष की विस्तृत आलोचना करने की न तो यहाँ जगह है, न आवश्यकता ही, तथापि यह कहे विना नही रहा जा सकता कि इसकी तय्यारी मे इसके कर्ता और उसके सहकारियो को सचमुच घोर परिश्रम करना पडा है और प्रकाशन मे जैन श्वेताम्बर संघ को भारी धन-व्यय। परन्तु खेद के साथ कहना पडता है कि इसमे कर्ता को सफलता की अपेक्षा निष्फलता ही अधिक मिली है और प्रकाशक के धनका अपव्यय ही विशेष हुआ है। सफलता न मिलने का कारण भी स्पष्ट है। इस ग्रन्थ को थोडे गौर से देखने पर यह सहज ही मालूम होता है कि इसके कर्ता को न तो प्राकृत भाषाओ का पर्याप्त ज्ञान था और न प्राकृत शब्द-कोष के निर्माण की उतनी प्रबल इच्छा, जितनी जैन दर्शन-शास्त्र और तर्क-शास्त्र के विषय मे अपने पाण्डित्यप्रख्यापन की घून। इसी घून ने अपने परिश्रम को योग्य दिशा में ले जानेवाली विवेक-बुद्धि का भी ह्रास कर दिया है। यही कारण है कि इस कोष का निर्माण, केवल पचहत्तर से भी कम प्राकृत जैन पुस्तको के ही, जिनमे अर्धमागधी के दर्शनविषयक ग्रंथो की बहुलता है, आधार पर किया गया है और प्राकृत की ही इतर मुख्य शाखाओ के तथा विभिन्न विषयो के अनेक जैन तथा जैनेतर ग्रन्थो मे एक का भी उपयोग नही किया गया है। इससे यह कोष व्यापक न होकर प्राकृत भाषा का एकदेशीय कोष हुआ है। इसके सिवा प्राकृत तथा सस्कृत ग्रन्थो के विस्तृत अशों को और कही-कही तो छोटे-बडे [1] सपूर्ण ग्रन्थ को ही अवतरण के रूप में उद्घृत करने के कारण पृष्ठ-सख्या मे बहुत बडा होने पर भी शब्द-सख्या मे ऊन ही नहीं, बल्कि आधार-भूत ग्रंथो में आए हुए कई [2] उपयुक्त शब्दो को छोड देने से और विशेषार्थ-हीन [3] अतिदीर्घ सामासिक शब्दो की भरती से वास्तविक शब्द-सख्या मे यह कोष अतिन्यून भी है। इतना ही नही, इस कोष में आदर्श पुस्तको की, असावधानी की और प्रेस की तो असंख्य अशुद्धियाँ हैं ही, प्राकृत भाषा के अज्ञान से सबन्ध रखनेवाली भूलो की भी कमी नही है। और सबसे बढकर दोष इस कोष में यह है कि वाचस्पत्य, अनेकान्तजयपताका, अष्टक, रत्नाकरावतारिका आदि केवल सस्कृत के और जैन इतिहास जैसे

---

१. जैसे 'चेइय' शब्द की व्याख्या मे प्रतिमाशतक नामक सटीक सस्कृत ग्रन्थ को आदि से लेकर अन्त तक उद्वृत किया गया है। इस ग्रथ की श्लोक-सख्या करीव पांच हजार है।

२. अक्क = अर्क आदि।

३ जैसे अइ-तिक्ख-रोस, अइ-दुक्ख-धम्म, अइ-तिव्व-कम्म-विगम, अकुसल-जोग-णिरोह, अचियते(?)उर-पर-घर-प्पवेस, अजिम्म(?)-कत-णयणा, अजस-सय-विसप्पमाण-हियय, अजहण्णुको(?)स-पएसिय आदि। इन शब्दो का इनके अवयवो की अपेक्षा कुछ भी विशेष अर्थ नही है।

केवल आधुनिक गुजराती ग्रन्थो के सस्कृत और गुजराती शब्दो पर से कोरी निजी कल्पना से ही[1] बनाये हुए प्राकृत शब्दों की इसमे खूब मिलावट की गई है, जिससे इस कोष की प्रामाणिकता ही एकदम नष्ट हो गई है। ये और अन्य अनेक अक्षम्य दोषो के कारण साधारण अभ्यासी के लिए इस कोष का उपयोग जितना भ्रामक और भयकर है, विद्वानो के लिए भी उतना ही क्लेशकर है।

इस तरह प्राकृत के विविध भेदो और विषयो के जैन तथा जैनेतर साहित्य के यथेष्ट शब्दो से सकलित, आवश्यक अवतरणो से युक्त, शुद्ध एव प्रामाणिक कोष का नितान्त अभाव बना ही रहा। इस अभाव की पूर्ति के लिये मैंने अपने उक्त विचार को कार्य-रूप में परिणत करने का दृढ सकल्प किया और तदनुसार शीघ्र ही प्रयत्न भी शुरु कर दिया गया, जिसका फल प्रस्तुत कोष के रूप मे चौदह वर्षो के कठोर परिश्रम के पश्चात् आज पाठको के सामने उपस्थित है।

प्रस्तुत कोष की तय्यारी में जो अनेक कठिनाइयाँ मुझे झेलनी पडी है उनमे सर्व-प्रथम प्राकृत के शुद्ध पुस्तको के विषय मे थी। प्राकृत का विशाल साहित्य-भण्डार विविध-विषयक ग्रथ-रत्नो से पूर्ण होने पर भी आजतक वह यथेष्ट रूप में प्रकाशित ही नही हुआ है। और हस्त-लिखित पुस्तकें तो बहुधा अज्ञान लेखको के हाथ से लिखी जानेके कारण प्राय अशुद्ध ही हुआ करती हैं, परन्तु आजतक जो प्राकृत की पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं वे भी, न्यूनाधिक परिमाण में, अशुद्धिओ से खाली नही है। अलबत, यूरोप की और इस देश की कुछ पुस्तकें ऐसी उत्तम पद्धति से छपी हुई हैं कि जिनमे अशुद्धियाँ बहुत ही कम हैं, और जो कुछ रह भी गई है वे उनमे टिप्पणी में दिए हुए अन्य प्रतियो के पाठान्तरो से सुधारी जा सकती हैं। परन्तु दुर्भाग्य से ऐसे सस्करणो की सख्या बहुत ही अल्प—नगण्य है। सचमुच, यह बडे खेद की बात है कि भारतीय और खास कर हमारे जैन विद्वान् प्राचीन पुस्तको के सशोधन मे अधिक हस्तलिखित पुस्तकों का उपयोग करने की और उनके भिन्न-भिन्न पाठो को टिप्पणी के आकार मे उद्घृत करने की तकलीफ ही नही उठाते। इसका नतीजा यह होता है कि सशोधक की बुद्धि में जो पाठ शुद्ध मालूम होता है वही एक, फिर चाहे वह वास्तव मे अशुद्ध ही क्यो न हो, पाठको को देखने को मिलता है। प्राकृत के इतर मुद्रित ग्रन्थो की तो यह दुर्दशा है ही, परन्तु जैनों के पवित्रतम और अति प्राचीन आगम-ग्रन्थो की भी यही अवस्था है। कई वर्षो के पहले मुर्शिदाबाद के प्रसिद्ध धन-कुबेर राय धनपतिसिंहजी बहादुर ने अनेक आगम-ग्रन्थ भिन्न-भिन्न स्थानो मे भिन्न-भिन्न सशोधको से सपादित करा कर छपवाये थे, जिनमें अधिकाश अज्ञानी सशोधको से सम्पादित होनेके कारण खूब ही अशुद्ध छपे थे। किन्तु अभी कुछ ही वर्ष हुए हमारी आगमोदय समिति ने अच्छा फड एकत्रित करके भी जो आगमो के ग्रन्थ छपवाये है वे कागज, छपाई सफाई आदि बाह्य शरीर की सजावट मे सुन्दर होने पर भी शुद्धता के विषय मे बहुधा पूर्वोक्त सस्करणो की पुनरावृत्ति ही है। क्योकि, न किसी मे आदर्श-पुस्तको के पाठान्तर देने का परिश्रम किया गया है, न मूल और टीका के प्राकृत शब्दो की संगति की ओर ध्यान दिया गया है, और न तो प्रथम सस्करण की साधारण अशुद्धियाँ सुधारने की यथोचित कोशिश ही की गई है। क्या ही अच्छा हो, यदि श्रीआगमोदयसमिति के कार्य-कर्ताओ का ध्यान इस तथ्य की ओर आकृष्ट हो और वे प्राकृत के विशेषज्ञ और परिश्रमी विद्वानो से सपादित करा कर समस्त (प्रकाशित और अप्रकाशित) आगम-ग्रन्थो का एक शुद्ध (Critical) सस्करण प्रकाशित करें, जिसकी अनिवार्य आवश्यकता है।

इस तरह हस्त लिखित और मुद्रित प्राकृत-ग्रन्थ प्राय अशुद्ध होने के कारण आवश्यकतानुसार एकाधिक हस्त-लिखित पुस्तको का अन्य-ग्रथो में उद्धृत उन्ही पाठो का और भिन्न भिन्न सस्करणो का सावधानी से निरोक्षण करके उनमें से शुद्ध प्राकृत शब्दो का तथा एक ही शब्द के भिन्न-भिन्न परन्तु शुद्ध रूपो का ही यहाँ ग्रहण किया गया है और अशुद्ध शब्द या रूप छोड दिए गए हैं। और जिस ग्रन्थ को एक ही हस्त-लिखित प्रति अथवा एक मुद्रित सस्करण पाया गया है उसमें रही हुई अशुद्धियो का भी सशोधन यथामति किया गया है और सशोधित शब्दो को ही इस कोष मे स्थान दिया गया है। साधारण स्थलो को छोड कर खास खास स्थानो मे ऐसी अशुद्धियो का उल्लेख भी उन पाठो को उद्धृत करके किया गया है, जिसमे विद्वान् पाठक को मेरी की हुई शुद्धि की योग्यता या अयोग्यता पर विचार करने की सुविधा हो। इस प्रकार जैसे मूल प्राकृत शब्दो की अशुद्धियो के सशोधन मे पूरी सावधानी रक्खी गई है वैसे ही आधुनिक विद्वानो की की हुई छाया (सस्कृत प्रतिशब्द) और अर्थ की भूलो को सुधारने की भी पूरी कोशिश की गई है। साराश यह कि इस कोष को सर्वाङ्ग-शुद्ध बनाने मे सपूर्ण ध्यान दिया गया है। मुझे यह जानकर संतोष हुआ है कि मेरे इस प्रयत्न की कदर भी प्रोफेसर ल्योमेन जैसे प्राकृत के सुप्रसिद्ध जर्मन विद्वान् तक ने की है।[2]

---

१. देखो अमगर, अखडणाणरज्ज, अगोरसव्वय, अचितगुणसमुदय, अज्झत्तविंदु, अज्झत्तमयपरिक्खा, अज्झत्थविंदु, अज्झत्थमयपरिक्खा, अभ(?)त्थओगसाहणजुत्त, अणेगतजयपडागा प्रभृति शब्दो के रेफरेंस।

२. देखो अन्यत्र उद्धृत किए हुए इस ग्रंथ-विषयक अभिप्रायो में रॉयल एसियाटिक सोसाईटी के जर्नल मे प्रकाशित प्रो. ल्युमेन का अभिप्राय।

दूसरी मुख्य कठिनाई अर्थ व्यय के बारे मे थी। मेरी आर्थिक अवस्था ऐसी नही थी कि इस महान् ग्रथ की तय्यारी के लिए पुस्तकादि आवश्यक साधनो के और सहायक मनुष्यो के वेतन-खर्च के अतिरिक्त प्रकाशन का भार भी वहन कर सकूँ। और मुफ्त मे किसी से आर्थिक सहायता लेना मैं पसन्द नहीं करता था। इससे इस कठिनाई को दूर करने के लिए अग्रिम ग्राहक बनाने की योजना की गई, जिसमें उन अग्रिम ग्राहको को हर पचीस रुपये मे इस संपूर्ण ग्रन्थ की एक कॉपी देने की व्यवस्था थी। इससे मेरी उक्त कठिनाई सम्पूर्ण तो नही, किन्तु बहुत-कुछ कम हो गई। इस योजना को इतने दूर तक सफल बनाने का अधिक श्रेय कलकत्ता के जैन श्वेताम्बर-श्रीसघ के अग्रगण्य नेता श्रीमान् सेठ नरोत्तमभाई जेठाभाई को है, जिन्होने शुरू से ही इसकी सरक्षकता का भार अपने पर लेते हुए मुझे हर तरह से इस कार्य मे सहायता की है, जिसके लिए मैं उनका चिर-कृतज्ञ हूँ। इसी तरह अहमदावाद निवासी श्रद्धेय श्रीयुत् केशवलालभाई प्रेमचन्द मोदी बी ए, एल्एल् बी का भी मैं बहुत ही उपकृत हूँ कि जिन्होंने कई मुद्रित पुस्तको में दी हुई प्राकृत शब्द सूचियो पर मे एकत्रित किया हुआ एक बडा शब्द सग्रह मुझे दिया था, इतना ही नही, बल्कि समय समय पर प्राकृत की अनेक हस्त-लिखित तथा मुद्रित पुस्तको का जोगाड कर दिया था और उक्त योजना मे ग्राहक-सख्या बढा देने का हार्दिक प्रयत्न किया था। प्रात स्मरणीय, पूज्यपाद, गुरुवर्य मुनिराज श्रीअमीविजयजी महाराज, पूज्य जैनाचार्य श्रीविजयमोहन सूरिजी, ज यु. भट्टारक श्रीजिनचारित्रसूरिजी तथा स्वतन्त्र-सम्पादक विद्वद्वर्य श्रीयुत् अम्बिकाप्रसादजी वाजपेयी का भी मे हृदय स उपकार मानता हूँ कि जिनकी प्रेरणा से अग्रिम ग्राहको की वृद्धि द्वारा मुझे इस कार्य में सहायता मिली है। इन महानुभावो को, जिनके शुभ नाम इसी ग्रन्थ मे अन्यत्र दी हुई अग्रिम-ग्राहक-सूची मे प्रकाशित किए गए हैं[1], अनेकानेक धन्यवाद हैं कि जिन्होने यथाशक्ति अल्पाधिक सख्या मे इस पुस्तक की कॉपियां खरीद कर मेरा यह कार्य सरल कर दिया है। यहां पर मेरे मित्र श्रीयुत् सेठ गिरधरलाल त्रिकमलाल और श्रीमान् बाबू डालचदजी सिघी के नाम विशेष उल्लेखनीय है। इन दोनो महाशयो ने अपनी अपनी शक्ति के अनुसार यथेष्ट सख्या मे इस कोष की कॉपियां खरीदने के अतिरिक्त मुझे इस कार्य के लिये समय समय पर बिना सूद ऋण देने की भी कृपा की थी। यह कहने मे कोई अत्युक्ति नही है कि यदि उक्त सब महानुभावो की यह सहायता मुझे प्राप्त न हुई होती तो इस कोष का प्रकाशन मेरे लिए मुश्किल ही नही, असंभव था।

यहां इस बात का भी उल्लेख करना उचित जान पडता है कि आज से करीब दस वर्ष पहले मेरे सहाध्यापक श्रद्धेय प्रोफेसर मुरलीधर बनर्जी एम्. ए महाशय ने और मैंने मिलकर एक प्रस्ताव विशिष्ट पद्धति का प्राकृत इग्लिश कोष तैयार करने के लिए कलकत्ता-विश्वविद्यालय में उपस्थित किया था, परन्तु उस समय वह अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दिया गया था। इसके कई वर्ष बाद जब मेरे इस प्राकृत-हिन्दी कोष का प्रथम भाग प्रकाशित हुआ तब उसे देखकर कलकत्ता-विश्वविद्यालय के कर्णधार स्वर्गीय ऑनरेबल जस्टिस आशुतोष मुकर्जी इतने सतुष्ट हुए कि उन्होंने तुरत ही विश्वविद्यालय की तरफ से हम दोनो के तत्त्वावधान मे इसी तरह के प्रमाण-युक्त एक प्राकृत-इङ्ग्लिश कोश तैय्यार और प्रकाशित करने का न केवल प्रस्ताव ही पास करवाया, बल्कि उसको कार्य-रूप में परिणत करने के लिए उपयुक्त व्यवस्था भी करायी है। इसके लिए उनको जितने धन्यवाद दिये जायँ, कम हैं। यहां पर मैं कलकत्ता-विश्वविद्यालय की भी प्रशंसा किए विना नही रह सकता कि जिसके द्वारा मुझे इस कार्य मे समय, पुस्तक आदि की अनेक सुविधाएँ मिली हैं, जिससे यह कार्य अपेक्षा-कृत शीघ्रता से पूर्ण हो सका है। इस कोष के उपोद्घात से सम्बन्ध रखनेवाले अनेक ऐतिहासिक जटिल प्रश्नो को सुलझाने मे श्रद्धेय प्रोफेसर मुरलीधर बनर्जी एम. ए ने अपने कीमती समय का बिना सकोच भोग देकर मुझे जो सहायता की है उसके लिए मैं उनका अन्त - करण से आभार मानता हूँ।

इस कोष के मुद्रण-कार्य के आरम्भ से लेकर प्राय शेष होने तक, समय समय पर जैसे जैसे जो अतिरिक्त हस्त-लिखित और मुद्रित पुस्तकें या सस्करण मुझे प्राप्त होते जाते थे वैसे वैसे उनका भी यथेष्ट उपयोग इस कोष मे किया जाता था। यही कारण है कि तब तक के अमुद्रित भाग के शब्द उनके रेफरेंसों के साथ साथ प्रस्तुत कोष मे ही यथास्थान शामिल कर दिए जाते थे और मुद्रित अश के शब्दो का एक अलग सग्रह तय्यार किया जाता था जो परिशिष्ट[2] के रूप मे इसी ग्रथ मे अन्यत्र प्रकाशित किया जाता है। ऐसा करते हुए तृतीय भाग के छपने तक जिन अतिरिक्त पुस्तको का उपयोग किया गया था उनकी एक अलग सूची भी तृतीय भाग में दी गई थी। उसके बाद के अतिरिक्त पुस्तको की अलग सूची इसमें न देकर प्रथम की दोनो (द्वितीय और तृतीय भाग मे प्रकाशित) सूचियो की जो एक साधारण सूची यहाँ दी जाती है उसीमें उन पुस्तको का भी वर्णानुक्रम से यथास्थान समावेश किया गया है, जिससे पाठको को अलग अलग रेफरेंस-सूचियां देखने की तकलीफ न हो।

उक्त परिशिष्ट मे केवल उन्हीं शब्दो को स्थान दिया गया है जो पूर्व-सग्रह में न आने के कारण एकदम नये हैं या आने पर भी लिंग या अर्थ में पूर्वागत शब्द की अपेक्षा विशेषता रखते हैं। केवल रेफरेंस की विशेषता को लेकर किसी शब्द को परिशिष्ट मे पुनरावृत्ति नहीं की गई है।

---

१ 'अग्रिम-ग्राहक सूची' का अश द्वितीय सस्करण में नहीं छापा गया है—संपादक।

२. 'परिशिष्ट' का संपूर्ण अश इस द्वितीय संस्करण में यथास्थान समावेश कर दिया गया है—संपादक।

यद्यपि मेरी मातृभाषा हिन्दी नही है तथापि वही एकमात्र भारतवर्ष की सर्वाधिक व्यापक और इसलिए राष्ट्र-भाषा के योग्य होने के कारण यहाँ अर्थ के लिए विशेष उपयुक्त समझी गई है।

अन्त मे, आर्ष से लेकर अपभ्रंश तक की प्राकृत भाषाओं के विविध-विषयक जैन एव जैनेतर प्राचीन ग्रथो के (जिनकी कुल सख्या ढाई सौ से भी ज्यादा है) अतिविशाल शब्द-राशि से, संस्कृत प्रतिशब्दो से, हिन्दी अर्थो से, सभी आवश्यक अवतरणो से और सपूर्ण प्रमाणो से परिपूर्ण इस बृहत् प्राकृत-कोष में, यथेष्ट सावधानता रखने पर भी, जो कुछ मनुष्य-स्वभाव-सुलभ त्रुटियां या भूलें हुई हो उनको सुधारने के लिए विद्वानो से नम्र प्रार्थना करता हुआ यह आशा रखता हूँ कि वे ऐसी भूलों के विषय मे मुझे सतर्क करेंगे ताकि द्वितीयावृत्ति मे तदनुसार सशोधन का कार्य सरल हो पडे। जो विद्वान् मेरे भ्रम प्रमादो की प्रामाणिक पद्धति से सूचना देंगे, मैं उनका चिर-कृतज्ञ रहूँगा।

यदि मेरी इस कृति से, प्राकृत-साहित्य के अभ्यास मे थोडी भी सहायता पहुँचेगी तो म अपने इस दीर्घ-काल-व्यापी परिश्रम को सफल समझूँगा।

कलकत्ता
ता० ३१-७-२८ }

हरगोविन्द दास टि. सेठ

प्रथम संस्करण का उपोद्घात

जो भाषा अतिप्राचीन काल मे इस देश के आर्य लोगों की कथ्य भाषा—बोलचाल की भाषा—थी, जिस भाषा में भगवान् महावीर और बुद्धदेव ने अपने पवित्र सिद्धान्तों का उपदेश दिया था, जिस भाषा को जैन और बौद्ध विद्वानों ने विविध-विषयक विपुल साहित्य की रचना कर अपनाई है, जिस भाषा मे श्रेष्ठ काव्य-निर्माण द्वारा प्रवरसेन हाल आदि महाकवियों ने अपनी अनुपम प्रतिभा का परिचय दिया है, जिस भाषा के मौलिक साहित्य के आधार पर संस्कृत के अनेक उत्तम ग्रन्थों की रचना हुई है, संस्कृत के नाटक ग्रन्थों में संस्कृत-भिन्न जिस भाषा का प्रयोग दृष्टिगोचर होता है, जिस भाषा से भारतवर्ष की वर्तमान समस्त आर्य भाषाओं की उत्पत्ति हुई है और जो भाषाएँ भारत के अनेक प्रदेशों में आजकल भी बोली जाती हैं, इन सब भाषाओं का साधारण नाम है प्राकृत, क्योंकि ये सब भाषाएँ एकमात्र प्राकृत के ही विभिन्न रूपान्तर हैं जो समय और स्थान की भिन्नता के कारण उत्पन्न हुई हैं। इसीसे इन भाषाओं के व्यक्ति-वाचक नामों के आगे 'प्राकृत' शब्द का प्रयोग आजतक किया जाता है, जैसे प्राथमिक प्राकृत, आर्ष या अर्धमागधी प्राकृत, पाली प्राकृत, पैशाची प्राकृत, शौरसेनी प्राकृत, महाराष्ट्री प्राकृत, अपभ्रंश प्राकृत, हिन्दी प्राकृत, बंगला प्राकृत आदि।

प्राकृत किसे कहते हैं ?

भारतवर्ष की अर्वाचीन और प्राचीन भाषाएँ और उनका परस्पर सम्बन्ध

भाषातत्त्व के अनुसार भारतवर्ष की आधुनिक कथ्य भाषाएँ इन पॉच भागों मे विभक्त की जा सकती है —(१) आर्य (Aryan), (२) द्राविड (Dravidian), (३) मुण्डा (Munda), (४) मन्-ख्मेर (Mon-khmer) और (५) तिब्बत-चीना (Tibeto-Chinese).

भारत की वर्तमान भाषाओं मे मराठी, बँगला, ओडिया, विहारी, हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, पंजावी, सिन्धी और काश्मीरी भाषा आर्य भाषा से उत्पन्न हुई हैं। पारसी तथा अंग्रेजी, जर्मनी आदि अनेक आधुनिक युरोपीय भाषाओं की उत्पत्ति भी इसी आर्य भाषा से है। भाषा-गत सादृश्य को देखकर भाषा-तत्त्व ज्ञाताओं का यह अनुमान है कि इस समय विच्छिन्न और बहु-दूरवर्ती भारतीय आर्य-भाषा-भाषी समस्त जातियाँ और उक्त युरोपीय भाषा भाषी सकल जातियाँ एक ही आर्य-वंश से उत्पन्न हुई है।

तेलगु, तामिल और मलयालम प्रभृति भाषाएँ द्राविड भाषा के अन्तर्गत हैं, कोल तथा सॉथाली भाषा मुण्डा भाषा के अन्तर्भूत हैं, खासी भाषा मन्ख्मेर भाषा का और भोटानी तथा नागा भाषा तिब्बत-चीना भाषा का निदर्शन है। इन समस्त भाषाओं की उत्पत्ति किसी आर्य भाषा से सम्बन्ध नहीं रखती, अतएव ये सभी अनार्य भाषाएँ है। यद्यपि ये अनार्य भाषाएँ भारत के ही दक्षिण, उत्तर और पूर्व भाग मे बोली जाती है तथापि अंग्रेजी आदि सुदूरवर्ती भाषाओं के साथ हिन्दी आदि आर्य भाषाओं का जो वंश-गत ऐक्य उपलब्ध होता है, इन अनार्य भाषाओं के साथ वह सम्बन्ध नहीं देखा जाता है।

ये सब कथ्य भाषाएँ आजकल जिस रूप मे प्रचलित है, पूर्वकाल में उसी रूप मे न थीं, क्योंकि कोई भी कथ्य भाषा कभी एक रूप मे नहीं रहती। अन्य वस्तुओं की तरह इसका रूप भी सर्वदा बदलता ही रहता है—देश, काल और व्यक्ति-गत उच्चारण के भेद से भाषा का परिवर्तन अनिवार्य होता है। यद्यपि यह परिवर्तन जो लोग भाषा का व्यवहार करते हैं उनके द्वारा ही होता है तथापि उस समय वह लक्ष्य मे नहीं आता। पूर्वकाल की भाषा के सरक्षित आदर्श के साथ तुलना करने पर बाद मे ही वह जाना जाता है। प्राचीन काल की जिन भारतीय भाषाओं के आदर्श सरक्षित हैं—जिन भाषाओं ने साहित्य में स्थान पाया है, उनके नाम ये हैं—वैदिक संस्कृत, लौकिक सस्कृत, पाली, अशोक लिपि तथा उसके बाद की लिपि की भाषा और प्राकृत भाषा-समूह। इनमे प्रथम की दो भाषाएँ कभी जन साधारण की कथ्य भाषा न थीं, केवल लेख्य—साहित्यिक भाषा—ही थीं। अवशिष्ट भाषाएँ कथ्य और लेख्य उभय रूप मे प्रचलित थीं। इस

समय ये समस्त भाषाएँ कथ्य रूप से व्यवहृत नहीं होतीं, इसी कारण ये मृत भाषा (dead languages) कहलाती हैं। उक्त वैदिक आदि सब भाषाएँ आर्य भाषा के अन्तर्गत हैं और इन्हीं प्राचीन आर्य भाषाओं में से कईएक क्रमशः रूपान्तरित होकर आधुनिक समस्त आर्य भाषाएँ उत्पन्न हुई हैं।

ये प्राचीन आर्य भाषाएँ कौन युग मे किस रूप मे परिवर्तित होकर क्रमशः आधुनिक कथ्य भाषाओं में परिणत हुईं, इसका सक्षिप्त विवरण नीचे दिया जाता है।

प्राचीन भारतीय आर्य भाषाओं का परिणति-क्रम

सर जॉर्ज ग्रियर्सन ने अपनी लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया (Linguistic survey of India) नामक पुस्तक में भारतवर्षीय समस्त आर्य भाषाओं के परिणाम का जो क्रम दिखाया है उसके अनुसार वैदिक भाषा उक्त साहित्य-भाषाओं में सर्व-प्राचीन है। इसका समय अनेक विद्वानों के मत मे खिस्ताब्द-पूर्व दो हजार वर्ष (2000 B. C.) और प्रो. मेक्समूलर के मत मे खिस्ताब्द-पूर्व बारह सौ वर्ष (1200 B. C.) है। यह वेद-भाषा क्रमशः परिमार्जित होती हुई ब्राह्मण, उपनिषद् और यास्क के निरुक्त की भाषा मे और बाद मे पाणिनि-प्रभृति के व्याकरण-द्वारा नियन्त्रित होकर लौकिक संस्कृत में परिणत हुई है। पाणिनि आदि के पद-प्रभृति के नियम-रूप सस्कारों को प्राप्त करने के कारण यह सस्कृत कहलाई। मुख्य रूप से 'संस्कृत' शब्द का प्रयोग इसी भाषा के अर्थ में किया जाता है। यह सस्कृत भाषा वैदिक भाषा से उत्पन्न होने से उसके साथ घनिष्ट सम्बन्ध रखने से वेद-भाषा के अर्थ मे भी 'सस्कृत' शब्द बाद के समय से प्रयुक्त होने लग गया है। पाणिनि के बाद सस्कृत भाषा का कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। यह परिवर्तन होने में—वेद-भाषा को लौकिक संस्कृत के रूप में परिणत होने मे—प्राय डेढ़ हजार वर्ष लगे हैं। पाणिनि का समय गोल्डस्टुकर के मत मे खिस्ताब्द पूर्व सप्तम शताब्दी और बोथलिंक के मत में खिस्ताब्द-पूर्व चतुर्थ शताब्दी है।

वेद-भाषा और लौकिक सस्कृत

यहाँ पर इस बात का उल्लेख करना आवश्यक है कि डॉ हॉर्नेलि और सर ग्रियर्सन के मन्तव्य के अनुसार आर्य लोगों के दो दल भिन्न-भिन्न समय मे भारतवर्ष मे आये थे[१]। पहले आर्यों के एक दल ने यहाँ आकर मध्यदेश मे अपने उपनिवेश की स्थापना की थी। इसके कई सौ वर्षों के बाद आर्यों के दूसरे दल ने भारत मे प्रवेश कर प्रथम दल के आर्यों को मध्यदेश की चारों ओर भगा कर उनके स्थान को अपने अधिकार मे किया और मध्यदेश को ही अपना वास-स्थान कायम किया। उक्त विद्वानों को यह मन्तव्य इसलिए करना पड़ा है कि मध्यदेश के चारों पार्श्वों में स्थित पंजाब, सिन्ध, गुजरात, राजपूताना, महाराष्ट्र, अयोध्या, बिहार, बंगाल और उड़ीसा प्रदेशों की आधुनिक आर्य कथ्य भाषाओं में परस्पर जो निकटता देखी जाती है तथा मध्यदेश की आधुनिक हिन्दी भाषा [पाश्चात्य हिन्दी] के साथ उन सब प्रान्तों की भाषाओं मे जो भेद पाया जाता है, उस निकटता और भेद का अन्य कोई कारण दिखाना असम्भव है। मध्यदेशवासी इस दूसरे दल के आर्यों का उस समय का जो साहित्य और जो सभ्यता थी उन्हीं के क्रमश नाम हैं वेद और वैदिक सभ्यता।

वेद और वैदिक सभ्यता

---

१ आर्य लोगो के आदिम वास स्थान के विषय में आधुनिक विद्वानो में गहरा मत-भेद है। कोई स्कान्डीनेविया को, कोई जर्मनी को, कोई पोलएड को, कोई हंगरी को, कोई दक्षिण रशिया को, कोई मध्य एशिया को आर्यों की आदिम निवास-भूमि मानते हैं तो कोई-कोई पंजाब और काश्मीर को ही इनका प्रथम वसति-स्थान बतलाते हैं। किन्तु अधिकाश विद्वान् भाषा-तत्त्व के द्वारा इस सिद्धान्त पर उपनीत हुए हैं कि युरोपीय और पूर्वदेशीय आर्यों में प्रथम विच्छेद हुआ। पीछे पूर्वदेश के आर्य लोग मेसेपोटेमिया और ईरान में एक साथ रहे और एक ही देव-देवी की उपासना करते थे। उसके बाद वे भी विच्छिन्न होकर एक दल फारस में गया और अन्य दल ने अफगानिस्तान के बीच होकर भारतवर्ष में प्रवेश और निवास किया। परन्तु जैन और हिन्दू शास्त्रों के अनुसार भारतवर्ष ही चिरकाल से आर्यों का आदिम निवास-स्थान है। कोई-कोई आधुनिक विद्वान् ने पुरातत्त्व की नूतन खोज के आधार पर भारतवर्ष से ही कुछ आर्य लोगो का ईरान आदि देशो में गमन और विस्तार-लाभ सिद्ध किया है, जिससे उक्त शास्त्रीय प्राचीन मत का समर्थन होता है।

उक्त वेद-भाषा प्राचीन होने पर भी वह वैदिक युग में जन-साधारण की कथ्य भाषा न थी, ऋषि-लोगों की साहित्य-भाषा थी। उस समय जन-साधारण में वैदिक भाषा के अनुरूप अनेक प्रादेशिक भाषाएँ (dialects) कथ्य रूप से प्रचलित थीं। इन प्रादेशिक भाषाओं में से एक ने परिमार्जित होकर वैदिक साहित्य में स्थान पाया है। ऊपर वैदिक युग से पूर्व काल में आए हुए प्रथम दल के जिन आर्यों के मध्यदेश के चारों तरफ के प्रदेशों मे उपनवेशों का उल्लेख किया गया है उन्होंने वैदिक युग अथवा उसके पूर्व-काल में अपने-अपने प्रदेशों की कथ्य भाषाओं में, दूसरे दल के आर्यों की वेद-रचना की तरह, किसी साहित्य की रचना नहीं की थी। इससे उन प्रादेशिक आर्य भाषाओं का तात्कालिक साहित्य मे कोई निदर्शन न रहने से उनके प्राचीन रूपों का सपूर्ण लोप हो गया है। वैदिक काल की और इसके पूर्व की उन समस्त कथ्य भाषाओं को सर ग्रियर्सन ने प्राथमिक प्राकृत (Primary Prākrits) नाम दिया है। यही प्राकृत भाषा-समूह का प्रथम स्तर (First stage) है। इसका समय खिस्त-पूर्व २००० से ख्रिस्त-पूर्व ६०० तक का निर्दिष्ट किया गया है। प्रथम स्तर की ये समस्त प्राकृत भाषाएँ स्वर और व्यञ्जन आदि के उच्चारण मे तथा विभक्तियों के प्रयोग में वैदिक भाषा के अनुरूप थीं। इससे ये भाषाएँ विभक्ति-बहुल (synthetic) कही जाती है।

प्राकृत-भाषाओं का प्रथम स्तर (ख्रिस्त-पूर्व २००० से ख्रिस्त-पूर्व ६००)

वैदिक युग मे जो प्रादेशिक प्राकृत भाषाएँ कथ्य रूप से प्रचलित थीं, उनमे परवर्ति-काल मे अनेक परिवर्तन हुए जिनमे ऋ ॠ आदि स्वरों का, शब्दों के अन्तिम व्यञ्जनों का, संयुक्त व्यञ्जनों का तथा विभक्ति और वचन-समूह का लोप या रूपान्तर मुख्य हैं। इन परिवर्तनों से ये कथ्य भाषाएँ प्रचुर परिमाण मे रूपान्तरित हुईं। इस तरह द्वितीय स्तर (second stage) की प्राकृत भाषाओं की उत्पत्ति हुई। द्वितीय स्तर की ये भाषाएँ जैन और बौद्ध धर्म के प्रचार के समय से अर्थात् ख्रिस्त-पूर्व षष्ठ शताब्दी से लेकर ख्रिस्तीय नवम या दशम शताब्दी पर्यन्त प्रचलित रहीं। भगवान् महावीर और बुद्धदेव के समय ये समस्त प्रादेशिक प्राकृत भाषाएँ, अपने द्वितीय स्तर के आकार मे, भिन्न-भिन्न प्रदेशों मे कथ्य भाषा के तौर पर व्यवहृत होती थीं। उन्होंने अपने सिद्धान्तों का उपदेश इन्हीं कथ्य प्राकृत भाषाओं में से एक मे दिया था। इतना ही नहीं, बल्कि बुद्धदेव ने अपना उपदेश संस्कृत भाषा में न लिखकर कथ्य प्राकृत भाषा मे लिखने के लिए अपने शिष्यों को आदेश दिया था। इस तरह प्राकृत भाषाओं का क्रमशः साहित्य की भाषाओं में परिणत होने का सूत्रपात हुआ, जिसके फलस्वरूप पश्चिम मगध और सूरसेन देश के मध्यवर्ती प्रदेश मे प्रचलित कथ्य भाषा से जैनों के धर्म-पुस्तकों की अर्ध-मागधी और पूर्व मगध मे प्रचलित लोक-भाषा से बौद्ध धर्म-ग्रन्थों की पाली भाषा उत्पन्न हुई। पाली भाषा के उत्पत्ति-स्थान के सम्बन्ध मे पाश्चात्य विद्वानों का जो मतभेद है उसका विचार हम आगे जा कर करेंगे। ख्रिस्ताब्द से २५० वर्ष पहले सम्राट् अशोक ने बुद्धदेव के उपदेशों को भिन्न-भिन्न प्रदेशों में वहाँ-वहाँ की विभिन्न प्रादेशिक प्राकृत भाषाओं मे खुदवाए। इन अशोक शिलालेखों में द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं के असंदिग्ध सर्व-प्राचीन निदर्शन संरक्षित हैं। द्वितीय स्तर के मध्य भाग में—प्रायः ख्रिस्तीय पंचम शताब्दी के पूर्व में भिन्न-भिन्न प्रदेशों की अपभ्रंश भाषाओं की उत्पत्ति हुई। इस स्तर की भाषाओं में चतुर्थी विभक्ति का, सब विभक्तियों के द्विवचनों का और आख्यात की अधिकांश विभक्तियों का लोप होने पर भी विभक्तियों का प्रयोग अधिक मात्रा में विद्यमान था। इससे इस स्तर की भाषाएँ भी विभक्ति-बहुल कही जाती हैं।

प्राकृत-भाषाओं का द्वितीय स्तर (ख्रिस्त-पूर्व ६०० से ख्रिस्ताब्द ६००)

सर ग्रियर्सन ने यह सिद्धान्त किया है कि आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं की उत्पत्ति द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं से, खासकर उसके शेष भाग में प्रचलित विविध अपभ्रंश भाषाओं से हुई है और आधुनिक भाषाओं को 'तृतीय स्तर की प्राकृत (Tertiary Prākrits)' कह कर निर्देश किया है। इन भाषाओं की उत्पत्ति का समय ख्रिस्तीय दशम शताब्दी है। इनका साधारण लक्षण यह है कि इनमे अधिकाश विभक्तियों का लोप हुआ है, एव भाषाओं की प्रकृति विभक्ति-बहुल न होकर विभक्तियों के वोधक स्वतन्त्र शब्दों का व्यवहार हुआ है। इससे ये विश्लेषणशील भाषाएँ (Analytical Languages) कही जाती हैं।

प्राकृत भाषाओं का तृतीय स्तर या आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं की उत्पत्ति (ख्रिस्ताब्द ६००)

जिस प्रादेशिक अपभ्रंश से जिस आधुनिक भारतीय आर्य भाषा की उत्पत्ति हुई है उसका विवरण आगे 'अपभ्रंश' शीर्षक में दिया जायगा।

द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं का इतिहास

प्रस्तुत कोष मे द्वितीय स्तर की साहित्यिक प्राकृत भाषाओं के शब्दों को ही स्थान दिया गया है। इससे इन भाषाओं की उत्पत्ति और परिणति के सम्बन्ध मे यहाँ पर कुछ विस्तार से विवेचन करना आवश्यक है।

साधारणत लोगों की यही धारणा है कि सस्कृत भाषा से ही द्वितीय स्तर की समस्त प्राकृत भाषाएँ और आधुनिक भारतीय भाषाएँ उत्पन्न हुई हैं। कई प्राकृत-वैयाकरणों ने भी अपने प्राकृत-व्याकरणों मे इसी मत का समर्थन किया है। परन्तु यह मत कहाँ तक सत्य है इसका विचार करने के पहले इन भाषाओं के भेदों को जानने की जरूरत है।

प्राकृत का सस्कृत-सापेक्ष विभाग प्राकृत वैयाकरणों ने प्राकृत भाषाओं के शब्द, सस्कृत शब्दों के सादृश्य और पार्थक्य के अनुसार इन तीन भागों मे विभक्त किए हैं —(१) तत्सम, (२) तद्भव और (३) देश्य या देशी।

(१) जो शब्द संस्कृत और प्राकृत मे बिलकुल एक रूप हैं उनको 'तत्सम' या 'सस्कृतसम' कहते हैं, जैसे—अञ्जलि, आगम, इच्छा, ईहा, उत्तम, ऊढा, एरंड, ओङ्कार, किङ्कर, खञ्ज, गण, घण्टा, चित्त, छल, जल, झङ्कार, टङ्कार, डिम्भ, ढक्का, तिमिर, दल, धवल, नीर, परिमल, फल, बहु, भार, मरण, रस, लव, वारि, सुन्दर, हरि, गच्छन्ति, हरन्ति प्रभृति।

(२) जो शब्द सस्कृत से वर्ण-लोप, वर्णागम अथवा वर्ण-परिवर्तन के द्वारा उत्पन्न हुए हैं वे 'तद्भव' अथवा 'सस्कृतभव' कहलाते हैं, जैसे —अग्र = अग्ग, आर्य = आरिअ, इष्ट = इट्ठ, ईर्ष्या = ईसा, उद्गम = उग्गम, कृष्ण = कसण, खर्जूर = खज्जूर, गज = गअ, घर्म = घम्म, चक्र = चक्क, क्षोभ = छोह यक्ष = जक्ख, ध्यान = झाण, दंश = डंस, नाथ = णाह, त्रिदश = तिअस, दृष्ट = दिट्ठ, धार्मिक = धम्मिअ, पश्चात् = पच्छा, स्पर्श = फस, बदर = बोर, भार्या = भारिआ, मेघ = मेह, अरण्य = रण्ण, लेश = लेस, शेष = सेस, हृदय = हिअअ भवति = हवइ, पिबति = पिअइ पृच्छति = पुच्छइ, अकार्षीत् = अकासी, भविष्यति = होहिइ इत्यादि।

(३) जिन शब्दों का सस्कृत के साथ कुछ भी सादृश्य नहीं है—कोई भी सम्बन्ध नहीं है, उनको 'देश्य' या 'देशी' बोला जाता है, यथा—अगय (दैत्य), आकासिय (पर्याप्त), इराव (हस्ती), ईस (कीलक), उअचित्त (अपगत), ऊसअ (उपधान), एलविल (धनाढ्य, वृषभ), ओडल (धम्मिल्ल), कदोट्ट (कुमुद), खुड्डिअ (सुरत), गयसाउल (विरक्त), घढ (स्तूप), चउक्कर (कार्तिकेय) छकुई (कपिकच्छू), जच्च (पुरुष), झडप्प (शीघ्र), टका (जङ्घा), डाल (शाखा), ढढर (पिशाच, ईर्ष्या), णित्तिरडिअ (त्रुटित), तोमरी (लता), थमिअ (विस्मृत), दाणि (शुल्क), धयण (गृह), निक्खुत्त (निश्चित), पणिआ (करोटिका), फुंटा (केश-बन्ध), बिट्ट (पुत्र), भुंड (सूकर), मड्डा (बलात्कार), रत्ति (आज्ञा), लच (कुक्कुट), विच्छड्ड (समूह), सयराह (शीघ्र), हुत्त (अभिमुख), उअ (पश्य), खुप्पइ (निमज्जति), छिवइ (स्पृशति), देक्खइ, निअच्छइ (पश्यति), चुक्कइ (भ्रश्यति), चोप्पडइ (म्रक्षति), अहिपच्चुअइ (गृह्णाति) प्रभृति।

उपर्युक्त विभाग प्राकृत के साथ सस्कृत के सादृश्य और पार्थक्य के ऊपर निर्भर करता है। इसके सिवा संस्कृत और प्राकृत के प्राचीन ग्रन्थकारों ने प्राकृत भाषाओं का और एक विभाग किया है जो प्राकृत भाषाओं के उत्पत्ति-स्थानों से संबन्ध रखता है। यह भौगोलिक विभाग (Geographical Classification) कहा जा सकता है। भरत-

प्राकृत भाषाओं का भौगोलिक विभाग प्रणीत कहे जाते नाट्य-शास्त्र मे,[1] सात भाषाओं को जो मागधी, अवन्तिजा, प्राच्या, सूरसेनी, अर्धमागधी, वाह्लीका और दाक्षिणात्या ये नाम हैं, चण्ड के प्राकृत-व्याकरण मे जो [2] पैशाचिकी और [3] मागधिका ये नाम मिलते हैं, दण्डी ने काव्यादर्श मे जो [4] महाराष्ट्राश्रया, शौरसेनी, गौडी और लाटी ये नाम दिए हैं, आचार्य हेमचन्द्र आदि ने मागधी, शौरसेनी, पैशाची और चूलिकापैशाचिक कह कर जिन नामों का निर्देश

---

१ "मागध्यवन्तिजा प्राच्या सूरसेन्यर्धमागधी।
वाह्लीका दाक्षिणात्या च सप्त भाषा प्रकीर्तिता॥" (नाट्यशास्त्र १७, ४८)।

२ "पैशाचिक्या रणयोर्लनौ" (प्राकृतलक्षण ३, ३८)।

३ "मागधिकाया रसयोर्लशौ" (प्राकृतलक्षण ३, ३९)।

४ 'महाराष्ट्राश्रया भाषा प्रकृष्टं प्राकृतं विदु।
सागर सूक्तिरत्नाना सेतुबन्धादि यन्मयम्॥
शौरसेनी च गौडी च लाटी चान्या च तादृशी।
याति प्रकृतमित्येव व्यवहारेषु संनिधिम्॥" (काव्यादर्श १, ३४ ३५)।

किया है और मार्कण्डेय ने अपने प्राकृतसर्वस्व में प्राकृतचन्द्रिका के कतिपय श्लोकों को उद्धृत कर महाराष्ट्री, आवन्ती, शौरसेनी, अर्धमागधी, वाह्लीकी, मागधी, प्राच्या और दाक्षिणात्या इन आठ भाषाओं के, छह विभाषाओं में द्राविड़ और ओढ्रज इन दो विभाषाओं के, ग्यारह पिशाच-भाषाओं में काञ्चीदेशीय, पाण्डय, पाञ्चाल, गौड, मागध, व्राचड, दाक्षिणात्य, शौरसेन, कैकय और द्राविड़ इन दस पिशाच-भाषाओं के और सताईस अपभ्रंशों में व्राचड, लाट, वैदर्भ, वार्वर, आवन्त्य, पाञ्चाल, टाक्क, मालव, कैकय, गौड, उड्र, हैव, पाण्ड्य, कौन्तल, सिंहल, कालिङ्ग, प्राच्य, कार्णाट, काञ्च, द्राविड़, गौर्जर, आभीर और मध्यदेशीय इन तेईस अपभ्रंशों के जिन नामों का उल्लेख किया है वे उस भिन्न-भिन्न देश से ही संबन्ध रखते हैं जहाँ-जहाँ वह-वह भाषा उत्पन्न हुई है। षड्भाषाचन्द्रिका के कर्ता ने 'शूरसेन देश में उत्पन्न भाषा शौरसेनी कही जाती है, मगध देश में उत्पन्न भाषा को मागधी कहते हैं और पिशाच-देशों की भाषा पैशाची और चूलिकापैशाची है' यह लिखते हुए यही बात अधिक स्पष्ट रूप में कही है।

पूर्व में प्राकृत भाषाओं के शब्दों के जो तीन प्रकार दिखाए हैं उनमें प्रथम प्रकार के तत्सम शब्द संस्कृत से ही सब देशों के प्राकृतों में लिये गए हैं, दूसरे प्रकार के तद्भव शब्द संस्कृत से उत्पन्न होने पर भी काल-क्रम से भिन्न-भिन्न देश में भिन्न-भिन्न रूप को प्राप्त हुए हैं और तीसरे प्रकार के देश्य शब्द वैदिक अथवा लौकिक संस्कृत से उत्पन्न नहीं हुए हैं, किन्तु भिन्न-भिन्न देश में प्रचलित भाषाओं से गृहीत हुए हैं। प्राकृत वैयाकरणों का यही मत है।

प्राकृत वैयाकरणो के मत से तत्सम आदि शब्दो की प्रकृति

देश्य शब्द

पहले प्राकृत भाषाओं का जो भौगोलिक विभाग बताया गया है, ये तृतीय प्रकार के देशीशब्द उसी भौगोलिक विभाग से उत्पन्न हुए है। वैदिक और लौकिक संस्कृत भाषा पंजाब और मध्यदेश में प्रचलित वैदिक काल की प्राकृत भाषा से उत्पन्न हुई है। पंजाब और मध्यदेश के बाहर के अन्य प्रदेशों में उस समय आर्य लोगों की जो प्रादेशिक प्राकृत भाषाएँ प्रचलित थीं उन्हीं से ये देशीशब्द गृहीत हुए हैं। यही कारण है कि वैदिक और संस्कृत साहित्य में देशीशब्दों के अनुरूप कोई शब्द (प्रतिशब्द) नहीं पाया जाता है।

मूल

प्राचीन काल में भिन्न-भिन्न प्रादेशिक प्राकृत भाषाएँ ह्यात थीं, इस बात का प्रमाण व्यास के महाभारत, भरत के नाट्यशास्त्र और वात्स्यायन के कामसूत्र आदि प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों में और जैनों के ज्ञाताधर्मकथा, विपाकश्रुत, औपपातिकसूत्र तथा राजप्रश्नीय आदि प्राचीन प्राकृत ग्रन्थों में भी मिलता है[3]। इन ग्रन्थों में 'नानाभाषा', 'देशभाषा' या 'देशीभाषा' शब्द का प्रयोग प्रादेशिक प्राकृत के अर्थ में ही किया गया है। चंड ने अपने प्राकृत व्याकरण में जहाँ देशीप्रसिद्ध[4] प्राकृत

---

१. ये श्लोक 'पैशाची' और 'अपभ्रंश' के प्रकरण में दिए गए हैं।

२. "शूरसेनोद्भवा भाषा शौरसेनीति गीयते।
मगधोत्पन्नभाषा तां मागधीं सम्प्रचक्षते।
पिशाचदेशनियतं पैशाचीद्वितयं भवेत्॥" (षड्भाषाचन्द्रिका, पृष्ठ २)।

३ "नानाचर्मभिराच्छन्ना नानाभाषाश्च भारत। कुशला देशभाषासु जल्पन्तोऽन्योन्यमीश्वरा" (महाभारत, शल्यपर्व ४६, १०३)।
"अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि देषभाषाविकल्पनम्।"
"अथवा च्छन्दत कार्या देशभाषा प्रयोक्तृभि." (नाट्यशास्त्र १७, २४; ४६)।
"नात्यन्त संस्कृतेनैव नात्यन्तं देशभाषया। कथा गोष्ठीषु कथयंल्लोके वहुमतो भवेत्" (कामसूत्र १, ४, ५०)।
"तते णं से मेहे कुमारे . . अट्ठारसविहिप्पगारदेसीभासाविसारए . होत्था", "तत्थ णं चंपाए नयरीए देवदत्ता नाम गणिया परिवसइ अड्ढा.. अट्ठारसदेसीभासाविसारया" (ज्ञाताधर्मकथासूत्र, पत्र ३८, ९२)।
"तत्थ ण वाणियगामे कामज्झया णामं गणिया होत्था. . .अट्ठारसदेसीभासाविसारया" (विपाकश्रुत, पत्र २१-२२)।
'तए ण दढपइण्णे दारए . अट्ठारसदेसीभासाविसारए" (औपपातिक सूत्र, पेरा १०९)।
"तए ण से दढपतिण्णे दारए.. अट्ठारसविहदेसिप्पगारभासाविसारए" (राजप्रश्नीयसूत्र, पत्र १४८)।

४ "सिद्धं प्रसिद्ध प्राकृत त्रेधा त्रिप्रकारं भवति—संस्कृतयोनि ,संस्कृतसमं... ,देशीप्रसिद्ध तच्चेदं हर्षितं = ल्हसिअं" (प्राकृतलक्षण पृष्ठ १-२)।

का उल्लेख किया है वहाँ भी देशी शब्द का अर्थ देशीभाषा ही है। ये सब देशी या प्रादेशिक भाषाएँ भिन्न-भिन्न प्रदेशों के निवासी आर्य लोगों की ही कथ्य भाषाएँ थीं। इन भाषाओं का पंजाब और मध्यदेश की कथ्य भाषा के साथ अनेक अंशों मे जैसे सादृश्य था वैसे किसी किसी अंश मे भेद भी था। जिस जिस अंश मे इन भाषाओं का पंजाब और मध्यदेश की प्राकृत भाषा के साथ भेद था उसमें से जिन भिन्न-भिन्न नामों ने और धातुओं ने प्राकृतसाहित्य में स्थान पाया है वे ही हैं प्राकृत के देशी वा देश्य शब्द।

प्राकृत-वैयाकरणों ने इन समस्त देश्य शब्दों में अनेक नाम और धातुओं को संस्कृत नामों के और धातुओं के स्थान मे आदेश-द्वारा सिद्ध करके तद्भव-विभाग में अन्तर्गत किए हैं[1]। यही कारण है कि आचार्य हेमचन्द्र ने अपनी देशीनाममाला में केवल देशी नामों का ही संग्रह किया है और देशी धातुओं का अपने प्राकृत-व्याकरण में संस्कृत धातुओं के आदेश-रूप मे उल्लेख किया है; यद्यपि आचार्य हेमचन्द्र के पूर्ववर्ती कई वैयाकरणों ने इनकी गणना देशी धातुओं मे ही की है[2]। ये सब नाम और धातु संस्कृत के नाम और धातुओं के आदेश-रूप में निष्पन्न करने पर भी तद्भव नहीं कहे जा सकते, क्योंकि संस्कृत के साथ इनका कुछ भी सादृश्य नहीं है।

कोई कोई पाश्चात्य भाषातत्त्वज्ञ का यह मत है कि उक्त देशी शब्द और धातु भिन्न-भिन्न देशों की द्राविड़, मुण्डा आदि अनार्य भाषाओं से लिए गए हैं। यहाँ पर यह कहा जा सकता है कि यदि आधुनिक अनार्य भाषाओं मे इन देशी-शब्दों और देशी-धातुओं का प्रयोग उपलब्ध हो तो यह अनुमान करना असंगत नहीं है। किन्तु जबतक यह प्रमाणित न हो कि 'ये देशी शब्द और धातु वर्तमान अनार्य भाषाओं मे प्रचलित हैं', तबतक 'ये देशी शब्द और धातु-प्रादेशिक आर्य भाषाओं से ही गृहीत हुए हैं' यह कहना ही अधिक संगत प्रतीत होता है। इन अनार्य भाषाओं में दो-एक देश्य शब्द और धातु प्रचलित होने पर भी 'वे अनार्य भाषाओं से ही प्राकृत भाषाओं में लिए गए हैं' यह अनुमान न कर 'प्राकृत भाषाओं से ही वे देश्य शब्द और धातु अनार्य भाषाओं मे गए हैं' यह अनुमान किया जा सकता है। हाँ, जहाँ ऐसा अनुमान करना असंभव हो वहाँ हम यह स्वीकार करने के लिए बाध्य होंगे कि 'ये देश्य शब्द और धातु अनार्य भाषाओं से ही प्राकृत मे लिए गए हैं, क्योंकि आर्य और अनार्य ये उभय जातियाँ जब एक स्थान मे मिश्रित हो गई हैं तब कोई कोई अनार्य शब्द और धातु का आर्य भाषाओं मे प्रवेश करना असंभव नहीं है।

डॉ. काल्डवेल (Caldwell) प्रभृति के मत मे वैदिक और लौकिक संस्कृत मे भी अनेक शब्द द्राविडीय भाषाओं से गृहीत हुए हैं। यह बात भी संदिग्ध ही है, क्योंकि द्राविडीय भाषा के जिस साहित्य मे ये सब शब्द पाये जाते हैं वह वैदिक संस्कृत के साहित्य से प्राचीन नहीं है। इससे 'वैदिक साहित्य मे ये सब शब्द द्राविडीय भाषा से गृहीत हुए हैं' इस अनुमान की अपेक्षा 'आर्य लोगों की भाषा से ही अनार्यों की भाषा में ये सब शब्द लिए गए हैं' यह अनुमान ही विशेष ठीक मालूम पड़ता है।

समय

जिन प्रादेशिक देशी-भाषाओं से ये सब देशी शब्द प्राकृत-साहित्य में गृहीत हुए हैं वे पूर्वोक्त प्रथम स्तर की प्राकृत भाषाओं के अन्तर्गत और उनकी समसामयिक हैं। खिस्त-पूर्व षष्ठ शताब्दी के पहले ये सब देशीभाषाएँ प्रचलित थीं, इससे ये देश्य शब्द अर्वाचीन नहीं, किन्तु उतने ही प्राचीन हैं जितने कि वैदिक शब्द।

द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं की उत्पत्ति—वैदिक या लौकिक संस्कृत से नहीं, किन्तु प्रथम स्तर की प्राकृतों से

प्राकृत के वैयाकरण-गण प्राकृत शब्द की व्युत्पत्ति में प्रकृति शब्द का अर्थ संस्कृत करते हुए प्राकृत भाषाओं की उत्पत्ति लौकिक संस्कृत से मानते हैं। संस्कृत के कई अलंकार शास्त्रों के टीकाकारों ने भी तद्भव और तत्सम शब्दों में स्थित

---

१. देखो हेमचन्द्र-प्राकृत-व्याकरण के द्वितीय पाद के १२७, १२९, १३४, १३६, १३८, १४१, १७४ वगैरह सूत्र और चतुर्थ पाद के २, ३, ४, ५, १०, ११, १२ प्रभृति सूत्र।

२. एते चान्यैर्देशीषु पठिता अपि अस्माभिर्धात्वादेशीकृता' (हे० प्रा० ४, २), अर्थात् अन्य विद्वानों ने वज्जर, पज्जर, उप्पाल प्रभृति धातुओं का पाठ देशी में किया है, तो भी हमने संस्कृत धातु के आदेश-रूप से ही ये यहीं बताए हैं।

'तत्' शब्द का सम्बन्ध संस्कृत से लगाकर इस मत का अनुसरण किया है[1]। कतिपय प्राकृत-व्याकरणों में प्राकृत शब्द की व्युत्पत्ति इस तरह की गई है —

'प्रकृतिः संस्कृतं, तत्र भवं तत आगतं वा प्राकृतम्' (हेमचन्द्र प्रा० व्या०)।

'प्रकृतिः संस्कृतं तत्र भवं प्राकृतमुच्यते' (प्राकृतसर्वस्व)।

'प्रकृतिः संस्कृतं तत्र भवत्वात् प्राकृतं स्मृतम्' (प्राकृतचन्द्रिका)।

'प्रकृतेः संस्कृतायास्तु विकृतिः प्राकृती मता' (षड्भाषाचन्द्रिका)।

'प्राकृतस्य तु सर्वमेव संस्कृतं योनिः' (प्राकृतसंजीवनी)।

इन व्युत्पत्तियों का तात्पर्य यह है कि प्राकृत शब्द 'प्रकृति' शब्द से बना है, 'प्रकृति' का अर्थ है संस्कृत भाषा, संस्कृत भाषा से जो उत्पन्न हुई है वह है प्राकृत भाषा।

प्राकृत वैयाकरणों की प्राकृत शब्द की यह व्याख्या अप्रामाणिक और अव्यापक ही नहीं है, भाषा-तत्त्व से असंगत भी है। अप्रामाणिक इसलिए कही जा सकती है कि प्रकृति शब्द का मुख्य अर्थ संस्कृत भाषा कभी नहीं होता—संस्कृत के किसी कोष मे प्राकृत शब्द का यह अर्थ उपलब्ध नहीं है[2] और गौण या लाक्षणिक अर्थ तबतक नहीं लिया जाता जबतक मुख्य अर्थ मे बाध न हो। यहाँ प्रकृति शब्द के मुख्य अर्थ स्वभाव अथवा[3] जन-साधारण लेने मे किसी तरह का बाध भी नहीं है। इससे उक्त व्युत्पत्ति के स्थान मे 'प्रकृत्या स्वभावेन सिद्धं प्राकृतम्' अथवा 'प्रकृतीनां साधारणजनानामिदं प्राकृतम्' यही व्युत्पत्ति संगत और प्रामाणिक हो सकती है। अव्यापक कहने का कारण यह है कि प्राकृत के पूर्वोक्त तीन प्रकारों मे तत्सम और तद्भव शब्दों की ही प्रकृति उन्होंने संस्कृत मानी है, तीसरे प्रकार के देश्य शब्दों की नहीं, अथच देश्य को भी प्राकृत कहा है। इससे देश्य प्राकृत में वह व्युत्पत्ति लागू नहीं होती। प्राकृत की संस्कृत से उत्पत्ति भाषा-तत्त्व के सिद्धान्त से भी संगति नहीं रखती, क्योंकि वैदिक संस्कृत[4] और लौकिक संस्कृत ये दोनों ही साहित्य की मार्जित भाषाएँ हैं। इन दोनों भाषाओं का व्यवहार शिक्षा की अपेक्षा रखता है। अशिक्षित, अज्ञ और बालक लोग किसी काल मे साहित्य की भाषा का न तो स्वयं व्यवहार कर सकते हैं और न समझ ही पाते हैं। इसलिए समस्त देशों में सर्वदा ही अशिक्षित लोगों के व्यवहार के लिए एक कथ्य भाषा चालू रहती है जो साहित्य की भाषा से स्वतन्त्र—अलग होती है। शिक्षित लोगों को भी अशिक्षित लोगों के साथ बातचीत के प्रसंग मे इस कथ्य भाषा का ही व्यवहार करना पड़ता है। वैदिक समय में भी ऐसी कथ्य भाषा प्रचलित थी। और जिस समय लौकिक संस्कृत भाषा प्रचलित हुई उस समय भी साधारण लोगों की स्वतन्त्र कथ्य भाषा विद्यमान थी, यह नाटक आदि मे संस्कृत भाषा के साथ प्राकृत-भाषी पात्रों के उल्लेख से प्रमाणित होता है।

पाणिनि ने संस्कृत भाषा को जो लौकिक भाषा कही है और पतञ्जलि ने इसको जो शिष्ट-भाषा का नाम दिया है, उसका मतलब यह नहीं है कि उस समय प्राकृत भाषा थी ही नहीं, परन्तु उसका अर्थ यह है कि उस समय के शिक्षित लोगों के आपस के वार्तालाप में, वर्तमान काल के पण्डित लोगों में संस्कृत की तरह और भिन्नदेशीय लोगों के साथ के व्यवहार Lingua Franca की माफिक संस्कृत भाषा व्यवहृत होती थी। किन्तु बालक, स्त्रियाँ और अशिक्षित लोग अपनी मातृ-भाषा में बातचीत करते थे जो संस्कृत-भिन्न साधारण कथ्य भाषा थी। साधारण कथ्य भाषा किसी देश में किसी काल मे साहित्य की भाषा से गृहीत नहीं होती, बल्कि साहित्य-भाषा ही जन-साधारण की कथ्य भाषा से उत्पन्न होती है। इसलिए 'संस्कृत से प्राकृत भाषा की उत्पत्ति हुई है' इसकी अपेक्षा 'क्या तो वैदिक संस्कृत और क्या लौकिक संस्कृत दोनों ही उस समय की प्राकृत भाषाओं से उत्पन्न हुई हैं' यही सिद्धान्त विशेष युक्ति संगत है। आजकल के भाषा तत्त्वज्ञों में इसी सिद्धान्त का अधिक आदर देखा जाता है। यह सिद्धान्त पाश्चात्य विद्वानों का कोई नूतन आविष्कार नहीं है, भारतवर्ष के

---

१. 'प्रकृतेः संस्कृतादागतं प्राकृतम्' (वाग्भटालंकारटीका २, २), 'संस्कृतरूपायाः प्रकृतेरुत्पन्नत्वात् प्राकृतम्' (काव्यादर्श की प्रेमचन्द्र-तर्कवागीश-कृत टीका १, ३३)।

२. 'प्रकृतिर्योनिशिल्पिनोः। पौरामात्यादिलिंगेषु गुणसाम्यस्वभावयोः। प्रत्ययात् पूर्विकायां च' (अनेकार्थसंग्रह ८७६-७)।

३. 'स्वाम्यमात्यः सुहृत्कोशो राष्ट्रदुर्गबलानि च।
राज्याङ्गानि प्रकृतयः पौराणां श्रेणयोऽपि च॥ (अभिधानचिन्तामणि ३, ३७८)।
'यत् कात्य —अमात्याद्याश्च पौराश्च सद्भिः प्रकृतयः स्मृताः' (अ० चि० ३, ३७८ की टीका)।

४. कोई कोई आधुनिक विद्वान् प्राकृत भाषा की उत्पत्ति वैदिक संस्कृत से मानते हैं, देखो 'पाली-प्रकाश' का प्रवेशक पृष्ठ ३४-३६।

ही प्राचीन भाषातत्त्वज्ञों में भी यह मत प्रचलित था यह निम्नोद्धृत कतिपय प्राचीन ग्रन्थों के अवतरणों से स्पष्ट प्रतीत होता है। रुद्रट-कृत काव्यालङ्कार के एक[1] श्लोक की व्याख्या में ख्रिस्त की ग्यारहवीं शताब्दी के जैन-विद्वान् नमिसाधु ने लिखा है कि—

"प्राकृतेति । सकलजगज्जन्तूना व्याकरणादिभिरनाहितसस्कार सहजो वचनव्यापार प्रकृति', तत्र भव सैव वा प्राकृतम्। 'आरिसवयणे सिद्धं देवाणं अद्धमागहा वाणी' इत्यादिवचनाद् वा प्राक् पूर्वं कृत प्राक्कृत बाल-महिलादि-सुबोध सकलभाषानिबन्धनभूत वचनमुच्यते। मेघनिर्मुक्तजलमिवैकस्वरूप तदेव च देशविशेषात् सस्कारकरणाच्च समासादितविशेष सत् सस्कृताद्युत्तरविभेदानाप्नोति। अत एव शास्त्रकृता प्राकृतमादौ निर्दिष्ट तदनु सस्कृतादीनि । पाणिन्यादिव्याकरणोदितशब्दलक्षणेन सस्करणात् सस्कृतमुच्यते।"

इस व्याख्या का तात्पर्य यह है कि—'प्रकृति शब्द का अर्थ है लोगो का व्याकरण आदि के सस्कारो से रहित स्वाभाविक वचन-व्यापार, उससे उत्पन्न अथवा वही है प्राकृत। अथवा 'प्राक् कृत' पर से प्राकृत शब्द बना है, 'प्राक् कृत' का अर्थ है 'पहले किया गया'। बारह अंग-ग्रन्थो में ग्यारह अग ग्रन्थ पहले किए गए हैं और इन ग्यारह अङ्ग-ग्रन्थो की भाषा आर्ष वचन में—सूत्र में अर्धमागधी कही गई है[2] जो बालक, महिला आदि को सुबोध—सहज गम्य है[3] और जो सकल भाषाओ का मूल है। यह अर्धमागधी भाषा ही प्राकृत है। यही प्राकृत, मेघ-मुक्त जल की तरह, पहले एक रूपवाला होने पर भी, देश-भेद से और सस्कार करने से भिन्नता को प्राप्त करता हुआ सस्कृत आदि अवान्तर विभेदो मे परिणत हुआ है अर्थात् अर्धमागधी प्राकृत से सस्कृत और अन्यान्य प्राकृत भाषाओ की उत्पत्ति हुई है। इसी कारण से मूल ग्रन्थकार (रुद्रट) ने प्राकृत का पहले और सस्कृत आदि बाद में निर्देश किया है। पाणिन्यादि व्याकरणो मे बताए हुए नियमो के अनुसार संस्कार पाने के कारण सस्कृत कहलाती है।'

'अकृत्रिमस्वादुपदैर्जन जिनेन्द्र साक्षादिव पासि भाषितै" (द्वात्रिंशद्द्वात्रिंशिका १, १८)।

"[4]अकृत्रिमस्वादुपदा जैनीं वाचमुपास्महे।" (हेमचन्द्रकाव्यानुशासन, पृष्ठ १)।

उक्त पद्यों में क्रमश महाकवि सिद्धसेन दिवाकर और आचार्य हेमचन्द्र जैसे समर्थ विद्वानों का जिनदेव की वाणी को 'अकृत्रिम' और संस्कृत भाषा को 'कृत्रिम' कहने का भी रहस्य यही है कि प्राकृत जन-साधारण की मातृभाषा होने के कारण अकृत्रिम— स्वाभाविक है और संस्कृत भाषा व्याकरण के संस्कार-रूप बनावटीपन से पूर्ण होने के हेतु कृत्रिम है।

---

१. "प्राकृतसंस्कृतमागधपिशाचभाषाश्च शौरसेनी च।
षष्ठोऽत्र भूरिभेदो देशविशेषादपभ्रंश ॥" (काव्यालकार २, १२)।

२. बारहवाँ अङ्ग-ग्रंथ, जिसका नाम दृष्टिवाद है और जिसमें चौदह पूर्व (प्रकरण) थे, सस्कृत भाषा मे था। यह बहुत काल से लुप्त हो गया है। यद्यपि इसके विषयों का सक्षिप्त वर्णन समवायाङ्गसूत्र में है।
"चतुर्दशापि पूर्वाणि सस्कृतानि पुराऽभवन् ॥११४॥
प्रज्ञातिशयसाध्यानि तान्युच्छिन्नानि कालत । अधुनैकादशाङ्ग्यस्ति सुधर्मस्वामिभाषिता ॥११५॥
बालस्त्रीमूढमूर्खादिजनानुग्रहणाय स । प्राकृता तामिहाकार्षीत्" (प्रभावकचरित्र, पृ० ६८-६६)।

३. "मुत्तूण दिट्ठिवायं कालियउक्कालियंगसिद्धं त। थीबालवायणत्थं पाययमुइयं जिणवरेहिं ॥"
(आचारदिनकर में उद्धृत प्राचीन गाथा)।
"बालस्त्रीमन्दमूर्खाणा नृणा चारित्रकाङ्क्षिणाम्। अनुग्रहार्थं तत्त्वज्ञै सिद्धान्त प्राकृत कृत ॥"
(दशवैकालिक टीका पत्र १० मे हरिभद्रसूरि द्वारा और काव्यानुशासन की टीका पृ० १ में आचार्य हेमचन्द्र द्वारा उद्धृत किया हुआ प्राचीन श्लोक)।

४. "अकृत्रिमाणि—असस्कृतानि, अत एव स्वादूनि मन्दधियामपि पेशलानि पदानि यस्यामिति विग्रह." (काव्यानुशासनटीका)। आचार्य हेमचन्द्र की 'अकृत्रिम' शब्द की इस स्पष्ट व्याख्या से प्रतीत होता है कि उनका अपने प्राकृत-व्याकरण में प्राकृत की प्रकृति सस्कृत कहना सिद्धान्त-निरूपण के लक्ष्य से नहीं, परन्तु अपने प्राकृत-व्याकरण की रचना-शैली के उपलक्ष में है, क्योकि सभी उपलब्ध प्राकृत-व्याकरणो की तरह हेमचन्द्र-प्राकृत-व्याकरण मे भी सस्कृत पर से ही प्राकृत-शिक्षा की पद्धति अख्त्यार की गई है और इस पद्धति में प्रकृति—मूल के स्थान मे सस्कृत को रखना अनिवार्य हो जाता है। अथवा यह भी असम्भव नहीं है कि व्याकरण-रचना के समय उनका यही सिद्धान्त रहा हो जो बाद मे बदल गया हो और इस परिवर्तित सिद्धान्त का काव्यानुशासन में प्रतिपादन किया हो। काव्यानुशासन की रचना व्याकरण के बाद उन्होने की है यह काव्यानुशासन की "शब्दानुशासनेऽस्माभि साध्व्यो वाचो विवेचिता" (पृष्ठ २) इस उक्ति से ही सिद्ध है।

केवल जैन विद्वानों में ही यह मत प्रचलित न था, खिस्त की आठवीं शताब्दी के जैनेतर महाकवि वाक्पतिराज ने भी अपने 'गउडवहो' नामक महाकाव्य में इसी मत को इन स्पष्ट शब्दों मे व्यक्त किया है —

"[1]सयलाम्रो इम वाया विसंति एत्तो य ऐंति वायाम्रो ।
एंति समुद्दं चिय ऐंति सायराम्रो च्चिय जलाइं ॥९३॥"

अर्थात् इसी प्राकृत भाषा मे सब भाषाएँ प्रवेश करती हैं और इस प्राकृत भाषा से ही सब भाषाएँ निर्गत हुई हैं, जल (म्रा कर) समुद्र में ही प्रवेश करता है और समुद्र से ही (वाष्प रूप से) वाहर होता है। वाक्पति के इस पद्य का मर्म यही है कि प्राकृत भाषा की उत्पत्ति अन्य किसी भाषा से नही हुई है, वल्कि सस्कृत आदि सब भाषाएँ प्राकृत से ही उत्पन्न हुई हैं।

खिस्त की नवम शताब्दी के जैनेतर कवि राजशेखर ने भी अपने 'वालरामायण' मे नीचे का श्लोक लिखकर यही मत प्रकट किया है —

"यद् योनि किल संस्कृतस्य सुदृशा जिह्वासु यन्मोदते, यत्र श्रोत्रपथावतारिणि कटुर्भाषाक्षराणा रस' ।
गद्य चूर्णपद पदं रसिपतेस्तत् प्राकृत यद्वचस्ताँल्लाटाँल्ललिताङ्गि पश्य नुदती दृष्टेर्निमेषव्रतम् ॥" (४८, ४९)।

जैन और जैनेतर विद्वानों के उक्त वचनों से यह स्पष्ट है कि प्राचीन काल के भारतीय भाषातत्त्वज्ञों मे भी यह मत प्रवल रूप से प्रचलित था कि प्राकृत की उत्पत्ति सस्कृत भाषा से नहीं है।

प्राकृत भाषा लौकिक सस्कृत से उत्पन्न नहीं हुई है इसका और भी एक प्रमाण है। वह यह कि प्राकृत के अनेक शब्द और प्रत्ययों का लौकिक संस्कृत की अपेक्षा वैदिक भाषा के साथ अधिक मेल देखने में आता है। प्राकृत भाषा साक्षाद्रूप से लौकिक सस्कृत से उत्पन्न होने पर यह कभी सभव नहीं हो सकता। वैदिक साहित्य मे भी प्राकृत के अनुरूप अनेक शब्द और प्रत्ययों के प्रयोग विद्यमान है। इससे यह अनुमान करना किसी तरह असंगत नहीं है कि वैदिक संस्कृत और प्राकृत ये दोनों ही एक प्राचीन प्राकृत भाषा से उत्पन्न हुई हैं और यही इस सादृश्य का कारण है। वैदिक भाषा और प्राकृत के सादृश्य के कतिपय उदाहरण हम नीचे उद्धृत करते हैं, ताकि उक्त कथन की सत्यता मे कोई संदेह नहीं हो सकता।

वैदिक भाषा और प्राकृत में सादृश्य

१ प्राकृत मे अनेक जगह सस्कृत ऋकार के स्थान मे उकार होता है, जैसे—वृन्द = वुन्द, ऋतु = उउ, पृथिवी = पुहवी, वैदिक साहित्य मे भी ऐसे प्रयोग पाये जाते है, जैसे—कृत = कुठ (ऋग्वेद १, ४६, ४)।

२ प्राकृत मे सयुक्त वर्णवाले कई स्थानों मे एक व्यञ्जन का लोप होकर पूर्व के ह्रस्व स्वर का दीर्घ होता है, जैसे—दुर्लभ = दूलह, विश्राम = वीसाम, स्पर्श = फास, वैदिक भाषा मे भी वैसा होता है, यथा—दुर्लभ = दूळभ (ऋग्वेद ४, ९, ८), दुर्णाश = दूणाश (शुक्लयजु प्रातिशाख्य ३, ४३)।

३. सस्कृत व्यञ्जनान्त शब्दों के अन्त्य व्यञ्जन का प्राकृत में सर्वत्र लोप होता है, जैसे—तावत् = ताव, यशस् = जस, वैदिक साहित्य में भी इस नियम का अभाव नहीं है, यथा—पश्चात् = पश्चा (अथर्वसंहिता १०, ४, ११), उच्चात् = उच्चा (तैत्तिरीयसहिता २, ३, १४), नीचात् = नीचा (तैत्तिरीयसंहिता १, २, १४)।

४ प्राकृत में संयुक्त र और य का लोप होता है, जैसे—प्रगल्भ = पगब्भ, श्यामा = सामा, वैदिक साहित्य में भी यह पाया जाता है, यथा—अ-प्रगल्भ = अ-पगल्भ (तैत्तिरीयसहिता ४, ५, ६१), त्र्यच = त्रिच (शतपथब्राह्मण १, ३, ३, ३३)।

५ प्राकृत में सयुक्त वर्ण का पूर्व स्वर ह्रस्व होता है, यथा—पात्र = पत्र, रात्रि = रत्ति, साध्य = सज्झ इत्यादि, वैदिक भाषा मे भी ऐसे प्रयोग हैं, जैसे—रोदसीप्रा = रोदसिप्रा (ऋग्वेद १०, ८८, १०), अमात्र = अमत्र (ऋग्वेद ३, ३६, ४)।

६. प्राकृत मे संस्कृत द का अनेक जगह ड होता है, जैसे—दण्ड = डण्ड, दंस = डंस, दोला = डोला, वैदिक साहित्य में भी ऐसे प्रयोग दुर्लभ नहीं है, जैसे—दुर्दभ = दूडभ (वाजसनेयसंहिता ३, ३६), पुरोदास = पुरोडाश (शुक्ल-यजु प्रातिशाख्य ३, ४४)।

---

१. सकला इद वाचो विशन्तीतश्च निर्यन्ति वाच' । आयन्ति समुद्रमेव निर्यन्ति सागरादेव जलानि ॥९३॥

७. प्राकृत मे ध का ह होता है, यथा—बधिर = बहिर व्याध = वाह, वेद-भाषा मे भी ऐसा पाया जाता है, जैसे—प्रतिसधाय = प्रतिसहाय (गोपथब्राह्मण २, ४)।

८ प्राकृत मे अनेक शब्दों मे सयुक्त व्यञ्जनों के बीच में स्वर का आगम होता है, जैसे—क्लिष्ट = किलिट्ठ, स्व = सुव, तन्वी = तणुवी, वैदिक साहित्य में भी ऐसे प्रयोग विरल नहीं है, यथा—सहस्र्य = सहस्रियः, स्वर्ग = सुवर्ग. (तैत्तिरीयसहिता ४, २, ३), तन्व = तनुव ,स्व = सुव (तैत्तिरीयआरण्यक ७ २२, १, ६, २, ७)।

९ प्राकृत मे अकारान्त पुलिङ्ग शब्द के प्रथमा के एकवचन में ओ होता है, जैसे—देवो, जिणो, सो इत्यादि, वैदिक भाषा मे भी प्रथमा के एकवचन मे कहीं-कहीं ओ देखा जाता है, यथा—संवत्सरो अजायत (ऋग्वेदसंहिता १०, १९०, २), सो चित् (ऋग्वेदसंहिता १, १९१, १०-११)।

१०. तृतीया विभक्ति के बहुवचन मे प्राकृत में देव आदि अकारान्त शब्दों के रूप देवेहि, गभीरेहि, जेट्ठेहि आदि होते है, वैदिक साहित्य में भी इसीके अनुरूप देवेभि , गम्भीरेभि, ज्येष्ठेभि आदि रूप मिलते हैं।

११ प्राकृत की तरह वैदिक भाषा में भी चतुर्थी के स्थान मे षष्ठी विभक्ति होती है[1] ।

१२. प्राकृत मे पञ्चमी के एकवचन मे देवा, वच्छा, जिगा आदि रूप होते हैं, वैदिक साहित्य में भी इसी तरह के उच्चा, नीचा, पश्चा प्रभृति उपलब्ध होते है ।

१३ प्राकृत में द्विवचन के स्थान में बहुवचन ही होता है वैदिक भाषा मे भी इस तरह के अनेकों प्रयोग मौजूद हैं, यथा—'इन्द्रावरुणौ' के स्थान मे 'इन्द्रावरुणा', 'मित्रावरुणौ' की जगह 'मित्रावरुणा', 'यौ सुरथौ रथितमौ दिविस्पृशावश्विनौ' के बदले 'या सुरथा रथीतमा दिविस्पृशा अश्विना', 'नरौ हे' के स्थल मे 'नरा हे' आदि ।

इस तरह अनेक युक्ति और प्रमाणों से यह साबित होता है कि प्राकृत की उत्पत्ति वैदिक अथवा लौकिक सस्कृत से नहीं, किन्तु वैदिक सस्कृत की उत्पत्ति जिस प्रथम स्तर की प्रादेशिक प्राकृत भाषा से पूर्व में कही गई है उसीसे हुई है। इससे यहाँ पर इस बात का उल्लेख करना आवश्यक है कि संस्कृत के अनेक आलंकारिकों ने और प्राकृत के प्राय समस्त वैयाकरणों ने 'तत्' शब्द से सस्कृत को लेकर 'तद्भव' शब्द का जो व्यवहार 'सस्कृतभव' अर्थ मे किया है वह किसी तरह सगत नहीं हो सकता। इसलिए वहाँ 'तत्' शब्द से सस्कृत के स्थान मे वैदिक काल के प्राकृत का ग्रहण कर 'तद्भव' शब्द का प्रयोग 'वैदिक काल के प्राकृत से जो शब्द सस्कृत मे लिया गया है उससे उत्पन्न' इसी अर्थ मे करना चाहिए। सस्कृत शब्द और प्राकृत तद्भव शब्द इन दोनों का साधारण मूल वैदिक काल का प्राकृत अर्थात् पूर्वोक्त प्राथमिक प्राकृत या प्रथम स्तर का प्राकृत है। इससे जहाँ पर 'तद्भव' शब्द का सैद्धान्तिक अर्थ 'सस्कृतभव' नहीं, किन्तु 'वैदिक काल के प्राकृत से उत्पन्न' यही समझना चाहिए।

द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं का उत्पत्ति-क्रम और उनके प्रधान भेद

जब उपर्युक्त कथन के अनुसार वैदिक तथा लौकिक सस्कृत और समस्त प्राकृत भाषाओं का मूल एक ही है और वैदिक तथा लौकिक सस्कृत द्वितीय स्तर की सभी प्राकृत भाषाओं से प्राचीन है, तब यह कहने की कोई आवश्यकता नहीं है कि द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं के उत्पत्ति-क्रम का निर्णय एकमात्र उसी सादृश्य के तारतम्य पर निर्भर करता है जो उभय संस्कृत और प्राकृत तद्भव शब्दों में पाया जाता है। जिस प्राकृत भाषा के तद्भव शब्दों का वैदिक और लौकिक संस्कृत के साथ जितना अधिक सादृश्य होगा वह उतनी ही प्राचीन और जिसके तद्भव शब्दों का उभय सस्कृत के साथ जितना अधिक भेद होगा वह उतनी ही अर्वाचीन मानी जा सकती है, क्योंकि अधिक भेद के उत्पन्न होने में समय भी अधिक लगता है यह निर्विवाद है।

द्वितीय स्तर की जिन प्राकृत भाषाओं ने साहित्य मे अथवा शिलालेखों मे स्थान पाया है उनके शब्दों की वैदिक और लौकिक सस्कृत के साथ, उपर्युक्त पद्धति से तुलना करने पर, जो भेद (पार्थक्य) देखने मे आते हैं उनके अनुसार द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं के निम्नोक्त प्रधान भेद (प्रकार) होते हैं, जो क्रम से इन तीन मुख्य काल-विभागों मे बाँटे जा सकते हैं—(१) प्रथम युग—ख्रिस्त-पूर्व चार सौ से लेकर ख्रिस्त के बाद एक सौ वर्ष तक (400 B. C. to 100 A D.), (२) मध्ययुग —ख्रिस्त के बाद एक सौ से पाँच सौ वर्ष तक (100 A C to 500 A. D), (३) शेष युग—ख्रिस्तीय पाँच सौ से एक हजार वर्ष तक (500 A D to 1000 A. D.)।

---

१ "चतुर्थ्यर्थे बहुलं छन्दसि" (पाणिनि-व्याकरण २, ३, ६२)।

प्रथम युग (ख्रिस्त-पूर्व ४०० से ख्रिस्त के बाद १००)

(क) हीनयान बौद्धों के त्रिपिटक, महावश और जातक-प्रभृति ग्रन्थों की पाली भाषा।
(ख) पैशाची और चूलिकापैशाची।
(ग) जैन अग-ग्रन्थों की अर्धमागधी भाषा।
(घ) अंग-ग्रन्थ-भिन्न प्राचीन सूत्रों की और पउम-चरिअ आदि प्राचीन ग्रन्थों की जैन महाराष्ट्री भाषा।
(ङ) अशोक-शिलालेखों की एवं परवर्ति-काल के प्राचीन शिलालेखों की भाषा।
(च) अश्वघोष के नाटकों की भाषा।

मध्ययुग (ख्रिस्तीय १०० से ५००)

(क) त्रिवेन्द्रम् से प्रकाशित भास-रचित कहे जाते नाटकों की और बाद के कालिदास-प्रभृति के नाटकों की शौरसेनी, मागधी और महाराष्ट्री भाषाएँ।
(ख) सेतुबन्ध, गाथासप्तशती आदि काव्यों की महाराष्ट्री भाषा।
(ग) प्राकृत व्याकरणों में जिनके लक्षण और उदाहरण पाये जाते हैं वे महाराष्ट्री, शौरसेनी, मागधी, पैशाची, चूलिकापैशाची भाषाएँ।
(घ) दिगम्बर जैन ग्रन्थों की शौरसेनी और परवर्ति-काल के श्वेताम्बर ग्रन्थों की जैन महाराष्ट्री भाषा।
(ङ) चंड के व्याकरण मे निर्दिष्ट और विक्रमोर्वशी मे प्रयुक्त अपभ्रंश भाषा।

शेष युग (ख्रिस्तीय ५०० से १००० वर्ष)

भिन्न-भिन्न प्रदेशों की परवर्ती काल की अपभ्रंश भाषाएँ।

अब इन तीन युगों मे विभक्त प्रत्येक भाषा का लक्षण और विशेष विवरण, उक्त क्रम के अनुसार (१) पालि, (२) पैशाची, (३) चूलिकापैशाची, (४) अर्धमागधी, (५) जैन महाराष्ट्री, (६) अशोकलिपि, (७) शौरसेनी, (८) मागधी, (९) महाराष्ट्री, (१०) अपभ्रंश इन शीर्षकों में क्रमश दिया जाता है।

---

(१) पालि

हीनयान बौद्धों के धर्म-ग्रन्थों की भाषा को पालि कहते हैं। कई विद्वानों का अनुमान है कि पालि शब्द 'पङ्क्ति' पर से बना है[1]। 'पङ्क्ति' शब्द का अर्थ है 'श्रेणी'[2]। प्राचीन बौद्ध लेखक अपने ग्रन्थ मे धर्म-शास्त्र की वचन-पङ्क्ति को उद्धृत करते समय इसी पालि शब्द का प्रयोग करते थे, इससे बाद के समय मे बौद्ध धर्म-शास्त्रों की भाषा का ही नाम पालि हुआ। अन्य विद्वानों का मत है कि पालि शब्द 'पङ्क्ति' पर से नहीं, परन्तु 'पल्लि' पर से हुआ है। पल्लि' शब्द असल में संस्कृत नहीं, परन्तु प्राकृत है, यद्यपि अन्य अनेक प्राकृत शब्दों की तरह यह भी पीछे से संस्कृत मे लिया गया है। पल्लि शब्द जैनों के प्राचीन अंग-ग्रन्थों मे भी पाया जाता है[3]। 'पल्लि' शब्द का अर्थ है ग्राम या गाँव। 'पालि' का अर्थ गावों मे बोली जाती भाषा—ग्राम्य भाषा—होता है। 'पङ्क्ति' पर से 'पालि' होने की कल्पना जितनी क्लेश-साध्य है 'पल्लि' पर से 'पालि' होना उतना ही सहज-बोध्य है। इससे हमें पिछला मत ही अधिक संगत मालूम होता है। 'पालि' केवल ग्रामों की ही भाषा थी, इससे उसका यह नाम हुआ है यह बात नहीं है। बल्कि प्रदेश-विशेष के ग्रामों की तरह शहरों के भी जन-साधारण की यह भाषा थी, परन्तु संस्कृत के अनन्य-भक्त

निर्देश और व्युत्पत्ति

---

१ "पङ्क्ति = पक्ति = पति = पण्टि = पंटि = पलि = पल्लि = पालि, अथवा पङ्क्ति = पत्ति = पट्टि = पल्लि = पालि" (पालिप्रकाश, प्रवेशक, पृष्ठ ९)।

२ "सेतुस्सिं तन्तिपन्तीसु नालियं पालि कथ्यते" (अभिधानप्रदीपिका ९९६)।

३ देखो, विपाकश्रुत (पत्र ३८, ३९)।

ब्राह्मणों की ही ओर से इस भाषा की तरफ अपनी स्वाभाविक घृणा[1] को व्यक्त करने के लिए इसका यह नाम दिया जाना और अधिक प्रसिद्ध हो जाने के कारण पीछे से बौद्ध विद्वानों का भी मागधी की जगह इस शब्द का प्रयोग करना आश्चर्य-जनक नहीं जान पड़ता।

उक्त प्राकृत भाषा-समूह में पालि भाषा के साथ वैदिक संस्कृत का अधिक सादृश्य देखा जाता है। इसी कारण से द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं मे पालि भाषा सर्वापेक्षा प्राचीन मालूम पड़ती है।

पालि भाषा के उत्पत्ति-स्थान के बारे मे विद्वानों का मत-भेद है। बौद्ध लोग इसी भाषा को मागधी कहते हैं और उनके मत से इस भाषा का उत्पत्ति-स्थान मगध देश है। परन्तु इस भाषा का मागधी प्राकृत के साथ कोई सादृश्य नहीं है। डॉ. कोनो (Dr Konw) और सर ग्रियर्सन ने इस भाषा का पैशाची भाषा के साथ सादृश्य देखकर पैशाची भाषा जिस देश मे प्रचलित थी उसी देश को इसका उत्पत्ति-स्थान बताया है,

उत्पत्ति-स्थान

यद्यपि पैशाची भाषा के उत्पत्ति-स्थान के विषय मे इन दोनों विद्वानों का मतैक्य नहीं है। डॉ. कोनो के मत मे पैशाची भाषा का उत्पत्ति-स्थान विन्ध्याचल का दक्षिण प्रदेश है और सर ग्रियर्सन का मत यह है कि 'इसका उत्पत्ति-स्थान भारतवर्ष का उत्तर-पश्चिम प्रान्त है, वहाँ उत्पन्न होने के बाद संभव है कि कोंकण-प्रदेश-पर्यन्त इसका विस्तार हुआ हो और वहाँ इससे पाली भाषा की उत्पत्ति हुई हो।' परन्तु पालि भाषा अशोक के गुजरात-प्रदेश-स्थित गिरनार के शिलालेख के अनुरूप होने के कारण यह मगध मे नहीं, किन्तु 'भारतवर्ष के पश्चिम प्रान्त में उत्पन्न हुई है और वहाँ से सिंहल देश में ले जाई गई है' यही मत विशेष संगत प्रतीत होता है, क्योंकि निम्नोक्त उदाहरणों से पालिभाषा का गिरनार-शिलालेख के साथ सादृश्य और पूर्व-प्रान्त-स्थित धौलि (खडगिरि) शिलालेख के साथ पार्थक्य देखा जाता है—

संस्कृत	पाली	गिरनारशिला०	धौलिशिला०
राज्ञ	राजिनो, रञ्ञो	राञो	लजिने
कृतम्	कतं	कतं	कटे

इस विषय मे डॉ. सुनीतिकुमार चटर्जी का कहना है कि "बुद्धदेव[2] के समस्त उपदेश मागधी भाषासे बाद के समय में मध्यदेश (Doab) की शौरसेनी प्राकृत मे अनुवादित हुए थे और वे ही खिस्त-पूर्व प्राय दो सौ वर्ष से पालि-भाषा के नाम से प्रसिद्ध हुए है।" किन्तु सच तो यह है कि पालि भाषा का शौरसेनी और मागधी की अपेक्षा पैशाची के साथ ही अधिक सादृश्य है जो निम्नोक्त उदाहरणों से स्पष्ट जाना जाता है।

संस्कृत	पालि	पैचाची	शौरसेनी	मागधी
*क[3] (लोक)	क (लोक)	क (लोक)	० (लोअ)	० (लोअ)
*ग (नग)	ग (नग)	ग (नग)	० (णअ)	० (णअ)
*च (शची)	च (सची)	च (सची)	० (सई)	० (शई)
*ज (रजत)	ज (रजत)	ज (रजत)	० (रअद)	० (लअद)
*त (कृत)	त (कत)	त (कत)	द (कद)	ड (कड)
र (कर)	र (कर)	र (कर)	र (कर)	ल (कल)

---

१. "लोकायत कुतर्कं च प्राकृत म्लेच्छभाषितम्।
न श्रोतव्य द्विजेनैतदधो नयति तद् द्विजम्" (गरुडपुराण, पूर्वखण्ड ९८, १७)।

२. The Origin and Development of the Bengalee Language, Vol. I, page 57.

३. इन उदाहरणों में प्रथम वह अक्षर दिया गया है जिसका उस उस भाषा के नीचे दिए गए अक्षरो मे परिवर्तन होता है और अक्षर के बाद ब्राकेट मे उसी अक्षरवाला शब्द स्पष्टता के लिए दिया गया है।

* स्वर वर्णों के मध्यवर्ती असंयुक्त वर्ण।

संस्कृत	पालि	पैशाची	शौरसेनी	मागधी
श (वश)	स (वस)	स (वस)	स (वस)	श (वश)
ष (मेष)	स (मेस)	स (मेस)	स (मेस)	श (मेश)
स (सारस)	स (सारस)	स (सारस)	स (सारस)	श (शालश)
न (वचन)	न (वचन)	न (वचन)	ण (वअण)	ण (वअण)
ट्ट (पट्ट)	ट्ट (पट्ट)	ट्ट (पट्ट)	ट्ट (पट्ट)	स्ट (पस्ट)
र्थ (अर्थ)	त्थ (अत्थ)	त्थ (अत्थ)	त्थ (अत्थ)	स्त (अस्त)
स्[1] (वृक्ष-)	ओ (रुक्खो)	ओ (रुक्खो)	ओ (रुक्खो)	ए (लुक्खे)

उत्पत्ति-समय

पालि भाषा की उत्पत्ति का समय खिस्त के पूर्व षष्ठ शताब्दी कहा जाता है, किन्तु वह काल बुद्धदेव की समसामयिक कथ्य मागधी भाषा का हो सकता है। पालि कथ्य भाषा नहीं, परन्तु बौद्ध धर्म-साहित्य की भाषा है। संभवत यह भाषा खिस्त के पूर्व चतुर्थ या पञ्चम शताब्दी मे पश्चिम भारत मे उत्पन्न हुई थी।

इस पालि-भाषा से आधुनिक सिंहली भाषा की उत्पत्ति हुई है।

प्राकृत शब्द से साधारणत. पालि-भिन्न अन्य भाषाएँ ही समझी जाती हैं। इससे, और पालि भाषा के अनेक स्वतन्त्र कोष होने से, प्रस्तुत कोष मे पालि भाषा के शब्दो को स्थान नहीं दिया गया है। इसलिए पालि भाषा की विशेष आलोचना करने की यहाँ आवश्यकता नहीं है।

(२) पैशाची

निदर्शन

गुणाढ्य ने [2]बृहत्कथा पैशाची भाषा में लिखी थी, जो लुप्त हो गई है। इस समय पैशाची भाषा के उदाहरण प्राकृतप्रकाश, आचार्य हेमचन्द्र का प्राकृतव्याकरण, षड्भाषाचन्द्रिका, प्राकृत-सर्वस्व और संक्षिप्तसार आदि प्राकृत-व्याकरणों में आचार्य हेमचन्द्र के कुमारपाल-चरित तथा [3]काव्यानुशासन में, मोहराज-पराजय नामक नाटक में और दो-एक षड्भाषास्तोत्रों में मिलते हैं।

भरत के नाट्यशास्त्र में पैशाची नाम का उल्लेख देखने में नहीं आता है, परन्तु इसके परवर्ती [4]रुद्रट, [5]केशव-मिश्र आदि संस्कृत के आलंकारिकों ने इसका उल्लेख किया है। वाग्भट ने इस भाषा को [6]'भूतभाषित' के नाम से अभिहित की है।

विनियोग

[7]वाग्भट तथा [8]केशवमिश्र ने क्रम से भूत और पिशाच-प्रभृति पात्रों के लिए और [9]षड्भाषा-चन्द्रिकाकार ने राक्षस, पिशाच और नीच पात्रों के लिए इसका विनियोग बतलाया है।

---

१. पुंलिंग में प्रथमा के एक वचन का प्रत्यय।

२. आचार्य उद्द्योतन की कुवलय माला में, दण्डी के काव्यादर्श में, बाण के हर्षचरित मे, धनञ्जय के दशरूपक में, सुबन्धु की वासवदत्ता में और अन्यान्य प्राकृत-संस्कृत ग्रंथो में इसका उल्लेख पाया जाता है। क्षेमेन्द्रकृत बृहत्कथामञ्जरी और सोमदेवभट्ट-प्रणीत कथासरित्सागर इसी बृहत्कथा का संस्कृत अनुवाद है। इस बृहत्कथा के ही भिन्न-भिन्न अंशो के आधार पर बाण, श्रीहर्ष, भवभूति आदि संस्कृत के महाकवियो की कादम्बरी, रत्नावली, मालतीमाधव-प्रभृति अनेक संस्कृत ग्रंथों की रचना की गई है।

३. पृष्ठ २२९, २३३।

४. काव्यालंकार २, १२।

५. 'संस्कृतं प्राकृतं चैव पैशाची मागधी तथा' (अलङ्कार शेखर, पृष्ठ ५)।

६. 'संस्कृतं प्राकृत तस्यापभ्र शो भूतभाषितम्' (वाग्भटालङ्कार २, १)।

७. 'यद् भूतैरुच्यते किञ्चित् तद्भौतिकमिति स्मृतम्' (वाग्भटालङ्कार २, ३)।

८. 'पैशाचीं तु पिशाचाद्या. प्राहु' (अलङ्कारशेखर, पृष्ठ ५)।

९. रक्ष पिशाचनीचेषु पैशाचीद्वितयं भवेत् ॥३५॥' (षड्भाषा-चन्द्रिका, पृष्ठ ३)।

षड्भाषाचन्द्रिकाकार पिशाच-देशों की भाषा को ही पैशाची कहते हैं और पिशाच-देशों के निर्देश के लिए नीचे

उत्पत्ति-स्थान

के श्लोकों को उद्धृत करते हैं —

'[1]पाण्ड्यकेकयवाह्लीकसह्यनेपालकुन्तला ।
सुधेष्णभोजगान्धारहैवकन्नोजनास्तथा ।
एते पिशाचदेशा स्यु'

मार्कण्डेय ने अपने प्राकृतसर्वस्व मे प्राकृतचन्द्रिका के

'काञ्चीदेशीयपाण्ड्यं च पाञ्चाल गौड-मागधम् ।
व्राचड दाक्षिणात्यं च शौरसेनं च कैकयम् ॥
शावरं द्राविड चैव एकादश पिशाचजा ।

इस वचन को उद्धृत कर ग्यारह प्रकार की पैशाची का उल्लेख किया है, परन्तु बाद मे इस मत का खण्डन करके सिद्धान्त रूप से इन तीन प्रकार की पैशाची का ग्रहण किया है, यथा—'कैकय शौरसेन च पाञ्चालमिति च त्रिधा पैशाच्य' ।

लक्ष्मीधर और मार्कण्डेय ने जिन प्राचीन वचनों का उल्लेख किया है उनमे पाण्ड्य, काञ्ची और कैकय आदि प्रदेश एक दूसरे से अतिदूरवर्ती प्रान्तों में अवस्थित हैं । इतने दूरवर्ती देश एकदेशीय भाषा के उत्पत्ति-स्थान कैसे हो सकते हैं ? यदि पैशाची भाषा किसी प्रदेश की भाषा न हो कर भिन्न भिन्न प्रदेशों मे रहनेवाली किसी जाति-विशेष की भाषा हो तो इसका सभव इस तरह हो भी सकता है कि पूर्वकाल मे किसी एक देश-विशेष मे रहनेवाली पिशाच-प्राय मनुष्य-जाति बाद मे भिन्न-भिन्न देशों मे फैलती हुई वहाँ अपनी भाषा को ले गई हो । मार्कण्डेय-निर्दिष्ट तीन प्रकार की पैशाची परस्पर सनिहित प्रदेशों की भाषा है, इससे खूब ही सभव है कि यह पहले केकय देश मे उत्पन्न हुई हो और बाद में उसी के समीपस्थ शूरसेन और पञ्जाब तक फैल गई हो । मार्कण्डेय ने शौरसेन-पैशाची और पाञ्चाल-पैशाची की प्रकृति जो कैकय-पैशाची कही है इसका मतलब भी यही हो सकता है । सर ग्रियर्सन के मत में पिशाच-भाषा-भाषी लोगों का आदिम वास-स्थान उत्तर-पश्चिम पञ्जाब अथवा अफगानिस्थान का प्रान्त प्रदेश है और बाद में वहाँ से ही सभवत इसका अन्य देशों मे विस्तार हुआ है । किन्तु डॉ. हॉर्नोल का इस विषय मे और ही मत है । उनका कहना यह है कि अनार्य जाति के लोग आर्य-जाति की भाषा का जिस विकृत रूप में उच्चारण करते थे वही पैशाची भाषा है, अर्थात् इनके मत से पैशाची भाषा न तो किसी देश-विशेष की भाषा है और न वह वास्तव में भिन्न भाषा ही है । हमें सर ग्रियर्सन का मत ही प्रामाणिक प्रतीत होता है जो मार्कण्डेय के मत के साथ अनेकांश मे मिलता-जुलता है ।

वररुचि ने शौरसेनी प्राकृत को ही पैशाची भाषा का मूल कहा है[2] । मार्कण्डेय ने पैशाची भाषा को कैकय, शौरसेन और पाञ्चाल इन तीन भेदों में विभक्त कर संस्कृत और शौरसेनी उभय को कैकय-पैशाची का और कैकय-पैशाची को शौरसेन-पैशाची का मूल बतलाया है । पाञ्चाल-पैशाची के मूल का उन्होंने निर्देश ही नहीं किया है, किन्तु उन्होंने इसके

प्रकृति

जो केरी (कलि) और मदिलं (मन्दिरम) ये दो उदाहरण दिये हैं इससे मालूम होता है कि इस पाञ्चाल-पैशाची का कैकय-पैशाची से रकार और लकार के व्यत्यय के अतिरिक्त अन्य कोई भेद नहीं है, सुतरा शौरसेन-पैशाची की तरह पाञ्चाल-पैशाची की प्रकृति भी इनके मत से कैकय-पैशाची ही हो सकती हैं । यहाँ पर यह कहना आवश्यक है कि मार्कण्डेय ने शौरसेन-पैशाची के जो[3] लक्षण दिए हैं उन पर से शौरसेन-पैशाची का

---

१. वर्तमान मदुरा और कन्याकुमारी के आसपास के प्रदेश का नाम पाण्ड्य, पञ्चनद प्रदेश का नाम केकय, अफगानिस्थान के वर्तमान वाल्खनगरवाले प्रदेश का नाम वाह्लीक, दक्षिण भारत के पश्चिम उपकूल का नाम सह्य, नर्मदा के उत्पत्ति-स्थान के निकटवर्ती देश का नाम कुन्तल, वर्तमान काबूल और पेशावरवाले प्रदेश का नाम गान्धार, हिमालय के निम्न-वर्ती पार्वत्य प्रदेश-विशेष का नाम हैव और दक्षिण महाराष्ट्र के पार्वत्य अञ्चल का नाम कन्नोजन है ।

२ "प्रकृति शौरसेनी" (प्राकृतप्रकाश १०, २) ।

३. 'सस्य श", "रस्य लो भवेत्", "चवर्गस्योपरिष्टाद् य" "कृतादिषु कडादय", "क्षस्य च्छ", "स्गावकृते ष्टस्य श्त", "तत्थयो श ऊर्ध्वं स्यात्", 'अत सोरो (?रे) तू" (प्राकृतसर्वस्व, पृष्ठ १२६) ।

शौरसेनी भाषा के साथ कोई भी सम्बन्ध प्रतीत नहीं होता, क्योंकि कैकय-पैशाची के साथ शौरसेन-पैशाची के जो भेद उन्होंने बतलाए हैं वे मागधी भाषा के ही अनुरूप हैं, न कि शौरसेनी के। इससे इसको शौरसेन-पैशाची न कह कर मागध-पैशाची कहना ही संगत जान पड़ता है।

प्राकृत वैयाकरणों के मत से पैशाची भाषा का मूल शौरसेनी अथवा संस्कृत भाषा है, किन्तु हम पहले यह भलीभाँति दिखा चुके हैं कि कोई भी प्रादेशिक कथ्य भाषा, संस्कृत अथवा अन्य प्रादेशिक भाषा से उत्पन्न नहीं है, परन्तु वह उसी कथ्य अथवा प्राकृत भाषा से उत्पन्न हुई है जो वैदिक युग में उस प्रदेश में प्रचलित थी। इस लिए पैशाची भाषा का भी मूल संस्कृत या शौरसेनी नहीं, किन्तु वह प्राकृत भाषा ही है जो वैदिक युग में भारतवर्ष के उत्तर-पश्चिम प्रान्त की या अफगानिस्थान के पूर्व प्रान्त-वर्ती प्रदेश की कथ्य भाषा थी।

प्रथम युग की पैशाची भाषा का कोई निदर्शन साहित्य में नहीं मिलता है। गुणाढ्य की बृहत्कथा संभवत इसी प्रथम युग की पैशाची भाषा में रची गई थी, किन्तु वह आजकल उपलब्ध नहीं है। इस समय हम

समय। व्याकरण, नाटक और काव्य में पैशाची भाषा के जो निदर्शन पाते हैं वह मध्ययुग की पैशाची भाषा का है। मध्ययुग की यह पैशाची भाषा खिस्त की द्वितीय शताब्दी से पाँचवीं शताब्दी पर्यन्त प्रचलित थी।

पैशाची भाषा का शौरसेनी भाषा के साथ जिस-जिस अंश में भेद है वह सामान्य रूप से नीचे दिया जाता है। इसके सिवा अन्य सभी अंशों में वह शौरसेनी के ही समान है। इससे इसके बाकी के लक्षण शौरसेनी

लक्षण के प्रकरण से जाने जा सकते हैं।

वर्ण-भेद

१. ज्ञ, न्य और ण्य के स्थान में ञ्ञ होता है, यथा—प्रज्ञा = पञ्ञा; ज्ञान = ञ्ञान, कन्यका = कञ्ञका, अभिमन्यु = अभिमञ्ञु, पुण्य = पुञ्ञ।

२. ण और न के स्थान में न होता है, जैसे—गुण = गुन, कनक = कनक।

३ त और द की जगह त होता है, जैसे—भगवती = भगवती, शत = सत, मदन = मतन, देव = तेव।

४. लकार ळ में बदलता है, यथा—सील = सीळ, कुल = कुळ।

५ टु की जगह टु और तु होता है, जैसे—कुटुम्बक, कुटुम्बक, कुतुम्बक।

६. महाराष्ट्री के लक्षण में असंयुक्त-व्यञ्जन परिवर्तन के १ से १३, १५ और १६ अंकवाले जो नियम बतलाए गए हैं वे शौरसेनी भाषा में लागू होते हैं, किन्तु पैशाची में नहीं, यथा—लोक = लोक, शाखा = साखा; भट = भट, मठ = मठ, गरुड = गरुड, प्रतिभास = पतिभास, कनक = कनक, शपथ = सपथ, रेफ = रेफ, शबल = सबळ, यशस् = यस, करणीय = करणीय, अगार = इंगार, दाह = दाह।

७. यादृश आदि शब्दों का दृ परिणत होता है ति में, यथा—यादृश = यातिस, सदृश = सतिस।

नाम-विभक्ति

१. अकारान्त शब्द की पञ्चमी का एकवचन आतो और आतु होता है, जैसे—जिनातो, जिनातु।

आख्यात

१ शौरसेनी के दि और दे प्रत्ययों की जगह ति और ते होता है, यथा—गच्छति, गच्छते, रमति, रमते।

२ भविष्य-काल में स्सि के बदले एय्य होता है, जैसे—भविष्यति = हुवेय्य।

३ भाव और कर्म में ईअ तथा इज्ज के स्थान में इय्य होता है, यथा—पठ्यते = पठिय्यते, हसिय्यते।

कृदन्त

१ त्वा प्रत्यय के स्थान में कहीं तून और कहीं त्थून और द्धून होते हैं, यथा पठित्वा = पठितून, गत्वा = गन्तून, नष्ट्वा = नत्थून, नद्धून, तष्ट्वा = तत्थून, तद्धून।

---

(३) चूलिकापैशाची

चूलिकापैशाची भाषा के लक्षण आचार्य हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत-व्याकरण में और पंडित लक्ष्मीधर ने अपनी षड्भाषाचन्द्रिका में दिए हैं। आचार्य हेमचन्द्र के कुमारपालचरित और काव्यानुशासन मे इस भाषा के निदर्शन पाये जाते हैं। इनके अतिरिक्त हम्मीरमदमर्दन नामक नाटक मे और दो-एक छोटे-छोटे षड्भाषास्तोत्रों मे भी इसके कुछ नमूने देखने मे आते हैं।

निदर्शन

प्राकृतलक्षण, प्राकृतप्रकाश, संक्षिप्तसार और प्राकृतसर्वस्व वगैरह प्राकृत-व्याकरणों मे और संस्कृत के अलंकार ग्रन्थों मे चूलिकापैशाची का कोई उल्लेख नहीं है, अथ च आचार्य हेमचन्द्र ने और पं लक्ष्मीधर ने चूलिकापैशाची के जो लक्षण दिए हैं वे चंड, वररुचि, क्रमदीश्वर और मार्कण्डेय-प्रभृति वैयाकरणों ने पैशाची भाषा के लक्षणों मे ही अन्तर्गत किए हैं। इससे यह स्पष्ट जाना जाता है कि उक्त वैयाकरण-गण चूलिकापैशाची को पैशाची भाषा के अन्तर्भूत ही मानते थे स्वतन्त्र भाषा के रूप मे नहीं। आचार्य हेमचन्द्र भी अपने अभिधानचिन्तामणि नामक संस्कृत कोष-ग्रन्थ के "भाषा: षट् संस्कृतादिका (काण्ड २,१९९) इस वचन की "संस्कृत-प्राकृत-मागधी-शौरसेनी-पैशाच्यपभ्रंशलक्षणा' यह व्याख्या करते हुए चूलिकापैशाची का अलग उल्लेख नहीं करते। इससे मालूम पड़ता है कि वे भी चूलिकापैशाची को पैशाची का ही एक भेद मानते हैं। हमारा भी यही मत है। इससे यहाँ पर इस विषय मे पैशाची भाषा के अनन्तरोक्त विवरण से कुछ अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं रहती। सिर्फ आचार्य हेमचन्द्र ने और उन्हीं का पूरा अनुसरण कर पं० लक्ष्मीधर ने इस भाषा के जो लक्षण दिए हैं वे नीचे उद्धृत किए जाते हैं। इनके सिवा सभी अंशों में इस भाषा का पैशाची से कोई पार्थक्य नहीं है।

पैशाची में इसका अन्तर्भाव

लक्षण

१. वर्ग के तृतीय और चतुर्थ अक्षरों के स्थान मे क्रमश: प्रथम और द्वितीय होता है[१], यथा—नगर = नकर, व्याघ्र = वक्ख, राजा = राचा, निर्भर = निच्छर, तडाग = तटाक, ढक्का = ठक्का, मदन = मतन, मधुर = मथुर, बालक = पालक, भगवती = फकवती।

२. र के स्थान मे वैकल्पिक ल होता है, यथा—रुद्र = लुद्द, रुद्द।

(४) अर्धमागधी

भगवान् महावीर अपना धर्मोपदेश अर्धमागधी भाषा मे देते थे[२]। इसी उपदेश के अनुसार उनके समसामयिक गणधर श्री सुधर्मस्वामी ने अर्धमागधी भाषा में ही आचाराङ्ग-प्रभृति सूत्र-ग्रन्थों की रचना की थी[३]। ये ग्रन्थ उस समय लिखे नहीं गए थे, परन्तु शिष्य परम्परा से कण्ठ-पाठ द्वारा संरक्षित होते थे। दिगम्बर जैनों के मत से ये समस्त ग्रन्थ विलुप्त हो गए हैं, परन्तु श्वेताम्बर जैन दिगम्बरों के इस मन्तव्य से सहमत नहीं हैं। श्वेताम्बरों के मत के अनुसार ये सूत्र-ग्रन्थ महावीर-निर्वाण के बाद ९८० अर्थात् खिस्ताब्द ४५४ मे वलभी (वर्तमान वळा, काठियावाड़) म श्रीदेवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण ने वर्तमान आकार मे लिपिबद्ध किए। उस समय लिखे जाने पर भी इन ग्रन्थों की भाषा प्राचीन है। इसका एक कारण यह है कि जैसे ब्राह्मणों ने कण्ठ-पाठ-द्वारा बहु-शताब्दी-पर्यन्त वेदों की रक्षा की थी वैसे ही जैन मुनियों ने भी अपनी शिष्य-परम्परा से मुख-पाठ द्वारा करीब एक हजार वर्ष तक अपने इन पवित्र ग्रन्थों को याद रखा था। दूसरा यह है कि जैन धर्म मे सूत्र-पाठों के शुद्ध उच्चारण के लिए खूब जोर दिया गया है, यहाँ तक कि मात्रा या अक्षर के भी अशुद्ध या विपरीत उच्चारण करने में दोष माना गया है। तिस पर भी सूत्र-ग्रन्थों की भाषा का सूक्ष्म निरीक्षण करने से इस बात को स्वीकार करना ही पड़ेगा कि भगवान् महावीर के समय की अर्ध-

प्राचीन जैन सूत्रों की भाषा अर्धमागधी

---

१ अन्य वैयाकरणों के मत से यह नियम शब्द के आदि के अक्षरों में लागू नही होता है (हे० प्रा० ४, ३२७)।

२. "भगवं च णं अद्धमागहीए भासाए धम्ममाइक्खइ" (समवायाङ्ग सूत्र, पत्र ६०)।
"तए णं समणे भगवं महावीरे कूणिअस्स रण्णो भिंभिसारपुत्तस्स ' ' अद्धमागहाए भासाए भासइ। सा वि य णं अद्धमागहा भासा तेसिं सव्वेसिं आरियमणारियाणं अप्पणो सभासाए परिणामेणं परिणमइ" (औपपातिक सूत्र)।

३. 'अत्थं भासइ अरिहा, सुत्तं गथंति गणहरा निउणं' (आवश्यकनियुक्ति)।

मागधी भाषा के इन ग्रन्थों में, अज्ञातभाव से ही क्यों न हो, भाषा-विषयक परिवर्तन अवश्य हुआ है। यह परिवर्तन होना असभव भी नहीं है, क्योंकि ये सूत्र-ग्रन्थ वेदों की तरह शब्द-प्रधान नहीं, किन्तु अर्थ-प्रधान हैं। इतना ही नहीं, बल्कि ये ग्रन्थ जन-साधारण के बोध के लिये ही उस समय की कथ्य भाषा मे रचे गये थे[1] और कथ्य भाषा मे समय गुजरने के साथ-साथ अवश्य होनेवाले परिवर्तन का प्रभाव कण्ठ-पाठ के रूप मे स्थित इन सूत्रों की भाषा पर पड़ना, अन्तत: उस-उस समय के लोगो को समझाने के उद्देश्य से भी, आश्चर्यकर नहीं है। इसके सिवा, भाषा-परिवर्तन का यह भी एक मुख्य कारण माना जा सकता है कि भगवान् महावीर के निर्वाण से करीब दो सौ वर्ष के बाद (खिस्त-पूर्व ३१०) चन्द्रगुप्त के राजत्व-काल में मगध देश में बारह वर्षो का सुदीर्घ अकाल पड़ने पर साधु लोगों को निर्वाह के लिए समुद्र-तीर-वर्ती प्रदेश (दक्षिण देश) में जाना पड़ा था[2]। उस समय वे सूत्र ग्रन्थों का परिशीलन न कर सकने के कारण उन्हें भूल से गए थे। इससे अकाल के बाद पाटलिपुत्र मे सघ ने एकत्रित होकर जिस-जिस साधु को जिस-जिस अङ्ग ग्रन्थ का जो-जो अंश जिस-जिस आकार मे याद रह गया था, उस उस से उस-उस अङ्ग ग्रन्थ के उस-उस अश को उस-उस रूप में प्राप्त कर ग्यारह अङ्ग-ग्रन्थों का संकलन किया[3]। इस घटना से जैसे अङ्ग ग्रन्थों की भाषा के परिवर्तन का कारण समझ मे आ सकता है, वैसे इन ग्रन्थों की अर्धमागधी भाषा मे, मगध के पार्श्ववर्ती प्रदेशों की भाषाओं की तुलना मे दूरवर्ती महाराष्ट्रप्रदेश की भाषा का जो अधिक साम्य देखा जाता है उसके कारण का भी पता चलता है। जब ऐतिहासिक प्रमाणों से यह बात सिद्ध है कि दक्षिण प्रदेश मे प्राचीन काल मे जैन धर्म का अच्छी तरह प्रचार और प्रभाव हुआ था तब यह अनुमान करना अयुक्त नहीं है कि उक्त दीर्घकालिक अकाल के समय साधु लोग समुद्र-तीर-वर्ती इस दक्षिण देश मे ही गए थे और वहाँ उन्होंने उपदेश-द्वारा जैन धर्म का प्रचार किया था। यह कहने की कोई आवश्यकता नहीं है कि उक्त साधुओं को दक्षिण प्रदेश में उस समय जो भाषा प्रचलित थी उसका अच्छी तरह ज्ञान हो गया था, क्योकि उसके बिना उपदेश-द्वारा धर्म-प्रचार का कार्य वे कर ही नहीं सकते थे। इससे यह असंभव नहीं है कि उन साधुओं की इस नव-परिचित भाषा का प्रभाव, उनके कण्ठ-स्थित सूत्रों की भाषा पर भी पड़ा था। इसी प्रभाव को लेकर उनमे से कईएक साधु-लोग पाटलिपुत्र के उक्त समेलन में उपस्थित हुए थे, जिससे अङ्गों के पुन सकलन में उस प्रभाव ने न्यूनाधिक अंश मे स्थान पाया था।

उक्त घटना से करीब आठ सौ वर्षों के बाद वलभी (सौराष्ट्र) और मथुरा मे जैन ग्रन्थों को लिपि बद्ध करने के लिए मुनि-समेलन किए गए थे, क्योंकि इन सूत्र ग्रन्थों का और उस समय तक अन्य जो जैन ग्रन्थ रचे गए थे उनका भी क्रमश. विस्मरण हो चला था और यदि वही दशा कुछ अधिक समय तक चालू रहती तो समग्र जैन शास्त्रों के लोप हो जाने का डर था जो वास्तव में सत्य था। संभवत. इस समय तक जैन साधुओं का भारतवर्ष के अनेक प्रदेशों में विस्तार हो चुका था और इन समस्त प्रदेशों से अल्पाधिक संख्या में आकर साधु लोगों ने इन संमेलनों मे योग-दान किया था। भिन्न-भिन्न प्रदेशों से आगत इन मुनियों से जो ग्रन्थ अथवा ग्रन्थ के अंश जिस रूप में प्राप्त हुआ उसी रूप मे वह लिपि-बद्ध किया गया। उक्त मुनियों के भिन्न-भिन्न प्रदेशों मे चिर-काल तक विचरने के कारण उन प्रदेशों को भिन्न-भिन्न भाषाओं का,

---

१. "मुत्तूण दिट्ठिवायं कालियउक्कालियंगसिद्धत।
थीबालवायणत्थ पाययमुइय जिणवरेहि ॥"
(आचारदिनकर में श्रीवर्धमानसूरि द्वारा उद्धृत की हुई प्राचीन गाथा)।
"बालस्त्रीमन्दमूर्खाणा नृणा चारित्रकाङ्क्षिणाम्।
अनुग्रहार्थं तत्त्वज्ञै सिद्धान्त प्राकृत कृत.॥"
(हरिभद्रसूरि की दशवैकालिक टीका में और हेमचन्द्र के काव्यानुशासन मे उद्धृत प्राचीन श्लोक)।

२. देखो Annual Report of Asiatic Society, Bengal, 1898 में डॉ. हॉर्नलि का लेख।

३. "इतश्च तस्मिन् दुष्काले कराले कालरात्रिवत्। निर्वाहार्थं साधुसङ्घस्तीर नीरनिधेर्ययौ ॥५५॥
अगुण्यमान तु तदा साधूना विस्मृतं श्रुतम्। अनभ्यसनतो नश्यत्यधीतं धीमतामपि ॥५६॥
सघोऽथ पाटलीपुत्रे दुष्कालान्तेऽखिलोऽमिलत्। यदङ्गाध्ययनोद्देशाद्यासीद् यस्य तदाददे ॥५७॥
ततश्चैकादशाङ्गानि श्रीसघोऽमेलयत् तदा। दृष्टिवादनिमित्त च तस्थौ किञ्चिद् विचिन्तयन् ॥५८॥
नेपालदेशमार्गस्थ भद्रबाहुं च पूर्विणम्। ज्ञात्वा संघ समाह्वातुं तत. प्रैषीन्मुनिद्वयम् ॥५९॥
(स्थविरावलीचरितं, सर्ग ९)।

उच्चारणों का और विभिन्न प्राकृत भाषाओं के व्याकरणों का कुछ-न-कुछ अलक्षित प्रभाव उनके कण्ठ-स्थित धर्म-ग्रन्थों की भाषा पर भी पडना अनिवार्य था। यही कारण है कि अग-ग्रन्थों मे, एक ही अङ्ग-ग्रन्थ के भिन्न-भिन्न अंशों मे और कहीं कहीं तो एक ही अग-ग्रन्थ के एक ही वाक्य में परस्पर भाषा-भेद नजर आता है। सभवत भिन्न-भिन्न प्रदेशों की भाषाओं के प्रभाव से युक्त इसी भाषा-भेद को लक्ष्य मे लेकर खिस्त की सप्तम शताब्दी के ग्रन्थकार श्रीजिनदासगणि ने अपनी निशीथ-चूर्णि मे अर्धमागधी भाषा का "अट्ठारसदेसीभासानियय वा अद्धमागह" यह वैकल्पिक लक्षण किया है। भाषा-परिवर्तन के उक्त अनेक प्रबल कारण उपस्थित होने पर भी अग-ग्रन्थों की अर्धमागधी भाषा में, पाटलिपुत्र के समेलन के बाद से, आमूल वा अधिक परिवर्तन न होकर उसके बदले जो सूक्ष्म या अल्प ही भाषा-भेद हुआ है और सैकड़ों की तादाद मे उसके प्राचीन रूप अपने असल आकार मे जो संरक्षित रह सके हैं उसका श्रेय सूत्रों के अशुद्ध उच्चारण आदि के लिए प्रदर्शित पाप-बन्ध के उस धार्मिक नियम को है जो सभवत. पाटलीपुत्र के संमेलन के बाद निर्मित या दृढ किया गया था।

यहाँ पर प्रसग-वश इस बात का उल्लेख करना उचित प्रतीत होता है कि [1]समवायाग सूत्र में निर्दिष्ट अग-ग्रन्थ-सम्बन्धी विषय और परिमाण का वर्तमान अङ्ग-ग्रन्थों मे कहीं-कहीं जो थोड़ा-बहुत क्रमश विसंवाद और ह्रास पाया जाता है और अङ्ग-ग्रन्थों में ही बाद के [2]उपाङ्ग ग्रन्थों का और बाद की [3]घटनाओं का जो उल्लेख दृष्टिगोचर होता है उसका समाधान भी हमको उक्त सम्मेलनों की घटनाओं से अच्छी तरह मिल जाता है।

अर्धमागधी और आर्ष एक हैं

[4]समवायाङ्ग सूत्र, व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र, औपपातिक सूत्र और प्रज्ञापना सूत्र में तथा अन्यान्य प्राचीन जैन ग्रन्थों में जिस भाषा को अर्धमागधी नाम दिया गया है, [5]स्थानाङ्गसूत्र और अनुयोगद्वारसूत्र मे जिस भाषा को 'ऋषिभाषिता' कहा गया है और सम्भवत इसी 'ऋषिभाषिता' पर से [6]आचार्य हेमचन्द्र आदि ने जिस भाषा की 'आर्ष (ऋषियों की भाषा)' संज्ञा रखी है वह वस्तुत एक ही भाषा है अर्थात् अर्धमागधी, ऋषिभाषिता और आर्ष ये तीनों एक ही भाषा के भिन्न-भिन्न नाम हैं, जिनमें पहला उसके उत्पत्ति-स्थान से और बाकी के दो उस भाषा को सर्व-प्रथम साहित्य मे स्थान देनेवालों से सम्बन्ध रखते हैं। जैन सूत्रों की भाषा यही अर्धमागधी, ऋषिभाषिता या आर्ष है। आचार्य हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत-व्याकरण में आर्ष प्राकृत के जो लक्षण और उदाहरण

---

१. समवायाङ्ग सूत्र, पत्र १०६ से १२५।

२. "जहा पन्नवणाए पढमए आहारुद्देसए" (व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र १, १—पत्र १९)।

३. देखो, स्थानाङ्ग सूत्र, पत्र ४१० में वर्णित निह्नव-स्वरूप।

४. देखो, पृष्ठ १९ में दिया हुआ समवायाङ्गसूत्र और औपपातिकसूत्र का पाठ।
"देवा ण भते! कयराए भासाए भासति? कयरा वा भासा भासिज्जमाणी विसिस्सति? गोयमा! देवा ण अद्धमागहाए भासाए भासति, सावि य ण अद्धमागहा भासा भासिज्जमाणी विसिस्सति।" (व्याख्याप्रज्ञप्तिसूत्र ५, ४—पत्र २२१)।
"से कि तं भासारिया? भासारिया जे णं अद्धमागहाए भासाए भासति' (प्रज्ञापनासूत्र १—पत्र ६२)।
मगहद्धविसयभासाणिबद्धं अद्धमागह, अट्ठारसदेसीभासाणियय वा अद्धमागह" (निशीथचूर्णि)।
"आरिसवयणे सिद्धं देवाण अद्धमागहा वाणी" (काव्यालकार की नमिसाधुकृतटीका २, १२)।
"सर्वार्धमागधीं सर्वभाषासु परिणामिनीम्।
सर्वेषा सर्वतो वाच सार्वज्ञी प्रणिदध्महे॥" (वाग्भटकाव्यानुशासन, पृष्ठ २)।

५. "सक्कता पागता चेव दुहा भणितीओ आहिया।
सरमडलम्मि गिज्जते पसत्था इसिभासिता॥" (स्थानाङ्गसूत्र ७—पत्र ३९४)।
"सक्कया पायया चेव भणिईओ होंति दोण्णि वा।
सरमंडलम्मि गिज्जंते पसत्था इसिभासिआ॥" (अनुयोगद्वारसूत्र, पत्र १३१)।

६. देखो, हेमचन्द्र-प्राकृतव्याकरण का सूत्र १, ३।
"आर्षोत्थमार्षतुल्यं च द्विविधं प्राकृत विदु" (प्रेमचन्द्रतर्कवागीश द्वारा काव्यादर्शटीका १, ३३ में उद्धृत किया हुआ पद्यांश)।

वताए हैं उनसे तथा 'अत एत् सौ पुंसि मागध्याम्[1]' (हे० प्रा० ४, २८७) इस सूत्र की व्याख्या में जो "[2]यदपि "[3]पोराणमद्धमागह-भासानियय हवइ सुत्तं[4]" इत्यादिना आर्षस्य अर्धमागधभाषानियतत्वमाम्नायि वृद्धैस्तदपि प्रायोऽस्यैव विधानात्, न वक्ष्यमाणलक्षणस्य" यह कहकर उसी के अनन्तर जो दशवैकालिक सूत्र से उद्धृत "कयरे आगच्छइ, से तारिसे जिइंदिए" यह उदाहरण दिया है उससे उक्त वात निर्विवाद सिद्ध होती है।

डॉ. जेकोवी ने प्राचीन जैन सूत्रों की भाषा को प्राचीन महाराष्ट्री कहकर 'जैन महाराष्ट्री' नाम दिया है।[5] डॉ. पिशल ने अपने सुप्रसिद्ध प्राकृत-व्याकरण में डॉ जेकोवी की इस वात का सप्रमाण खडन किया है और यह सिद्ध किया है कि आर्ष और अर्धमागधी इन दोनों में परस्पर भेद नहीं है, एव प्राचीन जैन सूत्रों की—गद्य और पद्य दोनों की भाषा परम्परागत मत के अनुसार अर्धमागधी है[6]। परवर्ती काल के जैन प्राकृत ग्रन्थों की भाषा अल्पाश मे अर्धमागधी की और अधिकाश मे महाराष्ट्री की विशेषताओं से युक्त होने के कारण 'जैन महाराष्ट्री' कही जा सकती है, परन्तु प्राचीन जैन सूत्रों की भाषा को, जो शौरसेनी आदि भाषाओं की अपेक्षा महाराष्ट्री से अधिक साम्य रखती हुई भी, अपनी उन अनेक खासियतों से परिपूर्ण है जो महाराष्ट्र आदि किसी प्राकृत मे दृष्टिगोचर नहीं होती हैं, यह (जैन महाराष्ट्री) नाम नहीं दिया जा सकता।

पडित वेचरदास अपने गुजराती प्राकृत-व्याकरण की प्रास्तावना में जैन सूत्रों की अर्धमागधी भाषा को [7]प्राकृत (महाराष्ट्री) सिद्ध करने की विफल चेष्टा करते हुए डॉ. जेकोवी से भी दो कदम आगे वढ गए हैं, क्योंकि डॉ जेकोवी जब इस भाषा को प्राचीन महाराष्ट्री—साहित्य-निवद्ध महाराष्ट्री से पुरातन महाराष्ट्री वताते हैं तव पडित वेचरदास, प्राकृत

अर्धमागधी महाराष्ट्री से भिन्न है

भाषाओं के इतिहास जानने की तनिक भी परवाह न रखकर, अर्वाचीन महाष्ट्री से इस प्राचीन अर्धमागधी को अभिन्न सिद्ध करने जा रहे हैं। पडित वेचरदास ने अपने सिद्धान्त के समर्थन मे जो दलीलें पेश की हैं वे अधिकांश मे भ्रान्त सस्कारों से उत्पन्न होने के कारण कुछ महत्त्व न रखती हुई भी कुतूहल-जनक अवश्य हैं। उन दलीलों का साराश यह है—(१) अर्धमागधी मे महाराष्ट्री से मात्र दो-चार रूपों की ही विशेषता, (२) आचार्य हेमचन्द्र का इस भाषा के लिए स्वतन्त्र व्याकरण या शौरसेनी आदि की तरह अलग-अलग सूत्र न वनाकर प्राकृत (महाराष्ट्री) या आर्ष प्राकृत मे ही इसको अन्तर्गत करना, (३) इसमे मागधी भाषा की कतिपय विशेषताओं का अभाव, (४) निशीथचूर्णिकार के अर्धमागधी के दोनों में एक भी लक्षण की इसमें असगति, (५) प्राचीन जैन ग्रन्थों मे इस भाषा का 'प्राकृत' शब्द से निर्देश, (६) नाट्य-शास्त्र मे और प्राकृत-व्याकरणों मे निर्दिष्ट अर्धमागधी के साथ प्रस्तुत अर्धमागधी की असमानता।

---

१. मागधी भाषा में अकारान्त पुंलिंग शब्द के प्रथमा के एकवचन मे 'ए' होता है।

२. इसका अर्थ यह है कि प्राचीन आचार्यो ने "पुराना सूत्र अर्धमागधी भाषा में नियत है" इत्यादि वचन-द्वारा आर्ष भाषा को जो अर्धमागधी भाषा कही है वह प्राय मागधी भाषा के इसी एक एकारवाले विधान को लेकर, न कि आगे कहे जानेवाले मागधी भाषा के अन्य लक्षण के विधान को लेकर।

३. इसी वचन के आधार पर डॉ. हॉर्नलि का चण्ड-कृत प्राकृतलक्षण के इन्ट्रोडक्शन (पृष्ठ १८-१९) मे यह लिखना कि हेमचन्द्र के मत में 'पोराण' आर्ष प्राकृत का एक नाम है, भ्रम-पूर्ण है, क्योंकि यहाँ पर 'पोराण' यह सूत्र का ही विशेषण है, भाषा का नहीं।

४. आवश्यकसूत्र के पारिट्ठापनिकाप्रकरण (दे० ला० पु० फं० पत्र ६२८) में यह सपूर्ण गाथा इस तरह है :—
"पुव्वावरसंजुत्तं वेरग्गकरं सतंतमविरुद्धं। पोराणमद्धमागहभासानिययं हवइ सुत्तं ॥"

५. Kalpa Sutra, Sacred Books of the East, VoL. XII.

६. Grammatik der Prākrit-Sprachen, 16-17.

७ जैसे आचार्य हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत-व्याकरण में महाराष्ट्री भाषा के अर्थ में प्राकृत शब्द का प्रयोग किया है वैसे पंडित वेचरदास ने भी अपने प्राकृत-व्याकरण में, जो केवल हेमाचार्य के ही प्राकृत व्याकरण के आधार पर रचा गया है, सर्वत्र साहित्यिक महाराष्ट्री के अर्थ में ही प्राकृत शब्द का व्यवहार किया है।

प्रथम दलील के उत्तर में हमें यहाँ अधिक कहने की कोई आवश्यकता नहीं, इसी प्रकरण के अन्त मे महाराष्ट्री से अर्धमागधी की विशेषताओं की जो सक्षिप्त सूची दी गई है वही पर्याप्त है। इसके अतिरिक्त डॉ वनारसीदास की 'अर्धमागधी रीडर', मुनि श्रीरत्नचन्द्रजी की 'जैन सिद्धान्त कौमुदी' और डॉ. पिशल का 'प्राकृत-व्याकरण' मौजूद है, जिनमें क्रमश अधिकाधिक संख्या में अर्धमागधी की विशेषताओं का संग्रह है। आचार्य हेमचन्द्र के ही प्राकृत-व्याकरण के 'आर्षम्' सूत्र से, इसकी स्पष्ट और सर्व-भेद-ग्राही व्यापक [1]व्याख्या से और जगह-जगह किए हुए आर्ष के सोदाहरण उल्लेखों से दूसरी दलील की निर्मूलता सिद्ध होती है। यदि आचार्य हेमचन्द्र द्वारा ही निर्दिष्ट की हुई दो-एक विशेषताओं के कारण चूलिकापैशाची अलग भाषा मानी जा सकती है, अथवा आठ-दस विशेषताओं को लेकर शौरसेनी, मागधी और पैशाची भाषाओं को भिन्न-भिन्न भाषा स्वीकार करने में आपत्ति नहीं की जा सकती, तो कोई वजह नही है कि उसी वैयाकरण के द्वारा प्रकारान्तर से अथच स्पष्ट रूप से बताई हुई वैसी ही अनेक विशेषताओं के कारण आर्ष या अर्धमागधी भी भिन्न भाषा न कही जाय। तीसरी दलील की जड़ यह भ्रान्त सस्कार है कि 'वही भाषा अर्धमागधी कही जाने योग्य हो सकती है जिसमें मागधी भाषा का आधा अश हो'। इसी भ्रान्त संस्कार के कारण चौथी दलील मे उद्धृत निशीथचूर्णि के अर्धमागधी के प्रथम लक्षण का सत्य और सीधा अर्थ भी उक्त पडितजी की समझ मे नहीं आया है। इस भ्रान्त संस्कार का निराकरण और निशीथचूर्णिकार द्वारा वताए हुए अर्धमागधी के प्रथम लक्षण का और उसके वास्तविक अर्थ का निर्देश इसी प्रकरण मे आगे चलकर आर्धमागधी के मूल की आलोचना के समय किया जायगा, जिससे इन दोनों दलीलों के उत्तरों को यहाँ दुहराने की आवश्यकता नहीं है। पाँचवीं दलील भी प्राचीन आचार्यों के द्वारा जैन सूत्र-ग्रन्थों की भाषा के अर्थ मे प्रयुक्त किए हुए 'प्राकृत' शब्द को 'महाराष्ट्री' के अर्थ मे घसीटने से ही हुई है। मालूम पड़ता है, पंडितजी ने जैसे अपने व्याकरण मे 'प्राकृत' शब्द को केवल महाराष्ट्री के लिए रिजर्व कर रखा है[2] वैसे सभी प्राचीन आचार्यों के 'प्राकृत' शब्द को भी वे एकमात्र महाराष्ट्री के ही अर्थ में मुकरर किया हुआ समझ बैठे हैं[3]। परन्तु यह समझ गलत है। प्राकृत शब्द का मुख्य अर्थ है प्रादेशिक कथ्य भाषा—लोक-भाषा। प्राकृत शब्द की व्युत्पत्ति भी वास्तव मे इसी अर्थ से संगति रखती है यह हम पहले ही अच्छी तरह प्रमाणित कर चुके हैं। खिस्त की षष्ठ शताब्दी के आचार्य दण्डी ने अपने काव्यादर्श में—

'शौरसेनी च गौडी च लाटी चान्या च तादृशी। याति प्राकृतमित्येव व्यवहारेषु सनिधिम्॥' (१, ३५)।

इन खुले शब्दों में यही बात कही है। इससे भी यह स्पष्ट है कि प्राकृत शब्द मुख्यत' प्रादेशिक लोक-भाषा का ही वाचक है और इससे साधारणत. सभी प्रादेशिक कथ्य भाषाओं के अर्थ में इसका प्रयोग होता आया है। दण्डी के समय तक के सभी प्राचीन ग्रथों में इसी अर्थ मे प्राकृत शब्द का व्यवहार देखा जाता है। खुद दंडी ने भी महाराष्ट्री भाषा मे प्राकृत शब्द के प्रयोग को 'प्रकृष्ट' शब्द से विशेषित करते हुए इसी बात का समर्थन किया है[4]। दण्डी के महाराष्ट्री को 'प्रकृष्ट प्राकृत' कहने के बाद ही से विशेष प्रसिद्धि होने के कारण, महाराष्ट्री के अर्थ में 'प्रकृष्ट' शब्द को छोड़ कर केवल प्राकृत शब्द का भी प्रयोग हेमचन्द्र आदि, किन्तु दण्डी के पीछे के ही विद्वानों ने, कहीं कहीं किया है। पंडितजी ने वररुचि के समय से लेकर पीछले आचार्यों का महाराष्ट्री के ही अर्थ मे प्राकृत शब्द का व्यवहार करने की जो बात उक्त टिप्पणी में ही लिखी है उससे प्रतीत होता है कि उन्होंने न तो वररुचि का ही व्याकरण देखा है और न उनके पीछे के आचार्यों के ही ग्रन्थों का निरीक्षण करने की कोशिश की है, क्योंकि वररुचि ने तो 'शेषं महाराष्ट्रीवत्' (प्राकृतप्रकाश १२, ३२) कहते हुए इस अर्थ में महाराष्ट्री शब्द का ही प्रयोग किया है, न कि प्राकृत शब्द का। आचार्य हेमचन्द्र ने भी कुमारपालचरित में 'पाइआहि भासाहि' (१, १) मे बहुवचन का निर्देश कर और देशीनाममाला (१, ४) मे 'विशेष' शब्द लगाकर 'प्राकृत' का प्रयोग साधारण

---

१. 'आर्षं प्राकृतं बहुलं भवति। तदपि यथास्थानं दर्शयिष्याम.। आर्षे हि सर्वे विधयो विकल्प्यन्ते' (हे० प्रा० १, ३)।

२. देखो, हेमचन्द्र-प्राकृत व्याकरण के १, ४६, १, ५७, १, ७९, १, ११८; १, ११९, १, १५१, १, १७७, १, २२८, १, २५४, २, १७, २, २१, २, ८९, २, १०१, २, १०४; २, १४६, २, १७४, ३, १६२, और ४, २८७ सूत्रों की व्याख्या।

३ 'ऊपरना बधा उल्लेखोमा वपरायेलो 'प्राकृत' शब्द प्राकृत भाषानो सूचक छे, अनुयोगद्वारमा 'प्राकृत' शब्द प्राकृत भाषाना अर्थमा वपरायेलो छे. (पृ० १३१ स०)। वैयाकरण वररुचिना समयथी तो ए शब्द ज अर्थमां वपरातो आव्यो छे, अने ए पछीना आचार्योए पण ए शब्दने ए ज अर्थमां वापरेलो छे, माटे कोईए अही ए शब्दने मरडवो नही।' (प्राकृत-व्याकरण, प्रवेश, पृष्ठ २६ टिप्पणी)।

४ 'महाराष्ट्राश्रया भाषा प्रकृष्टं प्राकृतं विदु' (काव्यादर्श १, ३४)।

लोक-भाषा के ही अर्थ में ही किया है। आचार्य दण्डी और हेमचन्द्र ही नहीं, बल्कि खिस्त की नववीं शताब्दी के कवि राजशेखर[1], ग्यारहवीं शताब्दी के नमिसाधु[2], उन्नीसवीं शताब्दी के प्रेमचन्द्रतर्कवागीश प्रभृति[3] प्रभूत जैन और जैनेतर विद्वानों ने इसी अर्थ मे प्राकृत शब्द का प्रयोग किया है। इस तरह जब यह अभ्रान्त सत्य है कि प्राचीन काल से लेकर आजतक प्राकृत शब्द प्रादेशिक कथ्य भाषा के अर्थ में व्यवहृत होता आया है और इसका मुख्य और प्राचीन अर्थ साधारणत सभी और विशेषत कोई भी प्रादेशिक भाषा है, तब प्राचीन आचार्यों द्वारा भगवान् महावीर की उपदेश-भाषा के और उनके समसामयिक शिष्य सुधर्मस्वामि-प्रणीत जैन सूत्रों की भाषा के ही अभिप्राय मे प्रयुक्त किए हुए 'प्राकृत' शब्द का 'अर्ध मगध-प्रदेश (जहाँ भगवान् महावीर और सुधर्मस्वामी का उपदेश और विचरण होना प्रसिद्ध है) की लोक-भाषा (अर्धमागधी)' इस सुसंगत अर्थ को छोड़ कर मगध से सुदूरवर्ती प्रदेश 'महाराष्ट्र (जहाँ न तो भगवान् महावीर का और न सुधर्मस्वामी का ही उपदेश या विहार होना जाना गया है) की भाषा (महाराष्ट्री)' यह असगत अर्थ लगाना, अपनी हीन विवेचना-शक्ति का परिचय देना है। इसी सिलसिले में पडितजी ने अनुयोगद्वार सूत्र की एक अपूर्ण गाथा उद्धृत की है। यदि उक्त पडितजी अनुयोगद्वार की गाथा के पूर्वार्ध का यहाँ पर उल्लेख करने के पहले इस गाथा के मूल स्थान को ढूँढ पाते और वे प्राकृत शब्द से जिस भाषा (महाराष्ट्री) का ग्रहण करते हैं इसके और प्राचीन सूत्रों की अर्धमागधी भाषा के इतिहास को न जानते हुए भी सिर्फ उत्तरार्ध-सहित इस गाथा पर ही प्रकरण-संगति के साथ जरा गौर से विचार करने का कष्ट उठाते, तो हमारा यह विश्वास है कि वे कम से कम इस गाथा का यहाँ हवाला देने का साहस और अनुयोगद्वार के कर्त्ता पर अर्धमागधी के विसमरण का व्यङ्ग्य-बाण छोड़ने की धृष्टता कदापि नहीं कर पाते। क्योंकि इस गाथा का मूल स्थान है तृतीय अग-ग्रन्थ जिसका नाम स्थानाङ्ग-सूत्र है। इसी स्थानाङ्ग-सूत्र के सम्पूर्ण स्वर-प्रकरण को अनुयोगद्वार-सूत्र में उद्धृत किया गया है जिसमे वह गाथा भी शामिल है। वह सम्पूर्ण गाथा इस तरह है :—

"सक्कता पागता चेव दुहा भणिईओ आहिया। सरमडलम्मि गिज्जते पसत्था इसिभासिता ॥"

इसका शब्दार्थ है—"संस्कृत और प्राकृत ये दो प्रकार की भाषाएँ कही गई हैं, गाये जाते स्वर-समूह (षड्ज-प्रभृति) में ऋषिभाषिता—आर्ष भाषा प्रशस्त है।" यहाँ पर प्रकरण है सामान्यत: गीत की भाषा का। वर्तमान समय की तरह उस समय भी सभी भाषाओं में गीत होते थे। इससे यहाँ पर इन सभी भाषाओं का निर्देश करना ही सूत्रकार को अभिप्रेत है जो उन्होंने संस्कृत—व्याकरण-संस्कार युक्त भाषा और प्राकृत—व्याकरण-संस्कार-रहित—लोक-भाषा इन दो मुख्य विभागों में किया है। इस तरह इस गाथा मे पहले गीत की भाषाओं का सामन्य रूप से निर्देश कर बाद मे इन भाषाओं में जो प्रशस्त है वह 'ऋषिभाषिता' इस विशेष रूप से बताई गई है। यदि यहाँ पर प्राकृत शब्द का 'प्रादेशिक लोक-भाषा' यह सामान्य अर्थ न लेकर पंडितजी के कथनानुसार 'महाराष्ट्री' यह विशेष अर्थ लिया जाय तो गीत की सभी भाषाओं का निर्देश, जो सूत्रकार को करना आवश्यक है, कैसे हो सकता है? क्या उस समय अन्य लोक-भाषाओं में गीत होते ही न थे? गीत का ठेका क्या सस्कृत और महाराष्ट्री इन दो भाषाओं को ही मिला हुआ था? यह कभी संभावित नहीं है। इसी गाथा के उत्तरार्ध के "पसत्था इसिभासिता" इस वचन से अर्धमागधी की सूचना ही नहीं, बल्कि उसका श्रेष्ठपन भी सूत्रकार ने स्पष्ट रूप मे बताया है। इससे पडितजी के उस कथन में कुछ भी सत्यांश नजर नहीं आता है, जो उनसे सूत्रकार के अर्धमागधी की अलग सूचना न करने के बारे मे किया गया है।

जैसे बौद्धसूत्रों की मागधी (पालि) से नाट्य-शास्त्र या प्राकृत-व्याकरणों में निर्दिष्ट मागधी भिन्न है वैसे जैन सूत्रों की अर्धमागधी से नाट्य-शास्त्र की या प्राकृत व्याकरणों की अर्धमागधी भी अलग है। इससे बौद्धसूत्रों की मागधी नाट्य-शास्त्र या प्राकृत-व्याकरणों की मागधी से मेल न रखने के कारण जैसे महाराष्ट्री न कही जाकर मागधी कही जाती है वैसे जैन सूत्रों की अर्धमागधी भाषा भी नाट्य-शास्त्र या प्राकृत-व्याकरणों की अर्धमागधी से समान न होने की वजह से ही महाराष्ट्री न कही जाकर अर्धमागधी ही कही जा सकती है।

---

१. 'परुसो सक्कअ-बंधो पाउअ-बंधोवि होइ सुउमारो' (कर्पूरमञ्जरी, अङ्क १)।

२. 'सूरसेन्यपि प्राकृतभाषैव, तथा प्राकृतमेवापभ्रंश' (काव्यालङ्कार-टिप्पण २, १२)।

३. 'सर्वासामेव प्राकृतभाषाणां'—(काव्यादर्श-टीका १, ३३), 'तादृशोऽयनेन देशनामोपलक्षिता सर्वा एव भाषा' प्राकृतसंज्ञयोच्यन्त इति सूचितम्' (काव्यादर्श-टीका १, ३५)।

भरत-रचित कहे जाते नाट्य-शास्त्र मे जिन सात भाषाओं का उल्लेख है उनमें एक अर्धमागधी भी है।[१] इसी नाट्यशास्त्र में नाटकों के नौकर, राजपुत्र और श्रेष्ठी इन पात्रों के लिए इस भाषा का प्रयोग निर्दिष्ट किया गया है।[२] इससे नाटकों मे इन पात्रों की जो भाषा है वह अर्धमागधी कही जाती है। परन्तु नाटकों की अर्धमागधी और जैन सूत्रों की अर्धमागधी मे परस्पर समानता की अपेक्षा इतना अधिक भेद है कि यह एक दूसरे से अभिन्न कभी नहीं कही जा सकती। मार्कण्डेय ने अपने प्राकृत-व्याकरण मे मागधी भाषा के लक्षण बताकर उसी प्रकरण के शेष मे अर्धमागधी भाषा का यह लक्षण कहा है—"[३]शौरसेन्या अदूरत्वादियमेवार्धमागधी" अर्थात् शौरसेनी भाषा के निकट-वर्ती होने के कारण मागधी ही अर्धमागधी है। इस लक्षण के अनन्तर उन्होंने उक्त नाट्य-शास्त्र के उस वचन को उद्धृत किया है, जिसमे अर्धमागधी के प्रयोगार्ह पात्रों का निर्देश है और इसके बाद उदाहरण के तौर पर वेणीसंहार की राक्षसी की एक उक्ति का उल्लेख कर अर्धमागधी का प्रकरण खतम किया है। इससे यह स्पष्ट मालूम होता है कि भरत का अर्धमागधी-विषयक उक्त वचन और मार्कण्डेय का अर्धमागधी-विषयक उक्त लक्षण नाटकीय अर्धमागधी के लिए ही रचित है, जैन सूत्रों की अर्धमागधी के साथ इसका कोई संबन्ध नहीं है। क्रमदीश्वर ने अपने प्राकृत-व्याकरण मे अर्धमागधी का जो लक्षण किया है वह यह है—"[४]महाराष्ट्रीमिश्रार्धमागधी" अर्थात् महाराष्ट्री से मिश्रित मागधी भाषा ही अर्धमागधी है। जान पड़ता है, क्रमदीश्वर का यह लक्षण भी नाटकीय अर्धमागधी के लिए ही प्रयोज्य है, क्योंकि उक्त नाट्यशास्त्र में जिन पात्रो के लिए अर्धमागधी के प्रयोग का नियम बताया गया है, अनेक नाटकों मे उन पात्रों की भाषा भिन्न-भिन्न है[५]। सभवत इसी भिन्नता के कारण ही क्रमदीश्वर ने और मार्कण्डेय ने अर्धमागधी के भिन्न-भिन्न लक्षण किए हैं।

नाटकीय अर्धमागधी जैन-सूत्रों की अर्धमागधी से भिन्न है

जैसे हम पहले कह चुके है, जैन सूत्रों की अर्धमागधी मे इतर भाषाओं की अपेक्षा महाराष्ट्री के लक्षण अधिक देखने में आते हैं। किन्तु यह याद रखना चाहिए कि ये लक्षण साहित्यिक महाराष्ट्री से जैन अर्धमागधी में नहीं आये हैं। इसका कारण यह है कि जैन सूत्रों की अर्धमागधी भाषा साहित्यिक महाराष्ट्री भाषा से अधिक प्राचीन है और इससे यही (अर्धमागधी) महाराष्ट्री का मूल कही जा सकती है।[६] डॉ. हॉर्नलि ने जैन अर्धमागधी को ही आर्ष प्राकृत कहकर इसीको परवर्ती काल में उत्पन्न नाटकीय अर्धमागधी, महाराष्ट्री और शौरसेनी भाषाओं का मूल माना है। आचार्य हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत-व्याकरण मे महाराष्ट्री नाम न दे कर प्राकृत के सामान्य नाम से एक भाषा के लक्षण दिए हैं और उनके उदाहरण साधारण तौर से अर्वाचीन महाराष्ट्री-साहित्य से उद्धृत किये हैं, परन्तु जहाँ अर्धमागधी के प्राचीन जैन ग्रन्थों से उदाहरण लिए हैं वहाँ इसको आर्ष प्राकृत का विशेष नाम दिया है। इससे प्रतीत होता है कि आचार्य हेमचन्द्र ने भी एक ही भाषा के प्राचीन रूप को आर्ष प्राकृत और अर्वाचीन रूप को महाराष्ट्री मानते हुए आर्ष प्राकृत को महाराष्ट्री का मूल स्वीकार किया है।

महाराष्ट्री से अर्धमागधी प्राचीन है

नाटकीय अर्धमागधी में मागधी भाषा के लक्षण अधिकांश मे पाये जाते हैं इससे 'मागधी से ही अर्धमागधी भाषा की उत्पत्ति हुई है और जैन सूत्रों की भाषा मे मागधी के लक्षण अधिक न मिलने से वह अर्धमागधी कहलाने योग्य नहीं' यह जो भ्रान्त संस्कार कई लोगों के मन मे जमा हुआ है, उसका मूल है अर्धमागधी शब्द को मागधी भाषा के अर्धांश

१. "मागध्यवन्तिजा प्राच्या सूरसेन्यर्धमागधी। वाह्लीका दाक्षिणात्या च सप्त भाषा प्रकीर्तिता" (१७, ४८)।

२ "चेटाना राजपुत्राणा श्रेष्ठिना चार्धमागधी" (भरतीय नाट्यशास्त्र, निर्णयसागरीय सस्करण, १७, ५०)।
मार्कण्डेय ने अपने व्याकरण में इस विषय में भरत का नाम देकर जो वचन उद्धृत किया है वह इस तरह है—"राक्षसी-श्रेष्ठिचेटानुकम्प्यदिरर्धमागधी' इति भरत" यह पाठान्तर ज्ञात होता है।

३. प्राकृतसर्वस्व (पृष्ठ १०३)।

४. संक्षिप्तसार (पृष्ठ ३८)।

५ देखो, भास-रचित कहे जाते 'चारुदत्त' और 'स्वप्नवासदत्त' मे क्रमश चेट तथा चेटी की भाषा और शूद्रक के 'मृच्छकटिक' में चेट और श्रेष्ठी चन्दनदास की भाषा।

६. "It thus seems t me very clear, that the Prākrit of Chanda is the ARSHA or ancient (Porana) orm of the Ardhamāgadhi, Mahārāshtri and Sauraseni." (Introduction to Prākrita akshana of Chanda, Page XIX).

मे ग्रहण करना, अर्थात् 'अर्ध मागध्या' यह व्युत्पत्ति कर 'जिसका अर्धांश मागधी भाषा वह अर्धमागधी' ऐसा करना।

अर्धमागधी शब्द की संगत-व्युत्पत्ति

वस्तुतः अर्धमागधी शब्द की न वह व्युत्पत्ति ही सत्य है और न वह अर्थ ही। अर्धमागधी शब्द की वास्तविक व्युत्पत्ति है 'अर्धमगधस्येयम्' और इसके अनुसार इसका अर्थ है 'मगध देश के अर्धांश की जो भाषा वह अर्धमागधी'। यही बात खिस्त की सातवीं शताब्दी के ग्रन्थकार श्रीजिनदासगणि महत्तर ने निशीथचूर्णि नामक ग्रन्थ मे "पोराणमद्धमागहभासानियय हवइ सुत्त" इस उल्लेख के 'अर्धमागध' शब्द की व्याख्या के प्रसङ्ग मे इन स्पष्ट शब्दों मे कही है —"मगहद्धविसयभासानिबद्ध अद्धमागह" अर्थात् मगध देश के अर्ध प्रदेश की भाषा में निबद्ध होने के कारण प्राचीन सूत्र 'अर्धमागध' कहा जाता है।

परन्तु, अर्धमागधी का मूल उत्पत्ति स्थान पश्चिम मगध अथवा मगध और शूरसेन का मध्यवर्ती प्रदेश (अयोध्या) होने पर भी जैन अर्धमागधी मे मागधी और शौरसेनी भाषा के विशेष लक्षण देखने मे नहीं आते। महाराष्ट्री के साथ ही इसका अधिक सादृश्य नजर आता है। यहाँ पर प्रश्न होता है कि इस सादृश्य का कारण क्या है? सर ग्रियर्सन ने

जैन अर्धमागधी का उत्पत्ति-स्थान और उसका 'महाराष्ट्री' के साथ सादृश्य का कारण

अपने प्राकृत-भाषाओं के भौगोलिक विवरण मे यह स्थिर किया है कि जैन अर्धमागधी मध्यदेश (शूरसेन) और मगध के मध्यवर्ती देश (अयोध्या) की भाषा थी एव आधुनिक पूर्वीय हिन्दी उससे उत्पन्न हुई है। किन्तु हम देखते है कि अर्धमागधी के लक्षणों के साथ मागधी, शौरसेनी और आधुनिक पूर्वीय हिन्दी का कोई सम्बन्ध नहीं है, परन्तु महाराष्ट्री प्राकृत और आधुनिक मराठी भाषा के साथ उसका सादृश्य अधिक है। इसका कारण क्या? किसीने अभीतक यह ठीक-ठीक नहीं बताया है। यह सम्भव है, जैसा हम पाटलिपुत्र के सम्मेलन के प्रसग मे ऊपर कह आये है, चन्द्रगुप्त के राजत्वकाल मे (खिस्त-पूर्व ३१०) बारह वर्षों के अकाल के समय जैन मुनि-संघ पाटलीपुत्र से दक्षिण की ओर गया था। उस समय वहाँ के प्राकृत के प्रभाव से अग-ग्रन्थों की भाषा का कुछ-कुछ परिवर्तन हुआ था। यही महाराष्ट्री प्राकृत का आर्ष प्राकृत के साथ सादृश्य का कारण हो सकता है।

सर आर. जि. भाण्डारकर जैन अर्धमागधी का उत्पत्ति-समय खिस्तीय द्वितीय शताब्दी मानते हैं। उनके मत में कोई भी साहित्यिक प्राकृत भाषा खिस्त की प्रथम या द्वितीय शताब्दी से पहले की नहीं है। शायद इसी मत का अनुसरण कर डॉ. सुनीतिकुमार चटर्जी ने अपनी Origin and Development of Bengalee Language नामक पुस्तक में

उत्पत्ति-समय

(Introduction, page 18) समस्त नाटकीय प्राकृत-भाषाओं का और जैन अर्धमागधी का उत्पत्ति-काल खिस्तीय तृतीय शताब्दी स्थिर किया है। परन्तु त्रिवेन्द्रम् से प्रकाशित भास-रचित कहे जाते नाटकों का निर्माण-समय अन्तत खिस्त की दूसरी शताब्दी के बाद का न होने से और अश्वघोष-कृत बौद्ध-धर्म-विषयक नाटकों के जो कतिपय अंश डॉ ल्युडर्स ने प्रकाशित किए हैं उनका समय खिस्त की प्रथम शताब्दी निश्चित होने से यह प्रमाणित होता है कि उस समय भी नाटकीय प्राकृत भाषाएँ प्रचलित थीं। और डॉ ल्युडर्स ने यह स्वीकार किया है कि अश्वघोष के नाटकों मे जैन अर्धमागधी भाषा के निदर्शन है। इससे जैन अर्धमागधी की प्राचीनता का यह भी एक विश्वस्त प्रमाण है। इसके अतिरिक्त, डॉ जेकोबी जैन सूत्रों की भाषा और मथुरा के शिलालेखों (खिस्तीय सन् ८३ से १७६) की भाषा से यह अनुमान करते हैं कि जैन अग ग्रन्थों की अर्धमागधी का काल खिस्त-पूर्व चतुर्थ शताब्दी का शेष भाग अथवा खिस्त-पूर्व तृतीय शताब्दी का प्रथम भाग है। हम डॉ. जेकोबी के इस अनुमान को ठीक समझते हैं जो पाटलिपुत्र के उस सम्मेलन से सगति रखता है जिसका उल्लेख हम पूर्व कर चुके हैं।

सस्कृत के साथ महाराष्ट्री के जो प्रधान-प्रधान भेद है, उनकी संक्षिप्त सूची महाराष्ट्री के प्रकरण में दी जायगी। यहाँ पर महाराष्ट्री से अर्धमागधी की जो मुख्य-मुख्य विशेषताएँ है उनकी सक्षिप्त सूची दी जाती है। उससे अर्ध मागधी के

लक्षण

लक्षणों के साथ महाराष्ट्री के लक्षणों की तुलना करने पर यह अच्छी तरह ज्ञात हो सकता है कि महाराष्ट्री की अपेक्षा अर्धमागधी की वैदिक और लौकिक सस्कृत से अधिक निकटता है जो अर्धमागधी की प्राचीनता का एक श्रेष्ठ प्रमाण कहा जा सकता है।

वर्ण-भेद

१. दो स्वरों के मध्यवर्ती असंयुक्त क के स्थान मे प्राय सर्वत्र ग और अनेक स्थलों में त और य होता है, जैसे—

ग—प्रकल्प = पगप्प, आकर = आगर, आकाश = आगास, प्रकार = पगार, श्रावक = सावग, विवर्जक = विवज्जग, निषेवक = णिसेवग, लोक = लोग, आकृति = आगइ।

त—आराधक = आराहत (ठाणगसूत्र—पत्र ३१७), सामायिक = सामातित (ठा० ३२२), विशुद्धिक = विशुद्धित (ठा० ३२२), अधिक = अहित (ठा० ३९३), शाकुनिक = साउणित (ठा ३९३),नैपद्यिक = णेमज्जित (ठा० ३९७), वीरासनिक = वीरासणित (ठा० ३९७), वर्धकि = वड्डुति (ठा० ३९८), नैरयिक = नेरतित (ठा० ३९९), सीमतक = सीमतत (ठा० ४५८), नरकात् = नरतातो (ठा० ४५८), माडम्बिक = माडवित (ठा० ४५९), कौटुम्बिक = कोडु वित (ठा० ४५९), सचक्षुष्केण = सचक्खुतेण (विपाकश्रुत—पत्र ५), कूणिक = कूणित (विपा० ५ टि), अन्तिकात् = अंतितातो (विपा० ७), राहस्यिकेन = रहस्सितेण (विपा ४, १८) इत्यादि ।

य—कायिक = काइय, लोक = लोय वगैरह ।

२. दो स्वरों के बीच का असयुक्त ग प्राय कायम रहता है। कहीं-कहीं इसका त और य होता है, जैसे—आगम = आगम, आगमन = आगमण, आनुगामिक = आणुगामिय, आगमिष्यत् = आगमिस्स, जागर = जागर, अगारिन् = अगारि, भगवन् = भगवं, अतिग = अतित (ठा० ३९७), सागर = सायर ।

३. दो स्वरों के बीच के असयुक्त च और ज के स्थान मे त और य उभय ही होता है। च के उदाहरण, जैसे—नाराच = णारात (ठा० ३५७), वचस् = वति (ठा० ३९८, ४५०), प्रवचन = पावतण (ठा० ४५१), कदाचित् = कयाती (विपा० १७, ३०), वाचना = वायणा, उपचार = उवयार, लोच = लोय, आचार्य = आयरिय । ज के कुछ निदर्शन ये हैं—भोजिन् = भोति (सूत्र० २, ६, १०), वज्र = वतिर (ठा० ३५७) पूजा = पूता (ठा० ३५८), राजेश्वर = रातीसर (ठा० ४५९), आत्मज = अत्तते (विपा० ४ टि), प्रजात = पयाय, कामध्वजा = कामज्झया, आत्मज = अत्तय ।

४ दो स्वरों का मध्यवर्ती त प्राय कायम रहता है कहीं-कहीं इसका य होता है, यथा—वन्दते = वदति, नमस्यति = नमंसति, पर्युपास्ते = पज्जुवासति (सूत्र २, ७, विपा—पत्र ६), जितेन्द्रिय = जितिदिय (सूत्र २, ६, ५), सतत = सतत (सूत्र १, १, ४, १२), भवति = भवति (ठा०—पत्र ३१७), अतरित = अतरित (ठा० ३४६), धैवत = धेवत (ठा० ३९३), जाति = जाति, आकृति = आगिति, विहरति = विहरति (विपा—४), पुरत = पुरतो, करोति = करेति (विपा० ६), तत = तते (विपा० ६, ७, ८), सदिसतु = सदिसतु, संलपति = सलवति (विपा० ७, ८), प्रभृति = पभिति (विपा० १५, १६), करतल = करयल ।

५. स्वरों के बीच मे स्थित द का द और त ही अधिकाश में देखा जाता है, कहीं-कहीं य भी होता है, जैसे—

द—प्रदिश = पदिसो (आचा), भेद = भेद, अनादिक = अणादिय (सूत्र २, ७), वदत् = वदमाण, नदति = णदति, जनपद = जणवद, वेदिष्यति = वेदिहिती (ठा०—पत्र क्रमश ३२१, ३९३, ४५८, ४५९) इत्यादि ।

त—यदा = जता, पाद = पात, निषाद = निसात, नदी = नती, मृषावाद = मुसावात, वादिक = वातित, अन्यदा = अन्नता, कदाचित् = कताती (ठा०—पत्र क्रमश ३१७, ३४६, ३९३, ३९७, ४५०, ४५१, ४५८, ४५९), यदि = जति, चिरादिक = चिरातीत (विपा० पत्र ४) इत्यादि ।

य—प्रतिच्छादन = पडिच्छायण, चतुष्पद = चउप्पय वगैरह ।

६ दो स्वरों के मध्य मे स्थित प के स्थान में प्राय सर्वत्र व ही होता है, यथा—पापक = पावग, सलपति = संलवति, सोपचार = सोवयार, अतिपात = अतिवात, उपनीत = उवणीय, अध्युपपन्न = अज्झोववण्ण, उपगूढ = उवगूढ, आधिपत्य = आहेवच्च, तपक = तवय, व्यपरोपित = ववरोवित इत्यादि ।

७ स्वरों के मध्यवर्ती य प्राए कायम रहता है, अनेक स्थानों में इसका त देखा जाता है, जैसे—

य—वायव = वायव, प्रिय = पिय, निरय = निरय, इन्द्रिय = इन्दिय, गायति = गायइ प्रभृति ।

त—स्यात् = सिता, सामायिक = सामातित, कायिक = कातित, पालयिष्यन्ति = पालतिस्सति, पर्याय = परितात, नायक = णातग, गायति = गातति, स्थायिन् = ठाति, शायिन् = साति, नैरयिक = नेरतित (ठा० पत्र क्रमश ३१७, ३२२, ३२३, ३५७, ३५८, ३९३, ३९४, ३९७, ३९८, ३९९), इन्द्रिय = इन्दित (ठा० ३२२, ३५५) इत्यादि ।

८. दो स्वरों के वीच के व के स्थान मे व, त, और य होता है, यथा—

व—वायव = वायव, गौरव = गारव, भवति = भवति, अनुविचिन्त्य = अणुवीति (सूत्र १, १, ३, १३) इत्यादि ।

त—परिवार = परिताल, कवि = कति (ठा० पच क्रमश ३५८, ३९३) इत्यादि ।

य—परिवर्तन = परियट्टण, परिवर्तना = परियट्टणा (ठा० ३४९) वगैरह ।

९. महाराष्ट्री में स्वर-मध्य-वर्ती असयुक्त क, ग, च, ज, त, द, प, य, व इन व्यञ्जनों का प्राय सर्वत्र लोप होता है और प्राकृतप्रकाश आदि प्राकृत-व्याकरणों के अनुसार इन लुप्त व्यञ्जनों के स्थान मे अन्य कोई वर्ण नहीं होता। सेतुबन्ध गाथासप्तशती और कर्पूरमञ्जरी आदि नाटकों की महाराष्ट्री भाषा मे भी यह लक्षण ठीक-ठीक देखने मे

आता है। आचार्य हेमचन्द्र के प्राकृत-व्याकरण के अनुसार उक्त लुप्त व्यञ्जनों के दोनों तरफ अवर्ण (अ या आ) होने पर लुप्त व्यञ्जन के स्थान मे 'य्' होता है। 'गउडवहो' में यह 'य्' अधिक मात्रा मे (उक्त व्यञ्जनों के पूर्व मे अवर्ण-भिन्न स्वर रहने पर भी) पाया जाता है। परन्तु जैन अर्धमागधी मे, जैसा हम ऊपर देख चुके हैं, प्राय. उक्त व्यञ्जनों के स्थान में अन्य अन्य व्यञ्जन होते है और कहीं कहीं तो वही व्यञ्जन कायम रहता है। हाँ, कहीं कहीं उक्त व्यञ्जनों के स्थान मे अन्य व्यञ्जन होने या वही व्यञ्जन रहने के बदले महाराष्ट्री की तरह लोप भी देखा जाता है, किन्तु यह लोप वहाँ पर ही देखने मे आता है जहाँ उक्त व्यञ्जनों के बाद अ या आ से भिन्न कोई स्वर होता है, जैसे—लोक = लोओ, रोचित = रोइत, भोजिन् = भोइ, आतुर = आउर, आदेशि = आएसि, कायिक = काइय, आवेश = आएस वगैरह।

१०. शब्द के आदि मे, मध्य मे और संयोग मे सर्वत्र ण की तरह न भी होता है, जैसे—नदी = नई, ज्ञातपुत्र = नायपुत्त, आरनाल = आरनाल, अनल = अनल, अनिल = अनिल, प्रज्ञा = पन्ना, अन्योन्य = अन्नमन्न, विज्ञ = विन्नु, सर्वज्ञ = सव्वन्नु इत्यादि।

११. एव के पूर्व के अम् के स्थान में आम् होता है, यथा—यमेव = जामेव, तमेव = तामेव, क्षिप्रमेव = खिप्पामेव, एवमेव = एवामेव, पूर्वमेव = पुव्वामेव इत्यादि।

१२. दीर्घ स्वर के बाद के इति वा के स्थान मे ति वा और इ वा होता है; जैसे—इन्द्रमह इति वा = इदमहे ति वा, इदमहे इ वा इत्यादि।

१३. यथा और यावत् शब्द के य का लोप और ज दोनों ही देखे जाते है, जैसे—यथाख्यात = अहक्खाय, यथाजात = अहाजात, यथानामक = जहाणामए, यावत्कथा = आवकहा, यावज्जीव = जावज्जीव।

वर्णागम

१. गद्य मे भी अनेक स्थलों मे समास के उत्तर शब्द के पहले म आगम होता है, यथा—निरयगामी, उड्ढगारव, दीहगारव, रहस्संगारव, गोणमाइ, सामाइयमाइयाई, अजहण्णमणुक्कोस, अदुक्खमसुहा आदि। महाराष्ट्री के पद्य मे पादपूर्त्ति के लिए ही कहीं कहीं म् आगम देखा जाता है, गद्य मे नहीं।

शब्द-भेद

१. अर्धमागधी में ऐसे प्रचुर शब्द हैं जिनका प्रयोग महाराष्ट्री में प्राय' उपलब्ध नहीं होता, यथा—अज्झत्थिय, अज्झोववण्ण, अणुवीति, आघवणा, आघवेत्तग, आणापाणू, आवीकम्म, कण्हुइ, केमहालय, दुरूढ, पच्चत्थिमिल्ल, पाउकुव्वं, पुरत्थिमिल्ल, पोरेवच्च, महतिमहालिया, वक्क, विउस इत्यादि।

२. ऐसे शब्दों की संख्या भी बहुत बड़ी है जिनके रूप अर्धमागधी और महाराष्ट्री में भिन्न भिन्न प्रकार के होते हैं। उनके कुछ उदाहरण नीचे दिए जाते हैं :—

अर्धमागधी	महाराष्ट्री	अर्धमागधी	महाराष्ट्री
अभियागम	अब्भागम	तच्च (तथ्य)	तच्छ
आउंटण	आउंचण	तेगिच्छा	चिइच्छा
आहरण	उआहरण	दुवालसग	वारसग
उप्पि	उवरिं, अवरिं	दोच्च	दुइअ
किया	किरिआ	नितिय	णिच्च
कीस, केस	केरिस	निएय	णिअअ
केवच्चिर	किअच्चिर	पडुप्पन्न	पच्चुप्पण्ण
गेहि	गिद्धि	पच्छेकम्म	पच्छाकम्म
चियत्त	चइअ	पाय (पात्र)	पत्त
छच्च	छक्क	पुढो (पृथक्)	पुहं, पिहं
जाया	जत्ता	पुरेकम्म	पुराकम्म
णिगण, णिगिण (नग्न)	णग्ग	पुव्वि	पुव्वं
णिगिणिण (नाग्न्य)	णग्गत्तण	माय (मात्र)	मत्त, मेत्त
तच्च (तृतीय)	तइअ	माहण	वम्हण

अर्धमागधी	महाराष्ट्री	अर्धमागधी	महाराष्ट्री
मिलक्खु, मेच्छ	मिलिच्छ	सोमाए, सुसाए	मसाए
वग्गू	वाश्रा	सुमिए	सिमिए
वाहणा (उपानह्)	उवाणाश्रा	सुहम, सुहुम	सएह
सहेज्ज	सहाश्र	सोहि	सुद्धि

और, दुवालस, वारस, तेरस, अउणवीसइ, वत्तीस, पणतीस, इगयाल, तेयालीस, पणयाल, अढयाल, एगट्ठि, वावट्ठि, तेवट्ठि, छावट्ठि, अढसट्ठि, अउणत्तरि, वावत्तरि, पएणत्तरि सत्तहत्तरि, तेयासी, छलसीइ, वाणउइ प्रभृति संख्या-शब्दों के रूप अर्धमागधी में मिलते हैं, महाराष्ट्री मे वैसे नहीं।

नाम-विभक्ति

१. अर्धमागधी में पुलिंग अकारान्त शब्द के प्रथमा के एकवचन में प्राय. सर्वत्र ए और क्वचित् ओ होता है, किन्तु महाराष्ट्री में ओ ही होता है।
२. सप्तमी का एक वचन स्सिं होता है जब महाराष्ट्री में म्मि।
३ चतुर्थी के एक वचन में आए या आते होता है, जैसे—देवाए, सवणयाए, गमणाए, अट्ठाए, अहिताते, असुभाते, अखमाते (ठा० पत्र ३५८) इत्यादि महाराष्ट्री में यह नहीं है।
४ अनेक शब्दों के तृतीया के एकवचन में सा होता है; यथा—मणसा, वयसा, कायसा, जोगसा, बलसा, चक्खुसा, महाराष्ट्री में इनके स्थान में क्रमश: मणेण, वएण, काएण, जोगेण, बलेण, चक्खुणा।
५. कम्म और धम्म शब्द के तृतीया के एक वचन में पालि की तरह कम्मुणा और धम्मुणा होता है, जब कि महाराष्ट्री में कम्मेण और धम्मेण।
६. अर्धमागधी में तत् शब्द के पञ्चमी के बहुवचन में तेब्भो रूप भी देखा जाता है।
७. युष्मत् शब्द की षष्ठी का एकवचन संस्कृत की तरह तव और अस्मत् की षष्ठी का बहुवचन अस्माकं अर्धमागधी मे पाया जाता है जो महाराष्ट्री में नहीं है।

आख्यात-विभक्ति

१. अर्धमागधी में भूतकाल के बहुवचन मे इंसु प्रत्यय है, जैसे—पुच्छिंसु, गच्छिंसु, आभासिंसु इत्यादि। महाराष्ट्री में यह प्रयोग लुप्त हो गया है।

धातु-रूप

१ अर्धमागधी में आइक्खइ, कुव्वइ, भुविं, होक्खती, बूया, अब्बवी, होत्था, हुत्था, पहारेत्था, आघं, दुरूहइ, विगिंचए, तिवायए, अकासी, तिउट्टई, तिउट्टिज्जा, पडिसंधयाति, सारयती, घेच्छिइ, समुच्छिहिति, आहंसु प्रभृति प्रभूत प्रयोगों में धातु की प्रकृति, प्रत्यय अथवा ये दोनों जिस प्रकार में पाये जाते हैं, महाराष्ट्री में वे भिन्न भिन्न प्रकार के देखे जाते हैं।

धातु-प्रत्यय

१. अर्धमागधी में त्वा प्रत्यय के रूप अनेक तरह के होते हैं :—
(क) ट्टु, जैसे—कट्टु, साहट्टु, अवहट्टु इत्यादि।
(ख) इत्ता, एत्ता, इत्ताणं और एत्ताणं, यथा—चइत्ता, विउट्टित्ता, पासित्ता, करेत्ता, पासित्ताणं, करेत्ताण इत्यादि।
(ग) इत्तु, यथा—दुरूहित्तु, जाणित्तु, वधित्तु प्रभृति।
(घ) च्चा, जैसे—किच्चा, णच्चा, सोच्चा, भोच्चा, चेच्चा वगैरह।
(ङ) इया, यथा—परिजाणिया, दुरूहिया आदि।
(च) इनके अतिरिक्त विउक्कम्म, निसम्म, समिच्च, सखाए, अणुवीति, लद्धुं, लद्धूण, दिस्सा इत्यादि प्रयोगों में 'त्वा' के रूप भिन्न भिन्न तरह के पाये जाते हैं।
२. तुम प्रत्यय के स्थान में इत्तए या इत्तते प्राय. देखने में आता है, जैसे—करित्तए, गच्छित्तए, संभुंजित्तए, उवसामित्तते (विपा० १३), विहरित्तए आदि।
३. ऋकारान्त धातु के त प्रत्यय के स्थान में ड होता है, जैसे—कड, मड, अभिहड, वावड, संवुड, वियड, वित्थड प्रभृति।

तद्धित

१ तर प्रत्यय का तराय रूप होता है; यथा—अणिट्ठतराए, अप्पतराए, बहुतराए, कंततराए इत्यादि।

२. आउसो, आउसंतो, गोमी, वुसिमं, भगवतो, पुरत्थिम, पच्चत्थिम, ओयंसी, दोसिणो, पोरेवच्च आदि प्रयोगों में मतुप्, और अन्य तद्धित प्रत्ययों के जैसे रूप जैन अर्धमागधी में देखे जाते हैं, महाराष्ट्री में वे भिन्न तरह के होते हैं।

महाराष्ट्री से जैन अर्धमागधी में इनके अतिरिक्त और भी अनेक सूक्ष्म भेद हैं, जिनका उल्लेख विस्तार-भय से यहाँ नहीं किया गया है।

---

(५) जैन महाराष्ट्री

नाम-निर्देश और साहित्य

जैन सूत्र-ग्रन्थों के सिवा श्वेताम्बर जैनों के रचे हुए अन्य ग्रन्थों की प्राकृत भाषा को 'जैन महाराष्ट्री' नाम दिया गया है। इस भाषा में तीर्थंकर और प्राचीन मुनियों के चरित्र, कथाएँ, दर्शन, तर्क, ज्योतिष, भूगोल, स्तुति आदि विषयों का विशाल साहित्य विद्यमान है।

प्राकृत के प्राचीन वैयाकरणों ने 'जैन महाराष्ट्री' यह नाम देकर किसी भिन्न भाषा का उल्लेख नहीं किया है। किन्तु आधुनिक पाश्चात्य विद्वानों ने व्याकरण, काव्य और नाटक-ग्रन्थों में महाराष्ट्री का जो रूप देखा जाता है उससे श्वेताम्बर जैनों के ग्रन्थों की भाषा में कुछ कुछ पार्थक्य देख कर इसको 'जैन महाराष्ट्री' नाम दिया है। इस भाषा में प्राकृत-व्याकरणों में बताये हुए महाराष्ट्री भाषा के लक्षण विशेष रूप से मौजूद होने पर भी जैन अर्धमागधी का बहुत-कुछ प्रभाव देखा जाता है।

समय

जैन महाराष्ट्री के कतिपय ग्रन्थ प्राचीन हैं। यह द्वितीय स्तर के प्रथम युग के प्राकृतों में स्थान पा सकती हैं। पयन्ना-ग्रन्थ, निर्युक्तियाँ, पउमचरिअ, उपदेशमाला प्रभृति ग्रन्थ प्रथम युग की जैन महाराष्ट्री के उदाहरण हैं। बृहत्कल्प-भाष्य, व्यवहारसूत्र-भाष्य, विशेषावश्यक-भाष्य, निशीथचूर्णि, धर्मसंग्रहणी, समराइच्चकहा प्रभृति ग्रन्थ मध्य-युग और शेष-युग में रचित होने पर भी इनकी भाषा प्रथम युग की जैन महाराष्ट्री के समान हैं। दशम शताब्दी के बाद रचे गये प्रवचन-सारोद्धार, उपदेशपदटीका, सुपासनाहचरिअ, उपदेशरहस्य प्रभृति ग्रन्थों की भाषा भी प्राय प्रथम युग की जैन महाराष्ट्री के ही अनुरूप हैं। इससे यहाँ पर यह कहना होगा कि जैन महाराष्ट्री के ये ग्रन्थ आधुनिक काल में रचित होने पर भी उसकी भाषा, संस्कृत की तरह, अतिप्राचीन काल मे ही उत्पन्न हुई थी और यह भी अनुमान किया जा सकता हैं कि जैन महाराष्ट्री क्रमश परिवर्तित होकर मध्य-युग की व्यञ्जन-लोप-बहुल महाराष्ट्री में रूपान्तरित हुई हैं।

लक्षण

अर्धमागधी के जो लक्षण पहले बताये गए हैं उनमें से अनेक इस भाषा में भी पाये जाते हैं। ऐसे लक्षणों में कुछ ये हैं :—

१. क के स्थान मे अनेक स्थलों में ग।

२ लुप्त व्यञ्जनों के स्थान में य्।

३. शब्द के आदि और मध्य मे भी ण की तरह न।

४ यथा और यावत् के स्थान में क्रमश' जहा और जाव की तरह अहा और आव भी।

५. समास में उत्तर पद के पूर्व मे 'म्' का आगम।

६. पाय, माय, तेगिच्छग, पडुप्पएण, साहि, सुहुम, सुमिण आदि शब्दों का भी, पत्त, मेत्त, चेइच्छय आदि की तरह प्रयोग।

७. तृतीया के एकवचन में कहीं कहीं सा प्रत्यय।

८ आइक्खइ, कुव्वइ प्रभृति धातु-रूप।

९ सोच्चा, किच्चा, वंदित्तु आदि त्वा प्रत्यय के रूप।

१० कड, वावड, संवुड, प्रभृति त-प्रत्ययान्त रूप।

---

(६) अशोक-लिपि

सम्राट् 'अशोक ने भारतवर्ष के भिन्न-भिन्न स्थानों में अपने धर्म के उपदेशों को शिलाओं में खुदवाये थे। ये सब शिलालेख उस समय में प्रचलित भिन्न-भिन्न प्रादेशिक भाषाओं में रचित हैं। भाषा-साम्य की दृष्टि से ये सब शिलालेख ४४ प्रधानत. इन तीन भागों मे विभक्त किये जा सकते हैं'—

(१) पंजाब के शिलालेख। इनकी भाषा सस्कृत के अनुरूप है। इनमें र का लोप नहीं देखा जाता।

(२) पूर्व भारत के शिलालेख। इनकी भाषा का मागधी के साथ सादृश्य देखने में आता है। इनमें र के स्थान में सर्वत्र ल है।

(३) पश्चिम भारत के शिलालेख। ये उज्जयिनी की उस भाषा में है जिसका पालि के साथ अधिक साम्य है।

इन तीनों प्रकार के शिलालेखों के कुछ उदाहरण नीचे दिए जाते हैं जिन पर से इनका भेद अच्छी तरह समझ में आ सकता है।

संस्कृत	कपर्दगिरि (पजाब)	धौलि (उडीसा)	गिरनार (गुजरात)
देवानाप्रियस्य	देवानप्रियस	देवानपियस	देवानंपियस
राज्ञ	रणो	लजिने	रानो, रनो
वृक्षा॰	—	लुखनि	वच्छा
शुश्रूषा	सुश्रुषा	सुसूसा	सुसुसा
नास्ति	नस्ति, नास्ति	नोथि, नथि, नथा	नास्ति

इन शिलालेखों का समय खिस्त-पूर्व २५० वर्ष का है।

इन शिलालेखों की भाषा की उत्पत्ति भगवान् महावीर की एवं सम्भवतः बुद्धदेव की उपदेश-भाषा से ही हुई है।[२]

---

(७) सौरसेनी

संस्कृत-नाटकों में प्राकृत गद्यांश सामान्य रूप से सौरसेनो भाषा में लिखा गया है। अश्वघोष के नाटकों में एक तरह की सौरसेनी के उदाहरण पाये जाते हैं, जो पालि और अशोकलिपि की भाषा के अनुरूप और पिछले काल के नाटकों में प्रयुक्त सौरसेनी की अपेक्षा प्राचीन है। भास के, कालिदास के और इनके बाद के अधिक नाटकों में सौरसेनी के निदर्शन देखे जाते हैं।

निदर्शन

वररुचि, हेमचन्द्र, क्रमदीश्वर, लक्ष्मीधर और मार्कण्डेय आदि के प्राकृत-व्याकरणों में सौरसेनी भाषा के लक्षण और उदाहरण पाये जाते हैं।

दण्डी, रुद्रट और वाग्भट आदि सस्कृत के अलकारिकों ने भी इस भाषा का उल्लेख किया है।

भरत के नाट्यशास्त्र में सौरसेनी भाषा का उल्लेख हैं, उन्होंने नाटक में नायिका और सखियों के लिए इस भाषा का प्रयोग बताया है।[३]

विनियोग

भरत ने विदूषक की भाषा प्राच्या कही है[४], परन्तु मार्कण्डेय के व्याकरण में प्राच्या भाषा के जो लक्षण दिये गये हैं उनसे और नाटकों में प्रयुक्त विदूषक की भाषा पर से यह मालूम होता है कि सौरसेनी से इस भाषा (प्राच्या) का कुछ विशेष भेद नहीं है। इससे हमने भी प्रस्तुत कोष में उसका अलग उल्लेख न करके सौरसेनी में ही अन्तर्भाव किया है।

प्राच्या भाषा सौरसेनी के अन्तर्गत

दिगम्बर जैनों के प्रवचनसार, द्रव्यसग्रह प्रभृति ग्रन्थ भी एक तरह की सौरसेनी भाषा में ही रचित हैं। यह भाषा श्वताम्बरो की अर्धमागधी और प्राकृत-व्याकरणो में निर्दिष्ट सौरसेनी के मिश्रण से बनी हुई है। इस भाषा को 'जैन सौरसेनी' नाम दिया गया है। जैन सौरसेनी मध्ययुग की जैन महाराष्ट्री की अपेक्षा जैन अर्द्धमागधी से अधिक निकटता रखती है और मध्ययुग की जैन महाराष्ट्री से प्राचीन है।

जैन सौरसेनी

---

१. हाल ही में डॉ॰ त्रिभुवनदास लहेरचद ने अपने एक गुजराती लेख में अनेक प्रमाण और युक्तियो से यह सिद्ध किया है कि अशोक के शिलालेखो के नाम से प्रसिद्ध शिलालेख सम्राट् अशोक के नहीं, परन्तु जैन सम्राट् सम्प्रति के खुदवाये हुए हैं।

२. See Dr A B Keith's Sanskrit Drama, Page 87.

३. "नायिकाना सखीनां च सूरसेनाविरोधिनी" (नाट्यशास्त्र १७, ५१)।

४. "प्राच्या विदूषकादीना" (नाट्यशास्त्र १७, ५१)।

सौरसेनी भाषा की उत्पत्ति[1] सूरसेन देश अर्थात् मथुरा प्रदेश से हुई है।

वररुचि ने अपने व्याकरण में संस्कृत को ही सौरसेनी भाषा की प्रकृति अर्थात् मूल कहा है[2]। किन्तु यह हम पहले ही प्रमाणित कर चुके हैं कि किसी प्राकृत भाषा की उत्पत्ति संस्कृत से नहीं हुई है। सुतरां, सौरसेनी प्राकृत का मूल भी वैदिक या लौकिक संस्कृत नहीं है। सौरसेनी और संस्कृत ये दोनों ही वैदिक युग में प्रचलित सूरसेन अथवा मध्यदेश की कथ्य प्राकृत भाषा से ही उत्पन्न हुई हैं। संस्कृत भाषा पाणिनि-प्रभृति के व्याकरण द्वारा नियन्त्रित होने के कारण परिवर्तन-हीन मृत-भाषा मे परिणत हुई। वैदिक काल की सौरसेनी ने प्राकृत-व्याकरण द्वारा नियन्त्रित न होने के कारण क्रमश. परिवर्तित होते हुए पिछले समय की सौरसेनी भाषा का आकार धारण किया। पिछले समय की यह सौरसेनी भी वाद में प्राकृत-व्याकरणों के द्वारा जकड़े जाने के कारण संस्कृत की तरह परिवर्तन-शून्य होकर मृत-भाषा में परिणत हुई है।

प्रकृति

अश्वघोष के नाटकों में जिस सौरसेनी भाषा के उदाहरण मिलते हैं वह अशोकलिपि की सम-सामयिक कही जा सकती है। भास के नाटकों की सौरसेनी का और जैन सौरसेनी का समय सम्भवत. खिस्त की प्रथम या द्वितीय शताब्दी मालूम होता है।

समय

महाराष्ट्री भाषा के साथ सौरसेनी भाषा का जिस-जिस अंश मे भेद है वह नीचे दिया जाता है। इसके सिवा महाराष्ट्री भाषा के जो लक्षण उसके प्रकरण में दिये जायँगे उनमे महाराष्ट्री के साथ सौरसेनी का कोई भेद नहीं है। इन भेदों पर यह ज्ञात होता है कि अनेक स्थलों मे महाराष्ट्री की अपेक्षा सौरसेनी का संस्कृत के साथ पार्थक्य कम और सादृश्य अधिक है।

लक्षण

वर्ण-भेद

१. स्वर-वर्णो के मध्यवर्ती असयुक्त त और द के स्थान में द होता है, यथा—रजत = रअद, गदा = गदा।

२. स्वरों के वीच असयुक्त थ का ह और ध दोनों होते हैं; जैसे—नाथ = णाध, णाह।

३. र्य के स्थान में य्य और ज्ज होता है, यथा—आर्य = अय्य, अज्ज, सूर्य = सुय्य, सुज्ज।

नाम-विभक्ति

१. पञ्चमी के एकवचन में दो और दु ये दो ही प्रत्यय होते हैं और इनके योग में पूर्व के अकार का दीर्घ होता है, यथा—जिनात् = जिणादो, जिणादु।

आख्यात

१ ति और ते प्रत्ययों के स्थान में दि और दे होता है, जैसे—हसदि, हसदे, रमदि, रमदे।

२. भविष्यत्काल के प्रत्यय के पूर्व में स्सि लगता है, यथा—हसिस्सिदि, करिस्सिदि।

सन्धि

१ अन्त्य मकार के वाद इ और ए होने पर ण् का वैकल्पिक आगम होता है, यथा—युक्तम् इदम् = जुत्तं णिमं, जुत्तमिमं, एवम् एतत् = एवं णेदं, एवमेदं।

कृदन्त

१. त्वा प्रत्यय के स्थान मे इअ, दूण और त्ता होते हैं, यथा—पठित्वा = पढिअ, पढिदूण, पढित्ता।

---

१. पन्नवणासूत्र के "सोत्तियमइया (?मई य) चेदी वीयभयं सिंधुसोवीरा। महुरा य सूरसेणा पावा भंगी य मासपुरिवट्टा" (पत्र ६१)। इस पाठ पर "चेदिपु शुक्तिकावती, वीतभय सिन्धुपु, सौवीरेषु मथुरा, सूरसेनेषु पापा, भङ्गे(? ङ्गि)षु मासपुरिवट्टा" इस तरह व्याख्या करते हुए आचार्य मलयगिरि ने सूरसेन देश की राजधानी पावा वतलाकर आजकल के विहार प्रदेश को ही सूरसेन कहा है। नेमिचन्द्रसूरि ने अपने प्रवचनसारोद्धारनामक ग्रंथ में पन्नवणासूत्र के उक्त पाठ को अविकल रूप में उद्धृत किया है। इसकी टीका में श्रीसिद्धसेनसूरि ने आचार्य मलयगिरि की उक्त व्याख्या को 'अतिव्यवहृत' कहकर, उक्त मूल पाठ की व्याख्या इस तरह की है —'शुक्तीमती नगरी चेदयो देश, वीतभयं नगरं सिन्धुसौवीरा जनपद', मथुरा नगरी सूरसेनाख्यो देश, पापा नगरी भङ्गयो देश', मासपुरी नगरी वर्तो देश.' (दे० ला० संस्करण, पत्र ४४६)।

२. प्राकृतप्रकाश (१२, २)।

(८) मागधी

मागधी प्राकृत के सर्व-प्राचीन निदर्शन अशोक-साम्राज्य के उत्तर और पूर्व भागों के खालसी, मिरट, लौरिया (Lauriya), सहसराम, बराबर (Barabar), रामगढ़, धौलि और जौगढ़ (Jaugadha) प्रभृति स्थानों के अशोक-शिलालेखों में पाये जाते हैं। इसके बाद नाटकीय प्राकृतों में मागधी भाषा के उदाहरण देखे जाते हैं। नाटकीय मागधी के सर्व-प्राचीन नमूने अश्वघोष के नाटकों के खण्डित अंशों में मिलते हैं। भास के नाटकों में, कालिदास के नाटकों में और मृच्छकटिक आदि नाटकों में मागधी भाषा के उदाहरण विद्यमान हैं।

निदर्शन

वररुचि के प्राकृतप्रकाश, चण्ड के प्राकृतलक्षण, हेमचन्द्र के सिद्धहेमचन्द्र (अष्टम अध्याय), क्रमदीश्वर के संक्षिप्त-सार, लक्ष्मीधर की षड्भाषाचन्द्रिका और मार्कण्डेय के प्राकृतसर्वस्व आदि प्राय. समस्त प्राकृत-व्याकरणों में मागधी भाषा के लक्षण और उदाहरण दिए गए हैं।

भरत के नाट्यशास्त्र में मागधी भाषा का उल्लेख है और उन्होंने नाटक मे राजा के अन्त पुर में रहनेवाले, सुरंग खोदनेवाले, कलवार, अश्वपालक वगैरह पात्रों के लिए और विपत्ति मे नायक के लिए भी इस भाषा का प्रयोग करने को कहा है[1]। परन्तु मार्कण्डेय द्वारा अपने प्राकृतसर्वस्व में उद्धृत किये हुए कोहल के "राक्षसभिक्षुक्षपणकचेटाद्या मागधी प्राहु" इस वचन से मालूम होता है कि भरत के कहे हुए उक्त पात्रों के अतिरिक्त भिक्षु, क्षपणक आदि अन्य लोग भी इस भाषा का व्यवहार करते थे। रुद्रट, वाग्भट, हेमचन्द्र आदि आलंकारिकों ने भी अपने-अपने अलकार-ग्रन्थों में इस भाषा का उल्लेख किया है।

विनियोग

मगध देश ही मागधी भाषा का उत्पत्ति-स्थान है। मगध देश की सीमा के बाहर भी अशोक के शिलालेखों में जो इसके निदर्शन पाये जाते हैं उसका कारण यह है कि मागधी भाषा उस समय राज-भाषा होने के कारण मगध के बाहर भी इसका प्रचार हुआ था। सम्भवत राज-भाषा होने के कारण ही नाटकों में सर्वत्र ही राजा के अन्त पुर के लोगों के लिए इस भाषा का व्यवहार करने का नियम हुआ था। प्राचीन भिक्षु और क्षपणक भी मगध के ही निवासी होने से, सम्भव है, नाटकों मे इनकी भाषा भी मागधी ही निर्दिष्ट की गई है।

उत्पत्ति-स्थान

वररुचि ने अपने प्राकृत व्याकरण में मागधी की प्रकृति—मूल होने का सम्मान सौरसेनी को दिया है[2]। इसीका अनुसरण कर मार्कण्डेय ने भी सौरसेनी से ही मागधी की सिद्धि कही है[3]। किन्तु मागधी और सौरसेनी आदि प्रादेशिक भाषाओं का भेद अशोक के शिलालेखों में भी देखा जाता है। इससे यह सिद्ध है कि ये सब प्रादेशिक भेद प्राचीन और समसामयिक हैं, एक प्रदेश की भाषा से दूसरे प्रदेश मे उत्पन्न नहीं हुए हैं। जैसे सौरसेनी मध्यदेश में प्रचलित वैदिक युग की कथ्य भाषा से उत्पन्न हुई है वैसे मागधी ने भी उस कथ्य भाषा से जन्म-ग्रहण किया है जो वैदिककाल मे मगध देश में प्रचलित थी।

प्रकृति

अशोक-शिलालेखों की और अश्वघोष के नाटकों की मागधी भाषा प्रथम युग की मागधी भाषा के निदर्शन हैं। भास के और परवर्ती काल के अन्य नाटकों की और प्राकृत-व्याकरणों की मागधी मध्य-युग की मागधी भाषा के उदाहरण हैं।

समय

शाकारी, चाण्डाली और शाबरी ये तीन भाषाएँ मागधी के ही प्रकार-भेद—रूपान्तर हैं। भरत ने शाकारी भाषा का व्यवहार शबर, शक आदि और उसी प्रकृति के अन्य लोगों के लिए कहा है[4], किन्तु मार्कण्डेय ने राजा के साले की भाषा शाकारी बतलाई है[5]। भरत पुक्कस आदि जातियों की व्यवहार-भाषा को चाण्डाली और अंगारकार, व्याध,

---

१. "मागधी तु नरेन्द्राणामन्त पुरनिवासिनाम्" (नाट्यशास्त्र १७, ५०)।
"सुरङ्गाखनकादीना शुण्डकाराश्वरक्षिणाम् । व्यसने नायकाना स्यादात्मरक्षासु मागधी ॥" (नाट्यशास्त्र १७, ५६)।

२. "प्रकृति सौरसेनी" (प्राकृतप्रकाश ११, २)।

३. "मागधी शौरसेनीत" (प्राकृनसर्वस्व, पृष्ठ १०१)।

४. "शबराणा शकादीना तत्स्वभावश्च यो गण । शकारभाषा योक्तव्या" (नाट्यशास्त्र १७, ५३)।

५ "शकारस्येय शाकारी, शकारश्च
'राज्ञोऽनूढाभ्राता श्यालस्त्वैश्वर्यसपन्न. ।
मदमूर्खताभिमानी शकार इति दुष्कुलीन स्यात्' इत्युक्ते" (प्राकृतसर्वस्व, पृष्ठ १०५)।

शाकारी आदि भाषाएँ मागधी के अन्तर्गत हैं

कठहार और यन्त्र-जीवी लोगों की भाषा को शावरी कहते हैं[1]। इन तीनों भाषाओं के जो लक्षण और उदाहरण मार्कण्डेय के प्राकृत-व्याकरण में और नाटकों के उक्त पात्रों की भाषा में पाये जाते हैं उनमें और इतर प्राकृत-व्याकरणों की मागधी भाषा के लक्षण और उदाहरणों में तथा नाटकों के मागधी-भाषा-भाषी पात्रों की भाषा में इतना कम भेद और इतना अधिक साम्य है कि उक्त तीन भाषाओं को मागधी से अलग नहीं कही जा सकती। यही कारण है कि हमने प्रस्तुत कोष में इन भाषाओं का मागधी में ही समावेश किया है।

मृच्छकटिक के पात्र माथुर और दो द्यूतकारों की भाषा को 'ढक्की' नाम दिया गया है। यह भी मागधी भाषा का ही एक रूपान्तर प्रतीत होता है। मार्कण्डेय ने 'ढक्की' को ही 'टाक्की' नाम से निर्देश किया है, यह उनके वहाँ पर उद्धृत किये हुए एक श्लोक से ज्ञात होता है[2]। मार्कण्डेय ने पदान्त में उ, तृतीया के एकवचन में ए, पञ्चमी के बहुवचन मे हुम

ढक्की या टाक्की भाषा

आदि जो इस भाषा के लक्षण दिए हैं उनपर से इसमें अपभ्रंश का ही विशेष साम्य नजर आता है। इस लिए मार्कण्डेय ने वहाँ पर जो यह कहा है कि 'हरिश्चन्द्र इस भाषा को अपभ्रंश मानता है[3]' वह मत हमें भी संगत मालूम पड़ता है।

मागधी भाषा का सौरसेनी के साथ जो प्रधान भेद है वह नीचे दिया जाता है। इसके सिवा अन्य अंशों में मागधी

लक्षण

भाषा साधारणत सौरसेनी के ही अनुरूप है।

वर्ण-भेद

१ र के स्थान मे सर्वत्र ल होता है[4], यथा—नर = णल, कर = कल।

२. श, ष और स के स्थान में तालव्य श होता है; यथा—शोभन = शोहण, पुरुष = पुलिश, सारस = शालश।

३. संयुक्त ष और स के स्थान मे दन्त्य सकार होता है, यथा—शुष्क = शुस्क, कष्ट = कस्ट, स्खलति = स्खलदि, बृहस्पति = बुहस्पदि।

४. ट्ट और ष्ठ के स्थान में स्ट होता है, यथा—पट्ट = पस्ट; सुष्ठु = शुस्ठु।

५. स्थ और र्थ की जगह स्त होता है, जैसे—उपस्थित = उवस्तिद, सार्थं = शस्त।

६. ज, द्य और य के बदले य होता है, यथा—जानाति = याणदि, दुर्जन = दुय्यण, मद्य = मय्य, अद्य = अय्य, याति = यादि, यम = यम।

७. न्य, ण्य, ज्ञ और ञ्ज के स्थान में ञ्ञ होता है, यथा—अन्य = अञ्ञ, पुण्य = पुञ्ञ, प्रज्ञा = पञ्ञा, अञ्जलि = अञ्ञलि।

८. अनादि छ के स्थान मे श्च होता है, यथा—गच्छ = गश्च, पिच्छिल = पिश्चिल।

९. क्ष की जगह स्क होता है[5], जैसे—राक्षस = लस्कश, यक्ष = यस्क।

नाम-विभक्ति

१. अकारान्त पुंलिंग-शब्द के प्रथमा के एकवचन मे ए होता है, यथा—जिन = यिणे, पुरुष. = पुलिशे।

२. अकारान्त शब्द के षष्ठी का एकवचन स्स और आह होता है, यथा—जिनस्य = यिणस्स, यिणाह।

३. अकारान्त शब्द के षष्ठी के बहुवचन मे आण और आहँ ये दोनों होते हैं, जैसे—जिनानाम् = यिणाण, यिणाहँ।

४. असमत् शब्द के एकवचन और बहुवचन का रूप हगे होता है।

---

१. "चाण्डाली पुक्कसादिषु। अंगारकर्व्याधाना काष्ठयन्त्रोपजीविनाम्। योज्या शबरभाषा तु" (नाट्यशास्त्र १७, ५३-४)।

२. "प्रयुज्यते नाटकादौ द्यूतादिव्यवहारिभि.।
वणिग्भिर्हीनदेहैश्च तदाहुष्टक्कभाषितम्" (प्राकृतसर्वस्व, पृष्ठ ११०)।

३. "हरिश्चन्द्रस्त्विमां भाषामपभ्रंश इतीच्छति" (प्राकृतस० पृष्ठ ११०)।

४. मार्कण्डेय यह नियम वैकल्पिक मानते हैं, "रस्य लो वा भवेत्" (प्राकृतस० पृष्ठ १०१)।

५. हेमचन्द्र-प्राकृत व्याकरण के अनुसार 'क्ष' की जगह जिह्वामूलीय '≍क' होता है, देखो हे० प्रा० ४, २९६।

(९) महाराष्ट्री

प्राकृत काव्य और गीति की भाषा महाराष्ट्री कही जाती है। सेतुबन्ध, गाथासप्तशती, गउडवहो, कुमारपालचरित प्रभृति ग्रन्थों मे इस भाषा के निदर्शन पाये जाते हैं। गाथा (गीति-साहित्य) में महाराष्ट्री प्राकृत ने इतनी प्रसिद्धि प्राप्त की थी कि बाद के नाटकों मे गद्य में सौरसेनी बोलनेवाले पात्रों के लिए सगीत या पद्य मे महाराष्ट्री भाषा का व्यवहार करने का रिवाज सा बन गया था। यही कारण है कि कालिदास से लेकर उसके बाद के सभी नाटकों में पद्य में प्राय महाराष्ट्री भाषा का ही व्यवहार देखा जाता है।

निदर्शन

चंड ने अपने प्राकृतलक्षण में 'महाराष्ट्री' इस नाम का उल्लेख और इसके विशेष लक्षण न देकर भी आर्ष-प्राकृत अथवा अर्धमागधी के और जैन महाराष्ट्री के लक्षणों के साथ साधारण भाव से इसके लक्षण दिए हैं। वररुचि ने अपने प्राकृत-व्याकरण में इस भाषा के [1]'महाराष्ट्री' नाम का उल्लेख किया है और इसके विशेष लक्षण और उदाहरण दिए हैं। आचार्य हेमचन्द्र ने अपने व्याकरण मे 'महाराष्ट्री' नाम का निर्देश न कर 'प्राकृत' इस साधारण नाम से महाराष्ट्री के ही लक्षण और उदाहरण बताए हैं। क्रमदीश्वर का संक्षिप्तसार, त्रिविक्रम की प्राकृतव्याकरणसूत्रवृत्ति, लक्ष्मीधर की षड्भाषाचन्द्रिका और मार्कण्डेय का प्राकृतसर्वस्व प्रभृति प्राकृत-व्याकरणों मे इस भाषा के लक्षण और उदाहरण पाये जाते हैं। चंड-भिन्न सभी प्राकृत वैयाकरणों ने महाराष्ट्री का मुख्य रूप से विवरण दिया है और सौरसेनी, मागधी प्रभृति भाषाओं के महाराष्ट्री के साथ जो भेद हैं वे ही बतलाए हैं।

सस्कृत के अलंकार-शास्त्रों मे भी भिन्न-भिन्न प्राकृत भाषाओं का उल्लेख मिलता है। भरत के नाट्य-शास्त्र में 'दाक्षिणात्या' भाषा का निर्देश है, किन्तु इसके विशेष लक्षण नहीं दिए गए हैं। संभवत. वह महाराष्ट्री भाषा ही हो सकती है, क्योंकि भरत ने महाराष्ट्री का अलग उल्लेख नहीं किया है। परन्तु मार्कण्डेय के प्राकृतसर्वस्व में उद्धृत प्राकृतचन्द्रिका के [2]वचन में और प्राकृतसर्वस्व के खुद मार्कण्डेय के [3]वचन मे महाराष्ट्री और दाक्षिणात्या का भिन्न भिन्न भाषा के रूप में उल्लेख किया गया है। दण्डी के काव्यादर्श के

'महाराष्ट्राश्रयां भाषां प्रकृष्टं प्राकृत विदु.।
सागर सूक्तिरत्नाना सेतुबन्धादि यन्मयम् ॥" (१, ३४)।

इस श्लोक मे महाराष्ट्री भाषा का और उसकी उत्कृष्टता का स्पष्ट उल्लेख है। दण्डी के समय मे महाराष्ट्री प्राकृत का इतना उत्कर्ष हुआ था कि इसके परवर्ती अनेक ग्रन्थकारों ने केवल इस महाराष्ट्री के ही अर्थ मे उस प्राकृत शब्द का प्रयोग किया है जो सामान्यत सर्व प्रादेशिक भाषाओं का वाचक है। रुद्रट का काव्यालंकार, वाग्भटालकार, पाइअलच्छी-नाममाला, हेमचन्द्र का प्राकृत-व्याकरण प्रभृति ग्रन्थों मे महाराष्ट्री के ही अर्थ मे प्राकृत शब्द व्यवहृत हुआ है। अलकार-शास्त्र-भिन्न पाइअलच्छीनाममाला और देशीनाममाला इन कोष-ग्रन्थों में भी महाराष्ट्री के उदाहरण हैं।

डॉ. हॉर्नलि के मत में महाराष्ट्री भाषा महाराष्ट्र देश मे उत्पन्न नहीं हुई है। वे मानते हैं कि महाराष्ट्री का अर्थ 'विशाल राष्ट्र की भाषा' है और राजपूताना तथा मध्यदेश प्रभृति इसी विशाल राष्ट्र के अन्तर्गत है, इसीसे 'महाराष्ट्री' मुख्य प्राकृत कही गई है। किन्तु दण्डी ने इस भाषा को महाराष्ट्र देश की ही भाषा कही है। सर ग्रियर्सन के मत मे महाराष्ट्री प्राकृत से ही आधुनिक मराठी भाषा उत्पन्न हुई है। इससे महाराष्ट्री प्राकृत का उत्पत्ति-स्थान महाराष्ट्र देश ही है यह बात नि सन्देह कही जा सकती है।

उत्पत्ति-स्थान

आचार्य हेमचन्द्र ने अपने व्याकरण मे महाराष्ट्र को ही 'प्राकृत' नाम दिया है और इसकी प्रकृति संस्कृत कही है। इसी तरह चण्ड, लक्ष्मीधर, मार्कण्डेय आदि वैयाकरणों ने साधारण रूप से सभी प्राकृत भाषाओं का मूल (प्रकृति) सस्कृत बताया है। किन्तु हम यह पहले ही अच्छी तरह प्रमाणित कर आए हैं कि कोई भी प्राकृत भाषा सस्कृत से उत्पन्न नहीं हुई है, बल्कि वैदिक काल में भिन्न-भिन्न प्रदेशों मे प्रचलित आर्यों की कथ्य भाषाओं

प्रकृति

---

१. "शेषं महाराष्ट्रीवत्" (प्राकृतप्रकाश १२, ३२)।

२. "महाराष्ट्री तथावन्ती सौरसेन्यर्धमागधी। वाह्लीकी मागधी प्राच्येत्यष्टौ ता दाक्षिणात्यया॥" (प्रा० स० पृष्ठ २)।

३. देखो प्राकृतसर्वस्व, पृष्ठ २ और १०४।

से ही सभी प्राकृत भाषाओं की उत्पत्ति हुई है, सुतरा महाराष्ट्री भापा की उत्पत्ति प्राचीन काल के महाराष्ट्र-निवासी आर्यों की कथ्य भापा से हुई है।

कौन समय आर्यों ने महाराष्ट्र में सर्व-प्रथम निवास किया था, इस बात का निर्णय करना कठिन है, परन्तु अशोक

समय

के पहले प्राकृत भाषा महाराष्ट्र देश मे प्रचलित थी, इस विषय मे किसीका मत-भेद नहीं है। उस समय महाराष्ट्र देश मे प्रचलित प्राकृत से क्रमश काव्यीय और नाटकीय महाराष्ट्री भापा उत्पन्न हुई है। प्राकृतप्रकाश का कर्ता वररुचि यदि वृत्तिकार कात्यायन से अभिन्न व्यक्ति हो तो यह स्वीकार करना होगा कि महाराष्ट्री ने अन्तत खिस्त-पूर्व दो सौ वर्ष के पहले ही साहित्य मे स्थान पाया था। लेकिन महाराष्ट्री भापा के तद्भव शब्दों मे व्यञ्जन वर्णों के लोप की बहुलता देखने से यह विश्वास नहीं होता कि यह भापा उतनी प्राचीन है। वररुचि का व्याकरण संभवत खिस्त के बाद ही रचा गया है। जैन अर्धमागधी और जैन महाराष्ट्री मे महाराष्ट्री प्राकृत के प्रभाव का हमने पहले उल्लेख किया है। महाराष्ट्री भापा में रचित जो सब साहित्य इस समय पाया जाता है उसमे खिस्त के बाद की महाराष्ट्री के ही निदर्शन देखे जाते हैं। प्राचीन महारा ट्री का कोई साहित्य उपलब्ध नही है। प्राचीन महाराष्ट्री मे बाद की महाराष्ट्री की तरह व्यञ्जन-वर्ण-लोप की अधिकता नहीं थी, इस बात के कुछ निदर्शन चण्ड के व्याकरण मे मिलते हैं। जैन अर्धमागधी और जैन महाराष्ट्री मे प्राचीन महाराष्ट्री भाषा का सादृश्य रक्षित है।

भरत ने नाट्यशास्त्र में आवन्ती और वाह्लीकी भापा का उल्लेख कर नाटकों मे धूर्त पात्रों के लिए आवन्ती का

आवन्ती और वाह्लीकी महाराष्ट्री के अन्तर्गत है

और द्यूतकारों के लिए वाह्लीकी का प्रयोग कहा है। मार्कण्डेय ने अपने प्राकृतसर्वस्व मे 'आवन्ती स्यान्महाराष्ट्रीशौरसेन्योस्तु सकरात्' और 'आवन्त्यामेव वाह्लीकी किन्तु रस्यात्र लो भवेत्' यह कह कर इनका सक्षिप्त लक्षण-निर्देश किया है। मार्कण्डेय ने आवन्ती भापा के जो त्वा के स्थान मे तूण और भविष्यत् काल के प्रत्यय के स्थान में ज्ज और ज्जा प्रभृति लक्षण बतलाए है वे महाराष्ट्री के साथ साधारण है। उनके दिए हुए किराद, वेदस, पेच्छदि प्रभृति उदाहरणों मे जो तकार के स्थान मे दकार है वहाँ शौरसेनी के साथ इसका (आवन्ती का) सादृश्य है परन्तु वह भी सर्वत्र नहीं है, जैसे उनके दिए हुए होइ, सुव्वइ, लिज्जइ, भणिए आदि उदाहरणों मे। इसी तरह वाह्लीकी में जो र का ल होता है वही एकमात्र मागधी का सादृश्य है। इसके सिवा सभी अशों मे यह भी आवन्ती की तरह महाराष्ट्री के ही सादृश है। सुतरा, ये दोनों भाषाएँ महाराष्ट्री के ही अन्तर्गत कही जा सकती है। इससे हमने भी इनका इस कोष मे अलग निर्देश नहीं किया है।

संस्कृत भाषा के साथ महाराष्ट्री भापा के वे भेद नीचे दिए जाते हैं जो महाराष्ट्री और सस्कृत के साथ अन्य प्राकृत

लक्षण

भाषाओं के सादृश्य और पार्थक्य की तुलना के लिए भी अधिक उपयुक्त हैं।

स्वर

१ अनेक जगह भिन्न स्वरों के स्थान मे भिन्न-भिन्न स्वर होते हैं, जैसे—समृद्धि = सामिद्धि, ईषत् = ईसि, हर = हीर, ध्वनि = झुणि, शय्या = सेज्जा, पद्म = पोम्म; यथा = जह सदा = सइ, स्त्यान = थीण, सास्ना = सुण्हा, आसार = ऊसार, ग्राह्य = गेज्झ, आली = ओली, इति = इअ, पथिन् = पह, जिह्वा = जीहा, द्विवचन = दुवअण, पिण्ड = पेंड, द्विधाकृत = दोहाइअ, हरीतकी = हरडई, कश्मीर = कम्हार, पानीय = पाणिअ, जीर्ण = जुण्ण, हीन = हूण, पीयूष = पेऊस, मुकुल = मउल, भ्रूकुटि = भिउडि, क्षुत = छीअ, मुसल = मूसल, तुण्ड = तोंड, सूक्ष्म = सण्ह, उद्व्यूढ = उव्वीढ, वातूल = वाउल, नूपुर = णेउर, तूणीर = तोणीर, वेदना = विअणा, स्तेन = थूण, मनोहर = मणहर, गो = गउ, गाअ, सोच्छ्वास = सूसास।

२. महाराष्ट्री मे ऋ, ॠ, ऌ, ॡ ये स्वर सर्वथा लुप्त हो गये है।

३. ऋ के स्थान मे भिन्न-भिन्न स्वर एवं रि होता है, यथा—तृण = तण, मृदुक = माउक्क, कृपा = किवा, मातृ = माइ, माउ, वृत्तान्त = वुत्तंत, मृषा = मुसा, मूसा, मोसा, वृन्त = विंट, वेंट, वोंट, ऋतु = उउ, रिउ, ऋद्धि = रिद्धि, ऋक्ष = रिच्छ, सदृश = सरिस, दृप्त = दरिअ।

४ ऌ के स्थान मे इलि होता है, जैसे—क्लृप्त = किलित्त, क्लृन्न = किलिण्ण।

५ ऐ का प्रयोग भी प्राय महाराष्ट्री में नहीं है। उसके स्थान मे सामान्यत ए और विशेषत अइ होता है, यथा—शैल = सेल, ऐरावण = एरावण, वैद्य = वेज्ज, वैधव्य = वेहव्व, सैन्य = सेण्ण, सइण्ण, कैलाश = केलास, कइलास, दैव = देव्व, दइव, ऐश्वर्य = अइसरिअ, दैन्य = दइण्ण।

६. ओ का व्यवहार भी[1] प्राय महाराष्ट्र मे नहीं है। उसके स्थान मे सामान्यत ओ और विशेष स्थलों में उ या अउ होता है, यथा—कौमुदी = कोमुई, यौवन = जोव्वण, दौवारिक = दुवारिअ, पौलोमी = पुलोमी, कौरव = कउरव, गौड = गउड, सौध = सउह।

असयुक्त व्यञ्जन

१. स्वरों के मध्यवर्ती क, ग, च, ज, त, द, य, व इन व्यञ्जनों का प्राय लोप होता है, जैसे क्रमश —लोक = लोअ, नग = णअ, शची = सई, रजत = रअअ, यती = जई, गदा = गआ, वियोग = विओअ, लावण्य = लाअण्ण।

२ स्वरों के बीच के ख, घ, थ, ध और भ के स्थान मे ह होता है, यथा क्रमश —शाखा = साहा, श्लाघते = लाहइ, नाथ = णाह, साधु = साहु, सभा = सहा।

३. स्वरों के बीच के ट का ड होता है, यथा—भट = भड, घट = घड।

४. स्वरों के बीच के ठ का ढ होता है, जैसे—मठ = मढ, पठति = पढइ।

५. स्वरों के बीच के ड का ल प्राय होता है, यथा—गरुड = गरुल, तडाग = तलाअ।

६. स्वरों के बीच के त का अनेक स्थल में ड होता है, यथा—प्रतिभासस = पडिहास, प्रभृति = पहुडि, व्यापृत = वावड, पताका = पडाआ।

७ न के स्थान में सर्वत्र ण होता है, यथा—कनक = कणअ, वचन = वअण, नर = णर, नदी = णई, अन्य = अण्ण, दैन्य = दइण्ण[2]।

८ दो स्वरों के मध्यवर्ती प का कहीं-कहीं व और कहीं-कहीं लोप होता है, यथा—शपथ = सवह, शाप = साव, उपसर्ग = उवसग्ग, रिपु = रिउ, कपि = कइ।

९ स्वरों के बीच के फ के स्थान मे कहीं-कहीं भ, कहीं-कहीं ह और कहीं-कहीं ये दोनों होते हैं, यथा—रेफ = रेभ, शिफा = सिभा, मुक्ताफल = मुत्ताहल, सफल = सभल, सहल, शेफालिका = सेभालिआ, सेहालिआ।

१०. स्वरों के मध्यवर्ती ब का व होता है, जैसे—अलाबू = अलावू, सबल = सवल।

११ आदि के य का ज होता है, यथा—यम = जम, यशस् = जस, याति = जाइ।

१२. कृदन्त के अनीय और य प्रत्यय के य का ज्ज होता है, जैसे—करणीय = करणिज्ज, पेय = पेज्ज।

१३. अनेक जगह र का ल होता है; यथा—हरिद्रा = हलिद्दा, दरिद्र = दलिद्द, युधिष्ठिर = जहुट्ठिल, अंगार = इंगाल।

१४. श और ष का सर्वत्र स होता है, यथा—शब्द = सद्द, विश्राम = वीसाम, पुरुष = पुरिस, सस्य = सास, शेष = सेस।

१५ अनेक जगह ह का घ होता है, यथा—दाह = दाघ, सिंह = सिंघ, संहार = संघार।

१६. कहीं-कहीं श, ष और स का छ होता है, जैसे—शाव = छाव, षष्ठ = छट्ठ, सुधा = छुहा।

१७ अनेक शब्दों मे स्वर सहित व्यञ्जन का लोप होता है, यथा—राजकुल = राउल, आगत = आअ, कालायस = कालास, हृदय = हिअ, पादपतन = पावडण, यावत् = जा, त्रयोदश = तेरह, स्थविर = थेर, बदर = बोर, कदल = केल, कर्णिकार = कण्णेर, चतुर्दश = चोद्दह, मयूख = मोह।

संयुक्त व्यञ्जन

१ क्ष के स्थान मे प्राय ख और कहीं-कहीं छ और झ होता है, जैसे—क्षय = खय, लक्षण = लक्खण, अक्षि = अच्छि, क्षीण = छीण, झीण।

२. त्व, थ्व, द्व और ध्व के स्थान मे कहीं-कहीं क्रमश च, छ, ज और झ होता है, यथा—ज्ञात्वा = णच्चा, पृथ्वी = पिच्छी, विद्वान् = विज्जं, बुद्ध्वा = बुज्झा।

३. ह्रस्व स्वर के परवर्ती थ्य, श्च, त्स और प्स के स्थान मे छ होता है, जैसे—पथ्य = पच्छ, पश्चात् = पच्छा, उत्साह = उच्छाह, अप्सरा = अच्छरा।

---

१. सस्कृत के 'अयि' शब्द का महाराष्ट्री में 'ऐ' होता है। इसके सिवा किसी किसी के मत में 'ऐ' तथा 'औ' का भी प्रयोग होता है, जैसे—कैतव = कैअव, कौरव = कौरव (है० प्रा० १, १)।

२. वररुचि के प्राकृत-व्याकरण के 'नो णः सर्वत्र' (२, ४२) सूत्र के अनुसार सर्वत्र 'न' का 'ण' होता है। सेतुबन्ध और गाथा-सप्तशती में इसी तरह सार्वत्रिक 'ण' पाया जाता है। हेमचन्द्र आदि कई प्राकृत वैयाकरणों के मत से शब्द के आदि के 'न' का विकल्प से 'ण' होता है, यथा—नदी = णई, नई, नर = णर, नर। गउडवहो में णकार का वैकल्पिक प्रयोग देखा जाता है।

४. द्य, य्य और र्य का ज्ज होता है, यथा—मद्य = मज्ज, जय्य = जज्ज, कार्य = कज्ज ।
५. ध्य और ह्य का झ होता है; यथा—ध्यान = झाण, साध्य = सज्झ, गुह्य = गुज्झ, सह्य = सज्झ ।
६. र्त का प्राय: ट होता है, जैसे—नर्तकी = णट्टई, कैवर्त = केवट्ट ।
७. ष्ट के स्थान में ठ होता है; यथा—मुष्टि = मुट्ठि, पुष्ट = पुट्ठ, काष्ठ = कट्ठ, इष्ट = इट्ठ ।
८. म्न का ण होता है, यथा—निम्न = णिण्ण, प्रद्युम्न = पज्जुण्ण ।
९. ज्ञ का ण और ज होता है, जैसे—ज्ञान = णाण, जाण, प्रज्ञा = पण्णा, पज्जा ।
१०. स्त का थ होता है, जैसे—हस्त = हत्थ, स्तोत्र = थोत्त, स्तोक = थोव ।
११ ड्म और क्म का प होता है, यथा—कुड्मल = कुपल, रुक्मिणी = रुप्पिणी ।
१२. ष्प और स्प का फ होता है, यथा—पुष्प = पुप्फ, स्पन्दन = फंदण ।
१३. ह्व का भ होता है, यथा—जिह्वा = जिब्भा, विह्वल = विब्भल ।
१४ न्म और ग्म का म होता है, जैसे—जन्मन् = जम्म, मन्मथ = मम्मह, युग्म = जुग्म, तिग्म = तिम्म ।
१५. श्म, ष्म, स्म और ह्म का म्ह होता है, यथा—काश्मीर = कम्हार, ग्रीष्म = गिम्ह, विस्मय = विम्हअ, ब्राह्मण = बम्हण ।
१६. श्न, ष्ण, स्न, ह्न, ह्न और क्ष्ण के स्थान में ण्ह होता है, यथा—प्रश्न = पण्ह, उष्ण = उण्ह, स्नान = ण्हाण, वह्नि = वण्हि, पूर्वाह्न = पुव्वण्ह, तीक्ष्ण = तिण्ह ।
१७ ह्ल का ल्ह होता है, यथा—प्रह्लाद = पल्हाअ, कह्लार = कल्हार ।
१८ सयोग में पूर्ववर्ती क, ग, ट, ड, त, द, प, श, ष और स का लोप होता है, जैसे—भुक्त = भुत्त, मुग्ध = मुद्ध, षट्पद = छप्पअ, खड्ग = खग्ग, उत्पल = उप्पल, मुद्गर = मुग्गर, सुप्त = सुत्त, निश्चल = णिच्चल, निष्ठुर = णिट्ठुर, स्खलित = खलिअ ।
१९ संयोग में परवर्ती म, न और य का लोप होता है, यथा—स्मर = सर, लग्न = लग्ग, व्याध = वाह ।
२० संयोग मे पूर्ववर्ती और परवर्ती सभी ल, व और र का लोप होता है, यथा—उल्का = उक्का, विक्लव = विक्कव, शब्द = सद्द, पक्व = पक्क, अर्क = अक्क, चक्र = चक्क ।
२१. संयुक्त अक्षरों के स्थान मे जो-जो आदेश ऊपर कहा है उसका और संयुक्त व्यञ्जन के लोप होने पर जो-जो व्यञ्जन बाकी रहता है उसका, यदि वह शब्द के आदि में न हो तो, द्वित्व होता है, जैसे—ज्ञात्वा = णच्चा, मद्य = मज्ज, भुक्त = भुत्त, उल्का = उक्का । परन्तु वह आदेश अथवा शेष व्यञ्जन यदि वर्ग का द्वितीय अथवा चतुर्थ अक्षर हो तो द्वित्व न होकर उसके पूर्व में आदेश अथवा शेष व्यञ्जन के अनन्तर-पूर्व व्यञ्जन का आगम होता है, यथा—लक्षण = लक्खण, पश्चात् = पच्छा, इष्ट = इट्ठ, मुग्ध = मुद्ध ।

विश्लेषण

१ र्ह, र्श, र्ष के मध्य मे और सयोग मे परवर्ती ल के पूर्व मे स्वर का आगम होकर सयुक्त व्यञ्जनों का विश्लेपण किया जाता है, यथा—अर्हत् = अरह, अरिह, अरुह, आदर्श = आयरिस, हर्ष = हरिस, क्लिष्ट = किलिट्ठ ।

व्यत्यय

१. अनेक शब्दों मे व्यञ्जन के स्थान का व्यत्यय होता है, यथा—करेणु = कणेरु, आलान = आणाल, महाराष्ट्र = मरहट्ठ, हरिताल = हलिआर, लघुक = हलुअ, ललाट = णडाल, गुह्य = गुय्ह, सह्य = सय्ह ।

सन्धि

१. समास में कहीं-कहीं ह्रस्व स्वर के स्थान मे दीर्घ और दीर्घ के स्थान मे ह्रस्व होता है, यथा—अन्तर्वेदि = अन्तावेइ, पतिगृह = पइहर, यमुनातट = जँउणअड, नदीस्रोत = णइसोत्त ।
२ स्वर पर रहने पर पूर्व स्वर का लोप होता है, जैसे—त्रिदशेश = तिअसीस ।
३. सयुक्त व्यञ्जन का पूर्व स्वर ह्रस्व होता है, जैसे—आस्य = अस्स, मुनीन्द्र = मुणिंद, चूर्ण = चुण्ण, नरेन्द्र = णरिंद, म्लेच्छ = मिलिच्छ, नीलोत्पल = णीलुप्पल ।

सन्धि-निषेध

१ उद्वृत्त (व्यञ्जन का लोप होने पर अवशिष्ट रहे हुए) स्वर की पूर्व स्वर के साथ प्राय: सन्धि नहीं होती है, यथा—निशाकर = णिसाअर, रजनीकर = रमणीअर ।

२. एक पद में स्वरों की सन्धि नहीं होती है, जैसे—पाद = पाअ, गति = गइ, नगर = णअर।
३ इ, ई, और ऊ की, असमान स्वर पर रहने पर, सन्धि नहीं होती है, यथा—वग्गेवि अवयासो, दणुइंदो।
४. ए और ओ की परवर्ती स्वर के साथ सन्धि नहीं होती है, यथा—फले आवघो, आलक्खिमो एण्हि।
५ आख्यात के स्वर की सन्धि नहीं होती है, जैसे—होइ इह।

नाम-विभक्ति

१. अकारान्त पुल्लिंग शब्द के एकवचन में ओ होता है, जैसे—जिन = जिणो, वृक्ष = वच्छो।
२ पञ्चमी के एकवचन मे त्तो, ओ, उ, हि और लोप होता है और त्तो-भिन्न अन्य प्रत्ययों के प्रसंग में अकार का आकार होना है; जैसे—जिनात् = जिणात्तो, जिणाओ जिणाउ, जिणाहि, जिणा।
३. पञ्चमी के बहुवचन का प्रत्यय त्तो, ओ, उ और हि होता है, एवं त्तो से अन्य प्रत्यय में पूर्व के अ का आ होता है, हि के प्रसंग मे ए भी होता है, यथा—जिणत्तो, जिणाओ, जिणाउ, जिणाहि, जिणेहि।
४. पञ्चमी के एकवचन के प्रत्यय के स्थान मे हिंतो और बहुवचन के प्रत्यय के स्थान में हिंतो और सुंतो इन स्वतन्त्र शब्दों का भी प्रयोग होता है, यथा—जिनात् = जिणा हिंतो, जिनेभ्य = जिणा हिन्तो, जिणे हिन्तो, जिणा सुंतो, जिणे सुंतो।
५ षष्ठी के एकवचन का प्रत्यय स्स होता है, यथा—जिणस्स, मुणिस्स, तरुस्स।
६ अस्मत् शब्द के प्रथमा के एकवचन के रूप म्मि, अम्मि, अम्हि, हं, अह और अहयं होता है।
७. अस्मत् शब्द के प्रथमा के बहुवचन के रूप अम्ह, अम्हे, अम्हो, मो, वयं और भे होता है।
८ अस्मत् शब्द के षष्ठी का बहुवचन णे, णो, मज्झ, अम्ह, अम्ह, अम्हे, अम्हो, अम्हाण, ममाण, महाण और मज्झाण होता है।
९ युष्मत् शब्द के षष्ठी का एकवचन तइ, तु, ते, तुम्ह, तुह, तुहं, तुव, तुम, तुमो, तुमाइ, दि, दे, इ, ए, तुब्भ, तुम्ह, तुज्झ उब्भ, उम्ह, उज्झ और उय्ह होता है।

लिङ्ग व्यत्यय

१. संस्कृत में जो शब्द केवल पुंलिंग है, उनमें से कईएक महाराष्ट्री में स्त्रीलिंग और नपुसक लिंग भी है, यथा—प्रश्न = पण्हो, पण्हा, गुणा = गुणा, गुणाइ, देवा = देवा, देवाणि।
२. अनेक जगह स्त्रीलिंग के स्थान मे पुंलिग होता है, यथा—शरत् = सरओ, प्रावृट् = पाउसो, विद्युता = विज्जुणा।
३ संस्कृत के अनेक क्लीबलिंग शब्दों का प्रयोग महाराष्ट्री में पुलिंग और स्त्रीलिंग में भी होता है, यथा—यश = जसो, जन्म = जम्मो, अक्षि = अच्छी, पृष्ठम् = पिट्ठो, चौर्यम् = चोरिआ।

आख्यात

१ ति और ते प्रत्ययों के त का लोप होता है, जैसे—हसति = हसइ, हसए, रमते = रमइ, रमए।
२ परस्मैपद और आत्मनेपद का विभाग नहीं है, महाराष्ट्री मे सभी धातु उभयपदी की तरह हैं।
३ भूतकाल के ह्यस्तन, अद्यतन और परोक्ष विभाग न होकर एक ही तरह के रूप होते हैं और भूतकाल मे आख्यात की जगह त-प्रययान्त कृदन्त का ही प्रयोग अधिक होता है।
४ भविष्यत्-काल के भो संस्कृत का तरह श्वस्तन और भविष्यत् ऐसे दो विभाग नहीं है।
५ भविष्यत्काल के प्रत्ययों के पहले हि होता है, यथा—हसिष्यति = हसिहिइ, करिष्यति, = करिहिइ।
६. वर्तमान काल के, भविष्यत्काल के और विधि-लिंग और आज्ञार्थक प्रत्ययों के स्थान मे ज्ज और ज्जा होता है, यथा—हससि, हसिष्यति, हसेत्, हसतु = हसेज्ज, हसेज्जा।
७ भाव और कर्म में ईअ और इज्ज प्रत्यय होते हैं, यथा—हस्यते = हसीअइ, हसिज्जइ।

कृदन्त

१. शीलाद्यर्थक तृ-प्रत्यय के स्थान में इर होता है, यथा—गन्तृ = गमिर, नमनशील = णमिर।
२ त्वा-प्रत्यय के स्थान में तुम्, अ, तूण, तुआण और त्ता होता है, जैसे—पठित्वा = पढिउ, पढिअ, पढिऊण, पढिउआण, पढित्ता।

तद्धित

१. त्व-प्रत्यय के स्थान में त्त और त्तण होता है, यथा—देवत्व = देवत्त, देवत्तण।

(१०) अपभ्रंश

महर्षि पतञ्जलि ने अपने महाभाष्य मे लिखा है कि "भूयासोऽपशब्दा श्रल्पीयास शब्दा । एकैकस्य हि शब्दस्य वहवोऽपभ्रंशा, तद्यथा—गौरित्यस्य शब्दस्य गावी, गोणी, गोता, गोपोतलिका इत्येवमादयोऽपभ्रंशा" अर्थात् अपशब्द बहुत और शब्द (शुद्ध) थोडे हैं, क्योंकि एक एक शब्द के बहुत अपभ्रंश हैं, जैसे 'गौ' इस शब्द के गावी, गोणी, गोता, गोपोतलिका इत्यादि अपभ्रंश हैं।

'अपभ्रंश' शब्द का सामान्य और विशेष अर्थ

यहाँ पर 'अपभ्रंश' शब्द अपशब्द के अर्थ में ही व्यवहृत है और अपशब्द का अर्थ भी 'संस्कृत-व्याकरण से असिद्ध शब्द' है, यह स्पष्ट है। उक्त उदाहरणों में 'गावी' और 'गोणी' ये दो शब्दों का प्रयोग प्राचीन[1] जैन-सूत्र-ग्रन्थों में पाया जाता है और चंड[2] तथा आचार्य[3] हेमचन्द्र आदि प्राकृत-वैयाकरणों ने भी ये दो शब्द अपने-अपने प्राकृत-व्याकरणों में लक्षण-द्वारा सिद्ध किये हैं। दण्डी ने अपने काव्यादर्श में पहले प्राकृत और अपभ्रंश का अलग-अलग निर्देश करते हुए काव्य में व्यवहृत आभीर-प्रभृति की भाषा को अपभ्रंश कही हैं और बाद मे यह लिखा है कि 'शास्त्र मे संस्कृत भिन्न सभी भाषाएँ अपभ्रंश कही गई हैं'[4]। यहाँ पर दण्डी ने शास्त्र-शब्द का प्रयोग महाभाष्य-प्रभृति व्याकरण के अर्थ में ही किया है। पतञ्जलि-प्रभृति संस्कृत-वैयाकरणों के मत में संस्कृत-भिन्न सभी प्राकृत-भाषाएँ अपभ्रंश के अन्तर्गत हैं, यह ऊपर के उनके लेख से स्पष्ट है। परन्तु प्राकृत-वैयाकरणों के मत में अपभ्रंश भाषा प्राकृत का ही एक अवान्तर भेद है। काव्यालंकार की टीका मे नमिसाधु ने लिखा है कि "प्राकृतमेवापभ्रंश" (२, १२) अर्थात् अपभ्रंश भी शौरसेनी, मागधी आदि की तरह एक प्रकार का प्राकृत ही है। उक्त क्रमिक उल्लेखों से यह स्पष्ट है कि पतञ्जलि के समय मे जिस अपभ्रंश शब्द का 'संस्कृत-व्याकरण-असिद्ध (कोई भी प्राकृत)' इस सामान्य अर्थ में प्रयोग होता था उसने आगे जाकर क्रमश 'प्राकृत का एक भेद' इस विशेष अर्थ को धारण किया है। हमने भी यहाँ पर अपभ्रंश शब्द का इस विशेष अर्थ में ही व्यवहार किया है।

निदर्शन

अपभ्रंश भाषा के निदर्शन विक्रमोर्वशी, धर्माभ्युदय आदि नाटक-ग्रन्थों में, हरिवंशपुराण, पउमचरिअ (स्वयंभूदेवकृत) भविसयत्तकहा, संजममंजरी, महापुराण, यशोधरचरित, नागकुमारचरित, कथाकोश, पार्श्वपुराण, सुदर्शनचरित्र, करकंडुचरित, जयतिहुअणस्तोत्र, विलासवईकहा, सणकुमारचरिअ, सुपासनाहचरिअ, कुमारपालचरित, कुमारपाल-प्रतिबोध, उपदेशतरंगिणी प्रभृति काव्यग्रन्थों मे, प्राकृतलक्षण, सिद्धहेमचन्द्रव्याकरण (अष्टम अध्याय), संक्षिप्तसार, षड्भाषाचन्द्रिका, प्राकृतसर्वस्व वगैरह व्याकरणों में और प्राकृतपिङ्गल नामक छन्द-ग्रन्थ मे पाये जाते हैं।

प्रकृति और समय

डॉ. हॉर्नेलि के मत में जिस तरह आर्य लोगों की कथ्य भाषाएँ अनार्य लोगों के मुख से उच्चारित होने के कारण जिस विकृत रूप को धारण कर पायी थीं वह पैशाची भाषा है और वह कोई भी प्रादेशिक भाषा नहीं है, उस तरह आर्यों की कथ्य भाषाएँ भारत के आदिम-निवासी अनार्य लोगों की भिन्न-भिन्न भाषाओं के प्रभाव से जिन रूपान्तरों को प्राप्त हुई थीं वे ही भिन्न-भिन्न अपभ्रंश भाषाएँ हैं और ये महाराष्ट्री की अपेक्षा अधिक प्राचीन हैं। डॉ हॉर्नेलि के इस मत का सर ग्रियर्सन-प्रभृति आधुनिक भाषातत्त्वज्ञ स्वीकार नहीं करते हैं। सर ग्रियर्सन के मत मे भिन्न-भिन्न प्राकृत भाषाएँ साहित्य और व्याकरण मे नियन्त्रित होकर जन-साधारण में अप्रचलित होने के कारण जिन नूतन कथ्य भाषाओं की उत्पत्ति हुई थी वे ही अपभ्रंश हैं। ये अपभ्रंश-भाषाएँ खिस्तीय पञ्चम शताब्दी के बहुत काल पूर्व से ही कथ्य भाषाओं के रूप मे व्यवहृत होती थीं, क्योंकि चण्ड के प्राकृत-व्याकरण में और कालिदास की विक्रमोर्वशी मे इसके निदर्शन पाये जाने के कारण यह निश्चित है कि खिस्तीय पञ्चम शताब्दी के पहले से ही ये साहित्य मे स्थान पाने लगी थीं। ये अपभ्रंश भाषाएँ प्राय दशम शताब्दी पर्यन्त साहित्य की भाषाएँ थीं। इसके बाद फिर जन-साधारण में अप्रचलित होने से जिन नूतन कथ्य भाषाओं की उत्पत्ति हुई वे ही हिन्दी, बंगला, गुजराती वगैरह आधुनिक

---

१ 'खीरीणियाओ गावीओ", "गोण वियाल" (आचा २, ४, ५)।
"णगरगावीओ" (विपा १, २ – पत्र २६)।
"गोणीण संगेल्लं" (व्यवहारसूत्र, उ० ४)।

२. "गोर्व्वावी" (प्राकृतलक्षण २, १६)। ३. "गोणादय" (हे० प्रा० २, १७४)।

४. "आभीरादिगिर काव्येष्वपभ्रंश इति स्मृता ।
शास्त्रे तु संस्कृतादन्यदपभ्रंशतयोदितम्" (१, ३६)।

आर्य कथ्य भाषाएँ हैं। इनका उत्पत्ति-समय ख्रिस्त की नववीं या दसवीं शताब्दी है। सुतरां, अपभ्रंश भाषाएँ ख्रिस्त की पञ्चम शताब्दी के पूर्व से लेकर नववीं या दशवीं शताब्दी पर्यन्त साहित्य की भाषाओं के रूप में प्रचलित थीं। इन अपभ्रंश भाषाओं की प्रकृति वे विभिन्न प्राकृत-भाषाएँ हैं, जो भारत के विभिन्न प्रदेशों में इन अपभ्रंशों की उत्पत्ति के पूर्वकाल मे प्रचलित थीं।

भेद अपभ्रंश के बहुत भेद हैं, प्राकृतचन्द्रिका में इसके ये सताईस भेद बताये गए हैं।

"व्राचडो लाटवैदर्भावुपनागरनागरौ। बार्बरावन्त्यपाञ्चालटाक्कमालवकैकयाः ॥
गौडोढ्रदैवपाश्चात्यपाण्ड्यकौन्तलसैंहलाः। कालिंगयप्राच्यकार्णाटकाञ्च्यद्राविडगौर्जराः ॥
आभीरो मध्यदेशीयः सूक्ष्मभेदव्यवस्थिताः। सप्तविंशत्यपभ्रंशा वैतालादिप्रभेदतः[1] ॥

मार्कण्डेय ने अपने प्राकृतसर्वस्व मे प्राकृतचन्द्रिका से सताईस अपभ्रंशों के जो लक्षण और उदाहरण उद्धृत किए हैं[2]। वे इतने अपर्याप्त और अस्पष्ट हैं कि खुद मार्कंडेय ने भी इनको सूक्ष्म कह कर नगण्य बताये हैं और इनका पृथग्-पृथग् लक्षण-निर्देश न कर उक्त समस्त अपभ्रंशों का नागर, व्राचड और उपनागर इन तीन प्रधान भेदों मे ही अन्तर्भाव माना है[3]। परन्तु यह बात मानने योग्य नहीं है, क्योंकि जब यह सिद्ध है कि जिन भाषाओं का उत्पत्ति स्थान भिन्न-भिन्न प्रदेश है और जिनकी प्रकृति भी भिन्न-भिन्न प्रदेश की भिन्न-भिन्न प्राकृत भाषाएँ हैं तब वे अपभ्रंश भाषाएँ भी भिन्न-भिन्न ही हो सकती हैं और उन सब का समावेश एक दूसरे में नहीं किया जा सकता। वास्तव मे बात यह है कि वे सभी अपभ्रंश भिन्न भिन्न होने पर भी साहित्य में निबद्ध न होने के कारण उन सब के निदर्शन ही उपलब्ध नहीं हो सकते थे। इसीसे प्राकृतचन्द्रिकाकार न उनके स्पष्ट लक्षण ही कर पाये हैं और न तो उदाहरण ही अधिक दे सके हैं। यही करण है कि मार्कण्डेय ने भी इन भेदों को सूक्ष्म कहकर टाल दिये हैं। जिन अपभ्रंश भाषाओं के साहित्य-निबद्ध होने से निदर्शन पाये जाते हैं उनके लक्षण और उदाहरण आचार्य हेमचन्द्र ने केवल अपभ्रंश के सामान्य नाम से और मार्कण्डेय ने अपभ्रंश के तीन विशेष नामों से दिये हैं। आचार्य हेमचन्द्र ने 'अपभ्रंश' इस सामान्य नाम से और मार्कण्डेय ने 'नागरापभ्रंश' इस विशेष नाम से जो लक्षण और उदाहरण दिये हैं वे राजस्थानी-अपभ्रंश या राजपूताना तथा गुजरात प्रदेश के अपभ्रंश से ही संबन्ध रखते हैं। व्राचडापभ्रंश के नाम से सिन्धप्रदेश के अपभ्रंश के लक्षण और उदाहरण मार्कण्डेय ने अपने व्याकरण मे दिये हैं, और उपनागर-अपभ्रंश का कोई लक्षण न देकर केवल नागर और व्राचड के मिश्रण को 'उपनागर-अपभ्रंश' कहा है। इसके सिवा सौरसेनी-अपभ्रंश के निदर्शन मध्यदेश के अपभ्रंश मे पाये जाते हैं। अन्य अन्य प्रदेशों के अथवा महाराष्ट्री, अर्धमागधी, मागधी और पैशाची भाषाओं के जो अपभ्रंश थे उनका कोई साहित्य उपलब्ध न होने से कोई निदर्शन भी नहीं पाये जाते हैं।

भिन्न-भिन्न अपभ्रंश भाषा का उत्पत्ति-स्थान भी भारतवर्ष का भिन्न भिन्न प्रदेश है। रुद्रट ने और वाग्भट ने

उत्पत्ति-स्थान अपने अपने अलङ्कार-ग्रन्थ मे यह बात संक्षेप मे अथच स्पष्ट रूप मे इस तरह कही है —

"षष्ठोऽत्र भूरिभेदो देशविशेषादपभ्रंशः." (काव्यालङ्कार २, १२)।
"अपभ्रंशस्तु यच्छुद्धं तत्तद्देशेषु भाषितम्" (वाग्भटालङ्कार २, ३)।

ख्रिस्त की पञ्चम शताब्दी के पूर्व से लेकर दशम शताब्दी पर्यन्त भारत के भिन्न-भिन्न प्रदेश मे कथ्य भाषाओं के

आधुनिक आर्य कथ्य भाषाओं की प्रकृति रूप मे प्रचलित जिस जिस अपभ्रंश भाषा से भिन्न-भिन्न प्रदेश की जो जो आधुनिक आर्य कथ्य भाषा (Modern Vernacular) उत्पन्न हुई है उसका विवरण यों है :—

---

१. वंगीयसाहित्यपरिषत्-पत्रिका, १३१७।

२. "टाक्कं टक्कभाषानागरोपनागरादिभ्योऽवधारणीयम्। तुबहुला मालवी। वाडीबहुला पाञ्चाली। उल्लप्राया वैदर्भी। संबोधनाढ्या लाटी। ईकारोकारबहुला औढ्री। सवीप्सा कैकेयी। समासाढ्या गौडी। डकारबहुला कौन्तली। एकारिणी च पाण्ड्या। युक्ताढ्या सैंहली। हियुक्ता कालिंगी। प्राच्या तद्देशीयभाषाढ्या। ज(भ)ट्टादिबहुलाऽऽभीरी वर्णविपर्ययात् कार्णाटी। मध्यदेशीया तद्देशीयाढ्या। संस्कृताढ्या च गौर्जरी। चकारात् पूर्वोक्तटक्कभाषाग्रहणम्। रत(ल)हभा व्यत्ययेन पाश्चात्या। रेफव्यत्येन द्राविडी। ढकारबहुला वैतालिकी। एओबहुला काञ्ची। शेषा देशभाषाविभेदात्।"

३. 'नागरो व्राचडश्चोपनागरश्चेति ते त्रयः। अपभ्रंशाः, परे सूक्ष्मभेदत्वान्न पृथङ् मताः" (प्रा० स० पृष्ठ ३)। "अन्येषामपभ्रंशानामेष्वेवान्तर्भावः." (प्रा० स० पृष्ठ १२२)।

महाराष्ट्री-अपभ्रंश से मराठी और कोंकणी भाषा।
मागधी-अपभ्रंश की पूर्व शाखा से बंगला, उड़िया और आसामी भाषा।
मागधी-अपभ्रंश की विहारी शाखा से मैथिली, मगही और भोजपुरिया।
अर्धमागधी-अपभ्रंश से पूर्वीय हिन्दी भाषाएँ अर्थात् अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी।
सौरसेनी-अपभ्रंश से बुन्देली, कन्नौजी, ब्रजभाषा, बाँगरू, हिन्दी या उर्दू ये पाश्चात्य हिन्दी भाषा।
नागर-अपभ्रंश से राजस्थानी, मालवी, मेवाड़ी, जयपुरी, मारवाड़ी तथा गुजराती भाषा।
पालि से सिंहली और मालदीवन।
टाकी अथवा ढाकी से लहण्डी या पश्चिमीय पंजाबी।
टाकी-अपभ्रंश (सौरसेनी के प्रभाव-युक्त) से पूर्वीय पंजाबी।
व्राचड-अपभ्रंश से सिन्धी भाषा।
पैशाची-अपभ्रंश से काश्मीरी भाषा।

लक्षण नागर-अपभ्रंश के प्रधान लक्षण ये हैं —

वर्ण-परिवर्तन

१. भिन्न-भिन्न स्वरों के स्थान में भिन्न-भिन्न स्वर होते हैं, यथा—कृत्य = कच्च, काच्च, वचन = वेण, वीण, बाहु = बाह, बाहा, बाहु, पृष्ठ = पट्ठि, पिट्ठि, पुट्ठि, तृण = तण, तिण, तृण, सुकृत = सुकिद, सुकृद, लेखा = लिह, लीह, लेह।

२. स्वरों के मध्यवर्ती असंयुक्त क, ख, त, थ, प और फ के स्थान में प्राय क्रमश ग, घ, द, ध, व और भ होता है, यथा— विच्छेदकर = विच्छोहगर, सुख = सुघ, कथित = कधिद, शपथ = शवध, सफल = सभल।

३. अनादि और असंयुक्त म के स्थान में वैकल्पिक सानुनासिक व होता है, यथा—कमल = कवँल, कमल, भ्रमर = भवँर, भमर।

४. संयोग में परवर्ती र का विकल्प से लोप होता है, यथा—प्रिय = पिय, प्रिय, चन्द्र = चन्द, चन्द्र।

५. कहीं-कहीं संयोग के परवर्ती य का विकल्प से र होता है, जैसे—व्यास = व्रास, वास, व्याकरण = व्रागरण, वागरण।

६ महाराष्ट्री में जहाँ म्ह होता है वहाँ अपभ्रंश में म्भ और म्ह दोनों होते हैं, यथा— ग्रीष्म = गिम्भ, गिम्ह, श्लेष्म = सिम्भ, सिम्ह।

नाम-विभक्ति

१ विभक्ति के प्रसंग में ह्रस्व स्वर का दीर्घ और दीर्घ का ह्रस्व प्राय होता है, यथा—श्यामल = सामल, खड्गा = खग्ग, दृष्टि = दिट्ठि, पृथ्वी = पृत्ति।

२. साधारणत सातों विभक्ति के जो प्रत्यय है वे नीचे दिये जाते है। लिंग-भेद में और शब्द-भेद में अनेक विशेष प्रत्यय भी हैं, जो विस्तार-भय से यहाँ नहीं दिये गए हैं।

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	उ, हो	०
द्वितीया	"	०
तृतीया	एं	हिं
चतुर्थी	सु, हो, स्सु	हं, ०
पञ्चमी	हे, हु	हुं
षष्ठी	सु, हो, स्सु	हं, ०
सप्तमी	इ, हि	हिं

आख्यात विभक्ति

		एकवचन	बहुवचन
१.	१ पु०	उं	हुं
	२ पु०	हि	हु
	३ पु०	इ, ए	हिं

२. मध्यम पुरुष के एकवचन मे आज्ञार्थ में इ, उ और ए होते हैं, यथा—कुरु = करि, करु, करे ।
३. भविष्यत्काल मे प्रत्यय के पूर्व मे स आगम होता है, यथा—भविष्यति = होसइ ।

कृदन्त

१. तव्य-प्रत्यय के स्थान मे इएव्वउ, एव्वउ और एवा होता है, यथा—कर्तव्य = करिएव्वउं, करेव्वउ, करेवा ।
२ त्वा के स्थान में इ, इउ इवि, अवि, एप्पि, एप्पिणु, एवि, एविणु, होते हैं, यथा—कृत्वा = करि, करिउ, करिवि, करवि, करेप्पि, करेप्पिणु करेवि, करेविणु ।
३. तुम्-प्रत्यय की जगह एवं अण, अणह, अणहिं एप्पि, एप्पिणु, एवि, एविणु होते हैं, यथा—कर्तुम् = करेव, करण, करणह कर-णहिं, करेप्पि, करेप्पिणु, करेवि, करेविणु ।
४. शीलाद्यर्थक तृ-प्रत्यय के स्थान मे अणअ होता है, जैसे—कर्तृ = करणअ, मारयितृ = मारणअ ।

तद्धित

१ त्व और ता के स्थान मे प्पण होता है, यथा—देवत्व = देवप्पण, महत्त्व = वड्डप्पण ।

हम पहले यह कह आये हैं कि वैदिक और लौकिक सस्कृत के शब्दों के साथ तुलना करने पर जिस प्राकृत भाषा मे वर्ण-लोप-प्रभृति परिवर्तन जितना अधिक प्रतीत हो, वह उतनी ही परवर्ती काल मे उत्पन्न मानी जानी चाहिए। इस नियम के अनुसार, हम देखते हैं कि महाराष्ट्री प्राकृत मे व्यञ्जनों का लोप सर्वापेक्षा अधिक है, इससे वह अन्यान्य प्राकृत-भाषाओं के पीछे उत्पन्न हुई है, ऐसा अनुमान किया जाता है। परन्तु अपभ्रंश मे उक्त नियम का व्यत्यय देखने मे आता है, क्योंकि भिन्न-भिन्न प्रदेशों की अपभ्रंश भाषाएँ यद्यपि महाराष्ट्रीके बाद ही उत्पन्न हुई है तथापि महाराष्ट्री में जो व्यञ्जन-वर्ण-लोप देखा जाता है, अपभ्रंश में उसकी अपेक्षा अधिक नही, बल्कि कम ही वर्ण-लोप पाया जाता है और ऋ स्वर तथा संयुक्त रकार भी विद्यमान है। इस पर से यह अनुमान करना असगत नहीं है कि वर्ण-लोप की गति ने महाराष्ट्री प्राकृत मे अपनी चरम सीमा को पहुँच कर उसको (महाराष्ट्री को) अस्थि-हीन-माँस पिण्ड की तरह स्वर-बहुल आकार मे परिणत कर दिया। अपभ्रंश मे उसीकी प्रतिक्रिया शुरू हुई, और प्राचीन स्वर एवं व्यञ्जनों को फिर स्थान देकर भाषा को भिन्न आदर्श में गठित करने की चेष्टा हुई। उस चेष्टा का ही यह फल है कि पिछले समय मे सस्कृत-भाषा का प्रभाव फिर प्रतिष्ठित होकर आधुनिक आर्य कथ्य भाषाएँ उत्पन्न हुई हैं।

अपभ्रंशो का भिन्न आदर्श मे गठन

प्राकृत पर संकृत का प्रभाव

जैन और बौद्धों ने सस्कृत भाषा का परित्याग कर उस समय की कथ्य भाषा में धर्मोपदेश को लिपिबद्ध करने की प्रथा प्रचलित की थी। इससे जो दो नयी साहित्य-भाषाओं का जन्म हुआ था, वे जैन सूत्रों की अर्धमागधी और बौद्ध-धर्म-ग्रन्थ की पालि भाषा है। परन्तु ये दो साहित्य-भाषाएँ और अन्यान्य समस्त प्राकृत-भाषाएँ सस्कृत के प्रभाव को उल्लघन नहीं कर सकी हैं। इस बात का एक प्रमाण तो यह है कि इन समस्त प्राकृत-भाषाओं मे सस्कृत-भाषा के अनेक शब्द अविकल रूप मे गृहीत हुए हैं। ये शब्द तत्सम कहे जाते हैं। यद्यपि इन तत्सम शब्दों ने प्रथम स्तर की प्राकृत-भाषाओं से ही संस्कृत मे स्थान और रक्षण पाया था, तो भी यह स्वीकार करना ही होगा कि ये सब शब्द परवर्ती काल की प्राकृत-भाषाओं मे जो अपरिवर्तित रूप मे व्यवहृत होते थे वह सस्कृत-साहित्य का ही प्रभाव था।

इसके अतिरिक्त, संस्कृत के ही प्रभाव से बौद्धों मे एक मिश्र-भाषा उत्पन्न हुई थी। महायान-बौद्धों के महावैपुल्य-सूत्र-नामक कतिपय सूत्र ग्रन्थ हैं। ललितविस्तर, सद्धर्म-पुण्डरीक, चन्द्रप्रदीपसूत्र प्रभृति इसके अन्तर्गत हैं। इन ग्रथों की भाषा मे अधिकांश शब्द तो सस्कृत के हैं ही, अनेक प्राकृत शब्दों के आगे भी सस्कृत की विभक्ति लगा-कर उनको भी सस्कृत के अनुरूप किये गए हैं। पाश्चात्य विद्वानों ने इस भाषा को 'गाथा' नाम दिया है। परन्तु यहाँ पर यह कहना आवश्यक है कि इसका यह 'गाथा' नाम असगत है, क्योंकि यह सस्कृत-मिश्रित-प्राकृत का प्रयोग उक्त ग्रथों के केवल पद्यांशों मे ही नहीं, बल्कि गद्यांश मे भी देखा जाता है। इससे इन ग्रंथों की भाषा को 'गाथा' न कहकर 'प्राकृत-मिश्र-सस्कृत' या 'सस्कृत मिश्र-प्राकृत' अथवा सक्षेप मे मिश्र-भाषा' ही कहना उचित है।

गाथा-भाषा

डॉ. बर्नेफ और डॉ राजेन्द्र लाल मित्र का मत है कि, 'सस्कृत भाषा, क्रमश परिवर्तित होती हुई प्रथम गाथा भाषा के रूप मे और बाद के पालि-भाषा के आकार मे परिणत हुई है। इस तरह गाथा भाषा संस्कृत और पालि की मध्यवर्ती

होने के कारण इन दोनों के (संस्कृत और पालि के) लक्षणों से आक्रान्त हैं।' यह सिद्धान्त सर्वथा भ्रान्त है, क्योंकि हम यह पहले ही अच्छी तरह प्रमाणित कर चुके हैं कि संस्कृत-भाषा क्रमश परिवर्तित होकर पालि भाषा मे परिणत नहीं हुई है, किन्तु पालि-भाषा वैदिक-युग की एक प्रादेशिक भाषा से ही उत्पन्न हुई है। और, गाथा-भाषा पालि-भाषा के पहले प्रचलित न थी, क्योंकि गाथा-भाषा के समस्त ग्रन्थों का रचना-काल ख्रिस्त-पूर्व दो सौ वर्षों से लेकर ख्रिस्त की तृतीय शताब्दी पर्यन्त का है, इससे गाथा-भाषा बहुत तो पालि भाषा की समकालीन हो सकती है, न कि पालि-भाषा की पूर्वावस्था। यह भाषा संस्कृत के प्रभाव को कायम रखकर विभिन्न प्राकृत-भाषाओं के मिश्रण से बनी है, इसमे सन्देह नहीं है। यही कारण है कि इसके शब्दों को प्रस्तुत कोष मे स्थान नहीं दिया गया है।

गाथा-भाषा का थोड़ा नमूना ललितविस्तर से यहाँ उद्धृत किया जाता है —

"अध्रुव त्रिभवं शरदभ्रनिभ, नटरङ्गसमा जगि जन्मि च्युति।
गिरिनद्यमम लघुशीघ्रजव, व्रजतायु जगे यथ विद्यु नभे ॥ १ ॥'
"उदकचन्द्रसमा इमि कामगुणा, प्रतिविम्ब इवा गिरिघोष यथा।
प्रतिभाससमा नटरङ्गसमास्तथ स्वप्नसमा विदितार्यजनै. ॥ १ ॥" (पृष्ठ २०४, २०६)।

बुद्धदेव और उसके सारथी की आपस मे बातचीत —

"एषो हि देव पुरुषो जरयाभिभूत., क्षीणेन्द्रिय सुदु खितो बलवीर्यहीन.।
बन्धुजनेन परिभूत अनाथभूत, कार्यासमर्थं अपविद्ध वनेव दारु॥
कुलधर्म एष अयमस्य हि त्व भणाहि, अथवापि सर्वजगतोऽस्य इयं ह्यवस्था।
शीघ्रं भणाहि वचनं यथभूतमेतत्, श्रुत्वा तथार्थमिह योनि सचिन्तयिष्ये॥
नैतस्य देव कुलधर्म न राष्ट्रधर्म, सर्वे जगस्य जर यौवन धर्षयाति।
तुम्यपि मातृपितृबान्धवज्ञातिसंघो, जरया अमुक्त नहि अन्यगतिर्जनस्य॥
धिक् सारथे अबुधबालजनस्य बुद्धिर्यद् यौवनेन मदमत्त जरा न पश्ये।
आवर्तयस्विह रथं पुनरह प्रवेक्ष्ये, किं मह्य क्रीडरतिभिर्जरया श्रितस्य॥"

संस्कृत पर प्राकृत का प्रभाव

पहले जो यह कहा जा चुका है कि वैदिक काल के मध्यदेश-प्रचलित प्राकृत से ही वैदिक संस्कृत उत्पन्न हुआ है और वह साहित्य और व्याकरण के द्वारा क्रमश मार्जित और नियन्त्रित होकर अन्त मे लौकिक संस्कृत मे परिणत हुआ है; एव प्राकृत के अन्तर्गत समस्त तत्सम शब्द संस्कृत से नहीं, परन्तु प्रथम स्तर के प्राकृत से ही संस्कृत मे और द्वितीय स्तर के प्राकृत में आये हैं, प्राकृत के अन्तर्गत तद्भव शब्द भी संस्कृत से प्राकृत में गृहीत न होकर प्रथम स्तर के प्राकृत से ही क्रमश परिवर्तित होकर परवर्ती काल के प्राकृत मे स्थान पाये हैं और संस्कृत व्याकरण-द्वारा नियन्त्रित होने से वे शब्द संस्कृत मे अपरिवर्तित रूप मे ही रह गये हैं, इसी तरह प्राकृत के अधिकाश देशी-शब्द भी वैदिक काल के मध्यदेश-भिन्न अन्यान्य प्रदेशों के आर्य-उपनिवेशों की प्राकृत-भाषाओं से ही बाद की प्राकृत-भाषाओं में आये हैं; इससे उन्होंने (देशी शब्दों ने) मध्यदेश के प्राकृत से उत्पन्न वैदिक और लौकिक संस्कृत में कोई स्थान नहीं पाया है। इस पर से यह सहज ही समझा जा सकता है कि प्राकृत ही संस्कृत भाषा का मूल है।

अब इस जगह हम यह बताना चाहते हैं कि प्राकृत से न केवल वैदिक और लौकिक संस्कृत भाषाएँ उत्पन्न ही हुई हैं, बल्कि संस्कृत ने मृत होकर साहित्य-भाषा मे परिणत होने पर भी अपनी अग-पुष्टि के लिए प्राकृत से ही अनेक शब्दों का संग्रह किया है। ऋग्वेद आदि मे प्रयुक्त वंक (वक्र), वहू (वधू), मेह (मेघ), पुराण (पुरातन), तितउ (चालनी), उच्छेक (उत्सेक), प्रभृति शब्द और लौकिक संस्कृत में प्रचलित तितउ (चालनी), आवुत्त (भगिनीपति), खुर (क्षुर), गोखुर (गोक्षुर), गुग्गुलु (गुल्गुलु), छुरिका (क्षुरिका), अच्छ (ऋक्ष), कच्छ (कक्ष), पियाल (प्रियाल), गड्ड (गरुड), चन्दिर (चन्द्र), इन्दिर (इन्द्र), शिथिल (श्लथ), मरन्द (मकरन्द), किसल (किसलय), हाला (सुराविशेष), हेवाक (व्यसन), दाढा (दंष्ट्रा), खिडक्किका (लघुद्वार, भाषा में खिडकी), जारुज (जरायुज), पुराण (पुरातन) वगैरह शब्द प्राकृत

से ही अविकल रूप मे गृहीत हुए हैं और मारिप (मार्ष), जहिष्यमि (हास्यमि), ब्रूमि (ब्रवीमि), निकृन्तन (निकर्तन), लटभ (सुन्दर), प्रभृति प्राकृत के ही मूल शब्द मार्जित कर संस्कृत मे लिए गए हैं।

प्राकृत-भाषाओं का उत्कर्ष

कोई भी कथ्य भाषा क्यों न हो, वह सर्वदा ही परिवर्तन-शील होती है। साहित्य और व्याकरण उसको नियम के बन्धन मे जकड़कर गति-हीन और अपरिवर्तनीय करते हैं। उसका फल यह होता है कि साहित्य की भाषा क्रमश. कथ्य भाषा से भिन्न हो जाती है और जन-साधारण में अप्रचलित मृत-भाषा में परिणत होती है। साहित्य की हरकोई भाषा एक समय की कथ्य भाषा से ही उत्पन्न होती है और वह जब मृत-भाषा मे परिणत होती है तब कथ्य भाषा से फिर एक नयी साहित्य की भाषा की सृष्टि होती है। इस तरह एक समय की कथ्य भाषा से ही वैदिक और लौकिक संस्कृत उत्पन्न हुई थी और वह साधारण के पक्ष में दुर्बोध होने पर अर्धमागधी, पालि आदि प्राकृत भाषाओं ने साहित्य मे स्थान पाया था। ये सब प्राकृत-भाषाएँ भी समय पाकर जन-साधारण में दुर्बोध हो जाने पर संस्कृत की तरह मृत-भाषा मे परिणत हो गईं और भिन्न-भिन्न प्रदेश की अपभ्रंश-भाषाएँ साहित्य-भाषाओं के रूप मे व्यवहृत होने लगीं। अपभ्रंश-भाषाएँ भी जब दुर्बोध होकर मृत-भाषाओं मे परिणत हो चली तब हिन्दी, बंगला, गुजराती, मराठी प्रभृति आधुनिक आर्य कथ्य भाषाएँ साहित्य की भाषाओं के रूप मे गृहीत हुई हैं। उक्त समस्त कथ्य भाषाएँ उस उस युग की साहित्य की मृत-भाषाओं की तुलना मे अवश्य ऐसे कतिपय उत्कर्षों से विशिष्ट होनी चाहिए जिनकी बदौलत ही ये उस-उस समय की मृत-भाषाओं को साहित्य के सिंहासन से च्युत कर उस सिंहासन को अपने अधिकार मे कर पायी थीं। अब यहाँ हमें यह जानना जरूरी है कि ये उत्कर्ष कौन थे ?

हरकोई भाषा का सर्व-प्रथम उद्देश्य होता है अर्थ-प्रकाश। इसलिए जिस भाषा के द्वारा जितने स्पष्ट रूप से और जितने अल्प प्रयास से अर्थ-प्रकाश किया जाय वह उतना ही उत्कृष्ट भाषा मानी जाती है। इन दो कारणों के वश होकर ही भाषा का निरन्तर परिवर्तन साबित होता है और भिन्न-भिन्न काल में भिन्न-भिन्न कथ्य-भाषाओं से नयी-नयी साहित्य भाषाओं की उत्पत्ति होती है। वैदिक संस्कृत क्रमश लुप्त होकर लौकिक संस्कृत की उत्पत्ति उक्त दो कारणों से ही हुई थी। वैदिक शब्द-समूह अप्रचलित होने पर उसके अनावश्यक प्रकृति और प्रत्ययों को बाद देकर जो सहज ही समझ मे आ सके वैसी प्रकृति और प्रत्ययों का संग्रह कर वैदिक भाषा से लौकिक संस्कृत की उत्पत्ति हुई थी। संस्कृत-भाषा के प्रकृति-प्रत्यय काल-क्रम से अप्रचलित होकर जब दु:ख-बोध्य हो उठे तब उस समय की कथ्य भाषाओं से ही स्पष्टार्थक, सुखोच्चारण-योग्य, मधुर और कोमल प्रकृति-प्रत्ययों का संग्रह कर संस्कृत के अनावश्यक, दुर्बोध, कष्टोच्चारणीय, कठोर और कर्कश प्रकृति-प्रत्यय-सन्धि-समासों का वर्जन कर अर्धमागधी, पाली और अन्यान्य प्राकृत-भाषाएँ साहित्य-भाषाओं के रूप में व्यवहृत होने लगीं। यदि इन सब नूतन साहित्य-भाषाओं मे संस्कृत की अपेक्षा अर्थ-प्रकाश की अधिक शक्ति, अल्प आयास से और सुख से उच्चारण-योग्यता प्रभृति गुण न होते तो ये कभी भी संस्कृत जैसी समृद्ध भाषा को साहित्य के सिंहासन से च्युत करने में समर्थ न होतीं। काल-क्रम से ये सब प्राकृत-साहित्य-भाषाएँ भी जब व्याकरण-द्वारा नियन्त्रित होकर अप्रचलित और जन-साधारण मे दुर्बोध हो चलीं तब उस समय प्रचलित प्रादेशिक अपभ्रंश भाषाओं ने इनको हटाकर साहित्य-भाषाओं का स्थान अपने अधिकार मे किया। यहाँ पर यह प्रश्न हो सकता है कि साहित्य की प्राकृत-भाषाओं की अपेक्षा इन अपभ्रंश-भाषाओं मे वह कौन-सा गुण था जिससे ये अपने पहले की प्राकृत साहित्य-भाषाओं को परास्त कर उनके स्थान को अपने अधिकार में कर सकीं ? इसका उत्तर यह है कि कोई भी गुण चरम सीमा मे पहुँच जाने पर फिर वह गुण ही नहीं रहने पाता, वह दोष में परिणत हो जाता है। संस्कृत की अपेक्षा प्राकृत-भाषाओं मे यह उत्कर्ष था कि इनमे संस्कृत के कर्कश और कष्टोच्चारणीय असंयुक्त और संयुक्त व्यञ्जन वर्णों के स्थान मे सब कोमल और सुखोच्चारणीय वर्ण व्यवहृत होते थे। किन्तु इस गुण की भी सीमा है, महाराष्ट्री-प्राकृत में यह गुण सीमा का अतिक्रम कर गया, यहाँतक कि संस्कृत के अनेक व्यञ्जनों का एकदम ही लोप कर उनके स्थान में स्वर-वर्णों की परम्परा-द्वारा समस्त शब्द गठित होने लगे। इससे इन शब्दों के उच्चारण सुख-साध्य होने के बदले अधिकतर कष्टसाध्य हुए, क्योंकि बीच बीच मे व्यञ्जन-वर्णों से व्यवहित न होकर केवल स्वर-परम्परा का उच्चारण करना कष्टकर होता है। इस तरह प्राकृत-भाषा महाराष्ट्री-प्राकृत में आकर जब इस चरम अवस्था में उपनीत हुई तबसे ही इसका पतन अनिवार्य हो उठा। इसकी प्रतिक्रिया-

स्वरूप अपभ्रंश-भाषाओं में नूतन व्यञ्जन वर्ण बैठा कर सुखोच्चारण-योग्यता करने की चेष्टा हुई। इसका फल यह हुआ कि प्रादेशिक अपभ्रंश-भाषाएँ साहित्य की भाषाओं के रूप मे उन्नीत हुईं। आधुनिक प्रादेशिक आर्य-भाषाएँ भी प्राकृत भाषाओं के इस दोष का पूर्ण संशोधन करने के लिए नूतन सस्कृत शब्दों को ग्रहण कर अपभ्रंशों के स्थान को अपने अधिकार मे करके नवीन साहित्य-भाषाओं के रूप में परिणत हुई। आधुनिक आर्य-भाषाओं मे पूर्व-वर्ती प्राकृतों और अपभ्रंशों की अपेक्षा उत्कर्ष यह है कि इन्होंने शब्दों के सम्बन्ध मे प्राकृत और सस्कृत को मिश्रित कर उभय के गुणों का एक सुन्दर सामञ्जस्य किया है। इनके तद्भव और देश्य शब्दों मे प्राकृत की कोमलता और मधुरता है और तत्सम शब्दों मे संस्कृत की ओजस्विता। आधुनिक आर्य-भाषाओं में सस्कृत और प्राकृत दोनो की अपेक्षा उत्कर्ष यह है कि ये सस्कृत और प्राकृतों के अनावश्यक लिंग, वचन और विभक्तियों के भेदों का वर्जन कर, उनके बदले भिन्न भिन्न स्वतन्त्र शब्दों के द्वारा लिंग, वचन और विभक्तियों के भेदों को प्रकाशित कर और सस्कृत तथा प्राकृतों के विभक्ति-बहुल स्वभाव का परित्याग कर विश्लेषण-शील-भाषा मे परिणत हुई हैं। इस तरह इन भाषाओ ने अल्प आयास से वक्ता के अर्थ को अधिकतर स्पष्ट रूप में प्रकाशित करने का मार्ग-प्रदर्शन किया है। उक्त गुणों के कारण ही आधुनिक आर्य-भाषाओं ने वैदिक, सस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश इन सब साहित्य-भाषाओं के स्थान पर अपना अधिकार जमाया है।

सस्कृत की अपेक्षा प्राकृत-भाषाओं मे जो उत्कर्ष—गुण ऊपर बताये हैं वे अनेक प्राचीन ग्रन्थकारों ने पहले ही प्रदर्शित किये हैं। उनके ग्रन्थों से, प्राकृत के उत्कर्ष के संबन्ध मे, कुछ वचन यहाँ पर उद्धृत किए जाते हैं —

[1]"अमिअं पाउअ-कव्वं पढिउं सोउं च जे ण आणंति।
कामस्स तत्त-तत्तिं कुणंति, ते कह ण लज्जंति ?॥ (हाल की गाथासप्तशती १, २)।

अर्थात् जो लोग अमृतोपम प्राकृत-काव्य को न तो पढ़ना जानते हैं और न सुनना जानते हैं अथच काम-तत्त्व की आलोचना करते हैं उनको शरम क्यों नहीं आती ?

[2]'उम्मिल्लइ लायण्णं पयय-च्छायाए सक्कय-वयाणं।
सक्कय सक्कारुक्करिसणेण पययस्सवि पहावो ॥' (वाक्पतिराज का गउडवहो ६५)।

सस्कृत शब्दों का लावण्य प्राकृत की छाया से ही व्यक्त होता है, सस्कृत-भाषा के उत्कृष्ट संस्कार मे भी प्राकृत का प्रभाव व्यक्त होता है।

[3]'णवमत्थ-दसणं संनिवेस-सिसिराओ बंध-रिद्धीओ।
अविरलमिणमो आभुवण-बंधमिह णवर पययम्मि ॥' (गउडवहो ७२)।

सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर आजतक प्रचुर परिमाण मे नूतन नूतन अर्थों का दर्शन और सुन्दर रचनावाली प्रबन्ध-सपत्ति कहीं भी है तो वह केवल प्राकृत में ही।

[4]'हरिस-विसेसो वियसावओ य मउलावओ य अच्छीण।
इह बहि-हुत्तो अंतो-मुहो य हिययस्स विप्फुरइ ॥' (गउडवहो ७४)।

प्राकृत-काव्य पढ़ने के समय हृदय के भीतर और बाहर एक ऐसा अभूत-पूर्व हर्ष होता है कि जिससे दोनों आँखें एक ही साथ विकसित और मुद्रित होती हैं।

[5]'परुसो सक्कअ-बंधो पाउअ बंधोवि होइ सुउमारो।
पुरिस-महिलाणं जेत्तिअमिहंतरं तेत्तिअमिमाणं ॥' (राजशेखर की कर्पूरमञ्जरी, अङ्क १)।

सस्कृत-भाषा कर्कश और प्राकृत भाषा सुकुमार है। पुरुष और महिला मे जितना अन्तर है, इन दो भाषाओं मे भी उतना ही प्रभेद है।

---

१ अमृत प्राकृत काव्य पठितु श्रोतु च ये न जानन्ति। कामस्यतत्त्वचिन्ता कुर्वन्ति, ते कथं न लज्जन्ते ?॥
२. उन्मीलति लावण्य प्राकृतच्छायया सस्कृतपदानाम्। सस्कृतसस्कारोत्कर्षणेन प्राकृतस्यापि प्रभाव ॥
३. नवामार्थदर्शन सनिवेशशिशिरा बन्धर्द्धय। अविरलमिदमाभुवनबन्धमिह केवल प्राकृते ॥
४ हर्षविशेषो विकासको मुकुलीकारकश्चाक्ष्णो। इह बहिर्मुखोऽन्तर्मुखश्च हृदयस्य विस्फुरति ॥
५. परुष सस्कृतबन्ध प्राकृतबन्धस्तु भवति सुकुमार। पुरुषमहिलयोर्यावदिहान्तर तावदनयो ॥

'गिर श्रव्या दिव्या प्रकृतिमधुरा प्राकृतगिर ।
सुभव्योऽपभ्रंश सरसरचनं भूतवचनम् ।' (राजशेखर का बालरामायण १, ११) ।

संस्कृत-भाषा सुनने योग्य है, प्राकृत भाषा स्वभाव-मधुर है, अपभ्रंश भाषा भव्य है और पैशाची-भाषा की रचना रस-पूर्ण है।

'[1]सक्कय-कव्वस्सत्थं जेण न याणंति मंद-बुद्धीया ।
सव्वाणवि सुह-बोहं तेणेम पायय रइय ।।
गुढत्थ-देसि-रहियं सुललिय-वन्नेहि विरइयं रम्मं ।
पायय-कव्व लोए कस्स न हियय सुहावेइ ?।। (महेश्वरसूरि का पञ्चमीमाहात्म्य) ।

सामान्य मनुष्य संस्कृत-काव्य के अर्थ को समझ नहीं पाते हैं। इसलिए यह ग्रन्थ उस प्राकृत-भाषा मे रचा जाता है जो सब लोगों को सुख-बोध्य है।

गूढार्थक देशी-शब्दों से रहित और सुललित पदों मे रचा हुआ सुन्दर प्राकृत-काव्य किसके हृदय को सुखी नहीं करता ?

'[2]उज्झउ सक्कय-कव्व सक्कय-कव्व च निम्मिय जेण ।
वस-हरं व पलित्त तडयडतट्टत्तणं कुणइ ।।'
(वज्जालग्ग (?) से अपभ्रंशकाव्यत्रयी की प्रस्ता०, पृष्ठ ७६ मे उद्धृत) ।

संस्कृत-काव्य को छोड़ो और जिसने संस्कृत काव्य की रचना की उसका भी नाम मत लो, क्योंकि वह (संस्कृत) जलते हुए बॉस के घर की तरह 'तड़ तड़ तट्ट' आवाज करता है—श्रुतिकटु लगता है।

"[3]पाइअ-कव्वम्मि रसो जो जायइ तह व छेय-भणिएहि ।
उययस्स य वासिय-सीयलस्स तित्ति न वच्चामो ।।
ललिए महुरक्खरए जुवई-यण-वल्लहे स-सिगारे ।
सते पाइय-कव्वे को सक्कइ सक्कयं पढिउं ? ।।" (जयवल्लभ का वज्जालग्ग, पृष्ठ ६)

प्राकृत-भाषा की कविता मे और विदग्ध के वचनों मे जो रस आता है उससे, वासो और शीतल जल की तरह, तृप्ति नहीं होती है—मन कभी ऊबता नहीं है—उत्कण्ठा निरन्तर बनी ही रहती है।

जब सुन्दर, मधुर, शृङ्गार-रस-पूर्ण और युवतियों को प्रिय ऐसा प्राकृत-काव्य मौजूद है तब संस्कृत पढने को कौन जाता है ?

---

१ सस्कृतकाव्यस्यार्थं येन न जानन्ति मन्दबुद्धय । सर्वेषामपि सुखबोध तेनेदं प्राकृतं रचितम् ।।
गुढार्थदेशीरहितं सुललितवर्णैर्विरचितं रम्यम् । प्राकृतकाव्यं लोके कस्य न हृदय सुखयति ? ।।

२ उज्झयता सस्कृतकाव्य सस्कृतकाव्य च निर्मित येन । वशगृहमिव प्रदीप्त तडतडतट्टत्वं करोति ।।

३. प्राकृतकाव्ये रसो यो जायते तथा वा छेकभणितै । उदकस्य च वासितशीतलस्य तृप्तिं न व्रजाम. ।।
ललिते मधुराक्षरके युवतिजनवल्लभे सशृंगारे । सति प्राकृतकाव्ये क. श्वक्नुते संस्कृतं पठितुम् ? ।।

इस कोष में स्वीकृत पद्धति

१. प्रथम काले टाइपो में क्रम से प्राकृत शब्द, उसके बाद सादे टाइपो मे उस प्राकृत शब्द के लिङ्ग आदि का संक्षिप्त निर्देश, उसके पश्चात् काले कोष्ठ (ब्राकेट) मे काले टाइपो मे प्राकृत शब्द का सस्कृत प्रतिशब्द, उसके अनन्तर सादे टाइपो मे हिन्दी भाषा में अर्थ और तदनन्तर सादे टाइपो मे ब्राकेट में प्रमाण (रेफरेंस) का उल्लेख किया गया है।

२. शब्दो का क्रम नागरी वर्ण-माला के अनुसार इस तरह रखा गया है :—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, क, ख, ग आदि। इस तरह अनुस्वार के स्थान की गणना सस्कृत-कोषो की तरह पर-सवर्ण अनुनासिक व्यञ्जन के स्थान मे न कर अन्तिम स्वर के बाद और प्रथम व्यञ्जन के पूर्व मे ही करने का कारण यह है कि संस्कृत की तरह प्राकृत मे [1]व्याकरण की दृष्टि से भी अनुस्वार के स्थान मे अनुनासिक का होना कही भी अनिवार्य नही है और प्राचीन हस्त-लिखित पुस्तको मे प्राय. सर्वत्र अनुस्वार का ही प्रयोग पाया जाता है।

३. प्राकृत शब्द का प्रयोग विशेष रूप से आर्ष (अर्धमागधी) और महाराष्ट्री भाषा के अर्थ मे और सामान्य रूप से आर्ष से लेकर अपभ्रंश भाषा तक के अर्थ मे किया जाता है। प्रस्तुत कोष के 'प्राकृत-शब्द-महार्णव' नाम मे प्राकृत-शब्द सामान्य अर्थ में ही गृहीत है। इसमे यहाँ आर्ष, महाराष्ट्री, शौरसेनी, अशोक-शिलालिपि, देश्य, मागधी, पैशाची, चूलिकापैशाची तथा अपभ्रंश भाषाओ के शब्दो का संग्रह किया गया है। परन्तु प्राचीनता और साहित्य की दृष्टि से इन सब भाषाओ मे आर्ष और महाराष्ट्री का स्थान ऊँचा है। इससे इन दोनो के शब्द यहाँ पूर्ण रूप से लिए गये हैं और शौरसेनी आदि भाषाओ के प्राय उन्ही शब्दो को स्थान दिया गया है जो या तो प्राकृत (आर्ष और महाराष्ट्री) से विशेष भेद रखते हैं अथवा जिनका प्राकृत रूप नही पाया गया है, जैसे—'य्येव', 'विधुव', 'संपाद-इत्तअ', 'संभावीअदि' वगैरह। इस भेद की पहिचान के लिए प्राकृत से इतर भाषा के शब्दो और आख्यात-कृदन्त के रूपो के आगे सादे टाइपो में कोष्ठ में उस उस भाषा का सक्षिप्त नाम-निर्देश कर दिया गया है, जैसे [2]'(शौ)', '(मा)' इत्यादि। परन्तु शौरसेनी आदि में भी जो शब्द या रूप प्राकृत के ही समान है वहाँ ये भेद-दर्शक चिह्न नही दिए गए हैं।

(क) आर्ष और महाराष्ट्री से शौरसेनी आदि भाषाओ के जिन शब्दो मे सामान्य (सर्व-शब्द-साधारण) भेद है उनको इस कोष मे स्थान देकर पुनरावृत्ति-द्वारा ग्रन्थ के कलेवर को विशेष बढाना इसलिए उचित नही समझा गया है कि वह सामान्य भेद प्राकृत-भाषाओ के साधारण अभ्यासी से भी अज्ञात नही है और वह उपोद्घात मे भी उस उस भाषा के लक्षण-प्रसङ्ग मे दिखा दिया गया है जिससे वह सहज ही ख्याल में आ सकता है।

(ख) आर्ष और महाराष्ट्री मे भी परस्पर उल्लेखनीय भेद है। तिस पर भी यहाँ उनका भेद-निर्देश न करने का एक कारण तो यह है कि इन दोनो मे इतर भाषाओ से अपेक्षा-कृत समानता अधिक है, दूसरा, प्रकृति की अपेक्षा प्रत्ययों में ही विशेष भेद हैं जो व्याकरण से सम्बन्ध रखता है, कोष से नही, तीसरा, जैन ग्रंथकारो ने महाराष्ट्री-ग्रंथों में भी आर्ष प्राकृत के शब्दो का अविकल रूप मे अधिक व्यवहार कर उनको महाराष्ट्री का रूप दे दिया है[4]।

४. प्राकृत में यश्रुतिवाला[5] नियम खूब ही अव्यवस्थित है। प्राकृत-प्रकाश, सेतुबन्ध, गाथासप्तशती और प्राकृतपिंगल आदि मे इस नियम का एकदम अभाव है जबकि आर्ष, जैन महाराष्ट्री तथा गउडवहो-प्रभृति ग्रन्थो मे इस नियम का हद से ज्यादा आदर देखा जाता हैं, यहाँ तक कि एक ही शब्द मे कही तो यश्रुति है और कही नही, जैसे 'पअ' और 'पय', 'लोअ' और 'लोय'। इस कोष में ऐसे शब्दों की पुनरावृत्ति न कर कोई भी (यश्रुतिवाले 'य', से रहित या सहित) एक ही शब्द लिया गया है। इससे क्रम तथा इतर समान शब्द की

---

१. देखो प्राकृतप्रकाश, सूत्र ४, १४, १७, हेमचन्द्र-प्राकृत-व्याकरण, सूत्र १, २५, और प्राकृतसर्वस्व, सूत्र, ४, २३ आदि।

२ प्राकृतसर्वस्व (पृष्ठ १-३) आदि में इनसे अतिरिक्त और भी प्राच्या, शाकारि आदि अनेक उपभेद बताए गए हैं, जिनका समावेश यहाँ शौरसेनी आदि इन्ही मुख्य भेदों में यथास्थान किया गया है।

३. इन सक्षिप्त नामों का विवरण सकेत-सूची मे देखिए।

४. इसी से डॉ. पिशल् आदि पाश्चात्य विद्वानो ने आर्ष-भिन्न जैन प्राकृत-ग्रंथो की भाषा को 'जैन महाराष्ट्री' नाम दिया है। देखो डॉ. पिशल् का प्राकृतव्याकरण और डॉ. टेसेटोरी की उपदेशमाला की प्रस्तावना।

५. हेमचन्द्र-प्राकृत व्याकरण का सूत्र १, १८०।

तुलना की सुविधा के लिए आवश्यकतानुरूप कहीं कहो रेफरेंसवाले शब्द के 'अ' के स्थान में 'य' और 'य' की जगह 'अ' किया गया है।

आर्ष ग्रन्थों में यश्रुतिवाले 'य' की तरह 'त' का प्रयोग भी बहुत ही पाया जाता है, जैसे 'अय' (अज) के स्थान में 'अत', 'अईअ' (अतीत) की जगह 'अतीय' आदि। ऐसे शब्दो की भी इस कोष में बहुधा पुनरावृति न करके त-वर्जित शब्दो को ही विशेष रूप से स्थान दिया गया है।

६. संयुक्त शब्दों को उनके क्रमिक स्थान में अलग न देकर मूल (पूर्व भागवाले) शब्द के भीतर ही उत्तर भागवाले शब्द अकारादि क्रम से काले टाइपो मे दिए गए हैं और उसके पूर्व° (ऊर्ध्व बिन्दी) का चिह्न दिया गया है। ऐसे शब्द का सस्कृत प्रतिशब्द भी काले टाइपो में° चिह्न दे कर दिए गए हैं। विशेष स्थानो मे पाठकों की सुगमता के लिए सयुक्त शब्द उसके क्रमिक स्थान मे अलग भी बतलाये गए हैं और उसके अर्थ तथा रेफरेंस के लिए मूल शब्द मे जहाँ वे दिए गए हैं, देखने की सूचना की गई है।

(क) इन संयुक्त शब्दों मे जहां 'देखो°——' से जिस शब्द को देखने को कहा गया है वहां उस शब्द के उसी मूल शब्द के भीतर देखना चाहिए न कि अन्य शब्द के अन्दर।

७. त्त, त्तण (त्व), आ, या (तल्), अर, यर, तराग (तर), अम, तम (तम) आदि सुगम और सर्वत्र-साधारण प्रत्ययवाले शब्दो में प्रत्ययो को छोडकर केवल मूल शब्द ही यहाँ लिए गए हैं। परन्तु जहाँ ऐसे प्रत्ययो में रूप आदि की विशेषता है वहाँ प्रत्यय-सहित शब्द भी लिए गए हैं।

८. धातुओं के सब रूप सादे टाइपो मे और कृदन्तो के रूप काले टाइपो में धातु के भीतर दिए गए हैं।

(क) भाव तथा कर्म-कर्तरि रूपो का निर्देश भी धातु के भीतर 'कर्म—' से ही किया गया है।[1]

(ख) भूत कृदन्त के रूप तथा अन्य आख्यात तथा कृदन्त के विशिष्ट रूप बहुधा अलग अलग अपने क्रमिक स्थान हे दिए गए हैं।

९. जिन सस्करणों से शब्द-संग्रह किया गया है उनमें रही हुई सपादन की या प्रेस की भूलो को सुधार कर शुद्ध शब्द ही यहाँ दिए गए हैं। पाठको के ज्ञानार्थ साधारण भूलो को छोडकर विशेष भूलवाले पाठ रेफरेंस के उल्लेख के अनन्तर-पूर्व में ज्यों के त्यों उद्धृत भी किये गए हे और भूलवाले भाग की शुद्धि कोष में '?' (शङ्काचिह्न) के बाद बतला दी गई है, जैसे देखो क्षोब्भ, वब्भ आदि शब्द।

(क) जहाँ भिन्न भिन्न ग्रंथों में या एक ही ग्रथ के भिन्न भिन्न स्थानो में या सस्करणो मे एक ही शब्द के अनेक संदिग्ध रूप पाये गए हैं और जिनके शुद्ध रूप का निर्णय करना कठिन जान पडा है वहाँ पर ऐसे रूपवाले सब शब्द इस कोष मे यथास्थान दिए गए हैं और तुलना के लिए ऐसे प्रत्येक शब्द के अन्त भाग मे 'देखो—' लिख कर इतर रूप भी सूचाया गया है, जैसे देखो 'पुक्खलच्छिभय, पोक्खलच्छिलय', 'पेसल, पेसलेस, 'भयालि, सयालि' आदि शब्द।

१०. एक ही ग्रथ के एक या भिन्न भिन्न सस्करणो के अथवा भिन्न भिन्न ग्रथो के पाठ-भेदो के सभी शुद्ध शब्द इस कोष मे यथास्थान दिए गए हैं, जैसे—परिज्झुसिय (भगवतीसूत्र २५—पत्र ९२३) और परिभुसिय (भग २५ टी—पत्र ९२५), णिव्विदेज्ज (भी. मा. का सूत्रकृताग १, २, ३, १२) और णिव्विदेज्ज (आ. स. का सूत्रकृताग १, २, ३, १२), पविरल्लिय (आ. स. का प्रश्नव्याकरण १, ५—पत्र ९१) और पवित्थरिल्ल (अभिधानराजेन्द्र का प्रश्नव्याकरण १, ५), सामकोट्ठ (समवायाग-सूत्र, पत्र १५३) और सामिकुट्ठ प्रवचनसारोद्धार, द्वार ७) प्रभृति।

११. सस्कृत की तरह प्राकृत मे भी कम से कम शब्द के आदि के 'ब' तथा 'व' के विषय मे गहरा मत-भेद है। एक की शब्द कहो बकारादि पाया जाता है तो कही वकारादि। जैसे भगवतीसूत्र मे 'बत्थि' हैं तो विपाकश्रुत में 'वत्थि' छपा है। इससे ऐसे शब्दो को दोनो स्थानो में न देकर जो 'ब' या 'व' उचित जान पडा है उसी एक स्थल में वह शब्द दिया गया है और उभय प्रकार के शब्दों के रेफरेंस भी वहां ही दिये गये हैं। हाँ, जहाँ दोनों अक्षरो के अस्तित्व का स्पष्ट रूप से उल्लेख पाया गया है वहाँ दोनो स्थलो मे वह शब्द दिया गया है, जैसे 'बप्फाउल' और 'वप्फाउल'[1] आदि।

१२. लिङ्गादि-बोधक संक्षिप्त शब्द प्राकृत शब्द से ही सबन्ध रखते हैं, सस्कृत-प्रतिशब्द से नही।

(क) जहां अर्थ-भेद में लिङ्ग आदि का भी भेद है वहाँ उस अर्थ के पूर्व मे ही भिन्न लिंग आदि का सूचक शब्द दे दिया गया है। जहाँ ऐसा भिन्न शब्द नही दिया है वहाँ उसके पूर्व के अर्थ या अर्थों के समान ही लिग आदि समझना चाहिए।

---

१. देशीनाममाला ६, ९२ का टीका।

(ख) प्राकृत मे लिंग-विधि खूब ही अनियमित है। प्राकृत वैयाकरणो ने भी कुछ अति सक्षिप्त परन्तु[1] व्यापक सूत्रो के द्वारा इस बात का स्पष्ट उल्लेख किया है। प्राचीन ग्रंथो मे एक ही शब्द का जिस-जिस लिंग मे योग जहाँ तक हमे दृष्टिगोचर हुआ है, उस-उस लिंग का निर्देश इस कोष मे उस शब्द के पास कर दिया गया है। जहाँ लिंग मे विशेष विलक्षणता पाई गई है वहाँ उस ग्रथ का अवतरण भी दे दिया गया है।

(ग) जहाँ स्त्रीलिंग का विशेष रूप पाया गया है वहाँ उस अर्थ के बाद 'स्त्री—' निर्देश करके रेफरेंस के साथ दिया गया है।

(घ) प्राकृत मे अनेक ग्रंथो मे अव्यय के बाद विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। इससे ऐसे स्थानो मे अव्यय-सूचक 'अ' के बाद प्राय लिंग बोधक शब्द भी दिया गया है, जैसे 'बला' के बाद 'अ. स्त्री' = (अव्यय तथा स्त्रीलिंग)।

१३. देश्य शब्दो के सस्कृत-प्रतिशब्द के स्थान मे केवल देश्य का सक्षिप्त रूप 'दे' ही काले टाइपो मे कोष्ठ मे दिया गया है।

(क) जो धातु वास्तव मे देश्य होने पर भी प्राकृत के प्रसिद्ध-प्रसिद्ध व्याकरणो मे संस्कृत धातु के आदेश कह कर तद्भव बतलाये गये हैं उनके सस्कृत-प्रतिशब्द के स्थान मे 'दे' न देकर प्राचीन वैयाकरणो की मान्यता बतलाने के उद्देश्य से वे वे आदेशि सस्कृत रूप ही दिये गये हैं। इससे संस्कृत से बिलकुल विसदृश रूपवाले इन देश्य धातुओं को वास्तविक तद्भव समझने की भूल कोई न करे।

(ख) जो धातु तद्भव होने पर भी प्राकृत-व्याकरणो में उसको अन्य धातु का आदेश बतलाया गया है उस धातु के व्याकरण-प्रदर्शित आदेशि संस्कृत रूप के बाद वास्तविक सस्कृत रूप भी दिखलाया गया है यथा पेच्छ के [दृश् , प्र + ईक्ष्] आदि।

(ग) प्राचीन ग्रथो मे जो शब्द देश्य रूप से माना गया है परन्तु वास्तव मे जो देश्य न होकर तद्भव ही प्रतीत होता है, ऐसे शब्दो का सस्कृत-प्रतिशब्द दिया गया है और प्राचीन मान्यता बतलाने के लिए सस्कृत प्रतिशब्द के पूर्व में 'दे' दिया गया है।

(घ) जो शब्द वास्तव मे देश्य ही है, परन्तु प्राचीन व्याख्याकारो ने उसको तद्भव बतलाते हुए उसके जो परिमार्जित—छिल-छाल कर बनाये हुए संस्कृत—रूप अपने ग्रंथो मे दिये हैं, परन्तु जो सस्कृत-कोषो मे नही पाये जाते हैं, ऐसे सस्कृत-प्रतिरूपो को यहाँ स्थान न देते हुए केवल 'दे' ही दिया गया है।

(ङ) जो शब्द देश्य रूप से सदिग्ध है उसके प्रतिशब्द के पूर्व में 'दे' भी दिया है।

१४. प्राचीन व्याख्याकारो के दिये हुए सस्कृत-प्रतिशब्द से भी जो अधिक समानतावाला सस्कृत प्रतिशब्द है वही यहाँ पर दिया गया है, जैसे 'ण्हाणिय' के प्राचीन प्रतिशब्द 'स्नापित' के बदले 'स्नानित'।

१५. अनेक अर्थवाले शब्दो के प्रत्येक अर्थ १, २, ३ आदि अंको के बाद क्रमश दिये गये हैं और प्रत्येक अर्थ के एक या अनेक रेफरेंस उस अर्थ के बाद सादे ब्राकेट में दिये हैं।

(क) धातु के भिन्न-भिन्न रूपवाले रेफरेंसो मे जो-जो अर्थ पाये गये हैं वे सब १, २, ३ के अंको से देकर क्रमश धातु के आख्यात तथा कृदन्त के रूप दिये गये हैं और उस-उस रूपवाले रेफरेंस का उल्लेख उसी रूप के बाद ब्राकेट में कर दिया गया है।

(ख) जिन शब्द का अर्थ वास्तव में सामान्य या व्यापक है, किन्तु प्राचीन ग्रथो में उसका प्रयोग प्रकरण-वश विशेष या संकीर्ण अर्थ मे हुआ है, ऐसे शब्द का सामान्य या व्यापक अर्थ ही इस कोष में दिया गया है, यथा—'हत्थिच्चग' का प्रकरण-वश होता 'हाथ के योग्य आभूषण' यह विशेष अर्थ यहां पर न देकर 'हाथ सम्बन्धी' यह सामान्य अर्थ ही दिया गया है। 'णक्खत्त (नाक्षत्र)' आदि तद्धितान्त शब्दो के लिए भी यही नियम रखा गया है।

१६. शब्द-रूप, लिंग, अर्थ की विशेषता या सुभाषित की दृष्टि से जहाँ अवतरण देने की आवश्यकता प्रतीत हुई है वहां पर वह, पर्याप्त अंश में, अर्थ के बाद और रेफरेंस के पूर्व में दिया गया है।

(क) अवतरण के बाद कोष्ठ मे जहाँ अनेक रेफरेंसो का उल्लेख है वहाँ पर केवल सर्व-प्रथम रेफरेंस का ही अवतरण से संबन्ध है, शेष का नहीं।

१७. एक ही ग्रथ के जिन अनेक सस्करणो का उपयोग इस कोष में किया गया है, रेफरेंस मे साधारणत सस्करण-विशेष का उल्लेख न करके केवल ग्रथ का ही उल्लेख किया गया है। इससे ऐसे रेफरेंसवाले शब्द को सब सस्करणो का या संस्करण-विशेष का समझना चाहिए।

---

१. हेमचन्द्र-प्राकृत-व्याकरण, सूत्र १, ३३ से ३५।

(क) जहाँ पर संस्करण-विशेष के उल्लेख की खास आवश्यकता प्रतीत हुई है वहाँ पर रेफरेंस की सकेत-सूची मे दिये हुए सस्करण के १, २ आदि अंक रेफरेंस के पूर्व मे दिये हैं, जैसे पेसल और पेसलेस शब्दो के रेफरेंस 'आचा' के पूर्व में '२' का अक आगमोदय-समिति के सस्करण का और '३' का अक प्रो० रवजी भाई के सस्करण का बोधक है।

१८. जहाँ कही प्राकृत के किसी शब्द के रूप की, अर्थ की अथवा सयुक्त शब्द आदि की समानता या विशेषता के लिये प्राकृत के ही ऐसे शब्दान्तर की तुलना बतलाना उपयुक्त जान पडा है वहाँ पर रेफरेंस के बाद 'देखो—' से उस शब्द को देखने की सूचना की गई है।

१६. जहाँ कही 'देखो' के बाद काले टाइपो में दिये हुए प्राकृत शब्द के अनन्तर सादे टाइपो मे लिंगादि-बोधक या सस्कृत-प्रतिशब्द दिया गया है वहाँ उसी लिंग आदिवाले या संस्कृत प्रतिशब्दवाले ही प्राकृत शब्द से मतलब है, न कि उसके समान इतर प्राकृत शब्द से। जैसे अ शब्द के 'देखो च अ' के च से पुंलिग च को छोडकर दूसरा ही अव्यय-भूत च शब्द, और ओसार के 'देखो ऊसार=उत्सार' के 'ऊसार' से तीसरा ही ऊसार शब्द देखना चाहिए, पहले, दूसरे और चौथे ऊसार शब्द को नही।

उक्त नियमो से अतिरिक्त जिन नियमों का अनुसरण इस कोष मे किया गया है वे आधुनिक नूतन पद्धति के संस्कृत आदि कोषो के देखनेवालो से परिचित और सुगम होने के कारण खुलासे की जरूरत नही रखते।

पाइअ-सद्द-महण्णवो ।

(प्राकृत-शब्द-महार्णवः)

णासिअ-दोस-समूहं, भासिअणेगंतवाय-ललिअत्थं ।
पासिअ-लोआलोअं, वंदामि जिणं महावीरं ॥ १ ॥

निक्कित्तिम-साउ-पयं, अइसइअ सयल-वाणि-परिणमिरं ।
वायं अवाय-रहिअं, पणमामि जिणिंद-देवाण ॥ २ ॥

पाइअ-भासामइअं, अवलोइअ सत्थ सत्थमइविउलं ।
सद्द-महण्णव-णामं, रएमि कोसं स-वण्ण-क्कमं ॥ ३ ॥

अ

अ पु [अ] १ प्राकृत वर्ण-माला का प्रथम अक्षर (हे १, १; प्रामा) । २ विष्णु, कृष्ण (से १, १) ।

अ देखो च अ (श्रा १४, जी २, पउम ११३, १४, कुमा) ।

अ [दे] देखो इव, 'चदो अ' (प्राकृ ७६) ।

अ° अ [अ°] निम्न-लिखित अर्थों में से, प्रकरण के अनुसार, किसी एक को बतलानेवाला अव्यय—१ निषेध, प्रतिषेध, 'अट्टमरण' (सुर ७, २४८), 'सव्वनिमेहे मओऽकारो' (विसे १२३२) । २ विरोध, उल्टापन, 'अधम्म' (गाया १, १८) । ३ अयोग्यता, अनुचितपन, 'अयाल' (पउम २२,८५) । ४ अल्पता, थोडापन, 'अधण' (गउड), 'अचेल' (सम ४०) । ५ अभाव, अविद्यमानता, 'अगुण' (गउड) । ६ भेद, भिन्नता, 'अमणुस्स' (णंदि) । ७ सादृश्य, तुल्यता, 'अचक्खुदसण' (सम १५) । ८ अप्रशस्तता, बुरापन, 'अभाइ' (चारु २६) । ६ लघुपन, छोटाई, 'अतड' (वृह १) ।

°अ पु [क] १ सूर्य, सूरज (से ७, ४३) । २ अग्नि, आग । ३ मयूर, मोर (से ६,४३) । ४ न पानी, जल (से १,१) । ५ शिखर, टोच (से ६,४३) । ६ मस्तक, सिर (से ६,१८) ।

°अ वि [°ज] उत्पन्न, जात (गा ६७१) ।

अअंख वि [दे] स्नेह-रहित, सूखा (दे १, १३) ।

अअर देखो अवर (पि १६५) ।

अअर देखो आयर (पि १६५) ।

अइ अ [अयि] १-२ सभावना और आमन्त्रण अर्थ का सूचक अव्यय (हे २, २०५, स्वप्न ५८) ।

अइ अ [अति] यह अव्यय नाम और धातु के पूर्व मे लगता है और नीचे के अर्थों में से किसी एक को सूचित करता है—१ अतिशय, अतिरेक, 'अइउण्ह', 'अइवत्ति', 'अइचितत' (श्रा १४, रभा, गा २१४) । २ उत्कर्ष, महत्त्व, 'अइवेग' (कप्प) । ३ पूजा, प्रशसा, 'अइजाय' (ठा ४) । ४ अतिक्रमण, उल्लघन, 'अइउक्सो' (दस ५,४,४२) । ५ ऊपर, ऊंचा, 'अइमच', 'अइपडागा' (औप, णाया १,१) । ६ निन्दा, 'अइपडिय' (वृह १) ।

अइ अ [अति] सामर्थ्य-सूचक अव्यय, 'अइवहइ' (सूअ १, २, ३, ५) ।

अइ सक [आ + इ] आगमन करना, आ गिरना, 'अईति नाराया' (स ३८३) ।

अइइ स्त्री [अदिति] पुनर्वसु नक्षत्र का अधिष्ठाता देव (सुज्ज १०) ।

अइइ सक [अति+इ] १ उल्लंघन करना । २ गमन करना । ३ प्रवेश करना । वकृ अइंत (से ६, २६, कप्प) । संकृ. अइच्च (सूअ १, ७, २८) ।

अइउट्ट वि [अतिवृत्त] अतिगत, प्राप्त (सूअ १, ५, १, १२) ।

अइच सक [अति + अञ्च्] १ अभिषेक करना, स्थानापन्न करना । २ उल्लघन करना । ३ अक दूर जाना (से १३, ८, ८६) ।

अइचिअ वि [अत्यञ्चित] १ अभिषिक्त, स्थानापन्न किया हुआ (से १३,८) । २ उल्लघित, अतिक्रान्त (से १३,८) । ३ दूर गया हुआ (से १३, ८६) ।

अइछ देखो अइच (से १३, ८) ।

अइछिअ देखो अइचिअ (से १३, ८) ।

अइंछण न [अत्यञ्चन] १ उल्लघन (से १३, ३८) । २ आकर्षण, खींचाव (से ८ ६४) ।

अइत देखो अइइ = अति + इ ।

अइंत वि [अनायत्] १ नहीं आता हुआ। २ जो जाना न जाता हो, 'गाहाहि पणइणीहि य खिज्जइ चित्तं अइंतीहिं' (वज्जा ४)।

अइंदिय वि [अतीन्द्रिय] इंद्रियों से जिसका ज्ञान न हो सके वह (विसे २८१८)।

अइमुत्त देखो अइमुत्त (प्राकृ ३२)।

अइकम अक [अतिक्रम्] गुजरना, बीतना, 'दिवखणस्स समग्रो अइक्कमइ दुद्धरस्स रायस्स' (सम्मत्त १७४)। देखो अइक्कम=अति + क्रम्।

अइकाय पु [अतिकाय] १ महोरग—जातीय देवों का एक इन्द्र (ठा २)। २ रावण का एक पुत्र (से १६, ५६)। ३ वि. बड़ा शरीरवाला (णाया १, ६)।

अइक्कंत वि [अतिक्रान्त] १ अतीत, गुजरा हुआ, 'अइक्कंतजोव्वणा' (ठा ५)। २ तीर्ण, पार पहुँचा हुआ (भाव)। ३ जिसने त्याग किया हो वह, 'सव्वसिणेहाइक्कंता' (औप)।

अइक्कम सक [अति+क्रम्] १ उल्लंघन करना। २ व्रत-नियम का आंशिक रूप से खण्डन करना, 'अइक्कमइ' (भग)। वकृ अइक्कमंत, अइक्कममाण (सुपा २३८, भग)। कृ अइक्कमणिज्ज (सूअ, २,७)।

अइक्कम पुं [अतिक्रम] १ उल्लंघन (गा ३४८)। २ व्रत या नियम का आंशिक खण्डन (ठा ३, ४)।

अइक्कमण न [अतिक्रमण] ऊपर देखो (सुपा २३८)।

अइक्ख वि [अतीक्ष्ण] तीक्ष्णतारहित, 'अइक्खा वेयरणी' (तदु ४६)।

अइक्ख वि [अनीक्ष्य] अदृश्य, 'अइक्खा वेयरणी' (तदु ४८)।

अइगच्छ } अक [अति+गम्] १ गुजरना,
अइगम } बीतना। २ सक पहुँचना। ३ प्रवेश करना। ४ उल्लंघन करना। ५ जाना, गमन करना। वकृ अइगच्छमाण (णाया १,१)। संकृ अइगच्च (भाचा), 'अइगंतूण अलोग' (विसे ६०४)।

अइगम पु [अतिगम] प्रवेश (विसे ३८६)।

अइगमण न [अतिगमन] १ प्रवेश-मार्ग (णाया १, २)। २ उत्तरायण, सूर्य का उत्तर दिशा में जाना (भग)।

अइगय वि [दे] १ आया हुआ। २ जिसने प्रवेश किया हो वह (दे १,५७), 'ससुरकुलम्मि अइगओ, दिट्ठो य सगउरवं तत्थ' (उप ५६७ टी)। ३ न मार्ग का पीछला भाग (दे १, ५७)।

अइगय वि [अतिगत] अतिक्रान्त, गुजरा हुआ, 'हिडतस्स अइगय वरिसमेगं' (महा, से १०, १८, विसे ७ टी)।

अइगय वि [अतिगत] प्राप्त, 'एवं बुदिमइगओ गब्भे सवसइ दुक्खिओ जीवो' (तदु १३)।

अइचिरं अ [अतिचिरम्] बहुत काल तक (गा ३४६)।

अइच्च देखो अइइ = अति + इ।

अइच्छ सक [गम्] जाना, गमन करना। अइच्छइ (हे ४,१६२)।

अइच्छ सक [अति+क्रम्] उल्लंघन करना। अइच्छइ (ओघ ५१८)। वकृ अइच्छंत (उत्त १८)।

अइच्छा स्त्री [अदित्सा] १ देने की अनिच्छा। २ प्रत्याख्यान विशेष (विसे ३५०४)।

अइच्छिय वि [गत] गया हुआ, गुजरा हुआ (पउम ३, १२२, उप पृ १३३)।

अइच्छिय वि [अतिक्रान्त] अतिक्रान्त, उल्लंघित (पाअ, विसे ३५८२)।

अइजाय पुं [अतिजात] पिता से अधिक संपत्ति को प्राप्त करनेवाला पुत्र (ठा ४)।

अइट्ठ वि [अदृष्ट] १ जो न देखा गया हो वह। २ न कर्म, दैव, भाग्य (भवि)। °उव्व, °पुव्व वि [°पूर्व] जो पहले कभी न देखा गया हो वह (गा ४१४, ७४८)।

अइट्ठ वि [अदृष्ट] जो देखा न गया हो वह (हास्य १४६)।

अइट्ठ वि [अनिष्ट] १ अप्रिय। २ खराब, दुष्ट, 'जो पुणु खलु खुद्दु अइट्ठसगु, तो किमब्भत्थउ देइ अंगु' (भवि)।

अइट्ठा सक [अति + स्था] उल्लंघन करना। संकृ अइट्ठिय (उत्त ७)।

अइट्ठिय वि [अतिष्ठित] अतिक्रान्त, उल्लंघित (उत्त ७)।

अइड न [दे] गिरि-तट, तराई, पहाड का निम्न भाग (दे १, १०)।

अइण न [अजिन] चर्म, चमडा (पाअ)।

अइणिय वि [दे अतिनीत] आनीत, लाया हुआ (दे १,२४)।

अइणिय } वि [अतिनीत] १ फेंका हुआ (से
अइणीय } ६, ५६)। २ जो दूर ले जाया गया हो (प्राप)।

अइणीअ वि [अतिगत] गत, गया हुआ (सुख २,१३)।

अइणीय वि [दे अतिनीत] आनीत, लाया हुआ (महा)।

अइणु वि [अतिनु] जिसने नौका का उल्लंघन किया हो वह, जहाज से उतरा हुआ (षड्)।

अइतह वि [अवितथ] सत्य, सच्चा (उप १०३१ टी)।

अइतेया स्त्री [अतितेजा] पक्ष की चौदहवी रात (सुज्ज १०,१४)।

अइदंपज्ज न [ऐदंपर्य] तात्पर्य, रहस्य, भावार्थ (उप ८६४, ८७६)।

अइदुसमा } स्त्री [अतिदुष्षमा] देखो दुस्स-
अइदुस्समा } मदुस्समा (पउम २०, ८३,
अइदूसमा } ६०, उप पृ १४७)।

अइद्दपज्ज देखो अइदंपज्ज (पचा १४)।

अइधाडिय वि [अतिघ्राटित] फिराया हुआ, घुमाया हुआ (पण्ह १,३)।

अइनिट्ठुहावण वि [अतिविष्टम्भन] स्तब्ध करनेवाला, रोकनेवाला (कुमा)।

अइन्न न [अजीर्ण] १ बदहजमी, अपच। २ वि जो हजम न हुआ हो वह। ३ जो पुराना न हुआ हो, नूतन (उव)।

अइन्न वि [अदत्त] नहीं दिया हुआ। °याण न [°दान] चोरी (आचा)।

अइपंडुकंबलसिला स्त्री [अतिपाण्डुकम्बलशिला] मेरु पर्वत पर स्थित दक्षिण दिशा की एक शिला (ठा ४)।

अइपडाग पु [अतिपताक] १ मत्स्य की एक जाति (विपा १, ८)। २ स्त्री पताका के ऊपर की पताका (णाया १, १)।

अइपरिणाम वि [अतिपरिणाम] आवश्यकता न रहने पर भी अपवाद-मार्ग का ही आश्रय लेनेवाला, शास्त्रोक्त अपवादों की मर्यादा का उल्लंघन करनेवाला,

'जो दव्वखेत्तकालभावकयं ज जहि जया काले। तल्लेसुस्सुत्तमई, अइपरिणामं वियाणाहि' (वृह १)।

अइपाइअ वि [अतिपातिक] हिंसा करनेवाला (सूत्र २, १, ५७)।

अइपास पु [अतिपार्श्व] भगवान् अरनाथ के समकालिक ऐरवत क्षेत्र के एक तीर्थंकर-देव (तित्थ)।

अइपास सक [अति+दृश्] अतिशय देखना, खूव देखना। अइपासइ (सूत्र १, १, ४, ६)।

अइप्पगे अ [अतिप्रगे] पूर्व-प्रभात, वडी सवेर (सुर ७, ७८)।

अइप्पमाण वि [अतिप्रमाण] १ तृप्त न होता हुआ भोजन करनेवाला। २ न तीन वार से अधिक भोजन (पिंड ६४७)।

अइप्पसग पुं [अतिप्रसङ्ग] १ अतिपरिचय (पञ्चा१०)। २ तर्क-शास्त्र मे प्रसिद्ध अति-व्याप्ति-नामक दोप (स १६६, उवर ४८)।

अइप्पसंगि वि [अतिप्रसङ्गिन्] अतिप्रसग दोपवाला (अज्भ १०)।

अइप्पहाय न [अतिप्रभात] वडी सवेर (गा ६८)।

अइवल वि [अतिवल] १ वलिष्ठ, शक्ति-शाली (औप)। २ न अतिशय वल, विशेष सामर्थ्य। ३ वडा सैन्य (हे ४, ३५४)। ४ पु एक राजा, जो भगवान् ऋपभदेव के पूर्वीय चतुर्थ भव में पिता या पितामह था (आचू)। ५ भरत चक्रवर्ती का एक पौत्र (ठा ८)। ६ भरत क्षेत्र मे आगामी चौवीसी मे होनेवाला पांचवा वासुदेव (सम ५)। ७ रावण का एक योद्धा (पउम ५६, २७)।

अइभद्दा स्त्री [अतिभद्रा] भगवान् महावीर के प्रभास नामक ग्यारहवें गणधर की माता (आचू)।

अइभूइ पु [अतिभूति] एक जैन मुनि, जो पचम वासुदेव के पूर्व-जन्म मे गुरु थे (पउम २०, १७६)।

अइभूमि स्त्री [अतिभूमि] १ परम प्रकर्ष। २ बहुत जमीन (से३, ४२)। ३ गृहस्थो के घर का वह भाग, जहां साधुओ का प्रवेश करने की अनुज्ञा न हो, 'अइभूमिं न गच्छेज्जा, गोयरग्गगओ मुणी' (दस ५, १, २४)।

अइमट्टिया स्त्री [अतिमृत्तिका] कीचवाली मट्टी (जीव ३)।

अइमत्त, अइमाय वि [अतिमात्र] वहुत, परिमाण से अधिक (उव ठा ६)।

अइमुक, अइमुंत, अइमुंतय, अइमुत्त, अइमुत्तय पुं [अतिमुक्त, °क] १ स्वनाम ख्यात एक अन्तकृद् (उसी जन्म मे मुक्ति पानेवाला) जैन मुनि, जो पोलासपुर के राजा विजय का पुत्र था और जिसने वहुत छोटी ही उम्र मे भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (अन्त)। २ कस का एक छोटा भाई (आव)। ३ वृक्ष-विशेष (पउम ४२, ८)। ४ माधवी लता (पाअ, स ३५)। ५ न अन्तगडदसा नामक अग-ग्रन्थ का एक अध्ययन (अन्त)। (हे १, २६,१७८, पि २४६)।

अइय वि [अतिग] अतिक्रान्त, 'अव्वो अइअ-म्मि तुमे, णवरं जइ सा न जूरिहिइ' (हे २, २०४)। २ करनेवाला, 'ठाणाइय' (औप)।

अइय वि [अतिग] प्राप्त (राय १३४)।

°अइय वि [दयित] १ प्रिय, प्रीतिपात्र। २ दया-पात्र, दया करने योग्य (से ६, ३१)।

अइयच्छ देखो अइगच्छ।

अइयण न [अत्यदन] वहुत खाना, अधिक भोजन करना (वव २)।

अइयय वि [अतिगत] गया हुआ (स ३०३)।

अइयर सक [अति+चर्] १ उल्लघन करना। २ व्रत को दूपित करना। वकृ अइयरत (सुपा ३५४)।

अइया सक [अति+या] जाना, गुजरना (उत्त २०)।

अइया स्त्री [अजिका] वकरी, छागी (उप २३७)।

°अइया स्त्री [दयिता] स्त्री, पत्नी (से ६, ३१)।

अइयाण न [अतियान] १ गमन, गुजरना। २ राजा वगैरह का नगर आदि मे धूम-धाम से प्रवेश करना (ठा ४)।

अइयाय वि [अतियात] गया हुआ, गुजरा हुआ (उत्त २०)।

अइयार पु [अतिचार] उल्लघन, अतिक्रमण (भवि)। २ गृहीत व्रत या नियम मे दूपण लगाना (श्रा ६)।

अइर अ [अचिर] जल्दी, शीघ्र (स्वप्न ३७)।

अइर न [अजिर] आगन, चौक (पाअ)।

अइर पु [दे] आयुक्त, गावका राज-नियुक्त मुखिया (दे १, १६)।

अइर न [दे अतर] देखो अयर = अतर (सुपा ३०)।

अइर वि [दे] अतिरोहित (पिंड ५६०, ५६१)।

अइरजुवइ स्त्री (दे) नई वहू, दुलहिन (दे १, ४८)।

अइरत्त पु [अतिरात्र] अधिक तिथि, ज्योतिष की गिनती से जो दिन अधिक होता है वह (ठा ६)।

अइरत्त वि [अतिरक्त] १ गाढा लाल। २ विशेप रागी। °कंवलसिला, °कवला स्त्री [°कम्वलशिला, कम्वला] मेरु पर्वत के पाडुक वन मे स्थित एक शिला, जिसपर जिनदेवो का जन्माभिषेक किया जाता है (ठा २ ३)।

अइरा अ [अचिरात्] शीघ्र, जल्दी (से ३, १५)।

अइरा, अइराणी स्त्री [अचिरा] पाचवें चक्रवर्ती और सोलहवें तीर्थंकर-देव की माता (सम १५२, पउम २०, ४२)।

अइराणी स्त्री [दे] १ इन्द्राणी। २ सौभाग्य के लिए इन्द्राणी-व्रत करनेवाली स्त्री (दे १,५८)।

अइरावण पु [ऐरावण] इन्द्र का हाथी (पाअ)।

अइरावय पु [ऐरावत] इन्द्र का हाथी (भवि)।

अइराहा स्त्री [अचिराभा] विजली, चपला (दे १, ३४ टी)।

अइरि न [अतिरि] धन या सुवर्ण का अति-क्रमण करनेवाला, धनाढ्य (षड्)।

अइरिंप पु [दे] कथावन्ध, वातचीत, कहानी (दे १,२६)।

अइरित्त वि [अतिरिक्त] १ बचा हुआ, अवशिष्ट (पउम ११८,११६)। २ अधिक, ज्यादा (ठा २, १), 'पवड्ढमाणाइरित्तगुणनिलग्रो' (सार्ध ६३)। °सिज्जासणिय वि [शय्यासनिक] लम्बी-चौड़ी शय्या और आसन रखनेवाला (साधु) (आचू)।

अवरूव वि [अतिरूप] १ सुरूप, सुडौल (पउम २०,११३)। २ पु भूत-जातीय देव-विशेष (पराण १)।

अइरेइय वि [अतिरेकित] अतिरेक-युक्त, अति-प्रभूत (राय ७८ टी)।

अइरेग पु [अतिरेक] १ आधिक्य, अधिकता, 'साइरेगअट्ठवासजायय' (णाया १, ५)। २ अतिशय (जीव ३)।

अइरेण, **अइरेणं** अ [अचिरेण] जल्दी, शीघ्र (गा १३५, पउम ६२, ४, उवर ४०)।

अइरेय देखो **अइरेग** (णाया १, १)।

अइव अ [अतीव] अतिशय, अत्यन्त,
'रित्त अइव महत,
चिट्ठइ मज्झम्मि तस्स भवणस्स।
ता त सव्व सुपुरिस!
अप्पायत्त करेज्जासु॥' (महा)।

अइवट्टण न [अतिवर्त्तन] उल्लघन, अतिक्रमण (आचा)।

अइवत्त सक [अति+वृत्] अतिक्रमण करना। अइवत्तइ (आचा)।

अइवत्तिय वि [अतिव्रतिक] १ जिसका उल्लंघन किया गया हो वह। २ प्रधान, मुख्य। ३ उल्लंघन करनेवाला (आचा)।

अइवय सक [अति+वृत्] उल्लंघन करना। सक्ट अइवइत्ता (सूअ २, २, ६५)।

अइवय सक [अति+व्रज्] १ उल्लघन करना। २ संमुख जाना। ३ प्रवेश करना। अइवयति (पण्ह १,९)। वकृ 'नियगवयण अइवयंत गय सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धा' (णाया १, १, कप्प)।

अइवय सक [अति+पत्] उल्लंघन करना। २ सम्बन्ध करना। ३ प्रवेश करना। ४ अक मरना। ५ गिरजाना, 'अवरे रण-सीस-लद्ध-लक्खा सगामम्मि अइवयति' (पण्ह १, ३), 'लोभघत्था ससार अइवयति' (पण्ह १,५)। वकृ 'जर वा सरीररूव-विणासिणि सरीर वा अइवयमाणिं निवारेसि' (णाया १, ९), अइवयत (कप्प)। प्रयो अइवाएमाण (आचा, ठा ७)।

अइवह सक [अति+वह] वहन करने मे समर्थ होना। अइवहइ (सूअ १, २, ३, ५)।

अइवाइ वि [अतिपातिन्] १ हिंसक (सूअ १, ५)। विनश्वर (विसे १५७८)।

अइवाइत्तु वि [अतिपातयितृ] मारनेवाला (ठा ३, २)।

अइवाइय वि [अतिपातिक] ऊपर देखो (सूअ २, १)।

अइवाएत्तु देखो **अइवाइत्तु** (ठा ७)।

अइवाएमाण देखो **अइवय**=अति+पत्।

अइवाय पु [अतिपात] १ हिंसा आदि दोष (ओघ ४६)। २ विनाश, 'पाणाइवाएण' (णाया १, ५)।

अइवाय पु [अतिवात] १ उल्लघन। २ भयकर पवन, तूफान (उप ७६८ टी)।

अइवाह सक [अति+वाहय्] बीताना, गुजारना, 'सो अइवाहेइ दुन्नि दिणे' (धर्मवि ३३)।

अइविरिय वि [अतिवीर्य] १ बलिष्ठ, महापराक्रमी। २ पु. इक्ष्वाकु वश का एक राजा (पउम ५, ५)। ३ नन्दावर्त नगर का एक राजा (पउम ३७, ३)।

अइविसाल वि [अतिविशाल] १ बहुत बडा, विस्तीर्ण। २ स्त्री यमप्रभ नामक पर्वत के दक्षिण तरफ की एक नगरी (दीव)।

अइस [अप] वि [ईदृश] ऐसा, इस तरह का (हे ४, ४०३)।

अइसइ वि [अतिशयिन्] अतिशय वाला, विशिष्ट, आश्चर्य-कारक (सुपा २५७)।

अइसइअ वि [अतिशयित] ऊपर देखो (पाअ)।

अइसंधण देखो **अइसधाण**, 'भितगाणतिसंधण न कायव्व' (पचा ७, २१)।

अइसंधाण [अतिसधान] ठगाई, वचना, 'भियगाणइसंधाण सासयवुड्ढी य जयणा य' (पचा ७)।

अइसक्कणा स्त्री [अतिष्वष्कणा] उत्तेजना, प्रेरणा, बढावा (निमी)।

अइसय सक [अति+शी] मात करना। वकृ. 'परबलम् अइसयंतो' (पउम ६०, १९)।

अइसय पुं [अतिशय] १ श्रेष्ठता, उत्तमता (कुमा १, ५)। २ महिमा, प्रभाव, 'त्रयणाइसग्रो' (महा)। ३ बहुत, अत्यन्त (सुर, १२, ८१)। ४ चमत्कार (उर १, ३)। °भरिय वि [°भृत] पूर्ण, पूरा भरा हुआ (पाअ)।

अइसरिय न [ऐश्वर्य] वैभव, सपत्ति, गौरव (हे १, १५१)।

अइसाइ वि [अतिशायिन्] १ श्रेष्ठ (धम्म ६ टी)। २ दूसरे को मात करनेवाला। स्त्री °णी (सुपा ११४)।

अइसायण न [अतिशायन] उत्कृष्टता, उत्कर्ष (चेइय ५३३)।

अइसार पु [अतिसार] सग्रहणी रोग, जठर की व्याधि-विशेष (लहुअ १५)।

अइसेस पु [अतिशेष] १ महिमा, प्रभाव, आध्यात्मिक सामर्थ्य (मम ५६)। २ बचा हुआ, अवशिष्ट (ठा ४, २)। ३ अतिशय वाला (विसे ५५२)।

अइसेसि वि [अतिशेषिन्] १ प्रभावशाली, महिमान्वित। २ समृद्ध (राज)।

अइसेसि वि [अतिशेषिन्] १ महिमान्वित। २ समृद्ध, ज्ञान आदि के अतिशय मे सम्पन्न (सट्ठि ४२ टी)।

अइसेसिय वि [अतिशेषित] ऊपर देखो (ओघ ३०)।

अइसेसिय वि [अतिशेषित] ज्ञात, जाना हुआ (वव १)।

अइहर पुं [अतिभर] हद, अवधि, मर्यादा, 'सत्तीय को अइहरो?' (अच्चु २३)।

अइहारा स्त्री [दे] बिजली, चपला (दे १, ३४)।

अइहि पुं [अतिथि] जिसके आने की तिथि नियत न हो वह, पाहुन, यात्री, भिक्षुक, साधु (आचा)। °सविभाग पु [°संविभाग] साधु को भोजन आदि का निर्दोष दान (धर्म ३)।

अई सक [गम्] जाना, गमन करना। अईइ (हे ४, १६२, कुमा), अइति (गउड)।

अईअ पु [अतीत] १ भूतकाल (पच्च ६०)। २ वि. जो बीत चुका हो, गुजरा हुआ, 'जे अ अईआ सिद्धा' (पडि)। ३ अतिक्रान्त (सूअ

१, १०, सार्ध ४, विसे ८०८)। ४ जो दूर हो गया हो (उत्त १५)।

अईअ } अ [अतीव] बहुत, विशेष, अत्यन्त
अईव } (भग २, १, पणह १, २)।

अईमत वि [अ + दृश्यमान] जो दिखता न हो (से १, ३५)।

अईसय देखो अइसय (पउम ३,१०५, ७५, २६)।

अईसार पु [अतीसार] रोग-विशेष, सग्रहणी रोग (सुख १,३)।

अईसार पु [अतीसार] १ संग्रहणी रोग। २ इस नाम का एक राजा (ठा ५,३)।

अउ देखो आउ = स्त्री, 'उल्लसिओ तमरूवो वलयागारो अउक्काओ' (पव २५५)।

अउअ न [अयुत] १ दस हजार की सख्या। २ 'अउअंग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो सख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४)।

अउअंग न [अयुताङ्ग] 'अच्छणिउर' को चौरासी लाख से गुणने पर जो सख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४)।

अउंठ वि [अकुण्ठ] निपुण, कार्य-दक्ष (गउड)।

अउचित्त न [औचित्य] उचितपन (प्राकृ १०)।

अउज्झ वि [अयोध्य] १ युद्ध मे जिसका सामना न किया जा सके वह (सम१३७)। २ जिस पर रिपु-सैन्य आक्रमण न कर सके ऐसा किला, नगर आदि (ठा ४)।

अउज्झा स्त्री [अयोध्या] नगरी-विशेष, इक्ष्वाकुवश के राजाओ की राजधानी, विनीता, कोसला, साकेतपुर आदि नामोंसे विख्यात नगरी, जो आजकल भी अयोध्या नाम से ही प्रसिद्ध है (ठा २)।

अउण वि [एकोन] जिसमे एक कम हो वह। यह शब्द बीस से लेकर तीस, चालीस आदि दहाई सख्या के पूर्व मे लगता है और जिसका अर्थ उस सख्या से एक कम होता है। °ट्ठि स्त्री [°षष्टि] उनसाठ, ५९ (कप्प)। °त्तरि स्त्री [°सप्तति] उनसत्तर, ६९ (कप्प) °त्तीस स्त्रीन [°त्रिंशत्] उनतीस, २९ (णाया १, १३)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] उनसाठ, ५९ (कप्प)। °पन्न, °वन्न स्त्रीन [पञ्चाशत्] उनपचास, ४९ (जी ३०, पउम १०२, ७०)। देखो एगूण।

अउणतीसइ स्त्री देखो अउण-त्तीस (उत्त ३६, २४०)।

अउणप्पन्न देखो अउणापन्न (जीवस २०८)।

अउणामट्ठि देखो अउण-सट्ठि (सुज्ज ९)।

अउणोणिव्वत्ति स्त्री [अपुनर्निवृत्ति] अन्तिम निवृत्ति, मोक्ष (अच्चु १०)।

अउण्ण } न [अपुण्य] १ पाप (सुर ६,
अउन्न } २१)। २ वि अपवित्र। ३ पुण्य-रहित, पापी (पउम २८, ११२, सुर २, ५१)।

अउम देखो ओम (गुभा १४)।

अउमर वि [अद्मर] खानेवाला, भक्षक (प्राकृ २८)।

अउल वि [अतुल] असाधारण, अद्वितीय (उप ७२८ टी, पणह १, ४)।

अउलीन वि [अकुलीन] कुल-हीन, कुजाति, संकर (गा २५३)।

अउव्व वि [अपूर्व] अनोखा, अद्वितीय (गा ११६)।

अउस पु [दे] उपासक, पूजारी (प्रयौ ८२)।

अए अ [अये] आमन्त्रण-सूचक अव्यय (कप्पू)।

अओ अ [अतस्] १ यहा से लेकर (सुपा ४७८)। २ इसलिए, इस कारण से (उप ७३०)।

अओ° [अयस्°] लोह। °घण पु [घन] लोहे का हथौडा, 'सीसपि भिंदति अओघ-णेहिं' (सूअ १, ५, २, १४)। °मय वि [°मय] लोहे की बनी हुई चीज (सूअ २, २)। °मुह पु [°मुख] १-२ इस नाम का अन्तर्द्वीप और उसके निवासी (ठा ५)। ३ वि लोहे की माफिक मजबूत मुह वाला, 'पक्खीहिं खज्जति अओमुहेहिं' (सूअ १, ५, २, ४)। °मुही स्त्री [°मुखी] एक नगरी (उप ७६४)।

अओगग वि [अयोग्य] नालायक (स ७६४)।

अओज्झा देखो अउज्झा (प्रति ११५)।

अ अ [दे] स्मरण-द्योतक अव्यय, 'अ दट्ठुवा मालइलआ' (प्राकृ ८०)।

अक पु [अङ्क] १ उत्सग, कोला (स्वप्न २१६)। २ रत्न की एक जाति (कप्प)। ३ नौ की एक सख्या, 'कासी विक्कमवच्छरम्मि य गए वाणकसुन्नोडुवे' (सुर १६, २४९)। ४ संख्या-दर्शक चिह्न, १, २, ३ (पणण २)। ५ नाटक का एक अश, 'सुरणा मणुस्सभवणाइएसु निज्झाइआ अका' (धण ४५)। ६ सफेद मणि की एक जाति (उत्त ३४)। ७ चिह्न, निशान (चद २०)। ८ मनुष्य के बत्तीस प्रशस्त लक्षणो मे से एक (पणह १, ४)। ९ आसन-विशेष (चद ४)। °कण्ड पुन. [काण्ड] रत्नप्रभा पृथ्वी के खर-काण्ड का एक हिस्सा, जो अक रत्नो का है (ठा १०)। °अरेल्लुग, °करेल्लुअ पु [°करेल्लुक] पानी मे होनेवाली एक जाति की वनस्पति (आचा)। °ट्ठिइ स्त्री [°स्थिति] अक रेखाओ की विचित्र स्थापना, ६४ कलाओ में एक कला (कप्प)। °धर पु [°धर] चन्द्रमा (जीव ३)। °धाई स्त्री [°धात्री] पाच प्रकार की धाई-माताओ में से एक, जिसका काम बालक को उत्सग में ले उसका जी वहलाना है (णाया १, १)। °लिवि स्त्री [°लिपि] अठारह लिपियो मे की एक लिपि, वर्णमाला-विशेष (सम ३५)। °वणिय पु [°वणिक्] अक-रत्नो का व्यापारी (राय)। °वालि, °वाली स्त्री [°पालि, °पाली] आलिंगन (काप्र १९४)। °हर देखो °धर (जीव ३)।

अंक [दे अङ्क] निकट, समीप, पास (दे १, ५)।

अक पुन [अङ्क] एक देव-विमान (देवेन्द्र १३२)।

अककरेलुअ, °ग देखो अक-करेल्लुअ (आचा २, १, ८, ५)।

अकण न [अङ्कन] १ चिह्नित करना (आव)। २ बैल आदि पशुओ को लोहे की गरम सलाई आदि से दागना (पणह १,१)। ३ वि. अंकित करनेवाला, गिनती मे लानेवाला, 'अंकण जोइ-सस्स सूर' (कप्प)।

अकणा स्त्री [अङ्कना] ऊपर देखो (णाया १, १७)।

अकदास पु [अङ्कदास] बालक को उत्सग मे लेकर उसका जी वहलानेवाला नौकर (सम्मत्त २१७)।

अकवाणिय देखो अंक-वणिय (राय १२९)।

अंकार पुं [दे] सहायता, मदद (दे १,६)।
अंकावई स्त्री [अङ्कावती] १ महाविदेह क्षेत्र के रम्य नामक विजय की राजधानी (ठा २)। मेरु की पश्चिम दिशा में बहती हुई शीतोदा महानदी की दक्षिण दिशा मे वर्तमान एक वक्षस्कार पर्वत (ठा ५, २)।
अंकिअ न [दे] आलिंगन (दे १,११)।
अंकिअ वि [अङ्कित] चिह्नित, निशानवाला (औप)।
अंकिइल्ल पुं [दे] नट, नर्तक, नचवैया (गाया १, १)।
अंकुडग पु [अङ्कुटक] नागदन्तक, खूँटी, ताख (जं १)।
अंकुर पुं [अङ्कुर] प्ररोह, फुनगी (जी ६)।
अंकुरिय वि [अङ्कुरित] अंकुर-युक्त, जिसमे अंकुर उत्पन्न हुए हो वह (उवा)।
अंकुस पु [अङ्कुश] १ आंकडी, लोहे का एक हथियार, जिससे हाथी चलाये जाते हैं, 'अंकुसेण जहा णागो धम्मे संपडिवाइओ' (उत्त २२)। २ ग्रह-विशेष (ठा २, ३)। ३ सीता का एक पुत्र, कुस (पउम ६७, १६)। ४ नियन्त्रण करनेवाला, काबू में रखनेवाला (गउड)। ५ एक देव-विमान (राज)। ६ पुन गुरु-वन्दन का एक दोष (पव २)।
अंकुस पुन [अङ्कुश] १ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४०)। २ पु अंकुशाकार खूँटी (राय ३७)।
अंकुसइय न [दे अंकुशित] अंकुश के आकार-वाली चीज (दे १, ३८, से ६, ६३)।
अंकुसय पु [अङ्कुशक] देखो अंकुस। २ सन्यासी का एक उपकरण, जिससे वह देव-पूजा के वास्ते वृक्ष के पल्लवो को काटता है (औप)।
अंकुसा स्त्री [अङ्कुशा] चौदहवें तीर्थंकर श्री अनन्तनाथ भगवान् की शासन-देवी (पव २८)।
अंकुसिअ वि [अङ्कुशित] अंकुश की तरह मुडा हुआ (से १४, २६)।
अंकुसी स्त्री [अङ्कुशी] देखो अंकुसा (संति १०)।
अंकूर देखो अंकुर, 'सा पुण विरतमित्ता णिंबंकूरे विसेसेइ' (सूअनि ६१ टी)।

अंकेल्लण न [दे] घोडा आदि को मारने का चाबुक, कोडा, औंगी (ज ४)।
अंकेल्लि पु [दे] अशोक-वृक्ष (दे१, ७)।
अंकोल्ल पु [अङ्कोठ] वृक्ष-विशेष (हे १,२००)।
अंग व पु [अङ्ग] १ इस नाम का एक देश, जिसको आजकल बिहार कहते हैं (सुर २, ६७)। २ रामका एक सुभट (पउम ५६,३७)। ३ न आचाराग सूत्र आदि बारह जैन आगम-ग्रंथ (विपा २, १)। ४ वेदाग, वेद के शिक्षादि छ अंग (आचू)। ५ कारण, हेतु (पव १)। ६ आत्मा, जीव (भवि)। ७ पुन शरीर (प्रासू ८४)। ८ शरीर के मस्तक आदि अवयव (कम्म १, ३४)। ९ अ मित्रता का आमन्त्रण, सम्बोधन (राय)। १० वाक्यालंकार मे प्रयुक्त किया जाता अव्यय (ठा ४)। °इ पु [°जित्] इस नामका एक गृहस्थ, जिसने भगवान् पार्श्वनाथ के पास दीक्षा ली थी (निर)। °इसि पु [°र्षि] चपा नगरी का एक ऋषि (आचू)। [°चूलिया] स्त्री [°चूलिका] अंग-ग्रंथो का परिशिष्ट (पक्खि)। °च्छल्लिय वि [°छिन्नाङ्ग] जिसका अंग काटा गया हो वह (सूअ २, २, ६३)। °जाय वि [°जात] बच्चा, लडका (उप ६४८)। °द देखो °य = °द (ठा ८)। °पविट्ठ न [°प्रविष्ट] १ बारह जैन अंग-ग्रन्थो में से कोई भी एक (कम्म १, ६)। २ अंग-ग्रंथो का ज्ञान (ठा २, १)। °बाहिर न [°बाह्य] १ अंग-ग्रंथो के अतिरिक्त जैन आगम (आचू)। २ अंग-ग्रंथो से भिन्न जैन आगमो का ज्ञान (ठा २)। °मग न [°ाङ्ग] १ अंग-प्रत्यग (राय)। २ हर एक अवयव (षड्)। °मंदिर न [°मन्दिर] चम्पा नगरी का एक देव-गृह (भग १, १)। °मद्द, °मद्दय पु [°मर्द, °मर्दक] १ शरीर की चपी करनेवाला नौकर। २ वि शरीर को मलनेवाला, चपी करनेवाला (सुपा १०८, महा, भग ११, १)। °य पुं [°द] १ वाली नामक विद्याधरराज का पुत्र (पउम १०, १०, ५६, ३७)। २ न. बाजूबंद, केहुटा (पण्ह १, ४)। °य वि [°ज] १ शरीर मे उत्पन्न। २ पु पुत्र, लडका (उप १३४ टी)। °या स्त्री [°जा] कन्या, पुत्री (पाअ)। °रक्ख, °रक्खग वि [°रक्ष, °रक्षक] शरीर की रक्षा करनेवाला (सुपा ५२७, इक)। °राग, °राय पु [°राग] शरीर मे चन्दनादि का विलेपन (औप, गा १८६)। °राय पु [°राज] १ अगदेश का राजा (उप ७६५)। अंग देश का राजा कर्ण (णाया १, १६, वेणी १०४)। °रिसि देखो °इसि। °रुह वि [°रुह] देखो °य = °ज (सुपा ५१२, पउम ५६, ३२)। °रुहा स्त्री [°रुहा] पुत्री, लडकी (सुपा १५०)। °विज्जा स्त्री [°विद्या] १ शरीर के स्फुरण का शुभाशुभ फल बतलानेवाली विद्या (उत्त ८)। २ उस नाम का एक जैन ग्रंथ (उत्त ८)। °वियार पुं [°विचार] देखो पूर्वोक्त अर्थ (उत्त १५)। °संभूय वि [°संभूत] सतान, बच्चा (उप ६४८)। °हारय पु [°हारक] शरीर के अवयवो के विक्षेप, हाव-भाव (अजि ३१)। °ादाण न [°ादान] पुरुषेन्द्रिय, पुरुष-चिह्न (निसी)।
अंग पु [अङ्ग] भगवान् आदिनाथ के एक पुत्र का नाम (ती १४)। २ न लगातार बारह दिनो का उपवास (सवोध ५८)। °ज देखो °य (धर्मवि १२६)। °हर वि. [°धर] अङ्ग-ग्रंथो का जानकार (विचार ४७३)।
अंग वि [आङ्ग] १ शरीर का विकार (ठा ८)। २ शरीर-सबधी, शारीरिक (सुअ २, २)। ३ न शरीर के स्फुरण आदि विकारो के शुभाशुभ फल को बतलानेवाला शास्त्र, निमित्त-शास्त्र (सम ४६)।
°अंग वि [चङ्ग] सुन्दर, मनोहर (भवि)।
अंगइया स्त्री [अङ्गदिका] एक नगरी, तीर्थ-विशेष (उप ५५२)।
अंगंगीभाव पु [अङ्गाङ्गीभाव] अभेद-भाव, अभिन्नता, 'अंगंगीभावेण परिणएणन्नसरिस-जिणधम्मे' (सुपा २१८)।
अंगण न [अङ्गण] आगन, चौक (सुर ३, ७१)।
अंगणा स्त्री [अङ्गना] स्त्री, औरत (सुर ३, १८)।
अंगदिआ देखो अङ्गइया (ती)।
अंगवड्ढण न [दे] रोग, बीमारी (दे १, ४७)।

अंगवलिज्ज न [दे] शरीर को मोड़ना (दे १, ४२)।

अगार पु [अङ्गार] १ जलता हुआ कोयला (हे १, ४७)। २ जैन साधुओं के लिए भिक्षा का एक दोष (आचा)। °मद्दग पु [°मर्दक] एक अभव्य जैन-आचार्य (उप २५४)। °वई स्त्री [°वती] सुमुमार नगर के राजा धुन्धुमार की एक कन्या का नाम (धम्म ८ टी)।

अंगारग, अगारय } पु [अङ्गारक] १-२ ऊपर देखो (गा २६१)। ३ मंगल-ग्रह (पण्ह १, ५)। ४ पहला महाग्रह (ठा २)। ५ राक्षस-वंश का एक राजा (पउम ५, २६२)।

अगारिय वि [अङ्गारित] कोयले की तरह जला हुआ, विवर्ण (नाट, आचा)।

अगाल देखो अंगार, 'निदड्ढंगालनिभं' (पिंड ६७५)।

अगालग देखो अगारग (राज)।

अंगालिय न [दे] ईख का टुकड़ा (दे १, २८)।

अगालिअ देखो अंगारिय (आचा)।

अगि पु [अङ्गिन्] १ प्राणी, जीव (गण ८)। २ वि. शरीरवाला। ३ अंग-ग्रन्थों का ज्ञाता (कप्प)।

अगिरस न [अङ्गिरस] एक गोत्र, जो गोतम-गोत्र की शाखा है (ठा ७)।

अगिरस वि [आङ्गिरस] १ अंगिरस-गोत्र में उत्पन्न (ठा ७)। २ पु एक तापस (पउम ४, ८६)।

अंगीकड, अगीकय } वि [अङ्गीकृत] स्वीकृत (ठा ५, सुपा ५२६)।

अगीकर, अगीकुण } सक [अङ्गी + कृ] स्वीकार करना। अंगीकरेइ (महा, नाट)। अंगीकरेहि (स ३०६)। संकृ अगीकरेऊण (विसे २६४२)।

अगुअ पुं [इङ्गुद] १ वृक्ष-विशेष। २ न इंगुद वृक्ष का फल (हे १, ८९)।

अंगुठ्ठ पु [अङ्गुष्ठ] अंगूठा (ठा १०)। °पसिण पु [°प्रश्न] १ एक विद्या। २ 'प्रश्न-व्याकरण' सूत्र का एक लुप्त अध्ययन (ठा १०)।

अगुट्ठी स्त्री [दे] सिरका अवगुण्ठन, घूंघट (दे १, ६, स २८४)।

अंगुत्थल न [दे] अंगुठी, अंगुलीय (दे १, ३१)।

अगुब्भव वि [अङ्गोद्भव] संतान, बच्चा (उप २६४)।

अंगुम सक [पूरय्] पूर्ति करना, पूरा करना। अंगुमइ (हे ४, ६८)।

अगुमिय वि [पूरित] पूर्ण किया हुआ (कुमा)।

अंगुरि, °री स्त्री [अङ्गुलि, °ली] उंगली (गा २७७)।

अगुल न [अङ्गुल] यव के आठ मध्यभाग के बराबर का एक नाप, मान-विशेष (भग ३, ७)। °पोहत्तिय वि [°पृथक्त्वक] दो से लेकर नव अंगुल तक का परिमाण वाला (जीव १)।

अगुलि स्त्री [अङ्गुलि] उंगली (कुमा)। °कोस पु [°कोश] अंगुलि-त्राण, दास्ताना (राय)। °प्फोडण न [°स्फोटन] उंगली फोड़ना, कड़ाका करना (तंदु)।

अगुलिअ, अगुलिज्जक, अगुलिज्जग } न [अङ्गुलीयक] अंगुठी (दे ५, ६, कप्प, पि २५२)।

अगुलिणी स्त्री [दे] प्रियंगु, वृक्ष-विशेष (दे १, ३२)।

अंगुली स्त्री [अङ्गुली] देखो अगुलि (कप्प)।

अंगुलीय, अगुलीयग, अगुलीयय, अगुलेज्जक, अंगुलेयय } पुन [अङ्गुलीयक] अंगुठी (सुर १०, ९४), 'पायवडिएण सामिय! समप्पिओ अंगलीयओ तीए' (पउम ५४, ६, सुर १, १३२, पि २५२, पउम ४६, ३९)।

अंगुलेयग देखो अगुलेयय (सुख २, २९)।

अगुवंग, अगोवग } न [अङ्गोपाङ्ग] १ शरीर के अवयव (पण्ण २३)। २ नख वगैरह शरीर के छोटे-छोटे अवयव, 'नहकेसमंसुअंगुलीओट्ठा खलु अंगोवगाणि' (उत्त ३)। °णाम न [°नामन्] शरीर के अवयवों के निर्माण में कारण-भूत कर्म-विशेष (कम्म १, ३४, ४८)।

अगोहलि स्त्री [दे] शिर को छोड़कर बाकी शरीर का स्नान (उप पृ २३)।

अंघो अ [अङ्ग] भय-सूचक अव्यय (प्राप्र ३६, प्रयौ २०५)।

अंच सक [कृष्] १ खींचना। २ जोतना, चास करना। ३ रेखा करना। ४ उठाना। अंचइ (हे ४,१८७)। संकृ अचेइत्ता (आव)।

अच सक [अञ्च्] पूजना, पूजा करना। अंचए (भवि)।

अच सक [अञ्च्] जाना। अंचति (पचा १६, २३), 'अञ्चु गइ पूयणम्मि य', 'सोधीए पारमचइ' (बृह ४)।

अंचल पु [अञ्चल] कपड़े का शेष भाग (कुमा)।

अंचि पु [अञ्चि] गमन, गति (भग १५)।

अचि पु [आञ्चि] आगमन, आना (भग १५)।

अंचिय वि [अञ्चित] १ युक्त, सहित (सुर ४, ६७)। २ पूजित (सुपा २१८)। ३ प्रशस्त, श्लाघित (प्रासू १८)। ४ न एक प्रकार का नृत्य (ठा ४, ४, जीव ३)। ५ एक वार का गमन (भग १५)। °यचि पु [°ञ्चि] १ गमनागमन, आना जाना (भग १५)। २ ऊंचा-नीचा होना (ठा १०)।

अंचियरिभिय न [अञ्चितरिभित] एक तरह का नाट्य (राय ५३)।

अचिया स्त्री [अञ्चिका] आकर्षण (स१०२)।

अछ सक [कृष्] १ खींचना, 'अछति वासुदेव अगडतडम्मि ठिय संत' (विसे ७९४)। २ अक लम्बा होना। वकृ अंछमाण (विसे ७९६)। प्रयो अछावेइ (णाया १, १)।

अछण न [कर्षण] खींचाव (पण्ह २, ५)।

अछिय वि [दे] आकृष्ट, खींचा हुआ (दे १, १४)।

अंज सक [अञ्ज्] आंजना। कृ अंजियव्व (स ५४३)।

अंजण पुं [अञ्जन] १ कृष्ण पुद्गल-विशेष (सुज्ज २०)। २ देव-विशेष (सिरि ६६७)।

अजण पु [अञ्जन] १ पर्वत-विशेष (ठा ५)। २ एक लोकपाल देव (ठा ४)। ३ पर्वत-विशेष का एक शिखर, जो दिग्हस्ती कहा जाता है (ठा २, ३, ८)। ४ वृक्ष-विशेष (आव)। ५ न. एक जाति का रत्न (णाया १, १)। ६ देवविमान-विशेष (सम ३५)। ७ काजल, कज्जल (प्रासू ३०)। ८ जिसका

सुरमा बनता है ऐसा एक पार्थिव द्रव्य (जी ४)। ६ आँखको आँजना (सूअ १, ६)। १० तैल आदि से शरीर की मालिश करना (राज)। ११ लेप (स ५८२)। १२ रत्नप्रभा पृथिवी के खर-काण्ड का दशवाँ अंश-विशेष (ठा १०)। °केसिया स्त्री [°केशिका] वनस्पति-विशेष (पण्ण १७, राय)। °जोग पु [°योग] कला-विशेष (कप्प)। °दीव पु [°द्वीप] द्वीप-विशेष (इक)। °पुलय पु [°पुलक] एक जाति का रत्न (ठा १०)। २ पर्वत-विशेष का एक शिखर (ठा ८)। °प्पहा स्त्री [°प्रभा] चौथी नरक-पृथिवी (इक)। °रिट्ठ पु [°रिष्ट] इन्द्र-विशेष (भग ३, ८)। °सलागा स्त्री [°शलाका] १ जैन-मूर्तिकी प्रतिष्ठा। २ अंजन लगाने की सलाई (सूअ १, ५)। °सिद्ध वि [°सिद्ध] आँख में अंजन-विशेष लगाकर अदृश्य होने की शक्तिवाला (निसी)। °सुन्दरी स्त्री [°सुन्दरी] एक सती स्त्री, हनूमान् की माता (पउम १५, १२)।

अंजणइसिआ स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष, श्याम तमाल का पेड़ (दे १, ३७)।

अंजणई स्त्री [दे] वल्ली-विशेष (पण्ण१)।

अंजणईस न [दे] देखो अंजणइसिआ (दे १, ३७)।

अंजणग देखो अंजण।

अंजणा स्त्री [अंजना] १ हनूमान की माता (पउम १, ६०)। २ स्वनाम-ख्यात चौथी नरक-पृथिवी (ठा २, ४)। ३ एक पुष्करिणी (ज ४)। °तणय पु [°तनय] हनूमान् (पउम ४७, २८)। °सुन्दरी स्त्री [°सुन्दरी] हनूमान् की माता (पउम १८, ५८)।

अंजणाभा स्त्री [अञ्जनाभा] चौथी नरक-पृथिवी (इक)।

अंजणिआ स्त्री [दे] देखो अंजणइसिआ (दे १, ३७)।

अंजणी स्त्री [अञ्जनी] कज्जल का आधार-पात्र (सूअ १, ४)।

अंजलि, °ली पुस्त्री [अञ्जलि] १ हाथ का संपुट (हे १, ३५)। २ एक या दोनो संकुचित हाथों को ललाट पर रखना, 'एगेण वा दोहि वा मउलिएहि हत्थेहि णिडालसंसितेहि अंजली भण्णति' (निचू)। ३ कर-संपुट, नमस्कार रूप विनय, प्रणाम (प्रासू ११०, स्वप्न ६३)। °उड पुं [°पुट] हाथ का संपुट (महा)। °करण न [°करण] विनय-विशेष, नमन (दे)। °पग्गह पुं [°प्रग्रह] १ नमन, हाथ जोड़ना (भग १४, ३)। २ संभोग-विशेष (राज)।

अंजस वि (दे) ऋजु, सरल (दे १, १४)।

अंजिय वि [अञ्जित] आँजा हुआ, अंजन-युक्त किया हुआ (से ६, ४८)।

अंजु वि [ऋजु] १ सरल, अकुटिल, 'अंजुधम्मं जहा तच्चं, जिणाण तं सुणेह मे' (सूअ १, १, १, ४, ८)। २ संयम में तत्पर, संयमी, 'पुट्ठोवि नाइवत्तइ अंजू' (आचा)। ३ स्पष्ट, व्यक्त (सूअ १, १)।

अंजुआ स्त्री [अञ्जुका] भगवान् अनन्तनाथ की प्रथम शिष्या (सम १५२)।

अंजू स्त्री [अञ्जू] १ एक सार्थवाह की कन्या (विपा १, १०)। २ 'विपाकश्रुत' का एक अध्ययन (विपा १, १)। ३ एक इन्द्राणी (ठा ८)। ४ 'ज्ञाताधर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन (णाया २)।

अंठि पुन [अस्थि] हड्डी, हाड (षड्), 'अहिअमहुरस्स अवस्स अजोग्गदाए अंठी न भक्खीअदि' (चारु ६)।

अंड, अंडअ, अंडग न [अण्ड, °क] १ अंडा (कप्प, औप)। २ अंड-कोश (महानि ४)। ३ 'ज्ञाताधर्मकथा' सूत्र का तृतीय अध्ययन (णाया १, १)। °कड वि [°कृत] जो अण्डे में बनाया गया हो, 'बंभणा माहणा एगे, आह अण्डकडे जगे' (सूअ १, ३)। °बंध पु [°बन्ध] मन्दिर के शिखर पर रखा जाता अण्डाकार गोला (गउड)। °वाणियय पु [°वाणिजक] अण्डों का व्यापारी (विपा १, ३)।

अंडग, अंडय त्रि [अण्डज] १ अण्डे से पैदा होनेवाले जन्तु, पक्षी, साँप, मछली वगैरह (ठा ३, १, ८)। २ रेशम का धागा। ३ रेशमी वस्त्र (उत्त २६)। ४ शण का वस्त्र (सूअ २, २)।

अंडय पुं [दे, अण्डज] मछली, मत्स्य (दे १, १६)।

अंडाउय वि [अण्डज] अण्डे से पैदा होनेवाला (पउम १०२, ६७)।

अंत पुं [अन्त] १ स्वरूप, स्वभाव (से ६, १८)। २ प्रान्त भाग (से ६, १८)। ३ सीमा, हद (जी ३३)। ४ निकट, नजदीक (विपा १, १)। ५ भंग, विनाश (विसे ३४५४, जी ४८)। ६ निर्णय, निश्चय (ठा ३)। ७ प्रदेश, स्थान, 'एगंतमंतमवक्कमइ' (भग ३, २)। ८ राग और द्वेष, 'दोहि अंतेहिं अदिस्समाणो' (आचा)। ९ रोग, बीमारी (विसे ३४५४)। १० वि इन्द्रियों को प्रतिकूल लगनेवाली चीज, असुन्दर, नीरस वस्तु (पण्ह २, ४)। ११ मनोहर, सुन्दर (से ६, १८)। १२ नीच, क्षुद्र, तुच्छ (कप्प)। °कर वि [°कर] उसी जन्म में मुक्ति पानेवाला (सूअ १, १५)। °करण वि [°करण] नाशक (पण्ह १, ६)। °काल पु [°काल] १ मृत्यु काल। २ प्रलय काल (से ५, ३२)। °किरिया स्त्री [°क्रिया] मुक्ति, संसार का अन्त करना (ठा ४, १)। °कुल न [°कुल] क्षुद्र कुल (कप्प)। °गड वि [°कृत्] उसी जन्म में मुक्ति पानेवाला (उप ४६१)। °गडदसा स्त्री [°कृद्दशा] जैन अंग-ग्रंथों में आठवाँ अंग-ग्रंथ (अणु १)। °चर वि [°चर] भिक्षा में नीरस पदार्थों की ही खोज करनेवाला (पण्ह २, १)।

अंत वि [अन्त्य] अन्तिम, अन्त का (पण्ण १५)। °क्खरिया स्त्री [°ाक्षरिका] १ ब्राह्मी लिपि का एक भेद (पण्ण १)। २ कला-विशेष (कप्प)।

अंत न [अन्त्र] आँत (सुपा १८२, गा ५८५)।

अंत अ [अन्तर्] मध्य में, बीच में (हे १, १४)। °उर न [°पुर] देखो अंतेउर (नाट)। °करण, °क्करण [°करण] मन, हृदय, 'करुणारसपरवसंतकरणेण' (उप ६ टी, नाट)। °ग्गय वि [°गत] मध्यवर्ती, बीचवाला (हे १, ६०)। °द्धा स्त्री [°धा] १ तिरोधान। २ नाश (आचू)। °द्धाण न [°धान] अदृश्य होना, तिरोहित होना

(उप १३९ टी)। °द्धाणी स्त्री [°र्धानी] जिससे अदृश्य हो सके ऐसी विद्या (सूअ २, २)। °द्धाभूअ वि [°र्धाभूत] नष्ट, विगत, 'नट्ठेत्ति वा विगतेत्ति वा अतद्धाभूतेत्ति वा एगट्ठा' (आचू)। °प्पाअ पु [°पात] अन्तर्भाव, समावेश (हे २, ७७)। °भाव पु [°भाव] समावेश (विसे)। °मुहुत्त न [°मुहूर्त] कुछ कम मुहूर्त्त, न्यून मुहूर्त्त (जी १४)। °रद्धा स्त्री [°धा] १ तिरोधान। २ नाश, 'वुड्ढी सइअन्तरद्धा' (श्रा १६)। °रद्धा स्त्री [°अद्धा] मध्य-काल, बीच का समय (आचा)। °रप्प पु [°आत्मन्] आत्मा, जीव (हे १, १४)। °रहिय, °रिहिद (शौ) वि [°हित] १ व्यवहित, अतराल-युक्त (आचा)। २ गुप्त, अदृश्य (सम ३९, उप १६६ टी, अभि १२०)। °विइ पु [°वेदि] गगा और यमुना के बीच का देश (कुमा)।

°अत वि [°कान्त] सुन्दर, मनोहर (से १, ५९)।

अतअ वि [आयात] आता हुआ (मे ६, ४९)।

अतअ वि [अन्तग] पार-गामी, पार-प्राप्त (मे ६, १८)।

अंतअ वि [अन्तद] १ अविनाशी, शाश्वत। २ जिसकी सीमा न हो वह (मे ६,१८)।

अतअ } वि [अन्तक] १ मनोहर, सुन्दर
अतग } (से ६, १८)। २ अन्तर्गत, समाविष्ट (सूअ १, १५)। ३ पर्यन्त, प्रान्त भाग, 'जे एव परिभासति अन्तए ते समाहिए' (सूअ १,३)। ४ यम, मृत्यु (से ६, १८, उप ९६६ टी), 'समागमं कखति अन्तगस्स' (सूअ १, ७)।

अतग वि [अन्तग] १ पार-गामी। २ दुस्त्यज, जो कठिनाई से छोडा जा सके, 'चिचाण अन्तग सोय निरवेक्खो परिव्वए' (सूअ १, ९)।

अतगय देखो अत-ग्गय (वव १)।

°अतण न [यन्त्रण] बन्धन, नियन्त्रण (प्रयौ २४)।

अतद्धाण वि [अन्तर्धान] तिरोधान-कर्त्ता (पिंड ५००)।

अतब्भाव देखो अंत-भाव (अज्झ १४२)।

अंतर न [अन्तर] १ मध्य, भीतर, 'गामतरे पविट्ठो सो' (उप ६ टी)। २ भेद, विशेष, फरक (प्रासू १६८)। ३ अवसर, समय (णाया १, २)। ४ व्यवधान (ज १)। ५ अवकाश, अन्तराल (भग ७,८)। ६ विवर, छिद्र (पाअ)। ७ रजोहरण। ८ पात्र। ९ पुं. आचार, कल्प। १० सूत के कपडे पहनने का आचार, सौत्र कल्प (कप्प)। °कप्प पुं [°कल्प] जैन साधु का एक आत्मिक प्रशस्त आचरण (पचू) °कद पु [°कन्द] कन्द की एक जाति, वनस्पति-विशेष (पराण१)। °करण न [°करण] आत्मा का शुभ अध्यवसाय-विशेष (पच)। °गिह न [°गृह] १ घर का भीतरी भाग। २ दो घरो के बीच का अतर (बृह ३)। °णई स्त्री [°नदी] छोटी नदी (ठा ६)। °दीव पु [°द्वीप] १ द्वीप-विशेष (जी २३)। २ लवण समुद्र के बीच का द्वीप (पराण १)। °सत्तु पु [°शत्रु] भीतरी शत्रु, काम-क्रोधादि (सुपा ८५)।

अतर सक [अन्तरय्] व्यवधान करना, बीच मे डालना। अतरेहि, अतरेमि (विक्र १३९)।

अतर वि [आन्तर] १ अभ्यन्तर, भीतरी, 'सयलसुराणपि अतरो अप्पाणो' (अच्चु २०)। २ मानसिक (उवर ७१)।

अतरग वि [अन्तरङ्ग] भीतरी (विसे २०२७)।

अतरजी स्त्री [आन्तरञ्जी] नगरी-विशेष (विसे २३०३)।

अतरपल्ली स्त्री [अन्तरपल्ली] मूल स्थान से ढाई गव्यूत की दूरी पर स्थित गाँव (पव७०)।

अतरमुहुत्त देखो अत-मुहुत्त (पच २,१३)।

अतरा अ [अन्तरा] १ मध्य मे, वीच मे (उप ६५४)। २ पहले, पूर्व मे (कप्प)।

अतराइय न [आन्तरायिक] १ कर्म-विशेष, जो दान आदि करने मे विघ्न करता है (ठा २)। २ विघ्न, रुकावट (पराह २,१)।

अतराईय न [अन्तरायीय] ऊपर देखो (सुपा ६०१)।

अंतरापह पुं [अन्तरापथ] रास्ता का बीचला भाग (सुख १, १५)।

अतराय पुन. [अन्तराय] देखो अतराइय (ठा २, ४, स २०३)।

अतराल पु [अन्तराल] अतर, बीच का भाग (अभि ८२)।

अतरावण पुन [अन्तरापण] दूकान, हाट (चारु ३)।

अतरावास पु [अन्तरवर्ष, अन्तरावास] वर्षा-काल (कप्प)।

अंतरिक्ख पुंन [अन्तरिक्ष] अन्तराल, आकाश (भग १७, १०, स्वप्न ७०)। °जाय वि [°जात] जमीन के ऊपर रही हुई प्रासाद, मंच आदि वस्तु (आचा २, ५)। °पासणाह पु [°पार्श्वनाथ] खानदेश मे अकोला के पास का एक जैन-तीर्थ और वहाँ की भगवान श्रीपार्श्वनाथ की मूर्ति (ती)।

अतरिक्ख वि [आन्तरिक्ष] १ आकाश-संबंधी, आकाश का (जी ५)। २ ग्रहो के परस्पर युद्ध और भेद का फल बतलानेवाला शास्त्र (सम ४९)।

अंतरिज्ज न [अन्तरीय] १ वस्त्र, कपडा। २ शय्या का नीचला वस्त्र, 'अतरिज्जं णाम णियसण, अहवा अतरिज्ज नाम सेज्जाए हेट्ठिल्ल पोत्त' (निचू १५)।

अंतरिज्ज न [दे] करधनी, कटीसूत्र (दे १, ३५)।

अतरिज्जिया स्त्री [अन्तरीया] जैनीय वेशवाटिक गच्छ की एक शाखा (कप्प)।

अतरित } वि [अन्तरित] व्यवहित, अतर-
अतरिय } वाला (सुर ३, १४३, से १, २७)।

अतरिया स्त्री [दे] समाप्ति, अत (ज २)।

अतरिया स्त्री [अन्तरिका] छोटा अन्तर, थोडा व्यवधान (राय)।

अतरीय न [अन्तरीप] द्वीप, 'सरवरगिहतराले जिणभवण आसि अतरीय व' (धर्मवि १४३)।

अतरेण अ [अन्तरेण] विना, सिवाय (उत्त १)।

अंतरेण अ [अन्तरेण] बीच मे, मध्य मे (स ७६७)।

अन्तलिक्ख देखो अन्तरिक्ख (णाया १, १, चारु ७)।

°अति देखो पति (से ६, ६६)।

अतिम वि [अन्तिम] चरम, शेष, अन्त्य (ठा १)।

अतिय न [अन्तिक] १ समीप, निकट (उत्त १)। २ अवसान, अंत, 'अह भिक्खू गिलाएज्जा आहारस्सेव अंतिया' (आचा १,८)। ३अन्तिम, चरम (सूअ २, २)।

अंतीहरी स्त्री [दे] दूती (दे १, ३५)।

अतेआरि वि [अन्तश्चारिन्] बीच में जानेवाला, वीचक (हे १, ६०)।

अतेउर न [अन्त पुर] १ राजस्त्रियो का निवासगृह। २ रानी, 'मणकुमारो वि तेसिं वदणत्थ सतेउरो गम्रो तमुज्जाए' (महा)।

अतेउरिगा, अंतेउरिया, अतेउरी } स्त्री [आन्त पुरिकी, °री] अन्त पुर मे रहनेवाली स्त्री, राज्ञी (उप ६ टी, सुपा २२८, २८६)। २ रोगी का नाममात्र लेने से उसको नीरोग बनानेवाली एक विद्या (वव ५)।

अतेल्ली स्त्री [दे] १ मध्य, वीच। २ उदर, पेट। ३ कल्लोल, तरग (दे १, ५५)।

अतेवासि वि [अन्तेवासिन्] शिष्य (कप्प)।

अतेवुर देखो अतेउर (प्रति ५७)।

अंतो अ [अन्तर्] वीच, भीतर, 'गामतो संपत्ता' (उप ६ टी, सुर ३, ७४)। °खरिया स्त्री [°खरिका] नगर मे रहनेवाली वेश्या (भग १५)। °गइया स्त्री [°गतिका] स्वागत के लिए सामने जाना, 'सव्वाए विभूईए अतोगइयाए तणयस्स' (सुर १५, १६१)। °गय वि [°गत] मध्यवर्ती, समाविष्ट (उप ९८६ टी)। °णिअसणी स्त्री [°निवसनी] जैन साध्वियो को पहनने का एक वस्त्र (वृह ३)। °दहण न [°दहन] हृदय-दाह (तदु)। °मज्झावसाणिय पुन [°मध्यावसानिक] अभिनय का एक भेद (राय)। °मुहुत्त न [°मुहूर्त्त] कम मुहूर्त्त, ४८ मिनिट से कम समय (कप्प)। °वाहिणी स्त्री [°वाहिनी] क्षुद्र नदी (ठा २, ३)। °वीसभ पु [°विश्रम्भ] हार्दिक विश्वास (हे १ ६०)। °सल्ल न [°शल्य] १ भीतरी शल्य, घाव (ठा ४)। २ कपट, माया (औप)। °साला स्त्री [°शाला] घरका भीतरी भाग, 'कोलालभड अतोसालाहिंतो वहिया नीणेइ' (उवा, पि ३४३)। °हुत्त वि [°मुख] भीतर, 'अताहुत्त डज्झइ जायासुएणे घरे हलिअउत्तो' (गा ३७३)।

अतोहुत्त वि [दे] अधोमुख, औंधा मुह वाला (दे १, २१)।

अत्रडी (अप) स्त्री [अन्त्र] आंत, आतो (हे ४, ४४५)।

°अद पु [चन्द्र] १ चन्द्रमा, चाद 'पसुवइणो रोसारुणपडिमासंकंतगोरिमुहअंदं' (गा १)। २ कपूर (से ६, ४७)। °राअ पु (°राग) चन्द्रकान्त मणि (से ६, ४७)।

°अदरा स्त्री [°कन्दरा] गुफा (से ६, ४७)।

°अदल पु [कन्दल] वृक्ष-विशेष (से ७, ४७)।

°अदावेदि (शौ) देखो अतावेइ (हे ४, २८६)।

अंदु, अदुया } स्त्री [अन्दु] शृखला, जजीर (औप, स ५३०)।

अदेउर (शौ) देखो अतेउर (हे ४, २६१)।

अदोल अक [अन्दोल्] १ हिचकना, झूलना। २ कपना, हिलना। ३ संदिग्ध होना, 'अदोलइ दोलासु व माणो गरुओवि विलयाए' (स ५२१)। वकृ अदोलत, अदोलिंत, अंदोलमाण (से ८,५१,११,२५, सुर ३,११६)।

अंदोल सक [अन्दोलय्] कपाना, हिलाना। वकृ अदोलंत (सुर ३, ६७)।

अदोलग पु [आन्दोलक] हिंडोला (राय)।

अदोलण न [आन्दोलन] १ हिचकना, झूलना (सुर ४, २२५)। २ हिंडोला। ३ मार्ग-विशेष (सूअ १, ११)।

अदोलय देखो अंदोलग (सुर ३, १७५)।

अंदोलि वि [आन्दोलिन्] हिलानेवाला, कपानेवाला (गा २३७)।

अदोलिर वि [आन्दोलितृ] झुलनेवाला (सुपा ७८)।

अदोल्लण देखो अदोलण।

अंध वि [अन्ध] १ अन्धा, नेत्र-हीन (विपा १, १)। २ अज्ञान, ज्ञानरहित 'एए णं अधा मूढा तमप्पइट्ठा' (भग ७, ७)। °कंटइज्ज न [°कण्टकीय] अध पुरुष के कंटक पर चलने के माफिक अविचारित गमन करना (आचा)। °तम न [°तमस] निविड अन्धकार (सूअ १, ५)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (वृह ४)।

अध पु [अन्ध] पाचवाँ नरक का चौथा नरकेन्द्रक, एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ११)।

अध पु व. [अन्ध्र] इस नाम का एक देश (पउम ९८, ६७)।

अंध वि [आन्ध्र] आन्ध्र देश का रहनेवाला (पएह १, १)।

अधंधु पुं [दे] कूप, कुँआ (दे १, १८)।

अंधकार देखो अंधयार (चद ४)।

अधग पु [दे] वृक्ष, पेड (भग १८, ४)। °वण्हि पु [°वह्नि] स्थूल अग्नि (भग १८,४)।

अधग देखो अध (भग १८, ४)। °वण्हि पुं [°वह्नि] सूक्ष्म अग्नि (भग १८, ४)। °वण्हि पु (°वृष्णि) यदुवश का एक राजा, जो समुद्रविजयादि के पिता था (अत २)।

अंधय, अंधयग } पु [अन्धक] १ अधा, नेत्रहीन (पएह १, २)। २ वानर-वश का एक राज कुमार (पउम ६, १८६)।

अधयार पुन [अन्धकार] अंधेरा, अधकार (कप्प, स ४२६)। °पक्ख पु [°पक्ष] कृष्णपक्ष (सुज्ज १३)।

अधयारण न [अन्धकार] अन्धेरा (भवि)।

अधयारिय वि [अन्धकारित] अधकार-वाला (से १, १५, ६३)।

अंधरअ, अधल } वि [अन्ध] अधा, नेत्रहीन (गा ७०४, हे २, १७३)।

अधलरिछी स्त्री [अन्धयित्री] अध बनानेवाली एक विद्या (सुपा ४२८)।

अधार पु [अन्धकार] अंधेरा (ओघ १११, २७०)।

अंधार सक [अन्धकारय्] अन्धकार-युक्त करना। कर्म. 'मेहच्छन्ने सूरे अंधारिज्जइ न किं भुवणं' (कुप्र ३८७)।
अधारिय वि [अन्धकारित] अंधकार वाला (सुपा ५४, सुर ३, २३०)।
अंधाव सक [अन्धय्] अंधा करना। अंधावेइ (विक्र ८४)।
अधिअ वि [अन्धित] अन्ध बना हुआ (सम्मत्त १२१)।
अंधिआ स्त्री [अन्धिका] द्यूत-विशेष (दे २, १)।
अंधिआ स्त्री [आन्धिका] चतुरिन्द्रिय जंतु की एक जाति (उत्त ३६,१४७)।
अंधिल्लग वि [अन्ध] अन्धा, जन्मान्ध (पण्ह २, ५)।
अधिल्लय देखो अंधिल्लग, (पिंड ५७२)।
अंधीकिद (शौ) वि [अन्धीकृत] अंध किया हुआ (स्वप्न ४६)।
अंधु पुं [अन्धु] कूप, कुंआ (प्रामा, दे १,१८)।
अंधेल्लग देखो अधिल्लग (पिण्ड)।
°अप पुं [कम्प] कंपन (से ५, ३२)।
अंब पु [अम्ब] एक जात के परमाधार्मिक देव, जो नरक के जीवो को दुख देते हैं (सम २८)।
अंब पु [आम्र] १ आम का पेड। २ न आम, आम्र-फल (हे १, ८४)। °गट्ठिया स्त्री [दे] आम की आठी, गुठली (निचू १५)। °चोयग न [दे] १ आम का रुछा (निचू १५)। २ आम की छाल (आचा २,७,२)। °डगल न [दे] आम का टुकडा (निचू १५) °डालग न [दे] आम का छोटा टुकडा (आचा २,७,२)। °पेसिया स्त्री [°पेशिका] आम का लम्बा टुकडा (निचू १५)। °भित्त न [दे] आम का टुकडा (निचू १५)। °सालग न [दे] आम की छाल (निचू १५)। °सालवण न [°शालवन] चैत्य-विशेष (राय)।
अंब न [अम्ल] १ तक्र, मट्ठा (ज ३)। २ खट्टा रस। ३ खट्टी चीज (विसे)। ४ वि. निष्ठुर वचन बोलनेवाला (बृह १)।
अंब वि [आम्ल] १ खट्टी वस्तु। २ मट्ठे से संस्कृत चीज (ज ३)।
अंब वि [ताम्र] लाल, रक्तवर्णवाला (से ३, ३४)।

अंबग देखो अंब = आम्र (अणु) °ट्ठिया स्त्री [°अस्थि] आम की गुठली (अणु)।
अंबट्ठ पु [अम्बष्ठ] १ देश-विशेष (पउम ६८, ६५)। २ जिसका पिता ब्राह्मण और माता वैश्य हो वह (सूअ १, ९)।
अंबड पु [अम्बड] १ एक परिव्राजक, जो महाविदेह क्षेत्र मे जन्म लेकर मोक्ष जायगा (औप)। २ भगवान् महावीर का एक श्रावक, जो आगामी चौवीसी में २२ वाँ तीर्थंकर होगा (ठा ९)।
अंबड वि [दे] कठिन (दे १,१६)।
अंबधाई स्त्री [अम्बाधात्री] धाई माता (सुपा २६८)।
अंबमसी स्त्री [दे] कठिन और वासी कनिक (दे १, ३७)।
अंबय देखो अंब (सुपा ३३४)।
अंबर पुन [अम्बर] एक देव-विमान (देवेन्द्र १४४)।
अंबर न [अम्बर] १ आकाश (पाअ, भग २, २)। २ वस्त्र, कपडा (पाअ, निचू १)। °तिलय पु [°तिलक] पर्वत-विशेष (आव)। °वत्थ न [°वस्त्र] स्वच्छ वस्त्र (कप्प)।
अंबरस पुन [अम्बरस] आकाश, गगन (भग २०, २—पत्र ७७५)।
अंबरिस पुन [अम्बरीष] १ भट्टी, भाड (भग ३, ६)। २ कोष्ठक (जीव)। ३ पु नारक-जीवो को दुःख देनेवाले एक प्रकार के परमाधार्मिक देव (पव १८०)।
अंबरिसि पु [अम्बऋषि] १ ऊपर का तीसरा अर्थ देखो (सम २८)। २ उज्जयिनी नगरी का निवासी एक ब्राह्मण (आव)।
अंबरीस देखो अंबरिस।
अंबरीसि देखो अंबरिसि।
अंबसमिआ } देखो अंबमसी।
अंबसमी }
अंबहुंडी स्त्री [अम्बहुण्डी] एक देवी (महानि २)।
अंबा स्त्री [अम्बा] १ माता, मा (स्वप्न २२४)। २ भगवान् नेमिनाथ की शासनदेवी (संति १०)। ३ वल्ली-विशेष (पण्ण १)।
अंबाड सक [खरण्ट्] खरडना, लेप करना; 'चमढेति खरण्टेति अंबाडेति त्ति वुत्त भवति' (निचू ४)।

अंबाड सक [तिरस् + कृ] उपालंभ देना, तिरस्कार करना, 'तओ हक्कारिय अंबाडिअ भणिआ य' (महा)।
अंबाडग } पु [आम्रातक] १ आमला का
अंबाडय } (पण्ण १, पउम ४२, ६)। २ न. आमला का फल (अनु ६)।
अंबाडिय वि [तिरस्कृत] १ तिरस्कृत (महा)। २ उपालब्ध (स ५१२)।
अंबिआ स्त्री [अम्बिका] १ भगवान् नेमिनाथ की शासनदेवी (ती १०)। २ पांचवें वासुदेव की माता (पउम २०, १८४)। °समय पुं [°समय] गिरनार पर्वत पर का एक तीर्थ स्थान (ती ४)।
अंबिर न [आम्र] आम का फल (दे १,१५)।
अंबिल पु [आम्ल] १ खट्टा रस (सम ४१)। २ वि. खटाई वाली चीज, खट्टी वस्तु (ओघ ३४०)। ३ नामकर्म-विशेष (कम्म १,४१)।
अंबिलिया स्त्री [अम्लिका] १ इमली का पेड (उप १०३१ टी)। २ इमली का फल (श्रा २०)।
अंबु न [अम्बु] पानी, जल (पाअ)। °अ, °ज न [°ज] कमल, पद्म (अच्चु ५५, कुमा)। °णाह पु [°नाथ] समुद्र (वव ६)। °रुह न [°रुह] कमल (पाअ)। °वह पुं [°वह] मेघ, वारिस (गउड)। °वाह पु [°वाह] मेघ, वारिस (गउड)।
अंबुपिसाअ पुं [दे] राहु (गा ८०४)।
अंबुसु पु [दे] श्वापद जन्तु विशेष, हिंसक पशु-विशेष, शरभ (दे १, ११)।
अंबेट्टिआ } स्त्री [दे] एक प्रकार का जूआ, मुष्टि-द्यूत (दे १, ७)
अंबेट्टी }
अंबेसि पु [दे] द्वार-फलक, दरवाजे का तख्ता (दे १, ८)।
अंबोच्ची स्त्री [दे] फूलों को विननेवाली स्त्री (दे १, ९, नाट)।
अंभ पु [अम्भस्] पानी, जल (श्रा १२)।
अंभु (अप) पुं [अश्मन्] पत्थर, पाषाण (पड्)।
अंभो पुं [अम्भस्] पानी, जल। °अ न [°ज] कमल (दे ७, ३८)। °इणी स्त्री [°जिनी] कमलिनी, पद्मिनी (मै ६१)। °निहि पु [°निधि] समुद्र (श्रा १२)।

°रुह न [°रुह] कमल, पद्म, 'कुंभभोरुहसर-जलनिहिणो, दिव्वविमाणरयणगणसिहिणो' (उप ६ टी)।

अंभोहि पुं [अम्भोधि] समुद्र (कुप्र २७१)।

अंस पु [अंश] १ भाग, अवयव, खंड, टुकड़ा (पात्र)। २ भेद, विकल्प (विसे)। ३ पर्याय, धर्म, गुण (विसे)।

अंस पु [अंश] विद्यमान कर्म, सत्ता-स्थित कर्म, 'अंस इति सतकम्मं भन्नई' (कम्म ६,६)। °हर वि [°धर] भागीदार (उत्त१३, २२)।

अंस } पु [अंस] कान्ध, कंधा (णाया
अंसलग } १, १८, तंदु)।

अंसि देखो अंस = अंस्।

अंसि स्त्री [अश्रि] १ कोण, कोना (उप पृ ६८)। २ धार, नोक (ठा ८)।

अंसिया स्त्री [अंशिका] भाग, हिस्सा (बृह ३)।

अंसिया स्त्री [अर्शिका] १ बवासीर का रोग (भग १६, ३)। २ नासिका का एक रोग (निचू ३)। ३ फुनसी, फोड़ा (निचू ३)।

अंसु पु [अंशु] किरण (लहुअ ६)। °मालि पु [°मालिन्] सूर्य, सूरज (रयण १)।

अंसु देखो अंसुय = अंशुक (पच ३, ४०)।

अंसु पु [अंशु] किरण। °मत, °वत वि [°मत्] १ किरणवाला। २ पु. सूर्य (प्राकृ ३५)।

अंसु न [अश्रु] आँसू, नेत्र-जल। °मत, °वंत वि [°मत्] अश्रुवाला (प्राकृ३५)।

अंसु } न [अश्रु] आसू, नेत्र-जल (हे १,
अंसुय } २६, कुमा)।

अंसुय न [अंशुक] १ वस्त्र, कपड़ा (से ६, ८२)। २ बारीक वस्त्र (बृह २)। ३ पोशाक, वेश (कप्प)।

अंसोत्थ देखो अस्सोत्थ (पि ७४, १५२, ३०६)।

अंह पुन [अंहस्] मल, 'मउय व बाहिओ सो निरहसा तेण जलपवाहेण' (धर्मवि १४६)।

अंहि पुं [अंह्रि] पाद, पाँव (कप्पू)।

अकइ वि [अकति] असंख्यात, अनन्त (ठा ३)।

अकंड देखो अयंड (गा ६६५)।

अकड्ढतलिम वि [दे] १ स्नेह रहित। जिसने शादी न की हो वह (दे १, ६०)।

अकंपण वि [अकम्पन] १ कंप रहित। २ पु रावण का एक पुत्र (से १४,७०)।

अकंपिय वि [अकम्पित] १ कम्परहित २ पु भगवान् महावीर का आठवाँ गणधर (सम १६)।

अकज्ज देखो अकय = अकृत्य (उव)।

अकण्ण } वि [अकर्ण] १ कर्ण रहित।
अकन्न } २-३ पु स्वनामख्यात एक अंत-र्द्वीप और उसमे रहनेवाला (ठा ४, २)।

अकप्प पु [अकल्प] अयोग्य आचार, शास्त्रोक्त विधि-मर्यादा से बाहर का आचरण (कप्प)।

अकप्प वि [अकल्प्य] अनाचरणीय, शास्त्र-निषिद्ध आहार-वस्त्र आदि अग्राह्य वस्तु (वव १)।

अकप्पिय पु [अकल्पिक] जिसको शास्त्र का पूरा-पूरा ज्ञान न हो ऐसा जैन साधु (वव १)।

अकप्पिय देखो अकप्प = अकल्प्य (दस ५)।

अकम वि [अक्रम] १ क्रम रहित। २ क्रिवि एक साथ (कुमा)।

अकम्म } न [अकर्मन्, °क] १ कर्म
अकम्मग } का अभाव (बृह १)। २ पु मुक्त, सिद्ध जीव (आचा)। ३ कृषि आदि कर्म रहित (देश, भूमि वगैरह) (जी २४)। °भूमग, °भूमय वि [°भूमक] अकर्म-भूमि मे उत्पन्न होने वाला (जीव १)। °भूमि, °भूमी स्त्री [°भूमि, भूमी] जिस भूमि मे कल्प वृक्षो से ही आवश्यक वस्तुओं की प्राप्ति होने से कृषि वगैरह कर्म करने की आवश्यकता नही है वह, भोग-भूमि (ठा ३, ४)। °भूमिय वि [°भूमिज] अकर्म-भूमि मे उत्पन्न (ठा ३, १)।

अकम्हा अ [अकस्मात्] अचानक, निष्का-रण (सुपा ५६६)।

अकय वि [अकृत] नही किया हुआ (कुमा)। °मुह वि [°मुख] अपठित, अशिक्षित (बृह ३)। °त्थ वि [°र्थ] असफल (नाट)।

अकय वि [अकृत्य] १—२ करने के अयोग्य या अशक्य। ३ न अनुचित काम। °कारि वि [°कारिन्] अकृत्य को करनेवाला (पउम ८०, ७१)।

अकय्य (मा) ऊपर देखो (नाट)।

अकरण न [अकरण] १ नही करना (कस) २ मैथुन, 'जइ सेवति अकरण पचरणहवि बाहिरा हुंति' (वव ३)।

अकाइअ वि [अकायिक] १ शारीरिक चेष्टा से रहित। २ पु मुक्तात्मा (भग ८, २)।

अकाम पु [अकाम] १ अनिच्छा (सूअ २, ६)। २ वि इच्छारहित, निष्काम (सुपा २०६)। °णिज्जरा स्त्री [°निर्जरा] कर्म-नाश की अनिच्छा मे बुभुक्षा आदि कष्टो को सहन करना (ठा४,४)।

अकामग } [अकामक] ऊपर देखो।
अकामय } ३ अवाञ्छनीय, इच्छा करने के अयोग्य (पण्ह १, १; णाया१, १)।

अकामिय वि [अकामिक] निराश (विपा १, १)।

अकाय वि [अकाय] १ शरीररहित। २ पुं मुक्तात्मा (ठा २, ३)।

अकार पुं [अकार] 'अ' अक्षर, प्रथम स्वर वर्ण (विसे ४६५)।

अकारग पुं [अकारक] १ अरुचि, भोजन की अनिच्छा रूप रोग (णाया १, १३)। २ वि अकर्ता (सूअ १, १)। °वाइ वि [°वादिन्] आत्मा को निष्क्रिय माननेवाला (सूअ १, १)।

अकासि अ [दे] निषेध-सूचक अव्यय, अलम्, 'अकासि लज्जाए' (दे १, ८)।

अकिंचण वि [अकिञ्चन] १ साधु, मुनि, भिक्षुक (पण्ह २, ५)। २ गरीब, निर्धन, दरिद्र (पात्र)।

अकिट्ठ वि [अकृष्ट] नहीं जोती हुई जमीन 'अकिट्ठजाय-' (पउम ३३, १४)।

अकिट्ठ वि [अक्लिष्ट] १ क्लेशरहित, बाधा-रहित,

'पेच्छामि तुज्झ वत,
 समामे कद्दवएसु दियहेसु।
मह नाहेण विणिहय,
 रामेण अकिट्ठधम्मेणं' (पउम ५३, ५२)।

अकिरिय वि [अक्रिय] १ आलसी, निरुद्यम। २ अशुभ व्यापार से रहित (ठा ७)। ३ परलोक-विषयक क्रिया को नहीं माननेवाला, नास्तिक (णंदि)। °प्य वि [°त्मन्] आत्मा को निष्क्रिय माननेवाला, सांख्य (सूअ १, १०)।

अकिरिया स्त्री [अक्रिया] १ क्रिया का अभाव (भग २६, २)। २ दुष्ट क्रिया, खराब व्यापार (ठा ३, ३)। ३ नास्तिकता (ठा ८)। °वाइ वि [°वादिन्] परलोक-विषयक क्रिया को नहीं माननेवाला, नास्तिक (ठा ४,४)।

अकीरिय देखो अकिरिय, 'जे केइ लोगम्मि अकीरियाया, अन्नेण पुट्ठा धुयमादिसंति' (सूअ १, १०)।

अकुइया स्त्री [अकुचिका] देखो अकुय।

अकुओभय वि [अकुतोभय] जिसको किसी तरफ से भय न हो वह, निर्भय (आचा)।

अकुंठ वि [अकुण्ठ] अपने कार्य में निपुण (गउड)।

अकुय वि [अकुच] निश्चल, स्थिर (निचू १)। स्त्री अकुइया (कप्प)।

अकोप्प वि [अकोप्य] रम्य, सुन्दर (पण्ह १, ४)।

अकोप्प पु [दे] अपराध, गुनाह (पड्)।

अकोस देखो अक्कोस = आक्रोश।

अकोसायत वि [अकोशायमान] विकसता हुआ, 'रविकिरणतरुणबोहियअकोसायतपउम-गंभीरवियडणाभे' (औप)।

अक्क पु [अर्क] १ सूर्य, सूरज (सुर १०, २२३)। २ आक का पेड़ (प्रासू १६८)। ३ सुवर्ण, सोना, 'जेण अन्नुन्नसरिसो विहिओ रयणक्कमजोगो' (रयण ५४)। रावण का एक सुभट (पउम ५६,२)। °तूल न [°तूल] आक की रूई (पण्ण १)। °तेअ पु [°तेजस्] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५,४६)। °बोंदीया स्त्री [°बोन्दिका] वल्ली-विशेष (पण्ण १)।

अक्क पु [दे] दूत, संदेश-हारक (दे १,६)।

°अक्क देखो चक्क (गा ५३०, से १, ५)।

अक्कअ वि [अकृत] नहीं किया गया। °पुव्व वि [°पूर्व] जो पहले कभी न किया गया हो (से १२, ५०)।

अक्कड देखो अक्खड (आउ ५३)।

अक्कंत वि [आक्रान्त] १ बलवान् के द्वारा दबाया हुआ (णाया १, ८)। २ घेरा हुआ, ग्रस्त (आचा)। ३ परास्त, अभिभूत (सूअ १, १, ४)। ४ एक जाति का निर्जीव वायु (ठा ५, ३)। ५ न आक्रमण, उल्लंघन (भग १, ३)। °दुक्ख वि [°दुःख] दुःख से दबा हुआ (सूअ १, १, ४)।

अक्कत वि [दे] बढ़ा हुआ, प्रवृद्ध (दे १,६)।

अक्कत वि [अकान्त] अनिष्ट, अनभिलषित, अनभिमत (सूअ १, १, ४, ६)।

अक्कंद अक [आ + क्रन्द्] रोना, चिल्लाना (प्रामा)। वकृ अक्कंदंत (सुपा ५७४)।

अक्कंद (अप) देखो अक्कम = आ + क्रम्। अक्कंदइ, संकृ. अक्कंदिऊण (सण)।

अक्कंद पुं [आक्रन्द] रोदन, विलाप, चिल्लाकर रोना (सुर २, ११४)।

अक्कंद वि [दे] त्राण करनेवाला, रक्षक (दे १, १५)।

अक्कंदावणय वि [आक्रन्दक] रुलानेवाला (कुमा)।

अक्कंदिय न [आक्रन्दित] विलाप, रोदन (से ४, ६४, पउम ११०, ५)।

अक्कम सक [आ + क्रम्] १ आक्रमण करना, दबाना। २ परास्त करना। वकृ अक्कमंत (पि ४८१)। संकृ. अक्कमित्ता (पण्ह १,१)।

अक्कम पु [आक्रम] १ दबाना, चढ़ाई करना। २ पराभव (भाव)।

अक्कमण न [आक्रमण] १—२ ऊपर देखो (से १४, ६६)। ३ पराक्रम (विसे १०४६)। ४ वि आक्रमण करनेवाला (से ६, १)।

अक्कमिअ देखो अक्कंत = आक्रान्त (काप्र १७२, सुपा १२७)।

अक्कसाला स्त्री [दे] १ बलात्कार, जबरदस्ती। २ उन्मत्त-सी स्त्री (दे १,५८)।

अक्का स्त्री [दे] बहिन (दे १, ६)।

अक्का स्त्री [अक्का] कुट्टनी, दूती (कुप्र १०)।

अक्कासी स्त्री [अक्कासी] व्यन्तर-जातीय एक देवी (ती ६)।

अक्किज्ज वि [अक्रेय] खरीदने के अयोग्य (ठा ६)।

अक्किट्ठ वि [अक्लिष्ट] १ क्लेश-वर्जित (जीव ३)। २ बाधारहित (भग ३, २)।

अक्किट्ठ वि [अकृष्ट] अविलिखित (भग ३,२)।

अक्किय वि [अक्रिय] क्रियारहित (विसे २२०६)।

अक्कुट्ठ वि [दे] अध्यासित, अधिष्ठित (दे १, ११)।

अक्कुस सक [गम्] जाना। अक्कुसइ (हे ४, १६२)।

अक्कुहय वि [अकुहक] निष्कपट, मायारहित (दस ६, २)।

अक्कूर पुं [अक्रूर] श्रीकृष्ण के चाचा का नाम (रुक्मि ४६)।

अक्कूर वि [अक्रूर] क्रूरतारहित, दयालु (पव २३६)।

अक्केज्ज देखो अक्किज्ज।

अक्केल्लय वि [एकाकिन्] अकेला, एकाकी (नाट)।

अक्कोड पु [दे] छाग, बकरा (दे १,१२)।

अक्कोडण न [आक्रोडन] इकट्ठा करना, संग्रह करना (विसे)।

अक्कोस न [अक्रोश] जिस ग्राम के अति नजदीक में अटवी, श्वापद या पर्वतीय नदी आदि का उपद्रव हो वह, 'खेत्तं चलमचलं वा, इंदमणिंदं सकोसमक्कोसं। वाघातम्मि अकोसं, अडवीजले सावए तेणे' (बृह ३)।

अक्कोस सक [आ + क्रुश्] आक्रोश करना। वकृ अक्कोसंत (सुर १२, ४०)।

अक्कोस पुं [आक्रोश] कटु वचन, शाप, भर्त्सना (सम ४०)।

अक्कोसग वि [आक्रोशक] आक्रोश करनेवाला (उत्त २)।

अक्कोसणा स्त्री [आक्रोशना] अभिशाप, निर्भर्त्सना (णाया १, १६)।

अक्कोसिअ वि [आक्रोशित] कटु वचनों से जिसकी भर्त्सना की गई हो वह (सुर ६, २३४)।

अक्कोह वि [अक्रोध] १ अल्प-क्रोधी (ज २)। २ क्रोधरहित (उत्त २)।

अक्ख पु [अक्ष] १ जीव, आत्मा (ठा १)। २ रावण का एक पुत्र (से १४, ६५)। ३

चन्दनक, समुद्र मे होनेवाला एक द्वीन्द्रिय जन्तु, जिसके निर्जीव शरीर को जैन साधु लोग स्थापनाचार्य मे रखते हैं (श्रा १)। ४ पहिया की धुरी, कील (श्रोघ ५४६)। ५ चौसर का पासा (घण ३२)। ६ बिभीतक, बहेडा का वृक्ष (से ६, ४४)। ७ चार हाथ या ६६ अगुलो का एक मान (अणु, सम)। ८ रुद्राक्ष (अणु ३)। ९ न इन्द्रिय (विसे ६१, घण ३२)। १० द्यूत, जूआ (से ६, ४४)। °चम्म न [°चर्मन्] पखाल, मसक, 'अक्खचम्म उट्टुगडदेसं' (णाया १, ६)। °पाडय न [°पादक] कील का टुकडा, 'राइणा हाहारवं करेमाणेण पहओ सो सुणओ अक्खपाडएणंति' (स २५५)। °माला स्त्री [°माला] जपमाला (पउम ६६, ३१)। °लया स्त्री [°लता] रुद्राक्ष की माला (दे)। °वत्त न [°पात्र] पूजा का पात्र, 'तो लोओ। गहियक्खवत्तहत्थो एइ गिहे वद्धावणत्थ' (सुपा ५८५)। °वलय न [°वलय] रुद्राक्ष की माला (दे २, ८१)। °वाअ पु [°पाद] नैयायिक मत के प्रवर्तक गौतम ऋषि (विसे १५०८)। °वाडग पु [°वाटक] अखाडा (जीव ३)। °सुत्तमाला स्त्री [°सूत्रमाला] जपमाला (अणु ३)।

अक्ख देखो अक्खा = आ + ख्या। अक्खइ (सण)।

अक्खइय वि [आख्यात] उक्त, कथित (सण)।

अक्खउहिणी देखो अक्खोहिणी (प्राकृ ३०)।

अक्खड वि [अखण्ड] १ संपूर्ण। २ अखण्डित। ३ निरन्तर, अविच्छिन्न, 'अक्खण्डपयाणेहिं रहवीरपुरे गओ कुमरो' (सुपा २९६)।

अक्खंडल पुं [आखण्डल] इन्द्र (पाअ)।

अक्खंडिअ वि [अखण्डित] १ सपूर्ण, खण्ड रहित (से ३, १२)। २ अविच्छिन्न, निरन्तर (उर ८, १०)।

अक्खत देखो अक्खा = आ + ख्या।

अक्खड सक [आ + स्कन्द्] आक्रमण करना, 'अक्खडइ पिया हिअए, अण्ण महिलाअणं रमंतस्स' (गा ४४)।

अक्खणवेल न [दे] १ मैथुन, संभोग। २ शाम, संध्या काल (दे १, ५९)।

अक्खणिआ स्त्री [दे] विपरीत मैथुन (पाअ)।

अक्खम वि [अक्षम] १ असमर्थ (सुपा ३७०)। २ अयुक्त, अनुचित (ठा ३, ३)।

अक्खय वि [अक्षत] १ घावरहित, व्रण शून्य (सुर २, ३३)। २ अखण्डित, सपूर्ण (सुर ६, १११)। ३ पु ब. अखण्ड चावल (सुपा ३२६)। °यार वि [°चार] निर्दोष आचरणवाला (वव ३)।

अक्खय वि [अक्षय] १ क्षय का अभाव (उवर ८३)। २ जिसका कभी नाश न हो वह (सम १)। °निहि पुन [°निधि] एक प्रकार की तपश्चर्या (पव २७१)। °तइया स्त्री [°तृतीया] वैशाख शुक्ल तृतीया (श्रानि)।

अक्खर पुन [अक्षर] १ अक्षर, वर्ण (सुपा ६५६)। २ ज्ञान, चेतना, 'नक्खरइ अणुव-ओगेवि, अक्खरं, सो य चेयणाभावो' (विसे ४५५)। ३ वि अविनश्वर, नित्य (विसे ४५७)। °त्थ पुं [°र्थ] शब्दार्थ (अभि १५१)। °पुट्ठिया स्त्री [°पुष्टिका] लिपि-विशेष (सम ३५)। °समास पु [°समास] १ अक्षरो का समूह। २ श्रुत-ज्ञान का एक भेद (कम्म १, ७)।

अक्खल पु [दे] १ अखरोट वृक्ष। २ न अखरोट वृक्ष का फल (पणण १६)।

अक्खलिय वि [दे] १ जिसका प्रतिशब्द हुआ हो वह, प्रतिध्वनित (दे १, २७)। २ आकुल, व्याकुल (सुर ४, ८८)।

अक्खलिय वि [अस्खलित] १ अबाधित, निरुपद्रव (कुमा)। २ जो गिरा न हो वह, अपतित (नाट)।

अक्खवाया स्त्री [दे] दिशा (दे १, ३५)।

अक्खा सक [आ + ख्या] कहना, बोलना। वकृ अक्खत (सण, धर्म ३)। कवकृ अक्खिज्जंत (सुर ११, १६२)। कृ अक्खेअ, अक्खाइयव्व (विसे २६४७, गा २४२)। हेकृ अक्खाउं (दस ८, सत्त ३ टी)।

अक्खा स्त्री [आख्या] नाम (विसे १६११)।

अक्खाइ वि [आख्यायिन्] कहनेवाला, उपदेशक, 'अधम्मक्खाई' (णाया १, १८, विपा १, १)।

अक्खाय न [आख्यातिक] क्रियापद, क्रिया-वाचक शब्द (विसे)।

अक्खाइय वि [अक्षितिक] स्थायी, अनश्वर, शाश्वत, 'एव ते अलियवयणदच्छा परदोमुप्पाय-णपसत्ता वेढंति अक्खाइयवीएण अप्पाण कम्मबंधणेण' (पण्ह १, २)।

अक्खाइया स्त्री [आख्यायिका] उपन्यास, वार्ता, कहानी (कप्पू, भास ५०)।

अक्खाउ वि [आख्यातृ] कहनेवाला (सूअ १, १, ३, १३)।

अक्खाग पुं [आख्याक] म्लेच्छो की एक जाति (सूअ १, ५)।

अक्खाडग } पुं [अक्षवाटक] १ जूआ
अक्खाडय } खेलने का अड्डा। २ अखाडा, व्यायाम-स्थान (उप पृ १३०)। ३ प्रेक्षको को वैठने का आसन (ठा ४, २)।

अक्खाण न [आख्यान] १ कथन, निवेदन (कुमा)। २ वार्ता, उपकथा (पउम ४८, ७७)।

अक्खाणय न [आख्यानक] कहानी, वार्ता (उप ५६७ टी)।

अक्खाय वि [आख्यात] १ प्रतिपादित, कथित (सुपा ३६५)। २ न. क्रियापद (पण्ह २, २)।

अक्खाय न [अखात] हाथी को पकडने के लिए किया जाता गढा, खड्डा (पाअ)।

अक्खाया स्त्री [आख्याता] एक प्रकार की जैन दीक्षा, 'अक्खायाए सुदंसणो सेट्ठी सामिणा पडिवोहिओ' (पंचू)।

अक्खि त्रि [अक्षि] आख, नेत्र (हे १, ३३, ३५, स २, १०४, प्राप्र, स्वप्न ६१)।

अक्खिअ वि [आक्षिक] पासा से जूआ खेलनेवाला, जुआडी (दे ७, ८)।

अक्खिअ वि [आख्यात] प्रतिपादित, कथित (श्रा १४)।

अक्खितर न [अक्ष्यन्तर] आख का कोटर (विपा १, १)।

अक्खिज्जंत देखो अक्खा = आ + ख्या।

अक्खित्त वि [आक्षिप्त] सब तरह से प्रेरित (सिरि ३६६)।

अक्खित्त वि [आक्षिप्त] १ व्याकुल। २ जिस पर टीका की गई हो वह। ३ आकृष्ट, खींचा हुआ (सुर ३,११५)। ४ सामर्थ्य से लिया हुआ (से ४, ३१)।

अक्खित्त न [अक्षेत्र] मर्यादित क्षेत्र के बाहर का प्रदेश (निचू १)।

अक्खिव सक [आ + क्षिप्] १ आक्षेप करना, टीका करना, दोषारोप करना। २ रोकना। ३ गंवाना। ४ व्याकुल करना। ५ फेंकना। ६ स्वीकार करना, 'अक्खिवइ पुरिसगार' (उवर ४६)। हेकृ अक्खिविउ (निर १, १), 'तओ न जुत्तमिह कालम् अक्खिविउ' (स २०५, पि ५७७)। कर्म 'अक्खिप्पइ य मे वाणी' (स २३, प्रामा)।

अक्खिव सक [आ+क्षिप्] आक्रोश करना। अक्खिवति (सिरि ८३१)।

अक्खिवण न [आक्षेपण] व्याकुलता, घबराहट (पण्ह १, ३)।

अक्खीण वि [अक्षीण] १ ह्रास-शून्य, क्षयरहित, अखूट (कप्प)। २ परिपूर्ण, सपूर्ण (कुमा)। °महाणसिय त्रि [°महानसिक] जिसको निम्नोक्त अक्षीण महानसी शक्ति प्राप्त हुई हो वह (पण्ह २, १) °महाणसी स्त्री [°महानसी] वह अद्भुत आत्मिक शक्ति जिससे थोडा भी भिक्षान्न दूसरे सैकडो लोगो को यावत्-तृप्ति खिलाने पर भी तबतक कम न हो, जबतक भिक्षान्न लानेवाला स्वय उसे न खाय (पव २७०)। °महालय वि [°महालय] जिससे थोडी जगह मे भी बहुत लोगो का समावेश हो सके ऐसी अद्भुत आत्मिक शक्ति से युक्त (गच्छ २)।

अक्खुअ वि [अक्षत] अक्षीण, त्रुटि-शून्य, 'अक्खुअआयारचरित्ता' (पडि)।

अक्खुडिअ वि [अखण्डित] सपूर्ण, अखण्ड, त्रुटिरहित, 'अक्खुडिओ पक्खुडिओ छिक्कतोवि सबालवुड्ढजणो' (सुपा ११६)।

अक्खुण्ण वि [अक्षुण्ण] जो टूटा हुआ न हो, अविच्छिन्न (वृह १)।

अक्खुद्द वि [अक्षुद्र] १ गभीर, अतुच्छ (दव्व ५)। २ दयालु, करुण (पचा२)। ३ उदार (पचा ७)। ४ सूक्ष्म बुद्धिवाला (धर्म २)।

अक्खुद्द न [अक्षौद्र्य] क्षुद्रता का अभाव (उप ६१५)।

अक्खुपुरी स्त्री [अक्षपुरी] नगरी-विशेष (णाया २)।

अक्खुब्भमाण वि [अक्षुभ्यमान] जो क्षोभ को प्राप्त न होता हो (उप पृ ६२)।

अक्खुभिय देखो अक्खुहिय (णदि ४६)।

अक्खुहिय वि [अक्षुभित] क्षोभरहित, अक्षुब्ध (सण)।

अक्खूण मि [अक्षूण] अन्यून, परिपूर्ण, 'भोयणवत्थाहरणं सपायंतेण सव्वमक्खूणं' (उप ७२८ टी)।

अक्खेअ देखो अक्खा = आ + ख्या।

अक्खेव पु [अ+क्षेप] शीघ्रता, जल्दी (सुपा १२६)।

अक्खेव पु [आक्षेप] १ आकर्षण, खीच कर लाना (पण्ह १, ३)। २ सामर्थ्य, अर्थ की सगति के लिए अनुक्त अर्थ को बतलाना (उप १००२)। ३ आशका, पूर्वपक्ष (भग २, १, विसे १४३६)। ४ उत्पत्ति, 'दइवेण फलक्खेवे अहप्पसंगो भवे पयडो' (उवर ४८)।

अक्खेवग पु [आक्षेपक] १ खीचकर लानेवाला, आकर्षक। २ समर्थक पद, अर्थसगति के लिए अनुक्त अर्थ को बतलानेवाला शब्द (उप ६६६)। ३ सान्निध्यकारक (उवर १८८)।

अक्खेवणी स्त्री [आक्षेपणी] श्रोताओ के मन को आकर्षण करनेवाली कथा (औप)।

अक्खेवि वि [आक्षेपिन्] आकर्षण करनेवाला, खीचकर लानेवाला (पण्ह १, ३)।

अक्खोड सक [कृष्] म्यान से तलवार को खीचना, बाहर करना। अक्खोडइ (हे ४,१८७)।

अक्खोड सक [आ + स्फोटय्] थोडा या एक बार झटकना। अक्खोडिज्जा। वकृ. अक्खोडत (दस ४)।

अक्खोड पुं [अक्षोट] १ अखरोट का पेड। २ न अखरोट वृक्ष का फल (पण्ण १७, सण)। ३ राजकुल को दी जाती सुवर्ण आदि की भेंट (वव १ टी)।

अक्खोड पु [आस्फोट] प्रतिलेखन की क्रिया-विशेष (पव २)।

अक्खोडिय वि [कृष्ट] खीचा हुआ, बाहर निकला हुआ (खड्ग) (कुमा)।

अक्खोभ, अक्खोह पु [अक्षोभ] १ क्षोभ का अभाव, घबराहट का अभाव (णाया १,६)। २ यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र, जो भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा लेकर शत्रुंजय पर मोक्ष गया था (अंत १, ७)। ३ न. 'अन्तकृद्दशा' सूत्र का एक अध्ययन (अंत १, ७)। ४ त्रि क्षोभरहित, अचल, स्थिर (पण्ह २,५, कुमा)।

अक्खोहणिज्ज वि [अक्षोभणीय] जो क्षुब्ध न किया जा सके (सुपा ११४)।

अक्खोहिणी स्त्री [अक्षौहिणी] एक बडी सेना, जिसमे २१८७० हाथी, २१८७० रथ, ६५६१० घोडे और १०६३५० पैदल होते हैं (पउम ५५, ७, ११)।

अखंड वि [अखण्ड] परिपूर्ण, खण्डरहित (औप)।

अखंडल पु [आखण्डल] इन्द्र (पउम ४६, ४४)।

अखंडिय वि [अखण्डित] नही टूटा हुआ, परिपूर्ण (पचा १८)।

अखप्पण वि [दे] स्वच्छ, निर्मल, 'आयवत्ताइं। धारिंति, ठविंति पुरो अखप्पणं दप्पणं केवि' (सुपा ७४)।

अखज्ज वि [अखाद्य] जो खाने लायक न हो (णाया १,१६)।

अखत्त न [अक्षात्र] क्षत्रिय-धर्म के विरुद्ध, जुलुम, 'यपइ विज्जावलिओ,
अहह अखत्त करेइ कोइ इमो'
(धम्म ८ टी)।

अखम देखो अक्खम (कुमा)।

अखरय पु [दे] भृत्य-विशेष, एक प्रकार का दास (पिड ३६७)।

अखलिअ देखो अक्खलिय = अस्खलित (कुमा)।

अखादिम वि [अखाद्य] खाने के अयोग्य, अभक्ष्य, 'कुपहे धावति, अखादिम खादति' (कुमा)।

अखाय वि [अखात] नही खुदा हुआ। °तल न [°तल] छोटा तलाव (पाअ)।
अखिल वि [अखिल] १ सर्व, सकल, परिपूर्ण (कुमा)। २ ज्ञान आदि गुणो से पूर्ण, 'अखिले अगिद्धे अणिएअचारी' (सूअ १, ७)।
अखुट्ट वि [दे] अखूट (भवि)।
अखुडिअ वि [अतुडित] अखूट, परिपूर्ण (कुमा)।
अखुडिअ देखो अक्खुडिअ (कुमा)।
अखेयण्ण वि [अखेदज्ञ] अकुशल, अनिपुण (सूअ १,१०)।
अखोड देखो अक्खोड + आस्फोट (पव २ टी)।
अखोहा स्त्री [अक्षोभा] विद्या-विशेष (पउम ७, १३७)।
अग पु [अग] १ वृक्ष, पेड। २ पर्वत, पहाड (से ६,४१), 'उच्चागयठाणलट्ठसठिय' (कप्प)।
अगइ स्त्री [अगति] १ नीच गति, नरक या पशु-योनि मे जन्म (ठा २, २)। २ निरुपाय (अच्चु ६६)।
अगंठिम न [अग्रन्थिम] १ कदली-फल, केला (बृह १)। २ फल की फांक, टुकडा (निचू १६)।
अगंडिगेह वि [दे] यौवनोन्मत्त, जवानी से उन्मत्त बना हुआ (दे १, ४०)।
अगडूयग वि [अकण्डूयक] नही खुजलानेवाला (सूअ २, २)।
अगथ वि [अग्रन्थ] १ धनरहित। २ पुंस्त्री. निर्ग्रन्थ, जैन साधु, 'पाव कम्म अकुव्वमाणे एम मह अगथे वियाहिए' (आचा)।
अगधण पु [अगन्धन] इस नाम की सर्पो की एक जाति, 'नेच्छंति वतय भोत्तु कुले जाय। अगधणे' (दस २)।
अगड पु [दे अवट] कूप, इनारा (सुर ११, ८६, उव)। °तड त्रि [°तट] इनारा का किनारा (विसे)। °दत्त पु [°दत्त] इस नाम का एक राजकुमार (उत्त)। दद्दुर पु [°दर्दुर] कुंए का मेढक, अल्पज्ञ, वह मनुष्य जो अपना घर छोड बाहर न गया हो (णाया १,८)।
अगड पु [अवट] कूप के पास पशुओ के जल पीने के लिए जो गर्त बनाया जाता है वह (उप २०५)।
अगड वि [अकृत] नही किया हुआ (वव ६)।
अगणि पु [अग्नि] आग (जी ६)। °काय पु [°काय] अग्नि के जीव (भग ७,१०)। °मुह पु [°मुख] देव, देवता (आचू)।
अगणिअ वि [अगणित] अवगणित, अपमानित (गा ४८४, पउम ११७, १४)।
अगणिज्जत वि [अगण्यमान] जो गुणने मे न आता हो, जिसकी आवृत्ति न की जाती हो, 'अगणिज्जती नासे विज्जा' (प्रासू ६६)।
अगत्थि } पु [अगस्ति, °क] १ इस नाम
अगत्थिय } का एक ऋषि। २ वृक्ष-विशेष (दे ६, १३३, अनु)। ३ एक तारा, अठासी महाग्रहो मे ५४ वां महाग्रह (ठा २, ३)।
अगन्न वि [अगण्य] १ जिसकी गिनती न हो सके वह (उप ७२८ टी)।
अगन्न वि [अकर्ण्य] नही सुनने लायक, अश्रव्य (भवि)।
अगम पु [अगम] १ वृक्ष, पेड, 'दुमा य पायवा रुक्खा अ (? अ) गमा विडिमा तरू' (दसनि १,३५)। २ वि स्थावर, नही चलने वाला (महानि ४)।
अगम न [अगम] आकाश, गगन (भग २० २)।
अगमिय वि [अगमिक] वह शास्त्र, जिसमे एक सदृश पाठ न हो, या जिसमे गाथा वगैरह पद्य हो, 'गाहाइ अगमिय खलु कालियसुय' (विसे ५४९)।
अगम्म वि [अगम्य] १ जाने के अयोग्य। २ स्त्री भोगने के अयोग्य, भगिनी, पर स्त्री आदि (भवि, सुर १२, ५२)। °गामि वि [°गामिन्] पर स्त्री को भोगनेवाला, पारदारिक (पण्ह १,२)।
अगय न [अगद] औषध, दवाई (सुपा ४४७)।
अगय पु [दे] दैत्य, दानव (दे १,६)।
अगर पुन [अगरु] सुगन्धि काष्ठ-विशेष (पण्ह २, ५)।
अगरल वि [अगरल] सुविभक्त, स्पष्ट, 'अगरलाए असम्मणाए भासाए भासेइ' (औप)।
अगरु देखो अगर (कुमा)।
अगरुअ वि [अगरुक] बडा नही, छोटा, लघु (गउड)।
अगरुलहु वि [अगुरुलघु] जो भारी भी न हो और हलका भी न हो वह, जैसे आकाश, परमाणु वगैरह (विसे)। °णाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, जिसमे जीवो का शरीर न भारी न हलका होता है (कम्म १,४७)।
अगलदत्त पु [अगडदत्त] एक रथिक-पुत्र (महा)।
अगलय देखो अगर (ओप)।
अगहण पु [दे] कापालिक, एक ऐसे सम्प्रदाय के लोग, जो माथे की खोपडी मे ही खाने-पीने का काम करते हैं (दे १, ३१)।
अगहिल्ल वि [अग्रहिल] जो भूतादि से आविष्ट न हो, अपागल (उप ५६७ टी)।
°राय पु [°राज] एक राजा, जो वास्तव मे पागल न होने पर भी पागल-प्रजा के आक्रमण मे बनावटी पागल बना था (ती २१)।
अगाढ वि [अगाध] अथाह, बहुत गहरा, 'अगाढपण्णेसु वि भावियप्पा' (सूअ १,१३)।
अगामिय वि [अग्रामिक] ग्रामरहित, 'अगामियाए अडवीए' (औप)।
अगार पु [अकार] 'अ' अक्षर (विसे ४८४)।
अगार न [अगार] १ गृह, घर (सम ३७)। २ पु गृहस्थ, गृही, ससारी (दस १)। °त्थ वि [°स्थ] गृही, (आचा)। °धम्म पुं [°धर्म] गृहि-धर्म, श्रावक-धर्म (औप)।
अगारग वि [अकारक] अकर्ता (सूअनि ३०)।
अगारि वि [अगारिन्] गृहस्थ, गृही (सूअ २,६)।
अगारी स्त्री [अगारिणी] गृहस्थ स्त्री (वव ४)।
अगाल देखो अयाल (स ८२)।
अगाह वि [अगाध] गहरा, गभीर (पाअ)।
अगिगणि देखो अग्गि (मक्षि १२)।
अगिला स्त्री [अग्लानि] अ.खिन्नता, उत्साह (ठा ५. १)।
अगिला स्त्री [दे] अवज्ञा, तिरस्कार (दे १, १७)।
अगीय वि [अगीत] शास्त्रो का पूरा ज्ञान जिसको न हो वैसा (जैन साधु) (उप ८३३ टी)।

अगीयत्थ वि [अगीतार्थ] ऊपर देखो (वव १)।

अगुज्झहर वि [दे] गुप्त बात को प्रकाशित करनेवाला (दे १,४३)।

अगुण देखो अउण (पि २६५)।

अगुण वि [अगुण] १ गुणरहित, निर्गुण (गउड)। २ पु दोष, दूषण (दस ५)।

अगुणासी देखो एगूणासी (पव २४)।

अगुणि वि [अगुणिन्] गुण-वर्जित, निर्गुण (गउड)।

अगुरु, अगुरुअ वि [अगुरु] १ बडा नहीं सो, छोटा, लघु। २ पुन सुगन्धि काष्ठ विशेष, अगुरु चन्दन, 'धूवेण कि अगुरुणो किमु कंकणेण' (कप्पू, पउम २,११)।

अगुरुलहु, अगुरुलहुअ देखो अगुरुलहु (सम ५१, ठा १०)।

अगुलु देखो अगुरु, 'सखतिणिसागुलुचदणाइ' (निचू २)।

अग्ग न [अग्रव] प्रकर्ष (उत्त २०, १५)।

अग्ग पुंन [दे] १ परिहास। २ वर्णन (मक्षि ४७)।

अग्ग न [अग्र] १ आगे का भाग, ऊपर का भाग (कुमा)। २ पूर्वभाग, पहले का भाग (निचू १)। ३ परिमाण, 'अग्ग ति वा परिमाण ति वा एगट्ठा' (आचू १)। ४ वि प्रधान, श्रेष्ठ (सुपा २४८)। ५ प्रथम, पहला (आव १)। °**क्खंध** पु [°स्कन्ध] सैन्य का अग्र भाग (से ३,४०)। °**गामिग** वि [°गामिक] अग्रगामी, आगे जानेवाला (स १४७)। °**ज** देखो °य (दे ६, ४६)। °**जम्म** [°जन्मन्] देखो °य (उप ७२८ टी)। °**जाय** [°जात] देखो °य (आचा)। °**जीहा** स्त्री [°जिह्वा] जीभ का अग्र-भाग। °**णिय**, °**णी** वि [°णी] अगुआ, मुखिया, नायक (कप्प, नाट)। °**तावस** पु [°तापस] ऋषि-विशेष का नाम (सुज १०)। °**द्ध** न [°र्ध] पूर्वार्ध (निचू १)। °**पिंड** पु [°पिण्ड] एक प्रकार का भिक्षान्न (आचा)। °**प्पहारि** वि [°प्रहारिन्] पहले प्रहार करनेवाला (आव १)। °**बीय** वि [°बीज] जिसमें बीज पहले ही उत्पन्न हो जाता है या जिसकी उत्पत्ति में उसका अग्र-भाग ही कारण होता है, जैसे आम, कोरंटक आदि वनस्पति (पण्ण १, ठा ४ १)। °**मणि** पु [°मणि] मुख्य, श्रेष्ठ, शिरोमणि (उप ७२८ टी)। °**महिसी** स्त्री [°महिषी] पटरानी (सुपा ४६)। °**य** वि [°ज] १ आगे उत्पन्न होने वाला। २ पु. ब्राह्मण। ३ बडा भाई। ४ स्त्री बडी बहन (नाट)। °**लोग** पु [°लोक] मुक्तिस्थान, सिद्धि-क्षेत्र (आ १२)। °**हत्थ** पु [°हस्त] १ हाथ का अग्र-भाग (उवा)। २ हाथ का अवलम्बन सहारा (से ४,३)। ३ अंगुली (प्राप)।

अग्ग न [अग्र] १ प्रभूत, बहु। २ उपकार (आचानि २८५)। °**भाव** न [°भाव] धनिष्ठा-नक्षत्र का गोत्र (ज ७, पत्र ५००)। °**माहिसी** देखो °महिसी (उत्त १६, १)।

अग्ग वि [अग्र्य] १ श्रेष्ठ, उत्तम (से ८,४४)। २ प्रधान, मुख्य (उत्त १४)।

अग्गओ अ [अग्रतस्] सामने, आगे (कुमा)।

अग्गथ वि [अग्रन्थ] १ धनरहित। २ पु जैन साधु (औप)।

अग्गक्खंध पु [दे] रणभूमि का अग्रभाग (दे १,२७)।

अग्गल न [अर्गल] १ किवाड बन्द करने की लकडी, आगल (दस ५,२)। २ पु एक महाग्रह (सुज २०)। °**पासय** पु [°पाशक] जिसमें आगल दिया जाता है वह स्थान (आचा २,१,५)। °**पासाय** पु [°प्रासाद] जहाँ आगल दिया जाता है वह घर (राय)।

अग्गल वि [दे] अधिक, 'वीसा एक्कग्गला' (पिंग)।

अग्गला स्त्री [अर्गला] आगल, हुड्का (पाअ)।

अग्गलिअ वि [अर्गलित] जो आगल से बन्द किया गया हो वह (सुर ६,१०)।

अग्गवेअ पु [दे] नदी का पूर (दे १,२६)।

अग्गह पु [आग्रह] आग्रह, हठ, अभिनिवेश (सूअ १,१,३, स ५१३)।

अग्गहण न [अग्रहण] १ अज्ञान (सुर १२, ४६)। २ नहीं लेना (से ११,६८)।

अग्गहण न [दे अग्रहण] अनादर, अवज्ञा (दे १,१७, से ११,६८)।

अग्गहणिया स्त्री [दे] सीमतोन्नयन, गर्भाधान के बाद किया जाता एक संस्कार और उसके उपलक्ष्य में मनाया जाता उत्सव, जिसको गुजराती भाषा में 'अग्घयणी' कहते हैं (सुपा २३)।

अग्गहि वि [आग्रहिन्] आग्रही, हठी (सूअ १,१३)।

अग्गहिअ वि [दे] १ निर्मित, विरचित। २ स्वीकृत, कबूल किया हुआ (षड्)।

अग्गाणी वि [अग्रणी] मुख्य, प्रधान, नायक, 'दक्खिन्नदयाकलिओ अग्गाणी सयलवणियसत्थस्स' (सुर ६,१३८)।

अग्गारण न [उद्गारण] वमन, वान्ति (चारु ७)।

अग्गाह वि [अगाध] अगाध, गभीर, 'खीरादहिणुव्व अग्गाहा' (गुरु ४)।

अग्गाहार पुं [अग्राधार] ग्राम-विशेष का नाम (सुपा ५४५)।

अग्गाहार पुं [दे अग्राहार] उच्च जीविका (सुख २,१३)।

अग्गि पु [अग्नि] नरकावास-विशेष, एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २७)। °**मत**, °**वत** वि [°मत्] अग्निवाला (प्राकृ ३५)। °**हुत्त** देखो °होत्त (उत्त २५,१६, सुख २५,१६)।

अग्गि पुं स्त्री [अग्नि] १ आग, वह्नि (प्रासू २२), 'एस पुण कावि अग्गी' (सट्ठि ६१)। २ कृत्तिका नक्षत्र का अधिष्ठायक देव (ठा २, ३)। ३ लोकान्तिक देव-विशेष (आवम)। °**आरिआ** स्त्री [°कारिका] अग्नि-कर्म, होम (कप्पू)। °**उत्त** पु [°पुत्र] ऐरवत क्षेत्र के एक तीर्थंकर का नाम (सम १५३)। °**कुमार** पु [°कुमार] भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति (पण्ण १)। °**कोण** पु [°कोण] पूर्व और दक्षिण के बीच की दिशा (सुपा ६८)। °**जस** पु [°यशस्] देव-विशेष (दीव)। °**ज्जोय** पु [°द्योत] भगवान् महावीर का पूर्वीय बीसवें ब्राह्मण-जन्म का नाम (आचू)। °**ट्ठ** वि [°स्थ] आग में रहा हुआ (हे ८,४२६)। °**ट्ठोम** पु [°ष्टोम] यज्ञ विशेष (पि १०,१५६)। °**थंभणी** स्त्री [°स्तम्भनी] आग की शक्ति को रोकनेवाली एक विद्या (पउम ७, १३६)। °**दत्त** पु [°दत्त] १ भगवान् पार्श्वनाथ के समकालीन ऐरवत क्षेत्र के एक तीर्थंकर देव (तित्थ)। २ भद्रबाहु

स्वामी का एक शिष्य (कप्प)। °दाग पु [°दान] सातवें वासुदेव के पिता का नाम (पउम २०,१८२)। °देव पु [°देव] देव-विशेष (दीव)। °भूइ पु [°भूति] १ भगवान् महावीर का द्वितीय गणधर (कप्प)। २ भगवान् महावीर का पूर्वीय अठारहवें ब्राह्मण-जन्म का नाम (आचू)। °माणव पु [°माणव] अग्निकुमार देवों का उत्तर-दिशा का इन्द्र (ठा २,३)। °माली स्त्री [°माली] एक इन्द्राणी (दीव)। °वेस पु [°वेश] १ इस नाम का एक प्रसिद्ध ऋषि (णदि)। २ न एक गोत्र (कप्प)। °वेस पु [°वेश्मन्] १ चतुर्दशी तिथि (ज)। २ दिवस का बाइसवां मुहूर्त (चद १०)। °वेसायण पु [°वैश्यायन] १ अग्निवेश ऋषि का पौत्र (णदि, स २२५)। २ अग्निवेश-गोत्र मे उत्पन्न (कप्प)। ३ गोशालक का एक दिक्चर (भग १५)। ४ दिन का बाइसवां मुहूर्त (सम ५१)। °सक्कार पु [°सत्कार] विधि-पूर्वक जलाना, दाह देना (आवम)। °सप्पभा स्त्री [°सप्रभा] भगवान् वासुपूज्य की दीक्षा समय की पालकी का नाम (सम)। °सम्म पु [°शर्मन्] एक प्रसिद्ध तपस्वी ब्राह्मण (आचा)। °सिह पु [°शिख] १ सातवें वासुदेव का पिता (सम १५२)। २ अग्निकुमार देवों का दक्षिण-दिशा का इन्द्र (ठा २, ३)। °सिह पु [°सिंह] एक जैन मुनि (उप ८८६)। °सिहाचारण पु [°शिखाचारण] अग्नि-शिखा में निर्बाधतया गमन करने की शक्ति वाला साधु (पव ६८)। °सीह पु [°सिंह] सातवें वासुदेव के पिता का नाम (ठा ६)। °सेण पु [°षेण] ऐरवत क्षेत्र के तीसरे और बाईसवें तीर्थंकर (तित्थ, सम १५३)। °होत्त न [°होत्र] १ अग्न्याधान, होम (विसे १६४०)। २ पु ब्राह्मण (पउम ३५,६)। °होत्तवाइ वि [°होत्रवादिन्] होम से ही स्वर्ग की प्राप्ति माननेवाला (सूअ १, ७)। °होत्तिय वि [°होत्रिक] होम करनेवाला (सुपा ७०)।

अग्गिअ पु [अग्निक] १ यमदग्नि नामक एक तापस (आचू)। २ भस्मक रोग, जिससे जो कुछ खाय वह तुरन्त ही हजम हो जाता है (विपा १,१, विसे २०४८)।

अग्गिअ पु [दे] इन्द्रगोप, एक जातिका क्षुद्र कीट (दे १,५३)। २ वि मन्द (दे १,५३)।

अग्गिआय पु [दे] इन्द्रगोप, क्षुद्र कीट-विशेष (पड्)।

अग्गिच्च वि [आग्नेय] १ अग्नि-सम्बन्धी। २ पुं लोकान्तिक देवों की एक जाति (णाया १,८)। ३ न गोत्र-विशेष, जो गोतम गोत्र की शाखा है (ठा ७)।

अग्गिच्चाभ न [आग्नेयाभ] देव-विमान विशेष (सम १४)।

अग्गिज्झ वि [अग्राह्य] लेने के अयोग्य (पउम ३१,५४)।

अग्गिम वि [अग्रिम] १ प्रथम पहला (कप्पू)। २ श्रेष्ठ, प्रधान, मुख्य (सुपा १)।

अग्गियय पु [आग्नेयक] इस नाम का एक राजपुत्र (उप ६३७)।

अग्गिल देखो अग्गिल्ल = अग्निल (सुज २०)।

अग्गिलिय देखो अग्गिम (पचव २)।

अग्गिल्ल पु [अग्निल] एक महाग्रह (ठा २, ३)।

अग्गिल्ल वि [अग्रिम] अग्रवर्ती (सिरि ४०६)।

अग्गीय देखो अगीय (उप ८४०)।

अग्गीवय न [दे] घर का एक भाग (पउम १६, ६४)।

अग्गुच्छ वि [दे] प्रमित, निश्चित (पड्)।

अग्गे अ [अग्रे] आगे, पहले (पिंग)। °यण वि [तन] आगे का, पहले का (आवम)। °सर वि [°सर] अगुआ, मुखिया, नायक (श्रा २८)।

अग्गेई स्त्री [आग्नेयी] अग्निकोण, दक्षिण-पूर्व दिशा (घण १८)।

अग्गेणिय न [अग्रायणीय] दूसरा पूर्व, बारहवें जैनागम का दूसरा महान् भाग (सम२६)।

अग्गेणी देखो अग्गेई (आवम)।

अग्गेणीय देखो अग्गेणिय (णदि)।

अग्गेय वि [आग्नेय] अग्नि (कोण) सम्बन्धी (अणु २१५)।

अग्गेय वि [आग्नेय] १ अग्नि-सम्बन्धी, अग्नि का (पउम १२,१२६, विसे १६६०)। २ न शस्त्र-विशेष (सुर ८, ४१)। ३ एक गोत्र, जो वत्स गोत्र की शाखा है (ठा ७)। ४ अग्नि-कोण, दक्षिण-पूर्व दिशा (भवि)।

अग्गोदय न [अग्रोदक] समुद्रीय वेला की वृद्धि और हानि (सम ७६)।

अग्घ अक [राज्] विराजना, शोभना, चमकना। अग्घइ (हे ४,१००)।

अग्घ सक [आ-घ्रा] सूँघना। सकृ अग्घेऊण (सम्मत्त १४२)।

अग्घ सक [अर्ह्] योग्य होना, लायक होना, 'कल ण अग्घइ' (णाया १,८)।

अग्घ सक [अर्घ्] १ अच्छी कीमत मे बेचना। २ आदर करना, सम्मान करना, 'पहिएण पुणो भणियं, तुब्भेहिं म्मिद्दि। कम्मि नयरम्मि। गतव्व सो माहइ, पणिय अग्घिम्सए जत्थ' (सुपा ५०१)। वकृ अग्घायमाण (णाया १, १)।

अग्घ पु [अर्घ] १ एक देव-विमान (देवेन्द्र १.२)। २ पूजा (राय १००)।

अग्घ पु [अर्घ] १ मछली की एक जाति (जीव ३)। २ पूजा-सामग्री (णाया १, १६)। ३ पूजा मे जलादि देना (कुमा)। ४ मूल्य, मोल, कीमत (निचू २)। °वत्त न [°पात्र] पूजा का पात्र (गाउड)।

अग्घ वि [अर्घ्य] १ पूजा मे दिया जाता जलादि द्रव्य (कप्पू)। २ कीमती, बहुमूल्य (प्राप)।

अग्घव सक [पूर्] पूर्ति करना, पूरा करना। अग्घवइ (हे ४, ६६)।

अग्घविय वि [पूर्ण] १ भरा हुआ, संपूर्ण। २ पूरा किया गया (सुपा १०६, कुमा)।

अग्घविय वि [अर्घित] पूजित, सत्कृत, सम्मानित (से ११, १६, गउड)।

अग्घा सक [आ+घ्रा] सूँघना। वकृ अग्घाअत, अग्घायमाण (गा ५६५, णाया १,८)। कवकृ अग्घाइज्जमाण (पण्ण २८)।

अग्घाइ वि [आघ्रायिन्] सूँघनेवाला, 'समरपउमग्घाइणि। वारियवामे। सहसु इण्हि' (काप्र २६४)।

अग्घाइअ वि [आघ्रात] सूंघा हुआ (गा ६७)।

अग्घाइज्जमाण देखो अग्घा।

अग्घाइर वि [आघ्रातृ] सूंघनेवाला। स्त्री °री (गा ८८६)।
अग्घाड सक [पूर्] पूर्ति करना, पूरा करना। अग्घाडइ (हे ४, १६९)।
अग्घाड } पु [दे] वृक्ष-विशेष, अपामार्ग,
अग्घाडग } चिचडा, लटजीरा (दे १,८, पण्ण १)।
अग्घाण वि [दे] तृप्त, संतुष्ट (दे १, १८)।
अग्घाय वि [आघ्रात] सूघा हुआ (पाअ)।
अग्घायमाण देखो अग्घ = अर्घ्।
अग्घायमाण देखो अग्घा।
अग्घिय वि [राजित] विराजित, शोभित (कुमा)
अग्घिय वि [अर्घित] १ बहुमूल्य, कीमती, 'अग्घिय नाम बहुमोल्लं' (निचू २)। २ पूजित (दे १,१०७, से २०२)।
अग्घोदय न [अर्घोदक] पूजा का जल (अभि ११८)।
अघ न [अघ] १ पाप, कुकर्म (कुमा)। २ वि शोचनीय, शोक का हेतु, 'अघ वम्हणभाव' (प्रयौ ८०)।
अघो देखो अहो (नाट)।
अचक्खु पुन [अचक्षुस्] १ आंख के सिवाय बाकी इन्द्रियाँ और मन (कम्म १, १०)। २ आँख को छोड बाकी इन्द्रिय और मन से होनेवाला सामान्य ज्ञान (द १९)। ३ वि अन्धा, नेत्रहीन (कम्म ४)। °दंसण न [दर्शन] आँख को छोड बाकी इन्द्रिया और मनसे होनेवाला सामान्य ज्ञान (सम १५)। °दंसणावरण न [°दर्शनावरण] अचक्षुर्दर्शन को रोकनेवाला कर्म (ठा ९)। °फास पु [°स्पर्श] अन्धकार, अंधेरा (णाया १, १४)।
अचक्खुस वि [अचाक्षुप] जो आँख से देखा न जा सके (पण्ह १, १)।
अचक्खुस्स वि [अचक्षुष्य] जिसको देखने का मन न चाहता हो (बृह ३)।
अचर वि [अचर] पृथिव्यादि स्थिर पदार्थ, स्थावर (दस)।
अचल वि [अचल] १ निश्चल, स्थिर (आचा)। २ पु यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि के एक पुत्र का नाम (अंत ३)। एक बलदेव का नाम (पव २०९)। ४ पर्वत, पहाड (गउड १२०)। ५ एक राजा, जिसने रामचन्द्र के छोटे भाई के साथ जैन दीक्षा ली थी (पउम ८५,४)। °पुर न [°पुर] ब्रह्म-द्वीप के पास का एक नगर (कप्प)। °प्प न [°ात्मन्] हस्तप्रहेलिका को ८४ लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह, अन्तिम संख्या (इक)। °भाय पु [°भ्रातृ] भगवान् महावीर का नववाँ गणधर (कप्प)।
अचल पु [अचल] छठवां रुद्र पुरुष (विचार ४७२)।
अचल न [दे] १ घर। २ घर का पिछला भाग। ३ वि कहा हुआ। ४ निष्ठुर, निर्दय। ५ नीरस, सूखा (दे १, ५३)।
अचला स्त्री [अचला] पृथिवी। २ एक इन्द्राणी (णाया २)।
अचिंत वि [अचिन्त] निश्चिन्त, चिन्तारहित।
अचिंत वि [अचिन्त्य] अनिर्वचनीय, जिसकी चिन्ता भी न हो सके वह अद्भुत (लहुअ ३)।
अचिंतणिज्ज } वि [अचिन्तनीय] ऊपर
अचिंतणीअ } देखो (अभि २०३, महा)।
अचिंतिय वि [अचिन्तित] आकस्मिक, असंभावित (महा)।
अचित्त वि [अचित्त] जीव-रहित, अचेतन, 'चित्तमचित्तं वा णेव सयं अजिन्नं गिण्हेज्जा' (दस ४)।
अचियत्त } वि [दे] १ अनिष्ट, अप्रीतिकर
अचियत्त } (सूअ २, २, पण्ह २, ३)। २ न अप्रीति, द्वेष (ओघ २६१)।
अचिरजुवइ देखो अइरजुवइ (दे १,१८ टी)।
अचिरा देखो अइरा (पउम ३७, ३७)।
अचिराभा स्त्री [अचिराभा] बिजली, विद्युत् (पउम ४२, ३२)।
अचिरेण देखो अइरेण (प्रारू)।
अचेयण वि [अचेतन] चैतन्यरहित, निर्जीव (पण्ह १, २)।
अचेल न [अचेल] १ वस्त्रों का अभाव। २ अल्प-मूल्यक वस्त्र। ३ थोडा वस्त्र (सम ४०)। ४ वि वस्त्र-रहित, नग्न। ५ जीर्ण वस्त्र वाला। ६ अल्प वस्त्र वाला। ७ कुत्सित वस्त्र वाला, मैला, 'तह थोव-जुन्न-कुत्थियचेलेहिंवि भण्णए अचेलोत्ति' (विसे २६०१)। °परिसह, °परीसह पु [°परिषह, °परीषह] वस्त्र के अभाव से अथवा जीर्ण, अल्प या कुत्सित वस्त्र होने से उसे अदीन भाव से सहन करना (सम ४०, भग ८, ८)।
अचेलग } त्रि [अचेलक] १ वस्त्र-रहित,
अचेलय } नग्न। २ फटा-टूटा वस्त्र वाला। ३ मलिन वस्त्र वाला। ४ अल्प वस्त्र वाला। ५ निर्दोष वस्त्र वाला, ६ अनियत रूप से वस्त्र का उपभोग करनेवाला (ठा ९, ३),
'परिसुद्धजिण्ण-कुच्छियथोवानिय-
यत्तभोगभोगेहिं'।
मुणओ मुच्छारहिया, संतेहि अचेलया हुंति'
(विसे २५९९)।
अच्च सक [अर्च्] पूजना, सत्कार करना। अच्चेइ (औप)। अच्च (दे २,३५ टी)। कवकृ. अच्चिज्जंत (सुपा ७८)। कृ अच्चणिज्ज (णाया १,१)।
अच्च पु [अर्च्य] १ लव (काल-मान) का एक भेद (कप्प)। २ वि पूज्य, पूजनीय (हे १, १७७)।
अच्चंग न [अत्यङ्ग] विलासिता के प्रधान अंग, भोग के मुख्य साधन, 'अच्चंगाण च भोगओ माण' (पंचा १)।
अच्चंत वि [अत्यन्त] हद से ज्यादा, अत्यधिक, बहुत (सुर ३,२२)। °थावर वि [°स्थावर] अनादि-काल से स्थावर-जाति में रहा हुआ (श्रावम)। °दूसमा स्त्री [°दुष्पमा] देखो दुस्समदुस्समा (पउम २०, ७२)।
अच्चंतिअ वि [आत्यन्तिक] १ अत्यन्त, अधिक, अतिशयित। २ जिसका नाश कभी न हो वह, शाश्वत (सूअ २, ६)।
अच्चग वि [अर्चक] पूजक (चैत्य १२)।
अच्चग्गल वि [अत्यर्गल] निरंकुश, अनियन्त्रित (मोह ८७)।
अच्चण न [अर्चन] पूजा, सम्मान (सुर ३, १३, सत्त १२ टी)।
अच्चणा स्त्री [अर्चना] पूजा (अच्चु ५७)।
अच्चणिया स्त्री [अर्चनिका] अर्चन, पूजा (राय १०८)।
अच्चत्त वि [अत्यक्त] नहीं छोडा हुआ, अपरित्यक्त (उप पृ १०७)।
अच्चत्थ वि [अत्यर्थ] १ अतिशयित, बहुत

(पण्ह १, १)। २ गभीर अर्थ वाला (राय)। ३ क्रिवि ज्यादा, अत्यत (सुर १,७)।

अच्चब्भुय वि [अत्यद्भुत] वडा आश्चर्य-जनक (प्रासू ४२)।

अच्चय पु [अत्यय] १ विपरीत आचरण (वृह ३)। विनाश, मरण (उव)।

अच्चय वि [अर्चक] पूजक, 'अणच्चयाण च चिरतणाण, जहारिहं रक्खणवड्ढणाति' (विवे ७० टी)।

अच्चर, **अच्चरिअ**, **अच्चरीअ** न [आश्चर्य] विस्मय, चमत्कार (विक्र ६४, प्रवो १७, रभा, भवि, नाट)।

अच्चहम वि [अत्यधम] अति नीच (कप्पू)।

अच्चा स्त्री [अर्चा] पूजा, सत्कार (गउड)।

अच्चा स्त्री [अर्चा] १ शरीर, देह (सूअ १,१३, १७, १,१५,१८, २,२,६, ठा १, पत्र १६)। २ लेश्या, चित्त-वृत्ति (सूअ १,१३,१७, १, १५,१८)। ३ ऐश्वर्य (ठा ३ १—पत्र ११७)।

अच्चासण पु [अत्यशन] पक्ष का वारहवा दिन, द्वादशी तिथि (सुज्ज १०, १४)।

अच्चासणया स्त्री [अत्यासनता] खूब वैठना, देर तक या वारंवार वैठना (ठा ६)।

अच्चासणया स्त्री [अत्यशनता] खूब खाना (ठा ६)।

अच्चासण्ण, **अच्चासन्न** न [अत्यासन्न] अति समीप खूब नजदीक (भग १,१, उवा)।

अच्चासाइय, **अच्चासादिय** वि [अत्याशातित] अपमानित, हैरान किया गया (ठा १०, भग ३, २)।

अच्चासाय सक [अत्या + शातय्] अपमान करना, हैरान करना। वकृ. **अच्चासाएमाण** (ठा १०)। हेकृ **अच्चासाइत्तए** (भग ३,२)।

अच्चाहिअ, **अच्चाहिद** वि [अत्याहित] १ महा भीति, वडा भय। २ झूठा, असत्य (स्वप्न ४७)। ३ ऐसा जखमी कार्य, जिसमे प्राण-हानि की सम्भावना हो (अभि ३७)।

अच्चि स्त्री [अर्चिस्] १ कान्ति, तेज (भग २ ५)। २ अग्नि की ज्वाला (पण्ण १)। ३ किरण (राय)। ४ दीप की शिखा (उत्त ३)। ५ न लोकान्तिक देवो का एक विमान (सम १४)। °**मालि** पु [°मालिन्] १ सूर्य, रवि (सूअ १, ६)। २ वि किरणो से शोभित (राय)। ३ न लोकान्तिक देवो का एक विमान (सम १४)। °**माली** स्त्री [°माली] १ चन्द्र और सूर्य की तृतीय अग्र-महिषी का नाम (ठा ४, १)। २ 'ज्ञातासूत्र' के द्वितीय श्रुतस्कन्ध के एक अध्ययन का नाम (णाया २)। ३ शक्रेन्द्र की तृतीय अग्रमहिषी की राजधानी का नाम (ठा ४,२)। °**मालिणी** स्त्री [°मालिनी] चन्द्र और सूर्य की एक अग्र-महिषी का नाम (भग १०, ५, इक)।

अच्चिअ वि [अर्चित] १ पूजित, सत्कृत (गा १५०)। २ न विमान-विशेष (जीव ३, पत्र १३७)।

अच्चित्त देखो अचित्त (ओघ २२, सुर १२, २७)।

अच्चीकर सक [अर्ची + कृ] १ प्रशसा करना। २ खुशामद करना। अच्चीकरेइ। वकृ. **अच्चीकरत** (निचू ५)।

अच्चीकरण न [अर्चीकरण] १ प्रशसा। २ खुशामद,

'अच्चीकरण रण्णो, गुणवयण
त समासओ दुविह।
सतमसत च तहा,
पच्चक्खपरोक्खमेक्केक्क।' (निचू ५)।

अच्चुअ पु [अच्युत] १ विष्णु (अच्चु ५)। २ वारहवा देवलोक (सम ३९)। ३ ग्यारहवा और वारहवा देवलोक का इन्द्र (ठा २,३)। ४ अच्युत-देवलोकवासी देव, 'त चेव आरण-च्चुय ओहिण्णाणेण पासति' (विसे ६९६)। °**नाह** पु [°नाथ] वारहवा देवलोक का इन्द्र (भवि)। °**वइ** पु [°पति] इन्द्र-विशेष (सुपा ६१)। °**वडिंसग** न [°वतसक] विमान-विशेष का नाम (सम ४१)। °**सग्ग** पु [°स्वर्ग] वारहवा देवलोक (भवि)।

अच्चुअ पुन [अच्युत] एक देव-विमान (देवेन्द्र १३५)।

अच्चुआ स्त्री [अच्युता] छठवे और सत्तरहवें तीर्थंकर की शासनदेवी (सति ९, १०)।

अच्चुइंद पु [अच्युतेन्द्र] ग्यारहवा और वारहवा देवलोक का स्वामी, इन्द्र-विशेष (पउम ११७, ७)।

अच्चुक्कड वि [अत्युत्कट] अत्यन्त उग्र (आवम)।

अच्चुग्ग वि [अत्युग्र] ऊपर देखो (पव २२४)।

अच्चुच्च वि [अत्युच्च] खूब ऊंचा, विशेष उन्नत (उप ९८६ टी)।

अच्चुट्ठिय वि [अत्युत्थित] अकार्य करने को तैय्यार (सूअ १, १४)।

अच्चुण्ह वि [अत्युष्ण] खूब गरम (ठा ५, ३)।

अच्चुत्तम वि [अत्युत्तम] अति श्रेष्ठ (कप्पू)।

अच्चुदय न [अत्युदक] १ वडी वर्षा (ओघ ३०)। २ प्रभूत पानी (जीव ३)।

अच्चुदार वि [अत्युदार] अत्यन्त उदार (स ६००)।

अच्चुन्नय वि [अत्युन्नत] वहुत ऊंचा (कप्प)।

अच्चुब्भड वि [अत्युद्भट] अति-प्रवल (भवि)।

अच्चुवयार पु [अत्युपकार] महान् उपकार (गा ५१४)।

अच्चुवयार पु [अत्युपचार] विशेष सेवा-सुश्रूषा (गा ५१४)।

अच्चुव्वाय वि [अत्युद्वात] अत्यन्त थका हुआ (वृह ३)।

अच्चुसिण वि [अत्युष्ण] अधिक गरम (आचा २, १, ७)।

अच्चे अक [अति + इ] १ अतिक्रान्त होना, गुजरना। २ सक उल्लघन करना। अच्चेइ (उत्त १३, ३१, सूअ १, १५, ८)।

अच्चे सक [अत्या + इ] त्याग करवाना। अच्चेहि (सूअ १, २, ३, ७)।

अच्चेअर न [आश्चर्य] आश्चर्य, विस्मय (विक्र १५)।

अच्छ अक [आस्] वैठना। अच्छइ (हे १, २१४)। वकृ **अच्छत**, **अच्छमाण** (सुर ७, १३, णाया १, १)। कृ **अच्छि-यव्व**, **अच्छेयव्व** (पि ५७०, सुर १२ २२८)।

अच्छ सक [आ + छिद्] १ काटना, छेदना। २ खीचना। अच्छे (आचा १,१,२, ३)। सकृ **अच्छित्तु** (श्रावक २२५), **अच्छेत्तु** (पिंड ३६८)।

अच्छ वि [अच्छ] १ स्वच्छ, निर्मल (कुमा)। २ पु स्फटिक रत्न (पव २७५)। ३ पु व. आर्य देश-विशेष (प्रव २७५)।

अच्छ पु [ऋक्ष] रीछ, भालू (पण्ह १, १)।

अच्छ वि [आच्छ] अच्छे देश में उत्पन्न (पण्ण ११)।

अच्छ पु [अच्छ] मेरु पर्वत (सुज्ज ५)। २ न. तीन बार औटा हुआ स्वच्छ पानी (पडि)।

अच्छ न [दे] १ अत्यन्त, विशेष। २ शीघ्र, जल्दी (दे १, ४६)।

°अच्छ वि [अक्षि] आख, नेत्र (कुमा)।

°अच्छ पु [कच्छ] १ अधिक पानीवाला प्रदेश। २ लताओं का समूह। ३ तृण, घास (से ६, ४७)।

°अच्छ पु [वृक्ष] वृक्ष, पेड (से ६,४७)।

अच्छअ पु [अक्षक] १ बहेडा का वृक्ष। २ न स्वच्छ जल (से ६, ४७)।

अच्छअर न [आश्चर्य] विस्मय, चमत्कार (कुमा)।

अच्छंद वि [अच्छन्द] जो स्वाधीन न हो, पराधीन, 'अच्छंदा जे ण भुंजति ण से चाइत्ति वुच्चइ' (दस २)।

अच्छक्क देखो अत्थक्क (गउड)।

अच्छण न [आसन] १ बैठना (णाया १, १)। २ पालकी वगैरह सुखासन (ओघ ७८)। °घर न [°गृह] विश्राम स्थान (जीव ३)।

अच्छण न [दे] १ सेवा, शुश्रूषा (बृह ३)। २ देखना, अवलोकन (वव १)। ३ अहिंसा, दया (दस ८)।

अच्छणिउर न [अच्छनिकुर] अच्छनिकुराग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २, १)।

अच्छणिउरंग न [अच्छनिकुराङ्ग] संख्या-विशेष, नलिन को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २,१)।

अच्छण्ण वि [अच्छन्न] अगुप्त, प्रकट (बृह ३)।

अच्छभल्ल पु [ऋक्षभल्ल] रीछ, भालू (दे १, ३७, पण्ह १, १)।

अच्छभल्ल पु [दे] यक्ष, देव-विशेष (दे १, ३७)।

अच्छरआ देखो अच्छरा (षड्)।

अच्छरय पु [आस्तरक] शय्या पर बिछाने का वस्त्र-विशेष (णाया १, १)।

अच्छरसा } स्त्री [अप्सरस्] १ इन्द्र की
अच्छरा } पटरानी (ठा ६)। २ 'ज्ञाताधर्मकथा' का एक अध्ययन (णाया २)। ३ देवी (पउम २, ४१)। ४ रूपवती स्त्री (पण्ह १, ४)।

अच्छरा स्त्री [दे अप्सरा] चुटकी, चुटकी का आवाज (सूअ २,२,५४)।

अच्छराणिवाय पु [दे] १ चुटकी। २ चुटकी बजाने मे जितना समय लगता है वह, अत्यल्प समय (पण्ण ३६)।

अच्छरिअ }
अच्छरिज्ज } न [आश्चर्य] विस्मय, चमत्कार (हे १, ५८, प्रयौ ४२)।
अच्छरीअ }

अच्छल न [अच्छल] निर्दोषता, अनपराध (दे १, १०)।

अच्छवि वि [अच्छवि] जैन-दर्शन मे जिसको स्नातक कहते हैं वह जीवन्मुक्त योगी (भग २५, ६)।

अच्छविकर पु [अक्षपिकर] एक प्रकार का मानसिक विनय (ठा ८)।

अच्छहल्ल पुं [ऋक्षभल्ल] रीछ, भालू (पाअ)।

अच्छा स्त्री [अच्छा] वरुण देश की राजधानी (पव २७५)।

°अच्छा स्त्री [कक्षा] गर्व, अभिमान (से ६, ४७)।

अच्छाइ वि [आच्छादिन्] ढकनेवाला, आच्छादक (स ५५१)।

अच्छायण न [आच्छादन] १ ढकना (दे ७, ४५)। २ वस्त्र, कपडा (आचा)।

अच्छायणा स्त्री [आच्छादना] ढकना, आच्छादित करना (वव ३)।

अच्छायत त्रि [अच्छातान्त] तीक्ष्ण, धारदार (पाअ)।

अच्छि त्रि [अक्षि] आंख, नेत्र (हे १ ३३, ३५)।

°चमढण न [°मलन] आख का मलना (बृह २)।

णिमीलिय न [निमीलित] १ आँख को मूंदना, मीचना। २ आँख मिचने में जो समय लगे वह, 'अच्छिणिमीलियमेत्त, णत्थि सुह दुक्खमेव अणुबद्धं। णरए णेरइआण, अहोणिस पच्चमाणाए' (जीव ३)। °पत्त न [°पत्र] आंख का पक्ष्म, पपनी (भग १४, ८)। °वेहग पु [°वेधक] एक चतुरिन्द्रिय जन्तु, क्षुद्र जीव-विशेष (उत्त ३६)। °रोडय पु [°रोडक] एक चतुरिन्द्रिय जन्तु, क्षुद्र कीट-विशेष (उत्त ३६)। °ल्ल वि [°मत्] १ आंख वाला प्राणी। २ चतुरिन्द्रिय जन्तु (उत्त ३६)। °मल पु [°मल] आंख का मैल, कीट्ट (निचू ३)।

अच्छिंद सक [आ + छिद्] १ थोडा छेद करना। २ एक वार छेद करना। ३ बलात्कार से छीन लेना। वकृ अच्छिंदमाण (भग ८, ३)।

अच्छिंद पु [अक्षीन्द्र] गोशालक के एक दिक्चर (शिष्य) का नाम (भग १५)।

अच्छिंदण न [आच्छेदन] १ एक वार छेदना (निचू ३)। २ छीनना। ३ थोडा छेद करना, थोडा काटना (भग १५)।

अच्छिक्क वि [दे] अस्पृष्ट, नही छुआ हुआ (वव १)।

अच्छिघरुल्ल वि [दे] अप्रीतिकर। २ पुं वेश, पोशाक (दे १, ४१)।

अच्छिज्ज वि [आच्छेद्य] १ जबरदस्ती जो दूसरे से छीन लिया जाय (पिंड)। २ पु जैन साधु के लिए भिक्षा का एक दोष (आचा)।

अच्छिज्ज वि [अच्छेद्य] जो तोडा न जा सके (ठा ३,२)।

अच्छित्ति स्त्री [अच्छित्ति] १ नाश का अभाव, नित्यता। २ वि नाश-रहित (विसे)। °णय पु [°नय] नित्यता-वाद, वस्तु को नित्य माननेवाला पक्ष (पव)।

अच्छिद्द वि [अच्छिद्र] १ छिद्र-रहित, निबिड, गाढ (ज २)। २ निर्दोष (भग २,०)।

अच्छिण्ण } वि [आच्छिन्न] १ बलात्कार
अच्छिन्न } से छीना हुआ। २ छेदा हुआ, तोडा हुआ (पाअ)।

अच्छिण्ण } वि [अच्छिन्न] १ नही तोडा
अच्छिन्न } हुआ, अलग नहीं किया हुआ (ठा १०)। २ अव्यवहित, अन्तर-रहित (गउड)।

अच्छिप्प वि [अस्पृश्य] छूने के अयोग्य (सुपा २८१)।

अच्छिप्पंत वि [अस्पृशत्] स्पर्श नही करता हुआ (श्रा १२)।

अच्छिय वि [आसित] बैठा हुआ (पि ४८०, ५६५)।

अच्छिवडण न [दे] आँख का मूँदना (दे १, ३६)।

अच्छिविअच्छि स्त्री [दे] परस्पर-आकर्षण, आपस की खींचतान (दे १, ४१)।

अच्छिहरिल्ल } देखो अच्छिघरुल्ल (दे
अच्छिहरुल्ल } १, ४१)।

अच्छी देखो अच्छि (रभा)।

अच्छुक्क न [दे] अक्षि-कूप-तुला, आँख का कोटर (सुपा २०)।

अच्छुत्ता स्त्री [अच्छुप्ता] १ एक विद्याधिष्ठात्री देवी (ति ८)। २ भगवान् मुनिसुव्रत स्वामी की शासनदेवी (सति १०)।

अच्छुद्धसिरी स्त्री [दे] इच्छा से अधिक फल की प्राप्ति, असभावित लाभ (षड्)।

अच्छुल्लूढ वि [दे] निष्कासित, बाहर निकाला हुआ, स्थान-भ्रष्ट किया हुआ (बृह १)।

अच्छेज्ज देखो अच्छिज्ज (ठा ३, २, ४)।

अच्छेर } न [आश्चर्य] १ विस्मय चमत्कार
अच्छेरग } (हे १,५८)। २ पुन विस्मय-जनक
अच्छेरय } घटना, अपूर्व घटना (ठा १०, १३८)। °कर वि [°कर] विस्मय-जनक, चमत्कार उपजानेवाला (श्रा १४)।

अच्छोड सक [आ + छोटय्] १ पटकना, पछाडना। २ सिंचना, छिटकना, 'अच्छोडेमि सिलाए, तिल तिल किं नु छिंदामि' (सुर १५, २३, सुर २, २४५)।

अच्छोड पु [आच्छोट] १ सिंचन। २ आस्फालन करना, पटकना (ओघ ३५७)।

अच्छोडण न [आच्छोटन] १ सिंचन। २ आस्फालन (सुर १३, ४१, सुपा ५६३, वेणी १०९)। ३ मृगया शिकार (दे १, ३७)।

अच्छोडाविय वि [दे आच्छोटित] वधित, वधाया हुआ (स ५२५; ०२६)।

आच्छोडिअ वि [दे] आकृष्ट, खीचा हुआ, 'अच्छोडिअवत्थद्ध (गा १६०)।

अच्छोडिअ वि [आच्छोटित] सिक्त, सिंचा हुआ (सुर २, २४५)।

अच्छोडिअ वि [आच्छोटित] पटका हुआ, आस्फालित (कुप्र ४३३)।

अछिप्प वि [अस्पृश्य] स्पर्श करने के अयोग्य, 'सो सुणओव्व अछिप्पो कुलुग्गयाण, न उण पुरिसो' (सुपा ४८७)।

अज देखो अय = अज (पउम ११,२५,२६)।

अजगर देखो अयगर (भवि)।

अजड पु [दे] जार, उपपति (षड्)।

अजड वि [अजड] १ पटु, विकण्ति (गउड)। २ निपुण, चतुर (कुमा)।

अजम वि [दे] १ सरल, ऋजु (षड्)। २ जमाईन (पभा १५)।

अजय वि [अयत्न] १ पाप-कर्म मे अविरत, नियम-रहित (कम्म ४)। २ अनुद्योगी, यत्न-रहित (अघो ५४)। ३ उपयोग-शून्य, बेख्याल (सुपा ५२२)। ४ क्रिवि बे-ख्याल मे, अनुपयोग मे, 'अजय चरमाणो य पाणभूयाइ हिंसइ (दस ४, उवर ४ टी।

अजय पु [अजय] षट्पद छंद का एक भेद (पिंग)।

अजयणा स्त्री [अयतना] अनुपयोग, ख्याल नही रखना गफलती (गच्छ ३)।

अजर वि [अजर] १ वृद्धावस्था-रहित, बुढापा-वर्जित। २ पु देव, देवता (आवम)। ३ मुक्त आत्मा (ओघ)।

अजराउर वि [दे] उष्ण, गरम (दे १,४५)।

अजरामर वि [अजरामर] १ बुढापा और मृत्यु से रहित 'णत्थि कोइ जगम्मि अजरामरो' (महा)। २ न मुक्ति, मोक्ष। ३ स्त्री °रा विद्या-विशेष (पउम ७, १३६)।

अजस पु [अयशस्] १ अपयश, अपकीर्ति (उप ७६८)। °ोकित्तिणाम न [°कीर्तिनामन्] अपकीर्ति का कारण-भूत एक कर्म (सम ६७)।

अजस्स क्रिवि [अजस्र] निरन्तर, हमेशा, 'आमरणंतमजस्स सजमपरिपालण विहिणा' (पचा ७)।

अजा देखो अया (कुमा)।

अजाण वि [अज्ञान] अनजान, मूर्ख (रयण ८५)।

अजाणअ वि [अज्ञायक] अनजान, जानकारी-रहित (काल)।

अजाणणा स्त्री [अज्ञान] जानकारी-रहित बेसमझी, 'अधारणाए तव्वत्ती न कया तम्मि' (श्रा २८)।

अजाणुय वि [अज्ञायक] अज्ञ, नही जाननेवाला (ठा ३, ४)।

अजाय वि [अजात] अनुत्पन्न, अनिष्पन्न। °कप्प पु [°कल्प] शास्त्रो को पूरा-पूरा नही जाननेवाला जैन साधु, अगीतार्थ, 'गीयत्थ जायकप्पो अगीओ खलु भवे अजाओ अ' (धर्म ३)। °कप्पिय पु [°कल्पिक] अगीतार्थ जैन साधु (गच्छ १)।

अजिअ वि [अजित] १ अपराजित, अपराभूत। २ पु दूसरे तीर्थंकर का नाम (अजि १)। ३ नववें तीर्थंकर का अधिष्ठाता देव (संति ७)। ४ एक भावी बलदेव (ती २१)। °बला स्त्री [°बला] भगवान् अजितनाथ की शासनदेवी (पव २७)। °सेण पु [°सेन] १ एक प्रसिद्ध राजा (आव)। २ चौथा कुलकर (ठा १०)। ३ एक विख्यात जैन मुनि (अत ४)।

अजिअ पु [अजित] भगवान् मल्लिनाथ का प्रथम श्रावक (विचार ३७८)।

°णाह पु [°नाथ] नववा रुद्र पुरुष (विचार ४७३)।

अजिअ वि [अजीव] जीव-रहित, अचेतन (कम्म १, १५)।

अजिअ वि [अजय्य] जो जीता न जा सके (सुपा ७५)।

अजिया स्त्री [अजिता] १ भगवान् अजितनाथ की शासन देवी (सति ६)। २ चतुर्थ तीर्थंकर की एक मुख्य शिष्या (तित्थ)।

अजिण न [अजिन] १ हरिण आदि पशुओ का चमडा (उत्त ५, दे ७, २७)। २ वि जिसने राग-द्वेष का सर्वथा नाश नही किया है वह (भग १५)। ३ जिन भगवान् के तुल्य सत्योपदेशक जैन साधु, 'अजिणा जिणसकासा, जिणा इवावितहं वागरेमाणा' (औप)।

अजिण्ण देखो अइन्न = अजीर्ण (आव)।

अजियंधर पु [अजितधर] ग्यारह रुद्रों मे आठवा रुद्र पुरुष (विचार ४७३)।

अजिर न [अजिर] आंगन, चौक (सण)।

अजीर } देखो अइन्न = अजीर्ण (वव १,
अजीरय } णाया १,१३)।

अजीरण देखो अइन्न = अजीर्ण (पिंड २७, पव १३१)।

अजीव पु [अजीव] अचेतन, निर्जीव, जड पदार्थ (नव २)। °काय पुं [°काय] धर्मास्तिकाय आदि अजीव पदार्थ (भग ७,१०)।

अजुअ पु [दे] वृक्ष-विशेष, सप्तच्छद, सतौना (दे १, १७)।

अजुअ न [अयुत] दश हजार, 'दोण्णि सहस्सा रहाण, पञ्च अजुयाणि हयाण' (महा)।

अजुअलवण्ण पु [अयुगलपर्ण] सतौना (दे १,४८)।

अजुअलवण्णा स्त्री [दे] इमली का पेड (दे १, ४८)।

अजुत्त वि [अयुक्त] अयोग्य, अनुचित (विसे)। °कारि वि [°कारिन्] अयोग्य कार्य करनेवाला (सुपा ६०४)।

अजुत्तीय वि [अयुक्तिक] युक्ति-शून्य, अन्याय्य (सुर १२, ५४)।

अजुय देखो अउअ, 'पंच अजुयाणि हयाण सत्त कोडीओ पाइक्कजणाण' (सुख ६, १)।

अजेअ वि [अजय] जो जीता न जा सके, 'सो मउडरयणपहावेण अजेओ दोमुहराया' (महा)।

अजोग पु [अयोग] मन, वचन और काया के सब व्यापारो का जिसमें अभाव होता है वह सर्वोत्कृष्ट योग, शैलेशी-करण (औप)।

अजोग वि [अयोग्य] अयोग्य, लायक नहीं वह (नीचू ११)।

अजोगि पु [अयोगिन्] १ सर्वोत्कृष्ट योग को प्राप्त योगी। २ मुक्त आत्मा (ठा २,१, कम्म ४, ४७, ५०)।

अज्ज मक [अर्ज्] पैदा करना, उपार्जन करना, कमाना। अज्जइ (हे ४,१०८)। सकृ. अज्जिय (पिंग)।

अज्ज वि [अर्य] १ वैश्य। २ स्वामी, मालिक (दे १, ५)।

अज्ज वि [आर्य] १ निर्दोष। २ आर्य-गोत्र मे उत्पन्न (णंदि ४९)। ३ शिष्ट-जनोचित, 'अज्जाइं कम्माइं करेहि राय' (उत्त १३,३२)। °खउड पुं [°खपुट] एक जैन आचार्य (कुप्र ४४०)।

अज्ज वि [आर्य] १ उत्तम, श्रेष्ठ (ठा ४,२)। २ मुनि, साधु (कप्प)। ३ सत्यकार्य करनेवाला (वव १)। ४ पूज्य, मान्य (विपा १, १)। ५ पु. मातामह (निसी)। ६ पितामह (णाया १, ८)। ७ एक ऋषि का नाम (णंदि)। ८ न गोत्र-विशेष (णंदि)। ९ जैन साधु, साध्वी और उनकी शाखाओ के पूर्व मे यह शब्द प्राय लगता है, जैसे अज्जवइर, अज्जचंदणा, अज्जपोमिला (कप्प)। °उत्त पु [°पुत्र] १ पति, भर्ता (नाट)। २ मालिक का पुत्र (नाट)। °घोस पु [°घोष] भगवान् पार्श्वनाथ का एक गणधर (ठा ८)। °मंगु पु [°मङ्गु] एक प्राचीन जैनाचार्य (सार्ध २२)। °मिस्स वि [°मिश्र] पूज्य, मान्य (अभि १३)। °समुद्द पु [°समुद्र] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य (सार्ध २२)।

अज्ज अ [अद्य] आज (सुर २, १६७)। °त्त वि [°तन] अधुनातन, आजकल का (रभा)। °त्ता स्त्री [°ता] आज कल (कप्प)। °प्पभिइ अ [°प्रभृति] आज से ले कर (उवा)।

अज्ज पु [दे] १ जिनेन्द्र देव। २ बुद्ध देव (दे १, ५)।

अज्ज न [आज्य] घी, घृत (पाअ)।

अज्ज° देखो रि = ऋ।

अज्ज अ [अद्य] आज (गा ५८)।

अज्जंत वि [आयत्] आगामी। °काल पु [°काल] भविष्य काल (पाअ)।

अज्जहिज्जो अ [अद्यह्य] आजकल (उप पृ ३७४)।

अज्जकालिअ वि [अद्यकालिक] आजकल का (अणु १५८)।

अज्जग देखो अज्जय = अर्जक, 'अज्जगतरुमजरिव्व' (सुपा ५३)।

अज्जग देखो अज्जय = आर्यक (निर १, १)।

अज्जण सक [अर्ज्] उपार्जन करना। सकृ अज्जणित्ता (सूअ १, ५, २, २३)।

अज्जण } [अर्जन] उपार्जन, पैदा करना
अज्जणण } (श्रा १२, सत्त १८), 'रज्ज केरिसमेवं करेमुवाय तदज्जणे' (उप ७ टी)।

अज्जम पु [अर्यमन्] १ सूर्य (पि २६१)। २ देव-विशेष (ज ७)। ३ उत्तरा-फाल्गुनी नक्षत्र का अधिष्ठायक देव (ठा २, ३)। ४ न उत्तरा-फाल्गुनी नक्षत्र (ठा २, ३)।

अज्जय पुं [आर्यक] १ मातमह, मा का बाप (पउम ५०, २)। २ पितामह, पिता का पिता (भग ९, ३३), 'ज पुण अज्जय-पज्जयजणयज्जियअत्थमज्भओ दाण परमत्थओ कलक तय तु पुरिसाभिमाणीण' (सुर १, २२०)।

अज्जय वि [अर्जक] १ उपार्जन करनेवाला, पैदा करनेवाला (सुपा १२४)। २ पु वृक्ष-विशेष (पण्ण १)।

अज्जय पु [दे] १ सुरस नामक तृण। २ गुरेटक नामक तृण (दे १, ५४)। ३ तृण, घास (निचू ११)।

अज्जल पुं [आर्यल] म्लेच्छो की एक जाति (पण्ण १)।

अज्जव न [आर्जव] सरलता, निष्कपटता (नव २९)।

अज्जव (अप) देखो अज्ज = आर्य। °खंड पु [खण्ड] आर्य-देश (भवि)।

अज्जवया स्त्री [आर्जव] ऋजुता, सरलता (पक्खि)।

अज्जवि वि [आर्जविन्] सरल, निष्कपट (आचा)।

अज्जविय न [आर्जव] सरलता (सूअ १, ५, २, २३)।

अज्जा स्त्री [आर्या] १ साध्वी (गच्छ २)। २ गौरी, पार्वती (दे १, ५)। ३ आर्या छन्द (ज २)। ४ भगवान् मल्लिनाथ की प्रथम शिष्या (सम १५२)। ५ मान्या, पूज्या स्त्री (पि १०६, १४३, १४५)। ६ एक कला (औप)।

अज्जा स्त्री [आज्ञा] आदेश, हुकुम (हे २, ८३)।

अज्जाय वि [अजात] अनुत्पन्न, 'अज्जायस्सियरस्सवि एस सहावो त्ति दुग्घड जाए' (धर्मस २७०)।

अज्जाव सक [आ + ज्ञापय्] आज्ञा करना, हुकुम फरमाना। कृ अज्जावेयव्व (सूअ २, १)।

अज्जिअ वि [अर्जित] उपार्जित, पैदा किया हुआ (श्रा १४)।

अज्जिआ स्त्री [आर्यिका] १ मान्या, पूज्या स्त्री। २ साध्वी, सन्यासिनी (सम ६५, पि ४४८)। ३ माता की माता (दस ७)। ४ पिता की माता (स २५५)।

अज्जिक्कीअ वि [दे] दत्त, दिया हुआ (वव १ टी)।

अज्जिणण देखो अज्जणण (उप ६६४)।

अज्जीव देखो अजीव, 'धम्माधम्मा पुग्गल, नह कालो पच हुति अज्जीवा' (नव १०)।

अज्जु (अप) अ [अद्य] आज (हे ४, ३४३, भवि, पिंग)।

अज्जुअ (शौ) देखो अज्ज = आर्य (नाट)।

अज्जुआ (शौ) देखो अज्जा = आर्या (पि १०५)।

अज्जुण पु [अर्जुन] १ तीसरा पाण्डव (णाया १, १६)। २ वृक्ष-विशेष (णाया १, ६, औप)। ३ गोशालक के एक दिक्चर (शिष्य) का नाम (भग १५)। ४ न श्वेत सुवर्ण, सफेद सोना, 'सव्वज्जुणसुवण्णमई' (औप)। ५ तृण-विशेष (पण्ण १)। ६ अर्जुन वृक्ष का पुष्प (णाया १, ६)।

अज्जुणग } [अर्जुनक] १—६ ऊपर देखो।
अज्जुणय } ७ एक माली का नाम (अंत १८)।

अज्जू स्त्री [आर्या] सास, श्वश्रू (हे १, ७७)।

अज्जोग देखो अजोग = अयोग (पंच १)।

अज्जोगि देखो अजोगि (पंच १)।

अज्जोरुह न [दे] वनस्पति-विशेष (पण्ण १)।

अज्झक्ख वि [अध्यक्ष] अधिष्ठाता (कप्पू)।

अज्झ पु [दे] यह (पुरुष मनुष्य) (दे १, ५०)।

अज्झत्त देखो अज्झप्प (सूअ १, २, २, १२)।

अज्झत्थ वि [दे] आगत, आया हुआ (दे १, १०)।

अज्झत्थ } न [अध्यात्म] १ आत्मा मे, आत्म-
अज्झप्प } सबधी, आत्म-विषयक, (उत्त १, आचा)। २ मन में, मन सबधी, मनो-विषयक (उत्त ६, सूअ १, १६, ४)। ३ मन, चित्त, 'अज्झप्पसाणयण' (दसनि १, २६)। ४ शुभ-ध्यान, 'अज्झप्प-रए सुसमाहि-अप्पा, सुत्तत्थं च विआणइ जे स भिक्खू' (दस १०,१५)। ५ पु आत्मा (ओघ ७४५)। °जोग पु [°योग] योग-विशेष, चित्त की एकाग्रता (सूअ १, १६, ४)। °दोस पु [°दोष] आध्यात्मिक दोष—क्रोध, मान, माया और लोभ (सूअ १, ६)। °वत्तिय वि [°प्रत्ययिक] चित्त-हेतुक, मन से ही उत्पन्न होनेवाला शोक, चिन्ता आदि (सूअ २, २, १६)। °विसोहि स्त्री [°विशुद्धि] आत्म-शुद्धि (ओघ ७४५)। °सवुड वि [°सवृत] मनो-निग्रही, मन को काबू में रखने-वाला (आचा)। °सुइ स्त्री [°श्रुति] अध्यात्म-शास्त्र, आत्म-विद्या, योग-शास्त्र (पण्ह २, १)। °सुद्धि स्त्री [°शुद्धि] मन की शुद्धि (आचू १)। °सोहि स्त्री [°शुद्धि] मन -शुद्धि (आचू १)।

अज्झत्थिय वि [आध्यात्मिक] आत्म-विषयक, आत्मा या मन से सबध रखनेवाला (विपा १, १, भग २, १)।

अज्झत्थीअ देखो अज्झत्थिय (पव १२१)।

अज्झप्पिअ वि [आध्यात्मिक] १ अध्यात्म का जानकार (अज्झ २)। २ अध्यात्म सम्बन्धी (सूअनि ६४)।

अज्झय वि [दे] प्रातिवेश्मिक, पडोसी (दे १, १७)।

अज्झयण पुंन [अध्ययन] १ शब्द, नाम (चंद १)। २ पढना, अभ्यास (विसे)। ३ ग्रन्थ का एक अंश (विपा १, १)।

अज्झयणि वि [अध्ययनिन्] पढने वाला, अभ्यासी (विसे १४६५)।

अज्झयाव सक [अधि + आप्] पढाना, सीखाना। । अज्झयाविंति (विसे ३१६६)।

अज्झवस सक [अध्यव + सो] विचार करना, चिंतन करना। वकृ अज्झवसंत (सुपा ५६५)।

अज्झवसण } न [अध्यवसान] चिन्तन,
अज्झवसाण } विचार, आत्म-परिणाम, 'तो कुमरेण भणियं, मुणिपुगव। रहसुहज्झवस-णपि। कि इयफलय जायइ?' (सुपा ५६६, प्रासू १०४, विपा १, २)।

अज्झवसाय पु [अध्यवसाय] विचार, आत्म-परिणाम, मानसिक सकल्प (आचा, कम्म ४, ८२)।

अज्झवसिय वि [अध्यवसित] निश्चित, (धर्मसं ४२८)।

अज्झवसिय वि [अध्यवसित] १ जिसका चिन्तन किया गया हो वह (औप)। २ न चिन्तन, विचार (अणु)।

अज्झवसिय न [दे] मुंडा हुआ मुह (दे १, ४०)।

अज्झसिय वि [दे] देखा हुआ, दृष्ट (दे १, ३०)।

अज्झस्स सक [आ + क्रुश्] आक्रोश करना, अभिशाप देना। अज्झस्सइ (दे १, १३)।

अज्झस } वि [आक्रुष्ट] जिस पर आक्रोश
अज्झस्सिय } किया गया हो वह (दे १, १३)।

अज्झहिय वि [अध्यधिक] अत्यत, अतिश-यित (महा)।

अज्झा स्त्री [दे] १ असती, कुलटा। २ प्रशस्त स्त्री। ३ नवोढा, दुलहिन। ४ युवती स्त्री। ५ यह (स्त्री) (दे १, ५०, गा ८३८, ८६८, वज्जा ६४)।

अज्झा } सक [अधि + इ] अध्यन करना,
अज्झाअ } पढना। अज्झामि, (सुख २, १३)। हेकृ अज्झाइउं (सुख २, १३)।

अज्झाअ सक [अध्यापय्] पढाना। कर्म अज्झाइज्जइ (सुख २, १३)।

अज्झाइअव्व वि [अध्येतव्य] पढने योग्य, 'सुअं मे भविस्सइ त्ति अज्झाइअव्वं भवइ' (दस ६, ४, ३)।

अज्झाय पु [अध्याय] १ पठन, अभ्यास (नाट)। २ ग्रन्थ का एक अंश (विसे ११११, प्राप)।

अज्झारुह पु [अध्यारुह] १ वृक्ष-विशेष। २ वृक्षों के ऊपर बढनेवाली वल्ली या शाखा वगैरह (पण्ण १)।

अज्झारोव पु [अध्यारोप] आरोप, उपचार (धर्मसं ३५२, ३५३)।

अज्झारोवण न [अध्यारोपण] १ आरोपण, ऊपर चढाना। २ पूछना, प्रश्न करना (विसे २६२८)।

अज्झारोह पु [अध्यारोह] देखो अज्झारुह (सूअ २, ३, ७, १८, १६)।

अज्झाव देखो अज्झाअ = अध्यापय्। अज्झा-वेइ (सुख २,१३)। वकृ, अज्झावअंत (हास्य १२४)।

अज्झावग देखो अज्झावय (दसनि १, १ टी)।

अज्झावण न [अध्यापन] पाठन (सिरि २७)।

अज्झावणा स्त्री [अध्यापना] पढाना (कम्म १, ६०)।

अज्झावय वि [अध्यापक] पढानेवाला, शिक्षक, गुरु (वसु, सुर ३, २६)।

अज्झावस अक [अध्या + वस्] रहना, वास करना। वकृ अज्झावसत (उवा)।

अज्झास पु [अध्यास] १ ऊपर बैठना। २ निवास-स्थान (सुपा २०)।

अज्झासणा स्त्री [अध्यासना] सहन करना (राज)।

अज्झासिअ वि [अध्यासित] १ आश्रित, अधिष्ठित। २ स्थापित, निवेशित (नाट)।

अज्झाहय वि [अध्याहत] १ उत्तेजित, 'सीयलेणं सुरहिगवम्मट्टियागवेण हत्थी अज्झाहओ वण सभरेइ' (महा)।

अज्झीण वि [अक्षीण] १ अक्षय, अखूट। २ न अध्ययन (विसे ६५८)।

अज्झुववज्ज देखो अज्झोववज्ज (पि ७७, औप)।

अज्झुववण्ण देखो अज्झोववण्ण (विपा १, १)।

अज्झुववाय देखो अज्झोववाय (उप पृ २८१)।

अज्झुसिअ वि [अध्युषित] आश्रित (पिंड ४५०)।

अज्झुसिर वि [अशुषिर] छिद्र-रहित (ओघ ३१३)।

अज्झेउ वि [अध्येतृ] पढनेवाला (विसे १४६५)।

अज्झेल्ली स्त्री [दे] दोहने पर भी जिसका दोहन हो सके ऐसी गैया (दे १, ७)।

अज्झेसणा स्त्री [अध्येषणा] अधिक प्रार्थना, विशेष याचना (राज)।

अज्झोयरग } पु [अध्यवपूरक] १ साधु के
अज्झोयरय } लिए अधिक रसोई करना। २ साधु के लिए बढाकर की हुई रसोई (औप, पव ६७)।

अज्झोल्लिआ स्त्री [दे] वक्ष-स्थल के आभूषण में की जाती मोतियों की रचना (दे १, ३३)।

अज्झोवगमिय वि [आभ्युपगमिक] स्वेच्छा से स्वीकृत (पण्ण ३४)।

अज्झोववज्ज अक [अध्युप + पद्] अत्यासक्त होना, आसक्ति करना। अज्झोववज्जइ (पि ७७)। भवि अज्झोववज्जिहिइ (औप)।

अज्झोववण्ण } वि [अध्युपपन्न] अत्यंत
अज्झोववन्न } आसक्त (विपा १,२, णाया १, २, महा, पि ७७)।

अज्झोववाय पु [अध्युपपाद] अत्यन्त आसक्ति, तल्लीनता (पण्ह २,५)।

अझावणा देखो अज्झावणा, 'पसमो पसन्नवयणो विहिणा सव्वाणझावणाकुसलो' (सबोध २४)।

अट } सक [अट्] भ्रमण करना, घूमना।
अट्ट } अटइ (षड्, हे १, १९५), परिअट्टइ (हे ४, २३०)।

अट्ट सक [कथ्] क्वाथ करना। अट्टइ (हे ४, ११९, षड्, गउड)।

अट्ट अक [शुष्] सूखना, शुष्क होना। अट्टंति (से ५, ६१)। वकृ अट्टंत (से ५, ७३)।

अट्ट वि [आर्त] १ पीडित, दुःखित (विपा १,१)। २ ध्यान-विशेष—इष्ट-सयोग, अनिष्ट-वियोग, रोग-निवृत्ति और भविष्य के लिए चिन्ता करना (ठा ४, १)। °ण्ण वि [°ज्ञ] पीडित की पीडा को जाननेवाला (षड्)।

अट्ट वि [ऋत] गत, प्राप्त (णाया १, १, भग १२, २)।

अट्ट पुन [अट्ट] १ दूकान, हाट (श्रा १४)। २ महल के ऊपर का घर, अटारी (कुमा)। ३ आकाश (भाग २०, २)।

अट्ट वि [दे] १ कृश, दुर्बल। २ बडा, महान्। ३ निर्लज्ज, बेशरम। ४ आलसी, सुस्त। ५ पु. शुक, तोता। ६ शब्द, आवाज। ७ न सुख। ८ झूठ, असत्योक्ति (दे १, ५०)।

अट्टट्ट वि [दे] गया हुआ, गत (दे १, १०)।

अट्टट्टहास पुं [अट्टट्टहास] देखो अट्टहास (उव)।

अट्टण न [अट्टन] १ व्यायाम, कसरत (औप)। २ पु इस नाम का एक प्रसिद्ध मल्ल (उत्त ४)। °साला स्त्री [°शाला] व्यायाम-शाला, कसरत-शाला (औप, कप्प)।

अट्टण न [अटन] परिभ्रमण (धर्म ३)।

अट्टणा स्त्री [आवर्तना] आवृत्ति (प्राकृ ३१)।

अट्टमट्ट वि [दे] निरर्थक, व्यर्थ, निकम्मा (सुख ५,८)।

अट्टमट्ट पुं [दे] १ आलवाल, कियारी (हे २, १७४)। २ अशुभ सकल्प-विकल्प, पाप-सबद्ध अव्यवस्थित विचार,
'अणवट्ठिय मणो जस्स झाइ बहुयाइ अट्टमट्टाइ। तं चितिय च न लहइ, सचिणइ य पावकम्माइ' (उव)।

अट्टय पुं [अट्टक] १ हाट, दूकान (श्रा १२)। २ पात्र के छिद्र को बन्द करने मे उपयुक्त द्रव्य-विशेष (बृह १)।

अट्टयक्कली स्त्री [दे] कमर पर हाथ रखकर खडा रहना (पाअ)।

अट्टहास पु [अट्टहास] बहुत हँसना, खिलखिला कर हँसना (पि २७१)।

अट्टालग } पुन [अट्टालक] महल का उपरि-
अट्टालय } भाग, अटारी (सम १३७, पउम २, ९)।

अट्टि स्त्री [आर्ति] पीडा, दुःख (आचा)।

अट्टिय वि [आर्तित] शोकादि से पीडित, 'अट्टा अट्टियचित्ता, जह जीवा दुक्खसागरमुवेंति' (औप)।

अट्टिय वि [अर्दित] व्याकुल, व्यग्र, 'अट्टदुहट्टियचित्ता' (औप)।

अट्ठ पु [अर्थ] संयम (सूअ १,२,२,१६)।

अट्ठ पुन [अर्थ] १ वस्तु, पदार्थ (उवा २; अच्चु), 'अट्ठदसी' (सूअ १, १४), 'अट्ठाइं, हेऊइं, पसिणाइं' (भग २, १)। २ विषय, 'इंदियट्ठा' (ठा ६)। ३ शब्द का अभिधेय, वाच्य (सूअ १,६)। ४ मतलब, तात्पर्य (विपा २,१, भास १८)। ५ तत्त्व, परमार्थ, 'तुब्भेत्थ भो भारहरा गिराणं, अट्ठ न याणाह अहिज्ज वेए' (उत्त १२, ११), 'इओ चुएसु दुहमट्ठदुग्गं' (सूअ १, १०, ६)। ६ प्रयोजन, हेतु (हे २,२३)। ७ अभिलाष, इच्छा; 'अट्ठो भंते! भोगेहिं, हंता अट्ठो' (णाया १,१६, उत्त ३)। ८ उद्देश्य, लक्ष्य (सूअ १, २, १)। ९ धन, पैसा (श्रा १४, आचा)। १० फल, लाभ, 'अट्ठजुत्ताणि सिक्खेज्जा णिरट्ठाणि उ वज्जए' (उत्त १)। ११ मोक्ष, मुक्ति (उत्त १)। °कर पु [°कर] १ मंत्री। २ निमित्त शास्त्र का विद्वान् (ठा ४, ३)। °जाय वि [°जातार्थ]

जिसकी आवश्यकता हो, जिसका प्रयोजन हो वह, 'अट्ठेण जस्स कज्ज सजात एस अट्ठजाओ य' (वव २)। °जाय वि [°याच] धनार्थी, धन की चाहवाला (वव २)। °सइय वि [°शतिक] सौ अर्थवाला, जिसका सौ अर्थ हो सके ऐसा (वचन आदि) (ज २)। °सेण प [°सेन] देखो अट्ठिसेण, देखो अत्थ=अर्थ।

अट्ठ त्रि व [अष्टन्] सख्या-विशेष, आठ, ८ (जी ४१)। °चत्ताल वि [°चत्वारिंश] अठतालीसवाँ (पउम ४८,१२६)। °चत्तालीस त्रि [°चत्वारिंशत्] अठतालीस (पि ४४५)। °ट्ठमिया स्त्री [°ष्टमिका] जैन साधुओं का ६४ दिन का एक व्रत, प्रतिमा-विशेष (सम ७७)। °तालीस वि [°चत्वारिंशत्] अठतालीस (नाट)। °तीस त्रि [°त्रिंशत्] सख्या-विशेष, अठतीस (सम ६५, पि ४४२, ४४५)। °तीसइम वि [°त्रिंश] अठतीसवाँ (पउम ३८, ५८)। °त्तरि स्त्री [°सप्तति] अठत्तर, ७८ की सख्या (पि ४४६)। °त्तीस त्रि [°त्रिंशत्] अठतीस (सुपा ६५९, पि ४४५)। °दस त्रि [°दशन्] अठारह, १८ (संति ३)। °दसुत्तरसय वि [°दशोत्तर-शत] एक सौ अठारहवाँ (पउम ११८,१२०)। °दह त्रि [°दशन] अठारह, १८ की संख्या (पिंग)। °पएसिय वि [°प्रदेशिक] आठ अवयव वाला (ठा १०)। °पया स्त्री [°पदा] एक वृत्त, छन्द-विशेष (पिंग) °पाहरिअ वि [प्राहरिक] आठ प्रहर संबधी (सुर १५, २१८)। °भाइया स्त्री [°भागिका] तरल वस्तु नापने का बत्तीस पलो का एक परिमाण (अणु)। °म न [°म] तेला, लगातार तीन दिनो का उपवास (सुर ४,५५)। °मंगल पुन [°मङ्गल] स्वस्तिक आदि आठ मागलिक वस्तु (राय)। °मभत्त पुन [°मभक्त] तेला, लगातार तीन दिनो का उपवास (णाया १,१)। °मभत्तिय वि [°मभक्तिक] तेला करनेवाला (विपा २, १)। °मी स्त्री [°मी] तिथि-विशेष, अष्टमी (विपा २, १)। °मुत्ति पु [°मूर्ति] महादेव, शिव (ठा ६)। °याल त्रि [°चत्वारिंशत्] अठतालीस (मवि)। °वन्न त्रि [°पञ्चाशत्] सख्या-विशेष, अट्ठावन, ५८ (कम्म १, ३२)। °वरिस, °वारिस वि [°वार्षिक] आठ वर्ष की उम्र का (सुर ३,१४६, ८,१०१)। °विह वि [°विध] आठ प्रकार का (जी २४)। °वीस स्त्रीन [°विंशति] अट्ठाईस (कम्म १, ५)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] सख्या-विशेष, अठसठ (पि ४४२-६)। °समइय वि [°सामयिक] जिसकी अवधि आठ 'समय' की हो वह (औप)। °सय न [°शत] एक सौ आठ, १०८ (ठा १०)। °सहस्स न [°सहस्र] एक हजार और आठ (औप)। °सामइय देखो °समइय (ठा ८)। °सिर वि [°शिरस्, °सिर] अष्ट-कोण, आठ कोण वाला (औप)। °सेण पुं [°सेन] देखो अट्ठिसेण। °हत्तर वि [°सप्ततितम] अठत्तरवाँ (पउम ७८, ५७)। °हत्तरि स्त्री [°सप्तति] अठत्तर की सख्या ७८ (सम ८६)। °हा अ [°धा] आठ प्रकार का (पि ४५१)।

°अट्ठ न [काष्ट] काष्ठ, लकडी (प्रयौ ७४)।

अट्ठग वि [अष्टाङ्ग] जिसका आठ अंग हो वह। °णिमित्त न [°निमित्त] वह शास्त्र जिसमे भूमि, स्वप्न, शरीर, स्वर आदि आठ विषयो के फलाफल का प्रतिपादन हो (सूअ १, १२)। °महाणिमित्त न [°महानिमित्त] अनन्तर-उक्त अर्थ (कप्प)।

अट्ठम वि [अष्टास्र] अष्ट-कोण (सूअ २,१, १५)।

अट्ठदिट्ठि स्त्री [अष्टदृष्टि] योग की आठ दृष्टियाँ, वे ये हैं —मित्रा, तारा, वला, दीप्रा, स्थिरा, कान्ता, प्रभा और परा (सिरि ६२३)।

अट्ठय न [अष्टक] आठ का समूह (वव १)।

अट्ठा स्त्री [अष्टा] १ मुष्टि, 'चउहिं अट्ठाहिं लोयं करेइ' (ज २, स १८२)। २ मुट्ठीभर चीज (पचव २)।

अट्ठा स्त्री [आस्था] श्रद्धा, विश्वास (सूअ २,१)।

अट्ठा स्त्री [अर्थ] लिए, वास्ते, 'तइया य मणी दिव्वो, समप्पिओ जीवरक्खट्ठा' (सुर ६, ६, ठा ५, २)। °दड पुं [°दण्ड] कार्य के लिए की गई हिंसा (ठा ५, २)।

अट्ठाइस वि [अष्टाविंश] अठाईसवाँ (पिंग)।

अट्ठाइस } स्त्रीन [अष्टाविंशति] सख्या-
अट्ठाईस } विशेष, अठाईस (पिंग, पि ४४२)।

अट्ठाण न [अस्थान] १ अयोग्य स्थान (ठा ६, विसे ८४५)। २ कुत्सित स्थान, वेश्या का मुहल्ला वगैरह (वव२)। ३ अयोग्य, गैरव्याजवी 'अट्ठाणमेय कुसला वयति, दगेण जे सिद्धिमुयाहरंति' (सूअ १, ७)।

अट्ठाण न [आस्थान] सभा, सभा-गृह (ठा ५, १)।

अट्ठाणउइ स्त्री [अष्टानवति] अठानवे, ९८ (सम ६६)।

अट्ठाणउय वि [अष्टानवत] अठानवेवाँ, ९८वाँ (पउम ९८, ७८)।

अट्ठाणवइ देखो अट्ठाणउइ (कुप्र २१६)।

अट्ठाणिय वि [अस्थानिक] अपात्र, अनाश्रय, 'अट्ठाणिए होइ बहू गुणाणं जेएणाणसकाइ मुसं वएज्जा' (सूअ १, १३)।

अट्ठायमाण वकृ [अतिष्ठत्] नहीं बैठता हुआ (पचा १६)।

अट्ठार } त्रि व [अष्टादशन्] संख्या-
अट्ठारस } विशेष, अठारह (पउम ३५, ७६, मति ९)। °विह त्रि [°विध] अठारह प्रकार का (सम ३५)।

अट्ठारसग न [अष्टादशक] १ अठारह का समूह (पंचा १४, ३)। २ वि जिसका मूल्य अठारह मुद्रा हो वह (पव १११)।

अट्ठारसम वि [अष्टादश] १ अठारहवाँ (पउम १८,५८)। २ न. लगातार आठ दिनो का उपवास (णाया १, १)।

अट्ठारसिय वि [अष्टादशिक] अठारह वर्ष की उम्र का (वव ४)।

अट्ठारह } देखो अट्ठार (पड्, पिंग)।
अट्ठाराह }

अट्ठावण्ण } स्त्रीन [अष्टापञ्चाशत्] संख्या-
अट्ठावन्न } विशेष, पचास और आठ, ५८ (पि २६५, सम ७४)।

अट्ठावन्न वि [अष्टापञ्चाश] अठावनवाँ (पउम ५८, १६)।

अट्ठावय पुं [अष्टापद] १ स्वनाम-ख्यात पर्वत-विशेष, कैलास (पण्ह १, ४)। २ न. एक जाति का जुआ (पण्ह १,४)। ३ द्यूत-फलक, जिस पर जुआ खेला जाता है वह (पण्ह १, ४)। ४ सुवर्ण, सोना (धण ८)। °सेल पु [°शैल] १ मेरु-पर्वत। २ स्वनाम-ख्यात पर्वत-विशेष, जहाँ भगवान् ऋषभदेव निर्वाण पाये थे, 'जम्मि तुमं अहिसित्तो, जत्थ य सिवसुक्खसंपय पत्तो। ते अट्ठावयसेला, सीसामेला गिरिकुलस्स' (धण ८)।

अट्ठावय न [अर्थपद] गृहस्थ (दस ३,४)।

अट्ठावय न [अर्थपद] अर्थ-शास्त्र, संपत्ति-शास्त्र (सूअ १,६ पण्ह १,४)।

अट्ठावीस स्त्रीन [अष्टाविंशति] अठाईस, २८ (पि ४४२, ४४५)।

अट्ठावीसइ स्त्री [अष्टाविंशति] संख्या-विशेष, अठाईस, २८। °विह वि [°विध] अठाईस प्रकार का (पि ४५१)।

अट्ठावीसइम वि [अष्टाविंश] १ अठाईसवाँ (पउम २८, १४१)। २ न तेरह दिनो के लगातार उपवास (णाया १,१)।

अट्ठासट्ठि स्त्री [अष्टाषष्टि] संख्या-विशेष, अठसठ, ६८ (पिंग)।

अट्ठासि } स्त्री [अष्टाशीति] संख्या-विशेष
अट्ठासीइ } अठासी, ८८ (पिंग, सम ७३)।

अट्ठासीय वि [अष्टाशीत] अठासीवाँ (पउम ८८, ४४)।

अट्ठाह न [अष्टाह] आठ दिन (णाया १,८)।

अट्ठाहिया स्त्री [अष्टाहिका] १ आठ दिनो का एक उत्सव (पंचा ८)। २ उत्सव (णाया १,८)।

अट्ठि वि [अर्थिन्] प्रार्थी, गरजवाला, अभिलाषी (आचा)।

अट्ठि पुं [अस्थि] १ हड्डी, हाड, 'अय अट्ठी' (सूअ २, १, १६)। २ फल की गुट्ठी (दस ५,१,७३)।

अट्ठि } स्त्रीन [अस्थि, °क] १ हड्डी, हाड
अट्ठिग } (कुमा; पण्ह १, ३)। २ जिसमे
अट्ठिय } बीज उत्पन्न न हुए हो ऐसा अपरिपक्व फल (बृह १)। ३ पु कापालिक, 'अट्ठी विज्जा कुच्छियमिक्खू' (बृह १, वव २)। °मिंजा स्त्री [°मिञ्जा] हड्डी के भीतर का रस (ठा ३,४)। °सरक्ख पुं [°सरजस्क] कापालिक (वव ७)। °सेण न [°षेण] १ वत्स-गोत्र की शाखारूप एक गोत्र। २ पु इस गोत्र का प्रवर्तक पुरुष और उसकी सन्तान (ठा ७)।

अट्ठिय वि [अर्थिक] १ गरजू, याचक, प्रार्थी (सूअ १, २, ३)। २ अर्थ का कारण, अर्थ सम्बन्धी। ३ मोक्ष का हेतु, मोक्ष का कारणभूत, 'पसत्ता लाभइस्सति विउलं अट्ठियं सुयं' (उत्त १)।

अट्ठिय वि [आर्थिक] १ अर्थ का कारण, अर्थ-सम्बन्धी। २ मोक्ष का कारण (उत्त १)।

अट्ठिय वि [अर्थित] अभिलषित, प्रार्थित (उत्त १)।

अट्ठिय वि [अस्थित] १ अव्यवस्थित, अनियमित (पण्ह १, ३)। २ चचल, चपल (से २, २४)।

अट्ठिय वि [आस्थिक] हड्डी-सम्बन्धी, हाड का, 'अट्ठिय रस मुणओ' (भत्त १४२)।

अट्ठिय वि [आस्थित] स्थित, रहा हुआ, (से १, ३५)।

अट्ठिय पु [अस्थिक] १ वृक्ष-विशेष। २ न फल-विशेष, अस्थिक वृक्ष का फल (दस ५, १, ७३)।

अट्ठिल्लय पुं [अस्थि] फल की गुट्ठी (पिंड ६०३)।

अट्ठुत्तर वि [अष्टोत्तर] आठ से अधिक (औप)। °सय न [°शत] एक सौ और आठ (काल)। °सय वि [°शततम] एक सौ आठवाँ (पउम १०८, ५०)।

अड } देखो अट्ठ = अष्टन् (पिंग, पि ४४२,
अड } १४६, भग, सम १३४)।

अड सक [अट्] भ्रमण करना, फिरना, 'अडति ससारे' (पण्ह १,१)। वकृ अडमाण (णाया १, १४)।

अड पु [अवट] १ कूप, इनारा (पाअ)। २ कूप के पास पशुओ के पानी पीने के लिए जो गर्त किया जाता है वह (हे १, २७१)। °अड देखो तड = तट (गा ११७, से १, ५५)।

अडइ } स्त्री [अटवि, °वी] भयानक जंगल,
अडई } वन (सुपा १८१, नाट)।

अडडम्भिय न [दे] विपरीत मैथुन (दे १, ४२)।

अडखम्म सक [दे] सभालना, रक्षण करना। कर्म 'अडखम्मिज्जति सव्वरिआहि वणे' (दे १, ४१)।

अडखम्मिअ वि [दे] सँभाला हुआ, रक्षित (दे १,४१)।

अडड न [अटट] 'अटटाग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा ३, ४)।

अडडग न [अटटाङ्ग] संख्या-विशेष, 'तुडिय' या 'महातुडिय' को चौरासी लाख मे गुणने पर जो सख्या लब्ध हो वह (ठा ३, ४)।

अडण न [अटन] भ्रमण, घूमना (ठा ६)।

अडणी स्त्री [दे] मार्ग, रास्ता (दे १ १६)।

अडपल्लण न [दे] वाहन-विशेष (जीव)।

अडयणा } स्त्री [दे] कुलटा, व्यभिचारिणी
अडया } स्त्री (दे १, १८, पाअ, गा २-४, ६६२, वज्जा ८६)।

अडयाल न [दे] प्रशसा, तारीफ (पण्ण २)।

अडयाल } स्त्रीन [अष्टचत्वारिंशत्] अठ-
अडयालीस } तालीस, ४८ की संख्या (जीव ३, सम ७०)। °सय न [°शत] एक सौ और अठतालीस, १४८ (कम्म २, २५)।

अडवडण न [दे] स्खलना, रुक-रुक चलना, 'तुरयावि परिस्सता अडवडण काउमारद्धा' (सुपा ६४५)।

अडाव } स्त्री [अटवि, °वी] भयंकर जगल,
अडवी } गहरा वन (पण्ह १, १, महा)।

अडसट्ठि स्त्री [अष्टषष्टि] अठसठ (पि ४४२)। °म वि [°तम] अठसठवाँ (पउम ६८,५१)।

अडाड पु [दे] बलात्कार, जबरदस्ती (दे १, १९)।

अडिल्ल पुं [अटिल] एक जाति का पक्षी (पण्ण १)।

अडिल्ला स्त्री [अडिल्ला] छन्द-विशेष (पिंग)।

अडोलिया स्त्री [अटोलिका] १ एक राज-पुत्री, जो युवराज की पुत्री और गर्दभराज की बहिन थी। २ मूषिका, चूही (बृह १)।

अडोविय वि [अटोपित] भरा हुआ (पण्ह १, ३)।

अड्ड वि [दे] जो आडे आता हो, बीच मे बाधक होता हो वह, 'सो कोहाडओ अड्डो आवडिओ' उप १४६ टी)।

अड्डुक्ख सक [क्षिप्] फेंकना, गिराना। अड्डुक्खइ (हे ४, १४३, षड्)।

अड्डुक्खिय वि [क्षिप्त] फेंका हुआ (कुमा)।

अड्डुण न [अड्डुन] १ चर्म, चमडा। २ ढाल, फलक, 'नवमुग्गवरणअड्डुणढक्किआजाणुभीमणसरीरा' (सुर २, ५)।

अड्डिअ वि [दे] आरोपित (वव १ टी)।

अड्डिया स्त्री [अड्डिका] मल्लो की क्रिया-विशेष (विसे ३३५७)।

अड्ढ देखो अद्ध = अर्ध (हे २,४१; चंद १०; सुर ६, १२६; महा)।

अड्ढ वि [आढ्य] १ सपन्न, वैभव-शाली, धनी (पाअ; उवा)। २ युक्त, सहित (पचा १२)। ३ पूर्ण, परिपूर्ण, 'विगुणमवि गुणड्ढ' (प्रासू ७१)।

अड्ढअक्कली स्त्री [दे] देखो अट्टयक्कली (दे १, ४५)।

अड्ढत्त वि [आरब्ध] शुरू किया हुआ, प्रारब्ध (से १३, ६)।

अड्ढाइज्ज } वि [अर्धतृतीय] ढाई (सम अड्ढाइय } १०१; सुर १,४४; भवि; विस १४०१)।

°अड्ढिय वि [कृष्ट] खींचा हुआ (से ५,७२)।

अड्ढुट्ठ वि [अर्धचतुर्थ] साढे तीन, 'अड्ढुट्ठाइ सयाइ' (पि ४५०)।

अड्ढेज्ज न [आढ्यत्व] धनीपन, श्रीमंताई (ठा १०)।

अड्ढेज्जा स्त्री [आढ्येज्या] श्रीमत से किया हुआ सत्कार (ठा १०)।

अड्ढोरुग पु [अर्धोरुक] जैन साध्वियो के पहनने का एक वस्त्र (ओघ ३१५)।

अढ (अप) देखो अट्ठ = अष्टन् (पि ६७,३०४, ४४२, ४४५)।

अढाइस (अप) स्त्रीन [अष्टाविंशति] संख्या-विशेष, अठाईस, २८ (पि ४४५)।

अढारसग देखो अट्ठारसग (पिंड ४०२)।

अढारसम देखो अट्ठारसम (भग १८, णाया १, १८)।

अण अ [°अ, अन्°] देखो अ° (हे २,१९०; से ११, ६४)।

अण सक [अण्] १ आवाज करना। २ जाना। ३ जानना। ४ समझना। अणइ (विसे ३४४१)।

अण पु [अण] १ शब्द, आवाज। २ गमन, गति (विसे ३४४०)। ३ कषाय, क्रोध आदि आन्तर शत्रु (विसे १२८७)। ४ गाली, आक्रोश, अभिशाप (तदु)। ५ न. पाप (पण्ह १, १)। ६ कर्म (आचा)। ७ वि कुत्सित, खराब (विसे २७९७ टी)।

अण पु [अन] देखो अणताणुबंधि (कम्म २, ५, १४, २६)।

अण पु [अनस्] शकट, गाडी (धर्म २)।

अण देखो अण्ण = अन्य, 'अणहिअआवि पिआएं' (से ११, १६, २०)।

अण न [ऋण] १ करजा, ऋण (हे १,१४१)। २ कर्म (उत्त १)। °धारग वि [°धारक] करजदार, ऋणी (णाया १, १५)। °बल वि [°बल] उत्तमर्ण, लेनदार (पण्ह १, २)। °भंजग वि [°भञ्जक] देवलिया (पण्ह १,३)।

°अण देखो गण (से ६, ६६)।

°अण देखो जण, 'अणा महिलाअण रमतस्स' (गा ४४), 'गुरुअणपरवस पिअ कि (काप्र ६१), 'दासअणाण' (अच्चु ३२)।

°अण देखो तण (से ६, ६६)।

°अणअरढ देखो अणवरय (नाट)।

अणइवर वि [अनतिवर] जिससे बढकर दूसरा न हो, सर्वोत्तम, 'अच्छराओ अणइवरसोमचारुरूवाओ' (औप)।

अणइवुट्ठि स्त्री [अनतिवृष्टि] अवृष्टि, वर्षा का अभाव, 'दुब्भिक्खडमरदुम्मारिईइअइवुट्ठी अणइवुट्ठी य' (सबोध २)।

अणईइ वि [अनीति] ईति-रहित, शलभादि-कृत उपद्रव से रहित 'अणईइपत्ता' (औप)।

अणग पु [अनङ्ग] १ काम, विषयाभिलाष, रमणेच्छा (श्रा १६, आव ६)। २ कामदेव, मन्मथ (गा २३३; गउड; कप्पू)। ३ एक राज-कुमार, जो आनन्दपुर के राजा जीतारि का पुत्र था (गच्छ २)। ४ न विषय-सेवन के मुख्य अगो के अतिरिक्त स्तन, कुक्षि, मुख आदि अग (ठा ५, २)। ५ बनावटी लिंग आदि (ठा ५, २)। ६ बारह अंग-ग्रन्थो से भिन्न जैन शास्त्र (विसे ८४४)। ७ वि शरीर-रहित, अग-हीन मृत, 'पहरउ कह णु अणगो, कह णु हु विघति कोमुमा बाणा' (गउड), 'पईवमज्झे पडई पयगो, रूवाणुरत्तो हवई अणगो' (सत्त ४८)। °घरिणी स्त्री [°गृहिणी] रति, कामदेव की पत्नी (सुपा ६६७)। °पडिसेविणी स्त्री [°प्रतिषेविणी] अमर्यादित रीति से विषय-सेवन करनेवाली स्त्री (ठा ५, २)। °पविट्ठ न [°प्रविष्ट] बारह अग-ग्रन्थो से भिन्न जैन ग्रन्थ (विसे ५२७)। °बाण पु [°बाण] काम के बाण (गा ७४८)। °लवण पुं [°लवन] रामचन्द्रजी का एक पुत्र, लव (पउम ९७,६)। °सर पु [°शर] काम के बाण (गा १०००)। °सेणा स्त्री [°सेना] द्वारका की एक विख्यात गणिका (णाया १, ५, १६)।

अणत पुं [अनन्त] चालू अवसर्पिणी काल के चौदहवे तीर्थंकर-देव, 'नमिताणत च जिण' (पडि)। २ विष्णु, कृष्ण (पउम ५, १२२)। ३ शेष नाग (से ६,८९)। ४ जिसमें अनन्त जीव हो ऐसी वनस्पति कन्द-मूल वगैरह (ओघ ४१)। ५ न केवल-ज्ञान (णाया १ ८)। ६ आकाश (भग २०, २)। ७ वि. नाश-वर्जित, शाश्वत (सूअ १,१,४; पण्ह १,३)। ८ नि सीम, अपरिमित, असख्य से भी कही अधिक (विसे)। ९ प्रभूत, बहुत, विशेष (प्रासू २६; ठा ४,१)। °काइय वि [°कायिक] अनन्त जीववाली वन-स्पति, कन्द-मूल आदि (धर्म २)। °काय पु [°काय] कन्द-मूल आदि अनन्त जीववाली वनस्पति (पण्ण १)। °खुत्तो अ [°कृत्वस्] अनन्त वार (जी ४४)। °जीव पु [°जीव] देखो °काइय (पण्ण १)। °जीविय वि [°जीविक] देखो °काइय (भग ८,३)। °णाण न [°ज्ञान] केवल-ज्ञान (दस २)। °णाणि वि [°ज्ञानिन्] केवल-ज्ञानी, सर्वज्ञ (सूअ १, ६)। °दंसि वि [°दर्शिन्] सर्वज्ञ (पउम ४८, १०५)। °पासि वि [°दर्शिन्] ऐरवत क्षेत्र के बीसवे जिन-देव (तित्थ)। °मिस्सिया स्त्री [°मिश्रिका] सत्यमिश्र भाषा का एक भेद, जैसे अनन्तकाय से मिश्र प्रत्येक वनस्पति मे मिली हुई अनन्तकाय को भी अनन्तकाय कहना (पण्ण ११)। °मीसय न [°मिश्रक] देखो °मिस्सिया (ठा १०)। °रह पुं [°रथ] विख्यात राजा दशरथ के बडे भाई का नाम (पउम २२, १०१)। °विजय पु [°विजय] भरतक्षेत्र के २४ वे और ऐरवत क्षेत्र के बीसवें भावी तीर्थं-कर का नाम (सम १५४)। °वीरिय वि [°वीर्य] १ अनन्त बलवाला। २ पु. एक केवलज्ञानी मुनि का नाम (पउम १४,१५८)। ३ एक ऋषि, जो कार्तवीर्य के पिता थे (आचू १)। ४ भरतक्षेत्र के एक भावी तीर्थंकर का नाम (ती २१)। °संसारय वि [°संसारिक] अनन्त काल तक संसार में जन्म-मरण पाने-वाला (उप ३८४)। °सेण पुं [°सेन] १ चौथा

कुलकर (सम १५०)। २ एक अन्तकृद् मुनि (अंत ३)।

अणंतइ पु [अनन्तजित्] चालू काल के चौदहवें जिन-देव, (पउम ९, १४८)।

अणंतग) १ देखो अणंत (ठा ५,३)। २ न
अणंतय) वस्त्र-विशेष (ओघ ३९)। ३ पु ऐरवत क्षेत्र के एक जिनदेव (सम १५३)।

अणंतय न [अनन्तक] वस्त्र, कपडा (पव २)।

अणंतर वि [अनन्तर] १ व्यवधान-रहित, अव्यवहित, 'अणंतर चयं चइत्ता' (णाया १,८)। २ पु वर्तमान समय (ठा १०)। ३ क्रिवि बाद मे, पीछे (विपा १, १)।

अणंतरहिय वि [अनन्तर्हित] १ अव्यवहित, व्यवधान-रहित (आचा)। २ सजीव, सचित्त, चेतन (निचू ७)।

अणंतसो अ [अनन्तशस्] अनन्त वार (द ४५)।

अणंताणुबंधि पुं [अनन्तानुबन्धिन्] अनन्त काल तक आत्मा को ससार मे भ्रमण करानेवाले कषायो की चार चौकडियो मे प्रथम चौकडी, अतिप्रचंड क्रोध, मान, माया और लोभ (सम १६)।

अणंस वि [अनंश] अखण्ड (धर्मसं ७०९)।

अणक्क पु [दे] १ एक म्लेच्छ देश। २ एक म्लेच्छ जाति (पण्ह १, १)।

अणक्ख पु [दे] १ रोष, गुस्सा, क्रोध (सुपा १३,१३०,६१०, भवि)। २ लज्जा (स ३७६)।

अणक्खर न [अनक्षर] श्रुत-ज्ञान का एक भेद—वर्णो के विना संपर्क के, छींकना, चुटकी बजाना, सिर हिलाना आदि संकेतो से दूसरे का अभिप्राय जानना (णंदि)।

अणगार वि [अनगार] १ जिसने घर-बार त्याग किया हो वह, साधु, यति, मुनि (विपा १, १, भग १७, ३)। २ घर-रहित, भिक्षुक, भीखमँगा (ठा ६)। ३ पु भरतक्षेत्र के भावी पांचवें तीर्थंकर का एक पूर्वभवीय नाम (सम १५४)।

°सुय न [°श्रुत] 'सूत्रकृतांग' सूत्र का एक अध्ययन (सूअ २, ५)।

अणगार वि [ऋणकार] १ करजा करनेवाला। २ दुष्ट शिष्य, अपात्र (उत्त १)।

अणगार वि [अनाकार] आकृति-शून्य, आकार-रहित, 'उवलभव्ववहाराभावओ नाणगार च' (विसे ६५)।

अणगारि पु [अनगारिन्] साधु, यति, मुनि (सम ३७)।

अणगारिय वि [आनगारिक] साधु-सम्बन्धी, मुनि का (विसे २६७३)।

अणगाल पु [अकाल] दुर्भिक्ष, अकाल (वृह ३)।

अणगिण वि [अनग्न] १ जो नंगा न हो, वस्त्रो से आच्छादित। २ पु कल्पवृक्ष की एक जाति, जो वस्त्र देता है (तंदु)।

अणग्घ देखो अनघ (कुप्र १)।

अणग्घ वि [ऋणघ्न] ऋण-नाशक, कर्म-नाशक (दस)।

अणग्घ) वि [अनर्घ्य] १ अमूल्य, बहुमूल्य,
अणग्घेय) कीमती (आव ४), 'रयणाइं अणग्घेयाइं हुंति पचप्पयारवण्णाइं' (उप ५९७ टी, स ८०)। २ महान्, गुरु। ३ उत्तम, श्रेष्ठ, 'तं भगवंतं अणहं नियमत्तीए अणग्घमत्तीए, सक्कारेमि' (विवे ६५, ७१)।

अणघ वि [अनघ] शुद्ध, निर्मल, स्वच्छ (पंचव ४)।

अणच्छ देखो करिस = कृष्। अणच्छइ (हे ४, १८७)।

अणच्छिआर वि [दे] अच्छिन्न, नहीं छेदा हुआ (दे १, ४४)।

अणज्ज वि [अन्याय्य] अयोग्य, जो न्याय-युक्त नही (पण्ह १, १)।

अणज्ज वि [अनार्य] आर्य-भिन्न, दुष्ट, खराब, पापी (पण्ह १, १, अभि १२३)।

अणज्जव (अप) ऊपर देखो। °खंड पु [°खण्ड] अनार्य देश, (भवि ३१२, २)।

अणज्झवसाय पु [अनध्यवसाय] अव्यक्त ज्ञान, अति सामान्य ज्ञान (विसे ६२)

अणज्झाय पु [अनध्याय] १ अध्ययन का अभाव। २ जिसमें अध्ययन निषिद्ध है वह काल (नाट)।

अणट्ट वि [अनार्त] आर्त-ध्यान से रहित, 'अणट्टा किति पव्वए' (उत्त १८, ५०)।

अणट्ठ पु [अनर्थ] १ नुकसान, हानि (णाया १, ९, उप ६ टी)। २ प्रयोजन का अभाव (आव ६)। ३ वि निष्कारण, वृथा, निष्फल (निचू १, पण्ह २, १)।

°दंड पु [°दण्ड] निष्कारण हिंसा, विना ही प्रयोजन दूसरे की हानि (सूअ २, २)।

अणड पु [दे] जार, उपपति (दे १,१८, षड्)।

अणड्ढ वि [अनर्ध] विभाग-रहित, अखण्ड (ठा ३, ३)।

अणण्ण वि [अनन्य] १ अभिन्न, अपृथग्भूत (निचू १)। २ मोक्ष-मार्ग, 'अणण्णं चरमाणे से ण छणे ण छणावए' (आचा)। ३ असाधारण, अद्वितीय (सुपा १८९, सुर १, ७)। °तुल्ल वि [°तुल्य] असाधारण, अनुपम (उप ६४८ टी)। °दंसि वि [°दर्शिन्] पदार्थ को सत्य-सत्य देखनेवाला (आचा)। °परम वि [°परम] संयम, इन्द्रिय-निग्रह, 'अणण्णपरमे णाणी, णो पमाए कयाइवि' (आचा)। °मण, °मणस वि [°मनस्क] एकाग्र चित्तवाला, तल्लीन (औप, पउम ९, ६३)। °समाण वि [°समान] असाधारण, अद्वितीय (उप ५९७ टी)।

अणत्त वि [अनात्त] अगृहीत, अस्वीकृत (ठा २,३)।

अणत्त वि [अनार्त्त] अपीडित, 'दव्वावइमाईसु अत्तमणत्ते गवेसणं कुणइ' (वव १)।

अणत्त वि [ऋणार्त्त] ऋण से पीडित (ठा ३, ४)।

अणत्त वि [अनात्र] दु खकर, सुख-नाशक, 'णेरइआणं भंते ! किं अत्ता पोग्गला अणत्ता वा' (भग १४, ९)।

अणत्त न [दे] निर्माल्य, देवोच्छिष्ट द्रव्य (दे १, १०)।

अणत्थ देखो अणट्ठ (पउम ६२, ४, श्रा २७, सण)।

अणथंत वकृ [अतिष्ठत्] १ नही रहता हुआ। २ अस्त होता हुआ, 'अणथंते दिवसयरे जो चयइ चउव्विहंपि आहारं' (पउम १४ १३४)।

अणन्न देखो अणण्ण (सुपा १८९, सुर १, ७, पउम ९, ६३)।

अणपन्निय देखो अणवण्णिय (भग १०,२)।

अणप्प वि [अनर्प्य] अर्पण करने के अयोग्य या अशक्य (ठा ६)।

अणप्प वि [अनल्प] अधिक, बहुत (औप)।

अणप्प पु [अनात्मन्] निज से भिन्न, आत्मा से परे (पउम ३७, २२)। °ज्ज वि [°ज्ञ] १ निर्बोध, मूर्ख। २ पागल, भूताविष्ट, पराधीन (निचू १)। °वसग वि [°वश] परवश, पराधीन (पउम ३७, २२)।

अणप्प पु [दे] खड्ग, तलवार (दे १, १२)।

अणप्पिय वि [अनर्पित] १ नहीं दिया हुआ। २ साधारण, सामान्य, अविशेषित (ठा १०)। °णय पु [°नय] सामान्य-ग्राही पक्ष (विसे)।

अणब्भतर वि [अनभ्यन्तर] भीतरी तत्त्व को नहीं जाननेवाला, रहस्य-अनभिज्ञ, 'अणब्भ-तरा खु अम्हे मदणगदस्स वुत्तंतस्स' (अभि ६१)।

अणभिग्गह न [अनभिग्रह] 'सर्वे देवा मन्या' इत्यादि रूप मिथ्यात्व का एक भेद (श्रा ६)।

अणभिग्गहिय न [अनभिग्रहिक] ऊपर देखो (ठा २, १)।

अणभिग्गहिय वि [अनभिगृहीत] १ कदा-ग्रह-शून्य (श्रा ६)। २ अस्वीकृत (उत २८)।

अणभिण्ण } वि [अनभिज्ञ] अजान, निर्बोध
अणभिन्न } (अभि १७४, सुपा १६८)।

अणभिलप्प वि [अनभिलाप्य] अनिर्वच-नीय, जो वचन से न कहा जा सके (लहुअ ७)।

अणमिस वि [अनिमिष] १ विकसित, खिला हुआ (सुर ३, १४३)। २ निमेष-रहित, पलक-वर्जित (सुपा ३५४)।

अणय पु [अनय] अनीति, अन्याय (श्रा २७, स ५०१)।

अणयार देखो **अणगार** (पउम ११, ७)।

अणरण्ण पु [अनरण्य] साकेतपुर का एक राजा जो, पीछे से ऋषि हुआ था (पउम १०, ८७)।

अणरह } वि [अनर्ह] अयोग्य, नालायक,
अणरिह } (कुमा), 'एवि दिज्जंति अणरिहे,
अणरुह } अणरिहत्ते तु इमो होइ' (पचभा)।

अणरहू स्त्री [दे] नवोढा, दुलहिन (पड्)।

अणरामय पु [दे] अरति, बेचैनी (दे १, ४५ भवि)।

अणराय वि [अराजक] राज-शून्य, जिसमे राजा न हो वह (बृह १)।

अणराह पु [दे] सिर मे पहनी जाती रग-बिरंगी पट्टी (दे १, २४)।

अणरिक्क वि [दे] अवकाश-रहित, फुरसत-रहित (दे १, २०)। २ दधि, क्षीर आदि गोरस भोज्य (निचू १६)।

अणरिह } वि [अनर्ह] अयोग्य, नालायक
अणरुह } (णाया १, १)।

अणल अ [अनलम्] असमर्थ (आचा २, ५, १, ७)।

अणल पु [अनल] १ अग्नि, आग (कुमा)। २ वि असमर्थ। ३ अयोग्य, 'अणलो अपच्च-लोत्ति य होंति अजोगो व एगट्ठा' (निचू ११)।

अणव वि [ऋणवत्] १ करजदार। पु. दिवस का छब्बीसवाँ मुहूर्त्त (चद)।

अणवकय वि [अनपकृत] जिसका अपकार न किया गया हो वह (उव)।

अणवगल्ल वि [अनवग्लान] ग्लानि-रहित, निरोग,
'सड्ढस्स अणवगल्लस्स, निरुवकिट्ठस्स, जतुण एगे ऊमासमासे एस पाणुत्ति वुच्चइ' (ठा २, ४)।

अणवच्च वि [अनपत्य] सन्तान-रहित, निर्वंश (सुपा २५९)।

अणवज्ज न [अनवद्य] १ पाप का अभाव, कर्म का अभाव (सूअ १, १, २)। २ वि निर्दोष, निष्पाप (पड्)।

अणवज्ज वि [अणवर्ज्य] ऊपर देखो (विसे)।

अणवट्ठप्प वि [अनवस्थाप्य] १ जिसको फिरसे दीक्षा न दी जा सके ऐसा गुरु अपराध करनेवाला (बृह ४)। २ न गुरु प्रायश्चित्त का एक भेद (ठा ३, ४)।

अणवट्ठिय वि [अनवस्थित] १ अव्यवस्थित, अनियमित (प्रासू १३७, सुर ४, ७६)। २ चचल, अस्थिर, 'अणवट्ठिय च चित्त' (सुर १२, १३८)। ३ पल्य-विशेष, नाप-विशेष (कम्म ४, ७३)।

अणवण्णिय पु [अणपन्निक, अणर्पणिक] वानव्यतर देवो की एक जाति (पण्ह १, ४, भग १०, २)।

अणवत्थ वि [अनवस्थ] अव्यवस्थित, अनि-यमित असमंजस (दे १, १३९)।

अणवत्था स्त्री [अनवस्था] १ अवस्था का अभाव (उव)। २ एक तर्क-दोष (विसे)। ३ अव्यवस्था, 'जणणी जायइ जाया, जाया माया पिया य पुत्तो य। अणवत्था संसारे, कम्मवसा सव्वजीवाण' (पिंवे १०७)।

अणवदग्ग वि [दे] १ अनन्त, अपरिमित, निस्सीम (भग १, १)। २ अविनाशी (सूअ २, ५)।

अणवद्द वि [अनवद्य] निष्पाप, निर्दोष, शुद्ध (प्राक् २१)।

अणवन्निय देखो **अणवण्णिय** (औप)।

अणवयग्ग देखो **अणवदग्ग** (सम १२५, पण्ह १, ३, प्राप)।

अणवयमाण वक्र [अनपवदत्] १ अप-वाद नहीं करता हुआ। २ सत्यवादी (वव ३)।

अणवरय वि [अनवरत] १ सतत, निरन्तर, अविच्छिन्न। २ न सदा, हमेशा (गा २८०, ६)।

अणवराइस (अप) वि [अनन्यादृश] असा-धारण, अद्वितीय (कुमा)।

अणवसर वि [अनवसर] आकस्मिक, अचि-न्तित (पाअ)।

अणवाह वि [अबाध] बाधा-रहित, निर्बाध (सुपा २६८)।

अणवेक्खिय वि [अनपेक्षित] उपेक्षित, जिसकी परवाह न हो।

अणवेक्खिय वि [अनवेक्षित] १ नहीं देखा हुआ। २ अविचारित, नहीं सोचा हुआ। °कारि वि [°कारिन्] साहसिक। °कारिया स्त्री [°कारिता] साहस कर्म (उप ७६८ टी)।

अणसण न [अनशन] आहार का त्याग, उप-वास (सम ११६)।

अणसिय वि [अनशित] उपोषित, उपवासी (आवम)।

अणह वि [अनघ] निर्दोष, पवित्र (औप, गा २७२, से ६, ३)।

अणह वि [दे] अक्षत, क्षति-रहित, व्रण-शून्य (दे १, १३, सुपा ९, ३३, सण)।

भवि. हम्मिहिइ, हणिहिइ (हे ४, २४४)। वकृ. हणंत (आचा, कुमा)। कवकृ हण्णु, हणिज्जमाण, हम्मंत, हम्ममाण (सूअ १, २, २, ५, श्रा १४, सुर १, ६६, विपा १, २—पत्र २४, पि ५४०)। संकृ. हंता, हंतूण, हंतूणं, हत्तूण, हणिऊण, हणिअ (आचा, प्रासू १४७, प्राकृ ३४, नाट)। हेकृ हउं, हणिउं° (महा, उप पृ ४८)। कृ. हतव्व (से ३, ३; हे ४, २४४, आचा)।

हण सक [श्रु] सुनना। हणइ (हे ४, ५८)।

हण वि [दे] दूर, अनिकट (दे ८, ५९)।

हण देखो हणण, 'हणदहणपयणमारण—' (पउम ८, २३२)।

°हण देखो घण = घन (गा ७१५, ८०१)।

हणण न [हनन] १ मारण, वध, घात (सुपा २४५, सण)। २ विनाश (पण्ह २, ५—पत्र १४८)। ३ वि. वध-कर्ता। स्त्री. °णी (कुप्र २२)।

हणिअ वि [हत] जिसका वध किया गया हो वह (श्रा २७, कुमा, प्रासू १६, पिंग)।

हणिअ देखो हण = हन्।

हणिअ वि [श्रुत] सुना हुआ (कुमा)।

हणिद देखो हिणिद (गा ९६३)।

हणिर वि [हन्तृ] वध करनेवाला (सुपा ६०७)।

हणिहणि } अ [अहन्यहनि] १ प्रतिदिन, हणिंहणिं } हमेशा (पण्ह २, ३—पत्र १२२)। २ सर्वथा, सब तरह से (पण्ह २, ५—पत्र १४८)।

हणु वि [दे] सावशेष, बाकी बचा हुआ (दे ८, ५९, सण)।

हणु पुंस्त्री [हनु] चिबुक, होठ के नीचे का भाग, ठुड्डी, ठोढ़ी, दाढ़ी (आचा, पण्ह १, ४—पत्र ७८)। °अ, °म, °मत, °यंत पुं [°मत्] हनुमान्, रामचन्द्रजी का एक प्रख्यात अनुचर, पवन तथा अञ्जनासुन्दरी का पुत्र (पउम १, ५९, १७, १२१, ४७, २६, हे २, १४६, कुमा, प्राप्र; पउम १६, १५, ५९, २१)। °रुह, °रूह न [°रुह] नगर-विशेष (पउम १, ६१, १७, ११८)। °व, °वंत देखो °म (पउम ४७, २५, ५०, ९, उप पृ ३७६)।

हणुया स्त्री [हनुका] १ ठुड्डी, ठोढी, दाढ़ी (अनु ५)। २ दंष्ट्रा-विशेष दाढ़ा-विशेष (ठवा)।

हणू स्त्री [हनू] देखो हणु (पि ३९८, ३९९)।

हण्णु देखो हण = हन्।

हत्त देखो हय = हत (पि १९४, ५६५)।

°हत्तरि देखो सत्तरि (पि २६४)।

हत्तु वि [हर्तृ] हरण-कर्ता (प्राकृ २०)।

हत्तूण देखो हण = हन्।

हत्थ वि [दे] १ शीघ्र, जल्दी करनेवाला (दे ८, ५९)। २ क्रिवि जल्दी (औप)।

हत्थ पुन [हस्त] १ हाथ, 'अत्थित्तणेण हत्थं पसारिय जस्स करणेहेण' (वज्जा १०६, आचा, कप्प, कुमा, दं ६)। २ पुं. नक्षत्र-विशेष (सम १०, १७)। ३ चौबीस अंगुल का एक परिमाण। ४ हाथी की सूँढ (हे २, ४५, प्राप्र)। ५ एक जैन मुनि (कप्प)। °कप्प न [°कल्प] नगर-विशेष (णाया १, १६—पत्र २२६, पिंड ४६१)। °कम्म न [°कर्मन्] हस्त क्रिया, दुश्चेष्टा-विशेष (सूअ १, ९, १७, ठा ३, ४—पत्र १६२, सम ३९, कस)। °ताड, °ताल पुं [°ताड] हाथ से ताडन (राज, कस ४, ३ टि)। °पहेलिअ स्त्रीन [°प्रहेलिक] संख्या-विशेष, शीर्षप्रकम्पित को चौरासी लाख से गुणने पर जो सख्या लब्ध हो वह (इक)। °प्पाहुड न [°प्राभृत] हाथ से दिया हुआ उपहार (दे ८, ७३)। °मालय न [°मालक] आभरण-विशेष (औप)। °लहुत्तण न [°लघुत्व] १ हस्त-लाघव। २ चोरी (पण्ह १, ३—पत्र ४३)। °सीस न [°शीर्ष] नगर-विशेष (णाया १, १६—पत्र २०८)। °ाभरण न [°ाभरण] हाथ का गहना (भग)। °ायाल पुं [°ाताड] देखो °ताड (कस)। °ालंब पु [°ालम्ब] हाथ का सहारा, मदद (से १, १६, सुर ४, ७१, कस)।

हत्थंकर पुं [हस्तङ्कर] वनस्पति-विशेष (आचा २, १०, २)।

हत्थंदु } पुंन [हस्तान्दुक] हाथ बाँधने हत्थंदुय } का काठ आदि का बन्धन-विशेष (पिंड ५७३, विपा १, ६—पत्र ६६)।

हत्थच्छुहणी स्त्री [दे] नव-वधू, नवोढा (दे ८, ६५)।

हत्थड (अप) देखो हत्थ (हे ४, ४४५, पि ५९९)।

हत्थय न [हस्तक] कलाप-समूह (दश० अगस्त्य० सूत्र ५१ पत्र ८१)।

हत्थल पु [दे] १ क्रीडा के लिए हाथ मे ली हुई चीज। २ वि. हस्त-लोल, चञ्चल हाथ-वाला (दे ८, ७३)।

हत्थल वि [हस्तल] १ खराब हाथवाला। २ पुं. चोर, तस्कर (पण्ह १, ३—पत्र ४३)।

हत्थलिज्ज देखो हत्थिलिज्ज (राज)।

हत्थल्ल वि [दे] क्रीडा से हाथ मे लिया हुआ (दे ८, ६०)।

हत्थल्लिअ वि [दे] हस्तापसारित, हाथ से हटाया हुआ (दे ८, ६४)।

हत्थल्ली स्त्री [दे] हस्त वृसी, हाथ मे स्थित आसन-विशेष (दे ८, ६१)।

हत्थार न [दे] सहायता, मदद (दे ८, ६०)।

हत्थारोह पुं [हस्त्यारोह] हस्तिपक, हाथी का महावत (विपा १, २—पत्र २३)।

हत्थावार न [दे] सहायता, मदद (भवि)।

हत्थाहत्थि स्त्री [हस्ताहस्तिका] हाथोहाथ, एक हाथ से दूसरे हाथ (गा १७९)।

हत्थाहत्थि अ. ऊपर देखो (गा २२९, ५८१, पुप्फ ४६३)।

हत्थि पुंस्त्री [हस्तिन्] १ हाथी (गा १९६, कुमा, अभि १८७)। स्त्री. °णी (णाया १, १—पत्र ६३)। २ पु नृप-विशेष (ती १४)। °आरोह पुं [आरोह] हाथी का महावत (धर्मवि १९)। °कण्ण, °कन्न पु [°कर्ण] २ एक अन्तर्द्वीप। २ वि. उसका निवासी मनुष्य (इक ठा ४, २—पत्र २२६)। °कप्प न [°कल्प] देखो हत्थ-कप्प (राज)। °गुलगुलाइय न [°गुलगुलायित] हाथी का शब्द-विशेष (राय)। °णागपुर न [°नागपुर] नगर-विशेष, हस्तिनापुर (उप ६४८ टी, सण)। °तावस पुं [°तापस]

हीर देखो हर=हर (हे १, ५१, कुमा, षड्)।

हीर पुं [हीर] १ विषम भग, असमान छेद (पएण १—पत्र ३७)। २ बारीक कुत्सित तृण, कन्द आदि में होती बारिक रेखा (जीव ३, ४, जी १२)। ३ पुन. हीरा, मणि-विशेष (स २०२, सिरि ११८६; कप्पू)। ४ तृण-विशेष (पिंग)। ५ दाढा का अग्र भाग (से ४, १४)।

हीर पुन [दे] १ सूई की तरह तीक्ष्ण मुँह वाला काष्ठ आदि पदार्थ (दे ८, ७०, कस)। २ भस्म (दे ८, ७०)। ३ प्रान्त, अन्त भाग (गउड)।

हीरंत देखो हर=हृ।

हीरणा स्त्री [दे] लाज, शरम (दे ८, ६७, षड्)।

हीरमाण देखो हर=हृ।

हील सक [हेलय्] १ अवज्ञा करना, तिरस्कार करना। २ निन्दा करना। ३ कदर्थन करना, पीडना। हीलइ (उव, सुख २, १६), हीलंति (दस ६, १, २, प्रासू २६)। वकृ. हीलंत (सट्ठि ८६)। कवकृ. हीलिज्जंत, हीलिज्जमाण (उप पृ १३३, णाया १, ८—पत्र १४४, प्रासू १६५)। कृ. हीलणिज्ज (णाया १, ३), हीलियव्व (पएह २, १—पत्र १००, २, ५—पत्र १५०)।

हीलण स्त्रीन [हेलन] १ अवज्ञा, तिरस्कार। २ निन्दा (सुपा १०४)। स्त्री. °णा (पएह २, १—पत्र १००, औप, उव, दस ६, १, ७, सट्ठि १००)।

हीला स्त्री [हेला] ऊपर देखो (उव, उप पृ २१६, उप १४२ टी)।

हीलिअ वि [हीलित] १ निन्दित। २ अपमानित, तिरस्कृत (सुख २, १७, ओघ ५२६, कस, दस ६, १, ३)। ३ पीडित, मर्दथित (आचा २, १६, ३)।

हीसमण न [दे हेषित] हेषारव, अश्व—घोडे का शब्द (दे ८, ६८, हे ४, २५८)।

हीही } (शौ) अ. विदूषक का हर्ष-सूचक
हीहीभो } अव्यय (हे ४, २८५, कुमा, प्राकृ ६७, मोह ४१)।

हु अ [खलु] इन अर्थों का द्योतक अव्यय—१ निश्चय (हे २, १९८, से १, १५, कुमा, प्राकृ ७८, प्रासू ५४)। २ ऊह, वितर्क (हे २, १९८, कुमा, प्राकृ ७८)। ३ संशय, सन्देह (हे २, १९८, कुमा)। ४ संभावना (हे २, १९८, कुमा, प्राकृ ७८)। ५ विस्मय, आश्चर्य (हे २, १९८, कुमा)। ६ किन्तु, परन्तु (प्रासू १०१)। ७ अपि, भी, 'ह्व अविमद्दयम्मि व त्ति' (धर्मसं १४० टी)। ८ वाक्य की शोभा (पचा ७, ३५)। ९ पादपूर्ति, पाद-पूरण (पउम ८, १४९, कुमा)।

हु } देखो हव=भू। हुअइ, हुएइ, हुंति,
हुअ } हुइरे, हुअइरे, हुज्ज, हुएज्ज, हुएइरे, हुएज्जइरे (पि ४७६, हे ४, ६१, पि ४५८, ४६६)। भवि. हुक्खामि, होक्खामि, हुक्ख (उत्त २, १२, सुख २, १२)। वकृ. हुंत (हे ४, ६१, स ३४)।

हुअ देखो हुण—हु। हुअइ (प्राकृ ६६)। वकृ. हुअंत (धात्वा १५७)।

हुअ वि [हुत] १ होमा हुआ, हवन किया हुआ (सुपा २६३, स ५५, प्राकृ ६६)। २ न होम, हवन (सुअ १, ७, १२, प्राकृ ६६)। °वह पुं [°वह] अग्नि, आग (गा २११, पाअ, णाया १, १—पत्र ६३, गउड)। °स पु [°श] अग्नि (गउड, अज्झ १५०, भवि, हि १३)। °सन पु [°शन] वही अर्थ (भग, से ५,५७, पाअ)।

हुअ देखो हूअ—भूत (प्राप्र, कुमा, भवि, सण)।

हुअंग देखो भुअंग, 'चंदनलट्ठिव्व हुअंगदूमिआ कि गु दूमेसि' (गा ९२६)।

°हुअग देखो भुअग (गा ८०६, पि १८८)।

हुं अ [हुम्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ दान। २ पृच्छा, प्रश्न (हे २, १९७, प्राप्र, कुमा)। ३ निवारण (हे २, १९७, कुमा)। ४ निर्धारण (प्राप्र, रंभा)। ५ स्वीकार (श्रा १२, सुपा ३४५)। ६ हुङ्कार, 'हुं' शब्द, 'हुं करंति पुरओ' (सुपा ४६२)। ७ अनादर (सिरि १५३)।

हुंकुय पुं [दे] अञ्जलि, प्रणाम (दे ८, ७१)।

हुंकार पुं [हुङ्कार] १ अनुमति-प्रकाशक शब्द, हाँ (विसे ५६५, से १० २४ गा ३५६, आत्मानु ६)। २ 'हुं' आवाज, 'हुं' ऐसा शब्द (हे ४, ४२२, कप्पू, सुर १, २४६)।

हुंकारिय न [हुङ्कारित] 'हुं' ऐसी की हुई आवाज (स ३७७)।

हुंकुरव पुं [दे] अञ्जलि, प्रणाम (दे ८, ७१)।

हुंड न [हुण्ड] १ शरीर की आकृति-विशेष, शरीर का बेडव अवयव (ठा ६—पत्र ३५७, सम ४४, १४९)। २ कर्म-विशेष जिसके उदय से शरीर का अवयव असपूर्ण बेढब—प्रमाण शून्य अव्यवस्थित हो वह कर्म (कम्म १, ४०)। ३ वि. बेढब अंगवाला (विपा १ १—पत्र ५)। °वसप्पिणी स्त्री [°वसर्पिणी] वर्तमानहीन समय (विचार ५०३)।

हुंडी स्त्री [दे] घटा (पाअ)।

हुंबउट्ठ पुं [दे] वानप्रस्थ तापस की एक जाति (औप, भग ११, ९—पत्र ५१५, ५१९)।

हुहुय अक [हुं हुं+कृ] 'हुं' 'हुं' आवाज करना। वकृ. हुहुयंत (चेइय ४९०)।

°हुच देखो पहुच=प्र+भू।

हुट्ट देखो होट्ट (आचा, पि ८४, ३३८)।

हुड पु [दे] १ मेष, मेढा (दे ८, ७०)। २ श्वान, कुत्ता (मृच्छ २५३)।

हुडुअ पु [दे] प्रवाह (दे ८, ७०)।

हुडुक पुंस्त्री [दे. हुडुक] वाद्य-विशेष (औप, कप्पू, सण, विक्र ८७)। स्त्री. °क्का (राय, सुपा ५०, १७५, २४२)।

हुडुम पु [दे] पताका, ध्वजा (दे ८, ७०, पाअ)।

हुड्ड पुस्त्री [दे] होड, बाजी, पण, शर्त, दाँव। स्त्री. °ड्डा (दे ८, ७०, सुपा २७९, पव ३८), 'हुड्डाहुड्ड सुयतेहिं' (सम्मत्त १४३)। देखो होड्ड।

हुण सक [हु] होम करना। हुणइ (हे ४, २४१, भग ११, ९—पत्र ५१६, कुमा)। कर्म. हुव्वइ, हुणिज्जइ, हुणिज्जए (हे ४, २४२, कुमा)। कवकृ. हुणिज्जमाण (सुपा ६७)। संकृ. हुणिऊण हुणेऊण, हुणिता (षड्, भग ११, ९—पत्र ५१६)।

बौद्ध साधु विशेष, हाथी को मारकर उसके माँस से जीवन-निर्वाह करने के सिद्धान्तवाला सन्यासी (औप, सूअनि १६०)। °नायपुर देखो °नागपुर (भवि)। °पाल पु [°पाल] भगवान् महावीर के समय का पावापुरी का एक राजा (कप्प)। °पिप्पली स्त्री [°पिप्पली] वनस्पति-विशेष (उत्त ३४, ११)। °मुह पुं [°मुख] १ एक अन्तर्द्वीप। २ वि. उसका निवासी मनुष्य (ठा ४, २—पत्र २२६, इक)। °रयण न [°रत्न] उत्तम हाथी (औप)। °राय पुं [°राज] उत्तम हाथी (सुपा ४२६)। °वाउय पु [°व्यापृत] महावत (औप)। °वाल देखो °पाल (कप्प)। °विजय न [°विजय] वैताढ्य की उत्तर श्रेणि का एक विद्याधर-नगर (इक)। °सीस न [°शीर्ष] एक नगर, जो राजा दमदन्त की राजधानी थी (उप ६४८ टी)। °सुंडिया देखो °सोंडिगा (राज)। °सोंड पु [°शौण्ड] श्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (पराग १—पत्र ४५)। °सोंडिगा स्त्री [°शुण्डिका] आसन-विशेष (ठा ५, १ टी—पत्र २९६)।

हत्थिअचक्खु न [दे] वक्र अवलोकन (दे ८, ६५)।

हत्थिज्ज वि [हस्तीय, हस्त्य] हाथ का, हाथ-सबन्धी (पिंड ४२४)।

हत्थिणउर, हत्थिणपुर, हत्थिणाउर, हत्थिणापुर न [हस्तिनापुर] नगर-विशेष (ठा १०—पत्र ४७७, सुर १०, १५५, महा, गउड, सुर १, ६४, नाट—शकु ७४, अत)।

हत्थिणी देखो हत्थि।

हत्थिमल्ल पु [दे] इन्द्र-हस्ती, ऐरावण हाथी (दे ८, ६३)।

हत्थियार न [दे] १ हथियार, शस्त्र (धर्मसं १०२२, ११०४, भवि)। २ युद्ध, लड़ाई, 'ता उट्ठेहि सपय करेहि हत्थियार ति', 'देव, कोइसं देवेण सह हत्थियारकरणं' (स ६३७, ६३८)।

हत्थिलिज्ज न [हस्तिलीय] एक जैन-मुनि-कुल (कप्प)।

हत्थिवय पु [दे] ग्रह-भेद (दे ८, ६३)।

हत्थिहरिल्ल पुं [दे] वेष (दे ८, ६४)।

हत्थुत्तरा स्त्री [हस्तोत्तरा] उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र (कप्प)।

हत्थुल्ल देखो हत्थ (हे २, १६४, षड्)।

हत्थोडी स्त्री [दे] १ हस्ताभरण, हाथ का आभूषण। २ हस्त-प्राभृत, हाथ से दिया जाता उपहार (दे ८, ७३)।

हत्थलेव पुं [दे] हस्त-ग्रहण, पाणि-ग्रहण (सिरि १५८)।

हद देखो हय = हत (प्राप्र, प्राकृ १२)।

हद, हद्द पुं [दे] बालक का मल-मूत्रादि (पिंड ४७१)।

हद्धय पुं [दे] ह्रास, विकास (दे ८, ६२)।

हद्धि, हद्धी अ [हा धिक्] १ खेद। २ अनुताप (प्राकृ ७६, षड्, स्वप्न ६१, नाट—शकु ६६, हे २, १६२)।

हमार (अप) वि [अस्मदीय] हमारा, हमसे संबन्ध रखनेवाला (पिंग)।

हमिर देखो भमिर (पि १८८)।

हम्म सक [हन्] वध करना। हम्मइ (हे ४, २४४, कुमा, संक्षि ३४, प्राकृ ६८)।

हम्म सक [हम्म्] जाना। हम्मइ (हे ४, १६२)।

हम्म न [हर्म्य] क्रीडा-गृह (से ६, ४३)।

हम्म° देखो हण = हन्।

हम्मार देखो हमार (पिंग)।

हम्मिअ वि [हम्मित] गत, गया हुआ (स ७४३)।

हम्मिअ न [दे. हर्म्य] गृह, प्रासाद, महल (दे ८, ६२, पाअ, सुर ६, १५०, आचा २, २, १, १०)।

हम्मीर पुं [हम्मीर] विक्रम की तेरहवीं शताब्दी का एक मुसलमान राजा (ती ५, हम्मीर २७, पिंग)।

हय वि [हत] जो मारा गया हो वह (औप, से २, ११, महा)। °माक्कोड पु [°मर्कोट] एक विद्याधर-नरेश (पउम १०, २०)। °स वि [°श] निराश (पउम ६१, ७४, गा २८१, हे १, २०६, २, १६५, उव)।

हय पुं [हय] अश्व, घोड़ा (औप, से २, ११; कुमा)। °कंठ पु [°कण्ठ] रत्न-विशेष, अश्व के कंठ जितना बड़ा रत्न (राय ६७)। °कण्ण, °कन्न पुं [°कर्ण] १ एक अन्तर्द्वीप। २ वि. उसका निवासी मनुष्य (इक, ठा ४, २—पत्र २२६)। ३ एक अनार्य देश (पव २७४)। °मुह पुं [°मुख] १ एक अन्तर्द्वीप (इक)। २ एक अनार्य देश (पव २७४)।

हय देखो हिअ = हृत (महा, भवि; राय ४४)।

हय देखो हर = ग्रह। °पोंडरीय पुं [°पुण्डरीक] पक्षि-विशेष (पराह १, १—पत्र ८)।

°हय देखो भय (गा ३८०)।

हयमार पुं [दे. हतमार] कणेर का गाछ (पाअ)।

हर सक [हृ] १ हरण करना, छीनना। २ प्रसन्न करना, खुश करना। हरइ (हे ४, २३४, उव, महा)। कर्म. हरिज्जइ, हीरइ, हरीअइ, हीरिज्जइ (हे ४, २५०, धात्वा १५७)। वकृ. हरंत (पि ३९७)। कवकृ. हीरंत, हीरमाण (गा १०५, सुर १२, १११, सुपा ६३५)। संकृ. हरिऊग (महा)। हेकृ हरिउ (महा)। कृ. हिज्ज, हेज्ज (पिंड ४४६, ४५३)।

हर सक [ग्रह्] ग्रहण करना, लेना। हरइ (हे ४, २०६)।

हर सक [ह्रद्] आवाज करना। °हरइ (से ५, ७१)।

हर पुं [हर] १ महादेव, शंकर (सुपा ३६३, कुमा, षड्, हे १, ५१, गा ६८७, ७६४)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। °मेहल न [°मेखल] कला-विशेष (सिरि ५६)। °वल्लहा स्त्री [°वल्लभा] गौरी, पार्वती (सुपा ५९७)।

हर पुं [ह्रद] द्रह, बडा जलाशय (से ६, ६५)।

हर देखो घर = गृह, 'ता वच्च पहिय मा मग्ग वासय एत्थ मज्झ हरे' (वज्जा १००, कुमा, सुपा ३६३, हे २, १४४)।

°हर देखो धर = धृ। कृ °हरेअव्व (से ६, ३)।

°हर देखो भर = भर (पउम १००, ५४, सुपा ४३२)।

°हर वि [°हर] हरण-कर्ता (सण)।

°हर वि [°धर] धारण करनेवाला (गा ३१५, ३९५)।

हुणण न [हवन] होम (सुपा ६३)।

हुणिअ देखो हुअ=हुत (सुपा २१७, मोह १०७)।

हुत्त वि [दे] अभिमुख, समुख (दे ८, ७०, हे २, १५८, गउड, भवि)।

हुत्त देखो हूअ=हूत (हे २, ९९)।

°हुत्त देखो हूअ=भूत (गा २४५, ८६६)।

°हुमआ देखो भुमआ (गा ५०५, पि १८८)।

हुर देखो फुर=स्फुर्। वकृ 'कतीए हुरतीए' आदि (कुप्र ४२०)।

हुरड पु स्त्री [दे] तृण आदि से कुछ कुछ पकाया हुआ चना आदि धान्य, होला—होरहा (सुपा ३८६, ४७३)।

हुरत्था अ [दे] बाहर (आचा १, ८, २, १, ३, २, १, ३, २, कस।

हुरुडी स्त्री [दे] विपादिका, रोग विशेष (दे ८, ७१)।

हुल सक [क्षिप्] फेंकना। हुलइ (हे ४, १४३, षड्)।

हुल सक [मृज्] मार्जन-करना, साफ करना। हुलइ (हे ४, १०५, षड्)।

हुलण वि [मार्जन] सफा करनेवाला (कुमा ६, ६८)।

हुलण न [क्षेपण] फेंकना (कुमा)।

हुलिअ वि [दे] १ शीघ्र, वेग-युक्त, 'मइ पवणहुलिए' (दे ८, ५९)। २ न. शीघ्र, जल्दी, तुरत (पराह १, १—पत्र १४, स ३५०, उप ७२८ टी)।

हुलुभुलि स्त्री [दे] कपट, दम्भ (नाट—मृच्छ २८२)।

हुलुव्वी स्त्री [दे] प्रसव-परा, निकट-भविष्य में प्रसव करनेवाली स्त्री (दे ८, ७१)।

°हुल्ल देखो फुल्ल=फुल्ल (भवि)।

हुव देखो हुण=हु। हुवइ (प्राकृ ६९)।

हुव देखो हव=भू। हुवति (हे ४, ६०, प्राप्र)। भूका. हुवीअ (कुमा ५, ८८)। भवि. हुविस्संति (पि ५२१)। वकृ. हुवंत, हुवमाण, हुवेमाण (षड्)। संकृ. हुविअ (नाट—चैत ५७)।

हुव (अप) देखो हूअ=भूत (भवि)।

हुव (अप) देखो हुअ=हुत (भवि)।

हुव्व °देखो हुण=हु।

°हुव्वत्त देखो धुव्वत=धुव=धाव् (से ६, ३४)।

हुरस देखो ह्रस=ह्रस्व (आचा, औप, सम्मत्त १६०)।

हुहुअ पुंन [हुहुक] देखो हूहूअ (अणु ९९; १७९)।

हुहुअंग पुंन [हुहुकाङ्ग] देखो हूहूअंग (अणु ९९, १७९)।

हुहुरु अ [हुहुरु] अनुकरण-शब्द-विशेष, 'हुहुरु' ऐसा शब्द (हे ४, ४२३; कुमा)।

हूअ देखो भूअ=भूत (हे ४, ६४, कुमा; श्रा १४, १६, महा, सार्ध १०५)।

हूअ वि [हूत] आहूत, आकारित (हे २, ९९)।

हूअ देखो हुअ=हुत, 'मन्ने पंचसरो पुरा भगवया ईसेण हूओ सयं, कोहग्घेण सम्रासुगोवि सधणुद्दडोवि णित्तानले' (रंभा २५)।

हूण पु [हूण] १ एक अनार्य देश। २ वि. उसका निवासी मनुष्य (पराह १, १—पत्र १४, कुमा)।

हूण देखो हीण=हीन (हे १, १०३, षड्)।

हूम पु [दे] लोहार (दे ८, ७१)।

हूसण देखो भूसण (गा ६५५, पि १८८)।

हूहू पुं [हूहू] गन्धर्व देवों की जाति (धर्मवि ४८, सुपा ५९)।

हूहूअ पुन [हूहूक] संख्या-विशेष, 'हूहूअंग' को चौरासी लाख से गुनने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४—पत्र ८६, अणु २४७)।

हूहूअग पुंन [हूहूकाङ्ग] संख्या-विशेष, 'अवव' को चौरासी लाख से गुनने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४—पत्र ८६, अणु २४७)।

हे अ [हे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ संबोधन। २ आह्वान। ३ असूया, ईर्ष्या (हे २, २१७ टि, पि ७१, ४०३, भवि)।

हेअ देखो हा=हा।

°हेअ देखो भेअ=भेद (गा ८२७)।

हेअंगवीण न [हैयङ्गवीन] १ नवनीत, मक्खन। २ ताजा घी (नाट—साहित्य २३९)।

हेआल पु [दे] हस्त-विशेष से निषेध, साँप के फरण की तरह किए हुए हाथ से निवारण (दे ८, ७२)।

हेउ पुं [हेतु] १ कारण, निमित्त; 'हेऊइं' (राय २६, उवा; पराह २, २—पत्र ११४, कप्प; गउड, जी ५१, महा, पि ३५८)। २ अनुमान-वाक्य, पंचावयव वाक्य (उत्त ९, ८; सुख ९, ८)। ३ अनुमान का साधन (धर्मसं ७७, ठा ४, ४ टी—पत्र २८३)। ४ प्रमाण (अणु)। °वाय पुं [°वाद] १ बारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ दृष्टिवाद (ठा १०—पत्र ४९१)। २ तर्कवाद, युक्तिवाद (सम्म १४०, १४२)।

हेउअ वि [हैतुक] १ हेतुवाद को माननेवाला, तर्कवादी, 'जो हेउवायपक्खम्मिहेउओ आगमे य आगमिओ' (सम्म १४२, उवर १५१)। २ हेतु का, हेतु से संबन्ध रखनेवाला। स्त्री. °उई (विसे ५२२)।

हेऊ } देखो हा=हा।
हेआणं }

हेज्ज देखो हर=हृ।

हेट्ठ स्त्री [अधस्] नीचे, गुजराती में 'हेठ', 'नग्गोहहेट्ठम्मि' (सुर १, २०५, पि १०७, हे २, १४१, कुमा, गउड), 'हेट्ठओ' (महा)। स्त्री °ट्ठा (औप, महा, पि १०७, ११४)। °मुह वि [°मुख] अवाङ्मुख; जिसने मुँह नीचा किया हो वह (विपा १, ६—पत्र ६८, दे १, ९३, भवि)। °वणि वि [°अवनी] महाराष्ट्र देश का निवासी, मरहट्टा—मरहठा (पिंड ६१९)।

हेट्ठिम } वि [अधस्तन] नीचे का (सम
हेट्ठिल्ल } १९, ४१, भग, हे २, १६३, सम ८७, षड्, औप)।

हेडा स्त्री [दे] १ घटा, समूह (सुपा ३८६, ५३०)। २ द्यूत आदि खेलने का स्थान, अखाडा (धम्म १२ टी)।

हेडिस } (अशो) देखो एरिस (पि १२१)।
हेदिस }

हेपिअ वि [दे] उन्नत, ऊँचा (षड्)।

हेम न [हेम] १ सुवर्ण, सोना (पाम, जं ४, औप, सक्षि १७)। २ धत्तूरा। ३ मासे का परिमाण। ४ पुं काला घोड़ा। ५ वि. पंडित (संक्षि ७)। ६ पुं. एक विद्याधर राजा (पउम १०, २१)। °चंद पुं [°चन्द्र] १-२ विक्रम की बारहवीं शताब्दी के दो

हरअई } स्त्री [हरीतकी] १ हरें का गाछ। हरडई } २ फल-विशेष, हरें (षड्, हे १, ६६, कुमा)।

हरण न [हरण] १ छीनना (सुपा १८, ४३६; कुमा)। २ वि छीननेवाला (कुप्र ११४, धर्मवि ३)।

हरण न [ग्रहण] स्वीकार (कुमा)।

हरण न [स्मरण] स्मृति, याद,

'अलिअकुविअंपि कअमतुअव
म जेसु सुहअ अणुणेंतो।
ताण दिअहाण हरणे रुआमि,
ण उणो अहं कुविआ'
(गा ६४१)।

°हरण देखो भरण (गा ५२७ अ)।

हरतणु पु [हरतनु] खेत में बोये हुए गेहूँ, जौ आदि के वालो पर होता जल-विन्दु (कप्प, चेइय ३७३, जी ५)।

हरद देखो हरय (भग)।

हरपच्चुअ वि [दे] १ स्मृत, याद किया हुआ। २ नाम के उद्देश से दिया हुआ (दे ८, ७४)।

हरय पु [ह्रद] वडा जलाशय, द्रह (आचा, भग, पराह २, ५—पत्र १४६, उत्त १२, ४५, ४६, हे २, १२०)।

हरहरा स्त्री [दे] युक्त प्रसग, योग्य अवसर, उचित प्रस्ताव,

निद्धूमग च गामं महिला-
थूभ च सुएणय दट्ठु।
नीय च काया ओलिंति
जाया भिक्खस्स हरहरा'
(विसे २०६४)।

हरहराइय न [हरहरायित] 'हर हर' आवाज (पराह १, ३—पत्र ४५)।

हराविअ वि [हारित] हराया हुआ, जिसका पराभव किया गया हो वह (हे ४, ४०६)।

हरि पुं [दे हरि] शुक, तोता (दे ८, ५६)।

हरि पु [हरि] १ विद्युत्कुमार-देवो की दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८४)। २ एक महाग्रह (ठा २, ३—पत्र ७८)। ३ इन्द्र, देव-राज (कुमा, कुप्र २३, सम्मत्त २२६; श्रु ८६)। विष्णु, श्रीकृष्ण (गा ४०६, ४११, सुपा १४३)। ५ रामचन्द्र (से ६, ३१)। ६ सिंह, मृगेन्द्र (से ६, ३१, कुमा, कुप्र ३४६)। ७ वानर, बन्दर (मे ४, २५, ६, २२, धर्मवि ५१, सम्मत्त २२२)। ८ अश्व, घोडा (उप १०३१ टी, ती ८, कुप्र २३, सुख ४, ६)। ९ भारत के साथ जैन दीक्षा लेनेवाला एक राजा (पउम ८५, ४)। १० ज्योतिषशास्त्र-प्रसिद्ध एक योग, 'गुरुहरिविट्ठे गडविइवाए' (सवोध ५४)। ११ छन्द का एक भेद (पिंग)। १२ सर्प, साँप। १३ भेक, मराडूक। १४ चन्द्र। १५ सूर्य। १६ वायु, पवन। १७ यम, जमराज। १८ हर, महादेव। १९ ब्रह्मा। २० किरण। २१ वर्ष-विशेष। २२ मयूर, मोर। २३ कोकिल, कोयल। २४ भर्तृहरि नामक एक विद्वान्। २५ पीला रँग। २६ पिंगल वर्ण। २७ हरा रँग। २८ वि. पीत वर्णवाला। २९ पिंगल वर्णवाला (हे ३, ३८)। ३० हरा वर्णवाला, 'हरिमणिसरिच्छहरिअरुइ' (अच्चु ३२)। ३१ पुंन. महाहिमवत पर्वत का एक शिखर (ठा ८—पत्र ४३६)। ३२ विद्युत्प्रभ पर्वत, का एक शिखर (ठा ९, इक)। ३३ निषध पर्वत का एक शिखर (ठा ९—पत्र ४५४, इक)। ३४ हरिवर्ष-क्षेत्र का मनुष्य-विशेष (कप्प)। °अंद पु [°श्चन्द्र] स्वनाम प्रसिद्ध एक राजा (हे २, ८७, षड्, गउड, कुमा)। °अदण न [°चन्दन] १ चन्दन की एक जाति (से ७, ३७, गउड, सुर १६, १४)। २ पुं. एक तरह का कल्प-वृक्ष (सुपा ८७, गउड)। देखो °चंदण। °अण्ण देखो °अद (सक्षि १७)। °आल पुंन [°ताल] १ पीत वर्णवाली उपधातु-विशेष, हरताल (णाया १, १—पत्र २४, जी ३, पव १५५, कुमा, उत्त ३४, ८, ३६, ७५)। २ पु. पक्षि-विशेष (हे २, १२१)। देखो °ताल। °एस पुं [°केश] १ चडाल (ओघ ७६६, सुख ६, १, महा)। २ एक चराडाल मुनि (उत्त १२)। °एसवल पुं [°केशबल] चराडालकुलोत्पन्न एक मुनि (उव, उत्त १२, १)। °एसिज्ज वि [°केशीय] १ चराडाल-सवन्धी। २ हरिकेशबल नामक मुनि का (उत्त १२)। °कंखि न [°काङ्क्षिन्] नगर-विशेष (ती २७)। °कत पु [°कान्त] विद्युत्कुमार देवो की दक्षिण दिशा का इन्द्र (इक)। °कतपवाय, °कतप्पवाय पुं [°कान्ताप्रपात] एक द्रह (ठा २, ३—पत्र ७२, टी—पत्र ७५)। °कता स्त्री [°कान्ता] १ एक महा-नदी (ठा २, ३—पत्र ७२, सम २७, इक)। २ महाहिमवान् पर्वत का एक शिखर (इक, ठा ८—पत्र ४३६)। °केलि पुं [°केलि] भारतीय देश विशेष (कप्पू)। °केसबल देखो °एसबल (कुलक ३१)। °केसि पुं [°केशिन्] एक जैन मुनि (श्रु १४०)। °गीअ न [°गीत] छन्द का एक भेद (पिंग)। °ग्गीव पु [°ग्रीव] राक्षस-वश का एक राजा (पउम ५, २६०)। °चंद पु [°चन्द्र] १ विद्याधर-वश का एक राजा (पउम ५, ४४)। २ एक विद्याधर-कुमार (महा)। °चंदण पु [°चन्दन] १ एक अन्तकृद् जैन मुनि (अंत १८)। २ देखो °अंदण (प्रासू १४५, स ३४६)। °णयर न [°नगर] वैताढ्य की दक्षिण श्रेणि मे स्थित एक विद्याधर-नगर (इक)। °ताल पु [°ताल] द्वीप-विशेष (इक)। देखो °आल। °दास पुं [°दास] एक वणिक् का नाम (पउम ५, ८३)। °धणु न [°धनुष्] इन्द्र-धनुष (उप ५६७ टी)। °पुरी स्त्री [°पुरी] इन्द्र-पुरी, अमरावती, स्वर्ग (सुपा ६३५)। °भद्द पुं [°भद्र] एक सुविख्यात जैन आचार्य तथा ग्रन्थकार (चेइय ३४, उप १०३६, सुपा १)। °मथ पुं [°मन्थ] धान्य-विशेष, काला चना (श्रा १८, पव १५६, सवोध ४३)। °मेला स्त्री [°मेला] वृक्ष-विशेष (औप)। °वइ पुं [°पति] वानर-पति, सुग्रीव (से १, १६)। °वस पु [°वंश] एक सुप्रसिद्ध क्षत्रिय-कुल (कप्प, पउम ५, २)। °वस्स, °वास पुं [°वर्ष] १ क्षेत्र-विशेष (अणु १६१, ठा २, ३—पत्र ६७, सम १२, पउम १०२, १०६, इक)। २ पुंन. महाहिमवान् पर्वत का एक शिखर (ठा ८—पत्र ४३६)। ३ निषध पर्वत का एक शिखर (ठा ९—पत्र ४५४, इक)। °वाहण पुं [°वाहन] १ मथुरा का एक

सुप्रसिद्ध जैन आचार्य तथा ग्रन्थकार (दे ८, ७७, सुपा ६५८)। ३ विक्रम की पनरहवीं शताब्दी का एक जैन मुनि (सिरि १३४१)। °जाल न [°जाल] सुवर्ण की माला (औप)। °तिलय पुं [°तिलक] विक्रम की चौदहवीं शताब्दी का एक जैनाचार्य (सिरि १३४०)। °पुर न [°पुर] एक विद्याधर-नगर (इक)। °मय वि [°मय] सोने का बना हुआ (सुपा ८८)। °महिहर पु [°महिधर] मेरु पर्वत (गउड)। °मालिणी स्त्री [°मालिनी] एक दिक्कुमारी देवी (इक)। °व पु [°वत्] फाल्गुन मास (सुज्ज १० १९)। °विमल पु [°विमल] एक जैन आचार्य (कुम्मा ३५)। °भ पु [°भ] चौथी नरक-पृथिवी का एक नरक-स्थान (निर १, १)।

हेमंत पुं [हेमन्त] १ ऋतु-विशेष, मगसिर या अगहन तथा पोस या पूस महिना (पाअ, आचा, कप्प, कुमा)। २ शीतकाल (दस ३, १२)।

हेमंत वि [हैमन्त] हेमन्त ऋतु में उत्पन्न (सुज्ज १२—पत्र २१९)।

हेमंतिअ वि [हैमन्तिक] ऊपर देखो (कप्प, औप, गा ६६, राय ३८)।

हेमग वि [हैमक] हिम का, हिम-संबन्धी (ठा ४, ४—पत्र २८७)।

हेमवइ } पुन [हैमवत] १ वर्ष विशेष, क्षेत्र-
हेमवय } विशेष (इक, सम १२, ज ४—पत्र २९९, ३००, ठा २, ३ टी—पत्र ६७, पउम १०२, १०६)। २ हिमवंत पर्वत का एक शिखर। ३ कूट-विशेष (इक)। ४ वि. हिमवंत पर्वत का (राय ७४, औप)। ५ पु हैमवत क्षेत्र का अधिष्ठाता देव (ज ४—पत्र ३००)।

हेम्म देखो हेम (संक्षि १७)।

हेर सक [दे] १ देखना, निरीक्षण करना। २ खोजना, अन्वेषण करना। वकृ. हेरंत (पिंग)। संकृ हेरऊण (धर्मवि ५४)।

हेरंब पु [दे] १ महिष, भैंसा। २ डिंडिम, वाद्य-विशेष (दे ८, ७६)।

हेरण्णवय पुंन [हैरण्यवत] १ वर्ष-विशेष, एक युगलिक क्षेत्र (इक पउम १०२, १०६)। २ रुक्मि पर्वत का एक शिखर। ३ शिखरी पर्वत का एक शिखर (इक २१८)।

हेरण्णिअ पु [हैरण्यिक] सुवर्णकार (उप पृ २१०)।

हेरन्नवय देखो हेरण्णवय (ठा २, ३—पत्र ६७, ७९)।

हेरिअ पु [हेरिक] गुप्त चर, जासूस (सुपा ४६४ ५८६)।

हेरिंब पु [दे हेरम्ब] विनायक, गणेश (दे ८, ७२, षड्)।

हेरुयाल सक [दे] क्रुद्ध करना, गुस्सा उपजाना। हेरुयालंति (णाया १, ८—पत्र १४४)।

हेला स्त्री [हेला] १ स्त्री की शृङ्गार-सवन्धी चेष्टा-विशेष (पाअ)। २ अनादर (पाअ, से १,५५)। ३ अनायास, अल्प प्रयास, सहलाई, सरलता (से १, ५५, कप्पू, प्रवि ११, पि ३७५)।

हेला स्त्री [दे हेला] वेग, शीघ्रता (दे ८, ७१, कप्पू, प्रवि ११, पि ३७५)।

हेलिय पु [हैलिक] एक तरह की मछली (जीव १ टी—पत्र ३६)।

हेलुअ न [दे] क्षुत, छींक (दे ८, ७२)।

हेलुका स्त्री [दे] हिक्का, हिचकी (दे ८, ७२)।

हेल्लि (अप) अ [हले] सखी का आमन्त्रण, हे सखि (हे ४, ४२२, ३७९, पि १०७)।

हेव (अशो) देखो हेव (पि ३३६)।

हेवाग पुं [हेवाक] स्वभाव, आदत (राज)।

हेसमण वि [दे] उन्नत, ऊँचा (षड्)।

हेसा स्त्री [हेषा] अश्व-शब्द (सुपा २८८, श्रा २७)।

हेसिअ न [हेषित] ऊपर देखो (दे ८, ६८, पउम ५४, ३०, औप, महा, भवि)।

हेसिअ न [दे हेषित] रसित, चीत्कार (षड्)।

हेहभूअ वि [दे] गुण-दोष के ज्ञान से रहित और निर्दम्भ, अज्ञ किन्तु निखालस (वव १)।

हेहय पु [हैहय] १ एक राजा (राज)। २ °डिंब पु [°डिम्ब] एक विद्याधर राजा (पउम १०, २०)।

हो देखो हव = भू। होइ, होअइ, होअए, होएइ, होंति, होन्ति, होअइरे (हे ४, ६०, षड्, कप्प, उव, महा, पि ४५८, ४७६)। होज्ज, होजा, होएज्ज, होएज्जा, होउ (हे ३, १५९, १७७, भग, प्राप्र, पि ४६६)। भूका. होत्था, होहीअ (कप्प, प्राप्र)। भवि. होहिइ, होहिंति, होहामि, होहिमि, होस्स, होस्सामि, होक्खइ, होक्ख (हे ३, १६६, १६७, १६९, प्राप्र, पि ५२१), होसइ (अप) (हे ४, ३८८)। कर्म होइज्जइ, होइज्जए, होईअइ (षड पि ४७६) वकृ. होंत, होमाण (हे ३, १८०, ४, ३५५, ३७२, कुमा, पि ४७६)। संकृ होऊण, होऊण, होअऊण, होइऊण, हविय, होत्ता (गउड, पि ५८५, ५८६, कुमा)। हेकृ. होउ, होत्तए (महा, पि ४७५ कप्प)। कृ. होयव्व (कप्प, महा, उव, प्रासू १६, ६१)।

हो अ [हो] इन अर्थो का सूचक अव्यय—१ विस्मय, आश्चर्य (पाअ, नाट—मृच्छ ११२)। २ संबोधन, आमन्त्रण (संक्षि ४७, उप ५९७ टी)।

होउ वि [होतृ] होम-कर्ता (गा ७२७)।

होंड देखो हुंड (विचार ५०७)।

होट्ठ पुं [ओष्ठ] होंठ, ओठ (आचा)।

होड्ड देखो हुड्ड, 'तो हं छोडेमि होड्डओ' (सुपा २७७, २७८)।

होढ पु [होड] मोष, चोरी की वस्तु (णाया १, २—पत्र ८६, पिंड ३८०)।

होण देखो हूण = हूण (पव २७४, विचार ४३)।

होत्तिय पु [होत्रिक] १ वानप्रस्थ तापसों का एक वर्ग, अग्निहोत्रिक वानप्रस्थ (औप, भग ११, ९—पत्र ५१५)। २ न. तृण-विशेष (पण्ण १—पत्र ३३)।

होम पुं [होम] हवन, अग्नि में मन्त्र-पूर्वक घृत आदि का प्रक्षेप (अभि १५९)।

होम सक [होमय्] होम करना। हेकृ. होमिउ (ती ८)।

होमिअ वि [होमित] हवन किया हुआ, 'अणत्थपडियकुकव्वहविहोमिओ' (स ७१४)।

होरंभा स्त्री [होरम्भा] वाद्य-विशेष, महा-ढक्का, बड़ा ढोल (राय ४६)।

होरण न [दे] वस्त्र, कपड़ा (दे ८, ७२, गा ७७१)।

राजा (पउम १२, २)। २ नन्दीश्वर द्वीप के अपरार्ध का अधिष्ठाता देव (जीव ३, ४)। °सह देखो °स्सह (राज)। °सेण पुं [°षेण] १ दशवां चक्रवर्ती राजा (सम ६८, १५२)। २ भगवान् नमिनाथजी का प्रथम श्रावक (विचार ३७८)। °स्सह पुं [°सह] १ विद्युत्कुमार-देवों की दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८४, इक)। माल्यवन्त पर्वत का एक शिखर (ठा ६—पत्र ४५४)।

हरि पुं [हरित्] १ हरा रँग, वर्ण-विशेष। २ वि. हरा रँगवाला (णाया १, १६ पत्र २२८)। ३ स्त्री. एक महा-नदी (सम २७, इक, ठा २, ३—पत्र ७२)। ४ षड्ज ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७—पत्र ३९३)। °पवात, °प्पवाय पुं [°प्रपात] एक द्रह, जहाँ से हरित् नदी निकलती है (ठा २, ३—पत्र ७२, टी—पत्र७५)।

हरि° देखो हिरि° (भग, पि ९८, उत्त ३२, १०३)।

हरिअ पु [°हरित] १ वर्ण-विशेष, हरा रँग। २ वि हरा वर्णवाला (औप, णाया १, १ टी—पत्र ४, १, ७—पत्र ११६, से ८, ४६, गा ६६५)। ३ पु एक आर्य मनुष्य-जाति (ठा ६—पत्र ३५८)। ४ पुंन. वनस्पति-विशेष, हरा तृण, सब्जी (पण्ण १—पत्र ३०, औप, पाअ, पच २, ५०, दस १०, ३)।

हरिअ देखो हिअ = हृत (कस, महा)।

°हरिअ देखो भरिअ = भरित (गा ६३२)।

हरिअग } न [हरितक] जीरा आदि के
हरिअय } पत्तो से बना हुआ भोज्य विशेष (पव २५९, सुज्ज २० टी)।

हरिआ स्त्री [हरिता] दूर्वा, दूब, तृण-विशेष (से ७, ५६, ९, ३१)।

हरिआ देखो हिरि (कुमा)।

हरिआल देखो हरि-आल।

हरिआली स्त्री [दे. हरिताली] दूर्वा, दूब (दे ८, ६४, पाअ, अत, कप्प, अणु २३)।

हरिएस देखो हरि-एस।

हरिचदण देखो हरि-चदण।

हरिच्चदण न [दे. हरिच्चन्दन] कुंकुम, केसर (दे ८, ६५)।

हरिडय पुं [हरितक] कोकण देश-प्रसिद्ध वृक्ष-विशेष (पण्ण १—पत्र ३१)।

हरिण पुं [हरिण] १ हिरन, मृग (कुमा)। २ छन्द का एक भेद (पिंग)। °च्छी स्त्री [°ाक्षी] सुन्दर नेत्रवाली स्त्री (कप्पू)। °ारि पु [°ारि] सिंह (उप पृ २९)। °ाहिव पु [°ाधिप] वही (हे ३, १८०)।

हरिणंक पु [हरिणाङ्क] चन्द्र, चाँद (हे ३, १८०, कप्पू, सण)।

हरिणंकुस पु [हरिणाङ्कुश] चौथे बलदेव के गुरु एक जैन मुनि (पउम २०, २०५)।

हरिणगवेसि देखो हरिणेगमेसि (पउम ३, १०४)।

हरिणी स्त्री [हरिणी] १ मादा हिरन, हिरनी (पाअ)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

हरिणेगमेसि पु [हरिनैगमैषिन्] शक्र के पदाति सैन्य का अधिपति देव (ठा ५, १—३०२, अत ७, इक)।

हरिद्दा देखो हलिद्दा (पि ३७५)।

हरिमथ पुं [दे] काला चना, अन्न-विशेष (श्रा १८, पव १५६, सबोध ४३, दे ८, ७० टि)। देखो हिरिमथ।

हरिमिग्ग पु [दे] लगुड, लट्ठी, लाठी, डंडा (दे ८, ६३)।

हरियदपुर न [हरिचन्द्रपुर] गधर्वनगर (चउप्पन्न० ऋषभचरित्र)।

हरिली देखो हिरिली (उत्त ३६, ९८)।

°हरिल्ल वि [°भरवत्] भारवाला, बोझवाला (गा ५४५)।

हरिस अक [हृष्] खुशी होना। हरिसइ (हे ४, २३५, प्राप्र, षड्), 'हरिसिज्जइ कयतावो रुद्दज्झाणोवगयचित्तो' (संबोध ४९)।

हरिस सक [हर्ष] हर्ष से रोम खड़ा करना, 'लोमादियं पि ण हरिसे सुन्नागारगओ मुणी' (सूअ १, २, २, १६)।

हरिस पुं [हर्ष] १ सुख। २ आनन्द, प्रमोद, खुशी (हे २, १०५, प्राप्र; कुमा, भग)। ३ आभूषण विशेष (औप)। °उर पुं [°पुर] एक जैन गच्छ (सुपा ६५८)। °ाल वि [°वत्] हर्ष-युक्त (प्राकृ ३५)।

हरिसण पु [हर्षण] ज्योतिष-प्रसिद्ध एक योग (सुपा १०८)।

हरिसाइय वि [हर्षित] हर्ष-प्राप्त (पउम ६१, ७२)।

हरिसाल देखो सरिसाल = हर्ष-वत्।

हरिसिअ वि [हर्षित] हर्ष-प्राप्त, आनन्दित (औप, भवि, महा, सण)।

हरी देखो हिरी (सूअ १, १३, ६, भग)।

हरीडई देखो हरडई (प्राकृ १२)।

हरे अ [अरे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ आक्षेप, निन्दा। २ सभाषण। ३ रति कलह (हे २, २०२, कुमा, स ४३०, पि ३३८)।

हरेडगी देखो हरीडई (पचा १०, २५)।

हरेणुया स्त्री [हरेणुका] प्रियगु, मालकाँगनी (उत्तनि ३)।

हरेस सक [हेप्] गति करना (नाट—वेणी ६७)।

हल न [हल] हर, जिससे खेत जोतते हैं (उवा, औप)। °उत्तय पुंन [°युक्तक] हल जोतना, 'असुभे समयम्मि कओ तेण हलउत्तओ खित्ते' (सुपा २३७, २३६, सुर २, ७७)। °कुद्दाल, °कुद्दाल पुं [°कुद्दाल] हल के ऊपर का भाग (उवा)। °धर पुं [°धर] बलदेव, राम (पण्ण १७—पत्र ५२६, दे २, ५५)। °धारण पु [°धारण] बलभद्र, राम (पउम ११७, ९)। °वाहग वि [°वाहक] हालिक, हल जोतनेवाला (श्रा २३)। °हर देखो °धर (सम ११३, पव—गाथा ४८; औप, कुप्र २५७)। °ाउह पुं [°ायुध] बलभद्र, राम (पउम ३८, २३, ७६, २६)।

°हल देखो फल = फल (सुपा ३९६, भवि, त्रि १०३)।

हलअ (मा) देखो हिअय = हृदय (चारु ११, नाट—मृच्छ २१)।

हलउत्तय देखो हल उत्तय।

हलद्दा } देखो हलिद्दा (हे १, ८८, कुमा;
हलद्दी } षड्)।

हलप्प वि [दे] बहु-भाषी, वाचाल (दे ८, ६१)।

हलबोल पुं [दे] कलकल, शोरगुल, कोलाहल (दे ८, ६४, पाअ, कुमा, सुपा ८७, १३२, हट्टि १४०, कुप्र ३९२, सिरि ४३३, सम्मत्त १२२)।

होरा स्त्री [होरा] १ खडी या खली से की हुई रेखा (गा ४३५)। २ ज्योतिष शास्त्र मे उक्त लग्न (मोह १०१)। ३ होराज्ञापक शास्त्र (स ६०२)।

होल पुन्नी [दे] १ वाद्य-विशेष, 'होलं वाएह मे इत्थ' (धर्मवि ४४), 'आढत्त मजपाएा वायावेइ होल' (सुख ३, १)। २ पक्षि विशेष, 'होलाहगिद्धकुक्कुडहसवगाईसु सवणजाईसु। जं खुहवसेएा खद्धा किमिगाई तेवि खामेमि' (खा १३)। ३ एक तरह की गाली, अपमान-सूचक शब्द—मूर्ख, बेवकूफ (आचा २, ४, १, ६, ११, दस ७,१४,१६)। °वाय पुं [°वाद] दुर्वचन बोलना, गाली-प्रदान (सूअ १, ६, २७)।

होलिया स्त्री [होलिका] होली, फागुन मास का पर्व-विशेष (सट्टि ७८ टी)।

होस° देखो हो = भू।

ह्रद देखो दह (पिंड ८४, पि ३६६ ए)।

ह्रस्स देखो रहस्स = ह्रस्व (पि ३५४)।

ह्रास देखो ह्रास = ह्रास (एदि २०६ टी)।

॥ इअ पाइअसद्दमहण्णवम्मि हआराइसद्दसकलणो अट्ठतीसइमो तरंगो समत्तो। समत्तो अ तस्समत्तीए एस गथो ॥

पसत्थी [प्रशस्तिः]

आसाइ पच्छिमाए भारह-वासे इहत्थि अइ-रम्मो। गुज्जर णामा देसो पुव्वं लाढो त्ति विक्खाओ ॥१॥
तस्सुत्तर-दिसि-भाए पुरं पुराणं पुराणमइ-पवर। राहणपुरं ति अच्छइ सच्छाण जिणिद-भवणाण ॥२॥
चंगाण तुङ्गाणं धय-वड-मेअंवलेहिं चलिरेहिं। पडिसेहत पिव ज णिअ-वासि-जणे अहम्माओ ॥३॥
णिअ-पाय-ण्णासेण वासेण य वास-याल-पेरत। जं पुण कय पवित्तं जय-गुरु-पमुहेहिं सूरीहि ॥४॥ [कुलय]
तव्वत्थव्वो आसी सिट्ठी सिरिमाल-वंस-वर-रयणं। णामेण तिअमचदो दक्खिण्ण-दयाइ-गुण-कलिओ ॥५॥
आवय-सपत्तीण संपत्तीए वि जेण णिअचित्ते। दिण्णो णेव कयाई विसाय-हरिसाण अवयासो ॥६॥ [जुग]
अणवज्ज-कज्ज-सज्जा धम्म मणा धम्मपत्ती से धणिअं। सीलाइ-गुण-प्पहाणा पहाणदेवि त्ति अ अहेसि ॥७॥
तेसिं दो तणुजम्मा आवहा लद्ध-धम्म-सक्कारा। जिट्ठो हरगोविंदो कणिट्ठओ बुड्ढिचंदो ओ ॥८॥
सत्थ-विसारय-जइणायरिएहिं विजयधम्म-सूरीहिं। कासीइ महेसीहिं विज्जागारम्मि सठविए ॥९॥
गतूण सोअरेहिं तेहिं वेहिपि तत्थ सत्थाण। सक्कय-पययमयाण अब्भासो काउमारद्धो ॥१०॥
खण-दिट्ठ-णट्ठ-भाव ससार सार-वज्जिअ णाउं। एअतिअ-अच्चंतिअ-सोक्ख मोक्ख च पाय-फलं ॥११॥
पडिवज्जिअ पव्वज्ज अणुओ पउणुअ-राग-विद्देसो। विहरइ त पालितो विसालविजओ त्ति पत्तभिहो ॥१२॥ [जुग्गं]
जेट्ठो उण सत्थाणं णाय-व्वायरणमाइ-विसयाणं। वढणज्झावाण-ससोहणाइ-कज्जेसु दिण्ण-मणो ॥१३॥
लंकाइ सिहलेसुं पाली-भासाइ सुगअ-समयाणं। अब्भास-परिक्खासुं पार पत्तोप्प-कालेण ॥१४॥
कलिकायाए णाए वायरणे चेव लद्ध-तित्थ-पओ। खायाइ परिक्खाए उत्तिण्णो उच्च-कक्खाए ॥१५॥
तत्थेव विस्सविज्जालयम्मि सव्वुत्तमाइ सेणीए। पायय-सक्कय-सत्थज्झावण-कज्जम्मि विणिउत्तो ॥१६॥
तेण य पायय-भासाहिहाण गंथस्स विक्खमाणेणं। चिर-कालाउ अभाव आयर जोग्गस्स विबुहाण ॥१७॥
वाणारसीइ वरिसे सिअहय हय-अरू-रयणिरयण-मिए। विहिओ उवक्कमो विक्कमाओ एअस्स गंथस्स ॥१८॥
कलिकायाए जाया पावय-वसु-अक इदु-परिगणिए। वरिसे भद्दय-मासे सिअ-सत्तमीए समत्ती ओ ॥१९॥
तस्स सुभद्दादेवी-णामाइ सधम्मिणीइ एत्थ बहु। आयरिअ साहिज्ज विज्जज्झयणाणुरत्ताए ॥२०॥
आरभ काऊण आरिस-भासाउ आ अवब्भसा। जो सद्दो जहिं अत्थे जत्थ गंथे उ उवलद्धो ॥२१॥
वण्णाणमणुक्कमेण सो सद्दो तम्मि अत्थए लिहिओ। तग्गन्थ-ठाण-दसण पुव्वं णिउणं णिरूवेत्ता ॥२२॥
पाईण-पाइआणं भासाण बहुत्त-भेअ-भिण्णाणं। सद्दण्णव-पार जे गया तयट्ठो ण एस समो ॥२३॥
जे उण अण-पत्तट्ठा सय तयब्भासिणो य अ-सहाया। ताणं हत्थालवण-दाणाएवस्स णिम्माणं ॥२४॥
जइ थेवोवि हवेज्जा तेसिं गन्थेणणेण उवयारो। ता एत्तिअमेत्तेणं मण्णे आयास-साहल्ल ॥२५॥
अण्णाणेण मईए भमेण वा एत्थ किंचि जमसुद्धं। तं सोहिंतु पसाय काऊण सयासया स-यणा ॥२६॥

॥ समाप्त ॥

हल्हर देखो हल हर = हल-धर।

हलहल देखो हटहड = (दे)। (गा २१)।

हलहल } पुन [दे] १ तुमुल, कोलाहल, हलहलअ } शोरगुल (दे ८, ७४, से १२, ८६)। २ कौतुक, कुतूहल (दे ८, ७४, स ७०४)। ३ त्वरा, हड़बड़ी, हलफल, शीघ्रता, 'हलहलमो तरा' (पाअ, स ७०४)। ४ औत्सुक्य, उत्कंठा (गा २१; ७८८)।

हलहलिअ वि [दे] कम्पित, काँपा हुआ (गा)।

हला अ [हला] सखी का आमन्त्रण, हे सखि (हे २, १९५, स्वप्न ४०, अभि २६, कुमा, गा ४३८, सुपा ३४६)।

हलाहल न [हलाहल] एक प्रकार का उग्र जहर, विष विशेष (प्रासू ३८)।

हलाहला स्त्री [दे] ब्रम्हणिका, बाम्हनी, जन्तु-विशेष (दे ८, ६३)।

हलि पु [हलिन्] बलराम, बलभद्र (पउम ७०, ३५, कुप्र १०१)।

हलिअ वि [हालिक] हल जोतनेवाला, कृषक (हे १, ६७, पाअ, प्राप्र, गा १०७, ३१७, ३६८)।

°हलिअ देखो फलिअ (गा ६)।

हलिआ स्त्री [हलिका] १ छिपकली। २ बाम्हनी, जन्तु-विशेष (कप्प)।

हलिआर देखो हरि-आल = हरि-ताल (हे २, १२१, षड्)।

हलिद्द पुं [हरिद्र, हारिद्र] १ वृक्ष-विशेष (हे १, २५४, गा ८६३)। २ वर्ण विशेष, पीला रंग। ३ न. नाम-कर्म का एक भेद, जिसके उदय से जीव का शरीर हल्दी के समान पीला होता है वह कर्म (कम्म १, ४)। °पत्त पु [°पत्र] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति (पण्ण १—पत्र ४६)। °मच्छ पु [°मत्स्य] मछली की एक जाति (पण्ण १—पत्र ४७)।

हलिद्दा } स्त्री [हरिद्रा] औषधि-विशेष, हल्दी हलिद्दी } (हे १, ८८; २५४, गा ५८, ८०, २४६)।

हलीसागर पु [हलिसागर] मत्स्य की एक जाति (पण्ण १—पत्र ४७)।

हलुअ वि [लघुक] हलका (हे २, १२२, स ७४५)।

हलूर वि [दे] सतृष्ण, सस्पृह (दे ८, ६२)।

हले अ [हले] हे सखि, सखी का संबोधन (हे २, १९५, कुमा)।

हल्ल अक [दे] हिलना, चलना। हल्लंति (सट्ठि ६८)। वकृ. हल्लंत (उवकु २१, सुपा ३४, २२३, वज्जा ४०, से ८, ४५)।

हल्ल पु [हल्ल] एक अनुत्तर-गामी जैन मुनि (अनु २ पडि)।

हल्लअ न [हल्लक] पद्म-विशेष, रक्त कह्लार (विक्र २३)।

हल्लपविअ वि [दे] त्वरित, शीघ्र (षड्)।

हल्लप्फल न [दे] १ हलफल, हड़बड़ी, औत्सुक्य, त्वरा, शीघ्रता (हे २, १७४, स ६०२, कुमा)। २ आकुलता, 'अह उवसते करिणो हल्लप्फलए' (सुपा ६३६)। ३ वि. कम्पनशील, काँपता, चञ्चल, 'पासट्ठिओवि दीवो सहसा हल्लप्फलो जाओ' (वज्जा ६६)।

हल्लप्फलिअ वि [दे] १ शीघ्र, जल्दी। २ न. आकुलता, व्याकुलपन (दे ८, ५६)। ३ वि. व्याकुल (धर्मवि ५६)।

हल्लफल देखो हल्लप्फल (गा ७६)।

हल्लप्फलिअ देखो हल्लप्फलिअ, 'विमलो आह लोहेण, तो हल्लफलिओ इमं' (श्रा १२)।

हल्लाविय वि [दे] हिलाया हुआ (सुर ३, १०६)।

हल्लिअ वि [दे] हिला हुआ, चलित (दे ८, ६२; भवि)।

हल्लिर वि [दे] चलन-शील, हिलनेवाला (स ५७८, कुप्र ३५१)।

हल्लीस पु [दे] रासक, मण्डलाकार होकर स्त्रियों का नाच (दे ८, ६१, भवि)।

हल्लुत्ताल } न [दे] शीघ्रता, जल्दी, त्वरा हल्लुत्तावल } गुजराती में 'उतावळ' (नाट सुर १५, ८८)।

हल्लप्फलिअ देखो हल्लप्फलिअ (जय १२)।

हल्लोहल देखो हल्लप्फल (उवा १ ७३, स १६; हे ४, ३९६ उप ७२८ टी, सुपा १८ २७, महा, भवि)।

हल्लोहलिअ देखो हल्लप्फलिअ (सिरि ६६४, ९३४ भवि)।

हल्लोहलिय पुस्त्री [दे] सरट, गिरगिट। स्त्री. °या (पण्ण)।

हव अक [भू] १ होना। २ सक. प्राप्त करना। हवइ, हवेइ, हवंति (हे ४, ६०, पण्ण, उव, महा, ठा ३, १—पत्र १०६), 'कि इमु[illegible]ट्ठिओ नलो हवइ महूरत्तं' (धर्मवि १७), हवेज्ज, हवेज्जा (पि ४७४)। वकृ. हवंत, हवेमाण (षड्)।

°हव देखो भव = भव (उप ४९८)।

हवण न [हवन] होम (विसे १४९२)।

हवि पुंन [हविस्] १ घृत, घी। २ हवनीय वस्तु (स ६, ७१४, दसनि १, १०४)।

हविअ वि [दे] गर्वित, गुपचा हुआ (दे ४, २२, ८, ६२)।

हव्व वि [हव्य] हवनीय पदार्थ, होम-योग्य वस्तु (सुपा १०३)। °वह पुं [°वह] अग्नि, आग (उप ५९७ टी, सुपा ४१६, गउड)। °वाह पुं [°वाह] वही (आचा, पाअ, सम्मत्त २२८, वेणी १९२, दस ६, ३५)।

हव्व वि [अर्वाच्] १ अवर, पर से अन्य 'नो हव्वाए नो पाराए' (आचा, सूअ २, १, १, ८, १०, १६, २४, २८, ३३)। २ न. शीघ्र, जल्दी (णाया १, १—पत्र ३१, उवा, सम ५६, विपा १, १—पत्र ८, औप, कप्प, भग)। ३ न. गुजरात (गुप्र-फु० २०, ६ नाणि)।

°हव्व देखो भव्व = भव्य (गा ३६०, ४२९ ४७६)।

हस अक [हस्] १ हँसना, हास्य करना। २ सक उपहास करना [illegible]। हसइ, हसेइ, हसए, [illegible] हसिज्जा, [illegible] हसामो [illegible] (हे ३, [illegible] १४५, [illegible]; कुमा)। [illegible] (हे ३, १२८, १७२, १३५, [illegible] भवि, [illegible] [illegible]

हसिस्स (हे ३, १६६, १६७, १६८, १६९)। कर्म. हसीअइ, हसिज्जइ, हसिज्जति (हे ३, १६०, १४२)। वकृ. हसत, हसंत, हसमाण (औप, हे ३, १५८, १८१, (षड्)। कवकृ. हसिज्जंत, हसीअत, हसीअमाण, हसिज्जमाण, हसेज्जमाण (हे ३, १६०, उप ५६७ टी, सुर १४, १८०)। सकृ. हसिऊण, हसेऊण, हसिउआण, हसिउआणं, हसेउआण, हसेउआण, हसिऊणं (हे ३ १५७, पि ५८४, ५८५)। हेकृ हसिउ, हसेउ (हे ३, १५७)। कृ. हसिअव्व, हसेअव्व, हसणीअ (पराह २, ५—पत्र १४९, हे ३, १५७, षड्, सक्षि ३४, नाट—मृच्छ ११४)।

हस अक [ह्रस_] हीन होना, कम होना। हसइ (पच ५, ५३)।

हस पुं [हास] हास्य (उप १०३१ टी)।

हसण स्त्रीन [हसन] हास्य, हँसी (भग, उत्त ३६, २६२, पंचा २, ८)। स्त्री. °णा (उप पृ २७५)।

हसहस अक [हसहसाय_] १ उत्तेजित होना। २ सुलगना, 'सिंगाररसत्तु (?) इया मोह्मईफु फुमा हसहसेइ' (सुख १, ८)। वकृ. हसहसित (दसनि ३, ३५)। संकृ. हसहसेऊण (राज)।

हसाव देखो हास = हासय_। हसावइ, हसावेइ (हे ३, १४९)।

हसिअ वि [हसित] १ जिसका उपहास किया गया हो वह (उव ११३)। २ न हास्य, हँसी (उव २२४)।

हसिअ वि [ह्रसित] ह्रास-प्राप्त, हीन (पच ५, ५३)।

हसिर वि [हसितृ] हास्य-कर्ता, हँसने की आदतवाला (प्राप्र, गा १७४, उप ७२८ टी, सुर २, ७८, कुमा)। स्त्री. °री (गउड)।

हसिरिआ स्त्री [दे] हास, हँसी (दे ८, ६२)।

हस्स अक [ह्रस_] कम होना, न्यून होना, क्षीण होना। वकृ. हस्समाण (णदि ८२ टी)।

हस्स देखो हस = हस्। हस्सइ (धात्वा १५७)। कर्म. हस्सइ (धात्वा १५७, हे ४, २४९)।

हस्स न [हास्य] १ हँसी (आचा १, २, १, २, पव ७२, नाट—मृच्छ ९२)। २ पु महाक्रन्दित नामक देवो का दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। °गय न [°गत] कला-विशेष (स ६०३)। °रइ पुं [°रति] इन्द्र-विशेष, महाक्रन्दित-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)।

हस्स वि [ह्रस्व] १ लघु, छोटा (सूअ २, १, १५, पव ५४)। २ वामन, खर्व (पाअ)। ३ अल्प, थोडा (भग, पंच ५, १०१, कम्म ५, ८४)। ४ पु. एक मात्रावाला स्वर (पराण ३६—पत्र ८४६, विसे ३०६८)।

हस्सण वि [हर्षण] हर्ष-कारक 'रोमहस्सणो जुद्धसंमद्दो' (विक्र ८७)।

हस्सिर देखो हसिर, 'अ-हस्सिरे सदा दंते' (उत्त ११, ४, सुख ११, ४)।

हहह, हहहा अ [हहह, °हा] १ इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ आश्चर्य (प्रयौ ७४)। २ खेद, विषाद (सिरि ६१२)।

हहा पुं [हहा] १ गन्धर्व देवो की एक जाति (हे ३, १२९)। २ अ. खेद-सूचक अव्यय (सिरि २९८; ७९७)।

हा अ [हा] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ विषाद, खेद (सुर १, ९६, स्वप्न २७, गा २१८, ७५४, ९६०, प्रासू २०)। २ शोक, दिलगीरी। ३ पीडा। ४ कुत्सा, निन्दा (हे १, ६७, २, २१७)। °कंद पुं [°क्रन्द] हाहाकार (पिंग)। °रव पुं [°रव] वही अर्थ (सुर २, १११)।

हा सक [हा] १ त्याग करना। २ गति करना। ३ क्षीण करना, हीन करना, कम करना। हाइ (षड्)। कर्म. हायइ, हायंति (भग, उव), हिज्जइ (भवि), हिज्जउ (प्रयौ १०७)। कवकृ. हायत (णाया १, १० टी—पत्र १७१), हीयमाण (काल)। सकृ. हाउ (उवकु १०, ११), हिच्चा, हिच्चाण (आचा १, ४, ४, १, पि ५८७), हेच्च, हेच्चा (सूअ १, २, ३, १, उत्त १८, ३५), हेच्चाण, हेच्चाण (पि ५८७)। कृ. हेअ (स ५९५, पंचा ६, २७, अच्चु ८, गउड)।

°हा देखो भा—स्त्री (गउड)।

हाअ देखो हा—सक। हाअइ, हाअए (षड्)।

हाअ सक [ह्रादय_] अतिसार रोग को उत्पन्न करना। हाएज्ज (पिंड ६४६)।

°हाअ देखो भाअ = भाग (से ८, ८२, षड्)।

°हाअ देखो घाय = घात (से ७, ५६)।

°हाअ देखो भाव = भाव (से ३, १५)।

हाउ देखो भाउ, 'मह वअणं मइरागविभ्रति हाआ तुहं भणई' (गा ८७२)।

हांसल देखो हंसल (राज)।

हाकंद देखो हा-कंद।

हाकलि स्त्री [हाकलि] छन्द का एक भेद (पिंग)।

हाडहड न [दे] तत्काल, तत्क्षण (वव १)।

हाडहडा स्त्री [दे] आरोपणा का एक भेद, प्रायश्चित-विशेष (ठा ५, २—पत्र ३२५, निचू २०)।

हाणि स्त्री [हानि] क्षति, अपचय (भवि)।

हाम अ [दे] इस तरह, इस प्रकार, एवं, 'हाम भण' (प्राकृ ८१)।

हायण पुं [हायन] वर्ष, संवत्सर (औप; णाया १, १ टी—पत्र ५७)।

हायणी स्त्री [हायनी] मनुष्य की दस दशाओं में छठवीं अवस्था (ठा १०—पत्र ५१९, दसु १०)।

हार सक [हारय_] १ नाश करना। २ हारना, पराभव पाना। हारेड, हारसु (उव, महा)। वकृ हारंत (सुपा १५४)।

हार पुं [हार] १ माला, अठारह सर की मोती आदि की माला (कप्प, राय १०२, उवा, कुमा, भवि)। २ हरण, अपहरण (वव १)। ३ द्वीप-विशेष। ४ समुद्र-विशेष (जीव ३, ४—पत्र ३६७)। ५ हरण-कर्ता, 'अदत्त-हारा' (आचा १, २, ३, ५)। °पुड पुंन [°पुट] धातु-विशेष, लोहा (आचा २, ६, १, १)। °भद्द पुं [°भद्र] हार-द्वीप का अधिष्ठाता एक देव (जीव ३, ४—पत्र ३६७)। °महाभद्द पुं [°महाभद्र] हार-द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३, ४)। °महावर पुं [°महावर] हार-समुद्र का एक

अणायरणया स्त्री [अनाचरण] ऊपर देखो (सम ७१)।

अणायरिय देखो अणज्ज = अनार्य (पण्ह १, १, पउम १४, ३०)।

अणायार देखो अणागार = अनाकार (विसे)।

अणायार पु [अनाचार] १ शास्त्र-निषिद्ध आचरण (स १८८)। २ गृहीत नियमो का जान-बूझ कर उल्लघन करना, व्रत-भङ्ग (वव १)।

अणारिय देखो अणज्ज = अनार्य (उवा)।

अणारिस वि [अनार्ष] जो ऋषि-प्रणीत न हो वह (पउम ११, ८०)।

अणारिस वि [अन्यादृश] दूसरे के जैसा (नाट)।

अणालत्त वि [अनालपित] अनुक्त, अकथित, नही बुलाया हुआ (उवा)।

अणालवय पु [अनालपक] मौन, नही बोलना (पाअ)।

अणाव सक [आ + नायय्] मगवाना, अणावेमि (सिरि ६४६)।

अणावरण वि [अनावरण] १ आवरण-रहित। २ न केवल-ज्ञान (सम्म ७१)।

अणाविअ वि [आनायित] मगवाया हुआ (सिरि ६६, ७१८)।

अणाविट्ठि } स्त्री [अनावृष्टि] वर्षा का अभाव
अणावुट्ठि } (पउम २०, ८७, सम ६०)।

अणाविल वि [अनाविल] १ निर्मल, स्वच्छ (गउड)।

अणासंसि वि [अनाशंसिन्] अनिच्छु, निस्पृह (बृह १)।

अणासण देखो अणसण (सूअ १,२,१,१४)।

अणासय पु [अनाश, °क] अनशन, भोजनाभाव, 'खारस्स लोणस्स अणासएण' (सूअ १, ७, १३)।

अणासव वि [अनाश्रव] १ आश्रव-रहित। २ पु आश्रव का अभाव, सवर। ३ अहिंसा, दया (पण्ह २, १)।

अणासिय वि [अनशित] भूखा (सूअ १, ५, २)।

अणाह वि [अनाथ] २ शरण-रहित (निवू ३)। २ स्वामि-रहित, मालिक-रहित। ३ रंक, गरीब, बेचारा (णाया १, ८)। ४ पु एक जैन मुनि (उत्त २०)।

अणाहार पुं [अनाहार] एक दिन का उपवास (सबोध ५८)।

अणाहि } वि [अनाधि, °क] मानसिक
अणाहिय } पीडा से रहित (से ३, ४४, पि ३६५)।

अणाहिट्ठि पु [अनाधृष्टि] एक अन्तकृद् मुनि (अन्त ३)।

अणिइण देखो अणगिण (विचार २२)।

अणिइय वि [अनियत] १ अनियमित, अव्यवस्थित। २ पु ससार (भग ६,३३)।

अणिउंचिय वि [अनिकुञ्चित] टेढ़ा नही किया हुआ, सरल (गउड)।

अणिउंत }
अणिउंतय } देखो अइमुत्त (दे ५, ३८, हे १, १७८, कुमा)।
अणिउंत्तय }

अणिएय वि [अनियत] अनियमित, अप्रतिबद्ध, 'अखिले अगिद्धे अणिएयचारी, अभयकरे भिक्खू अणाविलप्पा' (सूअ १, ७, २८)।

अणिंदिय वि [अनिन्दित] १ जिसकी निन्दा न की गई हो वह, उत्तम (धर्म १)। २ पु किन्नर देव की एक जाति (पण्ण १)।

अणिंदिय वि [अनिन्द्रिय] १ इद्रिय-रहित। २ पु मुक्त जीव। ३ केवलज्ञानी (ठा १०)। ४ वि अतीन्द्रिय, जो इद्रियो से जाना न जा सके, 'नय विज्जइ तग्गहणे लिंगपि अणिंदियत्तणओ' (सुर १२,४८, स १६८, विसे १८६२)।

अणिंदिया स्त्री [अनिन्दिता] ऊर्ध्व लोक मे रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८)।

अणिक्क वि [अनेक] एक से ज्यादा (नव ४३)। °वाइ वि [°वादिन्] अक्रियावादी (ठा ८)।

अणिक्किणी स्त्री [अनीकिनी] ऐसी सेना जिसमे २१८७ हाथी, २१८७ रथ, ६५६१ घोडे और १०६३५ प्यादें हों (पउम ५६, ६)।

अणिक्खित्त वि [अनिक्षिप्त] नही छोड़ा हुआ, अपरित्यक्त, अविच्छिन्न, 'अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेण सजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ' (उवा, औप)।

अणिगण } देखो अणगिण (जीव ३, सम
अणिगिण } १७)।

अणिग्गह वि [अनिग्रह] स्वच्छन्द, असयत (पण्ह १, २)।

अणिच्च वि [अनित्य] नश्वर, अस्थायी (नव २४, प्रासू ६५)। °भावणा स्त्री [°भावना] सासारिक पदार्थों की अनित्यता का चिन्तन (पव ६७)। °णुप्पेहा स्त्री [°नुप्रेक्षा] देखो पूर्वोक्त अर्थ (ठा ४, १)।

अणिट्ठ वि [अनिष्ट] अप्रीतिकर, द्वेष्य (उव)।

अणिट्ठिय वि [अनिष्ठित] असपूर्ण (गउड)।

अणिण देखो अणिरिण (नाट)।

अणिदा स्त्री [दे अनिदा] १ विना ख्याल किये की गई हिंसा (भग १६, ५)। २ चित्त की विकलता। ३ ज्ञान का अभाव (भग १,२)।

अणिमा पुस्त्री [अणिमन्] आठ सिद्धियो मे एक सिद्धि, अत्यन्त छोटा बन जाने की शक्ति (पउम ७, १३६)।

अणिमिस न [अनिमिष] फल-विशेष (दस ५, १, ७३)।

अणिमिस } वि [अनिमिष, °मेष] १ निमेष-
अणिमेस } शून्य (सुर ३, १७३)। २ पु मत्स्य, मछली (दस ५, १)। ३ देव, देवता (वव १, श्रा १६)। °नयण पु [नयन] देव, देवता (विसे ३४८६)।

अणिय न [अनीक] सैन्य, लश्कर (कप्प)।

अणिय न [अनृत] असत्य, झूठ (ठा १०)।

अणिय न [दे] धार, अग्र-भाग (पण्ह २,२)।

अणिय वि [अनित्य] अस्थिर, अनित्य (उव)।

अणियट्ट पु [अनिवर्त] १ मोक्ष, मुक्ति (आचा १,५,१)। २ एक महाग्रह (ठा २, ३)।

अणियट्टि वि [अनिवर्तिन्] १ निवृत्त नही होनेवाला, पीछे नही लौटनेवाला (औप)। २ न शुक्ल-ध्यान का एक भेद (ठा ४,१)। ३ पुं एक महाग्रह (चद २०)। ४ आगामी उत्सर्पिणी काल मे होनेवाले एक तीर्थंकर देव का नाम (सम १६४)।

अणियट्टि वि [अनिवृत्ति] १ निवृत्ति-रहित, व्यावृत्ति-वर्जित (कर्म २, २)। २ नववाँ गुणस्थानक (कर्म २)। °करण न [°करण] आत्मा का विशुद्ध परिणाम-विशेष (आचा)। °बादर न [°बादर] १ नववा गुण-स्थानक। २ नववें गुण-स्थानक में प्रवृत्त जीव (आव ४)।

अणियण देखो अणगिण (जीव ३)।

अधिष्ठायक देव, 'हारसमुद्दे हारवर-हारवर-(?हार)महावरा एत्थ दो देवा महिड्ढीया' (जीव ३, ४—पत्र ३६७)। °वर पु [°वर] १ हार-समुद्र का एक अधिष्ठाता देव। २ द्वीप-विशेष। ३ समुद्र-विशेष। ४ हारवर-समुद्र का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३, ४)। °वरभद्द पुं [°वरभद्र] हारवर-द्वीप का एक अधिष्ठायक देव (जीव ३, ४)। °वरमहाभद्द पुं [°वरमहाभद्र] हारवर-द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३, ४)। °वरमहावर पुं [°वरमहावर] हारवर-समुद्र का एक अधिष्ठायक देव (जीव ३, ४)। °वरावभास पु [°वरावभास] १ एक द्वीप। २ एक समुद्र (जीव ३, ४)। °वरावभास-भद्द पुं [°वरावभासभद्र] हारवरावभास-द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३, ४)। °वरावभासमहाभद्द पु [°वरावभासमहाभद्र] हारवरावभास-द्वीप का एक अधिष्ठायक देव (जीव ३, ४)। °वरावभासमहावर पुं [°वरावभासमहावर] हारवरावभास-समुद्र का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३, ४)। °वरावभासवर पुं [°वरावभासवर] हारवरावभास-समुद्र का एक अधिष्ठायक देव (जीव ३, ४—पत्र ३६७)।

°हार देखो भार (सुपा ३६१, भवि)।

हारअ वि [हारक] नाश-कर्ता (अभि १११)।

हारण वि [हारण] ऊपर देखो, 'धम्मत्थ-कामभोगाण हारणं कारणं दुहसयाण' (पुप्फ २६२, धम्म १० टी)।

हारव देखो हार=हारय्। हारवइ (हे ४, ३१)। भवि. हारविस्सइ (स ५६६)।

हारविअ वि [हारित] नाशित (कुमा, सुपा ५१२)।

हारा स्त्री [दे] लिक्षा जन्तु-विशेष (दे ८, ६६)।

°हारा देखो धारा (कप्प, गा ७८५)।

हारि स्त्री [हारि] १ हार, पराजय (उप पृ ५२)। २ पंक्ति, श्रेणि (कुप्र ३४४)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)।

हारि वि [हारिन्] १ हरण-कर्ता (विसे ३२४५, कुमा)। २ मनोहर, चित्ताकर्षक (गउड)।

हारिअ न [हारीत] १ गोत्र-विशेष, जो कौत्स गोत्र की एक शाखा है। २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३९०, णंदि ४९, कप्प)। °मालागारी स्त्री [°मालाकारी] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)।

हारिअ वि [हारित] १ हारा हुआ, द्यूत आदि में पराजित (सुपा ३६६, महा, भवि)। २ खोया हुआ, गुमाया हुआ (वव १, सुपा १६६)।

हारियंद वि [हारिचन्द्र] हरिचन्द्र का, हरिचन्द्र-कवि का बनाया हुआ (गउड)।

हारिया स्त्री [हारीता] एक जैन मुनि-शाखा (राज)। देखो हारिअ-मालागारी।

हारियायण न [हारितायन] एक गोत्र (कप्प)।

हारी स्त्री [हारी] देखो हारि=हारि (उप पृ ५२, कुप्र ३४४, पिंग)।

हारीय पुं [हारीत] १ मुनि-विशेष। २ न. गोत्र-विशेष (राज)। °वंध पु [°वन्ध] छन्द-विशेष (पिंग)।

हारोस पु [हारोष] १ अनार्य देश-विशेष। २ वि. उस देश का निवासी (पण्ण १—पत्र ५८)।

हाल पुं [दे हाल] राजा सातवाहन, गाथा-सप्तशती का कर्ता (दे ८, ६६, २, ३६, गा ३, वज्जा ९४)।

हाला स्त्री [हाला] मदिरा, दारू (पाअ, कुप्र ४०७; रंभा)।

हालाहल पुं [दे] मालाकार, माली (दे ८, ७५)।

हालाहल पुंस्त्री [हालाहल] १ जन्तु-विशेष, ब्रह्मसर्प, बाम्हनी (दे ६, ९०, पाअ; गा ६२)। स्त्री. °ला (दे ८, ७५)। २ त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (पण्ण १—पत्र ४५)। ३ पुन स्थावर विष-विशेष (दस ६, १, ७, गच्छ २, ४)। ४ पु. रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३३)।

हालाहला स्त्री [हालाहला] एक आजीविक-मतानुयायिनी कुम्हारिन (भग १५—पत्र ६५९)।

हालिअ देखो हलिअ=हालिक (हे १, ६७, प्राप्र)।

हालिज्ज न [हालीय] एक जैन मुनि-कुल (कप्प)।

हालिद्द पु [हारिद्र] १ हल्दी के तुल्य रंग, पीला वर्ण (अणु १०६, ठा ५, १—पत्र २९१)। २ वि. पीला, जिसका रंग पीला हो वह (पण्ण १—पत्र २५, सूअ २, १, १५, भग, औप)। ३ पुन एक देव-विमान (देवेन्द्र १३२)।

हालिया स्त्री [हालिका] देखो हलिआ (राज)।

हालुअ वि [दे] क्षीव, मत्त (दे ८, ६६)।

हाव सक [हापय्] १ हानि करना। २ त्याग करना। ३ परिभव करना। ४ लोप करना, 'थंडिलसामायारिं हावेइ' (वव १), हावए (उत्त ५, २३, सट्ठि २१ टी)। हाव-इज्जा (दस ८, ४१)। वकृ. हावित (विसे २७४६)।

हाव पुं [हाव] मुख का विकार-विशेष (पण्ह २, ४—पत्र १३२, भवि)।

हाव वि [दे] जघाल, द्रुतगामी, वेग से दौड़ने-वाला (दे ८, ७५)।

°हाव देखो भाव=भाव, 'ईसरहावेण' (अच्चु २५)।

हावण वि [हापन] हानि करनेवाला (हे २, १७८)।

हाविर वि [दे] १ जघाल, द्रुतगामी। २ दीर्घ, लम्बा। ३ मन्थर। ४ विरत (दे ८, ७५)।

हास देखो हस=हस्। वकृ. 'न हासमाणो वि गिर वइज्जा' (दस ७, ५४)।

हास सक [हासय्] हँसाना। हासेइ (हे ३, १४९)। कर्म हासीअइ, हासिज्जइ (हे ३, १५२)। वकृ. हासेंत (औप)। कवकृ हासिज्जंत (सुपा ५७)।

हास पु [हास] १ हास्य, हँसी (औप, गच्छ २, ४२, उव, गा ११, ३३२)। २ कर्म-विशेष, जिसके उदय से हँसी आवे वह कर्म (कम्म १, २१, ५७)। ३ अलंकार-शास्त्रोक्त रस-विशेष (अणु १३५)। °कर वि [°कर] हास्य-कारक (सुपा २४३)। °कारि वि [°कारिन्] वही (गउड)।

अणुइण्ण वि [अनुद्गीर्ण] बाहर नहीं निकला हुआ (ओप)।

अणुइण्ण देखो अणुचिण्ण।

अणुइण्ण देखो अणुदिण्ण।

अणुऊल वि [अनुकूल] अप्रतिकूल, अनुकूल (गा ५२३)।

अणुऊल सक [अनुकूलय्] अनुकूल करना। भवि अणुऊलइस्स (पि ५२८)।

अणुओअ पु [अनुयोग] १ व्याख्या, टीका, सूत्र का विस्तार से अर्थ-प्रतिपादन (ओघ २)। २ पृच्छा प्रश्न (अभि ४४)।

अणुओइय वि [अनुयोजित] प्रवर्तित, प्रवृत्त कराया हुआ (णदि)।

अणुओग देखो अणुओअ (विसे ६)।

अणुओग पु [अनुयोग] सम्बन्ध (गु १७)।

अणुओगि पु [अनुयोगिन्] सूत्रों का व्याख्याता आचार्य, 'अणुओगी लोगाण कल समयणामओ दढ होइ' (पचव ४)।

अणुओगिअ वि [अनुयोगिक] दीक्षित, मुनि-शिष्य (णदि)।

अणुओयण न [अनुयोजन] सबन्धन, जोडना (विसे १३८९)।

अणुकंप सक [अनु+कम्प्] १ दया करना। २ भक्ति करना। ३ हित करना। वकृ अणुकपंत (नाट)। कृ अणुकपणिज्ज, अणुकपणीअ (अभि ६४ रयण १५)।

अणुकंप वि [अनुकम्प्य] अनुकम्पा के योग्य (दे १, २२)।

अणुकंप } वि [अनुकम्प, °क] १ दयालु, करुण। २ भक्त, भक्तिमान् (उत्त
अणुकंपय } १२), 'हिआणुकपएण देवेण हरिणगमेसिणा' (कप्प)। ३ हितकर 'आयाणुकंपए णाममेगे, नो पराणुकपए' (ठा ४ ४)।

अणुकंपण न [अनुकम्पन] १ दया, कृपा (वव ३)। २ भक्ति, सेवा, 'माउअणुकंपणट्ठाए' (कप्प)।

अणुकंपा स्त्री [अनुकम्पा] ऊपर देखो (णाया १ १), 'आयरियणुकपाए गच्छो अणुकपिओ महाभागो' (कप्प-टी)। °दाण न [°दान] करुणा से गरीबों को अन्न आदि देना, 'अणुकंपादाण सड्ढयाण न कहिंपि पडिसिद्ध' (धर्म २)।

अणुकंपि वि [अनुकम्पिन्] १ दयालु, कृपालु (माल ७०)। २ भक्ति करनेवाला (सूअ १, ३, २)।

अणुकंपिअ वि [अनुकम्पित] जिस पर अनुकम्पा की गई हो वह (नाट)।

अणुकड्ढ सक [अनु + कृष्] १ खींचना। २ अनुसरण करना। वकृ अणुकड्ढमाण, अणुकड्ढेमाण (विपा १, १, णदि)।

अणुकड्ढि स्त्री [अनुकृष्टि] अनुवर्तन, अनुसरण (पच ५)।

अणुकड्ढिय वि [अनुकृष्ट] अनुकृत, अनुसृत (स १८२)।

अणुकप्प पु [अनुकल्प] १ बडे पुरुषों के मार्ग का अनुकरण। २ वि महापुरुषों का अनुकरण करनेवाला, 'णाणचरणड्ढगाण पुव्वायरियाण अणुकिति कुणइ अणुगच्छइ गुणधारी, अणुकप्प त वियाणाहि' (पचभा)।

अणुकम पु [अनुक्रम] परिपाटी, क्रम (महा)। °सो अ [°शस्] क्रम से, परिपाटी से (जी २८)।

अणुकर सक [अनु + कृ] अनुकरण करना, नकल करना। अणुकरेइ (स ४३६)।

अणुकरण न [अनुकरण] नकल (वव ३)।

अणुकह सक [अनु + कथय्] अनुवाद करना, पीछे बोलना।

अणुकहण न [अनुकथन] अनुवाद (सूअ १, १३)।

अणुकार पु [अनुकार] अनुकरण, नकल (कप्पू)।

अणुकारि वि [अनुकारिन्] अनुकरण करनेवाला, 'किन्नराणुकारिणा महुरसरेण' (महा)।

अणुकिइ स्त्री [अनुकृति] अनुकरण, नकल, पुव्वायरियाण नाणग्गहणेण य तवोविहाणेसु य अणुकिइं करेइ' (पचू)।

अणुकिण्ण वि [अनुकीर्ण] व्याप्त भरा हुआ (पउम ९१, ७)।

अणुकित्तण न [अनुकीर्तन] वर्णन, प्रशसा, श्लाघा (पउम ६३, ७३)।

अणुकित्ति देखो अणुकिइ (पचभा)।

अणुकुइय वि [अनुकुचित] १ पीछे फेंका हुआ। २ ऊचा किया हुआ (निचू ८)।

अणुकुण सक [अनु + कृ] अनुकरण करना। अणुकुणइ (विक्र १२९)।

अणुकूल देखो अणुऊल (हे २, २१७)।

अणुकूलण न [अनुकूलन] अनुकूल करना, प्रसन्न करना, 'त कहइ। तम्मज्झे जिट्ठमुणी तच्चित्तणुकूलणत्थ ज' (सुपा २३४)।

अणुकूलि वि [अनुकूलिन्] अनुकूल-कारक, 'मुहथिरजोगाणुकूलिणो भणिया' (संबोध ०)।

अणुक्कत वि [अन्वाक्रान्त] आचरित, अनुष्ठित (आचा)।

अणुक्कत वि [अनुक्रान्त] आचरित, विहित, अनुष्ठित, 'एस विही अणुक्कते माहणेण मइमया (आचा)।

अणुक्कम सक [अनु + क्रम्] क्रम से कहना। भवि अणुक्कमिस्सामि (जीवस १)।

अणुक्कम सक [अनु + क्रम्] अतिक्रमण करना। वकृ अणुक्कमत (सूअ १, ५, १, ७)।

अणुक्कम देखो अणुकम (महा, नव १६)।

अणुक्कमण न [अनुक्रमण] गमन, गति, (सूअ १, ५, २, २१)।

अणुक्कुइअ वि [अनुकुचित] थोडा सकुचित (पव ६२)।

अणुक्कोस पु [अनुक्रोश] दया, करुणा (ठा ४, ४)।

अणुक्कोस पु [अनुत्कर्ष] १ उत्कर्ष का अभाव। २ वि २ उत्कर्षरहित (भग ८, १०)।

अणुक्खित्त वि [अनुत्क्षिप्त] ऊचा न किया हुआ, 'दिट्ठ वणुक्खित्तमुह एसो मग्गो कुलवहूण' (गा ५२६)।

अणुग वि [अनुग] अनुचर, नौकर (दे ७, ६६)।

अणुग वि [अनुग] अनुसरण-कर्ता (गच्छ ३, ३१)।

अणुगंतव्व देखो अणुगम = अनु + गम्।

अणुगंपा स्त्री [अनुकम्पा] करुणा, दया (स १५८)।

अणुगंपिय वि [अनुकम्पित] जिस पर करुणा की गई हो वह (स ४७५)।

अणुगच्छ देखो अणुगम = अनु + गम्। अणुगच्छइ। वकृ अणुगच्छत, अणुगच्छमाण

ह्रास पुं [ह्रास] क्षय, हानि (धर्मसं ११६४)।

ह्रास देखो हरिस = हर्ष (श्रौप)।

ह्रासंकर देखो ह्रास-कर (सुपा ७८)।

ह्रासंकुहय वि [हास्यकुहक] हास्य-जनक कौतुक-कर्ता (दस १०, २८)।

ह्रासण वि [हासन] १ हास्य करानेवाला (पव ७३ टी)। २ हास्य-कर्ता (आचा २, १५, ५)।

ह्रासा स्त्री [ह्रासा] एक देवी (महा)।

ह्रासाविअ } वि [हासित] हँसाया हुआ
ह्रासिअ } (गा १२३, षड्, कुमा, हे ३, १५६)।

ह्रासि वि [हासिन्] हास्य कर्ता (आचा २, १५, ५)।

ह्रासिअ वि [हास्य] हँसने योग्य, 'वड्डु-आरअ पई मा हु पुत्ति जणहासिअ कुणसु' (गा ६०५, हे ३, १०५)।

°ह्रासिअ देखो भासिअ = भाषित (नाट—विक्र ६१)।

ह्रासीअ न [दे हास्य] हास, हँसी (दे ८, ६२)।

हाहक्कार देखो हाहा-कार, 'हाहक्कारमुहरवा' (पउम १७, १०)।

हाहा पु [हाहा] गन्धर्व देवों की एक जाति (सुपा ५६, कुमा, धर्मवि ४८)। २ अ विलाप, हाहाकार, शोकध्वनि (पाअ, भग ७, ६—पत्र ३०५)। °कय न [°कृत] हाहाकार, शोक-शब्द (णाया १, ६—पत्र १५७)। °कार पुं [°कार] वही (महा, भवि, वेणी १३६)। °भूअ वि [°भूत] हाहाकार को प्राप्त (भग ७, ६—पत्र ३०५)। °रव पु [°रव] हाहाकार (महा; सुपा १३६, भवि)। °हूहू [°हूहू] संख्या-विशेष 'हाहाहूहूअग' को चौरासी लाख से गुनने पर जो संख्या लब्ध हो वह (इक)। °हूहूअग न [°हूहूअङ्ग] संख्या-विशेष, 'अमम' को चौरासी लाख से गुनने पर जो संख्या लब्ध हो वह (इक)।

हि अ [हि] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ अवधारण, निश्चय (स्वप्न १०)। २ हेतु, कारण (कुमा ८, १७, कप्पू)। ३ एवम्, इस तरह (गउड ३२४, सण)। ४ विशेष। ५ प्रश्न। ६ सभ्रम। ७ शोक। ८ असूया। ६ पाद-पूरण (कुमा, गउड, गा २४२, २६५, ६०२, ६४८, पिंग, हे २, २१७)।

हिअ वि [हृत] १ अपहृत, छीना हुआ (णाया १, १६—पत्र २१५, पउम ५, ७३, ३०, २०, सुर ६, १७५)। २ नीत, जो दूसरी जगह ले जाया गया हो वह (पाअ, हे १, १२८)। ३ विनष्ट, स्फोटित (पिंड ४१५)। ४ आकृष्ट, खींचा हुआ, 'हियहियए' (राय)।

हिअ न [हित] १ मङ्गल, कल्याण। २ उपकार, भलाई (उत्त १, ६, पउम ६५, २१, उव, ठा ४, ४ टी—पत्र २८३, प्रासू १४)। ३ वि. हित-कारक, उपकारी (उत्त १, २८, २६, उव ३२६, ४५०; प्रासू १४)। ४ स्थापित, निहित (भत्त ७८)। °कर वि [°कर] १ हितकारक (ठा ६)। २ पु. दो उपवास (सबोध ५८)। ३ एक वणिक् का नाम (पउम ५, २८)। °कार वि [°कार] हित-कारक (श्रु १४६)। °यर देखो °कर (पउम ६५, २१)।

°हिअ देखो हिअय = हृदय (हे १, २६६, कुमा, आचा, कप्प)। °इट्ठ वि [°इष्ट] मन प्रिय (पउम ८५, २३)। °उड्डावण वि [°उड्डायन] चित्ताकर्षण का साधन (णाया १, १४—पत्र १८७)। २ चित्त को शून्य बनानेवाला (विपा १, २—पत्र ३६)।

°हिअ न [घृत] घी (सुख १८, ४३)।

हिअउल्ल (अप) देखो हिअय = हृदय (कुमा)।

हिअंकर पु [हितङ्कर] राम-पुत्र कुश के पूर्व जन्म का नाम (पउम १०४, २६)।

हिअड } (अप) देखो हिअय = हृदय (हे
हिअडुल्ल } ४, ३५०, पि ५६६, सण)।

हिअय न [हृदय] १ अन्त करण, हिया, मन (हे १, २६६, स्वप्न ३३, कुमा, गउड, द ४६, प्रासू ४४)। २ वक्षस्, छाती (से ४, २१)। ३ पर ब्रह्म (प्राप्र)। °गमणीअ वि [°गमनीय] हृदयगम, मनोहर (सम ६०)। °हारि वि [°हारिन्] चित्ताकर्षक (उप ७२८ टी)।

हिअय देखो हिअ = हित, 'कुद्धेहि जेहि जणो अयाणगो हिअयमग्गम्मि' (उप ७६८ टी)।

हिअयंगम वि [हृदयंगम] मनोहर, चित्ताकर्षक (दे १, १)।

हिआली स्त्री [हृदयाली] काव्य-समस्या विशेष, गूढार्थक काव्य-विशेष (वज्जा १२४)।

हिइ स्त्री [हृति] १ अपहरण। २ न. स्थानान्तर मे ले जाना (संक्षि ५)।

हिएसअ वि [हितैषक] हितेच्छु, हित चाहनेवाला (उत्त १४, २८)।

हिएसि वि [हितैषिन्] ऊपर देखो (उत्त १३, १५, उप ७२८ टी; सुपा ६०४, पुप्फ १०)।

हिओ अ [ह्यस्] गत कल (अभि ५६, प्राप, पि १३४)।

हिंग पुं [दे] जार, उपपति (दे १, ४)।

हिंगु पुंन [हिङ्गु] १ वृक्ष-विशेष, हींग का गाछ (पण्ण १—पत्र ३४)। २ हींग, 'डाए लोणे हिंगू सकामण फोडणे घूमे' (पिंड २५०, स २५८, चारु ७)। °सिव पु [°शिव] व्यन्तर देव-विशेष (दसनि १, ६६)।

हिंगुल पुन [हिङ्गुल] पार्थिव धातु-विशेष, हिंगुल, सिंगरफ (पण्ण १—पत्र २५, ती २, जी ३, सुख ३६, ७५)।

हिंगुलु पुंन [हिङ्गुलु] ऊपर देखो (उत्त ३६, ७५, कप्प)।

हिंगोल पुन [दे] मृतक-भोजन, किसी के मरण के उपलक्ष्य मे दी जाती जमीन, श्राद्ध। २ यक्ष आदि के यात्रा के उपलक्ष्य में किया जाता जीमनवार (आचा २, १, ४, १)।

हिंचिअ न [दे] एक पैर से चलने की बाल-क्रीडा (दे ८, ६८)।

हिंजीर न [हिञ्जीर] शृङ्खलक, सिकरी, सांकल (दे ६, ११६, गउड)।

हिंड सक [हिण्ड्] १ भ्रमण करना। २ जाना, चलना। हिंडइ (सुपा ३८४, महा), हिंडिज्जा (ओघ २५४)। कर्म. हिंडिज्जइ (प्रासू ४०)। वकृ. हिंडत (गा १३८)। कृ हिंडि-

अणुग्घास सक [अनु+ग्रासय्] खीलाना, भोजन कराना, 'असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अणुग्घासेज्ज वा अणुपाएज्ज वा' (निसी ७)। वकृ अणुग्घासंत (निचू ७)।

अणुचय पु [अनुचय] फैलाकर इकट्ठा करना (उप पृ १५)।

अणुचर सक [अनु+चर्] १ सेवा करना। २ पीछे-पीछे जाना, अनुसरण करना। ३ अनुष्ठान करना। अणुचरइ (आरा ६)। अणुचरति (स १३०)। कर्म अणुचरिज्जइ। (विसे २५५४)। वकृ अणुचरंत (पुप्फ ३१३) संकृ अणुचरित्ता (चउ १८)।

अणुचर देखो अणुअर (उत्त २८)।

अणुचरग वि [अनुचरक] सेवा करनेवाला (पव ६६)।

अणुचरिय वि [अनुचरित] अनुष्ठित, विहित, किया हुआ (कप्प)।

अणुचि सक [अनु+च्यु] मरना, एक जन्म से दूसरे जन्म में जाना। संकृ अणुचिऊण (महा)।

अणुचिंत सक [अनु+चिन्त्] विचारना, याद करना, सोचना। अणुचिंते (सया ६६)। वकृ अणुचिंतेमाण (णाया १,१)। संकृ अणुचीइ, अणुचीति, अणुवीइ (आचा, सूअ १, १, ३, १३; दस ७)।

अणुचिंतण न [अनुचिन्तन] सोच-विचार, पर्यालोचन (आव ४)।

अणुचिंता स्त्री [अनुचिन्ता] ऊपर देखो (आव ४)।

अणुचिट्ठ सक [अनु+स्था] १ अनुष्ठान करना। २ करना। अणुचिट्ठइ। (महा)।

अणुचिण्ण वि [अनुचीर्ण] १ अनुष्ठित, आचरित, विहित, 'मोहतिगिच्छा य कया, विरियायारो य अणुचिण्णो' (ओघ २४६)। २ प्राप्त, मिला हुआ, 'कायसफासमणुचिण्णा एगइया पाणा उद्दाइया' (आचा)। ३ परिणमित (जीव १)।

अणुचिण्णव वि [अनुचीर्णवत्] जिसने अनुष्ठान किया हो वह (आचा)।

अणुचिन्न देखो अणुचिण्ण (सुपा १६२, रयण ७५, पुप्फ ७२)।

अणुच्चिय वि [अनुचित] अयोग्य (बृह १)।

अणुचीइ, अणुचीति } देखो अणुचिंत।

अणुच्च वि [अनुच्च] ऊंचा नहीं, नीचा। °कुइय वि [°कुचिक] नीची और अस्थिर शय्या वाला (कप्प)।

अणुच्छहंत वि [अनुत्सहमान] उत्साह नहीं रखता हुआ (पउम १८,१८)।

अणुज्झिअत्त वि [अनुज्झितत्व] नहीं छोड़ा हुआ, अ यक्त (गउड २३८)।

अणुच्छित्त वि [अनुत्थित] १ गर्व-रहित, विनीत। २ स्फीत, समृद्ध। ३ सब से उन्नत, सवाच 'पडिबद्ध नवर तुम, नारदचन पयावियटपि। गहवलयमगणुच्छित्ते धुवेव्व, परियत्तइ णरिंद' (गउड)।

अणुच्छूढ वि [अनुत्क्षिप्त] अव्यक्त, नहीं छोड़ा हुआ (गा ५७६)।

अणुज पु [अनुज] छोटा भाई (स ३८८)।

अणुजत्त न [अनुयात्र] यात्रा में, 'अणणाया अणुजत्त निग्गओ पेच्छइ कुसुमियं चूयं' (महा)।

अणुजत्ता स्त्री [अनुयात्रा] निर्गम, निःसरण (पिंड ८८)।

अणुजा सक [अनु+या] अनुसरण करना, पीछे चलना। अणुजाइ (विसे ७१६)।

अणुजाइ वि [अनुयायिन्] अनुसरण करनेवाला (सुपा ८०५)।

अणुजाइ स्त्री [अनुयाति] अनुसरण (धर्मवि ८६)।

अणुजाण न [अनुयान] १ पीछे-पीछे चलना। २ महोत्सव-विशेष, रथयात्रा (बृह १)।

अणुजाण सक [अनु+ज्ञा] अनुमति देना, सम्मति देना। अणुजाणाइ (उव)। भूका. अणुजाणित्था (पि ५१७)। हेकृ. अणुजाणित्तए (ठा २,१)।

अणुजाणण न [अनुज्ञान] अनुमति, सम्मति (सूअ १, ६)।

अणुजाणावण न [अनुज्ञापन] अनुमति लेना, अणुजाणावणविहिणा' (पचा ६, १३)।

अणुजाणिय वि [अनुज्ञात] सम्मत, अनुमत (सुपा ५८४)।

अणुजाय वि [अनुयात] १ अनुगत, अनुसृत (उप १३७ टी)।

अणुजाय वि [अनुजात] १ पीछे से उत्पन्न। २ सदृश, तुल्य 'समभागणुजाए' (सुज्ज १२)।

अणुजीव सक [अनु+जीव्] आश्रय करना। अणुजीवंति (उत्त १८, १८)।

अणुजीवि वि [अनुजीविन्] १ आश्रित, नौकर, सेवक पर्याप्त, प्रिय अणुजीविविच्छड्डे' (सुपा ३३७, पाअ; स ५८३)। °त्तण न [°त्व] आश्रय, नौकरी (स ५६७)।

अणुजुंज सक [अनु+युज्] प्रश्न करना। कर्म अणुजुज्जंते (धर्मसं २८३)।

अणुजुत्ति स्त्री [अनुयुक्ति] योग्य युक्ति, उचित न्याय (सूअ १, ३, ३)।

अणुजेट्ठ वि [अनुज्येष्ठ] १ बड़े के नजदीक का (आचा)। २ छोटा, उतरता (पउम २२, ७६)।

अणुजोग देखो अणुओअ (ठा १०)।

अणुज्ज वि [अनोजस्] उत्साह-रहित, अनुत्साही हताश (कप्प)।

अणुज्ज वि [अनोजस्क] तेजरहित, फीका, 'अणुज्ज दीणवयणं चिट्ठइ' (कप्प)।

अणुज्ज वि [अनूद्य] उद्देश्य, लक्ष्य (धर्म १)।

अणुज्जा स्त्री [अनुज्ञा] अनुमति, सम्मति (पउम ३८, २४)।

अणुज्जा देखो अणोज्जा (आचा २, १५, ३)।

अणुज्जिय वि [अनूर्जित] बल-रहित, निर्बल (बृह ३)।

अणुज्जुय वि [अनृजुक] असरल, वक्र, कपटी (गा ७८६)।

अणुज्झा सक [अनु+ध्या] चिन्तन करना, ध्यान करना। संकृ अणुज्झाइत्ता (आचा)।

अणुज्झाण न [अनुध्यान] चिन्तन, विचार (आवम)।

अणुझा देखो अणुज्झा। वकृ अणुझायंत (कुमा)।

अणुज्झिअ वि [दे] १ प्रयत, प्रयत्न-शील। २ जागता, सावधान (षड्)।

अणुझिज्जिर वि [अनुक्षयिन्] क्षीण होनेवाला (वज्जा १२)।

अणुट्ठ वि [अनुत्थ] नहीं उठा हुआ, स्थित (ओघ ७०)।

अणुट्ठा सक [अनु+स्था] १ अनुष्ठान करना, शास्त्रोक्त विधान करना। २ करना। कृ अणु-

यव्व (उप पृ ५०, महा)। सकृ. हिंडिय (महा)। हेकृ. हिंडिउं (महा)।

हिंडग वि [हिण्डक] १ भ्रमण करनेवाला (पंचा १८, ८)। २ चलनेवाला (अणु १२६)।

हिंडण न [हिण्डन] १ परिभ्रमण, पर्यटन (पउम ६७, १८, स ४६)। २ गमन, गति (उप १०१७)। ३ वि. भ्रमण-शील (दे २, १०६)।

हिंडि स्त्री [हिण्डि] परिभ्रमण, पर्यटन; 'वासुदेवाइणो हिंडी राय-वसुभवाण वि। ताण्णएवि कह हुंता न हुंतं जइ कम्मयं (कर्म १६)।

हिंडि पुं [हिण्डिन्] रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३३)।

हिंडिअ वि [हिण्डित] १ चला हुआ, चलित, गत (महा ३४)। जहाँ पर जाया गया हो वह, 'हिंडियं असेसं गामं' (महा ६१)। ३ न. गति, गमन, विहार (णाया १, ६—पत्र १६५, ओघ २५४)।

हिंडुअ पुं [दे. हिण्डुक] आत्मा, जीव, जन्मान्तर माननेवाला आत्मा, हिन्दु (भग २०, २—पत्र ७७६)।

हिंडोल न [दे] १ खेत में पशुओं को रोकने की आवाज। २ क्षेत्र की रक्षा का यन्त्र (दे ८, ६६)।

हिंडोल देखो हिंदोल (स ५२१)।

हिंडोलण न [दे] १ रत्नावली, रत्नमाला। २ क्षेत्र की रक्षा की आवाज, खेत में पशु आदि को रोकने का शब्द (दे ८, ३६)।

हिंडोलय देखो हिंडोल (दे ८, ६६)।

हिंताल पुं [हिन्ताल] वृक्ष-विशेष (उप १०३१ टी, कुमा)।

हिंद सक [ग्रह्] स्वीकार करना, ग्रहण करना। हिंदइ (प्राकृ ७०, धात्वा १५७)। कर्म. हिंदिज्जइ (धात्वा १५७)। सकृ. हिंदिऊण (प्राकृ ७०, धात्वा १५७)।

हिंदोल सक [हिन्दोलय्] झूलना। वकृ. हिंदोलअत (कप्पू)।

हिंदोल पु [हिन्दोल] हिंडोला, झूलना, दोला (कप्पू)।

हिंदोलग न [हिन्दोलन] झूलना, दोलन (कप्पू)।

हिंविअ न [दे] एक पैर से चलने की बाल-क्रीडा (दे ८, ६८)।

हिंस सक [हिंस्] १ वध करना। २ पीडा करना। हिंसइ, हिंसई (आचा, पव १२१)। भूका. हिंसिसु (आचा, पव १२१)। भवि. हिंसिस्सइ, हिंसिस्सति, हिंसेही (पि ५१६, आचा, पव १२१)। वकृ. हिंसमाण (आचा)। कृ. हिंस, हिंसियव्व (उप ६२५, पण्ह १, १—पत्र ५, २, १—पत्र १००, उव)।

हिंस वि [हिंस्र] १ हिंसा करनेवाला, हिंसक (उत्त ७, ५, पण्ह १, १—पत्र ५, विसे १७६३, पंचा १, २३, उप ६२५, स ५०)। °प्पदाण, °प्पयाण न [°प्रदान] हिंसा के साधन-भूत खड्ग आदि का दान (औप, राज)।

हिंस° देखो हिंसा (पण्ह १, १—पत्र ५)। °प्पेहि वि [°प्रेक्षिन्] हिंसा को देखनेवाला (ठा ५, १—पत्र ३००)।

हिंसअ } वि [हिंसक] हिंसा करनेवाला
हिंसग } (भग, ओघ ७५२, उत्त ३६, २५६, उव, कुप्र २६)।

हिंसण न [हिंसन] हिंसा, 'अहिंसण सव्व-जियाण धम्मो' (सत्त ४२)।

हिंसा स्त्री [हिंसा] १ वध, घात (उवा, महा, प्रासू १४३)। २ वध, बन्धन आदि से जीव को की जाती पीड़ा, हैरानी (ठा ४, १—पत्र १८८)।

हिंसा स्त्री [हेषा] अश्व का शब्द, 'गयगज्जि हयहिंसं च तप्पुरओ केवि कुव्वता' (सुपा १६४)।

हिंसिय वि [हिंसित] हिंसा-प्राप्त (राज)।

हिंसिय न [हेषित] अश्व शब्द (पउम ६, १८०, दस ३, १ टी)।

हिंसी स्त्री [हिंसी] लता-विशेष (गउड)।

हिंहु पु [दे] हिन्दू, हिन्दुस्तान का निवासी (पिंग)।

हिक्का स्त्री [दे] रजकी, धोबिन (दे ८, ६६)।

हिक्का स्त्री [हिक्का] रोग-विशेष, हिचकी (सुपा ४८६)।

हिक्कास पुं [दे] पङ्क, कादा (दे ८, ६६)।

हिक्किअ न [दे] हेषा-रव, अश्व-शब्द (दे ८, ६८)।

हिज्ज देखो हर = हृ।

हिज्ज° देखो ह्य।

हिज्जा } अ [दे. ह्यस्] गत कल (षड्;
हिज्जो } दे ८, ६७, पाअ, प्रयौ १३, पि १३४)।

हिज्जो अ [दे] आगामी कल (दे ८, ६७)।

हिट्ट वि [दे] आकुल (दे ८, ६७)।

हिट्ठ देखो हेट्ठ (सुर ४, २२५, महा, सुपा ६८)।

हिट्ठ देखो हट्ठ = हृष्ट (उव, सम्मत्त ७५)।

हिट्टाहिड वि [दे] आकुल (दे ८, ६७)।

हिट्ठिम देखो हेट्ठिम (सिरि ७०८, सुज्ज १०, ५ टी)।

हिट्ठिल्ल देखो हेट्ठिल्ल (सम ८७)।

हिडिंब पु [हिडिम्ब] १ एक विद्याधर राजा (पउम १०, २०)। २ एक राक्षस (वेणी १७७)। ३ देश-विशेष (पउम ६८, ६५)।

हिडिंबा स्त्री [हिडिम्बा] एक राक्षसी, हिडिम्ब राक्षस की बहिन (हे ४, २९९)।

हिडोलणय देखो हिडोलण (दे ८, ७६)।

हिड्डु वि [दे] वामन, खर्व (दे ८, ६७)।

हिणिद वि [भणित] उक्त, कथित, 'खणपा-हुणिआ देअरजाआ ए सुहअ किं ति दे ह-(हि)णिदा' (गा ६६३)।

हिण्ण सक [ग्रह्] ग्रहण करना। हिण्णइ (धात्वा १५७)।

हिण्ण (अप) देखो हीण (पिंग)।

°हिण्ण देखो भिण्ण (गा ५६३)।

हितअ } (पै) देखो हिअअ = हृदय (प्राप्र,
हितप } षड्, वाग्र १६, पि २५४, हे ४, ३१०, कुमा, प्राकृ १२४)।

हित्थ वि [दे] १ लज्जित (दे ८, ६७, षण ६)। २ त्रस्त, भय-भीत (दे ८, ६७, हे २, १३६, प्राप्र, गा ३८६, ७६३, सुर १६, ६१, कुमा)। ३ हिंसित, मारा हुआ, 'हित्थो व ण हित्थो मे सत्तो, भणियँ व न भणियं मोस' (वव १)।

हित्था स्त्री [दे] लज्जा, शरम (दे ८, ६७)।

(कर्म) (भग १, २, ३), 'उदिरएण = उदित' (भग १, ४, ७ टी)।

अणुदिण्ण } व [अनुदीरित] १ जिसकी
अणुदिन्न } उदीरणा दूर भविष्य में हो। २ जिसकी उदीरणा भविष्य में न हो (भग १, ३)।

अणुदिय वि [अनुदित] उदय को अप्राप्त 'मिच्छत्त जमुदिन्नं न खीणं अणुदियं च उवसंतं' (भग १, ३ टी)।

अणुदियह न [अनुदिवस] प्रतिदिन, हमेशा (सुर १, ११५)।

अणुदिव न [दे] प्रभात, प्रातःकाल (षड्)।

अणुदिसा } स्त्री [अनुदिक्] विदिक्,
अणुदिसी } ईशान कोण आदि विदिशा (विसे २७०० टी, पि ६८, ४१३, कप्प)।

अणुद्दिट्ठ वि [अनुद्दिष्ट] जिसका उद्देश्य न किया गया हो वह (पण्ह २, १)।

अणुद्ध वि [अनूर्ध्व] ऊंचा नहीं, नीचा (कुमा)।

अणुद्धय वि [अनुद्धत] सरल, भद्र, विनयी (उप ७६८ टी)।

अणुद्धरि पु [अनुद्धरिन्] एक क्षुद्र जन्तु, कुंथु (कप्प)।

अणुद्धिय वि [अनुद्धृत] १ जिसका उद्धार न किया गया हो वह। २ बाहर नहीं निकाला हुआ, 'जं कुणइ भावसल्लं अणुद्धियं इत्थ सव्वदुहमूलं' (श्रा ४०)।

अणुद्धुय वि [अनुद्धूत] अपरित्यक्त, नहीं छोड़ा हुआ (कप्प)।

अणुधम्म पु [अणुधर्म] गृहस्थ-धर्म (विसे)।

अणुधम्म पु [अनुधर्म] अनुकूल—हितकर धर्म 'एसोणुधम्मो मुणिणा पवेइओ' (सूअ १, २, १)। °चारि वि [°चारिन्] हितकर धर्म का अनुयायी, जैन-धर्मी (सूअ १, २, २)।

अणुधम्मिय वि [अनुधार्मिक] धर्म के अनुकूल, धर्मोचित, 'एयं खु अणुधम्मियं तस्स' (आचा)।

अणुधाव सक [अनु + धाव्] पीछे दौड़ना। वकृ. अणुधावंत (से ४, २१)।

अणुधावण सक [अनुधावन] पीछे दौड़ना (सुपा ५०३)।

अणुधाविर वि [अनुधावितृ] पीछे दौड़नेवाला (उप ७२८ टी)।

अणुनाइ वि [अनुनादिन्] प्रतिध्वनि करनेवाला (कप्प)।

अणुनाय वि [अनुज्ञात] अनुमत, जिसको अनुमति दी गई हो वह, 'आहवणे मोक्कलय अणुनायाए तए नाह' (सुपा ४७७)।

अणुनास देखो अणुणास (जीत ३ टी)।

अणुन्नव देखो अणुण्णव। वकृ अणुन्नवेमाण (ठा ५, ३)। कृ अणुन्नवेयव्व (कस)। संकृ अणुन्नवेत्ता (कस)।

अणुन्नवणा देखो अणुण्णवणा (ओघ ६३०, कस)।

अणुन्नवणी देखो अणुण्णवणी (ठा ८, १)।

अणुन्ना देखो अणुण्णा (सुर ४, १३३, प्रासू १८१)।

अणुन्नाय देखो अणुण्णाय (ओघ १, महा)।

अणुपथ पु [अनुपथ] १ समीप का मार्ग (कस)। २ मार्ग के समीप, रास्ता के पास (बृह २)।

अणुपत्त वि [अनुप्राप्त] प्राप्त, मिला हुआ (सुर ४, २११)।

अणुपन्न वि [अनुपन्न] प्राप्त (कुप्र ४०१)।

अणुपयट्ट वि [अनुप्रवृत्त] अनुसृत, अनुगत (महा)।

अणुपयाण न [अनुप्रदान] दान का बदला प्रतिग्रहण (सबोध ३४)।

अणुपरियट्ट सक [अनुपरि + अट्] घूमना, परिभ्रमण करना। संकृ अणुपरियट्टित्ताण, 'देवे णं भंते महिड्ढिए, पभू लवणसमुद्दं अणुपरियट्टित्ताणं हव्वमागच्छित्तए ?' (भग १८, ७)। कृ अणुपरियट्टियव्व (णाया १, ६)। हेकृ अणुपरियट्टेउ (णाया १, ६)।

अणुपरियट्ट अक [अनुपरि + वृत्] फिरना, फिरते रहना, 'दुक्खाणमेव आवट्टं अणुपरियट्टइ' (आचा)। वकृ अणुपरियट्टमाण आचा)। संकृ अणुपरियट्टित्ता (औप)।

अणुपरियट्टण न [अनुपर्यटन] परिभ्रमण (सूअ १, १, २)।

अणुपरियट्टण न [अनुपरिवर्तन] परिवर्तन, फिरना (भग १, ६)।

अणुपरिवट्ट देखो अणुपरियट्ट = अनुपरि + वृत्। वकृ अणुपरिवट्टमाण (पि २८९)।

अणुपरिवाडि, °डी स्त्री [अनुपरिपाटि, °टी] अनुक्रम (से १५ ६६, पउम २०, ११, ३२, १६)।

अणुपरिहारि वि [अणुपरिहारिन्] 'परिहारी' को मदद करनेवाला, त्यागी मुनि की सेवा-शुश्रूषा करनेवाला (ठा ३, ४)।

अणुपरिहारि वि [अनुपरिहारिन्] ऊपर देखो (ठा ३, ४)।

अणुपवन्न वि [अनुप्रपन्न] प्राप्त (सूअ २, ३, २१)।

अणुपवाएत्तु वि [अनुप्रवाचयितृ] पढ़ानेवाला, पाठक, उपाध्याय (ठा ५, २)।

अणुपवाय देखो अणुप्पवाय = अनुप्र + वाचय्।

अणुपविट्ठ वि [अनुप्रविष्ट] पीछे से प्रविष्ट (णाया १, १, कप्प)।

अणुपविस सक [अनुप्र + विश्] १ पीछे से प्रवेश करना। २ प्रवेश करना, भीतर जाना। अणुपविसइ (कप्प)। वकृ अणुपविसंत (निचू २)। संकृ अणुपविसित्ता (कप्प)।

अणुपवेस पुं [अनुप्रवेश] प्रवेश, भीतर जाना। (निचू ७)।

अणुपस्स सक [अनु + दृश्] पर्यालोचन करना, विवेचना करना। संकृ अणुपस्सिय (सूअ १, ७, २)।

अणुपस्सि वि [अनुदर्शिन्] पर्यालोचक, विवेचक (आचा)।

अणुपाल सक [अनु + पालय्] १ अनुभव करना। २ रक्षण करना। ३ प्रतीक्षा करना, राह देखना। अणुपालेइ (महा), वकृ. 'सायासोक्खमणुपालंतेण' (पक्खि), अणुपालिंत, अणुपालेमाण (महा)। संकृ. अणुपालेऊण, अणुपालित्ता, अणुपालिय (महा, कप्प, पि ५७०)।

अणुपालण न [अनुपालन] रक्षण, प्रतिपालन (पंचभा)।

अणुपालणा देखो अणुवालणा (विसे २५२० टी)।

हिदि अ [हृदि] हृदय में 'हिदि निरुद्धवाउव्व' (विसे २२०)।

हिद्ध वि [दे] स्रस्त, खिसका हुआ, खिसक कर गिरा हुआ (पड्)।

हिम न [हिम] १ तुषार, आकाश से गिरता जल-कण (पाअ, आचा, से २, ११)। २ चन्दन, श्रीखण्ड (से २, ११)। ३ शीत, ठंढी, जाड़ा (बृह १)। ४ बर्फ, जमा हुआ जल (कप्प जी ५)। ५ पु छठवीं नरक-पृथिवी का पहला नरकेन्द्रक—नरक-स्थान (देवेन्द्र १२)। ६ ऋतु-विशेष, मार्गशीर्ष तथा पौष का महीना (उप ७२८ टी)। °कर पु [°कर] चन्द्रमा, चाँद (सुपा ५१)। °गिरि पुं [°गिरि] हिमाचल पर्वत (कुमा, भवि; सण)। °धाम पुं [°धामन्] वही (धम्म ६ टी)। °नग पु [°नग] वही (उप पृ ३४८)। °यर देखो °कर (पाअ)। °व, °वत पुं [°वत्] १ वर्षधर पर्वत-विशेष, 'हिमवो य महाहिमवो' (पउम १०२, १०५, उवा, कप्प, इक)। २ हिमाचल पर्वत (पि ३९६)। ३ राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र (अंत ३)। ४ एक प्राचीन जैन मुनि, जो स्कन्दिलाचार्य के शिष्य थे, 'हिमवतखमासमणे वंदे' (णंदि ५२)। °वाय पुं [°पात] तुषार-पतन (आचा)। °सीयल पु [°शीतल] कृष्ण पुद्गल-विशेष (सुज्ज २०)। °सेल पु [°शैल] हिमालय पर्वत (उप २११ टी)। °गम पुं [°गम] ऋतु-विशेष, हेमन्त ऋतु (गा ३३०)। °णी स्त्री [°नी] हिम-समूह (कुप्र ३९७)। °यल पुं [°चल] हिमालय पर्वत (सुपा ६३२)। °लय पु [°लय] वही अर्थ (पउम १०, १३, गउड)।

हिर देखो किर = किल (हे २, १८६, कुमा)।

हिरडी स्त्री [दे] चील पक्षी की मादा (दे ८, ६८)।

हिरण्ण } न [हिरण्य] १ रजत, चाँदी
हिरन्न } (उवा कप्प)। २ सुवर्ण, सोना (आचा, कप्प)। ३ द्रव्य, धन (सूअ १, ३, २, ८)। °क्ख पु [°क्ष] एक दैत्य (से ४, २२)। °गब्भ पु [°गर्भ] १ ब्रह्मा। २ प्रथम जिन भगवान् (पउम १०९, १२),

'गब्भट्ठिअस्स जस्स उ
हिरण्णवुट्ठी सकंचणा पडिया।
तेणं हिरण्णगब्भो
जयम्मि उवगिज्जए उसभो।'
(पउम ३, ६८)।

हिरि अक [ह्री] लज्जित होना। हिरिआमि (अभि २५५)।

हिरि° देखो हिरी (गाया १, १६—पत्र २१७, पड्)। °म वि [°मत्] लज्जालु, शरमिन्दा (उत्त ११, १३, ३२ १०३, पिंड ५२६)। °वेर पुं [°वेर] तृण-विशेष, सुगन्धवाला (पाअ, उत्तनि ३)।

हिरि पुं [हिरि] भालूक भालू का शब्द (पउम ४५)।

हिरिअ वि [ह्रीत] लज्जित (हे २, १०४)।

हिरिआ स्त्री [ह्रीका] लज्जा, शरम (उप ७०६, कुमा)।

हिरिंब न [दे] पल्वल, क्षुद्र तलाव (दे ८, ६९)।

हिरिमिथ पु [दे] चना, अन्न-विशेष (दे ८, ७०)। देखो हरिमिथ।

हिरिली स्त्री [दे] कन्द-विशेष (उत्त ३६, ९८)।

हिरिवंग पु [दे] लगुड, लट्ठी (दे ८, ६३)।

हिरी स्त्री [ह्री] १ लज्जा, शरम (आचा, हे २, १०४)। २ महापद्म-ह्रद की अधिष्ठात्री देवी (ठा २, ३—पत्र ७२)। ३ उत्तर रुचक-पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७)। ४ सत्पुरुष नामक किंपुरुषेन्द्र की एक अग्र महिषी (ठा ४, १—पत्र २०४)। ५ महाहिमवान् पर्वत का एक कूट (इक)। ६ देवप्रतिमा-विशेष (गाया १, १ टी—पत्र ४३)।

हिरीअ देखो हिरिअ (हे २, १०४)।

हिरे देखो हरे (प्राप्र)।

हिला स्त्री [दे] भुजा, हाथ,

'वच्चामो पेच्छता वणदलपावरण-
साहुलिहिलाओ।'
(पृथ्वी० चं०-शांतिसूरि)

साहुलिहिलाओ त्ति शाखाभुजा।
(पृथ्वी० चं० प्रथमभव, सकेतकार रत्नप्रभकृत)।

हिला } स्त्री [दे] वालुका, वालू, रेती (दे ८,
हिल्ला } ६६)।

हिल्लिय पुंस्त्री [दे] कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (पण्ण १—पत्र ४५)।

हिल्लिरी स्त्री [दे] मछली पकड़ने का जाल-विशेष (विपा १, ८—पत्र ८५)।

हिल्लूरी स्त्री [दे] लहरी, तरङ्ग (दे ८, ६७)।

हिल्लोडण न [दे] खेत में पशुओं को रोकने की आवाज (दे ८, ६९)।

हिव देखो हुव = भू। हिवइ (हे ४, २३८)।

हिसोहिसा स्त्री [दे] स्पर्धा (दे ८, ६१)।

ही अ [ही] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ विस्मय, आश्चर्य (सिरि ४७३)। २ दुःख (उप ५९७ टी)। ३ विषाद, खेद। ४ शोक, दिलगीरी (श्रा १६, कुप्र ४३६, कुमा, रंभा, मन ३७)। ५ वितर्क (सिरि २६८)। ६ कन्दर्प का अतिरेक। ७ प्रशान्त भाव का अतिशय (अणु १३९)।

ही देखो हिरी (विसे २६०३)। °म वि [°मत्] लज्जाशील, लज्जालु (सूअ १, २, २, १८)।

हीं अ [ह्रीँ] मन्त्राक्षर-विशेष, मायाबीज (सिरि १२१०)।

हीण वि [हीन] १ न्यून, कम, अपूर्ण (उवा, गाया १, १४—पत्र १९०)। २ रहित, वर्जित, 'हयं नाणं कियाहीणं' (हे २, १०४)। ३ अधम, हलका। ४ निन्द्य, निन्दनीय (प्रासू १२५, उप ७२८ टी)। ५ पु. प्रतिवादि-विशेष (हे १, १०३)। °जाइल्ल वि [°जातिक] अधम जाति का, नीच जाति का (उप ७२८ टी)। °वाइ पुं [°वादिन्] वादि-विशेष (सुपा २८२)।

हीण वि [ह्रीण] भीत (विपा १, २ टी—पत्र २८)।

हीमाणहे } (शौ) अ १ विस्मय, आश्चर्य।
हीमादिके } २ निर्वेद (हे ४, २८२, कुमा, प्राकृ ९८, मृच्छ २०२, २०६)।

हीयमाण देखो हा।

हीयमाणग } न [हीयमानक] अवधिज्ञान
हीयमाणय } का एक भेद, क्रमशः कम होता जाता अवधिज्ञान (ठा ६—पत्र ३७०, णंदि)।

अणुबज्झ } वि [अनुबद्ध] १ बंधा हुआ,
अणुबद्ध } सबद्ध (से ११, ६०)। २ सतत, अविच्छिन्न, 'अणुबद्धतिव्ववेरा परोप्पर वेयणं उदीरेंति' (पराह १, १)। ३ व्याप्त (गाया १, ८)। ४ प्रतिबद्ध (गाया १, २)। ५ अत्यन्त, बहुत, 'अणुबद्धनिरंतरवेयणासु' (पराह १, १)। ६ उत्पन्न (उत्तर ६२)।

अणुबद्ध वि [अनुबद्ध] १ अनुगत (पचा ६, २७)। २ पीछे बँधा हुआ (सिरि ४४४)।

अणुबूह देखो अणुबूह।

अणुब्भड वि [अनुद्भट] अनुद्धत, अनुल्वण (उत्त २)।

अणुब्भूय वि [अनुद्भूत] अप्रकट, अनुत्पन्न (नाट)।

अणुभअ देखो अणुभव = अनुभव (नाट)।

अणुभव सक [अनु + भू] १ अनुभव करना, जानना, समझना। २ कर्मफल को भोगना। अणुभवति (पि ४७५)। वकृ. अणुभवत (पि ४७५)। संकृ अणुभविअ, अणुभवित्ता (नाट पराह १, १)। हेकृ अणुभविउ (उत्त १८)।

अणुभव पु [अनुभव] १ ज्ञान, बोध निश्चय (पचा ५)। २ कर्म-फल का भोग (विसे)।

अणुभवण न [अनुभवन] ऊपर देखो (श्राव ४ विसे २०६०)।

अणुभवि वि [अनुभविन्] अनुभव करनेवाला (विसे १६५८)।

अणुभव्व वि [अनुभव्य] आसन्न भव्य (सबोध ५४)।

अणुभाग पु [अनुभाग] १ प्रभाव, माहात्म्य (सूत्र १,५,१)। २ शक्ति, सामर्थ्य (पराण २)। ३ कर्मो का विपाक—फल (सूत्र १,५,१)। ४ कर्मो का रस, कर्मो मे फल उत्पन्न करने की शक्ति, 'ताण रसो अणुभागो' (कम्म १,२ टी, नव ३१)। °बंध पु [°बन्ध] कर्म-पुद्गलो मे फल उत्पन्न करने की शक्ति का बनना (ठा ४, २)।

अणुभाय } पु [अनुभाव] १-४ ऊपर देखो
अणुभाव } (प्रासू ३५, ठा ३,३, गउड, आचा, सम ६)। ५ मनोगत भाव की सूचक चेष्टा, जैसे भौंह का चढाना वगैरह (नाट)। ६ कृपा, मेहरबानी (स ३५५)।

अणुभावग वि [अनुभावक] बोधक, सूचक, (आवम)।

अणुभास सक [अनु + भाष्] १ अनुवाद करना, कही हुई बात को उसी शब्द मे शब्दान्तर मे या दूसरी भाषा मे कहना। २ चिन्तन करना 'अणुभासइ गुरुवयणं' (आत्र ६, वव ३)। वकृ अणुभासयत, अणुभासमाण (स १८४ विसे २५१२)।

अणुभासण न [अनुभाषण] अनुवाद, उक्त बात का कहना (नाट)।

अणुभासणा स्त्री [अनुभाषणा] ऊपर देखो (ठा ५, ३, विसे २५२० टी)।

अणुभासय वि [अनुभाषक] अनुवादक, अनुवाद करनेवाला (विसे ३२१७)।

अणुभासयत देखो अणुभास।

अणुभुंज सक [अनु + भुज्] भोग करना। वकृ अणुभुंजमाण (स १६)।

अणुभूइ स्त्री [अनुभूति] अनुभव (विसे १६११)।

अणुभूय वि [अनुभूत] ज्ञात निश्चित (महा)। °पुव्व वि [°पूर्व] पहले ही जिसका अनुभव हो गया हो वह (गाया १ १)।

अणुभूस सक [अनु + भूष्] भूषित करना, शोभित करना। अणुभूसेदि (शौ) (नाट)।

अणुमइ स्त्री [अनुमति] अनुमोदन, सम्मति (श्रा ६)।

अणुमतव्व देखो अणुमण्ण (विसे १६६०)।

अणुमग्ग न [°] पीछे-पीछे, 'एवं विचिंतयनी अणुमग्गेणेव चलिया है' (सुर ४,१४२ महा)। °गामि वि [°गामिन्] पीछे-पीछे जानेवाला (पि ८०२)।

अणुमज्ज सक [अनु + मस्ज्] विचार करना। संकृ अणुमज्जित्ता (जीवस १६६)।

अणुमण्ण } सक [अनु + मन्] अनुमति
अणुमन्न } देना, अनुमोदन करना। अणुमराणे, अणुमन्नइ (पि ४५७, महा)। वकृ अणुमण्णमाण (उवर ३१)। संकृ अणमन्निऊण (महा)।

अणुमन्निय } वि [अनुमत] अनुमोदित,
अणुमय } सम्मत (उप पृ २६१)।

अणुमर अक [अनु + मृ] १ मरना। २ सती होना, पति के मरने से मर जाना, 'जं केवलिणो अणुमरति' (आउ ३५)। भवि. अणुमरिहिइ (पि ५२२)।

अणुमर अक [अनु + मृ] क्रम से मरना, पीछे-पीछे मरना, 'इय पारपरमरणे अणुमरइ सहस्सनो जाव' (पिंड २७४)।

अणुमरण न [अनुमरण] ऊपर देखो (गउड)।

अणुमहत्तर वि [अनुमहत्तर] मुखिया का प्रतिनिधि (निचू ३)।

अणुमाण न [अनुमान] १ अटकल-ज्ञान, हेतु के द्वारा अज्ञात वस्तु का निर्णय (गा ३८५, ठा ८, ८)।

अणुमाण न [अनुमान] १ अभिप्राय-ज्ञान (सूत्र १ १३,२०)। २ अनुसार (तंदु २७)।

अणुमाण सक [अनु + मानय्] अनुमान करना। सकृ अणुमाणइत्ता (वव १)।

अणुमाय वि [अणुमात्र] बहुत थोडा, थोडा परिमाणवाला (दस ५, २)।

अणुमाल अक [अनु + मालय्] शोभित होना, चमकना। संकृ अणुमालिंवि (भवि)।

अणुमिण सक [अनु + मा] अटकल से जानना। कर्म. अणुमिणिज्जइ (धर्मस १२१६) अणुमीयए (दसनि ८,३०)।

अणुमेअ वि [अनुमेय] अनुमान के योग्य (मैं ७३)।

अणुमेरा स्त्री [अनुमर्यादा] मर्यादा हद (कप्प)।

अणुमोइय वि [अनुमोदित] अनुमत सम्मत, प्रशंसित (आउर, भवि)।

अणुमोय सक [अनु + मुद्] अनुमति देना, प्रशंसा करना। अणुमोयइ (उव)। अणुमोएमो (चउ ५८)।

अणुमोयग वि [अनुमोदक] अनुमोदन करनेवाला (विसे)।

अणुमोयण न [अनुमोदन] अनुमति, सम्मति, प्रशंसा (उव, पचा ६)।

अणुम्मुक्क वि [अनुन्मुक्त] नही छोडा हुआ (पराह १, ४)।

अणुम्मुह वि [अनुन्मुख] अ-संमुख, विमुख, 'किह साहुस्स अणुम्मुहो चिट्ठामि त्ति' (महा)।

अणुय पु [अणुक] धान्य-विशेष (पव १५६)।

अणुयंपा देखो अणुकंपा (गउड, स २१४)।

अणह न [अनभस्] भूमि, पृथिवी (से ६, ३)।

अणहप्पणय वि [दे] अनष्ट, विद्यमान (दे १, ४८)।

अणहवणय वि [दे] तिरस्कृत, भर्त्सित (षड्)।

अणहा स्त्री [अधुना] इस समय (प्राकृ ८०)।

अणहारय पुं [दे] खड्डा, खला, जिसका मध्य-नीचा हो वह जमीन (दे १, ३८)।

अणहिअअ वि [अहृदय] हृदय-रहित, निष्ठुर, निर्दय (प्राप, गा ४१)।

अणहिगय वि [अनधिगत] १ नहीं जाना हुआ। २ पु वह साधु, जिसको शास्त्रों का ज्ञान न हो, अगीतार्थ (वव १)।

अणहिण्ण देखो अणभिण्ण (प्राप)।

अणहियास वि [अनध्यास] असहिष्णु, सहन नहीं करनेवाला (उव)।

अणहिल } न [अणहिल्ल] गुजरात देश की
अणहिल्ल } प्राचीन राजधानी, जो आजकल 'पाटन' नाम से प्रसिद्ध है (ती २६, कुमा)। °वाडय न [पाटक] देखो अणहिल (गु १०, मुणि १०८८८)।

अणहीण वि [अनधीन] स्वतन्त्र, अनायत्त (सण १६१)।

अणहुल्लिय वि [दे] जिसका फल प्राप्त न हुआ हो वह (सम्मत्त १४३)।

अणाइ वि [अनादि] आदि-रहित, नित्य (सम १२५)। °णिहण, निहण वि [°निधन] आद्यन्त-वर्जित, शाश्वत (उव, सम्म ६५, आव ४)। °मत, °वत वि [मत्] अनादि काल से प्रवृत्त (पउम ११८, ३२, भवि)।

अणाइज्ज वि [अनादेय] १ अनुपादेय, ग्रहण करने के अयोग्य। २ नाम-कर्म का एक भेद, जिसके उदय से जीव का वचन, युक्त होने पर भी ग्राह्य नहीं समझा जाता है (कम्म १,२७)।

अणाइय वि [अनादिक] आदि-रहित, नित्य (सम १२५)।

अणाइय वि [अज्ञातिक] स्वजन-रहित, अकेला (भग १, १)।

अणाइय वि [अणातीत] पापी, पापिष्ठ (भग १, १)।

अणाइय पु [ऋणातीत] संसार, दुनिया (भग १, १)।

अणाइय वि [अनादृत] जिसका आदर न किया गया हो वह (उप ८३३ टी)।

अणाइल वि [अनाविल] १ अकलुषित, निर्मल (पण्ह २, १)।

अणाईअ देखो अणाइय (उप १०३१ टी; पि ७०)।

अणाउ } पुं [अनायुष्क] १ जिन-देव (सूअ
अणाउय } १, ६)। २ मुक्तात्मा, सिद्ध (ठा १)।

अणाउल वि [अनाकुल] अव्याकुल, धीर (सूअ १, २, २; णाया १, ८)।

अणाउत्त वि [अनायुक्त] उपयोग-शून्य, बे-खयाल, असावधान (औप)।

अणाएज्ज देखो अणाइज्ज (सम १५६)।

अणागय पुं [अनागत] १ भविष्य काल, 'अणागयमपस्सता, पच्चुप्पन्नगवेसगा। ते पच्छा परितप्पंति, खीणे आउम्मि जोव्वणे' (सूअ १,३,४)। २ वि. भविष्य में होनेवाला (सूअ १,२)। °द्धा स्त्री [°द्धा] भविष्य काल (नव ४२)।

अणागलिय वि [अनर्गलित] नहीं रोका हुआ (उवा)।

अणागलिय वि [अनाकलित] १ नहीं जाना हुआ, अलक्षित (णाया १,६)। २ अपरिमित, 'अणागलियतिव्वचंडरोसं सप्परूवं विउव्वइ' (उवा)।

अणागार वि [अनाकार] १ आकार-रहित, आकृति-शून्य (ठा १०)। २ विशेषता-रहित (कम्म ४,१२)। ३ न दर्शन, सामान्य ज्ञान (सम ६५)।

अणाजीव वि [अनाजीव] १ आजीविका-रहित। २ आजीविका की इच्छा नहीं रखने-वाला। ३ नि स्पृह, निरीह (दस ३)।

अणाजीवि वि [अनाजीविन्] ऊपर देखो, 'अगिलाई अणाजीवी' (पडि, निचू १)।

अणाढ पु [दे] जार, उपपति (दे १, १८)।

अणाढिय वि [अनादृत] १ जिसका आदर न किया गया हो वह, तिरस्कृत (आव ३)। २ पु जम्बूद्वीप का अधिष्ठायक एक देव (ठा २,३)। ३ स्त्री जम्बूद्वीप के अधिष्ठायक देव की राज-धानी (जीव ३)।

अणाणुगामिय वि [अनानुगामिक] १ पीछे नहीं जानेवाला (ठा ५,१)। २ न अवधि-ज्ञान का एक भेद (णंदि)।

अणादि देखो अणाइ (स ६८३)।

अणादिय } देखो अणाइय (इक, पण्ह १,१,
अणादीय } ठा ३,१)।

अणादेज्ज देखो अणाइज्ज (पण्ह १, ३)।

अणाभिग्गह न [अनाभिग्रह] मिथ्यात्व का एक भेद (पच ४, २)।

अणाभोग पुं [अनाभोग] १ अनुपयोग, बे-खयाली, असावधानी (आव ४)। २ न मिथ्यात्व-विशेष (कम्म ४, ५१)।

अणामिय वि [अनामिक] १ नाम-रहित। २ पुं असाध्य रोग (तदु)। ३ स्त्री, कनिष्ठांगुली के ऊपर की अंगुली।

अणाय वि [अज्ञात] नहीं जाना हुआ, अपरि-चित (पउम २४, १७)।

अणाय पु [अनाक] मर्त्यलोक, मनुष्य-लोक (से १, १)।

अणाय पु [अनात्मन्] आत्म-भिन्न, आत्मा से परे (सम १)।

अणायग वि [अनायक] नायक-रहित (पउम ९६, ७०)।

अणायग वि [अज्ञातक] स्वजन-रहित, अकेला (निचू ६)।

अणायग वि [अज्ञायक] अजान, निर्बोध (निचू ११)।

अणायतण } न [अनायतन] १ वेश्या आदि
अणाययण } नीच लोगों का घर (दस ५,१)। २ जहाँ सज्जन पुरुषों का संसर्ग न होता हो वह स्थान (पण्ह २, ४)। ३ पतित साधुओं का स्थान (आव ३)। ४ पशु, नपुंसक वगैरह के संसर्गवाला स्थान (ओघ ७६३)।

अणायत्त वि [अनायत्त] पराधीन (पउम २६, २६)।

अणायर पुं [अनादर] अ-बहुमान, अपमान (पाअ)।

अणायरण न [अनाचरण] अनाचार, खराब आचरण।

अणुवजीवि वि [अनुपजीविन्] १ अना-श्रित। २ आजीविका-रहित (पंचा १५)।

अणुवजुत्त वि [अनुपयुक्त] असावधान, ख्याल-शून्य (अभि १३१)।

अणुवज्ज सक [गम्] जाना। अणुवज्जइ (हे ४, १६२)।

अणुवज्ज सक [दे] सेवा-शुश्रूषा करना (दे १, ४१)।

अणुवज्जण न [दे] सेवा-शुश्रूषा (दे १,४१)।

अणुवज्जिअ वि [दे] जिसकी सेवा-शुश्रूषा की गई हो वह (दे १, ४१)।

अणुवज्जिअ वि [दे] गत, गया हुआ (दे १, ४१)।

अणुवट्ट देखो अणुवत्त = अनु + वृत्। कृ अणुवट्टणीअ (नाट)।

अणुवट्टि देखो अणुवत्ति = अनुवर्तिन् (विसे २४१७)।

अणुवड सक [अनु + पत्] अभिन्न होना। अणुवडइ (उवर ७१)।

अणुवडिअ वि [अनुपतित] पीछे गिरा हुआ (हम्मीर ५०)।

अणुवत्त सक [अनु + वृत्] १ अनुसरण करना। २ सेवा-शुश्रूषा करना। ३ अनुकूल वरतना। ४ व्याकरण आदि के पूर्व सूत्र के पद का, अन्वय के लिए नीचे के सूत्र मे जाना। अणुवत्तइ (स ४२)। वकृ अणुत्तंत, अणुवत्तत, अणुवत्तमाण (प्राप्र, विसे ३५६८, नाट)। कृ अणुवट्टणीअ, अणु-वत्तणीअ, अणुवत्तियव्व (नाट, उप १०३१ टी)।

अणुवत्त वि [अनुद्वृत्त] अनुत्पन्न (पिंड १८)।

अणुवत्त वि [अनुवृत्त] १ अनुसृत, अनुगत। २ अनुकूल किया हुआ। ३ प्रवृत्त (वव २)।

अणुवत्तग वि [अनुवर्त्तक] अनुकूल प्रवृत्ति करनेवाला, सेवा करनेवाला (उव)।

अणुवत्तग वि [अनुवर्तक] अनुसरण-कर्ता (सूत्र १, २, २, ३२)।

अणुवत्तण न [अनुवर्त्तन] १ अनुसरण (स २३६)। २ अनुकूल प्रवृत्ति (गा २६५)। ३ पूर्व सूत्र के पद का अन्वय के लिए नीचे के सूत्र मे जाना (विसे ३५६८)।

अणुवत्तणा स्त्री [अनुवर्त्तना] ऊपर देखो (उवर १४८)।

अणुवत्तय देखो अणुवत्तग, 'अन्नमन्नच्छदाणु-वत्तया' (णाया १, ३)।

अणुवत्ति स्त्री [अनुवृत्ति] १ अनुसरण (स ४५६)। २ अनुकूल प्रवृत्ति। ३ अनुगम (विसे ७०५)।

अणुवत्ति वि [अनुवर्त्तिन] अनुकूल प्रवृत्ति करनेवाला, भक्त, सेवक,

'तुह चडि ! चलणकमलाणुवत्तिणो कह
णु सजमिजति।
सेरिहवहसकियमहिमहीरमाणेण व जमेण'
(गउड)।

अणुवत्ति वि [अनुवर्त्तिन्] ऊपर देखो (धर्मवि ५२, मोह १०२)।

अणुवम वि [अनुपम] उपमा-रहित, बेजोड, अद्वितीय (श्रा २७)।

अणुवमा स्त्री [अनुपमा] एक प्रकार का खाद्य द्रव्य (जीव ३)।

अणुवमिय वि [अनुपमित] देखो अणुवम (सुपा ६८)।

अणुवय देखो अणुव्वय (पउम २, ९२)।

अणुवय सक [अनु + वद्] अनुवाद करना, कहे हुए अर्थ को फिर से कहना। वकृ अणु-वयमाण (आचा)।

अणुवरय वि [अनुपरत] १ असयत, अनि-ग्रही (ठा २, १)। २ क्रिवि. निरन्तर हमेशा (रयण २५)।

अणुवलद्धि स्त्री [अनुपलब्धि] १ अभाव, अप्राप्ति। २ अभाव-ज्ञान, 'दुविहा अणुवलद्धीउ' (विसे १६८२)।

अणुवलब्भमाण वि [अनुपलभ्यमान] जो उपलब्ध न होता हो, जो जानने मे न आता हो (दसनि १)।

अणुवलेवय वि [अनुपलेपक] उपलेप-रहित, अलिप्त (पराह १, २)।

अणुवसत वि [अनुपशान्त] अशान्त, कुपित (उत १९)।

अणुवसम पु [अनुपशम] उपशम का अभाव (उव)।

अणुवसु वि [अनुवसु] रागवाला, प्रीतिवाला (माचा)।

अणुवह न [अनुपथ] पीछे, 'कुमराणुवहेण सो लग्गो' (उप ६ टी)।

अणुवहण न [अनुवहन] वहन, 'तवोवहाण-मुयाणमणुवहणं' (श्रु १३५)।

अणुवहय वि [अनुपहत] अविनाशित (पिंड)।

अणुवहुआ स्त्री [दे] नवोढा स्त्री, दुलहिन (दे १, ४८)।

अनुवाइ वि [अनुपातिन्] १ अनुसरण करनेवाला (ठा ६)। २ सम्बन्ध रखनेवाला (मम १५)।

अणुवाइ वि [अनुवादिन्] अनुवाद करने-वाला, उक्त अर्थ को कहनेवाला (सूत्र १, १२, सत्त १४ टी)।

अणुवाइ वि [अनुवाचिन्] पढनेवाला, अभ्यासी, 'मयुन्नवीसवरिसो अणुवाई सव्वमु-त्तस्स' (सत्त १८ टी)।

अणुवाएज्ज वि [अनुपादेय] ग्रहण करने के अयोग्य, (श्रावम)।

अणुवाद देखो अणुवाय = अनुवाद (विसे ३५७७)।

अणुवादि देखो अणुवाइ = अनुपातिन् (उत्त १६, ६)।

अणुवाय पु [अनुपात] १ अनुसरण (पराण १७)। २ सबन्ध, सयोग (भग १२, ४)। ३ आगमन (पचा ७)।

अणुवाय पु [अनुवात] १ अनुकूल पवन (राय)। २ वि अनुकूल पवन वाला प्रदेश—स्थान (भग १६, ६)।

अणुवाय वि [अनुपाय] उपाय-रहित, निरु-पाय (उप पृ १४)।

अणुवाय पुं [अनुवाद] अनुभाषण, उक्त बात को फिर से कहना (उवा, दे १, १३१)।

अणुवायण न [अनुपातन] अवतारण, उता-रना (धर्म २)।

अणुवायय वि [अनुवाचक] कहनेवाला, अभिवायक, 'पोमहमद्दो स्फुडोए एत्थ पव्वाणु-वायओ भणिओ' (सुपा ६१६)।

अणुवाल देखो अणुपाल। वकृ अणुवालेंत (स २३)। संकृ अणुवालिऊण (स १०२)।

अणुवालण न [अनुपालन] रक्षण, परिपालन (आचा)।

अणियय वि [अनियत] १ अव्यवस्थित, अनियमित (उव)। २ कल्पवृक्ष की एक जाति, जो वस्त्र देती है (ठा १०)।
अणिया देखो अणिदा (पिंड)।
अणिया स्त्री [दे] धार, अग्र-भाग, गुजराती में 'अणी', 'सखाणियाइ पइया' (धर्मवि १७)।
अणिरिक्क वि [दे] परतन्त्र, पराधीन। (कप्र ५४, गा ६६१)।
अणिरिण वि [अनृण] ऋण-वर्जित, उऋण, अनृणी (अभि ४६, चारु ६६)।
अणिरुद्ध वि [अनिरुद्ध] १ अप्रतिहत, नहीं रोका हुआ। (सूअ १, १२)। २ एक अन्तकृद् मुनि (अन्त १)।
अणिल पु [अनिल] १ वायु, पवन (कुमा)। २ एक अतीत तीर्थंकर का नाम (तित्थ)। ३ राक्षस-वंशीय एक राजा (पउम ५, २६४)।
अणिला स्त्री [अनिला] बाईसवें तीर्थंकर की एक शिष्या (पव ६)।
अणिल्ल न [दे] प्रभात, सवेरा (दे १,१६)।
अणिस न [अनिश] निरन्तर, सदा, हमेशा (गा २६२, प्रासू २६)।
अणिसट्ठ } वि [अनिसृष्ट] १ अनिक्षिप्त। अणिसिट्ठ } २ असमत, अननुज्ञात। ३ ऐसी भिक्षा, जिसके मालिक अनेक हों और जो सब की अनुमति से ली न गई हो, साधु की भिक्षा का एक दोष (पिंड, औप)।
अणिसीह वि [अनिशीथ] शास्त्र-विशेष, जो प्रकाश में पढा या पढाया जाय (आवम)।
अणिस्सकड वि [अनिश्रीकृत] जिस पर किसी खास व्यक्ति का अधिकार न हो, सर्व-साधारण (धर्म २)।
अणिस्सा स्त्री [अनिश्रा] अनासक्ति, आसक्ति का अभाव (उव)।
अणिस्सिय वि [अनिश्रित] १ अनासक्त, आसक्तिरहित (सूअ १, १६)। २ प्रतिबन्ध-रहित, रुकावटरहित (दस ?)। ३ अनाश्रित, किसी के साहाय्य की इच्छा न रखनेवाला (उत्त १६)। ४ न. ज्ञान-विशेष, अवग्रह-ज्ञान का एक भेद, जो लिंग या पुस्तक के बिना ही होता है (ठा ६)।
अणिह वि [अनीह] १ धीर, सहिष्णु (सूअ १,२,२)। २ निष्कपट, सरल (सूअ १,८)। ३ निर्मम, निःस्पृह (आचा)।
अणिह वि [अस्निह] स्नेहरहित (सूअ १,२, २, ३०)।
अणिह वि [दे] १ सदृश, तुल्य। २ न मुख, मुँह (दे १, ५१)।
अणिहय वि [अनिहत] अहत नहीं मारा हुआ। °रिउ पुं [°रिपु] एक अन्तकृद् मुनि (अन्त ३)।
अणीइस वि [अनीदृश] इस माफिक नहीं, विलक्षण (स ३०७)।
अणीय न [अनीक] सेना, लश्कर (औप)।
अणीयस पु [अनीयस] एक अन्तकृद् मुनि का नाम (अन्त ३)।
अणीस वि [अनीश] असमर्थ (अभि ६०)।
अणीसकड देखो अणिस्सकड (धर्म २)।
अणीहारिम वि [अनिर्हारिम] गुफा आदि में होनेवाला मरण-विशेष (भग १३, ८)।
अणु अ [अनु] यह अव्यय नाम और धातु के साथ लगता है और नीचे के अर्थों में से किसी एक को बतलाता है, १ समीप, नजदीक, 'अणुकुंडल' (गउड)। २ लघु, छोटा 'अणुगाम' (उत ३)। ३ क्रम, परिपाटी, 'अणुगुरु' (बृह १)। ४ में, भीतर, 'अणुजत्त' (महा)। ५ लक्ष्य करना, 'अणु जिण अकारि सगीय इत्थीहिं' (कुमा), 'अणु धारं सद्दुब्भमोत्तिए वुह असिम्मि सच्चविया' (गउड)। ६ योग्य, उचित, 'अणुजुत्ति' (सूअ १,४,१)। ७ वीप्सा, 'अणुदिण' (कुमा)। ८ बीच का भाग, 'अणुदिसी' (वि ४१३)। ९ अनुकूल, हितकर, 'अणुधम्म' (सूअ १,२ १)। १० प्रतिनिधि, 'अणुप्पभु' (निचू २)। ११ पीछे, बाद, 'अणुमज्जण' (गउड)। १२ बहुत, अत्यंत, 'अणुवक' (मा ६२)। १३ मदद करना सहायता करना 'अणुपरिहारि' (ठा ३,४)। १४ निरर्थक भी इसका प्रयोग होता है, देखो 'अणुक्कम', 'अणुमग्गि'।
अणु वि [अणु] १ थोडा, अल्प (पण्ह २,३)। २ छोटा (आचा)। ३ पु परमाणु (सम्म १३६)। °मय वि [°मत] उत्तम कुल, श्रेष्ठ वंश (कप्प)। °विरइ स्त्री [°विरति] देखो देसविरइ (कम्म १, १८)।
अणु पु [दे] धान-विशेष, चावल की एक जाति (दे १ ५)।
°अणु स्त्री [तनु] शरीर, 'सुअणु' (गा २६६)।
अणुअ देखो अणु = अणु (पाअ)।
अणुअ वि [अज्ञ] अजान, मूर्ख (गा १८४, ३८५)।
अणुअ पु [दे] १ आकृति, आकार। २ पुंस्त्री धान्य-विशेष (दे १ ५२, श्रा १८)।
अणुअ वि [अनुग] अनुसरण करनेवाला 'अधम्माणुए' (विपा १, १)।
अणुअ वि [अनुज] १ पीछे से उत्पन्न। २ पु छोटा भाई। ३ स्त्री छोटी बहिन (अभि ८२ पउम २८,१००)।
अणुअच्च सक [अनु + कृप्] पीछे खींचना। सक्र अणुअच्चिवि (भवि)।
अणुअप सक [अनु + कम्प्] दया करना। कृ अणुअपणिज्ज (हास्य १४४)।
अणुअंपा स्त्री [अनुकम्पा] दया, करुणा (से ६, २४, गा १६३)।
अणुअंपि वि [अनुकम्पिन्] दयालु, करुणा करनेवाला (अभि १७३)।
अणुअत्तय वि [अनुवर्त्तक] अनुकूल आचरण करनेवाला, अनुसरण करनेवाला (विसे ३४०२)।
अणुअत्ति देखो अणुवत्ति (पुप्फ ३२६)।
अणुअर वि [अनुचर] १ सहायताकारी, सहचर (पाअ)। २ सेवक, नौकर (प्रामा)।
अणुअर वि [अनुचर] अनुसरण-कर्ता (हास्य १२१)।
अणुअल्ल न [दे] प्रभात, सुबह (दे १, १६)।
अणुआ स्त्री [दे] लाठी (दे १, ५२)।
अणुआर पु [अनुकार] अनुकरण (नाट)।
अणुआरि वि [अनुकारिन्] अनुकरण करनेवाला (नाट)।
अणुआस पु [अनुकास] प्रसार, विकास (गाया १, १)।
अणुइअ पु [दे] धान्य-विशेष, चना (दे १, २१)।
अणुइअ देखो अणुदिय।
अणुइण्ण वि [अनुकीर्ण] १ व्याप्त, भरा हुआ। २ नहीं गिरा हुआ, अपतित, 'अवाइण्णपत्ता अणुइण्णपत्ता निद्धुयजरढपंडुपत्ता (औप)।

करना । २ प्रीति करना । ३ परिचय करना । अणुसज्जन्ति (स)। भूका अणुसज्जित्था (भग ६,७)

अणुसज्जणा स्त्री [अनुसज्जना] अनुसरण, अनुवर्तन (वव १)।

अणुसट्ठ वि [अनुशिष्ट] जिसको शिक्षा दी गई हो वह, शिक्षित (सुर ११, २६)।

अणुसट्ठि वि [अनुशिष्टि] १ शिक्षण, सीख, उपदेश (ठा ३, ३)। २ स्तुति, श्लाधा 'अणुसट्ठी य थुइ त्ति एगट्ठा' (वव १) । ३ आज्ञा, अनुज्ञा, सम्मति, 'इच्छामो अणुसट्ठि पव्व ज देह मे भयव' (सुर ६, २०६)।

अणुसमय न [अनुसमय] प्रतिक्षण (भग ४१, १)।

अणुसय पु [अनुशय] १ पश्चात्ताप, खेद (से २, १६)। २ गर्व, अभिमान (अणु)।

अणुसर सक [अनु + सृ] पीछा करना, अनुवर्तन करना। अणुसरइ (मण)। वकृ **अणुसरंत** (महा)। कृ **अणुसरियव्व** (ठा ५, १)।

अणुसर सक [अनु + स्मृ] याद करना, चिन्तन करना। वकृ **अणुसरंत** (पउम ६६, ७) कृ **अणुसरियव्व** (आवम)।

अणुसरण न [अनुसरण] १ पीछा करना। २ अनुवर्तन (विसे ९१३)।

अणुसरण न [अनुस्मरण] अनुचिन्तन, याद करना (पचा १, स २३१)।

अणुसरि देखो **अणुसारि**, 'आसायण परिहारो भत्तो मत्तीइ पवयणाणुसरी' (सबोध ४)।

अणुसरिउ वि [अनुसर्तृ] याद करनेवाला (विसे ९२)।

अणुसरिच्छ } वि [अनुसदृश] १ समान,
अणुसरिस } तुल्य (पउम ६४, ७०)। २ योग्य, लायक (से ११, ११५, पउम ८५, २६)।

अणुसार पु [अनुस्वार] १ वर्ण-विशेष, बिन्दी। २ वि अनुनासिक वर्ण (विसे ५०१)।

अणुसार पु [अनुसार] अनुसरण, अनुवर्तन (गउड, भवि)। २ माफिक, मुताबिक, 'कहिया-णुसारओ सव्वमुवगय सुमइणा सम्म' (सार्घ १४४)।

अणुसारि वि [अनुसारिन्] अनुसरण करने वाला (गउड, म १०१, सार्ध २६)।

अणुसास सक [अनु + शास्] १ सीख देना, उपदेश देना। २ आज्ञा करना। ३ शिक्षा करना, सजा देना। अणुसासति (पि १७२)। वकृ **अणुसासंत** (पि ३९७)। कवकृ **अणुमासिज्जंत** (सुपा २७३)। कृ. **अणुसा-सणिज्ज** (कुमा)। हेकृ. **अणुसासिउं** (पि ५७६)।

अणुसासण न [अनुशासन] १ सीख, उप-देश (सूअ १, १५)। २ आज्ञा, हुकुम (सूअ १, २, ३)। ३ शिक्षा, सजा (पचा ६)। ४ अनुकम्पा दया, 'अणुकप त्ति वा अणुसासणति वा एगट्ठा' (पचचू)।

अणुसासणा स्त्री [अनुशासना] ऊपर देखो (णाया १, १३)।

अणुसासिय वि [अनुशासित] शिक्षित (उत १, पि १७३)।

अणुसिक्खिर वि [अनुशिक्षितृ] सीखनेवाला, 'ज ज करेसि ज ज, जंपसि जह जह
तुम निअच्छेमि।
तं तं अणुसिक्खिरीए, दीहो दिअहो ण सपडइ'। (गा ३७८)।

अणुसिट्ठ देखो **अणुसट्ठ** (सूअ १, ३, ३)।

अणुसिट्ठि देखो **अणुसट्ठि** (ओघ १७३, बृह १, उत्त १०)।

अणुसिण वि [अनुष्ण] गरम नहीं वह, ठण्डा (कम्म १, ४६)।

अणुसील सक [अनु + शीलय्] पालन करना, रक्षण करना। **अणुसीलइ** (सण)।

अणुसुत्ति वि [दे] अनुकूल (दे १, २५)।

अणुसुमर सक [अनु + स्मृ] याद करना। अणुसुमरइ (धर्मवि ५६)। प्रयो. अणुसुमरावेइ (धर्मवि ६५)।

अणुसुय अक [अनु + स्वप्] सोने का अनु-करण करना। अणुसुयइ (तदु १३)।

अणुसूआ स्त्री [दे] शीघ्र ही प्रसव करनेवाली स्त्री (दे १, २३)।

अणुसूय वि [अनुस्यूत] अनुविद्ध, मिला हुआ (सूअ २, ३)।

अणुसूयग वि [अनुसूचक] जासूस की एक श्रेणी,
'सूयग तहाणुसूयग-पडिसूयग-सव्वसूयगा एव।
पुरिसा कयवित्तीया, वसंति सामतनगरेसु।
महिला कयवित्तीया, वसति सामंतनगरेसु ॥'
(वव १)।

अणुसेढि स्त्री [अनुश्रेणि] १ सीधी लाइन। २ न लाइनसर (पि ६६, ३०४)।

अणुसोय पु [अनुस्रोतस्] १ अनुकूल प्रवाह (ठा ४, ४)। २ वि अनुकूल, 'अणु-सोयसुहो लोगो पडिसोओ आसवो सुविहियाण' (दसचू २)। ३ न. प्रवाह के अनुसार,
'अणुसोयपट्ठिए बहुजणम्मि
पडिसोयलद्धलक्खेण।
पडिसोयमेव अप्पा, दायव्वो होउकामेण।,
(दसचू २)।

अणुसोय सक [अनु + शुच्] सोचना, चिन्ता करना, अफसोस करना। वकृ **अणु-सोयमाण** (सुपा १३३)।

अणुस्सर देखो **अणुसर** = अनु + स्मृ। संकृ. **अणुस्सरित्ता** (सूअ १, ७, १६)।

अणुस्सर देखो **अणुसर** = अनु + सृ। वकृ. **अणुस्सरंत** (म १४०)।

अणुस्सरण न [अनुस्मरण] चिन्तन करना, याद करना (उव, स ५३५)।

अणुस्सार पु [अनुस्वार] १ अनुस्वार, बिन्दी। २ वि अनुस्वारवाला अक्षर, अनुस्वार के साथ जिसका उच्चारण हो वह (णदि, विसे ५०३)।

अणुस्सुय वि [अनुत्सुक] उत्कण्ठा-रहित (सूअ १, ९)।

अणुस्सुय वि [अनुश्रुत] १ अवधारित (उत्त ५)। २ सुना हुआ (सूअ १, २, २)। ३ न. भारत-आदि पुराण-शास्त्र (सूअ १, ३, ४)।

अणुहर सक [अनु + हृ] अनुकरण करना, नकल करना। अणुहरइ (पि ४७७)।

अणुहरिय वि [अनुहृत] जिसका अनुकरण किया गया हो वह, अनुकृत,
'अणुहरिय धीर तुमे, चरिय निययस्स
पुव्वपुरिसस्स।
भरह-महानरवइणो, तिहुयणविक्खाय-कित्तिस्स'
(महा)।

अणुहव सक [अनु + भू] अनुभव करना। अणुहवइ (पि ४७५)। वकृ **अणुहवमाण** (सुर १, १७१)। कृ. **अणुहवियव्व, अणु-**

(नाट, सूत्र १,१४)। कवकृ °अणुगच्छिज्जंत (गाया १,२)। संकृ अणुगच्छित्ता (कप्प)।

अणुगच्छण देखो **अणुगमण** (पुप्फ ४०८)।

अणुगच्छिर वि [अनुगामिन्] अनुसरण करनेवाला (सण)।

अणुगज्ज अक [अनु + गर्ज्] प्रतिध्वनि करना, प्रतिशब्द करना। वकृ. **अणुगज्जेमाण** (णाया १, १८)।

अणुगम सक [अनु + गम्] १ अनुसरण करना, पीछे-पीछे जाना। २ जानना, समझना। ३ व्याख्या करना, सूत्र के अर्थो का स्पष्टीकरण करना। कर्म अणुगम्मइ (विसे ६१३)। ववकृ **अणुगम्मंत, अणुगम्ममाण** (उप ६ टी; सुपा ७८,२०८)। संकृ. **अणुगम्म** (सूम्र १, १४)। कृ **अणुगतव्व** (सुर ७, १७६, पण्ण १)।

अणुगम पु [अनुगम] १ अनुसरण, अनुवर्तन (दि २,६१)। २ जानना, ठीक-ठीक समझना, निश्चय करना (ठा १)। ३ सूत्र की व्याख्या, सूत्र के अर्थ का स्पष्टीकरण (वव १)। ४ अन्वय, एक की सत्ता मे दूसरे की विद्यमानता (विसे २६०)। ५ व्याख्या, टीका (विसे १३५७), अणुगम्मइ तेण तहिं, तओ व अणुगमणमेव वाणुगमो। 'अणुणोणुरूवओ वा, ज सुत्तत्थाणमणुसरणं' (विसे ६१३)।

अणुगमण न [अनुगमन] ऊपर देखो।

अणुगमिअ वि [अनुगत] अनुसृत (कुप्र ४३)।

अणुगमिर त्रि [अनुगन्तृ] अनुसरण करनेवाला (दे ६, १२७)।

अणुगय त्रि [अनुगत] १ अनुसृत, जिसका अनुसरण किया गया हो वह (पण्ह १, ४)। २ ज्ञात, जाना हुआ (विसे)। ३ अनुवृत्त, जो पूर्व मे बराबर चला आया हो (पण्ह १, ३)। ४ अतिक्रान्त (विसे ९५६)।

अणुगर देखो **अणुकर**। अणुगरेइ (स ३३४)। वकृ. **अणुगरिंत** (स ६८)।

अणुगरण देखो **अणुकरण** (कुप्र १७६)।

अणुगवेस सक [अनु + गवेष्] खोजना, शोधना, तलाश करना। अणुगवेसइ (कस)। वकृ **अणुगवेसेमाण** (भग ८, ५)। कृ **अणुगवेसियव्व** (कस)।

अणुगह देखो **अणुग्गह** = अनु + ग्रह् (नाट)।

अणुगहिअ देखो **अणुगिहिअ** (दे ८, २६)।

अणुगाम पु [अणुग्राम] १ छोटा गाँव, (उत्त ३)। २ उपपुर, शहर के पास का गाँव (ठा ९, २)। ३ विवक्षित गाँव मे दूसरा गाँव, 'गामाणुगाम दुइज्जमाणे' (विपा १, १, औप, आचा)।

अणुगामि } वि [अनुगामिन्, °मिक]
अणुगामिय } १ अनुसरण करनेवाला, पीछे-पीछे जानेवाला (औप)। २ निर्दोष हेतु, शुद्ध कारण (ठा ३, ३)। ३ अवधिज्ञान का एक भेद (कम्म १, ८)। ४ अनुचर, सेवक (सूत्र १, २, ३)।

अणुगारि वि [अनुकारिन्] अनुकरण करनेवाला, नकालची (महा, धर्म ५, स ६३०)।

अणुगिइ स्त्री [अनुकृति] अनुकरण, नकल (श्रा १)।

अणुगिण्ह देखो **अणुग्गह** = अनु + ग्रह। वकृ **अणुगिण्हमाण, अणुगिण्हेमाण** (निर १, १, णाया १, १६)।

अणुगिद्ध वि [अनुगृद्ध] अत्यन्त आसक्त, लोलुप (सूत्र १, ७)।

अणुगिद्धि स्त्री [अनुगृद्धि] अत्यासक्ति (उत्त ३२)।

अणुगिल सक [अनु + गॄ] भक्षण करना। संकृ **अणुगिलित्ता** (णाया १, ७)।

अणुगिहीअ वि [अनुगृहीत] जिस पर मेहरबानी की गई हो वह (स १४, १६३)।

अणुगीय वि [अनुगीत] १ पीछे कहा हुआ, अनूदित। २ पूर्व ग्रन्थकार के भाव के अनुकूल किया हुआ ग्रन्थ, व्याख्यान आदि (उत्त १३)। ३ जिसका गान किया गया हो वह, कीर्त्तित, वर्णित। ४ न. गाना, गीत, 'उज्जाणे मत्तभिंगाणुगीए' (पउम ३३, १४८)।

अणुगुण वि [अनुगुण] १ अनुकूल, उचित, योग्य (नाट)। २ तुल्य, सदृश गुणवाला,

जाण अलंकारसमो, विहवो
मइलेइ तेवि वड्ढंतो।
विच्छाएइ मियंक, तुसार-
वरिसो अणुगुणोवि' (गउड)।

अणुगुरु त्रि [अनुगुरु] गुरु-परम्परा के अनुसार जिस विषय का व्यवहार होता हो वह (बृह १)।

अणुगूल वि [अनुकूल] अनुकूल (स ३७८)।

अणुगेज्झ त्रि [अनुग्राह्य] अनुग्रह के योग्य, कृपा-पात्र (प्राप)।

अणुगेण्ह देखो **अणुग्गह** = अनु + ग्रह्। अणुगेण्हतु (पि ५१२)।

अणुग्गह सक [अनु + ग्रह्] कृपा करना मेहरबानी करना। कृ **अणुग्गहइदव्व, अणुग्गाहिदव्व** (शौ) (नाट)।

अणुग्गह पुं [अनुग्रह] १ कृपा, मेहरबानी (कप्पू)। २ उपकार (औप)। ३ वि जिस पर अनुग्रह किया जाय वह (वव १)।

अणुग्गह पु [अनवग्रह] जैन साधुओ को रहने के लिए शास्त्र-निषिद्ध स्थान,

'णो गोयरे णो वणगोणियाणं, णो वद्ध
दुज्झेति य जत्थ गावो।
अरण्णत्थ गोणेहिसु जत्थ खुण्णं, स उग्गहो
सेसमणुग्गहो तु' (बृह ३)।

अणुग्गहिअ }
अणुग्गहीअ } वि [अनुगृहीत] जिस पर कृपा की गई हो वह, आभारी
अणुग्गिहीअ } (महा, सुपा १६२, स ९७)।

अणुग्घाइम न [अनुद्घातिम] १ महा-प्रायश्चित का एक भेद (ठा ३,४)। २ वि महा-प्रायश्चित का पात्र (ठा ३,४)।

अणुग्घाइय वि [अनुद्घातिक] १ अनुद्घातिक नामक महा-प्रायश्चित का पात्र (ठा ५, ३)। २ न ग्रन्थाश-विशेष, जिसमे अनुद्घातिक प्रायश्चित का वर्णन है (पण्ह २, ५)।

अणुग्घाय वि [अनुद्घात] १ उद्घात-रहित। २ न निशीथ सूत्र का वह भाग, जिसमे अनुद्घातिक प्रायश्चित्त का विचार है, 'उग्घायमणुग्घाय आरोवण तिविहमो निसीह तु' (आव ३)।

अणुग्घाय न [अनुद्घात] गुरु-प्रायश्चित्त (वव १)।

अणुग्घायण न [अणोद्घातन] कर्मो का नाश (आचा)।

अणोसिय वि [अनुषित] १ जिसने वास न किया हो। २ अव्यवस्थित, 'अणोसिए णं करेइ णच्चा' (धर्म ३, सूअ १,१४)।
अणोहंतर वि [अनोघन्तर] पार जाने के लिए असमर्थ, 'मुणिणा हु एय पवेइय अणोहंतरा एए, नो य ओहं तरित्तए' (आचा)।
अणोहट्टय वि [अनपवर्तक] निरंकुश, स्वच्छन्दी (णाया १, १६)।
अणोहीण वि [अनवहीन] हीनता-रहित (पि १२०)।
अण्ण सक [भुज्] भोजन करना, खाना। अण्णइ (षड्)।
अण्ण स [अन्य] दूसरा, पर (प्राप्र १३१)। °उत्थिय वि [°तिर्थिक, °यूथिक] अन्य दर्शन का अनुयायी (सम ६०)। °ग्गहण न [°ग्रहण] १ गान के समय होनेवाला एक प्रकार का मुख-विकार। १ पु गानेवाला, गान्धर्विक, गवैया (निचू १७)। °धम्मिय वि [°धार्मिक] भिन्न धर्म वाला (ओघ १५)।
अण्ण न [अन्न] १ नाज, चावल आदि धान्य (सूअ १, ४, २)। २ भक्ष्य पदार्थ (उत्त २०)। ३ भक्षण, भोजन (सूअ १, २)। °इलाय, °गिलाय वि [°ग्लायक] वासी अन्न को खानेवाला (ओप; भग १६, ३)। °विहि पुस्त्री [°विधि] पाक-कला (औप)।
अण्ण न [अर्णस्] पानी, जल (उत्त ५)।
अण्ण वि [दे] १ आरोपित। २ खण्डित (षड्)।
°अण्ण देखो कण्ण = कर्ण (गा ५६४, कप्पू)।
अण्णअ पु [दे] १ जवान, तरुण। २ धूर्त, ठग। ३ देवर (दे १, ५५)।
अण्णइअ वि [दे] १ तृप्त (दे १, १६)। २ सब विषयो मे तृप्त, सर्वार्थ-तृप्त (षड्)।
अण्णओ अ [अन्यतस्] दूसरे से, दूसरी तरफ (उत्त १)। देखो अन्नओ।
अण्णण्ण वि [अन्योन्य] परस्पर, आपस मे (षड्)।
अण्णण्ण वि [अन्यान्य] और और, अलग-अलग,

'अण्णण्णाइ उवेंता,
ससारवहम्मि णिरवसाणम्मि।
मरणाति वीरहियआ,
वणदुट्टाणाइव कुलाइ' (गउड)।

अण्णत्त अ [अन्यत्र] दूसरे मे, भिन्न स्थान मे (गा ६५५)।
अण्णत्ति स्त्री [दे] अवज्ञा, अपमान, निरादर (दे १, १७)।
अण्णत्तो देखो अण्णओ (गा ६३६)।
अण्णत्थ देखो अण्णत्त (विपा १, २)।
अण्णत्थ वि [अन्यस्थ] दूसरे (स्थान) मे रहा हुआ (गा ५५०)।
अण्णत्थ वि [अन्वर्थ] यथार्थ, यथा नाम तथा गुण वाला, 'ठियमण्णत्थे तयत्थनिरवेक्ख' (विसे)।
अण्णमण्ण देखो अण्णण्ण = अन्योन्य, 'अण्णमण्णमणुरत्तया' (णाया १, २)।
अण्णमय वि [दे] पुनरुक्त, फिर से कहा हुआ (दे १, २८)।
अण्णय देखो अन्नय (धर्मसं ३६२)।
अण्णयर वि [अन्यतर] दो मे से कोई एक (कप्प)।
अण्णया अ [अन्यदा] कोई समय मे (उप ६ टी)।
अण्णव पु [अर्णव] १ समुद्र। २ संसार, 'अण्णवंमि महोघंमि एगे तिण्णे दुरुत्तरे' (उत्त ५)।
अण्णव न [ऋणवत्] एक लोकोत्तर मुहूर्त्त का नाम (ज ७)।
अण्णह न [अन्वह] प्रतिदिन, हमेशा (धर्म १)।
अण्णह देखो अण्णत्त (षड्)।
अण्णह } अण्णहा } अ [अन्यथा] अन्य प्रकार से, विपरीत रीति से, उलटा (षड्, महा)। °भाव पुं [°भाव] वैपरीत्य, उलटापन (बृह ४)।
अण्णहि देखो अण्णत्त (षड्)।
अण्णा स्त्री [आज्ञा] आज्ञा, आदेश (गा २३, अभि ६३, मुद्रा ५७)।
अण्णाइट्ठ वि [अन्वादिष्ट] आदिष्ट, जिसको आदेश दिया गया हो वह, 'अज्जुणए मालागारे मोग्गरपाणिणा जक्खेण अण्णाइट्ठे समाणे' (अंत २०)।
अण्णाइट्ठ वि [अन्वाविष्ट] १ व्याप्त (भग १४, १)। २ पराधीन, परवश (भग १८ ६)।
अण्णाइस (अप) वि [अन्यादृश] दूसरे के जैसा (पि २४५)।
अण्णाण न [अज्ञान] १ अज्ञान, अजानकारी, मूर्खता (दे १, ७)। २ मिथ्या ज्ञान, झूठा ज्ञान (भग ८, २)। ३ वि ज्ञान-रहित, मूर्ख (भग १, ६)।
अण्णाण न [दे] दाय, विवाह-काल मे वधू को अथवा वर को जो दान दिया जाता है वह (दे १, ७)।
अण्णाणि वि [अज्ञानिन्] १ ज्ञान रहित, मूर्ख (सूअ १, ७)। २ मिथ्या-ज्ञानी (पंच १)। ३ अज्ञान को ही श्रेयस्कर माननेवाला, अज्ञान-वादी (सूअ १, १२)।
अण्णाणिय वि [आज्ञानिक] १ अज्ञानवादी, अज्ञानवाद का अनुयायी (आव ६, सम १०६)। २ मूर्ख, अज्ञानी (सूअ १, १, २)।
अण्णाय वि [अज्ञात] अविदित, नहीं जाना हुआ (पण्ह २ १)।
अण्णाय पु [अन्याय] न्याय का अभाव (श्रा १२)।
अण्णाय वि [दे] आर्द्र, गीला (से ४, ६)।
अण्णाय वि [अन्याय्य] न्याय से च्युत, न्याय-विरुद्ध, 'जे विग्गहीए अण्णायभासी, न से समे होइ अझंझपत्ते' (सूअ १, १३)।
अण्णाय्य (शौ) ऊपर देखो (मा २०)।
अण्णारिच्छ वि [अन्यादृच] दूसरे के जैसा (प्रामा)।
अण्णारिस वि [अन्यादृश] दूसरे के जैसा (पि २४५)।
अण्णासय वि [दे] विस्तृत, बिछाया हुआ (षड्)।
अण्णिज्जमाण देखो अण्णे।
अण्णिय वि [अन्वित] युक्त, सहित (सूअ १, १०, नाट)।
अण्णिया स्त्री [दे] देखो अण्णी (दे १, ५१)।
अण्णिया स्त्री [अन्निका] एक विख्यात जैन मुनि की माता का नाम (ती ३६)। °उत्त पुं [°पुत्र] एक विख्यात जैन मुनि (ती ३६)।

ट्ठियव्व, अणुट्ठेअ (सुपा ५३७, सुर १४, ८५)।

अणुट्ठाइ वि [अनुष्ठायिन्] अनुष्ठान करने-वाला (आचा)।

अणुट्ठाण न [अनुष्ठान] १ कृति। २ शास्त्रोक्त विधान (आचा)।

अणुट्ठाण न [अनुत्थान] क्रिया का अभाव (उवा)।

अणुट्ठावण न [अनुष्ठापन] अनुष्ठान कराना (कम्म)।

अणुट्ठिय वि [अनुष्ठित] विधि से संपादित, विहित, किया हुआ (पड्, सुर ४, १६६)।

अणुट्ठिय वि [अनुत्थित] १ बैठा हुआ। २ आलसी, प्रमादी (आचा)।

अणुट्ठियव्व देखो अणुट्ठा।

अणुट्ठुभ न [अनुष्टुप्] एक प्रसिद्ध छंद, 'पत्तक्खरणएणाए अणुट्ठुभाए हवति दस सहस्सा (सुपा ६५६)।

अणुट्ठेअ देखो अणुट्ठा।

अणुण देखो अणुणी। अणुणह (भवि)।

अणुणत देखो अणुणी।

अणुणय पु [अनुनय] विनय, प्रार्थना (महा; अभि ११९)।

अणुणाइ वि [अनुनादिन्] प्रतिध्वनि करने वाला 'गजियसद्दस्स अणुणाइणा' (कप्प)।

अणुणाय पु [अनुनाद] प्रतिध्वनि प्रतिशब्द (विसे ३२०८)।

अणुणाय वि [अनुज्ञात] अनुमत, अनुमोदित (पचू)।

अणुणास पुन [अनुनास] अनुनासिक, जो नाक से बोला जाता है वह अक्षर। २ वि सानुस्वार, अनुस्वार-युक्त (ठा ७), 'कागस्सर-मणुणासं च' (जीव ३ टी)।

अणुणासिअ पु [अनुनासिक] देखो ऊपर का पहला अर्थ (वज्जा ६)।

अणुणी सक [अनु + नी] १ अनुनय करना, विनय करना, प्रार्थना करना। २ समझाना, दिलासा देना, सान्त्वना देना। वकृ अणुणन, 'पुरोहियं तं कममाणुणंत' (उत्त १४ भवि), अणुणेंत (गा ६०२)। कवकृ अणुणिज्जंत, अणुणिज्जमाण, अणुणीअमाण (सुपा २६७, से २, १६, पि ५३६)।

अणुणीअ वि [अनुनीत] जिसका अनुनय किया गया हो वह (दे ८, ४८)।

अणुणेंत देखो अणुणी।

अणुण्णय वि [अनुन्नत] १ नीचा, नम्र (दस ५, १)। २ गर्वरहित, निरभिमानी; 'एत्थवि भिक्खू अणुण्णए विणीए' (सुअ १ १६)।

अणुण्णव सक [अनु + ज्ञापय्] १ अनु-मति देना। २ आज्ञा देना, हुकुम देना। कर्म अणुण्णविज्जइ (उवा)। वकृ अणुण्णवेमाण (ठा ६)। कृ अणुण्णवेयव्व (ओघ ३८५ टी)। संकृ अणुण्णवित्ता, अणुण्णविय (आवम, आचा २ २, ६)।

अणुण्णवणया } स्त्री [अनुज्ञापना] १ अनु-
अणुण्णवणा } मति, सम्मति। २ आज्ञा फरमाइश (सम ४८, ओघ ३८८ टी)।

अणुण्णवणी स्त्री [अनुज्ञापनी] अनुमति-प्रका-शक भाषा, अनुमति देने का वाक्य (ठा ८,३)।

अणुण्णा स्त्री [अनुज्ञा] १ अनुमति, अनुमोदन (सुअ २ २)। २ आज्ञा। °कप्प पु [°कल्प] जैन साधुओं के लिए वस्त्र-पात्रादि लेने के विषय में शास्त्रीय विधान (पंचभा)।

अणुण्णा स्त्री [अनुज्ञा] १ पठन विषयक गुरु-आज्ञा-विशेष (अणु ३)। २ सूत्र के अर्थ का अध्ययन (वव १)।

अणुण्णाय वि [अनुज्ञात] १ जिसको आज्ञा दी गई हो वह। २ अनुमत, अनुमोदित (ठा ३, ४)।

अणुण्ह वि [अनुष्ण] ठंडा, जो गरम नहीं है वह (पि ३१२)।

अणुतड पु [अनुतट] भेद पदार्थों का एक जाति का पृथक्करण, जैसे मतप्त लोहे को हथौड़े से पीटने से स्फुलिंग (चिनगारी) पृथक् होते हैं (ठा ५)।

अणुतडिया स्त्री [अनुतटिका] १ ऊपर देखो (पण्ण ११)। २ तलाव, द्रह आदि का भेद (भास ७)।

अणुतप्प अक [अनु+तप] अनुताप करना, पछताना। अणुतप्पइ (स १८८)।

अणुतप्पि वि [अनुतापिन्] पश्चात्ताप करने-वाला (वव)।

अणुताव सक [अनु + तापय्] तपाना। संकृ अणुतावित्ता (सुअ २, ४, १०)।

अणुताव पु [अनुताप] पश्चात्ताप (पाअ; स १८४)।

अणुतावय वि [अनुतापक] पश्चात्ताप करने-वाला (सुअ २, ७, ८)।

अणुतावि देखो अणुतप्पि (उत्त ७२८ टी)।

अणुत्त वि [अनुक्त] अकथित (पंच ५)।

अणुत्तन देखो अणुवत्त।

अणुत्तप्प वि [अनुत्त्राप्य] १ परिपूर्ण शरीर। २ पूर्ण शरीरवाला, 'होइ अणुत्तप्पो सो अवि-गलइंदियपडिपुण्णो' (वव २)।

अणुत्तर वि [अनुत्तर] १ सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम (ठा १०)। २ एक सर्वोत्तम देवलोक का नाम (अनु)। ३ छोटा, 'अणुत्तरो भाया' (पउम ६, ४)। °ग्गा स्त्री [°अग्र्या] एक पृथिवी, जहाँ मुक्त जीवों का निवास है (सुअ १,६)। °णाणि वि [°ज्ञानिन्] केवलज्ञानी (सुअ १, २, ३)। °विमाण न [°विमान] एक सर्वोत्कृष्ट देवलोक (भग ६ ६)। °ोववाइय वि [°ौपपातिक] अनुत्तर देवलोक में उत्पन्न (अनु)। °ोववाइयदसा स्त्री ब [°ौपपातिकदशा] नववाँ जैन अंग-ग्रंथ (अनु)।

अणुत्थाण देखो अणुट्ठाण (स ६४६)।

अणुत्थाहय वि [अनुत्साह] हतोत्साह, निराश (कुमा)।

अणुदत्त पु [अनुदात्त] नीचे से बोला जाने-वाला स्वर (बृह १)।

अणुदय पु [अनुदय] १ उदय का अभाव। २ कर्म-फल के अनुभव का अभाव (कम्म २ १३ १४, १५)।

अणुदवि न [दे] प्रभात, सुबह (दे १, १६)।

अणुदिअ वि [अनुदित] जिसका उदय न हुआ हो (भग)।

अणुदिअस न [अनुदिवस] प्रतिदिन, हमेशा (नाट)।

अणुदिज्जत वि [अनुदीयमान] उदय में न आता हुआ (भग)।

अणुदिण न [अनुदिन] प्रतिदिन, हमेशा (कुमा)।

अणुदिण्ण } वि [अनुदित] १ उदय को
अणुदिन्न } अप्राप्त। २ फल-दान में असमर्थ

अणोसिय वि [अनुषित] १ जिसने वास न किया हो। २ अव्यवस्थित, 'अणोसिएण न करेइ णाणं' (धर्म ३, सूत्र १,१४)।
अणोहंतर वि [अनोघन्तर] पार जाने के लिए असमर्थ, 'मुणिणा हु एय पवेइय अणोहंतरा एए, नो य ओहं तरित्तए' (आचा)।
अणोहट्टय वि [अनपघट्टक] निरंकुश, स्वच्छन्दी (णाया १, १६)।
अणोहीण वि [अनवहीन] हीनता-रहित (पि १२०)।
अण्ण सक [भुज्] भोजन करना, खाना। अण्णाइ (षड्)।
अण्ण स [अन्य] दूसरा, पर (प्राप्र १३१)। °उत्थिय वि [°तीर्थिक, °यूथिक] अन्य दर्शन का अनुयायी (सम ६०)। °ग्गहण न [°ग्रहण] १ गान के समय होनेवाला एक प्रकार का मुख-विकार। १ पु गानेवाला, गान्धर्विक, गवैया (निचू १७)। °धम्मिय वि [°धार्मिक] भिन्न धर्म वाला (ओव १५)।
अण्ण न [अन्न] १ नाज, चावल आदि धान्य (सूत्र १, ४, २)। २ भक्ष्य पदार्थ (उत्त २०)। ३ भक्षण, भोजन (सूत्र १, २)। °इलाय, °गिलाय वि [°ग्लायक] बासी अन्न को खानेवाला (ओप, भग १६, ३)। °विहि पुस्त्री [°विधि] पाक कला (औप)।
अण्ण न [अर्णस्] पानी, जल (उत्त ५)।
अण्ण वि [दे] १ आरोपित। २ खण्डित (षड्)।
°अण्ण देखो कण्ण = कर्ण (गा ५६४, कप्पू)।
अण्णअ पु [दे] १ जवान, तरुण। २ धूर्त, ठग। ३ देवर (दे १, ५५)।
अण्णइअ वि [दे] १ तृप्त (दे १, १६)। २ सब विषयो मे तृप्त, सर्वार्थ-तृप्त (षड्)।
अण्णओ अ [अन्यतस्] दूसरे मे, दूसरी तरफ (उत्त १)। देखो अन्नओ।
अण्णण्ण वि [अन्योन्य] परस्पर, आपस मे (षड्)।
अण्णण्ण वि [अन्यान्य] और और, अलग-अलग,

'अण्णण्णाइ उवेंता,
संसारवहम्मि णिरवसाणम्मि।
मरणंति धीरहियआ,
वणइट्टाणाइव कुलाइं' (गउड)।

अण्णत्त अ [अन्यत्र] दूसरे मे, भिन्न स्थान मे (गा ६५५)।
अण्णत्ति स्त्री [दे] अवज्ञा, अपमान, निरादर (दे १, १७)।
अण्णत्तो देखो अण्णओ (गा ६३६)।
अण्णत्थ देखो अण्णत्त (विपा १, २)।
अण्णत्थ वि [अन्यस्थ] दूसरे (स्थान) मे रहा हुआ (गा ५५०)।
अण्णत्थ वि [अन्वर्थ] यथार्थ, यथा नाम तथा गुण वाला, 'ठियमण्णत्थे तयत्थनिरवेक्ख' (विसे)।
अण्णमण्ण देखो अण्णण्ण = अन्योन्य, 'अण्णमण्णमणुरत्तया' (णाया १, २)।
अण्णमय वि [दे] पुनरुक्त, फिर से कहा हुआ (दे १, २८)।
अण्णय देखो अन्नय (धर्मम ३६२)।
अण्णयर वि [अन्यतर] दो मे से कोई एक (कप्प)।
अण्णया अ [अन्यदा] कोई समय मे (उप ६ टी)।
अण्णव पु [अर्णव] १ समुद्र। २ संसार, 'अण्णवंसि महोघंसि एगे तिण्णे दुरुत्तरे' (उत्त ५)।
अण्णव न [ऋणवत्] एक लोकोत्तर मुहूर्त्त का नाम (ज ७)।
अण्णह न [अन्वह] प्रतिदिन, हमेशा (धर्म १)।
अण्णह देखो अण्णत्त (षड्)।
अण्णह } अ [अन्यथा] अन्य प्रकार से,
अण्णहा } विपरीत रीति से, उलटा (षड्, महा)। °भाव पुं [°भाव] वैपरीत्य, उलटापन (बृह ४)।
अण्णहि देखो अण्णत्त (षड्)।
अण्णा स्त्री [आज्ञा] आज्ञा, आदेश (गा २३, अभि ६३, मुद्रा ५७)।
अण्णाइट्ठ वि [अन्वादिष्ट] आदिष्ट, जिसको आदेश दिया गया हो वह, 'अज्जुणए मालागारे मोग्गरपाणिणा जक्खेणं अण्णाइट्ठे समाणे' (अंत २०)।
अण्णाइट्ठ वि [अन्वाविष्ट] १ व्याप्त (भग १४, १)। २ पराधीन, परवश (भग १८ ६)।
अण्णाइस (अप) वि [अन्यादृश] दूसरे के जैसा (पि २४५)।
अण्णाण न [अज्ञान] १ अज्ञान, अजानकारी, मूर्खता (दे १, ७)। २ मिथ्या ज्ञान, झूठा ज्ञान (भग ८, २)। ३ वि ज्ञान-रहित, मूर्ख (भग १, ६)।
अण्णाण न [दे] दाय, विवाह-काल मे वधू को अथवा वर को जो दान दिया जाता है वह (दे १, ७)।
अण्णाणि वि [अज्ञानिन्] १ ज्ञान रहित, मूर्ख (सूत्र १, ७)। २ मिथ्या-ज्ञानी (पच १)। ३ अज्ञान को ही श्रेयस्कर माननेवाला, अज्ञान-वादी (सूत्र १, १२)।
अण्णाणिय वि [आज्ञानिक] १ अज्ञानवादी, अज्ञानवाद का अनुयायी (आव ६, सम १०६)। २ मूर्ख, अज्ञानी (सूत्र १, १, २)।
अण्णाय वि [अज्ञात] अविदित, नही जाना हुआ (पण्ह २ १)।
अण्णाय पु [अन्याय] न्याय का अभाव (श्रा १२)।
अण्णाय वि [दे] आर्द्र, गीला (से ४, ६)।
अण्णाय वि [अन्याय्य] न्याय से च्युत, न्याय-विरुद्ध, 'जे विग्गहीए अण्णायभासी, न से समे होइ अझंझपत्ते' (सूत्र १, १३)।
अण्णाय्य (शौ) ऊपर देखो (मा २०)।
अण्णारिच्छ वि [अन्यादृक्ष] दूसरे के जैसा (प्रामा)।
अण्णारिस वि [अन्यादृश] दूसरे के जैसा (पि २४५)।
अण्णासय वि [दे] विस्तृत, बिछाया हुआ (षड्)।
अण्णिज्जमाण देखो अण्णे।
अण्णिय वि [अन्वित] युक्त, सहित (सूत्र १, १०, नाट)।
अण्णिया स्त्री [दे] देखो अण्णी (दे १, ५१)।
अण्णिया स्त्री [अन्निका] एक विख्यात जैन मुनि की माता का नाम (ती ३६)। °उत्त पु [°पुत्र] एक विख्यात जैन मुनि (ती ३६)।

अणुपालिय वि [अनुपालित] रक्षित, प्रतिपालित (ठा ८)।

अणुपास देखो **अणुपस्स**। वकृ. **अणुपासमाण** (दसचू २)।

अणुपिट्ठ न [अनुपृष्ठ] अनुक्रम, 'अणुपिट्ठमिद्धाइ' (सम्म)।

अणुपिहा देखो **अणुपेहा** (द्रव्य ३५)।

अणुपुख न [अनुपुङ्ख] मूल तक, अन्त-पर्यन्त, 'अणुपुखमावडतावि आवया तस्स ऊमवा हुति' (कुप्र ३३)।

अणुपुव्व वि [अनुपूर्व] क्रमवार, आनुक्रमिक (ठा ४, ४)। क्रिवि क्रमश (पाअ)। °**सो** [शस्] अनुक्रम से (आचा)।

अणुपुव्व न [आनुपूर्व्य] क्रम, परिपाटी, अनुक्रम (राय)।

अणुपुव्वी स्त्री [आनुपूर्वी] ऊपर देखो (पाअ)।

अणुपेक्खा स्त्री [अनुप्रेक्षा] भावना, चिन्तन, विचार (पउम १४, ७७)।

अणुपेहण न [अनुप्रेक्षण] ऊपर देखो (उप १४२ टी)।

अणुपेहा स्त्री [अनुप्रेक्षा] ऊपर देखो (पि ३२३)।

अणुपेहि वि [अनुप्रेक्षिन्] चिन्तन-कर्ता (सूत्र १, १०, ७)।

अणुप्पइन्न वि [अनुप्रकीर्ण] एक दूसरे से मिला हुआ, मिश्रित (कप्प)।

अणुप्पणी सक [अनुप्र + णी] १ प्रणय करना। २ प्रसन्न करना। वकृ. **अणुप्पणत** (उप पृ २८)।

अणुप्पगथ [अणुप्रग्रन्थ] सन्तोषी, अल्प परिग्रह वाला (ठा ६)।

अणुप्पगथ वि [अनुप्रग्रन्थ] ऊपर देखो (ठा ६)।

अणुप्पण्ण वि [अनुत्पन्न] अविद्यमान (नीचू ५)।

अणुप्पत्त देखो **अणुपत्त** (कप्प)।

अणुप्पदा सक [अनुप्र+दा] दान देना, फिर-फिर देना। अणुप्पदेइ (कस)। कृ **अणुप्पदायव्व** (कस)। हेकृ **अणुप्पदाउं** (उवा)।

अणुप्पदाण न [अनुप्रदान] दान, फिर-फिर दान देना (श्राव ६)।

अणुप्पभु पु [अनुप्रभु] स्वामी के स्थानापन्न प्रतिनिधि (निचू २)।

अणुप्पया देखो **अणुप्पदा**। अणुप्पएद (कम)। हेकृ **अणुप्पयाउ** (उवा)।

अणुप्पयाण देखो **अणुप्पदाण** (आचा)।

अणुप्पवत्त सक [अनुप्र + वृत्] अनुसरण करना। हेकृ **अणुप्पवत्तए** (विसे २००७)।

अणुप्पवाइत्तु } वि [अनुप्रवाचयितृ]
अणुप्पवाएत्तु } अध्यापक, पाठक पढानेवाला (ठा ५, १, गच्छ १)।

अणुप्पवाद पु [अनुप्रवाद] कथन (सूत्र २ ७, १३)।

अणुप्पवाय सक [अनुप्र+वाचय्] पढाना। वकृ **अणुप्पवाएमाण** (जं ३)।

अणुप्पवाय न [अनुप्रवाद] नववा पूर्व, बारहवें जैन अग-ग्रन्थ का एक अश-विशेष (ठा ६)।

अणुप्पविट्ठ देखो **अणुपविट्ठ** (कप्प)।

अणुप्पवित्ति स्त्री [अनुप्रवृत्ति] अनुप्रवेश, अनुगम (विसे २१६०)।

अणुप्पविस देखो **अणुपविस**। अणुप्पविसइ (उवा)। सकृ **अणुप्पवेसेत्ता** (निचू १)।

अणुप्पवेस देखो **अणुपवेस** (नाट)।

अणुप्पवेसण न [अनुप्रवेशन] देखो **अणुपवेस** (नाट)।

अणुप्पसाद (शौ) सक [अनुप्र + सादय्] प्रसन्न करना। अणुप्पसादेदि (नाट)।

अणुप्पसूय वि [अनुप्रसूत] उत्पन्न, पैदा किया हुआ (आचा)।

अणुप्पाइ वि [अनुपातिन्] युक्त, सबद्ध, सबन्धी (निचू १)।

अणुप्पिय वि [अनुप्रिय] अनुकूल, इष्ट (सूत्र १, ७)।

अणुप्पेंत वि [अनुत्प्रयत्] दूर करता, हटाता हुआ,

जम्मि अविसएगहिययत्तणेण ते
गारव वलग्गति।
त विसममणुप्पेंतो गरुयाए विही खलो होइ' (गउड)।

अणुप्पेच्छ देखो **अणुप्पेह**,

'तह पुव्विं कि न कय, न बाहए
जेण मे समत्थोवि।
एण्हि कि कस्स व कुप्पिमोत्ति धीरा।
अणुप्पेच्छ' (उव)।

अणुप्पेसिय वि [अनुप्रेषित] पीछे से भेजा हुआ (नाट)।

अणुप्पेह सक [अनुप्र + ईक्ष्] चिन्तन करना, विचारना अणुप्पेहति (पि ३२३)। कृ **अणुप्पेहियव्व** (पमू १)।

अणुप्पेहा स्त्री [अनुप्रेक्षा] चिन्तन भावना, विचार, स्वाध्याय-विशेष (उत्त २९)।

अणुप्फास पु [अनुस्पर्श] अनुभाव, प्रभाव, 'लाहस्सेव अणुप्फासो मन्ने अन्नयरामवि' (दस ६)।

अणुफुसिय वि [अनुप्रोञ्छित] पोछा हुआ, साफ किया हुआ (स ३८८)।

अणुबध सक [अनु + बन्ध] १ अनुसरण करना। २ सबन्ध बनाये रखना। अणुबधति (उत्तर ७१)। वकृ. **अणुबंधत** (वेणी १८३)। कवकृ **अणुबधीअमाण अणुबधिज्जमाण** (नाट)। हेकृ **अणुबधिदु** (शौ) (मा ६)।

अणुबध पु [अनुबन्ध] १ सततपन निरन्तरता विच्छेद का अभाव (ठा ६, उवर १२८)। २ सबन्ध (स १३८, गउड)। ३ कर्मा का सबन्ध (पचा १५)। ४ कर्मों का विपाक परिणाम (उवर ४, पचा १८)। ५ स्नेह प्रेम (स २७९)

'नयणाण पडउ वज्ज, अहवा वज्जस्स
वड्डिल किंपि।
अमुणियजणेवि दिट्ठे, अणुबधं जाणि कुव्वति' (सुर ४, २०)। ६ शास्त्र के आरम्भ मे कहने लायक अधिकारी विषय, प्रयोजन और सबन्ध (श्रात्र १)। ७ निर्बन्ध आग्रह (स ४५८)।

अणुबधअ वि [अनुबन्धक] अनुबन्ध करनेवाला (नाट)।

अणुबधण न [अनुबन्धन] अनुकूल बन्धन (उत्त २९, ४५, सुख २९, ४५)।

अणुबंधणा स्त्री [अनुबन्धना] अनुसन्धान, विस्मृत अर्थ का सन्धान (पचा १०,४५)।

अणुबधि वि [अनुबन्धिन्] अनुबन्धवाला, अनुबन्ध करनेवाला (धर्म २ स १२७)।

अणुबधिअ न [दे] हिक्का-रोग, हिचकी (दे १, ४४)।

अणुबधेल्ल वि [अनुबन्धिन्] विच्छेद-रहित, अनुगमवाला, अविनश्वर (उप २३३)।

बन्धन हो वह। २ पु श्राधाकर्म दोष (पिंड ६५)।

अत्तट्ठ वि [आत्मार्थ] १ आत्मीय, स्वकीय (धर्म २)। २ पु स्वार्थ, 'इह कामनियत्तस्स अत्तट्ठे नावरज्भइ' (उत्त ८)।

अत्तट्ठिय वि [आत्मार्थिक] १ आत्मीय। २ जो अपने लिए किया गया हो, 'उवक्खड भोयण माहणाणं अत्तट्ठिय सिद्धमहेगपक्ख' (उत्त १२)।

अत्तण, अत्तणअ } देखो अप्प = आत्मन् (मृच्छ २३६)। °केरक वि [आत्मीय] निजी, स्वकीय (नाट, पि ४०१)।

अत्तणअ, अत्तणक } (शौ) वि [आत्मीय] स्वकीय, अपना, निजका (पि २७७, नाट)।

अत्तणिज्जिय वि [आत्मीय] स्वकीय (ठा ३, १)।

अत्तणीअ (शौ) ऊपर देखो (स्वप्न २७)।

अत्तमाण देखो आवत्त = आ + वृत्।

अत्तय पु [आत्मज] पुत्र, लड़का। °या स्त्री [°जा] पुत्री, लड़की (विपा १ १)।

अत्तव्व वि [अत्तव्य] खाने लायक, भक्ष्य (नाट)।

अत्ता स्त्री [दे] १ माता, माँ (दे १, ५१, चारु ७०)। २ सासू (दे १, ५१, गा ६६७, हेका ३०)। ३ फूफा। ४ सखी (दे १,५१)।

°अत्ता देखो जत्ता (प्रति ८२)।

अत्ताण देखो अत्त = आत्मन्, (पि ४०१)।

अत्ताण वि [अत्राण] १ शरण-रहित, रक्षक-वर्जित (पण्ह १, १)। २ पु कन्धे पर लाठी रखकर चलनेवाला मुसाफिर। ३ फटे-टूटे कपड़े पहनकर मुसाफिरी करनेवाला यात्री (बृह १)।

अत्ति पु [अत्रि] इस नाम का एक ऋषि (गउड)।

अत्ति स्त्री [अर्त्ति] पीडा, दुःख (कुमा, सुपा १८५)। °हर वि [°हर] पीडा-नाशक, दुःख का नाश करनेवाला (अभि १०३)।

अत्तिहरी स्त्री [दे] दूती, समाचार पहुँचाने-वाली स्त्री (षड्)।

अत्तीकर सक [आत्मी + कृ] अपने अधीन करना, वश करना। अत्तीकरेइ; वकृ. अत्ती-करत (निचू ४)।

अत्तीकरण न [आत्मीकरण] अपने वश करना (निचू ४)।

अत्तुक्करिस, अत्तुक्कोस } पु [आत्मोत्कर्ष] अभिमान, गर्व, 'तम्हा अत्तुक्करिसो वज्जे-यव्वो जइजणेण' (सूअ १, १३, सम ७१)।

अत्तुक्कोसिय वि [आत्मोत्कर्षिक] गर्विष्ठ, अभिमानी (औप)।

अत्तेय पु [आत्रेय] १ अत्रि ऋषि का पुत्र (पि १०, ८३)। २ एक जैन मुनि (विसे २७६१)।

अत्तो अ [अतस्] १ इससे, इस हेतु से (गउड)। २ यहां से (प्रामा)।

अत्थ देखो अट्ठ = अर्थ (कुमा, उप ७२८, ८८४ टी, जी १, प्रासू ६५, गउड), 'अरोड-अत्थे कहिए विलावो' (गोय ७), 'अत्थमहो फलत्थोय' (विसे १०३६, १२४३)। °जोणि स्त्री [°योनि] धनोपार्जन का उपाय, साम, दाम, दण्ड रूप अर्थ नीति (ठा ३,३)। °णय पु [°नय] शब्द को छोड अर्थ को ही मुख्य वस्तु माननेवाला पक्ष (अणु)। °सत्थ न [शास्त्र] अर्थ शास्त्र, सपत्ति-शास्त्र (णाया १, १)। °वइ पु [°पति] १ धनी। २ कुबेर (वव ७)। °वाय पु [°वाद] १ गुणवर्णन। २ दोष-निरूपण। ३ गुण-वाचक शब्द। ४ दोष-वाचक शब्द (विसे)। °वि वि [°वित्] अर्थ का जानकार (पिंड १ भा)। °सिद्ध वि [°सिद्ध] १ प्रभूत धनवाला (ज ७)। २ पु ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिनदेव (तित्थ)। °लिय न [°लीक] धन के लिए असत्य बोलना (पण्ह १, २)। °लोयण न [°लोचन] पदार्थ का सामान्य ज्ञान (आचू १)। °लोयण न [°लोकन] पदार्थ का निरीक्षण,

'अत्थालोयण-तरला,इयरकईण भमति बुद्धीओ।
अत्थच्चेय निरारम्भमेति हियय कइन्दाणं॥'
(गउड)।

अत्थ पुं [अस्त] १ जहां सूर्य अस्त होता है वह पर्वत (से १०, १०))। २ मेरु पर्वत (सम ६५)। ३ वि अविद्यमान (णाया १, १३)। °गिरि पुं [°गिरि] अस्ताचल (सुर ३, २७७, पउम १६ ४५)। °सेल पु [°शैल] अस्ताचल (सुर ३, २२६)। °चल पुं [°चल] अस्त-गिरि (कप्पू)।

अत्थ न [अस्त्र] हथियार, आयुध (पउम ८, ५०, से १४, ६१)।

अत्थ सक [अर्थय्] मागना, याचना करना, प्रार्थना करना, विज्ञप्ति करना। अत्थयए (निचू ४)।

अत्थ अक [स्था] बैठना। अत्थइ (आरा ७१)।

अत्थ, अत्थं } देखो अत्त = अत्र (कप्प, पि २६३, ३६१)।

अत्थंडिल त्रि [अस्थण्डिल] साधुओं के रहने के लिए अयोग्य स्थान, क्षुद्र जन्तुओं से व्याप्त स्थान (ओघ १३)।

अत्थंत वकृ [अस्त यत्] अस्त होता हुआ (वज्जा २२)।

अत्थकिरिआ स्त्री [अर्थक्रिया] वस्तु का व्यापार, पदार्थ से होनेवाली क्रिया (धर्मसं ४६६)।

अत्थक्क न [दे] १ अकाण्ड, अकस्मात्, बे-समय (उप ३३०, से ११, २४, आ ३०, भवि), 'अत्थक्कगज्जिउब्भतहित्यहिअआ पहिअ-जाआ' (गा ३८६)। २ वि. अखिन्न (वज्जा ६)। ३ क्रिवि अनवरत, हमेशा (गउड)।

अत्थग्घ वि [दे] १ मध्य-वर्ती, बीच का, 'सभए अत्थग्घे वा ओइएणेसु घण पट्टे' (ओघ ३४)। २ अगाध, गभीर। ३ न. लम्बाई, आयाम। ४ स्थान, जगह (दे १, ५४)।

अत्थण न [अर्थन] प्रार्थना, याचना (उप ७२८ टी)।

अत्थणिऊर पुन [अर्थनिपूर] देखो अच्छ-णिउर (अणु ६६)।

अत्थणिऊरग पुन [अर्थनिपूराङ्ग] देखो अच्छणिउरग (अणु ६६)।

अत्थत्थि वि [अर्थार्थिन्] धन की इच्छा-वाला (उव १३६)।

अत्थम अक [अस्तम् + इ] अस्त होना, अदृश्य होना। अत्थमइ (पि ५५८)। वकृ. अत्थमत (पउम ८२, ५६)।

अत्थमण न [अस्तमयन] अस्त होना, अदृश्य होना (ओघ ९०७, से ८, ८५, गा २८४)।

अत्थमाविय वि [अस्तमापित] अस्त कर-वाया हुआ (सम्मत्त १६१)।

अत्थमिय वि [अस्तमित] १ अस्त हुआ,

अणुयत्त देखो अणुवत्त = अनु + वृत् । अणुयत्तइ (भवि) । वकृ. अणुयत्तंत, अणुयत्तमाण (पंचभा, विसे १२५१) । संकृ. अणुयत्तिऊण (गउड) ।

अणुयत्त देखो अणुवत्त = अनुवृत्त (भवि) ।

अणुयत्तणा स्त्री [अनुवर्तना] १ बीमार की सेवा-शुश्रूषा करना (बृह १) । २ अनुसरण । ३ अनुकूल वर्तन (जीव १) ।

अणुयत्तिय वि [अनुवृत्त] अनुकूल किया हुआ, प्रसादित (सुपा १३०) ।

अणुयरिय वि [अनुचरित] आचरित, अनुष्ठित (णाया १, १) ।

अणुया देखो अणुण्णा (सूअ २, १) ।

अणुयाव देखो अणुताव (स १८३) ।

अणुयास पु [अनुकाश] विशेष विकास (णाया १, १) ।

अणुरगा स्त्री [दे] गाडी (बृह १) ।

अणुरंगि वि [अनुरङ्गिन्] अनुकरण-कर्ता (सुज्ज १०, ८) ।

अणुरंगिय वि [अनुरङ्गित] रंगा हुआ (भवि) ।

अणुरंज सक [अनु + रञ्जय्] अनुरागी करना, प्रीणित करना । वकृ अणुरंजअंत (नाट) । संकृ अणुरंजिअ (नाट) ।

अणुरंजण न [अनुरञ्जन] राग, आसक्ति (विसे २६७७) ।

अणुरंजिएल्लय } वि [अनुरञ्जित] अनुरक्त किया हुआ, अनुरागी बनाया
अणुरंजिय } हुआ (ज ३, महा) ।

अणुरक्त वि [अनुरक्त] अनुराग-प्राप्त, प्रेम-प्राप्त (नाट) ।

अणुरज्ज अक [अनु + रञ्ज्] अनुरक्त होना, प्रेमी होना, 'अणुरज्जति खणेण जुवईउ खणेण पुण विरज्जति' (महा) ।

अणुरत्त देखो अणुरक्त (णाया १, १६) ।

अणुरसिय वि [अनुरसित] बोलाया हुआ, आहूत (णाया १, ६) ।

अणुराइ } वि [अनुरागिन्] अनुराग-
अणुराइल्ल } वाला, प्रेमी (स ३३०, महा, सुर १३, १२०) ।

अणुराग पुं [अनुराग] प्रेम, प्रीति (सुर ४, २२८) ।

अणुरागय वि [अन्वागत] १ पीछे आया हुआ । २ ठीक-ठीक आया हुआ । ३ न स्वागत (भग २, १) ।

अणुरागि देखो अणुराइ (महा) ।

अणुराय देखो अणुराग (प्रासू १११) ।

अणुराहा स्त्री [अनुराधा] नक्षत्र-विशेष (सम ६) ।

अणुरुंध सक [अनु + रुध्] १ अनुरोध करना । २ स्वीकार करना । ३ आज्ञा का पालन करना । ४ प्रार्थना करना । ५ अक. अधीन होना । कर्म अणुरुंधिज्जइ (हे ४, २४८ प्रामा) ।

अणुरुअ } वि [अनुरूप] १ योग्य, उचित
अणुरूव } (से ६, ३६) । २ अनुकूल (सुपा ११०) । ३ सदृश, तुल्य (णाया १, १६) । ४ न. समानता, योग्यता (सम्म) ।

अणुरोह पु [अनुरोध] १ प्रार्थना, 'ता ममाणुरोहेण एत्थ घरे निच्चमेव आगतव्व' (महा) । २ दाक्षिण्य, दक्षिणता (पात्र) ।

अणुरोहि वि [अनुरोधिन्] अनुरोध करनेवाला (स १२१) ।

अणुलग्ग वि [अनुलग्न] पीछे लगा हुआ (गा ३४५, सुर ३, २२६, सूक्त ७) ।

अणुलद्ध वि [अनुलब्ध] १ पीछे से मिला हुआ । २ फिर से मिला हुआ (नाट) ।

अणुलाव पु [अनुलाप] फिर-फिर बोलना (ठा ७) ।

अणुलिंप सक [अनु + लिप्] १ पोतना, लेप करना । २ फिर से पोतना । संकृ अणुलिंपित्ता (पि ५८२) । हेकृ अणुलिंपित्तए (पि ५७८) ।

अणुलिंपण न [अनुलेपन] लेप, पोतना (पण्ह २, ३) ।

अणुलित्त वि [अनुलिप्त] लिप्त, पोता हुआ (कप्प) ।

अणुलिह सक [अनु + लिह्] १ चाटना । २ छूना । वकृ. अणुलिहंत (सम १३१), 'गयणयलमणुलिहंतं' (पउम ३६, १२) ।

अणुलेवण न [अनुलेपन] १ लेप, पोतना (स्वप्न ६४) । २ फिर से पोतना (पण्ण २) ।

अणुलेविय वि [अनुलेपित] लिप्त, पोता हुआ, 'कम्माणुलेविओ सो' (पउम ८२, ७४) ।

अणुलोम सक [अनुलोमय्] १ क्रम से रखना । २ अनुकूल करना । संकृ अणुलोमइत्ता (ठा ६) ।

अणुलोम न [अनुलोम] १ अनुक्रम, यथाक्रम; 'वत्थ दुहाणुलोमेण तह य पडिलोमओ भवे वत्थ' (सुर १६, ४८) ।

अणुलोम वि [अनुलोम] सीधा, अनुकूल (ज २) ।

अणुल्लग देखो अणुल्लय (सुख ३६, १३०) ।

अणुल्लण वि [अनुल्वण] अनुद्धत, अनुद्भट (बृह ३) ।

अणुल्लय पु [अनुल्लक] एक द्वीन्द्रिय क्षुद्र जन्तु (उत्त ३६) ।

अणुल्लाव पु [अनुल्लाप] खराब कथन, दुष्ट उक्ति (ठा ३) ।

अणुव पुं [दे] बलात्कार, जबरदस्ती (दे १, १६) ।

अणुवइट्ठ वि [अनुपदिष्ट] १ अ-कथित, अ-व्याख्यात । २ जो पूर्व-परम्परा से न आया हो, 'अणुवइट्ठं नाम ज णो आयरियपरपरागय' (नीचू ११) ।

अणुवउत्त वि [अनुपयुक्त] असावधान (विसे) ।

अणुवएस पु [अनुपदेश] १ अयोग्य उपदेश (पंचा १२) । २ उपदेश का अभाव । ३ स्वभाव (ठा २, १) ।

अणुवओग वि [अनुपयोग] १ उपयोग-रहित । २ उपयोग का अभाव, असावधानता (अणु) ।

अणुवक्क वि [अनुवक्र] अत्यंत वक्र, बहुत टेढा, 'जाव अगारओ रासिं विअ अणुवक्क परिगमणं ण करेदि' (माल ६०) ।

अणुवंदण न [अनुवन्दन] प्रति-नमन, प्रतिप्रणाम (सार्ध ३६) ।

अणुवक्क देखो अणुवंक (पि ७४) ।

अणुवक्ख वि [अनुपाख्य] नाम-रहित, अनिर्वचनीय (बृह १) ।

अणुवक्खड वि [अनुपस्कृत] संस्कार-रहित (पाक) (निचू १) ।

अणुवच्च सक [अनु + व्रज्] अनुसरण करना, पीछे-पीछे जाना । अणुवच्चइ (हे ४, १०७) ।

अणुवच्चिअ वि [अनुव्रजित] अनुसृत (कुमा) ।

अत्थुरण न [दे आस्तरण] बिछौना (स ६७)।

अत्थुरिय वि [दे आस्तृत] बिछाया हुआ (स २३९, दे १, ११३)।

अत्थुवड न [दे] भल्लातक, भिलावा वृक्ष का फल (दे १, २३)।

अत्थेक्क वि [दे] आकस्मिक, अचिन्तित (से १२, ४७)।

अत्थोग्गह देखो अत्थुग्गह (सम ११)।

अत्थोग्गहण देखो अत्थुग्गहण (भग ११, ११)।

अत्थोडिग वि [दे] आकृष्ट, खींचा हुआ (महा)।

अत्थोभय त्रि [अस्तोभक] 'उत', 'वे' आदि निरर्थक शब्दों के प्रयोग से अदूषित (सूत्र) (वृह १)।

अत्थोवग्गह देखो अत्थुग्गह (पण्ण १५)।

अथक्क न [दे] १ अकाण्ड, अनवसर, अकस्मात् (षड्)। २ वि पसरनेवाला, फैलनेवाला (कुमा)।

अथव्वण पु [अथर्वण] चौथा वेद-शास्त्र (कप्प, णाया १, ५)।

अथिर वि [अस्थिर] १ चचल, चपल (कुमा)। २ अनित्य, विनश्वर (कुमा)। ३ अदृढ, शिथिल (ओघ)। ४ निर्बल (वव २)। ५ मजबूती से नही बैठा हुआ, नही जमा हुआ (अभ्यास), 'अथिरस्स पुव्वगहियस्स, वत्तणा ज इह थिरीकरणं' (पंचा १२)। °णाम न [°नामन्] नाम-कर्म का एक भेद (सम ६७)।

अद सक [अद्] खाना, भोजन करना। अदइ, अदए (षड्)।

अदसण देखो अद्दसण (पंचभा)।

अदसण पु [दे] चोर, डाकू (दे १, २९, षड्)।

अदंसिया स्त्री [अदर्शिका] एक प्रकार की मीठी चीज (पण्ण १७)।

अदक्खु वि [अदृष्ट] १ नहीं देखा हुआ। २ असर्वज्ञ (सूअ १, २, ३)।

अदक्खु वि [अदक्ष] अनिपुण, अकुशल (सूअ १, २, ३)।

अदक्खु वि [अदृश्य] १ नहीं देखनेवाला, अन्धा। २ असर्वज्ञ, 'अदक्खुव! दक्खुवाहिय सद्दहसु अदक्खुदसणा' (सूअ १, २, ३)।

अदण न [अदन] भोजन (बृह १)।

अदत्त वि [अदत्त] नही दिया हुआ (पण्ह १, ३)। °हार वि [°हार] चोर (आचा)। °हारि वि [°हारिन्] चोर (सूअ १,५,१)। °दाण न [°दान] चोरी (सम १०)। °दाणवेरमण न [°दानविरमण] चोरी से निवृत्ति, तृतीय व्रत (पण्ह २, ३)।

अदन्न देखो अदण्ण (निरि ३१०)।

अदब्भ वि [अदभ्र] अनल्प, बहुत (ज ३)।

अदय वि [अदय] निर्दय, निष्ठुर (निचू २)।

अदिइ देखो अइइ (ठा २, ३)।

अदिण्ण देखो अदत्त (ठा १)।

अदित्त वि [अदृप्त] १ दर्प-रहित, नम्र (बृह १)। २ अहिंसक (ओघ ३०२)।

अदिन्न देखो अदत्त (सम १०)।

अदिस्स देखो अदिस्स (सम ६०, सुपा १५३)।

अदिहि स्त्री [अधृति] अधीराई, धीरज का अभाव (पाअ)।

अदीण वि [अदीन] दीनता-रहित। °सत्तु पु [°शत्रु] हस्तिनापुर का एक राजा (णाया १, ८)।

अदु अ [दे] १ आनन्तर्य-सूचक अव्यय, अब (आचा)। २ इससे (सूअ १, २, २)।

अदु अ [दे] १ अथवा, या (सूअ १, ४, २, १५, उत्त ८, १२, दसचू २, १४)। २ अधिकारान्तर का सूचक (सूअ १, ४, २, ७)।

अदुत्तर अ [दे] आनन्तर्य-सूचक अव्यय, अब, बाद (णाया १, १)।

अदुय न [अद्रुत] अ-शीघ्र, धीरे-धीरे (भग ७,६) °बधण न [°बन्धन] दीर्घ काल के लिए बन्धन (सूअ २, २)।

अदुव } अ [दे] या, अथवा, और, 'हिंसेज
अदुवा } पाणभूयाइं, तसे अदुव थावरे' (दस ५, ५, आचा)।

अदोलि } वि [अदोलिन्] स्थिर, निश्चल
अदोलिर } (कुमा)।

अद्द वि [आर्द्र] १ गीला, भीगा हुआ, अकठिन (कुमा)। २ पुं इस नाम का एक राजा। ३ एक प्रसिद्ध राजकुमार और पीछे से जैन मुनि। ४ वि. आर्द्र राजा के वंशज। ५ नगर-विशेष (सूअ २, ६)। °कुमार पु [°कुमार] एक राजकुमार और बाद में जैन मुनि, 'अद्दकुमारो दढप्पहारी अ' (पडि)। °मुत्था स्त्री [°मुस्ता] कन्द-विशेष, नागर मोथा (श्र २०)। °मलग न [°मलक] १ हरा आमला। २ पीलु-वृक्ष की कली (धर्म २)। ३ शण वृक्ष की कली (पव ४)। °रिट्ठ पु [°रिष्ट] कोमल कौआ (आवम)।

अद्द पु [अब्द] १ मेघ, वर्षा, बारिश (हे २, ७९)। २ वर्ष, सवत्सर, सवत् (सुर १३, ७०)।

अद्द पु [अर्द] आकाश (भग २०, २)।

अद्द पुन [दे] १ परिहास। २ वर्णन (सक्षि ४७)।

अद्द सक [अर्द्] मारना, पीटना (वव १०)।

अद्दइअ न [अद्वैत] १ भेद का अभाव। २ वि भेद-रहित ब्रह्म वगैरह (नाट)।

अद्दइज्ज वि [आर्द्रीय] १आर्द्रकुमार-सम्बन्धी। २ इस नाम का 'सूत्रकृताङ्ग' सूत्र का एक अध्ययन (सूअ २, ६)।

अद्दसण न [अदर्शन] १ दर्शन का निषेध, नही देखना (सुर ७, २४८)। २ वि परोक्ष, जिसका दर्शन न हो, 'एक्कपएच्चिय हारिति मज्झ अद्दसणा इण्हि' (सुपा ६१७)। ३ नही देखनेवाला, अन्धा। ४ 'थीणद्धी' या अधम निद्रा वाला (गच्छ १, पव १०७)। °भूअ, °हूय वि [°भूत] जो अदृश्य हुआ हो (सुर १०, ५६, महा)।

अद्दण } वि [दे] आकुल, व्याकुल (दे १,
अद्दण्ण } १५, बृह १, निचू १०)।

अद्दन्न देखो अद्दण्ण (सुख १, १४)।

अद्दव वि [आर्द्रव] गला हुआ (श्राव ६)।

अद्दव्व न [अद्रव्य] अवस्तु, वस्तु का अभाव, (पंचा ३)।

अद्दह सक [आ + द्रह] उबालना, पानी-तैल वगैरह को खूब गरम करना। अद्दहेइ, अद्दहेमि, संकृ. अद्दहेत्ता (उवा)।

अद्दहिय वि [आहित] रखा हुआ, स्थापित (विपा १, ६)।

अणुवालणा स्त्री [अनुपालना] १ ऊपर देखो (पंचू)। २ °कप्प पु [°कल्प] साधु-गण के नायक की अकस्मात् मृत्यु हो जाने पर गण की रक्षा के लिए शास्त्रीय विधान (पचभा)।

अणुवालय वि [अनुपालक] १ रक्षक, परिपालक। २ पु गोशालक के एक भक्त का नाम (भग २४, २०)।

अणुवास सक [अनु+वासय्] व्यवस्था करना। अणुवासेज्जासि (आचा)।

अणुवास पु [अनुवास] एक स्थान मे अमुक काल तक रह कर फिर वहीं वास करना (पचभा)।

अणुवासण न [अनुवासन] १ ऊपर देखो। २ यन्त्र-द्वारा तेल आदि को अपान से पेट मे चढाना (णाया १, १३)।

अणुवासणा स्त्री [अनुवासना] ऊपर देखो (पचभा, णाया १, १३) °कप्प पु [°कल्प] अनुवास के लिए शास्त्रीय व्यवस्था (पचभा)।

अणुवासग वि [अनुपासक] १ सेवा नही करनेवाला। २ पुं जैनेतर गृहस्थ (निचू ८)।

अणुवासर न [अनुवासर] प्रतिदिन, हमेशा (सुर १, २४१)।

अणुवित्ति स्त्री [अनुवृत्ति] १ अनुकूल वर्तन (कुमा)। २ अनुसरण (उप ८३३ टी)।

अणुविद्ध वि [अनुविद्ध] सबद्ध, जुडा हुआ (से ११, १५)।

अणुविस सक [अनु+विश्] प्रवेश करना। अणुविसंति (सिक्खा ७७)।

अणुविहाण न [अनुविधान] १ अनुकरण। २ अनुसरण (विसे २०७)।

अणुवीइ स्त्री [अनुवीचि] अनुकूलता, 'वेयाणुवीइ मा कासि चोइज्जतो गिलाइ से भुज्जो' (सूअ १, ४, १, १६)।

अणुवीइ, अणुवीई, अणुवीति, अणुवीतिय अ [अनुविचिन्त्य] विचार कर, पर्यालोचना कर (पि ५९३, आचा, दस ७)। देखो अणुचिंत।

अणुवीइत्तु, अणुवीय देखो अणुवीई (सूअ १, १२, २, १, १०, १)।

अणुवूह सक [अनु+वृंह्] अनुमोदन करना, प्रशसा करना। अणुवूहेइ (कप्प)।

अणुवूहेत्तु वि [अनुबृंहितृ] अनुमोदन करने वाला (ठा ७)।

अणुवेद सक [अनु+वेदय्] अनुभव करना। वक्र अणुवेदयत (सूअ १, ५, १)।

अणुवेध, अणुवेह पु [अनुवेध] १ अनुगम, अन्वय, सम्बन्ध (धर्मसं ७१२, ७१५)। २ समिश्रण (पिंड ५६)।

अणुवेयण न [अनुवेदन] फल-भोग, अनुभव (स ४०३)।

अणुवेल अ [अनुवेल] निरन्तर, सदा (पाअ)।

अणुवेलधर पु [अनुवेलन्धर] नाग-कुमार देवो का एक इन्द्र (सम ३३)।

अणुवेह देखो अणुप्पेह। वक्र अणुवेहमाण (सूअ १, १०)।

अणुव्वइय वि [अनुव्रजित] अनुसृत (स ६८७)।

अणुव्वज सक [अनु+व्रज्] १ अनुसरण करना। २ सामने जाना। अणुव्वजे (सूअ १, ४, १, ३)।

अणुव्वय न [अणुव्रत] छोटा व्रत, साधुओ के महाव्रतो की अपेक्षा लघु व्रत, जैन गृहस्थ के पालने के नियम (ठा ५, १)।

अणुव्वय न [अनुव्रत] ऊपर देखो (ठा ५, १)।

अणुव्वय पु [अणुव्रत] श्रावक-धर्म (पचा १०, ८)।

अणुव्वयण न [अनुव्रजन] अनुगमन (धर्मवि ५४)।

अणुव्वयय वि [अनुव्रजक] अनुसरण करनेवाला, 'अन्नमन्नमणुव्वया' (णाया १, ३)।

अणुव्वया स्त्री [अनुव्रता] पतिव्रता स्त्री (उत्त २०)।

अणुव्वस वि [अनुवश] अधीन, आयत्त, 'एवं तुब्भे सरागत्था अन्नमन्नमणुव्वसा' (सूअ १, ३, ३)।

अणुव्वाण वि [अनुद्वान] १ अ-दन्ध, खुला हुआ (उप २११ टी)। २ स्निग्ध, चिकना, 'पव्वाणं किंचिउव्वाणमेव किंचिच्च होअणुव्वाणं' (ओघ ४८८)।

अणुव्विग्ग वि [अनुद्विग्न] अ-खिन्न, खेद-रहित (णाया १, ८, गा २८५)।

अणुव्विवाग न [अनुविपाक] विपाक के अनुसार, 'एव तिरिक्खे मणुयासुरेसु चउरतणतं तयणुव्विवाग (सूअ १,५,२)।

अणुव्वीइय देखो अणुवीइ (जीव)

अणुसकम सक [अनुस+क्रम्] अनुसरण करना। अणुसंकमति (उत्त १३,२५)।

अणुसग पु [अनुषङ्ग] १ प्रसग, प्रस्ताव (प्रासू ३६, भवि)। २ ससर्ग, सोहवत, 'मज्झठिई पुण एसा, अणुसङ्गेण हवन्ति गुण-दोसा' (सट्ठि २८, २७)।

अणुसंगिअ वि [आनुषङ्गिक] प्रासङ्गिक (भवि १५)।

अणुसचर सक [अनुस+चर्] १ परिभ्रमण करना। २ पीछे चलना। अणुसंचरइ (आचा, सूअ १, १०)।

अणुसंज देखो अणुसज्ज। अणुसंजति (पव ६८)।

अणुसंध सक [अनुस+धा] १ खोजना, ढूंढना, तलाश करना। २ विचार करना। ३ पूर्वापर का मिलान करना। अणुसधेमि (पि ५००)। सक्र अणुसधिवि (भवि)।

अणुसंधण, अणुसंधाण न [अनुसधान] गवेषणा, खोज (सबोघ ४४)। २ पूर्वापर की संगति (धर्मसं ३०३)।

अणुसधण, अणुसधाण न [अनुसधान] १ खोज, शोध। २ विचार, चिन्तन, 'अत्ताणुसंधणपरा सुसावगा एरिसा हुंति' (श्रा २०)। ३ पूर्वापर का मिलान (पचा १२)।

अणुसधिअ न [दे] अविच्छिन्न हिक्का, निरन्तर हिचकी (दे १, ५६)।

अणुसंभर सक [अनु+स्मृ] याद करना। अणुसभरइ (दमनि ४, ५५)।

अणुसवेयण न [अनुसवेदन] १ पीछे से जानना। २ अनुभव करना (आचा)।

अणुससर सक [अनुसं+सृ] गमन करना, भ्रमण करना, 'जो इमाओ दिसाओ वा विदिसाओ वा अणुसंसरइ' (आचा)।

अणुससर सक [अनुस+स्मृ] स्मरण करना, याद करना। अणुसंसरइ (आचा)।

अणुसज्ज अक [अनु+सज्] १ अनुसरण करना, पूर्व काल से कालान्तर मे अनुवर्तन

अद्धक्खिअ न [दे] १ सज्ञा करना, इशारा करना, संकेत करना (दे १ ३४)।

अद्धक्खिअ वि [अर्धाक्षिक] विकृत आख वाला (महानि ३)।

अद्धज । स्त्री [दे अर्धजङ्घा] एक प्रकार
अद्धजघी } का जूता, मोचक नामक जूता, जिसे गुजराती में 'मोजडी' कहते हैं (दे १, ३३, २ ५, ६ १३६)।

अद्धद्धा स्त्री [दे अद्धाद्धा] दिन अथवा रात्रि का एक भाग (सम्न ६ टी)।

अद्धपेडा स्त्री [अर्धपेटा] सन्दूक के अर्ध भाग के आकारवाली गृह-पङ्क्ति मे भिक्षाटन (उत्त ३०, १६)।

अद्धर पु [अध्वर] यज्ञ, याग (पाअ)।

अद्धर वि [दे] प्रच्छन्न, गुप्त, 'तम्हा एयस्स चिट्ठियमद्धरट्ठिओ चेव पिच्छामि, तओ राया तप्पिट्ठिलग्गो' (सम्मत्त १६१)।

अद्धविआर न [दे] १ मण्डन, भूषा, 'मा कुण अद्धविआर' (दे १, ४३)। २ मडल, छोटा मडल (दे १, ४३)।

अद्धा स्त्री [दे अद्धा] १ काल समय, वक्त, (ठा २,१, नव ४२)। २ सकेत (भग ११, ११)। ३ लब्धि, शक्ति-विशेष (विसे)। ४ अ तत्त्वत वस्तुत । ५ साक्षात्, प्रत्यक्ष (पिंग)। ६ दिवस। ७ रात्रि (सत्त ६ टी)। °काल पु [°काल] सूर्य आदि की क्रिया (परिभ्रमण) से व्यक्त होनेवाला समय, 'सूरकिरियाविसिट्ठो गोदोहाइकिरियासु निरवेक्खो। अद्धाकालो भण्णई' (विसे)। °छेय पु [°छेद] समय का एक छोटा परिमाण, दो आवलिका परिमित काल (पच)। °पच्चक्खाण न [°प्रत्याख्यान] अमुक समय के लिए कोई व्रत या नियम करना (आचू ६)। °मीसय न [°मिश्रक] एक प्रकार की सत्य-मृषा भाषा (ठा १०)। °मीसिया स्त्री [°मिश्रिता] देखो पूर्वोक्त अर्थ (पण्ण ११)। °समय पु [°समय] सर्व-सूक्ष्म काल (पण्ण ४)।

अद्धाण पु [अध्वन्] मार्ग, रास्ता (णाया १, १४, सुर ३,२२७)। °सीसय न [°शीर्षक] मार्ग का अन्त, अटवी आदि का अन्त भाग (वव ४, वृह ३)।

अद्धाण पु [अध्वन्] मार्ग, रास्ता, 'हवइ सलाभं नरस्स अद्धाए' (सुख ८, १३)। °सीसय न [°शीर्षक] जहा पर संपूर्ण सार्थ के लोग आगे जाने के लिए एकत्र हो वह मार्ग-स्थान (वव ४)।

अद्धाणिय वि [आध्विक] पथिक, मुसाफिर (वृह ४)।

अद्धासिय वि [अध्यासित] १ अधिष्ठित, आश्रित (सुर ७, २१४, उप २६४ टी)। २ आरूढ (स ६३०)।

अद्धि देखो इड्ढि,

'घएणा वहिरधरआ, ते चिअ जीअति माणुसे लोए।
ए सुणति खलवअण, खलाण अद्धि न पेक्खति' (गा ७०४)।

अद्धिइ स्त्री [अधृति] धीरज का अभाव, अधीरज (पउम ११८, ३६)।

अद्धुइअ वि [अर्धोदित] थोडा कहा हुआ (पि १५८)।

अद्धुग्घाड वि [अर्धोद्घाट] आधा खुला, 'अद्धोग्घाडा थणया' (पउम ३८, १०७)।

अद्धुट्ठ वि [अर्धचतुर्थ] साढे तीन (सम १०१, विसे ६६३)।

अद्धुत्त वि [अर्धोक्त] थोडा कहा हुआ (वव १०)।

अद्धुव वि [अध्रुव] १ चचल, अस्थिर, विनश्वर (स ३३६, पचा १६, पउम २६, ३०)। २ अनियत (आचा)।

अद्धेअद्ध वि [अर्धार्ध] १ द्विधा-भूत, दो टुकडेवाला, खण्डित। २ क्रिवि आधा-आधा जैसे हो,

'अद्धेअद्धप्फुडिआ, अद्धेअद्धकउक्खअमिलावेढा।
पवअभुआहअविसढा अद्धेअद्धमिहरा पडति महिहरा ।।' (से ६, ६६)।

अद्धोरु } देखो अड्ढोरुग (दे ३, ४५, ओघ
अद्धोरुग } ६७६)।

अद्धोवमिय वि [अद्धौपम्य, अद्धौपमिक] काल का वह परिमाण जो उपमा से समझाया जा सके, पल्योपम आदि उपमा-काल (ठा २, ४, ८)।

अध अ [अधस्] नीचे (आचा, पि १६०)।

अध (शौ) अ [अथ] अब, बाद (कप्पू)।

अधइं (शौ) [अथकिम्] १ हाँ। २ और क्या। ३ जरूर अवश्य (कप्पू)।

अधं अ [अधस्] नीचे (पि ३४८)।

अधट्ठ वि [अधृष्ट] अ-ढीठ (कुमा)।

अधण वि [अधन] निर्धन, गरीब,

'रमइ विहवी विसेसे, थिइमत्त थोयवित्थरो महइ।
मग्गइ सरीरमधणो, रोई जीए चिय कयत्थो ।।' (गउड, सण)

अधणि वि [अधनिन्] धन-रहित, निर्धन (श्रा १४)।

अधण्ण वि [अधन्य] अकृतार्थ निन्द्य (पण्ह १,१)।

अधम देखो अहम (उत्त ६)।

अधमण्ण } वि [अधमर्ण] करजदार, देनदार
अधमन्न } (धर्मवि १४६, १३५)।

अधम्म पुं [अधर्म] १ पाप-कार्य निषिद्ध कर्म, अनीति, 'अधम्मेण चेव वित्ति कप्पेमाणे विहरई' (णाया १, १८)। २ एक स्वतन्त्र और लोक-व्यापी अजीव वस्तु, जो जीव वगैरह को स्थिति करने मे सहायता पहुँचाती है (सम २, नव ५)। ३ वि धर्म-रहित, पापी (विपा १, १)। °केउ पु [°केतु] पापिष्ठ (णाया १, १८)। °क्खाइ वि [°ख्याति] प्रसिद्ध पापी (विपा १, १)। °क्खाइ वि [°ख्यायिन्] पाप का उपदेश देनेवाला (भग ३, ७)। °त्थिकाय पु [°ास्तिकाय] अधम्म का दूसरा अर्थ देखो (अणु)। °बुद्धि वि [°बुद्धि] पापी, पापिष्ठ (उप ७२८ टी)।

अधम्मिट्ठ वि [अधर्मिष्ट] १ धर्म को नहीं करनेवाला (भग १२, २)। २ महा-पापी, पापिष्ठ (णाया १, १८)।

अधम्मिट्ठ वि [अधर्मेष्ट] अधर्म-प्रिय, पाप-प्रिय (भग १२, २)।

अधम्मिट्ठ वि [अधर्मोष्ट] पापियो का प्यारा (भग १२, २)।

अधम्मिय देखो अहम्मिय (ठा ४, १)।

अधर देखो अहर (उवा, सुपा १३८)।

अधवा (शौ) देखो अहवा (कप्पू)।

अधा स्त्री [अधस्] अधो-दिशा, नीचली दिशा (ठा ६)।

अधि देखो अहि = अधि।

हुवर्णीय (पउम १७,१४; सुपा ५८१)। संकृ अणुहवेऊण, अणुहविउं (प्राकृ, पचा २)।
अणुहवण न [अनुभवन] अनुभव (स २८७)।
अणुहविय वि [अनुभूत] जिसका अनुभव किया गया हो वह (सुपा ६)।
अणुहारि वि [अनुहारिन्] अनुकरण करने वाला, नकालची (कुमा)।
अणुहाव देखो अणुभाव (स ४०३, ६५६)।
अणुहियासण न [अन्वध्यासन] धैर्य से सहन करना (ज २)।
अणुहु सक [अनु + भू] अनुभव करना। वकृ अणुहुंत (पउम १०२, १५७)।
अणुहुंज सक [अनु + भुज्] भोग करना, भोगना। अणुहुंजइ (भवि)।
अणुहुत्त देखो अणुहूअ (गा ६५९)।
अणुहूअ वि [अनुभूत] १ जिसका अनुभव किया गया हो वह (कुमा)। २ न अनुभव (से ४, २७)।
अणुहो सक [अनु + भू] अनुभव करना। अणुहोंति (पि ४७५)। वकृ अणुहोंत (पउम १०२, १७)। कवकृ अणुहोईअंत, अणुहोइज्जंत, अणुहोइज्जमाण, अणुहोईअमाण (पड्)। कृ अणुहोदव्व (शौ) (अभि १३१)।
अणूकप्प देखो अणुकप्प, 'एत्तो वोच्छं अणूकप्प' (पंचभा)।
अणूण वि [अनून] कम नहीं, अधिक (कुमा)।
अणूय } पुं [अनूप] अधिक जलवाला देश,
अणूव } जल-बहुल स्थान (विसे १७०३, वव ४)।
अणेअ वि [अनेक] देखो अणेक्क (कुमा अभि २४९)।
अणेकज्झ वि [दे] चञ्चल, चपल (दे १, ३०)।
अणेक्क } वि [अनेक] एक से अधिक, बहुत
अणेग } (औप; प्रासू ५३)। °करण न [°करण] पर्याय, धर्म, अवस्था (सम्म १०६)। °राइय वि [°रात्रिक] अनेक रातों में होनेवाला, अनेक रात सम्बन्धी (उत्सवादि) (कप्प)। °सो अ [°शस्] अनेक वार (श्रा १४)।

अणेगंत पुं [अनेकान्त] अनिश्चय, नियम का अभाव (विसे)। °वाय पुं [°वाद] स्याद्वाद, जैनो का मुख्य सिद्धान्त, सत्व-असत्व आदि अनेक विरुद्ध धर्मो का भी एक वस्तु में सापेक्ष स्वीकार,
'जेण विणा लोगस्सवि, ववहारो
सव्वहा न निव्वडइ।
तस्स भुवणेक्कगुरुणो नमो अणेगंतवायस्स'
(सम्म १६६)।
अणेगंतिय वि [अनैकान्तिक] ऐकान्तिक नहीं, अनिश्चित, अनियमित (भग १, १)।
अणेगावाइ वि [अनेकवादिन्] पदार्थो को सर्वथा अलग-अलग माननेवाला, अक्रियावाद-मत का अनुयायी (ठा ८)।
अणेच्छंत वि [अनिच्छत्] नहीं चाहता हुआ (उप ७६८ टी)।
अणेज वि [अनेज] निश्चल, निष्कम्प (आक)।
अणेज्ज वि [अज्ञेय] जानने के अयोग्य, जानने के अशक्य (महा)।
अणेलिस वि [अनीदृश] अनुपम, असाधारण, 'जे धम्म सुद्धमक्खाति पडिपुण्णमणेलिसं' (सूअ १, ११)।
अणेवंभूय वि [अनेवम्भूत] विलक्षण, विचित्र 'अणेवंभूयपि वेयणं वेदंति' (भग ५,५)।
अणेस देखो अण्णेस। वकृ अणेसंत (नाट)।
अणेसण न [अन्वेषण] खोज, तलाश (महा)।
अणेसणा स्त्री [अनेषणा] एषणा का अभाव (उवा)।
अणेसणिज्ज वि [अनेषणीय] अकल्पनीय, जैन साधुओं के लिए अग्राह्य (भिक्षा-आदि) (ठा ३, १, णाया १, ५)।
अणोउया स्त्री [अनृतुका] जिसको ऋतु-धर्म न आता हो वह स्त्री (ठा ५, २)।
अणोकंत वि [अनवक्रान्त] जिसका पराभव न किया गया हो वह, अजित, 'परवाईहिं अणोक्कंता' (औप)।
अणोग्गह देखो अणुग्गह = अनवग्रह; 'नागरगो संवट्टो अणोग्गहो' (बृह ३)।
अणोग्घसिय वि [अनवघर्षित] नहीं घिसा हुआ, अमार्जित (राय)।

अणोज्ज वि [अनवद्य] निर्दोष, शुद्ध (णाया १, ८)।
अणोज्जंगी स्त्री [अनवद्याङ्गी] भगवान् महावीर की पुत्री का नाम (आचू)।
अणोज्जा स्त्री [अनवद्या] ऊपर देखो (कप्प)।
अणोणअ वि [अनवनत] नहीं झुका हुआ (से १, १)।
अणोत्तप्प देखो अणुत्तप्प (पव ६८)।
अणोम वि [अनवम] हीन-रहित, परिपूर्ण (आचा)।
अणोमाण न [अनपमान] अनादर का अभाव, सत्कार, 'एवं उग्गमदोसा विजढा
पइरिक्कया अणोमाणं।
मोहतिगिच्छा य कया,
विरियायारो य अणुचिण्णो'
(ओघ २४६)।
अणोरपार वि [दे] १ प्रचुर, प्रभूत (आवम)। २ अनादि-अनन्त (पचा १५, जी ४४)। ३ अति विस्तीर्ण (पण्ह १, ३)।
अणोरुम्मिअ वि [अनुद्वान] अ-शुष्क, गीला (कुमा)।
अणोलय न [दे] प्रभात, प्रात काल (दे १, १६)।
अणोवणिहिया स्त्री [अनौपनिधिकी] आनुपूर्वी का एक भेद, क्रम-विशेष (अणु)।
अणोवणिहिया स्त्री [अनुपनिहिता] ऊपर देखो (पि ७७)।
अणोल्ल वि [अनार्द्र] १ शुष्क, सूखा हुआ (गा ५२१)। °मण वि [°मनस्क] अकरुण, निष्ठुर, निर्दय (काप्र ८६)।
अणोवदग्ग वि [अनवदग्र] अनन्त (सूअ १, १२, ६)।
अणोवम वि [अनुपम] उपमा-रहित, अद्वितीय (पउम ७६, २६, सुर ३, १३०)।
अणोवमिय वि [अनुपमित] ऊपर देखो (पउम २, ६३)।
अणोवसंखा स्त्री [अनुपसंख्या] अज्ञान, सत्य ज्ञान का अभाव (सूअ २, १२)।
अणोवहिय वि [अनुपधिक] १ परिग्रह-रहित, सतोषी। २ सरल, अकपटी (आचा)।
अणोवाहणग } वि [अनुपानत्क] जूता-
अणोवाहणय } रहित, जो जूता न पहिना हो (औप, पि ७७)।

१०)। °काय पु [°काय] पानी के जीव (दं १३)।

अपइट्ठाण देखो अप्पइट्ठाण (आचा, ठा ४, ३)।

अपइट्ठिअ पु [अप्रतिष्ठित] १ नरक-स्थान विशेष (देवेन्द्र २६)। देखो अप्पइट्ठिअ।

अपइट्ठिय देखो अप्पइट्ठिय (ठा ४, १)।

अपएस वि [अप्रदेश] १ निरंश, अवयव-रहित (भग २०, ५)। २ पु खराब स्थान (पचा ७)।

अपंग पु [अपाङ्ग] १ नेत्र का प्रान्त भाग। २ तिलक। ३ वि हीन अंग वाला (नाट)।

अपडिअ वि [दे] अ-नष्ट, विद्यमान (षड्)।

अपडिअ [अपण्डित] १ सद्बुद्धि-रहित (वृह १)। २ मूर्ख (अच्चु ५)।

अपकरिस पु [अपकर्ष] ह्रास (धर्मसं ८३७)।

अपगंड वि [अपगण्ड] १ निर्दोष। २ न. फेन, पानी का भाग (सूत्र १, ३)।

अपचय पु [अपचय] अपकर्ष, हीनता (उत्त १)।

अपच्च देखो अवच्च, 'अपच्चाणिव्विसेसाणि मत्ताणि' (पि ३६७)।

अपच्चय पु [अप्रत्यय] अविश्वास (पण्ह १, २)।

अपच्चल वि [अप्रत्यल] १ असमर्थ। २ अयोग्य (नचू ११)।

अपच्छ वि [अपथ्य] १ अ-हितकर (पउम ८२, ७२)। २ न नहीं पचनेवाला भोजन, 'धेवेण अपच्छासेवणेण रोगुव्व वड्ढेइ' (सुपा ४३८)।

अपच्छिम वि [अपश्चिम] अन्तिम (णदि, पाअ, उप २६४ टी)।

अपज्जत्त, अपज्जत्तग वि [अपर्याप्त] १ अपर्याप्ति, असमर्थ (गउड)। २ पर्याप्ति (आहारादि ग्रहण करने की शक्ति) से रहित (ठा २, १, नव ४)। °नाम न [°नामन्] नाम-कर्म का एक भेद (सम ६७)।

अपज्जवसिय वि [अपर्यवसित] १ नाश-रहित (सम्म ६१)। २ अन्त-रहित (ठा १)।

अपडिच्छिर वि [दे] जड-बुद्धि, मूर्ख (दे १, ४३)।

अपडिण्ण, अपडिन्न वि [अप्रतिज्ञ] १ प्रतिज्ञा-रहित, निश्चय-रहित (आचा)। २ राग-द्वेष आदि बन्धनों से वर्जित (सूत्र १, ३, ३)। ३ फल की इच्छा न रखकर अनु-ष्ठान करनेवाला, निष्काम, 'गन्थेसु वा चन्दण-माहु सेट्ठं, एव मुणीण अपडिन्नमाहु' (सूत्र १,६)।

अपडिपोग्गल वि [अप्रतिपुद्गल] दरिद्र, निर्धन (निचू ५)।

अपडिबद्ध वि [अप्रतिबद्ध] १ प्रतिबन्ध-रहित, बेरोक, 'अपडिबद्धो अनलो व्व' (पण्ह २, ५)। २ आसक्ति-रहित (पव १०४)।

अपडिवाइ देखो अप्पडिवाइ (ठा ६, ओघ ५३२, णदि)।

अपडिसलीण वि [अप्रतिसलीन] असयत, इन्द्रिय आदि जिसके काबू में न हों (ठा ४, २)।

अपडिहट्टु अ [अप्रतिहृत्य] न दे कर (कस, वृह ३)।

अपडिहय देखो अप्पडिहय (णाया १, १६)।

अपडीकार वि [अप्रतीकार] इलाज-रहित, उपाय-रहित (पण्ह १, १)।

अपडुप्पण्ण, अपडुप्पन्न वि [अप्रत्युत्पन्न] १ अ-वर्त-मान, अ-विद्यमान (पि १६३)। २ प्रतिपत्ति में अ-कुशल (नव ६)।

अपणट्ठ वि [अप्रनष्ट] नाश को अप्राप्त (सुर ४, २४०)।

अपत्त देखो अप्पत्त (वृह १, ठा ५, २, सूत्र १, १४)।

अपत्तिअत वक्र [अप्रतियत्] विश्वास नहीं करता हुआ (गा ६७८, पि ४८७)।

अपत्तिय देखो अप्पत्तिय (भग १६, ३, पचा ७)।

अपत्थ देखो अपच्छ (उत्त ७, पचा ७)।

अपभासिय देखो अवभासिय = अपभाषित (वव १)।

अपमत्त देखो अप्पमत्त (आचा)।

अपमाण न [अप्रमाण] १ झूठा, असत्य (श्रा १२)। २ वि. ज्यादा, अधिक (उत्त २४)।

अपमाय वि [अप्रमाद] १ प्रमाद-रहित। २ पु. प्रमाद का अभाव, सावधानी (पण्ह २, १)।

अपय वि [अपद] १ पाँव रहित, वृक्ष, द्रव्य, भूमि वगैरह पैर रहित वस्तु (णाया १, ८)। २ पुं मुक्तात्मा, 'अपयस्स पयं नत्थि' (आचा)। ३ सूत्र का एक दोष (वृह १, विसे)।

अपय स्त्री [अप्रज] सन्तानरहित (वृह १)।

अपर देखो अवर (निचू २०)। २ वैशेषिक दर्शन में प्रसिद्ध अवान्तर सामान्य (विसे २४९१)।

अपरच्छ वि [अपराक्ष] असमक्ष, परोक्ष (पण्ह १, ३)।

अपरद्ध देखो अवरज्झ (वप्प)।

अपरंतिया स्त्री [अपरान्तिका] छन्द-विशेष (अजि ३४)।

अपराइय वि [अपराजित] १ अ-परिभूत (पण्ह १, ४)। २ पुं सातवें बलदेव के पूर्व-जन्म का नाम (सम १५३)। ३ भरतक्षेत्र का छठवाँ प्रतिवासुदेव (सम १५४)। ४ उत्तम-पंक्ति के देवों की एक जाति (सम५६)। ५ भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र (राज)। ६ एक महाग्रह (ठा २,३)। ७ न अनुत्तर देव-लोक का एक विमान—देवावास (सम ५६)। ८ रुचक पर्वत का एक शिखर (ठा ८)। ९ जम्बूद्वीप की जगती का उत्तर द्वार (ठा ४,२)।

अपराइया स्त्री [अपराजिता] १ विदेह-वर्ष की एक नगरी (ठा २, ३)। २ आठवें बलदेव की माता (सम १५२)। ३ अंगारक ग्रह की एक पटरानी का नाम (ठा ४, १)। ४ एक दिशा-कुमारी देवी (ठा ८)। ५ औषधि-विशेष (ती ७)। ६ अञ्जनाद्रि पर्वत पर स्थित एक पुष्करिणी (ती २)।

अपराजिय देखो अपराइय (कप्प, सम ५६, १०२ ठा २, ३)।

अपराजिया देखो अवराइया (ठा २, ३)।

अपराजिया स्त्री [अपराजिता] १ भगवान मल्लिनाथ की दीक्षा-शिविका (विचार १२९)। २ पक्ष की दशवीं रात (सुज्ज १०, १४)।

अपरिग्गह वि [अपरिग्रह] १ धन-धान्य आदि परिग्रह से रहित (पण्ह २, ३)। २

अण्णी स्त्री [दे] १ देवर की स्त्री। २ पति की बहिन, ननद। ३ फूफा, पिता की बहिन (दे १, ५१)।

अण्णु, अण्णुअ वि [अज्ञ] अजान, निर्बोध, मूर्ख (षड्, गा १८४)।

अण्णुण्ण वि [अन्योन्य] परस्पर, आपस मे (गउड)।

अण्णूण वि [अन्यून] परिपूर्ण (उप पृ २२४)।

अण्णे सक [अनु + इ] अनुसरण करना। अण्णेइ (विसे २५२९)। अण्णेति (पि ४९३)। कवकृ अण्णिज्जमाण, (अन्वीयमान) (विपा १, १)।

अण्णेस सक [अनु + इष्] १ खोजना, ढूँढना, तहकीकात करना। २ चाहना, वाञ्छना। ३ प्रार्थना करना। अण्णेसइ (पि १६३)। वकृ अण्णेस्त, अण्णेसअत, अण्णेसमाण (महा, काल)।

अण्णेसण न [अन्वेषण] खोज, तलाश, तहकीकात (उप ६ टी)।

अण्णेसणा स्त्री [अन्वेषणा] १ खोज तहकीकात (प्राप)। २ प्रार्थना (आचा)। ३ गृहस्थ से दी जाती भिक्षा का ग्रहण (ठा, ३, ४)।

अण्णेसय वि [अन्वेषक] गवेषक (पव ७१)।

अण्णेसि वि [अन्वेषिन्] खोज करनेवाला (आचा)।

अण्णेसिय वि [अन्वेषित] जिसकी तहकीकात की गई हो वह, 'अण्णेसिया सव्वओ तुब्भे न कहिंचि दिट्ठा' (महा)।

अण्णोण्ण देखो अण्णुण्ण, 'अण्णोण्णममणुवद्धं णिच्छयओ भणियविसय तु' (पंचा ६, स्वप्न ५२)।

अण्णोसरिअ वि [दे] अतिक्रान्त, उल्लघित (दे १, ३९)।

अण्ह सक [भुज्] १ खाना, भोजन करना। २ पालन करना। ३ ग्रहण करना। अण्हइ (हे ४, ११०, षड्)। अण्हाइ (औप)। अण्हए (कुमा)।

°अण्ह न [अहन्] दिवस, दिन, 'पुव्वावरण्हकालसमयंसि' (उवा)।

अण्हग, अण्हय पु [आश्रव] कर्म-बन्ध के कारण हिंसादि (पण्ह १,१,५, औप)।

°अण्हा स्त्री [तृष्णा] तृषा, प्यास (गा ९३)।

अण्हेअअ वि [दे] भ्रान्त, भूला हुआ (दे १, २१)।

अतक्किय वि [अतर्कित] १ अचिन्तित, आकस्मिक, 'अतक्कियमेव एरिस वसणमह पत्ता' (महा)। २ ठीक-ठीक नहीं देखा हुआ, अपरिलक्षित (वव ८)। ३ क्रिवि 'अतक्किय चेव विहरिओ रायहत्थी' (महा)।

अतड त्रि [अतट] छोटा किनारा, 'अतडुव वातो सो चेव मग्गो' (वृह १)।

अतण्हाअ वि [अतृष्णाक] तृष्णा रहित, नि स्पृह (अच्चु ६४)।

अतत्त न [अतत्व] असत्य, झूठ, गैरव्याजवी (उप ५०८)।

अतत्थ वि [अत्रस्त] नहीं डरा हुआ, निर्भीक (कुमा)।

अतत्थ वि [अतथ्य] असत्य, झूठा (आचा)।

अतर देखो अयर (पव १, कम्म ५, भवि)।

अतव पुन [अतपस्] १ तपश्चर्या का अभाव (उत्त २३)। २ वि तप-रहित (वृह ४)।

अतव पु [अस्तव] अ-प्रशसा, निन्दा (कुमा)।

अतसी देखो अयसी (पण्ण १)।

अतह वि [अतथ] असत्य, अ-वास्तविक, झूठा (सूअ १,१,२, आचा)।

अतह वि [अतथा] उस माफिक नहीं,

'जाओ च्चिय कायव्वे उच्छाहेंति गरुयाण कित्तीओ।
ताओ च्चिय अतह-णिवेयणेण अलसेंति हिययाइं' (गउड)।

अतार वि [अतार] तरने को अशक्य (णाया १, ६, १४)।

अतारिम वि [अतारिम] ऊपर देखो (सूअ १, ३, २)।

अतिउट्ट अक [अति + त्रुट्] १ खूब टूटना, टूट जाना। २ सब बन्धन से मुक्त होना। अतिउट्टइ (सूअ १, १५, ५)।

अतिउट्ट सक [अति + वृत्] १ उल्लघन करना। २ व्याप्त होना। °तिउट्टइ (सूअ १, १५, ६ टी)।

अतिउट्ट वि [अतिवृत्त] १ अविक्रान्त। २ अनुगत, व्याप्त, 'जमी गुहाए जलणेतिउट्टे अविजाणओ डज्झइ लुत्तपण्णो' (सूअ १,५, १,१२)।

अतित्थ न [अतीर्थ] १ तीर्थ (चतुर्विध सघ) का अभाव, तीर्थ की अनुत्पत्ति। २ वह काल, जिसमे तीर्थ की प्रवृत्ति न हुई हो या उसका अभाव रहा हो (पण्ण १)। °सिद्ध वि [°सिद्ध] अतीर्थ काल मे जो मुक्त हुआ हो वह, 'अतित्थसिद्धा य मरुदेवी' (नव ५६)।

अतिहि देखो अइहि।

अतीगाढ त्रि [अतिगाढ] १ अति-निविड। २ क्रिवि अत्यत, बहुत, 'अतीगाढ भीओ जक्खाहिवो' (पउम ८, ११३)।

अतुल वि [अतुल] अनुपम, असाधारण (पण्ह १, १)।

अतुलिय वि [अतुलित] असाधारण, अद्वितीय (भवि)।

अत्त देखो अप्प = आत्मन् (सुर ३, १७४, सम ५७, आदि)। °लाभ पु [°लाभ] स्वरूप की प्राप्ति, उत्पत्ति (कम्म २, २५)।

अत्त वि [आर्त्त] पीडित, दु खित, हैरान (सुर ३, १४३, कुमा)।

अत्त वि [आत्त] १ गृहीत, लिया हुआ (णाया १, १)। २ स्वीकृत, मजूर किया हुआ (ठा २, ३)। ३ पु ज्ञानी मुनि (वृह १)।

अत्त वि [आप्त] १ ज्ञानादि-गुण-संपन्न, गुणी। २ राग-द्वेष वर्जित, वीतराग। ३ प्रायश्चित्त-दाता गुरु,

'नाणमादीणि अत्ताणि, जेण अत्तो उ सो भवे।
रागद्दोसपहीणो वा, जे व इट्ठा विसोहिए'

(वव १०)। ४ मोक्ष, मुक्ति (सूअ १, १०)। ५ एकान्त हितकर (भग १४, ९)। ६ प्राप्त, मिला हुआ (वव १०), 'अत्तप्पसण्णलेस्से' (उत्त १२)।

अत्त वि [आत्र] दु ख का नाश करनेवाला, सुख का उत्पादक (भग १४, ९)।

अत्त अ [अत्र] यहा, इस स्थान मे (नाट)। °भव वि [°भवत्] पूज्य, माननीय (अभि ६१, पि २९३)।

अत्तअ देखो अत्थय = अत्यय (प्राकृ २१)।

अत्तकम्म वि [आत्मकर्मन्] १ जिससे कर्म-

अपोरिसिय } वि [अपौरुषिक] पुरुष से ज्यादा परिमाण वाला, अगाध
अपोरिसीय } (णाया १, ५, १४)।

अपोरिसीय वि [अपौरुषेय] पुरुष से नहीं बनाया हुआ, नित्य (ठा १०)।

अपोह सक [अप + ऊह्] निश्चय करना, निश्चय रूप से जानना। अपोहए (विसे ५६१)।

अपोह पु [अपोह] १ निश्चय-ज्ञान (विसे ३९६)। २ पृथग्भाव, भिन्नता (ओघ ३)।

अप्प देखो अत्त = आप्त, 'अप्पोनभनिमित्त पढमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्तेत्ति वेमि' (णाया १, १)।

अप्प वि [अल्प] १ थोड़ा स्तोक (सुपा २८०, स्वप्न ६७)। २ अभाव (जीव ३, भग १४, १)।

अप्प पु [आत्मन्] १ आत्मा, जीव, चेतन (णाया १, १)। २ निज, स्व, 'अप्पणा अप्पणो कम्मक्खय करित्तए' (णाया १, ५)। ३ देह, शरीर (उत्त २)। ४ स्वभाव, स्वरूप (आचा)। °घाइ वि [°घातिन्] आत्म-हत्या करनेवाला (उप ३५७ टी)। °छंद वि [°च्छन्द] स्वैरी, स्वच्छन्दी (उप ८३३ टी)। °ज्ज वि [°ज्ञ] १ आत्मज्ञ (हे २, ८३)। २ स्वाधीन (निचू १)। °ज्जोइ पु [°ज्योतिस्] ज्ञानस्वरूप, 'किजोइरय पुरिसो अप्पज्जोइ त्ति णिद्दिट्ठो' (विसे)। °ण्णु वि [°ज्ञ] आत्म-ज्ञानी (पड्)। °वस वि [वश] स्वतन्त्र, स्वाधीन (पाअ, पउम ३७, २२)। °वह पु [°वध] आत्म-हत्या, अपघात (सुर २, १९६, ५, २३७)। °वाइ वि [°वादिन्] आत्मा के अतिरिक्त दूसरे पदार्थ को नहीं माननेवाला (णदि)।

अप्प पु [दे] पिता, बाप (दे १, ६)।

अप्प सक [अर्पय्] अर्पण करना, भेंट करना। अप्पेइ (हे १, ६३)। अप्पअइ (नाट)। संकृ अप्पिअ (सुपा २८०)। कृ अप्पेयव्व (सुपा २६५, ५१६)।

अप्पआस देखो अप्पगास (नाट)।

अप्पआस सक [श्लिष्] आलिङ्गन करना। अप्पआसइ (पड्)।

अप्पइट्ठाण पुन [अप्रतिष्ठान] १ मोक्ष, मुक्ति (आचा)। २ सातवीं नरक-भूमि का बीचला आवास (सम २, ठा ५, ३)।

अप्पइट्ठिअ वि [अप्रतिष्ठित] १ अप्रतिबद्ध। २ अशरीरी, शरीर-रहित (आचा २, १६, १२)। देखो अपइट्ठिअ।

अप्पउलिय वि [अपक्वौषधि] नहीं पकी हुई फल-फलहरी (स ५०)।

अप्पओजग वि [अप्रयोजक] अ-गमक, अ-निश्चायक (हेतु) (धर्मसं १२२३)।

अप्पंभरि वि [आत्मम्भरि] अवेलपेट्ट, स्वार्थी (उप ५७०)।

अप्पकंप वि [अप्रकम्प] निश्चल, स्थिर (ठा १०)।

अप्पकेर वि [आत्मीय] स्वकीय, निजी (प्रामा)।

अप्पक्क वि [अपक्व] नहीं पका हुआ, कच्चा (सुपा ४१३)।

अप्पग देखो अप्प (आव ४, आचा)।

अप्पगास पु [अप्रकाश] प्रकाश का अभाव, अन्धकार (निचू १)।

अप्पगुत्ता स्त्री [दे] कपिकच्छू, कौंच वृक्ष (दे १, २९)।

अप्पजाणुअ वि [आत्मज्ञ] आत्मा का जानकार (प्राकृ १८)।

अप्पजाणुअ वि [अल्पज्ञ] अज्ञ, मूर्ख (प्राकृ १८)।

अप्पज्झ वि [दे] आत्म-वश, स्वाधीन (दे १, १४)।

अप्पडिआर वि [अप्रतिकार] इलाज-रहित, उपाय-रहित (मा ४३)।

अप्पडिकंटय वि [अप्रतिकण्टक] प्रतिपक्ष-शून्य, प्रतिस्पर्धि-रहित (राय)।

अप्पडिकम्म वि [अप्रतिकर्मन्] संस्कार-रहित, परिष्कार-वर्जित, 'सुण्णागारे व अप्पडिकम्मे' (पण्ह २, ५)।

अप्पडिक्कंत वि [अप्रतिक्रान्त] दोष से अनिवृत्त, व्रत-नियम में लगे हुए दूषणों की जिसने शुद्धि न की हो वह (औप)।

अप्पडिकुट्ठ वि [अप्रतिकुष्ट] अनिवारित, नहीं रोका हुआ (ठा २, ४)।

अप्पडिचक्क वि [अप्रतिचक्र] अतुल्य, असमान (णदि)।

अप्पडिण्ण } देखो अपडिण्ण (आचा)।
अप्पडिन्न }

अप्पडिबंध पु [अप्रतिबन्ध] १ प्रतिबन्ध का अभाव। २ वि प्रतिबन्ध-रहित (सुपा ६०८)।

अप्पडिबद्ध देखो अपडिबद्ध (उत्त २९, पि २१८)।

अप्पडिबुद्ध वि [अप्रतिबुद्ध] १ अ-जागृत। २ कोमल, सुकुमार (अभि १९१)।

अप्पडिम वि [अप्रतिम] असाधारण, अनुपम (उप ७६८ टी, सुपा ३५)।

अप्पडिरूव वि [अप्रतिरूप] ऊपर देखो (उप ७२८ टी)।

अप्पडिलद्ध वि [अप्रतिलब्ध] अप्राप्त (णाया १, १)।

अप्पडिलेस्स वि [अप्रतिलेश्य] असाधारण मनो-बलवाला (औप)।

अप्पडिलेहण न [अप्रतिलेखन] अपर्यवेक्षण, अनवलोकन, नहीं देखना (आव ६)।

अप्पडिलेहणा स्त्री [अप्रतिलेखना] ऊपर देखो (कप्प)।

अप्पडिलेहिय वि [अप्रतिलेखित] अ-पर्यवेक्षित, अनवलोकित, नहीं देखा हुआ (उवा)।

अप्पडिलोम वि [अप्रतिलोम] अनुकूल (भग २५, ७, अभि २४)।

अप्पडिवरिय पु [अप्रतिवृत] प्रदोष काल (बृह १)।

अप्पडिवाइ वि [अप्रतिपातिन्] १ जिसका नाश न हो ऐसा, नित्य (सुर १४, २६)। २ अवधिज्ञान का एक भेद, जो केवल ज्ञान को विना उत्पन्न किये नहीं जाता (विसे)।

अप्पडिहत्थ वि [अप्रतिहस्त] असमान, अद्वितीय (से १३, १२)।

अप्पडिहय वि [अप्रतिहत] १ किसी से नहीं रुका हुआ (पण्ह २, ५)। २ अखण्डित, अबाधित, 'अप्पडिहयसासणे' (णाया १,१६)। ३ विसंवाद-रहित 'अप्पडिहयवरनाणदंसणधरे' (भग १, १)।

अप्पडीबद्ध देखो अपडिबद्ध, 'निम्ममनिरहंकारा निअयसरीरेवि अप्पडीबद्धा' (सया ६०)।

अण्णी स्त्री [दे] १ देवर की स्त्री। २ पति की बहिन, ननद। ३ फूफा, पिता की बहिन (दे १, ५१)।

अण्णु } वि [अज्ञ] अजान, निर्बोध, मूर्ख
अण्णुअ } (पड्, गा १८४)।

अण्णुण्ण वि [अन्योन्य] परस्पर, आपस मे (गउड)।

अण्णूण वि [अन्यून] परिपूर्ण (उप पृ २२४)।

अण्णे सक [अनु + इ] अनुसरण करना। अण्णेइ (विसे २५२६)। अण्णेति (पि ४६३)। कवकृ अण्णिज्जमाण, (अन्वीयमान) (विपा १, १)।

अण्णेस सक [अनु + इष्] १ खोजना, ढूँढना तहकीकात करना। २ चाहना, वाञ्छना। ३ प्रार्थना करना। अण्णेसइ (पि १६३)। वकृ अण्णेसंत, अण्णेसअत, अण्णेसमाण (महा, काल)।

अण्णेसण न [अन्वेषण] खोज तलाश, तहकीकात (उप ६ टी)।

अण्णेसणा स्त्री [अन्वेषणा] १ खोज तहकीकात (प्राप)। २ प्रार्थना (आचा)। ३ गृहस्थ ने दी जाती भिक्षा का ग्रहण (ठा, ३, ४)।

अण्णेसय वि [अन्वेषक] गवेपक (पव ७१)।

अण्णेसि वि [अन्वेषिन्] खोज करनेवाला (आचा)।

अण्णेसिय वि [अन्वेषित] जिसकी तहकीकात की गई हो वह, 'अण्णेसिया सव्वओ तुज्झे न कहिंचि दिट्ठा' (महा)।

अण्णोण्ण देखो अण्णुण्ण, 'अण्णोण्णसमणुबद्धं णिच्छयओ भणियविसय तु' (पंचा ६, स्वप्न ५२)।

अण्णोसरिअ वि [दे] अतिक्रान्त, उल्लघित (दे १, ३६)।

अण्ह सक [भुज्] १ खाना, भोजन करना। २ पालन करना। ३ ग्रहण करना। अण्हइ (हे ४, ११०, पड्)। अण्हाइ (औप)। अण्हए (कुमा)।

°अण्ह न [अहन्] दिवस, दिन, 'पुव्वावरण्हकालसमयंसि' (उवा)।

अण्हग } पु [आश्रव] कर्म-बन्ध के कारण
अण्हय } हिंसादि (पण्ह १,१,५, औप)।

°अण्हा स्त्री [तृष्णा] तृषा, प्यास (गा ६३)।

अण्हेअअ वि [दे] भ्रान्त, भूला हुआ (दे १, २१)।

अतक्किय वि [अतर्कित] १ अचिन्तित, आकस्मिक, 'अतक्कियमेव एरिस वसणमह पत्ता' (महा)। २ ठीक-ठीक नही देखा हुआ, अपरिलक्षित (वव ८)। ३ क्रिवि 'अतक्किय चेव विहरिओ रायहत्थी' (महा)।

अतड त्रि [अतट] छोटा किनारा, 'अतडुव वातो सो चेव मग्गो' (वृह १)।

अतण्हाअ वि [अतृष्णाक] तृष्णा रहित, नि स्पृह (अच्चु ६४)।

अतत्त न [अतत्व] असत्य, झूठ, गैरव्याजवी (उप ५०८)।

अतत्थ वि [अत्रस्त] नही डरा हुआ, निर्भीक (कुमा)।

अतत्थ वि [अतथ्य] असत्य, झूठा (आचा)।

अतर देखो अयर (पव १, कम्म ५, भवि)।

अतव पुन [अतपस्] १ तपश्चर्या का अभाव (उत्त २३)। २ वि तप-रहित (वृह ४)।

अतव पु [अस्तव] अ-प्रशसा, निन्दा (कुमा)।

अतसी देखो अयसी (पण्ण १)।

अतह वि [अतथ] असत्य, अ-वास्तविक, झूठा (सूअ १,१,२, आचा)।

अतह वि [अतथा] उस माफिक नही,
'जाओ च्चिय कायव्वे उच्छाहेंति गरुयाण
कित्तीओ।
ताओ च्चिय अतह-णिवेयणेण अलसेंति
हिययाइं' (गउड)।

अतार वि [अतार] तरने को अशक्य (णाया १, ६, १४)।

अतारिम वि [अतारिम] ऊपर देखो (सूअ १, ३, २)।

अतिउट्ट अक [अति + त्रुट्] १ खूब टूटना, टूट जाना। २ सब बन्धन से मुक्त होना। अतिउट्टइ (सूअ १, १५, ५)।

अतिउट्ट सक [अति + वृत्] १ उल्लघन करना। २ व्याप्त होना। °तिउट्टइ (सूअ १, १५, ६ टी)।

अतिउट्ट वि [अतिवृत्त] १ अतिक्रान्त। २ अनुगत, व्याप्त, 'जसी गुहाए जलणेतिउट्टे अविजाणओ डज्झइ लुत्तपण्णो' (सूअ १,५, १,१२)।

अतित्थ न [अतीर्थ] १ तीर्थ (चतुर्विध संघ) का अभाव, तीर्थ की अनुत्पत्ति। २ वह काल, जिसमे तीर्थ की प्रवृत्ति न हुई हो या उसका अभाव रहा हो (पण्ण १)। °सिद्ध वि [°सिद्ध] अतीर्थ काल मे जो मुक्त हुआ हो वह, 'अतित्थसिद्धा य मरुदेवी' (नव ५६)।

अतिहि देखो अइहि।

अतीगाढ त्रि [अतिगाढ] १ अति-निविड। २ क्रिवि अत्यंत, बहुत, 'अतीगाढं भीओ जक्खाहिवो' (पउम ८, ११३)।

अतुल वि [अतुल] अनुपम, असाधारण (पण्ह १, १)।

अतुलिय वि [अतुलित] असाधारण, अद्वितीय (भवि)।

अत्त देखो अप्प = आत्मन् (सुर ३, १७४, सम ५७, आदि)। °लाभ पु [°लाभ] स्वरूप की प्राप्ति, उत्पत्ति (कम्म २, २५)।

अत्त वि [आर्त्त] पीडित, दु खित, हैरान (सुर ३, १४३, कुमा)।

अत्त वि [आत्त] १ गृहीत, लिया हुआ (णाया १, १)। २ स्वीकृत, मंजूर किया हुआ (ठा २, ३)। ३ पु ज्ञानी मुनि (वृह १)।

अत्त वि [आप्त] १ ज्ञानादि-गुण-संपन्न, गुणी। २ राग-द्वेष वर्जित, वीतराग। ३ प्रायश्चित्त-दाता गुरु,
'नाणमादीणि अत्ताणि, जेण अत्तो उ सो भवे।
रागद्दोसपहीणो वा, जे व इट्ठा विसोहिए'
(वव १०)। ४ मोक्ष, मुक्ति (सूअ १, १०)। ५ एकान्त हितकर (भग १४, ९)। ६ प्राप्त, मिला हुआ (वव १०), 'अत्तप्पसण्णलेस्से' (उत्त १२)।

अत्त वि [आत्र] दु ख का नाश करनेवाला, सुख का उत्पादक (भग १४, ९)।

अत्त अ [अत्र] यहा, इस स्थान मे (नाट)। °भव वि [°भवत्] पूज्य, माननीय (अभि ६१, पि २९३)।

अत्तअ देखो अच्चय = अत्यय (प्राकृ २१)।

अत्तकम्म वि [आत्मकर्मन्] १ जिससे कर्म-

अप्पाअप्पि स्त्री [दे] उत्कण्ठा, औत्सुक्य (पिंग)।

अप्पाउड वि [अप्रावृत] अनाच्छादित, नग्न (सूअ २, २)।

अप्पाउय वि [अल्पायुष्क] थोडा आयु-वाला (ठा ३, ३, पउम १४ ३०)।

अप्पावरण वि [अप्रावरण] १ नग्न। २ न वस्त्र का अभाव। ३ वस्त्र नहीं पहनने का नियम (पचा ५, पव ४)।

अप्पाण देखो अप्प = आत्मन् (पण्ह १, २, ठा २, २, प्राप्र, हे ३, ५६)। °रक्खि वि [°रक्षिन्] आत्मा की रक्षा करनेवाला (उत्त ४)।

अप्पाबहु } न [अल्पबहुत्व] न्यूनाधिकता, अप्पाबहुय } कम-वेशीपन (नव ३२, ठा ८, २)।

अप्पावय वि [अप्रावृत] १ वस्त्र-रहित, नग्न (पण्ह २, १)। २ खुला हुआ, बन्द नहीं किया हुआ (सूअ १, ५, १)।

अप्पाविय वि [अर्पित] दिया हुआ (सुपा ३३१)।

अप्पाह सक [सं + दिश्] संदेश देना, खबर पहुँचाना। अप्पाहइ (षड्, हे ४, १८०)। अप्पाहेइ (गा ६३२)। संकृ अप्पाहट्टु, अप्पाहिवि (पि ५७७, भवि)।

अप्पाह सक [आ + भाष्] संभाषण करना। अप्पाहइ (प्राकृ ७०)।

अप्पाह सक [अधि + आपय्] पढाना, सीखाना। कर्म अप्पाहिज्जइ (से १०, ७४)। वकृ अप्पाहेंत (से १०, ७५)। हेकृ अप्पाहेउ (पि २८६)।

अप्पाहणी स्त्री [दे] संदेश, समाचार (पिंड ४३०)।

अप्पाहण्ण न [अप्राधान्य] मुख्यता का अभाव, गौणता (पचा १, भास ११)।

अप्पाहिय वि [संदिष्ट] संदेश दिया हुआ (भवि)।

अप्पाहिय वि [अध्यापित] १ पाठित, शिक्षित (से ११, ३८, १४, ६१)। २ न सीख, उपदेश, 'अप्पाहियमरणं' (उप ५६२ टी)।

अप्पिड्ढि विड्ढय [अल्पर्द्धिक] अल्प संपत्ति वाला (भग, पउम २, ७४)।

अप्पिण सक [अर्पय्] अर्पण करना, भेट करना, देना, 'अहीरोवि वारणेण अप्पिणइ' (आक)। अप्पिणामि (पि ५५७)। अप्पिणाति (विसे ७ टी)।

अप्पिणग न [अर्पण] दान, भेट (उप १७४)।

अप्पिणिच्चिय वि [आत्मीय] स्वकीय, निजी (भग)।

अप्पिय वि [अर्पित] १ दिया हुआ, भेट किया हुआ (विपा १, २, हे १, ६३)। २ विवक्षित, प्रतिपादन करने को इष्ट, 'जह दवियमप्पियं तं तहेव अत्थित्ति पज्जवनयस्स' (सम्म ४२)। ३ पुं पर्यायार्थिक नय, अप्पियमय विसेसो सामन्नमणप्पियनयस्स' (विसे)।

अप्पिय वि [अप्रिय] १ अनिष्ट, अप्रीतिकर (भग १, ५, विपा १, १)। २ न. मन का दुःख। ३ चित्त की शंका, 'अदु णाईण व सुहीण वा अप्पियं दट्ठु एगता होंति' (सूअ १, ४, १, १४)।

अप्पीइ स्त्री [अप्रीति] अप्रेम अरुचि (सुपा २६४)।

अप्पीकय वि [आत्मीकृत] आत्मा से संबद्ध (विसे)।

अप्पुट्ठ वि [अस्पृष्ट] नहीं छूआ हुआ, असंयुक्त, 'जं अप्पुट्ठा भावा ओहिनाणस्स हुंति पच्चक्खा' (सम्म ८१)।

अप्पुट्ठ वि [अपृष्ट] नहीं पूछा हुआ (सुपा १११)।

अप्पुण्ण वि [दे आपूर्ण] पूर्ण (षड्)।

अप्पुल्ल वि [आत्मीय] आत्मा से उत्पन्न (हे २, १६३, षड्, कुमा)।

अप्पुव्व देखो अपुव्व, 'अप्पुव्वो पडिबंधो जीवियमवि चयइ मह कज्जे' (सुपा ३११)।

अप्पेयव्व देखो अप्प = अर्पय्।

अप्पोलि स्त्री [अप्रज्वलिता] कच्ची फल-फुलहरी (श्रा २१)।

अप्पोल्ल वि [दे] पोल-रहित, नक्कर (बृह ३)।

अप्फडिअ वि [आस्फालित] आस्फालित, आहत (विसे २९९२ टी)।

अप्फाल सक [आ + स्फालय्] १ आस्फोटन करना, हाथ से आघात करना। २ ताडना, पीटना। ३ ताल ठोकना। अप्फालेइ (महा)। कवकृ अप्फालिज्जंत (गाय)। संकृ अप्फालिऊण (काप्र १८९, महा)।

अप्फालण न [आस्फालन] १ ताल ठोकना। २ ताडन, आघात (गा ५४८, से ५, २२, सुपा ८७)।

अप्फालिय वि [आस्फालित] १ हाथ से ताडित, आहत (पि ३११)। २ वृद्धि प्राप्त, उन्नत (राज)।

अप्फुंद सक [आ + क्रम्] १ आक्रमण करना। २ जाना, 'सभाग्गो व्व णहं अप्फुंदइ मलिअरविअर कुसुमरओ' (से ६, ५७)।

अप्फुडिय देखो अफुडिय (जं २, दस ६)।

अप्फुण्ण वि [दे आक्रान्त] आक्रान्त, दबाया हुआ (हे ४, २५८)।

अप्फुण्ण वि [अपूर्ण] अपूर्ण, अधूरा (गउड)।

अप्फुण्ण } वि [दे आपूर्ण] पूर्ण, भरा अप्फुन्न } हुआ (दे १, २०, सुर १०, १७०, पाअ), 'महया पुत्तसोएण अप्फुन्ना समाणी' (निर १, १)।

अप्फुल्ल देखो अप्पुल्ल (गउड)।

अप्फोआ स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष (पण्ण १)।

अप्फोड सक [आ + स्फोटय्] १ आस्फालन करना, हाथ से ताल ठोकना। २ ताडन करना। वकृ अप्फोडंत (णाया १, ८, सुर १३, १८२)।

अप्फोडण न [आस्फोटन] आस्फालन (गउड)।

अप्फोडिय } वि [आस्फोटित] १ आस्फालित, आहत। २ न आस्फालन अप्फोलिय } आघात (पण्ह १, ३, कप्प)।

अप्फोया स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष (राय ८० टी)।

अप्फोव वि [दे] वृक्षादि से व्याप्त, गहन, निविड (उत्त १८)।

अफल वि [अफल] निष्फल, निरर्थक (द्र १)।

डूब गया, अदृश्य हुआ (ओघ ५०७, महा, सुपा १५५)। २ हीन, हानि-प्राप्त (ठा ४,३)।

अत्थयारिआ स्त्री [दे] सखी, वयस्या (दे १ १६)।

अत्थर सक [आ + स्तृ] बिछाना, शय्या करना, पसारना। अत्थरइ (उव)। संकृ अत्थरिऊण (महा)।

अत्थरण न [आस्तरण] १ बिछौना, शय्या (से १४, ५०)। २ बिछाना, शय्या करना (विसे २३२२)।

अत्थरय वि [आस्तरक] १ आच्छादन करनेवाला (राय)। २ पु. बिछौने के ऊपर का वस्त्र (भग ११, ११, कप्प)।

अत्थरय वि [अस्तरजस्क] निर्मल, शुद्ध (भग ११, ११)।

अत्थवण देखो अत्थमण (भवि)।

अत्थसिद्ध पु [अर्थसिद्ध] पक्ष का दशवाँ दिवस, दशमी तिथि (सुज्ज १०, १४)।

अत्था देखो अट्ठा = आस्था।

अत्था } सक [अस्ताय्] अस्त होना,
अत्थाअ } डूब जाना, अदृश्य होना। अत्थाइ, अत्थाए (पउम ७३, ३५)। अत्थाअंति (से ७, २३)। वकृ अत्थाअंत (से ७, ६६)।

अत्थाअ वि [अस्तमित] अस्त हुआ, डूबा हुआ; 'तावच्चिय दिवसयरो अत्थाओ विगयकिरणसघाओ' (पउम १०,६६, से ६,५२)।

अत्थाइया स्त्री [दे] गोष्ठी-मण्डप (स ३६)।

अत्थाण न [आस्थान] सभा, सभा-स्थान (सुर १, ८०)।

अत्थाणिय वि [अस्थानिन्] गैर-स्थान में लगा हुआ, 'अत्थाणियनयणहिं' (भवि)।

अत्थाणी स्त्री [आस्थानी] सभा-स्थान (कुमा)।

अत्थाणीअ वि [आस्थानीय] सभा-सबन्धी (कुप्र ७८)।

अत्थाम वि [अस्थामन्] बल-रहित, निर्बल (णाया १,१)।

अत्थार पु [दे] सहायता, साहाय्य (दे १,६, णाम्र)।

अत्थारिय पु [दे] नौकर, कर्मचारी (वव ६)।

अत्थावग्गह देखो अत्थुग्गह (पण्ण ५)।

अत्थावत्ति स्त्री [अर्थापत्ति] अनुक्त अर्थ को अटकल से समझना, एक प्रकार का अनुमान-ज्ञान, जैसे 'देवदत्त पुष्ट है और दिन मे नही खाता है' इस वाक्य से 'देवदत्त रात मे खाता है' ऐसा अनुक्त अर्थ का ज्ञान (उप ६६८)।

अत्थाह वि [अस्ताघ] १ अथाह, थाह-रहित, गभीर (णाया १, १४)। २ नासिका के ऊपर का भाग भी जिसमे डूब सके इतना गहरा जलाशय (बृह ४)। ३ पु अतीत चौवीसी मे भारत मे समुत्पन्न इस नाम के एक तीर्थंकरदेव (पव ६)।

अत्थाह वि [दे] देखो अत्थग्घ (दे १, ५४, भवि)।

अत्थि वि [अर्थिन्] १ याचक, माँगनेवाला (सुर १०,१००)। २ धनी, धनवाला (पंचा)। ३ मालिक, स्वामी (विसे)। ४ गरजू, चाहनेवाला,

'धणओ धणत्थियाणं, कामत्थीणं च
सव्वकामकरो।
सग्गापवग्गसंगमहेऊ जिणदेसिओ धम्मो ॥'
(महा)।

अत्थि न [अस्थि] हाड, हड्डी (महा)।

अत्थि अ [अस्ति] १ सत्त्व-सूचक अव्यय है, 'अत्थेगइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया' (औप), 'अत्थि णं भंते ! विमाणाइं' (जीव ३)। २ प्रदेश, अवयव, 'चत्तारि अत्थिकाया' (ठा ४, ४)। °अवत्तव्व वि [°अवक्तव्य] सप्तभङ्गी का पाचवाँ भङ्ग, स्वकीय द्रव्य आदि की अपेक्षा से विद्यमान और एक ही साथ कहने को अशक्य पदार्थ,

'सब्भावे आइट्ठो देसो देसो अ उभयहा जस्स।
तं अत्थिअवत्तव्वं च होइ दविअं विअप्पवसा'
(सम्म ३८)।

°काय पु [°काय] प्रदेशो का—अवयवो का समूह (सम १०)। °णत्थवत्तव्व वि [°नास्त्यवक्तव्य] सप्तभङ्गी का सातवाँ भङ्ग, स्वकीय द्रव्यादि की अपेक्षा से विद्यमान, परकीय द्रव्यादि की अपेक्षा से अविद्यमान और एक ही समय मे दोनो धर्मो से कहने को अशक्य पदार्थ,

'सब्भावासब्भावे, देसो देसो अ उभयहा जस्स।
तं अत्थिणत्थवत्तव्वयं च दविअं विअप्पवसा'
(सम्म ४०)।

°त्त न [°त्व] सत्व, विद्यमानता, हयाती (सुर २, १४२)। °त्ता स्त्री [°ता] सत्व, हयाती (उप पृ ३७४)। °त्तिनय पुं [°इतिनय] द्रव्यार्थिक नय (विसे ५३७)। °नत्थि वि [°नास्ति] सप्तभङ्गी का तीसरा भङ्ग—प्रकार, स्वद्रव्यादि की अपेक्षा से विद्यमान और परकीय द्रव्यादि की अपेक्षा से अविद्यमान वस्तु,

'अह देसो सब्भावे देसोऽसब्भावपज्जवे णिअओ।
तं दविअमत्थिनत्थि अ, आएसविसेसिअं जम्हा'
(सम्म ३७)।

°नत्थिप्पवाय न [°नास्तिप्रवाद] बारहवें जैन अङ्ग-ग्रन्थ का एक भाग, चौथा पूर्व (सम २६)।

अत्थिक्क न [आस्तिक्य] आस्तिकता, आत्मा-परलोक आदि पर विश्वास (श्रा , पुप्फ ११०)।

अत्थिय देखो अत्थि = अर्थिन् (महा, औप)।

अत्थिय वि [अर्थिक] धनी, धनवान् (हे २, १५६)।

अत्थिय न [अस्थिक] १ हड्डी, हाड। २ पु वृक्ष-विशेष। ३ न बहु बीजवाला फल-विशेष (पण्ण १)।

अत्थिय वि [आस्तिक] आत्मा, परलोक आदि की हयाती पर श्रद्धा रखनेवाला (धर्म २)।

अत्थिर देखो अथिर (पंचा १२)।

अत्थीकर सक [अर्थी + कृ] प्रार्थना करना, याचना करना। अत्थीकरेइ (निचू ४)। वकृ अत्थीकरत (निचू ४)।

अत्थीकरण न [अर्थीकरण] प्रार्थना, याचना (निचू ४)।

अत्थु सक [आ+स्तृ] बिछाना, शय्या करना। कर्म अत्थुव्वइ, कवकृ. अत्थुव्वंत (विसे २३२१)।

अत्थुअ वि [आस्तृत] बिछाया हुआ (पाअ, विसे २३२१)।

अत्थुग्गह पु [अर्थावग्रह] इन्द्रियों और मन द्वारा होनेवाला ज्ञान-विशेष, निर्विकल्पक ज्ञान (सम ११, ठा २, १)।

अत्थुग्गहण न [अर्थावग्रहण] फल का निश्चय (भग ११, ११)।

अत्थुड वि [दे] लघु, छोटा, (दे १, ६)।

देना, सम्मति देना। अब्भणुजाणिस्सदि (शौ) (पि ५३४)।

अब्भणुण्णा [अभ्यनुज्ञा] अनुमति, सम्मति (राज)।

अब्भणुण्णाय वि [अभ्यनुज्ञात] अनुमत, समत (ठा ५, १)।

अब्भणुन्ना देखो अब्भणुण्णा।

अब्भणुन्नाय देखो अब्भणुण्णाय (णाया १, १, कप्प, सुर ३, ८८)।

अब्भण्ण न [अभ्यर्ण] १ निकट, नजदीक। २ वि समीपस्थ (पउम ६८ ५८)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (पउम ६८, ५८)।

अब्भत्त वि [अभ्यक्त] १ तेलादि से मर्दित, मालिश किया हुआ। २ सिक्त, सीचा हुआ, 'दिसि-दिसि चब्भत्तभूरिकेयारो, पत्तो वासारत्तो' (सुर २, ७८)।

अब्भत्थ वि [अभ्यस्त] पठित, शिक्षित (सुपा ६७)।

अब्भत्थ सक [अभि + अर्थय] १ सत्कार करना। २ प्रार्थना करना। अब्भत्थम्ह (पि ४७०)। संकृ अब्भत्थइअ, अब्भत्थिअ (नाट)। कृ अब्भत्थणीय (अभि ७०)।

अब्भत्थण न [अभ्यर्थन] १ सत्कार। २ प्रार्थना (कप्पू, हे ४, ३८४)।

अब्भत्थणा } स्त्री [अभ्यर्थना] १ आदर,
अब्भत्थणिया } सत्कार (से ४, ४८)। २ प्रार्थना, विज्ञप्ति (पंचा ११, सुर १, १६),

'न सहइ अब्भत्थणियं, असइ
गयाणवि पिट्ठिमंसाइं।
दट्ठूण भासुरमुहं, खलसीहं
को न वीहेइ' (वज्जा १२)।

अब्भत्थिय वि [अभ्यर्थित] १ आदृत, सत्कृत। २ प्रार्थित (सुर १, २१)।

अब्भन्न देखो अब्भण्ण (पाअ)।

अब्भपडल न [दे] उपधातु-विशेष, भोडल, अभ्रक, अवरक (उत्त ३६, ७५)।

अब्भपिसाअ पु [दे अभ्रपिशाच] राहु (दे १, ४२)।

अब्भय पु [अर्भक] वालक, बच्चा (पाअ)।

अब्भय पु [अभ्रक] अवरख (जी ४)।

अब्भरहिय वि [अभ्यर्हित] सत्कार-प्राप्त, गौरवशाली (वृह १)।

अब्भवहरिय वि [अभ्यवहृत] भुक्त (सुख २, १७)।

अब्भवहार पु [अभ्यवहार] भोजन, खाना (विसे २२१)।

अब्भवालुया स्त्री [दे] अभ्रक का चूर्ण (उत्त ३६ ७५)।

अब्भव्व देखो अभव्व, 'अब्भव्वाण सिद्धा णंतगुणा णंतया भव्वा' (पंस ८८)।

अब्भस सक [अभि + अस्] सीखना, अभ्यास करना। वकृ अब्भसंत (स ६०६)। कृ अब्भसियव्व (सुर १४, ८५)।

अब्भसण न [अभ्यसन] अभ्यास (दसनि १)।

अब्भसिय वि [अभ्यस्त] सीखा हुआ (सुर १, १८०, ६, १६)।

अब्भहर पु [दे] अभ्रक (पच ३, ३८)।

अब्भहिय वि [अभ्यधिक] विशेष, ज्यादा (सम २ सुर १ १७०)।

अब्भाअच्छ वि [अभ्या + गम्] सम्मुख आना, सामने आना। अब्भाअच्छइ (षड्)।

अब्भाइक्ख देखो अब्भक्खा। अब्भाइक्खइ, अब्भाइक्खेज्जा (आचा)।

अब्भागम पु [अभ्यागम] १ सम्मुखागमन। २ समीप स्थिति (निचू २)।

अब्भागमिय } वि [अभ्यागत] १ सम्मु-
अब्भागय } खागत। २ पु आगन्तुक, पाहुन, अतिथि (सूअ १,२,३, सुपा ५)।

अब्भायत्त } वि [दे] प्रत्यागत, वापस आया
अब्भायत्थ } हुआ (दे १, ३१)।

अब्भास पु [अभ्यास] गुणकार (अणु ७४, पिंड ५५५)।

अब्भास न [अभ्यास] १ निकट, नजदीक (से ६, ६०, पाअ)। २ वि समीपवर्ती, पार्श्व-स्थित (पाअ)। ३ पु शिक्षा, पढाई, सीख। ४ आवृत्ति (पाअ, वृह १)। ५ आदत (ठा ४, ४)। ६ आवृत्ति से उत्पन्न सस्कार (धर्म २)। ७ गणित का संकेत-विशेष (कम्म ४, ७८, ८३),

अब्भास सक [अभि + अस्] अभ्यास करना, आदत डालना,

'जं अब्भासइ जीवो, गुणं च दोसं च
एत्थ जम्मम्मि।
तं पावइ परलोए तेण य
अब्भास-जाणए' (धर्म २, भवि)।

अब्भाहय वि [अभ्याहत] आघात-प्राप्त (महा)।

अब्भिंग देखो अब्भंग = अभि+अञ्ज्। प्रयो. अब्भिंगावेइ (पि २३४)।

अब्भिंग देखो अब्भंग = अभ्यङ्ग (णाया १, १८)।

अब्भिगण देखो अब्भंगण (कप्प)।

अब्भिंगिय देखो अब्भंगिय (कप्प)।

अब्भिंतर देखो अब्भंतर (कप्प, स ७, पण्ह २, ५, णाया १, १३)।

अब्भिंतरओ अ [अभ्यन्तरतस्] १ भीतर में। २ भीतर से (आवम)।

अब्भिंतरिय वि [आभ्यन्तरिक] भीतर का, अन्तरंग (नम ६७, कप्प, णाया १, १)।

अब्भिंतरुद्धि पु [अभ्यन्तरोर्ध्विन्] कायोत्सर्ग का एक दोष, दोनों पैर के अंगूठों को मिलाकर और एड़ियों को बाहर फैलाकर किया जाता ध्यान-विशेष (चेइय ४८७)।

अब्भिट्ठ वि [दे] सगत, सामने आकर भिडा हुआ, 'हत्थी हत्थीण समं अब्भिट्ठो रहवरो सह रहेण' (पउम ६, १८२, ६८, २७)।

अब्भिड सक [सं+गम्] संगति करना, मिलना। अब्भिडइ (कुमा, हे ४, १६४)। अब्भिडसु (सुपा १५२)।

अब्भिडिअ वि [संगत] सगत युक्त (पाअ, दे १, ७८)।

अब्भिडिअ वि [दे] सार, मजबूत (दे १, ७८)।

अब्भिण्ण वि [अभिन्न] भेदरहित (धर्म २)।

अब्भुअअ देखो अब्भुदय (से १५, ६५, स ३०)।

अब्भुक्ख सक [अभि + उक्ष्] सीचन करना। वकृ. अब्भुक्खत (वज्जा ८६)।

अब्भुक्खण न [अभ्युक्षण] सिंचन करना, छिडकाव (स ५७६)।

अब्भुक्खणीया स्त्री [अभ्युक्षणीया] सीकर, आसार, पवन से गिरता जल (वृह १)।

अद्दा स्त्री [आर्द्रा] १ नक्षत्र-विशेष (सम २)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

अद्दाअ पु [दे] १ आदर्श, दर्पण (दे १, १४, पराण १५, निचू १३)। °**पसिण** पुं [°प्रश्न] विद्या-विशेष, जिसमे दर्पण मे देवता का आगमन होता है (ठा १०)। °**विज्जा** स्त्री [°विद्या] चिकित्सा का एक प्रकार, जिससे बीमार को दर्पण मे प्रतिबिम्बित कराने से वह नीरोग होता है (वव ५)।

अद्दाइअ वि [दे] आदर्श वाला, आदर्श से पवित्र (बृह १)।

अद्दाग [दे] देखो अद्दाअ (सम १२३)।

अद्दि पु [अद्रि] पहाड, पर्वत (गउड)।

अद्दिट्ठ वि [अदृष्ट] १ नही देखा हुआ (सुर १, १७२)। २ दर्शन का अविषय (सम्म ६६)।

अद्दिय वि [आर्द्रित] आर्द्र किया हुआ भिगाया हुआ (विक्र २३)।

अद्दिय वि [अर्दित] पीटा हुआ, पीडित (वव १०)।

अद्दिस्स वि [अदृश्य] देखने के अयोग्य या अशक्य (सुर ६, १२०, सुपा ८५, श्रा २७)।

अद्दिस्संत } वक्र [अदृश्यमान] नही **अद्दिस्समाण** } दिखाता हुआ (सुपा १५४, ४५७)।

अद्दीण वि [अदीन] क्षोभ को अप्राप्त, अक्षुब्ध, निर्भीक (पराह २, १)।

अद्दीण देखो अद्दीण (ओघ ५३७)।

अद्दुमाअ वि [दे] पूर्ण, भरा हुआ (षड्)।

अद्देस वि [अदृश्य] देखने के अशक्य (स १७०)।

अद्देसीकारिणी स्त्री [अदृश्यीकारिणी] अदृश्य बनानेवाली विद्या (सुपा ४५४)।

अद्देस्सीकरण वि [अदृश्यीकरण] १ अदृश्य करना। २ अदृश्य करनेवाली विद्या, 'किंपुण विज्जासिज्झा अद्देस्सीकरणसगओ वावि' (सुपा ४५५)।

अद्दोहि वि [अद्रोहिन्] द्रोह-रहित, द्वेष-वर्जित (धर्म ३)।

अद्ध पुन [अर्ध] १ आधा (कुमा)। २ खण्ड, अश (पि ४०२)। °**करिस** पुं [°कर्ष] परिमाण-विशेष, फल का आठवाँ भाग (अणु)। °**कुडव,** °**कुलव** पुं [°कुडव, °कुलव] एक प्रकार का धान्य का परिमाण (राय)। °**क्खेत्त** न [°क्षेत्र] एक अहोरात्र मे चन्द्र के साथ योग प्राप्त करनेवाला नक्षत्र (चद १०) °**खल्ला** स्त्री [°खल्वा] एक प्रकार का जूता (बृह ३)। °**घडय** पु [°घटक] आधा परिमाणवाला घडा, छोटा घडा (उवा)। °**चद** पु [°चन्द्र] १ आधा चन्द्र (गो ५७१)। २ गल-हस्त, गला पकड कर बाहर करना (उप ७२८ टी)। ३ न एक हथियार (उप पृ ३९५)। ४ अर्ध चन्द्र के आकारवाले सोपान (णाया १, १)। ५ एक तरह का बाण, 'एसो तुह तिक्खेण सीस छिंदामि अद्धचदेण' (सुर ८, ३७)। °**चक्कवाल** न [°चक्रवाल] गति-विशेष (ठा ७)। °**चक्कि** पु [°चक्रिन्] चक्रवर्ती राजा से अर्ध विभूति वाला राजा, वासुदेव (कम्म १, १२)। °**च्छट्ठ,** °**छट्ठ** वि [°षष्ठ] साढे पाँच (पि ४५०, सम १००)। °**ट्ठम** वि [°ष्टम] साढे सात (ठा ६)। °**णाराय** न [°नाराच] चौथा संहनन, शरीर के हाडो की रचना-विशेष (जीव १)। °**णारीसर** पु [°नारीश्वर] शिव, महादेव (कप्पू)। °**तइय** वि [°तृतीय] ढाई (पउम ४८, ३५)। °**तेरस** वि [°त्रयोदश] साढे बारह (भग)। °**तेवन्न** वि [°त्रिपञ्चाश] साढे बावन (सम १३४)। °**द्ध** वि [°ार्ध] चौथा भाग, पौआ (बृह ३)। °**नवम** वि [°नवम] साढे आठ (पि ४५०)। °**नाराय** देखो °**णाराय** (कम्म १, ३८)। °**पचम** वि [°पञ्चम] साढे चार (सम १०२)। °**पलिअक** वि [°पर्यङ्क] आसन-विशेष (ठा ५, १)। °**पहर** पु [°प्रहर] ज्यौतिष शास्त्र प्रसिद्ध एक कुयोग (गण १८)। °**वब्बर** पु [°बर्बर] देश-विशेष (पउम २७, ५)। °**मागहा,** °**ही** स्त्री [°मागधी] प्राचीन जैन साहित्य की प्राकृत भाषा, जिसमे मागधी भाषा के भी कोई २ नियम का अनुसरण किया गया है, 'पोराणमद्धमागहभासानिययं हवइ सुत्त' (हे ४, २८७, पि १६, सम ६०, पउम २,३४)। °**मास** पुं [°मास] पक्ष, पनरह दिन (दे १०)। °**मासिय** वि [°मासिक] पाक्षिक, पक्ष-सम्बन्धी (महा)। °**यंद** देखो °**चद** (उप ७२८ टी)। °**रज्जिय** वि [°राज्यिक] राज्य का आधा हिस्सेदार, अर्ध राज्य का मालिक (विपा १, ६)। °**रत्त** पुं [°रात्र] मध्य रात्रि का समय, निशीथ (गा २३१)। °**वेयाली** स्त्री [°वेताली] विद्या-विशेष (सूअ २, २)। °**सकासिया** स्त्री [°साङ्काश्यिका] एक राज-कन्या का नाम (आव ४)। °**सम** न [°सम] एक वृत्त, छन्द-विशेष (ठा ७)। °**हार** पु [°हार] १ नवसरा हार (राय, औप)। २ इस नाम का एक द्वीप। ३ समुद्र-विशेष (जीव ३)। °**हारभद्द** [°हारभद्र] अर्धहार-द्वीप का अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °**हारमहाभद्द** पु [हारमहाभद्र] पूर्वोक्त ही अर्थ (जीव ३)। °**हारमहावर** पु [°हारमहावर] अर्धहार समुद्र का एक अधिष्ठायक देव (जीव ३)। °**हारवर** पु [°हारवर] १ द्वीप-विशेष। २ समुद्र-विशेष। ३ उनका अधिष्ठायक देव (जीव ३)। °**हारवरभद्द** पुं [°हारवरभद्र] अर्धहारवर द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °**हारवरमहावर** पुं [°हारवरमहावर] अर्धहारवर समुद्र का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °**हारोभास** पु [°हारावभास] १ द्वीप-विशेष। २ समुद्र-विशेष (जीव ३)। **हारोभासभद्द** पु [°हारावभासभद्र] अर्धहारावभास नामक द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °**हारोभासमहाभद्द** पु [°हारावभासमहाभद्र] पूर्वोक्त ही अर्थ (जीव ३)। °**हारोभासमहावर** पुं [°हारावभासमहावर] अर्धहारावभास नामक समुद्र का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °**हारोभासवर** पु [°हारावभासवर] देखो पूर्वोक्त अर्थ (जीव ३)। °**ाढ़य** पु [°ाढ़क] एक प्रकार का परिमाण, आढक का आधा भाग (ठा ३, १)।

अद्ध पु [अध्वन्] मार्ग, रास्ता (महा, आचा)।

अद्धत पु [दे] १ पर्यन्त, अन्त भाग (दे १, १८, से ६, ३२, पाअ), 'भरिजतमिद्धपहद्धतो (विक्र १०१)। २ पु व. कतिपय कईएक (से १३ ३२)।

अद्धक्खण न [दे] १ प्रतीक्षा करना, राह देखना (दे १, ३४)। २ परीक्षा करना (दे १, ३४)।

अभय (सुपा १८)। °सेण पुं [°सेन] एक राजा का नाम (पिंड)।

अभयंकर वि [अभयंकर] अभय देनेवाला, अहिंसक (सूअ १, ७, २८)।

अभयकरा स्त्री [अभयकरा] भगवान् अभिनन्दन की दीक्षा-शिविका (विचार १२९)।

अभया स्त्री [अभया] १ हरीतकी, हर्रे, हरडई (निचू १५)। २ राजा दधिवाहन की स्त्री का नाम (ती ३५)।

अभयारिट्ठ न [अभयारिष्ट] मद्य-विशेष (सूअ १, ८)।

अभवसिद्धिय, अभवसिद्धीय } पु [अभवसिद्धिक, अभव्य] मुक्ति के लिये अयोग्य जीव (ठा २, २ आदि; ठा १)।

अभविय, अभव्व } वि [अभव्य] १ असुन्दर खराब (विसे)। २ पु. मुक्ति के लिये अयोग्य जीव (विसे; कम्म ३,२३)।

अभाअ वि [अभाग] अस्थान, अयोग्य स्थान (से ८,४२)।

अभाइ वि [अभागिन्] अभागा, हत-भाग्य, कमनसीब (चारु २६)।

अभागवेज्ज वि [अभागवेय] ऊपर देखो (पउम २८, ८६)।

अभाव पु [अभाव] १ ध्वंस, नाश (बृह १)। २ अविद्यमानता, असत्व (पचा ३)। ३ असम्भव (दस १)। ४ अशुभ परिणाम (उत्त १)।

अभाविय वि [अभावित] अयोग्य, अनुचित (ठा १०, बृह ३)।

अभावुग वि [अभावुक] जिसपर दूसरे के सग की असर न पड सके वह, 'विसहरमणी अभावुगदव्वं जीवो उ भावुग तम्हा' (सुपा १७५; ओघ ७७३)।

अभासग, अभासय } वि [अभाषक] १ बोलने की शक्ति जिसको उत्पन्न न हुई हो वह। २ नहीं बोलनेवाला। ३ पु केवल त्वग्-इन्द्रियवाला एकेन्द्रिय जीव। ४ मुक्त आत्मा (ठा २, ४; भग; अणु)।

अभासा स्त्री [अभाषा] १ असत्य वचन। २ सत्य-मिश्रित असत्य वचन (भग २५, ३)।

अभि अ [अभि] निम्न-लिखित अर्थों में से किसी एक को बतलानेवाला अव्यय—१ समुख, सामने, 'अभिगच्छणया' (ओघ)। २ चारों ओर, समन्तात्, 'अभिसेो' (स्वप्न ४२)। ३ बलात्कार, 'अभिओग' (धर्म २)। ४ उल्लघन, अतिक्रमण 'अभिक्कंत' (आचा)। ५ अत्यन्त, ज्यादा, 'अभिदुग्ग' (सूअ १, ५, २)। ६ लक्ष्य, 'अभिमुह'। ७ प्रतिकूल, 'अभिवाय' (आचा)। ८ विकल्प। ९ सभावना (निचू १)। १० निरर्थक भी इस अव्यय का प्रयोग होता है, 'अभिमतिय' (सुर १६ ९२)।

अभिअण पु [अभिजन] १ कुल। २ जन्म-भूमि (नाट)।

अभिआवण्ण वि [अभ्यापन्न] समुख-आगत (सूअ १, ४, २)।

अभिइ स्त्री [अभिजित्] नक्षत्र-विशेष (ठा २, ३)।

अभिइ सक (अभि + इ] सामने जाना, समुख जाना। वकृ अभिइंत (उत्त १४२ टी)।

अभिउज देखो अभिजुज। सकृ. अभिउजिय (ठा ३, ४, दस १०)।

अभिओअ, अभिओग } पुं [अभियोग] १ आज्ञा, हुकुम (औप, ठा १०)। २ बलात्कार, 'अभिओगे अ निओगे' (श्रा ५)। ३ बलात्कार से कोई भी कार्य मे लगाना (धर्म २)। ४ अभिभव, पराभव (आव ५)। ५ कार्मण-प्रयोग, वशीकरण, वश करने का चूर्ण या मन्त्र-तन्त्रादि,

'दुविहो खलु अभिओगो, दव्वे भावे य
होइ नायव्वो।
दव्वम्मि होइ जोगो, विज्जा मंता य भावम्मि'
(ओघ ५९७)।

६ गर्व, अभिमान (आव ५)। ७ आग्रह, हठ (नाट)। °पण्णत्ति स्त्री [°प्रज्ञप्ति] विद्या-विशेष (णाया १,१६)। देखो अहिओय।

अभिओग पु [अभियोग] उद्यम, उद्योग (सिरि ५८)।

अभिओगी स्त्री [आभियोगी] भावना-विशेष, ध्यान-विशेष, जो अभियोगिक देव-गति (नौकर-स्थानीय देव-जाति) में उत्पन्न होने का हेतु है (बृह १)।

अभिओयण न [अभियोजन] देखो अभिओग (आव; पण्ण २०)।

अभिगण, अभिजण } देखो अब्भंगण (नाट, रंभा)।

अभिकख सक [अभि + काङ्क्ष्] इच्छा करना, चाहना। अभिकंखेज्जा (आचा)। वकृ. अभिकखमाण (दस ६, ३)।

अभिकखा स्त्री [अभिकाङ्क्षा] अभिलाषा, इच्छा (आचा)।

अभिकखि, अभिकखिर } वि [अभिकाङ्क्षिन्] अभिलाषी, इच्छुक (पि ४०५; सुपा १२६)।

अभिक्कंत वि [अभिक्रान्त] १ गत, अतिक्रान्त, 'अणभिक्कंत च खलु वय सपेहाए' (आचा)। २ समुख गत। ३ आरब्ध। ४ उल्लघित (आचा; सूअ २, २)।

अभिक्कम सक [अभि + क्रम्] १ जाना, गुजरना। २ सामने जाना। ३ उल्लघन करना। ४ शुरू करना। वकृ अभिक्कममाण (आचा)। सकृ अभिक्कम्म (सूअ १,१,२)।

अभिक्कम पु [अभिक्रम] १ उल्लघन। २ प्रारम्भ। ३ समुख-गमन। ४ गमन, गति (आचा)।

अभिक्खं, अभिक्खणं } अ [अभीक्ष्ण] वारवार (उप १४७ टी; ठा २,४, वव ३)।

अभिक्खा स्त्री [अभिख्या] नाम (विसे १०४८)।

अभिगच्छ सक [अभि + गम्] प्राप्त करना। अभिगच्छइ (दस ४, २१, २२, ६, २, २)।

अभिगच्छ सक [अभि + गम्] सामने जाना। अभिगच्छंति (भग २, ५)।

अभिगच्छणया स्त्री [अभिगमन] समुख-गमन (ओप)।

अभिगच्छणा देखो अभिगच्छणया (वव १)।

अभिगज्ज अक [अभि + गर्ज्] गर्जना, खूब जोर से आवाज करना। वकृ अभिगज्जंत (णाया १, १८; सुर १३, १८२)।

अभिगम देखो अभिगच्छ। कृ अभिगमणीय (तं ६७९)।

अभिगम पुं [अभिगम] १ प्राप्ति, स्वीकार (पक्खि)। २ आदर, सत्कार (भग २, ५)। ३ (गुरु का) उपदेश, सीख (णाया १, १)।

अधिइ देखो अद्विइ (सुपा ३५६)।

अधिकरण देखो अहिगरण (पण्ह १, २)।

अधिग वि [अधिक] विशेष, ज्यादा (वृह १)।

अधिगम देखो अहिगम (धर्म २, विसे २२)।

अधिगरण देखो अहिगरण (निचू १)।

अधिगरणिया देखो अहिगरणिया (पण्ण २१)।

अधिगार देखो अहिगार (सूअनि ५८)।

अधिण्ण } (अप) वि [अधीन] आयत्त,
अधिन्न } परवश (पि ६१, हे ४, ४२७)।

अधिमासग पु [अधिमासक] अधिक मास (निचू २०)।

अधिरोविअ वि [अधिरोपित] आरोपित, 'सूलाविरोविओ मो' (धर्मवि १३७)।

अधीगार देखो अहिगार (सूअनि १८०)।

अधीय देखो अहीय (उत्त २०, २२)।

अधीस वि [अधीश] नायक, अधिपति (कुम्मा २३)।

अधुव देखो अद्‍धुव (णाया १, १, पउम ६५, ४६)।

अधो देखो अहो = अधम् (पि ३४२)।

अनंदि स्त्री [अनन्दि] अमङ्गल, अकुशल, 'त मोएउ अनंदि' (अजि ३७)।

अनन्न देखो अणण्ण (कुमा)।

अनय देखो अणय (सुपा ३७१)।

अनल देखो अणल (हे १, २२८, कुमा)।

अनागय देखो अणागय (भग)।

अनागार देखो अणागार (भग)।

अनाय देखो अणाय (सुपा ४७०, पि ३८०)।

अनालफ (चूपै) वि [अनारम्भ] पाप-रहित (कुमा)।

अनालफ (चूपै) वि [अनालम्भ] अहिंसक, दयालु (कुमा)।

अनिगिण देखो अणगिण (सम १७)।

अनिदाया } देखो अणिदा (पण्ण ३४)।
अनिद्दाया }

अनिमित्ती स्त्री [अनिमित्ती] लिपि-विशेष (विसे ४६४ टी)।

अनियमिय वि [अनियमित] १ अव्यवस्थित। २ असंयत, इन्द्रियों का निग्रह नहीं करनेवाला, 'गओ य नरय अनियमियप्पा' (पउम ११४, २६)।

अनियट्टि देखो अणियट्टि (सम २६, कम्म २, सत्त ७१ टी)।

अनियय देखो अणियय (ओघ २)।

अनिरुद्ध देखो अणिरुद्ध (अंत १४)।

अनिल देखो अणिल (हे १, २२८, कुमा)।

अनिसट्ठ देखो अणिसट्ठ (ठा ३, ४)।

अनिहारिम } देखो अणीहारिम (भग, ठा
अनीहारिम } २, ४)।

अनु (अप) देखो अण्णहा (कुमा)।

अनुकूल देखो अणुकूल (सुपा ४७४)।

अनुग्गह देखो अणुग्गह (अभि ४१)।

अनुचिट्ठिय देखो अणुट्ठिय (स १५)।

अनुज्जुय देखो अणुज्जुय (पि ५७)।

अनुहव देखो अणुहव = अनु + भू। वकृ अनुहवंत (रंभा)।

अन्न देखो अण्ण (सुपा ३६०, प्रासू ४३, पण्ह २, १, ठा ३, २, ०, १, आ ६)।

अन्नइय देखो अण्णइय (भवि)।

अन्नओ देखो अण्णओ। °हुत्त क्रिवि [°मुख] दूसरी तरफ (सुर ३, १३६)।

अन्नत्तो देखो अण्णत्तो (कुमा)।

अन्नत्थ } देखो अण्णत्थ (आचा, स १५०,
अन्नत्थ } कुमा)।

अन्नदो देखो अण्णत्तो (कुमा)।

अन्नमन्न देखो अण्णमण्ण (णाया १, १)।

अन्नन्न देखो अण्णण्ण (महा कुमा)।

अन्नय पु [अन्वय] एक की सत्ता मे ही दूसरे की विद्यमानता, जैसे अग्नि की हयाती में ही धूम की सत्ता, नियमित सम्बन्ध (उप ४१३, स ६५१)।

अन्नयर देखो अण्णयर (सुपा ३७०)।

अन्नया देखो अण्णया (महा)।

अन्नव देखो अण्णव (सुपा ८५, ५२६)।

अन्नह देखो अण्णह (सुर १, १५६, कुमा)।

अन्नहा देखो अण्णहा (पउम १००, २४, महा; सुर १, १४३, प्रासू ७)।

अन्नहि देखो अण्णहि (कुमा)।

अन्ना स्त्री [दे] माता, जननी (दस ७, १६, १६)।

अन्नाइट्ठ वि [अन्वाविष्ट] आक्रान्त, 'तुम णं आउसो कासवा! मम तवेएा अन्नाइट्ठे समाणे अतो छण्ह मासाएा पित्तजरपरिगयसरीरे दाहवक्कतीए छउमत्थे चेव काल करेस्ससि' (भग १५)।

अन्नाण देखो अण्णाण = अज्ञान (कुमा, सुर १, १५, महा, उवर ६५, कम्म ४, ६, ११)।

अन्नाणि देखो अण्णाणि (उव, सुपा ५८८)।

अन्नाणिय देखो अण्णाणिय (पउम ४, २७)।

अन्नाय देखो पहला और दूसरा अण्णाय (सुर ६, २, सुपा २५६, सुर २, ६, २०२, सम्म ६६, सुपा २३३, सुर २, १६५, सुपा, ३०८), 'नाएण ज न सिद्ध को खलु महलो तयत्यमन्नाओ?' (उर ७१८ टी)।

अन्नारिस देखो अण्णारिस (हे १, १४२, महा)।

अन्नाहुत्त वि [दे] पराङ्मुख (सुख २,१७)।

अन्नि वि [अन्यदीय] परकीय, 'अन्न वा अन्नि वा' (सूअ २, २, ६)।

अन्निज्जमाण देखो अण्णिज्जमाण (णाया १, १६)।

अन्निय देखो अण्णिय।

अन्नियसुय पु [अन्निकासुत] एक विख्यात जैन मुनि (उव)।

अन्निया देखो अण्णिया (सया ५६)।

अन्नुत्ति स्त्री [अन्योक्ति] साहित्य-प्रसिद्ध एक अलङ्कार (मोह ३७, सम्मत्त १४५)।

अन्नुन्न } देखो अण्णुण्ण (हे १, १५६,
अन्नुमन्न } काप्र)।

अन्नूण वि [अन्यून] अ-हीन (धर्मवि १२६)।

अन्नेस देखो अण्णेस। वकृ. अन्नेसमाण (उप ६ टी)।

अन्नेसण देखो अण्णेसण (सुर १०, २२८, सण)।

अन्नेसणा देखो अण्णेसणा (ठा ३, ४)।

अन्नेसय वि [अन्वेषक] गवेषक, खोज करनेवाला (स ५३५)।

अन्नेसि } देखो अण्णेसि (पि ५१६,
अन्नेसिय } आचा)।

अन्नोन्न देखो अण्णोण्ण (कुमा, महा)।

अप स्त्री. व. [अप्] पानी, जल (सुज्ज

अभिणिव्वट्ट मक [अभिनि + वृत्] रोकना, प्रतिषेध करना, 'से मेहावी अभिणिव्वट्टेज्जा कोहं च माणं च मायं च लोभं च पेज्जं च दोसं च मोहं च गब्भं च जम्मं च मारं च नरयं च तिरियं च दुक्खं च' (आचा)।

अभिणिव्वट्ट सक [अभिनिर् + वृत्] १ संपादित करना, निष्पन्न करना। २ उत्पन्न करना। संकृ—अभिणिव्वट्टित्ता, (भग ५, ४)।

अभिणिव्वट्ट वि [अभिनिर्वृत्त] १ निष्पन्न। २ उत्पन्न, 'इह खलु अत्तत्ताए तेहिं तेहिं कुलेहिं अभिसेएण अभिसंभूआ अभिसंजाया अभिणिव्वट्टा अभिसंवुड्ढा अभिसंबुद्धा अभिनिक्खंता अणुपुव्वेण महामुणी' (आचा)।

अभिणिव्वुड वि [अभिनिर्वृत्त] १ मुक्त, मोक्ष-प्राप्त (सूअ १, २, १)। २ शान्त, अकुपित (आचा)। ३ पाप से निवृत्त (सूअ १, २, १)।

अभिणिसज्जा स्त्री [अभिनिषद्या] जैन साधुओं के रहने का स्थान-विशेष (वव १)।

अभिणिसट्ठ देखो अभिणिसिट्ठ (सुज्ज ६)।

अभिणिसिट्ठ वि [अभिनिसृष्ट] बाहर निकला हुआ (जीव ३)।

अभिणिसेहिया स्त्री [अभिनैषेधिकी] जैन साधुओं के स्वाध्याय करने का स्थान-विशेष (वव १)।

अभिणिस्सव अक [अभिनिर् + स्रु] निकलना। अभिणिस्सवंति (राय ७४)।

अभिणी सक [अभि + नी] अभिनय करना, नाट्य करना। वकृ अभिणअंत (सै ७५)। कवकृ अभिणइज्जंत (सुपा ३५६)।

अभिणूम न [अभिनूम] माया, कपट (सुअ १, २, १)।

अभिण्ण वि [अभिज्ञ] जानकार, निपुण (उप ५८०)।

अभिण्ण वि [अभिन्न] १ अत्रुटित, अविदारित, अखण्डित (उवा, पचा ११)। २ भेदरहित, अपृथग्भूत (बृह ३)।

अभिण्णपुड पुं [दे] खाली पुड़िया, लोगों को ठगने के लिए लड़के जिसको रास्ता पर रख देते हैं (दे १, ४४)।

अभिण्णाण न [अभिज्ञान] निशानी, चिह्न (श्रा १४)।

अभिण्णाय वि [अभिज्ञात] जाना हुआ, विदित (आचा)।

अभितज्ज सक [अभि + तर्ज्] तिरस्कार करना, ताडन करना। वकृ अभितज्जेमाण (णाया १, १८)।

अभितत्त वि [अभितप्त] १ तपाया हुआ, गरम किया हुआ (सूअ १, ८, १, २७)।

अभितव सक [अभि + तप्] १ तपाना। २ पीडा करना, 'चत्तारि अगणिओ समारभित्ता जेहिं कूरकम्मा भितवेंति, बालं' (सूअ १, ५, १, १३)। कवकृ अभितप्पमाण, 'ते तत्थ चिट्ठंतिभितप्पमाणा मच्छा व जीवंतुवजोतिपत्ता' (सूअ १, ५, १, १३)।

अभिताव सक [अभि + तापय्] १ तपाना, गरम करना। २ पीडित करना। अभितावयंति (सूअ १, ५, १, २१, २२)।

अभिताव पु [अभिताप] १ दाह। २ पीडा (सूअ १, ५, १, २, ६)।

अभिताम सक [अभि + त्रासय्] त्रास उपजाना, भयभीत करना। वकृ अभितासेमाण (णाया १, १८)।

अभित्थु सक [अभि + स्तु] स्तुति करना, श्लाघा करना, वर्णन करना। अभित्थुणंति, अभित्थुणामि (पि ४९४, विसे १०५४)। वकृ. अभित्थुणमाण (कप्प)। कवकृ अभित्थुव्वमाण (रयण ९८)।

अभित्थुय वि [अभिष्टुत] स्तुत, श्लाघित (सया)।

अभिथु देखो अभित्थु। वकृ. अभिथुणंत (णाया १, १)। कवकृ अभिथुव्वमाण (कप्प, ठा ६)।

अभिदुग्ग वि [अभिदुर्ग] १ दुःखोत्पादक स्थान। २ अतिविषम स्थान (सूअ १, ५, १, १७)।

अभिदो (शौ) अ [अभितः] चारों ओर से (स्वप्न ४२)।

अभिद्दव सक [अभि + द्रु] पीडा करना, दुःख उपजाना, हैरान करना, 'नुदंति वायाहिं अभिद्दवं णरा' (आचा २, १६, २)।

अभिद्दविय वि [अभिद्रुत] उपद्रुत, हैरान किया हुआ (सुर १२, ६७)।

अभिद्दुय देखो अभिद्दविय (णाया १, ६, स ५६)।

अभिधाइ वि [अभिधायिन्] वाचक, कहनेवाला (विसे ३४७२)।

अभिधार मक [अभि + धारय्] १ चिन्तन करना। २ स्पृष्ट करना। अभिधारए (दस ५, २, २५, उत्त २, २१), अभिधारयामो (सूअ २, ६, १६)। वकृ. अभिधारयंत (उत्तनि ३)।

अभिधारण न [अभिधारण] धारणा, चिन्तन (बृह ३)।

अभिधेज्ज } पु [अभिधेय] अर्थ, वाच्य,
अभिधेय } पदार्थ (विसे १ टी)।

अभिनंद देखो अभिणंद। वकृ अभिनंदमाण (कप्प)। कवकृ अभिनंदिज्जमाण (महा)।

अभिनंदण देखो अभिणंदण (कप्प)।

अभिनंदि स्त्री [अभिनंदि] आनन्द, खुशी, 'पावेउ अ नंदिसेणमभिनंदिं' (अजि ३७)।

अभिनिक्खंत देखो अभिणिक्खंत (आचा)।

अभिनिक्खम अक [अभिनिर् + क्रम्] दीक्षा (संन्यास) लेना, दीक्षा लेने की इच्छा करना, गृहवास से बाहर निकलना। वकृ अभिनिक्खमंत (पि ३९७)।

अभिनिगिण्ह देखो अभिणिगिण्ह (आचा)।

अभिनिबुज्झ देखो अभिणिबुज्झ। अभिनिबुज्झइ (विसे ९८)।

अभिनिवट्ट देखो अभिणिवट्ट। संकृ. अभिनिवट्टित्ताण (पि ५८३)।

अभिनिविट्ठ देखो अभिणिविट्ठ (भग)।

अभिनिवेस सक [अभिनि + वेशय्] १ स्थापन करना। २ करना। अभिनिवेसए (दस ८, ५६)।

अभिनिवेसिय न [अभिनिवेशिक] मिथ्यात्व का एक प्रकार, सत्य वस्तु का ज्ञान होने पर भी उसे नहीं मानने का दुराग्रह (श्रा ६, कम्म ४, ५१)।

ममता-रहित, निर्मम, 'अपरिग्गहा अणारभा भिक्खू ताएा परिव्वए' (सूत्र १, १, ४)।

अपरिग्गहा स्त्री [अपरिग्रहा] वेश्या (वव २)।

अपरिग्गहिआ स्त्री [अपरिगृहीता] १ वेश्या, कन्या वगैरह अविवाहिता स्त्री (पडि)। २ पति-हीना स्त्री, विधवा (धर्म २)। ३ घर-दासी। ४ पनहारी। ५ देव-पुत्रिका, देवता को भेंट की हुई कन्या (श्राद्ध ५)।

अपरिच्छण्ण } वि [अपरिच्छन्न] १ नहीं
अपरिच्छन्न } ढका हुआ, अनावृत (वव ३)। २ परिवार रहित (वव १)।

अपरिणय वि [अपरिणत] १ रूपान्तर को अप्राप्त (ठा २, १)। २ जैन साधु की भिक्षा का एक दोष। (आचा)।

अपरित्त वि [अपरीत] अपरिमित, अनन्त (पराण १८)।

अपरिसेस वि [अपरिशेष] सब, सकल, निःशेष (पराह १, २, पउम ३, १४०)।

अपरिहारिय वि [अपरिहारिक] १ दोषों का परिहार नहीं करनेवाला। (आचा)। २ पु जैनेतर दर्शन का अनुयायी गृहस्थ (निचू २)।

अपवग्ग पु [अपवर्ग] मोक्ष, मुक्ति (सुर ८, १०६, सत्त ११)।

अपविद्ध वि [अपविद्ध] १ प्रेरित (से ७, ११)। २ न गुरु-वन्दन का एक दोष, गुरु को वन्दन करके तुरन्त ही भाग जाना (गुभा २३)।

अपह वि [अप्रभ] निस्तेज (दे १, १६४)।

अपहत्थ देखो अवहत्थ (भवि)।

अपहारि वि [अपहारिन्] अपहरण करने-वाला (स २१७)।

अपहिय वि [अपहृत] छीना हुआ (पउम ७६, ५)।

अपहु वि [अप्रभु] १ असमर्थ। २ नाथ-रहित, अनाथ (पउम १०१, ३५)।

अपाइय वि [अपात्रित] पात्र-रहित, भाजन-वर्जित, 'नो कप्पइ निग्गयीए अपाइयाए होत्तए' (कस)।

अपाउड वि [अपावृत] नहीं ढका हुआ, वस्त्र-रहित, नग्न (ठा ५, १)।

अपादाण न [अपादान] कारक-विशेष, जिसमें पञ्चमी विभक्ति लगती है (विसे २११७)।

अपाण न [अपान] १ पान का अभाव। (उत ८४५)। २ पानी जैसा ठंढा पेय वस्तु-विशेष। (भग १५)। ३ पुन. अपान वायु। ४ गुदा (सुपा ६२०)। ५ वि जल-वर्जित, निर्जल (उपवास), 'छट्ठेण भत्तेण अपाणएण' (ज २)।

अपायावगम पु [अपायापगम] जिनदेव का एक अतिशय (संबोध २)।

अपार वि [अपार] पार-रहित, अनन्त (सुपा ४५०)।

अपारमग्ग पु [दे] विश्राम, विश्रान्ति (दे १, ४३)।

अपाव वि [अपाप] १ पाप-रहित (सूत्र १, १, ३)। २ न पुण्य (उव)।

अपावा स्त्री [अपापा] नगरी-विशेष, जहां भगवान् महावीर का निर्वाण हुआ था, यह आजकल 'पावापुरी' नाम से प्रसिद्ध है और विहार से आठ माईल पर है (राज)।

अपिट्ठ वि [दे] पुनरुक्त, फिरसे कहा हुआ (पड्)।

अपिय वि [अप्रिय] अनिष्ट (जीव १)।

अपिह अ [अपृथक्] अ-भिन्न (कुमा)।

अपुणबंधग } वि [अपुनर्बन्धक] फिर से
अपुणबंधय } उत्कृष्ट कर्मबन्ध नहीं करने वाला, तीव्र भाव से पाप को नहीं करने वाला (पचा ३, उप २५३, ६५१)।

अपुणब्भव पु [अपुनर्भव] १ फिर से नहीं होना। २ वि जिसमें फिर जन्म न हो वह, मुक्ति-प्रद (पराह २, ४)।

अपुणब्भाव वि [अपुनर्भाव] फिर से नहीं होनेवाला (पच १)।

अपुणभव देखो अपुणब्भव (कुमा)।

अपुणरागम पु [अपुनरागम] १ मुक्त आत्मा। २ मुक्ति, मोक्ष (दसचू १)।

अपुणरावत्तग } पु [अपुनरावर्त्तक] १
अपुणरावत्तय } फिर नहीं घूमने वाला, मुक्त आत्मा। २ मोक्ष, मुक्ति (पि ३४३, औप, भग १ १)।

अपुणरावत्ति पु [अपुनरावर्तिन्] मुक्त आत्मा (पि ३४३)।

अपुणराविति पुं [अपुनरावृत्ति] मोक्ष, मुक्ति (पडि)।

अपुणरुत्त वि [अपुनरुक्त] फिर से अकथित, पुनरुक्ति-दोष से रहित, 'अपुणरुत्तेहिं महा-वित्तेहिं संथुणइ' (राय)।

अपुणागम देखो अपुणरागम (पि ३४३)।

अपुणागमण न [अपुनरागमन] १ फिर से नहीं आना। २ फिर न उत्पत्ति, 'अपुणा-गमणाय व त तिमिर उम्मूलिअ रविणा' (गउड)।

अपुण्ण न [अपुण्य] १ पाप। २ वि पुण्य-रहित, कम-नसीब, हत-भाग्य (विपा १, ७)।

अपुण्ण वि [अपूर्ण] अधूरा, अपरिपूर्ण (विपा १, ७)।

अपुण्ण वि [दे] आक्रान्त (पड्)।

अपुत्त } वि [अपुत्र, °क] १ पुत्र-रहित
अपुत्तिय } (सुपा ४१२, ३१४)। २ स्वजन-रहित, निर्मम, निःस्पृह (आचा)।

अपुन्न देखो अपुण्ण (णाया १, १३)।

अपुम न [अपुम्] नपुंसक (ओघ २२३)।

अपुप्फ देखो अप्पुप्फ (चंड)।

अपुव्व वि [अपूर्व] १ नूतन, नवीन। २ अद्भुत, आश्चर्यकारक। ३ असाधारण, अद्वितीय (हे ८, २७०, उव ६ टी)। °करण न [°करण] १ आत्मा का एक अभूतपूर्व शुभ परिणाम (आचा)। २ आठवाँ गुण-स्थानक (पव २२८, कम्म २, ६)।

अपूय } पु [अपूप] एक भक्ष्य पदार्थ, पूआ,
अपूव } पूडी (औप, पराण ३६, दे १, १३४, ६, ८१)।

अपेक्ख सक [अप+ईक्ष्] अपेक्षा करना, राह देखना। हेकृ अपेक्खिउं (शो) (नाट)।

अपेच्छ वि [अप्रेक्ष्य] १ देखने के अशक्य। २ देखने के अयोग्य (उव)।

अपेय वि [अपेय] पीने के अयोग्य, मद्य आदि (कुमा)।

अपेय वि [अपेत] गया हुआ, नष्ट; 'अपेय-चक्खु' (बृह १)।

अपेहय वि [अपेक्षक] अपेक्षा करने वाला (आव ४)।

अभिलासुग वि [अभिलाषुक] अभिलाषी (उप ३५७ टी)।

अभिलोयण न [अभिलोकन] जहाँ खडे रह कर दूर की चीज देखी जाय वह स्थान (पराह २, ४)।

अभिलोयण न [अभिलोचन] ऊपर देखो (पराह २, ४)।

अभिवद सक [अभि + वन्द्] नमस्कार करना, प्रणाम करना। वकृ **अभिवदत** (पउम २३, ६), कृ 'जे साहुणो ते अभिवदियव्वा' (गोय १४), **अभिवदणिज्ज** (विसे २६४३)।

अभिवदणा स्त्री [अभिवन्दना] प्रणाम, नमस्कार (चेइय ६३९)।

अभिवदय वि [अभिवन्दक] प्रणाम करने वाला (ओप)।

अभिवड्ढ अक [अभि + वृध्] वढना, बडा होना, उन्नत होना। अभिवड्ढामो, भूका. अभिवड्ढित्था (कप्प)। वकृ **अभिवड्ढेमाण** (ज ७)।

अभिवड्ढि देखो **अभिवुड्ढि** (इक)।

अभिवड्ढि देखो **अहिवड्ढि** (सुज्ज १० १२ टी)।

अभिवड्ढिय वि [अभिवर्धित] १ वढाया हुआ। २ अधिक मास। ३ अधिक मासवाला वर्ष (सम ५६, चन्द ११)।

अभिवड्ढे सक [अभि + वर्धय्] वढाना। अभिवड्ढेति (सुज्ज ६)। वकृ **अभिवड्ढेमाण** (सुज्ज ६)। संकृ **अभिवड्ढेत्ता** (सुज्ज ६)।

अभिवत्त वि [अभिव्यक्त] आविर्भूत (धर्मसं ८८)।

अभिवत्ति स्त्री [अभिव्यक्ति] प्रादुर्भाव (उप २८५)।

अभिवय सक [अभि + व्रज्] सामने जाना। वकृ **अभिवयंत** (णाया १, ८)।

अभिवाइय वि [अभिवादित] प्रणत, नमस्कृत (सुपा ३१०)।

अभिवात पु [अभिवात] १ सामने का पवन। २ प्रतिकूल (गरम या रूक्ष) पवन (आचा)।

अभिवाद } सक [अभि + वादय्] प्रणाम
अभिवाय } करना, नमस्कार करना। अभिवाएइ (महा)। अभिवादये (विसे १०५४)। वकृ **अभिवायमाण** (आचा)। कृ **अभिवायणिज्ज** (सुपा ५६८)।

अभिवाय देखो **अभिवात** (आचा)।

अभिवायण न [अभिवादन] प्रणाम, नमस्कार (आचा, दसचू)।

अभिवाहरण न [अभिव्याहरण] बुलाहट, पुकार (पचा २)।

अभिवाहार पु [अभिव्याहार] प्रश्नोत्तर, सवाल-जवाब (विसे ३३९६)।

अभिविहि पुस्त्री [अभिविधि] मर्यादा, व्याप्ति (पचा १५, विसे ८७४)।

अभिवुट्ठि स्त्री [अभिवृष्टि] वृष्टि, वर्षा (पव ४०)।

अभिवुड्ढ देखो **अभिवड्ढ**। संकृ **अभिवुड्ढित्ता** (सुज्ज १)।

अभिवुड्ढि स्त्री [अभिवृद्धि] १ वृद्धि, वढाव। २ उत्तरभाद्रपद नक्षत्र का अधिष्ठाता देव (ज ७)।

अभिवुड्ढे देखो **अभिवड्ढे**। संकृ **अभिवुड्ढेत्ता** (सुज्ज ६)।

अभिवेदणा स्त्री [अभिवेदना] अत्यन्त पीडा (सूअ १, ५, १, १६)।

अभिव्वंजण न [अभिव्यञ्जन] देखो **अभिवत्ति** (सूअ १, १, १)।

अभिव्वाहार देखो **अभिवाहार** (विसे ३३१२)।

अभिसंकण न [अभिशङ्कन] शका, वहम (सबोध ४६)।

अभिसंका स्त्री [अभिशङ्का] सशय, सदेह (सूअ १, ६, १, १४)।

अभिसंकि वि [अभिशङ्किन्] १ सदेह करनेवाला। २ भीरु, डरनेवाला, 'उज्जु माराभिसंकी मरणा पमुचति' (आचा, णाया १, १८)।

अभिसंग पु [अभिष्वङ्ग] आसक्ति (ठा ३, ४)।

अभिसंजाय वि [अभिसंजात] उत्पन्न (आचा)।

अभिसंथुण सक [अभिसं + स्तु] स्तुति करना, वर्णन करना। वकृ **अभिसंथुणमाण** (णाया १, ८)।

अभिसंधारण न [अभिसंधारण] पर्यालोचन, विचारना (आचा)।

अभिसंधि पुस्त्री [अभिसंधि] आशय, अभिप्राय (उप २११ टी)।

अभिसंधिय वि [अभिसंहित] गृहीत, उपात्त (आचा)।

अभिसंभूय वि [अभिसंभूत] उत्पन्न, प्रादुर्भूत (आचा)।

अभिसंबुद्ध वि [अभिसंबुद्ध] ज्ञान-प्राप्त, बोध-प्राप्त (आचा)।

अभिसंवुड्ढ वि [अभिसंवृद्ध] वढा हुआ, उन्नत अवस्था को प्राप्त (आचा)।

अभिसमण्णागय } वि [अभिसमन्वागत]
अभिसमन्नागय } १ अच्छी तरह जाना हुआ, सुनिर्णीत (भग ५, ४)। २ व्यवस्थित (सूअ २,१)। ३ प्राप्त, लब्ध (भग १५, कप्प, णाया १, ८)।

अभिसमागम सक [अभिसमा + गम्] १ सामने जाना। २ प्राप्त करना। ३ निर्णय करना, ठीक-ठीक जानना। संकृ **अभिसमागम्म** (आचा, दस ५)।

अभिसमागम पुं [अभिसमागम] १ समुख गमन। २ प्राप्ति। ३ निर्णय (ठा ३, ४)।

अभिसमे सक [अभिसमा+इ] देखो **अभिसमागम** = अभिसमा + गम्। अभिसमेइ (ठा ३, ४)। संकृ **अभिसमेच्च** (आचा)।

अभिसर सक [अभि + सृ] प्रिय के पास जाना। वकृ **अभिसरंत** (मोह ९१)।

अभिसरण न [अभिसरण] १ सामने जाना, समुख गमन (पराह १, १)। २ प्रिय के पास जाना (कुमा)।

अभिसव पु [अभिषव] १ मद्य आदि का अर्क। २ मद्य मास आदि से मिश्रित चीज (पव ६)।

अभिसारिआ देखो **अहिसारिआ** (गा ८७१)।

अभिसिंच सक [अभि + सिच्] अभिषेक करना। अभिसिंचति (कप्प)। कवकृ. **अभिसिच्चमाण** (कप्प)। प्रयो, हेकृ. **अभिसिंचावित्तए** (पि ५७८)।

अभिसित्त वि [अभिषिक्त] जिसका अभिषेक किया गया हो वह (आवम)।

अप्पड्ढिय वि [अल्पर्द्धिक] थोडी ऋद्धि-वाला, अल्प वैभववाला (सुपा ४३०)।

अप्पण न [अर्पण] १ भेंट, उपहार, दान (श्रा २७)। २ प्रधान रूप से प्रतिपादन (विसे १८४३)।

अप्पण देखो अप्प = आत्मन् (आचा, उत्त १, महा, हे ४, ४२२)।

अप्पण वि [आत्मीय] स्वकीय, निजका, 'नो अप्पणा पराया गुरुणो कइयावि होंति सुद्धाण' (सट्ठि १०५)।

अप्पणय वि [आत्मीय] स्वकीय, निजी (पउम ५०,१६, सुपा २७६, हे २,१५३)।

अप्पणा अ [स्वयम्] स्वय, आप, निज, खुद (पड्)।

अप्पणिज्ज } वि [आत्मीय] स्वकीय,
अप्पणिज्जिय } स्वीय (ठा १, आवम)।

अप्पणो अ [स्वयम्] आप, खुद, निज, 'विअसंति अप्पणो चेव कमलसरा' (हे २, २०९)।

अप्पण्ण देखो अक्कम = आ + क्रम्। अप्पण्णाइ (प्राकृ ७३)।

अप्पण्णुअ देखो अप्पजाणुअ = आत्मज्ञ, अल्पज्ञ (प्राकृ १८)।

अप्पतक्किय वि [अप्रतर्कित] अवितर्कित, असभावित (स ५३०)।

अप्पत्त पुन [अपात्र] १ अयोग्य, नालायक, कुपात्र, 'अण्णेवि हु अप्पत्ता परिद्धिं नेय विसहंति' (सुर ३, ४५, गा १५७)। २ वि आधार-रहित, भाजन-शून्य (सुर १३, ४५)।

अप्पत्त वि [अपत्र] १ पत्ता से रहित (वृक्ष) (सुर ३, ४५)। २ पाख से रहित (पक्षी) (सूअ १, १४)।

अप्पत्त वि [अप्राप्त] अलब्ध, अनवाप्त (सुर १३,४५, ओघ ८६)। °कारि वि [°कारिन्] वस्तु का विना स्पर्श किये ही (दूर से) ज्ञान उत्पन्न करनेवाला, 'अप्पत्तकारि णयण' (विसे)।

अप्पत्ति स्त्री [अप्राप्ति] नही पाना (सुर ४, २१३)।

अप्पत्तिय पुन [अप्रत्यय] अविश्वास (स ६६७, सुपा ५१२)।

अप्पत्तिय न [अप्रीति] १ अप्रीति, प्रेम का अभाव (ठा ४, ३)। २ क्रोध, गुस्सा (सूअ १, १, २)। ३ मानसिक पीडा (आचा)। ४ अपकार (निचू १)।

अप्पत्तिय वि [अपात्रिक] पात्र-रहित, आधार-वर्जित (भग १६, ३)।

अप्पत्तियण न [अप्रत्ययन] अविश्वास, अश्रद्धा (उप ३१२)।

अप्पत्थ वि [अप्रार्थ्य] १ प्रार्थना करने के अयोग्य। २ नही चाहने लायक (सुपा ३३६)।

अप्पत्थण न [अप्रार्थन] १ अयाञ्चा। २ अनिच्छा, अचाह (उत्त ३२)।

अप्पत्थिय वि [अप्रार्थित] १ अयाचित। २ अनभिलषित, अवाछित (ज ३)। °पत्थय, °पत्थिय वि [°प्रार्थक, °र्थिक] मरणार्थी, मौत को चाहनेवाला, 'कीस ण एस अप्पत्थिय-पत्थए दुरतपतलक्खणे' (भग ३, २, णाया १, ९, पि ७१)।

अप्पत्थुय वि [अप्रस्तुत] प्रसग के अनुपयुक्त, विषयान्तर (सुपा १०६)।

अप्पदुट्ठ वि [अप्रद्विष्ट] जिसपर द्वेष न हो वह, प्रीतिकर (ओघ ७४४)।

अप्पदुस्समाण वकृ [अप्रद्विष्यत्] द्वेष नहीं करता हुआ (अत १२)।

अप्पप्प वि [अप्राप्य] प्राप्त करने के अशक्य (विसे २६८७)।

अप्पभाय न [अप्रभात] १ वडी सवेर। २ वि प्रकाश-रहित, कान्ति-वर्जित, 'अज्ज पुण अप्पभाए गयणे' (सुर ११, ११०)।

अप्पभु वि [अप्रभु] १ असमर्थ (भग)। २ पु मालिक से भिन्न, नौकर वगैरह (धर्म ३)।

अप्पमज्जिय वि [अप्रमार्जित] साफ नही किया हुआ (उवा)।

अप्पमत्त वि [अप्रमत्त] प्रमाद-रहित, साव-धान, उपयोगवाला (पण्ह २,५, हे १,२३१, अभि १८५)। °संजय पुंस्त्री [°संयत] १ प्रमाद-रहित मुनि। २ न सातवा गुण-स्थानक (भग ३, ३)।

अप्पमाण देखो अपमाण (बृह ३, पण्ह २,३), 'अइक्कमित्ता जिणरायआणं, तवंति तिव्वं तवमप्पमाणं। पढंति नाणं तह दिंति दाणं, सव्वंपि तेसिं कयमप्पमाणं' (सत्त २०)।

अप्पमाय पु [अप्रमाद] प्रमाद का अभाव (निचू १)।

अप्पमेअ वि [अप्रमेय] १ जिसका माप न हो सके, अनन्त (पउम ७५,२३)। २ जिसका ज्ञान न हो सके (धर्म १)। ३ प्रमाण से जिसका निश्चय न किया जा सके वह (पण्ह १, ४)।

अप्पय देखो अप्प (उव, पि ४०१)।

अप्परिचत्त वि [अपरित्यक्त] नही छोडा हुआ, अपरिमुक्त (सुपा ११०)।

अप्परिवडिय वि [अपरिपतित] अनष्ट, विद्यमान (श्रा ६)।

अप्पलहुअ वि [अप्रलघुक] महान्, वडा (से १, १)।

अप्पलीण वि [अप्रलीन] असंबद्ध, सङ्ग-वर्जित (सूअ १ १, ४)।

अप्पलीयमाण वकृ [अप्रलीयमान] आसक्ति नही करता हुआ (आचा)।

अप्पवित्त वि [अप्रवृत्त] प्रवृत्ति-रहित (पंचा १४)।

अप्पवित्ति स्त्री [अप्रवृत्ति] प्रवृत्ति का अभाव (धर्म १)।

अप्पसत्त वि [अप्रशान्त] अशान्त, कुपित (पचा २)।

अप्पससणिज्ज वि [अप्रशंसनीय] प्रशसा के अयोग्य (तदु)।

अप्पसज्झ वि [अप्रसह्य] १ सहने के अश-क्य। २ सहन करने के अयोग्य (वव ७)।

अप्पसण्ण वि [अप्रसन्न] उदासीन (नाट)।

अप्पसत्थ वि [अप्रशस्त] अचारु, असुन्दर, खराब (ठा ३, ३, भग, श्रा ४)।

अप्पसत्तिय वि [अल्पसत्त्विक] अल्प सत्त्व वाला, 'सुसमत्थाविसमत्था कीरंति अप्पसत्तिया पुरिसा' (सूअ १, ४, १)।

अप्पसारिय वि [अप्रसारिक] निर्जन, विजन (स्थान) (उप १७०)।

अप्पहवंत वकृ [अप्रभवत्] समर्थ नही होता हुआ, नही पहुँच सकता हुआ (स ३०५)।

अप्पहिय वि [अप्रथित] १ अविस्तृत। २ अप्रसिद्ध (सुपा १२५)।

अमर पुं [अमर] १ देव, देवता (पात्र)। २ मुक्त आत्मा (औप)। ३ भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र (राज)। ४ अनन्तवीर्य नामक भावी जिनदेव के पूर्वजन्म का नाम (ती २१)। ५ वि मरणरहित, 'पावति अविग्घेण जीवा अयरामरं ठाणं' (पडि)। °कका स्त्री [°कङ्का] एक नगरी का नाम (उप ६४८ टी)। °केउ पुं [°केतु] एक राजकुमार (दंस)। °गिरि पुं [°गिरि] मेरु पर्वत (पउम ६५, ३७)। °गेह न [°गेह] स्वर्ग (उप ७२८ टी)। °चन्दण न [°चन्दन] १ हरि-चन्दन वृक्ष। २ एक प्रकार का सुगन्धित काष्ठ (पात्र)। °तरु पु [°तरु] कल्पवृक्ष (सुपा ४४)। °दत्त पु [°दत्त] एक श्रेष्ठि-पुत्र का नाम (धम्म)। °नाह पु [°नाथ] इन्द्र (पउम १०१, ७५)। °पुर न [°पुर] स्वर्ग (पउम २ १४)। °पुरी स्त्री [°पुरी] स्वर्गपुरी, अम-रावती (उप पृ १०५)। °पभ पु [°प्रभ] वानर-द्वीप का एक राजा (पउम ६, ६६)। °वइ पु [°पति] इन्द्र (पउम १०१, ७०, सुर १, १)। °वहू स्त्री [°वधू] देवी (महा)। °सामि पु [°स्वामिन्] इन्द्र (विसे १४३६ टी)। °सेण पु [°सेन] १ एक राजा का नाम (दंस)। २ एक राज-कुमार का नाम (णाया १, ८)। °लय त्रि [°लय] स्वर्ग, 'चविउममरालयाए' (उप ७२८ टी, सुपा ३५)। °वई स्त्री [°वती] १ देव-नगरी, स्वर्ग-पुरी (पात्र)। २ मर्त्य लोक की एक नगरी, राजा श्रीसेन की राजधानी (उप ९८६ टी)।

अमरंगणा स्त्री [अमराङ्गना] देवी (श्रा २७)।

अमरिंद पु [अमरेन्द्र] देवों का राजा, इन्द्र (भवि)।

अमरिस पु [अमर्ष] १ असहिष्णुता (हे २, १०५)। २ कदाग्रह (उत्त ३४)। ३ क्रोध, गुस्सा (पण्ह १, ३, पात्र)।

अमरिसण न [अमर्षण] १—३ ऊपर देखो। ४ वि असहिष्णु, क्रोधी (पण्ह १,४)। ५ सहिष्णु, क्षमाशील (सम १५३)।

अमरिसण वि [अमसृण] उद्यमी, उद्योगी (सम १५३)।

अमरिसिय वि [अमर्षित] १ मत्सरी, असहिष्णु (आवम, स ५९५)।

अमरी स्त्री [अमरी] देवी (कुमा)।

अमरीस पु [अमरेश] इन्द्र (चेइय ३१०)।

अमल वि [अमल] १ निर्मल, स्वच्छ (उत्त, सुपा ३४)। २ पु भगवान् ऋषभदेव के एक पुत्र का नाम (राज)।

अमला स्त्री [अमला] शक्र की एक अग्र-महिषी का नाम, इन्द्राणी-विशेष (ठा ८)।

अमवस्सा देखो **अमावस्सा** (पंचा १९, २०)।

अमाइ, **अमाइल्ल** } वि [अमायिन्] निष्कपट, सरल (आचा, ठा १०, द्र ४७)।

अमाघाय देखो **अमग्घाय** (उवा)।

अमाण वि [अमान] १ गर्वरहित, नम्र (कप्प)। २ असंख्य, 'ठाणट्ठाणविलोइज्जमा-णमाणोसहिसमूहो' (उत्त ६ टी)।

अमाय वि [अमात] नही समाया हुआ, 'सुसाहुवग्गस्स मणे अमाया' (सत्त ३५)।

अमाय वि [अमाय] निष्कपट, सरल (कप्प)।

अमायि देखो **अमाइ** (भग)।

अमारि स्त्री [अमारि] हिंसा-निवारण, जीवित-दान (सुपा ११२)। °घोस पु [°घोष] अहिंसा की घोषणा (सुपा ३०९)। °पडह पु [°पटह] हिंसा-निषेध का डिण्डिम, 'अमा रिपडह च घोसावेइ' (रयण ९०)।

अमावसा, **अमावस्सा**, **अमावासा** } स्त्री [अमावास्या] तिथि विशेष, अमावस (कप्प, सुपा २२६, णाया १, १०, चंद १०)।

अमिज्ज वि [अमेय] माप करने के लिए अशक्य, असंख्य (कप्प)।

अमिज्झ न [अमेध्य] १ अशुचि वस्तु 'भरि-यममिज्झस्स दुरहिगंधस्स' (उप ७२८ टी)। २ विष्ठा (सुपा ३१३)।

अमित्त पुंन [अमित्र] रिपु, दुश्मन (ठा, ४, ४, से ५, १७)।

अमिय देखो **अमय**=अमृत (प्रासू १, गा २, विसे, आवम, पिंग)। °कुंड न [°कुण्ड] नगर-विशेष का नाम (सुपा ५७८)। °गइ स्त्री [°गति] एक छन्द का नाम (पिंग)। °णाणि पुं [°ज्ञानिन्] ऐरवत क्षेत्र के एक तीर्थंकर देव का नाम (सम १५३)। °भूय वि [°भूत] अमृत तुल्य (आउ)। °मेह पु [°मेघ] अमृतवर्षा (जं ३)। °रुइ पु [°रुचि] चन्द्र, चन्द्रमा (श्रा १६)।

अमिय वि [अमित] परिमाण-रहित, असंख्य, अनन्त (भग ५, ४, सुपा ३१, श्रा २७)। °गइ पु [°गति] दक्षिण दिशा के एक इन्द्र का नाम, दिक्कुमारो का इन्द्र (ठा २, ३)। °जस पु [°यशस्] एक चक्रवर्ती राजा का नाम (महा)। °णाणि वि [°ज्ञानिन्] १ सर्वज्ञ (विसे)। २ ऐरवत क्षेत्र के एक जिन-देव का नाम (सम १५३)। °तेय पुं [°तेजस्] एक जैन मुनि का नाम (उप ७६८ टी)। °बल पुं [°बल] इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम (पउम ५,४)। °वाहण पुं [°वाहन] दिक्कुमार देवो के एक इन्द्र का नाम (ठा २, ३)। °वेग पुं [°वेग] राक्षस वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, २६१)। °ासणिय वि [°ासनिक] एक स्थान पर नही बैठनेवाला, चचल (कप्प)।

अमिल न [दे] ऊन का बना हुआ वस्त्र (श्रा १८)। २ पुं मेष, भेड (ओघ ३६८)।

अमिल वि [दे आमिल] अमिल देश मे बना हुआ (आचा २, ५, १, ५)।

अमिला स्त्री [अमिला] १ बीसवें जिनदेव की प्रथम शिष्या (सम १५२)। २ पाडी, छोटी भैंस (बृह १)।

अमिलाण, **अमिलाय** } त्रि [अम्लान] १ म्लान-रहित, ताजा, हृष्ट (सुर ३,६५, भग ११,११)। २ पुं कुरण्टक वृक्ष। ३ न कुरण्टक वृक्ष का पुष्प (दे १,३७)।

अमु स [अदस्] वह, अमुक (पि ४३२)।

अमुअ स [अमुक] वह, कोई, अमका-ढमका (ओघ ३२ भा, सुपा ३१४)।

अमुअ देखो **अमय**=अमृत (प्रासू ५१, गा ९७६)।

अमुअ देखो **अमय**=अमय (काप्र ७७७)।

अमुअ वि [अस्मृत] स्मरण मे नही आया हुआ (भग ३, ६)।

अमुइ वि [अमोचिन्] नही छोडनेवाला (उव)।

अमुग देखो **अमुअ**=अमुक (कुमा)।

अफाय पुं [दे] भूमि-स्फोट, वनस्पति-विशेष (पएण १)।

अफास वि [अस्पर्श] १ स्पर्श-रहित (भग)। २ खराब स्पर्श वाला (सूअ १, ५, १)।

अफासुय वि [अप्रासुक] १ सचित्त, सजीव (भग ५,६)। २ अग्राह्य (भिक्षा) (ठा ३,१)।

अफुड वि [अस्फुट] अस्पष्ट, अव्यक्त (सुर ३, १०६, २१३, गा २६६, उप ७२८ टी)।

अफुडिअ वि [अस्फुटित] अखरिडत, नहीं टूटा हुआ (कुमा)।

अफुस वि [अस्पृश्य] स्पर्श करने के अयोग्य (भग)।

अफुसिय वि [अभ्रान्त] भ्रम-रहित (कुमा)।

अफुस्स देखो अफुस (ठा ३, २)।

अबभ न [अब्रह्म] मैथुन, स्त्री-सङ्ग (पएह १,४)। °चारि वि [°चारिन्] ब्रह्मचर्य नहीं पालनेवाला (पि ४०५, ५१५)।

अबद्धिय पु [अबद्धिक] 'कर्मों का आत्मा से स्पर्श ही होता है, न कि क्षीर-नीर की तरह ऐक्य' ऐसा माननेवाला एक निह्नव—जैनाभास। २ न उसका मत (ठा ७, विसे)।

अबल वि [अबल] बल रहित, निर्बल (पउम ४८, ११७)।

अबला स्त्री [अबला] स्त्री, महिला, जनाना (पाअ)।

अबस पु [अवश] वडवानल (से १, १)।

अबहिट्ठ न [दे अवहित्थ] मैथुन, स्त्री-सङ्ग (सूअ १, ६)।

अबहिम्मण वि [अबहिर्मनस्क] धर्मिष्ठ, धर्म-तत्पर (आचा)।

अबहिल्लेस } वि [अबहिर्लेश्य] जिसकी
अबहिल्लेस्स } चित्त-वृत्ति बाहर न घूमती हो, संयत (भग, पएह २, ५)।

अबाधा देखो अबाहा (जीव ३)।

अबाह पु [अबाह] देश-विशेष (इक)।

अबाहा स्त्री [अबाधा] १ बाध का अभाव (ओघ ५२ भा, भग १४, ८)। २ व्यवधान, अन्तर (सम १६)। ३ बाध-रहित समय (भग)।

अबाहिर अ [अबहिस्] बाहर नहीं, भीतर (कुमा)।

अबाहिरिय वि [अबाह्य] भीतरी, आभ्यन्तर (वव १)।

अबाहिरिय वि [अबाहिरिक] जिसके किले के बाहर वसति न हो ऐसा गाँव या शहर (बृह १)।

अबीय देखो अबीय (कप्प)।

अबुज्झ अ [अबुद्ध्वा] नहीं जान कर, 'कैसिंचि तक्काइ अबुज्झ भाव' (सूअ १, १३, २०)।

अबुद्ध वि [अबुध] १ अजान, मूर्ख। (दस २)। २ अविवेकी (सूअ १, ११)।

अबुद्धिय } वि [अबुद्धिक] बुद्धि-रहित, मूर्ख
अबुद्धीय } (णाया १, १७, सूअ १, २,१, पउम ८, ७४)।

अबुह वि [अबुध] १ अजान। (सूअ १, २, १, जी १)। २ मूर्ख, बेवकूफ (पएह १, १)।

अबोह वि [अबोध] १ बोध-रहित, अजान। २ पु ज्ञान का अभाव (धर्म १)।

अबोहि पुस्त्री [अबोधि] १ ज्ञान का अभाव (सूअ २,६)। २ जैन धर्म की अप्राप्ति। ३ बुद्धि-विशेष का अभाव (भग १, ६)। ४ मिथ्या-ज्ञान, 'अबोहिं परियाणामि बोहिं उवसंप-ज्जामि' (आव ४)। ५ वि बोधि-रहित (भग)।

अबोहिय न [अबोधिक] ऊपर देखो (दस ६, सूअ १, १, २)।

अब° स्त्री व [अप्°] पानी, जल (श्रा २३)।

अव्वभ देखो अबंभ (सुपा ३१०)।

अव्वभण्ण } न [अब्रह्मण्य] ब्रह्मण्य का
अव्वम्हण्ण } अभाव (नाट, प्रयौ ७६)।

अव्वीय देखो अबीय (चेइय ७३८)।

अव्वुद्धसिरी स्त्री [दे] इच्छा से भी अधिक फल की प्राप्ति (दे १, ४२)।

अव्वुय पु [अर्बुद] पर्वत-विशेष, जो आज-कल 'आबू' नाम से प्रसिद्ध है (राज)।

अव्वुय न [अर्बुद] जमा हुआ शुक्र और शोणित (तदु ७)।

अब्भ न [अभ्र] १ आकाश। (राय, पाअ)। २ मेघ, बादल (ठा ४, ४, पाअ)।

अब्भ सक [आ + भिद्] भेदन करना। अब्भे (आचा १, १, २, ३)।

अब्भंग सक [अभि + अञ्ज्] तेल आदि से मर्दन करना, मालिश करना। अब्भंगइ, अब्भंगेइ (महा)। सक्ट अब्भंगिउं, अब्भं-गेत्ता, अब्भंगित्ता (ठा ३, १, पि २३४)। हेक्ट अब्भंगेत्तए (कस)।

अब्भंग पुं [अभ्यङ्ग] तेल-मर्दन, मालिश (निचू ३)।

अब्भंगण न [अभ्यञ्जन] ऊपर देखो (णाया १, १, महा)।

अब्भंगिएल्लय } वि [अभ्यक्त] तैलादि से
अब्भंगिय } मर्दित, मालिश किया हुआ (ओघ ८२, कप्प)।

अब्भंतर न [अभ्यन्तर] १ भीतर, में (गा ६२३)। २ वि भीतर का, भीतरी (राय, महा)। ३ समीप का, नजदीक का (सम्बन्धी) (ठा ८)। °ठाणिज्ज वि [°स्थानीय] नजदीक के सम्बन्धी, कौटुम्बिक लोग (विपा १, ३)। °तव पुं [°तपस्] विनय, वैया-वृत्य, प्रायश्चित्त, स्वाध्याय, ध्यान और कायो-त्सर्ग रूप अन्तरंग तप (ठा ६)। °परिसा स्त्री [°परिषद्] मित्र आदि समान जनों की सभा (राय)। °लद्धि स्त्री [°लब्धि] अवधि-ज्ञान का एक भेद (विसे)। °सबुक्का स्त्री स्त्री [°शम्बूका] भिक्षा की एक चर्या, गति-विशेष (ठा ६)। °सगडुद्धिया स्त्री [°शकटोर्द्धिका] कायोत्सर्ग का एक दोष (पव ५)।

अब्भंतर वि [अभ्यन्तर] भीतरी, भीतर का (ज ७, ठा २, १, पएण ३६)।

अब्भंसि वि [अभ्रंशिन्] १ भ्रष्ट नहीं होने-वाला (नाट)। २ अनष्ट (कुमा)।

अब्भक्खइज्ज देखो अब्भक्खा

अब्भक्खण न [दे] अकीर्ति, अपयश (दे १, ३१)।

अब्भक्खा सक [अभ्या + ख्या] झूठा दोष लगाना, दोषारोप करना। अब्भक्खाइ (भग ५, ७)। कृ. अब्भक्खइज्ज (आचा)।

अब्भक्खाण न [अभ्याख्यान] झूठा अभि-योग, असत्य दोषारोप (पएह १,२)।

अब्भट्ट देखो अब्भत्थिय, 'उ(?अ)ब्भट्टपरि-न्नाय' (पिंड २८१)।

अब्भड अ [दे] पीछे जाकर (हे ४, ३६५)।

अब्भणुजाण सक [अभ्यनु + ज्ञा] अनुमति,

अय न [अयस्] लोहा, लोह (ओघ ६२)। °आगर पु [°आकर] १ लोहे की खान (निचू ५)। २ लोहे का कारखाना (ठा ८)। °कंत, °क्खंत पु [°कान्त] लोह-चुम्बक (आवम)। °कडिल्ल न [दे °कडिल्ल] कटाह (ओघ)। °कुंडी स्त्री [°कुण्डी] लोहे का भाजन-विशेष (विपा १,६)। °कोट्टय पु [°कोष्टक] लोहे का कुशूल लोहे का गोला, 'पोट्ट अयकोट्ठओ व्व वट्ट' (उवा)। °गोलय पु [°गोलक] लोहे का गोला (श्रा १९)। °दव्वी स्त्री [°दर्वी] लोहे की कडछी या करछुल, जिससे दाल, कढी आदि हिलाया जाता है (दे २, ७)। °पाय न [°पात्र] लोहे का भाजन। °सलागा स्त्री [°शलाका] लोहे की सलाई (उप २११ टी)।

अय सक [अय्] १ गमन करना, जाना। २ प्राप्त करना। ३ जानना। वकृ अयमाण (सम ६३)।

अयछ सक [कृष्] १ खींचना। २ जोतना, चास करना। ३ रेखा करना। अयछइ (हे ४, १८७)।

अयछिर वि [कर्षिन्] कर्षणशील, खींचनेवाला (कुमा)।

अयड पु [अकाण्ड] १ अनुचित समय (महा)। २ अकस्मात्, हठात् (पउम ५,१६४, मे ४४, गउड)। ३ क्रिवि अनघारित, अतर्कित (पाअ)।

अयत वकृ [आयत्] आता हुआ, प्रवेश करता हुआ (आवम)।

अयनिय वि [अयन्त्रित] अनादरणीय (उत्त २०, ४२)।

अयपिर वि [अजल्पितृ] नहीं बोलनेवाला, मौनी (पि २९६, ५९६)।

अयपुल पु [अयपुल] गोशालक का एक शिष्य (भग ८, ५)।

अयस पु [आदर्श] दर्पण, काँच। °मुह पुं [°मुख] १ इस नाम का एक द्वीप। २ द्वीप-विशेष का निवासी (इक)।

अयसधि वि [इदसधि] उपयुक्त कार्य को यथासमय करनेवाला (आचा)।

अयकरय पु [अयकरक] एक महाग्रह (सुज्ज २०)।

अयक्क } अयग } पु [दे] दानव, असुर (दे १,६)।

अयगर पु [अजगर] अजगर, मोटा साँप (पण्ह १, १, पउम ६३, ५४)।

अयड पु [दे अवट] कूप, कुँआ (दे १,१८)।

अयण न [अतन] सतत होना, निरन्तर होना (विसे ३५७८)।

अयण न [अयन] १ गमन। २ प्राप्ति, लाभ (विसे ८३)। ३ ज्ञान, निर्णय (विसे ८३)। ४ गृह, मन्दिर, 'चडियायण' (स ४३५)। ५ वि प्रापक, प्राप्त करनेवाला (विसे ९६०)। ६ पुन वर्ष का आधा भाग, जिसमे सूर्य दक्षिण मे उत्तर मे या उत्तर से दक्षिण मे जाता है (ठा २, ४),

'एक्के अअणे दिअहा, वीए रअणीओ
होति दीहाओ।
विरहाअणो अउव्वो, इत्थ दुवे च्चेअ वड्ढति'
(गा ८४६)।

अयण न [अदन] १ भक्षण। २ खुराक, भोजन (स १३०, उर ८, ७)।

अयणु वि [अज्ञ] अजान, मूर्ख (सुर ३, १९९)।

अयणु वि [अतनु] स्थूल, मोटा, महान् (सण)।

अयतंचिअ वि [दे] पुष्ट, उपचित (दे १, ४७)।

अयर वि [अजर] वृद्धावस्थारहित 'अयरामर ठाणं' (पडि, उव)।

अयर पुन [अतर] १ सागर, समुद्र (द २८)। २ समय का मान-विशेष, सागरोपम (संग २१,२५, घण ४३)। ३ वि तरने के अशक्य (बृह १)। ४ असमर्थ, अशक्त (निचू १)। ५ ग्लान, बीमार (बृह १)।

अयरामर वि [अजरामर] १ जरा और मरण से रहित (नव २)। २ न मुक्ति, मोक्ष (पउम ८, १२७)।

अयल देखो अचल = अचल (पाअ, गउड, उप पृ १०५, अत ३, पउम ८५,४, सम ८८, कप्प, सम १६)।

अयला देखो अचला (पउम १२०, १५९)।

अयस देखो अजस (गउड, प्रासू २३, १५३, गा १७८)।

अयंसि वि [अयशस्विन्] अजसी, यशोरहित, कीर्ति शून्य (गउड)।

अयसि } अयसी } स्त्री [अतसी] धान्य-विशेष, अलसी, तीसी (भग, ठा ७, णाया १, ५)।

अया स्त्री [अजा] १ बकरी। २ माया, अविद्या। ३ प्रकृति, कुदरत (हे ३, ३२, षड्)। °किवाणिज्ज पुं [°कृपाणीय] न्याय-विशेष, जैसे बकरी के गले पर अनधारी छुरी पडती है उस माफिक अनधारा किसी कार्य का होना (आचा)। °पाल पु [°पाल] आभीर, बकरी चरानेवाला (स २६०)। °वय पु [°व्रज] बकरी का वाडा (भग १६,३)।

अयागर देखो अय-आगर (ठा ८)।

अयाण न [अज्ञान] ज्ञान का अभाव (सत्त ६३)।

अयाण वि [अज्ञ, अज्ञान] अजान, अज्ञानी, मूर्ख (ओघ ७४, पउम २२, ८३, गा २७५, दे ७, ७३)।

अयाणअ वि [अज्ञायक] ऊपर देखो (पाअ, भवि)।

अयाणत देखो अजाणंत (ओघ ११)।

अयाणमाण देखो अजाणमाण (नव ३९)।

अयाणिय देखो अजाणिय (उप ७२८ टी)।

अयाणुय देखो अजाणुय (सुर ३,१९८, सुपा ५४३)।

अयार पु [अकार] 'अ' अक्षर (विसे ४७८)।

अयाल पु [अकाल] अयोग्य समय, अनुचित काल (पउम २२, ८५)।

अयालि पु [दे] दुर्दिन, मेघाच्छन्न दिवस (दे १, १३)।

अयालिय वि [अकालिक] आकस्मिक, अकाण्डोत्पन्न, 'पडउ पडउ एयस्स हत्थतले अयालिया विज्जू' (रंभा)।

अयि देखो अइ = अयि (हे २, २१७)।

अयुजरेवइ स्त्री [दे] अचिर-युवति, नवोढा, दुर्लदिन (षड्)।

अयोमय देखो अओ-मय (अंत १६)।

अय्यावत्त (शौ) पु [आर्यावर्त] भारत, हिन्दुस्तान (कुमा)।

अय्युण (मा) देखो अज्जुण (हे ४, २९२)।

अर पुं [अर] १ धुरी, पहिये के बीचका काष्ठ। २ अठारहवाँ जिनदेव और सातवाँ

अब्भुक्खिय वि [अभ्युक्षित] सिक्त (स ३४०)।

अब्भुगम पु [अभ्युद्गम] उदय, उन्नति (सूअ १,१४)।

अब्भुग्गय वि [अभ्युद्गत] १ उन्नत। २ उत्पन्न (णाया १, १)। ३ ऊँचा किया हुआ, उठाया हुआ (औप)। ४ चारो तरफ फैला हुआ (चद १८)।

अब्भुग्गय वि [अभ्रोद्गत] ऊँचा, उन्नत (भग १२, ५)।

अब्भुच्चय पु [अभ्युच्चय] समुच्चय (भास ६५)।

अब्भुज्जय वि [अभ्युद्यत] १ उद्यत, उद्यम-युक्त (णाया १, ५)। २ तैयार (णाया १, १, सुपा २२२)। ३ पुं एकाकी विहार (वम्म १२ टी)। ४ जिनकल्पिक मुनि (पचव ४)।

अब्भुट्ठ उभ [अभ्युत्+स्था] १ आदर करने के लिए खडा होना। २ प्रयत्न करना। ३ तैयारी करना। अब्भुट्ठेइ (महा)। वकृ अब्भुट्ठमाण (स ४१६)। सकृ अब्भुट्ठित्ता (भग)। हेकृ अब्भुट्ठित्तए (ठा २, १)। कृ अब्भुट्ठेयव्व (ठा ८)।

अब्भुट्ठण न [अभ्युत्थान] आदर के लिए खडा होना (से १०,११)।

अब्भुट्ठा देखो अब्भुट्ठ।

अब्भुट्ठाण देखो अब्भुट्ठण (सम ५१, सुपा ३७६)।

अब्भुट्ठिय वि [अभ्युत्थित] १ सम्मान करने के लिए जो खडा हुआ हो (णाया १, ८)। २ उद्यत, तैयार, 'अब्भुट्ठिएसु मेहेसु' (णाया १, १, पडि)।

अब्भुट्ठेत्तु [अभ्युत्थातृ] अभ्युत्थान करनेवाला (ठा ५, १)।

अब्भुण्णय वि [अभ्युन्नत] १ उन्नत, ऊँचा (पण्ह १, ४)।

अब्भुण्णयत वकृ [अभ्युन्नयत्] १ ऊचा करता हुआ। २ उत्तेजित करता हुआ, 'तीएवि जलंति दीववत्तिमब्भुण्णअंतीए' (गा २६४)।

अब्भुत्त अक [स्ना] स्नान करना। अब्भुत्तइ (हे ४, १४)। वकृ. अब्भुत्तंत (कुमा)।

अब्भुत्त अक [प्र+दीप्] १ प्रकाशित होना। २ उत्तेजित होना। अब्भुत्तइ (हे ४, १५२)। अब्भुत्तए (कुमा)। प्रयो अब्भुत्तेंति (से ५, ५९)।

अब्भुत्तिअ वि [प्रदीप्त] १ प्रकाशित। २ उत्तेजित (से १५, ३८)।

अब्भुत्थ वि [अभ्युत्थ] उत्पन्न, 'पुव्वभवब्भुत्थमिणेहाओ' (महा)।

अब्भुत्थ } देखो अब्भुट्ठा। वकृ अब्भुत्थत
अब्भुत्था } (से १२, १८)। सकृ अब्भुत्थित्ता (काल)।

अब्भुदय पु [अभ्युदय] १ उन्नति, उदय (प्रयौ २९), 'अब्भुयभूयब्भुदय लद्धूण नरभव सुदीहद्ध' (उप ७६८ टो)।

अब्भुद्धर सक [अभ्युद्+धृ] उद्धार करना। अब्भुद्धरामि (भवि)।

अब्भुद्धरण न [अभ्युद्धरण] १ उद्धार (स ७४३)। २ वि उद्धार-कारक (हे ४,३३४)।

अब्भुन्नय देखो अब्भुण्णय (णाया १, १)।

अब्भुब्भड वि [अभ्युद्भट] अत्युद्भट, विशेष उद्धत (भवि)।

अब्भुय न [अद्भुत] १ आश्चर्य, विस्मय (उप ७६८ टी)। २ वि आश्चर्य-कारक (राय, सुपा, ३५)। ३ पु साहित्य शास्त्र प्रसिद्ध रसो मे से एक,

'विम्हयकरो अपुव्वो, अभूयपुव्वो य जो
रसो होइ।
हरिसविसाउप्पत्ती, लक्खणओ अब्भुओ नाम'
(अणु)।

अब्भुवगच्छ सक [अभ्युप+गम्] १ स्वीकार करना। २ पास जाना। प्रयो, सकृ अब्भुवगच्छाविय (पि १६३)।

अब्भुवगच्छाविअ वि [अभ्युपगमित] स्वीकार कराया हुआ, 'ताहे तेहिं कुमारेहिं सवो मज पाएत्ता अब्भुवगच्छाविओ विगयमओ चिंतेइ' (आक पृ ३०)।

अब्भुवगम पु [अभ्युपगम] १ स्वीकार, अङ्गीकार (सम १४५, स १७०)। २ तर्क-शास्त्र-प्रसिद्ध सिद्धान्त-विशेष (बृह १, सूअ १, १२)।

अब्भुवगमणा स्त्री [अभ्युपगमना] स्वीकार, अङ्गीकार (उप ८०९)।

अब्भुवगय वि [अभ्युपगत] १ स्वीकृत (सुर ६, ५८)। २ समीप मे गया हुआ (आचा)।

अब्भुववण्ण वि [अभ्युपपन्न] अनुग्रह-प्राप्त, अनुगृहीत (नाट, पि १६३, २७६)।

अब्भुववत्ति स्त्री [अभ्युपपत्ति] अनुग्रह, मेहरबानी (अभि १०४)।

अब्भुवे सक [अभ्युप+इ] स्वीकार करना। अब्भुवेजामि (णाया १,१६ टी, पत्र २०५)।

अब्भो देखो अव्वो (षड्)।

अब्भोक्खिय वि [अभ्युक्षित] सिक्त, सींचा हुआ (सुर ६, १९१)।

अब्भोज्ज वि [अभोज्य] भोजन के अयोग्य (पिंड १९०)।

अब्भोय (अप) देखो आभोग (भवि)।

अब्भोवगमिय वि [आभ्युपगमिक] स्वेच्छा से स्वीकृत। °ा स्त्री [°ा] स्वेच्छा से स्वीकृत तपश्चर्यादि की वेदना (ठा ४, ३)।

अब्भिड देखो अब्भिड। अब्भिडइ (षड्)।

अब्हुत्त देखो अब्भुत्त अब्हुत्तइ (षड्)।

अभग्ग वि [अभग्न] १ अखण्डित, अत्रुटित (पडि)। २ इस नाम का एक चोर (विपा १, १)।

अभत्त वि [अभक्त] १ भक्ति नहीं करनेवाला (कुमा)। २ न भोजन का अभाव (वव ७)। °ट्ठ पु [°ार्थ] उपवास (आचू, पडि, सुपा ३१७)। °ट्ठिय वि [°ार्थिक] उपोषित, जिसने उपवास किया हो वह (पंचव २)।

अभय न [अभय] १ भय का अभाव, धैर्य (राय)। २ जीवित, मरण का अभाव (सूअ १,६)। ३ वि भय-रहित, निर्भीक (आचा)। ४ पु राजा श्रेणिक का एक विख्यात पुत्र और मन्त्री, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (अनु १, णाया १, १)। °कुमार पुं [°कुमार] देखो अनन्तरोक्त अर्थ (पडि)। °दय वि [°दय] भय-विनाशक, जीवित-दाता (पडि)। °दाण न [°दान] जीवित-दान (पण्ह २, ४)। °देव पु [°देव] कईएक विख्यात जैनाचार्य और ग्रन्थकारो का नाम (मुणि १०८७४, गु १४, ती ४०, सार्ध ७३)। °प्पदाण न [°प्रदान] जीवित का दान (सूअ १,६)। °वत्त न [°वत्त्व] निर्भयता,

-', —काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य (सूत्र १,१,४)। °दमण वि [°दमन] १ रिपु विनाशक। २ पु. इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ७)। ३ एक जैन मुनि जो भगवान् अजितनाथ के पूर्वजन्म के गुरू थे (पउम २०,७)। °दमणी स्त्री [°दमनी] विद्या विशेष (पउम ७, १४५)। °विद्धंसी स्त्री [°विध्वंसिनी] रिपु का नाश करनेवाली एक विद्या (पउम ७, १४०)। °संतास पु [°संत्रास] राक्षसवंश में उत्पन्न लङ्का का एक राजा (पउम ५, २६५)। °हंत वि [°हन्तृ] १ रिपु-विनाशक। २ पु जिनदेव (श्रावम)।

अरिअल्लि पुंस्त्री [दे] व्याघ्र, शेर (दे १,२४)।

अरिंजय पु [अरिञ्जय] १ भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र। २ न. नगर-विशेष (पउम ५, १०६; इक; सुर ५, १०३)।

अरिट्ठ पु [अरिष्ट] १ वृक्ष-विशेष (पण्ण १)। २ पनरहवें तीर्थंकर का एक गणधर (सम १५२)। ३ पुन एक देवविमान (देवेन्द्र १३३)। ४ न गोत्र-विशेष, जो माण्डव्य गोत्र की शाखा है (ठा ७)। ५ रत्न की एक जाति (उत्त ३४, ४; सुपा ६)। ६ फल-विशेष, रीठा (पण्ण १७; उत्त ३४, ४)। ७ अनिष्ट-सूचक उत्पात (श्राचू)। °णेमि, °नेमि पुं [°नेमि] वर्तमान काल के बाईसवें जिनदेव (सम १७; अंत ५, कप्प, पडि)।

अरिट्ठा स्त्री [अरिष्टा] कच्छ नामक विजय की राजधानी (ठा २, ३)।

अरित्त न [अरित्र] पतवार, कन्हर, नाव की पीछे का डाड, जिससे नाव दाहिने-बाये घुमायी जाती है (धर्मवि १३२)।

अरिरिहो अ [अरिरिहो] पादपूरक अव्यय (हे २, २१७)।

अरिस देखो अरस (णाया १, १३)।

अरिसल्ल } वि [अर्शस्वत्] बवासीर
अरिसिल्ल } रोगवाला (पाअ, विपा १,७)।

अरिह वि [अर्ह] १ योग्य, लायक (सुपा २६६, प्राप्र)। २ पुं जिनदेव (औप)।

अरिह सक [अर्ह्] १ योग्य होना। २ पूजा के योग्य होना। ३ पूजा करना। अरिहइ (महा)। अरिहेति (भग)।

अरिह देखो अरह = अर्हत् (हे २, १११; षड्)। °दत्त, °दिण्ण पुं [°दत्त] जैन मुनि-विशेष का नाम (कप्प)।

अरिहणा देखो अरहणा (प्राकृ २८)।

अरिहंत देखो अरहंत = अर्हत् (हे २, १११; षड्, णाया १ १)। °चेइय न [°चैत्य] १ जिन-मन्दिर (उवा, आचू)। °सासण न [°शासन] १ जैन आगम-ग्रन्थ। २ जिन-आज्ञा। (पण्ह २, ५)।

°अरु देखो तरु (से २, १६, ५, ८५)।

अरु वि [अरुज्] रोग-रहित (तदु ४६)।

अरु देखो अरुव (तदु ४६)।

अरुग न [दे अरुक] व्रण, घाव, 'अरुगं इहरा कुत्थइ' (बृह ३)।

अरुंतुद वि [अरुन्तुद] १ मर्म-वेधक। २ मर्म-स्पर्शी, 'इय तदरुंतुदवायावाणेहिं विधियस्सावि' (सम्मत्त १५८)।

अरुण पु [अरुण] १ सूर्य सूरज (से ३, ६)। २ सूर्य का सारथी। ३ सन्ध्याराग, सन्ध्या की लाली (से ८, ७)। ४ द्वीप-विशेष। ५ समुद्र-विशेष, 'गंतूण होइ अरुणो, अरुणो दीवो तओ उदही' (दीव)। ६ एक ग्रह-देवता का नाम (ठा २, ३, पत्र ७८)। ७ गन्धावती-पर्वत का अधिष्ठाता देव (ठा २, ३, पत्र ६६)। ८ देव-विशेष (णंदि)। ९ रक्त रंग, लाली। (गउड)। १० न. विमान-विशेष (सम १४)। ११ वि. रक्त, लाल (गउड)। °कंत न [°कान्त] देवविमान-विशेष (उवा)। [°कील] न [°कील] देवविमान-विशेष (उवा)। °गंगा स्त्री [°गङ्गा] महाराष्ट्र-देश की एक नदी (ती २८)। °गव न [°गव] देवविमान-विशेष (उवा)। °ज्झय न [°ध्वज] एक देवविमान का नाम (उवा)। °प्पभ, °प्पह न [°प्रभ] इस नाम का एक देवविमान (उवा)। °भद्द पु [°भद्र] एक देवता का नाम (सुज्ज १९)। °भूय न [°भूत] एक देवविमान (उवा)। °महाभद्द पुं [°महाभद्र] देव-विशेष (सुज्ज १९)। °महावर पुं [°महावर] १ द्वीप-विशेष। २ समुद्र-विशेष (इक)। °वडिंसय न [°वतंसक] एक देवविमान (उवा)। °वर पुं [°वर] १ द्वीप-विशेष। २ समुद्र-विशेष (सुज्ज १९)। °वरोभास पुं [°वरावभास] १ द्वीप-विशेष। २ समुद्र-विशेष (सुज्ज १९)। °सिट्ठ न [°शिष्ट] एक देवविमान (उवा)। °ाभ न [°ाभ] देवविमान-विशेष (उवा)।

अरुण न [दे] कमल, पद्म (दे १, ८)।

अरुण पुंन [अरुण] १ एक देव-विमान। (देवेन्द्र १३१)। °प्पभ पुं [°प्रभ] १ अनुवेलन्धर नामक नागराज का एक आवास-पर्वत। २ उस पर्वत का निवासी देव। (ठा ४, २, पत्र २२६)। °ाभ पुं [°ाभ] कृष्ण पुद्गल-विशेष (सुज्ज २०)।

अरुणिम पुंस्त्री [अरुणिमन्] लाली, रक्तता; 'पाणिपल्लवारुणिमरमणीय' (सुपा ५८)।

अरुणिय वि [अरुणित] रक्त, लाल (गउड)।

अरुणुत्तरवडिंसग न [अरुणोत्तरावतंसक] इस नाम का एक देवविमान (सम १४)।

अरुणोद पुं [अरुणोद] समुद्र-विशेष (सुज्ज १९)।

अरुणोदय पु [अरुणोदक] समुद्र-विशेष (भग)।

अरुणोववाय पु [अरुणोपपात] ग्रन्थ-विशेष का नाम (णंदि)।

अरुय वि [अरुष्] व्रण, घाव (सूअ १, ३, ३)।

अरुय वि [अरुज्] निरोगी, रोगरहित (सम १, अजि २१)।

अरुह देखो अरह = अर्हत् (हे २,१११, षड; भवि)।

अरुह वि [अरुह] १ जन्मरहित। २ पुं. मुक्त आत्मा (पव २७५, भग १, १)। ३ जिनदेव (पउम ५, १२२)।

अरुह देखो अरिह = अर्ह्। अरुहसि (अभि १०४)। वकृ अरुहमाण (षड्)।

अरुह वि [अर्ह] योग्य (उत्तर ८४)।

अरुहंत देखो अरहंत = अर्हत् (हे २, १११; षड्)।

अरुहंत वि [अरोहत्] १ नहीं उगता हुआ, जन्म नहीं लेता हुआ (भग १, १)।

अरुव वि [अरूप] रूपरहित, अमूर्त, (पउम ७५, २६)।

४ ज्ञान, निश्चय (पव १४६)। ५ सम्य-क्त्व का एक भेद (ठा २, १)। ६ प्रवेश (से ८, ३३)।

अभिगमण न [अभिगमन] ऊपर देखो (स्वप्न १६, णाया १, १२)।

अभिगमि वि [अभिगामिन्] १ आदर करने वाला। २ उपदेशक। ३ निश्चय-कारक। ४ प्रवेश करने वाला ५ स्वीकार करने वाला, प्राप्त करने वाला (पराग २४)।

अभिगय वि [अभिगत] १ प्राप्त। २ सत्कृत। ३ उपदिष्ट। ४ प्रविष्ट (वृह १)। ५ ज्ञात, निश्चित (णाया १, १)।

अभिगहिय न [अभिग्रहिक] मिथ्यात्व-विशेष (कम्म ४, ५१)।

अभिगिज्झ अक [अभि+गृध्] अति लोभ करना, आसक्त होना। वकृ अभि-गिज्झंति (सूत्र २, २)।

अभिगिण्ह, अभिगिन्ह सक [अभि+ग्रह्] ग्रहण करना, स्वीकारना। अभि-गिरहइ (कप्प)। सकृ अभिगिन्हित्ता, अभिगिज्झ (पि ५८२, ठा २, १)।

अभिग्गह पु [अभिग्रह] १ प्रतिज्ञा, नियम। (ओघ ३)। २ जैन साधुओं का आचार-विशेष (वृह १)। ३ प्रत्याख्यान, (नियम-विशेष) का एक भेद (श्राव ६)। ४ कदा-ग्रह, हठ (ठा २, १)। ५ एक प्रकार का शारीरिक विनय (वव १)।

अभिग्गहणी स्त्री [अभिग्रहणी] भाषा का एक भेद, असत्य-मृषा वचन (सबोध २१)।

अभिग्गहिय वि [अभिग्रहिक] अभिग्रह वाला (ठा २, १, पव ६)।

अभिग्गहिय वि [अभिगृहीत] १ जिसके विषय मे अभिग्रह किया गया हो वह (कप्प, पव ६)। २ न अवधारण, निश्चय (पराग ११)।

अभिघट्ट सक [अभि+घट्ट] वेग से जाना। कवकृ अभिघट्टिज्जमाण (राय)।

अभिघाय पु [अभिघात] प्रहार, मार-पीट, हिंसा (पराह १, १, वृह ४)।

अभिचंद पु [अभिचन्द्र] १ यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र, जिसने जैन दीक्षा ली थी (अंत ३)। २ इस नाम का एक कुलकर पुरुष (पउम ३, ५५)। ३ मुहूर्त-विशेष। (सम ५१)।

अभिजण देखो अभिअण (स्वप्न २६)।

अभिजस न [अभियशस्] इस नाम का एक जैन साधुओं का कुल (एक आचार्य की संतति) (कप्प)।

अभिजाइ स्त्री [अभिजाति] कुलीनता, खानदानी (उत्त ११)।

अभिजाण सक [अभि+ज्ञा] जानना। वकृ अभिजाणमाण (आचा)।

अभिजात पु [अभिजात] पक्ष का ग्यारहवाँ दिन (सुज्ज १०,१४)।

अभिजाय वि [अभिजात] १ उत्पन्न, 'अभि-जायसड्ढो' (उत्त १४)। २ कुलीन (राज)।

अभिजुंज सक [अभि+युज्] १ मन्त्र-तन्त्रादि से वश करना। २ कोई कार्य मे लगाना। ३ आलिंगन करना। ४ स्मरण कराना, याद दिलाना। संकृ अभिजुंजिय, अभिजुंजियाण, अभिजुंजित्ता (भग २, ५, सूत्र १, ५ २ आचा, भग ३, ५)।

अभिजुत्त वि [अभियुक्त] १ व्रत-नियम मे जिसने दूषण न लगाया हो वह (णाया १, १४)। २ जानकार, पण्डित (णदि)। ३ दुश्मन से घिरा हुआ (वेणी १२०)।

अभिज्झा स्त्री [अभिध्या] लोभ, लोलुपता, आसक्ति (सम ७१, पराह १, ५)।

अभिज्झिय वि [अभिध्यित] अभिलषित, वाञ्छित (पराग २८)।

अभिट्ठिअ वि [अभीष्ट] अभिलषित (वज्जा १६४)।

अभिट्ठुय वि [अभिष्टुत] वर्णित, श्लाघित, प्रशंसित (श्राव २)।

अभिड्डुय देखो अभिद्दुय (सूत्र १, २, ३)।

अभिणअत, अभिणइज्जत देखो अभिणी

अभिणंद सक [अभि+नन्द्] १ प्रशंसा करना, स्तुति करना। २ आशीर्वाद देना। ३ प्रीति करना। ४ खुशी मनाना। ५ चाहना, इच्छा करना। ६ बहुमान करना, आदर करना। अभिणंदइ (स १६३)। वकृ **अभिणंदंत** (श्राप, णाया १, १, पउम ५, १३०)। कवकृ **अभिणंदिज्जमाण** (ठा ६, णाया १, १)।

अभिणंदिय वि [अभिनन्दित] जिसका अभिनन्दन किया गया हो वह (सुपा ३१०)।

अभिणंदण न [अभिनन्दन] १ अभिनन्दन। २ पु वर्तमान अवसर्पिणीकाल के चतुर्थ जिनदेव (सम ४३)। ३ लोकोत्तर श्रावणमास। (सुज्ज १०)।

अभिणय पु [अभिनय] शारीरिक चेष्टा के द्वारा हृदय का भाव प्रकाशित करना, नाट्य-क्रिया (ठा ४, ४)।

अभिणव वि [अभिनव] नूतन, नया (जीव ३)।

अभिणिक्खंत वि [अभिनिष्क्रान्त] दीक्षित, प्रव्रजित (स २७८)।

अभिणिगिण्ह सक [अभिनि+ग्रह्] रोकना, अटकाना। सकृ अभिणिगिज्झ (पि ३३१, ५९१)।

अभिणिचारिया स्त्री [अभिनिचारिका] भिक्षा के लिए गति-विशेष (वव ४)।

अभिणिपया स्त्री [अभिनिप्रजा] अलग-अलग रही हुई प्रजा (वव ६)।

अभिणिबुज्झ सक [अभिनि+बुध्] जानना, इन्द्रिय आदि द्वारा निश्चित रूप से ज्ञान करना। अभिणिबुज्झए (विसे ८१)।

अभिणिबोह पु [अभिनिबोध] ज्ञान-विशेष, मति-ज्ञान (सम्म ८६)।

अभिणियट्टण न [अभिनिवर्तन] पीछे लौटना, वापस जाना (आचा)।

अभिणिविट्ठ वि [अभिनिविष्ट] १ तीव्र रूप से निविष्ट। २ आग्रही (उत्त १४)।

अभिणिवेस पु [अभिनिवेश] आग्रह, हठ (णाया १, १२)।

अभिणिवेसि वि [अभिनिवेशिन्] कदा-ग्रही (अज्झ १५७)।

अभिणिवेह पु [अभिनिवेध] उलटा मापना (श्राचम)।

अभिणिव्वागड वि [दे अभिनिर्व्याकृत] भिन्न परिधि वाला, पृथग्भूत (घर वगैरह) (वव १, ६)।

अलय पु [अलक] १ विच्छू का काटा। (विपा १, ६)। २ केश, घुँघराले वाल। (पाअ, स ६६)।

अलया स्त्री [अलका] कुवेर की नगरी (पाअ, णाया १, ४)। देखो अलका।

अलव वि [अलप] मौनी, नही वोलनेवाला (सूअ २,६)।

अलवलवसह पु [दे] धूर्त वैल (पड्)।

अलस वि [अलस] १ आलसी, सुस्त (प्रासू ७)। २ मन्द, धीमा (पाअ)। ३ पु क्षुद्र कीट-विशेष, भू-नाग, वर्षाऋतु मे साँप सरीखा लाल रंग का जो लम्बा जन्तु उत्पन्न होता है वह (जी १५, पुप्फ २६५)।

अलस वि [दे] १ मधुर आवाजवाला, 'ख अलस कलमंजुल' (पाअ)। २ कुसुम्भ रग से रगा हुआ। ३ न मोम (दे १, ५२)।

°अलस देखो कलस (से १, ६, ११, ४०, गा ३६६)।

अलसग } पु [अलसक] १ विसूचिका रोग
अलसय } (उवा)। २ श्वयथु, सूजन (आचा)।

अलसाइअ वि [अलसायित] जिसने आलसी की तरह आचरण किया हो, मन्द (गा ३५२)।

अलसाय अक [अलसाय्] आलसी होना, आलसी की तरह काम करना। अलसाअइ (पि ५५८)। वकृ अलसायत, अलसायमाण (से १४, १, उप पृ ३१५, गच्छ १)।

अलसी देखो अयसी (आचा, पड्, हे २, ११)।

अला स्त्री [अला] १ इस नाम की एक देवी (ठा ६)। २ एक इन्द्राणी का नाम (णाया २)। °वडिंसग न [°वतंसक] अलादेवी का भवन (णाया २)।

°अला देखो कला (गा ६५७)।

अलाउ न [अलावु] तुम्वी फल, लौकी, तुम्वा (औप प्रासू १५१)।

अलाऊ } स्त्री [अलावू] तुम्वी-लता
अलावू } (कुमा, पड्)।

अलाय न [अलात] १ उल्मुक, जलता हुआ काष्ठ (दे १,१०७, ओघ २१ भा)। २ अङ्गार, कोयला (से ३, ३४)।

अलावणी स्त्री [अलावुवीणा] वीणा-विशेष (प्राकृ ३७)।

अलावु देखो अलाउ (जं ३)।

अलावू देखो अलाऊ (पि १४१, २०१)।

अलाह पु [अलाभ] नुकमान, गैरलाभ, 'वव-हरमाणाए पुणो होइ सुलाहो कयावलाहो वा" (सुपा ४४६)।

अलाहि देखो अल (उत्त ७२८ टी, हे २,१८९, णाया १, १, गा १२७)।

अलि पु [अलि] भ्रमर (कुमा)। °उल न [°कुल] भ्रमरो का समूह (हे ४, २५३)। °विरुय न [°विरुत] भ्रमर का गुञ्जारव (पाअ)।

अलि पुस्त्री [अलि] वृश्चिक राशि (विचार १०६)।

अलिअल्ली स्त्री [दे] १ कस्तूरी। २ व्याघ्र, शेर (दे १, ५६)।

अलिआ स्त्री [दे] सखी (दे १, १६)।

अलिआर न [दे] दूध (दे १, २३)।

अलिंजर न [अलिञ्जर] १ घडा, कुम्भ (ठा ४, २)। २ कुड, पात्र-विशेष (दे १, ३७)।

अलिंजरअ पु [अलिञ्जरक] १ घडा (उवा)। रगने का कुडा, रग-पात्र (पाअ)।

अलिंद न [अलिन्द] पात्र-विशेष, एक प्रकार का जलपात्र (श्रोप ४७६)।

अलिंदग पुं [अलिन्दक] १ द्वार का प्रकोष्ठ (स ४७६)। २ घर के वाहर के दरवाजे का चौक। ३ वाहर का अग्र भाग (वृह २, राज)।

अलिंदय पुन [आलिन्दक] धान्य रखने का पात्र-विशेष (अणु १५१)।

अलिण पु [दे] वृश्चिक, विच्छू (दे १, ११)।

अलिणी स्त्री [अलिनी] भ्रमरी (कुमा)।

अलित्त न [अरित्र] नौका खेवने का डंड, चप्पू (आचा २, ३ १)।

अलिय न [अलिक] कपाल (पाअ)।

अलिय न [अलीक] १ मृषावाद, असत्य वचन (पाअ)। २ वि झूठा, खोटा, 'अलिअ-पोरुसालाव'—(पाअ)। ३ निष्फल, निरर्थक (पण्ह १, २)। °वाइ वि [°वादिन्] मृषा-वादी (पउम ११, २७, महा)।

अलिल्ल सक [कथय्] कहना, वोलना। अलिल्लइ (पिंग)।

अलिल्लह न [दे] १ छन्द विशेष का नाम। २ वि अप्रयोजक, नियमरहित (पिंग)।

अलिल्ला स्त्री [अलिल्ला] इस नाम का एक छन्द (पिंग)।

अलीग } देखो अलिय = अलीक (सुर ४,
अलीय } २२३, सुपा ३००, महा)।

अलीवहू स्त्री [अलिवधू] भ्रमरी (कुमा)।

अलीसअ स्त्री पु [दे] शाक-वृक्ष, साग का पेड (दे १, २७)।

अलुक्खि वि [अरूक्षिन्] कोमल (भग ११, ४)।

अलेसि वि [अलेश्यिन्] १ लेश्यारहित। २ पुं मुक्त आत्मा (ठा ३, ४)।

अलोग पु [अलोक] जीव-पुद्गल आदि रहित आकाश (भग)।

अलोणिय वि [अलवणिक] लूणरहित, नमक-शून्य, 'नय अलोणियं सिल कोइ चट्टेइ' (महा)।

अलोय देखो अलोग (मम १)।

अलोभ पु [अलोभ] १ लोभ का अभाव, सतोष। २ वि लोभरहित, सतोषी (भग, उव)।

अलोल वि [अलोल] अलम्पट, निर्लोभ (दस १०, पि ८५)।

अलोह देखो अलोभ (कप्प)।

अल्ल न [दे] दिन, दिवस (दे १, ५)।

अल्ल देखो अद्द (हे १, ८२)।

अल्ल अक [नम्] नमना, नीचे झुकना। ओअल्लति (से ६, ४३)।

अल्लई स्त्री [आर्द्रकी] लता-विशेष, आर्द्रक-लता (पण्ण १७)।

अल्लग देखो अल्लय = आर्द्रक (धर्म २)।

अल्लत्थ सक [उत् + क्षिप्] ऊंचा फेंकना। अल्लत्थइ (हे ४, १४४)।

अल्लत्थ न [दे] १ जलार्द्र, गीला पखा। २ केयूर, भूषण-विशेष (दे १, ५४)।

अल्लत्थिअ वि [उत्क्षिप्त] ऊंचा फेंका हुआ (कुमा)।

अल्लय न [आर्द्रक] आदी, अदरक (जी ६)। °तिय न [°त्रिक] आदी, हल्दी और कचूर (जी ६)।

अल्लय वि [दे] परिचित, ज्ञात (दे १,१२)।

अल्लय पुं [अल्लक] इस नाम का एक विख्यात जैन मुनि और ग्रन्थकार, उद्द्योतन-

अभिनिव्वट्ट देखो अभिणिव्वट्ट (कप्प, आचा)।

अभिनिव्वट्ट अक [अभिनि + वृत्] पृथक् होना। वकृ अभिनिव्वट्टमाण (सूअ २, ३, २१)।

अभिनिव्वट्ट सक [अभिनिर् + वृत्] खींचना। संकृ 'कोसाओ असिं अभिनिव्वट्टित्ता (सूअ २, १, १६)।

अभिनिव्वागड वि [अभिनिर्व्याकृत] विभिन्न द्वार वाला (मकान)। (वव १ टी)।

अभिनिव्विट्ठ वि [अभिनिर्विष्ट] सजात, उत्पन्न (कप्प)।

अभिनिव्वुड देखो अभिणिव्वुड (पि २१६)।

अभिनिसढ वि [अभिनिसट] जिसका स्कन्ध प्रदेश बाहर निकल आया हो वह (भग १५, पत्र ६६६)।

अभिनिस्सव देखो अभिणिस्सव अभिनिस्सवति (राय ७५)।

अभिनिस्सव अक [अभिनि + स्रु] टपकना, झरना। अभिनिस्सवइ (भग)।

अभिन्न देखो अभिण्ण (प्राप्र)।

अभिन्नाण देखो अभिण्णाण (ओघ ४३६, सुर ७, १०१)।

अभिन्नाय देखो अभिण्णाय (कप्प)।

अभिपज्झाणिय वि [अभिपर्याणित] अध्यारोपित, ऊपर रखा हुआ (कुमा)।

अभिपवुट्ठ वि [अभिप्रवृष्ट] वरसा हुआ (आचा २, ३, १, १)।

अभिपाइय वि [आभिप्रायिक] अभिप्राय सम्बन्धी, मन कल्पित (अणु)।

अभिप्पाय पु [अभिप्राय] आशय, मन-परिणाम (आचा, स ३४, सुपा २६२)।

अभिप्पेय वि [अभिप्रेत] इष्ट, अभिमत (स २३)।

अभिभव सक [अभि + भू] पराभव करना, परास्त करना। अभिभवइ (महा)। संकृ अभिभविय, अभिभूय (भग ६, ३३, पण्ह १, २)।

अभिभव पु [अभिभव] पराभव, पराजय, तिरस्कार (आचा, दे १, ५७)।

अभिभवण न [अभिभवन] ऊपर देखो (सुपा ४७६)।

अभिभास सक [अभि + भाष्] संभाषण करना। अभिभासे (पि १६६)।

अभिभूइ स्त्री [अभिभूति] पराभव, अभिभव (द्र ३०)।

अभिभूय वि [अभिभूत] पराभूत, पराजित (आचा, सुर ४, ७९)।

अभिमंजु देखो अभिमण्णु (हे ४, ३०५)।

अभिमत सक [अभि + मन्त्रय्] मंत्रित करना, मन्त्र से सस्कारना। संकृ अभिमतिऊण, अभिमतिय (निचू १, आवम)।

अभिमतिय वि [अभिमन्त्रित] मन्त्र से सस्कारित (सुर १६, ६२)।

अभिमन्न सक [अभि + मन्] १ अभिमान करना। २ सम्मत करना। अभिमन्नइ (विसे २१९०, २६०३)।

अभिमय वि [अभिमत] इष्ट, अभिप्रेत (सूअ २, ४)।

अभिमाण पु [अभिमान] अभिमान, गर्व (निचू १)।

अभिमार पु [अभिमार] वृक्ष विशेष (राज)।

अभिमुह वि [अभिमुख] १ संमुख, सामने स्थित। २ क्रिवि सामने (भग)।

अभिमुहिय वि [अभिमुखित] समुख किया हुआ (सूअनि १४६)।

अभियागम पुं [अभ्यागम] समुख आगमन (सूअ १, १, ३, २)।

अभियावन्न वि [अभ्यापन्न] संमुख प्राप्त (सूअ १, ४, २, २८)।

अभिरइ स्त्री [अभिरति] १ रति, संभोग। २ प्रीति, अनुराग, (विसे ३२२३)।

अभिरम अक [अभि + रम्] १ क्रीडा करना, संभोग करना। २ प्रीति करना। ३ तल्लीन होना, आसक्ति करना। अभिरमइ (महा)। वकृ. अभिरमंत, अभिरममाण (सुपा १२०, णाया १, २, ४)।

अभिरमिय वि [अभिरमित] अनुरक्त किया हुआ, 'अभिरमियकुमुयवणसडं ससिमंडलं पलोयइ' (सुपा ३४)।

अभिरमिय वि [अभिरमित] सभुक्त, 'जेणाभिरमिय परकलत्त' (धर्मवि १२८)।

अभिरमिय } वि [अभिरत] १ अनुरक्त (सुपा
अभिरय } ३४)। २ तल्लीन, तत्पर; 'साहू तवनियमसजमाभिरया' (पउम ३७, ६३, स १२२)।

अभिराम वि [अभिराम] सुन्दर. मनोहर (णाया १, १३, स्वप्न ४५)।

अभिराम सक [अभि + रामय्] तत्परता से कार्य मे लगाना। अभिरामयति (दस ६, ४, १)।

अभिरुइय वि [अभिरुचित] पसद, मन का अभिमत (णाया १, १, उत्ता, सुपा ३४४, महा)।

अभिरुय सक [अभि + रुच्] पसंद पडना, रुचना। अभिरुयइ (महा)।

अभिरूयसि वि [अभिरूपिन्] सुन्दर रूप वाला, मनोहर (आचा २, ४, २, १)।

अभिरुह सक [अभि + रुह्] १ रोकना। २ ऊपर चढना, आरोहना। सकृ.
'चत्तारि साहिए मासे बहवे
पाणजाइया आगम्म।
अभिरुज्झ काय विहरिसु,
आरुहिया ण तत्थ हिंसिसु'
(आचा)।

अभिरोहिय वि [अभिरोधित] चारो ओर से निरुद्ध, रोका हुआ (णाया १, ६)।

अभिरोहिय वि [अभिरोहित] ऊपर देखो, 'परचक्करायाभिरोहिया', ('परचक्रराजेनापरमन्यनृपतिनाभिरोहिता सर्वत कृतनिरोधा या सा तथा' टी) (णाया १, ६)'

अभिलघ सक [अभि + लङ्घ्] उल्लघन करना। वकृ अभिलंघमाण (णाया १, १)।

अभिलप्प वि [अभिलाप्य] कथन-योग्य निर्वचनीय (आचू १)।

अभिलस सक [अभि + लष्] चाहना, वाञ्छना। अहिलसइ (उव)।

अभिलाअ } पुं [अभिलाप] १ शब्द,
अभिलाव } ध्वनि (ठा ३, १, भास २७)। २ सभाषण (णाया १,८, विसे)।

अभिलास पुं [अभिलाष] इच्छा, चाह (णाया १,६, प्रयौ ६१)।

अभिलासि } वि [अभिलाषिन्] चाहने
अभिलासिण } वाला, इच्छुक (वमु, स ६५४, पउम ३१, १२८)।

अवंग पुं [दे] कटाक्ष (दे १, १५)।

अवंगु } वि [दे अपावृत] नहीं ढका
अवगुय } हुआ, खुला (औप, पराह २, ४)।

अवगुण सक [दे] खोलना। अवगुणेज्जा (आचा २, २, २, ४)।

अवच्चिअ वि [अवाञ्चित] अधोमुख, अवाङ्-मुख (वज्जा १०)।

अवंचिअ वि [अवञ्चित] नहीं ठगा हुआ (वज्जा १०)।

अवंझ वि [अवन्ध्य] सफल, अचूक (सुपा ३२५)। °पवाय न [°प्रवाद] ग्यारहवां पूर्व, जैन ग्रन्थांश-विशेष (सम २६)।

अवतर वि [अवान्तर] भीतरी, बीच का (आवम)।

अवति पुं [अवन्ति] भगवान् आदिनाथ का एक पुत्र (ती १४)।

अवंति } स्त्री [अवन्ति, °न्ती] १ मालव देश।
अवती } २ मालव देश की राजधानी, जो आजकल राजपूताना में 'उज्जैन' नाम से प्रसिद्ध है (महा, सुपा ३९६, आवम)। °गगा स्त्री [°गङ्गा] आजीविक मत में प्रसिद्ध काल-विशेष (भग २४, १)। °वद्धण पु [°वर्धन] इस नाम का एक राजा (आव ४)। °सुकु-माल पु [°सुकुमाल] एक श्रेष्ठि-पुत्र, जो आर्यसुहस्ति आचार्य के पास दीक्षा लेकर देव-लोक के नलिनीगुल्म विमान में उत्पन्न हुआ है (पडि)। °सेण पु [°षेण] एक राजा (आक)।

अवंदिम वि [अवन्द्य] वन्दन करने के अयोग्य, प्रणाम के अयोग्य (दमचू १)।

अवकख सक [अव + काङ्क्ष्] १ चाहना। २ देखना। अवकखइ (भग)। वकृ. अव-कखमाण (णाया १, ६)।

अवकंत देखो अवक्कंत, 'कुमरोवि सत्थरामो उट्ठेत्ता सणियमवकंतो' (महा)।

अवकप्प सक [अव + कल्पय्] कल्पना करना, मान लेना। अवकप्पंति (सूअ १, ३, ३, ३)।

अवकय वि [अपकृत] १ जिसका अपकार किया गया हो वह (उव)। २ अपकार, अहित (सुपा ६४१)।

अवकर सक [अप + कृ] अहित करना। अवकरेंति (सूअ १, ४, १, २२)।

अवकरिस पुं [अपकर्ष] अपकर्ष, ह्रास, हानि (सम ६०)।

अवकलुसिय वि [अपकलुषित] मलिन (गउड)।

अवकस सक [अव + कृष्] त्याग करना। संकृ अवकसित्ता (चउ १४)।

अवकारि वि [अपकारिन्] अहित करने वाला (पउम ६, ८५)।

अवकिण्ण वि [अवकीर्ण] परित्यक्त (दे १, १३०)।

अवकिण्णग } पुं [अपकीर्णक] करकण्डु
अवकिण्णय } नामक एक जैन महर्षि का पूर्व नाम (महा)।

अवकित्ति स्त्री [अपकीर्त्ति] अपयश (दे १, ६०)।

अवकिट्टि स्त्री [अपकृत्ति] अपकार, अहित (प्राकृ १२)।

अवकीरण न [अवकरण] छोड़ना, त्याग, उत्सर्ग (आव ५)।

अवकीरिअ वि [दे अवकीर्ण] विरहित, वियुक्त (दे १, ३८)।

अवकीरियव्व वि [अवकरितव्य] त्याज्य, छोड़ने लायक (पराह १, ५)।

अवकूजिय न [अवकूजित] हाथ को ऊँचा-नीचा करना (निचू १७)।

अवकेसि पु [अवकेशिन्] फल-वन्ध्य वन-स्पति (उर २, ८)।

अवकोडक देखो अवओडग (पराह १, १)।

अवक्कंत वि [अपक्रान्त] १ पीछे हटा हुआ, वापस लौटा हुआ (सुपा २९२, उप १३४ टी, महा)। २ निकृष्ट, जघन्य (ठा ६)।

अवक्कंत पु [अवक्रान्त] प्रथम नरक भूमि का ग्यारहवाँ नरकेन्द्रक—नरक-स्थान विशेष (देवेन्द्र ५)।

अवक्कंति स्त्री [अपक्रान्ति] १ अपसरण। २ निर्गमन (णाया १, ८)।

अवक्कंति स्त्री [अवक्रान्ति] गमन गति (आचा)।

अवक्कम अक [अप + क्रम] १ पीछे हटना। २ बाहर निकलना। अवक्कमइ (महा, कप्प)। वकृ. अवक्कममाण (विपा १,६)। संकृ अवक्कमइत्ता, अवक्कम्म (कप्प, वव १)।

अवक्कम सक [अव + क्रम्] जाना। अवक्क-मइ (भग)। संकृ. अवक्कमित्ता (भग)।

अवक्कमण न [अपक्रमण] १ बाहर निकलना (ठा ५,२)। २ पलायन, भागना, 'निग्गमण-मवक्कमणं निस्सरणं पलायणं च एगट्ठा' (वव १०)। ३ पीछे हटना (णाया १, १)।

अवक्कमण न [अपक्रमण] अवतरण, 'उत्त-रावक्कमणं' (भग ६, ३३)।

अवक्कय पु [अवक्रय] भाड़ा, भाटि (बृह १)।

अवक्कय वि [अपकृत] जिसका अहित किया गया हो वह (चड)।

अवक्करस पु [दे] दारु, मद्य (दे १, ४६; पाअ)।

अवक्करिस } पु [अपकर्ष] हानि, अपचय
अवक्कास } (विसे १७६६, भग १२, ५)।

अवक्कास पुं [अवकर्ष] ऊपर देखो (भग १२, ५)।

अवक्कास पु [अप्रकाश] अन्धकार, अँधेरा (भग १२, ५)।

अवक्कोस पु [अवक्रोश] मान, अहंकार (सम ७१)।

अवक्ख सक [दृश्] देखना। अवक्खइ (पड्)। अवक्खए (भवि)। वकृ अव-क्खंत (कुमा)।

अवक्खंद पुं [अवस्कन्द] १ शिविर, छावनी, सैन्य का पड़ाव। २ नगर का रिपु-सैन्य द्वारा वेष्टन, घेरा (हे २, ४, स ४१२)।

अवक्खर पुं [अवस्कर] पुरीष, विष्ठा (प्राकृ २१)।

अवक्खारण न [अपक्षारण] १ निर्भर्त्सना, कठोर वचन। २ सहानुभूति का अभाव (पराह १, २)।

अवक्खेव पुं [अवक्षेप] विघ्न, बाधा (विपा १, ६)।

अवक्खेवण न [अवक्षेपण] १ बाधा, अन्त-राय। २ क्रिया-विशेष, नीचे जाना। (आवम; विसे २४९२)।

अवखेर सक [दे] १ खिन्न करना। २ तिर-स्कार करना। अवखेरइ (भवि)। वकृ. अव-खेरंत (भवि)।

अभिसेअ } पुं [अभिषेक] १ राजा, आचार्य
अभिसेग } आदि पद पर आरूढ करना (सथा, महा)। २ स्नान-महोत्सव, 'जिणाभिसेगे' (सुपा ५०)। ३ स्नान (औप, स ३२)। ४ जहा पर अभिषेक किया जाता है वह स्थान (भग)। ५ शुक्र शोणित का सयोग, 'इह खलु अत्तत्ताए तेहिं तेहिं कुलेहिं अभिसेएण अभि सभूया' (आचा १, ६, १)। ६ वि. आचार्य आदि पद के योग्य (बृह ३)। ७ अभिषिक्त (निचू १५)।

अभिसेगा स्त्री [अभिषेका] १ साध्वी, संन्यासिनी (निचू १५)। २ साध्वियो की मुखिया, प्रवर्तिनी (धर्म ३, निचू ६)।

अभिसेज्जा स्त्री [अभिशय्या] देखो अभिणिसज्जा (वव १)। २ भिन्न स्थान (विसे ३४६१)।

अभिसेवण न [अभिषेवण] पूजा, सेवा, भक्ति (पउम १४, ४६)।

अभिसेवि वि [अभिषेविन्] सेवा-कर्ता (सूअ २, ६, ४४)।

अभिस्सग पु [अभिष्वङ्ग] आसक्ति (विसे २९६५)।

अभिहट्टु अ [अभिहृत्य] बलात्कार करके, जबरदस्ती करके (आचा, पि ५७७)।

अभिहड वि [अभिहृत] १ सामने लाया हुआ (पचा १३)। २ जैन साधुओं की भिक्षा का एक दोष (ठा ३, ४)।

अभिहण सक [अभि+हन्] मारना, हिंसा करना (पि ४९९)। वकृ. अभिहणमाण (ज ३)।

अभिहणण न [अभिहनन] अभिघात, हिंसा (भग ८, ७)।

अभिहय वि [अभिहत] मारा हुआ, आहत (पडि)।

अभिहा स्त्री [अभिधा] नाम, आख्या (सण)।

अभिहाण न [अभिधान] १ नाम, आख्या (कुमा)। २ वाचक, शब्द (वव ६)। ३ कथन, उक्ति (विसे)।

अभिहाण न [अभिधान] १ उच्चारण (सूअनि १३८)। २ कथन, उक्ति (धर्मसं ११११)। ३ कोशग्रन्थ (चेइय ७४)।

अभिहिय वि [अभिहित] कथित, उक्त (आचा)।

अभिहेअ वि [अभिधेय] वाच्य, पदार्थ (विसे ८४१)।

अभीइ } स्त्री [अभिजित्] १ नक्षत्र-
अभीजि } विशेष (सम ८, १५)। २ पुं. एक राजकुमार (भग १३, ६)। ३ राजा श्रेणिक का एक पुत्र, जिसने जैन दीक्षा ली थी (अनु)।

अभीरु वि [अभीरु] १ निडर, निर्भीक (आचा)। २ स्त्री मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७)।

अभेज्झ देखो अभिज्झ (पण्ह १, ३)।

अभोज्ज वि [अभोज्य] भोजन के अयोग्य (णाया १, १६)। °घर न [°गृह] भिक्षा के लिए अयोग्य घर, धोबी आदि नीच जाति का घर (बृह १)।

अम सक [अम्] १ जाना। २ आवाज करना। ३ खाना। ४ पीडना। ५ अक रोगी होना, 'अम गत्ताईसु' (विसे ३४५३), 'अम रोगे वा' (विसे ३४५४)। अमइ (विसे ३४५३)।

अमग्ग पु [अमार्ग] १ कुमार्ग, खराब रास्ता (उव)। २ मिथ्यात्व, कषाय आदि हेय पदार्थ, 'अमग्गं परियाणामि मग्गं उवसंपज्जामि' (आव ४)। ३ कुमत, कुदर्शन (दस)।

अमग्घाय पु [अमाघात] १ द्रव्य का अ-हरण। २ मारिनिवारण, अभय घोषणा (पचा ६)।

अमच्च पु [अमात्य] मन्त्री, प्रधान (औप, सुर ४, १०४)।

अमच्च पु [अमर्त्य] देव, देवता (कुमा)।

अमज्झ वि [अमध्य] १ मध्य रहित, अखण्ड (ठा ३, २)। २ परमाणु (भग २०, ६)।

अमण न [अमन] १ ज्ञान, निर्णय (ठा ३, ४)। २ अन्त अवसान (विसे ३४५३)।

अमण } वि [अमनस्क] १ अप्रीतिकर,
अमणक्ख } अभीष्ट (ठा ३,३)। २ मनरहित (आव ४, सूअ २, ४, २)।

अमणाम वि [अमनआप] अनिष्ट, अमनोहर (सम १४९, विपा १, १)।

अमणाम वि [अमनोम] ऊपर देखो (भग; विपा १, १)।

अमणाम वि [अवनाम] पीड़ा-कारक, दु खोत्पादक (सूअ २, १)।

अमणुस्स पुं [अमनुष्य] १ मनुष्य भिन्न देव आदि (णादि)। २ नपुसक (निचू १)।

अमत्त न [अमत्र] भाजन, पात्र (सूअ १,६)।

अमम वि [अमम] १ ममता-रहित, नि स्पृह (पण्ह २, ५, सुपा ५००)। २ पु आगामी काल मे होने वाले एक जिनदेव का नाम (सम १५३)। ३ युग्म रूप से होने वाले मनुष्यो की एक जाति (ज ४)। दिन के २५ वां मुहूर्त का नाम (चद १०)। °त्त वि [°त्व] नि स्पृह, ममता-रहित (पचव ४)।

अमय वि [अमय] विकार-रहित,
'अमओ य होइ जीवो, कारणविरहा
जहेव आगास।
समय च होअनिच्च, मिम्मयवडतंतुमाईय'
(विसे)।

अमय न [अमृत] १ अमृत, सुधा (प्रासू ६९)। २ क्षीर समुद्र का पानी (राय)। ३ पु मोक्ष, मुक्ति (सम्म १६७, प्रामा)। ४ वि नही मरा हुआ, जीवित, 'अमओ ह नय विमुक्खामि' (पउम ३३,८२)। °कर पु [°कर] चन्द्र, चन्द्रमा (उप ७६८ टी)। °किरण पुं [°किरण] चन्द्र (सुपा ३७७)। °कुड पुं [°कुण्ड] चन्द्र, चाँद (श्रा २७)। °घोस पुं [°घोष] एक राजा का नाम (संथा)। °फल न [°फल] अमृतोपम फल (णाया १, ६)। °मइय—°मय वि [°मय] अमृत-पूर्ण (कुमा, सुर ३,१२१, २३३)। °मऊह पु [°मयूख] चन्द्र (मै ६८)। °वल्लरि, °वल्लरी स्त्री [°वल्लरि, °री] अमृतलता, वल्ली-विशेष, गुडूची। °वल्लि, °वल्ली स्त्री [°वल्लि, °ल्ली] वल्ली-विशेष, गुडूची (श्रा २०, पव ४)। °वास पुं [°वर्ष] सुधा-वृष्टि (गाचा)। देखो अमिय = अमृत।

अमय पु [दे] १ चन्द्र, चन्द्रमा (दे १,१५)। २ असुर, दैत्य (षड्)।

अमयघडिअ पु [दे. अमृतघटित] चन्द्रमा, चाँद (कुप्र २१)।

अमयणिग्गम पुं [दे. अमृतनिर्गम] १ चन्द्र, चन्द्रमा (दे १,१५)।

अमर वि [आमर] दिव्य, देव-सम्बन्धी, 'अमरा आउहमेया' (पउम ६१, ४९)।

अवच्चीय वि [अपत्यीय] सतानीय, सतान-सवन्धी (ठा ६)।

अवच्छुण्ण न [दे] क्रोध से कहा जाता मार्मिक वचन (दे १, ३६)।

अवच्छेय पु [अवच्छेद] विभाग, अंश (ठा ३, ३)।

अवछंद वि [अपच्छन्दस्क] छन्द के लक्षण से रहित, छन्दोदोष-दुष्ट (पिंग)।

अवजस पु [अपयशस्] अपकीर्ति (उप पृ १८७)।

अवजाण सक [अप+ज्ञा] १ अपलाप करना, 'वालस्स मंदय वीय ज च कड अवजाणई भुज्जो' (सूअ १, ४, १, २६)।

अवजाय पु [अपजात] पिता की अपेक्षा हीन वैभववाला पुत्र (ठा ४, १)।

अवजिब्भ पुं [अपजिह्व] दूसरी नरक-पृथिवी का आठवा नरकेन्द्रक—नरक-स्थान विशेष (देवेन्द्र ६)।

अवजीव वि [अपजीव] जीवरहित मृत, अचेतन (गउड)।

अवजुय वि [अवयुत] पृथग्भूत, भिन्न (वव ७)।

अवज्ज न [अवद्य] १ पाप (पण्ह २, ४)। २ वि निन्दनीय (सूअ १, १, २)।

अवज्जस सक [गम्] जाना, गमन करना। अवज्जसइ (हे ४, १६२)। वकृ अवज्जसंत (कुमा)।

अवज्जा स्त्री [अवज्ञा] अनादर (स ६०४)।

अवज्झ वि [अवध्य] मारने के अयोग्य (णाया १, १६)।

अवज्झ सक [दृश्] देखना (सक्षि ३६)।

अवज्झस न [दे] १ कटी, कमर। २ वि. कठिन (दे १, ५६)।

अवज्झा स्त्री [अवध्या] १ अयोध्या नगरी (इक)। २ विदेह वर्ष की एक नगरी (ठा २, ३)।

अवज्झाण न [अपध्यान] बुरा चिन्तन, दुर्ध्यान (सुपा ५४६, उप ४६६, सम ५०, विसे ३०१३)।

अवज्झाण } पुंन [अपध्यान] दुर्ध्यान, 'चउ-
अवझाण } व्विहो अवज्झाणो' (श्रावक २८६, पचा १, २३, संबोध ४५)।

अवज्झाय वि [उ.पध्यात] १ दुर्ध्यान का विषय। २ अवज्ञात, तिरस्कृत (णाया १,१४)।

अवज्झाय (अप) देखो उवज्झाय (दे १,३७)।

अवट्ट सक [अप + वृत्] घुमाना, फिराना, 'अवट्ट अवट्ट त्ति वाहरंते कण्णहारे रज्जुपरिवत्तणुज्जएसुं निजामएसु अयडम्मि चेव गिरिसिहरनिवडिय पिव विवन्न जाणवत्त' (स ३५५)।

अवट्ट अक [अप+वृत्] पीछे हटना। अवट्टइ (प्राकृ ७२)।

अवट्टा स्त्री [आवर्त्ता] राजमार्ग से वाहर की जगह (उप ६६१)।

अवट्ठभ पु [अवष्टम्भ] अवलम्बन, आश्रय (पउम २६. २०, स ३३१)।

अवट्ठभ पु [अवष्टम्भ] दृढता, हिम्मत (धर्मवि १४०)।

अवट्ठभ देखो अवठंभ। कर्म अवट्ठब्भंति (स ७४९)।

अवट्ठभण } न [अवष्टम्भन] अवलम्बन,
अवट्ठहण } सहारा (स ७५६ टी, ७४६)।

अवट्ठद्ध वि [अवष्टब्ध] रोका हुआ (द्रव्य २७)।

अवट्ठद्ध वि [अवष्टब्ध] १ अवलम्बित। २ आक्रान्त, 'अवट्ठद्धा महाविसाएण' (स ५८४)।

अवट्ठव सक [अव + स्तम्भ्] अवलम्बन करना, सहारा लेना। संकृ अवट्ठविअ (विक्र ६४)।

अवट्ठाण न [अवस्थान] १ अवस्थिति, अवस्था। २ व्यवस्था (वृह ५)।

अवट्ठिअ वि [अवस्थित] १ अवगाहन करके स्थित (सूअ १,६,११)। २ कर्म-वन्ध विशेष, प्रथम समय मे जितनी कर्म-प्रकृतियो का वन्ध हो द्वितीय आदि समयो मे भी उतनी ही प्रकृतियो का जो वन्ध हो वह (पच ५,१२)।

अवट्ठिअ वि [अवस्थित] १ स्थिर रहनेवाला (भग)। २ नित्य, शाश्वत (ठा ३,३)। ३ जो वढता-घटता न हो (जीव ३)।

अवट्ठिइ स्त्री [अवस्थिति] अवस्थान (ठा ३, ४, विसे ७५८)।

अवठंभ सक [अव + स्तम्भ्] अवलम्बन करना। संकृ.

'धाएण मओ, सद्देण मई, चोज्जेण वाहवहुयावि।
अवठंभिऊण धणुहं वाहेणवि मुक्किया पाणा' (वज्जा ४६)।

अवठभ पुं [दे] ताम्बूल, पान (दे १, ३६)।

अवड पु [अवट] कूप, कुंआ (गउड)।

अवड } पु [दे] १ कूप, कुंआ। २ आराम,
अवडअ } वगीचा (दे १, ५३)।

अवडअ पु [दे] १ चञ्चा, घास-फूस का पुतला, तृण-पुरुष (दे १, २०)।

अवडक्क पुं [अवटङ्क] प्रसिद्धि, ख्याति, 'जण-कयावडक्केण निग्घिणसम्मो णाम' (महा)।

अवडकिअ वि [दे] कूप आदि मे गिरकर मरा हुआ, जिसने आत्म-हत्या की हो वह (दे १, ४७)।

अवडाह सक [उत् + क्रुश्] ऊंचे स्वर से रुदन करना। अवडाहेमि (दे १, ४७)।

अवडाहिअ न [दे] १ ऊंचे स्वर मे रोदन (दे १, ४७)। २ वि. उत्कृष्ट (षड्)।

अवडिअ वि [दे] खिन्न, परिश्रान्त (दे १, २१)।

अवडु पुं [अवटु] कृकाटिका, घंटी या घाटी, कण्ठमणि (पाअ)।

अवडुअ पुं [दे] उदूखल, उलूखल (दे १,२६)।

अवडुल्लिअ वि [दे] कूप आदि मे गिरा हुआ (षड्)।

अवड्डा स्त्री [दे] कृकाटिका, घट्टी, गर्दन का ऊंचा हिस्सा (भग १५, पत्र ६७६)।

अवड्ढ वि [अपार्ध] १ आधा (सुज्ज १०)। २ आधा दिन, 'अवड्ढं पच्चक्खाइ' (पडि, भग १६, ३)। ३ आधे मे कम (भग ७, १, नव ४१)। °क्खेत्त न [°क्षेत्र] १ नक्षत्र-विशेष (चद १०)। २ मुहूर्त-विशेष (ठा ६)।

अवण पुं [दे] १ पानी का प्रवाह। २ घर का फलहक (दे १, ५५)।

अवण न [अवन] १ गमन। २ अनुभव (णदि, विसे ८३)।

अवणण देखो अवणयण (पिंड ४७३)।

अवणद्ध वि [अवनद्ध] १ संवद्ध, जोडा हुआ (सुर २, ७)। २ आच्छादित (भग)।

अवणम अक [अव + नम्] नीचे नमना। वकृ. अवणमत (राय)।

अमुगत्थ वि [अमुत्र] अमुक स्थान मे (सुपा ६०२)।

अमुण वि [अज्ञ] अजान, मूर्ख (बृह १)।

अमुणिय वि [अज्ञात] अविदित (सुर ४, २०)।

अमुणिय वि [अज्ञान] मूर्ख, अजान (पण्ह १, २)।

अमुत्त वि [अमुक्त] अपरित्यक्त (ठा १०)।

अमुत्त वि [अमूर्त्त] रूपरहित, निराकार (सुर १४, ३६)।

अमुदग्ग } न [अमुदग्र] १ अतीन्द्रिय
अमुयग्ग } मिथ्याज्ञान विशेष, जैसे देवताओ के पुद्गलरहित शरीर को देखकर जीव का शरीर पुद्गल से निर्मित नही है ऐसा निर्णय (ठा ७)।

अमुस वि [अमृष] सच्चा, सत्य, 'अमुसे वरे' (सूअ १, १०, १२)।

अमुसा स्त्री [अमृषा] सत्यवचन (सूअ १, १०)। °वाइ वि [°वादिन्] सत्यवादी (कुमा)।

अमुह वि [अमुख] निरुत्तर (वव ६)।

अमुहरि वि [अमुखरिन्] अवाचाल, मित-भाषी (उत्त १)।

अमूढ वि [अमूढ] अमुग्ध, विचक्षण (णाया १, ६)। °णाण न [°ज्ञान] सत्य-ज्ञान (आवम)। °दिट्ठि स्त्री [°दृष्टि] १ सम्यग्दर्शन (पव ६)। २ अविचलित बुद्धि (उत्त २)। ३ वि. अविचलित दृष्टि वाला, सम्यग्दृष्टि (गच्छ १)।

अमूस वि [अमृष] सत्यवादी (कुमा)।

अमेज्ज देखो अमिज्ज (भग ११,११)।

अमेज्झ देखो अमिज्झ (महा)।

अमोल्ल वि [अमूल्य] जिसकी कीमत न हो सके वह, बहुमूल्य (गउड, सुपा ५१६)।

अमोसलि न [दे. अमुशलि] वस्त्रादि निरी-क्षण का एक प्रकार (ओघ २६५)।

अमोसा देखो अमुसा (कुमा)।

अमोह वि [अमोघ] १ अवन्ध्य, सफल (सुपा ८३, ५७५)। २ पुं. सूर्य के उदय और अस्त के समय किरणो के विकार से होने वाली रेखा विशेष (भग ३, ६)। एक यक्ष का नाम (विपा १,४)। °दंसि वि [°दर्शिन्] १ ठीक-ठीक देखनेवाला (दस ६)। २ न. उद्यान-विशेष। ३ पु यक्ष-विशेष (विपा १, ३)। °पहारि वि [°प्रहारिन्] अचूक प्रहार करनेवाला, निशानबाज (महा)। °रह पुं [°रथ] इस नाम का एक रथिक (महा)।

अमोह पुं [अमोह] १ मोह का अभाव, सत्य-ग्रह (विसे)। २ रुचक पर्वत का एक शिखर (ठा ८)। ३ वि मोहरहित, निर्मोह (सुपा ८३)।

अमोह पुं [अमोघ] १ सूर्य-बिम्ब के नीचे कभी-कभी दीखती श्याम आदि वर्णोंवाली रेखा (अणु १२१)। २ पुन. एक देवविमान (देवेन्द्र १४४)।

अमोहण न [अमोहन] १ मोह का अभाव (वव १०)। २ वि. मुग्ध नही करनेवाला (कप्प)।

अमोहा स्त्री [अमोघा] १ एक जम्बूवृक्ष, जिसके नाम से यह जम्बूद्वीप कहलाता है (जीव ३)। २ एक पुष्करिणी (दीव)।

अम्म देखो अंब = आम्ल (उर २, ६)।

अम्मएव पु [आम्रदेव] एक जैन आचार्य (पव २७६, गा ६०६)।

अम्मगा देखो अम्मया (उवा)।

अम्मच्छ वि [दे] असबद्ध (षड्)।

अम्मड देखो अंबड (औप)।

अम्मडी (अप) स्त्री [अम्बा] माता, माँ (हे ४, ४२४)।

अम्मणुअचिय न [दे] अनुगमन, अनुसरण (दे १, ४६)।

अम्मधाई देखो अबधाई (विपा १, ६)।

अम्मया स्त्री [अम्बा] १ माता, जननी (उवा)। २ पाचवें वासुदेव की माता का नाम (सम १५२)।

अम्महे (शौ) अ. हर्ष-सूचक अव्यय (हे ४, २८४)।

अम्मा स्त्री [दे अम्बा] माता, माँ (दे १, ५)। °पिइ, °पिउ, °पियर, °पीइ पुं ब. [°पितृ] माँ-बाप, माता-पिता (वव ३, कप्प, सुर ३,८३, ठा ३,१, सुर ३,८८, ७,१७०)। °पेइय वि [°पैतृक] माँ-बाप-संबन्धी (भग १, ७)।

अम्माइआ स्त्री [दे] अनुसरण करने वाली स्त्री, पीछे-पीछे जानेवाली स्त्री (दे १,२२)।

अम्मो अ [?] १ आश्चर्य-सूचक अव्यय (हे २, २०८, स्वप्न २६)। २ माता का सबोधन, हे माँ (उवा; कुमा)।

अम्मोगइया स्त्री [दे] समुख-गमन, स्वागत करने के लिए सामने जाना, 'राया सयमेव अम्मोगइयाए निग्गओ' (सुख २, १३)।

अम्मोस वि [अमर्ष्य] अक्षम्य, क्षमा के अयोग्य (सुपा ४८७)।

अम्ह स [अस्मत्] हम, निज, खुद (हे २, ६६, १४२)। °केर, °क्केर, °चय वि [°ीय] अस्मदीय, हमारा (हे २, ६६, सुपा ४६६)।

अम्हत्त वि [दे] प्रमृष्ट, प्रमार्जित (षड्)।

अम्हार } (अप) वि [अस्मदीय] हमारा
अम्हारय } (षड्, कुमा)।

अम्हारिच्छ वि [अस्मादृक्ष] हमारे जैसा (प्रामा)।

अम्हारिस वि [अस्मादृश] हमारे जैसा (हे १, १४२, षड्)।

अम्हेच्चय वि [अस्माक] अस्मदीय, हमारा (कुमा, हे २, १४९)।

अम्हो अ [अहो] आश्चर्य-सूचक अव्यय (षड्)।

अय पु [अग] १ पहाड, पर्वत। २ सांप, सर्प। ३ सूर्य, सूरज (श्रा २३)।

अय पु [अज] १ छाग, बकरा (विपा १,४)। २ पूर्वभाद्रपद नक्षत्र का अधिष्ठायक देव (ठा २, ३)। ३ महादेव। ४ विष्णु। ५ राम-चन्द्र। ६ ब्रह्मा। ६ कामदेव (श्रा २३)। ८ महाग्रह-विशेष (ठा ६)। ६ बीजोत्पादक शक्ति से रहित धान्य (पउम ११, २५)। °करक पु [°करक] एक महाग्रह का नाम (ठा २, ३)। °वाल पु [°पाल] आभीर (श्रा २३)।

अय पु [अय] १ गमन, गति (विसे २७६३, श्रा २३)। २ लाभ, प्राप्ति। ३ अनुभव (विसे)। ४ न. पुण्य (ठा १०)। ५ भाग्य, नसीब (श्रा २३)।

अय न [अक] १ दुःख। २ पाप (श्रा २३)।

अवद्दार } देखो अवदार (गाया १, २,
अवद्दाल } प्राकृ)।

अवद्दाहणा स्त्री· देखो अवदहण (विपा १, १)।

अवद्दुस न [दे] उलूखल आदि घर का सामान्य उपकरण, गुजराती मे जिसको 'राचरचिलु' कहते हैं (दे १, ३०)।

अवद्धंस पु [अवध्वंस] विनाश (ठा ४, ४)।

अवधसि वि [अपध्वसिन्] विनाशकारक (उत्त ४, ७)।

अवधार सक [अव + धारय्] निश्चय करना। कृ अवधारियव्व (पचा ३)।

अवधारण न [अवधारण] निश्चय, निर्णय (श्रा ३०)।

अवधारणा स्त्री [अवधारणा] दीर्घकाल तक याद रखने की शक्ति (सम्मत्त ११८)।

अवधारिय वि [अवधारित] निश्चित, निर्णीत (वसु)।

अवधारियव्व देखो अवधार।

अवधाव सक [अप + धाव्] पीछे दौड़ना। अवधावइ (सण)। वकृ अवधावंत (स २३२)।

अवधिआ स्त्री [दे] उपदेहिका, दीमक (पण्ह १, १)।

अवधीरिय वि [अवधीरित] तिरस्कृत, अपमानित (वृह १, ४)।

अवधुण } सक [अव + धू] १ परित्याग
अवधूण } करना। २ अवज्ञा करना। संकृ अवधूणिअ, अवधूणिअ (माल २३२, वेणी ११०)।

अवधूय वि [अवधूत] १ अवज्ञात, तिरस्कृत (ओघ १८ भा टी)। २ विक्षिप्त (श्राव ४)।

अवनिद्दय पु [अपनिद्रक] उजागर, निद्रा का अभाव (सुर ६, ८३)।

अवन्न देखो अवण्ण = अवर्ण (भग, उव, ओघ ३५१)।

अवन्ना देखो अवण्णा (ओघ ३८२ भा, सुर १६, १३१, सुपा ३७२)।

अवपगुण } सक [दे] खोलना। अवपंगुणे
अवपगुर } (सूअ १, २, २, १३)। अवपगुरे (दस ५, १, १८)।

अवपक्का स्त्री [अवपाक्या] तापिका, तवी, छोटा तवा (गाया १, १ टी—पत्र ४३)।

अवपुट्ठ वि [अवस्पृष्ट] जिसका स्पर्श किया गया हो वह,
'जीए ससिकंतमणिमंदिराइं
निमि ससिकरावपुट्ठाइं।
वियलियवाहजलाइं रोयंतिव,
तरणितवियाइं' (सुपा ३)।

अवपुसिय वि [दे] संघटित, संयुक्त (दे १, ३६)।

अवपूर सक [अव + पूरय्] पूर्ण करना। अवपूरंति (स ७१२)।

अवपेक्ख सक [अवप्र + ईक्ष] अवलोकन करना। अवपेक्खइ (उत्त ६, १३)।

अवप्पओग पु [अपप्रयोग] उलटा प्रयोग, विरुद्ध औषधियो का मिश्रण (वृह १)।

अवप्फार पु [अवस्फार] विस्तार, फैलाव, 'ता किमिमिणा अहोपुरिसियावप्फारपाएण' (स २८८)।

अववध पु [अवबन्ध] बन्ध, बन्धन (गउड)।

अवबद्ध वि [अवबद्ध] बंधा हुआ, नियन्त्रित (धर्म ३)।

अववाण वि [अपबाण] बाणरहित (गउड)।

अवबुज्झ सक [अव + बुध्] १ जानना। २ समझना, 'जत्थ तं मुज्झसी राय, पेचत्थ नावबुज्झसे' (उत्त १८, १३)। वकृ अवबुज्झमाण (स ८५)। संकृ अवबुज्झेऊण (स १६७)।

अवबोह पु [अवबोध] १ ज्ञान, बोध (सुपा १७)। २ विकास (गउड)। ३ जागरण (धर्म २)। ४ स्मरण, याद (आचा)।

अवबोहय वि [अवबोधक] अवबोध-कारक, 'भवियकमलाववोहय, मोहमहातिमिरपसरभरसूर' (काल)।

अवबोहि पु [अवबोधि] १ ज्ञान। २ निश्चय, निर्णय (आचू १, विसे ११५४)।

अवभास अक [अव + भास्] चमकना, प्रकाशित होना।

अवभास पु [अवभास] प्रकाश (सुज्ज ३)।

अवभास पु [अवभास] ज्ञान (धर्मसं १३३३)।

अवभासण वि [अवभासन] प्रकाश-कर्ता (सुख १, ४०)।

अवभासय वि [अवभासक] प्रकाशक (विसे ३१७, २०००)।

अवभासि वि [अवभासिन्] देदीप्यमान, प्रकाशने वाला (गउड)।

अवभासिय वि [अवभासित] प्रकाशित (विसे)।

अवभासिय वि [अपभाषित] आक्रुष्ट, अभिशप्त (वव १)।

अवम देखो ओम (आचा)।

अवमग्ग पु [अपमार्ग] कुमार्ग, खराब रास्ता (कुमा)।

अवमग्ग पु [अपामार्ग] वृक्ष-विशेष, चिचटा, लटजीरा (दे १, ८)।

अवमच्चु पु [अपमृत्यु] अकाल मृत्यु, बिना मौत मरण (दे ६, ३, कुमा)।

अवमज्ज सक [अव + मृज्] पोंछना, झाड़ना, साफ करना। संकृ. अवमज्जिऊण (स ३४८)।

अवमण्ण सक [अव + मन्] तिरस्कार करना। अवमण्णंति (उवर १२०)।

अवमद्द पुं [अवमर्द] मर्दन, विनाश (पण्ह १, २)।

अवमद्दग वि [अवमर्दक] मर्दन करने वाला (णाया १, १६)।

अवमन्न सक [अव + मन्] अवज्ञा करना, निरादर करना। अवमन्नइ (महा)। वकृ अवमन्नंत (सूअ १,३,४) संकृ. अवमन्निऊण (महा)।

अवमन्निय } वि [अवमत] अवज्ञात, अव-
अवमय } गणित (सुर १६, १२७, महा, उव)।

अवमाण पु [अपमान] तिरस्कार (सुर १, २३५)।

अवमाण पुन [अवमान] १ अवज्ञा, तिरस्कार। २ परिमाण (ठा ४, १)।

अवमाण सक [अव + मानय्] अवगणना करना। अवमाणइ (भवि)।

अवमाणग न [अवमानन] अनादर, अवज्ञा (पण्ह १, ५, औप)।

अवमाणण न [अपमानन] तिरस्कार, अपमान (स १०)।

चक्रवर्ती राजा, 'सुमिणे अरं महरिहं पासइ जणणी अरो तम्हा' (आव २, सम ५३, उत्त १८)। ३ समय का एक परिमाण, कालचक्र का बारहवाँ हिस्सा। (ती २१)।

°अर पु [°अर] १ किरण। गा ३४३, से १, १७)। २ हस्त, हाथ (से १, २८)। ३ शुल्क, चुंगी (से १, २८)।

अरइ स्त्री [अरति] अर्श, मसा (आचा २, १३, १)।

अरइ स्त्री [अरति] १ बेचैनी। (भग, आचा, उत्त२)। °कम्म न [°कर्मन्] अरति का हेतुभूत कर्मविशेष (ठा ६)। °परिसह, °परीसह पु [°परिषह, °परीषह] अरति को सहन करना (पव ८)। °मोहणिज्ज न [°मोहनीय] अरति का उत्पादक कर्म-विशेष (कम्म १)। °रइ स्त्री [°रति] सुख-दुःख (ठा १)।

°अरंग देखो तरंग (से २, २६)।

अरंजर पुन [अरञ्जर] घड़ा, जल-घट (ठा ४, ४)।

°अरक्ख देखो वरक्ख (से ६, ४४)।

अरक्खुरी स्त्री [अराक्षुरी] नगरी-विशेष (आक)।

अरग देखो अर (पण्ह २, ४, भग ३ ५)।

अरज्झिय वि [अरहित] निरन्तर, रसतत, 'अरज्झियामितावा' (सूअ १, ५, १)।

अरडु पु [अरडु] वृक्ष-विशेष (उप १०३१ टी)।

अरण न [अरण] हिंसा (उव)।

अरणि पु [अरणि] १ वृक्ष-विशेष। २ इस वृक्ष की लकड़ी, जिसको घिसने पर अग्नि जल्दी पैदा होती है (आवम, णाया १, १८)।

अरणि पुस्त्री [दे] १ रास्ता, मार्ग। २ पङ्क्ति, कतार। (पड्)।

अरणिया स्त्री [अरणिका] वनस्पति-विशेष (आचा)।

अरणेट्टय पु [दे अरणेटक] पत्थरों के टुकड़ों से मिली हुई सफेद मिट्टी (जी ३)।

अरण्ण वि [आरण्य] जंगल में रहने वाला (सूअ १, १, १, १६)।

अरण्ण न [अरण्य] वन, जंगल (हे १, ६६)। °वडिंसग न [°वतंसक] देवविमान विशेष (सम ३६)। °साण पुं [°श्वन्] जंगली कुत्ता (कुमा)।

अरण्णय वि [आरण्यक] जंगली, जंगल-वासी (अभि ५२)।

अरत्त वि [अरक्त] राग-रहित, नीराग (आचा)।

अरन्न देखो अरण्ण (कप्प, उव)।

अरवाग पु [दे] एक अनार्य देश, अरब देश (पव २७४)।

अरमंतिया स्त्री [अरमन्तिका] अरमणता, कार्य में अतत्परता (उवा)।

अरय देखो अर (खेत्त १०८)।

अरय वि [अरजस्] १ रजोगुण-रहित (पउम ६, १४६)। २ एक महाग्रह का नाम (ठा २, ३)। ३ वि. धूलीरहित, निर्मल (कप्प)। ४ न पाचवें देव लोक का एक प्रतर (ठा ६)। ५ रजोगुण का अभाव, 'अरो य अरयं पत्तो पत्तो गइमणुत्तरं' (उत्त १८)।

अरय वि [अरत] अनासक्त, निःस्पृह (आचा)।

अरय पुन [अरजस्] एक देवविमान (देवेन्द्र १४१)।

अरया स्त्री [अरजा] कुमुद नामक विजय की राजधानी (ज ४)।

अरयणि पु [अरत्नि] परिमाण विशेष, खुली अंगुलीवाला हाथ (ठा ४, ४)।

अरर न [अरर] १ युद्ध। २ ढकना। °कुरी स्त्री [°कुरी] नगरी-विशेष (धम्म ६ टी)।

अररि पुन [अररि] किवाड़, द्वार (प्रामा)।

अरल न [दे] १ चीरी, कीट-विशेष। २ मशक, मच्छड़ (दे १, ५३)।

अरलाया स्त्री [दे] चीरी, कीट-विशेष (दे १, २६)।

अरलु देखो अरडु (पउम ४२, ८)।

अरविंद न [अरविन्द] कमल, पद्म (पण्ह २, ४)।

अरविंदर वि [दे] दीर्घ, लम्बा (दे १,४५)।

अरस पु [अरस] रसरहित, नीरस (णाया १, ५)।

अरस पु [अर्शस्] व्याधि-विशेष, बवासीर (श्रा २२)।

अरस न [अरस] तप-विशेष, निर्विकृति तप (संबोध ५८)।

अरह वि [अर्हन्] १ पूजा के योग्य, पूज्य (पड्, हे २, १११)। २ पु जिनदेव, तीर्थंकर (सम्म ६७)। °मित्त पु [°मित्र] एक व्यापारी का नाम (गच्छ २)।

अरह देखो अरिह = अर्ह्। अरहइ (प्राकृ २८)।

अरह वि [अरहस्] १ प्रकट। २ जिससे कुछ भी न छिपा हो। ३ पु जिनदेव, सर्वज्ञ (ठा ४, १, ६)।

अरह वि [अरथ] परिग्रहरहित (भग)।

अरहंत वकृ [अर्हत्] १ पूजा के योग्य, पूज्य (पड्, हे २, १११, भग ८, ५)। २ पु जिन भगवान्, तीर्थंकरदेव (आचा, ठा ३, ४)।

अरहंत वि [अरहोन्तर्] १ सर्वज्ञ, सब कुछ जाननेवाला। २ पु. जिन भगवान् (भग २,१)।

अरहंत वि [अरथान्त] १ निःस्पृह, निर्मम। २ पु जिनदेव (भग)।

अरहंत वकृ [अरहयत्] १ अपने स्वभाव को नहीं छोड़नेवाला। २ पु जिनेश्वर देव (भग)।

अरहट्ट पु [अरघट्ट] अरहट, रहट, पानी का चरखा, पानी निकालने का यन्त्र विशेष (गा ४६०, प्रासू ५५), 'भमिओ कालमणंत अरहट्टघडिव्व जलमज्झे' (जीवा १)।

अरहट्टिय वि [अरघट्टिक] अरहट चलानेवाला (कुप्र ५८)।

अरहणा स्त्री [अर्हणा] १ पूजा। २ योग्यता (प्राकृ २८)।

अरहण्णय पु [अरहन्नक] एक व्यापारी का नाम (णाया १, ८)।

अरहन्न पु [अर्हन्न] एक जैन मुनि का नाम (सुख २, ६)।

अराइ पु [अराति] रिपु, दुश्मन (कुमा)।

अराइ स्त्री [अरात्रि] दिन, दिवस (कुमा)।

अरागि वि [अरागिन्] रागरहित, वीतराग (पउम ११७, ४१)।

अरि देखो अरे (तंदु ५०, ५२ टी)।

अरि पु [अरि] दुश्मन, रिपु (पउम ७३,१६)। °छव्वग्ग पु [°षड्वर्ग] छः आन्तरिक

अवर स [अपर] १ पिछला काल या देश (महा)। २ पिछले काल या देश में रहा हुआ, पाश्चात्य (सम १३, महा)। ३ पश्चिम दिशा में स्थित, 'अवरद्दारेण' (स ६४६)। °कंका स्त्री [°कङ्का] १ धातकी-खंड के भरतक्षेत्र की एक राजधानी। २ इस नाम के 'ज्ञातधर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन (णाया १, १६)। °ण्ह पु [°ाह्न] १ दिन का अन्तिम प्रहर (ठा ४, २)। २ दिन का उत्तरी भाग (आचू १, गा २६६, प्रासू ५४)। °दाहिण पु [°दक्षिण] १ नैऋत्य कोण। २ वि नैऋत्य कोण में स्थित (पचा २)। °दाहिणा स्त्री [°दक्षिणा] पश्चिम और दक्षिण दिशा के बीच की दिशा, नैऋत कोण (वव ७)। °फाणु स्त्री [°पार्ष्णि] एडी, अडी का पिछला भाग (वव ८)। °राय पु [°रात्र] देखो अवरत्त= अपररात्र (आचा)। °विदेह पु [°विदेह] महाविदेह नामक वर्ष का पश्चिम भाग (ठा २, ३, पडि)। °विदेहकूड न [°विदेहकूट] पर्वत-विशेष का शिखर-विशेष (जं ४)। देखो अपर।

अवर स [अवर] ऊपर देखो (महा, णाया १, १६, वव ७, पचा २)।

अवरमुह वि [अपराङ्मुख] १ सम्मुख। २ तत्पर (पि २६६)।

अवरच्छ देखो अपरच्छ (पण्ह १, ३)।

अवरज्ज पु [दे] १ गत दिन। २ आगामी दिन। ३ प्रभात, सुबह (दे १, ५६)।

अवरज्झ अक [अप + राध्] १ अपराध करना, गुनाह करना। २ नष्ट होना। अवरज्झइ (महा, उव)। वकृ अवरज्झंत (राज)।

अवरत्त पु [अपररात्र, अवररात्र] रात्रि का पिछला भाग (भग, णाया १, १)।

अवरत्त वि [अपरक्त] १ विरक्त, उदास (उप पृ ३०८)। २ नाराज, नाखुश (मुद्रा २६७)।

अवरत्तअ } पु [दे] पश्चाताप, अनुताप (दे
अवरत्तेअ } १, ४५, पाअ)।

अवरदक्खिणा देखो अवर-दाहिणा (पव १०६)।

अवरद्ध न [अपराद्ध] १ अपराध, गुनाह (सुर २, १२१)। २ वि. जिसने अपराध किया हो वह, अपराधी, 'सगडे दारए ममं अंतेउरंसि अवरद्धे' (विपा १, ४, म २८)। ३ विनाशित, नष्ट किया हुआ (णाया १, १)।

अवरद्धिग वि [अपराधिक] १ अपराधी, दोषी। २ पु लूता-स्फोट। ३ सर्पादि-दंश (पिंड १४)।

अवरद्धिग } पुंस्त्री [अपराधिक] १ सर्प-
अवरद्धिय } दंश। २ फुनसी, छोटा फोडा (ओघ ३४१, पिंड)।

अवरा स्त्री [अपरा] विदेहवर्ष की एक नगरी (ठा २, ३)।

अवरा स्त्री [अपरा] पश्चिम दिशा (पव १०६)।

अवराइया देखो अपराइया (पउम २५, १, ज ४, ठा २, ३)।

अवराइस देखो अणगाइस (षड्, हे ४, ४१३)।

अवराजिय देखो अपराइय (इक)।

अवराजिया देखो अपराइया (इक)।

अवराह पु [अपराध] १ अपराध, गुनाह (आव १)। २ अनिष्ट, बुराई, 'अवराहेसु गुणेसु य निमित्तमेत्त परो होइ' (प्रासू १२२)।

अवराह पु [दे] कटी, कमर (दे १, २८)।

अवराहिय न [अपराधित] १ अपराध, गुनाह, 'जपइ जणो महल्ल कस्सवि अवराहिय जाय' (पउम ९४, २५, न ३२०)। २ अपकार, अनिष्ट, अहित,

'गिरि चडिआ खंति फलाई पुणु डालइ मोडंति।
तोवि महद्दुम सउणाह, अवराहिउ न करंति' (हे ४, ४५)।

अवराहिल्ल वि [अपराधिन्] अपराधी (प्राकृ ५०)।

अवराहुत्त वि [अपराभिमुख] १ पराङ्मुख। २ पश्चिम दिशा की तरफ मुँह किया हुआ (आव ४)।

अवरि } अ [उपरि] ऊपर (दे १, २६; प्राप्र)।
अवरिं }

अवरिक वि [दे] अवसररहित, अनवसर (दे १, २०)।

अवरिगलिअ वि [अपरिगलित] पूर्ण, भरपूर (से ११, ८८)।

अवरिज्ज वि [दे] अद्वितीय, असाधारण (दे १, ३६, षड्)।

अवरिल्ल वि [उपरि] उत्तरीय वस्त्र, चादर (हे २, १६६, कुमा, गउड, पाअ)।

अवरिल्ल वि [अपरीय] पाश्चात्य, पश्चिम दिशा संबन्धी; 'तो ण तुब्भे अवरिल्ल वणसंड गच्छेज्जाह' (णाया १, ६)।

अवरिहड्ढपुसण न [दे] १ अकीर्ति, अजस। २ असत्य, झूठ। ३ दान (दे १, ६०)।

अवरुंड सक [दे] आलिङ्गन करना। अवरुंडइ (दे १ ११, सुर ३, १८२, भवि)। कर्म. अवरुंडिज्जइ (दे १, ११)। संकृ अवरुंडिऊण (दे १, ११, स ४२१)।

अवरुंडण } न [दे] आलिङ्गन (भवि, पाअ,
अवरुंडिअ } दे १, ११)।

अवरुत्तर पु [अपरोत्तर] १ वायव्य कोण। २ वि. वायव्य कोण में स्थित (भग)।

अवरुत्तरा स्त्री [अपरोत्तरा] वायव्य दिशा, पश्चिम और उत्तर के बीच की दिशा (वव ७)।

अवरुद्ध वि [अवरुद्ध] घिरा हुआ (विसे २८७५)।

अवरुप्पर देखो अवरोप्पर (कुमा, रंभा)।

अवरुह अक [अव + रुह्] नीचे उतरना। अवरुहेहि (मै १४)।

अवरूव देखो अपुव्व (प्राकृ ८५)।

अवरोप्पर } वि [परस्पर] आपस में (हे ४,
अवरोवर } ४०६, गउड, सुपा २२, सुर ३, ७६, षड्)।

अवरोह पुं [अवरोध] १ अन्त पुर, जनानखाना (सुपा ६३)। २ अन्त पुर में रहनेवाली स्त्री (विपा १, ४)। ३ नगर को सैन्य से घेरना (निचू ८)। ४ सक्षेप (विसे ३५५५)। ५ प्रतिबन्ध, 'कहं सव्वत्थियत्तावरोहो त्ति' (विसे १७२३)। °जुवइ स्त्री [°युवति] अन्त पुर की स्त्री (पि ३८७)।

अवरोह पु [अवरोह] उगनेवाला (तृण आदि) (गउड)।

अवरोह पुं [दे] कटि, कमर (दे १, २८)।

अवलंब सक [अव + लम्ब्] १ सहारा लेना, आश्रय लेना। २ लटकना। अवलंबइ (कस)। अवलबेइ (महा)। वकृ अवलंबमाण (सम्म ५८)। कवकृ. अवलंबिज्जंत (पि ३६७)। संकृ. अवलंबिऊण, अवलंबिय (आव ५, आचा २, १, ६)। हेकृ.

अरूवि वि [अरूपिन्] ऊपर देखो (ठा ९, ३; आचा, पराग १)।

अरे अ [अरे] १-२ संभाषण और रति-कलह का सूचक अव्यय (हे २,२०१, षड्)।

अरे अ [अरे] इन अर्थों का सूचक अव्यय— १ आक्षेप। २ विस्मय, आश्चर्य। ३ परिहास, ठट्ठा (संक्षि ३८, ४७)।

अरोअ अक [उत् + लस्] उल्लास पाना, विकसित होना। अरोअइ (हे ४, २०२, कुमा)।

अरोअअ पु [अरोचक] रोग-विशेष, अन्न की अरुचि (श्रा २२)।

अरोइ वि [अरोचिन्] अरुचि वाला, रुचि-रहित, 'अरोइ अत्थे कहिए विलावो' (गोय ७)।

अरोग वि [अरोग] रोगरहित (भग १८, १)। °या स्त्री [°ता] आरोग्य, नीरोगता (उप ७२८ टी)।

अरोगि वि [अरोगिन्] नीरोग, रोग-रहित। °या स्त्री [°ता] आरोग्य, तदुरुस्ती (महा)।

अरोग्ग } देखो आरोय = आरोग्य (आचा २,
अरोय } १५, २)।

अरोस वि [अरोष] १ गुस्सा-रहित। २-३ पुं. एक म्लेच्छ देश और उसमें रहनेवाली म्लेच्छ जाति (पराह १, १)।

अल न [अल] १ विच्छू के पुच्छ का अग्र भाग,

'अलमेव विच्छुआणं, मुहमेव
अहीण तह य मदस्स।
दिट्ठि-विसं पिसुणाणं,
सव्वं सव्वस्स भय-जणयं'
(प्रासू १९)।

२ अलादेवी का एक सिंहासन (णाया २)। ३ वि. समर्थ (आचा)। °पट्ट न [°पट्ट] विच्छू की पूंछ जैसे आकारवाला एक शस्त्र (विपा १, ६)।

°अल देखो तल (गा ७५, से १, ७८)।

अल अ [अलम्] १ पर्याप्त, पूर्ण, 'अलमाणंदं जणतीए' (सुर १३, २१)। २ प्रतिषेध, निवारण, वस (उप २, ७)।

अलं अ [अलम्] अलङ्कार, भूषा (सूअनि २०२)।

अलंकर सक [अलं + कृ] भूषित करना, विराजित करना। अलंकरेंति (पि ५०९)। वकृ. अलकरंत (माल १४३)। संकृ. अलकरिअ (पि ५८१)। प्रयो, कर्म. अलंकरावीयउ (स ६४)।

अलंकरण न [अलङ्करण] १ आभूषण, अलकार (रयण ७४, भवि)। २ वि शोभाकारक, 'मज्झमलोअस्स अलकरणि सुलोअणि' (विक्र १४)।

अलंकरिय वि [अलंकृत] सुशोभित, विभूषित; 'किं नयरमलंकरिय जम्ममहेण तए महापुरिस।' (सुपा ५८४, सुर ४, ११८)।

अलंकार पु [अलङ्कार] १ शास्त्र-विशेष, साहित्यशास्त्र (सिरि ५५, सिक्खा २)। २ पुन. एक देवविमान (देवेन्द्र १३५)।

अलंकार पु [अलंकार] १ भूषण, गहना (औप, राय)। २ भूषा, शोभा (ठा ४, ४)। °सहा स्त्री [°सभा] भूषा-गृह, शृङ्गार-घर (इक)।

अलंकारिय पुं [अलंकारिक] नापित, नाई, हजाम (णाया १, १३)। °कम्म न [°कर्मन्] हजामत, क्षौर कर्म (णाया १, १३)। °सहा स्त्री [°सभा] हजामत बनाने का स्थान (णाया १, १३)।

अलंकिय वि [अलंकृत] १ विभूषित, सुशोभित (कप्प, महा)। २ न संगीत का एक गुण (जीव ३)।

अलंकुण देखो अलंकर। अलंकुणति (रयण ५२)।

अलंघ वि [अलङ्घ्य] १ उल्लघन करने के अयोग्य (सुर १, ४१)। २ उल्लघन करने के अशक्य (उप ५९७ टी)।

अलंघणिय } वि [अलङ्घनीय] ऊपर देखो
अलंघणीय } (महा, सुपा ६०१, पि ९६, नाट)।

अलंप पु [दे] कुक्कुट, मुर्गा (दे १, १३)।

अलंबुसा स्त्री [अलम्बुषा] १ एक दिक्कुमारी देवी का नाम। (ठा ८)। २ गुल्म-विशेष। (पाअ)।

अलंभि स्त्री [अलाभ] अप्राप्ति (ओघ २३, भा)।

अलका स्त्री [अलका] नगरी-विशेष, पहले प्रतिवासुदेव की राजधानी (पउम २०, २०१)। देखो अलया।

अलक्ख पु [अलक्ष] १ इस नाम का एक राजा, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पाई थी (अंत १८)। २ न. 'अंतगडदसा' सूत्र के एक अध्ययन का नाम। (अंत १८)।

अलक्ख वि [अलक्ष्य] लक्ष्य में न आ सके ऐसा (सुर ३, १३६, महा)।

अलक्खमाण वि [अलक्ष्यमाण] जो पहिचाना न जा सकता हो, गुप्त (उप ५९३ टी)।

अलक्खिय वि [अलक्षित] १ अज्ञात, अपरिचित। (से १३, ४५)। २ न पहचाना हुआ। (सुर ४, १४०)।

अलग देखो अलय = अलक (महा)।

अलगा देखो अलया (अंत १)।

अलग्ग न [दे] कलंक देना, दोष का झूठा आरोप (दे १, ११)।

अलचपुर न [अचलपुर] नगर-विशेष (कुमा)।

अलज्ज वि [अलज्ज] निर्लज्ज, बेशरम (पराह १, ३)।

अलज्जिर वि [अलज्जालु] ऊपर देखो (गा ९०, ४४५, ६६१, महा)।

अलट्टपल्लट्ट न [दे] पार्श्व का परिवर्तन (दे १, ४८)।

अलत्त पु [अलक्त] आलता, स्त्रियाँ हाथ-पैर को लाल करने के लिए जो रंग लगाती हैं वह (अनु ५)।

अलत्तय पु [अलक्तक] १ ऊपर देखो। (सुण ४०६)। २ वि आलता से रंगा हुआ (अनु)।

°अलधोय देखो कलधोय (से ६, ४६)।

अलमंजुल वि [दे] आलसी, सुस्त (दे १, ४६)।

अलमत्थु वि [अलमस्तु] १ समर्थ। २ निषेवक, निवारक। (ठा ४, २)।

अलमल पुं [दे] दुर्दान्त बैल (दे १,२५)।

अलमलवसह पुं [दे] उन्मत्त बैल (दे १, २५)।

अलय न [दे] विद्रुम, प्रवाल (दे १, १६, भवि)।

अवसउण न [अपशकुन] अनिष्ट-सूचक निमित्त, खराब शकुन (ओघ ८१ भा, गा २६१, सुपा ३६३)।
अवसक्कि वि [अपशङ्किन्] अपसरण-कर्ता (सूअ १, १२, ४)।
अवसक्क सक [अव + ष्वष्क्] पीछे हट जाना। अवसक्केज्जा (आचा)।
अवसक्कण न [अवष्वष्कण] अपसरण, पीछे हटना (पंचा १३)।
अवसक्कि वि [अवष्वष्किन्] पीछे हटने वाला (आचा)।
अवसण्ण वि [दे] झरा हुआ, टपका हुआ (षड्)।
अवसण्ण वि [अवसन्न] निमग्न, 'नागो जहा पंकजलावसण्णो' (उत्त १३, ३०)।
अवसद्द पु [अपशब्द] १ अशुद्ध शब्द (सुर १६, २४८)। २ खराब वचन (हे १, १७२)। ३ अपकीर्त्ति, अपयश (कुमा)।
अवसप्प अक [अव + सृप्] पीछे हटाना। २ निवृत्त होना। ३ उतरना। अवसप्पति (पि १७३)।
अवसप्पण न [अपसर्पण] अपसरण, अपवर्तन (पउम ५६, ७८)।
अवसप्पि वि [अपसर्पिन्] १ पीछे हटने-वाला। २ निवृत्त होनेवाला (सूअ १, २, २)।
अवसप्पिय वि [अपसर्पित] १ अपसृत। २ निवृत्त। ३ अवतीर्ण (भवि)।
अवसप्पिणी देखो ओसप्पिणी (भग ३, २, भवि)।
अवसमिआ (दे) देखो अवसमी (दे १ ३७)।
अवसय वि [अपशद] नीच, अधम (ठा ४, ४)।
अवसर अक [अप+सृ] १ पीछे हटना। २ निवृत्त होना। अवसरइ (हे १, १७२)। कृ अवसरियव्व (उप १४६ टी)।
अवसर सक [अव + सृ] आश्रय करना। संकृ ओसरणम् अवसरित्ता' (चउ १८)।
अवसर पु [अवसर] १ काल, समय (पाअ)। २ प्रस्ताव, मौका (प्रासू ५७, (महा)।

अवसरण देखो ओसरण (पव ६२)।
अवसरण न [अपसरण] १ पीछे हटना। २ निवृत्ति (गउड)।
अवसरिय वि [आवसरिक] सामयिक, समयोपयुक्त (सण)।
अवसरीर पु [अपशरीर] रोग, व्याधि, 'सव्वावसरीरहिओ' (उप ५६७ टी)।
अवसवस वि [अपस्ववश] पराधीन, परतन्त्र (णाया १, १६)।
अवसव्व न [अपसव्य] वाम पार्श्व (णंदि १५९)।
अवसव्वय न [अपसव्यक] शरीर का दहिना भाग (उप पृ २०८)।
अवसह पु [आवसथ] घर, मकान (उत्त ३२)।
अवसह न [दे] १ उत्सव। २ नियम (दे १, ५८)।
अवसाइअ वि [अप्रसादित] प्रसन्न नहीं किया हुआ (से १०, ६३)।
अवसाण न [अवसान] १ नाश। २ अन्त भाग (गउड, पि ३६६)।
अवसाय पु [अवश्याय] हिम, वर्फ (गउड)।
अवसारिअ वि [अप्रसारित] न फैला हुआ, अविस्तारित (से, १)।
अवसारिअ वि [अपसारित] १ आकृष्ट, खींचा हुआ (से १, १)। २ दूर किया हुआ, हटाया हुआ (सुपा २२२)।
अवसावण न [अवस्रावण] १ काँजी (बृह १)। २ भात वगैरह का पानी (सूक्त ८६)।
अवसावणिया स्त्री [अवस्वापनिका] सुलानेवाली विद्या (धर्मवि १२४)।
अवसिअ वि [अपसृत] पीछे हटा हुआ (से १३, ६३)।
अवसिअ वि [अवसित] १ समाप्त, परिपूर्ण। २ ज्ञात, जाना हुआ (विसे २४८२)।
अवसिज्ज अक [अव + सद्] हारना, पराजित होना, 'एक्कोवि नावसिज्जइ' (विसे २४८४)।
अवसित्त वि [अवसिक्त] सींचा हुआ (रंभा ३१)।

अवसिद (शौ) वि [अवसित] समाप्त, पूर्ण (अभि १३३, प्रति १०६)।
अवसिद्धंत पु [अपसिद्धान्त] दूषित सिद्धांत (विसे २४५७, ६)।
अवसीय अक [अव + सद्] क्लेश पाना, खिन्न होना। वकृ. अवसीयंत (पउम ३३, १३१)।
अवसुअ अक [उद् + वा] सूखना, शुष्क होना। अवसुअइ (षड्)।
अवसेअ पु [अवसेक] सिंचन, छिड़काव (अभि २१०)।
अवसेअ वि [अवसेय] जानने योग्य (विसे २६७१)।
अवसें (अप) देखो अवस (हे ४, ४२७)।
अवसेण देखो अवसं; 'अवसेण भुजियव्वा (पउम १०२, २०१)।
अवसेस पु [अवशेष] १ अवशिष्ट, बाकी (सुपा ७७)। २ वि. सब, सर्व (उप २११ टी)।
अवसेसिय वि [अवशेषित] १ समाप्त किया हुआ, पार पहुँचाया हुआ (से ४, ४७)। २ बाकी का, अवशिष्ट (भग)।
अवसेह सक [गम्] जाना। अवसेहइ (हे ४, १६२)। अवसेहति (कुमा)।
अवसेह अक [नश्] भागना, पलायन करना। अवसेहइ (हे ४, १७८, कुमा)।
अवसोइया स्त्री [अवस्वापिका] निद्रा (सुपा ६०६)।
अवसोग वि [अपशोक] १ शोक-रहित। २ देव-विशेष (दीव)।
अवसोण वि [अपशोण] थोड़ा लाल (गउड)।
अवसोवणी स्त्री [अवस्वापनी] निद्रा (सुपा ४७)।
अवस्स वि [अवश्य] जरूरी, नियत (आवम, आव ४)। °कम्म न [°कर्मन्] आवश्यक क्रिया (आचू १)। °करणिज्ज वि [°करणीय] अवश्य करने लायक कर्म, सामयिक आदि। °किरिया स्त्री [°क्रिया] आवश्यक अनुष्ठान (आचू १)। °किच्च वि [°कृत्य] आवश्यक कार्य (दे)।

सूरि का उपाध्याय अवस्था का नाम (सुर १६, २३६)।

अल्लल्ल पु [दे] मयूर, मोर (दे १, १३)।

अल्लविय [अप] देखो आलत्त = आलपित (भवि)।

अल्ला स्त्री [दे] माता, माँ (दे १,५)।

अल्लि } देखो अल्ली। अल्लिइ (षड्)।
अल्लिअ } अल्लिअइ (दे १,५८, हे ४,५४)। वकृ अल्लिअत (से १२, ७१, पउम १२, ५१)।

अल्लिअ सक [उप + सृप्] समीप मे जाना। अल्लिअइ (हे ४,१३९)। वकृ अल्लिअत (कुमा)। प्रयो अल्लियावेइ (पि ४८२, ५०१)।

अल्लिअ वि [आर्द्रित] गीला किया हुआ (गा ४४०)।

अल्लियावण न [आलायन] आलीन करना, श्लिष्ट करना, मिलान (भग ८, ६)।

अल्लिल्ल पु [दे] भमरा (षड्)।

अल्लिव सक [अर्पय्] अर्पण करना। अल्लिवइ (हे ४,३९, भवि, पि १९६,४८५)।

अल्ली } सक [आ + ली] १ आना। २
अल्लीअ } प्रवेश करना। ३ जोडना। ४ आश्रय करना। ५ आलिंगन करना। ६ अक. संगत होना। अल्लीअइ (हे ४, ५४)। भूका. अल्लीसी (प्रामा) हेकृ अल्लीउं (बृह ६)।

अल्लीण वि [आलीन] १ आश्लिष्ट। २ आगत। ३ प्रविष्ट। ४ संगत। ५ योजित। ६ थोडा लीन (हे ४, ५४)। ७ आश्रित (कप्प)। ८ तल्लीन, तत्पर (वव १०)।

अल्लेस वि [अलेश्य] लेश्यारहित (कम्म ४, ५०)।

अल्लोग देखो अलोग (द्रव्य १९)।

अल्हाद पुं [आह्लाद] खुशी, प्रमोद, आनन्द (प्राप्र)।

अव अ [अप] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ विपरीतता, उल्टापन, 'अवकय, अवगुय'। २ वापसी, पीछेपन, 'अवक्कमइ'। ३ बुरापन, खराबपन, 'अवमग्ग, अवसद्द'। ४ न्यूनता, कमी, 'अवड्ढ'। ५ रहितपन, वियोग; 'अवबाएा'। ६ बाहरपन, 'अवक्कमएा'।

अव अ [अव] निम्नलिखित अर्थों का सूचक अव्यय—१ निम्नता, 'अवइएएा'। २ पीछेपन, 'अवचुल्ली'। ३ तिरस्कार, अनादर, 'अवगएात'। ४ खराबी, बुराई, 'अवगुएा'। ५ गमन। ६ अनुभव (राज)। ७ हानि, ह्रास, 'अवक्कास'। ८ अभाव, 'अवलद्धि'। ९ मर्यादा (विसे ८२)। १० निरर्थक भी इसका प्रयोग होता है, 'अवपुट्ठ, अवगल्ल'।

अव सक [अव्] १ रक्षएा करना, 'अवतु मुणिएगो य पयकमल' (रयएा ६)। २ जाना, गमन करना। ३ इच्छा करना। ४ जानना। ५ प्रवेश करना। ६ सुनना। ७ माँगना, याचना। ८ करना, बनाना। ९ चाहना। १० प्राप्त करना। ११ आलिङ्गन। १२ मारना, हिंसा करना। १३ जलाना। १४ अक. प्रीति करना। १५ तृप्त होना। १६ प्रकाशना। १७ बढना। अव (श्रा २३, विसे २०२०)।

अव पुं [अव] शब्द, आवाज (श्रा २३)।

अवअक्ख सक [दृश्] देखना। अवअक्खइ (हे ४, १८१, कुमा)।

अवअक्खिअ न [दे] निवापित मुख, मुंडाया हुआ मुंह (दे १,४०)।

अवअच्छ न [दे] कक्षा-वस्त्र (दे १,२६)।

अवअच्छ अक [ह्लाद्] आनन्द पाना, खुश होना। अवअच्छइ (हे ४, १२२)।

अवअच्छ सक [ह्लादय्] खुश करना। अवअच्छइ (हे ४, १२२)।

अवअच्छिअ [दे] देखो अवअक्खिअ (दे १, ४०)।

अवअच्छिअ वि [ह्लादित] १ हृष्ट, आह्लाद प्राप्त। २ खुश किया हुआ, हर्षित (कुमा)।

अवअज्झ सक [दृश्] देखना। अवअज्झइ (षड्)।

अवअणिअ वि [दे] असंघटित, असयुक्त (दे १, ४३)।

अवअण्ण पु [दे] ऊखल, मूगल (दे १,२६)।

अवअत्त वि [अपवृत्त] स्खलित (से १०, १८)।

अवआस सक [दृश्] देखना। अवआसइ (हे ४, १८१, कुमा)।

अवइ वि [अव्रतिन्] व्रतशून्य, अविरत, असंयत (बृह १)।

अवइण्ण वि [अवतीर्ण] १ उतरा हुआ, नीचे आया हुआ। २ जन्मा हुआ (कप्पू, पउम ७९, २८)।

अवइढ (शौ) वि [अवचित] एकत्रित, इकट्ठा किया हुआ (अभि ११७)।

अवइद (शौ) वि [अपकृत] १ जिसका अहित किया गया हो वह। २ न अपकार, अहित (चारु ४०)।

अवइन्न देखो अवइण्ण (सुर ३, १२२)।

अवउज्ज सक [अवकुब्ज्] नीचे नमना। संकृ अवउज्जिय (आचा २, १, ७)।

अवउज्झ सक [अप + उज्झ्] परित्याग करना। छोड देना। सकृ. अवउज्झिऊण (बृह ३)।

अवउज्झ° देखो अववह।

अवउडग } देखो अवओडग (एाया १, २,
अवउडय } अनु)।

अवउठण न [अवगुण्ठन] १ ढकना। २ मुंह ढकने का वस्त्र, घूँघट (चारु ७०)।

अवऊढ वि [अवगूढ] आलिंगित, 'सभावहूअवऊढो एाववारिहरोव्व विज्जुलापडिभिन्नो' (हे २, ६, स ४९६)।

अवऊसण न [अपवसन] तपश्चर्या-विशेष (पचा १९)।

अवऊसण न [अपजोषण] ऊपर देखो (पचा १९)।

अवऊहण न [अवगूहन] आलिङ्गन (गा ३३४, ५५९, वज्जा ७४)।

अवएड पुं [अवएज] तापिका-हस्त पात्र-विशेष (एाया १, १ टी—पत्र ४३)।

अवएस पुं [अपदेश] बहाना, छल (पाअ)।

अवओडग न [अवकोटक] गले को मरोडना, कृकाटिका को नीचे ले जाना (विपा १, २)। °बंधण न [°बन्धन] १ हाथ और सिर को पृष्ठ भाग से बाँधना (पएह १, २)। २ वि. रस्सी से गला और हाथ को मोडकर पृष्ठ भाग के साथ जिसको बाँधा जाय वह (विपा १, २)।

अवंग पुं [अपाङ्ग] नेत्र का प्रान्त भाग (सुर ३, १२४, ११, ६१)।

सुपा ४२३)। °मण वि [°मनस्] तल्लीन, एकाग्र-चित्त (सुपा ६)।
अवहिय वि [रचित] निर्मित, बनाया हुआ (कुमा)।
अवहीण वि [अवहीन] हीन, उतरता, कम दरजा वाला (नाट, पि १२०)।
अवहीय वि [अपधीक] निन्द्य बुद्धिवाला, दुर्बुद्धि (पण्ह १, २)।
अवहीर सक [अव + धीरय्] अवज्ञा करना, तिरस्कार करना। अवहीरेइ (महा)। वकृ अवहीरंत (सुपा ३१२)। कवकृ अवहीरिज्जंत (सुपा ३७६)। संकृ अवहीरिऊण (महा)।
अवहीरण न [अवधीरण] अवहेलना, तिरस्कार (गा १४६, अभि ६८, गउड)।
अवहीरणा स्त्री [अवधीरणा] ऊपर देखो (से १३, १६, वेणी १८)।
अवहीरमाण देखो अवहर = अप + हृ।
अवहीरिअ वि [अवधीरित] अवज्ञात, तिरस्कृत (से ११, ७, गउड)।
अवहील देखो अवहीर। अवहीलह (सण)।
अवहीला स्त्री [अवहेला] अनादर (सिरि १७६)।
अवहूय वि [अवधूत] मार भगाया हुआ (संबोध ५२)।
अवहेअ वि [दे] दया-योग्य, कृपा-पात्र (दे १, २२)।
अवहेड सक [मुच्] छोडना, त्याग करना। अवहेडइ (हे ४, ९१)। संकृ अवहेडिउ (कुमा)।
अवहेडग } पुन [अवहेटक] आधे सिर का
अवहेडय } दर्द, आधा सीसी रोग (उत्तनि ३)।
अवहेडिय वि [दे] नीचे की तरफ मोडा हुआ, अवमोटित (उत्त १२)।
अवहेरि } स्त्री [अवहेला] अवगणना, तिर-
अवहेरी } स्कार (उप २६०, ५६७ टी, भवि, सुपा २६१, महा)।
अवहेलअ वि [अवहेलक] तिरस्कारक (सुपा १०६)।
अवहेलण वि [अवहेलन] उपेक्षा करने वाला (सूअ २, ६, १३)।
अवहोअ पुं [दे] विरह, वियोग (षड्)।
अवहोडय देखो अवओडग, 'सो वद्धो अवहोडएण' (सुख २, २५)।
अवहोमुह वि [उभयमुख] दोनो तरफ मुह वाला (प्राकृ ३०)।
अवहोल अक [अव + होलय्] १ झूलना। २ संदेह करना। वकृ अवहोलन्त (गाया १, ८)।
अवाइ वि [अपायिन्] १ दु खी। २ दोषी, अपराधी, 'निण्हिवसवाई होइ अवाई य नेहलोएवि' (सुपा २७५)।
अवाईण वि [अवाचीन] अधोमुख (णाया १, १)।
अवाईण वि [अवातीन] वायु से अनुपहत (णाया १, १)।
अवाउड वि [अ-व्यापृत] किसी कार्य में न लगा हुआ (उप पृ ३०२)।
अवाउड वि [अप्रावृत] अनाच्छादित, नग्न, दिगम्बर (णाया १, १, ठा ५, १)।
अवाडिअ वि [दे] वञ्चित, प्रतारित (षड्)।
अवाण देखो अपाण (पाअ, विपा १, ६)।
अवाय पु [अपाय] पानी का आगमन (श्रा २३)।
अवाय वि [अपाय] भाग्यरहित (श्रा २३)।
अवाय वि [अपाग] वृक्षरहित (श्रा २३)।
अवाय वि [अपाक] पापरहित (श्रा २३)।
अवाय पु [अवाय] प्राप्ति (श्रा २३)।
अवाय पु [अपाय] १ अनर्थ, अनिष्ट (ठा १)। २ दोष, दूषण (सुर ४, १२०)। ३ उदाहरण-विशेष (ठा ४, ३)। ४ विनाश (धर्म १)। ५ वियोग, पार्थक्य (णदि)। ६ संशय-रहित निश्चयात्मक ज्ञान-विशेष (ठा ४, ४, णदि)। °दंसि वि [°दर्शिन्] भावी अनर्थों को जाननेवाला (ठा ८, द्र ४६)। °विजय न [°विचय, °विजय] ध्यान-विशेष (ठा ४, २)।
अवाय पुं [अवाय] संशय रहित निश्चयात्मक ज्ञान-विशेष, मति ज्ञान का एक भेद (ठा ४, ४, णदि)।
अवाय वि [अम्लान] अम्लान, म्लानरहित, ताजा; 'अवायमल्लमंडिया' (स ३७२)।
अवायाण न [अपादान] कारक-विशेष, स्थानान्तरीकरण (ठा ८, विसे २०६६)।
अवार वि [अपार] पार-रहित, अनन्त (मै ६८)।
अवार पुं [दे] दूकान, हाट (दे १, १२)।
अवारी स्त्री [दे] ऊपर देखो (दे १, १२)।
अवालुआ स्त्री [दे] होठ का प्रान्त भाग (दे १, २८)।
अवाव पु [अवाप] रसोई, पाक। °कहा स्त्री [°कथा] रसोई-सम्बन्धी कथा (ठा ४, २)।
अवास } (अप) देखो अवसें (षड्)।
अवासें }
अवाह पु [अवाह] देश-विशेष (इक)।
अवाहा देखो अवाहा (औप)।
अवि अ [अपि] निम्नलिखित अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रश्न (से ५, ४)। २ अवधारण, निश्चय (आचा, गा ५०२)। ३ समुच्चय (विसे ३५५१, भग १, ७)। ४ संभावना (विसे ३५४८, उत्त ३)। ५ विलाप (पाअ)। ६–७ वाक्य के उपन्यास और पादपूर्ति में भी इसका प्रयोग होता है (आचा, पउम ८, १४६, षड्)।
अवि पुं [अवि] १ अज। २ मेष (विसे १७७४)।
अविअ वि [दे] उक्त, कथित (दे १, १०)।
अविअ वि [अवित] रक्षित (दे ५, ३५)।
अविअ अ [अपिच] विशेषण-सूचक अव्यय (पंचा ७, २१)।
अविअ अ [अपिच] समुच्चय-द्योतक अव्यय (सुर २, २४६, भग ३, २)।
अविअ पु [अविक] मेष, भेड (आचा)।
अविउ वि [अवित्] अज्ञ, मूर्ख (सट्ठि ४९)।
अविउक्कतिय वि [अव्युत्क्रान्तिक] उत्पत्ति-रहित (भग)।
अविउसरण न [अव्युत्सर्जन] अपरित्याग, पास मे रखना (भग)।
अविकंप वि [अविकम्प] निश्चल (पचा १८, ३५)।
अविकरण न [अविकरण] गृहीत वस्तुओं को यथास्थान न रखना (बृह ३)।
अविक्ख देखो अवेक्ख। अविक्खइ (महा)। हेकृ अविक्खिउं (स ३०७)। कृ अविक्खणिज्ज (विसे १७१६)।
अविक्खग वि [अपेक्षक] अपेक्षा करने वाला (विसे १७१६)।

अवग पुन [दे अवक] जल में होने वाली वनस्पति-विशेष (सूत्र २, ३, १८)।
अवगइ स्त्री [अपगति] १ खराब गति। २ गोपनीय स्थान (सुपा ३४५)।
अवगंड न [अवगण्ड] १ सुवर्ण। २ पानी का फेन (सूत्र १, ६)।
अवगतव्व देखो अवगम = अवगम्।
अवगच्छ सक [अव + गम्] जानना। अवगच्छइ (महा)। अवगच्छे (स १५२)।
अवगच्छ अक [अप + गम्] दूर होना, निकल जाना। अवगच्छइ (महा)।
अवगण } सक [अव + गणय्] अनादर
अवगण्ण } करना, तिरस्कारना। वकृ अवगणत (श्रा २७)। सकृ अवगणिणय (आरा १०५)।
अवगणणा स्त्री [अवगणना] अवज्ञा, अनादर (दे १, २७)।
अवगणिअ } वि [अवगणित] अवज्ञात,
अवगणिणय } तिरस्कृत (दे; जीव १)।
अवगद वि [दे] विस्तीर्ण, विशाल (दे १, ३०)।
अवगन्न देखो अवगण। अवगन्नइ (भवि)। सकृ अवगन्निवि (भवि)।
अवगन्निय देखो अवगणिणय (सुपा ४२१, भवि)।
अवगम पु [अपगम] १ अपसरण (सुपा ३०२)। २ विनाश (स १५३, विसे ११८२)।
अवगम सक [अव + गम्] १ जानना। २ निर्णय करना। सकृ. अवगमित्तु (सार्ध ६३)। कृ अवगतव्व (स ५२६)।
अवगम पु [अवगम] १ ज्ञान। २ निर्णय, निश्चय (विसे १८०)।
अवगमण न [अवगमन] ऊपर देखो (स ६७०, विसे १८६, ४०१)।
अवगमिअ } वि [अवगत] १ ज्ञात, विदित
अवगय } (सुपा २१८)। २ निश्चित, अवधारित (दे ३, २३; स १४०)।
अवगय वि [अपगत] गुजरा हुआ, विनष्ट (णाया १, १, दस १०, १६)।
अवगर सक [अप + कृ] अपकार करना, अहित करना। अवगरेइ (स ६३६)।

अवगरिस देखो अवक्करिस विसे (१५८३)।
अवगल वि [दे] आक्रान्त (षड्)।
अवगल्ल वि [अवग्लान] बीमार (ठा २, ४)।
अवगहण न [अवग्रहण] निश्चय, अवधारण (पव २७३)।
अवगाढ देखो ओगाढ (ठा १; भग; स १७२)।
अवगाढु वि [अवगाहितृ] अवगाहन करने वाला (विसे २८२२)।
अवगार पुं [अपकार] अपकार, अहित-करण (सुर २, ४३)।
अवगारय वि [अपकारक] अपकार-कारक (स ६६०)।
अवगारि वि [अपकारिन्] ऊपर देखो (स ६६०)।
अवगास पु [अवकाश] १ फुरसत (महा)। २ जगह, स्थान (आवम)। ३ अवस्थान, अवस्थिति (ठा ४, ३)।
अवगाह सक [अव + गाह्] अवगाहन करना। अवगाहइ (सण)।
अवगाह पु [अवगाह] १ अवगाहन। २ अवकाश (उत्त २८)।
अवगाहण न [अवगाहन] अवगाहन, 'नित्यावगाहणत्थ आगतव्व तए तत्थ' (सुपा ५६३)।
अवगाहणा देखो ओगाहणा (ठा ४, ३, विसे २०८८)।
अवगिंचण न [दे अवविवेचन] पृथक्करण (उप पृ ९६)।
अवगिज्झ देखो ओगिज्झ। सकृ अवगिज्झिय (कप्प)।
अवगीय वि [अवगीत] निन्दित (उप पृ १८१)।
अवगुंठण देखो अवउंठण (दे १, ६)।
अवगुंठिय वि [अवगुण्ठित] आच्छादित (महा)।
अवगुण पुं [अवगुण] दुर्गुण, दोष (हे ४, ३९५)।
अवगुण सक [अव + गुणय्] खोलना, उद्घाटन करना। अवगुणेज्जा (आचा २, २, २, ४)। अवगुणंति (भग १५)।
अवगूढ वि [अवगूढ] १ आलिंगित (हे २, १६८)। २ व्याप्त (णाया १, ८)।
अवगूढ न [दे] व्यलीक, अपराध (दे १, २०)।

अवगूहण न [अवगूहन] आलिंगन (सुर १४, २२०, पउम ७४, २४)।
अवगूहाविय वि [अवगूहित] आश्लेषित (स ६९९)।
अवग्ग वि [अव्यक्त] १ अस्पष्ट। २ पु. अगीतार्थ, शास्त्रानभिज्ञ साधु (उप ८७४)।
अवग्गह देखो उग्गह (पव ३०)।
अवग्गहण न [अवग्रहण] देखो उग्गह (विसे १८०)।
अवच देखो अवय = अवच (भग)।
अवचइय वि [अपचयिक] अपकर्षप्राप्त, ह्रासवाला (आचा)।
अवचय पु [अपचय] ह्रास, अपकर्ष (भग ११, ११; स २८२)।
अवचय पु [अवचय] इकट्ठा करना (कुमा)।
अवचयण न [अवचयन] ऊपर देखो (दे २, ५६)।
अवचि अक [अप + चि] हीन होना, कम जाना। अवचिज्जइ (भग)। अवचिज्जंति (भग २५, २)।
अवचि } सक [अव+चि] इकट्ठा करना
अवचिण } (फूल आदि को वृक्ष से तोड कर)। अवचिणइ (नाट)। भवि अवचिणिस्स (पि ५३१)। हेकृ अवचिणेदु (शौ) (पि ५०२)।
अवचिय वि [अपचित] हीन, ह्रासप्राप्त (विसे ८९७)।
अवचिय वि [अपचित] इकट्ठा किया हुआ (पाअ)।
अवचुण्णिय वि [अवचूर्णित] तोडा हुआ, चूर-चूर किया हुआ (महा)।
अवचुल्ल पु [अवचुल्ल] चूल्हे का पीछला भाग (पिंडभा ३४)।
अवचूल देखो ओऊल (णाया १, १६, पत्र २१९)।
अवच्च वि [अवाच्य] १ बोलने के अयोग्य। २ बोलने के अशक्य (धर्मसं ६९८)।
अवच्च न [अपत्य] सतान, बच्चा (कप्प, आव १; प्रासू ८३)। °व वि [°वत्] सतानवाला (सुपा १०६)।
अवच्चिज्ज देखो अवच्चीय (सूअनि २०५)।

अविहड पु [दे] बालक, बच्चा (बृह १)।
अविहव वि [अविभव] दरिद्र (गउड)।
अविहवा स्त्री [अविधवा] जिसका पति जीवित हो वह स्त्री, सधवा (णाया १,१)।
अविहा देखो अविदा (अभि २२४)।
अविहाड वि [अविघाट] अविकट (वव ७)।
अविहाविअ वि [दे] १ दीन, गरीब। २ न. मौन (दे १, ५६)।
अविहाविअ वि [अविभावित] अनालोचित (गउड)।
अविहि देखो अविधि (दस १)।
अविहिअ वि [दे] मत्त, उन्मत्त (षड्)।
अविहिंत वक्र [अविघ्नत्] नहीं मारता हुआ, हिंसा नहीं करता हुआ,
'वज्जेमित्ति परिणओ, सपत्तीए विमुच्चई वेरा। अविहिंतोवि न मुच्चइ, किलिट्ठभावोत्ति वा तस्स' (ओघ ६०)।
अविहिंस वि [अविहिंस] अहिंसक (आचा)।
अविहिंसा स्त्री [अविहिंसा] अहिंसा (सूअ १, २, १)।
अविहीर वि [अप्रतीक्ष] प्रतीक्षा नहीं करने वाला (कुमा)।
अविहेडय वि [अविहेटक] आदर करनेवाला (दस १०, १०)।
अवी देखो अवि (उत्त २०, ३८)।
अवीइय अ [अविविच्य] अलग न हो कर (भग १०, २)।
अवीइय [अविचिन्त्य] विचार न कर (भग १०, २)।
अवीय वि [अद्वितीय] १ असाधारण, अनुपम (कुमा)। २ एकाकी, असहाय (विपा १,२)।
अवुक्क सक [वि + ज्ञपय्] विज्ञप्ति करना, प्रार्थना करना। अवुक्कइ (हे ४, ३८)। वकृ. अवुक्कंत (कुमा)।
अवुड्ढ वि [अवृद्ध] तरुण, जवान (कुमा)।
अवुग्गह देखो अविग्गह (ठा ५, १)।
अवुह देखो अबुह (सण)।
अवूह देखो अवोह (णाया १, १)।
अवे सक [अव + इ] जानना। अवेसि (विसे १७७३)।
अवे अक [अप+इ] दूर होना, हटना। अवेइ (स २०)। अवेह (मुद्रा १९१)।
अवेक्ख सक [अप + ईक्ष्] अपेक्षा करना। अवेक्खइ (महा)।
अवेक्ख सक [अव+ईक्ष्] अवलोकन करना। अवेक्खाहि (स ३१७) संकृ अवेक्खिऊण (स ५२७)।
अवेक्खा स्त्री [अपेक्षा] अपेक्षा, परवाह (सुर ३, ८४, स ५९२)।
अवेक्खि वि [अपेक्षिन्] अपेक्षा करनेवाला (गउड)।
अवेक्खिय वि [अपेक्षित] जिसकी अपेक्षा हुई हो वह (अभि २१६)।
अवेक्खिय वि [अवेक्षित] अवलोकित (अभि १६६)।
अवेय वि [अपेत] रहित, वर्जित (विसे २२१३)। °रुइ वि [°रुचि] रुचि-रहित, निरीह (उप ७२८ टी)।
अवेय, अवेयग वि [अवेद, °क] १ पुरुष-वेदादि वेद से रहित (पएण १)। २ मुक्त, मोक्ष-प्राप्त (ठा २, १)।
अवेसि देखो अवेसि (दे १, ८, पाअ)।
अवेह देखो अवेक्ख = अव + ईक्ष्। अवेहइ (सूअ ६)।
अवोअड वि [अव्याकृत] अव्यक्त, अस्पष्ट (भास ७६)।
अवोच्छिण्ण देखो अव्वोच्छिण्ण (आचा)।
अवोच्छित्ति देखो अव्वोच्छित्ति (ठा ५, ३)।
अवोह सक [अप + ऊह्] १ विचार करना। २ निर्णय करना। अवोहए (आवम)।
अवोह पु [अपोह] १ विकल्पज्ञान, तर्क-विशेष। २ त्याग, वर्जन (उप ६६७)। ३ निर्णय, निश्चय (णादि)।
अव्वईभाव पु [अव्ययीभाव] व्याकरण-प्रसिद्ध एक समास (अणु)।
अव्वंग वि [अव्यङ्ग] अक्षत, अखण्ड (वव ७)।
अव्वंग न [अव्यङ्ग] १ पूर्ण अंग, पूरा शरीर। २ वि. अविकल, अन्यून, संपूर्ण, 'परि-हियअव्वंगधोयसियवसणा' (धर्मवि १७, १५)।
अव्वक्खित्त वि [अव्याक्षिप्त] १ विक्षेप-रहित। २ तल्लीन, एकाग्र (उत्त २०)।
अव्वग्ग वि [अव्यग्र] व्यग्रताशून्य, अनाकुल (उत्त १५)।
अव्वत्त, अव्वत्तय वि [अव्यक्त] १ अस्पष्ट, अस्फुट (उप ७६८ टी, सुर ४, २१४, आ २७)। २ छोटी उमर का बालक, बच्चा (निचू १८)। ३ अगीतार्थ, शास्त्र-रहस्यान-भिज्ञ (साधु) (धर्म २, आचा)। ४ पु. अव्यक्त मत का प्रवर्तक एक जैनाभास मुनि (ठा ७)। ५ न सांख्य मत में प्रसिद्ध प्रकृति (आवम)। °मय न [°मत] एक जैनाभास मत (विसे)।
अव्वत्तव्व वि [अवक्तव्य] १ अवचनीय। २ पु कर्मबन्ध विशेष, नव जीव सर्वथा कर्म-बन्धरहित होकर फिर जो कर्मबन्ध करे वह (पव ५, १२)।
अव्वत्तिय देखो अवत्तिय (औप, विसे, आवम)।
अव्वभिचारि वि [अव्यभिचारिन्] ऐका-न्तिक (पंचा २, ३७)।
अव्वय न [अव्यय] 'च' आदि निपात (चेइय ६८३)।
अव्वय न [अव्रत] १ व्रत का अभाव (श्रा १६, सम १३२)। २ वि. व्रतरहित (विसे २५४२)।
अव्वय वि [अव्यय] १ अक्षय, अखूट (सुपा ३२१)। २ नित्य, शाश्वत (भग २, १)।
अव्ववसिय वि [अव्यवसित] १ अनिश्चित, संदिग्ध। २ अपराक्रमी (ठा ३, ४)।
अव्वसण वि [अव्यसन] १ व्यसन-रहित। २ पुन लोकोत्तर रीति से १२ वाँ दिन (जं ७)।
अव्वह वि [अव्यथ] १ व्यथारहित। २ न निश्चल ध्यान (ठा ४, १, औप)।
अव्वहिय वि [अव्यथित] १ अपीडित (पचा ५)। २ निश्चल (बृह १)।
अव्वा स्त्री [अर्वाक्] पर से भिन्न, 'णो हव्वाए णो पाराए' (सूअ २, १, ६)।
अव्वा स्त्री [दे. अम्बा] माता, जननी (दे १, ५; (षड्)।
अव्वाइद्ध वि [अव्याविद्ध] १ अविपर्यस्त, अविपरीत। २ न. सूत्र का एक गुण, अक्षरों की उलट-पुलट का अभाव (बृह १, गच्छ २)।

अवणमिय वि [अवनत] अवनत (सुपा ४२६)।

अवणमिय वि [अवनमित] नीचे किया हुआ, नमाया हुआ (सुर २, ४१)।

अवणय वि [अवनत] नमा हुआ (दस ५)।

अवणय पु [अपनय] १ अपनय, हटाना (ठा ८)। २ निन्दा (पव १४०, विसे १४०३ टी)।

अवणयण न [अपनयन] हटाना, दूर करना (सुपा ११, स ४८३, उप ४९६)।

अवणाम पुं [अवनाम] ऊर्ध्व गमन, ऊंचा जाना, 'तुलाए णामावणामव्व' (धर्मसं २४२)।

अवणि स्त्री [अवनि] पृथिवी, भूमि (उप ३३९ टी)।

अवणिन देखो **अवणी** = अप + नी।

अवणिंद पु [अवनीन्द्र] राजा, भूप (भवि)।

अवणिअ देखो **अवणीय**, 'तं कुणसु चित्तनिवसणमवणियनीमेसदोसमल' (विवे १३८)।

अवणी देखो **अवणि** (सुपा ३१०)। °**सर** पु [°श्वर] राजा, भूमिपति (भवि)।

अवणी सक [अप + नी] दूर करना, हटाना। अवणेइ, अवणेमि (महा)। वकृ **अवणित**, **अवणेंत** (निचू १, सुर २, ८)। कवकृ. **अवणेज्जत** (उप १४९ टी)। कृ **अवणेअ** (द्र ३७)।

अवणीय वि [अपनीत] दूर किया हुआ (सुपा ५४)।

अवणीयवयण न [अपनीतवचन] निन्दा-वचन (आचा २, ४, १, १)।

अवणेंत देखो **अवणी** = अप + नी।

अवणोय पु [अपनोद] अपनयन, हटाना (विसे ६८२)।

अवणोयण न [अपनोदन] अपनयन, दूरी करण (स ६२१)।

अवण्ण वि [अवर्ण] १ वर्णरहित, रूपरहित (भग)। २ पु निन्दा (पचव ४)। ३ अपकीर्ति (ओघ १८४ भा)। °**व** वि [°वत्] निन्दक, 'तेसिं अवण्णव बाले महामोह पकुव्वइ' (सम ५१)। °**वाय** पु [°वाद] निन्दा (द्र २६)।

अवण्ण न [दे] अवज्ञा, निरादर (दे १, १७)।

अवण्णा स्त्री [अवज्ञा] निरादर, तिरस्कार (औप)।

अवण्हअ पु [अपह्नव] अपलाप (पड्)।

अवण्हवण न [अपह्नवन] अपलाप (आचा)।

अवण्हाण न [अवस्नान] साबुन आदि से स्नान करना (णाया १, १३, विपा १, १)।

अवतस देखो **अवयस** = अवतस (कुमा)।

अवतंस पु [अवतस] मेरुपर्वत (सुज्ज ९)।

अवतंसिय वि [अवतसित] विभूषित (कुमा)।

अवतट्ठ वि [अवतष्ट] तनूकृत, छिला हुआ (सूअ १, ५, २)।

अवतट्ठि देखो **अवयट्ठि** = अवतष्टि (सूअ १, ७)।

अवतारण न [अवतारण] १ उतारना। २ योजना करना (विसे ९४०)।

अवतासण न [अवत्रासन] डराना (पव ७३ टी)।

अवतित्थ न [अपतीर्थ] कुत्सित घाट, खराब किनारा (सुपा १५)।

अवत्त वि [अव्यक्त] १ अस्पष्ट (विसे)। २ कम उमर वाला (बृह १)। ३ असस्कृत (गच्छ १)। ४ पु देखो **अवग्ग** (निचू २)।

अवत्त वि [अवात] पवनरहित (गच्छ १)।

अवत्त वि [अवाप्त] प्राप्त, लब्ध।

अवत्त न [अवत्र] आसन विशेष (निचू १)।

अवत्तय वि [दे] विसस्थुल, अव्यवस्थित (दे १,३४)।

अवत्तव्व वि [अवक्तव्य] १ वचन से कहने के अशक्य, अनिर्वचनीय। २ सप्तभंगी का चतुर्थ भग,

'अत्थतरभूएहि अ नियएहिं दोहि समयमाईहिं। वयणविसेसाईअं दव्वमवत्तयं पडइ' (सम्म ३६)।

अवत्तिय न [अव्यक्तिक] १ एक जैनाभास मत, निह्नवप्रचालित एक मत। २ वि इस मत का अनुयायी (ठा ७)।

अवत्थतर न [अवस्थान्तर] जुदी दशा, भिन्न अवस्था (सुर ३, २०९)।

अवत्थग वि [अपार्थक] १ निरर्थक, व्यर्थ। २ असम्बद्ध अर्थवाला (सूत्र वगैरह) (विसे)।

अवत्थद्ध वि [अवष्टब्ध] अवलम्बन-प्राप्त, जिसको सहारा मिला हो वह (णाया १,१८)।

अवत्थय वि [अपार्थक] निरर्थक (विसे ९९९ टी)।

अवत्थरा स्त्री [दे] पाद-प्रहार, लात मारना (दे १,२२)।

अवत्था स्त्री [अवस्था] दशा, अवस्थिति (ठा ८, कुमा)।

अवत्थाण न [अवस्थान] अवस्थिति (ठा ४, १, स ६२७ महा, सुर १, २)।

अवत्थाव सक [अव + स्थापय्] १ स्थिर करना ठहराना। २ व्यवस्थित करना। हेकृ. **अवत्थाविदु**, **अवत्थावइदु** (शौ) (पि ५७३, नाट)।

अवत्थाविद (शौ) वि [अवस्थापित] अवस्थित किया हुआ (नाट)।

अवत्थिय देखो **अवट्ठिय** (महा, स २७४)।

अवत्थिय वि [अवस्तृत] फैलाया हुआ, प्रसारित (णाया १, ८)।

अवत्थु न [अवस्तु] १ अभाव, असत्त्व (भवि, श्रावम)। २ वि निरर्थक, निष्फल (पराह १, २)।

अवथभ देखो **अवठभ**। संकृ **अवथभिय** (चेइय ४८१)।

अवदग्ग देखो **अवयग्ग** (सूअ २, २, ५)।

अवदल वि [अपदल] १ नि सार, सार-रहित। २ कचा, अपक्व (ठा ४, ४)।

अवदहण न [अवदहन] दम्भन, गरम लोहे के कोश आदि से चर्म (फोडे आदि) पर दागना (णाया १, ४)।

अवदाण न [अवदान] शुद्ध कर्म (ती १५)।

अवदाअ वि [अवदात] १ पवित्र, निर्मल, 'दिणयरकरावदाय भत्त पेहित्तु चक्खुणा सम्मं' (सुपा ४११)। २ श्वेत, सफेद (पराह १, ४, पाअ)।

अवदार न [अपद्वार] १ छोटी खिडकी। २ गुप्त द्वार (उप ९९१)।

अवदाल सक [अव + दलय्] खोलना। अवदालेइ (औप)। सकृ **अवदालेत्ता** (औप)।

अवदालिय वि [अवदलित] विकसित, विजृम्भित, 'अवदालियपुडरीयनयणे' (औप, पराह १, ४, उवा)।

अवदिसा स्त्री [अपदिक्] भ्रान्त दिशा (स ९२९)।

अवदेस देखो **अवएस** (अभि ७६)।

असगहिय वि [असगृहीत] १ जिसका सग्रह न किया गया हो वह। २ अनाश्रित (ठा ८)।

असगहिय वि [असग्रहिक] १ सग्रह न करने वाला। २ पुं नैगम नय का एक भेद (विसे)।

असगिअ पु [दे] १ अश्व, घोडा। २ वि. अनवस्थित, चञ्चल (दे १, ५५)।

असंघयण वि [असहनन] सहनन से रहित। २ वज्र, ऋषभ, नाराच आदि प्राथमिक तीन सघयणो से रहित (निचू २०)।

असजण न [असञ्जन] नि ङ्गता, अनासक्ति (निचू १)।

असजम वि [असयम] १ हिंसा, भूठ आदि सावद्य अनुष्ठान (सूअ १, १३)। २ हिंसा आदि पाप-कार्यो मे अनिवृत्ति (धर्म ३)। ३ अज्ञान (आचा)। ४ असमाधि (वव १)।

असजय वि [असयत] १ हिंसा आदि पाप कार्यो से अनिवृत्त (सूअ १, १०)। २ हिंसा आदि करने वाला (भग ६,३)। ३ पु साधु भिन्न, गृहस्थ (आचा)।

असजल पु [असज्वल] १ ऐरवत वर्ष के एक जिनदेव का नाम (सम १५३)।

असजोगि वि [असयोगिन्] १ सयोग-रहित। २ पु मुक्त जीव, मुक्तात्मा (ठा २,१)।

असत वक्र [असत्] १ अविद्यमान (नव ३३)। २ भूठ, असत्य (पराह १ २)। ३ असुदर, अचारु (पराह २, २)।

असत देखो अस = अश्।

असत वि [अशान्त] शान्तरहित, क्रुद्ध (पराह २, २)।

असत वि [असत्त्व] सत्त्व-रहित, वल-शून्य (पराह १, २)।

असथड वि [दे असस्तृत] अशक्त, असमर्थ (आचा, वृह ५)।

असथरत वक्र [दे असस्तरन्] १ समर्थ न होता हुआ। २ खोज न करता हुआ (वव ४)। ३ तृप्त न होता हुआ (ओघ १८२)।

असथरण न [दे असंस्तरण] १ निर्वाह का अभाव (वृह १)। २ पर्याप्त लाभ का अभाव (पचव ३)। ३ असमर्थता, अशक्त अवस्था (धर्म ३, निचू १)।

असंथरमाण वक्र [दे असस्तरमाण] देखो असथरत (वव ४, ओघ १८१)।

असधिम वि [असंधिम] सधान रहित, अखण्ड (वृह ५)।

असभंत पु [असभ्रान्त] प्रथम नरक का छठवाँ नरकेन्द्रक—नरक-स्थान विशेष (देवेन्द्र ४)।

असभव्व वि [असभाव्य] जिसकी सभावना न हो सके ऐसा (श्रा १२)।

असभावणीय वि [असभावनीय] ऊपर देखो (महा)।

असलप्प वि [असंलप्य] अनिर्वचनीय (अणु)।

असलोय पु [असंलोक] १ अप्रकाश। २ वह स्थान जिसमे लोगो का गमनागमन न हो, भीडरहित स्थान (आचा)।

असवर पु [असवर] आश्रव, सवर का अभाव (ठा ५, २)।

असवरीय वि [असंवृत] १ अनाच्छादित। २ नही रुका हुआ (कुमा)।

असवुड वि [असवृत] असयत, पाप-कर्म मे अनिवृत्त (सूअ १, १, ३)।

अससइय वि [असशयित] असंदिग्ध (सूअ २, २)।

अससट्ठ वि [असंसृष्ट] १ दूसरे से न मिला हुआ (वृह २)। २ लेप-रहित (औप)। ३ स्त्री पिण्डैषणा का एक भेद (पव ९६)।

असंसत्त वि [असंसक्त] १ अमिलित (उत्त २)। २ अनासक्त (दस ८, उत्त ३)।

अससय वि [असशय] १ सशय-रहित (वृह १)। २ क्रिवि. नि सदेह, नक्की (अभि ११०)।

अससार पु [असंसार] संसार का अभाव, मोक्ष (जीव १)।

अससि वि [अस्रंसिन्] अविनश्वर (कुमा)।

असक्क वि [अशाक्य] जिसको न कर सके वह (सुपा ६५१)।

असक्क वि [अशक्त] असमर्थ (कुमा)।

असक्कय वि [असस्कृत] संस्कार-रहित (पराह १, २)।

असक्कय वि [असत्कृत] सत्कार-रहित (पराह १, २)।

असक्कणिज्ज वि [अशकनीय] अशक्य (कुमा)।

असग्गह, असग्गह, असग्गाह पु [असद्ग्रह] १ कदाग्रह (उप ६७२, सुपा १३४)। २ अति-निर्वन्ध, विशेष आग्रह (भवि)।

असच्च न [असत्य] १ भूठ वचन (प्रासू १५१)। २ वि. भूठा (पराह १, २)। °मोस न [°मृष] भूठ मे मिला हुआ सत्य (द्र २२)। °वाइ वि [°वादिन्] भूठ वोलने वाला (सम ५०, पउम ११, ३४)। °मोस न [°मृष] न सत्य और न भूठ ऐसा वचन (आचा)। °मोसा स्त्री [°मृषा] देखो अनन्तरोक्त अर्थ (पच १)। °संध वि [°संध] १ असत्य-प्रतिज्ञ। २ असत्य अभिप्राय वाला (महा, पराह १, २)।

असज्ज, असज्जमाण वक्र [असजत्] सग न करता हुआ (आचा, उत्त १४)।

असज्झाइय वि [अस्वाध्यायिक] पठन-पाठन का प्रतिवन्धक कारण (पव २६८)।

असज्झाय पुं [अस्वाध्याय] अनध्याय, वह काल जिसमे पठन-पाठन का निषेध किया गया है (गच्छ ३, ३०)।

असड्ढ वि [अश्रद्ध] श्रद्धारहित (कुमा)।

असढ वि [अशठ] सरल, निष्कपट (सुपा ५५०)। °करण वि [°करण] निष्कपट भाव मे अनुष्ठान करने वाला (वृह ६)।

असण न [अशन] १ भोजन, खाना (निचू ११)। २ जो खाया जाय वह, खाद्य पदार्थ (पव ४)।

असण पुं [असन] १ वीजक नामक वृक्ष (पराण १, णाया १, १, औप, पाअ, कुमा)। २ न. क्षेपण, फेंकना (विसे २७९५)।

असणि पुस्त्री [अशनि] १ एक प्रकार की विजली (सुज्ज २०)। २ पुं एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २६)।

असणि पुंस्त्री [अशनि] १ वज्र (पाअ)। २ आकाश मे गिरता अग्नि-कण (पराण १)। ३ वज्र का अग्नि (जी ६)। ४ अग्नि (स ३३२)। ५ अस्त्रविशेष (स ३८५)। °प्पह पु [°प्रभ] रावण के मामा का नाम (से १२, ६१)। °मेह पु [°मेघ] १ वह वर्षा जिसमे ओले गिरते हैं। २ अति भयकर वर्षा, प्रलय-मेघ (भग ७, ६)। °वेग पु [°वेग] विद्यावरो का एक राजा (पउम ६, १५७)।

अवमाणणा स्त्री [अवमानना] अवगणना (काल)।

अवमाणि वि [अवमानिन्] अवज्ञा करने वाला (अभि ६६)।

अवमाणिय वि [अपमानित] तिरस्कृत (से १०,६६, सुपा १०८)।

अवमाणिअ वि [अवमानित] १ अवज्ञात, अनाहृत (सुर २, १७६)। २ अपूरित, 'अवमाणियदोहला' (भग ११, ११)।

अवमार पुं [अपस्मार] भयकर रोग-विशेष, पागलपन (आचा)।

अवमारिअ वि [अपस्मारित, °रिक] अपस्मार रोग वाला (आचा)।

अवमारुय पु [अवमारुत] नीचे चलता पवन (गउड)।

अवमिच्चु देखो अवमच्चु (प्राकृ)।

अवमिय वि [दे] जिसको घाव हो गया हो वह, व्रणित (बृह ३)।

अवमुक्क वि [अवमुक्त] परित्यक्त (पि ५६६)।

अवमेह वि [अपमेघ] मेघ-रहित (गउड)।

अवय देखो अपय = अपद (सूअ १, ८, ११)।

अवय न [अब्ज] कमल, पद्म (पएण १)।

अवय वि [अवच] १ नीचा, अनुच्च (उत्त ३)। २ जघन्य, हीन, अश्रेष्ठ (सूअ १, १०)। ३ प्रतिकूल (भग १, ६)।

अवयंस पु [अवतंस] १ शिरोभूषण विशेष (कुमा, गा १७३)। २ कान का आभूषण (पाअ)।

अवयंस सक [अवतंसय्] भूषित करना। अवअसअति (पि १४२, ४६०)।

अवयक्ख सक [अप + ईक्ष्] अपेक्षा करना, राह देखना। अवयक्खइ (णाया १, ६)। वकृ अवयक्खंत, अवयक्खमाण (णाया १, ६, भग १०, २)।

अवयक्ख सक [अव + ईक्ष्] १ देखना। २ पीछे से देखना। वकृ. अवयक्खत (ओघ १८८ भा)।

अवयक्खा स्त्री [अपेक्षा] अपेक्षा (णाया १, ६)।

अवयग्ग न [दे] अन्त, अवसान (भग १, १)।

अवयच्छ सक [अव + गम्] जानना। अवयच्छइ (स ११३)। सकृ. अवयच्छिय (स २१०)।

अवयच्छ सक [दृश्] देखना। अवयच्छइ (हे ४, १८१)। वकृ. अवयच्छत (कुमा)।

अवयच्छिय वि [दृष्ट] देखा हुआ (णाया १, ८)।

अवयच्छिय वि [दे] प्रसारित, 'फु कारपवणपिसुणियमवयच्छियमयगरमहा य' (स ११३)।

अवयज्झ सक [दृश्] देखना। अवयज्झइ (हे ४, १८१)। सकृ. अवयज्झिऊण (कुमा)।

अवयट्ठि स्त्री [अवतष्टि] तनूकरण, पतला करना (आचा)।

अवयट्ठि वि [अवस्थायिन्] अवस्थिति करने वाला, स्थिर रहने वाला (आचा)।

अवयट्ठि स्त्री [अवकृष्टि] आकर्षण (आचा)।

अवयड्ढिअ वि [दे] युद्ध मे पकडा हुआ (दे १, ४६)।

अवयण न [अवचन] कुत्सित वचन, दूषित भाषा (ठा ६)।

अवयर सक [अव + तृ] १ नीचे उतरना। २ जन्म ग्रहण करना। अवयरइ (हे १, १७२)। वकृ अवयरंत, अवयरमाण (पउम ८२, ६३, सुपा १८१)। सकृ अवयरिउं (प्रासू)।

अवयरिअ पु [दे] वियोग, विरह (दे १, ३६)।

अवयरिअ वि [अपकृत] १ जिसका अपकार किया गया हो वह। २ न. अपकार, अहित-करण, 'को हेऊ तुह गमणे तुह अवयरियं मए किं व' (सुपा ४२१)।

अवयरिअ वि [अवतीर्ण] १ जन्मा हुआ। २ नीचे उतरा हुआ (सुर ६, १८६)।

अवयव पुं [अवयव] १ अंश, विभाग। २ अनुमान-प्रयोग का वाक्यांश (दसनि १, हे १, २४५)।

अवयवि वि [अवयविन्] अवयव वाला (ठा १, विसे २३५०)।

अवयाढ देखो ओगाढ (नाट, गउड)।

अवयाण न [दे] खीचने की डोरी, लगाम (दे १, २४)।

अवयाय पुं [अववाय] अपराध, दोष (उप १०३१ टी)।

अवयाय वि [अवदात] निर्मल (सिरि १०२७)।

अवयार पु [अपकार] अहित-करण (स ४३७, कुमा, प्रासू ६)।

अवयार पु [अवतार] १ उतरना। २ देहान्तर-धारण, जन्म-ग्रहण। ३ मनुष्य रूप में देवता का प्रकाशित होना, 'अज्ज! एव तुम देवावयारो विय आगईए' (स ४१६, भवि)। ४ सगति, योजना (विसे १००८)। ५ प्रवेश (विसे १०४३)।

अवयार पु [अवतार] रम्यप्रवेश (पव ८६)।

अवयार पु [दे] माघ-पूर्णिमा का एक उत्सव, जिसमे इख से दतवन आदि किया जाता है (दे १, ३२)।

अवयारण न [अवतारण] उतारना (सिरि १००४)।

अवयारय देखो अवगारय (स ६६०)।

अवयारि वि [अपकारिन्] अपकार करने वाला (स १७६, विवे ७६)।

अवयालिय वि [अवचालित] चलायमान किया हुआ (स ४२)।

अवयास सक [श्लिष्] आलिगन करना। अवयासइ (हे ४, १६०)। कवकृ अवयासिज्जमाण (ओप)। सकृ अवयासिय (णाया १, २)।

अवयास सक [अव + काश्] प्रकट करना। सकृ अवयासेऊण (तदु)।

अवयास देखो अवगास (गउड, कुमा)।

अवयास पुं [श्लेष] आलिगन (ओघ २४४ भा)।

अवयासण न [श्लेषण] आलिंगन (बृह १)।

अवयासाविय वि [श्लेषित] आलिगन कराया हुआ (विपा १, ४)।

अवयासिय वि [श्लिष्ट] आलिगित (कुमा; पाअ)।

अवयासिणी स्त्री [दे] नासा-रज्जु, नाक में डाली जाती डोर (दे १, ४६)।

अवर वि [अपर] अन्य, दूसरा, तद्भिन्न (आ २७, महा)। °हा अ [°था] अन्यथा (पचा ८)।

[°पत्त] (से ३, ४२)। °हर वि [°धर] तलवार-धारक, योद्धा (से ६,१८)। °हारा देखो °धारा (उव)।

असिइ (अप) देखो असीइ (सण)।

असिण न [अशन] भोजन, खाना, 'अग्ग-पिंड परिट्ठविज्जमाणं पेहाए, पुरा असिणा इत्ता अवहारा इवा' (आचा २, १, ५, १)।

असित्थ न [असिक्थ] आटा लगे हुए हाथ या वर्तन का कपडे से छना हुआ धोवन (पडि)।

असिद्ध वि [असिद्ध] १ अनिष्पन्न। २ तर्क-शास्त्र प्रसिद्ध दुष्ट हेतु (विसे २८२४)।

असिय वि [अशित] भुक्त, खादित (पाअ, सुपा २१२)।

असिय वि [असित] १ कृष्ण, श्वेतरहित (पाअ)। २ अशुभ (विसे)। ३ अवद्ध, अ-यन्त्रित (सूअ १, २, १), 'सिया एगे अणु-गच्छति, असिया एगे अणुगच्छति' (आचा)। °क्ख पुं [°क्ष] यक्ष-विशेष (सण)।

असिय न [दे] दात्र, दाँती (दे १, १४)।

असियव्व देखो अस = अश्।

असिलेसा स्त्री [अश्लेषा] नक्षत्र-विशेष (सम ११)।

असिलोग पु [अश्लोक] अकीर्त्ति, अजस (सम १२)।

असिव न [अशिव] १ विनाश। २ असुख। ३ देवतादि कृत उपद्रव (ओघ ७)। ४ मारी रोग (वव ४)।

असिविण पु [अस्वप्न] देव, देवता (प्रामा)।

असिव्व देखो असिव (वव ७, प्राप्र)।

असिसुई स्त्री [अशिश्वी] शिशुरहित स्त्री (प्राकृ २८)।

असिह वि [अशिख] शिखारहित (वव ४)।

असीइ स्त्री [अशीति] संख्या-विशेष, अस्सी, ८० (सम ८८)। °म वि [°तम] अस्सीवाँ, ८० वाँ (पउम ८०, ७४)।

असीइग वि [अशीतिक] अस्सी वर्ष की उम्र वाला (तंदु १७)।

असीम वि [असीमन्] निस्सीम, 'असीमंत-मत्तिराएण' (उप ७२८ टी)।

असील वि [अशील] १ दुःशील, असदा-चारी (पण्ह १, २)। २ न असदाचार, अब्रह्मचर्य। °मंत वि [°वत्] १ अब्रह्मचारी (ओघ ७७७)। २ असयत (सूअ १, ७)।

असु पुं व [असु] १ प्राण (स ३८३)। २ न चित्त। ३ ताप (प्राप्र, वृप ५१)।

असु देखो अंसु (प्राप्र)।

असुइ वि [अशुचि] १ अपवित्र, अस्वच्छ, मलिन (औप, वव ३)। २ न अमेध्य, विष्ठा (ठा ६, प्रासू १६६)।

असुइ वि [अश्रुति] शास्त्रश्रवण-रहित (भग ७, ६)।

असुईकय वि [अशुचीकृत] अपवित्र किया हुआ (उप ७२८ टी)।

असुग पुं [असुक] देखो असु = असु (हे १, १७७)।

असुज्झंत वि [अदृश्यमान] नहीं दिखाता हुआ, 'अन्नपि ज असुज्झंत। भुजतएण रत्ति' (पउम १०३, २५)।

असुणि वि [अश्रोतृ] न सुननेवाला, 'अलि-यपयपिरि अणिमित्तकोवणे असुणि सुणसु मह वयणं' (वज्जा ७२)।

असुद्ध वि [अशुद्ध] १ अस्वच्छ, मलिन। २ न मैला, अशुचि। °विसोहय पु [°विशो-धक] भंगी, मेहतर (सुर १६, १६५)।

असुभ देखो असुह = अशुभ (सम ६७, भग)।

असुय वि [अश्रुत] न सुना हुआ (ठा ४, ४)। °णिस्सिय न [°निश्रित] शास्त्र-श्रवण के विना ही होनेवाली बुद्धि—ज्ञान (णदि)। °पुव्व वि [°पूर्व] पहले कभी नहीं सुना हुआ (महा, णाया १,१, पउम ६५,१४)।

असुय वि [असुत] पुत्ररहित (उत्त २)।

असुर पु [असुर] १ दैत्य, दानव (पाअ)। २ देवजाति-विशेष, भवनपति और व्यन्तर देवों की जाति (पण्ह १, ४)। ३ दास-स्था-नीय देव (आउ ३६)। °कुमार पु [°कुमार] भवनपति देवो की एक अवान्तर जाति (ठा १, १, महा)। °राय पुं [°राज] असुरो का इन्द्र (पि ४००)। °वदि पुं [°वन्दिन्] राक्षस (से ६, ५०)।

असुरिंद पु [असुरेन्द्र] असुरों का राजा, इन्द्र-विशेष (णाया १, ८, सुपा ७७)।

असुह न [अशुभ] १ अमंगल, अनिष्ट (सुर ४, १६३)। २ पाप-कर्म (ठा ४, ४)। ३ वि खराव, असुन्दर (जीव १, कुमा)। °णाम न [°नामन्] अशुभ फल देनेवाला कर्म-विशेष (सम ६७)।

असुह न [असुख] दुःख (ठा ३, ३)।

असूअ सक [असूय्] असूया करना। असू-एहि (मै ७)।

असूया स्त्री [असूचा] १ सूचना का अभाव। २ दूसरे के दोषो को न कह कर अपना ही दोष कहना (निचू १०)।

असूया स्त्री [असूया] असूया, असहिष्णुता (दस)।

असूरिय वि [असूर्य] १ सूर्यरहित, अन्ध-कारमय स्थान। २ पु नरक-स्थान (सूअ १, ५, १)।

असेव्व देखो असिव (प्राप्र)।

असेव्व वि [असेव्य] सेवा के अयोग्य (गउड)।

असेस वि [अशेष] निःशेष, सर्व (प्राप)।

असोअ, असोग पुं [अशोक] १ देव-विशेष (राय ८१)। २ पुंन एक देवविमान (देवेन्द्र १४२)। ३ शक्र आदि इन्द्रो का एक आभाव्य विमान (देवेन्द्र २६३)। °वडिंसय पुंन [°वतंसक] सौधर्म देवलोक का एक विमान (राय ५६)।

असोग पुं [अशोक] १ सुप्रसिद्ध वृक्ष-विशेष (औप)। २ महाग्रह-विशेष (ठा २, ३)। हरा रंग (राय)। ४ भगवान् मल्लिनाथ का चैत्य-वृक्ष (सम १५२)। ५ देव-विशेष (जीव ३)। ६ न. तीर्थ-विशेष (ती १०)। ७ यक्ष-विशेष (विपा १, ३)। ८ वि शोक रहित। °चंद पुं [°चन्द्र] १ राजा श्रेणिक का पुत्र, राजा कोणिक (आवम)। २ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य (सार्ध ७७)। °ललिय पु [°ललित] चतुर्थ वलदेव का पूर्व-जन्मीय नाम (सम १५३)। °वण न [°वन] अशोक वृक्षो वाला वन (भग)। °वणिया स्त्री [°वनिका] अशोक वृक्ष वाला वगीचा (णाया १, १६)। °सिरि पु [°श्री] इस नाम का एक प्रख्यात राजा, सम्राट् अशोक (विसे ८६२)।

अवलंबित्तए (दसा ७)। कृ. अवलंबणिय, अवलंबिअव्व (से १०, २९)।

अवलंब } पुं [अवलम्ब, °क] १ सहारा, अवलंबग } आश्रय (श्रा १६)। २ वि लटकनेवाला (औप, वव ४)। ३ सहारा लेनेवाला (पच ८०)।

अवलंबण न [अवलम्बन] १ लटकना। २ आश्रय, सहारा (ठा ५, २, राय)।

अवलंबणया स्त्री [अवलम्बनता] अवग्रह-ज्ञान (णंदि १७५)।

अवलंबि वि [अवलम्बिन्] अवलम्बन करनेवाला (गउड, विसे २३२९)।

अवलंबिय वि [अवलम्बित] १ लटका हुआ। २ आश्रित (णाया १, १)।

अवलंबिर देखो अवलंबि (गा ३६७)।

अवलक्खण न [अपलक्षण] खराब लक्षण, बुरी आदत (भवि)।

अवलग्ग वि [अवलग्न] १ आरूढ। २ लगा हुआ, संलग्न (महा)।

अवलत्त वि [अपलपित] अपह्नुत, छिपाया हुआ (स २१२)।

अवलद्ध वि [अपलब्ध] अनादर से प्राप्त (ठा ६)।

अवलद्धि स्त्री [अवलब्धि] अप्राप्ति (भग)।

अवलय न [दे] घर, मकान (दे १, २३)।

अवलव सक [अप + लप्] १ असत्य बोलना। २ सत्य को छिपाना। कवकृ. अवलविज्जंत (सुपा १३२)। कृ अवलवणिज्ज (सुपा ३१५)।

अवलाव पु [अपलाप] अपह्नव (निचू १)।

अवलिअ न [दे] असत्य, झूठ (दे १,२२)।

अवलिंब पुं [अवलिम्ब] जीव या पुद्गलो से व्याप्त स्थान-विशेष (ठा २, ४)।

अवलिच्छअ वि [दे] अप्राप्त, अनासादित (से ६, ७८)।

अवलित्त वि [अवलिप्त] व्याप्त (सूअ १, १३, १४)।

अवलित्त वि [अवलिप्त] १ लिप्त। २ गर्वित; 'अलसो सढोवलित्तो, आलंबण-तप्परो अइपमाई। एवं ठिओवि मन्नइ, अप्पाणं सुट्ठिओ मित्ति' (उव)।

अवलुअ देखो अवलुय (आचा २,३,१,६)।

अवलुआ स्त्री [दे] क्रोध, गुस्सा (दे १,३६)।

अवलुत्त वि [अवलुप्त] लोप-प्राप्त (नाट)।

अवलेअ } पुं [अवलेप] १ अहंकार, गर्व। अवलेव } २ लेप, लेपन (पाअ, महा, नाट)। ३ अवज्ञा, अनादर (गउड)।

अवलेह पु [अवलेह] चटनी (वज्जा १०४)।

अवलेहणिया स्त्री [अवलेखनिका] १ वांस का छिलका (ठा ४,२)। २ धूलि आदि झाड़ने का एक उपकरण (निचू १)।

अवलेहि } स्त्री [अवलेखि, °का] १ वास अवलेहिया } का छिलका (कम्म १, २०)। २ लेह्य विशेष (पव ४)। ३ चावल के आटा के साथ पकाया हुआ दूध (पभा ३२)।

अवलोअ सक [अव+लोक्] देखना, अवलोकन करना। वकृ. अवलोअंत, अवलोएमाण (रयण ३६, णाया १, १) सकृ अवलोइऊण (काल)। कृ. अवलोयणीय (सुपा ७०)।

अवलोग } पु [अवलोक] अवलोकन, दर्शन अवलोय } (उप ९८६ टी, सुपा ६, स २७९, गउड)।

अवलोयण न [अवलोकन] १ दर्शन, विलोकन (गउड)। २ स्थान-विशेष, 'तुंग अवलोयणं चेव' (पउम ८०,४)। ३ शिखर-विशेष (ती ४)।

अवलोयणी स्त्री [अवलोकनी] देवी-विशेष (सम्मत्त १६०)।

अवलोव पुं [अपलोप] छिपाना, लोप करना (पण्ह १, २)।

अवलोवणी स्त्री [अपलोपनी] विद्या-विशेष (पउम ७, १३९)।

अवलोह वि [अपलोह] लोहरहित (गउड)।

अवल्लय न [दे अवल्लक] नौका खेवने का उपकरण-विशेष (आचा २, ३, १)।

अवल्लाव } पु [दे. अपलाप] असत्यकथन, अवल्लावय } अपलाप (दे १, ३८)।

अवव न [अवव] संख्या-विशेष, 'अववाङ्ग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४)।

अववंग न [अववाङ्ग] संख्या-विशेष, 'अडड' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४)।

अववक्कल वि [अपवल्कल] त्वचारहित (गउड)।

अववक्का स्त्री [अवपाक्या] तापिका, छोटा तवा (भग ११, ११)।

अववग्ग पुं [अपवर्ग] मोक्ष, मुक्ति (आवम)।

अववट्टण न [अपवर्तन] १ अपसरण। २ कर्मपरमाणुओ की दीर्घ स्थिति को छोटी करना (पच ५)।

अववट्टणा स्त्री [अपवर्तना] ऊपर देखो (पच ५)।

अववत्त वि [अपवृत्त] १ वापस लौटा हुआ। २ अपसृत (दे १, १५२)।

अववरक पुं [अपवरक] कोठरी, छोटा घर (मुद्रा ८१)।

अववह सक [अप+वह्] बाहर फेंकना, दूर हटाना। कर्म. अ उज्झइ (पचा १६, ६)।

अववाइअ वि [आपवादिक] अपवाद-संबंधी (अज्झ १०८)।

अववाइय वि [अपवादिक] अपवादवाला (नाट)।

अववाय पु [अपवाद] १ विशेष नियम, अपवाद (उप ७८१)। २ निन्दा, अवर्ण-वाद (पण्ह २,२)। ३ अनुज्ञा, संमति (निचू १)। ४ निश्चय, निर्णय वाली हकीकत (निचू ५)।

अववास सक [अव+काश्] अवकाश देना, जगह देना। अववासइ (प्राप्र)।

अववाह सक [अव + गाह्] अवगाहन करना। अववाहइ (प्राप्र)।

अवविह पु [अवविध] गोशालक के एक भक्त का नाम (भग ८, ५)।

अववीड पु [अवपीड] निष्पीडन, दवाना (गउड)।

अववीडण न [अवपीडन] ऊपर देखो (गउड)।

अवस वि [अवश] १ अस्वाधीन, पराधीन (सूअ १, ३, १)। २ स्वतन्त्र, स्वाधीन (से १, १)।

अवस वि [अवश] अकाम, अनिच्छु (धर्मसं ७००)।

अवसं अ [अवश्यम्] अवश्य, जरूर, निश्चय (हे ४, ४२७)।

अस्सोत्थ देखो अस्सत्थ (पि ७४, १५२, ३०६)।

अस्सोयव्व वि [अश्रोतव्य] सुनने के अयोग्य (सुर १४, २)।

अह अ [अथ] इन अर्थों का सूचक अव्यय— १ अब, बाद (स्वप्न ४३, द ३१, कुमा)। २ अथवा, और,

'छिज्जउ सीस अह होउ ववरण चयउ सव्वहा लच्छी।
पडिवन्नपालरणे सुपुरिसारण ज होइ त होउ ॥'
(प्रासू ३)।

३ मंगल (कुमा)। ४ प्रश्न। ५ समुच्चय। ६ प्रतिवचन, उत्तर (बृह १)। ७ विशेष (ठा ७)। ८ यथार्थता, वास्तविकता (विसे १२७६)। ९ पूर्वपक्ष (विसे १७८३)। १०-११ वाक्य की शोभा बढाने के लिए और पाद-पूर्त्ति मे भी इसका प्रयोग होता है (सूअ १, ७, पचा १६)।

अह न [अहन्] दिवस, दिन (श्रा १४, पाअ)।

अह अ [अधस्] नीचे (सुर २, ३८)। °लोग पुं [°लोक] पाताल-लोक (सुपा ४०)। °त्थ वि [°स्थ] नीचे रहा हुआ, निम्न-स्थित (पउम १०२, ६५)।

अह स [अदस्] यह, वह (पाअ)।

अह न [दे] दुःख (दे १, ६)।

अह न [अघ] पाप (पाअ)।

अह° देखो अहा (हे १,२४५, कुमा)। °क्कम, °क्कमसो अ [°क्रम] क्रम के अनुसार, अनुक्रम से (ओघ ५ भा, स ६)। °क्खाय, °खाय न [°ख्यात] निर्दोष चारित्र, परिपूर्ण संयम (ठा ५,२, नव २६, कुमा)। °क्खायसजय वि [°ख्यातसयत] परिपूर्ण संयम वाला (भग २५, ७)। °च्छद देखो अहाछद (सं ६)। °त्थ वि [°स्थ] ठीक-ठीक रहा हुआ, यथास्थित (ठा ९, ३)। °त्थ वि [°र्थ] वास्तविक (ठा ५, ३)। °प्पहाण अ [°प्रधान] प्रधान के हिसाब से (भग १५)।

अहइं अ [अथकिम्] स्वीकार-सूचक अव्यय—हां, अच्छा (नाट, प्रयौ ५)।

अहकार पु [अहङ्कार] अभिमान, गर्व (सूअ १, ६, स्वप्न ८२)।

अहकारि वि [अहङ्कारिन्] अभिमानी, गर्विष्ट (गउड)।

अहणिस न [अहर्निश] रात-दिन, सर्वदा (पिंग)।

अहकम्म देखो अहेकम्म (पिंड १३९)।

अहण वि [अधन] निर्धन, धनरहित (विसे २८१२)।

अहण्णिस न [अहर्निश] रात-दिन, निरन्तर (नाट)।

अहत्ता अ [अधस्तात्] नीचे (भग)।

अहन्न वि [अधन्य] अप्रशस्य, हतभाग्य (सुर २, ३७)।

अहन्निस देखो अहण्णिस (सुपा ४६२)।

अहम वि [अधम] अधम, नीच (कुमा)।

अहमति वि [अहमन्तिन्] अभिमानी, गर्विष्ट (ठा १०)।

अहमहमिआ, अहमहमिगया, अहमहमिगा स्त्री [अहमहमिका] मैं इससे पहले हो जाऊ ऐसी चेष्टा, अत्युत्कण्ठा (गा ५८०, सुपा ५४, १३२, १४८)।

अहमिंद पु [अहमिन्द्र] १ उत्तम-श्रेणीय पूर्ण स्वाधीन देवजाति विशेष, ग्रैवेयक और अनुत्तर विमान के निवासी देव (इक)। २ अपने को इन्द्र समझने वाला, गर्विष्ट, 'संपइ पुण रायाणो नरिंद ! सव्वेवि अहमिंदा' (सुर १, १२६)।

अहम्म देखो अधम्म (सूअ १, १, २, भग, नव ६, सुर २,४४, सुपा २५८, प्रासू १३६)।

अहम्म वि [अधर्म्य] धर्मच्यूत, धर्मरहित, गैरव्याजवी (सण)।

अहम्माणि वि [अहम्मानिन्] अभिमानी (श्रावम)।

अहम्मि वि [अधर्मिन्] धर्म रहित, पापी (सुपा १७२)।

अहम्मिट्ठ देखो अधम्मिट्ठ (भग १२, २, (राय)।

अहम्मिय वि [आधार्मिक] अधर्मी, पापी (विपा १, १)।

अहय वि [अहत] १ अनुबद्ध, अव्यवच्छिन्न (ठा ८, पत्र ४१८)। २ अक्षत, अखण्डित (सूअ २, २)। ३ जो दूसरी तरफ लिया गया हो (चद १६)। ४ नया, नूतन (भग ८, ६)।

अहर वि [दे] अशक्त, असमर्थ (दे १, १७)।

अहर पु [अधर] १ होठ, ओष्ठ (गांदि)। २ वि नीचे का, नीचला (पण्ह १, ३)। ३ नीच, अधम (पण्ह १, २)। ४ दूसरा, अन्य (प्रामा)। °गइ स्त्री [°गति] अधोगति, दुर्गति, नीच गति, 'अहरगइं निति कम्माइं' (पिंड)।

अहरिय वि [अधरित] तिरस्कृत (सुपा ४७)।

अहरी स्त्री [अधरी] पेषण-शिला, जिस पर मसाला वगैरह पीसा जाता है वह पत्थर, सिलवट (उवा)। °लोट्ठ पुं [°लोष्ट] जिससे पीसा जाता है वह पत्थर, लोढा (उवा)।

अहरीकय वि [अधरीकृत] तिरस्कृत, अवगणित (सुपा ४)।

अहरीभूय वि [अधरीभूत] तिरस्कृत, 'उयरेण धरतीए, नररयणमिम महप्पहं देवि ! अहरीभूयमसेस, जयंपि तुह रयणगब्भाए' (सुपा ३५)।

अहरुट्ठ पुन [अधरोष्ठ] नीचे का होठ (पण्ह १, ३, हे १, ८४, षड्)।

अहरेम देखो अहिरेम। अहरेमइ (हे ४, १६९)।

अहरेमिअ वि [पूरित] पूरा किया हुआ (कुमा)।

अहल वि [अफल] निष्फल, निरर्थक (प्रासू १३५, रंभा)।

अहलद न [यथालन्द] पाँच रात का समय (पव ७०)।

अहलदि देखो अहालदि (पव ७०)।

अहव देखो अहवा (हे १, ६७)।

अहवइ (अप) देखो अहवा (कुमा)।

अहवण, अहवा अ [अथवा] १ वाक्यालकार में प्रयुक्त किया जाता अव्यय (अणु, सूअ २, २)। २ या, अथवा (बृह १, निचू १, पचा ३, हे १, ६७)।

अहव्व देखो अभव्व (गा ३६०)।

अहव्वण पु [अथर्वन्] चौथा वेद-शास्त्र (औप)।

अहव्वा स्त्री [दे] असती, कुलटा स्त्री (दे १, १८)।

अहह अ [अहह] इन अर्थों का सूचक

अवस्स अ [अवश्यम्] जरूर, निश्चय (पि ३१५)।

अवस्सप्पिणी देखो अवसप्पिणी (संबोध ४८)।

अवस्साअ देखो अवसाय (विक्र)।

अवस्सिय वि [अवाश्रित] आश्रित, अवलग्न (अनु ६)।

अवह सक [रच्] निर्माण करना, बनाना। अवहइ (हे ४, ९४)।

अवह य [उभय] दोनो, युगल (हे २, १३८)।

अवह वि [अवह] न वहता हुआ, जो चालू नहीं है, बद, 'ओसप्पिणीइ अवहो इमाइ जाओ तओ य सिद्धिपहो (धर्मवि १५१)।

अवहइ स्त्री [अपहृति] विनाश (विसे २०-१९)।

अवहट्ट वि [दे] अभिमानी, गर्वित (दे १, २३)।

अवहट्टु देखो अवहर = अप + हृ।

अवहड वि [अपहृत] ले लिया गया, छीना हुआ (सुपा २६६, पण्ह १, ३)।

अवहड वि [अवहृत] ऊपर देखो (प्राकृ)।

अवहड न [दे] मुसल (दे १, ३२)।

अवहण्ण पु [दे] ऊखल, ओखल, उदूखल (दे १, २६)।

अपहत्थ पु [अपहस्त] मारने के लिए या निकाल बाहर करने के लिए ऊंचा किया हुआ हाथ, 'अवहत्थेण हओ कुमरो' (महा)।

अवहत्थ सक [अपहस्तय्] १ हाथ को ऊंचा करना। २ त्याग करना, छोड देना। अवहत्थेइ (महा)। संकृ. अवहत्थिऊण, अवहत्थेऊण (पि ५८६, महा)।

अवहत्थरा स्त्री [दे] लात मारना, पाद-प्रहार (दे १, २२)।

अवहत्थिय वि [अपहस्तित] परित्यक्त, दूर किया हुआ (महा, काप्र ५२४, गा ३५३, सुपा १६३, णादि)।

अवहय वि [अपहत] नष्ट, नाश-प्राप्त (से १४, २८)।

अवहय वि [अघातक] अहिंसक (ओघ ७५०)।

अवहर सक [गम्] जाना। अवहरइ (हे ४, १६२)।

अवहर अक [नश्] भाग जाना, पलायन करना। अवहरइ (हे ४, १७८, कुमा)।

अवहर सक [अप + हृ] १ छीन लेना, अपहरण करना। २ भागाकार करना, भाग देना। अवहरइ (महा) अवहरेज्जा (उत्त)। कवकृ अवहरिज्जंत, अवहीरमाण (सुर ३, १४२, भग २५, ४, णाया १, १८)। संकृ. अवहरिऊण, अवहट्टु (महा, आचा, भग)।

अवहर सक [अप + हृ] परित्याग करना। संकृ अवहट्टु (सूअ १, ४, १, १७)।

अवहर वि [अपहर] अपहारक, छीन लेनेवाला (गा १५६)।

अवहरण न [अपहरण] छीन लेना (कुमा, सुपा २५०)।

अवहरिअ वि [गत] गया हुआ (कुमा)।

अवहरिअ वि [अपहृत] छीन लिया हुआ (सुर ३, १४१, कुम्मा ६)।

अवहस सक [अव, अप + हस्] तुच्छ करना, तिरस्कार करना, उपहास करना। अवहसइ (णाया १, १८)।

अवहसिय वि [अप°, अवहसित] तिरस्कृत, उपहसित (णाया १, ८, सुर १२, ६७)।

अवहाड सक [दे] आक्रोश करना। अवहाडेमि (दे १, ४७ टी)।

अवहाडिअ वि [दे] उत्कृष्ट, जिस पर आक्रोश किया गया हो वह (दे १, ४७)।

अवहाण न [अवधान] १ ख्याल, उपयोग (सुर १०, ७१, कुमा)। २ ज्ञान, जानना (वसे ८२)।

अवहाय पु [दे] विरह, वियोग (दे १, ३६)।

अवहाय अ [अपहाय] छोड कर, त्याग कर (भग १९)।

अवहार सक [अव + धारय्] निर्णय करना, निश्चय करना। कर्म अवहारिज्जइ (स १६६)। हेकृ अवहारेत्तं (मास १६)।

अवहार (अप) देखो अवहर = अप + हृ। अवहारइ (भवि)। संकृ अवहारिवि (भवि)।

अवहार पुं [अपहार] १ अपहरण (पण्ह १, ३, सुपा २७५)। २ दूर करना, परित्याग (णाया १, ६)। ३ चोरी (सुपा ४४६)। ४ बाहर करना, निकालना (निचू ७)। ५ भागाकार (भग २५, ४)। ६ नाश, विनाश (सुर ७, १२५)।

अवहार पु [अवधार] निश्चय, निर्णय। °व वि [वत्] निश्चय वाला (ठा १०)।

अवहार पु [अवधार्य] ध्रुव राशि, गणित-प्रसिद्ध राशिविशेष (सुज १०, ६ टी)।

अवहारण न [अवधारण] निश्चय, निर्णय (से ११, १५, स १६६)।

अवहारय वि [अपहारक] छीननेवाला, अपहरण करनेवाला (सुर ११, १२)।

अवहारि वि [अपहारिन्] अपहारक, छीननेवाला (सुपा ५०३)।

अवहारिय वि [अवधारित] निश्चित (स ५७६, पउम २३, ६, सुपा ३३१)।

अवहाव सक [कृप्] दया करना, कृपा करना। अवहावेइ (षड्, हे ४, १५१)। अवहावसु (कुमा)।

अवहाविअ वि [अवधावित] गमन के लिए प्रेरित (सिरि ४३४)।

अवहास पु [अवभास] प्रकाश, तेज (गउड, प्राप्र)।

अवहासिणी स्त्री [अवहासिनी] नासारज्जु, 'मोत्तव्वे जोत्तअपग्गहम्मि अवहासिणी मुक्का' (गा ६९४)।

अवहासिय वि [अवभासित] प्रकाशित (सुपा १४२)।

अवहि देखो ओहि (सुपा ८६, ५७८, विसे ८२, ७३७)।

अवहिट्ठ वि [दे] दर्पित, अभिमानी, गर्वित (षड्)।

अवहिट्ठ न [दे] मैथुन, संभोग (सूअ १, ६, १०)।

अवहिय वि [अपहृत] छीन लिया हुआ (पउम २०, ६६, सुर ११, ३२, सुपा ४१३)।

अवहिय वि [अपहित] अहित (चंड)।

अवहिय वि [अवधृत] नियमित (विसे २६३३)।

अवहिय न [अवधृत] अवधारण (वव १)।

अवहिय वि [अवहित] सावधान, ख्यालवाला (पाअ, महा, णाया १, २, पउम १०, ६५,

अहिक्खेव पु [अधिक्षेप] १ तिरस्कार। २ स्थापन। ३ प्रेरणा (नाट)।

अहिखिव देखो अहिक्खिव वकृ अहिखिवत (स ५७)।

अहिग देखो अहिय = अधिक (विसे १६४३ टी)।

अहिखीर सक [दे] १ पकडना। २ आघात करना। अहिखीरइ (भवि)।

अहिगंध वि [अधिगन्ध] अधिक गन्ध वाला (गउड)।

अहिगम सक [अधि + गम्] १ जानना। २ निर्णय करना। ३ प्राप्त करना। कृ. अहिगम्म (सम्म १६७)।

अहिगम सक [अभि + गम्] १ सामने जाना २ आदर करना। कृ अहिगम्म (सण)।

अहिगम पुं [अधिगम] १ ज्ञान (विसे ६०८)।

'जीवाईणमहिगमो मिच्छत्तस्स खओवसमभावे' (धर्म २)। २ उपलम्भ, प्राप्ति (दे ७, १४)। ३ गुरु आदि का उपदेश (विसे २६७५)। ४ सेवा, भक्ति (सम ५१)। ५ न. गुरु आदि के उपदेश से होनेवाली सद्धर्म-प्राप्ति—सम्यक्त्व (सुपा ६४८)। °रुइ स्त्री [°रुचि] १ सम्यक्त्व का एक भेद। २ सम्यक्त्व वाला (पव १४५)।

अहिगम देखो अभिगम (औप, से ८, ३३, गउड)।

अहिगमण न [अधिगमन] १ ज्ञान। २ निर्णय। ३ प्राप्ति, उपलम्भ (विसे)।

अहिगमय वि [अधिगमक] जनानेवाला, बतलानेवाला (विसे ५०३)।

अहिगमिय वि [अधिगत] १ ज्ञात। २ निश्चित (सुर १, १८१)।

अहिगम्म देखो अहिगम = अधि + गम्।

अहिगम्म देखो अहिगम = अभि + गम्।

अहिगय वि [अधिकृत] १ प्रस्तुत (रयण ३६)। २ न. प्रस्ताव, प्रसग (राज)।

अहिगय वि [अधिगत] १ उपलब्ध, प्राप्त (उत्त १०)। २ ज्ञात (दे ६, १४८)। ३ पु. गीतार्थ मुनि, शास्त्राभिज्ञ साधु (वव १)।

अहिगर पुं [दे] अजगर (जीव १)।

अहिगरण पुन [अधिकरण] १ युद्ध, लडाई (उप पृ २६८)। २ असयम, पाप-कर्म से अनिवृत्ति (उप ८७२)। ३ आत्म-भिन्न बाह्य वस्तु (ठा २, १)। ४ पाप जनक क्रिया (णाया १, ५)। ५ आधार (विसे ८४)। ६ भेंट, उपहार (बृह १)। ७ कलह, विवाद (बृह १)। ८ हिंसा का उपकरण, 'मोहघेण य रइय हलउक्खलमुसलपमुहमहिगरण' (विवे ६१)। °कड, °कर वि [°कर] कलहकारक (सूअ १, २, २, आचा)। °किरिया स्त्री [°क्रिया] पाप-जनक कृति, दुर्गति मे ले जानेवाली क्रिया (पण्ह १, २)। °सिद्धत पुं [°सिद्धान्त] आनुषगिक सिद्धि करनेवाला सिद्धान्त (सूअ १, १२)।

अहिगरणी स्त्री [अधिकरणी] लोहार का एक उपकरण (भग १६, १)। °खोडि स्त्री [°खोटि] जिसपर अधिकरणी रखी जाती है वह काष्ठ (भग १६, १)।

अहिगरणिया } स्त्री [आधिकरणिकी] देखो
अहिगरणीया } अहिगरण-किरिया (सम १०, ठा २, १, नव १७)।

अहिगरी [दे] अजगरिन, स्त्री अजगर (जीव २)।

अहिगार पुं [अधिकार] १ वैभव, सपत्ति, 'नियअहिगारणुरूव जम्मणमहिम विहिस्सामो' (सुपा ४१)। २ हक, सत्ता (सुपा ३५०)। ३ प्रस्ताव, प्रसग (विसे ४८७)। ४ ग्रन्थ-विभाग (वसु)। ५ योग्यता, पात्रता (प्रासू १३५)।

अहिगारि } वि [अधिकारिन्] १ अमल-
अहिगारिय } दार, राज-नियुक्त सत्ताधीश, 'ता तप्पुराहिगारी समागओ तत्थ तम्मि खणे' (सुपा ३५०, श्रा २७)। २ पात्र, योग्य (प्रासू १३५, सण)।

अहिगिच्च अ [अधिकृत्य] अधिकार करके (उवर ३६, ६६)।

अहिघाय पु [अभिघात] आस्फालन, आघात (गउड)।

अहिछत्ता स्त्री [अहिच्छत्रा] नगरी-विशेष, कुरुजगल देश की प्राचीन राजधानी (सिरि ७८)।

अहिजाइ स्त्री [अभिजाति] कुलीनता (प्राप्र)।

अहिजाण सक [अभि + ज्ञा] पहिचानना। भवि. अहिजाणिस्सदि (शौ) (पि ५३४)।

अहिजाय वि [अभिघात] कुलीन (भग ६, ३३)।

अहिजुंज देखो अभिजुञ्ज। संकृ. अहिजुंजिय (भग)।

अहिजुत्त देखो अभिजुत्त (प्रवो ८४)।

अहिज्ज सक [अधि + इ] पढ़ना, अभ्यास करना। अहिज्जइ (अंत २)। वकृ अहिज्जंत, अहिज्जमाण (उप १६६ टी, उवा)। संकृ अहिज्जित्ता, अहिच्चा (उत्त १, सूअ १,१२) हेकृ अहिज्जिउं (दस ४)।

अहिज्ज वि [अधिज्य] धनुष की डोरी पर चढाया हुआ (वाण) (दे ७, ६२)।

अहिज्ज } वि [अभिज्ञ] जानकार, निपुण
अहिज्जग } (पि २६६, प्राकृ, दस)।

अहिज्जण न [अध्ययन] पठन, अभ्यास (विसे ७ टी)।

अहिज्जाण (शौ) देखो अहिण्णाण (प्राकृ ८७)।

अहिज्जाविय वि [अध्यापित] पाठित, पढाया हुआ (उप पृ ३३)।

अहिज्जिय वि [अधीत] पठित, अभ्यस्त (सुर ८, १२१, उप ५३० टी)।

अहिज्झिय वि [अभिध्यित] लोभ-रहित, अलुब्ध (भग ६,३)।

अहिट्ठ सक [अधि + ष्ठा] करना। अहिट्ठए (दस ६, ४, २)।

अहिट्ठग वि [अधिष्ठक] अधिष्ठाता, विधायक, कारक,

'नासदीपलिअकेसु, न निसिज्जा न पीढए।
निग्गथापडिलेहाए, बुद्धवुत्तमहिट्ठगा'
(दस ६, ५५)।

अहिट्ठण देखो अहिट्ठाण (पंचा ७, ३३)।

अहिट्ठा सक [अधि + स्था] १ ऊपर चलना। २ आश्रय लेना। ३ रहना, निवास करना। ४ शासन करना। ५ करना। ६ हराना। ७ आक्रमण करना। ८ ऊपर चढ बैठना। ६ वश करना। अहिट्ठेइ (निचू ५), 'ता अहिट्ठेहि इमं रज्जं' (स २०४)। अहिट्ठेज्जा (पि २५२, ४६६)। वकृ. अहिट्ठत (निचू ५)। कवकृ. अहिट्ठिज्जमाण (ठा ४, १)। संकृ. अहिट्ठेइत्ता (निचू १२)। हेकृ. अहिट्ठित्तए (बृह ३)।

अविक्खण न [अवेक्षण] अवलोकन, निरीक्षण (भवि)।

अविक्खण न [अपेक्षण] अपेक्षा, परवाह (विसे १७१६)।

अविक्खा देखो अवेक्खा (कुमा)।

अविक्खिय वि [अपेक्षित] १ अपेक्षित। २ न अपेक्षा, परवाह, 'नाविक्खियं सभाए' (श्रा १४)।

अविक्खिय वि [अवेक्षित] अवलोकित (सुपा ७२)।

अविगइअ वि [अविकृतिक] घृत आदि विकार-जनक वस्तुओं का त्यागी (सूअ २, २)।

अविगडिय वि [अविकटित] अनालोचित (वव १)।

अविगप्प देखो अवियप्प (सुर ४, १८६)।

अविगप्पग वि [अविकल्पक] १ विकल्प-रहित। २ न कल्पना-रहित प्रत्यक्ष ज्ञान (धर्मसं ७४०)।

अविगल वि [अविकल] अखण्ड, पूर्ण (उप २८३)।

अविगिच्छ वि [अविचिकित्स्य] जिसका इलाज न हो सके ऐसा, असाध्य व्याधि;
'तालपुड गरलाणं, जह बहुवाहीण खित्तिओ वाही।
दोसाणमसेसाणं, तह अविगिच्छो मुसादोसो' (श्रा १२)।

अविगीय पु [अविगीत] अगीतार्थ, शास्त्रों के रहस्य का अनभिज्ञ साधु (वव ३)।

अविग्गह वि [अविग्रह] १ शरीर-रहित। २ युद्ध-रहित, कलह-वर्जित (सुपा २३४)। ३ सरल, सीधा (भग)। °गइ स्त्री [°गति] अकुटिल गति (भग १४, ५)।

अविच्छ वि [अवीप्स्य] वीप्सारहित, व्याप्ति रहित (षड्)।

अविजाणय वि [अविज्ञायक] अनजान, मूर्ख (सूअ १, ५, १)।

अविज्ज वि [अबीज] बीजशक्ति से रहित (पउम ११, २५)।

अविणय पु [अविनय] विनय का अभाव (ठा ३, ३)।

अविणयवइ } पुं [दे] जार, उपपति (दे १, अविणयवर } १८)।

अविणयवई स्त्री [दे] असती, कुलटा (दे १, १८)।

अविणिद्द वि [अविनिद्र] निद्रा-विच्छेदरहित (गा ६६)।

अविण्णा स्त्री [अविज्ञा] अनुपयोग, ख्याल का अभाव (सूअ १, १, १)।

अवितह वि [अवितथ] सत्य, सच्चा (महा, उत्त)।

अविद } अ [अविद, °दा] विषाद-सूचक अविदा } अव्यय (पि २२, स्वप्न ५८)।

अविधि पुस्त्री [अविधि] १ विरुद्ध विधि। २ विधि का अभाव (बृह ३, आचू १)।

अविन्नाण वि [अविज्ञान] १ अजान। २ अज्ञात, अपरिचित (पउम ५, २१६)।

अवियड्ढ वि [अविदग्ध] अनिपुण (सुपा ५८२)।

अवियत्त न [अप्रीतिक] १ प्रीति का अभाव (ठा १०)। २ वि अप्रीतिकारक (पण्ह १, १)।

अवियत्त वि [अव्यक्त] अस्फुट, अस्पष्ट, 'अवियत्त दंसण अणागार' (सम्म ६५)।

अवियप्प वि [अविकल्प] १ भेदरहित, 'वजणपज्जायस्स उ पुरिसो पुरिसो त्ति निच्चमवियप्पो' (सम्म ३५)। २ क्रिवि निःसंशय, संशयरहित, 'सविअप्पनिव्विअप्पं इय पुरिसं जो भणिज्ज अवियप्प' (सम्म ३५)।

अवियाउरी स्त्री [दे. अविजनयित्री] वन्ध्या स्त्री (णाया १, २)।

अवियाणय देखो अविजाणय (आचा)।

अविरइ स्त्री [अविरति] १ विराम का अभाव, अनिवृत्ति। २ पाप कर्म से अनिवृत्ति (सम १०, पण्ह २,५)। ३ हिंसा (कम्म ४)। ४ अब्रह्म, मैथुन (ठा ६)। ५ विरति-परिणाम का अभाव (सूअ २,२)। ६ वि. विरतिरहित (नाट)। °वाय पु [°वाद] १ अविरति की चर्चा। २ मैथुन-चर्चा (ठा ६)।

अविरइय वि [अविरतिक] विरति से रहित, पापनिवृत्ति से वर्जित, पाप कर्म मे प्रवृत्त (भग, कस)।

अविरत्त वि [अविरक्त] वैराग्यरहित (णाया १, १४)।

अविरय वि [अविरत] १ विरामरहित, अविच्छिन्न (गा १५५)। २ पाप निवृत्ति से रहित (ठा २, १)। ३ चतुर्थ गुणस्थानक वाला जीव (कम्म ४,६३)। ४ क्रिवि सदा, हमेशा (पाअ)। °सम्मद्दिट्ठि स्त्री [°सम्यग्दृष्टि] चतुर्थ गुणस्थानक (कम्म २,२)।

अविरल वि [अविरल] निविड, घन (णाया १, १)।

अविरहि वि [अविरहिन्] विरहरहित (कुमा)।

अविराम वि [अविराम] १ विरामरहित। २ क्रिवि निरन्तर, हमेशा (पाअ)।

अविराय वि [अविलीन] अभ्रष्ट (कुमा)।

अविराहिय वि [अविराधित] अखण्डित, आराधित (भग १५)।

अविरिय वि [अवीर्य] वीर्यरहित (भग)।

अविल पु [दे] १ पशु। २ वि कठिन (दे १, ५२)।

अविलंबिय वि [अविलम्बित] विलम्व-रहित, शीघ्र (कप्प)।

अविला स्त्री [अविला] भेपी, भेडी (पाअ)।

अविवेग पु [अविवेक] १ विवेक का अभाव। २ वि विवेकरहित। °वंत वि [°वत्] अविवेकी (पउम ११३, ३९)।

अविसंधि वि [अविसंधि] पूर्वापर विरोध से रहित, संगत, सबद्ध (औप)।

अविसंवाइ वि [अविसंवादिन्] विसंवाद-रहित, प्रमाण भूत, सत्य (कुमा, सुर ६, १७८)।

अविसम वि [अविषम] सदृश, तुल्य (कुमा)।

अविसाइ वि [अविषादिन्] विषादरहित (पण्ह २, १)।

अविसेस वि [अविशेष] तुल्य, समान (ठा २,३, उप ८७७)।

अविसेसिय वि [अविशेषित] (ठा १०)।

अविस्स न [अविश्र] मांस और रुधिर (पव ४०)।

अविस्साम वि [अविश्राम] १ विश्रामरहित (पण्ह १,१)। २ क्रिवि. निरन्तर, सदा (उप ७२८ टी)।

अहिया स्त्री [अधिका] भगवान् श्रीनेमिनाथ की प्रथम शिष्या (सम १५२)।
अहियाइ देखो अहिजाइ (पड्)।
अहियाय देखो अहिजाय (पाअ)।
अहियार पुं [अभिचार] शत्रु के वध के लिए किया जाता मन्त्रादि-प्रयोग (गउड)।
अहियार देखो अहिगार (स ५४३, पाअ, मुद्रा २६६, भट्टि ७ टी, भवि, दे ७, ३२)।
अहियारि देखो अहिगारि (दे ६, १०८)।
अहियास सक [अधि+आस्, अधि+सह्] सहन करना, कष्टों को शान्ति से झेलना। अहियासइ, अहियासए, अहियासेइ (उव, महा)। कर्म अहियासिज्जति (भग)। वकृ अहियासेमाण (आचा)। संकृ अहियासित्ता, अहियासेत्तु (सूअ १, ३, ४, आचा) हेकृ अहियासित्तए (आचा)। कृ अहियासियव्व (उप ५४३)।
अहियास वि [अध्यास, अधिसह] सहिष्णु (बृह १)।
अहियासण न [अध्यासन अधिसहन] सहन करना (उप ५३६, स १६२)।
अहियासण न [अधिकाशन] अधिक भोजन, अजीर्ण (ठा ६)।
अहियासिय वि [अध्यासित, अधिषोढ] सहन किया हुआ (आचा)।
अहिर पु [आभीर] अहीर, गोवाला (गा ८११)।
अहिरम देखो अभिरम। वकृ अहिरमंत (सुपा १५४)।
अहिरम अक [अभि+रम्] क्रीडा करना, संभोग करना। अहिरमदि (शौ) (नाट)। हेकृ अभिरमिदुं (शौ) (नाट)।
अहिरम्म वि [अभिरम्य] सुन्दर, मनोहर (भवि)।
अहिराम वि [अभिराम] सुन्दर, मनोहर (पाअ)।
अहिरामिण वि [अभिरामिन्] आनन्द देने वाला (सण)।
अहिराय पु [अधिराज] १ राजा (बृह ३)। २ स्वामी, पति (सण)।
अहिराय न [अधिराज्य] राज्य, प्रभुत्व (भट्टि ७)।
अहिरिअ देखो अहिरीअ (पिंड ६३१)।
अहिरीअ वि [अह्रीक] निर्लज्ज, बेशरम (हे २, १०४)।
अहिरीअ वि [दे] निस्तेज, फीका (दे १, २७)।
अहिरीमाण वि [दे अह्रारिन्, अह्रीमनस्] १ अमनोहर, मन को प्रतिकूल। २ अलज्जा-कारक, 'एगयरे अन्नयरे अभिन्नाय तितिक्ख-माणे परिव्वए जे य हिरी, जे य अहिरीमाणा' (आचा १, ६, २)।
अहिरूव वि [अभिरूप] १ सुन्दर, मनोहर (अभि २११)। २ अनुरूप, योग्य (विक्र ३८)।
अहिरेम सक [पूर्] पूरा करना, पूर्त्ति करना। अहिरेमइ (हे ४, १६६)।
अहिरोइअ वि [दे] पूर्ण (पड्)।
अहिरोहण न [अधिरोहण] ऊपर चढना, आरोहण (मा ४०)।
अहिरोहि वि [अधिरोहिन्] ऊपर चढने वाला (अभि १७०)।
अहिरोहिणी स्त्री [अधिरोहिणी] नि श्रेणी, सीढी (दे ८, २६)।
अहिल वि [अखिल] सकल, सब (गउड, रंभा)।
अहिलंख, अहिलंघ, अहिलक्ख सक [काङ्क्ष्] चाहना, अभिलाष करना। अहिलखइ, अहिलघइ (हे ४, १९२), 'अहिल-क्खति मुअंति अ रुवावार विलासिणीहिअ-आइ' (से १०, ५७)।
अहिलक्ख वि [अभिलक्ष्य] अनुमान से जानने योग्य (गउड)।
अहिलव सक [अभि+लप्] समापण करना, कहना। कवकृ अहिलप्पमाण (स ८४)।
अहिलस सक [अभि+लष्] अभिलाप करना, चाहना। अहिलसइ (महा)। वकृ अहिलसंत (नाट)।
अहिलसिय वि [अभिलषित] वाञ्छित (सुर ४, २४८)।
अहिलसिर वि [अभिलाषिन्] अभिलाषी, इच्छुक (दे ६, ५८)।
अहिलाण न [अभिलान] मुख का बन्धन विशेष (णाया १, १७)।
अहिलाव पु [अभिलाप] शब्द, आवाज (ठा २, ३)।
अहिलास पुं [अभिलाष] इच्छा, वाञ्छा, चाह (गउड)।
अहिलासि वि [अभिलाषिन्] चाहनेवाला (नाट)।
अहिलिअ न [दे] १ पराभव। २ क्रोध, गुस्सा (दे १, ०७)।
अहिलिह सक [अभि+लिख्] १ चिन्ता करना। २ लिखना। अहिलिहति (मुद्रा १०८)। संकृ अहिलिहिअ (वेणी २५)।
अहिलोयण न [अभिलोकन] ऊँचा स्थान (पण्ह २, ४)।
अहिलोल वि [अभिलोल] चपल, चञ्चल (गउड)।
अहिलोहिआ स्त्री [अभिलोभिका] लोलुपता, तृष्णा (से ३,४७)।
अहिल्ल वि [दे] धनवान्, धनी (दे १, १०)।
अहिल्लिया स्त्री [अहिल्या] एक सती स्त्री (पण्ह १, ४)।
अहिव [अधिप] १ ऊपरी, मुखिया (उप ७२८ टी)। २ मालिक, स्वामी (गउड)। ३ राजा, नृप, 'दुट्ठाहिवा दंडपरा हवंति' (गोय ८)।
अहिवइ वि [अधिपति] ऊपर देखो (णाया १, ८, गउड, सुर ६, ६२)।
अहिवज्जु देखो अहिमज्जु (पड्)।
अहिवंदिय वि [अभिवन्दित] नमस्कृत (स ६४१)।
अहिवञ्जु देखो अहिमज्जु (पड्)।
अहिवड अक [अधि+पत्] क्षीण होना। वकृ 'एव निस्सारे माणुसत्तणे जीविए अहि-वडंते' (तंदु ३३)।
अहिवड सक [अधि+पत्] आना। वकृ अहिवडंत (राज)।
अहिवड्ढ देखो अभिवड्ढ अहिवड्ढामो (कप्प)।
अहिवड्ढि, अहिवद्धि स्त्री [अभिवृद्धि] उत्तर प्रोष्ठ-पदा नक्षत्र का अधिष्ठाता देवता (सुज्ज १०, १२, जं ७—पत्र ४९८)।
अहिवड्ढिय वि [अभिवर्धित] बढाया हुआ (स २४७)।

अव्वागड वि [अव्याकृत] अव्यक्त, अस्फुट (आचा, सत्त ६ टी)।

अव्वाण वि [आव्यान] थोडा स्निग्ध (ओघ ४८८)।

अव्वाबाह वि [अव्याबाध] १ हरज-रहित, बाधा-वर्जित (आव ३)। २ न रोग का अभाव (भग १८, १०)। ३ सुख (आवम)। ४ मोक्ष-स्थान, मुक्ति (भग १, १)। ५ पुं. लोकान्तिक देव-विशेष (णाया १, ८)।

अव्वाबाह पुन [अव्याबाध] एक देवविमान (देवेन्द्र १४५)।

अव्वावड वि [अव्यापृत] १ जो व्यवहार मे न लाया गया हो, व्यापार-रहित। २ एक प्रकार का वास्तु (बृह ३)।

अव्वावन्न वि [अव्यापन्न] अविनष्ट, नाश को अप्राप्त (भग १, ७)।

अव्वावार वि [अव्यापार] व्यापार-वर्जित (स ५०)।

अव्वाहय वि [अव्याहत] १ रुकावट-वर्जित (ठा ४,४, सुपा ८६)। २ अनुपहत, आघात-रहित (णदि)। °पुव्वावरत्त न [°पूर्वापरत्व] जिसमे पूर्वापर का विरोध या असगति न हो ऐसा (वचन) (राय)।

अव्वाहार पु [अव्याहार] न बोलना, मौन (पाअ)।

अव्वाहिय वि [अव्याहृत] न बुलाया हुआ (जीव ३, आचा)।

अव्विरय वि [अविरत] विरति-रहित (सट्टि ८)।

अव्वो अ नीचे के अर्थो में से, प्रकरण के अनुसार, किसी एक अर्थ का सूचक अव्यय—१ सूचना। २ दु ख। ३ संभाषण। ४ अपराध। ५ विस्मय। ६ आनन्द। ७ आदर। ८ भय। ९ खेद। १० विषाद। ११ पश्चात्ताप,
'अव्वो हरति हियय,
तहवि न वेसा हवति जुवईण।
अव्वो किंपि रहस्स, मुणति धुत्ता जणब्भहिआ॥
अव्वो सुपहायमिण,
अव्वो अज्जम्ह सप्फल जीअं।
अव्वो अइअम्मि तुमे, नवरं जइ सा न
जूरिहिइ॥' (हे २, २०४)।

अव्वोगड वि [अव्याकृत] १ अविशेषित (बृह २)। २ फैलाव-रहित (दसा ३)। ३ नही बाटा हुआ। ४ अस्फुट, अस्पष्ट। ५ न एक प्रकार का वास्तु (बृह ३)।

अव्वोच्छिण्ण वि [अव्युच्छिन्न, अव्यवच्छिन्न] १ आन्तर-रहित, सतत, विच्छेद-वर्जित (वव ७)। २ नित्य। ३ अव्याहत (गउड)।

अव्वोच्छित्ति स्त्री [अव्युच्छित्ति, अव्यवच्छित्ति] १ सातत्य, प्रवाह, बीच मे विच्छेद का अभाव, परपरा से बराबर चला आना (आवम)। °नय पुं [°नय] वस्तु को किसी न किसी रूप से स्थायी माननेवाला पक्ष, द्रव्यार्थिक नय (भग ७, ३)।

अव्वोच्छिन्न देखो अव्वोच्छिण्ण (ओघ ३२२, स २५६)।

अव्वोयड देखो अव्वोगड (भग १०,४, भास ७१)।

अस सक [अश्] व्याप्त करना। असइ, असए (षड्)।

अस अक [अस्] होना। अस्सि, 'हाहा हओहमस्सि त्ति कट्टु' (भग १५)। असि (प्राप)। अत्थि (हे ३, १४६, १४७, १४८)। भूका आसि, आसी (भग, उवा)।

अस सक [अश्] भोजन करना, खाना। असइ, 'भव्वमणोसालूर नामइ दोसोवि जत्थाही' (सार्ध १०६, भवि)। वकृ असंत (भवि)। कृ असियव्व (सुपा ४३८)।

अस वकृ [असत्] अविद्यमान, असत्, 'दुहओ ण विणस्सति, नो य उप्पज्जए अस' (सूअ १, १, १, १६)।

असइ स्त्री [असृति] १ उलटा रखा हुआ हस्त तल। २ धान्य मापने का एक परिमाण। ३ उससे मापा हुआ धान्य (अणु, णाया १,७)।

असइ स्त्री [दे असत्त्व] अभाव, अविद्यमानता, 'पढम जईण दाऊण,
अप्पणा पणमिऊण पारेइ।
असईय सुविहियाण, भुजेइ य कयदिसालोओ' (उवा)।

असइ, असइं, असई अ [असकृत्] अनेक वार, वार-वार (भवि, आचा, उप ८३३ टी)।

असई स्त्री [असती] १ कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री (सुपा ६)। २ दासी (भग ८,६)। °पोस पु पोष] धन के लिए दासी, नपुंसक या पशुओ का पालन, 'असईपोस च वज्जिज्जा' (श्रा २२)। °पोसणया स्त्री [°पोषणा] देखो अनन्तरोक्त अर्थ (पडि)।

असउण पुंन [अशकुन] अपशकुन (पचा ७)।

असंक वि [अशङ्क] १ शङ्का-रहित, असंदिग्ध। २ निडर, निर्भय (आचा, सुर २, २६)।

असंकल वि [अशृङ्खल] शृङ्खला-रहित, अनियन्त्रित (कुमा)।

असंकि वि [अशङ्किन्] संदेह न करने वाला (सूअ १, १, २)।

असंकिलिट्ठ वि [असंक्लिष्ट] १ संक्लेश-रहित। २ विशुद्ध, निर्दोष (औप, पणह २,१)।

असंख वि [असंख्य] संख्या-रहित, परिमाण-रहित (सुपा ५६६, जी २७, ४०)।

असंख न [असंख्य] सांख्य मत से भिन्न दर्शन (सुपा ५६६)।

असंखड स्त्रीन [दे] कलह, झगडा, 'जत्थ य समणीणमसंखडाइ गच्छम्मि नेव जायति' (गच्छ ३, ११)। स्त्री °डी (पव १०६)।

असंखड न [दे] कलह, झगडा (निचू १)।

असंखडिय वि [दे] कलह करने वाला, झगडाखोर (बृह १)।

असंखय देखो असंख = असंख्य (स ८५)।

असंखय वि [असंस्कृत] १ संस्कार-हीन। २ सधान करने के अशक्य (राज)।

असंखिज्ज वि [असंख्येय] गिनती या परिमाण करने के अशक्य (नव ३५)।

असंखिज्जय देखो असंखेज्जय (अणु)।

असंखेज्ज देखो असंखिज्ज (भग)।

असंखेज्जइ° वि [असंख्येय] असंख्यातवा। °भाग पुं [°भाग] असंख्यातवा हिस्सा (औप; भग)।

असंखेज्जय पुन [असंख्येयक] गणना-विशेष (अणु)।

असंग वि [असङ्ग] १ निस्सङ्ग, अनासक्त (पणण २)। २ पुं आत्मा (आचा)। ३ मुक्त जीव। ४ न. मोक्ष, मुक्ति (पचव ३, औप)।

असंगय न [दे] वस्त्र, कपडा (दे १,३४)।

अहुल्ल वि [अफुल्ल] अविकसित (कुमा)।
अहुवंत वकृ [अभवत्] न होता हुआ (कुमा)।
अहूण देखो अहीण = अहीन (कुमा)।
अहूव वि [अभूत] जो न हुआ हो °पुव्व वि [°पूर्व] जो पहले कभी न हुआ हो (कुमा)।
अहे अ [अधस्] नीचे (आचा)। °कम्म न [कर्मन्] आधाकर्म, भिक्षा का एक दोष (पिंड)। °काय पुं [°काय] शरीर का नीचला हिस्सा (सूअ १, ४, १)। °चर वि [°चर] बिल आदि में रहने वाले सर्प वगैरह जन्तु (आचा)। °तारग पु [°तारक] पिशाच-विशेष (पराण १)। °दिमा स्त्री [°दिक्] नीचे की दिशा (आचा)। °लोग पु [°लोक] पाताल-लोक (ठा २, २)। °वाय पु [°वात] नीचे बहनेवाला वायु (पराण १)। २ अपान-वायु, पर्दन (आवम)। °विग्रड वि [°विकट] भित्त्यादिरहित स्थान, खुला स्थान, 'तंसि भगवं अपडिन्ने अहेवियडे अहियासए दविए' (आचा)। °सत्तमा स्त्री [°सप्तमी] सातवी या अन्तिम नरकभूमि (सम ४१, णाया १, १६, १९)। देखो अहो = अधस्।
अहे देखो अह = अथ (भग १, ६)।
अहेउ पु [अहेतु] १ सत्य हेतु का विरोधी, हेत्वाभास (ठा ५, १)। २ वि कारणरहित, नित्य (सूअ १, १, १)। °वाय पु [°वाद] आगमवाद, जिसमें तर्क—हेतु को छोडकर केवल शास्त्र ही प्रमाण माना जाता हो ऐसा वाद (सम्म १४०)।
अहेउय वि [अहेतुक] हेतुवर्जित, निष्कारण (पउम ६३, ४)।
अहेकम्म पुन [अध कर्मन्] १ अधोगति में ले जाने वाला कर्म। २ भिक्षा का आधाकर्म दोष (पिंड ६९)।
अहेसणिज्ज वि [यथैषणीय] संस्काररहित, कोरा, 'अहेसणिज्जाइं वत्थाइं जाएजा' (आचा)।
अहेसर पु [अहरीश्वर] सूर्य, सूरज (महा)।
अहो देखो अह = अधस् (सम ३६, ठा २, २, ३, १, भग, णाया १, १, पउम १०२, ८१, आव ३)।
°करण न [°करण] कलह, झगडा (निचू १०)। °गइ स्त्री [°गति] १ नरक या तिर्यञ्च-योनि। २ अवनति (पउम ८०, ४६)। °गामि वि [°गामिन्] दुर्गति में जानेवाला (सम १५३, श्रा ३३)। °तरण न [°तरण] कलह, झगडा (निचू १०)। °मुह वि [°मुख] अधोमुख, अवनत मुख, लज्जित (सुर २, १५८, ३, १३५, सुपा २४२)। °लोइय वि [°लौकिक] पाताल लोक से सबन्ध रखने-वाला (सम १४२)। °हि वि [°अवधि] १ नीचे दर्जा का अवधिज्ञान वाला (राय)। २ पुस्त्री नीचे दर्जा का अवधिज्ञान, अवधिज्ञान का एक भेद (ठा २, २)।
अहो अ [अहनि] दिवस में, 'अहो य राओ य सिवाभिलासिणो' (पउम ३१, १२८, पण्ह २, १)।
अहो अ [अहो] इन अर्थों का सूचक अव्यय — १ विस्मय, आश्चर्य। २ खेद, शोक। ३ आमन्त्रण, सबोधन। ४ वितर्क। ५ प्रशंसा। ६ असूया, द्वेष (हे २, २१७, आचा, गउड)। °दाण न [°दान] आश्चर्य-कारक दान (उत्त २, कप्प)। °पुरिसिगा, °पुरिसिया स्त्री [°पुरुषिका] गर्व, अभिमान (स १२३, २८८)। °विहार पुं [°विहार] सयम का आश्चर्यजनक अनुष्ठान (आचा)।
अहो अ [अहो] दीनता-सूचक अव्यय (अणु १९)।
अहो° पुंन [अहन्] दिन, दिवस (पिंग)। °णिस, निस, निसि न [°निश] रात और दिन, दिन-रात, 'णिरए णेरइयाण अहोणिसं पच्चमाणाणं' (सूअ १, ५, १, श्रा ५०), 'अंतो अहोनिसिस्स उ' (विसे ८७३)। °रत्त पु [°रात्र] १ दिन और रात्रि परिमित काल, आठ प्रहर (ठा २, ४), 'तिण्णि अहोरत्ता पुण न खामिया कयतेण' (पउम ४३, ३१)। २ चार प्रहर का समय (जो २)। °राइया स्त्री [°रात्रिकी] ध्यानप्रधान अनुष्ठान विशेष (पचा १८, आव ४, सम २१)। °राइदिय न [°रात्रिन्दिव] दिनरात (भग, औप)।
अहोरण न [दे] उत्तरीय वस्त्र, चादर (दे १, २५, गा ७७१)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे अयाराइसद्दसकलणो
णाम पढमो तरंगो समत्तो।

आ

आ पुं [आ] १ प्राकृत वर्णमाला का द्वितीय स्वर-वर्ण (प्रामा)। इन अर्थों का सूचक अव्यय—२ अ मर्यादा, सीमा, 'आसमुद्दं' (गउड, विसे ८७४)। ३ अभिविधि, व्याप्ति, 'आमूलसिरं फलिहथंभाओ' (कुमा, विसे ८७४)। ४ थोडापन, अल्पता, 'आणीलककरुद्दतुरं वरणं' (गउड), 'आअंब' (से ६, ३१, विसे १२३५)। ५ समन्तात्, चारों ओर, 'अणुकडलमा विवइएणसरसकवरीविलंघियसम्मि' (गउड, विसे ८७५)। ६ अधिकता, विशेषता, 'आदीणं' (सूअ १,५)। ७ स्मरण, याद (षड्)। ८ विस्मय, आश्चर्य (ठा ५)। ९-१० क्रियाशब्द के योग में अर्थविस्तृति और विपर्यय, 'आरुहइ', 'आगच्छंत' (षड्, कुमा)। ११ वाक्य की शोभा के लिए भी इसका प्रयोग होता है (णाया १,२)। १२ पादपूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय (षड् २, १, ७६)।

असणी स्त्री [अशनी] एक इन्द्राणी (ठा ४, १)।

असणी स्त्री [अशनी] जिह्वा, जीभ, 'अवखाणमणी कम्माण मोहणं तह वयाण बंभं च' (गुख २, ४२)।

असण्ण वि [असञ्ज्ञ] सञ्ज्ञारहित, अचेतन (लहुअ ६)।

असण्णि वि [असञ्ज्ञिन्] १ सञ्ज्ञि-भिन्न, मनोज्ञान से रहित (जीव) (ठा २, २)। २ सम्यग्दृष्टि भिन्न, जैनेतर (भग १, २)। °सुय न [°श्रुत] जैनेतर शास्त्र (णंदि)।

असत्त वि [अशक्त] असमर्थ (सुर ३, २४४, १०, १७४)।

असत्त वि [असक्त] अनासक्त (आचा)।

असत्त न [असत्त्व] अभाव, असत्ता (णंदि)।

असत्ति स्त्री [अशक्ति] सामर्थ्य का अभाव। °मत वि [°मत्] असमर्थ, अशक्त (पउम ६६, ३६)।

असत्थ वि [अस्वस्थ] अतदुरुस्त, वीमार (सुर ३, १२७)।

असत्थ न [अशस्त्र] १ शस्त्र-भिन्न। २ सयम, निर्दोष अनुष्ठान (आचा)।

असद्द पु [अशब्द] १ अकीर्ति, अपयश (गच्छ २)। २ वि शब्दरहित (बृह ३)।

असद्ध वि [अश्रद्ध] श्रद्धारहित। स्त्री. °द्धी (उप पृ ३६४)।

असन्नि देखो असण्णि (भग, जी ४३)।

असबल वि [अशबल] १ अमिश्रित। २ निर्दोष, पवित्र (पण्ह २, १)।

असब्भ वि [असभ्य] अशिष्ट, जगली (स ६५०)। °भासि वि [°भाषिन्] असभ्य-भाषी (सुर ६ २१)।

असब्भाव पु [असद्भाव] १ यथार्थता का अभाव, झूठ (पिंड)। २ वि असत्य, अयथार्थ (उत्त ३, औप)।

असब्भावि वि [असद्भाविन्] झूठा, असत्य (महा)।

असब्भूय वि [असद्भूत] असत्य (भग)।

असम वि [असम] १ असमान, असाधारण (सुर ३, २४)। २ एक, तीन, पाच आदि एकाई सख्या वाला, विषम। °सर पु [°शर] कामदेव (गउड)।

असमवाइ न [असमवायिन्] नैयायिक और वैशेषिक मत प्रसिद्ध कारण-विशेष (विसे २०९६)।

असमंजस वि [असमञ्जस] १ अव्यवस्थित, गैरव्याजवी (आचा, सुर २, १३१, सुपा ६२३, उप १०००)। २ क्रिवि. अव्यवस्थित रूप से (पाअ)।

असमिक्खिय वि [असमीक्षित] अनालोचित, अविचारित (पण्ह १, २)। °कार वि [°कारिन्] साहसिक। °कारिया स्त्री [°कारिता] साहस कर्म (उप ७६८ टी)।

असरासय वि [दे] निर्दय, निष्ठुर हृदय वाला (दे १, ४०)।

असलील वि [अश्लील] असभ्य भाषा (मोह ८७)।

असव पु [असु] प्राण, 'विउत्तासवो विअ ठिओ कंचि कालं' (स ३५७)।

असवण्ण वि [असवर्ण] असमान, असाधारण (सण)।

असवार पु [अश्ववार] घुडसवार (धर्मवि ४१)।

असह वि [असह] १ असहिष्णु (कुमा, सुपा ६२०)। २ असमर्थ (वव १)। ३ खेद करने वाला (पाअ)।

असहण वि [असहन] असहिष्णु, क्रोधी (पाअ)।

असहाय वि [असहाय] १ सहायरहित (भग)। २ एकाकी (बृह ४)।

असहिज्ज वि [असाहाय्य] १ सहायता-रहित। २ सहायता का अनिच्छुक (उवा)।

असहीण वि [अस्वाधीन] परतन्त्र, पराधीन (दस ८)।

असहु वि [असह] १ असहिष्णु (उव)। २ असमर्थ, अशक्त (ओघ ३६, भा)। ३ वीमार, ग्लान (निचू १)। ४ सुकुमार, कोमल (ठा ३, ३)।

असहेज्ज देखो असहिज्ज (भग)।

असागारिय वि [असागारिक] गृहस्थो के आवागमन से रहित स्थान (वव ३)।

असाढभूइ पु [अषाढभूति] एक जैन मुनि (पिंड ४७४)।

असाढय न [असाढक] तृण-विशेष (पण्ण १, पत्र ३३)।

असाय न [असात] दु ख, पीडा (पण्ह १, १),
'रागवा इह जीवा,
दुल्लहलोयम्मि गाढमणुरत्ता।
ज वेइंति असायं, कत्तो त हंदि नरएवि'
(सुर ८, ७६)।
°वेयणिज्ज न [°वेदनीय] दु ख का कारण-भूत कर्म (ठा २, ४)।

असार, असारय } वि [असार, °क] निस्सार, सार-रहित (महा, कुमा)।

असारा स्त्री [दे] कदली-वृक्ष, केला का पेड (दे १, १२)।

असालिय पुस्त्री [दे] सर्प की एक जाति (सूअ २, ३, २४)।

असासय वि [अशाश्वत] अनित्य, विनश्वर (णाया १, १, गा २४७)।

असाहण न [असाधन] असिद्धि (सुर ४, २४८)।

असाहारण वि [असाधारण] अतुल्य, अनुपम (भग, दस)।

असि पुं [असि] १ खड्ग, तलवार (पाअ)। २ इस नाम की नरकपाल देवो की एक जाति (भग ३, ६)। ३ स्त्री. बनारस की एक नदी का नाम (ती ३८)। °कुंड न [°कुण्ड] मथुरा का एक तीर्थ-स्थान (ती ७)। °घाय पु [°घात] तलवार का घाव (पउम ५६, २५)। °चम्मपाय न [°चर्मपात्र] तलवार की म्यान, कोश (भग ३, ५)। °धारा स्त्री [°धारा] तलवार की धार (उत्त १९)। °धेणु, °धेणुआ स्त्री [°धेनु, °धेनुका] छुरी (गउड; पाअ)। °पत्त न [°पत्र] १ तलवार (विपा १, ६)। २ तलवार के जैसा तीक्ष्ण पत्र (भग ३, ६)। ३ तलवार की पतरी (जीव ३)। ४ पु. नरकपाल देवो की एक जाति (सम २९)। °पुत्तिगा स्त्री [°पुत्रिका] छुरी (उप पृ ३३४)। °मुट्ठि स्त्री [°मुष्टि] तलवार की मूठ (पाअ)। °रयण न [°रत्न] चक्रवर्ती राजा की एक उत्तम तलवार (ठा ७)। °लट्ठि स्त्री [°यष्टि] खड्ग-लता, तलवार (विपा १, ३)। °वण न [°वन] खड्गाकार पत्ते वाले वृक्षो का जंगल (पण्ह १, १)। °वत्त देखो

आइग्घ सक [आ + घ्रा] सूँघना। आइग्घइ, आइग्घाइ (षड्)। हेकृ. आइग्घिउ (कुमा)।

आइच्च अ [दे] कदाचित्, कोईवार (पएण १७—पत्र ४८५)।

आइच्च पु [आदित्य] १ सूर्य, सूरज, रवि (सम ५६)। २ लोकान्तिक देव-विशेष (णाया १, ८)। ३ न देवविमान-विशेष। ४ पुं तन्निवासी देव (पव)। ५ वि आद्य, प्रथम (सुज २०)। ६ सूर्य सवन्धी, 'आइच्चे ण मासे' (सम ५६)। °गइ पु [°गति] राक्षस वश के एक राजा का नाम (पउम ५,२६१)। °जस पु [°यशस्] भरत चक्रवर्ती का एक पुत्र, जिससे इक्ष्वाकु वश की शाखारूप सूर्यवश की उत्पत्ति हुई थी (पउम ५,३, सुर २, १३४)। °पभ न [°प्रभ] इस नाम का एक नगर (पउम ५,८२)। °पीढ न [°पीठ] भगवान् ऋषभदेव का एक स्मृतिचिह्न—पाद-पीठ (आवम)। °रक्ख पु [°रक्ष] इस नाम का लङ्का का एक राजपुत्र (पउम ५,१६६)। °रय पु [°रजस्] वानर वश का एक विद्याधर राजा (पउम ८, २३४)।

आइज्ज देखो आएज्ज (नव १५)।

आइज्जमाण वकृ [आर्द्रीक्रियमाण] आर्द्र किया जाता, भीजाया जाता (आचा)।

आइज्झमाण देखो आढा = आ + दृ।

आइट्ठ वि [आदिष्ट] १ उक्त, उपदिष्ट (सुर ४, १०१)। २ विवक्षित (सम्म ३८)।

आइट्ठ वि [आविष्ट] अधिष्ठित, आश्रित (कस)।

आइट्ठि स्त्री [आदिष्टि] धारणा (ठा ७)।

आइड्ढि स्त्री [आत्मर्द्धि] आत्मा की शक्ति, आत्मीय सामर्थ्य (भग १०, ३)।

आइड्ढिय वि [आत्मर्द्धिक] आत्मीय शक्ति-सपन्न (भग १०, ३)।

आइड्ढिय वि [आकृष्ट] खीचा हुआ (हम्मीर १७)।

आइण्ण देखो आइन्न = (दे) (तदु २०)।

आइण्ण देखो आइन्न (औप, भग ७, ८, हे ३, १३४)।

आइत्त वि [आदीप्त] थोडा प्रकाशित—ज्वलित (णाया १, १)।

आइत्त वि [आयत्त] अधीन, वशीभूत, 'तुज्झ सिरी जा परस्स आइत्ता' (जीवा १०)।

आइत्तु वि [आदातृ] ग्रहण करने वाला (ठा ७)।

आइत्तूण देखो आइ = आ + दा।

आइत्थ न [आतिथ्य] अतिथि-सत्कार (प्राकृ २१)।

आइदि स्त्री [आकृति] आकार (प्राप्र, स्वप्न २०)।

आइद्ध वि [आविद्ध] १ प्रेरित (से ७,१०)। २ स्पृष्ट, छूआ हुआ (से ३, ३५)। ३ पहना हुआ, परिहित (आक ३८)।

आइद्ध वि [आदिग्ध] व्याप्त (णाया १, १)।

आइन्न वि [आकीर्ण] १ व्याप्त, भरा हुआ (सुर १, ४६, ३, ७१)। २ पु. वस्त्र दायक कल्पवृक्ष (ठा १०)।

आइन्न वि [आचीर्ण] आचरित, विहित (आचा, चैत्य ४६)।

आइन्न वि [आदीर्ण] उद्विग्न, खिन्न, 'आइन्नाइ पियराइ तीए पुच्छति दिव्व-देवन्न' (सुपा ५९७)।

आइन्न पु [दे] जात्यश्व, कुलीन घोडा (पएह १, ४)।

आइप्पण न [दे] १ आटा (गा १६६ दे १, ७८) २ घर की शोभा के लिए जो चूना आदि की सफेदी दी जाती है वह। ३ चावल के आटा का दूध। ४ घर का मण्डन—भूषण (दे १, ७८)।

आइय (अप) वि [आयात] आया हुआ (भवि)।

आइय वि [आचित] १ सचित, एकत्रीकृत। २ व्याप्त, आकीर्ण। ३ ग्रथित, गुम्फित (कप्प, औप)।

आइय वि [आदृत] आदरप्राप्त (कप्प)।

आइयण न [आदान] ग्रहण, उपादान (पएह १, ३)।

आइयणया स्त्री [आदान] ग्रहण, उपादान (ठा २, १)।

आइरिअ देखो आयरिय = आचार्य (हे १, ७३)।

आइल वि [आविल] मलिन, कलुष, अस्वच्छ (पएह १, ३)।

आइल्ल } वि [आदिम] प्रथम, पहला
आइल्लिय } (सम १२६, भग)। 'आइल्लियासु तिसु लेसासु' (पएण १७, विसे २६२४)।

आइवाहिअ पु [आतिवाहिक] देव-विशेष, जो मृत जीव को दूसरे जन्म में ले जाने के लिए नियुक्त है,

'काहे अमाणवंता अग्गिमुहा,
आइवाहिआ तव पुरिसा।
अइलघेहिति मम अच्चुआ।
तमगहणनिउणयरकंतारं'
(अच्चु ८५)।

आइवाहिग पु [आतिवाहिक] मार्गदर्शक (वासुदेवहिंडी पत्र १५)।

आइस सक [आ + दिश्] आदेश करना, हुकुम करना, फरमाना। आइसह (पि ४७१)। वकृ. आइसंत (सुर १६, १३)।

आइसण वि [दे] उज्झित, परित्यक्त (दे १, ७१)।

आईण वि [आदीन] १ अतिदीन, बहुत गरीब (सूअ १, ५)। २ न दूषित भिक्षा (सूअ १, १०)।

आईण पुं [दे] जातिमान् अश्व, कुलीन घोडा (णाया १, १७)।

आईण } न [आजिन, °क] १ चमडे का बना
आईणग } हुआ वस्त्र (णाया १, १, आचा)। १ पु द्वीप-विशेष। २ समुद्र विशेष (जीव ३)। °भद्द पु [°भद्र] आजिन-द्वीप का अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °महाभद्द पुं [°महाभद्र] देखो पूर्वोक्त अर्थ (जीव ३)। °महावर पुं [°महावर] आजिन और आजिनवर नामक समुद्र का अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °वर पु [°वर] १ द्वीप-विशेष। २ समुद्र-विशेष। ३ आजिन और **अजिनवर** समुद्र का अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °वरभद्द पु [°वरभद्र] आजिनवरद्वीप का अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °वरमहाभद्द पु [°वरमहाभद्र] देखो अनन्तर उक्त अर्थ (जीव ३)। °वरोभास पुं [°वरावभास] १ द्वीप-विशेष। २ समुद्र-विशेष (जीव ३)। °वराभासभद्द पुं [°वरावभासभद्र] उक्त द्वीप का अधिष्ठायक देव (जीव ३)। °वरोभासमहाभद्द पु [°वरावभासमहाभद्र] देखो पूर्वोक्त अर्थ

असोगा स्त्री [अशोका] १ इस नाम की एक इन्द्राणी (ठा ४, १)। २ भगवान् श्री शीतलनाथ की शासनदेवी (पव २७)। ३ एक नगरी का नाम (पउम २०, १८९)।

असोभण वि [अशोभन] असुन्दर, खराब (पउम ६६, १६)।

असोय देखो असोग (भग, महा, रंभा)।

असोय पु [अश्वयुक्] आश्विन मास (सम २९)।

असोय वि [अशौच] १ शौचरहित (महा)। २ न. शौच का अभाव, अशुचिता। °वाइ वि [°वादिन्] अशौच को ही माननेवाला (ओघ ३१८)।

असोयणया स्त्री [अशोचनता] शोक का अभाव (पक्खि)।

असोया देखो असोगा (ठा २, ३, सति ६)।

असोल्लिय वि [अपक्व] कच्चा (उवा)।

असोहि स्त्री [अशोधि] १ अशुद्धि। २ विराधना (ओघ ७८८)। °ठाण न [°स्थान] १ पाप-कर्म। २ अशुद्धि स्थान। ३ दुर्जन का संसर्ग। ४ अनायतन (ओघ ७६३)।

अस्स न [आस्य] मुख, मुँह (गा ९८६)।

अस्स वि [अस्व] १ द्रव्यरहित, निर्धन। २ २ निर्ग्रन्थ, साधु, मुनि (आचा)।

अस्स पु [अश्व] १ घोडा (उप ७६८ टी)। २ अश्विनी नक्षत्र का अधिष्ठायक देव (ठा २, ३)। ३ ऋषि-विशेष (ज ७)। °कण्ण पु [°कर्ण] १ एक अन्तर्द्वीप। २ इस अन्तर्द्वीप का निवासी (णंदि)। °कण्णी स्त्री [°कर्णी] वनस्पति-विशेष (पण्ण १)। °करण न [°करण] जहाँ घोडा रखने में आता हो वह स्थान, अस्तबल (आचा २, १०, १४)। °ग्गीव पु [°ग्रीव] पहले प्रतिवासुदेव का नाम (सम १९३)। °तर पुस्त्री [°तर] खच्चड (पण्ण १)। °मुह पु [°मुख] १-२ इस नाम का एक अन्तर्द्वीप और उसके निवासी (णंदि, पण्ण १)। °मेह पुं [°मेघ] यज्ञ-विशेष, जिसमें अश्व मारा जाता है (अणु)। °सेण पु [°सेन] १ एक प्रसिद्ध राजा, भगवान् पार्श्वनाथ का पिता (पव ११)। २ एक महाग्रह का नाम (चन्द २०)। °यिर पुं [°दर] विद्याधर वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ४२)।

अस्स न [अस्र] १ अश्रु, आँसू। २ रुधिर, खून (प्राकृ २६)।

अस्संख वि [असंख्य] संख्या-रहित (उप १७)।

अस्संगिअ वि [दे] आसक्त (षड्)।

अस्सघयणि वि [असहननिन्] सहनन रहित, किसी प्रकार के शारीरिक बन्ध से रहित (भग)।

अस्संजम देखो असंजम (उव)।

अस्सजय वि [अस्वयत] १ गुरु की आज्ञानुसार चलनेवाला, अस्वच्छंदी (श्रा ३१)।

अस्सजय देखो असंजय (उव)।

अस्संदम पु [अश्वन्दम] अश्व-पालक (सुपा ६४५)।

अस्सण्ण देखो असण्ण, 'सुरिणो हवउ वयणमस्सण्णं' (उप १४९ टी)।

अस्सण्णि देखो असण्णि (विसे ५१६)।

अस्सत्थ पुं [अश्वत्थ] वृक्ष-विशेष, पीपल (नाट)।

अस्सत्थ वि [अस्वस्थ] रोगी, बीमार (सुर ३, १५१; माल ६५)।

अस्सन्नि देखो असण्णि (सुर १४,६६, कम्म ४, २, ३)।

अस्सम पु [आश्रम] १ स्थान, जगह। २ ऋषियों का स्थान (अभि ६६, स्वप्न २५)।

अस्समिअ वि [अश्रमित] श्रमरहित, अनभ्यासी (भग)।

अस्सवार देखो असवार (सम्मत्त १४२)।

अस्सस अक [आ+श्वस्] आश्वासन लेना। हेकृ अस्ससिदुं (शौ) (अभि १२०)।

अस्साइय वि [आस्वादित] जिसका आस्वादन किया गया हो वह (दे)।

अस्साएमाग देखो अस्साय=आस्वादय्।

अस्साद सक [आ+सादय्] प्राप्त करना। अस्सादेंति, अस्सादेस्सामो (भग १५)।

अस्साद सक [आ+स्वादय्] आस्वादन करना।

अस्सादण देखो अस्सायण (सुज्ज १०, १६)।

अस्सादिय वि [आसादित] प्राप्त किया हुआ (भग १५)।

अस्साय देखो अस्साद=आ+सादय्।

अस्साय देखो अस्साद=आ+स्वादय्। वकृ. अस्साएमाग (भग १२, १)। कृ. अस्सायणिज्ज (णाया १, १२)।

अस्साय देखो असाय (कम्म २,७, भग)।

अस्सायण पुं [आश्वायन] १ अश्व ऋषि का संतान (जं ७)। २ अश्विनी नक्षत्र का गोत्र (इक)।

अस्सावि वि [आस्राविन्] झरता हुआ, टपकता हुआ, सच्छिद्र, 'जहा अस्साविणिं नाव जाइअंधो दुरूहए' (सूअ १, १,२)।

अस्सास सक [आ+श्वासय्] आश्वासन देना, दिलासा देना। अस्सासअदि (शौ) (पि ४९०)। अस्सासि (उत्त २,४०, पि ४९१)।

अस्सासण पु [आश्वासन] एक महाग्रह (सुज्ज २०)।

अस्सि स्त्री [अश्रि] १ कोण, घर आदि का कोना (ठा ६)। २ तलवार आदि का अग्रभाग—धार (उप पृ ९६)।

अस्सि पु [अश्विन्] अश्विनी नक्षत्र का अधिष्ठायक देव (ठा २, २)।

अस्सिणी स्त्री [अश्विनी] इस नाम का एक नक्षत्र (सम ८)।

अस्सिय वि [आश्रित] आश्रय-प्राप्त, 'विरागमेगमस्सिओ' (वसु, ठा ७, सथा १८)।

अस्सु पुन [अश्रु] आँसू, 'अस्सू' (संक्षि १७)।

अस्सु (शौ) न [अश्रु] आँसू (अभि ५९, स्वप्न ८५)।

अस्सुक वि [अशुल्क] जिसकी चुंगी या फीस माफ की गई हो वह (उप ५९७ टी)।

अस्सुद (शौ) देखो असुय=अश्रुत (अभि १९३)।

अस्सुय वि [अस्मृत] याद नहीं किया हुआ (भग)।

अस्सेसा देखो असिलेसा (सम १७, विसे ३४०८)।

अस्सोई स्त्री [आश्वयुजी] आश्विन मास की पूर्णिमा (चंद १०)।

अस्सोई स्त्री [आश्वयुजी] आश्विन मास की अमावस (सुज्ज १०, ६ टी) देखो आसोया।

अस्सोकंता स्त्री [अश्वोत्क्रान्ता] संगीत-शास्त्र प्रसिद्ध मध्यम ग्राम की पाचवी मूर्च्छना (ठा ७)।

आउट्टि स्त्री [आकुट्टि] १ हिंसा, मारना (आचा; उव)। २ निर्दयता (आप १८)।

आउट्टि स्त्री [आवृत्ति] देखो आउट्टण = आवर्तन (वव १, १, २, १०, सूअ १, १, आचा)। ५ बार-बार करना, पुन पुन क्रिया (सुज्ज १२)।

आउट्टि वि [आकुट्टिन्] १ मारनेवाला, हिंसक, 'जाए काएए एगाउट्टी' (सूअ)। २ अकार्य-कारक (दसा)।

आउट्टि वि [दे] साढे तीन, 'एगे पुरण एवमाहंसु ता आउट्टि चदा आउट्टि सूरा सव्वलोयं ओभासेंति (सुज्ज १६)।

आउट्टिम वि [आकुट्टत्य] कूटकर बैठाने योग्य (जैसे सिक्के मे अक्षर) (दसनि २, १७)।

आउट्टिय देखो आउट्ट = आवृत्त (दसा)।

आउट्टिय पु [आकुट्टिक] दएड-विशेष (भत्त २७)।

आउट्टिय वि [आकुट्टित] छिन्न, विदारित (सूअ)।

आउट्टिया स्त्री [आकुट्टिका] पास मे आकर करना (पंचा १५, १८)।

आउट्ठ वि [आतुष्ट] सतुष्ट (निचू १)।

आउड सक [आ+जोडय्] संबन्ध करना, जोडना। कवकृ आउडिज्जमाण (भग ५, ४)।

आउड सक [आ+कुट्] १ कूटना, पीटना। २ ताडन करना, आघात करना। आउडेइ (जं ३)। कवकृ आउडिज्जमाण (भग ५, ४)।

आउड सक [लिख्] लिखना, 'इति कट्टु णामग आउडेइ' संकृ. आउडित्ता (जं ३—पत्र २६०)।

आउडिय वि [आकुटित] आहत, ताडित (ज ३—पत्र २२२)।

आउड्ड अक [मस्ज्] मज्जन करना, डूबना। आउड्डइ (हे ४, १०१, पड्)।

आउड्डिअ वि [मग्न] डूबा हुआ, तल्लीन (कुमा)।

आउण्ण वि [आपूर्ण] पूर्ण, भरपूर, व्याप्त; 'कुसुमफलाउएणहत्थेहिं' (पउम ८, २०३)।

आउत्त वि [आयुक्त] १ उपयोग वाला, सावधान (कप्प)। २ क्रिवि. उपयोग-पूर्वक (भग)। ३ न पुरीपोत्सर्ग, फरागत जाना (?) (उप ६८५)। ४ पुं. गाँव का नियुक्त किया हुआ मुखिया (दे १, १६)।

आउत्त वि [आगुप्त] १ सक्षिप्त (ठा ३, १)। २ सयत (भग)।

आउत्थ वि [आत्मोत्थ] आत्म-कृत (वव ४)।

आउर वि [आतुर] १ रोगी, बीमार (णंदि)। २ उत्कण्ठित। ३ दुखित, पीडित (प्रासू २८, ६५)।

आउर न [दे] १ लडाई, युद्ध। २ वि. बहुत। ३ गरम (दे १, ६५, ७६)।

आउरिय वि [आतुरित] दु खित, पीडित (आचा)।

आउल वि [आकुल] १ व्याप्त (औप)। २ व्यग्र (आव)। ३ व्याकुल, दु खित। ४ सकीर्ण (स्वप्न ७३)। ५ पुं समूह (विसे ७००)।

आउल सक [आकुलय्] १ व्याप्त करना। २ व्यग्र करना। ३ दु खी करना। ४ सकीर्ण करना। ५ प्रचुर करना। कवकृ—आउलिज्जंत, आउलीअमाण (महा, पि ५६३)।

आउलि स्त्री [आतुलि] वृक्ष-विशेष (दे ५, ५)।

आउलिअ वि [आकुलित] आकुल किया हुआ (गा २५, पउम ३३, १०६, उप पृ ३२)।

आउलीकर सक [आकुली+कृ] देखो आउल= आकुलय्। आउलीकरेंति (भग)। कवकृ आउलीकिअमाण (नाट)।

आउलीभूअ वि [आकुलीभूत] घबडाया हुआ (सुर २, १०)।

आउल्लय न [दे] जहाज चलाने का काष्ठमय उपकरण (सिरि ४२४)।

आउस अक [आ + वस्] रहना, वास करना। वकृ. आउसंत (सम १)।

आउस सक [आ + क्रुश्] आक्रोश करना, शाप देना, निष्ठुर वचन बोलना। आउसइ (भग १५)। आउसेज्ज, आउसेसि (उवा)।

आउस सक [आ + मृश्] स्पर्श करना, छूना। वकृ आउसंत (सम १)।

आउस सक [आ + जुष्] सेवा करना। वकृ आउसत (सम १)।

आउस न [दे] कूर्च (दे १, ६५)। क्षुरकर्म (नंदीटि टिप्पनक)

आउस देखो आउ = आयुष् (कुमा)।

आउस } वि [अयुष्मत्] चिरायु, दीर्घायु
आउसंत } (सम २६, आचा)।

आउसणा स्त्री [आक्रोशना] अभिशाप, निर्भर्त्सन (णाया १, १८, भग १५)।

आउसस देखो आउस = आ + क्रुश्। आउस्सति (णाया १, १८)।

आउस्स पु [आक्रोश] दुर्वचन, असभ्य वचन (सूअ १, ३, ३, १८)।

आउस्सिय वि [आवश्यक] १ जरूरी। २ क्रिवि. जरूर, अवश्य (पएए ३६)। °करण न [°करण] १ मन, वचन और काया का शुभ व्यापार। २ मोक्ष के लिए प्रवृत्ति (पएए ३६)।

आउह न [आयुध] १ शस्त्र, हथियार (कुमा)। २ विद्याधर वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ४४)। °घर न [°गृह] शस्त्रशाला (ज)। °घरसाला स्त्री [°गृहशाला] देखो अनन्तर-उक्त अर्थ (जं)। °घरिय वि [°गृहिक] आयुधशाला का अध्यक्ष—प्रधान कर्मचारी (ज)। °गार न [°गार] शस्त्रगृह (औप)।

आउहि वि [आयुधिन्] योद्धा, शस्त्रधारक (विसे)।

आऊड अक [दे] जुए में पण करना। आऊडइ (दे १, ६६)।

आऊडिय न [दे] द्यूत-पण, जुए मे की जाती प्रतिज्ञा (दे १, ६८)।

आऊर सक [आ + पूरय्] भरना, पूर्त्ति करना, भरपूर करना। आऊरेइ (महा)। कृ. आऊरयत, आऊरमाण (पउम) १०२, ३३, से १२, २८)। कवकृ. आऊरिज्जमाण (पि ५३७)। सकृ. आऊरिवि (अप) (भवि)।

आऊरिय वि [आपूरित] भरा हुआ, व्याप्त (सुर २, १६६)।

आऊसिय वि [आयूषित] १ प्रविष्ट। २ सकुचित (णाया १, ८)।

आएज्ज वि [आदेय] ग्रहण करने के योग्य उपादेय। °णाम, °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, जिसके उदय से किसी का कोई भी वचन ग्राह्य माना जाता है (सम ६७)।

आएस वि [ऐष्यत्] आगामी, भविष्य में होने वाला (सूअ १, २, ३, २०)।

अव्यय—१ आमन्त्रण। २ खेद। ३ आश्चर्य। ४ दुःख। ५ आधिक्य, प्रकर्ष (हे २, २१७, श्रा १४, कप्पू, गा ६५६)।

अहा° अ [यथा] जैसे, माफिक, अनुसार (हे १, २४५)। °छंद वि [°च्छन्द] १ स्वच्छन्दी, स्वैरी (उप ८३३ टी)। २ न मरजी के अनुसार (वव २)। °जाय वि [°जात] १ नग्न, प्रावरण-रहित (हे १, १४५)। २ न जन्म के अनुसार। ३ जैन साधुओं में दीक्षा काल के परिमाण के अनुसार किया जाता वन्दन—नमस्कार (धर्म २)। °णुपुव्वी स्त्री [°नुपूर्वी] यथाक्रम, अनुक्रम (णाया १, १, पउम १, ८)। °तच्च न [°तत्त्व] तत्त्व के अनुसार (भग २, १)। °तच्च न [°तथ्य] सत्य-सत्य (सम १६)। °पडिरूव वि [°प्रतिरूप] १ उचित, योग्य (औप)। २ क्रिवि यथायोग्य (विपा १, १)। °पवत्त वि [°प्रवृत्त] १ पूर्व की तरह ही प्रवृत्त, अपरिवर्तित (णाया १, ९)। २ न. आत्मा का परिणाम-विशेष (स ४७)। °पवत्तिकरण न [°प्रवृत्तिकरण] आत्मा का परिणाम-विशेष (कम्म ०)। °बायर वि [°बादर] निस्सार, सार-रहित (णाया १, १)। °भूय वि [°भूत] तात्त्विक, वास्तविक (ठा १, १)। °राइणिय, °रायणिय न [°रात्निक] यथा-ज्येष्ठ, बड़े के क्रम में (णाया १, १, आचा)। °रिय न [ऋजु] सरलता के अनुसार (आचा)। °रिह न [°र्ह] यथोचित (ठा २, १)। २ वि उचित, योग्य (धर्म १)। °रीय न [°रीत] १ रीति के अनुसार। २ स्वभाव के माफिक (भग ५, २)। °लंद पु [°लन्द] काल का एक परिमाण, पानी से भीजा हुआ हाथ जितने समय में सूख जाय उतना समय (कप्प)। °वगास न [°वकाश] अवकाश के अनुसार (सूअ २, ३)। °वच्च वि [°पत्य] पुत्र-स्थानीय (भग ३, ७)। °सयड वि [°संस्तृत] शयन के योग्य (आचा)। °संविभाग पु [°संविभाग] साधु को दान देना (उवा)। °सच्च न [°सत्य] वास्तविकता, सचाई (आचा)। °सत्ति न [°शक्ति] शक्ति के अनुसार (पसू ४)। °सुत्त न [°सूत्र] आगम के अनुसार (सम ७७)। °सुह न [°सुख] इच्छानुसार (णाया १, १, भग)। °सुहुम वि [°सूक्ष्म] सारभूत (भग ३, १)। देखो अह°।

अहालंद वि [यथालन्द] यथानुज्ञात (काल), इच्छानुसार (समय) (आचा २, ७, १, २)।

अहालंदि पुं [यथालन्दिन्] 'यथालन्द' अनुष्ठान करने वाला मुनि (पव ७०)।

अहासखड वि [दे] निष्कम्प, निश्चल (निचू २)।

अहासल वि [अहास्य] हास्य-रहित (नुपा ६१०)।

अहाह अ [अहाह] देखो अहह (हे २, २१७)।

अहि देखो अभि (गउड, पाअ, पंचव ४)।

अहि अ [अधि] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ आधिक्य, विशेषता, 'अहिगय, अहिमास'। २ अधिकार, सत्ता, 'अहिगय'। ३ ऐश्वर्य, 'अहिट्ठाण'। ४ ऊँचा, ऊपर, 'अहिट्ठा'।

अहि पुं [अहि] १ सर्प, सांप (पण्ण १, प्रासू १६, ३६, १०५)। २ शेष नाग (पिंग)। °च्छत्ता स्त्री [°च्छत्रा] नगरी-विशेष (णाया १, १६, ती ७)। °मड पुन [°मृतक] सांप का मुर्दा (णाया १, ९)। °वइ पु [°पति] शेष नाग (अच्चु ६०)। °विछिअ पुं [°वृश्चिक] सर्प के मूत्र से उत्पन्न होने वाली वृश्चिक जाति (कुमा)।

अहिअल न [दे] क्रोध, गुस्सा (दे १, ३६, पड्)।

अहिआअ न [अभिजात] कुलीनता, खानदानी (गा ३८)।

अहिआइ स्त्री [अभिजाति] कुलीनता (पड्)।

अहिआर पु [दे] लोक यात्रा, जीवन-निर्वाह (दे १, २९)।

अहिउत्त वि [दे] व्याप्त, खचित (गउड)।

अहिउत्त वि [अभियुक्त] १ विद्वान्, पण्डित। २ उद्यत, उद्योगी (पाअ)। ३ शत्रु से घिरा हुआ (वेणी १२३ टि)।

अहिऊर सक [अभि + पूरय्] पूर्ण करना, व्याप्त करना। कर्म अहिऊरिज्जति (गउड)।

अहिऊल सक [दह्] जलाना, दहन करना। अहिऊलइ (हे ४, २०८, पड्, कुमा)।

अहिओय पुं [अभियोग] १ सवन्ध (गउड)। २ दोषारोपण (स २२६)। देखो अभिओअ (भवि)।

अहिंद पुं [अहीन्द्र] १ सर्पों का राजा, शेष नाग (अच्चु १)। २ श्रेष्ठ सर्प (कुमा)। °उर न [°पुर] वासुकि-नगर। °उरणाह पुं [°पुरनाथ] विष्णु, अच्युत (अच्चु २६)।

अहिंसग वि [अहिंसक] हिंसा न करने वाला (ओघ ७४७)।

अहिंसण न [अहिंसन] अहिंसा (धर्म १)।

अहिंसय देखो अहिंसग (पण्ह २, १)।

अहिंसा स्त्री [अहिंसा] दूसरे को किसी प्रकार से दुःख न देना (निचू २, धर्म ३, सूअ १, ११)।

अहिंसिय वि [अहिंसित] अमारित, अपीडित (सूअ १, १, ४)।

अहिकंख देखो अभिकंख वकृ. अहिकखन्त (पंचव ४)।

अहिकंखिर वि [अभिकाङ्क्षिन्] अभिलाषी, इच्छुक (सण)।

अहिकखि देखो अहिकंखिर (सूअ १, १२, २२)।

अहिकय वि [अधिकृत] जिसका अधिकार चलता हो वह, प्रस्तुत (विसे १५८)।

अहिकरण देखो अहिगरण (निचू ४)।

अहिकरणी देखो अहिगरणी (ठा ८)।

अहिकार देखो अहिगार (उत्त १४, १७)।

अहिकारि देखो अहिगारि (रंभा)।

अहिकिच्च अ [अधिकृत्य] अधिकार कर, उद्देश्य कर (आचू १)।

अहिक्खण न [दे] उपालभ, उलहना (दे १, ३५)।

अहिक्खित्त वि [अधिक्षिप्त] १ तिरस्कृत। २ निन्दित। ३ स्थापित। ४ परित्यक्त। ५ क्षिप्त (नाट)।

अहिक्खिव सक [अधि + क्षिप्] १ तिरस्कार करना। २ फेंकना। ३ निन्दना। ४ स्थापित करना। ५ छोड देना। अहिक्खिवइ (उव)। अहिक्खिवाहि (स ३२६)। वकृ अहिक्खिवंत (पउम ६५, ४४)।

आकिदि देखो आकिइ (कुमा)।
अकुंच सक [आ + कुञ्चय्] संकोच करना। आकुचइ, सक्र आकुंचिवि (अप) (भवि)।
आकुचण न [आकुञ्चन] संकोच, संक्षेप (सम्म १३३, विसे २४६२)।
आकुच्चिय वि [आकुञ्चित] संकुचित, 'रुद्ध गलय आकुचियाओ धमणीओ पसरिया वियणा' (सुर ४, २३८)।
आकुट्ठ न [आक्रुष्ट] १ आक्रोश। २ वि. जिस पर आक्रोश किया गया हो वह (दे ३,३२)।
आकुल दे आउल (कप्प)।
आकूय न [आकूत] १ इङ्गित, इशारा (उप ७२८ टी)। २ अभिप्राय (विसे ६२८)।
आकेवलिय वि [आकेवलिक] असंपूर्ण (आचा)।
आकोडण न [आकोटन] कूट कर घुसेड़ना (पण्ह १, ३)।
आकोस देखो अक्कोस = आक्रोश (पच ४, २३)।
आकोसाय अक [आकोशाय्] विकसित होना। वक्र आकोसायत (पण्ह १, ४)।
आक्कंद (मा) देखो आकंद। आक्कंदामि (पि ८८)।
आखच (अप) सक [आ + कृप्] पीछे खींचना। संक्र आखचिवि (भवि)।
आखंडल पुं [आखण्डल] इन्द्र (सुपा ४७)। °धणुह न [°धनुष्] इन्द्रधनुष् (उप ६८६ टी)। °भूइ पु [°भूति] भगवान् महावीर के मुख्य शिष्य गौतम-स्वामी (पउम ११८, १०२)।
आगइ स्त्री [आगति] आगमन (आचा, विसे २१४६)।
आगइ देखो आकिइ (महा)।
आगतव्व देखो आगम = आ + गम्।
आगतगार } न [आगन्त्रगार] धर्मशाला,
आगतार } मुसाफिरखाना (औप, आचा)।
आगतु वि [आगन्तृ] आनेवाला (सूअ)।
आगन्तु देखो आगम = आ + गम्।
आगतुग } वि [आगन्तुक] १ आनेवाला।
अगतुय } २ अतिथि (स ४७१, चारु २४, सुपा ३३६, ओघ २१६)। ३ कृत्रिम, अस्वाभाविक (सुर १२, १०)।

आगतूण देखो आगम = आ + गम्।
आगंप सक [आ + कम्पय्] कँपाना, हिलाना। वक्र. आगपयंत (स ३३१, ४४३)।
आगपिय देखो आकपिय (पउम ३४, ४३)।
आगच्छ सक [आ + गम्] आना, आगमन करना। आगच्छइ (महा)। भवि. आगच्छिस्सइ (पि ५२३)। वक्र आगच्छत, आगच्छमाण (काल, भग)। हेक्र आगच्छित्तए (पि ५७८)।
आगत देखो आगय (सुर २, २४८)।
आगत्ती स्त्री [दे] कूप तुला (दे १, ६३)।
आगम सक [आ + गम्] १ आना आगमन करना। २ जानना। भवि आगमिस्स (पि ५२३, ५६०)। वक्र. आगममाण (आचा)। संक्र. आगतूण, आगमेत्ता, आगम्म (पि ५८१, ५८२, औप)। क्र आगंतव्व (सुपा १२)। हेक्र आगंतु (काल)।
आगम पुं [आगम] १ समागम (वंच, १४५)। २ ज्ञान, जानकारी, 'चोद्दसविज्जाठाणाण आगमे कए' (सुख २, १३)।
आगम पुं [आगम] १ आगमन (से १४, ७५)। २ शास्त्र, सिद्धान्त (जी ४८)। °कुसल वि [°कुशल] सिद्धान्तो का जानकार (उत्त)। °ज्ञ वि [°ज्ञ] शास्त्रों का जानकार (प्राप्त)। °णीइ स्त्री [°नीति] आगमोक्त विधि (धर्म २)। °ण्णु वि [°ज्ञ] शास्त्रों का जानकार (प्राप्त)। °परतंत वि [°परतन्त्र] सिद्धान्त के अधीन (पंचव)। °वलिय वि [°वलिक] सिद्धान्तो का अच्छा जानकार (भग ८, ८)। °ववहार पु [°व्यवहार] सिद्धान्तानुमोदित व्यवहार (वव)।
आगम सक [आ + गम्] प्राप्त करना। सक्र आगमित्ता (सूअ २, ७, ३६)।
आगमण न [आगमन] आगमन (आ ४)।
आगमि वि [आगमिन्] आने वाला, आगामी (विसे ३१५४)।
आगमिअ वि [आगमित] विदित, ज्ञात, 'तत्थ अच्छतो आगमिओ' (सुख १, ३)।
आगमिय वि [आगमिक] १ शास्त्र-संबन्धी, शास्त्र-प्रतिपादित (उवर १५१)। २ शास्त्रोक्त वस्तु को ही माननेवाला (सम्म १४२)।

आगमिर वि [आगन्तृ] आनेवाला, आगमन करनेवाला (सण)।
आगमिस्स वि [आगमिष्यत्] १ आगामी, होनेवाला (पउम ११८, ६३)। २ आनेवाला (सम १५३)।
आगमिस्सा स्त्री [आगमिष्यन्ती] भविष्य-काल, 'अईअकालम्मि आगमिस्साए' (पच ६०)।
आगमेस } देखो आगमिस्स (अत १६,
आगमेसि } औप)।
आगम्म देखो आगम = आ + गम्।
आगय वि [आगत] १ आया हुआ (प्रासू ५)। २ उत्पन्न (णाया १, ७)।
आगर देखो आकर = आकर (आचा, उप ८३३ टी)।
आगरि वि [आकरिन्] खान का मालिक, खान का काम करनेवाला (पण्ह १,२)।
आगरिस पु [आकर्ष] १ ग्रहण, उपादान (विसे २७८०, सम १४७)। २ खींचाव (विसे २७८०, हे १, १७७)। ३ ग्रहण कर छोड़ देना (आचू)। ४ प्राप्ति (भग २५, ७)।
आगरिस सक [आ + कृष्] खींचना। वक्र. आगरिसत (धर्मसं ३७२)।
आगरिसग वि [आकर्षक] १ खींचनेवाला। २ पु. अयस्कान्त, लोह-चुम्बक (आवम)।
आगरिसण न [आकर्षण] खींचाव (सम्मत्त २१५)।
आगरिसणी स्त्री [आकर्षणी] विद्या-विशेष (सुर १३, ८१)।
आगरिसिय वि [आकृष्ट] खींचा हुआ (सुपा १६६, महा)।
आगल सक [आ + कलय्] १ जानना। २ लगाना। ३ पहुँचाना। ४ संभावना करना। आगलेइ (उव)। आगलेंति (भग ३, २)। सक्र 'हत्थि खंभम्मि आगलेऊण' (महा)।
आगल्ल वि [आग्लान] ग्लान, बीमार (बृह १)।
आगस सक [आ + कृष्] खींचना। आगसाहि (आचा २, ३, १, १४)। संक्र. आगसिउं (विसे २२२)।
आगह देखो आगाह। सक्र आगहइत्ता (दस ५, १, ३१)।
आगहिअ वि [आगृहीत] संगृहीत (विसे २२०४)।

अहिट्ठाण न [अधिष्ठान] १ बैठना (निचू ५)। २ आश्रयण (सूत्र१, २,३)। ३ मालिक बनना (आचा)। ४ स्थान, आश्रय (स ४९६)।

अहिट्ठायग वि [अधिष्ठायक] अध्यक्ष, अधिपति (कुप्र २१९)।

अहिट्ठावण न [अधिष्ठापन] ऊपर रखना (निचू ५)।

अहिट्ठिय वि [अधिष्ठित] १ अध्यासित (णाया १, १४)। २ अधीन किया हुआ (णाया १, १४)। ३ आक्रान्त, आविष्ट (ठा ५, २)।

अहिठाण न [अधिष्ठान] अपान-प्रदेश (पव १३५)।

अहिड्डुय वि [दे. अभिद्रुत] पीडित, 'अहिड्डुयं पीडिअ परद्धं च' (पाअ)।

अहिणंद देखो अभिणंद। वकृ अहिणदमाण (पउम ११, १२०) कवकृ. अहिणंदिज्जमाण, अहिणंदीअमाण (नाट, पि ५६३)।

अहिणंदण देखो अभिणदण (पउम २०,३०, भवि)।

अहिणदि वि [अभिनन्दिन्] आनन्द मानने वाला (स ६७७)।

अहिणदिय देखो अभिणंदिय (पउम ८, १२३, स १४)।

अहिणय देखो अभिणय (कप्पू; सण)।

अहिणव पु [अभिनव] १ सेतुबन्ध काव्य का कर्ता राजा प्रवरसेन (से १,९)। २ वि. नूतन, नया (णाया १, १, सुपा ३३०)।

अहिणवेमाण देखो अहिणी।

अहिणवेमाण देखो अहिणु।

अहिणाण देखो अहिण्णाण (भवि)।

अहिणिवोह पुं [अभिनिवोध] ज्ञान-विशेष, मतिज्ञान (पण्ण २९)।

अहिणिवस सक [अभिनि + वस्] वसना, रहना। वकृ. अहिणिवसमाण (मुद्रा २३१)।

अहिणिविट्ठ वि [अभिनिविष्ट] आग्रह-ग्रस्त (स २७३)।

अहिणिवेस पुं [अभिनिवेश] आग्रह, हठ (स ६२३, अभि ९५)।

अहिणिवेसि वि [अभिनिवेशिन्] आग्रही (पि ४०५)।

१३

अहिणी स्त्री [अहि] नागिन (वज्जा ११४)।

अहिणी देखो अभिणी वकृ. अहिणवेमाण (सुर ३, १५०)।

अहिणील वि [अभिनील] हरा, हरा रंग वाला (गउड)।

अहिणु सक [अभि + नु] स्तुति करना, प्रशंसना। वकृ. अहिणवेमाण (सुर ३,७७)।

अहिण्ण वि [अभिन्न] भेदरहित, अपृथग्भूत (गा २९५, ३८०)।

अहिण्णाण न [अभिज्ञान] चिह्न, निशानी (अभि १३)।

अहिण्णु वि [अभिज्ञ] निपुण, ज्ञाता (हे १, ५६)।

अहितत्त वि [अभितप्त] तापित, सतापित (उत्त २)।

अहित्ता देखो अहिज्ज = अधि + इ।

अहिदायग वि [अभिदायक] देने वाला, दाता (सुपा ५४)।

अहिदेवया स्त्री [अधिदेवता] अधिष्ठाता देव (सुपा ६०, कप्पू)।

अहिद्दव सक [अभि + द्रु] हैरान करना। अहिद्दवति (स ३९३)। भवि. अहिद्दविस्सइ (स ३९६)।

अहिद्दुय वि [अभिद्रुत] हैरान किया हुआ (स ५१४)।

अहिधाव सक [अभि + धाव्] दौडना, सामने दौड कर जाना। वकृ. अहिधावंत (मि १३, २९)।

अहिनाण } देखो अहिण्णाण (श्रा १६, सुपा
अहिन्नाण } २५०)।

अहिनिवेस देखो अहिणिवेस (स १२५)।

अहिपच्चुअ सक [ग्रह्] ग्रहण करना। अहिपच्चुअइ (हे ४, २०९, षड्)। अहिपच्चुअति (कुमा)।

अहिपच्चुअ सक [आ + गम्] आना। अहिपच्चुअइ (हे ४, १६३)।

अहिपच्चुइअ वि [आगत] आयात (कुमा)।

अहिपच्चुइअ न [दे] अनुगमन, अनुसरण (दे १, ४९)।

अहिपड सक [अभि + पत्] सामने आना। अहिपडति (पव १०६)।

अहिपास सक [अधि + दृश्] १ अधिक देखना। २ समान रूप से देखना। अहिपासए (सूत्र १, २, ३, १२)।

अहिप्पाय देखो अभिप्पाय (महा, कप्पू)।

अहिप्पेय देखो अभिप्पेय (उप १०३१ टी, स ३४)।

अहिभव देखो अभिभव (गउड)।

अहिमजु पुं [अभिमन्यु] अर्जुन के एक पुत्र का नाम (कुमा)।

अहिमतण वि [अभिमन्त्रण] मन्त्रित करना, मन्त्र से संस्कारना (भवि)।

अहिमंतिअ वि [अभिमन्त्रित] मन्त्र से संस्कृत (महा)।

अहिमज्जु }
अहिमण्णु } देखो अहिमजु (कुमा, षड्)।
अहिमन्नु }

अहिमय वि [अभिमत] संमत, इष्ट (स २००)।

अहिमयर पुं [अहिमकर] सूर्य, रवि (पाअ)।

अहिमर पुं [अभिमर] धनादि के लोभ से दूसरे को मारने का साहस करने वाला (सुर १, ९८)। २ गजादिघातक (विसे १७६४)।

अहिमाण पु [अभिमान] गर्व, अहकार (प्रासू १७, सण)।

अहिमाणि वि [अभिमानिन्] अभिमानी, गर्विष्ठ (स ४३१)।

अहिमार पु [अभिमार] वृक्ष-विशेष, 'एगं अहिमारदारुअ अग्गी' (उत्तनि ३)।

अहिमास } पु [अधिमास, °क] अधिक
अहिमासग } मास (अणु १, निचू २०)।

अहिमुह वि [अभिमुख] समुख, सामने रहा हुआ (से १, ४४, पउम ८, १९७; गउड)।

अहिमुहिहूअ } वि [अभिमुखीभूत] सामने
अहिमुहीहूअ } आया हुआ (पउम १२, १०५ ४५, ६)।

अहिय वि [अधिक] १ ज्यादा, विशेष (औप, जी २७, स्वप्न ४०)। २ क्रिवि बहुत, अत्यन्त (महा)।

अहिय वि [अहित] अहितकर, शत्रु, दुश्मन (महा, सुपा ६९)।

अहिय वि [अधीत] पठित, अभ्यस्त, 'अहियसुओ पडिवज्जिय एगल्लविहारपडिम सो' (सुर ४, १५४)।

आचिक्ख सक [आ + चक्ष्] कहना। कृ. आचिक्खणीय (स ४०)।
आचिक्खिय वि [आख्यात] कथित, उक्त (स ११६)।
आचुण्णिअ वि [आचूर्णित] १ चूर-चूर किया हुआ (पउम १७, १२०)।
आचेलक्क न [आचेलक्य] १ वस्त्र का अभाव (कप्प)। २ वि आचार विशेष, 'आचेलक्को धम्मो' (पचा)।
आच्छेदण न [आच्छेदन] १ नाश। २ वि. नाशक (कुमा)।
आजत्थ देखो आगम + आ = गम। आजत्थइ (प्राकृ ७४)।
आजाइ देखो आयाइ (ठा, स १७८)।
आजि देखो आइ = आजि (कुमा, दे १,४६)।
आजीरण पु [आजीरण] स्वनामख्यात एक जैन मुनि, 'आजीरणो य गीओ' (संथा ६७)।
आजीव } पु [आजीव] १ आजीविका,
आजीवग } जीवन निर्वाह का उपाय, 'आजीवमेय तु अबुज्जमाणो पुणो पुणो विप्परियासुवेंति' (सूअ)। २ जैन साधु के लिए भिक्षा का एक दोष—गृहस्थ को अपनी जाति, कुल आदि की समानता बतलाकर उससे भिक्षा ग्रहण करना (ठा ३, ४)। ३ गोशालक मत का अनुयायी साधु (पन्न)। ४ धन का समूह (सूअ)।
आजीवग पु [आजीवक] १ धन का गर्व (सूअ)। २ सकल जीव (जीव ३ टी)। देखो आजीवय।
आजीवण न [आजीवन] १ आजीविका, जीवन-निर्वाह का उपाय। २ जैन साधु के लिए भिक्षा का एक दोष (वव)।
आजीवणा स्त्री [आजीवना] ऊपर देखो (दस, जीत)।
आजीवय देखो आजीवग, 'आजीवयदिट्ठ तेण चउरासीतिजातिकुलकोडीजोणिपमुहसयसहस्सा भवंतीतिमक्खाया' (जीव ३)।
आजीविय वि [आजीविक] गोशालक के मत का अनुयायी (पण्ण २०, उवा)।
आजीविगा स्त्री [आजीविका] १ निर्वाह (आव)। २ जैन साधु के लिए भिक्षा का एक दोष (उत्त)।

आजुत्त वि [आयुक्त] अप्रमादी (निचू)।
आजुज्झ अक [आ + युध्] लड़ना। हेकृ आजुज्झिदुं (शौ) (वेणी १२४)।
आजुह न [आयुध] हथियार (मै २४)।
आजोज्ज देखो आओज्ज (विसे १५०३)।
आडंबर पु [आडम्बर] १ आटोप, ऊपरी दिखाव (पाअ)। २ वाद्य की आवाज (ठा)। ३ यक्ष-विशेष (आचू)। ४ न यक्ष का मन्दिर (पव)।
आडंबर पु [आडम्बर] वाद्य-विशेष, पटह (अणु १२८)।
आडंबरिल्ल वि [आडम्बरवत्] आडम्बरी (पाअ)।
आडविय वि [दे] १ चूर्णित, चूर-चूर किया हुआ (षड्)।
आडविय वि [आटविक] जंगल में रहनेवाला, जंगली (स १२१)।
आडह सक [आ + दह्] चारों ओर से जलाना। आडहइ (पि २२२, २२३)। आडहति (पि २२२, २२३)।
आडह सक [आ + धा] स्थापन करना, नियुक्त करना। आडहइ। संकृ आडहेत्ता (औप)।
आडाडा स्त्री [दे] बलात्कार, जबरदस्ती (दे १, ६४)।
आडासेतीय पुं [आडासेतीक] पक्षि-विशेष (पण्ह १, १)।
आडि स्त्री [आटि] १ पक्षि-विशेष। २ मत्स्य-विशेष (दे ८, २४)।
आडियत्तिय पु [दे] शिबिका-वाहक पुरुष (?) (स ५३७, ५४१)।
आडुआल सक [दे] मिश्र करना, मिलाना। आडुआलइ (दे १, ६६)।
आडुआलि पुं [दे] मिश्रता, मिलावट (दे १, ६६)।
आडोय देखो आडोव = आटोप (सुपा २६२)।
आडोलिय वि [दे] रुद्ध, रोका हुआ (णाया १, १८)।
आडोव सक [आ + टोपय्] १ आडंबर करना। २ पवन द्वारा फूलाना। आडोवेइ (भग)। संकृ आडोवेत्ता (भग)।
आडोव पु [आटोप] आडम्बर (उवा, सण)।

आडोविअ वि [दे] आरोपित, गुस्सा किया हुआ (दे १, ७०)।
आडोविअ वि [आटोपिक] आटोपवाला, स्फारित (पण्ह १, ३)।
आढई स्त्री [आढकी] वनस्पति-विशेष (पण्ण १)।
आढग पुन [आढक] १ चार प्रस्थ (सेर) का एक परिमाण। २ चार सेर परिमित चीज (औप, सुपा ६७)।
आढत्त वि [दे] आक्रान्त, 'एत्थंतरम्मि विजयवम्मनरवइणा आढत्तो लच्छिनिलयमामी सूरतेओ नाम नरवई (स १४०)।
आढत्त वि [आरब्ध] शुरू किया हुआ, प्रारब्ध (ओघ ४८२, हे २, १३८)।
आढत्तिअ } वि [आरब्ध] प्रारम्भ किया हुआ
आढविअ } (मगल २३, चेइय १४८)।
आढप्प° देखो आढव।
आढय देखो आढग (महा; ठा ३, १)।
आढव सक [आ + रभ्] आरंभ करना, शुरू करना। आढवइ (हे ४, १५५, धम्म २२)। कर्म आढप्पइ, आढवीअइ (हे ४, २५४)।
आढा सक [आ + दृ] आदर करना, मानना। आढाइ (उवा)। वकृ आढामाण, आढायमाण (पि ५००, आचा)। कवकृ आइज्जमाण (आचा)।
आढा स्त्री [आदर] संमान (पव २—गाथा १५५, संबोध ५५)।
आढिअ वि [आदृत] सत्कृत, सम्मानित (हे १, १४३)।
आढिअ वि [दे] १ इष्ट, अभीष्ट। २ गणनीय, माननीय। ३ अप्रमत्त, उद्युक्त। ४ गाढ, निबिड (दे १, ७४)।
आण सक [ज्ञा] जानना, 'किं न आणह एअ' (से १३, ३)। आणमि (से १५, २८), 'अमिअ पाउअकव्व पढिउं सोउं च जे ण आणंति' (गा २)। आणे (अभि १६७)।
आण सक [आ + णी] लाना, आनयन करना, ले आना। आणइ (पि १७, भवि)। वकृ आणमाणे (णाया १, १६)। हेकृ आणिवि (अप) (भवि)।
आण पुं [आन] १ श्वासोच्छ्वास, सास। २ श्वास के पुद्गल (पण्ण)।

अहिवण्ण वि [दे] पीला और लाल रंग वाला (दे १, ३३)।

अनिवण्णु } देखो अहिमज्जु (षड्, कुमा।
अहिवन्नु }

अहिवल्ली स्त्री [अहिवल्ली] नाग-वल्ली (सिरि ८७)।

अहिवस सक [अधि+वस्] निवास करना, रहना। वकृ अहिवसंत (स २०८)।

अहिवाइय वि [अभिवादित] अभिनन्दित (स ३१४)।

अहिवायण देखो अभिवायण (भवि)।

अहिवाल वि [अधिपाल] पालक, रक्षक (भवि)।

अहिवास पु [अधिवास] वासना, संस्कार (दे ७, ८७)।

अहिवासण न [अधिवासन] संस्काराधान (पचा ८)।

अहिवासि वि [अधिवासिन्] निवासी (चेइय ६८७)।

अहिवासिअ वि [अधिवासित] सजाया हुआ, तय्यार किया हुआ (दस ३, १ टी)।

अहिविण्णा स्त्री [दे] कृत-सापत्न्या स्त्री, उपपत्नी (दे १, २५)।

अहिसंका स्त्री [अभिशङ्का] भ्रम, संदेह (पउम ४२, २१)।

अहिसंका स्त्री [अभिशङ्का] भय, डर (सूअ १, १२, १७)।

अहिसंजमण न [अभिसंयमन] नियन्त्रण (गउड)।

अहिसंधारण न [अभिसंधारण] अभिप्राय (पचा ६, ३९)।

अहिसंधि पुस्त्री [अभिसंधि] अभिप्राय, आशय (पण्ह १, २, स ४६३)।

अहिसंधि पु [दे] वारंवार (दे १, ३२)।

अहिसक्कण पुन [अभिष्वष्कण] संमुख गमन (पव २)।

अहिसर सक [अभि+सृ] १ प्रवेश करना। २ अपने दयित—प्रिय के पास जाना। प्रयो., कर्म अभिसारीअदि (शौ) (नाट)। हेकृ अभिसारिदुं (शौ) (नाट)।

अहिसरण न [अभिसरण] प्रिय के समीप गमन (स ५३३)।

अहिसरिअ वि [अभिसृत] १ प्रिय के समीप गत। २ प्रविष्ट (आवम)।

अहिसहण न [अभिसहन] सहन करना (ठा ६)।

अहिसाअ देखो अक्कम = आ + कम्। अहिसाअइ (प्राकृ ७३)।

अहिसाम वि [अभिशाम] काला, कृष्ण वर्ण वाला (गउड)।

अहिसाय वि [दे] पूर्ण, पूरा (दे १, २०)।

अहिसारण न [अभिसारण] १ आनयन (से १०, ६२)। २ पति के लिए संकेत स्थान पर जाना (गउड)।

अहिसारिअ वि [अभिसारित] आनीत (स १, १३)।

अहिसारिआ स्त्री [अभिसारिका] नायक को मिलने के लिए संकेत स्थान पर जानेवाली स्त्री (कुमा)।

अहिसिअ न [दे] १ अनिष्ट ग्रह की आशंका से खेद करना—रोना (दे १, ३०)। २ वि. अनिष्ट ग्रह से भयभीत (षड्)।

अहिसिंच देखो अभिसिंच। अहिसिंचइ (महा)। संकृ अहिसिंचिऊण (स ११६)।

अहिसिंचण न [अभिषेचन] अभिषेक (सम १२५)।

अहिसित्त देखो अभिसित्त (महा, सुर ८, ११९)।

अहिसेअ देखो अभिसेअ (सुपा ३७, नाट)।

अहिसोढ़ वि [अधिसोढ] सहन किया हुआ (उप १४७ टी)।

अहिस्संग पु [अभिष्वङ्ग] आसक्ति (नाट)।

अहिहय वि [अभिहत] १ आघात-प्राप्त (से ५, ७७)। २ मारित, व्यापादित (से १४, १२)।

अहिहर सक [अभि + हृ] १ लेना। २ उठाना। ३ अक. शोभना, विराजना। ४ प्रतिभास होना, लगना,

'नीयाभरणा अकयएणमंडणा
अहिहरंति रमणीओ।
सुरणाओ व कुसुमफलतरम्मि
सहयारवल्लीओ।
इह हि हलिद्दाहयदविडसा-
मलीगंडमंडलानील।
फलमसअलपरिणामावलवि
अहिहरइ चूयाण' (गउड)।

अहिहर न [दे] १ देवकुल, पुराना देवमन्दिर। २ वल्मीक (दे १, ५७)।

अहिहव सक [अभि + भू] पराभव करना, जीतना। अहिहवति (स १९८) कर्म अहिहवीयति (स ६६८)।

अहिहाण न [दे अभिधान] वर्णन, प्रशंसा (दे १, २१)।

अहिहाण देखो अभिहाण (स १६५, गउड, सुर ३, २५, पात्र)।

अहिहू देखो अहिहव। कवकृ अहिहूअमाण (अभि ३७)।

अहिहूअ वि [अभिभूत] पराभूत, परास्त (दे १, १५८)।

अही सक [अधि + इ] पढना। कर्म अहीयइ (विसे ३१९९)।

अही स्त्री [अही] नागिन, सर्पिणी (जीव २)।

अहीकरण न [अधिकरण] कलह, झगडा (निचू १०)।

अहीगार देखो अहिगार, 'सेसेसु अहीगारो, उवगरणसरीरमुक्खेसु' (आचानि २९४)।

अहीण वि [अधीन] आयत्त, अधीन (पण्ह २, ४)।

अहीण वि [अ-हीन] अन्यून, पूर्ण (विपा १, १, उवा)।

अहीय देखो अहिय = अधिक (पव १९८)।

अहीय वि [अधीत] पठित, अभ्यस्त, 'वेया अहीया ण भवंति ताणं' (उत्त १५, १२, णाया १, १४, स ७८)।

अहीरग वि [अहीरक] तन्तुरहित (फलादि) (जी १२)।

अहीरु वि [अभीरु] निडर, निर्भीक (भवि)।

अहीलास देखो अहिलास, 'देहम्मि अहिलासो' (तंदु ४१)।

अहीसर पु [अधीश्वर] परमेश्वर (प्रामा)।

अहुआसेय वि [अहुताशेय] अग्नि के अयोग्य (गउड)।

अहुणा अ [अधुना] अभी, इस समय, आजकल (ठा ३, ३, नाट)।

अहुणि (पै) देखो अहुणा (प्राकृ १२७)।

अहुलण वि [अमार्जक] अनाशक (कुमा)।

आणाइत्त वि [आज्ञावत्] आज्ञा माननेवाला (पचा)।

आणाइय वि [आनायित] मँगाया हुआ (कुमा २, २१)।

आणापाण पु [आनप्राण] १ श्वासोच्छ्वास (प्रासू १०४)। २ श्वासोच्छ्वास-परिमित समय (अणु)। °पज्जत्ति स्त्री [°पर्याप्ति] श्वासोच्छ्वास लेने की शक्ति (भग ६, ४)।

आणापाणु स्त्री [आनप्राण] ऊपर देखो, 'आणापाणूओ' (भग २५, ५)।

आणापाणुय पु [आनप्राणक] श्वासोच्छ्वास-परिमित काल (कप्प)।

आणाम पु [आनाम] श्वास, अन्त श्वास (भग)।

आणामिय वि [आनामित] १ थोड़ा नमाया हुआ (पण्ह १, ४)। २ अधीन किया हुआ (पउम ६८, ३७)।

आणाल पु [आलान] १ बन्धन। २ हाथी बाँधने की रज्जु—डोरी। ३ जहां पर हाथी बाँधा जाता है वह स्तम्भ, कील (हे २, १७७, प्रामा)। °क्खभ, °खभ पुं [°स्तम्भ] जहाँ हाथी बाँधा जाता है वह स्तम्भ (हे २, ११७)।

आणाव देखो आणव = आ + ज्ञपय्। आणावेइ (स १२६)। कवकृ. आणाविज्जत (सुपा ३२३)। कृ आणावेयव्व (आचा)।

आणाव सक [आ + नायय्] मँगवाना। आणावइ (भवि)। संकृ आणाविय (नाट)।

आणाव (अप) सक [आ + नी] लाना। आणावइ (प्राकृ १२०)।

आणावण न [आनायन] दूसरे से मँगवाना, 'मयमाणयणे पढमा वीया आणावणेण अन्नेहिं (सवोघ ७)।

आणावण न [आज्ञापन] आज्ञा, हुकुम (पड्)।

आणाविय वि [आज्ञापित] जिसको हुकुम किया गया हो वह, फरमाया हुआ (सुपा २५१)।

आणाविय वि [आनायित] मँगवाया हुआ (सुपा ३८५)।

आणि देखो आणी। कृ आणियव्व (रयण ६)। संकृ आणिअ (नाट)।

आणिअ वि [आनीत] लाया हुआ (हे १, १०१)।

आणिअ [दे] देखो आढिअ (दे १,७४)।

आणिक्क वि [दे] टेढा, वक्र (से ६, ८६)।

आणिक्क न [दे] तिर्यक् मैथुन (दे १, ६१)।

आणी सक [आ + नी] लाना। कर्म. आणीअइ (पि ५४८)। वकृ 'आणंतीए गुणेसु, दोमेसु परमुह कुणतीए' (मुद्रा २३६)। संकृ आणीय (विसे ६१६)। कवकृ आणिज्जत (सुपा १६३)।

आणीय त्रि [आनीत] लाया हुआ (हे १, १०१, काल)।

आणुअ न [दे] १ मुख, मुँह (दे १, ६२, पड्)। २ आकार, आकृति (दे १, ६)।

आणुओगिअ वि [आनुयोगिक] व्याख्याकर्ता (णदि ५१)।

आणुकंपिय वि [आनुकम्पिक] दयालु, कृपालु (राज)।

आणुगामि वि [अनुगामिन्] नीचे देखो (विसे ७३६)।

आणुगामिय वि [आनुगामिक] १ अनुसरण करनेवाला, पीछे-पीछे जानेवाला (भग)। २ न अवधिज्ञान का एक भेद (आवम)।

आणुगुण्ण } आणुगुन्न } न [आनुगुण्य] १ औचित्य, अनुरूपता (पंचा ६, २६)। २ अनुकूलता (धर्मसं ११८६)।

आणुधम्मिय वि [आनुधर्मिक] इतर धर्मवालो को भी अभीष्ट, सर्वधर्म-सम्मत (आचा)।

आणुपाणु देखो आणापाणु (कम्म ५, ४०)।

आणुपुव्व न [आनुपूर्व्य] अनुक्रम, परिपाटी (निर १,१)।

आणुपुव्वी स्त्री [आनुपूर्वी] क्रम, परिपाटी (अणु)। °णाम, °नाम न [°नामन्] नामकर्म का एक भेद (सम ६७)।

आणुलोमिअ वि [आनुलोमिक] अनुलोम, अनुकूल, मनोहर (दस ७, ५६)।

आणुवित्ति स्त्री [अनुवृत्ति] अनुसरण (स ६१)।

आणूग पुन [अनूप] सजलप्रदेश (धर्मसं ६२६)।

आणूव पु [दे] श्वपच, डोम (दे १, ६४)।

आणे सक [आ + नी] लाना, ले आना। आणेइ (महा)। कृ आणेयव्व (सुपा १६३)। संकृ. आणेऊण (महा)।

आणे सक [ज्ञा] जानना। आणेइ (नाट)।

आणेसर देखो आणा-ईसर (श्रा १०)।

आत देखो आय = आत्मन् (ठा १)।

आतब देखो आयव = आताम्र (स २६१)।

आतित्थ देखो आइत्थ (कुप्र १००, २८६)।

आत्त देखो अत्त = आत्मन्, 'आत्तहियं खु दुहेण लब्भइ' (सूत्र १, २, २, ३०)।

आत्त देखो अत्त = आत्त (अणु २१)।

आत्त वि [आत्मीय] स्वकीय (अणु २१)।

आदंस } आदंसग } देखो आयस (गा २०४, प्रति ८, सूत्र १, ४)।

आद (शौ) देखो अत्त = आत्मन् (द्रव्य ६)।

आद देखो आइ = आ + दा। आदए (सूत्र १, ८, १६)।

आदण्ण } आदन्न } वि [दे] आकुल, व्याकुल, घबड़ाया हुआ (उप पृ २२१, हे ४, ४२२)।

आदयाण वि [आददान] ग्रहण करता हुआ (श्रु १३८)।

आदर देखो आयर = आ + दृ। आदरइ (हे ४, ८३)।

आदरिस देखो आयस (कुमा, दे २, १०७)।

आदाउ वि [आदातृ] ग्रहण करनेवाला (विसे १५६८)।

आदाण देखो आयाण (ठा ४, १), 'गब्भादाणेण सजुयामि तुम' (पउम ६५,६०, उवा)।

आदाण न [आर्द्रहण] उबाला हुआ, गरम किया हुआ (जल तैल आदि) (उवा)।

आदाणिय न [आदानीय] लाभ, नफा (सुख ४, ६)।

आदाणीय देखो आयाणीय (कप्प)।

आदाय देखो आया = आ + दा।

आदि देखो आइ = आदि (कप्प, सूत्र १,५)।

आदिच्च देखो आइच्च (ठा ५, ३, ८)।

आदिच्छा स्त्री [आदित्सा] ग्रहण करने की इच्छा (श्राव)।

आदिज्ज देखो आएज्ज (भग)।

आदिट्ठ देखो आइट्ठ (अभि १०६)।

आदित्त देखो आइत्त (वजा १६०)।

आ अ [आ] नीचे, अध (राय ३५, ३६)।
आ अ [आस्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ खेद (गा ६२६)। २ दुःख। ३ गुस्सा, क्रोध (कप्पू)।
आ सक [या] जाना। 'अन्नो ण आमि छेत्त' (गा ८२१)।
आअ वि [दे] १ अत्यंत, बहुत। २ दीर्घ, लम्बा। ३ विषम, कठिन। ४ न लोह, लोहा। ५ मुसल, मूषल (दे १, ७३)।
आअ वि [आगत] आया हुआ, 'पत्थति आअरोसा' (से १२, ६८, कुमा)।
आअअ वि [आगत] आया हुआ (से ३, ४, १२, १८, गा ३०१)।
आअअ वि [आयत] लम्बा, विस्तीर्ण (से ११, ११),
'मरगयसूईविद्ध व मोत्तिअ पिअइ आअअग्गीवो।
मोरो पाउसआले तणग्गलग्ग उअअबिंदु'
(गा ३६४)।
आअंछ सक [कृप्] १ खींचना। २ जोतना, चास करना। ३ रेखा करना। आअंछइ (षड्)।
आअतव्व देखो आगम=आ + गम्।
आअतुअ देखो आगंतुय (स्वप्न २०, अभि १२१)।
आअंपिअ देखो आकंपिय (से १०, ५१)।
आअत्र वि [आताम्र] थोड़ा लाल (से ६,३१, सुर ३, ११०)।
°आअव पु [कादम्ब] हस, पक्षि-विशेष (से ६, ३१)।
आअक्ख सक [आ + चक्ष्] कहना, बोलना, उपदेश करना। आयक्खाहि (भग)। कर्म आअक्खीअदि (शौ) (नाट)। भूकृ. आअक्खिद (शौ) (नाट)।
आअच्छ देखो आगच्छ। आअच्छइ (षड्)। संकृ आअच्छिअ, आअच्छिऊण (नाट, पि ५८१, ५८४)।
आअड्ड अक [दे] परवश होकर चलना। आअड्डइ (दे १, ६९)।
आअड्ड अक [व्या + पृ] व्यापृत होना, काम में लगना। आअड्डइ (सण, षड्)। आअड्डेइ (हे ४, ८१)।
आअड्डिअ वि [दे] परवशचलित, दूसरे की प्रेरणा से चला हुआ (दे १, ६८)।
आअड्डिअ वि [व्यापृत] कार्य में लगा हुआ (कुमा)।
आअण्णण देखो आयन्नण (गा ६५६)।
आअत्ति देखो आयइ (पिंग)।
आअद देखो आगय (प्राकृ १२, संक्षि ६)।
आअम देखो आगम (अच्चु ७, अभि १८४, गा ४७६, स्वप्न ४८, मुद्रा ८३)।
आअमण देखो आगमण (से ३, २०, मुद्रा १८७)।
आअर सक [आ + दृ] आदर करना, सत्कार करना। आअरइ (षड्)।
आअर न [दे] १ उदूखल, ऊखल। २ कूर्च (दे १, ७४)।
आअल्ल पु [दे] १ रोग, बीमारी (दे १, ७५, पाअ)। २ वि चचल, चपल (दे १,७५)। देखो आयल्लया।
आअल्लि } स्त्री [दे] झाडी, लताओं से निविड
आअल्ली } प्रदेश (दे १, ६१)।
आअव्व अक [वेप्] काँपना। आअव्वइ (षड्)।
आआमि देखो आगामि (अभि ८१)।
आआस देखो आयस (षड्)।
आआसतअ [दे] देखो आयासतल (षड्)।
आइ सक [अ + दा] ग्रहण करना, लेना। आइएज्जा (सूअ १,७,२६)। आइयत्ति (भग)। कर्म. आइयइ (कस)। सकृ आइत्तूण, आयइत्ता, आइत्तु (आचा, सूअ १, १२, पि ५७७)। प्रयो. आइयावेंति (सूअ २,१)। कृ आइयव्व (कस)।
आइ पु [आदि] १ प्रथम, पहला (सुर २, १३२)। २ वगैरह, प्रभृति (जी ३)। ३ समीप, पास। ४ प्रकार, भेद। ५ अवयव, अश। ६ प्रधान, मुख्य, 'इअ आसंसति निसीह! सिहदत्ताइणो दिआ तुज्झ' (कुमा, सूअ १, १५)। ७ उत्पत्ति (सम्म ६५)। ८ ससार, दुनया (सूम १, ७)। °गर वि [°कर] १ आदि प्रवर्त्तक (सम १)। २ पुं. भगवान् ऋषभदेव (पउम २८,३६)। °गुण पु [°गुण] सहभावी गुण (श्राव ४)। °णाह पुं [°नाथ] भगवान् ऋषभदेव (आवम)। °तित्थयर पुं [°तीर्थंकर] भगवान् ऋषभदेव (णदि)। °देव पु [°देव] भगवान् ऋषभदेव (सुर २, १३२)। °म पुं [°म] प्रथम, आद्य, पहला (आव ५)। °मूल न [°मूल] मुख्य कारण (आचा) °मोक्ख पुं [°मोक्ष] ससार से छुटकारा, मोक्ष। २ शीघ्र ही मुक्त होने वाली आत्मा, 'इत्थीओ जे ण सेवंति आइमोक्खा हि ते जणा' (सूअ १,७)। °राय पुं [°राज] भगवान् ऋषभदेव (ठा ६)। °वराह पुं [°वराह] कृष्ण, नारायण (से ७, २)।
आइ वि [आदिन्] खानेवाला (पंचा १८, ३६)।
आइ स्त्री [आजि] सग्राम, लड़ाई (सधा)।
आइअंतिय देखो अच्चंतिय (भग १२, ६)।
आइ अ [दे] वाक्य की शोभा के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला अव्यय (भग ३, २)।
आइखणा } स्त्री [दे] १ देवता-विशेष,
आइखणिया } कर्ण-पिशाचिका देवी (पव
आइखिणिया } २,७३ टी—पत्र १८२, वृह १)। २ डोमिनी, चाडाली (वृह १)।
आइंग न [दे] वाद्य-विशेष (पउम ३, ८७, ६६, ६)।
आइंच देखो आयंच। आइंचइ (उवा)।
आइंच देखो अक्कम=आ + क्रम्। आइंचइ (प्राकृ ७३)।
आइच्चवार पु [आदित्यवार] रविवार (कुप्र ४११)।
आइच्चिय वि [आदित्यिक] आदित्य-संबन्धी (सूअनि ८ टी)।
आइंछ देखो आअंछ। आइंछइ (हे ४,१८७)।
आइक्ख सक [आ + चक्ष्] कहना, उपदेश देना, बोलना, आइक्खइ (उवा)। वकृ. आइक्खमाण (णाया १,१२)। हेकृ आइक्खित्तए (उवा)।
आइक्खग वि [आख्यायक] कहनेवाला, वक्ता (पण्ह २, ४)।
आइक्खण न [आख्यान] कथन, उपदेश (वृह ३)।
आइक्खिय वि [आख्यात] उक्त, उपदिष्ट (स ३२)।
आइक्खिया स्त्री [आख्यायिका] १ वार्त्ता, कहानी (णाया १, १)। २ एक प्रकार की मैली विद्या, जिससे चाण्डालिनी भूत-काल आदि की परोक्ष बातें कहती है (ठा ६)।
आइग्ग वि [आविग्न] उद्विग्न, खिन्न (पाअ)।

आभिओगिय वि [आभियोगित] वशीकरण आदि से संस्कृत (आव)।

आभिओग्ग देखो आभिओग (पण्ण २०)।

आभिग्गहिअ वि [आभिग्रहिक] १ अभिग्रह-संबन्धी (पंचा ४, ८)। २ न मिथ्यात्व-विशेष (पच ४, २)।

आभिग्गहिय वि [आभिग्रहिक] १ प्रतिज्ञा से सबन्ध रखनेवाला। २ प्रतिज्ञा का निर्वाह करनेवाला (आव)। ३ न. मिथ्यात्व-विशेष (श्रा ६)।

आभिणंदिय पुं [आभिनन्दित] श्रावण मास (चंद)।

आभिट्ट, आभिडिय वि [दे] प्रवृत्त, 'आभिट्ट पर-मरणं' (पउम ४,४२,६,१६२, वज्जा ४२)।

आभिणिबोहिग देखो आभिणिबोहिय (धर्मसं ८२३)।

आभिणिबोहिय न [आभिनिबोधिक] इन्द्रिय और मन से होनेवाला प्रत्यक्षज्ञान-विशेष (सम ३३)।

आभिप्पाइअ वि [आभिप्रायिक] अभिप्राय-वाला (अणु १४५)।

आभिसेक्क वि [आभिषेक्य] १ अभिषेक के योग्य (निर १, १)। २ मुख्य, प्रधान, 'आभि-सेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह' (औप)।

आभीर, आभीरिय पुं [आभीर] एक शूद्र-जाति, अहीर, गोवाला (सूत्र १, ८, सुर ९, ६२)।

आभूअ वि [आभूत] उत्पन्न (निर १, १)।

आभेडिय [दे] देखो आभिट्ट (उप पृ ४२)।

आभोइअ वि [आभोगित] देखा हुआ (कप्प)।

आभोग पुं [आभोग] १ विलोकन, देखना (उप १४७)। २ प्रदेश, स्थान (सुर २, २२१)। ३ उपकरण, साधन (ओघ ३६)। ४ प्रति-लेखन (ओघ ३)। ५ उपयोग, ख्याल (भग)। ६ विस्तार (णाया १, १)। ७ ज्ञान, जानना (भग २५, ६, ठा ४)। देखो आभोय = आभोग।

आभोगण न [आभोगन] ऊपर देखो (णंदि)।

आभोगि वि [आभोगिन्] परिपूर्ण, 'जह कमलो निरवाओ जाओ जसविहवाभोगी' (सुपा २७५)। °णी स्त्री [°नी] मानसिक निर्णय उत्पन्न करानेवाली विद्या-विशेष (वृह)।

आभोय सक [आ + भोगय्] १ देखना। २ जानना। ३ ख्याल करना। आभोएइ (उवा, णाया)। वकृ आभोएमाण (कप्प)। संकृ आभोइत्ता, आभोएऊण, आभोइअ (दस ५, महा, पंचव)।

आभोय पु [आभोग] १ सर्प की फणा (स ६१०)। २ देखो आभोग (आव, महा, सुर ३, ३२)।

आम अ [आम] अनुमति प्रकाशक अव्यय—हाँ (गा ४१७, सुर २, २४५, स ४५६)।

आम अ [भवन्] आप (प्राकृ ८१)।

आम पु [आम] १ रोग, पीडा (से ९, ४४)। २ वि. अपक्व, कच्चा (श्रा २०)। ३ अशुद्ध, अपवित्र (आचा)। °जर पु [°ज्वर] अजीर्ण से उत्पन्न बुखार (गा ५१)।

आमइ वि [आमयिन्] रोगी (वव १)।

आम अ [आम] १ स्वीकार-सूचक अव्यय—हाँ (सुख २, १३)। २ अतिशय, अत्यन्त (धर्मसं ६४९)।

आमंड न [दे] बनावटी आमला का फल, कृत्रिम आमलक (उप पृ २१४, उप १४५ टी)।

आमंडण न [दे] भाण्ड, पात्र (दे १, ६८)।

आमंत सक [आ + मन्त्रय्] १ आह्वान करना, संबोधन करना। २ अभिनन्दन करना। वकृ आमंतेमाण (आचा)। संकृ आमंतित्ता (कप्प), आमंतिय (सूत्र १, ४)।

आमंतण न [आमन्त्रण] आह्वान, संबोधन (वव)। °वयण न [°वचन] संबोधन-विभक्ति (विसे ३४५७)।

आमंतणी स्त्री [आमन्त्रणी] १ संबोधन की भाषा, आह्वान की भाषा (दस ६)। २ आठवीं संबोधन-विभक्ति (ठा ८)।

आमंतिय वि [आमन्त्रित] संबोधित (विपा १, ९)।

आमग देखो आम (णाया १, ९)।

आमघाय पुं [अमाघात] अमारि-प्रदान, हिंसा-निवारण (पचा ९, १५, २०, २१)।

आमज्ज सक [आ + मृज्] एक बार साफ करना। आमज्जेज्ज (आचा)। वकृ आमज्जंत (निचू)। प्रयो. आमज्जावंत (निचू)।

आमद्द पुं [आमर्द] मर्पण, आघात (कुमा)।

आमय पु [आमय] रोग, दर्द (स ५६६, स्वप्न ६०)। °करणी स्त्री [°करणी] विद्या-विशेष (सूत्र २, २)।

आमय वि [आमत] संमत, अनुमत (विवे १३६)।

आमराय पुं [आमराज] एक प्रसिद्ध राजा (ती ७)।

आमरिस पुं [आमर्ष] स्पर्श (विसे ११०६)।

आमल पुंन [आमलक] आमला का फल (सम्मत्त १५६)।

आमलई स्त्री [आमलकी] आमला का पेड (दे)।

आमलकप्पा स्त्री [आमलकल्पा] नगरी-विशेष (णाया २, १)।

आमलग पु [आमरक] १ चारो ओर से मारना। २ विपाक-श्रुत का एक अध्ययन (ठा १०)।

आमलग, आमलय पुंन [आमलक] १ आमला का पेड (ठा ४)। २ आमला का फल, 'मुक्खोवाओ आमलगो विव करतले देसिओ भगवया' (वसु, कुमा)।

आमलय न [दे] नूपुर-गृह, नूपुर रखने का स्थान (दे १, ६७)।

आमसिण वि [आमसृण] १ थोडा चिकना। २ उल्लसित (से १२, ४३)।

आमिल्ल सक [आ + मुच्] छोडना। आमिल्लइ (भवि)।

आमिस न [आमिष] नैवेद्य (पंचा ६, २६, कुप्र ४२३, ती १३)।

आमिस न [आमिष] १ मांस (णाया १, ४)। २ वि मनोहर, सुन्दर (से ९, ३१)। ३ आसक्ति का कारण, 'आमिसं सव्वमुज्झित्ता विहरिस्सामो निरामिसा' (उत्त १४)। ४ आहार, फलादि भोज्य वस्तु (पंचा ६)।

आमुच सक [आ + मुच्] १ छोडना। २ उतारना। ३ पहनना। वकृ आमुचंत (श्राक ३८)।

आमुक्क वि [आमुक्त] १ त्यक्त (गा ५३९, गउड)। २ उतारा हुआ (श्राक ३८)। ३ परि-हित (वेणी १११ टी)।

(जीव ३)। °वरोभासमहावर पुं [वरावभासमहावर] अजिनवराभास नामक समुद्र का अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °वरोभासवर [°वरावभासवर] देखो अनन्तरोक्त अर्थ (जीव ३)।

आईनीइ स्त्री [आदिनीति] सामरूप पहली राजनीति (सुपा ४६२)।

आईय देखो आइ = आदि (जी ७, काल)।

आइय वि [आतीत] १ विशेष-ज्ञात। २ समार-प्राप्त, संसार मे घूमनेवाला (आचा)।

आईल पुन [आचील] पान का थूकना (पव)।

आईव अक [आ + दीप्] चमकना। वकृ आईवमाग (महानि)।

आईसर पुं [आदीश्वर] भगवान् ऋषभदेव (सिरि ५५१)।

आउ स्त्री [दे] १ पानी, जल (दे १, ६१)। २ इस नाम का एक नक्षत्र-देव (ठा २, ३)। °काय, °क्काय पुं [°काय] जल का जीव (उप ६८५, पराग १)। °काइय, °क्काइय पु [°कायिक] जल का जीव (पराग १, भग २४, १३)। °जीव पु [°जीव] जल का जीव (सूअ १, ११)। °वहुल वि [°वहुल] १ जल-प्रचुर। २ रत्नप्रभा पृथिवी का तृतीय काराड (सम ८८)।

आउ अ [दे] अथवा, या, 'आउ पलोहेइ मं अव्वुत्तवेसेण कोइ अमाणुसो, आउ सच्चय चेव अज्जउत्तोत्ति' (स ३४६)।

आउ } न [आयुष्] १ आयु, जीवन-
आउअ } काल (कुमा, रयण १६)। २ उमर, वय (गा ३२१)। ३ आयु के कारणभूत कर्म-पुद्गल (ठा ८)। °क्काल पु [°काल] मरण, मृत्यु (आचा)। °क्खय पुं [°क्षय] मरण, मौत (विपा १, १०)। °क्खेम न [°क्षेम] आयु-पालन, जीवन (आचा)। °विज्जा स्त्री [°विद्या] वैद्यकशास्त्र, चिकित्साशास्त्र, (आव)। °व्वेय पुं [°वेद] वैद्यक, चिकित्सा-शास्त्र (विपा १, ७)।

आउंच सक [आ + कुञ्चय्] सकुचित करना, समेटना। सकृ आउंचिवि (अप) (भवि)।

आउंचण न [आकुञ्चन] सकोच, गात्रसक्षेप (कस)।

आउंचणा स्त्री [आकुञ्चना] ऊपर देखो (धर्म ३)।

अउंचिअ वि [आकुञ्चित] १ संकुचित। २ उठा कर धारण किया हुआ (से ६, १७)।

आउंजि वि [आकुञ्चिन्] १ सकुचनेवाला। २ निश्चल (गउड)।

आउंट देखो आउट्ट = आ-वर्तय्। आउंटावेमि (णाया १, ५)।

आउंट अक [आ + कुञ्च्] संकोचना, प्रयो., संकृ आउंटावित्तु (पव ५)।

आउंटण न [आकुण्टन] आवर्जन (पचा १७, १६)।

आउंटण न [आकुञ्चन] संकोच, गात्र-सक्षेप (हे १, १७७)।

आउंवालिय वि [दे] आप्लावित, डुबाया हुआ, पानी आदि द्रवपदार्थ से व्याप्त (पाअ)।

आउक्क } देखो आउ = आयुष् (सुपा ६५५,
आउग } भग ६, ३)।

आउच्छ सक [आ + प्रच्छ्] आज्ञा लेना, अनुज्ञा लेना। वकृ आउच्छंत, आउच्छमाण (से १२, २१, ४७)। संकृ आउच्छिऊण, आउच्छिअ (महा, सुपा ६१)।

आउच्छण न [आप्रच्छन] आज्ञा, अनुज्ञा (गा ४७, ५००)।

आउच्छणा स्त्री [आप्रच्छना] प्रश्न (पचा १२, २६)।

आउच्छा स्त्री [आपृच्छा] आज्ञा (कुप्र १२४)।

आउच्छिय वि [आपृष्ट] जिसकी आज्ञा ली गई हो वह (से १२, ६४)।

आउज्ज देखो आओज्ज = आतोद्य (हे १, १५६)।

आउज्ज पुं [आवर्ज] १ समुख करना। २ शुभ क्रिया (पराग ३६)।

आउज्ज वि [आवर्ज्य] सम्मुख करने योग्य (आवम)।

आउज्ज वि [आयोज्य] जोडने योग्य, सम्बन्ध करने योग्य (विसे ७४ ३२९६)।

आउज्जिय वि [आतोद्यिक] वाद्य वजानेवाला (सुपा १९९)।

आउज्जिय वि [आयोगिक] उपयोगवाला, सावधान (भग २, ५)।

आउज्जिय वि [आवर्जित] समुख किया हुआ (पराग ३६)।

आउज्जिया स्त्री [आवर्जिका] क्रिया, व्यापार (आवम)। °करण न [°करण] शुभ व्यापार-विशेष (पराग ३६)।

आउज्जीकरण न [आवर्जीकरण] शुभ व्यापार-विशेष (पराग ३६)।

आउट्ट सक [आ + वृत्] १ करना। २ भूलाना। ३ व्यवस्था करना। ४ अक समुख होना, तत्पर होना। ५ निवृत्त होना। ६ घूमना, फिरना। आउट्टइ, आउट्टंति (भग ७, १, निचू ३)। वकृ आउट्टंत (सम २२)। सकृ आउट्टिऊण (राज)। हेकृ आउट्टित्तए (कप्प)। प्रयो. आउट्टावेमि (णाया १, ५ टी)।

आउट्ट सक [आ + कुट्ट्] छेदन करना, हिंसा करना। आउट्टामो (आचा)।

आउट्ट वि [आवृत्त] १ निवृत्त, पीछे फिरा हुआ (उप ६६८), 'दप्पकए वाउट्टे जइ खिंसति तत्थवि तहेव' (वृह ३)। २ भ्रामित, भुलाया हुआ (उप ९००)। ३ ठीक-ठीक व्यवस्थित (आचा)। ४ कृत, विहित (राज)।

आउट्ट पु [आकुट्ट] छेदन, हिंसा (सूअ १, १)।

आउट्ट } वि [आदृत] आदर-युक्त (पिंड
आउट्टिअ } ३१९, पव ११२)।

आउट्टण न [आकुट्टन] हिंसा (सूअ १, १)।

आउट्टण न [आवर्त्तन] १ आराधन, सेवा, भक्ति (वव १, ६)। २ अभिमुख होना, तत्पर होना (सूअ १, १०)। ३ अभिलाषा, इच्छा (आचा)। ४ घूमाना, भ्रमण। ५ निवृत्ति (सूअ १, १०)। ६ करना, क्रिया, कृति (राज)।

आउट्टणया स्त्री [आवर्त्तनता] अपायज्ञान (णदि)।

आउट्टणा स्त्री [आवर्त्तना] ऊपर देखो (निचू २)।

आउट्टावण न [आवर्त्तन] अभिमुख करना, तत्पर करना (आचा २)।

रखनेवाला, मन और इन्द्रियों का निग्रह करनेवाला। २ अश्व आदि को सयत रहने को सिखानेवाला (ठा ४, २)।

आयप पु [आकम्प] १ कंपना, हिलना। २ कँपानेवाला (पउम ६६, १८)।

आयपिय वि [आकम्पित] कँपाया हुआ (स ३५३)।

आयब अक [वेप्] काँपना, हिलना। आयबइ (हे ४, १४७)।

आयब } वि [आताम्र] थोडा लाल
आयबिर } (ओप, सुर ३, ११०, सुपा ६, १८४)।

आयबिल न [आचाम्ल] तपो-विशेष, आबिल (णाया १,८)। °वड्ढमाण न [°वर्धमान] तपश्चर्या विशेष (अत ३२, महा)।

आयबिलिय वि [आचाम्लिक] आम्बिल-तप का कर्त्ता (ठा ७, पराह २, १)।

आयभर } वि [आत्मम्भरि] स्वार्थी, अकेलआयंभरि } पेटू (ठा ४, ३)।

आयव अक [आ+कम्प्] काँपना, हिलना (प्रामा)।

आयस } पु [आदर्श] १ दर्पण (पराह १,४,
आयंसग } सूत्र १,१)। २ बैल आदि के गले का भूषण-विशेष (अणु)। °मुह पु [°मुख] १ एक अन्तर्द्वीप। २ उसके निवासी मनुष्य (ठा ४, २)।

आयक्ख देखो आइक्ख। आयक्खाहि (भग)।

आयग वि [आजक] देखो आय = आज (आचा)।

आयज्झ अक [वेप्] काँपना, हिलना। आयज्झइ (हे ४, १४१, षड्)। वक्र आयज्झत (कुमा)।

आयट्ट सक [आ + वर्त्तय्] १ फिराना, घुमाना। २ उबालना। वक्र आअट्टत (से ५, ७५, ८, १६)। कवक्र आयट्टिज्जमाण (णाया १, ६)।

आयट्टण न [आवर्त्तन] फिराना (सुपा ५३०)।

आयड्ढ सक [आ + कृप्] खीचना। आयड्ढइ (महा)। कवक्र आअड्ढिज्जत (से ५, २८)। सक्र आयड्ढिऊण (महा)।

आयड्ढण न [आकर्पण] आकर्पण, खीचाव (सुपा १२, ७६, गा ११८)।

आयड्ढि स्त्री [आकृष्टि] ऊपर देखो (गउड, दे ६, २१)।

आयड्ढि पुं [दे] विस्तार (दे १, ६४)।

आयड्ढिय वि [आकृष्ट] खीचा हुआ (काल, कप्पू)।

आयण्ण सक [आ + कर्णय्] सुनना, श्रवण करना। आअराणेइ (गा ३६५)। वक्र आअण्णंत (से १, ६५, गा ४६५; ६४३)। सक्र आयण्णिऊण (उवा)।

आयण्णण न [आकर्णन] श्रवण (महा)।

आयण्णिय वि [आकर्णित] सुना हुआ (उवा)।

आययत वक्र [आददत्] ग्रहण करता हुआ (सूअ २, १)।

आयत्त त्रि [आयत्त] अधीन, स्ववश (गा ३७६)।

आयन्न देखो आयण्ण। वक्र आयन्नत (सुर १, २४७)।

आयन्नण देखो आयण्णण (सुर ३, २१०)।

आयम सक [आ + चम्] आचमन करना, कुल्ला करना। हेक्र आयमित्तए (कप्प)। वक्र आयममाण (ठा ५)।

आयमण न [आचमन] शुद्धि, शौच (आ १२, गा ३३०, निचू १, स २०६, २५२)।

आयमिअ देखो आगमिअ (हे १, १७७)।

आयमिणी स्त्री [आयमिनी] विद्या-विशेष (सूअ २, २)।

आयय वि [आयत] १ लम्बा विस्तृत (उवा, पउम ८, २१५)। २ पु मोक्ष (सूअ १,२)।

आयय सक [आ + दद्] ग्रहण करना। आयए, आययति (दस ५, २, ३१, उत्त ३, ७)। वक्र आययमाण (पिंड १०७)।

आययण न [आयतन] १ प्रकटीकरण (सूअ १, ६, १६)। २ उपादान कारण (सूअ १, १२, ५)।

आययण न [आयतन] १ घर, गृह (गउड)। २ आश्रय, स्थान (आचा)। ३ देव-मन्दिर (आवम)। ४ धार्मिक जनो का एकत्र होने का स्थान,

'जत्थ साहम्मिया बहवे सीलवता बहुस्सुया।
चरित्तायारसपण्णा आययण त वियाण हु'
(धम्म)। ५ कर्म-बन्ध का कारण (आचा)।

६ निर्णय, निश्चय (सूअ १, ६)। ७ निर्दोष स्थान (साधं १०६)।

आयर सक [आ + चर्] आचरना, करना। आयरइ (महा, उव)। वक्र आयरत, आयरमाण (भग)। कृ. आयरियव्व (स १)।

आयर पु [आकर] १ खानि, खान। २ समूह (काल, कप्पू)।

आयर देखो आयार = आचार (पुप्फ ३५६)।

आयर पु [आदर] १ सत्कार, सम्मान (गउड)। २ परिग्रह, असंतोष (पराह १,५)। ३ ख्याल, सभाल (कप्पू)।

आयरग पु [आयरङ्ग] इस नाम का एक म्लेच्छ राजा (पउम २७, ६)।

आयरण न [आचरण] प्रवृत्ति, अनुष्ठान (पडि)।

आयरण न [आदरण] आदर (भग १२,५)।

आयरणा स्त्री [आचरणा] परंपरा का रिवाज (चेइय २५)।

आयरणा स्त्री [आचरणा] आचरण, अनुष्ठान (सट्ठि १४५, उवर १४५)।

अयरिय वि [आचरित] १ अनुष्ठित, विहित, कृत (उवा)। २ न शास्त्र-सम्मत चाल-चलन,

'असढेण समाइन्न ज कत्थइ केणइ असावज्जं।
न निवारियमन्नेहि य, बहुमणुमयमेयमायरियं'
(उप ८१३)।

आयरिय पु [आचार्य] १ गण का नायक, मुखिया (आवम)। २ उपदेशक, गुरु, शिक्षक (भग १, १)। ३ अर्थ पढानेवाला (भग ८, ८)।

आयरिस देखो आयस (हे २, १०५)।

आयल्ल अक [लम्ब्] १ व्याप्त होना। २ लटकना, 'केसकलाउ खधि ओएल्लइ, परिमोक्कु नियवि आयल्लइ' (भवि)।

आयल्लया स्त्री [दे] बेचैनी, 'मयणसरविहुरियगी सहसा आयल्लय पत्ता' (पउम ८, १८६), 'विद्धो अणगबाणेहिं झत्ति आयल्लयं पत्तो' (सुर १६, ११०), 'किं उण पिअवअस्स मअणाअल्लअं अत्तणो उइदेहिं अक्खरेहिं णिवेदेमि' (कप्पू)। देखो आअल्ल।

आयल्लिय वि [दे] आक्रान्त, व्याप्त (उप १०३१ टी, भवि)।

आयव पुं [आतपवत्] अहोरात्र का २४वां मुहूर्त (सुज १०, १३)।

आएस पुं [आदेश] १ अपेक्षा। २ प्रकार, रीति (णंदि १८४)। ३ वि. नीचे देखो (पिंड २३०)।

आएस देखो आवेस (भग १४, २)।

आएस } पु [आदेश] १ उपदेश, शिक्षा। २ आज्ञा, हुकुम (महा)। ३ विवक्षा,
आएसग } सम्मति (सम्म ३७)। ४ अतिथि, मेहमान (सूअ २, १, ५६)। ५ प्रकार, भेद, 'जीवे णं भंते! कालाएसेणं किं सपदेसे अपदेसे' (भग ६, ४, जीव २, विसे ४०३)। ६ निर्देश (निचू)। ७ प्रमाण, 'जाव न वहुप्पसन्नं ता मीस एस इत्थ आएसो' (पिंड २१)। ८ इच्छा, अभिलाषा, देखो आएसि। ९ दृष्टान्त, उदाहरण, 'वाघाइयमाएसो अवरद्धो हुज्ज अन्नतरएणं' (आचानि २६७)। १० सूत्र, ग्रन्थ, शास्त्र (विसे ४०५)। ११ उपचार, आरोप, 'आएसो उवयारो' (विसे ३४,८८)। १२ शिष्ट सम्मत, 'वहुसुयमाइण्णं तु,
न वाहियएणेहिं जुगप्पहाणेहिं।
आएसो सो उ भवे,
अहवावि नयतरविगप्पो' (वव २,८)।

आएसण न [आदेशन] ऊपर देखो (महा)।

आएसण न [आदेशन, आवेशन] लोहा वगैरह का कारखाना, शिल्पशाला (आचा २, २,२,१०, औप)।

आएसि वि [आदेशिन्] १ आदेश करनेवाला। २ अभिलाषी, इच्छुक (आचा)।

आएसिय वि [आदिष्ट] जिसको आज्ञा दी गई हो वह (भवि)।

आएसिय वि [आदेशिक] १ आदेश संबन्धी। २ विवाह आदि के जिमन में बचे हुए वे खाद्य-पदार्थ जिनको श्रमणों में बाँट देने का सकल्प किया गया हो (पिंड २२९)।

आओ अ [दे] अथवा, या, 'हंत किमेयंति, किं ताव सुविणओ, आओ इदजालं, आओ मइविब्भमो, आओ सच्चयं चेवत्ति' (स ४५४)।

आओग पुं [आयोग] १ लाभ, नफा (औप)। २ अत्यधिक सूद के लिए करजा देना (भग)। ३ परिकर, सरंजाम (औप)।

आओग पु [आयोग] अर्थोपाय, अर्थोपार्जन का साधन (सूअ २, ७, २)।

आओग्ग पुं [आयोग्य] परिकर, सरजाम (औप)।

आओज्ज पुन [आयोग्य] वाद्य, वाजा (महा, पड्)।

आओज्ज वि [आयोज्य] संवन्ध-योग्य, जोडने योग्य (विसे २३)।

आओड सक [आ + खोटय्] प्रवेश कराना, घुसेडना। आओडावेंति (विपा १,६)।

आओडण न [आकोलन] मजवूत करना (से ६, ६)।

आओडिअ वि [दे] ताडित, मारा हुआ (से ६, ६)।

आओध अक [आ + युध्] लडना। आओधेहि (वेणि १११)।

आओस सक [आ + क्रुश्, क्रोशय्] आक्रोश करना, शाप देना। आओसइ (निर १, १) आओसेज्जसि, आओसेमि (उवा)। कवकृ आओसेज्जमाण (अंत २२)।

आओस पु [दे] प्रदोष-समय, सन्ध्या-काल (ओघ ६१ भा)।

आओसणा स्त्री [आक्रोशना] निर्भत्संना, तिरस्कार (निर १, १)।

आओहण न [आयोधन] युद्ध, लडाई (उप ६४८ टी, सुर ६, २२०)।

आंत वि [अन्त्य] अन्त का (पचा १८,३९)।

आकख सक [आ + काङ्क्ष्] चाहना, इच्छना। आकखिहि (भवि)।

आकंखा स्त्री [आकाङ्क्षा] चाह, इच्छा, अभिलाषा (विसे ८५६)।

आकंखि वि [आकाङ्क्षिन्] अभिलाषी, इच्छुक (आचा)।

आकद अक [आ + क्रन्द्] रोना, चिल्लाना। आकदामि (पि ८८)।

आकदिय न [आक्रन्दित] १ आक्रन्दन, रोदन। २ वि जिसने आक्रन्दन किया हो वह (दि ७, २७)।

आकप अक [आ + कम्प्] १ थोडा काँपना। २ तत्पर होना। ३ आरावन करना। संकृ. आकंपइत्ता, आकंपइत्तु (राज)।

आकंप पुं [आकम्प] १ थोडा काँपना। २ आराधन (वव)। ३ तत्परता, आवर्जन (राज)।

आकपण न [आकम्पन] ऊपर देखो (वव, धर्म)।

आकंपिय वि [आकम्पित] ईषत् चलित, कम्पित (उप ७२८ टी)।

आकपिय वि [आकम्पित] आवर्जित, प्रसन्न किया हुआ (पिंड ४३६)।

आकड्ढ पु [आकर्ष] खीचाव। °विकड्ढि स्त्री [°विकृष्टि] खीच-तान (भग १५)।

आकड्ढण न [आकर्षण] खीचाव (निचू)।

आकड्ढिय वि [दे] वाहर निकाला हुआ, 'पुव्व व वच्छ तीए निब्भच्छिया
ता घरित्तु गलयम्मि।
पच्छिमअसोगवणियादारेणाकड्ढिया
झत्ति॥' (धर्मंवि १३३)।

आकण्णण न [आकर्णन] श्रवण (नाट)।

आकण्णिय वि [आकर्णित] श्रुत, सुना हुआ (आचा)।

आकदि देखो आकिदि (संक्षि ६)।

आकम्हिय वि [आकस्मिक] अकस्मात् होनेवाला, विना ही कारण होनेवाला, 'वज्झनिमित्ताभावा जं भयमाकम्हियं तंति' (विसे ३४५१)।

आकर पु [आकर] १ खान। २ समूह (कुमा)।

आकस देखो आगस। आकसिस्सामो (आचा २, ३, १, १५) हेकृ. आकसित्तए (आचा २, ३, १, १५)।

आकार देखो आगार (कुमा, द १३)।

आकास देखो आगास (भग)।

आकासिय वि [दे] पर्याप्त, काफी (पड्)।

आकिइ स्त्री [आकृति] स्वरूप, आकार (हे १, २०९)।

आकिंचण न [आकिञ्चन्य] निस्पृहता, निष्परिग्रहता, 'आकिंचणं च वंभं च जइधम्मो' (नव २३)।

आकिंचणया स्त्री [आकिञ्चनता] ऊपर देखो (सम १२०)।

आकिंचणिय } देखो आकिंचण (आचू, सुपा
आकिंचन्न } ६०८)।

आकिट्ठि स्त्री [आकृष्टि] आकर्षण (धर्मवि १५)।

आयासइत्तिअ वि [आयासयितृ] तकलीफ देनेवाला (अभि ६३)।

आयासतल न [आकाशतल] चन्द्रशाला, घर के ऊपर की खुली छत (कुप्र ४५२)।

आयासतल न [दे] प्रासाद का पृष्ठ भाग (दे १,७२)।

आयासलव न [दे] पक्षिगृह, नीड (दे १, ७२)।

आयासिअ वि [आयासित] परिश्रान्त, खिन्न (गा १६०)।

आयाहम्म वि [आत्मघ्न] १ आत्मविनाशक। २ न आधाकर्म दोष (पिंड ६५)।

आयाहिण न [आदक्षिण] दक्षिण पार्श्व से भ्रमण करना (उवा)। °पयाहिण वि [°प्रदक्षिण] दक्षिण पार्श्व से भ्रमण कर दक्षिण पार्श्व में स्थित होनेवाला (विपा १, १)। °पयाहिणा स्त्री [°प्रदक्षिणा] दक्षिण पार्श्व से परिभ्रमण, प्रदक्षिणा (ठा १)।

आयु देखो आउ = आयुष्। °वत वि [°वत्] चिरायुष्क, दीर्घ आयुवाला (पण्ह १, ४)।

आर पु [आर] १ इह-लोक, यह जन्म (सूअ १,२,१,८, १६,२८, १,८,६)। २ मनुष्य-लोक (सूअ १, ६, २८)। ३ नुकीली लोहे की कील (कुप्र ४३४)। ४ न गृहस्थपन (सूअ १, २, १, ८)।

आर पु [आर] १ मंगल-ग्रह (पउम १७, १०८, सुर १०, २२४)। २ चौथा नरक का एक नरकावास (ठा ६)। ३ वि. अर्वाक्तन, पूर्व का (सूअ १,६)।

°आरअ वि [कारक] कर्त्ता, करनेवाला (गा १७६, ३४८)।

आरओ अ [आरतस्] १ पूर्व, पहले, अर्वाक् (सुअ १, ८, स ६४३)। २ समीप में, पास में (उप ३३१)। ३ शुरू कर के, प्रारम्भ कर के (विसे २२८५)।

आरओ अ [आरतस्] पीछे से (णदि २४६ टी)।

आरदर वि [दे] १ अनेकान्त। २ संकट, व्याप्त (दे १, ७८)।

आरभ सक [आ + रभ्] १ शुरू करना। २ हिंसा करना। आरंभइ (हे ४, १५५)। वकृ. आरभंत (गा ४२, से ८, ८२)। संकृ. आरंभइत्ता, आरंभिअ (नाट)।

आरंभ पु [आरम्भ] १ शुरूआत, प्रारम्भ (हे १, ३०)। २ जीव-हिंसा, वध (श्रा ७)। ३ जीव, प्राणी (पण्ह १, १)। ४ पाप-कर्म (आचा)। °य वि [°ज] पाप-कार्य से उत्पन्न (आचा)। °विणय पु [°विनय] आरंभ का अभाव। °विणइ वि [°विनयिन्] आरंभ से विरत (आचा)।

आरभग } पुं [आरम्भक] १ ऊपर देखो
आरंभय } (सूअ २, ६)। २ वि. शुरू करनेवाला (विसे ६२८, उप पृ ३)। ३ हिंसक, पाप-कर्म करनेवाला (आचा)।

आरभि वि [आरम्भिन्] १ शुरू करनेवाला (गउड)। २ पाप-कार्य करनेवाला (उप ८६६)।

आरभिअ पुं [दे] मालाकार, माली (दे १, ७१)।

आरंभिअ वि [आरब्ध] प्रारब्ध, शुरू किया हुआ (भवि)।

आरभिअ देखो आरंभ = आ + रभ्।

आरभिया स्त्री [आरम्भिकी] १ हिंसा से सम्बन्ध रखनेवाली क्रिया। २ हिंसक क्रिया से होनेवाला कर्म-बन्ध (ठा २, १, नव १७)।

आरक्ख न [आरक्ष्य] कोतवाल का ओहदा, कोतवाली, आरक्षकता (सुख ३, १)।

आरक्ख वि [आरक्ष] १ रक्षण करनेवाला (दे १, १५)। २ पु. कोतवाल, नगर का रक्षक (पाअ)।

आरक्खग वि [आरक्षक] १ रक्षण करनेवाला, त्राता (कप्प, सुपा ३५१)। २ पु क्षत्रियों का एक वंश। ३ वि उस वंश में उत्पन्न (ठा ६)।

आरक्खि वि [आरक्षिन्] रक्षक, त्राता (ठा ३, १, ओघ २६०)।

आरक्खिग } वि [आरक्षिक] १ रक्षक,
आरक्खिय } त्राता। २ पुं. कोतवाल (निचू १, १६, सुपा ३३६, महा, स १२७, १५१)।

आरज्झ सक [आ + राध्] आराधन करना। आरज्झइ (प्राकृ ६८)।

आरज्झ वि [आराध्य] पूज्य, माननीय (अच्चु ७१)।

आरड सक [आ + रट्] १ चिल्लाना, बूम मारना। २ रोना। वकृ. आरडंत (उप १२८ टी)। संकृ. आरडिऊण (महा)।

आरडिअ न [दे] १ विलाप, क्रन्दन। २ वि. चित्र-युक्त (दे १, ७५)।

आरण पुं [आरण] १ देवलोक-विशेष (अनु, सम ३६, इक)। २ उस देवलोक का निवासी देव, 'त चेव आरणच्चुय ओहीनाणेण पासंति' (सग २२१, विसे ६६६)।

आरण पुन [आरण] एक देवविमान (देवेन्द्र १३५)।

आरण न [दे] १ अधर, होठ। २ फलक (दे १, ७६)।

आरणाल न [आरनाल] काजी, माबूदाना (दे १, ६७)।

आरणाल न [दे] कमल, पद्म (दे १, ६७)।

आरण्ण वि [आरण्य] जंगली, जंगल-निवासी (से ८, ५६)।

आरण्णग } वि [आरण्यक] १ जंगली, जंगल-
आरण्णय } निवासी, जंगल में उत्पन्न (उप २२६, मा)। २ न शास्त्र-विशेष, उपनिषद्-विशेष, (पउम ११, १०)।

आरण्णिय वि [आरण्यिक] जंगल में बसनेवाला (तापस आदि) (सूअ २, २)।

आरत वि [आरत] १ थोडा रक्त (आचा)। २ अत्यन्त अनुरक्त (पण्ह २, ४)।

आरत्तिय न [आरात्रिक] आरती (सुर १०, १६, कुमा)।

आरद्ध वि [आरब्ध] प्रारब्ध, शुरू किया हुआ (काल)।

आरद्ध वि [दे] १ बढा हुआ। २ सतृष्ण, उत्सुक। ३ घर में आया हुआ (दे १, ७५)।

आरनाल देखो आरणाल = आरनाल (पाअ)।

आरनाल न [दे] कमल, पद्म (षड्)।

आरन्निय देखो आरण्णिय (सूअ २, २, २१)।

आरब देखो आरव।

आरब्भ नीचे देखो।

आरभ देखो आरंभ = आ + रभ्। आरभइ (हे ४, १५५, उवर १०)। वकृ. आरभंत, आरभमाण (ठा ७)। संकृ. आरब्भ (विसे ७६५)।

आगाढ वि [आगाढ] १ प्रबल, दुःसाध्य, 'कड्डुगोसहव आगाढरोगिणो रोगसमदच्छं' (उप ७२८ टी), 'नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अन्नमन्नस्स मोए आइइत्तए, नन्नत्थ आगढेहिं रोगायकेहिं' (कस)। २ अपवाद, खास कारण (पचभा)। ३ अत्यन्त गाढ (निचू)। °जोग पु [°योग] योग-विशेष, गणि-योग (ओघ ५४८)। °पण्ण न [°प्रज्ञ] शास्त्र, आगम, 'आगाढपण्णेसु य भावियप्पा' (वव)। °सुय न [°श्रुत] आगम-विशेष (निचू)।

आगामि वि [आगामिन्] आनेवाला (सुपा ९)।

आगार सक [आ + कराय्] बुलाना, आह्वान करना। संकृ आगारेऊण (आव)।

आगार न [आगार] १ घर, गृह (णाया १, १, महा)। २ वि. गृहस्थ, गृही (ठा)। °त्थ वि [°स्थ] गृही (पि ३०६)।

आगार पु [आकार] १ अपवाद (उप ७२८ टी, पडि)। २ इंगित, चेष्टा-विशेष (सुर ११, १६२)। ३ आकृति, रूप (सुपा ११५)।

आगारिय वि [आगारिक] गृहस्थ-सबन्धी (विसे)।

आगारिय वि [आकारित] १ आहूत। २ उत्सारित, परित्यक्त (आव)।

आगाल पु [आगाल] १ समान प्रदेश मे रहना। २ सम भाव से रहना (आचा)। ३ उदीरणा-विशेष (राज)।

आगास पुन [आकाश] आकाश, अन्तराल (उवा)। °गमा स्त्री [°गमा] विद्या-विशेष, जिसके बल से आकाश मे गमन कर सकता है (पउम ७, १४४)। °गामि वि [°गामिन्] आकाश मे गमन करने वाला, पक्षि-प्रभृति (आचा)। °जोइणी स्त्री [°योगिनी] पक्षि-विशेष, आगासजोइणीए मिसुओ सद्दोवि वामपासम्मि' (सुपा १८५)। °त्थिकाय पु [°अस्तिकाय] आकाश-प्रदेशो का समूह, अखण्ड आकाश-द्रव्य (पण्ण १)। °थिग्गल न [दे] मेघरहित आकाश का भाग (आवम)। °फलिह, °फालिय पु [°स्फटिक] निर्मल स्फटिक-रत्न (राय, औप)। °फालिया स्त्री [°फालिका] एक मीठा द्रव्य (पण्ण १७)। °इवाइ वि [°अतिपातिन्] विद्या आदि के बल से आकाश में गमन करनेवाला (औप)।

आगासिय वि [आकाशित] आकाश को प्राप्त (औप)।

आगासिय वि [आकर्षित] खींचा हुआ (औप)।

आगासिया स्त्री [आकाशिकी] आकाश मे गमन करने की लब्धि-शक्ति (सूअनि १६३)।

आगाह सक [अव + गाह्] अवगाहन करना, स्नान करना। आगाहइत्ता (दस ५, १, ३१)।

आगिइ स्त्री [आकृति] आकार, रूप, मूर्ति (सुर २, २२, विपा १, १)।

आगिट्ठि स्त्री [आकृष्टि] आकर्षण (सुपा २३२)।

आगी देखो आगिइ, 'छिण्णावलिरुयगागीदिसासु सामाइय न जं तासु' (विसे २७०७)।

आगु पु [आकु] अभिलाष, इच्छा (आक)।

आघं देखो आघव। 'सूत्रकृताग' सूत्र के प्रथम श्रुतस्कन्ध का दसवाँ अध्ययन (सूअ १,१०)।

आघंस सक [आ + घृष्] घर्षण करना (निचू)।

आघस सक [आ + घृष्] घिसना, थोडा घिसना। आघसिज्ज (आचा २, २, १, ४)।

आघस वि [आघर्ष] जल के साथ घिसकर जो पिया जा सके वह (पिंड ५०२)।

आघसण न [आघर्षण] एक बार का घर्षण (निचू)।

आघयण न [दे] वध-स्थान (णाया १, ६— पत्र १६७)।

आघव सक [आ + ख्या] १ कहना, उपदेश देना। २ ग्रहण करना। आघवेइ (ठा)। कवकृ आघविज्जए (भग)। भूका. आघं (सूअ, पि ८८)। वकृ आघवेमाण (पि ४४)। हेकृ आघवित्तए (पि ८८)।

आघवणा स्त्री [आख्यान] कथन, उक्ति (णाया १, ६)।

आघवइत्तु वि [आख्यायक] कथक, वक्ता, उपदेशक (ठा ४, ४)।

आघविय वि [आख्यात] उक्त, कहा हुआ (पि ४४)।

आघविय वि [दे] गृहीत, स्वीकृत (अणु २०)।

आघवेत्तग वि [आख्यापयितृक] उपदेष्टा, वक्ता (आचा)।

आघस सक [आ + घस्] थोडा घिसना। आघसावेज्ज (निचू)।

आघा सक [आ + ख्या] कहना। (आचा)।

आघा सक [आ + घ्रा] सूँघना। वकृ आघायत (उप ३५७ टी)।

आघाय वि [आख्यात] कथित, उक्त (आचा)।

आघाय वि [आख्यात] १ उक्त, कथित (सूअ १, १३, २)। २ न उक्ति, कथन (सूअ १, १, २, १)।

आघाय पुं [आघात] १ एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २६)। २ विनाश (उत्त ५, ३२, सुख ५, ३२)।

आघाय पुं [आघात] १ वध। २ चोट, प्रहार (कुमा, णाया १, ६)।

आघायत देखो आघा = आ + घ्रा।

आघाव देखो आघव। आघावेइ (पि ८८; २०२)।

आघुट्ठ वि [आघुष्ट] घोषित, जाहिर किया हुआ (भवि)।

आघुम्म अक [आ + घूर्ण्] डोलना, हिलना, काँपना, चलना।

आघुम्मिय वि [आघूर्णित] डोला हुआ, कम्पित, चलित, 'आघुम्मियनयणजुओ' (पउम १०, ३२, ८७, ५६)।

आघोस सक [आ + घोषय्] घोषणा करना, ढिंढोरा पिटवाना। आघोसेइ (म ६०)।

आघोसण न [आघोषण] ढिंढोरा, घोषणा (महा)।

आचक्ख सक [आ + चक्ष्] कहना। वकृ आचक्खन (पि २५, ८८, नाट)।

आचक्खिद (शौ) वि [आख्यात] उक्त, कथित (अभि २००)।

आचरिय वि [आचरित] १ अनुष्ठित, विहित। २ न आचरण (प्रासू १११)।

आचाम सक [आ + चामय्] चाटना, खाना, पीना। वकृ आचामत (कुप्र ३६)।

आचार देखो आयार = आचार (कुमा)।

आचारिअ देखो आयरिय = आचार्य (प्राप)।

आरेइअ वि [दे] १ मुकुलित, सकुचित। २ भ्रान्त। ३ मुक्त (दे १, ७७)। ४ रोमाञ्चित, पुलकित (दे १, ७७, पाअ)।

आरेण अ [आरेण] १ समीप, पास (उप ३३६ टी)। २ अर्वाक्, पहले (विसे ३६१७)। ३ प्रारम्भ कर (विसे २२८४)।

आरोअ अक [उत् + लस्] विकसित होना, उल्लास पाना। आरोअइ (हे ८, २०२)।

आरोअणा देखो आरोवणा (ठा ४, १, विसे २६२७)।

आरोइअ [दे] देखो आरेइअ (पड्)।

आरोग्ग सक [दे] खाना, भोजन करना, आरोगना। आरोग्गइ (दे १, ६६)।

आरोग्ग न [आरोग्य] एकाशन तप (सबोध ५८)।

आरोग्ग न [आरोग्य] १ नीरोगता, रोग का अभाव (ठा ४, ३, उव)। २ वि रोग-रहित, नीरोग (कप्प)। ३ पु एक ब्राह्मणोपासक का नाम (उप ५४०)।

आरोग्गरिअ वि [दे] रक्त, रँगा हुआ (पड्)।

आरोग्गिअ वि [दे] भुक्त, खाया हुआ (दे १, ६६)।

आरोद्ध वि [दे] १ प्रवृद्ध, बढा हुआ। २ गृहागत, घर मे आया हुआ (पड्)।

आरोय न [आरोग्य] १ क्षेम, कुशल। २ नीरोगता, 'आरोयारोय पसूया' (आचा २, १५, ६)।

आरोल सक [पुञ्ज्] एकत्र करना, इकट्ठा करना, आरोलइ (हे ४, १०२, पड्)।

आरोलिअ वि [पुञ्जित] एकत्रित, इकट्ठा किया हुआ (कुमा)।

आरोव सक [आ + रोपय्] १ ऊपर चढाना, ऊपर बैठाना। २ स्थापन करना। आरोवेइ (हे ४, ४७)। संकृ आरोवेत्ता, आरोविउं, आरोविऊण (भग, कुमा, महा)।

आरोवण न [आरोपण] ऊपर चढाना (सुपा २४६)। २ सम्भावना (दे १, १७४)।

आरोवणा स्त्री [आरोपणा] १ ऊपर चढाना। २ प्रायश्चित्त-विशेष (वव १)। ३ प्ररूपणा, व्याख्या का एक प्रकार। ४ प्रश्न, पर्यनुयोग (विसे २६२७, २६२८)।

आरोविअ वि [आरोपित] १ चढाया हुआ। २ संस्थापित (महा, पाअ)।

आरोस पु [आरोष] १ म्लेच्छ देश-विशेष। २ वि उस देश का निवासी (पण्ह १, १, कम्)।

आरोसिअ वि [आरोषित] कोपित, रुष्ट किया हुआ (से ६, ६६, भवि, दे १, ७०)।

आरोह सक [आ + रुह्] ऊपर चढना, बैठना। आरोहइ (कस)।

आरोह सक [आ + रोहय्] ऊपर चढाना। कृ आरोहइयव्व (वव १)।

आरोह पु [आरोह] १ सवार, हाथी, घोडा आदि पर चढनेवाला (से १३, ७५)। २ ऊँचाई (बृह)। ३ लम्बाई (वव १, ५)।

आरोह पुं [दे] स्तन, थन, चूँचो (दे १, ६३)।

आरोहग वि [आरोहक] १ सवार होनेवाला। २ हस्तिपक, पीलवान, हाथी का रक्षक (औप)।

आरोहि वि [आरोहिन्] ऊपर देखो (गउड)।

आरोहिय वि [आरूढ] ऊपर बैठा हुआ, ऊपर चढा हुआ (भवि)।

आल न [दे] अनर्थक, मुधा (सिरि ८६५)।

आल न [दे] १ छोटा प्रवाह। २ वि कोमल, मृदु (दे १, ७३)। ३ आगत (रभा)।

आल न [आल] कलंकारोप, दोषारोपण (स ४३३), 'न दिज्ज कस्सवि कूडआल' (सत्त २)।

°आल देखो काल (गा ५५, से १, २६, ५, ८५, ६, ५६)।

°आल देखो जाल (से ५, ८५, ६, ५६)।

°आल देखो ताल, 'समविसम णमंति हरिआलवकियाइं' (से ६, ५६)।

आलइअ वि [आलगित] यथास्थान स्थापित, योग्य स्थान मे रखा हुआ (कप्प)।

आलइअ वि [आलयिक] गृही, आश्रयवाला (आचा)।

आलइय वि [आलगित] पहना हुआ (आचा २, १५, ५)।

आलंकारिय वि [आलङ्कारिक] १ अलकार-शास्त्र-ज्ञाता। २ अलकार-सबन्धी। ३ अलंकार के योग्य, 'आलंकारिय भंड उवणेह' (जीव ३)।

आलंकिअ वि [दे] पंगु किया हुआ (दे १, ६८)।

आलंद न [आलन्द] समय का परिमाण-विशेष, पानी से भींजा हुआ हाथ जितने समय में सूख जाय उतने से लेकर पाँच अहोरात्र तक का काल (विसे)।

आलंदिअ वि [आलन्दिक] उपर्युक्त समय का उल्लंघन न कर कार्य करनेवाला (विसे)।

आलंब सक [आ + लम्ब्] आश्रय करना, सहारा लेना। संकृ. आलंबिय (भास ११)।

आलंब पु [आलम्ब] आश्रय, आधार (सुपा ६३५)।

आलंब न [दे] भूमि-छत्र, वनस्पति-विशेष जो वर्षा मे होता है (दे १, ६४)।

आलंबण न [आलम्बन] १ आश्रय, आधार, जिसका अवलम्बन किया जाय वह (णाया १, १)। २ कारण, हेतु, प्रयोजन (आवम; आचा)।

आलंबणा स्त्री [आलम्बना] ऊपर देखो (पि ३६७)।

आलंबि वि [आलम्बिन्] अवलम्बन करनेवाला, आश्रयी (गउड)।

आलंभिय न [आलम्भिक] १ नगर-विशेष (ठा १)। २ भगवती सूत्र के ग्यारहवें शतक का बारहवाँ उद्देश (भग ११, १२)।

आलंभिया स्त्री [आलम्भिका] नगरी-विशेष (भग ११, १२)।

आलक्क पु [दे] पागल कुत्ता (भत्त १२५)।

आलक्ख सक [आ + लक्षय्] १ जानना। २ चिह्न से पहिचानना। आलक्खिमो (गउड)।

आलक्खिय वि [आलक्षित] १ ज्ञात, परिचित। २ चिह्न से जाना हुआ (गउड)।

आलग्ग वि [आलग्न] लगा हुआ, संयुक्त (से ५, ३३)।

आलत्त वि [आलपित] संभाषित, आभाषित (पउम १६, ४२, सुपा २०८, श्रा ६)।

आलत्तय देखो अलत्त (गउड, गा ६४६)।

आलत्थ पु [दे] मयूर, मोर (दे १, ६५)।

आलद्ध वि [आलब्ध] १ संस्पृष्ट। २ संयुक्त। ३ स्पृष्ट, छुआ हुआ। ४ मारा हुआ (नाट)।

°आण देखो जाण = यान (चारु ८)।

आणछ देखो आअछ। आणछइ (पड्)।

आणत देखो आणी।

आणतरिय न [आनन्तर्य] १ अविच्छेद, व्यवधान का अभाव (ठा ४, ३)। २ अनुक्रम, परिपाटि, 'आणतरियति वा अणुपरिवाडित्ति वा अणुक्कमेत्ति वा एगट्ठा' (आचू)।

आणद अक [आ + नन्द्] आनन्द पाना, खुश होना।

आणंद सक [आ + नन्दय्] खुश करना। आणंदेदि (शौ) (नाट)। कृ आणदिअव्व (रयण १०)।

आणद पु [आनन्द] १ अहोरात्र का सोलहवाँ मुहूर्त (सुज्ज १०, १३)। २ एक देव-विमान (देवेन्द्र १३१)।

आणंद पुं [आनन्द] १ हर्ष, खुशी (कुमा)। २ भगवान् शीतलनाथ के मुख्य-शिष्य (सम १५२)। ३ पोतनपुर नगर का एक राजा, जो भगवान् अजितनाथ का मातामह था (पउम ५, ५२)। ४ भावी छठवाँ बलदेव (सम १५४)। ५ नागकुमार-जातीय देवो के स्वामी धरणेन्द्र के एक रथ-सैन्य का अधिपति देव (ठा ५, १)। ६ मुहूर्त-विशेष (सम ५१)। ७ भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र (राज)। ८ भगवान् महावीर के एक साधु शिष्य का नाम (कप्प)। ९ भगवान् महावीर के दस मुख्य उपासको (श्रावक-शिष्य) मे पहला (उवा)। १० देव-विशेष (ज, दीव)। ११ राजा श्रेणिक के एक पौत्र का नाम (निर २, १)। १२ 'उपासगदसा' सूत्र का एक अध्ययन (उवा)। १३ 'अणुत्तरोपपातिक दसा' सूत्र का सातवाँ अध्ययन (भग)। १४ 'निरयावली' सूत्र का एक अध्ययन (निर २, १)। १५ व. देश-विशेष (पउम ९८, ६६)। °पुर न [°पुर] नगर विशेष (बृह)। °रक्खिय पु [°रक्षित] स्वनामख्यात एक जैन साधु (भग)।

आणदण न [आनन्दन] १ खुशी, हर्ष (सुपा ४४०)। २ वि खुश करनेवाला, आनन्द-दायक (स ३१३, रयण ३, सण)।

आणंदवड } पु [दे] पहली बार की रज-
आणंदवस } स्वला का रक्त वस्त्र (गा ४५७, दे १, ७२, पड्)।

आणदा स्त्री [आनन्दा] १ देवी-विशेष, मेरु की पश्चिम दिशा मे स्थित रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी (ठा ८)। २ इस नाम की एक पुष्करिणी (राज)।

आणदिय वि [आनन्दित] १ हर्षप्राप्त (औप)। २ रामचन्द्र के भाई भरत के साथ दीक्षा लेनेवाला एक राजा (पउम ८५, ३)।

आणदिर वि [आनन्दिन्] आनन्दी, खुश रहनेवाला (भवि)।

आणक्ख सक [परि + ईक्ष्] परीक्षा करना। हेकृ आणक्खेउ (ओघ ३६)।

आणच्छ देखो आअछ। आणच्छइ (पड्)।

आणट्ट वि [आनष्ट] सर्वथा नष्ट (उत्त १८, ५०, सुख १८, ५०)।

आणण न [आनन] मुख, मुँह (कुमा)।

आणण न [आनयन] लाना (महा)।

आणत्त वि [आज्ञप्त] आदिष्ट, जिसको हुकुम दिया गया हो वह (णाया १, ८, सुर ४, १००)।

आणत्ति स्त्री [आज्ञप्ति] आज्ञा, हुकुम (अभि ८१)। °अर वि [°कर] आज्ञाकारक, नौकर (से ११, ६५)। °किंकर वि [°किङ्कर] नौकर (पण्ह)। °हर वि [°हर] आज्ञा-वाहक, संदेश-वाहक (अभि ८१)।

आणत्तिया स्त्री [आज्ञप्तिका] ऊपर देखो (उवा, पि ८८)।

आणत्थ न [आनर्थ्य] अनर्थता (सम्मु १५०)।

आणप (अशो) देखो आणव = आ + ज्ञपय्। आणपयति (पि ४)।

आणपाण देखो आणापाण (नव ६)।

आणप्प वि [आज्ञाप्य] आज्ञा करने योग्य (सूअ १, ४, २, १५)।

आणम अक [आ + अन्] श्वास लेना। आणमति (भग)।

आणमणी देखो आणवणी (भास १८, पि ८८, २४८)।

आणय पुन [आनत] १ देवलोक-विशेष (सम ३५)। २ पु उस देवलोक-वासी देव (उत्त)।

आणय पुंन [आनत] एक देवविमान (देवेन्द्र १३५)।

आणयण न [आनयन] लाना, आनना (श्रा १४, स ३७६)।

आणव सक [आ + ज्ञपय्] आज्ञा देना, फरमाना। आणवइ, आणवेसि (पउम ३३, १००, ९८)। वकृ आणवेमाण (पि ५५१)। कृ आणवेयव्व (महा)।

आणव देखो आणाव = आ + नायय्।

आणवण न [आज्ञपन] आज्ञा, आदेश, फर-माइश (उवा, प्रामा)।

आणवण न [आनायन] मँगवाना (सुपा ५७८)।

आणवणिय वि [आज्ञापनिक] आज्ञा फर-मानेवाला (राय २५)।

आणवणिया स्त्री [आज्ञापनिका, आनाय-निका] देखो दोनो आणवणी (ठा २, १)।

आणवणी स्त्री [आज्ञापनी] १ क्रिया-विशेष, हुकुम करना। २ हुकुम करने से होनेवाला कर्मबन्ध (नव १९)।

आणवणी स्त्री [आनायनी] १ क्रिया-विशेष, मँगवाना। २ मँगवाने से होनेवाला कर्म-बन्ध (नव १९)।

आणा स्त्री [आज्ञा] आदेश, हुकुम (ओघ ६०)। २ उपदेश, 'एसा आणा निग्गथिया' (आचा)। ३ निर्देश, 'उववाओ णिद्देसो आणा विणओ य होंति एगट्ठा' (वव)। ४ आगम, सिद्धान्त (विसे ८९४, णदि)। ५ सूत्र की व्याख्या (औप)। °ईसर पु [°ईश्वर] आज्ञा फरमानेवाला मालिक (विपा १, १)। °जोग पु [°योग] १ आज्ञा का सम्बन्ध (पंचा)। २ शास्त्र के अनुसार कृति, 'पाव विसाइतुल्लं आणाजोगो अ मतसमो' (पचव)। °रुइ स्त्री [°रुचि] सम्यक्त्व-विशेष (उत्त)। २ वि. आगमो पर श्रद्धा रखनेवाला (पच)। °व वि [°वत्] आज्ञा माननेवाला (पंचा)। °वत्त न [°पत्र] आज्ञापत्र, हुकुमनामा (से १, १८)। °ववहार पु [°व्यवहार] व्यवहार-विशेष (पचा)। °विजय न [°विचय, °विजय] धर्मध्यान-विशेष, जिसमे आज्ञा—आगम के गुणो का चिन्तन किया जाता है (औप)।

आणाइ पुं [दे] शकुनि, पक्षी (दे १, ६४)।

आलीढ पुंन [आलीढ] योद्धा का युद्ध समय का आसन-विशेष (वव १)।

आलीण वि [आलीन] १ लीन, आसक्त, तत्पर (पउम ३२,६)। २ आलिंगित, आश्लिष्ट (कप्प)।

आलीयग वि [आदीपक] जलानेवाला, आग सुलगानेवाला (णाया १ २)।

आलीयमाण देखो आली = आ + ली।

आलील न [दे] समीप का भय, पास का डर (दे १, ६५)।

आलीवग देखो आलीयग (पण्ह १, ३)।

आलीवण न [आदीपन] आग लगाना (दे १, ७१, विपा १, १)।

आलीविय वि [आदीपित] आग से जलाया हुआ (पि २४४)।

आलु पुंन [आलु] कन्द-विशेष, आलू (श्रा २०)।

आलुई स्त्री [आलुकी] वल्ली-विशेष (पव १०)।

आलुंख सक [दह्] जलाना, दाह देना। आलुंखइ (हे ४, २०८ षड्)।

आलुख सक [स्पृश्] स्पर्श करना, छूना। आलुखइ (हे ४ १८२)।

आलुखण न [स्पर्शन] स्पर्श, छूना (गउड)।

आलुखिअ वि [स्पृष्ट] स्पृष्ट, छुआ हुआ (से १,२१, पाअ)।

आलुखिअ वि [दग्ध] जला हुआ (सुर ६ २०३)।

आलुव सक [स्पृश्] छूना। आलुवइ (प्राकृ ७४)।

आलुप सक [आ + लुम्प्] हरण करना। आलुपह (आचा)।

आलुंप वि [आलुम्प] अपहारक, हरण करनेवाला, छीन लेनेवाला (आचा)।

आलुग देखो आलु (पराण १)।

आलुगा स्त्री [दे] घटी, छोटा घडा (उप ६६०)।

आलुयार वि [दे] निरर्थक, व्यर्थ निष्प्रयोजन, 'ता दसिमो नमग्गं अन्नह कि आलुयारभरिएहिं' (सुपा ३४३)।

आलेक्ख } वि [आलेख्य] चित्रित, 'रत्ति
आलेक्खिय } परिवट्टेउं लक्खं आलेक्खदिराय-

राणवि न खम' (अच्चु २५, से २, ४५; गा ६४१, गउड)।

आलेट्ठु } देखो आसिलिस।
आलेट्ठुअ }

आलेव पुं [आलेप] विलेपन, लेप, 'आलेवनिमित्तं च देवीओ वलयालकियवाहाओ घसंति चंदणं' (महा)।

आलेवण न [आलेपन] १ लेप विलेपन। २ जिसका लेप किया जाता है वह वस्तु, 'जे भिक्खू रत्तिं आलेवणजाय पडिग्गाहेत्ता' (निचू १२)।

आलेसिय वि [आश्लेषित] आलिंगन कराया हुआ (चेइय ३७६)।

आलेह पुं [आलेख] चित्र (आवम)।

आलेहिअ वि [आलेखित] चित्रित (महा)।

आलोअ सक [आ + लोक्] देखना, विलोकन करना। वकृ. आलोअत, आलोइंत, आलोएमाण (गा ५४६; उप पृ ४३, आचा)। कवकृ. आलोक्कन (से १, २५)। संकृ. आलोएऊण, आलोइत्ता (काल, ठा ६)।

आलोअ सक [आ + लोच्] १ देखना। २ गुरु को अपना अपराध कह देना। ३ विचार करना। ४ आलोचना करना। आलोएइ (भग)। वकृ. आलोअंत (पडि)। संकृ. आलोएत्ता, आलो-इअ (भग, पि ५८२)। हेकृ. आलोइत्तए (ठा २, १)। कृ. आलोएयव्व, आलोएइयव्व (उप ६८२, ओघ ७६६)।

आलोअ पुं [आलोक] १ तेज, प्रकाश (से २, १२)। २ विलोकन, अच्छी तरह देखना (ओघ ३)। ३ पृथ्वी का समान-भाग, सम भू-भाग (ओघ ५६५)। ४ गवाक्षादि प्रकाश-स्थान (आचा)। ५ जगत्, संसार (आव)। ६ ज्ञान (पण्ह १, ४)।

आलोअग } वि [आलोचक] आलोचना
आलोअय } करनेवाला (श्रा ४०, पुप्फ ३५५, ३६०)।

आलोअण न [आलोकन] विलोकन, दर्शन निरीक्षण (ओघ ५६ भा);

'अत्थालोअणतरला, इअरकईणं भमंति बुद्धीओ।
त एव निरारभ, एंति हियय कइंदाए' (गउड)।

आलोअग न [आलोचन] नीचे देखो (पण्ह २, १, श्राप २४)।

आलोअणा स्त्री [आलोचना] १ देखना, बतलाना। २ प्रायश्चित के लिए अपने दोषों को गुरु को बता देना। ३ विचार करना (भग १७, २, श्रा ४२, स ५०६)।

आलोइअ वि [आलोचित] दृष्ट, निरीक्षित (से ६, ६४)।

आलोइअ वि [आलोचित] प्रदर्शित, गुरु को बताया हुआ (पडि)।

आलोइअ देखो आलोअ = आ + लोच्।

आलोइत्तु वि [आलोकयितृ] देखने वाला, द्रष्टा (सम १५)।

आलोइल्ल वि [आलोकवत्] प्रकाश-युक्त (वज्जा १६०)।

आलोक्कन देखो आलोअ = आ + लोक्।

आलोग देखो आलोअ = आलोक (ओघ ५६५)। °नयर न [°नगर] नगर-विशेष (पउम ६८, ५७)।

आलोच देखो आलोअ = आ + लोच्। वकृ. आलोचंत (सुपा ३०७)। संकृ. आलोचिऊण (स ११७)।

आलोचण देखो आलोअण (उप ३३२)।

आलोड सक [आ + लोडय्] हिलोरना, मथन करना। संकृ. आलोडिवि (अप) (भवि)।

आलोडिय } वि [आलोडित] मथित,
आलोलिय } हिलोरा हुआ, 'आलोडिया य नयरी' (पउम ५३ १२६, उप १४२ टी)।

आलोयण न [आलोकन] गवाक्ष (उत्त १६, ४)।

आलोव सक [आ + लोपय्] आच्छादित करना। कवकृ. आलोविज्जमाण (स ३८२)।

आलोव देखो आलोअ = आलोक; 'मते अत्यालोवे भेसज्जे भोयणे पियागमणे' (रना)।

आलोविय वि [आलोपित] आच्छादित, ढका हुआ (णाया १, १)।

आव वि [यावत्] जितना। आवति (पि ३६६)।

आव अ [यावत्] जब तक, जब लग। °कह वि [°कथ] देखो °कहिय (विसे १२६३, श्रा १)। °कहं अ [°कथम्]

आदित्तु वि [आदातृ] ग्रहण करनेवाला (ठा ७)।
आदिय सक [आ + दा] ग्रहण करना। आदियइ (उवा)। प्रयो आदियावेंति (सूअ २, १)।
आदिल्ल } देखो आइल्ल (पि ५९५)।
आदिल्लग }
आदी स्त्री [आदी] इस नाम की एक महानदी (ठा ५, ३)।
आदीण वि [आदीन] १ अत्यंत दीन, बहुत गरीब (सूअ १, ५)। २ न दूषित भिक्षा। °भोइ वि [°भोजिन्] दूषित भिक्षा को लेनेवाला, 'आदीणभोईवि करेति पावं' (सूअ १, १०)।
आदीणिअ वि [आदीनिक] अत्यन्त दीन-सवन्धी, 'आदीणिय दुक्कडिय पुरत्था' (सूअ १, ५)।
आदु (शौ) देखो अदु (त्रि ९०)।
आदेज्ज देखो आएज्ज (पण्ह १, ४)।
आदेस देखो ओएस = आदेश (कुमा, वव २ ८)।
आदेस पु [आदेश] व्यपदेश, व्यवहार (सूअ १, ८, ३)। देखो आएस = आदेश (सूअ २, १, ५६)।
आधरिस सक [आ + धर्षय्] परास्त करना, तिरस्कारना। आधरिसहि (आवम)।
आधा देखो आहा (पिंड)।
आधार देखो आहार = आधार (पण्ह २,५)।
आधोरण पु [आधोरण] हस्तिपक, महावत, हाथीवान् (धर्मवि १३६)।
आनय देखो आणय (अनु)।
आनामिय देखो आणामिय (पण्ह १, ४)।
आपण देखो आवण (अभि १८८)।
आपण्ण देखो आवण्ण (अभि ६५)।
आपत्ति स्त्री [आपत्ति] प्राप्ति (सबोध ३५, पव १४९)।
आपाइय वि [आपादित] १ जिसकी आपत्ति की गई हो वह। २ उत्पादित, जनित (विसे १७४९)।
आपायण न [आपादन] सपादन (श्रावक ८२, पवा ६, १६)।
आपीड पु [आपीड] शिरोभूषण (श्रा २८)।
आपीण देखो आवीण (गउड)।
आपुच्छ सक [आ + प्रच्छ्] आज्ञा लेना, सम्मति लेना। आपुच्छइ (महा)। वकृ. आपुच्छंत (पि ३९७)। कृ. आपुच्छणीय (णाया १, १)। संकृ आपुच्छित्ता, आपुच्छित्ताणं, आपुच्छिऊण, आपुच्छिउं, आपुच्छिय (पि ५८२, ५८३, कप्प, ठा ५, १)।
आपुच्छण न [आप्रच्छन] आज्ञा, अनुमति (णाया १, ६)।
आपुट्ठ वि [आपृष्ट] जिसकी आज्ञा या सम्मति ली गई हो वह (सुर १०, ५१)।
आपुण्ण वि [आपूर्ण] पूर्ण, भरपूर (दे १, २०)।
आपूर पुं [आपूर] पूरनेवाला, 'मयणसरापूरं सर्मि' (कप्प)।
आपूर देखो आऊर। कर्म. आपूरिज्जइ (महा)। वकृ आपूरमाण, आपूरेमाण (भग, राय)।
आपेड }
आपेड्ड } देखो आपीड (पि १२२, महा)।
आपेल }
आप्पण न [दे] पिष्ट, आटा (षड्)।
आफंस पुं [आस्पर्श] अल्प स्पर्श (हे १,४४)।
आफर पुं [दे] द्यूत, जुआ (दे १, ६३)।
आफाल सक [आस्फालय्] आस्फालन करना, आघात करना। सकृ आफालित्ता, आफालिऊण (पि ५८२, ५८६)।
आफालण देखो अप्फालण (गा ५४९)।
आफुण्ण वि [दे] आक्रान्त (अणु १९२)।
आफोडिअ न [आस्फोटित] हाथ पछाड़ना (पण्ह १, ३)।
आबंध सक [आ + बन्ध्] मजबूत बांधना। वकृ आबंधत (हे १, ७)। सकृ आबंधिऊण (पि ५८६)।
आबंध पु [आबन्ध] सबन्ध, सयोग (गउड)।
आबद्ध वि [आबद्ध] बंधा हुआ (स ३५८)।
आबाहा स्त्री [आबाधा] १ अल्प बाधा (णाया १, ४)। २ अन्तर (सम १५)। ३ मानसिक पीडा (बृह)।
आभंकर पु [आभङ्कर] १ ग्रह-विशेष (ठा २, ३)। २ न विमान-विशेष (सम ८)।
°पभंकर न [°प्रभङ्कर] विमान-विशेष (सम ८)।
आभक्खाण देखो अब्भक्खाण (उवा)।
आभट्ठ वि [आभाषित] १ कथित, उक्त (सुपा १५१)। २ संभाषित (सुर २,२४८)।
आभरण न [आभरण] अलकार, आभूषण (पि ६०३)।
आभव्व वि [आभव्य] होने योग्य, संभाव्य (वव, सुपा ३०७)।
आभा स्त्री [आभा] प्रभा, कान्ति, तेज (कुमा, औप)।
आभागि वि [आभागिन्] भोक्ता, भोगी, 'अणेगाण जम्ममरणाणं आभागी भवेज्ज' (वसु, णाया १, १८)।
आभार पु [आभार] बोझ, भार (सुपा २३६)।
आभास सक [आ + भाष्] कहना, संभाषण करना। आभासइ (हे ४, ४४७)।
आभास पु [आभास] १ जो वास्तविक में वह न होकर उसके समान लगता हो। २ विपरीत, 'करणाभासेहिं' (कुमा)।
आभासिय पुं [आभाषिक] १ इस नाम का एक म्लेच्छ देश। २ उसमें रहनेवाली म्लेच्छ जाति (पण्ह १, १)। ३ एक अन्तर्द्वीप। ४ उसमें रहनेवाला, 'कहि णं भंते! आभासियमणुयाणं आभासियदीवे नाम दीवे' (जीव ३, ठा ४, २)।
आभासिय देखो आभट्ठ (निर)।
आभिओइय देखो आभिओगिय (महा)।
आभिओग पु [आभियोग्य] १ किंकर-स्थानीय देव-विशेष (ठा ४, ४)। २ नौकर, किंकर (राय)। ३ किंकरता, नौकरी (दस ६, २)।
आभिओगा स्त्री [आभियोग्या] आभियोगिक भावना (उत्त ३६, २५५)।
आभिओगि वि [आभियोगिन्] किंकर-स्थानीय देव (दस ६)।
आभिओगिय वि [आभियोगिक] १ मन्त्र आदि से आजीविका चलानेवाला (पण्ण २०)। २ नौकर स्थानीय देव-विशेष (णाया १, ८)। ३ वशीकरण, दूसरे को वश में करने का मन्त्रादि-कर्म (पंचा, महा)।

आवदि स्त्री [आवृति] आवरण (संक्षि ६)।
आवन्न देखो आवण्ण (पउम ३४, ३०, णाया १, २, स २५६, उत्तर १६०)।
आवय पुं [आवर्त्त] देखो आवत्त, 'कितिकम्म बारसावय' (सम २१)।
आवय देखो आवड। वकृ आवयंत, आवयमाण (पउम ३३, १३, णाया १, १, ८)।
आवया स्त्री [आपगा] नदी (पाअ, स ६१२)।
आवया स्त्री [आपद्] आपदा, विपद्, दुःख (पाअ धण ४२),
'न गणंति पुव्वनेहं, न य
नीइं नेय लोय-अववायं।
नय भाविआवयाओ, पुरिसा
महिलाए आयत्ता' (सुर २, १८६)।
आवर सक [आ + वृ] आच्छादन करना, ढँकना। कर्म आवरिज्जइ (भग ६, ३३)। कवकृ. आवरिज्जमाण (भग १५)। संकृ आवरित्ता (ठा)।
आवरण न [आवरण] १ आच्छादन करनेवाला, ढकनेवाला, तिरोहित करनेवाला (सम ७१, णाया १, ८)। २ वास्तु-विद्या (ठा ६)।
आवरणिज्ज वि [आवरणीय] १ आच्छादनीय। २ ढकनेवाला, आच्छादन करनेवाला (औप)।
आवरिय वि [आवृत] आच्छादित, तिरोहित, 'आवरिओ कम्मेहिं' (निचू १)।
आवरिसण न [आवर्षण] छिडकना, सिंचन (बृह १)।
आवरिसण न [आवर्षण] सुगंध जल की वृष्टि (अणु २५)।
आवरेइया स्त्री [दे] करिका, मद्य परोसने का पात्र-विशेष (दे १, ७१)।
आवलण न [आवलन] मोडना (पण्ह १, १)।
आवलि स्त्री [आवलि] १ पङ्क्ति, श्रेणी (महा)। २ पु एक विद्याधर का नाम (पउम ५, ६५)।
आवलिआ स्त्री [आवलिका] १ पंक्ति, श्रेणी (राय)। २ क्रम, परिपाटी (सुज्ज १०)। ३ समय-विशेष, एक सूक्ष्म काल-परिमाण (भग ६, ७)। °पविट्ठ वि [°प्रविष्ट] श्रेणी से व्यवस्थित (भग)। °बाहिर वि [°बाह्य] विप्रकीर्ण, श्रेणि-बद्ध नहीं रहा हुआ (भग)।
आवलिय वि [आवलित] वेष्टित (सूअनि २००)।
आवली स्त्री [आवली] १ पंक्ति, श्रेणी (पाअ)। २ रावण की एक कन्या का नाम (पउम ६, ११)।
आवस सक [आ + वस्] रहना, वास करना। आवसेज्जा (सूअ १, १२)। वकृ 'आगारं आवसंता वि' (सूअ १, ६)।
आवसह पु [आवसथ] १ घर, आश्रय, स्थान (सूअ १, ४)। २ मठ, संन्यासियों का स्थान (पण्ह, हे २, १८७)।
आवसहिअ पु [आवसथिक] १ गृहस्थ, गृही (सूअ २, २)। २ सन्यासी (सूअ २, ७)।
आवसिय, आवस्सग, आवस्सय वि [आवश्यक] १ अवश्य-कर्त्तव्य, जरूरी। २ न सामयिकादि धर्मानुष्ठान, नित्य-कर्म (उत्त, दस १०, णंदि)। ३ जैन ग्रन्थ-विशेष, आवश्यक सूत्र (आवम)। °णुओग पु [°नुयोग] आवश्यक सूत्र की व्याख्या (विसे १)।
आवस्सय पुन [आपाश्रय] १—३ ऊपर देखो। ४ आधार आश्रय (विसे ८७४)।
आवस्सिया स्त्री [आवश्यकी] सामाचारी-विशेष, जैन साधु का अनुष्ठान-विशेष (उत्त २६)।
आवह सक [आ + वह्] धारण करना, वहन करना, 'धेत्तेत्ति गिहिपसंगो जइणो सुद्धस्स पकमावहइ' (उव), 'णो पूयणं तवसा आवहेज्जा' (सू १, ७)।
आवह वि [आवह] धारण करनेवाला (आचा)।
आवा सक [आ + पा] १ पीना। २ भोग में लाना, उपभोग करना। हेकृ 'वंतं इच्छसि आवेउं, सेयं ते मरणं भवे' (दस २, ७)।
आवाइया स्त्री [आवापिका] प्रधान होम, 'पत्थुयाए पक्खावाइयाए' (स ७५७)।
आवाग पु [आपाक] आवा, मिट्टी के पात्र पकाने का स्थान (उप ६४८, विसे २४६ टी)।
आवाड पु [आपात] भीलों की एक जाति, 'तेण कालेण तेणं समएणं उत्तरड्ढभरहे वासे बहवे आवाडा णामं चिलाया परिवसंति' (ज ३)।
आवाणय न [आपाणक] दूकान, 'भिन्नाइं आवाणयाइं' (स ५३०)।
आवाय पुंन [आपात] अभ्यागम, आगमन (पव ६१, ६१ टी)।
आवाय देखो आवाग (था २३)।
आवाय पु [आपात] १ प्रारम्भ, शुरूआत (पाअ, से ११, ७५)। २ प्रथम मेलन (ठा ४, १)। ३ तत्काल, तुरत (था २३)। ४ पतन, गिरना (था २३)। ५ सम्बन्ध, संयोग (उव, कप्प)।
आवाय पु [आवाप] १ आवा, मिट्टी के पात्र पकाने का स्थान। २ आलवाल। ३ प्रक्षेप, फेंकना। ४ शत्रु की चिन्ता। ५ बोना, वपन (था २३)।
आवायण न [आपादन] सम्पादन, (धर्मसं १०९८)।
आवाल देखो आलवाल (धर्मवि १६, ११२)।
आवाल, आवालय न [दे] जल के निकट का प्रदेश (दे २, ७०)।
आवाव देखो आवाय = आवाप। °कहा स्त्री [°कथा] रसोई सम्बन्धी कथा, वि. कथा-विशेष (ठा ४, २)।
आवास पु [आवास] १ वास-स्थान (ठा ६, पाअ)। २ निवास, अवस्थान, रहना (पण्ह १, ४, औप)। ३ पक्षि-गृह, नीड (वव १, १)। ४ पडाव, डेरा (सुपा २५६, उप पृ १३०)। °पव्वय पु [°पर्वत] रहने का पर्वत (इक)।
आवास, आवासग देखो आवस्सय = आवश्यक (पि ३४८, ओघ ६३८, विसे ८५०)।
आवासणिया स्त्री [आवासनिका] आवास-स्थान (स १२२)।
आवासय न [आवासक] १ आवश्यक, जरूरी। २ नित्य-कर्त्तव्य धर्मानुष्ठान (हे ?, ४३, विसे ८५८)। ३ पुं. पक्षि-गृह, नीड (वव १, १)। ४ वि. संस्काराधायक, वासक। ५ आच्छादक (विसे ८७५)।
आवासि वि [आवासिन्] रहनेवाला, 'एगंतनियावासी' (उव)।
आवासिय वि [आवासित] संनिवेशित, पडाव डाला हुआ (सुपा ४५६, सुर २, १)।

आमुट्ठ वि [आमृष्ट] १ स्पृष्ट। २ उलटा किया हुआ (ओघ)।

आमुय सक [आ + मुच्] छोड़ना, त्यागना। आमुयइ (गउड)।

आमुस सक [आ + मृश्] थोड़ा या एक वार स्पर्श करना। वकृ आमुसत, आमुसमाण (ठा १, आचा, भग ८, ३)।

आमेडणा स्त्री [आम्रेडना] विपर्यस्त करना, उलटा करना (पण्ह १, ३)।

आमेल पु (दे) लट, जटा (दे १, ६२)।

आमेल | आमेलग | आमेलय पुं [आपीड] फूलों की माला, जो मुकुट पर धारण की जाती है, शिरोभूषण (हे १, १०५, पि १२२, भग ६, ३३)।

आमेळ देखो आमेल = आपीड (उवा २०६)।

आमेळिअ वि [आपीडित] अवतंसित, शिरोभूषण से विभूषित (से ६, २१)।

आमोअ अक [आ + मुद्] खुश होना। सकृ आमोएवि (अप) (भवि)।

आमोअ पुं [दे आमोद] हर्ष, खुशी (दे १, ६४)।

आमोअ पुं [आमोद] सुगन्ध, अच्छी गन्ध (से १, २३)।

आमोअ पु [आमोद] वाद्य-विशेष (राय ४६)।

आमोअअ वि [आमोदक] १ सुगन्ध उत्पन्न करनेवाला। २ आनन्द-जनक (से ६, ४०)।

आमोअअ वि [आमोदद] सुगन्ध देनेवाला (से ६, ४०)।

आमोइअ वि [आमोदित] हृष्ट, हर्षित (भवि)।

आमोक्ख पुं [आमोक्ष] मोक्ष, मुक्ति, पूर्ण छुटकारा (सूअ १, १, ४, १३)।

आमोक्खा स्त्री [आमोक्ष] १ छुटकारा। २ परित्याग (सूअ १, ३, पि ४६०)।

आमोड पु [दे] जूट, लट, समूह (दे १, ६२)।

आमोडग न [आमोटक] १ वाद्य-विशेष (आचू)। २ फूलों से बालों का एक प्रकार का बन्धन (उत्तनि ३)।

आमोडण न [आमोटन] थोड़ा मोड़ना (पण्ह १, १)।

आमोडिअ वि [आमोटित] मर्दित (माल ६०)।

आमोद | आमोय देखो आमोअ (स्वप्न ५२, सुर ३, ४१, काल)।

आमोय पुं [आमोक] कतवार-पुञ्ज, कतवार का ढेर, कूड़े का पुञ्ज (आचा २, ७, ३)।

आमोरअ वि [दे] विशेषज्ञ, अच्छा जानकार (दे १, ६६)।

आमोस पुं [आमर्श, °र्ष] स्पर्श, छूना; 'सफरिसणमामोसो' (पण्ह २, १ टी, विसे ७८१)।

आमोस पु [आमोष] चोर (उत्त ६, २८)।

आमोसग वि [आमोषक] १ चोर, चोरी करनेवाला (ठा ५, २)। २ चोरों की एक जाति (उर २, ६)।

आमोसहि पु [आमर्शौषधि] लब्धि-विशेष, जिसके प्रभाव से स्पर्श मात्र से ही सब रोग नष्ट होते हैं (पण्ह २, १, औप)।

आय पु [आय] १ लाभ, प्राप्ति, फायदा (अणु)। २ वनस्पति-विशेष (पण्ण १)। ३ कारण, हेतु (विसे १२२६, २६७६)। ४ अध्ययन, पठन (विसे ६५८)। ५ गमन (विसे २७६२)।

आय पु [आय] अध्ययन, शास्त्रांश-विशेष (अणु २५०)।

आय वि [आज] १ अज-सम्बन्धी। २ बकरे के बाल से उत्पन्न (वस्त्रादि) (आचा)।

आय वि [आगत] आया हुआ (काल)।

आय वि [आत्त] गृहीत, 'आयचरित्तो करेइ सामण्णं' (सथा ३६)।

आय पु [आगस्] १ पाप। २ अपराध, गुनाह (श्रा २३)।

आय पुस्त्री [आत्मन्] १ आत्मा, जीव (सम १)। २ निज, स्वय, 'अहालहुस्सगाइं रयणाइं गहाय आयाए एगतमंत अवक्कामति' (भग ३, २)। ३ शरीर, देह (णाया १, ८)। ४ ज्ञान आदि आत्मा के गुण (आचा)। °गुत्त वि [°गुप्त] सयत, जितेन्द्रिय, 'आयगुत्ता जिइंदिया' (सूअ)। °जोगि वि [°योगिन्] मुमुक्षु, ध्यानी (सूअ)। °ट्ठि वि [°र्थिन्] मुमुक्षु, 'एव से भिक्खू आयट्ठी' (सूअ)। °तत वि [°तन्त्र] स्वाधीन, स्वतन्त्र (राज)। °तत्त न [°तत्त्व] परम पदार्थ, ज्ञानादि रत्न-त्रय (आचा)। °प्पमाण वि [°प्रमाण] साढे तीन हाथ का परिमाण वाला (पव)। °प्पवाय न [°प्रवाद] बारहवे जैन अङ्ग ग्रन्थ का एक भाग, सातवाँ पूर्व (सम २६)। °भाव पुं [°भाव] १ आत्म-स्वरूप। २ निज अभिप्राय (भग)। ३ विषयासक्ति 'विणाइज्जओ सव्वह आयभाव' (सूअ)। °य पु [°ज] पुत्र, लड़का (भवि)। °रक्ख वि [°रक्ष] अङ्गरक्षक (णाया १, ८)। °व वि [°वत्] ज्ञानादि आत्मगुणों से सपन्न (आचा)। °हम्म वि [°घ्न] आत्मा को अधोगति मे ले जानेवाला। २ देखो आहाकम्म (पिंड)।

आय° देखो आउ, 'किंचायरक्खिओ जो पुरिसो सो होइ वरिससयआउ' (सुपा ४५३)।

आयइ स्त्री [आयति] भविष्य काल (सुर ४, १३१)।

आयइजणग न [आयतिजनक] तपश्चर्या-विशेष (पव २७१)।

आयइत्ता देखो आइ = आ + दा।

आयंक पु [आतङ्क] १ दुःख। २ पीड़ा (आचा)। ३ दुःसाध्य रोग, आशु-घाती रोग (औप)।

आयंकि वि [आतङ्किन्] रोगी, रोग युक्त (ठा ५, ३, टी—पत्र ३४२)।

आयंगुल न [आत्माङ्गुल] परिमाण का एक भेद,

'जेण जया मणूसा, तेसिं ज होइ माणरूव तु।
त भणियमिहायगुलमणिययमाण पुण इम तु।'
(विसे ३५० टी)।

आयंच सक [आ + तञ्च्] सींचना, छिड़कना। आयचइ, आयंचामि (उवा)।

आयंचणिया स्त्री [आतञ्चनिका] कुम्भकार का पात्र-विशेष, जिसमे वह पात्र बनाने के समय मिट्टीवाला पानी रखता है (भग १५)।

आयचणी स्त्री [आतञ्चनी] ऊपर देखो (भग १५)।

आयत वि [आचान्त] जिसने आचमन किया हो वह (णाया १, १, स १८९)।

आयत देखो आया = आ + या।

आयतम वि [आत्मतम] आत्मा को खिन्न करनेवाला (ठा ४, २)।

आयतम वि [आत्मतमस्] १ अज्ञानी, अजान। २ क्रोधी (ठा ४, २)।

आयंदम वि [आत्मदम] १ आत्मा को शान्त

आवेढण न [आवेष्टन] ऊपर देखो (गउड, पि ३०४)।
आवेढिय वि [आवेष्टित] १ चारो ओर से वेष्टित (भग १६, ६; उप पृ ३२७)। २ एक वार वेष्टित (ठा)।
आवेयण न [आवेदन] निवेदन, मनो-भाव का प्रकाश-करण (गउड, दे ७, ८७)।
आवेवअ वि [दे] १ विशेष आसक्त। २ प्रवृद्ध, बढ़ा हुआ (षड्)।
आवेस सक [आ + वेशय्] भूताविष्ट करना। सकृ आवेसिऊण (स ६४)।
आवेस पु [आवेश] १ अभिनिवेश। २ जोश। ३ भूतग्रह। ४ प्रवेश (नाट)।
आवेसण न [आवेशन] शून्यगृह, 'आवेसण-सभापवासु पणियसालासु एगया वासो' (आचा)।
आस देखो अस्स = अश्व (प्राकृ २६)।
आस अक [आस्] बैठना। वकृ 'अजय आसमाणो य पाणभूयाइं हिंसइ' (दस ४)। हेकृ आसित्तए, आसइत्तए, आसइत्तु (पि ५७८, कस, दस ६, ५४)।
आस पु [अश्व] १ अश्व, घोडा (णाया १, १७)। २ देव-विशेष, अश्विनी नक्षत्र का अधिष्ठायक देव (ज)। ३ अश्विनी नक्षत्र (चद २०)। ४ मन, चित्त (पण्ण २)। °कण्ण, °कन्न पु [°कर्ण] १ एक अन्तर्द्वीप। २ उसका निवासी (ठा ४, २)। °ग्गीव पु [°ग्रीव] एक प्रसिद्ध राजा, पहला प्रतिवासुदेव (पउम ५, १५६)। °तर पु [°तर] खच्चर (श्रा १८)। °त्थाम पु [°स्थामन्] द्रोणाचार्य का प्रख्यात पुत्र (कुमा)। °द्धअ पु [°ध्वज] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, ४२)। °धम्म पु [°धर्म] देखो पूर्वोक्त अर्थ (पउम ५,४२)। °धर वि [°धर] अश्वो को धारण करनेवाला (औप)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (इक)। °पुरा, °पुरी स्त्री [°पुरी] नगरी-विशेष (कस, ठा २, ३)। °मक्खिया स्त्री [°मक्षिका] चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष (ओघ ३६७)। °मद्दग, °मद्दय पुं [°मर्दक] अश्व का मर्दन करनेवाला (णाया १, १७)। °मित्त पुं [°मित्र] एक जैनाभास दार्शनिक, जो महागिरि के शिष्य कौण्डिन्य का शिष्य था और जिसने सामुच्छेदिक पथ चलाया था (ठा ७)। °मुह पुं [°मुख] १ एक अन्तर्द्वीप। २ उसका निवासी (ठा ४,२)। °मेह पुं [°मेघ] यज्ञ-विशेष (पउम ११, ४२)। °रह पुं [°रथ] घोडा-गाडी (णाया १, १)। °वार पु [°वार] घुड-सवार, घुड-चढ़ैया (सुपा २१४)। °वाहणिया स्त्री [°वाहनिका] घोडे की सवारी, घोडे पर सवार होकर फिरना (विपा १, ६)। °सेण पुं [°सेन] १ भगवान् पार्श्वनाथ के पिता (कप्प)। २ पचवें चक्रवर्ती का पिता (सम १५२)। °रोह पु [°रोह] घुड-सवार, घुड-चढैया (से १२, ६६)।
आस पुस्त्री [आश] भोजन, 'सामासाए पायरासाए' (सूअ २, १)।
आस पुं [आस] क्षेपण, फेंकना (विसे २७६५)।
आस न [आस्य] मुख, मुँह (णाया १, ८)।
आसइ वि [आश्रयिन्] आश्रय-स्थित, 'थमासइणी जाया सा देवी सालभजिव्व' (धर्मवि १४७)।
आसंक सक [आ + शङ्क्] १ सदेह करना, सशय करना। २ अक भयभीत होना। आसकइ (स ३०)। वकृ आसकत, आसकमाण (नाट, माल ८३)।
आसका स्त्री [आशङ्का] शङ्का, भय, वहम, सशय (सुर ६, १२१, महा, नाट)।
आसंकि वि [आशङ्किन्] आशङ्का करनेवाला (गा २०५)।
आसंकिय वि [आशङ्कित] १ सदिग्ध, सशयित। २ सभावित (महा)।
आसंकिर वि [आशङ्कित्] आशका करनेवाला, वहमी (सुर १४, १७, गा २०६)।
आसंग पुं [दे] वास-गृह, शय्या-गृह (दे १, ६६)।
आसंग पुं [आसङ्ग] १ आसक्ति, अभिष्वग। २ संबन्ध। (गउड)। ३ रोग (आचा)।
आसंगि वि [आसङ्गिन्] १ आसक्त। २ सवन्धी, सयोगी (गउड)। स्त्री. °णी (गउड)।
आसंघ सक [सं + भावय्] १ संभावना करना। २ अध्यवसाय करना। ३ स्थिर करना, निश्चय करना। आसंघइ (से १५, ६०)। वकृ. आसंघंत (से १५, ६२)।
आसंघ पुं [दे] १ श्रद्धा, विश्वास (सुपा ५२६, षड्)। २ अध्यवसाय, परिणाम (से १,१५)। ३ आशसा, इच्छा, चाह (गउड)।
आसंघा स्त्री [दे] १ इच्छा, वाञ्छा (दे १, ६३)। २ आसक्ति (मै २)।
आसंघिअ वि [दे] १ अध्यवसित। २ अवधारित (से १०, ६६)। ३ संभावित (कुमा, स १३७)।
आसंजिअ वि [आसक्त] पीछे लगा हुआ (सुर ८, ३०, उत्तर ६१)।
आसंदय न [आसन्दक] आसन-विशेष (आचा, महा)।
आसंदय पुन [आसन्दक] आसन-विशेष, मंच (सुख ६, १)।
आसंदाण न [आसन्दान] अवष्टम्भन, अवरोध, रुकावट (गउड)।
आसंदिआ स्त्री [आसन्दिका] छोटा मञ्च (सूअ १, ४, २, १५, गा ६६७)।
आसंदी स्त्री [आसन्दी] आसन-विशेष, मञ्च (सूअ १, ६, दस ६, ५४)।
आसंधी स्त्री [अश्वगन्धी] वनस्पति-विशेष (सुपा ३२४)।
आसंबर वि [आशाम्बर] १ दिगम्बर, नग्न (प्रामा)। २ जैन का एक मुख्य भेद। ३ उसका अनुयायी (स २)।
आससइय वि [असशयित] संशय-रहित (सूअ २, २, १६)।
आसंसण न [आशंसन] इच्छा, अभिलाषा (भास ६५)।
आसंसा स्त्री [आशंसा] अभिलाषा, इच्छा (आचा)।
आससि वि [आशंसिन्] अभिलाषी, इच्छा करनेवाला (आचा)।
आससिअ वि [आशसित] अभिलषित (गा ७६)।
आसक्खय पु [दे] प्रशस्त पक्षि-विशेष, श्रीवद (दे १, ६७)।
आसग देखो आस = अश्व (णाया १,१२)।
आसगलिअ वि [दे] आक्रान्त, 'आसगलिओ तिव्वकम्मपरिणाईए' (स ४०४)।
आसगलिअ वि [दे] प्राप्त, 'एव विसयविसुद्धचितणेण खविओ कम्मसघाओ, आसगलियं बोधिवीयं' (स ६७६)।

आयव वि [आतप] १ उद्योत, प्रकाश (गा ४६)। २ ताप, घाम (उत्त)। ३ न मुहूर्त-विशेष (सम ५१)। °णाम, °नाम न [°नामन्] नामकर्म का एक भेद (सम ६७)।
आयवत्त न [आतपत्र] छत्र, छाता (णाया १, १)।
आयवत्त पु [आर्यावर्त्त] भारत, हिंदुस्तान (इक)।
आयवा स्त्री [आतपा] १ सूर्य की एक अग्र-महिषी—पटरानी। २ इस नाम का 'ज्ञाता-धर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन (णाया २, १)।
आयस वि [आयस] लोहे का, लोह-निर्मित (गउड, निचू १)।
आयसी स्त्री [आयसी] लोहे का कोश (पण्ह १, १)।
आया देखो आय = आत्मन्।
आया सक [आ + या] आना, आगमन करना। आयति (सुपा ५७)। आयाइंति, आयाइसु (कप्प)। वकृ. आयत।
आया सक [आ + दा] ग्रहण करना, स्वीकार करना। आयइज्ज (उत्त ६)। कृ आया-णिज्ज (ठा ६)। संकृ आयाए, आदाय, आयाय (कस, कप्प, महा)।
आयाइ स्त्री [आजाति] १ उत्पत्ति, जन्म (ठा १०)। २ जाति, प्रकार। ३ आचार, आचरण (आचा)। °ट्ठाण न [°स्थान] १ संसार, जगत्। २ 'आचाराङ्ग' सूत्र के एक अध्ययन का नाम (ठा १०)।
आयाइ स्त्री [आयाति] १ आगमन। २ उत्पत्ति, गर्भ से बाहर निकलना (ठा २, ३)। ३ आयति, भविष्य काल (दसा)।
आयाए देखो आया = आ + दा।
आयाण पुंन [आदान] १ ग्रहण, स्वीकार (आचा)। २ इन्द्रिय (भग ५, ४)। ३ जिसका ग्रहण किया जाय वह, ग्राह्य वस्तु (ठा ४, सूअ २,७)। ४ कारण, हेतु, 'सति मे तउ आयाणा जेहिं कीरइ पावगं' (सूअ १, १), 'किंवा दुक्खायाणं अट्टज्झाणं समारुहसि' (पउम ९५, ४८)। ५ आदि, प्रथम (अणु)।
आयाण न [आदान] १ संयम, चरित्र (सूअ १, १३, २२)। २ [illegible] आदेय, उपादेय (सूअ १, १४, १७, तंदु २०)। °पय न [°पद] ग्रन्थ का प्रथम शब्द (अणु १४०)।
आयाण न [आयान] १ आगमन। २ अश्व का एक आभरण-विशेष (गउड)।
आयाम सक [आ + यमय्] लम्बा करना। कवकृ आआमिज्जंत (से १० ९)। संकृ आयामेत्ता, आयामेत्ताण (भग, पि ५८३)।
आयाम सक [आ + यम्] शौच करना, शुद्धि करना। आयामइ (पव १०६ टी)।
आयाम सक [दा] देना, दान करना। आया-मेइ (भग १५)। संकृ आयामेत्ता (भग १५)।
आयाम पु [आयाम] लम्बाई, दैर्घ्य (सम २, गउड)।
आयाम पु [दे] बल, जोर (दे १, ६५)।
आयाम न [आचाम्ल] तपो-विशेष, आयंबिल, 'नाइविगिट्ठो उ तवो छम्मासे परिमियं तु आयामं' (आचानि २७२, २७३)।
आयाम } न [आचाम] अवस्रावण, चावल
आयामग } आदि का पानी (ओघ ३५९, उत्त १५)।
आयामणया स्त्री [आयामनता] लम्बाई (भग)।
आयामि वि [आयामिन्] लम्बा (गउड)।
आयामुही स्त्री [आयामुखी] इस नाम की एक नगरी (स ४३१)।
आयाय देखो आया = आ + दा।
आयाय वि [आयात] आया हुआ (पउम १४, १३०, दे १,६६, कुम्मा १६)।
आयार सक [आ + कारय्] बुलाना, आह्वान करना। आआरेदि (शौ) (नाट)। संकृ आआ-रिअ, आयारेऊण (नाट, स ५७८)।
आयार पु [आकार] १ आकृति, रूप (णाया १, १)। २ इङ्गित, इशारा (पाअ)।
आयार पु [आकार] 'आ' अक्षर (कुप्र ३२)।
आयार पु [आचार] १ आचरण, अनुष्ठान (ठा २,३, आचा)। २ चाल-चलन, रीत-भात (पउम ६३, ८)। ३ बारह जैन अङ्ग-ग्रन्थों में पहला ग्रन्थ, 'आयारपढमसुत्ते' (उप ६८०)। ४ निपुण शिष्य (भग १, १)। °क्खेवणी स्त्री [°क्षेपणी] कथा का एक भेद (ठा ४)। °भंडग, °भंडय न [°भाण्डक] ज्ञानादि का उपकरण—साधन (णाया १, १, १६)।
आयारमिय न [आचारमिक] विवाह के समय दिया जाता एक प्रकार का दान (स ७७)।
आयारिय वि [आकारित] १ आहूत, बुलाया हुआ (पउम ६१, २५)। २ न आह्वान-वचन, आक्षेप-वचन (से १३, ८०, अभि २०९)।
आयाव सक [आ + तापय्] सूर्य के ताप में शरीर को थोड़ा तपाना। २ शीत, आतप आदि को सहन करना। वकृ आयावत पउम ६, ६१), आयावित (काल), आयावेंत (पउम २६, २१), आयावेमाण (महा, भग)। हेकृ आयावेत्तए (कस)। संकृ आयाविय (आचा)।
आयाव पुं [आताप] असुरकुमार-जातीय देव-विशेष (भग १३, ६)।
आयाव पुं [आताप] आतप-नामकर्म (पच ५, १३७)।
आयावग वि [आतापक] शीत आदि को सहन करनेवाला (सूअ २, २)।
आयावण न [आतापन] एक बार या थोड़ा आतप आदि को सहन करना (णाया १,१६)। °भूमि स्त्री [°भूमि] शीतादि सहन करने का स्थान (भग ६, ३३)।
आयावणया } स्त्री [आतापना] ऊपर देखो
आयावणा } (ठा ३, ५)।
आयावय वि [आतापक] शीत आदि को सहन करनेवाला (पण्ह २, १)।
आयावल } पु [दे] सवेर का तड़का,
आयावलय } बालातप (दे १, ७०, पाअ)।
आयावि वि [आतापिन्] देखो आयावय (ठा ४)।
आयास सक [आ + यासय्] तकलीफ देना, खिन्न करना। आआसति (पि ४९०)। संकृ आआसिअ (मा ४५)।
आयास पुं [आयास] १ तकलीफ, परिश्रम, खेद (गउड)। २ परिग्रह, असन्तोष (पण्ह १, ५)। °लिवि स्त्री [°लिपि] लिपि-विशेष (पण्ह १)।
आयास देखो आयस (षड्)।
आयास देखो आगास (पउम ९६, ४०, हे १, ८४)। °तिलय न [°तिलक] नगर-विशेष (भवि)।

आसायण न [आस्वादन] स्वाद लेना, चखना (पउम २२, २७, णाया १, ६, सुपा १०७)।

आसायण न [आशातन] १ नीचे देखो (विवे ६६)। २ अनन्तानुबन्धि कषाय का वेदन (विसे)।

आसायणा स्त्री [आशातना] विपरीत वर्त्तन, अपमान, तिरस्कार (पडि)।

आसार सक [आ + सारय्] तदुरस्त करना, वीणा को ठीक करना। सक्क आसारेऊण (सिरि ७६४)।

आसार पु [आसार] समीकरण, वीणा को ठीक करना (कुप्र १३६)।

आसार पु [आसार] वेग से पानी का बरसना, (से १, २०, सुपा ६०६)।

आसारिय वि [आसारित] ठीक किया हुआ, 'आसारिया कुमारेण वीणा' (कुप्र १३६)।

आसालिय पुस्त्री [आशालिक] १ सर्प की एक जाति (पण्ह १, १)। २ स्त्री विद्या-विशेष (पउम १२, ६४, ५२, ६)।

आसावल्ली स्त्री [आशापल्ली] एक नगरी (ती १५)।

आसावि वि [आस्राविन्] झरनेवाला, सच्छिद्र (सूअ, १, ११)।

आसास सक [आ + शास्] आशा करना, उम्मीद रखना। आसासदि (वेणी ३०)।

आसास अक [आ + श्वासय्] आश्वासन देना, सान्त्वना करना। आसासइ (वज्जा १६)। वकृ आसासत, आमासित (से ११, ८७, आ १२)।

आसास पु [आश्वास] १ आश्वासन, सान्त्वना (ओघ ७३, सुपा ८३, उप ६६२)। २ विश्राम (ठा ४, ३)। ३ द्वीप-विशेष (आचा)।

आसासअ पुं [आश्वासक] विश्राम-स्थान, ग्रन्थ का अंश, सर्ग, परिच्छेद, अध्याय (से २, ४६)। २ वि. आश्वासन देनेवाला, 'नाण आसासय सुमित्तुव्व' (पुप्फ ३८)।

आसासग पुं [आशासक] बीजक-नामक वृक्ष (ओप)।

आसासण न [आश्वासन] १ सान्त्वना, दिलासा (सुर ६, ११०, १२, १५, उप पृ ५७)। २ ग्रहों के देव-विशेष (ठा २, ३)।

आसासण पु [आश्वासन] १ एक महाग्रह (सुज्ज २०)। २ वि. आश्वासन-दाता (कुप्र ११०)।

आसासिअ वि [आश्वासित] जिसको आश्वासन दिया गया हो वह (से ११, १३६, सुर ४, २८)।

आसि सक [आ + श्रि] आश्रय करना। संकृ. आसिज्ज (आरा ६६)।

आसि देखो अस = अस्।

आसि वि [आशिन्] खानेवाला, भोजक (सट्ठि १३)।

आसिअ वि [आश्विक] अश्व का शिक्षक, 'दुट्ठे वि य जो आसे दमेइ त आसियं विंति' (वव ४)।

आसिअ वि [आशित] खिलाया हुआ, भोजित (से ८, ६३)।

आसिअ वि [आश्रित] आश्रय-प्राप्त (कप्प, सुर ३, १७, से ६, ६५, विसे ७५६)।

आसिअ वि [आसित] १ उपविष्ट, बैठा हुआ (से ८, ६३)। २ रहा हुआ, स्थित (पउम ३२, ६६)।

आसिअ देखो आसित्त (णाया १, १, कप्प, ओप)।

आसिअअ वि [दे] लोहे का, लोह-निर्मित (दे १,६७, सूत्र कृ० चूर्णी सू० गा २८५)।

आसिआ स्त्री [आसिका] बैठना, उपवेशन (से ८, ६३)।

आसिआ देखो आसी = आशिष् (पड्)।

आसिच सक [आ + सिच्] सींचना। कर्म आसिच्चंत (चेइय १५१)।

आसिण वि [आशिन्] खानेवाला, भोक्ता, 'मसासिणस्स' (पउम २६, ३७)।

आसिण पुं [आश्विन] आश्विन मास (पाअ)।

आसित्त वि [आसिक्त] १ थोडा सिक्त (भग ६, ३३)। २ सिक्त, सींचा हुआ (आवम)। ३ पु नपुसक का एक भेद (पुप्फ १२८)।

आसित्तिया स्त्री [दे] खाद्य-विशेष, 'विसाहाहिं आसित्तियाओ भोचा कज्जं साधेंति' (सुज्ज १०, १७)।

आसियावाय देखो आसीवाय (सूअ १, १४, १६)।

आसिल पु [आसिल] एक महर्षि (सूअ १, ३, ४, ३)।

आसिलिट्ठ वि [आश्लिष्ट] आलिंगित (नाट)।

आसिलिस सक [आ + श्लिष्] आलिंगन करना। हेकृ आलेट्ठुअ, आलेट्ठु (हे २, १६४)।

आसिसा देखो आसी = आशिष् (महा, अभि १३३)।

आसी देखो अस् = अस्।

आसी स्त्री [आशी] दाढा (विसे)। °विस पु [°विष] १ जहरिला सँप, 'आसी दाढा तग्गयविसामीविना मुणेयव्वा' (जीव १ टी; प्रासू १२०)। २ पर्वत-विशेष का एक शिखर (ठा २, ३)। ३ निग्रह और अनुग्रह करने मे समर्थ, लब्धि विशेष को प्राप्त (भग ८, १)।

आसी स्त्री [आशिष्] आशीर्वाद (सुर १, १३८)। °वयण न [°वचन] आशीर्वाद (सुपा ४६०)। °वाय पु [°वाद] आशीर्वाद (सुर १२, ४३, सुपा १७४)।

आसीण वि [आसीन] बैठा हुआ, 'नमिऊण आसीणा तओ' (वसु)।

आसीवअ पु [दे] दरजी, कपडा सीनेवाला (दे १, ६६)।

आसीसा देखो आसी = आशिष् (पड्)।

आसु पुन [अश्रु] आंसू (सक्षि १७)।

आसु, आसुं अ [आशु] शीघ्र, तुरत, जल्दी (सार्ध १८, महा, काल)। °क्कार पुं [°कार] १ हिंसा, मारना। २ मरने का कारण, विसूचिका वगैरह (आव)। ३ शीघ्र उपस्थित, 'आसुक्कारे मरणे, अच्छिन्नाए य जीवियासाए' (आउ ६)। °पण्ण वि [°प्रज्ञ] १ शीघ्र-बुद्धि। २ दिव्य-ज्ञानी, केवल-ज्ञानी (सूअ १, ६, १४)।

आसुर वि [आसुर] असुर-सबन्धी (ठा ४, ४, आउ ३६)।

आसुरत्त न [आसुरत्व] क्रोधिपन, गुस्सा (दस ८, २५)।

आसुरिय पु [आसुरिक] १ असुर, असुर रूप से उत्पन्न (राज)। २ वि. असुर-सबन्धी (सूअ २, २, २७)।

आसुरीय वि [असुरीय] असुर-सबन्धी,

आरभड न [आरभट] १ नृत्य का एक भेद (ठा ४, ४)। २ इस नाम का एक मुहूर्त्त, 'छच्चेव य आरभडो सोमित्तो पंचअंगुलो होइ' (गणि)।

आरभड न [आरभट] एक तरह की नाट्य-विधि (राय ५४)। °भसोल न [°भसोल] नाट्यविधि-विशेष (राय ५४)।

आरभडा स्त्री [आरभटा] प्रतिलेखना-विशेष (ओघ १६२ भा)।

आरभिय न [आरभित] नाट्यविधि-विशेष (राय)।

आरय वि [आरत] १ उपरत। २ अपगत (सूत्र १, १५)।

आरय वि [आऽरत] उपरत, सर्वथा निवृत्त (सूत्र १, ४, १, १, १, १०, १३)।

आरव पुं [आरव] शब्द, आवाज, ध्वनि (सण)।

आरव पुं [आरव] इस नाम का एक प्रसिद्ध म्लेच्छ-देश (पण्ह १, १)।

आरव } वि [आरव] अरब देश में उत्पन्न,
आरवग } अरब देश का निवासी। स्त्री °वी (णाया १, १)।

आरविंद वि [आरविन्द] कमल-सम्बन्धी (गउड)।

आरस सक [आ + रस्] चिल्लाना, बूम मारना। वकृ. आरसंत (उत्त १९)। हेकृ आरसिउं (काल)।

आरसिय न [आरसित] १ चिल्लाहट, बूम। २ चिल्लाया हुआ (विपा १, २)।

आरसिय पु [आदर्श] दर्पण (कहावली)।

आरह देखो आरभ। आरहइ (षड्)। संकृ. आरहिअ (अभि ६०)।

आरहत } वि [आर्हत] अर्हन् का, जिन-
आरहतिय } देव सम्बन्धी, 'आरहतेहिं' (दस ६, ४, ४, पव २—गाथा १७०)।

आरा स्त्री [आरा] लोहे की सलाई, पैने मे डाली जाती लोहे की खीली (पण्ह १, १, स ३८)।

आरा अ [आरात्] १ अर्वाक्, पहले (दे १, ६३)। २ पूर्व-भाग (विसे १७४०)।

आराइअ वि [दे] १ गृहीत, स्वीकृत। २ प्राप्त (दे १, ७०)।

आराडि स्त्री [आराटि] चीत्कार, चिल्लाहट (सुख २, १५)।

आराडी स्त्री [दे] देखो आरडिअ (दे १, ७५)।

आराम पु [आराम] बगीचा, उपवन (औप, णाया १ १)।

आराम पुंन [आराम] बगीचा, उपवन, 'आरा-माणि' (आचा २, १०, २)।

आरामिअ पुं [आरामिक] माली (कुमा)।

आराव पुं [आराव] शब्द, आवाज (स ९७७, गउड)।

आराह सक [आ + राधय्] १ सेवा करना, भक्ति करना। २ ठीक-ठीक पालन करना। आराहइ, आराहेइ (महा, भग)। वकृ. आराहंत (रयण ७०)। संकृ आरा-हित्ता, आराहेत्ता, आराहिऊण (कप्प, भग, महा)। हेकृ. आराहिउ (महा)।

आराह वि [आराध्य] आराधन-योग्य (आरा ११)।

आराहग वि [आराधक] १ आराधन करने-वाला। २ मोक्ष का साधक (भग ३, १)।

आराहण न [आराधन] १ सेवना (आरा ११)। २ अनशन (राज)।

आराहणा स्त्री [आराधना] १ सेवा, भक्ति। २ परिपालन (णाया १, १२, पचा ७)। ३ मोक्ष-मार्ग के अनुकूल वर्त्तन (पक्खि)। ४ जिसका आराधन किया जाय वह (आरा १)।

आराहणा स्त्री [आराधना] आवश्यक, साम-यिक आदि षट्-कर्म (अणु ३१)।

आराहणी स्त्री [आराधनी] भाषा का एक प्रकार (दस ७)।

आराहिय वि [आराधित] १ सेवित, परि-पालित (सम ७०)। १ अनुरूप, योग्य (स ६२३)।

आरिट्ठ वि [दे] यात, गत, गुजरा हुआ (षड्)

आरिय न [आऋत] आगमन (राय १०१)।

आरिय देखो अज्ज=आर्य। (भग, षड्, सुपा १२८, पउम १४, ३०, सुर ८, ६३)।

आरिय वि [आरित] सेवित, 'आरिओ आय-रिओ सेवितो वा एगट्ठत्ति' (मानू)।

आरिय वि [आकारित] आहूत, बुलाया हुआ, 'आरिओ आगारिओ वा एगट्ठा' (आव)।

आरिया देखो अज्जा=आर्या (प्राकृ)।

आरिल्ल वि [दे] अर्वाक् उत्पन्न, पहले जो उत्पन्न हुआ हो (दे १, ६३)।

आरिस वि [आर्ष] ऋषि-सम्बन्धी (कुमा)।

आरिहय देखो आरहत (दस १, १ टी)।

आरुग्ग देखो आरोग्ग=आरोग्य, 'आरुग्ग-बोहिलाभ समाहिवरमुत्तमं दिंतु' (पडि)।

आरुट्ठ वि [आरुष्ट] क्रुद्ध, रुष्ट (पउम ५३, १४१)।

आरुण्ण (अप) सक [आ + श्लिष्] आलिङ्गन करना। आरुण्णइ (प्राकृ ११९)।

आरुभ देखो आरुह=आ+रुह्। वकृ आरुभमाण (कस)।

आरुवणा देखो आरोवणा (विसे २९२८)।

आरुस सक [आ + रुष्] क्रोध करना, रोष करना। सकृ आरुस्स (सूत्र १, ५)।

आरुसिय वि [आरुष्ट] क्रुद्ध, कुपित (णाया १, २)।

आरुह सक [आ + रुह्] ऊपर चढना, ऊपर बैठना। आरुहइ (षड्, महा)। आरुहेइ (भग)। वकृ आरुहत, आरुहमाण (से ५, १९, श्रा३६)। संकृ आरुहिऊण, आरुहिय (महा, नाट)। हेकृ. आरुहिउं (महा)।

आरुह वि [आरुह] उत्पन्न, उद्भूत, जात, 'गामारुह म्हि गामे, वसामि नअरट्ठिइं ण आणामि। णाअरिआण पइणो हरेमि जा होमि सा होमि' (गा ७०५)।

आरुहण न [आरोहण] ऊपर बैठना (णाया १, २, गा ६३०, सुपा २०३, विपा १, ७ गउड)।

आरुहण न [आरोहण] आरोपण, ऊपर चढाना (पव १५५, राय १०६)।

आरुहिय वि [आरोपित] १ स्थापित। २ ऊपर बैठाया हुआ (से ८, १३)।

आरुहिय } वि [आरूढ] १ ऊपर चढा हुआ
आरूढ } (महा)। २ कृत, विहित, 'तीए पुरओ पइण्णा आरुहिया दुक्करा मए सामि' (पउम ८, १९१)।

(धर्मवि ८)। संकृ. आहविउं, आहविऊण (धर्मवि ६८, सम्मत्त २१७)।

आहव पुं [आहव] युद्ध, लडाई (पाअ, सुपा २८८, आरा ४१)।

आहवण } न [आह्वान] १ बुलाना। आहव्वण } २ ललकारना (श्रा १२, सुपा ६०, पउम ६१, ३०, स ६४)।

आहविअ देखो आहूअ = आहूत (ती ४)।

आहव्व वि [आभाव्य] शास्त्रोक्त क्षेत्रादि (पंचा ११, ३०, पव १०५)।

आहव्वणी स्त्री [आह्वानी] विद्या-विशेष (सूअ २, २)।

आहा सक [आ + ख्या] कहना। कर्म. आहिज्जइ (पि ५४५), आहिज्जति (कप्प)।

आहा सक [आ + धा] स्थापन करना। कर्म आहिज्जइ (सूअ २, ७)। हेकृ आहेउ (सूअ १, ६)। सकृ आहाय (उत्त ५)।

आहा स्त्री [आभा] कान्ति, तेज (कप्पू)।

आहा स्त्री [आधा] १ आश्रय, आधार (पिंड)। २ साधु के निमित्त आहार के लिए मन-प्रणिधान (पिंड)। °कड वि [°कृत] आधा-कर्म-दोष से युक्त (स १८८)। °कम्म न [°कर्मन्] १ साधु के लिए आहार पकाना। २ साधु के निमित्त पकाया हुआ भोजन, जो जैन साधुओं के लिए निषिद्ध है (पण्ह २, ३, ठा ३, ४)। °कम्मिय वि [°कर्मिक] देखो पूर्वोक्त अर्थ (अनु)।

आहाण न [आधान] १ स्थापन। २ स्थान, आश्रय, 'सव्वगुणाहाणं' (श्राव ४, उवर २६)।

आहाण } न [आख्यान, °क] १ उक्ति, आहाणय } वचन। २ किंवदन्ती, कहावत, लोकोक्ति (सुर २, ६६, उप ७२८ टी)।

आहातहिय वि [याथातथ्य] सत्य, वास्तविक (सूअ २,१,२७)। देखो आहत्तहीय।

आहार सक [आ + हारय्] खाना, भोजन करना, भक्षण करना। आहारइ, आहारेंति (भग)। वकृ आहारेमाण (कप्प)। भकृ. आहारिज्जस्समाण (भग)। हेकृ आहारित्तए, आहारेत्तए (कप्प)। कृ. आहारेयव्व (ठा ३)।

आहार पुं [आहार] १ खुराक, भोजन (स्वप्न ६०, प्रासू १०४)। २ खाना, भक्षण (पव)। ३ न देखो आहारग (पउम १०२, ६८)। °पज्जत्ति स्त्री [°पर्याप्ति] भुक्त आहार को खल और रस के रूप मे बदलने की शक्ति (भग ६, ४)। °पोसह पुं [°पोषध] व्रत विशेष, जिसमे आहार का सर्वथा या आंशिक त्याग किया जाता है (श्राव ६)। °सण्णा स्त्री [°संज्ञा] आहार करने की इच्छा (ठा ४)।

आहार पुं [आधार] १ आश्रय, अधिकरण (सुपा १२८, संथा १०३)। २ आकाश (भग २०, २)। ३ अवधारण, याद रखना (पुप्फ ३५६)।

आहारग न [आहारक] १ शरीर विशेष, जिसको चौदह-पूर्वी, केवलज्ञानी के पास जाने के लिए बनाता है (ठा २, २)। २ वि भोजन करनेवाला (ठा २, २)। ३ आहारक शरीर-वाला (विसे ३७५)। ४ आहारक शरीर उत्पन्न करने का जिसे सामर्थ्य हो वह (कप्प)। °जुगल न [°युगल] आहारक शरीर और उसके अंगोपाङ्ग (कम्म २, १७, २४)। °णाम न [°नामन्] आहारक शरीर का हेतु-भूत कर्म (कम्म १, ३३)। °दुग न [°द्विक] देखो °जुगल (कम्म २, ३, ८, १७)।

आहारण वि [आधारण] १ धारण करने-वाला। २ आधार-भूत (से ६, ५०)।

आहारण वि [आहारण] आकर्षक (से ६, ५०)।

आहारय देखो आहारग (ठा ६, भग, पण्ण २८, ठा ५, १, कर्म १, ३७)।

आहाराइणिया स्त्री [याथारात्निकता] यथा-ज्येष्ठ, ज्येष्ठानुक्रम (कस)।

आहारि वि [आहारिन्] आहार-कर्त्ता (अज्झ १११)।

आहारिम वि [आहार्य] १ खाने योग्य। २ जल के साथ खाया जा सके ऐसा योग्य चूर्ण-विशेष (पिंड ५०२)।

आहारिम वि [आहार्य] आहार के योग्य, खाने लायक (निचू ११)।

आहारिय वि [आहारित] १ जिसने आहार किया हो वह, 'तस्स कडरीयस्स रण्णो त पणीयं पाणभोयणं आहारियस्स समाणस्स' (णाया १, १६)। २ भक्षित, भुक्त (भग)।

आहावणा स्त्री [आभावना] अपरिगणना, गणना का अभाव (राज)।

आहावणा स्त्री [आभावना] उद्देश्य (पिंड ३६१)।

आहाविअ वि [आधावित] दौडा हुआ (सिरि ७५२)।

आहाविर वि [आधावितृ] दौडनेवाला (सण)।

आहास देखो आभास = आ + भाष्। सकृ. आहासिवि (अप) (भवि)।

आहाह अ [आहाह] आश्चर्य-द्योतक अव्यय (हे २, २१७)।

आहि पुंस्त्री [आधि] मन की पीडा (धम्म १२ टी)।

आहिआइ स्त्री [आभिजाति] कुलीनता, खानदानी (से १, ११)।

आहिआई स्त्री [आभिजाती] कुलीनता (गा २८५)।

आहिंड सक [आ + हिण्ड्] १ गमन करना, जाना। २ परिश्रम करना। ३ घूमना, परिभ्रमण करना। वकृ आहिंडंत, आहिंडेमाण (उप २६४ टी, णाया १,१)। सकृ. आहिंडिय (महा, स १६३)।

आहिंडग } वि [आहिण्डक] चलनेवाला, आहिंडय } परिभ्रमण करनेवाला (ओघ ११५, ११८, औप)।

आहिक्क न [आधिक्य] अधिकता (विसे २०८७)।

आहिजाइ देखो आहिआइ (महा)।

आहिजाई देखो आहिआई (गा २४)।

आहितुंडिअ पुं [आहितुण्डिक] गारुडिक, सपहरिया, सपेरा (मुद्रा ११६)।

आहित्थ वि [दे] १ चलित, गत। २ कुपित, क्रुद्ध (दे १,७६, जीव ३ टी)। ३ आकुल, घबडाया हुआ (दे १, ७६, से १३, ८३, पाअ), 'आहित्थं उप्पिच्छं च आउलं रोस-भरियं च' (जीव ३ टी)।

आहिद्ध वि [दे] १ रुद्ध, रुका हुआ। २ गलित, गला हुआ (पड्)।

आहिपच्च न [आधिपत्य] मुखियापन, नेतृत्व (उप १०३१ टी)।

आहिय वि [आहित] १ स्थापित, निवेशित (ठा ४)। २ सम्पूर्ण हितकर (सूअ)। ३ विरचित,

आलप्प वि [आलाप्य] कहने के योग्य, निर्वचनीय, 'सदसदणभिलप्पालप्पमेगं अणेग' (लहुअ ८)।

आलभ सक [आ + लभ्] प्राप्त करना। आलभिज्जा (उत्तर ११)।

आलभण न [आलभन] विनाशन (धर्मसं ८८२)।

आलभिया स्त्री [आलभिका] नगरी-विशेष (उवा, भग ११, २)।

आलय पुन [आलय] गृह, घर, स्थान (महा, गा १३५)।

आलय पुन [आलय] बौद्धदर्शन-प्रसिद्ध विज्ञान-विशेष (धर्म ६९५, ६९६, ६९७)।

आलयण न [दे] वास-गृह, शय्या-गृह (दे १, ६६, ८, ५८)।

आलव सक [आ + लप्] १ कहना, बात-चीत करना। २ थोड़ा या एक बार कहना। वकृ आलवंत (गा ११८, अभि ३८), आल-वमाण (ठा ४)। आलविऊण (महा), आलविय (नाट)।

आलवण न [आलपन] संभाषण, बातचीत, वार्तालाप (ओघ ११३, उव १२८ टी, श्रा १६, दे १, ५६, स ६६)।

आलवाल न [आलवाल] कियारी, थाँवला (पाअ)।

आलस त्रि [आलस] आलसी, सुस्त (भग १२, २)। °त्त न [°त्व] आलस, सुस्ती (श्रा २३)।

आलसिय वि [आलसित] आलसी, मन्द (भग १२, २)।

आलसुय देखो आलसिय, 'सावि सायसीला आलसुया कुडिला' (सम्मत्त ५३)।

आलस्स पुन [आलस्य] सुस्ती, 'आलस्सो रणरणओ' (वज्जा १६२)।

आलस्स न [आलस्य] आलस, सुस्ती (कुमा, सुपा २५१)।

आलस्सि वि [आलस्यिन्] आलसी, सुस्त (गच्छ २, १)।

आलाअ देखो आलाव (गा ४२८, ६१९, मै १६)।

आलाण देखो आणाल (पाअ, से ५, १७, महा)।

आलाणिय वि [आलानित] नियन्त्रित, मज-बूती से बाँधा हुआ, 'दढभुयदंडालाणियकमला-करिणी निवो समरसीहो' (सुपा ४)।

आलाव पु [आलाप] १ संभाषण, बातचीत (श्रा ६)। २ अल्प भाषण (ठा ५)। ३ प्रथम भाषण (ठा ४)। ४ एक बार की उक्ति (भग ५, ४)।

आलावक देखो आलावग (सुज्ज ८)।

आलावग पु [आलापक] पैरा, पैराग्राफ, परिच्छेद, ग्रन्थ का अंश-विशेष (ठा २, २)।

आलावण न [आलापन] बाँधने का रज्जु आदि साधन, बन्धन-विशेष। °बंध पुं [°बन्ध] बन्ध-विशेष (भग ८, ९)।

आलावण न [आलापन] आलाप, संभाषण (वज्जा १२४)।

आलावणी स्त्री [आलापनी] वाद्यविशेष (वज्जा ८०)।

आलास पु [दे] वृश्चिक, बिच्छू (दे १, ६१)।

आलाहि देखो अलाहि (षड्)।

आलि पु [अलि] भ्रमर, भमरा, भौंरा (पडि)।

आलि देखो आली (राय, पाअ)।

आलिंग सक [आ + लिङ्ग्] आलिङ्गन करना, भेंटना, गले लगाना। आलिंगइ (महा)। संकृ आलिंगिऊण (महा)। हेकृ. आलिंगिउ (महा)।

आलिंग पुं [आलिङ्ग] वाद्य-विशेष (राय)।

आलिंग वि [आलिङ्ग्य] १ आलिङ्गन करने योग्य। २ पु वाद्य-विशेष (जीव ३)।

आलिंगण न [आलिङ्गन] आलिंगन, भेंट (कप्पू)। °वट्टि स्त्री [°वृत्ति] गाल या कपोल का उपधान—तकिया, शरीर-प्रमाण उपधान (भग ११, ११)।

आलिंगणिया स्त्री [आलिङ्गनिका] देखो आलिंगणवट्टि (जीव ३)।

आलिंगिणी स्त्री [आलिङ्गिनी] जानु आदि के नीचे रखने का तकिया (पव ८४)।

आलिंगिय वि [आलिङ्गित] आश्लिष्ट, जिसका आलिंगन किया गया हो वह (काल)।

आलिंद पुं [आलिन्द] बाहर के दरवाजे के चौकट्ठे का एक हिस्सा (अभि १५६, अवि २८)।

आलिंप सक [आ + लिप्] पोतना, लेप करना। आलिंपइ (उव)। हेकृ आलिं-पित्तए (कस)। वकृ. आलिंपंत। प्रयो. आलिंपावंत (निचू ३)।

आलिपण न [आलेपण] १ लेप करना, विले-पन (रयण ५५)। २ जिसका लेप होता है वह चीज (निचू १२)।

आलिआ देखो आवलिआ (पंच ५, १४५)।

आलित्त न [आलित्र] जहाज चलाने का काष्ठ-विशेष (आचा २, ३, १, ६)।

आलित्त वि [आलिप्त] खरण्टित, खरडा हुआ, लिपा हुआ (पिंड २३४)।

आलित्त त्रि [आदीप्त] १ चारों ओर से जला हुआ, 'जह आलित्ते गेहे कोइ पसुत्तं नर तु बोहेजा' (वव १,३, णाया १,१,१४)। २ न आग लगनी, आग से जलना, 'कोट्टिमघरे वसने आलित्तम्मि वि न डज्झइ' (वव ४)।

आलिद्ध वि [आश्लिष्ट] आलिंगित (भग १९, ३, सुर ३, २२२)।

आलिद्ध वि [आलीढ] चखा हुआ, आस्वादित (से ६, ५६)।

आलिसंदग पु [दे आलिसन्दक] धान्य-विशेष (ठा ५, ३, भग ६, ७)।

आलिसिंदय पु [दे आलिसिन्दक] ऊपर देखो (ठा ५, ३)।

आलिह सक [स्पृश्] स्पर्श करना, छूना। आलिहइ (हे ४, १८२)। वकृ आलिहंत (नाट)।

आलिह सक [आ + लिख्] १ विन्यास करना, स्थापन करना। २ चित्र करना, चितरना या चित्र बनाना। वकृ आलिहमाण (सुर १२,४०)।

आलिहिअ वि [आलिखित] चित्रित (सुर १, ८७)।

आली सक [आ + ली] १ लीन होना, आसक्त होना। २ आलिंगन करना। ३ निवास करना। वकृ आलीयमाण (गउड)।

आली स्त्री [आली] १ पंक्ति, श्रेणी। २ सखी, वयस्या (हे १, ८३)। ३ वनस्पति-विशेष (णाया १, ३)।

आलीढ वि [आलीढ] १ आसक्त, 'आमूलालो-लधूलीबहुलपरिमलालीढलोलालिमाला' (पडि)। २ न. आसन-विशेष (वव १)।

इओ अ [इतस्] १ इससे, इस कारण (पि १७४)। २ इस तरफ (सुपा ३६४)। ३ इस (लोक) मे (विसे २६८२)।
इओअ अ [इतश्च] प्रसगान्तर-सूचक अव्यय (श्रा २८)।
इंखिणिया स्त्री [दे. इङ्खिनिका] निन्दा, गर्हा (सूअ १,२)।
इखिणी स्त्री [दे. इङ्खिनी] ऊपर देखो (सूअ १, २)।
इंगार } देखो अगार (पि १०२, जी ६,
इंगाल } प्राप्र)। °कम्म न [°कर्मन्] कोयला आदि उत्पन्न करने का और वेचने का व्यापार (पडि)। °सगडिया स्त्री [°शकटिका] अंगीठी, आग रखने का वर्तन (भग)।
इगारडाह पुंन [अङ्गारदाह] आवा, मिट्टी के पात्र पकाने का स्थान (आचा २, १०, २)।
इगाल वि [आङ्गार] अङ्गार-संवन्धी (दस ५)।
इगालग देखो अगारग (ठा २, ३)।
इंगालय देखो इगालग (सुज्ज २०)।
इंगाली स्त्री [दे] ईख का टुकडा, गंडेरी (दे १, ७६, पाअ)।
इंगाली स्त्री [आङ्गारी] देखो इगाल-कम्म (श्रा २२)।
इंगिअ न [इङ्गित] इशारा, सकेत, अभिप्राय के अनुरूप चेष्टा (पाअ)। °ज्ज, °ण्ण, ण्णु वि [°ज्ञ] इशारे से समझनेवाला (प्राप्र, हे २, ८३, पि २७६)। °मरण न [°मरण] मरण-विशेष (पचा)।
इगिअजाणुअ देखो इगिअज्ज (प्राकृ १८)।
इगिणी स्त्री [इङ्गिनी] मरण-विशेष, अनशन-क्रिया-विशेष (सम ३३)।
इगुअ न [इङ्गुद] इगुदी वृक्ष का फल (कुमा, पउम ४१, ६)।
इगुदी } स्त्री [इङ्गुदी] वृक्ष-विशेष, इसके
इंगुदी } फल तैलमय होते हैं, इसका दूसरा नाम व्रण-विरोपण भी है, क्योकि इसके तैल से व्रण बहुत शीघ्र अच्छे होते हैं (आचा, अभि ७३)।
इंघिअ वि [दे] घ्रात, सूँघा हुआ (दे १,८०)।
°इणर देखो किण्णर (से ८, ६१)।
इंत देखो ए = आ + इ।

इंद पुं [इन्द्र] १ देवताओं का राजा, देवराज (ठा २)। २ श्रेष्ठ, प्रधान, नायक; 'णरिंद' (गउड), 'देविंद' (कप्प)। ३ परमेश्वर, ईश्वर (ठा ४)। ४ जीव, आत्मा, 'इदो जीवो सव्वोवलद्धिभोगपरमेसरत्तणओ' (विसे २६६३)। ५ ऐश्वर्य-शाली (आवम)। ६ विद्याधरो का प्रसिद्ध राजा (पउम ६,२, ७,८)। ७ पृथ्वीकाय का एक अधिष्ठायक देव (ठा ५, १)। ८ ज्येष्ठा नक्षत्र का अधिष्ठायक देव (ठा २, ३)। ९ उन्नीसवें तीर्थंकर के एक स्वनाम-ख्यात गणधर (सम १५२)। १० सप्तमी तिथि (कप्प)। ११ मेघ, वर्षा, 'किं जयइ सव्वत्था दुब्भिक्खं अह भवे इंदो' (दसनि १०५)। १२ न देवविमान-विशेष (सम ३७)। °इ पुं [°जित्] १ इस नाम का राक्षस वंश का एक राजा, एक लकेश (पउम ५, २६२)। २ रावण के एक पुत्र का नाम (से १२, ९८)। °ओव देखो °गोव (पि १६८)। °काइय पुं [°कायिक] त्रीन्द्रिय जीव-विशेष (पण्ण १)। °कील पु [°कील] दरवाजा का एक अवयव (औप)। °कुभ पुं [कुम्भ] १ बडा कलश (राय)। २ स्थान-विशेष (णाया १, ६)। °केउ पुं [°केतु] इन्द्र-ध्वज, इन्द्र यष्टि (पण्ह १, ४, २, ४)। °खील देखो °कील (औप, पि २०६)। °गाइय देखो °काइय (उत्त ३६)। °गाह पुं [°ग्रह] इन्द्रावेश, किसी के शरीर मे इन्द्र का अधिष्ठान, जो पागलपन का कारण होता है, 'इंदगाहा इवा खंदगाहा इवा' (भग ३, ७)। °गोव, °गोवग, °गोवय पुं [°गोप] वर्षा ऋतु मे होनेवाला रक्त वर्ण का क्षुद्र जन्तु-विशेष, जिसको गुजराती मे 'गोकुल गाय' कहते है (उत्त ३२, सुर २, ८७, जी १७, पि १६८)। °ग्गह पुं [°ग्रह] ग्रह-विशेष (जीव ३)। °ग्गि पुं [°ाग्नि] १ विशाखा नक्षत्र का अधिष्ठायक देव (अणु)। २ महाग्रह-विशेष (ठा २, ३)। °ग्गीव पुं [ग्रीव] ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २,३)। °जसा स्त्री [°यशस्] काम्पिल्य नगर के ब्रह्मराज की एक पत्नी (उत्त १३)। °जाल न [°जाल] माया-कर्म, छल, कपट (स ४५४)। °जालि, °जालिअ वि [°जालिन्, °क] मायावी, बाजीगर (ठा ४, सुपा २०३)।

°जुइण्ण पुं [°द्युतिज्ञ] स्वनाम-ख्यात इक्ष्वाकु-वंश का एक राजा (पउम ५, ६)। °ज्झय पुं [ध्वज] बडी ध्वजा (पि २६६)। °ज्झया स्त्री [°ध्वजा] इन्द्र द्वारा भरतराज को दिखाई हुई अपनी दिव्य अङ्गुलि के उपलक्ष मे राजा भरत से उस अङ्गुलि के समान आकृति की की हुई स्थापना और उसके उपलक्ष मे किया गया उत्सव (आचू २०)। °णील पुन [°नील] नीलम, नीलमणि, रत्न-विशेष (गउड, पि १६०)। °तरु पुं [°तरु] वृक्ष-विशेष, जिसके नीचे भगवान् संभवनाथ को केवल-ज्ञान हुआ था (पउम २०, २८)। °त्त न [°त्व] १ स्वर्ग का आधिपत्य, इन्द्र का असाधारण धर्म। २ राजत्व। ३ प्राधान्य (सुपा २५३)। °दत्त पु [°दत्त] इस नाम का एक प्रसिद्ध राजा (उप ९३६)। २ एक जैन मुनि (विपा २,७)। °दिण्ण पु [°दिन्न] स्वनाम-ख्यात एक जैन आचार्य (कप्प)। °धणु न [°धनुष्] १ शक्र-धनु, सूर्य की किरण मेघो पर पडने से आकाश में जो धनुप का आकार दीख पडता है वह। २ विद्याधर-वंश के एक राजा का नाम (पउम ८,१८६)। °नील देखो °णील (पउम ३, १३२)। °पाडिवया स्त्री [°प्रतिपत्] कार्त्तिक (गुजराती आश्विन) मास के कृष्णपक्ष की पहली तिथि (ठा ४)। °पुर न [°पुर] १ इन्द्र का नगर, अमरावती (उप पृ १२६)। २ नगर-विशेष, राजा इन्द्रदत्त की राजधानी (उप ९३६)। °पुरग न [°पुरक] जैनीय वेशवाटिक गण के चौथे कुल का नाम (कप्प)। °प्पभ पु [°प्रभ] राक्षस वंश के एक राजा का नाम, जो लङ्का का राजा था (पउम ५, २६१)। °भूइ पु [°भूति] भगवान् महावीर का प्रथम—मुख्य शिष्य, गौतमस्वामी (सम १९, १५२)। °मह पुं [°मह] १ इन्द्र की आराधना के लिए किया जाता एक उत्सव। २ आश्विन पूर्णिमा (ठा ४, २)। °माली स्त्री [°माली] राजा आदित्य की पत्नी (पउम ६, १)। °मुद्धाभिसित्त पु [°मूर्द्धाभिषिक्त] पक्ष की सातवी तिथि, सप्तमी (चद्र १०)। °मेह पु [°मेघ] राक्षस वंश मे उत्पन्न एक राजा (पउम ५, २६१)। °य पुं [°क] १ देखो इन्द्र (ठा ६)। २ नरक-विशेष। ३

यावज्जीव, जीवन-पर्यन्त (आव)। °कहा स्त्री [°कथा] जीवन-पर्यन्त, 'धएणा आवकहाए गुरुकुलवासं न मुंचति' (उप ६८१)। °कहिय वि [°कथिक] यावज्जीविक, जीवन-पर्यन्त रहनेवाला (ठा ६, उप ५२०)।

आव पु [आप] १ प्राप्ति, लाभ (पण्ह २, १)। २ जल का समूह। °वहुल न [°वहुल] देखो आउ-चहुल (कस)।

आव सक [आ+या] आना, आगमन करना, 'वणवसिराणवि निच्चं आवइ निद्दामुह ताण' (सुपा ६४७)। आवेइ (नाट)। आवति (मंग १६२)।

आवआस सक [उप+गूह्] आलिंगन करना। आवआसइ (प्राक ७४)।

आवइ स्त्री [आपद्] आपत्ति, विपत्, संकट (सम ५७, सुपा ३२१, सुर ४, २१५, प्रासू ५, १५६)।

आवग पुं [दे] अपामार्ग, वृक्ष विशेष, लटजीरा (दे १, ६२)।

आवडु वि [आपाण्डु] थोडा सफेद, फीका (गा २६५)।

आवंडुर वि [आपाण्डुर] ऊपर देखो (से ६, ७४)।

आवंत देखो जावत, 'आवंती के यावती लोगंसि समणा य माहणा य' (आचा १, ४, २, ३, १, ५, २, १, ४, पि ३५७)।

आवग्गण न [आवल्गन] अश्व पर चढने की कला (भवि)।

आवच्चेज्ज वि [अपत्यीय] अपत्य-स्थानीय (कप्प)।

आवज्ज देखो आओज्ज (हे १, १५६)।

आवज्ज अक [अ+पद्] प्राप्त होना, लागू होना। आवज्जइ (कस)। कृ आवज्जियव्व (पण्ह २, ५)।

आवज्ज सक [आ+वर्ज्] १ संमुख करना। २ प्रसन्न करना, 'आवज्जंति गुणा खलु अबुहपि जणं अमच्छरियं' (स ११)।

आवज्ज सक [आ+पद्] प्राप्त करना। आवजई (उत्त ३२, १०३)। आवज्जे (सूअ १, १,२,१६, २०), आवज्जसु (सुख २,६)।

आवज्ज } वि [आवर्ज, °क] प्रीत्युत्पादक
आवज्जग } (पिंड ४३८)।

आवज्जण न [आवर्जन] १ संमुख करना। २ प्रसन्न करना (आचू)। ३ उपयोग, ख्याल। ४ उपयोग-विशेष। ५ व्यापार-विशेष (विसे ३०५१)।

आवज्जिय वि [आवर्जित] १ प्रसन्न किया हुआ। २ अभिमुख किया हुआ (महा, सुर ६, ३१, सुपा २३२)। °करण न [°करण] व्यापार-विशेष (आचू)।

आवज्जिय देखो आउज्जिय = आतोद्यिक (कुमा)।

आवज्जीकरण न [आवर्जीकरण] उपयोग-विशेष या व्यापार-विशेष का करना, उदीरणावलिका मे कर्म-प्रक्षेप रूप व्यापार (औप, विसे ३०५०)।

आवट्ट अक [आ+वृत्] १ चक्र की तरह घूमना, फिरना। २ विलीन होना। ३ सक शोषण करना, सुखाना। ४ पीडना, दुःखी करना। आवट्टइ (हे ४, ४१६, सूअ १, ५, २)। वकृ आवट्टमाण (से ५, ८०)।

आवट्ट देखो आवत्त (आचा, सुपा ६४, सूअ १, ३)।

आवट्टणा स्त्री [आवर्तना] आवर्तन (प्राक ३१)।

आवट्टिआ स्त्री [दे] १ नवोढा, दुलहिन। २ परतन्त्र स्त्री (दे १, ७७)।

आवड देखो आवत्त = आवर्त्त (राय ३०)।

आवड सक [आ+पत्] १ आना, आगमन करना। २ आ लगना। वकृ आवडत (प्रासू १०६)।

आवडण न [आपतन] १ गिरना (से ६, ४२)। २ आ लगना (स ३८४)।

आवणवीहि स्त्री [आपणवीथि] १ हट्ट-मार्ग, बाजार। २ रथ्या-विशेष, एक तरह का मुहल्ला (राय १००)।

आवडिअ वि [आपतित] १ गिरा हुआ (महा)। २ पास मे आया हुआ (से १४, ३)।

आवडिअ वि [दे] १ संगत, संबद्ध (दे १, ७८, पाअ)। २ सार, मजबूत (दे १, ७८)।

आवण पु [आपण] १ हाट, दूकान (णाया १, १, महा)। २ बाजार (प्रामा)।

आवणिय पु [आपणिक] सौदागर, व्यापारी (पाअ)।

आवण्ण वि [आपन्न] १ आपत्ति-युक्त। २ प्राप्त (गा ४६७)। °सत्ता स्त्री [°सत्त्वा] गर्भिणी, गर्भवती स्त्री (अभि १२४)।

आवण्ण वि [आपन्न] आश्रित (सूअ १, १, १, १६)।

आवत्त सक [आ+वृत्] आना, 'नावत्तइ नागच्छइ पुणो भवे तेण अपुणरावित्ति' (चेइअ ३९६)।

आवत्त अक [आ+वृत्] १ परिभ्रमण करना। २ बदलना। ३ चक्राकार घूमना। ४ सक पठित पाठ को याद करना। ५ घुमाना। आवत्तइ (सूक्त ७१)। वकृ. अत्तमाण, आवत्तमाण (हे १, २७१, कुमा)।

आवत्त पु [आवर्त्त] १ चक्राकार परिभ्रमण (स्वप्न ९६)। २ मुहूर्त्त-विशेष (सम ५१)। ३ महाविदेह क्षेत्रस्थ एक विजय (प्रदेश) का नाम (ठा २, ३)। ४ एक खुरवाला पशु-विशेष (पण्ह १, १)। ५ एक लोकपाल का नाम (ठा ४, १)। ६ पर्वतविशेष (ठा ६)। ७ मणि का एक लक्षण (राय)। ८ ग्राम-विशेष (आवम)। ९ शारीरिक चेष्टा-विशेष, कायिक व्यापार-विशेष, 'दुवालसावत्ते किति-कम्मे' (सम २१)। °कूड न [°कूट] पर्वत-विशेष का शिखर-विशेष (इक)। °यित वकृ [°यमान] दक्षिण की तरफ चक्राकार घूमनेवाला (भग ११, ११)।

आवत्त पुन [आवर्त्त] १ एक तरह का जहाज (सिरि ३८३)। २ न लगातार २५ दिनो का उपवास (संबोध ५८)।

आवत्त न [आतपत्र] छत्र, छाता (पाअ)।

आवत्तण न [आवर्त्तन] चक्राकार भ्रमण (हे २, ३०)। °पेढिया स्त्री [°पीठिका] पीठिका-विशेष (राय)।

आवत्तय पु [आवर्त्तक] देखो आवत्त। १० वि. चक्राकार भ्रमण करनेवाला (हे २, ३०)।

आवत्ता स्त्री [आवर्त्ता] महाविदेह-क्षेत्र के एक विजय (प्रदेश) का नाम (इक)।

आवत्ति स्त्री [आपत्ति] १ दोष-प्रसंग, 'सव्वविमोक्खावत्ती' (विसे १६३४)। २ आपदा, कष्ट। ३ उत्पत्ति (विसे ६६)।

आवत्ति स्त्री [आपत्ति] प्राप्ति (धर्मसं ४७३)।

इक्कार देखो एक्कारह (कम्म ६, ६६)।

इक्किक्क वि [एकैक] प्रत्येक (जी ३३, प्रासू ११८, सुर ८, ४२)।

इक्किल्ल स्त्रीन [एकचत्वारिंशत्] एकचालीस, ४१ (कम्म ६, ५६)।

इक्कुस न [दे] नीलोत्पल, कमल (दे १, ७९)।

इक्ख सक [ईक्ष्] देखना। इक्खइ (उव)। इक्ख (सूअ १, २, १, २१)।

इक्खअ वि [ईक्षक] देखनेवाला (गा ५५७)।

इक्खण न [ईक्षण] अवलोकन, प्रेक्षण (पउम १०१, ७)।

इक्खाउ देखो इक्खागु (विक्र ६४)।

इक्खाग वि [ऐक्ष्वाक] इक्ष्वाकु नामक प्रसिद्ध क्षत्रियवंश में उत्पन्न (तित्थ)।

इक्खाग } पुं [इक्ष्वाकु] १ एक प्रसिद्ध क्षत्रिय इक्खागु } राजवंश, भगवान् ऋषभदेव का वंश। २ उस वंश में उत्पन्न (भग ९, ३३, कप्प, औप, अजि १३)। ३ कोशल देश (णाया १,८)। °भूमि स्त्री [°भूमि] अयोध्या नगरी (आव २)।

इक्खु पु [इक्षु] १ ईख, ऊख (हे २, १७, पि ११७)। २ धान्य-विशेष, 'वरट्टिका' नाम का धान्य (श्रा १८)। °गडिया स्त्री [गण्डिका] गडेरी, ईख का टुकडा (आचा)। °घर न [°गृह] उद्यान-विशेष (विसे)। °चोयग न [दे] ईख का कुचा (आचा)। °डालग न [°दे] १ ईख की शाखा का एक भाग (आचा)। २ ईख का छेद (निचू १)। °पेसिया स्त्री [°पेशिका] गण्डेरी (निचू १६)। °भित्ति स्त्री [दे] ईख का टुकडा (निचू १६)। °मेरग न [°मेरक] गण्डेरी, कटे हुए ऊख के गुल्ले (आचा)। °लट्ठि स्त्री [°यष्टि] ईख की लाठी, इक्षु-दण्ड (आचू)। °वाड पुं [°वाट] ईख का खेत, 'सुचिरं पि अच्छमाणो नलथम्भो इच्छुवाडमज्झम्मि' (आव ३)। °सालग न [दे] १ ईख की लम्बी शाखा (आचा)। २ ईख की बाहर की छाल (निचू १६)। देखो उच्छु।

इग देखो एक्क (कम्म १, ८, ३३, सुपा ४०६, श्रा १४, नव ८, पि ४४५, श्रा ४४, सम ७५)।

इगयाल स्त्रीन [एकचत्वारिंशत्] एकचालीस, ४१ (कम्म ६, ५६)।

इगवीसइम वि [एकविंश] एक्कीसवाँ (पव ४६)।

इगुचाल वि [एकचत्वारिंशत्] संख्या-विशेष, ४१—चालीस और एक (भग, पि ४४५)।

इगुणवीस वि [एकोनविंश] उन्नीसवाँ (पव ४६)।

इगुणीस } स्त्री [एकोनविंशति] उन्नीस (पव इगुवीस } १८, कम्म ६, ५६)।

इगुसट्ठि स्त्री [एकोनषष्टि] उनसठ (कम्म ६, ६१)।

इग्ग वि [दे] भीत, डरा हुआ (दे १, ७९)।

इग्ग देखो एक्क (नाट)।

इग्घिअ वि [दे] भर्त्सित, तिरस्कृत (दे १, ८०)।

इच्चा देखो इ सक।

इच्चाइ पुंन [इत्यादि] वगैरह, प्रभृति (जी ३)।

इच्चेव अ [इत्येवम्] इस प्रकार, इस माफिक (सूअ १, ३)।

इच्छ सक [इष्] इच्छा करना, चाहना। इच्छइ (उव, महा)। वकृ इच्छंत, इच्छ-माण (उत्त १, पंचा ५)।

इच्छ सक [आप् + स् = ईप्स्] प्राप्त करने को चाहना। कृ इच्छियव्व (वव १)।

इच्छकार देखो इच्छा-कार (पडि)।

इच्छक्कार पुं [इच्छाकार] 'इच्छा' शब्द (पंचा १२, ४)।

इच्छा स्त्री [इच्छा] पक्ष की ग्यारहवी रात्रि, 'जयति-अपराजिया य ग(? इ)च्छा य' (सुज्ज १०, १४)।

इच्छा स्त्री [इच्छा] अभिलाषा, चाह, वाञ्छा (उवा, प्रासू ४८)। °कार पुं [°कार] स्वकीय-इच्छा, अभिलाप (पडि)। °छंद वि [°च्छन्द] इच्छा के अनुकूल (आव ३)। °णुलोम वि [°नुलोम] इच्छा के अनुकूल (पराण ११)। °णुलोमिय वि [°नुलोमिक] इच्छा के अनुकूल (आचा)। °पणिय वि [°प्रणीत] इच्छानुसार किया हुआ (आचा)। °परिमाण न [°परिमाण] परिग्राह्य वस्तुओं के विषय की इच्छा का परिमाण करना, श्रावक का पाचवाँ व्रत (ठा ५)। °मुच्छा स्त्री [°मूर्च्छा] अत्यासक्ति, प्रबल इच्छा (पराह १, ३)। °लोभ पुं [°लोभ] प्रबल लोभ (ठा ६)। °लोभिय वि [°लोभिक] महालोभी (ठा ६)। °लोल पु [°लोल] १ महान् लोभ। २ वि. महा-लोभी (बृह ६)।

°इच्छा स्त्री [दित्सा] देने की इच्छा (आव)।

इच्छिय [इष्ट] इष्ट, अभिलषित, वाञ्छित (सुर ४, १५३)।

इच्छिय वि [ईप्सित] प्राप्त करने को चाहा हुआ, अभिलषित (भग, सुपा ६२५)।

इच्छिय त्रि [इच्छित] जिसकी इच्छा की गई हो वह (भग)।

इच्छिर वि [एषितृ] इच्छा करनेवाला (कुमा)।

इच्छु देखो इक्खु (कुमा, प्रासू ३३)।

इच्छु वि [इच्छु] अभिलाषी (गा ७४०)।

इज्ज सक [आ + इ] आना, आगमन करना। वकृ. इज्जंत,

'विणयम्मि जो उवाएण, चोइओ कुप्पई नरो।
दिव्वं सो सिरिमिज्जंतिं, दडेण पडिसेहए।।' (दस ९, २, ४)।

इज्ज पुंन [इज्या] यज्ञ, याग, 'भिक्खट्ठा वंभ-इज्जमि' (उत्त १२, ३)।

इज्जा स्त्री [इज्या] १ याग, पूजा। २ ब्राह्मणों का सन्ध्यार्चन (अणु ठा १०)।

इज्जा स्त्री [दे] माता, जननी (अणु)।

इज्जिसिय वि [इज्यैषिक] पूजा का अभिलाषी (भग ९, ३३)।

इज्झ अक [इन्ध्] चमकना (हे २, २८)। वकृ. इज्झमाण (राय)।

इट्टग पुं [दे] सेवई, गु० सेव (पिंडनि० गा० ४६१, ४६६)।

इट्टगा स्त्री [इष्टका] नीचे देखो (पराह २, २, पिंड)।

इट्टगा स्त्री [दे] खाद्य-विशेष, सेव (पिंड ४६१, ४६६, ४७२)।

इट्टवाय देखो इट्टा-वाय (सम्मत्त १३७)।

इट्टा स्त्री [इष्टका] ईंट (गउड, हे २, ३४)। °पाय, °वाय पुं [°पाक] ईंटो का पकना। २ जहाँ पर ईंटें पकाई जाती हैं वह स्थान (ठा ८)।

आवाह सक [आ + वाहय्] १ सानिध्य के लिए देव या देवाधिष्ठित चीज को बुलाना। २ बुलाना। संकृ आवाहिवि (अप) (भवि)।

आवाह पुं [आबाध] पीडा, बाधा (विपा १, ६)।

आवाह पुं [आवाह] १ नव-परिणीता वधू को वर के घर लाना (पण्ह २, ४)। २ विवाह के पूर्व किया जाता पान देने का एक उत्सव (जीव ३)।

आवाहण न [आवाहन] आह्वान (विसे १८८३)।

आवाहिय वि [आवाहित] १ बुलाया हुआ, आहूत (भवि)। २ मदद के लिए बुलाया हुआ देव या देवाधिष्ठित वस्तु, 'एव च भणंतेणं आवाहियाइ सत्थाइ' (सुर ८, ४२)।

आवि न [दे] १ प्रसव-पीडा। २ वि नित्य, शाश्वत। ३ दृष्ट, देखा हुआ (दे १, ७३)।

आवि अ [चापि] समुच्चय-द्योतक अव्यय (कप्प)।

आवि अ [आविस्] प्रकटता-सूचक अव्यय (सुर १४, २११)।

आविअ सक [आ + पा] पीना, 'जहा दुमस्स पुप्फेसु भमरो आविअइ रसं' (दस १, २)।

आविअ वि [आवृत] आच्छादित (से ६, ६२)।

आविअ पुं [दे] १ इन्द्रगोप, क्षुद्र कीट-विशेष। २ वि मथित, आलोडित (दे १, ७६)। ३ प्रोत (दे १, ७६, पाअ, षड्)।

आविअ वि [आविच] अविच-देशोत्पन्न (राय)।

आविअज्झा स्त्री [दे] १ नवोढा, दुलहिन। २ परतन्त्रा, पराधीन स्त्री (दे १, ७७)।

आविध सक [आ + व्यध्] १ विंधना। २ पहनना। ३ मन्त्र से अधीन करना। आविंध (आक ३८)। आविधामो (पि ४८९), 'पालव वा सुवण्णसुत्त वा आविंधेज्ज पिणिधेज्ज वा' (आचा २, १३, २०)। कर्म. आविज्झइ (उव)।

आविंधण न [आव्यधन] १ पहनना। २ मन्त्र से आविष्ट करना, मन्त्र से अधीन करना (पण्ह १, २, आक ३८)।

आविक्कम्म पुन [आविष्कर्मन्] प्रकट-कर्म, प्रकटरूप से किया हुआ काम (आचा २, १५, ५)।

आविग्ग वि [आविग्न] उद्विग्न, उदासीन (से ९, ८६, १३, ६३, दे ७, ६३)।

आविट्ठ वि [आविष्ट] १ आवृत, व्याप्त (मम ५१, सुपा १८७)। २ प्रविष्ट (सूअ १, ३)। ३ अधिष्ठित, आश्रित (ठा ५, भास ३६)।

आविट्ठ वि [आविष्ट] भूत आदि के उपद्रव से युक्त (सम्मत्त १७३)।

आविद्ध वि [आविद्ध] परिहित, पहना हुआ (कप्प)।

आविद्ध वि [दे] क्षिप्त, प्रेरित (दे १, ६३)।

आविब्भाव पु [आविर्भाव] १ उत्पत्ति। २ प्रादुर्भाव, अभिव्यक्ति, 'आविब्भावतिरोभाव-मेत्तपरिणामिदव्वमेवाय' (विसे)।

आविब्भूय वि [आविर्भूत] १ उत्पन्न। २ प्रादुर्भूत (कप्प)। ३ अभिव्यक्त (सुर १४, २११)।

आविल वि [आविल] १ मलिन, अस्वच्छ (मम ५१)। २ आकुल, व्याप्त (सूअ १, १५)।

आविलिअ वि [दे] कुपित, क्रुद्ध (षड्)।

आविलुपिअ वि [आकाङ्क्षित] अभिलषित (दे १, ७२)।

आविस सक [आ + विश्] प्रवेश करना, घुसना। आविसेइ (सम्मत्त १७३)।

आविस अक [आ + विश्] १ सवद्ध होना युक्त होना। २ सक उपभोग करना, सेवना, 'परदारमाविसामित्ति' (विसे ३२५६), 'ज ज समय जीवो, आविसई जेण जेण भावेण। सो तम्मि तम्मि समए, सुहासुह बधए कम्म' (उव)

आविहव अक [आविर् + भू] १ प्रकट होना। २ उत्पन्न होना। आविहवइ (स ४८)।

आविहूअ देखो आविब्भूय (स ७१८)।

आवी देखो आवि = आविस्, 'आवी वा जइ वा रहस्से' (उत्त १, १७, सुख १, १७)। °कम्म देखो आविकम्म (आचा २, १५, ५)।

आवीअ वि [आपीत] १ पीत। २ शोषित (से १३, ३१)।

आवीइ वि [आवीचि] निरन्तर, अविच्छिन्न, 'गब्भप्पभिइमावीइसलिलच्छेए सर व सूसंतं। अणुसमयं मरमाणे, जीयति जणो कहं भणइ?' (सुपा ६५१)। °मरण न [°मरण] मरण-विशेष (भग १३, ७)।

आवीकम्म न [आविष्कर्मन्] १ उत्पत्ति। २ अभिव्यक्ति (ठा ६, कप्प)।

आवीड सक [आ + पीड्] १ पीडना। २ दबाना। आवीडइ (सण)।

आवीण न [आपीन] स्तन, थन (गउड)।

आवील देखो आपेल = आपीड (स ३१५)।

आवीळ देखो आवीड। सकृ आवीलियाण (आचा २, १, ८, १)।

आवीलण न [आपीडन] समूह, निचय (गउड)।

आवुअ पुं [आवुक] नाटक की भाषा मे पिता, बाप (नाट)।

आवुण्ण वि [आपूर्ण] पूर्ण, भरपूर (दे २, १०२)।

आवुत्त पु [दे] भगिनी-पति (अभि १८३)।

आवुद वि [आवृत] ढका हुआ (प्राकृ ८, १२)।

आवुदि स्त्री [आवृति] आवरण (प्राकृ ८, १२)।

आवूर देखो आपूर = आ + पूरय्। वकृ आवूरंत (पउम ७६,८)। कवकृ. आवूरिज्ज-माण (स ३८२)।

आवूरण न [आपूरण] पूर्ति (स ४३६)।

आवूरिय देखो आऊरिय (पउम ६४, ५२, स ७७)।

आवेअ सक [आ + वेदय्] १ विनति करना, निवेदन करना। २ बतलाना। आवे-एइ (महा)।

आवेअ पुं [आवेग] कष्ट, दुख (से १०, ५७, ११, ७२)।

आवेड देखो आवा।

आवेढिअय वि [आवेष्टित] वेष्टित, घिरा हुआ (गा २८)।

आवेड } देखो आमेल (हे २, २३४,
आवेडय } कुमा)।

आवेढ पु [आवेष्ट] १ वेष्टन। २ मण्डलाकार करना (से ७, २७)।

इमेरिस वि [एतादृश] ऐसा, इसके जैसा (सण)।
इय देखो इम (महा)।
इय देखो इइ (षड्, हे १, ९१, औप)।
इय न [दे] प्रवेश, पैठ (आवम)।
इय वि [इत] १ गत, गया हुआ (सूअ १, ६)। २ प्राप्त, 'उदयमिओ जस्सीमो जयम्मि चदुव्व जिणचदो' (सार्घ ७१, विसे)। ३ ज्ञात, जाना हुआ (आचा)।
इयण्हि अ [इदानीम्] हाल में, इस समय, अधुना (ठा , ३)।
इयर वि [इतर] १ अन्य, दूसरा (जी ४६, प्रासू १००)। २ हीन, जघन्य (आचा १, ६, २)।
इयरहा अ [इतरथा] अन्यथा, नही तो, अन्य प्रकार से (कम्म १, ६०)।
इयरेयर त्रि [इतरेतर] अन्योन्य, परस्पर (राज)।
इयाणि } अ [इदानीम्] हाल मे, इस
इयाणिं } समय (भग, पि १४४)।
इर देखो किल (हे २, १८६, नाट)।
इरमंदिर पु [दे] करभ, ऊँट (दे १, ८१)।
इराव पु [दे] हाथी (दे १, ८०)।
इरावदी (शौ) स्त्री [इरावती] नदी-विशेष (नाट)।
°इरि देखो गिरि, 'विंभइरिपवरसिहरे' (पउम १०, २७)।
इरिण न [ऋण] करजा, ऋण (चारु ६६)।
इरिण न [दे] कनक, सुवर्ण (दे १, ७९, गउड)।
इरिय सक [ईर्] जाना, गति करना। इरियामि (उत्त १८, २६, सुख १८, २६)।
इरिया स्त्री [दे] कुटी, कुटिया (दे १, ८०)।
इरिया स्त्री [ईर्या] गमन, गति, चलना (आचा)। °वह पुं [°पथ] १ मार्ग मे जाना (ओघ ५४)। २ जाने का मार्ग, रास्ता (भग ११, १०)। ३ केवल शरीर से होनेवाली क्रिया (सूअ २, २)। °वहिय न [°पथिक] केवल शरीर की चेष्टा से होनेवाला कर्मबन्ध, कर्म-विशेष (सूअ २, २, भग ८, ८)। °वहिया स्त्री [°पथिकी] कषाय-रहित केवल कायिक क्रिया, क्रिया-विशेष (पडि, ठा २)। °समिइ स्त्री [°समिति] विवेक से चलना, दूसरे जीव को किसी प्रकार की हानि न हो ऐसा उपयोग-पूर्वक चलना (ठा ८)। °समिय वि [°समित] विवेक-पूर्वक चलनेवाला (विपा २, १)।
इल पु [इल] १ वाराणसी का वास्तव्य स्वनाम-ख्यात एक गृहपति—गृहस्थ (णाया २)। २ न इलादेवी के सिंहासन का नाम (णाया २)। °सिरी स्त्री [°श्री] इल नामक गृहस्थ की स्त्री (णाया २)।
°इलत्तअ देखो ज्झिलत (मे ३, ४७)।
इला स्त्री [इला] १ पृथिवी, भूमि (मे २, ११)। २ धरणेन्द्र की एक अग्र-महिषी (णाया २)। ३ इल नामक गृहस्थ की पुत्री (णाया २)। ४ रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी (ठा ८)। ५ राजा जनक की माता (पउम २१, ३३)। ६ इलावर्धन नगर मे स्थित एक देवता (आवम)। °कूड न [°कूट] इलादेवी के निवास-भूत एक शिखर (ठा ४)। °पुत्त पुं [°पुत्र] इलादेवी के प्रसाद मे उत्पन्न एक श्रेष्ठि-पुत्र, जिसने नटिनी पर मोहित होकर नट का पेशा सीखा और अन्त मे नाच करते-करते ही शुद्ध भावना मे केवलज्ञान प्राप्त कर मुक्ति पाई (आचू)। °वइ पु [°पति] एलापत्य गोत्र का आदि पुरुष (णदि)। °वडंसय न [°ावतंसक] इलादेवी का प्रासाद (णाया २)।
इलाइपुत्त देखो इला-पुत्त, 'धन्नो इलाइपुत्तो चिलाइपुत्तो अ बाहुमुणी' (पडि)।
इलिया स्त्री [इलिका] क्षुद्र जीव-विशेष, चीनी और चावल मे उत्पन्न होनेवाला कीट-विशेष (जी १७)।
इली स्त्री [इली] शस्त्र-विशेष, एक जाति की तलवार की तरह का हथियार (पण्ह १, ३)।
इल्ल पु [दे] १ प्रतीहार, चपरासी। २ लविन्न, दाँती। ३ वि दरिद्र, गरीब। ४ कोमल, मृदु। ५ काला, कृष्ण वर्णवाला (दे १, ८२)।
इल्लपुलिंद पु [दे] व्याघ्र, शेर (चंड)।
इल्लि पु [दे] १ शार्दूल, व्याघ्र। २ सिंह। ३ छाता (दे १, ८३)।
इल्लिय वि [दे] आसिक्त, उप्पेलणफुल्लाविअमहल्ल-अफुल्लामवेल्लिअमल्लिआअक्खतल्लाएए' (विक्र २३)।
इल्लिया स्त्री [इल्लिका] क्षुद्र जीव-विशेष, अन्न में उत्पन्न होनेवाला कीट-विशेष (जी १६)।
इल्लीर न [दे] १ आसन-विशेष। २ छाता। ३ दरवाजा, गृह-द्वार (दे १, ८३)।
इव अ [इव] इन अर्थो का द्योतक अव्यय—१ उपमा। २ सादृश्य, तुलना। ३ उत्प्रेक्षा (हे २, १८२, सण)।
इसअ वि [दे] विस्तीर्ण (षड्)।
इसणा देखो एसणा (रंभा)।
इसाणी स्त्री [ऐशानी] ईशान कोण, पूर्व और उत्तर के बीच की दिशा (नाट)।
इसि पु [ऋषि] १ मुनि, साधु, ज्ञानी, महात्मा (उत्त १२, अवि १४)। २ ऋषिवादि-निकाय का दक्षिण दिशा का इन्द्र, इन्द्र-विशेष (ठा २, ३)। °गुत्त पु [°गुप्त] १ स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि (कप्प)। २ न जैन मुनियो का एक कुल (कप्प)। °गुत्तिय न [°गुप्तीय] जैन मुनियो का एक कुल (कप्प)। °दास पुं [°दास] १ इस नाम का एक सेठ, जिसने जैन दीक्षा ली थी। २ 'अनुत्तरोववाइदसा' सूत्र का एक अध्ययन (अनु २)। °दत्त, °दिण्ण पुं [°दत्त] एक जैन मुनि (कप्प)। °पालिय पुं [°पालित] ऐरवत क्षेत्र के पाँचवें तीर्थंकर का नाम (सम १५३)। °पालिया स्त्री [°पालिता] जैन मुनियो की एक शाखा (कप्प)। °भद्दपुत्त पुं [भद्रपुत्र] एक जैन श्रावक (भग ११, १२)। °भासिय न [°भाषित] १ अगग्रन्थो के अतिरिक्त जैन आचार्यो के बनाए हुए उत्तराध्ययन आदि शास्त्र (आवम)। २ 'प्रश्नव्याकरण' सूत्र का तृतीय अध्ययन (ठा १०)। °वाइ, °वाइय, °वादिय पु [वादिन्] व्यन्तरो की एक जाति (औप, पण्ह १, ४)। °वाल पु [°पाल] १ ऋषिवादि-व्यन्तरो का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३)। २ पाचवें वासुदेव का पूर्वभवीय नाम (सम १५३)। °वालिय पुं [°पालित] ऋषिवादिव्यन्तरो के एक इन्द्र का नाम (देव)।
इसिण पुं [इसिन] अनार्य देश विशेष (णाया १, १)।

आसज्ज अ [आसाद्य] प्राप्त करके (विसे ३०)।

आसड पुं [आसड] विक्रम की तेरहवीं शताब्दी का स्वनाम-ख्यात एक जैन ग्रन्थकार (विवे १४३)।

आसण न [आसन] १ जिसपर बैठा जाता है वह चौकी आदि (आव ४)। २ स्थान, जगह (उत्त १, १)। ३ शय्या (आचा)। ४ बैठना, उपवेशन (ठा ६)।

आसणिय वि [आसनित] आसन पर बैठाया हुआ (स २६२)।

आसण्ण न [आसन्न] १ समीप, पास। २ वि समीपस्थ (गउड)। देखो आसन्न।

आसत्त वि [आसक्त] लीन, तत्पर (महा, प्रासू ६४)।

आसत्त वि [आसक्त] १ नीचे लगा हुआ (राय ३५)। २ पुं नपुंसक का एक भेद, वीर्यपात होने पर भी स्त्री का आलिंगन कर उसके कक्षादि अंगों में जुड़कर सोनेवाला नपुंसक (पव १०६)।

आसत्ति स्त्री [आसक्ति] अभिष्वङ्ग, तल्लीनता (कुमा)।

आसत्थ पुं [अश्वत्थ] पीपल का पेड़ (पउम ५३, ७६)।

आसत्थ वि [आश्वस्त] १ आश्वासन-प्राप्त, स्वस्थ। २ विश्रान्त (णाया १,१, सम १५२, पउम ७, ३८, दे ७, २८)।

आसन्न देखो आसण्ण (कुमा, गउड)। °वत्ति वि [°वर्त्तिन्] नजदीक में रहनेवाला (सुपा ३५१)।

आसम पु [आश्रम] तापस आदि का निवास स्थान, तीर्थ-स्थान (पण्ह १,३, औप)। २ ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और भैक्ष्य (सन्यास) ये चार प्रकार की अवस्था (पचा १०)।

आसमपय न [आश्रमपद] तापसों के आश्रम से उपलक्षित स्थान (उत्त ३०, १७)।

आसमि वि [आश्रमिन्] आश्रम में रहनेवाला, ऋषि, मुनि वगैरह (पंचव १)।

आसय अक [आस्] बैठना। आसयति (जीव ३)।

आसय सक [आ + श्री] १ आश्रय करना, अवलम्बन करना। २ ग्रहण करना। आसयइ (कप्प)। वकृ. आसयंत (विसे ३२२)।

आसय पुं [आशक] खानेवाला (आचा)।

आसय पुं [आश्रय] आधार, अवलम्बन (उप ७१४, सुर १३, ३६)।

आसय पुं [आशय] १ मन, चित्त, हृदय (सुर १३, ३६, पात्र)। २ अभिप्राय (सूअ १, १५)।

आसय न [दे] निकट, समीप (दे १, ६५)।

आसरिअ वि [दे] समुख-आगत, सामने आया हुआ (दे १, ६६)।

आसव अक [आ + स्रु] धीरे-धीरे झरना, टपकना। वकृ आसवमाण (आचा)।

आसव सक [आ + स्रु] आना, 'आसवदि जेण कम्मं परिणामेणप्पणो स विण्णेओ भावासवो' (द्रव्य २६)।

आसव पुं [आश्रव] सूक्ष्म छिद्र, देखो, 'सयासव' (भग १, ६)।

आसव पुं [आसव] मद्य, दारू (उप ७२८ टी)।

आसव पुं [आश्रव] १ कर्मों का प्रवेश-द्वार, जिससे कर्मबन्ध होता है वह हिंसा आदि (ठा २, १)। २ वि श्रोता, गुरु-वचन को सुननेवाला (उत्त १)। °सक्कि वि [°सक्तिन्] हिंसादि में आसक्त (आचा)।

आसवण न [दे] वास-गृह, शय्या-घर (दे १, ६६)।

आसवाहिया स्त्री [अश्ववाहिका] अश्व-क्रीडा (धर्मवि ४)।

आसाअ सक [आ + सादय्] स्पर्श करना, छूना। आसाएज्जा। वकृ. आसायमाण (आचा २ ३, २, ३)।

आसस अक [आ + श्वस्] आश्वासन लेना, विश्राम लेना। आससइ, आससमु (पि ८८, ४६६)।

आससण न [आशसन] विनाश, हिंसा (पण्ह १, ३)।

आससा स्त्री [आशंसा] अभिलाषा, 'जेमि तु परिमाए, त दुट्ठं आससा हाइ' (विसे २५१६)।

आससिय वि [आश्वस्त] आश्वासन-प्राप्त (स ३७८)।

आसा स्त्री [आशा] १ आशा, उम्मीद (औप, से १, २६, सुर ३, १७७)। २ दिशा (उप ६४८ टी)। ३ उत्तर रुचक पर बसनेवाली एक दिक्कुमारी, देवी-विशेष (ठा ८)।

आसाअ सक [आ + स्वाद्] स्वाद लेना, चखना, खाना। आसायति (भग)। वकृ. आसाअअत, आसाएंत, आसायमाण (नाट, से ३, ४२, णाया १, १)।

आसाअ सक [आ + सादय्] प्राप्त करना। वकृ आसाएत (से ३, ४५)।

आसाअ सक [आ + शातय्] अवज्ञा करना, अपमान करना। आसाएज्जा (महानि ५)। वकृ आसायंत, आसाएमाण (श्रा ६, ठा ४)।

आसाअ पुं [आस्वाद] १ स्वाद, रस (गा ५६३, से ६, ६८, उप ७६८ टी)। २ तृप्ति (से १, २६)।

आसाअ पु [आऽस्वाद] स्वाद का बिलकुल अभाव (तंदु ४५)।

आसाअ देखो आसय = आश्रय (तदु ४५)।

आसाअ पु [आसाद] प्राप्ति (से ६, ६८)।

आसाइअ वि [आशातित] १ अवज्ञात, तिरस्कृत (पुप्फ ४५४)। २ न अवज्ञा, तिरस्कार (विवे ६२)।

आसाइअ वि [आस्वादित] चखा हुआ, थोडा खाया हुआ (से ५, ४६)।

आसाइअ वि [आसादित] प्राप्त, लब्ध (हेका ३०, भवि)।

आसाढ पु [आषाढ] १ आषाढ मास (सम ३९)। २ एक निह्नव, जो अव्यक्तिक मत का उत्पादक था (ठा ७)। °भूइ पु [°भूति] एक प्रसिद्ध जैन मुनि (कुम्मा २६)।

आसाढा स्त्री [आषाढा] नक्षत्र-विशेष (ठा २)।

आसाढी स्त्री [आषाढी] आषाढ मास की पूर्णिमा (सुज्ज)।

आसाढी स्त्री [आषाढी] १ आषाढ मास की पूर्णिमा। २ आषाढ मास की अमावस (सुज्ज १०, ६)।

आसाद्देत्तु वि [आस्वादयितृ] आस्वादन करनेवाला (ठा ७)।

आसामर पु [आशामर] सातवें वासुदेव और बलदेव के पूर्वभवीय धर्मगुरु का नाम (पउम १५३)।

ईसर पु [ईश्वर] अणिमा आदि आठ प्रकार के ऐश्वर्य से सम्पन्न (अणु २२)।

ईसरिय न [ऐश्वर्य] वैभव, प्रभुता, ईश्वरपन (पउम ८६, ६३)।

ईसा स्त्री [ईषा] १ लोकपालो की अग्रमहिषियो की एक पार्षदा (ठा ३, २)। २ पिशाचेन्द्र की एक परिषद् (जीव ३)। ३ हल का एक काष्ठ (दे २, ६६)।

ईसा स्त्री [ईर्षा] ईर्ष्या, द्रोह (गउड)। °**रोस** पुं [°रोष] क्रोध, गुस्सा (कप्पू)।

ईसाइय वि [इर्ष्योयित] जिसको ईर्ष्या हुई हो वह (सुपा ६१)।

ईसाण पु [ईशान] १ देवलोक-विशेष, दूसरा देवलोक (सम २)। २ दूसरे देवलोक का इन्द्र (ठा २, ३)। ३ उत्तर और पूर्व के बीच की दिशा, ईशान-कोण (सुपा ६८)। ४ मुहूर्त-विशेष (सम ५१)। ५ दूसरे देवलोक के निवासी देव (ठा १०)। ६ प्रभु, स्वामी (विसे)। °**वडिसग** न [°वतसक] विमान-विशेष का नाम (सम २५)।

ईसाण पुं [ईशान] अहोरात्र का ग्यारहवाँ मुहूर्त (सुज १०, १३)।

ईसाणा स्त्री [ऐशानी] ईशान कोण (ठा १०)।

ईसाणी स्त्री [ऐशानी] १ ईशान-कोण। २ विद्या-विशेष (पउम ७, १४१)।

ईसालु वि [ईर्ष्यालु] ईर्ष्यालु, असहिष्णु, द्वेषी (महा, गा ६३४, प्राप्र)। स्त्री. °**णी** (पउम ३६, ४५)।

ईसास देखो **इस्सास**, 'ईसासट्ठाण' (निर, पि १६२)।

ईसि अ [ईषत्] १ थोडा, अल्प (पण्ण ३६)। २ पृथिवी-विशेष, सिद्धि-क्षेत्र, मुक्ति-भूमि (सम २२)। °**पब्भार** वि [°प्राग्भार] थोडा अवनत (पचा १८)। °**पब्भारा** स्त्री [°प्राग्भारा] पृथिवी-विशेष, सिद्धि क्षेत्र (ठा ८, सम २२)।

ईसिअ न [ईर्ष्यित] १ ईर्ष्या, द्वेष (गा ५१०)। २ वि. जिसपर ईर्ष्या की गई हो वह (दे २, १६)।

ईसिअ न [दे] १ भील के सिर पर का पत्र-पुट, भीलो की एक तरह की पगडी। २ वि. वशीकृत, वश किया हुआ (दे १, ८४)।

ईसिं } देखो **ईसि** (महा, गुर २, ६६, कस;
ईसीं } पि १०२)।

ईह सक [ईक्ष्, ईह्] १ देखना। २ विचारना। ३ चेष्टा करना। **ईहए** (विसे ५६१)। वकृ **ईहंत, ईहमाण** (गउड, सुपा ८८, विसे २५८), संकृ. 'अनिमाणो ईहिऊण मइपुव्वं' (पव ८६; विसे २५७)।

ईहण न [ईहन] नीचे देखो (आचू १)।

ईहा स्त्री [ईहा] १ विचार, ऊहापोह, विमर्श (णाया १, १, सुपा ५७२)। २ चेष्टा, प्रयत्न (ओघ ३)। ३ मति-ज्ञान का एक भेद (पण्ण १५, ठा ४)। ४ इच्छा (स ६१२)। °**मिग**, °**मिय** पुं [°मृग] १ वृक, भेडिया (णाया १, १; भग ११, ११)। २ नाटक का एक भेद (राय)।

ईहा स्त्री [ईक्षा] अवलोकन, विलोकन (ओप)।

ईहिय वि [ईहित] चेष्टित (सूअ १, १, ३)। २ विमर्शित, विचारित, ईहा-विषयीकृत (विसे २५७)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे ईआराइसद्दसंकलणो णाम चउत्थो तरगो समत्तो॥

उ

उ पु [उ] प्राकृत वर्णमाला का पञ्चम अक्षर, स्वर-विशेष (प्रामा)। २ उपयोग रखना, ख्याल करना, 'उत्ति उवओगकरणे' (विसे ३१९८)। ३ गति-क्रिया (आवम)।

उ अ [उ] निम्नोक्त अर्थों का सूचक अव्यय—१ संबोधन, आमन्त्रण। २ कोप-वचन, क्रोधोक्ति। ३ अनुकम्पा, दया। ४ नियोग, हुकुम। ५ विस्मय, आश्चर्य। ६ अंगीकार, स्वीकार। ७ प्रश्न, पृच्छा (हे २, २१७)।

उ अ [तु] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ विशेषण। २ कारण (वव १)।

उ अ [तु] इन अर्थों का द्योतक अव्यय—१ समुच्चय, और (कप्प)। २ अवधारण, निश्चय (आवम)। ३ किन्तु, परन्तु (ठा ३, १)। ४ नियोग, आज्ञा। ५ प्रशंसा। ६ विनिग्रह। ७ शंका की निवृत्ति (उव)। ६ पादपूर्ति के लिए भी इसका प्रयोग होता है (उव)।

उ देखो **उव**, 'उओ उपे' (पड् २, १, ६८)।

उ° अ [उत्] निम्नोक्त अर्थों का सूचक अव्यय—१ ऊँचा, ऊर्ध्व; 'उक्कमंत' (आवम)। २ विपरीत, उलटा; 'उक्कम' (विसे)। ३ अभाव, रहितता; 'उक्कर' (णाया १, १)। ४ ज्यादा, विशेष; 'उक्कोविय' (उप पृ ७८, विसे ३५७६)।

उअ अ [दे] विलोकन करो, देखो (दे १, ८६ टी; हे २, २११)।

उअ अ [उत] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ विकल्प, अथवा। २ वितर्क, विमर्श (कुमा)। ३ प्रश्न, पृच्छा। ४ समुच्चय। ५ बहुत, अतिशय (हे १, १७२)।

उअ अ [दे] ऋजु, सरल (पड्)।

उअ देखो **उव** (गा ५०, से ६, ६)।

उअ न [उद] पानी, जल। °**सिंधु** पुं [°सिन्धु] समुद्र, सागर (पि ३४०)।

'आसुरीयं दिसं बाला गच्छंति अवसातम' (उत्त ७, १०)।

आसुरुत्त वि [आशुरुप्त] १ शीघ्र क्रुद्ध । २ अति कुपित (णाया १, १)।

आसुरुत्त वि [आसुरोक्त] अति कुपित (णाया १, १)।

आसुरुत्त वि [आशुरुष्ट] अति-कुपित (विपा १, ६)।

आसूगि न [आशूनिन्] १ बलिष्ठ बनानेवाली खुराक । २ रसायन-क्रिया (सूत्र १, ६)।

आसूणी स्त्री [आशूनी] श्लाघा, प्रशंसा (सूत्र १ ६, १५)।

आसूणिय वि [आशूनिन] थोडा स्थूल किया हुआ (पण्ह १ ३)।

आसूय न [दे] औपयाचितक, मनौती (पिंड ४०५)।

आसेअणय वि [आसेचनक] जिसको देखने से मन को तृप्ति न होती हो वह (दे १,७२)।

आसेव सक [आ + सेव्] १ सेवना । २ पालना । ३ आचरना । आसेवए (आप ६७)।

आसेवण न [आसेवन] १ परिपालन, संरक्षण (सुपा ४३८)। २ आचरण (स २७१)। ३ मैथुन, रतिसंभोग (दसचू १, पव १७०)।

आसेवणया } स्त्री [आसेवना] १ परिपालन
आसेवणा } (सूत्र १, १४)। २ विपरीत आचरण (पव)। ३ अभ्यास (आचू)। ४ शिक्षा का एक भेद (धर्म ३)।

आसेवा स्त्री [आसेवा] ऊपर देखो (सुपा १०)।

आसेविय वि [आसेवित] १ परिपालित । २ अभ्यस्त (आचा)। ३ आचरित, अनुष्ठित (स ११८)।

आसोअ पु [अश्वयुक्] आश्विन मास (रयण ३६)।

आसोअ वि [आशोक] अशोक वृक्ष संबन्धी (गउड)।

आसोइया स्त्री [दे. आसोतिका] ओषधिविशेष, 'आसोइयाइमीस चोल घुसिणं कुसुमसमीस' (सुपा ३६७)।

आसोई स्त्री [आश्वयुजी] आश्विन पूर्णिमा (इक)।

आसोई } स्त्री [आश्वयुजी] १ आश्विन
आसोया } मास की पूर्णिमा । २ आश्विन मास की अमावस (सुज्ज १०, ७, ६)।

आसोकंता स्त्री [आशोकान्ता] मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७)।

आसोत्थ पु [अश्वत्थ] पीपल का पेड (पण्ण १, उप २३६)।

आह सक [ब्रूञ्] कहना । भूका—आहंसु, आहु (कप्प)।

आह सक [काङ्क्ष्] चाहना, इच्छा करना। आहइ (हे ४, १६२, षड्)। वकृ आहंत (कुमा)।

आहंडल देखो आखंडल (हम्मीर १५)।

आहंतु देखो आहण ।

आहच्च अ [दे] १ अन्यथा । २ निष्कारण (वव १)। °भाव पु [°भाव] कादाचित्कता (पव १०७ टी)।

आहच्च न [दे] १ अत्यर्थ, बहुत, अतिशय (दे १, ६२)। २ अ शीघ्र, जल्दी (आचा)। ३ कदाचित्, कभी (भग ६, १०)। ४ उपस्थित होकर (आचा)। ५ व्यवस्था कर (सूत्र २, १)। ६ विभक्त कर (आचा)। ७ छीन कर (दसा)।

आहच्चा स्त्री [आहत्या] प्रहार, आघात (भग १५)।

आहट्ट न [दे] देखो आहट्टु = दे (पव ७३ टी)।

आहट्टु स्त्री [दे] प्रहेलिका, पहेलियाँ, बुझौवल, 'नेमु न विम्हयइ मय आहट्टुकुहेडएहिं वं' (पव ७३)।

आहट्टु देखो आहर = आ + हृ ।

आहड [आहृत] १ छीन लिया हुआ । २ चोरी किया हुआ (सुपा ६४३)। ३ सामने लाया हुआ, उपस्थापित (स १८८)।

आहड न [दे] सीत्कार, सुरत शब्द (षड्)।

आहण सक [आ + हन्] आघात करना, मारना । आहणामि (पि ४६६)। संकृ आहणिअ, आहणिऊण, आहणित्ता (पि ५६१, ५८५, ५८२)। हेकृ आहंतुं (पि ५७६)।

आहण सक [आ + हन्] उठाना । संकृ आहु [? हृ] णिय (राय १८, २१)।

आहणण न [आहनन] आघात (उप ३६६)।

आहणाविय वि [आघातित] आहत कराया हुआ (स ५२७)।

आहत्तहीय न [याथातथ्य] १ यथावस्थितपन, वास्तविकता । २ तथ्य-मार्ग—सम्यग्ज्ञान आदि । ३ 'सूत्रकृताङ्ग' सूत्र का तेरहवाँ अध्ययन (सूत्र १, १३, नि ३३५)।

आहम्म सक [आ + हम्म्] आना, आगमन करना । आहम्मइ (हे ४, १६२)।

आहम्मिअ वि [अधार्मिक] अधर्म-संबन्धी (दस ८, ३१)।

आहम्मिअ वि [अधार्मिक] अधर्मी, पापी (सम ५१)।

आहय वि [आहत] आघात प्राप्त, प्रेरित (कप्प)।

आहय वि [आहृत] १ आकृष्ट, खींचा हुआ । २ छीना हुआ (उप २११ टी)।

आहर सक [आ + हृ] १ छीनना, खींच लेना । २ चोरी करना । ३ खाना, भोजन करना । आहरइ (पि १७३)। कवकृ आहरिज्जमाण (ठा ८)। संकृ आहट्टु (पि २८६)। हेकृ. आहरित्तए (तदु)।

आहर सक [आ + हृ] लाना । आहराहि (सूत्र १ ४, २, ४), आहरेमो (सूत्र २, २, ५५)।

आहरण पुन [आहरण] १ उदाहरण, दृष्टान्त (ओघ ५३६, उप २६३,६५१)। २ आह्वान, बुलाना (सुपा ३१७)। ३ ग्रहण, स्वीकार । ४ व्यवस्थापन (आचा)। ५ आनयन, लाना (सूत्र २, २)।

आहरण पुंन [आभरण] भूषण, अलंकार, 'देहे आहरणं वहू' (श्रा १२, कप्पू)।

आहरणा स्त्री [दे] खर्राट, नाक का खरखर शब्द (ओघ २)।

आहरिसिय वि [आधर्षित] तिरस्कृत, भर्त्सित, 'आहरिसिओ दूओ समंतेण नियन्तिओ' (आवम)।

आहल्ल (अप) अक [आ + चल्] हिलना, चलना, 'न ‥ दंतपंतो आहल्लइ, खलइ जीहा' (भवि)।

आहल्ला स्त्री [आहल्या] विद्याधर-राज की एक कन्या (पउम १३, ३५)।

आहव सक [आ + ह्वे] बुलाना । आह—

उईरण देखो उदीरण (ठा ४, पुप्फ १६५)।

उईरणया } देखो उदीरणा (विसे २५१५,
उईरणा } टी, कम्मप १५८, विसे २९६२)।

उईरिय देखो उदीरिय (पुप्फ २१६)।

उउ त्रि [ऋतु] १ ऋतु, दो मास का काल विशेष, वसन्त आदि छ प्रकार का काल (ओप, अन्त ७), 'उऊए', 'उऊइं' (कप्प)। २ स्त्री-कुसुम रजो-दर्शन, स्त्री-धर्म (ठा ५, २)। °बद्ध पुं [°बद्ध] शीत और उष्णकाल, वर्षा-काल के अतिरिक्त आठ मास का समय (ओघ २६, २९०, ३४८)। °मास पुं [°मास] १ श्रावण मास (वव १ टी)। २ तीस दिनवाला मास (सम)। °य वि [°ज] ऋतु में उत्पन्न, समय पर उत्पन्न होनेवाला (पण्ह २, ५, णाया १, १), 'उयग्रगुरुवर-पवरधूवणउउयमल्लाणुलेवणविहीसु। गवेसु रज्जमाणा रमति घाणिंदियवसट्टा' (णाया १, १७)।

°संधि पुंस्त्री [°संधि] ऋतु का सन्धि-काल, ऋतु का अन्त समय (आचा)। °संवच्छर पुं [°संवत्सर] वर्ष-विशेष (ठा ५)। देखो उइ = उउ।

उउंबर देखो उंबर = उदुम्बर (कुमा, हे १, २७०, षड्)।

उउवहिय न [ऋतुबद्ध] मास-कल्प, एक मास तक एक स्थान में साधु का निवासा-नुष्ठान (आचा २, २, ७)।

उऊखल } पुन [उदूखल] उलूखल, गूगल
उऊहल } (कुमा, षड्, हे १, १७१)

उएट्ट पु [दे] शिल्प विशेष (अणु १४९)।

उओग्गिअ वि [दे] सम्बद्ध, सयुक्त (षड्)।

उं अ [दे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ क्षेप, निन्दा। २ विस्मय। ३ खेद। ४ वितर्क। ५ सूचन (प्राकृ ७९)।

उंघ अक [नि + द्रा] नीद लेना। उंघइ। (हे ४, १२)।

उंचहिआ स्त्री [दे] चक्रधारा (दे १, १०९)।

उंछ पुन [उञ्छ] भिक्षा (सूअ १, २, ३ १४)।

उंछ पुं [उञ्छ] भिक्षा, माधुकरी (उप ६७७, ओघ ४२४)।

उंछअ पुं [दे] वस्त्र छापने का काम करने वाला शिल्पी, छापी, जो कपड़ा छापता है, छींट बनाता है वह (दे १, ९८, पाअ)।

उंज सक [सिच्] सीचना, छीटकना। उंजिवा (राज)। भवि—उजिस्सइ (सुपा १३६)।

उंज सक [युज्] प्रयोग करना, जोडना, 'अहमवि उंजेमि तह किंपि' (धम्म ८ टी)।

उंजायण न [उज्झायन] गोत्र-विशेष, जो वशिष्ठ-गोत्र की एक शाखा है (ठा ७)।

उंजिअ वि [सिक्त] सिक्त, छीड़का हुआ (सुपा १३९)।

उंड } वि [दे] १ गभीर, गहरा (दे १,
उंडग } ८५, सुपा १५, उप १४७ टी, ठा
उंडय } १०, श्रा १६)। २ पु पिण्ड, 'बालाई मंसउंडग मज्जाराई विराहेज्जा' (ओघ २४९ भा)। ३ चलते समय पॉव में पिण्ड रूप से लग जाय उतना गहरा कीचड़, कर्दम (ओघ ३३ भा)। ४ शरीर का एक भाग, मास पिंड; 'हियय उंडए' (विपा १, ५)।

उंडग } न [दे] स्थंडिल, स्थान, जगह (दस
उंडुअ } ४, १, ५, १, ८७)।

उंडल न [दे] १ मञ्च, मचान, उच्चासन। २ निकर, समूह (दे १, १२९)।

उंडिया स्त्री [दे] मुद्रा-विशेष (राज)।

उंडी स्त्री [दे] पिण्ड, गोलाकार वस्तु, 'तत्थ ण एगा वरमऊरी दो पुट्ठे परियागते पिट्ठुंडीपंडुरे निव्वणे निरुवहए भिन्नमुट्ठिप्पमाणे मऊरीअंडए पसवति' (णाया १, ३)।

उंदर } पुंस्त्री [उन्दुर] मूषक, चूहा (गउड,
उंदुर } पण्ह १, १, उवा, दे १, १०२)।

उंदु न [दे] मुख, मुँह (अणु २९)। °रुक्क न [दे] मुँह से वृषभ आदि की तरह आवाज करना (अणु २९)।

उंदुरअ पुं [दे] लम्बा दिवस (दे १, १०५)।

उंदुरु पुंस्त्री [उन्दुरु] मूषक, चूहा (दस २, ७)।

उंब पुं [उम्ब] वृक्ष-विशेष, 'निबंबउंबउंबर' (उप १०३१ टी)।

उंबर पुं [उदुम्बर] १ वृक्ष-विशेष, गूलर का पेड़ (पण्ण १)। २ न. गूलर का फल (प्राप्र)। ३ देहली, द्वार के नीचे की लकड़ी (दे १, ९०)। °दत्त पुं [°दत्त] १ यक्ष-विशेष (विपा १, ७)। २ एक सार्थवाह का पुत्र (विपा १, ७)। °पंचग, °पणग न [°पञ्चक] वड, पीपल, गूलर, प्लक्ष और काकोदुम्बरी इन पाच वृक्षों के फल (सुपा ४६, भग ६, ३३)। °पुप्फ न [°पुष्प] गूलर का फूल (भग ६, ३३)।

उंबर वि [दे] बहुत, प्रचुर (दे १, ९०)।

उंबरउप्फ न [दे] नवीन अभ्युदय, अपूर्व उन्नति (दे १, ११९)।

उंबरय पुं [दे] कुष्ठ रोग का एक भेद (सिरि ११५)।

उंबा स्त्री [दे] बन्धन (दे १, ८६)।

उंबी स्त्री [दे] पका हुआ गेहूँ (दे १, ८६; सुपा ४७३)।

उंबेभरिया स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष (पण्ण १)।

उंभ सक [दे] पूर्त्ति करना, पूरा करना (राज)।

उकिट्ठ देखो उक्किट्ठ (पिंग)।

उकुरुडिया [दे] देखो उक्कुरुडिया (निर १, १)।

उक्क वि [उत्क] १ उन्मुक, उत्कण्ठित (सुर ३, ५३)। एक विद्याधर राजा का नाम (पउम १०, २०)।

उक्क वि [उक्त] कथित (पिंग)।

उक्क न [दे] पाद-पतन, पाव पर गिर कर नमस्कार करना (दे १, ८५)।

उक्कअ वि [दे] प्रसृत, फैला हुआ (षड्)।

उक्कंचण } न [दे] १ झूठी प्रशंसा करना,
उक्कंचणया } खुशामद (णाया १, २)। २ ऊँचा करना, उठाना (सूअ २, २)। ३ भाड़ निकालना (निचू ५)। ४ घूस, रिशवत (दसा २)। ५ मूर्ख पुरुष को ठगनेवाले धूर्त का, समीपस्थ विचक्षण पुरुष के भय से थोड़ी देर के लिए निश्चेष्ट रहना (औप)। °दीव पुं [°दीप] ऊँचा दंडवाला प्रदीप (अन्त)।

उक्कंठण न [दे] देखो उक्कंचण (राज)।

उक्कंठ अक [उत् + कण्ठ्] उत्कण्ठा करना, उत्सुक होना। उक्कंठेहि (मै ७३)। वकृ. उक्कंठत (मै ६३)। हेकृ उक्कठिठुं (शौ) (अभि १४७)।

उक्कठा स्त्री [उत्कण्ठा] उत्सुकता, औत्सुक्य (हे १, २५, ३०)।

निर्मित (पाग्र)। °ग्गि पु [°ग्नि] ग्रग्नि-होत्रीय ब्राह्मण (पउम ३५, ५)।

आहिय वि [आहित] १ व्याप्त, 'ग्रचिरेणा-हिग्रो एम जलोयरवाहिणा' (कुप्र ४३)। २ जनित, उत्पादित। ३ प्रथित, प्रसिद्धि-प्राप्त (सूग्र १, २, २, २६)। ४ मर्वथा हितकारी (सूग्र १ २, २, २७)।

आहिय वि [आख्यात] कहा हुग्रा, प्रति-पादित, उक्त (पण्ण ३३, सुत्र १६)।

आहियार पुं [अधिकार] ग्रविकार, सत्ता, हक (पउम ५५, ८)।

आहिवत्त देखो आहिपत्त (काल)।

आहिसारिअ वि [अभिसारित] नायक-बुद्धि मे गृहीत, पति बुद्धि से स्वीकृत (से १३,१७)।

आहीर पु [आहीर] १ देश-विशेष (कप्प)। २ शूद्र जाति विशेष, ग्रहीर (सूग्र १, १)। ३ इस नाम का एक राजा (पउम ६८, ६४)। स्त्री °री—ग्रहीरिन (सुपा ३६०)।

आहु सक [आ + ह्वे] बुलाना। कृ. आहु-णिज्ज (ग्रौप)।

आहु [आ + हु] दान करना, त्याग करना। कृ आहुणिज्ज (णाया १, १)।

आहु ग्र [आहु] ग्रयवा, या (नाट)।

आहु पुं [दे] घूक, उल्लू (दे १, ६१)।

आहु देखो आह = ग्रू ।

आहुइ वि [आहोतृ] दाता, त्यागी (णाया १, १)।

आहुइ स्त्री [आहुति] १ हवन, होम (गउड)। २ होम का पदार्थ, वलि (स १७)।

आहुंदुर, आहुंदुरु पुं [दे] वालक, वच्चा (दे १, ६६)।

आहुड न [दे] १ सीत्कार, सुरत समय का शब्द। २ पणित, विक्रय, वेचना (दे १,७४)।

आहुड ग्रक [दे] गिरना। ग्राहुडइ (दे १, ६६)।

आहुडिअ वि [दे] निपतित, गिरा हुग्रा (दे १, ६६)।

आहुण मक [आ + धु] कँपाना, हिलाना। कवकृ. आहुणिज्जमाण (णाया १, ६)।

आहुणिय वि [आधुनिक] १ ग्राजकल का, नवीन। २ पु ग्रह-विशेष (ठा २, ३)।

आहुत्त न [दे. अभिमुख] सम्मुख, सामने, 'कुमरोवि पहाविग्रो तयाहुत्त' (महा, भवि)।

आहूअ वि [आहूत] बुलाया हुग्रा (पाग्र)।

आहूअ पुं [आहूक] पिशाच-विशेष (इक)।

आहूअ वि [आभूत] उत्पन्न, जात, 'ग्राहूग्रो से गब्भो' (वसु)।

आहेउं देखो आहा = ग्रा + धा।

आहेड, आहेडग, आहेडय पुन [आखेट, °क] शिकार, मृगया (सुपा १६७, स ६७; दे)।

आहेडिय वि [आखेटिक] मृगया-सम्वन्धी, 'ग्राहेडियभसणेण' (सम्मत्त २२६)।

आहेण न [दे] विवाह के बाद वर के घर वधू के प्रवेश होने पर जो जिमाने का उत्सव किया जाता है वह (ग्राचा २, १, ४)।

आहेय वि [आधेय] १ स्थाप्य। २ ग्राश्रित (विसे ६२४)।

आहेर देखो आहीर (विसे १५५४)।

आहेवच्च न [आधिपत्य] नेतृत्व, मुखियापन (सम ८६)।

आहेवण न [आक्षेपण] १ ग्राक्षेप। २ क्षोभ उत्पन्न करना (पण्ह १, २)।

आहोअ देखो आभोग (से १, ४६, ६, ३१ गा ८८, गउड)।

आहोअ देखो आभोय = ग्रा + भोजय्। सकृ. आहोइऊण (स ५५)।

आहोइअ वि [आभोगित] ज्ञात, दृष्ट (स ४८५)।

आहोइअ वि [आभोगिक] उपयोग ही जिसका प्रयोजन हो वह, उपयोग-प्रधान (कप्प)।

आहोड मक [ताडय्] ताडन करना, पिटना आहोडइ (हे ४, २७)।

आहोरण [आधोरण] हस्तिपक, महावत (पाग्र, स ३६६)।

आहोहि, आहोहिय वि [आधोवधिक] ग्रवधि-ज्ञानी का एक भेद, नियत क्षेत्र को ग्रवधिज्ञान से देखनेवाला (भग, सम ६६)।

इग्र पाइअसद्दमहण्णवे आयाराइसद्दसंकलणो विइग्रो तरंगो समत्तो।



इ

इ पुं [इ] १ प्राकृत वर्णमाला का तृतीय स्वर-वर्ण (प्रामा)। २–३ वाक्यालङ्कार ग्रौर पाद-पूर्ति में प्रयुक्त किया जाता ग्रव्यय (कप्प, हे २, २१७, षड्)।

इ देखो इइ (उवा)।

इ सक [इ] १ जाना, गमन करना। २ जानना। एइ एति (कुमा)। वकृ. एंत (कुमा)। सकृ इच्चा (ग्राचा)। हेकृ. इत्तए, एत्तए (कप्प; कस)।

इअहरा देखो इयरहा (प्राकृ ३७)।

इइ ग्र [इति] इन ग्रर्थो का सूचक ग्रव्यय— १ समाप्ति (ग्राचा)। २ ग्रवधि, हद (विसे)। ३ मान, परिमाण (पव ८४)। ४ निश्चय (निचू २,१५)। ५ हेतु, कारण (ठा ३)। ६ एवम्, इस तरह, इस प्रकार (उन २२)। देखो इति।

उक्करिसण न [उत्कर्षण] १ उत्कर्ष, बढाई, महत्व। २ स्थापन, आधान,
'उम्मिल्लइ लायण्णं
पययच्छायाए सक्कय वयाण।
सक्कयसक्कारुक्करिसणेण
पययस्सवि पहावो ॥' (गउड)।

उक्करिसिय वि [उत्कृष्ट] खीच निकाला हुआ, उन्मूलित (से १४, ३)।

उक्कल देखो उक्कड (ठा ५, ३)।

उक्कल अक [उत् + कल्] उत्कट रूप से वरतना। उक्कलइ (सुख २, ३७)।

उक्कल वि [उत्कल] १ धर्म-रहित। २ न चोरी (पण्ह १, ३, टी)। २ पु देश-विशेष, जिसको आजकल 'उडिया' या 'उडीसा' कहते हैं (प्रवो ७८)।

उक्कलंब सक [उत् + लम्बय्] फांसी लटकाना। उक्कलंबेमि (स ६३)।

उक्कलंबण न [उल्लम्बन] फांसी लटकाना। (स ३५८)।

उक्कला देखो उक्कलिया (उत्त ३६, १३८)।

उक्कलिय वि [दे] उबला हुआ, गुजराती में 'उकलेलु','उसिणोदग तिदंडुक्कलिय' (विचार २६७)।

उक्कलिया स्त्री [उत्कलिका] १ लूता, मकडी एक प्रकार का कीटा जो जाल बनाता है, 'उक्कलियंडे' (कप्प)। २ नीचे की तरफ बहनेवाला वायु (जी ७)। ३ छोटा समुदाय, समूह-विशेष (ठा ३, १)। ४ लहरी, तरंग (राज)। ५ ठहर-ठहर कर तरंग की तरह चलनेवाला वायु (आचा)।

उक्कस सक [गम्] जाना, गमन करना। उक्कसइ (हे ४, १६२, कुमा)। प्रयो उक्कसावेइ। वकृ उक्कसावत (निचू १०)।

उक्कस देखो ओकस। वकृ. उक्कसमाण (कस)। हेकृ उक्कसित्तए (आचा २, ३, १, १५)।

उक्कस देखो उक्कुस (कुमा)।

उक्कस देखो उक्कस्स = उत्कर्ष (सूअ १, १, ४, १२), 'तवस्सी अइउक्कसो' (दस ५, २, ४२)।

उक्कसण न [उत्कर्षण] १ अभिमान करना (सूअ १, १३)। २ ऊँचा जाना। ३ निवर्तन, निवृत्ति। ४ प्रेरणा (राज)।

उक्कसाइ वि [उत्कशायिन्] सत्कारादि के लिए उत्कण्ठित (उत्त ३)।

उक्कसाइ वि [उत्कषायिन्] प्रबल कषाय-वाला (उत्त १५)।

उक्कस्स अक [अप+कृष्] १ ह्रास प्राप्त होना, हीन होना। २ फिसलना, गिरना, पैर रपटने से गिर जाना। वकृ. उक्कस्समाण (ठा ५)।

उक्कस्स पु [उत्कर्ष] १ गर्व, अभिमान (सूअ १, १, ४, २)। २ अतिशय, उत्कृष्टता (भवि)।

उक्कस्स वि [उत्कर्षवत्] १ उत्कृष्ट, ज्यादा से ज्यादा, 'उक्कस्सठिईयाण' (ठा १, १,), 'उक्कस्सा उदीरणया' (कम्मप १६६)। २ अभिमानी, गर्विष्ठ (सूअ १, १)।

उक्का स्त्री [उल्का] १ लूका, आकाश से जो एक प्रकार का अंगार सा गिरता है (ओघ ३१० भा, जी ६)। २ छिन्न-मूल दिग्दाह (आचू)। ३ अग्नि-पिण्ड (ठा ८)। ४ आकाश-वह्नि (दस ४)। °मुह पुं [°मुख] १ अन्तर्द्वीप-विशेष। २ उसके निवासी लोक (ठा ४, २)। °वाय पु [°पात] तारा का गिरना, लूका गिरना। (भग ३, ६)।

उक्का स्त्री [दे] कूप-तुला (दे १, ८७)।

उक्काम सक [उत् + क्रामय्] दूर करना, पीछे हटाना, 'उक्कामयंति जीवं धम्माओ तेण ते कामा' (दसनि २—पत्र ८७)।

उक्कारिया देखो उक्करिया (पण्ण ११, भास ७)।

उक्कालिय वि [उत्कालिक] वह शास्त्र, जिसका अमुक समय में ही पढने का विधान न हो (ठा २, १)।

उक्कास देखो उक्कस्स = उत्कर्ष (भग १२, ५)।

उक्कास वि [दे] उत्कृष्ट, ज्यादा से ज्यादा (षड्)।

उक्कासिअ वि [दे] उत्थित, उठा हुआ (दे १, ११४)।

उक्किट्ठ वि [उत्कृष्ट] १ ज्यादा (पव—गा १५)। २ पुं. इमली आदि के पत्तों का समूह (दस ५, १, ३४)। ३ लगातार दो दिन का उपवास (सबोध ५८)।

उक्किट्ठ वि [उत्कृष्ट] १ उत्कृष्ट, उत्तम (हे १, १२८, ८ २६)। २ फल का शस्त्र द्वारा किया हुआ टुकडा (दस ५, १, ३४)।

उक्किट्ठि स्त्री [उत्कृष्टि] हर्षध्वनि, आनन्द की आवाज (ओप, भग २, १)। देखो उक्कट्ठि।

उक्किण्ण वि [उत्कीर्ण] १ खोदित, खोदा हुआ (अभि १८२)। २ नष्ट (आचू २)।

उक्कित्त वि [उत्कृत्त] कटा हुआ (से ५, ५१)।

उक्कित्तण न [उत्कीर्तन] १ कथन (पउम ११८, ६३)। २ प्रशंसा, श्लाघा (चउ १)।

उक्कित्तिय वि [उत्कीर्तित] कथित, कहा हुआ (सुज्ज २० टी)।

उक्किन्न वि [उत्कीर्ण] १ चर्चित, उपलिप्त, 'चंदणोक्किन्नगायसरीरे' (तंदु २६)। २ खोदा हुआ (दसनि २, १७)।

उक्किर सक [उत् + कृ] खोदना, पत्थर आदि पर अक्षर वगैरह का शस्त्र से लिखना। उक्किरइ (पि ४७७)।

उक्किरणग न [उत्करणक] अक्षत आदि से बढाना, बधावा, वर्धापन, 'पुप्फारुहणगाइं उक्किरणगाइं। पूयं च चेइयाणं तेवि सरज्जेसु कारिंति' (धर्मवि ४६)।

उक्किरिय देखो उक्करिअ = उत्कीर्ण (श्रा १४, सुपा ५१८)।

उक्कीर देखो उक्किर। उक्कीरसि (अणु)। वकृ उक्कीरमाण (अणु)।

उक्कीरिअ देखो उक्करिअ = उत्कीर्ण (उप पृ ३१५)।

उक्कीलिय न [उत्क्रीडित] उत्तम क्रीडा (पउम ११५, ६)।

उक्कीलिय वि [उत्कीलित] कीलक से नियंत्रित, 'उक्कीलिउव्व परियमिउव्व सुत्तुव्व मुक्कजीउव्व' (सुपा ४७५)।

उक्कुंचण न [उत्कुञ्चन] ऊँचे चढाना (सूअ २, २, ६२)।

उक्कुड वि [दे] मत्त, उन्मत्त (दे १, ६१)।

उक्कुक्कुर अक [उत् + स्था] उठना, खडा होना। उक्कुक्कुरइ (हे ४, १७, षड्)।

द्वीप-विशेष। ४ न. विमान विशेष (इक)। °याल देखो °जाल (महा)। °रह पु [°रथ] विद्याधर वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ४४)। °राय पु [°राज] इन्द्र (तित्थ)। °लट्ठि स्त्री [°यष्टि] इन्द्र-ध्वज (णाया १, १)। °लेहा स्त्री [°लेखा] राजा त्रिकसंयत की पत्नी (पउम ५, ५१)। °वज्जा स्त्री [°वज्रा] छन्द-विशेष का नाम, जिसके एक पाद में ग्यारह अक्षर होते हैं (पिंग)। °वसु स्त्री [°वसु] ब्रह्मराज की एक पत्नी (राज)। °वाय पु [°वात] एक माण्डलिक राजा (भवि)। °वारण पुं [°वारण] इन्द्र का हाथी, ऐरावत (कुमा)। °सम्म पु [°शर्मन्] स्वनाम-ख्यात एक ब्राह्मण (आवम)। °साम-णिअ पुं [°सामानिक] इन्द्र के समान ऋद्धि-वाला देव (महा)। °सिरी स्त्री [°श्री] राजा ब्रह्मदत्त की एक पत्नी (राज)। °सुअ पुं [°सुत] इन्द्र का लड़का, जयन्त (दे ६,१९)। °सेणा स्त्री [°सेना] १ इन्द्र का सैन्य। २ एक महानदी (ठा ५, ३)। °हणु देखो °धणु (हे १, १८७)। °उह न [°युध] इन्द्रधनु (णाया १,१)। °उहप्पभ पु [°युधप्रभ] वानरद्वीप का एक राजा (पउम ६, ६६)। °मअ पु [°मय] राजा इन्द्रायुधप्रभ का पुत्र, वानरद्वीप का एक राजा (पउम ६,६७)।

इंद पुन [इन्द्र] एक देवविमान (देवेन्द्र १४१)।

इंद वि [ऐन्द्र] १ इन्द्र-संबन्धी (णाया १, १)। २ न. संस्कृत का एक प्राचीन व्याकरण (आवम)।

इंदगाइ पुं [दे] साथ में संलग्न रहनेवाले कीट-विशेष (दे १, ८१)।

इंदग्गि पु [दे] वर्फ, हिम (दे १, ८०)।

इंदग्गिधूम न [दे] वर्फ, हिम (दे १, ८०)।

इंदड्ढलअ पु [दे] इन्द्र का उत्थापन (दे १, ८२)।

इंदमह वि [दे] १ कुमारी मे उत्पन्न। २ न. कुमारता, यौवन (दे १, ८१)।

इंदमहकामुअ पुं [दे. इन्द्रमहकामुक] कुत्ता, श्वान (दे १, ८२, पाअ)।

इंदा स्त्री [इन्द्रा] १ एक महानदी (ठा ५, ३)। २ धरणेन्द्र की एक अग्र-महिषी (णाया २)।

इंदा स्त्री [ऐन्द्री] पूर्व-दिशा (ठा १०)।

इंदाणी स्त्री [इन्द्राणी] १ इन्द्र की पत्नी (सुर १, १७०)। २ एक राज-पत्नी (पउम ६, २१९)।

इंदासणि पु [इन्द्राशनि] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २६)।

इंदिंदिर पु [इन्दिन्दिर] भ्रमर, भमरा, भौंरा (पाअ, दे १, ७९)।

इंदिय पुन [इन्द्रिय] १ आत्मा का चिह्न, ज्ञान के साधन-भूत इन्द्रिय—श्रोत्र, चक्षु, घ्राण, जिह्वा, त्वक् और मन, 'त तारिसं नो पयलेंति इंदिया' (दसचू १, १९, ठा ६)। २ अंग, शरीर के अवयव, 'नो निग्गथे इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता निज्झाइत्ता भवइ' (उत्त १६)। °अवाय पुं [°पाय] इन्द्रियो द्वारा होनेवाला वस्तु का निश्चयात्मक ज्ञान-विशेष (पण्ण १५)। °ओगाहणा स्त्री [°विग्रहणा] इन्द्रियो द्वारा उत्पन्न होनेवाला ज्ञान-विशेष (पण्ण १५)। °जय पुं [°जय] १ इन्द्रियो का निग्रह, इन्द्रियो को वश मे रखना, 'अजि-इंदिएहिं चरणं, कट्ठं व घुणेहि कीरइ असारं। तो धम्मत्थीहिं दढं, जइअव्वं इंदियजयम्मि' (इंदि ४)। २ तपो-विशेष (पव २७०)। °ट्ठाण न [°स्थान] इन्द्रियो का उपादान कारण, जैसे श्रोत्रेन्द्रिय का आकाश, चक्षु का तेज वगैरह (सूअ १, १)। °णिव्वत्तणा स्त्री [°निर्वर्त्तना] इन्द्रियो के आकार की निष्पत्ति (पण्ण १५)। °णाण न [°ज्ञान] इन्द्रिय-द्वारा उत्पन्न ज्ञान, प्रत्यक्ष ज्ञान (वव १०)। °त्थ पु [°र्थ] इन्द्रिय से जानने योग्य वस्तु, रूप-रस-गन्ध वगैरह (ठा ६)। °पज्जत्ति स्त्री [°पर्याप्ति] शक्ति-विशेष, जिसके द्वारा जीव धातुओ के रूप मे बदले हुये आहार को इन्द्रियो के रूप मे परिणत करता है (पण्ण १)। °विजय पु [°विजय] देखो °जय (पचा १८)। °विसय पु [°विषय] देखो °त्थ (उत्त ५)।

इंदिय न [इन्द्रिय] लिंग, पुरुष-चिह्न (धमंस ९८१)।

इंदियाल देखो इंद-जाल (सुपा ११७, महा)।

इंदियाल } देखो इंद-जालि, 'तुह कोउयत्थ-
इंदियालि } मित्थं विहिय मे खयरइंदियालेण' (सुपा २४२), 'जह एस इंदियाली, दंसइ खणनस्सराइ रूवाइं' (सुपा २४३)।

इंदियालीअ देखो इंद-जालिअ, 'न भवामि अहं खयरो नरपुगव। इंदियालीओ' (सुपा २४३)।

इंदिर पु [इन्दिर] भ्रमर, भमरा, भौंरा, 'झंकारमुहरिंदिराइं' (विक्र २९)।

इंदिरा स्त्री [इन्दिरा] लक्ष्मी (सम्मत्त २२६)।

इंदीवर न [इन्दीवर] कमल, पद्म (पउम १०, ३९)।

इंदु पुं [इन्दु] चन्द्र, चन्द्रमा (पाअ)।

इंदुत्तरवडिंसग न [इन्द्रोत्तरावतंसक] देव-विमान-विशेष (सम ३७)।

इंदुर पुंस्त्री [उन्दुर] चूहा, मूषक (नाट)।

इंदोकन न [इन्दुकान्त] विमान-विशेष (सम ३७)।

इंदोव देखो इंद-गोव (पाअ, दे १, ७६)।

इंदोवत्त पु [दे] इन्द्रगोप, कीट-विशेष (दे १, ८१)।

इंद्र देखो इंद = इन्द्र (पि २६८)।

इंध न [चिह्न] निशानी, चिह्न (हे १, १७७, २, ५०, कुमा)।

इंधण न [इन्धन] १ ईंधन, जलावन, लकडी वगैरह दाह्य-वस्तु (कुमा)। २ अस्त्र-विशेष (पउम ७१, ६४)। ३ उद्दीपन, उत्तेजन (उत्त १४)। ४ पलाल, पुआल, तृण वगैरह, जिससे फल पकाये जाते हैं (निचू १५)। °साला स्त्री [°शाला] वह घर, जिसमे जलावन रक्खे जाते हैं (निचू १६)।

इंधिय वि [इन्धित] उद्दीपित, प्रज्वलित (बृह ४)।

इक्क न [दे] प्रवेश, पैठ, 'इक्कमप्पए पवेसण' (विसे ३४८३)।

इक्क देखो एक्क (कुमा, सुपा ३७७, द ४०, पाअ, प्रासू १०, कस, सुर १०, २१२, श्रा १०, द २१, रयण २, श्रा ६, पउम ११, ३२)।

इक्कड पुं [इक्कड] तृण-विशेष (पण्ह २, ३, पण्ण १)।

इक्कड वि [ऐक्कड] इक्कड तृण का बना हुआ (आचा २, २, ३, १४)।

इक्कण वि [दे] चोर, चुरानेवाला (दे १,८०), 'वाहुलयामूलेसु रइयाओ जणमणेक्कणाओ उ। वाहुसरियाउ तीसे' (स ७६)।

उक्खंद पुं [अवस्कन्द] १ घेरा डालना। २ छल से शत्रु-सैन्य को मारना (पण्ह १, २)।

उक्खभ पु [उत्तम्भ] अवलम्ब, सहारा (सथा)।

उक्खभिय देखो उत्थंभिय (भवि)।

उक्खभिय न [औत्तम्भिक] अवलम्ब, सहारा (राज)।

उक्खडमड्डा अ [दे] पुन पुन, बारंबार, 'उक्खडमड्डुत्ति वा भुज्जो भुज्जोत्ति वा पुणो पुणोत्ति वा एगट्ठा' (वव १)।

उक्खण सक [उत् + खन्] उखाड़ना, उच्छेदन करना, काटना। उक्खणाइ (पण्ह १, १)। सक्त उक्खणिऊण (नीचू १)। कर्म. उक्खम्मति (पि ५४०)। कवक्त उक्खम्मत (से ७, २८)। क्त उक्खम्मिअव्व (से १०, २६)।

उक्खण सक [दे] खाँडना, मुसल वगैरह से व्रीहि आदि का छिलका दूर करना (दे १, ११५)।

उक्खण वि [दे] अवकीर्ण, चूर्णित (षड्)।

उक्खणण न [उत्खनन] उन्मूलन, उत्पाटन (वण्ह १, १)।

उक्खणण न [दे] खाँडना, निस्तुषीकरण (दे १, ११५ टी।

उक्खणिअ न [दे] खण्डित, निस्तुषीकृत (दे १, ११५)।

उक्खत्त देखो उक्खय (पि ९०, १९३, ५६६)।

उक्खम्म° देखो उक्खण = उत् + खन्।

उक्खय वि [उत्खात] १ उखाड़ा हुआ, उन्मूलित (णाया १, ७, हे १, ६७, षड्, महा)। २ खुला हुआ, उद्घाटित,
'एत्यन्तरम्मि पत्तो, सुदाढविज्जाहरो तहिं भवणे।
उक्खयखग्गा दिट्ठा, जूयारा तेणवि दुवारे'
(सुपा ४००)।

उक्खल } देखो उऊखल (हे २, ९०, सूअ
उक्खलग } १, ४, २, १२)।

उक्खलिय वि [दे उत्खण्डित] उन्मूलित, उत्पाटित (से ६, २९)।

उक्खलिया } स्त्री [दे] थाली, पात्र-विशेष
उक्खली } (दे १, ८८), 'उक्खलिया थाली जा साधुणिमित्त सा आहाकम्मिया' (निचू १)।

उक्खा स्त्री [ऊखा] स्थाली, भाजन-विशेष (आचा २, १, १)।

उक्खाइद (शौ) वि [उत्खातित] उद्धृत (उतर ९७)।

उक्खाय देखो उक्खय (हे १, ६७, गा २७३)।

उक्खाल सक [उत् + खन्, खालय्] उखाड़ना, उन्मूलन करना। संक्त उक्खल-इत्ता (रभा)।

उक्खिण देखो उक्खण = उत् + खन्। उक्खिणामि (भवि)। सक्त. उक्खिणिवि (अप) (भवि)।

उक्खिण्ण वि [दे] १ अवकीर्ण, ध्वस्त, चूर्णित। २ आछन्न, गुप्त। ३ पार्श्व में शिथिल, एक तरफ से ढीला (दे १, १३०)।

उक्खित्त } वि [उत्क्षिप्त] १ फेंका हुआ।
उक्खित्तय } २ ऊँचा उडाया हुआ (पाअ)। ३ ऊँचा किया हुआ (णाया १, १)। ४ उन्मूलित, उत्पाटित (राज)। ५ बाहर निकाला हुआ (पण्ह २, १)। ६ उत्थित (पिंग)। ७ न गेय-विशेष (राय, ठा ४, ४)। °चरय वि [°चरक] पाक पात्र से बाहर निकाले हुए भोजन को ही ग्रहण करने का नियमवाला (साधु) (पण्ह २, १)।

उक्खिप्प देखो उक्खिव = उत् + क्षिप्।

उक्खिय वि [उक्षित] सिक्त, सींचा हुआ; 'चदणोक्खियगायसरीरे' (सूअ २, २, ५५, कप्पू)।

उक्खिल्ल सक [दे] उखाड़ना। प्रयो, हेक्त 'उक्खिल्लाविउ माढत्तो थूभो' (ती ७)।

उक्खिव सक [उप + क्षिप्] स्थापन करना, 'सुयस्स य भगवओ चेव नाम उक्खिविस्सामो' (स १९२)।

उक्खिव सक [उत् + क्षिप्] १ फेंकना। २ ऊँचा फेंकना। ३ उडाना। ४ बाहर करना। ५ काटना। ६ उठाना। उक्खिवेइ (सूक्त ५६)। वक्त. 'पाएवि उक्खिवती न लज्जति णट्टिया सुणेवत्था' (बृह ३)। सक्त. उक्खिविउ; उक्खिप्प (पि ५७५, आचा २, २, ३)। कवक्त. उक्खिप्पत, उक्खिप्पमाण (से ६, ३५, पण्ह १, ४), उच्छिप्पत (से २, १३)।

उक्खिवण न [उत्क्षेपण] १ फेंकना, दूर करना। २ वि. दूर करनेवाला (कुमा)।

उक्खिवणा स्त्री [उत्क्षेपणा] बाहर करना, दूर करना (बृह १)।

उक्खिविय देखो उक्खित्त (सुर २, १८०)।

उक्खुंड पु [दे] १ उल्मुक, अलात, मशाल। २ समूह। ३ वस्त्र का एक अंश, अञ्चल (दे १, १२९)।

उक्खुड सक [तुड्] तोडना, टुकडा करना। उक्खुडइ (हे ४, ११६)।

उक्खुडिअ वि [तुडित] १ खण्डित, छिन्न, भिन्न (कुमा, से ४, २१, सुपा २९२)। २ व्यय किया हुआ, खर्च किया हुआ;
'एत्तियकाला इण्हि, उक्खुडिय
सालिमाइय नाउं।
तुह जोग्ग तो सहसा,
पुणो पुणो कुट्टिय हियय'
(सुपा १५)।

उक्खुत्त वि [दे. उत्कृत्त] काटा हुआ, 'रएण दुरदंतुक्खुत्तविसंवलिय तिलच्छेतं' (गा ७९९)।

उक्खुब्भ अक [उत् + क्षुभ्] क्षुब्ध होना। उक्खुब्भइ (प्राक्त ७५)।

उक्खुरुहुंचिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ (दे १, ४)।

उक्खुलप सक [दे] खुजवाना। सक्त. उक्खुलंपिय (आचा २, १, ६, २)।

उक्खुहिअ वि [उत्क्षुब्ध] क्षुब्ध, क्षोभ-प्राप्त (से ७, १६)।

उक्खेव पुं [उत्क्षेप] १ उत्पाटन, उन्मूलन (औप)। २ ऊँचा करना (गउड)। ३ जो उठाया जाय वह, 'उक्खेवे निक्खेवे महल्लभाणम्मि' (पिंड ५७०)।

उक्खेव पुं [उपक्षेप] उपोद्घात, भूमिका (उवा, विपा १, २, ३, ४)।

उक्खेवग वि [उत्क्षेपक] १ ऊँचा फेंकनेवाला। २ पु एक जाति का पखा, व्यजनविशेष (पण्ह २, ५)।

उक्खेवण न [उत्क्षेपण] १ फेंकना (पउम ३७, ५०)। २ उन्मूलन, उत्पाटन (सूअ २, १)।

इट्टाल न [इट्टाल] ईंट का टुकड़ा (दस ५, १, ६५)।

इट्ठ वि [इष्ट] १ अभिलषित, अभिप्रेत, वाञ्छित (विपा १, १; सुपा ३७०)। २ पूजित, सत्कृत (औप)। ३ आगमोक्त, सिद्धान्त से अविरुद्ध (उप ८८२)।

इट्ठ न [इष्ट] १ स्वाभ्युपगत, स्व-सिद्धान्त (धर्मसं ५१९)। २ न. तपो-विशेष, निर्वि-कृति-तप (सम्बोध ५८)। ३ यागक्रिया (स ७१३)।

इट्ठि स्त्री [इष्टि] १ इच्छा, अभिलाषा, चाह (सुपा २४६)। २ याग-विशेष (अभि २२७)।

°इट्ठि स्त्री [कृष्टि] खींचाव, खींचना (गा १८)।

इडा स्त्री [इडा] शरीर के बाएँ भाग में स्थित नाडी (कुमा)।

इड्डर न [दे] गाडी (ओघ ४७६)।

इड्डरग } न [दे] रसोई ढकने का बड़ा पात्र
इड्डरय } (राय १४०)।

इड्डरिया स्त्री [दे] मिष्टान्न-विशेष, एक प्रकार की मिठाई (सुपा ४८५)।

इड्ढ वि [ऋद्ध] ऋद्धि-सम्पन्न (भग)।

इड्ढि स्त्री [ऋद्धि] १ वैभव, ऐश्वर्य, सम्पत्ति (सुर ३, १७)। २ लब्धि, शक्ति, सामर्थ्य (उत्त ३)। ३ पदवी (ठा ३,४)। °गारव न [°गौरव] सम्पत्ति या पदवी आदि प्राप्त होने पर अभिमान और प्राप्त न होनेपर उसकी लालसा (सम ३, ठा ३, ४)। °पत्त वि [°प्राप्त] ऋद्धिशाली (पण्ण ११, सुपा ३६०)। °म, °मत वि [°मत] ऋद्धिवाला (निचू १, ठा ६)।

इड्ढिरसिय वि [दे] याचक-विशेष, माँगन की एक जाति (भग ९, ३३ टी)।

इणं } अ [एतत्] यह (दे १, ७९)।
इणमो }

°इण्ण देखो दिण्ण (से ४, ३५)।

°इण्ण देखो किण्ण (से ८, ७१)।

इण्ह न [चिह्न] चिह्न, निशान (से १, १२, षड्)।

°इण्हा स्त्री [तृष्णा] तृष्णा, प्यास, स्पृहा (गा ६३)।

इण्हिं अ [इदानीम्] इस समय, इस वक्त (दे १, ७९, पाअ)।

इतरेतरासय पु [इतरेतराश्रय] तर्कशास्त्र-प्रसिद्ध एक दोष, परस्पर एक दूसरे की अपेक्षा (धर्मसं ११५८)।

इति देखो इइ (पि १८)। °हास पुं [°हास] पूर्ववृत्तान्त, अतीतकाल की घटनाओं का विव-रण, पुरावृत्त (कप्प)। २ पुराणशास्त्र (भग)।

इत्तए देखो इ सक।

इत्तर वि [इत्वर] १ अल्प, थोड़ा (अणु)। २ अल्प-कालिक, थोड़े समय के लिए जो किया जाता हो वह (ठा ६)। ३ थोड़े समय तक रहनेवाला (श्रा १६)। °परिग्गहा स्त्री [°परिग्रहा] थोड़े समय के लिए रक्खी हुई वेश्या, रखैल, रखात आदि (आव ६)। °परिग्गहिया स्त्री [°परिगृहीता] देखो °परिग्गहा (आव ६)।

इत्तरिय वि [इत्वरिक] ऊपर देखो (निचू २, आचा; उवा, पंचा १०)।

इत्तरिय देखो इयर (सूअ २, २)।

इत्तरी स्त्री [इत्वरी] थोड़े काल के लिए रखी हुई वेश्या आदि (पचा १)।

इत्तहे (अप) अ [अत्र] यहा पर (कुमा)।

इत्ताहे अ [इदानीम्] इस समय, इस वक्त, अधुना (पाअ)।

इत्ति देखो इइ (कुमा)।

इत्तिय वि [इयत्, एतावत्] इतना (हे २, १५६, कुमा, प्रासू १३८ षड्)।

इत्तिरिय वि [इत्वरिक] अल्पकालिक, जो थोड़े समय के लिए किया जाता हो (स ४६, विसे १२६५)।

इत्तिल देखो इत्तिय (हे २, १५६)।

इत्तो देखो इओ (श्रा १७)।

इत्तोअ देखो इओअ (श्रा १४)।

इत्तोप्प [दे] यहाँ से लेकर, इत प्रभृति (पाअ)।

इत्थ अ [अत्र] यहाँ, इसमे (कप्प, कुमा, प्रासू १४१)।

इत्थ अ [इत्थम्] इस तरह, इस प्रकार (पण्ण २)। °त्थ वि [°स्थ] नियत आकार-वाला, नियमित (जीव १)।

इत्थंथ वि [इत्थंस्थ] इस तरह रहा हुआ (दस ६, ४, ७)।

इत्थत्थ पु [इत्यर्थ] वह अर्थ (भग)।

इत्थत्थ पुं [स्त्र्यर्थ] स्त्री-विषय (पि १६२)।

इत्थयं देखो इत्थ (श्रा १२)।

इत्थि स्त्रीन [स्त्री] महिला, नारी, 'इत्थीणि वा पुरिसाणि वा' (आचा २, ११, ३)।

इत्थि } स्त्री [स्त्री] जनाना, औरत, महिला
इत्थी } (सूअ २, २, हे २, १३०)। °कला स्त्री [°कला] स्त्री के गुण, स्त्री को सीखने योग्य कला (ज २)। °कहा स्त्री [°कथा] स्त्री-विषयक वार्तालाप (ठा ४)। °णपुसग पुन [°नपुं-सक] एक प्रकार का नपुंसक (निचू १)। °णाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, जिसके उदय से स्त्रीत्व की प्राप्ति होती है (णाया १, ८)। °परिसह पु [°परिषह] ब्रह्मचर्य (भग ८, ८)। °विप्पजह वि [°विप्रजह] १ स्त्री का परित्याग करनेवाला। २ पु मुनि, साधु (उत्त ८)। °वेद, °वेय पुं [°वेद] १ स्त्री को पुरुष संग की इच्छा। २ कर्म-विशेष, जिसके उदय से स्त्री को पुरुष के साथ भोग करने की इच्छा होती है (भग, पण्ण २३)।

इत्थेण त्रि [स्त्रैण] स्त्रियों का समूह, स्त्री-जन, 'लज्जसि किं न महतो दीणाओ मारिसित्थेणा' (उप ७२८ टी)।

इदाणिं देखो इयाणिं (आचा)।

इदाणि (शौ) देखो इयाणिं (प्राकृ ८७)।

इदाणीं } देखो इदाणिं (संक्षि १९)।
इदाणी }

इदिवित्त (शौ) न [इतिवृत्त] इतिहास (मोह १२८)।

इदुर न [दे] धान्य रखने का एक तरह का पात्र (अणु १५१)।

इद्दड पुं [दे] भौंरा, मधुकर (दे १, ७९)।

इद्धग्गिधूम न [दे] तुहिन, हिम (षड्)।

इद्धि देखो इड्ढि (षड्)।

इध (शौ) देखो इह (हे ४, २६८)।

इब्भ पुं [इभ्य] धनी, आढ्य (पाअ)।

इब्भ पुं [दे] वणिक्, व्यापारी (१, ७९)।

इभ पुं [इभ] हाथी, हस्ती (ज २, कुमा)।

इभपाल पुं [इभपाल] महावत (सम्मत्त १५७)।

इम स [इदम्] यह (हे ३, ७२)।

उग्गाल पुं [उद्गार] विनिर्गम, बाहर निकलना (वव १)।

उग्गाह सक [उद् + ग्रह्] ग्रहण करना, 'भायणवत्थाइं पमज्जइ, पमज्जइत्ता भायणाइ उग्गाहेइ' (उवा)। संकृ. **उग्गाहेत्ता** जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ' (उवा)।

उग्गाह सक [अव + गाह्] अवगाहन करना, 'उग्गाहेंति नाणाविहाम्रो चिगिन्छा-सहियाम्रो' (स १७)।

उग्गाह सक [उद् + ग्राहय्] १ तगादा करना। २ ऊँचे से चलना। उग्गाहइ (प्राकृ ७२)।

उग्गाह पु देखो उग्गाहा (पिंग)।

उग्गाहण न [उद्ग्राहण] तगादा, दी हुई चीज की माँग (सुपा ५७८)।

उग्गाहणिआ स्त्री [उद्ग्राहणिका] ऊपर देखो, 'उज्जाणपालयाणं पासम्मि गम्रो तया सोवि। उग्गाहणियाहेउ' (सुपा ६३२)।

उग्गाहणी स्त्री [उद्ग्राहणी] ऊपर देखो (द्र ६)।

उग्गाहा स्त्री [उद्गाथा] छन्द-विशेष (पिंग)।

उग्गाहिअ वि [दे उद्ग्राहित] १ गृहीत, लिया हुआ। २ उत्क्षिप्त, फेंका हुआ। ३ प्रवर्तित (दे १, १३७)। ४ उच्चालित, ऊँचे से चलाया हुआ (पाअ स २१३)।

उग्गाहिम वि [अवगाहिम] तली हुई वस्तु। (पण्ह २, ५)।

उग्गिण्ण, **उग्गिन्न** } वि [उद्गीर्ण] १ उक्त, कथित (भवि)। २ वान्त, उद्गीर्ण (णाया १, १)। ३ उठाया हुआ, ऊपर किया हुआ,

'उग्गिन्नखग्गमबल अवलोइय
नरवईवि विम्हइम्रो।
चिंतेइ अहो धट्ठा, मज्झ वहट्ठा
इह पविट्ठा' (सुर १६, १४७),
'निद्दय! निर्यविणीवह-
कलकमलिणोव्व रे तुमं जाम्रो।
उग्गिन्नखग्गपसरतक्किसा-
मलियसव्वगो' (सुपा ५३८)।

उग्गिर देखो उग्गिल। उग्गिरेइ (मुद्रा १२१)। वकृ उग्गिरंत (काल)।

उग्गिरण न [उद्गरण] १ वान्ति, वमन, कथ। २ उक्ति, कथन,

'माणसिणोवि अवमाणवयणा
ते परस्स न करेंति।
सुहदुक्खुग्गिरणत्थं, साहू
उयहिव्व गभीरा' (उव)।

उग्गिल सक [उद् + गॄ] १ कहना, बोलना। २ डकार करना। ३ उलटी करना, वमन करना। ४ उठाना। वकृ. 'अग्गिजालुग्गिलंत वयणं' (णाया १, ८)। संकृ. **उग्गिलित्ता** (कस), **उग्गिलेत्ता** (निचू ०)।

उग्गिलिअ देखो उग्गिण्ण (पाअ)।

उग्गीय वि [उद्गीत] १ उच्च स्वर से गाया हुआ (दे १,१६३)। २ न संगीत गीत, गान (से १, ६५)।

उग्गीयमाण देखो उग्गा।

उग्गीर देखो उग्गिर। वकृ 'खग्ग उग्गीरंतो इत्थिवहत्थं, हयासलोयाण' (सुपा १५८)।

उग्गीरिअ देखो उग्गिण्ण, 'उग्गीरिम्रो ममोवरि, जमजीहादीहतरलकरवालो' (सुपा१५८)।

उग्गीव वि [उद्ग्रीव] उत्कण्ठित, उत्सुक (कुमा)। °किय वि [°कृत] उत्कण्ठित किया हुआ (उप १०३१ टी)।

उग्गुलुंछिआ स्त्री [दे] हृदय-रस का उछलना, भावोद्रेक (दे १, ११८)।

उग्गोव सक [उद् + गोपय्] १ खोजना। २ प्रकट करना। ३ विमुग्ध करना। वकृ 'इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एग महं किण्हसुत्तग वा जाव सुकिल्लसुत्तग वा पासमाणे पासति उग्गोवेमाणे उग्गोवेइ' (भग १६, ६)।

उग्गोवणा स्त्री [उद्गोपना] १ खोज, गवेषणा,

'एसण गवेसणा लग्गणा
य उग्गोवणा य बोद्धव्वा।
एए उ एसणाए नामा
एगट्ठिया होंति' (पिंड ७३)।

२ देखो उग्गम, 'उग्गम उग्गोवण मग्गणा य एगट्ठियाणि एयाणि' (पिंड ८५)।

उग्गोविय वि [उद्गोपित] विमोहित, भ्रान्त, 'उग्गोवियमिति अप्पाण मन्नति' (भग १६, ६)।

उग्घ देखो उग्ग। उग्घइ (षड्)।

उग्घट्टि, **उग्घट्टी** } स्त्री [दे] अवतंस, शिरो-भूषण (दे १, ९०)।

उग्घड सक [उद् + घाटय्] खोलना (प्रामा)।

उग्घड अक [उद् + घट्] खुलना। उग्घडइ (सिरि ५०४)। उग्घडति (धर्म वि ७६)।

उग्घडिअ वि [उद्घाटित] खुला हुआ (धर्म वि ७७)।

उग्घडिअ वि उद्घाटित] खुला हुआ। २ छिन्न, नष्ट किया हुआ (से ११, १३०)।

उग्घर वि [उद्गृह] गृह-त्यागी, जिसने घरबार छोड कर सन्यास लिया हो वह, साधु,

'चंदोव्व कालपक्खे परिहाई पए पए पमायपरो।
तह उग्घरविग्घरनिरंगणो वि नय इच्छियं लहइ'
(णाया १, १० टी)।

उग्घव देखो अग्घव। उग्घवइ (हे ४, १६९ टि, राज)।

उग्घसिय न [अवघर्षित] घर्षण (राय ६७)।

उग्घाअ पु [दे] १ समूह, संघात (दे १, १२६, स ७७, ४३६, गउड, से ५, ३४)। २ स्थपुट, विषमोन्नत प्रदेश (दे १,१२६)।

उग्घाअ पु [उद्घात] १ आरम्भ, प्रारम्भ 'उग्घाम्रो आरभो' (पाअ)। २ प्रतिघात ठोकर लगना। ३ लघूकरण, भाग-पात (ठा ३)। ४ उपोद्घात, भूमिका (विसे १३४८)। ५ ह्रास (ठा ५ २)। ६ न प्रायश्चित-विशेष। ७. निशीथ सूत्र का एक अंश, जिसमे उक्त प्रायश्चित्त का वर्णन है, 'उग्घायमणुग्घाय आरोवण तिविहमो निसीह तु' (आव ३)।

उग्घाअ सक [उद् + घातय्] विनाश करना। उग्घाएइ (उत्त २९, ६)।

उग्घाइम वि [उद्घातिम] १ लघु, छोटा। २ न लघु प्रायश्चित्त (ठा ३)।

उग्घाइय वि [उद्घातित] १ विनाशित (ठा १०)। २ न लघु प्रायश्चित्त (ठा ५)।

उग्घाइय वि [उद्घातित] लघु प्रायश्चित्त वाला (वव १)।

उग्घाइय न [उद्घातिक] लघु प्रायश्चित्त (कस)।

इसिणअ वि [इसिनक] इसिन-नामक अनार्य देश मे उत्पन्न (णाया १, १, इक)।
इसिया स्त्री [इषिका] सलाई, शलाका (सुम २, १)।
इसु पुं [इषु] वाण (पाम)।
इस्स वि [एष्यत्] १ भविष्य काल, 'भुत्तं संपयमिस्सं' (विसे)। २ होनेवाला, भावी; 'सभरइ भूय मिस्सं' (विसे ५०८)।
इस्सर देखो ईसर (प्राप्र, पि ८७, ठा २, ३)।
इस्सरिय देखो ईसरिय (पउम ५, २७०, सम १३, प्रासू ७५)।
इस्सा स्त्री [ईर्ष्या] द्रोह, असूया (उत्त ३४, २३)।
इस्सास पुं [इष्वास] १ धनुष, कार्मुक, शरासन। २ वाण-क्षेपक, तीरंदाज (प्राकृ)।
इह पु [इभ] हाथी, हस्ती (प्राकृ)।
इह अ॰ [इदानीम्] इस समय, अधुना (प्राकृ ८०)।
इह अ [इह] यहां, इस जगह (आचा, स्वप्न २२)। °पारलोइय वि [ऐहिकपारलौकिक] इस और परलोक से सम्वन्ध रखनेवाला (स १५९)। °भविय वि [ऐहभविक] इस जन्म सवन्धी (भग)। °लोअ, °लोग पु [°लोक] वर्तमान जन्म, मनुष्य-लोक (ठा ३, प्रासू ७५, १५३)। °लोय, °लोइय वि [ऐहलौकिक] इस जन्म-सवन्धी, वर्तमान जन्म-सवन्धी (कप्प, सुपा ४०८, पण्ह १, ३, स ४८१), 'इहलोयपारलोइयसुहाइ सव्वाइ तेण दिन्नाइं' (स १५५)।
इहअ, इहइ } ऊपर देखो (षड्, पउम २१, ७)।
इहइ अ [इदानीम्] हाल, संप्रति, इस समय (पाअ)।
इह, इहय } देखो इह = इह (औप, श्रा १४)।
इहरहा, इहरा } देखो इअर-हा (उप ८६०, भत्त ३६, हे २, २१२)।
इहरा देखो इहइ = इदानीम् (गउड)।
इहामिय देखो ईहामिय (पि ९४)।
इहिं अ [इह] यहाँ (रभा)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे इआराइसद्दसकलणो
णाम तइओ तरंगो समत्तो ॥

ई

ई पु [ई] प्राकृत वर्णमाला का चतुर्थ वर्ण, स्वर विशेष (प्रामा)।
ईअ म [एनत्, इदम्] यह (पि ४२६, ४२९)।
ईअ अ [इति] इस तरह, 'ईय मणोविसईण' (विसे ५१४)।
ईइ पुंस्त्री [ईति] धान्य वगैरह को नुकसान पहुँचानेवाला चूहा आदि प्राणि-गण (औप)।
ईइस वि [ईदृश] ऐसा, इस तरह का, इसके समान (महा, स १५)।
ईजिह अक [घ्रा] तृप्त होना। ईजिहइ (प्राकृ ६५)।
°ईड देखो कीड = कीट; 'दुद्दंसणणिवईडसारिच्छं' (गा ३०)।
ईडा स्त्री [ईडा] स्तुति (चेइय ८६८)।
ईण वि [ईन] प्रार्थी, अभिलाषी, 'आहाकडं चेव निकाममीणे' (सूअ १, १०, ८)।
°ईण देखो दीण (से ८, ६१)।
ईति देखो ईइ (सम ६०)।
ईदिस देखो ईइस (स १४०, अभि १८२, कप्पू)।
ईर सक [ईर्] १ प्रेरणा करना। २ कहना। ३ गमन करना। ४ फेंकना। ईरेइ (विसे १०६०), कृ 'ठाणगमणगुणजोगजुजणजुगतरनिवातियाए दिट्ठीए ईरियव्वं' (पण्ह २, १)। भूकृ॰ ईरिद (शौ) (अभि ३०)।
ईरिय वि [ईरित] प्रेरित (विसे ३१४४)।
ईरिया देखो इरिया (सम १०, ओघ ७४८, सुर २, १०४)।
ईरिस देखो ईइस (कुमा, स्वप्न ५५)।
ईस न [दे] खूँटा, खीला, कीलक (दे १, ८४)।
ईस सक [ईर्ष्] ईर्ष्या करना, द्वेष करना। ईसाअति (गा २४०)।
ईस पु [ईश] देखो ईसर = ईश्वर (कुमा, पउम १०२, ५८)। २ न ऐश्वर्य, प्रभुता (पण्ण २)।
ईस देखो ईसि (कप्पू)।
ईसअ पुं [दे] रोझ, हरिण की एक जाति (दे १, ८४)।
ईसत्थ न [इष्वस्त्रशास्त्र] धनुर्वेद, वाण-विद्या (औप, पण्ह १, ५), 'विन्नाणनाणकुसला ईसत्थकयस्समा वीरा' (पउम ९८, ४०, पि ११७)।
ईसर पुं [दे] मन्मथ, कामदेव (दे १, ८४)।
ईसर पु [ईश्वर] १ परमेश्वर, प्रभु (हे १, ८४)। २ महादेव, शिव (पउम १०९, १२)। ३ स्वामी, पति (कुमा)। ४ नायक, मुखिया (विपा १, १)। ५ देवताओ का एक आवास, वेलघर-देवो का आवास विशेष (सम ७३)। ६ एक पाताल कलश (ठा ४, २)। ७ आढ्य, धनी (सुपा ४३९)। ८ ऐश्वर्य-शाली, वैभवी (जीव ३)। ९ युवराज। १० माण्डलिक, सामन्त-राजा। ११ मन्त्री (अणु)। १२ इन्द्र विशेष, भूतवादि-निकाय का इन्द्र (ठा २, ३)। १३ पाताल-विशेष (ठा ४)। १४ एक राजा का नाम। १५ एक जैन मुनि (महानि ६)। १६ यक्ष-विशेष (पव २७)।

उच्चर सक [उत्+चर्] १ पार जाना, उत्तीर्ण होना। २ कहना, बोलना। ३ अक समर्थ होना पहुँच सकना। ४ बाहर निकलना। उच्चरए (सूक्त ४६), 'मूलदेवेण य निरूवियाइं पामाइं जाव दिट्ठ निसियासिहत्थेहिं वेढियमताणयं मरणूसेहिं। चिंतियं च, गाहमेएसिं उच्चरामि, कायव्वं च मए वइरनिज्जायणं, निराउहो सपय, ता न पोरिमस्सावसरोत्ति चिंतिय भणियं' (महा)। वकृ

'भरिउच्चरतपरिअपिअसभरणविसुरणो वराईए।
परिवाहो विअ दुक्खस्स वहइ णअणट्ठिओ वाहो' (गा ३७७)।

उच्चरण न [उच्चरण] कथन, उच्चारण, 'सिद्धसमक्खं सोहिं वय-उच्चरणाइ काऊण' (सुपा ३१७)।

उच्चरिय वि [उच्चरित] १ उत्तीर्ण, पार-प्राप्त, 'तीए हत्थिसभमुच्चरियाए उज्झिऊण भय, जीवियदायगोत्ति मुणिऊण तुम साहिलासं पलोइओ' (महा)। २ उच्चरित, कथित उक्त (विम १०८३)।

उच्चलण न [उच्चलन] उन्मर्दन, उत्पीडन (पाअ)।

उच्चलिय वि [उच्चलित] चलित, गत (भवि)।

उच्चल्ल वि [दे] १ अध्यासित, आरूढ। २ विदारित, छिन्न (षड्)।

उच्चल्ल सक [उत्+चल्] १ चलना, जाना। २ समीप में आना।

उच्चल्लिय वि [उच्चलित] १ गत, गया हुआ। २ समीप में आया हुआ,

'जिणभवणदुवारट्ठियउच्चल्लिय-
फुल्लमालिओहत्थ।
पुप्फाइ गेण्हतो, अतो
विहिणा पविट्ठो ह' (सुर ३, ७४)।

उच्चा अ [उच्चैस्] १ ऊँचा, 'तो तेण दुट्ठहरिणा उच्चा हरिऊण लोय-पच्चक्ख। उवणीओ सो रण्णे' (महा)। २ उत्तम, श्रेष्ठ (ठा २, १)। °गोत्त, °गोय न [°गोत्र] १ उत्तम गोत्र, श्रेष्ठ-वंश। २ कर्म विशेष, जिसके प्रभाव से जीव उत्तम माने-जाते कुल में उत्पन्न होता है (ठा २, ४, आचा)। °वय न [°व्रत] १ महाव्रत (उत्त १)। २ वि. महाव्रतधारी (उत्त १५)।

उच्चाअ वि [दे] १ श्रान्त, थका हुआ (ओघ ५१८)। २ पु आलिंगन, परिरम्भ (गुणा ३३२)।

उच्चाइय वि [दे उत्त्याजित] उत्थापित, उठाया हुआ, 'उच्चाइया नगरा' (म २०६)।

उच्चाग पुं [उच्चाग] हिमाचल पर्वत। °य वि [°ज] हिमाचल में उत्पन्न, 'उच्चागयठाणलट्ठसठिय' (कप्प)।

उच्चाड वि [दे] विपुल, विशाल (दे १, ९७)।

उच्चाड सक [दे] १ रोकना, निवारना। २ अक अफसोस करना, दिलगीर होना (हे २, १९३ टि)।

उच्चाडण न [उच्चाटन] १ एक स्थान से दूसरे स्थान में उठा ले आना, स्व-स्थान से भ्रष्ट करना। २ मन्त्र-विशेष, जिसके प्रभाव से वस्तु अपने स्थान से उडायी जा सकती है, 'उच्चाडणयभणमोहणाइ सव्वपि मह करगय ष' (सुपा ५९६)।

उच्चाडणी स्त्री [उच्चाटनी] विद्या-विशेष जिसके द्वारा वस्तु अपने स्थान से उडायी जा सकती है (सुर १३, ८१)।

उच्चाडिर वि [दे] १ रोकनेवाला, निवारण करनेवाला। २ अफसोस करनेवाला, दिलगीर, 'किं उल्लावेंतीए, उअ जूरतीए किं नु भीआए। उच्चाडिरीए वेव्वेत्ति, तीए भणिअ न विम्हरिमो' (हे २, १९३)।

उच्चार सक [उत्+चारय्] १ बोलना, उच्चारण करना। २ मलोत्सर्ग करना, पाखाना जाना। उच्चारेइ (उवा)। वकृ उच्चारयन (स १०७)। उच्चारेमाण (कप्प, णाया १, १)। कृ उच्चारेयव्व (उवा)।

उच्चार पु [उच्चार] १ उच्चारण। २ विष्ठा, मलोत्सर्ग (सम १०, उवा, सुपा ६११)।

उच्चार वि [दे] विमल, स्वच्छ (दे १, ९७)।

उच्चारण न [उच्चारण] कथन 'इसि हस्सपच्चक्खरूच्चारणद्धाए' (औप)।

उच्चारिअ वि [दे] गृहीत, उपात्त (दे १, ११४)।

उच्चारिअ वि [उच्चारित] १ कथित, उक्त। २ पाखाना गया हुआ (राज)।

उच्चाल सक [उत्+चालय्] १ ऊँचा फेंकना। २ दूर करना। संकृ. 'उच्चालइय निहाणिमु अदुवा आसणाओ खलइंसु' (आचा)।

उच्चालइय वि [उच्चालयितृ] दूर करनेवाला त्यागनेवाला, 'जं जाणेज्जा उच्चालइय तं जाणेज्जा दुरालइय' (आचा)।

उच्चालिय वि [उच्चालित] उठाया हुआ, ऊँचा किया हुआ, उत्थापित, 'उच्चालियम्मि पाए इरियासमियस्स संकमट्ठाए' (ओघ ७४८, दर्सान ४५)।

उच्चाव सक [उच्चय्] ऊँचा करना, उठाना। सकृ उच्चावइत्ता, 'दोवि पाए उच्चावइत्ता सव्वओ समत नमभिलोएज्ज' (पण्ण १७)।

उच्चावय वि [उच्चावच] १ ऊँचा और नीचा (णाया, १, १, पण्ण ३४)। २ उत्तम और अधम (भग १५)। ३ अनुकूल और प्रतिकूल (भग १, ९)। ४ असमञ्जस, अव्यवस्थित (णाया १, १६)। ५ विविध, नानाविध, 'उच्चावयाहि सेज्जाहि तवस्सी भिक्खू थामव' (उत्त ८)। ६ उत्कृष्टतर, विशेष उत्तम, 'तए ण तस्स आणदस्स समणोवासगस्स उच्चावएहि सीलव्वयगुणवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासेहिं अप्पाण भावेमाणस्स' (उवा, औप)।

उच्चाविय वि [उच्चित] ऊँचा किया हुआ (वज्जा १३२)।

उच्चिट्ठ अक [उत्+स्था] खडा होना। उच्चिट्ठ (काल)।

उच्चिडिम वि [दे] मर्यादा-रहित, निर्लज्ज, 'उच्चिडिमं मुक्कमज्जायं' (पाअ)।

उच्चिण सक [उत्+चि] फूल वगैरह को तोड कर एकत्रित करना, इकट्ठा करना। उच्चिणइ (हे ४, २४१)। वकृ. उच्चिणत (भवि)।

उच्चिणण न [उच्चयन] अवचयन, एकत्रीकरण (सुपा ४९९)।

उच्चिणिय वि [उच्चित] इकट्ठा किया हुआ, अवचित (पाअ)।

उच्चिणिर वि [उच्चेतृ] फूल वगैरह को चुननेवाला (कुमा)।

उअ वि [उदञ्च्] उत्तर, उत्तर दिशा मे स्थित। °महिहर पुं [°महिधर] हिमाचल-पर्वत (गउड)।
उअअ न [उदक] पानी, जल (गा ५३, से ६, ८८)।
उअअ देखो उदय (से १०, ३१)।
उअअ न [उदर] पेट, उदर (से ६, ८८)।
उअअ वि [दे] ऋजु, सरल, सीधा (दे १, ८८)।
उअअद (शौ) देखो उवगय (नाट)।
उअआरअ वि [उपकारक] उपकार करने-वाला (गा ५०)।
उअआरि वि [उपकारिन्] ऊपर देखो (विक २५)।
उअइव्व वि [उपजीव्य] आश्रय करने योग्य, सेवा करने योग्य (से ६, ६)।
उअऊह सक [उप + गूह्] आलिंगन करना। सकृ. उअऊहेऊण (पि ५८६)।
उअएस देखो उवएस (गा १०१)।
उअंचण न [उदञ्चन] १ ऊँचा फेंकना। २ ढकने का पात्र, आच्छादक पात्र (दे ४,११)।
उअचिद (शौ) वि [उदञ्चित] १ ऊँचा उठाया हुआ, ऊँचा फेंका हुआ (नाट)।
उअत पुं [उदन्त] हकीकत, वृत्तान्त, समाचार (पाअ; प्रामा)।
उअकिद (शौ) वि [उपकृत] जिसपर उपकार किया गया हो वह (पि ६४)।
उअक्किअ वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ (दे १, १०७)।
उअगअ देखो उवगय (गा ६४४)।
उअचित्त वि [दे] अपगत, निवृत्त (दे १, १०८)।
उअजीवि वि [उपजीविन्] आश्रित (अभि १८६)।
उअज्झाअ देखो उवज्झाय (नाट)।
उअट्टी स्त्री [दे] नीवी, स्त्री के कटि-वस्त्र की नाड़ी; 'उअट्टी उच्चओ नीवी' (पाअ)।
उअट्ठिअ देखो उवट्ठिय (प्राप)।
उअणिअ } उअणीअ } देखो उवणीय (प्राकृ ६)।
उअण्णास देखो उवण्णास (नाट)।
उअत्तत देखो उव्वट्ट = उद् + वृत्।

उअत्थाण देखो उवट्ठाण (नाट)।
उअत्थिअ देखो उवट्ठिय (से ११, ७८)।
उअदिट्ठ देखो उवइट्ठ (नाट)।
उअभुत्त देखो उवभुत्त (रभा)।
उअभोग देखो उवभोग (नाट)।
उअमिज्जंत वकृ [उपमीयमान] जिसकी तुलना की जाती हो वह (काप्र ८९६)।
उअर न [उदर] पेट (कुमा)।
उअरिं } उअरि } देखो उवरि (गा ६४, से ८, ७५)।
उअरी स्त्री [दे] शाकिनी, देवी-विशेष (दे १, ६८)।
उअरुज्झ देखो उवरुज्झ। उअरुज्झदि (शौ) (नाट)।
उअरोअ } उअरोह } देखो उवरोह (प्राप; नाट)।
उअलद्ध देखो उवलद्ध (नाट)।
उअविट्ठअ न [औपविष्टक] आसन (प्राकृ १०)।
उअविय वि [दे] उच्छिष्ट, 'इहरा मे णिसि-भत्त उअवियं चेव गुरुमादी' (वृह १)।
उअसप्प देखो उवसप्प। उअसप्प (रुक्मि ५१)।
उअसम } उअसम्म } देखो उवसम = उप + शम्। उअसमइ, उवसम्मइ (प्राकृ ६६)
उअह अ [दे] देखो, देखिए (दे १, ६८, प्राप्र)।
उअहस देखो उवहस। उअहसइ (प्राकृ ३४)।
उअहार देखो उवहार (नाट)।
उअहारी स्त्री [दे] दोग्ध्री, दोहनेवाली स्त्री (दे १, १०८)।
उअहि पु [उदधि] १ समुद्र, सागर (गउड)। २ स्वनाम-ख्यात एक विद्याधर राजकुमार (पउम ५, १६६)। ३ काल परिमाण, साग-रोपम (सुर २, १३६)। ४ स्वनाम ख्यात एक जैन मुनि (पउम २०, ११७)। देखो उदहि।
उअहि देखो उवहि = उपधि (पव ६)।
उअहुज्जत देखो उवभुज।
उअहोअ देखो उवभोग (प्रवो ३०, नाट)।
उआअ देखो उवाय (नाट)।
उआअण देखो उवायण (माल ४६)।
उआर देखो उराल (सुपा ६०७, कप्पू)।
उआर देखो उवयार (षड्, गउड)।

उआलभ देखो उवालभ = उपा + लभ्। कृ. उआलंभणिज्ज (नाट)।
उआलंभ देखो उवालंभ = उपालम्भ (गा २०१)।
उआलभ देखो उआलभ = उपा + लभ्। उआलभेमि (त्रि ८२)।
उआलि स्त्री [दे] अवतंस, शिरोभूषण (दे १, ६०)।
उआस वि [उदास] नीचे देखो (पिंग)।
उआस देखो उवास = उपा + आस्। कवकृ. उआसिज्जमाण (हास्य १४०)।
उआसीण वि [उदासीन] १ उदासी, दिल-गीर। २ मध्यस्थ, तटस्थ (स ५४६, नाट)।
उआहरण देखो उदाहरण (मन ३)।
उइ सक [उप + इ] समीप जाना। उएइ, उएउ (पि ४९३)।
उइ अक [उद् + इ] उदित होना। उएइ (रंभा)। वकृ उइयत (रभा)।
उइ देखो उउ, 'अन्नोवि हुतु उइओ सरिसा परं तें' (रंभा)। °राय पु [°राज] वसन्त ऋतु (रभा)।
उइअ वि [उदित] १ उदय प्राप्त, उद्गत (सुपा १२७)। २ उक्त, कथित (विसे २३३, ८४६)। °परक्कम पु [°पराक्रम] इक्ष्वाकु-वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ६)।
उइअ वि [उचित] योग्य, लायक (से ८, १०३)।
उइंतण न [दे] उत्तरीय वस्त्र, चादर (दे १, १०३, कुमा)।
उइंद पुं [उपेन्द्र] इन्द्र का छोटा भाई, विष्णु का वामन अवतार, जो अदिति के गर्भ से हुआ था (हे १, ६)।
उइट्ठ वि [अपकृष्ट] हीन, सकुचित, 'आउसिय-अक्खचम्मउइट्ठगडदेस' (णाया १, ८)।
उइण्ण देखो उदिण्ण (ठा ५, विसे ५०३)।
उइण्ण वि [उदीच्य] उत्तर दिशा सम्बन्धी, उत्तर दिशा में उत्पन्न (आवम)।
उइन्न देखो ओइण्ण (सम्मत्त ७७)।
उइयत देखो उइ = उद् + इ।
उईण देखो उदीण (राय)।
उईर देखो उदीर, 'उईरेइ अइपीडं' (श्रा २७)। वकृ उईरत (पुप्फ १३)। सकृ. उईरइत्ता (सूअ १, ६)।

उच्छाय सक [अव + छादय्] आच्छादन करना, ढकना। संकृ उच्छाइऊण (चेइय ४८५)।
उच्छायण वि [अवच्छादन] आच्छादक, ढकनेवाला (स ३२३)।
उच्छायण वि [उच्छादन] नाशक (स ३२३, ५६३)।
उच्छायणया } स्त्री [उच्छादना] १ उच्छेद,
उच्छायणा } विनाश (भग १५)। २ व्यवच्छेद, व्यावृत्ति (राज)।
उच्छार देखो उत्थार = आ + क्रम् (हे ४, १६० टी)।
उच्छाल सक [उत् + शालय्] उछालना, ऊँचा फेंकना। वकृ. उच्छालिंत (कुम्मा ४)।
उच्छालण न [उच्छालन] उछालना, उत्क्षेपण (कुम्मा ५)।
उच्छालिअ वि [उच्छालित] फेंका हुआ, उत्क्षिप्त (सुपा ६७)।
उच्छास देखो ऊसास (मै ६८)।
उच्छाह सक [उत् + साहय्] उत्साह दिलाना, उत्तेजित करना। उच्छाहइ (सुपा ३५२)।
उच्छाह पु [उत्साह] १ उत्साह (ठा २,१)। २ दृढ उद्यम, स्थिर प्रयत्न (सुज २०)। ३ उत्कंठा, उत्सुकता (चंद २०)। ४ पराक्रम, बल। ५ सामर्थ्य, शक्ति (आचू १, हे १, ११४, २, ४८, पउम २०, ११८)।
उच्छाह पुं [दे] सूत का डोरा (दे १,९२)।
उच्छाहण न [उत्साहन] उत्तेजन, प्रोत्साहन (उप ५९७ टी)।
उच्छाहिय वि [उत्साहित] प्रोत्साहित, उत्तेजित (पिंड)।
उच्छिद सक [उत् + छिद्] उन्मूलन करना, उखाडना। संकृ उच्छिंदिअ (सूक्त ४४)।
उच्छिदण न [दे] उधार लेना, करजा लेना, सूद पर लेना (पिंड ३१७)।
उच्छिंपग वि [अवच्छिम्पक] चोरों को खान-पान वगैरह की सहायता देनेवाला (पण्ह १, ३)।
उच्छिंपण न [उत्क्षेपण] १ ऊपर फेंकना। २ बाहर निकालना (पण्ह १, १)।
उच्छिट्ठ वि [उच्छिष्ट] जूठा, उच्छिष्ट (सुपा ११७, ३७५; प्रासू १५८)।
उच्छिट्ट वि [उच्छिष्ट] अशिष्ट, असभ्य (दस ३, १ टी)।
उच्छिण्ण वि [उच्छिन्न] उच्छिन्न, उन्मूलित (ठा ५)।
उच्छित्त वि [दे] १ उत्क्षिप्त, फेंका हुआ। २ विक्षिप्त, पागल (दे १, १२४)।
उच्छित्त वि [उत्क्षिप्त] फेंका हुआ (से ५, ६१, पाअ)।
उच्छित्त देखो उच्छिय (से २, १२, गउड)।
उच्छित्त वि [उत्सिक्त] सींचा हुआ, सिक्त (दे १, १२३)।
उच्छिन्न देखो उच्छिण्ण (कप्प)।
उच्छिप्पत देखो उक्खिव।
उच्छिय वि [उच्छ्रित] उन्नत, ऊँचा (राज)।
उच्छिरण वि [दे] उच्छिष्ट, जूठा (षड्)।
उच्छिल्ल न [दे] १ छिद्र, विवर (दे १, ९५)। २ वि अवजीर्ण (षड्)।
उच्छु देखो इक्खु (पाअ, गा ७४१, पि १७७, ओघ ७७१, दे १,११७)। °जंत न [°यन्त्र] ईख पेरने का साचा (दे ६, ५१)।
उच्छु पु [दे] पवन, वायु (दे १, ८५)।
उच्छुअ वि [उत्सुक] उत्कण्ठित (हे २, २२)।
उच्छुअ न [दे] डरते-डरते की हुई चोरी (दे १, ९५)।
उच्छुअरण न [दे] ईख का खेत (दे १, ११७)।
उच्छुआर वि [दे] सछन्न, ढका हुआ (दे १, ११५)।
उच्छुडिअ वि [दे] १ बाण वगैरह से आहत। २ अपहृत, छीना हुआ (दे १, १३५)।
उच्छुग देखो उच्छुअ (सुर ८,९१)। °भूय वि [°भूत] जो उत्कण्ठित हुआ हो (सुर २, २१४)।
उच्छुच्छु वि [दे] दृप्त, अभिमानी (दे १, ९९)।
उच्छुण्ण वि [उत्क्षुण्ण] १ खण्डित, तोडा हुआ, 'उच्छुण्णं मद्दिअं च निद्दलिअं' (पाअ)। २ आक्रान्त, 'रइणावि अणुच्छुण्णा,
वीसत्थं मारुएण वि अणालिद्धा।
तिअसेहिंवि परिहरिआ,
पवगमेहिं मलिआ सुवेलुच्छंगा'
(से १०, २)।
उच्छुद्ध वि [दे] १ विक्षिप्त। २ पतित (ओघ २२० भा)।
उच्छुभ सक [अप + क्षिप्] आक्रोश करना, गाली देना। उच्छुभह (भग १५)।
उच्छुभण न [उत्क्षेपण] ऊँचा फेंकना (पव ७३ टी)।
उच्छुर वि [दे] अविनश्वर स्थायी (दे १, ९०)।
उच्छुरण न [दे] १ ईख का खेत। २ ईख, ऊख (दे १, ११७)।
उच्छुल्ल पु [दे] १ अनुवाद। २ खेद, उद्वेग (दे १, १३१)।
उच्छूढ वि [दे] आरुढ, ऊपर बैठा हुआ (षड्)।
उच्छूढ वि [उत्क्षिप्त] १ त्यक्त, उज्झित (णाया १, १ उव)। २ मुषित, चुराया हुआ (राज)। ३ निष्कासित, बाहर निकाला हुआ (औप)।
उच्छूढ वि [उत्क्षुब्ध] ऊपर देखो, 'उच्छूढसरीरघरा अन्नो जीवो सरीरमन्न ति' (उव पि ६६)।
उच्छूर देखो उल्लूर = तुड(हे ४, ११६ टि)।
उच्छूल देखो उच्चूल (उव)।
उच्छेअ पुं [उच्छेद] १ नाश, उन्मूलन, 'एगतुच्छेअम्मिवि सुहदुक्खविअप्पणमजुत्तं' (सम्म १८)। २ व्यवच्छेद, व्यावृत्ति, 'उच्छेओ सुत्तत्थाण ववच्छेउत्ति वुत्त भवति' (नीचू १)।
उच्छेयण न [उच्छेदन] विनाश, उन्मूलन, 'चिंतेइ एस समओ एयस्सुच्छेयणे मज्झ' (सुपा ३३५)।
उच्छेर अक [उत् + श्रि] १ ऊँचा होना, उन्नत होना। २ अधिक होना, अतिरिक्त होना। वकृ उच्छेरंत (काप्र १९४)।
उच्छेव पु [उत्क्षेप] १ ऊँचा करना, उठाना। २ फेंकना (वव २, ४)।
उच्छेव पुं [उत्क्षेप] प्रक्षेप (वव ४)।

उक्कंठिय } वि [उत्कण्ठित] उत्सुक (गा
उक्कंठिर } ५४२, सुर ३, ८६, पउम ११,
उक्कंठुलय } ११८, वज्जा ६०)।

उक्कंड वि [उत्खण्डित] खूब छटा हुआ, विशेष खण्डित (पिंड १७१)।

उक्कंडय सक [उत्कण्टय्] पुलकित करना, 'दियसेवि भूग्रसंभावरणाए उक्कटयति अंगाइ' (गउड)।

उक्कंडय वि [उत्कण्टक] पुलकित, रोमाञ्चित (गउड)।

उक्कंडा स्त्री [दे] घूस, रिशवत (दे १, ६२)।

उक्कंडिअ वि [दे] १ आरोपित। २ खण्डित (षड्)।

उक्कंत वि [उत्क्रान्त] ऊँचा गया हुआ (भवि)।

उक्कंति } स्त्री [दे] देखो उक्कदा (दे १,
उक्कंती } ८७)।

उक्कद वि [दे] विप्रलब्ध, ठगा हुआ, वञ्चित (षड्)।

उक्कंदल वि [उत्कन्दल] अंकुरित (गउड)।

उक्कदि } स्त्री [दे] कूपतुला (दे १, ८७)।
उक्कदी }

उक्कंप अक [उत् + कम्प्] काँपना, हिलना।

उक्कंप पुं [उत्कम्प] कम्प, चलन (सण, गा ७३५)।

उक्कंपिय वि [उत्कम्पित] १ चञ्चल किया हुआ (राज)। २ न कम्प, हिलन, 'णीसासुक्कपिअपुलइएहिं जाणंति णच्चिउं घरणा। अम्हारिसीहिं दिट्ठे, पिअम्मि अप्पावि वीसरिओ' (गा ३६१)।

उक्कंपिय वि [दे] धवलित, सफेद किया हुआ (कप्प)।

उक्कंवण न [दे. अवकम्बन] काठ पर काठ के हाते से घर की छत बांधना, घर का सस्कार-विशेष (बृह १)।

उक्कंविय वि [दे. अवकम्बित] काठ से बांधा हुआ (राज)।

उक्कच्छ वि [उत्कच्छ] स्फुट, स्पष्ट (पिंग)।

उक्कच्छा स्त्री [उत्कच्छा] छन्द-विशेष (पिंग)।

उक्कच्छिआ स्त्री [औपकक्षिकी] जैन साध्वियो को पहनने का वस्त्र-विशेष (ओघ ६७७)।

उक्कज्ज वि [दे] अनवस्थित, चञ्चल (षड्)।

उक्कट्ठि स्त्री [अपकृष्टि] अपकर्ष, हानि (वुन्न १)।

उक्कट्ठि स्त्री [उत्कृष्टि] उत्कर्ष, 'महता उक्कट्ठिसीहणादकलकलरवेणं' (सुज्ज १९—पत्र २७८)। देखो उक्किट्ठि।

उक्कड वि [उत्कट] १ तीव्र, प्रचण्ड, प्रखर (णंदि, महा)। २ विशाल, विस्तीर्ण (कप्प, सुर १, १०६)। ३ प्रबल (उवा; सुर ६, १७२)।

°उक्कड देखो दुक्कड (उप ६४६)।

उक्कडिय वि [दे] तोडा हुआ, छिन्न (पाअ)।

उक्कडिय देखो उक्कुडुय (कस)।

उक्कड्ढ सक [उत् + कर्षय्] उत्कृष्ट करना, बढाना। उक्कड्ढए (कम्म ५, ९८ टी)।

उक्कड्ढग पुं [अपकर्षक] १ चोर की एक-जाति—जो घर से धन आदि ले जाते हैं। २ जो चोरो को बुलाकर चोरी कराते हैं। ३ चोर की पीठ ठोकने वाले, चोर के सहायक (पण्ह १, ३ टी)।

उक्कड्ढिय वि [उत्कर्षित] १ उत्पाटित, उठाया हुआ। २ एक स्थान से उठा कर अन्यत्र स्थापित (पिंड ३९१)।

उक्कण्ण वि [उत्कर्ण] सुनने के लिए उत्सुक (से ६, १६)।

उक्कत्त सक [उत् + कृत्] काटना, कतरना। वकृ उक्कत्तत (सुपा २१६)।

उक्कत्त वि [उत्कृत्त] कटा हुआ, छिन्न (विपा १, २)।

उक्कत्तण न [उत्कर्त्तन] काट डालना, छेदन (पुप्फ ३८४)।

उक्कत्तिय देखो उक्कत्त = उत्कृत्त (पउम ५६, २४)।

उक्कत्थण न [उत्कत्थन] उखाडना (पण्ह १, १)।

उक्कप्प पु [उत्कल्प] शास्त्र-निषिद्ध आचरण (पचभा)।

उक्कनाह पुं [दे] उत्तम अश्व की एक जाति (सम्मत्त २१६)।

उक्कम सक [उत् + क्रम्] १ ऊँचा जाना। २ उलटे क्रम से रखना। वकृ उक्कमंत (आवम)। सकृ. उक्कमिऊणं (विसे ३५३१)।

उक्कम पु [उत्क्रम] उलटा क्रम, विपरीत क्रम (विसे २७१)।

उक्कमण न [उत्क्रमण] ऊर्ध्व गमन। २ वाहर जाना (समु १७२)।

उक्कमिन वि [उपक्रान्त] १ प्रारब्ध। २ क्षीण, 'अब्भागमितम्मि वा दुहे, अहवा उक्कमिते भवंतीए। एगस्स गती य आगती, विदुम ता सरणं ण मन्नइ।' (सूम १, २, ३, १७)।

उक्कर सक [उत् + कृ] खोदना। कवकृ. उक्करिज्जमाण (आवम)।

उक्कर पुं [उत्कर] १ समूह, सघात, 'सक्करुक्कररसड्ढे' (सुपा ५१८)। २ कर-रहित, राज-देय शुल्क से रहित (णाया १, १)।

उक्करड देखो उक्कर = उत्कर, 'कस्सावि उत्तरीयं गहिऊण कओ अ उक्करडो' (सिरि ७६५)।

उक्करड पु [दे] १ अशुचि राशि। २ जहाँ मैला इकट्ठा किया जाता है वह स्थान (श्रा २७, सुपा ३५५)।

उक्करिअ वि [दे] १ विस्तीर्ण, आयत। २ आरोपित। ३ खण्डित (षड्)।

उक्करिअ वि [उत्कीर्ण] खोदित, खोदा हुआ, 'टंकुक्करियव्व निच्चलनिहित्तलोयणा' (महा)।

उक्करिद (शौ) वि [उत्कृत] ऊँचा किया हुआ (स्वप्न ३६)।

उक्करिया स्त्री [उत्करिका] जैसे एरण्ड के बीज से उसका छिलका अलग होता है उस तरह अलग होना, भेद-विशेष (भग ५, ४)।

उक्करिस सक [उत् + कृष्] १ खींचना। २ गर्व करना, बडाई करना। वकृ उक्करिसंत (से १४, ६)।

उक्करिस देखो उक्कस्स = उत्कर्ष (उव, विसे १७९९)।

उज्जाणी स्त्री [औद्यानी] गोष्ठी, गोठ (सुपा ४८५)।

उज्जायण न [उद्यायन] गोत्र-विशेष (सुज्ज १०, १ टी)।

उज्जाल सक [उत्+ज्वालय्] उज्ज्वल करना, विशेष निर्मल करना। सकृ. उज्जालिय (श्रावक ३७६)।

उज्जाल सक [उद्+ज्वालय्] १ उजाला करना। २ जलाना। सकृ उज्जालिय, उज्जालित्ता (दस ५, आचा)।

उज्जालण न [उज्ज्वालन] जलाना (दस ५)।

उज्जालण न [उज्ज्वालन] उज्ज्वल करना (सिरि ६८०)।

उज्जालय वि [उज्ज्वालक] आग सुलगानेवाला (सूअ १, ७, ५)।

उज्जालिअ वि [उज्ज्वालित] जलाया हुआ, सुलगाया हुआ (सुर ६, ११७)।

उज्जावण न [उद्यापन] व्रत का समाप्ति-कार्य (प्रारू)।

उज्जाविय वि [दे] विकासित (सण)।

उज्जित देखो उज्जयंत (णाया १, १६),

'उज्जितसेलसिहरे, दिक्खा
नाणं निसीहिआ जस्स।
तं धम्मचक्कवट्टिं,
अरिट्ठनेमिं नमसामि' (पडि)।

उज्जीरिअ वि [दे] निर्भर्त्सित, अपमानित, तिरस्कृत (दे १, ११२)।

उज्जीवण न [उज्जीवन] १ पुनर्जीवन, जिलाना, 'तस्समपभावो एसो कुमरस्सुज्जीवणे जाओ' (सुपा ५०४)। २ उद्दीपन (सण)।

उज्जीविय वि [उज्जीवित] पुनर्जीवित, जिलाया हुआ (सुपा २७०)।

उज्जु वि [ऋजु] सरल, निष्कपट, सीधा (औप, आचा)। °कड वि [°कृत] १ निष्कपट तवस्वी (आचा, उत्त)। °कड वि [°कृत्] माया-रहित आचरणवाला (आचा)। °जड, °जड्ड वि [°जड] सरल किन्तु मूर्ख, तात्पर्य को नहीं समझनेवाला (पचा १६, उत्त २६)। °मइ स्त्री [°मति] १ मन पर्यव ज्ञान का एक भेद, सामान्य मनोज्ञान, सामान्य रीति से दूसरों के मनोभाव को जानना। २ वि. उक्त मनो-ज्ञानवाला (पण्ह २, १, औप)। °वालिया स्त्री [°वालिका] नदी-विशेष, जिसके किनारे भगवान् महावीर को केवल-ज्ञान उत्पन्न हुआ था (कप्प, स ४३२)। °सुत्त पु [°सूत्र] वर्तमान वस्तु को ही माननेवाला नय-विशेष (ठा ७)। °सुय पु [°श्रुत] देखो पूर्वोक्त अर्थ, 'पच्चुप्पन्नग्गाही उज्जुसुओ णयविही मुणेअव्वो' (अणु)। °हत्थ पु [°हस्त] दाहिना हाथ (ओघ ५११)।

उज्जु पु [ऋजु] संयम (सूअ १, १३, ७)।

उज्जुअ वि [ऋजुक] ऊपर देखो (आचा, कुमा, गा १५६, ३५२)।

उज्जुआइअ वि [ऋजुकारित] सरल किया हुआ (से १३, २०)।

उज्जुग देखो उज्जुअ (पि ५७)।

उज्जुत्त वि [उद्युक्त] उद्यमी, प्रयत्नशील (सुर ४, १५, पाअ)।

उज्जुरिअ वि [दे] १ क्षीण, नष्ट। २ शुष्क, सूखा (दे १, ११२)।

उज्जूढ वि [उद्व्यूढ] धारण किया हुआ (संबोध ५३)।

उज्जेणग पु [उज्जयनक] श्रावक-विशेष, एक उपासक का नाम (आचू ४)।

उज्जेणी देखो उज्जइणी (महा, काप्र ३३३)।

उज्जोअ सक [उद्+द्योतय्] प्रकाश करना, उद्योत करना। उज्जोएइ (महा)। वकृ उज्जोयत, उज्जोइत, उज्जोयमाण, उज्जोएमाण (णाया १, १, सुपा ४७, सुर ८, ८७, सुपा २४२, जीव ३)।

उज्जोअ पु [उद्योग] प्रयत्न, उद्यम (पउम ३, १२६, सुक्त ३६ पुप्फ २८, २६)।

उज्जोअ पु [उद्द्योत] १ प्रकाश, उजेला। °गर वि [°कर] प्रकाशक, 'लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे' (पडि, पाअ, हे १, १७७)। २ उद्द्योत का कारण-भूत कर्म-विशेष (सम ६७, कम्म १)। °त्थ न [°ास्त्र] शस्त्र-विशेष (पउम १२, १२८)।

उज्जोअग वि [उद्द्योतक] प्रकाशक, 'सव्व जयुज्जयोगस्स' (णंदि)।

उज्जोअण न [उद्द्योतन] १ प्रकाशन, अवभासन। २ वि प्रकाश करनेवाला (उप ७२८ टी)। ३ पुं. सूर्य, रवि। ४ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य (गु ७, सार्ध ६२)।

उज्जोअय वि [उद्द्योतक] १ प्रकाशक। २ प्रभावक, उन्नति करनेवाला (उर ८, १२)।

उज्जोइत देखो उज्जोअ = उद् + द्योतय्।

उज्जोइय वि [उद्द्योतित] प्रकाशित (मम १५३, सुपा २०५)।

उज्जोग्गमाण देखो उज्जोअ = उद् + द्योतय्।

उज्जोमिआ स्त्री [दे] रश्मि, रस्सी (दे १, ११५)।

उज्जोव देखो उज्जोअ = उद् + द्योतय्। वकृ. उज्जोवत, उज्जोवयत, उज्जोवेंत, उज्जोवेमाण (पउम २१, १५, स २०७, ६३१, ठा ८)।

उज्जोवण न [उद्द्योतन] प्रकाशन (स ६३१)।

उज्जोविय देखो उज्जोइय (कप्प, णाया १, १, पण्ह १, ४, पउम , १६०, स ३६)।

उज्झ सक [उज्झ्] त्याग करना, छोड़ देना। उज्झइ (महा)। कवकृ. उज्झिज्जमाण (उप २११ टी)। सकृ. उज्झिअ, उज्झिउं, उज्झिऊण (अभि ६०, पि ५७६, राज)। हेकृ उज्झित्तए (णाया १, ८)। कृ उज्झियव्व (उप ५६७ टी)।

उज्झ पुं [उज्झ, उद्ध्य] उपाध्याय, पाठक (विसे ३१६८)।

उज्झअ, उज्झग वि [उज्झक] त्याग करनेवाला, छोड़नेवाला (सूअ १, ३, उप १७६ टी)।

उज्झण न [उज्झन] परित्याग (उप १७६ पृ ४०३, पउम १, ६०, औप)।

उज्झणया, उज्झणा स्त्री [उज्झना] परित्याग (उप ५६३, श्राव ४)।

उज्झणिअ वि [दे] विक्रीत, वेचा हुआ। २ निम्नीकृत, नीचा किया हुआ (षड्)।

उज्झमण न [दे] पलायन, भागना (दे १, १०३)।

उज्झमाण वि [दे] पलायित, भागा हुआ (षड्)।

उज्झर पु [निर्झर] पर्वत से गिरनेवाला जल-प्रवाह, पहाड़ का झरना (णाया १, १, गउड, गा ६३६)। °वण्णी स्त्री [°पर्णी] उदक-पात, जल-प्रपात (निचू ५)।

उक्कुज्ज अक [उत् + कुब्ज्] ऊँचा होकर नीचा होना। संकृ उक्कुज्जिय (आचा)।

उक्कुज्जिय न [उत्कूजित] अव्यक्त शब्द (नीचू)।

उक्कुट्ठ न [उत्कृष्ट] वनस्पति का कूटा हुआ चूर्ण (आचा, निचू १, ४)।

उक्कुट्ठ वि [उत्क्रुष्ट] ऊँचे स्वर से आक्रुष्ट (दे १, ४७)।

उक्कुडुग, उक्कुडुय वि [उत्कुटुक] आसन-विशेष, निषद्या-विशेष (भग ७, ६, ओघ १५६ भा, णाया १, १)। स्त्री उक्कुडुई (ठा ५ १)। °सणिय वि [°सनिक] उत्कुटुक-आसन से स्थित (ठा ५, १)।

उक्कुद्द अक [उत् + कूर्द्] कूदना, उछलना। उक्कुद्दइ (उत्त २७, ५)।

उक्कुरुआ देखो उक्कुरुडिया (ती ११)।

उक्कुरुड पु देखो उक्कुरुडी (कुप्र ५५)।

उक्कुरुड पु [दे] राशि, ढेर (दे १, ११०)।

उक्कुरुडिगा, उक्कुरुडिया, उक्कुरुडी स्त्री [दे] घूरा, कूडा डालने की जगह (उव ५६३ टी, विपा १, १, णाया १, २, दे १, ११०)।

उक्कुस सक [गम्] जाना, गमन करना। उक्कुसइ (हे ४, १६२)।

उक्कुस वि [उत्कृष्ट] उत्तम, श्रेष्ठ (कुमा)।

उक्कूइय न [उत्कूजित] अव्यक्त महा-ध्वनि (पण्ह १, १)।

उक्कूल वि [उत्कूल] १ सन्मार्ग से भ्रष्ट करनेवाला। २ किनारे से बाहर का। ३ न. चोरी (पण्ह १, ३)।

उक्कूव अक [उत् + कूज्] अव्यक्त आवाज करना, चिल्लाना। वकृ. उक्कूवमाण (विपा १, ८, निर ३, १)।

उक्केर पुं [उत्कर] १ समूह, राशि, ढेर (कुमा, महा)। २ करण-विशेष, कर्मों की स्थित्यादि को वढाना (विसे २५१४)। ३ भिन्न, एरण्ड के बीज की तरह जो अलग किया गया हो वह (राज)।

उक्केर पु [दे] उपहार, भेंट (दे १, ६६)।

उक्केल्लाविय वि [दे] उकेलाया हुआ, खुलवाया हुआ, 'राइणा उक्केलियाइं चोल्लयाइं, निरूवियाइं समन्तओ, जाव दिट्ठं कत्थइ सुवण्णं, कत्थइ रुप्पयं, कत्थइ मणिमोत्तियपवालाइ' (महा)।

उक्कोट्टिय वि [दे] अवरोध-रहित किया हुआ, घेरा उठाया हुआ (स ६३९)।

उक्कोड न [दे] राज-कुल मे दातव्य द्रव्य, राजा आदि को दिया जाता उपहार (वव १ टी)।

उक्कोडा स्त्री [दे] घूस, रिशवत (दे १, ६२, पण्ह १, ३, विपा १, १)।

उक्कोडिय वि [दे] घूस लेकर कार्य करनेवाला, घुसखोर (णाया १, १, औप)।

उक्कोडी स्त्री [दे] प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि (दे १, ६४)।

उक्कोय वि [उत्कोप] प्रखर, उत्कट (सण)।

उक्कोयण देखो उक्कोवण (भवि)।

उक्कोया स्त्री [उत्कोचा] १ घूस, रिशवत। २ मूर्ख को ठगने मे प्रवृत्त धूर्त पुरुष का, समीपस्थ विचक्षण पुरुष के भय से थोडी देर के लिए अपने कार्य को स्थगित करना (राज)।

उक्कोल पु [दे] घाम, धूप, गरमी (दे १, ८७)।

उक्कोवण न [उत्कोपन] उद्दीपन, उत्तेजन, 'मयणुक्कोवण' (भवि)।

उक्कोविअ वि [उत्कोपित] अत्यंत क्रुद्ध किया हुआ (उप पृ ७८)।

उक्कोस सक [उत् + क्रुश्] १ रोना, चिल्लाना। २ तिरस्कार करना। वकृ. उक्कोसंत (राज)।

उक्कोस वि [उत्कर्ष] उत्कृष्ट, प्रधान, मुख्य (पंचा १, २)।

उक्कोस पुं [उत्कर्ष] १ प्रकर्ष, अतिशय, 'उक्कोसजहन्नेणं अंतमुहुत्तं चिय जियंति' (जी ३८, औप)। २ गर्व, अभिमान (सूअ १, २, २, २६, सम ७१, ठा ४, ४—पत्र २७४)।

उक्कोस वि [उत्कृष्ट] उत्कृष्ट, अधिक से अधिक, 'सुरनेरइयाण ठिई उक्कोसा सागराणि तित्तीसं' (जी ३६), 'कोसतिगं च मणुस्सा उक्कोससरीरमाणेणं' (जी ३२), 'तओ वियडत्तीओ पडिगाहित्तए, तं जहा—उक्कोसा, मज्झिमा, जहण्णा' (ठा ३, उव)।

उक्कोस पुं [उत्क्रोश] १ कुरर, पक्षि-विशेष (पण्ह १, १)। २ वि जोर से चिल्लानेवाला (राज)।

उक्कोसण न [उत्क्रोशन] १ क्रन्दन। २ निर्भर्त्सन, तिरस्कार,

'उक्कोसणतज्जणताडणाओ
अवमाणहीलणाओ य।
मुणिणो मुणियपरभवा
दढप्पहारिव्व विसहंति' (उव)।

उक्कोसा स्त्री [उत्कोशा] कोशानामक एक प्रसिद्ध वेश्या (धर्म वि ६७)।

उक्कोसिअ वि [उत्क्रोशित] भर्त्सित, तिरस्कृत, दुतकारा हुआ (उप पृ ७८)।

उक्कोसिअ वि [उत्कर्षिन्] देखो उक्कोस = उत्कृष्ट (कप्प, भत्त ३७)।

उक्कोसिअ पु [उत्कौशिक] १ गोत्र-विशेष का प्रवर्त्तक एक ऋषि। २ न. गोत्र-विशेष, 'थेरस्स णं अज्जवइरसेणस्स उक्कोसियगोत्तस्स (कप्प)।

उक्कोसिअ वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ (षड्)।

उक्कोसिया स्त्री [उत्कृष्टि] उत्कर्ष, आधिक्य (भग)।

उक्कोस्स देखो उक्कोस = उत्कृष्ट (विसे ५८७)।

उक्ख सक [उक्ष्] सींचना (सूअ २, २, ५५)।

उक्ख [उक्ष] १ सवन्व (राज)। २ जैन साध्वियों के पहनने के वस्त्र-विशेष का एक अंश (बृह १)।

उक्ख देखो उच्छ = उक्षन् (पाअ)।

उक्खइअ वि [उत्खचित] व्याप्त, भरा हुआ (से १, ३३)।

उक्खंड सक [उत् + खण्डय्] तोडना, टुकडा करना। वकृ उक्खडंत (नाट)।

उक्खड पुं [दे] १ संघात, समूह। २ स्थपुट, विषमोन्नत प्रदेश (दे १, १२६)।

उक्खडण न [उत्खण्डन] उत्कर्त्तन, विच्छेदन (विक्र २८)।

उक्खडिअ वि [उत्खण्डित] खण्डित, छिन्न (से ५, ४३)।

उक्खडिअ वि [दे] आक्रान्त, दबाया हुआ (से १, ११२)।

'जमह दिया य राओ य, हुणामि महुसप्पिसं। तेण मे उडओ दड्ढो, जाय सरणओ भय' (निचू १)।

उडाहिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ (षड्)।

उडिअ वि [दे] अन्विष्ट, खोजा हुआ (षड्)।

उडिद पु [दे] उडिद, उरद, माष, धान्य-विशेष (दे १, ६८)।

उडु पु [उडु] एक देव-विमान (देवेन्द्र १३१)। °प्पभ पुन [°प्रभ] उडु नामक विमान के पूर्व तरफ स्थित एक देव-विमान (देवेन्द्र १३८)। °मज्झ पुन [°मध्य] उडुविमान के दक्षिण तरफ का एक देव विमान (देवेन्द्र १३८)। °यावत्त पुन [°कावर्त] उडुविमान के पश्चिम तरफ का एक देव-विमान (देवेन्द्र १३८)। °सिट्ठ पुन [°सृष्ट] उडुविमान के उत्तर तरफ का एक देव विमान (देवेन्द्र १३८)।

उडु न [उडु] १ नक्षत्र (पाअ)। २ विमान-विशेष (सम ६६)। °प, °व पु [°प] १ चन्द्र, चन्द्रमा (औप, सुर १६, २४६)। २ जहाज, नौका (दे १, १२२)। ३ एक की सख्या (सुर १६, २४६)। °वइ पु [°पति] चन्द्र (नम ३०, पण्ह १, ४)। °वर पुं [°वर] सूर्य (राज)।

उडु देखो उउ (ठा २, ४, ओघ १२३ भा)।

उडुंवरिज्जिया स्त्री [उदुम्बरीया] जैन मुनियो की एक शाखा (कप्प)।

उडुहिअ न [दे] १ विवाहिता स्त्री का कोप। २ वि उच्छिष्ट, जूठा (दे १, १३७)।

उडूखल } पुन [उडूखल] उलूखल, उदूखल
उडूहल } (पिंड ३६१, प्राकृ ७)।

उड्ड पु [उड्र] १ देश-विशेष, उत्कल, ओड, ओड्र नामो से प्रसिद्ध देश, जिसको आजकल उडीसा कहते हैं (स २८६)। २ इस देश का निवासी, उडिया, 'सगजवण-वव्वर-गाय मुरुं-डोड्ड भडग—' (पण्ह १, १)।

उड्ड वि [दे] कुंआ आदि को खोदनेवाला, खनक (दे १, ८५)।

उड्डण पु [दे] १ वैल, साँड। २ वि दीर्घ, लम्बा (दे १, १२३)।

उड्डस देखो उद्दस (उत्त ३६, १३८)।

उड्डस पुं [दे] खटमल, खटकीरा, उडिस (दे १, ६६)।

उड्डहण पु [दे] चोर, डाकू (दे १, ६१)।

उड्डाअ पुं [दे] उद्गम, उदय, उद्भव (दे १, ६१)।

उड्डाण न [उड्डयन] उडान, उडना, 'मोगेवि अहव घिप्पइ, हत तइवम्मि उड्डाणे' (सुर ८, ५२)।

उड्डाण पु [दे] १ प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि। २ कुरर, पक्षि-विशेष। ३ विष्ठा, पुरीष। ४ मनोरथ, अभिलाष। ५ वि गर्विष्ठ, अभिमानी (दे १, १२८)।

उड्डामर वि [उड्डामर] उद्भट, प्रवल (कुप्र १४५)।

उड्डामर वि [उड्डामर] १ भय भीति। २ आडम्बरवाला, टीपटापवाला (पाअ)।

उड्डामरिअ वि [उड्डामरित] भय-भीत किया हुआ (कप्पू)।

उड्डाव सक [उद् + डायय्] उडाना। उड्डावइ (भवि)। वकृ. उड्डावंत (हे ४, ३५२)।

उड्डाय वि [उड्डायक] उडानेवाला (पिंड ४७१)।

उड्डावण न [उड्डायन] १ उडाना, 'मत्तजल-वायमुड्डावणेण जलकलुमण किमिम' (कुमा)। २ आकर्षण, 'हियउड्डावणे' (णाया १, १४)।

उड्डाविअ वि [उड्डायित] उडाया हुआ (गा ११०, पिंग)।

उड्डाविर वि [उड्डायितृ] उडानेवाला (वज्जा ६४)।

उड्डास पुं [दे] सताप, परिताप (दे १, ६६)।

उड्डाह पुं [उद्दाह] १ भयङ्कर दाह, जला देना (उप २०८)। २ मालिन्य, निन्दा, उप-घात (ओघ २२१)।

उड्डिअ वि [औड्र] उडीसा देश का निवासी (नाट)।

उड्डिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ (षड्)।

उड्डिअंत देखो उड्डी = उत् + डी।

उड्डिआहरण न [दे] छुरी पर रक्खे हुए फूल को पाँव की दो उँगलियो से लेते हुए चल जाना; 'छुरिअग्गमुक्कपुप्फं घेत्तुअ पायंगुलीहि उप्पयण। तं उड्डिआहरणं' 'कुंसुम यत्रोड्डीय, क्षुरिकाग्राच्छावयेन सगृह्य। पादाङ्गुनिभिर्गच्छति, तद्विज्ञातव्यमुड्डिआहरण' (दे १, १२१)।

उड्डिय वि [उड्डीन] उडा हुआ, 'तरुउड्डिय-पक्खिगणुव्व पत्ते' (धर्मवि १३६)।

उड्डिहिअ वि [दे] ऊपर फेंका हुआ (पाअ)।

उड्डी अक [उद् + डी] उडना। उड्डेइ, उड्डेंति (पि ४७४)। वकृ. उड्डिअत, उड्डेंत (दे ६, ६८, उप १०३१ टी)। सकृ. उड्डेउण, उड्डेवि (पि ५८६, भवि)।

उड्डी स्त्री [औड्री] लिपि-विशेष, उत्कल देश की लिपि (विसे ४६४ टी)।

उड्डीण वि [उड्डीन] उडा हुआ (णाया १, १, पाअ, सुपा ४६४)।

उड्डुअ पु [दे] डकार, उद्गार, 'जभाइएणं उड्डुएण वायनिसग्गेणं' (पडि)।

उड्डुय } पु [दे] देखो उड्डुअ (चेइय
उड्डोअ } ४३८, ४३७)।

उड्डुवाडिय पुं [उड्डुवाटिक] भगवान् महावीर के एक गण का नाम (कप्प)। देखो उद्दवाइअ।

उड्डुहिअ देखो उडुहिअ (दे १, १३७)।

उड्डोय देखो उड्डुअ (राज)।

उड्ढ न [ऊर्ध्व] १ ऊपर, ऊँचा (अणु)। २ वमन, उलटी, 'उड्ढणिरोहो कुट्ठ' (वृह ३)। ३ वि. उत्तम, मुख्य 'अहत्ताए नो उड्ढत्ताए परिणमति' (भग ६, ३, आवम)। ४ खड़ा, दण्डायमान, 'खाणुव्व उड्ढदेहो काउस्सग्गं तु ठाइज्जा' (आव ६)। ५ ऊपर का, उपरितन (उवा)। °कंडूयग पु [°कण्डूयक] तापसो का एक सम्प्रदाय जो नाभि के ऊपर भाग मे ही खुजलाते हैं (भग ११, ६)। °काय पु [°काय] शरीर का उपरितन भाग (राज)। °काय पुं [°काक] काक, वायस, 'ते उड्ढ-काएहि पखज्जमाणा अवरेहि खज्जंति सणप्फ-एहिं' (सूअ १, ५, २, ७)। °गम वि [°गम] ऊपर जानेवाला (सुपा ४५६)। °गामि वि [°गामिन्] ऊपर जानेवाला (सम १५३)। °चर वि [°चर] ऊपर चलनेवाला, आकाश मे उडनेवाला (गृध्रादि) (आचा)। °दिसा स्त्री [°दिश्] ऊर्ध्व दिशा (उवा; आव ६)। °रेणु पु [°रेणु] परिमाण-विशेष, आठ

उक्खेविअ वि [उत्क्षेपित] जलाया हुआ (धूप) (भवि)।

उक्खोडिअ वि [उत्खोटित] १ उत्क्षिप्त, उडाया हुआ (पाअ)। २ छिन्न, उखाड़ा हुआ (दे १, १०५, १११)।

उग अक [उत् + गम्] उदित होना। उगइ (नाट)।

उग (अप) वि [उद्गत] उदित (पिंग)।

उगाहिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ (षड्)।

उगुणपन्न स्त्रीन [एकोनपञ्चाशत्] ऊनपचास, ४६ (सुज्ज १०, ६ टी)।

उगुणवीसा स्त्री [एकोनविंशति] उन्नीस, १६ (सुज्ज १०, ६ टी)।

उगुणुत्तर न [एकोनसप्तति] उनहत्तर, ६६, 'उगुणुत्तराइं' (सुज्ज १०, ६ टी)।

उगुनउइ स्त्री [एकोननवति] नवासी, ८६ (कम्म ६, ३०)।

उगुसीइ स्त्री [एकोनाशीति] उनासी, ७६ कम्म ६, ३०)।

उग्ग अक [उद् + गम्] उदित होना। उग्गे (पिंग)। वकृ उग्गंत, 'देव। पणयजणकल्लाणकंदुद्दविसट्टणुग्गतमिह-(?हि)। राणुगारिणो' (धर्मा ५)।

उग्ग सक [उद् + घाटय्] खोलना। उग्गइ (हे ४, ३३)।

उग्ग वि [उग्र] १ तेज, तीव्र, प्रबल (पउम ८३, ४)। २ पु क्षत्रिय की एक जाति, जिसको भगवान् आदिदेव ने आरक्षक-पद पर नियुक्त की थी (ठा ३, १)। °वई स्त्री [°वती] ज्योति -शास्त्र-प्रसिद्ध नन्दा-तिथि की रात (जं ७)। °सिरि पु [°श्रीक] राक्षस वश का एक राजा, स्वनाम-ख्यात एक लकेश (पउम ५, २६४)। °सेण पु [°सेन] मथुरा नगरी का एक यदुवंशीय राजा (णाया १, १६, अंत)।

उग्गंठ सक [उत् + ग्रन्थ्] खोलना, गाँठ खोलना। संकृ उग्गंठिऊण (हम्मीर १७)।

उग्गंध वि [उद्गन्ध] अत्यन्त सुगन्धित (गउड)।

उग्गच्छ } अक [उद् + गम्] उदय होना। उग्गच्छदि (शौ) (नाट)। उग्गमइ (वज्जा १६)। उग्गमेज (काल)। वकृ. उग्गमत, उग्गममाण (सुपा ३८, पण्ण १)।
उग्गम }

उग्गम पु [उद्गम] १ उत्पत्ति, उद्भव, 'तत्युग्गमो पसूई पभवो एमाई होंति एगट्ठा' (राज)। २ उदय, 'सूरुग्गमो' (सुर ३, २५०)। ३ उत्पत्ति से सम्बन्ध रखनेवाला एक भिक्षा दोष (ओघ ६५, ५३० भा, ठा १०)।

उग्गमण न [उद्गमन] उदय (सिरि ४२८, सुज्ज ६)।

उग्गमिय वि [उद्गमित] उपार्जित (निचू २)।

उग्गय वि [उद्गत] उत्पन्न, जात (आव ३)। २ उदित, उदय-प्राप्त (सुर ३, २४७)। ३ व्यवस्थित (राज)।

उग्गह सक [रचय्] रचना, बनाना, निर्माण करना। करना। उग्गहइ (हे ४,६४)।

उग्गह सक [उद् + ग्रह्] ग्रहण करना। उग्गहेइ (भग)। संकृ उग्गहित्ता (भग)।

उग्गह पु [अवग्रह] इन्द्रिय द्वारा होनेवाला सामान्य ज्ञान-विशेष (विसे)। २ अवधारण, निश्चय (उत्त)। ३ प्राप्ति, लाभ (आचू)। ४ पात्र, भाजन (पचा ३)। ५ साध्वियो का एक उपकरण (ओघ ६६६, ६७६)। ६ योनिद्वार (बृह ३)। ७ ग्रहण करने योग्य वस्तु (पण्ह १, ३)। ८ आश्रय, आवासस्थान, वसति (आचा), 'आहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हित्ता' (णाया १, १)। ९ वह वस्तु, जिसपर अपना प्रभुत्व हो, अधीन चीज (बृह ३)। १० देव या गुरु से जितनी दूरी पर रहने का शास्त्रीय विधान है उतनी जगह, मर्यादित भू-भाग, गुर्वादि की चारो तरफ की शरीर-प्रमाण जमीन, 'अणुजाणह मे मिउग्गहं' (पडि)। °णंत, °णंतग न [°नन्त, °क] जैन साध्वियो का एक गुह्याच्छादक वस्त्र, जांघिया, लँगोट, 'छादतोग्गहणंतं' (बृह ३)। °पट्ट, °पट्टग पुन [°पट्ट, °क] देखो पूर्वोक्त अर्थ, 'नो कप्पइ निग्गथाण उग्गहणंतग वा उग्गहपट्टग वा धारित्तए वा परिहरित्तए वा' (बृह ३)।

उग्गह पुं [अवग्रह] परोसने के लिए उठाया हुआ भोजन (सूअ २, २, ७३)।

उग्गहण न [अवग्रहण] इन्द्रिय द्वारा होनेवाला सामान्य ज्ञान, 'अत्थाणं उग्गहणं अवग्गहं' (विसे १७६)।

उग्गहिअ वि [रचित] १ निर्मित, विहित (कुमा)।

उग्गहिअ वि [अवगृहीत] १ सामान्य रूप से ज्ञात। २ परोसने के लिए उठाया हुआ (ठा १)। ३ गृहीत। ४ आनीत। ५ मुख मे प्रक्षिप्त, 'तिविहे उग्गहिए पण्णत्ते;—जं च उग्गिण्हइ, जं च साहरइ, जं च आसगम्मि पक्खिवति' (वव २, ८)।

उग्गहिअ वि [दे] निपुण-गृहीत, अच्छी तरह लिया हुआ (दे १, १०४)।

उग्गा सक [उद् + गै] १ ऊँचे स्वर से गान करना। २ वर्णन करना। ३ श्लाघा करना, 'उग्गाइ गाइ हसइ,
असवुडो सय करेइ कंदप्प।
गिहिकज्जचिंतगो वि य,
ओसन्ने देइ गेण्हइ वा' (उव)।
वकृ उग्गायंत (सुर ८, १८६)। कवकृ उग्गीयमाण (पउम २, ४१)।

उग्गाढ वि [उद्गाढ] १ अति गाढ़, प्रबल (उप ६८६ टी, सुपा ६४)। २ स्वस्थ, तन्दुरुस्त (बृह १)।

उग्गामिय वि [उद्गमित] ऊपर उठाया हुआ, ऊँचा किया हुआ (सुख १, १४)।

उग्गायत देखो उग्गा।

उग्गार } पु [उद्गार] १ वचन, उक्ति; 'ते पिसुणा जे ण सहंति णिग्गुणा परगुणुग्गारे' (गउड)। २ शब्द, आवाज, ध्वनि, 'तियसरहपेल्लियघणो णहदुंदुहिबहलगज्जिउग्गारो', 'अहिताडियकंसुग्गारझंझणापडिरवाहोओ' (गउड)। ३ डकार। ४ वमन, ओकाई (नाट, कस), 'जिणझाणालणडज्झंतमयणधूमुग्गारेण पिव केसकलावेणं' (स ३१३, निचू १०)। ५ जल का छोटा प्रवाह, 'उग्गालो छिछोली' (पाअ)। ६ रोमन्थ, पगुराना, 'रोमंथो उग्गालो' (पाअ)।
उग्गाल }

उग्गाल पु [दे. उद्गाल] पान की पिचकारी (पव ३८)।

उत्तण वि [उत्तृण] तृणवाली जमीन, 'खित्तखिलभूमिवल्लराइं उत्तणघडसंकडाइ डज्झतु' (पण्ह १, १)।
उत्तणुअ वि [उत्तनुक] अभिमानी, गर्विष्ठ (पाअ)।
उत्तत्त वि [उत्तप्त] अति-तप्त, बहुत गरम (सुपा ३७)।
उत्तत्त वि [दे] अध्यासित, आरूढ (षड्)।
उत्तत्थ वि [उत्त्रस्त] भय-भीत, त्रास-प्राप्त (पण्ह १, ३, पाअ)।
उत्तद्ध देखो उत्तरद्ध (पिंग)।
उत्तप्प वि [दे] १ गर्वित, अभिमानी (दे १, १३१, पाअ)। अधिक गुणवाला (दे १३१)।
उत्तप्प वि [उत्तप्त] देदीप्यमान (राज)।
उत्तम पुं [उत्तम] एक दिन का उपवास (सवोध ५८)।
उत्तम वि [उत्तम] १ श्रेष्ठ, प्रशस्त, सुन्दर (कप्प, प्रासू ६)। २ प्रधान, मुख्य (पचा ४)। ३ परम, उत्कृष्ट, 'उत्तमकट्ठपत्ते' (भग ७,६)। ४ अन्त्य, अन्तिम (राज)। ५ पु मेरु-पर्वत (इक)। ६ सयम, त्याग (दसा ५)। ७ राक्षस वंश का एक राजा, स्वनाम-ख्यात एक लकेश (पउम ५, २६४)। °ट्ठ पु [°र्थ] १ श्रेष्ठ वस्तु। २ मोक्ष (उत्त २)। ३ मोक्ष-मार्ग, 'जीवा ठिया परमट्ठम्मि' (पउम २, ८१)। ४ अनशन, मरण (ओघ ७)। °ण्ण वि [°र्ण] लेनदार (नाट)।
उत्तम वि [उत्तमस्] अज्ञान-रहित, 'तिविहतमा उम्मुक्का, तम्हा ते उत्तमा हुंति' (आवनि ५५, कप्प)।
उत्तमंग न [उत्तमाङ्ग] मस्तक, सिर (सम ५०, कुमा)।
उत्तमा स्त्री [उत्तमा] १ 'णायाधम्मकहा' का एक अध्ययन (णाया २,१)। २ इन्द्राणी (णाया २, १, ठा ४, १)।
उत्तमा स्त्री [उत्तमा] पक्ष की प्रथम रात्रि (सुज्ज १०, १४)।
उत्तम्म अक [उत् + तम्] खिन्न होना, उद्विग्न होना। उत्तम्मइ (स २०३)। वकृ. उत्तम्मंत, उत्तम्ममाण (नाट)। संकृ उत्तम्मिअ (नाट)।

उत्तम्मिअ वि [उत्तान्त] खिन्न, दिलगीर (दे १, १०२, पाअ)।
उत्तर अक [उत् + तॄ] १ बाहर निकलना। २ सक. पार करना। उत्तरिस्सामो (स १०१)। वकृ उत्तरंत,
'पेच्छति अणिमिसच्छा पहिआ
हलिअस्स पिट्ठपडुरिअं।
धूअं दुद्धसमुद्दुत्तरंतलच्छि
विअ सअण्हा' (गा ३८८),
'उत्तरंताण य मरु, खयंवारो तिमाए मरिउ-मारद्धो' (महा)। सकृ उत्तरित्तु (वि ५७७)। हेकृ. उत्तरित्तए (पि ५७८)।
उत्तर अक [अव + तॄ] उतरना, नीचे आना। वकृ उत्तरमाण, 'उत्तरमाणस्स तो विमाणाओ' (सुपा ३४०)। उत्तर वि [उत्तर] १ श्रेष्ठ, प्रशस्त (पउम ११८, ३०)। २ प्रधान, मुख्य (सूअ १, ३)। ३ उत्तर-दिशा मे रहा हुआ (ज १)। ४ उपरि-वर्त्ती, उपरितन (उत्त २)। ५ अधिक, अतिरिक्त, 'अट्ठुत्तर—' (औप, सूअ १, २)। ६ अवान्तर, भेद, शाखा, 'उत्तरपगइ' (कम्म १)। ७ ऊन का बना हुआ वस्त्र, कम्बल वगैरह (कप्प)। ८ न जवाब, प्रत्युत्तर (वव १)। ९ वृद्धि (भग १३, ४)। १० पु. ऐरवत क्षेत्र के बाईसवें भावी जिनदेव का नाम (सम १५४)। ११ वर्षा कल्प (कप्प)। १२ एक जैन मुनि, आर्य-महागिरि के प्रथम शिष्य (कप्प)। °कंचुय पु [°कञ्चुक] बख्तर-विशेष (विपा १, २)। °करण न [°करण] उपस्कार, सस्कार, विशेष-गुणाधान,
'खडियविराहियाण,
मूलगुणाण सउत्तरगुणाणं।
उत्तरकरणं कीरइ, जह
सगड-रहंग-गेहाणं' (आव ५)।
°कुरा स्त्री [°कुरु] स्वनाम-ख्यात क्षेत्र-विशेष, 'उत्तरकुराए णं भंते। कुराए केरिसए आगार-भावपडोयारे पण्णत्ते' (जीव ३)। °कुरु पुं [°कुरु] १ वर्ष-विशेष, 'उत्तरकुरुमाणु-सच्छरावो' (पि ३२८, सम ७०, पण्ह १, ४, पउम ३५, ५०)। २ देव-विशेष (जं २)। °कुरुकूड न [°कुरुकूट] १ माल्यवंत पर्वत का एक शिखर (ठा ९)। २ देव-विशेष (ज ४)। °कोडि स्त्री [°कोटि] संगीतशास्त्र-प्रसिद्ध गान्धार-ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७)। °गंधारा स्त्री [°गान्धारा] देखो पूर्वोक्त अर्थ (ठा ७)। °गुण पु [°गुण] शाखा गुण, अवान्तर गुण (भग ७, २)। °चावाला स्त्री [°चावाला] नगरी-विशेष (आवम)। °चूल [°चूड] गुरु-वन्दन का एक दोष, गुरु को वन्दन कर बडे आवाज से 'मत्थ-एण वंदामि' कहना (धर्म २)। °चूलिया स्त्री [°चूलिका] देखो अनन्तर-उक्त अर्थ (बृह ३; गुभा २५)। °ड्ढ न [°र्ध] पिछला आधा भाग उत्तरार्ध (ज ४)। °दिसा स्त्री [°दिश्] उत्तर दिशा (सुर २, २२८)। °द्ध न [°र्ध] पिछला आधा भाग (पिंग)। °पगइ. °पयडि स्त्री [°प्रकृति] कर्मो के अवान्तर भेद (उत्त ३३, सम ६६)। °पच्चत्थिमिल्ल पु [°पाश्चात्य] वायव्य कोण (पि)। °पट्ट पु [°पट्ट] बिछौना के ऊपर का वस्त्र (ओघ १५६ भा)। °पारणग न [°पारणक] उपवासादि व्रत की समाप्ति, पारण (काल)। °पुरच्छिम, °पुरत्थिम पुं [°पौरस्त्य] ईशान कोण, उत्तर और पूर्व के बीच की दिशा (णाया १, १, भग, पि ६०२)। °पोट्ठवया स्त्री [°प्रौष्ठपदा] उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र (सुज्ज ४)। °फग्गुणी स्त्री [°फाल्गुनी] उत्तर-फाल्गुनी नक्षत्र (कप्पू, पि ६२)। °बलिस्सह पु [°बलिस्सह] १ एक प्रसिद्ध जैन साधु (कप्प)। २ उत्तर बलिस्सह नामक स्थविर से निकाला हुआ एक गण, भगवान् महावीर का द्वितीय गण—साधु-सप्रदाय (कप्प, ठा ९)। °भद्दवया स्त्री [भाद्रपदा] नक्षत्र-विशेष (ठा ९)। °मंदा स्त्री [°मन्दा] मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७)। °महुरा स्त्री [°मथुरा] नगरी विशेष (दस)। °वाय पु [°वाद] उत्तरवाद (आचा)। °विक्किय, °वेउव्विय वि [°वैक्रिय] स्वाभाविक-भिन्न वैक्रिय, बनावटी वैक्रिय (कम्म १ कप्प)। °साला स्त्री [°शाला] १ क्रीडा-गृह। २ पीछे से बनाया हुआ घर। ३ वाहन-गृह हाथी-घोडा आदि बाँधने का स्थान, तबेला (निचू ८)। °साहग, °साहय वि [°साधक] विद्या, मन्त्र वगैरह का

उग्घाड सक [उद् + घाटय्] १ खोलना। २ प्रकट करना। ३ बाहर करना। उग्घाडइ (हे ४, ३३)। उग्घाडए (महा)। संकृ उग्घाडिऊण (महा)। कृ उग्घाडिअव्व (श्रा १६)। कवकृ उग्घाडिज्जंत (से ५, १२)।

उग्घाड पुं [उद्घाट] प्रकट, प्रकाश, 'किंनु कओ बहुएहिं उग्घाडो निययकम्माण' (सिरि ५२८)।

उग्घाढ देखो उग्घाड = उद् + घाटय्। हेकृ. 'तं जिणहरम्म दार केणवि नो मक्कियं उवाडेउं' (सिरि ५२८)।

उग्घाड वि [उद्घाट] १ खुला हुआ, अनाच्छादित (पउम ३६, १०७)। २ थोटा बन्द किया हुआ, 'उग्घाडकवाडउग्घाडणाए' (आव ४)। ३ व्यक्त, प्रकट। ४ परिपूर्ण, अन्यून, 'एत्थतरम्मि उग्घाडपोरिसीसूयगो वली पत्तो' (सुपा ६७)।

उग्घाडण न [उद्घाटन] १ खोलना (आव ४)। २ बाहर करना, बाहर निकालना (उप पृ ३९७)।

उग्घाडणा स्त्री [उद्घाटना] ऊपर देखो (आव ४)।

उग्घाडिअ वि [उद्घाटित] १ खुला हुआ। २ प्रकटित, प्रकाशित (से २, ३७)।

उग्घायण न [उद्घातन] १ नाश, विनाश (आचा)। २ पूज्य-स्थान, उत्तम जगह। ३ सरोवर मे जाने का मार्ग (आचा २, ३)।

उग्घार पुं [उद्घार] सिञ्चन, छिडकाव, 'विणितरुहिरुग्घार निवडिओ धरणिवट्टे' (स ५६८)।

उग्घिट्ठ } वि [उद्घृष्ट] सघृष्ट, 'नमिरसुर-
उग्घुट्ठ } किरीडुग्घिट्ठपायारविंदे' (लहुअ ४, से ६, ८०)।

उग्घुट्ठ वि [उद्घुष्ट] घोषित, उद्घोषित (सुर १०, १४, सण), 'अमरवहुग्घुट्ठजयजयारव' (महा)।

उग्घुट्ठ वि [दे] उच्छोल्छित, लुप्त, दूरीकृत, विनाशित (दे १, ६६), 'उरघालिरवेणीमुह-यणलग्गुग्घुट्ठमहिरआ जणअसुआ' (से ११, १०२)।

उग्घुस सक [मृज्] साफ करना, मार्जन करना। उग्घुसइ (हे ४, १०५)।

उग्घुस सक [उद् + घुष्] देखो उग्घोस। संकृ. उग्घुसिअ (नाट)।

उग्घुसिअ वि [मृष्ट] मार्जित, साफ किया हुआ (कुमा)।

उग्घोस सक [उद् + घोषय्] घोषणा करना, ढिंढोरा पिटवाना, जाहिर करना। उग्घोसेह (विपा १, १)। वकृ. उग्घोसेमाण (विपा १, १, णाया १, ५)। कवकृ. उग्घोसिज्जमाण (विपा १, २)।

उग्घोस पुं [उद्घोष] नीचे देखो (स्वप्न २१)।

उग्घोसणा स्त्री [उद्घोषणा] डुग्गी पिटवाना, ढिंढोरा पिटवा कर जाहिर करना (विपा १, १)।

उग्घोसिय वि [मार्जित] साफ किया हुआ, 'उग्घोसियसुनिम्मलं व आयंसमंडलतल' (पण्ह २, ५)।

उग्घोसिय वि [उद्घोषित] जाहिर किया हुआ, घोषित (भवि)।

उघूण वि [दे] पूर्ण, भरपूर (षड्)।

उचिय वि [उचित] योग्य, लायक, अनुरूप (कुमा, महा)। °ण्णु वि [°ज्ञ] विवेकी (उप ७६८ टी)।

उच्च न [दे] नाभि-तल (दे १, ८६)।

उच्च } वि [उच्च, °क, उच्चैस्] १ ऊँचा
उच्चअ } (कुमा)। २ उत्तम, उत्कृष्ट (हे २, १६४, सूअ १, १०)। °च्छद वि [°च्छन्दस्] स्वैर, स्वेच्छाचारी (पण्ह १, २)। °णागरी देखो °नागरी (कप्प)। °त्त न [त्व] १ ऊँचाई (सम १२, जी २८)। २ उत्तमता (ठा ४, १)। °त्तभयग, °त्तभयय पु [°त्वभृतक] जिससे समय और वेतन का इकरार कर यथासमय नियत काम लिया जाय वह नौकर (राज, ठा ४, १)। °त्तरिया स्त्री [°त्तरिका] लिपि-विशेष (सम ३५)। °त्थवणय न [°स्थापनक] लम्बगोलाकार वस्तु-विशेष, 'धण्णस्स ण अणगारस्स गीवाए अयमेयारूवे तवरूवलावन्ने होत्था, से जहानामए करगगीवा इवा कुडिया-गीवा इवा उच्चत्थवणए इवा' (अनु)। °च्चिआ स्त्री [°विचिका] ऊँचा-नीचा करना, जैसे-तैसे रखना,

'कह तपि तुइ ण णाअ जह सा
आसंदिआण बहुआणं।
काऊण उच्चवचिअं तुह
दंसणलेहला पडिआ'
(गा ६६७)।

°वाय पु [°वाद] प्रशसा, श्लाघा (उप ७२८ टी)। देखो उच्चा।

उच्चइअ वि [उच्चयित] एकत्रीकृत, इकट्ठा किया हुआ (काल)।

उच्चडिय वि [दे] ऊँचा चढाया हुआ (हम्मीर २८)।

उच्चतय पु [उच्चन्तक] दन्त-रोग, दांत मे होनेवाला रोग-विशेष (राज)।

उच्चपिअ वि [दे] १ दीर्घ, लम्बा, आयत (दे १, ११६)। २ आक्रान्त, दबाया हुआ, रोदा हुआ, 'सीसं उच्चपिअं' (तदु)।

उच्चड्डिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, ऊँचा फेंका हुआ (दे १, १०६)।

उच्चत्त वि [उत्त्यक्त] पतित, त्यक्त (पाअ)।

उच्चत्तवरत्त न [दे] १ दोनो तरफ का स्थूल भाग। २ अनियमित भ्रमण, अव्यवस्थित विवर्तन (दे १, १३६)। ३ दोनो तरफ से ऊँचा-नीचा करना (पाअ)।

उच्चत्थ वि [दे] दृढ, मजबूत (दे १, ९७)

उच्चदिअ वि [दे] मुषित, चुराया हुआ (षड्)।

उच्चप्प वि [दे] आरूढ, ऊपर बैठा हुआ (दे १, १००)।

उच्चय सक [उत् + त्यज्] त्याग देना, छोड देना। कृ उच्चयणिज्ज (पउम ६६, २८)।

उच्चय पु [उच्चय] १ समूह, राशि, 'रयणो-च्चय विसाल' (सुपा ३४, कप्प)। २ ऊँचा ढेर करना (भग ८, ६)। ३ नीवी, स्त्री के कटी-वस्त्र की नाडी (पाअ)। °वध पुं [°वन्ध] वन्ध-विशेष, ऊपर ऊपर रख कर चीजो को बांधना (भग ८, ६)।

उच्चय पु [अवचय] इकट्ठा करना, एकत्री-करण (दे २, ५६)।

पगाहि उत्तालं' (ठा ७), 'भीय दुयमुप्पिच्छ-त्थमुत्ताल च कमसो मुणेयव्व' (जीव ३)।

उत्ताल न [दे] लगातार रुदन, अन्तर-रहित क्रन्दन की आवाज (दे १, १०१)।

उत्तालण देखो उत्ताडण।

उत्तावल न [दे] उतावल, शीघ्रता। २ वि. शीघ्रकारी, आकुल, 'हल्लुत्तावलिगिहदासिवि-हियतक्कालकरणिज्जे' (सुर १०, १)।

उत्तास सक [उत् + त्रासय्] १ भयभीत करना, डराना। २ पीडना, हैरान करना। उत्तासेदि (शौ) (नाट)। कृ उत्तासणिज्ज (तदु)।

उत्तास पुं [उत्त्रास] १ त्रास, भय। २ हैरानी (कप्पू)।

उत्तासइत्तु वि [उत्त्रासयितृ] १ भय-भीत करनेवाला। २ हैरान करनेवाला (आचा)।

उत्तासणअ } वि [उत्त्रासनक] १ भयकर, उत्तासणग } उद्वेग-जनक। २ हैरान करनेवाला (पउम २२, ३५, णाया १, ८)।

उत्तासिय वि [उत्त्रासित] १ हैरान किया हुआ। २ भयभीत किया हुआ (सुर १, २४७, आव ४)।

उत्ताहिय वि [दे] उत्क्षिप्त, फेका हुआ (दे १, १०६)।

उत्ति स्त्री [उक्ति] वचन, वाणी (श्रा १४, सुपा २३, कप्पू)।

उत्तिंग पु [उत्तिङ्ग] १ गर्दभाकार कीट-विशेष (धर्म २, निचू १३)। २ चीटियो का विल, 'उत्तिगपणगदगमट्टीमक्कडासताणासकमणे' (पडि)। ३ चीटियो की सन्तान (दसा ३)। ४ तृण के अग्रभाग पर स्थित जल-बिंदु (आचा)। ५ वनस्पति-विशेष, सर्पच्छत्रा, गुजराती में जिसको 'विलाडी नी टोप' कहते हैं,

'गहणेसु न चिट्ठिज्जा,
बीएसु हरिएसु वा।
उदगम्मि तहा निच्च,
उत्तिगपणगेसु वा' (दस ८, ११)।

६ न. छिद्र, विवर, रन्ध्र (निचू १८, आचा २, ३, १, १६)। °लेण न [°लयन] कीट-विशेष का गृह—विल (कप्प)।

उत्तिंगपणग पुंन [उत्तिङ्गपनक] कीटिका-नगर, चीटियो का विल (दास ५, १, ५६)।

उत्तिट्ठ अक [उत् + स्था] १ उठाना। २ उदित होना। वकृ. 'उत्तिट्ठन्ते दिवायरे' (उत्त ११, २४)।

उत्तिण वि [उत्तृण] तृण-शून्य,

'झझावाउत्तिणवरविवर-
पलोट्टतसलिलधाराहि।
कुड्डलिहिओहिदिअह
रक्खइ अज्जा करअलेहि'
(गा १७०)।

उत्तिणिअ वि [उत्तृणित] तृण-रहित किया हुआ, 'झझावाउत्तिणिए घरम्मि' (गा १३५)।

उत्तिण्ण वि [उत्तीर्ण] १ बाहर निकला हुआ, 'उत्तिण्णा तलागाओ' (महा)। दिट्ठ च महा-सरवर, मज्जिओ जहाविहि तम्मि, उत्तिण्णो य उत्तरपच्छिमतीरे' (महा)। २ पार पहुँचा हुआ, पार-प्राप्त (स ३३२), 'उत्तिण्णा समुद्द, पत्ता वीयभय' (महा)। ३ जो कम हुआ हो, 'सचरइ चिरपडिग्गहलायण्णुत्ति-ण्णवेससोहग्गो' (गउड)। ४ रहित, 'सोहइ अदोसभावो गुणोव्व जइ होइ मच्छरुत्तिण्णो (गउड)। ५ निपटा हुआ, जिसने कार्य समाप्त किया हो वह, 'ण्हाणुत्तिण्णाए' (गा ५५५)। ६ उल्लघित, अतिक्रान्त (राज)।

उत्तिण्ण वि [अवतीर्ण] १ नीचे उतरा हुआ, 'रायादक्खो, तेण साहा गहिया, उत्तिण्णो, निराणदो किकायव्वविमूढो गओ च प' (महा)।

उत्तित्थ पुंन [उत्तीर्थ] कुपथ, अपमार्ग (भवि)।

उत्तिम देखो उत्तम (पड्, पि १०१, हे १, ४१, निचू १)।

उत्तिमग देखो उत्तमग (महा, पि १०१)।

उत्तिन्न देखो उत्तिण्ण (काप्र १४६, कुमा)।

उत्तिरिविडि } स्त्री [दे] भाजन वगैरह का उत्तिवडा } ऊँचा ढेर, भाजनो की थप्पी, गुजराती मे जिसको 'उतरेवड' कहते हैं (दे १, १२२), 'फोडेइ विरालो लोलयाए सारेवि उत्तिवड' (उप ७२८ टी)।

उत्तुंग वि [उत्तुङ्ग] ऊँचा, उन्नत (महा, कप्पू, गउड)।

उत्तुंड वि [उत्तुण्ड] उन्मुख, ऊर्ध्व-मुख (गउड)।

उत्तुण वि [दे] गर्व-युक्त, दृप्त, अभिमानी (दे १, ६६, गउड)।

उत्तुप्पिय वि [दे] स्निग्ध, चिकना (विपा १, ८)।

उत्तुय सक [उत् + तुद] पीडा करना, हैरान करना। वकृ उत्तुयत (विपा १, ७)।

उत्तुरिद्धि स्त्री [दे] गर्व, अभिमान। २ वि. गर्वित, अभिमानी (दे १, ६६)।

उत्तुर्वे वि [दे] दृष्ट, देखा हुआ (पड्)।

उत्तुहिअ वि [दे] उत्खाटित, छिन्न, नष्ट (दे १, १०५, १११)।

उत्तूह पुं [दे] किनारा-रहित इनारा, तट-शून्य कूप (दे १, ६४)।

उत्तेअ वि [उत्तेजस्] १ तेजस्वी, प्रखर। २ पु मात्रावृत्त का एक भेद (पिंग, नाट)।

उत्तेअण न [उत्तेजन] उत्तेजन (मुद्रा१६८)।

उत्तेइअ } वि [उत्तेजित] उद्दीपित, प्रोत्सा-उत्तेजिअ } हित, प्रेरित (दस ३, पाअ)।

उत्तेड } पुं [दे] बिन्दु (पिण्ड १६), उत्तेडय } 'मितो य एमो घडउत्तडएहिं' (म २६४)।

उत्थ न [उक्थ] १ स्तोत्र-विशेष। २ योग-विशेष (विसे)।

उत्थ वि [उत्थ] उत्पन्न, उत्थित (सुपा १६६, गउड)।

उत्थ (शौ) देखो उट्ठ = उत् + स्था। उत्थेदि (प्राकृ ६४)।

उत्थइय वि [अवस्तृत] १ व्याप्त (से ४, ३८)। २ प्रसारित, फैलाया हुआ। ३ आच्छादित, 'अच्छरगमउयमसूरगउच्छ- (? त्थ)-इय भद्दासणं रयावेइ' (णाया १, १, पि ३०६)।

उत्थंगिअ देखो उत्थघिअ = उत्तम्भित (पि ५०५)।

उत्थघ सक [उद् + नमय्] ऊँचा करना, उन्नत करना। उत्थघइ (हे ४, ३६)।

उत्थंघ सक [उत् + स्तम्भ्] १ उठाना। २ अवलम्बन देना। ३ रोकना (गउड, से ५, ६)। उत्थंघेइ (गा ७२४)।

उत्थघ सक [उत् + क्षिप्] ऊँचा फेंकना। उत्थघइ (हे ४, १४४)। संकृ. उत्थघिअ (कुमा)।

उत्थघ सक [रुध्] रोकना। उत्थंघइ (हे ४, १३३)।

उच्चिय देखो उच्चिय, 'तस्स सुम्रोच्चियपन्नत्तरोण संतोसमरणुपत्ता' (उप १६६ टी)।

उच्चिवलय न [दे] कलुषित जल, मैला पानी (पाम्र)।

उच्चुंच वि [दे] दृप्त, गर्विष्ठ, अभिमानी (दे १, ६६)।

उच्चुग वि [दे] अनवस्थित (षड्)।

उच्चुड अक [उत् + चुड्] अपसरण करना, हटना। वकृ उच्चुडत (गउड ७३३)।

उच्चुप्प मक [चट्] चढ़ना, आरूढ होना, ऊपर बैठना। उच्चुप्पइ (हे ४, २५६)।

उच्चुप्पिअ वि [दे चटित] आरूढ, ऊपर चढा हुआ (दे १, १००)।

उच्चुरण [दे] उच्छिष्ट, जूठा (षड्)।

उच्चुलउलिअ न [दे] कुतूहल से शीघ्र शीघ्र जाना (दे १, १२१)।

उच्चुल्ल वि [दे] १ उद्विग्न, खिन्न। २ अधिरूढ, आरूढ। ३ भीत, डरा हुआ (दे १, १२७)।

उच्चूड पुं [उच्चूड] निशान का नीचे लटकता हुआ शृंगारित वस्त्रांश (उव ४४६)।

उच्चूर वि [दे] नानाविध, बहुविध (राज)।

उच्चूल पु [अवचूल] १ निशान का नीचे लटकता हुआ शृङ्गारित वस्त्रांश (उप ४४६ टी)। २ औंधा-सिर—पैर ऊपर और सिर नीचे कर—खडा किया हुआ (विपा १, ६)।

उच्चे देखो उच्चिण। उच्चेइ (हे ४, २४१)। हेकृ. उच्चेउं (गा १५६)।

उच्चेय वि [उच्चेतस्] चिन्तातुर मनवाला (पाम्र)।

उच्चेल्लर न [दे] १ ऊसर भूमि। २ जघनस्थानीय केश (दे १, १३६)।

उच्चेव वि [दे] प्रकट, व्यक्त (दे १, ९७)।

उच्चोड पु [दे] शोषण, 'चदणुच्चोडकारी चडो देहस्स दाहो' (कप्पू, प्राप)।

उच्चोदय पु [उच्चोदय] चक्रवर्ती का एक देवकृत प्रासाद (उत्त १३, १३)।

उच्चोल पुं [दे] १ खेद, उद्वेग। २ नीवी, स्त्री के कटी-वस्त्र की नाडी (दे १, १३१)।

उच्छ पु [उक्षन्] बैल, वृषभ (हे २, १७)।

उच्छ पुं [दे] १ आंत का आवरण (दे १, ८५)। २ वि. न्यून, हीन, 'उच्छत्तं वा न्यूनत्वम्' (पण्ह २, १)।

उच्छअ पुं [उत्सव] क्षण, उत्सव (हे २, २२)।

°उच्छअ वि [पृच्छक] प्रश्न-कर्ता (गा ९०)।

उच्छइअ वि [उच्छदित] आच्छादित, 'पालंबउच्छइयवच्छयलो' (काल)।

उच्छंखल वि [उच्छृङ्खल] १ शृङ्खला-रहित, अवरोध-वर्जित, बन्धन-शून्य। २ उद्धत, निरंकुश (गउड)।

उच्छखलिय वि [उच्छृङ्खलित] अवरोधरहित किया हुआ, खुला किया हुआ, 'उच्छंखलियवरणाए सोहग्गं किंपि पवरणाए' (गउड)।

उच्छंग पुं [उत्सङ्ग] मध्य भाग, 'मउडुच्छंगपरिग्गहमियंकजोण्हावभासिणो पमुवइणो' (गउड, से १०,२)। २ क्रोड, गोद, कोरा (पाम्र), 'उच्छंगे णिविसेत्ता' (आवम)। ३ पृष्ठ देश (औप)।

उच्छंगिअ वि [उत्सङ्गित] कोरा, कोली या गोद में लिया हुआ (उप ६४८ टी)।

उच्छंगिअ वि [दे] आगे किया हुआ, आगे रखा हुआ (दे १, १०७)।

उच्छघ देखो उत्थघ (हे ४, ३६ टी)।

उच्छट पु [दे] झडप से की हुई चोरी (दे १, १०१, पाम्र)।

उच्छट्ट पु [दे] चोर, डाकू (दे १, १०१)।

उच्छडिअ वि [दे] चुराई हुई चीज, चोरी का माल (दे १, ११२)।

°उच्छण न [प्रच्छन] प्रश्न, पूछना (गा ५००)।

उच्छण्ण देखो उच्छन्न (हे १, ११४)।

उच्छत न [अपच्छत्र] १ अपने दोष को ढकने का व्यर्थ प्रयत्न, गुजराती मे 'ढाकपिछोडो'। २ मृषावाद, झूठ वचन (पण्ह १, २)।

उच्छन्न वि [उत्सन्न] छिन्न, खण्डित, नष्ट (कुमा, सुपा ३८४)।

उच्छप्प सक [उत् + सर्पय्] उन्नत करना, प्रभावित करना। उच्छप्पइ (सुपा ३५२)। वकृ. उच्छप्पंत (सुपा २६६)।

उच्छप्पण न [उत्सर्पण] उन्नति, अभ्युदय (सुपा २७१)।

उच्छप्पणा स्त्री [उत्सर्पणा] ऊपर देखो, 'जिणपवयणम्मि उच्छप्पणाउ कारेइ विविहाम्रो' (सुपा २०६, ६४६)।

उच्छल अक [उत् + शल्] १ उछलना, ऊँचा जाना। २ कूदना। ३ पसरना, फैलना। वकृ उच्छलंत (कप्प, गउड)।

उच्छलण न [उच्छलन] उछलना (दे १, ११८, ६, ११५)।

उच्छलिअ वि [उच्छलित] उछला हुआ, ऊँचा गया हुआ (गा ११७, ६२४, गउड)। २ प्रसृत, फैला हुआ, 'ता ताण वरगवो। उच्छालयो छलिउं पिव गध गोसासचदणवणस्स' (सुपा ३८५)।

उच्छलिर वि [उच्छलितृ] उछलनेवाला (धर्मवि १४, कुप्र ३७३)।

उच्छल्ल देखो उच्छल। उच्छल्लइ (पि ३२७), 'उच्छल्लति समुद्दा' (हे ४, ३२६)।

उच्छल्ल वि [उच्छल] उछलनेवाला (भवि)।

उच्छल्लणा स्त्री [दे] अपवर्तना, अपप्रेरणा, 'कण्णडप्पहारनिद्दयआरक्खियखरफरुसवयणतज्जणगलच्छल्लुच्छल्लणाहिं विमणा चारगवसहिं पवेसिया' (पण्ह १, ३)।

उच्छल्लिअ देखो उच्छलिअ (भवि)।

उच्छल्लिअ वि [दे] जिसकी छाल काटी गई हो वह, 'तरुणो उच्छल्लिआ य दंतीहिं' (दे १, १११)।

उच्छव देखो उच्छअ (कुमा)। २ उत्पेक (भवि)।

उच्छविअ न [दे] शय्या, बिछौना (दे १, १०३)।

उच्छह सक [उत् + सह्] उद्यम करना। वकृ उच्छह (दस ६, ३, ६)।

उच्छह अक [उत् + सह्] उत्साहित होना। वकृ उच्छहंत (भवि)।

उच्छाहय वि [उत्सहित] उत्साह-युक्त (सण)।

उच्छाइअ वि [अवच्छादित] आच्छादित, ढका हुआ (पउम ६१, ४२, सुर ३, ७१)।

उच्छाडिअ (अप) वि [अवच्छादित] ढका हुआ (भवि)।

उच्छाण देखो उच्छ = उक्षन् (प्रामा)।

उच्छाय पुं [उच्छ्राय] उत्सेध, ऊँचाई (ठा ७)।

['वस्ति] दृति, पानी भरने का मशक (णाया १, १८)। °सिहा स्त्री [°शिखा] वेला (ठा १०)। °सीम पु [°सीमन्] पर्वत-विशेष (इक)।

उदग्ग वि [उदग्र] १ सुन्दर, मनोहर; 'तत्तो दट्ठु तीए रूव तह जोव्वणमुदग्गं' (सुर ,१, १२२)। २ उग्र, उत्कट, प्रखर (ठा ४, २, णाया १, १, सत्त ३०)। ३ प्रधान, मुख्य; 'उदग्गचारित्ततवो महेसी' (उत्त १३)।

उदड्ढ पुं [उद्दग्ध] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २७)।

उदत्त वि [उदात्त] उदार, अकृपण (संबोध ३८)।

उदत्त वि [उदात्त] स्वर-विशेष, जो उच्च स्वर से बोला जाय वह स्वर (विसे ८५२)।

उदन्ना स्त्री [उदन्या] तृषा, तरस, पिपासा (उप १०३१ टी।

उदय देखो उदग (णाया १, ८, सम १५३, उप ७२८ टी, प्रासू ७२, पएण १)।

उदय पु [उदय] लाभ (सूअ २, ६, २४)।

उदय पु [उदय] १ अभ्युदय, उन्नति, 'जो एवविहंपि कज्ज आयरइ, सो किं वभदत्त-कुमारस्स उदय इच्छइ ?' (महा)। २ उत्पत्ति (विसे)। ३ विपाक, कर्म-परिणाम,

'बहुमारणअब्भक्खाणदाण
परधरविलोवणाईणं।
सव्वजहन्नो उदओ दसगुणिओ
एक्कसि कयाण' (उव)।

४ प्रादुर्भाव, उद्गम, 'आइच्चोदए चंदगहा इव निप्पभा जाया सुरा' (महा),

'उदयम्मिवि अत्थमणेवि
धरइ रत्तत्तणं दिवसनाहो।
रिद्धीसु आवईसुवि
तुल्लच्चिय गुरण सप्पुरिसा।'
(प्रासू १२)।

५ भरतक्षेत्र के भावी सातवें जिनदेव (सम १५३)। ६ भरतक्षेत्र मे होनेवाले तीसरे जिनदेव का पूर्व-भवीय नाम (सम १५४)। ७ स्वनाम-ख्यात एक राजकुमार (पउम २१, ५६)। °ायल पुं [°ाचल] पर्वत-विशेष, जहां सूर्य उदित होता है (सुपा ८८)।

उदयत देखो उदि।

उदयण पुं [उदयन] १ राजा सिद्धराज का प्रसिद्ध मंत्री (कुप्र १४३)।

उदयण पु [उदयन] १ एज राजकुमार, कोशाम्बी नगरी के राजा शतानीक का पुत्र (विपा १, ५)। २ एक विख्यात जैन राजा (कप्प)। ३ न. उन्नति, उदय। ४ वि. उन्नत होनेवाला, प्रवर्धमान (ठा ५, ३)।

उदर न [उदर] १ पेट, जठर (सूअ १, ८)। २ पेट की बीमारी, 'खयजरवणलूआसामसो-सोदराणि' (लहुअ १५)।

उदरभरि वि [उदरम्भरि] स्वार्थी, अकेलपेटू (पि ३७६)।

उदरि वि [उदरिन्] पेट की बीमारीवाला (पएह २, ५)।

उदरिय वि [उदरिक] ऊपर देखो (विपा १, ७)।

उदवाह वि [उदवाह] १ पानी वहन करने-वाला, जल-वाहक। २ पु छोटा प्रवाह (भग ३, ६)।

उदसी [दे] [उदश्वित् ?] तक

उदहि पुं [उदधि] १ समुद्र, सागर (कुमा)। २ भवनपति देवो की एक जाति, उदधिकुमार (पएह १, ४)। °कुमार पुं [°कुमार] देवो की एक जाति (पएण १)। देखो उअहि।

उदाइ पुं [उदायिन्] १ एक जैन राजा, महाराजा कोणिक का पुत्र, जिसको एक दुष्ट ने जैन साधु बनकर धर्मच्छल से मारा था और जो भविष्य मे तीसरा जिनदेव होगा (ठा ६, ती)। २ पु राजा कूणिक का पट्ट-हस्ती (भग १६, १)।

उदाइण देखो उदायण (कुलक २३)।

उदात्त देखो उदत्त (णदि १७४ टी)।

उदायण पुं [उदायन] सिन्धु-देश का एक राजा, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (ठा ८, भग ३, ६)।

उदार देखो उराल (उप पृ १०८)।

उदासि वि [उदासिन्] उदास, उदासीन। °व न [°त्व] औदासीन्य (रमा, स ४५६)।

उदासीण वि [उदासीन] १ मध्यस्थ, तटस्थ (पएह १, २)। २ उपेक्षा करनेवाला (ठा ६)।

उदाहड वि [उदाहृत] कथित, दृष्टान्तित (राज)।

उदाहर सक [उदा + हृ] १ कहना। २ दृष्टान्त देना। उदाहरति (पि १४१), 'भासं मुसं नेव उदाहरिज्जा' (सत्त ४३)। भूका. उदाहु (आचा; उत्त १४, ६), उदाहू (सूअ १, १२, ४)। वकृ. उदाहरंत (सूअ १, १२, ३)।

उदाहरण न [उदाहरण] १ कथन, प्रति-पादन। २ दृष्टान्त (सूअ १, १२, विसे)।

उदाहिय वि [उदाहृत] १ कथित, प्रति-पादित। २ दृष्टान्तित (आचा, णाया १,८)।

उदाहिय वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका गया (पड्)।

उदाहु देखो उदाहर।

उदाहु अ [उताहो] अथवा, या (उवा)।

उदाहू देखो उदाहर।

उदाहो देखो उदाहु = उताहो (स्वप्न ७०)।

उदि अक [उद् + इ] १ उन्नत होना। २ उत्पन्न होना। (विसे १२९६, जीव ३)। वकृ. उदयंत (भग, पउम ८२, ५६, सुपा १९८)। कवकृ उदिज्जत (विसे ५३०)।

उदिक्खिअ वि [उदीक्षित] अवलोकित (दे ६, १४४)।

उदिण्ण वि [उदीच्य] उत्तर-दिशा मे उत्पन्न (आवम)।

उदिण्ण } वि [उदीर्ण] १ उदित, उदय-प्राप्त
उदिन्न } (ठा ५), 'इक्को वि इक्को विसओ उदिन्नो' (सत्त ५२)। २ फलोन्मुख (कर्म) (पएण १६, भग)। ३ उत्पन्न, 'जहा उदिएणो नए्णु कोवि वाही' (सत्त ९, श्रा २७)। ४ उत्कट, प्रबल, 'अणुत्तरोववाइयाण भंते ! देवा किं उदिएण मोहा, उवसतमोहा, खीणमोहा ?' (भग ५, ४)।

उदिय वि [उदित] १ उदित, उद्गत (सम ३६)। २ उन्नत (ठा ४)। ३ उक्त, कथित (विसे ३५७६)।

उदीण वि [उदीचीन] १ उत्तर दिशा से सबन्ध रखनेवाला, उत्तर दिशा मे उत्पन्न (आचा, पि १६५)। °पाईणा स्त्री [°प्राचीना] ईशान-कोण (भग ५, १)।

उदीणा स्त्री [उदीचीना] उत्तर दिशा (ठा १, १)।

उच्छेवण न [उत्क्षेपण] ऊपर देखो (से ६, २५)।
उच्छेवण न [दे] घृत, घी (दे १, ११६)।
उच्छेह पुं [उत्सेध] ऊँचाई (दे १, १३०)।
उच्छोडिय वि [उच्छोटित] छुड़ाया हुआ, मुक्त किया हुआ, 'उच्छोडिय-ववो सो रन्ना भणिओ य भद्द । उववसिमु' (सुर १, १०५), 'पासट्ठियपुरिसेहिं तक्खणमुच्छोडिया य से वंवा' (सुर २, ३६)।
उच्छोभ वि [उच्छोभ] १ शोभा-रहित। २ न. पिशुनता, चुगली (राज)।
उच्छोल सक [उत् + मूलय्] उन्मूलन करना, उखाड़ना। वकृ. उच्छोलत (राज)।
उच्छोल सक [उत् + क्षालय्] प्रक्षालन करना, धोना। वकृ. उच्छोलत (निचू १७)। प्रयो., वकृ उच्छोलावंत (निचू १६)।
उच्छोलण न [उत्क्षालन] प्रभूत जल से प्रक्षालन, 'उच्छोलणं च कक्कं च तं निज्ज परियाणिया' (सूअ १, ६, औप)।
उच्छोलणा स्त्री [उत्क्षालना] प्रक्षालन (दस ४)।
उच्छोला स्त्री [दे] प्रभूत जल, 'नहदंतकेशरोमे जमेइ उच्छोलवोयणो अजओ' (उव)।
उच्छोलित्तु वि [उत्क्षालयितृ] डुबोनेवाला, निमग्न करनेवाला (सूअ २, २, १८)।
उजु देखो उज्जु (आचा, कप्प)।
उजुअ देखो उज्जुअ (नाट)।
उज्ज देखो ओय = ओजस् (कप्प)।
उज्ज न [ऊर्ज] १ तेज, प्रताप। २ बल (कप्प)।
उज्जअणी } स्त्री [उज्जयनी, °यिनि]
उज्जइणी } नगरी-विशेष, मालव देश की प्राचीन राजधानी, आजकल भी यह 'उज्जैन' नाम से प्रसिद्ध है (चारु ३९, पि ३८६)।
उज्जगल न [दे] वलात्कार, जबरदस्ती। २ वि दीर्घ, लम्बा (दे १, १३५)।
उज्जगरय पु [उज्जागरक] १ जागरण, निद्रा का अभाव,

'जत्थ न उज्जगरओ,
जत्थ न ईसा विसूरणं माणं।
सब्भावचाडुयं जत्थ,
नत्थि नेहो तहिं नत्थि'
(वज्जा ६८)।

उज्जग्गिर न [उज्जागर] जागरण, निद्रा का अभाव (दे १, ११७, वज्जा ७४)।
उज्जगुज्ज वि [दे] स्वच्छ, निर्मल (दे १ ११३)।
उज्जड वि [दे] उजाड़, वसति-रहित (दे १, ६६),

'उक्किण्णरयभरोणयत-
लज्जरभूविसट्टविलविसमा
थोउज्जडक्कविडवा इमाओ
ता उन्दरथलीओ' (गउड)।

उज्जणिअ वि [दे] वक्र, टेढ़ा (दे १, १११)।
उज्जम अक [उद् + यम्] उद्यम करना, प्रयत्न करना। उज्जमइ (धम्म १४)। उज्जमह (उव)। वकृ. उज्जमंत, उज्जममाण (पण्ह १, ३), 'ण करेइ दुक्खमोक्ख उज्जममाणावि संजमतवेसु' (सूअ १, १३)। कृ उज्जमिअव्व, उज्जमेयव्व (सुर १४, ८३, सुपा २८७, २२४)। हेकृ. उज्जमिउं (उव)।
उज्जम पु [उद्यम] उद्योग, प्रयत्न (उव, जी ५०, प्रासू ११५)।
उज्जमण (अप) न [उद्यापन] उद्यापन, व्रत-समाप्ति-कार्य (भवि)।
उज्जमि वि [उद्यमिन्] उद्योगी (कुप्र ४१६)।
उज्जमिय (अप) वि [उद्यापित] समापित (व्रत) (भवि)।
उज्जम्ह अक [उत् + जृम्भ्] जोर से जँभाई लेना। उज्जम्हइ (प्राकृ ६४)।
उज्जय हि [उद्यत] उद्योगी, उद्युक्त, प्रयत्न-शील (पाअ, काप्र १६६, गा ४४८)। °मरण न [°मरण] मरण-विशेष (आचा)।
उज्जयंत पु [उज्जयन्त] गिरनार पर्वत, 'इय उज्जयंतकप्पं, अवियप्पं जो करेइ जिणभत्तो' (ती, विवे १८), 'ता उज्जयंतसत्तुंजएसु तित्थेसु दोसुवि जिणिंदे' (मुणि १०६७५)।
उज्जर वि [दे] १ मध्य-गत, भीतर का। २ पुं निर्जरण, क्षय (तदु ४१)।
उज्जल अक [उद् + ज्वल्] १ जलना। २ प्रकाशित होना, चमकना। उज्जलति (विक्र ११४)। वकृ. उज्जलंत (णादि)।
उज्जल वि [उज्ज्वल] १ निर्मल, स्वच्छ (भग ७, ८, कुमा)। २ दीप्त, चमकीला (कप्प, कुमा)।
उज्जल वि [दे] देखो उज्जल्ल (हे २, १७४ टि)।
उज्जलण वि [उज्ज्वलन] चमकीला, देदीप्यमान, 'जालुज्जलणगअवरव कत्थइ पयत अइवेगचंचल सिहिं' (कप्प)।
उज्जलिअ पुं [उज्ज्वलिन] तीसरी नरक-भूमि का सातवाँ नरकेन्द्रक—नरक-स्थान विशेष (देवेन्द्र ८)।
उज्जलिअ वि [उज्ज्वलित] १ उद्दीप्त, प्रकाशित (पउम ११८, ८८, औप)। २ ऊँची ज्वालाओं से युक्त (जीव ३)। ३ न. उद्दीपन (राज)।
उज्जल्ल वि [दे] स्वेद-सहित, पसीनावाला, मलिन, 'मुंडा कडूविणट्ठगा उज्जल्ला असमाहिया' (सूअ १, ३)। २ बलवान, बलिष्ठ (हे २, १७४)।
उज्जल्ल न [औज्ज्वल्य] उज्ज्वलता (गा ६२६)।
उज्जल्ला स्त्री [दे] बलात्कार, जबरदस्ती (दे १, ६७)।
उज्जव अक [उद् + यत्] प्रयत्न करना। वकृ. 'सुट्ठुवि उज्जवमाण पंचेव करंति रित्तय समणं' (उव)।
उज्जवण देखो उज्जावण (भवि)।
उज्जह सक [उद् + हा] प्रेरणा करना। सकृ उज्जहित्ता (उत्त २७, ७)।
उज्जाअर } पुं [उज्जागर] जागरण, निद्रा
उज्जागर } का अभाव (गा ४८७, वज्जा ७६)।
उज्जाडिअ वि [दे] उजाड़ किया हुआ (भवि)।
उज्जाण न [उद्यान] उद्यान, बगीचा, उपवन (अणु, कुमा)। °जत्ता स्त्री [°यात्रा] गोष्ठी, गोठ (णाया १, १)। °पालअ, °वाल वि [पालक, °पाल] बगीचा का रक्षक, माली (सुपा २०८, ३०५)।
उज्जाणिअ वि [औद्यानिक] उद्यान-संबंधी, बगीचा का (भग १४, १)।
उज्जाणिअ वि [दे] निम्नीकृत, नीचा किया हुआ (दे १, ११३)।
उज्जाणिआ } स्त्री [औद्यानिका] गोष्ठी,
उज्जाणिगा } गोठ, 'उज्जाणं जत्थ लोगो उज्जाणिआए वच्चइ' (निचू ८, स १५१)।

उद्धाव देखो उद्धा ।
उद्धवण न [उद्धावन] नीचे देखो (श्रा १)।
उद्धावणा स्त्री [उद्धावना] १ प्रबल प्रवृत्ति । २ दूर-गमन, दूर क्षेत्र में जाना (धर्म ३)। ३ कार्य की शीघ्र सिद्धि (वव १)।
°उद्धि देखो वुद्धि (षड्)।
उद्धि स्त्री [दे] गाडी का एक अवयव, गुजराती 'उध' (सुज १०, ८ टी, ठा ३, २ टी-पत्र १३३)।
उद्धिअ देखो उद्धरिअ=उद्धृत (श्रा ४०, औप, राय, वव १, औप, पण्ह २८)।
उद्धीमुह वि [ऊर्ध्वीमुख] मूँह ऊँचा किया हुआ (चद ४)।
उद्‌धुवलिय वि [दे] धुँधलाया हुआ (सण)।
उद्‌धुणिय देखो उद्धुय (सण)।
उद्‌धुम सक [पृ] पूर्ण करना, पूरा करना। उद्धुमइ (हे ४, १५६)।
उद्‌धुमा सक [उद् + ध्मा] १ आवाज करना। २ जोर से धमनी को चलाना। उद्धुमाइ उद्धुमाअइ (षड्, प्रामा)।
उद्‌धुमाइअ वि [उद्‌ध्मापित] ठढा किया हुआ, निर्वापित (से १, ८)।
उद्‌धुमाय वि [दे] १ परिपूर्ण, 'मायाइ उद्धुमाया' (कुमा), 'पडिहत्थमुद्धुमाय आहिरेइयं च जाण आउण्णे' (णादि)। २ उन्मत्त, 'मअरदरसुद्धुमाअमुहलमहुअरं' (मे ६, ११)।
उद्‌धुय वि [उद्‌धूत] १ पवन से उडा हुआ (से ७, १४)। २ प्रसृत, फैला हुआ, 'गधुद्धुयाभिरामे' (ओप)। ३ प्रकम्पित, 'वाउद्धुयविजयवेजयनी' (जीव ३)। ४ उत्कट, प्रबल (मम १३७)। ५ व्यक्त, प्रकट (कप्प)।
उद्‌धुर वि [उद्‌धुर] १ ऊँचा, उच्च, 'उद्धुर उच्च' (पाअ)। २ प्रचण्ड, प्रबल (सुर ३, ३६, १२, १०६)।
उद्‌धुव्वत
उद्‌धुव्वामाण } देखो उद्‌धू
उद्‌धुमिय वि [उद्‌धुषित] १ रोमाञ्च, 'अन्नोन्नजपिएहि हसिउद्धुसिएहि खिप्पमाणो य' (उव)। २ वि रोमाञ्चित, पुलकित (दे १, ११५, २, १००), 'उद्धुसियरोमकूवो सीयलअनिलेण संकुइयगत्तो' (सुर २, १०१), 'उद्धुसियकेसरसढ' (महा।
उद्‌धू सक [उद् + धू] १ कँपाना, चलाना। २ चामर वगैरह वीजना, पखा करना। कवकृ उद्‌धुव्वंत, उद्‌धुव्वमाण (पउम २, ४०, कप्प)।
उद्‌धूणिय देखो उद्‌धुय (सण)।
उद्‌धूद (शौ) देखो उद्‌धुय (चारु ३५)।
उद्‌धूल सक [उद् + धूलय्] १ व्याप्त करना। २ धूलि लगाना। उद्‌धूलेइ (हे ४, २९)।
उद्‌धूलण न [उद्‌धूलन] धूलि को अङ्ग पर लगाना,
'जारमसाणसमुब्भवभूइसुहप्फमसिज्जिरंगीए।
ण समप्पइ णवकावालिआइ उद्धूलणारंभो।'
(गा ४०८)।
उद्‌धूलिय वि [उद्‌धूलित] १ धूलि से लपेटा हुआ। २ व्याप्त, 'तिमिरोद्धूलिअभवण' (कुमा)।
उद्‌धूवणिया स्त्री [उद्‌धूपनिका] धूप देना,
'केवि हु विरालतन्नयपुरीसमीसेहिं गुग्गुलाईहिं।
उव्वरियम्मि खिवित्ता उद्धूवणिय पयच्छंति।'
(सुर १४, १७४)।
उद्‌धूविअ वि [उद्‌धूपित] जिसको धूप किया गया हो वह (विक्र ११३)।
उद्धोस पु [उद्धर्ष] उल्लास, ऊँचा होना (सट्टि ६५), 'ज ज इह मुहुमवुद्धीए चिंतिज्जइ त सव्व रोमुद्धोस जणेइ मह अम्मो' (सुपा ६४)।
उन्न न [ऊर्ण] ऊन, भेड या बकरी के रोम। °मय वि [°मय] ऊन का बना हुआ,
'गोवालियाण विंद नच्चावइ फारमुत्तियाहारं।
उन्नमयवासनिवमणपीणुन्नयथणहराभोग ॥'
(सुपा ४३२)।
उन्न (अप) वि [विषण्ण] विषाद-प्राप्त, खिन्न (षड्)।
उन्नइ देखो उण्णइ (काल, सुपा २५७, प्रासू २८, सार्ध ३४)।
उन्नइज्जमाण देखो उन्नी।
उन्नइय वि [उन्नीत] ऊँचा लिया हुआ (पउम १०५, ५७)।
उन्नंद सक [उद् + नन्द्] अभिनन्दन करना। कवकृ 'हिययमालासहस्सेहि उन्नंदिज्जमाणे' (कप्प)।
उन्नय देखो उण्णय (सुपा ४७६, मम ७१, कप्प)।
उन्ना देखो उण्णा। °मय वि [°मय] ऊन का बना हुआ (सुपा ६४१)।
उन्नाडिय न [उन्नाटित] हर्ष-द्योतक आवाज (स ३७६)।
उन्नाम पु [उन्नाम] १ ऊँचाई। २ अभिमान, गर्व (सम ७१)।
उन्नामिअ वि [उन्नमित] ऊँचा किया हुआ (पाअ, महा, स ३७७)।
उन्नालिअ वि [दे] देखो उण्णालिअ, 'उन्नालिअ उन्नामिअ' (पाअ)।
उन्नाह पु [उन्नाह] ऊँचाई (पाअ)।
उन्निअ देखो उण्णिअ=और्णिक (ओघ ७०५)।
उन्निक्खम सक [उन्नि + खन्] उखाडना, उन्मूलन करना। भवि. उन्निक्खिस्सामि (सूअ २, १, ६)। कृ उन्निक्खेयव्व (सूअ २, १, ७)।
उन्निक्खमण न [उन्निष्क्रमण] दीक्षा छोड कर फिर गृहस्थ होना, साधुपन छोडकर फिर गृहस्थ बनना (उप १३० टी, ३६६)।
उन्नी देखो उण्णी। कवकृ. उन्नइज्जमाण (कप्प)।
उन्हाल (अप) पु [उष्णकाल] ग्रीष्म ऋतु (भवि)।
उपक्खर न [उपस्कर] घर का उपकरण (उत्त ६, ६)।
उपंत न [उपान्त] १ पिछला या पीछे का भाग। २ वि समीपस्थ (गा ६६३)।
उपरिं
उपरि } देखो उवरि (विसे १०२१, षड्)।
उपरिल्ल देखो उवरिल्ल (षड्)।
उपवज्जमाण देखो उववाय=उप + वादय्।
उपसप्प देखो उवसप्प। उपसप्पइ (षड्)। सकृ उपसप्पिय (नाट)।
उपाणहिय पुंस्त्री [उपानत्] जूता, 'अन्नदिणे जपाणेपाणहिए मुत्तमारुढा' (सुपा ३६२), 'तह तं निउपाणहियाउवि वाहिस्स' (सुपा ३६२)।
उप्प देखो ओप्प=अर्पय्। उप्पेइ (पि १०४, हे १, २६६)।

उज्झरिअ वि [दे] टेढी नजर से देखा हुआ। २ विक्षिप्त। ३ क्षिप्त, फेंका हुआ। ४ परित्यक्त, उज्झित (दे १, १३३)।
उज्झल वि [दे] प्रबल, बलिष्ठ (षड्)।
उज्झलिअ वि [दे] १ प्रक्षिप्त, फेंका हुआ। २ विक्षिप्त (षड्)।
उज्झस पु [दे] उद्यम, उद्योग, प्रयत्न (दे १, ९५)।
उज्झसिअ वि [दे] उत्कृष्ट, उत्तम (षड्)।
°उज्झा देखो अउज्झा (उप पृ ३७४)।
उज्झाय पु [उपाध्याय] विद्या-दाता गुरु, शिक्षक, पाठक (महा, सुर १, १८०)।
उज्झासि वि [उद्भासिन्] चमकनेवाला, देदीप्यमान, 'ककरणुज्झासिहत्था' (रभा)।
उज्झिखिअ न [दे] १ वचनीय, लोकापवाद। २ वि निन्दनीय। ३ कथनीय (दे ३, ५५)।
उज्झिय वि [उज्झित] १ परित्यक्त, विमुक्त (कुमा)। २ भिन्न (श्राव ४)। ३ न परित्याग (अणु)। °थ पु [°क] एक सार्थवाह का पुत्र (विपा १, २)।
उज्झिय वि [दे] १ शुष्क, सूखा हुआ। २ निम्नीकृत, नीचा किया हुआ (षड्)।
उज्झिया स्त्री [उज्झिता] एक सार्थवाह-पत्नी (णाया १, ७)।
उट्ट पुस्त्री [उष्ट्र] ऊँट, करभ (विपा १, ६, हे २, ३४, उवा)। स्त्री उट्टी (राज)।
उट्टार पु [अवतार] घाट, तीर्थ, जलाशय का तट,

'अह ते तुरउट्टारे वहुभडमयरे सुसत्थकमलवणे।
लीलायति जहिच्छ समरतलाए कुमारगया'
(पउम ९८, ३०)।

उट्टिगा देखो उट्टिया (धर्मसं ७८)।
उट्टिय } वि [औष्ट्रिक] ऊँट सम्बन्धी। ऊँट
उट्टियय } के रोम्रो का बना हुआ (ठा ५, ३, ओघ ७०९)। ३ पुं भृत्य, नौकर (कुमा)। ४ घडा, घट (उवा)।
उट्टिया स्त्री [उष्ट्रिका] घडा, घट, कुम्भ (विपा १,६, उवा)। °समण पु [°श्रमण] आजीविक-मत का साधु, जो वडे घडे में बैठ कर तपस्या करता है (औप)।
उट्ठ अक [उत् + स्था] उठना, खडा होना। उट्ठइ (हे ४,१७, महा)। उट्ठेइ (पि ३०९)। वकृ उट्ठत (गा ३८२, सुपा २९९), उट्ठिंत (सुर ८, ४३, १३, ५३)। सकृ. उट्ठाय, उट्ठित्तु, उट्ठित्ता, उट्ठेत्ता (राज, आचा, पि ५८२)। हेकृ उट्ठिउ (उप पृ २५८)।
उट्ठ वि [उत्थ] उत्थित, उठा हुआ (ओघ ७० उवा)। °वइस अप [°पवेश] उठ-बैठ (हे ४, ४२३)।
उट्ठ पुं [ओष्ठ] ओठ, अधर (मम १२५, सुपा ५२३)।
उट्ठ पु [उष्ट्र] जलचर जतु-विशेष (सूम्र १, ७, १५)।
उट्ठण देखो उट्ठाण (धर्मवि १३०)।
उट्ठभ सक [अव + स्तभ्] १ आलम्बन देना, सहारा देना। २ आक्रमण करना कर्म उट्ठब्भइ (हे ४, ३९५)। सकृ 'उट्ठभिया एगया काय' (आचा १, ९, ३, ११)।
उट्ठवण न [उत्थापन] उत्थापन, ऊँचा करना, उठाना (ओघ २१४, दे १, ८२)।
उट्ठविय वि [उत्थापित] उत्पाटित, उठाया हुआ, खडा किया हुआ, 'सा मणिय उट्ठविया भणइ किमागमणकारणं सुयहे' (सुर ६, १६०)।
उट्ठा देखो उट्ठ = उत् + स्था (प्रामा)।
उट्ठा स्त्री [उत्था] उत्थान, उठान, 'उट्ठाए उट्ठेइ' (णाया १, १, औप)।
उट्ठाइ वि [उत्थाइन्] उठनेवाला (आचा)।
उट्ठाइअ वि [उत्थित] १ जो तैयार हुआ हो, प्रगुण (पउम १२, ९६)। २ उत्पन्न, उत्थित (स ३७९)।
उट्ठाइअ देखो उट्ठाविअ (उवा)।
उट्ठाण न [उत्थान] १ उठान, ऊँचा होना (उव), 'मग्रसलिलेहिं घडासु अ वोच्छिज्जइ पसरिअ महिरउट्ठाणं' (से १३, ३७)। २ उद्भव, उत्पत्ति (णाया १,१४)। ३ आरम्भ, प्रारम्भ (भग १५)। ४ उद्वसन, वाहर निकलना (णदि)। °सुय न [°श्रुत] शास्त्र-विशेष (णदि)।
उट्ठाय देखो उट्ठ = उत् + स्था।
उट्ठाव सक [उत् + स्थापय्] उठाना। उट्ठावेइ (महा)।
उट्ठावण देखो उट्ठवण (कस)।
उट्ठावण देखो उवट्ठावण, 'पव्वावणाविहिमुट्ठावणं च अज्जाविहिं निरवसेसं' (उव)।
उट्ठावणा देखो उवट्ठावणा (भत्त २५)।
उट्ठाविअ वि [उत्थापित] १ उठाया हुआ, खडा किया हुआ (नाट)। २ उत्पातित, 'तुमए उट्ठाविओ कली एम' (उप ६४८ टी)।
उट्ठिउ }
उट्ठित }
उट्ठित्ता } देखो उट्ठ = उत् + स्था।
उट्ठित्तु }
उट्ठिय वि [उत्थित] उत्थित, खडा हुआ (सुर ३, ९९)। २ उत्पन्न, उद्भूत (पण्ह १, ३), 'विहीसिया कावि उट्ठिया एसा' (सुपा ५४१)। ३ उदित, उदय-प्राप्त, 'उट्ठियम्मि सूरे' (अणु)। उद्यत, उद्युक्त (आचा)। ५ उद्वसित, वाहर निकला हुआ (ओघ ६५ भा)।
उट्ठिर वि [उत्थातृ] उठनेवाला (सण)।
उट्ठिसिय वि [उद्घुषित] पुलकित, रोमाञ्चित (ओघ, कुमा)।
उट्ठीअ (अप) देखो उट्ठिय (पिंग)।
उट्‌ठुभ } अक [अव + ष्ठीव्] थूकना।
उट्‌ठुह } उट्‌ठुभति, उट्‌ठुभइ (पि १२०), उट्‌ठुहइ (भग १५)। सकृ उट्‌ठुहइत्ता (भग १५)।
उठिअ (अप) देखो उट्ठिय (पिंग—पत्र ५८१)।
°उड पुन [कुट] घट, कुम्भ,

'पडिवक्खमणणुपुंजे लावण्णउडे अणगगअकुंभे।
पुरिससअहिअअवरिए कीस थणंती थणे वहसि'
(गा २९०)

°उड पु [कूट] समूह, राशि, 'सप्पी जहा अडउडं भत्तार जो विहिंसइ' (सम ५१)।
°उड देखो पुड (उवा, महा, गउड, गा ६६०, सुर २, १३, प्रासू ३९)।
उडंक पुं [उटङ्क] एक ऋषि, तापस-विशेष (निचू १२)।
उडंव वि [दे] लिप्त, लिपा हुआ (षड्)।
उडज }
उडय } पु [उटज] ऋषि-आश्रम, पर्णशाला, पत्तो से वना हुआ घर (अभि
उडव } १११, प्रति ८४, अभि ३७, स १०), 'उडवो तावसगेहं' (पाअ);

उप्पाड सक [उत् + पाटय्] १ ऊपर उठाना। २ उखाडना, उन्मूलन करना। उप्पाडेइ (पण्ह १,१, म ६५, काल)। कृ उप्पाडणिज्ज (सुपा २४६)। सकृ उप्पाडिय (नाट)।

उप्पाड सक [उत् + पादय्] उत्पन्न करना। सकृ उप्पाडिऊण (विसे ३३२ टी)।

उप्पाड पु [उत्पाट] उन्मूलन, उत्खनन, 'नयणोप्पाडो' (उप १४६ टी, ६८६ टी)।

उप्पाडण न [उत्पाटन] १ उत्थापन, ऊपर उठाना। २ उन्मूलन, उत्खनन (स २६६, राज)।

उप्पाडिय वि [उत्पाटित] १ ऊपर उठाया हुआ (पाअ, प्रासू)। २ उन्मूलित (आक)।

उप्पाडिय वि [उत्पादित] उत्पन्न किया हुआ, 'उप्पाडियणाणाण खवगसीमाण तेसिं नमो' (भाव १३)।

उप्पादअ वि [उत्पादक] उत्पन्न कर्ता (प्रयौ १७)।

उप्पादीअमाण देखो **उप्पाय** = उत् + पादय्।

उप्पाय सक [उत् + पादय्] उत्पन्न करना, वनाना। उप्पाएहि (काल)। वकृ **उप्पाएंत, उप्पायंत** (सुर २, २२, ६, १३)। सकृ **उप्पाएत्ता** (भग)। हेकृ **उप्पाइत्ता, उप्पाएउ, उप्पाएत्तए** (राज, पि ४६५, गाया १, ४)। कवकृ **उप्पादीअमाण** (शौ) (नाट)।

उप्पाय पुन [उत्पात] १ उत्पतन, ऊर्ध्व-गमन, 'न मग्गं गतुमणा सिक्खति नहगणुप्पाय' (सुपा १८०)। २ आकस्मिक उपद्रव, 'पवहणं च पासइ समुद्दमज्झे उप्पाएण छम्मासे भमत ताहे अणेण त उत्पाय उवसामिय' (महा)। ३ आकस्मिक उपद्रव का प्रतिपादक शास्त्र, निमित्त शास्त्र-विशेष (ठा ६, सम ४७, पण्ह १,४)। °**निवाय** पु [°निपात] चढना और उतरना (स ४११)।

उप्पाय पुं [उत्पाद] उत्पत्ति, प्रादुर्भाव (सुपा ६, कुमा)। °**पव्वय** पु [पर्वत] एक प्रकार के पर्वत, जहा आकर कई व्यन्तर-जातीय देव-देविया क्रीडा के लिए विचित्र प्रकार के शरीर वनाते हैं (सम ३३, जीव ३)। °**पुव्व** न [°पूर्व] प्रथमपूर्व, ग्रन्थाश-विशेष, वारहवें जैन अङ्ग-ग्रन्थ का एक भाग (सम २६)।

उप्पायग वि [उत्पादक] १ उत्पन्न करने-वाला। २ पु. त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष, कीट-विशेष (वव ८)।

उप्पायण न [उत्पादन] १ उत्पादन, उपार्जन (ठा ३,४)। २ वि उत्पादक, उपार्जक (पउम ३०, ४०)।

उप्पायणया } स्त्री [उत्पादना] १ उपार्जन, **उप्पायणा** } उत्पन्न करना। जैन साधु की भिक्षा का एक दोष (ओघ ७४६, ठा ३, ४, पिण्ड १)।

उप्पायय वि [उत्पादक] उत्पन्न-कर्ता (सुख २, २५)।

उप्पाल सक [कथ्] कहना, वोलना। उप्पालइ (हे ४, २)। उप्पालसु (कुमा)।

उप्पाव सक [उत् + प्लावय्] १ लँघाना, तैराना। २ कुदाना, उडाना। उप्पावेइ (हे २, १०६)। कवकृ **उप्पियमाण** (उवा)।

उप्पास सक [उत्प्र + अस्] हँसी करना। उप्पासिति (सुख १, १६)।

उप्पाहल न [दे] उत्कठा, उत्सुकता (पाअ)।

उप्पि सक [अर्पय्] देना। उप्पिउ (कप्प)।

उप्पिं अ [उपरि] ऊपर, 'कहि ण भते! जोइसिआ देवा परिवसति ? गोयमा! उप्पि दीवसमुद्दाण इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए' (जीव ३, णाया १, ६, ठा ३, ४, औप)।

उप्पिगलिआ स्त्री [दे] हाथ का मध्य भाग, करोत्सग (दे १, ११८)।

उप्पिंजल न [दे] १ सुरत, संभोग। २ रज, धूली। ३ अपकीर्त्ति, अपयश (दे १, १३५)।

उप्पिंजल वि [उत्पिञ्जल] अति-आकुल, व्याकुल (कप्प)।

उप्पिंजल अक [उत्पिञ्जलय्] आकुल की तरह आचरण करना। वकृ **उप्पिंजलमाण** (कप्प)।

उप्पिच्छ [दे] देखो **उप्पित्थ**, 'आहित्थ उप्पिच्छ च आउल रोसभरिय च', 'भीयं दुयमुप्पिच्छमुत्ताल च कमसो मुणेयव्व' (जीव ३), 'हत्थी अह तस्स सवडहुत्तो पहाविओ आयरुप्पिच्छो', 'रक्खससेन्नपि आयरुप्पिच्छ (पउम ८, १७५, १२, ८७), 'उप्पिच्छमथरगईहिं' (भत्त ११६)।

उप्पिण देखो **उप्पण**। वकृ **उप्पिणंत** (सुपा ११)।

उप्पित्थ वि [दे] १ त्रस्त, भीत (दे १, १२६, से १०, ६१, म ५७४, पुप्फ ४४३, गउड), 'किं कायव्वविमूढा सरणविहूणा भयुप्पित्था' (सुर १२, १६०)। २ कुपित, क्रुद्ध। ३ विधुर, आकुल (दे १, १२६, पाअ)।

उप्पित्थ वि [दे] त्रास-युक्त (गीत) (राय ७७ टी)।

उप्पिय सक [उत् + पा] १ आस्वादन करना। २ फिर-फिर स्वास लेना। वकृ. **उप्पियंत** (पण्ह १, ३—पत्र ५५, राज)।

उप्पिय वि [अर्पित] अर्पण किया हुआ (हे १, २६६)।

उप्पियण न [उत्पान] फिर-फिर स्वास लेना (राज)।

उप्पियमाण देखो **उप्पाव**।

उप्पिलण न [उत्प्लावन] लांघना (पिंड ४२२)।

उप्पिलाव देखो **उप्पाव**। उप्पिलावेइ। वकृ **उप्पिलावत**, 'जे भिक्खू सरण नाव उप्पिलावेइ, उप्पिलावत वा साइज्जइ' (निचू १८)।

उप्पीड पु [दे उत्पीड] समूह, राशि (से ४, ३७, ८, ३)।

उप्पीडण न [उत्पीडन] १ कस कर वांधना। २ दवाना (से ८ ६७)।

उप्पील सक [उत् + पीडय्] १ कस कर वाँधना। २ उठवाना 'सरणं वा णाव उप्पीलावेज्जा (आचा २, ३, १, ११)। उप्पीलवेज्जा (पि २४०)।

उप्पील पु [दे] १ सघात, समूह (दे १, १२६, सुपा ६१, सुर ३, ११६, वज्जा ६०, पुप्फ ७३, धम्म १२ टी), 'हुयामणो दहे सव्व जालुप्पीलो विणासए' (महा)। २ स्थपुट, विपमोन्नत प्रदेश (दे १ १२६)।

उप्पीलण न [उत्पीडन] पीडा, उपद्रव (स २७२)।

उप्पीलिय वि [उत्पीडित] कस कर वाँधा हुआ, 'उप्पीलियचिंचपट्टगहियाउहपहरणा' (पण्ह १, ३, विपा १, २)।

ऋच्छाच्छरिका (इक)। °लोग, °लोय पु [°लोक] स्वर्ग, देव-लोक (ठा ५, ३, भग)। °वाय पुं [°वात] ऊँचा गया हुआ वायु, वायु-विशेष (जीव १)।

उड्ढ ऊपर देखो, 'उड्ढजाए अहोसिरे झाण-कोट्ठोवगए' (भग १, १ महा, श्रा ३३)।

उड्ढक न [दे] मार्ग का उन्नत भू-भाग (सूअ १, २)।

उड्ढल / उड्ढल्ल पु [दे] उल्लास, विकास (दे १, ९१)।

उड्ढविय वि [ऊर्ध्वित] ऊँचा किया हुआ (वज्जा १४६)।

उड्ढा स्त्री [ऊर्ध्वा] ऊर्ध्व-दिशा (ठा ६)।

उड्ढि [दे] देखो उद्धि (सुज्ज १०, ८)।

उड्ढि देखो वुड्ढि (षड्)।

उड्ढि देखो उद्धि (षड्)।

उड्ढिय देखो उद्धरिअ = उद्धृत (रंभा)।

उड्ढिया स्त्री [दे] १ पात्र-विशेष (स १७३)। २ कम्बल वगैरह ओढ़ने का वस्त्र (स ५८६)।

उण देखो पुण = पुनर् (पिंड ८२)।

उण न [ऋण] ऋण, करजा (षड्)।

उण / उणा / उणाइ देखो पुण (प्रामा, प्रासू ६१, कुमा, हे १, ६५)।

उणपन्न स्त्रीन [एकोनपञ्चाशत्] उनचास, ४९ (देवेन्द्र ९६)।

उणाइ पु [उणादि] व्याकरण का एक प्रकरण (पण्ह २, २)।

उणाइ पु [दे] प्रिय, पति, नायक, 'उणाइ-साहढोल्ला प्रियार्थे' (सक्षि ४७)।

उणो देखो पुण (गउड, पि ३४२, हे १,६५)।

उण्ण न [ऊर्ण] भेड या बकरी के रोम, रोआँ। देखो उन्न। °कप्पास पुं [°कार्पास] ऊन, भेड के रोम (निचू १)। °णाभ पुं [°नाभ] मकडी, कीट-विशेष (राज)।

°उण्ण देखो पुण्ण = पूर्ण (से ८, ६१, ६५)।

उण्णअ सक [उद् + नद्] पुकारना, आह्वान करना। उण्णअइ (प्रक्त ७४)।

उण्णइ स्त्री [उन्नति] उन्नति, अभ्युदय (गा ४६७)।

उण्णइज्जमाण देखो उण्णो।

उण्णम अक [उद् + नम्] ऊंचा होना, उन्नत होना। वकृ. उण्णमत (पि १६९)।

सकृ. उण्णमिय (आचा २, १, ५)।

उण्णम वि [दे] समुन्नत, ऊँचा (दे १, ८८)।

उण्णय वि [उन्नत] १ उन्नत, ऊँचा (अभि २०९)। २ गुणवान्, गुणी (णाया १, १)। ३ अभिमानी (सूअ १, १६)। ४ न अभि-मान, गर्व (भग १२, ५)।

उण्णय पु [उन्नय] नीति का अभाव (भग १२, ५)।

उण्णा स्त्री [ऊर्णा] ऊन, भेड के रोम (आवम)। °पिपीलिया स्त्री [°पिपीलिका] चीटी, जन्तु-विशेष (दे ६,४८)।

उण्णाअक वि [उन्नायक] १ उन्नति-कारक। २ पुन. छन्द शास्त्र प्रसिद्ध मध्य-गुरु चतुष्कल की संज्ञा (पिंग)।

उण्णाग पु [उन्नाक] ग्राम-विशेष (आवम)।

उण्णाम पुं [उन्नाम] १ उन्नति, ऊँचाई (से ६, ५९)। २ गर्व, अभिमान। ३ गर्व का कारण-भूत कर्म (भग १२, ५)।

उण्णाम सक [उद् + नमय्] ऊँचा करना (से ४, ५६)।

उण्णामिय वि [उन्नमित] ऊँचा किया हुआ (गा १९, २५६, से ६, ७१)।

उण्णाल सक [उद् + नमय्] ऊँचा करना। उण्णालइ (प्राक्त ७५)।

उण्णालिय वि [दे] १ कृश, दुर्बल। २ उन्नमित, ऊँचा किया हुआ (दे १, १३९)।

उण्णिअ वि [उन्नीत] वितर्कित, विचारित (से १३, ७७)।

उण्णिअ वि [और्णिक] ऊन का बना हुआ (ठा ६, ३, ओघ ७०९, ८९ भा)।

उण्णिद्द वि [उन्निद्र] १ विकसित, उल्लसित (गउड)। २ निद्रा-रहित (माल ८५)।

उण्णी सक [उद् + नी] १ ऊँचा ले जाना। २ कहना। भवि उण्णेहं (विसे ३५८५)। कवकृ. उण्णइज्जमाण (राज)।

उण्णुइअ पु [दे] १ हुँकार। २ आकाश की तरफ मुँह किए हुए कुत्ते की आवाज (दे १, १३२)। ३ वि. गर्वित, 'एव भणिओ सतो उण्णुइओ सो कहेइ सव्व तु' (वव २, १०)।

उण्ह पु [उष्ण] १ आतप, गरमी (णाया १, १)। २ वि गरम, तप्त (कुमा)।

उण्हवण न [उष्णन] गरम करना (पिंड २४०)।

उण्हिआ स्त्री [दे] कृसर, खिचडी (दे १, ८८)।

उण्हीस पुन [उष्णीष] पगडी, मुकुट (हे २, ७५)।

उण्होदयभड पु [दे] भ्रमर, भमरा, भौंरा (दे १,१२०)।

उण्होला स्त्री [दे] कीट-विशेष (आवम)।

उताहो अ [उताहो] अथवा, या (वि ८५)।

उत्त वि [उक्त] कथित, अभिहित (सुर १०, ७६, स ३७६)

उत्त वि [उप्त] १ बोया हुआ। २ निष्पादित, उत्पादित, 'देवउत्ते अए लोए बभउत्तेति यावरे' (सूअ १, १, ३)।

उत्त पु [दे] वनस्पति-विशेष (राज)।

°उत्त वि [गुप्त] रक्षित (सूअ १, १, ३, ५)।

उत्त देखो पुत्त (गा ८४, सुर ७, १५८)।

उत्तइय / उत्तुइय वि [उत्तेजित] (दश० नि० गा० १११. अग०)।

उत्तंघ देखो उत्थंघ = रुध्। उत्तघइ (हे ४, १३३)।

उत्तघ देखो उत्तभ। उत्तघइ (प्राक्त ७०)।

उत्तत देखो वुत्तत (षड्, विक्र ३९)।

उत्तंपिअ वि [दे] खिन्न, उद्विग्न (दे १, १०२)।

उत्तंभ सक [उत् + स्तम्भ्] १ रोकना। २ अवलम्बन देना, सहारा देना। कर्म. उत्तभिज्जइ, उत्तभिज्जेंति (पि ३०८)।

उत्तभण न [उत्तम्भन] १ अवरोध। २ अवलम्बन (उप पृ २२१)।

उत्तंभय वि [उत्तम्भक] १ रोकनेवाला। २ अवलम्बन देनेवाला, सहायक (उप पृ २२०)।

उत्तंस पुं [अवतंस] शिरो-भूषण, अवतस (गउड, दे २, ५७)।

उत्तस पुं [उत्तंस] कर्णपूरक, कनफूल, कर्ण-भूषण (पाअ)।

उत्तइय वि [दे] उत्तेजित, अधिक दीपित (दसनि ३, ३५)।

उत्तण वि [दे] गर्वित (सट्ठि ५६ टी)। देखो उत्तुण।

उव्वुक्क सक [उद् + वुक्क्] बोलना, कहना। उव्वुक्कइ (हे ४, २)।

उव्वुक्क न [दे] १ प्रलपित, प्रलाप। २ संकट। ३ बलात्कार (दे १, १२८)।

उव्वुड अक [उद् + ब्रुड्] तैरना।

उव्वुड } पु [उद्ब्रुड] तैरना। °निवुड, उव्वुड्ड } °निव्वुड्डण न [निब्रुड,°ण] उमचुभ करना (पराह १,३, उप १२८ टी)।

उव्वुड्ड वि [उद्ब्रुडित] उन्मग्न, तीर्ण (गा ३७, स ३६०)।

उव्वुड्डण न [उद्ब्रुडन] उन्मज्जन (कप्पू)।

उव्वुह अक [उत् + क्षुभ्] संक्षुब्ध होना। उव्वुहइ (प्राकृ ७५)।

उव्वूर वि [दे] १ अधिक, ज्यादा। २ पुं संघात, समूह। ३ स्थपुट, विषमोन्नत प्रदेश (दे १, १२६)।

उव्भ सक [ऊर्ध्वय्] ऊँचा करना, खडा करना। उव्भेउ (वज्जा ६४), उव्भेह (महा)।

उव्भ देखो उड्ढ (हे २, ५६, सुर २, ६, पड्)।

उव्भड पुं [उद्भाण्ड] १ उत्कट भाँड, बहुरूपा, निर्लज्ज हडा, उग्र विदूषक,

'खरउत्ति कह जाणसि
देहागारा कहिंति से हृदि।
छिक्कोवण उव्भडो
णीयासि दारुणसहावो।' (ठा ६ टी)।

२ न गाली, कुत्सित-वचन, 'उव्भडवयण—' (भवि)।

उव्भत वि [दे] ग्लान, बीमार (दे १, ६५, महा)।

उव्भत वि [उद्भ्रान्त] १ आकुल, व्याकुल, खिन्न (दे १, १४३),

'अवलवह मा संकह ण इमा गहलघिआ परिब्भमइ। अत्थक्कगज्जिउव्भतहित्थहिअआ पहिअजाआ' (गा ३८६), 'भवभमणुब्भतमाणमा अम्हे' (सुर १५, १२३)। २ मूर्च्छित (से १, ८)। ३ भ्रान्तियुक्त, भौचक्का, चकित (हे २, १६४)।

उव्भत पुं [उद्भ्रान्त] प्रथम नरक-पृथिवी का चौथा नरकेन्द्रक—एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ३)।

उव्भग्ग वि [दे] गुरिठत व्याप्त, 'तिमिरोब्भग्गणिमाए' (दे १, ६५, नाट)।

उव्भज्जि स्त्री [दे] कोद्रव-समूह (राज)।

उव्भड वि [उद्भट] १ प्रबल, प्रचण्ड, 'उव्भटपवणपकं पिरजयप्पडागाइ अइपयडं' (सुपा ४६), 'उव्भडकल्लोलभीमणाराव' (णमि ४)। २ भयंकर, विकराल (भग ७, ६)। ३ उद्धत, आडंबरी (पाअ),

'अइरोसो अइतोमो अइहासो
दुज्जणेहिं सवासो।
अइउव्भडो य वेसो पंचवि
गरुयपि लहुअंति।' (धम्म)।

उव्भम पु [उद्भ्रम] १ उद्वेग २ परिभ्रमण (नाट)।

उव्भव अक [उद् + भू] उत्पन्न होना। उव्भवइ (पि ४७५, नाट)। वकृ उव्भवत (सुपा ५७१, ६५६)।

उव्भव अक [ऊर्ध्वय्] ऊँचा करना, खडा करना।

उव्भव पु [उद्भव] उत्पत्ति, प्रादुर्भाव (विसे; णाया १, २)।

उव्भविय वि [ऊर्ध्वित] ऊँचा किया हुआ (उप पृ १३०, वज्जा १४)।

उव्भाअ वि [दे] शान्त, ठंढा, (दे १, ६६)।

उव्भाम सक [उद् + भ्रामय्] घुमाना। उव्भामेइ (राय १२६)।

उव्भाम पुं [उद्भ्राम] १ परिभ्रमण (ठा ४)। २ वि परिभ्रमण करनेवाला (वव १)।

उव्भामइल्ला स्त्री [उद्भ्रामिणी] स्वैरिणी, कुलटा स्त्री (वव ४, बृह ६)।

उव्भामय पु [उद्भ्रामक] जार, उपपति (पिंड ४२०)।

उव्भामग पुं [उद्भ्रामक] १ पारदारिक, परस्त्री-लम्पट (ओघ ६० भा)। २ वायु-विशेष, जो तृण वगैरह को ऊपर ले उडता है (जी ७)। ३ वि परिभ्रमण करनेवाला (वव १)।

उव्भामिगा } स्त्री [उद्भ्रामिका] कुलटा उव्भामिया } स्त्री, स्वैरिणी (वव ६, उप पृ २६४)।

उव्भालण न [दे] १ सूप आदि से साफ-सुथरा करना, उत्पवन। २ वि. अपूर्व, अद्वितीय (दे, १, १०३)।

उव्भालिअ वि [दे] सूप आदि से साफ किया हुआ, उत्पूत, 'उब्भालिअं उप्पुणिअं' (पाअ)।

उव्भाव अक [रम्] क्रीडा करना, खेलना। उव्भावइ (हे ४,१६८, षड्)। वकृ उव्भावंत (कुमा)।

उव्भावणया } स्त्री [उद्भावना] १ प्रभा-उव्भावणा } वना, गौरव, उन्नति, 'पवयण-उब्भावणया' (ठा १०—पत्र ५१४)। २ उत्प्रेक्षा, वितर्कणा, 'असब्भावउब्भावणाहिं' (णाया १, १२—पत्र १७४)। ३ प्रकाशन, प्रकटीकरण (णंदि)।

उव्भाविअ न [रमण] सुरत, क्रीडा, संभोग (दे १, ११७)।

उव्भास सक [उद् + भासय्] प्रकाशित करना। वकृ उव्भासत, उव्भासेंत (पउम २८, ३६, ३, १५५)।

उव्भासिय वि [उद्भासित] प्रकाशित (हेका २८२),

'भवणाओ नीहरंते जिणम्मि
चाउव्विहेहिं देवेहिं।
इंतेहि य जंतेहि य
कहमिव उव्भासियं गयणं॥'
(सुपा ७७)।

उव्भासुअ वि [दे] शोभाहीन (दे १, ११०)।

उव्भासेंत देखो उव्भास

उव्भिं देखो उव्भिय = उद्भिद् (आचा)।

उव्भिउडि वि [उद्भ्रुकुटि] भौंह चढाया हुआ (गउड)।

उव्भिज्जा स्त्री [उद्भेद्या] भाजी, एक तरह का शाक (पिंड ६२६)।

उव्भिद सक [उद् + भिद्] १ ऊँचा करना, खडा करना। २ विकसित करना। ३ अंकुरित करना। ४ खोलना। कर्म. उव्भिज्जति। वकृ उव्भिदमाण (आचा २, ७)। कवकृ. 'भत्तिभरनिब्भरुब्भिज्जमाणघणपुलय-पूरियसरीरा' (सुपा ६५६ ६७, भग १६, ६)। संकृ. उव्भिदिय, उब्भिंदिउ (पचा १३, पि ५७४)।

उव्भिग देखो उव्भिय = उद्भिद् (पराह १, ४)।

साधन करनेवाले का महायक (सुपा १५१, ८ ३६६)। देखो उत्तरा°।

उत्तरओ अ [उत्तरत] उत्तर दिशा की तरफ (ठा ८, भग)।

उत्तरंग न [उत्तरङ्ग] १ दरवाजे का ऊपर का काष्ठ (कुमा)। २ वि चपल, चचल (मुद्रा २६८)।

उत्तरकुरु पु. व [उत्तरकुरु] १ देव-भूमि स्वर्ग (स्वप्न ६०)। २ स्त्री भगवान् नमिनाथ की दीक्षाशिविका (विचार १२६)।

उत्तरण न [उत्तरण] १ उतरना, पार करना (ठा ५, स ३६२)। २ अवतरण, नीचे आना (ठा १०)।

उत्तरणवरंडिया स्त्री [दे] उडुप, जहाज, डोंगी (दे १, १२२)।

उत्तरविउव्विय वि [उत्तरवैक्रियिक] उत्तर-वैक्रियनामक लब्धि से सम्पन्न (पच २, २०)।

उत्तरसंग देखो उत्तरा-संग (पव ३८)।

उत्तरा स्त्री [उत्तरा] १ उत्तर दिशा (ठा १०)। २ मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७)। ३ एक दिशा-कुमारी देवी (ठा ८)। ४ दिगम्बर-मत-प्रवर्तक आचार्य शिवभूति की स्वनाम ख्यात भगिनी (विसे)। ५ अहिच्छत्रा नगरी की एक वापी का नाम (ती)। °णंदा स्त्री [°नन्दा] एक दिक्कुमारी देवी (राज)। °पह पु [°पथ] उत्तरदिशा-स्थित देश, उत्तरीय देश (आचू २)। °फग्गुणी देखो उत्तर-फग्गुणी (सम ७, इक)। °भद्दवया देखो उत्तर-भद्दवया (सम ७, इक)। °यण न [°यण] उत्तरायण, सूर्य का उत्तर दिशा में गमन, माघ से लेकर छ महीना (सम ५३)। °यया स्त्री [°यता] गान्धार-ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७)। °वह देखो °पह (महा, उव १४२ टी)। °संग पु [°सग] उत्तरीय वस्त्र का शरीर में न्यास-विशेष, उत्तरासण (कप्प, भग, औप)। °समा स्त्री [°समा] मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७)। °साढा स्त्री [°षाढा] नक्षत्र-विशेष (सम ६, कस)।

°हुत्त न [°भिमुख] १ उत्तर की तरफ। २ वि. उत्तर दिशा की तरफ मुँह किया हुआ (ओघ ६५०, आव ४)।

उत्तरिज्ज } न [उत्तरीय] चादर, दुपट्टा
उत्तरिय } (उवा, प्राप्र; हे १, २४८), 'जरजिण्णं उत्तरियं' (सुपा ५४६),

उत्तरिय वि [उत्तीर्ण] १ उतरा हुआ, नीचे आया हुआ (सुर ६, १५६)। २ पार पहुँचा हुआ (महा)।

उत्तरिय वि [औत्तरिक, औत्तराह] देखो उत्तर (ठा १०, विसे १२४५)।

उत्तरिल्ल वि [औत्तराह] उत्तर दिशा या काल में उत्पन्न या स्थित, उत्तर-सम्बन्धी, उत्तरीय, 'अह उत्तरिल्लरुयगे' (सुपा ४२, सम १००, भग)।

उत्तरीअ देखो उत्तरिय = उत्तरीय (कुमा; हे १, २४८, महा)।

उत्तरीकरण न [उत्तरीकरण] उत्कृष्ट बनाना, विशेष शुद्ध करना, 'तस्स उत्तरीकरणेणं' (पडि)।

उत्तरोट्ठ पु [उत्तरौष्ठ] १ ऊपर का ओठ (पि ३६७)। २ श्मश्रु, मूँछ (राज)।

उत्तलहअ पुं [दे] विटप, अंकुर (दे १, ११६)।

उत्तव वि [उक्तवत्] जिसने कहा हो वह (पि ५६६)।

उत्तस अक [उत् + त्रस्] १ त्रास पाना, पीडित होना। २ डरना, भयभीत होना। वकृ. उत्तसंत (सुर १, २४६, १०, २२०)।

उत्तसिय वि [उत्त्रस्त] १ भयभीत। २ पीडित (सुर १, २४६)।

उत्ताड सक [उत् + ताडय्] १ ताडना, ताडन करना। २ वाद्य बजाना। कवकृ. 'उत्ताडिज्जताणं दद्दरियाण कुडवाणं' (राय)।

उत्ताडण न [उत्ताडन] १ ताडना करना (कुमा)। २ वाद्य बजाना (राज)।

उत्ताण वि [उत्तान] १ उन्मुख, ऊर्ध्व-मुख (पचा १८)। २ चित्त (विपा १, ६, ठा ४, ४)। ३ विस्फारित, 'उत्ताणणयणपेच्छणिज्जा पासादीया दरिसणिज्जा' (औप)। ४ अनिपुण, अकुशल, 'उत्ताणमई न साहए धम्मं' (धम्म ८)। °साइय वि [°शायिन्] चित्त सोनेवाला (कस)।

उत्ताणअ } ऊपर देखो (भग; गा ११०,
उत्ताणग } कस)।

उत्ताणपत्तय वि [दे] एरण्ड-सम्बन्धी (पत्ती वगैरह), (दे १, १२०)।

उत्ताणिअ वि [उत्तानित] १ चित्त किया हुआ (से ६, ८९, गा ४६०)। २ चित्त सोनेवाला (दमा)।

उत्तार सक [अव + तारय्] नीचे उतारना। वकृ. उत्तारेमाण (ठा ५)।

उत्तार सक [उत् + तारय्] १ पार पहुँचाना। २ बाहर निकालना। ३ दूर करना, 'देहो ' नईए खित्तो, तओ एए जइ नो उत्तारिता तो हु मरिऊए' (सुपा ३५७, काल)।

उत्तार पुं [उत्तार] १ उतरना, पार करना, 'अणुसोओ संसारो पडिसोओ तस्स उत्तारो' (दस २), 'णइउत्ताराइ' (उवर ३२)। २ परित्याग (विसे १०४२)। ३ उतारनेवाला, पार करानेवाला,

'भवसयसहस्सदुलहे,
जाइजरामरणसागरोत्तारे।
जिणवयणम्मि गुणायर !
खणमवि मा काहिसि पमायं'
(प्रासू १३४)।

उत्तार पुं [दे] आवास-स्थान, गुजराती में 'उतारो' (सिरि ७००)।

उत्तारण न [उत्तारण] १ उतारना २ दूर करना। ३ बाहर निकालना। ४ पार करना, 'ता अज्जवि मोहमहाअहिविसवेगा
फुरंति तुह बाढं।
ताणुत्तारणहेउ, तम्हा
जत्त कुणसु मद्द ।।'
(सुपा ५५७, विसे १०४०)।

उत्तारय वि [उत्तारक] पार उतारनेवाला (स ६४७)।

उत्तारिअ वि [उत्तारित] १ पार पहुँचाया हुआ। २ दूर किया हुआ। ३ बाहर निकाला हुआ, 'तेणवि उत्तारिओ भूमिविवराओ' (महा)।

उत्ताल वि [उत्ताल] १ महान्, बडा, 'उत्ताल-तालयाण वणिएहिं दिज्जमाणाण' (सुपा ५०२)। २ उतावला, शीघ्रकारी, 'कहवि उत्तालो अप्पडिलेहियसेज्जं गिण्हंतो' (सुपा ६२०)। ३ उद्धत (दे १,१०१)। ४ बेताल, ताल विरुद्ध गान का एक दोष, 'गायंतो मा

रसरमिश्रो पिच्छइ नन्न विणा कण्य" (मोह २२)।

उम्मत्थ सक [अभ्या + गम्] सामने आना। उम्मत्थइ (हे ४, १६७, कुमा)।

उम्मत्थ वि [दे] अधो-मुख, विपरीत (दे १, ९३)।

उम्मर पु [दे] देहली, द्वार के नीचे की लकडी (दे १, ९५)।

उम्मरिअ वि [दे] उत्खात, उन्मूलित (दे १, १०० पड्)।

उम्मल वि [दे] स्त्यान, कठिन, घट्ट (दे १, ९१)।

उम्मलण न [उन्मर्दन] मसलना (पाग्र)।

उम्मल्ल पु [दे] १ राजा, नृप। २ मेघ, बारिश। ३ बलात्कार। ४ वि पीवर, पुष्ट (दे १, १३१)।

उम्मल्ला स्त्री [दे] तृष्णा (दे १, ९४)।

उम्मह्ण वि [उन्मथन] नाशक, विनाशकारी (सुर ३, २३१)।

उम्माइअ वि [उन्मादित] उन्मत्त किया हुआ (पउम २४, १९)।

उम्माडिय न [दे] उल्मुक जलता काष्ठ, गुजराती मे 'उवाडु' (सिरि ९८०)।

उम्माण न [उन्मान] १ माप, माशा आदि तुला मान (ठा २, ४)। २ जो तौला जाता है वह (ठा १०)।

उम्माद देखो उम्माय (भग १४, ७)।

उम्मादइत्तअ (शौ) वि [उन्मादयितृ] उन्माद करानेवाला (अभि ४२)।

उम्माय अक [उद् + मद्] उन्माद करना, उन्मत्त होना। वकृ उम्मायत (उप ९८६ टी)।

उम्माय पु [उन्माद] १ चित्त-विभ्रम, पागलपन (ठा ६, महा)। २ कामाधीनता, विषय मे अत्यन्तासक्ति (उत्त १६)। ३ आलिङ्गन (विसे)।

उम्माल देखो ओमाल (पाग्र)।

उम्मालिय व [उन्मालित] सुशोभित (भवि)।

उम्माह पुं [उन्माथ] विनाश, 'निसेविज्जतावि (कामभोगा) करेंति अहियगुम्माहय' (महा)।

उम्माहय वि [उन्माथक] विनाशक, 'अहो उम्माहयत्त विसयाणं' (महा, भवि)।

उम्माहि वि [उन्माथिन] विनाशक (महा-टि)।

उम्माहिय वि [उन्माथित] विनाशित (भवि)।

उम्मि पुस्त्री [ऊर्मि] १ कल्लोल, तरंग (कुमा, दे ३ ६)। २ भीड, जन-समुदाय (भग २, १)। °मालिणी स्त्री [°मालिनी] नदी-विशेष (ठा २, ३)।

उम्मिंठ वि [दे] हस्तिपक-रहित, महावत-रहित, निरकुश, 'उम्मिंठवारिवरो इव उम्मूलइनयसमूहं सो' (सुपा ३४८, २०३)।

उम्मिण सक [उद् + मी] तौलना, नाप करना। कर्म उम्मिणिज्जइ (अणु १५३)।

उम्मिय वि [उन्मित] प्रमित, 'कोडाकोडिजुगुम्मियावि सिहिणो हाहा विचित्ता गदी' (रंभा)।

उम्मिलिर वि [उन्मीलितृ] विकासी, 'तत्थ य उम्मिलिरपढमपल्लवारुणियगयणाहम्म' (सुपा ८६)।

उम्मिल्ल अक [उद् + मील्] १ विकसित होना। २ खुलना। ३ प्रकाशित होना। उम्मिल्लइ (गउड)। वकृ उम्मिल्लंत (से १०, ३१)।

उम्मिल्ल वि [उन्मील] १ विकसित (पाग्र, से १०, ५०, न ७६)। २ प्रकाशमान (से ११, ६४, गउड)।

उम्मिल्लण न [उन्मीलन] विकास, उल्लास (गउड)।

उम्मिल्लिय वि [उन्मीलित] १ विकसित, उल्लसित। २ उद्घाटित, खुला हुआ, 'तओ उम्मिल्लियाणि तस्स नयणाणि' (श्रावम, स २८०)। ३ प्रकाशित। ४ बहिष्कृत, 'पजरुम्मिल्लियमणिकणगथूभियागे' (जीव ४)। ५ न. विकास (अणु)।

उम्मिस अक [उद् + मिष्] खुलना, विकसना। वकृ. उम्मिसंत (विक्र ३४),

उम्मिसिय वि [उन्मिषित] १ विकसित, प्रफुल्ल (भग १४, १)। २ न विकास, उन्मेष (जीव ३)।

उम्मिस्स देखो उम्मीस (पव ६७)।

उम्मीलण देखो उम्मिल्लण (कुमा, गउड)।

उम्मीलणा स्त्री [उन्मीलना] प्रभव, उत्पत्ति (राज)।

उम्मीलिय देखो उम्मिल्लिय (राज)।

उम्मीस वि [उन्मिश्र] मिश्रित, युक्त (सुपा ७८, प्रासू ३२)।

उम्मुअ देखो उमुय। वकृ.'जलणम्मि पोउम्मम्मिवुम्मुग्रत चक्खु पगएणं गए निक्खिविज्जा' (उप पृ २०)।

उम्मुअ न [उल्मुक] अलात, लूका (पाग्र)।

उम्मुच सक [उद् + मुच्] परित्याग करना। वकृ उम्मुचत (विसे २७७०)।

उम्मुक्क वि [उन्मुक्त] १ विमुक्त, रहित, 'ते धीरा बधणुम्मुक्का नावकखति जीविय' (सूत्र १, ६)। २ उत्क्षिप्त (औप)। ३ परित्यक्त (श्रावम)।

उम्मुग्ग वि [उन्मग्न] १ जल के ऊपर तैरा हुआ। २ न तैरना। °निमुग्गिया स्त्री [°निमग्नता] उमज्जन करना, 'से भिक्खू वा० उदगसि पवमाणे नो उम्मुग्गनिमुग्गियं करेज्जा' (आचा २, ३, २, ३)।

उम्मुग्गा } स्त्री देखो उम्मग्ग = उन्मग्न
उम्मुज्जा } (पराह १, ३, पि १०४, २३४, आचा)।

उम्मुट्ठ वि [उन्मृष्ट] स्पृष्ट छुआ हुआ (पाग्र)।

उम्मुद्दिअ वि [उन्मुद्रित] १ विकसित, प्रफुल्ल (गउड कप्पू)। २ उद्घाटित, खोला हुआ, 'उम्मुद्दिओ सामुग्गो, तम्मज्भे लहुनमुग्गय नियइ' (सुपा १४४)।

उम्मुयण न [उन्मोचन] परित्याग, छोड देना (सुर २, १६०)।

उम्मुयणा स्त्री [उन्मोचना] त्याग उज्झन (श्राव ५)।

उम्मुह वि [दे] दृप्त अभिमानी (दे १, ९६, पड्)।

उम्मुह वि [उन्मुख] १ संमुख (उप पृ १३४)। २ ऊर्ध्व-मुख (सि ६, ८२)।

उम्मूढ वि [उन्मूढ] विशेष मूढ, अत्यन्त मुग्ध। °विसूइया स्त्री [°विसूचिका] रोग-विशेष, हैजा (सुपा १६)।

उम्मूल वि [उन्मूल] उन्मूलन करनेवाला, विनाशक (गा ३९५)।

उम्मूल सक [उद् + मूलय्] उखाडना, मूल से उखाड फेंकना। उम्मूलेइ (महा)।

उत्थंघ पु [उत्तम्भ] ऊर्ध्व-प्रसरण, ऊँचा फैलाना (से ६, ३३)।

उत्थघण न [उत्तम्भन] ऊपर देखो (गउड)।

उत्थघि वि [उत्क्षेपिन्] ऊँचा फेंकना (गउड)।

उत्थघिअ वि [उन्नमित] ऊँचा किया हुआ, उन्नत किया हुआ (कुमा)।

उत्थघिअ वि [रुद्ध] रोका हुआ (कुमा)।

उत्थघिअ वि [उत्तम्भित] उत्थापित, उठाया हुआ (गे ५, ६०)।

उत्थभि वि [उत्तम्भिन्] १ आघात-प्राप्त, अवलम्बन करनेवाला,

'धारिज्जइ जलनिहीवि
कल्लोलोत्थंभिसत्तकुलसेलो।
न हु अन्नजम्मनिम्मिअ-
सुहासुहो कम्म-परिणामो ॥'
(प्रामू १२७)।

उत्थभिअ वि [उत्तम्भित] १ अवलम्बित। २ रुका हुआ, स्तम्भित, 'अइपीणत्थणउत्थभिआणणे मुअणु सुणसु मह वअणं' (गा ९२४)। ३ बन्धन-मुक्त किया हुआ (स ५६८)।

उत्थभिर देखो उत्तंभि (वज्जा १५२)।

उत्थग्घ पु [दे] समर्द, उपमर्द (दे १, ९३)।

उत्थप्पण देखो उट्ठयण (कुप्र ११७)।

उत्थय देखो उत्थइय (कप्प), 'निवडंति तणोत्थयकूपियासु तुगावि मायगा' (उप ७२८ टी)।

उत्थर सक [आ + क्रम्] आक्रमण करना। संकृ उत्थरिवि (अप) (भवि)।

उत्थर सक [अव + स्तृ] १ आच्छादन करना, ढकना। २ पराभव करना। वकृ. उत्थरंत, उत्थरमाण (पण्ह १, ३, राज)।

उत्थर } सक [उत् + स्तृ] आच्छादन
उत्थल्ल } करना (?)। उत्थरइ, उत्थल्लइ (प्राकृ ७५)।

उत्थरिअ वि [आक्रान्त] आक्रान्त, दवाया हुआ, 'उत्थरिओवग्गिआई अक्कतं' (पाअ, भवि)।

उत्थरिय वि [दे] १ निस्सृत, निर्गत (स ४७३)। 'अच्छुक्कुत्थरियमहल्लवाह-
भरनीसहा पडिया' (सुपा २०)। २ उत्थित, उठा हुआ (दे ७, ९२)।

उत्थल न [उत्स्थल] १ ऊँची धूल राशि, उन्नत रज पुञ्ज (भग ७, ६ टी)। २ उन्मार्ग, कुपथ (से ८, ६)।

उत्थलिअ न [दे] १ घर, गृह। २ वि उन्मुख-गत, ऊँचा गया हुआ (दे १ १०७, स १८०)।

उत्थल्ल अक [उत् + शल्] उछलना, कूदना। उत्थल्लइ (षड्)।

उत्थल्लपत्थल्ला स्त्री [दे] दोनो पार्श्वों से परिवर्त्तन, उथल पुथल (दे १, १२२)।

उत्थल्ला स्त्री [दे] १ परिवर्त्तन (दे १, ९३)। २ उद्वर्त्तन (गउड)।

उत्थल्लिअ वि [उच्छलित] उछला हुआ, 'उत्थल्लिअं उच्छलिअं' (पाअ)।

उत्थाइ वि [उत्थायिन्] उठनेवाला (दे ८ १९)।

उत्थाइय वि [उत्थापित] उठाया हुआ, 'पुन्नुत्थाइयनरवरदेमे दडाहिवं ठवइ महणा' (सुपा ३५२)।

उत्थाण न [उत्थान] १ वीर्य, बल, पराक्रम (विसे २८-२९)। २ उत्थान, उत्पत्ति, 'वच्छावाही अमज्झो न नियत्तइ ओसहेहिं कएहिं। तम्हा तीउत्थाणं निरुभियव्व हिएसीहिं' (सुपा ४०४)।

उत्थामिय (अप) वि [उत्थापित] उठाया हुआ (भवि)।

उत्थार सक [आ + क्रम्] आक्रमण करना, दवाना। उत्थारइ (हे ४, १६०, षड्)।

उत्थार देखो उच्छाह = उत्साह (हे २, ४८, षड्)।

उत्थारिय वि [आक्रान्त] आक्रान्त, दवाया हुआ, 'उत्थारिअअतरंगरिउवग्गो' (कुमा, सुपा ५४६)।

उत्थिय देखो उट्ठिय (हे ४, १६, पि ३०)।

उत्थिय देखो उत्थइअ (पंचा८)।

°उत्थिय वि [°तीर्थिक] मतानुयायी, दर्शनानुयायी (उवा, जीव ३)।

°उत्थिय वि [°यूथिक] यूथ प्रविष्ट, 'अण्णउत्थिय—' (उवा; जीव ३)।

उत्थुभण न [अवस्तोभन] अनिष्ट की शान्ति के लिए किया जाता एक प्रकार का कौतुक, थू-थू आवाज करना। (वृह १)।

उद न [उद] जल, पानी, 'अवि साहिए दुवे वासे सीओदं अभोच्चा निक्खंते' (आचा, भग ३, ६)। °उल्ल °ओल्ल वि [°आर्द्र] पानी से गीला। (ओघ ४८६, पि १६१)। °गत्ताभ न [°गर्त्ताभ] गोत्र-विशेष (ठा ७)।

उदइग देखो ओदइअ (अणु)।

उदइल्ल वि [उदयिन्] उदयवान्, उन्नतिशील, 'सिरिअभयदेवसूरी अपुव्वसूरो सयावि उदइल्लो' (सुपा ६२२)।

उदंक पु [उदङ्क] जल का पात्र विशेष, जिससे जल ऊँचा छिडका जाता है (ज २)।

उदंच सक [उद् + अञ्च्] ऊँचा जाना (कुमा)।

उदंचण प [उदञ्चन] १ ऊँचा फेंकना। १ वि ऊँचा फेंकनेवाला (अणु)।

उदंचिर वि [उदञ्चितृ] ऊँचा जानेवाला (कुमा)।

उदंत पु [उदन्त] हकीकत, समाचार, वृत्तान्त, 'णिअमेऊण कइवल वीओदंतो व्व राहवस्स उवणिओ' (से ४, ५५, स ३०, भग)।

उदप पुं [उद्दृप्त] कृष्णराज पुत्र उदय (नलदव० रास० ऋषिवर्धन)

उदग पुन [उदक] जल पानी, 'चत्तारि उदगा पण्णत्ता' (ठा ४, जी ५)। २ वनस्पति-विशेष (दस ८, ११)। ३ जलाशय (भग १, ८)। ४ पुं स्वनाम-ख्यात एक जैन साधु। ५ सातवें भावी जिनदेव (सुअ २, ७)। °गब्भ पु [°गर्भ] वादल, अभ्र (भग २, ५)। °दोणि स्त्री [°द्रोणि] १ जल रखने का पात्र-विशेष, ठंढा करने के लिए गरम लोहा जिसमे डाला जाता है वह (भग १६, १)। २ जो अरघट्ट मे लगाया जाता हे वह छोटा घडा (दस ७)। °पोग्गल न [°पौद्गल] वादल, मेघ (ठा ३, ३)। °मच्छ पु [°मत्स्य] इन्द्र-धनुष का खण्ड, उत्पात-विशेष (भग ३, ६)। °माल पुस्त्री [°माल] जल का ऊपर चढता तरग, उदकशिखा, वेला (ठा १०, जीव ३)। °वत्थि स्त्री

उल्लेत्ता देखो उल्ल = आर्द्रय्।

उल्लेव पु [दे] हास्य, हँसी (दे १, १०२)।

उल्लेहड वि [दे] लम्पट, लुब्ध (दे १, १०४, पाअ)।

उल्लोइय न [दे] १ पोतना, भीत को चूना वगैरह से सफेद करना (औप)। २ वि पोता हुआ (णाया १, १, सम १३७)।

उल्लोक वि [दे] त्रुटित, छिन्न (षड्)।

उल्लोच पु [दे उल्लोच] चन्द्रातप, चाँदनी (दे १, ६८, सुर १२, १, उप १०७)।

उल्लोढ सक [उल्लोध्रय्] लोध्र आदि से घिसना। उल्लोढिज्ज (आचा २, १३, १)।

उल्लोय पुं [उल्लोक] १ अगासो, छत (णाया १, १, कप्प, भग)। २ थोडी देर, थोडा विलम्ब (राज)।

उल्लोय देखो उल्लोच (सुर ३, ७०, कुमा)।

उल्लोल अक [उत् + लुल्] लुठना लेटना। वकृ उल्लोलत (निचू १७)। पु शोकाकुल स्त्री-रुदन शब्द (चउ० सगरचरिय)।

उल्लोल सक [उद् + लोलय्] पोछना। उल्लोलेइ, सकृ उल्लोलेत्ता (आचा २, १५, ५)।

उल्लोल पु [दे] १ शत्रु, दुश्मन (दे १, ६६)। २ कोलाहल (पउम १६, ३६)।

उल्लोल पुं [उल्लोल] १ प्रबन्ध, 'उद्देसे आसि णराहिवाण वियडा कट्टुल्लोला' (गउड)। २ वि उद्भट, उद्धत, 'तरुणजणविब्भमुल्लोल-सागरे' (स ६७)। ३ वि उत्सुक, 'बहुसो घडंतविहडतसइसुहासायसगमुल्लोले। हियए च्चेय समप्पति चचला वीइवावारा' (गउड)।

उल्लोव (अप) देखो उल्लोच (भवि)।

उल्हव सक [वि + ध्मापय्] ठढा करना, आग को बुझाना। उल्हवइ (हे ४, ४१६)।

उल्हविय वि [दे. विध्मापित] बुझाया हुआ, शान्त किया हुआ (पउम २, ६६)।

उल्हसिअ वि [दे] उद्भट, उद्धत, (दे १, ११६)।

उल्हा अक [वि + ध्मा] बुझ जाना। उल्लाइ (स २८३)।

उव अ [उप] निम्न लिखित अर्थो का सूचक अव्यय—१ समीपता, 'उवदसिय' (पण्ण १)। २ सदृशता, तुल्यता (उत्त ३)। ३ समस्तपन (राय)। ४ एकवार। ५ भीतर (आव ४)।

उव न [उद] पानी, जल, 'पाउवदाइ च ण्हाणुवदाइ च' (णाया १,७—पत्र ११७)।

उवअठ वि [उपकण्ठ] समीप का, आसन्न (गउड)।

उवइट्ठ वि [उपदिष्ट] कथित, प्रतिपादित, शिक्षित (ओघ १८ भा, पि १७३)।

उवइण्ण वि [उपचीर्ण] सेवित (ग ३६)।

उवइय वि [उपचित] १ मासल, पुष्ट (पण्ह १, ४)। २ उन्नत (ओप)।

उवइय पुस्त्री [दे] त्रीन्द्रिय जीव-विशेष, देखो ओवइय (जीव १ टी, पण्ण)।

उवइस सक [उप + दिश्] १ उपदेश देना, सिखाना। २ प्रतिपादन करना। उवइसइ (पि १८४)। उवइसति (भग)।

उवउज सक [उप + युज्] उपयोग करना। कर्म उवउज्जति (विसे ४८०)। सकृ उवउजिऊण, उवउज्ज (पि ५८५, निचू १)।

उवउज्ज पु [दे] १ उपकार (दे १, १०८)। २ वि उपकारक (षड्)।

उवउत्त वि [उपयुक्त] १ न्याय्य, वाजवी। २ सावधान, अप्रमत्त (उव, उप ७७३)।

उवऊढ वि [उपगूढ] आलिङ्गित (पाअ, से १, ३८, गा १३३)।

उवऊह सक [उप + गूह्] आलिङ्गन करना। उवऊहइ (प्राकृ ७४)।

उवऊहण न [उपगूहन] आलिङ्गन (से ५, ४८)।

उवऊहिअ वि [उपगूहित] आलिङ्गित (गा ६२१)।

उवएइआ स्त्री [दे] शराब परोसने का पात्र (दे १, ११८)।

उवएस पुं [उपदेश] १ शिक्षा, बोध (उव)। २ कथन, प्रतिपादन। ३ शास्त्र, सिद्धान्त (आचा, विसे ८६४)। ४ उपदेश्य, जिसके विषय मे उपदेश दिया जाय वह (धर्म १)।

उवएसग वि [उपदेशक] उपदेश देनेवाला, 'हिच्चाणं पुव्वसजोगं, सिया किच्चोवएसगा' (सूअ १, १)।

उवएसण न [उपदेशन] देखो उवएस (उत्त २८, ठा ७, विसे २५८३)।

उवएसणया } स्त्री [उपदेशना] उपदेश
उवएसणा } (राज, विसे २५८३)।

उवएसिय वि [उपदेशित] उपदिष्ट, 'सामाइयणिज्जुत्ति वोच्छ उवएसिय गुरुजणेण' (विसे १०८०, सण)।

उवओग पु [उपयोग] १ ज्ञान, चैतन्य (पण्ण १२, ठा ४, ४, द ४)। २ ख्याल, ध्यान, सावधानी, 'त पुण सविग्गेण उवओगजुएण तिव्वसद्धाए' (पचा ४)। ३ प्रयोजन, आवश्यकता (सुपा ६४३)।

उवओगि वि [उपयोगिन्] उपयुक्त, योग्य, प्रयोजनीय, पत्ताईण विसुद्धि माहेउं गिण्हए जमुवओगि' (सुपा ६४३, स ५)।

उवंग पुन [उपाङ्ग] १ छोटा अवयव, क्षुद्र भाग, 'एवमादी सव्वे उवगा भण्णति' (निचू १)। २ ग्रन्थ-विशेष, मूल-ग्रन्थ के अश-विशेष को लेकर उसका विस्तार से वर्णन करनेवाला ग्रन्थ, टीका, संगोवगाण सरहस्साण चउण्ह वेयाण' (औप)। ३ 'औपपातिक' सूत्र वगैरह बाहर जैन ग्रन्थ (कप्प, ज, १, सूक्त ७०)।

उवजण न [उपाञ्जन] मुक्षण, मालिश (पण्ह २, १)।

उवकंठ देखो उवअठ (भवि)।

उपकठ न [उपकण्ठ] समीप (सिरि ११२१)।

उवकदुअ (शौ) अ [उपकृत्य] उपकार करके (प्राकृ ८८)।

उवकप्प सक [उप + क्लृप्] १ उपस्थित करना। २ करना, 'उवकप्पइ करेइ उवणेइ वा होति एकट्ठा' (पचभा)। उवकप्पति (सूअ १, ११)।

उवकप्प पु [उपकल्प] साधु को दी जानेवाली भिक्षा, अन्नपान वगैरह (पचभा)।

उवकय वि [उपकृत] जिसपर उपकार किया गया हो वह, अनुगृहीत, 'अणुवकयपराणुग्गहपरायणा' (आव ४)।

उवकय वि [दे] सज्जित, प्रगुण, तैयार (दे १, ११६)।

उवकर देखो उवयर = उप + कृ। उवकरेउ (उवा)।

उवकर सक [अव + कृ] व्याप्त करना। भूका 'अहवा पसुणा उवकरिंसु' (आचा १, ६, ३, ११)।

उदीर सक [उद् + ईरय्] १ प्रेरणा करना। २ कहना, प्रतिपादन करना। ३ जो कर्म उदय-प्राप्त न हो उसको प्रयत्न-विशेष से फलोन्मुख करना। उदीरइ, उदीरेंति (भग, दंनि ७८)। भूका. उदीरिंसु, उदीरेंसु (भग)। भवि. उदीरिस्सति (भग)। वकृ. उदीरेंत (ठा ७), 'कुसलवइमुदीरतो' (उप ६०४)। कवकृ. उदीरिज्जमाण (पएण २३)। हेकृ उदीरेत्तए (कस)।

उदीरग देखो उदीरय (पच ५, ५)।

उदीरय न [उदीरण] १ कथन, प्रतिपादन। २ प्रेरणा। ३ काल-प्राप्त न होने पर भी प्रयत्न-विशेष से किया जाता कर्म-फल का अनुभव (कम्म २, १३)।

उदीरणया } स्त्री [उदीरणा] ऊपर देखो
उदीरणा } (कम्म २,१३, १), 'ज करणेणोकड्ढिय उदए दिज्जइ उदीरणा एसा' (कम्मप १४३, १६६)।

उदीरय वि [उदीरक] १ कथक, प्रतिपादक। २ प्रेरक,प्रवर्तक, 'एकमेक्क विसयविसउदीरएसु' (पएह १,४)। ३ उदीरणा करनेवाला, काल-प्राप्त न होने पर भी प्रयत्न-विशेष से कर्म-फल का अनुभव करनेवाला (कम्मप १५६)।

उदीरिद देखो उदीरिय (राय ७४)।

उदीरिय वि [उदीरित] १ प्रेरित, 'चालियाणं घट्टियाए खोमियाणं उदीरियाणं केरिसे सद्दो भवति' (राय, जीव ३)। २ कथित, प्रतिपादित, 'घोरे धम्मे उदीरिए' (आचा)। ३ जनित, कृत, 'ससद्दफासा फरुसा उदीरिया' (आचा)। ४ समय-प्राप्त न होने पर भी प्रयत्न-विशेष से खींच कर जिसके फल का अनुभव किया जाय वह (कर्म) (पएण २३, भग)।

उदु देखो उउ (प्राप, अभि १८९, पि ५७)।

उदुंवर देखो उंवर (कस)।

उदुरुह सक [उद् + रुह्] ऊपर चढना। उदुरुहइ (पि ११८)।

उदूखल देखो उऊखल (पि ६६)।

उदूग पुन [दे] पृथिवी-शिला (वचा ८, १० टी)।

उदूलिय वि [दे] अवनत, नीचा नमा हुआ (षड्)।

उदूहल देखो उऊहल (आचा, पि ६६)।

उद्द न [दे] १ जल-मानुष। २ ककुद, बैल के कंधे का कूवड़ (दे १, १२३)। ३ मत्स्य-विशेष। ४ उसके चर्म का बना हुआ वस्त्र (आचा)।

उद्द वि [आर्द्र] गीला, आर्द्र (षड्)।

उद्दअ वि [उद्यत] उद्यम-युक्त (प्राकृ २१)।

उद्दंड } वि [उद्दण्ड] १ प्रचण्ड, उद्धत
उद्दंडग } (कुमा, गउड)। २ पु हाथ में दण्ड को ऊँचा रखकर चलनेवाले तापसों की एक जाति (औप, निचू १)।

उद्दंतुर वि [उद्दन्तुर] १ जिसका दाँत बाहर आया हो वह। २ ऊँचा (गउड)।

उद्दंभ पुं [उद्दम्भ] छन्द का एक भेद (पिंग)।

उद्दंस पु [उद्दंश] मधुमक्षिका, मत्कुण आदि छोटा कीट (कप्प)।

उद्दड्ढ पु [उद्दग्ध] रत्नप्रभा नरक-पृथिवी का एक नरकावास (ठा ६)। °मज्झिम पु [°मध्यम] रत्नप्रभा पृथिवी का एक नरकावास (ठा ६)। °वित्त पु [°वर्त्त] देखो पूर्वोक्त अर्थ (ठा ६)। °विसिट्ठ पुं [°विशिष्ट] देखो पूर्वोक्त अर्थ (ठा ६)।

उद्दद्दर न [दे ऊर्ध्वदर] सुभिक्ष, सुकाल (बृह १)।

उद्दम पुन देखो उज्जम = उद्यम (प्राकृ २१)।

उद्दरिअ वि [दे] १ उत्खात, उखाडा हुआ (दे १, १००)। २ स्फुटित, विकसित, 'फुडिअ फलिअ च दलिअ उद्दरिअं' (पाअ)।

उद्दरिअ वि [उद् + दृप्त] गर्वित, उद्धत, अभिमानी (णदि)।

उद्दलण न [उद्दलन] विदारण (गउड)।

उद्दव सक [उद्, उप + द्रु] १ उपद्रव करना, पीडा करना। २ मारना, विनाश करना, हिंसा करना, 'तए ए सा रेवई गाहावईणी अन्नया कयाइ तासि दुवालसरहं सवत्तीए अतर जाणित्ता छ सवत्तीओ सत्थप्पओगेणं उद्दवेइ, उद्दवेइत्ता छ सवत्तीओ विसप्पओगेण उद्दवेइ, उद्दवेइत्ता तासि दुवालसएह सवत्तीए कोलघरिय एगमेग हिरएणकोडि एगमेग वय सयमेव पडिवज्जेइ, २ त्ता महासयएण समणोवासएण सद्धि उरालाइ भोगभोगाइ भुंजमाणी विहरइ' (उवा)। भवि. उद्दवेहिइ (भग १५)। कवकृ उद्दविज्जमाण (सूअ २, १)। कृ उद्दवेयव्व (सूअ २, ३)।

उद्दवअ पु [उद्द्रव, उपद्रव] १ उपद्रव। २ विनाश, हिंसा, 'आरंभो उद्दवओ' (श्रा ७)।

उद्दवइत्तु वि [उद्द्रोतृ, उपद्रोतृ] १ उपद्रव करनेवाला। २ हिंसक, विनाशक, 'से हंता छेत्ता भेत्ता लुंपित्ता उद्दवइत्ता विलुंपित्ता अकडं करिस्सामि त्ति मन्नमाणे' (आचा)।

उद्दवग न [उद्द्रवग, उपद्रवग] १ उपद्रव, हरकत, 'उद्दवण पुण जाणसु अइवायविवज्जियं' (पिंड, औप)। २ विनाश, हिंसा (सं ८४, आचा)।

उद्दवण न [अपद्रावण] मृत्यु को छोडकर सब प्रकार का दुःख, 'उद्दवणं पुण जाणसु अइवायविवज्जियं पीडं' (पिंडभा २५, पिंड ९७)।

उद्दवणया } स्त्री [उद्द्रवणा, उपद्रवणा]
उद्दवणा } ऊपर देखो (भग, पएह १,१)।

उद्दवाइअ देखो उड्डुवाइय, 'समणस्स णं भगवओ महावीरस्स णव गणा हुत्था, त०—गोदासे गणे उत्तरवलिस्सहगणे उद्देहगणे चारणगणे उद्दवातित-(इअ)-गणे विस्सवातित-(इअ)-गणे कामड्ढित-(अ)-गणे माणवगणे कोडितगणे' (ठा ९)।

उद्दविअ वि [उद्द्रुत, उपद्रुत] १ पीडित, 'सघाइआ सघट्टिआ परियाविआ किलामिआ उद्दविया ठाणाओ ठाणं संकामिया' (पडि)। २ विनाशित, 'नाऊण विभंगेण नियजिट्ठसुयस्स विलसिय, तो सो सकुद्दुंवो उद्दविओ' (सुपा ४०६)।

उद्दवेत्तु देखो उद्दवइत्तु (आचा)।

उद्दा सक [उद् + दा] बनाना, निर्माण करना। उद्दाइ (भग)।

उद्दा अक [अव + द्रा] मरना। उद्दाई, उद्दायति (भग)। संकृ उद्दाइत्ता (जीव ३, ठा १०, भाग)।

उद्दाइआ स्त्री [उद्द्रोत्री, उपद्रोत्री] उपद्रव करनेवाली स्त्री, 'ताए वा उद्दाइआए कोइ संजओ गहितो होज्जा' (ओघ १८ भा टी)।

उद्दाइन देखो उद्दाय = शुभ्।

उद्दाइत्ता देखो उद्दा = अव + द्रा।

उवगम देखो उवगच्छ। सक्र उवगम्म (विसे ३१९९)। हेक्र उवगतुं (निचू १९)।

उवगय वि [उपगत] १ पास आया हुआ (से १, १६, गा ३२१)। २ ज्ञात, जाना हुआ (सम ८८, उप पृ ५६, सार्ध १४४)। ३ युक्त, सहित (राय)। ४ प्राप्त (भग)। ५ प्रकर्ष-प्राप्त (सम्म १)। ६ स्वीकृत, 'अज्झप्पवद्धमूला, अएऐहि वि उवगया किरिया' (उवर ५५)। ७ अन्तर्भूत, अन्तर्गत;
'ज च महाकप्पसुयं,
जाणि अ सेसाणि छेअसुत्ताणि।
चरणकरणाणुओगो त्ति
कालियत्थे उवगयाणि'
(विसे १२९५)।

उवगय वि [उपकृत] जिसपर उपकार किया गया हो वह (स २०१)।

उवगर सक [उप + कृ] हित करना। उवगरेमि (स २०९)।

उवगरण न [उपकरण] १ साधन, सामग्री, साधक वस्तु (ओघ ६६६)। २ बाह्य इन्द्रिय-विशेष (विसे १९४)।

उवगरिय न [उपकृत] उपकार (कुप्र ४५)।

उवगस सक [उप + कस्] समीप आना, पास आना। संक्र उवगसित्ता (सूअ १, ४)। वक्र.
'उवगसत भपित्ता, पडिलोमाहिं वग्गुहिं।
भोगभोगे वियारेई, महामोह पकुव्वइ'
(मम ५०)।

उवगा सक [उप + गै] वर्णन करना, श्लाघा करना, गुणगान करना। कवक्र उवगाइज्जमाण, उवगिज्जमाण, उवगीयमाण (राय, भग ९, ३३, स ६३)।

उवगार देखो उवयार = उपकार (सुर २, ४३)।

उवगारग वि [उपकारक] उपकार करनेवाला (स ३२१)।

उवगारि वि [उपकारिन्] ऊपर देखो (सुर ७, १९७)।

उवगारिया स्त्री [उपकारिका] प्रासाद आदि की पीठिका (राय ८१)।

उवगिअ न [उपकृत] १ उपकार। २ वि. जिसपर उपकार किया गया हो वह (स ६३९)।

उवगिज्जमाण देखो उवगा।

उवगिण्ह सक [उप + ग्रह्] १ उपकार करना। २ पुष्टि करना। ३ ग्रहण करना। उवगिण्हह (पि ५१२)।

उवगीय वि [उपगीत] १ वर्णित, श्लाघित। २ न. संगीत, गीत, गान, 'वाइयमुवगीयं नट्टमवि सुय दिट्ठ चिट्ठमुत्तिकर' (सार्ध १०८)।

उवगीयमाण देखो उवगा।

उवगूढ वि [उपगूढ] १ आलिङ्गित (गा ३५१, स ४४८)। २ न. आलिंगन (राज)।

उवगूह सक [उप + गुह्] १ आलिंगन करना। २ गुप्त रीति से रक्षण करना। ३ रचना करना, बनाना। कवक्र उवगूहिज्जमाण (णाया १, १, औप)।

उवगूहण न [उपगूहन] १ आलिंगन। २ प्रच्छन्न रक्षण। ३ रचना, निर्माण, 'आरुहणणट्टणेहि वालयउवगूहणेहि च' (तदु)।

उवगूहिय वि [उपगूढ] आलिंगित (आवम)।

उवगूहिय न [उपगूहित] गाढ आलिंगन (पव १९९)।

उवग्ग न [उपाग्र] १ अग्र के समीप। २ आषाढ मास, 'एसो च्चिय कालो पुणरेव गए उवग्गम्मि' (वव १)।

उवग्गह पुं [उपग्रह] १ पुष्टि, पोषण (विसे १८५०)। २ उपकार (उप ५९७ टी, स १५४)। ३ ग्रहण, उत्पादन (ओघ २१२ भा)। ४ उपधि, उपकरण, साधन (ओघ ६६६)।

उवग्गह पु [उपग्रह] सामीप्य-सम्बन्ध (धर्मसं ३६३)।

उवग्गहग वि [उपग्राहक] उपकार-कारक (कुलक २३)।

उवग्गहिअ न [उपगृहीत] उपकार (तंदु ५०)।

उवग्गहिअ वि [उपगृहित] १ उपस्थापित (पएण २३)। २ आलिंगनादि चेष्टा, 'उवहसिएहि उवग्गहिएहि उवसद्देहि' (तदु)। ३ उपकृत (स १५६)। ४ उपष्टम्भित (राज)।

उवग्गहिअ देखो ओवग्गहिअ (पंचव)।

उवग्गाहि वि [उपग्राहिन्] सम्बन्धी, सम्बन्ध रखनेवाला (स ५२)।

उवग्घाय पु [उपोद्घात] ग्रन्थ के आरम्भ का वक्तव्य, भूमिका (विसे ९९२)।

उवघायग वि [उपघातक] विनाशक (धर्मसं ५१२)।

उवघाइ वि [उपघातिन्] उपघात करनेवाला (भास ८७, विसे २००८)।

उवघाइय वि [उपघातिक] १ उपघातकारक (विसे २००९)। २ हिंसा से सम्बन्ध रखनेवाला, 'भूओवघाइए' (औप)।

उवघाय पु [उपघात] १ विराधना, आघात (ओघ ७८८)। २ अशुद्धता (ठा ५)। ३ विनाश (कम्म १, ५४)। ४ उपद्रव (तंदु)। ५ दूसरे का अशुभ-चिन्तन (भास ५१)। °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, जिसके उदय से जीव अपने ही शरीर के पडजीभ, चोरदत, रसौली आदि अवयवों से क्लेश पाता है वह कर्म (सम ६७)।

उवघायण न [उपघातन] ऊपर देखो (विसे २२३)।

उवचय पु [उपचय] १ वृद्धि (भग ६, ३)। २ समूह (पिंड २, ओघ ४०७)। ३ शरीर (आव ५)। ४ इन्द्रिय-पर्याप्ति (पएण १५)।

उवचयण न [उपचयन] १ वृद्धि। २ परिपोषण, पुष्टि (राज)।

उवचर सक [उप + चर्] १ सेवा करना। २ समीप मे घूमना-फिरना। ३ आरोप करना। ४ समीप मे खाना। ५ उपद्रव करना। उवचरइ, उवचरए, उवचरामो, उवचरंति (बृह १, पि ३४९, ४५५, आचा)।

उवचर सक [उप + चर्] व्यवहार करना। उवचरति (पिडभा ६)।

उवचरय वि [उपचरक] १ सेवा के मिष से दूसरे के अहित करने का मौका देखनेवाला (सूअ २, २, २८)। २ पुं जासूस, चर (आचा २, ३, १, ५)।

उवचरिय वि [उपचरित] कल्पित (धर्मसं २४५)।

उवचरिय वि [उपचरित] १ उपासित, सेवित, बहुमानित (स ३०)। २ न. उपचार, सेवा (पचा ६)।

उप्पइअ वि [उत्पतित] ऊँचा गया हुआ, उड़ा हुआ, 'सेवि य आगासे उप्पइए' (उवा; सुर ३, ६६)। २ उन्नत, ऊँचा (आचा)। ३ उद्भूत, उत्पन्न (उत्त २)। ४ न उत्पतन, उड़ना (औप)।

उप्पइअ वि [उत्पाटित] उत्थापित, उठाया हुआ, 'खुडिउप्पइअमुणाल दट्ठूण पिअ व सिढिलवलअ णलिणिं' (से १, ३०)।

उप्पइअव्व } देखो उप्पय = उत् + पत्।
उप्पइउ

उप्पंक वि [दे] १ बहु, अत्यन्त। २ पु पङ्क, कीचड़, काँदो। ३ उन्नति (दे १, १३०)। ४ समूह, राशि (दे १, १३०, पाअ, गउड, स ४३७)।

उप्पग पु [दे] समूह, राशि,
'णवपल्लव विसएणा, पहिआ
पेच्छंति चूअरुक्खस्स।
कामस्स लोहिउप्पगराइअं
हत्यभल्लं व ॥' (गा ५८५)।

उप्पज्ज अक [उत् + पद्] उत्पन्न होना। उप्पजति (कप्प)। वकृ उप्पज्जत, उप्पज्जमाण (से ८, ५५, सम्म १३४, भग, विसे ३३२२)।

उप्पड सक [उत् + पत्] उड़ना, ऊँचा जाना, कूदना (प्रामा)।

उप्पड पुं [उत्पट] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष, क्षुद्र कीट-विशेष (राज)।

उप्पडिअ देखो उप्पइअ (नाट)।

उप्पण सक [उत् + पू] धान्य वगैरह को सूप आदि से साफ-सुथरा करना। कर्म. 'साली वीही जवा य लुव्वतु मलिज्जतु उप्पणिज्जतु य' (पण्ह १, २)।

उप्पणण न [उत्पवन] सूप आदि से धान्य वगैरह को साफ-सुथरा करना (दे १, १०३)।

उप्पण्ण वि [उत्पन्न] उत्पन्न, संजात, उद्भूत (भग, नाट)।

उप्पत्त वि [दे] १ गलित। २ विरक्त (षड्)।

उप्पत्ति वि [उत्पत्ति] उत्पत्ति, प्रादुर्भाव (उव)।

उप्पत्तिया स्त्री [औत्पत्तिकी] बुद्धि-विशेष, विना शास्त्राभ्यासादि के ही होनेवाली बुद्धि, स्वाभाविक मति (ठा ४, ४, णाया १, १)।

उप्पन्न देखो उप्पण्ण (उवा; सुर २, १६०)।

उप्पय सक [उत् + पत्] उड़ना, कूदना। उप्पयइ (महा)। वकृ उप्पयंत, उप्पयमाण (उप १४२ टी, णाया १, १६)। संकृ उप्पइत्ता (औप)। कृ. उप्पइअव्व (से ६, ७८)। हेकृ उप्पइउ (सुर ६, २२२)।

उप्पय देखो उप्पव। वकृ उप्पअत (से ५, ५६)।

उप्पय पु [उत्पात] १ उत्पतन, ऊँचे जाना, कूदना, उड्डयन। २ उत्पत्ति, 'अवट्ठिए चले मदपडिवाउप्पयाई य' (विसे ५७७)। °निवय पु [°निपात] १ ऊँचा-नीचा होना,
'खरपवणुद्धुयसायरतरंगवेगेहिं हीरए नावा।
गुरुकुल्लोलवसुट्ठियनगरनियरेण धरियावि ॥
अणवरयतरंगेहिं उप्पयनिवयं कुणंतिया वहइ'
(सुर १३, १६७)। २ नाट्य-विधि का एक प्रकार (जीव ३)।

उप्पयण न [उत्पतन] ऊँचा जाना, उड्डयन (ठा १०, से ६, २४)।

उप्पयण न [उत्प्लवन] जल को लाँघना, तैरना (से ५, ६०)।

उप्पयणी स्त्री [उत्पतनी] विद्या-विशेष (सूअ २, २, २७)।

उप्परि (अप) देखो उवरि (हे ४, ३३४, पिंग)।

उप्परिवाडि, °डी स्त्री [उत्परिपाटि, °टी] उलटा क्रम, विपर्यास, विपर्यय, 'उप्परिवाडी-वहणे चाउम्मासा भवे लहुगा' (गच्छ १)।

उप्परोप्पर अ [उपर्युपरि] ऊपर-ऊपर (स १४०)।

उप्पल न [उत्पल] १ कमल, पद्म (णाया १, १, भग)। २ विमान-विशेष, (सम ३८)। ३ सख्या-विशेष, 'उप्पलग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो सख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४)। ४ सुगन्धि द्रव्य-विशेष, 'परमुप्पलगंधिए' (जं ३)। ५ पु. परिव्राजक-विशेष (आचू १)। ६ द्वीप-विशेष। ७ समुद्र-विशेष (पण्ण १५)। °वेंटग पु [°वृन्तक] आजीविक मत का एक साधु-समाज (औप)।

उप्पलंग न [उत्पलाङ्ग] सख्या-विशेष, 'हुहुय' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४)।

उप्पला स्त्री [उत्पला] १ एक इन्द्राणी, काल नामक पिशाचेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १)। २ इस नाम का 'ज्ञाताधर्मकथा' का एक अध्ययन (णाया २, १)। ३ स्वनाम ख्यात एक श्राविका (भग १२, १)। ४ एक पुष्करिणी (जीव ३)।

उप्पलिणी स्त्री [उत्पलिनी] कमलिनी, कमल का गाछ या पौधा (पण्ण १)।

उप्पल्ल वि [दे] अध्यासित, आरूढ (षड्)।

उप्पव सक [उत् + प्लु] १ लाँघना, पार करना, तैरना। २ ऊँचा जाना, उड़ना। वकृ. उप्पवत, उप्पवमाण (से ५,६१, ८,८६)।

उप्पवइय वि [उत्प्रव्रजित] जिसने दीक्षा छोड़ दी हो वह, साधु होकर फिर गृहस्थ बना हुआ (स ४८५)।

उप्पह पु [उत्पथ] उन्मार्ग, कुमार्ग, 'पथाउ उप्पह नेंति' (निचू ३, से ४, २६, हेका २५६)। °जाइ वि [°यायिन्] उलटे रास्ते जानेवाला, विपथ-गामी (ठा ४, ३)।

उप्पा स्त्री देखो उप्पाय = उत्पाद (ठा १—पत्र १६, ठा ५, ३—पत्र ३४६)।

उप्पाइ वि [उत्पादिन्] उत्पन्न होनेवाला (विसे २८१६)।

उप्पाइत्ता देखो उप्पाय = उत् + पादय्।

उप्पाइत्तु वि [उत्पादयितृ] उत्पादक, उत्पन्न करनेवाला (ठा ७)।

उप्पाइय न [औत्पातिक] भूकंप आदि उत्पातो का सूचक शास्त्र (सूअ १, १२, ६)।

उप्पाइय वि [उत्पादित] उत्पन्न किया हुआ, 'उप्पाइयाविच्छिएणकोउहलत्ते' (राय)।

उप्पाइय वि [औत्पातिक] १ अस्वाभाविक, कृत्रिम, 'उप्पाइयपव्वय व चकमंत'। २ आकस्मिक, अकस्मात् होनेवाला, 'उप्पाइया वाही' (राज)। ३ न अनिष्ट-सूचक आकस्मिक उपद्रव, उत्पात, 'भो भो नावियपुरिसा मकरद्धयाग समुच्चया होह। दीसइ कयतवयणं व भीममुप्पाइयं जेण' (सुर १३, १८६)।

उप्पाएउ
उप्पाएत } देखो उप्पाय = उत् + पादय्।
उप्पाएत्तए

उवयारय वि [उपकारक] उपकार करनेवाला (धम्म ८ टी)।
उवयारि वि [उपकारिन्] उपकारक (स २०८, विक २३, विवे ७६)।
उवयारिअ वि [औपचारिक] उपचार से संबन्ध रखनेवाला (उवर ३४)।
उवयालि पु [उपजालि] १ एक अन्तकृद् मुनि, जो वसुदेव का पुत्र था और जिसने भगवान् श्रीनेमिनाथजी के पास दीक्षा लेकर शत्रुञ्जय पर मुक्ति पाई थी (अंत १४)। २ राजा श्रेणिक का इस नाम का एक पुत्र, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर-विमान मे देव गति प्राप्त की थी (अनु १)।
उवरइ स्त्री [उपरति] विराम, निवृत्ति (विसे २१७७, २६४०, सम ४४)।
उवरज सक [उप + रञ्ज्] ग्रस्त करना। कर्म उवरज्जदि (शौ) (मुद्रा ५८)।
उवरग देखो ओअरय, 'उवरगपविट्ठाए कणगमंजरीए निरूवणत्थं दारदेसट्ठिएण दिट्ठ त पुव्ववरिणयचेट्ठिय' (महा)।
उवरत्त वि [उपरक्त] १ अनुरक्त, राग-युक्त, 'कुमरगुणेसुवरत्ता' (सुपा २५६)। २ राहु से ग्रसित (पाअ)। ३ म्लान (स ४७३)।
उवरम अक [उप + रम्] निवृत्त होना, विरत होना, 'भो उवरमसु एयाओ असुमज्झवसाणाओ' (महा)।
उवरम पु [उपरम] १ निवृत्ति, विराम, (उप पृ ६३)। २ नाश (विसे ६२)।
उवरय वि [उपरत] १ विरत, निवृत्त (आचा, सुपा ५०८)। २ मृत (स १०४)।
उवरय देखो उवरग, 'उवरयगया दारं पिहिऊण किंपि मुणमुणाती चिट्ठइ' (महा)।
उवरल (अप) देखो उव्वरिय [दे] (पिंग)।
उवराग } पुं [उपराग] सूर्य या चन्द्र का
उवराय } ग्रहण, राहु-ग्रहण (पराह, १, २, से ३, ३६, गउड)।
उवराय पु [उपरात्र] दिन, 'राओवरायं अपडिन्ने अन्नगिलाय एगया भुंजे' (आचा)।
उवरि अ [उपरि] ऊपर, ऊर्ध्व (उव)। °भासा स्त्री [°भाषा] गुरु के बोलने के अनन्तर ही विशेष बोलना (पडि)। °म, °मग, °मय, °ल्ल वि [°तन] ऊपर का, ऊर्ध्व-स्थित (सम ४३, सुपा ३५, भग, हे २, १६३, सम २२, ८६)। °हुत्त वि [°अभिमुख] ऊपर की तरफ (सुपा २६६)।
उवरिं ऊपर देखो (कुमा)।
उवरितण देखो उवरि-म (धर्मवि १५१)।
उवरुंध सक [उप + रुध्] १ अटकाव करना। २ अड़चन डालना। ३ प्रतिबन्ध करना, रोकना। कर्म उवरुज्झइ, उवरुंधिज्जइ, (हे ४, २४८)।
उवरुद्द पु [उपरुद्र] नरक के जीवों को दुःख देनेवाले परमाधार्मिक देवों की एक जाति, 'रुद्दोवरुद्द काले अ, महाकाले त्ति यावरे' (सम २८), 'भजति अगमगाणि, ऊरुबाहूसिराणि करचरणा। कप्पेंति कप्पणीहिं, उवरुद्दा पावकम्मरया' (सूअ १, ५)।
उवरुद्ध वि [उपरुद्ध] १ रक्षित। २ प्रतिरुद्ध, अवरुद्ध, 'पासत्थपमुहचोरोवरुद्धधणभव्वसत्थाण' (सार्ध ६८, उप पृ ३८५)।
उवरोह सक [उप + रोधय्] अड़चन डालना। कृ उवरोहणीय (सुख १, ४०)।
उवरोह पु [उपरोध] १ अड़चन, बाधा (विसे १४१३, स ३१६), 'भूओवरोहरहिए' (आव ४)। २ अटकाव, प्रतिबन्ध (बृह १, स १५)। ३ घेरा, नगर आदि का सैन्य द्वारा वेष्टन, 'उवरोहभया कीरइ सप्परिखो पुरवरस्स पागारो' (बृह ३)। ४ निर्बन्ध, आग्रह (स ४५७)।
उवरोहिअ वि [उपरोधित] जिसको उपरोध —निर्बन्ध किया गया हो वह (कुप्र १३५, ४०६)।
उवरोहि वि [उपरोधिन्] उपरोध करनेवाला (आव ४)।
उवल पुं [उपल] १ पाषाण, पत्थर (प्रासू १७५)। २ टांकी वगैरह को संस्कृत करनेवाला पाषाण-विशेष (पराण १)।
उवलम्बण पु [उपलम्बन] सांकल (सिकड) वाला एक प्रकार का दीपक (अनु)।
उवलंभ सक [उप + लभ्] १ प्राप्त करना। २ जानना। २ उलाहना देना। कर्म. उवलभिज्जइ (पि ५४१)। वकृ उवलभेमाण (णाया १, १८)।
उवलभ पु [उपलम्भ] १ लाभ, प्राप्ति (सुपा ६)। २ ज्ञान (स ६५१)। ३ उलाहना, 'एव बहूवलभे' (उप ६४८ टी)।
उवलंभ देखो उवालभ = उपालम्भ, 'उवलंभम्मि मिगावई नाहियवाई वि वत्तव्वे' (दमनि १, ७५)।
उवलभण न [उपलम्भन] प्राप्ति (णदि २१०)।
उवलभणा स्त्री [उपलम्भना] उलाहना, 'धरणा सत्थवाह् बहूहिं खेज्जणाहि य रुटणाहि य उवलभणाहि य खेजमाणा य रुटमाणा य उवलभेमाणा य धरणस्स एयमट्ठं णिवेदेंति' (णाया १, १८)।
उवलक्ख सक [उप + लक्षय्] जानना, पहिचानना। उवलक्खेइ (महा)। संकृ. उवलक्खेऊण (महा)। कृ. उवलक्खिज्ज (उप पृ ८७)।
उवलक्ख पुं [उपलक्ष] ज्ञान, खबर, मालूम, 'खित्ताइ अणुवलक्ख रयणाइं रुक्खगहणम्मि' (कुप्र ३२६)।
उपलक्खण न [उपलक्षण] १ पहिचान (सुपा ६१)। २ अन्यार्थ-बोधक सकेत (श्रा ३०)।
उवलक्खिअ वि [उपलक्षित] १ पहिचाना हुआ, परिचित (श्रा १२)।
उवलग्ग वि [उपलग्न] लगा हुआ, लग्न, 'पउमिणिपत्तोवलग्गजलबिंदुनिचयचित्त' (कप्प, भवि)।
उवलद्ध वि [उपलब्ध] १ प्राप्त। २ विज्ञात, 'जइ सव्व उवलद्ध, जइ अप्पा भाविओ उवसमेण' (उव, णाया १, १३, १४)। ३ उपालब्ध, जिसको उलाहना दिया गया हो वह (उप ७२८ टी)।
उवलद्धि स्त्री [उपलब्धि] १ प्राप्ति, लाभ। २ ज्ञान (विसे २०६)।
उवलद्धिय देखो उवलद्ध, 'सत्तरत्तछुहियस्स मे भक्खमुवलद्धियं, ता तुम भक्खिस्स' (कुप्र ५६)।
उवलद्धु वि [उपलब्धृ] ग्रहण करनेवाला, जाननेवाला (विसे ६२)।

उप्पुअ वि [उत्प्लुत] उच्छलित, कूदा हुआ (से ६, ४८, पण्ह १, ३)।

उप्पुसिअ देखो उप्पुसिअ (से ६, ८५)।

उप्पुणिअ वि [उत्पूत] सूप से साफ-सुथरा किया हुआ (पाअ)।

उप्पुण्ण वि [उत्पूर्ण] पूर्ण, व्याप्त (स २५)।

उप्पुलइअ वि [उत्पुलकित] रोमाञ्चित (स २८१)।

उप्पुसिअ वि [उत्प्रोञ्छित] लुप्त, प्रोञ्छित (से ६, ८५ गउड)।

उप्पूर पु [उत्पूर] १ प्राचुर्य (पण्ह १, ३)। २ प्रकृष्ट-प्रवाह (औप)।

उप्पेक्ख (अप) देखो उविक्ख। उप्पेक्ख (पिंग)।

उप्पेक्ख सक [उत्प्र+ईक्ष्] संभावना करना, कल्पना करना। उप्पेक्खामि (स १४७)। उप्पेक्खेमि (स ३४६)।

उप्पेक्खा स्त्री [उत्प्रेक्षा] १ अलंकार-विशेष २ वितर्कणा, संभावना (गा ३३९)।

उप्पेक्खिअ वि [उत्प्रेक्षित] संभावित, विकल्पित (दे १, १०६)।

उप्पेय न [दे] अभ्यंग, तैलादि की मालिश, 'पुव्वं च मगलट्ठा उप्पेय जइ करेइ गिहियाण' (वव ६)।

उप्पेल सक [उद्+नमय्] ऊँचा करना, उन्नत करना। उप्पेलइ (हे ४, ३६)।

उप्पेलिअ वि [उन्नमित] ऊँचा किया हुआ, उन्नत किया हुआ (कुमा)।

उप्पेल्ल पु [उन्नमन] ऊँचा करना (पउम ८, २७२)।

उप्पेस पु [उत्पेष] त्रास, भय, डर (से १०, ६१)।

उप्पेहड वि [दे] उद्भट, आडम्बरवाला (दे १, ११६, पाअ, स ४४६)।

उप्फ देखो पुप्फ (गा ६३६)।

उप्फण सक [उत्+फण्] छाँटना, पवन से धान्य आदि का छिलका दूर करना। उप्फणति, भूका उप्फणिंसु, भवि उप्फणिस्सति (आचा २, १, ६, ४)।

उप्फदोल वि [दे] चल, अस्थिर (दे १, १०२)।

उप्फाल पु [दे] खल, दुर्जन (दे १, ९०, पाअ)।

उप्फाल सक [उत्+पाटय्] १ उठाना। २ उखाडना। उप्फालेइ (हे २, १७४)।

उप्फाल सक [कथ्] कहना, बोलना। उप्फालेइ (हे २, १७४)।

उप्फाल वि [कथक] कहनेवाला, सूचक (स ६४४)।

उप्फालिअ वि [कथित] १ कथित। २ सूचित (पाअ, उप ७२८ टी, स ४७८)।

उप्फिड अक [उत्+स्फिट्] कुण्ठित होना, असमर्थ होना। उप्फिडइ, उप्फेडइ, 'एमाइत्तिगप्पणेहिं वाहिज्जमाणो उप्फि-(प्फे)-डइ परसू' (महा)।

उप्फिड अक [उत्+स्फिट्] मण्डूक की तरह कूदना, उडना। उप्फिडइ (उत्त २७, ५)। वकृ उप्फिडत (पव २)।

उप्फिडण न [उत्स्फेटन] कुण्ठित होना (स ६९८)।

उप्फिडिय वि [उत्स्फिटित] १ कुण्ठित। २ बाहर निकला हुआ, 'कत्थइ नक्कुक्कत्तियमिप्पिपुड्डुप्फिडियमोत्तिया...नो' (सुर १३, २१३)।

उप्फुकिआ स्त्री [दे] धोबिन, कपडा धोनेवाली (दे १, ११४)।

उप्फुडिअ वि [दे] आस्तृत, बिछाया हुआ (दे १, ११३)।

उप्फुण्ण वि [दे] आपूर्ण, भरा हुआ, व्याप्त (दे १, ९२, सुर १, २३३, ३, २१५)।

उप्फुन्न वि [दे] स्पृष्ट, छुआ हुआ (पव १५८ टी)।

उप्फुल्ल वि [उत्फुल्ल] विकसित (पाअ, से ६, ९६)।

उप्फुल्लिआ स्त्री [उत्फुल्लिका] क्रीडा विशेष, पाँव पर बैठ कर बारबार ऊँचा-नीचा होना,

'उप्फुलिआइ खेल्लउ,
मा ण वारेहि होउ परिऊढा।
मा जहणभारगरुई,
पुरिसाअतो किलिम्मिहिइ'
(गा १९६)।

उप्फुस सक [उत्+स्पृश्] सिंचना, छिडकना। संकृ उप्फुसिऊण (राज)।

उप्फेणउप्फेणिय क्रिवि [दे] क्रोध-युक्त प्रबल वचन से, 'उप्फेणउप्फेणिय सीहरायं एव वयासी' (त्रिपा १, ९—पत्र ९०)।

उप्फेस पु [दे] १ त्रास, भय (दे १, ९४)। २ मुकुट, पगडी, शिरोवेष्टन, 'पंच रायककुहा पण्णत्ता, तं जहा—खग्ग छत्त उप्फेस उवाहणाउ वालवियणी' (ठा ५, १—पत्र ३०३, औप, आचा २, ३, २, २)।

उप्फेसण न [दे] डराना, भयोत्पादन (सुख ३, १)।

उप्फोअ पु [दे] उद्गम, उदय (दे १, ९१)।

उबुस सक [मृज्] मार्जन करना, शुद्धि करना, साफ करना। उबुसइ (षड्)।

उब्बंध सक [उद्+बन्ध्] १ फाँसी लगाना, फाँसी लगा कर मरना। २ वेष्टन करना। वकृ 'जलनिहितडम्मि दिट्ठा उब्बधंती इहप्पाण' (सुपा १६०)। संकृ उब्बधिअ, उब्बधिऊण (नाट, पि २७०, स ३४६)।

उब्बंधण न [उद्बन्धन] फाँसी लगाना, उल्लम्बन (... ५)।

उब्बण वि [उल्वण] उत्कट (पि २६६)।

उब्बद्ध वि [उद्बद्ध] १ जिसने फाँसी लगाई हो वह, फाँसी लगा कर मरा हुआ। २ वेष्टित, 'मुअगसंघायउब्बद्धो' (सुर ८, ५७)। ३ शिक्षक के साथ शर्तों से बँधा हुआ, शिक्षक के आयत्त (ठा ३),

'सिप्पाई सिक्खतो,
सिक्खावेंतस्स देइ जा सिक्खा।
गहियम्मिवि सिक्खम्मि,
ज चिरकाल तु उब्बद्धो' (बृह)।

उब्बिब वि [दे] १ खिन्न, उद्विग्न। २ शून्य ३ क्रान्त। ४ प्रकट वेष वाला। ५ भीत, डरा हुआ। ६ उद्भट (दे १, १२७, वज्जा ६२)।

उब्बिबल वि [दे] कलुष जलवाला (दे १११ टी)।

उब्बिबल न [दे] कलुष जल, मैला पानी (दे १, १११)।

उब्बिविर वि [दे] खिन्न, उद्विग्न (कप्पू)।

(णाया १,१६, गउड)। २ वि सहित, युक्त, 'गुणसपग्रोववीग्रो' (विसे ३४११)।

उववीड ग्र [उपपीड] उपमर्दन, 'सिविणो-ववीड ग्रालिंगणेण गाढ पीडिग्रो' (रभा)।

उववूह सक [उप + बृह्] १ पुष्ट करना। २ प्रशंसा करना, तारीफ करना। सक्क उववूहेऊण (दसनि ३)। कृ उववूहेयव्व (दसनि ३)।

उववूहण न [उपबृंहण] १ वृद्धि, पोषण (पण्ह २,१)। २ प्रशंसा, श्लाघा (पचा २)।

उववूहा स्त्री [उपबृहा] ऊपर देखो 'उववूह-थिरीकरणे वच्छल्लपभावणे ग्रट्ठ' (पडि)।

उववूहणिय वि [उपबृंहणीय] पुष्टि-कर्त्ता (निचू ८)। स्त्री पट्ट-विशेष, राजा वगैरह के भोजन-समय में उपभोग मे ग्रानेवाला पट्टा (निचू ६)।

उववूहिय वि [उपबृंहित] १ वृद्धि को प्राप्त, पुष्ट (सं १५)। २ प्रशंसित (उप पृ ३८६)।

उववूहिर वि [उपबृंहिन्] १ पोषक, पुष्टि-कारक। २ प्रशंसक (सण)।

उववेय वि [उपेत] युक्त, सहित (णाया १, १, ग्रौप वसु, सुर १, ३४, विसे ६६६)।

उवसकम सक [उपस + क्रम्] समीप ग्राना। वक्र उवसंकमंत (दस ५, २, १०)।

उवसखड सक [उपस + कृ] रांधना, पकाना। कवक्र उवसखडिज्जमाण (ग्राचा २, १ ४, २)।

उवसखा स्त्री [उपसख्या] यथावस्थित पदार्थ-ज्ञान (सूग्र १, १२)।

उवसगह सक [उपस + ग्रह्] उपकार करना। कर्म उवसगहिज्जइ (स १६१)।

उवसंघर सक [उपस + हृ] उपसहार करना। उवसघरमि (भवि)।

उवसघरिय देखो उवसहरिय (भवि)।

उवसविय वि [उपसहृत] जिसका उपसंहार किया गया हो वह, समापित (विसे १०११)।

उवसंचि सक [उपसं + चि] संचय करना। सक्क उवसंचिवि (सण)।

उवसंठिय वि [उपसंस्थित] १ समीप मे स्थित। २ उपस्थित (सण)।

उवसत वि [उपशान्त] १ क्रोधादि विकार-रहित (सूग्र १, ६, धर्म ३)। २ नष्ट, ग्रपगत, 'उवसंतरय करेह' (राय)। ३ पु ऐरवत क्षेत्र के स्वनाम-धन्य एक तीर्थङ्कर-देव (पव ७)। °मोह पुं [°मोह] ग्यारहवां गुण-स्थानक (सम २६)।

उवसंति स्त्री [उपशान्ति] उपशम (ग्राचा)।

उवसंधारिय वि [उपसधारित] सकल्पित (निचू १)।

उवसपज्ज [उपस + पद्] १ समीप मे जाना। २ स्वीकार करना। ३ प्राप्त करना। उवसपज्जइ (स १६१)। वक्र उवसपज्जंत (वव १)। संक्र उवसपज्जिता, उवसपज्जि-त्ताण (कप्प, उवा)। हेक्र उवसपज्जिउ (वृह १)।

उवसपण्ण वि [उपसंपन्न] १ प्राप्त। २ समीप-गत (धर्म ३)।

उवसपया स्त्री [उपसंपद्] १ ज्ञान वगैरह की प्राप्ति के लिए दूसरे गुर्वादि के पास जाना (धर्म ३)। २ ग्रन्य गुरु ग्रादि की सत्ता का स्वीकार करना (ठा ३, ३)। ३ लाभ, प्राप्ति (उत्त २६)।

उवसंहर सक [उपस + हृ] १ हटाना, दूर करना। २ सकेलना, समेटना, 'ता उवसहर इम कोव' (कुप्र २८५)। सक्क 'उवसहरिउ नीमेसदेवमाय गग्रो जाव' (धर्मवि १८)।

उवसंहरिय वि [उपसहृत] समेटा हुग्रा, 'वतरेण य उवसहरिया माया' (महा)।

उवसहार पुं [उपसहार] सकोचन, समेट (द्रव्य १०)।

उवसहार पुं [उपसहार] १ समाप्ति। २ उपनय (श्रा ३६)।

उवसग्ग पु [उपसर्ग] १ उपद्रव, वाधा (ठा १०)। २ ग्रव्यय-विशेष, जो धातु के पूर्व मे जोडे जाने से उस धातु के ग्रर्थ की विशेषता करता है (पण्ह २, २)।

उवसग्ग वि [दे] मन्द, ग्रालसी (दे १, ११३)।

उवसग्गिअ वि [उपसर्गित] हैरान किया हुग्रा (सिरि १११७)।

उवसज्ज ग्रक [उप + सृज्] ग्राश्रय करना। उवसज्जिजा (ग्राचा २, ८, १)।

उवसज्जण न [उपसर्जन] १ ग्रप्रधान, गौण (विसे २२६२)। ३ सम्बन्ध (विसे ३००५)।

उवसत्त वि [उपसक्त] विशेष ग्रासक्तिवाला (उत्त ३०)।

उवसद्द पुं [उपशब्द] सुरत-समय का शब्द (तंदु)।

उवसद्द पुंन [उपशब्द] १ प्रच्छन्न शब्द। २ समीप का शब्द (तदु ५०)।

उवसप्प सक [उप + सृप्] समीप जाना। सक्क उवसप्पिऊण (महा, स ५२६)।

उवसप्पि वि [उपसर्पिन्] समीप मे जाने-वाला (भवि)।

उवसप्पिय वि [उपसर्पित] पास गया हुग्रा (पाग्र)।

उवसम पु [उप + शम्] १ क्रोध-रहित होना। २ शान्त होना, ठडा होना। ३ नष्ट होना। उवसमइ (कप्प, कम, महा)। कृ उवसमियव्व (कप्प)। प्रयो उवसमेइ (विसे १२८४), उवसमावेइ (पि ५५२)। कृ उव-समावियव्व (कप्प)।

उवसम पुं [उपशम] १ क्रोध का ग्रभाव, क्षमा (ग्राचा)। २ इन्द्रिय-निग्रह (धर्म ३)। ३ पन्द्रहवां दिवस (चद १०)। ४ मुहूर्त्त-विशेष (सम ५१)। °सम्म न [°सम्यक्त्व] सम्यक्त्व-विशेष (भग)।

उवसमणा स्त्री [उपशमना] ग्रात्मिक प्रयत्न-विशेष, जिसमे कर्म-पुद्गल उदय-उदीरणादि के ग्रयोग्य वनाए जाय वह (पंच)।

उवसमि वि [उपशमिन्] उपशमवाला (विसे ५३० टी)।

उवसमिअ पु [औपशमिक] कर्मो का उप-शम (ग्रणु ११३)।

उवसमिय वि [उपशमित] उपशम-प्राप्त (भवि)।

उवसमिय वि [औपशमिक] १ उपशम से होनेवाला। २ उपशम से संवन्ध रखनेवाला (सुपा ६४८)।

उवसाम सक [उप + शमय्] १ शान्त करना। २ रहित करना। उवसामेइ (भग)। वक्र उवसामेमाण (राज)। कृ उवसामि-यव्व (कप्प)। सक्क. उवसामइत्तु (पव)।

उब्भिडण ४ [उद् + भेदन] लग कर अलग होना, आघात कर पीछे हटना, 'जेमु चिय कुठिज्जइ, रहमुब्भिडणमुहलो महिहरेसु। तेसु च्चेय णिमिज्जइ, पहिरोहदोलिरो कुलिसो' ॥ (गउड)।

उब्भिण्ण } वि [उद्भिन्न] १ अंकुरित (ओघ ११३), 'उब्भिन्ने पाणियं
उब्भिन्न } पडिय' (सुर ७, ११४)। २ उद्घाटित खोला हुआ। ३ न जैन साधुओं के लिए भिक्षा का एक दोष, मिट्टी वगैरह से लिप्त पात्र को खोलकर उसमें से दी जाती भिक्षा, 'छगणाइ-णोवउत्त उब्भिदिय ज तमुब्भिण्णं' (पंचा १३, ठा ३, ४)। ४ वि ऊँचा हुआ, खडा हुआ, 'हरिसवसुब्भिन्नरोमचा' (महा)।

उब्भिय वि [उद्भिद्] पृथ्वी को फाडकर उगनेवाली वनस्पति (पण्ह १, ४)।

उब्भिय वि [ऊर्ध्वित] ऊँचा किया हुआ, खडा किया हुआ (सुपा ८६, महा, वज्जा ८८)।

उब्भिय न [उद्भिद्] १ लवण-विशेष, समुद्र के किनारे पर क्षार जलके ससर्ग से होने-वाला नोन (आचा २, १, ६, ५)। २ पुन. खजरीट, शलभ आदि प्राणी (सबोध २०, धर्मसं ७२, सूत्र १, ६, ८)।

उब्भीकय वि [ऊर्ध्वीकृत] ऊँचा किया हुआ, 'उब्भीकयवाहुजुओ' (उप ५६७ टी)।

उब्भुअ अक [उद् + भू] उत्पन्न होना। उब्भुअइ (हे ४, ६०)।

उब्भुआण वि [दे] १ उबलता हुआ, अग्नि से तप्त जो द्रव वगैरह उछलता है वह (दे १, १०५, ७, ८१)।

उब्भुग्ग वि [दे] चल, अस्थिर (दे १, १०२)।

उब्भुत्त सक [उत् + क्षिप्] ऊँचा फेकना। उब्भुत्तइ (हे ४, १४४)।

उब्भुत्तिअ वि [उत्क्षिप्त] ऊँचा फेंका हुआ (कुमा)।

उब्भुत्तिअ वि [दे] उद्दीपित, प्रदीपित (पाअ)।

उब्भूअ वि [उद्भूत] १ उत्पन्न (सुर ३, २३६)। २ आगन्तुक कारण (विसे १४७६)।

उब्भूइआ स्त्री [औद्भूतिकी] श्रीकृष्ण वासु-देव की एक भेरी जो किसी आगन्तुक प्रयो-जन के उपस्थित होने पर बजाई जाती थी (विसे १४७६)।

उब्भेअ पुं [उद्भेद] उद्गम, उत्पत्ति, 'उम्हा-अतगिरियडंसीमाणिव्वडियकंदलुब्भेय' (गउड), 'अभिणवजोव्वणउब्भेयसुन्दरा सयलमणहरा-रावा' (सुर ११, ११६)।

उब्भेइम वि [उद्भेदिम] स्वय उत्पन्न होने-वाला, उब्भेइम पुण सयरुह जहा मामुद्द लोणं' (निचू ११)।

उभ पुं [उभ] उभय, दोनो (पंच ६, ५८)।

उभओ अ [उभयतस्] द्विधा, दोनो तरह से, दोनो ओर से (उव, औप)।

उभज्जायण देखो ओमज्जायण (सुज्ज १०, १६)।

उभय वि [उभय] युगल, दो, दोनो (ठा ४, ४)। °त्थ अ [°त्र] दोनो जगह (सुपा ६४८)। °लोग पु [°लोक] यह और पर जन्म (पंचा ११)। °हा अ [°था] दोनो तरफ से, द्विधा (सम्म ३८)।

उमच्छ सक [वञ्च्] ठगना, धूर्त्तना। उमच्छइ (हे ४, ९३)। वकृ उमच्छत (कुमा)।

उमच्छ सक [अभ्या + गम्] सामने आना। उमच्छइ (पड्)।

उमा स्त्री [उमा] गौरी, पार्वती (पाअ)। २ द्वितीय वासुदेव की माता (सम १५२)। ३ देव-गणिका-विशेष (आचू)। ४ स्त्री-विशेष (कुमा)। °साइ [°स्वाति] स्वनाम धन्य एक प्राचीन जैनाचार्य और विख्यात ग्रन्थकार (सार्ध ५०)।

उमाण न [दे] प्रवेश (आचा २, १, ६)।

°उमार देखो कुमार (अच्चु २६)।

उमीस वि [उन्मिश्र] मिश्रित, 'पलिलसिर-पलिग्गपीवलकरणघुमणुमीसएहवरणजल' (कुमा)।

उमुय सक [उद् + मुच्] छोडना। वकृ. उमुयत (उत्त ३०, २३)।

उम्मइअ वि [दे] १ मूढ, मूर्ख (दे १, १०२)। २ उन्मत्त (गा ४६८, वज्जा ४२)।

उम्मऊह वि [उन्मयूख] प्रभाशाली (गउड)।

उम्मड पुं [दे] १ हठ। वि उद्वृत्त (दे १, १२४)।

उम्माथिय वि [दे] दग्ध, जला हुआ (वज्जा ९२)।

उम्मग्ग वि [उन्मग्न] १ पानी के ऊपर आया हुआ, तीर्ण (राज)। २ न. उन्मज्जन, तैरना, जल के ऊपर आना (आचा)। °जला स्त्री [°जला] नदी-विशेष, जिसमे पत्थर वगैरह भी तैर सकते हैं (जं ३)।

उम्मग्ग पु [उन्मार्ग] १ कुपथ, उलटा रास्ता, विपरीत मार्ग (सुर १, २४३, सुपा ६५)। २ छिद्र, रन्ध्र (आचा) ३ अकार्य करना (आचा)।

उम्मग्गणा स्त्री [उन्मार्गणा] छिद्र, विवर (आचा)।

उम्मच्छ न [दे] १ क्रोध, गुस्सा (दे १, १२५, से ११, १६, २०)। २ वि असंबद्ध, ३ प्रकारान्तर से कथित (दे १, १२५)।

उम्मच्छर वि [उन्मत्सर] १ ईर्ष्यालु, द्वेषी (से ११, १४)। २ उद्भट (गा १२७, ६७५)।

उम्मच्छविअ वि [दे] उद्भट (दे १, ११६)।

उम्मच्छिअ वि [दे] १ रुपित, रुष्ट, २ आकुल, व्याकुल (दे १, १३७)।

उम्मज्ज न [उन्मज्जन] तरण, तैरना। °णिमज्जिया स्त्री [°निमज्जिका] उभचुभ करना, पानी मे ऊँचा-नीचा होना (ठा ३, ४)।

उम्मज्जग वि [उन्मज्जक] १ उन्मज्जन करने-वाला, गोता लगाने वाला। २ उन्मज्जन से ही स्नान करनेवाले तापसो की एक जाति (औप, भग ११, ९)।

उम्मड्ढा स्त्री [दे] १ बलात्कार, जबरदस्ती (दे १, ९७)। २ निषेध, अस्वीकार (उप ७२८ टी)।

उम्मण वि [उन्मनस्] उत्कण्ठित, उत्सुक (उप पृ ५८)।

उम्मत्त पु [दे] १ धतूरा, वृक्ष-विशेष। २ एरण्ड, वृक्ष-विशेष (दे १, ८९)।

उम्मत्त वि [उन्मत्त] १ उद्धत, उन्माद-युक्त (वृह १)। २ पागल, भूताविष्ट (पिंड ३८०)। °जला स्त्री [°जला] नदी-विशेष (ठा २, ३)।

उम्मत्तय न [दे] धतूरे का फल, "उम्मत्तय-

उवहिय वि [उपहित] १ उपढौकित, अर्पित। २ निहित, स्थापित (आचा, विसे ६३७)। ३ न उपढौकन, अर्पण (निचू २०)।

उवहिय वि [औपाधिक] माया से प्रच्छन्न विचरनेवाला (णाया १, २)।

उवहुज सक [उप + भुज्] उपभोग करना, कार्य में लाना। उवहुंजइ (पि ५०७)। कवकृ उवहुज्जंत (पि ५४६)।

उवहुत्त देखो उवभुत्त (पाअ, से १०, ४५)।

उवाइक्कम सक [उपाति + क्रम्] उल्लंघन करना। संकृ उवाइकम्म (आचा २, ८, १)।

उवाइण सक [उपाति + नी] गुजारना। संकृ. उवाइणित्ता (आचा २, २, २, ७)।

उवाइण सक [उप + याच्] मनौती करना, किसी काम के पूरा होने पर किसी देवता की विशेष आराधना करने का मानसिक संकल्प करना। हेकृ 'जति णं अहं देवाणुप्पिया। दारगं वा दारियं वा पयामि, ताणं अहं तुब्भं जाय च दाय च भाग च अक्खयणिहिं च अणुवड्ढेस्सामि त्ति कट्टु ओवाइय 'उवाइणित्तए' (विपा १, ७)।

उवाइण सक [उपा + दा] १ ग्रहण करना। २ प्रवेश करना। हेकृ उवाइणित्तए (ठा ३)। प्रयो. 'त सेयं खलु मम जितसत्तुस्स रण्णो संताणं तच्चाणं तहियाणं अवितहाणं सब्भूताणं जिणपण्णत्ताणं भावाणं अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठ उवाइणावित्तए' (णाया १, १२)।

उवाइणाव सक [अति + क्रम्] १ उल्लंघन करना। २ गुजारना, पसार करना। उवाइणावेइ। वकृ उवाइणावेंत। हेकृ उवाइणावेत्तए (कस), उवाइणावित्तए (कप्प), 'से गामंसि वा जाव सन्निवेसंसि वा बहिया से णं संनिविट्ठं पेहाए कप्पइ निग्गथाण वा निग्गथीण वा तद्दिवसं भिक्खायरियाए गतूण पडिनियत्तए, नो से कप्पइ त रयणिं तत्थेव उवाइणावेत्तए। जे खलु निग्गथे वा निग्गथी वा तं रयणिं तत्थेव उवाइणावेइ, उवाइणावेंत वा साइज्जइ, से दुहओ वीइक्कममाणे आवज्जइ चउमासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं' (कस), 'नो से कप्पइ तं रयणिं उवाइणावित्तए' (कप्प)।

उवाइणाविय वि [अतिक्रान्त] १ उल्लंघित। २ गुजारा हुआ, पसार किया हुआ, विताया हुआ, 'नो कप्पइ निग्गथाण वा निग्गथीण वा असणं वा ४ पढमाए पोरुसीए पडिग्गाहेत्ता पच्छिमं पोरिसिं उवाइणावेत्तए। से य आहच्च उवाइणाविए सिया, तं नो अप्पणा भुजेज्जा' (कस)।

उवाइय देखो उवयाइय (णाया १, २, सुपा १०, महा)।

उवाई स्त्री [उत्लावकी] पोताकी-नामक विद्या की प्रतिपक्षभूत एक विद्या (विसे २४५४)।

उवाएज्ज } वि [उपादेय] ग्राह्य, ग्रहण करने
उवाएय } योग्य (विसे, स १४८)।

उवागच्छ } सक [उपा + गम्] समीप में
उवागम } आना। उवागच्छइ (भग, कप्प)। भवि. उवागमिस्सति (आचा २, ३, १, २) संकृ उवागच्छित्ता (भग, कप्प)। हेकृ उवागच्छित्तए (कप्प)।

उवागम पु [उपागम] समीप में आगमन (राज)।

उवागमण न [उपागमन] १ समीप में आगमन। २ स्थान, स्थिति (आचानि ३११)।

उवागय वि [उपागत] १ समीप में आया हुआ (आचा २, ३, १, २)। २ प्राप्त, 'एगदिवसपि जीवो पवज्जमुवागओ अणन्नमणो' (उव)।

उवाडिय वि [उत्पाटित] उखाड़ा हुआ (विपा १, ६)।

उवाणया } स्त्री [उपानह्] जूता (षड्),
उवाणहा } 'पुव्वमुत्तारियाओ उवाणहाओ पएसु ठवियाओ' (सुपा ६१०, सूअ १, ४, २, ६)।

उवादा सक [उपा + दा] ग्रहण करना। कर्म उवादीयति (भग)। संकृ उवादाय, उवादिएत्ता (भग)। कवकृ. उवादीयमाण (आचा २)।

उवादाण न [उपादान] १ ग्रहण, स्वीकार। २ कार्यरूप में परिणत होनेवाला कारण। ३ जिसका ग्रहण किया जाय वह, ग्राह्य, 'नाणोवादाणो च्चिय मुच्छा लोभोत्ति तो रागो' (विसे २६७०)।

उवादिय वि [उपजग्ध] उपभुक्त (राज)।

उवाय पु [उपाय] १ हेतु, साधन (उत्त ३२)। २ दृष्टान्त, 'उवाओ सोसाधम्मेण य विधम्मेण य' (आचू १)। ३ प्रतीकार (ठा ४, ३)।

उवाय सक [उप + याच्] मनौती करना। वकृ उवायमाण (णाया १, २, १७)।

उवायण न [उपायन] भेंट, उपहार, नजराना (उप २४५, सुपा २२४, ४१०, गउड)।

उवायणाव देखो उवाइणाव। उवायणावेइ। वकृ उवायणावेंत। हेकृ उवायणावेत्तए (कस), उवायणावित्तए (कप्प)।

उवायाण देखो उवादाण (अच्चु १२; स २, विसे २६७६)।

उवायाय वि [उपायात] समीप में आया हुआ (निर १, १)।

उवारुढ वि [उपारूढ़] आरूढ (स ३३१)।

उवालंभ सक [उपा + लभ्] उलाहना देना। उवालम्भइ (कप्प)। वकृ. उवालभंत (पउम १६,४१)। संकृ उवालभित्ता (बृह ४)। कृ उवालभणिज्ज (माल १५५)।

उवालंभ पु [उपालम्भ] उलाहना (णाया १, १, मा ४)।

उवालद्ध वि [उपालब्ध] जिसको उलाहना दिया गया हो वह, 'उवालद्धो य सो सिवो वभणो' (निचू १, माल १६७)।

उवालह सक [उपा + लभ्] उलाहना देना। भवि उवालहिस्सं (प्राप)।

उवावत्त पुं [उपावृत्त] वह अश्व जो लेटने से श्रम-मुक्त हुआ हो (चारु ७०)।

उवावत्तिद (शौ) वि [उपावृत्तित] उपर्युक्त अश्व से युक्त (चारु ७०)।

उवास सक [उप + आस्] उपासना करना, सेवा करना; 'सुस्सूसमाणो उवासेज्जा सुपण्णं सुतवस्सियं' (सूअ १, ६)। वकृ. उवासमाण (ठा ६)।

उवास पु [अवकाश] खाली जगह, आकाश (ठा २, ४, ८, भग)।

वकृ उम्मूलन्त, उम्मूलयंत (से १, ४; स ५६६)। संकृ. उम्मूलिऊण (महा)।

उम्मूलण न [उन्मूलन] उत्पाटन, उत्खनन (पि २७८)।

उम्मूलणा स्त्री [उन्मूलना] ऊपर देखो (पण्ह १, १)।

उम्मूलिअ वि [उन्मूलित] उत्पाटित, मूल से उखाड़ा हुआ (गा ४७५; सुर ३, २४५)।

उम्मेंठ [दे] देखो उम्मिंठ (पउम ७१, २६; स ३३२)।

उम्मेस पु [उन्मेष] उन्मीलन, विकास (भग १३, ४)।

उम्मोयणी स्त्री [उन्मोचनी] विद्या-विशेष (सुर १३, ८१)।

उम्ह पुंस्त्री [ऊष्मन्] १ संताप, गरमी, उष्णता, 'सरीरउम्हाए जीवइ सयावि' (उप ५६७ टी; णाया १, १; कुमा)। २ भाफ, वाष्प (से २, ३२; हे २, ७४)।

उम्हइअ } वि [ऊष्मायित] संतप्त, गरम
उम्हविय } किया हुआ (से ४, १; पउम २, ९६; गउड)।

उम्हाअ अक [ऊष्माय्] १ गरम होना। २ भाफ निकालना। वकृ. उम्हाअंत, उम्हाअमाण (से ६, १०; पि ५५८)।

उम्हाल वि [ऊष्मवत्] १ गरम, परितप्त। २ वाष्प युक्त (गउड)।

उम्हाविअ न [दे] सुरत, संभोग (दे १, ११७)।

उयचिय वि [दे] देखो उविअ = परिकर्मित, 'उयचियखोमदुगुल्लपट्टपडिच्छयणे' (णाया १, १—पत्र १३)।

उयट्ट देखो उव्वट्ट = उद् + वृत्। उयट्टंति, भूका उयट्टिंसु (भग)।

उयट्ट देखो उव्वट्ट = उद्वृत्त।

उयत्त अक [अप + वृत्] हटना। उयत्तति (दस ३, १ टी)।

उयर वि [उदार] श्रेष्ठ, उत्तम, 'देवा भवंति विमलोयरकंतिजुत्ता' (पउम १०, ८८)।

उयरिया स्त्री [अपवरिका] छोटा कमरा (सम्मत्त ११६)।

उयविय देखो उविअ = (दे) (राय ६३ टी)।

उयाइय न [उपयाचित] मनौती (सुपा ८; ५७८)।

उयाय वि [उपयात] उपगत (राज)।

उयारण न [अवतारण] निछावर, उतारा, हर्ष-दान, गुजराती में 'उवारणु' (कुप्र ६५)।

उयाहु देखो उदाहु (सुर १२, ५६; काल; विसे १६१०)।

उय्यकिअ वि [दे] इकट्ठा किया हुआ (षड्)।

उय्यल वि [दे] अध्यासित, आरूढ (षड्)।

उर पुन [उरस्] वक्ष स्थल, छाती (हे १, ३२)। °अ, °ग पुंस्त्री [°ग] सर्प, साँप (काप्र १७१),

'उरगगिरिजलणसागरनह-
तलतरुगणसमो अ जो होइ।
भमरमियधरणिजलरुहरविपवण-
समो अ सो समणो।' (अणु)।

°तव पु [°तपस्] तप-विशेष (ठा ४)। °त्थ न [°स्त्र] अस्त्र-विशेष, जिसके फेंकने से शत्रु सर्पों से वेष्टित होता है (पउम ७१, ६६)। °परिसप्प पुंस्त्री [°परिसर्प] पेट से चलनेवाला प्राणी (सर्पादि) (जो २०)। °सुत्तिया स्त्री [°सूत्रिका] मोतियों की हार (राज)।

उर न [दे] आरम्भ, प्रारम्भ (दे १, ८६)।

उरउरेण अ [दे] साक्षात् (विपा १, ३)।

उरत्त वि [दे] खण्डित, विदारित (दे १, ९०)।

उरत्थ वि [उरस्थ] १ छाती में स्थित। २ छाती में पहनने का आभूषण (आचा २, १३, १)।

उरत्थय न [दे] वर्म, बख्तर, कवच (पाअ)।

उरब्भ पुस्त्री [उरभ्र] मेष, भेड (णाया १, १; पण्ह १, १)।

उरब्भिअ वि [औरभ्रिक] भेड चरानेवाला (सूअ २, २, २८)।

उरब्भिज्ज } वि [उरभ्रीय] १ मेष-सम्बन्धी।
उरब्भिय } २ उत्तराध्ययन सूत्र का एक अध्ययन, 'तत्तो समुद्धियमेयं उरब्भिज्जंति अज्झयणं' (उत्तनि; राज)।

उरय पु [उरज] वनस्पति-विशेष (राज)।

उररि पु [दे] पशु, बकरा (दे १, ८८)।

उरल देखो उराल (कम्म १; भग; द २२)।

उरविय वि [दे] १ आरोपित। २ खण्डित, छिन्न (षड्)।

उरसिज पुं [उरसिज] स्तन, थन (नर्मवि ६६)।

उरस्स वि [उरस्य] १ सन्तान, बच्चा (ठा १०)। २ हार्दिक, आभ्यन्तर, 'उरस्सबल-समण्णागय—' (राय)।

उराल वि [उदार] १ प्रबल (राय)। २ प्रधान, मुख्य (मुज्ज १)। ३ सुन्दर, श्रेष्ठ (सूअ १, ६)। ४ अद्भुत (चन्द २०)। ५ विशाल, विस्तीर्ण (ठा ५)। ६ न शरीर-विशेष, मनुष्य और तिर्यञ्च् (पशु पक्षी) इन दोनों का शरीर (अणु)।

उराल वि [उदार] स्थूल, मोटा (सूअ १, १, ४, ६)।

उराल वि [दे] भयंकर, भीष्म (सुज्ज १)।

उरालिय न [औदारिक] शरीर-विशेष (नव)।

उरिआ स्त्री [उड्डिका] लिपि-विशेष (सम ३५)।

उरित्तिय न [दे उरसि-त्रिक] तीन सर-वाला हार (ओप)।

°उरिस देखो पुरिस (गा २८२)।

उरु वि [उरु] विशाल, विस्तीर्ण (पाअ)।

उरुपुल्ल पु [दे] १ अपूप, पूआ। २ चिचटी (दे १, १३४)।

उरुमल्ल }
उरुमिल्ल } वि [दे] प्रेरित (षड्; दे १, १०८)।
उरुसोल्ल }

उरोरुह पु [उरोरुह] स्तन, थन (पव ६२)।

उरोरुह न [उरोरुह] १ स्तन, थन। २ जैन साध्वियों का उपकरण-विशेष (ओघ ३१७ भा)।

°उल देखो कुल (से १, २६; गा ११६; सुर ३, ४१; महा)।

उलय } पुंन [उलप] तृण-विशेष (सुपा
उलव } २८१; प्राप्र)।

उलवी स्त्री [उलपी] तृण-विशेष, 'उलवी वीरणं' (पाअ)।

उलिअ वि [दे] असंकुचित नजरवाला, स्फार दृष्टि (दे १, ८८)।

उलित्त न [दे] ऊँचा कुआ (दे १, ८६)।

°उलीण देखो कुलीण (गा २५८)।

उव्वट्टण न [उद्वर्त्तन] तुले से उसके बीज को अलग करना (पिंड ६०३)।

उव्वट्टण न [अपवर्त्तन] देखो उव्वट्टणा = अपवर्त्तना (विसे २५१४)।

उव्वट्टणा स्त्री [उद्वर्त्तना] १ मरण, शरीर से जीव का निकलना (ठा २, ३)। २ पार्श्व का परिवर्त्तन (श्राव ४)। ३ जीव का एक प्रयत्न, जिससे कर्म-परमाणुओं की लघु स्थिति दीर्घ होती है, करण विशेष (भग ३१, ३२)।

उव्वट्टणा स्त्री [अपवर्त्तना] जीव का एक प्रयत्न जिससे कर्मों की दीर्घ स्थिति का ह्रास होता है (विसे २७१५ टी)।

उव्वट्टिअ वि [उद्वर्तित] साफ किया हुआ, प्रमार्जित, 'करीसेण वावि उव्वट्टिए' (पिंड २७६)।

उव्वट्टिय वि [उद्वृत्त] किसी गति से बाहर निकला हुआ, मृत, 'आउक्खएण उव्वट्टिया समाणा' (पण्ह १, १)।

उव्वट्टिय वि [उद्वर्त्तित] १ जिसने किसी भी द्रव्य से शरीर पर का तेल वगैरह का मैल दूर किया हो वह, 'तओ तत्थट्ठिओ चेव अब्भंगिओ उव्वट्टिओ उएहखलउदगेहिं पमज्जिओ' (महा)। २ प्रच्यावित, किसी पद से भ्रष्ट किया हुआ (पिंड)।

उव्वड्ढ वि [उद्वृद्ध] वृद्धि-प्राप्त (आवम)।

उव्वण वि [उल्बण] प्रचण्ड, उद्भट (उप पृ ७०, गउड, धम्म ११ टी)।

उव्वत्त देखो उव्वट्ट = उद् + वृत्। उव्वत्तइ (पि २८९)। वकृ. उव्वत्तत, उव्वत्तमाण (से ५, ४२, स २५८, ६२७)। कवकृ. उव्वत्तिज्जमाण (णाया १,३)। संकृ उव्वत्तिवि (भवि)।

उव्वत्त देखो उव्वट्ट (दे)।

उव्वत्त सक [उद् + वर्तय्] १ खड़ा करना। २ उलटा करना। उव्वत्तति (पव ७१) संकृ उव्वत्तिया (दस ५, १, ६३)।

उव्वत्त वि [उद्वर्त्त] खड़ा करनेवाला (पव ७१)।

उव्वत्त वि [उद्वृत्त] १ उत्तान, चित्त (से ५, ६२)। २ उल्लसित (हे ४, ४३४)। ३ जिसने पार्श्व को घुमाया हो वह (आव ३)। ४ ऊर्ध्व-स्थित, 'सो उव्वत्तविसाणो खववसभो जाओ' (महा)। ५ घुमाया हुआ, फिराया हुआ (प्राप)।

उव्वत्त वि [अपवृत्त] उलटा रहा हुआ, विपरीत स्थित (से १, ६१)।

उव्वत्तण न [उद्वर्त्तन] १ पार्श्व का परिवर्त्तन (गा २८३, निचू ४)। २ ऊँचा रहना, ऊर्ध्व-वर्त्तन (ओघ १६ भा)।

उव्वत्तिय वि [उद्वर्त्तित] १ परिवर्तित, चक्राकार घुमा हुआ (स ८५), 'भमिय व वणतरूहिं उव्वत्तियय व सयलवसुहाए' (सुर १२,१६६)।

उव्वद्ध देखो उव्वड्ढ (महा)।

उव्वम सक [उद् + वम्] उलटी करना, पीछा निकाल देना। वकृ उव्वमत (से ५, ६, गा ३४१)।

उव्वमिअ वि [उद्वान्त] उलटी किया हुआ, वमन किया हुआ (पाअ)।

उव्वर अक [उद् + वृ] शेष रहना, बच जाना, तुम्हाण 'देंताण जमुव्वरेइ देज्जाह साहूण तमायरेण' (उप २११ टी)। वकृ उव्वरत (नाट)।

उव्वर पु [दे] घर्म, ताप (दे १ ८७)।

उव्वरिअ वि [दे] १ अधिक, बचा हुआ, अवशिष्ट (दे १, १३२, पिंग, गा ४७४, सुपा ११, ५३२, ओघ १६८ भा)। २ अनीप्सित, अनभीष्ट। ३ निश्चित। ४ अगणित। ५ न ताप, गरमी (दे १, १३२)। ६ वि अतिक्रान्त, उल्लङ्घित, 'परदव्वहरणविरया निरयाइदुहाण ते खलुव्वरिया' (सुपा ३६८)।

उव्वरिअ न [अपवरिका] कोठरी, छोटा घर (सुर १४, १७४)।

उव्वल सक [उद् + वल्] १ उपलेपन करना। २ पीछे लौटना। हेकृ उव्वलित्तए (कस)।

उव्वल सक [उद् + वलय्] उन्मूलन करना। उव्वलए। वकृ उव्वलमाण (पच ५,१६६)।

उव्वलण न [उद्वलन] १ शरीर का उपलेपन-विशेष (णाया १, १, १३)। २ मालिश, अभ्यञ्जन (बृह ३, औप)।

उव्वलणा स्त्री [उद्वलना] १ उन्मूलन। २ उद्वलन-योग्य कर्म-प्रकृति (पच ३, ३४)।

उव्वलिय वि [उद्वलित] पीछे लौटा हुआ (महा)।

उव्वस वि [उद्वस] उजाड़, वसति-रहित (सुपा १८८, ४०६)।

उव्वसिय वि [उद्वसित] ऊपर देखो (गा १६४ सुर २, ११६, सुपा ५४१)।

उव्वसी स्त्री [उर्वशी] १ एक अप्सरा (सण)। २ रावण की एक स्वनाम-ख्यात पत्नी (पउम ७४, ८)।

उव्वह सक [उद् + वह्] १ धारण करना। २ उठाना। उव्वहइ (महा)। वकृ. उव्वहंत, उव्वहमाण (पि ३६७, से ६,५)। कवकृ उव्वुज्झमाण (णाया १,६)।

उव्वहण न [उद्वहन] १ धारण। २ उत्थापन। (गउड, नाट)।

उव्वहण न [दे] महान् आवेश (दे १, ११०)।

उव्वा स्त्री [दे] घर्म, ताप (दे १, ८७)।

उव्वा, उव्वाअ } अक [उद् + वा] १ सूखना, शुष्क होना। उव्वाइ, उव्वाअइ (षड्, हे ४, २४०)।

उव्वाअ वि [उद्वात] शुष्क, सूखा (गउड)।

उव्वाअ, उव्वाइअ } वि [दे] खिन्न, परिश्रान्त (दे १, १०२, बृह १, वव ४, पाअ, गा ७५८, सुपा ४३६)।

उव्वाउल न [दे] १ गीत। २ उपवन, बगीचा (दे १, १३४)।

उव्वाडुल न [दे] १ विपरीत सुरत। २ मर्यादा-रहित मैथुन (दे १, १३३)।

उव्वाढ वि [दे] १ विस्तीर्ण, विशाल। २ दुःखरहित (दे १, १२६)।

उव्वाण देखो उव्वाअ = उद्वात (कुप्र १६६)।

उव्वाय देखो उवाय = उपाय (सूअ १, ४, १, २)।

उव्वार (अप) सक [उद्+त्रतय्] त्याग करना, छोड़ देना। कर्म. उव्वारिज्जइ (हे ४, ४३८)।

उव्वाल सक [कथ्] कहना, बोलना। उव्वालइ (षड्)।

उव्वास सक [उद् + वासय्] १ दूर करना। २ देशनिकाला करना। ३ उजाड़ करना। उव्वासइ (नाट, पिंग)।

उव्वासिय वि [उद्वासित] १ उजाड़ किया हुआ (पउम २७, ११)। २ देश-बाहर

उवकरण देखो उवगरण (औप)।
उवकस सक [उप+कष्] प्राप्त होना, 'नारीण वसमुवकसंति' (सूत्र १, ४)।
उवकसिअ वि [दे] १ सनिहित। २ परिसेवित। ३ सजित, उत्पादित (दे १, १३८)।
उवकार देखो उवगार (धर्मस ६२० टी)।
उवकारिया देखो उवगारिया (राय ८२)।
उवकिइ } स्त्री [उपकृति] उपकार (दे ४, उवकिदि } ३४, ८, ४५)।
उवकुल न [उपकुल] नक्षत्र-विशेष, श्रवण आदि बारह (ज ७)।
उवकुल पुन [उपकुल] कुल नक्षत्र के पास का नक्षत्र (सुज्ज १०, ५)।
उवकोसा स्त्री [उपकोशा] एक गणिका, कोशा वेश्या की छोटी वहिन (कुप्र ४५३)।
उवकोसा स्त्री [उपकोशा] एक प्रसिद्ध वेश्या (उव)।
उवक्कंत वि [उपक्रान्त] १ समीप मे आनीत। २ प्रारब्ध, प्रस्तावित (विसे ६८७)।
उवक्कम सक [उप+क्रम्] १ शुरू करना, प्रारम्भ करना। २ प्राप्त करना। ३ जानना। ४ समीप मे लाना। ५ सस्कार करना। ६ अनुसरण करना, 'सीसो गुरुणो भाव जमुवक्कमए' (विसे ६२९), 'ता तुब्भे ताव अवक्कमह लहुं, जाव एयासि भावमुवक्कमामि त्ति' (महा), 'जेणोवक्कामिज्जइ समीवमाणिज्जए' (विसे २०३६), 'जएण हलकुलिआईहिं खेत्ताइ उवक्कमिज्जति से त खेत्तोवक्कमे' (अणु)। वकृ उवक्कमत (विसे ३४१८)।
उवक्कम पुं [उपक्रम] १ आरम्भ, प्रारम्भ। २ प्राप्ति का प्रयत्न, 'सोच्चा भगवाणुसासणं सच्चे तत्थ करेज्जुवक्कमं' (सूत्र १, २, ३, १४)। ३ कर्मो के फल का अनुभव (सूत्र १, ३, भग १, ४)। ४ कर्मो की परिणति का कारण-भूत जीव का प्रयत्न-विशेष (ठा ४, २)। ५ मरण, मौत, विनाश, 'हुज्ज इमम्मि समए उवक्कमो जीवियस्स जइ मज्झ' (आउ १५, बृह ४)। ६ दूरस्थित को समीप मे लाना; 'सत्थस्सोवक्कमण उवक्कमो तेण तम्मि अ तओ वा सत्थसमीवीकरण' (विसे, अणु)। ७ आयुष्य विघातक वस्तु (ठा ४, २, स २८७)। ८ शस्त्र, हथियार, 'भुम्माहारच्छेए उवक्कमेण च परिणाए' (धर्म २)। ९ उपचार (स २०५)। १० ज्ञान, निश्चय। ११ अनुवर्त्तन, अनुकूल-प्रवृत्ति (विसे ९२९, ९३०)। १२ सस्कार, परिकर्म, 'खेत्तोवक्कमे' (अणु)।
उवक्कम पु [उपक्रम] अनुदित कर्मो को उदय मे लाना (सूअनि ४७)।
उवक्कमण न [उपक्रमण] उपर देखो (अणु, उवर ४६, विसे ६११, ६१७, ६२१)।
उवक्कमिय वि [औपक्रमिक] उपक्रम से सम्बन्ध रखनेवाला (ठा २, ४, सम १४५, पएण ३५)।
उवक्काम देखो उवक्कम = उप + क्रम्। कर्म. उवक्कामिज्जइ (विसे २०३६)।
उवक्काम सक [उप + क्रम्] दीर्घकाल मे भोगने योग्य कर्मो को अल्प समय मे ही भोगना। कर्म उवक्कामिज्जइ (धर्मस ६४८)।
उवक्कामण न [उपक्रमण] उपक्रम कराना (श्रावक १६७)।
उवक्कामण देखो उवक्कमण (विसे २०५०)।
उवक्केस पुं [उपक्लेश] १ बाधा। २ शोक (राज)।
उवक्खड सक [उप+स्कृ] १ पकाना, रसोई करना। १ पाक को ममाले से संस्कारित करना। उवक्खडेइ, उवक्खडिंति (पि ५५९)। संकृ.उवक्खडेत्ता (आचा)। प्रयो उवक्खडावेइ, उवक्खडाविंति (पि ५५९, कप्प)। संकृ उवक्खडावेत्ता (पि ५५९)।
उवक्खड } वि [उपस्कृत] १ पकाया उवक्खडिय } हुआ। २ मसाला वगैरह से सस्कार-युक्त पकाया हुआ (निचू ८, पि ३०६, ५५९, उत्त १२, ११)। ३ पुन रसोई, पाक,'भणियामहाणसणारा जह अज्ज उवक्खडो न कायव्वो' (उप ३५६ टी, ठा ४,२, णाया १, ८, ओघ ५४ भा)। °म वि [°म] पकाने पर भी जो कच्चा रह जाता है वह, मूंग वगैरह अन्न-विशेष, 'उवक्खडाम णाम जहा चणयादीण उवक्खडियाणं जे ण सिज्झति ते कक्कडुयाम उवक्खडियामं भण्णइ' (निचू १५)।
उवक्खर पु [उपस्कर] १ संस्कार। २ जिससे संस्कार किया जाय वह (ठा ४, २)।
उवक्खर पु [उपस्कर] घर का उपकरण, साधन (सूअनि ५)।
उवक्खरण न [उपस्करण] ऊपर देखो। °साला स्त्री [°शाला] रसोई-घर, पाक-गृह (निचू ९)।
उवक्खा सक [उपा + ख्या] कहना। कर्म. उवक्खाइज्जति (सूअ २, ४, १०, भग १६, ३—पत्र ७६२)।
उवक्खा स्त्री [उपाख्या] उपनाम (धर्मसं ७२७)।
उवक्खाइत्तु वि [उपख्यापयितृ] प्रसिद्धि करानेवाला, 'अत्ताण उवक्खाइत्ता भवइ' (सूअ २, २, २६)।
उवक्खाइया स्त्री [उपाख्यायिका] उपकथा, अवान्तर कथा (सम ११६)।
उवक्खाण न [उपाख्यान] उपाख्यान, कथा (पउम ३३, १४९)।
उवक्खित्त वि [उपक्षिप्त] प्रारब्ध, शुरू किया हुआ (मुद्रा ९३)।
उवक्खिव सक [उप+क्षिप्] १ स्थापन करना। २ प्रयत्न करना। ३ प्रारम्भ करना। उवक्खिव (पि ३१९)।
उवक्खीण वि [उपक्षीण] क्षय-प्राप्त (धर्मवि ४२)।
उवक्खेअ पु [उपक्षेप] १ प्रयत्न, उद्योग। २ उपाय, 'ण भणामि तस्सिं साहणिज्जे किदो उवक्खेओ' (मा ३९)।
उवक्खेव पु [दे उपक्षेप] बालोत्पाटन, मुण्डन (तदु १७)।
उवग वि [उपग] १ अनुसरण करनेवाला (उप २४३, औप)। २ समीप में जानेवाला (विसे २५६५)।
उवगच्छ सक [उप + गम्] १ समीप मे आना। २ प्राप्त करना। ३ जानना। ४ स्वीकार करना। उवगच्छइ (उव, स २३७)। उवगच्छंति (पि ५८२)। संकृ उवगच्छिऊण (म ४४)।
उवगणिय वि [उपगणित] गिना हुआ, सख्यात, परिगणित (स ४६१)।
उवगप्पिय वि [उपकल्पित] विरचित (म ७२१)

°कर वि [°कर] उत्कण्ठा-जनक (णाया १, १)।
उस्सूण वि [उच्छून] सूजा हुआ, फूला हुआ (उप ५६४, गउड, स २०३)।
उस्सूर न [उत्सूर] सन्ध्या, शाम, 'वचामो नियनयरे उस्सूरं वट्टए जेण' (सुर ७, ६३, उप पृ २२०)।
उस्सेअ पु [उत्सेक] १ सिंचन। २ उन्नति। ३ गर्व (चारु ४५)।
उस्सेइम वि [उत्स्वेदिम] आटा से मिश्रित पानी, आटा-धोया जल (कप्प, ठा ३, ३)।
उस्सेह पु [उत्सेध] १ ऊँचाई (विपा १, १)। २ शिखर, टोंच (जीव ३)। ३ उन्नति, अभ्युदय, 'पडणंता उस्सेहा' (स ३६६)।
उस्सेहंगुल न [उत्सेधाङ्गुल] एक प्रकार का परिमाण (विसे ३४० टी)।
उह न [उभ] दोनों, युग्म, युगल (षड्)।
उहट्ट अक [अप + घट्ट्] नष्ट होना। उहट्टइ (सम्मत्त १६२)।
उहट्‌टु देखो उव्वट्ट = उद् + वृत्।
उहय स [उभय] दोनों, युग्म (कुमा, भवि)।
उहर न [उपगृह] छोटा घर, आश्रय-विशेष (पण्ह १, १)।
उहस सक [उप + हस्] उपहास करना। उहसइ (प्राकृ ३४)।
उहार पु [उहार] मत्स्य विशेष (राज)।
उहिंजल पुं [दे] चतुरिन्द्रिय जन्तु विशेष (सुख ३६, १४६)।
उहिंजलिआ स्त्री [दे] ऊपर देखो (उत्त ३६, १४६)।
उहु (अप) देखो अहो = अहो (सण)।
उहुर वि [दे] अवाङ्मुख, अधोमुख (गउड)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे उआराइसद्दसंकलणो
णाम पंचमो तरंगो समत्तो ॥

ऊ

ऊ पु [ऊ] प्राकृत वर्णमाला का षष्ठ स्वर-वर्ण (हे १, १, प्रामा)।
ऊ अ [दे] निम्नलिखित अर्थों का सूचक अव्यय—१ गर्हा, निन्दा, 'ऊ णिल्लज्ज'। २ आक्षेप, प्रस्तुत वाक्य के विपरीत अर्थ की आशंका से उसे उलटाना, 'ऊ किं मए भणिअं'। ३ विस्मय, आश्चर्य, 'ऊ कह मुणिआ अहयं'। ४ सूचना, 'ऊ केण ण विण्णायं' (हे २, १६६, षड्)।
ऊअट्ट वि [अववृष्ट] वृष्टि से नष्ट (पाअ)।
ऊआ स्त्री [दे] यूका, जूँ (दे १, १३६)।
ऊआस पुं [उपवास] भोजनाभाव (हे १, १७३)।
ऊगिय वि [दे] अलंकृत (षड्)।
ऊज्झाअ देखो उवज्झाय (हे १, १७३, प्रामा)।
°ऊड देखो कूड (से १२, ७८, गा ५८३)।
ऊढ वि [ऊढ] वहन किया हुआ, धारण किया हुआ, 'ऊढकलं वज्जुणपरिमलेसु सुरमंदिरतेसु' (गउड)।
ऊढ वि [ऊढ] परिणीत, विवाहित (धर्मसं १३६०)।
ऊढा स्त्री [ऊढा] विवाहिता स्त्री (पाअ)।
ऊढिअय वि [दे] १ प्रावृत, आच्छादित। २ न. आच्छादन, प्रावरण (पाअ)।
ऊण वि [ऊन] न्यून, हीन (पउम ११८, ११६)। °वीसइम वि [°विंशतितम] उन्नीसवाँ (पउम १६, ८०)।
ऊण न [ऋण] ऋण, करजा (नाट)।
ऊणंदिअ वि [दे] आनन्दित, हर्षित (दे १, १४१, षड्)।
ऊणिमा स्त्री [पूर्णिमा] पूर्णिमा, 'तओ तीए चेव ऊणिमाए भरिऊण भंडस्स वहणाई पत्थिओ पारसउलं' (महा)।
ऊणिय वि [ऊनित] कम किया हुआ (जं २)।
ऊणिय पुं [ऊणिक] सेवक-विशेष (प्रश्नव्या० पत्र १३)।
ऊणोयरिआ स्त्री [ऊनोदरिता] कम आहार करना, तप-विशेष (भग २५, ७, नव २८)।
ऊतालीस } स्त्री न [एकोनचत्वारिंशत्] उनचालीस, ३६ (सुज्ज २, ३,
ऊयाल } पत्र ५२, देवेन्द्र २६४)।
ऊमिगण न [दे] प्रोंखणक, चुमना (धर्म २)।
ऊमिणिय वि [दे] प्रोञ्छित, जिसने स्नान के बाद शरीर पोंछा हो वह (स ७५)।
ऊमित्तिअ न [दे] दोनों पार्श्वों में आघात करना (दे १, १४२)।
ऊर पु [दे] १ ग्राम, गाँव। २ संघ, समूह (दे १, १४३)।
°ऊर देखो तूर (से ८, ६५)।
°ऊर देखो पूर (से ८ ६५, गा ४५, २३१)।
ऊरण पु [ऊरण] मेष, भेड (राय, विसे)।
ऊरणी स्त्री [दे] मेष, भेड (दे १, १४०)।
ऊरणीअ वि [औरणिक] भेडी चरानेवाला (अणु १४४)।
°ऊरय वि [पूरक] पूर्ति करनेवाला (भवि)।
ऊरस वि [औरस] पुत्र-विशेष, स्व-पुत्र (ठा १०)।
ऊरिसंकिअ वि [दे] रुद्ध, रोका हुआ (षड्)।
ऊरी अ [ऊरी] १ अंगीकार। २ विस्तार। °कय वि [°कृत] अंगीकृत, स्वीकृत (उप ७२८ टी)।
ऊरु पु [ऊरु] जङ्घा, जाँघ (णाया १, १८,

उवचि सक [उप+चि] १ इकट्ठा करना। २ पुष्ट करना। उवचिणइ, उवचिणाइ, उवचिणंति। भूका उवचिणिंसु। भवि. उवचिणिस्संति (ठा २, ४, भग)। कर्म उवचिज्जइ, उवचिज्जंति (भग)।

उवचिट्ठ सक [उप+स्था] उपस्थित होना, समीप आना। उवचिट्ठे, उवचिट्ठेज्जा (पि ४८२)।

उवचिणिअ देखो उवचिय (धर्मवि १०६)।

उवचिय वि [उपचित] १ पुष्ट, पीन (पराह १, ४, कप्प)। २ स्थापित, निवेशित (कप्प, पराए २)। ३ उन्नति (औप)। ४ व्याप्त (अणु)। ५ वृद्ध, बढा हुआ (आचा)।

उवच्चया स्त्री [उपत्यका] पर्वत के पास की नीची जमीन (ती ११)।

उवच्छंदिद (शौ) वि [उपच्छन्दित] अभ्यर्थित (अभि १७३)।

उवजंगल वि [दे] दीर्घ, लम्बा (दे १, ११६)।

उवजा अक [उप+जन] उत्पन्न होना। उवजायइ (विसे ३०२९)।

उवजाइ स्त्री [उपजाति] छन्द-विशेष (पिंग)।

उवजाइय देखो उवयाइय (श्राद्ध १६, सुपा ३५४)।

उवजाय वि [उपजात] उत्पन्न (सुपा ६००)।

उवजीव सक [उप+जीव्] आश्रय लेना। उवजीवइ (महा)।

उवजीवग वि [उपजीवक] आश्रित (सुपा ११६)।

उवजीवि वि [उपजीविन्] १ आश्रय लेनेवाला, 'न करेइ नेय पुच्छइ निद्धम्मा लिंगमुवजीवी' (उव)। २ उपकारक (विसे २८८६)।

उवजोइय वि [उपज्योतिष्क] १ अग्नि के समीप में रहनेवाला। २ पाक-स्थान में स्थित, 'के इत्थ खत्ता उवजोइया वा अज्झावया वा सह खंडिएहिं' (उत्त १२, १८)।

उवज्ज अक [उत् + पद्] उत्पन्न होना। उवज्जंति (सूअ १, १, ३, १६)।

उवज्जण न [उपार्जन] पैदा करना, कमाना (सुर ८, १४४।

उवज्जिण सक [उप + अर्ज्] उपार्जन करना। उवज्जिणेमि (स ४४३)।

उवज्झय } पु [उपाध्याय] १ अध्यापक, उवज्झाय } पढानेवाला, (पउम ३६, ६०, षड्)। २ सूत्राध्यापक जैन मुनि को दी जाती एक पदवी (विसे)।

उवज्झिय वि [दे] आकारित, बुलाया हुआ (राज)।

उवझाय देखो उवज्झाय (सिरि ७७)।

उवट्टग देखो उव्वट्टण (राज)

उवट्टणा देखो उव्वट्टणा (भग, विसे २५१५ टी)।

उवट्ठ वि [उपस्थ] एक स्थान में सतत अवस्थित (वव ४)। °काल पु [°काल] आने की वेला, अभ्यागम समय (वव ४)।

उवट्ठंभ पुं [उपष्टम्भ] १ अवस्थान (भग)। २ अनुकम्पा, करुणा (ठा २)।

उवट्ठप्प वि [उपस्थाप्य] १ उपस्थित करने योग्य। २ व्रत—दीक्षा के योग्य, 'वियत्तकिच्चे सेहे य उवट्ठप्पा य आहिया' (वृह ६)।

उवट्ठव सक [उप + स्थापय्] युक्ति से सस्थापित करना। उवट्ठयंति (सूअ २, १ २७)।

उवट्ठव सक [उप + स्थापय्] १ उपस्थित करना। २ व्रतों का आरोपण करना, दीक्षा देना। उवट्ठवेड, उवट्ठवेह (महा, उवा)। हेकृ. उवट्ठवेत्तए (वृह ४)।

उवट्ठवणा स्त्री [उपस्थापना] १ चारित्रविशेष, एक प्रकार की जैन दीक्षा (धर्म २)। २ शिष्य में व्रत की स्थापना, 'वयट्ठवणमुवट्ठवणा' (पचभा)।

उवट्ठवणीय वि [उपस्थापनीय] देखो उपट्ठप्प (ठा ३)।

उवट्ठा सक [उप + स्था] उपस्थित होना। उवट्ठाएज्जा (भग)।

उवट्ठाण न [उपस्थान] १ बैठना, उपवेशन (णाया १, १)। २ व्रत-स्थापन (महानि ७)। ३ एक ही स्थान में विशेष काल तक रहना (वव ४)। °दोस पुं [°दोष] नित्यवास दोष (वव ४)। °साला स्त्री [°शाला] आस्थान-मण्डप, सभा-स्थान (णाया १, १, निर १, १)।

उवट्ठाण न [उपस्थान] अनुष्ठान, आचार (सूअ १, १, ३, १४)।

उवट्ठाणा स्त्री [उपस्थाना] जिसमें जैन साधुलोग एक वार ठहर कर फिर भी शास्त्रनिषिद्ध-अवधि के पहले ही आकर ठहरे वह स्थान (वव ४)।

उवट्ठाव देखो उवट्ठव। उवट्ठावेहि (पि ४६८)। हेकृ उवट्ठावित्तए, उवट्ठावेत्तए (ठा)।

उवट्ठावणा देखो उवट्ठवणा (वृह ६)।

उवट्ठिय वि [उपस्थित] १ प्राप्त 'जणवादमुवट्ठिओ' (उत्त १२) २ समीप-स्थित (आव १०)। ३ तैय्यार, उद्यत (धर्म ३)। ४ आश्रित, निम्मत्तमुवट्ठिओ' (आउ, सूअ १, २)। ५ मुमुक्षु, प्रव्रज्या लेने को तैय्यार, 'उवट्ठिय पडिरय, सजय सुतवस्सिय। वुक्कम्म धम्माओ भसेइ, महामोह पकुव्वइ' (सम ५१)।

उवठावणा देखो उवट्ठवणा (पचा १७,३०)।

उवडहित्तु वि [उपदहितृ] जलानेवाला, 'अगणिकाएणं कायमुवडहित्ता भवइ' (सूअ २, २)।

उवडिअ वि [दे] अवनत, नमा हुआ (षड्)।

उवणगर न [उपनगर] उपपुर, शाखा-नगर (औप)।

उवणच्च सक [उप + नर्त्तय्] नचाना, नाच कराना। कवकृ. उवणच्चिज्जमाण (औप)।

उवणद्ध वि [उपनद्ध] घटित (उत्तर ६१)।

उवणम सक [उप + नम्] १ उपस्थित करना, ला रखना। २ प्राप्त करना। उवणमइ (महा)। वकृ. उवणमंत (उप १३६ टी, सूअ १, २)।

उवणमिय वि [उपनमित] उपस्थापित (सण)।

उवणय वि [उपनत] उपस्थित (से १, ३६)।

उवणय पुं [उपनय] १ उपसहार, दृष्टान्त के अर्थ को प्रकृत में जोडना, हेतु का पक्ष में उपसहार (पव ६६, श्रोघ ४४ भा)। २ स्तुति, श्लाघा (विसे १४०३ टी, पव १४०)। ३ अवान्तर नय (राज)। ४ सस्कार-विशेष, उपनयन (स २७२)।

ऊह सक [ऊह्] १ तर्क करना। २ विचारना। ऊहइ (विसे ८३१), ऊहेमि (सुर ११, १८५)। संकृ ऊहिऊण (श्राउ ५२)।
ऊह न [ऊधस्] स्तन (विपा १, २)।
ऊह पु [ऊह] १ विचार, विवेक-बुद्धि (राज)। २ तर्क, वितर्क (सूम्र २, ४)। ३ सख्या-विशेष (राज)। ४ ओघ-सज्ञा, अव्यक्त ज्ञान (विसे ५२२, ४२३)।
ऊहंग न [ऊहाङ्ग] सख्या-विशेष (राज)।
ऊहट्ट वि [दे] उपहसित (दे १, १४०)।
ऊहसिय वि [उपहसित] जिसका उपहास किया गया हो वह (दे १, १४०)।
ऊहा स्त्री [ऊहा] तर्क, विचार-बुद्धि (श्रावम)।
ऊहापोह पु [ऊहापोह] सोच-विचार, मन में होनेवाला तर्क-वितर्क (कुप्र ६१)।
ऊहिअ वि [ऊहित] अनुमान से ज्ञात (से ६, ४२)।
ए पु [ए] स्वर-वर्ण विशेष (हे १,१, प्रामा)।

॥ इग्र सिरिपाइअसद्दमहण्णवे ऊआराइसद्दसकलणो छट्ठो तरगो समत्तो ॥

ए

ए पु [ए] स्वर वर्ण-विशेष (हे १,१, प्रामा)।
ए अ [ए, ऐ] इन अर्थों का सूचक अव्यय— १ आमन्त्रण, सम्बोधन, 'ए एहि सवडहुत्तो मज्झ' (पउम ८, १७४)। २ वाक्यालंकार, वाक्य-शोभा, 'से जहाणाम ए' (अणु)। ३ स्मरण। ४ असूया, ईर्ष्या। ५ अनुकम्पा, करुणा। ६ आह्वान (हे २, २१७, भवि, गा ६०४)।
ए सक [आ + इ] आना, आगमन करना। एइ (उवा)। भवि. एहिइ (उवा)। वकृ. एत (पउम ८, ४३, सुर ११, १४८), इत (सुर ३, १३), एज्जंत (पि ५६१), एज्जमाण (उप ६४८ टी)।
ए° देखो एत्तिअ (उवा)।
ए° देखो एवं (उवा)।
एअ वि [एत] आया हुआ, आगत (सम्मत्त ११६)।
एअ स [एतत्] यह (भग, हे १,११, महा)। °रिस वि [°दृश] ऐसा, इसके जैसा (द्र ३२)। °रूव वि [°रूप] ऐसा, इस प्रकार का (णाया १, १, महा)।
एअ देखो एग (गउड, नाट, स्वप्न ६०, १०६)। °आइ वि [°किन्] अकेला (अभि १६०, प्रति ६५)। °रह त्रि व. [°दशन्] ग्यारह की सख्या, दश और एक (पि २४५)। °रहम वि [°दश] ग्यारहवाँ (भवि)।
एअ देखो एव = एव (कुमा)।
एअ, एअ देखो एव, 'एअ वि सिरीअ दिट्ठआ' (से ३, ४६, गउड, पिंग)।
एअंत देखो एकंत (वेणी १८)।
एआईस (अप) पु व [एकविंशति] एक्कीस (पिंग)।
एयारिच्छ वि [एतादृश] ऐसा, इसके जैसा (प्रामा)।
एइज्जमाण देखो एय = एज्।
एइय वि [एजित] कम्पित (राय ७४)।
एइस देखो एईस (सुख २, १७)।
एईस वि [एतादृश] ऐसा (विसे २५४६)।
एउजि (अप) अ [एवमेव] १ इसी तरह। २ यही (भवि)।
एऊण देखो एगूण (पिंग)।
एंत देखो इ = इ।
एंत देखो ए = आ + इ।
एक देखो एक्क तथा एग (षड्, सम ६६, पउम १०३, १७२, हेका ११६, पएह २, ५, पउम ११४, २४, सुपा १६५, कप्प, सम ७१, १५३)। °इआ अ [°दा] एक समय में, कोई वक्त (हे २, १६२)। °ल (अप) वि [°क] एकाकी (पि ५६५)। °लिय वि [°किन्] एकाकी, अकेला (उप ७२८ टी)। °णउइ स्त्री [°नवति] संख्या-विशेष, एकानवे (सम ६५, पि ४३५)।
एकूण देखो अउण = एकोन (सुज्ज १६)।
एक्क देखो एक तथा एग (हे २, ६६; सुपा १४३, सम ६६, ५५, पउम ३१, १२८, गउड, कप्पू, मा १८, सुपा ४८६, मा ४१, पि ५६५, नाट, णाया १, १, गा ६१८, काल, सुर ५, २४२, भग, सम ३६, पउम २१, ६३, कप्प)। °वए देखो एगपए (गउड, सुर १, ३८)। °सणिय वि [°शनिक] एक ही वार भोजन करनेवाला (पएह २, १)। °सत्तरि स्त्री [°सप्तति] सख्या-विशेष, ७१, एकहत्तर (सम ८२)। °सरग, °सरय वि [°सरक, °सर्ग] एक समान, एक सरीखा (उवा, भग १६, पएह २, ५)। °सि अ [°शस्] एक वार, 'सव्वजहन्नो उदओ दसगुणिओ एक्कसि कयाएं' (भग), 'एक्कसि कओ पमाओ जीव पाडेइ भवसमुद्दम्मि' (सुर ८,११२), 'एक्कसि सीलकलंकिअह देज्जहि पच्छित्ताइं' (हे ४, ४२८)। °सि अ [°त्र] एक (किसी एक) में, 'एक्कसि न खु थिरो सित्ति पिओ कीइवि उवालद्धो' (कुमा)। °सि, °सिअ अ [°दा] कोई एक समय मे (हे २, १६२)। °सिं अ [°शस्] एक वार (पि ४५१)। °इ वि [°किन्] अकेला (प्रयौ २३)। °इ पुं [°दि] स्वनाम-ख्यात एक माण्डलिक (सूबा) (विपा १, १)। °णउय वि

उवलभ देखो उवलभ = उप + लभ्। वकृ. उवलभंत (पि ४५७)। संकृ उवलब्भ (पि ५९०)।

उवलभत्ता } स्त्री [दे] वलय, कङ्कन
उवलयभग्गा } (दे १, १२०)।

उवलल अक [उप + लल्] क्रीडा करना, विलास करना। कवकृ उवललंत (महा)। प्रयो, वकृ उवलालिज्जमाण (णाया १,१)।

उवललय न [दे] सुरत, मैथुन (दे १, ११७)।

उवललिय न [उपललित] क्रीडा-विशेष (णाया १, ६)।

उवलह देखो उवलभ = उप + लभ्। संकृ उवलहिय (स ३२), उवलहिऊण (स ६१०)।

उवला सक [उप + ला] १ ग्रहण करना। २ आश्रय करना। हेकृ उवलाउ (वव १)।

उवलि देखो उवल्लि। उवलिइज्जा (आचा २, ३, १, २)।

उवलिंप सक [उप + लिप्] लीपना, पोतना। भवि उवलिंपिहिइ (पि ५४९)।

उवलिप सक [उप + लिप्] चुम्बन करना, 'वलाए जो उ सीसाएं जीहाए उवलिपए' (गच्छ १,११६)।

उवलित्त वि [उपलिप्त] लीपा हुआ, पोता हुआ (णाया १, १)।

उवलीण देखो उवल्लीण।

उवलुअ वि [दे] सलज्ज, लज्जा-युक्त (दे १, १०७)।

उवलेव पुं [उपलेप] १ लेपना। २ कर्म-बन्ध (औप)। ३ संश्लेष (आचा)। ४ आश्लेष (सूअ १, १, २)।

उवलेवण न [उपलेपन] ऊपर देखो (भग ११ ६, निचू १; औप)।

उवलेविय वि [उपलेपित] लीपा हुआ, पोता हुआ (कप्प)।

उवलोभ सक [उप + लोभय्] लालच देना, लोभ दिखाना। संकृ उवलोभेऊण (महा)।

उवलोहिय वि [उपलोभित] जिसको लालच दी गई हो वह (उप ७२८ टी)।

उवल्लि सक [उप + ली] १ रहना, स्थिति करना। २ आश्रय करना। उवल्लियइ (पि १९६, ४७४), 'तओ संजयमेव वासावासं उवल्लिइज्जा' (आचा २, ३, १, १, २)।

उवल्लीण वि [उपलीन] १ स्थित। २ प्रच्छन्न-स्थित, 'उवल्लीणा मेहुणधम्मं विरणवेंति' (आचा २)।

उववइ पुं [उपपति] जार (धर्मवि १२८)।

उववज्ज अक [उप + पद्] १ उत्पन्न होना। २ सगत होना, युक्त होना। उवज्जइ, भवि उववज्जिहिइ (भग, महा)। वकृ उववज्जमाण (ठा ४)। सकृ। उववज्जित्ता (भग १७, ६)। हेकृ. उववज्जिउ (सूअ २,१)।

उववज्जण न [उपवर्जन] त्याग, 'असमजसोववज्जणमिह जायइ सव्वसगचायाओ' (सुपा ४७१)।

उववज्जमाण देखो उववाय = उप+वादय्।

उववज्झ वि [उपवाह्य] राज आदि का वल्लभ —प्रधान, सेनापति आदि (दस ९, २, ५)।

उववज्झ वि [औपवाह्य] प्रधान आदि का, प्रधान आदि को बैठने योग्य (दस ९, २,५)।

उववट्ट अक [उप + वृत्] च्युत होना, मरना, एक गति से दूसरी गति में जाना। उववट्टइ (भग)। वकृ उववट्टमाण (भग)।

उववण न [उपवन] बगीचा (णाया १, १, गउड)।

उववण्ण वि [उपपन्न] १ उत्पन्न, 'उववण्णो माणुसम्मि लोगम्मि' (उत्त ९)। २ संगत, युक्त (पचा ६, उवर ४७)। ३ प्रेरित, 'उववण्णो पावकम्मुणा' (उत्त १९)। ४ न. उत्पत्ति, जन्म (भग १४,१)।

उववत्ति स्त्री [उपपत्ति] १ उत्पत्ति, जन्म (ठा २)। २ युक्ति, न्याय (पउम २, ११७, उवर ४९)। ३ विषय। ४ सभव, 'विसउ त्ति वा संभउ त्ति वा उवव त्ति त्ति वा एगट्ठा' (आचू १)।

उववत्तु वि [उपपत्तृ] उत्पन्न होनेवाला, 'देवलोगेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति' (औप, ठा ८)।

उववन्न देखो उववण्ण (भग, ठा २, २, स १५८, १६२)।

उववयण न [उपपतन] देखो उववाय = उपपात, 'उववयण उववाओ' (पचभा)।

उववसण न [उपवसन] उपवास (सुपा ६१९)।

उववाइय वि [औपपादिक, औपपातिक] १ उत्पन्न होनेवाला, 'अत्थि मे आया उववाइए, नत्थि मे आया उववाइए' (आचा)। २ देवरूप या नारक रूप से उत्पन्न होनेवाला (पण्ह १, ४)।

उववाय सक [उप + पादय्] सपादन करना, सिद्ध करना। उववायए (उत्त १, ४३, दस ८, ३३)।

उववाय पु [उप + वादय्] वाद्य बजाना। कवकृ उपवज्जमाण, उववज्जमाण (कप्प, राज)।

उववाय पु [उपपात] १ देव या नारक जीव की उत्पत्ति—जन्म (कप्प)। २ सेवा, आदर, 'आणोववायवयणनिद्देसे चिट्ठति' (भग ३,३)। ३ विनय। ४ आज्ञा, 'उववाओ णिद्देसो आणा विणओ य होंति एगट्ठा' (वव ४)। ५ प्रादुर्भाव (पण्ण १६)। ६ उपसंपादन, सप्राप्ति (निचू ५)। °कप्प पु [°कल्प] साध्वाचार-विशेष, पार्श्वस्थों के साथ रह कर सविग्न विहार की संप्राप्ति (पंचभा)। °य वि [°ज] देव या नारक गति में उत्पन्न जीव (आचा)।

उववास पुन [उपवास] उपवास, अनाहार, दिन-रात भोजनादि का अभाव (उवा, महा)।

उववासि वि [उपवासिन्] जिसने उपवास किया हो वह (पउम ३३, ५१, सुपा ४७८)।

उववासिय वि [उपवासित] उपवास किया हुआ (भवि)।

उवविअ देखो उववीअ, 'सव्वगं जुव्वणो च (? व) विअो' (धर्मवि ८)।

उवविट्ठ वि [उपविष्ट] बैठा हुआ, निषण्ण (आवम)।

उवविणिग्गय वि [उपविनिर्गत] सतत निर्गत (जीव ३)।

उवविस अक [उप + विश्] बैठना। उवविसइ (महा)। सकृ उवविसिअ (अभि ३८)।

उवविसण न [उपवेशन] बैठना (कुलक ७)।

उववीअ न [उपवीत] १ यज्ञसूत्र, जनेऊ

एल वि [दे] कुशल निपुण (दे १, १४४)।
एल } पु [एड, एल] १ मृगों की एक
एलग } जाति (विपा १, ४)। २ मेष मेड
(सूत्र २, २)। °मूअ, °मूग वि [°मूक]
१ मूक, भेड की तरह अव्यक्त बोलनेवाला,
जलएलमूअमम्मणअलियवयणजंपणे दोसा'
(श्रा १२ दस ५, श्राव ४, निचू ११)।
एलगच्छ न [एलकाक्ष] स्वनाम-ख्यात नगर-विशेष (उत्र २११ टी)।
एलय देखो एल (उवा, पि २४०)।
एलविल वि [दे] १ धनाढ्य, धनी। २ पु वृषभ, बैल (दे १, १४८, पड्)।
एला स्त्री [एला] १ इलायची का पेड (मे ७, ६२)। २ इलायची-फल (सुर १३, ३३)। °रस पु [°रस] इलायची का रस (पण्ह २ ५)।
एलालुअ पुन [एलालुक] आलू की एक जाति, कन्द-विशेष (अनु ६)।
एलावच्च न [एलापत्य] माण्डव्य गोत्र का एक शाखा-गोत्र (ठा ७)।
एलावच्च वि [ऐलापत्य] एलापत्य-गोत्र का (णंदि ४९)।
एलावच्चा स्त्री [एलापत्या] पक्ष की तीसरी रात (चंद १०, १४)।
एलिक्ख वि [ईदृक्ष] ऐसा (उत्त ७, २२)।
एलिअ पु [एलिड्] धान्य-विशेष (पण्ह १)।
एलिया स्त्री [एडिका, एलिका] १ एक जात की मृगी। २ भेडिया (हे ३, ३२)।
एलिस देखो एरिस (सूत्र १, ६, १)।
एलु पु [एलु] वृक्ष-विशेष (उप १०३१ टी)।
एलुग } पुन [एलुक] देहली, द्वार के नीचे
एलुअ } की लकडी (जीव ३, आचा २)।
एल्ल वि [दे] दरिद्र, निर्धन (दे १, १७४)।
एव अ [एव] इन अर्थों का सूचक अव्यय —१ अवधारण, निश्चय (ठा ३, १ प्रासू १६)। २ सादृश्य तुल्यता। ३ चार-नियोग। ४ निग्रह। ५ परिभव। ६ अल्प, थोडा (हे २, २१७)।
एव देखो एव (हे १, २९, पउम १५, २४)।
एवड वि [इयत्, एतावत्] इतना। °खुत्तो अ [°कृत्वस्] इतनी वार (कप्प)।

एवइय वि [इयत्, एतावत्] इतना (कप्प, विसे ४४४)।
एव अ [एवम्] इस तरह, इस रीति से, इस प्रकार (सूअ १, १, हे १, २९)। °भूअ पुं [°भूत] १ व्युत्पत्ति के अनुसार उस क्रिया से विशिष्ट अर्थ को ही शब्द का अभिधेय माननेवाला पक्ष (ठा ७)। २ वि इस तरह का, एव-प्रकार (उप ८७७)। °विध, °विह वि [°विध] इस प्रकार का (हे ४, ३२३, काल)।
एवहास पु [एवहास] इतिहास (गउड ८८२)।
एवड (अप) वि [इयत्] इतना (हे ४, ४०८, कुमा, भवि)।
एवमाइ देखो एमाइ (पण्ह १, ३)।
एवमेव } देखो एमेव (हे १, २७१, उवा)।
एवामेव }
एव्व देखो एव (पड्, अभि ७२, स्वप्न १०)।
एव्व देखो एव=एव (अभि १३ स्वप्न ४०)।
एव्वहि (अप) अ [इदानीम्] इस समय, अधुना (पड्)।
एव्वारु पु [इर्वारु] ककडी (कुमा)।
एस सक [इष्] १ इच्छा करना। २ खोजना। ३ प्रकाशित करना। एसइ (पिंड ७५)।
एस सक [आ+इष्] करना, 'तम्हा विणयमेसिज्जा' (उत्त १, ७, सुख १, ७)।
एस सक [आ+इष्] १ खोजना, शुद्ध भिक्षा की खोज करना। २ निर्दोष भिक्षा का ग्रहण करना। एसति (आचा २, ६, २)। वकृ. एसमाण (आचा २, ५, १)। संकृ एसित्ता, एसिया (उत्त १, आचा)। हेकृ एसित्तए (आचा २, २, १)।
एस वि [एष्य] १ भावी पदार्थ, होनेवाली वस्तु (श्राव ५)। २ पु भविष्य काल (दसनि १), 'अकयव सपइ गए कह कीरइ, किह व एसम्मि' (विसे ४२२)।
°एस देखो देस; 'भण को ण रुस्सइ जणो पत्थिज्जंतो अएसकालम्मि' (गा ४००)।

एसग वि [एषक] अन्वेषक, गवेषक (आचा)।
एसज्ज न [ऐश्वर्य] वैभव, प्रभुत्व, संपत्ति (ठा ७)।
एसण न [एषण] १ अन्वेषण, खोज। २ ग्रहण (उत्त २)।
एसणा स्त्री [एषणा] १ अन्वेषण, गवेषण, खोज (आचा)। २ प्राप्ति, लाभ, 'विसएसण झियायंति' (सूअ १, ११)। ३ प्रार्थना (सूअ १, २)। ४ निर्दोष आहार की खोज करना (ठा ६)। ५ निर्दोष भिक्षा (आचा २)। ६ इच्छा, अभिलाष (पिंड १)। ७ भिक्षा का ग्रहण (ठा ३,८)। °समिइ स्त्री [°समिति] निर्दोष भिक्षा का ग्रहण करना (ठा ५)। °समिय वि [°समित] निर्दोष भिक्षा को ग्रहण करनेवाला (उत्त ६, भग)।
एसणिज्ज वि [एषणीय] ग्रहण-योग्य (णाया १, ५)।
एसि वि [एषिन्] अन्वेषक, खोज करनेवाला (आचा)।
एसिय वि [एषिक] १ खोज करनेवाला, गवेषक। २ पु व्याघ्र। ३ पाखण्ड-विशेष (सूअ १, ९)। ४ मनुष्यों की एक नीच जाति (आचा २, १, २)।
एसिय वि [एषित] गवेषित, अन्वेषित (भग ७, १)। २ निर्दोष भिक्षा (वव ४)।
एसिय वि [एषित] भिक्षा-चर्या की विधि से प्राप्त (सूअ २, १, ५६)।
एस्सरिय देखो एसज्ज (उव)।
एह अक [एध्] बढना, उन्नत होना। एहइ (पड्)। प्रयो, वकृ 'दीसति दुहम् एहता (दस ६)।
एह (अप) वि [ईदृक्] ऐसा, इसके जैसा (पड्, भवि)।
एहत्तरि (अप) स्त्री [एकसप्तति] संख्या-विशेष, ७१ (पिंग)।
एहा स्त्री [एधस्] समिध, इन्धन (उत्त १२, ४३, ४४)।
एहिअ वि [ऐहिक] इस जन्म-संबन्धी (ओघ ६२)।

॥ इअ सिरिपाईअसद्दमहण्णवे एआराइसद्दसंकलणो सत्तमो तरंगो समत्तो ॥

उवसाम पुं [उपशम] उपशान्ति (सिरि २३५)।

उवसाम देखो उवसम (विसे १३०६)।

उवसामग वि [उपशमक] १ क्रोधादि को उपशान्त करनेवाला (विसे ५२६, श्राव ४)। २ उपशमसे सबन्ध रखनेवाला, 'उवसामग-सेढिगयस्स होइ उवसामग तु सम्मत्तं' (विसे २७३५)।

उवसामण न [उपशमन] उपशान्ति, उपशम (स ४६९)।

उवसामणया स्त्री [उपशमना] उपशम (ठा ८)।

उवसामय देखो उवसामग (सम २६, विसे १३०२)।

उवसामिय वि [औपशमिक] १ उपशम-संबन्धी। २ पु भाव-विशेष, 'मोहोवसमसहावो, सव्वो उवसामिओ भावो' (विसे ३४-६४)। ३ न सम्यक्त्व-विशेष (विसे ५२६)।

उवसामिय वि [उपशमित] शान्त किया हुआ (वव १)।

उवसाह सक [उप + कथ्] कहना। उवसाहइ (सण)।

उवसाहण वि [उपसाधन] निष्पादक (सण)।

उवसाहिय वि [उपसाधित] तैयार किया हुआ (पउम ३४, ८, सण)।

उवसित्त वि [उपसिक्त] सिक्त, छिड़का हुआ (रंभा)।

उवसिलोअ सक [उपश्लोकय्] वर्णन करना, प्रशंसा करना। कृ उवसिलोअइदव्व (शौ) (मुद्रा १६८)।

उवसुत्त वि [उपसुप्त] सोया हुआ (से १५, ११)।

उवसुद्ध वि [उपशुद्ध] निर्दोष (सूम १, ६)।

उवसूइय वि [उपसूचित] ससूचित (सण)।

उवसेर वि [दे] रति योग्य (दे १, १०४)।

उवसेवण न [उपसेवन] सेवा, परिचय (पव ६)।

उवसेवय वि [उपसेवक] सेवा करनेवाला, भक्त (भवि)।

उवसोभ अक [उप + शुभ्] शोभना, विराजना। वकृ उवसोभमाण, उवसोभेमाण (भग, णाया १, १)।

उवसोभिय वि [उपशोभित] सुशोभित, विराजित (औप)।

उवसोहा स्त्री [उपशोभा] शोभा, विभूषा (सुर ३, १०४)।

उवसोहिय वि [उपशोधित] निर्मल किया हुआ, शुद्ध किया हुआ (णाया १, १)।

उवसोहिय देखो उवसोभिय (सुपा ५, भवि, सार्ध ६६)।

उवस्सग्ग देखो उवसग्ग (कम)।

उवस्सय पुं [उपाश्रय] जैन साधुओं के निवास करने का स्थान (सम १८८, ओघ १७ भा, उप ६४८ टी)।

उवस्सा स्त्री [उपाश्रा] द्वेष (वव १)।

उवस्सिय वि [उपाश्रित] १ द्वेषी (वव १)। २ अङ्गीकृत। ३ समीप में स्थित। ४ न द्वेष (राज)।

उवस्सुदि स्त्री [उपश्रुति] प्रश्न-फल को जानने के लिए ज्योतिषी को कहा जाता प्रथम वाक्य (हास्य १३०)।

उवह स [उभय] दोनों, युगल (कुमा, हे २, १३८)।

उवह अ [दे] देखो' अर्थ को बतलानेवाला अव्यय (षड्)।

उवहट्ट सक [समा + रभ्] शुरू करना, आरम्भ करना। उवहट्टइ (षड्)।

उवहड वि [उपहृत] १ उपढौकित, उपस्थापित (राज)। २ भोजन स्थान मे अर्पित भोजन (ठा ३, ३)।

उवहण सक [उप + हन्] १ विनाश करना। २ आघात पहुँचाना। उवहणइ (उव)। कर्म उवहम्मइ (षड्)। वकृ उवहणत (राज)।

उवहणण न [उपहनन] १ आघात। २ विनाश (ठा १०)।

उवहत्थ सक [समा + रच्] १ रचना, बनाना। २ उत्तेजित करना। उवहत्थइ (हे ४, ९५)।

उवहत्थिय वि [समारचित] १ बनाया हुआ। २ उत्तेजित (कुमा)।

उवहम्म° देखो उवहण।

उवहय वि [उपहत] १ विनाशित (प्रासू १३५)। २ दूषित (बृह १)।

उवहर सक [उप + हृ] १ पूजा करना। २ उपस्थित करना। ३ अर्पण करना। उवहरइ (हे ४, २५९)। भूका उवहरिंसु (ठा ९)।

उवहस सक [उप + हस्] उपहास करना, हँसी करना। कृ उवहसणिज्ज (स ३)।

उवहसिअ वि [उपहसित] १ जिसका उपहास किया गया हो वह (पि १५५)। २ न उपहास (तदु)।

उवहा स्त्री [उपधा] माया, कपट (धर्म ३)।

उवहाण न [उपधान] १ तकिया, उसीसा (दे १, १४०, सुर १२, २५, सुपा ४)। २ तपश्चर्या (सूअ १, ३, २, २१)। ३ उपाधि, 'सच्छपि फलिहरयणं उवहाणवसा कलिज्जए काल' (उप ७२८ टी)।

उवहार पु [उपहार] १ भेट, उपहार (प्रति ७४)। २ विस्तार, फेलाव, 'पहासमुदओवहारेहिं सव्वओ चेव दीवयत' (कप्प)।

उवहारणया देखो उवधारणया (राज)।

उवहारिअ वि [उपधारित] अवधारित, निश्चित (सूअ २, ७)।

उवहारिआ } स्त्री [दे] दोहनेवाली स्त्री (गा
उवहारी } ७३१, दे १, १०८)।

उवहारुल्ल वि [उपहारवत्] उपहारवाला (सक्षि २०)।

उवहास पु [उपहास] हँसी, ठट्ठा, दिल्लगी (हे २, २०१)।

उवहास वि [उपहास्य] हँसी के योग्य,
'सुसमत्थो वि हु जो,
जणयअज्जिय सपय निसेवेइ।
सो अम्मि। ताव लोए, ममंव
उवहासयं लहइ' (सुर १, २३२)।

उवहासणिज्ज वि [उपहसनीय] हास्यास्पद (पउम १०६, २०)।

उवहि पुं [उदधि] समुद्र, सागर (से ५, ४०, ४२, भवि)।

उवहि पुस्त्री [उपाधि] १ माया, कपट (आचा)। २ कर्म (सूम १, २)। ३ उपकरण, साधन, 'तिविहा उवही पण्णत्ता' (ठा ३, ओघ २)।

उवहिंड सक [उप + हिण्ड्] पर्यटन करना, घूमना, 'भिक्खट्ठं उवहिंडे' (संबोध ४१)।

प्पिआ । सिंघूए महाणईए पच्चत्थिमिल्लं णिक्खुड मसिंधुमागरगिरिमेराग समविसमणिक्खुडाणि अ ओअवेहि' (ज ३) । सक्र ओअवेत्ता (ज ३) ।

ओअवण न [साधन] विजय, वश करना, स्वायत्त करना (ज ३—पत्र २४८) ।

ओआअ पु [दे] १ ग्रामाधीश, गाँव का स्वामी । २ आज्ञा, आदेश । ३ हस्ती वगैरह को पकडने का गर्त्त । ४ वि अपहृत, छीना हुआ (दे १, १६६) ।

ओआअव पु [दे] अस्त-समय (दे १, १६२) ।

ओआर सक [अप + वारय्] ढाकना, 'कह सुज्ज हत्थेण ओआरेसि' (मै ४६) ।

ओआर पुं [अपकार] अनिष्ट, हानि, क्षति (कुमा) ।

ओआर पु [अवतार] १ अवतारण (ठा १, गउड) । २ अवतार, देहान्तर-धारण (पड्) । ३ उत्पत्ति, जन्म, 'अच्चतमणोयारो जत्थ जरारोगवाहीण' (स १३१) । ४ प्रवेश (विसे १०४०) ।

ओआर देखो उवयार (षड्) ।

ओआरण न [अवतारण] उतारना, अवतारित करना (दे ४, ४०) ।

ओआरिअ वि [अवतारित] उतारा हुआ (से ११, ९३, उप ५९७ टी) ।

ओआल पु [दे] छोटा प्रवाह (दे १, १५१) ।

ओआली स्त्री [दे] १ खड्ग का दोष । २ पंक्ति, श्रेणी (दे १, १६४) ।

ओआवल पु [दे] वालातप, सुबह का सूर्य-ताप (दे १, १६१) ।

ओआस देखो अवगास (हे १, १७२, कुमा, २०), 'अम्हारिसाण सुदर । ओआसो कत्थ पावाण' (काप्र ९०३ ।

ओआस देखो उवचास (हे १, १७३, प्राकृ) ।

ओआहिअ वि [अवगाहित] जिसका अवगाहन किया गया हो वह (से १, ४, ८, १००) ।

ओइव सक [आ + मुच्] १ छोड़ देना, त्यागना, फेंक देना । २ उतार कर रख देना, 'तो उज्झिऊण लज्ज ओइवइ कचुय सरीराओ' (पउम ३४, १६), तहेव य मुडत्ति परिवाडीए ओइंवइ त्ति' (आक ३८) ।

ओइण्ग वि [अवतीर्ण] उतरा हुआ (पाअ, गा ६३) ।

ओइत्त, ओइत्तग न [दे] परिधान, वस्त्र (दे १, १५५) ।

ओइझ वि [दे] आरूढ (दे १, १५८) ।

ओउंठण न [अवगुण्ठन] स्त्री के मुँह पर का वस्त्र, घूँघट (अभि १६८) ।

ओउड्डिय वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ (पड्) ।

ओऊल न [अवचूल] लटकता हुआ वस्त्राञ्चल, प्रालम्ब (पाअ), 'मरगयलवतमोत्तिओऊल' (पउम ८, २८३) । देखो ओचूल ।

ओं अ [ओम्] प्रणव मुख्य मन्त्राक्षर (पडि) ।

ओंकार पु [ओङ्कार] 'ओं' अक्षर (उत्त २५ ३१) ।

ओंगण अक [क्वण्] अव्यक्त आवाज करना । ओगणइ (प्राकृ ७३) ।

ओंघ देखो उव । ओघइ (हे ४, १२ टि) ।

ओंडल न [दे] केश-गुम्फ, केश-रचना, धम्मिल्ल (दे १, १५०) ।

ओंदुर देखो उदुर (पड्) ।

ओंवाल सक [छादय्] ढकना, आच्छादित करना । ओवालइ (हे ४, २१) ।

ओंवाल सक [प्लावय्] १ डुवाना । २ व्याप्त करना । ओवालइ (हे ४, ४१) ।

ओंवालिअ वि [छादित] ढका हुआ (कुमा) ।

ओंवालिअ वि [प्लावित] १ डुबाया हुआ । २ व्याप्त (कुमा) ।

ओकवण देखो उक्कवण (आचा २, २, ३, १ टी) ।

ओकच्छिया देखो उक्कच्छिआ (पव ६२) ।

ओकड्ढ वि [अपकृष्ट] १ खींचा हुआ । २ न अपकर्षण, खींचाव (उत्त १६) ।

ओकड्ढग देखो उक्कड्ढग (पण्ह १, ३) ।

ओकरग पु [अवकरक] विष्ठा (मन ३०) ।

ओकस सक [अव + कृप्] १ निमग्न होना, गड जाना । २ खींचना । ३ वह जाना । वक्र ओकसमाण (कस) ।

ओक्कंत वि [अवक्रान्त] निराकृत, पराजित, 'परवाईहिं अणोक्कंता अण्णउत्थिएहिं अणाधसिज्जमाणा विहरति' (औप) ।

ओक्कदी देखो उक्कदी (दे १, १७४) ।

ओक्कणी स्त्री [दे] यूका, जूँ (दे १, १५९) ।

ओक्किअ न [दे] १ वास, वसन, अवस्थान । २ वमन, उल्टी (दे १, १५१) ।

ओक्खच सक [आ + कृप्] खींचना । कर्म 'जह जह ओक्खचिज्जइ, तह तह वेग पगिण्हमाणेण । भयव ! तुरगमेणं, इहाणिओ आममे तुम्हं' (सुर ११, ५१) ।

ओक्खड सक [अव + खण्डय्] तोडना, भागना । कृ ओक्खंडेअव्व (से १०, २९) ।

ओक्खडिअ वि [दे] आक्रान्त (दे १, ११२) ।

ओक्खद देखो अवक्खद (सुर १०, २१०, पउम ३७, २९) ।

ओक्खल देखो उऊखल (कुमा प्राप्र) ।

ओक्खली [दे] देखो उक्खली (दे १, १७४) ।

ओक्खमाण (शौ) वि [भविष्यत्] भविष्य मे होनेवाला, भावी (प्राकृ ९६) ।

ओक्खिण्ण वि [दे] १ अवकीर्ण । २ खण्डित, चूर्णित (कम, दे १, १३०) । २ छन्न, ढका हुआ । ३ पार्श्व मे क्षिप्त (दे १, १३०) ।

ओक्खित्त वि [अवक्षिप्त] फेका हुआ (कस) ।

ओखच देखो ओक्खच ।

ओगम देखो अवगम । कृ ओगमिदव्व (शौ) (मा ४८) ।

ओगय वि [उपगत] प्राप्त (सूअ १, ५, २, १०) ।

ओगर देखो ओ.ग्गर (पिंग) ।

ओगलिअ वि [अवगलित] गिरा हुआ, खिसका हुआ (गा २०५) ।

ओगसण न [अपकसन] ह्रास (राज) ।

ओगहिअ वि [अवगृहीत] उपात्त, गृहीत (ठा ३) ।

ओगाढ वि [अवगाढ] १ आश्रित, अधिष्ठित (ठा २, २) । २ व्याप्त (णाया १, १६) । ३ निमग्न (ठा ४) । ४ गभीर, गहरा (पउम २०, ६५, से ६, २९) ।

ओगास पुं [अवकाश] जगह, स्थान (विसे १३६ टी) ।

ओगास पु [अवकाश] मार्ग, रास्ता (सुख २, २१) ।

ओगाह सक [अव + गाह्] पाँव से चलना । वकृ ओगाहंत (पिंड ५७५) ।

उवासग वि [उपासक] १ सेवा करनेवाला। २ पुं. जैन या बुद्ध दर्शन का अनुयायी गृहस्थ (धर्मस १०१३)।

उवासग वि [उपासक] १ उपासना करने-वाला, सेवक। २ पुं श्रावक, जैन गृहस्थ (उत्त २)। °दसा स्त्री [°दशा] सातवाँ जैन अंग ग्रन्थ (सम १)। °पडिमा स्त्री [°प्रतिमा] श्रावको को करने योग्य नियम-विशेष (उत्त २)।

उवासण न [उपासन] उपासना, सेवा (स ५४३, मै ८६)।

उवासणा स्त्री [उपासना] १ क्षौर कर्म, हजामत वगैरह सफाई। २ सेवा, शुश्रूषा, 'उवासणा संसुकम्ममाइया, गुरुरायाईणं वा उवासणा पज्जुवासणया' (आवम)।

उवासय देखो उवासग (सम ११६)।

उवासय पु [उपाश्रय] जैन मुनियों का निवास-स्थान (उप १४२ टी)।

उवासिय वि [उपासित] सेवित (पउम ६८, ४२)।

उवाहण सक [उपा + हन्] विनाश करना, मारना। वक्र उवाहणत (पराह १, २)।

उवाहणा देखो उवाणहा (अनु, णाया १, १५)।

उवाहि पुस्त्री [उपाधि] १ कर्म-जनित विशेषण (आचा)। २ सामीप्य, सन्निधि (भग १, १)। ३ अस्वाभाविक धर्म, 'सुद्धोवि फलिहमणी उपाहिवसओ धरेइ अन्नत्तं' (धम्म ११ टी)।

उवि सक [उप + इ] १ समीप आना। २ स्वीकार करना। ३ प्राप्त करना। उविति (भग)। वक्र उविंत (पि ४९३, प्रामा)।

उविअ देखो अविअ = अपि च (स २०६)।

उविअ वि [उपेत] युक्त, सहित (भवि)।

उविअ न [दे] शीघ्र, जल्दी (दे १, ८६)। २ वि परिकर्मित, संस्कारित, 'णाणामणिक-णगरयणविमलमहरिहनिउणोवियमिसिमिसंत-विरइयसुसिलिट्ठविसिट्ठलट्ठसठियपसत्थआविद्ध-वीरवलए' (णाया १, १)।

उविंद पुं [उपेन्द्र] कृष्ण (कुमा)। °वज्जा स्त्री [°वज्रा] ग्यारह अक्षरो के पादवाला एक छन्द (पिंग)।

उविंद पुन [उपेन्द्र] एक देव-विमान (देवेन्द्र १४१)।

उविक्ख सक [उप + ईक्ष्] उपेक्षा करना, अनादर करना। वक्र उविक्खमाण (द्र १६)।

उविक्खा स्त्री [उपेक्षा] उपेक्षा, अनादर (काल)।

उविक्खिय वि [उपेक्षित] तिरस्कृत, अनादृत (सुपा ३६५)।

उविक्खेव पु [उद्विक्षेप] हजामत, मुण्डन (तन्दु)।

उवियग्ग वि [उद्विग्न] खिन्न, उद्वेग-प्राप्त (राज)।

उवीव अक [उद् + विच्] उद्वेग करना, खिन्न होना। उवीवइ (नाट)।

उवे देखो उवि। उवेइ, उवेंति (औप)। वक्र उवेंत (महा)। सक्र उवेच्च (सूअ १, १४)।

उवेक्ख देखो उविक्ख। उवेक्खह (सुपा ३५४)। कृ उवेक्खियव्व (स ६०)।

उवेक्खिअ देखो उविक्खिय (गा ४२०)।

उवेच्च देखो उवे।

उवेय वि [उपेत] १ समीप-गत। २ युक्त, सहित (सस्था ६)।

उवेय वि [उपेय] उपाय-साध्य (राज)।

उवेल्ल अक [प्र + सृ] फैलना, प्रसारित होना। उवेल्लइ (हे ४, ७७)।

उवेस अक [उप + विश्] बैठना। वक्र उवेसमाण (पिंड ५८३)।

उवेह सक [उप + ईक्ष्] उपेक्षा करना, तिरस्कार करना, उदासीन रहना। उवेहइ (धम्म १६)। वक्र उवेहंत, उवेहमाण (स ४६, ठा ६)। कृ उवेहियव्व (सण)।

उवेह सक [उत्प्र + ईक्ष्] १ जानना, सम-झना। २ निश्चय करना। ३ कल्पना करना। उवेहाहि। वक्र उवेहमाण, 'उवेहमाणे अणु-वेहमाणं बूया, उवेहाहि समियाए' (आचा)। संक्र उवेहाए (आचा)।

उवेहण न [उपेक्षण] उपेक्षा, उदासीनता (संबोध १०, हित २३)।

उवेहा स्त्री [उपेक्षा] तिरस्कार, अनादर, उदा-सीनता (सम ३२)। °कर वि [°कर] उपे-क्षक, उदासीन (श्रा २८)।

उवेहा स्त्री [उत्प्रेक्षा] १ ज्ञान, समझ। २ कल्पना। ३ अवधारण, निश्चय (औप)।

उवेहिय वि [उपेक्षित] अनादृत, तिरस्कृत (उप १२६, सुपा १३५)।

°उव्व देखो पुव्व (गा ४१४)।

उव्वत वि [उद्वान्त] १ वमन किया हुआ। २ निष्क्रान्त, निर्गत (अभि २०६)।

उव्वक्क सक [उद् + वम्] १ बाहर निका-लना २ वमन करना। हेकृ उव्वक्किउ (सुपा १३६)।

उव्वक्क } वि [उद्वान्त] १ बाहर निकाला
उव्वक्किय } हुआ (वव १)। २ वमन किया हुआ;

'मतोनामयपाण, काउ उव्वक्कियं हयामेण। ज गहिऊण विरई, कलकिया मोहमूढेण'
(सुपा ४३५)।

उव्वग्ग देखो ओवग्ग। संकृ. उव्वग्गिवि (भवि)।

उव्वट्ट उभ [उद् + वृत्, वर्तय्] १ चलना-फिरना। २ मरना, एक गति से दूसरी गति मे जन्म लेना। ३ पिष्टिका आदि से शरीर के मल को दूर करना। ४ कर्म-पर-माणुओ की लघु स्थिति को हटाकर लम्बी स्थिति करना। ५ पार्श्व को चलाना-फिराना। ६ उत्पन्न होना, उदित होना। उव्वट्टइ (भग)। वकृ. उव्वट्टत, उव्वट्टमाण, उअत्तत (भग, नाट, उत्तर १०७, बृह १)। सकृ उव्वट्टित्ता, उद्दट्टु, उव्वट्टिय (जीव १, विपा १, १, आचा २, ७, स २०६)। हेकृ. उव्वट्टित्तए (कस)।

उव्वट्ट देखो उव्वट्टिय = उद्वृत्त (भग)।

उव्वट्ट वि [दे] १ नीराग, राग-रहित। २ गलित (दे १, १२६)।

उव्वट्टण न [उद्वर्त्तन] १ शरीर पर से मल वगैरह को दूर करना। २ शरीर को निर्मल करनेवाला द्रव्य—सुगन्धि वस्तु (उवा, णाया १, १३)। ३ दूसरे जन्म मे जाना, मरण। ४ पार्श्व का परिवर्त्तन (आव ४)। ५ कर्म-पर माणुओ की ह्रस्व स्थिति को दीर्घ करना (पंच)।

'ओच्छाहिओ परेण व लद्धि-
पसंसाहि वा समुत्तइओ।
अवमाणिओ परेण य जो
एसइ माणपिंडो सो॥'
(पिंड ४६५)।

ओच्छिअ न [दे] केश-विवरण (दे १, १५०)।

ओच्छिण्ण वि [अवच्छिन्न] आच्छादित, 'पत्तेहि य पुप्फेहि य ओच्छिण्णपलिच्छिण्णा' (जीव ३)।

ओच्छुद सक [आ+क्रम्] १ आक्रमण करना। २ गमन करना। ओच्छुदति (से १३, १६)। कर्म ओच्छुदइ (से १०, ५५)।

ओच्छुण्ण वि [आक्रान्त] १ दबाया हुआ। २ उल्लंघित, 'ओच्छुण्णदुग्गमपहा' (से १३, ६३, १५, १३)।

ओच्छोअअ न [दे] घर की छत के प्रान्त भाग से गिरता पानी
'रक्खेइ पुत्तअ मत्थएण
ओच्छोअअं पडिच्छंती।
अंसूहि पहिअघरिणी ओलि-
ज्जंतं ण लक्खेइ' (गा ६२१)

ओजिम्ह अक [आ] तृप्त होना। ओजिम्हइ (प्राकृ ६५)।

ओज्जर वि [दे] भीरु, डरपोक (षड्)।

ओज्जल देखो उज्जल (दे)।

ओज्जल्ल वि [दे] बलवान् प्रबल (दे १, १५८)।

ओज्झाअ पु [दे] गर्जित, गर्जारव (दे १ १५८)।

ओज्झ वि [दे] मैला, अस्वच्छ, चोखा नहीं वह (दे १, १४८)।

ओज्झत देखो ओज्झा = अप + ध्या।

ओज्झमण न [दे] पलायन, भाग जाना (दे १, १०३)।

ओज्झर पु [निर्झर] झरना, पर्वत से निकलता जल-प्रवाह (गा ६४०, हे १, ६८, कुमा, महा)।

ओज्झरिअ [दे] देखो उज्झरिअ (दे १, १३३)।

ओज्झरी स्त्री [दे] ओझ, आंत का आवरण (दे १, १५७)।

ओज्झा सक [अप+ध्या] खराब चिन्तन करना। कवकृ ओज्झत (भवि)।

ओज्झा देखो उवज्झा (उप पृ ३७४)।

ओज्झाय देखो उवज्झाय (कुमा, प्रारू)।

ओज्झाय वि [दे] दूसरे की प्रेरणा कर हाथ से लिया हुआ (दे १, १५६)।

ओज्झावग देखो उवज्झाय (उप ३५७ टी)।

ओट्ठ पु [ओष्ठ] ओठ, अधर (पउम १, २४ स्वप्न १०४ कुमा)।

ओट्टिय वि [औष्ट्रिक] उष्ट्र सम्बन्धी, उष्ट्र के बालों से बना हुआ (कस, स ५८६)।

ओडड्ढ वि [दे] अनुरक्त, रागी (दे १, १५६)।

ओड्ड पु [ओड्र] १ उत्कल देश। २ वि उत्कल देश का निवासी, उड़िया (पिंग)।

ओड्डिअ वि [ओड्रीय] उत्कल-देशीय (पिंग)।

ओड्ढण न [दे] ओढन, उत्तरीय, चादर (दे १, १५५)।

ओड्ढिणा स्त्री [दे] ओढनी (स २११)।

ओढण न [दे] अवगुण्ठन (प्राकृ ३८)।

ओण देखो ऊण = ऊन (रंभा)।

ओणंद सक [अव+नन्द्] अभिनन्दन करना। कवकृ. ओणदिज्जमाण (कप्प)।

ओणम अक [अव+नम] नीचे नमना। वकृ ओणमंत (से १, ४५)। संकृ. ओण-मिअ, ओणमिऊण (आचा २, निचू १)।

ओणय वि [अवनत] १ नमा हुआ (सुर २, ४६)। २ न नमस्कार, प्रणाम (सम २१)।

ओणल्ल अक [अव+लम्ब्] लटकना, 'केसकलावु खवे ओणल्लइ' (भवि)।

ओणविय वि [अवनमित] नमाया हुआ, अवनत किया हुआ (गा ६३५)।

ओणाम सक [अव+नमय्] नीचे नमाना, अवनत करना। ओणामेहि (मृच्छ ११०)। संकृ ओणामित्ता (निचू)।

ओणामणी स्त्री [अवनामनी] एक विद्या, जिसके प्रभाव से वृक्ष वगैरह स्वयं फलादि देने के लिए अवनत होते हैं (उप पृ १५५, निचू १)।

ओणामिय } **ओणाविय** } वि [अवनमित] अवनत किया हुआ (से ५, ३६, ६, ४, गा १०३, भवि)।

ओणिअत्त अक [अपनि+वृत्] पीछे हटना, वापिस आना। वकृ ओणिअत्तंत (से २, ७)।

ओणिअत्त वि [अपनिवृत्त] पीछे हटा हुआ, वापिस आया हुआ (से ५, ५८)।

ओणिमिल्ल वि [अवनिमीलित] मुद्रित, मूँदा हुआ (से ६, ८७, १३, ८२)।

ओणियट्ट देखो ओनियट्ट (पि ३३३)।

ओणियत्थ पु [दे] वल्मीक, चींटियों का खुदा हुआ मिट्टी का ढेर (दे १, १५१)।

ओणीवी स्त्री [दे] नीवी, कटि-सूत्र (दे १, १५०)।

ओणुणअ वि [दे] अभिभूत, पराभूत (दे १, १५८)।

ओण्णिद्द न [औन्निद्र्य] निद्रा का अभाव, 'ओण्णिद्दं दोब्बल्लं' (काप्र ८५, दे १, १५७)।

ओण्णिय वि [और्णिक] ऊन का बना हुआ, ऊर्ण-निर्मित (कस)।

ओणेज्ज वि [उपनेय] साँचे में ढाल कर बना हुआ फूल आदि, साँचे से बनता मोम का पुतला, 'आउट्टिमउक्किन्न ओणेज्जे (? णे) ज्ज पीलिम च रंग च' (दसनि २, १७)।

ओत्तलहअ पु [दे] विटप (दे १, ११६)।

ओत्ताण देखो उत्ताण (विक्र २८)।

ओत्थ सक [स्थग्] ढकना। ओत्थइ (प्राकृ ६५)।

ओत्थअ वि [अवस्तृत] १ फैला हुआ, प्रसृत (से ७, ३)। २ आच्छादित, पिहित 'सर्व-तओ अन्थय गयण' (आवम, दे १, १५१, स ७७, ३८६)।

ओत्थअ वि [दे] अवसन्न, खिन्न (दे १, १५१)।

ओत्थइअ देखो ओच्छइय (गा ५८६, से ८, ६२, स ५७६)।

ओत्थर देखो ओच्छर। ओत्थरइ (पि ५०५, नाट)।

ओत्थर पु [दे] उत्साह (दे १, १५०)।

ओत्थरण न [अवस्तरण] बिछौना (पउम ४६, ८४)।

किया हुआ (सुपा ५४२)। ३ दूर किया हुआ (गा १०६)।
उव्वाह पु [दे] घर्म, ताप (दे १, ८७)।
उव्वाह पु [उद्वाह] विवाह (मै २१)।
उव्वाह सक [उद् + बाधय्] विशेष प्रकार से पीडित करना। कवकृ. उव्वाहिज्जमाण (आचा; णाया १, २)।
उव्वाहिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ (दे १, १०६)।
उव्वाहुल न [दे] १ उत्सुकता, उत्कण्ठा (भवि; दे १, १३६)। २ वि. द्वेष्य, अप्रीतिकर (दे १, १३६)।
उव्वाहुलिय वि [दे] उत्सुक, उत्कण्ठित (भवि)।
उव्विआइअ वि [उद्वेदित] उत्पीडित (से १३, २६)।
उव्विक्क न [दे] प्रलपित, प्रलाप (षड्)।
उव्विग्ग वि [उद्विग्न] १ खिन्न। २ भीत, घबड़ाया हुआ (हे २, ७९)।
उव्विग्गिर वि [उद्वेगशील] उद्वेग करनेवाला (वाका ३८)।
उव्विज्ज देखो उव्विय। उव्विज्जइ (प्राकृ ६८), उव्विज्जंति (वै ८९)। संकृ उव्विज्जिऊण (धर्मवि ११६)।
उव्विड वि [दे] १ चकित, भीत। २ क्लान्त, क्लेश-युक्त (षड्)।
उव्विडिम वि [दे] १ अधिक प्रमाण वाला। २ मर्यादा-रहित, निर्लज्ज (दे १, १३४, चउ० पत्र २६७-२६८ पद्य)।
उव्विण्ण देखो उव्विग्ग (पि २१६)।
उव्विद्ध वि [उद्विद्ध] १ ऊँचा गया हुआ, उच्छ्रित (पण्ह १, ४)। २ गम्भीर, गहरा (सम ४४, णाया १, १)। ३ विद्ध, 'कीलयसएहिं धरणियले उव्विद्धो' (सधा ८७)।
उव्विद्ध वि [उद्विद्ध] जिसकी ऊँचाई का माप किया गया हो वह (पव १५८)।
उव्विन्न देखो उव्विग्ग (हे २, ७९, सुर ४, २४८)।
उव्विय अक [उद् + विज्] उद्वेग करना, उदासीन होना, खिन्न होना, 'को उव्विएज्ज नरवर! मरणस्स अवस्स गंतव्वे' (स १२६)। वकृ उव्वियमाण (स १३६)।

उव्वियणिज्ज वि [उद्वेजनीय] उद्वेग-प्रद (पउम १६, ३६, सुपा ५६७)।
उव्विरेयण न [उद्विरेचन] खाली करना, 'एव च भरिउव्विरेयणं कुव्वतस्स' (काल)।
उव्विल्ल अक [उद् + वेल्] १ चलना, काँपना। २ सक. वेष्टन करना। वकृ उव्विल्लंत, उव्विल्लमाण (सुपा ८८, उप पृ ७७)।
उव्विल्ल अक [प्र + सृ] फेलना, पसरना। उव्विल्लइ (भवि)।
उव्विल्ल अक [उद् + वेल्] १ तड़फड़ाना, इधर-उधर चलना, 'उव्विल्लइ सयणीए देवो आमल्लचवणुव्व' (धर्मवि ११२)।
उव्विल्ल वि [उद्वेल] चञ्चल, चपल (सुपा ३४)।
उव्विल्लिर वि [उद्वेलितृ] चलनेवाला, हिलनेवाला (सुपा ८८)।
उव्विव अक [उद् + विज्] उद्वेग करना, खिन्न होना। उव्विवइ (षड्)।
उव्विव्व } देखो उव्विव। उव्विव्वइ, उव्वेअइ (प्राकृ ६८)।
उव्वेअ }
उव्विव्व वि [दे] १ क्रुद्ध, क्रोध-युक्त (षड्)। २ उद्भट वेष वाला (पाअ)।
उव्विह सक [उत् + व्यध्] १ ऊँचा फेंकना। २ ऊँचा जाना, उड़ना, 'मे जहाणामए केइ पुरिसे उसुं उव्विहइ' (पि १२६)। वकृ. 'मणसावि उव्विहंताइं अणेगाइं आमसयाइं पासति' (णाया १, १७ टी—पत्र २३१)। वकृ. उव्विहमाण (भग १६)। संकृ उव्विहित्ता (पि १२६)।
उव्विह पुं [उद्विह] स्वनाम-ख्यात एक आजीविक मत का उपासक (भग ८, ५)।
उव्वी पु [उर्वी] पृथिवी (से २, ३०)। °स पु [°श] राजा (कुमा)।
उव्वीढ देखो उव्वूढ (कुमा, हे १, १२०)।
उव्वीढ वि [दे] उत्खात, खोदा हुआ (दे १, १००)।
उव्वीढ वि [उद्विद्ध] उत्क्षिप्त, 'तस्स उसुस्स उव्वीढस्स समाणस्स' (पि १२६)।
उव्वील सक [अव + पीडय्] पीड़ा पहुँचाना, मार-पीट करना। वकृ उव्वीलेमाण (राज)।

उव्वीलय वि [अपव्रीडक] लज्जा-रहित करनेवाला, शिष्य को प्रायश्चित्त लेने में शरम को दूर करने का उपदेश देनेवाला (गुरु) (भग २५, ७, द्र ४६)।
उव्वुज्झमाण देखो उव्वह।
उव्वुण्ण } वि [दे] १ उद्विग्न। २ उत्सिक्त।
उव्वुन्न } ३ शून्य (दे १, १२३)। ४ उद्भट, उल्बण (दे १, १२३, सुर ३, २०५)।
उव्वूढ वि [उद्व्यूढ] १ धारण किया हुआ, पहना हुआ (कुमा)। २ ऊँचा लिया हुआ, ऊपर धारण किया हुआ (से ५, ५४, ६, ११)। ३ परिणीत, कृत-विवाह (सुपा ४५६)।
उव्वेअणीअ वि [उद्वेजनीय] उद्वेग-कारक (नाट)।
उव्वेग पुं [उद्वेग] १ शोक, दिलगीरी (ठा ३, ३)। २ व्याकुलता (भग ३, ६)।
उव्वेढ सक [उद् + वेष्ट्] १ बाँधना। २ पृथक् करना, बन्धन-मुक्त करना। उव्वेढइ (षड्), उव्वेढिज्ज (आचा २, ३, २, २)।
उव्वेढण न [उद्वेष्टन] १ बन्धन। २ वि. बन्धन-रहित किया हुआ (राज)।
उव्वेढिअ वि [उद्वेष्टित] १ बन्धन रहित किया हुआ। २ परवेष्टित (दे ४, ४६)।
उव्वेत्ताल न [दे] अविच्छिन्न चिल्लाना, निरन्तर रोदन (दे १, १०१)।
उव्वेय देखो उव्वेग (कुमा; महा)।
उव्वेयग वि [उद्वेजक] उद्वेग-कारक (रयण ४०)।
उव्वेयणग } वि [उद्वेजनक] उद्वेग-जनक
उव्वेयणय } (आउ, पण्ह १, १)।
उव्वेयणय पुन [उद्वेजनक] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २८)।
उव्वेल अक [प्र + सृ] फैलना। उव्वेलइ (षड्)।
उव्वेल वि [उद्वेल] उच्छलित (से २, ३०)।
उव्वेलिअ वि [उद्वेलित] फैला हुआ, प्रसृत (माल १४२)।
उव्वेल्ल देखो उव्वेढ। उव्वेल्लइ (हे ४, २२३)। कर्म. उव्वेल्लिज्जइ (कुमा)।
उव्वेल्ल सक [उद् + वेल्ल्] १ सत्वर जाना। २ त्याग करना। ऊँचा उड़ना, ऊँचा

ओमत्थ वि [दे] नत, अधोमुख (पाअ)।
ओमत्थिय [दे] देखो ओमथिय (ओघ ३८६)।
ओमल्ल न [निर्माल्य] निर्माल्य, देवोच्छिष्ट द्रव्य (षड्)।
ओमल्ल वि [दे] घनीभूत, कठिन, जमा हुआ (षड्)।
ओमाण पु [अपमान] अपमान, तिरस्कार (उत्त २६)।
ओमाण न [अवमान] १ जिससे क्षेत्र वगैरह का माप किया जाता है वह, हस्त, दण्ड वगैरह मान (ठा २, ४)। २ जिसका माप किया जाता है वह क्षेत्रादि (अणु)।
ओमाणण न [अवमानन, अप°] अपमान, तिरस्कार (स ६६७)।
ओमाय वि [अवमित] परिमित, मापा हुआ (सुज्ज ६)।
ओमाल देखो ओमल्ल = निर्माल्य (हे १, ३८, कुमा, वज्जा ८८)।
ओमाल अक [उप + माल्] १ शोभना, शोभित होना। २ सक सेवा करना, पूजना। संकृ ओमालिवि (भवि)। कवकृ 'अहवावि भत्तिपणमतियसवहूसीसकुसुमदामेहिं। ओमालिज्जंतकमो, नियमा तित्थाहिवो होइ' (उप ६८६ टी)।
ओमालिअ देखो ओमल्ल = निर्माल्य (प्राकृ ३४)।
ओमालिअ वि [उपमालित] १ शोभित। २ पूजित, अर्चित (भवि)।
ओमालिआ स्त्री [अवमालिका] चिमडी या मुरझाई हुई माला (गा १६४)।
ओमास पु [अवमर्श] स्पर्श (से ६, ६७)।
ओमिण सक [अव + मा] मापना, मान करना। कर्म ओमिणिज्जइ (अणु)।
ओमिणण न [दे] प्रोंखनक, विवाह की एक रीति वर के लिये सासू की ओर से किया हुआ न्योछावर (पचा ८,२५)।
ओमिय वि [अवमित] परिच्छिन्न, परिमित (सुज्ज ६)।
ओमील अक [अव + मील्] मुद्रित होना, बन्द होना। वकृ ओमीलंत (से ३, १)।
ओमीस वि [अवमिश्र] १ मिश्रित। २ समीपस्थ। ३ न सामीप्य, समीपता, 'सुचिरंपि अच्छमाणो, वेरुलिओ कायमणियओमीसे। न उवेइ कायभावं, पाहन्नगुणेण नियएण।' (ओघ ७७२)।
ओमुक्क वि [अवमुक्त] परित्यक्त (सम्मत्त १५६)।
ओमुग्ग देखो उम्मुग्ग (पि १०८, २३४)।
ओमुच्छिअ वि [अवमूर्च्छित] महा-मूर्छा को प्राप्त (पउम ७, १५८)।
ओमुद्धग वि [अवमूर्धक] अधोमुख, 'ओमुद्धगा धरणियले पडंति' (सूअ १, ५)।
ओमुय सक [अव + मुच्] पहनना। ओमुयइ (कप्प)। वकृ ओमुयंत (कप्प)। संकृ ओमुइत्ता (कप्प)।
ओमोय पु [ओमोक] आभरण, आभूषण (भग ११, ११)।
ओमोयर वि [अवमोदर] भूख की अपेक्षा न्यून भोजन करनेवाला (उत्त ३०)।
ओमोयरिय न [अवमोदरिक] १ न्यून भोजनत्व, तप-विशेष (आचा)। २ दुर्भिक्ष, अकाल (ओघ ७)।
ओमोयरिया स्त्री [अवमोदरिता, °रिका] न्यून भोजन रूप तप (ठा ६)।
ओम्माय पु [उन्माद] उन्मत्तता (सबोध २१)।
ओय न [ओजस्] १ विषम संख्या, जैसे एक, तीन, पांच आदि (पिंड ६२६)। २ आहार-विशेष, अपनी उत्पत्ति के समय जीव प्रथम जो आहार लेता है वह (सूअनि १७१)।
ओय वि [ओकस्] गृह, घर (वव ५)।
ओय वि [ओज] १ एक, असहाय (सूअ १, ४, २, १)। २ मध्यस्थ, तटस्थ, उदासीन (बृह १)। ३ पु विषम राशि (भग २५,३)।
ओय न [ओजस्] १ बल (आचा)। २ प्रकाश, तेज (चंद ५)। ३ उत्पत्ति स्थान में आहत पुद्गलों का समूह (पण्ण ८, सग १८२)। ४ आर्तव, ऋतु-धर्म (ठा ३, ३)।
ओयंसि वि [ओजस्विन्] १ बलवान्। २ तेजस्वी (सम १५२, औप)।
ओयट्टण न [अपवर्त्तन] पीछे हटना, वापिस लौटना (उप ७६०)।
ओयड्ढ सक [अप + कृष्] खींचना। कवकृ ओयड्ढियंत (पउम ७१, २६)।
ओयड्ढिया } स्त्री [दे] ओढनी, ओढने
ओयड्ढी } का वस्त्र चादर, दुपट्टा (सुख २, ३०)।
ओयग देखो ओदग (पउम ६६, १६)।
ओयत्त वि [अववृत्त] अवनत, अधोमुख (पाअ)।
ओयत्त सक [अप + वर्तय्] उलटाना, खाली करने के लिए नमाना। संकृ ओयत्तियाण (आचा २, १, ७, ५)।
ओयत्तण न [अपवर्तन] खिसकाना, हटाना (पिंड ५६३)।
ओयविय वि [दे] परिकर्मित (पण्ह १, ४; औप)।
ओया स्त्री [ओजस्] शक्ति, सामर्थ्य (णाया १, १०—पत्र १७०)।
ओया स्त्री [ओजस्] १ प्रकाश (सुज्ज ६)। २ माता का शुक्र-शोणित (तंदु १०)।
ओयाइअ देखो उवयाइय (सुपा ६२५, दे ४, १२)।
ओयाय वि [उपयात] उपागत, समीप पहुँचा हुआ (णाया १, ६, निर १, १)।
ओयार सक [अव + तारय्] नीचे उतारना। संकृ ओयारिया (दस ५, १, ६३)।
ओयार पुं [अवतार] घाट, तीर्थ (चेइय ५१८)।
ओयारग वि [अवतारक] १ उतारनेवाला। २ प्रवृत्ति करनेवाला (सम १०६)।
ओयारण देखो उयारण (कुप्र ७१)।
ओयावइत्ता अ [ओजयित्वा] १ बल दिखा कर। २ चमत्कार दिखा कर। ३ विद्या आदि का सामर्थ्य दिखा कर (जो दीक्षा दी जाय वह) (ठा ४)।
ओर वि [दे] १ चारु, सुन्दर (दे १,१४६)। २ समीप (दश० अग० चू०, आख्या० कोश पत्र ८७ गा० ६)।
ओरपिअ वि [दे] १ आक्रान्त। २ नष्ट (दे १, १७१)।
ओरपिअ वि [दे] पतला किया हुआ, छिला हुआ (पाअ)।

कुमा)। °जाल न [°जाल] जाँघ तक लटकने-वाला एक आभूषण (औप)।

ऊरुदग्घ वि [ऊरुदघ्न] जघा-प्रमाण (गहरा वगैरह) (पड्)।

ऊरुद्दअस वि [ऊरुद्वयस] ऊपर देखो (पड्)।

ऊरुमेत्त वि [ऊरुमात्र] ऊपर देखो (पड्)।

ऊल पुं [दे] गति-भग (दे १, १३९)।

°ऊल देखो कूल (गा १८९)।

ऊस पु [उस्र] किरण (हे १, ४३)। °मालि पु [°मालिन्] सूर्य (कुमा)।

ऊस पु [ऊष] क्षार-भूमि की मिट्टी (पएण १, जी ४)।

ऊसअ न [दे] उपधान, उसीसा, तकिया (दे १, १४० पड्)।

ऊसढ वि [उत्सृष्ट] १ परित्यक्त। २ न. उत्सर्जन, मलादि का त्याग, 'नो तत्थ ऊसढं पकरेज्जा, त जहा, उच्चारं वा' (आचा २, २, १, ३)।

ऊसढ वि [दे उच्छ्रित] १ उच्च, श्रेष्ठ (आचा २, ४, २, ३, जीव ३)। २ ताजा, 'भद्द भद्दएति वा, ऊसढं ऊसढेति वा, रसिय रसिए ति वा' (आचा २, ४, २, २)।

ऊसण न [दे] गति-भङ्ग (दे १, १३९)।

ऊसण्हसण्हिया देखो उस्सण्हसण्हिया (पव २५४)।

ऊसत्त देखो उसत्त (कप्प, आवम)।

ऊसत्थ पु [दे] १ जम्भाई। २ वि आकुल (दे १, १४३)।

ऊसर अक [उत् + सृ] १ खिसकना। २ दूर होना। ३ सक त्यागना। ऊसरइ (भवि) संकृ ऊसरिवि (भवि)।

ऊसर न [ऊषर] क्षार-भूमि, जिसमे बीज नही पैदा होता है, 'ऊसरदवदलियदड्ढरुक्खना-एण' (सम्य १७, भक्त ७३)।

ऊसरण न [उत्सरण] आरोहण, 'थाणूसरण तओ समुप्पयण' (विसे १२०८)।

ऊसय पु [उच्छ्रय] १ उत्सेध, ऊँचाई। २ उत्सेधागुल (जीवस १०४)।

ऊसल अक [उत् + लस्] उल्लसित होना। ऊसलइ (हे ४, २०२, पड्, कुमा)।

ऊसल वि [दे] पीन पुष्ट (दे १, १४०)।

ऊसलिअ वि [उल्लसित] उल्लसित, प्रादुर्भूत

ऊसलिअ वि [दे] रोमाञ्चित, पुलकित (दे १, १४१, पाअ)।

ऊसव देखो उस्सव = उत्सव (स्वप्न ६३)।

ऊसव देखो उस्सव = उत् + श्रि। उस्सवेह (पि ६४, ५५१)। मकृ ऊसविय (कप्प, भग)।

ऊसविअ वि [दे] १ उद्भ्रान्त (दे १, १४३)। २ ऊँचा किया हुआ (दे १, १४३, णाया १, ८, पाअ)। ३ उद्वान्त, वमित (पड्)।

ऊसविय वि [उच्छ्रित] ऊर्ध्व-स्थित (कप्प)।

ऊसस सक [उत् + श्वस्] १ उसाँस लेना, ऊँचा साँस लेना। २ विकसित होना। ३ पुलकित होना। ऊससइ (पि ६४, ३१५)। वकृ ऊससत, ऊससमाण (गा ७४, धण ४, पि ४९६)।

ऊससण न [उच्छ्वसन] उसाँस। °लद्धि स्त्री [°लब्धि] श्वासोच्छ्वास की शक्ति (कम्म १, ४४)

ऊससिअ न [उच्छ्वसित] १ उसास (पडि)। २ वि उल्लसित। ३ पुलकित (स ८३)।

ऊससिर वि [उच्छ्वसितृ] उसास लेने-वाला (हे २, १४५)।

ऊसाअत वि [दे] खेद होने पर शिथिल (दे १, १४१)।

ऊसाइअ वि [दे] १ विक्षिप्त। २ उत्क्षिप्त (दे १, १४१)।

ऊसार सक [उत् + सारय्] दूर करना, त्यागना। सकृ. ऊसारिवि (अप) (भवि)।

ऊसार पु [दे] गर्त्त-विशेष (दे १, १४०)।

ऊसार पु [उत्सार] परित्याग (भवि)।

ऊसार पु [आसार] वग वाली वृष्टि (हे १, ७६, पड्)।

ऊसारि वि [आसारिन्] वेग से वरसनेवाला (कुमा)।

ऊसारिअ वि [उत्सारित] दूर किया हुआ (महा, भवि)।

ऊसास पुं [उच्छ्वास] १ उसास, ऊँचा श्वास (आचू ५)। २ मरण (बृह १)। °णाम न [°नामन्] कर्म विशेष (कम्म १ ४४)।

ऊसासय वि [उच्छ्वासक] उसास लेने-वाला (विसे २७१४)।

ऊसासिअ वि [उच्छ्वासित] बाधा-रहित किया हुआ (दे १२, ९२)।

ऊसाह पु [उत्साह] उत्साह, उछाह (मा १०)।

ऊसि सक [उत् + श्रि] ऊँचा करना, उन्नत करना। सकृ ऊसिया (उत्त १०, ३५)।

ऊसिक्क सक [उत् + ष्वष्क्] ऊँचा करना। सकृ ऊसिक्किऊग (भग १, ८ टी)।

ऊसिक्किअ वि [दे] प्रदीप्त, शोभायमान (पाअ)।

ऊसित्त वि [उत्सिक्त] १ गर्वित। २ उद्धत। ३ वढा हुआ। ४ अतिशायित (हे १, ११४)।

ऊसित्त वि [अवसिक्त] उपलिप्त (पाअ)।

ऊसिय देखो उस्सिय = उच्छ्रित (औप, कप्प, सण)।

ऊसीस, ऊसीसग, ऊसीसय न [उच्छीर्ष, °क] उसीसा, सिरहाना (णाया १, ७, पाअ, सुपा ५३, १२०)।

ऊसुअ वि [उत्सुक] उत्कठित (गा ५४३, कुमा)।

ऊसुअ वि [उच्छुक] जहा से शुक उद्गत हुआ हो वह (हे १, ११४)।

ऊसुइअ वि [उत्सुकित] उत्सुक किया हुआ (गा ३१२)।

ऊसुभ अक [उत् + लस्] उल्लसित होना। ऊसुंभइ (हे ४, २०२)।

ऊसुभिअ वि [उल्लसित] उल्लास-प्राप्त (कुमा)।

ऊसुभिअ न [दे] १ रोदन-विशेष, गला बैठ जाय ऐसा रुदन (दे १,१४२, पड्)

ऊसुक्किअ वि [दे] विमुक्त, परित्यक्त (दे १, १४२)।

ऊसुग देखो ऊसुअ=उत्सुक (उप ५९७ टी)।

ऊसुग न [दे] मध्य भाग (आचा २, १, ८, ६)।

ऊसुम्मिअ वि [दे] उसीसा या सिरहाना किया हुआ (पड्)।

ऊसुर न [दे] ताम्बूल, पान (हे २, १७४)।

ऊसुरुसुभिअ [दे] देखो ऊसुंभिअ (दे १, १४२)।

ओलिभा स्त्री [दे] उपदेहिका, दीमक (दे १, १५३, गउड)।

ओलिज्झमाण देखो ओलिह।

ओलित्त वि [अवलिप्त, उपलिप्त] लीपा हुआ, कृतलेप (पण्ह १, ३, उव पाअ, दे १ १५८ औप)।

ओलित्ती स्त्री [दे] खड्ग आदि का एक दोष (दे १, १५६)।

ओलिप्प न [दे] हास हँसी (दे १, १५३)।

ओलिप्पंती स्त्री [दे] खड्ग आदि का एक दोष (दे १ १६)।

ओलिह सक [अव + लिह्] आस्वादन करना। कवकृ ओलिज्झमाण (कप्प)।

ओली सक [अव + ली] १ आगमन करना। २ नीचे आना। ३ पीछे आना नीय च वाया ओलिंति' (विसे २०६८)।

ओली स्त्री [आली] पक्ति, श्रेणी (कुमा)।

ओली स्त्री [दे] कुल-परिपाटी, कुलाचार (दे १, १४८)।

ओलुआ स्त्री [दे] बालकों की एक प्रकार की क्रीडा (दे १, १५३)।

ओलुड सक [वि + रचय्] करना टपकना, बाहर निकालना। ओलुडइ (हे ८, २६)।

ओलुडिर वि [विरचयितृ] करनेवाला (कुमा)।

ओलुप पु [अवलोप] मसलना, मर्दन करना (गउड)।

ओलुपअ पु [दे] तापिका-हस्त, तवा का हाथा (दे १, १६३)।

ओलुग्ग वि [अवरुग्ण] १ रोगी, बीमार (पाअ)। २ भग्न, नष्ट (पण्ह १, १), 'मुक्का मुक्का निम्ममा ओलुग्गा ओलुग्गमरारा' (निर १, १)।

ओलुग्ग वि [दे] १ सेवक नौकर। २ निस्तेज, निर्बल, बल-हीन (दे १, १६४)। ३ निच्छाय, निस्तेज (सुर २, १०२ दे १, १६४ स ४६६ ५०४)।

ओलुग्गाविय वि [दे] १ बीमार। २ विरह, पीडित (वज्जा ८६)।

ओलुट्ट वि [दे] १ असघटमान, असगत। २ मिथ्या, असत्य (दे १, १६४)।

ओलेहड वि [दे] १ अन्यासक्त। २ तृष्णा-पर। ३ प्रवृद्ध दे १, १७२)।

ओलोअ देखो अवलोअ। वकृ ओलोअंत, ओलोएमाण (सा ५ णाया १, १६, १ १)।

ओलोट्ट सक [अप + लुठ्] पीछे लोटना। वकृ ओलोट्टमाण (राज)।

ओलोयण न [अवलोकन] १ देखना। २ दृष्टि नजर (उप पृ १२७)।

ओलोयण न [अवलोकन] गवाक्ष 'दिट्ठा अन्नया तेण पासायगगएण' (सुपा २, ६)।

ओलोयणा स्त्री [अवलोकना] १ देखना। २ [illegible]।

ओल्ल पु [दे] १ पति स्वामी। २ दण्ड प्रतिनिधि पुरुष राजपुरुष-विशेष (पिग)।

ओल्ल देखो उल्ल = आर्द्र (हे, १ ८२, षाअ १७२)।

ओल्ल देखो उल्ल = आर्द्रय्। ओल्लेइ (पि १११)। वकृ ओल्लंत (से १३ ६३)। कवकृ ओल्लिज्जंत (गा ६०२)।

ओल्लट्टण पु [अवलट्टन] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २८)।

ओल्लण न [आर्द्रण] गीला करना, भिजाना (पि १११)।

ओल्लणी स्त्री [दे] मार्जिता, इलायची दाल-चीनी आदि मसाला से सस्कृत दधि (दे १, १५४)।

ओल्लरण न [दे] स्वाप, सोना (दे १ १६३)।

ओल्लरिअ वि [दे] सुप्त, सोया हुआ (दे १६३ सुपा ३१२)।

ओल्लविद (शौ) नीचे देखो (पि १११, मृच्छ १०५)।

ओल्लिअ वि [आर्द्रित] आर्द्र किया हुआ (गा ३३०; सण)।

ओल्ली स्त्री [दे] पनक, काई, गुजराती मे 'ऊल' (चेइय ३७३)।

ओल्हव सक [वि + ध्यापय्] बुझाना। ठढा करना। कवकृ. ओल्हविज्जंत (स ३६२)। कृ ओल्हवेयव्व (स ३६२)।

ओल्हविअ वि [दे] देखो उल्हविय (सुर १०, १४६)।

ओव न [दे] हाथी वगैरह को बाधने के लिए किया हुआ गर्त्त (दे १, १८९)।

ओवअण न [अवपतन] नीचे गिरना, अध पात (से ६ ७७, १३, २२)।

ओवइणी स्त्री [अवपातिनी] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से स्वय नीचे आता है या दूसरे को नीचे उतारता है (सूअ २ २)।

ओवइय वि [अवपतित] १ अवतीर्ण, नीचे आया हुआ (से ६, ७८ औप)। २ आपतित, आ पडा हुआ (से ६ ७८)। ३ न पतन (औप)।

ओवइय पुस्त्री [दे] तीन इन्द्रियवाला एक क्षुद्र जन्तु, '[illegible] तेइंदिय [illegible] लोहिया हत्थिसोंडा' (जीव १)।

ओवइय वि [औपचयिक] उपचित, परिपुष्ट (राज)।

ओवगारिय वि [औपकारिक] उपकार करने वाला (भग १३, ६)।

ओवगारिय वि [औपकारिक] उपकार के निमित्त का उपकारार्थ (देवेन्द्र ३०६)।

ओवग्ग सक [अप + क्रम] १ व्याप्त करना। २ ढकना, आच्छादन करना। ओवग्गइ, ओवग्गइ (से ४, २५ ३ ११)।

ओवग्ग सक [उप + वल्ग्, आ + क्रम्] १ आक्रमण करना। २ पराभव करना। ओवग्गइ (भवि)। सकृ ओवग्गिवि (भवि)।

ओवग्गहिय वि [औपग्रहिक] जैन साधुओं के एक प्रकार का उपकरण जो कारण-विशेष से थोडे समय के लिए लिया जाता है (पव ६०)।

ओवग्गिअ वि [दे उपवल्गित] १ अभिभूत १ आक्रान्त (से ६, ३०, पाअ सुर १३ ४२)।

ओवघाइय वि [औपघातिक] उपघात करने वाला पीडा उत्पन्न करनेवाला, 'सुय वा जइ वा दिट्ठं न लविज्जोवघाइय' (दस ८)।

ओवच्च सक [उप + व्रज्] पास जाना, 'तुहाण ओवच्च वासहर' (भवि)।

ओवट्ट अक [अप + वृत्] १ पीछे हटना। २ कम होना, ह्रास-प्राप्त होना। वकृ ओवट्टंत (उप ७६२)।

ओवट्ट पु [अपवर्त्त] १ ह्रास हानि। २ भागाकार, (विसे २०६२)।

[°नवत] ६१ वाँ (पउम ६१, ३०)। °रसम वि [°दश] ग्यारहवाँ (विपा १, १, उवा, सुर ११, २५०)। °रह त्रि व [°दशन्] ग्यारह, दश और एक (षड्)। °सीइ स्त्री [°शीति] सख्या-विशेष, एकासी (सम ८८)। °सीइविह वि [°शीतिविध] एकासी तरह का (पराग १,१७)। °सीय वि [°शीत] एकासीवाँ, ८१ वाँ (पउम ८१, १६)। °ोत्तरसय वि [°ोत्तरशततम] एक सौ एक वाँ, १०१ वाँ (पउम १०१, ७६)। °ोयर पु [°ोदर] सहोदर भाई, सगा भाई (पउम ६, ६०, ४६, १८)। °ोयरा स्त्री [°ोदरा] सगी बहिन (पउम ८ १०६)।

एक्क वि [एकक] अकेला (हेका ३१)।

एक्क वि [दे] स्नेह-पर, प्रेम-तत्पर (दे १, १४४)।

एक्कई (अप) वि [एकाकिन्] एकाकी, अकेला (भवि)।

एक्कंग न [दे] चन्दन, सुगन्धि काष्ठ-विशेष (दे १, १४४)।

एक्कंत पु [एकान्त] १ सर्वथा। २ तत्त्व, प्रमेय। ३ जरूर, अवश्य। ४ असाधारणता, विशेष (से ४,२३)। ५ निर्जन, निराला (गा १०२)। देखो एगंत।

एक्कक्क वि [एकैक] हर एक, प्रत्येक (नाट)।

एक्कक्कम [दे] देखो एक्केक्कम (से ५, ५६)।

एक्कगसित्थ न [एकसिक्थ] तपो-विशेष (पव २७१)।

एक्कग्ग देखो एग-ग्ग = एक-क (कुप्र ७६)।

एक्कघरिल्ल पुं [दे] देवर, पति का छोटा भाई (दे १, १४६)।

एक्कणड पुं [दे] कथक, कथा कहनेवाला (दे १, १४५)।

एक्कमुह वि [दे] १ धर्म-रहित, निधर्मी। २ दरिद्र, निर्धन। ३ प्रिय, इष्ट (दे १, १४८)।

एक्कमेक्क वि [एकैक] प्रत्येक, हर एक (हे ३, १, षड्, कुमा)।

एक्कल्ल वि [दे] प्रबल, बलवान् (षड्)।

एक्कल्लपुडिंग न [दे] विरल-विन्दु-वृष्टि, अल्प विन्दुवाली बारिश (दे १, १४७)।

एक्कसरिअं अ [दे] १ शीघ्र, तुरन्त। २ संप्रति, आजकल (हे २, २१३, षड्)।

एक्कसिरिआ अ [दे] शीघ्र, जलदी (प्राकृ ८१)।

एक्कसाहिल्ल वि [दे] एक स्थान मे रहनेवाला (दे १, १४६)।

एक्कसिंबली स्त्री [दे] शाल्मली-पुष्पो से नूतन फलवाली (दे १, १४६)।

एक्कसेस देखो एग-सेस (अणु १४७)।

एक्कह देखो एग (प्राकृ ३५)।

एक्कार देखो एक्कारह (कम्म ६, १६)।

एक्कार पु [अयस्कार] लोहार (हे १, १६६, कुमा)।

एक्की स्त्री [एका] एक (स्त्री) (निचू १)।

एक्कूण देखो अउण (पि ४४५)।

एक्केक्कम वि [दे] परस्पर, अन्योन्य (दे १, १४५), 'सुहडा एक्केक्कम अपेच्छता' (पउम ६८, १५)।

एक्केल्ल } देखो एग (प्राकृ, ३५)।
एक्कोल्ल }

एग स [एक] १ एक, प्रथम-सख्या (अणु)। २ एकाकी, अकेला (ठा ४, १)। ३ अद्वितीय (कुमा)। ४ असहाय, नि सहाय (विपा १, २)। ५ अन्य, दूसरा, 'एवमेगे वदति मोसा' (पराह १, २)। ६ समान, सदृश, तुल्य (उवा)। °इय देखो एग, 'अत्थेगइयाए नेरइयाए एग पलिओवम ठिई पन्नत्ता' (सम २, ठा ७, औप)। °इय वि [°क] अकेला, एकाकी (भग)। °ओ अ [°तस्] एक तरफ (कप्प)। °क्खरिय वि [°ाक्षरिक] एक अक्षरवाला (नाम) (अणु)। °खंधी स्त्री [°स्कन्ध] एक स्कन्धवाला (वृक्ष वगैरह) (जीव ३)। °खुर वि [°खुर] एक खुरवाला (गौ वगैरह पशु) (पराग १)। °ग वि [°क] एकाकी, अकेला (श्रा १४)। °ग्ग वि [°ाग्र] तल्लीन, तत्पर (सुर १, ३०)। °चक्खु वि [°चक्षुष्क] एक आंखवाला, एकाक्ष, काना (पराह २, ५)। °चत्ताल वि [°चत्वारिंश] एकतालीसवाँ (पउम ४१, ७९)। °चर वि [°चर] एकाकी विहरनेवाला (आचा)। °चरिया स्त्री [°चर्या] एकाकी विहरना (आचा)। °चारि वि [°चारिन्] अकेले-विहारी (सूअ १, १३)। °चूड पुं [°चूड] विद्याधर वश का एक राजा (पउम ५, ४५)। °च्छत्त वि [°च्छत्र] १ पूर्ण प्रभुत्ववाला, अकरटक, 'एगच्छत्त ससागर भुजिऊरा वसुह' (पराह २, ४)। २ अद्वितीय (काप्र १८६)। °जडि वि [°जटिन्] महाग्रह-विशेष (ठा २, ३)। °जाय वि [°जात] अकेला, निस्सहाय, 'खग्गविसाणं व एगजाए' (पराह २, ५)। °ट्ठ वि [°स्थ] इकट्ठा, एकत्रित (भग १४, ६, उप पृ ३४१)। °ट्ठ वि [°ार्थ] एक अर्थवाला, पर्याय-शब्द (ओघ १ भा)। °ट्ठ, °ट्ठ अ [°त्र] एक स्थान मे, 'मिलिया मन्नेवि एगट्ठ' (पउम ४७, ४४)। °ट्ठिय वि [°ार्थिक] एक ही अर्थवाला, समानार्थक, पर्याय-शब्द (ठा १)। °ट्ठिय वि [°ास्थिक] जिसके फल में एक ही बीज होता है ऐसा आम वगैरह का पेड (पराग १)। °णासा स्त्री [°नासा] एक दिक्कुमारी, देवी-विशेष (आव १)। °त्त न [°त्र] एक ही स्थान मे, 'एगत्ते ठिओ' (स ४७०)। °त्थ देखो °ट्ठ (सम्म १०६, निचू १)। °नासा देखो °णासा (ठा ८)। °पए अ [°पदे] एक ही साथ, युगपत् (पि १७१)। °पक्ख वि [°पक्ष] १ असहाय (राज)। २ ऐकान्तिक, अविरुद्ध (सूअ १, १२)। °पन्नास स्त्रीन [°पञ्चाशत्] एकावन, पचास और एक। °पन्नासइम वि [°पञ्चाशत्तम] एकावनवाँ, ५१ वाँ (पउम ५१, २८)। °पाइअ वि [°पादिक] एक पाँव ऊँचा रखनेवाला (आतापना मे) (कस)। °पासग वि [°पार्श्वक] एक ही पार्श्व की भूमि से सम्बन्ध रखनेवाला (आतापना मे) (पराह २, १)। °पासिय वि [°पार्श्विक] देखो पूर्वोक्त अर्थ (कस)। °भत्त न [°भक्त] व्रत-विशेष, एकासन (पचा १२)। °भूय वि [°भूत] १ एकीभूत, मिला हुआ (ठा १)। २ समान (ठा १०)। °मण वि [°मनस्] एकाग्रचित्त, तल्लीन (सुर २, २२६)। °मेग वि [°एक] प्रत्येक, हर एक (सम ६७)। °य वि [°क] एकाकी, अकेला (दस ५)। °य° वि [°ग] अकेला जानेवाला (उत्त ३)। °यर वि [°तर] दो मे से कोई

ओवाह सक [अव + गाह्] अवगाहना। ओवाहइ (प्राप्र)।

ओवाहिअ वि [अपवाहित] १ नीचे गिराया हुवा (से ६, १६, १३, ७२)। २ घुमाकर नीचे डाला हुआ (से ७, ५५)।

ओविअ वि [दे] १ आरोपित, अव्यासित। २ मुक्त, परित्यक्त। ३ हृत, छीना हुआ। ४ न खुशामद। ५ रुदित, रोदन (दे १, १६७)। ६ त्रि परिकर्मित, संस्कारित (कप्प)। ७ खचित, व्याप्त (आवम)। ८ उज्ज्वालित, प्रकाशित (णाया १, १६)। ९ विभूषित, शृंगारित (प्राप)। देखो उविय।

ओविद्ध वि [अपविद्ध] १ प्रेरित, आहत (से ७,१२)। २ नीचे गिराया हुआ (से १३, २६)।

ओवील सक [अव + पीडय्] पीडा पहुँचाना, मार-पीट करना। वकृ **ओवीलेमाण** (णाया १, १८—पत्र २३६)।

ओवीलय देखो उव्वीलय (पराह १, ३)।

ओवुब्भमाण देखो **ओवह**।

ओवेहा स्त्री [उपेक्षा] १ उपदर्शन, देखना। २ अवधीरण, 'सजयगिहिचोयणाचोयणे य वावारओवेहा' (ओघ १७१ भा)।

°**ओव्वण** देखो **जोव्वण** (से ७, ६२)।

ओव्वत्त अक [अप + वृत्] १ पीछे फिरना, लौटना। २ अवनत होना। संकृ **ओवत्तिऊण** (ओघ भा ३० टी)।

ओव्वत्त वि [अपवृत्त] पीछे फिरा हुआ। २ नमा हुआ, अवनत (से ८, ८४)।

ओव्वेव्व देखो उव्वेव (सक्षि ३५)।

ओस देखो **ऊस** = ऊष (दस ५, १, ३३)।

ओस पु [दे] देखो **ओसा** (राज)। °**चारण** पु [°चारण] हिम के अवलम्बन से जानेवाला साधु (गच्छ)।

ओसक्क सक [अव + ष्वष्क्] कम करना, घटाना। संकृ **ओसक्किया** (दस ५,१,६३)।

ओसक्क अक [अव + ष्वष्क्] १ पीछे हटना, अपसरण करना। २ भागना, पलायन करना। ३ उदीरण करना, उत्तेजित करना। ओसकइ (पि ३०२,३१५)। वकृ **ओसक्कंत, ओसक्कमाण** (से ५, ७३, स ६४)। संकृ. **ओसक्कइत्ता, ओसक्किय, ओसक्किऊण** (ठा ८, दस ४, सुर २, १५)।

ओसक्क वि [दे अवष्वष्कित] अपसृत, पीछे हटा हुआ (दे. १, १४९, पाअ)।

ओसक्कण न [अवष्वष्कण] १ अपसरण (स ६३)। २ नियत काल से पहले करना (धर्म ३)। ३ उत्तेजन (बृह २)।

ओसक्किय वि [अवष्वष्कित] नियत काल से पहले किया हुआ (पिंड २९०)।

ओसट्ट अक [वि + सृप्] फैलना, पसरना। ओसट्टइ (गा ८५६)।

ओसट्ट वि [दे] विकसित, प्रफुल्लित (षड्)

ओसडिअ वि [दे] आकीर्ण, व्याप्त (षड्)।

ओसढ न [औषध] दवा, इलाज, भैषज (हे १, २२७)।

ओसढिअ वि [औषधिक] वैद्य, चिकित्सक (कुमा)।

ओसण न [दे] उद्वेग, खेद (दे १ १५५)।

ओसण्ण वि [अवसन्न] १ खिन्न (गा ३८२, से १३, ३०)। २ शिथिल, ढीला (वव ३)। देखो **ओसन्न**।

ओसण्ण वि [दे] त्रुटित, खण्डित (दे १, १५६, षड्)।

ओसण्ण अ [दे] प्राय बहुत कर (कप्प)।

ओसत्त वि [अवसक्त] सबद्ध, सयुक्त (णाया १, ३, स ४४९)।

ओसधि देखो **ओसहि** (ठा २, ३)।

ओसद्ध वि [दे] पातित, गिराया हुआ (पाअ)।

ओसन्न देखो **ओसण्ण** = अवसन्न (सुर ४, ३४, णाया १, ५, स ६, पुप्फ २१)। ३ न एकान्त, 'ओसन्ने देइ गेण्हइ वा' (उव)।

ओसन्न वि [अवसन्न] निमग्न (दसचू १, ८)।

ओसन्न देखो **ओसण्ण** (कम्म १, १३, विसे २२७५)।

ओसप्पिणी स्त्री [अवसर्पिणी] दश कोटाकोटि सागरोपमपरिमित काल-विशेष, जिसमे सर्व पदार्थो के गुणो की क्रमश हानि होती जाती है (सम ७२, ठा १)।

ओसम सक [उप + शमय्] उपशान्त करना। भवि. ओसमेहिति (पिंड ३२६)।

ओसमिअ वि [उपशमित] शान्ति-प्राप्त (सम ३७)।

ओसर अक [अव + तृ] १ नीचे आना। २ अवतरना, जन्म लेना। ओसरइ (षड्)।

ओसर अक [अप + सृ] अपसरण करना, पीछे हटना। २ सरकना, खिसकना, फिसलना। ओसरइ (महा, काल)। वकृ **ओसरंत** (गा १८, ३९३, से ६, २६, ६, ८२, १२, ६, से ६३)।

ओसर सक [अव + सृ] आना, तीर्थंकर आदि महापुरुष का पधारना (उप ७२८ टी)।

ओसर पु [अवसर] १ अवसर, समय (सूअ १, २)। २ अन्तर (राज)।

ओसरण न [अवसरण] १ जिन-देव का उपदेश स्थान (उप १३३, रयण १)। २ साधुओ का एकत्रित होना (सूअ १, १२)।

ओसरण न [अपसरण] १ हटना, दूर होना। २ वि दूर करनेवाला; 'बहुपावकम्मओसरणं' (कुमा १)।

ओसरिअ वि [दे] १ आकीर्ण, व्याप्त। २ आँख के इशारे से संकेतित या इंगित (षड्)। ३ अधोमुख, अवनत। ४ न. आँख का इशारा (दे १, १७१)।

ओसरिअ वि [अवसृत] आगत, पधारा हुआ (उप ७२८ टी)।

ओसरिअ वि [अपसृत] १ पीछे हटा हुआ (पउम १६, २३, पाअ, गा ३५१)। २ न. अपसरण (से २, ८)।

ओसरिअ वि [उपसृत] संमुखागत, सामने आया हुआ, (पाअ)।

ओसरिआ स्त्री [दे] अलिन्दक, बाहर के दरवाजे का प्रकोष्ठ (दे १, १६१)।

ओसव पु [उत्सव] उत्सव, आनन्द-क्षण (प्राप्र)।

ओसविय देखो **ओसमिअ** (पिंड ३२६)।

ओसविय वि [उच्छ्रयित] ऊँचा किया हुआ (पउम ८, २६६)।

ओसव्विअ वि [दे] १ शोभा-रहित। २ न अवसाद, खेद (दे १, १६८)।

ओसह न [औषध] दवाई, भैषज (औप, स्वप्न ५६)।

ऐ

ऐ अ [अयि] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ संभावना। २ आमन्त्रण, संबोधन। ३ प्रश्न। ४ अनुराग, प्रीति। ५ अनुनय, 'ऐ बीहेमि, ऐ उम्मत्तिए' (हे १, १६६)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे ऐआराइसद्दसंकलणो
अट्ठमो तरंगो समत्तो ॥

ओ

ओ पुं [ओ] स्वर वर्ण-विशेष (हे १, १, प्रामा)।

ओ देखो अव = अप (हे १, १७२, प्राप्र, कुमा, पड्)।

ओ देखो अव (हे १, १७२, प्राप्र, कुमा, पड्)।

ओ देखो उव (हे १, १७२, कुमा)।

ओ देखो उअ = उत (हे १, १७३, कुमा)।

ओ अ [ओ] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ वितर्क। २ प्रकोप, विस्मय (प्राकृ ७८)।

ओ अ [ओ] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ सूचना, 'ओ अविणयतत्तिल्ले'। २ पश्चात्ताप, अनुताप, 'ओ न मए छाया इत्तिआए' (हे २, २०३, पड्, कुमा, प्राप्र)। ३ संबोधन, आमन्त्रण (नाट—चैत ३४)। ४ पादपूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय (पंचा १, विसे २०२४)।

ओअ न [दे] वार्त्ता, कथा कहानी (दे १, १४६)।

ओअअ वि [अपगत] अपसृत, 'ओअआअव—' (पि १६५)।

ओअक्क पु [दे] गर्जित, गर्जना (दे १, १५४)।

ओअंद सक [आ + छिद्] १ बलात्कार से छीन लेना। २ नाश करना। ओअंदइ (हे ४, १२५, पड्)।

ओअंदणा स्त्री [आच्छेदना] १ नाश। २ जबरदस्ती छीनना (कुमा)।

ओअक्ख सक [दृश्] देखना। ओअक्खइ (हे ४, १८१, पड्)।

ओअग्ग सक [वि + आप्] व्याप्त करना। ओअग्गइ (हे ४, १४१)।

ओअग्गिअ वि [व्याप्त] विस्तृत, फैला हुआ (कुमा)।

ओअग्गिअ वि [दे] १ अभिभूत, परिभूत। २ न केश वगैरह को एकत्रित करना (दे १, १७२)।

ओअग्घिअ } वि [दे] घ्रात, सूँघा हुआ
ओअग्घिअ } (दे १, १६२, पड्)।

ओअण्ण वि [अवनत] नमा हुआ, नीचे की तरफ मुड़ा हुआ (से ११, ११८)।

ओअत्त वि [अपवृत्त] औंधा किया हुआ, उलटा किया हुआ, 'ओअत्ते कुंभमुहे जललवकणिआवि किं ठाइ ?' (गा ६५४)।

ओअत्तअ वि [अपवर्त्तितव्य] १ अपवर्त्तन-योग्य। २ त्यागने योग्य, छोड़ने लायक, 'कुसुमम्मि व पव्वाअए भमरोअत्तअम्मि' (से ३, ४८)।

ओअम्मअ वि [दे] अभिभूत, पराभूत (पड्)।

ओअर सक [अव + तॄ] १ जन्म-ग्रहण करना। २ नीचे उतरना। ओयरइ (हे ४, ८५)। वकृ. ओयरंत (ओघ १६१, सुर १४, २१)। हेकृ. ओयरिउ (प्रारू)। कृ ओयरियव्व (सुर १०, १११)।

ओअरण न [उपकरण] साधन, सामग्री (गा ६८१)।

ओअरण न [अवतरण] उतरना, नीचे आना (गउड)।

ओअरय पुं [अपवरक] कमरा, कोठरी (सुपा ४१५)।

ओअरिअ वि [अवतीर्ण] उतरा हुआ (पाअ)।

ओअरिअ वि [औदरिक] पेट-भरा, पेटू, उदर भरने मात्र की चिन्ता करनेवाला (ओघ ११८ भा)।

ओअरिया स्त्री [अपवरिका] कोठरी, छोटा कमरा (सुपा ४१५)।

ओअल्ल देखो ओवट्ट = अप + वृत्। ओअल्लइ (प्राकृ ७०)।

ओअल्ल अक [अव + चल्] चलना। ओअल्लति (पि १६७, ४८८)। वकृ ओअल्लंत (पि १६७, ४८८)।

ओअल्ल पु [दे] १ अपचार, खराब आचरण, अहित आचरण (पड्, स ५२१)। २ कम्प, कांपना (पड्, दे १, १६५)। ३ गौओं का वाडा। ४ वि पर्यस्त, प्रक्षिप्त। ५ लम्बमान, लटकता हुआ (दे १, १६५)। ६ जिसकी आँखें निमीलित होती हों वह, 'मुच्छिज्जंतोअल्ला अक्कंता णिअअमहिहरेहि पवगा' (से १३, ४३)।

ओअल्लअ वि [दे] विप्रलब्ध, प्रतारित (पड्)।

ओअव सक [साधय्] साधना, वश में करना, जीतना, 'गच्छाहि ण भो देवाणु-

ओहट्ट } वि [अपघट्टक] निवारक, हटाने-
ओहट्टय } वाला, निषेधक (विपा १, २, गाया १, १६, १८)।

ओहट्टिअ वि [दे] दूसरे को दबाकर हाथ से गृहीत (दे १, १५६)।

ओहट्ठ पुं [दे] हास हंसी (दे १, १५३)।

ओहट्ठ वि [अवघृष्ट] घिसा हुआ (पउम ३७ ३)।

ओहड वि [अपहृत] नीचे लाया हुआ (दस ५, १, ३९)।

ओहडणी स्त्री [दे] अर्गला (दे १, १६०)।

ओहत्त वि [दे] अवनत (दे १, १५६)।

ओहत्थिअ वि [अपहस्तित] परित्यक्त, दूर किया हुआ (मै ३५)।

ओहय वि [उपहत] उपघात-प्राप्त (गाया १ १)।

ओहय वि [अवहत] विनाशित (औप)।

ओहर सक [अप + हृ] अपहरण करना। कर्म ओहरीआमि (पि ६८)।

ओहर अक [अव + हृ] टेढा होना, वक्र होना। २ सक उलटा करना। ३ फिराना। सक्र ओहरिय (आचा २, १ ७)।

ओहर न [उपगृह] छोटा गृह, कोठरी (पण्ह १, १)।

ओहरण न [अपहरण] उठा ले जाना, अपहार (उप ६७६)।

ओहरण न [दे] १ विनाशन, हिंसा। २ असम्भव अर्थ की सम्भावना (दे १, १७४)। ३ अस्त्र, हथियार (स ५३१, ६३७)। ४ वि आघ्रात (षड्)।

ओहरिअ वि [दे. अपहृत] १ फेंका हुआ (से १३, ३)। २ नीचे गिराया हुआ (से ३, ३७)। ३ उतारा हुआ, उत्तारित (ओघ ८०६)। ४ अपनीत, 'ओहरिअभरुव्व भार-वहो' (श्रा ४०)।

ओहरिम वि [दे] १ आघ्रात, सूँघा हुआ। २ पु चन्दन घिसने की शिला, चन्द्रौटा (दे १ १६६)।

ओहल देखो उऊखल (हे १, १७१, कुमा)।

ओहल सक [अव + खल्] घिसना। भवि-ओहलिही (सुपा १३६)।

ओहलिय वि [अवगलित] गिरा हुआ, 'अंसुजलोहलियगंडयलो' (सुर २, १८६, सण)।

ओहली स्त्री [दे] ओघ, समूह (सुपा ३६४)।

ओहस सक [उप + हस्] उपहास करना। ओहसइ (नाट)। कवकृ ओहसिज्जंत (से १५, १०)। कृ ओहसणिज्ज (स ८)।

ओहसिअ न [दे] १ वस्त्र, कपडा। २ वि घूत, कम्पित (दे १, १७३)।

ओहसिअ वि [उपहसित] जिसका उपहास किया गया हो वह (ग, ६०, दे १, १७३, स ४४८)।

ओहाइअ वि [दे] अधो-मुख (१, १५८)।

ओहाइअ वि [अवधावित] चरित्र से भ्रष्ट (दसचू १, १)।

ओहाडण न [अवघाटन] प्रायश्चित्त-विशेष (वव १)।

ओहाडण न [अवघाटन] ढकना, पिधान (वव १)।

ओहाडणी स्त्री [दे अवघाटनी] १ पिधानी (दे १, १६१)। २ एक प्रकार की ओढनी (जीव ३)

ओहाडिय वि [अवघाटित] १ पिहित, बन्द किया हुआ, 'वइरामयकवाडोहाडियाओ' (जं १—पत्र ७१)। २ स्थगित (आव ५)।

ओहाण न [उपधान] स्थगन, ढकना (वव ४)।

ओहाण न [अवधान] उपयोग, ख्याल (आचा)।

ओहाण न [अवधावन] अवक्रमण, पीछे हटना (निचू १६)।

ओहाम सक [तुलय्] तौलना, तुलना करना। ओहामइ (हे ४, २५)। वकृ ओहामन (कुमा)।

ओहामिय वि [तुलित] तौला हुआ (पाअ, सुपा २६६)।

ओहामिय वि [दे] १ अभिभूत (षड्)। २ तिरस्कृत (स ३१३, ओघ ६०)। ३ बन्द किया हुआ, स्थगित, 'जह वीणावसरवा खणेण ओहामिआ सव्वा' (पउम ४६, ६)।

ओहार सक [अव + धारय्] निश्चय करना। संकृ ओहारिअ (अभि १६४)।

ओहार पु [दे] १ कच्छप। २ नदी वगैरह के बीच की शुष्क जगह, द्वीप। ३ अंश, विभाग (दे १, १६७)। ४ जलचर-जन्तु-विशेष (पण्ह १, ३)।

ओहार पुं [अवधार] निश्चय। °व वि [°वत्] निश्चयवाला (द्र ४६)।

ओहारइत्तु वि [अवधारयितृ] निश्चय करने-वाला (राज)।

ओहारइत्तु वि [अवहारयितृ] दूसरे पर मिथ्याभियोग लगानेवाला (राज)।

ओहारण न [अवधारण] नियम, निश्चय (द्र २)।

ओहारणी स्त्री [अवधारणी] निश्चयात्मक भाषा 'ओहारणिं अप्पियकारिणिं च भासं न भासिज्ज सया स पुज्जो' (दस ८, ३)।

ओहारिणी स्त्री [अवधारिणी] ऊपर देखो (भास १४)।

ओहाव सक [आ + क्रम्] आक्रमण करना। ओहावइ (हे ४, १६०, षड्)।

ओहाव अक [अव + धाव्] पीछे हटना। वकृ ओहावत, ओहावेत (ओघ १२६, वव ८)।

ओहावण न [अवधावन] १ अपसर्पण, पलायन (वव १)। २ दीक्षा से भागना, दीक्षा को छोड देना (वव ३)।

ओहावण न [अवभावन] अपमान, अपकीर्ति (पिंड ४८६)।

ओहावणा स्त्री [अपह्रापना] लाघव, लघुता (जय २६)।

ओहावणा स्त्री [अपभावना] तिरस्कार, अनादर (उप १२६ टी, स ४१०)।

ओहावणा स्त्री [आक्रान्ति] आक्रमण (काल)।

ओहाविअ वि [अपभावित] १ तिरस्कृत (सुपा २२४)। २ ग्लान, ग्लानि-प्राप्त (वव ८)।

ओहाविअ वि [अवधावित] पलायित, अप-सृत (दसचू १, २)।

ओहास पु [अवहास, उपहास] हँसी, हास्य (प्राप्र; मै ४३)।

ओहासण न [अवभाषण] याचना, माग, विशिष्ट भिक्षा (आव ४)।

ओगाह सक [अव + गाह्] अवगाहन करना। ओगाहइ (पड्)। वकृ **ओगाहन्त** (आव २)। संकृ **ओगाहइत्ता, ओगाहित्ता** (दस ५, भग ५, ४)।

ओगाहण न [अवगाहन] अवगाहन (भग)।

ओगाहणा स्त्री [अवगाहना] १ आधार-भूत आकाश-क्षेत्र (ठा १)। २ शरीर (भग ६, ८)। ३ शरीर परिमाण (ठा ४, १)। ४ अवस्थान, अवस्थिति (विसे)। °**णाम** न [°नामन्] कर्म-विशेष (भग ६ ८)। °**णाम** पु [°नाम] अवगाहनात्मक परिणाम (भग ६, ८)।

ओगाहिम त्रि [अवगाहिम] पक्वान्न (पचा ५)।

ओगिज्झ } सक [अव + ग्रह्] १ आश्रय
ओगिण्ह } लेना। २ अनुज्ञा-पूर्वक ग्रहण करना। ३ जानना। ४ उद्देश करना। ५ लक्ष्य कर कहना। ओगिण्हइ (भग, कप्प)। संकृ **ओगिज्झिय, ओगिण्हइत्ता, ओगिण्हित्ता, ओगिण्हित्ताण** (आचा, णाया १, १, कम, उवा)। कृ **ओघेत्तव्व** (कप्प पि ५७०)।

ओगिण्हण न [अवग्रहण] सामान्य ज्ञान-विशेष, अवग्रह (णदि)।

ओगिण्हणया स्त्री [अवग्रहणता] १ ऊपर देखो (णदि)। २ मनो विषयीकरण, मन से जानना (ठा ८)।

ओगिन्ह देखो ओगिण्ह। संकृ **ओगिन्हित्ता** (निर १, १)।

ओगुंडिय वि [अवगुण्डित] लिप्त (बृह १)।

ओगुट्ठि स्त्री [अपकृष्टि] अपकर्ष, हलकाई, तुच्छता (पउम ५६, १५)।

ओगूहिय वि [अवगूहित] आलिंगित (णाया १, ६)।

ओग्गर पु [ओग्गर] धान्य विशेष, व्रीहि-विशेष (पिंग)।

ओग्गह देखो उग्गह (सम्म ७५, उवा; कम्म, स ३५, ५६८)।

ओग्गह सक [प्रति + इष्] ग्रहण करना। ओग्गहइ (प्राकृ ७३)।

ओग्गहण देखो ओगिण्हण। °**पट्टग** पुंन [°पट्टक] जैन साध्वियों के पहनने का एक गुह्याच्छादक वस्त्र, जांघिया, लंगोट (कस)।

ओग्गहिय वि [अवगृहीत] १ अवग्रह-ज्ञान से जाना हुआ, अवग्रह का विषय। २ अनुज्ञा से गृहीत। ३ बद्ध, बँधा हुआ (उवा)। ४ देने के लिए उठाया हुआ (औप)।

ओग्गहिय वि [अवग्रहिक] अनुज्ञा से गृहीत, अवग्रहवाला (औप)।

ओग्गारण न [उद्गारण] उद्गार (चारु ७)।

ओग्गाल पु [दे] छोटा प्रवाह (दे १, १५१)।

ओग्गाल सक [रोमन्थाय्] पगुराना, चबाई हुई वस्तु का पुन चबाना। ओग्गालइ (हे ४, ४३)।

ओग्गालिर वि [रोमन्थायितृ] पगुरानेवाला, चबाई हुई वस्तु का पुन चबानेवाला (कुमा)।

ओग्गाह देखो उग्गाह = उद् + ग्राहय्। ओग्गाहइ (प्राकृ ७२)।

ओग्गिअ वि [दे] अभिभूत, पराभूत (दे १, १५८)।

ओग्गीअ पु [दे] हिम, बर्फ (दे १, १४६)।

ओग्घ देखो उग्घड। ओग्घइ (प्राकृ ७१)।

ओग्घसिय वि [अवघर्षित] प्रमार्जित, साफ सुथरा किया हुआ (राय)।

ओघ पुं [ओघ] १ समूह सघात (णाया १, ५)। २ ससार, 'एते ओघं तरिस्संति समुद्दं ववहारिणो' (सूअ १, ३)। ३ अविच्छेद अविच्छिन्नता (पण्ह १, ४)। ४ सामान्य, साधारण। °**सण्णा** स्त्री [°संज्ञा] सामान्य ज्ञान (पण्ण ७)। °**ादेस** पुं [°ादेश] सामान्य विवक्षा (भग २५, ३)। देखो ओह = ओघ।

ओघट्टिद (शौ) वि [अवघट्टित] आहत (प्रयौ २७)।

ओघसर पुं [दे] १ घर का जल-प्रवाह। २ अनर्थ, खराबी, नुकसान (दे १, १७०, सुर २, ६६)।

ओघसिय देखो ओग्घसिय।

ओघाययण न [ओघायतन] १ परम्परा से पूजा जाना स्थान। २ तलाव में पानी जाने का साधारण रास्ता (आचा २, १०, २)।

ओघेत्तव्व देखो ओगिण्ह।

ओचार पुं [दे अपचार] धान्य रखने की बडी कोठी—मिट्टी का पात्र-विशेष (अणु १५१)।

ओचिदी (शौ) स्त्री [औचिती] उचितता, औचित्य (रंभा)।

ओचुंब सक [अव + चुम्ब्] चुम्बन करना। संकृ **ओचुंबिऊण** (भवि)।

ओचुल्ल न [दे] चुल्हा का एक भाग (दे १, १५३)।

ओचूल } देखो ओऊल (विपा १, २, सुर
ओचूलग } ३, ७०)। २ मुख से हटा हुआ शिथिल—ढीला (वव्र), 'ओचूलगणियत्था' (जं ३—पत्र २७५)।

ओच्चय देखो अवचय (महा)।

ओच्चिया स्त्री [अवचायिका] तोड़ कर (फूलों को) इकट्ठा करनेवाली (गा ७६७)।

ओच्छेल्लर न [दे] ऊपर-भूमि। २ जघन के रोम (दे १, १३६)।

ओच्छअ } वि [अवस्तृत] १ आच्छादित।
ओच्छइय } २ निरुद्ध, रोका हुआ (पण्ह १, ४, गउड, स १६४)।

ओच्छंडिअ वि [दे] १ अपहृत। २ व्यथित, पीडित (षड्)।

ओच्छण्ण वि [अवच्छन्न] आच्छादित, ढका हुआ, 'णिच्चोउगो असोगो ओच्छण्णो सालरुक्खेण' (सम १५२)। देखो ओच्छन्न।

ओच्छत्त न [दे] दन्त-धावन, दतवन (दे १, १५२)।

ओच्छन्न देखो ओच्छण्ण (स ११२ औप)। २ अवष्टब्ध, आक्रान्त (आचा)।

ओच्छर (शौ) सक [अव + स्तृ] १ बिछाना, फैलाना। २ आच्छादित करना, ढाँकना। ओच्छरीअदि (नाट—उत्तम १०५)।

ओच्छविय } वि [अवच्छादित] आच्छा-
ओच्छाइय } दित ढका हुआ, 'गुच्छलयारुक्खगुम्मवल्लिगुच्छओच्छाइय सुरम्म वेभारगिरिकडगपायमूलं' (णाया १, १—पत्र २५, २८ टी, महा, स १५०)।

ओच्छाइवि नीचे देखो।

ओच्छाय सक [अव + छादय्] आच्छादन करना। संकृ **ओच्छाइवि** (भवि)।

ओच्छायण वि [अवच्छादन] ढाकना, पिधान (स ५५७)।

ओच्छाहिय देखो उच्छाहिय,

कइअंक } पुं [दे] निकर, समूह (दे २,
कइअंकसइ } १३)।

कइअव न [कैतव] कपट, दम्भ (कुमा, प्राप्र)।

कइआ अ [कदा] कब, किस समय ? (गा १३८, कुमा)।

कइउल्ल वि [दे] थोडा, अल्प (दे १, २१)।

कइंद पुं [कवीन्द्र] श्रेष्ठ कवि (गउड)।

कइकच्छु स्त्री [कपिकच्छु] वृक्ष-विशेष, केवांच, कौंछ, कवाछ (गा ५३२)।

कइगई स्त्री [कैकयी] राजा दशरथ की एक रानी (पउम ६५, २१)।

कइत्थ पुं [कपित्थ] १ वृक्ष-विशेष, कैथ का पेड़। २ फल-विशेष, कैथ, कैथा (गा ६४१)।

कइम वि [कतम] बहुत में से कौन सा ? (हे १, ४८, गा ११६)।

कइयव्व देखो कइअव (तदु ५३)।

कइयहा (अप) अ [कदा] कब, किस समय ? (सण)।

कइयाइ अ [कदाचित्] किसी समय में (कुप्र ४१३)।

कइर देखो कयर = कतर (पिंड ४६६)।

कइर पु [कदर] वृक्ष विशेष, 'ज कइररुक्ख-हिट्ठा इह दसकोडी दविणमत्थि' (श्रा १६)।

कइरव न [कैरव] कमल कुमुद (हे १, १५२)।

कइरव पुन [कैरव] कुमुद, 'कइरवो' (संक्षि ५)।

कइरविणी स्त्री [कैरविणी] कुमुदिनी, कमलिनी (कुमा)।

कइलास पु [कैलास, °श] १ स्वनाम-ख्यात पर्वत विशेष (पाअ, पउम ५, ५३, कुमा)। २ मेरु पर्वत (निचू १३)। ३ देव-विशेष, एक नाग-राज (जीव ३)। °सय पुं [°शय] महादेव, शिव (कुमा)। देखो केलास।

कइलासा स्त्री [कैलासा, °शा] देव-विशेष की एक राजधानी (जीव ३)।

कइल्लवइल्ल पु [दे] स्वच्छन्द-चारी बैल (दे २, २५)।

कइविया स्त्री [दे] बरतन विशेष, पीकदान, पीकदानी (णाया १, १ टी—पत्र ४३)।

कइस (अप) वि [कीदृश] कैसा (कुमा)।

कईया (अप) देखो कइआ (सुपा ११६)।

कईवय देखो कइवय (पउम २८, १६)।

कईस पु [कवीश] श्रेष्ठ कवि, उत्तम कवि (पिंग)।

कईसर पुं [कवीश्वर] उत्तम कवि (रंभा)।

कउ पुं [क्रतु] यज्ञ (कप्पू)।

कउ (अप) अ [कुत] कहाँ से (हे ४, ४१६)।

कउअ वि [दे] १ प्रधान, मुख्य। २ पुंन चिन्ह, निशान (दे २, ५६)।

कउच्छेअय पुं [कौक्षेयक] पेट पर बँधी हुई तलवार (हे १, १६२, षड्)।

कउड न [दे ककुद] देखो कउह = ककुद (षड्)।

कउरअ } पुं [कौरव] १ कुरु देश का
कउरव } राजा। २ पुंस्त्री. कुरु वश मे उत्पन्न। ३ वि कुरु (देश या वश) से सबन्ध रखनेवाला। ४ कुरु देश मे उत्पन्न (प्राप्र, नाट, हे १, १६२)।

कउल न [दे] १ करीष, गोइँठा का चूर्ण (दे २, ७)।

कउल न [कौल] तान्त्रिक मत का प्रवर्त्तक ग्रन्थ, कौलोपनिषद् वगैरह। २ वि शक्ति का उपासक। ३ तान्त्रिक मत को जाननेवाला। ४ तान्त्रिक मत का अनुयायी। ५ देवता-विशेष,

'विमज्जंतमहापमुद-
सणभमपरोप्परारूढा।
गयणे च्चिय गधउडिं
कुणति तुह कउलणारीओ'
(गउड)।

कउलव देखो कउरव (चड)।

कउसल पुन [कौशल] चतुराई, 'कउसलो' (संक्षि ६, प्राकृ १०)।

कउसल न [कौशल] कुशलता, दक्षता, होशियारी (हे १, १६२, प्राप्र)।

कउह न [दे] नित्य, सदा, हमेशा (दे २, ५)।

कउह पुंन [ककुद] १ बैल के कंधे का कुब्बड। २ सफेद छत्र वगैरह राज-चिह्न। ३ पर्वत का अग्रभाग, टोच (हे १, २२५)। ४ वि प्रधान, मुख्य,

'कलरिभियमहुरततीतलतालवसकउहाभिरामेसु।
सद्देसु रज्जमाणा, रमती सोइदियवसट्टा।'
(णाया १, १७)। देखो ककुह।

कउहा स्त्री [ककुभ्] १ दिशा (कुमा)। २ शोभा, कान्ति। ३ चम्पा के पुष्पों की माला। ४ इस नाम की एक रागिणी। ५ शास्त्र। ६ विकीर्ण केश (हे १, २१)।

कउहि वि [ककुदिन्] वृषभ, बैल (अणु १४२)।

कए } अ [कृते] वास्ते, निमित्त, लिए,
कएण } 'तत्तो सो तस्स कए, खणेइ खाणी-
कएणं } ठाणेगठाणेसु' (कुम्मा १५, कुमा), 'अवरएहमज्जिरीए कएण कामो वहइ चाव' (गा ४७३),

'लज्जा चत्ता सीलं च
खंडिअं अजसघोसणा दिण्णा।
जस्स कएण पिअसहि।
सो चेअ जणो जणो जाओ'
(गा ५२५)।

कएल्ल वि [कृत] किया हुआ (सुख २, १५)।

कओ अ [कुत] कहाँ से ? (आचा, उत्त-रयण २६)। °हुत्त क्रिवि [दे] किस तरफ, 'कओहुत्त गंतव्व ?' (महा)।

कओ अ [क] कहाँ, किस स्थान में, 'कओ वयामो ?' (णाया १, १४)।

कओण्ह वि [कदुष्ण] थोडा गरम (वर्मवि ११२)।

कओल देखो कवोल (से ३, ४६)।

कं अ [कम्] उदक, जल (तदु ५३)।

कंइ अ [दे] किससे, 'कंइ पइ सिक्खिउ ए गइलालस' (विक १०२)।

कंक पुं [कङ्क] १ पक्षि-विशेष (पण्ह १, १; ४, अनु ४)। २ एक प्रकार का मजबूत और तीक्ष्ण लोहा (उप ४६४)। ३ वृक्ष-विशेष, 'कंकफलसरलनयण—' (उप १०३१ टी)। °पत्त न [°पत्र] बाण-विशेष, एक प्रकार का बाण, जो उडता है (वेणी १०२)। °लोह पुंन [°लोह] एक प्रकार का लोहा (उप पृ ३२६, सुपा २०७)। °वत्त देखो °पत्त (नाट)।

कंकइ पुं [कङ्कति] वृक्ष-विशेष, नागवला-नामक ओषधि (उप १०३१ टी)।

कंकड पुं [कङ्कट] वर्म, कवच, 'रामो चावे सकंकडे दिट्ठी देंतो' (पउम ४४, २१, औप)।

कंकडइय वि [कङ्कटित] कवचवाला, वर्मित (पण्ह १, ३)।

ओत्थरिअ वि [अवस्तृत] १ बिछाया हुआ । २ व्याप्त (से ७, ४७) ।

ओत्थरिअ वि [दे] १ आक्रान्त । २ जो आक्रमण करता हो वह (दे १ १६९) ।

ओत्थल्ल देखो उत्थल्ल = उत् + स्तृ । ओत्थल्लइ (प्राकृ ७१) ।

ओत्थल्लपत्थल्ला देखो उत्थल्लपत्थल्ला (दे १, १२२) ।

ओत्थाडिय वि [अवस्तृत] बिछाया हुआ (भवि) ।

ओत्थार सक [अव + स्तारय्] आच्छादित करना । कर्म ओत्थारिज्जति (स ६६८) ।

ओदइग देखो ओदइय (अणु १३६) ।

ओदइय पुन [औदयिक] १ उदय, कर्म-विपाक (भग ७, १४; विसे २१७८) । २ वि उदय निष्पन्न (विसे २१७८, सूअ १, १३) । ३ पुं कर्मोदय-रूप भाव, 'कम्मोदयमहावो सव्वो अणुहो सुहो य ओदइओ' (विसे ३४९८) । ४ वि उदय होने पर होनेवाला (विसे २१७८) ।

ओदञ्च न [औदात्य] उदात्तता श्रेष्ठता (प्राकृ) ।

ओदज्ज न [औदार्य] उदारता (प्राकृ) ।

ओदण न [ओदन] भात, रींधा हुआ चावल (पराह २, ५; ओघ ७१८; चारु १) ।

ओदरिय वि [औदरिक] पेट-भरा, पेट भरने के लिए ही जो साधु हुआ हो वह (निचू १) ।

ओदहण न [अवदहन] तप्त किए हुए लोहे के कोश वगैरह से दागना (राज) ।

ओदारिय न [औदार्य] उदारता (प्राकृ) ।

ओद्द वि [आर्द्र] गीला (प्राकृ २०) ।

ओद्दपिअ वि [दे] १ आक्रान्त । २ नष्ट (दे १, १७१) ।

ओद्दंस सक [अव + ध्वंस्] १ गिराना । २ हटाना । ३ हराना । कवकृ 'परवाईहिं अणोक्कंता अरणउत्थिएहिं अणोद्धंसिज्ज-माणा विहरंति' (ओप) ।

ओधाव सक [अव + धाव्] पीछे दौड़ना । ओधावइ (महा) ।

ओधुण देखो अ वधुण । कर्म ओधुव्वति (पि ५३६) । वकृ ओधुणिअ (पि ५९१) ।

ओधूअ वि [अवधूत] कम्पित (नाट) ।

ओधूसरिअ वि [अवधूसरित] धूसर रंग-वाला, हलका पीला रंगवाला (से १०, २१) ।

ओनडिय वि [अवनटित] अवगणित, तिर-स्कृत, 'चउओनडियअरणावह' (सम्मत्त २१८) ।

ओनियट्ट वि [अवनिवृत्त] देखो ओणि-अत्त = अपनिवृत्त (कप्प) ।

ओपल्ल वि [दे] अपदीर्ण कुण्ठित, 'तते एां मे तेतलिपुत्ते नीलुप्पल जाव असि खंधे ओहरति, तत्थवि य मे धारा ओपल्ला' (गाया १, १४) ।

ओप्प वि [दे] घृष्ट, ओप दिया हुआ (पड्) ।

ओप्प सक [अर्पय्] अर्पण करना । ओप्पेइ (हे १, ६३) ।

ओप्पा स्त्री [दे] शाण आदि पर मणि वगैरह का घर्षण करना (दे १ १४८) ।

ओप्पाइय वि [औत्पातिक] उत्पात-सम्बन्धी (ओप) ।

ओप्पिअ वि [अर्पित] समर्पित (हे १, ६३) ।

ओप्पिअ वि [दे] शाण पर घिसा हुआ, 'णिवमउडोप्पिअपयणह' (दे १, १४८) ।

ओप्पील पुं [दे] समूह, जत्था (पाअ) ।

ओप्पुसिअ
ओप्पुसिअ } देखो उप्पुसिअ (गउड, पि ४८६) ।

ओबद्ध वि [अवबद्ध] १ बधा हुआ । २ अवसन्न (वव १) ।

ओबुज्झ सक [अव + बुध्] जानना । वकृ ओबुज्झमाण (आचा) ।

ओब्भालण देखो उब्भालण (दे १, १०३) ।

ओभग्ग वि [अवभग्न] भग्न, नष्ट (से ३, ६३; १०, २०) ।

ओभावणा स्त्री [अपभ्राजना] लोक-निन्दा, अपकीर्त्ति (राज) ।

ओभास अक [अव + भास्] प्रकाशना, चमकना । वकृ ओभासमाण (भग ११, ९) । प्रयो ओभासेइ (भग) ओभासति, ओभा-सेंति (सुज १९) कृ ओभासमाण (सूअ १ १४) ।

ओभास सक [अव + भाष्] याचना करना मागना । कवकृ ओभासिज्जमाण (निचू २) ।

ओभास पु [अवभास] १ प्रकाश (ओप) । २ महाग्रह-विशेष (ठा २, ३) ।

ओभासण न [अवभासन] १ प्रकाशन उद्योतन (भग ८, ८) । २ आविर्भाव । ३ प्राप्ति (सूअ १, १२) ।

ओभासण न [अवभाषण] याचना, प्रार्थना (वव ८) ।

ओभासिय वि [अवभाषित] १ याचित, प्रार्थित (वव ६) । २ न याचना, प्रार्थना (बृह १) ।

ओभुग्ग वि [अवभुग्न] वक्र, बांका (गाया १, ८—पत्र १३३) ।

ओमुडिय वि [अवमुक्त] छुड़ाया हुआ, रहित किया हुआ तेणवि कडिट्ठऊणलक्ख विव सूई-ओमोडिओ नियकुक्कुडो' (महा) ।

ओम वि [अवम] असार, निस्सार (आचा २, ५ २, १) ।

ओम वि [अवम] १ कम, न्यून हीन (आचा) । २ लघु छोटा (ओघ २७३ भा) । ३ न. दुर्भिक्ष, अकाल (ओघ १३ भा) । °कोट्ठ वि [°कोष्ठ] ऊनोदर, जिसने कम खाया हो वह (ठा ४) । °चेलग, °चेलय वि [°चेलक] जीर्ण और मलिन वस्त्र धारण करनेवाला (उत्त १२; आचा) । °रत्त पु [°रात्र] १ दिन-क्षय, ज्योतिष की गिनती के अनुसार जिस तिथि का क्षय होता है वह (ठा ६) । २ अहोरात्र, रात-दिन (ओघ २८५) ।

ओमइल्ल वि [अवमलिन] मलिन, मैला (प २, २५) ।

ओमंथ [दे] देखो ओमत्थ (पाअ) ।

ओमंथिय वि [दे] अधोमुख किया हुआ नमाया हुआ (गाया १, १) ।

ओमंथिय वि [अवमस्तिक] शीर्षासन उ स्थित, नीचे मस्तक और ऊंचे पैर रखकर स्थित (णंदि १२८ टी) ।

ओमस वि [दे] असतृत, अरगत (पड्) ।

ओमज्जण न [अवमज्जन] स्नान-क्रिया (उप ६८८ टी) ।

ओमज्जायण पु [अवमज्जायन] ऋषि-विशेष (ज ७, इक) ।

ओमज्जिअ वि [अवमार्जित] जिसको स्पर्श कराया गया हो वह स्पर्शित (स ५६७) ।

ओमट्ठ वि [अवमृष्ट] स्पृष्ट, छुआ हुआ (से ५, २१) ।

कचुग देखो कचुअ (ओघ ६७६, विसे २५२८)।

कचुगि देखो °कचुइ (मण)।

कचुलिआ स्त्री [कञ्चूलिका] कचली, चोली (कप्पू)।

कंछुल्ली स्त्री [दे] हार, कण्ठाभरण (भवि)।

कंजिअ न [काञ्जिक] काञ्जिक (सुर ३,१३३, कप्पू)।

कट देखो कटग (पिंड २००)।

कटअन वि [कण्टकायमान] १ कण्टक जैसा, कण्टक की तरह आचरता (से ६, २०)। २ पुलकित होता (अच्चु ५८)।

कटइअ वि [कण्टकित] १ कण्टकवाला (से १,३२)। २ रोमाञ्चित, पुलकित (कुमा, पाअ)।

कटइज्जत देखो कंटअन (गा ६७)।

कटइल पुं [कण्टकिल] १ एक जात का बाँस। २ वि कण्टकों से व्याप्त (सूअ १,५)।

कटइल्ल देखो कटइअ (पण्ह १, १, कुमा)।

कटउच्चि वि [दे] कण्ट-प्रोत (दे २, १७)।

कटकिल्ल देखो कंटइअ (दे २, ७५)।

कटग } पुं [कण्टक] १ काटा, कण्टक (कस, हे १, ३०)। २ रोमाञ्च
कटय } पुलक (गा ६७)। ३ शत्रु, दुश्मन (णाया १, १)। ४ वृश्चिक की पूँछ (वव ६)। ५ शल्य (विपा १, ८)। ६ दुःखोत्पादक वस्तु (उत्त १)। ७ ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक कुयोग (गण १६)। °बोंदिया स्त्री [°दे] कण्टक-शाखा (आचा २, १, ५)।

कटाली स्त्री [दे] वनस्पति विशेष, कण्ट-कारिका, भटकटैया (दे २, ४)।

कटिअ वि [कण्टिक] १ कण्टकवाला, कण्टक-युक्त। २ वृक्ष-विशेष (उप १०३१ टी)।

कटिया स्त्री [कण्टिका] वनस्पति-विशेष (वृह १, आचू १)।

कटी स्त्री [दे] उपकण्ठ, कण्ठिका, पर्वत के नजदीक की भूमि,
'एयाओ पल्ढारुणफलभरवंधुरिया भूमिखज्जूरा। कटीओ निव्ववंति व, अमदरूरमंदआभोया' (गउड)।

कंटुल्ल } [दे] देखो ककोड = (दे) (पाअ,
कटोल } दे २, ७)।

कठ पुं [दे] १ सूकर, सूअर। २ मर्यादा, सीमा (दे २, ५१)।

कठ पु [°कण्ठ] १ गला, घाटी (कुमा)। २ समीप, पास। ३ अञ्चल, 'कठे वत्थाईणं णिवद्धगठिम्मि' (दे २, १८)। °दरखलिअ वि [°दरस्खलित] गद्गद (पाअ)। °मुरय न [°मुरज] आभरण विशेष (णाया १, १)। °मुरवी स्त्री [°मुरवी] गले का एक आभरण (ओप)। मुही° स्त्री [°मुखी] गले का एक आभूषण (राज)। °सुत्त न [°सूत्र] १ सुरत-बन्ध-विशेष। २ गले का एक आभूषण (औप)।

कठ वि [कण्ठ्य] १ कण्ठ से उत्पन्न। २ सरल, सुगम (निचू १५)।

कठकुची स्त्री [दे] १ वस्त्र वगैरह के अञ्चल मे बँधी हुई गाँठ। २ गले में लटकती हुई लम्बी नाडी-ग्रन्थि (दे २, १८)।

कठदीणार पु [दे] छिद्र, विवर (दे १, २४)।

कठमल्ल न [दे] १ ठठरी, मृत-शिविका। २ यान-पात्र, वाहन (दे २, २०)।

कठमाल पुस्त्री [कण्ठमाल] रोग-विशेष (कुप्र ४७१)।

कठय पु [कण्ठक] स्वनाम-ख्यात एक चौर-नायक (महा)।

कठाकठि अ [कण्ठाकण्ठि] गले-गले मे ग्रहण कर (णाया १, २—पत्र ८८)।

कठाल वि [कण्ठवत्] वडा गलावाला (धर्मंवि १०१)।

कठिअ पु [दे] चपरासी, प्रतीहार (दे २, १५)।

कंठिआ स्त्री [कण्ठिका] गले का एक आभूषण (गा ७५)।

कठीरअ देखो कठीरव (किरात १७)।

कठीरव पुं [कण्ठीरव] सिंह, शार्दूल (प्रयौ २१)।

कड सक [कण्ड्] १ व्रीहि वगैरह का छिलका अलग करना। २ खीचना। ३ खुजवाना। वकृ. कडत (ओघ ४६८ गा ६६३), कडित (णाया १, ७)।

कड न [काण्ड] १ अगुल का असख्यातवा भाग, 'कंडति एत्थ भन्नइ अगुलभागो असंखेज्जो' (पत्र २६० टी)।

कंड पुंन [काण्ड] १ दण्ड लाठी। २ निन्दित समुदाय। ३ पानी, जल। ४ पर्व। ५ वृक्ष का स्कन्ध। ६ वृक्ष की शाखा। ७ वृक्ष का वह एक भाग, जहा से शाखाएँ निकलती हैं। ८ ग्रन्थ का एक भाग। ९ गुच्छ, स्तवक। १० अश्व, घोडा। ११ प्रेत, पितृ और देवता के यज्ञ का एक हिस्सा। १२ रीढ, पृष्ठ भाग की लम्बी हड्डी। १३ खुशामद। १४ श्लाघा, प्रशंसा। १५ गुप्तता, प्रच्छन्नता। १६ एकान्त, निर्जन। १७ तृण-विशेष। १८ निर्जन पृथ्वी (हे १, ३०)। १९ अवसर, प्रस्ताव (गा ६३३)। २० समूह (णाया १,८)। २१ बाण, शर (उप ६६६)। २२ देव-विमान-विशेष (राज)। २३ पर्वत वगैरह का एक भाग (सम ६५)। २४ खण्ड, टुकड़ा, अवयव (आचू १)। °च्छारिय पु [°च्छारिक] १ इस नाम का एक ग्राम। २ एक ग्राम-नायक (वव ७)। देखो कडग, कडय।

कंड पु [दे] १ फेन, फीन। २ वि दुर्बल। ३ विपन्न, विपत्ति-ग्रस्त (दे २, ५१)।

कडइअ देखो कटइअ (गा ५५८)।

कडइज्जत देखो कटइज्जत (गा ६७ अ)।

कंडग न [कण्डक] १ सख्यातीत संयम-स्थान-समुदाय (पिंड ९९, १००)। २ विभाग, पर्वत आदि का एक भाग (सूअ १,६,१०)।

कडग पुन [काण्डक] देखो कड = काण्ड (आचा आवम)। २५ संयम श्रेणि-विशेष (वृह ३)। २६ इस नाम का एक ग्राम (आचू १)। देखो कडय।

कंडण न [कण्डन] व्रीहि वगैरह को साफ करना, तुष पृथक्करण (था २०)।

कडपंडया स्त्री [दे] यवनिका, परदा (दे २, २५)।

कडय पुंन [काण्डक] देखो कंड = काण्ड तथा कडग। २७ वृक्ष-विशेष, राक्षसों का चैत्य वृक्ष, 'तुलसी भूयाण भवे, रक्खसाणं च कडओ' (ठा ८)। २८ तावीज, गण्डा, यन्त्र; 'वज्झति कंडयाइ, पउणीकीरंति अगयाइं' (सुर १६, ३२)।

कडरीय पु [कण्डरीक] महापद्म राजा का एक पुत्र, पुण्डरीक का छोटा भाई, जिसने

ओरत्त वि [दे] १ गर्विष्ठ, अभिमानी। २ कुसुम्भ से रक्त। ३ विदारित, काटा हुआ (दे १, १६५, पाअ)।

ओरद्ध देखो अवरद्ध = अपराद्ध (प्राकृ ५०)।

ओरम अक [उप + रम्] निवृत्त होना। ओरम (सूअ १, २, १, १०)।

ओरल्ली स्त्री [दे] लम्बा और मधुर आवाज (दे १, १८४, पाअ)।

ओरस सक [अव + तॄ] नीचे उतरना। ओरसइ (हे ४, ८५)।

ओरस वि [उपरस] स्नेह-युक्त, अनुरागी (ठा १०)।

ओरस वि [औरस] १ स्वोत्पादित पुत्र, स्व-पुत्र (ठा १०)। २ औरस्य, हृदयोत्पन्न (जीव ३)।

ओरसिअ वि [अवतीर्ण] उतरा हुआ (कुमा)।

ओरस्स वि [औरस्य] हृदयोत्पन्न, आभ्यन्तरिक (प्रारू)।

ओराल देखो उराल = उदार (ठा ४, १० जीव १)।

ओराल देखो उराल (दे) (चद १)।

ओराल न [औदार] नीचे देखो (विसे ६३१)।

ओरालिय न [औदारिक] १ शरीर विशेष, मनुष्य और पशुओं का शरीर (औप)। २ वि. शोभायमान, शोभा वाला (पाअ)। ३ औदारिक शरीर वाला (विसे ३७५)। °णाम न [°नामन्] औदारिक शरीर का हेतुभूत कर्म (कम्म)।

ओरालिय वि [दे] १ व्याप्त। २ उपलिप्त, 'दिट्ठोरुहिरोरालियसिरो' (सुख १, १३)।

ओरालिय वि [दे] १ पोंछा हुआ, 'मुहि करयलु देवि पुणु ओरालिउ मुहकमलु' (भवि)। २ फैलाया हुआ, प्रसारित, 'दसदिसि वहकयवु ओरालिओ' (भवि)।

ओराली देखो ओरल्ली (सुर ११, ८६)।

ओरिक्किय न [अवरिङ्कित] महिष की आवाज, 'कत्थइ महिसोरिक्किय कत्थइ डुहुडुहुडुहत्वनइ-सलिल' (पउम ६४, ४३)।

ओरिल्ल पुं [दे] लम्बा काल, दीर्घ काल (दे १, १५५)।

ओरी [दे] समीप (आख्या० कोष. पत्र—८५ गा० १५)।

ओरुंज न [दे] क्रीडा-विशेष (दे १, १५६)।

ओरुम्भिय वि [उपरुद्ध] आवृत्त, आच्छादित (गा ६१४)

ओरुण्ण वि [अवरुदित] रोया हुआ (गा ५३८)।

ओरुद्ध वि [अवरुद्ध] रुका हुआ, बन्द किया हुआ (गा ८००)।

ओरुभ सक [अव + रुह्] उतरना। वकृ ओरुभमाण (कस)।

ओरुम्मा अक [उद् + वा] सूखना, सूख जाना। ओरुम्माइ (हे ४, ११)।

ओरुह देखो ओरुभ। वकृ ओरुहमाण (संथा ६३, कस)।

ओरुहण न [अवरोहण] नीचे उतरना (पउम २६, ५५, विसे १२०८)।

ओरुहण न [अवरोहण] नीचे उतारना, अवतारण (पव १५५)।

ओरोध देखो ओरोह = अवरोध (विपा १, ६)।

ओरोह देखो ओरुभ। वकृ. ओरोहमाण (कस, ठा ५)।

ओरोह पुं [अवरोध] १ अन्त पुर, जनानखाना (औप)। २ अन्त पुर की स्त्री (सुर १, १४३)। ३ नगर के दरवाजा का अवान्तर द्वार (णाया १, १, औप)। ४ सघात, समूह (राज)।

ओलअ पु [दे] १ श्येन पक्षी, बाज पक्षी। २ अपलाप, निह्नव (दे १, १६०)।

ओलअणी स्त्री [दे] नवोढा, दुलहिन (दे १, १६०)।

ओलइअ वि [दे अवलगित] १ शरीर में सटा हुआ, परिहित (दे १ १६२, पाअ)। २ लगा हुआ (मे १, १६२)।

ओलइणी स्त्री [दे] प्रिया, स्त्री (दे १, १६०)।

ओलंड सक [उत् + लङ्घ्] उल्लघन करना। ओलडेंति (णाया १, १—पत्र ६१)।

ओलंब देखो अवलंब = अव+लम्ब्। सकृ ओलंबिऊण (महा)।

ओलंब पु [अवलम्ब] नीचे लटकना (औप, स्वप्न ७३)।

ओलंबण न [अवलम्बन] सहारा, आश्रय। °दीव पु [°दीप] शृङ्खला-बद्ध दीपक (राज)।

ओलंबिय वि [अवलम्बित] आश्रित, जिसका सहारा लिया गया हो वह (निचू १)। २ लटकाया हुआ (औप)।

ओलंबिय वि [उल्लम्बित] लटकाया हुआ (सूअ २, २ औप)।

ओलंभ पु [उपालम्भ] उलाहना, 'अप्पोलभणिमित्त पढमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि' (णाया १, १)।

ओलक्खिअ वि [उपलक्षित] पहिचाना हुआ (पउम १३, ४२, सुपा २५४)।

ओलगि (अप) देखो ओलग्गि (सिरि ५२४)।

ओलग्ग सक [अव + लग्] १ पीछे लगना। २ सेवा करना। ओलग्गति (पि ४८८)। हेकृ ओलग्गिउ (सुपा २३४, महा)। प्रयो, सकृ ओलग्गाविवि (सण)।

ओलग्ग वि [अवरुग्ण] १ ग्लान, बीमार। २ दुर्बल, निर्बल (णाया १, १—पत्र २८ टी, विपा १, २)।

ओलग्ग वि [अवलग्न] पीछे लगा हुआ, अनुलग्न (महा)।

ओलग्ग [दे] देखो ओलुग्ग (दे १, १६४)।

ओलग्गा स्त्री [दे] सेवा, भक्ति, चाकरी, 'करेउ देवो पसाय मम ओलग्गाए' (स ६ ३६), 'ओलग्गाए वेलत्ति जपिउ निग्गओ खुज्जो' (धम्म ८ टी)।

ओलग्गि वि [अवलागिन्] सेवा करने-वाला। स्त्री-°णी (रंभा)।

ओलग्गिअ वि [अवलग्न] सेवित (वज्जा ३२)।

ओलावअ पु [दे] श्येन, बाज पक्षी (दे १, १६०, स २१३)।

ओलि देखो ओली = आली (हे १, ८३)।

ओलिंदअ पु [अलिन्दक] बाहर के दरवाजे का प्रकोष्ठ (गा २५४)।

ओलिंप सक [दे] खोलना। कवकृ 'ओलिप-[?लिप्प] माणे वि तहा तहेव काया कवाडम्मिविभासियव्वा' (पिंड ३५४)।

ओलिंप सक [अव + लिप्] लीपना, लेप लगाना। वकृ. ओलिंपमाण (राज)।

कंदणया स्त्री [क्रन्दनता] मोटे स्वर से चिल्लाना (ठा ४, १)।

कंदप्प पुं [कन्दर्प] १ कामदेव, अनंग (पाअ)। २ कामोद्दीपक हास्यादि 'कंदप्पे कुक्कुइए' (पडि, णाया १, १)। ३ देव-विशेष (पव ७३)। ४ काम संबन्धी कथा। ५ वि काम-युक्त, कामी (बृह १)।

कंदप्प वि [कान्दर्प] कान्दर्प संबन्धी (पव ७३)।

कंदप्पि वि [कन्दर्पिन्] कामोद्दीपक, कन्दर्प का उत्तेजक (वव १)।

कंदप्पिय पुं [कान्दर्पिक] १ मजाक करने वाला भाण्ड वगैरह (औप, भग)। २ भाण्ड-प्राय देवों की एक जाति (पण्ह २, २)। ३ हास्य वगैरह भाण्ड कर्म से आजीविका चलानेवाला (पण्ण २०)। ४ वि काम-संबन्धी (बृह १)।

कंदर न [कन्दर] १ रन्ध्र विवर (णाया १ १)। २ गुहा, गुफा (उवा, प्रासू ७३)।

कंदरा } स्त्री [कन्दरा] गुहा, गुफा (से ४, कंदरी } ६ राज)।

कंदल पुं [कन्दल] १ अंकुर प्ररोह (सुपा ८)। २ लता विशेष (णाया १, ६)।

कंदल न [दे] कपाल (दे २, ४)।

कंदलग पुं [कन्दलक] एक खुरवाला जानवर विशेष (पण्ण १)।

कंदलिअ } वि [कन्दलित] अंकुरित (कुमा, कंदलिल्ल } पि ५९५)।

कंदली स्त्री [कन्दली] १ लता विशेष (सुपा ६, पउम ५३ ७६)। २ अंकुर, प्ररोह, 'दारिद्ददुमकंदलीजणदवो' (उप ७२८ टी)।

कंदली स्त्री [कन्दली] कन्द-विशेष (उत्त ३६, ६८ ६६)।

कंदविय पुं [कान्दविक] हलवाई, मिठाई वेचनेवाला (उप २११ टी)।

कंदिंद पुं [क्रन्देन्द्र, क्रन्दितेन्द्र] क्रन्दित-नामक देव-निकाय का इन्द्र (ठा २ ४—पत्र ८५)।

कंदिय पुं [क्रन्दित] १ वाणव्यन्तर देवों की एक जाति (पण्ह १, ४, औप)। २ न. रोदन, आक्रन्द (उत्त २)।

कंदिर वि [क्रन्दितृ] कांदनेवाला (भवि)।

कंदी स्त्री [दे] मूला कन्द विशेष (दे २ १)।

कंदु पुंस्त्री [कन्दु] एक प्रकार का बरतन, जिसमें मांड वगैरह पकाया जाता है, हांडा (विपा १, ३, सूअ १, ५)।

कंदुअ पुं [कन्दुक] १ गेंद (पाअ, स्वप्न ३८, मै ६१)। २ वनस्पति-विशेष (पण्ण १)।

कंदुइअ पुं [कान्दविक] हलवाई, मिठाई वेचनेवाला (दे २, ४१, ६ ३३)।

कंदुक देखो कंदुअ (सूअ २ ३, १६)।

कंदुग देखो कंदुअ (राज)।

कंदुट्ट न [दे] देखो कंदोट्ट (पाअ, धर्मा ५, मण)।

कंदुव्वय पुन [दे] कन्द-विशेष (सुख ३६, ६८)।

कंदुय देखो कंदुइअ (कुप्र ६८)।

कंदोइय देखो कंदुइअ (सुपा ३८५)।

कंदोट्ट न [दे] नील कमल (दे २, ६, प्राप्र, षड्, गा ६२२, उत्तर ११७, कप्पू, भवि)।

कंध देखो खंध = स्कन्ध (नाट, वज्जा ३६)।

कंधरा स्त्री [कन्धरा] ग्रीवा, गरदन (पाअ, सुर ४, १६६, गउ ६)।

कंधार पुं [दे] स्कन्ध, ग्रीवा का पीछला भाग (उप पृ ८६)।

कंप अक [कम्प्] कांपना, हिलना। कंपइ (हे १, ३०)। वकृ कंपंत, कंपमाण (महा, कप्प)। कवकृ कंपिज्जंत (से ६, ३८, १३, ५६)। प्रयो, वकृ कंपावित (सुपा ५६३)।

कंप पुं [कम्प] अस्थैर्य, चलन, हिलन (कुमा, आउ)।

कंपड पुं [दे] पथिक, मुसाफिर (दे २, ७)

कंपण न [कम्पन] १ कम्प, हिलन (भवि)। २ रोग-विशेष। °वाइअ वि [°वातिक] कम्प वायु नामक रोगवाला (अनु ६)।

कंपि वि [कम्पिन्] कांपनेवाला (कप्पू)।

कंपिअ वि [कम्पित] कांपा हुआ (कुमा)।

कंपिर वि [कम्पितृ] कांपनेवाला (गा ६५६, सुपा १५८, श्रा २७)।

कंपिल्ल वि [कम्पवत्] कांपनेवाला, अस्थिर, 'निच्चमकंपिल्लं परभयाहि कंपिल्लनामपुरं' (उप ६ टी)।

कंपिल्ल पुं [काम्पिल्य] १ यदुवंशीय राजा अन्धकवृष्णि के एक पुत्र का नाम (अन्त ३)। २ न पंजाब देश का एक नगर (ठा १०, उप ६४८ टी)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (पउम ८, १४३, उवा)।

कंम्र वि [कम्र] १ कामुक, कामी। २ सुन्दर, मनोहर (पि २९५)।

कंब° देखो कंबा।

कंबर पुं [दे] विज्ञान (दे २, १३)।

कंबल पुन [कम्बल] १ कामरी, ऊनी कपड़ा (आचा, भग)। २ पुं स्वनाम-ख्यात एक बलीवर्द (राज)। ३ गौ के गले का चमड़ा, सास्ना, गलकंबल, लहर (विपा १, २)।

कंबा स्त्री [कम्बा] यष्टि लकड़ी 'दिट्ठा नजणएणं, निसूडिउं कंबघाएहिं, वद्धो' (सुपा ३६६)।

कंबि } स्त्री [कम्बि, °म्बी] १ दर्वी कंबी } कड़छी। २ लीला-यष्टि, छड़ी, शौख से हाथ में रखी जाती लकड़ी (उप पृ २३७)।

कंबिया स्त्री [कम्बिका] पुस्तक का पुट्ठा, किताब का आवरण पृष्ठ (राय ६६)।

कंबु पुं [कम्बु] १ शङ्ख (पण्ह १, ४)। २ इस नाम का एक द्वीप (पउम ४५, ३२)। ३ पर्वत-विशेष (पउम ४५, ३२)। ४ न एक देव-विमान (सम २२)। °ग्गीव न [°ग्रीव] एक देव-विमान (सम २२)।

कंबोय पुं [कम्बोज] देश-विशेष (पउम २७, ७, स ८०)।

कंबोय वि [काम्बोज] कम्बोज देश में उत्पन्न (स ८०)।

कंभार पुं व [कश्मीर] इस नाम का एक प्रसिद्ध देश (हे २, ६८, षड्)। °जम्म न [°जन्मन्] कुंकुम, केसर (कुमा)। देखो कम्हार।

कंभूर (अप) ऊपर देखो (षड्)।

कंस पुं [कंस] १ राजा उग्रसेन का एक पुत्र, श्रीकृष्ण का मातुल (पण्ह १, ४)। २ महा-ग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। ३ कांसा, एक प्रकार की धातु (णाया १, ७—पत्र ११८)। °णाभ पुं [°नाभ] ग्रह-विशेष (सुज २०, इक)। °वण्ण पुं [°वर्ण] ग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। °वण्णाभ पुं [°वर्णाभ] ग्रह-विशेष (ठा २, ३)। °सहारण पुं [°संहारण] कृष्ण, विष्णु (पिंग)।

ओवट्टण न [अपवर्त्तन] ह्रास, कमी (श्रावक २१६)।

ओवट्टणा स्त्री [अपवर्त्तना] भागाकार, भाग-हरण (राज)।

ओवट्टिअ न [दे] चाटु, खुशामद (दे १, १६२)।

ओवट्ठ वि [अववृष्ट] बरसा हुआ, जिसने वृष्टि की हो वह (से ६, ३८)।

ओवट्ठ पु [दे अववर्ष] १ वृष्टि, बारिश (से ६, २७)। २ मेघ-जल का सिञ्चन (दे १, १५२)।

ओवट्ठिइअ वि [औपस्थितिक] उपस्थिति के योग्य, नौकर (प्रयौ ११)।

ओवड अक [अव + पत्] गिरना, नीचे पड़ना। वकृ ओवडत (से १३, २८)।

ओवडण न [अवपतन] १ अध पात। २ झम्पा-पात (से २, ३२)।

ओवड्ढ वि [उपार्ध] आधे के करीब। °ओमोयरिया स्त्री [°अवमोदरिका] बारह कवल का ही आहार करना, तप-विशेष (भग ७, १)।

ओवड्ढि स्त्री [अपवृद्धि] ह्रास (निचू २०)।

ओवड्ढा स्त्री [दे] ओढनी का एक भाग (दे १ १५१)।

ओवण न [उपवन] बगीचा, आराम (कुमा)।

ओवणिहिय पु [औपनिहित, औपनिधिक] भिक्षाचर विशेष, समीपस्थ भिक्षा को लेनेवाला साधु (ठा ५, औप)।

ओवणिहिया स्त्री [औपनिधिकी] आनुपूर्वी-विशेष, अनुक्रम-विशेष (औप)।

ओवत्त सक [अप + वर्त्तय्] १ उलटा करना। २ फिराना, घुमाना। ३ फेंकना। संकृ ओवत्तिय (दस ५)। कृ ओवत्तेअव्व (से १०, ५०)।

ओवत्त वि [अपवृत्त] फिराया हुआ (से ६, ६१)।

ओवत्तिय वि [अपवर्त्तित] १ घुमाया हुआ। २ क्षिप्त (णाया १, १—पत्र ४७)।

ओवत्थाणिय वि [औपस्थानिक] सभा का कार्य करनेवाला नाकर। स्त्री °या (भग ११ ११)।

ओवम देखो ओवम्म, 'इंदियपच्चक्खं पिय अणुमाणं ओवमं च मइनाणं' (जीवस १४२)।

ओवमिय वि [औपमिक] उपमा-सम्बन्धी (अणु)।

ओवमिय } न [औपम्य] १ उपमा (ठा ८ ओवम्म } अणु)। २ उपमान, प्रमाण (सूअ १, १०)।

ओवय सक [अव + पत्] १ नीचे उतरना। २ आ पड़ना। वकृ ओवयंत, ओवयमाण (कप्प, स ३७०, पि ३६ , णाया १, १ ६)।

ओवयण न [दे अवपतन] प्रोङ्खणक, चुमना (णाया १, १—पत्र ३६)।

ओवयण न [अवपतन] अवतरण, नीचे उतरना (भग ३, २—पत्र १७७)।

ओवयाइयय वि [औपयाचितक] मनौती से प्राप्त किया हुआ, मनौती से मिला हुआ (ठा १०)।

ओवयारिय वि [औपचारिक] उपचार-सम्बन्धी (पंचा ६, पुप्फ ४०६)।

ओवर पु [दे] निकर, समूह (दे १, १५७)।

ओववाइय वि [औपपातिक] १ जिसकी उत्पत्ति होती हो वह (पंच १)। २ पु संसारी, प्राणी (आचा)। ३ देव या नारक-जीव (दस ४)। ४ न देव या नारक जीव का शरीर (पंच १)। ५ जैन आगम-ग्रन्थ विशेष, औप-पातिक सूत्र (औप)।

ओववाइय वि [औपपातिक] एक जन्म से दूसरे जन्म में जानेवाला (सूअ १, १, ११)।

ओवसग्गिय वि [औपसर्गिक] १ उपसर्ग से सबन्ध रखनेवाला, उपद्रव—समर्थ रोगादि। २ शब्द-विशेष, प्र, परा आदि अव्यय रूप शब्द (अणु)।

ओवसमिअ पुन [औपशमिक] १ उपशम। २ वि उपशम से उत्पन्न। ३ उपशम होने पर होनेवाला (विसे २१७४)।

ओवसेर न [दे] १ चन्दन, सुगन्धि काष्ठ-विशेष। २ वि रति-योग्य (दे १, १७३)।

ओवस्सय देखो उवस्सय, 'घट्टिज्जइ ओवस्सय-तणय तेणाइरक्खट्ठा' (पव ८१)।

ओवह सक [अव + वह्] १ वह जाना, वह चलना। २ डूबना। कवकृ, ओवुब्भमाण (कम)।

ओवहारिअ वि [औपहारिक] उपहार सम्बन्धी (विक ७५)।

ओवहिअ वि [औपधिक] माया से गुप्त विचरनेवाला (णाया १, २)।

ओवाअअ पु [दे] आपातप, जल-समूह की गरमी (षड्)।

ओवाइअ देखो ओववाइय (राज)।

ओवाइअ देखो उववाइय (सुपा ११३)।

ओवाइय वि [आवपातिक] सेवा करनेवाला (ठा १०)।

ओवाडण न [अवपाटन] विदारण, नाश (ठा २, ४)।

ओवाडिय वि [अवपाटित] विदारित (औप)।

ओवाय सक [उप + याच्] मनौती करना। वकृ ओवायंत, ओवाइयमाण (सुर १३, २०६, णाया १, ८—पत्र १३४)।

ओवाय पु [अवपात] १ सेवा भक्ति (ठा ३, २, औप)। २ गर्त्त, गड्ढा (पण्ह १ १)। ३ नीचे गिरना (पण्ह १, ४)।

ओवाय वि [औपाय] उपाय-जन्य, उपाय-सबन्धी (उत्त १, २८)।

ओवार सक [अप + वारय्] आच्छादन करना, ढकना। संकृ ओवारिअ (अभि २१३)।

ओवारि न [दे] धान्य भरने का एक प्रकार का लम्बा कोठा, गोदाम (राज)।

ओवारिअ वि [दे] ढेर किया हुआ, राशि-कृत (स ४८७, ४८)।

ओवारिअ वि [अपवारित] आच्छादित ढका हुआ (मै ६१)।

ओवास अक [अव + काश्] शोभना विराजना। ओवासइ (प्राप)।

ओवास अक [अव + काश्] अवकाश पाना, जगह मिलना। ओवासइ (प्राप्र, कुमा ७, २३, प्राकृ ६६)।

ओवास पु [अवकाश] अवकाश, खाली जगह (पाअ, प्राप्र, से १, ५४)।

ओवास पु [उपवास] उपवास, भोजनाभाव (पउम ४२, ८६)।

ओवासंतर पुन [अवकाशान्तर] आकाश गगन (भग २०, २—पत्र ७७६)।

कच्च न [दे. कृत्य] कार्य, काम (दे २, २, (पड्)।

कच्च (पै) देखो कज्ज (प्राप्र)।

कच्च न [काच] काच, शीशा, 'कच्चमणिणो य सम आहरणे पउंजीअदि' (पण्ह)।

कच्चंत वि [कृत्यमान] पीड़ित किया जाता (सूअ १, २, १)।

कच्चरा स्त्री [दे] १ कचरा, कच्चा कचरा। २ कलश को सुराहार, तवार और मसाला डालकर बनाया हुआ खाद्य-विशेष, एक प्रकार का अचार, गुजराती में जिसको 'कचरी' कहते हैं, 'कुंगा कच्चरा वच्चरा दिसाभोया' (भवि)।

कच्चवार पु [दे] कतवार, तृण (सुपा ४४)।

कच्चाइणी स्त्री [कात्यायनी] देवी-विशेष, चण्डी (स ३७)।

कच्चायण पु [कात्यायन] १ स्वनाम-ख्यात ऋषि-विशेष (सुज्ज १०)। २ न. कौशिक गोत्र की शाखा-रूप एक गोत्र। ३ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०)।

कच्चायणी स्त्री [कात्यायनी] पार्वती, गौरी (पाअ)।

कच्चि अ [कच्चित्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रश्न। २ मंगल। ३ अभिलाष। ४ हर्ष (पि २७१ हे २, २१७ २१८)।

कच्चु (अप) ऊपर देखो (हे ४, ३२९)।

कच्चूर पु [कर्चूर] वनस्पति-विशेष, कचूर, काली हलदी (श्रा २०)।

कच्चोल) पुन [कच्चोलक] पात्र-विशेष,
कच्चोलय } प्याला (पउम १०२, १२०, भवि सुपा २०१)।

कच्छ पु [कक्ष] १ कांख, ककरी। २ वन जंगल (भग ३ ६)। ३ तृण, घास। ४ शुष्क तृण। ५ वल्ली, लता। ६ शुष्क काष्ठों वाला जंगल। ७ राजा वगैरह का जनानखाना। ८ हाथी को बांधने की डोर। ९ पार्श्व बाजू। १० ग्रह-भ्रमण। ११ कक्षा, श्रेणी। १२ द्वार दरवाजा। १३ वनस्पति-विशेष, गूगल। १४ विभीतक वृक्ष। १५ घर की भीत। १६ स्पर्धा का स्थान। १७ जल-प्राय देश (हे २, १७)।

कच्छ पु न [कच्छ] १ स्वनाम-ख्यात देश, जो आजकल भी 'कच्छ' नाम से प्रसिद्ध है (पउम ९८ ६४, इक २, १ टी)। २ जलप्राय देश, जल-बहुल देश (णाया १, १—पत्र, ३३, कुमा)। ३ कछोटा, लँगोट (सुर २ १६)। ४ इक्षु वगैरह की वाटिका (कुमा. आचा २, ३)। ५ महाविदेह वर्ष का एक विजय-प्रदेश (ठा २, ३)। ६ तट, किनारा, 'कच्छासन्ने मच्छे चक्कवाओ सल्लाइ पाइ' (गा १०७)। ७ नदी के जल से वेष्टित वृक्ष (भग)। ८ भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र (राज)। ९ कच्छ-विजय का एक राजा। १० कच्छ विजय का अधिष्ठायक देव (जं ४)। ११ पार्श्व का प्रदेश। १२ गाय वगैरह के उदर के समीप का प्रदेश (णा [illegible] ८६ टी)। १३ छन्द-विशेष, दोहा छन्द का एक भेद (पिंग)। °कूड न [°कूट] १ माल्यवंत नामक वक्षस्कार पर्वत का एक शिखर। २ कच्छ विजय के वैताढ्य पर्वत के दक्षिणोत्तर पार्श्ववर्ती एक शिखर (ठा ९)। ३ चित्रकूट पर्वत का एक शिखर (जं ४)। °ाहिव पु [°ाधिप] कच्छ देश का राजा (भवि)। °ाहिवइ पु [°ाधिपति] कच्छ देश का राजा (भवि)।

कच्छ पुं [कच्छ] १ नदी के पास की नीची जमीन। २ मूला आदि की वाड़ी (आचा २, ३, ३, १)।

कच्छउर पु [दे] वाटिका, सब्जी पैदा करनेवाला। (गाथा प्र० ४६८, २, ३३—पत्र)।

कच्छगावई स्त्री [कच्छकावती] महाविदेह वर्ष का एक विजय प्रदेश (ठा २, ३)।

कच्छट्टी स्त्री [दे] कछौटी, लँगोटी, काछी (रंभा —टि)।

कच्छभ पु [कच्छप] १ कूर्म, कछुआ (पण्ह १, १; णाया १ ४) २ राहु, ग्रह-विशेष (भग १२, ६)। °रिंगिय न [°रिङ्गित] गुरु-वन्दन का एक दोष, कछुए की तरह चलते हुए वन्दन करना (बृह ३; गुभा)।

कच्छभाणिया स्त्री [दे] जल में होनेवाली वनस्पति-विशेष (सूअ २, ३, १८)।

कच्छभी स्त्री [कच्छपी] १ कच्छप-स्त्री, कूर्मी। २ वाद्य विशेष (पण्ह २, ५)। ३ ग्रन्थ की पोथी (णाया १, १७)। ४ पुस्तक-विशेष (ठा ४, २)।

कच्छर न [दे] पङ्क, कीच, कर्दम (दे २, २)।

कच्छरी स्त्री [कच्छरी] गुल्म-विशेष (पण्ण १—पत्र ३२)।

कच्छव (अप) पुं [कच्छप] स्वनाम-प्रसिद्ध देश-विशेष (भवि)।

कच्छव देखो कच्छभ (पउम ३४, ३३ दे १, १६७ प्रासू)।

कच्छवी देखो कच्छभी (कुप्र ३)।

कच्छह देखो कच्छभ (पाअ)।

कच्छा स्त्री [कक्षा] १ किनार, कोर (पउम १६, ५०)। २ हाथी के पेट की रज्जु, 'उप्पीलियकच्छे' (णाया १, २—पत्र ७३ टी)। ३ काँख, कक्ष (भग ३, ६; आचा)। ४ [illegible] (ठा ७)। ५ कमर का आधा भाग (पि ६०४)। ६ [illegible] (ठा ७)। ७ [illegible]। ८ स्पर्धास्थान। ९ घर की भीत। १० प्रकोष्ठ (हे २, १७)।

कच्छा स्त्री [कच्छा] नदी-किनारा, नदी का सामीप्य (पाअ)। °वई स्त्री [°वती] देखो कच्छगावई (जं ४)। °वईकूड न [°वतीकूट] वक्षस्कार पर्वत का एक शिखर (इक)।

कच्छारम्भ पु [दे. कक्षारम्भ] रोग विशेष (सिरि ११७)।

कच्छु स्त्री [कच्छू] १ खुजली, पाम रोग-विशेष (प्राप्र २८)। २ खाज को उत्पन्न करनेवाली ओषधि, कपिकच्छु (पण्ण २, ५)। °ल, °ल्लि [°मत्] खाज रोग-वाला (राज, विपा १, ७)।

कच्छुट्टिया स्त्री [दे. कच्छपट्टिका] कछौटी, लँगोटी (रंभा)।

कच्छुरिअ वि [दे] १ दूषित, जिसकी ईर्ष्या की जाय वह। २ न. ईर्ष्या (दे २, १६)।

कच्छुरिअ वि [कच्छुरित] व्याप्त, खचित (कुम्मा ६ टी)।

कच्छुरी स्त्री [दे] कपिकच्छु, केवाँच (दे २, ११)।

ओसहि°, ही स्त्री [ओषधि] १ वनस्पति (पण्ण १)। २ नगरी-विशेष (राज)। °महिहर पुं [°महिधर] पर्वत-विशेष (अच्चु ४४)।

ओसहिअ वि [आवसथिक] चन्द्रार्घ-दानादि व्रत को करनेवाला (गा ३४६)।

ओसा स्त्री [दे] १ ओस, निशा जल (जी ५, आचा, विसे २५७६)। २ हिम, बरफ (दे १, १६४)।

ओसाअ पु [दे] प्रहार की पीडा (दे १, १५२)।

ओसाअ पु [अवश्याय] हिम, ओस (से १३, ५२, दे ८, ५३)।

ओसाअन वि [दे] १ जँभाई खाता हुआ आलसी। २ बैठवा। ३ वेदना-युक्त (दे १, १७०)।

ओसाअण वि [दे] १ महीशान, जमीन का मालिक। २ आपोशान (पड्)।

ओसाण न [अवसान] १ अन्त (ठा ४)। २ समीपता, सामीप्य (सूअ १, ४)।

ओसाण न [अवसान] गुरु के समीप स्थान, गुरु के पास निवास (सूअ १, १४, ४)।

ओसाणिहाण त्रि [दे] विधि-पूर्वक अनुष्ठित (दे १, १६३)।

ओसाय पु [अवश्याय] ओस, निशा-जल (जीवम ३१)।

ओसायण न [अवसादन] परिशाटन, नाश (विसे)।

ओसार सक [अप + सारय्] दूर करना। ओसारेहि (स ४०८)। कर्म ओसारिज्जंतु (स ४१०)। सक्र ओसारिवि (भवि)।

ओसार पु [दे] गो-वाट, गो-वाडा (दे १, १४६)।

ओसार पु [अपसार] अपसरण (से १३, १४)।

ओसार देखो ऊसार = उत्सार (भवि)।

ओसार पु [अवसार] कवच, बख्तर (से १२, ५६)।

ओसारिअ वि [अपसारित] दूर किया हुआ, अपनीत (गा ६६, पउम २३, ८)।

ओसारिअ वि [अवसारित] अवलम्बित, लटकाया हुआ (औप)।

ओसास (अप) देखो ओवास = अवकाश (भवि)।

ओसिअ वि [दे] १ अबल, बल-रहित (दे १, १५०)। २ अपूर्व, असाधारण (पड्)।

ओसिअ वि [उषित] १ बसा हुआ, रहा हुआ (सूअ १, १४, ४)। २ व्यवस्थित (सूअ १, ४, १, २०)।

ओसिअत वकृ [अवसीदत्] पीडा पाता हुआ (हे १, १०१, से ३, ५१)।

ओसिघिअ वि [दे] घ्रात, सूँघा हुआ (दे १, १६२, पाअ)।

ओसिंचित्तु वि [अपसेचयितृ] अपसेक करनेवाला (सूअ २, २)।

ओसिक्खिअ न [दे] १ गति-व्याघात। २ अरति-निहित (दे, १, १७३)।

ओसित्त वि [अवसिक्त] भीजाया हुआ, सिक्त (आचा २, १, १, १)।

ओसित्त वि [दे] उपलिप्त (दे १, १५८)।

ओसिय वि [अवसित] १ पर्यवसित। २ उपशान्त (सूअ १, १३)। ३ जीत, पराभूत (विसे)।

ओसिरण न [दे] व्युत्सर्जन, परित्याग (पड्)।

ओसीअ वि [दे] अधो-मुख, अवनत (दे १, १५८)।

ओसीर देखो उसीर (पण्ह २, ५)।

ओसीस अक [अप + वृत्] १ पीछे हटना। २ घूमना, फिरना। सक्र ओसीसिऊण (दे १, १५२)।

ओसीस वि [अप + वृत्त] अपवृत्त (दे १, १५२)।

ओसुअ वि [उत्सुक] उत्कण्ठित (प्राप्र)।

ओसुंखिअ वि [दे] उत्प्रेक्षित, कल्पित (दे १६१)।

ओसुभ सक [अव + पातय्] १ गिरा देना। २ नष्ट करना। कर्म ओसुब्भति (स ७, ६१)। वकृ ओसुभइ (से ४, ५४)। कवकृ ओसुब्भत (पि ५३५)।

ओसुक्क सक [तिज्] तीक्ष्ण करना, तेज करना। ओसुक्कइ (हे ४, १०४)।

ओसुक्क वि [अवशुष्क] सूखा हुआ (पउम ५३, ७६, ५, १४)।

ओसुक्ख अक [अव + शुष्] सूखना। वकृ ओसुक्खन (से ६, ६३)।

ओसुद्ध वि [दे] १ विनिपतित (दे १, १५७)। २ विनाशित (से १३, २२)।

ओसुब्भत देखो ओसुभ।

ओसुय न [औत्सुक्य] उत्सुकता, उत्कण्ठा (औप, पि ३२७ ए)।

ओसोयणी, ओसोवणिया, ओसोवणी स्त्री [अवस्वापनी] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से दूसरे को गाढ निद्राधीन किया जा सकता है (सुपा २२०, णाया १, १६, कप्प)।

ओस्सक्क पु [अवष्वष्क] अपसर्पण, पीछे हटना (पव २)।

ओस्सक्कण देखो ओसक्कण (पिंड २८५)।

ओस्सा [दे] देखो ओसा (कम्म)।

ओस्साड पुं [अवशाट] नाश, विनाश (सण)।

ओह देखो ओघ (पण्ह १, ४, गा ५१८, निचू १६, ओघ २, धम्म १० टी)। ५ सूत्र, शास्त्र-सम्बन्धी वाक्य (विसे ६५७)।

ओह सक [अव + तृ] नीचे उतरना। ओहइ (हे ४, ८५)।

ओह पुन [ओघ] १ उत्सर्ग, सामान्य नियम, (णंदि ५२)। २ सामान्य, साधारण (वव १)। ३ प्रवाह (राय ४७ टी)। ४ सलिल-प्रवेश। ५ आस्रव-द्वार (आचा २, १६, १०)। ६ ससार (सूअ १, ६, ६)। °सूय न [°श्रुत] शास्त्र-विशेष (णंदि ५२)।

ओहक्क पु [दे] हास हँसी (दे १, १५३)।

ओहजलिया स्त्री [दे] क्षुद्र जन्तु-विशेष, चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष (जीव १)।

ओहतर वि [ओघतर] संसार पार करनेवाला (मुनि), (आचा)।

ओहंस पुं [दे] १ चन्दन। २ जिसपर चन्दन घिसा जाता है वह शिला, चन्द्रौटा या होरसा (दे १, १६८)।

ओहट्ट अक [अप + घट्ट्] १ कम होना, ह्रास पाना। २ पीछे हटना। ३ सक हटाना, निवृत्त करना। ओहट्टइ (हे ४, ४१६)। वकृ ओहट्टत (से ८, ६०, सुपा २३३)।

ओहट्ट पु [दे] १ अवगुण्ठन। २ नीवी, कटि वस्त्र। ३ वि अपसृत, पीछे हटा हुआ (दे १, १६६, भवि)।

कट्ठिअ पुं [दे] चपरासी, प्रतीहार (दे २, १५)।

कट्ठिअ वि [काष्ठित] काठ से संस्कृत भीत वगैरह (आचा २, २)।

कट्ठिण देखो कढिण (नाट—मालती ५६)।

कट्ठेअ वि [काष्ठेय] देखो कट्ठिअ—काष्ठित (आचा २, २, १, ६)।

कट्ठोल देखो कट्ठ = कृष्ट (पिंड १२)।

कड वि [दे] १ क्षीण, दुर्बल। २ मृत, विनष्ट (दे २, ५१)।

कड पु [कट] १ गण्ड-स्थल, गाल (णाया १, १ पत्र ६५)। २ तृण, घास। ३ चटाई, आस्तरण-विशेष (ठा ४, ४ पत्र २७१)। ४ लकडी, यष्टि, 'तेमि च जुद्ध लयालिट्ठु-कडपामाणदतनिवाएहिं' (वसु)। ५ वंश, बाँस (विपा १, ६ ठा ४, ४)। ६ तृण-विशेष (ठा ४, ४)। ७ छिला हुआ काष्ठ (आचा २, २, १)। °च्छेज्ज न [°च्छेद्य] कला विशेष (औप, ज २)। °तड न [°तट] १ कटक का एक भाग। २ गण्ड तल (णाया १, १)। °पूयणा स्त्री [°पूतना] व्यन्तरी-विशेष (विसे २५४६)।

कड वि [कृत] १ किया हुआ, बनाया हुआ, रचित (भग, पण्ह २, ४, विपा १, १, कप्प, सुपा २६)। २ पुन युग विशेष, सत्ययुग, (ठा ४, ३)। ३ चार की संख्या (सूत्र १, २)। °जुग न [°युग] सत्य-युग, उन्नति का समय, आदि युग, १७२८००० वर्षों का यह युग होता है (ठा ४, ३)। °जुम्म पुं [°युग्म] सम राशि-विशेष, चार से भाग देने पर जिसमें कुछ भी शेष न बचे ऐसी राशि (ठा ४, ३)। °जुम्मकडजुम्म पु [°युग्मकृतयुग्म] राशि विशेष (भग ३४, १)। °जुम्मकलिओय [°युग्मकल्योज] राशि विशेष (भग ३४, १)। °जम्मतेओग पु [°युग्मत्र्योज] राशि-विशेष (भग ३४, १)। °जुम्मदावरजुम्म पु [°जुग्मद्वापर-युग्म] राशि-विशेष (भग ३४, १)। °जोगि वि [°योगिन] १ कृत-क्रिय (निचू १)। २ गीतार्थ, ज्ञानी (ओघ १३४ भा)। ३ तपस्वी (निचू १)। °वाइ पु [°वादिन] सृष्टि को नैसर्गिक न मानकर किसी की बनाई हुई माननेवाला, जगत्कर्तृत्ववादी (सूत्र १, १, १) °इ पु [°दि] देखो °जोगि (भग, णाया १, १—पत्र ७४)। देखो कय = कृत।

कडअल्ल पु [दे] दौवारिक, प्रतीहार (दे २, १५)।

कडअल्ली स्त्री [दे] कण्ठ, गला (दे २, १५)।

कडइअ पु [दे] स्थपति, वढई (दे २, २२)।

कडइअ वि [कटकिन] वलय की तरह स्थित (से १२, ४१)।

कडइल्ल पु [दे] दौवारिक, प्रतीहार (दे २, १५)।

कडगर न [कडङ्गर] तुष, छिलका, भूसा (सुपा १२६)।

कडंत न [दे] मूली, कन्द विशेष। २ मुसल (दे २, ५६)।

कडतर न [दे] पुराना सूर्प आदि उपकरण (दे २, १८)।

कडतरिअ वि [दे] दारित, विदारित, विनाशित (दे २, २०)।

कडब पु [कडम्ब] वाद्य विशेष (विसे ७८ टी)।

कडबा पुस्त्री [कडम्बा] वाद्य-विशेष (राय ४६)।

कडंभुअ न [दे] १ कुम्भग्रीव-नामक पात्र-विशेष। घडे का कण्ठ-भाग (दे २, २०)।

कडक देखो कडग (नाट—रत्ना ५८)।

कडकडा स्त्री [कडकडा] अनुकरण शब्द-विशेष, कड कड आवाज (स २५७, पि ५५८, नाट—मालती ५६)।

कडकडिअ वि [कडकडित] जिसने कड कड आवाज किया हो वह, जीर्ण (गुर ३,१६३)।

कडकडिर वि [कडकडायितृ] कड-कड आवाज करनेवाला (सण)।

कडकिय न [कडकित] कडकड आवाज (सिरि ६६२)।

कडक्ख पु [कटाक्ष] कटाक्ष, तिरछी चितवन, भाव युक्त दृष्टि, आँख का संकेत (पाअ, सुर १, ४३, सुपा ६)।

कडक्ख सक [कटाक्षय्] कटाक्ष करना। कडक्खइ (भवि)। सकृ कडक्खेवि (भवि)।

कडक्खण न [कटाक्षण] कटाक्ष करना (भवि)।

कडक्खिअ वि [कटाक्षित] १ जिसपर कटाक्ष किया गया हो वह (रंभा)। २ न कटाक्ष (भवि)।

कडग पुन [कटक] १ कडा, वलय, हाथ का आभूषण-विशेष (णाया १,१)। २ यवनिका, परदा, 'अन्नम्मि सगगमण होही कडतरेण तं सव्वं। निसुयमुत्तज्झमाएणं' (उप १६६ टी)। ३ पर्वत का मूल भाग। ४ पर्वत का मध्य भाग। ५ पर्वत की सम भूमि। ६ पर्वत का एक भाग, 'गिरिकंदरकडगविसमदुग्गेसु' (पच्च ८२, पण्ह १, ३, णाया १, ४, १८)। ७ शिबिर, सेना रहने का स्थान (बृह २)। ८ पु देश-विशेष (णाया १, १—पत्र ३३)। देखो कडय।

कडच्छु स्त्री [दे] कर्छी, चमची, डोई (दे २, ७)।

कडण न [कदन] १ मार डालना, हिंसा करना। (कुमा)। २ नाश करना। ३ मर्दन। ४ पाप। ५ युद्ध। ६ विह्वलता, आकुलता (हे १, २१७)।

कडण न [कटन] १ घर की छत। २ घर पर छत डालना (गच्छ १)।

कडण न [कटन] चटाई आदि से घर का संस्कार, चटाई आदि से घर के पार्श्व भागों का किया जाता आच्छादन (आचा २, २, ३, १ टी, पत्र १३३)।

कडणा स्त्री [कटना] घर का अवयव विशेष (भग ८, ६)।

कडणी स्त्री [कटनी] मेखला, 'कुरगिरिकिड-णिपरिट्ठिय[illegible] सिरिसगुहरंति' (सुपा ६१७)।

कडतला स्त्री [दे] लोहे का एक प्रकार का हथियार, जो एक धारवाला और वक्र होता है (दे २, १६)।

कडत्तरिअ वि [दे] देखो कडतरिअ (भवि)।

कडद्दरिअ वि [दे] १ छिन्न, काटा हुआ। २ न छिद्रता (पड्)।

कडप्प पु [दे कटप्र] १ समूह, निकर, कलाप (दे २, १३, पड्, गउड, सुपा ६२, भवि, विक्र ६५)। २ वस्त्र का एक भाग (दे २, १३)।

ओहासिय वि [अवभापित] याचित (पचा १३, १०)।

ओहि पुंस्त्री [अवधि] १ मर्यादा सीमा हद (गा १७०,२०६)। २ रूपि-पदार्थ का अतीन्द्रिय ज्ञान-विशेष (उवा, महा)। °जिण पुं [°जिन] अवधिज्ञानवाला साधु (पण्ह २, १)। °णाण न [°ज्ञान] अवधिज्ञान (बव १)। °णाणावरण न [°ज्ञानावरण] अवधिज्ञान का प्रतिबन्धक कर्म (कम्म १)। °दंसण न [°दर्शन] रूपी वस्तु का अतीन्द्रिय सामान्य ज्ञान (सम १५)। °दंसणावरण न [°दर्शनावरण] अवधिदर्शन का आवारक कर्म (ठा ६)। °नाण देखो °णाण (प्रासू)। °मरण न [°मरण] मरण-विशेष (भग १३, ७)।

ओहिअ वि [अवतीर्ण] उतरा हुआ (कुमा)।

ओहिअ वि [औधिक] औत्सर्गिक, सामान्य रूप से उक्त (अणु १६६, २००)।

ओहिण्ण वि [अपभिन्न] रोका हुआ, अटकाया हुआ (से १३ ७४)।

ओहित्थ न [दे] १ विषाद, खेद। २ रभस, वेग। ३ वि विचारित (दे १, १६८)।

ओहिर देखो ओहीर। ओहिरइ (षड्)।

ओहिर देखो ओहर = अव + हृ। कर्म ओहिरिआमि (पि ६८)।

ओहीअन्त वि [अवहीयमान] क्रमशः कम होता हुआ (से १०, ४२)।

ओहीण वि [अवहीन] १ पीछे रहा हुआ (अभि ५६)। २ अपगत, गुजरा हुआ (स १२, ६७)।

ओहीर अक [नि + द्रा] सो जाना, निद्रा लेना (हे ४, १२)। वकृ ओहीरमाण (णाया १, १; विपा १, १, कप्प)।

ओहीर अक [सद्] खिन्न होना। वकृ ओहीरन्त 'व सीअंत' (पाअ)।

ओहीरिअ वि [अवधीरित] तिरस्कृत, परिभूत (आचा २, १)।

ओहीरिअ वि [दे] १ उद्गीत। २ अवसन्न, खिन्न (दे १, १६३)।

ओहुअ वि [दे] अभिभूत, पराभूत (दे १ १५८)।

ओहुज देखो उवहुज। ओहुजइ (भवि)।

ओहुड वि [दे] विफल, निष्फल (दे १, १५७)।

ओहुप्पन्त वि [आक्रम्यमाण] जिसपर आक्रमण किया जाता हो वह (से ३, १८)।

ओहुर वि [दे] १ अवनत, अवाङ्मुख (गउड)। २ खिन्न, खेद-प्राप्त। ३ स्रस्त, ध्वस्त (दे १ १५७)।

ओहुल्ल वि [दे] १ खिन्न। २ अवनत, नीचे झुका हुआ (भवि)।

ओहूणग न [अवधूनन] १ कम्प। २ उल्लङ्घन। ३ अपूर्व करण से भिन्न ग्रन्थि का भेद करना (आचा १, ६, १)।

ओहूय वि [अवधूत] उल्लङ्घित (बृह १)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे ओआराइसद्दसंकलणो णवमो तरंगो समत्तो।
तस्समत्तीए अ सरविहाओवि समत्तो॥

क

क पुं [क] १ प्राकृत वर्ण-माला का प्रथम व्यञ्जनाक्षर, जिसका उच्चारण-स्थान कण्ठ है (प्राप प्रामा)। २ ब्रह्मा (दे ५, २६)। ३ किए हुए पाप का स्वीकार, 'कत्ति कड मे पाप' (आवम)। ४ न. पानी, जल (स ६११)। ५ सुख (सुर १६,५५)। देखो °अ = क।

क देखो किम् (गउड, महा)।

कअवत देखो कय-व = कृतवत् (प्राकृ ३५)।

कइ त्रि व [कति] कितना, 'त भंते! कइदिसं ओभासेइ' (भग)। °अ वि [°क] कतिपय, कईएक; 'सोएमि जाव तुज्झं, पियर कइएसु दियहेसु' (पउम ३४,२७)। °अव वि [°पय] कतिपय, कईएक (हे १, २५०)। °इअ [°चित] कईएक (उप पृ ३)। °त्थ वि [°थ] कितनावाँ, कौन संख्या का? (विसे ६१७)। °वइय, °वय, °वाह वि [°पय] कईएक (पउम ६१, १६, उवा षड्; कुमा हे १, २५०)। °वि अ [°अपि] कईएक (काल, महा)। °विह वि [°विध] कितने प्रकार का (भग)।

कइ वि [कृतिन्] १ विद्वान्, पण्डित। २ पुण्यवान् (सूअ २, १, ६०)।

कइ अ [कचित्] कहीं, किसी जगह में (दसचू २, १४)।

कइ अ [कदा] कब, किस समय?, 'एआइ उए मज्झो थणभार कइ णु उव्वहइ?' (गा ८०३)।

कइ पुं [कपि] बन्दर, वानर (पाअ)। °दीव पुं [°द्वीप] द्वीप-विशेष, वानर द्वीप (पउम ५५,१६)। °द्धय, °धय पुं [°ध्वज] १ वानर-द्वीप के एक राजा का नाम (पउम ६ ८३)। २ अर्जुन (हे २, ६०)। °हसिअ न [°हसित] १ स्वच्छ आकाश में अचानक बीजली का दर्शन। २ वानर के समान विकृत मुँह का हँसना (भग ३,६)।

कइ देखो कवि = कवि (गउड, सुर १, २७)। °अर (अप) पुं [कवि] श्रेष्ठ कवि (पिंग)। °मा स्त्री [°त्व] कवित्व, कविपन (षड्)। °राय पुं [°राज] १ श्रेष्ठ कवि (पिंग)। २ 'गउडवहो' नामक प्राकृत काव्य के कर्ता वाक्पतिराज-नामक कवि, 'आसि कइरायइंधो वप्पइराओ त्ति पणइलवो' (गउड ७९७)।

कइअ वि [क्रयिक] खरीदनेवाला, ग्राहक, 'किणंतो कइओ होइ, विक्किणंतो य वाणिओ' (उत्त ३५, १४)।

(सुपा २६२)। २ वि खींचनेवाला, आकर्षक (उप पृ २७७)।

कड्ढणया स्त्री [कर्षणता] आकर्षण (उप पृ २७७)

कड्ढाविय वि [कर्षित] खींचवाया हुआ, बाहर निकलवाया हुआ (भवि)।

कड्ढिअ वि [दे] बाहर निकला हुआ, गुजराती में 'काढेलु', 'तो दासीहिं सुणउ व्व कड्ढिओ कुट्टिऊण वहिं' (सिरि ६८६)।

कड्ढिअ वि [कृष्ट] १ आकृष्ट, खींचा हुआ (पण्ह १, ३)। २ पठित, उच्चारित (स १८२)।

कड्ढोकड्ढ न [कर्षापकर्ष] खींचातान (उत्त १६)।

कढ सक [क्वथ्] १ क्वाथ करना। २ उबालना। ३ तपाना, गरम करना। कढइ (हे ४, २२०)। वकृ कढमाण (पि २२१)। कवकृ 'राया जपइ एय मिचह रे रे कढतत्तिल्लेण' (सुपा १२०), कढीअमाण (पि २२१)।

कढकढकढेंत वि [कडकडायमान] कड-कड आवाज करता (पउम २१, ५०)।

कढण न [क्वथन] क्वाथ करना, 'रागगुणेण पावइ खडणकडणाइ मजिट्ठा' (कुप्र २२३)।

कढिअ न [दे] कढी (पिंड ६२४)।

कढिअ वि [क्वथित] १ उबाला हुआ। २ खूब गरम किया हुआ, 'कढिओ खलु निंबरसो अइकडुओ एव जाएइ' (श्रा २७, ओघ १४७, सुपा ४६६)।

कढिआ स्त्री [दे] कढी, भोजन-विशेष (दे २ ६७)।

कढिण } कढिणग } वि [कठिन] १ कठिन, कर्कश, कठोर, परुष (पण्ह १ ३, पाअ)। २ न तृण-विशेष (आचा २, ३, ३)। ३ पर्ण, पत्ता (पण्ह २, ५)।

कढोर वि [कठोर] १ कठिन, परुष, निष्ठुर। २ पु इस नाम का एक राजा (पउम ३२, २३)।

कण सक [क्वण] शब्द करना, आवाज करना। कणइ (हे ४, २३६)। वकृ कणत (सुर १० २२८, वज्जा ६६)।

कण सक [कण्] आवाज करना। कणइ (हे ४, २३६)।

कण पु [कण] १ कण, लेश, 'गुणकणमवि परिकहिउ न सक्कइ' (सार्ध ७६)। २ विकीर्ण दाना (कुमा)। ३ वनस्पति-विशेष, (पण्ण १)। ४ पु एक म्लेच्छ देश (राज)। ५ ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७७)। ६ तण्डुल, ओदन (उत्त १२)। ७ कनिक (आचा २, १)। ८ बिंदु, 'विंदुइअ कणइअ' (पाअ)। °इअ वि [°वत्] बिन्दुवाला (पाअ)। [°कुडग] पुं [कुण्डक] ओदन की बनी हुई एक भक्ष्य वस्तु, 'कणकुडग चइत्ताण विट्ठं भुंजइ सूयरो' (उत्त १२)। °पूपलिया स्त्री [°पूपलिका] भोजन-विशेष, कणिक (आटा) की बनाई हुई एक खाद्य वस्तु (आचा २,१)। °भक्ख पु [°भक्ष] वैशेपिक मत का प्रवर्तक एक ऋषि (राज)। °वित्ति स्त्री [°वृत्ति] भिक्षा, भीख (सुपा २३४)। °वियाणग पु [°वितानक] देखो कणग-वियाणग (सुज्ज २०, इक)। °सताणय पु [°संतानक] देखो कणग-सताणय (इक)। °द पु [°द] वैशेषिक मत का प्रवर्तक ऋषि (विसे २१६४)। °यण्ण वि [°कीर्ण] बिन्दुवाला) (पाअ)।

कण पु [क्वण] शब्द, आवाज (उप पृ १०३)।

कणइकेउ पु [कनकिकेतु] इस नाम का एक राजा (दस)।

कणइपुर न [कनकिपुर] नगर-विशेष, जो महाराज जनक के भाई कनक की राजधानी थी (ती)।

कणइर पु [कर्णिकार] कणेर, वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३२)।

कणइल्ल पुं [दे] शुक, तोता, सुग्गा, सुआ (दे २,२१, पड्, पाअ)।

कणई स्त्री [दे] लता, वल्ली (दे २, २५ पड्, स ४१६, पाअ)।

कणगर न [कनङ्गर] पाषाण का एक प्रकार का हथियार (विपा १, ६)।

कणकण पु [कणकण] कण-कण आवाज (आवम)।

कणकणकण अक [दे] कण-कण आवाज करना। कणकणकणति (पउम २६, ५३)। वकृ कणकणकणत (पउम ५३, ८६)।

कणकणग पु [कनकनक] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव विशेष (ठा २, ३)।

कणक्कणिअ वि [क्वणक्वणित] कण-कण आवाजवाला (कप्पू)।

कणखल न [दे] उद्यान-विशेष (सट्टि ६ टी)।

कणग वि [कानक] सुवर्ण रस पाया हुआ (कपड़ा) (आचा २, ५, १, ५)। °पट्ट वि [°पट्ट] सोने का पट्टावाला (आचा २, ५, १, ५)।

कणग देखो कण (कप्प)।

कणग [दे] देखो कणय = (दे) (पण्ह १, २)।

कणग पु [कनक] १ ग्रह विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव विशेष (ठा २, ३—पत्र ७७)। २ रेखा-सहित ज्योति-पिण्ड, जो आकाश से गिरता है (ओघ ३१० भा, जी ६)। ३ बिन्दु। ४ शलाका, सलाई (राज)। ५ घृतवर द्वीप का अधिपति देव (सुज्ज १६)। ६ बिल्व वृक्ष, बेल का पेड (उत्तनि ३)। ७ न. सुवर्ण, सोना (स ६४, जी ३)। °कत वि [°कान्त] १ कनक की तरह चमकता (आचा २, ५, १)। २ पु देव विशेष (दीव)। °कुड न [°कूट] १ पर्वत-विशेष का एक शिखर (ज ४)। २ पु. स्वर्ण मय शिखरवाला पर्वत (जीव ३)। °केउ पुं [°केतु] इस नाम का एक राजा (णाया १, १४)। °गिरि पु [°गिरि] १ मेरु पर्वत। २ स्वर्ण-प्रचुर पर्वत (ओप)। °ज्झय पु [°ध्वज] इस नाम का एक राजा (पचा ५)। °पुर न [°पुर] नगर विशेष (विपा २, ६)। °प्पभ पु [°प्रभ] देव-विशेष (सुज्ज १६)। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] १ देवी-विशेष। २ 'ज्ञाता-धर्मसूत्र' का एक अध्ययन (णाया २, १)। °फुल्लिअ न [पुष्पित] जिसमे सोने के फूल लगाए गए हो ऐसा वस्त्र (निचू ७७)। °माला स्त्री [°माला] १ एक विद्याधर की पुत्री (उत्त ९)। २ एक स्वनाम ख्यात साध्वी (सुर १५, ६७)। °रह पु [°रथ] इस नाम का एक राजा (ठा ७, १०)। °लया स्त्री

कंकडुअ } पु [काङ्कटुक] दुर्भेद्य माष,
कंकडुग } उरद की एक जाति, जो कभी पकता ही नहीं, 'कंकडुग्रो विव मासो, सिद्धि न उवेइ जस्स ववहारो' (वव ३)।

कंकण न [कङ्कण] हाथ का आभरण-विशेष, कँगन (श्रा २८, गा ६६)।

कंकण पु [दे] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, १४७)।

कंकणी स्त्री [कङ्कण] हाथ का आभरण-विशेष, 'मयमेव मकणीए धणीए त कंकणी वद्धा' (कुप्र १८५)।

कंकति पु [कङ्कति] गाम- विशेष (राज)।

कंकतिज्ज पुंस्त्री [काङ्कतीय] माघराज वंश मे उत्पन्न (राज)।

कंकय पु [कङ्कत] १ नागवला-नामक ओषधि। २ सर्प की एक जाति। ३ पुंस्त्री कघा, केश सँवारने का उपकरण (सूत्र १, ४)।

कंकलास पु [कृकलास] कर्कोट, साप की एक जाति (पाग्र)।

कंकसी स्त्री [दे] कघी, केश सँवारने का उपकरण (ती १५)।

कंकाल न [कङ्काल] चमडी और माम रहित अस्थि-पञ्जर, 'कंकालवेसाए' (श्रा १६), 'अह नरकरंककंकालसकुले भीसणममाणे' (वज्जा २०, दे २, ५३)।

कंकावंस पु [कङ्कावंश] वनस्पति-विशेष, (पण्ण ३३)।

कंकिल्लि देखो कंकेल्लि (सुपा ५५६, कुमा)।

कंकुण देखो कंकण = दे (सुख ३६, १४७)।

कंकेलि पु [कङ्केलि] अशोक वृक्ष (मै ६० विक्र २८)।

कंकेल्लि पुं [दे कङ्केल्लि] अशोक वृक्ष (दे २, १२, गा ४०४, सुपा १४०, ५९२, कुमा)।

कंकोड न [दे. कर्कोट] १ वनस्पति विशेष, ककरैल, एक प्रकार की सब्जी, जो वर्षा में ही होती है (दे २, ७, पाग्र)। २ पु एक नागराज। ३ साप की एक जाति (हे १, २६, षड्)।

कंकोल पु [कङ्कोल] १ कङ्कोल, शीतल-चीनी के वृक्ष का एक भेद। २ न उस वृक्ष का फल, 'सकप्पूरेलाकंकोल तंबोल' (उप १०३१ टी)। देखो कक्कोल।

कंख सक [काङ्क्ष्] चाहना, वाछना। कखइ (हे ४, १९२, षड्)।

कंखण न [काङ्क्षण] नीचे देखो (धर्म २)।

कंखा स्त्री [काङ्क्षा] १ चाह, अभिलाष (सूत्र १, १५)। २ आसक्ति, गृद्धि (भग)। ३ अन्य धर्म की चाह अथवा उसमे आसक्ति रूप सम्यक्त्व का एक अतिचार (पडि)। °मोहणिज्ज न [°मोहनीय] कर्म विशेष (भग)।

कंखि वि [काङ्क्षिन्] चाहनेवाला (आचा, गउड, सुर १३, २४३)।

कंखिअ वि [काङ्क्षित] १ अभिलषित। २ काक्षा युक्त, चाहवाला (उवा, भग)।

कंखिर वि [काङ्क्षितृ] चाहनेवाला, अभिलाषी (गा ५५, सुपा ५३७)।

कंगणी स्त्री [दे] वल्ली-विशेष, कागनी (पण्ण १)।

कंगु स्त्रीन [कङ्गु] १ धान्य विशेष, काँगन या कांगो (ग ७, दे ७, १)। २ वल्ली-विशेष (पण्ण १)।

कंगुलिया स्त्री [दे कङ्गुलिका] जिन-मन्दिर की एक बडी आशातना, जिन-मन्दिर मे या उसके नजदीक लघु या वृद्ध नीति का करना (धर्म २)।

कंचण पुन [काञ्चन] १ एक देव-विमान (देवेन्द्र १३१)। २ वि. सोने का, सुवर्ण का, 'कंचण खंड' (वज्जा १५८)। °पह न [°प्रभ] १ रत्न-विशेष। २ वि रत्न-विशेष का बना हुआ (देवेन्द्र २६९)। °पायव पु [°पादप] वृक्ष-विशेष (स ६७३)।

कंचण पुं [काञ्चन] १ वृक्ष-विशेष। २ स्वनाम-ख्यात एक श्रेष्ठी (उप ७२८ टी)। ३ न सुवर्ण, सोना (कप्प)। °उर न [°पुर] कलिंग देश का एक मुख्य नगर (आक)। °कूड न [°कूट] १ सौमनस-नामक वक्षस्कार पर्वत का एक शिखर (ठा ७)। २ देव-विमान-विशेष (सम १२)। ३ रुचक पर्वत का एक शिखर (ठा ८)। °केअई स्त्री [°केतकी] लता-विशेष (कुमा)। °तिलय न [°तिलक] इस नाम का विद्याधरो का एक नगर (इक)। °त्थल न [°स्थल] स्वनाम ख्यात एक नगर (दस)। °वलाणग न [°वलानक] चौरासी तीर्थो में एक तीर्थ का नाम (राज)। °सेल पु [°शैल] मेरु-पर्वत (कप्पू)।

कंचणग पुं [काञ्चनक] १ पर्वत-विशेष (सम ७०)। २ काञ्चनक पर्वत का निवासी देव (जीव ३)।

कंचणा स्त्री [काञ्चना] स्वनाम ख्यात एक स्त्री (पण्ह १, ४)।

कंचणार पु [काञ्चनार] वृक्ष-विशेष (पउम ५३, ७९, कुमा)।

कंचणिया स्त्री [काञ्चनिका] रुद्राक्ष माला (औप)।

कंचा (पे) देखो कण्णा (प्राप्र)।

कंचि } स्त्री [काञ्चि, °ञ्ची] १ स्वनाम-ख्यात
कंची } एक देश (कुमा)। २ कटी-मेखला, कमर का आभूषण (पाग्र)। ३ स्वनाम-ख्यात एक नगर (सुपा ४०६)।

कंची स्त्री [दे] मुशल के मुँह मे रक्खी जाती लोहे की एक वलयाकार चीज, सामी या साम (दे २, १)।

कंचीरय न [दे] पुष्प विशेष (वज्जा १०८)।

कंचीरय न [काञ्चीरत] सुरत-विशेष (वज्जा १०८)।

कंचु } पु [कञ्चुक] १ स्त्री का स्तनाच्छा-
कंचुअ } दक वस्त्र, चोली (पउम ६, ११, पाग्र)। २ सर्प-त्वक्, साप की केंचली, केंचुली (विसे २५१७)। ३ वर्म, कवच (भग ९,३३)। ४ वृक्ष-विशेष (हे १, २५, ३०)। ५ वस्त्र, कपडा, 'तो उज्झिऊण लज्जा (लज्ज), ओइंघड कंचुय सरीराओ' (पउम ३४, १५)।

कंचुइ पु [कञ्चुकिन्] १ अन्त पुर का प्रतीहार, चपरासी (णाया १, १, पउम ८, ३९, सुर २, १०६)। २ सांप (विसे २५१७)। ३ यव, जव। ४ चणक, चना। ५ जुआर, अगहन मे होनेवाला एक प्रकार का अन्न, जोन्हरी। ६ वि जिसने कवच धारण किया हो वह (हे ४, २६३)।

कंचुइअ वि [कञ्चुकित] कञ्चुकवाला (कुमा, विपा १, २)।

कंचुइज्ज पु [कञ्चुकीय] अन्त पुर का प्रतीहार (भग ११, ११)।

कंचुइज्जत वि [कञ्चुकायमान] कञ्चुक की तरह आचरण करता, 'रोमचकंचुइज्जत-सव्वगत्तो' (सुपा १८१)।

कणेड्ढिआ स्त्री [दे] गुञ्जा, घुँघची (दे २, २१)।

कणेर देखो **कणिआर** (हे १, १६८; पि २५८)।

कणेरु } स्त्री [करेणु] हस्तिनी, हथिनी **कणेरुया** } (हे २ ११६; कुमा; णाया १, १—पत्र ६४)।

कणोवअ न [दे] गरम किया हुआ जल, तेल वगैरह (दे २, १६)।

कण्ण पु [कन्या] राशि-विशेष, कन्या राशि; 'बुहो य कण्णम्मि वट्टए उच्चो' (पउम १७, ८१)।

कण्ण पु [कण्व] इस नामका एक परिव्राजक, ऋषि विशेष (ग्रौप अभि २६२)।

कण्ण पु [कर्ण] १ कोटि भाग, अग्रांश (सुज्ज १, १)। २ एक म्लेच्छ-जाति (मृच्छ १५२)।

कण्ण पुन [कर्ण] १ कान, श्रवण, श्रोत्र; 'कण्णाइं' (पि ३५८; प्रामू २)। ४ पु अङ्ग देश का इस नाम का एक राजा, युधिष्ठिर का बडा भाई (णाया १, १६)। ३ कोना, वस्तु के छोर का एक अंश (अग० सूत्र ५१, ६६)। °उर, °ऊर न [°पूर] कान का आभूषण (प्राप्र; हका ४५)। °गइ स्त्री [°गति] मेरु-सम्बन्धी एक श्रेणि (जो १०)। °जयसिंहदेव पु [°जयसिंहदेव] गुजरात देश का बारहवीं शताब्दी का एक यशस्वी राजा (ती)। °देव पु [°देव] विक्रम की तेरहवीं शताब्दी का सोराष्ट्र-देशीय एक राजा (ती)। °धार पु [°धार] नाविक, निर्यामक (णाया १, ८)। °पाउरण पु [°प्रावरण] १ इस नाम का एक अन्तर्द्वीप। २ उस अन्तर्द्वीप का निवासी (पराण १)। °पावरण देखा °पाउरण (इक)। °पीढ न [°पीठ] कान का एक प्रकार का आभूषण (ठा ६)। °पूर देखो °ऊर (णाया १, ८)। °रवा स्त्री [°रवा] नदी-विशेष (पउम ४०, १३)। °वालिया स्त्री [°वालिका] कान के ऊपर भाग मे पहना जाता एक प्रकार का आभूषण (ग्रोप)। °वेहणग न [°वेधनक] उत्सव-विशेष, कर्णवेधोत्सव (ग्रोप)। °सक्कुली स्त्री [°शष्कुली] १ कान का छिद्र। २ कान की लवाई (णाया १, ८)। °सोहण न [°शोधन] कान का मैल निकालने का एक उपकरण (निचू ४)। °हार पु [°धार] देखो °धार (अच्चु २४; स ३२७)। देखो कन्न।

कण्णआर देखो **कणिआर** (प्राकृ ३०)।

कण्णउज्ज पु [कान्यकुब्ज] १ देश-विशेष, दोआब, गङ्गा और यमुना नदी के बीच का देश। २ न उस देश का प्रधान नगर, जिसको आजकल 'कन्नौज' कहते है (ती; कप्पू)।

कण्णवाल न [दे] कान का आभूषण—कुण्डल वगैरह (दे २, २३)।

कण्णगा देखो **कन्नगा** (आव ४)।

कण्णन्छुरी स्त्री [दे] गृह-गोधा, छिपकली (दे २, १९)।

कण्णडय (अप) देखो **कण्ण** (हे ४, ४३२ ४३३)।

कण्णल (अप) त्रि [कर्णाट] १ देश-विशेष, कर्णाटक। २ वि उस देश का निवासी (पिंग)।

कण्णलोयण पुन [कर्णलोचन] देखो **कण्णि-लायण** (सुज्ज १०, १६)।

कण्णल्ल पुन [कर्णल] ऊपर देखो (सुज्ज १०, १६ टी)।

कण्णस वि [कन्यस] अधम जघन्य (उत ५)।

कण्णस्सरिय वि [दे] १ कानी नजर से देखा हुआ। २ न कानी नजर से देखना (दे २, २४)।

कण्णा स्त्री [कन्या] १ ज्योतिष शास्त्र-प्रसिद्ध एक राशि। २ कन्या, लडकी, कुमारी (कप्पू; पि २८२)। °चोलय न [°चोलक] धान्य-विशेष, जवनाल (णदि)। °णय न [°नय] चोल देश का एक प्रधान नगर, 'चोलदेसाव-यंसे कण्णाणयनयरे' (ती)। °लिय न [°लीक] कन्या के विषय में बोला जाता झूठ (पण्ह १, ३)।

कण्णाआस न [दे] कान का आभूषण—कुण्डल वगैरह (दे २, २३)।

कण्णाइधण न [दे] कान का आभूषण—कुण्डल वगैरह (दे २, २३)।

कण्णाड पु [कर्णाट] १ देश-विशेष, जो आजकल 'कर्णाटक' नाम से प्रसिद्ध है। २ वि उस देश में उत्पन्न, वहा का निवासी (कप्पू)।

कण्णाम पु [दे] पर्यन्त, अन्त-भाग (दे २, १८)।

कण्णि पु [कर्णि] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २६)।

कण्णिआ स्त्री [कर्णिका] १ पद्म-उदर, कमल का बीज-कोष (दे ६, १८०)। २ कोण, अस्र (अणु; ठा ८)। ३ शालि वगैरह के बीज का मुख-मूल तुष मुख (ठा ८)।

कण्णिआर पु [कर्णिकार] १ वृक्ष विशेष, कनेर का गाछ (कुमा हे २ ९५; प्राप्र)। २ गोशालक का एक भक्त (भग १५, १०)। ३ न कनेर का फूल (णाया १, ९)।

कण्णिलायण न [कर्णिलायन] नक्षत्र विशेष का एक गोत्र (इक)।

कण्णीरह देखो **कन्नीरह**।

कण्णुप्पल न [कर्णोत्पल] कान का आभूषण-विशेष (कप्पू)।

कण्णेर देखो **कण्णिआर** (हे १, १६८)।

कण्णोन्छडिआ स्त्री [दे] दूसरे की बात चुपचुप सुननेवाली स्त्री (दे २, २२)।

कण्णोड्ढ } स्त्री [दे] स्त्री को पहनने का **कण्णोड्ढिआ** } वस्त्र विशेष, नीरङ्गी (दे २, २० टी)।

कण्णोढत्ती [दे] देखो **कण्णोन्छडिआ** (दे २, २२)।

कण्णोप्पल देखो **कण्णुप्पल** (नाट)।

कण्णोल्ली स्त्री [दे] १ चञ्चु, चोच, पक्षी का ठोर, ठोठ। २ अवतंस, शेखर, भूषण विशेष (दे २ ५७)।

कण्णोवगण्णिआ स्त्री [कर्णोपकर्णिका] कर्णाकर्णि, कानाकानी (दे १ ६१)।

कण्णोस्सरिअ [दे] देखो **कण्णस्सरिय** (दे २, २४)।

कण्ह पु [कृष्ण] कन्द विशेष (उत्त ३६, ९९)।

कण्ह पु [कृष्ण] १ श्रीकृष्ण, माता देवकी और पिता वसुदेव से उत्पन्न नववां वासुदेव (णाया १, १६)। २ पाचवां वासुदेव और बलदेव के पूर्व जन्म के गुरू का नाम (सम १५३)। ३ देशावकाशिक व्रत को अतिचरित

वर्षों तक जैनी दीक्षा का पालन कर अन्त में उसका त्याग कर दिया था (णाया १, १६; उव)।
कंडरीय वि [कण्डरीक] १ अशोभन, असुन्दर। २ अप्रधान (सूअनि १४७, १५३)।
कंडलि } स्त्री [कन्दरिका] गुफा, कन्दरा
कंडलिआ } (पि ३३३, हे २, ३८, कुमा)।
कंडवा स्त्री [कण्डवा] वाद्य-विशेष (राय)।
कंडार सक [उत् + कृ] खुदना, छील-छाल कर ठीक करना। सकृ.
'णूणं दुवे इह पआवइणो जअम्मि,
जे देहणिम्मवणजोव्वणदाणदक्खा।
एक्कें घडेइ पढमं कुमरीणमंग,
कंडारिऊण पअडेइ पुणो दुईओ' (कप्पू)।
कंडावेल्ली स्त्री [काण्डवल्ली] वनस्पति-विशेष (पण्ण १)।
कंडिअ वि [कण्डित] साफ-सुथरा किया हुआ (दे १, ११५)।
कंडियायण न [कण्डिकायन] वैशाली (विहार) का एक चैत्य (भग १५)।
कंडिल्ल पुं [काण्डिल्य] १ काण्डिल्य-गोत्र का प्रवर्त्तक ऋषि-विशेष। २ पुंस्त्री काण्डिल्य गोत्र उत्पन्न। ३ न. गोत्र-विशेष, जो माण्डव्य गोत्र की एक शाखा है (ठा ७—पत्र ३६०)। °यण पु [°यन] स्वनाम ख्यात ऋषि-विशेष (चंद १०)।
कंडु देखो कड्डू (राज)।
कंडु देखो कंदु (सूअ १, ५)।
कंडुअ सक [कण्डूय्] खुजवाना। कंडुअइ (हे १, १२१, उव), कंडुअए (पि ४६२)। वकृ कंडुअंत (गा ६६०), कंडुअमाण (प्रासू २८)।
कंडुअ पुं [कान्दविक] हलवाई, मिठाई बेचनेवाला, 'राया चिंतेइ, कओ कंदुयस्स जलकंतरयणसपत्ती?' (आवम)।
कंडुअ } पुं [कन्दुक] गेंद (दे ३, ५६,
कंडग } राज)।
कंडुज्जुय वि [काण्डर्जु] वाण की तरह सीधा (स ३१७, गा ३५२)।
कंडुयग वि [कण्डूयक] खुजानेवाला (औप)।
कंडुयण न [कण्डूयन] १ खुजली, खाज, पामा, रोग-विशेष। २ खुजवाना, 'पामागहियस्स जहा, कंडुयणं दुक्खमेव मूढस्स' (स ५१५, उव २६४ टी; गउड)।
कंडुयय देखो कंडुयग, 'अकंडुयएहिं' (पण्ह २, १—पत्र १००)।
कंडुरु पुं [कण्डुरु] स्वनाम-ख्यात एक राजा, जिसने रामचन्द्र के भाई भरत के साथ जैनी दीक्षा ली थी (पउम ८५, ५)।
कंडू स्त्री [कण्डू] १ खुजलाहट, खुजवाना (णाया १, ५)। २ रोग-विशेष, पामा, खाज (णाया १, १३)।
कंडूइ स्त्री [कण्डूति] ऊपर देखो (गा ५३२, सुर २, २३)।
कंडूइअ न [कण्डूयित] खुजवाना (सूअ १, ३, ३, गा १८१)।
कंडूय देखो कंडुअ = कण्डूय्। कंडूयइ (महा)। वकृ. कंडूयमाण (महा)।
कंडूयग वि [कण्डूयक] खुजवानेवाला (ठा ५, १)।
कंडूयण देखो कंडुयण (उप २५६, सुपा १७६, २२७)।
कंडूयय देखो कंडूयग (महा)।
कंडूर पु [दे] वक, वगुला (दे २, ६)।
कंडूल वि [कण्डूल] खाजवाला, कण्डू-युक्त (कुमा)।
कंत सक [कृत्] १ काटना, छेदना। २ कातना, चरखे मे सूता बनाना, 'सल्लं कंतति अप्पणो' (सूअ १, ८, १०)। कंतामि (पिंडभा ३५)।
कंत वि [कान्त] १ मनोहर, सुन्दर (कुमा)। २ अभिलषित, वाञ्छित (णाया १, १)। ३ पु पति, स्वामी (पाअ)। ४ देव विशेष (सुज्ज १६)। ५ न कान्ति, प्रभा (आचा २,५,१)।
कंत वि [क्रान्त] गत, गुजरा हुआ (प्राप)।
कंता स्त्री [कान्ता] १ स्त्री, नारी (सुर ३, १४, सुपा ५७३)। २ रावण की एक पत्नी का नाम (पउम ७४, ११)। ३ एक योग-दृष्टि (राज)।
कंतार न [कान्तार] १ अरण्य, जंगल (पाअ)। २ दुष्ट, दूषित। ३ निराश्रय। ४ पागल (कप्पू)।
कंतार पुन [कान्तार] जल-फलादि-रहित अरण्य, 'कंतारो' (सम्मत्त १६६)।
कंति स्त्री [कान्ति] १ तेज, प्रकाश (सुर २, २३६)। २ शोभा, सौन्दर्य (पाअ)। ३ इस नाम की रावण की एक पत्नी (पउम ७४, ११)। ४ अहिंसा (पण्ह २,१)। ५ इच्छा। ६ चन्द्र की एक कला (राज, विक १०७)। °पुरी स्त्री [°पुरी] नगरी-विशेष (ती)। °म, °ल्ल वि [°मत्] कान्ति युक्त (आवम, गउड, सुपा ८, १८८)।
कंति स्त्री [क्रान्ति] १ परिवर्त्तन, फेरफार। २ गमन, गति (नाट—विक्र ६०)।
कंतु पु [दे] काम, कामदेव (दे २, १)।
कंथक } पु [कन्थक] अश्व की एक जाति
कंथग } (ठा ४, ३, उत्त २३), 'जहा से
कंथय } कंबोयाण आइन्ने कंथए सिया' (उत्त ११)।
कंथा स्त्री [कन्था] कथड़ी, गुदड़ी, पुराने वस्त्र से बना हुआ ओढना (हे १, १८७)।
कंथार पुं [कन्थार] वृक्ष विशेष (उप २२० टी)।
कंथारिया } स्त्री [कन्थारिका, °री] वृक्ष-
कंथारी } विशेष (उप १०३१ टी)। °वण न [°वन] उज्जैन के समीप का एक जंगल जहां अवन्तीसुकुमार-नामक जैन मुनि ने अनशन व्रत किया था (आक)।
कंथेर पु [कन्थेर] वृक्ष-विशेष (राज)।
कंथेरी स्त्री [कन्थेरी] कण्टकमय वृक्ष-विशेष (उर ३, २)।
कंद अक [क्रन्द्] कांदना, रोना। कंदइ (पि २३१)। भूका कंदिंसु (पि ५१६)। वकृ कंदंत (गा ५८४), कन्दमाण (णाया १, १)।
कंद वि [दे] १ दृढ, मजबूत। २ मत्त, उन्मत्त। ३ न. स्तरण, आच्छादन, (दे २, ५१)।
कंद पु [क्रन्द, क्रन्दित] व्यन्तर देवो की एक जाति (ठा २, ३—पत्र ८५)।
कंद पु [कन्द] १ गूदेदार और बिना रेशे की जड, जमीकन्द, सूरन शकरकन्द, बिलारीकन्द, ओल, गाजर, लहसुन वगैरह (जी ६)। २ मूल, जड (गउड)। ३ छन्द विशेष (पिंग)।
कंद पुं [स्कन्द] कार्त्तिकेय, षडानन (कुमा हे २, ५, षड्)।

कद (मा) देखो कड = कृत (प्राकृ १०३)।
कदग देखो कयग (हम्मीर ३४)।
कदण देखो कडण = कदन (कुमा)।
कदली देखो कयली (पएण १—पत्र ३२)।
कदु देखो कउ = क्रतु (प्राकृ १२)।
कदुअ (शौ) अ [कृत्वा] करके (प्राकृ ८८)।
कदुइया स्त्री [दे] वल्ली-विशेष, कद्दू, लौकी (पएण १—पत्र ३३)।
कदुशण (मा) वि [कदुष्ण] थोडा गरम (प्राकृ १०२)।
कद्दम पुन [कर्दम] कीचड, काँदो (कुप्र ६६)। °ल वि [°ल] कीचडवाला (सूअनि १६१)।
कद्दम } पु [कर्दम] १ कादो, कीच (पएह
कद्दमग } १ ८)। २ देव विशेष, एक नाग-राज (भग ६, ३)।
कद्दमिअ वि [कर्दमित] पङ्क-युक्त, कीचड वाला (से ७, २०, गउड)।
कद्दमिअ पु [दे] महिष, भैंसा (दे २, १५)।
कन्न देखो कण्ण = कर्ण (सुर १ २, सुर २, १७१, सुपा ५२४, धम्म १२ टी ठा ४, २, सुपा ६५, पाअ)। °ायस पु [°ावतस] कान का आभूषण (पाअ)।
कन्न देखो कण्ण (कुलक)। °एव देखो कण्ण-देव (कुप्र ४)। °वट्टि, °ावट्टि स्त्री [°वृत्ति] किनारा, अग्र भाग (कुप्र ३३१, ३३४, विचार ३२७ पव १२५)।
कन्नउज्ज देखो कण्णउज्ज (कुमा)।
कन्नगा स्त्री [कन्यका] कन्या, लडकी, कुमारी (सुर ३, ८२२, महा)।
कन्नस वि [कनीयस्] कनिष्ठ, जघन्य 'कन्नसमज्झिमजेट्ठा' (पव १५७)।
कन्ना देखो कण्णा (सुर २, १५४, पाअ)।
कन्नाड देखो कण्णाड (भवि)।
कन्नारिय वि [दे] विभूषित अलंकृत, 'आएहे कन्नारिउ गडदु' (भवि)।
कन्नीरह पु [कर्णीरथ] एक प्रकार की शिविका, धनाढ्य का एक प्रकार का वाहन (णाया १ ३)।
कन्नुल्लड (अप) पु [कर्ण] कान, श्रवणेन्द्रिय (कुमा)।
कन्नेरय देखो कण्णिआर (कुमा)।
कन्नोली [दे] देखो कण्णोल्ली (पाअ)।
कन्ह देखो कण्ह (सुपा ५६६, कप्प)। °सह न [°सह] जैन साधुओं के एक कुल का नाम (कप्प)।
कपय देखो कमन्व (प्राकृ १०)।
कपिजल पु [कपिञ्जल] पक्षि-विशेष—१ चातक। २ गौरा पक्षी (पएह १, १)।
कपूर देखो कप्पूर (श्रा २७)।
कप्प अक [क्लृप्] १ समर्थ होना। २ कल्पना, काम मे आना। ३ सक. काटना, छेदना। कप्पइ कप्पए (कप्प, महा, पिंग)। कर्म कप्पिज्जइ (हे ४, ३५७)। कृ कप्प-णिज्ज (आव ६)। प्रयो कप्पावेज्ज (निचू १७)। वकृ कप्पावत (निचू १७)।
कप्प सक [कल्पय्] १ करना, बनाना। २ वर्णन करना। ३ कल्पना करना। वकृ कप्पेमाण (विपा १, १)। संकृ कप्पेऊण (पचव १)।
कप्प वि [कल्प्य] ग्रहण-योग्य (पचा १२)।
कप्प पु [कल्प] १ प्रक्षालन (पिंड २६६, २७१, ३०५, गच्छ २, ३२)। २ आचार, व्यवहार (वव १ पव ६६)। ३ दशाश्रु-तस्कन्ध सूत्र। ४ कल्प-सूत्र। ५ व्यवहार सूत्र (वव १)। ६ वि उचित (पचा १८, ३०)। °काल पु [°काल] प्रभूत काल (सूत्र १, १, ३, १६)। °धर वि [°धर] कल्प तथा व्यवहार सूत्र का जानकार (वव १)।
कप्प पु [कल्प] १ काल-विशेष, देवो के दो हजार युग परिमित समय, 'कम्माण कप्पिआण काहि कप्पतरेसु णिव्वेस' (अच्चु १८, कुमा)। २ शास्त्रोक्त विधि, अनुष्ठान (ठा ६)। ३ शास्त्र-विशेष (त्रिसे १०७५, सुपा ३२४) ४ कम्बल-प्रमुख उपकरण (ओघ ४०)। ५ देवो का स्थान, बारह देवलोक (भग ५, ४, ठा २, १०)। ६ बारह देवलोक निवासी देव, वमानिक देव (सम २)। ७ वृक्ष-विशेष, मनोवाञ्छित फल को देनेवाला वृक्ष, कल्प-वृक्ष (कुमा)। ८ शस्त्र-विशेष, 'असिखेडयकप्पतामरविहत्था' (पउम ६, ७३)। ९ अधिवास, स्थान (वृह १)। १० राजा नन्द का एक मन्त्री (राज)। ११ वि. समर्थ, शक्तिमान् (णाया १, १३)। १२ सदृश तुल्य, 'केवलकप्प' (आवम, पएह २, २)। °ट्ठ पु [°स्थ] बालक, बच्चा (वव ७)। °ट्ठिइ स्त्री [°स्थिति] साधुओ का शास्त्रोक्त अनुष्ठान (वृह ६)। °ट्ठिया स्त्री [°स्थिका] १ लडकी, बालिका (वव ४)। २ तरुण स्त्री (वृह १)। °ट्ठी स्त्री [°स्था] १ बालिका, लडकी (वव ६)। २ कुलाङ्गना, कुल वधू (वव ३)। °तरु पुं [°तरु] कल्प-वृक्ष (प्रासू १६८, हे २, ७९)। °त्थी स्त्री [°स्त्री] देवी, देव-स्त्री (ठा ३)। °दुम, °द्दुम पुं [°द्रुम] कल्प-वृक्ष (धण ६, महा) °पायव पु [°पादप] कल्प-वृक्ष (पडि, सुपा ३६)। °पाहुड न [°प्राभृत] जैन ग्रन्थ विशेष (ती)। °रुक्ख पु [°वृक्ष] कल्प-वृक्ष (पएह १, ४)। °वडिंसय न [°ावतंसक] १ विमान-विशेष। २ विमान-वासी देव-विशेष (निर)। °वडिसया स्त्री [°ावतंसिका] जैन ग्रन्थ-विशेष, जिसमे कल्पा-वतंसक देव-विमानो का वर्णन है (राय, निर १)। °विडवि पुं [°विटपिन्] कल्प-वृक्ष (सुपा १२९)। °साल पु [°शाल] कल्प-वृक्ष (उप १४२ टी)। °साहि पु [°शाखिन्] कल्प-वृक्ष (सुपा ३९९)। °सुत्त न [°सूत्र] श्रीभद्रबाहु स्वामि-विरचित एक जैन ग्रन्थ (कप्प, कम)। °सुय न [°श्रुत] १ ज्ञान-विशेष। २ ग्रन्थ-विशेष (णदि)। °ाईअ पु [°ातीत] उत्तम जाति के देव-विशेष, ग्रैवेयक और अनुत्तर विमान के निवासी देव (पएह १, ५ पएण १)। °ाग पु [°ाक] विधि को जाननेवाला (कम, औप)। °ाय पुं [°ाय] कर, चुङ्गी, राज-देय भाग (विपा १, ३)।
कप्पंत पु [कल्पान्त] प्रलय-काल, संहार-समय (कप्पू)।
कप्पड पु [कर्पट] १ कपडा, वस्त्र (पउम २५, १८, सुपा ३४४, स १८०)। २ जीर्ण वस्त्र, लकुटाकार कपडा (पएह १, ३)।
कप्पडिअ वि [कार्पटिक] भिक्षुक, भीखमंगा (णाया १, ८, सुपा १३८, वृह १)।
कप्पडिअ वि [कार्पटिक] कपटी, मायावी (णाया १, ८—पत्र १५०)।
कप्पण न [कल्पन] छेदन, काटना (सुपा १३८)।

कंस न [कांस्य] १ धातु-विशेष, कासा। २ वाद्य विशेष। ३ परिमाण विशेष। ४ जल पीने का पात्र, प्याला (हे १, २९, ७०)। °ताल न [°ताल] वाद्य-विशेष (जीव ३)। °पत्ती, °पाई स्त्री [°पात्री] कासा का बना हुआ पात्र-विशेष (कप्प, ठा ९)। °पाय न [°पात्र] कासा का बना हुआ पात्र (दस ६)।

कंसार पु [दे] कसार, एक प्रकार की मिठाई, 'ता करेऊण कंसारं तालपुडमंजुय चेग विसमोयग गोमे उवणेमि एयाए' (स १८७)।

कंसारी स्त्री [दे] त्रीन्द्रिय क्षुद्र जन्तु की एक जाति (जी १८)।

कंसाल पु [कांस्याल] वाद्य-विशेष (हे २, ९२, सुपा ५०)।

कंसाला स्त्री [कंसताला, कांस्यताला] वाद्य का एक प्रकार का निर्घोष, ताल (णंदि)।

कंसालिया स्त्री [कांस्यतालिका] एक प्रकार का वाद्य (सुपा २४२)।

कंसिअ पुं [कांस्यिक] १ कसेरा, कँसारी, कांस्य-कार (हे १, ७०)। २ वाद्य विशेष (सुपा २४२)।

कंसिआ स्त्री [कंसिका] १ ताल (णाया १, १७)। २ वाद्य-विशेष (आचा २)।

ककाणि पुस्त्री [दे] मर्म स्थान, 'अरुस्स विउकति ककाणओ से' (सूअ १, ५, २, १५)।

ककुध } देखो कउह = ककुद (पि २०९,
ककुभ } हे २, १७४)।

ककुह देखो कउह = ककुद (ठा ५, १, णाया १, १७, विपा १, २)। ५ हरिवंश का एक राजा (पउम २२, ९९)।

ककुहा देखो कउहा (पड्)।

कक्क पुं [कल्क] १ उद्वर्त्तन-द्रव्य, शरीर पर का मैल दूर करने के लिए लगाया जाता द्रव्य (सूअ १ ९, निचू १)। २ न पाप (भग १२, ५)। ३ माया, कपट (सम ७१)। °गरुग न [°गुरुक] माया, कपट (पण्ह १, २—पत्र २८)।

कक्क पुन [कल्क] १ चन्दन आदि उद्वर्तन द्रव्य (दस ६, ६४)। २ प्रसूति-रोग आदि मे किया जाता क्षार-पातन। ३ लोध्र आदि मे उद्वर्तन (पव २—गाथा ११५)। °कुरुया स्त्री [°करुका] माया, कपट (पव २)।

कक्क पु [कर्क] १ चक्रवर्त्ती का एक देव-कृत प्रासाद (उत्त १३, १३)। २ राशि-विशेष, कर्क राशि (धर्मवि ६६)।

कक्कंध पु [कर्कन्ध] ग्रहाधिष्ठायक देव विशेष (ठा २, ३)।

कक्कंधु स्त्री [कर्कन्धु] वैर का वृक्ष (पाअ)।

कक्कड पु [कर्कट] कर्कराशि (विचार १०९)।

कक्कड न [कर्कट] १ जलजन्तु विशेष, कुलीर (पाअ)। २ ककडी, फल-विशेष (पव ४)। ३ हृदय का एक प्रकार का वायु (भग १०, ३)।

कक्कडच्छ पु [कर्कटाक्ष] ककडी, खीरा (कप्प)।

कक्कडिया } स्त्री [कर्कटिका, °टी] ककडी
कक्कडी } (खीरा) का गाछ (उप ९९१)।

कक्कणा स्त्री [कल्कना] १ पाप। २ माया (पण्ह १, २)।

कक्कब पुं [दे] गुड बनाते समय की इक्षु-रस की एक अवस्था, इक्षु रस का विकार-विशेष (पिंड २८३)।

कक्कर पु [कर्कर] १ ककर, पत्थर (विपा १, २ गउड, सुपा ५९७, प्रासू १६८)। २ वि कठिन, परुष (आचू ४)। ३ कर्कर आवाज वाला (उत्त ७)।

कक्करणया स्त्री [कर्करणता] १ दोषोद्भावन, दोषोद्भावनगर्भित प्रलाप (ठा ३, ३—पत्र १४७)।

कक्कराइय न [कर्करायित] १ ककर की तरह आचरित। २ दोषोच्चारण, दोष-प्रकटन (आव ४)।

कक्कस वि [कर्कश] १ कठोर परुष (पाअ, सुपा ५८, आरा ९४, पउम ३१, ६६)। २ प्रखर, चण्ड। ३ तीव्र, प्रगाढ (विपा १, १)। ४ अनिष्ट, हानि कारक (भग ६, ३३)। ५ निष्ठुर, निर्दय (उप)। ६ चबा-चबा कर कहा हुआ वचन (आचा २, ४ १)।

कक्कस } पु [दे] दध्योदन, करम्ब (दे
कक्कसार } २ १४)।

कक्कसेण पु [कर्कसेन] अतीत उत्सर्पिणी-काल मे उत्पन्न एक स्वनाम ख्यात कुलकर पुरुष (राज)।

कक्कारुआ स्त्री [कर्कारुका] १ कूष्माण्ड वल्ली, कोहडा का गाछ, कक्कारुआ गोठडलित्तवेंटा' (मृच्छ ५९)।

कक्किड पु [दे] कृकलास, गिरगिट, गुजराती मे 'काकेडो' (दे २, ५)।

कक्कि पु [कल्किन्] भावष्य मे होनेवाला पाटलिपुत्र का एक रजा (ती)।

कक्किय न [कल्किक] माग (सूअ १, १०)।

कक्केअण पुन [कर्केतन] रत्न की एक जाति (कप्प पउम ३ ७५)।

कक्केरअ पुं [कर्केरक] मणि-विशेष की एक जाति (मृच्छ २०२)।

कक्कोड न [कर्कोट] शाक विशेष, ककरैल, ककोडा (राज)। देखो कक्कोडय।

कक्कोडई स्त्री [कर्कोटकी] ककोडे का वृक्ष ककरैल का गाछ (पाण १—पत्र ३३)।

कक्कोडय न [कर्कोटक] देखो कक्कोड। २ पु अनुवेलन्धर-नामक एक नाग-राज। ३ उसका आवास पर्वत (भग ३, ६, इक)।

कक्कोल पु [कङ्कोल] १ वृक्ष-विशेष, शीतल-चीनी के वृक्ष का एक भेद (गउड, स ७१)। २ न फल-विशेष, जो सुगधी होता है (पण्ह २, ५)। देखो ककोल।

कक्कोली स्त्री [कङ्कोली] वृक्ष-विशेष (कुप्र २४९)।

कक्ख देखो कच्छ = कक्ष (उव, कप्प, सुर १, ८८, पउम ४४, १, पि ३१८, ४२०)।

कक्खग वि [कक्षाग] १ कक्षा-प्राप्त। २ पु कक्षा का केश (तदु ३९)।

कक्खड देखो कक्कस (सम ४१, ठा १, १, वज्जा ८०, उव)।

कक्खड वि [दे] पीन, पुष्ट (दे २, ११, कप्प आचा, भवि)।

कक्खडगी स्त्री [दे] सखी, सहेली (दे २, १९)।

कक्खल [दे] देखो कक्कम्प (पड्)।

कक्खा देखो कच्छा = कक्षा (पाअ, णाया १, ८, सुर ११, २२१)।

कग्गाड पु [दे] १ अपामार्ग, चिरचिरा, लटजीरा। २ किलाट, दूध की मलाई (दे २, ५४)।

कग्घायल पु [दे] किलाट, दूध का विकार, दूध की मलाई (दे २, २२)।

१५, २०२, दे २, ५४, अणु; कप्प, औप)। ५ कलह, झगडा (षड्)।

कमल पुन [कमल] एक देव-विमान (देवेन्द्र १४२)। °णअण पु [नयन] विष्णु, नारायण (समु १५२)।

कमल न [कमल] १ कमल, पद्म, अरविन्द, (कप्प, कुमा, प्रासू ७१)। २ कमलाख्य इन्द्राणी का सिंहासन। ३ संख्या-विशेष, 'कमलाग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (जो २)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। ५ पु कमलाख्य इन्द्राणी के पूर्व जन्म का पिता (णाया २)। ६ श्रेष्ठि-विशेष (सुपा २७५)। ७ पिंगल-प्रसिद्ध एक गण, अन्त्य अक्षर जिसमे गुरु हो वह गण (पिंग)। ८ एकजात का चावल, कलम (प्राप्र)। °क्ख पु [°क्ष] इस नाम का एक यक्ष (सण)। °जय न [°जय] विद्याधरो का एक नगर (इक)। °जोणि पु [°योनि] ब्रह्मा, विधाता (पाअ)। °पुर न [°पुर] विद्याधरो का एक नगर (इक)। °प्पभा स्त्री [प्रभा] १ काल-नामक पिशाचेन्द्र की अग्र-महिषी (ठा ४, १)। २ 'ज्ञाता धर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन (णाया २)। °बन्धु पु [°बन्धु] १ सूर्य, रवि (पउम ७०, ६२)। २ इस नाम का एक राजा (पउम २२, ९८)। °माला स्त्री [°माला] पोतनपुर नगर के राजा आनन्द की एक रानी, भगवान् अजितनाथ की मातामही—दादी (पउम ५, ५२)। °रय पु [°रजस्] कमल का पराग (पाअ)। °वडिंसय न [°वतंसक] कमला-नामक इन्द्राणी का प्रासाद (णाया २)। °सिरी स्त्री [°श्री] कमला-नामक इन्द्राणी की पूर्व जन्म की माता का नाम (णाया २)। °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] इस नाम की एक रानी (उप ७२८ टी)। °सेणा स्त्री [°सेना] एक राज-पुत्री (महा)। °ाअर, °ागर पु [°ाकर] १ कमलो का समूह। २ सरोवर, ह्रद वगैरह जलाशय (मे १, २६, कप्प)। °ापीड, °ामेल पु [°ापीड] भरत चक्रवर्ती का अश्व-रत्न (ज ३, पि ९२)। °ासण पु [°ासन] ब्रह्मा, विधाता (पाअ, दे ७, ६२)।

कमलग न [कमलाङ्ग] संख्या विशेष, चौरासी लाख महापद की संख्या (जो २)।

कमला स्त्री [दे] हरिणी, मृगी (पाअ)।

कमला स्त्री [कमला] १ लक्ष्मी (पाअ, सुपा २७५)। २ रावण की एक पत्नी (पउम ७४, ९)। ३ काल नामक पिशाचेन्द्र की एक अग्र-महिषी, इन्द्राणी विशेष (ठा ४, १)। ४ 'ज्ञाताधर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन (णाया २)। ५ छन्द-विशेष (पिंग)। °अर पु [°कर] धनाढ्य, धनी (से १, २६)।

कमलिणी स्त्री [कमलिनी] पद्मिनी, कमल का गाछ (पाअ)।

कमलुब्भव पु [कमलोद्भव] ब्रह्मा (त्रि ८२)।

कमव } अक [स्वप्] सोना सो जाना।
कमवस } कमवइ (षड्)। कमवसइ (हे ४, १४६, कुमा)।

कमसो अ [क्रमश] क्रम से, एक-एक करके (सुर १, ११९)।

कमिअ वि [दे] उपसर्पित, पास आया हुआ (दे २ ३)।

कमिय वि [क्रान्त] उल्लंघित (दस २, ५)।

कमेलग } पुस्त्री [क्रमेलक] उष्ट्र, ऊँट (पाअ,
कमेलय } उप १०३१ टी, कप्प ३३)। स्त्री °गी (उप १०३१ टी)।

कम्म सक [कृ] हजामत करना, क्षौर-कर्म करना। कम्मइ (हे ४, ७२, षड्)। वकृ कम्मंत (कुमा)।

कम्म सक [भुज्] भोजन करना। कम्मइ (षड्)। कम्मेइ (हे ४, ११०)।

कम्म देखो कम = कम्

कम्म पुन [कर्मन्] १ जीव द्वारा ग्रहण किया जाता अत्यन्त सूक्ष्म पुद्गल (ठा ४, ४, कम्म १, १)। २ काम, क्रिया, करनी, व्यापार (ठा १, आचा), 'कम्मा णाणफला' (पि १७२)। ३ जो किया जाय वह। ४ व्याकरण-प्रसिद्ध कारक-विशेष (विसे २०९९, ३४२०)। ५ वह स्थान, जहाँ पर चूना वगैरह पकाया जाता है (पण्ह २, ५ - पत्र १२३)। ६ पूर्व-कृति, भाग्य, 'कम्मत्ता दुब्भगा चेव' (सूअ १, ३, १, आचा (षड्)। ७ कार्मण शरीर। ८ कार्मण-शरीर नामकर्म, कर्म-विशेष (कम्म २, २१)। °कर वि [°कर] नौकर, चाकर (आचा)। देखो °गार। °करण न [°करण] कर्म-विषयक बन्धन, जीव-पराक्रम-विशेष (भग ६, १)। °कार वि [°कार] नौकर (पउम १७, ७)। °किब्बिस वि [°किल्बिष] कर्म-चाण्डाल, खराब काम करनेवाला (उत्त ३)। °क्खंध पुं [°स्कन्ध] कर्म-पुद्गलो का पिण्ड (कम्म ५)। °गर देखो °कर (प्राकृ)। °गार पुं [°कार] १ कारीगर, शिल्पी (णाया १, ९)। देखो °कर। °जोग पु [°योग] शास्त्रोक्त अनुष्ठान (कम्म)। °ट्ठाण न [°स्थान] कारखाना (आचा)। °ट्ठिइ स्त्री [°स्थिति] १ कर्म-पुद्गलो का अवस्थान-समय (भग ६, ३)। २ वि. संसारी जीव (भग १४ ६)। °णिसेग पु [°निषेक] कर्म-पुद्गलो की रचना-विशेष (भग ६, ३)। °धारय पुं [°धारय] व्याकरण प्रसिद्ध एक समास (अणु)। °परिसाडणा स्त्री [°परि-शाटना] कर्म-पुद्गलो का जीव-प्रदेशो से पृथक्करण (सूअ १, १)। °पुरिस पुं [°पुरुष] कर्म-प्रधान पुरुष—१ कारीगर, शिल्पी (सूअ १, ४, १)। २ महारम्भ करने-वाले वासुदेव वगैरह राजा लोग (ठा ३, १—पत्र ११३)। °प्पवाय न [°प्रवाद] जैन ग्रन्थाश-विशेष आठवाँ पूर्व (सम २६)। °बंध पु [°बन्ध] कर्म पुद्गलो का आत्मा मे लगना, कर्मो मे आत्मा का बन्धन (आव ३)। °भूमग वि [°भूमिक] कर्म-भूमि मे उत्पन्न (पण्ण १)। °भूमि स्त्री [°भूमि] कर्म-प्रधान भूमि, भरत क्षेत्र वगैरह (जी २३)। °भूमिग देखो °भूमग (पण्ण २३)। °भूमिय वि [°भूमिज] कर्म-भूमि मे उत्पन्न (ठा ३, १—पत्र ११४)। °मास पु [°मास] श्रावण मास (जो १)। °मासग पु [°माषक] मान-विशेष, पाँच गुञ्जा, पाँच रत्ती (अणु)। °य वि [°ज] १ कर्म से उत्पन्न होनेवाला। १ कर्म-पुद्गलो का बना हुआ शरीर-विशेष, कार्मण शरीर (ठा २, १, ५, १)। °या स्त्री [°जा] अभ्यास से उत्पन्न होनेवाली बुद्धि, अनुभव (णंदि)। °लेस्सा स्त्री [°लेश्या] कर्म द्वारा होनेवाला जीव का परिणाम (भग १४, १)। °वग्गणा स्त्री [°वर्गणा] कर्म-रूप मे परिणत होनेवाला

कच्छुल पु [कच्छुल] गुल्म-विशेष (पएण १—पत्र ३२)।

कच्छुल्ल पुं [कच्छुल्ल] स्वनाम ख्यात एक नारद मुनि (णाया १, १६)।

कच्छू देखो कच्छु (प्रासू ७२)।

कच्छोटी स्त्री [दे] कछौटी, लंगोटी (रभा—टि)।

कज्ज वि [कार्य] १ जो किया जाय वह। २ करने योग्य। ३ जो किया जा सके (हे २, २४)। ४ न प्रयोजन, उद्देश्य, 'न य माहेइ सकज्जं' (प्रासू २७, कप्पू)। ५ कारण, हेतु (वव ७)। ६ काम, काज,

'अन्नह परिचिंतिज्जइ,
सहरिसकंडुज्जएण हियएण।
परिणमइ अन्नह च्चिय,
कज्जारंभो विहिवसेण'
(सुर ४, १६)।

°जाण वि [°ज्ञ] कार्य को जाननेवाला (उप ६४८)। °सेण पुं [°सेन] अतीत उत्सर्पिणी-काल में उत्पन्न स्वनाम ख्यात एक कुलकर-पुरुष (सम १५०)।

कज्जआ (शौ) स्त्री [कन्यका] कन्या, कुमारी (प्राकृ ८७)।

कज्जउड पु [दे] अनर्थ (दे २, १७)।

कज्जमाण वि [क्रियमाण] जो किया जाता हो वह, 'कज्जं च कज्जमाणं च आगमिस्सं च पावगं' (सूअ १, ८)।

कज्जल न [कज्जल] १ काजल, मसी। २ अञ्जन, सुरमा (कुमा)। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] सुदर्शना-नामक जम्बू-वृक्ष की उत्तर दिशा में स्थित एक पुष्करिणी (जीव ३)।

कज्जलइअ वि [कज्जलित] १ काजलवाला। २ श्याम, कृष्ण (पाअ)।

कज्जलंगी स्त्री [कज्जलाङ्गी] कज्जल-गृह, दीप के ऊपर रखा जाता पात्र, जिसमें काजल इकट्ठा होता है, कजरौटी (अत, णाया १, १—पत्र ६)।

कज्जला स्त्री [कज्जला] इस नाम की एक पुष्करिणी (इक)।

कज्जलाव अक [ब्रुड्] डूबना, बूडना, 'आउसंतो समणा! एय ते णावाए उदयं उत्तिंगेण आसवइ, उवरुवरि वा णावा कज्जलावेइ' (आचा २, ३, १, १६)। वकृ कज्जलावेमाण (आचा २, ३, १, १६)।

कज्जलिअ देखो कज्जलइअ (से २, ३६, गउड)।

कज्जव } पु [दे] १ विष्ठा, मैला। २ तृण
कज्जवय } वगैरह का समूह, कूडा, कतवार (दे २, ११, उप १७६, ५६३, स २६४, दे ६, ५६, अणु)।

कज्जिय वि [कार्यिक] कार्यार्थी, प्रयोजनार्थी (वव ३)।

कज्जोवग पुं [कार्योपग] अठासी महाग्रहों में एक ग्रह का नाम (ठा २, ३—पत्र ७८)।

कज्झाल न [दे] सेवाल, एक प्रकार की घास, जो जलाशयों में लगती है (दे २, ८)।

कटरि (अप) अ [कटरे] इन अर्थों का द्योतक अव्यय—१ आश्चर्य, विस्मय, 'कटरि थणंतरु मुद्धडहे, जे मणु विच्चि न माइ' (हे ४, ३५०)। २ प्रशंसा, श्लाघा, 'कटरि भालु सुविसालु, कटरि मुहकमल पसन्निम' (धम्म ११ टी)।

कटार (अप) न [दे] छुरी, क्षुरिका (हे ४, ४४५)।

कट्ट सक [कृत्] काटना, छेदना। कट्टइ (भवि)। सकृ कट्टि, कट्टिवि, कट्टिअ (रभा, भवि, पिंग)।

कट्ट वि [कृत्त] काटा हुआ, छिन्न (उप १८०)।

कट्ट न [कष्ट] १ दु:ख। २ वि. कष्ट-कारक, कष्टदाई (पिंग)।

कट्टर पुंन [दे] कढी में डाला हुआ घी का वडा, खाद्य-विशेष (पिंड ६३७)।

कट्टर न [दे] खण्ड, अंश, टुकडा, 'से जहा चित्तयकट्टरे इ वा वियाणपट्टे इ वा' (अनु)।

कट्टराय न [दे] छुरी, शस्त्र-विशेष (स १४३)।

कट्टारी स्त्री [दे] क्षुरिका, छुरी (दे २, ४)।

कट्टिअ वि [कर्त्तित] काटा हुआ, छेदित (पिंग)।

कट्टु वि [कर्त्तृ] कर्ता, करनेवाला (पड्)।

कट्टु अ [कृत्वा] करके (णाया १, ५, कप्प भग)।

कट्टोरग पुं [दे] कटोरा, प्याला, पात्र-विशेष, 'तओ पासेहिं करोडगा कट्टोरगा मंकुआ सिप्पाओ य ठविज्जंति' (निचू १)।

कट्ठ न [कष्ट] १ दु:ख, पीडा, व्यथा (कुमा)। २ पाप। ३ वि. कष्ट-दायक, पीडा-कारक (हे २, ३४, ९०)। °हर न [°गृह] कठघरा, काठ की बनी हुई चारदीवारी (सुर २, १८१)।

कट्ठ न [काष्ठ] काठ, लकडी (कुमा, सुपा ३५४)। २ पुं राजगृह नगर का निवासी एक स्वनाम-ख्यात श्रेष्ठी। (आवम)। °कम्मंत न [°कर्मान्त] लकडी का कारखाना (आचा २, २)। °करण न [°करण] श्यामक-नामक गृहस्थ के एक खेत का नाम (कप्प)। °कार पु [°कार] काठ-कर्म से जीविका चलानेवाला (अणु)। °कोलंब पु [°कोलम्ब] वृक्ष की शाखा के नीचे झुकता हुआ अग्र-भाग (अनु)। °खाय पुं [°खाद] कीट-विशेष, घुण (ठा ४)। °दल न [°दल] रहर की दाल (राज)। °पाउया स्त्री [°पादुका] काठ का जूता, खडाऊँ (अनु ४)। °पुत्तलिया स्त्री [°पुत्तलिका] कठपुतली (अणु)। °पेज्जा स्त्री [°पेया] १ मूँग वगैरह का क्वाथ। २ घृत में तली हुई तण्डुल की राब (उवा)। °महु न [°मधु] पुष्प-मकरन्द (कुमा)। °मूल न [°मूल] द्विदल धान्य, जिसका दो टुकडा समान होता है ऐसा चना, मूँग आदि अन्न (बृह १)। °हार पु [°हार] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष, क्षुद्र कीट-विशेष (जीव १)। °हारय पु [°हारक] कठहरा, लकडहारा (सुपा ३८५)।

कट्ठ वि [कृष्ट] विलिखित, चासा हुआ, 'खीर-दुमहेट्ठपथकट्ठोल्ला इयरेण य मीसो य' (ओघ ३३९)।

कट्ठण न [कर्षण] आकर्षण, खींचाव (गउड)।

कट्ठहार पु [काष्ठहार] कठहरा, लकडहारा, काष्ठवाहक (कुप्र १०४)।

कट्ठा स्त्री [काष्ठा] १ दिशा (सम ८८)। २ हद, सीमा, 'कवडस्स अहो परा कट्ठा' (श्रा १६)। ३ काल का एक परिमाण, अठारह निमेष (तंदु)। ४ प्रकर्ष (सुज ९)।

°पिय पु [°वनमालप्रिय] इस नाम का एक यक्ष (विपा २, १)। °वम्म पु [°वर्मन्] नृप-विशेष, भगवान् विमलनाथ का पिता (सम १५१)। °वीरिय पु [°वीर्य] कार्त-वीर्य के पिता का नाम (सूअ १, ८)।

कयं अ [कृतम्] अलम् बस (उवर १४४)।

कयंगला स्त्री [कृतङ्गला] श्रावस्ती नगरी के समीप की एक नगरी (भग)।

कयंत पु [कृतान्त] १ यम मृत्यु मरण (सुपा १६६ सुर २ ५)। २ शास्त्र सिद्धान्त, मरणंति कय त प कयंतसिद्ध उ मयरहिस्रं' (सार्ध ११७, सुपा १२६)। ३ रावण का इस नाम एक सुभट (पउम ५६, ३१)। °मुह पु [°मुख] रामचन्द्र के एक सेनापति का नाम (पउम ६४ ६२)। °वयण पु [°वदन] राम का एक सेनापति (पउम ६४, २०)।

कयंध देखो कमंध (हे १, १३६, षड्)।

कयंद देखो कलंद (पएण १, हे १,२२२)।

कयंब पु [कदम्ब] समूह, 'अप्पाण पिव सव्वं जीवकयंबं च रक्खइ सयावि' (सबोध २०)।

कयंबिय वि [कदम्बित] अलंकृत, विभूषित (कप्प)।

कयवुअ देखो कलवुअ (कप्प)।

कयग वि [कृतक] प्रयत्न-जन्य (धर्मसं २६६, ४१४)।

कयग वि [क्रायक] खरीदनेवाला (वव १ टी)।

कयग पुं [कतक] १ वृक्ष-विशेष, निर्मली। २ न कतक-फल, निर्मली-फल, पायपमारी, 'जह कयगमजणाई जनवुट्ठीओ विमोहिंति' (विसे ५३६ टी)।

कयज्ज वि [कदर्य] कंजूस, कृपण (राज)।

कयड्डि पुं [कपर्दिन्] इस नाम का एक यक्ष देवता (सुपा ५४२)।

कयण न [कदन] हिंसा मार डालना (हे १, २१७)।

कयत्थ सक [कदर्थय्] हैरान करना, पीडा करना। कयत्थइ (धम्म ८ टी)। कवकृ. कयत्थिज्जंत (स ८)।

कयत्थण न [कदर्थन] हैरानी, हैरान करना, पीडन (सुपा १८०, महा)।

कयत्थणा स्त्री [कदर्थना] ऊपर देखो (स ४७२, सुर १५, १)।

कयत्थिय वि [कदर्थित] हैरान किया हुआ पीडित (सुपा २२७ महा)।

कयन्न वि [कदन्न] खराब अन्न (धर्मवि १३६)।

कयम वि [कतम] बहुत में से कौन? (स ४०२)।

कयर वि [कतर] दो में से कौन? (हे ३, ५८)।

कयर पु [करीर] १ वृक्ष-विशेष, करीर, करील (स २५६)। २ न करीर का फल (पभा १४)।

कयल पु [कदल] १ कदली-वृक्ष, केला का गाछ। २ न कदली फल, केला (हे १, १६७)।

कयल न [दे] अलिञ्जर, पानी भरने का बड़ा गगरा, झज्झर, मटका (दे २, ४)।

कयलि, °ली स्त्री [कदलि, °ली] केला का गाछ (महा, हे १, २२०)। °समागम पुं [°समागम] इस नाम का एक गाँव (आवम)। °हर न [°गृह] कदली-स्तम्भ से बनाया हुआ घर (महा, सुर ३, १४, ११६)।

कयल्लुअ देखो कय = कृत (सुख २ ३)।

कयवर पु [दे] १ कतवार, कूडा, मैला (णाया १, १ सुपा ३८, ८७, स २६४, भत्त ८६, पाअ, सए पुप्फ ३१, निचू ७)। २ विष्ठा (आव १)।

कयवरुज्झिया स्त्री [दे कचवरोज्झिका] कूड़ा साफ करनेवाली दासी (णाया १, ७— पत्र ११७)।

कयवाउ पुं [कृकवाकु] कुक्कुट, मुकडा, मुर्गा (गउड)।

कयवाय पु [कृकवाक] कुक्कुट, कुकडा, मुर्गा (पाअ)।

कयसण न [कदशन] खराब भोजन (विवे १३६)।

कयमेहर पु [दे] कुकडा, मुर्गा, 'कयमेहराण मुम्मइ आलावो भत्ति गोसम्मि' (वज्जा ७२)।

कया अ [कदा] कब, किस समय? (ठा २, ४, प्रासू १६६)।

कयाइ अ [कदापि] कभी भी, किसी समय भी (उवा)।

कयाइ, कयाइ, कयाई अ [कदाचित्] १ किसी समय, कभी (उवा, वसु) 'अह अन्नया कयाई' (सुपा ५०६, पि ७३)। २ वितर्क-द्योतक अव्यय 'नट्ठे मि कयाइत्ति' (भग १५)।

कयाण न [क्रयाणक] बेचने योग्य वस्तु, करियाना (उप पृ १२०)।

कयाणग पुंन देखो कयाण, 'देव निम्रवाहणाए कयाणगे किं न विक्केह' (सिरि ४७८)।

कयार पु [दे] कतवार, कूड़ा, मैला (दे २, ११, भवि)।

कयावि देखो कयाइ = कदापि (प्रासू १३१)।

कयोग पुं [कयोग] नट-विशेष, बहुरूपिया (बृह ४)।

कर सक [कृ] करना, बनाना। करइ (हे ४, २३४)। भूका कासी, काही, काहीअ, करिंसु, करेंसु, अकासि, अकासी (हे ४, १६२, कुमा, भग, कप्प)। भवि काहिइ, काही, करिस्सइ, करिहिइ, काहं, काहिमि (हे १,५, पि ५३३, कुमा)। कर्म. कज्जइ, करीइ, करिज्जइ (भग, हे ४, २५०)। वकृ. करंत, करित, करेंत, करेमाण (पि ५०६, रयण ७२, से २, १५, सुर २, २४०, उवा)। कवकृ कज्जमाण, किरत, कीरमाण (पि ५४७, कुमा, गा २७२, रयण ८६)। संकृ करित्ता, करित्ताण, करिदूण, काउ, काऊण, काऊणं, कट्टु, करिअ, किच्चा, कियाणं (कप्प, दस ३, षड्, कुमा भग अभि ४१, सूअ १,१, १, औप)। हेकृ. काउं, करेत्तए (कुमा, भग ८, २)। कृ करणिज्ज, करणीअ, करिअव्व, करेअव्व, कायव्व (दस १० एड्, स २१, प्रासू १४८, कुमा)। प्रयो करावेइ, करावेई (पि ५५३, ५५२)।

कर पु [कर] एक महाग्रह (सुज्ज २०)।

कर पुं [कर] १ हस्त, हाथ (सुर १, ५४, प्रासू ५७)। २ महसूल, चुंगी (उप ७६८ टी, सुर १, ५४)। ३ किरण, रश्मि (उप ७६८ टी, कुमा)। हाथी की सूँड (कुमा)। ५ करका, शिला वृष्टि, ओला, 'करच्छडाभडियपक्खिउले' (पउम ६६, १५)। °ग्गह पु [°ग्रह] १ हाथ से ग्रहण करना 'न्द्र्य-

कडमड पुंन [दे] उद्वेग (सक्षि ४७)।

कडय न [कटक] ऊख आदि की यष्टि (आचा २, १०, २)।

कडय देखो गडग (सुर १, १६३, पाअ, गउड, महा, सुपा १६२, दे ५, ३३)। ६ लश्कर, सैन्य (ठा ६)। १० पु काशी देश का एक राजा (महा)। °वई स्त्री [°वती] राजा कटक की एक कन्या (महा)।

कडयड पु [कडकड] कड कड आवाज, 'वत्थइ खरपवहाणयकडम(? य)डभज्जतद्दुम-गहणं' (पउम ६४, ४४)।

कडयडिय वि [दे] परावर्त्तित, फिराया हुआ, घुमाया हुआ, 'न कुम्मह कडयटिय दिट्ठि नं पविहउ गिरिवरु' (सुपा १७६)।

कडसक्करा स्त्री [दे] वंश शलाका वंश की सलाई (विपा १, ६)।

कडसार न [कटसार] मुनि का एक उप-करण, आसन, 'न वि लेइ जिणा पिछी (? छि)। नवि कुंडी (? डि) कमंडल च कडसारं' (विचार १२८)।

कडसी स्त्री [दे] श्मशान, मसान (दे २, ६)।

कडहू पु [कटभू] वृक्ष-विशेष (वृह ?)।

कडा स्त्री [दे] कडी, सिकडी, जजीर की लडी, 'वियडकवाडकडाण खडक्खओ निसुणिओ तत्तो' (सुपा ४१४)।

कडार न [दे] नारिकेल, नरियर (दे २,१०)।

कडार पु [कडार] १ वर्ण-विशेष, तामडा वर्ण, भूरा रग। २ वि कपिल वर्णवाला, भूरा रग का, मटमैला रग का (पाअ, रयण ७७, सुपा ३३, ६२)।

कडाली स्त्री [दे कटालिका] घोडे के मुंह पर बाधने का एक उपकरण (अनु ६)।

कडाह पु [कटाह] १ कडाह, लोहे का पात्र, लोहे की बडी कडाही (अनु ६, नाट—मृच्छ ३)। २ वृक्ष विशेष (पउम १३,७६)। ३ पाजर की हड्डी शरीर का एक अवयव (पएण १)।

कडाहपल्हत्थिअ न [दे] दोनो पार्श्वो का अपवर्त्तन, पार्श्वो को घुमाना-फिराना (दे २, २५)।

कडि स्त्री [कटि] १ कमर, कटी (विपा १, २, अनु ६)। २ वृक्षादि का मध्य भाग (ज १)। °तड न [°तट] १ कटी-तट। २ मध्य भाग (राय)। °पट्टय न [°पट्टक] धोती, वस्त्र-विशेष (बृह ४)। °पत्त न [°पत्र] १ सर्गादि वृक्ष की पत्ती। २ पतली कमर (अनु ५)। °यल न [°तल] कटी-प्रदेश (भवि)। °ल्ल न [°टीय] देखो कडिल्ल (दे) का दूसरा अर्थ। °वट्टी स्त्री [°पट्टी] कमर का पट्टा, कमर-पट्टा (सुपा ३३१)। °वत्थ न [°वस्त्र] धोती, कमर मे पहनने का कपडा (दे २, १७)। °सुत्त न [°सूत्र] कमर का आभूषण, मेखला (सम १८३, कप्पू)। °हत्थ पुं [°हस्त] कमर पर रखा हुआ हाथ (दे २, १७)।

कडि वि [कटिन्] चटाईवाला (अणु १४४)।

कडिअ वि [कटित] १ कट—चटाई से आच्छादित (कप्प)। २ कट से सस्कृत (आचा २, २, १)। ३ एक दूसरे मे मिला हुआ, 'घणकडियकडिच्छाए' (औप)।

कडिअ वि [दे] प्रीणित, खुशी किया हुआ (षड्)।

कडिखभ पु [दे] १ कमर पर रखा हुआ हाथ (पाअ, दे २, १७)। २ कमर मे किया हुआ आघात (दे, २, १७)।

कडिण पुन [दे] तृण विशेष (सूअ २, २, ७)।

कडित्त देखो कालत्त (णाया १, १ टी—पत्र ६)।

कडिभिल्ल न [दे] शरीर के एक भाग मे होनेवाला कुष्ठ विशेष। (बृह ३)।

कडिल्ल वि [दे] १ छिद्र-रहित, निश्छिद्र (दे २, ५२, षड्)। २ न कटी-वस्त्र, कमर मे पहनने का वस्त्र, धोती वगैरह (दे २, ५२, पाअ, षड्, सुपा १५२, कप्पू, भवि, विसे २६००)। ३ वन, जगल, अटवी, ससारभवकडिल्ले सजोगवियोगसोगतरुगहणे। कुपहपणट्ठाण तुमं, सत्थाहो नाह ! उप्पन्नो।' (पउम २, ४५, वव २, दे २, ५२)। ४ वि गहन, निविड, सान्द्र, 'भिल्लिभिल्लायइकडिल्ल' (उप १०३१ टी, दे २, ५२, षड्)। ५ आशीर्वाद, आसीस। ६ पु दौवारिक, प्रतीहार। ७ विपक्ष, शत्रु, दुश्मन (दे २, ५२, षड्)। ८ कटाह, लोहे का बडा पात्र (ओघ ६२)। ९ उपकरण-विशेष (दस ६)।

कडी देखो कडि (सुपा २२६)।

कडु } पु [कटुक] १ कडुआ, तिक्त, रस-
कडुअ } विशेष (ठा १)। २ वि तीता, तिक्त रस वाला (से १, ६१, कुमा)। ३ अनिष्ट (पएह २, ५)। ४ दारुण, भयकर (पएह १, १)। ५ परुष, निष्ठुर (नाट—रत्ना ६६)। ६ स्त्री वनस्पति-विशेष, कुटकी (हे २, १५५)।

कडुअ (शौ) अ [कृत्वा] करके (हे २, २७२)।

कडुआल पु [दे] घण्टा, घण्ट (दे २, ५७)। २ छोटी मछली (दे २, ५७, पाअ)।

कडुइअ वि [कटुकित] १ कडुआ किया हुआ। २ दूषित (गउड)।

कडुइया स्त्री [कटुकी] वल्ली-विशेष, कुटकी (पएण १)।

कडुच्छय } पुस्त्री [दे] देखो कडच्छु,
कडुच्छु } 'धूवकडुच्छयहत्था' (सुपा ५१,
कडुच्छुय } पाअ, निर ३, १, धम्म)।

कडुयाविय वि [दे] १ प्रहृत, जिस पर प्रहार किया गया हो वह (उप पृ ६५)। २ व्यथित, पीडित, 'सा य (चोरवाडी) कुमारपहारक-डुयाविया भग्गा परम्मुहा कया' (महा)। ३ हराया हुआ, पराभूत। ४ भारी विपद् मे फँसा हुआ (भवि)।

कडूइद (शौ) वि [कटूकृत] कटुक किया हुआ (नाट)।

कडेवर न [कलेवर] शरीर, देह (राय, हे ४, ३६५)।

कड्ढ सक [कृष्] १ खीचना। २ चास करना। ३ रेखा करना। ४ पढना। ५ उच्चारण करना। कड्ढइ (हे ४, १८७)। वकृ कड्ढत, कड्ढमाण (गा ६८७, महा)। कवकृ कड्ढिज्जत, कड्ढिज्जमाण (से ५, २६, ६, ३६ पएह १, ३)। सकृ कड्ढिऊण, कड्ढेउ, कड्ढित्तु कड्ढिय (महा), 'कड्ढेत्तु, नमोक्कार' (पचव), कड्ढिउ (पि ५७७)। कृ कड्ढेयव्व (सुपा २३६)।

कड्ढ पु [कर्ष] खीचाव, आकर्षण (उत्त १६)।

कड्ढण न [कर्षण] १ खीचाव, आकर्षण,

करपत्त न [करपत्र] करपत्र, क्रकच (विपा १, ६)।

करभ पु [करभ] ऊँट, उष्ट्र (पएह १, १; गउड)।

करभी स्त्री [करभी] १ उष्ट्री, स्त्री-ऊँट, ऊँटनी (पिंड)। २ धान्य भरने का बड़ा पात्र (वृह २ कम)। देखो करही।

करम वि [दे] क्षीण, दुर्बल (दे २, ६; पड्)।

करमंद पु [करमन्द] फलवाला वृक्ष-विशेष (गउड)।

करमद्द पु [करमर्द] वृक्ष विशेष, करौंदा (पएण १—पत्र ३२)।

करमरी स्त्री [दे] हठ-हृत स्त्री, बाँदी (दे २, १५, पड्; गा ५२७; पाश्र)।

करय देखो करग (उप ७२८ टी; पएण १; कुमा; उवा ७)। ३ पक्षि-विशेष (पएह १, १)।

करयटी स्त्री [दे] मल्लिका वेला का गाछ (दे २, १८)।

करयर अक [करकराय्] कर-कर' आवाज करना। वकृ करयरत (पउम ६८ ३५)।

कररुद्द पुं [कररुद्र] छन्द-विशेष (पिंग)।

करलि } स्त्री [कदलि, °ली] १ पताका।
करली } २ हरिण की एक जाति। ३ हाथी का एक आभरण (हे १, १२०; कुमा)।

करव पुन [दे करक] जल-पात्र, 'पालिकरवाउ नीरं पाएउ पुच्छिश्रो' (सुपा २१४; ६३१)।

करवटी स्त्री [करमन्टी] लता-विशेष, एक जात का पेड़ (दे, ८, ३५)।

करवत्तिआ स्त्री [करपात्रिका] जल पात्र-विशेष (श्रा १२)।

करवाल पु [करवाल] खड्ग, तलवार (पाश्र; सुपा ६०)।

करविया स्त्री [दे करकिका] पान पात्र-विशेष (सुपा ४८८)।

करवीर पु [करवीर] वृक्ष विशेष, कनेर का गाछ (गउड)।

करसी [दे] देखो कडसी (हे २, १७४)।

करह पु [करभ] १ ऊँट, उष्ट्र (पउम ५६, ४४; पाश्र; कुमा, सुपा ४२७)। २ सुगंधी द्रव्य-विशेष (गउड ६६८)।

करहञ्च न [करहञ्च] छन्द-विशेष (पिंग)।

करहाड पु [करहाट] वृक्ष विशेष, करहार शिफा कन्द, मैनफल (गउड)।

करहाडय पु [करहाटक] १ ऊपर देखो। २ देश-विशेष, 'करहाडयविसए वत्नउरयमनिवेसम्मि' (स २५३)।

करही देखो करभी। ३ इस नाम का एक छन्द (पिंग)। °रुह वि [°रोह] ऊँट सवार, उष्ट्री पर सवारी करने वाला (महा)।

कराइणी स्त्री [दे] शाल्मली वृक्ष, सेमर का पेड़ (दे २ १८)।

कराडह्न पु [कराडह्न] स्वनाम ख्यात एक राजा (ती ३७)।

कराल वि [कराल] १ उन्नत, ऊँचा (अनु ५)। २ दन्तुरित, जिसका दंत लम्बा और बाहर निकला हो वह (गउड)। ३ भयानक, भयंकर (कप्पू)। ४ फाड़नेवाला। ५ विकसित (से १० ८१)। ६ व्यवहित (से ११,६६)। ७ वि इस नाम का विदेह-देश का राजा (धर्म २)।

कराल सक [करालय्] १ फाड़ना, छिद्र करना। २ विकसित करना। करालेइ (से १०, ४१)।

करालिअ वि [करालित] १ दन्तुरित, लम्बा और बहिर्निर्गत दंतवाला (से १२, १०)। २ व्यवहित किया हुआ, अन्तरालवाला बनाया हुआ (से ११, ८६)। ३ भयंकर बनाया हुआ (कप्पू)।

करली स्त्री [दे] दतवन, दाँत शुद्ध करने का काष्ठ (दे २, १२)।

करावण न [कारण] करवाना, बनवाना, निर्मापन (सुपा ३८२, धम्म ८ टी)।

कराविय वि [कारित] कराया हुआ (स ५६८; महा)।

करि पु [करिन्] हाथी, हस्ती (पाश्र, प्रासू १६६)। °धरणट्ठाण न [°धरणस्थान] हाथी को बाँधने का डोर—रज्जू, रस्सा (पाश्र)। °नाह पु [°नाथ] १ ऐरावण, इन्द्र का हाथी। २ उत्तम हस्ती (सुपा १०६)। °बंधण न [°बन्धन] हाथी पकड़ने का गर्त्त (पाश्र)। °मयर पुं [°मकर] जल हस्ती (पाश्र)।

करिअ पु [करिक] एक महाग्रह (सुज २०)।

करिअ } देखो कर = कृ।
करिअव्व }

करिआ स्त्री [दे] मदिरा परोसने का पात्र (दे २, १४)।

करिएव्वउ } (अप) देखो कायव्व (हे ४,
करिएव्वउं } ४३८; कुमा; ति २७४)।

करित देखो कर=कृ।

करिणिआ } स्त्री [करिणी] हस्तिनी, हथिनी
करिणी } (महा; पउम ८०, ५३; सुपा ४)।

करिण पु [करिन्] हाथी, हस्ती, 'रे दुट्ठ करिणाहम! कुजाय! मयनजुवइमुहरीणा' (उप ६ टी)।

करित्ता }
करित्ताण } देखो कर = कृ।
करिदूण }

करिमरी [दे] देखो करमरी (गा ५४, ५५)।

करिल्ल न [दे] १ वंशांकुर, बाँस का कोपड़, रेतीली भूमि में उत्पन्न होनेवाला वृक्ष-विशेष, जिसे ऊँट खाते हैं (दे २, १०)। २ करेला, तरकारी-विशेष 'वालुपुरिनाइकुड्डुप्पलाइसंभियकरिल्लमाई' (विसे २६३)। ३ अंकुर, कन्दल (अनु)। ४ पुं करील वृक्ष, करील (पड्)। ५ वि वंशांकुर के समान, 'हाहा ते चेय करिल्लणियमावाहुमयणदुल्लिय' (गउड)।

करिस देखो कड्ढ=कृष्। करिसइ (हे ४, १८७)। वकृ. करिसंत (सुर १ २३०)। संकृ करिसित्ता (पि ५८२)।

करिस पुं [कर्ष] १ आकर्षण, खींचाव। २ विलेखन रेखा-करण। ३ मान विशेष, पल का चौथा हिस्सा (जो १)।

करिस देखो करीस (हे १ १०१; पाश्र)।

करिसग वि [कर्षक] खेती करनेवाला, कृषीवल (उत्त ३; श्रावम)।

करिसण न [कर्षण] १ खींचाव, आकर्षण। २ चासना, खेती करना। ३ कृषि, खेती (पएह १, १)।

करिसय देखो करिसग (सुपा २, २६०; सुर २, ८७)।

करिसावण पुन [कार्षापण] सिक्का-विशेष (विसे ५०६ अणु)।

करिसिद (शौ) वि [कर्षित] १ आकर्षित। २ चासा हुआ, खेती किया हुआ (हेका ३३१)।

[°लता] चमरेन्द्र के सोम नामक लोकपाल-देव की एक अग्रमहिषी (ठा ४, १—पत्र २०४)। °वियाणग पु [°वितानक] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३, पत्र ७७)। °सताणग पु [°सतानक] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७७)। °ावलि स्त्री [°ावलि] १ सुवर्ण का एक आभूषण, सुवर्ण की मणियों से बना आभूषण (अंत २७)। २ तप-विशेष, एक प्रकार की तपश्चर्या (औप)। ३ पुं द्वीप-विशेष। ४ समुद्र-विशेष (जीव ३)। °ावलिपविभत्ति स्त्री [°ावलिप्रविभक्ति] नाट्य का एक प्रकार (राय)। °ावलिभद्द पु [°ावलिभद्र] कनकावलि द्वीप का एक अधिष्ठायक देव (जीव ३)। °ावलिमहाभद्द पु [°ावलिमहाभद्र] कनकावलिवर नामक समुद्र का एक अधिष्ठायक देव (जीव ३)। °ावलिमहावर पुं [°ावलिमहावर] कनकावलिवर नामक समुद्र का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °ावलिवर पु [°ावलिवर] १ इस नाम का एक द्वीप। २ इस नाम का एक समुद्र। कनकावलिवर समुद्र का अधिष्ठाता देव-विशेष (जीव ३)। °ावलिवरभद्द पुं [°ावलिवरभद्र] कनकावलिवर द्वीप का एक अधिपति देव (जीव ३)। °ावलिवरमहाभद्द पु [°ावलिवरमहाभद्र] कनकावलिवर नामक द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °ावलिवरोभास पु [°ावलिवरावभास] १ इस नाम का एक द्वीप। २ इस नाम का एक समुद्र (जीव ३)। °ावलिवरोभासभद्द पु [°ावलिवरावभासभद्र] कनकावलिवराव-भास द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °ावलिवरोभासमहाभद्द पु [°ावलिवरा-वभासमहाभद्र] कनकावलिवरावभास द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °ावलि-वरोभासमहावर पु [°ावलिवरावभास-महावर] कनकावलिवरावभास-समुद्र का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °ावलिवरोभास-वर पु [°ावलिवरावभासवर] कनकावलि-वरावभास-समुद्र का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३) °ावली स्त्री [°ावली] देखो °ावलि का पहला और दूसरा अर्थ (पव २७१)। देखो कणय = कनक।

कणगसत्तरि स्त्री [कनकसप्तति] एक प्राचीन जैनेतर शास्त्र (अणु ३६)।

कणगा स्त्री [कनका] १ भीम-नामक राक्ष-सेन्द्र की एक अग्रमहिषी (ठा ४, २—पत्र ७७)। २ चमरेन्द्र के सोम-नामक लोकपाल की एक अग्र-महिषी (ठा ४, २)। ३ 'णाया-धम्मकहा' सूत्र का एक अध्ययन (णाया २, १)। ४ क्षुद्र जन्तु-विशेष की एक जाति, चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष (जीव १)।

कणगुत्तम पु [कनकोत्तम] इस नाम का एक देव (दीव)।

कणय पु [दे] १ फूलों को इकट्ठा करना, अवचय। २ बाण, शर, 'असिखेडयकणयतो-मर—' (पउम ८, ८८, पण्ह १, १, दे २, ५६, पाअ)।

कणय पुन [कनक] एक देव विमान (देवेन्द्र १४४)।

कणय देखो कणग = कनक (ओघ ३१० भा, प्रासू १५६, हे १, २२८, उव, पाअ, महा, कुमा)। ८ पु राजा जनक के एक भाई का नाम (पउम २८, १३२)। ९ रावण का इस नाम का सुभट (पउम ५६, ३२)। १० धतूरा, वृक्ष-विशेष (से ९, ४८)। ११ वृक्ष-विशेष (पण्ण १—पत्र ३३)। १२ न छन्द-विशेष (पिंग)। °पव्वय पु [°पर्वत] देखो कणग-गिरि (सुपा ४३)। °मय वि [°मय] सुवर्ण का बना हुआ (सुपा २०)। °ाभ न [°ाभ] विद्याधरों का एक नगर (इक)। °ाली स्त्री [°ाली] घर का एक भाग (णाया १,१—पत्र १२)। °ावली स्त्री [°ावली] देखो कणगावली। ३ एक राज-पत्नी (पउम ७, ४५)।

कणयंदी स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष, पाडरी, पाढल (दे २, ५८)।

कणवित्राणय पु [कणवितानक] देखो कणगवियाणग (सुज्ज २०)।

कणवी स्त्री [दे] कन्या (वज्जा १०८)।

कणवीर पु [करवीर] १ वृक्ष विशेष, कनेर (हे १, २५३, सुपा १५१)। २ न कनेर का फूल (पण्ह १,३)।

कणि पुस्त्री [दे] स्फुरण, स्फूर्ति, 'कणी फुरणं' (पाअ)।

कणिआर देखो कण्णिआर (कुमा, प्राप्र हे २, ९५)।

कणिआरिअ वि [दे] १ कानी आँख से जो देखा गया हो वह। २ न कानी नजर से देखना (दे २, २४)।

कणिक्क स्त्री [कणिका] कनेक, रोटी के लिए पानी से भिजाया हुआ आटा (दे १, ३७)।

कणिक्क वि [कणिक्क] मत्स्य-विशेष (जीव १)।

कणिक्का देखो कणिका (आ १४)।

कणिट्ठ वि [कनिष्ठ] १ छोटा लघु (पउम १५, १२, हे २, १७२)। २ निकृष्ट, जघन्य (रंभा)।

कणिअ न [कणित] १ आर्त्त-स्वर। २ आवाज, ध्वनि (आव ४)।

कणिय° } देखो कणिका (कप्प)। २
कणिया } कणिका, चावल का टुकड़ा (आचा २, १, ८)। °कुंडय देखो कण-कुंडग (स ४८७)।

कणिया स्त्री [कणिता] वीणा-विशेष (जीव ३)।

कणिर वि [कणितृ] आवाज करनेवाला (उप पृ १०३, पाअ)।

कणिल्ल न [कनिलय] नक्षत्र-विशेष का गोत्र (इक)।

कणिट्ठिका स्त्री [कनिष्ठिका] छोटी अंगुली (अंगविज्जा, अध्या० ६ श्लो० १७५२)।

कणिस न [कणिश] सस्य-शीर्षक, धान्य का अग्र भाग (दे २,६)।

कणिस न [दे] किशारु, सस्य-शूक, सस्य का तीक्ष्ण अग्र भाग (दे २, ६, भवि)।

कणीअ } वि [कनीयस्] छोटा, लघु,
कणीअस } 'तस्स माया कणीअसो णाम' (वसु, वेणी १७९, कप्प, अंत १४)।

कणीणिगा स्त्री [कनीनिका] १ आँख की तारा। २ छोटी उंगली (राज)।

कणीर देखो कणेर (चंड)।

कणुय न [कणुक] त्वग् वगैरह का अवयव (आचा २, १, ८)।

कणूया देखो कणिया = कणिका (राज)।

आवाज (भग ६ ३३, राय)। ३ चूना आदि से मिश्रित जल (विग १, ६)।

कलकल अक [कलकलाय्] 'कल कल' आवाज करना। वकृ कलकलंत, कलकलित, कलकलेंत, कलकलमाण (पराह १, १, ३, औप)।

कलकलिअ न [कलकलित] कोलाहल करना (दे ६, ३६)।

कलकलिअ वि [कलकलित] कलकल शब्द से युक्त (सिरि ६६४)।

कलक्ख देखो कडक्ख = कटाक्ष (गा ७०२)।

कलचुलि पु [कलचुलि] १ क्षत्रिय विशेष। २ इस नाम का एक क्षत्रिय-वंश (पिंग)।

कलण देखो करण 'तामुवि कलरणेसु हासु मुहसकप्पो' (अच्चु ८२)।

कलण न [कलन] १ शब्द, आवाज। २ सख्यान, गिनती (विसे २०२८)। ३ धारण करना (सुपा २५)। ४ जानना (सुपा १६)। ५ प्राप्ति, ग्रहण 'जुत्त वा मयलकलाकलण रयणायरसुअम्स' (श्रा १६)।

कलणा स्त्री [कलना] १ कृति, करण, 'जुएण कदप्प-दप्प गिहुवरणकलणाकंदलिल्ल कुणता' (कप्पू)। २ धारण करना, लगाना, 'मज्झरणहे मिरिखट्पकलणा' (कप्पू)।

कलणिज्ज देखो कल = कलय्।

कलत्त न [कलत्र] स्त्री, भार्या (प्रासू ७६)।

कलधोय देखो कलहोय (औप)।

कलभ पुस्त्री [कलभ] १ हाथी का बच्चा (णाया १, १)। २ बच्चा, बालक, 'उवमासु अपज्जत्तेभकलभदन्तावहासमूरुजुअं' (हे १, ७)।

कलभिआ स्त्री [कलभिका] हाथी का स्त्री बच्चा (णाया १ १—पत्र ६३)।

कलम पुं [दे कलम] १ चोर तस्कर (दे २, १०, पाअ, आचा)। २ एक प्रकार का उत्तम चावल (उवा जं २, पाअ)।

कलमल पु [कलमल] १ पेट का मल (ठा ३, ३)। २ वि दुर्गन्धि, दुर्गन्धवाला (उप ८३३)

कलमल पुन [दे] १ मदन-वेदन (सक्ष ४७)। २ कंपन, थरथराहट, घृणा, 'असुईए अट्ठीण सोणियकिमिजालपुण्णमाणा। नामपि चिंतियं खलु कलमलय जणइ हिययम्मि' (मन ३३)।

कलय देखो कालय (हे १, ६७)।

कलय पु [दे] १ अर्जुन वृक्ष। २ सोनार, सुवर्णकार (दे २ ५८)।

कलय पुं [कलाद] सोनार सुवर्णकार (षड्)।

कलयंदि वि [दे] १ प्रसिद्ध, विख्यात। २ स्त्री वृक्ष-विशेष, पाडरी, पाढल (दे २, ५८)।

कलयज्जल न [दे] ओष्ठ-लेप, होठ पर लगाया जाता लेप-विशेष (भवि)।

कलयल देखो कलकल (हे २, २२०, पाअ, गा ५३५)।

कलयलिर वि [कलकलायितृ] कलकल करने-वाला (वज्जा ६६)।

कलरुद्दाणी स्त्री [कलरुद्राणी] इस नाम का छन्द (पिंग)।

कलल न [कलल] १ वीर्य और शोणित का समुदाय, 'पाइज्जति रडता मुतत्ततउतवसनिभ कलल' (पउम ११८ ८), वसकललसंभ-सोणिय—' (पउम ३६ ५६)। २ गर्भ-वेष्टन चर्म। ३ गर्भ के अवयव रूप रेत विकार (गउड)। ४ कांदो, कीचड, कर्दम (गउड)।

कललिय वि [कललित] कर्दमित, कीचवाला किया हुआ 'अणोणणकलह्विअलियकेसरकी-लालक्ललियद्दारा' (गउड)।

कलविंक पु [कलविङ्क] पक्षि विशेष, चटक, गौरिया पक्षी, गौरैया (पाअ गउड)।

कलवू स्त्री [दे] तुम्बी पात्र (दे २, १२, षड्)।

कलस पु [कलश] १ कलश, घडा, (उवा, णाय १, १)। २ स्कन्धक छन्द का एक भेद, छन्द-विशेष (पिंग)।

कलस पुन [कलश] १ एक देव विमान। (देवेन्द्र १४०)। २ वाद्य-विशेष (राय ५० टी)।

कलसिया स्त्री [कलशिका] १ छोटा घडा (अणु)। २ वाद्य विशेष (आचू १)।

कलह पुं [कलह] क्लेश, झगडा (उव, औप)।

कलह देखो कलभ (उव, पउम ७८, २८)।

कलह न [दे] तलवार की म्यान (दे २, ५, पाअ)।

कलह अक [कलहाय्] झगडा करना, लडाई करना। वकृ कलहंत, कलहमाण (पउम २८, ४, सुपा ११, २३३, ५४६)।

कलहण न [कलहन] झगडा करना (उव)।

कलहाअ देखो कलह = कलहाय्। कलहाएदि (शौ) (नाट)। वकृ कलहाअंत (गा ६०)।

कलहाइअ वि [कलहायित] कलहवाला, झगडाखोर (पाअ)।

कलहि वि [कलहिन्] झगडाखोर (दे ५, ५४)।

कलहोय न [कलधौत] १ सुवर्ण, सोना (सण)। २ चांदी, रजत (गउड, पराह १, ४, पाअ)।

कला स्त्री [कला] १ अंश, भाग, मात्रा (अनु ४)। २ समय का सूक्ष्म भाग (विसे २०२८)। ३ चन्द्रमा का सोलहवां हिस्सा (प्रासू ६५)। ४ कला, विद्या, विज्ञान (कप्प, राय, प्रासू ११२)। पुरुष योग्य कला के मुख्य बहत्तर और स्त्री-योग्य कला के मुख्य चौसठ भेद हैं, 'बावत्तरी कला' (अणु), 'बावत्तरिकलापंडियावि पुरिसा' (प्रासू १२६), 'चउसट्ठिकलापंडिया' (णाया १, ३)। पुरुष-कला ये हैं—१ लिपि ज्ञान। २ अकगणित। ३ चित्र कला। ४ नाट्यकला। ५ गान, गाना। ६ वाद्य बजाना। ७ स्वर गत (षड्ज, ऋषभ वगैरह स्वरों का ज्ञान)। ८ पुष्कर गत (मृदग, मुरजादि विशेष वाद्य का ज्ञान)। ९ समताल (सगीत के ताल का ज्ञान)। १० द्यूत कला। ११ जनवाद (लोगो के साथ आलाप सलाप करने की विधि)। १२ पासे का खेल। १३ अष्टापद (चौपाट खेलने की रीति)। १४ शीघ्र कवित्व। १५ दक-मृत्तिका (पृथक्करण-विद्या)। १६ पाक कला। १७ पान-विधि (जलपान के गुण दोष का ज्ञान)। १८ वस्त्र-विधि (वस्त्र की सजावट की रीति)। १९ विलेपन विधि। २० शयन-विधि। २१ आर्या (छन्द विशेष) बनाने की रीति। २२ प्रहेलिका (विनोद के लिए पहेलिया—गूढाशय पद्य)। २३ मागधिका (छन्द विशेष)। २४ गाथा (छन्द विशेष)। २५ गीति (छन्द-विशेष)। २६ श्लोक (अनुष्टुप् छन्द)। २७ हिरण्य युक्ति (चादी के आभूषण की यथास्थान योजना)। २८ सुवर्ण-युक्ति। २९ चूर्ण-युक्ति (सुगन्धि पदार्थ बनाने की रीति)। ३० आभरण-विधि (आभूषणो की सजावट)। ३१ तरुणी परिकर्म (स्त्री को सुन्दर बनाने

करनेवाला एक उपासक (सुपा ५६२)। ४ विक्रम की तृतीय शताब्दी का एक प्रसिद्ध जैनाचार्य, दिगम्बर जैन मत के प्रवर्त्तक शिवभूति मुनि के गुरु (विसे २५५३)। ५ काला वर्ण (आचा)। ६ इस नाम का एक परिव्राजक, तापस (औप)। ७ वि. श्याम वर्ण, काला रंगवाला (कुमा)। °ओराल पु [°ओराल] वनस्पति-विशेष (पएण १—पत्र ३४)। °कंद पु [°कन्द] वनस्पति-विशेष, कन्द-विशेष (पएण १—पत्र ३६)। °कणिगार पु [°कर्णिकार] काली कनेर का गाछ (जीव ३)। °कुमार पु [°कुमार] राजा श्रेणिक का एक पुत्र (निर १, ४)। °गोमी स्त्री [°गोमिन्] काला शृगाल 'कण्हगोमी जहा चित्ता, कंटगं वा विचित्तयं' (वव ६)। °णाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, जिसके उदय से जीव का शरीर काला होता है (राज)। °पक्खिय वि [°पाक्षिक] १ क्रूर कर्म करनेवाला (सूत्र २, २)। २ बहुत काल तक संसार में भ्रमण करनेवाला (जीव) (ठा १, १)। °बंधुजीव पु [°बन्धुजीव] वृक्ष विशेष, श्याम पुष्पवाला दुपहरिया (जीव ३)। °भूम, °भोम पु [°भूम] काली जमीन (आवम, विसे १४५८)। °राइ, °राई स्त्री [°राजि, °जी] १ काली रेखा (भग ६, ५, ठा ८)। २ एक इन्द्राणी, ईशानेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ८, जीव ४)। ३ 'ज्ञाता धर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन—परिच्छेद (णाया २, १)। °रिसि पु [°ऋषि] इस नाम का एक ऋषि, जिसका जन्म शंखावती नगरी में हुआ था (ती)। °लेस, °लेस्स वि [°लेश्य] कृष्ण-लेश्यावाला (भग)। °लेसा, लेस्सा स्त्री [°लेश्या] जीव का अति निकृष्ट मन—परिणाम, जघन्य-वृत्ति (भग, सम ११ ठा १ १)। °वडिंसय, °वडेंसय न [°ावतंसक] एक देव-विमान (राज, णाया २, १)। °वल्लि, °वल्ली स्त्री [°वल्लि, °ल्ली] वल्ली-विशेष, नागदमनी लता (पएण १)। °सप्प पु [°सर्प] १ काला साँप (जीव ३)। २ राहु (सुज २०)। देखो कन्ह।

कण्हुई अ [कुतश्चिन्] किसी से (सूत्र १, २, ३, ६)। देखो कण्हुइ।

कण्हा स्त्री [कृष्णा] १ एक इन्द्राणी, ईशानेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ८—पत्र ४२६)। २ एक अन्तकृत् स्त्री (अंत २५)। ३ द्रोपदी, पाण्डवों की स्त्री (राज)। ४ राजा श्रेणिक की एक रानी (निर १, ४)। ५ ब्रह्म देश की एक नदी (आवम)।

कण्हुइ अ [क्वचित्] क्वचित्, कहीं भी (सूत्र १, १)। २ कहां से ? (उत्त २)।

कण्हुई देखो कण्हुइ (सूत्र २ २, २१)।

कतवार पु [दे] कतवार, कूडा (दे २,११)।

कति देखो कइ = कति (पि ४३३, भग)।

कतु देखो कउ = क्रतु (कप्प)।

कत्त सक [कृत्] काटना, छेदना, कतरना। कत्ताहि (पएह १ १)। वकृ कत्तन (ओघ ४६८)।

कत्त सक [कृत्] कातना, चरखे से सूत बनाना। वकृ कत्तत (पिंड ५७४)।

कत्त वि [कृत] निर्मित (मक्षि ४०)।

कत्त न [दे] कलत्र, स्त्री (षड्)।

कत्तण न [कर्तन] कातना (पिंड ६०२)।

कत्तण न [कर्त्तन] १ कतरना, काटना (सम १२५, उप पृ २)। २ वि काटनेवाला, कतरनेवाला (सुर १, ७२)।

कत्तणया स्त्री [कर्त्तनता] लवन, कतराई (सुर १, ७२)।

कत्तर पु [दे] कतवार, कूडा, 'इत्तो य कविलमूसयकत्तरवहुकारिनिड्डुपभिईहिं, केम्मत्र-किमी विरुद्धा' (सुपा २०७)।

कत्तरिअ वि [कृत्त, कर्त्तित] कतरा हुआ, काटा हुआ, लून (सुपा ५४६)।

कत्तरी स्त्री [कर्त्तरी] कतरनी, कैंची (कप्प)।

कत्तवीरिअ पुं [कार्त्तवीर्य] नृप विशेष (सम १५३, पडि ३६)।

कत्तव्व वि [कर्त्तव्य] १ करने योग्य (स १७२)। २ न कार्य, काज, काम (श्रा ६)।

कत्ता स्त्री [दे] अन्धिका द्यूत से वर्त्तिका, कौडी (दे २ १)।

कत्ति स्त्री [कृत्ति] चर्म, चमडा (स ४३६, गउड, णाया १, ८)।

कत्ति° वि [कर्तृ] करनेवाला, 'किरिया ण कत्तिरहिया' (धर्मसं १४५)।

कत्तिकेअ पु [कार्त्तिकेय] महादेव का एक पुत्र, षडानन (दे ३, ५)।

कत्तिगी स्त्री [कार्त्तिकी] कार्त्तिक मास की पूर्णिमा (पउम ८६ ३०, इक)।

कत्तिम वि [कृत्रिम] कृत्रिम, बनावटी (सुपा ८३, ज ७)।

कत्तिय पु [कार्त्तिक] १ कार्त्तिक मास (सम ६५)। २ इस नाम का एक श्रेष्ठी (निर १, ३)। ३ भरत क्षेत्र के एक भावी तीर्थंकर के पूर्व भव का नाम (सम १५४)।

कत्तिया स्त्री [कृत्तिका] नक्षत्र विशेष (सम ११, इक)।

कत्तिया स्त्री [कर्त्तिका] कतरनी, कैंची (सुपा २६०)।

कत्तिया स्त्री [कार्त्तिकी] १ कार्त्तिक मास की पूर्णिमा (सम ६६)। २ कार्त्तिक मास की अमावास्या (चंद १०)।

कत्तियविय वि [दे] कृत्रिम दिखाऊ 'कत्ति-यवियाहिं उवहिप्पहाणगाहिं' (सूत्रनि १, ४)।

कत्तु वि [कर्तृ] करनेवाला, 'कत्ता भुत्ता य पुत्रपावाणं' (श्रा ६)।

कत्तो अ [कुत] कहां से, किससे ? (पउम ४७, ८, कुमा)। °च्चय वि [°त्य] कहां से उत्पन्न ? (विसे १०१६)।

कत्थ सक [कत्थ्] श्लाघा करना, प्रशंसना। कत्थइ (हे १, १८७)।

कत्थ अ [कुत] कहां से ? (षड्)।

कत्थ अ [क, कुत्र] कहां ? (षड्, कुमा, प्रासू १२३)। °इ अ [°चित्] कहीं, किसी जगह (आचा चूण ह २, १७४)।

कत्थ वि [कथ्य] १ कहने योग्य, वचनीय। २ न काव्य का एक भेद (ठा ४, ४—पत्र २८७)। ३ वनस्पति-विशेष (राज)।

कत्थंत देखो कह = कथय्।

कत्थभाणी स्त्री [कस्तभाणी] पानी में होने-वाली वनस्पति-विशेष (पएण १—पत्र ३४)।

कत्थूरिया स्त्री [कस्तूरी] मृग-मद, हरिण की नाभि में होनेवाली सुगन्धित वस्तु (सुपा १४०, स २३६, कप्पू)।
कत्थूरी

कथ वि [दे] १ क्षण, हत। २ क्षीण, दुर्बल (षड्)।

(ठा ३, ३, दे ८, ६५)। ७ वि दक्ष, चतुर (दे ८, ६५)।

कल्लवत्त पु [कल्यवर्त्त] कलेवा, प्रातर्भोजन, जल-पान (स्वप्न ६०, नाट)।

कल्लवाल पु [कल्यपाल] कलवार, शराब वेचनेवाला (मोह ६२)।

कल्लविअ वि [दे] १ तीमित, आर्द्रित। २ विस्तारित, फैलाया हुआ (दे २, १८)।

कल्ला स्त्री [दे] मद्य, दारू (दे २, २)।

कल्लाकल्लि } अ [कल्याकल्य] १ प्रतिदिन, कल्लाकल्लिं } हर रोज (विपा १, ३, णाया १, १८)। २ प्रति-प्रभात, रोज सुबह (उवा, आप)।

कल्लाण न [कल्याण] सुवर्ण (सिरि ३७३)।

कल्लाण पुन [कल्याण] १ सुख, मगल, क्षेम, 'गुणट्ठाणपरिणामे सने जीवाणा सयलकल्लाणा' (उप ६००, महा, प्रासू १४६)। २ निर्वाण, मोक्ष (विसे ३४४०)। ३ विवाह, लग्न (वसु)। ४ जिन भगवान् का पूर्व भव से च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवल ज्ञान तथा मोक्ष-प्राप्ति रूप अवसर, 'पच महाकल्लाणा सव्वेसि जिणाण होंति णिअमेण' (पचा ६)। ५ समृद्धि, वैभव (कप्प)। ६ वृक्ष-विशेष (पणण १)। ७ तप विशेष (पव)। ८ देश-विशेष। ९ नगर विशेष 'कल्लाणदेसे कल्लाणनयरे सकरो णाम राया जिण भत्तो हुत्था' (ती ५१)। १० पुण्य, शुभ कर्म (आचा)। ११ वि हित-कारक, सुख-कारक (जीव ३ उत्त ३)। °कडय न [°कनक] नगर-विशेष (ती)। °कारि वि [°कारिन्] सुखावह, मंगल-कारक (णाया १, १६)।

कल्लाणि वि [कल्याणिन्] कल्याण-प्राप्त (राज)।

कल्लाणी स्त्री [कल्याणी] १ कल्याण करने-वाली स्त्री (गउड)। २ दो वर्ष की बछिया (उत्तर १०३)।

कल्लाल पु [कल्यपाल] कलाल, दारू वेचने-वाला (अणु, आव ६)।

कल्लि अ [कल्ये] कल दिन, कल को (गा ५०२)।

कल्लुग पु [कल्लुक] द्वीन्द्रिय जीव-विशेष, कीट की एक जाति (जीव ३)।

कल्लुय पुं [कल्लुक] द्वीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (पणण १—पत्र ४४)।

कल्लुरिया [दे] देखो कुल्लरिया (राज)।

कल्लेउय पुंन [दे] कलेवा, प्रातराश (ओघ ४६४ टी)।

कल्लोडय पुं [दे] दमनीय वैल, साँड (आचा २, ४, २)।

कल्लोडिआ [दे] देखो कल्होडी (नाट)।

कल्लोल पुं [कल्लोल] तरग, ऊर्मि (औप, प्रासू १२७)।

कल्लोल वि [दे, कल्लोल] शत्रु, दुश्मन (दे २, २)।

कल्लोलिणी स्त्री [कल्लोलिनी] नदी (कप्पू)।

कल्हार न [कह्लार] सफेद कमल (पणण १, दे २, ७६)।

कल्हि देखो कल्लि (गा ८०२)।

कल्होड पुं [दे] वत्सतर, बछड़ा (दे २, ६)।

कल्होडी स्त्री [दे] वत्सतरी, बछिया (दे २, ६)।

कव अक [कु] आवाज करना, शब्द करना। कवइ (हे ४, २३३)।

कवइय वि [कवचित] बख्तरवाला, वर्मित (पउम ७०, ७१, औप)।

कवंध देखो कमध (पण्ह १, ३, महा, गउड)।

कवग्ग पु [कवर्ग] 'क' से 'ङ' तक के पाँच अक्षर (धर्मवि १४)।

कवचिअ देखो कवइय (सिरि १३१६)।

कवचिया स्त्री [कवचिका] कलाचिका, प्रकोष्ठ (राज)।

कवट्टिअ वि [कदर्थित] पीडित, हैरान किया हुआ (हे १, १२४)।

कवड न [कपट] माया, छद्म, शाठ्य (पाअ, सुर ४, १६१)।

कवडि देखो कवड्डि, 'तो भणइ कवडिजक्खो अज्जवि त पुच्छसे एय' (सुपा ५४२)।

कवड्ड पु [कपर्द] बडी कौडी, वराटिका (दे ११०, जी १५)।

कवड्डि पु [कपर्दिन्] १ यक्ष विशेष (सुपा ५१२)। २ महादेव, शिव (कुमा)।

कवड्डिया स्त्री [कपर्दिका] कौडी, वराटिका (सुपा १४, ५८५)।

कवण वि [किम्] कौन? (पउम ७२, ८, कुमा)।

कवय पुन [कवच] वर्म, बख्तर (विपा १, २, पउम २८, ३१, पाअ)।

कवय न [दे] वनस्पति-विशेष, भूमिच्छत्र (दे २, ३)।

कवरी स्त्री [कवरी] केश-पाश, धम्मिल्ल (कुमा, वेणी १८३)।

कवल सक [कवलय्] ग्रसना, हडप करना। कवलेइ (गउड)। कर्म कवलिज्जइ (गउड)। कवकृ कवलिज्जत (सुपा ७०)। सकृ. कव-लिऊण (गउड)।

कवल पुं [कवल] कवल, ग्रास (पत्र ४, औप)।

कवलण न [कवलन] ग्रसन, भक्षण (काप्र १७०, सुपा ८७४)।

कवलिअ वि [कवलित] ग्रसित, भक्षित (पाअ, सुर २, १४६, सुपा १२१, ३१६)।

कवलिआ स्त्री [दे] ज्ञान का एक उपकरण (आप ८)।

कवल्ल पुं [दे] लोहे का कडाह (सूअ १, ५, १, १५)।

कवल्लि } स्त्री [दे] पात्र विशेष, गुड वगैरह कवल्ली } पकाने का भाजन, कडाह, कराह, 'डज्झतेण य गिम्हे कालमिलाए कवल्लिभूयाए' (संथा १२०, विपा १, ३)।

कवाल } पुन [कपाट] किवाड, किवाडी कवाड } (गउड, औप, गा ६२०)।

कवाल न [कपाल] १ खोपडी, सिर की हड्डी, 'करकलिअकवालो' (सुपा १५२)। २ घट-कर्पर, भिक्षा-पात्र (आचा, हे १, २३१)।

कवास पु [दे] एक प्रकार का जूता, अर्धजङ्घा (दे २, ५)।

कवि देखो कइ = कपि (सुर १, २५६)।

कवि पु [कवि] १ कविता करनेवाला (सुर १, १८, सुपा ५६२, प्रासू ६३)। २ शुक्र, ग्रह-विशेष (सुपा ५६२)। °त्त न [°त्व] कविता, कवित्त (सुर १,४२)। देखो कइ = कवि।

कप्पणा स्त्री [कल्पना] १ रचना, निर्माण। २ प्ररूपणा, निरूपण (निचू १)। ३ कल्पना, विकल्प (विसे १६३२)।

कप्पणी स्त्री [कल्पनी] कतरनी, कैंची (पण्ह १, १; विपा १, ४; स ३७१)।

कप्पर पु [कर्पर] खप्पर, कपाल, सिर की खोपडी (बृह ४, नाट)। देखो कुप्पर = कर्पर।

कप्परिअ वि [दे] दारित, चीरा हुआ (दे २, २०; वज्जा ३८; भवि)।

कप्पास पु [कार्पास] १ कपास, रूई। २ ऊन (निचू ३)।

कप्पासट्ठि पु [कार्पासास्थि] त्रीन्द्रिय जीव-विशेष, क्षुद्र जन्तु-विशेष (जीव १)।

कप्पासिअ वि [कार्पासिक] १ कपास बेचनेवाला (अणु १४९)। २ न जैनेतर शास्त्र-विशेष (अणु ३६; णंदि)।

कप्पासिय वि [कार्पासिक] कपास का बना हुआ, सूती वगेरह (अणु)।

कप्पासी स्त्री [कर्पासी] रूई का गाछ (राज)।

कप्पिआकप्पिअ न [कल्पाकल्प] एक जैन शास्त्र (णंदि २०२)।

कप्पिय वि [कल्पित] १ रचित, निर्मित (ओप)। २ स्थापित, समीप मे रखा हुआ, 'से अभए कुमारे त अल्लं मसं रुहिरं अप्पकप्पियं करेइ' (निर १,१)। ३ कल्पना निर्मित, विकल्पित (दसनि १)। ४ व्यवस्थित (आचा, सूअ १ २)। ५ छिन्न, काटा हुआ (विपा १, ४)।

कप्पिय वि [कल्पिक] १ अनुमत, अनिषिद्ध (उवर १३०)। २ योग्य, उचित (गच्छ १, वव ८)। ३ पु गीतार्थ, ज्ञानी साधु, 'किं वा अकप्पिएणं' (वव १)।

कप्पिया स्त्री [कल्पिका] जैन ग्रन्थ विशेष, एक उपाङ्ग ग्रन्थ (ज १; निर)।

कप्पूर पु [कर्पूर] कपूर, सुगन्धि द्रव्य-विशेष (पण्ह २, ५; सुर २, ६; सुपा २६३)।

कप्पोवग पु [कल्पोपग] १ कल्प-युक्त। २ देव विशेष, बारह देव लोक-वासी देव (पण्ण २१)।

कप्पोववण्ण पु [कल्पोपपन्न] ऊपर देखो (सुपा ८८)।

कप्पोववत्तिआ स्त्री [कल्पोपपत्तिका] देवलोक विशेष मे उत्पत्ति (भग)।

कप्फल न [कट्फल] इस नाम की एक वनस्पति, कायफल (हे २, ७७)।

कप्फाड देखो कवाड = कपाट (गउड)।

कप्पाड [दे] देखो कफाड (पाअ)।

कफ पु [कफ] कफ, शरीर स्थित धातु विशेष (राज)।

कफाड पुं [दे] गुफा, गुहा (दे २, ७)।

कबंध (शौ) देखो कमंध (प्राकृ ८५)।

कब्बट्टी स्त्री [दे] छोटी लडकी (पिंड २८५)।

कब्बड, कब्बडग पुन [कर्वट] १ खराब नगर, कुत्सित शहर (भग, पण्ह १, २)। २ पुं ग्रह विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। ३ वि कुनगर का निवासी (उत्त ३०)।

कब्बर देखो कब्बुर (प्राकृ ७)।

कब्बाडभयय पु [दे] ठीका पर जमीन खोदने का काम करनेवाला मजदूर (ठा ४ १—पत्र २०३)।

कब्बुर, कब्बुरय वि [कर्बुर] १ कबरा, चितकबरा, चितला (गउड, अच्चु ६)। २ पु ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३, राज)।

कब्बुरिअ वि [कर्बुरित] अनेक वर्णोवाला, चितकबरा किया हुआ, 'देहकंतिकब्बुरियजम्मगिह' (सुपा ७४); 'मणिमयतोरणगोरणितरणपहाकिरणकब्बुरिअ' (कुम्मा ६, पउम ८२, ११)।

कभ (अप) देखो कफ (षड्)।

कभल्ल न [दे] कपाल, खप्पर (अनु ५, उवा)।

कम सक [क्रम्] १ चलना पाँव उठाना। २ उल्लघन करना। ३ अक फैलना, पसरना। ४ होना, 'मणसोवि विसयनियमो न कमइ जओ स सव्वत्थ' (विसे २४६), 'न एत्थ उवायंतरं कमइ' (स २०६)। वकृ. कमंत (से २, ६)। कृ कमणिज्ज (औप)।

कम सक [कम्] चाहना, वाञ्छना। वकृ कम्ममाण (दे २, ८५)। कृ कमणीय (सुपा ३८, २६२) कम्म (णाया १ १८ टी—प २८८)।

कम अक [क्रम्] १ संगत होना, युक्त होना, घटना। २ अधिक रहना। कमइ (पिंड २३१, पत्र ६१)।

कम पुं [क्रम] १ पाद, पग, पाँव (सुर १, ८)। २ परम्परा, 'नियकुलकमागयाओ पिउणा विज्जाओ मज्झ दिन्नाओ' (सुर ३, २८)। ३ अनुक्रम, परिपाटी (गउड)। ४ मर्यादा, सीमा (ठा ४)। ५ न्याय, फेसला; 'अविआरिअ कम ण करिस्सदि' (स्वप्न २१)। ६ नियम (बृह १)।

कम पु [क्लम] श्रम, थकावट, क्लान्ति (हे २, १०६; कुमा)।

कमंडलु पुंन [कमण्डलु] संन्यासियो का एक मिट्टी या काष्ठ का पात्र (निर ३, १, पण्ह १, ४; उप ६४८ टी)।

कमंध पुंन [कबन्ध] रुंड, मस्तकहीन शरीर (हे १, २३९; प्राप्र कुमा)।

कमढ पु [दे] १ दही की कलशी। २ पिठर, स्थाली। ३ बलदेव। ४ मुख, मुँह (दे २, ५५)।

कमढ, कमढग, कमढय पु [कमठ, °क] १ तापस-विशेष, जिसको भगवान् पार्श्वनाथ ने वाद मे जीता था और जो मरकर दैत्य हुआ था (णमि २२)। २ कूर्म, कच्छप (पाअ)। ३ वंश, बांस। ४ शल्लकी वृक्ष (हे १, १९९)। ५ न मैल मल (निचू ३)। ६ साध्वियो का एक पात्र (निचू १ ओघ ३९ भा)। ७ साध्वियो को पहनने का एक वस्त्र (ओघ ६७५; बृह ३)।

कमण न [क्रमण] १ गति, चाल। २ प्रवृत्ति (आचू ४)।

कमणिआ स्त्री [क्रमणिका] उपानत्, जूता (बृह ३)।

कमणिल्ल वि [क्रमणीवत्] जूतावाला, जूता पहना हुआ (बृह ३)।

कमणी स्त्री [क्रमण] जूता उपानत् (बृह ३)।

कमणी स्त्री [दे] निश्रेणि, सीढी (दे २, ८)।

कमणीय वि [कमनीय] सुन्दर, मनोहर (सुपा ३४, २०)।

कमल पु [दे] १ पिठर, स्थाली। २ पटह ढोल (दे २, ५४)। ३ मुख मुँह (दे २, ५४; षड्)। ४ हरिण, मृग, 'तत्थ य एगो कमलो मगव्वहूहिं णीए सगओ वसइ' (सुर

कसा स्त्री [कशा, कसा] चर्म-यष्टि, चाबुक, कोड़ा (विपा १, ६, सुपा ३४७)।

कसा देखो कासा (षड्)।

कसाइ वि [कषायिन्] १ कषाय रंगवाला। २ क्रोध-मान-माया-लोभवाला (पण्ण १८, आचा)।

कसाइअ वि [कषायित] ऊपर देखो (गा ४८२, श्रा ३५, आचा)।

कसाय सक [कशाय] ताडन करना, मारना। भूका कसाइत्था (आचा)।

कसाय पुं [कषाय] १ क्रोध, मान, माया और लोभ (विसे १२२६, द ३)। २ रस-विशेष, कषैला (ठा १)। ३ वर्ण-विशेष, लाल-पीला रंग (उत्त २२)। ४ क्वाथ, काढ़ा। ५ वि कषैला स्वादवाला। ६ कषाय रंगवाला। ७ सुगन्धी, खुशबूदार (हे २, १६०)।

कसार [दे] देखो कसार (भवि)।

कसि वि [कषिन्] मारनेवाला, विनाशक, 'चत्तारि एए कसिणो कसाया सिंचंति मूलाइ पुणब्भवस्स' (सुपा १, १)।

कसिअ न [कशिका] प्रतोद, चाबुक, 'अघो मए नट्टवदीए कसिअं श्राढत्तं' (प्रयौ १०८)।

कसिआ स्त्री ऊपर देखो (सुर १३, १७०)।

कसिआ स्त्री [दे] फल विशेष, अरण्यचारी नामक वनस्पति का फल (दे २, ६)।

कसिट (पै) देखो कट्ठ=कष्ट (षड्)।

कसिण देखो कसण=कृष्ण, कृत्स्न (हे २, ७५, कुमा, पाअ, दे ४, १२)।

कसुमीरा स्त्री [कश्मीर] एक उत्तर भारतीय देश (प्राकृ २८, ३३)।

कसेरु } पुन [कशेरु, °क] जलीय कन्द-
कसेरुय } विशेष (गउड, पण्ण १)।

कसेरुग पुन [कशेरुक] जलमें होनेवाली वनस्पति की एक जाति (सूअ २ ३, १८, आचा २, १, ८, ५)।

कसोति स्त्री [दे] खाद्य-विशेष, 'महाहि कसोतिं भोचा कज्ज मघेति' (सुज्ज १०, १७)।

कस्म पु [दे] पङ्क, कर्दम, कादो (दे २, २)।

कस्सय न [दे] प्राभृत, उपहार, भेंट (दे २, १२)।

कस्सव पु [काश्यप] १ वंश-विशेष, 'कस्सव-वंसुत्तसो' (विक्र ६७)। २ ऋषि विशेष (अभि २६)।

कह सक [कथय्] कहना, बोलना। कहइ (हे ४,२)। कर्म कत्थइ, कहिज्जइ (हे १, १८७, ४, २४९)। वकृ कहन्त, कहित, कहेमाण (रयण ७२, सुर ११, १८८)। कवकृ. कत्थंत, कहिज्जंत, कहिज्जमाण (राज, सुर १, ४४, गा १९८, सुर १४, ६४)। संकृ कहिउ, कहिऊण (महा, काल)। कृ कहणिज्ज, कहियव्व, कहेयव्व, कहणीय (सूअ १, १, १, सुर ४, १६२, सुपा ३१६, पण्ह २, ४, सुर १२, १७०)।

कह सक [क्वथ्] क्वाथ करना, उबालना। कहइ (षड्)।

कह पु [कफ] कफ, शरीरस्थ धातु-विशेष, बलगम (कुमा)।

कह देखो कह (हे १, २९, कुमा, षड्)। °कहवि देखो कह-कहवि (गउड, उप ७२८ टी)। °वि देखो कह-वि (प्रासू ११४, १४१)।

कहआ अ [कथंचा] वितर्क और आश्चर्य अर्थ को बतलानेवाला अव्यय (से ७, ३४)।

कहं अ [कथम्] १ कैसे, किस तरह? (स्वप्न ४५, कुमा)। २ क्यों किस लिए? (हे १, २९, षड्, महा)। °कहवि अ [°कथमपि] किसी तरह (गा १४९)। °कहा स्त्री [°कथा] राग द्वेष को उत्पन्न करनेवाली कथा, विकथा (आचा)। °चि, °ची अ [°चिन्] किसी तरह, किसी प्रकार से (श्रा १२, उप ५३० टी)। °पि अ [°अपि] किसी तरह (गउड)।

कहकह पुं [कहकह] प्रमोद-कलकल, खुशी का शोर (ठा ३, १—पत्र ११६, कप्प)।

कहकह अक [कहकहय्] खुशी का शोर मचाना। वकृ कहकहिंत (पण्ह १, २)।

कहकहकह पुं [कहकहकह] खुशी का शोर (भग)।

कहकह पुं [कथकथा] बातचीत (आचा २, १५, २)।

कहग वि [कथक] १ कहनेवाला, (भत्ति २४)। २ पुं कथा-कार (उप १०३१ टी)।

कहण न [कथन] कथन, उक्ति (धर्म १)।

कहणा स्त्री [कथना] ऊपर देखो (श्रन २; उप ४६७, ६६८)।

कहय देखो कहग (हे १, १८५)।

कहल्ल पुन [दे] कर्पर, खप्पर (श्रत १२)।

कहा स्त्री [कथा] कथा, वार्त्ता, हकीकत (सुर २, २१०, सुपा, स्वप्न ८३)।

कहाणग } न [कथानक] १ कथा, वार्त्ता
कहाणय } (श्रा १२, उप पृ ११६)। २ प्रसंग, प्रस्ताव, 'कय ने नाम जालिणिनि कहाणयविसेसेण' (स १२३, ५८८)। ३ प्रयोजन, कार्य, 'कहाणयविसेसेण समागओ पाडलाउह' (स ५८५)।

कहाव सक [कथय्] कहलाना, बुलवाना। कहाविउ (महा)।

कहावण पु [कार्षापण] सिक्का-विशेष (हे २, ७१, ९३, कुमा)।

कहाविअ वि [कथित] कहलाया हुआ (सुपा ६५, ४७७)।

कहि } अ [क्व, कुत्र] कहां, किस स्थान
कहिआ } में? (उवा, भग, नाट, कुमा,
कहिं } उत्त)।

कहित्तु वि [कथयितृ] कहनेवाला, भाषक (सम १५)।

कहिय वि [कथित] कथित, उक्त (उव नाट)।

कहिया स्त्री [कथिका] कथा, कहानी (उव १०३१ टी)।

कहु (अप) अ [कुत] कहां से? (षड्)।

कहेड वि [दे] तरुण, जवान (दे २, १३)।

कहेत्तु देखो कहित्तु (ठा ४, २)।

काअंची } स्त्री [काकचिञ्ची] गुञ्जा,
काअंची } घुंघची (प्राकृ ३०)।

काइअ वि [कायिक] शारीरिक, शरीर-संबन्धी (श्रा ३८ प्रासा)।

काइआ } स्त्री [कायिकी] १ शरीर सब-
काइगा } न्धी क्रिया, शरीर से निर्वृत्त व्यापार (ठा २,१, सम १०, नव १७) २ शौच-क्रिया (स ६४९)। ३ मूत्र, पेशाब (ओघ २१६, उप पृ २७८)।

काइंदी स्त्री [काकन्दी] इस नाम की एक नगरी, बिहार की एक नगरी (संथा ७६)।

काइणी स्त्री [दे] गुञ्जा, लाल रत्ती (दे २, २१)।

पुद्गल-समूह (पच)। °वाइ वि [°वादिन्] भाग्य को ही सब कुछ माननेवाला (राज)। °विवाग पुं [°विपाक] १ कर्म परिणाम, कर्म-फल। २ कर्म-विपाक का प्रतिपादक ग्रन्थ (कम्म १, १)। °संवच्छर पुं [°संवत्सर] लौकिक वर्ष (सुज्ज १०)। °साला स्त्री [°शाला] १ कारखाना। २ कुम्भकार का घटादि बनाने का स्थान (बृह २)। °सिद्ध पु [°सिद्ध] कारीगर, शिल्पी (आवम)। °जीव [°जीव] १ कारीगर। २ कारीगरी का कोई भी काम बतलाकर भिक्षादि प्राप्त करनेवाला साधु (ठा ५, १)। °दाण न [°दान] जिसमें भारी पाप हो ऐसा व्यापार (भग ८, ५)। °यरिय पु [°र्य] कर्म से आर्य, निर्दोष व्यापार करनेवाला (पराण १)। °वाइ देखो °वाइ (आचा)।

कम्म वि [कार्मण] १ कर्म-सम्बन्धी, कर्म-जन्य, कर्म-निर्मित, कर्म-मय। २ न कर्म-पुद्गलों का ही बना हुआ एक अत्यन्त सूक्ष्म शरीर, जो भवान्तर में भी आत्मा के साथ ही रहता है (ठा १, कम्म ४)। २ कर्म-विशेष, कार्मण-शरीर का हेतु-भूत कर्म (कम्म २, २१)। ३ कार्मण-शरीर का व्यापार (कम्म ८, १५, कम्म ४)।

कम्मइय न [कर्मचित, कार्मण] ऊपर देखो (पउम १०२, ९८)।

कम्मंत पु [दे. कर्मान्त] १ कर्म-बन्धन का कारण (आचा, सूअ २, २)। २ कर्म-स्थान, कारखाना (दे २, ५२)।

कम्मंत वि [कुर्वत्] १ हजामत करता हुआ। २ हजाम, नापित (कुमा)। °साला स्त्री [°शाला] जहाँ पर उस्तरा—बाल बनाने का छुरा आदि सजाया जाता हो वह स्थान (निचू ८)।

कम्मकर देखो कम्म-कर (प्राकृ २६)।

कम्मग न [कर्मक, कार्मक, कार्मण] देखो कम्म = कार्मण (ठा २,२, पराण २१, (भग)।

कम्मण न [कार्मण] १ कर्ममय शरीर (द ७२)। २ औषध, मन्त्र आदि के द्वारा मोहन, वशीकरण, उच्चाटन आदि कर्म (उप १३४ टी, स १०८)। °गारि वि [°कारिन्] कामण करनेवाला (सुर १, ९८)। °जोय पुं [°योग] कार्मण-प्रयोग (णाया १, १४)।

कम्मण न [भोजन] भोजन (कुमा)।

कम्ममाण देखो कम = कम्।

कम्मय देखो कम्मग (भग, पच)।

कम्मव सक [उप + भुज्] उपभोग करना। कम्मवइ (हे ४ १११, षड्)।

कम्मवण न [उपभोग] उपभोग, काम में लाना (कुमा)।

कम्मस वि [कल्मष] १ मलिन। २ न. पाप (पाअ, हे २, ७९, प्रामा)।

कम्मा स्त्री [कर्मन्] क्रिया, व्यापार (ठा ४, २—पत्र २१०)।

कम्मार पु [कर्मार] १ लोहार, लोहकार (विसे १५६८)। २ ग्राम-विशेष (आचू १)।

कम्मार, कम्मारग, कम्मारय वि [कर्मकार, °क] १ नौकर, चाकर (स ५३७, ओघ ४, ६४ टी)। २ कारीगर, शिल्पी (जीव ३)।

कम्मारिया स्त्री [कर्मकारिका] स्त्री-नौकर, दासी (सुपा ६३०)।

कम्मि, कम्मिअ वि [कर्मिन्] कर्म करनेवाला, अभ्यासी,

'णवकम्मिएण उअ पामरेण दट्ठूण पाउहारीओ। मोतव्वे जोत्तअपग्गहम्मि अवरासणी मुक्का॥' (गा ६६४)।

२ पाप कर्म करनेवाला (सूअ १, ७, ६)।

कम्मिया स्त्री [कर्मिका, कार्मिका] १ अभ्यास से उत्पन्न होनेवाली बुद्धि (णाया १, १)। २ अक्षीण कर्म-विशेष, अवशिष्ट कर्म (भग)।

कम्हल न [कश्मल] पाप (राज)।

कम्हा अ [कस्मात्] क्यों, किस कारण से ? (औप)।

कम्हार देखो कभार (हे २, ७४)। °ज न [°ज] केसर, कुकुम (कुमा)।

कम्हिअ पु [दे] माली, मालाकार (दे २, ८)।

कम्हीर देखो कभार (मुद्रा २४२, पि १२०, ३१२)।

कय पु [कच] केश, बाल (हे १, १७७, कुमा)।

कय पु [क्रय] खरीदना (सुपा ३४४)।

कय देखो कड = कृत (आचा, कुमा, प्रासू १५)। °उण्ण, °उन्न वि [°पुण्य] पुण्यशाली, भाग्यशाली (स ६०७, सुपा ६०६)। °क देखो °ग (पराह १, २)। °कज्ज वि [°कार्य] कृतार्थ, सफल-मनोरथ (णाया १, ८)। °करण वि [°करण] अभ्यासी, कृताभ्यास (बृह १, पराह १, ३)। °किच्च वि [°कृत्य] कृतार्थ, सफल मनोरथ (सुपा २७)। °ग वि [°क] १ अपनी उत्पत्ति में दूसरे की अपेक्षा करनेवाला, प्रयत्न-जन्य (विसे १८३७, स ६५३)। पु दास-विशेष, गुलाम, 'भयगभत्तं वा बलभत्त वा कयगभत्त वा' (निचू ६)। ३ न सुवर्ण सोना (राज)। °ग्घ वि [°घ्न] उपकार न माननेवाला, कृतघ्न (सुर २, ४४, सुपा ५८८)। °जाणुअ वि [°ज्ञायक] कृतज्ञ, उपकार को माननेवाला (पि ११८)। °ण्णु वि [°ज्ञ] उपकार को माननेवाला, किए हुए उपकार की कदर करनेवाला (धम्म २६)। °ण्णुया स्त्री [°ज्ञता] कृतज्ञता, एहसानमन्दी, निहोरा मानना (उप पृ ८६)। °त्थ वि [°र्थ] कृतकृत्य, चरितार्थ, सफल-मनोरथ (प्रासू २३)। °नासि वि [°नाशिन्] कृतघ्न (ओघ १६६)। °न्न, °न्नु देखो °ण्णु, 'जं कित्तिजलहिराया विवेयनयमदिर कयन्नगुरू' (सुपा ३०१, महा, स ३३, श्रा २८)। °पंजलि वि [°प्राञ्जलि] कृताञ्जलि, नमस्कार के लिए जिसने हाथ ऊँचा किया हो वह (आव)। °पडिकइ स्त्री [°प्रतिकृति] १ प्रत्युपकार (पचा १६)। २ विनय-विशेष (वव १)। °पडिकइया स्त्री [प्रतिकृतिता] १ प्रत्युपकार (णाया १, २)। २ विनय का एक भेद (ठा ७)। °बलिकम्म वि [°बलिकर्मन्] जिसने देवता की पूजा की है वह (भग २, ५, णाया १, १६—पत्र २१०, तदु)। °मंगला स्त्री [°मङ्गला] इस नाम की एक नगरी (सया)। °माल, °मालय वि [°माल, °क] १ जिसने माला बनाई हो वह। २ पु वृक्ष-विशेष, कनेर का गाछ; 'अकोल्लबिल्लसल्लइकयमालतमालसालड्ढ' (उप १०३१ टी)। ३ तमिस्रा-नामक गुफा का अधिष्ठायक देव (ठा २, ३)। °लक्खण वि [°लक्षण] जिसने अपने शरीर चिन्ह को सफल किया हो वह (भग ६, ३३, णाया १, १)। °व वि [°वत्] जिसने किया हो वह (विसे १५५५)। °वणमाल-

काम पु [काम] १ इच्छा, कामना, अभिलाषा (उत्त १४, आचा; प्रासू ६६)। २ सुन्दर शब्द, रूप वगैरह विषय (भग ७,७, ठा ४,४)। ३ विषय का अभिलाप (कुमा)। ४ मदन, कन्दर्प (कुमा, प्रासू १)। ५ इन्द्रिय-प्रीति (धर्म १)। ६ मैथुन (पराग २)। ७ छन्द-विशेष (पिंग)। °कंत न [°कान्त] देव-विमान-विशेष (जीव ३)। °कम न [°क्रम] लान्तक देव-लोक के इन्द्र का एक यात्रा-विमान (ठा १०—पत्र ४३७)। °काम वि [°काम] विषय की चाहवाला (पराग २)। °कामि वि [°कामिन्] विषयाभिलाषी (आचा)। °कूड न [°कूट] देव विमान-विशेष (जीव ३)। °गम वि [°गम] १ स्वेच्छाचारी, स्वैरी (जीव ३)। २ न देखो °कम (जीव ३)। °गामि स्त्री [°गामी] विद्या-विशेष (पउम ७, १३५)। °गुण न [°गुण] १ मैथुन (पण्ह १, ४)। २ शब्द-प्रमुख विषय (उत्त १४)। °घड पु [°घट] ईप्सित चीज को देनेवाला दिव्य कलश (श्रा १४)। °जल न [°जल] स्नान-पीठ, जिसपर बैठकर स्नान किया जाता है वह पट्ट, 'मिणाणपीढ तु कामजल' (निचू १३)। °जुग पु [°युग] पक्षि-विशेष (जीव ३)। °ज्झय न [°ध्वज] देवविमान-विशेष (जीव ३) °ज्झया स्त्री [°ध्वजा] इस नाम की एक वेश्या (विपा १, २)। °ट्ठि वि [°र्थिन्] विषयाभिलाषी (णाया १,१)। °ड्ढिय पु [°र्द्धिक] १ जैन साधुओं का एक गण (ठा ९—पत्र ४५१)। २ न जैन मुनियों का एक कुल (राज)। °णयर न [°नगर] विद्याधरों का एक नगर (इक)। °दाइणी स्त्री [°दायिनी] ईप्सित फल को देनेवाली विद्या-विशेष (पउम ७, १३५)। °दुहा स्त्री [°दुघा] कामधेनु (श्रा १६)। °देअ, °देव पु [°देव] १ अनग, कन्दर्प (नाट, स्वप्न ५५)। २ एक जैन श्रावक का नाम (उवा)। °धेणु स्त्री [°धेनु] ईप्सित फल देनेवाली गौ (काल)। °पाल पुं [°पाल] १ देव-विशेष (दीव)। २ बलदेव, हलायुध (पाअ)। °पिपासय वि [°पिपासक] विषयाभिलाषी (भग)। °पुर न [°पुर] इस नाम का एक विद्याधर नगर (इक)। °प्पभ न [°प्रभ] देवविमान-विशेष (जीव ३)। °फास पु [°स्पर्श] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठाता देव-विशेष (सुज्ज २०)। °महावण न [°महावन] बनारस के समीप का एक चैत्य (भग १५)। °रूअ पु [°रूप] देश-विशेष, जो आसाम में है (पिंग)। °लेस्स [°लेश्य] देव-विमान-विशेष (जीव ३)। °वण्ण न [°वर्ण] एक देव-विमान (जीव ३)। °सत्थ न [°शास्त्र] रति शास्त्र (धर्म २)। °समणुण्ण वि [°समनोज्ञ] कामासक्त, कामान्ध (आचा)। °सिंगार न [°शृङ्गार] देव-विमान विशेष (जीव ३)। °सिट्ठ न [°शिष्ट] एक देव विमान-विशेष (जीव ३)। °वित्त न [°वर्त] देव-विमान-विशेष (जीव ३)। °वसाइत्त स्त्री [°वशायिता] योगी का एक तरह का ऐश्वर्य, जिसमें योगी अपनी इच्छा के अनुसार सर्व पदार्थों का अपने चित्त में समावेश करता है (राज)। °ससा स्त्री [°शंसा] विषयाभिलाष (ठा ८, ४)।

काम अ [कामम्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ अवधारण (सूअ २, १)। २ अनुमति सम्मति (निचू १६)। ३ अभ्युपगम, स्वीकार (सूअ २, ६)। ४ अतिशय, अतिशय (हे २, २१७)।

कामंग न [कामाङ्ग] कन्दर्प का उत्तेजक स्नान वगैरह (सूअ २, २)।

कामदुहा स्त्री [कामदुधा] कामधेनु, ईप्सित वस्तु को देनेवाली दिव्य गौ (पउम ८२, १४)।

कामंध पु [कामान्ध] विषयातुर, तीव्र कामी (प्रासू १७६)।

कामकिसोर पु [दे] गर्दभ, गधा (दे २, ३०)।

कामग वि [कामक] १ अभिलषणीय, वाञ्छनीय (पण्ह १, १)। २ चाहनेवाला, इच्छुक (सूअ १, २, २)।

कामण न [कामन] चाह, अभिलाष, 'परइत्थिकामणेण जीवा नरयम्मि वच्चंति' (महा)।

कामय देखो कामग (उवा)।

कामि वि [कामिन्] विषयाभिलाषी (आचा, गउड)।

कामि वि [कामिन्] अभिलाषी (कुप्र १५५)।

कामिअ वि [कामित] वाञ्छित, अभिलषित (सुपा २५५)।

कामिअ वि [कामिक] १ काम-सम्बन्धी, विषय-सम्बन्धी (भत्त १११)। २ न. तीर्थ-विशेष (ती २८)। ३ सरोवर-विशेष, जिसमें ईप्सित जन्म मिलता है (राज)। ४ वि इच्छा पूर्ण करनेवाला (स ३६०) ५ वि इच्छुक, इच्छावाला, साभिलाष (विपा १, १)।

कामिआ स्त्री [कामिका] इच्छा, अभिलाषा, 'अकामिआए चिणंति दुक्ख' (पण्ह १ ३)।

कामिंजुल पु [कामिञ्जुल] पक्षि विशेष (दे २, २६)।

कामिड्ढि पुं [कामर्द्धि] एक जैन मुनि, आर्य सुहस्तिसूरि का एक शिष्य (कप्प)।

कामिड्ढिय न [कामर्द्धिक] जैन मुनियों का एक कुल (कप्प)।

कामिणी स्त्री [कामिनी] कान्ता, स्त्री (सुपा ५)।

कामिय वि [कामित] यथेष्ट, जितना चाहे उतना (पिंड २७२)।

कामुअ } वि [कामुक] कामी, विषयाभिलाषी
कामुग } (मै २५, महा)। °सत्थ न [°शास्त्र] काम-शास्त्र, रति-शास्त्र (उप ५३० टी)।

कामुत्तरवडिंसग न [कामोत्तरावतंसक] देवविमान-विशेष (जीव ३)।

काय पु [काय] १ वनस्पति की एक जाति (सूअ २, ३, १६)। २ एक महाग्रह (सुज्ज २०)। ३ पुन जीव-निकाय, जीव-समूह, 'एयाइं कायाइं पवेदिताइं' (सूअ १, ७, २)। °मंत वि [°वत्] बड़ा शरीरवाला (सूअ २, १, १३)। °वह पु [°वध] जीव-हिंसा, (श्रावक ३४९)।

काय पु [काय] १ शरीर, देह (ठा ३ १, कुमा)। २ समूह, राशि (विसे ९००)। ३ देश-विशेष (पण्ह १, १)। ४ वि उस देश में रहनेवाला (पराग १)। °गुत्त वि [°गुप्त] शरीर को वश में रखनेवाला (भग)। °गुत्ति स्त्री [°गुप्ति] शरीर को वश में रखना, जितेन्द्रियता (भग)। °जोअ, °जोग पु [°योग] शरीर व्यापार, शारीरिक क्रिया (भग)। °जोगि वि [°योगिन्] शरीर-जन्य

करग्गहलुलिओ वम्मिल्लो' (गा ५४४)। २ पाणि-ग्रहण, शादी (राज)। °य पु [°ज] नख (काप्र १७२)। °रुह पुन [°करुह] १ नख (हे १, ३८)। २ पुं नृप-विशेष (पउम ७७, ८८)। °लाघव न [°लाघव] कला-विशेष, हस्त-लाघव (कप्प)। °वंदण न [°वन्दन] वन्दन का एक दोष, एक प्रकार का शुल्क समझकर वन्दन करना (बृह ३)।

करअडी } स्त्री [दे] स्थूल वस्त्र, मोटा कपडा
करअरी } (दे २, १६)।

करआ स्त्री [करका] करका, ओला, शिला-वृष्टि (अच्चु ६४)।

करइल्ली स्त्री [दे] शुष्क-वृक्ष, सूखा पेड (दे २, १७)।

करंक पुं [दे करङ्क] १ भिक्षा-पात्र (दे २, ५५, गउड)। २ अशोक-वृक्ष (दे २, ५५)।

करंक पुंन [करङ्क] १ हड्डी, हाड, 'करकच-यभीसणे मसाणम्मि' (सुपा १७५)। २ अस्थि-पञ्जर, हाड-पञ्जर (उप ७२८ टी)। ३ पानदान, पान वगैरह रखने की छोटी पेटी, 'तंबोलकरवाहिणीओ' (कप्पू)। ४ हड्डियों का ढेर (सुर ६, २०३)।

करंज सक [भञ्ज्] तोडना, फोडना, टुकडा करना। करजइ (हे ४, १०६)।

करंज पु [करञ्ज] वृक्ष विशेष, करिञ्जा (पराग १, दे १, १३, गा १२१)।

करंज पु [दे] शुष्क-त्वक्, सूखी त्वचा (दे २, ८)।

करंजिअ वि [भग्न] तोडा हुआ (कुमा)।

करंड पुंन [करण्ड] वंशाकार हड्डी (तंदु ३५)।

करंड } पु [करण्ड, °क] १ करण्ड,
करंडग } डिब्बा, पेटिका (पराह १, ५,
करंडय } श्रा १४, ठा ४, ४)।

करंडिया स्त्री [करण्डिका] छोटा डिब्बा (णाया १, ७, सुपा ४२८)।

करंडी स्त्री [करण्डी] १ डिब्बा, पेटिका (श्रा १४)। २ कुंडी, पात्र विशेष (उप ५६३)।

करंडुय न [दे] पीठ के पास की हड्डी (पराह १, ४—पत्र ७८)।

करंत देखो कर = कृ।

करंब पु [करम्ब] दही और भात का बना हुआ एक खाद्य द्रव्य, दध्योदन (पाअ, दे ४, १४, सुपा १३६)।

करंबिय वि [करम्बित] व्याप्त, खचित (सुपा ३४, गउड)।

करकंट पु [करकण्ट] इस नाम का एक परिव्राजक, तापस-विशेष (औप)।

करकंडु पु [करकण्डु] एक जैन महर्षि (महा, पडि)।

करकचिय वि [क्रकचित] करवत आदि से फाडा हुआ (अणु १५४)।

करकड वि [दे. कर्कर कर्कट] १ कठिन, परुष (उवा)।

करकडी स्त्री [दे करकटी] चिथडा, निन्दनीय वस्त्र-विशेष, जो प्राचीन काल में वध्य पुरुष को पहनाया जाता था (विपा १, २—पत्र २४)।

करकय पु [क्रकच] करपत्र, करात, आरा (परण १, १)।

करकर पु [करकर] 'कर-कर' आवाज (णाया १ ६)। °सुंठ पुन [°शुण्ठ] तृण-विशेष (पराह १—पत्र ४०)।

करकरिग पु [करकरिक] ग्रह-विशेष, ग्रहाधि-ष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)।

करग देखो कारग = कारक (राादि ५०)।

करग पुं [करक] १ करका, ओला (श्रा २०, ओघ ३४३, जी ५)। २ पानी की कलशी, जल पात्र (अनु ५, श्रा १६, सुपा ३३६, ३६४)। देखो करय = करक।

करगय देखो करकय (स ६६६)।

करग्गह देखो कर-गह (सम्मत्त १७३)।

करचायल पु [दे] किलाट, दूध की मलाई (दे २, २२)।

करच्छोडिया स्त्री [दे] ताली, ताल (सुग्र २, १५)।

करट्ट पु [दे] अपवित्र अन्न को खानेवाला ब्राह्मण (मृच्छ २०७)।

करड पु [करट] १ काक, कौआ (उर १, १४)। २ हाथी का गण्ड-स्थल (सुपा १३६, पाअ)। ३ वाद्य-विशेष (विक्र ८७)। ४ कुसुम्भ-वृक्ष। ५ करीर-वृक्ष। ६ गिरगिट, सरट। ७ पाखडी, नास्तिक। ८ श्राद्ध-विशेष (दे २, ५५ टी)।

करड पु [दे] १ व्याघ्र, शेर। २ वि कबरा, चितकबरा (दे २, ५५)।

करडा स्त्री [दे] लट्वा—१ एक प्रकार का करञ्ज वृक्ष। २ पक्षि विशेष, चटक। ३ भ्रमर, भौंरा। ४ वाद्य-विशेष (दे २ ५५)।

करडि पु [करटिन्] हाथी, हस्ती (सुर २, ६६, सुपा ५०, २३६)।

करडी स्त्री [दे, करटी] वाद्य विशेष, 'अट्टमय करडीए' (ज २)।

करडुयभत्त न [दे] श्राद्ध-विशेष (पिंड)।

करण न [करण] १ इन्द्रिय (सुर ४, २३६, (कुमा)। २ आसन, पद्मासन वगैरह (कुमा)। ३ अधिकरण, आश्रय (कुमा)। ४ कृति, क्रिया, विधान (ठा ३, ४, सुर ४, २४५)। ५ कारक-विशेष, साधकतम (ठा ३, १, विसे १६३६)। ६ उपाधि, उपकरण (ओघ ६६६)। ७ न्यायालय, न्याय-स्थल (उप पृ ११७)। ८ वीर्य-स्फुरण (ठा ३, १—पत्र १०६)। ९ ज्योतिः-शास्त्र प्रसिद्ध बव-बालवादि करण (सुर २, १६५)। १० निमित्त, प्रयो-जन (आचू १)। ११ जेल, कैदखाना (भवि)। १२ वि जो किया जाय वह (ओघ २, भा ३)। १३ करनेवाला (कुमा)। °हिवइ पु [°धिपति] जेल का अध्यक्ष (भवि)। °साला स्त्री [°शाला] न्यायालय (दस० वृ० हारि० पत्र १०८, २)।

करणया स्त्री [करणता] १ अनुष्ठान, क्रिया। २ संयमानुष्ठान (णाया १, १—पत्र ५०)।

करणसाला स्त्री [करणशाला] न्याय मन्दिर (दस ३, १ टी)।

करणि स्त्री [दे] क्रिया, कर्म (अणु १३७)।

करणि स्त्री [दे] १ रूप, आकार (दे २ ७, सुपा १०५, ८७५, पाअ)। २ सादृश्य समा-नता (अणु)। ३ अनुकरण, नकल करना (गउड)। ४ स्वीकार, अंगीकार (उप पृ ३८५)।

करणिज्ज देखो कर = कृ।

करणिल्ल वि [दे] समान, सदृश 'मयणज्जल-तोणीरकरणिल्लेण पयामयंगेण निरंतरा च ऊरुजुयलेण' (स ३१२), 'वधूयकरणिल्लेण सहावारुणेण अहरेण' (स ३१२)।

करणीअ देखो कर = कृ।

कारायणी स्त्री [दे] शाल्मलि-वृक्ष, सेमर का पेड़ (दे २, १८)।

काराव देखो कारव। कारावेइ (पि ५५२)। भवि कारावस्सिं (पि ५२८)।

कारावण देखो कारवण (पराह १, ३, उप ४०६)।

कारावय वि [कारक] करानेवाला विधायक (स ५५७)।

काराविय वि [कारित] करवाया हुआ, बनवाया हुआ (विसे १०१६, सुर ३, २४, स १६३)।

कारि वि [कारिन्] कर्ता, करनेवाला, 'एयस्स कारिणो बालिसत्तमारोविया जेण' (उव ५६७ टी), 'एयअरणत्थम्मि कारिणी अहयं' (सुर ८, ५६)।

कारिआ देखो कारिया (तदु ४६)।

कारिम वि [दे] कृत्रिम, बनावटी, नकली (दे २, २७, गउ ४५७, षड्, उप ७२८ टी, स ११६, प्रासू २०)।

कारिय देखो कज्ज = कार्य (सूत्र १, २, ३, १०, दस ६, ६५)।

कारिय वि [कारित] कराया हुआ, बनवाया हुआ (पराह २, ५)। कार्य (सूत्र गा १५१)।

कारियल्लई स्त्री [दे] वल्ली-विशेष, करैला का गाछ (पराण १—पत्र ३३)।

कारिया स्त्री [कारिका] करनेवाली, कर्त्री (उवा)।

कारिल्ल देखो कारि (सबोध ३८)।

कारिल्ली स्त्री [दे] वल्ली विशेष, करैला का गाछ (सूक्त ६१)।

कारीस पु [कारीष] गोइठा की अग्नि, कंडा की आग (उत्त १२)।

कारु पु [कारु] १ कारीगर, शिल्पी (पाअ, प्रासू ८०)। २ नव प्रकार के कारु चर्मकर आदि।

कारुइज्ज वि [कारुकीय] कारीगर से सम्बन्ध रखनेवाला (पराह १, २)।

कारुणिय वि [कारुणिक] दयालु, कृपालु (ठा ४, २, सण)।

कारुण्ण } न [कारुण्य] दया, करुणा, (महा
कारुन्न } उप ७२८ टी)।

कारेमाण } देखो कार = कारय्।
कारेयव्व }

कारेल्लय न [दे] करैला, तरकारी-विशेष (अनु ६)।

कारोडिय पु [कारोटिक] १ कापालिक, भिक्षुक विशेष। २ ताम्बूल-वाहक, स्थगीधर (औप)।

काल न [दे] तमिस्र, अन्धकार (दे २, २६ षड्)।

काल पुं [काल] १ समय वक्त (जी ४९)। २ मृत्यु, मरण (विसे २०६७, प्रासू ११२)। ३ प्रस्ताव, प्रसंग, अवसर (विसे २०६७)। ४ विलम्ब देरी (स्वप्न ६१)। ५ उमर, वय (स्वप्न ४२)। ६ ऋतु (स्वप्न ४२)। ७ ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। ८ ज्योतिः-शास्त्र प्रसिद्ध एक कुयोग (गण १९)। ९ सातवीं नरक-पृथ्वी का एक नरकावास (ठा ५, ३ —पत्र ३४१, सम ५८)। १० नरक के जीवों को दुःख देनेवाले परमाधार्मिक देवों की एक जाति (सम २८)। ११ वेलम्ब इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १९८)। १२ प्रभञ्जन इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १९८)। १३ इन्द्र-विशेष, पिशाच-निकाय का दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। १४ पूर्वीय लवण समुद्र के पाताल कलशों का अधिष्ठाता देव (ठा ४, २—पत्र २२६)। १५ राजा श्रेणिक का एक पुत्र (निर १, १)। १६ इस नाम का एक गृहपति (णाया २, १)। १७ अभाव (बृह ४)। १८ पिशाच देवों की एक जाति (पराण १)। १९ निधि-विशेष (ठा ९—पत्र ४४९)। २० वर्ण-विशेष, श्याम-वर्ण (पराण २)। २१ न. देव-विमान-विशेष (सम ३५)। २२ 'निरयावली' सूत्र का एक अध्ययन (निर १, १)। २३ काली-देवी का सिंहासन (णाया २)। २४ वि कृष्ण, काला रंग का (सुर २, ५) °कंखि वि [°काङ्क्षिन्] १ समय की अपेक्षा करनेवाला (आचा)। २ अवसर का ज्ञाता (उत्त ६)। °कप्प पुं [°कल्प] १ समय-सम्बन्धी शास्त्रीय विधान। २ उसका प्रतिपादक शास्त्र (पंचभा)। °काल पु [°काल] मृत्यु-समय (विसे २०६६)। °कूड न [°कूट] उत्कट विष-विशेष (सुपा २३८)। °क्खेव पुं [°क्षेप] विलम्ब, देरी (से १३, ४२)। °गय वि [°गत] मृत्यु-प्राप्त, मृत (णाया १, १, महा)। °चक्क न [°चक्र] १ बीस सागरोपम परिमित समय (णंदि)। २ एक भयंकर शस्त्र, 'जाहे एवमवि न सक्कइ ताहे कालचक्कं विउव्वइ' (आवम)। °चूला स्त्री [°चूडा] अधिक-मास वगैरह का अधिक समय (निचू १)। °ण्णु वि [°ज्ञ] अवसर का जानकार (उप १७९ टी, आचा)। °दट्ठ वि [°दष्ट] मौत से मरा हुआ (उप ७२८ टी)। °देव पु [°देव] देव-विशेष (दीव)। °धम्म पुं [°धर्म] मृत्यु मरण (णाया १, १, विपा १, २)। °न्न, °न्नु देखो °ण्णु (पि २७६, सुपा १०९)। °परियाय पुं [°पर्याय] मृत्यु-समय (आचा)। °परिहीण न [°परिहीन] विलम्ब, देरी (राय)। °पाल पु [°पाल] देव विशेष, धरणेन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १)। °पास पुं [°पाश] ज्योतिः-शास्त्र-प्रसिद्ध एक कुयोग (गण १८)। °पिट्ठ, °पुट्ठ पुन [°पृष्ठ] १ धनुष। २ कर्ण का धनुष। ३ काला हरिण। ४ क्रौञ्च पक्षी (पि ५३)। °पुरिस पु [°पुरुष] जो पुंवेद कर्म का अनुभव करता हो वह (सूत्र १, ४, १, २ टी)। °प्पभ पु [°प्रभ] इस नाम का एक पर्वत (ठा १०)। °फोडय पुंस्त्री [°स्फोटक] प्राणहर फोड़ा। स्त्री °डिया (रंभा)। °मास पुं [°मास] मृत्यु-समय, 'कालमासे कालं किच्चा' (विपा १, १, २, भग ७, ९)। °मासिणी स्त्री [°मासिनी] गर्भिणी, गुर्विणी (दस ५, १)। °मिग पु [°मृग] कृष्ण मृग की एक जाति (ज २)। °रत्ति स्त्री [°रात्रि] प्रलय रात्रि, प्रलय-काल (गउड)। °वडिंसग न [°वतंसक] देव-विमान-विशेष, काली देवी का विमान (णाया २)। °वाइ वि [°वादिन्] जगत को कालकृत माननेवाला, समय को ही सब कुछ माननेवाला (णंदि)। °वासि पुं [°वर्षिन्] अवसर पर बरसनेवाला मेघ (ठा ४, ३—पत्र २६०)। °सदीव पु [°सदीप] असुर-विशेष, त्रिपुरासुर (आक)।

करिसिय वि [कृशित] दुर्बल किया हुआ (सूअ १, ३)।

करीर पु [करीर] वृक्ष-विशेष करीर, करील (उप ७२८ टी, था १६, प्रासू ६२)।

करीस पु [करीष] जलाने के लिए सुखाया हुआ गोबर, कंडा, गोइठा (हे १, १०१)।

करुण देखो कलुण (स्वप्न ५३ सुपा २१६), 'उज्झइ उयारभाव दक्खिण्ण कम्णय च आमुयइ' (गउड)।

करुणा स्त्री [करुणा] दया, दूसरे के दुःख को दूर करने की इच्छा (गउड, कुमा)।

करुणाइय वि [करुणायित] जिसपर करुणा की गई हो वह (गउड)।

करुणि वि [करुणिन्] करुणा करनेवाला, दयालु (मण)।

करे सक [कारय्] कराना । करेइ (प्राकृ ६०)।

करेअव्व } करेत } देखो कर = कृ।

करेडु पुं [दे] कृकलास, गिरगिट, सरट (दे २, ५)।

करेणु पु [करेणु] १ हस्ती, हाथी। २ कनेर का गाछ, 'एसो करेणू' (हे २, ११६)। ३ स्त्री हस्तिनी हथिनी (हे २, ११६, णाया १, १, सुर ८, १३६)। °दत्ता स्त्री [°दत्ता] ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की एक स्त्री (उत्त १३)। °सेणा स्त्री [°सेना] देखो पूर्वोक्त अर्थ (उत्त १३)।

करेणुआ स्त्री [करेणु] हस्तिनी, हथिनी (पाअ, महा)।

करेमाण } करेअव्व } देखो कर = कृ।

करेवाहिय वि [करबाधित] राज-कर से पीडित, महसूल से हैरान (औप)।

करोड पु [दे] १ नारिकेल, नारियल। २ काक, कौआ। ३ वृषभ, बैल (दे २, ५४)।

करोडग पु [दे] पात्र-विशेष, कटोरा (निचू १)।

करोडि स्त्री [करोटि] सिर की हड्डी (सुख, २, २९)।

करोडिय पु [करोटिक] कापालिक, भिक्षुक-विशेष (णाया १, ८—पत्र १५०)।

करोडिया } करोडी } स्त्री [करोटिका, °टी] १ कुंडा, बडे मुँह का एक पात्र, कांस्य-पात्र-विशेष (अणु, दे ७, १५, पाअ)। २ स्थगिका, पानदान (णाया १, १ टी—पत्र ४३)। ३ मिट्टी का एक तरह का पात्र (औप)। ४ कपाल, भिक्षा-पात्र (णाया १, ८)। ५ परोसने का एक उपकरण (दे, २, ३८)।

करोडी स्त्री [दे] एक प्रकार की चींटी, क्षुद्र-जन्तु-विशेष (दे २, ३)।

करोडी स्त्री [दे] मुरदा, शव (कुप्र १०२)।

कल सक [कलय्] १ संख्या करना। २ आवाज करना। ३ जानना। ४ पहिचानना। ५ संबन्ध करना। कलइ (हे ४, २५९, षड्)। कलयति (विसे २०२९)। भवि कलइस्स (पि ५३३)। कर्म कलिजए (विसे २०२९)। वकृ कलयंत (सुपा ४)। कवकृ कलिज्जंत (सुपा ९४)। संकृ कलिऊण, कलिअ (महा, अभि १८२)। कृ कलणिज्ज, कलणीअ (सुपा ६२२, वि ११)।

कल वि [कल] १ मधुर, मनोहर (पाअ)। २ पुं अव्यक्त मधुर शब्द (णाया १, १६)। ३ कोलाहल, कलकल (चंद १९)। ४ कर्दम, कीचड, कादो (भत्त १३०)। ५ धान्य-विशेष, गोल चना, मटर (ठा ५, ३)। °कंठी स्त्री [°कण्ठी] कोकिला, कोयल (दे २, ३०, कप्पू)। °मंजुल वि [°मञ्जुल] शब्द से मधुर (पाअ)। °यंठ पु [°कण्ठ] कोकिल, कोयल (कुमा)। °यंठी देखो °कंठी (सुर ४, ४८)। °हंस पुं [°हंस] एक पक्षी, राज-हंस (कप्प, गउड)।

कलंक पु [कलङ्क] १ दाग, दोष (प्रासू ९४)। २ लाञ्छन, चिह्न (कुमा, गउड)।

कलंक सक [कलङ्कय्] कलंकित करना। कलंकइ (भवि)। कृ. कलंकियव्व (सुपा ४४८, ५८१)।

कलंक पु [दे] १ बाँस, वंश (दे २, ८)। २ बाँस की बनाई हुई बाड (णाया १, १८)।

कलंकण न [कलङ्कन] कलंकित करना (पव ८)।

कलंकल वि [कलङ्कल] असमंजस, अशुभ (औप, संथा)।

कलंकलीभागि वि [कलङ्कलीभागिन्] दुःख-व्याकुल (सूअ २, २, ८१, ८३)।

कलंकलीभाव पु [कलङ्कलीभाव] १ दुःख से व्याकुलता। २ संसार-परिभ्रमण (आचा २, १६, १२)।

कलंकवई स्त्री [दे] वृति, वाड, कांटे आदि से परिच्छिन्न स्थान-परिधि (दे २, २४)।

कलंकिअ वि [कलङ्कित] कलंकित, दागी (हे ४, ४३८)।

कलंकिल्ल वि [कलङ्किन्] कलंकवाला, दागी (काल, पि ५९५)।

कलंतर न [कलान्तर] व्याज, सूद (कुप्र ३५५)।

कलंद पु [कलन्द] १ कुंड, कुण्डा, रंग-पात्र (उवा)। २ जाति से आर्य एक प्रकार के मनुष्य (ठा ६—पत्र ३५८)।

कलंब पुं [कदम्ब] १ वृक्ष-विशेष, नीप, कदम का गाछ (हे १, ३०, २२२ गा ३७, कप्पू)। °चीर न [°चीर] शस्त्र-विशेष (विपा १, ६—पत्र ६६)। °चीरिया स्त्री [°चीरिका] तृण-विशेष, जिसका अग्र भाग अति तीक्ष्ण होता है (जीव ३)। °वालुया स्त्री [°वालुका] १ कदम्ब के पुष्प के आकार-वाली धूली। २ नरक की नदी, 'कलंबवा-लुयाए दड्ढपुव्वो अणंतसो' (उत्त १९)।

कलंबु स्त्री [दे] वल्ली-विशेष, नालिका (दे २, ३)।

कलंबुअ न [कदम्बक] कदम्ब-वृक्ष का पुष्प, 'धाराहयकलंबुअं पिव समुस्ससियरोमकूवे' (कप्प)।

कलंबुआ [दे] देखो कलंबु (पण्ण १, मुच्छ ४)।

कलंबुआ स्त्री [कलम्बुका] १ कदम्ब पुष्प के समान मास-गोलक। २ एक गाँव का नाम, जहाँ पर भगवान् महावीर को कालहस्ती ने सताया था (राज)।

कलंबुगा स्त्री [कलम्बुका] जल मे होनेवाली वनस्पति की एक जाति (सूअ २, ३, १८)।

कलंबुय पु [कदम्बक] कदम्ब-वृक्ष (सुख १९)।

कलकल पु [कलकल] १ कोलाहल, कल-कलरव (श्रा १४)। २ व्यक्त शब्द, स्पष्ट

कालुस्स न [कालुष्य] कलुषपन (मा २)।

कालेज्ज न [दे] तापिच्छ, श्याम तमाल का पेड़ (दे २, २६)।

कालेय न [कालेय] १ काली देवी का अपत्य। २ सुगन्धि द्रव्य विशेष, कालचन्दन (स ७५)। ३ हृदय का मांस-खण्ड, कलेजा (सूअ १, ५, १, रंभा)।

कालोद देखो कालोय (जीव ३)।

कालोदधि पुं [कालोदधि] समुद्र-विशेष (पण्ह १, ५)।

कालोदाइ पुं [कालोदायिन्] इस नाम का एक दार्शनिक विद्वान् (भग ७, १०)।

कालोय पुं [कालोद] समुद्र विशेष जो धातकी-खण्ड द्वीप को चारो तरफ घिर कर स्थित है (सम ६७)।

काव, कावड पुं [दे] १ कांवर, वहँगी, बोझ ढोनेके लिए तराजूनुमा एक वस्तु, इसमे दोनो ओर सिकहर लटकाये जाते हैं (जीव ३, पउम ७५, ५२)। °कोडिय पुं [°कोटिक] कांवर से भार ढोनेवाला (अणु)। देखो काय = (दे)।

कावडि, कावोडि स्त्री [दे] कावर (कुप्र १२१, २४४, दस ४, १ टी)।

कावडिअ पुं [दे] वैवधिक, कांवर से भार ढोनेवाला (पउम ७५, ५२)।

कावध पुं [कावध्य] एक महाग्रह, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (राज)।

कावलिअ वि [दे] असहन, असहिष्णु (दे २, २८)।

कावलिअ वि [कावलिक] कवल-प्रक्षेप रूप आहार (भग, सग १८१)।

कावालिअ पुं [कापालिक] वाम-मार्गी, अघोर सम्प्रदाय का मनुष्य (सुपा १७४, ३६७, दे १, ३१, प्रवो ११५)।

कावालिआ, कावालिणी स्त्री [कापालिकी] कापालिक-व्रतवाली स्त्री (गा ४०८)।

काविट्ठ न [कापिष्ठ] देव-विमान-विशेष (सम २७, पउम २०, २३)।

काविल न [कापिल] १ सांख्य-दर्शन (सम्म १४५)। २ वि सांख्य मत का अनुयायी (औप)।

काविलिज्ज वि [कापिलीय] १ कपिल मुनि-सबन्धी। २ न कपिल मुनि के वृत्तान्तवाला एक ग्रन्थांश, 'उत्तराध्ययन' सूत्र का आठवाँ अध्ययन (सम ६४)।

काविसायण देखो कविसायण (जीव ३)।

कावी स्त्री [दे] नीलवर्णवाली, हरा रंग की चीज (दे २, २६)।

कावुरिस देखो कापुरिस (स ३७५)।

कावेअ न [कापेय] वानरपन, चञ्चलता (अच्चु ६२)।

कावोय वि [दे] कांवर वहन करनेवाला (अणु ४६)।

कास देखो कड्ढ = कृष्। कासइ (षड्)।

कास अक [कास्] १ कहरना, रोग विशेष से खराब आवाज करना। २ कासना, खांसी की आवाज करना। ३ खोखार करना। ४ छींक खाना। वकृ कासंत, कासमाण (पण्ह १, ३—पत्र ५४, आचा)। सकृ कासित्ता (जीव ३)।

कास पुं [काश, °स] १ रोग विशेष, खांसी (णाया १,१३)। २ तृण-विशेष, कास, काम-कुसुमव मन्ने मुनिप्फल जम्म-जीविय नियय' (उप ७२८ टी) 'कासकुसुमव विहल' (आप ५८)। ३ उसका फूल जो सफेद और शोभायमान होता है, 'ता तत्थ नियइ धूलिं समहर-हरहासकासकास' (सुपा ४२८, कुमा)। ४ ग्रह विशेष, ग्रह-देव-विशेष (ठा २, ३)। ५ रस (ठा ७)। ६ ससार, जगत् (आचा)।

कास देखो कंस = कास्य (हे १,२९, षड्)।

कासंकस वि [कासङ्कष] प्रमादी, ससार मे आसक्त (आचा)।

कासग देखो कासय, 'जेण रोहंति बीजाइं, जेण जीवंति कासगा' (निचू १)।

कासण न [कासन] खोखारना, खाट्कार (ओघ २३५)।

कासमद्दग पुं [कासमर्दक] वनस्पति-विशेष, गुच्छ-विशेष (पण्ण १—पत्र ३२)।

कासय, कासव पुं [कर्षक] कृषीवल, किसान (दे १, ८७, पाअ),
'जह वा लुणाइ सस्साइं,
कासवो परिणयाइं छित्तम्मि।
तह भूयाइं कयंतो, वत्थुमहावो इमो जम्हा'
(सुपा ६५१)।

कासव पुं [कश्यप] १ इस नाम का एक ऋषि (पाअ)। २ हरिण की एक जाति। ३ एक जात की मछली। ४ दक्ष प्रजापति का जामाता। ५ वि दारू पीनेवाला (हे १, ४३, षड्)।

कासव न [काश्यप] १ इस नाम का एक गोत्र (ठा ७, णाया १, १, कप्प)। २ पुं भगवान् ऋषभदेव का एक पूर्व पुरुष। ३ वि. काश्यप गोत्र मे उत्पन्न, काश्यप-गोत्रीय (ठा ७—पत्र ३९०, उत्त ७, कप्प, सूअ १,६)। ४ पुं नापित, हजाम (भग ६, १०, आवम)। ५ इस नाम का एक गृहस्थ (अंत १८)। ६ न. इस नाम का एक 'अंतगडदसा' सूत्र का अध्ययन (अंत १८)।

कासवनालिया स्त्री [काश्यपनालिका] श्री-पर्णीफल (आचा २, १, ८, ६, दस ५, २, २१)।

कासविज्जया स्त्री [काश्यपीया] जैन मुनियो की एक शाखा (कप्प)।

कासवी स्त्री [काश्यपी] १ पृथिवी, धरित्री (कुमा)। २ कश्यकप-गोत्रीया स्त्री (कप्प)। °रइ स्त्री [°रति] भगवान् सुमतिनाथ की प्रथम शिष्या (सम १५२)।

कासा स्त्री [कृशा] दुर्वल स्त्री (हे १ १२७, षड्)।

कासाइया, कासाई स्त्री [काषायी] कषाय-रंग मे रंगी हुई साडी, लाल साडी (कप्प, उवा)।

कासाय वि [काषाय] कषाय-रंग से रंगा हुआ वस्त्रादि (गउड)।

कासार न [कासार] १ तलाव, छोटा सरोवर (सुपा १९६)। २ पक्वान्न-विशेष, कँसार (स १८९)। ३ पुं समूह, जत्था (गउड)। ४ प्रदेश, स्थान (गउड)। °भूमि स्त्री [°भूमि] नितम्ब-प्रदेश (गउड)।

कासार न [दे] धातु-विशेष, सीसपत्रक (दे २, २७)।

कासि पुं [काशी] १ देश-विशेष, काशी जिला, 'कासित्ति जणवओ' (सुपा ३१, उत्त १८)। २ काशी देश का राजा (कुमा)।

की रीति)। ३२ स्त्री लक्षण (स्त्री के शुभाशुभ चिन्हों का परिज्ञान)। ३३ पुरुष लक्षण। ३४ अश्व लक्षण। ३५ गज-लक्षण। ३६ गो-लक्षण। ३७ कुक्कुट-लक्षण। ३८ छत्र लक्षण। ३९ दण्ड लक्षण। ४० असि लक्षण। ४१ मणि-लक्षण (रत्न-परीक्षा)। ४२ काकणि-लक्षण (रत्न विशेष की परीक्षा)। ४३ वास्तुविद्या (गृह बनाने और सजाने की रीति)। ४४ स्कन्धावार मान (सैन्य परिमाण)। ४५ नगर-मान। ४६ चार (ग्रह-चार का परिज्ञान)। ४७ प्रतिचार (ग्रहों के वक्र-गमन वगैरह का ज्ञान, अथवा रोगप्रतीकार ज्ञान)। ४८ व्यूह (सैन्य रचना)। ४९ प्रतिव्यूह (प्रतिद्वन्द्वि व्यूह)। ५० चक्र व्यूह। ५१ गरुड-व्यूह। ५२ शकट व्यूह। ५३ युद्ध (मल्ल-युद्ध)। ५४ नियुद्ध। ५५ युद्धातियुद्ध (खड्गादि शस्त्र से युद्ध)। ५६ दृष्टि युद्ध। ५७ मुष्टि-युद्ध। ५८ बाहु युद्ध। ५९ लता युद्ध। ६० इषु-शास्त्र (दिव्यास्त्र-सूचक शास्त्र)। ६१ त्सरु-प्रपात (खड्ग शिक्षा शास्त्र)। ६२ धनुर्वेद। ६३ हिरण्य पाक (चाँदी बनाने की रीति)। ६४ सुवर्ण-पाक। ६५ सूत्रक्रीडा (एक ही सूत को अनेक प्रकार कर दिखाना)। ६६ वस्त्र-क्रीडा। ६७ नालिका खेल (द्यूत-विशेष)। ६८ पत्र-च्छेद्य (अनेक पत्रों में अमुक पत्र का छेदन, हस्त-लाघव)। ६९ कट-च्छेद्य (कट की तरह क्रम से छेद करने का ज्ञान)। ७० सजीव (मरी हुई धातु को फिर असल बनाना)। ७१ निर्जीव (धातु-मारण, रसायण)। ७२ शकुन-रुत (शकुन-शास्त्र), (ज २ टी, सम ८३)। °गुरु पु [°गुरु] कलाचार्य, विद्याध्यापक, शिक्षक (सुपा २५)। °यरिय पुं [°चार्य] देखो पूर्वोक्त अर्थ (णाया १, १)। °वई स्त्री [°वती] १ कलावाली स्त्री। २ एक पतिव्रता स्त्री (उप ७३६, पडि)। °सवण्ण न [सवर्ण] मत्स्य-विशेष (ठा १०)।

कलाइआ स्त्री [कलाचिका] प्रकोष्ठ, कोनी से लेकर मणिबन्ध तक का हस्तावयव (पाअ)।

कलाय पु [कलाद] सोनार, सुवर्णकार (पण्ह १, २, णाया १, ८)।

कलाय पु [कलाय] धान्य विशेष, गोल चना, मटर (ठा ३, ५, अनु ५)।

कलाव पु [कलाप] १ समूह, जत्था (हे १, २३१)। २ मयूर-पिच्छ (सुपा ४८)। ३ शरधि, तूण, जिसमें बाण रक्खे जाते हैं (दे २, १०)। ४ कण्ठ का आभूषण (औप)।

कलावग न [कलापक] १ चार श्लोकों की एक वाक्यता। २ ग्रीवा का एक आभरण (पण्ह २, ५)।

कलावय न [कलापक] चार श्लोकों की एक वाक्यता (सम्मत्त १८७)।

कलावि पुस्त्री [कलापिन्] मयूर, मोर (उप ७२८ टी)।

कलि पु [कलि] एक नरकावास (देवेन्द्र २६)।

कलि पु [कलि] १ कलह, झगडा (कुमा, प्रासू ६४)। २ युग-विशेष, कलि युग (उप ८३३)। ३ पर्वत विशेष (ती ५४)। ४ प्रथम भेद (निचू १५)। ५ एक, अकेला (सूअ १, २, २, भग १८, ४)। ६ दुष्ट पुरुष, 'दुट्ठो वली' (पाअ)। °ओग, °ओय पु [°ओज] युग्म-राशि विशेष (भग १८, ४; ठा ४, ३)। °ओयकडजुम्म पु [°ओज-कृतयुग्म] युग्म-राशि-विशेष (भग ३४, १)। °ओयकलिओय पु [°ओजकल्योज] युग्म-राशि विशेष (भग ३४, १)। °ओजत-ओय पु [°ओजत्र्योज] युग्म राशि विशेष (भग ३४, १)। °ओयदावरजुम्म पु [°ओजद्वापरयुग्म] युग्म-राशि-विशेष (भग ३४, १)। °कुंड न [°कुण्ड] तीर्थ-विशेष (ती १५)। °जुग न [°युग] कलि-युग (ती २१)।

कलि पुं [दे] शत्रु दुश्मन (दे २, २)।

कलिअ वि [कलित] १ युक्त, सहित (पण्ह १, २)। २ प्राप्त, गृहीत। ३ ज्ञात, विदित (दे २, ५६, पाअ)।

कलिअ देखो कल = कलय्।

कलिअ पु [दे] १ नकुल, न्योला, नेवला। २ वि गर्वित, गर्व युक्त (दे २, ५६)।

कलिआ स्त्री [दे] सखी, सहेली (दे २, ५६)।

कलिआ स्त्री [कलिका] अविकसित पुष्प, कली (पाअ, गा ४८२)।

कलिंग पु [कलिङ्ग] १ देश विशेष, यह देश उड़ीसा से दक्षिण की ओर गोदावरी के मुहाने पर है (पउम ६८, ६७, ओघ ३० भा, प्रासू ३०)। २ कलिंग देश का राजा (पिंग)।

कलिंग पु [कलिङ्ग] भगवान् आदिनाथ का एक पुत्र (ती १४)।

कलिंच देखो किलिंच (गा ७७०)।

कलिंज पुं [कलिञ्ज] कट, चटाई (निचू १७)।

कलिंज न [दे] छोटी लकड़ी (दे २, ११)।

कलिंब पुन [कलिम्ब] १ वांस का पात्र-विशेष, 'कलिंबो वंसकप्परी' (गच्छ २)। २ सूखी लकडी (भग ८, ३)।

कलित्त न [कटित्र] कमर पर पहना जाता एक प्रकार का चर्म मय कवच (णाया १, १, औप)।

कलिम न [दे] कमल, पद्म (हे २, ६)।

कलिमल देखो कलमल = कलकल (तदु ४१)।

कलिल वि [कलिल] गहन, घना, दुर्भेद्य (पाअ)।

कलुण वि [करुण] १ दीन, दया-जनक, कृपा-पात्र (हे १, २५४, प्रासू १२६, सुर २, २२६)। २ पु साहित्य शास्त्र-प्रसिद्ध नव रसों मे एक रस (अणु)।

कलुणा देखो करुणा (राज)।

कलुस वि [कलुष] १ मलिन, अस्वच्छ, 'कलिकलुस' (विपा १, १, पाअ)। २ न पाप, दोष, मैल (स १३२, पाअ)।

कलुसिअ वि [कलुषित] पाप-ग्रस्त, मलिन (से १०, ५, गउड)।

कलुसीकय वि [कलुषीकृत] मलिन किया हुआ (उव)।

कलेर पु [दे] १ कंकाल, अस्थि-पञ्जर। २ वि कराल, भयानक (दे २, ५३)।

कलेवर न [कलेवर] शरीर, देह (आउ ४८, पिंग)।

कलेसुय न [कलेसुक] तृण-विशेष (सूअ २, २)।

कलोवाइ स्त्री [दे] पात्र-विशेष (आचा २, १, २, १)।

कल्ल न [कल्य] १ कल, गया हुआ या आगामी दिन (पाअ, णाया १, १, दे ८, ६७)। २ शब्द, आवाज। ३ संख्या, गिनती (विसे ३४४२)। ४ आरोग्य, निरोगता, 'कल्लं किलारुग्गं' (विसे ३४३९)। ५ प्रभात, सुबह (अणु)। ६ वि निरोग, रोग रहित

किंजक्ख पु [दे] शिरीष-वृक्ष, सिरस का पेड़ (दे २, ३१)।

किणेद (शो)। अ [किमिदम्, किमेतत्] यह क्या? (पड्, कुमा)।

किंतु अ [किन्तु] परन्तु, लेकिन (सुर ४, ३७)।

किंथुग्घ देखो किंत्थुग्घ (राज)।

किंदिय न [केन्द्र] १ वर्तुल का मध्य-स्थल। २ ज्योतिष में इष्ट लग्न से पहला, चौथा, सातवाँ और दसवाँ स्थान 'किंदियठाणट्ठिय-गुरम्मि' (सुपा ३९)।

किंदुअ पु [कन्दुक] कन्दुक, गेंद (भवि)।

किंधर पु [दे] छोटी मछली (दे २, ३२)।

किंनर पु [किन्नर] १ व्यन्तर देवों की एक जाति (पण्ह १, ४)। २ भगवान् धर्मनाथ जी के शासनदेव का नाम (संति ८)। ३ चमरेन्द्र की रथ-सेना का अधिपति देव (ठा ५, १)। ४ एक इन्द्र (ठा २, ३)। ५ देव-गन्धर्व, देव-गायक (कुमा)। °कंठ पु [°कण्ठ] किन्नर के कण्ठ जितना बड़ा एक मणि (जीव ३)।

किंनरी स्त्री [किन्नरी] किन्नर देव की स्त्री (कुमा)।

किंनु अ [किंनु] पूर्वपक्ष, आक्षेप, आशंका का सूचक अव्यय (वव १)।

किंपय वि [दे] कृपण, कंजूस (दे २, ३१)।

किंपाग पु [किम्पाक] १ वृक्ष-विशेष, 'हुंति मुहि च्चिय महुरा विसया किंपागभूरुहफल व्व' (पुप्फ ३९२ ओप)। २ न उसका फल, जो देखने में और स्वाद में सुन्दर, परन्तु खाने में प्राण का नाश करता है, 'किंपागफलोवमा विसया' (सुर १२, १३८)।

किंपि अ [किमपि] कुछ भी (प्रासू ६०)।

किंपुरिस पु [किंपुरुष] १ व्यन्तर देवों की एक जाति (पण्ह १, ४)। २ एक इन्द्र, किन्नर-निकाय के उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३)। ३ वैरोचन बलीन्द्र की रथसेना का अधिपति देव (ठा ५, १—पत्र ३०२)। °कंठ पु [°कण्ठ] मणि की एक जाति, जो किंपुरुष के कण्ठ जितना बड़ा होता है (जीव ३)।

किंबोड वि [दे] स्खलित, गिरा हुआ, भूला हुआ (२, ३१)।

किमज्झ वि [किमध्य] असार, निःसार (पण्ह २, ४)।

किंवयंती स्त्री [किंवदन्ती] जनश्रुति, जनरव (हम्मीर ३६)।

किंसारु पु [किंशारु] सस्य-शूक, सस्य का तीक्ष्ण अग्र भाग (दे २, ६)।

किंसुग्घ न [किंस्तुघ्न] ज्योतिष-प्रसिद्ध एक स्थिर करण (विसे ३३५०)।

किंसुअ पु [किंशुक] १ पलाश का पेड़, टेसू, ढाक (सुर ३ ४६)। २ न. पलाश का पुष्प (हे १, २९, ८६)।

किंकिंडि पुं [दे] सर्प, साँप (दे २, ३२)।

किक्किंधा स्त्री [किष्किन्धा] नगरी विशेष (से १४, ५५)।

किक्किंधि पु [किष्किन्धि] १ पर्वत-विशेष (पउम ६, ४५)। २ इस नाम का एक राजा (पउम ६, १५४, १०, २०)। °पुर न [°पुर] नगर विशेष (पउम ६, ४५)।

किच्च वि [कृत्य] १ करने योग्य, कर्त्तव्य, फरज (सुपा ४६५, कुमा)। २ वन्दनीय, पूजनीय, 'न पिट्ठओ न पुरओ नेव किच्चाण पिट्ठओ' (उत्त ३)। ३ पु गृहस्थ (सूअ १, १, ४)। ४ न शास्त्रोक्त अनुष्ठान, क्रिया, कृति (आचा २ २, २, सूअ १, १, ४)।

किच्चंत वि [कृत्यमान] १ छिन्न किया जाता, काटा जाता। २ पीडित किया जाना, सताया जाता (राज)।

किच्चण न [दे] प्रक्षालन, धोना, 'हरिअच्छेयण छप्पइयघचण किच्चण च पोत्ताण' (ओघ १६८—पत्र ७२)।

किच्चा स्त्री [कृत्या] १ काटना, कर्त्तन (उप पृ ३५६)। २ क्रिया, काम, कर्म। ३ देव वगैरह की मूर्ति का एक भेद। ४ जादूगरी जादू। ५ रोग-विशेष, महामारी का रोग (हे १, १२८)।

किच्चा देखो कर = कृ।

किच्चि स्त्री [कृत्ति] १ मृग वगैरह का चमड़ा। २ चमड़े का वस्त्र। ३ भूर्जपत्र, भोजपत्र। ४ कृत्तिका नक्षत्र (हे २, १२ ८९, पड्)।

°पाउरण पु [°प्रावरण] महादेव, शिव (कुमा)। °हर पु [°धर] महादेव, शिव (पड्)।

किच्चिर अ [कियच्चिरम्] कितने समय तक, कब तक? (उप १२८ टी)।

किच्छ न [कृच्छ्र] १ दुःख कष्ट (ठा ५, १)। २ वि कष्ट-साध्य, कष्ट-युक्त (हे १, १२८)। ३ क्रिवि दुःख से, मुश्किल से (सुर ८, १४८)।

किज्ज वि [क्रेय] खरीदने योग्य, 'अकिज्जं किज्जमेव वा' (दस ७)।

किज्जंत देखो कि = कृ।

किज्जअ वि [कृत] किया गया, निर्मित (पिंग)।

किट्ट सक [कीर्त्तय्] १ श्लाघा करना, स्तुति करना। २ वर्णन करना। ३ कहना, बोलना। किट्टइ किट्टेइ (आचा, भग)। वकृ. किट्टमाण (पि २८९)। संकृ किट्टइत्ता, किट्टित्ता (उत्त २९, कप्प)। हेकृ. किट्टित्तए (कस)।

किट्ट स्त्रीन [किट्ट] १ धातु का मल, मैल (उप ५३२)। २ रग-विशेष (उर ६, ५)। ३ तेल, घी वगैरह का मैल। स्त्री. °ट्टी (पभा ३३)।

किट्टण देखो कित्तण (बृह ३)।

किट्टि स्त्री [किट्टि] १ अल्पीकरण-विशेष, विभाग-विशेष, 'अपुव्वविसोहीए अणुभागोणू-णविभयणं किट्टी' (पच १२, आवम)।

किट्टिय वि [कीर्तित] १ वर्णित, प्रशंसित (सूअ २, ६)। २ प्रतिपादित, कथित (सूअ २, २, ठा ७)।

किट्टिया स्त्री [कीटिका] वनस्पति-विशेष (पण्ण १, भग ७, २)।

किट्टिस न [किट्टिस] १ खली, सरसों, तिल आदि का तैल रहित चूर्ण (अणु)। २ एक प्रकार का सूत, सूता (अणु, आवम)।

किट्टिस न [किट्टिस] १ ऊन आदि का बाकी बचा हुआ अंश। २ उससे बना हुआ सूता। ३ ऊन, ऊँट के बाल आदि की मिलावट का सूता (अणु ३४)।

किट्टी देखो किट्ट = किट्ट।

किट्टीकय वि [किट्टीकृत] आपस में मिला हुआ, एकाकार, जैसे सुवर्ण आदि का किट्ट

कविअ न [कविक] लगाम (पाअ, सुपा २१३)।

कविंजल देखो कपिंजल (आचा २)।

कविकच्छु, कविगच्छु देखो कइकच्छु (पण्ह २, ५, आ १४, दे १,२६, जीव ३)।

कविट्ठ देखो कइत्थ (पण्ण १, दे ३, ४५)।

कविड न [दे] घर का पिछला आँगन (दे २, ६)।

कवित्थ देखो कइत्थ (उप ३०३१ टी)।

कवियच्छु देखो कइकच्छु (स २३६)।

कविल पु [दे] श्वान, कुत्ता (दे २,६, पाअ)।

कविल पु [कपिल] १ वर्ण-विशेष, भूरा रग, तामटा वर्ण (उत्रा २)। २ पक्षि-विशेष (पण्ह १, ४)। ३ साख्य मत का प्रवर्त्तक मुनि-विशेष (आवम, औप)। ४ एक ब्राह्मण महर्षि (उत्त ८)। ५ इस नामका एक वासुदेव (णाया १, १६)। ६ राहु का पुद्गल-विशेष (सुज्ज २०)। ७ त्रि भूरा रग का, मटमैला रग का (पउम ६,७०, से ७,२२)। °ा स्त्री [°ा] एक ब्राह्मणी का नाम (आचू)।

कविलडोला स्त्री [दे कपिलडोला] क्षुद्र जन्तु-विशेष, जिसको गुजराती मे 'खडमाकडी' कहते हैं (जी १८)।

कविलास देखो कइलास, 'तेमुवि हवेज कविलासमेरुगिरिसंनिभा कूडा' (उव)।

कविलिअ वि [कपिलित] कपिल रंगवाला किया हुआ, भूरे रंग से रँगित (गउड)।

कविल्लुय न [दे] पात्र-विशेष, कडाही (बृह ५)।

कविस पुं [कपिश] १ वर्ण-विशेष, काला-पीला रग, वादामी, कृष्ण-पीत-मिश्रित वर्ण। २ वि कपिश वर्णवाला (पाअ, गउड)।

कविस न [दे] दारू, मद्य, मदिरा (दे २,२)।

कविसा स्त्री [दे] अर्धजङ्घा, एक प्रकार का जूता (दे २, ५)।

कविसायण पुंन [कपिशायन] मद्य-विशेष, गुड का दारू (पण्ण १७—पत्र ५३२)।

कविसीसग, कविसीसय पुन [कपिशीर्षक] प्राकार का अग्र-भाग (औप, णाया १, १, राय)।

कविहसिय पुन [कपिहसित] आकाश मे अकस्मात् होनेवाली भयकर आवाज करती ज्वाला (अणु १२०)।

कवेल्लुय देखो कविल्लुय (ठा ८—पत्र ४१७)।

कवोड देखो कवोय (पिंड २१७)।

कवोय पु [कपोत] १ कबूतर, पारावत, परेवा (गउड, विपा १, ७)। २ म्लेच्छ देश-विशेष (पउम २७, ७)। ३ न कूष्माण्ड, कोहडा (भग १५)।

कवोल पु [कपोल] गाल, गण्ड (सुर ३, १२०, हे ४, ३९५)।

कवोसण (मा) वि [कदुष्ण] थोडा गरम (प्राकृ १)।

कव्व न [काव्य] १ कविता, कवित्व (ठा ४, ४, प्रासू १)। २ पु ग्रह-विशेष, शुक्र (सुर ३, ५३)। ३ वि वर्णनीय, श्लाघनीय (हे २, ७९)। °इत्त वि [°वत्] काव्यवाला (हे २, १५९)।

कव्व न [क्रव्य] मास (सुर ३, ५३)।

कव्वट्ठ पु [दे] वालक, वच्चा (गच्छ ३,१६)।

कव्वड देखो कव्वड (भवि)।

कव्वा स्त्री [क्रव्या] माया (सूत्र० चू० पत्र. १७५ सूत्र गा० ३४५ अव्या० ६ गा० १)।

कव्वाड पु [दे] दक्षिण हस्त, दाहिना हाथ (दे २, १०)।

कव्वाडिअ वि [दे] काँवर उठानेवाला, वहँगी से माल ढोनेवाला (कुप्र १२१)।

कव्वाय पुं [क्रव्याद] १ राक्षस, पिशाच (पउम ७, १०, दे २, १५, स २१३)। २ वि. कच्चा मास खानेवाला (पउम २२, ३५)। ३ मास खानेवाला (पाअ)।

कव्वाल न [दे] १ कर्म-स्थान, कार्यालय। २ गृह, घर (दे २, ५२)।

कस सक [कष्] १ ठार मारना। २ कसना, घिसना। ३ मलिन करना। कसति (पण्ण १३)। कवकृ कसिज्जमाण (सुपा ६१५)।

कस पु [कश] चर्म-यष्टि, चावुक (पण्ह १, ३, णाया १, २, स २८७)।

कस पु [कष] १ कसौटी, कष-क्रिया, 'तावच्छेयकमेहिं सुद्ध पासइ सुवन्नमुप्पन्न' (सुपा ३८६)। २ कसौटी का पत्थर (पाअ)। ३ वि. हिंसक, मार डालनेवाला, ठार मारनेवाला (ठा ४, १)। ४ पुन ससार, भव, जगत् (उत्त ४)। ५ न कर्म, कर्म-पुद्गल, 'कम्म कस भवो वा कस' (विसे १२२८)। °पट्ट, °वट्ट पु [°पट्ट] कसौटी का पत्थर (अणु, गा ६२६, सुर २, २४)। °ाहि पुस्त्री [°ाहि] सर्प की एक जाति (पण्ण १)।

कसई स्त्री [दे] फल विशेष, अरण्यचारी वनस्पति का फल (दे २, ६)।

कसट (पै) देखो कट्ठ=कष्ट (हे ४, ३१०, प्राप्र)।

कसट्ट पु [दे] क्तवार, कूडा (ओघ ५५७)।

कसण पुं [कृष्ण] १ वर्ण विशेष। २ वि. कृष्ण वर्णवाला, काला, श्याम (हे २, ७५, ११०, कुमा)। °पक्ख पुं [°पक्ष] कृष्ण-पक्ष, वदी पखवारा (पाअ)। °सार पु [°सार] १ वृक्ष-विशेष। २ हरिण की एक जाति (नाट—मृच्छ ३)।

कसण वि [कृत्स्न] सकल, सब, सम्पूर्ण (हे १, ७५)।

कसणसिअ पु [दे] वलभद्र, वासुदेव का वडा भाई (दे २, २३)।

कसणिअ वि [कृष्णित] काला किया हुआ (पाअ)।

कसमीर देखो कम्हीर (पउम ९८ ६५)।

कसर पु [दे] अधम बैल (दे २, ४, गा ७९५), 'नणु सीलभरुव्वहणे, तेवि हु सीयति का (? क) सरुव्व' (पुप्फ ६३)।

कसर पुंन [दे कसर] रोग-विशेष, कण्डू-विशेष, 'कच्छुत्त (? क) सराभिभूआ खरतिक्खणक्खक्खइअविक्यतणू' (ज २—पत्र १६५)।

कसरक्क पुंन [दे कसरक्क] १ चर्वण-शब्द खाते समय जो शब्द होता है वह, 'खज्जइ न उ कसरक्केहिं' (हे ४, ४२३, कुमा)। २ कुड्मल, फूल की कली, ते गिरिसिहरा ते पीलुपल्लवा ते करीरकसरक्का। लब्भति करह! मरुविलसियाइ कत्तो वणेत्थम्मि' (वज्जा ४६)।

कसव्व न [दे] वाष्प, भाफ। २ वि स्तोक, अल्प। ३ प्रचुर, व्याप्त (दे २, ५३)। ४ आर्द्र, गीला, 'दहिरकसव्वालवियदीहरवणकोलवव्भनिउरंव' (स ४३७, दे २, ५३)। ५ कर्कश, परुष, 'वूढोमयकयरवचुरणकलुसपालासफलकसव्वाओ' (गउड)।

कित्तय वि [कीर्तक] कीर्तन-कर्ता (पव २१६ टी)।

कित्तवोरिअ देखो कत्तवीरिअ (ठा ८)।

कित्ता देखो किच्चा = कृत्या (प्राकृ ८)।

कित्ति स्त्री [कीर्त्ति] १ यश, कीर्त्ति, सुख्याति (ओप, प्रासू ४३, ७४, ८१)। २ एक विद्या-देवी (पउम ७, १४१)। ३ केसरि-द्रह की अधिष्ठात्री देवी (ठा २, ३—पत्र ७२)। ४ देव-प्रतिमा-विशेष (णाया १, १ टी—पत्र ४३)। ५ श्लाघा, प्रशंसा (पंच ३)। ६ नीलवन्त पर्वत का एक शिखर (ज ४)। ७ सौधर्म देवलोक की एक देवी (निर)। ८ पुं इस नाम का एक जैन मुनि, जिसके पास पाँचवें बलदेव ने दीक्षा ली थी (पउम २०, २०५)। °कर वि [°कर] १ यशस्कर, ख्याति-कारक (णाया १, १)। २ पु भगवान् आदिनाथ के एक पुत्र का नाम (राज)। °चंद पु [°चन्द्र] नृप-विशेष (धम्म)। °धम्म पुं [°धर्म] इस नाम का एक राजा (दस)। °धर पु [°धर] १ नृप-विशेष (तदु)। २ एक जैन मुनि, दूसरे बलदेव के गुरु (पउम २०, २०५)। °पुरिस पु [°पुरुष] कीर्त्ति-प्रधान पुरुष, वासुदेव वगैरह (ठा ६)। °म वि [°मत्] कीर्त्ति-युक्त। °मई स्त्री [°मती] १ एक जैन साध्वी, (आक)। २ ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की एक स्त्री (उत्त १३)। °य वि [°द] कीर्त्ति-कर, यशस्कर (औप)।

कित्ति स्त्री [कृत्ति] चर्म, चमड़ा, 'कुत्तो अम्हाण वग्घकित्ती य' (काप्र ८६३, गा ६४०, वज्जा ४४)।

कित्तिम वि [कृत्रिम] बनावटी, नकली (सुपा २४, ६१८)।

कित्तिय वि [कीर्त्तित] १ उक्त, कथित, 'कित्तियवंदियमहिया' (पडि)। २ प्रशंसित, श्लाघित (ठा २, ४)। ३ निरूपित, प्रति-पादित (तदु)।

कित्तिय वि [कियत्] कितना (गउड)।

किन्न वि [क्लिन्न] आर्द्र, गीला (हे ४, ३२६)।

किन्ह देखो कण्ह (कप्प)।

किपाड वि [दे] स्खलित, गिरा हुआ (पड्)।

किब्बिस न [किल्बिष] १ पाप, पातक (पण्ह १, २)। २ मांस, 'निग्गय च से वीयपामेण किब्बिसं' (स २६३)। ३ पु. चाण्डाल-स्थानीय देव-जाति (भग १२, ५)। ४ वि मलिन। ५ अधम, नीच (उत्त ३)। ६ पापी, दुष्ट (धर्म ३)। ७ कर्बुर, चितकबरा (तदु)।

किब्बिसिय पु [किल्बिषिक] १ चाण्डाल-स्थानीय देव-जाति (ठा ३, ४—पत्र १६२)। २ केवल वेषधारी साधु (भग)। ३ वि अधम, नीच (सूअ १, १, ३)। ४ पाप-फल को भोगनेवाला दरिद्र, पशु वगैरह (णाया १, १)। ५ भाण्ड-चेष्टा करनेवाला (औप)।

किब्बिसिया स्त्री [कैल्बिषिकी] १ भावना-विशेष, धर्म-गुरु वगैरह की निन्दा करने की आदत (धर्म ३)। २ केवल वेष-धारी साधु की वृत्ति (भग)।

किम (अप) अ [कथम्] क्यों, कैसे? (हे ४, ४०१)।

किमग देखो किवण (आचा)।

किमस्स पुं [किमश्व] नृप-विशेष, जिसने इन्द्र को संग्राम में हराया था और शाप लगने से जो मरकर अजगर हुआ था (निचू १)।

किमी पुं [कृमि] १ क्षुद्र जीव, कीट-विशेष (पण्ह १, ३)। २ पेट में, फुनसी में और बवासीर में उत्पन्न होनेवला जन्तु-विशेष (जी १५)। ३ द्वीन्द्रिय कीट-विशेष (पण्ह १, १—पत्र २३)। °य न [°ज] कृमि-तन्तु में उत्पन्न वस्त्र, 'कोसेज्जपट्टमाई ज, किमियं तु पवुच्चइ' (पचभा)। °राग, °राय पु [°राग] किरमिजी का रंग (कम्म १, २०, दे २, ३२, पण्ह २, ४)। °रासि पु [°राशि] वनस्पति विशेष (पण्ण १—पत्र ३६)।

किमिघरवसण [दे] देखो किमिहरवसण (पड्)।

किमिच्छय न [किमिच्छक] इच्छानुसार दान (णाया १, ८—पत्र १५०)।

किमिण वि [कृमिमत्] कृमि-युक्त, 'किमिणवहुदुरभिगंधेसु' (पण्ह २, ५)।

किमिराय वि [दे] लाक्षा से रक्त (दे २, ३२)।

किमिहरवसण न [दे] कौशेय-वस्त्र, रेशमी वस्त्र (दे २, ३३)।

किमु अ [किमु] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रश्न। २ वितर्क। ३ निन्दा। ४ निषेध (हे २, २१७, पिंग)।

किमुय अ [किमुत] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रश्न। २ विकल्प। ३ वितर्क। ४ अतिशय (हे २, २१८), 'अमरनररायमहियं ति पूइय तेहिं, किमुय सेसेहिं' (विसे १०६१)।

किम्मिय न [दे किम्मित] जड़ता, जाड्य (राज)।

किम्मीर वि [किर्मीर] १ कर्बुर, कबरा (पाअ)। २ पु. राक्षस-विशेष, जिसको भीमसेन ने मारा था (वेणी ११७)। ३ वंश विशेष, 'जाया किम्मीरवंसे' (रंभा)।

किय देखो कीय (पिंड ३०६)।

कियत वि [कियत्] कितना (सम्मत्त २२८)।

कियत्थ देखो कयत्थ (भवि)।

कियव्व देखो कइअव (उप ७२८ टी)।

किया देखो किरिआ, 'हय नाणं कियाहीणं' (हे २, १०४), 'मग्गणुसारी सद्धो पन्न-वणिज्जो कियावरो चेव' (उप १६६, विसे ३५९३ टी, कप्पू)।

कियाडिया स्त्री [दे] कानबूट्टी, कान का ऊपरी भाग (वव १)।

कियाण देखो कर = कृ।

कियाणग न [क्रयाणक] किराना, नमक, मसाला आदि बेचने योग्य चीजें (सुर १,६०)।

किर पुं [दे] सूकर, सूअर (दे २, ३०, पड्)।

किर अ [किल] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ संभावना। २ निश्चय। ३ हेतु, निश्चित कारण। ४ वार्त्ता-प्रसिद्ध अर्थ। ५ अरुचि। ६ अलीक, असत्य। ७ संशय, संदेह (हे २, १८६, पड्, गा १२६, प्रासू १७, दस १)। ८ पाद पूर्ति में भी इसका प्रयोग होता है (कम्म ४, ७६)।

किर सक [कॄ] १ फेंकना। २ पसारना, फैलाना। ३ बिखेरना। वकृ किरंत (से ४, ५८, १४ ५७)।

किरण पुन [किरण] किरण, रश्मि, प्रभा (सुपा ३५१, गउड, प्रासू ८२)।

काई स्त्री [काकी] कौए की मादा (विपा १, ३)।

काउ स्त्री [कापोती] लेश्या विशेष, आत्मा का एक प्रकार का परिणाम (भग, आचा)। °लेसा स्त्री [°लेश्या] आत्म-परिणाम-विशेष (सम; ठा ३, १)। °लेस्स वि [°लेश्य] कापोत लेश्यावाला (पराण १७ भग)। °लेस्सा देखो °लेसा (पराण १७)।

काउ देखो कर = कृ।

काउंवर पुं [काकोदुम्बर] नीचे देखो (राज)।

काउंवरी स्त्री [काकोदुम्बरी] ओषधि-विशेष, 'निवंवरवउवरकाउंवरिवोरि—' (उप १०३१ टी; पराण १)।

काउकाम वि [कर्त्तुकाम] करने को चाहनेवाला (ओघ ५३७)।

काउड्डावण न [कायोड्डावन] उच्चाटन, दूर-स्थित दूसरे के शरीर का आकर्षण करना (णाया १, १४)।

काउदर पु [काकोदर] साँप की एक जाति (पराह १, १)।

काउमण वि [कर्त्तुमनस्] करने की चाहवाला (उव, उप पृ ७०, सं ९०)।

काउरिस पु [कापुरुष] १ खराब आदमी, नीच पुरुष। २ कातर डरपोक पुरुष (गउड, सुर ८, १५०, सुपा १६२)।

काउल्ल पुं [दे] वक, बगुला (दे २, ६)।

काउसग्ग } पु [कायोत्सर्ग] १ शरीर पर
काउस्सग्ग } के ममत्व का त्याग (उत्त २६)। २ कायिक-क्रिया का त्याग। ३ ध्यान के लिए शरीर की निश्चलता (पडि)।

काऊ देखो काउ (ठा १; कम्म ४, १३)।

काऊणं } देखो कर = कृ।
काऊण }

काओदर देखो काउदर (स्वप्न ९८)।

काओली स्त्री [काकोली] कन्द-विशेष, वनस्पति-विशेष (पराण १)।

काओवग पु [कायोपग] ससारी आत्मा (सूअ २, ६)।

काओसग्ग देखो काउसग्ग (भवि)।

काक पु [काक] १ कौआ, वायस (अनु ३)। २ ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। °जघा स्त्री [°जङ्घा] वनस्पति-विशेष, चकसेनी, घुंघची (अनु ३)। देखो काग, काय = काक।

काकंदग पुं [काकन्दक] एक जैन महर्षि (कप्प)।

काकंदिय पु [काकन्दिक] एक जैन महर्षि (कप्प)।

काकंदिया स्त्री [काकन्दिका] जैन मुनियों की एक शाखा (कप्प)।

काकंदी देखो काइंदी (णाया १, ६, ठा ५, १)।

काकणि देखो कागणि (विण १, २)।

काकलि देखो कागलि (ठा १०—पत्र ४७१)।

काग देखो काक (दे १, १०६, प्रासू ६०)। °तालसजीवगनाय पु [°तालसजीवकन्याय] काकतालीयन्याय (उप १४२ टी)। °तालिज्ज, °तालीअ न [°तालीय] जैसे कौए का अतर्कित आगमन और ताल फल का अकस्मात् गिरना होता है ऐसा अवितर्कित सभव, अकस्मात् किसी कार्य का होना (आचा, दे ५, १५)। °थल न [°स्थल] देश-विशेष (दे २, २७)। °पाल पु [°पाल] कुष्ठ-विशेष (राज)। °पिंडी स्त्री [°पिण्डी] अग्र-पिण्ड (आचा २, १, ६)। देखो काय = काक।

कागंदी देखो काइंदी (अनु २)।

कागणि स्त्री [दे] १ राज्य, 'असोगसिरिणो पुत्तो अवो जायइ कागणिं' (विसे ८६२)। २ मास का छोटा टुकडा (औप)।

कागणी देखो कागिणी (श्रा २७, ठा ७)।

कागणी स्त्री [काकिणी] सवा गुंजा का एक बाट (अणु १५५)।

कागल पु [काकल] ग्रीवास्थ उन्नत प्रदेश (अनु)।

कागलि } स्त्री [काकलि, °ली] १ सूक्ष्म
कागली } गीत-ध्वनि, स्वर-विशेष (सुपा ५६, उप पृ ३५)। २ देवी-विशेष, भगवान् अभिनन्दन की शासन-देवी (पव २७)।

कागिणी स्त्री [काकिणी] १ कौडी, कपर्दिका (उर ७, ३; उव, श्रा २८ टी)। २ बीस कौडी के मूल्य का एक सिक्का (उप ५४५)। ३ रत्न विशेष (सम २७, उप ९८६ टी)।

कागी स्त्री [काकी] १ कौए की मादा (वा २ विद्या-विशेष (विसे २४५३)।

काकोणंद पु [काकोनन्द] इस नाम की एक म्लेच्छ जाति, 'मिच्छा कागोणंदा विक्खाया महियलम्मि ते सूरा' (पउम ३४, ४१)।

काठिण्ण न [काठिन्य] कठिनता (धर्मसं ५१, ५४)।

काढ पुं [क्वाथ] काढा (कुलक ११)।

काण वि [काण] काना, एकाक्ष (सुपा ६४३)।

काण वि [दे] १ सच्छिद्र, काना (आचा २, १, ८)। २ चुराया हुआ। °क्कय पु [°क्रय] चुराई हुई चीज को खरीदना (सुपा ३४३, ३४४)।

काणच्छि } स्त्री [दे] टेढी नजर से देखना,
काणच्छिया } कटाक्ष (दे २, २४, भवि), 'काणच्छियाओ य जहा विडो तहा करेइ' (श्रावम)।

काणण न [कानन] १ वन, जगल (पाअ)। बगीचा, उपवन (अनु, ओप)।

काणत्थेव पुं [दे] विरल जल-वृष्टि, बूँद-बूँद बरसना (दे २, २६)।

काणद्धी स्त्री [दे] परिहास (दे २, २८)।

काणिक्का स्त्री [दे] बडी ईंट (वृह ३)।

काणिट्टा स्त्री [काणेष्टा] लोहे की ईंट (वव ४)।

काणिआर देखो कण्णिआर (सक्षि १७)।

काणिय न [काण्य] आँख का रोग, 'काणियं झिम्मियं चेव, कुणियं खुज्जियं तहा' (आचा)।

काणीण पु [कानीन] कुंवारी कन्या से उत्पन्न पुत्र (भवि)।

कादव देखो कायव (पराह १, १)।

कादवरी देखो कायवरी (अभि १८८)।

कादूसण वि [कदूषण] आत्मा को दूषित करनेवाला। स्त्री. °णिया (भग ६, ५—पत्र २६८)।

कापुरिस देखो काउरिस (णाया १, १)।

काम पु [काम] रोग, बीमारी (दसनि २, १५)। °एव देखो कामदेव (कुप्र ४११)। °ग्घ न [°घ्न] आयंबिल तप (सत्रोव ५८)। °डहण पुं [°दहन] महादेव, शिव (वज्जा ६८)। °रुय देखो कामरूअ (धर्मवि ५६)।

काम सक [कामय्] चाहना, वाञ्छना। कामेइ (पि ४९१)। कामेंति (गउड)। वकृ, कामेंत कामअमाण (गा २५६, अभि ६१)।

किलीण देखो किलिण्ण (भवि)।

किलीव देखो कीव (स ६०)।

किलेस अक [क्लिश्] क्लेश पाना, हैरान होना। किलेसइ (प्राकृ २७)।

किलेस पुं [क्लेश] १ खेद, थकावट (औप)। २ दुःख, पीडा, बाधा (पउम २२, ७५; सुज्ज २०)। ३ दुःख का कारण। ४ कर्म, शुभाशुभ-कर्म (बृह १)। °यर वि [°कर] क्लेश जनक (पउम २२, ७५)।

किलेसिय वि [क्लेशित] दुःखी किया हुआ (सुर ४, १६७; १६६)।

किल्ला देखो किड्डा (मे ६१)।

किव पु [कृप] १ इस नाम का एक ऋषि, कृपाचार्य (हे १, १२८), 'भाइमयसमग्ग गंगेय विदुर दोण जयद्दह सउणी कीव (? सउणि किव) आगत्थाम' (णाया १, १६—पत्र २०८)।

किवँ (अप) देखो कह (कुमा)।

किवण वि [कृपण] १ गरीब, रंक, दीन (सूअ १, १, ३; अच्चु ६७)। २ दरिद्र, निर्धन (पण्ह १, २)। ३ कंजूस, अदाता (दे २, ३१)। ४ क्लीब, कायर (सूअ २,२)।

किवा स्त्री [कृपा] दया, मेहरबानी (हे १, १२८)। °वन्न वि [°पन्न] कृपा-प्राप्त, दयालु (पउम ६५,४७)।

किवाण पुन [कृपाण] खड्ग, तलवार (सुपा १५८; हे १, १२८, गउड)।

किवालु वि [कृपालु] दयालु, दया करनेवाला (पउम ३४, ५०, ६७, २०)।

किविड न [दे] १ खलिहान, अन्न साफ करने का स्थान। २ वि खलिहान में जो हुआ हो वह (दे २, ६०)।

किविडी स्त्री [दे] १ किवाड, पार्श्व द्वार। २ घर का पिछला आँगन (दे, २, ६०)।

किविण देखो किवण (हे १, ४६; १२८; गा १३६; सुर ३, ४४; प्रासू ५१; पण्ह १, १)।

किवीडजोणि पु [कृपीटयोनि] अग्नि (सम्मत्त २२६)।

किस सक [कृशय्] ह्रसित करना, अपचित करना। किसए (सूअ १, २, १, १४)।

किस वि [कृश] १ दुर्बल, निर्बल (उवर ११३)। २ पतला (हे १, १२८; ठा ४, २)।

किसग वि [कृशाङ्ग] दुर्बल शरीरवाला (गा ६५७)।

किसर पु [कृशर] १ पक्वान्न-विशेष, तिल, चावल और दूध की बनी हुई एक खाद्य चीज। २ खिचडी, चावल और दाल का मिश्रित भोजन-विशेष (हे १, १२८)।

किसर देखो केसर 'महमहिअदसणकिसर' (हे १, १४६)।

किसरा स्त्री [कृशरा] खिचडी, चावल-दाल का मिश्रित भोजन-विशेष (हे १, १२८; दे १, ८८)।

किसल देखो किसलय (हे १, २६९, कुमा)।

किसलइय वि [किसलयित] अंकुरित, नये अंकुरवाला (सुर ३, ३९)।

किसलय पुन [किसलय] १ नूतन अंकुर (श्रा २०)। २ कोमल पत्ता (जी ६), 'सव्वोवि किसलओ खलु उग्गममाणो अणंतओ भणिओ' (पण्ण १)। °माला स्त्री [°माला] छन्द-विशेष (अजि १६)।

किसा देखो कासा (हे १, १२७)।

किसाणु पु [कृशानु] १ अग्नि, वह्नि, आग। २ वृक्ष-विशेष, चित्रक वृक्ष। ३ तीन की संख्या (हे १, १२८, षड्)।

किसि स्त्री [कृषि] खेती, चास (विसे १६१५; सुर १५, २००; प्राप्र)।

किसिअ वि [कृशित] दुर्बलता-प्राप्त, कृशता-युक्त (गा ४०; वज्जा ४०)।

किसिअ वि [कृषित] १ विलखित, रेखा किया हुआ। २ जोता हुआ, कृष्ट। ३ खींचा हुआ (हे १, १२८)।

किसीवल पु [कृषीवल] कर्षक, किसान, 'पाय परस्स धन्नं भक्खंति किसीवला पुव्विं' (श्रा १६)।

किसोर पु [किशोर] बाल्यावस्था के बाद की अवस्थावाला बालक, 'सीहकिसोरोव्व गुहाओ निग्गओ' (सुपा ५४१)।

किसोरी स्त्री [किशोरी] कुमारी, अविवाहिता युवती (णाया १, ६)।

किस्स देखो किलिस = क्लिश्। संकृ किस्सइत्ता (सूअ १, ३, २)।

किह } देखो कह (आचा, कुमा; भाग ३, २;
किहं } णाया १, १७)।

कीअ देखो कीव (षड्, प्राप्र)।

कीइस वि [कीदृश] कैसा, किस तरह का (स १४०)।

कीकस पु [कीकश] १ कृमि-जन्तु-विशेष। २ न. हड्डी, हाड। ३ वि कठिन, कठोर (राज)।

कीचअ देखो कीयग (वेणी १७७)।

कीड देखो किड्ड = क्रीड्। भवि. कीडिस्सं (पि ५२६)।

कीड पु [कीट] १ कीडा, क्षुद्र जन्तु (उत्त)। २ कीट-विशेष, चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त २)।

कीडइल्ल वि [कीटवत्] कीडावाला, कीटक-युक्त (गउड)।

कीडण न [क्रीडन] खेल, क्रीडा (सुर १, ११८)।

कीडय पु [कीटक] देखो कीड = कीट (नाट सुपा ३७०)।

कीडय न [कीटज] कीडे के तन्तु से उत्पन्न होनेवला वस्त्र, वस्त्र-विशेष (अणु)।

कीडा देखो किड्डा (सुर ३, ११६; उवा)।

कीडाविया देखो किड्डाविया (राज)।

कीडिया स्त्री [कीटिका] पिपीलिका, चींटी (सुर १०, १७६)।

कीडी स्त्री [कीटी] ऊपर देखो (उप १४७ टी; दे २, ३)।

कीण सक [क्री] खरीदना, मोल लेना। कीणइ, कीणए (षड्)। भवि. कीणिस्सं (पि ५११; ५३४)।

कीणास पुं [कीनाश] यम, जम (पाअ; सुपा १८३)। °गिह [°गृह] मृत्यु, मौत (उप १३६ टी)।

कीदिस (शौ) देखो कीरिस (प्राकृ ८३)।

कीय वि [क्रीत] १ खरीदा हुआ, मोल लिया हुआ (सम ३६; पण्ह २, १; सुपा ३४५)। २ जैन साधुओं के लिए भिक्षा का एक दोष (ठा ३, ४)। ३ न. क्रय, खरीद (दस ३, सूअ १, ६)। °कड, °गड वि [°कृत] १ मूल्य देकर लिया हुआ (बृह १)। २ साधु के लिए मोल से कीना हुआ, जैन साधु के लिए भिक्षा-दोष-युक्त वस्तु (पि ३३०)।

क्रियावाला (भग)। °ट्ठिइ स्त्री [°स्थिति] मर कर फिर उसी शरीर मे उत्पन्न होकर रहना (ठा २, ३)। °णिरोह पु [°निरोध] शरीर-व्यापार का परित्याग (ग्राव ४)। °तिगिन्छा स्त्री [°चिकित्सा] १ शरीर-रोग की प्रतिक्रिया। २ उसका प्रतिपादक शास्त्र (विपा १,८)। °भवत्थ वि [°भवस्थ] माता के उदर मे स्थित (भग)। °वंझ पु [वन्ध्य] ग्रह-विशेष (राज)। °समिअ वि [°समित] शरीर की निर्दोष प्रवृत्ति करनेवाला (भग)। °समिइ स्त्री [°समिति] शरीर की निर्दोष प्रवृत्ति (ठा ८)।

काय पु [काक] १ कौआ, वायस (उप पृ ७३, हका १८८, वा २६)। २ वनस्पति-विशेष, काला उम्बर (पण्ण १—पत्र ३५)। देखो काअ, काग।

काय पु [काच] कांच, शीशा (महा, ग्राचा)।

काय पु [दे] १ कावर, बहँगी, बोझ ढोने के लिए तराजूनुमा एक वस्तु, इसमे दोनो ओर निकहर लटकाये जाते हैं (णाया १, ८ टी—पत्र १५२)। °कोडिय पु [°कोटिक] काँवर से भार ढोनेवाला (णाया १, ८ टी)। देखो काव।

काय पु [दे] १ लक्ष्य, वेध्य, निशाना। २ उपमान, जिस पदार्थ की उपमा दी जाय वह (दे २, २६)।

कायकुल पु [दे] कामिञ्जुल, जल-पक्षी-विशेष (दे २, २६)।

कायंदी स्त्री [दे] परिहास, उपहास (दे २, २८)।

कायदी देखो काइदी (स ६)।

कायबुअ पु [दे] कामिञ्जुल जल-पक्षी विशेष (दे २, २९)।

कायंब । पु [कादम्ब, °क] १ हंस-पक्षी
कायंबग । (पाग्र, कप्प)। २ गन्धर्व-विशेष। ३ कदम्ब वृक्ष (राज)। ४ वि कदम्ब-वृक्ष-सम्बन्धी, 'कायंबपुप्फगोलयमसूरअइमुत्तयम्स पुप्फ व' (पुप्फ २६८)।

कायंबर न [कादम्बर] मद्य-विशेष, गुड का दारू, 'कायंबरपसन्ना' (पउम १०२, १२२)।

कायंबरी स्त्री [कादम्बरी] एक गुहा का नाम (कुप्र ६३)।

कायंबरी स्त्री [कादम्बरी] १ मदिरा, दारू (पाग्र, पउम ११८, १०)। २ अटवी-विशेष (स ५५१)।

कायक न [दे कायक] हरा रंग की रूई से बना हुआ वस्त्र (ग्राचा २ ५, १)।

कायत्थ पु [कायस्थ] जाति-विशेष, कायथ जाति, कायस्थ नाम से प्रसिद्ध जाति, लेखक, लिखने का काम करनेवाली मनुष्य-जाति (मुद्रा ७६, मृच्छ ११७)।

कायपिउच्छा } स्त्री [दे] कोकिला, कोयल,
कायपिउला } पिकी (दे २, ३०, षड्)।

कायर वि [कातर] अधीर, डरपोक (णाया १, १ प्रासू ५८)।

कायर वि [दे] प्रिय, स्नेह-पात्र (दे २, ५८)।

कायरिय वि [कातर] १ डरपोक, भयभीत, अधीर, 'धीरणवि मरियव्व कायरिएणावि अवस्समरियव्व' (प्रासू १०९)। २ पु गोशालक का एक भक्त (भग ८, ५)।

कायरिया स्त्री [कातरिका] माया, कपट (सूम्र १, २, १)।

कायल पुं [दे] १ काक, कौआ (दे २, ५८, पाग्र)। २ वि. प्रिय, स्नेह-पात्र (दे २, ५८)।

कायलि देखो कागलि (नाट—मृच्छ ६२)।

कायवंझ [कायवन्ध्य] ग्रह-विशेष, ग्रहा धिष्ठायक देव-विशेष (राज)।

कायव्व देखो कर = कृ।

कायह वि [कायह] देश-विदेश में बना हुआ (वस्त्र), (ग्राचा २, ५, १, ७)।

काया स्त्री [काया] शरीर, देह (प्रासू ११२)।

कार सक [कारय्] करवाना, बनवाना। कारेइ, कारेह (पि ४७२, सुपा ११३)। भूका कारेत्था (पि ५१७)। वकृ कारयंत (सुर १६, १०), कारेमाण (कप्प)। कवकृ कारिज्जंत (सुपा ५७)। सकृ कारिऊण (पि ५८४)। कृ कारेयव्व (पचा ६)।

कार वि [दे] कटु, कडवा, तीता (दे २ २६)।

कार पुन देखो कारा = कारा (स ६११, णाया १ १)।

कार पु [कार] १ क्रिया, कृति, व्यापार (ठा १०)। २ रूप, आकृति। ३ मुख का मध्य भाग (वव ३)।

°कार वि [°कार] करनेवाला (पउम १७, ७)।

कारकड वि [दे] परुष, कठिन (दे २, ३०)।

कारंड । पु [कारण्ड, °क] पक्षि-विशेष, 'हंस-
कारंडग । कारंडवचक्कवाग्रोवसोभिय' (भवि
कारंडव । ओप, स ६०१, णाया १, १, पण्ह १, १ विक्र ४१)।

कारग वि [कारक] १ करनेवाला (पउम ८२, ८६ उप पृ २१५)। २ करानेवाला (श्रा ६, विसे)। ३ न कर्ता, कर्म वगैरह व्याकरण प्रसिद्ध कारक (विसे ३०८४)। ४ कारण, हेतु, 'कारण ति वा कारग ति वा साहारण ति वा एगट्ठा' (ग्राचू १)। ५ उदाहरण, दृष्टान्त (ग्रोघ १६ भा)। ६ पुं सम्यक्त्व विशेष, शास्त्रानुसार शुद्ध क्रिया, 'जं जह भणियं तुमए तं तह करणम्मि कारगो होइ' (सम्य १४)।

कारण न [कारण] १ हेतु निमित्त (विसे २०९८, स्वप्न १७)। २ प्रयोजन (ग्राचा)। ३ अपवाद (कप्प)।

कारणिज्ज वि [कारणीय] प्रयोजनीय (स ३२६)।

कारणिय वि [कारणिक] १ प्रयोजन से किया जाता (उवर १०८)। २ कारण से प्रवृत्त (वव २)। ३ पु न्याय-कर्ता, न्यायाधीश (सुपा ११८)।

कारय देखो कारग (श्रा १६, विसे ३४२०)।

कारव सक [कारय्] करवाना, बनवाना। कारवेइ (उव)। वकृ कारवित (सुपा ६३२, पुप्फ ४७)। सकृ कारवित्ता (कप्प)।

कारवण न [कारण] निर्मापन, बनवाना (राज)।

कारवस पु [कारवश] देश-विशेष (भवि)।

कारवाहिय वि [कारबाधित] देखो करे-वाहिय (ग्रोप)।

कारविय वि [कारित] कराया हुआ (सुर १, २२६)।

कारह वि [कारभ] करभ सम्बन्धी (गउड)।

कारा स्त्री [कारा] कैदखाना (दे २, ६०, पाग्र)। °गार पुन [°गार] कैदखाना, जेल (सुपा १२२, मार्थ ५२)। °घर न [°गृह] कैदखाना (ग्रच्चु ८३)। °मंदिर न [°मन्दिर] कैदखाना, जेलखाना (कप्पू)।

कारा स्त्री [दे] लेखा, रेखा (दे २, २६)।

११)। °समय पु [°समय] १ अनाप्त-प्रणीत शास्त्र (सम्म १)। २ वि कुतीर्थिक, कुशास्त्र का प्रणेता और अनुयायी (सम्म १)। °सल्लिय वि [°शल्यिक] जिसके भीतर खराब शल्य घुस गया हो वह (पराह २,४)। °सील न [°शील] १ खराब स्वभाव (आचा)। २ अब्रह्मचर्य, व्यभिचार (ठा ४, ४)। ३ वि. जिसका आचरण अच्छा न हो वह, दुराचारी (ओघ ७६३)। ४ अब्रह्मचारी, व्यभिचारी (ठा ५, ३)। °स्सुमिण पुन [°स्वप्न] खराब स्वप्न (श्रा ६)। °हण वि [°वन] अल्प धनवाला दरिद्र (पराह २, १—पत्र १००)।

कु स्त्री [कु] १ पृथिवी, भूमि, 'कुसमयविसामण' (सम्म १ टी—पत्र ११४, से १, २६)। °त्तिअ न [°त्रिक] १ तीनो जगत्, स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक। २ तीन जगत् मे स्थित पदार्थ (ओप)। °त्तिअ वि [°त्रिज] तीनो जगत् मे उत्पन्न वस्तु (आवम)। °त्तिआवण पुन [°त्रिकापण] तीनो जगत् के पदार्थ जहाँ मिल सके ऐसी दूकान (भग, णाया १,१—पत्र ५३)। °वलय न [°वलय] पृथ्वी-मण्डल (श्रा २७)।

कुअरी देखो कुआँरी (पि २५१)।

कुअलअ देखो कुवलय (प्राप्र)।

कुआँरी देखो कुमारी (गा २६८)।

कुइअ वि [कुचित] सकुचा हुआ (पव ६२)।

कुइमाण वि [दे] म्लान, शुष्क (दे २, ४०)।

कुइय वि [कुचित] अवस्यन्दित, क्षरित (ठा ६)।

कुइय वि [कुपित] क्रुद्ध, कोप-युक्त (भवि)।

कुइयण्ण पु [कुविकर्ण] इस नाम का एक गृहपति, एक गृहस्थ (विसे ६३२)।

कुउअ पुन [कुतुप] स्नेह पात्र, घी तैल वगैरह भरने का चमडे का पात्र-विशेष, 'तुप्पाइ को (? कु) उआइ (पाअ) देखो कुतुव।

कुउआ स्त्री [दे] तुम्बी-पात्र, तुम्बा (दे २, १२)।

कुउव देखो कुउअ (पिंड ५५७)।

कुऊल न [दे] १ नीवी, नारा, इजारबन्द। २ पहने हुए कपडे का प्रांत भाग, अञ्चल (दे २, ३८)।

कुऊहल न [कुतूहल] १ अपूर्व वस्तु देखने की लालसा —उत्सुकता। २ कौतुक, परिहास (हे १, ११७, कुमा)।

कुओ अ [कुत] कहाँ से ? (पड्)। °इ अ [°चित्] कही से, किसी से (स १८५)। °वि अ [°अपि] कही से भी (काल)।

कुंआरी स्त्री [कुमारी] वनस्पति-विशेष, कुवारपाठा, घीकुवार, घीगुवार (श्रा २०, जी १०)।

कुंकण न [दे] १ कोकनद, रक्त-कमल (पराण १—पत्र ४०)। २ पुं क्षुद्र जन्तु विशेष, चतुरिन्द्रिय कीडे की एक जाति (उत्त ३६)।

कुंकण पु [कोङ्कण] देश-विशेष (अणु, सार्ध ३४)।

कुकुण देखो कुंकण (सिरि २८६)।

कुंकुम न [कुङ्कुम] केसर, सुगन्धी द्रव्य-विशेष (कुमा, श्रा १८)।

कुंग पु [कुङ्ग] देश-विशेष (भवि)।

कुंच सक [कुञ्च्] १ जाना, चलना। २ अक सकुचित होना। ३ टेढा चलना (कुमा, गउड)।

कुंच पु [क्रौञ्च] १ पक्षि-विशेष (पराह १, १, उप पृ २०८, उर १, १४)। २ इस नाम का एक असुर (पाअ)। ३ इस नाम का एक अनार्य देश। ४ वि उसके निवासी लोग (पव २७४)। °रवा स्त्री [°रवा] दण्डकारण्य की इस नाम की एक नदी (पउम ४२, १५)। °वीरग न [°वीरक] एक प्रकार का जहाज (निचू १६)। °रि पु [°रि] कार्त्तिकेय, स्कन्द (पाअ)। देखो कोंच।

कुंचल न [दे] मुकुल, कली, वौर (दे २, ३६, पाअ)।

कुंचि वि [कुञ्चिन्] १ कुटिल, वक्र। २ मायावी, कपटी (वव १)।

कुंचिगा देखो कोंचिगा।

कुंचिय वि [कुञ्चित] १ सकुचित (सुपा ५८)। २ कुण्डल के आकारवाला, गोलाकृति (औप, जं २)। ३ कुटिल, वक्र (वव १)।

कुंचिय पु [कुञ्चिक] इस नाम का एक जैन उपासक (भत्त १३३)।

कुंचिया देखो कोंचिगा। रूई से भरा हुआ पहनने का एक प्रकार का कपडा (जीत)।

कुंचिया स्त्री [कुञ्चिका] कुञ्जी, ताली (पिंड ३५६)।

कुंजर पुं [कुञ्जर] हस्ती, हाथी (हे १, ६६ पाअ)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष, हस्तिनापुर (पउम ६५, ३४)। °सेणा स्त्री [°सेना] ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की एक रानी (उत्त २६)। °वत्त न [°वर्त] नगर-विशेष (सुर ३, ८८)।

कुंट वि [कुण्ट] १ कुब्ज, वामन (आचा)। २ हाथ-रहित, हस्त-हीन (पव ११०, निचू ११, आचा)।

कुंटलविंटल न [दे] १ मंत्र-तंत्रादि का प्रयोग, पाखण्ड विशेष (आवम)। २ वि. मन्त्र-तन्त्रादि से आजीविका चलानेवाला (आक)।

कुंटार वि [दे] म्लान, सूखा, मलिन (दे २, ४०)।

कुंटि स्त्री [दे] १ गठरी, गाँठ (दे २, ३४)। २ शस्त्र-विशेष, एक प्रकार का औजार, 'मुमलुक्खलहलदतालकुंटिकुद्दालपमुहसत्थाणं' (सुपा ५२६)।

कुंठ वि [कुण्ठ] १ मन्द, आलसी (श्रा १६)। २ मूर्ख, बुद्धि-रहित (आचा)।

कुंठी स्त्री [दे] सँडसी, चीमटा (वज्जा ११४)।

कुंड न [कुण्ड] १ कुडा, पात्र-विशेष (पड्)। २ जलाशय-विशेष (णदि)। ३ इस नाम का एक सरोवर (ती ३४)। ४ आज्ञा, आदेश, 'वेसमणकुंडधारिणोतिरियजंभगा देवा' (कप्प)। °कोलिय पु [°कोलिक] एक जैन उपासक (उवा)। °ग्गाम पुं [°ग्राम] मगध देश का एक गाँव (कप्प, पउम २, २१)। °धारि वि [°धारिन्] आज्ञाकारी (कप्प)। °पुर न [°पुर] ग्राम-विशेष (कप्प)।

कुंड न [दे] ऊख पेरने का जीर्ण काण्ड, जो वाँस का बना हुआ होता है (दे २, ३३, ४, ४५)।

कुंडग पुंन [कुण्डक] १ अन्न का छिलका (उत्त १, ५, आचा २, १, ८, ६)। २ चावल से मिश्रित भूसा (उत्त १, ५)।

°समय पु [°समय] समय, वक्त (सुज ८)। °समा स्त्री [°समा] समय-विशेष, शास्त्र-रूप समय (जो २)। °सार पुं [°सार] मृग की एक जाति, काला मृग, 'एसो वि कालसारो ण देइ गन्तुं पयाहिणं वलंतो' (गा २५)। °सोअरिय पु [°सौकरिक] स्वनाम-ख्यात एक कसाई (श्राक)। °गरु, °गुरु, °यरु न [°गुरु] सुगन्धि द्रव्य-विशेष, जो धूप के काम मे लाया जाता है (णाया १, २; कप्प; श्रौप गउड)। °यस, °स न [°यस] लोहे की एक जाति (हे १, २६९; कुमा, प्राप्र; से ८, ८९); °सवेसियपुत्त पु [°स्यवैशिकपुत्र] इस नाम का एक जैन मुनि जो भगवान् पार्श्वनाथ की परम्परा मे थे (भग)।

कालंजर पु [कालञ्जर] १ देश-विशेष (पिंग)। २ पर्वत विशेष (श्रावम)। देखो कालिंजर।

कालक्खर सक [दे] १ निर्भर्त्सना करना, फटकारना। २ निर्वासित करना, बाहर निकाल देना; 'तो तेण भणिया भज्जा, गिए। पुत्तो कालक्खरियइ एसो, तो सा रोसेण भणइ त्यभिमुहं, मइ जीवंतीए इम न होइ ता जाउ दव्वपि, किं वज्जइ लच्छीए, पुत्त-निउत्ताए पिउणा पियमं। जयम्मि' (सुपा ३९९, ४००)।

कालक्खर पुन [कालाक्षर] १ अल्प-ज्ञान, अल्प-शिक्षा, २ वि अल्प-शिक्षित, 'कालक्खरदूसिक्खिअ धम्मिअ रे निवकीडसरिच्छ' (गा ८७८)।

कालक्खरिअ वि [दे] १ उपालब्ध, निर्भर्त्सित। २ निर्वासित, 'तहवि न विरमइ दुलहो अणाहकुलडाए सगमे, तत्तो कालक्खरिओ पिउणा' (सुपा ३८८), 'तो पिउणा कालेण कालक्खरिओ' (सुपा ४८८)।

कालक्खरिअ वि [कालाक्षरिक] थोड़े से अक्षर जाननेवाला, अशिक्षित, 'भो तुम्हाण मज्झे अह एक्को कालक्खरिओ' (कप्पू)।

कालग } पु [कालक] १ प्रसिद्ध जैनाचार्य
कालय } (पुप्फ १०९, २४०)। २ भ्रमर, भौंरा (राज)। देखो काल (उवा, उप ९८६ टी)।

कालाल वि [दे] धूर्त, ठग (दे २, २८

कालपट्ठ न [दे. कालपृष्ठ] धनुष (दे २, २८)।

कालवेसिय पुं [कालवैशिक] एक वेश्या-पुत्र (ती ७)।

काला स्त्री [काला] १ श्याम-वर्णवाली। २ तिरस्कार करनेवाली (कुमा)। ३ एक इन्द्राणी, चमरेन्द्र की एक पटरानी (ठा ५, १)। ४ वेश्या-विशेष (ती ७)।

कालाइक्कमय न [कालातिक्रमक] तप-विशेष, दिन के पूर्वार्ध तक आहार-त्याग (संबोध ५८)।

कालालोण पुन [काललवण] काला नोन या नमक (दस ३, ८)।

कालि पु [कालिन] विहार का एक पर्वत (ती १३)।

कालिअसूरि पु [कालिकसूरि] एक प्रसिद्ध प्राचीन जैन आचार्य (विचार ५२९)।

कालिआ स्त्री [दे] १ शरीर, देह। २ कालान्तर। ३ मेघ, बारिश (दे २, ५८)। ४ मेघ-समूह, बादल (पाअ)।

कालिआ स्त्री [कालिका] १ देवी विशेष (सुपा १८२)। २ एक प्रकार का तूफानी पवन (उप ७२८ टी; णाया १, ९)।

कालिंग पु [कालिङ्ग] १ देश विशेष, 'पत्तो कालिंगदेसम्मो' (श्रा १२)। २ वि कलिङ्ग देश मे उत्पन्न (पउम ९९, ५५)।

कालिंगी स्त्री [कालिङ्गी] वल्ली-विशेष, तरबूज का गाछ (पण्ण १)।

कालिंगी स्त्री [कालिङ्गी] विद्या विशेष (सूअ २, २, २७)।

कालिंजण न [दे] तापिच्छ, श्याम तमाल का पेड (दे २, २९)।

कालिंजणी स्त्री [दे] ऊपर देखो (दे २, २९)।

कालिंजर पु [कालिञ्जर] १ देश-विशेष (पिंग)। २ पर्वत-विशेष (उत्त १३)। ३ न जंगल-विशेष (पउम ५८, ९)। ४ तीर्थ-स्थान-विशेष (ती ७)।

कालिंदी स्त्री [कालिन्दी] १ यमुना नदी (पाअ)। २ एक इन्द्राणी, शक्रेन्द्र की एक पटरानी (पउम १०२, १५९)।

कालिअ पु [दे] १ शरीर, देह। २ मेघ बारिश (दे २, ५८)।

कालिग देखो कालिय = कालिक (राज)।

कालिगा स्त्री [कालिकी] संज्ञा-विशेष, बहुत समय पहले गुजरी हुई चीज का भी जिससे स्मरण हो सके वह (विसे ५०८)।

कालिज्ज न [कालेय] हृदय का गूढ मांस-विशेष (तंदु)।

कालिम पुस्त्री [कालिमन्] श्यामता, कृष्णता दागीपन (सुर ३, ४८; श्रा १२)।

कालिय पु [कालिय] इस नाम का एक सर्प (सुपा १८१)।

कालिय वि [कालिक] १ काल से उत्पन्न काल-सम्बन्धी। २ अनिश्चित, अव्यवस्थित, 'हत्थागया इमे कामा कालिया जे अणागया' (उत्त ५; कस १९)। ३ वह शास्त्र, जिसको अमुक समय मे ही पढ़ने की शास्त्रीय आज्ञा है (ठा २, १—पत्र ४९)। °दीव पु [°द्वीप] द्वीप-विशेष (णाया १, १७—पत्र २२८)। °पुत्त पु [°पुत्र] एक जैन मुनि जो भगवान् पार्श्वनाथ की परम्परा में से थे (भग)। °सण्णि वि [°संज्ञिन्] कालिकी संज्ञावाला (विसे ५०९)। °सुअ न [°श्रुत] वह शास्त्र जो अमुक समय में ही पढ़ा जा सके (णंदि)। °णुओग पु [°ानुयोग] देखो पूर्वोक्त अर्थ (भग)।

काली स्त्री [काली] १ विद्या-देवी-विशेष (संति ५)। २ चमरेन्द्र की एक पटरानी (ठा ५, १; णाया २, १)। ३ वनस्पति-विशेष, काकजङ्घा (अनु ४)। ४ श्यामवर्ण-वाली स्त्री, 'सामा गायइ महुरं, काली गायइ खरं च रुक्खं च' (ठा ७)। ५ राजा श्रेणिक की एक रानी (निर १, १)। ६ चौथी जैन शासन-देवी (संति ९)। ७ पार्वती, गौरी (पाअ)। ८ इस नाम का एक छंद (पिंग)।

कालुण न [कारुण्य] दया, करुणा। °वडिया स्त्री [°वृत्ति] भीख माँग कर आजीविका करना (विपा १, १)।

कालुणिअ देखो कारुणिय (सूअ १, १, १)।

कालुणीअ देखो कारुणिय (सूअ १, ३, २, ९)।

कालुय पु [दे] मत्स्य की एक उत्तम जाति (सम्मत्त २१९)।

कालुसिय न [कालुष्य] कलुषता, मलिनता (गउड)।

कुंभ पु [कुम्भ] १ स्वनाम प्रसिद्ध एक राजा, भगवान् मल्लिनाथ का पिता (सम १५१, पउम २०, ४५)। २ स्वनाम-ख्यात जैन महर्षि, अठारहवें तीर्थंकर के प्रथम शिष्य (सम १५२)। ३ कुम्भकर्ण का एक पुत्र (से १२, ६५)। ४ एक विद्याधर सुभट का नाम (पउम १०, १३)। ५ परमाधार्मिक देवों की एक जाति (सम २६)। ६ कलश, घड़ा (महा, कुमा)। ७ हाथी का गण्ड-स्थल (कुमा)। ८ धान्य मापने का एक परिमाण (अरणु)। ९ तरने का उपकरण (निचू १)। १० ललाट, भाल-स्थल (पव २)। ११ °अण्ण पु [°कर्ण] रावण के छोटे भाई का नाम (१५, ११)। °आर पु [°कार] कुम्हार, घड़ा आदि मिट्टी का वरतन वनानेवाला (हे १, ८)। °उर न [°पुर] नगर-विशेष (दस)। °गार देखो °आर (महा)। °ग्ग न [°ाग्र] मगध-देश-प्रसिद्ध एक परिमाण (णाया १, ८—पत्र १२५)। °सेण पु [°सेन] उत्सर्पिणी काल के प्रथम तीर्थंकर के प्रथम शिष्य का नाम (तित्थ)।

कुंभंड न [कूष्माण्ड] फल विशेष, कोहँडा, कुम्हड़ा (कप्पू)।

कुंभार पु [कुम्भकार] कुम्हार, घड़ा आदि मिट्टी का वरतन वनानेवाला (हे १, ८)। °ावाय पु [°पाक] कुम्हार का वरतन पकाने का स्थान (ठा ८)।

कुंभि पुं [कुम्भिन्] १ हस्ती, हाथी (सण)। २ नपुंसक-विशेष, एक प्रकार का षंड पुरुष (पुप्फ १२७)।

कुंभिक्क देखो कुंभिय (राय ३७)।

कुंभिणी स्त्री [दे] जल का गर्त (दे २, ३८)।

कुंभिय वि [कुम्भिक] कुम्भ-परिमाणवाला (ठा ४, २)।

कुंभिल पु [दे कुम्भिल] १ चोर, स्तेन (दे २, ६२, विक ५६)। २ पिशुन, दुर्जन (दे २, ६२)।

कुंभिल्ल वि [दे] खोदने योग्य (दे २, ३९)।

कुंभी स्त्री [कुम्भी] १ पात्र-विशेष, घड़े के आकारवाला छोटा कोष्ठ (सम १२५)। २ कुंभ, घड़ा (ज ३)। °पाग पु [°पाक] १ कुंभी में पकना (पण्ह २, ५)। २ नरक की एक प्रकार की यातना (सूअ १, १, १)।

कुंभी स्त्री [कूष्माण्डी] कोहँडा का गाछ, 'चलिओ कुंभीफल दंतुरासु' (गउड)।

कुंभी स्त्री [दे] केश-रचना, केश-संयम (दे २ ३४)।

कुंभील पु [कुम्भील] जलचर प्राणि विशेष, नक्र, मगर (चारु ६४)।

कुंभुब्भव पु [कुम्भोद्भव] ऋषि-विशेष, अगस्त्य ऋषि (कप्पू)।

कुकम्मि वि [कुकर्मिन्] खराव कर्म करनेवाला (सूत्र १, ७, १८)।

कुकुला स्त्री [दे] नवोढा, दुलहिन (दे २, ३३)।

कुकुस [दे] देखो कुक्कुस (दस ५ १३४)।

कुकुहाइय न [कुकुद्दायित] चलते समय का शब्द विशेष (तदु)।

कुकूल पु [कुकूल] करीषाग्नि, कंडे की आग (पण्ह १, १)।

कुक्क देखो कोक्क। कुक्कइ (पि १६७, ४८८)।

कुक्क पु [दे] कुत्ता, कुक्कुर, 'कुक्केहि कुक्काहि अ वुक्कअते' (मृच्छ ३६)।

कुक्कयय न [दे] आभरण-विशेष, 'अदु अजणि अलंकारं कुक्कययं मे पयच्छाहि' (सूअ १, ४, २, ७)। देखो कुक्कुडय।

कुक्की स्त्री [दे] कुत्ती, कुक्कुरी (मृच्छ ३६)।

कुक्कुअ वि [कुत्कुच] भांड की तरह शरीर के अवयवों की कुचेष्टा करनेवाला (धर्म २, पव ६)।

कुक्कुअ न [कौकुच्य] कुचेष्टा, कामोत्पादक अंग-विकार (पउम ११, ६७, आचा)।

कुक्कुअ वि [कुकूज] आक्रन्दन करनेवाला (उत्त २१)।

कुक्कुआ स्त्री [कुचकुचा] अवस्पन्दन, क्षरण, रस-रस कर चूना, रसना (वृह ६)।

कुक्कुइअ वि [कौकुचिक] भंड की तरह कुचेष्टा करनेवाला, काम-चेष्टा करनेवाला (भग, औप)।

कुक्कुइअ न [कौकुच्य] काम-कुचेष्टा, 'भंडाईए व नयणाइयाण सवियारकरणमिह भणियं। कुक्कुइयं' (सुपा ५२६, पडि)।

कुक्कुड पु [कुर्कुट] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, १४८)।

कुक्कुड पु [कुक्कुट] १ कुक्कुट, मुर्गा (गा ५८२, उवा)। २ वनस्पति-विशेष (भग १५)। ३ विद्या द्वारा किया जाता हस्त-प्रयोग-विशेष (वव १)। °मंसय न [°मांसक] १ मुर्गा का मांस। २ बीजपूरक वनस्पति का गुदा (भग १५)।

कुक्कुड वि [दे] मत्त, उन्मत्त (दे २, ३७)।

कुक्कुडय न [कुक्कुटक] देखो कुक्कयय (सूअ १, ४, २, ७ टी)।

कुक्कुडिया } स्त्री [कुक्कुटिका °टी]
कुक्कुडी } कुक्कुटी, मुर्गी (णाया १, ३, विपा १, ३)।

कुक्कुडी स्त्री [कुक्कुटी] माया, कपट (पिंड २९७)।

कुक्कुडेसर न [कुक्कुटेश्वर] तीर्थ-विशेष (ती १६)।

कुक्कुर पु [कुक्कुर] कुत्ता, श्वान (पउम ६४, ८०, सुपा २७७)।

कुक्कुरुड पु [दे] निकर, समूह (दे २, १३)।

कुक्कुस पु [दे] धान्य आदि का छिलका, भूसा (दे २, ३६, दस ५, १, ३४)।

कुक्कुह पु [कुक्कुभ] पक्षि-विशेष (गउड)।

कुक्कुहाइअ न [दे] चलते समय का अश्व का शब्द विशेष (तदु ५३)।

कुक्खि [दे कुक्षि] देखो कुच्छि (दे २, ३४, औप, स्वप्न ६१, कप्पू ३३)।

कुक्खिंभरि देखो कुच्छिंभरि (धर्मवि १८६)।

कुक्खेअअ देखो कुच्छेअय (सक्षि ६)।

कुग्गाह पु [कुग्राह] १ कदाग्रह, हठ (उप ८३३ टी)। २ जल-जन्तु विशेष, 'कुग्गाह-गाहाइयजंतुसंकुलो' (सुपा ६२६)।

कुच पु [कुच] स्तन, थन (कुमा)।

कुचोज्ज न [कुचोद्य] कुतर्क (धर्मसं ११७५)।

कुच्च पु [कूर्च] कँघी, बाल सँवारने का उपकरण (उत्त २२, ३०)।

कुच्च न [कूर्च] १ दाढी-मूँछ (पाअ, अभि २१२)। २ तृण-विशेष (पण्ह २, ३) देखो कुच्चग।

कुच्चधरा स्त्री [कूर्चधरा] दाढी-मूँछ धारण करनेवाली (ओघ ८३ भा)।

३ स्त्री. काशी नगरी, वनारस शहर (कुमा)। °पुर न [°पुर] काशी नगरी, वनारस शहर (पउम ६,१३७)। °राय पु [°राज] काशी देश का राजा (उत्त १८)। °व पुं [°प] काशी देश का राजा (पउम १०४, ११)। °वद्धण पुं [°वर्धन] इस नाम का एक राजा, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (ठा ८—पत्र ४३०)।

कासिअ न [दे] १ सूक्ष्म वस्त्र, वारीक कपडा। २ सफेद वस्त्र (दे २, ५६)।

कासिअ न [कासित] छींक, क्षुत् (राज)।

कासिज्ज न [दे] काकस्थल-नामक देश (दे २, २७)।

कासिल्ल वि [कासिक] खांसी रोगवाला (विपा १, ७—पत्र ७२)।

कासी स्त्री [काशी] काशी, वनारस (णाया १, ८)। °राय पु [°राज] काशी का राजा (पिंग)। °स पुं [°श] काशी का राजा (पिंग)। °सर पुं [°श्वर] काशी का राजा (पिंग)।

काह सक [कथय्] कहना। काहयते (सुअ १, १३, ३)।

काहर देखो काहार (दस ४, १ टी)।

काहल वि [दे] १ मृदु, कोमल। २ ठग, धूर्त्त (दे २, ५८)।

काहल वि [कातर] कातर, डरपोक, अधीर (हे १, २१४, २५४)।

काहल पुन [काहल] १ वाद्य-विशेष (सुर ३, ६६, औप, णंदि)। २ अव्यक्त आवाज (पण्ह २, २)।

काहला स्त्री [काहला] वाद्य-विशेष, महा-ढक्का (विक्र ८७)।

काहलिया स्त्री [काहलिका] आभूषण-विशेष (पव २७१)।

काहली स्त्री [दे] तरुणी, युवती (दे २,२६)।

काहली स्त्री [दे] १ खर्च करने का धान्यादि। २ तवा, जिसपर पूरी या पूडी वगैरह पकायी जाती है (दे २, ५६)।

काहार पु [दे] कहार, एक जाति जो पानी भरने और डोली वगैरह ढोने का काम करती है (दे २, २७, भवि)।

काहार पुन [दे] काँवर, वहँगी (सुज्ज १०,६)।

काहावण पु [कार्षापण] सिक्का-विशेष (हे २, ७१, पण्ह १, २, षड्, (प्राप्र)।

काहिय वि [काथिक] कथा-कार, वार्ता करने-वाला (वृह १)।

काहिल पु [दे] गोपाल, ग्वाला, स्त्री. °ला (दे २, ३८)।

काहिल्लिआ स्त्री [दे] तवा, जिसपर पूरी आदि पकायी जाती है (पाअ)।

काहीअ देखो काहिय (गच्छ ३, ६)।

काहीइदाण न [कारिष्यतिदान] प्रत्युपकार की आशा से दिया जाता दान (ठा १०)।

काहे अ [कदा] कव, किस समय? (हे २, ६५, अत २४, प्राप्र)।

काहेणु स्त्री [दे] गुञ्जा, लाल रत्ती (दे २, २१)।

कि देखो किं (हे १, २६, षड्)।

कि सक [कृ] करना, वनाना, 'डुकिय करणे' (विसे ३३००)। कवकृ किज्जत (सुर १, ६०, ३, १४, ५६)।

किअ देखो कय = कृत (काप्र ६२५, प्रासू १५, धम्म २४, मै ६५, वज्जा ४)।

किअ देखो किव = कृप (षड्)।

किअत वि [कियत्] कितना (सण)।

किअत देखो कयत (अच्चु ५६)।

किआडिआ स्त्री [कृकाटिका] गला का उन्नत भाग (पाअ)।

किइ स्त्री [कृति] कृति, क्रिया, विधान (षड्, प्राप्र, उव)। °कम्म न [°कर्मन्] १ वन्दन, प्रणमन (सम २१)। २ कार्य-करण (भग १४,३)। ३ विश्रामणा (व्यव० गा० ६२)।

किं स [किम्] कौन, क्या, क्यों, निन्दा, प्रश्न, अतिशय, अल्पता और सादृश्य को वतलानेवाला शब्द (हे १, २६, ३, ५८, ७१, कुमा, विपा १, १, निचू १३), 'कि वुल्लति मणीओ जाउ सहस्सेहिं धिप्पति' (प्रासू ४)। °उण अ [°पुन] तव फिर, फिर क्या? (प्राप्र)।

किकत्तव्वया देखो किकायव्वया (आचा २, २, ३)।

किंकम्म पुं [किंकर्मन्] इस नाम का एक गृहस्थ (अत)।

किंकर पुं [किङ्कर] नौकर, चाकर, दास (सुपा ६०, २२३)। °सच्च पु [°सत्य] १ पर-मेश्वर परमात्मा। २ अच्युत, विष्णु (अच्चु २)।

किंकरी स्त्री [किङ्करी] दासी, नौकरानी (कप्पू)।

किंकाइअ देखो केकाइय (अणु २१२)।

किंकायव्वया स्त्री [किंकर्त्तव्यता] क्या करना है यह जानना। °मूढ वि [°मूढ] किंकर्तव्य-विमूढ, हक्कावक्का, भौंचक्का, वह मनुष्य जिसे यह न सूझ पडे कि क्या किया जाय (महा)।

किंकार पुन [क्रेङ्कार] अव्यक्त शब्द-विशेष (सिरि ५४१)।

किंकिअ वि [दे] सफेद, श्वेत (दे २, ३१)।

किंकिच्चजड वि [किंकृत्यजड] हक्कावक्का, वह मनुष्य जिसे यह न सूझ पडे कि क्या किया जाय (श्रा २७)।

किंकिणिआ स्त्री [किङ्किणिका] क्षुद्र-घण्टिका, करधनी (सुपा १५६)।

किंकिणी स्त्री [किङ्किणी] ऊपर देखो (सुपा १५४, कुमा)।

किंकिल्लि देखो कंकिल्लि (विचार ४६१)।

किंगिरिड पु [किङ्किरिट] क्षुद्र कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जीव की एक जाति (राज)।

किंच अ [किञ्च] समुच्चय-द्योतक अव्यय, और भी, दूसरा भी (सुर १, ४०, ४१)।

किंचण न [किञ्चन] १ द्रव्य-हरण, चोरी (विसे ३४५१)। २ अ कुछ, किञ्चित् (वव २)।

किंचण न [किञ्चन] द्रव्य, वस्तु (उत्त ३२, ८, सुव ३२, ८)।

किंचहिय वि [किञ्चिदधिक] कुछ ज्यादा (सुपा ४३०)।

किंचि अ [किञ्चित्] अल्प, ईषत्, थोडा (जी १, स्वप्न ४७)।

किंचिम्मत्त वि [किञ्चिन्मात्र] स्वल्प, वहुत थोडा, यत्किञ्चित् (सुपा १४२)।

किंचूण वि [किञ्चिदून] कुछ कम, पूर्ण-प्राय (औप)।

किंजक्क पुं [किञ्जल्क] पुष्प-रेणु, पराग (णाया १, १)।

कुडगी स्त्री [दे कुटङ्गी] वाँस की जाली, एक्कपहारेण निव्वडिया वसकुडंगी' (महा, सुर १२, २००, उप पृ २८१)।
कुडच देखो कुडु व (महा, गा ६०६)।
कुडग देखो कुड (श्रावम, सूत्र १, १२)।
कुडभी स्त्री [कुटभी] छोटा पताका (सम ६०)।
कुडय न [दे] लता-गृह, लता से आच्छादित घर, कुटीर, झोपडी (दे २,३७)।
कुडय पुन [कुटज] वृक्ष-विशेष, कुरैया (णाया १, ९, पण्ण १७, स १६४), 'कुडय दलइ' (कुमा)।
कुडव पु [कुडव] अनाज या अन्न नापने का एक माप (णाया १, ७, उप पृ ३७०)।
कुडाल देखो कुड्डाल (उवा)।
कुडिअ वि [दे] कुब्ज, वामन, नाटा (पाअ)।
कुडिआ स्त्री [दे] वाड का विवर (दे २, २४)।
कुडिच्छ न [दे] १ वाड का छिद्र। २ कुटी, झोपडी। ३ वि त्रुटित, छिन्न (दे २, ६४)।
कुडिल वि [कुटिल] वक्र, टेढा (सुर १, २०, २, ८६)।
कुडिलविडल न [दे· कुटिलविटल] हस्ति-शिक्षा (राज)।
कुडिल्ल न [दे] १ छिद्र, विवर (पाअ)। २ वि कुब्ज, कुवडा (पाअ)।
कुडिल्लय वि [दे कुटिलक] कुटिल, टेढा, वक्र (दे २ ४०, भवि)।
कुडिव्वय देखो कुलिव्वय (राज)।
कुडी स्त्री [कुटी] छोटा गृह, झोंपडी, कुटीर (सुपा १२०, वज्जा ६४)।
कुडीर न [कुटीर] झोपडी, कुटी (हे ४, ३६४, पउम ३३, ८५)।
कुडीर न [दे] वाड का छिद्र (दे २, २४)।
कुडुंग पु [दे] लतागृह, लताओ से ढका हुआ घर (षड्, गा १७५, २३२ अ)।
कुडुंब न [कुटुम्ब] परिजन, परिवार, स्वजन-वर्ग (उवा, महा, प्रासू १६७)।
कुडुंबय पुं [कुस्तुम्बक] १ वनस्पति-विशेष, धनियाँ (पण्ण १—पत्र ४०)। २ कन्द-विशेष, 'पलडुलसणकदे य कदली य कुडुंबए' (उत्त ३६, ९८ का)।
कुडुंबि } वि [कुटुम्बिन्, °क] १ कुटुम्ब-
कुडुंबिअ } युक्त, गृहस्थ। २ कुनवेवाला, कर्षक (गउड)। ३ सम्बन्धी, 'सोभागुणसमुद-एण आणाणकुडु बिएण' (कप्प)।
कुडुंबीअ न [दे] सुरत, संभोग, मैथुन (षड्)।
कुडुंभग पु [दे] जल-मण्डूक, पानी का मेढक (निचू १)।
कुडुक्क पुं [दे] लता गृह (षड्)।
कुडुच्चिअ न [दे] सुरत, सभोग, मैथुन (दे २, ४१)।
कुडुझी (अप) स्त्री [कुटी] कुटिया, झोपडी (कुमा)।
कुड्ड पुन [कुड्य] १ भित्ति, भीत (पउम ६८, ९, हे २, ७८),

'अज्ज गओत्ति अज्ज गओत्ति
अज्ज गओत्ति गणिरीए।
पढमव्विअ दिअहद्धे कुड्डो लेहाहिं
चित्तलिओ (गा २०८)।

कुड्ड न [दे] आश्चर्य, कौतुक, कुतूहल (दे २, ३३, पाअ, षड्, हे २, १७४)।
कुड्डगिलोई [दे] गृह-गोधा, छिपकली (दे २, १९)।
कुड्डलेवणी स्त्री [दे. कुड्यलेपनी] सुधा, चूना, खडी, खटिका (दे २, ४२)।
कुड्डाल न [दे] हल के ऊपर का विस्तृत अंश (उवा)।
कुढ पुन [दे] १ चुराई हुई वस्तु की खोज में जाना (दे २, ६२, सुपा ५०३)। २ छीनी हुई चीज को छुडानेवाला, वापस लेनेवाला (दे २, ६२)।
कुढार पु [कुठार] कुल्हाडा, फरसा (हे १, १९९, षड्)।
कुढावय न [दे] अनुगमन, पीछे जाना (विसे १४३९ टी)।
कुढिय वि [दे] कूढ, मूर्ख, वेवकूफ, 'कूयति नेउराइ पुणो पुणो कुढियपुरिसोव्व' (सुर ३, १४२)।
कुढिय वि [दे] जिसके माल की चोरी हो गई हो वह (सुख २, २१)।
कुण सक [कृ] करना, बनाना। कुणइ, कुणउ, कुण (भग, महा, सुपा ३२०)। वकृ कुणत, कुणमाण (गा १६५, सुपा ३६, ११३, आचा)।
कुणक्क पु [कुणक्क] वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३५)।
कुणव न [कुणप] १ मुरदा, मृत-शरीर (पाअ, गउड)। २ वि. दुर्गन्धी (हे १, २३१)।
कुणाल पु· व. [कुणाल] १ देश-विशेष (णाया १, ८, उप ९८६ टी)। २ प्रसिद्ध महाराज अशोक का एक पुत्र (विसे ८६१)।
°नयर न [°नगर] एक शहर, उज्जैन, 'आमी कुणालनयरे' (मआ)।
कुणाला स्त्री [कुणाला] इस नाम की एक नगरी (सुपा १०३)।
कुणि } पु [कुणि] १ हस्त-विकल, हूँठ,
कुणिअ } हाथ-कटा मनुष्य (पउम २, ७७)। २ जन्म से ही जिसका एक हाथ छोटा हो वह। ३ जिसका एक पाँव छोटा हो वह, खञ्ज (पण्ह २, ५—पत्र १५०, आचा)।
कुणिआ स्त्री [दे] वृति-विवर, वाड का छिद्र (दे २, २४)।
कुणिम पुन [दे कुणप] १ शव, मृतक, मुरदा (पण्ह २, ३)। २ मास (ठा ४, ४, औप)। ३ नरकावास-विशेष (सूअ १, ५, १)। ४ शव का रुधिर, वसा वगैरह (भग ७, ६)।
कुणुकुण अक [कुणुकुणाय्] शीत से कम्प होने पर 'कडकड' आवाज करना। वकृ कुणुकुणत (सुर २, १०३)।
कुण्हरिया स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३५)।
कुतत्ती स्त्री [दे] मनोरथ, वाञ्छा (दे २, ३६)।
कुतुंब पुं [कुस्तुम्ब] वाद्य-विशेष (राय ४६)।
कुतुंबर पुं [कुस्तुम्बर] वाद्य-विशेष (राय ४६)।
कुतुव पुन [कुतुप] १ तेल वगैरह भरने का चमडे का पात्र (दे ५, २२)। देखो कुडअ।
कुत्त पु [दे] कुत्ता, कुक्कुर (रंभा)।
कुत्त न [दे. कुनक] ठेका, इजारा (विपा १, १—पत्र ११)।
कुत्तार वि [कुतार] अयोग्य तारक (गच्छ १, ३०)।
कुत्तिय पुंस्त्री [दे] एक तरह का कीडा, चतुरिन्द्रिय जन्तु-विशेष, 'करालिय कुत्तिय विच्छू' (आप १७, पभा ४१)।

उसमें मिल जाता है उस तरह मिला हुआ (उव)।

किट्ठ वि [क्लिष्ट] क्लेश-युक्त (भग ३, २; जीव ३)।

किट्ठ वि [कृष्ट] जोता हुआ, हल-विदारित (सुर ११, ५६; भग ३, २)। २ न. देव-विमान विशेष, 'जे देवा सिरिवच्छं सिरिदाम-कंड मल्ल किट्ठ (? ट्ट) चावोएणय अर-एणवडिंसग विमाएं देवत्ताए उववएणा' (सम ३६)।

किट्ठि स्त्री [कृष्टि] १ कर्षण। २ खींचाव, आकर्षण। ३ देवविमान-विशेष (सम ६)। °कूड न [°कूट] देवविमान-विशेष (सम ६)। °घोस न [°घोष] विमान विशेष (सम ६)। °जुत्त न [°युक्त] विमान-विशेष (सम ६)। °ज्झय न [°ध्वज] विमान विशेष (सम ६)। °प्पभ न [°प्रभ] देवविमान-विशेष (सम ६)। °वण्ण न [°वर्ण] विमान-विशेष (सम ६)। °सिंग न [°शृङ्ग] विमान-विशेष (सम ६)। °सिट्ठ न [°शिष्ट] एक देव-विमान (सम ६)।

किट्ठियावत्त न [कृष्टयावर्त्त] देवविमान-विशेष (सम ६)।

किट्ठुत्तरवडिंसग न [कृष्टयुत्तरावतंसक] इस नाम एक देव-विमान, देव-भवन (सम ६)।

किडग वि [क्रीडक] क्रीडा करनेवाला (सूअ १, ४, १, २ टी)।

किडि पु [किरि] सूकर, सूअर (हे १, २५१, षड्)।

किडिकिडिया स्त्री [किटिकिटिका] सूखी हड्डी की आवाज (णाया १, १—पत्र ७४)।

किडिभ पु [किटिभ] रोग विशेष, एक प्रकार का क्षुद्र कोढ (लहुअ १५; भग ७, ६)।

किडिया स्त्री [दे] खिडकी, छोटा द्वार (स ५८३)।

किड्ड अक [क्रीड्] खेलना, क्रीडा करना। वकृ. किड्डंत (पि ३६७)।

किड्डकर वि [क्रीडाकर] क्रीडा-कारक (औप)।

किड्डा स्त्री [क्रीडा] १ क्रीडा, खेल (विपा १, ७)। २ बाल्यावस्था (ठा १०—पत्र ५१६)।

किड्डाविया स्त्री [क्रीडिका] क्रीडन धात्री, बालक को खेल-कूद करानेवाली दाई (णाया १, १६—पत्र २११)।

किढि वि [दे] १ संभोग के लिए जिसको एकान्त स्थान में लाया जाय वह (वव ३)। २ स्थविर, वृद्ध (बृह १)।

किढिण न [किठिन] संन्यासियों का एक पात्र, जो बाँस का बना हुआ होता है (भग ७, ६)।

किण सक [क्री] खरीदना। किणइ (हे ४, ५२)। वकृ. 'से किण किणावेमाणे हण घायमाणे' (सूअ २, १)। किणंत (सुपा ३६६)। संकृ. किणित्ता (पि ५८२)। प्रयो. किणावेइ (पि ५५१)।

किण पु [किण] १ घर्षण-चिह्न, घर्षण की निशानी (गउड)। २ मांस-ग्रन्थि। ३ सूखा घाव (सुपा ३७०; वज्जा ३६)।

किणइअ वि [दे] शोभित, विभूषित (पउम ६२, ६)।

किणण न [क्रयण] कीनना, खरीद, क्रय (उप पृ २५८)।

किणा देखो किण्णा (प्राप्र; हे ३, ६९)

किणि वि [क्रयिन्] खरीदनेवाला (सम्बोध १६)।

किणिकिण अक [किणिकिणय्] किण-किण आवाज करना। वकृ. किणिकिणिंत (औप)।

किणिय वि [क्रीत] कीना हुआ, खरीदा हुआ (सुपा ४३४)।

किणिय पु [किणिक] १ मनुष्य की एक जाति, जो बाजा बनाती और बजाती है (वव ३)। २ रस्सी बनाने का काम करने-वाली मनुष्य जाति, 'किणिया उ वरत्ताओ वलिंति' (पव)।

किणिय न [किणित] वाद्य-विशेष (राय)।

किणिया स्त्री [किणिका] छोटा फोडा, फुनसी, 'अन्नेवि सइ महियलनिसीय-
णुप्पन्नकिणियपोगिल्ला।
मलिणजरकप्पडोच्छइयविग्गहा
कहवि हिंडंति' (स १८०)।

किणिस सक [शाणय्] तीक्ष्ण करना, तेज करना। किणिसइ (पिंग)।

किणो अ [किमिति] क्यों, किसलिए? (दे २, ३१; हे २, २१६; पाअ; गा ६७; महा)।

किण्ण वि [कीर्ण] १ उत्कीर्ण, खुदा हुआ-'उवलकिएणव्व कट्ठघडियव्व' (सुपा ५७१)। २ क्षिप्त, फेंका हुआ (ठा ६)।

किण्ण पु [किण्व] १ फलवाला वृक्ष विशेष, जिससे दारू बनता है (गउड आचा)। २ न सुरा बीज, किण्व-वृक्ष के बीज, जिसका दारू बनता है (उत्त २)। °सुरा स्त्री [°सुरा] किण्व-वृक्ष के फल से बनी हुई मदिरा (गउड)।

किण्णा वि [दे] शोभमान, राजमान (दे २ ३०)।

किण्ण अ [किनम्] प्रश्नार्थक अव्यय (उवा)।

किण्णर देखो किंनर (ज १; राय; इक)।

किण्णा अ [कथम्] क्यों, क्यों कर, कैसे? 'किएणा लद्धा किएणा पत्ता' (विपा २, १—पत्र १०६)।

किण्णु अ [किंनु] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रश्न। २ वितर्क। ३ सादृश्य। ४ स्थान, स्थल। ५ विकल्प (उवा; स्वप्न २४)।

किण्ह देखो कण्ह (गा ६५; णाया १, १; उर ६, ५; पएण १७)।

किण्ह न [दे] १ बारीक कपडा। २ सफेद कपडा (दे २, ५६)।

किण्हग पु [दे] वर्षाकाल में घडा आदि में होनेवाली एक तरह की काई (जीवस ३६)।

किण्हा देखो कण्हा (ठा ५, ३—पत्र ३५१; कम्म ८, १३)।

कितव पुं [कितव] द्यूतकर, जूआरी (दे ४, ८)।

कित्त देखो किच्च (संक्षि ५)।

कित्त देखो किट्ट = कीर्त्तय्। भवि. कित्तइस्सं (पडि)। संकृ. कित्तइत्ताण (पच ११६)।

कित्तण न [कीर्त्तन] १ श्लाघा, स्तुति, 'तव य जिणुत्तम संति कित्तण' (अजि ४; से ११, १, ३)। २ वर्णन, प्रतिपादन। ३ कथन, उक्ति (विसे ६४०; गउड; कुमा)।

कित्तणा स्त्री [कीर्तना] कीर्तन, वर्णन, प्रशंसा (चेइय ७४८)।

एक विजय-युगल, भूमि प्रदेश-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)। ३ न चन्द्र-विकासी कमल (णाया १, ३—पत्र ६६ से १, २६)। ४ संख्या-विशेष, कुमुदाङ्ग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (जो २)। ५ शिखर-विशेष (ठा ८)। ६ वि. पृथ्वी मे आनन्द पानेवाला। ७ खराब प्रीतिवाला (से १, २६)। देखो कुमुद।

कुमुअ पु [कुमुद] देव-विशेष (सिरि ६६७)। °चंद पु [°चन्द्र] आचार्य सिद्धसेन दिवाकर की मुनि अवस्था का नाम (सम्मत्त १४१)।

कुमुअंग न [कुमुदाङ्ग] संख्या-विशेष, 'महाकाल' को चौरासी लाख मे गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (जो २)।

कुमुआ स्त्री [कुमुदा] १ इस नाम की एक पुष्करिणी (ज ४)। २ एक नगरी (दीव)।

कुमुइणी स्त्री [कुमुदिनी] १ चन्द्र-विकासी कमल का पेड (कुमा, रभा)। २ इस नाम की एक रानी (उप १०३१ टी)।

कुमुद देखो कुमुअ (इक)। देव-विमान-विशेष (सम ३३, ३५)। °गुम्म न [°गुल्म] देव-विमान-विशेष (सम ३५)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (इक)। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] इस नाम की एक पुष्करिणी (ज ४)। °वण न [°वन] मथुरा नगरी के समीप का एक जङ्गल (ती २१)। °गर पु [°कर] कुमुद-षण्ड, कुमुदो से भरा हुआ वन (पराह १, ४)।

कुमुदंग देखो कुमुअंग (इक)।

कुमुदग न [कुमुदक] तृण-विशेष (सूअ २, २)।

कुमुली स्त्री [दे] चुल्ली, चूल्हा (दे २, ३९)।

कुम्म पुं [कूर्म] कच्छप, कछुआ (पाअ)। °ग्गाम पु [°ग्राम] मगध देश के एक गाँव का नाम (भग १५)।

कुम्मण वि [दे] म्लान, शुष्क, कुम्हलाया हुआ (दे २, ४०)।

कुम्मार पु [कूर्मार] मगध देश के एक गाँव का नाम (आचा २, १५, ५)।

कुम्मास पु [कुल्माष] १ अन्न-विशेष, उरद (ओघ ३५६, पराह २, ५)। २ थोडा भीजा हुआ मूँग वगैरह धान्य (पराह २, ५—पत्र १४८)।

कुम्मी स्त्री [कूर्मी] १ कछुई, कच्छपी। २ नारद की माता का नाम (पउम ११, ५२)। °पुत्त पु [°पुत्र] दो हाथ ऊँचा इस नाम का एक पुरुष, जिसने मुक्ति पाई थी (औप)।

कुम्ह पुव [कुश्मन्] देश-विशेष (हे २,७४)।

कुम्हंड देखो कोहंड (प्राकृ २२)।

कुम्हंडी देखो कोहंडी (प्राकृ २२)।

कुय पु [कुच] १ स्तन, थन। २ वि शिथिल (वव ७)। ३ अस्थिर (निचू १)।

कुयवा स्त्री [दे] वल्ली-विशेष (पराण १—पत्र ३३)।

कुरंग पु [कुरङ्ग] १ मृग की एक जाति (जं २)। २ कोई भी मृग, हरिण (पराह १, १, गउड)। स्त्री °गी (पाअ)। °च्छी स्त्री [°ाक्षी] हरिण के नेत्र जैसे नेत्रवाली स्त्री, मृगनयनी स्त्री (वाअ २०)।

कुरंटय पुं [कुरण्टक] वृक्ष-विशेष, पियवाँसा (उप १०३१ टी)।

कुरकुर देखो कुरुकुरु। वकृ कुरकुराइत (रंभा)।

कुरय पु [कुरक] वनस्पति-विशेष (पराण १—पत्र ३५)।

कुरय न [कुरवक] पुष्प विशेष (वज्जा १०६)।

कुरर पु [कुरर] कुरर-पक्षी, उत्क्रोश (पराह १, १, उप १०२६)।

कुररी स्त्री [दे] पशु, जानवर (दे २, ४०)।

कुररी स्त्री [कुररी] १ कुरर पक्षी की मादा। २ गाथा छन्द का एक भेद (पिंग)। ३ मेषी, भेडी (रभा)।

कुरल पु [कुरल] १ केश, वाल, 'कुरल-कुरलीहिं कलिओ तमालदलसामलो अइसणिद्धो' (सुपा २४, पाअ)। २ पक्षि-विशेष (जीव १)।

कुरली स्त्री [कुरली] १ केशो की वक्र सटा (सुपा १, २४)। २ कुरल-पक्षिणी, 'कुरलिव्व नहगणे भमइ' (पउम १७, ७६)।

कुरवय पु [कुरवक] वृक्ष-विशेष, कटसरैया (गा ६, मा ४०, विक्र २६, स ४१४, कुमा, दे ५, ६)।

कुरा स्त्री [कुरा] वर्ष-विशेष, अकर्म भूमि-विशेष (ठा २, ३, १०)।

कुरिण न [दे] बडा जगल, भयकर अटवी (ओघ ४४७)।

कुरु पुं व [कुरु] १ आर्य देश-विशेष, जो उत्तर भारत मे है (णाया १, ८, कुमा)। २ भगवान् आदिनाथ का इस नाम का एक पुत्र (ती १४)। ३ अकर्म-भूमि विशेष (ठा ६)। ४ इस नाम का एक वंश (भवि)। ५ पुस्त्री कुरु वंश मे उत्पन्न, कुरु वंशीय (ठा ६)। °अरा, °अरी देखो नीचे °चरा, °चरी (पड्)। °खेत्त °क्खेत्त न [°क्षेत्र] १ दिल्ली के पास का एक मैदान, जहाँ कौरव और पाण्डवो की लडाई हुई थी। २ कुरु देश की राजधानी, हस्तिनापुर नगर (भवि, ती १६)। °चंद पु [°चन्द्र] इस नाम का एक राजा (धम्म, आवम)। °चर वि [°चर] कुरु देश का रहनेवाला। स्त्री °चरा, °चरी (हे ३, ३१)। °जंगल न [°जङ्गल] कुरु-भूमि, देश-विशेष (भवि, ती ७)। °णाह पु [°नाथ] दुर्योधन (गा ४४३, गउड)। °दत्त पु [°दत्त] इस नाम का एक श्रेष्ठी और जैन महर्षि (उत २, सथा)। °मई स्त्री [°मती] ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की पटरानी (सम १५२)। °राय पुं [°राज] कुरु देश का राजा (ठा ७)। °वइ पुं [°पति] कुरु देश का राजा (उप ७२८ टी)।

कुरुकुया स्त्री [कुरुकुचा] पाँव का प्रक्षालन (ओघ ३१८)।

कुरुकुरु अक [कुरुकुराय्] 'कुर-कुर' आवाज करना, कुलकुलाना, बडबडाना। कुरुकुराअसि (पि ५५८)। वकृ कुरुकुराअत (कप्पू)।

कुरुकुरिअ न [दे] रणरणक, औत्सुक्य (दे २, ४२)।

कुरुगुर देखो कुरुकुरु। कुरुगुरेंति (स ५०३)।

कुरुचिल्ल पु [दे] १ कुलीर, जल-जन्तु-विशेष। २ न ग्रहण, उपादान (दे २, ४१)। देखो कुरुविल्ल।

कुरुच्छ वि [दे] अनिष्ट, अप्रिय (दे २, ३६)।

कुरुड वि [दे] १ निर्दय, निष्ठुर (दे २, ६३, भवि)। २ निपुण, चतुर (दे २,५३, भवि)।

कुरुग न [दे] राजा का या दूसरे का घर (राज)।

कुरुमाल सक [दे] टटोलना, धीरे धीरे हाथ फेरना। वकृ, कुरुमालत (कुप्र ४४)।

किरणिल्ल वि [किरणवत्] किरणवाला, तेजस्वी (सुर २, २४२)।

किराड } पुं [किरात] १ अनार्य देश विदेश
किराय } (पव १४८)। २ भील, एक जगली जाति (सुर २, २७, १८०, सुपा ३६१, हे १, १८३)।

किरात (शौ) देखो किराय (प्राकृ ८६)।

किरि देखो किर=किल (सिरि ८३२, ८३४)।

किरि पुं [किरि] भालू की आवाज, 'कत्थइ किरित्ति कत्थइ हिरित्ति कत्थइ छिरित्ति रिच्छाणं सद्दो' (पउम ६४, ४५)।

किरि पुं [किरि] सूकर, सूअर (गउड)।

किरिआण देखो कयाण 'जम्मंतरगहिअपुन्न-किरिआणो' (कुलक २१)।

किरिइरिया } स्त्री [दे] १ कर्णोपकर्णिका,
किरिकिरिआ } एक कान से दूसरे कान गई हुई वात, गप। २ कुतूहल, कौतुक (दे २, ६१)।

किरिकिरिया स्त्री [दे] वाद्य-विशेष, वाँस आदि की कम्बा—लकडी से वना हुआ एक प्रकार का वाजा (आचा २, ११, १)।

किरित्तण देखो कित्तण (नाट—माल ६७)।

किरिया स्त्री [क्रिया] १ क्रिया, कृति, व्यापार, प्रयत्न (सूअ २, १, ठा ३, ३)। २ शास्त्रोक्त अनुष्ठान, धर्मानुष्ठान (सूअ २, ४, पव १४६)। ३ सावद्य व्यापार (भग १७, १)। ४ °ट्ठाण न [°स्थान] कर्मबन्ध का कारण (सूअ २, २, आव ४)। °वर वि [°पर] अनुष्ठान कुशल (पड्)। °वाइ वि [°वादिन्] १ आस्तिक, जीवादि का अस्तित्व माननेवाला (ठा ४, ४)। २ केवल क्रिया से ही मोक्ष होता है ऐसा माननेवाला (सम १०६)। °विसाल न [°विशाल] एक जैन ग्रन्थांश, तेरहवाँ पूर्व-ग्रन्थ (सम २६)।

किरीड पुं [किरीट] मुकुट, शिरो भूषण (पाअ)।

किरीडि पुं [किरीटिन्] अर्जुन, मध्यम पाण्डव (वेणी १६२)।

किरीत वि [क्रीत] कीना हुआ, खरीदा हुआ (प्राप्र)।

किरीय पुं [किरीय] १ एक म्लेच्छ देश। २ उसमें उत्पन्न म्लेच्छ जाति (राज)।

किरोल्य न [किरोलक] फल-विशेष, किरोलिका वल्ली का फल (उर ६, ५)।

किल देखो किर=किल (हे २, १८६, गउड, कुमा)।

किलंत वि [क्लान्त] खिन्न, श्रान्त (पड्)।

किलज न [किलिञ्ज] वाँस का एक पात्र, जिसमे गैया वगैरह को खाना खिलाया जाता है (उवा)।

किलज न [किलिञ्ज] तृण-विशेष (धर्मवि १३५, १३६)।

किलकिल अक [किलकिलाय्] 'किल-किल' आवाज करना, हँसना, 'किलकिलइ व्व सहरिस मणिकंचीकिंकिणिरिवेण' (कप्पू)।

किलकिलाइय न [किलकिलायित] 'किल-किल' ध्वनि, हर्ष-ध्वनि (आवम)।

किलणी स्त्री [दे] रथ्या, गली (दे २, ३१)।

किलम्म अक [क्लम्] क्लान्त होना, खिन्न होना। किलम्मइ (कप्पू)। किलम्मसि (वज्जा ६२)। वकृ किलम्मत (पि १३६)।

किलाचक्क न [क्रीडाचक्र] इस नाम का एक छन्द—वृत्त (पिंग)।

किलाड पुं [किलाट] दूध का विकार-विशेष, मलाई (दे २, २२)।

किलाम सक [क्लमय्] क्लान्त करना, खिन्न करना, ग्लानि उत्पन्न करना। किलामेज (पि १३६)। वकृ. किलामेंत (भग ५, ६)। कवकृ किलामीअमाण (मा ४६)।

किलाम पु [क्लम] खेद, परिश्रम, ग्लानि, 'खमणिज्जो मे किलामो' (पडि, विमे २४०४)।

किलामणया स्त्री [क्लमना] खिन्न करना, उत्पन्न करना (भग ३, ३)।

किलामणा स्त्री [क्लमना] क्लम, क्लेश (महानि ४)।

किलामिअ देखो किलंत (अणु १३६)।

किलामिअ वि [क्लमित] खिन्न किया हुआ, हैरान किया हुआ, पीडित, 'तण्हाकिलामि-अंगो' (पउम १०३, २२, सुर १०, ४८)।

किलिंच न [दे] छोटी लकडी, लकडी का टुकडा, 'दतंतरसोहणयं किलिंचमित्तंपि अवि-दिन्न' (भत्त १०२, पाअ, दे २, ११)।

किलिंचिअ न [दे] ऊपर देखो (गा ८०)।

किलित देखो किलंत (नाट—मृच्छ २५, पि १३६)।

किलिकिंच अक [रम्] रमण करना, क्रीडा करला। किलिकिंचइ (हे ४, १६८)।

किलिकिंचिअ न [रत] रमण, क्रीडा, संभोग (कुमा)।

किलिकिल अक [किलकिलाय्] 'किल-किल' आवाज करना। वकृ किलिकिलंत (उप १०३१ टी)।

किलिकिलि न [किलिकिलि] इस नाम का एक विद्याधरनगर (इक)।

किलिकिलिकिल देखो किलकिल। वकृ. किलिकिलिकिलंत (पउम ३३ ८)।

किलिगिलिय न [किलिकिलित] 'किल-किल' आवाज करना, हर्ष-द्योतक ध्वनि-विशेष (स ३७०, ३८५)।

किलिट्ठ वि [क्लिष्ट] १ क्लेश-युक्त (उत्त ३२)। २ कठिन, विषम। ३ क्लेश जनक (प्राप्र, हे २, १०६, उव)।

किलिण्ण देखो किलिन्न (स्वप्न ८५)।

किलित्त वि [क्लृप्त] कल्पित, रचित (प्राप्र, पड्, हे १, १४५)।

किलित्ति स्त्री [क्लृप्ति] रचना, कल्पना (पि ५६)।

किलिन्न वि [क्लिन्न] आर्द्र, गीला (हे १, १४५, २, १०६)।

किलिम्म देखो किलम्म। किलिम्मइ (पि १७७)। वकृ किलिम्मंत (से ६, ८०, ११, ५०)।

किलिम्मिअ वि [दे] कथित, उक्त (दे २, ३२)।

किलिव देखो कीव (वव २, मै ४३)।

किलिस अक [क्लिश्] खेद पाना, थक जाना, दु खी होना। वकृ किलिसंत (पउम २१, ३८)।

किलिस देखो किलेस, 'मिच्छत्तमच्छभीयाण, किलिससलिलम्मि वुड्डाण' (सुपा ६४)।

किलिसिअ वि [क्लेशित] आयासित, क्लेश प्राप्त (स १४६)।

किलिस्स देखो किलिस=क्लिश्। किलिस्सइ (महा, उव)। वकृ किलिस्संत (नाट—माल ३१)।

किलिस्सिअ वि [क्लिष्ट] क्लेश प्राप्त, क्लेश-युक्त (उप पृ ११६)।

कुलाल पु [कुलाट] १ मार्जार, बिलाड। २ ब्राह्मण, विप्र (सूत्र २, ६)।

कुलिंगाल पुं [कुलाङ्गार] कुल में कलंक लगानेवाला, दुराचारी (ठा ४, १—पत्र १८५)।

कुलिअ न [कुलिक] खेत में घास काटने का छोटा काष्ठ-विशेष (अणु ४८)।

कुलिक } पु [कुलिक] १ ज्योतिष-शास्त्र
कुलिय } में प्रसिद्ध एक कुयोग (गण १८)। २ न एक प्रकार का हल (पएह १, १)।

कुलिय न [कुड्य] १ भीत, भित्ति (सूत्र १, २, १)। २ मिट्टी की बनाई हुई भीत (बृह २, कस)।

कुलिया स्त्री [कुलिका] भीत, कुड्य (बृह २)।

कुलिर पु [कुलिर] मेष वगैरह बारह राशि में चतुर्थ राशि (पउम १७, १०८)।

कुलिव्वय पु [कुटिव्रत] परिव्राजक का एक भेद, तापस-विशेष, घर में ही रहकर क्रोधादि का विजय करनेवाला (औप)।

कुलिस पुन [कुलिश] वज्र, इन्द्र का मुख्य आयुध (पाअ, उप ३२० टी)। °णिणाय पुं [°निनाद] रावण का इस नाम का एक सुभट (पउम ५६, २६)। °मज्झ न [°मध्य] एक प्रकार की तपश्चर्या (पउम २२, २४)।

कुलीकोस पुं [कुटीक्रोश] पक्षि-विशेष (पएह १, १—पत्र ८)।

कुलीण वि [कुलीन] उत्तम कुल में उत्पन्न (प्रासू ७१)।

कुलीर पु [कुलीर] जन्तु-विशेष (पाअ, दे २ ४१)।

कुलुंच सक [दह्, म्लै] १ जलाना। २ म्लान करना। सक्ट 'मालइकुसुमाइं कुलुंचिऊण मा जाणि णिव्वुओ सिसिरो' (गा (४२६)।

कुलुक्किय वि [दे] जला हुआ, 'विरहदवग्गिकुलुक्कियकायहो' (भवि)।

कुलोवकुल पु [कुलोपकुल] ये चार नक्षत्र— अभिजित्, शतभिषा, आर्द्रा और अनुराधा (सुज्ज १०, ५)।

कुल्ल पुं [दे] १ ग्रीवा, कण्ठ। २ वि असमर्थ, अशक्त। ३ छिन्न-पुच्छ, जिसकी पूँछ कट गई हो वह (दे २, ६१)।

कुल्ल पुन [दे] चूतड, गुजराती में 'कुलो' (सुख ८, १३)।

कुल्ल अक [कूर्द्] कूदना। वकृ. 'मारुईरक्खसाए वल मुक्कबुक्कारपाडक्क कुल्लंतवग्गतमेणामुह' (पउम ५३, ७६)।

कुल्लउर न [कुल्यपुर] नगर-विशेष (सया)।

कुल्लड न [दे] १ चुल्ली, चूल्हा (दे २,६३)। २ छोटा पात्र, पुडवा (दे २, ६३, पाअ)।

कुल्लरिअ पुं [दे] कान्दविक, हलवाई, मिठाई बनानेवाला (दे २, ४१)।

कुल्लरिया स्त्री [दे] हलवाई की दूकान (आवम)।

कुल्ला स्त्री [कुल्या] १ जल की नाली, सारिणी (कुमा, हे २, ७६)। २ नदी, कृत्रिम नदी (कप्पू)।

कुल्लाग पु [कुल्याक] सन्निवेश-विशेष, मगध देश का एक गाँव (कप्प)।

कुल्ली देखो कुल्ला (धर्मवि ११२)।

कुल्लुडिया स्त्री [कुल्लुडिका] घटिका, घडी (सूत्र १,४,२)।

कुल्लुरी स्त्री [दे] खाद्य-विशेष, गुजराती— 'कुलेर' (पव ४)।

कुल्लूरिअ [दे] देखो कुल्लरिअ (महा)।

कुल्ह पुं [दे] शृगाल, सियार (दे २, ३४)।

कुवणय न [दे] लकुट, यष्टि, लडकी, छडी (राज)।

कुवलय न [कुवलय] १ नीलोत्पल, हरा रंग का कमल (पाअ)। २ चन्द्र-विकासी कमल (श्रा २७)। ३ कमल, पद्म (गा ५)।

कुवली स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष (कुप्र २४६)।

कुविंद पु [कुविन्द] तन्तुवाय, कपडा बुननेवाला (सुपा १८८)। °वल्ली स्त्री [°वल्ली] वल्ली-विशेष (पएण १—पत्र ३३)।

कुविय वि [कुपित] क्रुद्ध, जिसको गुस्सा हुआ हो वह (पएह १, १, सुर २, ५, हेका ७३, प्रासू ६४)।

कुविय देखो कुप्प = कुप्य (पएह १, ५, सुपा ४०६)। °साला स्त्री [°शाला] बिछौना आदि गृहोपकरण रखने की कुटिया, घर का वह भाग जिसमें गृहोपकरण रक्खे जाते हैं (पएह १, ४—पत्र ११३)।

कुवेणी स्त्री [कुवेणी] शस्त्र-विशेष, एक प्रकार का हथियार (पएह १, ३—पत्र ४४)।

कुवेर देखो कुबेर (महा)।

कुव्व सक [कृ, कुर्व] करना, बनाना। कुव्वइ (भग)। भूका. कुव्वित्था (पि ५१७)। वकृ. कुव्वंत, कुव्वमाण (ओघ १५ भा, णाया १, ६)।

कुस पुन [कुश] तृण-विशेष, दर्भ, डाभ, काश (विपा १, ६, निचू १)। २ पु दाशरथी राम के एक पुत्र का नाम (पउम १००, २)। °ग्ग [°ाग्र] दर्भ का अग्र-भाग जो अत्यन्त तीक्ष्ण होता है (उत्त ७)। °ग्गनयर न [°ाग्रनगर] नगर-विशेष, बिहार का एक नगर, राजगृह, जो आजकल 'राजगिर' नाम से प्रसिद्ध है (पउम २, ६८)। °ग्गपुर न [°ाग्रपुर] देखो पूर्वोक्त अर्थ (सुर १, ८१)। °ट्ट पु [°वर्त्त] आर्य देश-विशेष (सत्त ६७ टी)। °ट्ट पु [°ार्त] आर्य देश-विशेष, जिसकी राजधानी शौर्यपुर थी (इक)। °त्त न [°क्त, °क्त] आस्तरण-विशेष, एक प्रकार का बिछौना (णाया १, १—पत्र १३)। °त्थलपुर न [°स्थलपुर] नगर-विशेष (पउम २१, ७६)। °मट्टिया स्त्री [°मृत्तिका] डाभ के साथ कुटी जाती मिट्टी (निचू १८)। °वर पु [°वर] द्वीप-विशेष (अणु—टी)।

कुस वि [कौश] दर्भ का बना हुआ (आचा २, २, ३, १४)।

कुसण न [दे] तीमन, आर्द्र करना (दे २, ३५)।

कुसण न [दे] गोरस (पिंड २८२)।

कुसणिय वि [दे] गोरस से बना हुआ करम्बा आदि खाद्य, 'कुसु (? स) णियति' (पिंड २८२ टी)।

कुसल वि [कुशल] १ निपुण, चतुर, दक्ष, अभिज्ञ (आचा, णाया १, २)। २ न. सुख, हित (राय)। ३ पुण्य (पचा ६)।

कुसला स्त्री [कुशला] नगरी-विशेष, विनीता, अयोध्या (आवम)।

कुसार देखो कूसार (स ६८६)।

कुसी स्त्री [कुशी] लोहे का बना हुआ एक हथियार (दे ८, ५)।

कीयग पु [कीचक] विराट देश के राजा का साला, जिसको भीम ने मारा था (उप ६४८ टी), 'नवम दूय विराडनयर, तत्थ ण तुम कि (? की) यगं भाउसयसमग्ग' (णाया १, १६—पत्र २०६)।

कीया स्त्री [कीका] नयन तारा, 'मरकतम-सारकलित्तनयणकीयरामिवन्ने' (णाया १, १ टी—पत्र ६)।

कीर पु [दे. कीर] शुक, तोता, सुग्गा (दे २, २१, उर १, १४)।

कीर पु [कीर] १ देश-विशेष काश्मीर देश। २ वि काश्मीर देश सबन्धी। ३ वि काश्मीर देश मे उत्पन्न (विसे ४६४ टी)।

कीरत } देखो कर = कृ।
कीरमाण }

कीरल पुं [कीरल] देश-विशेष (पउम ६८, ६४)।

कीरिस देखो केरिस (गा ३७४, मा ४)।

कीरी स्त्री [कीरी] लिपि-विशेष, कीर देश की लिपि (विसे ४६४ टी)।

कील अक [क्रीड्] क्रीडा करना, खेलना। कीलइ (प्राप्र)। वकृ कीलत, कीलमाण (सुर १,१२१, पि २४०)। सकृ कीलेत्ता, कीलिऊण (सुर १, ११७ पि २४०)।

कील वि [दे] स्तोक, अल्प, थोडा (दे २, २१)।

कील देखो खील (पाग्र)।

कील पुन [दे कील] कंठ, गला (सूत्र १, ५, १, ६)।

कीलण न [कीलन] कील से बन्धन, खीले में नियन्त्रण 'फणिमणिकीलणदुक्ख विम्हरिय पुहविदेवीए' (मोह २०)।

कीलण न [क्रीडन] क्रीडा, खेल (ग्रौप)। °धाई स्त्री [°धात्री] बालक को खेल-कूद करानेवाली दाई (णाया १, १)।

कीलणअ न [क्रीडनक] खिलौना (अभि २४२)।

कीलणिआ } स्त्री [दे] रथ्या, गली (दे २,
कीलणी } ३१)।

कीला स्त्री [दे] १ नव-वधू, दुलहिन (दे २, ३३)।

कीला स्त्री [कीला] सुरत समय मे किया जाता हृदय-ताडन विशेष (द २, ६४)।

कीला स्त्री [क्रीडा] खेल, क्रीडन (सुपा ३५८, सुर १, ११७)। °वास पु [°वास] क्रीडा करने का स्थान (इक)।

कीलाल न [कीलाल] रुधिर, खून, रक्त (उप ८६, पाग्र)।

कीलालिअ वि [कीलालिन] रुधिर-युक्त, खूनवाला (गउड)।

कलावण न [क्रीडन] खेल कराना (णाया १, २)।

कीलावणय न [क्रीडनक] खिलौना (निर १, १)।

कलिअ न [क्रीडित] क्रीडा, रमण, क्रीडन (सम १५, स २४१)।

कीलिअ वि [कीलित] खूँटा ठोका हुआ, 'लिहियव्व कीलियव्व' (महा, सुपा २५४)।

कीलिआ स्त्री [कीलिका] १ छोटा खूँटा, खूँटी (कम्म १, ३६)। २ शरीर सहनन-विशेष, शरीर का एक प्रकार का बांधा, जिसमे हड्डियाँ केवल खूँटी से बँधी हुई हो ऐसा शरीर-बन्धन (सम १४६, कम्म १,३६)।

कीव पु [क्लीब] १ नपुसक (वृह ४)। २ वि कातर, अधीर (सुर २, १४, णाया १, १)।

कीव पुं [दे कीव] पक्षि-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८)।

कीस वि [कीदृश] कैसा, किस तरह का (भग, पराग ३४)।

कीस वि [किंस्व] कौन स्वभाववाला, कैसे स्वभाव का (भग)।

कीस अ [कस्मात्] क्यो, किस से, किस कारण से ? (उव, हे ३, ६८)।

कीस देखो किलिस्स। कीसति (उत्त १६, १५, वे ३३)। वकृ कीसत (वे ८३)।

कु अ [कु] १ अल्प, थोडा। २ निपिद्ध, निवारित। ३ कुत्सित, निन्दित (हे २, २१७, से १, २६, सम्म १)। ४ विशेष, ज्यादा (णाया १, १४)। °उरिस पु [°पुरुष] खराब आदमी, दुर्जन (से १२, ३३)। °चर वि [°चर] खराब चाल-चलनवाला, सदाचार-रहित (आचा)। °डड पु [°दण्ड] पाश-विशेष, जिसका प्रान्त भाग काष्ठ का होता है ऐसा रज्जु पास (पण्ह १, ३)। °डिम वि [°दण्डिम] दण्ड देकर छीना हुआ द्रव्य (विपा १, ३)। °तित्थ न [°तीर्थ] १ जलाशय मे उतरने का खराब मार्ग (प्रासू ६०)। २ दूषित दर्शन (सूत्र १, १, १)। ३ °तिथि वि [°तीर्थिन] दूषित मत का अनुयायी (कुमा)। °दडिम देखो डडिम (णाया १, १—पत्र ३७)। °दसण न [°दर्शन] दुष्ट मत, दूषित धर्म (पण्ण २)। °दसणि वि [°दर्शनिन] १ दुष्ट दार्शनिक। २ दूषित मत का अनुयायी (श्रा ६)। °दिट्ठि स्त्री [°दृष्टि] १ कुत्सित दर्शन (उत्त २८)। २ दूषित मत का अनुयायी (धम २)। °दिट्ठिय वि [°दृष्टिक] दुष्ट दर्शन का अनुयायी, मिथ्यात्वी (पउम ३०, ४४)। °प्पवयण न [°प्रवचन] १ दूषित शास्त्र। २ वि दूषित सिद्धान्त को माननेवाला (अणु)। °प्पावयणिय वि [°प्रावचनिक] १ दूषित सिद्धान्त का अनुसरण करनेवाला (सूत्र १, २, २)। २ दूषित आगम-सबन्धी (अनुष्ठान) (अणु)। °भत्त न [°भक्त] खराब भोजन (पउम २०, १६६)। °मार पुं [°मार] १ कुत्सित मार (सूत्र २, २)। २ अत्यन्त मार, मृत-प्राय करनेवाला ताडन (णाया १, १४)। °रडा स्त्री [°रण्डा] रॉड, विधवा (श्रा १६)। °रुव, °रूव न [°रूप] १ खराब रूप (उप ३६२ टी, पण्ह १, ४)। २ माया-विशेष (भग १२, ५)। °लिंग न [°लिङ्ग] १ कुत्सित भेष (दस)। २ पु कीट वगैरह क्षुद्र जन्तु (विसे १७५४)। ३ वि कुतीर्थिक, दूषित धर्म का अनुयायी (श्रावम)। °लिंगि पु [°लिङ्गिन्] १ कीट वगैरह क्षुद्र जन्तु (ग्रोघ ७४८)। २ वि कुतीर्थिक, असत्य धर्म का अनुयायी (पण्ह १ २)। °वय न [°पद] खराब शब्द,

'सो सोहइ दूसतो, कइयणरइयाइ विविहकव्वाइ।
जो भजिऊण कुवय, अन्नपय सुदर देइ'
(वज्जा ६)।

°वियप्प पु [°विकल्प] कुत्सित विचार (सुपा ४४)। °वुरिस देखो °उरिस (पउम ६५ ४५)। °ससग्ग पु [°ससर्ग] खराब सोहवत, दुर्जन-सगति (धर्म ३)। °सत्थ पुन [°शास्त्र] कुत्सित शास्त्र, अनाप्त-प्रणीत सिद्धान्त, 'ईसरमयाइया सव्वे कुसत्था' (निचू

'कुहेडविजासवदारजीवी न गच्छई सरणं तम्मि काले' (उत्त २०, ४५)। २ आभाणक, वक्रोक्ति-विशेष, 'तेसु न विम्हयइ सय आह-ट्टुकुहेडएहिं व' (पव ७३ टी, बृह १)।

कुहेडग पुन [दे] अजमा (पचा ५, ३०)।

कुहेडगा स्त्री [कुहेटका] कन्द-विशेष, पिण्डालु (पव ४)।

कूअ देखो कूव = कूप (चड, हम्मीर ३०)।

कूअण न [कूजन] १ अव्यक्त शब्द। २ वि ऐसी आवाज करनेवाला (ठा ३, ३)।

कूअणया स्त्री [कूजनता] कूजन, अव्यक्त शब्द (ठा ३ ३)।

कूइआ स्त्री [कूपिका] कूई, छोटा कूप (चड)।

कूइय न [कूजित] अव्यक्त आवाज (महा, सुर ३, ४८)।

कूइया स्त्री [कूजिका] किवांड आदि का अव्यक्त आवाज (पिंड ३५६ टी)।

कूचिआ स्त्री [कूर्चिका] दाढी-मूँछ का बाल (सबोध ३१)।

कूचिया स्त्री [कूचिका] बुद्बुद, बुलबुला, पानी का बुलका (विसे १४६७)।

कूज अक [कूज्] अव्यक्त शब्द करना। कूजाहि (चारु २१)। वकृ कूजत (मै २६)।

कूजिअ न [कूजित] अव्यक्त आवाज (कुमा, मै २६)।

कूड सक [कूटय्] १ भूठा ठहराना। २ अन्यथा करना। कूडे (अणु ५० टी)।

कूड पुं [दे कूट] पाश, फाँसी, जाल (दे २, ४३, राय, उत्त ५, सूअ १, ५, २)।

कूड पुन [कूट] १ असत्य, छल युक्त, भूठा, 'कूटतुलकूडमाणे' (पडि)। २ भ्रान्ति-जनक वस्तु (भग ७ ६)। ३ माया, कपट, छल, दगा, धोखा (सुपा ६२७)। ४ नरक (उत्त ५)। ५ पीडा-जनक स्थान, दुःखोत्पादक जगह (सूअ १, ५, २, उत्त ६)। ६ शिखर, टोच (ठा ४, २, रभा)। ७ पर्वत का मध्य भाग (ज २)। ८ पाषाणमय यन्त्र-विशेष, मारने का एक प्रकार का यन्त्र (भग १५)। ९ समूह, राशि (निर १, १)। °कारि वि [°कारिन्] धोखेबाज, दगाखोर (सुपा ६२७)। °ग्गाह पु [°ग्राह] धोखे मे जीवो को फंसानेवाला (विपा १, २)। स्त्री. °ग्गाहणी (विपा १, २)। °जाल न [°जाल] धोखे का जाल, फाँसी (उत्त १९)। °तुला स्त्री [°तुला] भूठी नाप, बनावटी नाप (उवा १)। °पास न [°पाश] एक प्रकार की मछली पकडने का जाल (विपा १, ८)। °प्पओग पु [°प्रयोग] प्रच्छन्न पाप (आव ४)। °लेह पुं [°लेख] १ जाली लेख, दूसरे के हस्ताक्षर-तुल्य अक्षर बना कर धोखे-बाजी करना। २ दूसरे के नाम मे भूठी चिट्ठी वगैरह लिखना (पडि, उवा)। °वाहि पुं [°वाहिन्] बैल, बलीवर्द (आव ५)। °सक्ख न [°साक्ष्य] भूठी गवाही (पचा १)। °सक्खि वि [°साक्षिन्] भूठी साक्षी देनेवाला (श्रा १४)। °सक्खिज्ज न [°साक्ष्य] भूठी गवाही (सुपा ३७५)। °सामलि स्त्री [°शाल्मलि] १ वृक्ष-विशेष के आकार का एक स्थान, जहां गरुड जातीय देवो का निवास है (सम १३, ठा २, ३)। २ नरक स्थित वृक्ष-विशेष (उत्त २०)। °ागार न [°ागार] १ शिखर के आकारवाला घर (ठा ४, २)। २ पर्वत पर बना हुआ घर (आचा २, ३, ३)। ३ पर्वत मे खुदा हुआ घर (निचू १२)। ४ हिंसा-स्थान (ठा ४, २)। °ागारसाला स्त्री [°ागारशाला] षड्यन्त्र वाला घर, षड्यन्त्र करने के लिए बनाया हुआ घर (विपा १, ३)। °ाहच्च न [°ाहत्य] पाषाण-मय यन्त्र की तरह मारना, कुचल डालना (भग १५)।

कूड न [कूट] १ पाश, जाल, फँस, फंदा (सूअ १, ५, २, १८, राय ११४)। २ लगातार २७ दिन का उपवास (संबोध ५८)।

कूडग देखो कूड (आवम)।

कूण अक [कूणय्] सकुचित होना, सकोच पाना (गउड)।

कूणिअ वि [कूणित] सकोच प्राप्त, सकोचित (गउड)।

कूणिअ वि [दे] ईषद् विकसित, थोडा खिला हुआ (दे २, ४४)।

कूणिअ पु [कूणिक] राजा श्रेणिक का पुत्र (औप)।

कूणिय वि [कूणित] मडा हुआ (कुप्र १६०)।

कूय अक [कूज्] अव्यक्त आवाज करना। वकृ. कूयत, कूयमाण (ओघ २१ भा, विपा १, ७)।

कूय पुं [कूप] १ कूप, कुँआ (गउड)। २ घी, तेल वगैरह रखने का पात्र, कुतुप (णाया १, १—पत्र ५८, औप)। °ददुर पु [°दर्दुर] १ कूप का मेढक। २ वह मनुष्य जो अपना घर छोड बाहर न गया हो, अल्पज्ञ (उप ६४८ टी। देखो कूव।

कूर वि [क्रूर] १ निर्दय, निष्कृप, हिंसक (पण्ह १ ३)। २ भयकर, रौद्र (णाया १, ८, सूअ १, ७)। ३ पु रावण का इस नाम का एक सुभट (पउम ५६, २९)।

कूर पुन [कूर] वनस्पति-विशेष (सूअ २, ३, १६)।

कूर न [कूर] भात, ओदन (दे २, ४३)। °गडुअ, °गड्डुअ पु [गडुक] एक जैन महर्षि (आचा, भाव ८)।

कूर° अ [ईषन्] थोडा, अल्प (हे २, १२९, षड्)।

कूरपिउड न [दे] भोजन-विशेष, खाद्य-विशेष (आवम)।

कूरि वि [क्रूरिन्] १ निर्दयी, क्रूर चित्तवाला। २ निर्दय परिवारवाला (पण्ह १, ३)।

कूल न [दे] सैन्य का पिछला भाग (दे २, ४३, से १२, ९२)।

कूल न [कूल] तट, किनारा (पाअ, णाया १, १९)। °धमग पुं [ध्मायक] एक प्रकार का वानप्रस्थ जो किनारे पर खडा हो आवाज कर भोजन करता है (औप)। °वालग, °वालय पुं [°वालक] एक जैन मुनि (आव; काल)।

कूलकंसा स्त्री [कूलङ्कषा] नदी, तीर को तोडनेवाली नदी (वेणी १२०)।

कूव पुन [दे] १ चुराई चीज की खोज मे जाना (दे २, ६२, पाअ)। २ चुराई चीज को छुडानेवाला, छीनी हुई चीज को लडाई वगैरह कर वापस लेनेवाला, 'तए ण सा दोवदी देवी पउमणाभ एव वयासी—एवं खलु देवा० जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे बारव-तीए णयरीए कण्हे णाम वासुदेवे मम प्पियभाउए परिवसति, त जइ ण से छण्ह

कुडभी स्त्री [दे. कुटभी] छोटी पताका (आव्म)।

कुडमोअ पुंन [कुण्डमोद] हाथी के पैर की आकृतिवाला मिट्टी का एक तरह का पात्र (दस ६, ५१)।

कुडल पुन [कुण्डल] १ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४५)। २ तप-विशेष, 'पुरिमड्ढ' या निर्विकृतिक तप (सबोध ५७)।

कुडल पुन [कुण्डल] १ कान का आभूषण (भग, औप)। २ पु विदर्भ देश के एक राजा का नाम (पउम ३०, ७७)। ३ द्वीप-विशेष। ४ समुद्र-विशेष। ५ देव-विशेष (जीव ३)। ६ पर्वत-विशेष (ठा १०)। ७ गोल आकार (सुपा ६२)। °भद्द पु [°भद्र] कुण्डल द्वीप का एक अधिष्ठायक देव (जीव ३)। °मडिअ वि [°मण्डित] १ कुण्डल से विभूषित। २ विदर्भ देश का इस नाम का एक राजा (पउम ३०, ७४)। °महाभद्द पु [°महाभद्र] देव-विशेष (जीव ३)। °महावर पु [°महावर] कुण्डलवर समुद्र का अधिष्ठाता देव (सुज्ज १९)। °वर पुं [°वर] १ द्वीप-विशेष। २ समुद्र-विशेष। ३ देव-विशेष (जीव ३)। ४ पर्वत-विशेष (ठा ३, ४)। °वरभद्द पुं [°वरभद्र] कुण्डलवर द्वीप का एक अधिष्ठायक देव (जीव ३)। °वरमहाभद्द पुं [°वरमहाभद्र] कुण्डलवर द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °वरोभास पु [°वरावभास] १ द्वीप-विशेष। २ समुद्र-विशेष (जीव ३)। °वरोभासभद्द पु [°वरावभासभद्र] कुण्डलवरावभास द्वीप का अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °वरोभासमहाभद्द पुं [°वरावभासमहाभद्र] देखो पूर्वोक्त अर्थ (जीव ३)। °वरोभासमहावर पुं [°वरावभासमहावर] कुण्डलवरावभास समुद्र का अधिष्ठायक देव-विशेष (जीव ३)। °वरोभासवर पु [°वरावभासवर] समुद्र-विशेष का अधिपति देव-विशेष (जीव ३)।

कुडला स्त्री [कुण्डला] विदेहवर्ष-स्थित नगरी विशेष (ठा २, ३)।

कुडलि वि [कुण्डलिन्] कुण्डलवाला (भास ३३)।

कुडलिअ वि [कुण्डलित] वर्तुल, गोल आकारवाला (सुपा ६२, कप्पू)।

कुडलिआ वि [कुण्डलिका] छन्द विशेष (पिंग)।

कुडलोद पु [कुण्डलोद] इस नाम का एक समुद्र (सुज्ज १९)।

कुडाग पु [कुण्डाक] सन्निवेश-विशेष, ग्राम-विशेष (आवम)।

कुंडि देखो कुडी (महा)।

कुडिअ पु [दे] ग्राम का अधिपति, गाँव का मुखिया (दे २, ३७)।

कुडिअपेस्सण न [दे] ब्राह्मण विष्टि, ब्राह्मण की नौकरी, ब्राह्मण की सेवा (दे २, ४३)।

कुडिगा } स्त्री [कुण्डिका] नीचे देखो
कुडिया } (रभा, अनु ५, भग, णाया २, ५)।

कुडिण न [कुण्डिन] विदर्भ देश का एक नगर (कुप्र ४८)।

कुडी स्त्री [कुण्डी] १ कुण्डा, पात्र-विशेष, 'तेसिमहोभूमीए ठविया कुंडी य तेल्लपडिपुन्ना' (सुपा २६६)। २ कमण्डल, संन्यासी का जल-पात्र (महा)।

कुढ देखो कुठ (सुपा ४२२)।

कुढय न [दे] १ चुल्ली, चूल्हा। २ छोटा बरतन (दे २, ६३)।

कुत पु [दे] शुक, तोता, सुग्गा (दे २, २१)।

कुन पु [कुन्त] १ हथियार-विशेष, भाला (पण्ह १, १, औप)। २ राम के एक सुभट का नाम (पउम ५९, ३८)।

कुनल पु [कुन्तल] १ केश, बाल (सुर १, १, सुपा ६१, २००)। २ देश विशेष (सुपा ६१, उव ४९५)। °हार पु [°हार] धम्मिल्ल, सयत केश, बाँधे हुए बाल (पाअ)।

कुतल पुं [दे] सातवाहन, नृप-विशेष (दे २, ३९)।

कुतला स्त्री [कुन्तला] इस नाम की एक रानी (दस)।

कुतला स्त्री [दे] करोटिका, परोसने का एक उपकरण (दे २, ३८)।

कुतली स्त्री [कुन्तली] कुन्तल देश की रहनेवाली स्त्री (कप्पू)।

कुंनाकुति न [कुन्ताकुन्ति] बर्छे की लड़ाई (सिरि १०३२)।

कुती स्त्री [दे] मजरी, बौर (दे २, ३४)।

कुती स्त्री [कुन्ती] पाण्डवो की माता का नाम (उप ६४८)। °विहार पुं [°विहार] नासिक-नगर का एक जैन मन्दिर, जिसका जीर्णोद्धार कुन्तीजी ने किया था (ती २८)।

कुतापोट्टलय वि [दे] चतुष्कोण, चार कोनवाला, चौकोर (दे २, ४३)।

कुंथु पु [कुन्थु] १ एक जिन-देव, इस अवसर्पिणी काल मे उत्पन्न सत्तरहवाँ तीर्थंकर और छठवाँ चक्रवर्ती राजा (सम ४३, पडि)। २ हरिवश का एक राजा (पउम २२, ९८)। ३ चमरेन्द्र की हस्ति-सेना का अधिपति देव-विशेष (ठा ५, १—पत्र ३०२)। ४ एक क्षुद्र जन्तु, त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, जी १७)।

कुद पुं [कुन्द] १ पुष्प-वृक्ष विशेष (जं २)। २ न पुष्प-विशेष, कुन्द का फूल (सुर २, ७६, णाया १, १)। ३ विद्याधरो का एक नगर (इक)। ४ पुन छन्द-विशेष (पिंग)।

कुदय वि [दे] कृश, दुर्बल (दे २, ३७)।

कुंदा स्त्री [कुन्दा] एक इन्द्राणी, मानिभद्र इद्र की पटरानी (इक)।

कुदीर न [दे] बिम्बी-फल, कुन्दरुल का फल (दे २, ३९)।

कुदुक पुं [कुन्दुक] वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ४१)।

कुदुरुक्क पुं [कुन्दुरुक] सुगन्धि पदार्थ विशेष (णाया १, १—पत्र ४१, सम १३७)।

कुदुल्लुअ पु [दे] पक्षि-विशेष, उलूक, उल्लू (पाअ)।

कुधर पु [दे] छोटी मछली (दे २, ३२)।

कुपय पुन [कूपक] तैल वगैरह रखने का पात्र-विशेष (रयण ३१)।

कुपल पुन [कुट्मल, कुड्मल] १ इस नाम का एक नरक। २ मुकुल, कली, कलिका (हे १, २६ कुमा, पड्)।

कुबर [दे] देखो कुंधर (पाअ)।

कुभ पु [कुम्भ] १-३ साठ, अस्सी और एक सौ आढक की नाप (अणु १५१, तंदु २९)। ४ ज्योतिष-प्रसिद्ध एक राशि (विचार १०६)। ५ एक राजा (राय ४६)।

केक्काइय देखो केकाइय (णाया १, ३—पत्र ६५)।

केगई देखो केकई (पउम १, ६४, २०, १८४)।

केगाइय देखो केकाइय (राज)।

केज्ज वि [क्रेय] बेचने की चीज (ठा ६)।

केढ } पु [कैटभ] १ इस नाम का एक
केढव } प्रतिवासुदेव राजा (पउम ५, १५६)। २ दैत्य-विशेष (हे १, २४०; कुमा)। °रिउ पु [°रिपु] श्रीकृष्ण, नारायण (कुमा)।

केत्त देखो केत्तिअ (हास्य १३६)।

केत्तिअ } वि [कियत्] कितना? (हे २,
केत्तिल } १५७, कुमा, षड्, महा)।

केत्तुल (अप) ऊपर देखो (कुमा, षड्, हे ४, ४०८)।

केत्थु (अप) अ [कुत्र] कहाँ, किस जगह? (हे ४, ४०५)।

केद्दह देखो केत्तिअ (हे २, १५७, प्राप्र)।

केम } (अप) देखो कह (षड्, हे ४, ४०१,
केम्व } ४१८)।

केय न [केत] १ गृह, घर। २ चिह्न, निशानी (पव ४)।

केयण न [केतन] १ वक्र वस्तु, टेढी चीज। २ चंगेरी का हाथा (ठा ४,२—पत्र २१८)। ३ संकेत, सकेत स्थान (वव ४)। ४ धनुष की मूठ (उत्त ६)। ५ मछली पकडने का जाल (सूअ १, ३, १)। ६ स्थान, जगह (आचा)। ७ 'कडवल्लसठित' (सूत्र० चूर्णी पत्र ८२ गा० १७६)।

केयय देखो केकय (सुपा १४२)।

केयव्व वि [क्रेतव्य] खरीदने योग्य वस्तु (उत्त ३५, १५)।

केर } वि [दे संबन्धिन्] सबन्धी वस्तु,
केरय } सबन्धी चीज (स्वप्न ५१, हे ४, ३५६, ३७३, प्राप्र, भवि)।

केरव न [कैरव] १ कुमुद, सफेद कमल (पाअ, सुपा ४६)। २ कैतव, कपट (हे १, १५२)।

केरिच्छ वि [कीदृक्ष] कैसा, किस तरह का? (हे १, १०५, प्राप्र, काल)।

केरिस वि [कीदृश] कैसा, किस तरह का? (प्रासा)।

केरी स्त्री [क्रकटी] वृक्ष-विशेष, करीर का गाछ, 'निंबववोरिकेरि—' (उप १०३१ टी)।

केल देखो कयल = कदन (हे १, १६७)।

केलाइय वि [समारचित] साफसुथरा किया हुआ (कुमा)।

केलाय सक [समा + रचय] समारचन करना, साफ कर ठीक करना। केलायइ (हे ४, ६५)।

केलास पु [कैलास] राहु का कृष्ण पुद्गल-विशेष (सुज्ज २०)।

केलास पुं [कैलास] १ स्वनाम-प्रसिद्ध पर्वत-विशेष (से ६, ७३, गउड, कुमा)। २ इस नाम का एक नाग राज (इक)। ३ इस नाग-राज का आवास-पर्वत (ठा ४, २)। ४ मिट्टी का एक तरह का पात्र (निर १, ३)। देखो कइलास।

केलि देखो कयलि (कुमा)।

केलि स्त्री [दे] कन्द-विशेष (उत्त ३६, ६८, सुख ३६, ६८)।

केलि } स्त्री [केलि, °ली] १ क्रीडा, खेल,
केली } मजाक (कुमा, पाअ, कप्पू)। २ परि-हास, हाँसी, ठट्ठा (पाअ, ओप)। ३ काम-क्रीडा (कप्पू, औप)। °आर वि [°कार] क्रीडा करनेवाला, विनोदी (कप्पू)। °काणण न [°कानन] क्रीडोद्यान (कप्पू)। °किल, °गिल वि [°किल] १ विनोदी, क्रीडा-प्रिय (सुपा ३१४)। २ पु व्यन्तर-जातीय देव-विशेष (सुपा ३२०)। ३ पुन स्थान-विशेष (पउम ५५, १७)। °भवण न [°भवन] क्रीडा-गृह, विलास-घर (कप्पू)। °विमाण न [°विमान] विलास-महल (कप्पू)। °सअण न [°शयन] काम शय्या (कप्पू)। °सेज्जा स्त्री [°शय्या] काम शय्या (कप्पू)।

केली देखो कयली (हे १, १२०)।

केली स्त्री [दे] असती, कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री (दे २, ४४)।

केलीगिल वि [कैलीकिल] केलीकिल स्थान मे उत्पन्न (पउम ५५, १७)।

केव° देखो कं° (भग, पण्ण १७—पत्र ५४५, विसे २८६१)।

केवँ (अप) देखो कह (कुमा)।

केवइय वि [कियत्] कितना? (नम १३४, विसे ६४६ टी)।

केवट्ट पु [कैवर्त्त] धीवर, मछलीमार, मछुआ (पाअ, स २५८, हे २, ३०)।

केवड (अप) देखो केत्तिअ (हे ४, ४०८, कुमा)।

केवल वि [केवल] १ अकेला, असहाय (ठा २, १, औप)। २ अनुपम, अद्वितीय (भग ६, ३३)। ३ शुद्ध, अन्य वस्तु से अमिश्रित (दस ४)। ४ सपूर्ण, परिपूर्ण (निर १, १)। ५ अनन्त, अन्त-रहित (विसे ८४)। ६ न. ज्ञान-विशेष सर्वश्रेष्ठ ज्ञान, भूत, भावी वगैरह सर्व वस्तुओ का ज्ञान, सर्वज्ञता (विसे ८२७)। °कप्प वि [°कल्प] परिपूर्ण, संपूर्ण (ठा ३, ४)। °णाण न [°ज्ञान] सर्वश्रेष्ठ ज्ञान, सपूर्ण ज्ञान (ठा २, १)। °णाणि, °नाणि वि [°ज्ञानिन्] १ केवल-ज्ञानवाला, सर्वज्ञ (कप्प, औप)। २ पु इस नाम के एक अर्हन् देव, अतीत उत्सर्पिणी-काल के प्रथम तीर्थंकर (पव ६)। °ण्णाण, °नाण, °न्नाण देखो °णाण (विसे ८२६, ८२६, ८७३)। °दसण न [°दर्शन] परिपूर्ण सामान्य बोध (कम्म ४, १२)।

केवल अ [केवलम्] केवल, सिर्फ, मात्र (स्वप्न ६२, ६३, महा)।

केवलाअ सक [समा + रभ्] आरम्भ करना, शुरू करना। केवलाअइ (षड्)।

केवलि वि [केवलिन्] केवल ज्ञानवाला, सर्वज्ञ (भग)। °पक्खिय वि [पाक्षिक] १ स्वयबुद्ध। २ पु जिनदेव, तीर्थंकर (भग ६, ३१)।

केवलिअ वि [केवलिक] १ केवलज्ञानवाला (भग)। २ परिपूर्ण, सपूर्ण, 'सामाइय केवलियं पसत्थं' (विसे २६८१)।

केवलिअ वि [कैवलिक] १ केवल-ज्ञान से सबन्ध रखनेवाला (द १७)। २ केवलि-प्रोक्त (सूअ १,१४)। ३ केवल-ज्ञानि सबन्धी (ठा ४, २)। ४ न केवल ज्ञान, सपूर्ण ज्ञान (आव ४)।

केवलिअ न [कैवल्य] केवल ज्ञान, केवलिए सपत्ते' (सत्त ६७ टी, विसे ११८०)।

कुच्चग वि [कौर्चक] शर नामक गाछ का बना हुआ (आचा २, २, ३, १४)।

कुच्चग } देखो कुच्च (आचा २, २, ३,
कुच्चय } काल)। ३ कूँची, तृण-निर्मित तूलिका, जिससे दीवाल मे चूना लगाया जाता है (उप पृ ३४३; कुमा)।

कुच्चिय वि [कूर्चिक] दाढी-मूँछवाला (बृह १)।

कुच्छ सक [कुत्स्] निन्दा करना, धिक्कारना। कृ कुच्छ कुच्छणिज्ज (श्रा २७, पण्ह १, ३)।

कुच्छ पुं [कुत्स] १ ऋषि-विशेष। २ गोत्र-विशेष, 'थेरस्स णं अज्जसिवभूइस्स कुच्छसगुत्तस्स' (कप्प)।

कुच्छ देखो कुच्छ = कुत्स्।

कुच्छग पु [कुत्सक] वनस्पति विशेष (सूअ २ २)।

कुच्छणिज्ज देखो कुच्छ = कुत्स्, 'अन्नेसि कुच्छणिज्जं साणाणं भक्खणिज्ज हिं' (श्रा २७)।

कुच्छा स्त्री [कुत्सा] निन्दा, घृणा, जुगुप्सा (ओघ ४४४ उप ३२० टी)।

कुच्छि पुस्त्री [कुक्षि] १ उदर, पेट (हे १, ३५; उवा, महा)। २ अडतालीस अगुल का मान (जं २)। °किमि पु [°कृमि] उदर मे उत्पन्न होनेवाला कीडा, द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष (पण्ण १)। °धार पु [°धार] १ जहाज का काम करनेवाला नौकर, 'कुच्छिधारकन्नधारगब्भजसजत्ताणावावाणियगा' (णाया १, ८—पत्र १३३)। २ एक प्रकार का जहाज का व्यापारी (णाया १, १६)। °पूर पु [°पूर] उदर-पूर्त्ति (वव ४)। °वेयणा स्त्री [°वेदना] उदर का रोग-विशेष (जीव ३)। °सूल पुंन [°शूल] रोग-विशेष (णाया १, १३, विपा १, १)।

कुच्छिंभरि वि [कुक्षिम्भरि] अकेलपेट्ट, पेटू, स्वार्थी, 'हा तियचरित्तकुसि (? च्छि) भरिए !' (रंभा)।

कुच्छिमई स्त्री [दे. कुक्षिमती] गर्भिणी, आपन्न-सत्त्वा (दे २, ४१, पड्)।

कुच्छिभद्दिका (मा) देखो कुच्छिमई (प्राकृ १०२)।

कुच्छिय वि [कुत्सित] खराब, निन्दित, गर्हित (पचा ७, भवि)।

कुच्छिल्ल न [दे] १ वृति का विवर, वाड का छिद्र (दे २, २४)। २ छिद्र, विवर (पाअ)।

कुच्छेअ पु [कौक्षेयक] तलवार, खड्ग (दे १, १६१ पड्)।

कुज पु [कुज] वृक्ष, पेड (ज २)।

कुजय पु [कुजय] जूआरी, जूआखोर (सूअ १, २, २)।

कुज्ज वि [कुब्ज] १ कुब्ज, कुबडा, वामन (सुपा २, कप्पू)। २ पुन पुष्प-विशेष (पड्)।

कुज्जय पु [कुब्जक] १ वृक्ष-विशेष, शतपत्रिका (पउम ४२, ८, कुमा)। २ न. उस वृक्ष का पुष्प 'बवेउ कुज्जयपसूणं' (हे १, १८१)।

कुज्झ सक [क्रुध्] क्रोध करना, गुस्सा करना। कुज्झइ (हे ४, २१७, पड्)।

कुट्ट सक [कुट्ट्] १ कूटना, पीटना, ताडन करना। २ काटना, छेदना। ३ गरम करना। ४ उपालम्भ देना। भवि कुट्टइस्स (पि ५२८)। वकृ कुट्टित (सुर ११, १)। कवकृ कुट्टिज्जंत, कुट्टिज्जमाण (सुपा ३४०, प्रासू ६६, राय)। सकृ कुट्टिय (भग १४, ८)।

कुट्ट पुं [कुट] घडा, कुम्भ (सूअ २, ७)।

कुट्ट पुन [दे] १ कोट, किला, 'दिज्जंति कवाडाइ कुट्टुवरि भडा ठविज्जति' (सुवा ५०३)। २ नगर, शहर (सुर १५, ८१)। °वाल पुं [°पाल] कोतवाल, नगर-रक्षक (सुर १५, ८१)।

कुट्टण न [कुट्टन] १ छेदन, चूर्णन, भेदन (औप)। २ कूटना, ताडना (हे ४, ४३८)।

कुट्टणा स्त्री [कुट्टना] शारीरिक पीडा (सूअ १, १२)।

कुट्टणी स्त्री [कुट्टनी] १ मूसल, एक प्रकार की मोटी लकडी, जिससे चावल आदि अन्न कूटे जाते हैं (बृह १)। २ दूती, कुटनी, कुट्टिनी (रंभा)।

कुट्टयरी स्त्री [दे] चडी, पार्वती (दे २, ३५)।

कुट्टा स्त्री [दे] गौरी, पार्वती (दे २, ३५)।

कुट्टाय पु [दे] चर्मकार, मोची (दे २, ३७)।

कुट्टित देखो कुट्ट = कुट्ट्।

कुट्टितिया देखो कोट्टतिया (राज)।

कुट्टिंव [दे] देखो कोट्टिंव (पाअ)।

कुट्टिणी स्त्री [कुट्टिनी] कूटनी, दूती (कप्पू, रंभा)।

कुट्टिम देखो कोट्टिम = कुट्टिम (भग ८, ६, राय, जीव ३)।

कुट्टिय वि [कुट्टित] १ कूटा हुआ, ताडित (सुपा १५, उत्त १६)। २ छिन्न, छेदित (बृह १)।

कुट्ठ पुंन [कुष्ठ] १ पंसारी के यहाँ बेची जाती एक वस्तु, कूठ (विसे २६३, पण्ह २,५)। २ रोग-विशेष, कोढ (वव ६)।

कुट्ठ पु [कोष्ठ] १ उदर, पेट, 'जहा विसं कुट्ठगय मतमूलविसारया। वेज्जा हणंति मतेहिं' (पडि)। २ कोठा, कुशूल, धान्य भरने का बडा भाजन (पण्ह २, १)। °बुद्धि वि [°बुद्धि] एक वार जानने पर नही भूलनेवाला (पण्ह २, १)। देखो कोट्ठ, कोट्ठग।

कुट्ठ वि [क्रुष्ट] १ शपित, अभिशप्त। २ न. शाप, अभिशाप-शब्द, 'उड्ढ कुट्ठ केहिं पेच्छता आगया इत्थ' (सुपा २५०)।

कुट्ठग पुन [कोष्ठक] शून्य घर (दस ५, १ २०, ८२)।

कुट्ठा स्त्री [कुष्ठा] इमली, चिंचा (बृह १)।

कुट्ठि वि [कुष्ठिन्] कुष्ठ रोगवाला (सुपा २४३, ५७६)।

कुड पु [कुट] १ घडा, कलश (दे २, ३५, गा २२६, विसे १४५६)। २ पर्वत। ३ हाथी वगैरह का बन्धन-स्थान (णाया १, १—पत्र ६३)। ४ वृक्ष, पेड, 'तडुवियसिहडमडियकुडग्गो' (सुपा ५६२)। °कठ पुं [°कण्ठ] पात्र-विशेष, घडा के जैसा पात्र (दे २, २०)। °दोहिणी स्त्री [°दोहिनी] घडा भर दूध देनेवाली (गा ५३७)।

कुडंग पुन [कुटङ्क] १ कुञ्ज, निकुञ्ज, लता वगैरह से ढका हुआ स्थान (गा ६८०, हेका १०५)। २ वन, जंगल (उप २२० टी)। ३ वाँस की जाली, वाँस की बनी हुई छत (बृह १)। ४ गह्वर, कोटर (राज)। ५ वंश-गहन (णाया १, ८, कुमा)।

कुडंग पुन [दे कुटङ्क] लता-गृह लता से ढका हुआ घर (दे २, ३७, महा, पाअ, पड्)।

कुडंगा स्त्री [कुटङ्का] लता-विशेष (पउम ५३, ७६)।

कोंड पु [कौण्ड. गौड] देश-विशेष (इक)।

कोंडल देखो कुंडल (राज)। °मेत्तग पुं [°मित्रक] एक व्यन्तर देव का नाम (बृह ३)।

कोंडलग पु [कुण्डलक] पक्षि विशेष (औप)।

कोडलिआ स्त्री [दे] १ श्वापद जन्तु-विशेष, साही, श्वावित्। २ क्रीडा, कीट (दे २,५०)।

कोडिअ पु [दे] ग्राम-निवासी लोगों में फूट कराकर छल से गाँव का मालिक वन बैठने-वाला (दे २, ४८)।

कोंडिणपुर न [कौण्डिनपुर] नगर विशेष (रुक्मि ५१)।

कोंडिया देखो कुंडिया (पराह २, ५)।

कोंडिण्ण देखो कोडिन्न (राज)।

कोंढ देखो कुढ (हे १, ११६)।

कोंडुल्लु पु [दे] उलूक, उल्लू, पक्षि-विशेष (दे २, ४६)।

कोंत देखो कुंत (पराह १, १ सुर २, २८)।

कोंतल देखो कुंतल = कुन्तल (प्राकृ ६. सक्षि ४)।

कोंती देखो कुंती (णाया १, १६—पत्र २१३)।

कोंभी देखो कुंभी (प्राकृ ६)।

कोक पु [कोक] १ चक्रवाक पक्षी (दे ८, ४३)। २ वृक, भेडिया (इक)।

कोकंतिय पुस्त्री [दे] जन्तु-विशेष, लोमडी, लोखरिआ (पराह १, १)। स्त्री °या (णाया १, १—पत्र ६५)।

कोकणद देखो कोकणय (संबोध ४७)।

कोकणय न [कोकनद] १ रक्त कुमुद। २ लाल कमल (पराण १, स्वप्न ७२)।

कोकासिय [दे] देखो कोक्कासिय (पराह १, ४—पत्र ७८)।

कोकुइय देखो कुक्कुइअ (ठा ६—पत्र ३७१)।

कोक्क सक [व्या + हृ] बुलाना, आह्वान करना। कोक्कइ (हे १, ७६, षड्)। वकृ कोकंत (कुमा)। सकृ कोक्किवि (भवि)। प्रयो कोक्कावइ (भवि)।

कोक्कास पु [कोक्कास] इस नाम का एक वर्धकि, वढई (आचू १)।

कोकासिय [दे] देखो कोआसिअ (दे २, ५०)।

कोक्किय वि [व्याहृत] आहूत, बुलाया हुआ (भवि)।

कोक्कुइय देखो कक्कुइअ (कम, औप)।

कोखुब्भ देखो खोखुब्भ वकृ कोखुब्भमाण (पि ३१६)।

कोच्चप्प न [दे] अलीक-हित, झूठी भलाई, दिखावटी हित (दे २, ४६)।

कोच्चिय पुस्त्री [दे] शैक्षक, नया शिष्य (वव ६)।

कोच्छ न [कौत्स] १ गोत्र विशेष। २ पुंस्त्री कौत्स गोत्र मे उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३९०)।

कोच्छ वि [कौक्ष] १ कुक्षि सम्बन्धी, उदर से सम्बन्ध रखनेवाला। २ न उदरप्रदेश, 'गणियायारकणेरुकोत्थ (? च्छ) हत्थी' (णाया १, १—पत्र ६४)।

कोच्छभास पु [दे कुत्सभाष] काक, कौआ, वायस, 'न मणी सयमाहस्सो आविज्झइ कोच्छभासस्स' (उव)।

कोच्छेअय देखो कुच्छेअय (हे १, १६१, कुमा, षड्)।

कोज्ज देखो कुज्ज (कप्प)।

कोज्जप्प न [दे] स्त्री रहस्य (दे २, ४६)।

कोज्जय देखो कुज्जय (णाया १, ८—पत्र १२५)।

कोज्जरिअ वि [दे] आपूरित, पूर्ण किया हुआ, भरा हुआ (षड्)।

कोज्झरिअ वि [दे] ऊपर देखो (दे २, ५०)।

कोटर देखो कोट्टर (चेइय १५१)।

कोटिंब पुं [दे] गौ (निशीथ ३५६५ गा०)।

कोटुंभ पुन [दे] हाथ से आहत जल, 'कोटुंभो जलकरप्फालो' (पाग्र)। देखो कोट्टुंभ।

कोटीवरिस अ [कोटीवर्ष] लाट देश की प्राचीन राजधानी (विचार ४६)।

कोट्ट देखो कुट्ट = कुट्ट्। कवकृ कोट्टिज्जमाण (आवम)। सकृ कोट्टिय (जीव ३)।

कोट्ट न [दे] १ नगर, शहर (दे २, ४५)। २ कोट, किला, दुर्ग (णाया १, ८—पत्र १३४, उत्त ३०, बृह १, सुपा ११८)। °वाल पुं [°पाल] कोटवाल, नगर-रक्षक (सुपा ४१३)।

कोट्टनिया स्त्री [कुट्टयन्तिका] तिल वगैरह को चूरने का उपकरण (णाया १, ७—पत्र ११७)।

कोट्टकिरिया स्त्री [कोट्टक्रिया] देवी-विशेष, दुर्गा आदि रुद्र रूपवाली देवी (अणु २५)।

कोट्टग देखो कुट्टग (उप १७९, पराह १, १)।

कोट्टर देखो कोडर (महा, हे ४, ४२२, गा ५६३ अ)।

कोट्टवीर पु [कोट्टवीर] इस नाम का एक मुनि, आचार्य शिवभूति का एक शिष्य (विसे २५५२)।

कोट्टा स्त्री [दे] १ गौरी, पार्वती (दे २, ३५—१, १७४)। २ गला, गर्दन (उप ९९१)।

कोट्टाग पुं [कोट्टाक] १ वर्धकि वढई (आचा २, १, २)। २ न. हरे फलों को सुखाने का स्थान-विशेष (बृह १)।

कोट्टिंब पु [दे] द्रोणी, नौका, जहाज (दे २, ४७)।

कोट्टिम पुन [कुट्टिम] १ रत्नमय भूमि (णाया १, २)। २ फरस-बंध जमीन, बँधी हुई जमीन (जं १)। ३ भूमि-तल (सुर ३, १००)। ४ एक या अनेक तलावाला घर (वव ४)। ५ झोपडी, मढी। ६ रत्न की खान। ७ अनार का पेड (हे १, ११६, प्राप्र)।

कोट्टिम वि [कृत्रिम] वनावटी, वनाया हुआ, अकुदरती (पउम ६६, ३६)।

कोट्टिल } पु [कौट्टिक] मुग्दर, मुगरी, मुगरा, कोट्टिल्ल } जोडी (राज, विपा १,६—पत्र ६६, ६६)।

कोट्टी स्त्री [दे] १ दोह, दोहन। २ विषम स्खलना (दे २, ६४)।

कोट्टुंभ पुंन [दे] हाथ से आहत जल, 'कोट्टुंभ करइए तोए' (दे २, ४७)।

कोट्टुम अक [रम्] क्रीडा करना, रमण करना। कोट्टुमइ (हे ४, १६८)।

कोट्टुवाणी स्त्री [कोट्टुवाणी] जैन मुनि-गण की एक शाखा (कप्प)।

कोट्ठ देखो कुट्ठ = कुष्ठ (भग १६, ६, णाया १, १७)।

कुत्ती स्त्री [दे] कुत्ती, कुक्कुरी (रंभा)।

कुत्थ अ [कुत्र] कहाँ, किस स्थान में? (उत्तर १०४)।

कुत्थ सक [कोथय्] सड़ाना, 'नो वाऊ हरेज्जा, नो सलिल कुत्थिज्जा' (पव १५८ टी) कुच्छे (? त्थे) ज्जा (अरा १६१)। भवि कुच्छि (? त्थि) हिई (पिंड २३८)। कृ कुत्थ (दसनि १०, २४)।

कुत्थ देखो कढ। कुत्थमि, कुत्थमु (गा ५०१ अ)।

कुत्थण स्त्रीन [कोथन] सड़ना, सड़ जाना (वव ४)।

कुत्थर न [दे] १ विज्ञान (दे २, १३)। २ कोटर वृक्ष की पोल, गह्वर (सुपा २४६)। ३ सर्प वगैरह का बिल (उप ३५७ टी)।

कुत्थल देखो कोत्थल, 'कुच्छ (? त्थ) लम-माणउयरो' (धर्मवि २७)।

कुत्थुंब पुं [कुस्तुम्ब] वाद्य-विशेष (राय)।

कुत्थुंभरी स्त्री [कुस्तुम्बरी] वनस्पति-विशेष, धनियाँ (पराग १—पत्र ३१।

कुत्थुह पुन [कौस्तुभ] मणि-विशेष, जो विष्णु की छाती पर रहती है (हेका २५७)।

कुत्थुहवत्थ न [दे] नीवी, नारा, इजारबन्द (दे २, ३८)।

कुदो देखो कुओ (हे १, ३७)।

कुद्द वि [दे] प्रभूत, प्रचुर (दे २, ३४)।

कुद्दण पु [दे] रासक, रासा (दे २, ३८)।

कुद्दव पुं [कोद्रव] धान्य-विशेष, कोदों, कोदव (सम्य १२)।

कुद्दाल पु [कुद्दाल] १ भूमि खोदने का साधन, कुदार, कुदारी (सुपा ५२६)। २ वृक्ष-विशेष (ज २)।

कुद्ध वि [क्रुद्ध] कुपित, क्रोध-युक्त (महा)।

कुपचि (पि) अ [क्वचित्] किसी जगह में (प्राकृ १२३)।

कुप्प सक [कुप्] कोप करना, गुस्सा करना। कुप्पइ (उव, महा)। वकृ. कुप्पंत (सुपा १६७)। कृ कुप्पियव्व (स ६१)।

कुप्प सक [भाप्] बोलना, कहना। कुप्पड (भवि)।

कुप्प न [कुप्य] सुवर्ण और चाँदी को छोड कर अन्य धातु और मिट्टी वगैरह के बने हुए गृह-उपकरण, 'लोहाई उवक्खरो कुप्पं' (बृह १, पडि)।

कुप्पढ पुं [दे] १ गृहाचार, घर का रिवाज। २ समुदाचार, सदाचार (दे २, ३६)।

कुप्पर न [दे] सुरत के समय किया जाता हृदय ताडन-विशेष। २ समुदाचार, सदाचार। ३ नर्म, हाँसी, ठट्ठा (दे २, ६४)।

कुप्पर पु [कूर्पर] १ कफोणि, हाथ का मध्य भाग। २ जानु, घुटना। ३ रथ का अवयव-विशेष (ज ३)।

कुप्पर पु [कर्पर] देखो कप्पर। भीत की परत, भीत का जीर्ण-शीर्ण थर, 'एयाओ पाडलावडुकुप्परा जुरणभित्तिओ' (गउड)।

कुप्पल देखो कुपल (पि २७७)।

कुप्पास पु [कूर्पास] कञ्चुक, काँचली, जनानी कुरती (हे १, ७२, कप्पू, पाअ)।

कुप्पिय वि [कुपित] १ कुपित, क्रुद्ध। २ न क्रोध, गुस्सा, 'कुप्पिय नाम कुज्झिय' (आचू ४)।

कुप्पिस देखो कुप्पास (हे १, ७२, दे २, ४०)।

कुब्बर पुं [कूबर] भगवान् मल्लिनाथ का शासनाधिष्ठायक यक्ष (पव २६)।

कुबेर पु [कुबेर] भगवान् कुन्थुनाथ के प्रथम श्रावक का नाम (विचार ३७८)।

कुबेर पुं [कुबेर] १ कुबेर, यक्ष-राज, धनेश (पाअ, गउड)। २ भगवान् मल्लिनाथ का शासनाधिष्ठाता यक्ष विशेष (संति ८)। ३ काञ्चनपुर के एक राजा का नाम (पउम ७, ४५)। ४ इस नाम का एक श्रेष्ठी (उप ७२८ टी)। ५ एक जैन मुनि (कप्प)। °दिसा पु [°दिश्] उत्तर दिशा (सुर २, ८५)। °नयरी स्त्री [°नगरी] कुबेर की राजधानी, अलका (पाअ)।

कुबेरा स्त्री [कुबेरा] जैन साधु-गण की एक शाखा (कप्प)।

कुब्बड वि [दे] कुबडा, कुब्ज, वामन (श्रा २७)।

कुब्बर पु [कूबर] वैश्रमण के एक पुत्र का नाम (अंत ५)।

कुभंड पु [कुभाण्ड] देव-विशेष की जाति (ठा २, ३—पत्र ८५)।

कुभंडिद पु [कुभाण्डेन्द्र] इन्द्र-विशेष, कुभाण्ड देवों का स्वामी (ठा २, ३)।

कुमर देखो कुमार (हे १, ६७, सुपा २४३, ६५६, कुमा)।

कुमरी देखो कुमारी (कप्पू, पाअ)।

कुमार पु [कुमार] १ प्रथम-वय का बालक, पाँच वर्ष तक का लड़का (ठा १०, णाया १, २)। २ युवराज, राज्यार्ह पुरुष (पण्ह १, ५)। ३ भगवान् वासुपूज्य का शासनाधिष्ठाता यक्ष (संति ७)। ४ लोहकार, लोहार, 'चवेडमुट्ठिमाईहिं कुमारेहिं अय पिव' (उत्त २३)। ५ कार्त्तिकेय, स्कन्द (पाअ)। ६ शुक पक्षी। ७ घुड़सवार। ८ सिन्धु नद। ९ वृक्ष-विशेष, वरुण-वृक्ष (हे १, ६७)। १० अविवाहित ब्रह्मचारी (सम ५०)। °ग्गाम पु [°ग्राम] ग्राम-विशेष (आचा २, ३)। °णंदि पु [°नन्दिन्] इस नाम का एक सोनार (आवम)। °धम्म पु [°धर्म] एक जैन साधु (कप्प)। °वाल पु [°पाल] विक्रम की बारहवीं शताब्दी का गुजरात का एक सुप्रसिद्ध जैन राजा (दे १, ११३ टी)।

कुमार पु [दे] कुआर का महीना, आश्विन मास (ठा २, १)।

कुमारा स्त्री [कुमारा] इस नाम का एक सन्निवेश, 'तओ भगवं कुमाराए सन्निवेसे गओ' (आवम)।

कुमारिय पु [कुमारिक] कसाई, सौनिक (बृह १)।

कुमारिया स्त्री [कुमारिका] देखो कुमारी (पि ३५०)।

कुमारी स्त्री [कुमारी] १ प्रथम वय की लड़की २ अविवाहित कन्या (हे ३, ३२)। ३ वनस्पति-विशेष, घीकुआरी (पव ४)। ४ नवमल्लिका। ५ नदी-विशेष। ६ जम्बू-द्वीप का एक भाग। ७ वनस्पति-विशेष, अपराजिता। ८ सीता। ९ बड़ी इलाची। १० वन्ध्या ककड़ी की लता। ११ पक्षि-विशेष (हे ३, ३२)।

कुमारी स्त्री [दे कुमारी] गौरी, पार्वती (दे २, ३५)।

कुमुअ पु [कुमुद] १ इस नाम का एक वानर (से १, ३४)। २ महाविदेह-वर्ष का

कोणाली स्त्री [दे] गोष्ठी, गोठ (बृह १)।
कोणिअ } पु [कोणिक] राजा श्रेणिक का
कोणिग } पुत्र, नृप-विशेष (अत, णाया १, १, महा, उव)।
कोणु स्त्री [दे] लेखा, लकीर, रेखा (दे २,२६)।
कोणेट्ठिया स्त्री [दे] गुञ्जा, गु० 'चणोठी' (अनु० वृ० हारि० पत्र० ७६) देखो, चणोट्ठिया।
कोण्ण पु [दे कोण] गृह-कोण, घर का एक भाग, कोना (दे २, ४५)।
कोतव न [कौतव] मूषक के रोम मे निष्पन्न सूता (राज)।
कोतुहल देखो कुऊहल (काल)।
कोत्तलका स्त्री [दे] दारू परोसने का भाण्ड, पात्र-विशेष (२ १४)।
कोत्तिअ वि [कौतुकिक] कौतूकी कुतूहली (गा ६७२)।
कोत्तिअ पु [कोत्रिक] १ भूमि-शयन करनेवाला वानप्रस्थ (औप)। २ न एक प्रकार का मधु (ठा ६)।
कोत्थ देखो कोच्छ = कौक्ष।
कोत्थर न [दे] १ विज्ञान (दे २, १३)। २ कोटर, गह्वर (सुपा २८७, निचू १५)।
कोत्थल पु [दे] १ कुशूल, कोष्ठ (दे २, ४८)। २ कोथली, थैला (स १६२)। °कारा स्त्री [°कारी] भौंरी, कीट विशेष (बृह १)।
कोत्थुभ | पु [कौस्तुभ] वासुदेव के वक्ष
कोत्थुह | स्थल की मणि (तीं १०, प्राप्र,
कोथुभ | महा, गा १५१, पण्ह १, ४)।
कोदंड पु [कोदण्ड] धनुष, धनु, कार्मुक, चाप (अत १६)।
कोदंडिम } देखो कु-दंडिम (ज ३, कप्प)।
कोदंडिय }
कोदूसग देखो कोडूसग (भग ६, ७)।
कोद्दव देखो कुद्दव (भवि)।
कोद्दविया स्त्री [दे] मातृवाहा, क्षुद्र कीट-विशेष (सुख १८, ३५)।
कोद्दाल देखो कुद्दाल (पण्ह १, १—पत्र २३)।
कोद्दालिया स्त्री [कुद्दालिका] छोटा कुदार, कुदारी (विपा १, ३)।

कोध पु [क्रोध] इस नाम का एक राजा, जिसने दाशरथि भरत के साथ जैन दीक्षा ली थी (पउम ८५, ४)।
कोप्प देखो कुप्प = कुप्। कोप्पइ (नाट)।
कोप्प पु [दे] अपराध, गुनाह (दे २, ४७)।
कोप्प वि [कोप्य] द्वेष्य, अप्रीतिकर, 'अकोप्पजघजुगला' (पण्ह १, ३)।
कोप्पर पु [कूर्पर] १ हाथ का मध्य भाग (ओघ २६६ भा, कुमा, हे १, १२४)। २ नदी का किनारा, तट, तीर (ओघ ३०)।
कोबेरी स्त्री [कौबेरी] विद्या-विशेष (पउम ७, १४२)।
कोभग } पुं [क्षोभक] पक्षि-विशेष (अत,
कोभगक } औप)।
कोमल वि [कोमल] मृदु सुकुमार (जी १०, पाअ, कप्पू)।
कोमार वि [कौमार] १ कुमार से संबन्ध रखनेवाला, कुमार-सबन्धी (विपा १, ७१)। २ कुमारी सबन्धी (पाअ)। ३ कुमारी मे उत्पन्न (दे १, ८१)। स्त्री °रिया, °री (भग १५)। °भिच्च न [°भृत्य] वैद्यक शास्त्र-विशेष, जिसमे बालकों के स्तन पान-संबन्धी वर्णन है (विपा १, ७—पत्र ७५)।
कोमारी स्त्री [कौमारी] विद्या-विशेष (पउम ७, १३७)।
कोमुइया स्त्री [कौमुदिका] श्रीकृष्ण वासुदेव की एक भेरी, जो उत्सव की सूचना के समय बजाई जाती थी (विसे १४७६)।
कोमुई स्त्री [दे] पूर्णिमा, कोई भी पूर्णिमा (दे २, ४८)।
कोमुई स्त्री [कौमुदी] १ शरद् ऋतु की पूर्णिमा (दे २, ४८)। २ चन्द्रिका, चाँदनी (औप, धम्म ११ टी)। ३ इस नाम की एक नगरी (पउम ३६, १००)। ४ कार्त्तिक की पूर्णिमा (राय)। °नाह पु [°नाथ] चन्द्रमा, चाँद (धम्म ११ टी)। °महूसव पु [°महोत्सव] उत्सव-विशेष (पि ३६६)।
कोमुदिया देखो कोमुइया (णाया १, ५—पत्र १००)।
कोमुदी देखो कोमुई = कौमुदी (णाया १, १ २)।
कोयव वि [कौतव] चूहे के रोमो से बना हुआ (वस्त्र) (अणु ३४)।

कोयव वि [कौयव] 'कोयव' देश मे निष्पन्न (आचा २, ५, १, ५)। देखो कोयवग।
कोयवग } पु [दे] रूई से भरे हुए कपडे
कोयवय } का बना हुआ प्रावरण-विशेष, रजाई (णाया १, १७—पत्र २२६)।
कोयवी स्त्री [दे] रूई से भरा हुआ कपडा (बृह ३)।
कोरंग पु [कोरङ्क] पक्षि-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८)।
कोरंट } पुं [कोरण्ट, °क] १ वृक्ष-विशेष
कोरंटग } (पाअ)। २ न इस नाम का भृगुकच्छ (भडौच) शहर का एक उपवन (वव १)। ३ कोरण्टक वृक्ष का पुष्प (पण्ह १, ४, जं १)।
कोरअ (शौ) देखो कउरव (प्राकृ ८४)।
कोरय } पुंन [कोरक] फलोत्पादक मुकुल,
कोरव } फल की कली (पाअ), 'चत्तारि कोरवा पन्नत्ता' (ठा ४, १—पत्र १८५)।
कोरव देखो कउरव (सम्मत्त १७६)।
कोरविआ स्त्री [कौरव्या] देखो कोरव्वीया (अणु १३०)।
कोरव्व पुस्त्री [कौरव्य] १ कुरु-वंश में उत्पन्न (सम १५२, ठा ६)। २ कौरव्य-गोत्रीय। ३ पु आठवाँ चक्रवर्ती राजा ब्रह्मदत्त (जीव ३)।
कोरव्वीया स्त्री [कौरवीया] इस नाम की षड्ज ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७)।
कोरिंट | देखो कोरंट (णाया १ १—
कोरिंटय | पत्र १६, कप्प, पउम ४२, ८,
कोरेंट | औप, उवा)।
कोल पुं [दे] ग्रीवा, नोक, गला (दे २, ४५)।
कोल पुं [क्रोड] १ सूअर, वराह (पण्ह १, १—पत्र ७, स १११)। २ उत्सङ्ग, गोद, 'कोलीकय—' (गउड)।
कोल पु [कोल] १ देश-विशेष (पउम ६८, ६६)। २ घुण, काष्ठ कीट (सम ३६)। ३ शूकर, वराह, सूअर (उप ३२० टी, णाया १, १, कुमा, पाअ)। ४ मूषिक के आकार का एक जन्तु (पण्ह १, १—पत्र ७)। ५ अस्त्र-विशेष (धम्म ५)। ६ मनुष्य की एक नीच जाति (आचू ४)। ७ बदरी वृक्ष, बेर का गाछ। ८ न. बदरी-फल, बेर (दस ५, १, भग ६, १०)। °पाग न [°पाक] नगर-

कुरुय न [दे कुरुक] माया, कपट (मम ७१)।
कुरुया स्त्री [दे कुरुका] शरीर-प्रक्षालन, स्नान (वव १)।
कुरर देखो कुरर (कुमा)।
कुरुल पु [दे] १ कुटिल केश, टेढा बाल (दे २, ६३, भवि)। २ वि निर्दय। ३ निपुण, चतुर (दे २, ६३)।
कुरुल अक [कु] आवाज करना, कौए का बोलना। कुरुलहि (भवि)।
कुरुलिअ न [कुत] वायस का शब्द कौए की आवाज (भवि)।
कुरुव देखो कुरु (पउम ११८, ८३, भवि)।
कुरुवग देखो कुरवय (सुपा ७७)।
कुरुविंद पु [कुरुविन्द] १ मणि-विशेष, रत्न की एक जाति (गउड)। २ तृण विशेष (पएग १, पण्ह १, ४—पत्र ७८)। ३ कुर्विलिक-नामक रोग, एक प्रकार का जवा रोग, 'एणीकुरुविंदचत्तवट्टाणुपुव्वजंघे' (औप)। °वत्त पुन [°वर्त्त] भूषण-विशेष (कप्प)।
कुरुविंदा स्त्री [कुरुविन्दा] इस नाम की एक वणिग्भार्या (पउम ५५, ३८)।
कुरुविह्न [दे] देखो कुरुचिह्न (पाअ)।
कुल पुन [कुल] १ कुल, वंश जाति (प्रासू १७)। २ पैतृक वंश (उत्त ३)। ३ परिवार, कुटुम्ब (उप ६, ७७)। ४ सजातीय समूह (पण्ह १,३)। ५ गोत्र (सुपा ८, ठा ४,१)। ६ एक आचार्य की संतति (कप्प)। ७ घर, गृह (कप्प, सूअ १, ४, १)। ८ सान्निध्य, सामीप्य (आचा)। ९ ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध नक्षत्र-संज्ञा (सुज्ज १०, इक), 'कुलो, कुल' (हे १, ३३)। °उव्व पु [पूर्व] पूर्वज, पूर्व-पुरुष (गउड)। °क्कम पु [°क्रम] कुलाचार, वंश-परम्परा का रिवाज (सट्ठि ७४)। °कर देखो नीचे °गर (ठा १०)। °कोडि स्त्री [°कोटि] जाति विशेष (पव १५१, ठा ९ १०)। °क्कम देखो कम (सट्ठि ६)। °गर पु [°कर] कुल की स्थापना करनेवाला, युग के प्रारम्भ में नीति वगैरह की व्यवस्था करनेवाला महापुरुष (सम १२६, पउम ५)। °गेह न [°गेह] पितृ गृह (सण)। °घर न [°गृह] पितृ-गृह (औप)। °ज वि [°ज] कुलीन, खानदानी कुल में उत्पन्न (द्र ५)। °जाय वि [°जात] कुलीन, खानदानी कुल का (सुपा ५९८, पाअ)। °जुअ वि [°युत] कुलीन (पव ६४)। °णाम न [°नामन्] कुल के अनुसार किया जाता नाम (अणु)। °तंतु पु [°तन्तु] कुल-संतान, कुल-संतति (वव ६)। °तिलग पुन [°तिलक] कुल में श्रेष्ठ (भग ११, ११)। °त्थ वि [°स्थ] कुलीन, खानदानी वंश का (णाया १, ५)। °त्थेर पु [°स्थविर] श्रेष्ठ साधु (पत्र)। °दिणयर पु [°दिनकर] कुल में श्रेष्ठ (कप्प)। °दीव पु [°दीप] कुल प्रकाशक, कुल में श्रेष्ठ (कप्प)। °देव पु [°देव] गोत्र-देवता (काल)। °देवया स्त्री [°देवता] गोत्र-देवता (सुपा ५९७)। °देवी स्त्री [°देवी] गोत्र देवी (सुपा ६०२)। °धम्म पु [°धर्म] कुलाचार (ठा १०)। °पव्वय पु [°पर्वत] पर्वत-विशेष (सम ६६, सुपा ४३)। °पुत्त पु [°पुत्र] वंश रक्षक पुत्र (उत्त १)। °बालिया स्त्री [°बालिका] कुलीन कन्या (सुर १, ४३, हेका ३०१)। °भूसण न [°भूषण] १ वंश को दिपाने या चमकाने वाला। २ पु एक केवली भगवान् (पउम ३९,१२२)। °मय पु [°मद] कुल का अभिमान (ठा १०)। °मयहरिया, °महत्तरिया स्त्री [°महत्तरिका] कुल में प्रधान स्त्री, कुटुम्ब की मुखिया (सुपा ७६, आवम)। °य देखो °ज (सुपा ५९८)। °रोग पु [°रोग] कुल व्यापक रोग (ज २)। °वइ पु [°पति] तापसों का मुखिया, प्रधान सन्यासी (सुपा १६०, उप ३१)। °वंस पु [°वंश] कुल रूप वंश, वंश (भग ११, १०)। °वस पुं [°वश्य] कुल में उत्पन्न, वंश में सजात (भग ६, ३३)। °वडिंसय पु [°वतंसक] कुल-भूषण, कुल-दीपक (कप्प)। °वहू स्त्री [°वधू] कुलीन स्त्री, कुलाङ्गना (आव ५, पि ३८७)। °संपण्ण वि [°संपन्न] कुलीन, खानदानी कुल का (औप)। °समय पु [°समय] कुलाचार (सूअ १, १, १)। °सेल पु [°शैल] कुल-पर्वत (सुपा ६००, स ११९)। °सेलया स्त्री [°शैलजा] कुल पर्वत से निकली हुई नदी, 'कुलसेलयाविसरिया तुरए नीययम्मगामरइ' (सुपा ६००)। °हर न [°गृह] पितृगृह, पिता का घर (गा १२१, सुपा ३६४, से ९, ५३)। °जीव वि [°जीव] अपने कुल की बड़ाई बतला कर आजीविका प्राप्त करनेवाला (ठा ५,१)। °ालय न [°ालय] पक्षी का घर, नीड (पाअ)। °ायार पु [°ाचार] कुलाचार वंश-परम्परा से चला आता रिवाज (वव १)। °ारिय पु [°ार्य] पितृ-पक्ष की अपेक्षा से आर्य (ठा ३, १)। °ालय वि [°ालय] गृहस्थों के घर भीख मांगनेवाला (सूअ २, ६)।
कुलंकर पु [कुलङ्कर] इस नाम का एक राजा (पउम ८२, २९)।
कुलंप पु [कुलम्प] इस नाम का एक अनार्य देश। २ उसमें रहनेवाली जाति (सूअ २,२)।
कुलकुल देखो कुरकुर। कुलकुलइ (भवि)।
कुलक्ख पु [कुलक्ष] १ एक म्लेच्छ देश। २ उसमें रहनेवाली जाति (पण्ह १, १, इक)।
कुलग्घ पु [कुलार्घ] एक अनार्य देश (पव २७४)।
कुलडा स्त्री [कुलटा] व्यभिचारिणी स्त्री, पुंश्चली (सुपा ३८४)।
कुलत्थ पुंस्त्री [कुलत्थ] अन्न-विशेष, कुलथी (ठा ५, ३, णाया १,५)। स्त्री °त्था (श्रा १८)।
कुलफंसण पु [दे] कुल-कलंक, कुल का दाग, कुल की अपकीर्ति (दे २, ४२, भवि)।
कुलय देखो कुडव (तंदु २९, अणु १५१)।
कुलय न [कुलक] तीन या चार से ज्यादा परस्पर सापेक्ष पद्य (समत्त ७६)।
कुलल पु [कुलल] १ पक्षि-विशेष (पण्ह १, १)। २ गृद्ध पक्षी (उत्त १४)। ३ कुरर पक्षी (सूअ १, ११)। ४ मार्जार, बिडाल, 'जहा कुक्कुडपोयस्स णिच्चं कुललओ भयं' (दस ४)।
कुलल्लय पुन [दे] कुल्ला, गंडूष (पव ३८)।
कुलव देखो कुडव (जो २)।
कुलसंतइ स्त्री [दे] चुल्ली चूल्हा (दे २, ३९)।
कुलाअल पु [कुलाचल] कुलपर्वत (त्रि ८२)।
कुलाण देखो कुणाल (राज)।
कुलाल पु [कुलाल] कुम्भकार, कुम्हार (पाअ, गउड)।

कोस पुं [कोश, °ष] १ खजाना, भण्डार (णाया १, १३१; पउम ५, २४)। २ तलवार की म्यान (सूत्र १, ६)। ३ कुड्मल, 'कमलकोसव्व' (कुमा)। ४ मुकुल, कली (गउड)। ५ गोल, वृत्ताकार, 'ता मुह-मेलियकरकोसपिहियपसरंतद्वंतरपसरं' (सुपा २७; गउड)। ६ दिव्य-भेद, तप्त लोहे का स्पर्श वगैरह शपथ 'एत्थ अम्हे कोसविसएहिं पच्चाएमो' (स ३२४)। ७ अभिधान शास्त्र शब्दार्थ-निरूपक ग्रन्थ जैसा प्रस्तुत पुस्तक। ८ पुन पानपात्र चषक (पात्र)। ८ न नगर विशेष, 'कोस नाम नयरं' (स १३३)। °पाण न [°पान] सौगंध, शपथ (गा ४८८)। °हिव पु [°धिप] खजानची, भंडारी (सुपा ७३)।

कोसंब पु [कोशाम्र] फल-वृक्ष-विशेष (पण्ण १—पत्र ३१)। °गंडिया स्त्री [°गण्डिका] खड्ग-विशेष, एक प्रकार की तलवार (राज)।

कोसंबिया स्त्री [कौशाम्बिका] जैनमुनि-गण की एक शाखा (कप्प)।

कोसंबी स्त्री [कौशाम्बी] वत्स देश की मुख्य-नगरी (ठा १०; विपा १,५)।

कोसग पु [कोशक] साधुओं का एक चर्म-मय उपकरण, चमडे की एक प्रकार की थैली (धर्म ३)।

कोसट्टइरिआ स्त्री [दे] चण्डी, पार्वती, गौरी, शिव-पत्नी (दे २, ३५)।

कोसय न [दे कोशक] लघु शराव, छोटा पान पात्र (दे २, ४७; पात्र)।

कोसल न [कोशल] कुशलता, निपुणता, चातुरी (कुमा)।

कोसल न [दे] नीवी, नारा, इजारबन्द (दे २, ३८)।

कोसल } पु [कोसल °क] १ देश-विशेष
कोसलग } (कुमा; महा)। २ एक जैन महर्षि, सुकोसल मुनि (पउम २२, ४८)। ३ कोसल देश का राजा। ४ वि कोशल देश मे उत्पन्न (ठा ५, २)। ५ °पुर न [°पुर] अयोध्या नगरी (आक १)।

कोसला स्त्री [कोसला] १ नगरी-विशेष, अयोध्या-नगरी (पउम २०, २८)। २ अयोध्या प्रान्त, कोसल देश (भग ७, ६)।

कोसलिअ वि [कोशलिक] १ कोसल देश मे उत्पन्न, कोसल देश-सम्बन्धी (भग २०, ८)। २ अयोध्या मे उत्पन्न, अयोध्या संबन्धी (ज २)।

कोसलिअ न [दे कौशलिक] प्राभृत, भेंट, उपहार (दे २ १२, मण; सुपा—प्रस्तावना ५)।

कोसलिआ स्त्री [दे कौशलिका] ऊपर देखो (दे २, १२; सुपा—प्रस्तावना ५)।

कोसल्ल न [कौशल्य] निपुणता, चतुराई (कुमा; सुपा १६; सुर १०, ८०)।

कोसल्ल न [दे] प्राभृत, भेंट, उपहार; 'त पुरजणकोसल्लं नरवइणा अप्पियं कुमारस्स' (महा)।

कोसल्ला स्त्री [कौशल्य] निपुणता, चतुराई, 'तह मज्झनीइकोसल्लया य खीणच्चिय इयाणिं' (सुपा ६०३)।

कोसल्ला स्त्री [कौशल्या] दाशरथि राम की माता (उत्त पृ ३७४)।

कोसल्लिअ न [दे कोशलिक] भेंट, उपहार (दे २, १२; महा; सुपा ४१३, ५२७; सण)।

कोसा स्त्री [कोशा] इस नाम की एक प्रसिद्ध वेश्या, जिसके यहा जैन महर्षि श्रीस्थूलभद्र मुनि ने निर्विकार भाव से चातुर्मास (चौमासा) किया था (विवे ३३)।

कोसिण वि [कोष्ण] थोडा गरम (नाट—वेणी)।

कोसिय न [कौशिक] १ मनुष्य का गोत्र विशेष (अभि ४१; ठा ३६०)। २ बीसवें नक्षत्र का गोत्र (चंद १०)। ३ पुं उलूक, घूक, उल्लू (पात्र; सार्ध ५६)। ४ साप विशेष, चण्डकोशिक-नामक दृष्टि-विष सर्प, जिसको भगवान् श्रीमहावीर ने प्रबोधित किया था (आवम)। ५ वृक्ष-विशेष। ६ इन्द्र। ७ नकुल। ८ कोशाध्यक्ष, खजानची ६ प्रीति, अनुराग। १० इस नाम का एक राजा। ११ इस नाम का एक असुर। १२ सर्प को पकडनेवाला, सपेरा, गारुडिक। १३ अस्थिसार, मज्जा। १४ शृंगाररस (हे १, १५६)। १५ इस नाम का एक तापस (भवि)। १६ पुस्त्री कौशिक गोत्र मे उत्पन्न, कौशिक-गोत्रीय (ठा ७—पत्र ३६०)। १७ स्त्री कौशिकी (मा १६)।

कोसिया स्त्री [कौशिका] १ भारतवर्ष की एक नदी (कस)। २ इस नाम की एक विद्या-धर-राज-कन्या (पउम ७, ५४)। ३ चमडे का जूता, 'कोसियसमारूभूमियसिरोरुहो विगय-वसणो य' (स २०३)। देखो कोसी।

कोसियार पुं [कोशिकार] १ कीट-विशेष, रेशम का कीडा (पण्ह १, ३)। २ न रेशमी वस्त्र (ठा ५, ३)।

कोसी स्त्री [कोशी] १ सिम्बी, छीमी, फली (पात्र)। २ तलवार की म्यान (सूत्र २, १, १६)।

कोसी स्त्री [कोशी] देखो कोसिया (ठा ५, ३—पत्र ३५१)। २ गोलाकार एक वस्तु, 'कंचणकोसीपविट्ठदंताणं' (औप)।

कोसुंभ वि [कौसुम्भ] कुसुंभ-सम्बन्धी (रंग) (सिरि १०५७)।

कोसुम वि [कौसुम] फूल सम्बन्धी, फूल का बना हुआ, 'कोसुमा बाणा' (गउड)।

कोसुम्ह देखो कुसुंभ (सक्षि ४)।

कोसेअ } न [कौशेय] १ रेशमी वस्त्र,
कोसेज्ज } रेशमी कपडा (दे २, ३३; सम १५३ पण्ह १, ४)। २ तसर का बना हुआ वस्त्र (जीव ३)।

कोह पुं [क्रोध] गुस्सा, कोप (श्रोघ २ भा; ठा ४, १)। °मुंड वि [°मुण्ड] क्रोध-रहित (ठा ५, ३)।

कोह पुं [कोथ] सडना, शीर्णता (भग ३, ६)।

कोह पु [दे कोथ] कोथली, थैला (विसे २६८८)।

कोह वि [क्रोधवत्] क्रोध-युक्त, कोप-सहित 'कोहाए माणाए मायाए लोभाए आसाय-णाए' (पडि)।

कोहंगक पु [कोभङ्गक] पक्षि-विशेष (औप)।

कोहज्झाण न [क्रोधध्यान] क्रोध-युक्त चिन्तन (आउ ११)।

कोहंड न [कूष्माण्ड] १ कुष्माण्डी-फल, कोहँडा (पि ७६, ८६, १२७)। २ न.

कुसीलव पु [कुशीलव] अभिनयकर्ता नट (कप्पू)।

कुसुभ पुन [कुसुम्भ] १ वृक्ष-विशेष, कसुम, बर्रे (ठा ८—पत्र ४०५)। २ न. कुसुम का पुष्प, जिसका रंग बनता है (जं २)। ३ रंग-विशेष (श्रा १२)।

कुसुभिअ वि [कुसुम्भित] कुसुम्भ रंगवाला (श्रा १२)।

कुसुभिल पु [दे] पिशुन, दुर्जन, चुगलखोर (दे २, ४०)।

कुसुभी स्त्री [कुसुम्भी] वृक्ष-विशेष, कुसुम का पेड (पाअ)।

कसुम अक [कुसुमय्] फूल आना। कुसुमति (सबोध ४७)।

कुसुम न [कुसुम] १ पुष्प, फूल (पाअ, प्रासू ३४)। २ पु इस नाम का भगवान् पद्मप्रभ का शासनाधिष्ठायक यक्ष (संति ७)। °केउ पुं [°केतु] अरुणवर द्वीप का अधिष्ठायक देव (दीव)। °चाय, °चाव पु [°चाप] कामदेव, मकरध्वज (सुपा ५६, ५३०, महा)। °ज्झय पु [°ध्वज] वसन्त ऋतु (कुमा)। °णयर न [°नगर] नगर-विशेष, पाटलिपुत्र, आजकल जो 'पटना' नाम से प्रसिद्ध है (आवम)। °दंत पुं [°दन्त] एक तीर्थङ्कर देव का नाम, इस अवसर्पिणी काल के नववें जिनदेव, श्री सुविधिनाथ (पउम १, ३)। °दाम न [°दामन्] फूलों की माला (उवा)। °धणु न [धनुष्] कामदेव (कुमा)। °पुर न [°पुर] देखो ऊपर °णयर (उप ४८६)। °बाण पु [°बाण] कामदेव (सुर ३, १६२, पाअ)। °रअ पु [°रजस्] मकरन्द (पाअ)। °रद पु [°रद] देखो दंत (पउम २०, ५)। °लया स्त्री [°लता] छन्द-विशेष (अजि १५)। °संभव पु [°संभव] मधुमास, चैतमास (अणु)। °सर पु [°शर] कामदेव (सुर ३, १०६)। °ाअर पुं [°ाकर] इस नाम का एक छन्द (पिंग)। °ाउह पु [°ायुध] काम, कामदेव (स ५३८)। °ावई स्त्री [°ावती] इस नाम की एक नगरी (पउम ५, २६)। °ासव पुं [°ासव] किंजल्क, पराग, पुष्प-रेणु (णाया १, १, औप)।

कुसुमसंभव पुं [कुसुमसम्भव] वैशाख मास का लोकोत्तर नाम (सुज्ज १०, १६)।

कुसमाल वि [कुसमवत्] फूलवाला (स ६६७)।

कुसुमाल पु [दे] चोर, स्तेन (दे २, १०)।

कुसुमालिअ वि [दे] शून्य-मनस्क, भ्रान्त-चित्त (दे २, ४२)।

कुसुमिअ वि [कुसुमित] पुष्पित, पुष्प-युक्त, खिला हुआ (णाया १, १, पउम ३३, १४८)।

कुसुमिल्ल वि [कुसुमवत्] ऊपर देखो (सुपा २२३)।

कुसुर [दे] देखो मसुर (हे २, १७४ टि)।

कुसूल पु [कुशूल] कोष्ठ, अन्न रखने के लिए मिट्टी का बना एक प्रकार का बडा पात्र (पाअ)।

कुस्सुमिग पु [कुस्वप्न] दुष्ट स्वप्न (सबोध ४२)।

कुह अक [कुथ्] सड जाना, दुर्गन्धी होना। कुहइ (भवि, हे ४, ३६५)।

कुह पुं [कुह] वृक्ष पेड, गाछ, 'कुहा महीरुहा वच्छा' (दसनि १)।

कुह देखो कह (गा ५०७ अ)।

कुहंड पुं [कूष्माण्ड] व्यन्तर देवों की एक जाति (औप)।

कुहंड न [कूष्माण्ड] १ कुम्हडा, पेठा, कोहँडा (कम्म ५, ८५)।

कुहंडिया स्त्री [कूष्माण्डी] कोहँडा का गाछ (राय)।

कुहक्क, कुहग } देखो कुहय (धर्मवि १३५, कुप्र ८)।

कुहग पु [कुहक] कन्द-विशेष, 'लाहिणीहू य थीहू य, कुहगा य तहेव य' (उत्त ३६, ६६ का)।

कुहड वि [दे] कुब्ज, कूबडा (दे २, ३६)।

कुहण पु [कुहन] १ वृक्षों का एक प्रकार, वृक्षों की एक जाति, 'से किं तं कुहणा? कुहणा अणेगविहा पएणत्ता' (पएण १—पत्र ३५)। २ वनस्पति-विशेष। ३ भूमि-स्फोट (पएण १—पत्र ३०, आचा)। ४ देश-विशेष। ५ इसमें रहनेवाली जाति (पएह १, १—पत्र १४, इक)।

कुहण वि [क्रोधन] क्रोधी, क्रोध करनेवाला (पएह १, ४—पत्र १००)।

कुहणी स्त्री [दे] कूर्पर, हाथ का मध्य-भाग (सुपा ४१२)।

कुहय पुन [कुहक] १ वायु-विशेष दौडते हुए अश्व के उदर-प्रदेश के समीप उत्पन्न होता एक प्रकार का वायु, 'घणगज्जिय-हयकुहए (गच्छ २)। २ इन्द्रजालादि कौतुक, 'अलोलुए अक्कुहए अमाई (दस ६, ३)।

कुहर न [कुहर] १ पर्वत का अन्तराल (णाया १, ९—पत्र ६३), 'गेहं व वित्तरहिअं णिज्जरकुहरं व सलिलसुएणविअं' (गा ६०७)। २ छिद्र, बिल, विवर (पएह १, ४, पासू २)। ३ पु व. देश-विशेष (पउम ६८, ६७)।

कुहाड पु [कुठार] कुल्हाड, फरसा (विपा १, ६, पउम ६६, २४, स २,४)।

कुहाडी स्त्री [कुठारी] कुल्हाडी, कुठार (उप ९६३)।

कुहावणा स्त्री [कुहना] १ आश्चर्य-जनक, दम्भ-क्रिया, दम्भ-चर्या। २ लोगों से द्रव्य हासिल करने के लिए किया हुआ कपट-भेष (जीत)।

कुहिअ वि [दे] लिप्त, पोता हुआ (दे २, ३५)।

कुहिअ वि [कुथित] १ थोडी दुर्गन्धवाला (णाया १, १२—पत्र १७३)। २ सडा हुआ (उप ५६७ टी)। ३ विनष्ट (णाया १, १)। °पूइय वि [पूतिक] अत्यन्त सडा हुआ (पएह ?, ५)।

कुहिणी स्त्री [दे] १ कूर्पर, हाथ का मध्य भाग। २ रथ्या, महल्ला (दे २, ६२)।

कुहिल पुंस्त्री [कुहुमत्] कोयल पक्षी (पिंग)।

कुहु स्त्री [कुहु] कोकिल पक्षी की आवाज (पिंग)।

कुहुण देखो कुहण = कुहन (उत्त ३६, ६६ का)।

कुहुव्वय पु [कुहुव्रत] कन्द-विशेष (उत्त ३६, ६८)।

कुहेड पुं [दे] ओषधी-विशेष, गुरेटक, एक प्रकार का हर्रे का गाछ (दे २, ३५)।

कुहेड, कुहेडअ } पुं [कुहेट, °क] १ चमत्कार उपजानेवाला मन्त्र तन्त्रादि ज्ञान,

खउड पु [खपुट] स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैनाचार्य (श्रावम, श्राचू)।

खउर अक [क्षुभ्] १ क्षुब्ध होना, डर से विह्वल होना। २ सक कलुषित करना। खउरइ (हे ४, १५४; कुमा), 'खउरेति घिइग्गहणं' (से ५, ३)।

खउर वि [दे] कलुषित, 'दरदट्ठविवएणविद्दुमरश्रक्खउरा' (से ५, ४७, स ५७८)।

खउर न [क्षौर] क्षोर-कर्म, हजामत (हेका १८६)।

खउर पुन [खपुर] खैर वगैरह का चिकना रस गोंद (बृह ३, निचू १६)। °कढिणय न [°कठिनक] तापसो का एक प्रकार का पात्र (विसे १४६५)।

खउरिअ वि [क्षुब्ध] कलुषित (पाअ, बृह ३)।

खउरिअ वि [क्षौरित] मुण्डित, लुञ्चित, केश-रहित किया हुआ (से १०, ४३)।

खउरिअ वि [खपुरित] खरण्टित, चिपकाया हुआ (निचू ५)।

खउरीकय वि [खपुरीकृत] गोंद वगैरह की तरह चिकना किया हुआ,

'कलुसीकओ य किट्टीकओ य
खउरीकओ य मलिणिओ।
कम्मेहिं एस जीवो, नाऊणवि
मुज्झई जेण' (उव)।

खओवसम पुं [क्षयोपशम] कुछ भाग का विनाश और कुछ का दवना (भग)।

खओवसमिय वि [क्षयोपशमिक] १ क्षयोपशम से उत्पन्न, क्षयोपशम-संबन्धी (सम १४५, ठा २, १, भग)। २ पुन क्षयोपशम (भग, विसे २१७५)।

खखर पु [दे] पलाश-वृक्ष (ती ५३)।

खगार पु [खङ्गार] राजा खेंगार, विक्रम की बारहवीं शताब्दी का सौराष्ट्र देश का एक भूपति, जिसको गुजरात के राजा सिद्धराज ने मारा था (ती ५)। °गढ पु [°गढ] नगर विशेष, सोराष्ट्र का एक नगर, जो आजकल 'जूनागढ' के नाम से प्रसिद्ध है (ती २)।

खच सक [कृष्] १ खींचना। २ वश में करना। खचइ (भवि), 'ता गच्छ तुरियं तुरयं मा खच मुच मुक्कलयं' (सुपा १६८)।

खचिय वि [कृष्ट] १ खींचा हुआ (स ५७४)। २ वश में किया हुआ (भवि)।

खंज अक [खञ्ज्] लगडा होना (कप्पू)।

खंज वि [खञ्ज] लगड़ा, पङ्गु, लूला (सुपा २७६)।

खंज न [खञ्ज] गाडी में लोहे के डंडे के पास बाधा जाता मण आदि का गोल कपड़ा—जो तेल आदि से भीजाया हुआ रहता है, विटआ, 'खजंजणनयणनिभा' (उत्त ३४,४)।

खंजण पु [खञ्जन] राहु का कृष्ण पुद्गल-विशेष (सुज्ज २०)।

खंजण पु [खञ्जन] १ पक्षि विशेष, खञ्जरीट (दे २,७०)। २ वृक्ष-विशेष, 'ताटवडखंजखजणमुखयरगहीरदुक्खसचारे' (स २५६)।

खंजण पुं [दे] १ कर्दम, कीचड (दे २,६६, पाअ)। २ कज्जल, काजल, मषी (ठा ४,२)। ३ गाडी के पहिए के भीतर का काला कीच (पण्ण १७—पत्र ५२५)।

खंजर पु [दे] सूखा हुआ पेड (दे २, ६८)।

खंजा स्त्री [खञ्जा] छन्द-विशेष (पिंग)।

खंजिअ वि [खञ्जित] जो लगडा हुआ हो, पगूभूत (कप्पू)।

खंड सक [खण्डय्] तोडना, टुकडा करना, विच्छेद करना। खडइ (हे ४, ३६७)। कवकृ खडिज्जत (से १३, ३२, सुपा १३४)। हेकृ खडित्तए (उवा)। कृ खडियव्व (उप ६२८ टी)।

खंड पु [खण्ड] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २६)। °कव्व न [°काव्य] छोटा काव्यग्रन्थ (सम्मत्त ८४)।

खड (अप) देखो खग्ग, 'मुंडीरह खडइ वसइ लच्छी' (भवि)।

खड पुन [खण्ड] १ टुकडा अश, हिस्सा (हे २, ६७, कुमा)। २ चीनी मिस्री (उर ६, ८)। ३ पृथ्वी का एक हिस्सा, 'छक्खड—' (सण)। °घडग पुं [°घटक] भिक्षुक का जल-पात्र (णाया १, १६)। °प्पवाया स्त्री [°प्रपाता] वैताढ्य पर्वत की एक गुफा (ठा २, ३)। °भेय पु [°भेद] विच्छेद-विशेष, पदार्थ का एक तरह का पृथक्करण, पटके हुए घडे की तरह पृथग्भाव (भग ५, ४)। °मल्लय पुन [°मल्लक] भिक्षा-पात्र (णाया १, १६)। °सो अ [°शस्] टुकडा-टुकडा, खण्ड-खण्ड (पि ५१६)। °भिय देखो °भेय (ठा १०)।

खंड न [दे] १ मुण्ड, शिर, मस्तक। २ दारू का बरतन, मद्य-पात्र (दे २, ६८)।

खडई स्त्री [दे] असती, कुलटा (दे २, ६७)।

खडग पुन [खण्डक] चौथा हिस्सा (पव १४३)।

खडग न [खण्डक] शिखर-विशेष (ठा ६, इक)।

खंडण न [खण्डन] १ विच्छेद, भञ्जन, नाश (णाया १, ८)। २ कण्डन, धान्य वगैरह का छिलका अलग करना, 'खडणदलणाइ गिहकम्मे' (सुपा १४)। ३ वि. नाश करनेवाला, नाशक (सुपा ४३२)।

खडणा स्त्री [खण्डना] विच्छेद, विनाश (कप्पू, निचू १)।

खडपट्ट पु [खण्डपट्ट] १ द्यूतकार, जूआरी (विपा १, ३)। २ धूर्त, ठग। ३ अन्याय से व्यवहार करनेवाला (विपा १,३)।

खडरक्ख पुं [खण्डरक्ष] १ दाण्डपाशिक, कोतवाल (णाया १, १, पण्ह १, ३ ओप)। २ शुल्कपाल, चुंगी वसूल करनेवाला (णाया १, १, विसे २३६०, ओप)।

खडव न [खाण्डव] इन्द्र का वन-विशेष, जिसको अर्जुन ने जलाया था (नाट—वेणी ११४)।

खडा स्त्री [खण्ड] मिस्री, चीनी, शक्कर, खांड (ओघ ३७३)।

खडा स्त्री [खण्डा] इस नाम की एक विद्याधर-कन्या (महा)।

खडाखडि अ [खण्डशस्] टुकड़ा-टुकडा, खण्डखण्ड (उवा, णाया १,६)। °डीकय वि [कृत] टुकडा-टुकडा किया हुआ (सुर १६, ५६)।

खडामणिकचण न [खण्डामणिकाञ्चन] इस नाम का एक विद्याधर-नगर (इक)।

खडावत्त न [खण्डावर्त्त] इस नाम का एक विद्याधरनगर (इक)।

मानाणं मम कूवं नो हव्वमागच्छइ, तए णं अहं देवा० जं तुमं वदसि तस्स आणाओवायवयणणिद्देसे चिट्ठिस्सामि' (णाया १, १६—पत्र २१५), 'दोवईए कूवग्गाहा' (उप ६४८ टी, ३ ६, ६२)।

कूव, कूवग, कूवय पुं [कूप, °क] १ कूप, कुँआ, गर्त्त (प्रासू ४५)। २ स्नेह-पात्र, कुतुप, कुप्पा (वज्जा ७२, उप पृ ४१२)। ३ जहाजका मध्य स्तम्भ, जहाँपर पाल बंधा जाता है (औप, णाया १,८)। °तुला स्त्री [°तुला] कूपतुला, ढेंकुवा (दे १, ६३, ८७)। °मंडुक्क पुं [°मण्डूक] १ कूप का मेढक। २ अल्पज्ञ मनुष्य, जो अपना घर छोड बाहर न जाता हो (निचू १)।

कूवय पु [कूपक] देखो कूव = कूप (रयण ३२)। स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन मुनि (अंत ३)।

कूवर पुन [कूवर] १ जहाज का एक अवयव, जहाज का मुख-भाग, 'मंचुरिणायकट्ठकूवरा' (णाया १, ६—पत्र १५७)। २ रथ या गाडी वगैरह का एक अवयव, युगन्धर (से १२, ८४)।

कूवल न [दे] जवन-वस्त्र (दे २, ४३)।

कूविय न [कूजित] अव्यक्त शब्द, 'तह कहवि कुणइ सो सुरयकूविय तप्पुरो जेण' (सुपा ५२८)।

कूविय पुं [कूपिक] इस नाम का एक सन्निवेश—गाव (आवम)।

कूविय वि [दे] मोष-व्यावर्त्तक, चुराई हुई चीज की खोज कर उसे लानेवाला (णाया १, १८—पत्र २३६)। २ चोर की खोज करनेवाला (णाया १, १)।

कूविया स्त्री [कूपिका] १ छोटा कूप (उप ७२८टी)। २ छोटा स्नेह-पात्र, कुप्पी (राज)।

कूवी स्त्री [कूपी] ऊपर देखो, 'एयाओ अमयकूवीओ' (उप ७२८ टी)।

कूसार पु [दे] गर्त्ताकार, गर्त्त जैसा स्थान, खड्डा, 'कूसारखलतपओ' (दे २, ४४, पाअ)।

कूहंड पु [कूष्माण्ड] व्यन्तर देवो की एक जाति (पण्ह १, ४)।

के सक [क्री] कीनना, खरीदना। केइ, केअइ (पड्)।

के° वि [कियत्] कितना? °चिरेण अ [°चिरेण] कितने समय मे? (अंत २४)। °च्चिर अ [°च्चिर] कितने समय तक? (पि १४९)। °च्चिरेण देखो °चिरेण (पि १४९)। °दूर न [°दूर] कितना दूर? 'केदूरे सा पुरी लंका?' (पउम ४८, ४७)। °महालय वि [°महालय] कितना वडा? (णाया १, ८)। °महालिय वि [°महत्] कितना वडा? (पण्ण २१)। °महिड्ढिय वि [°महर्द्धिक] कितनी वडी ऋद्धिवाला (पि १४९)।

केअइ पु [केकय] देश-विशेष, जिसका आधा भाग आर्य और आधा भाग अनार्य है, सिन्धु देश की सीमा पर का देश (इक), 'केयइअद्धं च आरियं भणियं' (पण्ण १, सत्त ६७ टी)।

केअई स्त्री [केतकी] वृक्ष-विशेष, केवडा का वृक्ष (कुमा, दे ८, २५)।

केअग, केअय पु [केतक] १ वृक्ष-विशेष, केवडा का गाछ, केतकी (गउड)। २ न केतकी-पुष्प, केवडा का फूल (गउड)। ३ चिन्ह, निशान (ठा १०)।

केअगी स्त्री [केतकी] १ केवडा का गाछ या पौधा। २ केवडा का फूल (राय ३४)।

केअल देखो केवल (अभि २६)।

केअव देखो कइअव = कैतव, 'जं केअवेण पिम्मं' (गा ७४४)।

केआ स्त्री [दे] रज्जु, रस्सी (दे २, ४४, भग १३, ६)।

केआर पु [केदार] १ क्षेत्र, खेत (सुर २, ७८)। २ आलवाल, क्यारी (पाअ, गा ६६०)।

केआरवाण पुं [दे] वृक्ष-विशेष, पलाश का पेड (दे २, ४५)।

केआरिआ स्त्री [केदारिका] घासवाली जमीन, गोचर भूमि (कप्पू)।

केउ पु [केतु] १ ध्वज, पताका (सुपा २२६)। २ ग्रह-विशेष (सुज्ज २०, गउड)। ३ चिन्ह, निशान (औप)। ४ तूल-सूत्र, रूई का सूता (गउड)। °खेत्त न [°क्षेत्र] मेघ-वृष्टि से ही जिसमे अन्न पैदा हो सकता हो ऐसा क्षेत्र-विशेष (आव ६)। °मई स्त्री [°मती] किन्नरेन्द्र और किंपुरुषेन्द्र की अग्र-महिषी का नाम, इन्द्राणी-विशेष (भग १०, ५, णाया २)। °माल न [°माल] वेताढ्य पर्वत पर स्थित इस नाम का एक विद्याधर-नगर (इक)।

केउ पु [दे] कन्द, कांदा (दे २,४४)।

केउ पुन [केतु] एक देवविमान (देवेन्द्र १३४)।

केउग, केउय पुं [केतुक] पाताल-कलश-विशेष (सम ७१, ठा ४,२—पत्र २२६)।

केऊर पुंन [केयूर] १ हाथ का आभूषण-विशेष, अङ्गद, बाजूबन्द (पाअ, भग ९,३३)। २ पु. दक्षिण समुद्र का पाताल-कलश (पव २७२)।

केऊरपुत्त पुं [दे] गाय तथा भैंस का बच्चा (संक्षि ४७)।

केऊव पु [केयूप] दक्षिण समुद्र का एक पाताल-कलश (इक)।

केंकाय अक [केङ्काय्] 'कें-कें' आवाज करना। वकृ 'पेच्छइ तओ जडागिं केंकायंतं महीपडियं' (पउम ४४, ५४)।

केंसुअ देखो किंसुअ (कुमा)।

केकई स्त्री [कैकयी] १ राजा दशरथ की एक रानी, केकय देश के राजा की कन्या (पउम २२, १०८, उप पृ ३७)। २ आठवें वासुदेव की माता (सम १५२)। ३ अपर-विदेह के विभीषण-वासुदेव की माता (आवम)।

केकय पु [केकय] १ देश विशेष, यह देश प्राचीन वाह्लीक प्रदेश के दक्षिण की ओर तथा सिंधु देश की सीमा पर स्थित है। २ इस देश का रहनेवाला (पण्ह १, १)। ३ केकय देश का राजा (पउम २२, १०८)।

केकसिया स्त्री [कैकसिका] रावण की माता का नाम (पउम ७, ५४)।

केका स्त्री [केका] मयूर-वाणी। °रव पुं [°रव] मयूर की आवाज, मयूर-शब्द (णाया १, १—पत्र २५)।

केकाइय न [केकायित] मयूर का शब्द (सुपा ७९)।

केकई देखो केकई (पउम ७९, २६)।

केक्कय देखो केकय (पव २७४)।

केक्कसी स्त्री [कैकसी] रावण की माता (पउम १०३, ११४)।

खग्गि पु [खड्गिन्] जन्तु-विशेष, गेंडा (कुमा)।

खग्गिअ पु [दे] ग्रामेश, गाँव का मुखिया (दे २, ६९)।

खग्गी स्त्री [खड्गी] विदेह वर्ष की नगरी-विशेष (ठा ४, ३)।

खग्गूड त्रि [दे] १ शठ-प्राय, धूर्त-सदृश (ओघ ३६ भा)। २ धर्मरहित, नास्तिक-प्राय (ओघ ३५ भा)। ३ निद्रालु। ४ रस-लम्पट (वृह १)।

खच सक [खच्] १ पावन करना, पवित्र करना। २ कसकर बांधना। खचइ (हे ४, ८९)।

खचिअ देखो खइअ = खचित (कुमा)। ३ पिञ्जरित (कप्प)।

खच्चल्ल पु [दे] ऋक्ष, भल्लूक, भालू (दे २, ६९)।

खच्चोल पु [दे] व्याघ्र, शेर (दे २, ६९)।

खज्ज पु [खर्ज] वृक्ष-विशेष (स २५६)।

खज्ज वि [खाद्य] १ खाने योग्य वस्तु (पण्ह १, २)। २ न खाद्य विशेष (भवि)।

खज्ज वि [क्षय्य] जिसका क्षय किया जा सके वह (पड्)।

खज्जंत देखो खा।

खज्जग देखो खज्ज = खाद्य (भग १५)।

खज्जमाण देखो खा।

खज्जय देखो खज्ज = खाद्य (पउम ६९, १६)।

खज्जिअ वि [दे] १ जीर्ण, सडा हुआ। २ उपालब्ध, जिसको उलाहना दिया गया हो वह (दे २, ७८)।

खज्जिर (अप) वि [खाद्यमान] जो खाया गया हो वह (सण)।

खज्जू स्त्री [खर्जू] खुजली, पामा (राज)।

खज्जूर पु [खर्जूर] १ खजूर का पेड (कुमा, उत्त ३४)। २ न खजूर का फल (पउम ४१, ९; सुपा ५७)।

खज्जूरी स्त्री [खर्जूरी] खजूर का गाछ (पाअ, पण्ण १)।

खज्जोअ पु [दे] नक्षत्र (दे २, ६९)।

खज्जोअ पु [खद्योत] कीट-विशेष, जुगनू, (सुपा ४७, णाया १,८)।

खट्ट न [दे] १ तीमन, कढ़ी, मोर (दे २,६७)। २ वि खट्टा, अम्ल (पण्ण १—पत्र २७, जीव १)। °मेह पु [°मेघ] खट्टे जल की वर्षा (भग ७, ६)।

खट्टंग न [दे] छाया, आतप का अभाव (दे २,६८)।

खट्टंग न [खट्वाङ्ग] १ शिव का एक आयुध (कुमा)। २ चारपाई का पाया या पाटी। ३ प्रायश्चित्तात्मक भिक्षा मांगने का एक पात्र। ४ तान्त्रिक मुद्रा-विशेष,

'हत्थट्ठिय कवाल, न मुयइ नूण खणपि खट्टंग।
सा तुह विरहे बालय, बाला कावालिणी जाया' (वज्जा ८८)।

खट्टक्खड पु [खट्वाखक] रत्नप्रभा नामक पृथिवी का एक नरकावास, 'काल काऊण रयणप्पभाए पुढवीए खट्टखडाभिहाणे नरए पलिओवमाऊ चेव नारगो उववन्नोत्ति' (स ८६)।

खट्टा स्त्री [खट्वा] खाट, पलंग, चारपाई (सुपा ३३७, हे १, १९५)। °मल्ल पु [°मल्ल] बीमारी की प्रबलता से जो खाट से उठ न सकता हो वह (बृह १)।

खट्टिअ) [दे खट्टिक] खटीक, सौनिक,
खट्टिक्क } कसाई (गा ६८२, सूअ २, २, दे २, ७०)।

खड पु [दे] एक म्लेच्छ-जाति (मृच्छ १५२)।

खड न [दे] तृण, घास (दे २,६७, कुमा)।

खडइअ वि [दे] संकुचित, संकोच-प्राप्त (दे २, ७२)।

खडंग न [षडङ्ग] छ अंग, वेद के ये छ अंग—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, छन्द, निरुक्त। °वि वि [°वित्] छहो अंगो का जानकार (पि २६५)।

खडक्कय पुन [खटत्कृत] आहट देना, ध्वनि के द्वारा सूचना, सिकडी वगैरह की आवाज, 'वियडकवाडकडाए खडक्कओ निसुणिओ तत्तो' (सुपा ४१४)।

खडक्कार पु [खटत्कार] ऊपर देखो (सुर ११, ११२, विक्र ९०)।

खडक्किआ } स्त्री [दे] खिडकी, छोटा द्वार
खडक्की } (कप्पू, महा, दे २, ७१)।

खडक्किय देखो खडक्कय (धर्मवि ५६)।

खडक्खड पु [खटखट] खट-खट आवाज (मोह ८६)।

खडक्खर देखो छडक्खर (सम्मत्त १४३)।

खडखड पु [खडखड] देखो खडखड (दुर)।

खडखडग वि [दे] छोटा और लम्बा (राज)।

खडट्ठोविल पु [दे] एक म्लेच्छ जाति (मृच्छ १५२)।

खडणा स्त्री [दे] गैया, गौ (गा ६३९ अ)।

खडहड पु [खटखट] सांकल वगैरह की आवाज, खटकार (सुपा ५०२)।

खडहडी स्त्री [दे] जन्तु-विशेष, गिलहरी, गिल्ली (दे २, ७२)।

खडिअ देखो खट्टिअ (गा ६८२ अ)।

खडिअ देखो खलिअ (गा १६२ अ)।

खडिअ पु [दे] दवात, स्याही का पात्र (धर्मवि ५७)।

खडिआ स्त्री [खटिका] खडी, लडको को लिखने की खडी या खडिया (कप्पू)।

खडी स्त्री [खटी] ऊपर देखो (प्राकृ)।

खडुआ स्त्री [दे] मौक्तिक, मोती (दे २, ६८)।

खडुक्क अक [आविस् + भू] प्रकट होना, उत्पन्न होना। खडुक्कंति (वज्जा ४६)।

खडुक्क } पुस्त्री [दे] मुट्ठ सिर पर उंगली
खडुग } का आघात (वव १)।

खड्ड सक [मृद्] मर्दन करना। खड्डइ (हे ४, १२६)।

खड्ड } न [दे] १ श्मश्रु, दाढ़ी-मूँछ (दे २,
खड्डुग } ६६, पाअ)। २ बडा, महान् (विसे २५७९ टी)। ३ गर्त्त के आकारवाला (उवा)।

खड्डा स्त्री [दे] १ खानि, आकर (दे २,६६)। २ पर्वत का खात, पर्वत का गर्त्त (दे २ ६६)। ३ गर्त्त, गड्ढा, खड्डा (सुर २,१०३, स १५२, सुपा १५, श्रा १६, महा, उत्त २, पचा ७)।

खड्डिअ वि [मृदित] जिसका मर्दन किया गया हो वह (कुमा)।

खड्डुया स्त्री [दे] ठोकर, आघात, 'खड्डुया मे चवेडा मे' (उत्त १, ३८)।

खड्डोलय पु [दे] खड्डा, गर्त्त, गड्ढा (स ३९३)।

खण सक [खन्] खोदना। खणइ (महा)। कर्म खम्मइ, खणिज्जइ (हे ४, २४४)। वकृ खणमाण (सुर २, १०३)। संकृ-

केवली स्त्री [केवली] ज्योतिष विद्या-विशेष (हास्य १२६, १२९)।

केस पु [केश] केश, वाल (उप ७६८ टी, प्रयौ २६)। °पुर न [°पुर] वैताढ्य पर स्थित एक विद्याधर-नगर (इक)। °लोअ पु [°लोच] केशों का उन्मूलन (भग, पएह २, ४)। °वाणिज्ज न [°वाणिज्य] केश-वाले जीवों का व्यापार (भग ८,५)। °हत्थ, °हत्थय पु [°हस्त, °क] केशपाश, समा-रचित केश, संयत वाल (कप्प, पाग्र)।

केस देखो केरिस। स्त्री °सी (अणु १३१)।

केस देखो किलेस (उप ७६८ टी, धम्म २२)।

केसर पु [कवीश्वर] उत्तम कवि, श्रेष्ठ कवि (उप ७२८ टी)।

केसर पुन [केसर] एक देवविमान (देवेन्द्र १४२)।

केसर पुन [केसर] १ पुष्प-रेणु, पराग, किंजल्क (से १, ५०, दे ६, १३)। २ सिंह वगैरह के कंधा का वाल, केसरा (से १, ५८, सुपा २१५)। ३ पु वकुल वृक्ष (कप्पू, गउड, पाग्र)। ४ न इस नाम का एक उद्यान, काम्पिल्य नगर का एक उपवन (उत्त १७)। ५ फल विशेष (राज)। ६ सुवर्ण, सोना। ७ छन्द-विशेष (हे १, १४६)। ८ पुष्प-विशेष (गउड ११२२)।

केसरा स्त्री [केसरा] १ सिंह वगैरह के स्कन्ध पर के वालों की सटा, 'केसरा य सीहाणं' (प्रासू ५१, गउड, प्रामा)।

केसरि पु [केसरिन्] १ सिंह, वनराज, कण्ठीरव (उप ७२८ टी, से ८, ९४, पएह १, ४)। २ ह्रद-विशेष, नीलवन्त पर्वत पर स्थित एक ह्रद (सम १०४)। ३ नृप-विशेष, भरत-क्षेत्र के चतुर्थ प्रति वासुदेव (सम १५४)। °दह पु [°द्रह] द्रह-विशेष (ठा २, ३)।

केसरिआ स्त्री [केसरिका] साफ करने का कपडे का टुकडा (भग, विसे २५५२ टी)।

केसरिल्ल वि [केसरवत्] केसरवाला (गउड)।

केसरी स्त्री [केसरी] देखो केसरिआ, 'तिद-डकुडियछत्तछन्नुयंकुसपवित्तयकेसरीहत्थगए' (णाया १, ५—पत्र १०५)।

केसव पु [केशव] १ अर्ध चक्रवर्त्ती राजा (सम)। २ श्रीकृष्ण वासुदेव, नारायण (गउड)।

केसि वि [क्लेशिन्] क्लेश-युक्त, क्लिष्ट (विसे ३१५४)।

केसि पु [केशि] १ एक जैन मुनि, भगवान् पार्श्वनाथ के शिष्य (राय, भग)। २ असुर-विशेष, अश्व के रूप को धारण करनेवाला एक दैत्य, जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था (मुद्रा २६२)।

केसि पु [केशिन्] देखो केसव (पउम ७५, २०)।

केसिअ वि [केशिक] केशवाला, वाल-युक्त। स्त्री. °आ (सूअ १, ४, २)।

केसी स्त्री [केशी] सातवें वासुदेव की माता (पउम २०, १८४)।

°केसी स्त्री [°केशी] केशवाली स्त्री, 'विइण्ण-केसी' (उवा)।

केसुअ देखो किंसुअ (हे १, २९, ८६)।

केह (अप) वि [कीदृश] कैसा, किस तरह का? (भवि, पड्, कुमा)।

केहिं (अप) अ लिए, वास्ते (हे ४, ४२५)।

कैअव न [कैतव] कपट, दम्भ (हे १, १, गा १२४)।

कोअ देखो कोक (दे २, ४५ टी)।

कोअ देखो कोव (गउड)।

कोअड देखो कोदंड (पाग्र)।

कोआस अक [वि + कस्] विकसना, खिलना। कोआसइ (हे ४, १९५)।

कोआसिय वि [विकसित] विकसित, प्रफुल्ल, खिला हुआ (कुमा, ज २)।

कोइल पु [कोकिल] १ कोयल, पिक (पएह १, ४, उप २३, स्वप्न ६१)। २ छन्द का एक भेद (पिंग)। °च्छय पु [°च्छद] वनस्पति विशेष, तलकण्टक (पण्ण १७—पत्र ५२७)।

कोइला स्त्री [कोकिला] स्त्री कोयल, पिकी, 'कोइला पचम सरं' (अणु, पाग्र)।

कोइला स्त्री [दे] कोयला, काष्ठ के अंगार (दे २, ४९)।

कोउआ स्त्री [दे] गोइठा की अग्नि, करीषाग्नि (दे २, ४८, पाग्र)।

कोउग } न [कौतुक] १ कुतूहल, अपूर्व वस्तु
कोउय } देखने का अभिलाष (सुर २, २२६)। २ आश्चर्य, विस्मय (वव १)। ३ उत्सव (राय)। ४ उत्सुकता, उत्कण्ठा (पचव १)। ५ दृष्टि-दोषादि से रक्षा के लिए किया जाता काजल का तिलक, रक्षा-बन्धनादि प्रयोग (राय, औप, विपा १, १, पएह १, २, धर्म ३)। ६ सौभाग्य आदि के लिए किया जाता स्नपन विस्मापन, धूप, होम वगैरह कर्म (वव १, णाया १, १४)।

कोउण्ह वि [कदुष्ण] थोडा गरम (धर्मवि ११३)।

कोउहल } देखो कुऊहल (हे १, ११७,
कोउहल्ल } १७१, २, ९९, कुमा, प्राप्र)।

कोउहल्लि वि [कुतूहलिन्] कुतूहली, कौतुकी, कुतूहल-प्रिय (कुमा)।

कोऊहल } देखो कुऊहल (कुमा, पि ६१)।
कोऊहल्ल }

कोंकण पु [कोङ्कण] देश-विशेष (स ४१२)।

कोंकणग पु [कोङ्कणक] १ अनार्य देश-विशेष (इक)। २ वि. उस देश में रहनेवाला (पएह १, १, विसे १४१२)।

कोंच पु [क्रौञ्च] १ इस नाम का एक अनार्य देश (पएह १, १)। २ पक्षि-विशेष (ठा ७)। ३ द्वीप-विशेष (ती ४५)। ४ इस नाम का एक असुर (कुमा)। ५ वि. क्रौञ्च देश का निवासी (पएह १, १)। °रिवु पु [°रिपु] कार्त्तिकेय, स्कन्द (कुमा)। °वर पु [°वर] इस नाम का एक द्वीप (अणु-टी) °वीरग पुन [°वीरक] एक प्रकार का जहाज (बृह १)। देखो कुच।

कोंचिगा स्त्री [कुञ्चिका] ताली, कुंजी (उप १७७)।

कोंचिय वि [कुञ्चित] आकुञ्चित, संकुचित पएह १, ४)।

कोंटलय न [दे] १ ज्योतिष-सम्बन्धी सूचना। २ शकुनादि निमित्त-सम्बन्धी सूचना, 'पउजणे कोंटलयम्स' (ओघ २२१ भा)।

कोंठ देखो कुंठ (हे १, ११६ पि)।

कोंड देखो कुंड (हे १, २०२)।

खमावणया } स्त्री [क्षमणा] खमाना, माफी
खमावणा } माँगना (भग १७, ३, राज)।
खमाविय वि [क्षमित] माफ किया हुआ (हे ३, १५२, सुपा ३६४)।
खमिय वि [क्षमित] माफ किया हुआ (कुप्र १६)।
खम्म देखो खण = खन्। खम्मइ (प्राकृ ६८)।
खम्मक्खम पु [दे] १ संग्राम, लडाई। २ मन का दुःख। ३ पश्चात्ताप का निश्वास (दे २, ७६)।
खय देखो खच। खग्रइ (पड्)।
खय अक [क्षि] क्षय पाना, नष्ट होना। खग्रइ (पड्)।
खय देखो खग (पाग्र)। ३ आकाश तक ऊँचा पहुँचा हुआ (से ६,४२)। °राय पु [°राज] पक्षिओ का राजा, गरुड-पक्षी (पाग्र)। °वइ पु [°पति] गरुड-पक्षी (से १५, ५०)।
खय न [क्षत] २ व्रण, घाव, 'खारक्खेव व खए' (उप ७२८ टी)। २ वि व्रणित, घवाया हुआ, 'सुणग्रोव्व कीडखग्रो' (श्रा १४, सुपा ३४६, सुर १२, ६१)। °यार स्त्री पु [°चार] शिथिलाचारी साधु या साध्वी (वव ३)।
खय वि [खात] खोदा हुआ (पउम ६१, ४२)।
खय पु [क्षय] १ क्षय, प्रलय, विनाश (भग ११, ११)। २ रोग-विशेष, राज-यक्ष्मा (लहुग्र १५)। °कारि वि [°कारिन्] नाश-कारक (सुपा ६५५)। °काल, °गाल पुं [°काल] प्रलय काल, (भवि, हे ४,३७७)। °ग्गि पु [°ाग्नि] प्रलय-काल की आग (से १२, ८१)। °नाणि पु [°ज्ञानिन्] केवल-ज्ञानी, परिपूर्ण ज्ञानवाला, सर्वज्ञ (विसे ५१८)। °समय पुं [°समय] प्रलय-काल (लहुग्र २)।
खयंकर वि [क्षयकर] नाश-कारक (पउम ७, ८१, ६६, ३४, पुप्फ ८२)।
खयंतकर वि [क्षयान्तकर] नाश-कारक (पउम ७, १७०)।
खयर पुस्त्री [खचर] १ आकाश में चलने-वाला, पक्षी (जी २०)। २ विद्याधर, विद्या बल से आकाश मे चलनेवाला मनुष्य (सुर ३, ८८, सुपा २४०)। °राय पु [°राज] विद्याधरो का राजा (सुपा १३४)।
खयर देखो खइर = खदिर (अन्त १२, सुपा ५६३)।
खयरक्क वि [खादिरक] खदिर-सम्बन्धी। स्त्री. °क्का (सुख २, ३)।
खयाल पुन [दे] वंश-जाल, बाँस का वन (भवि)।
खर अक [क्षर्] १ झरना, टपकना। २ नष्ट होना। खरइ (विसे ४५५)।
खर वि [खर] १ निष्ठुर, रुखा, परुष, कठोर (सुर २, ६, दे २ ७८, पाग्र)। २ पुस्त्री गर्दभ, गधा (पराह १, १, पउम ५६, ४४)। ३ पु. छन्द-विशेष (पिंग)। ४ न तिल का तेल (ग्रोघ ४०६)। °कंट न [°कण्ट] बबूल वगैरह की शाखा (ठा ३, ४)। °कड न [°काण्ड] रत्नप्रभा पृथिवी का प्रथम काण्ड—अंश-विशेष (जीव ३)। °कम्म न [°कर्मन्] जिसमे अनेक जीवो की हानि होती हो ऐसा काम, निष्ठुर धंघा (सुपा ५०५)। °कम्मिअ वि [°कर्मिन्] १ निष्ठुर कर्म करनेवाला। २ पु. कोतवाल, दाण्डपाशिक (ग्रोघ २१८)। °किरण पु [°किरण] सूर्य, सूरज (पिंग, सण)। °दूसण पु [°दूषण] इस नाम का एक विद्याधर राजा, जो रावण का बहनोई था (पउम १०, १७)। °नहर पु [°नखर] श्वापद जन्तु, हिंसक प्राणी सुपा १३६, ४७४)। °निस्सण पु [°निस्वन] इस नाम का रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३०)। °मुह पुं [°मुख] १ अनार्य, देश-विशेष। २ अनार्य देश-विशेष का निवासी (पराह १, ४)। °मुही स्त्री [°मुखी] १ वाद्य-विशेष (पउम ५७, २३, सुपा ५०, ग्रौप)। २ नपुंसक दासी (वव ६)। °यर वि [°तर] १ विशेष कठोर (सुपा ६०६)। २ पु. इस नाम का एक जैन गच्छ (राज)। °सन्नय न [°संज्ञक] तिल का तेल (ग्रोघ ४०६)। °साविआ स्त्री [°शाविका] लिपि-विशेष (सम ३५)। °स्सर पु [°स्वर] परमाधार्मिक देवो की एक जाति (सम २६)।
खर वि [क्षर] विनश्वर, अस्थायी (विसे ४५७)।
खरट सक [खरण्टय्] १ धूत्कारना, निर्भ-र्त्सना करना। २ लेप करना। खरटए (सूक्त ४६)।
खरट वि [खरण्ट] १ धूत्कारनेवाला, तिर-स्कारक। २ उपलिप्त करनेवाला। ३ अशुचि पदार्थ (ठा ४, १, सूक्त ४६)।
खरटण न [खरण्टन] १ निर्भर्त्सन, परुष-भाषण (वव १)। २ प्रेरणा (ग्रोघ ४० भा)।
खरटणा स्त्री [खरण्टना] ऊपर देखो (ग्रोघ ७५)।
खरंटिअ वि [खरण्टित] निर्भर्त्सित (कुप्र ३१८)।
खरसुया स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष (संबोध ४४)।
खरड पु [दे] हाथी की पीठ पर बिछाया जाता आस्तरण (पव ८४)।
खरड सक [लिप्] लेपना, पोतना। संकृ. खरडिवि (सुपा ४१५)।
खरड पु [खरट] एक जघन्य मनुष्य जाति, 'ग्रह केणइ खरडेण किणिउ हट्टम्मि वरुणव-णियस्स' (सुपा ३६२)।
खरडिअ वि [दे] १ रूक्ष, रुखा। २ भग्न, नष्ट (दे २, ७६)।
खरडिअ वि [लिप्त] जिसको लेप किया गया हो वह, पोता हुआ (ग्रोघ ३७३ टी)।
खरण न [दे] बबूल वगैरह की कण्टक-मय डाली (ठा ८, ३)।
खरफरुस पु [खरपरुष] एक नरक स्थान (देवेन्द्र २७)।
खरय पु [खरक] भगवान् महावीर के कान मे से खीला (मास कील) निकालनेवाला एक वैद्य (चेइय ६६)।
खरय पु [दे] १ कर्मकर, नौकर (ग्रोघ ४३८)। २ राहु (भग १२, ६)।
खरहर अक [खरखराय्] 'खर-खर' आवाज करना। वकृ. खरहरंत (गउड)।
खरहिअ पुं [दे] पौत्र, पोता, पुत्र का पुत्र (दे २, ७२)।
खरा स्त्री [खरा] जन्तु-विशेष, नेवला की तरह भुज से चलनेवाला जन्तु-विशेष (जीव २)।

कोट्ठ पु [कोष्ट] १ धारणा, अवधारित अर्थ का कालान्तर मे स्मरण-योग्य अवस्थान (णंदि १७६)। २ सुगन्धी द्रव्य-विशेष (राय ३४)।

कोट्ठ, कोट्ठग, कोट्ठय | देखो कुट्ठ = कोष्ठ (णाया १, १, ठा ३, १, पाग्र)। ३ आश्रय-विशेष, आवास-विशेष (ओघ २००, वव १)। ४ अपवरक, कोठरी (दस ५, १, उप ५८६)। ५ चैत्य-विशेष (णाया २, १)। °गार न [°गार] धान्य भरने का घर (ओघ, कप्प)। २ भाण्डागार, भंडार (णाया १, १)।

कोट्ठार पुंन [कोष्ठागार] भाण्डागार, भंडार, (पउम २, ३)।

कोट्ठि वि [कुष्ठिन] कुष्ठ रोगी (आचा)।

कोट्ठिया स्त्री [कोष्ठिका] छोटा कोष्ठ, लघु कुशूल (उवा)।

कोट्टु पु [क्रोष्टृ] शृगाल, सियार (षड्)।

कोडड देखो कोदंड (स २५६)।

कोडडिय देखो कोदंडिय (कप्प)।

कोडय न [दे] कार्य, काम काज (दे २, २)।

कोडय [दे] देखो कोडिअ (पाग्र)।

कोडर न [कोटर] गह्वर, वृक्ष का पोल भाग, विवर (गा ५६२)।

कोडल पु [कोटर] पक्षि-विशेष (राज)।

कोडाकोडि स्त्री [कोटाकोटि] सख्या-विशेष, करोड को करोड से गुनने पर जो सख्या लब्ध हो वह (सम १०५, कप्प, उव)।

कोडाल पु [कोडाल] १ गोत्र-विशेष का प्रवर्त्तक पुरुष। २ न. गोत्र-विशेष (कप्प)।

कोडि स्त्री [कोटि] १ धनुष का अग्र भाग (राय ११३)। २ भेद, प्रकार (पिंड ३६५)।

कोडि स्त्री [कोटि] १ संख्या विशेष, करोड, १०००००००, (णाया १, ८, सुर १, ६७, ४, ६१)। २ अग्र-भाग, अणी, नोक (से १२, २६, पाग्र)। ३ अंश, विभाग, भाग, 'नरियक्कमो पएसो लोए वालग्गकोडिमित्तोवि' (पव्व ३६, ठा ६)। °कोडि देखो कोडाकोडि (सुपा २६६)। °वद्ध वि [°बद्ध] करोड सख्यावाला (वव ३)। °भूम स्त्री [°भूम] एक जैन तीर्थ (ती ४३)। °सिला स्त्री [°शिला] एक जैन तीर्थ (पउम ४८, ६६)। °सो अ [°शस्] करोडो, अनेक करोड (सुपा ४२०)। देखो कोडी।

कोडिअ न [दे] १ छोटा मिट्टी का पात्र, लघु सराव, मकोरा (दे २,४७)। १ पु पिशुन, दुर्जन, चुगलखोर (षड्)।

कोडिअ पु [कोटिक] १ एक जैन मुनि (कप्प)। २ एक जैन मुनि-गण (कप्प, ठा ६)।

कोडिअ वि [कोटित] सकोचित (धर्मसं ३८८)।

कोडिण्ण, कोडिन्न न [कौडिन्य] १ इस नाम का एक नगर (उप ६४८ टी)। २ वाशिष्ठ गोत्र की शाखा रूप एक गोत्र (कप्प)। ३ पु. कौडिन्य गोत्र का प्रवर्त्तक पुरुष। ४ वि. कौडिन्य-गोत्रीय (ठा ७—पत्र ३६०, कप्प)। ५ पु. एक मुनि, जो शिवभूति का शिष्य था (विसे २५५२)। ६ महागिरि-सूरि का शिष्य, एक जैन मुनि (कप्प)। ७ गोतम स्वामी के पास दीक्षा लेनेवाले पाँच सौ तापसो का गुरु (उप १४२ टी)।

कोडिन्ना स्त्री [कौण्डिन्या] कौडिन्य-गोत्रीय स्त्री (कप्प)।

कोडिल्ल पु [दे] पिशुन दुर्जन, चुगलखोर (दे २, ४०, षड्)।

कोडिल्ल देखो कोट्टिल्ल (राज)।

कोडिल्ल पु [कौटिल्य] इस नाम का एक ऋषि, चाणक्य मुनि (वव १, अणु)।

कोडिल्लय न [कोटिल्यक] चाणक्य-प्रणीत नीति-शास्त्र (अणु)।

कोडिसाहिय न [कोटिसहित] प्रत्याख्यान विशेष, पहले दिन उपवास करके दूसरे दिन भी उपवास की ली जाती प्रतिज्ञा (पव ४)।

कोडी देखो कोडि (उव, ठा ३, १, जी ३७)। °करण न [°करण] विभाग, विभजन (पिंड ३०७)। °णार न [°नार] इस नाम का सोरठ देश का एक नगर (ती ५६)। °मातसा स्त्री [°मातसा] गान्धार ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७—पत्र ३६३)। °वरिस न [°वर्ष] लाट देश की राजधानी, नगर-विशेष (इक, पव १७४)। °वरिसिया स्त्री [°वर्षिका] जैन मुनि-गण की एक शाखा (कप्प)। °सर पुं [°श्वर] करोड पति, कोटीश (सुपा ३)।

कोडीण न [कोडीन] १ इस नाम का एक गोत्र, जो कौत्स गोत्र की एक शाखा रूप है। २ वि. इस गोत्र मे उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०)।

कोडुंब न [दे] कार्य, काज (दे २, २)।

कोडुंबि देखो कुडुंबि (ठा ३, १—पत्र १२५)।

कोडुंबिय पु [कौटुम्बिक] १ कुटुम्ब का स्वामी, परिवार का स्वामी, परिवार का मुखिया (भग)। २ ग्राम-प्रधान, गाँव का आदमी (पण्ह १, ५—पत्र ६४)। ३ वि. कुटुम्ब मे उत्पन्न, कुटुम्ब मे सम्बन्ध रखने-वाला, कुटुम्ब-सम्बन्धी (महा, जीव ३)।

कोडूसग पु [कोदूषक] अन्न-विशेष, कोदो की एक जाति (राज)।

कोड्ड [दे] देखो कुड्ड (दे २, ३३, स ६४१, ६४२, हे ४, ४२२, णाया १, १६—पत्र २२४, उप ८६२, भवि)।

कोड्डुम देखो कोट्टुम (कुमा)।

कोड्डुमिअ न [रत] रति-क्रीडा-विशेष (कुमा)।

कोड्डिय वि [दे] कुतूहली, कौतुकी, विनोद-शील, उत्कण्ठित (उप ७६८ टी)।

कोड्ढ, कोढ पु [कुष्ठ] रोग-विशेष, कुष्ठ-रोग (पि ६६, णाया १, १३, श्रा २०)।

कोढि वि [कुष्ठिन्] कुष्ठ-रोग से ग्रस्त, कुष्ठ-रोगी (आचा)।

कोढिअ, कोढिय वि [कुष्ठिक] कुष्ठ-रोगी, कुष्ठ-ग्रस्त (पण्ह २, ५ विपा १, ७)।

कोण वि [दे] १ काला, श्याम वर्णवाला (दे २, ४५)। २ पुं. लकुट, लकडी, यष्टि (दे २, ४५, निचू १, पाग्र)। ३ वीणा वगैरह बजाने की लकडी, वीणा-वादन-दण्ड (जीव ३)।

कोण, कोणग पुन [कोण] कोन, अस्त्र, घर का एक भाग (गउड, दे २, ४५, रंभा)।

कोणव पु [कौणप] राक्षस, पिशाच (पाग्र)।

कोणायल पुं [कोणाचल] भगवान् शान्ति-नाथ के प्रथम श्रावक का नाम (विचार ३७८)।

कोणालग पु [कोनालक] जलचर पक्षि-विशेष (पण्ह १, १)।

१, १८)। सकृ खवइत्ता, खवित्तु, खवेत्ता (भग १५, सम्य १६, औप)।
खव पु [दे] १ वाम हस्त, बायाँ हाथ। २ गर्दभ, रासभ (दे २, ७७)।
खवग वि [क्षपक] १ नाश करनेवाला, क्षय करनेवाला। २ पु तपस्वी जैन-मुनि (उव भाव ८)। ३ वि क्षपक श्रेणि मे आरूढ (कम्म ५)। °सेढि स्त्री [श्रेणि] क्षपण-क्रम कर्मो के नाश की परिपाटी (भग ६ ११, उवर ११४)।
खवडिअ वि [दे] स्खलित, स्खलन-प्राप्त (दे २, ७१)।
खवण } न [क्षपण] १ क्षय, नाश (जीत)।
खवणय } २ डालना, प्रक्षेप (कम्म ४, ७५)। ३ पु जैन-मुनि (विसे २५८५, मुद्रा ७८)।
खवण देखो खमण, 'विहिय पक्खखवणे सो' (धर्म २३)।
खवणा स्त्री [क्षपणा] अध्ययन, शास्त्र-प्रकरण (अणु २५०)।
खवय पु [दे] स्कन्ध, कंधा (दे २, ६७)।
खवय देखो खवग (सम २६, आरा १३, आचा)।
खवलिअ वि [दे] कुपित, क्रुद्ध (दे २, ७२)।
खवल्ल पु [खवल्ल] मत्स्य-विशेष (विपा १, ८—पत्र ८३ टी)।
खवा स्त्री [क्षपा] रात्रि, रात। °जल न [°जल] अवश्याय, हिम (ठा ४, ४)।
खविअ वि [क्षपित] १ विनाशित, नष्ट किया हुआ (सुर ४ ५७, प्राप)। २ उद्वेजित (गा १३४)।
खव्व पु [दे] १ वाम कर, बाया हाथ। २ रासभ, गधा (दे २, ७७)।
खव्व वि [खर्व] वामन, कुब्ज, नाटा (पाअ)।
खव्व वि [खर्व] लघु, थोडा, 'अखव्वगव्वो दव्वो आसि' (सिरि ६७५)।
खव्वुर देखो कव्वुर (विक्र २८)।
खव्वुल न [दे] मुँह, मुख (दे २, ६८)।
खस अक [दे] खिसकना, गिर पडना। खसइ (पिंग)।
खस पु व [खस] १ अनार्य देश-विशेष, हिन्दुस्थान के उत्तर मे स्थित इस नाम का एक पहाडी मुल्क (पउम ६८ ६६)। २ पुंस्त्री. खस देश मे रहनेवाला मनुष्य (पण्ह १—पत्र १४, इक)।
खसखस पु [खसखस] पोस्ता का दाना, उशीर, खस (स ६६)।
खसफस अक [दे] खसना, खिसकना, गिर पडना। वकृ खसफसेमाण (सुर २,१५)।
खसफसि वि [दे] व्याकुल, अधीर। °हूअ वि [°भूत] व्याकुल बना हुआ (हे ४, ४२२)।
खसर देखो कसर = दे कसर (जं २, स ८८०)।
खसिअ देखो खइअ = खचित (हे १, १९३)।
खसिअ न [कसित] रोग-विशेष, खाँसी (हे १, १८१)।
खसिअ वि [दे] खिसका हुआ (सुपा २८१)।
खसु पुं [दे] रोग-विशेष, पामा, गुजराती में 'खस' (सण)।
खह पुंन [खह] आकाश, गगन (भग २०, २—पत्र ७७५)।
खह देखो ख (ठा ३, १)।
खहयर देखो खयर (औप, विपा १, १)।
खहयरी स्त्री [खचरी] १ पक्षिणी, मादा पक्षी। २ विद्याधरी, विद्याधर की स्त्री (ठा ३, १)।
खा } सक [खाद्] खाना, भोजन करना,
खाअ } भक्षण करना। खाइ खाअइ, खाउ (हे ४ २२८)। खंति (सुपा ३७० महा)। भवि खाहिइ (हे ४, २२८)। कर्म खज्जइ (उव)। वकृ खंत, खायंत, खायमाण (कप्प १४, पउम २२, ७५, विपा १, १), 'खंता पिअंता इह जे मरंति पुणोवि ते खंति पिअंति राय !' (कप्प १४)। कवकृ खज्जंत, खज्जमाण (पउम २२, ४३ गा २४८ पउम १७, ८१, ८२, ४०)। हेकृ खाइउ (पि ५७३)।
खाअ वि [ख्यात] प्रसिद्ध, विश्रुत (उप ३२६, ६२३, नव २७, हे २, ९०)। °कित्तीय वि [°कीर्त्तिक] यशस्वी, कीर्त्तिमान् (पउम ७, ४८)। °जस वि [°यशस्] वही अर्थ (पउम ५ ८)।
खाअ वि [खादित] भुक्त, भक्षित, 'खाउग्गिलणए—' (गा ६६८, भवि)।
खाअ वि [खात] १ खुदा हुआ। २ न. खुदा हुआ जलाशय, 'खाओदगाइं' (कप्प)। ३ ऊपर मे विस्तारवाली और नीचे मे सकुचित ऐसी परिखा। ४ ऊपर और नीचे समान रूप से खुदी हुई परिखा (औप)। ५ खाई, परिखा पाअ)।
खाइ स्त्री [खाति] खाई, परिखा (सुपा २६४)।
खाइ स्त्री [ख्याति] प्रसिद्धि, कीर्त्ति (सुपा ५२६ ठा ३, ४)।
खाइ [दे] देखो खाइ (औप)।
खाइअ देखो खइअ = क्षायिक (विसे ४६, २१७५ सत्त ६७ टी)।
खाइअ वि [खादित] खाया हुआ, भुक्त, भक्षित (प्राप, निर १, १)।
खाइआ स्त्री [दे खातिका] खाई, परिखा (दे २, ७३, पाअ, सुपा ५२६, भग ५, ७, पण्ह २, ५)।
खाइ अ [दे] १—२ वाक्य की शोभा और पुन शब्द के अर्थ का सूचक अव्यय (भग ५, ४, औप)।
खाइग देखो खाइअ = क्षायिक (सुपा ५५१)।
खाइम न [खादिम] अन्न-वर्जित फल, औषध वगेरह खाद्य चीज (सम ३६, ठा ४२, औप)।
खाइर वि [खादिर] खदिर-वृक्ष-सम्बन्धी, खैर का, कत्थई (हे १, ६७)।
खाउय न [खाद्यक] खाद्यपदार्थ (मूलशुद्धि गा० १७१, देवदिन्न कथा गा ६ पछी)।
खाओवसम } देखो खओवसमिय (सुपा
खाओवसमिअ } ५५१, ६४८, सम्य २३)।
खाओवसमिग देखो खाओवसमिअ (अज्झ ६८, सम्यक्त्वो ५)।
खाडइअ वि [दे] प्रतिफलित, प्रतिबिम्बित (दे २ ७३)।
खाडखड पु [खाडखड] चौथी नरक-पृथिवी का एक नरकावास (ठा ६)।
खाडहिला स्त्री [दे] एक प्रकार का जानवर, गिलहरी, गिल्ली (पण्ह १, १, उप पृ २०५ विसे ३०८ टी)।
खाण पु [दे] एक म्लेच्छ जाति (मृच्छ १५२)।
खाण न [खादन] भोजन, भक्षण, 'खाणेण

विशेष, जहाँ श्रीऋषभदेव भगवान् का मंदिर है, यह नगर दक्षिण मे है (ती ४५)। °पाल पु [°पाल] देव विशेष, धरणेन्द्र का लोकपाल (ठा ३, १—पत्र १०७)। °सुणय, °सुणह पुस्त्री [°शुनक] १ बडा शूकर, सूअर की एक जाति, जंगली वराह (आचा २, १, ५)। २ शिकारी कुत्ता (पण्ण ११)। स्त्री °णिया (पण्ण ११)। °वास पुंन [°वास] काष्ठ, लकडी (सम ३९)।

कोल वि [कौल] १ शक्ति का उपासक, तान्त्रिक मत का अनुयायी। २ तान्त्रिक मत से सबन्ध रखनेवाला, 'कोलो घम्मो कस्स णो भाइ रम्मो' (कप्पू)। ३ न बदर-फल-सबन्धी (भग ६, १०)। °चुण्ण न [°चूर्ण] वेर का चूर्ण, वेर का सत्तू (दस ५, १)। °ट्ठिय न [°अस्थिक] वेर की गुठिया या गुठली (भग ६, १०)।

कोलच पु [दे] पिठर, स्याली (दे २, ४७, पाअ)। २ गृह, घर (दे २, ४७)।

कोलब पु [कोलम्ब] वृक्ष की शाखा का नामा हुआ अग्र भाग (अनु ५)।

कोलगिणी स्त्री [कोली, कोलकी] कोल-जातीय स्त्री (आचू ४)।

कोलघरिय वि [कौलगृहिक] कुलगृह-सबन्धी, पितृगृह-सबन्धी, पितृगृह से संबन्ध रखनेवाला (उवा)।

कोलज्जा स्त्री [दे] धान्य रखने का एक तरह का गर्त्त (आचा २, १, ७)।

कोलर देखो कोटर (गा ५६३ अ)।

कोलव न [कौलव] ज्योतिप-शास्त्र में प्रसिद्ध एक करण (विसे ३३४८)।

कोलाल वि [कौलाल] १ कुम्भकार-सबन्धी। २ न मिट्टी का पात्र (उवा)।

कोलालिय पु [कौलालिक] मिट्टी का पात्र वेचनेवाला (बृह २)।

कोलाह पुं [कोलाभ] साप की एक जाति (पण्ह १)।

कोलाहल पु [दे] पक्षी की आवाज, पक्षी का शब्द (दे २, ५०)।

कोलाहल पु [कोलाहल] तुमुल, शोरगुल, रौला, हल्ला, बहुत दूर जानेवाला अनेक प्रकार का अस्फुट शब्द (दे २, ५०; हेका १०५, उत ९)।

कोलाहलिय वि [कोलाहलिक] कोलाहल-वाला, शोरगुलवाला (पउम ११७, १६)।

कोलिअ पुं [दे] एक अधम मनुष्य जाति (सुख २, १५)।

कोलिअ पु [दे] कोली, तन्तुवाय, जुलाहा, कपडा बुननेवाला (दे २, ६५, णादि, पव २, उप पृ २१०)। २ जाल का कीडा, मकडा (दे २,२५, पाअ, श्रा २०, आव ४, बृह १)।

कोलित्त न [दे] उल्मुक, लूका (दे २, ४९)।

कोलिन्न न [कौलीन्य] कुलीनता, खानदानी (धर्मवि १४६)।

कोलीकय वि [क्रोडीकृत] स्वीकृत, अंगीकृत (गउड)।

कोलीण न [कौलीन] १ किंवदती, लोक वार्ता, जन-श्रुति (मा ३७)। २ वि. वंश-परपरागत, कुलक्रम मे आयात। ३ उत्तम कुल मे उत्पन्न। ४ तान्त्रिक मत का अनुयायी (नाट—महावी १३३)।

कोलीर न [दे] लाल रग का एक पदार्थ, कुरुविन्द, 'कोलीररत्तणयणेअ' (दे २, ४६)।

कोलुण्ण न [कारुण्य] दया, अनुकम्पा, करुणा (निचू ११)। °पडिया, °वडिया स्त्री [°प्रतिज्ञा] अनुकम्पा की प्रतिज्ञा (निचू ११)।

कोलेज्ज पुं [दे] नीचे गोल और ऊपर खाई के आकार का धान्य आदि भरने का कोठा (आचा २, १, ७, १)।

कोलेय पुं [कौलेयक] श्वान, कुत्ता (सम्मत्त १६०, धर्मवि ५२)।

कोल्ल पु न [दे] कोयला, जली हुई लकडी का टुकडा (निचू १)।

कोल्लइर न [कोल्लकिर] नगर-विशेष (पिंड ४२७)।

कोल्लपाग न [कोल्लपाक] दक्षिण देश का एक नगर, जहां श्री ऋषभदेव का मन्दिर है (ती ४५)।

कोल्लर पु [दे] पिठर, स्याली, थाली, थरिया (दे २, ४७)।

कोल्ला देखो कुल्ला (कुमा)।

कोल्लाग देखो कुल्लाग (अत)।

कोल्लापुर न [कोल्लापुर] दक्षिण देश का एक नगर, महालक्ष्मी का स्थान (ती ३४)।

कोल्लासुर पु [कोल्लासुर] इस नाम का एक दैत्य (ती ३४)।

कोल्लुग [दे] देखो कोल्हुअ (वव १, बृह १)।

कोल्हाहल न [दे] फल-विशेष, बिम्बी-फल (दे २, ३९)।

कोल्हुअ पुं [दे] १ शृगाल, सियार (दे २, ६५, पाअ, पउम ७, १७, १०५, ४२)। २ कोल्हू, चरखी, ऊख मे रस निकालने का कल (दे २, ६५, महा)।

कोव सक [कोपय्] १ दूषित करना। २ कुपित करना। कोवेइ (सूअनि १२५), कोवइज्ज (कुप्र ६४)।

कोव पु [कोप] क्रोध, गुस्सा (विपा १, ६, प्रासू १७५)।

कोवण वि [कोपन] क्रोधी, क्रोध-युक्त (पाअ, सुपा ३८५, सम ३४७, स्वप्न ८२)।

कोवाय पु [कोपक] अनार्य देश-विशेष (पव २७४)।

कोवासिअ देखो कोआसिय (पाअ)।

कोवि वि [कोपिन्] क्रोधी, क्रोध-युक्त (सुपा २८१, श्रा २०)।

कोविअ वि [कोविद्] निपुण, विद्वान्, अभिज्ञ (आचा, सुपा १३०, ३९२)।

कोविअ वि [कोपित] १ क्रुद्ध किया हुआ। २ दूषित, दोष-युक्त किया हुआ, 'वइरो विर दाहो वायणति नवि कोविय वयण' (उव)।

कोविआ स्त्री [दे] शृगाली, सियारिन (दे २, ४९)।

कोविआर पु [कोविदार] वृक्ष-विशेष (विक्र ३३)।

कोविणी स्त्री [कोपिनी] कोप युक्त स्त्री (श्रा १२)।

कोशण (मा) वि [कदुष्ण] थोडा गरम (प्राकृ १०२)।

कोस पु [दे] १ कुसुम्भ रग से रगा हुआ रक्त वस्त्र। २ समुद्र, जलधि, सागर (दे २, ६५)।

कोस पुं [क्रोश] कोस, मार्ग की लम्बाई का परिमाण, दो मील (कप्प, जी ३२)।

खिंखिणी स्त्री [किङ्किणी] ऊपर देखो (ठा १०, णाया १, १, अजि २७)।
खिंखिणी स्त्री [दे] शृगाली, स्त्री-सियार (दे २, ७४)।
खिग पु [खिङ्ग] रंडीबाज, व्यभिचारी, 'अरोगखिगजणउव्वासियरसणे' (रंभा)।
खिस सक [खिस्] निन्दा करना, गर्हा करना, तुच्छकारना। खिसए (आचा)। कर्म खिंसिज्जइ (बृह १)। कवकृ खिंसिज्जंत (उप ५८८)। कृ खिसणिज्ज (णाया १, ३)।
खिंसण न [खिंसन] अवर्णवाद, निन्दा, गर्हा (औप)।
खिंसणा स्त्री [खिंसना] निन्दा, गर्हा (औप, उप १३४ टी)।
खिंसा स्त्री [खिंसा] ऊपर देखो (ओघ ६०, द्र ४२)।
खिंसिय वि [खिंसित] निन्दित गर्हित (ठा ६)।
खिक्खिड पु [दे] कृकलास, गिरगिट, सरट (दे २, ७४)।
खिक्खियत वि [खिखीयमान] 'खि-खि' आवाज करता (पराह १, ३—पत्र ४६)।
खिक्खिरी स्त्री [दे] डोम वगैरह का स्पर्श रोकने की लकडी (दे २, ७३)।
खिच्च पुन [दे] खीचडी, कृसरा (दे १, १३४)।
खिज्ज अक [खिद्] १ खेद करना, अफसोस करना। २ उद्विग्न होना, थक जाना। खिज्जइ, खिज्जए (स ३४, गउड, पि ४५७)। कृ खिज्जियव्व (महा, गा ५१३)।
खिज्जणिया स्त्री [खेदनिका] खेद-क्रिया अफसोस, मन का उद्वेग (णाया १, १६—पत्र २०२)।
खिज्जिअ न [दे] उपालम्भ, उलाहना (दे २, ७४)।
खिज्जिअ वि [खिन्न] १ खेद प्राप्त। २ न खेद (स ५५५)। ३ प्रणय-जन्य रोष (णाया १, ६—पत्र १६५)।
खिज्जिअय न [खेदितक] छन्द-विशेष (अजि ७)।
खिज्जिर वि [खेदितृ] खेद करनेवाला, खिन्न होने की आदतवाला (कुमा ७, ६०)।

खिड्ड न [खेल] खेल, क्रीडा, मजाक, 'खिड्डेण मए भणिय एयं' (सुपा ३०२), 'वालत्तण खिड्डुपरो गमेइ' (सत्त ६८)। °कर वि [°कर] खेल करनेवाला, मजाक करनेवाला (सुपा ७८)।
खिण्ण वि [खिन्न] १ खिन्न, खेद प्राप्त। २ श्रान्त, थका हुआ (दे १, १२४, गा २२६)।
खिण्ण देखो खाण (प्राप)।
खित्त वि [क्षिप्त] १ फेंका हुआ (सुर ३, १०२, सुपा ३५७)। २ प्रेरित (दे १, ६३)। °इत्त, °चित्त वि [°चित्त] भ्रान्त-चित्त, विक्षिप्त-मनस्क, पागल (ठा ५, २, ओघ ४६७, ठा ५, १)। °मण वि [मनस्] चित्त भ्रमवाला (महा)।
खित्त देखो खेत्त (अणु, प्रासू, पडि)। °देवया स्त्री [°देवता] क्षेत्र का अधिष्ठायक देव (आ ४७)। °वाल पु [पाल] देव-विशेष, क्षेत्र-रक्षक देव (सुपा १५२)।
खित्तज पुं [क्षेत्रज] गोद लिया हुआ लडका, 'खित्तज सुएणावि कुल वट्टउ (कुप्र २०८)।
खित्तय न [क्षिप्तक] छन्द विशेष (अजि २४, २५)।
खित्तय न [दे] १ अनर्थ, नुकसान। २ वि. दीप्त, प्रज्वलित (दे २, ७६)।
खित्तअ वि [क्षैत्रिक] १ क्षेत्र-सम्बन्धी। २ पु व्याधि-विशेष, 'तालुपुडं गरलाण जह वहुवाहीण खित्तिओ वाही' (श्रा १२)।
खिन्न देखो खिण्ण = खिन्न (पाअ, महा)।
खिप्प अक [क्लृप्] १ समर्थ होना। २ दुर्बल होना। खिप्पइ (सक्षि ३५)।
खिप्प वि [क्षिप्र] शीघ्र, त्वरा युक्त। °गइ वि [°गति] १ शीघ्र गतिवाला। २ पु. अमितगति इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १)।
खिप्पं अ [क्षिप्रम्] तुरन्त, शीघ्र, जल्दी (प्रासू ३७, पडि)।
खिप्पत देखो खिव।
खिप्पामेव अ [क्षिप्रमेव] शीघ्र ही, तुरन्त ही (जं ३, महा)।
खिमा स्त्री [क्ष्मा] पृथिवी (चड)।
खिर अक [क्षर्] १ गिरना, गिर पडना। २ टपकना, झरना। खिरइ (हे ४, १७३)। वकृ. खिरत (पउम १०, ३२)।

खिरिय वि [क्षरित] १ टपका हुआ। २ गिरा हुआ (पाअ)।
खिल न [खिल] अकृष्ट-भूमि, ऊसर जमीन (पराह १, २—पत्र २६)।
खिलीकरण न [खिलीकरण] खाली करना, शून्य करना, 'जुवजणघोरखिलीकरणकवाडओ वेमवाडओ' (मै ८)।
खिल्ल सक [कीलय्] रोकना, रुकावट डालना, 'मणइ इमाए वन्धव। गमण खिल्लेमि कट्टिउ रेह' (सुपा १३७)।
खिल्ल अक [खेल्] क्रीडा करना, खेल करना, तमाशा करना। वकृ. खिल्लंत (सुपा ३६६)।
खिल्ल पुं [दे] फोडा, फुनसी, गुजराती में 'खील' (तंदु ३८)।
खिल्लण न [खेलन] खिलौना, खेलनक (सुर १५, २०८)।
खिल्लहड } पु [दे. खिल्लहड] कन्द विशेप
खिल्लहल } (श्रा २०, धर्म २)।
खिल्लुहडा स्त्री [दे] कन्द-विशेष (सबोध ४४)।
खिव सक [क्षिप्] १ फेंकना। २ प्रेरना। ३ डालना। खिवइ, खिवेइ (महा)। वकृ खिवेमाण (णाया १, २)। कवकृ खिप्पत (काल)। संकृ. खिविअ (कम्म ४, ७४)। कृ खिवियव्व (सुपा १५०)।
खिवण न [क्षेपण] १ फेंकना, क्षेपण (से १२, ३६)। २ प्रेरण, इधर-उधर चलाना (से ५, ३)।
खिविय वि [क्षिप्त] १ क्षिप्त, फेंका हुआ। २ प्रेरित (सुपा २)।
खिव्व देखो खिव। संकृ 'अह खिव्विऊण सव्व, पोए ते पत्थिया रयणभूमिं' (धम्म १२ टी)।
खिस अक [दे] सरकना, खिसकना। संकृ 'अह नियगामे गच्छतस्स खिसिऊण वाहणा-हितो पडिय (सुपा ५२७, ५२८)।
खीण देखो खिण्ण = खिन्न, 'कोवेत्थ सुरय-खीणो' (पउम ३२, ३)।
खीण वि [क्षिण] १ क्षय-प्राप्त, नष्ट, विछिन्न (मम्म ६०, हे २, ३)। २ दुर्बल, कृश (भग २, ५)। °दुह वि [°दुःख] दुःख-रहित (मम १५३)। °मोह वि [°मोह] १ जिसका मोह नष्ट हो गया हो वह (ठा ३

देव-विमान-विशेष (ती ५६)। ३ पु. व्यन्तर-श्रेणीय देव-जाति-विशेष (पव १९४)।
कोहंडी स्त्री [कूष्माण्डी] कोहँडे का गाछ (हे १, १२४, दे २, ५० टी)।
कोहण वि [क्रोधन] १ क्रोधी, गुस्साखोर (सम ३७, पउम ३५, ७)। २ पुं इस नाम का रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३२)।
कोहल देखो कुऊहल (हे १, १७१)।
कोहलिअ वि [कुतूहलिन्] कुतूहली, कुतूहल-प्रेमी। स्त्री °आ (गा ७६८)।
कोहलिआ स्त्री [कूष्माण्डिका] कोहँडा का गाछ,

'जह लंघेसि परवइ निययवइ
भरसहपि मोत्तूण।
तह मण्णे कोहलिए, अज्जं
कल्लपि फुट्टिहिसि' (गा ७६८)।

कोहली देखो कोहंडी (हे २, ७३, दे २, ५० टी)।
कोहल्ल देखो कोहल (षड्)।
कोहल्ली स्त्री [दे] तापिका, तवा, पचन-पात्र-विशेष (दे २, ४६)।
कोहल्ली देखो कोहंडी (षड्)।
कोहि } वि [क्रोधिन्] क्रोधी, क्रोधी-स्वभाव का
कोहिल्ल } गुस्साखोर (कम्म ४, १४०, बृह २)।
कौरव } देखो कउरव (हे १, १, चड)।
कौलव }
°क्किसिय देखो किसिय = कृपित (उप ७२८ टी)।
°क्कूर देखो कूर = कूर। (वा २६)।
°क्केर देखो °केर (हे २, ९९)।
°क्खड देखो खड (गउड)।
°क्खभ देखो खभ (से ३, ५९)।
°क्खम देखो खम (अमू २७)।
°क्खलण देखो खलण (गउड)।
°क्खिसा देखो खिसा (सुपा ५१०)।
°क्खु देखो खु (कप्पू, अभि ३७, चारु १४)।
°क्खुत्त देखो खुत्त (गउड)।
°क्खेड्ड देखो खेड्ड (सुपा ५५२)।
°क्खेव देखो खेव, 'खारक्खेव व खए' (उप ७२८ टी)।
°क्खोडी देखो खोडी (पण्ह १, ३)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे कयाराइसद्दसकलणो
दसमो तरंगो समत्तो ॥

ख

ख पुं [ख] १ व्यञ्जन-वर्ण विशेष, इसका स्थान कण्ठ है (प्रामा, प्राप)। २ न आकाश, गगन, 'गज्जते खे मेहा' (हे १, १८७, कुमा, दे ६, १२१)। ३ इन्द्रिय (विसे ३४४३)। °ग पु [°ग] १ पक्षी, खग (पाअ, दे २, ५०)। २ मनुष्य की एक जाति, जो विद्या के बल से आकाश मे गमन करती है, विद्याधर-लोक (आरा ५९)। देखो खय = खग। °गइ स्त्री [°गति] १ आकाश-गति। २ कर्म-विशेष, जो आकाश-गति का कारण है (कम्म २,३, नव ११)। °गामिणी स्त्री [°गामिनी] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से आकाश मे गमन किया जा सकता है (पउम ७, १४५)। °पुप्फ न [°पुष्प] आकाश-कुसुम, असंभावित वस्तु (कुमा)।
खअ } सक [खच्] संपत्ति-युक्त करना।
खउर } खअइ, खउरइ (प्राकृ ७३)।
खइ वि [क्षयिन्] १ क्षयवाला, नाशवाला। २ क्षय रोगवाला, क्षय-रोगी (सुपा २३३, ५७६)।
खइअ वि [क्षपित] नाशित, उन्मूलित (औप, भवि)।
खइअ वि [खचित] १ व्याप्त, जटित। २ मण्डित, विभूषित (हे १, १९३, औप, स ११४)।
खइअ वि [खादित] १ खाया हुआ, भुक्त, ग्रस्त (पाअ, स २५०, उप पृ ४९)। २ आक्रान्त, 'तह य होंति उ कसाया। खइओ जेहिं मणुस्सो कज्जाकज्जाइं न मुणेइ' (स ११४)। ३ न. भोजन, भक्षण, 'खइएण व पीएण व न य एसो ताइओ हवइ अप्पा' (पञ्च ६२, ठा ४, ४—पत्र २७६)।
खइअ वि [क्षयित] क्षय-प्राप्त, क्षीण, 'किमि-कायखइयदेहो' (सुर १६, १९१)।
खइअ पुं [दे] हेवाक, स्वभाव (ठा ४, ४—पत्र २७६)।
खइअ } पु [क्षायिक] १ क्षय, विनाश,
खइग } उन्मूलन, 'से किं तं खइए? खइए अट्ठण्ह कम्मपयडीण खइएणं' (अणु)। २ वि. क्षय से उत्पन्न, क्षय-संबन्धी, क्षय से संबन्ध रखनेवाला। ३ कर्म-नाश मे उत्पन्न, 'कम्मक्खयमहावो खइओ' (विसे ३४९५, कम्म १,१५, ३,१९, ४,२२, सम्य २३, औप)।
खइत्त न [क्षैत्र] खेतो का समूह, अनेक खेत (पि ६१)।
खइया स्त्री [खदिका] खाद्य-विशेष, सेका हुआ व्रीहि—धान, लावा, 'दहिघयपायसखइया-निओए' (भवि)।
खइर पु [खदिर] वृक्ष विशेष, खैर का गाछ (आचा, कुमा)।
खइर वि [खादिर] खदिर-वृक्ष-संबन्धी (हे १, ६७, सुपा १५१)।
खइव [दे] देखो खइअ (ठा ४, ४—पत्र १७६ टी)।

खुडंतदित्तमोत्तिया' (पउम ५३, ११२, स ४४८)। सकृ. खुडिऊण (स ११३)।

खुडक्क देखो खुडुक्क = (दे)। खुडक्कए (धर्मवि ७१)।

खुडक्किअ [दे] देखो खुडुक्किअ (गा २२६)।

खुडिअ वि [खण्डित] त्रुटित खण्डित, विच्छिन्न (हे १, ५३, षड्)।

खुडुक्क सक [अप+क्रमय्] हटाना, दूर करना। खुडुक्कइ (प्राकृ ७०)।

खुडुक्क अक [दे] १ नीचे उतरना। २ स्खलित होना। ३ शल्य की तरह चुभना। ४ गुस्सा मे मौन रहना। खुडुक्कइ (हे ४, ३९५)। वकृ खुडुक्कत (कुमा)।

खुडुक्किअ वि [दे] १ शल्य की तरह चुभा हुआ, खटका हुआ (उप ३५५)। २ रोष-मूक, गुस्सा से मौन धारण करनेवाला। स्त्री. °आ (गा २२६ अ)।

खुड्ड } वि [दे क्षुद्र क्षुल्लक] १ लघु,
खुड्डग } छोटा (दे २, ७४, कप्प, दस ३, आचा २, २, ३, उत्त १)। २ नीच, अधम दुष्ट (पुप्फ ४४१)। ३ पुं छोटा साधु, लघु शिष्य (सूअ १, ३, २)। ४ पुंन. अगुलीय-विशेष, एक प्रकार की अगूठी (औप, उप २०८)।

खुड्डमड्डा अ [दे] १ बहु, अत्यन्त। २ फिर-फिर (निचू २०)।

खुड्डय देखो खुड्ड (हे २, १७४, षड्, कप्प, सम ३५, णाया १, १)।

खुड्डाग } देखो खुड्डग (औप, पण्ण ३६,
खुड्डाय } णाया १, ७, कप्प)। °णियंठ न [°नैर्ग्रन्थ] उत्तराध्ययन सूत्र का छठवां अध्ययन (उत्त ६)।

खुड्डिअ न [दे] सुरत, मैथुन, संभोग (दे २ ७५)।

खुड्डिआ स्त्री [दे. क्षुद्रिका] १ छोटी, लघ्वी (ठा २, ३, आचा २, २, ३)। २ डावर, नही खुदा हुआ छोटा तलाव (जं १, पण्ह २, ५)।

खुणुक्खुडिआ स्त्री [दे] घ्राण, नाक, नासिका (दे २, ७६)।

खुण्ण वि [क्षुण्ण] १ मर्दित (गा ४४५, निचू १)। २ चूर्णित (दे २, ४५)। ३ मग्न, लीन, 'अजरामरपहखुण्णा साहू सरणं सुकय-पुण्णा' (चउ ३८, सथा)।

खुण्ण वि [दे] परिवेष्टित (दे २, ७५)।

खुत्त वि [दे] निमग्न, डूबा हुआ (दे २, ७४, णाया १,१, गा २७६,३२४, सथा, गउड)।

°खुत्तो अ [°कृत्वस्] वार, दफा (उव, सुर १४, ६१)।

खुद्द वि [क्षुद्र] तुच्छ, नीच, दुष्ट, अधम (पण्ह १, १, ठा ६)।

खुद्द न [क्षौद्र्य] क्षुद्रता, तुच्छता, नीचता (उप ९१५)।

खुद्दिमा स्त्री [क्षुद्रिमा] गान्धार ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७—पत्र ३९३)।

खुद्ध वि [क्षुब्ध] क्षोभ-प्राप्त, घवडाया हुआ (सुपा ३२५)।

खुधा स्त्री [क्षुध्] भूख (धर्मसं १०६२)।

खुधिय वि [क्षुधित] क्षुधातुर, भूखा (सूअ १, ३, १)।

खुन्न देखो खुण्ण = क्षुण्ण (पि ५६८)।

खुन्न देखो खुण्ण = (दे) (पाअ)।

खुप्प सक [प्लुप्] जलाना। खुप्पइ (प्राकृ ६५)।

खुप्प अक [मस्ज्] डूबना, निमग्न होना। खुप्पइ (हे ४, १०१)। वकृ खुप्पंत (गउड, कुमा, ओघ २३, से १३, ६७)। हेकृ खुप्पिउ (तदु)।

खुप्पिवासा स्त्री [क्षुत्पिपासा] भूख और प्यास (पि ३१८)।

खुब्भ अक [क्षुभ्] १ क्षोभ पाना, क्षुभित होना। २ नीचे डूबना। वकृ खुब्भत (ठा ७—पत्र ३८३)।

खुब्भण न [क्षोभण] क्षोभ, घवडाहट (राज)।

खुभ अक [क्षुभ्] डरना, घवडाना। खुभइ (रयण १८)। कृ खुभियव्व (पण्ह २,३)।

खुभिय वि [क्षुभित] १ क्षोभ-युक्त, घवडाया हुआ (पण्ह १, ३)। २ न. क्षोभ, घवडाहट (ओव)। ३ कलह, झगडा (बृह ३)।

खुम्म अक [क्षुध्] भूख लगना। खुम्मइ (प्राकृ ६८)।

खुम्मिय वि [दे] नमित, नमाया हुआ (णाया १, १—पत्र ४७)।

खुय न [क्षुत] छींक (चेइय ४३३)।

खुर पु [खुर] जानवर के पाँव का नख (सुर १, २४८, गउड, प्रासू १७१)।

खुर पु [क्षुर] छूरा, उस्तरा (णाया १, ८, कुमा, प्रयौ १०७)। °पत्त न [°पत्र] अस्तुरा या उस्तरा, छूरा (विपा १, ६)।

खुरप्प पुन [क्षुरप्र] एक तरह का जहाज (सिरि ३८३)।

खुरप्प पु [क्षुरप्र] १ घास काटने का अस्त्र-विशेष, खुरपा (सम १३४)। २ शर-विशेष, एक प्रकार का बाण (वेणी ११७)।

खुरसाण पुं [खुरशान] १ देश-विशेष (पिंग)। २ खुरशान देश का राजा (पिंग)।

खुरहखुडी स्त्री [दे] प्रणय-कोप (षड्)।

खुरासाण देखो खुरसाण (पिंग)।

खुरि वि [खुरिन्] खुरवाला जानवर (श्राव ३)।

खुरु पुं [खुरु] प्रहरण-विशेष, आयुध-विशेष (सुर १३, १९३)।

खुरुडुक्खुडी स्त्री [दे] प्रणय-कोप (दे २, ७६)।

खुरुप्प देखो खुरप्प (पउम ५९, १६, स १८४)।

खुल क [दे] वह गाँव जहाँ साधुओं को भिक्षा कम मिलती हो या भिक्षा में घृत आदि न मिलता हो (वव १)।

खुल देखो खुम्म। खुलइ (प्राकृ ६६)।

खुलिअ देखो खुडिअ (पिंग)।

खुलुह पु [दे] गुल्फ, पैर की गाँठ, फीली (दे २, ७५, पाअ)।

खुल्ल न [दे] कुटी, कुटीर (दे २, ७४)।

खुल्ल } वि [क्षुल्ल, °क] १ छोटा, लघु,
खुल्लग } क्षुद्र (पण्ण १)। २ पुं द्वीन्द्रिय जीव-विशेष (जीव १)।

खुल्लग देखो खुड्डग (कुप्र २७९)।

खुल्लण (अप) देखो खुड्ड (पिंग)।

खुल्लय वि [क्षुल्लक] १ लघु, क्षुद्र, छोटा (भवि)। २ कपर्दक-विशेष, एक प्रकार की कौडी (णाया १, १८—पत्र २३५)।

खुल्लासय पुं [दे] खलासी, जहाज का कर्मचारी-विशेष (सिरि ३८५)।

खुल्लिरी स्त्री [दे] सकेत (दे २, ७०)।

खंडाहंड वि [खण्डखण्ड] टुकड़ा-टुकड़ा किया हुआ (सुपा ३८५)।

खंडिअ पु [खण्डिक] छात्र, विद्यार्थी (औप)।

खंडिअ वि [खण्डित] छिन्न, विच्छिन्न (हे १, ५३, महा)।

खंडिअ पु [दे] १ मागध, भाट, विरुद-पाठक। २ वि अनिवार्य, निवारण करने को अशक्य (दे २, ७८)।

खंडिआ स्त्री [खण्डिका] खण्ड, टुकडा (अभि ६२)।

खंडिआ स्त्री [दे] नाप-विशेष, बीस मन की नाप (स २४)।

खंडी स्त्री [दे] १ अपद्वार, छोटा गुप्त द्वार (णाया १, १८—पत्र २३६)। २ किले का छिद्र (णाया १, २—पत्र ७६)।

खंडु (अप) देखो खग्ग। गुजराती में 'खाडु' कहते हैं (प्राकृ १२१)।

खंडुअ न [दे] बाहु-वलय, हाथ का आभूषण-विशेष, बाजूबंद (मृच्छ १८१)।

खंडुय देखो खड्ग (पव १४३)।

खंत पु [दे] पिता, बाप (पिंड ४३२, सुख २, ३ ५, ८)

खंत देखो खा।

खंत वि [क्षान्त] क्षमा-शील, क्षमा-युक्त (उप ३२० टी, कप्पू, भवि)।

खंतव्व वि [क्षन्तव्य] क्षमा-योग्य, माफ करने लायक (विक्र ३८, भवि)।

खंति स्त्री [क्षान्ति] क्षमा, क्रोध का अभाव (कप्प, महा, प्रासू ४८)।

खंति देखो खा।

खंतिया } स्त्री [दे] माता, जननी (पिंड
खंती } ४३०, ४३१)।

खंद पुं [स्कन्द] १ कार्तिकेय, महादेव का एक पुत्र (हे २, ५, प्राप्र, णाया १, १—पत्र ३६)। २ राम का स्कन्द नाम का एक सुभट (पउम ६७, ११)। °कुमार पुं [°कुमार] एक जैन मुनि (उव)। °ग्गह पु [°ग्रह] १ स्कन्दकृत उपद्रव, स्कन्दावेश (ज २)। २ ज्वर-विशेष (भग ३, ६)। °मह पु [°मह] स्कन्द का उत्सव (णाया १, १)। °सिरी स्त्री [°श्री] एक चोर-सेनापति की भार्या का नाम (विपा १, ३)।

खंदग } पु [स्कन्दक] १-२ ऊपर देखो। ३
खंदय } एक जैन मुनि (उव, भग, अंत, सुपा ४०८)। ४ एक परिव्राजक, जिसने भगवान् महावीर के पास पीछे से जैन दीक्षा ली थी (पुप्फ ८४)।

खंदरुद्द न [स्कन्दरुद्र] शास्त्र-विशेष (धर्मस ६३५)।

खंदिल पुं [स्कन्दिल] एक प्रख्यात जैनाचार्य, जिसने मथुरा में जैनागमों को लिपि-बद्ध किया (गच्छ १)।

खंध पु [स्कन्ध] भित्ति, भीत, दीवार (आचा २, १, ७, १)।

खंध पुं [स्कन्ध] १ पुद्गल-प्रचय, पुद्गलों का पिण्ड (कम्म ४, ६६)। २ समूह, निकर (विसे ६००)। ३ कन्धा, कांध (कुमा)। ४ पेड का धड़, जहाँ से शाखा निकलती है (कुमा)। ५ छन्द-विशेष (पिंग)। °करणी स्त्री [°करणी] साध्वियों को पहनने का उपकरण-विशेष (ओघ ६७७)। °मंत वि [°मत्] स्कन्धवाला (णाया १, १)। °बीय पुं [°बीज] स्कन्ध ही जिसका बीज होता है ऐसा कदली वगैरह का गाछ (ठा ५, २)। °सालि पुं [°शालिन्] व्यन्तर देवों की एक जाति (राज)।

खंधग्गि पु [दे स्कन्धाग्नि] स्थूल काष्ठों की आग (दे २, ७०, पाअ)।

खंधमंस पु [दे] हाथ, भुजा, बाहु (दे २, ७१)।

खंधमसी स्त्री [दे] स्कन्ध-यष्टि, हाथ (षड्)।

खंधय देखो खंध (पिंग)।

खंधयट्ठि स्त्री [दे स्कन्धयष्टि] हाथ, भुजा, (दे २, ७१)।

खंधर पुस्त्री [कन्धर] ग्रीवा, गला, गरदन (सण)। स्त्री. °रा (महा)।

खंधलट्ठि स्त्री [दे स्कन्धयष्टि] स्कन्ध-यष्टि, हाथ, भुजा (षड्)।

खंधवार देखो खंधावार (महा)।

खंधाआर देखो खंधावार (प्राकृ ३०)।

खंधार पु व [स्कन्धार] देश विशेष (पउम ६८, ६६)।

खंधार देखो खंधावार (पउम ६६, २८, महा, विसे २४४१)।

खंधाल वि [स्कन्धवत्] स्कन्धवाला (सुपा १२६)।

खंधावार पु [स्कन्धावार] छावनी, सैन्य का पडाव, शिविर (णाया १, ८, स ६०३, महा)।

खंधि वि [स्कन्धिन्] स्कन्धवाला (औप)।

खंधिल्ल देखो खंधि (स ६६७)।

खंधी स्त्री देखो खंध (औप)।

खंधीधार पु [दे] बहुत गरम पानी की धारा (दे २, ७२)।

खंप सक [सिच्] सिञ्चना, छिडकना। खंपइ (भवि)।

खंपणय न [दे] वस्त्र, कपडा, 'बहुमेयमिलमलमइलखंपणयचिक्कणसरीरो' (सुपा ११)।

खंभ पु [स्तम्भ] खंभा थंभा (हे १, १८७, २ ४, ८, भग, महा)।

खंभ सक [स्कभ्] क्षुब्ध होना, विचलित होना। खंभेजा, खंभाएज्जा (ठा ५, १—पत्र २६२)।

खंभतित्थ न [स्तम्भतीर्थ] एक जैन तीर्थ, गुजरात का प्राचीन 'खंभणा' गाँव (कुप्र २१)।

खंभल्लिअ वि [स्तम्भित] खंभे से बाँधा हुआ (से ६, ८५)।

खंभाइत्त न [स्तम्भादित्य] गूर्जर देश का एक प्राचीन नगर, जो आजकल 'खंभात' नाम से प्रसिद्ध है (ती २३)।

खंभालण न [स्तम्भालगन] खम्भे से बाँधना (पण्ह १, ३)।

खक्खरग पुन [दे] सूखी रोटी (धर्म २)।

खग्ग पु [खड्ग] १ पशु विशेष, गैंडा (उप १४८, पण्ह १ १)। २ पुंन तलवार, असि (हे १, ३४, स ५३१)। °धेणुआ स्त्री [°धेनु] छुरी, चाकू (दस)। °पुरा स्त्री [°पुरा] विदेह वर्ष की स्वनाम प्रसिद्ध नगरी (ठा २, ३)। °पुरी स्त्री [°पुरी] पूर्वोक्त ही अर्थ (इक)।

खग्गाखग्गि न [खड्गाखड्गि] तलवार की लडाई (सिरि १०३२)।

खेर पुं [दे] एक म्लेच्छ जाति (मृच्छ १५२)।

खेरि स्त्री [दे] १ परिशाटन, नाश, 'धरणखेरिं वा' (वृह २)। २ खेद, उद्वेग। ३ उत्कंठा, उत्सुकता (भवि)।

खेल अक [खेल्] खेलना, क्रीडा करना, तमाशा करना। खेलइ (कप्पू), खेलउ (गा १०६)। वकृ खेलंत (पि २०६)।

खेल पुं [दे] जहाज का कर्मचारी विशेष (सिरि ३८५)।

खेल वि [खेल] खेल करनेवाला, नाटक का पात्र (धर्मवि ६) स्त्री °लिया (धर्मवि ६)।

खेल पुं [श्लेष्मन्] श्लेष्मा कफ, निष्ठीवन, थूक (सम १०, औप, कप्प, पडि)।

खेलण } न [खेलन, °क] १ क्रीडा, खेलणय } खेल। २ खिलौना (आक, स १२७)।

खेलोसहि स्त्री [श्लेष्मौषधि] १ लब्धि-विशेष, जिससे श्लेष्म ओषधि का काम देने लगे (पण्ह २, १, सति ३)। २ वि ऐसी लब्धिवाला (आवम, पव २७०)।

खेल्ल देखो खेल = खेल्। खेल्लइ (पि २०६)। वकृ खेल्लमाण (स ४४)। प्रयो संकृ खेल्लावेऊण (पि २०६)।

खेल्ल देखो खेल = श्लेष्मन (राज)।

खेल्लण देखो खेलग (स २६५)।

खेल्लावण } न [खेलनक] १ खेल कराना, खेल्लावणय } क्रीडा कराना। २ न खिलौना (उप १४२ टी)। °धाई स्त्री [°धात्री] खेल करानेवाली दाई (राज)।

खेल्लिअ न [दे] हसित, हँसी, ठट्ठा (दे २, ७६)।

खेल्लुड देखो खल्लूड (राज)।

खेव पुं [क्षेप] १ क्षेपण, फेंकना (उप ७२८ टी)। २ न्यास, स्थापना (विसे ६१२)। ३ संख्या-विशेष (कम्म ४, ८१, ८४)।

खेव पुं [क्षेप] विलम्ब, देरी (स ७७५)।

खेव पुं [खेद] उद्वेग, खेद, क्लेश, 'न हु कोइ गुरू खेव वहइ सीसेसु संतिसुमहेसु (?)' (पउम ६७, २३)।

खेवण न [क्षेपण] प्रेरण (णाया १, २)।

खेवय वि [क्षेपक] फेंकनेवाला (गा २४२)।

खेविय वि [खेदित] खिन्न किया हुआ (भवि)।

खेह पुंन [दे] धूली, रज, 'वग्गिरतुरगखर-खुरुक्खयखेहाउन्नरिक्खपहे' (सुर ११, १७१)।

खोअ पुं [क्षोद] १ इक्षु, ऊख। २ द्वीप-विशेष, इक्षुवर द्वीप। ३ समुद्र-विशेष, इक्षुरस समुद्र (अणु ९०)।

खोइय वि [दे] विच्छेदित, 'सव्वे सघी खोइया' (सुख २ १५)।

खोउदय पुं [क्षोदोदक] समुद्र-विशेष (सूअ १, ६, २०)।

खोओद देखो खोदोद (सुज्ज १९)।

खोटग } पुं [दे] खूँटी, खूँटा (उप २७८, खोंटय } स २६३)।

खोक्ख अक [खोख्] वानर का बोलना, बन्दर का आवाज करना। खोक्खइ (गा १७१ अ)।

खोक्खा } स्त्री [खोखा] वानर की आवाज खोखा } (गा ५३२)।

खोखुब्भ अक [चोक्षुभ्य्] अत्यन्त भयभीत होना, विशेष व्याकुल होना। वकृ खोखु-ब्भमाण (औप पण्ह १,३)।

खोज्ज पुन [दे] मार्ग-चिह्न (संक्षि ४७)।

खोट्ट सक [दे] खटखटाना, ठकठकाना, ठोकना। कवकृ खोट्टिज्जंत (ओघ ५९७ टी)। संकृ खोट्टेउ (ओघ ५९७ टी)।

खोट्टिय [दे] बनावटी लकडी (नदीटिप्प पत्र १४६)।

खोट्टी स्त्री [दे] दासी, चाकरानी (दे २, ७७)।

खोड पुं [स्फोट] फोडा (प्राकृ १८)।

खोड पुं [दे] १ सीमा-निर्धारक काष्ठ, खूँटा। २ वि धार्मिक, धर्मिष्ठ (दे २, ८०)। ३ खज, लगडा (दे २, ८०, पिंग)। ४ शृगाल, सियार (मृच्छ १८३)। ५ प्रदेश, जगह, 'सिगक्खोडे कलहो' (ओघ ७६ भा)। ६ प्रस्फोटन, प्रमार्जन (ओघ २६५)। ७ न राजकुल में देने योग्य सुवर्ण वगैरह द्रव्य (वव १)।

खोडपज्जालि पुं [दे] स्थूल काष्ठ की अग्नि (दे २, ७०)।

खोडय पुं [क्ष्वोटक] नख से चर्म का निष्पी-डन (हे २, ६)।

खोडय पुं [स्फोटक] फोडा, फुंसी (हे २, ६)।

खोडिय पुं [खोटिक] गिरनार पर्वत का क्षेत्रपाल देवता (ती २)।

खोडी स्त्री [दे] १ बडा काष्ठ (पण्ह १, ३—पत्र ५३)। २ काष्ठ की एक प्रकार की पेटी (महा)। ३ नकली लकडी (३ आव वृ हारि. पत्र ४२१)।

खोणि स्त्री [क्षोणि] पृथिवी, धरणी (सण)। °वइ पुं [°पति] राजा, भूपति (उप ७६८ टी)।

खोणिंद पुं [क्षोणीन्द्र] राजा, भूमिपति (सण)।

खोणी देखो खोणि (सुर १२, ६१, सुपा २३८, रंभा)।

खोद पुं [क्षोद] १ चूर्णन, विदारण (भग १७, ६)। २ इक्षु-रस, ऊख का रस (सूअ १,६)। °रस पुं [°रस] समुद्र-विशेष (दीव)। °वर पुं [°वर] द्वीप-विशेष (जीव ३)।

खोद पुं [क्षोद] चूर्ण, बुकनी (हम्मीर ३४)।

खोदोअ } पुं [क्षोदोद] १ समुद्र-विशेष, खोदोद } जिसका पानी इक्षु-रस के तुल्य मधुर है (जीव ३, इक)। २ मधुर पानीवाली वापी (जीव ३)। ३ न मधुर पानी, इक्षु-रस के समान मिठा जल (पण्ण १)।

खोद्द न [क्षौद्र] मधु, शहद (भग ७, ६)।

खोभ सक [क्षोभय्] १ विचलित करना, धैर्य से च्युत करना। २ आश्चर्य उपजाना। ३ रज पैदा करना। खोभेइ (महा) वकृ. खोभंत (पउम ३, ६९, सुपा ४६३)। हेकृ. खोभित्तए, खोभइउ (उवा, पि ३१६)।

खोभ पुं [क्षोभ] १ विचलता, संभ्रम (आव ५)। २ इस नाम का एक रावण का सुभट (पउम ५६, ३२)।

खोभण न [क्षोभण] क्षोभ उपजाना, विच-लित करना, 'तेलोक्कखोभणकर' (पउम २, ८२, महा)।

खोभिय वि [क्षोभित] विचलित किया हुआ (पउम ११७, ३१)।

खोम } न [क्षौम] १ कार्पासिक वस्त्र, खोमग } कपास का बना हुआ वस्त्र (णाया

खणेत्तु (आचा)। कवकृ खन्नमाण (पि ५४०)।

खण पु [क्षण] काल विशेष, बहुत थोडा समय (ठा २, ४, हे २, २०, गउड, प्रासू १३४)। °जोइ वि [°योगिन्] क्षणमात्र रहनेवाला (सूत्र १, १, १)। °भंगुर वि [°भङ्गुर] क्षण-विनश्वर, क्षणिक (पउम ८, १०५, गा ४२३, विवे ११४)। °या स्त्री [°दा] रात्रि, रात (उप ७६८ टी।

खणक्खण } अक [खणखणाय्] 'खण-
खणखणखण } खण' आवाज करना। खण-खणति (पउम ३६, ५३)। वकृ खण-खणंत (स ३८४)।

खणग वि [खनक] खोदनेवाला (णाया १, १८)।

खणण न [खनन] खोदना (पउम ८६, ६०, उप पृ २२१)।

खणय देखो खण = क्षण (आचा, उवा)।

खणय वि [खनक] खोदनेवाला (दे १, ८५)।

खणाविय वि [खानित] खुदाया हुआ (सुपा ४५८, महा)।

खणि स्त्री [खनि] खान, आकर (सुपा ३५०)।

खणिक } देखो खणिय = क्षणिक, 'महाइया
खणिग } कामगुणा खणिक्का' (श्रु १५२, धर्मसं २२८)।

खणित्त न [खनित्र] खोदने का अस्त्र, खन्ती (दे ४, ४)।

खणिय वि [क्षणिक] १ क्षण-विनश्वर, क्षण-भंगुर (विसे १६७२)। २ वि फुरसत-वाला काम धंधा से रहित, 'नो तुम्हे विव अम्हे खणिया इय वुत्तु नीहरिओ' (धम्म ८ टी)। °वाइ वि [°वादिन्] सर्व पदार्थ को क्षण-विनश्वर माननेवाला, बौद्धमत का अनुयायी (राज)।

खणिय वि [खनित] खुदा हुआ (सुपा २५६)।

खणी देखो खणि (पाअ)।

खणुसा स्त्री [दे] मन का दुःख मानसिक पीडा (दे २, ६८)।

खण्ण न [दे] खात, खोदा हुआ (दे २, ६६, बृह ३, वव १)।

खण्ण वि [खन्य] खोदने योग्य (दे २, ३६)।

खण्णु देखो खाणु (दे २, ६६ पड्)।

खण्णुअ पुं [दे. स्थाणुक] कीलक, खोंटी, खूँटा (दे २, ६८, गा ६४, ४२२ अ)।

खत्त न [दे] १ खात, खोदा हुआ (दे २, ६६, पाअ)। २ शस्त्र से तोडा हुआ (ओघ ३५०)। ३ सेंध, चोरी करने के लिए दीवाल में किया हुआ छेद (उप पृ ११६, णाया १, १८)। ४ खाद, गोबर (उप ५६७ टी)। °खणग पु [°खनक] सेंध लगाकर चोरी करनेवाला (णाया १, १८)। °खणण न [°खनन] सेंध लगाना (णाया १, १८)। °मेह पु [°मेघ] करीष के समान रसवाला मेघ (भग ७, ६)।

खत्त पुं [क्षत्र] क्षत्रिय, मनुष्य जाति-विशेष (सुपा १६७, उत्त १२)।

खत्त वि [क्षात्र] १ क्षत्रिय-सम्बन्धी, क्षत्रिय का। २ न क्षत्रियत्व, क्षत्रियपन, 'अहह अखत्त करेइ कोइ इमो' (धम्म ८ टी, नाट)।

खत्तय पु [दे] १ खेत खोदनेवाला। २ सेंध लगाकर चोरी करनेवाला। ३ ग्रह-विशेष, राहु (भग १२, ६)।

खत्ति पु [दे] एक म्लेच्छ-जाति (मृच्छ १५२)।

खत्ति पुंस्त्री [क्षत्रिन्] नीचे देखो, 'खत्तीण सेट्ठे जह दंतवक्के' (सूत्र १, ६, २२)।

खत्तिअ पुंस्त्री [क्षत्रिय] मनुष्य की एक जाति, क्षत्री, राजन्य (पिंग, कुमा, हे २, १८५, प्रासू ८०)। °कुंडग्गाम पुं [°कुण्डग्राम] नगर विशेष, जहां श्रीमहावीर देव का जन्म हुआ था (भग ६, ३३)। °कुंडपुर न [°कुण्डपुर] पूर्वोक्त ही अर्थ (आचा २, १५, ४)। °विज्जा स्त्री [°विद्या] धनु-विद्या (सूत्र २, २)।

खत्तिणी } स्त्री [क्षत्रियाणी] क्षत्रिय जाति
खत्तियाणी } की स्त्री (पिंग, कप्प)।

खद्द न [दे] प्रभूत लाभ (पंचा १७, २१)।

खद्ध वि [दे] १ भुक्त, भक्षित (दे २, ६७ सुपा ६१०, उप पृ २५२ सण, भवि)। २ प्रचुर, बहुत, 'खद्धे भवदुक्खजले तरइ विणा नेय गुरुतरिं' (सार्ध ११४ दे २, ६७, पंच २, बृह ८)। ३ विशाल, बडा (ओघ ३०७, ठा ३, ४)। ४ अ. शीघ्र, जल्दी (आचा २, १, ६)। °दाणिअ वि. [°दानिक] समृद्ध, ऋद्धि-सम्पन्न (ओघ ८६)।

खन्न [दे] देखो खण्ण (पाअ)।

खन्नमाण देखो खण = खन्।

खन्नुअ [दे] देखो खण्णुअ (पाअ)।

खपुसा स्त्री [दे] एक प्रकार का जूता (बृह ३)।

खप्पर पु [कर्पर] १ मनुष्य-जाति-विशेष, 'पत्ते तम्मि दमएणगेसु पबल ज खप्परगण बल' (रंभा)। २ भिक्षा-पात्र कपाल (सुपा ४६५)। ३ खोपडी, कपाल (हे १, १८१)। ४ घट वगैरह का टुकडा (पउम २०, १६६)।

खप्पर } वि [दे] रूक्ष, रूखा, निष्ठुर
खप्पुर } (दे २ ६६, पाअ)।

खम सक [क्षम्] १ क्षमा करना, माफ करना। २ सहन करना। खमइ (उवर ८३, महा)। कर्म खमिज्जइ (भवि)। कृ खम्मियव्व (सुपा ३०७, उप ७२८ टी, सुर ४, १६७)। प्रयो खमावइ (भवि)। संकृ खमावइत्ता, खमावित्ता (पडि, काल)। कृ खमावियव्व (कप्प)।

खम वि [क्षम] १ उचित, योग्य, 'सचित्तो आहारो न खमो मणसा वि पत्थेउं' (पंच ५४, पाअ)। २ समर्थ, शक्तिमान् (दे १, १७ उप ६५०, सुपा ३)।

खमग पु [क्षमक क्षपक] तपस्वी जैन साधु (उप पृ ३६२, ओघ १४०, भत्त ४४)।

खमण न [क्षपण] तपश्चर्या, बेला, तेला आदि तप (पिंड ३१२)।

खमण न [क्षपण, क्षमण] १ उपवास (बृह १, निचू २०)। २ पु तपस्वी जैन साधु (ठा १०—पत्र ५१४)।

खमय देखो खमग (ओघ ५२४, उप ४८६, भत्त ४०)।

खमा स्त्री [क्षमा] १ पृथिवी, भूमि 'उव्वूढ-खमाभारो' (सुपा ३४८)। २ क्रोध का अभाव क्षान्ति (हे २, १८)। °वइ पु [°पति] राजा, नृप, भूपति (धर्म १६)। °समण पु [°श्रमण] साधु, ऋषि मुनि (पडि)। °हर पुं [°धर] १ पर्वत, पहाड। २ साधु, मुनि (सुपा ३२१)।

हिमाचल पर्वत पर का एक महान् ह्रद, जहाँ से गगा निकलती है (ठा २, ३)। °सोअ पु [°स्रोतस्] गगा नदी का प्रवाह (पि ८५)।

गंगली स्त्री [दे] मौन, चुप्पी (सुपा २७८, ४८७)।

गगा स्त्री [गङ्गा] १ स्वनाम-प्रसिद्ध नदी (कम, सम २७, कप्प)। २ स्त्री-विशेष (कुमा)। ३ गोशालक के मत से काल-परिमाण-विशेष (भग १५)। ४ गगा नदी की अधिष्ठायिका देवी (आवम)। ५ भीष्मपितामह की माता का नाम (णाया १,१६)। °कुड न [°कुण्ड] हिमाचल पर्वत पर स्थित ह्रद-विशेष, जहा से गगा निकलती है (ठा ८)। °कूड न [°कूट] हिमाचल पर्वत का एक शिखर (ठा २, ३) °दीव पु [°द्वीप] द्वीप-विशेष, जहाँ गगा-देवी का भवन है (ठा २, ३)। °देवी स्त्री [°देवी] गगा की अधिष्ठायिका देवी, देवी विशेष (इक)। °वत्त पु [°वर्त्त] आवर्त्त-विशेष (कप्प)। °सय न [°शत] गोशालक के मत मे एक प्रकार का काल-परिमाण (भग १५)। °सागर पु [°सागर] प्रसिद्ध तीर्थ-विशेष, जहा गंगा समुद्र मे मिलती है (उत्त १८)।

गगेअ पु [गाङ्गेय] १ गगा का पुत्र, भीष्म-पितामह (णाया १, १६, वेणी १०४)। २ द्वैक्रिय मत का प्रवर्त्तक आचार्य (आचू १)। ३ एक जैन मुनि, जो भगवान् पार्श्वनाथ के वंश के थे (भग ९, ३२)।

गञ्छ । पु [दे] वरुड, इस नाम की एक गञ्छय म्लेच्छ जाति (दे २, ८४)।

गञ्छिय पु [दे] तेली। गु० घाची (लोक प्र ८६५।१—३१ सर्ग)।

गंज सक [गञ्ज] १ तिरस्कार करना। २ उल्लंघन करना। ३ मर्दन करना। ४ पराभव करना। गजइ (जय ५)। कृ गजणीय (सिरि ३८)।

गज पु [दे] गाल (दे २, ८१)।

गज पु [गञ्ज] भोज्य-विशेष, एक प्रकार की खाद्य वस्तु (पण्ह २, ५—पत्र १४८)। °साला स्त्री [°शाला] तृण, लकडी वगैरह इन्धन रखने का स्थान (निचू १५)।

गजण न [गञ्जन] १ अपमान, तिरस्कार (सुपा ४८०),

'वेरिएणवि रणुप्पन्ना,
वज्झंति गया न चेव केसरिणो।
सभाविज्जइ मरण,
न गजण धीरपुरिसाणं' (वज्जा ४२)।

२ कलक, दाग, 'गजणरहिओ जम्मो' (वज्जा १८)।

गजण वि [गञ्जन] मर्दनकर्ता (सिरि ५४६)।

गजा स्त्री [गञ्जा] सुरा-गृह, मद्य की दूकान (दे २, ८५ टी)।

गजिअ पु [गाञ्जिक] कल्य-पाल, दारू वेचनेवाला, कलाल (दे २, ८५ टी)।

गजिअ वि [गञ्जित] १ पराजित, अभिभूत, 'तग्गरिमगजिओ इव' (उप ९८६ टी)। २ हत, मारा हुआ, विनाशित (पिंग)। ३ पीडित (हे ४, ४०९)।

गजिल्ल वि [दे] १ वियोग-प्राप्त, वियुक्त। २ भ्रान्त-चित्त, पागल (दे २, ८३)।

गंजुल्लिय वि [दे] रोमाञ्चित, पुलकित (जय १२)।

गजोल वि [दे] समाकुल, व्याकुल (षड्)।

गंजोल्लिअ वि [दे] १ रोमाञ्चित, जिसके रोम खडे हुए हो वह (दे २, १००, भवि)। २ न हँसाने के लिए किया जाता अग-स्पर्श, गुदगुदी, गुदगुदाहट (दे २, १००)।

गठ सक [ग्रथ्] १ गठना, गूँथना। २ रचना, बनाना। गठइ (हे ४, १२०, षड्)।

गठ देखो गथ (राय, सूअ २, ५, धर्म २)।

गठि स्त्री [गृष्टि] एकवार व्यायी हुई गौ (प्राकृ ३२)।

गठि पुस्त्री [ग्रन्थि] १ गांठ, जोड। २ वांस आदि की गिरह, पर्व (हे १, ३५, ४, १२०)। ३ गठरी, गाठ (णाया १, १, औप)। ४ रोग-विशेष (लहुअ १५)। ५ राग-द्वेष का निविड परिणाम-विशेष (उप २५३),

'गठित्ति सुदुब्भेओ कक्खडघणरूढगूढगंठि व्व।
जीवस्स कम्मजणिओ घणरागद्दोसपरिणामो'

(विसे ११९५)।

°छेअ पु [°च्छेद] गाँठ तोडनेवाला, चोर-विशेष, पाकेटमार (दे २, ८६)। °भेय पुं [°भेद] ग्रन्थि का भेदन (धर्म १)। °भेयग वि [°भेदक] १ ग्रन्थि को भेदनेवाला। २ पुं. चोर-विशेष (णाया १, १८, पण्ह १, ३)। °वण्ण पु [°पर्ण] सुगन्धि गाछ विशेष (कप्पू)। °सहिय वि [°सहित] १ गाँठ-युक्त। २ न प्रत्याख्यान-विशेष, व्रत-विशेष (धर्म २, पडि)।

गठिम न [ग्रन्थिम] १ ग्रन्थन से बनी हुई माला वगैरह (पण्ह २, ५, भग ९, ३३)। २ गुल्म-विशेष (पण्ण १—पत्र ३२)।

गठिय वि [ग्रथित] गूँथा हुआ गठा हुआ, पिरोया हुआ (कुमा)।

गठिय वि [ग्रन्थिक] गाँठवाला (सूअ २, ५)।

गठिल्ल वि [ग्रन्थिमत्] ग्रन्थि-युक्त, गाँठ-वाला (राज)।

गड पु [दे] १ वन, जंगल। २ दाण्डपाशिक, कोतवाल। ३ छोटा मृग (दे २, ९९)। ४ नापित, नाई (दे २, ९९, आचा २, १, २)। ५ न गुच्छ, समूह, 'कुसुमदामगडमुवट्ठविय' (महा)।

गंड पुंन [गण्ड] १ गाल, कपोल (भग, सुपा ८)। २ रोग-विशेष, गण्डमाला, 'ता मा करेह वीय गडोवरिफोडियातुल्ल (उप ७६८ टी आचा)। ३ हाथी का कुम्भस्थल (पव २६)। ४ कुच, स्तन (उत्त ८)। ५ ऊख का जत्था, इक्षु-समूह (उप पृ ३५९)। ६ छन्द-विशेष (पिंग)। ७ फोडा, स्फोटक (उत्त १०)। ८ गाठ, ग्रन्थि (अवि १७, अभि १८४)। °भेअ, °भेअअ पु [°भेदक] चोर-विशेष पाकेटमार (अवि १७ अभि १८४)। °माणिया स्त्री [°माणिका] धान्य का एक प्रकार की नाप (राय)। °माला स्त्री [°माला] रोग-विशेष, जिसमे गला फूल जाती है (सण)। °यल न [°तल] कपोल-तल (सुर ४, १२७)। °लेहा स्त्री [°लेखा] कपोल-पाली, गाल पर लगाई हुई कस्तूरी वगैरह की छटा (निर १,१, गउड)। °वच्छा स्त्री [°वक्षस्का] पीन स्तनो से युक्त छाती-वाली स्त्री (उत्त ८)। °वाणिया स्त्री [°पाणिका] वाँस का पात्र-विशेष, जो डाला से छोटा होता है (भग ७, ८)। °वास पु [°पार्श्व] गाल का पार्श्व-भाग (गउड)।

खरिअ वि [दे] भुक्त, भक्षित (दे २, ६७, भवि)।
खरिआ स्त्री [दे] नौकरानी, दासी (ओघ ४३८)।
खरिसुअ पुं [दे खरिंशुक] कन्द-विशेष (श्रा २०)।
खरुट्टी स्त्री [खरोष्ट्री] एक प्राचीन लिपि जो दाहिने से बाएँ को लिखी जाती थी। गाधार लिपि। देखो, खरोट्टिआ (पराग १)।
खरम्ह वि [दे] १ कठिन, कठोर। २ स्थपुट, विषम और ऊँचा (दे २, ७८)।
खरोट्टिआ स्त्री [खरोष्ट्रिका] लिपि-विशेष (सम ३५)।
खल अक [स्खल] १ पडना, गिरना। २ भूलना। ३ रुकना। खलइ (प्राप्र)। वकृ. खलत, खलमाण (से २, २७, गा ५४६, सुपा ६४१)।
खल अक [स्खल्] अपसरण करना, हटना। खलाहि (उत्त १२, ७)।
खल अ [खलु] पाद पूर्ति मे प्रयुक्त होता अव्यय (प्राकृ ८१)।
खल वि [खल] १ दुर्जन, अधम मनुष्य (सुर १, १६)। २ न धान साफ करने का स्थान (विपा १ ८, श्रा १४)। °पू वि [°पू] खलिहान या खलियान को साफ करनेवाला (कुमा, षड्, प्रामा)।
खलइअ वि [दे] रिक्त, खाली (दे २, ७१)।
खलक्खल अक [खलखलाय्] 'खल खल' आवाज करना। खलक्खलेइ (पि ५५८)।
खलगंडिअ वि [दे] मत्त, उन्मत्त (दे २, ६७)।
खलण न [स्खलन] १ नीचे देखो (आचा, से ८, ५५, गा ४६६, वज्जा २६)।
खलणा स्त्री [स्खलना] १ गिर जाना, निपतन (दे २, ६४)। २ विराधना, भजन (ओघ ७८८)। ३ अटकायत, रुकावट, 'होजा गुणो, ण खलणं करेमि जइ अस्स वसणम्स' (उप ३३६ टी)।
खलभालय वि [दे] क्षुब्ध, क्षोभ-प्राप्त (भवि)।
खलहर } पु [खलखल] नदी के प्रवाह की
खलहल } आवाज, 'वहमाणवाहिणीणं दिसि-दिसिसुव्वतखलहरासद्दो' (सुर ३, ११, २, ७५)।

खला अक [दे] खराब करना, नुकसान करना, 'ताणवि खलो खलाइ य' (पउम ३७,६३)।
खलिअ वि [स्खलित] १ रुका हुआ। २ गिरा हुआ पतित (हे २, ७७, पाअ)। ३ न. अपराध, गुनाह। ४ भूल (से १, ६)।
खलिअ वि [खलिक] खल से व्याप्त, खलि-खचित (दे ४, १०)।
खलिण पुन [खलिन] १ लगाम (पाअ)। २ कायोत्सर्ग का एक दोष (पव ५)।
खलिया स्त्री [खलिका] तिल वगैरह का तैल-रहित चूर्ण, खली, खरी (सुपा ४१४)।
खलियार सक [खली + कृ] १ तिरस्कार करना, धुत्कारना। २ ठगना। ३ उपद्रव करना। खलियारसि, खलियारेंति (सुपा २३७, स ४६८)।
खलियार पु [खलिकार] तिरस्कार, निर्भर्त्सना (पउम ३६, ११६)।
खलियारण न [खलीकरण] तिरस्कार (पउम ३६, ८४)।
खलियारणा स्त्री [खलीकरणा] वञ्चना, ठगाई (स २८)।
खलियारिअ वि [खलीकृत] १ तिरस्कृत (पउम ६६, २)। २ वञ्चित, ठगा हुआ (स २८)।
खलिर वि [स्खलितृ] स्खलन करनेवाला (वज्जा ५८, सण)।
खली स्त्री [दे खली] तिल-पिण्डिका, तिल वगैरह का स्नेहरहित चूर्ण, खली (दे २,६६, सुपा ४१५, ४१६)।
खलीकय देखो खलियारिअ (चउ ४४)।
खलीकर देखो खलियार = खली + कृ। खली-करेइ (स २७)। कर्म खलीकरीयइ, खली-किज्जइ (स २८, सण)।
खलीण न [खलीन] देखो खलिण (सुपा ७७, स ५७४)। २ नदी का किनारा, 'खलीणमट्टिय खणमाणे' (विपा १, १—पत्र—१६)।
खलु अ [खलु] विशेष-सूचक अव्यय (दसनि ४, १६)।
खलु अ [खलु] इन अर्थो का सूचक अव्यय— १ अवधारण, निश्चय (जी ७)। २ पुन, फिर (आचा)। ३ पादपूर्ति और वाक्य की शोभा के लिए भी इसका प्रयोग होता है (आचा, निचू १०)। °खित्त न [°क्षेत्र] जहां पर जरूरी चीज मिले वह क्षेत्र (वव ८)।

खलुंक पु [दे] १ गली बैल, अविनीत बैल, (ठा ४, ३—पत्र २४८)। २ अविनीत शिष्य, कुशिष्य (उत्त २७)।
खलुकिज्ज पु [दे] १ गली बैल सबन्धी। २ न उत्तराध्ययन सूत्र का इस नाम का एक अध्ययन (उत्त २७)।
खलुग देखो खलुय (पव ६२)।
खलुय न [खलुक] गुल्फ, पाँव का मणि-बन्ध (विपा १, ६)।
खल्ल न [दे] १ बाड का छिद्र। २ विलास (दे २, ७७)। ३ वि. खाली, रिक्त, 'जाया खल्लकवोला परिसोसियमससोणिया धणिय' (उप ७२८ टी, दे १, ३८)।
खल्ल वि [दे] निम्न-मध्य, जिसका मध्य भाग नीचा हो वह (दे १, ३८)।
खल्लइअ वि [दे] १ सकुचित, संकोच-युक्त। २ प्रहृष्ट, हर्षयुक्त (दे २, ७९, गउड)।
खल्लग } पुन [दे] १ पत्र, पत्ता। २ पत्र-
खल्लय } पुट, पत्तो का बना हुआ पुडवा या दोना (सूअ १, २, २, १६ टी, पिंड २१०, बृह १)।
खल्लग } पु न [दे] १ पाँव का रक्षण
खल्लय } करनेवाला चमडा, एक प्रकार का जूता (धर्म ३)। २ थैला (उप १०३१ टी)।
खल्ला स्त्री [दे] चर्म, चमडा, खाल (दे २, ६६, पाअ)।
खल्लाड देखो खल्लीड (निचू २०)।
खल्लिरा स्त्री [दे] संकेत (दे २, ७०)।
खल्लिहड (अप) देखो खल्लीड (हे ४, ३८६)।
खल्ली स्त्री [दे] सिर का वह चमडा, जिसमे केश पैदा न होता हो (आवम)।
खल्लीड पुं [खल्वाट] जिसके सिर पर बाल न हो, गजा, चदला (हे १, ७४, कुमा)।
खल्लूड पुं [खल्लूट] कन्द-विशेष (पराग १—पत्र ३६)।
खव सक [क्षपय्] १ नाश करना। २ डालना, प्रक्षेप करना। ३ उल्लघन करना। खवेइ (उव), खवयति (भग १८, ७)। कर्म. खविज्जति (भग)। वकृ. खवेमाण (णाया

सुगन्धित लेप-द्रव्य (विपा १, ६)। °वट्टि स्त्री [°वर्त्ति] गन्ध-द्रव्य की बनाई हुई गोली (गाया १, १, औप)। °वह पुं [°वह] पवन, वायु (कुमा, गा ५४२)। °वास पु [°वास] १ सुगन्धित वस्तु का पुट। २ चूर्ण-विशेष (सुपा ६७)। °समिद्ध त्रि [°समृद्ध] १ सुगन्धित, सुगन्ध पूर्ण। २ न नगर-विशेष (आवम, इक)। °सालि पुं [°शालि] सुगन्धित व्रीहि, धान (आवम)। °हत्थि पुं [°हस्तिन्] उत्तम हस्ती, जिसकी गन्ध से दूसरे हाथी भग जाते हैं (नम १, पडि)। °हरिण पुं [°हरिण] कस्तूरिया हिरन (कप्पू)। °हारग पु [°हारक] १ इस नाम का एक म्लेच्छ देश। २ गन्धहारक देश का निवासी (पण्ह १, १—पत्र १४)।

गंधण पु [गन्धन] एक सर्प-जाति (दस २, ८)।

गंधपिसाय पु [दे] गन्धिक, पसारी (दे २, ८७)।

गंधय देखो गंध (महा)।

गंधलया स्त्री [दे] नासिका, घ्राण (दे २,८५)।

गंधवाह पु [गन्धवाह] पवन (समु १८०)।

गंधव्व पुं [गन्धर्व] १ देव-गायक, स्वर्ग-गायक (उत्त १, सण)। १ एक प्रकार की देव-जाति, व्यंतर देवों की एक जाति (पण्ह १, ४, औप)। ३ यक्ष-विशेष, भगवान् कुन्थुनाथ का शासनाधिष्ठायक यक्ष (संति ८)। ४ न. मुहूर्त्त-विशेष (सम ५१)। ५ नृत्य-युक्त गीत, गान (विपा १, २)। °कंठ न [°कण्ठ] रत्न की एक जाति (राय)। °घर न [°गृह] संगीत-गृह, संगीतालय, संगीत का अभ्यास-स्थान (ज १)। °णगर, °नगर न [°नगर] असत्य-नगर, सन्ध्या के समय में आकाश में दीखता मिथ्या-नगर, जो भावी उत्पात का सूचक है (अणु, पव १६८)। °पुर न [°पुर] देखो °णगर (गउड)। °लिवि स्त्री [°लिपि] लिपि-विशेष (सम ३५)। °विवाह पुं [°विवाह] उत्सव-रहित विवाह, स्त्री-पुरुष की इच्छा के अनुसार विवाह (सण)। °साला स्त्री [°शाला] गान-शाला, संगीत-गृह, संगीतालय (वव १०)।

गंधव्व वि [गन्धर्व] १ गंधर्व-संबन्धी, गंधर्व से सबन्ध रखनेवाला (ज १, अभि ११५)। २ पु. उत्सव-हीन विवाह, विवाह-विशेष, 'गंधव्वेण विवाहेण सयमेव विवाहिया' (आवम)। ३ न गीत, गान (पाअ)।

गंधव्वि वि [गन्धर्विन्] गानेवाला (ती ३)।

गंधव्विअ वि [गान्धर्विक] १ गंधर्व-विद्या में कुशल (सुपा १९९)।

गंधा स्त्री [गन्धा] नगरी-विशेष (इक)।

गंधाण न [गन्धान] छन्द-विशेष (पिंग)।

गंधार पु [गन्धार] देश-विशेष, कन्धार (स ३८)। २ पर्वत-विशेष (स ३९)। ३ न. नगर-विशेष (स ३८)।

गंधार पु [गान्धार] स्वर विशेष, रागिनी-विशेष (ठा ७)।

गंधारी स्त्री [गान्धारी] १ सती विशेष, कृष्ण वासुदेव की एक स्त्री (पडि, अंत १५)। २ विद्यादेवी-विशेष (संति ६)। ३ भगवान् नमिनाथ की शासनदेवी (संति १०)।

गंधारी स्त्री [गान्धारी] विद्या-विशेष (सूअ २, २, २७)।

गंधावइ } पुं [गन्धापातिन्] स्वनाम-प्रसिद्ध
गंधावाइ } एक वृत्त, वैताढ्य पर्वत (इक, ठा २, ३—पत्र ६९, ८०; ठा ४, २—पत्र २२३)।

गंधि वि [गन्धिन्] गंध-युक्त, गंधवाला (कप्प, गउड)।

गंधिअ वि [दे] दुर्गन्ध, खराब गन्धवाला (दे २, ८३)।

गंधिअ पु [गान्धिक] गन्ध-द्रव्य बेचनेवाला, पसारी (दे २, ८७)।

गंधिअ वि [गन्धिक] गंध-युक्त, 'सुगन्धवर-गन्धगन्धिए' (औप)। °साला स्त्री [°शाला] दारू वगैरह गन्धवाली चीज की दूकान (वव ६)।

गंधिअ वि [गन्धित] गन्ध-युक्त, गन्धवाला (स ३७२, गा ५४५, ८७२)।

गंधिल पुं [गन्धिल] वर्ष-विशेष, विजय-क्षेत्र-विशेष (ठा २, ३, इक)।

गंधिलावई स्त्री [गन्धिलावती] १ क्षेत्र-विशेष, विजयवर्ष-विशेष (ठा २, ३, इक)। २ नगरी-विशेष (द्र ६१)। °कूड न [°कूट] १ गन्धमादन पर्वत का एक शिखर (ज ४)। २ वैताढ्य पर्वत का शिखर-विशेष (ठा ६)।

गंधिल्ली स्त्री [दे] छाया, छांह (उप १०३१ टी)।

गंधुत्तमा स्त्री [गन्धोत्तमा] मदिरा, सुरा (दे २, ८६)।

गंधेल्ली स्त्री [दे] १ छाया, छांह। २ मधु-मक्षिका (दे २, १००)।

गंधोदग } न [गन्धोदक] सुगन्धित जल,
गंधोदय } सुगन्ध-वासित पानी (औप, विपा १, ६)।

गंधोल्ली स्त्री [दे] १ इच्छा, अभिलाषा। २ रजनी, रात (दे २, ९९)।

गंप्पि }
गंप्पिणु } देखो गम = गम्।

गंभीर न [गाम्भीर्य] १ गम्भीरता। २ अनौद्धत्य (सूअनि ६६)।

गंभीर वि [गम्भीर] १ गम्भीर, अस्ताघ, अतुच्छ, गहरा (औप, से ६, ४४, कप्प)। २ पुन गहन-स्थान, गहन प्रदेश, जहां प्रति-शब्द उत्थित हो (विसे ३४०४, बृह १)। ३ पुं. रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३)। ४ यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र (अंत ३)। ५ न. समुद्र के किनारे पर स्थित इस नाम का एक नगर (सुर १३, ३०)। °पोय न [°पोत] नगर-विशेष (णाया १, १७)। °मालिणी स्त्री [°मालिनी] महा-विदेह-वर्ष की एक नगरी (ठा २ ३)।

गंभीरा स्त्री [गम्भीरा] १ गंभीर-हृदया स्त्री (वव ५)। २ मात्रा-छन्द का एक भेद (पिंग)। ३ क्षुद्र जंतु-विशेष, चतुरिन्द्रिय जीव विशेष (पण्ण १)।

गंभीरिअ न [गाम्भीर्य] गम्भीरता, गम्भीरपन (हे २, १०७)।

गंभीरिम पुस्त्री [गाम्भीर्य] ऊपर देखो (सण)।

गगण न [गगन] आकाश, अम्बर (कप्प, स ३४८)। °णंदण न [°नन्दन] वैताढ्य पर्वत पर का एक नगर (इक)। °वल्लभ, °वल्लह न [°वल्लभ] वैताढ्य पर्वत पर का एक नगर (राज, इक)।

गगणंग पुंन [गगनाङ्ग] छन्द-विशेष (पिंग)।

अ पाएिए अ तह गहिओ मंडलो अडअणाए' (गा ६६२, पउम १४, १३६)।

खाण न [ख्यान] कथन, उक्ति (राज)।

खाणि स्त्री [खानि] खान, आकर (दे २, ६६, कुमा, सुपा ३४८)।

खाणिअ वि [खानित] खुदवाया हुआ (हे ३, ५७)।

खाणी देखो खाणि (पाअ)।

खाणु } पुं [स्थाणु] स्थाणु, ठूठा वृक्ष, अचल
खाणुय } (पएह २, ५, हे २, ७ कम)।

खादि देखो खाइ = ख्याति (सक्षि ६)।

खाम सक [क्षमय्] खमाना, माफी मांगना। खामेइ (भग)। कर्म खामिज्जइ, खामीअइ (हे ३, १५३)। संकृ खामेत्ता (भग)।

खाम वि [क्षाम] १ कृश, दुर्बल, 'खामप डुकवोल' (उप ६८६ टी, पाअ)। २ क्षीण, अशक्त (दे ६, ४६)।

खामण न [क्षमण] खमाना (श्रावक ३६५)।

खामणा स्त्री [क्षमणा] क्षमापना, माफी मांगना, क्षमा-याचना (सुपा ५६४, विवे ७६)।

खामिय वि [क्षमित] १ जिसके पास क्षमा मांगी गई हो वह, खमाया हुआ (विसे २३८८, हे ३, १५२)। २ सहन किया हुआ। ३ विलम्बित, विलम्ब किया हुआ, 'तिरिएण अहोरत्ता पुण न खामिया मे कयतेण (पउम ४३, ३१, हे ३, १५३)।

खाय पु [खाद] पांचवीं नरक-भूमि का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ११)।

खायर देखो खाइर (कर्म ६)।

खार पु [क्षार] १ एक नरक स्थान (देवेन्द्र ३०) २ भुजपरिसर्प की एक जाति (सूअ २ ३, २५)। ५ वैर, दुश्मनी (सुख १, ३)। °डाह पुन [°दाह] क्षार पकाने की भट्ठी (आचा २, १०, २)। °तंत पुंन [°तन्त्र] आयुर्वेद का एक भेद, वाजीकरण (ठा ८—पत्र ४२८)।

खार पु [क्षार] १ क्षरण, झरना, सचलन (ठा ८)। २ भस्म, खाक (णाया १, १२)। ३ खार, क्षार, लवण-विशेष (सूअ १, ७)। ४ लवण, नोन (वृह ४)। ५ जानवर-विशेष (पएण १)। ६ सर्जिका, सज्जी (सूअ १,४,२)। ७ वि कटु या चरपरा स्वादवाला, कटु चीज (पएण १७—पत्र ५३०)। ८ खारी चीज, नमकीन स्वादवाली वस्तु (भग ७, ६, सूअ १, ७)। °तउसी [°त्रपुषी] कटु त्रपुषी, वनस्पति-विशेष (पएण १७)। °तिल्ल न [°तैल] खारे से सस्कृत तैल (पएह २, ५)। °मेह पुं [°मेघ] क्षार रसवाले पानी की वर्षा (भग ७, ६)। °वत्तिय वि [°पात्रिक] क्षार-पात्र मे जिमाया हुआ। २ क्षार-पात्र का आधार भूत (ओप)। °वत्तिय वि [°वृत्तिक] खार मे फेंका हुआ, खार से सींचा हुआ (ओप, दसा ६)। °वावी स्त्री [°वापी] क्षार से भरी हुई वापी, कूँआ (पएह १, १)।

खारफिडी स्त्री [दे] गोधा, गोह, जन्तु-विशेष (दे २, ७३)।

खारदूसण वि [खारदूषण] खरदूषण का, खरदूषण-सम्बन्धी (पउम ४५, १५)।

खारय न [दे] मुकुल, कली (दे २, ७३)।

खारायण पुं [क्षारायण] १ ऋषि-विशेष। २ माण्डव्यगोत्र के शाखाभूत एक गोत्र (ठा ७)।

खारि स्त्री [खारी] एक प्रकार की नाप, ३४ सेर की तौल (गा ८१२)।

खारिंभरी स्त्री [खारिम्भरी] खारी-परिमित वस्तु जिसमें अट सके ऐसा पात्र भर दूध देनेवाली (गा ८१२)।

खारिक्क न [दे] फल-विशेष, छुहारा (सिरि ११६६)।

खारिय वि [क्षारित] १ स्रावित, झराया हुआ (वव ६)। २ पानी में घिसा हुआ (भवि)।

खारी देखो खारि (गा ८१२, जो १)।

खारुगणिय पु [क्षारुगणिक] १ म्लेच्छ देश-विशेष। २ उसमें रहनेवाली म्लेच्छ जाति (भग १२, २)।

खारोदा स्त्री [क्षारोदा] नदी-विशेष (राज)।

खाल सक [क्षालय्] धोना, पखारना, पानी से साफ करना। कृ. खालणिज्ज (उप ३२६)।

खाल स्त्रीन [दे] नाला, मोरी, गदगी निकलने का मार्ग (ठा २, ३) स्त्री खाला (कुमा)।

खालण न [क्षालन] प्रक्षालन, पखारना (सुपा ३२८)।

खालिअ वि [क्षालित] धौत, धोया हुआ (ती १३)।

खावण न [ख्यापन] प्रतिपादन (पंचा १०, ७)।

खावणा स्त्री [ख्यापना] प्रसिद्धि प्रकथन, 'अक्खाणं खावणाविहाणं वा' (विसे)।

खावियंत वि [खाद्यमान] जिसको खिलाया जाता हो वह, 'कागणिमसाइं खावियंत' (विपा १, २—पत्र २४)।

खावियग वि [खादितक] जिसको खिलाया गया हो वह, 'कागणिमंसखावियगा' (ओप)।

खावेंत वि [ख्यापयत्] प्रख्याति करता हुआ, प्रसिद्धि करता हुआ (उप ८३३ टी)।

खास अक [कास्] खांसना, खाँसी खाना। खासई (तंदु १६)।

खास पुं [कास] रोग विशेष, खांसी की बीमारी, खांसी (विपा १, १, सुपा ४०४, सण)।

खासि वि [कासिन्] खांसी का रोगवाला (सुपा ५७६)।

खासिअ न [कासित] खांसी, खांसना (हे १, १८१)।

खासिअ पु [खासिक] १ म्लेच्छ देश विशेष। २ उसमें रहनेवाली म्लेच्छ जाति (पएह १, १—पत्र १४, इक, सूअ १, ५, १)।

खि अक [क्षि] क्षीण होना। कर्म 'खिज्जइ भवसतती' (स ६८४)। खीयंति, खीयते (कम्म ६, ६६, टी)।

खिइ स्त्री [क्षिति] पृथिवी, धरा (पउम २०, १५६, स ४१६)। °गोयर पु [°गोचर] मनुष्य, मानुष, आदमी (पउम ५३, ४३)। °पइट्ठ न [°प्रतिष्ठ] नगर-विशेष (स ६)। °पइट्ठिय न [°प्रतिष्ठित] १ इस नाम का एक नगर (उप ३२० टी, स ७)। २ राजगृह नाम का नगर, जो आजकल विहार में 'राजगिर' नाम से प्रसिद्ध है (ती १०)। °सार पु [°सार] इस नाम का एक दुर्ग (पउम ८०, ३)।

खिख अक [सिङ्ख्] खिंखि आवाज करना। खिखेइ। वकृ. खिखियंत (सुख २, ३३)।

खिंखिणिया स्त्री [किङ्किणिका] क्षुद्र घण्टिका (उवा)।

गण पुं [गण] १ समूह, समुदाय. यूथ, थोक (जी ३४, कुमा, प्रासू ४, ७५, १५१)। २ गच्छ, समान आचार व्यवहारवाले साधुओं का समूह (कप्प)। ३ छन्द-शास्त्र प्रसिद्ध मात्रा-समूह (पिंग)। ४ शिव का अनुचर (पाअ, कुमा)। ५ मल्लो का समुदाय (अणु)। °ओ अ [°तस्] अनेकश, बहुश (सूअ २, ६)। °नायग पुं [°नायक] गण का मुखिया (णाया १, १)। °नाह पु [°नाथ] १ गण का स्वामी, गण का मुखिया (सुपा २, १०)। २ गणधर, जिनदेव का प्रधान शिष्य (पउम १२, ६)। ३ आचार्य, सूरि (सार्ध २३)। °भाव पुं [°भाव] विवेक-विशेष (गउड)। °राय पु [°राज] १ सामन्त राजा (भग ७, ६)। २ सेनापति (आव ३, कप्प)। °वइ पु [°पति] १ गण का स्वामी। २ गणेश, गजानन, शिवपुत्र (गा ३७२ गउड)। ३ जिनदेव का मुख्य शिष्य, गणधर (सिग्घ २)। °सामि पु [°स्वामिन्] गण का मुखिया, गणधर (उप २८० टी)। °हर पुं [°धर] १ जिनदेव का प्रधान शिष्य (सम ११३)। २ अनुपम ज्ञानादिगुण-समूह को धारण करनेवाला जैन साधु, आचार्य वगैरह, 'सिज्जंभवं गणहरं' (आवम, पव २७६)। °हरिंद पु [°धरेन्द्र] गणधरो मे श्रेष्ठ, प्रधान गणधर (पउम ३, ४३, ५८, १)। °हारि पुं [°धारिन्] देखो °हर (गण २३, सार्ध १)। °जीव पु [°जीव] गण के नाम से निर्वाह करनेवाला (ठा ५, १)। °वच्छेइय, °वच्छेदय, °वच्छेयय पु [°वच्छेदक] साधु-गण के कार्य की चिन्ता करनेवाला साधु (आचा २, १, १०, ठा ३, ३, कप्प)। °हिवइ पुं [°धिपति] १ शिव-पुत्र, गजानन, गणेश (गा ४०३, पाअ)। २ जिनदेव का प्रधान-शिष्य (पउम २६,४)।

गणग पुं [गणक] १ ज्योतिषी, जोशी, ज्योतिष-शास्त्र का जानकार, दैवज्ञ (णाया १, १)। २ भंडारी, भाण्डागारिक (णाया १, १—पत्र १६)।

गणण न [गणन] गिनती, संख्यान (वव १)।

गणणा स्त्री [गणना] गिनती, संख्या, संख्यान (सुर २, १३२, प्रासू १००, सूअ २, २)।

गणणाइआ स्त्री [दे. गण-नायिका] पार्वती, चण्डी, शिवपत्नी (दे २, ८७)।

गणय देखो **गणग** (औप, सुपा २०३)।

गणसम वि [दे] गोष्ठी-रत, गोठ मे लीन (दे २, ८७)।

गणायमह पुं [दे] विवाह-गणक (दे २, ८६)।

गणाविअ वि [गणित] गिनती कराया हुआ (स ६२६)।

गणि वि [गणिन्] १ गण का स्वामी, गण का मुखिया। स्त्री. **गणिणी** (सुपा ६०२)। २ पुं. आचार्य, गच्छनायक, साधु-समुदाय का नायक (ठा ८)। ३ जिनदेव का प्रधान साधु-शिष्य (पउम ६१, १०)। ४ परिच्छेद, निश्चय, सिद्धान्त (णदि)। °पिडग न [°पिटक] १ बारह मुख्य जैन आगम ग्रन्थ, द्वादशाङ्गी (सम १, १०६)। २ निर्युक्ति वगैरह से युक्त जैन आगम (औप)। ३ पुं. यक्ष-विशेष, जिन-शासन का अधिष्ठायक देव (संति ४)। ४ निश्चय-समूह, सिद्धान्त-समूह (णदि)। °विज्जा स्त्री [°विद्या] १ शास्त्र-विशेष। २ ज्योतिष और निमित्त शास्त्र का ज्ञान (णदि)।

गणि पुस्त्री [गणि] अध्ययन, परिच्छेद, प्रकरण (णंदि १४३)।

गणिम न [गणिम] गिनती से बेची जाती वस्तु, सख्या पर जिसका भाव हो वह (श्रा १८, णाया १, ८)।

गणिम न [गणिम] १ गणना, गिनती, सख्या। २ वि संख्येय, जिसकी गिनती की जा सके वह, (अणु १५४)।

गणिय वि [गणित] १ गिना हुआ। २ न गिनती, सख्या (ठा ६, ज २)। ३ जैन साधुओ का एक कुल (कप्प)। ४ अंक गणित, गणित-शास्त्र (णंदि, अणु)। °लिवि स्त्री [°लिपि] लिपि-विशेष, अक-लिपि (सम ३५)।

गणिय पु [गणिक] गणित-शास्त्र का ज्ञाता, 'गणियं जाणइ गणिओ' (अणु)।

गणिया स्त्री [गणिका] वेश्या, गणिका (श्रा १२ विपा १, २)।

गणिर वि [गणयितृ] गिनती करनेवाला (गा २०८)।

गणेत्तिआ } स्त्री [दे] १ रुद्राक्ष का बना
गणेत्ती } हुआ हाथ का आभूषण-विशेष (णाया १, १६—पत्र २१३, औप, भग, महा)। २ अक्ष-माला (दे २, ८१)।

गणेसर पुं [गणेश्वर] १ गण का नायक। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

गण्ण त्रि [गण्य] गणनीय, संख्येय (सबोध १०)।

गण्णा (मा) स्त्री [गणना] गिनती (प्राकृ १०२)।

गत्त न [गात्र] देह, शरीर (औप, पाअ, सुर २, १०१)।

गत्त देखो **गड्ड** (भग १५)। स्त्री. **गत्ता** (सुपा २१४)।

गत्त न [दे] १ ईषा, चौपाई या चारपाई की लकड़ी-विशेष। २ पंक, कर्दम (दे २, ९९)। ३ वि गत, गया हुआ (षड्)।

°**गत्तण** वि [कर्तन] काटनेवाला, छेदक (सूअ १, १५, २४)।

गत्तडि } स्त्री [दे] १ गवादनी, गोचर-भूमि
गत्ताडी } (दे २, ८२)। २ गायिका, गानेवाली स्त्री (षड् दे २, ८२)।

गत्थ त्रि [ग्रस्त] कवलित, ग्रास किया हुआ, 'अइमहच्छणोभगच्छा (? त्था)' (पण्ह १, ३—पत्र ४४, नाट—चैत १४६)।

गद सक [गद्] बोलना, कहना। वकृ **गदत** (नाट—चैत ४५)।

गदि देखो **गइ** = गति (देवेन्द्र ३५१)।

गदुअ (शौ) अ [गत्वा] जाकर (प्राकृ ८८)।

गद्द देखो **गज्ज** = गद्य (प्राकृ २१)।

गद्दतोय पु [गर्दतोय] लोकान्तिक देवो की एक जाति (सम ८५, णाया १, ८)।

गद्दभ पुं [दे] कटु-ध्वनि, कर्ण-कटु आवाज (दे २, ८२, पाअ, स १११, ४२०)।

गद्दभ देखो **गद्दह** = गर्दभ (प्राक)।

गद्दभय देखो **गद्दहय** (आचा २, ३, १, आवम)।

गद्दभाल पु [गर्दभाल] स्वनाम-प्रसिद्ध एक परिव्राजक (भग)।

गद्दभालि पु [गर्दभालि] एक जैन मुनि (ती २५)।

गद्दभिल्ल पु [गर्दभिल्ल] उज्जयिनी का एक राजा (निचू १०, पि २९१, ४००)।

४)। २ न बारहवाँ गुण-स्थानक (सम २६)। °राग वि [°राग] १ वीतराग, राग-रहित। २ पु जिनदेव, तीर्थंकर देव (गच्छ १)।

खीयमाण वि [क्षीयमाण] जिसका क्षय होता जाता हो वह (गा ९८६ टी)।

खीर न [क्षीर] वेला, दो दिन का उपवास (संबोध ५८)। °डिंडिर पु [°डिण्डीर] देव-विशेष (कुप्र ७६)। °डिंडिरा स्त्री [°डिण्डीरा] देवी-विशेष (कुप्र ७६)। °वर पु [°वर] १ समुद्र-विशेष। २ द्वीप विशेष (मुज्ज १९)।

खीर न [क्षीर] १ दुग्ध, दूध (हे २, १७, प्रासू ६३ १६८)। २ पानी, जल (हे २, १७)। ३ पु क्षीरवर समुद्र का अधिष्ठायक देव (जीव ३)। ४ समुद्र विशेष, क्षीर समुद्र (पउम ६६, १८)। कयंब पु [°कदम्ब] इस नाम का एक ब्राह्मण-उपाध्याय (पउम २१, ९)। °काओली स्त्री [°काकोली] वनस्पति-विशेष, खीरविदारी, (पराण १)। °जल पु [°जल] क्षीर समुद्र, समुद्र-विशेष (दीव)। °जलनिहि पु [°जलनिधि] वही पूर्वोक्त अर्थ (सुपा २९५)। °दुम, °द्दुम पु [°द्रुम] दूधवाला पेड, जिसमे दूध निकलता है ऐसे वृक्ष की जाति (ओघ ३४६, निचू १)। °धाई स्त्री [धात्री] दूध पिलानेवाली दाई (णाया १, १)। °पूर पु [°पूर] उबलता हुआ दूध (पराण १७)। °प्पभ पु [°प्रभ] क्षीरवर द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °मेह पु [°मेघ] दूध-समान स्वादवाले पानी की वर्षा (तित्थ)। °वई स्त्री [°वती] प्रभूत दूध देनेवाली (बृह ३)। °वर पुं [°वर] द्वीप-विशेष (जीव ३)। °वारि न [°वारि] क्षीर समुद्र का जल (पउम ६६, १८)। °हर पु [°गृह, °धर] क्षीर-सागर (वज्जा २४)। °ासव पु [°ाश्रव] लब्धि-विशेष, जिसके प्रभाव से वचन दूध की तरह मधुर मालूम हो। २ ऐसी लब्धिवाला जीव (पराह २, १, औप)।

खीरइय वि [क्षीरकित] सजात क्षीर, जिसमे दूध उत्पन्न हुआ हो वह, 'तए ण माली पत्तिया वत्तिआ गब्भिया पसूया आगयगन्धा खीरा (? र) इया बद्धफला' (णाया १, ७)।

खीरि वि [क्षीरिन्] १ दूधवाला। २ पुं जिसमें दूध निकलता है ऐसे वृक्ष की जाति (उप १०३१ टी)।

खीरिज्जमाण वि [क्षीर्यमाण] जिसका दोहन किया जाता हो वह (आचा २, १, ४)।

खीरिणी स्त्री [क्षीरिणी] १ दूधवाली (आचा २, १, ४)। २ वृक्ष-विशेष (पराण १ — पत्र ३१)।

खीरी स्त्री [क्षैरेयी] खीर, पक्वान्न-विशेष (सुपा ६३६, पाअ)।

खीरोअ पुं [क्षीरोद] समुद्र-विशेष, क्षीर-सागर (हे २, १८२, गा ११७, गउड, उप ५३० टी, स ३४४)।

खीरोआ स्त्री [क्षीरोदा] इस नाम की एक नदी (इक ठा २, ३)।

खीरोद देखो खीरोअ (ठा ७)।

खीरोदग } पु [क्षीरोदक] क्षीर-सागर
खीरोदय } (णाया १, ८, औप)।

खीरोदा देखो खीरोआ (ठा ३, ४—पत्र १६१)।

खील } पु [कील, °क] खीला, खूँट,
खीलग } खूँटी (स १०६, सूअ १, ११, हे
खीलव } १, १८१, कुमा)। °मग्ग पु [°मार्ग] मार्ग-विशेष, जहां धूली ज्यादा रहने से खूँटे के निशान बनाये गये हो (सूम १, ११)।

खीलावण न [क्रीडन] खेल कराना, क्रीडा कराना। °धाई स्त्री [°धात्री] खेल कूद करानेवाली दाई (णाया १, १—पत्र ३७)।

खीलिया देखो कीलिआ (जीवस ४८)।

खीलिया स्त्री [कीलिका] छोटी खूँटी (आवम)।

खीव पु [क्षीव] मद-प्राप्त, मदोन्मत्त, मस्त (दे, ८, ६६)।

खु अ [खलु] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ निश्चय, अवधारण। २ वितर्क, विचार। ३ सशय, सदेह। ४ सभावना। ५ विस्मय, आश्चर्य (हे २, १९८, षड्, गा ६, १४२, ४०१, स्वप्न ६, कुमा)।

खु° देखो खुहा (पराह २, ४, सुपा १९८, णाया १, १३)।

खुइ स्त्री [क्षुति] १ छींक। २ छींक का निशान (णाया १, १६, भग ३, १)।

खुइअ वि [दे] १ विच्छिन्न। २ विध्यात, शान्त, 'खुइया चिया' (कुप्र १४०)।

खुखुणय पु [दे] नाक का छिद्र (दे २, ७६, पाअ)।

खुखुणी स्त्री [दे] रथ्या, मुहल्ला (दे २ ७६)।

खुगाह पु [दे] अश्व की एक उत्तम जाति (सम्मत्त २१६)।

खुट पुं [दे] खूँट, खूँटी। °मोडअ वि [°मोटक] १ खूँटे को मोडनेवाला, उससे छूटकर भाग जानेवाला। २ पु इस नाम का एक हाथी (नाट—मृच्छ ८४)।

खुडअ वि [दे] स्खलित, स्खलना-प्राप्त (दे २, ७१)।

खुद (शौ) सक [क्षुद्] १ जाना। २ पीसना, कूटना। खुंददि (प्राकृ ९३)।

खुद अक [क्षुध्] भूख लगना। खुदइ (प्राकृ ६६)।

खुपा स्त्री [दे] वृष्टि को रोकने के लिए बनाया जाता एक तृणमय उपकरण (दे २, ७५)।

खुभण वि [क्षोभण] क्षोभ उपजानेवाला (पराह १, १—पत्र २३)।

खुज्ज अक [परि + अस्] १ फेंकना। २ निराम करना। खुज्जइ (प्राकृ ७२)।

खुज्ज } वि [कुब्ज] १ कूबडा। २ वामन
खुज्जय } (हे १, १८१, गा ५३४)। ३ वक्र, टेढा (ओघ)। ४ एक पार्श्व से हीन (पव ११०)। ५ न. सस्थान-विशेष, शरीर का वामन आकार (ठा ६, सम १४९, औप)। स्त्री खुज्जा (णाया १, १)।

खुज्जिय वि [कुब्जिन्] कूबडा (आचा)।

खुट्ट सक [तुड्] १ तोडना, खण्डित करना, टुकडा करना। २ अक खूटना, क्षीण होना। ३ टूटना, त्रुटित होना। खुट्टइ (नाट—साहित्य २२९, हे ४, ११६), खुट्टति (उव)।

खुट्ट वि [दे] त्रुटित, खण्डित, छिन्न (हे २, ७४, भवि)।

खुड देखो खुट्ट = तुड्। खुडइ (हे ४, ११६)। खुडेंति (से ८, ४८)। वकृ. 'पवगभिन्नमत्थया

१५, १४४)। ४ जाने योग्य। ५ भोगने योग्य—स्वपत्नी वगैरह (सुर १२, ५२)।

गम्म न [गम्य] गमन, 'अगम्मगम्म सुविएोसु धन्न' (सुख ८, १३)।

गम्ममाण देखो गम = गम्।

गय वि [दे] १ घूर्णित, भ्रमित, घुमाया गया (दे २, ८६, षड्)। २ मृत, मरा हुआ, निर्जीव (दे २, ८६)।

गय वि [गत] १ गया हुआ (सुपा ३३४)। २ अतिक्रान्त, गुजरा हुआ (दे १, ५६)। ३ विज्ञात, जाना हुआ (गउड)। ४ नष्ट, हत (उप ७२८ टी)। ५ प्राप्त, 'आघईगयपि सुहए' (प्रासू ८३, १०७)। ६ स्थित, रहा हुआ, 'मणगय' (उत्त १)। ७ प्रविष्ट, जिसने प्रवेश किया हो (ठा ४, १)। ८ प्रवृत्त (सूअ १, १, १)। ९ व्यवस्थित (औप)। १० न गति, गमन, 'उसभो गइदमयगलमुललियगय-विक्कभो भयवं (वसु, सुपा ५७८, आचा)। °पाण वि [°प्राण] मृत, मरा हुआ (आ २७)। °राय वि [°राग] राग-रहित, वीत-राग, निरीह (उप ७२८ टी)। °वइया, °वई स्त्री [°पतिका] १ विधवा, रांड, (औप, पउम २६, ४२)। २ जिसका पति विदेश गया हो वह स्त्री, प्रोषित-भर्तृका (गा ३३२, पउम २६ ८२)। °वय वि [°वयस्] वृद्ध, बुड्ढा (पाअ)। °णुगइअ वि [°ानुग-तिक] अघ, परम्परा का अनुयायी, अंध-श्रद्धालु (उवर ४६)।

गय पुं [गज] १ हाथी, हस्ती, कुजर (अणु, औप, प्रासू १५४, सुपा ३३४)। २ एक अंतकृत् जैन मुनि, गज सुकुमाल मुनि (अंत ३)। ३ इस नाम का एक सेठ (उप ७६८ टी)। ४ रावण का एक सुभट (पउम ५६, २)। °उर न [°पुर] नगर-विशेष, कुरु देश का प्रधान नगर, हस्तिनापुर (उप १०१४, महा, सण)। °कण्ण, °कन्न पुं [°कर्ण] १ द्वीप-विशेष। २ उसमें रहनेवाला (जीव ३, ठा ४,२)। °कलभ पुं [°कलभ] हाथी का बच्चा (राय)। °गय वि [°गत] हाथी के ऊपर आरूढ (औप)। °ग्गपय पु [°ग्रपद] पर्वत-विशेष (आक)। °त्थ वि [°स्थ] हाथी के ऊपर स्थित (पउम ८, ८६)। °पुर देखो °उर (सूअ १, ५, ६)। °बंधय पुं [°बन्धक] हाथी को पकड़नेवाली जाति (सुपा ६४२)। °मारिणी स्त्री [°मारिणी] वनस्पति-विशेष, गुच्छ विशेष (पराण १—पत्र ३२)। °मुह पुं [°मुख] १ गणेश, गणपति, शिव-पुत्र (पाअ)। २ यक्ष-विशेष (गण ११)। °राय पुं [°राज] प्रधान हाथी, श्रेष्ठ हस्ती (सुपा ३८६)। °वइ पुं [°पति] गजेन्द्र, श्रेष्ठ हस्ती (णाया १, १६, सुपा २८६)। °वर पु [°वर] प्रधान हाथी। °वरारि पु [°वरारि] सिंह, शार्दूल, वनराज (पउम १७, ७६)। °वहू स्त्री [°वधू] हथिनी, हस्तिनी (पाअ)। °वीही स्त्री [°वीथी] शुक्र वगैरह महाग्रहो का चार-क्षेत्र-विशेष (ठा ६)। °ससण पु [°श्वसन] हाथी की सूँड (औप)। °सुकुमाल पु [°सुकुमाल] एक प्रसिद्ध जैन मुनि, उसी भव मे मुक्ति-गत जैन साधु-विशेष (अत, पडि)। °ारि पु [°ारि] सिंह, पञ्चानन (भवि)। °ारोह पुं [°ारोह] हस्तिपक, महावत (पाअ)।

गय पुं [गद] रोग, बिमारी (ओप, सुपा ५७८)।

गयक पु [गजाङ्क] देवो की एक जाति, दिक्कुमार देव (औप)।

गयद पुं [गजेन्द्र] श्रेष्ठ हाथी (गउड)।

गयकठ पुं [गजकण्ठ] रत्न-विशेष (राय ६७)।

गयकन्न पुं [गजकर्ण] अनार्य देश-विशेष (पव २७४)।

गयग्गपय न [गजाग्रपद] दशार्णकूट का एक तीर्थ (आचानि ३३२)।

गयण न [गगन] 'ह' अक्षर (सिरि १६६)। °मणि पु [°मणि] सूर्य (कुप्र ५१)।

गयण न [गगन] गगन, आकाश, अम्बर (हे २, १६४, गउड)। °गइ पुं [गति] एक राजकुमार (दंस)। °चर वि [°चर] आकाश में चलनेवाला, पक्षी, विद्याधर वगैरह (सुपा २५०)। °मडल पु [मण्डल] एक राजा (दस)।

गयणरइ पुं [दे] मेघ, मेह, बादल (दे २, ८८)।

गयणिदु पुं [गगनेन्दु] विद्याधर वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ४५),

गयनिमीलिया स्त्री [गजनिमीलिका] उपेक्षा, उदासीनता (मं ५१)।

गयमुह पुं [गजमुख] अनार्य देश-विशेष (पव २७४)।

गयसाउल, गयसमाउल्ल वि [दे] विरक्त, वैरागी (दे ८७, षड्)।

गया स्त्री [गदा] लोहे का या पाषाण का अस्त्र-विशेष, लोहे का मुगदर या लाठी (राय)। °हर पुं [°धर] वासुदेव (उत्त ११)।

गया स्त्री [गदा] एक देव-विमान (देवेन्द्र १३३)।

गया स्त्री [गया] स्वनाम-प्रसिद्ध नगर-विशेष (उप २५१)।

°गर वि [°कर] करनेवाला, कर्त्ता (मण)।

गर पुं [गर] १ विष विशेष, एक प्रकार का जहर (निचू १)। २ ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध ववादि करणो मे से एक (विसे ३३४८)।

°गरण देखो करण (रयण ६३)।

गरल न [गरल] १ विष, जहर (पाअ प्रासू ३६)। २ रहस्य। ३ वि. अव्यक्त, अस्पष्ट; 'अ-गरलाए अ-मम्मणाए' (औप)।

गरलिगाबद्ध वि [गरलिकाबद्ध] निक्षिप्त, उपन्यस्त (निचू १)।

गरह सक [गर्ह्] निन्दा करना, घृणा करना। गरहइ, गरहह (भग)। वक्र गरहत (द्र १५)। कवक्र गरहिज्जमाण (णाया १, ८)। सक्र गरहित्ता (आचा २, १५)। हेक्र गरहित्तए (कस, ठा २, १)। कृ. गरहणिज्ज, गरहणीय, गरहियव्व (सुपा १८४, ३७६, पएह २, १)।

गरहण न [गर्हण] निन्दा, घृणा (पि १३२)।

गरहणया, गरहणा स्त्री [गर्हणा] निन्दा, घृणा (भग १७, ३, औप, पएह २, १)।

गरहा स्त्री [गर्हा] निन्दा, घृणा (भग)।

गरहिअ वि [गर्हित] निन्दित, घृणित (स ६३, द्र ३३, सण)।

°गरिअ वि [कृत] किया हुआ, निर्मित (दे ७, ११)।

गरिट्ठ वि [गरिष्ठ] अति गुरु, बडा भारी (सुपा १०, १२८ प्रासू १५४)।

गरिम पुस्त्री [गरिमन्] गुरुता, गुरुत्व, गौरव (हे १, ३५, सुपा २३, १०६)।

खुव पुं [क्षुप] जिसकी शाखा और मूल छोटे होते हैं ऐसा वृक्ष (णाया १, १—पत्र ६५)।

खुवय पु [दे] तृण-विशेष, कण्टकि-तृण, कँटीला घास (दे २, ७५)।

खुव्व देखो खुभ। खुव्वइ (पड्)।

खुव्वय न [दे] पत्ते का पुडवा, दोना (वव २)।

खुह देखो खुभ। कृ खुहियव्व (सुपा ६१६)।

खुहा स्त्री [क्षुध्] भूख, बुभुक्षा (महा, प्रासू १७३)। °परिसह, °परीसह पुं [°परिषह, °परीषह] भूख की वेदना को शान्ति से सहन करना (उत्त २, पचा १)।

खुहिअ वि [क्षुभित] १ क्षोभ-प्राप्त (से १, ४६, सुपा २४१)। २ क्षोभ, सन्त्रास (ओघ ७)।

खूण न [क्षूण] नुकसान, हानि (सुर ४, ११३, महा)। २ अपराध, गुनाह (महा)। ३ न्यूनता, कमी (सुपा ७, ४३०)।

खेअ सक [खेदय्] खिन्न करना, खेद उपजाना। खेएइ (विसे १४७२; महा)।

खेअ पु [खेद] १ खेद, उद्वेग, शोक (उप ७२८ टी)। २ तकलीफ, परिश्रम (स ३१५)। ३ सयम विरति (उत्त १५)। ४ थकावट, श्रान्ति (आचा)। °ण्ण, °न्न वि [°ज्ञ] निपुण, कुशल, चतुर, जानकार (उप ६०८, ओघ ६४७)।

खेअ देखो खेत्त (सूअ १, ६, आचा)।

खेअ पुं [क्षेप] त्याग, मोचन (से १२, ४८)।

खेअण न [खेदन] १ खेद, उद्वेग। २ वि खेद उपजानेवाला (कुमा)।

खेअर देखो खयर (कुमा, सुर ३,६)। °ाहिव पु [°ाधिप] विद्याधरो का राजा (पउम २८, ५७)। °ाहिवइ पु [°ाधिपति] विद्याधरो का राजा (पउम २८, ४४)।

खेअरिंद पु [खेचरेन्द्र] खेचरो का राजा (पउम ६, ५२)।

खेअरी देखो खहचरी (कुमा)।

खेआलु वि [दे] १ नि सह, मन्द, आलसी। २ असहिष्णु ईर्ष्यालु (दे २, ७७)।

खेइय वि [खेदित] खिन्न किया हुआ (स ६३४)।

खेचर देखो खेअर (ठा ३, १)।

खेज्जणा स्त्री [खेदना] खेद-सूचक वाणी, खेद (णाया १ १८)।

खेड सक [कृष्] खेती करना, चास करना। खेडइ (सुपा २७६), ग्रह अन्नया य दुन्निवि हलाइं खेडंति अप्पणाच्चेव' (सुपा २३७)।

खेड सक [खेटय्] हांकना। खेडए (चेइय ३३७, कुप्र ७१)।

खेड न [खेट] १ धूली का प्राकारवाला नगर (औप, पण्ह १, २)। २ नदी और पर्वतो से वेष्टित नगर (सूअ २, २)। ३ पु• मृगया, शिकार (भवि)।

खेडग न [खेटक] फलक, ढाल (पण्ह १, ३)।

खेडण न [कर्षण] खेती करना (सुपा २३७)।

खेडण न [खेटन] खदेडना, पीछे हटाना (उप २२६)।

खेडणअ न [खेलनक] खिलौना (नाट—रत्ना ६२)।

खेडय पुं [क्ष्वेटक] १ विष, जहर (हे २, ६)। २ ज्वर-विशेष (कुमा)।

खेडय वि [स्फेटक] नाशक, नाश करनेवाला (हे २ ६, कुमा)।

खेडय न [खेटक] छोटा गाव (पाअ, सुर २, १६२)।

खेडावग वि [खेलक] खेल करनेवाला, तमासगिर (उप पृ १८८)।

खेडिअ वि [कृष्ट] हल मे विदारित (दे १, १३६)।

खेडिअ पु [स्फेटिक] १ नाशवाला, नश्वर। २ अनादरवाला (हे २, ६)।

खेड्ड अक [रम्] क्रीडा करना, खेल करना। खेड्डइ (हे ४, १६८)। खेड्डुंति (कुमा)।

खेड्ड } न [खेल] १ क्रीडा, खेल, तमाशा,
खेड्डय } मजाक (हे २, १७४, महा, सुपा २७ , स ५०६)। २ वहाना, छल, 'मय-खेड्डय विहेऊण' (सुपा ५२३)।

खेड्डा स्त्री [क्रीडा] क्रीडा, खेल, तमाशा (औप, पउम ८, ३७, गच्छ २)।

खेड्डिया स्त्री [दे] वारी, दफा, 'भद्द। पच्छिमा खेड्डिया' (स ४८५)।

खेत्त पुन [क्षेत्र] १ आकाश (विसे २०८८)। २ कृषि भूमि, खेत (वृह १)। ३ जमीन, भूमि। ४ देश, गांव, नगर वगैरह स्थान (कप्प, पंचू विसे)। ५ भार्या, स्त्री (ठा १०)। °कप्प पु [°कल्प] १ देश का रिवाज (वृह ६)। २ क्षेत्र-संवन्धी अनुष्ठान। ३ ग्रन्थ-विशेष, जिसमे क्षेत्र-विषयक आचार का प्रतिपादन हो (पचू)। °पलिओवम न [°पल्योपम] काल का नाप-विशेष (अणु)। °ारिय पु [°ार्य] आर्य भूमि मे उत्पन्न मनुष्य (पण्ण १)। देखो खित्त = क्षेत्र।

खेत्तय पु [क्षेत्रक] राहु (सुज्ज २०)।

खेत्ति वि [क्षेत्रिन्] क्षेत्रवाला, क्षेत्र का स्वामी (विसे १४६२)।

खेम न [क्षेम] १ कुशल, कल्याण, हित (पउम ६५, १७, गा ४६६, भत्त ३६, रयण ६)। २ प्राप्त वस्तु का परिपालन (णाया १, ५)। ३ वि कुशलता-युक्त, हित-कर, उपद्रव-रहित (णाया १, १, दस ७)। ४ पु पाटलिपुत्र के राजा जितशत्रु का एक अमात्य (आचू १)। °पुरी स्त्री [°पुरी] १ नगरी-विशेष (पउम २०, ७)। २ विदेह-वर्ष की एक नगरी (ठा २, ३)।

खेमकर पु [क्षेमङ्कर] १ कुलकर पुरुष-विशेष (पउम ३, ५०)। २ ऐरवत क्षेत्र के चतुर्थ कुलकर-पुरुष (सम १५३)। ३ ग्रह-विशेष ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३)। ४ स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन मुनि (पउम २१, ८०)। ५ वि कल्याण-कारक, हित-जनक (उप २११ टी)।

खेमधर पु [क्षेमन्धर] १ कुलकर पुरुष-विशेष (पउम ३,५२) ऐरवत क्षेत्र का पाँचवाँ कुलकर पुरुष-विशेष (सम १५३)। ३ वि• क्षेम-धारक उपद्रव-रहित (राज)।

खेमग पुं [क्षेमक] स्वनाम-प्रसिद्ध एक अन्त कृद् जैनमुनि (अंत)।

खेमराय पुं [क्षेमराज] राजा कुमारपाल का एक पूर्व पुरुष (कुप्र ५)।

खेमलिज्जिया स्त्री [क्षेमलिया] जैनमुनि-गण की एक शाखा (कप्प)।

खेमा स्त्री [क्षेमा] १ विदेह वर्ष की एक नगरी (ठा २, ३)। २ क्षेमपुरी-नामक नगरी-विशेष (पउम २०, १०)।

गल्लप्फोड पुं [दे] डमरुक, वाद्य-विशेष (दे २, ८६)।

गल्लूरण न [दे] मांस खाते हुए कुपित शेर की गर्जना (माल ६०)।

गल्लोल्ल न [दे] गडुक, पात्र विशेष (निचू १)।

गव पुंस्त्री [गो] पशु, जानवर (सूअ १,२,३)।

गवक्ख पु [गवाक्ष] १ गवाक्ष, वातायन, झरोखा (ओप, पण्ह २, ४)। २ गवाक्ष के आकृति का रत्न विशेष (जीव ३)। °जाल न [°जाल] १ रत्न-विशेष का ढेर (जीव ३, राय)। २ जालीवाला वातायन (ग्रौप)।

गवच्छ पुं [दे] आच्छादन, ढकना (राय)।

गवच्छिय वि [दे] आच्छादित, ढका हुआ (राय, जीव ३)।

गवत्त न [दे] घास, तृण (दे २, ८५)।

गवत्थिय देखो गवच्छिय (पउमच० ४१—५)।

गवय पु [गवय] गो की आकृति का जगली पशु-विशेष, नील गाय (पण्ह १, १)।

गवर पुं [दे] वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३४)।

गवल पुं [गवल] १ जगली पशु विशेष, जंगली महिष (पउम ८८, ६)। २ न. महिष का सिंग (पण्ण १७, सुपा ६२)।

गवा स्त्री [गो] गैया, गाय (पउम ८०, १३)।

गवाइणी देखो गवायणी (आचा २, १०, २)।

गवायणी स्त्री [गवादनी] गोचर-भूमि (दे २, ८२)।

गवार वि [दे] गँवार, छोटे गांव का निवासी (वज्जा ४)।

गवालय न [गवालीक] गौ के विषय में अनृत भाषण (पण्ह १, २)।

गविअ वि [दे] अवघृत, निश्चित (षड्)।

गविट्ठ वि [गवेषित] खोजा हुआ (सुपा १५४, ६४०, स ४८४, पाअ)।

गविल न [दे] उत्तम कोटि की चीनी, शुद्ध मिस्री (उर ५, ६)।

गवेधुआ स्त्री [गवेधुका] जैनमुनि-गण की एक शाखा (कप्प)।

गवेलग पुंस्त्री [गवेलक] १ मेष, भेड (णाया १, १, ग्रौप)। २ गौ और भेड़ (ठा ७)।

गवेस सक [गवेषय्] गवेषणा करना, खोजना, तलाश करना। गवेसइ (महा, षड्)। भूका गवेसित्था (आचा)। वकृ गवेसन, गवेसयंत, गवेसमाण (श्रा १२, सुपा ४१०, सुर १, २०२, णाया १, ४)। हेकृ गवेसित्तए (कप्प)।

गवेसइत्तु वि [गवेषयितृ] खोज करनेवाला, गवेषक (ठा ४, २)।

गवेसग वि [गवेषक] ऊपर देखो (उप पृ ३३)।

गवेसण न [गवेषण] खोज, अन्वेषण (ग्रौप, सुर ४, १४३)।

गवेसणया स्त्री [गवेषणा] ईहा-ज्ञान, संभावना-ज्ञान (णंदि १७४)।

गवेसणया } स्त्री [गवेषणा] १ खोज, अन्वेगवेसणा } षण (ग्रौप, सुपा २३३)। २ शुद्ध भिक्षा की याचना (ओघ ३)। ३ भिक्षा का ग्रहण (ठा ३, ४)।

गवेसय देखो गवेसग (भवि)।

गवेसाविय वि [गवेषित] १ दूसरे से खोजवाया हुआ, दूसरे द्वारा खोज किया गया (स २०७, ओघ ६२२ टी)। २ गवेषित, अन्वेषित, खोजा हुआ (स ६८)।

गवेसि वि [गवेषिन्] खोज करनेवाला, गवेषक (पुप्फ ४४०)।

गवेसिअ वि [गवेषित] अन्वेषित, खोजा हुआ (सुर १५, १२६)।

गव्व पुं [गर्व] मान, अहंकार, अभिमान (भग १५, पव २१६)।

गव्वर न [गह्वर] कोटर, गुहा (स ३६३)।

गव्वि वि [गर्विन्] अभिमानी, गर्व-युक्त (श्रा १२, दे ७, ६१)।

गव्विट्ठ वि [गर्विष्ठ] विशेष अभिमानी, गर्व करनेवाला (दे १, १२८)।

गव्विय वि [गर्वित] गर्व-युक्त, जिसको अभिमान उत्पन्न हुआ हो वह (पाअ, सुपा २७०)।

गव्विर वि [गर्विन्] अहंकारी, अभिमानी (हे २, १५६, हेका ४५)। स्त्री. °री (हेका ४५)।

गस सक [ग्रस्] खाना, निगलना, भक्षण करना। गसइ (हे ४, २०४, षड्)। वकृ. गसत (उप ३२० टी)।

गसण न [ग्रसन] भक्षण, निगलना (स ८५७)।

गसिअ वि [ग्रस्त] भक्षित, निगलित (कुमा, सुर ६, ६०, सुपा ४८६)।

गह सक [ग्रथ्] गूँथना, गठना। गहेति (सूअनि १४०)।

गह सक [ग्रह्] १ ग्रहण करना, लेना। २ जानना। गहेइ (सण)। वकृ गहत (श्रा २७)। संकृ. गहाय, गहिअ, गहिऊण, गहिया, गहेउं (पि ५९१ नाट, पि ५८६, सूअ १, ४, १, १, ५, २)। कृ. गहीअव्व, गहेअव्व (रयण ७०, भग)।

गह पु [ग्रह] १ ग्रहण, आदान, स्वीकार (विसे ३७१, सुर ३, ६२)। २ सूर्य, चन्द्र वगैरह ज्योतिष्क-देव (गउड, पण्ह १, २)। ३ कर्म का बन्ध (दस ४)। ४ भूत वगैरह का आक्रमण, आवेश (कुमा, सुर २, १४४)। ५ गृद्धि, आसक्ति, तल्लीनता (आचा)। ६ संगीत का रस-विशेष (दस २)। °खोभ पु [°क्षोभ] राक्षस वंश के एक राजा का नाम, एक लंकेश (पउम ५, २६६)। °गज्जिय न [°गर्जित] ग्रहों के संचार से होनेवाली आवाज (जीव ३)। °गहिय वि [°गृहीत] भूतादि से आक्रान्त, पागल (कुमा, सुर २, १४४)। °चरिय न [°चरित] १ ज्योतिषशास्त्र (वव ४)। २ ज्योतिष-शास्त्र का परिज्ञान (सम ८३)। °दंड पु [°दण्ड] दण्डाकार ग्रह-पंक्ति (भग ३, ७)। °नाह पु [°नाथ] १ सूर्य, सूरज (श्रा २८)। २ चन्द्र, चन्द्रमा (उप ७२८ टी)। °मुसल न [°मुसल] मुसलाकार ग्रह पंक्ति (जीव ३)। °सिंघाडग न [°शृङ्गाटक] १ पानी-फल के आकारवाली ग्रहपंक्ति (भग ३, ७)। २ ग्रह युग्म, ग्रह की जोडी (जीव ३)। °हिव पुं [°धिप] सूर्य, सूरज (श्रा २८)।

गह पु [ग्रह] १ सवच (धर्मसं ३६३)। २ पकड, धरना (सूअ १, ३, २, ११, धर्मवि ७२)। ३ ग्रहण, ज्ञान (धर्मसं १३६४)। °भिन्न न [°भिन्न] जिसके बीच से ग्रह का गमन हो वह नक्षत्र (वव १)। °सम न [°सम] गेय काव्य का एक भेद (दसनि २, २३)।

१, १—पत्र ४३ टी, उवा १)। २ सन का बना हुआ वस्त्र (सम १२३, भग ११, ११, पराह २, ४)। ३ रेशमी वस्त्र (उप १४६, स २००) । ४ वि. अतसी-संबंधी, सन-संबन्धी, (ठा १०, भग १, १ ११)। °पसिण न [°प्रश्न] विद्या-विशेष, जिससे वस्त्र मे देवता का आह्वान किया जाता है (ठा १०)।

खोमिय न [क्षौमिक] १ कपास का बना हुआ वस्त्र (ठा ३, ३)। २ सन का बना हुआ वस्त्र (कप्प)।

खोमिय वि [क्षौमिक] १ रेशम सम्बन्धी। २ सन-सम्बन्धी (पव १२७)।

खोय देखो खोट (सम १५१, इक)।

खोर } न [दे] पात्र-विशेष, कचोलक, कटोरा
खोरय } (उप पृ १३५, णादि)।

खोल पुं [दे] १ छोटा गधा (दे २, ८०)। २ वस्त्र का एक देश (दे २, ८०, ५, ३०, बृह १)। ३ मद्य का नीचला कीट कर्दम (आचा २, १, ८, बृह १)।

खोल पु [दे] गुप्तचर, जासूस (पिंड १२७)।

खोल्ल न [दे] कोटर, गह्वर 'खोल्ल कोत्थर' (निचू १५)।

खोसलय वि [दे] दन्तुल, लम्बे और बाहर निकले हुए दाँतवाला (दे २, ७७)।

खोसिय वि [दे] जीर्ण-प्राय किया हुआ (पिंड ३२१)।

खोह देखो खोभ = क्षोभय्। खोहइ (भवि)। वकृ खोहेंत (से १५ ३३)। कवकृ खोहिज्जंत (से २, ३)।

खोह देखो खोभ = क्षोभ (पराह १, ४, कुमा सुपा ३६७)।

खोहण देखो खोभण (श्रा १२, सुपा ५०२)।

खोहिय देखो खोभिय (सण)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे खआराइसद्दसकलणो एआरहमो तरंगो समत्तो ॥

ग

ग पुं [ग] व्यञ्जन-वर्ण विशेष, इसका स्थान कण्ठ है (प्रामा, प्राप)।

°ग वि [°ग] १ जानेवाला। २ प्राप्त होनेवाला, जैसे—पारग, वसग (आचा, महा)।

गअवंत वि [गतवत्] गया हुआ (प्राकृ ३५)।

गइ स्त्री [गति] १ ज्ञान, अवबोध (विसे २५०२)। २ प्रकार, भेद (से १, ११)। ३ गमन, चलन, देशान्तर-प्राप्ति, (कुमा)। ४ जन्मान्तर-प्राप्ति, भवान्तर-गमन ठा (१,१, द)। ५ देव, मनुष्य, तिर्यञ्च, नरक और मुक्त जीव की अवस्था, देवादि-योनि (ठा ५, ३)। °तस पुं [°त्रस] अग्नि और वायु के जीव (कम्म ३, १३, ४, १६)। °नाम न [°नामन्] देवादि गति का कारण-भूत कर्म (सम ६७)। °प्पवाय पु [°प्रपात] १ गति की नियतता (पराग १६)। २ ग्रयाश-विशेष (भग ८, ७)।

गइंद पु [गजेन्द्र] १ ऐरावण हाथी, इन्द्र-हस्ती। २ श्रेष्ठ हाथी (गउड, कुमा)। °पय न [°पद] गिरनार पर्वत का एक जल-तीर्थ (ती ३)।

गइल्लय देखो गय = गत (सुख २, २२)।

गउ } पु [गो] बैल, वृषभ, साँड (हे १,
गउअ } १५८)। °पुच्छ पु न [°पुच्छ] १ बैल की पूँछ। २ वाण-विशेष (कुमा)।

गउअ पुं [गवय] गो-तुल्य आकृतिवाला जगली पशु-विशेष, नील गाय (कुमा)।

गउआ स्त्री [गो] गैया, गौ (हे १, १५८)।

गउड पुं [गौड] १ स्वनाम ख्यात देश, बंगाल का पूर्वी भाग (हे १, २०२, सुपा ३८६)। २ गौड देश का निवासी (हे १, २०२)। ३ गौड देश का राजा (गउड, कुमा)। °वह पुं [°वध] वाक्पतिराज का बनाया हुआ प्राकृत-भाषा का एक काव्य-ग्रंथ (गउड)।

गउण वि [गौण] अप्रधान, अमुख्य (दे १, ३)।

गउणी स्त्री [गौणी] शक्ति-विशेष, शब्द की एक शक्ति (दे १, ३)।

गउरव देखो गारव (कुमा, हे १, १६३)।

गउरविय वि [गौरवित] गौरव-युक्त किया हुआ, जिसका आदर—सम्मान किया गया हो वह, 'तज्जणयाइ तत्थागयाइ थेवेहिं चेव दियहेहिं, गउरवियाइ रयणायरेण' (सुपा ३५६, ३६०)।

गउरी स्त्री [गौरी] १ पार्वती, शिव-पत्नी (सुपा १०६)। २ गौर वर्णवाली स्त्री। ३ स्त्री-विशेष (कुमा)। °पुत्त पु [°पुत्र] पार्वती का पुत्र, स्कन्द, कार्तिकेय (सुपा ४०१)।

गअ देखो गय = गत, 'भीया जहागयगई पडिवज्ज गए' (रंभा)।

गंग पु [गङ्ग] मुनि-विशेष, द्विक्रिय मत का प्रवर्तक आचार्य (ठा ७, विसे २४२५)। °दत्त पु [°दत्त] १ एक जैन मुनि, जो पछु वासुदेव के पूर्वजन्म के गुरू थे (स १५३)। २ नववें वासुदेव के पूर्वजन्म का नाम (पउम २०, ७१)। ३ इस नाम का एक जैन श्रेष्ठी (भग १६, ५)। °दत्ता स्त्री [°दत्ता] एक सार्थवाह की स्त्री का नाम (विपा १, ७)।

गंग° देखो गंगा। °प्पवाय पुं [°प्रपात]

गाढ वि [गाढ] १ गाढ, निबिड, सान्द्र (पाअ, सुर १४, ४८)। २ मजबूत, दृढ (सुर ४, २३७)। ३ क्रिवि. अत्यन्त, अतिशय (कप्प)।

गाण न [गान] गीत गाना (हे ४, ६)।

गाण वि [गायन] गवैया, गीत-प्रवीण (दे २, १०८)।

गाणगणिअ पु [गाणङ्गणिक] छ ही मास के भीतर एक साधु-गण से दूसरे गण में जानेवाला साधु (बृह १)।

गाणी स्त्री [दे] गवादनी, गोचर-भूमि (दे २, ८२)।

गाथा देखो **गाहा** (भग, पिंग)।

गाध वि [गाध] अस्ताघ-रहित, कम गहरा (दे ५, २४)।

गाम पुं [ग्राम] १ समूह, निकर, 'चवलो इंदियगामो' (सुर २, १३८)। २ प्राणि-समूह, जन्तु-निकर (विसे २८८६)। ३ गाँव, वसति, ग्राम (कप्प, णाया १, १८, औप)। ४ इन्द्रिय-समूह (भग, औप)। °कडग, °कडय पु [°कण्टक] १ इन्द्रिय-समूह रूप कांटा (भग, औप)। २ दुर्जनो का रूक्ष आलाप, गाली (आचा)। °घायग वि [°घातक] गाँव का नाश करनेवाला (पण्ह १,३)। °णिद्धमण न [°निर्धमन] गाँव का पानी जाने का रास्ता, नाला (कप्प)। °धम्म पु [°धर्म] १ विषयाभिलाष, विषय की वाञ्छा (ठा १०)। २ इन्द्रियो का स्वभाव। ३ विषय-प्रवृत्ति (आचा)। ४ मैथुन (सूअ १, २, २)। ५ शब्द, रूप वगैरह इन्द्रियो का विषय (पण्ह १, ४)। ६ गाँव का धर्म, गाँव का कर्तव्य (ठा १०)। °द्ध पुन [°र्ध] आधा गाँव। २ उत्तर भारत, भारत का उत्तरप्रदेश (निचू १२)। °मारी स्त्री [°मारी] गाँव भर मे फैली हुई बीमारी-विशेष (जीव ३)। °रोग पु [°रोग] ग्राम-व्यापक बीमारी (ज २)। °वइ पु [°पति] गाव का मुखिया (पाअ)। °णुग्गाम न [°नुग्राम] एक गाँव से दूसरे गांव (औप)। °यार पुं [°चार] विषय (आवम)।

गामउड, **गामऊड** पु [दे] गाँव का मुखिया (दे २, ८६, बृह ३)।

गामंतिय न [ग्रामान्तिक] १ गाँव की सीमा (आचा)। २ वि. गाँव की सीमा में रहनेवाला (दसा १)। ३ पु जैनेतर दार्शनिक-विशेष (सूअ २, २)।

गामगोह पु [दे] गाँव का मुखिया (दे २, ८६)।

गामड पु [ग्रामक] गांव, छोटा गांव (श्रा १६)।

गामण न [दे गमन] भूमि में गमन, भू-सर्पण (भग ११, ११)।

गामणह न [दे] ग्राम-स्थान, ग्राम-प्रदेश (षड्)।

गामणि देखो **गामणी** (दे २, ८६, षड्)।

गामणिसुअ पुं [दे] गाँव का मुखिया (दे २, ८६)।

गामणी पु [दे] गाँव का मुखिया (दे २, ८६, प्रामा)।

गामणी वि [ग्रामणी] १ श्रेष्ठ, प्रधान, नायक (से ७, ६०, धण १, गा ४४६, षड्)। २ पुं. तृण-विशेष (दे २, ११२)।

गामपिंडोलग पु [दे] भीख से पेट भरने के लिये गाँव का आश्रय लेनेवाला भीखारी (आचा)।

गामरोड पु [दे] छल से गाँव का मुखिया बन बैठनेवाला, गाँव के लोगो मे फूट उत्पन्न कर गाँव का मालिक होनेवाला (दे २, ९०)।

गामहण न [दे] ग्राम-स्थान, गाँव का प्रदेश (दे २, ९०)। २ छोटा गांव (पाअ)।

गामाग पुं [ग्रामाक] ग्राम-विशेष, इस नाम का एक सन्निवेश (आवम)।

गामार वि [दे. ग्रामीण] ग्रामीण, छोटे गाँव का रहनेवाला (वज्जा ४)।

गामि वि [गामिन्] जानेवाला (गा १६७, आचा)। स्त्री °णी (कप्प)।

गामिअ वि [ग्रामिक] १ देखो **गामिल्ल** (दे २, १००)। २ ग्राम का मुखिया (निचू २)। ३ विषयाभिलाषी (आचा)।

गामिणिआ स्त्री [गामिनिका] गमन करने-वाली स्त्री, 'ललिअहंसवहुगामिणिआहिं' (अजि २६)।

गामिल्ल, **गामिल्लुअ**, **गामीण** वि [ग्रामीण] गाँव का निवासी, गँवार, (पउम ७७, १०८, विसे १ टी, दे ८, ४७)। स्त्री °ल्ली (कुमा)।

गामुअ वि [गामुक] जानेवाला (स १७५)।

गामेइआ स्त्री [ग्रामेयिका] गाँव की रहने-वाली स्त्री, गँवार स्त्री (गउड)।

गामेणी स्त्री [दे] छागी, अजा, बकरी (दे २, ८४)।

गामेय देखो **गामेयग** (धर्मवि १३७)।

गामेयग वि [ग्रामेयक] गाँव का निवासी, गँवार (बृह १)।

गामेरड [दे] देखो **गामरोड** (षड्)।

गामेलुअ, **गामेल्ल** देखो **गामिल्ल** (मृच्छ २७५, विपा १, १, भवि १४११)।

गामेस पुं [ग्रामेश] गाँव का अधिपति (दे २, ३७)।

गायण वि [गायन] गवैया, गायक (सिरि ७०१)।

गायरी स्त्री [दे] गगरी, गगरी, कलशी, छोटा घडा (दे २, ८६)।

°गार वि [°कार] कारक, कर्त्ता (भवि)।

गार पुं [दे ग्रावन्] पत्थर, पाषाण, कङ्कड (वव ४)।

गार न [अगार] गृह, घर, मकान (ठा ६)। °त्थ पुंस्त्री [°स्थ] गृहस्थ, गृही (निचू १)। °त्थिय पुस्त्री [°स्थित] गृहस्थ, गृही, संसारी, 'गारत्थियजणउचियं भासासमिओ न भासिज्जा' (पुप्फ १८१, ठा ६)।

°गारय वि [कारक] कर्त्ता, करनेवाला (स १५१)।

गारव पुन [गौरव] १ अभिमान, अहंकार। २ अभिलाष, लालसा, 'तओ गारवा पण्णत्ता' (ठा ३, ४, श्रा ३५, सम ८)। ३ महत्व, गुरुत्व, प्रभाव (कुमा)। ४ आदर, सम्मान (षड्, प्राप्र)।

गारवित वि [गौरवित] १ गौरवान्वित, महत्त्वशाली। २ गर्वीला, अभिमानी। ३ लालसावाला, अभिलाषी (सूअ १, १, १)।

गारविल्ल वि [गौरववत्] ऊपर देखो (कम्म १, ५६)।

गारहत्थ वि [गार्हस्थ] गृहस्थ-सम्बन्धी, गृहस्थ का (पव २३५)।

गारि पुंस्त्री [अगारिन्] गृही, संसारी, गृहस्थ (उत्त ५, १६)।

गंड न [गण्ड] दोष, नाग (सूत्र १, ६ १६)। °माणिया स्त्री [°मानिका] पात्र-विशेष (राय १४०) °विइवाय पुं [°व्यतिपात] ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक योग (संबोध ५४)।

गंडइया स्त्री [गण्डकिका] नदी-विशेष (आवम)।

गंडय पुं [गण्डक] १ गेंडा, जानवर-विशेष (पाअ, दे ७, ५७)। २ उद्घोषणा करनेवाला पुरुष, टेर लगानेवाला पुरुष (ओघ ६४४)।

गंडली स्त्री [दे] गँडेरी, ऊख का टुकडा (उप पृ १०६)।

गंडा देखो गंठि = ग्रन्थि (प्राकृ १८)।

गंडाग पु [गण्डक] नाई, हजाम (आचा २, १, २, २)।

गंडि पु [गण्डि] जन्तु-विशेष (उत्त १)।

गंडि वि [गण्डिन्] १ गण्डमाला का रोगवाला (आचा)। २ गण्ड रोगवाला (पण्ह २, ५)।

गंडिया स्त्री [गण्डिका] १ गँडेरी, ऊख का टुकडा (महा)। २ सोनार का एक उपकरण (ठा ४ ४)। ३ एक अर्थ के अधिकारवाली ग्रन्थ-पद्धति (सम १२९)।

गंडिल देखो गंधिल (इक)।

गंडिलावई देखो गंधिलावई (इक)।

गंडी स्त्री [गण्डी] १ सोनार का एक उपकरण (ठा ४, ४—पत्र २७१)। २ कमल की कर्णिका (उत्त ३६)। °तिंदुग न [°तिन्दुक] यक्ष-विशेष (ती ३८)। °पय पु [°पद] हाथी वगैरह चतुष्पद जानवर (ठा ४, ४)। °पोत्थय पुन [°पुस्तक] पुस्तक-विशेष (ठा ४, २)।

गंडीरी स्त्री [दे] गण्डेरी, ऊख का टुकडा (दे २, ८२)।

गंडीव न [गाण्डीव] १ अर्जुन का धनुष (वेणी ११२)।

गंडीव न [दे. गाण्डीव] धनुष, कार्मुक (दे २, ८४, महा, पाअ)।

गंडीवि पु [गाण्डीविन्] अर्जुन, मध्यम पाण्डव (वेणी ५८)।

गंडुअ न [गण्डु] ओसीसा, सिरहाना (महा)।

गंडुअ न [गण्डुत्] तृण-विशेष (दे २, ७५)।

गंडुल पु [गण्डोल] कृमि-विशेष, जो पेट में पैदा होता है (जी १५)।

गंडुवहाण न [गण्डोपधान] गाल का तकिया (पव ८४)।

गंडूपय पुं [गण्डूपद] जन्तु-विशेष (राज)।

गंडूल देखो गंडुल (पण्ह १, १—पत्र २३)।

गंडूस पुं [गण्डूष] पानी का कुल्ला (गा २७०, सुपा ४४९), 'बहुमइरागंडूसपाए' (उप ६८६ टी)।

गंडूस पुं [गण्डूष] पानी का कुल्ला (सुअनि ५४)।

गंत देखो गा।

गंतव्व, गंता } देखो गम = गम्।

गंतिय न [गन्तृक] तृण-विशेष (पण्ण १—पत्र ३३)।

गंती स्त्री [गन्त्री] गाडी, शकट (धम्म १२ टी, सुपा २७७)।

गंतुं देखो गम = गम्।

गंतुपच्चागया स्त्री [गत्वाप्रत्यागता] भिक्षा-चर्या-विशेष, जैन मुनियो की भिक्षा का एक प्रकार (ठा ६)।

गंतुकाम वि [गन्तुकाम] जाने की इच्छा वाला (श्रा १४)।

गंतुमण वि [गन्तुमनस्] ऊपर देखो (वसु)।

गंतूण, गंतूणं } देखो गम = गम्।

गंथ देखो गंठ—ग्रन्थ्। गंथइ (पि ३३३)। कर्म गंथीअंति (पि ५४८)।

गंथ पु [ग्रन्थ] १ शास्त्र, सूत्र, पुस्तक (विसे ८९४, १३८३)। २ धन-धान्य वगैरह बाह्य मिथ्यात्व, क्रोध, मान आदि आभ्यन्तर उपधि, परिग्रह (ठा २, १, बृह १, विसे २५७३)। ३ धन, पैसा (स २३६)। ४ स्वजन, संबन्धी लोग (पण्ह २, ४)। °ाईअ पुं [°ातीत] जैन साधु (सूअ १, ६)।

गंथि वि [ग्रन्थिन्] रचना-कर्ता (सम्मत्त १३६)।

गंथि देखो गंठि (पण्ह १, ३—पत्र ४४)।

गंथिम देखो गंठिम (णाया १, १३)।

गंदिला स्त्री [गन्दिला] देखो गंधिल (इक)।

गंदोणी स्त्री [दे] क्रीडा-विशेष, जिसमे आँख बंद की जाती है, आँख-मिचौनी (दे २,८३)।

गंदुअ देखो गेंदुअ (पड्)।

गंध पुं [गन्ध] १ गन्ध, नासिका से ग्रहण करने योग्य पदार्थो की वास, महक (औप, भग; हे १, १७७)। २ लव, लेश (से ६, ३)। ३ चूर्ण विशेष (पण्ह १, १)। ४ वानव्यन्तर देवो की एक जाति (इक)। ५ न देव-विमान विशेष (निर १, ४)। ६ त्रि. गन्धयुक्त पदार्थ (सूअ १, ६)। °उडी स्त्री [°कुटी] गन्ध-द्रव्य का घर (गउड, हे १, ८)। °कासाइया स्त्री [°काषायिका] सुगन्धि कषाय रंग की साडी (उवा, भग ९, ३३)। °गुण पुं [°गुण] गन्धरूप गुण (भग)। °ट्टय न [°ाट्टक] गन्ध-द्रव्य का चूर्ण (ठा ३, १—पत्र ११७) °ड्ढ वि [°ाढ्य] गन्धपूर्ण, सुगन्धपूर्ण (पंचा २)। °णाम न [°नामन्] गन्ध का हेतुभूत कर्म-विशेष (अणु)। °तेल्ल न [°तैल] सुगन्धित तैल (कप्पू)। °दव्व न [°द्रव्य] सुगन्धित वस्तु, सुवासित द्रव्य (उत्त १)। °देवी स्त्री [°देवी] देवी-विशेष, सौधर्म देवलोक की एक देवी (निर १, ४)। °द्धणि स्त्री [°घ्राणि] गन्ध तृप्ति (णाया १, १—पत्र २५, औप)। °नाम देखो °णाम (सम ६७)। °मय पु [°मृग] कस्तूरी मृग, कस्तुरिया हरिन (सुपा २)। °मंत वि [°वत्] १ सुगन्धित, सुगन्ध-युक्त। २ अतिशय गन्धवाला, विशेष गन्ध से युक्त (ठा ५, ३—पत्र ३३३)। °मादण, °मायण पु [°मादन] १ पर्वत-विशेष, इस नाम का एक पहाड (सम १०३, पण्ह २, २, ठा २,३—पत्र ६९)। २ पुंन पर्वत-विशेष का एक शिखर (ठा २, ३—पत्र ८०)। ३ न. नगर-विशेष (इक)। °वई स्त्री [°वती] भूतानन्द-नामक नागेन्द्र का आवास-स्थान (दीव)। °वट्टय न [°वर्त्तक]

गिण देखो गण = गणय्। गिणति (सट्ठि ६७)।

गिण्ह देखो गह = ग्रह्। गिण्हइ (कप्प)। वकृ गिण्हत, गिण्हमाण (सुपा ६१६, णाया १, १)। सकृ गिण्हिउं, गिण्हिऊण, गिण्हित्ता (पि ५७४, ५८५, ५८२)। हेकृ गिण्हित्तए (कप्प)। कृ. गिण्हियव्व, गिण्हेयव्व (श्रणु, सुपा ५१३)।

गिण्हण देखो गहण = ग्रहण (सिरि ३४७, पिंड ४५६, तदु ५०)।

गिण्हणा स्त्री [ग्रहण] उपादान, श्रादान (उत्त १६, २७)।

गिण्हाविअ वि [ग्राहित] ग्रहण कराया हुआ (धर्मवि ११६)।

गिद्ध पु [गृध्र] पक्षि-विशेष, गीध (पाश्र, णाया १, १६)।

गिद्ध वि [गृद्ध] श्रासक्त, लम्पट, लोलुप (पण्ह १, २, श्राचू ३)।

गिद्धपिट्ठ न [गृद्ध स्पृष्ट, गृध्रपृष्ठ] मरण-विशेष, श्रात्महत्या के अभिप्राय से गीध श्रादि को श्रपना शरीर खिला देना (पव १५७)।

गिद्धि स्त्री [गृद्धि] एक देव-विमान (देवेन्द्र १३४)।

गिद्धि स्त्री [गृद्धि] श्रासक्ति, लम्पटता, गार्घ्य (सूत्र १, ६)।

गिन्हणा देखो गिण्हणा (उत्त १६, २७)।

गिह्म पु [ग्रीष्म] ऋतु-विशेष, गरमी का मौसिम (हे २, ७४, प्राप्र)।

गिह्मा स्त्री देखो गिह्म, 'गिम्हासु' (सुख २, ३७)।

गिर सक [गॄ] १ बोलना, उच्चारण करना। २ गिलना, निगलना। गिरइ (षड्)।

गिरा स्त्री [गिर्] वाणी, भाषा, वाक् (हे १, १६)।

गिरि पुं [गिरि] १ पहाड, पर्वत (गउड, १, २३)। °अडी स्त्री [°तटी] पर्वतीय नदी (गउड)। °कण्णई, °कण्णी स्त्री [°कर्णी] वल्ली-विशेष, लता विशेष (पण्ण १—पत्र ३३, श्रा २०)। °कूड न [°कूट] १ पर्वत का शिखर। २ पु रामचन्द्र का महल (पउम ८०, ४)। °जण्ण पुं [°यज्ञ] कोंकण देश मे वर्षाकाल मे किया जाता एक प्रकार का उत्सव (बृह १)। °णई स्त्री [°नदी] पर्वतीय नदी (पि ३८५)। °णाल पु [°नार] प्रसिद्ध पर्वत विशेष, जो काठियावाड मे श्राजकल भी 'गिरनार' के नाम से विख्यात है (ती ३)। °दारिणी स्त्री [°दारिणी] विद्या-विशेष (पउम ७, १३९)। °नई देखो °णई (सुपा ६३५)। °पक्खन्दण न [°प्रस्कन्दन] पहाड पर से गिरना (निचू ११)। °यडय न [°कटक] पर्वत का मध्य भाग (गउड)। °पब्भार पु [°प्राग्भार] पर्वत-नितम्ब (सया)। °राय पुं [°राज] मेरु पर्वत (इक)। °वर पु [°वर] प्रधान पर्वत, उत्तम पहाड (सुपा १७६)। °वरिंद पुं [°वरेन्द्र] मेरु पर्वत (श्रा २७)। °सुआ स्त्री [°सुता] पार्वती, गौरी (पिंग)।

गिरि पु [दे] बीज-कोश (दे ६, १४८)।

गिरिंद पु [गिरीन्द्र] १ श्रेष्ठ पर्वत। २ मेरु पर्वत। ३ हिमाचल (कप्पू)।

गिरिकन्नी देखो गिरि-कण्णी (पव ४)।

गिरिडी स्त्री [दे] पशुओं के दांत को बांधने का उपकरण-विशेष, 'दतगिरिडिं पवदइ' (सुपा २३७)।

गिरिनयर न [गिरिनगर] गिरनार पर्वत के नीचे का नगर, जो श्राजकल 'जूनागढ' के नाम से प्रसिद्ध है (कुप्र १७६)।

गिरिफुल्लिय न [गिरिपुष्पित] नगर-विशेष (पिंड ४६१)।

गिरिस पुं [गिरिश] महादेश, शिव (पाश्र दे, ६, १२१)। °वास पु [°वास] कैलाश पर्वत (से ६, ७५)।

गिरीस पु [गिरीश] १ हिमालय पर्वत। २ महादेव, शिव (पिंग)।

गिल सक [गृ] गिलना, निगलना, भक्षण करना। सकृ. गिलिऊण (नाट)।

गिलण न [गरण] निगरण, भक्षण (हे ४, ४४५)।

गिला } श्रक [ग्लै] १ ग्लान होना, बीमार
गिलाअ } होना। २ खिन्न होना, थक जाना। ३ उदासीन होना। गिलाइ, गिलायइ, गिलाएमि (भग, कस, श्राचा)। वकृ. गिलायमाण (ठा ३, ३)।

गिला स्त्री [ग्लानि] १ बीमारी, रोग। २ खेद, थकावट (ठा ८)।

गिलाण देखो गिलाअ, 'गिलाणइ कज्जे' (स ७१७)।

गिलाण वि [ग्लान] १ बीमार, रोगी (सूत्र १, ३, ३)। २ श्रशक्त, श्रसमर्थ, थका हुआ (ठा ३, ४)। ३ उदासीन, हर्ष-रहित (णाया १, १३, हे २, १०६)।

गिलाणि स्त्री [ग्लानि] ग्लानि, खेद, थकावट (ठा ५, १)।

गिलायय वि [ग्लायक] ग्लानि-युक्त, ग्लान (श्रोप)।

गिलासि पुस्त्री [ग्रासिन] व्याधि-विशेष, भस्मक रोग (श्राचा)। स्त्री °णी (श्राचा)।

गिलिअ वि [गिलित] निगला हुआ, भक्षित (सुपा ३, २०६, सुपा ६४०)।

गिलिअवंत वि [गिलितवत्] जिसने भक्षण किया हो वह (पि ५६६)।

गिलोइया } स्त्री [दे] गृह-गोधा, छिपकली
गिलोई } (सुपा ६४०, पुप्फ २६७)।

गिल्लि स्त्री [दे] १ हाथी की पीठ पर कसा जाता होदा, हौदा (णाया १, १—पत्र ४३ टी, श्रौप)। २ डोली, दो श्रादमी से उठाई जाती एक प्रकार की शिविका (सूअ २, २, दसा ६)।

गिव्वाण पुं [गीर्वाण] देव, सुर, त्रिदश (उप ५३० टी)।

गिह न [गृह] घर मकान (श्राचा, श्रा २३, स्वप्न ६४)। °त्थ पुस्त्री [°स्थ] गृहस्थ, गृही, ससारी (कप्प, द्र ५)। स्त्री. °त्था (पउम ४६, ३३)। °नाह पु [°नाथ] घर का मालिक (श्रा २८)। °लिंगि पुस्त्री [°लिङ्गिन्] गृहस्थ, गृही, ससारी (दस)। °वइ पुस्त्री [°पति] गृहस्थ, गृही, घर का मालिक (ठा ५, ३, सुपा २३४)। °वास पु [°वास] १ घर मे निवास। २ द्वितीयाश्रम, ससारिपन, 'गिहवास पास पिव मन्नतो वसइ दुक्खिश्रो तम्मि' (धम्म सूत्र १, ९)। °वट्ट पुं [°वर्त्त] द्वितीय श्राश्रम, ससारिपन (सूत्र १, ४, १)। °सम पु [°श्रम] घरवास, द्वितीयाश्रम (स १४८)।

गग्ग पु [गर्ग] १ ऋषि-विशेष। २ गोत्र-विशेष, जो गौतम गोत्र की एक शाखा है (ठा ७)।

गग्ग पुं [गर्ग] १ एक जैन महर्षि (उत्त २७, १)। २ विक्रम की बारहवीं शताब्दी का एक श्रेष्ठी (कुप्र १४३)।

गग्ग पु [गार्ग्य] गर्ग गोत्र मे उत्पन्न ऋषि-विशेष (उत्त २७)।

गग्गर वि [गद्गद] १ गद्गद आवाजवाला, अति अस्पष्ट वक्ता (प्राप्र)। २ आनंद या दुःख मे अव्यक्त कथन (हे १, २१६, कुमा)।

गग्गरी स्त्री [गर्गरी] गगरी, छोटा घडा (दे २, ८६, सुपा ३३६)।

गग्गिर देखो गग्गर, 'रुजगग्गिरं गेम्र' (गा ८४३, सण)।

गच्छ सक [गम्] १ जाना, गमन करना। २ जानना। ३ प्राप्त करना। गच्छइ (प्राप्र, पड्)। भवि. गच्छं (हे ३, १७१, प्राप्र)। वकृ. गच्छंत, गच्छमाण (सुर ३, ६६, भग १२, ६)। संकृ. गच्छिअ (कुमा)। हेकृ. गच्छित्तए (पि ५६८)।

गच्छ पुंन [गच्छ] १ समूह, सार्थ, संघात (स १४८)। २ एक आचार्य का परिवार (औप, स ४७)। ३ गुरु-परिवार, 'गुरुपरिवारो गच्छो, तत्थ वसताण णिज्जरा विउला' (पचव, धर्म ३)। °वास पु [°वास] गुरु-कुल मे रहना, गच्छ-परिवार के साथ निवास (धर्म ३)। °विहार पु [°विहार] गच्छ की सामाचारी, गच्छ का आचार (वव १)। °सारणा स्त्री [°सारणा] गच्छ का रक्षण (राज)।

गच्छागच्छि अ गच्छ-गच्छ से होकर (औप)।

गच्छिल्ल वि [गच्छवत्] गच्छवाला, गच्छ में रहनेवाला (बृह १)।

गज देखो गय = गज (गड्, प्रास १७१, इक)। °सार पुं [°सार] एक जैन मुनि, दण्डक-ग्रन्थ का कर्ता (दं ४७)।

गज्ज पु [दे] जव, यव, अन्न-विशेष (दे २, ८१, पाअ)।

गज्ज न [गद्य] छन्द-रहित वाक्य, प्रबन्ध (ठा ४, ४—पत्र २८७)।

गज्ज अक [गर्ज्] गरजना, गडगडाना, घड-घडाना। गज्जइ (हे ४, ६८)। वकृ. गज्जंत, गज्जयत (सुर २, ७५, रयण ५८)।

गज्जण न [गर्जन] १ गर्जन, भयानक ध्वनि, मेघ या सिंह का नाद। २ नगर-विशेष (उप ७६५)।

गज्जणसद्द पु [दे गर्जनशब्द] पशु और हाथी की आवाज (दे २, ८८)।

गज्जफल } गज्जल } वि [दे] देश-विशेष मे उत्पन्न (वस्त्र) (आचा २, ५, १, ५, ७)।

गज्जभ पु [गर्जभ] पश्चिमोत्तर दिशा का पर्वत (आवम)।

गज्जर पुं [दे] कन्द-विशेष, गाजर, गजरा, इसका खाना धर्म-शास्त्र मे निषिद्ध है। (श्रा १६, जी ६)।

गज्जल वि [गर्जल] गर्जन करनेवाला (निचू ७)।

गज्जह देखो गज्जभ (आवम)।

गज्जि स्त्री [गर्जि] गर्जन, हाथी वगैरह की आवाज (कुमा सुपा ८६, उप पृ ११७)।

गज्जिअ वि [गर्जित] १ जिसने गर्जन किया हो वह, स्तनित (पाअ)। २ न गर्जन, मेघ वगैरह की आवाज (पण्ह १, ३)।

गज्जित्तु } गज्जिर } वि [गर्जितृ] गर्जन करनेवाला, गरजनेवाला (ठा ४, ४—पत्र २६६, गा ५५)।

गज्जिल्लिअ न [दे] १ गुदगुदी, गुदगुदाहट। २ अंग-स्पर्श से होनेवाला रोमाच, पुलक (पड्)।

गज्झ वि [ग्राह्य] ग्रहण योग्य (स १४०, विसे १७०७)।

गट्टण पु [गट्टन] धरणेंद्र की नाट्य-सेना का अधिपति (राज)।

गट्ठिआ स्त्री [दे] गठिया, गुठली, 'अवगट्ठिया' (निचू १५)।

गड न [गड] १ विस्तीर्ण शिला, मोटा पत्थर (दे २,११०)। २ गर्त्त, खाई (सुर १३,४१)।

गड (मा) देखो गय = गत (प्राप्र)।

गडयड पुन [दे] गर्जन, भयानक ध्वनि, हाथी वगैरह की आवाज, 'ता गडयड कुणंतो, समागओ गयवरो, तत्थ' 'इत्यतरे सय चिय, सो जक्खो गडयडं पकुव्वंतो' (सुपा २८१, ५४२)।

गडयड अक [दे] गर्जन करना, भयानक आवाज करना। वकृ गडयडत (सुपा १६४)।

गडयडी स्त्री [दे] वज्र-निर्घोष, गडगड आवाज, मेघ-ध्वनि (दे २, ८५, सण)।

गडवड न [दे] गडबड, गोलमाल (सुपा ५४१)।

गडिअ } गडुअ } देखो गम = गम्।

गडुल न [दे] चावल वगैरह का धोया-जल, चावल आदि का धोवन (धर्म २)।

गड्ड पुंस्त्री [गर्त्त] गड्हा, गड्ढा (हे २, ३२, प्राप्र, सुपा ११४)। स्त्री गड्डा (हे १, ३५)।

गड्ड न [दे] शकट, गाडी (ती १५)।

गड्डरिगा } गड्डरिया } स्त्री [दे] भेडी, मेषी, ऊर्णायु, 'गड्डरिगपवाहेणं गयाणुगइयं जणं वियाणंतो' (धम्म, सूअ १, ३, ४)।

गड्डरी स्त्री [दे] १ छागी, अजा, बकरी (दे २, ८४)। २ भेडी, मेषी (सट्ठि ३८)।

गड्डह पुस्त्री [गर्दभ] गदहा, गधा, खर (हे २, ३७)। °वाहण पुं [°वाहन] रावण, दशानन (कुमा)।

गड्डिआ } गड्डी } स्त्री [दे] गाडी, शकट (ओघ ३८६ टी, दे २, ८१, सुपा २४२)।

गड्ढ न [दे] शय्या, बिछौना (दे २, ८१)।

गढ देखो घड = घट्। गढइ (हे ४, ११२)।

गढ पुस्त्री [दे] गढ, दुर्ग, किला, कोट (दे २, ८१, सुपा २५, १०५)। स्त्री गढा (कुमा)।

गढिअ वि [घटित] गढा हुआ, जटित (कुमा)।

गढिअ वि [ग्रथित] १ गूंथा हुआ, निबद्ध, 'नेहनिगडगढियाण' (उप ६८६ टी, पण्ह १, ४)। २ रचित, गुम्फित, निर्मित (ठा २, १)। ३ गृद्ध, आसक्त, (आचा २, २, २, पण्ह १, २)।

गण सक [गणय्] १ गिनना, गिनती करना। २ आदर करना। ३ अभ्यास करना, आवृत्ति करना। ४ पर्यालोचन करना। गणइ, गणेइ (कुमा, महा)। वकृ. गणत, गणेत (पचा ४, मे ४,१५)। कृ गणेयव्व (उप ५५५)।

मग्न, खुशी में लीनः 'तं वह दट्ठुं आणंद-गुंदल' (सुपा १३४)।

गुंदवडय न [दे] एक प्रकार की मिठाई, गुजराती मे जिसको 'गुंदवडा' कहते हैं (सुपा ४८५)।

गुंदा } स्त्री [दे] १ विन्दु २ अधम, नीच
गुंपा } (दे २, १०१)।

गुंध सक [ग्रन्थ्] गठना। गुंधइ (प्राकृ ६३)।

गुंफ सक [गुम्फ्] गूँथना, गठना। गुंफइ (षड्) वकृ गुफंत (कुमा)।

गुफ पुं [गुम्फ] १ रचना, गूँथना, ग्रन्थन (उप १०३१ टी दे १, १५०, ६, १४२)।

गुंफ पुं [दे] गुप्ति, कारागार, जेल (दे २, ६०)।

गुंफण न [दे] गोफन, पत्थर फेंकने का अस्त्र-विशेष, 'गुंफणफेरणसुंकारएहिं' (सुर २, ८)।

गुंफी स्त्री [दे] शतपदी, क्षुद्र कीट-विशेष, गोजर, कनखजूरा (दे २, ६१)।

गुग्गुल पुं [गुग्गुल] सुगन्धित द्रव्य-विशेष, गूगल या गुग्गुल (सुपा १५१)।

गुग्गुली स्त्री [गुग्गुल] गूगल का पेड (जी १०)।

गुग्गुलु देखो गुग्गुल (स ४३६)।

गुच्छ } पुं [गुच्छ] १ गुच्छा, गुच्छक,
गुच्छय } स्तवक (उत्त २, स्वप्न ७२)। २ वृक्षो की एक जाति (पएण १)। ३ पत्तो का समूह (जं १)।

गुच्छय देखो गोच्छय (ओघ ६६८)।

गुच्छिय वि [गुच्छित] गुच्छा वाला, गुच्छ-युक्त, 'निच्च गुच्छिया' (राय)।

गुज्ज देखो गोज्ज (सुपा २८१)।

गुज्जर पुं [गूजर] १ भारत का एक प्रान्त, गुजरात देश (पिंग)। २ वि. गुजरात का निवासी। स्त्री. °री (नाट)।

गुज्जरत्ता स्त्री [गूर्जरत्रा] गुजरात देश (सार्ध ६८)।

गुज्जलिअ वि [दे] संघटित (षड्)।

गुज्झ पु [गुह्य] एक देव-जाति (दस ७, ५३)।

गुज्झ } वि [गुह्य] १ गोपनीय, छिपाने
गुज्झअ } योग्य (णाया १,१, हे २,१२४)। २ न. गुप्त वात, रहस्य, 'सिमंतिणिहियगयं गुज्झं पिव तक्खणा फुट्टं' (उप ७२८ टी)। ३ लिंग, पुरुष-चिह्न। ४ योनि, स्त्री-चिह्न (धर्म २)। ५ मैथुन, सभोग (पगह १, ४)। °हर वि [°धर] गुप्त वात को प्रकट नही करनेवाला (दे २ ४३)। °हर वि [°हर] रहस्य-भेदी, गुप्त वात को प्रसिद्ध करनेवाला (दे २, ६३)।

गुज्झअ } पुं [गुह्यक] देवो की एक जाति
गुज्झग } (ठा ५, ३)।

गुट्ट न [दे] स्तम्व, तृण-काण्डः 'अज्जुण-गुट्ठ व तस्स जाणूइं' (उवा)।

गुट्ठ देखो गोट्ठ (पाअ, भत्त १६२)।

गुट्ठी देखो गोट्ठी (सूक्त ५८)।

गुड सक [गुड्] १ हाथी को कवच वगैरह से सजाना। २ लडाई के लिए तय्यार करना, सजाना, 'गुडह गइंदे पउणीकरेह रहचक्कपाइक्के' (सुपा २८८)। कवकृ 'गुडिअगुडिज्ज-तभडं' (से १२, ८७)।

गुड सक [गुड्] नियन्त्रण करना। गुडेइ (संबोध ५४)।

गुड पुं [गुड] १ गुड, ईख का विकार, लाल शक्कर (हे १, २०२, प्रासू १५१)। २ एक प्रकार का कवच (राज)। °सत्थ न [°सार्थ] नगर-विशेष (आक)।

गुडदालिअ वि [दे] पिण्डीकृत, इकट्ठा किया हुआ (दे २, ६२)।

गुडा स्त्री [गुडा] १ हाथी का कवच। २ अश्व का कवच (विपा १, २)।

गुडिअ वि [गुडित] कवचित, वर्मित, कृत-संनाह (से १२, ७३, ८७, विपा १, २)।

गुडिआ स्त्री [गुटिका] गाली (गा १७७)।

गुडीलद्धिआ स्त्री [दे] चुम्बन (दे २, ६१)।

गुड्डर पुंन [दे] खीमा या खेमा, तंवू, डेरा, वस्त्र-गृह (सिरि ४८२, ६४४)।

गुण सक [गुणय्] १ गिनना। २ आवृत्ति करना, याद करना। गुणइ (सूक्त ५१, हे ४, ४२२), गुणेइ (उव)। वकृ. गुणमाण (उप पृ ३६६)।

गुण पुं [गुण] उच्चारण (सूअनि २०)। २ रसना, मेखला (आचा २, २, १, ७)।

गुण पुन [गुण] १ गुण, पर्याय, स्वभाव, धर्म (ठा ५, ३)। २ ज्ञान, सुख वगैरह एक ही साथ रहनेवाला धर्म (सम्म १०७,१०६)। ३ ज्ञान, विनय, दान, शौर्य, सदाचार वगैरह दोष-प्रतिपक्षी पदार्थ (कुमा, उत्त १६, अणु, ठा ४, ३, से १, ४)। ४ लाभ, फायदा, 'विहवेहिं गुणाइं मग्गंति' (हे १, ३४, सुपा १०३)। ५ प्रशस्तता, प्रशंसा (णाया १, १)। ६ रज्जू, डोरा, धागा (से १, ४)। ७ व्याकरण-प्रसिद्ध ए, ओ और अर् रूप स्वर-विकार (सुपा १०३)। ८ जैन गृहस्थ को पालने का व्रत विशेष, गुण-व्रत (पचव ३)। ९ रूप, रस, गन्ध वगैरह द्रव्याश्रित धर्म, 'गुण-पञ्चक्खत्तणओ गुणीवि जाओ घडाव्व पञ्चक्खो' (ठा १, १, उत्त २८)। १० प्रत्यञ्चा, धनुष का रोदा (कुमा)। ११ कार्य, प्रयोजन (भग २, १०)। १२ अप्रधान, अमुख्य, गौण (हे १, ३४)। १३ अंश, विभाग (अणु)। १४ उपकार, हित (पंचा ५)। °कर वि [°कर] १ लाभ-कारक। २ उपकार-कारक (पंचा ५)। °कार पुं [°कार] गुणा करना, अभ्यास-राशि (सम ६०)। °चंद पुं [°चन्द्र] १ एक राजकुमार (आवम)। २ एक जैन मुनि और ग्रन्थकार। ३ श्रेष्ठि-विशेष (राज)। °ट्ठाण न [°स्थान] गुणो का स्वरूप-विशेष, मिथ्यादृष्टि वगैरह चउदह गुण-स्थानक (कम्म ४, पव ६०)। °ट्ठिअ पुं [°र्थिक] गुण को प्रधान माननेवाला मत, नय-विशेष (सम्म १०७)। °ड्ढ वि [°ाढ्य] गुणी, गुणवान् (सुर ३, २०, १३०)। °ण्ण, °ण्णु, °न्न, °न्नु वि [°ज्ञ] गुण का जानकार (गउड, उवर ८६, उप ५३० टी, सुपा १२२)। °पुरिस पुं [°पुरुष] गुणी पुरुष (सूअ १, ४) °मंत वि [°वत्] गुणी, गुण-युक्त (आचा २,१,६)। °रयणस-वच्छर न [°रत्नसंवत्सर] तपश्चर्या-विशेष (भग)। °व, °वत वि [°वत्] गुणी, गुण-युक्त (श्रा ३६, उप ८७५)। °व्वय न [व्रत] जैन गृहस्थ को पालने योग्य-व्रत-विशेष (पडि)। °सिलय न [°शिलक] राजगृह नगर का एक चैत्य (णाया १, १)। °सेढि स्त्री [°श्रेणि] कर्म-पुद्गलो की रचना-

गद्दभी स्त्री [गर्दभी] १ गधी, गदही (पि २६१)। २ विद्या-विशेष (काल)।

गद्दह पु [गर्दभ] १ गदहा, गधा, खर (मम ५०, दे २, ८०, पाग्र, हे २, ३७)। २ इस नाम का एक मंत्रि-पुत्र (वृह १)।

गद्दह न [दे] कुमुद, चन्द्र-विकासी कमल (दे २, ८३)।

गद्दहय पुं [गर्दभक] १ क्षुद्र जन्तु-विशेष, जो गोशाला वगैरह में उत्पन्न होता है (जी १७)। २ देखो गद्दह (नाट)।

गद्दही देखो गद्दभी (नाट—मृच्छ ५८, निचू १०)।

गद्दिअ वि [दे] गर्वित, गर्व-युक्त (दे २, ८३)।

गद्ध पुं [गृध्र] पक्षि-विशेष, गीध, गिद्ध (औप)।

गन्न वि [गण्य] १ माननीय, आदरास्पद, 'हियमप्पणो करेंतो, कस्स न होइ गरुओ गुरुगन्नो', 'सव्वो गुणेहि गन्नो' (उव)। २ न गणना, गिनती, 'मुल्लस्स कुणइ गन्न' (सुपा २५३)।

गब्भ पु [गर्भ] १ कुक्षि, पेट, उदर (ठा ५, १)। २ उत्पत्ति-स्थान जन्म-स्थान (ठा २, ३)। ३ भ्रूण, अन्तरापत्य (कप्प)। ४ मध्य, अन्तर, भीतर का (णाया १, ८)। °गरा स्त्री [°करी] गर्भाधान करनेवाली विद्या-विशेष (सूअ २, २)। °घर न [°गृह] भीतर का घर, घर का भीतरी भाग (णाया १, ८)। °ज वि [°ज] गर्भ मे उत्पन्न होनेवाला प्राणी, मनुष्य, पशु वगैरह (पउम १०२, ६७)। °त्थ वि [°स्थ] १ गर्भ मे रहनेवाला। २ गर्भ से उत्पन्न होनेवाला मनुष्य वगैरह (ठा २, २)। °मास पु [°मास] कार्तिक से लेकर माघ तक का महीना (वव ७)। °य देखो °ज (जी २३)। °वई स्त्री [°वती] गर्भिणी स्त्री (सुपा २७६)। °वक्कंति स्त्री [°व्युत्क्रान्ति] १ गर्भाशय में उत्पत्ति (ठा २, ३)। °वक्कंतिअ वि [°व्युत्क्रान्तिक] गर्भाशय मे जिसकी उत्पत्ति हाती है वह (सम २, २१)। °हर देखो घर (सुर ६, २१, सुपा १८२)।

गब्भर न [गह्वर] १ कोटर, गुहा। २ गहन, विषम स्थान (श्राव ४, पि ३३२)।

गब्भर देखो गह्वर, 'गब्भरो' (प्राकृ २४, संक्षि १६)।

गब्भाहाण न [गर्भाधान] सस्कार-विशेष (राय १४६)।

गब्भिज्ज पु [दे गर्भज] जहाज का निम्न श्रेणी का नौकर 'कुच्छिधारकन्नधारगब्भिज (? ज्ज) सजत्ताणावावाणियगा' (णाया १, ८—पत्र १३३, राज)।

गब्भिण } वि [गर्भिन] १ जिसको गर्भ
गब्भिय } पैदा हुआ हो वह गर्भ-युक्त (हे १, २०८, प्राप्र, णाया १ ७)। २ युक्त, सहित, 'वेडिमदलनीलभित्तिगब्भिणय' (कुमा, षड्)।

गब्भिल्ल देखो गब्भिज्ज (णाया १, १७—पत्र २२८)।

गम सक [गम्] १ जाना, गति करना, चलना। २ जानना, समझना। ३ प्राप्त करना। भूका गमिही (कुमा)। कर्म गम्मइ, गमिज्जइ (हे ४, २४६)। कवकृ. गम्ममाण (म ३४०)। संकृ गतु, गमिअ, गता, गतूण, गंतूणं (कुमा, षड्, प्राप्र, औप, कम), गडुअ, गडिअ, गदुअ (शौ), (हे ४, २७२, पि ४८१, नाट—मालती ४०), गमेप्पि, गमेप्पिणु, गप्पि, गप्पिणु (अप), (कुमा)। हेकृ गतुं (कस, श्रा १४)। कृ गतव्व, गमणिज्ज, गमणीअ (णाया १, १, गा २४६, उव, भग, नाट)।

गम सक [गमय्] १ ले जाना। २ व्यतीत करना, पसार करना, गुजारना। गमेति (गउड), 'वुहा! मुहा मा दियहे गमेह' (सत्त ४)। कर्म गमेज्जति (गउड)। वकृ. गमत (सुपा २०२)। सकृ गमिऊण (पि) हेकृ गमित्तए (पि ५७८)।

गम पु [गम] १ गमन, गति, चाल (उप २२० टी)। २ प्रवेश (पउम १, २६)। ३ शास्त्र का तुल्य पाठ, एक तरह का पाठ, जिसका तात्पर्य भिन्न हो (दे १, १ विसे ५४६, भग)। ४ व्याख्या, टीका (विसे ६१३)। ५ बोध, ज्ञान, समझ (अणु, णादि)। ६ मार्ग, रास्ता (ठा ७)।

गम पु [गम] १ प्रकार (वव १)। २ वि. जगम (मज्ञानि ४)।

गमग वि [गमक] बोधक, निश्चायक (विसे ३१५)।

गमण न [गमन] गमन, गति (भग, प्रासू १३२)। २ वेदन, बोध (णदि)। ३ व्याख्यान, टीका। ४ पुष्य वगैरह नत्र नक्षत्र (राज)।

गमणया } स्त्री [गमन] गमन, गति 'लोगत-
गमणा } गमणयाए' (ठा ४, ३), 'पायवदए पहारेत्थ गमणाए' (णाया १,१—पत्र २६।

गमणिज्ज देखो गम = गम्।

गमणिआ स्त्री [गमनिका] १ सक्षिप्त, व्याख्यान, दिग्-दर्शन (राज)। २ गुजारना, अतिक्रमण, 'कालगमणिया एत्थ उवाओ' (उप ७२८ टी)।

गमणी स्त्री [गमनी] १ विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से आकाश मे गमन किया जा सकता है (णाया १, १६—पत्र २१३)। २ जूता, 'सव्वोवि जणो जल विगाहि तो उत्तारइ गमणीओ चरणाहितो' (सुपा ६१०)।

गमणीअ देखो गम = गम्।

गमय देखो गमग (विसे २६७३)।

गमार वि [दे ग्राम्य] अविदग्ध, मूर्ख (संक्षि ४७)।

गमाव देखो गम = गमय्। गमावइ (सण)।

गमिअ वि [गमिक] प्रकारवाला (वव १)।

गमिद वि [दे] १ अपूर्ण। २ गूढ़। ३ स्खलित (षड्)।

गमिय वि [गमित] १ गुजारा हुआ, अतिक्रात (गउड)। २ ज्ञापित, बोधित, निवेदित (विसे ५५६)।

गमिय न [गमिक] शास्त्र-विशेष, सदृश पाठवाला शास्त्र, 'भग गणियाइ गमिय सरिसगम च कारणवसेण' (विसे ५४९, ८५४)।

गमिर वि [गन्तृ] जानेवाला (हे २, १४५)।

गमेप्पि } देखो गम = गम्।
गमेप्पिणु }

गमेर देखो गमार (संक्षि ४७)।

गमेस देखो गवेस। गमेसइ (हे ४, १८९)। गमेसति (कुमा)।

गम्म वि [गम्य] १ जानने योग्य। २ जो जाना जा सके (उत्तर १७०, सुपा ४२६)। ३ हराने योग्य, आक्रमणीय (सुर १२६,

गुम्मइअ वि [दे] १ मूढ, मूर्ख (दे २,१०३, ओघ १३६, पाअ, षड्)। २ अपूरित, पूर्ण नहीं किया हुआ (षड्)। ३ पूरित, पूर्ण किया हुआ (दे २, १०३)। ४ स्खलित। ५ सचलित, मूल से उच्चलित। ६ विघटित, वियुक्त (दे २, १०३, षड्)।

गुम्मड देखो **गुम्म**। गुम्मडइ (हे ४, २०७)।

गुम्मडिअ वि [मोहित] मोह युक्त, मुग्ध किया हुआ (कुमा ७, ४७)।

गुम्मागुम्मि अ जत्थाबन्ध होकर (औप)।

गुम्मिअ वि [मुग्ध] १ मोह प्राप्त मूढ (कुमा ७, ४७)। २ घूर्णित मद से घूमता हुआ (बृह १)।

गुम्मिअ पु [गौल्मिक] कोतवाल, नगर-रक्षक (ओघ १६३, ७६६)।

गुम्मिअ वि [दे] मूल से उखाडा हुआ, उन्मूलित (दे २, ६२)।

गुम्मी स्त्री [दे] इच्छा, अभिलाषा (दे २, ६०)।

गुम्मी स्त्री [गुल्मी] शतपदी, यूका, खटमल, जूँ (उत्त ३६, १३६, सुख ३६, १३६)।

गुम्ह सक [गुम्फ्] गूँथना, गठना। गुम्हदु (शौ) (स्वप्न ५३)।

गुय्ह देखो **गुज्झ** (हे २, १२४)।

गुरव देखो **गुरु**, 'जा उरवे साहीणे धम्मं साहेइ पोढवुद्धिओ' (पउम ६, ११४)।

गुरु } पु [गुरु] १ शिक्षक, विद्या-दाता,
गुरुअ } पढानेवाला (वव १, अणु)। २ धर्मोपदेशक, धर्माचार्य (विसे ६३०)। ३ माता, पिता वगैरह पूज्य लोग (ठा १०)। ४ बृहस्पति, ग्रह-विशेष (पउम १७, १०८, कुमा)। ५ स्वर विशेष, दो मात्रावाला आ, ई वगैरह स्वर जिसके पीछे अनुस्वार या सयुक्त व्यञ्जन हो ऐसा भी स्वर-वर्ण (पिंग)। ६ वि. बडा, महान् (उवा, से ३, ३८)। ७ भारी, बोझिल (ठा १, १, कम्म १)। ८ उत्कृष्ट, उत्तम (कम्म ४, ७२, ७६)। °कम्म वि [°कर्मन्] कर्मो का बोझवाला, पापी (सुपा २६५)। °कुल न [°कुल] १ धर्माचार्य का सामीप्य (पंचा ११)। २ गुरु-परिवार (उप ६७७)। °गइ स्त्री [°गति] गति-विशेष, भारीपन से ऊँचा-नीचा गमन (ठा ८)। °लाघव न [°लाघव] सारासार, अच्छा और बुरापन (वव ४)। °सज्झिल्लग पुं [°सहाध्यायिक] गुरु के भाई (बृह ४)।

गुरुई देखो **गरुई** (णाया १, १)।

गुरुणी स्त्री [गुर्वी] १ गुरु-स्थानीय स्त्री (सुर ११, २११)। २ धर्मोपदेशिका, साध्वी (उप ७२८ टी)।

गुरेड न [गुरेट] तृण-विशेष (दे १, ५४)।

गुल देखो **गुड** = गुड (ठा ३, १, ६, णाया १, ८, गा ५५४, औप)।

गुल न [दे] चुम्बन (दे २, ६१)।

गुलगुंछ सक [उन् + क्षिप्] ऊँचा फेंकना। गुलगुंछइ (हे ४, १४४)। संकृ **गुलगुंछिऊण** (कुमा)।

गुलगुंछ देखो **गुलुगुंछ** = उद् + नमय्। गुलगुंछइ (हे ४, ३६)।

गुलगुल अक [गुलगुलाय्] 'गुलगुल' आवाज करना, हाथी का हर्ष से चिघाडना या बोलना। वकृ **गुलगुलत**, **गुलगुलेत** (उप १०३१ टी, उवा, पउम ८, १७१, १०२, २०)।

गुलगुलाइअ } न [गुलगुलायित] हाथी की
गुलगुलिय } गर्जना (ज ५, सुपा १३७)।

गुलल सक [चाटू कृ] खुशामद करना। गुललइ (हे ४, ७३)। वकृ **गुललत** (कुमा)।

गुललावणिया स्त्री [गुडलावणिका] एक तरह की मिठाई, गोलपापडी। २ गुडवाना (पव २५६, सुज्ज २० टी)।

गुलहाणिया स्त्री [गुडधानिका] खाद्य-विशेष (पव ४)।

गुलिअ वि [दे] मथित, विलोडित (दे २, १०३, षड्)। २ पुं गेंद, कन्दुक, 'कंदुओ गुलिओ' (पाअ)।

गुलिआ स्त्री [दे] १ बुमिका। २ गेंद, कन्दुक। ३ स्तवक, गुच्छा (दे २, १०३)।

गुलिआ स्त्री [गुलिका] १ गोली, गुटिका (महा, णाया १, १३, सुपा २६२)। २ वर्णक द्रव्य-विशेष, सुगन्धित द्रव्य-विशेष (औप, णाया १, १—पत्र २४)।

गुलुइय वि [दे] गुल्मित, गुल्मवाला, लता समूहवाला (औप, भग)।

गुलुछ पु [गुलुञ्छ] गुच्छ, गुच्छा (दे २, ६२)।

गुलुगुंछ देखो **गुलगुंछ** = उत् + क्षिप्। गुलुगुंछइ (हे ४, १४४)।

गुलुगुंछ सक [उन् + नमय्] ऊँचा करना, उन्नत करना। गुलुगुंछइ (हे ४,३६)।

गुलुगुंछिअ वि [उन्नमित] ऊँचा किया हुआ, उन्नमित (दे २, ६३, कुमा)।

गुलुगुंछिअ वि [दे] वाड से अन्तरित (दे २, ६३)।

गुलुगुल देखो **गुलगुल**। गुलुगुलति (भवि)। वकृ **गुलुगुलेत** (पि ५५८)।

गुलुगुलाइय } देखो **गुलगुलाइअ** (औप,
गुलुगुलिय } पण्ह १, ३, स ३६६)।

गुलुच्छ वि [दे] भ्रमित, घुमाया हुआ, (दे २, ६२)।

गुलुच्छ पु [गुलुच्छ] गुच्छा, स्तवक (पाअ)।

गुल्लइय वि [गुल्मवत्] लता-समूहवाला, गुल्म-युक्त (णाया १, १—पत्र ५)।

गुव देखो **गुप्प** = गुप्। गुवंति (भग १५)।

°**गुवलय** देखो **कुवलय**, 'मुद्दियगुवलयनिहाए' (णदि)।

गुवालिया [दे] देखो **गोआलिआ** (जी १७)।

गुविअ वि [गुप्त] व्याकुल, क्षुब्ध (ठा ३, ४—पत्र १६१)।

गुविल वि [गुपिल] १ गहन, गहरा, गाढ, निविड (सुर ६, ६६, उप पृ ३०, पण्ह १, ३)। २ न. झाडी, जंगल (उप ८३३ टी),

'इक्को करइ कम्मं,
इक्को अणुहवइ दुक्कयविभारं।
इक्को संसरइ जिओ,
जरमरणचउगइगुविलं' (पच ४४)।

गुविल वि [दे] चीनी का बना हुआ, मिस्री-वाला (मिष्टान्न) (उर ५, १०)।

गुव्विणी स्त्री [गुर्विणी] गर्भवती स्त्री (सुपा २७७)।

गुह देखो **गुभ**। गुहइ (हे १, २३६)।

गुह पुं [गुह] कार्त्तिकेय, एक शिव-पुत्र (पाअ)।

गुहा स्त्री [गुहा] गुफा, कन्दरा (पाअ, ठा २, ३; प्रासू २७१)।

गुहिर वि [दे] गम्भीर, गहरा (पाअ, कप्प)।

गरिह देखो गरह। गरिहइ, गरिहामि (महा; पडि)।

गरिह पुं [गर्ह] निन्दा, गर्हा (प्राप्र)।

गरिहणया देखो गरहणया (उत्त २९, १)।

गरिहा स्त्री [गर्हा] निन्दा, घृणा, जुगुप्सा (ओघ ७९१, स १६०)।

गरु देखो गुरु; 'गरुयरगत्ताए खिविऊण' (सुपा २१४)।

गरुअ वि [गुरुक] गुरु, बडा, महान् (हे १, १०९, प्राप्र; प्रासू ३९)।

गरुअ सक [गुरुकारय्] गुरु करना, बडा बनाना। गरुएइ (पि १२३),

'हंसाएा सरेहिं सिरी, सारिज्जइ
अह सराएा हंसेहिं।
अरएणाएणं चिअ एए,
अप्पाएा णवर गरुअंति'
(हेका २५५)।

गरुआ } अक [गुरुकारय्] १ बडा बनना। बडे की तरह आचरण करना। गरुआइ, गरुआअइ (हे ३, १३८)।
गरुआअ }

गरुइअ वि [गुरुकृत] वडा किया हुआ (से ९, २०, गउड)।

गरुई } स्त्री [गुर्वी] बडी, ज्येष्ठा, महती (हे १, १०७, प्राप्र, निचू १)।
गरुवी }

गरुक्क देखो गरुअ; 'णवजोव्वणरूअपसाहिएण सिंगारगुणगरुक्केण' (प्राप)।

गरुड देखो गरुल (सति १; स २६५, पिंग)। छन्द-विशेष (पिंग)। °त्थ न [°स्त्र] अस्त्र-विशेष, उरगास्त्र का प्रतिपक्षी अस्त्र (पउम १२, १३०, ७१, ६६)। °द्धय पुं [°ध्वज] विष्णु, वासुदेव (पउम ६१, ५७)। °वूह पुं [°व्यूह] सेना की एक प्रकार की रचना (महा, पि २४०)।

गरुडंक पुं [गरुडाङ्क] १ विष्णु, वासुदेव। २ इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ७)।

गरुल पुं [गरुड] एक देव विमान (देवेन्द्र १३४)।

गरुल पुं [गरुड] १ पक्षि-राज, पक्षि-विशेष (पएह १, १)। २ यक्ष-विशेष, भगवान् शान्तिनाथ का शासन-यक्ष (संति ८)। ३ भवनपति देवों की एक जाति, सुपर्णकुमार देव (पएह १, ४)। ४ सुपर्णकुमार देवों का इन्द्र (सूअ १, ६)। °केउ पुं [°केतु] देखो °ज्झय (राज)। °ज्झय, °द्धय पुं [°ध्वज] १ गरुड पक्षी के चित्रवाली ध्वजा (राय)। २ वासुदेव, कृष्ण। ३ देव-जाति-विशेष, सुपर्णकुमार देव (आवम; सम; पि)। °व्वूह देखो गरुड-वूह (जं २), °सत्थ न [°शस्त्र] गरुडास्त्र, अस्त्र-विशेष (महा)। °सण न [°सन] आसन-विशेष (राय)। °ोववाय न [°ोपपात] शास्त्र-विशेष, जिसको याद करने से गरुडदेव प्रत्यक्ष होते हैं (ठा १०)। देखो गरुड।

गरुवी देखो गरुई (कुमा)।

गल अक [गल्] १ गल जाना, सडना। २ खतम होना, समाप्त होना। ३ झरना, टपकना, गिरना। ४ पिघलना, नरम होना। ५ सक. गिराना, टपकाना, 'जाव रत्ती गलइ' (महा)। वकृ. 'नवेण रस सोएहिं गलतम् असुइरस' (महा, सुर ४, ६८, सुपा २०४)। गलित (पएह १, ३, प्रासू ७२)। प्रयो., वकृ. गलावेमाण (णाया १, १२)।

गल } पु [गल] १ गला, ग्रीवा, कण्ठ (सुपा ३३, पाअ)। २ वडिश, वंसी, मछली पकडने का काँटा (उप १८८, विपा १, ८, सुर ८, १४०)। °गज्जि स्त्री [°गर्जि] गले की गर्जना (महा)। °गज्जिय न [°गर्जित] गल-गर्जन (महा)। °लाय वि [°लात] गले में लगाया हुआ, कण्ठन्यस्त (औप)।
गलअ }

गलई स्त्री [गलकी] वनस्पति-विशेष (राज)।

गलआ देखो गलअ (पएह १, १)।

गलत्थ देखो खिव। गलत्थइ (हे ४, १४३, भवि)।

गलत्थण न [क्षेपण] १ क्षेपण करना, फेंकना। २ प्रेरण (से ५, ५३, सुपा २८)।

गलत्थलिअ वि [दे] १ क्षिप्त, फेंका हुआ। २ प्रेरित (दे २, ८७)।

गलत्थल्ल पुं [दे] गलहस्त, हाथ से गला पकडना (णाया १,६, पएह १,३—पत्र ५३)।

गलत्थल्लिअ [दे] देखो गलत्थलिअ (से ५, ४१, ८, ६१)।

गलत्था स्त्री [दे] प्रेरणा;

'गरुयाए चिय भुवणम्मि भावया
न उण हुंति लहुयाए।
गहकल्लोलगलत्था, ससिसूराणं न ताराण'
(उप ७२८ टी)।

गलत्थिअ वि [क्षिप्त] १ प्रेरित (सुपा ६३५)। २ फेंका हुआ (दे २, ८७, कुमा)। ३ वाहर निकाला हुआ (पाअ)।

गलद्धअ पुं [दे] प्रेरित, क्षिप्त (षड्)।

गलहत्थिअ वि [गलहस्तित] गला पकडकर वाहर निकाला हुआ (वज्जा १३८)।

गलाण देखो गिलाण (नाट—चैत ३४)।

गलि देखो गल = गल, 'मच्छुव्व गलि गिलित्ता' (दसचू १, ६)।

गलि } वि [गलि, °क] दुर्विनीत, दुर्दम (श्रा १२, सुपा २७६)। °गद्दह पु [°गर्दभ] अविनीत गदहा (उत्त २७)। °वइल्ल पुं [°बलीवर्द] दुर्विनीत वैल (कप्पू)। °स्स पुं [°श्व] दुर्दम घोडा (उत्त १)।
गलिअ }

गलिअ वि [गलित] १ गला हुआ, पिघला हुआ (कप्प)। २ क्षालित, प्रक्षालित (कुमा)। ३ स्खलित, पतित (से १, २)। ४ नष्ट, नाश-प्राप्त (सुपा २४३, सण)।

गलिअ वि [दे] स्मृत, याद किया हुआ (दे २, ८१)।

गलिंत देखो गल = गल।

गलिच्च वि [गलीय, गल्य] गले का (पिंड ४२४)।

गलिर वि [गलितृ] निरन्तर पिघलता, टपकता, 'वहुसोगगलिरनयणेण' (श्रा १४)।

गलुल देखो गरुल (अच्चु १, षड्)।

गलोई } स्त्री [गुडूची] वल्ली विशेष, गिलोय, गुरुच (हे १, १२४, जी १०)।
गलोया }

गल्ल पुं [गल्ल] १ गाल, कपोल (दे २, ८१, उवा)। २ हाथी का गण्ड-स्थल, कुम्भ स्थल (षड्)। °मसूरिया स्त्री [°मसूरिका] गाल का उपधान (जीत)।

गल्लक्क पुन [दे] १ स्फटिक मणि (प्राप, पि २९६)।

गल्लत्थ देखो गलत्थ। गल्लत्थइ (षड्)।

१, २)। °दास पु [°दाम] १ एक जैन-मुनि, भद्रबाहु स्वामी का प्रथम शिष्य। २ एक जैनमुनिगण (कप्प, ठा ६)। °दोहिया स्त्री [°दोहिका] १ गौ का दोहन। २ आसन विशेष, गौ दुहने के समय जिस तरह बैठा जाता है उस तरह का उपवेशन (ठा ५, १)। °दुह वि [°दुह्] गौ को दोहने-वाला (पड्)। °धूलिआ स्त्री [°धूलिका] लग्न-विशेष, गौओं को चरा कर लौटने का समय, सायकाल, 'वेलव्व गोधूलिया' (रंभा)। °पय °प्पय न [°ष्पद] १ गौ का खुर डूबे उतना गहरा, 'लद्धम्मि जम्मि जीवाण जायइ गोपय व भवजलही' (श्राप ६६)। २ गोपद-परिमित भूमि (श्रणु)। ३ गौ का खुर (ठा ४,४)। °भद्द पुं [°भद्र] श्रेष्ठि-विशेष, शालिभद्र के पिता का नाम (ठा १०)। °भूमि स्त्री [°भूमि] गौओं को चरने की जगह (आवम)। °म वि [°मत्] गौवाला (विसे १४६८)। °मड न [°मृत] गौ का शव (णाया १, ११—पत्र १७३)। °मय न [°मय] गोवर, गौ का मल, गो-विष्ठा (भग ५, २)। °मुत्तिया स्त्री [°मूत्रिका] १ गौ का मूत्र, गोमूत्र (ओघ ६४ भा)। २ गोमूत्र के आकारवाली गृहपंक्ति (पचव २)। °मुहिअ न [°मुखित] गौ के मुख की आकारवाली ढाल (णाया १, १८)। °रहग पु [°रथक] तीन वर्ष का बैल (सूअ १, ४, २)। °रोयण स्त्रीन [°रोचन] स्वनाम-ख्यात पीत-वर्ण द्रव्य-विशेष, गोमस्तकस्थित शुष्क-पित्त (सुर १,१३७)। स्त्री °णा (पचा ४)। °लेहणिया स्त्री [°लेहनिका] ऊपर भूमि (निचू ३)। °लोम पु [°लोम] १ गौ का रोम, वाल। २ द्वीन्द्रिय जन्तु विशेष (जीव १)। °वइ पु [°पति] १ इन्द्र। २ सूर्य। ३ राजा (सुपा १४२)। ४ महादेव। ५ बैल (हे १,२३१)। °वइय पु [°व्रतिक] गौओं की चर्या का अनुकरण करनेवाला एक प्रकार का तपस्वी (णाया १, १५)। °वय देखो °पय (राज)। °वाड पु [°वाट] गौओं का वाडा (दे १,१४९)। °व्वइय देखो °वइय (औप)। °साला स्त्री [°शाला] गौओं का वाडा (निचू ८)। °हण न [°धन] गौओं का समूह (गा ६०६, सुर १, ४६)।

गोअ देखो गोव = गोपय्। कृ गोअणिज्ज (नाट—मालती १२१)।

गोअट पुं [दे] १ गौ का चरण। २ स्थल-शृङ्गाट, स्थल में होनेवाला शृङ्गाट या सिंघाडा का पेड (दे २, ९८)।

गोअग्गा स्त्री [दे] रथ्या, मुहल्ला (दे २, ९६)।

गोअड्डा स्त्री [दे] दूध वेचनेवाली स्त्री (दे २, ९८)।

गोअर पुं [गोचर] छात्रालय (दस ५, २ २)।

गोअलिणी स्त्री [गोपालिनी] ग्वालिन, 'जो गयणभूमिभंडोयरम्मि जुण्हादहीय महणेण। पुन्निमगोअलिणीए मक्खणपिंडुव्व निम्मविओ।' (धर्मवि ५५)।

गोआ स्त्री [गोदा] नदी-विशेष, गोदावरी नदी, 'गोआणइकच्छकुडंगवासिणा दरिअसी-हेण' (गा १७५)।

गोआ स्त्री [दे] गगरी, कलशी, छोटा घडा (दे २, ८९)।

गोआअरी स्त्री [गोदावरी] नदी-विशेष, गोदावरी (गा ३५५)।

गोआलिआ स्त्री [दे] वर्षा ऋतु में उत्पन्न होनेवाला कीट-विशेष (दे २, ९८)।

गोआवरी देखो गोआअरी (हे २, १७४)।

गोउर न [गोपुर] नगर या किले का दरवाजा (सम १३७, सुर १, ५६)।

गोउलिय वि [गोकुलिक] गो-धन पर नियुक्त पुरुष, गोकुल-रक्षक (कुप्र ३१)।

गोंजी } गोंठी } स्त्री [दे] मजरी, वौर (दे २, ९५)।

गोंड देखो कोंड = कौण्ड (इक)।

गोंड न [दे] कानन, वन, जंगल (दे २, ९४)।

गोंडी स्त्री [दे] मंजरी, वौर (दे २, ९५)।

गोंदल देखो गुदल (भवि)।

गोंदीण न [दे] मयूर-पित्त, मोर का पित्त (दे २, ९७)।

गोंफ पुं [गुल्फ] पाद-ग्रन्थि, पैर की गाँठ (पण्ह १, ४)।

गोकण्ण } गोकन्न } पुं [गोकर्ण] १ गौ का कान। २ दो खुरवाला चतुष्पद-विशेष (पण्ह १, १)। ३ एक अन्तर्द्वीप, द्वीप-विशेष। ४ गोकर्ण-द्वीप का निवासी मनुष्य (ठा ४, २)।

गोकिलिंज देखो गो-कलिंजय (राय १४०)।

गोक्खुरय पुं [गोक्षुरक] एक औषधि का नाम, गोखरू (स २५६)।

गोग्गय पु [दे] प्राजन-दण्ड, कोडा, चाबुक (दे २, ९७)।

गोच्छ देखो गुच्छ (से ६, ४७, गा ५३२)।

गोच्छअ } गोच्छग } पुन [गोच्छक] पात्र वगैरह साफ करने का वस्त्र-खण्ड (कस; पण्ह २, ५)।

गोच्छड न [दे] गोमय, गो-विष्ठा (मृच्छ ३४)।

गोच्छा स्त्री [दे] मञ्जरी, वौर (दे २, ९५)।

गोच्छिय देखो गुच्छिय (औप, णाया १, १)।

गोच्छड देखो गोच्छड (नाट—मृच्छ ४१)।

गोजलोया स्त्री [गोजलौका] क्षुद्र कीट-विशेष, द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष (पण्ण १५)।

गोज्ज पुं [दे] १ शारीरिक दोषवाला बैल (सुपा २८१)। २ गानेवाला, गवैया, गायक, 'वीणावससणाह, गोयं नडनट्टछत्तगोज्जेहिं। वंदिजणेण सहरिसं, जयसद्दालायणं च कयं' (पउम ८५, १६)।

गोट्ठ पु [गोष्ठ] गोवाडा, गौओं के रहने का स्थान (महा, पउम १०३, ४०, गा ४४७)।

गोट्ठामाहिल पुं [गोष्ठामाहिल] कर्म-पुद्गलो को जीव प्रदेश से अबद्ध माननेवाला एक जैनाभास आचार्य (ठा ७)।

गोट्टि देखो गोट्टी (आवम)।

गोट्ठिल्ल | गोट्ठिल्लग | गोट्ठिल्लय | पु [गोष्ठिक] एक मण्डली के सदस्य, मित्र, समान-वयस्क दोस्त (णाया १, १६—पत्र २०५, विपा १, २—पत्र ३७)।

गोट्ठी स्त्री [गोष्ठी] १ मण्डली, समान वय-वालो की सभा (प्राप्र, दसनि १, णाया १, १६)। २ वार्त्तालाप, परामर्श (कुमा)।

गोड पुं [गौड] १ देश-विशेष (स २८६)। २ वि. गौड देश का निवासी (पण्ह १, १)।

गोड पुं [दे] गोड, पाद, पैर (नाट—मृच्छ १५८)।

गोडा स्त्री [गोला] नदी-विशेष, गोदावरी (गा ५८; १०३)।

गह° न [गृह] घर, मकान। °वइ पुं [°पति] गृहस्थ, गृही, संसारी (पउम २०, ११६, प्राप्र)। °वइणी स्त्री [°पत्नी] गृहिणी, स्त्री (सुपा २२६)।

गहक्कोल पु [दे॰ ग्रहकल्लोल] राहु, ग्रह-विशेष (दे २, ८६, पाग्र)।

गहगट्ट ग्रक [दे] हर्ष से भर जाना, ग्रानन्द-पूर्ण होना। गहगहइ (भवि)।

गहण न [ग्रहण] १ ग्रादान, स्वीकार (मे ४, ३३, प्रासू १४)। २ ग्रादर, सम्मान। ३ ज्ञान, ग्रवबोध (से ४, ३३)। ४ शब्द, ग्रावाज (ग्राचा २, ३, ३, ग्रावम)। ५ वि ग्रहण करनेवाला। ६ न इन्द्रिय (विसे १७०७)। ७ चन्द्र-सूर्य का उपराग—ग्रहण (भग १२, ६)। ८ वि ग्राह्य, जिसका ग्रहण किया जाय वह (उत्त ३२)। ९ न शिक्षा-विशेष (ग्राव)।

गहण न [ग्राहण] ग्रहण कराना, ग्रगीकार कराना, 'जो ग्रामि वभचेरग्गहणगुरू' (कुमा)।

गहण न [ग्रहण] १ ग्रादान का कारण। २ ग्राक्षेपक, 'चक्खुस्स रुव गहण वयंति' (उत्त ३२, २२)।

गहण न [गहन] ग्ररण्य-क्षेत्र (ग्राचा २, ३, ३, १)। °विदुग्ग न [°विदुर्ग] पर्वत के एक प्रदेश में स्थित वृक्ष-वल्ली-समुदाय (सूग्र २, २, ८)।

गहण वि [गहन] १ निविड, दुर्भेद्य, दुर्गम, 'काले ग्रणाइणिहणे जोणीगहणम्मि भीसणे इत्थ' (जी ४६), 'फलसारणलिणिगहणा' (गउड)। २ वन, झाडी, घना कानन (पाग्र, भग)। ३ वृक्ष-गह्वर, वृक्ष का कोटर (विपा १, ३—पत्र ४६)।

गहण न [दे] १ निर्जल-स्थान, जल-रहित प्रदेश (दे २, ८२, ग्राचा २, ३, ३)। २ वन्धक, वरोहर, गिरवी (सुपा ५४८)।

गहणय न [दे] गहना, ग्राभूषण (सुपा १५४)।

गहणया स्त्री [ग्रहण] ग्रहण, स्वीकार, उपादान (ग्रौप)।

गहणी स्त्री [ग्रहणी] गुदाशय, गाँड (पण्ह १, ४, ग्रौप)।

गहणी स्त्री [ग्रहणी] कुक्षि, पेट (पव १०६)।

गहणी स्त्री [दे] जबरदस्ती हरण की हुई स्त्री, वंदी या बंदी (दे २, ८४, से ६, ४७)।

गहत्थि पुं [गभस्ति] किरण, दिवड् (पाग्र)।

गहर पुं [दे] गृध्र, गीध-पक्षी (दे २, ८४, पाग्र)।

गहर पुन [गह्वर] १ निकुज। २ वन, जगल। ३ दंभ, कपट। विषम-स्थान। ५ रोदन। ६ गुफा। ७ ग्रनेक ग्रनर्थों का सकट, 'गहरो' (प्राकृ २८)।

गहवइ पु [गृहपति] कृषक, खेती करनेवाला (पाग्र)।

गहवइ वि [दे] १ ग्रामीण, गाँव का रहने-वाला (दे २, १००)। २ पु चन्द्रमा, चाँद (दे २, १००, पाग्र, वाग्र १५)।

गहिअ वि [दे] वक्रित, मोडा हुग्रा, टेढा, किया हुग्रा (दे २, ८५)।

गहिअ वि [गृहीत] १ उपात्त, स्वीकृत (ग्रौप, ठा ४, ४)। २ पकडा हुग्रा (पण्ह १, ३)। ३ ज्ञात, उपलब्ध, विदित (उत्त २, पड्)।

गहिअ वि [गृद्ध] ग्रासक्त, तल्लीन (ग्राचा)।

गहिआ स्त्री [दे] १ काम-भोग के लिए जिसकी प्रार्थना की जाती हो वह स्त्री (दे २, ८५)। २ ग्रहण करने योग्य स्त्री (पड्)।

गहिर वि [गभीर] गहरा, गम्भीर, ग्रस्ताघ (दे १ १०१, काप्र ९२५, कप्प, गउड, ग्रौप, प्राप्र)।

गहिल वि [ग्रहिल] भूतादि से ग्राविष्ट, पागल (श्रा १४)।

गहिलिय } वि [दे ग्रहिल] ग्रावेश-युक्त,
गहिल्ल } पागल, भ्रान्त-चित्त (पउम ११३, ४३, पड्, श्रा १२, उप ५६७ टी, भवि)।

गहीअ देखो गहिअ = गृहीत (श्रा १२, रयण ६८)।

गहीर देखो गभीर (प्रासू ६)।

गहीरिअ न [गाभीर्य] गहराई, गम्भीरपन (हे २, १०७)।

गहीरिम पुस्त्री [गभीरिमन्] गहराई, गम्भीरता (हे ४, ४१९)।

गहेअव्व } देखो गह = ग्रह।
गहेउ }

गहेप्प (ग्रप) देखो गह = ग्रह्। गह्णुइ (पड्)।

गा } सक [गै] १ गाना, ग्रालापना। २
गाअ } वर्णन करना। ३ श्लाघा करना। गाइ, गाग्रइ (हे ४, ६)। वकृ गंत, गाअंत, गायमाण (गा ५४६, पि ४७९, पउम ६४, २४)। कवकृ गिज्जत (गउड, गा ६४२, सुपा २१, सुर ३, ७९)। संकृ, गाइउ (महा)।

गाअ पु [गो] वैल, वृषभ, साँड (हे १, १५८)।

गाअ न [गात्र] १ शरीर, देह (मम ६०)। २ शरीर का ग्रवयव (ग्रौप)।

गाअ वि [गायक] गानेवाला (कुमा)।

गाअक पुं [गवाङ्क] महादेव, शिव (कुमा)।

गाअग वि [गायन] गानेवाला, गवैया (सुपा ५५, सण)।

गाइअ वि [गीत] १ गाया हुग्रा, 'किन्नरेण तो गाइय गीय' (सुपा १६)। २ न गीत, गान, गाना (ग्राव ४)।

गाइआ स्त्री [गायिका] गानेवाली स्त्री (गा ६४४)।

गाइर वि [गाथक] गानेवाला, गवैया (सुपा ५८)।

गाई स्त्री [गो] गैया, गो (हे १, १५८, दे ४, १८, गा २७१, सुर ७, ९५)।

गाउ } न [गव्यूत] १ कोस, क्रोश, दो
गाउअ } हजार धनुष-प्रमाण जमीन (पि
गाऊअ } २५४, ग्रौप, इक जी १८, विसे ८२ टी)। २ दो कोस, क्रोश-युग्म (ग्रोघ १२)।

गागर पुं [दे] स्त्री को पहनने का वस्त्र-विशेष, लहँगा, घँघरा या घाघरा; गुजराती मे 'घाघरो' (पण्ह १, ४)। २ मत्स्य-विशेष (पण्ण १)।

गागरी [दे] देखो गायरी (पि ६२)।

गागलि पु [गागलि] एक जैनमुनि (उत्त १०)।

गागेज्ज वि [दे] मथित, मथा हुग्रा, ग्रालोडित (दे २, ८८)।

गागेज्जा स्त्री [दे] नवोढा, दुलहिन (दे २, ८८)।

गाडिअ वि [दे] विधुर, वियुक्त (दे २,८३)।

गोयम वि [गौतम] १ गोतम गोत्र में उत्पन्न, गोतम गोत्रीय, 'जे गोयमा ते सतविहा पएणत्ता' (ठा ७, भग ज १)। २ पुं भगवान् महावीर का प्रधान-शिष्य (भग १४, ७, उवा)। ३ इस नाम का एक राज-कुमार, राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र, जो भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा लेकर शत्रुञ्जय पर्वतपर मुक्त हुआ था (अन्त २)। ४ एक मनुष्य जाति, जो बैल द्वारा भिक्षा माँग कर अपना निर्वाह चलाती है (णाया १, १४)। ५ एक ब्राह्मण (उप ६१७)। ६ द्वीप विशेष (सम ८०, उप ५६७ टी)। °केसिज्ज न [°केशीय] 'उत्तराध्ययन' सूत्र का एक अध्ययन, जिसमें गौतम स्वामी और केशिमुनि का सवाद है (उत्त २३)। °सगुत्त वि [°सगोत्र] गोतम गोत्रीय (भग, आवम)। °सामि पु [°स्वामिन] भगवान् महावीर के सर्व-प्रधान शिष्य का नाम (विपा १, १—पत्र २)।

गोयमज्जिया, गोयमेज्जिया स्त्री [गौतमार्यिका] जैनमुनि-गण की एक शाखा (राज, कप्प)।

गोयर पु [गोचर] १ गौओं को चरने की जगह, 'णो गोयरे णो वणगारिणयाए' (वृह ३)। २ विषय, 'अबुहहगोयर णमह सयभु' (गउड)। ३ इन्द्रिय का विषय, प्रत्यक्ष, 'इअ राया उज्जाण त कासी नयणगोअर सव्व' (कुमा)। ४ भिक्षाटन, भिक्षा के लिए भ्रमण (ओघ ६६ भा, दस ५, १)। ५ भिक्षा, माधुकरी (उप २०४)। ६ वि. भूमि मे विचरनेवाला, 'विभ्भवणगोयराण पुलिंदाण' (गउड)। °चरिआ स्त्री [°चर्या] भिक्षा के लिए भ्रमण (उप १३७ टी, पउम ४, ३)। °भूमि स्त्री [°भूमि] १ पशुओं को चरने की जगह (दे ३, ४०)। २ भिक्षा-भ्रमण की जगह (ठा ६)। °वत्ति वि [°वर्त्तिन] भिक्षा के लिए भ्रमण करनेवाला (गा २०४)।

गोयरी स्त्री [गौचरी] भिक्षा, माधुकरी (सुपा २६६)।

गोर पुं [गौर] १ शुक्ल-वर्ण, सफेद रग। २ वि गौर वर्णवाला, शुक्ल (गउड, कुमा)। ३ अवदात, निर्मल (णाया १, ८)। °खर पु [°खर] गर्दभ की एक जाति (पएण १)। °गिरि पु [°गिरि] पर्वत विशेष, हिमाचल (तिं १)। °मिग पु [°मृग] १ हरिण की एक जाति। २ न उस हरिण के चमडे का बना हुआ वस्त्र (आचा २, ५, १)।

गोरअ देखो गोरव (गा ८६)।

गोरंग वि [गौराङ्ग] गोरा शरीरवाला, शुक्ल शरीरवाला (कप्पू)।

गोरफिडी स्त्री [दे] गोधा, गोह, जन्तु-विशेष (दे २, ६८)।

गोरडित वि [दे] त्रस्त, ध्वस्त (पड्)।

गोरव न [गौरव] १ महत्व, गुरुता (प्रासू ३०)। २ आदर, सम्मान, बहुमान (विसे ३४७३, रयण ५३)। ३ गमन, गति (ठा ६)।

गोरविअ वि [गौरवित] सम्मानित, जिसका आदर किया गया हो वह (दे ४, ५)।

गोरव्व वि [गौरव्य] गौरव-योग्य (धर्मवि ६४, कुप्र ३७७)।

गोरस पुन [गोरस] गोरस, दूध, दही, मट्ठा या छाछ वगैरह (णाया १, ८, ठा ४, १)।

गोरस पु [गोरस] वाणी का आनन्द (सिरि १४०)।

गोरह पु [दे] हल मे जोतने योग्य बैल (आचा २, ४२, ३)।

गोरा स्त्री [दे] लाङ्गल-पद्धति, हल रेखा। २ चक्षु, आंख। ३ ग्रीवा, गर्दन या डोक (दे २ १०४)।

गोरि° देखो गोरी (हे १, ४)।

गोरिअ न [गौरिक] विद्याधर का नगर विशेष (इक)।

गोरी स्त्री [गौरी] १ शुक्ल-वर्णा स्त्री (हे ३, २८)। २ पार्वती, शिव-पत्नी (कुमा, सुपा २४०, गा १)। ३ श्रीकृष्ण की एक स्त्री का नाम (अत १५)। ४ इस नाम की एक विद्या-देवी (सति ६)। °कूड न [°कूट] विद्याधर-नगर-विशेष (इक)।

गोरी स्त्री [गौरी] विद्या-विशेष (सूअ २, २, २७)।

गोरूव न [गोरूप] प्रशस्त गाय (धर्मवि ११२)।

गोल पुं [दे] १ साक्षी (दे २, ६५)। २ पुरुष का निन्दा गर्भ आमन्त्रण (णाया १, ६)। ३ निष्ठुरता, कठोरता (दस ७)।

गोल पुं [गोल] १ वृक्ष-विशेष, 'कदम्बगोल-णिहुकटअतरिणअगे' (अच्चु ५८)। २ गोलाकार, वृत्ताकार मण्डलाकार वस्तु (ठा ८, ४, अनु ५)। ३ गोलक, गुडा (सुपा २७०)। ४ गेंद, कन्दुक (सूअ १, ४)।

गोल पुस्त्री [दे] गोला, जार से उत्पन्न, कुंड (दस ७, १४)। स्त्री °ली (दस ७, १६)।

गोलग, गोलय पु [गोलक] ऊपर देखो (सूअ २, २, उप पृ २६२ वाज)।

गोलव्वायण न [गोलव्यायन] गोत्र-विशेष (सुज १०, १६)।

गोला स्त्री [दे] गो, गैया (दे २, १०४, पाअ)। २ नदी, कोई भी नदी। ३ सखी, सहेली, सगिनी (दे २, १०४)। गोदावरी नदी (दे २, १०४, गा ५८, १७५, हेका २६७ पि ८७, १६४, पाअ, पड्)।

गोलिय पु [गोडिक] गुड बनानेवाला (वव ६)।

गोलिया स्त्री [दे] १ गोली, गुटिका (राय, अणु)। गेंद, लडकों के खेलने की एक चीज, 'तीए दासीए घडो गोलियाए भिन्नो' (दसनि २)। ३ वडा कुएडा वडी, घानी (ठा ८)। °लिछ, °लिच्छ न [°लिञ्छ, °लिच्छ] १ चुल्ली, चूल्हा। २ अग्नि विशेष (ठा ८—पत्र ४१७)।

गोलियायण न [गोलिकायन] १ गोत्र-विशेष, जो कौशिक गोत्र की एक शाखा है। २ वि. गोलिकायन-गोत्रीय (ठा ७)।

गोली स्त्री [दे] मथनी या मथानी मथनिया, दही मथने की लकडी, रही (दे २, ६५)।

गोल्ल न [दे] विम्बी-फल, कुन्दरुन का फल (णाया १, ८, कुमा)।

गोल्ल पुं [गौल्य] १ देश विशेष (आवम)। २ न गोत्र-विशेष जो काश्यप गोत्र की शाखा है। ३ वि गौल्य गोत्र मे उत्पन्न (ठा ७)।

गोल्हा स्त्री [दे] बिम्बी, वल्ली-विशेष, कुन्दरुन की लतर (दे २, ६५, आवम, पाअ)।

गोव सक [गोपय्] १ छिपाना। २ रक्षण करना। गोवए, गोवेइ (सुपा ३४६, महा)।

गारिहत्थिय त्रीन [गार्हस्थ्य] गृहस्थ-सबन्धी, संसारि-सबन्धी। स्त्री. °या (पव २३५)।

गारुड } वि [गारुड] १ गरुड-संबन्धी।
गारुल्ल } २ सर्प के विष को उतारनेवाला, सर्प-विष को दूर करनेवाला। ३ पुं. सर्प विष को दूर करनेवाला मन्त्र (उप ९८६ टी, से १४, ५७)। ४ न. शास्त्र विशेष, मन्त्र शास्त्र-विशेष, सर्पविष नाशक मन्त्र का जिसमे वर्णन हो वह शास्त्र (ठा ९)। °मंत पुं [°मन्त्र] सर्प-विष का नाशक मन्त्र (सुपा २१९)। °विउ वि [°वित्] गारुड मन्त्र का जानकार, गारुड शास्त्र का जानकार (उप ९८६ टी)।

गाल सक [गालय्] १ गालना, छानना। २ नाश करना। ३ उल्लघन करना, अतिक्रमण करना। गालयइ (विसे ६४)। वकृ. गालेमाण (भग ६, ३३)। कवकृ. गालिज्जंत (सुपा १७३) प्रयो. गालावेइ (णाया १, १२)।

गालण न [गालन] छालना, गालना (पण्ह १, १, उप पृ ३७९)।

गालणा स्त्री [गालना] १ गालना, छानना। २ गिरवाना। ३ पिघलवाना (विपा १, १)।

गालवाहिया स्त्री [दे] छोटी नौका, डोंगी, 'एत्थंतरम्मि समागया गालवाहियाए निज्जामया' (स ३५१)।

गालि स्त्री [गालि] गाली, गारी, अपशब्द, असभ्य वचन (सुपा ३७०)।

गालिय वि [गालित] १ छाना हुआ। २ अतिक्रान्त। ३ विनाशित। ४ क्षिप्त, 'गालियमिठो निरंकुसो वियरिओ रायहत्थी' (महा)।

गाली स्त्री [गाली] देखो गालि (पव ३८)।

गाव (अप) देखो गा। गावइ (पिंग)। वकृ. गावत (पि २५४)।

गाव (अप) देखो गव्व (भवि)।

गाव वि [दे] गत, गया हुआ, गुजरा हुआ (षड्)।

गाव } पुं [ग्रावन्] १ पत्थर, पाषाण
गावाण } (पाअ)। २ पहाड, गिरि (हे ३, ५६)।

गावि (अप) देखो गव्विय (भवि)।

गावी स्त्री [गो] गौ, गैया (हे २, १७४, विपा १, २, महा)।

गास पुं [ग्रास] ग्रास, कवल (सुपा ४९८)।

गास पुं [ग्रास] भोजन (पव ६५)।

गाह देखो गह = ग्रह्। कर्म. गाहिज्जइ (प्राप्र)।

गाह सक [ग्राहय्] ग्रहण कराना। गाहेइ (औप)।

गाह सक [गाह्] १ गाहना, ढूँढना। २ पढना, अभ्यास करना। ३ अनुभव करना। ४ टोह लगाना। गाहदि (शौ), (मृच्छ ७२)। कवकृ. गाहिज्जंत (वज्जा ४)।

गाह पुं [गाध] अस्ताव-रहित, थाह (ठा ४, ४)।

गाह पुं [ग्राह] १ गाह, कुम्भीर, नक्र, जल-जन्तु-विशेष, मगर (दे २,८९, णाया १, ४, जी २०)। २ आग्रह, हठ (विसे २६८९, पउम १६, १२)। ३ ग्रहण, आदान (निचू १)। ४ गारुडिक, सर्प को पकडनेवाली मनुष्य-जाति (बृह १)। °वई स्त्री [°वती] नदी-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)।

गाहग वि [ग्राहक] १ ग्रहण करनेवाला, लेनेवाला (सुपा ११)। २ समझनेवाला, जाननेवाला (सुपा ३४३)। ३ समझानेवाला, शिक्षक, आचार्य, गुरु (औप)। ४ ज्ञापक, बोधक। स्त्री गाहिगा (औप)।

गाहक वि [ग्राहक] प्राप्ति करनेवाला, 'गाहग सयलगुणाण' (स ६८२)।

गाहण न [ग्राहण] १ ग्रहण कराना। २ ग्रहण, आदान, 'गाहण तवचरियस्सा गहण चिय गाहणा होति' (पचभा)। ३ शास्त्र, सिद्धान्त (वव ४)। ४ बोधक-वचन, शिक्षा, उपदेश (पण्ह २, २)।

गाहणया } स्त्री [ग्राहणा] ऊपर देखो (उप
गाहणा } पृ ३१४, आचा, गच्छ १)।

गाहय देखो गाहग (विसे ८३१, स ४९८)।

गाहा स्त्री [गाथा] अध्ययन, ग्रन्थ-प्रकरण (उत्त ३१, १३)।

गाहा स्त्री [गाथा] १ छन्द-विशेष, आर्या, गीति (ठा ५, ३, अजि ३७, ३८)। २ प्रतिष्ठा। ३ निश्चय, 'सिसपयाण य गाहा' (आव ४)। ४ 'सूत्रकृताग' सूत्र का सोलहवाँ अध्ययन (सूअ १, १, १)।

गाहा स्त्री [दे] गृह, घर, मकान, 'गाहा घरं गिहमिति एगट्ठा' (वव ८)। °वइ पुंस्त्री [°पति] १ गृहस्थ, गृही, ससारी (ठा ४, ४, सुपा २२९)। २ धनी, धनाढ्य (उत्त १)। ३ भडारी, भाण्डागारिक (सम २७)। स्त्री. °णी (णाया १, ५, उवा)।

गाहाल पुं [ग्राहाल] कीट-विशेष, श्रीन्द्रिय जन्तु विशेष (जीव १)।

गाहावई स्त्री [ग्राहावती] १ नदी विशेष। २ द्वीप-विशेष। ३ ह्रद-विशेष, जहाँ से ग्राहावती नदी निकलती है (जं ४)।

गाहाविय वि [ग्राहित] जिसको ग्रहण कराया गया हो वह (सुर ११, १८३)।

गाहिणी स्त्री [गाहिनी] १ गाहने वाली स्त्री। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

गाहिपुर न [गाधिपुर] नगर-विशेष (गउड)।

गाहिय वि [ग्राहित] १ जिसको ग्रहण कराया गया हो वह। २ आमित, उकसाया हुआ (सूअ १, २, १)।

गाहीकय वि [गाथीकृत] एकत्रित, इकट्ठा किया हुआ (सूअनि १, १६)।

गाहु स्त्री [गाहु] छन्द-विशेष (पिंग)।

गाहुलि पुंस्त्री [दे] ग्राह, नक्र, मगर, क्रूर जल-जन्तु विशेष (दे २, ८९)।

गाहुल्लिया देखो गाहा = गाथा (सुपा २९४)।

गिंठि [गृष्टि] १ एक वार व्यायी हुई। २ एक वार व्यायी हुई गाय (हे १, २६)।

गिंधुअ [दे] देखो गेंठुअ (पाअ)।

गिंधुल्ल [दे] देखो गेंठुल्ल (पाअ)।

गिंभ (अप) देखो गिम्ह (हे ४, ४४२)।

गिंह देखो गिम्ह (षड्)।

गिज्जंत देखो गा।

गिज्झ अक [गृध्] आसक्त होना, लम्पट होना। गिज्झइ (हे ४, २१७)। गिज्झह (णाया १, ८)। वकृ गिज्झत (औप)। कृ. गिज्झियव्व (पण्ह २, ५)।

गिज्झ वि [गृह्य, ग्राह्य] १ ग्रहण करने योग्य। २ अपनी तरफ मे किया जा सके ऐसा (ठा ३, २)।

गिट्ठि देखो गिंठि, 'वारंतस्सवि वला दिट्ठी गिट्ठिव्व जवसम्मि' (उप ७२८ टी, पाअ, गा ६४०)।

गिड्डिया स्त्री [दे] गेडी, गेंद खेलने की लकडी (पव ३८)।

घ

घ पुं [घ] कण्ठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्राप; प्रामा)।

घअद न [दे] मुकुर, दर्पण (षड्)।

घइं (अप) अ पाद-पूरक और अनर्थक अव्यय (हे ४, ४२४; कुमा)।

घओअ } पु [घृतोद] १ समुद्र-विशेष, जिसका पानी घी के तुल्य स्वादिष्ट है (इक; ठा ७)। २ मेघ विशेष (तित्थ) ३ वि जिसका पानी घी के समान मधुर हो ऐसा जलाशय। स्त्री °आ, °दा (जीव ३; राय)।
घओद }

घंघ पुं [दे] गृह, मकान, घर (दे २, १०५)। °साला स्त्री [°शाला] अनाथ-मण्डप, भिक्षुओं का आश्रय-स्थान (ओघ ६३६; वव ७; आचा)।

घघल (अप) न [झकट] १ झगडा, कलह (हे ४, ४२२)। २ मोह, घबराहट (कुमा)।

घघलिअ वि [दे] घबडाया हुआ (संवे ६, धर्मवि १३४)।

घंघोर वि [दे] भ्रमण-शील, भटकनेवाला (दे २, १०६)।

घंचिय पु [दे] तेली, तेल निकालनेवाला, गुजराती मे 'घाची' (सुर १६, १९०)।

घंट पुस्त्री [घण्ट] घण्टा, कास्य-निर्मित वाद्य-विशेष (ओघ ८६ भा)। स्त्री. °टा (हे १, १९५; राय)।

घंटिय पु [घण्टिक] चाण्डाल का कुल-देवता, यक्ष विशेष (बृह १)।

घंटिय पुं [घाण्टिक] घण्टा बजानेवाला (कप्प)।

घंटिया स्त्री [घण्टिका] १ छोटी घण्टी (प्रामा)। २ किंकिणी, घुँघुरू (सुर १,२४८, जं २)। ३ आभरण-विशेष (णाया १, ९)।

घंस पुं [घर्ष] घर्षण, घिसन (णाया १, १—पत्र ६३)।

घसण न [घर्षण] घिसन, रगड (स ४७)।

घसिय वि [घर्षित] घिसा हुआ, रगडा हुआ (औप)।

घक्कूण देखो घे।

घग्घर न [दे] घँघरा, घघरा, लहँगा, स्त्रियो के पहनने का एक वस्त्र (दे २, १०७)।

घग्घर पुं [घर्घर] १ शब्द-विशेष (गा८००)। २ खोखला गला, 'घग्घरगलम्मि' (दे ६,१७)। ३ खोखला आवाज, 'रुयमाणी घग्घरेण-सद्देण' (सुर २, ११२)। ४ न श्याद्वल, शैवाल या सेवार वगैरह का समूह (गउड)।

घट्ट सक [घट्ट्] १ स्पर्श करना, छूना। २ हिलना, चलना। ३ सघर्ष करना। ४ आहत करना। घट्टइ (सुपा ११६)। वकृ. घट्टत (ठा ७)। कवकृ. घट्टिज्जंत (से २, ७)।

घट्ट सक [घट्टय्] हिलाना। संकृ घट्टियाण (दस ५, १, ३०)।

घट्ट अक [भ्रश्] भ्रष्ट होना। घट्टइ (षड्)।

घट्ट पुं [दे] १ कुसुम्भ रंग से रँगा हुआ वस्त्र। २ नदी का घाट। ३ वेणु, वंश, वाँस (दे २, १११)।

घट्ट पुं [घट्ट] १ शर्कराप्रभा-नामक नरक-भूमि का एक नरकावास (इक)। २ पुंन. जमाव (श्रा २८)। ३ समूह, जत्था, 'हयघट्टाइ' (सुपा २५६)। ४ वि. गाढा, निविड, 'मूल घट्टकरुल्हओ' (सुपा ११)।

घट्टसुअ न [दे. घटयंशुक] वस्त्र-विशेष, बूटेदार कौसुम्भ वस्त्र (कुमा)।

घट्टण वि [घट्टन] चालाक, हिला देनेवाला (पिंड ६३३)।

घट्टण न [घट्टन] १ छूना, स्पर्श करना। २ चलाना, हिलाना (दस ४)।

घट्टणग पुं [घट्टनक] पात्र वगैरह को चिकना करने के लिए उस पर घिसा जाता एक प्रकार का पत्थर (बृह ३)।

घट्टणया } स्त्री [घट्टना] १ आघात, आहनन (औप; ठा ४,४)। २ चलन, हिलन (ओघ ९)। ३ विचार। ४ पृच्छा (बृह ४)। ५ कदर्थना, पीडा (आचा)। ६ स्पर्श, छूना (पण्ण १६)।
घट्टणा }

घट्टय देखो घट्ट (महा)।

घट्टिय वि [घट्टित] १ आहत, सघर्ष-युक्त (ज १)। २ प्रेरित, चालित (पण्ह १, ३)। ३ स्पृष्ट, छुआ हुआ (ज १; राय)।

घट्ठ वि [घृष्ट] १ घिसा हुआ (हे २ १७४, औप; सम १३७)।

घड सक [घट्] १ चेष्टा करना। २ करना, वनाना। अक. परिश्रम करना। ४ संगत होना, मिलना। घडइ (हे १, १९५) वकृ. घडत, घडमाण (से १, ५, निचू १)। कृ. घडियव्व (णाया १, १—पत्र ६०)।

घड सक [घटय्] १ मिलाना, जोडना, सयुक्त करना। २ वनाना, निर्माण करना। ३ संचालन करना। घडेइ (हे ४, ५०)। भवि. घडिस्सामि (स ३६४)। वकृ. घडत (सुपा २५५)। संकृ. घडिअ (दस ५, १)।

घड पु [घट] घडा, कुम्भ, कलश (हे १, १९५)। °कार पुं [°कार] कुम्भकार, मिट्टी का वरतन बनानेवाला (उप पृ ४१५)। °चेडिया स्त्री [°चेटिका] पानी भरनेवाली दासी, पनहारिन (सुपा ४९०)। °दास पुं [°दास] पानी भरनेवाला नौकर, पनिहारा आचा)। °दासी स्त्री [°दासी] पानी भरनेवाली, पनिहारी (सूअ १, १५)।

घड वि [दे] स्तूपीकृत, वनाया हुआ (षड्)।

घडइअ वि [दे] सकुचित (षड्)।

घडग पुं [घटक] छोटा घडा (ज २, अणु)।

घटगार देखो घड-कार (वव १)।

घडचडग पुं [घटचटक] एक हिंसा-प्रधान संप्रदाय (मोह १००)।

घडण स्त्रीन [घटन] १ घटना, प्रसंग (वि १३)। २ अन्वय, संवध (चेइय ४६७)।

घडण न [घटन] १ घडना या गढना, कृति, निर्माण (से ७, ७१)। २ यत्न, चेष्टा, परिश्रम (अनु ४; पण्ह २, १)।

घडणा स्त्री [घटना] मिलान, मेल, संयोग (सूअ १, १, १)।

घडय देखो घडग (जं २)।

घडा स्त्री [घटा] समूह, जत्था (गउड)।

गिहिकोइला स्त्री [गृहकोकिला] गृहगोधा, छिपकली (स ७५८)।
गिहमेहि पु [गृहमेधिन्] गृहस्थ (धर्मवि २६)।
गिहवइ पु [गृहपति] देश का अधिपति, सूबेदार, 'तह गिहवईवि देस्स नायगो' (पव ८५)।
गिहि पुं [गृहिन्] गृही, संसारी, गृहस्थ (ओघ १७ भा, नव ४३)। °धम्म पुं [°धर्म] गृहस्थ-धर्म, श्रावक-धर्म (राज)। °लिंग न [°लिङ्ग] गृहस्थ का वेश (बृह १)।
गिहिणी स्त्री [गृहिणी] गृहिणी, भार्या, स्त्री (सुण ८३, श्रा १६)।
गिहीअ वि [गृहीत] आत्त, उपात्त, ग्रहण किया हुआ (स ४२८)।
गिहेलुग देखो गिहेलुय (आचा २, ५, १, ८)।
गिहेलुय पुं [गृहेलुक] देहली, द्वार के नीचे की लकडी (निचू १३)।
गी स्त्री [गिर्] वाणी, भाषा, वाक्, 'थिरमुज्जल च छायाघणं च गोविलसियं जस्स' (गउड)।
गीआ स्त्री [गीता] श्रीमद्भगवद्गीता, ज्ञानमय उपदेश, छन्द-विशेष (पिंग)।
गीइ स्त्री [गीति] १ छन्द-विशेष, आर्या-वृत्त का एक भेद। २ गान, गीत (ठा ७, उप १३० टी)।
गीइया स्त्री [गीतिका] ऊपर देखो (औप, णाया १, १)।
गीय वि [गीत] १ पद्य-मय वाक्य, गेय, जो गाया जाय वह (पण्ह २, ५, अणु)। २ कथित, प्रतिपादित (णाया १, १)। ३ प्रसिद्ध, विख्यात (संथा)। ४ न गान, ताल और वाजे के अनुसार गाना (ज २, उत्त १)। ५ संगीत-कला, गान-कला, संगीत-शास्त्र का परिज्ञान (णाया १,१)। ६ पु गीतार्थ, उत्सर्ग और अपवाद वगैरह का जानकार जैन साधु, विद्वान् जैन मुनि (उप ७७३)। °जस पुं [°यशस्] इन्द्र-विशेष, गन्धर्व देवो का एक इन्द्र (ठा २, ३, इक)। °त्थ पु [°ार्थ] १ विद्वान् जैन मुनि (उप ८३३ टी, वव ४, सुपा १२७)। २ संगीत रहस्य (मै १४)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (पउम ५५, ५३)। °रइ स्त्री [°रति] १ संगीत-क्रीडा (औप)। २ पु. गन्धर्व देवो का एक इन्द्र (इक, भग, ३, ८)। ३ गन्धर्व सेना का अधिपति देव-विशेष (ठा ७)। ४ वि. संगीत-प्रिय, गान-प्रिय (विपा १, २)।
गीवा स्त्री [ग्रीवा] कण्ठ, गरदन (पाअ)
गुछ देखो गुच्छ (हे १, २६)।
गुछा स्त्री [दे] १ विन्दु। २ दाढी-मूंछ। ३ अधम, नीच (दे २, १०१)।
गुंज अक [हस्] हँसना, हास्य करना। गुंजइ (हे ४, १९६)।
गुंज अक [गुञ्ज्] १ गुन-गुन करना, भ्रमर आदि का आवाज करना। २ गर्जना, सिंह वगैरह का आवाज करना, 'गुंजति सीहा' (महा)। वकृ गुंजत (णाया १, १—पत्र ५ रंभा)।
गुंज पुं [गुञ्ज] १ गुञ्जारव करता वायु (पउम १३, ४३)। २ पर्वत-विशेष, 'गुंजवरपव्वय ते' (पउम ८, ९०, ९४)।
गुंजा स्त्री [गुञ्जा] १ लता विशेष (सुर २, ६)। २ फल विशेष, घुंघची (णाया १, १, गा ३१०)। ३ भम्भा, वाद्य-विशेष (आचा)। ४ परिमाण-विशेष (ठा ४, १)। ५ गुञ्जारव, गुंजन, गुन-गुन आवाज, "गुंजावक्ककुहरोवगूढ' (राय)। ६ वायु-विशेष, गुञ्जारव करनेवाला वायु (जीव १, जी ७) °फल, °हल न [°फल] फल-विशेष, घुंघची (सुर २, ६, सुपा २६१)।
गुंजालिआ स्त्री [गुञ्जालिका] गभीर तथा टेढी वापी—वावली या वावडी (आचा २, ३, ३, १)।
गुंजालिया स्त्री [गुञ्जालिका] वक्र-सारिणी, टेढ़ी कियारी (णाया १, १)। २ गोल पुष्करिणी (निचू १२)। ३ वक्र नदी (पण्ण ११)।
गुंजाविअ वि [हासित] हँसाया हुआ (कुमा ७, ४१)।
गुंजिअ न [गुञ्जित] गुन-गुन आवाज, भ्रमर वगैरह का शब्द (कुमा)।
गुंजिर वि [गुञ्जितृ] गुन-गुन आवाज करनेवाला (उप १०३१ टी)।
गुंजुल्ल देखो गुंजोल्ल। गुंजुल्लइ (हे ४, २०२)।
गुंजेल्लिअ वि [दे] पिण्डीकृत, इकट्ठा किया हुआ (दे २, ९२)।
गुंजोल्ल सक [वि + लुल्] विखेरना। गुंजोल्लइ (प्राकृ ७३)।
गुंजोल्ल अक [उत् + लस्] उल्लास पाना, विकसित होना। गुंजोल्लइ (हे ४, २०२)।
गुंजोल्लिअ वि [उल्लसित] विकसित, विकसित (कुमा)।
गुंठ सक [उद् + धूलय्, गुण्ठ्] धूल वाला करना, धूली के रंग का करना, धूसरित करना। गुंठइ (हे ४, २९)। वकृ. गुंठंत (कुमा)।
गुंठ पु [दे] अधम अश्व, दुष्ट घोडा (दे २, ९१, स ४५४)। २ वि मायावी, कपटी (वव ३)।
गुंठा स्त्री [दे] माया, दम्भ, छल (वव ३)।
गुंठिअ वि [गुण्ठित] १ धूसरित। २ व्याप्त ३ आच्छादित (दे १, ८५)।
गुंठी स्त्री [दे] नीरंगी, स्त्री का वस्त्र-विशेष (दे २, ९०)।
गुंड न [दे] मुस्ता मे उत्पन्न होनेवाला तृण-विशेष (दे २, ९१)।
गुंडण न [गुण्डन] धूलि का लेप, धूल का शरीर मे लगाना, 'रयरेणुगुंडणाणि य नो सम्म सहसि' (णाया १, १—पत्र ७१)।
गुंडिअ वि [गुण्डित] १ धूलि-लिप्त, धूलि-युक्त (पाअ)। २ लिप्त, पोता हुआ, 'चुण्णगुंडिअगात' (विपा १, २—पत्र २४)। ३ घिरा हुआ, सउणी जह पंसुगुंडिया' (सूअ १, २, १)। ४ आच्छादित, प्रावृत (आवा)। ५ प्रेरित (पण्ह १, ३)।
गुंथण न [ग्रन्थन] गूंथना, गठना (रयण १८)।
गुंद पुं [गुन्द्र] वृक्ष-विशेष (पाअ)।
गुंदल न [दे. गुन्दल] १ आनन्द-ध्वनि, खुशी की आवाज, हर्ष की तुमुलध्वनि, 'मत्तवरकामिणीसघकयगुंदलं' (सुर ३, ११५)। 'करिणीहिं कलहेहिं य खणमेक्क हरिसगुंदल काउं' (सुपा १३७)। २ हर्ष-भर, आनन्द-संदोह, खुशी की वृद्धि, 'अमदआणदगुंदल-पुरुव्व', 'आणदगुंदलेणं ललइ लीलावईहिं परिकलिओ' (सुपा २२, १३६)। वि आनन्द-

घय न [घृत] घी घृत (हे १, १२६, सुर १६, ६३)। °आसव पु [°श्रव] जिसका वचन घी की तरह मधुर लगे ऐसा लब्धिमान् पुरुष (श्रावम)। °किट्ट न [°किट्ट] घी का मैल (धर्म २)। °किट्टिया स्त्री [°किट्टिका] घी का मैल (पव ४)। °गोल न [°गोल] घी और गुड की बनी हुई एक प्रकार की मिठाई, मिष्टान्न विशेष (सुपा ६३३)। °घट्ट पुं [°घट्ट] घी का मैल (बृह १)। °पुन्न पु [°पूर्ण] घेवर, मिष्टान्न विशेष (उप १४२ टी)। °पूर पु [°पूर] घेवर या घीवर मिष्टान्न-विशेष (सुपा ११)। °पूसमित्त पु [°पुष्यमित्र] एक जैन मुनि, आर्यरक्षित सूरि का एक शिष्य (आचू १)। °मंड पु [°मण्ड] ऊपर का घी, घृतसार (जीव ३)। °मिल्लिया स्त्री [°इलिका] घी का कीट, क्षुद्र जन्तु-विशेष (जो १६)। °मेह पु [°मेघ] घी के तुल्य पानी बरसनेवाली वर्षा (ज ३)। °वर पु [°वर] द्वीप-विशेष (इक)। °सागर पु [°सागर] समुद्र-विशेष (दीव)।

घयण पु [दे] भाण्ड, भाँडा, भडवा (उप पृ २०४, २७५, पचव ४)।

घयपूस पुं [घृतपुष्य] एक जैन महर्षि (कुलक २२)।

घर पुन [गृह] घर, मकान, गृह (हे २, १४४ ठा ५, प्रासू ७५)। °कुडी स्त्री [°कुटी] १ घर के बाहर की कोठरी। २ चौक के भीतर की कुटिया (ओघ १०५)। ३ स्त्री का शरीर (तदु)। °कोइला, °कोइलिआ स्त्री [°कोकिला] गृहगोधा, छिपकली (पिंड, सुपा ६४०)। °गोली स्त्री [°गोली] गृहगोधा, छिपकली (दे २, १०५)। °गोहिआ स्त्री [°गोधिका] छिपकली, जन्तु-विशेष (दे २, १९)। °जामाउय पु [°जामातृक] घर-जमाई, ससुर घर मे ही हमेशा रहनेवाला जामाता (णाया १, १६)। °त्थ पु [°स्थ] गृही, ससारी, घरवारी (प्रासू १३१)। °नाम न [°नामन्] असली नाम, वास्तविक नाम (महा)। °वाडय न [°पाटक] ढकी हुई जमीन वाला घर (पाअ)। °वार न [°द्वार] घर का दरवाजा (काप्र १९५)। °सउणि पुं [°शकुनि] पालतू जानवर (वव २)। °समुदाणिय पु [समुदानिक] आजीविक मत का अनुयायी साधु (औप)। °सामि [°स्वामिन्] घर का मालिक (हे २, १४४)। °सामिणी स्त्री [°स्वामिनी] गृहिणी, स्त्री (पि ९२)। °सूर [°शूर] अलीक शूर, झूठा शूर, घर मे ही बहादुरी दिखानेवाला (दे)।

घरगण न [गृहाङ्गण] घर का आँगन, चौक (गा ४४०)।

घरकूडी स्त्री [गृहकूटी] स्त्री-शरीर (तदु ४०)।

घरग देखो घर (जीव ३)।

घरघट पु [दे] चटक, गौरैया पक्षी (दे २, १०७, पाअ)।

घरघरग पुं [दे] गला का आभूषण-विशेष (ज १)।

घरट्ट पु [घरट्ट] जाता, चक्की, अन्न पीसने का पाषाण यन्त्र (गा ८००, सण)।

घरट्ट पु [दे] अरघट्ट, अरहट, पानी का चरखा (निचू १)।

घरट्टी स्त्री [घरट्टी] शतघ्नी, तोप (दे ३, १०)।

घरणी देखो घरिणी, 'त वरघरणिए वरणिए व' (७२८ टी, प्रासू ४५)।

घरयद पु [दे] आदर्श, दर्पण, शीशा (दे २, १०७)।

घरस पुं [दे गृहवास] गृहाश्रम, गृहस्थाश्रम (बृह ३)।

घरसण देखो घसण (सण)।

घरित वि [गृहवत्] घरवाला, गृहस्थ (प्राकृ ३५)।

घरिणी स्त्री [गृहिणी] घरवाली, स्त्री, भार्या, पत्नी (उप ७२८ टी, से २, ३८, सुर २ १००, कुमा)।

घरिल्ल पुं [गृहिन्] गृही, ससारी, घरवारी (गा ७३६)।

घरिल्ला स्त्री [गृहिणी] घरवाली, स्त्री, पत्नी (कुमा)।

घरिल्ली स्त्री [दे गृहिणी] गृहिणी, पत्नी (दे २, १०६)।

घरिस पुं [घर्ष] घर्षण, रगड (णाया १, १६)।

घरिसण न [घर्षण] घर्षण, रगड (सण)।

घरोइला स्त्री [दे] गृहगोधा, छिपकली, बिस्तुइया (पि १६८)।

घरोल न [दे] गृह-भोजन-विशेष (दे २, १०६)।

घरोलिया } स्त्री [दे] गृहगोधिका, छिपकली,
घरोली } गुजराती मे 'घरोली' (पण्ह १, १, दे २, १०५)।

घलघल पु [घलघल] 'घल-घल' आवाज, ध्वनि-विशेष (विपा १, ६)।

घल्ल सक [क्षिप्] फेंकना, डालना, घालना। घल्लइ, घल्लंति (भवि, हे ४, ३३४, ४२२)।

घल्ल वि [दे] अनुरक्त, प्रेमी (दे २, १०५)।

घल्लअ } पु [दे] द्वीन्द्रिय जीव की एक
घल्लोय } जाति (सुख ३६, १३०, उत्त ३६, १३०)।

घल्लिअ वि [क्षिप्त] फेंका हुआ, डाला हुआ (भवि)।

घल्लिअ वि [दे] घटित, निर्मित, किया हुआ, 'अइरुट्ठेणं तेणवि घल्लिओ तिक्खखग्गगुरुघाओ' (सुपा २४९)।

घस सक [घृष्] १ घिसना, रगडना। २ मार्जन करना, सफा करना। घसइ (महा; षड्) संकृ 'घसिऊण अरणिकट्ठ अग्गी पज्जालिओ मए पच्छा' (सुर ७, १८९)।

घस स्त्रीन [दे] १ फटी हुई जमीन, फाटवाली भूमि (आचा २, १०, २)। २ शुषिर भूमि, पोली जमीन। ३ क्षार भूमि (दस ६, ३२)।

घसण देखो घसण (सुपा १४, दे १, १६६)।

घसणिअ वि [दे] अन्विष्ट, गवेषित (षड्)।

घसणी स्त्री [घर्षणी] सर्प-रेखा, टेढी लकीर (स ३५७)।

घसा स्त्री [दे] १ पोली जमीन। २ भूमि-रेखा, लकीर (राज)।

घसिय वि [घृष्ट] घिसा हुआ, रगडा हुआ (दसा ५)।

घसिर वि [ग्रसितृ] बहु-भक्षक, बहुत खानेवाला (ओघ १३३ भा)।

घसी स्त्री [दे] १ भूमि-राजि, लकीर। २ नीचे उतरना, अवतरण (राज)।

घसी स्त्री [दे] जमीन का उतार, ढाल (आचा २, १, ५, ३)।

विशेष (पंच)। °सेण पुं [°सेन] इस नाम का एक प्रसिद्ध राजा (स ६)। °हर वि [°धर] १ गुणो को धारण करनेवाला, गुणी। २ तन्तु-धारक। स्त्री °रा (सुपा ३२७)। °यर पुं [°कर] गुणो की खान, अनेक गुण-वाला, गुणी (पउम १५, ६८, प्रासू १३४)।

गुण देखो एगूण, 'गुणसट्ठि अपमत्ते सुराउवधं तु जइ इहागच्छे' (कम्म २, ८, ४, ५४, ५६, श्रा ४४)।

°गुण वि [°गुण] गुना, आवृत्त, 'वीसगुणो तीसगुणो' (कुमा; प्रासू २६)।

गुणण न [गुणन] १ गुणकार (पव २३६)। २ ग्रन्थ-परावर्तन, आवृत्ति, 'गुणणु (? गुण-णणु) प्पेहासु य असत्तो' (पिंड ६६४)।

गुणणा स्त्री [गुणना] ऊपर देखो (सम्यक्त्वो १५)।

गुणयालीस स्त्रीन [एकोनचत्वारिंशत्] उनचालीस, ३६ (राय ५६)।

गुणवुड्ढि स्त्री [गुणवृद्धि] लगातार आठ दिनो का उपवास (सवोध ५८)।

गुणसेण पु [गुणसेन] एक जैन आचार्य जो सुप्रसिद्ध हेमाचार्य के प्रगुरु थे (कुप्र १६)।

गुणा स्त्री [दे] मिष्टान्न-विशेष (भवि)।

गुणाविय वि [गुणित] पढाया हुआ, पाठित, 'तत्थ सो अजएण मयलाओ धणुव्वेयाइयाओ महत्थविजाओ गुणाविओ' (महा)।

गुणि वि [गुणिन्] गुण-युक्त, गुणवाला (उप ५९७ टी; गउड, प्रासू २६)।

गुणिअ वि [गुणित] १ गुना हुआ, जिसका गुणा किया गया हो वह (श्रा ६)। २ चिंतित, याद किया हुआ (से ११, ३१)। ३ पठित अधीत (ओघ ६२)। ४ जिस पाठ की आवृत्ति की गई हो वह, परावर्तित (वव ३)।

गुणिल्ल वि [गुणवत्] गुणी, गुण-युक्त (पि ५९५)।

गुण्ण देखो गोण्ण (अणु १४०)।

गुण्ह (अप) देखो गिण्ह। गुण्हइ (प्राकृ ११६)।

गुत्त न [गोत्र] साधुत्व, साधुपन (सूअ २, ७, १०)।

गुत्त वि [गुप्त] गुप्त, प्रच्छन्न, छिपा हुआ (णाया १,४, सुर ७,२३४)। २ रक्षित (उत्त १५)। ३ स्व-पर की रक्षा करनेवाला, गुप्ति-युक्त, मन वगैरह की निर्दोष प्रवृत्तिवाला (उप ६०४)। ४ एक स्वनाम-प्रसिद्ध जैनाचार्य (श्राक)।

गुत्त देखो गोत्त (पाअ, भग, आवम)।

गुत्तण्हाण न [दे] पितृ-तर्पण (दे २, ६३)।

गुत्ति स्त्री [गुप्ति] १ कैदखाना, जेल (सुर १, ७३, सुपा ६३)। २ कठघरा (सुपा ६३)। ३ मन, वचन और काया की अशुभ प्रवृत्ति को रोकना। ४ मन वगैरह की निर्दोष प्रवृत्ति ठा २, १, सम ८)। °गुत्त वि [°गुप्त] मन वगैरह की निर्दोष प्रवृत्तिवाला, सयत (पण्ह २, ४)। °पाल पुं [°पाल] जेल का रक्षक, कैदखाना का अध्यक्ष (सुपा ४६७)। °सेण पुं [°सेन] ऐरवत क्षेत्र मे उत्पन्न एक जिनदेव (सम १५३)।

गुत्ति स्त्री [गुप्ति] गोपन, रक्षण (गु १२)।

गुत्ति स्त्री [दे] १ बन्धन (दे २,१०१; भवि)। २ इच्छा, अभिलाषा। ३ वचन, आवाज। ४ लता, वल्ली। ५ सिर पर पहनी जाती फूल की माला (दे २, १०१)।

गुत्तिंदिय वि [गुप्तेन्द्रिय] इंद्रिय-निग्रह करने वाला, संयतेंद्रिय (भग, णाया १, ४)।

गुत्तिय वि [गौप्तिक] रक्षक, रक्षण करने-वाला, 'नगरगुत्तिए सद्दावेइ' (कप्प)।

गुत्तिय वि [गौत्रिक] गोती, समान गोत्र-वाला, गोतिया (कुप्र ३४४)।

गुत्तिवाल देखो गुत्ति-पाल (धर्मवि २६)।

गुत्थ वि [ग्रथित] गुम्फित, गूँथा हुआ (स ३०३, प्राप, गा ६३, कम्पू)।

गुत्थंड पुं [दे] भास-पक्षी, पक्षि-विशेष (दे २, ६२)।

गुद पुंस्त्री [गुद] गाँड, गुदा (दे ६, ४६)।

गुद्दह न [गोद्रह] नगर-विशेष (मोह ८८)।

गुप्प अक [गुप्] व्याकुल होना। गुप्पइ (हे ४, १५०, षड्)। वकृ. गुप्पंत, गुप्पमाण (कुमा ६, १०२, कप्प, औप)।

गुप्प वि [गोप्य] १ छिपाने योग्य। २ न एकान्त, विजन (ठा ४, १)।

गुप्पई स्त्री [गोष्पदी] गौ का पैर डूबे उतना गहरा, 'को उत्तरिउं जलहिं, निव्वुड्डए गुप्पई-नीरे' (धम्म १२ टी)।

गुप्पंत न [दे] १ शयनीय, शय्या। २ वि. गोपित, रक्षित (दे २, १०२)। ३ संमूढ, मुग्ध, घवडाया हुआ, व्याकुल (दे २, १०२, से १, २, २, ४)।

गुप्पय देखो गो-पय (सूक्त ११)।

गुप्फ पुं [गुल्फ] फीली, पैर की गाँठ (स ३३, हे २, ६०)।

गुफगुमिअ वि [दे] सुगन्धी, सुगन्ध-युक्त (दे २, ६३)।

गुब्भ देखो गुप्फ (षड्)।

गुभ सक [गुफ्] गूँथना, गठना। गुभइ (हे १, २३६)।

गुम सक [भ्रम्] घूमना, पर्यटन करना, भ्रमण करना। गुमइ (हे ४, १६१)।

गुमगुम } अक [गुमगुमाय्] १ 'गुम-गुमगुमाअ } गुम' आवाज करना। २ मधुर अव्यक्त ध्वनि करना। वकृ गुमगुमंत, गुमगुमिंत, गुमगुमायंत (औप; णाया १, १, कप्प, पउम ३३, ६)।

गुमगुमाइय वि [गुमगुमायित] जिसने 'गुम-गुम' आवाज किया हो वह (औप)।

गुमिअ वि [भ्रमित] भ्रमित, घुमाया हुआ (कुमा)।

गुमिल वि [दे] १ मूढ, मुग्ध। २ गहन, गहरा। ३ प्रस्खलित। ४ आपूर्ण, भरपूर (दे २, १०२)।

गुमुगुमुगुम देखो गुमगुम। वकृ गुमुगुमु-गुमत, गुमुगुमुगुमेंत (पउम २, ४०, ६२, ६)।

गुम्म अक [मुह्] मुग्ध होना, घवडाना, व्याकुल होना। गुम्मइ (हे ४, २०७))

गुम्म पुं [गुल्म] परिवार, परिकर, 'हत्थी-गुम्मसपरिवुडे' (सूअ २, २, ५५)।

गुम्म पुंन [गुल्म] १ लता, वल्ली, वनस्पति-विशेष (पएण १)। २ झाडी, वृक्ष-घटा (पाअ)। ३ सेना-विशेष, जिसमें २७ हाथी, २७ रथ, ८१ घोडा और १३५ प्यादा हो ऐसी सेना (पउम ५६, ५)। ४ वृन्द, समूह (औप, सूअ २,२)। ५ गच्छ का एक हिस्सा, जैनमुनि-समाज का एक अंश (औप)। ६ स्थान, जगह (ओघ १६३)।

घित्त (अप) वि [क्षिप्त] फेंका हुआ, डाला हुआ (भवि)।

घित्तुमण वि [ग्रहीतुमनस्] ग्रहण करने की इच्छावाला (सुपा २०६)।

घित्तूण, घिप्प° } देखो घि।

घिस सक [ग्रस्] गसना, निगलना, भक्षण करना। घिसइ (हे ४, २०४)।

घिसरा स्त्री [दे] मछली पकड़ने का जाल-विशेष (विपा १, ८—पत्र ८५)।

घिसिअ वि [ग्रस्त] कवलित, निगला हुआ, भक्षित (कुमा ७, ४६)।

घुघुरुड पु [दे] उत्कर, ढग, ढेर, समूह (दे २, १०६)।

घुट पु [दे] घूँट, एक वार पीने योग्य पानी आदि (हे ४, ४२३)।

घुग्घ, घुग्घिअ } (अप) पुन [घुग्घिका] कपि-चेष्टा, वन्दर की चेष्टा (हे ४, ४२३, कुमा)।

घुग्घुन्त्थण न [दे] खेद, तकलीफ, परिश्रम (दे २, ११०)।

घुग्घुरि पु [दे] मण्डूक, भेक, मेढक (दे २, १०६)।

घुग्घुस्सुअ वि [दे] नि शक होकर गया हुआ (पड्)।

घुग्घुस्सुमय न [दे] साशक वचन, आशका-युक्त वाणी (दे २, १०६)।

घुघुघुघुघुघ अक [घुघुघुघाय्] 'घुघु' आवाज करना, घूक या उल्लू का वोलना। वकृ घुघुघुघुघुघेंत (पउम १०५, ५६)।

घुघुय अक [घुघूय्] ऊपर देखो। वकृ घुघुयत (णाया १, ८—पत्र १३३)।

घुट्टग पु [घृष्टक] लिपे हुए पात्र को घिसने का पत्थर (पिंड १५)।

घुट्टघुणिअ न [दे] पहाड की वडी शिला (दे २, ११०)।

घुट्ठ वि [घुष्ट] घोपित, ऊँची आवाज से जाहिर किया हुआ (पउम ३, ११८, भवि)।

घुडुक्क अक [गर्ज्] गरजना, गर्जारव करना। घुडुक्कइ (हे ४, ३९५)।

घुण पु [घुण] काष्ठ-भक्षक कीट, घुन (ठा ४ १, विसे १५३६)।

घुणघुणिआ, घुणाघुणी } स्त्री [दे] कर्णोपकर्णिका, कानाकानी (दे २, ११०, महा)।

घुणिय वि [घुणिन्] घुणो से विद्ध, घुना हुआ (वृह १)।

घुण्ण देखो घुम्म। वकृ. घुण्णत (नाट)।

घुण्णिअ वि [घूर्णित] १ घुमा हुआ। २ भ्रान्त, भटका हुआ (दे ८, ४६)।

घुत्तिअ वि [दे] गवेपित, अन्वेपित, खोजा हुआ (दे २,१०६)।

घुन्न, घुम } देखो घुम्म। घुमइ (पिंग)। वकृ. घुन्नत (पण्ह १, ३)।

घुमघुमिय वि [घुमघुमित] १ जिसनें 'घुम-घुम' आवाज किया हो वह। २ न 'घुम-घुम' ध्वनि, 'महुरगभीरघुमघुमियवरमद्दल' (सुपा ५०)।

घुम्म अक [घुर्ण्] घूमना, चक्राकार फिरना। घुम्मइ (हे ४, ११७, पड्)। वकृ घुम्मत, घुम्ममाण (हेका ३३, णाया १, ९)। सकृ घुम्मिऊण (महा)।

घुम्मण न [घूर्णन] चक्राकार भ्रमण (कुमा)।

घुम्माविअ वि [घूर्णित] घुमाया हुआ (वज्जा १२२)।

घुम्मिय वि [घूर्णित] घुमा हुआ, चक्र की तरह फिरा हुआ (सुपा ९४)।

घुम्मिर वि [घूर्णितृ] घूमनेवाला, फिरनेवाला, चक्राकार घूमनेवाला (उप पृ ६२, गा १८०, गउड)।

घुयग पु [दे] एक तरह का पत्थर, जो पात्र वगैरह को चिकना करने के लिए उस पर घिसा जाता है, खराद या चरखी (पिंड)।

घुरहुर देखो घुरुघुर। वकृ घुरहुरत (श्रा १२)।

घुरुक्क अक [दे] घुरकना, घुडकना, गरजना। 'घुरुक्कति वग्घा' (महा)।

घुरुक्कार पु [घुरुत्कार] सूअर आदि की आवाज (किरात ६)।

घुरुघुर अक [घुरुघुराय्] घुरघुराना, 'घुर-घुर' आवाज करना, व्याघ्र वगैरह का वोलना। घुरुघुरंति (पि ५५८)। वकृ. घुरुघुरायत (सुपा ५०५)।

घुरुघुरि पुं [दे] मण्डूक, मेढक, भेक, वेंग (दे २, १०६)।

घुरुघुरु, घुरुहुर } देखो घुरुघुर। घुरुहुरइ (महा)। वकृ घुरुघुरुमाण (महा)।

घुल देखो घुम्म। घुलइ (हे ४, ११७)।

घुलिकि स्त्री [दे] हाथी की आवाज, करि-शब्द (पिंग)।

घुलघुल अक [घुलघुलाय्] 'घुल घुल' आवाज करना। वकृ घुलघुलाअमाण (पि ५५८)।

घुलिअ वि [घूर्णित] चक्राकार घुमा हुआ (कुमा)।

घुव्वा स्त्री [दे] कीट-विशेष, द्वीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (पण्ण १)।

घुसण देखो घुसिण (कुमा)।

घुसल सक [मथ्] मथना, विलोडना। घुसलइ (हे ४, १२१)।

घुसलिअ वि [मथित] मथित, विलोडित (कुमा)।

घुसिण न [घुसृण] कुकुम, सुगन्धित द्रव्य-विशेष, केसर (हे १, १२८)।

घुसिणल्ल वि [घुसृणवत्] कुंकुमवाला, कुकुम-युक्त (कुमा)।

घुसिणिअ वि [दे] गवेपित, अन्विष्ट (दे २, १०६)।

घुसिम न [दे] घुसृण, कुकुम (पड्)।

घुसिरसार न [दे] अवस्नान, विवाह के अव-सर मे स्नान के पहले लगाया जाता मसूरादि का पिसान, उवटन (दे २, ११०)।

घुसुल देखो घुसल। वकृ घुसुलत, घुसुलित (पिंड ५८७, ५७३)।

घुसुलण न [मथन] विलोडन (पिंड ६०२)।

घूअ पुस्त्री [घूक] उलूक, उल्लू, पक्षि विशेष (णाया १, ८, पउम १०५, ५६)। स्त्री. घूई (विपा १,३)। °रि पु [°रि] काक, कौआ, वायस (तदु)।

घूणाग पुं [घूणाक] स्वनाम-ख्यात सन्निवेश-विशेष, ग्राम-विशेष (आचू १)।

घूरा स्त्री [दे] १ जघा, जाँघ। २ खलका, शरीर का अवयव विशेष, 'गद्दभाण वा घूराओ कप्पेंति' (सूअ २, २, ४५)।

घे देखो गह = ग्रह्। घेइ (षड्)। भवि.

गूढ वि [गूढ] गुप्त, प्रच्छन्न, छिपा हुआ (पगह १, ४, जी १०)। °दंत पु [°दन्त] १ एक अन्तर्द्वीप, द्वीप विशेष। २ द्वीप-विशेष का निवासी (ठा ४, २)। ३ एक जैन मुनि। ४ 'अनुत्तरोपपातिक दशा' सूत्र का एक अध्ययन (अनु २)। ५ भरत क्षेत्र का एक भावी चक्रवर्ती राजा (सम १५४)।

गूह सक [गुह्] छिपाना, गुप्त रखना। वकृ गूहंत (स ६१०)।

गूह न [गूथ] गू, विष्ठा (तंदु)।

गूहण न [गूहन] छिपाना (सम ७१)।

गूहिय वि [गूहित] छिपाया हुआ (स १८६)।

गुण्ह } (अप) देखो गिण्ह। गृण्हइ (कुमा)।
गुन्ह } सकृ गृण्हेप्पिणु (हे ४, ३६४)।

गेअ वि [गेय] १ गाने योग्य, गाने लायक, गीत (ठा ४, ४—पत्र २८७, वज्जा ४४)। २ न गीत, गान, 'मणहरगेयभुणीए' (सुर ३, ६६, गा ३३४)।

गेंठुअ न [दे] स्तनों के ऊपर की वस्त्र ग्रन्थि (दे २, ९३)।

गेंठुल्ल न [दे] कञ्चुक, चोली (दे २, ९४)।

गेंड न [दे] देखो गेंठुअ (दे २, ९३)।

गेंडुई स्त्री [दे] क्रीडा, खेल, गम्मत, विनोद (दे २,९४)।

गेंदुअ पुं [कन्दुक] गेंद, गेंदा, खेलने की एक वस्तु (हे १, ५७, १८२, सुर १, १२१)।

गेज्ज वि [दे] मथित, विलोडित (दे २,८८)।

गेज्जल न [दे] ग्रीवा का आभरण (दे २, ९४)।

गेज्झ वि [ग्राह्य] ग्रहण-योग्य (हे १,७८)।

गेडण न [दे] १ फेंकना, क्षेपण। २ दे देना, 'तत्त वगेडणकए सरंभमा आसमाउ लहु' (उप ६४८ टी)।

गेड्डु न [दे] १ पङ्क, कीच, कांदो। २ यव, अन्न-विशेष (दे २, १०४)।

गेड्डी स्त्री [दे] गेडी, गेंद खेलने की लकडी (कुमा)।

गेण्ह देखो गिण्ह। गेण्हइ (हे ४, २०९, उव, महा)। भूका गेण्हीअ (कुमा)। भवि गेण्हिस्सइ (महा)। वकृ गेण्हंत, गेण्हमाण (सुर ३,७४, विपा १,१)। सकृ गेण्हित्ता, गेण्हिऊण, गेण्हिअ (भग, पि ५८६, कुमा)। कृ गेण्हियव्व (उत्त १)।

गेण्हण न [ग्रहण] आदान, उपादान, लेना (उप ३३६, स ३७५)।

गेण्हणया स्त्री [ग्रहणा] ग्रहण, आदान (उप ५२६)।

गेण्हाविय वि [ग्राहित] ग्रहण कराया हुआ (स ५२६, महा)।

गेण्हिअ न [दे] उर -सूत्र, स्तनाच्छादक-वस्त्र (दे २, ९४)।

गेद्ध देखो गिद्ध (औप)।

गेरिअ } पुन [गैरिक] १ गेरु, लाल रङ्ग
गेरुअ } की मिट्टी (स २२३, पि ६०, ११८)। २ मणि-विशेष, रत्न की एक जाति (पगण १—पत्र २६)। ३ वि. गेरु रंग का (कप्पू)। ४ पु त्रिदण्डी साधु, सांख्य मत का अनुयायी परिव्राजक (पव ९४)।

गेलण्ण } न [ग्लान्य] रोग, बीमारी, ग्लानि
गेलन्न } (विसे ५४०, उप ४९६, ओघ ७७, २२१)।

गेविज्ज } न [ग्रैवेयक] १ ग्रीवा का आभू-
गेवेज्ज } षण, गले का गहना (औप, णाया
गेवेज्जय } १, २)। २ ग्रैवेयक देवों का विमान (ठा ९)। ३ पुं उत्तम श्रेणी के देवों की एक जाति (कप्प, औप, भग, जी ३३, इक)।

गेवेय देखो गेवेज्ज (आचा २, १३, १)।

गेह पुन [गेह] घर, 'न नई न वणं न उज्जडो 'गेहो' (वज्जा ९८)।

गेह न [गेह] गृह, घर, मकान (स्वप्न १६, गउड)। °जामाउय पुं [°जामातृक] घर-जमाई, सर्वदा ससुर के घर में रहनेवाला जामाता (उप पृ ३६६)। °गार वि [°कार] १ घर के आकारवाला। २ पुं कल्पवृक्ष की एक जाति (सम १७)। °लु वि [°वत्] घरवाला, गृही, संसारी (पड्)। °सम पुं [°श्रम] गृहस्थाश्रम (पउम ३१, ८३)।

गेहि वि [गृद्ध] लोलुप, अत्यासक्त (ओघ ८७)।

गेहि स्त्री [गृद्धि] आसक्ति, गार्ध्य, लालच (स ११३, पगह १, ३)।

गेहि वि [गेहिन्] नीचे देखो (णाया १, १४))।

गेहिअ वि [गेहिक] १ घरवाला, गृही। २ पुं. भर्त्ता, धनी, पति (उत्त २)।

गेहिअ [गृद्धिक] अत्यासक्त, लोलुप, लालची (पगह १, ३)।

गेहिणी स्त्री [गेहिनी] गृहिणी, स्त्री (सुपा ३४१, कुमा, कप्पू)।

गो पु [गो] भूप, राजा, 'तइओ गो भूपपमुर-स्सिणो त्ति' (वव १)। °माहिसक्क न [°माहिषक] गौ और भैंस का झुंड या समूह 'निव्वुय गोमाहिसक्कं' (स ६८९)।

गो पुं [गो] १ रश्मि, किरण (गउड)। २ स्वर्ग, देव-भूमि (सुपा १४२)। ३ बैल, बलीवर्द। ४ पशु, जानवर। ५ स्त्री गैया, 'अपरप्परेयितिरियानियमियदिग्गमणओणिलो गोव्व' (विसे १७५८, पउम १०२, ५०, सुपा २७५)। ६ वाणी, वाग् (सुअ १, १३)। ७ भूमि, 'जं महइ विमभवणगोयगणं लोओ पुलिंदाणं' (गउड, सुपा १४२)। °आल देखो °वाल (पुप्फ २१६)। °इन्न वि [°मत्] गो-युक्त, जिसके पास अनेक गौ हो वह (दे २, ९८)। °उल न [°कुल] १ गौओं का समूह (आव ३)। २ गोष्ठ गो-वाडा, 'सामी गोउलगओ' (आवम)। °उलिय वि [°कुलिक] गो कुलवाला, गो कुल का मालिक, गोवाला (महा)। °किलंजय न [°किलञ्जक] पात्र-विशेष, जिसमें गौ को खाना दिया जाता है (भग ७, ८)। °कीड पु [°कीट] पशुओं की मक्खी, बगा (जी १६)। °क्खीर, °खीर न [°क्षीर] गैया का दूध (सम ६०, णाया १, १)। °ग्गह पु [°ग्रह] गाय की चोरी, गौ को छीनना (पगह १, ३)। °ग्गहण न [°ग्रहण] गो-ग्रहण (णाया १, १८)। °णिसज्जा स्त्री [°निषद्या] आसन विशेष, गौ की तरह बैठना (ठा १, १)। °तित्थ न [°तीर्थ] १ गौओं का तालाव आदि में उतरने का रास्ता, क्रम से नीची जमीन (जीव ३)। २ लवण समुद्र वगैरह की एक जगह (ठा १०)। °त्तास वि [°त्रास] १ गौओं को त्रास देनेवाला। २ पु एक कूटग्राह का पुत्र (विपा

च

च अ [च] अथवा, या, 'चसद्दो विगप्पेण' (पच ३, ४४)।
च पु [च] तालु-स्थानीय व्यञ्जन-वर्ण-विशेष (प्राप, प्रामा)।
च अ [च] इन अर्थों मे प्रयुक्त किया जाता अव्यय—१ और, तथा (कुमा, हे २, २१७)। २ पुन, फिर (कम्म ४, २३, ६६, प्रासू ५)। ३ अवधारण, निश्चय (पच १३)। ४ भेद, विशेष (निचू १)। ५ अतिशय, आधिक्य (आचा, निचू ४)। ६ अनुमति, सम्मति (निचू १)। ७ पाद-पूर्त्ति, पाद-पूरण (निचू १)।
चआ स्त्री [त्वक्] चमडी, त्वचा (षड्)।
चइअ वि [शकित] जो समर्थ हुआ हो, शक्त (से ६, ५१)।
चइअ देखो चविअ (पउम १०३, १२६)।
चइअ वि [त्यक्त] मुक्त, परित्यक्त (कुमा ३, ४६)।
चइअ वि [त्याजित] छुडवाया हुआ, मुक्त कराया हुआ (ओघ ११५)।
चइअ देखो चय = त्यज्।
चइअ देखो चु।
चइइअ देखो चेइअ (षड्)।
चइउ, चइऊण } देखो चय = त्यज्।
चइऊण देखो चु।
चइत्त देखो चेइअ (हे २, १३, कुमा)
चइत्त पु [चैत्र] मास-विशेष, चैत्र मास (हे १, १५२)।
चइत्ता देखो चु।
चइत्ताण, चइयव्व } देखो चय = त्यज्।
चइद (शौ) वि [चकित] भीत, शकित (अभि २१३)।
चइयव्व देखो चु।
चउ वि [चतुर्] चार, संख्या-विशेष, ४ (उवा, कम्म ४,२, जी ३३)। °आलीस स्त्रीन [°चत्वारिंशत्] चौआलीस, ४४ (पि ७५, १६६)। °कट्ठ न [°काष्ठा] चारो दिशा (कुमा) °कट्ठी स्त्री [°काष्ठी] चौकठा, चौकठ, चौखटा, द्वार के चारो ओर का काठ, द्वार का ढाँचा (निचू १)। °क्कोण वि [°कोण] चार कोणवाला, चतुरस्र (णाया १ १३)। °ग न देखो चउक्क = चतुष्क (द ३०) °गइ स्त्री [°गति] नरक, तिर्यग्, मनुष्य और देव की योनि (कम्म ४, ६६)। °गइअ वि [°गतिक] चारो गति मे भ्रमण करनेवाला (श्रा ६)। °गमण न [°गमन] चारो दिशाएँ (कप्प)। °गुण, °ग्गुण वि [°गुण] चौगुना (हे १, १७१, षड्)। °चत्ता स्त्री [°चत्वारिंशत्] संख्या विशेष, चौआलीस (भग)। °चरण पु [°चरण] चौपाया, चार पैर के जन्तु, पशु (उप ७६८ टी, सुपा ४०६)। °चूड पु [°चूड] विद्याधर वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ४५)। °ट्ठ देखो °त्थ (हे २, ३३)। °ट्ठाणवडिअ वि [°स्थानपतित] चार प्रकार का (भग)। °णउइ स्त्री [°नवति] सख्या-विशेष, चौरानवे, ९४ (पि ४४६)। °णउय वि [°नवत] चौरानवेवाँ, ९४ वाँ (पउम ९४, १०६)। °णवइ देखो °णउइ (सम ९७, श्रा ४४)। °ण्ण (अप)। देखो °पन्न (पिंग)। °तिस, °तीस न [°त्रिंशत्] चौतीस, ३४ (भग, औप)। °तीसइम देखो °त्तीसइम (पउम ३४,६१)। °तीसा स्त्री देखो °तीस (प्रारू)। °त्तालीस वि [°चत्वारिंश] चौआलीसवाँ, ४४ वाँ (पउम ४४, ६८)। °त्तीसइम वि [°त्रिंश] १ चौतीसवाँ ३४ वाँ (कप्प)। २ न. सोलह दिनो का लगातार उपवास (णाया १, १—पत्र ७२)। °त्थ वि [°थ] १ चौथा (हे १, १७१)। २ पुन. उपवास (भग)। °त्थचउत्थ पुन [°थचतुर्थ] एक एक उपवास (भग)। °त्थभत्त न [°थभक्त] एक दिन का उपवास (भग)। °त्थभत्तिय वि [°थभक्तिक] जिसने एक उपवास किया हो वह (पण्ह २, १)। °त्थिमगल न [°थीमङ्गल] वधू-वर के समागम का चतुर्थ दिन, जिसके बाद जामाता अकेला अपने घर जाता है, चौठारी (गा ६४६ अ)। °त्थी स्त्री [°थी] १ चौथी। २ सप्रदान-विभक्ति, चतुर्थी विभक्ति (ठा ८)। ३ तिथि-विशेष (सम ६)। °दंत देखो °द्दंत (राज)। °दस त्रि व [°दशन्] संख्या-विशेष, चौदह (नव २, जी ४७)। °दसपुव्वि पु [°दशपूर्विन्] चौदह पूर्व ग्रन्थो का ज्ञानवाला मुनि (ओघ २)। °दसम वि. देखो °द्दसम (णाया १, १४)। °दसहा अ [°दशधा] चौदह प्रकार से (नव ५)। °दसी स्त्री [°दशी] तिथि विशेष, चतुर्दशी (रयण ७१)। °द्दंत पु [°दन्त] ऐरावत, इन्द्र का हाथी (कप्प)। °द्दस देखो °दस (भग)। °द्दसपुव्वि देखो °दसपुव्वि (भग ५, ४)। °द्दसम वि [°दश] १ चौदहवाँ, १४ वा (पउम १४,१५८)। २ पुंन लगातार छ दिनो का उपवास (भग)। °द्दसी देखो °दसी (कप्प)। °द्दसुत्तरसयय वि [°दशोत्तरशततम] एक सौ चौदहवाँ, ११४ वाँ (पउम ११४, ३५)। °द्दह देखो °दस (पि १६६, ४४३)। °द्दही देखो °दसी (प्राप्र)। °द्दिस, °द्दिसिं अ [°दिश्] चारो दिशाओ की तरफ, चारो दिशाओ में (भग, महा, ठा ४, २)। °द्धा अ [°धा] चार प्रकार से (उव)। °नाण न [°ज्ञान] मति, श्रुत, अवधि और मन पर्यव ज्ञान (भग, महा)। °नाणि वि [°ज्ञानिन्] मति वगैरह चार ज्ञानवाला (सुपा ८३, ३२०) °पण्ण देखो °पन्न। °पणगइम वि [°पञ्चाश] १ चौवनवाँ, ५४ वाँ। २ न लगातार छब्बीस दिनो का उपवास (णाया २—पत्र २५१)। °पन्न, °पन्नास स्त्रीन [°पञ्चासत्] चौवन, ५४ (पउम २०, १७, सम ७२, कप्प)। °पन्नासइम वि [°पञ्चाशत्तम] चौवनवाँ, ५४ वाँ (पउम ५४, ४८)। °पय देखो °प्पय (णाया १, ८, जी २१)। °पाल न [°पाल] सूर्याभ देव का प्रहरण-कोश (राय)। °पइया, °प्पइया स्त्री [°पदिका] १ छन्द-विशेष (पिंग)। २ जन्तु-विशेष की एक जाति (जीव २)। °प्पई स्त्री [°पदी] देखो °पइया (सुपा १६०)। °प्पन्न देखो °पन्न (सम ७२)। °प्पय पुंस्त्री [°पद] १

गोडी स्त्री [गौडी] गुड की बनी हुई मदिरा, गुड का दारू (बृह २)।

गोड्ड वि [गौड] १ गुड का बना हुआ। २ मधुर, मीठा (भग १८, ६)।

गोड्ड [दे] देखो गोड (मृच्छ १२०)।

गोण पुं [दे] १ साक्षी (दे २, १०४)। २ बैल, वृषभ, बलीवर्द (दे २, १०४, कुमा, हे २, १७४, सुपा ५४७, औप; दस ५, १, आचा २, ३, ३, उप ६०४, विपा १, १)। °इल्ल वि [°वत्] गाय वाला, गौओं का मालिक (सुपा ५४७)। °वइ पुंस्त्री [°पति] गौओं का मालिक, गौ वाला (सुपा ५४७)।

गोण (शौ) पुन [गो] बैल, 'गोणो, गोणं' (प्राकृ ८८)।

गोण वि [गौण] १ गुण निष्पन्न, गुण-युक्त, यथार्थ (विपा १, २, औप)। २ अप्रधान, अमुख्य (औप)।

गोणगणा स्त्री [गवाङ्गना] गैया, गाय (सुपा ४६५)।

गोणत्त } पुन [दे] वैद्य का औजार रखने
गोणत्तय } का थैला (उप ३१७, स ४८४)।

गोणस पुं [गोनस] सर्प की एक जाति, फण-रहित साँप की एक जाति (पण्ह १, १, उप पृ ४०३)।

गोणा स्त्री [दे] गाय, गैया, गऊ (षड्)।

गोणिक्क पुं [दे] गो-समूह, गौओं का समूह (दे २, ६७, पाअ)।

गोणिअ त्रि [दे] गौओं का व्यापारी (वव ६)।

गोणी स्त्री [दे] गाय, गैया (ओघ २३ भा)।

गोण्ण देखो गोण = गौण (कप्प, णाया १, १—पत्र ३७)।

गोतिहाणी स्त्री [दे गोत्रिहायणी] गोवत्सा, गौ की वछडी (तदु ३२)।

गोत्त पु [गोत्र] १ पर्वत, पहाड, (श्रा १४)। २ न. नाम, अभिधान, आख्या (से १५, १०)। ३ कर्म-विशेष, जिसके प्रभाव से प्राणी उच्च या नीच जाति का कहलाता है (ठा २, ४)। ४ पुन. गोत, वंश, कुल, जाति, 'सत्त मूलगोत्ता पण्णत्ता' (ठा ७)। °क्खलिय न [°स्खलित] नाम-विपर्यास, एक के बदले दूसरे के नाम का उच्चारण (से ११, १७)। °देवया स्त्री [°देवता] कुल-देवी (श्रा १४)। °फुस्सिया स्त्री [°स्पर्शिका] वल्ली-विशेष (पण्ण १)।

गोत्त पुन [गोत्र] १ पूर्वज पुरुष के नाम से प्रसिद्ध अपत्य—सतति (णंदि ४६, सुज्ज १०, १६)। २ वि वाणी का रक्षक (सूअ १, १३, ६)।

गोत्ति वि [गोत्रिन्] समान गोत्रवाला, कुटुम्बी, स्वजन (सुपा १०६)।

गोत्ति देखो गुत्ति (स २४२)।

गोत्तिअ वि [गोत्रिक] समान गोत्रवाला, स्वजन, भाई-वद (श्रा २७)।

गोत्थुभ देखो गोथुभ (इक)।

गोत्थूभा देखो गोथूभा (इक)।

गोथुभ } पु [गोस्तूप] १ ग्यारहवें जिन-
गोथूभ } देव का प्रथम-शिष्य (सम १५२, पि २०८)। २ वेलन्धर नागराज का एक आवास-पर्वत (सम ६६)। ३ न. मानुषोत्तर पर्वत का एक शिखर (दीव)। ४ कौस्तुभ-रत्न (सम, १५८)।

गोथूभा स्त्री [गोस्तूपा] १ वापी-विशेष, अंजन पर्वत पर की एक वापी (ठा ३, ३)। २ शक्रेन्द्र की एक अग्रमहिषी की राजधानी (ठा ४, २)।

गोदा स्त्री [दे गोदा] नदी-विशेष, गोदावरी (षड्, गा ६५५)।

गोध पु [गोध] १ म्लेच्छ देश। २ गोध देश का निवासी मनुष्य (राज)।

गोधा स्त्री [गोधा] गोह, हाथ से चलनेवाली एक साँप की जाति (पण्ह १, १, णाया १, ८)।

गोन्न देखो गोण्ण (णाया १, १६—पत्र २००)।

गोपुर देखो गोउर (उत्त ६, अभि १८५)।

गोप्पहेलिया स्त्री [गोप्रहेलिका] गौओं को चरने की जगह (आचा २, १०, २)।

गोफणा स्त्री [दे] गोफन, पत्थर फेंकने का अस्त्र-विशेष (राज)।

गोमड्डा स्त्री [दे] रथ्या, मुहल्ला (दे २, ६६)।

गोमाअ } पु [गोमायु] शृगाल, सियार, गीदड
गोमाउ } (नाट—मृच्छ ३२०, वि १६५, णाया १, ४, स २२६, पाअ)।

गोमाणसिया स्त्री [गोमानसिका] शय्याकार स्थान-विशेष (जीव ३)।

गोमाणसी स्त्री [गोमानसी] ऊपर देखो (जीव ३)।

गोमि } वि [गोमिन्] जिसके पास अनेक
गोमिअ } गौ हो वह, (अणु, निचू २)।

गोमिअ देखो गोम्मिअ (राज)।

गोमिअ [दे] देखो गोमा (अणु २१२)।

गोमिक (मा) [गौरवित] समानित (प्राकृ १०१)।

गोमी स्त्री [दे] कनखजूरा, त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (जी १६)।

गोमुह पु [गोमुख] १ यक्ष-विशेष, भगवान् ऋषभदेव का शासन-यक्ष (सति ७)। २ एक अन्तर्द्वीप, द्वीप विशेष। ३ गोमुख-द्वीप का निवासी मनुष्य (ठा ४, २)। ४ न. उपलेपन (दे २, ८८)।

गोमुही स्त्री [गोमुखी] वाद्य-विशेष, (अणु, राय)।

गोमुही [गोमुखी] वाद्य-विशेष (राय ४६, अणु १२८)।

गोमेअ } पुं [गोमेद] रत्न की एक जाति,
गोमेज्ज } राहुरत्न (कुमा ७०, उत्त २)।

गोमेह पु [गोमेध] १ यक्ष-विशेष, भगवान् नेमिनाथ का शासन-देव (स ८)। २ यज्ञ-विशेष, जिसमे गौ का वध किया जाता है (पउम ११, ४१)।

गोम्मिअ पुं [गौल्मिक] कोतवाल, नगर-रक्षक (पण्ह १, २)।

गोम्ही देखो गोमी (राज)।

गोय देखो गोत्त (सम ३३, कम्म १)। °वाइ वि [°वादिन्] अपने कुल को उत्तम माननेवाला, वशाभिमानी (आचा)।

गोय न [दे] उदुम्बर—गूलर वगैरह का फल (आव ६)।

गोय न [गोत्र] मौन, वाक्-संयम (सूअ १, १४, २०)। °वाय पुं [°वाद] गोत्र-सूचक वचन (सूअ १, ६, २७)।

गोयम पुं [गोतम] ऋषि-विशेष (ठा ७)। २ छोटा बैल (औप)। ३ न. गोत्र-विशेष (कप्प, ठा ७)।

चउवीस वि [चतुर्विंश] चौवीसवाँ (पव ४६)।

चउवीसिगा स्त्री [चतुर्विंशिका] समय-मान-विशेष, चौवीस तीर्थंकर जितने समय मे होते हैं उतना काल—एक उत्सर्पिणी या एक अवसर्पिणी-काल (महानि ४)।

चउवेद } वि [चतुर्वेद] चारो वेदो का
चउवेय } ज्ञाता, चतुर्वेदी, चौवे (धर्मसं
चउव्वेद } १२३८, मोह १०)।

चउसट्ठिआ स्त्री [चतुःषष्टिका] रसवाली चीज तौलने का एक नाप, चार पल का एक माप (अणु १५१)।

चउसर वि [दे] चौसर, चार सरा (लडी)वाला (हार आदि) (सुपा ५१०, ५१२)।

चउहत्थ पुं [चतुर्हस्त] श्रीकृष्ण (सुख ६, १)।

चउहार पुं [चतुराहार] चार प्रकार का आहार, अशन, पान, खादिम और स्वादिम, 'कतासिज्जपि न संछवेमि चउहारपरिहारो' (सुपा ५७३)।

चओर पुंन [दे] पात्र-विशेष, 'भुत्तावसाणे य आयमणवेलाए अवणीएसु चओरेसु' (स २५२)।

चओर } पुस्त्री [चकोर] पक्षि-विशेष
चओरग } (पण्ह १, १, सुपा ३७)।

चओवचइय वि [चयोपचयिक] वृद्धि-हानिवाला (उप २५८ टी, आचा)।

चंकम अक [चङ्क्रम्] वार वार चलना। २ इधर उधर घूमना। ३ वहुत भटकना। ४ टेढा चलना। ५ चलना फिरना। वकृ. चंकमंत (उप १३० टी, ६८६ टी)। हेकृ चंकमिउ (स ३५६)। कृ चंकमियव्व (पि ५५६)।

चंकमण न [चङ्क्रमण] १ इधर उधर भ्रमण। २ वहुत चलना। ३ वार वार चलना। ४ टेढ़ा चलना। ५ चलना-फिरना। (सम १०६, णाया १, १)।

चंकमिय वि [चंक्रमित] १ जिसने चंक्रमण या भ्रमण किया हो वह। २-६ ऊपर देखो (उप ७२८ टी, निचू १)।

चंकमिर वि [चङ्क्रमितृ] चंक्रमण करनेवाला (मण)।

चंकम्म अक [चङ्क्रम्य] देखो चंकम। वकृ चंकम्मंत, चंकम्ममाण (गा ४६३, ६२३ उप पृ २३°, पण्ह २, ५, कप्प)।

चंकम्मण देखो चंकमण (णाया १, १—पत्र ३८)।

चंकम्मिअ देखो चंकमिअ (से ११, ६६)।

चंकार पु [चकार] च वर्ण, 'च' अक्षर (ठा १०)।

चंग वि [दे. चङ्ग] सुन्दर, मनोहर, रम्य (दे ३, १, उप पृ १२६, सुपा १०६, कुप्र ३५, धम्म ६ टी, कप्पू, प्राप्र सण, भवि)।

चंग क्रिवि [दे] अच्छा, ठीक (२५)।

चंगदेव पु [चङ्गदेव] हेमाचार्य का गृहस्थावस्था का नाम (कुप्र २०)।

चंगवेर पु न [दे] काठ का तख्ता (आचा २, ४, २, ३)।

चंगवेर पुं [दे] काष्ठ-पात्री, काठ का बना हुआ छोटा पात्र-विशेष, 'पीढए चंगवेरे य' (दस ७)।

चंगिम पुंस्त्री [दे चङ्गिमन्] सुन्दरता सौन्दर्य, श्रेष्ठता, चारुपन (नाट)। स्त्री. °मा (विवे १००, उप पृ १८१, सुपा ५, १२३, २९३)।

चंगेरी स्त्री [दे] टोकरी, चगेली, डलिया, कठारी, तृण आदि का बना पात्र-विशेष (विसे ७१०, पण्ह १, १)।

चंच देखो चंछ। चंचइ (प्राकृ ६५)।

चंच पुं [चञ्च] १ पङ्कप्रभा नरक-पृथिवी का एक नरकावास (इक)। २ न देव-विमान-विशेष (इक)।

चंचपुड पुंन [दे] आघात, अभिघात, 'खुरवलणचंचपुडेहिं धरणिअल अभिहणमाण' (जं ३)।

चंचप्पर न [दे] असत्य, भूठ, अनृत, 'चंचप्परं न भणिमो' (दे ३, ४)।

चंचरीअ पुं [चञ्चरीक] भ्रमर, भौंरा (दे ३, ६)।

चंचल वि [चञ्चल] १ चपल, चञ्चल (कप्प, चारु १)। २ पुं. रावण के एक सुभट का नाम (पउम ५८, ३६)।

चंचला स्त्री [चञ्चला] १ चञ्चल स्त्री। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

चंचलिअ वि [चञ्चलित] चञ्चल किया हुआ, 'मणयाणिलचंचे (? च) लिअकेसराइ' (विक्र २६)।

चंचा स्त्री [चञ्चा] १ नरकट की चटाई। २ चमरेन्द्र की राजधानी, स्वर्ग-नगरी-विशेष। ३ घास का पुतला (दीव)।

चंचाल (अप) देखो चंचल (सण)।

चंचु स्त्री [चञ्चु] चोच, पक्षी का ठोर (दे ३, २३)।

चंचुच्चिय न [दे चञ्चुरित, चञ्चूचित] कुटिल गमन टेढी चाल (औप)।

चंचुमालइय वि [दे] रोमाञ्चित, पुलकित (कप्प, औप)।

चंचुय पुं [चञ्चुक] १ अनार्य देश-विशेष। २ उस देश का निवासी मनुष्य (पण्ह १, १)।

चंचुर वि [चञ्चुर] चपल, चचल (कप्पू)।

चंछ सक [तक्ष्] छिलना। चंछइ (षड्)।

चड सक [पिष्] पीसना। चडइ (षड्)।

चंड देखो चंद (इक)।

चंड वि [चण्ड] १ प्रवल, उग्र, प्रखर, तीव्र (कप्प)। २ भयानक, डरावना (उत्त २६, औप)। ३ अति क्रोधी, क्रोध-स्वभावी (उत्त १, १०, पिंग, णाया १, १८)। ४ तेजस्वी, तेजिल (उप पृ ३२१)। ५ पु राक्षस वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, २६४)। ६ क्रोध, कोप (उत्त १)। °किरण पु [°किरण] सूर्य, रवि (उप पृ ३२१)। °कोसिअ पुं [°कौशिक] एक सर्प, जिसने भगवान् महावीर को सताया था (कप्प)। °दीव पु [द्वीप] द्वीप-विशेष (इक)। °पज्जोअ पु [°प्रद्योत] उज्जयिनी के एक प्राचीन राजा का नाम (आवम)। °भाणु पु [भानु] सूर्य, सूरज (कुम्मा १३)। °रुद्द पु [°रुद्र] प्रकृति-क्रोधी एक जैन आचार्य (भाव १७)। °वडिंसय पुं [°ावतंसक] नृप-विशेष (महा)। °वाल पु [°पाल] नृप-विशेष (कप्पू)। °सेण पु [°सेन] एक राजा का नाम (कप्पू)। °ालिय न [°ालीक] क्रोध-वश कहा हुआ भूठ (उत्त १)।

चंडंसु पु [चण्डांशु] सूर्य, सूरज, रवि (कप्पू)।

कवकृ गोविज्जंत (सुपा ३३७, सुर ११, १६२, प्रासू ६५)।

गोव } पुं [गोप] गौत्रों का रक्षक, ग्वाला,
गोवअ } गोपाल (उवा ७, दे २, ५८, कप्पू)। °गिरि पु [°गिरि] पर्वत विशेष, 'गोवगिरिसिहरसंठियचरमजिणाययणदारमवरुद्ध' (मुणि १०८६७)।

गोवड्ढण देखो गोवद्धण (पि २९१)।

गोवण न [गोपन] १ रक्षण। २ छिपाना (श्रा २८, उप ५९७ टी)।

गोवद्धण पु [गोवर्धन] १ पर्वत-विशेष (पि २९१)। २ ग्राम विशेष (पउम २०, ११५)।

गोवय वि [गोपक] छिपानेवाला, ढाँकनेवाला (सवोध ३४)।

गोवर पुन [दे] गोवर, गोमय, गो-विष्ठा (दे २, ९६, उप ५९७ टी)।

गोवर पुं [गोवर] १ मगध देश का एक गाँव, गौतम-स्वामी की जन्मभूमि (आक)। २ वणिग्-विशेष (उप ५९७ टी)।

गोवल न [गोवल] १ गोधन, गोकुल, गौओं का समूह, 'रिंति गोवलाइं' (सुपा ४३३)। २ गोत्र-विशेष (सुज्ज १०)।

गोवलायण देखो गोवल्लायण (सुज्ज १०)।

गोवलिअ पुं [गोवलिक] ग्वाला, अहीर (सुपा ४३३)।

गोवल्ल पुन [गोवल] गोत्र-विशेष (सुज्ज १०, १६ टी)।

गोवल्लायण वि [गोवलायन] १ गोवल गोत्र मे उत्पन्न। २ न गोत्र विशेष (इक)।

गोवा पु [गोपा] गौत्रों का पालन करनेवाला, ग्वाला (प्रामा)।

गोवाय सक [गोपाय्] १ छिपाना। २ रक्षण करना। वकृ. गोवायत (उप ३५७)।

गोवाल पु [गोपाल] गौ पालनेवाला, ग्वाला, अहीर (दे २, २८)। °गुज्जरी स्त्री [°गुर्जरी] भैरव रागवाली भाषा-विशेष, गुजरात के अहीरो का गीत (कुमा)।

गोवालय पुं [गोपालक] ऊपर देखो (पउम ५, ९६)।

गोवालि पुं [गोपालिन्] ग्वाला गोप, अहीर (सुपा ४३२, ४३३)।

गोवालिणी स्त्री [गोपालिनी] गोप-स्त्री, अहीरिन, ग्वालि (सुपा ४३२)।

गोवालिय पुं [गोपालिक] गोप, अहीर, ग्वाला (सुपा ४३३)।

गोवालिया स्त्री [गोपालिका] गोप-स्त्री, गोपी, अहीरिन (णाया १, १६)।

गोवाली स्त्री [गोपाली] वल्ली-विशेष (पण्ण १)।

गोविअ वि [दे] अजल्पाक, नहीं बोलनेवाला (दे २, ९७)।

गोविअ वि [गोपित] १ छिपाया हुआ। २ रक्षित (सुर १, ८८, निर १, ३)।

गोविआ स्त्री [गोपिका] गोपागना, अहीरिन (कुमा, गा ११४)।

गोविंद पुं [गोपेन्द्र] १ स्वनाम-ख्यात एक योग-विषयक ग्रन्थकार। २ एक जैनमुनि (पचव, णंदि)।

गोविंद पुं [गोविन्द] १ विष्णु, कृष्ण। २ एक जैन मुनि (ठा १०)। °णिज्जुत्ति स्त्री [°निर्युक्ति] इस नाम का एक जैन दार्शनिक ग्रन्थ (निचू ११)।

गोविल्ल न [दे] कञ्चुक, चोली (दे २, ९४)।

गोवी स्त्री [दे] बाला, कन्या, कुमारी, लड़की (दे २, ९६)।

गोवी स्त्री [गोपी] गोपागना, अहीरिन (सुपा ४'५)।

गोव्वर [दे] देखो गोवर (उप ५९३, ५९७ टी)।

गोस पुन [दे] प्रभात, सुबह, प्रात काल (दे २, ९६, सण, गउड, वव ६, पचव २, पाअ पड्, पव ४)।

गोसंधिय पु [गोसंधित] गोपाल, अहीर (राज)।

गोसग्ग पुन [दे गोसर्ग] प्रात काल, प्रभात (दे २, ९६, पाअ)।

गोसण्ण वि [दे] मूर्ख, बेवकूफ (दे २, ९७, पड्)।

गोसाल } पुं व [गोशाल] १ देश-विशेष
गोसालग } (पउम ९८, ६५)। २ पु. भगवान् महावीर का एक शिष्य, जिसने पीछे अपना आजीविक मत चलाया था (भग १५)।

गोसाविआ स्त्री [दे] १ वश्या, वारागना (मृच्छ ५५)। २ मूर्ख-जननी (नाट—मृच्छ ७०)।

गोसिय वि [दे] प्रभातिक, प्रात काल-सबन्धी (सण)।

गोसीस न [गोशीर्ष] चन्दन-विशेष, सुगन्धित काष्ठ-विशेष (पण्ह २, ४, ५, कप्प, सुर ४, १४, सण)।

गोह पुं [दे] १ गाँव का मुखिया (दे २, ८९)। २ भट, सुभट, योद्धा (दे २, ८९, महा)। ३ जार, उपपति (उप पृ २१५)। ४ सिपाही, पुलिस (उप पृ ३३५)। ५ पुरुष, आदमी, मनुष्य (मृच्छ ५७)।

गोह पुं [दे] कोतवाल आदि [illegible] मनुष्य (सुख ३, ९)। २ वि ग्रामीण, ग्राम्य, गँवार या गँवारू, देहाती (सुख २, १३)।

गोहा देखो गोधा (दे २, ७३, भग ८, ३)।

गोहिया स्त्री [गोधिका] १ गोधा, गोह, जल-जन्तु-विशेष (सुर १०, १८६)। २ साँप की एक जाति (जीव २)। ३ वाद्य-विशेष (अणु)।

गोहुर न [दे] गोमय, गो-विष्ठा (दे २, ९६)।

गोहूम पुं [गोधूम] अन्न-विशेष, गेहूँ (कस)।

गोहेर } पु [गोवेर] जन्तु-विशेष, साँप
गोहेरय } की तरह का जानवर (पउम ४८, ९२, ९१)।

°ग्गह देखो गह = ग्रह (गउड)।

°ग्गहण देखो गहण = ग्रहण (अभि ५६)।

°ग्गहण देखो गहण = ग्रहण (कुमा)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे गआराइसद्दसंकलणो
बारहमो तरंगो समत्तो ॥

राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंकापति (पउम ५,२६६)। °विकंप पुंन [°विकम्प] चन्द्र का विकम्प-क्षेत्र (जो १०)। °विमाण न [°विमान] चन्द्र का विमान (ज ७)। °विलासि वि [°विलासिन्] चन्द्र के तुल्य मनोहर (राय)। °वेग पुं [°वेग] एक विद्याधर-नरेश (महा)। °संवच्छर पुं [°संवत्सर] वर्ष-विशेष, चान्द्र मासों से निष्पन्न संवत्सर (चंद १०)। °साला स्त्री [°शाला] अट्टालिका, अटारी (दे ३, ६)। °सालिया स्त्री [°शालिका] अट्टालिका (णाया १, १)। °सिंग न [°शृङ्ग] देव-विमान-विशेष (सम ८)। °सिट्ठ न [°शिष्ट] एक देवविमान (सम ८)। °सिरी स्त्री [°श्री] द्वितीय कुलकर पुरुष की माँ का नाम (आचू १)। °सिहर पुं [°शिखर] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, ४३)। °सूरदंसा-वणिआ, °सूरपासणिया स्त्री [°सूरदर्शनिका] बालक का जन्म होने पर तीसरे दिन उसको कराया जाता चन्द्र और सूर्य का दर्शन और उसके उपलक्ष्य में किया जाता उत्सव (भग ११, ११, विपा १, २)। °सूरि पुं [°सूरि] स्वनामविख्यात एक जैन आचार्य (सण)। °सेण पुं [°सेन] १ भगवान् आदिनाथ का एक पुत्र। २ एक विद्याधर राज-कुमार (महा)। °सेहर पुं [°शेखर] १ भूप-विशेष (ती ३८)। २ महादेव, शिव (पि ३६५)। °हास पुं [°हास] खड्ग-विशेष, तलवार (से १४, ५२, गउड)।

चंद पुं [चन्द्र] संवत्सर-विशेष, जिसमें अधिक मास न हो वह वर्ष (सुज्ज ११)। °उडु पुं [°ऋतु] कुछ अधिक उनसठ दिनों की एक ऋतु (सुज्ज १२)। °परिवेस पुं [°परिवेष] चन्द्र-परिधि (अणु १२०)। °प्पहा स्त्री [°प्रभा] देखो चंद-प्पभा (विचार १२६, कुप्र ४५३)। °वदी स्त्री [°वती] एक नगरी (मोह ८८)।

चंद वि [चान्द्र] चन्द्र-संबन्धी (चंद १२)। °कुल न [°कुल] जैन मुनियों का एक कुल (गच्छ ४)।

चंदअ देखो चंद = चन्द्र (हे २, १६४)।

चंदइल्ल पुं [दे] मयूर, मोर (दे ३, ५)।

चंदंक पुं [चन्द्राङ्क] विद्याधर वंश का एक स्वनाम-प्रसिद्ध राजा (पउम ५, ४३)।

चंदग [चन्द्रक] देखो चंद। °विज्झ, °वेज्झ न [°वेध्य] राधावेध, 'चंदगविज्झं लद्धं, केवलसरिसं समाउपरिहीएं' (संथा १२२, निचू ११)।

चंदट्ठिआ स्त्री [दे] १ भुज, शिखर, कन्धा। २ गुच्छा, स्तवक (दे ३, ६)।

चंदण पुं [चन्दन] १ एक देवविमान (देवेन्द्र १४३)। २ रत्न की एक जाति (उत्त ३६, ७७)। ३ पुं द्वीन्द्रिय जीव-विशेष, अक्ष का जीव (उत्त ३६, १३०)।

चंदण पुंन [चन्दन] १ सुगन्धित वृक्ष-विशेष, चन्दन का पेड़ (प्रासू ६)। २ न. सुगन्धित काष्ठ-विशेष, चन्दन की लकड़ी (भग ११, ११, हे २, १८२)। ३ घिसा हुआ चन्दन (कुमा)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। ५ रुचक पर्वत का एक शिखर (ज)। °कलस पुं [°कलश] चन्दन-चर्चित कुम्भ, माङ्गलिक घट (औप)। °घड पुं [°घट] मंगल कारक घड़ा (जीव ३)। °बाला स्त्री [°बाला] एक साध्वी स्त्री, भगवान् महावीर की प्रथम शिष्या (पडि)। °वइ पुं [°पति] स्वनाम-ख्यात एक राजा (उप ९८६ टी)।

चंदणग पुंन [चन्दनक] १ ऊपर देखो। २ पुं द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष, जिसके कलेवर को जैन साधु लोग स्थापनाचार्य में रखते हैं (पण्ह १, १, जी १५)।

चंदणा स्त्री [चन्दना] भगवान् महावीर की प्रथम शिष्या, चन्दनबाला (सम १५२, कप्प)।

चंदणि स्त्री [दे] आचमन, कुल्ला। °उयय न [°उदक] कुल्ला फेंकने की जगह (आचा २, १, ६, २)।

चंदणी स्त्री [दे] चन्द्र की पत्नी, रोहिणी, 'चंदो विय चंदणीजोगो' (महा)।

चंदम पुं [चन्द्रमस्] चन्द्रमा, चाँद (भग)।

चंदरुद्द देखो चंड-रुद्द (पचा ११, ३५)।

चंदवडाया स्त्री [दे] जिसका आधा शरीर ढका और आधा नंगा हो ऐसी स्त्री (दे ३,७)।

चंदा स्त्री [चन्द्रा] चन्द्र-द्वीप की राजधानी (जीव ३)।

चंदाअव पुं [चन्द्रातप] ज्योत्स्ना, चन्द्रिका, चन्द्र की प्रभा, चाँदनी (से १, २७)। देखो चंदायय।

चंदाणण पुं [चन्द्रानन] ऐरवत क्षेत्र के प्रथम जिनदेव (सम १५३)।

चंदाणणा स्त्री [चन्द्रानना] १ चन्द्र के तुल्य आह्लाद उत्पन्न करनेवाली, चन्द्रमुखी। २ शाश्वती जिन-प्रतिमा-विशेष (ठा १, १)।

चंदाभ वि [चन्द्राभ] १ चन्द्र के तुल्य आह्लाद-जनक। २ पुं आठवाँ जिनदेव, चन्द्र-प्रभ स्वामी (आचू २)। ३ इस नाम का एक राज-कुमार (पउम ३, ५५)। ४ न एक देवविमान (सम १४)।

चंदायण न [चान्द्रायण] तप-विशेष, जिसमें चन्द्रमा के घटने-बढने के अनुसार भोजन के कौर घटाने-बढ़ाने पड़ते हैं (पचा १९)।

चंदायण न [चन्द्रायण] चन्द्र का छ छ मास पर दक्षिण और उत्तर दिशा में गमन (जो ११)।

चंदायय देखो चंदाअव। १ आच्छादन-विशेष, वितान, चँदवा (सुर ३, ७२)।

चंदालग न [दे] ताम्र का भाजन-विशेष (सूअ १, ४, २)।

चंदावत्त न [चन्द्रावर्त्त] एक देवविमान (सम ८)।

चंदाविज्झय देखो चंदग-विज्झ (णंदि)।

चंदिअ वि [चान्द्रिक] चन्द्रका, चन्द्र-संबन्धी (पव १४१)।

चंदिआ स्त्री [चन्द्रिका] चाँदनी, चन्द्र की प्रभा, ज्योत्स्ना (से ५ २, गा ७७)।

चंदिकोज्जलीय वि [दे. चन्द्रिकोज्ज्वलिन्] चन्द्र-कान्ति से उज्वल बना हुआ (चंद)।

चंदिण न [दे] चन्द्रिका, चन्द्रप्रभा,

'मेहाण दाण चंदाण,
चंदिण तरुवराण फलनिवहो।
सप्पुरिसाण विढत्तं,
सामन्नं सयललोआणं ॥' (श्रा १०)।

चंदिम देखो चंदम (औप, कप्प)। २ एक जैन मुनि (अनु २)।

चंदिमा स्त्री [चन्द्रिका] चन्द्र की प्रभा, ज्योत्स्ना, चाँदनी (हे १, १८५)।

चंदिमाइय न [चान्द्रिक] 'ज्ञाताधर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन (राज)।

घट्टाघडी स्त्री [दे] गोष्ठी, सभा, मण्डली (पड्)।

घडाव सक [घटय्] १ बनाना। २ बनवाना। ३ संयुक्त करना, मिलाना। घडावइ (हे ४, ३४०)। संकृ घट्टावित्ता (आवम)।

घडि वि [घटिन्] घटवाला (अणु १४४)।

घडि° स्त्री [घटी] देखो घडिआ = घटिका (प्रासू ५५)। °मतय, °मत्तय न [°मात्रक] छोटे घडे के आकार का पात्र-विशेष (राज, कम)। °जंत न [°यन्त्र] रेंट रेंहट, पानी निकालने का कल (पात्र)।

घडिअ वि [घटित] १ कृत, निर्मित (पात्र)। २ संसक्त सबद्ध, श्लिष्ट, मिला हुआ (पात्र, स १६४, औप, महा)।

घडिअघडा स्त्री [दे] गोष्ठी मण्डली (दे २ १०५)।

घडिआ स्त्री [घटिका] १ छोटा घडा, कलशी (गा ४६०, श्रा २७)। २ घडी, मुहूर्त (सुपा १०८)। ३ समय बतानेवाला यन्त्र, घटी-यन्त्र, घडी (पात्र)। °लय न [°लय] घण्टागृह, घण्टा बजाने का स्थान (सुर ७, १७)।

घडिआ } स्त्री [दे] गोष्ठी, मण्डली (पड्, घडी } दे २, १०५)।

घडिगा देखो घडिआ (सूअ १, ४, २, १४)।

घडी स्त्री [घटी] देखो घडिआ (स २३८, प्रारू)।

घडुक्कय पु [घटोत्कच] भीम का पुत्र (हे ४, २९९)।

घडुब्भव वि [घटोद्भव] १ घट मे उत्पन्न। २ पुं ऋषि-विशेष, अगस्त्य मुनि (प्रारू)।

घढ न [दे] थूहा, टीला, स्तूप (पात्र)।

घण पुं [घन] १ मेघ, बादल (सुर १३, ४५, प्रासू ७२)। २ हथौडा (दे ६, ११)। ३ गणित-विशेष, तीन अकों का पूरण करना, जैसे दो का घन आठ होता है (ठा १०—पत्र ४९६ विसे ३५५०)। ४ वाद्य का शब्द-विशेष, कास्यताल वगैरह (ठा २, ३)। ५ वि दृढ, ठोस (औप)। ६ अविरल, निविड, निश्छिद्र, सान्द्र (कुमा, औप)। ७ गाढ, प्रगाढ, 'जाया पीई घणा तेसिं' (उप ५९७ टी)। ८ अतिशय, अधिक, अत्यन्त (राय)। ९ कठिन, तरलता-रहित, स्त्यान (जी ७, ठा ३, ४)। १० न देवविमान-विशेष (सम ३७)। ११ पिण्ड (सूअ १, १, १)। १२ वाद्य-विशेष (सुज्ज १२)। °उदहि देखो घणोदहि (भग)। °णिचिय वि [°निचित] अत्यन्त निविड (भग ७, ८, औप)। °तव न [तपस्] तपश्चर्या-विशेष (उत्त ३)। °दंत पु [°दन्त] १ इस नाम का एक अन्तर्द्वीप। २ उसका निवासी मनुष्य (ठा ४, २)। °माल न [°माल] वैताढ्य पर्वत पर स्थित विद्याधर-नगर-विशेष (इक)। °मुइग पु [°मृदङ्ग] मेघ की तरह गम्भीर आवाजवाला वाद्य विशेष (औप)। °रह पु [°रथ] एक जैन मुनि (पउम २०, १९)। °वाउ पु [°वायु] स्त्यान वायु, जो नरक-पृथ्वी के नीचे है (उत्त ३६)। °वाय पु [°वात] देखो °वाउ (भग, जी ७)। °वाहण पु [°वाहन] विद्याधरो के राजा का नाम (पउम ५, ७७)। °विज्जुआ स्त्री [°विद्युता] देवी-विशेष, एक दिक्कुमारी देवी का नाम (इक)। °समय पु [°समय] वर्षा-काल, वर्षा ऋतु (कुमा पात्र)।

घणंगुल पुन [घनाङ्गुल] परिमाण-विशेष, सूची से गुना हुआ प्रतरांगुल (अणु १५८)।

घणसमद्द पु [घनसमर्द] ज्योतिष-प्रसिद्ध योग विशेष, जिसमें चन्द्र या सूर्य ग्रह अथवा नक्षत्र के बीच में होकर जाता है वह योग (सुज्ज १२—पत्र २३३)।

घणघणाइय न [घनघनायित] रथ की घनघनाहट या गडगडाहट, अव्यक्त शब्द-विशेष (पण्ह १, ३)।

घणवाहि पु [दे] इन्द्र, स्वर्गपति (दे २ १०७)।

घणसार पु [घनसार] कपूर (पात्र, भवि)। °मंजरी स्त्री [°मञ्जरी] एक स्त्री का नाम (कप्पू)।

घणा स्त्री [घना] धरणेन्द्र की एक अग्र-महिषी, इन्द्राणी-विशेष (णाया २, १—पत्र २५१)।

घणा स्त्री [घृणा] घृणा, जुगुप्सा, गर्हा (प्राप्र)।

घणिय न [घनित] गर्जना, गर्जन (सुज्ज २०)।

घणोदहि पुं [घनोदधि] पत्थर की तरह कठिन जल-समूह (सम ३७)। °वलय न [°वलय] वलयाकार कठिन जल-समूह (पण्ण २)।

घण्ण पुं [दे] १ उर, वक्षस्, छाती। २ वि रक्त, रगा हुआ (दे २, १०५)। ३ घात्य, मार डालने योग्य (सूत्र कृ० २—७, पत्र ४१०)।

घत्त सक [क्षिप्] १ फेंकना, डालना। २ प्रेरणा। घत्तइ (हे ४, १४)। संकृ अंकाओ घत्तिऊण वरवीणं (पउम ८८, २०, स ३५१)।

घत्त सक [ग्रह्] ग्रहण करना। भवि घत्तिस्सं (प्रयौ ३३)।

घत्त सक [गवेषय्] खोजना, ढूँढना अनु-संधान करना। घत्तइ (हे ४, १८९)। सकृ घत्तिअ (कुमा)।

घत्त सक [यत्] यत्न करना, उद्योग करना। घत्तह (तदु ५६)।

घत्त वि [घात्य] १ मार डालने योग्य। २ जो मारा जा सके (पि २८१, सूअ २, ७ ६, ८)।

घत्तण न [क्षेपण] फेंकना (कुमा)।

घत्ता स्त्री [घत्ता] छन्द विशेष (पिंग)।

घत्ताणंद न [घत्तानन्द] छन्द-विशेष (पिंग)।

घत्ति अ [दे] शीघ्र जल्दी (प्राकृ ८१)।

घत्तिय वि [क्षिप्त] प्रेरित (स २०७)।

घत्तु वि [घातुक] मारनेवाला घातक जल्लाद (उत्त १८ ७)।

घत्थ वि [ग्रस्त] गृहीत, पकडा हुआ (पिंड ११९)।

घत्थ वि [ग्रस्त] १ भक्षित, निगला हुआ, कवलित (पउम ७१, ५१, पण्ह १, ५)। २ आक्रान्त, अभिभूत (सुपा ३५२ महा)।

घम्म पु [घर्म] घाम, गरमी संताप धूप (दे १, ८७, गा ४१४)। २ पसीना, स्वेद (हे ४, ३२७)।

घम्मा स्त्री [घर्मा] पहली नरक पृथिवी (ठा ७)।

घम्मोई स्त्री [दे] तृण विशेष (दे २ १०९)।

घम्मोडी स्त्री [दे] १ मध्याह्न काल। २ मशक, मच्छर, क्षुद्र जन्तु-विशेष। ३ ग्रामणी नामक-तृण (दे २, ११२)।

३, २०; भवि, वज्जा ६४, आवम, पड्)। ४ विशाल, विस्तीर्ण (दे ३, २०, भवि)।

चक्कलिअ वि [दे] चक्राकार किया हुआ (से ११, ६८, स ३८४, गउड)। °भिण्ण वि [°भिन्न] गोलाकार खण्ड, गोल टुकड़ा (बृह १)।

चक्कवाई स्त्री [चक्रवाकी] चक्रवाक-पक्षी का मादा, चकवी, चकई (रभा)।

चक्कवाग } पु [चक्रवाक] पक्षि-विशेष, चक्कवाय } चकवा (णाया १, १, पण्ह १, १, स ३३७, कप्पू, स्वप्न ५१)।

चक्कवाल न [चक्रवाल] १ चक्राकार भ्रमण, 'रीढज्ज न चक्कवालेण' (पुप्फ १७८)। २ मण्डल, चक्राकार पदार्थ, गोल वस्तु (पण्ण ३६, ओप, णाया १, १६)। ३ गोल जलाशय, 'ससारचक्कवाले' (पच्च ५२)। ४ गोल जल-समूह, जल राशि, 'जह खुहियचक्कवाले पोय रयणभरियमसुद्दम्मि। निज्जामगा धरिंती' (पच्च ७६)। ५ आवश्यक कार्य, नित्य-कर्म (पंचव ४) ६ समूह, राशि, ढेर (आउ)। ७ पु पर्वत-विशेष (ठा १०)। °विक्खभ पु [°विष्कम्भ] चक्राकार घेरा, गोल परिधि (भग, ठा २, ३)। °सामायारी स्त्री [°सामाचारी] नित्य-कर्म विशेष (पचव ४)। चक्कवाला स्त्री [चक्रवाला] गोल पक्ति, चक्राकार श्रेणी (ठा ७)।

चक्काअ देखो चक्कवाय (हे १, ८)।

चक्काग न [चक्रक] चक्राकार वस्तु, 'चक्काग भजमाणस्स समो भगो य दीसइ' (पण्ण १, पि १६७)।

चक्कार पु [चक्रार] राक्षस वश का एक राजा, एक लकापति (पउम ५, २६३)। °बद्ध न [°बद्ध] शकट, गाडी (दस ५, १)।

चक्कावाय पु न देखो चक्कवाय 'मिलियाइ चक्कावायाइ' (न ७६८)।

चक्काह पु [चक्राभ] सोलहवें जिन-देव का प्रथम शिष्य (सम १५२)।

चक्काहिव पु [चक्राधिप] चक्रवर्त्ती राजा, सम्राट् (सण)।

चक्काहिवइ पुं [चक्राधिपति] ऊपर देखो (सण)।

चक्कि } वि [चक्रिन्, चक्रिक] १ चक्र-चक्किय } वाला, चक्र-विशिष्ट। २ पु. चक्रवर्त्ती राजा, सम्राट् (सण)। ३ तेली। ४ कुम्भार (कप्प, ओप, णाया १,१)। °साला स्त्री [°शाला] तेल बेचने की दूकान (वव ९)।

चक्किय वि [चकित] भयभीत, 'समुद्दगभीरसमा दुरासया, अचक्किया केणइ दुप्पहसिया' (उत्त ११)।

चक्किय पु [चाक्रिक] १ चक्र से लडनेवाला योद्धा। २ भिक्षुक की एक जाति (ओप, णाया १, १)।

चक्किया क्रि [शक्नुयात्] सके, कर सके, समर्थ हो सके (कप्प, कम्म पि ४६५)।

चक्की स्त्री [चक्र'] छन्द-विशेष (पिंग)।

चक्कुलडा स्त्री [दे] सर्प की एक जाति (दे ३, ५)।

चक्केसर पु [चक्रेश्वर] १ चक्रवर्त्ती राजा (भवि)। २ विक्रम की तेरहवीं शताब्दी का एक जैन ग्रन्थकार मुनि (राज)।

चक्केसरी स्त्री [चक्रेश्वरी] १ भगवान् आदिनाथ की शासनदेवी (सति ९)। २ एक विद्या-देवी (सति ५)।

चक्कोडा स्त्री [दे] अग्नि-भेद, अग्नि विशेष (दे ३ २)।

चक्ख (अप) सक [आ + चक्ष्] कहना। चक्खइ (प्राकृ ११९)।

चक्ख सक [आ + स्वादय्] चखना, चीखना, स्वाद लेना। चक्खइ (पि २०२)। वकृ चक्खत (गा १७१)। कवकृ चक्खिज्जत, चक्खीअत (पि २०२)। सकृ चक्खिऊण (से १३, ३९)। हेकृ चक्खिउ (वज्जा ४६)।

चक्खडिअ न [दे] जीवितव्य, जीवन (दे ३, ६)।

चक्खण न [आस्वादन] आस्वादन, चीखना (उप पृ २५२)।

चक्खिअ वि [अस्वादित] आस्वादित, चीखा हुआ (हे ४, २५८, गा ६०३, वज्जा ४६)।

चक्खिदिय न [चक्षुरिन्द्रिय] नयनेन्द्रिय, आंख, चक्षु (उत्त २९, ६३)।

चक्खु पुन [चक्षुष्] १ आंख, नेत्र, चक्षु (हे १, ३३, सुर ३, १५३, सम १)। २ पुं इस नाम का एक कुलकर पुरुष (पउम ३, ५३)। ३ न देखो नीचे °दसण (कम्म ३, १७; ४, ६)। ४ ज्ञान, बोध (ठा ३, ४)। ५ दर्शन, अवलोकन (आचा)। °कंत पु [°कान्त] देव-विशेष, कुण्डलोद समुद्र का अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °कंता स्त्री [°कान्ता] एक कुलकर पुरुष की पत्नी (सम १५०)। °दसण न [°दर्शन] चक्षु से वस्तु का सामान्य ज्ञान (सम १५)। °दसणवडिया स्त्री [°दर्शनप्रतिज्ञा] आंख से देखने का नियम, नयनेन्द्रिय का सयम (निचू ९, आचा २, २)। °दय वि [°दय] ज्ञान-दाता (सम १, पडि)। °पडिलेहा स्त्री [°प्रतिलेखा] आंख से देखना (निचू १)। °परिन्नाण न [°परिज्ञान] रूप-विषयक ज्ञान, आंख से होनेवाला ज्ञान (आचा)। °पह पुं [°पथ] नेत्र-मार्ग, नयन-गोचर (पण्ह १, ३)। °फास पु [°स्पर्श] दर्शन, अवलोकन (ओप)। °भीय वि [°भीत] अवलोकन मात्र से ही डरा हुआ (आचा)। °म, °मत वि [°मत्] १ लोचन-युक्त, आंखवाला (विसे)। २ पु एक कुलकर पुरुष का नाम (सम १५०)। °लोल वि [°लोल] देखने का शौकीन, जिसकी नयनेन्द्रिय सयत न हो वह (कस)। °लोलुय वि [°लोलुप] वही पूर्वोक्त अर्थ (कस)। °ल्लोयणलेस्स वि [°लोकनलेश्य] सुरूप, सुन्दर रूपवाला (राय, जीव ३)। °वित्तिहय वि [वृत्ति-हत] दृष्टि से अपरिचित (वव ८)। °स्सव पु [°श्रवस्] सर्प, सांप (स ३३४)।

चक्खुड्डुण न [दे] प्रेक्षणक, तमाशा (दे ३, ४)।

चक्खुय देखो चक्खुस (आवम)।

चक्खुरक्खणी स्त्री [दे] लज्जा, शरम (दे ३, ७)।

चक्खुस वि [चाक्षुष] आंख से देखने योग्य वस्तु, नयन-ग्राह्य (पण्ह १, १, विसे ३३११)।

चक्खुहर वि [चक्षुर्हर] दर्शनीय (राय १०२)।

चगोर देखो चओर (प्राकृ)।

घसुमर वि [घस्मर] खाने की आदतवाला, खाधुक (प्राकृ २८)।

घाइ वि [घातिन्] घातक, नाशक, हिंसक (गा ४३७, विसे १२३८, भग)। °कम्म न [°कर्मन्] कर्म-विशेष, ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय और अन्तराय ये चार कर्म (भ्रत)। °चउक्क न [चतुष्क] पूर्वोक्त चार कर्म (प्रारू)।

घाइअ वि [घातित] १ मारित, विनाशित (णाया १, ८, उव)। २ घवाया हुआ, जो शक्ति-शून्य हुआ हो, सामर्थ्यरहित, 'करणाइं घाइयाइं जाया अह वेयणा मंदा' (सुर ४, २३६)।

घाइआ स्त्री [घातिका] १ विनाश करनेवाली स्त्री, मारनेवाली स्त्री (ज २)। २ घात, हत्या। ३ घाव करना (सुर १६, १५०)।

घाइज्जमाण } देखो घाय = हन्।
घाइयव्व }

घाइयव्व देखो घाय = घातय्।

घाइर वि [घ्रायिन्] सूँघनेवाला (गा ८८६)।

घाउकाम वि [हन्तुकाम] मारने की इच्छावाला (णाया १, १८)।

घाएत देखो घाय = हन्।

घाड अक [भ्रश्] भ्रष्ट होना, च्युत होना। घाडइ (षड्)।

घाड पु [घाट] १ मित्रता, सौहार्द (बृह णाया १, २)। २ मस्तक के नीचे का भाग (णाया १, ८—पत्र १३३)।

घाडिय वि [घाटिक] वयस्य, मित्र (णाया १, २ बृह १)।

घाडेरुय पु [दे] खरगोश की एक जाति (?) 'जे तुह संगसुहासारज्जुनिवद्धा दुह मए रुद्धा। घाडेरुयससया इव अवंधणा ते पलायंति' (उप ७२८ टी)।

घाण पु [दे] १ घानी, कोल्हू, तिल-पीडन-यन्त्र (पिंड)। २ घान, चक्की आदि मे एक वार डालने का परिमाण (सुपा १४)।

घाण पुंन [घ्राण] नाक, नासिका, 'दो घाणा' (पुरण १५, उप ६४८ टी, दे २, ७६)। °रिस पुंन [°र्शस्] नासिका में होनेवाला रोग-विशेष, पीनस (ओघ १८४ भा)।

घाणिंदिय न [घ्राणेन्द्रिय] नासिका, नाक (उत्त २६)।

घाय सक [हन्] मारना, मार डालना, विनाश करना। वकृ घाएइ (उव)। वकृ. 'घाएत रिउभडहवे' (पउम ६०, १७)। घायत (पउम २४, २६, विसे १७६३)। कवकृ. 'से घणे चिलाएणं चोरसेणावइणा पचहिं चोरसएहिं सद्धिं गिह घाइज्जमाण पासइ' (णाया १,१८)। वकृ घाइयव्व (पउम ६६, ३४)।

घाय सक [घातय्] मरवाना, दूसरे द्वारा मार डालना, विनाश करवाना। वकृ घायमाण (सूअ २,१)। कृ घाइयव्व (पउम ६६, ३४)।

घाय पु [घात] गमन, गति (सुज १, १)।

घाय पु [घात] १ प्रहार, चोट, वार (पउम ५६, २५)। २ नरक (सूअ १, ५, १)। ३ हत्या, विनाश, हिंसा (सूअ १, १, २)। ४ ससार (सूअ १, ७)

घायग वि [घातक] मार डालनेवाला, विनाशक (स २६४, सुपा २०७)।

घायण न [हनन] १ हत्या, नाश, हिंसा (सुपा ३४६, द्र २६)। २ वि. हिंसक, मार डालनेवाला (स १०८)।

घायण पुं [दे] गायक, गवैया (दे २, १०८, हे २, १७४, षड्)।

घायणा स्त्री [हनन] मारना, हिंसा, वध (पएह १, १)।

घायय देखो घायग (विसे १७६३, स २६७)।

घायय पुं [घातक] नरक-स्थान विशेष (देवेन्द्र २६, ३०)।

घायावणा स्त्री [घातना] १ मरवाना, दूसरे द्वारा मारना। २ लूटपाट मचवाना, 'बहुग्गामघायावणाहिं ताविया' (विपा १, ३)।

घार अक [घारय्] १ विष का फैलना, विष की असर से बेचैन होना। २ सक. विष से बेचैन करना। ३ विष से मारना। कर्म. 'घारिज्जंतो य तओ विसेण' (स १८६)। हेकृ. घारिज्जिउ (स १८६)।

घार पु [दे] प्राकार, किला, दुर्ग (दे २, १०८)।

घारत पुं [दे] घृतपूर, घेवर, एक प्रकार की मीठाई (दे २, १०८)।

घारण न [घारण] विष की असर से होनेवाली बेचैनी (सुपा १२४)।

घारिय वि [घारित] जो विष की असर से बेचैन हुआ हो, 'तत्तओ भोगो। सव्वत्थ तदुवघाया विसघारियभोगतुल्लोत्ति' (उप ४४२), 'विसवा (? घा) रियस्स जह वा घणचन्दणकामिणीसगो' (उवर ६७), 'विसघारिओ सि धत्तूरिओ सि मोहेण किंव ठगिओ सि' (सुपा १२४, ४४७)।

घारिया स्त्री [दे] मिष्टान्न-विशेष, गुजराती मे जिसे 'घारी' कहते हैं (भवि)।

घारी स्त्री [दे] १ शकुनिका, पक्षि-विशेष (दे २, १०७, पाअ)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

घास सक [घृष्] १ घिसना। २ पीडा करना। कर्म घासइ (सूअ १, १३, १५)।

घास पुं [घास] तृण, पशुओ को खाने का तृण (दे २, ८५, औप)।

घास पु [ग्रास] १ कवल, कौर (औप, उत्त २)। २ आहार, भोजन (आचा, ओघ ३३०)।

घास पु [घर्ष] घर्षण, रगड, 'जो मे उवजिओ इह करुरुहघसणेण चरणघासेण' (सुपा १४)।

घासेसणा स्त्री [ग्रासैषणा] आहार-विषयक शुद्धि अशुद्धि का पर्यालोचन (ओघ ३३८)।

घि देखो घे। भवि घिच्छिइ (विसे १०२३)। कर्म. घिप्पंति (प्रासू ४)। सकृ घित्तूण (कुमा ७,४६)। हेकृ. घित्तु (सुपा २०६)। कृ. घित्तव्व (सुर १४, ७७)।

घिअ न [घृत] घी, घीव, आज्य (गा २०)।

घिअ वि [दे] भर्त्सित, तिरस्कृत, अवधीरित (दे २, १०८)।

घिं° } पु [ग्रीष्म] १ गरमी की ऋतु, ग्रीष्म
घिसु } काल, 'घिंसिसिरवामे' (ओघ ३१० भा, उत्त २, ८, पि ६, १०१)। २ गरमी, अभिताप (सूअ १, ४, २)।

घिट्ठ वि [दे] कुब्ज, कूबडा (दे २, १०८)।

घिट्ठ वि [घृष्ट] घिसा हुआ, रगडा हुआ (सुपा २७८, गा ६२६ अ)।

घिणा स्त्री [घृणा] १ जुगुप्सा, अरुचि। २ दया, अनुकम्पा (हे १, १२८)।

घिणिल्ल वि [घृणावत्] घृणावाला, नफरत करनेवाला (पिंड१७६)।

चडुला स्त्री [दे] रत्न-तिलक, सोने की मेखला मे लटकता हुआ रत्न निर्मित तिलक (दे ३, ८)।

चडुलातिलय न [दे] ऊपर देखो (दे ३, ८)।

चडुलिया स्त्री [दे] अन्त भाग में जला हुआ घास का पूला, घास की आंटी (णदि)।

चड्ड सक [मृद्] मर्दन करना, मसलना। चड्डइ (हे ४, १२६)। प्रयो चड्डावए (सुपा ३३१)।

चड्ड सक [पिष्] पीसना। चड्डइ (हे ४, १८५)।

चड्ड सक [भुज्] भोजन करना, खाना। चड्डइ (हे ४, ११०)।

चड्ड न [दे] तैल-पात्र, जिसमें दीपक किया जाता है, गुजराती मे 'चाड्ड' (सुपा ६३८, वृह १)।

चड्डुण न [भोजन] १ भोजन, खाना। २ खाने की वस्तु, खाद्य-सामग्री (कुमा)।

चड्डावल्ली स्त्री [चड्डावल्ली] इस नाम की एक नगरी, जहां श्रीधनेश्वर मुनि ने विक्रम की ग्यारहवी सदी में 'सुरसुदरी-चरिश्र' नामक प्राकृत काव्य रचा था (सुर १६, २४६)।

चड्डिअ वि [मृदित] मसला हुआ, जिसका मर्दन किया गया हो वह (कुमा)।

चड्डिअ वि [पिष्ट] पीसा हुआ (कुमा)।

चढ देखो चड = आ + रुह्। सक्र चढिऊण (सम्मत्त १५६)।

चढण देखो चडण (सवोध २८)।

चण } पु [चणक] चना, अन्न विशेष
चणअ } (जं ३, कुमा, गा ५५७, दे १, २१)।

चणइया स्त्री [चणकिका] मसूर, अन्न-विशेष (ठा ५, ३)।

चणग देखो चणअ (सुपा ६३१, सुर ३, १४८)। °गाम पुं [°ग्राम] ग्राम-विशेष, गौड देश का एक ग्राम (राज)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष, राजगृह-नगर का असली नाम (राज)।

चणयग्गाम देखो चणग-गाम (धर्मवि ३८)।

चणोट्ठिया स्त्री [दे] गु जा। गु० 'चणोट्ठी', देखो कोणेट्ठिया (अनु० वृ० हारि० पत्र ७६)।

चत्त पुन [दे] तकू, तकुआ, सूत बनाने का यन्त्र, तकली (दे ३, १, धर्म २)।

चत्त वि [त्यक्त] छोडा हुआ, परित्यक्त (पण्ह २, १, कुमा १, १६)। २ सूत की आंटी (प्रश्नव्या० ८०, १)।

चत्तर देखो चच्चर (पि २६६, नाट)।

चत्ता देखो चत्तालीसा (उवा)।

चत्ता स्त्री [चर्चा] १ शरीर पर सुगन्धी वस्तु का विलेपन। २ विचार, चर्चा (प्राकृ ३८)।

चत्ताल वि [चत्वारिंश] चालीसवां (पउम ४०, १७)।

चत्तालीस न [चत्वारिंशत्] १ चालीस, ४०, 'चत्तालीस विमाणावाससहस्सा पण्णत्तो' (सम ६६, कप्प)। २ वि चालीस वर्ष की उम्रवाली, 'चत्तालीसस्स विन्नाण' (तदु)।

चत्तालीसा स्त्री [चत्वारिंशत्] चालीस, ४०, 'तीसा चत्तालीसा' (पण्ण २)।

चत्थरि पुंस्त्री [दे. चस्तरि] हास, हास्य (दे ३, २)।

चपेटा स्त्री [दे. चपेटा] कराघात, थप्पड, तमाचा (षड्)।

चप्प सक [आ + क्रम्] आक्रमण करना, दवाना। संकृ चप्पिवि (भवि)।

चप्प सक [चर्च्] १ अध्ययन करना। २ कहना। ३ भर्त्सना करना। ४ चन्दन आदि से विलेपन करना। चप्पइ (प्राकृ. ७५ संक्षि ३५)।

चप्पडग न [दे] काष्ठ-यन्त्र-विशेष (पण्ह १, ३—पत्र ५३)।

चप्परण न [दे] तिरस्कार, निरास (गु ६)।

चप्पलअ वि [दे] १ असत्य, झूठा (कुमा ८, ७६)। २ वहुमिथ्यावादी, वहुत झूठ वोलनेवाला (षड्)।

चप्पिय वि [आक्रान्त] आक्रान्त, दवाया हुआ (भवि)।

चप्पुडिया } स्त्री [चप्पुटिका] चपटी, चुटकी,
चप्पुडी } अंगुष्ठ के साथ अगुली की ताली (णाया १, ३—पत्र ६५; दे ८, ४३)।

चप्फल } न [दे] शेखर-विशेष, एक तरह
चप्फलय } का शिरोभूषण। २ वि असत्य, झूठा, मिथ्याभाषी (दे ३, २०, हे ३, ३८, कुमा ८, २५)।

चमक्क पु [चमत्कार] विस्मय, आश्चर्य, 'सजणियजणचमक्को' (धम्म ६ टी, उप ७६८ टी)। °यर वि [°कर] विस्मय-जनक (सण)।

चमक्क } सक [चमत् + कृ] विस्मित
चमक्कर } करना, आश्चर्यान्वित करना। चमक्केइ, चमक्कति (विवे ४३, ४८) वकृ चमक्करत विक्र ६६)।

चमक्कार पु [चमत्कार] आश्चर्य, विस्मय (सुर १०, ८, वजा २४)।

चमक्किअ वि [चमत्कृत] विस्मित, आश्चर्यान्वित (सुपा १२२)।

चमड } सक [भुज्] भोजन करना, खाना।
चमढ } चमडइ (षड्) चमढइ (हे ४, ११०)।

चमढ सक [दे] १ मर्दन करना, मसलना। २ प्रहार करना। ३ कदर्थन करना, पीडना। ४ निन्दा करना। ५ आक्रमण करना। ६ उद्विग्न करना, खिन्न करना। कवकृ चमढिज्जत (ओघ १२८ भा, वृह १)।

चमढण न [भोजन] भोजन, खाना (कुमा)।

चमढण न [दे] १ मर्दन, अवमर्दन (ओघ १८७ भा, स २२)। २ आक्रमण (स ५७६)। ३ कदर्थन, पीडन। ४ प्रहार (ओघ १६३)। ५ निन्दा, गर्हण (ओघ ७६)। ६ वि जिसकी कदर्थना की जाय वह (ओघ २३७)।

चमढणा स्त्री [दे] ऊपर देखो (वृह १)।

चमढिअ वि [दे] मर्दित, विनाशित (वव २)।

चमर पु [चमर] पशु-विशेष, जिसके वालो का चामर या चँवर वनता है, 'वराहरुरुचमरसेविए रण्णे' (पउम ६४,१०५, पण्ह १, १)। २ पु पाचवें जिनदेव का प्रथम शिष्य (सम १५२)। ३ दक्षिण दिशा के असुरकुमारो का इन्द्र (ठा २, ३)। °चच पु [°चञ्च] चमरेन्द्र का आवास-पर्वत (भग १३, ६)। °चचा स्त्री [°चञ्चा] चमरेन्द्र की राजधानी, स्वर्गपुरी-विशेष (णाया २)। °पुर न [°पुर] विद्याधरो का नगर-विशेष (इक)।

चमर पुन [चामर] चँवर, चामर, वालव्यजन (हे १, ६७)। °धारी, °हारी स्त्री

घेच्छ (विसे ११२७)। कर्म घेप्पइ (हे ४, २५६)। कवकृ घेप्पंत, घेप्पमाण (गा ५८१, भग, स १५२)। सकृ. घेऊण, घक्कूण, घेक्कूण, घेत्तुआण, घेत्तुआणं, घेत्तूण, घेत्तूणं (नाट—मालती ७१, पि ५८४, हे ४, २१०, पि, उव, प्राप्र)। हेकृ घेत्तु, घेत्तूण (हे ४, २१०, पउम, ११८, २४)। कृ घेत्तव्व (हे ४, २१०, प्राप्र)।

घेउर पुंन [दे] घेवर, घृतपूर, मिष्टान्न-विशेष, 'सा भणइ नियगेहेवि हु घयघेउरभोयणं ममा-कुणइ' (सुपा १३)।

घेक्कूण देखो घे।

घेत्तुमण वि [ग्रहीतुमनस्] ग्रहणकरने की इच्छावाला (पउम १११, १६)।

घेप्प° } घेप्पंत } घेप्पमाण } देखो घे।

घेवर [दे] देखो घेउर (दे २, १०८)।

घोट्ट } घोट्टय } सक [पा] पीना, पान करना। घोट्टइ (हे ४, १०)। वकृ घोट्टयत (स २५७)। हेकृ. घोट्टित्त (कुमा)।

घोड देखो घुम्म। घोडइ (से ५, १०)।

घोड } घोडग } घोडय } पुस्त्री [घोट, °क] घोडा, अश्व, हय (दे २, १११, पंच ५२, उवा, उप २०८)। २ पुं. कायोत्सर्ग का एक दोष (पव ५)। °रक्खग पु [°रक्षक] अश्वपाल, माईस (उप ५६७ टी)। °ग्गीव [°ग्रीव] अश्वग्रीव-नामक प्रतिवासुदेव, नृपविशेष (आवम)। °मुह न [°मुख] जैनेतर शास्त्र विशेष (अणु)।

घोडिय पुं [दे] मित्र, वयस्य (बृह ५)।

घोडी स्त्री [घोटी] १ घोडी। २ वृक्ष-विशेष, 'सीयल्लिघोडिवच्चूलकयरखइराइसकिराणे' (स २५६)।

घोण न [घोण] घोडे की नाक (सण)।

घोणस पु [घोनस] एक प्रकार का साँप (पउम ३९, १७)।

घोणा स्त्री [घोणा] १ नाक, नासिका (पाअ)। २ घोडे की नाक। ३ सूअर का मुख-प्रदेश (से २, ६४, गउड)।

घोर अक [घुर्] निद्रा मे 'घुर-घुर' आवाज करना। घोरंति (गा ८००)। वकृ. घोरत (स ४२४, उप १०३१ टी)।

घोर वि [दे] १ नाशित, विनाशित। २ पुं. गीध, पक्षि विशेष (दे २, ११२)।

घोर वि [घोर] भयंकर, भयानक, विकट (सूअ १, ५, १, सुपा ३४५, सुर २, २४३, प्रासू १३९)। २ निर्दय, निष्ठुर (पाअ)।

घोरि पुं [दे] शलभ पशु की एक जाति (दे २, १११)।

घोल देखो घुम्म। घोलइ (हे ४, ११७)। वकृ घोलत (कप्प, गा २७१, कुमा)।

घोल सक [घोलय्] १ घिसना, रगडना। २ मिलाना (विसे २०४४, से ४, ५२)।

घोल न [दे] कपडे से छाना हुआ दही (पभा ३३)।

घोलण न [घोलन] घर्षण, रगड (विसे २०४४)।

घोलणा स्त्री [घोलना] पत्थर वगैरह का पानी की रगड से गोलाकार होना (स ४७)।

घोलवड } घोलवडय } न [दे] एक प्रकार का खाद्य द्रव्य, दहीवडा (पभा ३३, श्रा २०, सुपा ४९५)।

घोलाविअ वि [घोलित] मिश्रित किया हुआ, मिलाया हुआ (से ४, ५२)।

घोलिअ न [दे] १ शिलातल। २ हठ-कृत, बलात्कार (दे २, ११२)।

घोलिअ वि [घूर्णित] घुमाया हुआ (पाअ)।

घोलिअ वि [घूर्णित] अत्यन्त लीन, 'अत्र-रक्खिओ जविएसु अईव घोलिओ' (सुख २, १३)।

घोलिअ वि [घोलित] आम की तरह घोला हुआ (सूअ २, २, ६३)।

घोलिअ वि [घालित] रगडा हुआ, मर्दित (औप)।

घोलिर वि [घूर्णितृ] घूमनेवाला, चक्राकार फिरनेवाला (गा ३३८, स ५७८, गउड)।

घोस सक [घोषय्] १ घोषणा करना, ऊँची आवाज से जाहिर करना। २ घोखना ऊँची आवाज से अध्ययन करना, जोर-जोर से बोल कर पढना या रटना। घोसइ (हे १, २६०, प्रामा)। प्रयो घोसावेइ (भग)।

घोस पुं [घोष] १ ऊँची आवाज (स १०७, कुमा, गा ५४)। २ आभीर-पल्ली, अहीरो का महल्ला, अहीर टोली (हे १,२६०)। ३ गोष्ठ, गौओं का बाडा (ठा २,४—पत्र ८६, पाअ)। ४ स्तनितकुमार देवो की दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३)। ५ उदात्त आदि स्वर-विशेष (वव १०)। ६ अनुनाद (भग ६, १)। ७ न देव-विमान विशेष (सम १२, १७)। °सेण पु [°सेन] सातवें वासुदेव का पूर्वजन्म का धर्म गुरु, एक जैन मुनि (पउम २०, १७६)।

घोस न [घोष] लगातार ग्यारह दिनो का उपवास (संबोध ५८)।

घोसण न [घोषण] १ ऊँची आवाज (निचू १)। २ घोषणा, ढिंढोरा पिटवाकर जाहिर करना (राय)।

घोसणा स्त्री [घोषणा] ऊपर देखो (णाया १, १३, गा ५२४)।

घोसय न [दे] दर्पण का घरा, दर्पण रखने का उपकरण-विशेष (अंत)।

घोसाडई स्त्री [घोषातकी] लता-विशेष (पण्ण १७—पत्र ५३०)।

घोसाडिया देखो घोसाडई (राय ३१)।

घोसालई } घोसाली } स्त्री [दे] शरद ऋतु मे होनेवाली लता-विशेष (दे २, १११, पण्ण १—पत्र ३३)।

घोसावग न [घोषण] घोषणा, डोंडी या डुग्गी पिटवा कर जाहिर करना (उप २११ टी)।

घोसिअ वि [घोषित] जाहिर किया हुआ (उव)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि घआराइसद्दसंकलणो
तेरहमो तरंगो समत्तो ॥

(३, ७)। °करण न [°करण] संयम का मूल और उत्तर गुण (सूत्र १, १ सम्म १६४)। °करणाणुओग पुं [°करणानुयोग] संयम के मूल और उत्तर गुणों की व्याख्या (निचू १५)। °कुसील पु [°कुशील] चारित्र को मलिन करनेवाला साधु, शिथिलाचारी साधु (पव २)। °णय [°नय] क्रिया को मुख्य माननेवाला मत (आचा)। °मोह पुन [°मोह] चारित्र का आवारक कर्म-विशेष (कम्म १)।

चरम वि [चरम] १ अन्तिम, अन्त का, पर्यन्तवर्त्ती (ठा २, ४, भग ८, ३, कम्म ३, १७, ४, १६, १७)। २ अनन्तर भव में मुक्ति पानेवाला। ३ जिसका विद्यमान भव अन्तिम हो वह (ठा २, २)। °काल पुं [°काल] मरणसमय (पंचव ४)। °जलहि पुं [°जलधि] अन्तिम समुद्र, स्वयंभूरमण समुद्र (लहुअ २)।

चरमंत पुं [चरमान्त] सब में अन्तिम, सब से प्रान्त-वर्त्ती (सम ६६)।

चरय देखो चरग (औप, णाया १, १५)।

चरि पुंस्त्री [चरि] १ पशुओं को चरने की जगह। २ चारा, पशुओं को खाने की चीज, घास (कुप्र १७)।

चरिगा देखो चरिया = चरिका (राज)।

चरित्त न [चरित्र] १ चरित, आचरण। २ व्यवहार (भवि, प्रासू ४०)। ३ स्वभाव, प्रकृति (कुमा)।

चरित्त न [चरित्र] जीवन कथा, जीवनी, कहानी (सम्मत्त १२०)।

चरित्त न [चारित्र] संयम, विरति, व्रत, नियम (ठा २, ४, ४, ४, भग)। °कप्प पु [°कल्प] संयमानुष्ठान का प्रतिपादक ग्रन्थ (पंचभा)। °मोह पुन [°मोह] कर्म-विशेष, संयम का आवारक कर्म (भग)। °मोहणिज्ज न [°मोहनीय] वही पूर्वोक्त अर्थ (ठा २, ४)। °चरित्त न [°चारित्र] आंशिक संयम, श्रावक-धर्म (पडि, भग ८, २)। °यार पु [°चार] संयम का अनुष्ठान (पडि)। °रिय पु [°र्य] चारित्र से आर्य, विशुद्ध चारित्रवाला, साधु, मुनि (पण्ण १)।

चरित्ति पुंस्त्री [चारित्रिन्] संयमवाला, साधु, मुनि (उप ६६६, पंचव १)।

चरिम देखो चरम (सुर १, १०, औप, भग, ठा २, ४)।

चरिय पु [चरक] चर-पुरुष, जासूस, दूत (सुपा ५२८)।

चरिय न [चरित] १ चेष्टित, आचरण (औप, प्रासू ८६)। २ जीवनी, जीवन-चरित (सुपा २)। ३ चरित्र ग्रन्थ (सुपा ६५८)। ४ सेवित आश्रित (पण्ह १, ३)।

चरिया स्त्री [चरिका] १ परिव्राजिका, संन्यासिनी (ओघ ५६८)। २ किला और नगर के बीच का मार्ग (सम १३७, पण्ण १,१)।

चरिया स्त्री [चर्या] १ आचरण, अनुष्ठान, 'दुक्करचरिया मुणिवराण' (पउम १४, १५२)। २ गमन, गति, विहार (सूत्र १,१, ४)। ३ गाडी (आख्या० पत्र ११ गा ६८)।

चरीया देखो चरिया = चर्या, 'तणफासो चरीया य दमेक्कारस जोगिमु' (पंच ४,२०)।

चरु पु [चरु] स्थाली-विशेष, पात्र-विशेष (औप, भवि)।

चरुगिणय देखो चारुइणय (इक)।

चरुल्लेव न [दे] नाम, आख्या (दे ३, ६)।

चल सक [चल्] १ चलना, गमन करना। २ अक कांपना, हिलना। चलइ (महा, गउड)। वकृ चलंत, चलमाण (गा ३५६, सुर ३, ४०, भग)। हेकृ चलिउं (गा ४८४)। प्रयो सकृ चलइत्ता (दस ५,१)।

चल वि [चल] १ चंचल, अस्थिर (म ४२०, वज्जा ६६)। २ पु रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३६)।

चलचल वि [चलचल] १ चंचल, अस्थिर, 'चलचलयकोडिमोडणकराइं नयणाइं तरुणीणं' (वज्जा ६०)। २ पु घी में तली जाती हुई चीज का पहला तीन घान (निचू ४)।

चलण पु [चरण] पांव, पैर, पाद (औप, से ६, १३)। °मालिया स्त्री [°मालिका] पैर का आभूषण-विशेष (पण्ह २, ५, औप)। °वंदण न [°वन्दन] पैर पर सिर झुका कर प्रणाम, प्रणाम-विशेष (पउम ८, २०६)।

चलण न [चलन] चलना, गति, चाल, प्रथा, रिवाज (से ६, १३)।

चलणा स्त्री [चलना] १ चलन, गति। २ कम्प, हिलन (भग १६, ६)।

चलणाउह पु [चरणायुध] कुक्कुट, मुर्गा (दे ३, ७)।

चलणाओह पुं [दे चरणायुध] ऊपर देखो (षड्)।

चलणिया स्त्री [चलनिका] नीचे देखो (ओघ ६७६)।

चलणिया } स्त्री [चलनिका, °नी] जैन
चलणी } साध्वियों को पहनने का कटि-वस्त्र (पव ६२)।

चलणी स्त्री [चलनी] १ साध्वियों का एक उपकरण (ओघ ३१५ भा)। २ पैर तक का कीच (जीव ३, भग ७, ६)।

चलवलण न [दे] चटपटाई, चंचलता (पउम १०२, ६)।

चलाचल वि [चलाचल] चंचल, अस्थिर (पउम ११२, ६)।

चलिंदिय वि [चलेन्द्रिय] इन्द्रिय-निग्रह करने में असमर्थ, जिसकी इन्द्रियां काबू में न हो वह (आचा २, ५, १)।

चलिअ न [चलित] १ विकलता, अस्थैर्य, चंचलता (पाअ)। २ वि चला हुआ, कम्पित (आवम)। ३ प्रवृत्त (पाअ, औप)। ४ विनष्ट (धम्म २)।

चलिर वि [चलितृ] चलनेवाला, अस्थिर, चपल चंचल, चलिरभमराली' (उप ६८६, सुपा ७६, २५७, स ४१)।

चल्ल देखो चल = चल्। चल्लइ (हे ४, २३१ षड्)।

चल्लणग न [दे] जघनांशुक, कटि-वस्त्र (षड्)।

चल्लि स्त्री [दे] नाचते समय की एक प्रकार की गति (कप्पू)।

चल्लि स्त्री [दे] मदन-वेदना (सक्षि ४७)।

चल्लिअ देखो चलिअ (सुर २, ६१, उप पृ ५०)।

चव सक [कथय्] कहना, बोलना। चवइ (हे ४, २)। कर्म. चविज्जइ (कुमा)। वकृ. चवंत (भवि)।

चौपाया प्राणी, पशु (जी ३१)। २ न ज्योतिष-प्रसिद्ध एक स्थिर करण (विसे ३३५०)। °प्पह पुं [°पथ] चौहट्टा, चौराहा, चौरास्ता (प्रयौ १००)। °प्पुड वि [°पुट] चार पुटवाला, चौसर, चौपड (विपा १, १)। °प्फाल वि [°फाल] देखो °प्पुड (णाया १, १—पत्र ५३)। °ब्बाहु वि [°बाहु] १ चार हाथवाला। २ पु. चतुर्भुज, श्रीकृष्ण (नाट)। °ब्भुअ [°भुज] देखो °बाहु (नाट; सूअ १, ३ १)। °भग पुन [°भङ्ग] चार प्रकार, चार विभाग (ठा ४, १)। °भगी स्त्री [°भङ्गी] चार प्रकार, चार विभाग (भग)। °भाइया स्त्री [°भागिका] चौसठ पल का एक नाप (अणु)। °मट्टिया स्त्री [°मृत्तिका] कपडे के साथ कूटी हुई मिट्टी (निचू १८)। °मडलग न [°मण्डलक] लग्न मण्डप, विवाह-मण्डप (सुपा ६३)। °मासिअ देखो चाउ-म्मासिअ (श्रा ४७)। °मुह, °म्मुह पुं [°मुख] १ ब्रह्मा, विधाता (पउम ११, ७२, २८, ४८)। २ वि. चार मुँहवाला, चार द्वारवाला (श्रौप, सण)। °वग्ग पुन [°वर्ग] चार वस्तुओं का समुदाय (निचू १५)। °वण्ण, °वन्न स्त्रीन [°पञ्चाशत्] चौवन, पचास और चार, ५४ (पि २६५, २७३, सम ७२)। °वार वि [°द्वार] चार दरवाजेवाला (गृह) (कुमा)। °विह वि [°विध] चार प्रकार का (द ३२, नव ३)। °वीस स्त्रीन [°विंशति] चौवीस, वीस और चार, २४ (सम ४३, द १, पि ३४)। °वीसइ (श्रप)। स्त्री [°विंशति] वीस और चार, चौवीस (पि ४४५)। °वीसइम वि [°विंशतितम] १ चौवीसवाँ (पउम २४, ४०)। २ न ग्यारह दिनों का लगातार उपवास (भग)। °व्वग्ग देखो °वग्ग (श्राचा २, २)। °व्वार पुंन [°वार] चार वार, चार दफा (हे १, १७१, कुमा)। °व्विह देखो °विह (ठा ४, २)। °व्वीस देखो °वीस (सम ४३)। °व्वीसइम देखो °वीसइम (णाया १, १)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] चौसठ, साठ और चार (सम ७१, कप्प)। °सट्ठिम वि [°षष्टितम] चौसठवाँ (पउम ६४, ४७)। °स्सट्ठि देखो °सट्ठि (कप्पू)। °स्साल न [°शाल] चार शालाओं से युक्त घर (स्वप्न ५१)। °हट्ट, °हट्टय पुंन [°हट्ट, °क] चौहट्टा, बाजार (महा, श्रा २७, सुपा ४५५)। °हत्तर वि [°सप्तत] चौहत्तरवाँ, ७४ वाँ (पउम ७४, ४३)। °हत्तरि स्त्री [°सप्तति] चौहत्तर, सत्तर और चार (पि २४५, २६४)। °हा अ [°धा] चार प्रकार से (ठा ३, १, जी १६)। देखो चो°।

चउक्क न [चतुष्क] चौकडी, चार वस्तुओं का समूह (सम ४०, सुर १४, ७८, सुपा १४), 'वरणचउक्केण' (श्रा २३)।

चउक्क [दे. चतुष्क] चौक, चौराहा, जहाँ चार रास्ता मिलता हो वह स्थान, चौमुहानी (दे ३,२, पड्, णाया १, १; श्रौप, कप्प, अणु, बृह १, जीव १, सुर १, ६३, भग)। २ आँगन, प्रागण (सुर ३, ७२)।

चउक्कर पु [दे] कार्तिकेय, शिव का एक पुत्र (दे ३, ५)।

चउक्कर वि [चतुष्कर] चार हाथवाला, चतुर्भुज (उत्त ८)।

चउक्किआ स्त्री [दे. चतुष्किका] आँगन, छोटा चौक (सुर ३, ७२)।

चउज्झाइया स्त्री [दे] नाप-विशेष (भग ७, ८)।

चउड पु [चोड] देश-विशेष (सम्मत्त ६०)।

चउद देखो चउ-दस (संबोध २३)।

चउद्दह वि [चतुर्दश] चौदहवाँ (प्राकृ ५)। स्त्री. °ही (प्राकृ ५)।

चउपचम वि [चतुष्पञ्च] चार या पाँच (सूअ २, २, २१)।

चउपाडिवय न [चतुष्प्रतिपत्] चार पडवा या परिवा तिथियाँ (पव १०४)।

चउप्पाय पं [चतुष्पाद] एक दिन का उपवास (संबोध ५८)।

चउप्फल वि [चतुष्फल] चौगुना, 'मद्दल-वाय चउप्फललोयं' (सिरि १५७)।

चउबोल स्त्रीन [चौबोल] छन्द-विशेष (पिंग)। स्त्री °ला (पिंग)।

चउम्मुह पुं [चतुर्मुख] दो दिन का उपवास, वेला (संबोध ५८)।

चउर वि [चतुर] १ निपुण, दक्ष, होशियार (पाअ, वेणी ६६)। २ क्रिवि. निपुणता से होशियारी से, 'केसी गायइ चउर' (ठा ७)।

चउरग वि [चतुरङ्ग] १ चार अंगवाला, चार विभागवाला (सैन्य वगैरह) (सण)। २ न. चार अंग, चार प्रकार (उत्त ३)।

चउरगय न [चतुरङ्गक] एक तरह का जुआ (मोह ८६)।

चउरगि वि [चतुरङ्गिन्] चार विभागवाला (सैन्य वगैरह)। स्त्री. °णी (सुपा ४५६)।

चउरंत वि [चतुरन्त] १ चार पर्यन्तवाला, चार सीमाएँवाला। २ पुं ससार (श्रोप)। स्त्री °ता [°ता] पृथिवी, धरणी (ठा ४, १)।

चउरत न [चतुरन्त] चक्र, पहिया (चेइय ३४३)।

चउरंस वि [चतुरस्र] चतुष्कोण, चार कोणवाला (भग, आचा, द १२)।

चउरंसा स्त्री [चतुरस्रा] छन्द विशेष (पिंग)।

चउरय पु [दे] चौरा, चबूतरा, गाँव का सभा स्थान (सम १३८ टी)।

चउरस्स देखो चउरंस (विसे २७६७)।

चउरचिंध पु [दे] सातवाहन, राजा शालि-वाहन (दे ३, ७)।

चउराणण वि [चतुरानन] १ चार मुँहवाला। २ पु ब्रह्मा, विधाता (गउड)।

चउरासी } स्त्री [चतुरशीति] सख्या-विशेष,
चउरासीइ } चौरासी, ८४ (जी ४५, सण, उवा, पउम २०, १०३, सम ६०, कप्प)।

चउरासीइम वि [चतुरशीतितम] चौरासीवाँ, ८४ वाँ (पउम ८४, १२, कप्प)।

चउरासीय स्त्रीन [चतुरशीति] चौरासी, 'चउरासीय तु गणहरा तस्स उप्पन्ना' (पउम ४, ३५)।

चउरिंदिय वि [चतुरिन्द्रिय] त्वक्, जिह्वा, नाक और चक्षु इन चार इन्द्रियवाला (जन्तु) (भग ठा १, १, जी १८)।

चउरिमा स्त्री [चतुरिमन्] चतुरता, चतुराई, चातुर्य, निपुणता (सट्ठि १६)।

चउरिया } स्त्री [दे] लग्न-मण्डप, मडवा,
चउरी } विवाह-मण्डप, गुजराती में 'चोरी' (रंभा, सुपा ५५२)।

चउरुत्तरसय वि [चतुरुत्तरशततम] एकसौ चारवाँ, १०४ वाँ (पउम १०४, ३५)।

चाउम्मासी स्त्री [चातुर्मासी] देखो चाउम्मासिअ (धर्म २, श्राव)।
चाउरग देखो चउरग (पउम २, ७५)।
चाउरगि देखो चउरगि (भग, णाया १, १—पत्र ३२)।
चाउरगिज्ज वि [चतुरङ्गीय] १ चार अगों से सम्बन्ध रखनेवाला। २ न 'उत्तराध्ययन' सूत्र का एक अध्ययन (उत्त ४)।
चाउरत देखो चउरत (सम १, ठा ३, १, हे १, ४४)।
चाउरत पु [चातुरन्त] १ चक्रवर्ती राजा, सम्राट् (पण्ह १, ४) २ न लग्न-मण्डप, चौरी (स ७८)।
चाउरत न [चातुरन्त] भरत-क्षेत्र, भारतवर्ष (चेइय ३४०, ३४१)।
चाउरत न [चतुरन्त] चक्र, पहिया (चेइय (३४४)।
चाउरक्क वि [चातुरक्य] चार वार परिणत। °गोखीर न [°गोक्षीर] चार वार परिणत किया हुआ गो-दूध, जैसे कतिपय गौओं का दूध दूसरी गौओं को पिलाया जाय, फिर उनका अन्य गौओं को, इस तरह चार वार परिणत किया हुआ गो-दुग्ध (जीव ३)।
चाउल वि [दे] चावल का, 'तहेव चाउलं पिट्ठं' (दस ५, २ २२)।
चाउल पु [दे] चावल, तण्डुल, (दे ३, ८, आचा २, १, ३, ६, ८, उप पृ २३१, श्रोघ ३४४, सुपा ६३६, रयण ६०, कप्प)।
चाउल्लग न [दे] पुरुष का पुतला—कृत्रिम पुरुष (निचू १)।
चाउवण्ण देखो चाउवन्न (सम्मत्त १६२)।
चाउवन्न } वि [चातुर्वर्ण्य] १ चार वर्ण-
चाउव्वण्ण } वाला, चार प्रकार वाला। २ पु साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका का समुदाय (ठा ५, २—पत्र ३२१), 'चाउव्वण्णस्स समणसघस्स' (पउम २०, १२०)। ३ न ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चार मनुष्य-जाति (भग १५)।
चाउव्विज्ज देखो चाउव्वेज्ज (ती ७)।
चाउव्वेज्ज न [चातुर्वैद्य] १ चार प्रकार की विद्या—न्याय, व्याकरण, साहित्य और धर्म-शास्त्र। २ पुं चौबे, ब्राह्मणों का एक अल्ल—उपगोत्र या वर्ग, 'पउरचाउव्वेज्जलोएण' (महा)।
चाउस्साला स्त्री [चतुश्शाला] चारो तरफ के कमराओं से युक्त घर (पव १३३ टी)।
चाएत देखो चाय = चय।
चाँउडा स्त्री [चामुण्डा] स्वनाम-ख्यात देवी (हे १, १७४)। °काउअ पु [°कामुक] महादेव, शिव (कुमा)।
चाग देखो चाय = त्याग (पंचव १)।
चागि देखो चाइ (उप पृ १०५)।
चाड वि [दे] मायावी, कपटी (दे ३, ८)।
चाडु पुन [चाटु] १ प्रियवाक्य। २ खुशामद (हे १, ६७, प्राप्र)। °यार वि [°कार] खुशामदी (पण्ह १, २)।
चाडुअ न [चाटुक] ऊपर देखो, कुमा)।
चाणक्क पु [चाणक्य] १ राजा चन्द्रगुप्त का स्वनाम-प्रसिद्ध मन्त्री (मुद्रा १४८)। २ एक मनुष्य-जाति (भवि)।
चाणक्की स्त्री [चाणक्यी] लिपि-विशेष (विसे ४६४ टी)।
चाणिक्क देखो चाणक्क (श्राक)।
चाणूर पुं [चाणूर] मल्ल-विशेष, जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था (पण्ह १, ४, पिंग)।
चामर पुंन [चामर] चँवर, वाल-व्यजन (हे १, ६७)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। °गाहि वि [°ग्राहिन्] चामर बीजनेवाला नौकर। स्त्री. °णी (भवि)। °च्छायण न [°च्छायन] स्वाति नक्षत्र का गोत्र (इक)। °ज्झय पु [°ध्वज] चामर-युक्त पताका (ग्रौप)। °धार वि [°धार] चामर बीजनेवाला (पउम ८०, ३८)।
चामरच्छ न [चामरथ्य] गोत्र विशेष (सुज्ज १०, १६)।
चामरा स्त्री. उपर देखो (ग्रौप, धसु, भग ६, ३३)।
चामीअर न [चामीकर] सुवर्ण, सोना (पाग्र, सुपा ७७, णाया १, ४)।
चामुंडराय पुं [चामुण्डराज] गुजरात का एक चौलुक्य वंश का राजा (कुप्र ४)।
चामुंडा देखो चाँउडा (विसे, पि)।
चाय देखो चय = शक्। वकृ. चायत, चाएंत (सूग्र १, ३, १, वव १)।
चाय देखो चाव (सुपा ५३०, से १४, १५; पिंग)।
चाय पुं [त्याग] १ छोड़ना, परित्याग (प्रासू ८, पंचव १)। २ दान (सुर १, ६५)।
चायग } पु [चातक] पक्षि-विशेष, चातक-
चायय } पक्षी (मण, पाग्र, दे ६, ६०)।
चार सक [चारय्] चराना, खिलाना। चारेइ (धर्मवि १४३)।
चार पुं [चार] १ गति, गमन, 'पायचारेण' (महा, उप पृ १२३, रयण १५)। २ भ्रमण, परिभ्रमण (स १६)। ३ चर-पुरुष, जासूस (विपा १, ३, महा, भवि)। ४ कारागार, कैदखाना (भवि)। ५ संचार, सचरण (ग्रौप)। ६ अनुष्ठान, ग्राचरण (ग्राचानि ४५, महा)। ७ ज्योतिष-क्षेत्र, ग्राकाश (ठा २, २)।
चार पुं [दे] १ वृक्ष-विशेष, पियाल वृक्ष, चिरौंजी का पेड (दे ३, २१, अणु, पण्ण १६)। २ बन्धन-स्थान (दे ३, २१)। ३ इच्छा, अभिलाष (दे ३, २१, भवि, सुण ५११)। ४ न. फल-विशेष, मेवा-विशेष (पण्ण १६)। °वक्कय पुं [°क्रय] वेचनेवाले की इच्छानुसार दाम देकर खरीदना (सुपा ५११)।
चारए देखो चर = चर्।
चारग दे [चारक] देखो चार (ग्रौप, णाया १, १, पण्ह १, ३, उप ३५७ टी)। °पाल पुं [°पाल] जेलखाना का अध्यक्ष (विपा १, ६—पत्र ६५)। °पालग पुं [°पालक] कैदखाना का अध्यक्ष, जेलर (उप पृ ३३७)। °भंड न [°भाण्ड] कैदी को शिक्षा करने का उपकरण (विपा १, ६)। °हिव पु [°धिप] कैदखाना का अध्यक्ष, जेलर (उप पृ ३३७)।
चारण पुं [दे] ग्रन्थि-च्छेदक, पाकेटमार, चोर-विशेष (दे ३, ६)।
चारण पु [चारण] १ आकाश में गमन करने की शक्ति रखनेवाले जैन मुनियो की एक जाति (ग्रौप, सुर ३, १५, अजि १६)। २ मनुष्य-जाति-विशेष, स्तुति करनेवाली जाति भाट (उप ७६८ टी; प्रामा)। ३ एक जैन मुनि-गण (ठा ६)।

चंडण देखो चदण, 'चडण, चडणो' (प्राकृ १६)।

चडमा पु [चन्द्रमस्] चन्द्रमा, चाँद (पिंग)।

चडा स्त्री [चण्डा] १ चमरादि इन्द्रो की मध्यम परिषद् (ठा ३, २, भग ४, १)। २ भगवान् वासुपूज्य की शासनदेवी (संति१०)।

चडातक न [चण्डातक] स्त्री का पहनने का वस्त्र, चाला, लहँगा (दे ३, १३)।

चडार पु न [दे] भण्डार, भाण्डागार (कुमा)।

चंडाल पुं [चण्डाल] १ वर्णसंकर जाति-विशेष, शूद्र और ब्राह्मणी से उत्पन्न (आचा, सूअ १, ८)। २ डोम (उत १, अणु)।

चडालिअ त्रि [चाण्डालिक] चण्डाल-सबन्धी, चण्डाल जाति में उत्पन्न (उत्त १)।

चंडाली स्त्री [चण्डाली] १ चण्डाल-जातीय स्त्री। २ विद्या-विशेष (पउम ७, १४२)।

चडिअ वि [दे] कृत, छिन्न, काटा हुआ (दे ३, ३)।

चडिक्क पु न [दे चाण्डिक्य] रोष, गुस्सा, क्रोध, रौद्रता (दे ३, २, पड्, सम ७१)।

चंडिक्किअ वि [दे चाण्डिक्यित] १ रोष-युक्त, रौद्राकारवाला, भयंकर (णाया १, १, पण्ह २, २, भग ७, ८, उवा)।

चडिज्ज पुं [दे] कोप, क्रोध, गुस्सा। २ वि पिशुन, खल, दुर्जन (दे ३, २०)।

चडिम पुस्त्री [चण्डिमन्] चण्डता, प्रचण्डता (सुपा ६६)।

चडिया स्त्री [चण्डिका] देखो चडी (स २६२, नाट)।

चडिल वि [दे] पीन, पुष्ट (दे ३, ३)।

चडिल पु [चण्डिल] हजाम, नापित (दे ३, २, पाअ, गा २६१ अ)।

चडी स्त्री [चण्डी] १ क्रोध-युक्त स्त्री, कर्कशा और उग्र स्त्री (गा ६०८)। २ पार्वती, गौरी, शिव-पत्नी (पाअ)। ३ वनस्पति-विशेष (पण्ण १)। °देवग वि [°देवक] चण्डी का भक्त (सूअनि ६०)।

चद पु [चन्द्र] १ चन्द्र, चन्द्रमा, चाद (ठा २, ३; प्रासू १३, ५५, पाअ)। २ नृप-विशेष (उप ७२८ टी)। ३ रामचन्द्र, दाशरथी राम (से १, ३४)। ४ राम के एक सुभट का नाम (पउम ५६, ३८)। ५ रावण का एक सुभट (पउम ५६, २)। ६ राशि-विशेष (भवि)। ७ आह्लादक वस्तु। ८ कपूर। ९ स्वर्ण, सोना। १० पानी, जल (हे २, १६४)। ११ एक जैन आचार्य (गच्छ ४)। १२ एक द्वीप का नाम, द्वीप-विशेष (जीव ३)। १३ राधावेध की पुतली का बायाँ नयन, आंख का गोला (णादि)। १४ न. देवविमान-विशेष (सम ८)। १५ रुचक पर्वत का एक शिखर (दीव)। °अन देखो °कत (विक्र १३६)। °उत्त देखो °गुत्त (मुद्रा १६८)। °कत पुं [°कान्त] १ मणि-विशेष (स ३६०)। २ न देवविमान-विशेष (सम ८)। ३ त्रि चन्द्र की तरह आह्लादक (आवम)। °कंता स्त्री [°कान्ता] १ नगरी विशेष (उप ९७३)। २ एक कुलकर-पुरुष की पत्नी (सम १५०)। °कूड न [°कूट] १ देवविमान विशेष (सम ८)। २ रुचक पर्वत का एक शिखर (ठा ८)। °गुत्त पु [°गुप्त] मौर्यवंश का एक स्वनाम-विख्यात राजा (विसे ८६२)। °चार पु [°चार] चन्द्र की गति (चद १०)। °चूड, °चूल पुं [°चूड] विद्याधर वश का एक स्वनाम प्रसिद्ध राजा (पउम ५, ४५, दंस)। °च्छाय पु [°च्छाय] अग देश का एक राजा, जिसने भगवान् मल्लिनाथ के साथ दीक्षा ली थी (णाया १,८)। °जसा स्त्री [°यशस्] एक कुलकर पुरुष की पत्नी (सम १५०)। °ज्झय न [°ध्वज] देवविमान-विशेष (सम ८)। °णक्खा स्त्री [°नखा] रावण की बहिन का नाम (पउम १०, १८)। °णह पु [°नख] रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३१)। °णही देखो °णक्खा (पउम ७,६८)। °णागरी स्त्री [°नागरी] जैन मुनि-गण की एक शाखा (कप्प)। °दरिसणिया स्त्री [°दर्शनिका] उत्सव-विशेष, बच्चे के पहली बार के चन्द्र-दर्शन के उपलक्ष्य में किया जाता उत्सव (राज)। °दिण न [°दिन] प्रति-पदादि तिथि (पच ५)। °दीव पु [°द्वीप] द्वीप-विशेष (जीव ३)। °द्ध न [°र्ध] आधा चन्द्र, अष्टमी तिथि का चन्द्र (जीव ३)। °पडिमा स्त्री [°प्रतिमा] तप-विशेष (ठा २, ३)। °पन्नत्ति स्त्री [°प्रज्ञप्ति] एक जैन उपाङ्ग ग्रन्थ (ठा २, १—पत्र १२६)। °पव्वय पु [°पर्वत] वक्षस्कार पर्वत-विशेष (ठा २, ३)। °पुर न [°पुर] वैताढ्य पर्वत पर स्थित एक विद्याधर-नगर (इक)। °पुरी स्त्री [°पुरी] नगरी-विशेष, भगवान् चन्द्रप्रभ की जन्म-भूमि (पउम २०, ३४)। °प्पभ वि [°प्रभ] १ चन्द्र के तुल्य कान्तिवाला। २ पुं आठवें जिनदेव का नाम (धर्म २)। ३ चन्द्रकान्त, मणि-विशेष (पण्ण १)। ४ एक जैन मुनि (दस)। ५ न देवविमान-विशेष (सम ८)। ६ चन्द्र का सिंहासन (णाया २, १)। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] १ चन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १)। २ मदिरा-विशेष, एक जात का दारू (जीव ३)। ३ इस नाम की एक राज-कन्या (उप १०३१ टी)। ४ इस नाम की एक शिविका, जिसमें बैठकर भगवान् शीतलनाथ और महावीर-स्वामी दीक्षा के लिए बाहर निकले थे (आवम)। °प्पह देखो °प्पभ (कप्प, सम ४३)। °भागा स्त्री [°भागा] एक नदी (ठा ५, ३)। °मडल पु न [°मण्डल] १ चन्द्र का मण्डल, चन्द्र का विमान (ज ७, भग)। २ चन्द्र का विम्ब (पण्ह १,४)। °मग्ग पु [°मार्ग] १ चन्द्र का मण्डल-गति से परिभ्रमण। २ चन्द्र का मण्डल (सुज ११)। °मणि पु [°मणि] चन्द्रकान्त, मणि-विशेष (विक्र १२६)। °माला स्त्री [°माला] १ चन्द्राकार हार, चन्द्र-हार। २ छन्द-विशेष (पिंग)। °मालिया स्त्री [°मालिका] वही पूर्वोक्त अर्थ (औप)। °मुही स्त्री [°मुखी] १ चन्द्र के समान आह्लादक मुखवाली स्त्री। २ सीता-पुत्र कुश की पत्नी (पउम १०६, १२)। °रह पु [°रथ] विद्याधर वश का एक राजा (पउम ५, १५, ४४)। °रिसि पु [°ऋषि] एक जैन ग्रन्थकार मुनि (पच ५)। °लेस न [°लेश्य] देवविमान-विशेष (सम ८)। °लेहा स्त्री [°लेखा] १ चन्द्र की रेखा, चन्द्रकला। २ एक राज-पत्नी (ती १०)। °वडिंसग न [°वतंसक] १ चन्द्र के विमान का नाम (चद १८)। २ देखो चंडवडिसग (उत्त १३)। °वण्ण न [°वर्ण] एक देवविमान (सम ८)। °वयण वि [°वदन] १ चन्द्र के तुल्य आह्लादजनक मुँहवाला। २ पुं.

चिआ स्त्री [त्विष्] कान्ति, तेज, प्रभा (षड्)।

चिआ देखो चियगा (सुपा २४१, महा)।

चिइ स्त्री [चिति] १ उपचय, पुष्टि, वृद्धि (पव २)। २ इकट्ठा करना (उत्त ६)। ३ वुद्धि, मेधा (पाम्र)। ४ भीत वगैरह बनाना। ५ चिता (पराह १, १—पत्र ८)। °कम्म न [°कर्मन्] वन्दन, प्रणाम-विशेष (श्राव ३)।

चिइ देखो चेइअ (उप ५९७, चैत्य १२, पंचा १)।

चिइगा देखो चियगा (जं १)।

चिइच्छ सक [चिकित्स्] १ दवा करना, इलाज करना। २ शका करना, सशय करना। चिइच्छइ (हे २, २१, ४, २४०)।

चिइच्छअ वि [चिकित्सक] १ दवा करनेवाला, इलाज करनेवाला। २ पु. वैद्य (मा ३३)।

चिइय देखो चिंतिय, 'जेण एस सुचरियतवोवि सुचिइयजिणिदवयणोवि' (महा)।

चिउर पु [चिकुर] १ केश, बाल (गा १८८)। २ पीत रग का गन्धद्रव्य-विशेष (पराग १७—पत्र ५२८, राय)।

चिंच } सक [मण्डय्] विभूपित करना,
चिंचअ } अलकृत करना। चिंचइ, चिंचअइ (हे ४, ११५, षड्)।

चिंचइअ वि [मण्डित] शोभित, विभूपित, अलकृत (पउम १५, १३, सुपा ८८, महा, पाम्र, प्राप, कुमा)।

चिंचइअ वि [दे] चलित, चला हुआ (दे ३, १३)।

चिंचणिआ }
चिंचणिगा } स्त्री [दे] देखो चिंचिणी (कुमा, सुपा १२, ५८३)।
चिंचणी }

चिंचगी स्त्री [दे] घरट्टिका, अन्न पीसने की चक्की (दे ३, १०)।

चिंचा स्त्री [चञ्चा] १ तृण की बनाई हुई चटाई वगैरह। °पुरिस पुं [°पुरुष] तृण का मनुष्य, जो पशु, पक्षी आदि को डराने के लिए खेतो मे गाडा जाता है (सुपा १२४)।

चिंचा स्त्री [दे. चिञ्चा] इमली का पेड (दे ३, १०, पाम्र, विपा १, ६, सुपा १२४, ५८२, ५८३)।

चिंचिअ वि [मण्डित] भूपित, अलंकृत (कुमा)।

चिंचिणिआ }
चिंचिणिचिंचा } स्त्री [दे] इमली का पेड (ओघ २६; दे ३, १०, सुपा ५८४, पाम्र)।
चिंचिणी }

चिंचिल्ल सक [मण्डय्] विभूपित करना, अलकृत करना। चिंचिल्लइ (हे ४, ११५, षड्)।

चिंचिल्लिअ वि [मण्डित] विभूपित, अलकृत, सँवारा हुआ (पाम्र, कुमा)।

चिंत सक [चिन्तय्] १ चिन्ता करना, विचार करना। २ याद करना। ३ ध्यान करना। ४ फीकिर करना, अफसोम करना। चिंतेइ, चिंतेमि (उव, कुमा)। वकृ. चिंतंत, चिंतेंत, चिंतिंत, चिंतयत, चिंतयमाण, चिंतेमाण (कुमा, उव; पउम १०, ४, अभि ५७, हे ४,३२२,३१०, सुर ४,२३)। कवकृ. चिंतिज्जत (गा ६५१)। संकृ. चिंतिउं, चिंतिऊण (महा, गा ३५८)। कृ चिंतणीय, चिंतियव्व, चिंतेयव्व (उप ७३२, पंचा २, पउम ३१, ७७, सुपा ४४५)।

चिंत वि [चिन्त्य] चिन्तनीय, विचारणीय, विचार-योग्य (उप ६८५)।

चिंतग वि [चिन्तक] चिन्ता करनेवाला, विचारक (उप पृ ३३३, ३३६ टी)।

चिंतण न [चिन्तन] १ विचार, पर्यालोचन (महा)। २ स्मरण, स्मृति (उत्त ३२, महा)।

चिंतणा स्त्री [चिन्तना] ऊपर देखो (उप ८८६ टी)।

चिंतणिया स्त्री [चिन्तनिका] याद करना, चिन्तन करना (ठा ५, ३)।

चिंतय वि [चिन्तक] चिन्ता करनेवाला (स ५९५, निर १, १)।

चिंतव देखो चिंत = चिंतय्। चिंतवइ (कुमा, भवि)।

चिंतविय वि [चिन्तित] जिसकी चिंता की गई हो वह (भवि)।

चिंता स्त्री [चिन्ता] १ विचार, पर्यालोचन (पाम्र, कुमा)। २ अफसोस, शोक, दिलगीरी (सुर २, १६१, सूत्र २ १, प्रासू ६१)। ३ ध्यान (श्राव ४)। ४ स्मृति, स्मरण (णदि)। ५ इष्ट प्राप्ति का संदेह (कुमा)। °उर वि [°तुर] शोक से व्याकुल (सुर ६, ११६)। °दिट्ठ वि [दृष्ट] विचार-पूर्वक देखा हुआ (पाम्र)। °मइअ वि [°मय] चिन्ता-युक्त, 'सप्रणे चिंतामइअ काऊण पिअ' (गा १३३)। °मणि पुं [°मणि] १ मनोवाञ्छित अर्थ को देनेवाला रत्न-विशेष, दिव्य मणि (महा)। २ वीतशोक नगरी का एक राजा (पउम २०, १४२)। °वर वि [°पर] चिन्ता-मग्न (पउम १०, १३)।

चिंतायग } वि [चिन्तक] चिन्ता करनेवाला
चिंतावग } (आवम)। स्त्री. °गा (सुपा २१)।

चिंतिय वि [चिन्तित] १ विचारित, पर्यालोचित (महा)। २ याद किया हुआ, स्मृत (णाया १, १, षड्)। ३ जिसको चिंता उत्पन्न हुई हो वह (जीव ३, औप)। ४ न स्मरण, स्मृति (भग ६, ३३; औप)।

चिंतिर वि [चिन्तयितृ] चिन्ताशील, चिन्ता करनेवाला (श्रा २७, सण)।

चिंध न [चिह्न] १ चिह्न, लाञ्छन, निशानी (हे २, ५०, प्राप्र, णाया १, १६)। २ ध्वजा, पताका (पाम्र)। °पट्ट पुं [°पट्ट] निशानी रूप वस्त्र-खण्ड (णाया १, १)। °पुरिस पु [°पुरुष] १ दाढी-मूँछ वगैरह पुरुष की निशानी वाला नपुसक, हिजडा। २ पुरुष का वेप धारण करनेवाली स्त्री वगैरह (ठा ३, १)।

चिंधाल वि [चिह्नवत्] चिह्नयुक्त, निशानीवाला (पउम १०६, ७)।

चिंधाल वि [दे] १ रम्य, सुन्दर, मनोहर। २ मुख्य, प्रधान, प्रवर (दे ३, २२)।

चिंधिय वि [चिह्नित] चिह्न-युक्त (पि २६७)।

चिंफुल्लणी स्त्री [दे] स्त्री का पहनने का वस्त्र-विशेष, लहँगा (दे ३, १३)।

चिकिच्छ देखो चिइच्छ। चिकिच्छामि (स ४८५)। कृ चिकिच्छिअव्व (अभि १६७)।

चिकुर देखो चिउर (पि ५०६)।

चंदिल पुं [चन्दिल] नापित, हजाम (गा २६१, दे ३, २)।

चंदुत्तरवडिंसग न [चन्द्रोत्तरावतंसक] एक देवविमान (सम ८)।

चंदेरी स्त्री [दे] नगरी-विशेष (ती ४५)।

चंदोज्ज } न [दे] कुमुद, चन्द्र-विकासी
चंदोज्जय } कमल (दे ३, ४)।

चंदोत्तरण न [चन्द्रोत्तरण] कौशाम्बी नगरी का एक उद्यान (विपा १, ५—पत्र ६०)।

चंदोयर पुं [चन्द्रोदर] एक राज-कुमार (धम्म)।

चंदोवग न [चन्द्रोपक] संन्यासी का एक उपकरण (ठा ४, २)।

चंदोवराग पुं [चन्द्रोपराग] चन्द्र-ग्रहण, चन्द्रमा का ग्रहण, राहु-ग्रास (ठा १०, भग ३, ६)।

चंद्र देखो चंद (हे २, ८०, कुमा)।

चंप सक [दे] चाँपना, दाबना, दबाना। चंपइ (आरा २५)। कर्म. चंपिज्जइ (हे ४, ३९५)।

चंप सक [चर्च्] चर्चा करना। चंपइ (प्राप्र)। संकृ. चंपिऊण (वज्जा ६४)।

चंप सक [आ + रुह्] चढ़ना। चंपइ (प्राकृ ७३)।

चंप देखो चंपय (राय ३०)।

चंपग पुन [चम्पक] एक देवविमान (देवेन्द्र १४२)।

चंपग देखो चंपय, 'असुइट्ठाणे पडिया, चंपगमाला न कीरइ सीसे' (आव ३)।

चंपडण न [दे] प्रहार, आघात, 'सरभसचलंतविअडगुडिअगंधसिंधुरणिवहचलणचंपडणसमुप्पइआ . .धूलीजालोली' (विक्र ८४)।

चंपण न [दे] चाँपना, दबाना (उप १३७ टी)।

चंपय पुं [चंपक] १ वृक्ष-विशेष, चम्पा का पेड (स १५२, भग)। २ देव-विशेष (जीव ३)। ३ न चम्पा का फूल (कुमा)। °माला स्त्री [°माला] १ छन्द-विशेष (पिंग)। २ चम्पा के फूलों का हार (आव ३)। °लया स्त्री [°लता] १ लताकार चम्पक वृक्ष। २ चम्पक वृक्ष की शाखा (जं १, औप)। °वण न [°वन] चम्पक वृक्षों की प्रधानतावाला वन (भग)।

चंपयवडिंसय पुं [चम्पकावतंसक] सौधर्म देवलोक में स्थित एक विमान (राय ५९)।

चंपा स्त्री [चम्पा] अंग देश की राजधानी, नगरी-विशेष, जिसको आजकल 'भागलपुर' कहते हैं (विपा १, १, कप्प) °पुरी स्त्री [°पुरी] वही अर्थ (पउम ८, १५६)।

चंपा स्त्री देखो चंपय। °कुसुम न [°कुसुम] चम्पा का फूल (राय)। °वण्ण वि [°वर्ण] चम्पा के फूल के तुल्य रंगवाला, सुवर्ण-वर्ण। स्त्री. °ण्णी (अप) (हे ४, ३३०)।

चंपारण (अप) पु [चम्पारण्य] १ देश-विशेष, चंपारन, तिरहुत कमिश्नरी (विहार) का एक जिला। २ चंपारन का निवासी (पिंग)।

चंपिअ वि [दे] चाँपा हुआ, दबाया हुआ, मर्दित (सुपा १३७, १३८)।

चंपिअ न [दे] आक्रमण, दबाव (तंदु ४४)।

चंपिज्जिया स्त्री [चम्पीया] जैन मुनिगण की एक शाखा (कप्प)।

चंभ पुं [दे] हल से विदारित भूमि-रेखा (दे ३, १)।

चकप्पा स्त्री [दे] त्वक्, त्वचा, चमड़ी (दे ३, ३)।

चकिद देखो चइद (कुमा)।

चकोर पुस्त्री [चकोर] पक्षि-विशेष, चकोर पक्षी (सुपा ४५७)। स्त्री °री (रयण ४९)।

चक्क पुं [चक्र] १ पक्षि-विशेष, चक्रवाक पक्षि (पाअ, कुमा, सण), 'तो हरिसपुलइयंगो चक्को इव दिट्ठउग्गयपयंगो' (उप ७२८ टी)। २ न. गाड़ी का पहिया (पण्ह १, १)। ३ समूह (सुपा १५०, कुमा)। ४ अस्त्र-विशेष (पउम ७२, ३१, कुमा)। ५ चक्राकार आभूषण, मस्तक का आभरण-विशेष (औप)। ६ व्यूह-विशेष, सैन्य की चक्राकार रचना-विशेष (णाया १, १, औप)। °कंत पुं [°कान्त] देव-विशेष, स्वयंभूरमण समुद्र का अधिष्ठाता देव (दीव)। °जोहि पुं [°योधिन्] १ चक्र से लड़नेवाला योद्धा (ठा ९)। २ वासुदेव, तीन खंड पृथिवी का राजा (आव १)। °ज्झय पुं [°ध्वज] चक्र के निशान-वाली ध्वजा (जं १)। °पहु पुं [°प्रभु] चक्रवर्ती राजा (सण)। °पाणि पु [°पाणि] १ चक्रवर्ती राजा, सम्राट्। २ वासुदेव, अर्ध-चक्रवर्ती राजा (पउम ७३, ३)। °पुरा, °पुरी स्त्री [°पुरी] विदेह वर्ष की एक नगरी (ठा २,३, इक)। °प्पहु देखो °पहु (सण)। °यर पु [°चर] भिक्षुक, भीखमंगा (उप ६१७)। °रयण न [°रत्न] अस्त्र-विशेष, चक्रवर्ती राजा का मुख्य आयुध (पण्ह १,४)। °वइ पु [°पति] सम्राट् (पिंग)। °वइ, °वट्टि पुं [°वर्तिन्] छ खण्ड भूमि का अधिपति राजा, सम्राट् (पिंग, सण, ठा ३, १, पडि, प्रासू १७५)। °वट्टित्त न [°वर्तित्व] सम्राट्पन, साम्राज्य (सुर ४, ९१)। °वत्ति देखो °वट्टि (पि २८९)। °विजय पुं [°विजय] चक्रवर्ती राजा से जीतने योग्य क्षेत्र-विशेष (ठा ८)। °साला स्त्री [शाला] वह मकान, जहाँ तिल पेरा जाता हो, तैलिक गृह (वव १०)। °सुह पुं [°शुभ, °सुख] देव-विशेष, मानुषोत्तर पर्वत का अधिपति देव (दीव)। °सेण पु [°सेन] स्वनाम-ख्यात एक राजा (दंस)। °हर पु [°धर] १ चक्रवर्ती राजा, सम्राट् (सम १२९, पउम २, ८५, ४, ३६, कप्प)। २ वासुदेव, अर्ध-चक्री राजा (राज)।

चक्क न [चक्र] एक देवविमान (देवेन्द्र १३३)।

चक्कआअ देखो चक्कवाय (पि ८२)।

चक्कंग पुं [चक्राङ्ग] पक्षि-विशेष (सुपा ३४)।

चक्कणभय न [दे] नारंगी का फल (दे ३, ७)।

चक्कणाहय न [दे] ऊर्मि, तरङ्ग, कल्लोल (दे ३, ६)।

चक्कम } अक [भ्रम्] घूमना, भटकना,
चक्कम्म } भ्रमण करना। चक्कमइ (दे २, ६)। चक्कम्मइ (हे ४, १६१)। वकृ. चक्कमंत (स ६१०)।

चक्कम्मविअ वि [भ्रमित] घुमाया हुआ, फिराया हुआ (कुमा)।

चक्कय देखो चक्क (पण्ण १)।

चक्कल न [दे] कुण्डल, कर्ण का आभूषण। २ दोलाफलक, हिंडोला का पटिया (दे ३, २०)। ३ वि. वर्तुल, गोलाकार पदार्थ (दे

(अजि २७)। °गर पुं [°कर] चित्रकार, चितेरा (सुर १, १०४, गाया १, ८)। °गुत्ता स्त्री [°गुप्ता] १ देवी-विशेष, सोम-नामक लोकपाल की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १)। २ दक्षिण रुचक पर्वत पर वसनेवाली एक दिक्कुमारी, देवी-विशेष (ठा ८)। °पक्ख पु [°पक्ष] १ वेणु देव नामक इन्द्र का एक लोकपाल, देव-विशेष (ठा ४, १)। २ क्षुद्र जन्तु-विशेष, चतुरिन्द्रिय कीट-विशेष (जीव १)। °फल, °फलग, °फलय न [°फलक] तसवीरवाला तख्ता (महा, भग १५, पि ५१६)। °भित्ति स्त्री [°भित्ति] १ चित्र-वाली भीत। २ स्त्री की तसवीर (दस ८)। °यर देखो °गर (गाया १, ८)। °रस पुं [°रस] भोजन देनेवाली कल्पवृक्षों की एक जाति (सम १७, पउम १०२, १२२)। °लेहा स्त्री [°लेखा] छन्द-विशेष (अजि १३)। °सभूइय न [°सभूतीय] चित्र और संभूत नामक चाण्डाल-विशेष के वृत्तान्त वाला 'उत्तराध्ययनसूत्र' का एक अध्ययन (उत्त १२)। °सभा स्त्री [°सभा] तसवीरवाला गृह (गाया १, ८)। °साला स्त्री [°शाला] चित्र-गृह (हेका ३३२)।

चित्तग पु [चित्राङ्ग] पुष्प देनेवाले कल्प-वृक्षों की एक जाति (सम १७))।

चित्तग देखो चित्त=चित्र (उप पृ ३०)।

चित्तजाणुअ देखो चित्त-ण्णु (प्राकृ १८)।

चित्तठिअ वि [दे] परितोषित, खुश किया हुआ (दे ३, १२)।

चित्तण न [चित्रण] चित्र-कर्म (धर्मवि ३४)।

चित्तदाउ पुं [दे] मधु-पटल, मधपुडा (दे ३, १२)।

चित्तपत्तय पुं [चित्रपत्रक] चतुरिन्द्रिय जीव की एक जाति (उत्त ३६, १४६)।

चित्तपरिच्छेय वि [दे] लघु, छोटा (भग, ७, ६)।

चित्तय देखो चित्त = चित्र (पाअ)।

चित्तयल्ला स्त्री [चित्रकलता] वल्ली-विशेष (हम्मीर २८)।

चित्तल वि [दे] १ मण्डित, विभूषित। २ रमणीय, सुन्दर (दे ३, ४)।

चित्तल त्रि [चित्रल] १ चितला, कबरा, चितकवरा (पाअ)। २ पुं जगली पशु-विशेष, हरिण के आकारवाला द्विखुरा पशु-विशेष (जीव १, पण्ह १, १)।

चित्तलि पुस्त्री [चित्रलिन्] सांप की एक जाति (पण्ण १)।

चित्तलिअ वि [चित्रलित, चित्रित] चित्र-युक्त किया हुआ, 'पढम व्विअ दिअहद्धे कुड्डो रेहाहिं चित्तलिओ' (गा २०८)।

चित्तविअअ वि [दे] परितोषित (षड्)।

चित्तवीणा स्त्री [चित्रवीणा] वाद्य-विशेष (राय ४६)।

चित्ता स्त्री [चित्रा] १ नक्षत्र-विशेष (सम २)। २ देवी-विशेष, एक विद्युत्कुमारी देवी (ठा ४, १)। ३ शक्रेन्द्र के एक लोकपाल की स्त्री, देवी-विशेष (ठा ४, १—पत्र २०४)। ४ औषधि-विशेष(सुर १०, २२३, पण्ण १७)।

चित्ताचिल्लडय } चित्ताचेल्लरय } पुं [दे] जगली पशु-विशेष (आचा २, १, ५, ३, ४)।

चित्तावडी स्त्री [चित्रपटी] वस्त्र-विशेष, छीट (बूटीदार) आदि कपडा, 'उवविट्ठा चित्ता-वडिमसूरयम्मि विब्भमवई कमलया य' (स ७३८)।

चित्ति पुं [चित्रिन्] चित्रकार, चितेरा (कम्म १, २३)।

चित्तिअ वि [चित्रित] चित्र-युक्त किया हुआ (औप, कप्प, उप ३६१ टी, दे १, ७५)।

चित्तिया स्त्री [चित्रिका] स्त्री-चीता, श्वापद-विशेष की मादा (पण्ण ११)।

चित्ती देखो चेत्ती (सुज्ज १०, ७)।

चित्ती स्त्री [चैत्री] चैत्र मास की पूर्णिमा (इक)।

चिद्दविअ } चिद्दाविअ } वि [दे] निर्णाशित, विनाशित (दे ३, १३, पाअ, भवि)।

चिन्न देखो चिण्ण (सुपा ४; सण, भवि)।

चिप्प सक [दे] १ कूटना। २ दवाना। कर्म. 'वि (? चि)-प्पिज्जसि ज तस्सि केणावि गोमह-वसहेण' (दे २, ६६ टी)। संकृ. चिप्पित्ता (वृह २)।

चिप्पग पुन [दे] कूटी हुई छाल; गुजराती में 'चेपो' (कस २, ३० टि)।

चिप्पड देखो चिविड (धर्मवि २७)।

चिप्पय देखो चिप्पग (कस २, ३० टि)।

चिप्पिअ पु [दे] नपुंसक-विशेष, जन्म के समय में अंगूठे से मर्दन कर जिसका अण्डकोश दवा दिया गया हो वह (पव १०६ टी)।

चिप्पिडय पु [दे] अन्न-विशेष (दसा ६)।

चिवुअ न [चिवुक] होठ के नीचे का अव-यव, ठोढ़ी (कुमा)।

चिब्भड न [चिर्भिट] खीरा, ककडी, फल-विशेष, गुजराती मे 'चीभडु' (दे ६, १४८)।

चिब्भडिया स्त्री [चिर्भिटिका] १ वल्ली-विशेष, ककडी का गाछ। २ मत्स्य की एक जाति (जीव १)।

चिब्भिड देखो चिब्भड (सुपा ६३०, पाअ)।

चिमिट्ठ } चिमिढ } वि [चिपिट] चिपटा, वैठा हुआ, दवा हुआ (नाक) (गाया १, ८, पि २०७, २४८)।

चिमिण वि [दे] रोमश, रोमाञ्चित, पुलकित, गद्गद (दे ३, ११, षड्)।

चिय देखो चेइअ = चैत्य, 'सो अन्नया कयाइ चियपरिवाडि कुणतओ नयरे' (सम्मत्त १५६)।

चियका } चियगा } स्त्री [चिता] मुर्दे को फूँकने के लिए चुनी हुई लकडियो का ढेर (पण्ह १, ३—पत्र ४५, सुपा ६५७, स ४१६)।

चियत्त देखो चत्त (भग २, ५, १०, २, कप्प, निचू १)।

चियत्त वि [दे] १ अभिमत, सम्मत (ठा ३, ३)। २ प्रीतिकर, राग-जनक (औप)। ३ प्रीति, रुचि। ४ अप्रीति का अभाव (ठा ३, ३—पत्र १४७)।

चियया देखो चियगा (पउम ६२, २३)।

चियाग } चियाय } देखो चाय=त्याग (ठा ५, १, सम १६)।

चिर न [चिर] १ दीर्घ काल, वहुत काल (स्वप्न ८३, गा १४७)। २ विलम्ब, देरी (गा ३४)। ३ वि. दीर्घ काल तक रहनेवाला; 'हियइच्छियपियलभा चिरा सया कस्स जायंति' (वज्जा ५२)। °आरअ वि [°कारक] विलम्ब करनेवाला (गा ३४)। °जीवि वि [°जीविन्] दीर्घ काल तक जीनेवाला (पि ५६७)। °जीविअ वि [°जीवित] दीर्घ काल तक जीया हुआ, वृद्ध (वाअ २, ३४)। °ट्ठिइ, °ट्ठिइय, °ट्ठिईय वि [°स्थितिक]

चच्च सक [चर्च्] चन्दन आदि का विलेपन करना। चच्चेइ (वर्मवि १५)।

चच्च पुं [चर्च] हेमाचार्य के पिता का नाम (कुप्र २०)।

चच्च पुं [चर्च] समालम्भन, चन्दन वगैरह का शरीर में उपलेप (दे ६, ७६)।

चच्चर न [चत्वर] चौहट्टा, चौरास्ता, चौराहा, चौक (णाया १,१, पराह १,३, सुर १,६२, (हे २, १२ कुमा)।

चच्चरिअ पु [दे चच्चरीक] भ्रमर, भौंरा (षड्)।

चच्चरिया स्त्री [चर्चरिका] १ नृत्य-विशेष (रभा)। २ देखो चच्चरी (स ३०७)।

चच्चरी स्त्री [चर्चरी] १ गीत-विशेष, एक प्रकार का गान, 'विव्यरियत्त्वचरीरवमुहरियउ-ज्जाणभूभागे' (सुर ३,५४), 'पारभियचच्चरी-गीयं' (सुपा ५५)। २ गानेवाली टोली, गानेवालों का यूथ, 'पवत्ते मयणमहूसवे निग्गयासु विचित्तवेसासु नयरचच्चरीसु', 'कह नीयचच्चरी अम्हाण चच्चरीए समाणन्न परिव्वयइ' (स ४२)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)। ४ हाथ की ताली की आवाज (आव १)।

चच्चरा स्त्री [दे] वाद्य-विशेष, 'अट्ठसयं चच्चराणं, अट्ठसयं चच्चरावायगाणं' (राय)।

चच्चा स्त्री [दे] १ शरीर पर सुगन्धि पदार्थ का लगाना, विलेपन (दे ३, १६, पात्र, ज १, णाया १, १, राय)। २ तल प्रहार, हाथ की ताली (दे ३, १६, षड्)।

चच्चार सक [उपा + लभ्] उपालम्भ देना, उलाहना देना। चच्चारइ (षड्)।

चच्चिक्क वि [दे] १ मण्डित, विभूषित, 'चदुज्जयचच्चिक्का दिसाउ' (दे ३, ४), 'तणुप्पहापटलचच्चिक्को' (धम्म ६ टी), 'साहू गुणरयणचच्चिक्का' (चउ ३६)। २ पुन. विलेपन, चन्दनादि सुगन्धि वस्तु का शरीर पर मसलना (हे २, ७४), 'चच्चिक्को' (षड्), 'कुंकुमचच्चिक्कछुरियंगो' (पउम २८, २८ टी), 'पेच्छइ सुवन्नकलसं सुरचदण-पंकचच्चिक्कं' (उप ७६८ टी), 'घणलेहिद-पंकचच्चिक्को' (मुच्छ ११०)।

चच्चिअ वि [चर्चित] विलिप्त (चेइय ८४५)।

चच्चुप्प सक [अर्पय्] अर्पण करना, देना। चच्चुप्पइ (हे ४, ३६)।

चच्छ सक [तक्ष्] छिलना, काटना। चच्छइ (हे ४, १९४)।

चच्छिअ वि [तष्ट] छिला हुआ (कुमा)।

चज्ज सक [दृश्] देखना, अवलोकन करना। चज्जइ (दे ३, ४, षड्)।

चज्जा स्त्री [चर्या] १ आचरण, वर्तन। २ चलन, गमन। ३ परिभाषा, संकेत (विसे २०४४)।

चज्जिय वि [दृष्ट] अवलोकित, देखा हुआ (महा)।

चट्टुअ देखो चट्टुअ (गा १६२)।

चट्ट सक [दे] चाटना, अवलेह करना, 'न य अलोणियं सिल कोइ चट्टेइ' (महा)।

चट्ट पुं न [दे] १ भूख, बुभुक्षा, 'जीवंति उदहिपडिआ, चट्टुच्छिन्ना न जीवंति' (सुक्त ७०)। २ पुं चट्टा, विद्यार्थी। °साला स्त्री [°शाला] चटशाला, चटसार, छोटे बालकों की पाठशाला (वृह १)।

चट्टि वि [चट्टिन्] चाटनेवाला (वज्जा)।

चट्टु, चट्टुअ, चट्टुल पु [दे] दारु-हस्त, काठ की कलछी, परोसने का पात्र-विशेष (दे ३, १, गा १६२ अ)।

चड सक [आ + रुह्] चढ़ना, ऊपर बैठना, आरूढ होना। चडइ (हे ४, २०६)। सकृ चडिउ, चडिऊण (सुपा ११४, कुमा)।

चड पुं [दे] शिखा, चोटी (दे ३ १)।

चडक्क पुं न [दे] १ चमत्कार, चटका (हे ४, ४०६, भवि)। २ शस्त्र-विशेष (पउम ७, २६)।

चडक्कारि वि [चटत्कारिन्] 'चटत्' शब्द करनेवाला (पवन आदि) (गउड)।

चडग देखो चडय (पराण १)।

चडगर पुं [दे] १ समूह, यूथ, जत्था (पउम ६०, १५, णाया १, १—पत्र ४६)। २ आडम्बर, आटोप, 'महया चडगरत्तणेण अत्यकहा हणइ' (दसनि ३)।

चडचड पुं [चडचड] 'चड-चड' आवाज (विपा १, ६)।

चडचडचड अक [चडचडाय्] 'चड-चड' आवाज करना। चडचडचडति (विपा १, ६)।

चडड पुं [चटट] ध्वनि-विशेष, बिजली के गिरने की आवाज (सुर २, ११०)।

चडण न [आरोहण] चढ़ना, ऊपर बैठना (आ १४, प्रासू १०१, उप ७२८ टी, ओघ ३०, सद्दि १४२, वज्जा ५४)।

चडपड अक [दे] चटपटाना, छटपटाना, क्लेश पाना। वकृ. चडपडंत (मुद्रा ७२)।

चडय पु स्त्री [चटक] पक्षि-विशेष, गौरैया पक्षी (दे २,१०७)। स्त्री °या (दे ८, ३६)।

चडवेला स्त्री देखो चवेडा (पराह १, ३—पत्र ५३)।

चडावण न [आरोहण] चढ़ाना (उप १५२)।

चडाविय वि [आरोहित] चढाया हुआ, ऊपर स्थापित, 'रणखभउरजिणहरे चडाविया कणयमयकलसा' (मुणि १०६०१, सुर १३, ३६ महा)।

चडाविय वि [दे] प्रेषित, भेजा हुआ, 'चाउद्दिसिंपि तेणं चडाविय साहणं तआ सोत्ति' (सुपा ३६५)।

चडिअ वि [आरूढ] चढा हुआ, आरूढ (सुपा १३७, १५३, १५६, हे ४, ४४५)।

चडिआर पु [दे] आटोप, आडम्बर (दे ३, ५)।

चडु पुं [चटु] १ प्रिय वचन, प्रिय वाक्य। २ व्रती का एक आसन। ३ उदर, पेट। ४ पु न प्रिय संभाषण, खुशामद (हे १, ६७, प्राप्र)। °आर वि [°कार] खुशामद करने-वाला, खुशामदी (पराह १, ३)। °आरअ वि [°कारक] खुशामदी (गा ६०५)।

चडुकारि वि [चटुकारिन्] खुशामदी (पिंड ४१४)।

चडुत्तरिया स्त्री [दे] १ उत्तरचढ। २ वाद-विवाद (मोह ७)।

चडुयारि देखो चडुकारि (पिंड ४८६)।

चडुल वि [चटुल] १ चचल, चपल (से २, ४५, पउम ४२, १६)। २ कपवाला, हिलता हुआ (से १, ५२)।

चडुल्ल वि [दे. चटुलक] खराड-खराड किया हुआ, 'विदुलगचडुलगछिन्ने' (सूअनि ७१)।

चिहुर पुं [चिकुर] केश, बाल (पाम; सुपा २८१)।

चो } देखो चेइअ (हे १, १५१, सार्घ
चीअ } ५७, ६३)।

चीअ न [चिता] मुर्दे को फूँकने के लिए चुनी हुई लकडियों का ढेर, 'चीए वधुस्स व अट्ठिआइं रुग्नई समुच्चिणइ' (गा १०४)।

चीइ देखो चेइअ (सुर ३, ७५)।

चीड वि [दे] काला काँच की मणिवाला (सिरि ६८०)।

चीण वि [चीन] १ छोटा, लघु, 'चीणचिमिढवकभग्गणास' (णाया १, ८—पत्र १३३)। २ पु म्लेच्छ देश-विशेष, चीन देश (पराह १, १, स ४४३)। ३ चीन देश का निवासी, चीनी या चीना (पराह १,१)। ४ धान्य-विशेष, व्रीहि का भेद (सण), 'चीणाकूरं छलियातक्केण दिन्नं' (महा)। °पट्ट पुं [°पट्ट] चीन देश में होनेवाला वस्त्र-विशेष (पराह १, ४)। °पिट्ठ न [°पिष्ट] सिन्दूर-विशेष (राय, पराण १७)।

चीणंसु } पुं [चीनांशु, °क] १ कीट-विशेष,
चीणसुय } जिसके तन्तुओं से वस्त्र बनता है (बृह १)। २ चीन देश का वस्त्र-विशेष; 'चीणसुसमूसियघयविराइय' (सुपा ३४, अणु, जं २)।

चीया स्त्री. देखो चीअ = चिता; 'चीयाए पक्खिउ तत्तो उद्दीविओ जलणो' (सुर ६, ८८)।

चीर न [चीर] वस्त्र-खण्ड, कपडे का टुकडा (ओघ ६३ भा; श्रा १२, सुपा ३६१)। °कडूसगपट्ट पु [°कण्डूसकपट्ट] जैन साधुओं का एक उपकरण, रजोहरण का बन्धन-विशेष (निचू ५)।

चीरग पुं [चीरक] नीचे देखो (गच्छ २)।

चीरिय पु [चीरिक] १ रास्ता मे पड़े हुए चीथडों को पहननेवाला भिक्षुक। २ फटा-टूटा कपडा पहननेवाली एक साधु-जाति (णाया १, १५—पत्र १९३)।

चीरिया स्त्री [चीरिका] नीचे देखो (सुर ८, १८८)।

चीरी स्त्री [चीरी] १ वस्त्र-खण्ड, वस्त्र का टुकडा; 'तो तेण नियवत्थचलाउ चीरीउ करेऊण' (सुपा ५८४)। २ क्षुद्र कीट-विशेष, झीगुर (कुमा, दे १, २६)।

चीवट्टी स्त्री [दे] भल्ली, भाला, शस्त्र-विशेष (दे ३, १४)।

चीवर न [चीवर] वस्त्र, सन्यासियों या भिक्षुओं के पहनने का कपडा (सुर ८, १८८, ठा ५, २)।

चीहाडी स्त्री [दे] चीत्कार, चिल्लाहट, पुकार, हाथी की गर्जना या चिंघाडना (सुर १०, १८२)।

चीही स्त्री [दे] मुस्ता का तृण-विशेष (दे ३, १४, ६२)।

चु अक [च्यु] १ मरना, जन्मान्तर में जाना। २ गिरना। भवि. चइस्सामि (कप्प)। संकृ चइऊण, चइत्ता, चइअ (उत्त ६, ठा ८, भग)। कृ. चइयव्व (ठा ३, ३)।

चुअ अक [श्चुत्] झरना, टपकना। चुअइ (हे २, ७७)।

चुअ सक [त्यज्] त्याग करना, परिहार करना; 'एयमट्ठं मिगे चुए' (सूअ १, १, २, १२)।

चुअ वि [च्युत] १ च्युत, मृत, एक जन्म से दूसरे जन्म में अवतीर्ण (भग, महा, ठा ३, १)। २ विनष्ट, 'चुअकलिकलुस' (अजि १८)। ३ भ्रष्ट, पतित (णाया १, ३)।

चुइ स्त्री [च्युति] च्यवन, मरण (राज)।

चुंआरपुर न [चुङ्कारपुर] एक नगर (सम्मत्त १४५)।

चुचुअ पु [दे] शेखर, अवतंस, मस्तक का भूषण (दे ३, २६)।

चुचुअ पुं [चुञ्चुक] १ म्लेच्छ देश-विशेष। २ उस देश में रहनेवाली मनुष्य जाति (इक)।

चुचुण पुं [चुञ्चुन] इभ्य (धनी) जाति-विशेष, एक वैश्य-जाति (ठा ६—पत्र ३५८)।

चुचुणिअ वि [दे] १ चलित, गत। २ च्युत, नष्ट (दे ३, २३)।

चुंचुणिआ स्त्री [दे] गोष्ठी की प्रतिध्वनि। २ रमण, रति, सभोग। ३ इमली का पेड। ४ द्युत-विशेष, मुष्टि-द्यूत। ५ यूका, खटमल, क्षुद्र कीट-विशेष (दे ३, २३)।

चुंचुमालि वि [दे] १ अलस, आलसी, दीर्घसूत्री (दे ३, १८)।

चुंचुलि पु [दे] १ चुंच्चु चोंच। २ चुलुक, पसर, एक हाथ का सपुटाकार (दे ३, २३)।

चुंचुलिअ वि [दे] १ अवधारित, निश्चित। २ न. तृष्णा, लालच, सस्पृहता (हे ३,२३)।

चुंचुलिपूर पुं [दे] चुलुक चुल्लू, पसर (दे ३, १८)।

चुछ वि [दे] परिशोषित, सूखाया हुआ (दे ३, १५)।

चुछिअ वि [दे] सूखा हुआ, परिशोषित, 'चुंछियगल्लं एयं, मा भत्तारं हला कुणसु' (सुपा ३४६)।

चुंट सक [चि] फूल वगैरह को तोड कर इकट्ठा करना। वकृ. चुंटंत (सुपा ३३२)।

चुंटिर वि [दे] चुननेवाला (दे ६, ११६ टी)।

चुढी स्त्री [दे] थोडा पानीवाला अखात जलाशय (णाया १, १—पत्र ३३)।

चुंपालय [दे] देखो चुप्पालय,
'ताव य सेज्जासु ठिओ,
णदगइखेयरो निसासमए।
चुंपालएण पेच्छइ,
निवडंत रयणपज्जलियं'
(पउम २६, ८०)।

चुंब सक [चुम्ब्] चुम्बन करना। चुंबइ (हे ४, २३६)। वकृ. चुंबंत (गा १७६, ५१६)। कवकृ. चुंबिज्जंत (से १, ३२)। संकृ. चुंबिवि (अप) (हे ४, ४३९)। कृ. चुंबिअव्व (गा ४६५)।

चुंबण न [चुम्बन] चुम्बन, चुम्बा चूमा (गा २१३, कप्पू)।

चुंबिअ वि [चुम्बित] १ चुम्बा लिया हुआ, कृत-चुम्बन। २ न. चुम्बन, चुम्बा (दे ६, ९८)।

चुंबिर वि [चुम्बितृ] चुम्बन करनेवाला (भवि)।

चुंभल पु [दे] शेखर, अवतंस, शिरो-भूषण (दे ३, १६)।

चुक्क अक [भ्रंश्] १ चूकना, भूल करना। २ भ्रष्ट होना, रहित होना, वञ्चित होना। ३ सक. नष्ट करना, खण्डन करना। चुक्कइ (हे ४, १७७, षड्), 'सो सव्वविरइवाई, चुक्कइ देसं व सव्वं च' (विसे २६८४)।

[°धारिणी] चामर वीजने या डोलानेवाली स्त्री (सुपा ३३९, सुर १०, १५७)।

चमरी स्त्री [चमरी] चमर-पशु की मादा, सुरही गाय (से ७, ४८, स ४४१, औप, महा)।

चमस पुंन [चमस] चमचा, कलछी, दर्वी (औप, महा)।

चमुक्कार पु [चमत्कार] १ आश्चर्य, विस्मय, 'पेच्छागयसुरकिन्नरचित्तचमुक्कारकारय' (सुर १३, ६७)। २ बिजली का प्रकाश, 'ताव य विज्जुचमुक्कारणंतर चडचडडससद्दो' (सुर २, ११०)।

चमू स्त्री [चमू] १ सेना, सैन्य, लश्कर (आवम)। २ सेना-विशेष, जिसमें ७२९ हाथी, ७२९ रथ, २१८७ घोड़े और ३६४५ पैदल हों ऐसा लश्कर (पउम ५६, ६)।

चम्म न [चर्मन्] छाल, त्वक्, चमडा, खाल (हे १, ३२, स्वप्न ७०, प्रासू १७१)। °किड वि [°किट] चमडे से सीआ हुआ (भग १३, ९)। °कोस, °कोसय पुं [°कोश, °क] १ चमडे का बना हुआ थैला २ एक तरह का चमडे का जूता (ओघ ७२८, आचा २, २, ३, वव ८)। °कोसिया स्त्री [°कोशिका] चमडे की बनी हुई थैली (सूअ २, २)। °खडिअ वि [°खण्डिक] १ चमडे का परिधानवाला। २ सब उपकरण चमडे का ही रखनेवाला (णाया १, १५)। °ग वि [°क] चमडे का बना हुआ चर्ममय (सूअ २, २)। °पक्खि पु [°पक्षिन्] चमडे की पांखवाला पक्षी (ठा ४, ४—पत्र २७१)। °पट्ट पु [°पट्ट] चमडे का पट्टा, वध्रं (विपा १, ६)। °पाय न [°पात्र] चमडे का पात्र (आचा २, ६, १)। °यर पुं [°कर] मोची, चमार (स २ ६, दे २, ३७)। °रयण न [°रत्न] चक्रवर्ती का रत्न-विशेष, जिससे सुबह मे बोये हुए शालि वगैरह उसी दिन पक कर खाने योग्य हो जाते हैं (पव २१२)। °रुक्ख पु [°वृक्ष] वृक्ष-विशेष (भग ८, ३)।

चम्मट्ठि स्त्री [चर्मयष्टि] चर्म-मय यष्टि, चर्म-दण्ड, चमडा लगी हुई छडी (कप्पू)।

चम्मट्ठिअ अक [चर्मयष्टीय्] चर्म-यष्टि की तरह आचरण करना। वकृ. चम्मट्ठिअंत (कप्पू)।

चम्मट्ठिल पु [चर्मास्थिल] पक्षि-विशेष (पण्ह १, १)।

चम्मार पु [चर्मकार] चमार, मोची (विसे २६८८)।

चम्मारय पुं [चर्मकारक] ऊपर देखो (प्राप)।

चम्मिय वि [चर्मित] चर्म से बँधा हुआ, चर्म-वेष्टित (औप)।

चम्मेट्ठ पुं [चर्मेष्ट] प्रहरण-विशेष, चमडे से वेष्टित पाषाणवाला आयुध (पण्ह १, १)।

चम्मेट्ठग पुस्त्री [चर्मेष्टक] शस्त्र-विशेष (राय २१)। स्त्री. °गा (अणु १७५)।

चय सक [त्यज्] छोडना, त्याग करना। चयइ (षड्, हे ४, ८६)। कर्म. चइज्जइ (उव)। वकृ चयत (सुपा ३८८)। संकृ. चइअ, चइउ, चिच्चा, चइऊण, चइत्ता, चइत्ताणं, चइत्तु (कुमा, उत्त १८, महा, उवा, उत्त १)। कृ चइयव्व (सुपा ११६, ४०५, ५२१)।

चय सक [शक्] सकना, समर्थ होना। चयइ (हे ४, ८६)। वकृ चयत (सूअ १, ३, ३, से ६, ५०)।

चय अक [च्यु] मरना, एक जन्म से दूसरे जन्म मे जाना। चयइ (भवि), चयति (भग)। वकृ. चयमाण (कप्प)।

चय पुं [चय] १ शरीर, देह (विपा १, १, उवा)। २ समूह, राशि, ढेर (विसे २२१६, सुपा ५७१, कुमा)। ३ इकट्ठा होना (अणु)। ४ वृद्धि (आचा)।

चय पुं [चय] ईंटो की रचना-विशेष (पिंड २)।

चय पु [च्यव] च्यव जन्मान्तर-गमन (ठा ८, कप्प)।

चयण न [चयन] १ इकट्ठा करना (पव २)। २ ग्रहण, उपादान (ठा २, ४)।

चयण न [त्यजन] त्याग, परित्याग (सट्ठि ३६)।

चयण न [च्यवन] १ मरण, जन्मान्तर-गमन (ठा १—पत्र १६)। २ पतन, गिर जाना। °कप्प पु [°कल्प] १ पतन-प्रकार, चारित्र वगैरह से गिरने का प्रकार। २ शिथिल साधुओं का विहार (गच्छ १, पचभा)।

चयण न [च्यवन] च्युति, भ्रंश, क्षय (तदु ४१)।

चर सक [चर्] १ गमन करना, चलना, जाना। २ भक्षण करना। ३ सेवना। ४ जानना। चरइ (उव, महा)। भूका चरिंसु (गउड)। भवि चरिस्स(पि १७३)। वकृ. चरत, चरमाण (उत्त २, भग, विपा १, १)। संकृ चरिअ, चरिऊण (नाट—मृच्छ १०, आवम)। हेकृ चरिउ, चाराए (ओघ ६५, कस)। कृ चरियव्व (भग ९, ३३)। प्रयो, चारियव्व (पणण १७—पत्र ४९७)।

चर पु [चर] १ गमन, गति। २ वर्तन (दस, आवम ३ दूत, जासूस (पाअ, भवि)।

चर पुं [चर] जंगम प्राणी (कुप्र २४)।

°चर वि [°चर] चलनेवाला (आचा)।

चरंती स्त्री [चरन्ती] जिस दिशा मे भगवान् जिनदेव वगैरह ज्ञानी पुरुष विचरते हो वह (वव १)।

चरग पु [चरक] १ देखो चर = चर। २ सन्यासियो का झुण्ड विशेष, यूथवध घूमने वाले त्रिदण्डियो की एक जाति (भग, गच्छ २)। ३ भिक्षुको की एक जाति (पणण २०)। ४ दश-मशकादि जन्तु (राज)।

चरचरा स्त्री [चरचरा] 'चर-चर' आवाज (स २५७)।

चरड पु [चरट] लुटेरे की एक जाति (धम्म १२ टी, सुपा २३२, ३३३)।

चरण पुन [चरण] १ सयम, चारित्र, 'सम्मत्तनाणचरणा पत्तेय अट्ठअट्ठभेइल्ला' (संबोध २२)। २ आचरण (सूअनि १२४)।

चरण न [चरण] १ सयम, चारित्र, व्रत, नियम (ठा ३, १, ओघ २, विसे १)। २ चरना, पशुओं का तृणादि-भक्षण (सुर २, ३)। ३ पद्य का चौथा हिस्सा (पिंग)। ४ गमन, विहार (णदि, सूअ १, १०, २)। ५ सेवन, आदर (जीव २)। ६ पाद, पाँव

[°पितृ] चाचा, पिता का छोटा भाई (विपा १,३)। °माउया स्त्री [°मातृ] १ छोटी माँ, माता की छोटी सपत्नी, विमाता, सौतेली माँ (उप २६४ टी, णाया १, १, विपा १, ३)। २ चाची, पिता के छोटे भाई की स्त्री (विपा १, ३—पत्र ४०)। °सगय, °सयय पु. [°शतक] भगवान् महावीर के दश मुख्य उपासकों में से एक (उवा)। °हिमवंत पु [हिमवत्] छोटा हिमवान् पर्वत, पर्वत-विशेष (ठा २, ३, सम १२, इक)। °हिमवंतकूड न [°हिमवत्कूट] १ क्षुद्र हिमवान्-पर्वत का शिखर-विशेष। २ पु. उसका अधिपति देव-विशेष (ज ४)। °हिमवतगिरिकुमार पु [°हिमवद्गिरिकुमार] देव-विशेष, जो क्षुद्र हिमवत्कूट का अधिष्ठायक है (जं ४)।

चुल्लग न [दे] सदूक (कुप्र २२७, २२८)।

चुल्लग [दे] देखो चोल्लक (श्राक)।

चुल्लि } स्त्री [चुल्लि, °ल्ली] चूल्हा, जिसमें
चुल्ली } आग रखकर रसोई की जाती है वह (दे १ ८७, सुर २, १०३)।

चुल्ली स्त्री [दे] शिला, पाषाण-खण्ड (दे ३, १५)।

चुल्लुच्छल अक [दे] छलकना, उछलना, 'चुल्लुच्छलेइ ज होइ ऊणय, रित्तय कणकणेइ। भरियाइ ण खुब्भती सुपुरिसविन्नाणभडाई।' (सूअनि ६६ टी)।

चुल्लोडय पु [दे] बड़ा भाई (दे ३, १७)।

चूअ पु [दे] स्तन-शिखा, थन का अग्र भाग, चूची (दे ३, १८)।

चूअ पु [चूत] १ वृक्ष-विशेष, आम्र, आम का गाछ (गउड, भग, सुर ३, ४८)। २ देव-विशेष (जीव ३)। °वडिंसग न [°ावतंसक] सौधर्म विमान-विशेष (राय)। °वडिंसा स्त्री [°ावतंसा] शक्रेन्द्र की एक अग्र-महिषी, इन्द्राणी-विशेष (इक, जीव ३)।

चूआ स्त्री [चूता] शक्रेन्द्र की एक अग्र-महिषी, इन्द्राणी-विशेष (इक, ठा ४, २)।

चूचुअ पुंन [चूचुक] स्तन का अग्र-भाग (प्राकृ ११)।

चूड पुं [दे] चूडा, बाहु-भूषण, वलयावली (दे ३, १८, ७, ५२, ५६, पाम्र)।

चूडा देखो चूला (सुर २, २४२, गउड, णाया १, १, सुपा १०४)।

चूडुल्लअ (अप) देखो चूड (हे ४ ३९५)।

चूर सक [चूरय्, चूर्णय्] खण्ड करना, तोडना, टुकडा-टुकडा करना। चूरेमि (धम्म ६ टी)। भवि चूरइस्स (पि ५२८)। वकृ. चूरंत (सुपा २६१, ५६०)।

चूर (अप) पुंन [चूर्ण] चूर, भुरभुर, 'जिह गिरिसिंगहु पडिअ सिल, अन्नुवि चूरु करेइ' (हे ४, ३३७)।

चूरण देखो चुन्नण (कुप्र २०३)।

चूरिअ वि [चूर्ण, चूर्णित] चूर-चूर किया हुआ, टुकडा-टुकडा किया हुआ (भवि)।

चूरिम पुंन [दे] मिठाई विशेष, चूर्मा लड्डू (पव ४ टी)।

चूल° देखो चूला। °मणि न [°मणि] विद्याधरों का एक नगर (इक)।

चूलअ [दे] देखो चूड (नाट)।

चूला स्त्री [चूडा] १ चोटी, सिर के बीच की केश-शिखा (पाम्र)। २ शिखर, टोच, 'अवि चलइ मेरुचूला' (उप ७२८ टी)। ३ मयूर-शिखा। ४ कुक्कुट शिखा। ५ शेर की केसरा। ६ कुंत वगैरह का अग्र भाग। ७ विभूषण, अलंकार,

'तिविहा य दव्वचूला, सचित्ता मीसगा य अचित्ता। कुक्कुड सीह मोरसिहा, चूलामणि अग्गकुंतादी। चूला विभूसणंति य, सिहरति य होंति एगट्ठा' (निचू १)।

८ अधिक मास। ९ अधिक वर्ष। १० ग्रन्थ का परिशिष्ट (दसचू १)। °कम्म न [°कर्मन्] संस्कार-विशेष, मुण्डन (श्रावम)। °मणि पुंस्त्री [°मणि] १ सिर का सर्वोत्तम आभूषण विशेष, मुकुट-रत्न शिरोमणि (औप, राय)। २ सर्वोत्तम, सर्व-श्रेष्ठ, 'तिलायचूलामणि नमो ते' (धण १)।

चूलिय पु [चूलिक] १ अनार्य देश-विशेष। २ उस देश का निवासी (पण्ह १, १)। ३ स्त्रीन संख्या विशेष, चूलिकांग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (इक, ठा २, ४)। स्त्री °या (राज)।

चूलियंग न [चूलिकाङ्ग] संख्या-विशेष, प्रयुत को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४, जीव ३)।

चूलिया देखो चूला (सम ६६, सुर ३, १२, णदि, निचू १; ठा ४, ४)।

चूव (अप) देखो चूअ (भवि)।

चूह सक [क्षिप्] फेंकना, डालना, प्रेरणा। चूहइ (षड्)।

चे अ [चेत्] यदि, जो, अगर (उत्त १६), 'एवं च कम्मो तित्थ, न चेदचेलोत्ति को गाहो ?' (विसे २५८६)।

चे देखो चय = त्यज्। चेइ, (आचा)। सकृ. चेच्चा (कप्प, औप)।

चे } देखो चि। चेइ चेअइ, चेए, चेअए
चेअ } (षड्)।

चेअ अक [चित्] १ चेतना, सावधान होना, ख्याल रखना। २ सुध आना, स्मरण करना, याद आना। चेयइ (स ५३८)। ३ सक, जानना। ४ अनुभव करना। चेयए (श्रावम)।

चेअ सक [चेतय्] १ ऊपर देखो। २ देना, अर्पण करना, वितरण करना। ३ करना, बनाना, 'जो अतरायं चेएइ' (सम ५१)। चेएइ, चेएसि, चेएमि (आचा)। वकृ. चेते[ए]माण (ठा ५, २—पत्र ३१४, सम ३६)।

चेअ अ [एव] अवधारण सूचक अव्यय, निश्चय बतानेवाला अव्यय (हे २, १८४)।

चेअ न [चेतस्] १ चेत, चेतना, ज्ञान, चैतन्य (विसे १९६१, भग १६)। २ मन, चित्त, अन्तःकरण (दस ५, १, ठा ६, २)।

चेइ पुं [चेदि] देश-विशेष (इक सत्त ६७ टी)। °वइ पु [°पति] चेदि देश का राजा (पिंग)।

चेइ° } पुन [चैत्य] १ चिता पर बनाया
चेइअ } हुआ स्मारक, स्तूप, कबर या कब्र वगैरह स्मृति चिह्न, 'मडयदाहेसु वा मडयथूभियासु वा मडयचेइएसु वा' (आचा २, २, ३)। २ व्यन्तर का स्थान व्यन्तरायतन (भग, उवा, राय, निर १, १, विपा १, १, २)। ३ जिन-मन्दिर, जिन-गृह, अर्हन्मन्दिर (ठा ४, २—पत्र ४३०, पंचभा; पचा १२, महा, द्र ४, २७), 'पडिमं कासी य चेइए रम्मे' (पव ७९)। ४ इष्ट देव की मूर्ति,

चव अक [च्यु] मरना, जन्मान्तर में जाना। चवइ (हे ४, २३३)। संक्र. चविऊण (प्राकृ)। कृ. चवियव्व (ठा ३, ३)।

चव पु [च्यव] मरण, मौत, 'मन्नंता अपुण-च्चवं, (उत्त ३, १४)।

चवचव पुं [चवचव] 'चव-चव' आवाज, ध्वनि-विशेष (ओघ २८६ भा)।

चवण न [च्यवन] १ मरण, जन्मान्तर-प्राप्ति (सुर २, १३६, ७, ८, द ४)। २ पतन, गिर जाना (बृह १)।

चवल वि [चपल] १ चचल, अस्थिर (सुर १२, १३८, प्रासू १०३)। २ आकुल, व्याकुल (औप)। ३ पुं रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३६)।

चवल पु [दे] अन्न-विशेष, बोड़ा (श्रा १८)।

चवलय पु [दे] धान्य-विशेष, गुजराती में 'चोळा' (पव १५४)।

चवला स्त्री [चपला] विद्युत्, बिजली (जीव ३)।

चविअ वि [च्युत] मृत, जन्मान्तर-प्राप्त (कुमा २, २६)।

चविअ वि [कथित] उक्त, कहा हुआ (भवि)।

चविआ स्त्री [चविका] वनस्पति विशेष (पएण १७—पत्र ५३१)।

चविडा, चविला, चवेला स्त्री [चपेटा] तमाचा, थप्पड़ (हे १, १४६, कुमा)।

चवेडी स्त्री [दे] १ श्लिष्ट कर-संपुट। २ संपुट, समुद्र, डिब्बा (दे ३, ३)।

चवेण न [दे] वचनीय, लोकापवाद (दे ३, ३)।

चवेला देखो चविडा (प्राकृ)।

चव्व सक [चर्व] चबाना (सक्षि ३४)।

चव्व (शौ) देखो चव = चर्च्। चव्वदि (प्राकृ ९३)।

चव्वक्किअ वि [दे] धवलित, चूने से पोता हुआ; 'चव्वक्किया य चुन्नेण नासिया (सुपा ४५५)।

चव्वण न [चर्वण] चबाना (दे ७, ८२)।

चव्वाइ देखो चव्वाग (राज)।

चव्वाक, चव्वाग पुं [चार्वाक] नास्तिक, बृहस्पति का शिष्य, लोकायतिक (प्रबो ७८, राज)।

चव्वागि वि [चार्वाकिन्] १ चबानेवाला। २ दुर्व्यवहारी (वव ३)।

चव्विय वि [चर्वित] चबाया हुआ (सुर १३, १२३)।

चस सक [चष्] चखना, आस्वाद लेना। वक्र. चसद (शौ) (रंभा)। हेक्र. चसिदुं (शौ) (रंभा)।

चसग, चसय पुं [चषक] १ दारू पीने का प्याला (जं ५, पाअ)। २ पान-पात्र, प्याला (सुर २, ११, पउम ११३, १०)। ३ पक्षि-विशेष (दे ६, १४५)।

चहुतिआ स्त्री [दे] चुटकी, चुटकीभर, 'जोग-चुएणवहुतियामित्तपक्खेवेण' (काल)।

चहुट्ट अक [दे] चिपकना, चिपटना, लगना; गुजराती में 'चोंटवु', 'रे मूढ तुह अकज्जे लीलाइ चहुट्टए जहा चित्तं' (संवेग १६)। चहुट्टइ (कुप्र २४६)।

चहुट्ट वि [दे] १ निमग्न, लीन (दे ३, २, वज्जा ३८), 'मण-ममरो-पुण तीए मुहारविंदे-चिय चहुट्टो' (उप ७२८ टी)।

चहुट्ट, चहुट्टिय वि [दे] चिपका हुआ, लगा हुआ (धर्मवि १४१, उप ७२८ टी; कुप्र २७)।

चहोड पुं [दे] एक मनुष्य-जाति (भवि)।

चाइ वि [त्यागिन्] १ त्याग करनेवाला, छोड़नेवाला। २ दानी, दान देनेवाला, उदार (सुर १, २१७, ४, ११८)। ३ निःसंग, निरीह, संयमी (आचा)।

चाइय वि [त्याजित] छोड़वाया हुआ (धर्मवि ८)।

चाइय वि [शकित] जो समर्थ हुआ हो (पउम ७, १२१, सूअ १, १४), 'सव्वोवा-एहि जया घेत्तूण न चाइया सुरिंदेणं। ताहे ते नेरइया' (पउम ११८, २४)।

चाउअंगी स्त्री [चार्वङ्गी] सुन्दर अंगवाली स्त्री (प्राकृ २६)।

चाउंड पु [चामुण्ड] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लङ्का-पति (पउम ५, २६३)।

चाउकाल न [चतुष्काल] चार वक्त, चार समय (विसे २५७६)।

चाउक्कोण वि [चतुष्कोण] चार कोनावाला, चतुरस्र (जीव ३)।

चाउग्घंट, चाउघंट वि [चतुर्घण्ट] चार घंटावाला, चार घण्टाओं से युक्त (णाया १, १, भग ६, ३३, निर १)।

चाउज्जाम न [चातुर्याम] चार महाव्रत, साधु-धर्म—अहिंसा, सत्य, अस्तेय और अपरि-ग्रह ये चार साधु-व्रत (णाया १, ७, ठा ४, १)।

चाउज्जाय न [चातुर्जात] दालचीनी, तमा-लपत्र, इलायची और नागकेसर (उप पृ १०६, महा)।

चाउत्थिग देखो चाउत्थिय (उत्तनि ३)।

चाउत्थिय पुं [चातुर्थिक] रोग विशेष, चौथे-चौथे दिन पर होनेवाला ज्वर, चौथिया बुखार (जीव ३)।

चाउद्दसिया स्त्री [चतुर्दशिका] तिथि-विशेष, चतुर्दशी, चौदस, 'हीणपुएणचाउद्दसिया' (उवा)।

चाउद्दसी स्त्री [चतुर्दशी] ऊपर देखो (भग, जो ३)।

चाउद्दह (अप) त्रि. व. [चतुर्दशन्] चौदह, १४ (पिंग)।

चाउद्दिसिं देखो चउ-द्दिसिं (महा, सुपा ३६५)

चाउप्पाय न [चतुष्पाद] चतुर्विध, चार प्रकार का (उत्त २०, २३, सुख २०, २३)।

चाउमास, चाउम्मास पुंन [चातुर्मास] १ चौमासा, जैसे आषाढ़ से लेकर कार्तिक तक के चार महीने (उप पृ ३६०, पंचा १७)। २ आषाढ़, कार्तिक और फाल्गुन मास की शुक्ल चतुर्दशी, 'पक्खिए चाउमासे' (लहुअ १६)।

चाउम्मासिअ वि [चातुर्मासिक] १ चार मास सम्बन्धी, जैसे आषाढ़ से लेकर कार्तिक तक के चार महीने से सम्बन्ध रखनेवाला (णाया १, ५, सुर १४, २२८)। २ न. आषाढ, कार्तिक और फाल्गुन मास की शुक्ल चतुर्दशी तिथि, पर्व-विशेष (श्रा ४७, अजि ३८)।

चाउम्मासी स्त्री [चातुर्मासी] चार मास, चौमासा, आषाढ से कार्तिक, कार्तिक से फाल्गुन और फाल्गुन से आषाढ तक के चार महीने (पउम ११८, ५८)।

चोणअ न [चोदन] प्रेरण, प्रेरणा (भत्त ३६, उत्त २८)।

चोइअ वि [चोदित] प्रेरित (स १५, सुपा १५०, औप, महा)।

चोए सक [चोदय्] १ प्रश्न करना। २ सीखना, शिक्षण देना। चोएइ, चोएह (ववा१)।

चोक्क [दे] देखो चुक्क = (दे) (महा)।

चोक्ख वि [दे] चोखा, शुद्ध, शुचि, पवित्र, (णाया १, १, उप १४२ टी, बृह १, भग ६, ३३, राय, औप)।

चोक्खलि वि [दे] चोखाई करनेवाला, शुद्धता वाला (पिंड ६०३)।

चोक्खा स्त्री [चोक्षा] परिव्राजिका-विशेष, इस नाम की एक सन्यासिनी (णाया १,८)।

चोज्ज न [दे] आश्चर्य, विस्मय (दे ३, १४, सुर ३, ४, सुपा १०३, सट्ठि १५६, महा)।

चोज्ज न [चोर्य] चोरी, चोर-कर्म, 'तहेव हिंसं अलियं, चोज्जं अबमसेवण' (उत्त ३५, ३, णाया १, १८)।

चोज्ज न [चोद्य] १ प्रश्न, पृच्छा। २ आश्चर्य, अद्‍भुत। २ वि. प्रेरणा-योग्य (गा ४०६)।

चोट्टी स्त्री [दे] चोटी, शिखा (दे ३, १)।

चोड्डु न [दे] वृन्त, फल और पत्ती का बन्धन, (विक्र २८)।

चोढ पुं [दे] बिल्व, वृक्ष-विशेष, बेल का पेड (दे ३, १६)।

चोण्ग न [दे] १ कलह, झगडा (निचू २०)। २ काष्ठानयन आदि जघन्य कर्म (सूअ २, २)।

चोत्त } पुंन [दे] प्रतोद, प्राजन-दण्ड,
चोत्तअ } चाबुक (दे ३,१६, पात्र)।

चोद [दे] देखो चोय (पण्ह २, ५—पत्र १५०)।

चोदग देखो चोअअ (ओघ ४ भा)।

चोदणा स्त्री [चोदना] प्रेरणा, किसी प्रभावशाली व्यक्ति की ओर से कुछ कहने या करने के लिए होनेवाला सकेत (धर्मसं १२४०)।

चोप्पड सक [म्रक्ष्] स्निग्ध करना, घी तेल वगैरह लगाना। चोप्पडइ (हे ४, १९१)। वकृ. चोप्पडमाण (कुमा)।

चोप्पड न [म्रक्षण] घी, तैल वगैरह स्निग्ध वस्तु, 'गेहव्वयस्स जोग्गं किंचिवि कणचोप्पडाईयं' (सुपा ४३०)।

चोप्पडिय वि [दे] चुपडा हुआ (पव ४)।

चोप्पाल पु [चतुष्पाल] सूर्याभ देव की आयुध-शाला (राय ६३)।

चोप्पाल न [दे] मत्तवारण, वरण्डा (जं २)।

चोफुल्ल वि [दे] स्निग्ध, स्नेहवाला, प्रेम-युक्त, प्रेमी (दे ३, १५)।

चोय } न [दे] त्वचा, छाल (पण्ह २,
चोयग } ५—पत्र १५० टी)। २ आम वगैरह का छूछा (निचू १५, आचा २, १, १०)। ३ गन्ध द्रव्य-विशेष (अणु, जीव १, राय)।

चोयग देखो चोअअ (णदि)।

चोयणा स्त्री [चोदना] प्रेरणा (स १५, उप ६४८ टी)।

चोयय पुं [दे] फल-विशेष (अणु १५४)।

चोयालीस स्त्रीन [चतुश्चत्वारिंशत्] चौवालीस, ४४ (चेइय ३६२)।

चोर पुं [चोर] तस्कर, दूसरे का धन चुरानेवाला (हे ३, १३४, पण्ह १, ३)। °कीड पुं [°कीट] विष्ठा मे उत्पन्न होता कीट (जी १७)।

चोरकार पुं [चौर्यकार] चोर, तस्कर, 'चोरकारकर ज थूलमदत्त तय वज्जे' (सुपा ३३४)।

चोरग वि [चोरक] १ चुरानेवाला। २ पुंन वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३४)।

चोरण न [चोरण] १ चोरी, चुराना (सुर ८, १२२)। २ वि चोर, चोरी करनेवाला (भवि)।

चोरली स्त्री [दे] श्रावण मास की कृष्ण चतुर्दशी (दे ३, १६)।

चोराग पुं [चोराक] सनिवेश विशेष, इस नाम का एक छोटा गाँव (आवम)।

चोराव सक [चोरय्] चोरी करना। चोरावेइ (प्राकृ ६०)।

चोरासी } देखो चउरासी (पि ४३६,
चोरासीइ } ४४६)।

चोरिअ न [चौर्य] चोरी, अपहरण (हे २, १०७, ठा १, १; प्रासू ६५, सुपा ३७६)।

चोरिअ वि [चौरिक] १ चोरी करनेवाला (पव ४१)। २ पुं. चर, जासूस (पण्ह १,१)।

चोरिअ वि [चोरित] चुराया हुआ (विसे ८५७)।

चोरिआ स्त्री [चौर्य, चौरिका] चोरी, अपहरण (गा २०६, पड्; हे १, ३५, सुर ६, १७८)।

चोरिक्क न [चौरिक्य] ऊपर देखो (पण्ह १, ३)।

चोरी स्त्री [चौरी] चोरी, अपहरण (श्रा २७)।

चोल वि [दे] १ वामन, कुब्ज (दे ३, १८)। २ पु. पुरुष चिह्न, लिङ्ग (पव ६१)। ३ न. गन्ध-द्रव्य-विशेष, मजिष्ठा (उर ६, ४)। °पट्ट पुं [°पट्ट] जैन मुनि का कटि-वस्त्र (ओघ ३४)। °य पुं [°ज] मजीठ का रग (उर ६, ४)।

चोल पु [चोल] देश-विशेष, द्रविड और कलिङ्ग के बीच का देश (पिंग, सण)।

चोलअ न [दे] कवच, वर्म (नाट)।

चोलअ } न [चौल, °क] संस्कार-विशेष,
चोलग } मुण्डन, 'विहिणा चूलाकम्मं बालाणं चोलयं नाम' (श्रावम, पण्ह १, २)।

चोलुक्क देखो चालुक्क (ती ५)।

चोलोयणग } न [चूलापनयन] १ चूलोप-
चोलोवणअ } नयन, सस्कार-विशेष, मुंडन
चोलोवणयण } (णाया १, १—पत्र ३८)। २ शिखा-धारण, चूडा-धारण (भग ११, ११—पत्र ५४४, औप)।

चोल्लक [दे] देखो चोल्लग (पण्ह २, ४)।

चोल्लक } पु न [दे] १ भोजन (उप पृ १२,
चोल्लग } श्रावम, उत्त ३)। २ वि. क्षुद्रक, छोटा, लघु (उप पृ ३१)।

चोल्लय पुंन [दे] थैला, बोरा, गोन, 'पर मम ममक्ख तोलेह चोल्लए', 'राइणा उक्केल्लावियाई चोल्लयाइ' (महा)।

चोवत्तरि स्त्री [चतुःसप्तति] सत्तर और चार, ७४ (पव ५, १८)।

चोवालय पुन [चतुर्द्वार] चोवारा, ऊपर का शयन-गृह, 'इओ य एगा देवी हत्थिमिठे आसत्ता। णवरं हत्थी चों-(? चो)वालयाओ हत्थेण अवतारेइ' (दस २, १० टी)।

चोव्वड देखो चोप्पड = म्रक्ष्। चोव्वडइ (पड्)।

चारणिआ स्त्री [चारणिका] गणित-विशेष (ओघ २१ टी)।

चारभड पुं [चारभट] शूर पुरुष, लड़वैया, सैनिक (पएह १, २, १, ३, बृह १)।

चारभड पु [चारभट] लुटेरा (पिंड ५७६)।

चारय देखो चारग (सुपा २०७, ल १५)।

चारवाय पु [दे] ग्रीष्म ऋतु का पवन (दे ३, ६)।

चारहड देखो चारभड (धम्म १२ टी, भवि)।

चारहडी स्त्री [चारभटी] शौर्यवृत्ति, सैनिक-वृत्ति (सुपा ४४१, ४४२, हे ४, ३६६)।

चारागार न [चारागार] कैदखाना, जेलखाना (सुर १६, १७)।

चारि स्त्री [चारि] चारा, पशुओं के खाने की चीज, घास आदि (ओघ २३८)।

चारि वि [चारिन्] १ प्रवृत्ति करनेवाला। (विसे २४३ टी, उव, आचा)। २ चलने वाला, गमन शील (औप, कप्पू)।

चारिअ वि [चारित] १ जिसको खिलाया गया हो वह (से २, २७)। २ विज्ञापित, जताया हुआ (पएण १७—पत्र ४६७)।

चारिअ पु [चारिक] १ चर पुरुष, जासूस (पएह १, २, पउम २६, ६५), 'चोरुत्ति चोरिउत्ति य होइ जओ परदारगामित्ति' (विसे २३७३)। २ पचायत का मुखिया पुरुष, समुदाय का अगुआ (स ४०६)।

चारित्त देखो चरित्त = चारित्र (ओघ ६ भा, उप ६७७ टी)।

चारित्ति देखो चरित्ति (पुप्फ १५९)।

चारियव्व देखो चर = चर्।

चारिया स्त्री [चर्या] १ आचरण, इधर-उधर गमन, जीविका। २ चेष्टा (उत्त १६, ८१, ८२, ८४, ८५)।

चारी स्त्री [चारी] देखो चारि = चारि (स ४८७, ओघ २३८ टी)।

चारु वि [चारु] १ सुन्दर, शोभन, प्रवर (उवा, औप)। २ पु तीसरे जिनदेव का प्रथम शिष्य (सम १५२)। ३ न. प्रहरण-विशेष, शस्त्र-विशेष (जीव १, राय)।

चारुइणय पुं [चारुकिनक] १ देश-विशेष। २ वि. उस देश का निवासी (औप, भत)। स्त्री. °णिया (औप)।

चारुणय पुं [चारुनक] ऊपर देखो (औप)। स्त्री. °णिया (औप, णाया १, १)।

चारुवच्छि पु व. [चारुवत्सि] देश-विशेष (पउम ६८, ६४)।

चारुसेणी स्त्री [चारुसेनी] छन्द-विशेष (पिंग)।

चाल सक [चालय्] १ चलाना, हिलाना, कँपाना। २ विनाश करना। चालेइ (उव, स ४७४, महा)। कर्म. चालिज्जइ (उव)। वकृ. चालत, चालेमाण (सुपा २२४, जीव ३)। कवकृ चालिज्जमाण (णाया १, १)। हेकृ चालित्तए (उवा)।

चालण न [चालन] १ चलाना, हिलाना (रभा)। २ विचार (विसे १००७)।

चालण न [चालन] शका, प्रश्न, पूर्वपक्ष (चेइय २७१)।

चालणा स्त्री [चालना] शंका, पूर्वपक्ष, आक्षेप (अणु, बृह १)।

चालणिया स्त्री [चालनिका] नीचे देखो (उप १३४ टी)।

चालणी स्त्री [चालनी] आखा, छानने का पात्र चलनी या छलनी (आवम)।

चालवास पु [दे] सिर का भूषण-विशेष (दे ३, ८)।

चालिय वि [चालित] चलाया हुआ, हिलाया हुआ; 'पुप्फवईए चालियाए सियसकेयपडागाए' (महा)।

चालिर वि [चालयितृ] १ चलानेवाला। २ चलनेवाला, 'खरपवणचाडुचालिरदवग्गिस-रिसेण पेम्मेण' (वज्जा ७०)।

चाली स्त्री [चत्वारिंशत्] चालीस, ४० (उवा)।

चालीस स्त्रीन [चत्वारिंशत्] चालीस, ४० (महा, पिंग) स्त्री. °सा (ति ५)।

चालुक पुंस्त्री [चौलुक्य] १ चालुक्य वश में उत्पन्न। २ पुं. गुजरात का प्रसिद्ध राजा कुमारपाल (कुमा)।

चाव सक [चर्व्] चबाना। कृ. चावयव्व (उत्त १६, ३८)।

चाव पुं [चाप] धनुष, कार्मुक (स्वप्न ५५)।

चावल न [चापल] चपलता, चचलता (अभि २४१)।

चावल्ल न [चापल्य] ऊपर देखो (स ५२६)।

चावाली स्त्री [चावाली] ग्राम विशेष, इस नाम का एक गाँव (आवम)।

चाविय वि [चर्वित] चबाया हुआ (धर्मवि ४६, १४६)।

चाविय वि [च्यावित] मरवाया हुआ (पएह २, १)।

चावेडी स्त्री [चापेटी] विद्या-विशेष, जिसमे दूसरे को तमाचा मारने पर बीमार आदमी का रोग चला जाता है (वव ५)।

चावेयव्व देखो चाव = चर्व्।

चावोण्णय न [चापोन्नत] विमान-विशेष, एक देव-विमान (सम ३६)।

चास पु [चाष] पक्षि-विशेष, स्वर्ण-चातक, पपीहा, लहटोरवा (पएह १, १, पएण १७, णाया १, १, ओघ ८४ भा, उर १, १४)।

चास पु [दे] चास, हल-विदारित भूमि रेखा, खेती (दे ३, १)।

चाह सक [वाञ्छ्] १ चाहना, वाछना। २ अपेक्षा करना। ३ याचना। चाहइ, चाहसि (भवि, पिंग)।

चाहिणी स्त्री [चाहिनी] हेमाचार्य की माता का नाम (कुप्र २०)।

चाहिय वि [वाञ्छित] १ वाञ्छित, अभि-लषित। २ अपेक्षित। ३ याचित (भवि)।

चाहुआण पु [चाहुयान] १ एक प्रसिद्ध क्षत्रिय-वश, चौहान वश। २ पुस्त्री. चौहान वश मे उत्पन्न (सुपा ५५६)।

चि देखो चिण। कर्म चिव्वइ, चिम्मइ, चिज्जंति (हे ४, २४३, भग)।

चिअ अ [एव] निश्चय को बतलानेवाला अव्यय, 'अणुबद्ध त चिअ कामिणीण' (हे २, १८४, कुमा, गा १६, ४६, द १)।

चिअ अ [इव] १—२ उपमा और उत्प्रेक्षा का सूचक अव्यय (प्राप्र)।

चिअ वि [चित] १ इकट्ठा किया हुआ (भग)। २ व्याप्त (सुपा २४१)। ३ पुष्ट, मासल (उप ८७५ टी)।

चिअ न [चित] ईंट आदि का ढेर (अणु १५४)।

चिअ देखो चित्त = चित्त प्राकृ २६)।

'अतेउरपुरबलवाहणेहि
वरसिरिघरेहि मुणिवसभा ।
कामेहि बहुविहेहि य
छंदिज्जतावि नेच्छंति' (उत्त)।
संकृ. छंदिअ (दस १०)।

छंद पुन [छन्द] १ इच्छा, मरजी, अभिलाषा (आचा, गा २०२, स २३६, उव, प्रासू ११)। २ अभिप्राय, आशय (आचा, भग)। ३ वशता, अधीनता (उत्त ४, हे १, ३३)। °चारि वि [°चारिन्] स्वच्छन्दी, स्वैरी (उप ७६८ टी)। °इत्त वि [°वत्] स्वैरी (भवि)। °णुवत्तण न [°नुवर्त्तन] मरजी के अनुसार बरतना (प्रासू १४)। °णुवत्तय वि [°नुवर्त्तक] मरजी का अनुसरण करनेवाला (णाया १, ३)।

छंद पुन [छन्दस्] १ स्वच्छन्दता, स्वैरिता (उत्त ४)। २ अभिलाष, इच्छा। ३ आशय, अभिप्राय (सूअ १, २, २, आचा, हे १, ३३)। ४ छन्द-शास्त्र (सुपा २८७, औप)। ५ वृत्त, छन्द (वज्जा ४)। °ण्णुय वि [°ज्ञ] छन्द का जानकार (गउड)।

छंदण पुन [छादन] ढकना, ढक्कन (राय ६६)।

छंदण न [छन्दन] निमन्त्रण (पिंड ३१०)।

छंदण न [वन्दन] वन्दन, प्रणाम, नमस्कार (गुभा ४)।

छंदणा स्त्री [छन्दना] १ निमन्त्रण (पंचा १२)। २ प्रार्थना (बृह १)।

छंदा स्त्री [छन्दा] दीक्षा का एक भेद, अपने या दूसरे के अभिप्राय-विशेष से लिया हुआ सन्यास (ठा २, २, पंचभा)।

छंदिअ वि [छन्दित] अनुज्ञात, अनुमत (ओघ ३८०)। २ निमन्त्रित (निचू २)।

छंदो° देखो छंद = छन्दस् (आचा, अभि १२६)।

छक्क वि [षट्क] छक्का, छ का समूह, 'अतररिउछक्काअक्कता (सुपा ५१६, सम ३५)।

छग देखो छ = षष् (कम्म ४)।

छग न [दे] पुरीष, विष्ठा (पण्ह १, ३—पत्र ५४, ओघ ७२)।

छग देखो छक्क (पव २७१)।

छगण न [स्थगन] पिधान, ढकना (वव ४)।

छगण न [दे] गोमय, गोबर (उप ५६७ टी, पंचा १३, निचू १२)।

छगणिया स्त्री [दे] गोइंठा, कडा (अनु ५)।

छगल पुस्त्री [छगल] छाग, अज, बकरा (पण्ह १,१, औप)। स्त्री °ली (दे २,८४)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (ठा १०)।

छग्ग देखो छक्क (द ११)।

छग्गुरु पु [षड्गुरु] १ एक सौ और अस्सी दिनो का उपवास। २ तीन दिनो का उपवास (ठा २, १)।

छच्छुंदर पुन [दे] छछुंदर, मूसे या चूहे की एक जाति (स १६)।

छज्ज अक [राज्] शोभना, चमकना। छज्जइ (हे ४, १००)।

छज्जिअ वि [राजित] शोभित, अलंकृत (कुमा)।

छज्जिआ स्त्री [दे] पुष्प-पात्र, चंगेरी (स ३३४)।

छट्टा [दे] देखो छटा (षड्)।

छट्ठ वि [षष्ठ] १ छठवाँ (सम १०४, हे १, २६५)। २ न. लगातार दो दिनो का उपवास (सुर ४, ५५)। °क्खमण न [°क्षमण, °क्षपण] लगातार दो दिनो का उपवास (श्रत ६, उप पृ ३४३)। °क्खमय पु [°क्षमक, °क्षपक] दो-दो दिनो का बराबर उपवास करनेवाला तपस्वी (उप ६२२)। °भत्त न [°भक्त] लगातार दो दिनो का उपवास (धर्म ३)। °भत्तिय वि [°भक्तिक] लगातार दो दिनो का उपवास करनेवाला (पण्ह १, १)।

छट्ठी स्त्री [षष्ठी] १ तिथि-विशेष (सम २६)। २ विभक्ति-विशेष, संबन्ध-विभक्ति (णदि, हे १, २६५)। ३ जन्म के बाद किया जाता उत्सव-विशेष (सुपा ५७८)।

छड सक [आ + रुह्] आरूढ होना, चढना। छडइ (षड्)।

छडक्खर पुं [दे] स्कन्द, कार्त्तिकेय (दे २, २६)।

छडछडा स्त्री [छटच्छटा] सूर्प (सूप) वगैरह से अन्न को झाडते समय होता एक प्रकार का अव्यक्त आवाज (णाया १, ७—पत्र ११६)।

छडा स्त्री [दे] विद्युत, बिजली (दे ३, २४)।

छडा स्त्री [छटा] १ समूह, परम्परा (सुर ४, २४३, वा १२)। २ छींटा, पानी की बूँद (पाअ)।

छडाल वि [छटावत्] छटावाला (पउम ३५, १८)।

छडिय वि [छटित] सूप आदि मे छँटा या फटका हुआ (तदु २६, राय ६७)।

छड्ड सक [छर्दय्, मुच्] १ वमन करना। २ छोडना, त्याग करना। ३ डालना, गिराना। छड्डइ (हे ४, ३६, ४, ६१, महा, उव)। कर्म. छड्डिज्जइ (पि २६१)। वकृ छड्डुत (भाग)। संकृ छड्डेउ भूमीए खीरं जह पियइ दुट्ठमज्जारी' (विसे १४७१)। छड्डित्तु (वव २)।

छड्डण न [छर्दन, मोचन] १ परित्याग, विमोचन (उप १७६, ओघ ८६)। २ वमन, वान्ति (विपा १, ८)।

छड्डय वि [छर्दक] छोडनेवाला (कुप्र ३१७)। २ पु. एक सेठ का नाम (कुप्र ३६६)।

छड्डवण न [छर्दन, मोचन] १ छुडवाना, मुक्त करवाना। २ वमन कराना। ३ वि. वमन करानेवाला। ४ छुडानेवाला (कुमा)।

छड्डवय वि [छर्दक, मोचक] त्याग करानेवाला, त्याजक (दे २, ६२)।

छड्डावण देखो छड्डवण (सुपा ५१७)।

छड्डाविय वि [छर्दित, मोचित] १ वमन कराया हुआ। २ छुडवाया हुआ (श्रावम, बृह १)।

छड्डि स्त्री [छर्दि] वमन का रोग (षड्, हे २, ३६)।

छड्डि स्त्री [छर्दिस्] छिद्र, दूषण, 'जो जग्गइ परछड्डि, सो नियछड्डीए कि सुयइ' (महा)।

छड्डिय, छड्डियल्लिय } वि [छर्दित, मुक्त] १ वान्त, वमन किया हुआ। २ त्यक्त, मुक्त (विसे २६०६, दे १, ४६, औप)।

छण सक [क्षण्] हिंसा करना। छणे (आचा)। प्रयो. छणावेइ (पि ३१८)।

छण सक [क्षण्] छेदन करना। छणह (सूअ २, १, १७)।

छण पुं [क्षण] १ उत्सव, मह (हे २, २०)। २ हिंसा (आचा)। °चंद पुं [°चन्द्र] शरद

चिक्क वि [दे] १ स्तोक, थोड़ा, अल्प। २ न. क्षुत, छींक (षड्)।

चिक्कण वि [चिक्कण] चिकना, स्निग्ध (पण्ह १,१, सुपा ११)। २ निबिड, घना, 'जं पाव चिक्कणं तए बद्धं' (सुर १४, २०६)। ३ दुर्भेद्य, दुःख से छूटने योग्य (पण्ह १, १)।

चिक्का स्त्री [दे] १ थोडी चीज। २ हलकी मेघ-वृष्टि, सूक्ष्म छींटा (दे ३, २१)।

चिक्कार पु [चीत्कार] चिल्लाहट, चिंघाड (सण)।

चिक्किग देखो चिक्कण (कुमा)।

चिक्खअग वि [दे] सहिष्णु, सहन करनेवाला (षड्)।

चिक्खल्ल पु [दे] कर्दम, पंक, कीच (दे ३, ११, हे ३, १४२, पण्ह १, १)।

चिक्खल्लय न [चिक्खल्लक] काठियावाड का एक नगर (ती २)।

चिक्खिल्ल, चिखल्ल, चिखिल्ल [दे] देखो चिक्खल्ल (गा ६७, ३२४, ४४५, ६८४, औप)।

चिगिचिगाय अक [चिकचिकाय्] चकचकाट करना, चमकना। वकृ. चिगिचिगायत (सुर २, ८६)।

चिगिच्छग देखो चिइच्छअ (विवे ३०)।

चिगिच्छण न [चिकित्सन] चिकित्सा, इलाज (उप १३५ टी)।

चिगिच्छय देखो चिइच्छअ (स २७८, णाया १, ५—पत्र १११)।

चिगिच्छा स्त्री [चिकित्सा] दवा, प्रतीकार, इलाज (स १७)। °सहिया स्त्री [°संहिता] चिकित्सा-शास्त्र, वैद्यक-शास्त्र (स १७)।

चिच्च वि [दे] १ चिपटी नासिकावाला, बैठी हुई नाकवाला (दे ३, ६)। २ न. रमण, संभोग, रति (दे ३, १०)।

चिच्च वि [त्याज्य] छोड़ने योग्य, परिहरणीय, 'सरकम्माइ पि चिच्चाइं' (सुपा ४६८)।

चिच्चर वि [दे] चिपटी नासिकावाला (दे ३, ६)।

चिच्चा देखो चय = त्यज्।

चिच्चि पुं [चिच्चि] चीत्कार, चिल्लाहट, भयंकर आवाज, 'चिच्चीसर—' (विपा १,२—पत्र २६)।

चिच्चि पुं [दे] हुताशन, अग्नि (दे ३, १०)।

चिट्ठं अ [दे] अत्यन्त, अतिशय (आचा १, ४, २, २)।

चिट्ठ अक [स्था] बैठना, स्थिति करना। चिट्ठइ (हे १, १६)। भूका. चिट्ठिंसु (आचा)। वकृ. चिट्ठत, चिट्ठमाण (कुमा, भग)। संकृ चिट्ठिउं, चिट्ठिऊण, चिट्ठिण, चिट्ठित्ता, चिट्ठित्ताण (कप्प, हे ४, १६, राज, पि)। हेकृ चिट्ठित्तए (कप्प)। कृ चिट्ठणिज्ज, चिट्ठिअव्व (उप २६४ टी, भग)।

चिट्ठ देखो चेट्ठ। वकृ. चिट्ठमाण (पंचा २)।

चिट्ठइत्तु वि [स्थातृ] बैठनेवाला, ठहरनेवाला (भग ११,११, दसा ३)।

चिट्ठण न [स्थान] खड़ा रहना (पव २)।

चिट्ठण न [चेष्टन] चेष्टा, प्रयत्न (हि २२)।

चिट्ठणा स्त्री [स्थान] स्थिति, बैठना, अवस्थान (वृह ६)।

चिट्ठा देखो चेट्ठा (सुर ४, २४५, प्रासू १२५)।

चिट्ठिय वि [चेष्टित] १ जिसने चेष्टा की हो वह (पण्ह १, ३, णाया १, १)। २ न चेष्टा, प्रयत्न, (पण्ह २, ४)।

चिट्ठिय वि [स्थित] १ अवस्थित, रहा हुआ। २ न. अवस्थान, स्थिति (वव २०)।

चिडिग पु [चिटिक] पक्षि-विशेष (पण्ह १, १)।

चिण सक [चि] १ इकट्ठा करना। २ फूल वगैरह तोड़कर इकट्ठा करना। चिणइ (हे ४, २३८)। भूका. चिणिंसु (भग)। भवि. चिणिहिइ (हे ४, २४३)। कर्म चिणिज्जइ (हे ४, २४२)। संकृ. चिणिऊण, चिणेऊण (षड्)।

चिण देखो चण (श्रा १८)।

चिण देखो चित्त (प्राकृ २६)।

चिणिअ वि [चित] इकट्ठा किया हुआ (सुपा ३२३, कुमा)।

चिणोट्ठी स्त्री [दे] गुंजा, घुंघची, लाल रत्ती, गुजराती में 'चणोठी' (दे ३, १२)।

चिण्ण वि [चीर्ण] १ आचरित, अनुष्ठित (उत्त १३)। २ अंगीकृत, आदृत (उत्त ३१)। ३ विहित, कृत (उत्त १३)।

चिण्ह न [चिह्न] निशानी, लाञ्छन (हे २, ५०, गउड)।

चित्त सक [चित्रय्] चित्र बनाना, तसवीर खींचना। चित्तेइ (महा)। कवकृ चित्तिज्जत (उप पृ ३४१)।

चित्त न [चित्त] १ मन, अन्तःकरण, हृदय (ठा ४, १, प्रासू ६१, १५५)। २ ज्ञान, चेतना (आचा)। ३ बुद्धि, मति (अव ४)। ४ अभिप्राय, आशय (आचा)। ५ उपयोग, ख्याल (अणु)। °ण्णु वि [°ज्ञ] दिल का जानकार (उप पृ १७६)। °निवाइ वि [°निपातिन्] अभिप्राय के अनुसार वरतनेवाला (आचा)। °मंत वि [°वत्] सजीव वस्तु (सम ३६, आचा)।

चित्त देखो चइत्त = चैत्र (रभा, जं २, कप्प)।

चित्त न [चित्र] १ छवि, आलेख्य, तसवीर (सुर १, ८६, स्वप्न १३१)। २ आश्चर्य, विस्मय (उत्त १३)। ३ काष्ठ-विशेष (अनु ५)। ४ वि विलक्षण, विचित्र (गा ६१२, प्रासू ४२)। ५ अनेक प्रकार का, विविध, नानाविध (ठा १०)। ६ अद्भुत, आश्चर्यजनक (विपा १, ६, कप्प)। ७ कबरा, चितकबरा (णाया १, ८)। ८ पुं एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६७)। ९ पर्वत-विशेष (पण्ह १, ५—पत्र ६४)। १० चित्रक, चीता, श्वापद विशेष (णाया १, १—पत्र ६५)। ११ नक्षत्र-विशेष, चित्रा नक्षत्र, 'हत्थो चित्तो य तहा, दस वुड्ढिकराइं नाणस्स' (सम १७)। °उत्त पु [°गुप्त] भरत क्षेत्र के एक भावी जिनदेव (सम १५४)। °कणगा स्त्री [°कनका] देवी-विशेष, एक विद्युत्कुमारी देवी (ठा ४, १)। °कम्म न [°कर्मन्] आलेख्य, छवि, तसवीर (गा ६१२)। °कर देखो °गर (अणु)। °कह वि [°कथ] नाना प्रकार की कथाएँ कहनेवाला (उत्त ३)। °कूड पु [°कूट] १ सीतानदी के उत्तर किनारे पर स्थित एक वक्षस्कार-पर्वत (जं ४)। २ पर्वत-विशेष (पउम ३३, ६)। ३ न नगर-विशेष, जो आजकल मेवाड में 'चित्तौड' नाम से प्रसिद्ध है (रयण ६)। ४ शिखर-विशेष (ठा २, ३)। °क्खरा स्त्री [°अक्षरा] छन्द-विशेष

छल° देखो छ = षष् (कम्म ६, ६)।

छल सक [छलय्] ठगना, वञ्चना। छलिज्जेज्जा (स २१३)। सक्त. छलिउ, छलिऊण (महा)। कृ. छलिअव्व (श्रा १४)।

छल न [छल] १ कपट, माया (उव)। २ व्याज, बहाना (पाअ, प्रासू ११४)। ३ अर्थ-विघात, वचन-विघात, एक तरह का वचन-युद्ध (सूअ १, १२)। °ायियण न [°ायतन] छल, वचन-विघात (सूअ १, १२)।

छलस वि [षडस्र] षट्-कोण, छ कोणवाला (ठा ८)।

छलसिअ वि [षडस्रिक] छ कोणवाला (सूअ २, १, १५)।

छलण न [छलन] प्रक्षेपण, फेंकना (आचानि ३११)।

छलण न [छलन] ठगाई, वञ्चना (सुर ६, १८१)।

छलणा स्त्री [छलना] १ ठगाई, वञ्चना (ओघ ७८५, उप ७७६)। २ छल, माया, कपट (विसे २५४५)।

छलत्थ वि [षडर्थ] छ अर्थवाला (विसे ६०१)।

छलसीअ स्त्रीन [षडशीति] सख्या-विशेष, अस्सी और छ, ८६ (भग)।

छलसीइ स्त्री. ऊपर देखो (सम ६२)।

छलिअ वि [छलित] १ वञ्चित, विप्रतारित, ठगा हुआ (भवि, महा)। २ शृङ्गार-काव्य। ३ चोर का इशारा, तस्कर-संज्ञा (राज)।

छलिअ वि [दे] विदग्ध, चालाक, चतुर (दे ३, २४, पाअ)।

छलिअ न [छलिक] नाट्य-विशेष (मा ४)।

छलिअ वि [स्खलित] स्खलन-प्राप्त (ओघ ७८६)।

छलिया देखो छालिया, 'चीणाकूरं छलियातक्केण दिन्नं' (महा)।

छलुअ, छलुग, छलूअ पु [षडुलूक] वैशेषिक मत- प्रवर्तक कणाद ऋषि (कप्प, ठा ७; विसे २३०२), 'दव्वाइछप्पयत्थोवएसणाओ छलूउत्ति' (विसे २५०८, २४५५)।

छल्ली स्त्री [दे] त्वचा, वल्कल, छाल (दे ३, २४, जी १३, गा ११५, ठा ४, १, णाया १, १३)।

छल्लुय देखो छलुअ (पि १४८)।

छव देखो छिव। छवेमि (सुपा ५७३)।

छवडी स्त्री [दे] चर्म, चाम, चमडा (दे ३, २५)।

छवि स्त्री [छवि] १ कान्ति, तेज (कुमा, पाअ)। २ अग, शरीर (पण्ह १, १)। चर्म, चमडी (पाअ, जीव ३)। ४ अवयव (पडि)। ५ अगी, शरीरी (ठा ४, १) ६ अलङ्कार-विशेष (अणु)। °च्छेअ पु [°च्छेद] अङ्ग का विच्छेद, अवयव कर्त्तन (पडि)। °च्छेयण न [°च्छेदन] अग-च्छेद (पण्ह १, १)। °त्ताण न [°त्राण] चमडी का आच्छादन, कवच, वर्म (उत्त २)।

छविअ वि [स्पृष्ट] छूआ हुआ (श्रा २७)।

छविपव्व न [छविपर्वन्] औदारिक शरीर (उत्त ५, २४)।

छवीइय वि [छविमत्] १ कान्तिवाला। २ घन, निविड (आचा २, ४, २, ३)।

छव्वग [दे] देखो छव्वय (राज)।

छव्विअ वि [दे] पिहित, आच्छादित (गउड)।

छह (अप) देखो छ + षष् (पि ४४१)।

छहत्तर वि [षट्सप्तत] छिहत्तरवाँ, ७६ वाँ (पउम ७६, २७)।

छहत्तरि स्त्री [षट्सप्तति] छिहत्तर, ७६ (पव १६)।

छाअ देखो छाव (प्राकृ १५)।

छाइअ वि [छादित] आच्छादित, ढका हुआ (पउम ११३, ५४, कुमा)।

छाइल्ल वि [छायावत्] छायावाला, कान्ति-युक्त (हे २, १५६, षड्)।

छाइल्ल पु [दे] १ प्रदीप, दीपक, 'जोइक्खं तह छाइल्लयं च दीवं मुणेजाहि' (वव ७, दे ३, ३५)। २ वि. सदृश, समान, तुल्य। ३ ऊन, अधूरा (दे ३, ३५)। ४ सुरूप, सुडौल, रूपवान् (दे ३, ३५, षड्)।

छाई देखो छाया (षड्)।

छाई स्त्री [दे] माता, देवी, देवता (दे ३, २६)।

छाउमत्थ न [छाद्मस्थ्य] छद्मस्थ-अवस्था (सट्ठि ६ टी)।

छाउमत्थिय वि [छाद्मस्थिक] केवलज्ञान उत्पन्न होने के पहले की अवस्था में उत्पन्न, सर्वज्ञता की पूर्वावस्था से संबन्ध रखनेवाला (सम ११; पण्ण ३६)।

छाओवग वि [छायोपग] १ छाया-युक्त, छायावाला (वृक्षादि) २ पुं. सेवनीय पुरुष, माननीय पुरुष (ठा ४, ३)।

छागल वि [छागल] १ अज-संबन्धी (ठा ५, ३)। २ पुं. अज, बकरा। स्त्री. °ली (पि २३१)।

छागलिय पुं [छागलिक] छागों से आजीविका करनेवाला, अजा-पालक (विपा १, ४)।

छाण न [दे] १ धान्य वगैरह का मलना (दे ३, ३४)। २ गोमय, गोबर (दे ३, ३४, सुर १२, १७, णाया १, ७, जीव १)। ३ वस्त्र, कपडा (दे ३, ३४, जीव ३)।

छाणण न [दे] छानना, गालन, 'भूमीपेहण-जलछाणणाइं जयणाओ होइ न्हाणाइ' (सट्ठि ४५ टी)।

छाणवइ (अप) देखो छण्णवइ (पिंग)।

छाणी स्त्री [दे] १ धान्य वगैरह का मलन। २ वस्त्र, कपडा (दे ३, ३४)। ३ गोमय, गोबर (दे ३, ३४, धर्म २)।

छाणी स्त्री [दे] कंडा, गोबर का इन्धन (पव ३८)।

छाय वि [छात] व्रणाङ्कित, घाववाला (दस ६, २, ७)।

छाय सक [छादय्] आच्छादन करना, ढकना। छायइ (हे ४, २१)। वकृ. छायंत (पउम ७, १४)।

छाय वि [दे. छात] १ बुभुक्षित, भूखा (दे ३, ३३, पाअ; उप ७६८ टी, ओघ २६० भा)। २ कृश, दुर्बल (दे ३, ३३, पाअ)।

छायंसि वि [छायावत्] कान्तिमान्, तेजस्वी (सम १५२)।

छायण न [छादन] आच्छादन, ढकना (पिंग, महा, स ११)।

छायण न [छादन] १ घर की छत, छाजन (पिंड ३०३)। २ ढक्कन, आवरण। ३ वस्त्र, कपडा (सुख ७, १५)।

छायणिया, छायणी स्त्री [दे] डेरा, पड़ाव, छावनी; 'तो तत्थेव ठिमो एसो कुणिता गिहछायणिए' (श्रा १२, महा)।

लम्वा आयुष्यवाला, दीर्घ काल तक रहनेवाला (भग, सूग्र १, ५, १), 'एयाइँ फासाइँ फुसंति वाल, निरंतर तत्थ चिरट्टिईयं' (सूग्र १, ५, २)। °राअ पुं [°रात्र] वहु काल, दीर्घ काल (आचा)।

चिर अक [चिरय्] १ विलम्व करना। २ आलस करना। चिरअदि (शौ) (पि ४९०)।

चिर अ [चिरम्] दीर्घ काल तक, अनेक समय तक (स्वप्न २६, जी ४६)। °तण वि [°तन] पुराना, वहुत काल का (महा)।

चिरंचिय वि [चिरचित] चिरकाल मे उपचित—इकट्ठा किया हुआ या वढ़ा हुआ (पच ५, १६७)।

चिरडी स्त्री [दे] वर्ण-माला, अक्षरावली, 'चिरडिपि अयाणंता लोआ लोएहिं गोरवब्भहिआ' (दे १, ६१)।

चिरड्डिहिल्ल [दे] देखो चिरिड्डिहिल्ल (पाअ)।

चिरमाल सक [प्रति + पालय्] परिपालन करना। चिरमालइ (प्राक्ट ७५)।

चिरया स्त्री [दे] कुटी-झोपडी (दे ३, ११)।

चिररस अ [चिरस्य] वहुत काल तक (उत्तर १७६, कुमा)।

चिराअ देखो चिर = चिरय्। चिरायइ (स १२६)। चिराअसि (मै ६२)। भवि चिराइस्सं (गा २०)। वकृ. चिराअमाण (नाट—मालती २७)।

चिराइय वि [चिरादिक] पुराना, प्राचीन (णाया १, १, औप)।

चिराईय वि [चिरातीत] पुराना, प्राचीन (विपा १,१)।

चिराउ अ [चिरात्] चिर काल से, लम्वे समय से (कुप्र ३६७)।

चिराणअ (अप) वि [चिरन्तन] पुरातन, पुराना, प्राचीन (भवि)।

चिरादण वि [चिरन्तन] ऊपर देखो (वृह ३)।

चिराव अक [चिरय्] १ विलम्व करना। २ आलस करना। ३ सक. विलम्व कराना, रोक रखना चिरावइ (भवि)। चिरावेह (काल), 'मा णे चिरावेहि' (पउम ३,१२६)।

चिराविय वि [चिरायित] १ जिसने विलम्व किया हो वह। २ विलम्वित, रोका गया। ३ न विलम्व, देरी; 'भणिओ चंदाभाए कि मज्ज चिराविय सामि!' (पउम १०५, १०१)।

चिरिंचिरा स्त्री [दे] जलधारा, वृष्टि (दे ३, १३)।

चिरिका स्त्री [दे] १ पानी भरने का चर्म-भाजन, मशक। २ अल्प वृष्टि। ३ प्रात काल, सुवह (दे ३, २१)।

चिरिन्चिरा [दे] देखो चिरिंचिरा (दे ३, १३)।

चिरिडी देखो चिरडी (गा १६१ अ)।

चिरिड्डिहिल्ल न [दे] दधि, दही (दे ३,१४)।

चिरिहिट्टी स्त्री [दे] गुञ्जा, घुंगची, लाल रत्ती (दे ३, १२)।

चिलाअ पुं [किरात] १ अनार्य देश-विशेष। २ किरात देश मे रहनेवाली म्लेच्छ-जाति, भिल्ल, पुलिंद (हे १,१८३,२५४, पण्ह १,१, औप, कुमा)। ३ धन सार्थवाह (व्यापारी) का एक दास—नौकर (णाया १, १८)।

चिलाइया स्त्री [किरातिका] किरात देश की रहनेवाली स्त्री, किरातिन (णाया १, १)।

चिलाई स्त्री [किराती] ऊपर देखो (इक)। °पुत्त पु [°पुत्र] एक दासी-पुत्र और जैन-महर्षि (पडि, णाया १, १८)।

चिलाद देखो चिलाअ (प्राक्ट १२)।

चिलिचिलिआ स्त्री [दे] धारा, वृष्टि (षड्)।

चिलिचिलिय वि [दे] भीजा या भीगा हुआ, आर्द्रित, गीला (तदु ३८)।

चिलिचिल्ल | चिलिचिल | चिलिच्चील वि [दे] आर्द्र, गीला (पण्ह १, ३—पत्र ४५, दे ३, १२)।

चिलिण [दे] देखो चिलीण, 'छक्कायसंजमम्मि अ चिलिणे सेहन्नहाभावो' (ओघ १९५)।

चिलिमिणी | चिलिमिलिगा | चिलिमिलिया | चिलिमिली स्त्री [दे] यवनिका, परदा, आच्छादन-पट (ओघ भा, सूअ २, २, ४८, कस, ओघ ७८, ८०)।

चिलीण न [दे] अशुचि, मैला, मल-मूत्र, 'सवंति चिलीणे मच्छियाओ घणचंदणं मोत्तुं' (उप १०३१ टी)।

चिल्ल पु [दे] १ वाल, वच्चा, लडका (दे ३, १०)। २ चेला, शिष्य (आवम)।

चिल्ल पु [चिल्ल] १ वृक्ष-विशेष (राज)। २ न पुष्प-विशेष।

'पूय कुणंति देवा, कचणकुसुमेसु जिणवरिंदाणं। इह पुण चिल्लदलेसु, नरेण पूया विरइयव्वा ॥' (पउम ६६, १६)।

चिल्ल न [दे] सूर्प, सूप, छाज (प्राक्ट २८)।

चिल्लअ न [दे] देदीप्यमान, चमकता, 'मंडणोहुणप्पगारएहिं केहिं केहिंवि अवंगतिलयपत्तलेहनामएहि चिल्लएहि' (अजि २८, औप)।

चिल्लग [दे] देखो चिल्लिय (पण्ह १, ४—पत्र ७१ टी)।

चिल्लड [दे] देखो चिल्लल (दे) (आचा २, ३, ३)।

चिल्लणा स्त्री [चिल्लणा] एक सती स्त्री, राजा श्रेणिक की पत्नी (पडि)।

चिल्लय न [दे] अपचक्षु, खराव आँख (पण्ह १, १ टी—पत्र २५)।

चिल्लल पु [चिल्वल] १ अनार्य देश विशेष। २ उस देश का निवासी (इक)।

चिल्लल पुस्त्री [दे] १ श्वापद पशु-विशेष, चीता (पण्ह १, १—पत्र ७, णाया १,१—पत्र ६५)। स्त्री. °लिया (पण्ण ११)। न. काँदोवाला जलाशय, छोटा तलाव आदि (णाया १, १—पत्र ६३)। ३ देदीप्यमान, चमकता (णाया १, १६—पत्र २११)।

चिल्ला स्त्री [दे] चील, पक्षि-विशेष, शकुनिका (दे ३, ९, ८, ८, पाअ)।

चिल्लिय वि [दे] १ लीन, आसक्त (णाया १, १)। २ देदीप्यमान (णाया १, १, औप, (कप्प)।

चिल्लिरि पु [दे] मशक, मच्छर, क्षुद्र जन्तु-विशेष (दे ३, ११)।

चिल्लूर न [दे] मुसल, एक प्रकार की मोटी लकडी जिससे चावल आदि अन्न कूटे जाते हैं (दे ३, ११)।

चिल्हय पु [दे] चक्र-मार्ग, पहिये की लकीर, गुजराती में 'चीलो' (सुपा २८०)।

चिविट्ठ | चिविड वि [चिपिट] चिपटा, वैठा या धँसा हुआ (नाक), 'चिविडनासा' (पि २४८, पउम २७, ३२, गउड)।

चिविडा स्त्री [चिपिटा] गन्ध-द्रव्य-विशेष (दे ३, ७१)।

चिविढ देखो चिविड (सुर १३, १८१)।

छिच्छिकार पुं [छिच्छिकार] निवारण-सूचक या घृणा सूचक शब्द, छि , छि (पिंड ४५१)।
छिच्छि अ [दे धिक्धिक्] छि छि, धिक्-धिक्, अनेक धिक्कार (हे २, १७४, षड्)।
छिज्ज देखो छिंद = छिद्। हेकृ. छिज्जिउं (तंदु)।
छिज्ज वि [छेद्य] १ खण्डित किया जा सके। २ छेदने योग्य (सूअ २, ५)। ३ न. छेद, विच्छेद, द्विधाकरण, 'पावंति बधवहरोहछिज्ज-मरणावसाणाइं" (ओघ ४६ भा; पुप्फ १८६)।
छिज्जत वि [क्षीयमाण] क्षय पाता, दुर्बल होता, 'छिज्जतेहिं अणुदिएा, पच्चक्खम्मिवि तुमम्मि अंगेहिं' (गा ३४७)।
छिज्जत } छिज्जमाण } देखो छिंद
छिड्ड न [छिद्र] १ छिद्र, विवर (पउम २०, १६२, अनु ६, उप पृ १३८)। २ अवकाश, अवसर (पण्ह १, ३)। ३ दूषण, दोष (सुपा ३६०)। °पाणि पु [°पाणि] एक प्रकार का जैन साधु (आचा २, १, ३)।
छिड्ड पुन [छिद्र] आकाश, गगन (भग २०. २—पत्र ७७५)।
छिण्ण देखो छिन्न (णाया १, १८, सूअ १, ८)।
छिण्ण पु [दे] जार, उपपति (दे ३, २७, षड्)।
छिण्णच्छोडण न [दे] शीघ्र, तुरन्त, जल्दी (दे ३, २६)।
छिण्णयड वि [दे] टंक से छिन्न (पाअ)।
छिण्णा स्त्री [दे] असती, कुलटा (दे ३, २७)।
छिण्णाल पु [दे] जार, यार, उपपति, छिनाला या छिनरा (दे ३, २७, षड्)।
छिण्णालिआ } स्त्री [दे] असती, कुलटा, छिण्णाली } पुंश्चली, छिनारी, छिनाल, व्यभिचारिणी। (मृच्छ ५५, दे ३, २७)।
छिण्णोब्भवा स्त्री [दे] दूर्वा, दूब (घास), दाभ (दे ३, २६)।
छित्त देखो खित्त = क्षेत्र (औप; उप ८३३ टी, हेका ३०)।
छित्त वि [दे] स्पृष्ट, छूआ हुआ (दे ३, २७, गा १३, सुपा ५०४, पाअ)।
छित्तर [दे] देखो छेत्तर (स ८, २२३, उप पृ ११७, ५३० टी)।
छित्ति स्त्री [छित्ति] छेद, विच्छेद, खण्डन (विसे १४५८, लहुअ ५)।
छित्तु वि [छेतृ] छेदनेवाला (पव १)।
छिद्द देखो छिड्ड (णाया १, २, ठा ५, १, पउम ६४, ६)।
छिद्द पुं [दे] छोटी मछली (दे ३, २६)।
छिद्दिय वि [छिद्रित] छिद्र-युक्त, छिद्रवाला (गउड)।
छिन्न वि [छिन्न] १ खण्डित, त्रुटित, छेद-युक्त (भग, प्रासू १४६)। २ निर्धारित, निश्चित (बृह १)। ३ न छेद, खण्डन (उत्त १५)। °गथ वि [°ग्रन्थ] स्नेह-रहित, स्नेह-मुक्त (पण्ह २, ५)। २ पु त्यागी, साधु, मुनि, निर्ग्रन्थ (ठा ६)। °च्छेय पु [°च्छेद] नय-विशेष, प्रत्येक सूत्र को दूसरे सूत्र की अपेक्षा से रहित माननेवाला मत (णंदि)। °द्धाणतर वि [°ध्वान्तर] मार्ग-विशेष, जहां गाँव, नगर वगैरह कुछ भी न हो ऐसा रास्ता (बृह १)। °मडंब वि [°मडम्ब] जिस गाँव या शहर के समीप में दूसरा गाँव वगैरह न हो (निचू १०)। °रुह वि [°रुह] काट कर वोने पर भी पैदा होनेवाली वनस्पति (जीव १०, पण्ण ३६)।
छिन्नाल वि [दे] हल की जात का बेल आदि (उत्त २७, ७)।
छिन्नालिंगा } स्त्री [दे] स्थलचर पक्षि-विशेष छिण्णालिंगा } (अंग वि. अ० ५८)। देखो छिण्णालिआ।
छिप्प न [क्षिप्र] जल्दी, शीघ्र। °तूर न [°तूर्य] शीघ्र। २ वजाया जाता एक वाजा, तुरही (विपा १, ३, णाया १, १८)।
छिप्प न [दे] १ भिक्षा, भीख (दे ३, ३६, सुपा ११५)। २ पुच्छ, लाङ्गूल (दे ६, ३६, पाअ)।
छिप्पंत देखो छिव = स्पृश्।
छिप्पती स्त्री [दे] १ व्रत-विशेष। २ उत्सव-विशेष (दे ३, ३७)।
छिप्पंदूर न [दे] १ गोमय खण्ड, गोबर-खण्ड। २ वि. विषम, कठिन (दे ३, ३८)।
छिप्पाल पुं [दे] सस्यासक्त बैल, खाने में लगा हुआ बैल (दे ३, २८)।
छिप्पालुअ न [दे] पूँछ, लाङ्गूल (दे ३, २६)।
छिप्पिंडी स्त्री [दे] १ व्रत-विशेष। २ उत्सव-विशेष। ३ पिष्ट, पिसान (दे ३, ३७)।
छिप्पिअ वि [दे] क्षरित, झरा हुआ, टपका हुआ (पाअ)।
छिप्पीर न [दे] पलाल, पुआल, तृण (दे ३, २८)।
छिप्पोल्ली स्त्री [दे] अजादि की विष्ठा (निचू १)।
छिब्भ सक [क्षिप्] फेंकना। छिब्भंति (सूअ १, ५, २, १२)।
छिमिछिमिछिम अक [छिमिछिमाय्] 'छिम-छिम' आवाज करना। वकृ. छिमि-छिमिछिमंत (पउम २६, ४८)।
छिरा स्त्री [शिरा] नस, नाडी, रग (ठा २, १, हे १, २६६)।
छिरि पुं [दे] भालू की आवाज (पउम ६४, ४५)।
छिल्ल न [दे] १ छिद्र, विवर (दे ३, ३५, षड्)। २ कुटी, कुटिया, छोटा घर। ३ बाड का छिद्र (दे ३, ३५)। ४ पलाश का पेड (ती ६)।
छिल्लर न [दे] पल्वल, छोटा तलाव (दे ३, २८, सुर ४, २२६)।
छिल्लर वि [दे] असार, छिछरं, खालरं।
छिल्ली स्त्री [दे] शिखा, चोटी (दे ३, २७)।
छिव सक [स्पृश्] स्पर्श करना, छूना। छिवइ (हे ४, १८२)। कर्म. छिप्पइ, छिवि-ज्जइ (हे ४, २५७)। वकृ. छिवंत (गा २६६)। कवकृ. छिप्पंत, छिविज्जमाण (कुमा, गा ४४३, स ६३२, श्रा १२)।
छिवट्ठ [दे] देखो छेवट्ठ (कम्म २, ४)।
छिवण न [स्पर्शन] स्पर्श, छूना (उप १८७ टी, ६७७)।
छिवा स्त्री [दे] श्लक्ष्ण कष, चीकना चाबुक, 'छिवापहारे य' (णाया १, २—पत्र ८६, पण्ह १, ३, विपा १, ६)।
छिवाडिआ } स्त्री [दे] १ वल्लि वगैरह की छिवाडी } फली, सीम या सेम (जं १)। २ पुस्तक-विशेष, पतले पन्नेंवाली ऊँची पुस्तक,

चुक्क वि [भ्रष्ट] १ चूका हुआ, भूला हुआ, विस्मृत, 'चुक्कसकेआ', 'चुक्कविणअम्मि' (गा ३१८, १९५)। भ्रष्ट, वञ्चित, रहित, 'दंसणमेत्तपसण्णे चुक्का सि सुहाण वहुआणं' (गा ४६५, चउ ३६, सुपा ८७)। ३ अन-वहित, बे-ख्याल (से १, ९)।

चुक्क पुं [दे] मुष्टि, मुट्ठी (दे ३, १४)।

चुक्कार पुं [दे] आवाज, शब्द (से १३, २५)।

चुक्कुड पुं [दे] छाग, बकरा, अज (दे ३, १६)।

चुक्ख [दे] देखो चोक्ख (सूक्त ४९)।

चुचुअ } न [चूचुक] स्तन का अग्र भाग, चुच्चुय } थन का वृन्त, चूची (पण्ह १, ४, राय)।

चुचूय पुंन [चुचूक] स्तन का अग्र भाग, स्तनों की गोलाई, चूची (राय ९४)।

चुच्छ वि [तुच्छ] १ अल्प, थोडा, हलका। २ हीन, जघन्य, नगण्य (हे १, २०४, षड्)।

चुज्ज न [दे] आश्चर्य (दे ३, १४, सट्ठि ८३)।

चुडण न [दे] जीर्णता, सड जाना (ओघ ३४९)।

चुडलिअ न [दे] गुरु-वन्दन का एक दोष, रजोहरण को अलात की तरह खडा रखकर वन्दन करना (गुभा २५)।

चुडली [दे] देखो चुडुली (पव २)।

चुडिली देखो चुडुली (तदु ४६)।

चुडुप्प न [दे] १ खाल उतारना (दे ३, ३)। २ घाव, क्षत (गउड)। ३ चमडी, त्वचा (पाअ)।

चुडुप्पा स्त्री [दे] त्वचा, चमडी, खाल (दे ३, ३)।

चुडुली स्त्री [दे] उल्का, अलात, जलती हुई लकडी, उल्मुक (दे ३, १५, पाअ, सुर १३, १५९, स २४२)।

चुण सक [चि] चुनना, चुगना, पक्षियो का खाना। चुणइ (हे ४, २३८), 'काओ लिंबो-हलि चुणइ' (सूक्त ८९)।

चुणअ पुं [दे] १ चाण्डाल। २ बाल, बच्चा। ३ छन्द, इच्छा। ४ अरुचि, भोजन की अप्रीति। ५ व्यतिकर, सम्बन्ध। ६ वि. अल्प, थोडा। ७ मुक्त, त्यक्त। ८ आघ्रात, सूँघा हुआ (दे ३, २२)।

चुणिअ वि [दे] विधारित, धारण किया हुआ (दे ३ १५)।

चुण्ण सक [चूर्णय्] चूरना, टुकडा-टुकडा करना। सकृ. चुण्णिय (राज)।

चुण्ण पुन [चूर्ण] १ चूर्ण, चूर, बुकनी, बारीक खण्ड (बृह १, हे १, ८४, आचा)। २ आटा, पिसान (आचा २,२,१)। ३ धूली, रज, रेणु (दे ३, १७)। ४ गन्ध द्रव्य का रज, बुकनी (भग ३, ७)। ५ चूना (हे १, ८४, विपा १, २)। ६ वशीकरणादि के लिए किया जाता द्रव्य-मिलान (णाया १, १४)। °कोसय न [°कोशक] भक्ष्य-विशेष (पण्ह २, ५)।

चुण्ण न [चौर्ण] पद विशेष, गम्भीरार्थक पद, महार्थक शब्द (दसनि २)।

चुण्णइअ वि [दे] चूर्णाहत, चूरन से आहत, जिस प्रकार चूर्ण फेंका गया हो वह (दे ३, १७, पाअ)।

चुण्णग पुं [चूर्णक] वृक्ष-विशेष (आचा २, १०, २३)।

चुण्णा स्त्री [चूर्णा] छन्द-विशेष, वृत्त-विशेष (पिंग)।

चुण्णाआ स्त्री [दे] कला विज्ञान (दे ३, १६)।

चुण्णासी स्त्री [दे] दासी, नौकरानी (दे ३, १६)।

चुण्णि स्त्री [चूर्णि] ग्रन्थ की टीका-विशेष (निचू)।

चुण्णिअ वि [चूर्णित] १ चूर-चूर किया हुआ (पाअ)। २ धूली से व्याप्त (दे ३, १७)।

चुण्णिआ स्त्री [चूर्णिका] भेद-विशेष, एक तरह का पृथग्भाव, जैसे पिसान का अवयव अलग-अलग होता है (पण्ण ११)।

चुण्णिय वि [चूर्णिक] गणित-प्रसिद्ध सर्वा-वशिष्ट अंश (सुज्ज १०, २२—पत्र १८५, १२—पत्र २१९)।

चुद्दस देखो चउ-द्दस (सुर ८, ११८)।

चुन्न देखो चुण्ण (कुमा, ठा ३, ४, प्रासू १८, माव २, पभा ३१)।

चुन्नण न [चूर्णन] चूर-चूर करना (रवा ३)।

चुन्नि देखो चुण्णि (विचार ३५२, चंड)।

चुन्निअ देखो चुण्णिअ (पण्ह २, ४)।

चुन्निआ देखो चुण्णिआ (भास ७)।

चुप्प वि [दे] सस्नेह, स्निग्ध (दे ३, १५)।

चुप्पल पुं [दे] शेखर, अवतंस (दे ३, १६)।

चुप्पलिअ न [दे] नया रँगा हुआ कपडा (दे ३, १७)।

चुप्पालय पुं [दे] झरोखा, गवाक्ष, वातायन, जगला (दे ३, १७)।

चुरिम न [दे] खाद्य-विशेष (पव ४)।

चुलचुल अक [चुलचुलाय्] उत्कण्ठित होना, उत्सुक होना। वकृ. चुलचुलंत (गा ४८१)।

चुलणी स्त्री [चुलनी] १ द्रुपद राजा की स्त्री (णाया १, १६, उप ६४८ टी)। २ ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की माता (महा)। °पिय पु [°पितृ] भगवान् महावीर का एक मुख्य उपासक (उवा)।

चुलसी स्त्री [चतुरशीति] चौरासी, अस्सी और चार, ८४ (महा, जी ४७), 'चुलसीए नागकुमारावाससयसहस्सेसु' (भग)।

चुलसीइ देखो चुलसी (पउम २०, १०२, जं २)।

चुलिआला स्त्री [चुलियाला] छन्द विशेष (पिंग)।

चुलुअ पुन [चुलुक] चुल्लू, पसर, एक हाथ का संपुटाकार (दे ३, १८, सुपा २१९, प्रासू ५७)।

चुलुक्क देखो चालुक्क (दे १, ८४ टी)।

चुलुचुल अक [स्पन्द्] फडकना, फरकना, थोडा हिलना। चुलुचुलइ (हे ४, १२७)।

चुलुचुलिअ वि [स्पन्दित] १ फरका हुआ, कुछ हिला हुआ। २ न स्फुरण, स्पन्दन (पाअ)।

चुलुप्प पुं [दे] छाग, अज, बकरा (दे ३, १६)।

चुल्ल पु [दे] १ शिशु, बालक। २ दास, नौकर (दे ३, २२)। ३ वि. छोटा, लघु (ठा २, ३)। °ताय पुं [°तात] पिता का छोटा भाई, चाचा (पि ३२५)। °पिउ पुं

छुरी स्त्री [क्षुरी] छुरी, चाकू (दे २, ४, प्रासू ६५)।

छुरु देखो छुड्डु (सुपा १५६)।

छुल्लुच्छुल देखो चुल्लुच्छल। छुल्लुच्छुलेइ (सूअनि ६६ टी)।

छुव सक [छुप्] स्पर्श करना, छूना। कर्म. छुप्पइ, छुविज्जइ (हे ४, २४६)। कवकृ छुप्पंत (उप ३३६, ७२८ टी)।

छुह सक [क्षिप्] फेंकना, डालना। छुहइ (उव, हे ४, १४३)। संकृ छोढूण, छोढूण (स ८५, विसे ३०१)।

छुहा स्त्री [सुधा] १ अमृत, पीयूष (हे १, २६५, कुमा)। २ खड़ी, मकान पोतने का श्वेत द्रव्य-विशेष, चूना (दे १, ७८, कुमा)। °अर पु [°कर] चन्द्र, चन्द्रमा (पड्)।

छुहा स्त्री [क्षुध्] क्षुधा, भूख, बुभुक्षा (हे १, १७, दे २, ४२)।

छुहाइअ वि [क्षुधित] भूखा, बुभुक्षित (पाअ)।

छुहाउल वि [क्षुदाकुल] ऊपर देखो (गा ५८१)।

छुहालु वि [क्षुधालु] ऊपर देखो (उप पृ १६०, १५० टी)।

छुहिअ वि [क्षुधित] ऊपर देखो (उव, उप ७२८ टी, प्रासू १८०)।

छुहिअ वि [दे] लिप्त, पोता हुआ (दे ३, ३०)।

छूढ वि [क्षिप्त] क्षिप्त, प्रेरित (हे २, ९२, १२७, कुमा)।

छूहिअ न [दे] पार्श्व का परिवर्त्तन (पड्)।

छेअ सक [छेदय्] १ छिन्न करना। २ तोड़वाना, छेदवाना। कर्म. छेइज्जति (पि ५४३)। संकृ छेएत्ता (महा)।

छेअ पुं [दे] १ अन्त, प्रान्त, पर्यन्त (दे ३, ३८, पाअ, मे ७, ४८, कम्म १, ३६)। २ देवर, पति का छोटा भाई (दे ३, ३८)। ३ एक देश, एक भाग (से १, ७)। ४ निर्विभाग अंश (कम्म ४, ८२)।

छेअ वि [छेक] निपुण, चतुर, हुशियार (पाअ, प्रासू १७२; औप, णाया १, १)। °ायरिय पुं [°ाचार्य] शिल्पाचार्य, कलाचार्य (भग ७, ६)।

छेअ वि [दे छेक] १ विशुद्ध, निर्मल (पचा ३, ३५, ३८)। २ न कालोचित हित (धर्मस ५४३)।

छेअ पुं [छेद] १ नाश, विनाश, 'विज्जाच्छेओ कओ मइ' (सुर ५, १९४)। २ खण्ड, विभाग (मे १, ७)। ३ छेदन, कर्त्तन, 'जीहाछेअ' (गा १५३, से ७, ४८)। ४ छ जैन आगम ग्रन्थ, वे ये हैं—निशीथसूत्र, महानिशीथसूत्र, दशाश्रुतस्कन्ध, बृहत्कल्प, व्यवहारसूत्र, पञ्चकल्पसूत्र (विसे २२९५)। ५ छिन्न विभाग, अलग किया हुआ अंश (से ७, ४८)। ६ कमी, न्यूनता (पञ्चा १६)। ७ प्रायश्चित्त-विशेष (ठा ४, १)। ८ शुद्धि-परीक्षा का एक अंग, धर्म-शुद्धि जानने का एक लक्षण, निर्दोष बाह्य आचरण, 'सो छेएण सुद्धोत्ति' (पंचव ३)। °रिह न [°र्ह] प्रायश्चित्त विशेष (ठा १०)।

छेअअ } वि [छेदक] छेदन करनेवाला,
छेअग } काटनेवाला (नाट, विसे ५१३)।

छेअण न [छेदन] १ खण्डन, कर्त्तन, द्विधा करण (सम ३६, प्रासू १४०)। २ कमी न्यूनता, ह्रास (आचा)। ३ शस्त्र, हथियार (सूअ २, ३)। ४ निश्चायक वचन (बृह १)। ५ सूक्ष्म अवयव (बृह १)। ६ जल-जीव-विशेष (सूअ २ ३)।

छेओवट्ठावण न [छेदोपस्थापनीय] जैन संयम-विशेष, बड़ी दीक्षा (नव २६, अंत्रा ११)।

छेओवट्ठावणिय न [छेदोपस्थापनीय] ऊपर देखो (सक)।

छेंछई [दे] देखो छिंछई (गा ३०१)।

छेंड [दे] देखो छिंड (दे ३, ३५)।

छेंडा स्त्री [दे] १ शिखा, चोटी। २ नव-मालिका, लता-विशेष (दे ३, ३९)।

छेंडी स्त्री [दे] छोटी गली, छोटा रास्ता (दे ३, ३१)।

छेग देखो छेअ = छेक (दे ३, ४७)।

छेज्ज देखो छिज्ज (दसनि २, महा)।

छेज्जा स्त्री [छेद्या] छेदन-क्रिया (सूअ १, ४)।

छेण पु [दे] स्तेन, चोर (पड्)।

छेत्त देखो खेत्त (गा ६, उप ३५७ टी, स १६४, भवि)।

छेत्तर न [दे] सूप वगैरह पुराना गृहोपकरण (दे ३, ३२)।

छेत्तसोवणय न [दे] खेत में जागना (दे ३, ३२)।

छेत्तु वि [छेतृ] छेदनेवाला, काटनेवाला (आचा)।

छेद देखो छेअ = छेदय्। कर्म छेदीअति (पि ५४३)। संकृ छेदिऊण, छेदेत्ता (पि ५८६, भग)।

छेद देखो छेअ = छेद (पउम ४४, ६७; औप, वव १)।

छेदअ वि [छेदक] छेदनेवाला (पि २३३)।

छेदण वि [छेदन] छेदन-कर्ता। स्त्री °णी (स ७६६)।

छेदोवट्ठावणिय देखो छेओवट्ठावणिय (ठा ३, ४)।

छेव पु [दे] १ स्थासक, चन्दनादि सुगन्धि वस्तु का विलेपन। २ चोर, चोरी करनेवाला (दे ३, ३६)।

छेप्प न [दे. शेप] पुच्छ, लाङ्गूल, पूंछ (गा ६२, विपा १, २, गउड)।

छेभय पुं [दे] चन्दन आदि का विलेपन, स्थासक (दे ३, ३२)।

छेल } पुस्त्री [दे] अज, छाग, बकरा (दे
छेलग } ३, ३२, स १५०)। स्त्री. °लिआ,
छेलय } °ली (पि २३१, पण्ह १, १—पत्र १४)।

छेलावण न [दे] १ उत्कृष्ट हर्ष-ध्वनि। २ बाल क्रीड़न। ३ चीत्कार, ध्वनि-विशेष, 'छेलावणमुक्किट्ठाइ बालकीलावणं च सेंढाइ' (आवम)।

छेलिय न [दे] सेण्टित, नाक छींकने का शब्द, अव्यक्त ध्वनि-विशेष (पण्ह १, ३, विसे ५०१)।

छेली स्त्री [दे] थोड़े फूलवाली माला (दे ३, ३१)।

छेवग न [दे] महामारी या मारी वगैरह फैली हुई बीमारी (वव ५, निचू १)।

छेवट्ट } न [दे. सेवार्त्त, छेदवृत्त] १
छेवट्ठ } संहनन-विशेष, शरीर-रचना-विशेष, जिसमें मर्कट-बन्ध, वेठन और खीला न होकर यों ही हड्डियाँ आपस में जुड़ी हो ऐसी

अभीष्ट देवता की प्रतिमा, 'कल्लाणं मंगलं चेइयं पज्जुवासामो' (औप, भग)। ५ अर्हत्-प्रतिमा, जिन-देव की मूर्त्ति (ठा ३, १, उवा, पण्ह २, ३, आव २, पडि), 'विइएण उप्पाएण नदीसरवरे दीवे समोसरणं करेइ, तहिं चेइयाइं वदइ' (भग २०, ६), 'जिणविंबे मंगलचेइयति सययन्नुणो विति' (पव ७६)। ६ उद्यान, बगीचा; 'मिहिलाए चेइए वच्छे सीअच्छाए मणोरमे' (उत्त ६ ६)। ७ सभा-वृक्ष, सभा-गृह के पास का वृक्ष। ८ चबूतरा-वाला वृक्ष। ६ देवो का चिह्न-भूत वृक्ष। १० वह वृक्ष जहाँ जिनदेव को केवल ज्ञान उत्पन्न होता है (ठा ८ सम १३,१५६)। ११ वृक्ष, पेड, 'वाएण हीरमाणम्मि चेइयम्मि मणोरमे' (उत्त ६, १०)। १२ यज्ञ स्थान। १३ मनुष्यो का विश्राम-स्थान (पड्, हे २, १०७)। °खभ पुं [°स्तम्भ] स्तूप, थूभ, (सम ६३, राय, सुज्ज १८)। °घर न [°गृह] जिन-मन्दिर, अर्हन्मन्दिर (पउम २, १२, ६४, २६)। °जत्ता स्त्री [°यात्रा] जिन-प्रतिमा-सम्बन्धी महोत्सव-विशेष (धर्म ३)। °थूभ पुं [°स्तूप] जिन-मन्दिर के समीप का स्तूप (ठा ४, २, ज १)। °दव्व न [°द्रव्य] देव-द्रव्य, जिन-मन्दिर-संबधी स्थावर या जगम मिल्कत (वव ६, पञ्चभा, उप ४०७, द्र ४)। °परिवाडी स्त्री [°परि-पाटी] क्रम से जिन मन्दिरो की यात्रा (धर्म २)। °मह पुं [°मह] चैत्य-सम्बन्धी उत्सव (आचा २, १, २)। °रुक्ख पु [°वृक्ष] १ चबूतरावाला वृक्ष, जिसके नीचे चौतरा बाधा हो ऐसा वृक्ष। २ जिन-देव को जिसके नीचे केवल ज्ञान उत्पन्न होता है वह वृक्ष। ३ देवताओ का चिह्न भूत वृक्ष। ४ देव-सभा के पास का वृक्ष (सम १३, १५६, ठा ८)। °वन्दण न [°वन्दन] जिन-प्रतिमा की मन, वचन और काया से स्तुति (पव १, सघ १, ३)। °वदणा स्त्री [°वन्दना] वही पूर्वोक्त अर्थ (सघ १)। °वास पु [°वास] जिन मन्दिर मे यतियो का निवास (दस)। °हर देखो °घर (जीव १, पउम ६५, ६२, सुपा १३, द्र ६५, उवर १६०)।

चेइअ वि [चेतित] कृत, विहित, 'तत्य २ अगारीहिं अगाराइं चेइआइं भवति' (आचा २, १, २, २), 'चेइअं कइमेगट्ठं' (बृह २, कस)।

चेंध देखो चिंध (प्राप्र)।

चेआ देखो चे = त्यज्।

चेट्ठ अक [चेष्ट्] प्रयत्न करना, आचरण करना। वकृ चेट्ठमाण (काल)।

चेट्ठ देखो चिट्ठ = स्था (दे १, १७४)।

चेट्ठण न [स्थान] स्थिति, अवस्थान (वव ४)।

चेट्ठण देखो चिट्ठण = वेष्टन (उपपं ११)।

चेट्ठा स्त्री [चेष्टा] प्रयत्न, आचरण (ठा ३, १, सुर २, १०६)।

चेट्ठिय देखो चिट्ठिय = चेष्टित (औप, महा)।

चेड पुं [दे] बाल, कुमार, शिशु (दे ३, १०, णाया १, २, बृह १)।

चेड, चेडग, चेडय पुं [चेट, °क] १ दास, नौकर (औप, कप्प)। २ नृप-विशेष, वैशालिका नगरी का एक स्वनाम प्रसिद्ध राजा (आचू १, भग ७, ६, महा)। ३ मैला देवता, देव की एक जघन्य जाति (सुपा २१७)।

चेडिआ स्त्री [चेटिका] दासी, नौकरानी (भग ६, ३३, कप्पू)।

चेडी स्त्री [चेटी] ऊपर देखो (आवम)।

चेडी स्त्री [दे] कुमारी, बाला, लडकी (पाअ)।

चेत्त न [चैत्य] चैत्य-विशेष (पड्)।

चेत्त पुं [चैत्र] १ मास-विशेष, चैत मास (सम २६, हे १, ·१५२)। २ जैन मुनियों का एक गच्छ (बृह ६)।

चेत्ती स्त्री [चैत्री] १ चैत मास की पूर्णिमा। २ चैत मास की अमावस (सुज १०, ६)।

चेदि देखो चेइ (सण)।

चेदीस पु [चेदीश] चेदि देश का राजा (सण)।

चेयग वि [चेतक] दाता, देनेवाला (उप ६५७)।

चेयण पुं [चेतन] १ आत्मा, जीव, प्राणी (ठा ४, ४)। २ वि. चेतनावाला, ज्ञानवाला; 'भुवि चेयणं न किमरूवं' (विसे १८४५)।

चेयणा स्त्री [चेतना] ज्ञान, चेत, चैतन्य, सुध, ख्याल (आव ६, सुर ४, २४५)।

चेयण्ण, चेयन्न न [चैतन्य] ऊपर देखो (विसे ४७५, सुपा २०, सुर १४, ८)।

चेयस देखो चेअ = चेतस्,

'ईसादासेण आविट्ठे, कलुसाविलवेयसे। जे अतरायं चेएइ, महामोह पकुव्वइ' (सम ५१)।

चेया देखो चेयणा, 'पत्तेयमभावाओ, न रेणु-तेल्ल व समुदए चेया' (विसे १६५२)।

चेल, चेलय न [चेल] वस्त्र, कपडा (आचा औप)। °कण्ण न [°कर्ण] व्यजन-विशेष, एक तरह का पंखा (स ५४६)। °गोल न [°गोल] वस्त्र का गेंद कन्दुक (सूअ १, ४, २)। °हर न [°गृह] तम्बू, पट-मण्डप, रावटी (स ५३७)।

चेलय न [दे] तुला-पात्र, 'दिट्ठीतुलाए भुवणं, तुलति जे चित्तचेलए निहिय' (वज्जा ५६)।

चेलिय देखो चेल, 'रयणकचणचेलियवहुवन्न-भरभरिया' (पउम ६६, २५, आचा)।

चेलुंप न [दे] मुसल, मूपल (दे ३, ११)।

चेल्ल, चेल्लअ [दे] देखो चिल्ल (दे) (पउम ६७, १३, १६, स ४६६, दसनि १, उप २६८)।

चेल्लग, चेल्लय [दे] देखो चिल्लग (पण्ह १, ४—पत्र ६८, ती ३३)।

चेव अ [एव, चैव] १ अवधारण सूचक अव्यय, निश्चयदर्शक शब्द, 'जो कुणइ पर्स्स दुहं पावइ त चेव सो अणंत-गुणं' (प्रासू ७६, महा), 'अवहारणे चेवसद्दो य' (विसे ३५६५)। २ पाद-पूरक अव्यय (पउम ८, ८८)।

चेव अ [इव] सादृश्य-द्योतक अव्यय, 'पेच्छइ गणहरवसह सरयरवि चेव तेएण' (पउम ३, ४, उत्त १६, ३)।

चो देखो चउ (हे १, १७१, कुमा, सम ६०, औप, भग, णाया १, १, १४, विपा १, १, सुर १४, ६७)। °आल स्त्री [°चत्वारि-शत्] चालीस और चार, ४४ (वसे २३०४)। °वट्ठि स्त्री [°षष्टि] चौसठ, ६४ (कप्प)। °वत्तरि स्त्री [°सप्तति] सत्तर और चार, ७४ (सम ८४)।

चोअ सक [चोदय्] १ प्रेरणा करना। २ कहना। चोएइ (उव, स १५)। कवकृ. चोइज्जंत, चोइज्जमाण (सुर २,१०, णाया १, १६)। सकृ चोइऊण (महा)।

चोअअ वि [चोदक] प्रेरक, प्रश्न-कर्ता, पूर्व-पक्षी (अणु)।

विपा १, १)। °वि अ [°अपि] जो भी (महा)।

जइ अ [यत्र] जहाँ, जिस स्थान मे (षड्)।

जइ वि [जयिन्] जीतनेवाला, विजयी (कुमा)।

जइअव्व वि [जेतव्य] जीतने योग्य (प्रवि १२)।

जइआ अ [यदा] जिस समय, जिस वक्त (उव, हे ३, ६५)।

जइच्छा स्त्री [यदृच्छा] १ स्वतन्त्रता। २ स्वेच्छाचार (राज)।

जइण वि [जैन] १ जिन-देव का भक्त, जिन-धर्मी। २ जिन भगवान् का, जिन-देव से संबन्ध रखनेवाला (विसे ३८३, धम्म ६ टी, सुर ८, ६४)। स्त्री. °णी (पचा ३)।

जइण वि [जयिन्] जीतनेवाला, 'मणपवण-जइणवेग' (उवा, णाया १, १—पत्र ३१)।

जइण वि [जविन्] वेगवला, वेग-युक्त, त्वरा-युक्त, 'उवइयउप्पइयचवलजइणसिग्घवे-गाहिं' (औप)।

जइत्त वि [जैत्र] १ जीतनेवाला, विजयी (ठा ६)। २ पु. नृप-विशेष (रंभा)।

जइत्ता देखो जय = जि।

जइय वि [जयिक] जयावह, विजयी (णाया १, ८—पत्र १३३)।

जइय वि [यष्टृ] याग करनेवाला. 'तुब्भे जइया जन्नाणं' (उत्त २५, ३८)।

जयअव्व देखो जय = यत्।

जइवा अ [यदि वा] अथवा, या (वव १)।

जइस (अप) वि [यादृश] जैसा, जिस तरह का (षड्)।

जउ न [जतु] लाक्षा, लाख, लाह (ठा ४,४, उप पृ २४)।

जउ पु [यदु] १ स्वनाम-ख्यात एक राजा। २ सुप्रसिद्ध क्षत्रिय वंश (उव)। °णंदण पु [°नन्दन] १ यदुवंशीय, यदुवंश में उत्पन्न। २ श्रीकृष्ण (उव)।

जउ पुं [यजुष्] वेद-विशेष, यजुर्वेद (अणु)।

जउण पुं [यमुन] स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा (उप ४५७)।

जउणा, जॅउण°, जॅउणा स्त्री [यमुना] भारत की एक प्रसिद्ध नदी, जमुना (ठा १, २, हे १, ४, १७८)।

जउणा देखो जॅउणा (वज्जा १२२, प्राकृ ११)।

जओ अ [यत] १ क्योंकि, कारण कि, चूँकि (श्रा २८)। २ जिससे, जहाँ से (प्रासू ८२, १४८)।

ज अ [यत्] १ क्योंकि, कारण कि। २ वाक्यान्तर का संबन्ध-सूचक अव्यय (हे १,२४, महा, गा ६६)। °किंच अ [°किञ्चित्] १ जो कुछ, जो कोई (पडि, पण्ह १, ३)। २ असंबद्ध, अयुक्त, तुच्छ, नगण्य (पचव ४)।

जकयसुकय वि [दे] अल्प सुकृत से ग्राह्य, थोडे उपकार से अधीन होनेवाला (दे ३, ४५)।

जंगम वि [जगम] १ चलनेवाला, जो एक स्थान से दूसरे स्थान में जा सकता हो वह (ठा ६, भवि)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

जंगल पु [जङ्गल] १ देश विशेष, सपादलक्ष देश (कुमा, सत्त ६७ टी)। २ निर्जल प्रदेश (बृह १)। ३ न मास, 'गयकुंभवियारिय-मोत्तिएहिं जं जगल किणइ' (वज्जा ४२)।

जंगा स्त्री [दे] गोचर-भूमि, पशुओं को चरने की जगह (दे ३, ४०)।

जंगिअ वि [जाङ्गमिक] १ जंगम वस्तु से संबन्ध रखनेवाला, जंगम-संबन्धी। २ न. जंगम जीवों के रोम का बना हुआ कपडा (ठा ३, ३, ५, ३, कस)।

जंगुलि स्त्री [जाङ्गुलि] विष उतारने का मन्त्र, विष-विद्या (ती ४५)।

जंगुलिय पुं [जाङ्गुलिक] गारुडिक, विषमन्त्र का जानकार, विषहरिया (पउम १०५,५७)।

जंगोल स्त्रीन [जाङ्गुल] विष-विघातक तन्त्र, विष-विद्या, आयुर्वेद का एक विभाग जिसमें विष की चिकित्सा का प्रतिपादन है (विपा १, ७—पत्र ७५)। स्त्री. °ली (ठा ८)।

जंघा स्त्री [जङ्घा] जाँघ, जानु के नीचे का भाग (आचा, कप्प)। °चर वि [°चर] पादचारी, पैर से चलनेवाला (अणु)। °चारण पु [°चारण] एक प्रकार के जैन मुनि, जो अपने तपोबल से आकाश में गमन कर सकते हैं (भग २०, ८, पव ६७)। °संतारिम वि [°संतार्य] जाँघ तक पानीवाला जलाशय (आचा २, ३, २)।

जंघाच्छेअ पु [दे] चत्वर, चौक (दे ३, ४३)।

जंघामय, जंघालुअ वि [दे] जंघाल, द्रुत-गामी, वेग से जानेवाला (दे ३, ४२, पड्)।

जंघाल वि [जङ्घाल] द्रुत-गामी (दे ८,७८)।

जंत सक [यन्त्र्] १ वश करना, काबू में करना। २ जकडना, बांधना (उप पृ १३१)।

जंत न [यन्त्र] १ कल, युक्ति-पूर्वक शिल्प आदि कर्म करने के लिए पदार्थ-विशेष, तिल-यन्त्र आदि (जीव ३, गा ५५४, पडि, महा, कुमा)। २ वशीकरण, रक्षा वगैरह के लिए किया जाता लेख प्रयोग (पण्ह १, २)। ३ सयमन, नियन्त्रण (राय)। °पत्थर पु [°प्रस्तर] गोफण का पत्थर (पण्ह १, २)। °पिल्लणकम्म न [°पीडनकर्मन्] यन्त्र द्वारा तिल, ईख आदि पीलने या पेरनेका धंधा (पडि)। °पुरिस पुं [°पुरुष] यन्त्र-निर्मित पुरुष, यन्त्र से पुरुष की चेष्टा करनेवाला पुतला (भावम)। °वाडचुल्ली स्त्री [°पाटचुल्ली] इक्षु-रस पकाने का चूल्हा (ठा ८—पत्र ४१७)। °हर न [°गृह] धारा-गृह, पानी का फवारावाला स्थान (कुमा)।

जंत देखो जा = या।

जंतण न [यन्त्रण] १ नियन्त्रण, संयमन, काबू। २ रोकनेवाला, प्रतिरोधक, (से ४, ४६)।

जंतिअ पु [यान्त्रिक] यन्त्र-कर्म करनेवाला, कल चलानेवाला (गा ५५४)।

जंतिअ वि [यन्त्रित] नियन्त्रित, जकडा हुआ (पउम ५३, १४५)।

जंतु पु [जन्तु] जीव, प्राणी (उत्त ३, सण)।

जंतुग न [जन्तुक] जलाशय मे होनेवाला तृण-विशेष (पण्ह २, ३—पत्र १२३)।

जंतुय वि [जान्तुक] जन्तुक नामक तृण का (आचा २, २, ३, १४)।

जंप सक [जल्प्] बोलना, कहना। जंपइ (प्राप्र)। वकृ. जंपंत, जंपमाण (महा, गा १६८, सुर ४, २)। संकृ. जंपिऊण, जंपिऊणं, जंपिय (प्राकृ, महा)। हेकृ. जंपिउ (महा)। कृ. जंपिअव्व (गा २४२)।

च्च प्र [एव] अवधारण-सूचक अव्यय (हे २ १८४, कुमा, षड्)।

च्चिअ देखो चिअ=एव (हे २, १८४; कुमा)।

च्चेअ } च्चेय } देखो चेव=एव (पि ९२, जी ३२)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि चयाराइसद्दसंकलणो
चउद्दसमो तरंगो समत्तो।

छ

छ पु [छ] १ तालु-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्राप, प्रामा)। २ आच्छादन, ढकना, 'छ त्ति य दोसाण छायणे होइ' (आवम)।

छ त्रि व. [षष्] संख्या-विशेष, छ, 'छ छंडिआओ जिणसासणम्मि' (श्रा ६, जी ३२, भग १, ८)। °उत्तरसय वि [°उत्तर-शततम] एक सौ और छठवाँ (पउम १०६, ४९)। °कम्म न [°कर्मन्] छ प्रकार के कर्म, जो ब्राह्मणों के कर्त्तव्य हैं, यथा—यजन, याजन, अध्ययन, अध्यापन, दान और प्रतिग्रह (निचू १३)। °काय न [°काय] छ प्रकार के जीव, पृथिवी, अग्नि, पानी, वायु, वनस्पति और त्रस जीव (श्रा ७, पंचा १५)। °गुण, °ग्गुण वि [°गुण] छगुना (ठा ६, पि २७०)। °चरण पुं [°चरण] भ्रमर, भौंरा (कुमा)। °जीव-निकाय पु [°जीवनिकाय] देखो °काय (आचा)। °ण्णउइ, °ण्णवइ [°णवति] संख्या-विशेष, छानवे, ९६ (सम ९८, अजि १०)। °त्तीस स्त्रीन [°त्रिंशत्] संख्या विशेष, छत्तीस, ३६ (कप्प)। °त्तीसइम वि [°त्रिंशत्तम] छत्तीसवाँ (पउम ३६, ४३, पएण ३६)। °द्दस त्रि. व [षोडशन्] षोडश, सोलह। °द्दसहा अ [षोडशधा] सोलह प्रकार का (वव ४)। °द्दिसि न [°दिश्] छ दिशाएँ—पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ऊर्ध्व और अधोदिशा (भग)। °द्धा अ [°धा] छ प्रकार का (कम्म १, ३८)। °नवइ, °नुवइ °न्नउइ देखो °ण्णउइ (कम्म ३, ४, १२, सम ७०)। °न्नउय वि [°णवत] छानवेवाँ, ९६ वाँ (पउम ९६, ५०)। °प्पण्ण, °प्पन्न स्त्रीन [°पञ्चाशत्] छप्पन, ५६ (राज, सम ७३)। °प्पन्न वि [°पञ्चाश] छप्पनवाँ (पउम ५६, ४८)। °ब्भाय पु [°भाग] छठवाँ हिस्सा (पि २७०)। °ब्भासा स्त्री [°भाषा] प्राकृत, संस्कृत, मागधी, शौरसेनी, पैशाचिका और अपभ्रंश ये छ भाषाएँ (रंभा)। °मासिय, °म्मासिय वि [षाण्मासिक] छ मास में होनेवाला, छ मास सम्बन्धी (सम २१, औप)। °वरिस वि [°वार्षिक] छ वर्ष की उम्रवाला (सार्ध २६)। °वीस देखो °व्वीस (पिंग)। °व्विह वि [°विध] छ प्रकार का (कस, नव ३)। °व्वीस स्त्रीन [°विंशति] छव्वीस, वीस और छ (सम ४५)। °व्वी-सइम वि [°विंशतितम] १ छव्वीसवाँ २६ वाँ (पउम २६, १०३)। २ लगातार बारह दिनों का उपवास (णाया १, १)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] सख्या विशेष, साठ और छ (कम्म २, १८)। °स्सयरि स्त्री [°सप्तति] छिहत्तर (कम्म २, १७)। °हा देखो °द्धा (कम्म १ ५, ८)।

छइ देखो छवि=छवि (वा १२)।

छइअ वि [स्थगित] आवृत्त, आच्छादित, तिरोहित (हे २, १७, षड्)।

छइल } छइल्ल } वि [दे] विदग्ध, चतुर, होशियार (पिंग दे ३, २४, गा ७२०, वज्जा पाअ, कुमा)।

छउअ वि [दे] तनु, कृश, पतला (दे ३, २५)।

छउम पुन [छद्मन्] १ कपट, शठता, माया (सम १, षड्)। २ छल, बहाना (हे २, ११२, षड्)। ३ आवरण, आच्छादन (सम १, ठा २, १)।

छउम न [छद्मन्] ज्ञानावरणीय आदि चार घाती कर्म (चेइय ३४६)।

छउमत्थ वि [छद्मस्थ] १ असर्वज्ञ, संपूर्ण ज्ञान से वञ्चित। २ राग-सहित, सराग (ठा ४, १, ६, ७)।

छउलूअ देखो छलूअ (राज, विसे २५०८)।

छंकुई स्त्री [दे] कपिकच्छु, वृक्ष-विशेष, केवाँच, कवाछ (दे ३, २४)।

छंट पुं [दे] छींटा, जल का छींटा, जल-च्छटा। २ वि. शीघ्र, जल्दी करनेवाला (दे ३, ३३)।

छंट सक [सिच्] सींचना। छंटसु (सुपा २६८)।

छंटण न [सेचन] सिंचन, सिंचना (सुपा १३६, कुमा)।

छंटा स्त्री [दे] देखो छंट (पाअ)।

छंटिअ वि [सिक्त] सींचा हुआ (सुपा १३८)।

छड देखो छड्ड=मुच्। छंडइ (आरा ३२, भवि)।

छंडिअ वि [दे] छन्न, गुप्त (षड्)।

छंडिअ वि [मुक्त] परित्यक्त, छोड़ा हुआ (आरा, भाव)।

छंद सक [छन्द्] १ चाहना, वाञ्छना। २ अनुज्ञा देना, संमति देना। ३ निमन्त्रण देना। कवकृ;

(पडि)। °भद्द पुं [°भद्र] यक्षद्वीप का अधिपति देव-विशेष (चंद २०)। °मंडलपविभत्ति स्त्री [°मण्डलप्रविभक्ति] एक तरह का नाट्य (राय)। °मह पुं [°मह] यक्ष के लिए किया जाता महोत्सव (आचा २, १, २)। °महाभद्द पुं [°महाभद्र] यक्ष द्वीप का अधिपति देव (चंद २०)। °महावर पु [°महावर] यक्ष समुद्र का अधिष्ठाता देव-विशेष (चंद २०)। °राय पुं [°राज] १ यक्षो का राजा, कुबेर। २ प्रधान यक्ष (सुपा ४६२)। ३ एक विद्याधर राजा (पउम ८, १२४)। °वर पुं [°वर] यक्ष-समुद्र का अधिपति देव-विशेष (चंद २०)। °इट्ठ वि [°आविष्ट] यक्ष का आवेशवाला, यक्षाधिष्ठित (ठा ५, १, वव २)। °आदित्तय, °आलित्तय न [°आदीप्तक] १ कभी-कभी किसी दिशा मे बिजली के समान जो प्रकाश होता है वह, आकाश मे व्यन्तर-कृत अग्नि-दीपन (भग ३, ६, वव ७)। २ आकाश मे दीखता अग्नि-युक्त पिशाच (जीव ३)। °आवेस पु [°आवेश] यक्ष-कृत आवेश, यक्ष का मनुष्य-शरीर मे प्रवेश (ठा २, १)। °आहिव पुं [°अधिप] १ वैश्रमण, कुबेर, यक्ष राज। २ एक विद्याधर राजा (पउम ८, ११३)। °आहिवइ पुं [°अधिपति] देखो पूर्वोक्त अर्थ (पाअ, पउम ८, ११६)।

जक्खरत्ति स्त्री [दे यक्षरात्रि] दीपालिका, दीवाली, कार्तिक वदि अमास का पर्व (दे ३, ४३)।

जक्खा स्त्री [यक्षा] एक प्रसिद्ध जैन साध्वी, जो महर्षि स्थूलभद्र की बहिन थी (पडि)।

जक्खिंद पुं [यक्षेन्द्र] १ यक्षो की स्वामी, यक्षो का राजा (ठा ४, १)। २ भगवान् अरनाथ का शासनाधिष्ठायक देव (पव २६, संति ८)।

जक्खिणी स्त्री [यक्षिणी] १ यक्ष-योनिक स्त्री, देवियो की एक जाति (आवम)। २ भगवान् श्रीनेमिनाथ की प्रथम शिष्या (सम १५२)।

जक्खिणी स्त्री [यक्षिणी] देखो जक्खा (मंगल २३)।

जक्खी स्त्री [याक्षी] लिपि-विशेष (विसे ४६४ टी)।

जक्खुत्तम पु [यक्षोत्तम] यक्ष-देवो की एक अवान्तर जाति (पराण १)।

जक्खेस पु [यक्षेश] १ यक्षो का स्वामी। २ भगवान् अभिनन्दन का शासन-यक्ष (संति ७)।

जग न [यकृत्] पेट की दक्षिण ग्रन्थि (पराह १, १)।

जग पु [दे] जन्तु, जीव, प्राणी, 'पुढो जगा परिसखाय भिक्खू' (सूअ १, ७, २०)।

जग पुंन [जगत्] प्राणी, जीव, 'पुढविजीवे हिंसिज्जा जे अ तन्निस्सिया जगे' (दस ५, १, ६८, सूअ १, ७, २०, १, ११, ३३)।

जग न [जगत्] जग, ससार, दुनियाँ (स २४६, सुर २, १३१)। °गुरु पु [°गुरु] १ जगत् में सर्व-श्रेष्ठ पुरुष। २ जगत् का पूज्य। ३ जिन-देव, तीर्थंकर (स २१, पंचा ४)। °जीवण वि [°जीवन] १ जगत् को जीलानेवाला। २ पु जिन-देव (राज)। °णाह पुं [°नाथ] जगत् का पालक, परमेश्वर, जिन-देव (णदि)। °पियामह पु [°पितामह] १ ब्रह्मा, विधाता। २ जिनदेव (णदि)। °प्पगास वि [°प्रकाश] जगत् का प्रकाश करनेवाला, जगत्प्रकाशक (पउम २२, ४७)। °प्पहाण न [°प्रधान] जगत् में श्रेष्ठ (गउड)।

जगई स्त्री [जगती] १ प्राकार, किला, दुर्ग (सम १३, चैत्य ६१)। २ पृथिवी (उत्त १)।

जगईपव्वय पु [जगतीपर्वत] पर्वत-विशेष (राय ७५)।

जगजग अक [चकास्] चमकना, दीपना। वकृ जगजगंत, जगजगेत (पउम ७७, २३, १४, १३४)।

जगड सक [दे] १ झगडना, झगडा करना, कलह करना। २ कदर्थन करना, पीडना। ३ उठाना, जागृत करना। वकृ जगडंत (भवि)। कवकृ जगडिज्जंत (पउम ८२, ६, राज)।

जगडण न [दे] नीचे देखो (उव)।

जगडण वि [दे] १ झगडा करानेवाला। २ कदर्थना करानेवाला (धर्मवि ८६, कुप्र ४२६)।

जगडणा स्त्री [दे] १ झगडा, कलह। २ कदर्थन, पीडन, 'सेणिय चिय कम्महणणायगस्स, जगजगडणापमत्तस्स' (उप ५३० टी)।

जगडिअ वि [दे] विद्रावित, कदर्थित (दे ३, ४४, सार्ध ६७, उव)।

जगडिअ वि [दे] लडाया हुआ (धर्मवि ३१)।

जगर पु [जगर] सनाह, कवच, वर्म (दे ३, ४१)।

जगल न [दे] १ पङ्कवाली मदिरा, मदिरा का नीचला भाग (दे ३, ४१)। २ ईख की मदिरा का नीचला भाग (दे ३, ४१, पाअ)।

जगार पुं [दे] राब, यवागू (पव ४)।

जगार पु [जकार] 'ज' अक्षर, 'ज' वर्ण (निचू १)।

जगार पु [यत्कार] 'यत्' शब्द, 'जगारद्दिट्ठाणं तगारेण निद्देसो कीरइ' (निचू १)।

जगारी स्त्री [जगारी] अन्न-विशेष, एक प्रकार का क्षुद्र अन्न, 'असणं ओयणसत्तुगमुग्गजगारीइ' (पंचा ५)।

जगुत्तम वि [जगदुत्तम] जगत्-श्रेष्ठ, जगत् में प्रधान (पराह २, ४)।

जग्ग अक [जागृ] १ जागना, नीद से उठना। २ सचेत होना, सावधान होना। जग्गइ, जग्गि (हे ४, ८०, षड्; प्रासू ६८)। वकृ. जग्गंत (सुपा १८५)। प्रयो. जग्गावइ (पि ५५६)।

जग्गण न [जागरण] जागना, निद्रा-त्याग (ओघ १०६)।

जग्गविअ वि [जागरित] जगाया हुआ, नीद से उठाया हुआ (सुपा ३३१)।

जग्गह पु [यद्ग्रह] जो प्राप्त हो उसे ग्रहण करने की राजाज्ञा, 'रराणा जग्गहो घोसिओ' (आवम)।

जग्गाविअ देखो जग्गविअ (से १०, ५६)।

जग्गाह देखो जग्गह (आक)।

जग्गिअ वि [जागृत] जगा हुआ, त्यक्त-निद्र (गा ३८५, कुमा; सुपा ५६३)।

जग्गिर वि [जागरितृ] १ जागनेवाला। २ सावचेत रहनेवाला (सुपा २१८)।

जघण न [जघन] कमर के नीचे का भाग, ऊरुस्थल (कप्प, औप)।

ऋतु की पूर्णिमा का चन्द्रमा (स ३७१)। °ससि पु [°शशिन्] वही पूर्वोक्त अर्थ (सुपा ३०६)।

छणण न [छगन] हिंसन, हिंसा (ग्राचा)।

छणिंदु पु [क्षणेन्दु] शरद् ऋतु की पूर्णिमा का चन्द्र (सुपा ३३, ४०४)।

छण्ण वि [छन्न] १ गुप्त, प्रच्छन्न, छिपाया हुआ (वृह १, प्राप)। २ आच्छादित, ढका हुआ (गा ५८०)। ३ न माया, कपट (सूत्र १, २, २)। ४ निर्जन, विजन, रहस्। ५ क्रिवि गुप्त रीति से, प्रच्छन्न रूप से,

'ज छण्णं आयरियं,
तइया जणणीए जोव्वणमएण।
त पडिव (? यडि) ज्जइ
इण्हिं सुएहिं सील चयतेहिं'
(उप ७२८ टी)।

छण्णालय न [दे पण्णालक] त्रिकाष्ठिक, तिपाई, सन्यासियों का एक उपकरण (भग, ग्रौप, णाया १, ५)।

छत्त न [छत्र] छाता, आतपत्र (णाया १, ५, प्रासू ५२)। °धार पुं [°धार] छाता धारण करनेवाला नौकर (जीव ३)। °पडागा स्त्री °[पताका] १ छत्र-युक्त ध्वज। २ छत्र के ऊपर की पताका (ग्रौप)। °पलासय न [°पलाशक] कृतमंगला नगरी का एक चैत्य (भग)। °भंग पु [°भङ्ग] राज-नाश, नृप-मरण (राज)। °हार देखो °धार (आवम)। °इच्छत्त न [°तिच्छत्र] १ छत्र के ऊपर का छाता (सम १३७)। २ पुं. ज्योतिष-शास्त्र प्रसिद्ध योग-विशेष (सुज्ज १२)।

छत्त न [छत्र] लगातार तैंतीस दिनों का उपवास (संबोध ५८)। पुन. एक देवविमान (देवेन्द्र १४०)। ३ पुं ज्योतिष प्रसिद्ध एक योग जिसमें चन्द्र आदि ग्रह छत्र के आकार से रहते हैं (सुज्ज १२—पत्र २३३)। °इल्ल वि [°वत्] छातावाला (सुख २, १३)। °कार वि [कार] छाता बनानेवाला शिल्पी (अणु १४९)। °ग पुंन [°क] वनस्पति-विशेष (सूत्र २, ३, १६)।

छत्त पुं [छात्र] विद्यार्थी, अभ्यासी (उप पृ ३३१, १६६ टी)।

छत्तंतिया स्त्री [छत्रान्तिका] परिषद्-विशेष, सभा-विशेष (वृह १)।

छत्तच्छय (अप) पु [सप्तच्छद] वृक्ष-विशेष, सतौना, छतिवन (मण)।

छत्तधन्न न [दे] घास, तृण (पात्र)।

छत्तवण्ण देखो छत्तिवण्ण (प्राप्र)।

छत्ता स्त्री [छत्रा] नगरी-विशेष (आवम)।

छत्तार पुं [छत्रकार] छाता बनानेवाला कारीगर (पण्ण १)।

छत्ताइ पु [छत्राभ] वृक्ष-विशेष, 'णग्गोहस-त्तिवण्णे, साले पियए पियंगुछत्ताहें' (सम १५२)।

छत्ति वि [छत्रिन्] छत्र-युक्त, छातावाला (भास ३३)।

छत्तिवण्ण पुं [सप्तपर्ण] वृक्ष-विशेष, सतौना, छतिवन, (हे १, २६५, कुमा)।

छत्तोय पु [छत्रौक] वनस्पति-विशेष, वृक्ष-विशेष (पण्ण १—पत्र ३५)।

छत्तोव पुं [छत्रोप] वृक्ष-विशेष (ग्रौप, अंत)।

छत्तोह पुं [छत्रौघ] वृक्ष-विशेष (ग्रौप, पण्ण १—पत्र ३१, भग)।

छदमत्थ देखो छउमत्थ (द्रव्य ४४)।

छद्दवण देखो छड्डुवण (राज)।

छद्दसम वि [पड्दश] छ या दश (सूत्र २, २, २१)।

छद्दी स्त्री [दे] शय्या, बिछौना (दे ३, २४)।

छन्न वि [क्षण] हिंसा-प्रधान, हिंसा-जनक (सूत्र १, ९, २६)।

छन्न देखो छण्ण (कप्प, उप ६४८ टी, प्रासू ८२)।

छप्पइगिल्ल वि [पट्पदिकावत्] यूका-युक्त यूकावाला (वृह ३),

छप्पइया स्त्री [पट्पदिका] यूका, जूँ (ओघ ७२४)।

छप्पती स्त्री [दे] नियम-विशेष, जिसमें पद्य लिखा जाता है (दे ३, २५)।

छप्पण्ण } वि [दे पट्प्रज्ञक] विदग्ध,
छप्पण्णय } चतुर, चालाक (दे ३, २४, पात्र, वज्जा ५८)।

छप्पत्तिआ स्त्री [दे] १ चपत, थप्पड़, तमाचा। २ चपाती, रोटी, फुलका,

'छप्पत्तिआवि खज्जइ,
निप्पत्ते पुत्ति! एत्थ को देसो ?।
निग्गपुरिसेवि रमिज्जइ,
परपुरिसविवज्जिए गामे'
(गा ८८७)।

छप्पन्न [दे] देखो छप्पण्ण (जय ६)।

छप्पय पु [पट्पद] १ भ्रमर, भौंरा (हे १, २६५, जीव ३)। २ वि. छ स्थानवाला। ३ छ प्रकार का (विसे २८६१)। ४ न छन्द-विशेष (पिंग)।

छब्ब } पुंन [दे] पात्र-विशेष (ग्राचा २,
छब्बग } १, ८, १, पिंड ५६१, २७८)।

छब्बय न [दे] वंश-पिटक, घी वगैरह को छानने का उपकरण-विशेष, 'मुइंगाईमक्कोड-एहिं समत्तगं च नाऊणं। गालेज्ज छब्बएणं' (ओघ ५५८)।

छब्भामरी स्त्री [पट्भ्रामरी] एक प्रकार की वीणा (णाया १, १७—पत्र २२९)।

छमच्छम अक [छमच्छमाय्] 'छम-छम' आवाज करना, गरम चीज पर दिया जाता पानी की आवाज। छमच्छमइ (वज्जा ८८)।

छम° देखो छमा। °रुह पुं [°रुह] वृक्ष, पेड, दरख्त (कुमा)।

छमलय पुं [दे] सप्तच्छद, वृक्ष-विशेष, सतौना, छतिवन (दे ३, २५)।

छमा स्त्री [क्षमा, क्ष्मा] पृथिवी, धरिणी, भूमि (हे २, १८)। °हर पु [°धर] पर्वत, पहाड (पड्)। देखो छम°।

छमी स्त्री [शमी] वृक्ष-विशेष, अग्नि-गर्भ वृक्ष (हे १, २६५)।

छम्म देखो छउम (हे २, ११२, पड्, पउम ४०, ५, सण)।

छम्मुह पुं [पण्मुख] १ स्कन्द, कार्तिकेय (हे १, २६५)। २ भगवान् विमलनाथ का अधिष्ठायक देव (संति ८)।

छय न [छद] १ पर्ण, पत्ती, पत्र, पत्ता (ग्रौप)। २ आवरण, आच्छादन (से ९, ४७)।

छय न [क्षत] १ व्रण, घाव (हे २, १७)। २ पीडित, व्रणित (सूत्र १, २, २)।

छयल्ल [दे] देखो छइल्ल (रंभा)।

छरु पु [त्सरु] खड्ग-मुष्टि, तलवार का हाथा (पण्ह १, ४)। °प्पवाय न [°प्रवाद] खड्ग-शिक्षा-शास्त्र (ज २)।

६५, स्वप्न १६)। २ देहाती मनुष्य (सूत्र १, १, २)। ३ समुदाय, वर्ग, लोक (कुमा; पंचव ४)। ४ वि. उत्पादक, उत्पन्न करनेवाला 'जेण सुहज्भप्पजण' (विसे ६६०)। °जत्ता स्त्री [°यात्रा] जन-समागम, जन-संगति, 'जणजत्तारहियाणं होइ जइत्तं जईण सया' (दस ४)। °ट्ठाण न [°स्थान] १ दण्डकारण्य दक्षिण का एक जंगल। २ नगर-विशेष, नासिक (ती २८)। °वइ पुं [°पति] लोगो का मुखिया (औप)। °वय पुं [°व्रज] मनुष्य समूह (पउम ४, ५)। °वाय पुं, [°वाद] १ जन-श्रुति, किवदन्ती, उडती खबर (सुपा ३००)। २ मनुष्यो की आपस मे चर्चा (औप)। ३ लोकापवाद, लोक में निन्दा, 'जणवायभएणं' (श्रव १)। °स्सुइ स्त्री [°श्रुति] किवदन्ती। °विवाय पुं [°पवाद] लोक में निन्दा (गा ४८४)।

जणइ स्त्री [जनिका] उत्पादिका, उत्पन्न करनेवाली (कुमा)।

जणइउ } पु [जनयितृ] १ जनक, पिता
जणइत्तु } (राज)। २ वि उत्पादक, उत्पन्न करनेवाला (ठा ४, ४)।

जणउत्त पुं [दे] ग्राम का प्रधान पुरुष, गाँव का मुखिया (दे ३, ५२, पड्)। २ विट, भाण्ड, भाँड, विदुषक (दे ३, ५२)।

जणंगम पु [जनङ्गम] चाण्डाल, 'रायणो हुंति रका य बंभणा य जणंगमा' (उप १०३१ टी, पाअ)।

जणग देखो जणय (भग, उप पृ २१६, सुर २, १३७)।

जणण न [जनन] १ जन्म देना, उत्पन्न करना, पैदा करना (सुपा ५६७, सुर ३, ६, द्र ५७)। २ वि. उत्पादक, जनक (उर ६, ६, कुमा; भवि), 'जणमरणपसायजणणा' (वसु)।

जणणि } स्त्री [जननि, °नी] १ माता,
जणणी } अम्बा (सुर ३, २५, महा, पाअ)। २ उत्पन्न करनेवाली स्त्री, उत्पादिका (कुमा)।

जणद्दण पुं [जनार्दन] श्रीकृष्ण, विष्णु (उप ६४८ टी, पिंग)।

जणप्पवाद पुं [जनप्रवाद] जन-रव, लोकोक्ति, अफवाह (मोह ४३)।

जणमेअअ पुं [जनमेजय] स्वनाम-प्रसिद्ध नृप-विशेष (चारु १२)।

जणमेजय देखो जणमेअअ (धर्मवि ८१)।

जणय वि [जनक] १ उत्पादक, उत्पन्न करनेवाला, 'दिट्ठिविय पिसुणाण सव्वं सव्वस्स भयजणयं' (प्रासू १६)। २ पु. पिता, बाप (पाअ, सुर ३, २५, प्रासू ७७)। ३ देखो जण = जन (सूअ १, ६)। ४ मिथिला का एक राजा, राजा जनक, सीता का पिता (पउम २१, ३३)। ५ पुन व. माता-पिता, माँ-बाप, 'जं किंपि कोई साहइ. तज्जणयाइ कुणंति तं सव्वं' (सुपा ३५६, ५६८)। °तणआ स्त्री [°तनया] राजा जनक की पुत्री, राजा रामचन्द्र की पत्नी, सीता, जानकी (से १, ३७)। °दुहिया, °धूआ [°दुहितृ] वही अर्थ (पउम २३, ११, ४८, ४)। °नंदण पुं [°नन्दन] राजा जनक का पुत्र, भामण्डल (पउम ६५, २५)। °नंदणी स्त्री [°नन्दनी] सीता, राम-पत्नी, जानकी (पउम ६४, ४६)। °णंदिणी स्त्री [°नन्दिनी] वही अर्थ (पउम ४५, १८)। °निवतणया स्त्री [°नृपतनया] राजा जनक की पुत्री, सीता (पउम ४८, ६०)। °पुत्ती स्त्री [°पुत्री] वही अर्थ (रयण ७८)। °सुअ पु [°सुत] जनक राजा का पुत्र, भामण्डल (पउम ६५, २८)। °सुआ स्त्री [°सुता] जानकी, सीता (पउम ३७, ६२, से २, ३८, १०, ३)।

जणयंगया स्त्री [जनकाङ्गजा] जानकी, सीता, राजा रामचन्द्र की पत्नी (पउम ४१, ७८)।

जणवय पुं [जनपद] १ देश, राष्ट्र, जन-स्थान, लोकालय (औप)। २ देश-निवासी जन-समूह, प्रजा (पण्ह १, ३, आचा)।

जणवय वि [जानपद] देश में उत्पन्न, देश का निवासी (आचा)।

जणस्सुइ स्त्री [जनश्रुति] किवदन्ती, अफवाह, कहावत (धर्मवि ११२)।

जणि (अप) अ [इव] तरह, माफिक, जैसा (हे ४, ४४४, पड्)।

जणिअ वि [जनित] उत्पादित, उत्पन्न किया हुआ (पाअ)।

जणी स्त्री [जनी] स्त्री, नारी, महिला (णाया २—पत्र २५३, पउम १५, ७३)।

जणु देखो जणि (हे ४, ४४४, कुमा, पड्)।

जणुक्कलिआ स्त्री [जनोत्कलिका] मनुष्यो का छोटा समूह (भग)।

जणुम्मि स्त्री [जनोर्मि] तरंग की तरह मनुष्यो की भीड (भग)।

जणेमाण देखो जण = जनय्।

जणेर (अप) वि [जनक] १ उत्पादक, पैदा करनेवाला। २ पुं. पिता, बाप (भवि)।

जणेरि (अप) स्त्री [जननी] माता, माँ (भवि)।

जण्ण पु [यज्ञ] १ यज्ञ, याग, मख, क्रतु (प्राप्र, गा २२७)। २ देव-पूजा। ३ श्राद्ध (जीव ३)। °इ, °जाइ वि [°याजिन्] यज्ञ करनेवाला (औप, निचू १)। °इज्ज वि [°ीय] १ यज्ञ-सम्बन्धी, यज्ञ का। २ न. 'उत्तराध्ययन' सूत्र का एक प्रकरण (उत्त २५)। °ट्ठाण न [°स्थान] १ यज्ञ का स्थान। २ नगर-विशेष, नासिक (ती २०)। °मुह न [°मुख] यज्ञ का उपाय (उत्त २५)। °वाड पुं [°वाट] यज्ञ-स्थान (गा २२७)। °सेट्ठ पुं [°श्रेष्ठ] श्रेष्ठ यज्ञ, उत्तम याग (उत्त १२)।

जण्ण देखो जन्न = जन्य (धर्मसं १००)।

जण्णय देखो जणय (प्राप्र)।

जण्णयत्ता स्त्री [दे· यज्ञयात्रा] वरात, विवाह की यात्रा, वर के साथियों का गमन (उप ६५४)।

जण्णसेणी स्त्री [याज्ञसेनी] द्रौपदी, पाण्डव-पत्नी (वेणी ३७)।

जण्णहर पु [दे] नर-राक्षस, दुष्ट-मनुष्य (पड्)।

जण्णिय पु [याज्ञिक] याजक, यज्ञ करानेवाला (श्रावम)।

जण्णोवईय } न [यज्ञोपवीत] यज्ञ-सूत्र,
जण्णोववीय } जनेऊ (उत्त २, श्रावम)।

जण्णोहण पु [दे] राक्षस, पिशाच (दे ३, ४३)।

जण्ह न [दे] १ छोटी स्थाली। २ वि. कृष्ण, काले रंग का (दे ३, ५१)।

जण्हई स्त्री [जाह्नवी] गंगा नदी, भागीरथी (अच्चु ६)।

छाया स्त्री [छाया] १ आतप का अभाव, छाँह (पाअ)। २ कान्ति, प्रभा, दीप्ति (हे १, २४९; औप; पाअ)। ३ शोभा (औप)। ४ प्रतिबिम्ब, परछाइँ (प्रासू ११४, उत्त २)। ५ धूप-रहित स्थान, अनातप देश (ठा २, ४)। °गइ स्त्री [°गति] १ छाया के अनुसार गमन। २ छाया के अवलम्बन से गति (पएण १६)। °पास पु [°पार्श्व] हिमाचल पर स्थित भगवान् पार्श्वनाथ की मूर्त्ति (ती ४५)।

छाया स्त्री [दे] १ कीर्त्ति, यश, ख्याति। २ भ्रमरी, भमरी, भौंरी (दे ३, ३४)।

छायाइत्तय वि [छायावत्] छायावाला, छाया-युक्त। स्त्री °इत्तिआ (हे २, २०३)।

छायाल स्त्री [षट्चत्वारिंशत्] छियालीस, चालीस और छ, ४६ (भग)।

छायालीस स्त्रीन ऊपर देखो (सम ६९, कप्प)।

छायालीस वि [षट्चत्वारिंश] छियालीसवाँ, ४६ वाँ (पउम ४६, ९९)।

छार वि [क्षार] १ पिघलनेवाला, झरनेवाला। २ खारा, लवण-रसवाला। ३ पुं. लवण, नोन, नमक। ४ सज्जी, सजीखार। ५ गुड (हे २, १७, प्राप्र)। ६ भस्म, भूति (विसे १२५९; स ४४; प्रासू १४५; णाया १,२)। ७ मात्सर्य, असहिष्णुता (जीव ३)।

छार पु [दे] अच्छभल्ल, भालूक (दे ३, २६)।

छारय देखो छार (श्रा २७)।

छारय न [दे] १ इक्षु-शल्क, ऊख की छाल (६, ३, ३४)। २ मुकुल, कली (दे३, ३४; पाअ)।

छारिय वि [छारिक] क्षार-सम्बन्धी (दस ५, १, ७)।

छाल पुं [छाग] अज, बकरा (हे १, १९१)।

छालिया स्त्री [छागिका] अजा, छागी (सुर ७, ३०, सण)।

छाली स्त्री [छागी] ऊपर देखो (प्रामा)।

छाव पुं [शाव] बालक, बच्चा, शिशु (हे १, २६५, प्राप्र, वव १)।

छावण देखो छायण (वृह १)।

छावट्ठि स्त्री [षट्षष्टि] छाछठ, छियासठ, ६६ (सम ७८, विसे २७६१)।

छावत्तरि स्त्री [षट्सप्तति] छिहत्तर, सत्तर और छ ७६ (पउम १०२, ८६, सम ८५)। °म वि [°तम] छिहत्तरवाँ (भग)।

छावलिय वि [षडावलिक] छ आवलिका-परिमित समयवाला (विसे ५३१)।

छासट्ठ वि [षट्षष्ट] छियासठवाँ (पउम ६६, ३७)।

छासी स्त्री [दे] छाछ, तक्र, मट्ठा (दे ३, २६)।

छासीइ स्त्री [षडशीति] छियासी, अस्सी और छ। °म वि [°तम] छियासीवाँ, ८६ वाँ (पउम ८६, ७४)।

छाहत्तरि (अप) देखो छावत्तरि (पि २४५)।

छाहत्तरि देखो छावत्तरि (पव २३६)।

छाहा, छाहिया, छाही स्त्री [छाया] १ छाँह, आतप का अभाव। २ प्रतिबिम्ब, परछाइँ (पड्; प्राप, सुर २, २४७, ६, ६५; हे १, २४९; गा ३४)।

छाही स्त्री [दे] गगन, आकाश। °मणि पुं [°मणि] सूर्य, सूरज (दे ३, २६)।

छिअ देखो छीअ (दे ८, ७२, प्रामा)।

छिछई स्त्री [दे] असती, कुलटा (हे २, १७४, गा, ३०१; ३५०, पाअ, धर्मरत्न-लघुवृत्तिपत्र ३१, १)।

छिछटरमण न [दे] क्रीडा-विशेष, चक्षु-स्थगन की क्रीडा (दे ३, ३०)।

छिछय पु [दे] १ देह, शरीर। २ जार, उपपति। ३ न फल-विशेष, शलाटु-फल (दे ३, ३६)।

छिछोली स्त्री [दे] छोटा जल-प्रवाह (दे ३, २७, पाअ)।

छिंड न [दे] १ चूडा, चोटी (दे ३, ३५, पाअ)। २ छत्र, छाता। ३ धूप-यन्त्र (दे ३, ३५)।

छिंडिआ स्त्री [दे] १ वाड का छिद्र। २ अपवाद, 'छ छिंडिआओ जिणसासणम्मि' (पव १४८; श्रा ६)।

छिंडी स्त्री [दे] वाड का छिद्र (णाया १, २—पत्र ७९)।

छिंद सक [छिद्] छेदना, विच्छेद करना। छिंदइ (प्राप्र, महा)। भवि छेच्छं (हे ३, १७१)। कर्म. छिज्जइ (महा)। वकृ. छिंदमाण (णाया १, १)। कवकृ. छिज्जंत, छिज्जमाण (श्रा ६; विपा १, २)। संकृ. छिंदिऊण, छिंदित्ता, छिंदित्तु, छिंदिय, छेत्तूण (पि ५८५, भग १४, ८, पि ५०६, ठा ३, २; महा)। कृ. छिंदियव्व (पण्ह २, १)। हेकृ. छेत्तु (आचा)।

छिंदण न [छेदन] छेद, खण्डन, कर्त्तन (ओघ १५४ भा)।

छिंदावण न [छेदन] कटवाना, दूसरे द्वारा छेदन कराना (महानि ७)।

छिंदाविय वि [छेदित] विच्छिन्न कराया गया (स २२९)।

छिपय पुं [छिम्पक] कपडा छापने का काम करनेवाला (दे १, ९८, प्राप्र)।

छिंक न [दे] क्षुत, छींक (दे ३, ३८, कुमा)।

छिक्क वि [दे छुप्त] स्पृष्ट, छूआ हुआ (दे ३, ३६, हे २, १३८, से ३, ४६, स ४४४)। °परोइया स्त्री [°प्ररोदिका] वनस्पति-विशेष (विसे १७५४)।

छिक्क वि [छीत्कृत] छी-छीं आवाज से आहूत, 'पुव्विंपि वीरसुणिआ छिक्काछिक्का पहावए तुरियं' (ओघ १२४ भा)।

छिक्कत वि [दे] छींक करता हुआ (सुपा ११९)।

छिक्का स्त्री [दे] छिक्का, छींक (स ३२०)।

छिक्कारिअ वि [छीत्कारित] छीं-छी आवाज से आहूत, अव्यक्त आवाज से बुलाया हुआ (ओघ १२४ भा टी)।

छिक्किय न [दे] छींकना, छींक करना (स ३२४)।

छिक्कोअण वि [दे] असहन, असहिष्णु (दे ३, २९)।

छिक्कोट्टली स्त्री [दे] १ पैर की आवाज। २ पाँव से धान्य का मलना। ३ गोइठा का टुकडा, गोबर-खण्ड (दे ३, ३७)।

छिक्कोलिअ वि [दे] तनु, पतला, कृश (दे ३, २५)।

छिक्कोवण [दे] देखो छिक्कोअण (ठा ६—पत्र ३७२)।

छिग्ग (शौ) सक [छुप्] छूना। छिग्गदि (प्राकृ ९३)।

छिच्चोल्य पु [दे] देखो छिव्वोल्ल (पाअ)।

छिच्छई देखो छिंछई (षड्)।

छिच्छय देखो छिंछय (षड्)।

जमा स्त्री [यामी] दक्षिण दिशा (ठा १०—पत्र ४७८)।

जमालि पुं [जमालि] स्वनाम-ख्यात एक राज-कुमार, जो भगवान् महावीर का जामाता था, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी और पीछे से अपना अलग पन्थ निकाला था (णाया १, ८, ठा ७)।

जमावण न [यमन] १ नियन्त्रण करना। २ विषम वस्तु को सम करना (निचू १)।

जमिअ वि [यमित] नियन्त्रित, संयमित, काबू में किया हुआ (से ११, ४१, सुपा ३)।

जमुणा देखो जँउणा (पि १७६, २५१)।

जमू स्त्री [जमू] ईशानेन्द्र की एक अग्र-महिषी का नाम (इक)।

जम्म अक [जन्] उत्पन्न होना। जम्मइ (हे ४, १३६, षड्)। वकृ. जम्मत (कुमा), 'जम्मतीए सोगो, वड्ढंतीए य वड्ढए चिंता' (सूक्त ८८)।

जम्म सक [जम्] खाना, भक्षण करना। जम्मइ (षड्)।

जम्म पुन [जन्मन्] जन्म, उत्पत्ति (ठा ६, महा, प्रासू ६०)।

जम्मण न [जन्मन्] जन्म, उत्पत्ति, उत्पाद (हे २, १७४, णाया १, १, सुर १, ६)।

जम्मा स्त्री [याम्या] दक्षिण दिशा (उप पृ ३७५)।

जम्हाअ, जम्हाह, जम्हाडा } देखो जभाअ। जम्हाअइ, जम्हाहइ, जम्हाहाइ (प्राकृ ६४)।

जय सक [जि] १ जीतना। २ अक. उत्कृष्ट-पन से वरतना। जयइ (महा)। जयति (स ३९)। सकृ. जइत्ता (ठा ६)।

जय सक [यज्] १ पूजा करना। २ याग करना। जयइ (उत्त २५, ४)। वकृ. जअमाण (अभि १२५)।

जय अक [यत्] १ यत्न करना, चेष्टा करना। २ ख्याल करना, उपयोग करना। जयइ (उव)। भवि जइस्सामि (महा)। वकृ. जयत, जयमाण (स २६०, श्रा २६, ओघ १२४, पुप्फ २४१)। कृ जइयव्व (उव, सुर १, ३४)।

जय न [जगत्] जगत्, दुनियाँ, संसार (प्रासू १५५, से ६, १)। °त्तय न [°त्रय] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक (सुपा ७६, ६५)। °नाह पु [°नाथ] परमेश्वर, परमात्मा (पउम ८६, ६५)। °पहु पु [°प्रभु] परमेश्वर (सुपा २८, ८८)। °णंद वि [°नन्द] जगत् को आनन्द देनेवाला (पउम ११७, ६)।

जय वि [यत] १ संयत, जितेन्द्रिय (भास ६५)। २ उपयोग रखनेवाला, ख्याल रखनेवाला (उत्त १, श्राव ४)। ३ न. छठवाँ गुण-स्थानक (कम्म ४, ४८)। ४ ख्याल, उपयोग, सावधानता (णाया १, १—पत्र ३३), 'जय चरे जय चिट्ठे' (दस ४)।

जय पुं [जव] वेग, शीघ्र-गमन, दौड (पाअ)।

जय पुं [जय] १ जय, जीत, शत्रु का पराभव (औप, कुमा)। २ स्वनाम-प्रसिद्ध एक चक्र-वर्त्ती राजा (सम १५२)। °उर न [°पुर] नगर-विशेष (स ६)। °कम्मा स्त्री [°कर्मा] विद्या-विशेष (पउम ७, १३८)। °घोस पु [°घोष] १ जय ध्वनि। २ स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन मुनि (उत्त २५)। °चंद पु [°चन्द्र] १ विक्रम की बारहवी शताब्दी का कन्नौज का एक अन्तिम राजा। २ पन्नरहवी शताब्दी का एक जैनाचार्य (रयण ६४)। °जत्ता स्त्री [°यात्रा] शत्रु पर चढाई (सुपा ५४१)। °पडाया स्त्री [°पताका] विजय का झंडा (श्रा १२)। °पुर देखो °उर (वसु)। °मंगला स्त्री [°मङ्गला] एक राज-कुमारी (दंस ३)। °लच्छी स्त्री [°लक्ष्मी] जय-लक्ष्मी, विजयश्री (से ४, ३१, काप्र ७४३)। °वंत वि [°वत्] जय-प्राप्त, विजयी (पउम ६६ ४६)। °वल्लह पु [°वल्लभ] नृप-विशेष (दस १)। °संध पुं [°सन्ध] पुण्डरीक-नामक राजा का एक मन्त्री (आचू ४)। °संधि पु [°सन्धि] वही पूर्वोक्त अर्थ (आव ४)। °सद्द पुं [°शब्द] विजय-सूचक आवाज (औप)। °सिंह पुं [°सिंह] १ सिंहल द्वीप का एक राजा (रयण ४४)। २ विक्रम की बारहवी शताब्दी का गुजरात का एक प्रसिद्ध राजा, जिसका दूसरा नाम 'सिद्ध-राज' था, 'जेण जयसिंहदेवो राया भणिऊण सयलदेसम्मि' (मुणि १०६००)। ३ स्वनाम-ख्यात जैनाचार्य-विशेष (सुपा ६५८), 'सिरि-जयसिंहो सूरी नयभरीमण्डलम्मि सुप्रसिद्धो' (मुणि १०८७२)। °सिरि स्त्री [°श्री] विजयश्री, जयलक्ष्मी (आवम)। °सेण पु [°सेन] स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा (महा)। °वह वि [°वह] १ जय को वहन करनेवाला, विजयी (पउम ७०, ७, सुपा २३४)। २ विद्याधर-नगर-विशेष (इक)। °वहपुर न [°वहपुर] एक विद्याधर-नगर (इक)। °वास न [°वास] विद्याधरों का एक स्वनाम-ख्यात नगर (इक)।

जय पुं [यत] प्रयत्न, चेष्टा, कोशिश (दस ५, १, ६६)।

जय पुस्त्री [जया] तिथि-विशेष—तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी तिथि (ज १)।

जय° देखो जया = यदा। °प्पभिइ अ [°प्रभृति] जब से, जिस समय से (स ३१६)।

जयंत पु [जयन्त] १ इन्द्र का पुत्र (पाअ)। २ एक भावी बलदेव (सम १५४)। ३ एक जैन मुनि, जो वज्रसेन मुनि के तृतीय शिष्य थे (कप्प)। ४ इस नाम के देव-विमान में रहनेवाली एक उत्तम देव जाति (सम ५६)। ५ जंबूद्वीप को जगती के पश्चिम द्वार का एक अधिष्ठाता देव (ठा ४, २)। ६ न देव-विमान-विशेष (सम ५६)। ७ जम्बूद्वीप की जगती का पश्चिम द्वार (ठा ४, २)। ८ रुचक पर्वत का एक शिखर (ठा ४)।

जयती स्त्री [जयन्ती] १ पक्ष की नववी रात (सुज्ज १०, १४)। २ भगवान् अरनाथ की दीक्षा-शिविका (विचार १२६)।

जयती स्त्री [जयन्ती] १ वल्ली-विशेष, अरणी, वर्ष गांठ (पएण १)। २ सप्तम बलदेव की माता (सम १५२)। ३ विदेह वर्ष की एक नगरी (ठा २, ३)। ४ अगारक-नामक ग्रह की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १)। ५ जम्बूद्वीप के मेरु से पश्चिम दिशा में स्थित रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८)। ६ भगवान् महावीर की एक उपासिका (भग १२, २)। ७ भगवान् महावीर के आठवें गणधर की माता (आवम)। ८ अजनक

जिसके पन्ने विशेष लम्बे और कम चौडे हो ऐसी पुस्तक (ठा ४, २; पव ८०)।

छिविअ वि [स्पृष्ट] १ छूआ हुआ (दे ३, २७) २ न. स्पर्श, छूना (से २, ८)।

छिविअ न [दे] ईख का टुकडा (दे ३, २७)।

छिवोल्लअ [दे] देखो छिव्वोल्ल (गा ६०५ अ)।

छिव्व वि [दे] कृत्रिम, बनावटी (दे ३, २७)।

छिव्वोल्ल न [दे] १ निन्दार्थक मुख-विकूरणन, अरुचि-प्रकाशक मुख-विकार-विशेष। २ विकूणित मुख (दे ३, २८)।

छिह सक [स्पृश्] स्पर्श करना, छूना। छिहइ (हे ४, १८२)।

छिहंड न [शिखण्ड] मयूर की शिखा (णाया १, १—वत्र ५७ टी)।

छिहंडअ पुं [दे] दही का बना हुआ मिष्टान्न, दधिसर, गुजराती में जिसे 'सिखंड' कहते हैं (दे ३, २९)।

छिहंडि पु [शिखण्डिन्] १ मयूर, मोर। २ वि. मयूरपिच्छ को धारण करनेवाला (णाया १, १—पत्र ५७ टी)।

छिहली स्त्री [दे] शिखा, चोटी (वृह ४)।

छिहा स्त्री [स्पृहा] स्पृहा, अभिलाष (कुमा, हे १, १२८; षड्)।

छिहिंडिभिल्ल न [दे] दधि, दही (दे ३, ३०)।

छिहिअ वि [स्पृष्ट] छूआ हुआ (कुमा)।

छीअ स्त्रीन [क्षुत] छिक्का, छींक (हे १, ११२; २, १७; ओघ ६४३; पडि)। स्त्री. °आ (श्रा २७)।

छीअमाण वि [क्षुवत्] छींक करता (आचा २, २, ३)।

छीण वि [क्षीण] क्षय-प्राप्त, कृश, दुर्बल (हे २, ३; गा ८४)।

छीयंत वि [क्षुवत्] छींक करता (ती ८)।

छीर न [क्षीर] जल, पानी। २ दुग्ध, दूध (हे २, १७; गा ५६७)। °बिराली स्त्री [°बिडाली] वनस्पति-विशेष, भूमि-कूष्माण्ड (पराण १—पत्र ३५)।

छीरल पु [क्षीरल] हाथ से चलनेवाला एक तरह का तन्तु, साँप की एक जाति (पराह १, १)।

छीवोल्लअ [दे] देखो छिव्वोल्ल (गा ६०३)।

छु सक [क्षुद्] १ पीसना। २ पीलना। कर्म. छुज्जइ (उव)। कवकृ. छुज्जमाण (संथा ६०)।

छुअ देखो छीअ (प्राप्र)।

छुअ देखो छुव। छुअइ (प्राकृ ७६)।

छुई स्त्री [दे] वलाका, बकपंक्ति (दे ३, ३०)।

छुंछुई स्त्री [दे] कपिकच्छु, केवाँच का पेड़ (दे ३, ३४)।

छुछुमुसय न [दे] रणरणक, उत्सुकता, उत्कण्ठा (दे ३, ३१)।

छुंद वि [आ + क्रम्] आक्रमण करना। छुंदइ (हे ४, १६०; षड्)।

छुद सक [दे] वहु, प्रभूत (दे ३, ३०)।

छुक्कारण न [धिक्कारण] धिक्कारना, निंदा (वृह २)।

छुच्छ वि [तुच्छ] तुच्छ, क्षुद्र, हलका (हे १, २०४)।

छुच्छुक्कर सक [छुन्छु + कृ] 'छुन्छु' आवाज करना, श्वानादि को बुलाने को आवाज करना। छुच्छुक्करेति (आचा)।

खुज्जमाण देखो छु।

छुट्ट अक [छुट्] छूटना, बन्धन-मुक्त होना। छुट्टइ (भवि)। छुट्टह (धम्म ६ टी)।

छुट्ट वि [छुटित] छूटा हुआ, बन्धन-मुक्त (सुपा ४०७; सूक्त ८६)।

छुट्ट वि [दे] छोटा, लघु (पाअ)।

छुट्टण न [छोटन] छुटकारा, मुक्ति (श्रा २७)।

छुट्ठ वि [दे] १ लिप्त। २ क्षिप्त, फेंका हुआ (भवि)।

छुडु अ [दे] १ यदि, जो (हे ४, ३८५; ४२२)। २ शीघ्र, तुरन्त (हे ४, ४०१)।

छुड्ड वि [क्षुद्र] क्षुद्र, तुच्छ, हलका, लघु (औप)।

छुड्डिया स्त्री [क्षुद्रिका] आभरण-विशेष (पराह २, ५—पत्र १५६ टी)।

छुण्ण वि [क्षुण्ण] १ चूर्णित, चूर-चूर किया हुआ। २ विहत, विनाशित। ३ अभ्यस्त (हे २, १७; प्राप्र)।

छुत्त वि [क्षुप्त] स्पृष्ट, छूआ हुआ (हे २, १३८; कुमा)।

छुत्ति स्त्री [दे] छूत, अशौच (सूक्त ८६)।

छुदहीर पुं [दे] १ शिशि, बच्चा, बालक। २ शशी, चन्द्रमा (दे ३, ३८)।

छुद्दिया देखो छुड्डिया (पराह २, ५—पत्र १४६)।

छुद्ध देखो खुद्ध (प्राप्र)।

छुद्ध वि [दे] क्षिप्त, प्रेरित (सण)।

छुध वि [क्षुध] भूखा (प्राकृ २२)।

छुन्न पुंन [क्षुण्ण] क्लीव, नपुंसक (पिंड ४२५)।

छुन्न देखो छुण्ण, 'जंतम्मि पावमइणा छुन्ना छन्नेण कम्मेण' (सया ५९)।

छुप्पंत देखो छुव।

छुब्भ अक [क्षुभ्] क्षुब्ध होना, विचलित होना। छुब्भति (पि ६६)।

छुब्भत्थ [दे] देखो छोब्भत्थ (दे ३, ३३)।

छुभ देखो छुह। छुभइ, छुभेइ (महा, रयण २०)। संकृ छुभित्ता (पि ६६)।

छुमा देखो छमा (दसचू १)।

छुर सक [छुर्] १ लेप करना, लीपना। २ छेदन करना, छेदना। ३ व्याप्त करना (वा १२; पउम २८, २८)।

छुर पुं [क्षुर] १ छुरा, नपित का अस्त्र। २ पशु का नख, खुर। ३ वृक्ष-विशेष, गोखरू। ४ वाण, शर, तीर (हे २, १७; प्राप्र)। ५ न. तृण-विशेष (पराण १)। °घरय न [°गृहक] नापित के छुरा वगैरह रखने की थैली (निचू १)।

छुरण न [क्षुरण] अवलेपन (कप्पू)।

छुरमड्डि पुं [दे] नापित, हजाम (दे ३, ३१)।

छुरहत्थ पुं [दे- क्षुरहस्त] नापित, हजाम (दे ३, ३१)।

छुरिआ स्त्री [दे] मृत्तिका, मिट्टी (दे ३, ३१)।

छुरिआ, छुरिगा स्त्री [क्षुरिका] छुरी, चाकू (महा, सुपा ३८१, स १४७)।

छुरिय वि [छुरित] १ व्याप्त। २ लिप्त (पउम २८, २८)।

°चारिया स्त्री [°चारिका] क्षुद्र जन्तु-विशेष, चतुरिन्द्रिय जीव की एक जाति (राज)। °जंत न [°यन्त्र] पानी का यन्त्र, पानी का फवारा (कुमा)। °णाह पु [°नाथ] समुद्र, सागर (उप ७२८ टी)। °णिहि पुं [°निधि] समुद्र, सागर (गउड)। °णीली स्त्री [°नीली] शैवाल (दे ३, ४२)। °तुसार पु [°तुषार] पानी का विन्दु (पात्र)। °थभिणी स्त्री [°स्तम्भिनी] विद्या-विशेष (पउम ७, १३६)। °द पुं [°द] मेघ, अभ्र (मुद्रा २६२, पव १८)। °द्दा स्त्री [°द्रा] पानी से भीजाया हुआ पखा (सुपा ४१३)। °निहि देखो °णिहि (प्रासू १२७)। °प्पभ पुं [°प्रभ] १ इन्द्र-विशेष, उदधिकुमार-नामक देव-जाति का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३)। २ जलकान्त नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १)। °य न [°ज] कमल, पद्म (पउम १२, ३७, औप, पराग १)। °य देखो °द (काल, गउड, से १, २४)। °यर पुंस्त्री [°चर] जल मे रहनेवाला ग्राहादि जन्तु (जी २०)। स्त्री. °री (जीव २)। °रंकु पु [°रङ्कु] पक्षि-विशेष, ढेंक पक्षी (गा ५७८, गउड)। °रक्खस पुं [°राक्षस] राक्षस की जाति (पराग १)। °रमण न [°रमण] जल-क्रीडा, जल-केलि (णाया १, १३)। °रय पुं [°रय] जलप्रभ-नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १)। °रासि पुं [°राशि] समुद्र, सागर (सुपा १६५, उप २६४ टी)। °रुह पुन [°रुह] पानी में पैदा होनेवाली वनस्पति (पराग १)। °रूव पु [°रूप] जलकान्त नामक इन्द्र का एक लोकपाल (भग ३, ८)। °लिल्लिर न [°लिल्लिर] पानी में उत्पन्न होनेवाली वस्तु-विशेष (दस १)। °वायस पुंस्त्री [°वायस] जलकौआ, पक्षि-विशेष (कुमा)। °वासि वि [°वासिन्] १ पानी में रहनेवाला। २ पुं तापसों की एक जाति, जो पानी में ही निमग्न रहते हैं (औप)। °वाह पुं [°वाह] १ मेघ, अभ्र (उप पृ ३२, सुपा ८६)। २ जन्तु-विशेष (पउम ८८, ७)। °विच्छुय पुं [°वृश्चिक] पानी का बिच्छू, चतुरिन्द्रिय जन्तु-विशेष (पराग १)। °वीरिय पुं [°वीर्य] १ इक्ष्वाकु वंश का एक स्वनाम-ख्यात राजा (ठा ८)। २ क्षुद्र कीट-विशेष, चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति (जीव १)। °सय न [°शय] कमल, पद्म (उप १०३१ टी)। °साला स्त्री [°शाला] प्रपा, पानी पिलाने का स्थान, प्याऊ (श्रा १२)। °सूग न [°शूक] १ शैवाल। २ जलकान्त-नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १)। °सेल पुं [°शैल] समुद्र के भीतर का पर्वत (उप ५६७ टी)। °हत्थि पुं [°हस्तिन्] जल-हस्ती, पानी का एक जन्तु (पात्र)। °हर पुं [°धर] १ मेघ, अभ्र (सुर २, १०४, से १, ५६)। २ एक विद्याधर सुभट (पउम १२, ६५)। °हर पुं [°भर] जल-समूह (गउड)। °हर न [°गृह] समुद्र, सागर (से १, ५६)। °हरण न [°हरण] १ पानी की क्यारी (पात्र)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। °हि पुं [°धि] १ समुद्र, सागर (महा, सुपा २२३)। २ चार की सख्या (विवे १४४)। °ासय पुंन [°शय] सरोवर, तलाव (सुर ३, १)।

जलइय पु [जलकित] जलकान्त-नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६८)।

जलंजलि पुं [जलाञ्जलि] तर्पण, दोनो हाथों मे लिया हुआ जल (सुर ३, ५१, कप्पू)।

जलग पुं [ज्वलक] अग्नि, आग (पिंड)।

जलजलिअ वि [जलजलित] 'जल जल' शब्द से युक्त (सिरि ६६४)।

जलजलिंत वि [जाज्वल्यमान] देदीप्यमान, चमकता (कप्प)।

जलण पुं [ज्वलन] १ अग्नि, वह्नि (उप ६४८ टी)। २ देवो की एक जाति, अग्नि-कुमार-नामक देव-जाति (पराह १, ४)। ३ वि. जलता हुआ। ४ चमकता, देदीप्यमान, 'एईए जलणजलणोवमाए' (उव ६४८ टी। ५ जलानेवाला (सूत्र १, १, ४)। ६ न अग्नि सुलगाना (पराह १, ३)। ७ जलाना, भस्म करना (गच्छ २)। °जडि पुं [°जटिन्] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, ४६)। °मित्त पुं [°मित्र] स्वनाम-ख्यात एक प्राचीन कवि (गउड)।

जलावण न [ज्वालन] जलाना, दग्ध करना (पराह १, १)।

जलिअ वि [ज्वलित] १ जला हुआ, प्रदीप्त (सूत्र १, ५, १)। २ उज्वल, कान्ति-युक्त (पराह २, ५)।

जलिर वि [ज्वलितृ] जलता, सुलगता (धर्मवि ३५, कुप्र ३७६)।

जलूगा } स्त्री [जलौकस्] १ जन्तु-विशेष, जोक, जलिका, जल का कीडा (पउम १ २४, पराह १, १)। २ पक्षि-विशेष (जीव १)।
जलूया }

जलूसग पुं [दे] रोग-विशेष (उप पृ ३३२)।

जलोयर न [जलोदर] रोग-विशेष, जलन्धर, जठराम (सरण)।

जलोयरि वि [जलोदरिन्] जलन्धर रोग से पीडित (राज)।

जलोया देखो जलूया (जी १५)।

जल्ल पुं [दे. जल्ल] १ शरीर का मैल, सुखा पसीना (सम १०, ४०, औप)। २ नट की एक जाति, रस्सी पर खेल करनेवाला नट (पराह २, ४, औप, णाया १, १)। ३ वन्दी, विरुद-पाठक (णाया १, १)। ४ एक म्लेच्छ देश। ५ उस देश में रहनेवाली म्लेच्छ जाति (पराह १, १—पत्र १४)।

जल्लार पुं [जल्लार] १ स्वनाम-प्रसिद्ध एक अनार्य देश। २ जल्लार देश का निवासी (इक)।

जल्लिय न [दे. जल्लक] शरीर का मैल (उत्त २४)।

जल्लोसहि स्त्री [दे. जल्लौषधि] एक तरह की आध्यात्मिक शक्ति, जिसके प्रभाव मे शरीर के मैल से रोग का नाश होता है (पराह २, १, विसे ७७६)।

जव सक [यापय्] १ गमन करवाना, भेजना। २ व्यवस्था करना। जवइ (हे ४, ४०)। हेकृ जवित्तए (सूत्र १, ३, २)। कृ जवणिज्ज, जवणीय (णाया १, ५, हे १, २४८)।

जव सक [यापय्] काल-यापन करना, पसार करना। जवेंति (पिंड ६१६)।

जव सक [जप्] जाप करना, बार-बार मन ही मन देवता का नाम स्मरण करना, पुन. पुन मन्त्रोच्चारण करना। जवइ (रंभा), 'तप्पंति तवमरणेगे जवंति मंते तहा सुविज्जाओ'

शरीर-रचना (सम ४४, १४९, भग, कम्म १, ३९)। २ कर्म-विशेष, जिसके उदय से पूर्वोक्त सहनन की प्राप्ति होती है वह कर्म (कम्म १, ३९)।

छेवाडी [दे] देखो छिवाडी (पव ८०, निचू १२, जीव ३)।

छेह पु [दे क्षेप] प्रेरण, क्षेपण, 'तो वम्म-परिणामोणग्रभुमग्रावलिरुब्भमाणदिट्ठिच्छेहो' (से ४,१७)।

छेहत्तरि (अप) देखो छाहत्तरि (पिंग)।

छोअ पुं [दे] छिलका (सूअ २, १, १६)।

छोइअ पु [दे] दास, नौकर (दे ३३)।

छोइआ स्त्री [दे] छिलका, ईख वगैरह की छाल (उप ७६८ टी); 'उच्छुखंडे पत्थिए छोइय पणामेइ' (महा)।

छोकरी स्त्री [दे] छोकरी, लडकी (कुप्र ५३)।

छोट्टि स्त्री [दे] उच्छिष्टता, जूठाई (पिंड ५८७)।

छोड सक [छोटय्] छोडना, बन्धन से मुक्त करना। छोडइ, छोडेइ (भवि, महा)। सक. छोडिवि (सुपा २४९)।

छोडय वि [दे] छोटा, लघु (वज्जा १६४)।

छोडाविय वि [छोटित] छुडवाया हुआ, बन्धन-मुक्त कराया हुआ (स ९२)।

छोडि स्त्री [दे] छोटी, लघ्वी, क्षुद्र (पिंग)।

छोडिअ वि [छोटित] १ छोडा हुआ, बन्धन मुक्त किया हुआ, 'वत्थाओ छोडिओ गंठी' (सुपा ५०४, स ४३१)। २ घट्टित, आहत (पण्ह १, ४—पत्र ७८)।

छोडिअ देखो फोडिअ (औप)।

छोढूण वि [दे] छोडकर (कुप्र ३१)।

छोढूण } देखो छुह।
छोढूणं }

छोप्प वि [स्पृश्य] स्पर्श-योग्य, छूने लायक (आचा २, १५,५)।

छोब्भ पु [दे] पिशुन, खल, दुर्जन (दे ३, ३३)। देखो छोभ।

छोब्भ वि [क्षोभ्य] क्षोभ-योग्य, क्षोभणीय, 'होंति सत्तपरिवज्जिया य छोभा (? ब्भा) सिप्पकलासमयसत्थपरिवज्जिया' (पण्ह १, ३—पत्र ५५)।

छोब्भत्थ वि [दे] अप्रिय, अनिष्ट (दे ३, ३३)।

छोब्भाइत्ती स्त्री [दे] १ अस्पृश्या, छूने के अयोग्या। २ द्वेष्या, अप्रीतिकर स्त्री (दे ३, ३९)।

छोभ [दे] देखो छोब्भ (दे ३, ३३ टि)। २ निस्सहाय, दीन (पण्ह १, ३—पत्र ५५)।

३ न. अभ्याख्यान, कलंक-आरोपण, दोषारोप (बृह १, वव २)। ४ न वन्दन-विशेष, दो खमासमण-रूप वन्दन (गुभा १)। ५ आघात, 'कोत्रेण धमधमतो दतच्छोभे ये देइ सो तम्मि' (महा)।

छोम देखो छउम (णाया १, ९—पत्र १५७)।

छोयर पु [दे] छोरा, लडका, छोकरा (उप पृ २१५)।

छोलिअ देखो छोडिअ = छोटित (पिंग)।

छोल्ल सक [तक्ष्] छीलना, छाल उतारना। छोल्लइ (षड्)। कर्म छोल्लिज्जंतु (हे ४, ३९५)।

छोल्लण न [तक्षण] छीलना, निस्तुषीकरण, छिलका उतारना (णाया १, ७)।

छोल्लिय वि [तष्ट] छिलका उतारा हुआ, तुष-रहित किया हुआ (उप १७५)।

छोह पुं [दे] १ समूह, यूथ, जत्था। २ विक्षेप (दे ३, ३९)। ३ आघात, 'ताव य सो मायगो छोहं जा देइ उत्तरिज्जम्मि' (महा)।

छोह पुं [क्षेप] १ क्षेपण, फेंकना, 'निर्यदिट्ठिच्छोहअमयधाराहिं' (सुपा २९८)।

छोहर [दे] देखो छोयर (सुपा ५५२)।

छोहिय वि [क्षोभित] क्षोभ-प्राप्त, घबडाया हुआ, व्याकुल किया गया (उप १३७ टी)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि छआराइसद्दसकलणो पंचदसमो तरंगो समत्तो ॥

ज

ज पु [ज] तालु-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण विशेष (प्रामा, प्राप)।

ज स [यत्] जो, जो कोई (ठा ३, १, जी ८, कुमा, गा १०६)।

°ज वि [°ज] उत्पन्न, 'आसाइयरससेओ होइ विसेसेण णेहजो दहणो' (गा ७९९), 'आरभज' (आचा)।

जअकार पुं [जयकार] जीत, अभ्युदय (प्राकृ ३०)।

जअड अक [त्वर्] त्वरा करना, शीघ्रता करना। जअडइ (हे ४,१७०, षड्)। वकृ. जअडत (हे ४, १७०)। प्रयो जअडावंति (कुमा)।

जअल वि [दे] छन्न, आच्छादित, ढका हुआ (षड्)।

जइ पुं [यति] १ साधु, जितेन्द्रिय, संन्यासी (औप, सुपा ४४४)। २ छन्द-शास्त्र में प्रसिद्ध विश्राम-स्थान, कविता का विश्राम स्थान (धम्म १ टी)।

जइ वि [यति] जितना (वव १)।

जइ अ [यदा] जिस समय, जिस-वक्त (प्राप्र)।

जइ अ [यदि] यदि, जो, अगर (सम १५५,

जसो° देखो जस। °आ स्त्री [°दा] १ नन्द नामक गोप की पत्नी (गा ११२, ६५७)। २ भगवान् महावीर की पत्नी (कप्प)। °कामि वि [°कामिन्] यश चाहनेवाला (दस २)। °क्कित्तिनाम न [°कीर्त्तिनामन्] कर्म-विशेष, जिसके प्रभाव से सुयश फैलता है (सम ६७)। °धर पु [°धर] १ धरणेन्द्र के अश्व-सैन्य का अधिपति देव (ठा ५, १)। २ न ग्रैवेयक देवलोक का प्रस्तर (इक)। °हरा स्त्री [°धरा] १ दक्षिण रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिशाकुमारी देवी (ठा ८)। २ जम्बू-वृक्ष विशेष, सुदर्शना (जीव ३)। ३ पक्ष की चौथी रात्रि (जो ४)।

जसोधर देखो जस-हर (सुज्ज १०, १४)।

जसोधरा देखो जसो-हरा (सुज्ज १०, १४)।

जसोया स्त्री [यशोदा] भगवान् महावीर की पत्नी का नाम (आचा २, १५, ३)।

जह सक [हा] त्याग देना, छोड देना। जहइ (पि ६७)। वकृ. जहंत (वव ३)। कृ जहणिज्ज (राज)। सकृ जहित्ता (पि ५८२)।

जह अ [यत्र] जहां, जिसमें (हे ३, १६१)।

जह अ [यथा] जिस तरह से, जैसे (ठा ३, १, स्वप्न २०)। °क्कम न [°क्रम] क्रम के अनुसार, अनुक्रम (पचा ६)। °क्खाय देखो अह-क्खाय (आवम)। °ट्ठिय वि [°स्थित] वास्तविक, सत्य (सुर १, १८२, सुपा ५७)। °त्थ वि [°र्थ] वास्तविक, सत्य (पंचा १५)। °त्थनाम वि [°र्थनामन्] नाम के अनुसार गुणवाला, अन्वर्थ (श्रा १६)। °त्थवाइ वि [°र्थवादिन्] सत्य-वक्ता (सुर १४, १६)। °प्प न [याथात्म्य] वास्तविकता, सत्यता (राज)। °रिह न [°र्ह] उचितता के अनुसार (सुपा १६२)। °वट्टिय वि [°वृत्त] सत्य, यथार्थ (सुपा ५२६)। °विहि पुंस्त्री [°विधि] विधि के अनुसार, 'नहगामिणिपमुहाओ जहविहिणा साहियव्वाओ' (सुर ३, २८)। °सख न [°संख्य] संख्या के क्रम से, क्रमानुसार (नाट)। देखो जहा = यथा।

जहण न [जघन] कमर के नीचे का भाग (गा १६६, णाया १, ६)।

जहणरोह पु [दे] ऊरु, जघा, जांघ (दे ३, ४४)।

जहणा स्त्री [हान] परित्याग (सवोध ५६)।

जहणूसव } न [दे] अर्धोरुक, जघनांशुक,
जहणूसुअ } स्त्री को पहनने का वस्त्र-विशेष (दे ३, ४५, षड्)।

जहण्ण } वि [जघन्य] निकृष्ट, हीन, अधम,
जहन्न } नीच (सम ८, भग, ठा १, १, जी ३८; द ६)।

जहा = देखो जह = हा। (पि ३५०)। संकृ. जहाइत्ता, जहाय (सूअ १, २, १, पि ५६१)।

जहा देखो जह = यथा (हे १, ६७, कुमा)। °जुत्त वि [°युक्त] यथोचित, योग्य (सुर २, २०१)। °जेट्ठ न [°ज्येष्ट] ज्येष्ठता के क्रम से (अणु)। °णामय वि [°नामक] जिसका नाम न कहा गया हो, अनिर्दिष्ट-नामा, कोई (जीव ३)। °तच्च न [°तथ्य] सत्य, वास्तविक (आचा)। °तह न [°तथ] सत्य, वास्तविक (राज)। °तह न [याथातथ्य] वास्तविकता, सत्यता, 'जाणासि ण भिक्खु जहातहेण' (सूअ १, ६)। २ 'सूत्रकृताङ्ग' सूत्र का एक अध्ययन (सूअ १, १३)। °पवट्टकरण न [°प्रवृत्तकरण] आत्मा का परिणाम-विशेष (आचा)। °भूय वि [°भूत] सच्चा, वास्तविक (णाया १, १) °राइणिया स्त्री [°रात्निकता] ज्येष्ठता के क्रम से, बडप्पन के अनुसार (कस)। °रुह देखो जह-रिह (स ४६३)। °वित्त न [°वृत्त] जैसा हुआ हो वैसा, यथार्थ (स २४)। °सत्ति स्त्रीन [°शक्ति] शक्ति के अनुसार (पचा ३)।

जहाजाय वि [दे. यथाजात] जड़, मूर्ख, वेवकूफ (दे ३, ४१, पण्ह १, ३)।

जहि } देखो जह = यत्र (हे २, १६१; गा
जहिं } १३१, प्रासू ५६)।

जहिय देखो जहि (पिंड ५८)।

जहिच्छ न [यथेच्छ] इच्छा के अनुसार (सुपा १६; पिंग)।

जहिच्छिय न [यथेप्सित] इच्छानुकूल, इच्छानुसार (पंचा १)।

जहिच्छिया स्त्री [यदृच्छा] मरजी, स्वेच्छा, स्वच्छन्दता (गा ४५३, विसे ३१६; स ३३२)।

जहिट्ठिल पुं [युधिष्ठिर] पाण्डु-राजा का ज्येष्ठ पुत्र, ज्येष्ठ पाण्डव (हे १, १०७, प्राप्र)।

जहिमा स्त्री [दे] विदग्ध पुरुष की बनाई हुई गाथा (दे ३, ४२)।

जहुट्ठिल देखो जहिट्ठिल (हे १, ९६, १०७)।

जहुत्त न [यथोक्त] कथनानुसार (पडि)।

जहेअ अ [यथैव] जैसे ही (से ६, ११)।

जहेच्छ देखो जहिच्छ (गा ८८२)।

जहोइय न [यथोदित] कथितानुसार (धर्म ३)।

जहोइय } न [यथोचित] योग्यता के अनु-
जहोचिय } सार (से ८, ५, सुपा ४७१)।

जा अक [जन्] उत्पन्न होना। जाअइ (हे ४, १३६)। वकृ जायत (कुमा)। सकृ 'एक्के च्चिय निव्विएणा पुणो-पुणो जाइउं च मरिउं च' (स १३०)।

जा सक [या] १ जाना, गमन करना। २ प्राप्त करना। ३ जानना। जाइ (सुपा ३०१)। जति (महा)। वकृ. जत (सुर ३, १४३, १०, ११७)। कवकृ जाइज्जमाण (पण्ह १, ४)।

जा सक [या] सकना, समर्थ होना, 'किंतु मम एत्थ न जाइ पव्वइउं', 'वहिट्ठियाणं कि जायइ अज्झाइउं' (सुख २, १३)।

जा देखो जाव = यावत् (हे १, २७१, कुमा, सुर १५, १३८)।

जाअ देखो जाव = जाप (हास्य १३२)।

जाअ देखो जा = या। जाअइ (प्राकृ ६६)।

जाअर देखो जागर (मुद्रा १८७)।

जाआ स्त्री [यातृ] देवर-भार्या, देव की पत्नी, देवरानी (प्राकृ ४३)।

जाइ स्त्री [जाति] १ पुष्प-विशेष, मालती (कुमा)। २ सामान्य नैयायिकों के मत से एक धर्म-विशेष, जो व्यापक हो, जैसे मनुष्य का मनुष्यत्व, गो का गोत्व (विसे १६०१)। ३ जात, कुल, गोत्र, वश, ज्ञाति (ठा ४, २, सूअ १, १३, कुमा)। ४ उत्पत्ति, जन्म (उत्त ३, पडि)। ५ क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य आदि जाति (उत्त ३)। ६ पुष्प-प्रधान वृक्ष, जाई का पेड (पण्ण १)।

जंपण न [जल्पन] उक्ति, कथन, कहना (श्रा १२, गउड)।

जंपण न [दे] १ अकीर्त्ति, अपयश। २ मुख मुँह (दे ३, ५१, भवि)।

जंपय वि [जल्पक] बोलनेवाला, भाषक (पण्ह १, ३)।

जंपाण न [जम्पान] १ वाहन-विशेष, सुखासन, शिविका विशेष (ठा ४, ३, ग्रौप, सुपा ३६३, उप ६५६)। २ मृतक-यान, शव-यान (सुपा २१६)।

जंपिच्छिय वि [दे] जिसको देखे उसी को चाहनेवाला (दे ३, ४४, पाग्र)।

जंपिय वि [जल्पित] कथित, उक्त (प्रासू १३०)।

जंपिय देखो जंप।

जंपिर वि [जल्पितृ] १ जल्पाक, वाचाट (दे २, ६७)। २ बोलनेवाला, भाषक (हे २, १४५, श्रा २७, गा १६२, सुपा ४०२)।

जंपेक्खिरमग्गिर } वि [दे] जिसको देखे जंपेच्छिरमग्गिर } उसी की याचना करनेवाला (षड्, ३, ४४)।

जंबवई स्त्री [जाम्बवती] श्रीकृष्ण की एक पत्नी (अंत १४, आचू १)।

जंबवंत पु [जाम्बवत्] एक विद्याधर राजा (कुप्र २५६)।

जंबाल न [दे] १ जंवाल, सैवाल, जलमल, सिवार या सेवार (दे ३, ४२, पाग्र)।

जंबाल पुंन [जम्बाल] १ कर्दम, काँदो, पक (पाग्र, ठा ३, ३)। २ जरायु, गर्भ-वेष्टन चर्म (सूम १, ७)।

जंबीरिय (अप) न [जम्बीर] नीबू या नींबू, फल-विशेष (सण)।

जंबु पुं [जम्बु] १ जम्बुक, सियार, 'उद्धमुहुन्नइयजंबुगण' (पउम १०५, ५७)। २ एक प्रसिद्ध जैन मुनि, सुधर्म-स्वामी के शिष्य, अन्तिम केवली (कप्प, वसु, विपा १, १)। ३ न जम्बू वृक्ष का फल, जामुन (श्रा ३६)।

जंबु पुन [जम्बु] जम्बू वृक्ष का फल, जामुन, 'ते चिंति जंबू भक्खेमो' (संबोध ४७)।

जंबु° देखो जंबू (कप्प, कुमा, इक, पउम ५६, २२, से १३, ८६)।

जंबुअ पुं [दे] १ वेतस वृक्ष, वेंत। २ पश्चिम दिक्पाल (दे ३, ५२)।

जंबुअ } पु [जम्बुक] १ सियार, गीदड जंबुग } (प्रासू १७१, उप ७६८ टी, पउम १०५, ६४)। २ न. जम्बूवृक्ष का फल, जामुन (सुपा २२६)।

जंबुल पुं [दे] १ वानीर वृक्ष, वेंत। २ न. मद्यभाजन, सुरापात्र (दे ३, ४१)।

जंबुल्ल वि [दे] जल्पाक, वाचाट, बकवादी (पाग्र)।

जंबुवई देखो जंबवई (अंत, पडि)।

जंबू स्त्री [जम्बू] १ वृक्ष-विशेष, जामुन का पेड (णाया १, १, ग्रौप)। २ जंबू वृक्ष के आकार का एक रत्नमय शाश्वत पदार्थ, सुदर्शना, जिसके कारण यह द्वीप जंबूद्वीप कहलाता है (जं १)। ३ पुं एक सुप्रसिद्ध जैन मुनि, सुधर्म-स्वामी का मुख्य शिष्य (जं १)। °दीव पु [°द्वीप] भूखण्ड विशेष, सब द्वीप और समुद्रों के बीच का द्वीप, जिसमें वह भारत आदि क्षेत्र वर्त्तमान है (जं १, इक)। °दीवग वि [°द्वीपक] जम्बूद्वीप-सबन्धी, जम्बूद्वीप में उत्पन्न (ठा ४, २, ६)। °दीवपण्णत्ति स्त्री [°द्वीपप्रज्ञप्ति] जैन आगम-ग्रन्थ-विशेष, जिसमें जंबूद्वीप का वर्णन है (जं १)। °पीढ, °पेढ न [°पीठ] सुदर्शना-जम्बू का अधिष्ठान-प्रदेश (ज ४, इक)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (इक)। °मालि पु [°मालिन्] रावण का एक पुत्र, रावण का एक सुभट (पउम ५६, २२, से १३, ८६)। °मेघपुर न [°मेघपुर] विद्याधर-नगर-विशेष (इक)। °संड पुं [°पण्ड] ग्राम-विशेष (आवम)। °सामि पुं [°स्वामिन्] सुप्रसिद्ध जैन मुनि-विशेष (आवम)।

जंबूअ पुं [जम्बूक] सियार, गीदड (ओघ ८४ भा)।

जंबूणय न [जाम्बूनद] १ सुवर्ण, सोना (सम ६५, पउम ५, १२६)। २ पुं. स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा (पउम ४८, ६८)।

जंबूलय पुंन [जम्बूलक] उदक-भाजन-विशेष (उवा)।

जंभ पु [दे] तुप, भूसा, धान्य वगैरह का छिलका (दे ३, ४०)।

जंभंत देखो जंभा = जृम्भ्।

जंभग वि [जृम्भक] १ जँभाई लेनेवाला। २ पु. व्यन्तर-देवों की एक जाति (कप्प, सुपा ४०)।

जंभणभण } वि [दे] स्वच्छन्द-भाषी, जो जंभणभण } मरजी में आवे वह बोलने- जंभणय } वाला (षड्, दे ३, ४४)।

जंभणी स्त्री [जृम्भणी] तन्त्र-प्रसिद्ध विद्या-विशेष (सूम २, २, पउम ७, १४४)।

जंभय देखो जंभग (णाया १, १, अंत, भग १४, ८)।

जंभल पुं [दे] जड, सुस्त, मन्द (दे ३, ४१)।

जंभा स्त्री [जृम्भा] जँभाई, जृम्भण (विपा १,)।

जंभा स्त्री [जृम्भा] एक देवी का नाम (सिरि २०३)।

जंभा } अक [जृम्भ्] जँभाई लेना। जंभाअ } जंभाइ, जंभाअइ (हे ४, १५७, २४०, प्राप्र, षड्)। वकृ जंभंत, जंभाअंत (गा ५४६, से ७, ६५, कप्प)।

जंभाइअ न [जृम्भित] जँभाई, जृम्भा (पडि)।

जंभिय न [जृम्भित] १ जँभाई, जृम्भा। २ पुं. ग्राम-विशेष, जहाँ भगवान् महावीर को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ था, यह गाँव पारसनाथ पहाड़ के पास की ऋजुवालिका नदी के किनारे पर था (कप्प)।

जक्ख पु [यक्ष] १ व्यन्तर देवों की एक जाति (पण्ह १, ४, ग्रौप)। २ धनेश, कुवेर, यक्षाधिपति (प्राप्र)। ३ एक विद्याधर-राजा, जो रावण का मौसेरा भाई था (पउम ८, १०२)। ४ द्वीप-विशेष। ५ समुद्र-विशेष (चंद १६)। ६ श्वान, कुत्ता; 'अह आयविराहणया उक्खुक्खिहणे पवयणम्मि' (ओघ १६३ भा)। °कद्दम पुं [°कर्दम] १ केसर, अगर, चन्दन, कपूर और कस्तूरी का समभाग मिश्रण (भवि)। २ द्वीप-विशेष। ३ समुद्र-विशेष (चद २०)। °गाह पु [°ग्रह] यक्षावेश, यक्षकृत उपद्रव (जीव ३, जं २)। °णायग पुं [°नायक] यक्षों का अधिपति, कुवेर (भण)। °दित्त न [°दीप्त] देखो नीचे °दित्तय (पव २६)। °दिन्ना स्त्री [°दत्ता] महर्षि स्थूलभद्र की वहिन, एक जैन साध्वी

जाणय वि [ज्ञापक] जनानेवाला, समझानेवाला (औप)।

जाणया स्त्री [ज्ञान] ज्ञान, समझ, जानकारी, 'एएसि पयाएा जाणजाए सवएायाए' (भग)।

जाणवय वि [जानपद] १ देश मे उत्पन्न, देश सबन्धी (भग, णाया १, १—पत्र १)।

जाणाव सक [ज्ञापय्] ज्ञान कराना, जनाना। जाणावइ, जाणावेइ (कुमा, महा)। हेकृ. जाणाविउ, जाणावेउ (पि ५५१)। कृ जाणावेयव्व (उप पृ २२)।

जाणावण न [ज्ञापन] ज्ञापन, बोधन (पउम ११, ८८, सुपा ६०६)।

जाणावणा } स्त्री [ज्ञापनी] विद्या-विशेष
जाणावणी } (उप पृ ४२, महा)।

जाणाविय वि [ज्ञापित] जनाया, विज्ञापित, मालूम कराया, निवेदित (सुपा ३५६, श्रावम)।

जाणि वि [ज्ञानिन्] ज्ञाता, जानकार (कुमा)।

जाणिअ वि [ज्ञात] जाना हुआ, विदित (सुर ४, २१४, ७, २६)।

जाणु न [जानु] १ घोंटू, घुटना। २ ऊरु और जघा का मध्य भाग (तदु, निर १, ३, णाया १, २)।

जाणु } वि [ज्ञायक] जाननेवाला, ज्ञाता,
जाणुअ } जानकार (ठा ३, ४, णाया १, १३)।

जाणे अ [जाने] उत्प्रेक्षा-सूचक अव्यय, मानो (अभि १५०)।

जाम सक [मृज्] मार्जन करना, सफा करना। जामइ (नाट—प्राप्र ८० टी)।

जाम पु [याम] १ प्रहर, तीन घण्टा का समय (सम ४४, सुर ३, २४२)। २ यम, अहिंसा आदि पाँच व्रत। ३ उम्र विशेष, आठ से बत्तीस, बत्तीस से साठ और साठ से अधिक वर्ष की उम्र (आचा)। ४ वि यम-सबन्धी, जमराज का (सुपा ७०५)। °इल्ल वि [°वत्] १ प्रहरवाला (हे २, १५६)। २ पु. प्राहरिक, पहरेदार, यामिक (सुपा ५)। °दिसा स्त्री [°दिश्] दक्षिण दिशा (सुपा ४०५)। °वई स्त्री [°वती] रात्रि, रात (गउड)।

जाम देखो जाव = यावत् (आरा ३३)।

जामाइ देखो जामाउ (पिंड ४२४)।

जामग्गहण न [यामग्रहण] प्राहरिकत्व, पहरेदारी (सुख २, ३१)।

जामाउ } पुं [जामातृ, °क] जामाता,
जामाउय } दामाद, लडकी का पति (पउम ८६, ४, हे १, १३१, गा ६८३)।

जामि स्त्री [जामि, यामि] बहिन, भगिनी (राज)।

जामिअ देखो जामिग (धर्मवि १३५)।

जामिग पुं [यामिक] प्राहरिक, पहरुआ, पहरू, पहरेदार (उप ८३३)।

जामिणी स्त्री [यामिनी] रात्रि, रात (उप ७२८ टी)।

जामिल्ल देखो जामिग (सुपा १४६, २६६)।

जामेअ पु [यामेय] भानजा, भागिनेय, बहिन का पुत्र (धर्मवि २२)।

जाय सक [याच्] प्रार्थना करना, मांगना। वकृ. जायत (पण्ह १, ३)। कवकृ जाइज्जत (पउम ५, ६८)।

जाय सक [यातय्] पीडना, यन्त्रणा करना। जाएइ (उव)। कवकृ जाइज्जत (पण्ह १, १)।

जाय देखो जाग (णाया १, १)।

जाय वि [जात] १ उत्पन्न, जो पैदा हुआ हो (ठा ६)। २ न. समूह, सघात, (दस ४)। ३ भेद, प्रकार (ठा १०, निचू १६)। ४ वि. प्रवृत्त (औप)। ५ पु लडका, पुत्र (भग ६, ३३, सुपा २७६)। ६ न बच्चा, सतान, 'जाय तीए जइ कहवि जायए पुन्न-जोगेण' (सुपा ५६८)। ७ जन्म, उत्पत्ति (णाया १, १)। °कम्म न [°कर्मन्] १ प्रसूति-कर्म (णाया १, १)। २ सस्कार-विशेष (वसु)। °तेय पु [°तेजस्] अग्नि, वह्नि (सम ५०)। °निदुदुया स्त्री [°निद्रुता] मृत-वत्सा स्त्री (विपा १, २)। वि °मूअ वि [°मूक] जन्म से मूक (विपा १ १)। °रूव न [°रूप] १ सुवर्ण, सोना (औप)। २ रूप्य, चाँदी (उत्त ३५)। ३ सुवर्ण-निर्मित (सम ६५)। °वेय पु [°वेदस्] अग्नि, वह्नि (उत्त १२)।

जाय वि [यात] गत, गया हुआ (सूअ १, ३, १)। २ प्राप्त (सूअ १, १०)। ३ न. गमन, गति (आचा)।

जाय पु. [जात] गीतार्थ, विद्वान् जैन मुनि (पव—गाथा २४)।

जायग वि [याचक] १ माँगनेवाला। २ पुं. भिक्षुक (श्रा २३, सुपा ४१०)।

जायग वि [याजक] यज्ञ करानेवाला (उत्त २५, ६)।

जायण न [याचन] याचना, प्रार्थना (श्रा १४, प्रति ६१)।

जायण न [यातन] कदर्थन, पीडन (पण्ह १, २)।

जायणया } स्त्री [याचना] याचना, प्रार्थना
जायणा } माँगना (उप पृ ३०२, सम ४०, स २६१)।

जायणा स्त्री [यातना] कदर्थना, पीडा (पण्ह १ १)।

जायणी स्त्री [याचनी] प्रार्थना की भाषा (ठा ४, १)।

जायव पु स्त्री [यादव] यदुवंश मे उत्पन्न, यदुवशीय (णाया १, १६, पउम २०, ५६)।

जाया स्त्री [यात्रा] निर्वाह, गुजारा, वृत्ति। °माय वि [°मात्र] जितने से निर्वाह हो सके उतना, 'साहुस्स वित्ति धीरा जाया माय च ओमं च (पिंड ६४३)।

जाया स्त्री [जाया] स्त्री, औरत, (गा ६, सुपा ३८६)।

जाया देखो जत्ता (पण्ह २, ४, सूअ १, ७)।

जाया स्त्री [जाता] चमरेन्द्र आदि इन्द्रो की बाह्य परिषत् (भग, ठा ३, २)।

जायाइ पु [यायाजिन्] यज्ञ-कर्ता, याजक, यज्ञ करानेवाला (उत्त २५, १)।

जार पुं [जार] १ उपपति, यार (हे १, १७७)। २ मणि का लक्षण-विशेष (जीव ३)।

जारिच्छ वि [यादृक्ष] ऊपर देखो (प्रामा)।

जारिस वि [यादृश] जैसा, जिस तरह का (हे १, १४२)।

जारेकण्ण न [जारेकृष्ण] गोत्र-विशेष, जो वाशिष्ठ गोत्र की एक शाखा है (ठा ७)।

जाल सक [ज्वालय्] जलाना, दग्ध करना, 'तो जलियजलणजालावलीसु जालेमि नियदेहं' (महा)। संकृ जालेवि (महा)।

जच्च पु [दे] पुरुष, मरद, आदमी (दे ३, ४०)।
जच्च वि [जात्य] १ उत्तम जातवाला, कुलीन, श्रेष्ठ, उत्तम, सुन्दर (णाया १, १; श्रा १२; सुपा ७७; कप्प)। २ स्वाभाविक, अकृत्रिम (तद्दु)। ३ सजातीय, विजाति-मिश्रण से रहित, शुद्ध (जीव ३)।
जच्चंजण न [जात्याञ्जन] १ श्रेष्ठ अञ्जन, सुन्दर आँजन (णाया १, १)। २ मर्दित अञ्जन, तैल वगैरह से मर्दित अञ्जन (कप्प)।
जच्चंदण न [दे] १ अगरु, सुगन्धि द्रव्य-विशेष, जो धूप के काम में आता है। २ कुंकुम, केसर (दे ३, ५२)।
जच्चंध वि [जात्यन्ध] जन्म से अन्धा, जन्मान्ध (सुपा ३६५)।
जच्चण्णिय } वि [जात्यन्वित] सुकुल में
जच्चन्निय } उत्पन्न, श्रेष्ठ जाति का (सूअ १, १०; वृह ३)।
जच्चास पुं [जात्यश्व, जात्याश्व] उत्तम जाति का घोड़ा (पउम ५४, ३६)।
जच्चिय (अप) वि [जातीय] समान जाति का (भग)।
जच्चिर न [यच्चिर] जहाँ तक, जितने समय तक (वव ७)।
जच्छ सक [यम्] १ उपरम करना, विराम करना। २ देना, दान करना। जच्छइ (हे ४, २१५; कुमा)।
जच्छ पुं [यक्ष्मन्] रोग-विशेष, यक्ष्मा, क्षय-रोग (प्राकृ २२)।
जच्छंद वि [दे] स्वच्छन्द, स्वैर (दे ३, ४३; षड्)।
जज देखो जय = यज्। वकृ जजमाण (नाट—शकु ७२)।
जजु देखो जउ = यजुष् (णाया १, ५; भग)।
जज्ज वि [जय्य] जो जीता जा सके वह, जीतने को शक्य (हे २, २४)।
जज्जर वि [जर्जर] जीर्ण, सच्छिद्र, खोखला, जांजर, फाँफरा या फाँफर (गा १०१; सुर ३, १३६)।
जज्जर सक [जर्जरय्] जीर्ण करना, खोखला करना। कवकृ. जज्जरिज्जंत, जज्जरिज्जमाण (नाट—चैत ३३; सुपा ६४)।

जज्जरिय वि [जर्जरित] जीर्ण किया गया, खोखला किया हुआ, पुराना (ठा ४, ४; सुर ३, १६५; कस)।
जज्जिग पुं [जयिक] एक जैन आचार्य का नाम (ती १५)।
जज्जिय } न [यावज्जीव] जीवन-पर्यन्त,
जज्जीव } जिन्दगी भर, 'जज्जीव अहिगरणं' (पिंड ५०६; ५१२)।
जट्ट पुं [जर्त] १ देश-विशेष (भव)। २ उस देश का निवासी (हे २, ३०)।
जट्ठ वि [इष्ट] यजन किया हुआ, याग किया हुआ (स ५५)।
जट्ठ न [इष्ट] यजन, याग, यज्ञ (उत्त १२, ४०; २५, ३०)।
जट्ठि स्त्री [यष्टि] लकड़ी, 'जट्ठिमुट्ठिलउडपहारेहिं' (महा; प्राप्र)।
जड वि [जड] १ अचेतन, जीव रहित पदार्थ। २ मूर्ख, आलसी, विवेक शून्य (पाअ; प्रासू ७१)। ३ शिशिर, जाड़े से ठंढा होकर चलने को अशक्त (पाअ)।
जड देखो जढ (षड्)।
जड° } स्त्री [जटा] सटे हुए वाल, मिले हुए
जडा } वाल (हेका २५७; सुपा २५१)। °वर वि [°धर] १ जटा को धारण करने-वाला। २ पुं जटाधारी तापस, संन्यासी (पउम ३६, ७५)। °धारि पु [°धारिन्] देखो पूर्वोक्त अर्थ (पउम ३३, १)।
जडहारि देखो जड-धारि (कुप्र २६३)।
जडाउ } पु [जटायु] स्वनाम-प्रसिद्ध गृद्ध
जडाउण } पक्षि-विशेष (पउम ४४, ५५, ४०)।
जडागि पुं [जटाकिन्] ऊपर देखो (पउम ४१, ६५)।
जडाल वि [जटावत्] जटा-युक्त, जटाधारी (हे २, १४६)।
जडासुर पु [जटासुर] असुर-विशेष (वेणी १७७)।
जडि वि [जटिन्] १ जटावाला, जटायुक्त। २ पु जटाधारी तापस (औप; भत्त १००)।
जडिअ वि [जटिक] देखो जडि (कुप्र २६३)।

जडिअ वि [जटित] पिहित, ढका हुआ (सिरि ५१६)।
जडिअ वि [दे. जटित] जड़ित जड़ा हुआ, खचित, सलग्न (दे ३, ४१; महा; पाअ)।
जडिम पुंस्त्री [जडिमन्] जडता, जडपन, जाड्य (सुपा ६)।
जडियाइलग } पुं [दे जटिकादिलक] ग्रह-
जडियाइलय } विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३; चन्द २०)।
जडिल वि [जटिल] १ जटावाला, जटा-युक्त (उवा; कुमा २, ३५)। २ व्याप्त, खचित, 'उल्लसियवहलजालोलिजडिले जलणे पवेसो वा' (सुपा ४६५)। ३ पु. सिंह, केसरी। ४ जटाधारी तापस (हे १, १९४; भग १५; पव ६४)।
जडिलय पुं [दे. जटिलक] राहु, ग्रह-विशेष (सुज्ज २०)।
जडिलिय } वि [जटिलित] जटिल किया
जडिलिल्ल } हुआ, जटा-युक्त किया हुआ (सुपा १२५; २६६)।
जडिल्ल वि [जटिन्] जटावाला, जटाधारी (चंड)।
जगुल देखो जडिल (भग १५—पत्र ६७०)।
जड्ड वि [दे] अशक्त, असमर्थ (पव १०७)।
जड्ड न [जाड्य] जडता, जडपन (उप ३२० टी; सार्ध १३०)।
जड्ड देखो जड (पव १०७; पचमा)।
जड्ड पु [दे] हाथी, हस्ती (ओघ २३८; वृह १)।
जड्डा स्त्री [दे] जाडा, शीत (सुर १३, २१५; पिंग)।
जढ वि [त्यक्त] परित्यक्त, मुक्त, वर्जित (हे ४, २५८; ओघ ९०), 'जइवि न सम्मत्तजढो' सत्त ७१ टी)।
जढर } न [जठर] पेट, उदर (हे १, २५४;
जढल } प्राप्र; षड्)।
जण सक [जनय्] उत्पन्न करना, पैदा करना। जणेइ, जणंति (प्रासू १५, १०८; महा)। जणयति (आचा)। वकृ जणत, जणेमाण (सुर १३, २१; द्र २६; उव)।
जण पुं [जन] १ मनुष्य, मानव, आदमी, लोग, व्यक्ति (औप; आचा; कुमा; प्रासू ६;

जिअ अक [जीव्] जीना, प्राण-धारण करना। जिअइ, जिअउ (हे १, १०१)। वकृ. जिअंत (गा ६१७)।

जिअ पुं [जीव] आत्मा, प्राणी, चेतन (सुर २, ११३; जी ६, प्रासू ११४, १३०)। °लोअ पु [°लोक] संसार, दुनियाँ (सुर १२, १४३)।

जिअ न [जित] जीत, जय (प्राकृ ७०)। °कासि वि [°काशिन्] जीत से शोभनेवाला विजेता (सम्मत्त २१७)। °सत्तु पु [°शत्रु] अग-विद्या का जानकार दूसरा रुद्र-पुरुष (विचार ४७३)।

जिअ वि [जित] १ जीता हुआ, पराभूत, अभिभूत (कुमा, सुर ३, ३२)। २ परिचित (विसे १४७२)। °प्प वि [°त्मन्] जितेन्द्रिय, सयमी (सुपा २७६)। °भाणु पुं [°भानु] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लका-पति (पउम ५, २५९)। °सत्तु पु [°शत्रु] १ भगवान् अजितनाथ का पिता (सम १५०)। २ नृप-विशेष (महा, विपा १, ५)। °सेण पु [°सेन] १ जैन आचार्य-विशेष। २ नृप-विशेष। ३ एक चक्रवर्ती राजा। ४ स्वनामख्यात एक कुलकर (राज)। °ारि पु [°ारि] भगवान् सभवनाथजी का पिता (सम १५०)।

जिअंती स्त्री [जीवन्ती] वल्ली-विशेष (पण्ण १)।

जिअव वि [जीतवत्] जय-प्राप्त (पण्ह १, १)।

जिइंदिय } वि [जितेन्द्रिय] इन्द्रियो को
जिएंदिय } वश मे रखनेवाला, संयमी (पउम १४, ३९; हे ४, २८७)।

जिंघ सक [घ्रा] सूँघना, गन्ध लेना। कृ जिंघणिज्ज (कप्प)।

जिंघण न [घ्राण] सूँघना, गन्ध-ग्रहण (स ५७७)।

जिंघणा स्त्री [घ्राण] ऊपर देखो (ओघ ३७६)।

जिंघिअ वि [घ्रात] सूँघा हुआ (पाअ)।

जिंडह पुन [दे] कन्दुक, गेंद, 'जिंडहगेड्डिआ-इरमणं' (पव ३८, धर्म २)।

जिंडुह पुं [दे] कन्दुक, गेंद (पव ३८)।

जिंभ } देखो जभाय। जिंभ (अभि
जिंभाअ } २४१)। वकृ. जिंभाअंत (से ११, ३०)।

जिंभिया स्त्री [जृम्भा] जम्भाई, जृम्भण, मुख विकाश (सुपा ५८३)।

जिगीसा स्त्री [जिगीषा] जय की इच्छा (कुप्र २७८)।

जिग्घ देखो जिंघ। जिग्घइ (निचू १)।

जिग्घिअ वि [दे] घ्रात, सूँघा हुआ (दे ३, ४६)।

जिच्च } देखो जिण = जि।
जिच्चमाण }

जिट्ठ वि [ज्येष्ठ] १ महान्, वृद्ध, बडा (सुपा २३४, कम्म ४, ८३)। २ श्रेष्ठ, उत्तम। ३ पुं. बडा भाई, 'जिट्ठ व कणिट्ठ पि हु' (धर्म २)। °भूइ पु [°भूति] जैन साधु-विशेष (ती १७)। °मूली स्त्री [°मूली] ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा (इक)।

जिट्ठ पु [ज्येष्ठ] मास-विशेष, जेठ (राज)।

जिट्ठा स्त्री [ज्येष्ठा] १ भगवान् महावीर की पुत्री। २ भगवान् महावीर की भगिनी (विसे २३०७)। ३ नक्षत्र-विशेष (ज १)। देखो जेट्ठा।

जिट्ठाणी स्त्री [ज्येष्ठा] वडे भाई की पत्नी, जिठानी या जेठानी (सुपा ४८७)।

जिट्ठिणी स्त्री [ज्यैष्ठी] जेठ मास की अमावस (सट्टि ७८ टी)।

जिण सक [जि] जीतना, वश करना। जिणइ (हे ४, २४१, महा)। कर्म. जिणिज्जइ, जिव्वइ (हे ४, २४२)। वकृ. जिणंत, जिणयंत (पि ४७३, पउम १११, १७)। कवकृ. जिव्वमाण (उत्त ७, २२)। संकृ जिणित्ता, जिणिऊण, जिणेऊण, जेऊण, जेउआण (पि, हे ४, २४१, षड्, कुमा)। हेकृ. जिणिउं, जेउं (सुर १, १३०, रंभा)। कृ. जिच्च, जिणेयव्व, जेयव्व (उत्त ७, २२, पउम १६, १६, सुर १४, ७९)।

जिण पु [जिन] १ राग आदि अन्तरंग शत्रुओ को जीतनेवाला, अर्हन् देव, तीर्थंकर (सम १, ठा ४, १, सम्म १)। २ बुद्ध देव, बुद्ध भगवान् (दे १, ५)। ३ केवल-ज्ञानी, सर्वज्ञ (पण्ण १)। ४ चौदह पूर्व ग्रन्थो का जानकार (उत्त ५)। ५ जैन साधु-विशेष, जिनकल्पी मुनि। ६ अवधि-ज्ञान आदि अतीन्द्रिय ज्ञानवाला (पचा ४, ठा ३, ४)। ७ वि. जीतनेवाला (पचा ३, २०)। °इंद पुं [°इन्द्र] अर्हन् देव (सुर ४, ८१)। °कप्प पु [°कल्प] एक प्रकार के जैन मुनियो का आचार, चारित्र-विशेष (ठा ३, ४, बृह १)। °कप्पिय पुं [°कल्पिक] एक प्रकार का जैन मुनि (ओघ ६६९)। °किरिया स्त्री [°क्रिया] जिनदेव का वतलाया हुआ धर्मानुष्ठान (पचव १)। °घर न [°गृह] जिन-मन्दिर (भग २, ८, णाया १, १६—पत्र २१०)। °चंद पु [°चन्द्र] १ जिनदेव, अर्हन् देव (कम्म ३, १, अजि २९)। २ स्वनाम-ख्यात जैन आचार्य विशेष (गु १२, सण)। °जत्ता स्त्री [°यात्रा] अर्हन् देव की पूजा के उपलक्ष मे किया जाता उत्सव-विशेष, रथ-यात्रा (पचा ७)। °णाम न [°नामन्] कर्म-विशेष जिसके प्रभाव से जीव तीर्थंकर होता है (राज)। °दत्त पु [°दत्त] १ स्वनाम-प्रसिद्ध जैनाचार्य-विशेष (गण २६, सार्ध १५०)। २ स्वनाम-ख्यात एक जैन श्रेष्ठी (पउम २०, ११६)। °दव्व न [°द्रव्य] जिन-मन्दिर-सम्बन्धी धनादि वस्तु, 'वड्ढंतो जिणदव्व तित्थयरत्त लहइ जीवो' (उप ४१८, दस १)। °दास पु [°दास] १ स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन उपासक (आचू ६)। २ स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि और ग्रन्थकार, निशीथ-सूत्र का चूर्णिकार (निचू २०)। °देव पु [°देव] १ अर्हन् देव (गु ७)। २ स्वनाम-प्रसिद्ध जैनाचार्य (श्राक)। ३ एक जैन उपासक (आचू ४)। °धम्म पु [°धर्म] जिनदेव का उपदिष्ट धर्म, जैन धर्म (ठा ५, २, हे १, १८७)। °नाह पु [°नाथ] जिनदेव, अर्हन् देव (सुपा २३५)। °पडिमा स्त्री [°प्रतिमा] अर्हन् देव की मूर्त्ति (णाया १, १६—पत्र २१०, राय, जीव ३), 'जिणपडिमादंसणेण पडिबुद्धं' (दसचू २)। °पवयण न [°प्रवचन] जैन आगम, जिनदेव-प्रणीत शास्त्र (विसे १३५०)। °पसत्थ वि [°प्रशस्त] तीर्थंकर-भाषित, जिनदेव-कथित (पण्ह २,

जण्हली स्त्री [दे] नीवी, नारा, इजारबन्द (दे ३, ४०)।

जण्हवी स्त्री [जाह्नवी] १ सगर चक्रवर्त्ती की एक पत्नी, भगीरथ की जननी (पउम ५, २०१)। २ गङ्गा-नदी, भागीरथी (पउम ४१, ५१, कुमा)।

जण्हु पुं [जह्नु] भरत-वंशीय एक राजा (प्राप्र; हे २, ७५)। °सुआ स्त्री [°सुता] गङ्गा-नदी, भागीरथी (पाप्र)।

जण्हुआ स्त्री [दे] जानु, घुटना (पाप्र)।

जण्हुकन्ना स्त्री [जह्नुकन्या] गगा-नदी (कुप्र ६६)।

जत्त देखो **जय**=यत्। भवि जत्तिहामि (निर १, १)।

जत्त पुं [यत्न] उद्योग, उद्यम, चेष्टा (उप पृ ५८)।

जत्ता स्त्री [यात्रा] १ देशान्तर-गमन, देशाटन (ठा ४, १, औप)। २ गमन, गति, 'जत्तत्ति होइ गमणं' (पंचभा, औप)। ३ देव-पूजा के निमित्ति किया जाता उत्सव-विशेष, अट्ठाहिका, रथ-यात्रा आदि, 'हुं नायं पारद्धा मिढायपणेमु जत्ताओ' (सुर ३, ३८)। ४ तीर्थ-गमन, तीर्थ-भ्रमण (धर्म २)। ५ शुभ-प्रवृत्ति (भग १८, १०)।

जत्ता स्त्री [यात्रा] संयम-निर्वाह (उत्त १६, ८)।

जत्ति स्त्री [दे] १ चिन्ता। २ सेवा, सुश्रूषा, 'अजाणणाए तज्जत्ती न कया तम्मि केणवि' (श्रा २८)।

जत्तिअ देखो °यत्तिअ (उवा २० टि)।

जत्तिय वि [यावत्] जितना (प्रासू १५६, श्रावम)।

जत्तो देखो **जओ** (हे २, १६०)।

जत्थ अ [यत्र] जहाँ, जिसमे (हे २, १६१, प्रासू ७६)।

जदि देखो **जइ**=यदि (निचू २)।

जदिच्छा देखो **जइच्छा** (वृह ३, मा १२)।

जदु देखो **जउ**=यदु (कुमा; ठा ८)।

जद्दर पुन [दे] वस्त्र-विशेष (सम्मत्त २१८, २१६)।

जधा देखो **जहा** (ठा २, ३, ३, १)।

जन्न देखो **जण्ण** (पराह १, २, ४, पउम ११, ४६)।

जन्न वि [जन्य] १ जन-हित, लोक-हितकर (सूअ २, ६, २)। २ उत्पन्न होने योग्य (धर्मसं २८०)।

जन्नत्ता } स्त्री [दे] बरात, गुजराती मे 'जान'
जन्ना } (सुपा ३६६, उप ७६८ टी)।

जन्नसेणी देखो **जण्णसेणी** (पार्थ ४)।

जन्नु देखो **जाणु** (पउम ६८, १०)।

जन्नोवइय देखो **जण्णोवईय** (सुख २, १३)।

जन्नोवईय देखो **जण्णोवईय** (णाया १, १६—पत्र २१३)।

जन्हवी देखो **जण्हवी** (ठा ६, ६)।

जप देखो **जव**=जप् (षड्)।

जपिर वि [जपितृ] जाप करनेवाला (षड्)

जप्प देखो **जप**। जप्पइ (षड्)। जप्पंति (पि २६६)।

जप्प पुं [जल्प] १ उक्ति, कथन। २ छल का उपालम्भ रूप भाषण (राज)।

जप्प वि [याप्य] गमन कराने योग्य। °जाण न [°यान] वाहन-विशेष, शिविका (दे ६, १२२)।

जप्पभिइ } अ [यत्प्रभृति] जब से, जहाँ से
जप्पभिइं } लेकर (णाया १, १; कप्प)।

जप्पिअ वि [जल्पित] १ उक्त, कथित (प्राप)। २ न उक्ति, वचन (अन्नु २)।

जम सक [यमय्] १ काबू मे रखना, नियन्त्रण करना। २ जमाना, स्थिर करना। जमेइ (से १०, ७०)। संकृ जमइत्ता (औप)।

जम पुं [यम] १ अहिंसादि पाँच महाव्रत, साधु का व्रत (णाया १, ५, ठा २, ३)। २ दक्षिण दिशा का एक लोकपाल, देव-विशेष, जम-देवता, जमराज (पराह १, १, पाप्र, हे १, २४५)। ३ भरणी नक्षत्र का अधिपति देव (सुज्ज १०)। ४ किष्किन्धा नगरी का एक राजा (पउम ७, ४६)। ५ तापस-विशेष (आवम)। ६ मृत्यु, मौत (आव ४, महा)। ७ संयमन, नियन्त्रण (आवम)। °काइय पुं [°कायिक] असुर-विशेष, परमाधार्मिक देव, जो नारकी के जीवों को दु ख देते हैं (पराह १, १)। °घोस पुं [°घोष] ऐरवत वर्ष के एक भावी जिन-देव (पव ७)। °पुरी स्त्री [°पुरी] जम की नगरी, मौत का स्थान, 'को जमपुरीसमाणे सममाणे एव-मुल्लवइ?'(सुपा ४६२)। °प्पभ पु [°प्रभ] यमदेव का उत्पात-पर्वत, पर्वत-विशेष (ठा १०)। °भड पुं [°भट] यमराज का सुभट (महा)। °मंदिर न [°मन्दिर] यमराज का घर, मृत्यु स्थान (महा)। °लय न [°लय] पूर्वोक्त ही अर्थ (पउम ४५, १०)।

जमग पुं [यमक] १ पक्षि-विशेष। देव-विशेष (जीव ३)। ३ पर्वत-विशेष (जीव ३, सम ११४, इक)। ४ द्रह-विशेष, दह, भील (जीव ३, इक)। देखो **जमय**।

जमग } अ [दे] एक साथ, एक ही
जमगसमग } समय मे, युगपत् (धम्म ११ टी, णाया १, ४, औप, विपा १, १)।

जमणिया स्त्री [जमनिका] जैन साधु का उपकरण-विशेष (राज)।

जमदग्गि पुं [जमदग्नि] तापस-विशेष, इस नाम का एक सन्यासी, परशुराम का पिता (पि २०७)।

जमदग्गिजडा स्त्री [यमदग्निजटा] गन्ध-द्रव्य-विशेष, सुगन्धवाला (उत्तनि ३)।

जमय देखो **जमग** ५ न अलंकार-शास्त्र मे प्रसिद्ध अनुप्रास-विशेष। ६ छन्द-विशेष (पिंग)।

जमल न [यमल] १ जोडा, युग्म, युगल (णाया १, १, हे २, १७३, से ५, ५६)। २ समान श्रेणि में स्थित, तुल्य पक्तिवाला (राय)। ३ सहवर्त्ती, सहचारी (भग १५)। ४ समान, तुल्य (राय, औप)। °ज्जुणभंजग पुं [°र्जुनभञ्जक] श्रीकृष्ण वासुदेव (पराह १, ४)। °पद, °पय न [°पद] १ प्राय-श्चित्त-विशेष (निचू १)। २ आठ अको की संख्या (पराण १२)। °पाणि पुं [°पाणि] मुष्टि, मुट्ठी (भग १६, ३)।

जमलिय वि [यमलित] १ युग्म रूप से स्थित (राय)। २ सम-श्रेणि रूप से अवस्थित (णाया १, १, औप)।

जमलोइय वि [यमलौकिक] १ यमलोक-सम्बन्धी, यमलोक से सम्बन्ध रखनेवाला। २ परमाधार्मिक देव, असुरों की एक जाति (सूअ १, १२)।

जिव देखो जीव, 'मायाइ ग्रह भरिणग्रो कायव्वा वच्छ जिवदया तुमए' (धर्मवि ५)।

जिवँ } (ग्रप) देखो जिध (कुमा; षड्, हे
जिहँ } ४, ३३७)।

जिह्वा देखो जीहा (षड्)।

जीअ देखो जीव = जीव्। जीग्रइ (गा १२४, हे १, १०१)। वकृ. जीअंत (मे ३, १२, गा ८९६)।

जीअ देखो जीव = जीव (गउड)। ५ पानी, जल (से २, ७)।

जीअ देखो जीविअ (हे १, २७१; प्राप्र; सुर २, २३०)।

जीअ न [जीत] १ ग्राचार, रिवाज, प्रथा, रूढि (ग्रौप; राय, सुपा ४३)। २ प्रायश्चित से सम्बन्ध रखनेवाला एक तरह का रिवाज, जैन सूत्रो मे उक्त रीति से भिन्न तरह के प्रायश्चित्तो का परम्परागत ग्राचार (ठा ५, २)। ३ ग्राचार-विशेष का प्रतिपादक ग्रन्थ (ठा ५, २; वव १)। ४ मर्यादा, स्थिति, व्यवस्था (णंदि)। °कप्प पु [°कल्प] १ परम्परा से ग्रागत ग्राचार। २ परम्परागत ग्राचार का प्रतिपादक ग्रन्थ (पचा ६; जीत)। °कप्पिय वि [°कल्पिक] जीत कल्पवाला (ठा १०)। °धर वि [°धर] १ ग्राचार-विशेष का जानकार। २ स्वनाम-ख्यात एक जैनाचार्य (णदि)। °ववहार पु [°व्यवहार] परम्परा के ग्रनुसार व्यवहार (धर्म २; पचा १६)।

जीअण देखो जीवण (नाट—चैत २५८)।

जीअव वि [जीवितवत्] जीवितवाला, श्रेष्ठ जीवनवाला (पराह १, १)।

जीआ स्त्री [ज्या] १ धनुष की डोर (कुमा)। २ पृथिवी, भूमि। ३ माता, जननी (हे २, ११५; षड्)।

जीण न [दे अजिन] जीन, ग्रश्व की पीठ पर बिछाया जाता चर्ममय ग्रासन (पव ८४)।

जीमूअ पु [जीमूत] १ मेघ, वर्षा (पाग्र; गउड)। २ मेघ-विशेष, जिसके वरसने से जमीन दश वर्ष तक चिकनी रहती है (ठा ४, ४)।

जीर° देखो जर = जृ।

जीरण न [जीर्ण] १ ग्रन्न पाक। २ वि. पुराना, पचा हुग्रा, 'ग्रजीरण' (पिंड २७)।

जीरय न [जीरक] जीरा, मसाला-विशेष (सुर १, २२)।

जीरव सक [जीरय्] पचाना। जीरवइ (कुप्र २६६)।

जीव ग्रक [जीव्] १ जीना, प्राण धारण करना। २ सक. ग्राश्रय करना। जीवइ (कुमा)। वकृ जीवत, जीवमाण (विपा १,५; उप ७२८ टी)। हेकृ जीविउ (ग्राचा)। संकृ जीविअ (नाट)। कृ जीविअव्व, जीवणिज्ज (सूग्र १, ७)। प्रयो. जीवावेहि (पि ५५२)।

जीव पुंन [जीव] १ ग्रात्मा, चेतन, प्राणी (ठा १, १; जी १; सुपा २३५), 'जीवाइं' (पि ३६७)। २ जीवन, प्राण-धारण, 'जीवोत्ति जीवणं पाणधारणं जीवियंति पज्जाया' (विसे ३५०८; सम १)। ३ पुं. बृहस्पति, सुर-गुरु (सुपा १०८)। ४ बल, पराक्रम (भग २, १)। ५ देखो जीअ = जीव। °काय पु [°काय] जीव-राशि, जीव-समूह (सूग्र १, ११)। °ग्गाह न [°ग्राह] जिन्दे को पकडना (णाया १, २)। °णिकाय पु [°निकाय] जीव-राशि (ठा ६)। °त्थिकाय पु [°ास्तिकाय] जीव-समूह, जीव-राशि (भग १३,४; ग्रणु)। °दय वि [°दय] जीवित देनेवाला (सम १)। °दया स्त्री [°दया] प्राणि-दया, दुखी जीव का दुख से रक्षण (महानि २)। °देव पुं [°देव] स्वनाम-ख्यात प्रसिद्ध जैन ग्राचार्य ग्रौर ग्रथकार (सुपा १)। °पएस पु [प्रदेशजीव] ग्रन्तिम प्रदेश मे ही जीव की स्थिति को माननेवाला एक जैनाभास दार्शनिक (राज)। °पएसिय पु [°प्रादेशिक] देखो पूर्वोक्त ग्रर्थ (ठा ७)। °लोग, °लोय पुं [°लोक] १ जीव-जाति, प्राणि-लोक, जीव-समूह (महा)। °विजय न [°विचय] जीव के स्वरूप का चिन्तन (राज)। °विभत्ति स्त्री [°विभक्ति] जीव का भेद (उत्त ३६)। °वुड्ढिय न [°वृद्धिक] ग्रनुज्ञा, समति, ग्रनुमति (णदि)।

जीव न [जीव] सात दिन का लगातार उपवास (सवोध ५८)। °विसिट्ठ न [°विशिष्ट] वही ग्रर्थ (सवोध ५८)।

जीवजीव पुं [जीवजीव] १ जीव-बल, ग्रात्म-पराक्रम (भग २, १)। २ चकोर-पक्षी, चकवा (राज)।

जीवंत देखो जीव = जीव्। °मुक्क पु [°मुक्त] जीवन्मुक्त, जीवन-दशा मे ही संसार-बन्धन से मुक्त महात्मा (ग्रच्चु ४७)।

जीवग पुं [जीवक] १ पक्षि-विशेष (उप ५८०)। २ नृप-विशेष (तित्थ)।

जीवजीवग पु [जीवजीवक] चकोर पक्षी, चकवा (पराह १, १—पत्र ८)।

जीवण न [जीवन] १ जीना, जिन्दगी (विसे ३५२१; पउम ८, २५०)। २ जीविका, ग्राजीविका (स २२७, ३१०)। ३ वि. जिलानेवाला (राज)। °वित्ति स्त्री [°वृत्ति] ग्राजीविका (उप २६४ टी)।

जीवमजीव पुं [जीवाजीव] चेतन ग्रौर जड पदार्थ (ग्रावम)।

जीवम्मुत्त देखो जीवंत-मुक्क (उवर १९१)।

जीवयमई स्त्री [दे] मृगो के ग्राकर्षण के साधन-भूत व्याध-मृगी (दे ३, ४६)।

जीवा स्त्री [जीवा] १ धनुष की डोरी (स ३८४)। २ जीवन, जीना (विसे ३५२१)। ३ क्षेत्र का विभाग-विशेष (सम १०४)।

जीवाउ पु [जीवातु] जिलानेवाला ग्रौषध, जीवनौषध (कुमा)।

जीवाविय वि [जीवित] जिलाया हुग्रा (उप ७६८ टी)।

जीवि वि [जीविन्] जीनेवाला (गा ८४७)।

जीविअ वि [जीवित] १ जो जिन्दा हो। २ न जीवित, जीवन, जिन्दगी (हे १, २७१; प्राप्र)। °नाह पु [°नाथ] प्राण-पति (सुपा ३१५)। °रिसिका स्त्री [°रिसिका] वनस्पति-विशेष (पराण १—पत्र ३६)।

जीविआ स्त्री [जीविका] १ ग्राजीविका, निर्वाह साधक वृत्ति (ठा ४, २; स २१८; णाया १, १)।

जीविओसविय वि [जीवितोत्सविक] जीवन मे उत्सव के तुल्य, जीवनोत्सव के समान (भग ६, ३३; राय)।

पर्वत की एक वापी (ती २४)। ६ नवमी तिथि (जं ७)। १० जैन मुनियों की एक शाखा (कप्प)।

जयण न [यजन] १ याग, पूजा। २ अभय-दान (पण्ह २, १)।

जयण न [यतन] १ यत्न, प्रयत्न, चेष्टा, उद्यम, 'जयणघडण-जोग-चरित' (अनु)। २ यतना, प्राणी की रक्षा (पण्ह २, १)।

जयण वि [जवन] वेगवाला, वेग-युक्त (कप्प)।

जयण न [जयन] १ जीत, विजय (मुद्रा २६८, कप्पू)। २ वि जीतनेवाला (कप्प)।

जयण न [दे] घोडे का बख्तर, हय-सनाह (दे ३, ४०)।

जयणा स्त्री [यतना] १ प्रयत्न, चेष्टा, कोशिश (निचू १)। २ प्राणी की रक्षा, हिंसा का परित्याग (दस ४)। ३ उपयोग, किसी जीव को दुःख न हो इस तरह प्रवृत्ति करने का ख्याल (निचू १, स ६७, औप)।

जयद्दह पुं [जयद्रथ] सिन्धु देश का स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा, जो दुर्योधन का बहनोई था (णाया १, १६)।

जया अ [यदा] जिस समय, जिस वक्त (कप्प, काल)।

जया स्त्री [जया] १ विद्या-विशेष (पउम ७, १४१)। २ चतुर्थ चक्रवर्ती राजा की अग्र-महिषी (सम १५२)। ३ भगवान् वासुपूज्य की स्वनाम ख्यात माता (सम १५१)। ४ तिथि-विशेष—तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी तिथि (सुज्ज १०)। ५ भगवान् पार्श्वनाथ की शासनदेवी (ती ६)। ६ ओषधि-विशेष (राज)।

जयार पु [जकार] १ 'ज' अक्षर। २ जका-रादि अश्लील शब्द, 'जत्थ जयारमयारं समणी जंपइ गिहत्थपच्चक्खं' (गच्छ ३, ४)।

जयिण देखो जइण = जयिन् (पण्ह १, ४)।

जर अक [जॄ] जीर्ण होना, पुराना होना, बूढा होना। जरइ (हे ४, २३४)। कर्म. जीरइ, जरिज्जइ (हे ४, २५०)। वकृ. जरत (अच्चु ७९)।

जर पुं [ज्वर] रोग-विशेष, बुखार (कुमा)।

जर पु [जर] १ रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३)। २ वि. जीर्ण, पुराना (दे ३, ५९)।

जर वि [जरत्] जीर्ण, पुराना, वृद्ध, बूढा (कुमा; सुर २, ६६, १०४)। स्त्री. °ई (कुमा, गा ४७२ अ)। °ग्गव पु [°गव] बूढा बैल (बृह १, अनु ४)। °ग्गवी स्त्री [°गवी] बूढी गाय (गा ४६२)। °ग्गु पुं [°गु] १ बूढा बैल। २ स्त्री बूढी गाय, 'जिएणा य जरग्गवो पडिया' (पउम ३३, १६)।

जर° देखो जरा (कुमा; अंत १६; वव ७)।

जरंड वि [दे] वृद्ध, बूढा (दे ३, ४०)।

जरग्ग वि [जरत्क] जीर्ण, पुराना (अनु ५)।

जरठ वि [जरठ] १ कठिन, परुष। २ जीर्ण, पुराना (णाया १, १—पत्र ५)। देखो जरढ।

जरड वि [दे] वृद्ध, बूढा (दे ३, ४०)।

जरढ देखो जरठ (पि १९८, से १०, ३८)। ३ प्रौढ, मजबूत (से १, ४३)।

जरण न [जरण] जीर्णता, आहार का हजम होना, हाजमा (धर्मसं ११३५)।

जरय पुं [जरक] रत्नप्रभा नामक नरक पृथिवी का एक नरकावास (ठा ६—पत्र ३६५)। °मज्झ पु [°मध्य] नरकावास-विशेष (ठा ६)। °वत्त पुं [°वर्त] नरकावास-विशेष (ठा ६)। °विसिट्ठ पुं [°विशिष्ट] नर-कावास-विशेष (ठा ६)।

जरलद्धिअ } वि [दे] ग्रामीण, ग्राम्य (दे जरलविअ } ३, ४४)।

जरा स्त्री [जरा] बुढापा, वृद्धत्व (आचा; कस, प्रासू १३४)। °कुमार पु [°कुमार] श्रीकृष्ण का एक भाई (अंत)। °संध पु [°सन्ध] राजगृह नगर का एक राजा, नववाँ प्रतिवासुदेव, जिसको श्री कृष्ण वासुदेव ने मारा था (सम १५३)। °सिंध पुं [°सिन्ध] वही पूर्वोक्त अर्थ (पण्ह १, ४—पत्र ७२)। °सिंधु पुं [°सिन्धु] वही पूर्वोक्त अर्थ (णाया १, १६—पत्र २०९, पउम ५, १५६)।

जरा स्त्री [जरा] वसुदेव की एक पत्नी (कुप्र ६६)।

जराहिरण (अप) देखो जल-हरण (पिंग)।

जरि वि [ज्वरिन्] बुखारवाला, ज्वर से पीडित (सुपा २४३)।

जरि वि [जरिन्] जरा-युक्त, वृद्ध, बूढा (दे ३, ५७, उर ३, १)।

जरिअ वि [ज्वरित] ज्वर-युक्त, बुखारवाला (गा २६९, सुपा २८९)।

जल अक [ज्वल्] १ जलना, दग्ध होना। २ चमकना। जलइ (महा)। वकृ. जलंत (उवा, गा २६४)। हेकृ. जलिउ (महा)। प्रयो., वकृ. जलित (महानि ७)।

जल देखो जड्ड (श्रा १२, श्राव ४)।

जल न [जाड्य] जडता, मन्दता, 'जलधोय-जललेवा' (सार्ध ७३, से १, २४)।

जल पुं [ज्वल] देदीप्यमान, चमकीला (सूअ १, ५, १)।

जल न [जल] वीर्य (वज्जा १०२)। °कन्त पुन [°कान्त] एक देवविमान (देवेन्द्र १४४)। °कारि पुंस्त्री [°कारिन्] चतुरि-न्द्रिय जन्तु-विशेष (उत्त ३६, १४९)। °य वि [°ज] पानी मे उत्पन्न (श्रु ६८)। °वारिअ पु [°वारिक] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति (सुख ३६, १४९)।

जल न [जल] १ पानी, उदक (सूअ १, ५, २; जी २)। २ पुं जलकान्त-नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १)। °कंत पु [°कान्त] १ मणि-विशेष, रत्न की एक जाति (पण्ण १; कुम्मा १५)। २ इन्द्र-विशेष, उदधिकुमार-नामक देव-जाति का दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३)। ३ जलकान्त इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १)। °करप्फाल पुं [°करास्फाल] हाथ से आहत पानी (पाअ)। °करि पुंस्त्री [°करिन्] पानी का हाथी, जल-जन्तु विशेष (महा)। °कलंब पु [°कदम्ब] कदम्ब वृक्ष की एक जाति (गउड)। °कीडा, °कीला स्त्री [°क्रीडा] पानी में की जाती क्रीडा, जल-केलि (णाया १, २)। °केलि स्त्री [°केलि] जल-क्रीडा (कुमा)। °चर देखो °यर (कप्प; हे १, १७७)। °चार पु [°चार] पानी में चलना (आचा २, ५, १)। °चारण पु [°चारण] जिसके प्रभाव से पानी में भी भूमि की तरह चला जा सके ऐसी अलौकिक शक्ति रखने-वाला मुनि (गच्छ २)। °चारि पुं [°चारिन्] पानी में रहनेवाला जतु (जी २०)।

विभागो दीवपगासाण जुगवजम्मेवि' (विसे ५३६ टी, औप)।

जुगुन्छ देखो जुउच्छ । जुगुच्छइ (हे ४, ४)।

जुगुच्छणया } स्त्री [जुगुप्सा] घृणा, जुगुच्छा } तिरस्कार (स १६७, प्राप्र)।

जुगुच्छिय वि [जुगुप्सित] घृणित, निन्दित (कुमा)।

जुग्ग न [युग्य] १ वाहन, गाडी वगैरह यान (आचा)। २ शिविका, पुरुष-यान (सूत्र २, २, जं २)। ३ गोल्ल देश मे प्रसिद्ध दो हाथ का लम्बा-चौडा यान-विशेष, शिविका-विशेष (णाया १, १, औप)। ४ वि यान वाहक अश्व आदि। ५ भार-वाहक (ठा ४, ३)। °ायरिया, °ारिया स्त्री [°ाचर्या] वाहन की गति (ठा ४, ३—पत्र २३६)।

जुग्ग वि [योग्य] लायक, उचित (विसे २६६२, स ३१, प्रासू ५६, कुमा)।

जुग्ग न [युग्म] युगल, द्वन्द्व, उभय (कुमा, प्राप्र, प्राप)।

जुज्ज देखो जुज। जुज्जइ (हे ४, १०६, षड्)। जुज्जंत देखो जु।

जुज्झ अक [युध्] लडाई करना, लडना। जुज्झइ (हे ४, २१७, षड्)। वकृ जुज्झंत, जुज्झमाण (सुर ६, २२२, २, ५१)। संकृ. जुज्झित्ता (ठा ३, २)। प्रयो जुज्झावेइ (महा)। वकृ जुज्झावेंत (महा)। कृ जुज्झावेयव्व (उप पृ २२५)।

जुज्झ न [युद्ध] लडाई, सग्राम, समर (णाया १, ८, कुमा, कप्पू, गा ६८४)। °इजुद्ध न [°ातियुद्ध] महायुद्ध, पुरुषो की बहत्तर कलाओ में एक कला (औप)।

जुज्झण न [योधन] युद्ध लडाई (सुपा ५२७)।

जुज्झिअ वि [युद्ध] १ लडा हुआ, जिसने संग्राम किया हो वह (से १५, ३७)। २ न. युद्ध, लडाई, संग्राम (स १२६)।

जुट्ठ वि [जुष्ट] सेवित (प्रामा)।

जुट्ठ न [दे] झूठ, असत्य; 'आ दुट्ठ तुम जुट्ठं जंपसि' (धर्मवि १३३)।

जुडिअ वि [दे] आपस मे जुटा हुआ, लडने के लिए एक दूसरे से भीडा हुआ, 'सुहडेहिं सम सुहडा जुडिया तह साइणावि साईहिं' (उप ७२८ टी)।

जुण्ण वि [दे] विदग्ध, निपुण, दक्ष (दे ३, ४७)।

जुण्ण वि [जीर्ण] जूना, पुराना (हे १, १०२, गा ५३४)।

जुण्णदुग्ग न [जीर्णदुर्ग] नगर-विशेष, जो आजकल भी 'जूनागढ' नाम से प्रसिद्ध है (ती २)।

जुण्ह देखो जोण्ह = ज्यौत्स्न (सुज्ज १६)।

जुण्हा स्त्री [ज्योत्स्ना] चांदनी, चन्द्रिका, चन्द्र का प्रकाश (सुपा १२१, सण)।

जुत्त सक [युक्तय्] जोतना। सकृ जुत्तित्ता (ती १५)।

जुत्त वि [युक्त] १ संगत, उचित, योग्य (णाया १, १६, चद २०)। २ संयुक्त, जोडा हुआ, मिला हुआ, सवद्ध (सूत्र १, १, १, आचू)। ३ उद्युक्त, किसी कार्य मे लगा हुआ (पव ६४)। ४ सहित, समन्वित (सूत्र १, १, ३, आचा)। °ासंखिज्ज न [°ासख्येय] सख्या-विशेष (कम्म ४, ७८)।

जुत्ताणंतय पुंन [युक्तानन्तक] गणना-विशेष (अणु २३४)।

जुत्तासंखेज्जय देखो जुत्तासखिज्ज (अणु २३४)।

जुत्ति स्त्री [युक्ति] १ योग, योजन, जोड, संयोग (औप, णाया १, १०)। २ न्याय, उपपत्ति (उप ६५०, प्रासू ६३)। ३ साधन, हेतु (सूत्र १, ३, ३)। °ण्ण वि [°ज्ञ] युक्ति का जानकार (औप)। °सार वि [°सार] युक्ति-प्रधान, युक्त, न्याय-सगत, प्रमाण-युक्त (उप ७२८ टी)। °सुवण्ण न [°सुवर्ण] बनावटी सोना (दस १०, ३६)। °सेण पुं [°पेण] ऐरवत वर्ष के अष्टम जिन-देव (सम १५३)।

जुत्तिय वि [यौक्तिक] गाडी वगैरह मे जो जोता जाय, 'जुत्तियतुरगमाण' (सुपा ७७)।

जुद्ध देखो जुज्झ = युद्ध (कुमा)।

जुन्न देखो जुण्ण (सुर १, २४४)

जुन्हा देखो जुण्हा (सुपा १५७)।

जुप्प देखो जुज जुप्पइ (हे ४, १०६)। जुप्पसि (कुमा)।

जुम्म न [युग्म] १ युगल, दोनो, उभय (हे २, ६२, कुमा)। २ पुं सम राशि (ओघ ४०७, ठा ४, ३—पत्र २३७)। °पएसिय वि [°प्रादेशिक] सम-सख्य प्रदेशो से निष्पन्न (भग २५, ४)।

जुम्म न [युग्म] परस्पर सापेक्ष दो पद्य (सिरि ३६१)।

जुम्ह° स [युष्मत्] द्वितीय पुरुष का वाचक सर्वनाम, 'जुम्हदम्हपयरण' (हे १, २४६)।

जुरुमिल्ल वि [दे] गहन, निविड, सान्द्र, 'दुहजुरुमिल्लावत्थ' (दे ३, ४७)।

जुव पु [युवन्] जवान, तरुण (कुमा)। °राअ पु [°राज] गद्दी का वारिस (उत्तराधिकारी) राजकुमार, भावी राजा (सुर २, १७५, अभि ८२)।

जुवइ स्त्री [युवति] तरुणी, जवान स्त्री (हे १, ४, औप, गउड, प्रासू ६३, कुमा)।

जुवगव पुं [युवगव] तरुण बैल (आचा २, ४, २)।

जुवरज्ज न [यौवराज्य] १ युवराजपन (उप २११ टी, सुर १६, १२७)। २ राजा के मरने पर जब तक युवराज का राज्याभिषेक न हुआ हो तबतक का राज्य (आचा २, ३, १)। ३ राजा के मरने पर और युवराज के राज्याभिषेक हो जाने पर भी जबतक दूसरे युवराज की नियुक्ति न हुई हो तबतक का राज्य (बृह १)।

जुवल देखो जुगल (स ४७८, पउम ६५, २३)।

जुवलिय देखो जुगलिय (भग, औप)।

जुवाण देखो जुव (पउम ३, १४६, णाया १, १, कुमा)।

जुवाणी देखो जुवई (पउम ८, १८४)।

जुव्वण } देखो जोव्वण (प्रासू ४६, जुव्वणत्त } ११६), 'पढमं चिय बालत्त, 'तत्तो कुमरत्तजुव्वणत्ताइं' (सुपा २४३)।

जुसिअ वि [जुष्ट] सेवित, 'पाएण देइ लोगो उवगारिसु परिचिए व जुसिए वा' (ठा ४, ४)।

(सुपा २०२)। वकृ. जवंत (नाट)। कवकृ. जविज्जंत (सुर १३, १८६)।

जव पुं [जप] जाप, पुन. पुन· मन्त्रोच्चारण, बार-बार मन ही मन देवता का नाम-स्मरण (पण्ह २, २, सुपा १२०)।

जव पुं [यव] १ अन्न-विशेष, जव या जौ (णाया १,१, पण्ह १,४)। २ परिमाण-विशेष, आठ यूका की नाप (ठा ८)। °णाली स्त्री [°नाली] वह नाली जिसमें जौ बोए जाते हों (आचू १)। °मज्झ न [°मध्य] १ तप-विशेष (पउम २२, २४)। २ आठ यूका का एक नाप (पव २५)। °मज्झा स्त्री [°मध्या] व्रत विशेष, प्रतिमा-विशेष (ठा ४, १) °राय पुं [°राज] नृप-विशेष (बृह १)। °वंसा स्त्री [°वंशा] वनस्पति-विशेष (पण्ण १)।

जव पुं [जव] वेग, दौड, शीघ्र गति (कुमा)।

जव पुंन [यव] एक देवविमान (देवेन्द्र १४०)। °नालय पुं [°नालक] कन्या का कंचुक (णंदि ८८ टी)। °न्न न [°ान्न] यव-निष्पन्न परमान्न, भोज्य विशेष, जव की खीर, जाउर (पव २५९)।

जवजव पुं [यवयव] अन्न-विशेष, एक तरह का यव-धान्य (ठा २, १)।

जवण न [दे] हल की शिखा, हल की चोटी (दे ३, ४१)।

जवण न [जपन] जाप, पुन पुन. मन्त्र का उच्चारण, 'अहिणा दट्ठस्स जए को कालो मत-जवणम्मि' (पउम ८६, ६०, स ६)।

जवण वि [जवन] १ वेग से जानेवाला (उप ७६८ टी)। २ पुं. वेग, शीघ्र गति (आवम)।

जवण पुं [यवन] १ म्लेच्छ देश-विशेष (पउम ६८, ६४)। २ उस देश में रहनेवाली मनुष्य-जाति (पण्ह १, १)। ३ यवन देश का राजा (कुमा)।

जवण न [यापन] निर्वाह, गुजारा, (उत्त ८)।

जवणा स्त्री [यापना] ऊपर देखो (पव २)।

जवणाणिया स्त्री [यवनानिका] लिपि-विशेष (राज)।

जवणालिया स्त्री [यवनालिका] कन्या का कञ्चुक (आवम)।

जवणिआ स्त्री [यवनिका] परदा (दे ४, १, सण; कप्पू)।

जवणिज्ज देखो जव = यापय्।

जवणी स्त्री [यवनी] परदा, आच्छादक पट (दे २, २५)। २ संचारिका, दूती (अभि ५७)।

जवणी स्त्री [यावनी] १ यवन की स्त्री। २ यवन की लिपि (सम ३५, विसे ४६४ टी)।

जवणीअ देखो जव = यापय्।

जवपचमाण पुं [दे] जात्यश्व का वायु-विशेष, प्राण-वायु (गउड)।

जवय } पुं [दे] जव का अंकुर (दे ३,
जवरय } ४२)।

जवली स्त्री [दे] जव, वेग, 'गच्छंति गल्य-नेहेण पवरतुरयाहिरूढा जवलीए' (सुपा २७६)।

जववारय [दे] देखो जवरय (पंचा ८)।

जवस न [यवस] १ तृण, घास, 'गिट्ठिव्व जवसम्मि' (उप ७२८ टी, उप पृ ८४)। २ गेहूँ वगैरह धान्य (आचा २, ३, २)।

जवा स्त्री [जपा] १ वल्ली-विशेष, जवा-पुष्प का वृक्ष। २ गुडहल का फूल, अडहुल का पुष्प (कुमा)।

जवास पुं [यवास] वृक्ष-विशेष, रक्त पुष्प-वाला वृक्ष-विशेष, 'पाउसि जवासो '(श्रा २३, पण्ण १), 'जवासाकुसुमे इ वा' (पण्ण १७)।

जवि } वि [जविन्] १ वेगवाला, वेग-युक्त
जविण } सुपा ११२)। २ पुं. अश्व, घोड़ा (राज)।

जविअ वि [जपित] १ जिसका जाप किया गया हो वह (मन्त्र आदि) (सिरि ३६६)। २ न. अध्ययन, प्रकरण आदि प्रयाश (सुख २, १३)।

जविय वि [यापित] १ गमित, गुजरा हुआ। २ नाशित (कुमा)।

जस पुं [यशस्] १ कीर्त्ति, इज्जत, सु-ख्याति (औप, कुमा)। २ संयम, त्याग, विरति (वव १, दस ५, २)। ३ विनय (उत्त ३)। ४ भगवान् अनन्तनाथ का प्रथम शिष्य (सम १५२)। ५ भगवान् पार्श्वनाथ का आठवाँ प्रधान शिष्य (कप्प)। °कित्ति स्त्री [°कीर्त्ति] सुख्याति, सुप्रसिद्धि (सुअ १, ६, आचू १)। °भद्द पुं [°भद्र] स्वनाम-ख्यात एक जैन आचार्य (कप्प, सार्ध २३)। °म मत वि [°वत्] १ यशस्वी, इज्जतदार, कीर्तिवाला (पण्ह १, ४)। २ पुं. स्वनाम-प्रसिद्ध एक कुलकर पुरुष (सम १५०)। °वई स्त्री [°वती] १ द्वितीय चक्रवर्त्ती सगर-राज की माता (सम १५२) २ तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी की रात्रि (चंद १०)। °वम्म पुं [°वर्मन्] स्वनाम-ख्यात नृप-विशेष (गउड)। °वाय पुं [°वाद] साधुवाद, यशो-गान, प्रशंसा (उप ९८६ टी)। °विजय पुं [°विजय] विक्रम की अठारहवीं शताब्दी का एक जैन सुप्रसिद्ध ग्रन्थकार, न्यायाचार्य श्रीमान् यशोविजय उपाध्याय (राज)। °हर पुं [°धर] १ भारतवर्ष का भूत कालिक अठारहवाँ जिन-देव (पव ८)। २ भारतवर्ष के एक भावी जिन-देव (पव ४६)। ३ एक राज-कुमार (धम्म)। ४ पक्ष का पाँचवाँ दिन (जं ७)। ५ वि. यश को धारण करनेवाला, यशस्वी (जीव ३)। देखो जसो°।

जसंसि पुं [यशस्विन्] भगवान् महावीर के पिता का एक नाम (आचा २, १५, ३, कप्प)।

जसद पुं [जसद] धातु-विशेष, जस्ता (राज)।

जसदेव पुं [यशोदेव] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य (पव २७६)।

जसभद्द पुं [यशोभद्र] १ पक्ष का चतुर्थ दिवस (सुज्ज १०, १४)। २ एक राजर्षि, जो वागड देश के रत्नपुर नगर का राजा था और जिसने जैनी दीक्षा ली थी, जो आचार्य हेमचन्द्र के गुरु थे (कुप्र ७, १८)। ३ न. उड्डुवाटिक गण का एक कुल (कप्प)।

जसवई स्त्री [यशोमती] भगवान् महावीर की दौहित्री का नाम (आचा २ १५, ३)।

जसस्सि वि [यशस्विन्] यशस्वी, कीर्तिमान् (सुअ १, ६, ३, श्रु १४३)।

जसहर पुंन [यशोधर] एक देव-विमान (देवेन्द्र १४१)।

जसा स्त्री [यशा] कपिलमुनि की माता (उत्त ८)।

जेत्त देखो जइत्त (पि ६१)।
जेत्तिअ } त्रि [यावत्] जितना (हे २,
जेत्तिल } १५७, गा ७१, गउड)।
जेत्तिक (शौ) ऊपर देखो (प्राकृ ६५)।
जेत्तुल } (अप) ऊपर देखो (हे ४, ४३५)।
जेत्तुल्ल }
जेद्दह देखो जेत्तिअ (हे २, १५७, प्राप्र)।
जेम सक [जिम्, भुज्] भोजन करना। जेमइ (हे ४, ११०, षड्)। वकृ जेमंत (पउम १०३, ८५)।
जेम (अप) अ [यथा] जैसे, जिस तरह से (सुपा ३८३, भवि)।
जेमण } न [जेमन] जीमन, भोजन (ओघ
जेमणग } ८८ औप)।
जेमणय न [दे] दक्षिण अंग, गुजराती में 'जमणु' (दे ३, ४८)।
जेमणी स्त्री [जेमनी] जीमन (सबोध १७)।
जेमावण न [जेमन] भोजन कराना, खिलाना (भग ११, ११)।
जेमाविय वि [जेमित] भोजित, जिसको भोजन कराया गया हो वह (उप १३६ टी)।
जेमिय वि [जेमित] जीमा हुआ, जिसने भोजन किया हो वह (णाया १, १—पत्र ४१ टी)।
जेयव्व देखो जिण = जि।
जेव (शौ) देखो एव = एव (रंभा, कप्पू)।
जेवँ (अप) देखो जिवँ (हे ४, ३९७)।
जेवड (अप) देखो जेत्तिअ (हे ४, ४०७)।
जेव्व (शौ) देखो एव = एव (पि, नाट)।
जेह (अप) वि [यादृश्] जैसा (हे ४, ४०२, षड्)।
जेहिल पुं [जेहिल] स्वनाम ख्यात एक जैन मुनि (कप्प)।
जो } सक [दृश्] देखना। जोइ (सण),
जोअ } 'एसा हु वंकवक्कं, जोयइ तुह सुमुहं जेण' (सुर ३, १२६)। जोयति (स ३६१)। कर्म. जोइज्जइ (रयण ३२)। वकृ जोअंत (धम्म ११ टी, महा, सुर १०, २४४)। कवकृ जोइज्जंत (सुपा ५७)।
जोअ अक [द्युत्] प्रकाशित होना, चमकना। जोइ (कुमा)। भूका. जोइंसु (भग)। वकृ °जोअंत (कुमा, महा)।
जोअ सक [द्योतय्] प्रकाशित करना। जोयइ (सूअ १, ६, १३), 'तस्सवि य गिहं पुण वालपडिया जोयए दुहिया' (सुपा ६११)। जोएज्जा (विसे ६१२)।
जोअ सक [योजय्] १ समाप्त करना, खतम करना। २ करना। जोएइ (सुज्ज १०, १२—पत्र १८० १८१, सुज्ज १२—पत्र २३३)।
जोअ सक [योजय्] जोडना, युक्त करना। जोएइ (महा)। वकृ जोइयव्व, जोएअव्व जोयणिय, जोयणिज्ज (उप ५६६, स ५६८, औप, निचू १)।
जोअ पु [दे] १ चन्द्र, चन्द्रमा (दे ३, ४८)। २ युगल, युग्म (णाया १, १ टी—पत्र ४३)।
जोअ देखो जोग (भवि २५, स ३६१, कुमा)। °वडय न [°वटक] चूर्ण-विशेष, पाचक चूर्ण, हाजमा (स २५२)।
जोअंगण [दे] देखो जोइंगण (भवि)।
जोअग वि [द्योतक] १ प्रकाशनेवाला २ न. व्याकरण-प्रसिद्ध निपात वगैरह पद (विसे १००३)।
जोअड पुं [दे] खद्योत, कीट-विशेष, जुगनू (षड्)।
जोअण न [दे] लोचन, नेत्र, चक्षु, आँख (दे ३, ५०)।
जोअण न [योजन] १ परिमाण-विशेष, चार कोश (भग, इक)। २ संबन्ध, संयोग, जोडना (पण्ह १, १)।
जोअण न [यौवन] युवावस्था, तरुणता, जवानी (उप १४२ टी, गा १९७)।
जोअणा स्त्री [योजना] जोडना, संयोग करना (उप पृ २२१)।
जोआ स्त्री [द्यो] १ स्वर्ग। २ आकाश (षड्)।
जोआवइत्तु वि [योजयितृ] जोडनेवाला, संयुक्त करनेवाला (ठा ४, ३)।
जोइ वि [योगिन्] १ युक्त, संयोगवाला। २ चित्त-निरोध करनेवाला, समाधि लगानेवाला। ३ पुं मुनि, यति, साधु (सुपा २१६, २१७)। ४ रामचन्द्र का स्वनाम-ख्यात एक सुभट (पउम ६७, १०)।
जोइ पु [ज्योतिस्] १ प्रकाश, तेज (भग, ठा ४, ३)। २ अग्नि, वह्नि, 'सप्पि जहा जहा पडिय जोइमज्झे' (सूअ १, १३)। ३ प्रदीप आदि प्रकाशक वस्तु, 'जहा हि अंवे सह जाइणावि' (सूअ १, १२)। ४ अग्नि का काम करनेवाला कल्पवृक्ष (सम १७)। ५ ग्रह, नक्षत्र आदि प्रकाशक पदार्थ (चंद १)। ६ ज्ञान। ७ ज्ञान-युक्त। ८ प्रसिद्धि-युक्त। ९ सत्कर्म-कारक (ठा ४, ३)। १० स्वर्ग। ११ ग्रह वगैरह का विमान (राज)। १२ ज्योतिष-शास्त्र (निर ३, ३)। °अंग पुं [°अङ्ग] अग्नि का काम करनेवाला कल्पवृक्ष-विशेष (ठा १०)। °रस न [°रस] रत्न की एक जाति (णाया १, १)। देखो जोइस = ज्योतिस्।
जोइअ पु [दे] कीट-विशेष, खद्योत, जुगनू, पटवीजना (दे ३, ५०)।
जोइअ वि [दृष्ट] देखा हुआ, विलोकित (सुर ३, १७३, महा भवि)।
जोइअ वि [योजित] जोडा हुआ (स २९४)।
जोइअ देखो जोगिय (राज)।
जोइंगण पु [दे] कीट-विशेष, इन्द्र-गोप (दे ३, ५०)।
जोइक्क पुन [ज्योतिष्क] प्रदीप आदि प्रकाशक पदार्थ, 'किं सूरस्स दसणाहिगमे जाइक्कतरं गवेसीयदि' (रंभा)।
जोइक्ख पुं [दे ज्योतिष्क] १ प्रदीप, दीपक (दे ३, ४९, पव ४, वव ७)। २ प्रदीप आदि का प्रकाश (ओघ ६५३)।
जोइणी स्त्री [योगिनी] १ योगिनी, संन्यासिनी। २ एक प्रकार की देवी, ये चौंसठ हैं (सति ११)।
जोइर त्रि [दे] स्खलित (दे ३, ४९)।
जोइस न [दे] नक्षत्र (दे ३, ४९)।
जोइस देखो जोइ = ज्योतिस् (चंद १, कप्प, विसे १८७०, जो १, ठा ६)। °राय पुं [°राज] १ सूर्य। २ चन्द्र (सुज्ज २०, १८)। °लय पुं [°लय] सूर्य आदि देव (उत्त ३६)।

७ मद्य-विशेष (विपा १, २)। °आजीव पु [°आजीव] जाति की समानता बतला कर भिक्षा प्राप्त करनेवाला साधु (ठा ५, १)। °थेर पु [स्थविर] साठ वर्ष की उम्र का मुनि (ठा ३, २)। °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष (सम ६७)। °प्पसण्णा स्त्री [°प्रसन्ना] जाति के पुष्पों से वासित मदिरा (जीव ३)। °फल न [°फल] १ वृक्ष-विशेष। २ फल-विशेष, जायफल, एक गर्म मसाला (सुर १३ ३३, सण)। °मंत वि [°मत्] उच्च जाति का (श्राचा २, ४, २)। °मय पु [°मद] जाति का अभिमान (ठा १०)। °वत्तिया स्त्री [°पत्रिका] १ सुगन्धित फलवाला वृक्ष-विशेष। २ फल-विशेष, एक गर्म मसाला (सण)। °सर पुं [°स्मर] १ पूर्व जन्म की स्मृति। २ वि. पूर्व जन्म का स्मरण करनेवाला, पूर्व-जन्म का ज्ञान-वाला, 'जाइसराइं मन्ने इमाइं नयणाइं सयललोयस्स' (सुर ४, २०८)। °सरण न [°स्मरण] पूर्व जन्म की स्मृति (उत्त १६)। °स्सर देखो °सर (कप्प, विसे १६७१, उप २२० टी)।

जाइ स्त्री [जाति] १ न्याय-शास्त्र-प्रसिद्ध दूषणाभास—असत्य दूषण (धर्मसं २६०, स ७११)। २ माता का वंश (पिंड ४३८)।

जाइ देखो जाया (पड्)।

जाइ स्त्री [दे] १ मदिरा, सुरा, दारू (दे ३, ४५)। २ मदिरा-विशेष (विपा १, २)।

जाइ वि [याजिन्] यज्ञ-कर्ता (दसनि १, १४६))।

जाइ वि [यायिन्] जानेवाला (ठा ४, ३)।

जाइअ वि [याचित] प्रार्थित, माँगा हुआ (विसे २५०४, गा १६५)।

जाइअ देखो जाय = जात (वज्जा १४४)।

जाइच्छि° } जाइच्छिय } वि [याद्दच्छिक] १ इच्छा-नुसार, यथेच्छ (धर्मसं १२)। २ इच्छानुसारी (धर्मसं ६०२)।

जाइच्छिय वि [याद्दच्छिक] स्वेच्छा-निर्मित (विसे २५)।

जाइज्जत देखो जाय = यातय्।

जाइज्जंत } जाइज्जमाण } देखो जाय = याच्।

जाइणी स्त्री [याकिनी] एक जैन साध्वी, जिसको सुप्रसिद्ध जैन ग्रन्थकार श्री हरिभद्र-सूरि अपनी धर्म-माता समझते थे (उप १०३९)।

जाइयव्वय न [यातव्य] गमन, गति (सुख २, १७)।

जाईअ वि [जातीय] जाति-सम्बन्धी (श्रावक ४०)।

जाउ न [जायु] क्षीरपेया, यवागू, माड की काजी, लपसी, खाद्य-विशेष (पिंड ६२५)।

जाउ अ [जातु] कदाचित्, कभी (उवकु ११)।

जाउ अ [जातु] किसी तरह (उप ५४७)। °कण्ण पु [कर्ण] पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र का गोत्र (इक)।

जाउ स्त्री [यातृ] १ देवर-पत्नी, देवरानी। २ वि. जानेवाला (सक्षि ४)।

जाउया स्त्री [यातृका] देवर-पत्नी, पति के छोटे भाई की स्त्री, देवरानी (णाया १,१६)।

जाउर पुं [दे] कपित्थवृक्ष, कैथ का फल (दे ३, ४५)।

जाउल पुं [जानुल] वल्ली-विशेष (पण्ण १—पत्र ३२)।

जाउहाण पु [यातुधान] राक्षस (उप १०३१ टी, पाअ)।

जाग पुं [याग] १ यज्ञ, अध्वर, होम, हवन (पउम १४, ४७, स १७१)। २ देव-पूजा (णाया १, १)।

जागर अक [जागृ] जागना, निद्रा-त्याग करना। जागरइ (पड्)। वकृ जागरमाण (विसे २७१६)। हेकृ जागरित्तए, जाग-रेत्तए (कप्प, कस)।

जागर वि [जागर] १ जागनेवाला, जागता (आचा, कप्प श्रा २५)। २ पुं. जागरण, निद्रा-त्याग (मुद्रा १८७, भग १२, २, सुर १३, ६७)।

जागरइत्तु वि [जागरितृ] जागनेवाला (श्रा २३)।

जागरिअ वि [जागृत] जागा हुआ, निद्रा-रहित, प्रबुद्ध (णाया १, १६, श्रा २५)।

जागरिअ वि [जागरिक] निद्रा-रहित (भग १२, २)।

जागरिया स्त्री [जागरिका, जागर्या] जागरण, निद्रा-त्याग (णाया १, १, औप)।

जागरुअ वि [जागरूक] जागता, जागा हुआ, जागने के स्वभाववाला (धर्मवि १३९)।

जाजावर वि [यायावर] गमनशील, विनश्वर (सम्मत्त १७४)।

जाडी स्त्री [दे] गुल्म, लता-प्रतान (दे ३, ४५)।

जाण सक [ज्ञा] जानना, ज्ञान प्राप्त करना, समझना। जाणइ (हे ४, ७)। वकृ जाणंत, जाणमाण (कप्प, विपा १, १)। संकृ. जाणिऊण, जाणित्ता, जाणित्तु (पि ५८६, महा, भग)। हेकृ. जाणिउं (पि ५७६)। कृ. जाणियव्व (भग, श्रत १२)।

जाण पुंन [यान] १ रथादि वाहन, सवारी (औप; पण्ह २, ५, ठा ४, ३)। २ यान-पात्र, नौका, जहाज, 'नाणं संसारसमुद्दतारणे वधुर जाणं' (पुप्फ ३७)। ३ गमन, गति (राज)। °पत्त, °वत्त न [°पात्र] जहाज, नौका (नमि ५, सुर १३,३१)। °साला स्त्री [°शाला] १ तबेला, अस्तबल। २ वाहन बनाने का कारखाना (औप, आचा २,२,२)।

जाण न [ज्ञान] ज्ञान, बोध, समझ (भग, कुमा)।

जाण° वि [जानत्] जानता हुआ, 'जाणं काएण णाउट्टी' (सूअ १, ५, १), 'आसु-पण्णेण जाणया' (आचा)।

जाणई स्त्री [जानकी] सीता, राम-पत्नी (पउम १०६, १८, से ६, ६)।

जाणग वि [ज्ञायक] जानकार ज्ञानी, जाननेवाला (सूअ १, १, १, महा, सुर १०, ६५)।

जाणगी देखो जाणई (पउम ११७, १८)।

जाणण न [दे] बरात, गुजराती मे 'जान', 'जो तदवत्थाए समुचिओत्ति जाणणणाइओ' (उप ५९७ टी)।

जाणण न [ज्ञान] जानना, जानकारी, समझ, बोध (हे ४, ७, उप पृ २३, सुपा ४१६, सुर १०, ७१; रयण १४, महा)।

जाणणया } जाणणा } स्त्री. ऊपर देखो (उप ५१६, विसे २१४८, भग, आचू ३)।

जाणय देखो जाणग (भग, महा)।

शास्त्र (विसे १७७५)। °सूल न [°शूल] योनि का एक रोग (णाया १, १६)।

जोणिय वि [योनिक, यवनिक] अनार्य देश-विशेष से उत्पन्न। स्त्री. °या (इक, औप, णाया १, १—पत्र ३७)।

जोण्णलिआ स्त्री [दे] अन्न-विशेष, जुआरि, जोन्हरी (दे ३, ५०)।

जोण्ह वि [ज्यौत्स्न] १ शुक्ल, श्वेत, 'कालो वा जोण्हो वा केणणुभावेण चदस्स' (सुज्ज १६)। २ पुं. शुक्ल पक्ष (जो ४)।

जोण्हा स्त्री [ज्योत्स्ना] चन्द्र-प्रकाश (पड्, काप्र १६७)।

जोण्हाल वि [ज्योत्स्नावत्] ज्योत्स्ना वाला, चन्द्रिकायुक्त (हे २, १५६)।

जोत्त देखो जुत्त = युक्त (कुप्र ३८१)।

जोत्त } न [योक्त्र, °क] जोत, रस्सी या
जोत्तय } चमडे का तस्मा, जिससे बैल या घोडा, गाडी या हल मे जोता जाता है (पण्ह २, ५, गा ६६२)।

जोव देखो जोअ = दृश्। जोवइ (महा, भवि)।

जोव पु [दे] १ विन्दु। २ वि स्तोक, थोडा (दे ३, ५२)।

जोवण न [दे] १ यन्त्र कल, 'आउज्जोवण' (ओघ ६० भा)। २ धान्य का मर्दन, अन्न-मलन (ओघ ६० भा)।

जोवारि स्त्री [दे] अन्न-विशेष, जुआरि (दे ३, ५०)।

जोविअ वि [दृष्ट] विलोकित (स १४७)।

जोव्वण न [यौवन] १ तारुण्य, जवानी (प्राप्र, कप्प)। २ मध्य भाग (से २, १)।

जोव्वणणीर } न [दे] वय -परिणाम, वृद्धत्व,
जोव्वणवेअ } बूढापा, 'जोव्वणणीरं तरुणत्तणे वि विजिएंदियाण पुरिसाण' (दे ३, ५१)।

जोव्वणिया स्त्री [यौवनिका] यौवन, जवानी (राय)।

जोव्वणोवय न [दे] बूढापा, वृद्धत्व, जरा (दे ३, ५१)।

जोस देखो जुस = जुष्। वकृ. जोसत (राज)। प्रयो, सकृ जोसियाण (वव ७)।

जोस पु [जोष] अवमान, अन्त (सूअ १, २, ३, २ टि)।

जोसिअ वि [जुष्ट] सेवित (सूअ १, २, ३)।

जोसिआ स्त्री [योषित्] स्त्री, महिला, नारी (पड्; धर्म २)।

जोसिणी देखो जोण्हा (अभि ३१)।

जोह अक [युध्] लडना। जोहइ (भवि)।

जोह पुं [योध] सुभट, योद्धा (औप, कुमा)। °ट्ठाण न [°स्थान] सुभटों का युद्ध कालीन शरीर-विन्यास, अग-रचना-विशेष (ठा १; निचू २०)।

जोहणा देखो जोण्हा (मै ७१)।

जोहा स्त्री [योधा] भुज-परिसर्प की एक जाति (सूअ २, ३, २५)।

जोहार सक [दे] जुहारना, जोहार करना, प्रणाम करना। कर्म जोहारिज्जइ (श्राक २५, १३)।

जोहार पु [दे] जोहार, प्रणाम (पव ३८)।

जोहि वि [योधिन्] लडनेवाला, सुभट (पव ७१)।

जोहि वि [योधिन] लडनेवाला, लडवैया (अप)।

जोहिया स्त्री [योधिका] जतु-विशेष, हाथ से चलनेवाली एक प्रकार की सर्प-जाति (जीव २)।

ज्जिअ } (शौ) अ [दे] अवधारण—निश्चय
ज्जेअ } का सूचक अव्यय (प्राकृ ६८)।

°ज्जेव } (शौ)। देखो एव = एव (पि २३,
°ज्जेव्व } ८५)।

ज्झड देखो झड। ज्झडइ (हे ४, १३० टि)।

ज्झ[?]राविअ वि [दे] निवासित, निवास-प्राप्त (पड्)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि जआराइसद्दसकलणो सोलहमो तरंगो समत्तो ॥

झ

झ पु [झ] १ तालु-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्रामा, प्राप)। २ ध्यान (विसे ३१६८)।

झंकार पुं [झङ्कार] नूपुर वगैरह की आवाज (सुर ३, १८, पडि, सण)।

झकारिअ न [दे] अवचयन, फूल वगैरह का आदान या चुनना (दे ३, ५६)।

झंख सक [दे] स्वीकार करना। झंखइ (अप) (सिरि ८६४)।

झख अक [सं + तप्] सतप्त होना, सताप करना। झखइ (हे ४, १४०)।

झंख अक [वि + लप्] विलाप करना, बकवाद करना। झंखइ (हे ४, १४८)। वकृ झंखत (कुमा), 'धणनासाओ गहिलीभूओ झखइ नरेस। एस धुवं। सोमोवि भणइ झखसि तुमेव वहुलोहगहगहिओ' (श्रा १४)।

झंख सक [उपा + लभ्] उपालंभ देना, उलाहना देना। झंखइ (हे ४, १५६)।

झख अक [निर् + श्वस्] निःश्वास लेना। झंखइ (हे ४, २०१)।

जाल न [जाल] १ समूह, सघात (सुर ४, १३५, स ४४३)। २ माला का समूह, दाम-निकर (राय)। ३ कारीगरीवाले छिद्रों से युक्त गृहांश, गवाक्ष-विशेष, झरोखा (औप, णाया १, १)। ४ मछली वगैरह पकडने का जाल, पाश-विशेष (पराह १,१)। ४ मछली वगैरह पकडने की जाल, पाश-विशेष (पराह १,१,४)। ५ पैर का आभूषण-विशेष, कडा (औप)। °कडग पुं [°कटक] १ सच्छिद्र गवाक्षो का समूह। २ सच्छिद्र गवाक्ष-समूह से अलंकृत प्रदेश (जीव ३)। °घरग न [°गृहक] सच्छिद्र गवाक्षवाला मकान (राय, णाया १, २)। °पजर न [°पञ्जर] गवाक्ष (जीव ३)। °हरग देखो °घरग (औप)।

जाल पु [ज्वाल] ज्वाला, अग्नि-शिखा, आग की लपट (सुर ३, १८८, जी ६)।

जालतर न [जालान्तर] सच्छिद्र गवाक्ष का मध्यभाग (सम १३७)।

जालंधर पुं [जालन्धर] १ पजाब का एक स्वनाम-ख्यात शहर (भवि)। २ न गोत्र-विशेष (कप्प)।

जालंधरायण न [जालन्धरायण] गोत्र-विशेष (आचा २, १५)।

जालग देखो जाल = जाल (पराह १, १, ५, औप, णाया १, १)।

जालग पुं [जालक] द्वीन्द्रिय जीव की एक जाति, मकडी (उत्त ३६, १३०)।

जालघडिआ स्त्री [दे] चन्द्रशाला, अट्टालिका, अटारी (दे ३, ४६)।

जालय देखो जाल = जाल (गउड)।

जालवगी स्त्री [दे] संवाद, सम्हाल, खबर, गुजराती मे 'जाळवरा' (सिरि ३८५)।

जाला स्त्री [ज्वाला] १ अग्नि की शिखा (आचा, सुर २, २४६)। २ नवम चक्रवर्त्ती की माता (सम १५२)। ३ भगवान् चन्द्रप्रभ की शासनदेवी (सति ६)।

जाला अ [यदा] जिस समय, जिस काल में, 'ताला जाअति गुणा, जाला ते सहिअएहिं घेप्पति' (हे ३, ६५)।

जालाउ पु [जालायुष्] द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष, मकडी (राज)।

जालाव सक [ज्वालय्] जलाना, दाह देना। वकृ जालावत (महानि ७)।

जालाविअ वि [ज्वालित] जलाया हुआ (सुपा १८६)।

जालि पुं [जालि] १ राजा श्रेणिक का एक पुत्र, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (अनु १)। २ श्रीकृष्ण का एक पुत्र, जिसने दीक्षा ले कर शत्रुञ्जय पर्वत पर मुक्ति पाई थी (अत १४)।

जालिय पु [जालिक] जाल-जीवि, वागुरिक, बहेलिया, चिडीमार (गउड)।

जालिय वि [ज्वालित] जलाया हुआ, सुल-गाया हुआ (उव, उप ५९७ टी)।

जालिया स्त्री [जालिका] १ कञ्चुक (पराह १, ३—पत्र ४४, गउड)। २ वृन्त (राज)।

जालुग्गाल पु [जालोद्गाल] मछली पकडने का साधन-विशेष (अभि १८३)।

जाव देखो जावइअ (आचा २, २, ३, ३)।

जाव सक [यापय्] १ गमन करना, गुजा-रना। २ वरतना। ३ शरीर का प्रतिपालन करना। जावइ (आचा)। जावेइ (हे ४, ४०) जावए (सूअ १, १, ३)।

जाव अ [यावत्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ परिमाण। २ मर्यादा। ३ अव-धारण, निश्चय, 'जावदय परिमाणे मज्जाया-एवधारणे चेइ' (विसे ३५१६, णाया १, ७)। °ज्जीव स्त्री न [°ज्जीव] जीवन पर्यन्त (आचा)। स्त्री °वा (विसे ३५१८, औप)। °ज्जीविय वि [°ज्जीविक] यावज्जीव-सबन्धी (स ४४१)। देखो जाव।

जाव पुं [जाप] मन ही मन वार वार देवता का स्मरण, मन्त्र का उच्चारण (सुर ६, १७४, सुपा १७१)।

जावइ पु [द] वृक्ष-विशेष (पराण १—पत्र ३४)।

जावइअ वि [यावत्] जितना, 'जावइया वयणपहा' (सम्म १४४, भत्त ६४)।

जावई स्त्री [जातिपत्री] १ कन्द-विशेष (उत्त ३६, ६८, सुख ३६, ६८)। २ गुच्छ वनस्पति की एक जाति (पराण १—पत्र ३४)।

जावईय पुं [जातिपत्रीक] कन्द-विशेष (उत्त ३६, ६८)।

जावं देखो जाव (पउम ६८, ५०)। °ताव अ [°तावत्] १ गणित-विशेष। २ गुणाकार (ठा १०)।

जावत देखो जावइअ (भग १, १)।

जावग देखो जावय = यापक (दसनि १)।

जावण न [यापन] १ बिताना, गुजारना। २ दूर करना, हटाना (उप ३२० टी)।

जावणा स्त्री [यापना] ऊपर देखो (उप ७२८ टी)।

जावणिज्ज वि [यापनीय] १ जो बीताया जाय, गुजारने योग्य। २ शक्ति-युक्त, 'जाव-णिज्जाए णिसीहिआए' (पडि)। °तत न [°तन्त्र] ग्रन्थ-विशेष (धर्म २)।

जावय वि [यापक] १ बीतानेवाला। २ पु. तर्क-शास्त्र-प्रसिद्ध काल-क्षेपक हेतु (ठा, ४, ३)।

जावय वि [जापक] जीतनेवाला, 'जिणाण जावयाण' (पडि)।

जावय पु [यावक] अलक्तक, अलता, लाख का रग (गउड, सुपा ६६)।

जावसिय वि [यावसिक] १ धान्य से गुजारा करनेवाला (बृह १)। २ घास वाहक (ओघ २३८)।

जाविय वि [यापित] बीताया हुआ (णाया १, १७)।

जास पु [जाप] पिशाच-विशेष (राज)।

जासुमण, जासुमिण, जासुयण पु [जपासुमनस्] १ जपा का वृक्ष, पुष्पप्रधान (पराण १, णाया १, १)। २ न जपा का फूल (णाया १, १ कप्प)।

जाहग पु [जाहक] जन्तु-विशेष, जिसके शरीर मे काटे होते हैं, साही या साहिल (पराह १, १, विसे १४५४)।

जाहत्थ न [याथार्थ्य] सत्यपन, वास्तविकता (विसे १२७६)।

जाहासख देखो जहा-सख, 'जाहासखमिमीणं नियकज्ज साहुवाओ य' (उप १७६)।

जाहे अ [यदा] जिस समय, जब, (हे ३, ६५, महा, गा ६८)।

जि (अप) देखो एव=एव (हे ४, ४२०, कुमा, वज्जा १४)।

झणझणिय देखो झणज्झणिअ (सुपा ५०)।

झणि देखो झुणि (रंभा)।

झत्ति देखो झडत्ति (हे १, ४२, षड्, महा, सुर २, ६)।

झत्थ वि [दे] गत, गया हुआ। २ नष्ट (दे ३, ६१)।

झपिअ वि [दे] पर्यस्त, उत्क्षिप्त (षड्)।

झप्प देखो झंप। झप्पइ (षड्)।

झमाल न [दे] इन्द्रजाल, माया-जाल (दे ३, ५३)।

झय पुंस्त्री [ध्वज] ध्वज, पताका (हे २, २७, औप)। स्त्री °या (औप)।

झर अक [क्षर्] झरना, टपकना, चूना, गिरना। झरइ (हे ४, १७३)। वकृ झरंत (कुमा, सुर ३, १०)।

झर सक [स्मृ] याद करना। झरइ (हे ४, ७४, षड्)। कृ झरेयव्व (वृह ५)।

झरक } पुं [दे] तृण का बनाया हुआ
झरंत } पुरुष चञ्चा (दे ३, ५५)।

झरग वि [स्मारक] चिन्तन करनेवाला, ध्यान करनेवाला, 'भणगं करगं झरगं पभावग णाणदसणगुणाणं' (णदि)।

झरझर पुं [झरझर] निर्झर या झरना आदि का 'झर-झर' आवाज (सुर ३, १०)।

झरण न [क्षरण] झरना, टपकना, पतन (वव १)।

झरणा स्त्री [क्षरणा] ऊपर देखो (आवम)।

झरग पु [दे] सुवर्णकार, सोनार (दे ३,५४)।

झरिय वि [क्षरित] टपका हुआ, गिरा हुआ, पतित (उव, ओघ ७६०)।

झरुअ पु [दे] मशक, मच्छड (दे ३, ५४)।

झलक्किअ वि [दग्ध] जला हुआ, भस्मीभूत, 'जयगुरुगुरुविरहानलजालोलिझलक्किय हियय' (सुपा ६५७, हे ४, ३९५)।

झलझल अक [जाज्वल्] झलकना, चमकना, दीपना। वकृ. झलझलत (भवि)।

झलझलिआ स्त्री [दे] झोली, कोथली, थैली (दे ३, ५६)।

झलहल देखो झलझल। झलहलइ (सुपा १८६)। वकृ. झलहलत (श्रा २८)।

झलहलिय वि [दे] क्षुब्ध, विचलित, 'घर-हरियघर झलहलियसायरं चलियसयलकुलमेलं' (कुलक ३३)।

झला स्त्री [दे] मृगतृष्णा, धूप मे जल-ज्ञान, व्यर्थ तृष्णा (दे ३, ५३, पाअ)।

झलुकिअ } वि [दे] दग्ध, जला हुआ (दे
झलुसिअ } ३, ५६)।

झल्लरी स्त्री [झल्लरी] वलयाकार वाद्य-विशेष, हुडुग बाजा, झाल, झालर (ठा १०, औप, सुर ३, ६६, सुपा ५०, कप्प)।

झल्लरी स्त्री [दे] अजा, बकरी (चड)।

झल्लोज्झल्लिअ वि [दे] सपूर्ण, परिपूर्ण, भरपूर (भवि)।

झवणा स्त्री [क्षपणा] १ नाश, विनाश (विसे ९६१)। २ अध्ययन, पठन (विसे ६५८)।

झस पु [झष] १ एक देवविमान (देवेन्द्र १४०)। २ एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ११)।

झस पु [झष] १ मत्स्य, मछली (पण्ह १, १)। २ °चिंधय पु [चिह्नक] कामदेव, स्मर (कुमा)।

झस पु [दे] १ अयश, अपकीर्ति। २ तट, किनारा। ३ वि. तटस्थ, मध्यस्थ। ४ दीर्घ-गभीर, लम्बा और गंभीर, बहुत गहरा (दे ३, ६०)। ५ टक से छिन्न (दे ३, ६०, पाअ)।

झसय पु [झषक] छोटा मत्स्य (दे ३,५७)।

झसर पुन [दे] शस्त्र-विशेष, आयुध-विशेष, 'सरझसरसत्तिसव्वल—' (पउम ८, ६५)।

झसिअ वि [दे] १ पर्यस्त, उत्क्षिप्त। २ आक्रुष्ट, जिसपर आक्रोश किया गया हो वह (दे ३, ६२)।

झसिंध पु [झषचिह्न] काम, स्मर (कुमा)।

झसुर न [दे] १ ताम्बूल, पान (दे ३, ६१, गउड)। २ अर्थ (दे ३, ६१)।

झा सक [ध्यै] चिन्ता करना, ध्यान करना। झाइ, झाअइ (हे ४, ६)। वकृ झायत, झायमाण (प्रासू, महा)। सकृ झाऊण (आरा ११२)। हेकृ झाइत्तए (कस)। कृ झायव्व, झेय, झाइयव्व, झाएयव्व (कुमा, आरा ७८, आव ४, ति १०, सुर १४, ८४)।

झाइ वि [ध्यायिन्] चिन्तन करनेवाला, ध्यान करनेवाला (आचा)।

झाइअ वि [ध्यात] चिन्तित (सिरि १२५५)।

झाउ वि [ध्यातृ] ध्यान करनेवाला, चिन्तक (आव ४)।

झाड न [दे. झाट] १ लता-गहन, निकुञ्ज, झाडी (दे ३, ५७, ७, ८४, पाअ, सुर ७, २४३)। २ वृक्ष, पेड, 'आअल्ली झाडमेअम्मि' (दे १, ६१), 'दिट्ठो य तए पोमाडज्झाडयस्स इमम्मि पएसे विणिग्गओ पायओ' (स १४४)।

झाडण न [झाटन] १ झोष, क्षय, क्षीणता। २ प्रस्फोटन, झाडना (राज)।

झाडल न [दे] कर्पास-फल, ढोंडो, कपास (दे ३, ५७)।

झाडावण स्त्रीन [झाटन] झडवाना, सफा कराना, मार्जन कराना। स्त्री. °णी (सुपा ३७३)।

झाण वि [ध्यान] ध्यानकर्ता (श्रु १२८)।

झाण पुन [ध्यान] १ चिन्ता, विचार, उत्कण्ठा-पूर्वक स्मरण, सोच (आव ४, ठा ४, १, हे २, २६)। २ एक ही वस्तु में मन को स्थिरता, लौ लगाना (ठा ४, १)। ३ मन आदि की चेष्टा का निरोध। ४ दृढ़ प्रयत्न से मन वगैरह का व्यापार (विसे ३०७१, ठा ४, १)।

झाणंतरिया स्त्री [ध्यानान्तरिका] १ दो ध्यानो का मध्य भाग, वह समय जिसमे प्रथम ध्यान की समाप्ति हुई हो और दूसरे का आरम्भ जबतक न किया गया हो और अन्य अनेक ध्यान करने के बाकी हो (ठा ६, भग, ५, ४)। २ एक ध्यान समाप्त होने पर शेष ध्यानो मे किसी एक को प्रथम प्रारभ करने का विमर्श (वृह १)।

झाणि वि [ध्यानिन्] ध्यान करनेवाला (आरा ८६)।

झाम सक [दह्] जलाना, दाह देना, दग्ध करना। झामेइ (सूअ २, २, ४४)। वकृ. झामत (सूअ २, २, ४४)।

झाम वि [दे] दग्ध, जला हुआ (आचा २, १, १)। °थंडिल न [°स्थण्डिल] दग्ध भूमि (आचा २, १, १)।

५)। °पहु पुं [°प्रभु] जिन-देव, अर्हन् देव (उप ३२० टी)। °पाडिहेर न [°प्रातिहार्य] जिन-देव की अर्हत्ता-सूचक देव-कृत अशोक वृक्ष आदि आठ बाह्य विभूतियाँ, वे ये हैं—१ अशोक वृक्ष, २ सुर-कृत पुष्प-वृष्टि, ३ दिव्य-ध्वनि, ४ चामर, ५ सिंहासन, ६ भामण्डल, ७ दुन्दुभि-नाद, ८ छत्र (दस १)। °पालिय पु [°पालित] चम्पा नगरी का निवासी एक श्रेष्ठि-पुत्र (णाया १, ६)। °बिंब न [°बिम्ब] जिन-मूर्ति, जिन देव की प्रतिमा (पडि, पचा ७)। °भड पु [°भट] स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन आचार्य, जो सुप्रसिद्ध जैन ग्रन्थकार श्रीहरिभद्र सूरि के गुरु थे (सार्ध ५८)। °भद्द पु [°भद्र] स्वनाम-प्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार (आव ४)। °भवण न [°भवन] अर्हन् मन्दिर (पव ४)। °मय न [°मत] जैन दर्शन (पंचा ४)। °माया स्त्री [°मातृ] जिन-देव की जननी (सम १५१)। °मुद्दा स्त्री [°मुद्रा] जिनदेव जिस तरह से कायोत्सर्ग में रहते हैं उस तरह शरीर का विन्यास, आसन-विशेष (पचा ३)। °यंद देखो °चंद (सुर १, १०, सुपा ७६)। °रक्खिय पु [°रक्षित] स्वनाम-ख्यात एक सार्थवाह-पुत्र (णाया १, ६)। °वइ पु [°पति] जिन-देव, अर्हन्-देव (सुपा ८६)। °वई स्त्री [°वाच्] जिन-देव की वाणी (बृह १)। °वयण न [°वचन] जिन-देव की वाणी (ठा ६)। °वयण न [°वदन] जिनदेव का मुख (औप)। °वर पु [°वर] अर्हन् देव (पउम ११, ४, अजि १)। °वरिंद पु [°वरेन्द्र] अर्हन् देव (उप ७७६)। °वल्लह पु [°वल्लभ] स्वनाम ख्यात एक जैन आचार्य और प्रसिद्ध स्तोत्र-कार (लहुअ १७)। °वसह पु [°वृषभ] अर्हन् देव (राज)। °सकहा स्त्री [°सक्थि] जिन देव की अस्थि (भग १०, ५)। °सासण न [°शासन] जैन दर्शन (उत्त १८, सूअ १, ३, ४)। °हंस पुं [°हंस] एक जैन आचार्य (द ४७)। °हर देखो °घर (पउम ११, ३, सुपा ३६१, महा)। °हरिस पुं [°हर्ष] एक जैन मुनि (रयण ६४)। °ायण न [°ायतन] जिन-देव का मन्दिर (पव ४)।

जिणद देखो जिणिंद, 'सव्वे जिणंदा सुरविंद-वंदा' (पडि, जी ४८)।

जिणकप्पि पु [जिनकल्पिन्] जैन मुनि का एक भेद (पचा १८, ६)।

जिणण न [जयन] जय, जीत (सण)।

जिणपह पु [जिनप्रभ] एक जैन आचार्य (ती ५)।

जिणिद पु [जिनेन्द्र] जिन भगवान्, अर्हन् देव (प्रासू ५२)। °गिह न [°गृह] जिन-मन्दिर (सुर ३, ७२)। °चंद पुं [°चन्द्र] जिन-देव (पउम ६५, ३६)।

जिणिय वि [जित] पराभूत, वशीकृत (सुपा ५२२, रयण २७)।

जिणिसर देखो जिणेसर (सम्मत्त ७६, ७७)।

जिणिस्सर देखो जिणेसर (पचा १६)।

जिणुत्तम पु [जिनोत्तम] जिन-देव (अजि ४)।

जिणेंद देखो जिणिद (चेइय ६०)।

जिणेस पुं [जिनेश] जिन भगवान्, अर्हन् देव (सुपा २६०)।

जिणेसर पु [जिनेश्वर] १ जिन देव, अर्हन् देव (पउम २, २३)। २ विक्रम की ग्यारहवीं शताब्दी के स्वनाम-ख्यात एक प्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार (सुर १६, २३६, सार्ध ७६, गु ११)।

जिण्ण वि [जीर्ण] १ पुराना, जर्जर (हे १, १०२, चारु ४६ प्रासू ७६)। २ पचा हुआ, 'जिण्णे भोअणमत्ते' (हे १, १०२)। ३ वृद्ध, बूढ़ा (बृह १)। °सेट्ठि पुं [°श्रेष्ठिन्] १ पुराना सेठ। २ श्रेष्ठि पद से च्युत (आव ४)।

जिण्ण (अप) देखो जिअ = जित (पिंग)।

जिण्णासा स्त्री [जिज्ञासा] जानने की इच्छा (पचा ३)।

जिण्णिअ } (अप) देखो जिणिय (पिंग)।
जिण्णीअ }

जिण्णोब्भवा स्त्री [दे] दूर्वा, दूब (घास) (दे ३, ४६)।

जिण्हु वि [जिष्णु] १ जित्वर, जीतनेवाला, विजयी (प्रामा)। २ पु. अर्जुन, मध्यम पाण्डव (गउड)। ३ विष्णु, श्रीकृष्ण। ४ सूर्य, रवि। ५ इन्द्र, देव-नायक (हे २, ७५)।

जित्त देखो जिअ = जित (महा, सुपा ३६५, ६४३)।

जित्तिअ } वि [यावत्] जितना (हे २, जित्तिल } १५६, षड्)।

जित्तुल (अप) ऊपर देखो (कुमा)।

जिध (अप) अ [यथा] जैसे, जिस तरह से (हे ४, ४०१)।

जिन्न देखो जिण्ण (सुपा ६)।

जिन्नासिय वि [जिज्ञासित] जानने के लिए इष्ट, जानने के लिए चाहा हुआ (भास ७१)।

जिन्नुद्धार पुं [जीर्णोद्धार] पुराने और टूटे-फूटे मन्दिर आदि को सुधारना (सुपा ३०६)।

जिब्भ पु [जिह्व] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ६, २६)।

जिब्भा स्त्री [जिह्वा] जीभ, रसना (पण्ह २, ५, उप ६८६ टी)।

जिब्भिंदिय न [जिह्वेन्द्रिय] रसनेन्द्रिय, जीभ (ठा ४, २)।

जिब्भिया स्त्री [जिह्विका] १ जीभ। २ जीभ के आकारवाली चीज (ज ४)।

जिम सक [जिम्, भुज्] जीमना, भोजन करना, खाना। जिमइ (हे ४, ११०, षड्)।

जिम (अप) देखो जिध (षड्, भवि)।

जिमण न [जेमन, भोजन] जीमन, भोजन (श्रा १६, चैत्य ५६)।

जिमण न [जेमन] जिमाना, भोज (धर्मवि ७०)।

जिमिअ वि [जिमित, भुक्त] १ जिसने भोजन किया हुआ हो वह (पउम २०, १२७, पुप्फ ३५, महा)। २ जो खाया गया हो वह, भक्षित (दे ३, ४३)।

जिम्म देखो जिम = जिम्। जिम्मइ (हे ४, २३०)।

जिम्ह पुं [जिह्म] १ मेघ-विशेष, जिसके बरसने से प्राय एक वर्ष तक जमीन में चिकनापन रहती है (ठा ४, ४—पत्र २७०)। २ वि. कुटिल, कपटी, मायावी (सम ७१)। ३ मन्द, अलस (ज २)। ४ न. माया, कपट (वव ३)।

जिम्ह न [जैम्ह] कुटिलता, वक्रता, माया, कपट (सम ७१)।

भूसमाण (आचा)। संकृ भूसित्ता, भूसित्ताणं, भूसेत्ता (औप, पि ५८३, अत २७)।

भूसणा स्त्री [जोषणा] सेवा, आराधना (उवा, अंत, औप, णाया १, १)।

भूसरिअ वि [दे] १ अत्यर्थं, अत्यन्त। २ स्वच्छ, निर्मल (दे ३, ६२)।

भूसिय वि [जुष्ट] १ सेवित, आराधित (णाया १, १, औप)। २ क्षपित, क्षिप्त, परित्यक्त (उवा, ठा २, २)।

झेंडुअ पुं [दे] कन्दुक, गेंद (दे ३, ५९)।

झेय देखो झा।

झेर पुं [दे] पुराना घण्टा (दे ३, ५९)।

झोंटिग पु [दे] देव-विशेष (कुप्र ४७२)।

झोट्टी स्त्री [दे] अर्ध-महिषी, भैंस की एक जाति (दे ३, ५९)।

झोंडलिआ स्त्री [दे] रास के समान एक प्रकार की क्रीडा (दे ३, ६०)।

झोड सक [शाटय्] पेड आदि से पत्र वगैरह को गिराना। झोडइ (पि ३२६)।

झोड न [दे] १ पेड आदि से पत्र आदि का गिराना। २ जीर्ण वृक्ष (णाया १, ११—पत्र १७१)।

झोडण न [शाटन] पातन, गिराना (पण्ह १, १—पत्र २३)।

झोडप्प पु [दे] १ चना, अन्न-विशेष। २ सूखे चने का शाक (दे ३, ५६)।

झोडिअ पु [दे] व्याध, शिकारी, बहेलिया (दे ३, ६०)।

झोलिआ } स्त्री [दे झोलिका] झोली, झोल्लिआ } थैली, कोथली (दे ३, ५६, सूत्र २, ४)।

झोस देखो झूस। झोसेइ (आचा)। वकृ झोसमाण, झोसेमाण (सुपा २९, आचा)। सकृ 'सलेहणाए मम्मं झोसित्ता नियदेहं तु' (सुर ६, २४६)।

झोस सक [गवेषय्] खोजना, अन्वेषण करना। झोसेहि (बृह ३)।

झोस सक [क्षेपय्] डालना, प्रक्षेप करना। कृ झोसेयव्व (वव १)।

झोस पु [क्षेप] राशि-विशेष, जिसके डालने से समान भागाकार हो वह राशि (वव १)।

झोस पुं [दे] झाडना, दूर करना (ठा ५, २)।

झोसग न [दे] गवेषण, मार्गण, 'आमोगण ति वा मग्गण ति वा झोसण ति वा एगट्ठं' (वव २)।

झोसणा देखो झूसणा (सम ११९, भग)।

झोसणा स्त्री [जोषणा] अन्त समय की आराधना, सलेखना (श्रावक ३७८)।

झोसिअ देखो झूसिय (आचा, हे ४, २५८)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि झआराइसद्दसंकलणो
सत्तरहमो तरंगो समत्तो ॥

———

ट

ट पु [ट] मूर्द्धस्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्रामा, प्राप)।

टउया स्त्री [दे] आह्वान-शब्द, पुकारने की आवाज, गुजराती मे 'टौको' (कुप्र ३०६)।

टंक पु [टङ्क] चिन्न-विशेष, सिक्का पर का चिन्न (पचा ३, ३५)।

टंक पु [टङ्क] १ तलवार आदि का अग्र भाग (पण्ह १, १—पत्र १८)। २ एक प्रकार का सिक्का (श्रा १२, सुपा ५१३)। ३ एक दिशा में छिन्न पर्वत (णाया १, १—पत्र ६३)। ४ पत्थर काटने का अस्त्र, टाँकी, छेनी (से ५, ३५, उप पृ ३१५)। ५ परिमाण-विशेष, चार मासे की तौल (पिंग)। ६ पक्षि-विशेष (जीव १)।

टंक पुं [दे] १ तलवार, खड्ग। २ खात, खुदा हुआ जलाशय। ३ जङ्घा, जाँघ। ४ भित्ति, भीत। ५ तट, किनारा (दे ४, ४)। ६ खनित्र, कुदाल (दे ४, ४, से ५, ३५)। ७ वि. छिन्न, छेदा हुआ, काटा हुआ (दे ४, ४)।

टंकण पु [टङ्कन] म्लेच्छ की एक जाति, (विसे १४४४)।

टंकवत्थुल पु [दे] कन्द-विशेष, एक जाति की तरकारी (श्रा २०)।

टंका स्त्री [दे] १ जंघा, जाँघ (पाअ)। २ स्वनाम-ख्यात एक तीर्थ (ती ४३)।

टंकार पु [टङ्कार] धनुष का शब्द (भवि)।

टंकार पु [दे] ओजस्, तेज (गउड)।

टंकिअ वि [दे] प्रसृत, फैला हुआ (दे ४, १)।

टंकिअ वि [टङ्कित] टाँकी से काटा हुआ (दे ४, ५०)।

टंकिया स्त्री [टङ्किका] पत्थर काटने का अस्त्र, टाँकी (सम्मत्त २२७)।

टंवरय वि [दे] भारवाला, गुरू, भारी (दे ४, २)।

टक्क पुं [टक्क] देश-विशेष (हे १, १९५)।

टक्क वि [टक्क] १ टक्क देशीय। २ पु भाट की एक जाति (कुप्र १२)।

टक्कर पु [दे] ठोकर, अंग से अंग का आघात (सुर १२, ६७, वव १)।

टक्करा स्त्री [दे] टकोर, मुड-सिर मे उगली का आघात (वव १ टी)।

टक्कारा स्त्री [दे] अरणि-वृक्ष का फूल (दे ४, २)।

टगर पुं [तगर] १ वृक्ष-विशेष, तगर का वृक्ष। २ सुगन्धित काष्ठ-विशेष (हे १, २०५, कुमा)।

जीविओसासिय वि [जीवितोच्छ्वासिक] जीवन को बढानेवाला (भग ६, ३३)।

जीविगा देखो जीविआ (स २१८)।

जीह अक [लस्ज्] लजा करना, शरमाना। जीहइ (हे ४, १०३, षड्)।

जीहा स्त्री [जिह्वा] जीभ, रसना (आचा; स्वप्न ७८)। °ल वि [वत्] लम्बी जीभवाला (पउम ७, १२०, नमि ८, सुर २, ६२)।

जीहाविअ वि [लज्जित] लज्जा-युक्त किया गया, लजाया गया (कुमा)।

जु देखो जुज (कुमा)। कवकृ जुज्जत (सम्म १०७, से १२, ८७)।

जु° स्त्री [युध्] लडाई, युद्ध; 'जुधि ' वातिभए घेप्पइ' (विसे ३०१६)।

जु अ [दे] निश्चय-सूचक अव्यय (सा ४)।

जुअ देखो जुग (से १२, ६०, इक, पण्ह १, १)। ६ युग्म, जोडा, उभय (पिंग, सुर २, १०२, सुपा १६०)।

जुअ वि [युत] युक्त सलग्न, सहित (दे १, ८१, सुर ४, ६४)।

जुअ देखो जुव (गा २२८, कुमा, सुर २, १७७)।

जुअइ स्त्री [युवति] तरुणी, जवान स्त्री (गउड, कुमा)।

जुअजुअ (अप) अ [युतयुत] जुदा-जुदा, अलग-अलग, भिन्न-भिन्न (हे ४, ४२२)।

जुअण [दे] देखो जुअल=(दे) (षड्)।

जुअणद्ध पुं [युगनद्ध] ज्योतिष प्रसिद्ध एक योग, जिसमे बैल के कधे पर रखे हुए युग—जुआ या जुआठ की तरह चन्द्र और सूर्य तथा नक्षत्र अवस्थित होते हैं वह योग (सुज्ज १२—पत्र २३३)।

जुअय न [युतक] जुदा, पृथक् (दे ७, ७३)।

जुअरज्ज न [यौवराज्य] युवराज का भाव या पद, युवरापन (स २६८)।

जुअल न [युगल] १ युग्म, जोडा, उभय (पाअ)। २ वे दो पद्य जिनका अर्थ एक दूसरे से सापेक्ष हो (श्रा १४)।

जुअल पुं [दे] युवा, तरुण, जवान (दे ३, ४७)।

जुअलिअ वि [दे] द्विगुणित (दे ३, ४७)।

जुअलिय देखो जुगलिय (णाया १, १)।

जुअली स्त्री [युगली] युग्म, जोडा (प्राकृ ३८)।

जुआण देखो जुवाण (गा ५७, २४६)।

जुआरि स्त्री [दे] जुआरि, अन्न-विशेष (सुपा ५४६, सुर १, ७१)।

जुइ स्त्री [द्युति] कान्ति, तेज, प्रकाश, चमक (औप, जीव ३)। °म, °मत वि [°मत्] तेजस्वी, प्रकाशशाली (स ६४१, पउम १०२, १५६)।

जुइ स्त्री [युति] सयोग, युक्तता (ठा ३, ३)।

जुइ पु [युगिन्] स्वनाम ख्यात एक जैन मुनि (पउम ३२, ५७)।

जुईम वि [द्युतिमत्] तेजस्वी (सूअ १, ६, ८)।

जुउच्छ सक [जुगुप्स्] घृणा करना, निन्दा करना। जुउच्छइ (हे ४, ४, षड्, मे ५, ५)।

जुउच्छिअ वि [जुगुप्सित] निन्दित (निचू ४)।

जुगिय वि [दे] जाति, कर्म या शरीर से हीन, जिसको सन्यास देने का जैन शास्त्रो में निषेध है (पुप्फ १२५)।

जुगिय वि [दे] १ काटा हुआ (पिंड ४४६)। २ दूषित (सिरि २२३)।

जुज सक [युज्] जोडना, युक्त करना। जुजइ (हे ४, १०६)। वकृ. जुजत (ओघ ३२६)।

जुजण न [योजन] जोडना, युक्त करना, किसी कार्य में लगाना (सम १०६)।

जुजणया } स्त्री [योजना] १ ऊपर देखो
जुजणा } (औप, ठा ७)। २ करण-विशेष—मन, वचन और शरीर का व्यापार, 'मणव-यणकायकिरिया पन्नरसविहाउ जुजणाकरण' (विसे ३३६०)।

जुजम [दे] देखो जुजुमय (उप ३१८)।

जुजिअ वि [दे] बुभुक्षित, भूखा (णाया १, १—पत्र ६६, ६८ टी)।

जुजुमय न [दे] हरा तृण-विशेष, एक प्रकार की हरी घास, जिसको पशु चाव से खाते हैं (स ४८७)।

जुजुरुड वि [दे] परिग्रह-रहित (दे ३, ४७)।

जुग पु [युग] १ काल-विशेष—सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि ये चार युग (कुमा)। २ पांच वर्ष का काल (ठा २, ४—पत्र ८६, सम ७५)। ३ न. चार हाथ का यूप (औप, पण्ह १, ४)। ४ शकट का एक अंग, धुर, गाडी या हल खीचने के समय जो बैलो के कन्धे पर रक्खे जाते हैं (उप पृ १३६, उत्त २)। ५ चार हाथ का परिमाण (अणु)। ६ देखो जुअ = युग। °प्पवर वि [°प्रवर] युग-श्रेष्ठ (भग)। °प्पहाण वि [°प्रधान] १ युग-श्रेष्ठ (रभा)। २ पु. युग-श्रेष्ठ जैन आचार्य की एक उपाधि (पव २६८, गुरु १)। °बाहु पु [बाहु] १ विदेह वर्ष में उत्पन्न स्वनाम-प्रसिद्ध एक जिनदेव (विपा २, १)। २ विदेह वर्ष का एक त्रि-खण्डाधिपति राजा (आचू ४)। ३ मिथिला का एक राजा (तित्थ)। ४ वि यूप या खभा की तरह लम्बा हाथवाला, दीर्घ बाहु (ठा ६)। °मच्छ पु [°मत्स्य] की एक जाति (विपा १, ८—पत्र ८४ टी) °सवच्छर पुं [°सवत्सर] वर्ष-विशेष (ठा ५, ३)।

जुगतर न [युगान्तर] यूप-परिमित भूमि-भाग, चार हाथ जमीन (पण्ह २, १)। °पलोयणा स्त्री [°प्रलोकना] चलते समय चार हाथ जमीन तक दृष्टि रखना (भग)।

जुगधर न [युगन्धर] १ गाडी का काष्ठ-विशेष, शकट का एक अवयव (ज १)। २ पुं विदेह वर्ष मे उत्पन्न एक जिन-देव (आचू १)। ३ एक जैन मुनि (पउम २०, १८)। ४ एक जैन आचार्य (आवम)।

जुगल न [युगल] युग्म, जोडा, उभय (अणु, राय)।

जुगलि वि [युगलिन्] स्त्री-पुरुष के युग्म रूप से उत्पन्न होनेवाला (रयण २२)।

जुगलिय वि [युगलिन] १ युग्म-युक्त, द्वन्द्व-सहित (जीव ३)। २ युग्म रूप मे स्थित (राज)।

जुगव वि [युगवत्] समय के उपद्रव से वर्जित (अणु, राय)।

जुगव } अ [युगपत्] एक ही साथ,
जुगवं } एक ही समय मे, 'कारणकज्ज-

ठ

ठ पुं [ठ] मूर्ध-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्रामा, प्राप)।

ठइअ वि [दे] १ उत्क्षिप्त, ऊपर फेंका हुआ। २ पु. अवकाश (दे ४, ५)।

ठइअ वि [स्थगित] १ आच्छादित, ढका हुआ। २ बन्द किया हुआ, रुका हुआ (स १७३)।

ठइअ देखो ठविअ (पिंग)।

ठंडिल्ल देखो थंडिल्ल (उव)।

ठंभ देखो थंभ = स्तम्भ्। कर्म ठभिज्जइ (हे २, ६)।

ठंभ देखो थंभ = स्तम्भ (हे २, ६, षड्)।

ठकुर } पु [ठक्कुर] १ ठाकुर, क्षत्रिय, ठक्कुर } राजपूत (स ५४८, सुपा ४१२, मट्ठि ६८)। २ ग्राम वगैरह का स्वामी, नायक, मुखिया (श्रावम)।

ठक्कार पु [ठ कार] 'ठ' अक्षर, 'तम्मि चलते करिमयसित्ताइ महीइ तुरगखुरसेणी। लिहिया रिऊण विजए मती ठक्कारपंति व्व' (धर्मवि २०)।

ठग } सक [स्थग] बन्द करना, ढकना। ठय } ठगेइ, ठएइ (सट्ठि २३ टी, सुख २, १७)।

ठग पु [ठक] ठग, धूर्त, वञ्चक (दे २, ५८, कुमा)।

ठगिय वि [दे] वञ्चित, ठगा हुआ, विप्रतारित (सुपा १२४)।

ठगिय देखो ठइय = स्थगित (उप पृ ३८८)।

ठट्टार पु [दे] ताम्र, पितलआदि धातु के बर्तन बनाकर जीविका चलानेवाला, ठठेरा (धर्म २)।

ठड्ढ वि [स्तब्ध] हक्काबक्का, कुण्ठित, जड (हे २, ३९, वज्जा ६२)।

ठप्प वि [स्थाप्य] स्थापनीय, स्थापन करने योग्य (ओघ ६)।

ठय सक [स्थग्] बन्द करना, रोकना। ठएति (स १५६)।

ठयण [स्थगन] १ रुकाव, अटकाव। २ वि. रोकनेवाला। स्त्री °णी (उप ६६६)।

ठयण न [स्थगन] बन्द करना, 'अच्छिठयणं च' (पंचा २, २५)।

ठरिअ वि [दे] १ गौरवित। २ ऊर्ध्व-स्थित (दे ४, ६)।

ठलिय वि [दे] खाली, शून्य, रिक्त किया गया (सुपा २३७)।

ठल्ल वि [दे] निर्धन, धन-रहित, दरिद्र (दे ४, ५)।

ठव सक [स्थापय्] स्थापन करना। ठवइ, ठवेइ (पिंग, कप्प, महा)। ठवे (भग)। वकृ. ठवत (रयण ६३)। संकृ ठविउ, ठविऊण, ठवित्ता, ठवित्तु, ठवेत्ता (पि ५७६, ५८६, ५८२, प्रासू २७, पि ५८२)।

ठवण न [स्थापन] स्थापन, संस्थापन (सुर २, १७७)।

ठवणा स्त्री [स्थापना] १ प्रतिकृति, चित्र, मूर्त्ति, आकार (ठा २, ४, १०, अणु)। २ स्थापन, न्यास (ठा ४, ३)। ३ सांकेतिक वस्तु, मुख्य वस्तु के अभाव या अनुपस्थिति मे जिस किसी चीज मे उसका संकेत किया जाय वह वस्तु (विसे २६२७)। ४ जैन साधुओं की भिक्षा का एक दोष, साधु को भिक्षा मे देने के लिए रखी हुई वस्तु (ठा ३, ४—पत्र १५६)। ५ अनुज्ञा, संमति (णंदि)। ६ पर्युषणा, आठ दिनों का जैन पर्व-विशेष (निचू १०)। °कुल पुन [°कुल] भिक्षा के लिए प्रतिषिद्ध कुल (निचू ४)। °णय पु [°नय] स्थापन को ही प्रधान माननेवाला मत (राज)। °पुरिस पुं [°पुरुष] पुरुष की मूर्ति या चित्र (ठा ३, १, सूत्र १, ४, १)। °यरिय पुं [°चार्य] जिस वस्तु मे आचार्य का संकेत किया जाय वह वस्तु (धर्म २)। °सच्च न [°सत्य] स्थापना-विषयक सत्य, जिन भगवान् की मूर्ति को जिन कहना यह स्थापना-सत्य है (ठा १०, पण्ण ११)।

ठवणा स्त्री [स्थापना] वासना (णंदि १७६)।

ठवणी स्त्री [स्थापनी] न्यास, न्यास रूप से रखा हुआ द्रव्य (श्रा १४)। °मोस पुं [°मोष] न्यास की चोरी, न्यास का अपलाप, 'दोहेसु मित्तदोहो, ठवणीमोसो असेसमोसेसु' (श्रा १४)।

ठविअ वि [स्थापित] रखा हुआ, संस्थापित (षड्, पि ५६४, ठा ५, २)।

ठविआ स्त्री [दे] प्रतिमा, मूर्ति, प्रतिकृति (दे ४, ५)।

ठविर देखो थविर पि १६६)।

ठा अक [स्था] बैठना, स्थिर होना, रहना, गति का रुकाव करना। ठाइ, ठाअइ (हे ४, १६, षड्)। वकृ ठायमाण (उप १३० टी)। संकृ. ठाइऊण, ठाऊण (पि ३०६, पंचा १८)। हेकृ ठाइत्तए, ठाउ (कस, श्राव ५)। कृ. ठाणिज्ज, ठायव्व, ठाएयव्व (णाया १, १४, सुपा ३०२, सुर ६, ३३)।

ठाइ वि [स्थायिन्] रहनेवाला, स्थिर होनेवाला (औप, कप्प)।

ठाएयव्व देखो ठा।

ठाएयव्व देखो ठाव।

ठाण पु [दे] मान, गर्व, अभिमान (दे ४, ५)।

ठाण पुंन [स्थान] १ स्थिति, अवस्थान, गति की निवृत्ति (सूअ १,५,१, बृह १)। २ स्वरूप-प्राप्ति (सम्म १)। ३ निवास, रहना (सूअ १, ११, निचू १)। ४ कारण, निमित्त, हेतु (सूअ १, १, २, ठा २, ४)। ५ पर्यंक आदि आसन (राज)। ६ प्रकार, भेद (ठा १०, आचू ४)। ७ पद, जगह (ठा १०)। ८ गुण, पर्याय, धर्म (ठा ५, ३, श्राव ४)। ९ आश्रय, आधार, वसति, मकान, घर (ठा ४, ३)। १० तृतीय जैन अग-ग्रन्थ, 'ठाणाग' सूत्र (ठा १)। ११ 'ठाणाग' सूत्र का अध्ययन, परिच्छेद (ठा १,२,३,४,५)। १२ कायोत्सर्ग (औप)। °भट्ठ वि [°भ्रष्ट] १ अपनी जगह से च्युत (णाया १, ६)। २ चारित्र से पतित (तदु)। °इय वि [°तिग] कायोत्सर्ग करनेवाला (औप)। °यय न [°यत] ऊँचा स्थान (बृह ५)।

ठाण न [स्थान] १ कुकण (कोकण) देश का एक नगर (सिरि ६३६)। २ तेरह दिन का लगातार उपवास (सबोध ५८)।

जुहिट्ठिर, जुहिट्ठिल, जुहिट्ठिल्ल देखो जहिट्ठिल (पिंग, उप ६४८ टी, णाया १, १६—पत्र २०८, २२६)।

जुहु सक [हु] १ देना, अर्पण करना। २ हवन करना, होम करना। जुहुणामि (ठा ७—पत्र ३८१, पि ५०१)।

जूअ न [द्यूत] जुआ, द्यूत (पाअ)। °कर वि [°कर] जुआरी, जुए का खिलाडी (सुपा ५२२)। °कार वि [°कार] वही पूर्वोक्त अर्थ (णाया १, १८)। °कारि वि [°कारिन्] जुआरी (महा)। °केलि स्त्री [°केलि] द्यूत-क्रीडा (रयण ४८)। °खलय न [°खलक] जुआ खेलने का स्थान (राज)। °केलि देखो °केलि (रयण ४७)।

जूअ पु [यूप] १ जुआ, धुर, गाडी का अवयव-विशेष जो बैलो के कन्धे पर डाला जाता है, जुअड (उत्त पृ १३६)। २ स्तम्भ-विशेष, 'जूअसहस्स मुसल सहस्सं च उस्सवेह' (कप्प)। ३ यज्ञ-स्तम्भ (जं ३)। ४ एक महापाताल-कलश (पव २७२)।

जूअअ पुं [दे] चातक पक्षी (दे ३, ४७)।

जूअग पुं [यूपक] देखो जूअ = यूप (सम ७१)।

जूअग पुं [यूपक] सन्ध्या की प्रभा और चन्द्र की प्रभा का मिश्रण (ठा १०)।

जूआ स्त्री [यूका] १ जूँ, चीलड, खटमल, क्षुद्र कीट-विशेष (जी १६)। २ परिमाण-विशेष, आठ लिक्षा का एक नाप (ठा ६, इक)। °सेज्जायर वि [°शय्यातर] यूकाओ को स्थान देनेवाला (भग १५)।

जूआर वि [द्यूतकार] जुआरी, जुए का खेलाडी (रभा, भवि, सुपा ४००)।

जूआरि, जूआरिअ वि [द्यूतकारिन्] जुआ खेलनेवाला, जुए का खेलाडी (द्र ४३, सुपा ४००, ४८८, स १५०)।

जूझ देखो जुज्झ = युध्। कृ. यूझियव्व (सिरि १०२५)।

जूड पुं [जूट] कुन्तल, केश-कलाप (दे ४, २४, भवि)।

जूय न [यूप] लगातार छ दिनो का उपवास (सवोध ५८)।

जूयय, जूवय पु [यूपक] शुक्ल पक्ष की द्वितीया आदि तीन दिनो मे होती चन्द्र की कला और सन्ध्या के प्रकाश का मिश्रण (अणु १२०, पव २६८)।

जूर सक [गर्ह्] निंदा करना। जूरति (सूअ २, २, ५५)।

जूर अक [क्रुध्] क्रोध करना, गुस्सा करना। जूरइ (हे ४, १३२, षड्)।

जूर अक [खिद्] खेद करना, अफसोस करना। जूरइ (हे ४, १३२, षड्)। जूर (कुमा)। भवि जूरिहिइ (हे २, १९३)। वकृ जूरत (हे २, १९३)।

जूर अक [जूर्] १ झुरना, सूखना। २ सक. वध करना, हिंसा करना (राज)।

जूरण न [जूरण] १ सूखना, झुरना। २ निन्दा, गर्हण (राज)।

जूरव सक [वञ्च्] ठगना, वचना। जूरवइ (हे ४, ९३)।

जूरवण वि [वञ्चन] ठगनेवाला (कुमा)।

जूरावण न [जूरण] झुराना, शोषण (भग ३, २)।

जूराविअ वि [क्रोधित] क्रुद्ध किया हुआ, कोपित (कुमा)।

जूरिअ वि [खिन्न] खेद प्राप्त (पाअ)।

जूरुम्मिलय वि [दे] गहन, निबिड, सान्द्र (दे ३, ४७)।

जूल देखो जूर = क्रुध्। जूल (गा ३५४)।

जूव देखो जूअ = द्यूत (णाया १, २—पत्र ७९)।

जूव, जूवय देखो जूअ = यूप (इक, ठा ४, २)।

जूस देखो झूस (ठा २, १, कप्प)।

जूस पुन [यूष] जूस, मूँग वगैरह का क्वाथ, कढी (ओघ १४७, ठा ३, १)।

जूसअ वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ (षड्)।

जूसणा स्त्री [जोषणा] सेवा (कप्प)।

जूसिय वि [जुष्ट] १ सेवित (ठा २, १)। २ क्षपित, क्षीण (कप्प)।

जूह न [यूथ] समूह, जत्था (ठा १०, गा ५४८)। °वइ पु [°पति] समूह का अधिपति, यूथ का नायक (से ६, ६८, णाया १, १, सुपा १३७)। °हिव पु [°धिप] पूर्वोक्त ही अर्थ (गा ५४८)। °हिवइ पु [°धिपति] यूथ-नायक (उत्त ११)।

जूह न [यूथ] युग्म, युगल, जोडा (आचा २, ११, २)। °काम न [°काम] लगातार चार दिनो का उपवास (सवोध ५८)।

जूहिय वि [यूथिक] यूथ मे उत्पन्न (आचा २, २)।

जूहियठाण न [यूथिकस्थान] विवाह-मण्डप वाली जगह (आचा २, ११, २)।

जूहिया स्त्री [यूथिका] लता-विशेष, जूही का पेड (पण्ण १, पउम ५३, ७९)।

जूही स्त्री [यूथी] लता-विशेष, माधवी लता (कुमा)।

जे अ १ पाद-पूर्ति मे प्रयुक्त किया जाता अव्यय (हे २, २१७)। २ अवधारण-सूचक अव्यय (उव)।

जेअ वि [जेय] जीतने योग्य (रुक्मि ५०)।

जेअ वि [जेतृ] जीतनेवाला (सूअ १, ३, १, १, १, ३, १, २)।

जेउ वि [जेतृ] जीतनेवाला, विजेता (भग २०, २)।

जेउआण, जेउं, जेऊण देखो जिण = जि।

जेक्कार पुं [जयकार] 'जय-जय' आवाज स्तुति, 'हुंति देवाण जेक्कारो' (गा ३३२)।

जेट्ठ देखो जिट्ठ = ज्येष्ठ (हे २, १७२, महा उवा)।

जेट्ठ देखो जिट्ठ = ज्यैष्ठ (महा)।

जेट्ठा देखो जिट्ठा (सम ८, आचू ४)। °मूल पु [°मूल] जेठ मास (ओप, णाया १, १३)। °मूला स्त्री [°मूली] जेठ मास की पूर्णिमा (सुज्ज १०)।

जेट्ठामूली स्त्री [ज्येष्ठामूली] १ जेठ मास की पूर्णिमा। २ जेठ मास की अमावस्या (सुज १०, ६)।

जेण देखो जइण = जैन (सम्मत्त ११७)।

जेण अ [येन] लक्षण-सूचक अव्यय, 'भमररुअ जेण कमलवणं' (हे २, १८३, कुमा)।

जेत्त वि [यावत्] जितना। स्त्री. °त्ती (हास्य १३०)।

प्रसिद्ध जगल, दण्डकारण्य (पउम ६८, ४२)।

डंडि } स्त्री [दे] सिले हुए वस्त्र-खण्ड (दे ४,
डंडी } ७, पण्ह १, ३)।

डवर पुं [दे] घर्म, गरमी, प्रस्वेद (दे ४, ८)।

डवर पुं [डम्बर] आडम्बर, आटोप (उप १४२ टी; पिंग)।

डभ देखो दब्भ (हे १, २१७)।

डभण न [दम्भन] दागने का शस्त्र-विशेष (विपा १, ६)।

डंभण न [दम्भन] वंचना, ठगाई (पव २)।

डभणया } स्त्री [दम्भना] १ दागना। २
डभणा } माया, कपट, दम्भ, वञ्चना (उप पृ ३१५, पण्ह २, १)।

डभिअ पु [दे] जुआरी, जुए का खेलाडी (दे ४, ८)।

डभिअ वि [दाम्भिक] वञ्चक, मायावी, कपटी (कुमा, षड्)।

डस सक [दंश्] डसना, काटना। डसइ, डंसए (षड्)।

डस पुं [दश] क्षुद्र जन्तु-विशेष, डाँस, मच्छर (जी १८)।

डंस पुं [दंश] १ दन्त-क्षत। २ सर्प आदि का काटा हुआ घाव। ३ दोष। ४ खडन। ५ दाँत ६ वर्म, कवच। ७ मर्म-स्थान (प्राकृ १५)।

डसण पुन [दंशन] वर्म, कवच; 'डंसणो' (प्राकृ १५)।

डक्क वि [दष्ट] डसा हुआ, दाँत से काटा हुआ (हे २, २; गा ५३१)।

डक्क वि [दे] दन्त-गृहीत, दाँत से उपात्त (दे ४, ६)।

डक्का स्त्रीन [डक्का] वाद्य-विशेष (सुपा १६५)।

डक्कुरिज्जत वकृ [दे] पीडित होता हुआ (सूअ० चू० गा० ३१५)।

डगण न [दे] यान-विशेष (राज)।

डगमग अक [दे] चलित होना, हिलना, काँपना। डगमगेति (पिंग)।

डगल न [दे] १ फल का टुकडा (निचू १५)। २ ईंट, पाषाण वगैरह का टुकडा (ओघ ३५६; ७८ भा)।

डग्गल पुं [दे] घर के ऊपर का भूमि-तल, छत (दे ४, ८)।

डज्झ }
डज्झंत } देखो डह।
डज्झमाण }

डट्ठ देखो डक्क = दष्ट (हे १, २१७)।

डड्ढ त्रि [दग्ध] प्रज्वलित, जला हुआ (हे १, २१७; गा १४६)।

डड्ढाडी स्त्री [दे] दव-मार्ग, आग का रास्ता (दे ४, ८)।

डप्फ न [दे] सेल, कुन्त, भाला, बरछी, आयुध-विशेष (दे ४, ७)।

डब्भ पुं [दर्भ] डाभ, कुश, तृण-विशेष (हे १, २१७)।

डमडम अक [डमडमाय्] 'डम-डम' आवाज करना, डमरू आदि का आवाज होना। वकृ, डमडमंत (सुपा १६३)।

डमडमिय वि [डमडमायित] जिसने 'डम-डम' आवाज किया हो वह (सुपा १५१, ३३८)।

डमर पुन [डमर] १ राष्ट्र का भीतरी या वाह्य विप्लव, बाहरी या भीतरी उपद्रव (णाया १, १; ज २; पव ४; औप)। २ कलह, लडाई, विग्रह (पण्ह १, २; दे ८, ३२)।

डमरुअ } पुन [डमरुक] वाद्य-विशेष,
डमरुग } कापालिक योगियों के बजाने का वाजा, डमरू (दे २,८६; पउम ५७,२३; सुपा ३०६; षड्)।

डर अक [त्रस्] डरना, भय-भीत होना। डरइ (हे ४, १९८)।

डर पु [दर] डर, भय, भीति (हे १, २१७; सण)।

डरिअ वि [त्रस्त] भय-भीत, डरा हुआ (कुमा; सुपा ६५५; सण)।

डल पु [दे] लोष्ट, मिट्टी का ढेला (दे ४,७)।

डल्ल सक [पा] पीना। डल्लइ (हे ४, १०)।

डल्ल } न [दे] पिटिका, डाला, डाली, बाँस
डल्लग } का बना हुआ फल-फूल रखने का पात्र (दे ४, ७; आवम)।

डल्ला स्त्री [दे] डाला, डाली (कुप्र २०६)।

डल्लिर वि [पातृ] पीनेवाला (कुमा)।

डव सक [आ + रभ्] आरम्भ करना, शुरू करना। डवइ (षड्)।

डवडव अ [दे] ऊँचा मुँह कर के वेग से इधर-उधर गमन (षड्)।

डव्व पुं [दे] वाम हस्त, बायाँ हाथ, गुजराती में 'डावो' (दे ४, ६)।

डस देखो डंस। डसइ (हे १, २१८; पि २२२)। हेकृ डसिउ (सुर २, २४३)।

डसण न [दशन] १ दश, दंत से काटना (हे १, २१७)। २ दाँत (कुमा)।

डसण वि [दशन] काटनेवाला (सिरि ६२०)।

डसिअ वि [दष्ट] डसा हुआ, काटा हुआ (सुपा ४४६; सुर ६, १८५)।

डह सक [दह्] जलाना, दग्ध करना। डहइ, डहए (हे १, २१८; षड्; महा; उव)। भवि डहिहिइ (हे ४, २४६)। कवकृ. डज्झंत, डज्झमाण (सम १३७; उप पृ ३३; सुपा ८५)। हेकृ डहिउ (पउम ३१, १७)। कृ डज्झ (ठा ३, २; दस १०)।

डहण न [दहन] १ जलाना, भस्म करना (बृह १)। २ पु अग्नि, वह्नि, आग (कुमा)। ३ वि. जलानेवाला, 'तस्स सुहासुहडहणो अप्पा जलणो पयासेइ' (आरा ८४)।

डहर पुं [दे] १ शिशु, बालक, बच्चा (दे ४, ८; पाअ; वव ३; दस ६, १; सूअ १, २, १; २, ३, २१, २२, २३)। २ वि लघु, छोटा, क्षुद्र (ओघ १७८,२६० भा)। °ग्गाम पु [°ग्राम] छोटा गाँव (वव ७)।

डहरक पुं [दे] वृक्ष-विशेष। २ पुष्प-विशेष, 'डहरकफुल्लगुरत्ता भुजती तप्फल मुणसि' (धर्मवि ६७)।

डहरिया स्त्री [दे] जन्म से अठारह वर्ष तक की लडकी (वव ४)।

डहरी स्त्री [दे] अलिञ्जर, मिट्टी का घडा (दे ४, ७)।

डाअल न [दे] लोचन, आँख, नेत्र (दे ४,६)।

डाइणी स्त्री [डाकिनी] १ डाकिनी, डायन, चुडैल, प्रेतिनी। २ जंतर मंतर जाननेवाली स्त्री (पण्ह १, ३; सुपा ५०५; स ३०७, महा)।

डाउ पुं [दे] १ फलिहंसक वृक्ष, एक जाति का पेड। २ गणपति की एक तरह की प्रतिमा (दे ४, १२)।

जोइस पुं [ज्यौतिष] १ देवों की एक जाति, सूर्य, चन्द्र, ग्रह आदि (कप्प, औप, दंड २७)। २ न सूर्य आदि का विमान (ति १२, जो १)। ३ शास्त्र-विशेष, ज्योतिष-शास्त्र (उत्त २)। ४ सूर्य आदि का चक्र। ५ सूर्य आदि का मार्ग, आकाश, 'जे गहा जाइसम्मि चारं चरंति' (पएण ३)।

जोइस पुं [ज्यौतिष] १ सूर्य, चन्द्र आदि देवों की एक जाति (कप्प, पचा २)। २ वि ज्योतिष शास्त्र का जानकार, जोतिषी (सुपा १५६)।

जोइसिअ वि [ज्यौतिषिक] १ ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता, दैवज्ञ, जोतिषी (स २२, सुर ४, १००, सुपा २०३)। २ सूर्य, चन्द्र आदि ज्योतिष्क देव (औप, जी २४, पएण २)। °राय पु [°राज] १ सूर्य, रवि। २ चन्द्रमा (पएण २)।

जोइसिंद पुं [ज्योतिरिन्द्र] १ सूर्य, रवि। २ चन्द्र, चन्द्रमा (ठा ६)।

जोइसिण पुं [ज्यौत्स्न] शुक्ल पक्ष (जो ४)।

जोइसिणा स्त्री [ज्योत्स्ना] चन्द्र की प्रभा, चन्द्रिका, चाँदनी (ठा २,४)। पक्ख पु [पक्ष] शुक्ल पक्ष (चद १५)। भा स्त्री [भा] चन्द्र की एक अग्र-महिषी (भग १०, ५)।

जोइसिणी स्त्री [ज्यौतिषी] देवी-विशेष (पएण १७—पत्र ४९६)।

जोई स्त्री [दे] विद्युत्, बिजली (दे ३, ४९, षड्)।

जोईरस देखो जोइ-रस (कप्प, जीव ३)।

जोईस पु [योगीश] योगीन्द्र, योगि-राज (स १)।

जोईसर पु [योगीश्वर] ऊपर देखो (सुपा ८३, रयण ६)।

जोउकण्ण न [यौगकर्ण] गोत्र-विशेष (सुज १०, १६ टी)।

जोउकण्णिय न [यौगकर्णिक] गोत्र-विशेष (सुज्ज १०, १६)।

जोकार देखो जेकार (गा ३३२ अ)।

जोक्ख वि [दे] मलिन, अपवित्र (दे ३, ४८)।

जोग देखो जुग्ग = युग्म, 'सपाउयाजोग समाजुत्तं' (राय ४०)।

जोग पु [योग] नक्षत्र-समूह का क्रम से चन्द्र और सूर्य के साथ सबंध (सुज १०, १)।

जोग पु [योग] १ व्यापार, मन, वचन और शरीर की चेष्टा (ठा ४, १, सम १०, स ४७०)। २ चित्तनिरोध, मन-प्रणिधान, समाधि (१उव ६८, २३, उत्त १)। ३ वश करने के लिए या पागल आदि बनाने के लिए फेंका जाता चूर्ण-विशेष, 'जोगो मइमोह-करो सीसे खित्तो इमाए सुत्ताए' (सुर ८, २०१)। ४ सम्बन्ध, सयोग, मेलन (ठा १०)। ५ ईप्सित वस्तु का लाभ (णाया १, ५)। ६ शब्द का अवयवार्थ-सम्बन्ध (भास २४)। ७ बल, वीर्य, पराक्रम (कम्म ५)। °क्खेम न [°क्षेम] ईप्सित वस्तु का लाभ और उसका सरक्षण (णाया १, ५)। °त्थ वि [°स्थ] योग-निष्ठ, ध्यान-लीन (पउम ६८, २३)। °त्थ पुं [°ार्थ] शब्द के अवयवों का अर्थ, व्युत्पत्ति के अनुसार शब्द का अर्थ (भास २४)। °दिट्ठि स्त्री [°दृष्टि] चित्त-निरोध से उत्पन्न होनेवाला ज्ञान-विशेष (राज)। °धर वि [°धर] समाधि मे कुशल, योगी (पउम ११६, १७)। °परि-व्वाइया स्त्री [°परिव्राजिका] समाधि-प्रधान व्रतिनी-विशेष (णाया १, ६)। °पिंड पु [°पिण्ड] वशीकरण आदि के प्रयोग से प्राप्त की हुई भिक्षा (पचा १३, निचू १३)। °मुद्दा स्त्री [°मुद्रा] हाथ का विन्यास-विशेष (पचा ३)। °व वि [°वत्] १ शुभ प्रवृत्तिवाला (सूअ १, २, १)। २ योगी, समाधि करनेवाला (उत्त ११)। °वाहि वि [°वाहिन्] १ शास्त्र ज्ञान की आराधना के लिए शास्त्रोक्त तपश्चर्या को करनेवाला। २ समाधि मे रहनेवाला (ठा ३, १—पत्र १२०)। °विहि पुस्त्री [°विधि] शास्त्रों की आराधना के लिए शास्त्र-निर्दिष्ट अनुष्ठान, तपश्चर्या-विशेष, 'इय वुत्तो जोगविही', 'एसा जोगविही' (अग)। °सत्थ न [°शास्त्र] चित्त-निरोध का प्रतिपादक शास्त्र (उवर १६०)।

जोग देखो जोग्ग, 'इय सो न एत्थ जोगो, जोगो पुण होइ अक्कूरो' (धम्म १२, सुर २, २०५, महा, सुपा २०८)।

जोगि देखो जोइ = योगिन् (कुमा)।

जोगिंद पुं [योगीन्द्र] महान् योगी, योगीश्वर (रयण २९)।

जोगिणी देखो जोइणी (सुर ३, १८९)।

जोगिय वि [यौगिक] दो पदों के सम्बन्ध से बना हुआ शब्द, जैसे—उप-करोति, अभि-षेणयति (पण्ह २, २—पत्र ११४)। २ यन्त्र-प्रयोग से बना हुआ (उप पृ ६४)।

जोगीसर देखो जोईसर (स २०१)।

जोगेसरी स्त्री [योगेश्वरी] देव-विशेष (सण)।

जोगेसी स्त्री [योगेशी] विद्या-विशेष (पउम ७, १४२)।

जोग्ग वि [योग्य] योग्य, उचित, लायक (ठा ३, १, सुपा २८)। २ प्रभु, समर्थ, शक्तिमान् (निचू २०)।

जोग्गा स्त्री [दे] चाटु, खुशामद, (दे ३, ४८)।

जोग्गा स्त्री [योग्या] १ शास्त्र का अभ्यास (भग ११, ११, ज ३)। २ गर्भ-धारण में समर्थ योनि (तदु)।

जोज देखो जोअ = योजय्। भवि. जोज-इस्सामि (कुप्र १३०)। कृ. जोज्ज (उत्त २७, ८)।

जोड सक [योजय्] जोड़ना, संयुक्त करना। वकृ जोडंत (सुर ४, १९)। सकृ जोडिऊण (महा)।

जोड पुंन [दे] १ नक्षत्र (दे ३, ४९, पि ६)। २ रोग-विशेष (सण)।

जोड (अप) स्त्री [दे] जोड़ी, युगल, 'एरिस जोड न जुत्त' (कुप्र ४५३)।

जोडिअ पु [दे] व्याध, बहेलिया, चिड़ीमार (दे ३, ४९)।

जोडिअ वि [योजित] जोड़ा हुआ, सयुक्त किया हुआ (सुपा १४९, ३५१)।

जोण पु [योन, यवन] म्लेच्छ देश-विशेष (णाया १, १)।

जोणि स्त्री [योनि] १ उत्पत्ति-स्थान (भग, स ८२, प्रासू ११५)। २ कारण, हेतु, उपाय (ठा ३, ३, पचा ४)। ३ जीव का उत्पत्ति-स्थान (ठा ७)। ४ स्त्री-चिन्ह, भग (अणु)। °विहाण न [°विधान] उत्पत्ति-

म्लेच्छ-जाति, डोम (पराह १, १, इक, पव ६)। ३ देखो डुब (पाश्र)।

डोंविलग } पुं [दे] १ म्लेच्छ देश विशेष। २ डोंबिलय } एक अनार्य जाति (पराह १, १, इक)। ३ डोम, चाराडाल (स २८६)।

डोक्करी स्त्री [दे] बूढी स्त्री (कुप्र ३५३)।

डोड पुं [दे] ब्राह्मण, विप्र (सुख ३, १)।

डोडिणी स्त्री [दे] ब्राह्मणी (अनु० ६६ सूत्र)।

डोडिणी स्त्री [दे] ब्राह्मणी (श्रणु ४६)।

डोड्ड पु [दे] एक मनुष्य-जाति, ब्राह्मण, 'दिट्ठो तक्खणजिमिश्रो निग्गच्छतो बहिं डोड्डो, तो तस्सुदर फालिअं' (उप १३६ ठी)।

डोर पुं [दे] डोर, गुण, रस्सी (गा २११, वज्जा ६६)।

डोल अक [दोलय्] १ डोलना, हिलना, झूलना। २ सशयित होना, सन्देह करना। वकृ डेलत (अच्चु ६०)।

डोल पुं [दे] १ लोचन, आंख, नयन, गुजराती मे 'डोलो', (दे ४, ६)। २ जन्तु-विशेष (बृह १)। ३ फल-विशेष (पचव २)।

डोल पु [दे] चतुरिन्द्रिय जीव की एक जाति (उत्त ३६, १४८, सुख ३६, १४८)।

डोला स्त्री [दोला] हिंडोला, झूलना या झूला (हे १, २१७, पाश्र)।

डोला स्त्री [दे] डाली, शिविका, पालकी (दे ४, ११)।

डोलाअत वि [दोलायमान] सशय करनेवाला, डँवाडोल (अच्चु ७)।

डोलाइअ वि [दोलायित] सशयित, डँवाडोल, 'भडस्स डोलाइअं हिअअ' (गा ६६६)।

डोलायमाण देखो डोलाअत (निचू १०)।

डोलाविय वि [दोलित] कम्पित, हिलाया हुआ (पउम ३१, १२४)।

डोलिअ पु [दे] कृष्णसार, काला हिरन (दे ४, १२)।

डोलिर वि [दोलावत्] डोलनेवाला, काँपनेवाला, 'दरडोलिरसीसं' (कुमा)।

डोल्लगग पु [दे] पानी मे होनेवाला जन्तु-विशेष (सूत्र २, ३)।

डोव [दे] देखो डोअ (र्णादि, उप पृ २१०)। स्त्री °वा (पभा २७)।

डोसिणी स्त्री [दे] ज्योत्स्ना, चन्द्र-प्रकाश, चाँदनी (षड्)।

डोहल पुं [दोहद] १ गर्भिणी स्त्री का अभिलाष। मनोरथ, लालसा (हे १, २१७, (कुमा)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि डयाराइसद्दसंकलणो
वीसइमो तरंगो समत्तो ॥

ढ

ढ पु [ढ] व्यञ्जन वर्ण-विशेष, यह मूर्द्धन्य है, क्योकि इसका उच्चारण मूर्द्धा से होता है (प्रामा, प्राप)।

ढक पुं [दे] काक, वायस, कौआ (दे ४, १३, ज २, प्राप, सण, भवि, पाश्र)। °वत्थुल न [वास्तुल] शाक विशेष, एक तरह की भाजी या तरकारी (धर्म २)।

ढक पुं [ढङ्क] कुम्भकार-जातीय एक जैन उपासक (विसे २३०७)।

ढक देखो ढक्क। भवि. ढंकिस्स (पि २२१)।

ढकण न [दे छादन] १ ढकना, पिघान (प्रासू ६०, अणु)।

ढकण देखो ढिकुण (राज)।

ढकणी स्त्री [दे छादनी] ढकनी, पिघानिका, ढकने का पात्र-विशेष (दे ४, १४)।

ढकिअ देखो ढक्किअ (सिरि ५२६)।

ढकुण पुं [दे] मत्कुण, खटमल (दे ४, १४)।

ढकुण पु [ढङ्कुण] वाद्य-विशेष (आचा २, १११)।

ढंख देखो ढक = (दे) (पि २१३, २२३)।

ढखर पु न [दे] फल पत्र से रहित डाल, 'ढंखरसेसोवि हु महुअरेण मुक्को ण मालईविडवो' (गा ७५५, वज्जा ५२)।

ढंखरअ [दे] ढेला। गु० ढेखारा (आख्यानकम० को० नागश्री आख्यानक पत्र—४ पद्य ६१)।

ढखरी स्त्री [दे] वीणा-विशेष, एक प्रकार की वीणा (दे ४, १४)।

ढढ पु [दे] १ पंक, कीच, कर्दम, काँदो (दे ४, १६)। २ वि. निरर्थक, निकम्मा (दे ४, १६, भवि)।

ढढ पु [ढण्ढण] एक जैन महर्षि, ढणढण ऋषि (सुख २, ३१)।

ढंढ वि [दे] दाम्भिक, कपटी (सम्मत्त ३१)।

ढढण पुं [ढण्ढन] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि (विवे ३२, पडि)।

ढढणी स्त्री [दे] कपिकच्छु, केवाँच, वृक्ष-विशेष (दे ४, १३)।

ढढर पु [दे] १ पिशाच। २ ईर्ष्या (दे ४, १६)।

ढढरिअ पुं [दे] कर्दम, पक, कादा, काँदो (दे ४, १५)।

ढढल्ल सक [भ्रम्] घूमना, फिरना, भ्रमण करना। ढढल्लइ (हे ४, १६१)।

ढंढल्लिअ वि [भ्रान्त] भ्रान्त, घूमा हुआ (कुमा)।

मंख वि [दे] तुष्ट, संतुष्ट, खुश (दे ३, ५३)।

मंखण न [उपालम्भ] उपालम्भ, उलाहना (कुमा)।

मंखर पुं [दे] शुष्क तरु, सूखा पेड (दे ३, ५४)।

मंखरिअ [दे] देखो झकारिअ (दे ३, ५६)।

मंखावण वि [संतापक] संताप करनेवाला (कुमा)।

मंखिर वि [नि श्वसितृ] नि श्वास लेनेवाला (कुमा ७, ४४)।

मंझ पुं [मंझ] कलह, झगडा (सम ५०)। °कर वि [°कर] कलहकारी, फूट करानेवाला (सम ३७)। °पत्त वि [°प्राप्त] क्लेश-प्राप्त (सूअ १, १३)।

मंमण } अक [झमझणाय्] 'झन-झन' शब्द करना। झमझणइ (गा ५७५ अ)। झमझणक्कइ (पिंग)।
ममझणक्क }

मंमणा स्त्री [झञ्झना] 'झन-झन' शब्द (गउड)।

मंझा स्त्री [झञ्झा] वाद्य-विशेष, झाँझ, झाल (राय ५० टी)।

मंझा स्त्री [झञ्झा] १ प्रचण्ड वायु-विशेष (गा १७०, सण)। २ कलह, क्लेश, झगडा (उव, वृह ३)। ३ माया, कपट। ४ क्रोध, गुस्सा (सूअ १, १३)। ५ तृष्णा, लोभ (सूअ २, २)। ६ व्याकुलता, व्यग्रता (आचा)।

मंझिय वि [झञ्झित] बुभुक्षित, भूखा (णाया १, १)।

मंट सक [भ्रम्] घूमना, फिरना। मंटइ (हे ४, १६१)।

मंट अक [गुञ्ज्] गुञ्जारव करना। वक्र 'मंटंतभमिरभमरउलमालियं मालियं गहिउं' (सुपा ५२६)।

मंटण न [भ्रमण] पर्यटन, परिभ्रमण (कुमा)।

मंटलिआ स्त्री [दे] चंक्रमण, कुटिल गमन (दे ३, ५५)।

मंटिअ वि [दे] जिस पर प्रहार किया गया हो वह, प्रहृत (दे ३, ५५)।

मंटी स्त्री [दे] छोटा किन्तु ऊँचा केश-कलाप (दे ३, ५३)।

मंडली स्त्री [दे] असती, कुलटा (दे ३, ५४)।

मड्डुअ पुं [दे] वृक्ष-विशेष, पीलु का पेड (दे ३, ५३)।

मड्डुली स्त्री [दे] असती, कुलटा। २ क्रीडा, खेल (दे ३, ६१)।

मंदिय वि [दे] प्रद्रुत, पलायित, भगाया हुआ (पड्)।

मप सक [भ्रम्] घूमना, फिरना। मपइ (हे ४, १६१)।

मप सक [आ + च्छादय्] मॉपना, आच्छादन करना, ढकना। मपइ (पिंग)। संकृ मपिऊण, मपिवि (कुमा, भवि)।

मप सक [आ = क्रामय्] आक्रमण करवाना। मपइ (प्राकृ ७०)।

मपण वि [भ्रमण] भ्रमण-कर्ता (कुप्र ४)।

मपण न [भ्रमण] परिभ्रमण, पर्यटन (कुमा)।

मपणी स्त्री [दे] पक्ष्म, आँख की बरौनी, आँख के बाल (दे ३, ५४, पाअ)।

मंपा स्त्री [झम्पा] एकदम कूदना, झम्पा पात (सुपा १६८)।

मपिअ वि [दे] १ त्रुटित, टूटा हुआ। २ घट्टित, आहत (दे ३, ६१)।

मपिअ वि [आच्छादित] झपा हुआ, बद किया हुआ (पिंग), 'पईवओ मपिओ झत्ति' (महा), 'तओ एव भणमाणस्स सहत्थेणं मपिअं मुहकुहर सुमइस्स णाइलेण' (महानि ४)।

मक्किअ न [दे] वचनीय, लोक-निन्दा (दे ३, ५; भवि)।

मख देखो मख = वि + लप्। वकृ. मखत (जय २३)।

मगड पुं [दे] झगडा, कलह (सुपा ५४६, ५४७)।

मग्गुली स्त्री [दे] अभिसारिका, प्रिय से मिलने के लिए संकेत स्थान पर जानेवाली स्त्री या न्यायिका (विक्र १०१)।

मज्झर पुं [झर्झर] १ वाद्य-विशेष, झाँझ। २ पटह, ढोल। ३ कलि-युग। ४ नद-विशेष (पि २१४)।

मज्झरिय वि [झर्झरित] वाद्य विशेष के शब्द से युक्त (ठा १०)।

मज्झरी स्त्री [दे] दूसरे के स्पर्श को रोकने के लिए चाडाल लोग जो लकडी अपने पास रखते हैं वह (दे ३, ५४)।

झड अक [शद्] १ झडना, पके फल आदि का गिरना, टपकना। २ हीन होना। ३ सक. झपट मारना, गिराना। झडइ (हे ४,१३०)। वकृ. झडत (कुमा)। कवकृ 'वासासु सीयवाएहिं झडिज्जतो' (आव १)। संकृ. 'झडिऊण पल्लविल्ला, पुणोवि जायंति तरुवरा तुरियं। धीराणवि धणरिद्धी, गयावि न हु दुल्लहा एवं' (उप ७२८)।

झडत्ति अ [झटिति] शीघ्र, जल्दी, तुरंत, (उप ७२८ टी, महा)।

झडप्प अ [दे] शीघ्रता, जल्दी (उप पृ ११०, रंभा)।

झडप्प सक [आ + छिद्] झपटना, झपट मारना, छीनना। झडप्पमि (भवि)। संकृ. झडप्पिवि (भवि)।

झडप्पड न [दे] झटपट, झटिति, शीघ्र (हे ४, ३८८)।

झडप्पिअ वि [आच्छिन्न] छीना हुआ (भवि)।

झडि अ [झटिति] शीघ्र, जल्दी, तुरन्त, 'झडि आपल्लवइ पुणो' (गा ९१३)।

झडिअ वि [दे] १ शिथिल, ढीला, सुस्त (गा २३०)। २ श्रान्त, खिन्न, (पड्)। ३ झडा हुआ, गिरा हुआ, 'करच्छडाझडियपक्खिउले' (पउम ९६, १५)।

झडित्ति देखो झडत्ति (सुर २, ४)।

झडिल देखो जडिल (हे १, १९४)।

झडी स्त्री [दे] निरन्तर वृष्टि, झडी, गुजराती में 'झडी' (दे ३, ५३)।

झग सक [जुगुप्स्] घृणा करना। झणइ (पड्)।

झणज्झण अक [झणझणाय्] 'झन-झन' आवाज करना। वकृ झणज्झणत (प्राप)।

झणज्झणिअ वि [झणझणित] 'झन-झन' आवाजवाला (पिंग)।

झणझण देखो झणज्झण। झणझणइ (वज्जा ६६)।

झणझणारव पुं [झणझणारव] 'झन-झन' आवाज (महा)।

ढोइय वि [ढौकित] १ भेंट किया हुआ। २ उपस्थित किया हुआ (महा, सुपा १६८, भवि)।

ढोंघर वि [दे] भ्रमण-शील, घुमक्कड, घूमनेवाला (दे ४, १५)।

ढोयण देखो **ढोवण** (चेइय ५२, कुप्र १६८)।

ढोयणिया स्त्री [ढौकनिका] उपहार, भेंट (धर्मवि ७१)।

ढोल्ल पु [दे] प्रिय, पति (संक्षि ४७, हे ४, ३३०)।

ढोल्ल पुं [दे] १ ढोल, पटह। २ देश विशेष, जिसकी राजधानी धौलपुर है (पिंग)।

ढोवण, **ढोवणय** न [ढौकन, °क] १ भेंट करना, अर्पण करना (कुमा)। २ उपहार, भेंट (सुपा २८०)।

ढोविय वि [ढौकित] उपस्थापित, उपस्थित किया हुआ (स ५०८)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि ढयाराइसद्दसंकलणो एक्कवीसइमो तरंगो समत्तो ॥

ण तथा न

ण पुं [ण, न] व्यञ्जन वर्ण-विशेष, इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है, इससे यह मूर्द्धन्य कहाता है (प्राप, प्रामा)।

ण अ [न] निषेधार्थक अव्यय, नहीं, मत (कुमा, गा २, प्रासू १५६)। °**उण**, °**उणा**, °**उणाइ**, °**उणो** अ [°पुनः] न तु, नहीं कि (हे १, ६५, षड्)। °**संतिपरलोगवाइ** वि [शान्तिपरलोकवादिन्] मोक्ष और परलोक नहीं है ऐसा माननेवाला (ठा ८)।

ण स [तत्] वह (हे ३, ७०, कुमा)।

ण स [इदम्] यह, इस (हे ३, ७७, उप ६६०, गा १३१, १९६)।

ण वि [ज्ञ] जानकार, पण्डित, विचक्षण (कुमा २, ८८)।

णअ देखो **णव** = नव (गा १०००, नाट—चैत ४२)। °**दीअ** पुं [°द्वीप] बंगाल का एक विख्यात नगर, जो न्याय-शास्त्र का केन्द्र गिना जाता है, जिसको आजकल 'नदिया' कहते हैं (नाट—चैत १२६)।

णअच्चर देखो **णत्तचर** (चड)।

णइ स्त्री [नति] १ नमन, नम्रता। २ अवसान, अन्त (राय ४६)।

णइ अ. १ निश्चय सूचक अव्यय, 'गईए णइ' (हे २, १८४, षड्)। २ निषेधार्थक अव्यय, 'नइ माया नेय पिया' (सुर २, २०९)।

णइ° देखो **णई** (गउड, हे २, ९७, गा १६७, सुर १३, ३५)।

णइअ वि [नयिक] नय-युक्त, अभिप्राय-विशेष-वाला (सम ४०)।

णइअ देखो **णी** = नी।

णइमासय न [दे] पानी में होनेवाला फल-विशेष (दे ४, २३)।

णइराय न [नैरात्म्य] आत्मा का अभाव। °**वाद** पुं [°वाद] आत्मा के अस्तित्व को नहीं माननेवाला दर्शन, बौद्ध तथा चार्वाक मत (धर्मसं ११८५)।

णई स्त्री [नदी] नदी, पर्वत आदि से निकला वह स्रोत जो समुद्र या बड़ी नदी में जाकर मिले (हे १, २२९, पाअ)। °**कच्छ** पु [°कच्छ] नदी के किनारे पर की झाड़ी (णाया १, १)। °**गाम** पु [°ग्राम] नदी के किनारे पर स्थित गाँव (प्राप्र)। °**णाह** पुं [°नाथ] समुद्र, सागर (उप ७२८ टी)। °**वइ** पुं [°पति] समुद्र, सागर (पण्ह १, ३)। °**संतार** पुं [°संतार] नदी उतरना, जहाज आदि से नदी पार जाना (राज)। °**सोत्त** पुं [°स्रोतस्] नदी का प्रवाह (प्राप्र, हे १, ४)।

णउ (अप) देखो **इव** (कुमा)।

णउअ न [नयुत] 'नयुतांग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४, इक)।

णउअंग न [नयुताङ्ग] 'प्रयुत' को चौरासी से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४, इक)।

णउइ स्त्री [नवति] संख्या-विशेष, नव्वे, ९० (सम ९४)।

णउइय वि [नवत] ९० वाँ (पउम ९०, ३१)।

णउल पु० [नकुल] १ न्योला, नेवला (पण्ह १, १, जी २२)। २ पाँचवाँ पाण्डव (णाया १, १६)।

णउल पु [नकुल] वाद्य-विशेष (राय ४६)।

णउली स्त्री [नकुली] एक महौषधि (ती ५)।

णउली स्त्री [नकुली] विद्या-विशेष, सर्प-विद्या की प्रतिपक्ष विद्या (राज)।

ण अ [दे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रश्न। २ उपमा (प्राकृ ७९)।

णं अ १ वाक्यालंकार में प्रयुक्त किया जाता अव्यय (हे ४, २८३, उवा, पडि)। २ प्रश्न-सूचक अव्यय, ३ स्वीकार-द्योतक अव्यय (राज)।

ण (शौ) देखो **णणु** (हे ४, २८३)।

णं (अप) देखो **इव** (हे ४, ४४४, भवि, सण, पडि)।

झाम वि [ध्याम] अनुज्ज्वल (पराह १, २—पत्र ४०)।
झामण न [दे] जलाना, आग लगाना प्रदीपनक (वव २)।
झामर वि [दे] वृद्ध, बूढा (दे ३, ५७)।
झामल न [दे] १ आँख का एक प्रकार का रोग, गुजराती मे 'झामरो'। २ वि. झामर रोगवाला (उप ७६८ टी, श्रा १२)।
झामल वि [ध्यामल] श्याम, काला (धर्मसं ८०७)।
झामलिय वि [ध्यामलित] काला किया हुआ (कुप्र ५८)।
झामिअ वि [दे] दग्ध, प्रज्वलित (दे ३, ५६, वव ७, आवम)। २ श्यामलित, काला किया हुआ। ३ कलंकित, 'घणदड्ढपयगाएवि जीए जा झामिओ नेयं' (सार्ध १६)।
झाय वि [ध्मात] भस्मीकृत, दग्ध, जला हुआ (णादि)।
झायव्व देखो झा।
झारुआ स्त्री [दे] चीरी, क्षुद्र जन्तु-विशेष (दे ३, ५७)।
झावण न [ध्मापन] देखो झामण (राज)।
झावणा न [ध्मापना] दाह, जलाना, अग्नि-सस्कार (आवम)।
झावणा देखो अझावणा (संबोध २४)।
झिखण न [दे] गुस्सा करना (उप १४३ टी)।
झिंखिअ न [दे] वचनीय, लोकापवाद, लोक-निन्दा (दे ३, ५५)।
झिंगिर } पु [दे] क्षुद्र कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय
झिंगिरड } जीव की एक जाति, झींगुर या झिल्ली (जीव १)।
झिंझिअ वि [दे] बुभुक्षित, भूखा (वृह ६)।
झिंझिणी } स्त्री [दे] एक प्रकार का पेड,
झिंझिरी } लता-विशेष (उप १०३१ टी, आचा २, १, ८, वृह १)।
झिज्जंत } वि [क्षीयमाण] जो क्षय को
झिज्जमाण } प्राप्त होता हो, कृश होता हुआ (से ५, ५८, ७२८ टी, कुमा)।
झिज्झ अक [क्षि] क्षीण होना। झिज्झइ (प्राकृ ६३)।
झिज्झिरी स्त्री [दे] वल्ली-विशेष (आचा २, १, ८, ३)।
झिण्ण देखो झीण (से १, ३५, कुमा)।
झिमिय } न [दे] शरीर के अवयवो की
झिम्मिय } जडता (आचा)।
झिया देखो झा। झियाइ, झियायइ (उवा, भग, कस, पि ४७९)। वकृ. झियायमाण (णाया १, १—पत्र २८, ६०)।
झिरिड न [दे] जीर्ण कूप, पुराना इनारा (दे ३, ५७)।
झिलिअ वि [दे] झीला हुआ, पकडी हुई वह वस्तु जो ऊपर मे गिरती हो (सुपा १७८)।
झिल्ल अक [स्ना] झीलना, स्नान करना। झिल्लइ (कुमा)।
झिल्लिआ स्त्री [झिल्लिका] कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जीव की एक जाति, झिल्ली (पाअ, पराण १)।
झिल्लिरिआ स्त्री [दे] १ चीही-नामक तृण। २ मशक, मच्छड (दे ३, ६२)।
झिल्लिरी स्त्री [दे] मछली पकडने की एक तरह की जाल (विपा १, ८—पत्र ८५)।
झिल्ली स्त्री [दे] लहरी, तरग (गउड)।
झिल्ली स्त्री [झिल्ली] १ वनस्पति-विशेष (पराण १, उप १०३१ टी)। २ कीट-विशेष, झींगुर (गा ४६४)।
झीण वि [क्षीण] दुर्बल, कृश (हे २, ३, पाअ)।
झीण न [दे] १ अग, शरीर। २ कीट, कीडा (दे ३, ६२)।
झीरा स्त्री [दे] लज्जा, शरम (दे ३, ५७)।
झुंख पु [दे] तुणय नामक वाद्य (दे ३, ५८)।
झुंझिय वि [दे] १ बुभुक्षित, भूखा (पराह १, ३—पत्र ४६)। २ झुरा हुआ, मुरझा हुआ (भग १६, ४)।
झुंझुमुसय न [दे] मन का दुःख (दे ३, ५८)।
झुंटण न [दे] १ प्रवाह (दे ३, ५८)। २ पशु-विशेष, जो मनुष्य के शरीर की गरमीसे जीता है और जिसका रोम कपडे के लिये बहुमूल्य है (उप ५५१)।
झुंपडा स्त्री [दे] झोपडी, तृण कुटीर, तृण-निर्मित घर (हे ४, ४१६, ४१८)।
झुंवणग न [दे] प्रालम्ब (णाया १, १)।
झुज्झ देखो जुज्झ = युध्। झुज्झइ (पि २१४)। वकृ झुज्झंत (हे ४, ३७६)।
झुट्ठ वि [दे] झूठ, अलीक, असत्य (दे ३, ५८)।
झुण सक [जुगुप्स्] घृणा करना, निन्दा करना। झुणइ (हे ४, ४, सुपा ३१८)।
झुणि पुं [ध्वनि] शब्द, आवाज (हे १, ५२, षड्, कुमा)।
झुणिअ वि [जुगुप्सित] निन्दित, घृणित (कुमा)।
झुत्ती स्त्री [दे] छेद, विच्छेद (दे ३, ५८)।
झुमुझुमुसय न [दे] मन का दुःख (दे ३ ५८)।
झुलुक्क पुं [दे] अकस्मात् प्रकाश (आत्मानु ६)।
झुल्ल अक [अन्दोल्] झूलना, डोलना, लटकना। वकृ. झुल्लंत (सुपा ३१७)।
झुल्लण स्त्रीन [दे] छन्द-विशेष। स्त्री. °णा (पिंग)।
झुल्लुरी स्त्री [दे] गुल्म, लता, गाछ (दे ६, ५८)।
झुस देखो झूस। सकृ झूसित्ता (पि २०९)।
झुसणा देखो झूसणा (राज)।
झुसिय देखो झूसिय (वृह २)।
झुसिर न [शुषिर] १ रन्ध्र, विवर, पोल, खाली जगह (णाया १, ८ सुपा ६२०)। २ वि पोला, छूँछा (ठा २, ३, णाया १, २, पराह १, २)।
झूझ देखो जूझ। झूझति (सबोध १८)।
झूर सक [स्मृ] याद करना, चिन्तन करना। झूरइ (हे ४, ७४)। वकृ. झूरत (कुमा)।
झूर सक [जुगुप्स्] निन्दा करना, घृणा करना,
'निरुवमसोहग्गमइ, दिट्ठूण तस्स रूवगुणरिद्धिं। इदो वि देवराया, झूरइ नियमेण नियरूव' (रयण ४)।
झूर अक [क्षि] झुरना, क्षीण होना, सूखना। वकृ. झूरत, झूरमाण (सण, उप पृ २७)।
झूर वि [दे] कुटिल, वक्र, टेढा (दे ३, ५९)।
झूरिय वि [स्मृत] चिन्तित, याद किया हुआ (भवि)।
झूस सक [जुष्] १ सेवा करना। २ प्रीति करना। ३ क्षीण करना, खपाना। वकृ.

आगम ग्रंथ-विशेष (णदि)। ८ वाञ्छा, अभिलाप, चाह (सम ७१)। ९ गान्वार ग्राम की एक मूर्छना (ठा ७)। १० पुं स्वनाम ख्यात एक राजकुमार (विपा १, १)। ११ एक जैन मुनि, जो अपने आगामी भव मे द्वितीय बलदेव होगा (पउम २०, १९०)। १२ वृक्ष-विशेष (पउम २०, ४२)। °आवत्त देखो °यावत्त (इक)। °उड्ढ पु [°वृद्ध] एक प्राचीन कवि का नाम (कप्पू)। °कर, °गर वि [°कर] मगल-कारक (कप्प, णाया १, १)। °गाम पु [°ग्राम] ग्राम-विशेष (उप ६१७, आचू १)। °घोन पु [°घोप] १ वारह प्रकार के वाद्यो की आवाज (णंदि)। २ न देवविमान-विशेष (सम १७)। °चुण्णग न [°चूर्णक] होठ पर लगाने का एक प्रकार का चूर्ण (सूअ १, ४, २)। °तूर न [°तूर्य] एक साथ वजाया जाता वारह तरह का वाद्य (बृह १)। °पुर न [°पुर] साण्डिल्य देश का एक नगर (उप १०३१ टी)। °फल पु [°फल] वृक्ष-विशेष (णाया १, ८, १५)। °भाण न [°भाजन] उपकरण-विशेष (बृह १)। °मित्त पुं [°मित्र] १ देखो णंद-मित्त (राज)। २ एक राजकुमार, जिसने भगवान् मल्लिनाथ के साथ दीक्षा ली थी (णाया १, ८)। °मुइग पु [°मृदङ्ग] एक प्रकार का मृदग, वाद्य-विशेष (राय)। °मुह न [°मुख] पक्षि-विशेष (राज)। °यर देखो °कर (पउम ११८, ११७)। °यावत्त पु [°आवर्त्त] १ स्वस्तिक-विशेष (औप, पण्ह १, ४)। २ एक लोकपाल देव (ठा ४, १)। ३ क्षुद्र जन्तु-विशेष (पएण १)। ४ न. देव-विमान-विशेष (राज)। °राय पु [°राज] पाण्डवो के सम-कालीन एक राजा (णाया १, १६—पत्र २०८)। °राय पु [°राग] समृद्धि मे हर्प (भग २, ५)। °रुक्ख पु [°वृक्ष] वृक्ष-विशेष (पएण १)। °वड्ढणा देखो °वद्धणा (इक)। °वद्धग पु [°वर्धन] १ भगवान् महावीर का ज्येष्ठ भ्राता (कप्प)। २ पक्ष-विशेष (कप्प)। ३ एक राजकुमार (विपा १, ६)। ४ न नगर-विशेष (सुपा ६८)। °वद्धणा स्त्री [°वर्धना] १ एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८)। २ एक पुष्करिणी (ठा ४, २)। °सेण पुं [°षेण] १ ऐरवत वर्ष मे उत्पन्न चतुर्थ जिन-देव (सम १५३)। २ एक जैन कवि (अजि ३८)। ३ एक राज-कुमार (ठा १०)। ४ स्वनाम ख्यात एक जैन मुनि (उव)। ५ देव-विशेष (राज)। °सेणा स्त्री [°षेणा] १ पुष्करिणी-विशेष (जीव ३)। २ एक दिक्कुमारी देवी (दीव)। °सेणिया स्त्री [°षेणिका] राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अत)। °स्सर पु [°स्वर] १ देखो णंदीसर (राज)। २ वारह प्रकार के वाद्यो का एक ही साथ आवाज (जीव ३)।

णंदिअ न [दे] सिंह की चिल्लाहट दहाड (दे ४, १९)।

णंदिअ त्रि [नन्दित] १ समृद्ध (औप) २ जैनमुनि-विशेष (कप्प)।

णंदिक्ख पु [दे] सिंह, मृगेन्द्र (दे ४, १९)।

णंदिघोस पु [नन्दिघोप] वाद्य विशेष (राय ४६)।

णंदिज्ज न [नन्दीय] जैन मुनियो का एक कुल (कप्प)।

णंदिणी स्त्री [नन्दिनी] पुत्री, लडकी (पउम ४९, २)। °पिउ पुं [°पितृ] भगवान् महावीर का एक स्वनाम-ख्यात गृहस्थ उपा-सक (उवा)।

णंदिणी स्त्री [दे] गऊ, गैया, गाय (दे ४, १८, पाअ)।

णंदिल पुं [नन्दिल] आर्यमंगु के शिष्य एक जैनमुनि (णदि ५०)।

णंदिस्सर } पुं [नन्दीश्वर] १ एक द्वीप। २
णंदीसर } एक समुद्र (सुज्ज १९)। ३ एक देव विमान (देवेन्द्र १४४)।

णंदी देखो णंदि (महा, ओघ ३२१ भा, पण्ह १, १, औप, सम १५२, णदि)।

णंदी स्त्री [दे] गऊ, गाय, गैया (दे ४, १८, पाअ)।

णंदीसर पु [नन्दीश्वर] स्वनाम प्रसिद्ध एक द्वीप (णाया १, ८, महा)। °वर पु [°वर] नन्दीश्वर-द्वीप (ठा ४, ३)। °वरोद पुं [°वरोद] समुद्र-विशेष (जीव ३)।

णंदुत्तर पुं [नन्दोत्तर] देव-विशेष, नाग-कुमार के भूतानन्द-नामक इन्द्र के रथ-सैन्य का अधिपति देव (ठा ५, १, इक)। °वडिंसग न [°वतंसक] एक देव-विमान (सम २९)।

णंदुत्तरा स्त्री [नन्दोत्तरा] १ पश्चिम रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८, इक)। २ कृष्णानामक इन्द्राणी की एक राजधानी (जीव ३)। ३ पुष्करिणी-विशेष (ठा ४, २)। ४ राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत ७)।

णकार पु [णकार, नकार] 'ण' या 'न' अक्षर (विसे २८९७)।

णक्क पु [नक्र] १ जलजन्तु-विशेष, ग्राह, नाका (पण्ह १, १, कुमा)। २ रावण का एक स्वनाम ख्यात सुभट (पउम ५६, २८)।

णक्क पुं [दे] १ नाक, नासिका (दे ४, ४६, विपा १, १, औप)। २ वि. मूक, वाचा-वाचा-शक्ति मे रहित, गूँगा (दे ४, ४६)। °सिरा स्त्री [°सिरा] नाक का छिद्र (पाअ)।

णक्कचर पु [नक्तञ्चर] १ राक्षस। २ चोर। ३ विडाल। ४ वि रात्रि मे चलने फिरने-वाला (हे १ १७७)।

णक्ख पुं [नख] नख, नाखून (हे २, ९९; प्राप्र)। °अ वि [°ज] नख से उत्पन्न (गा ९७१)। °आउह पु [°आयुध] सिंह, मृगारि (कुमा)।

णक्खत्त पुन [नक्षत्र] कृत्तिका, अश्विनी, भरणी आदि ज्योतिष्क-विशेष (पाअ, कप्प, इक, सुज्ज १०)। °दमण पुं [°दमन] राक्षस-वश का एक राजा, एक लकेश (पउम ५, २६६)। °मास पु [°मास] ज्योतिष-शास्त्र मे प्रसिद्ध समय-मान-विशेष (वव १)। °मुह न [°मुख] चन्द्र, चांद (राज)। °संवच्छर पु [°संवत्सर] ज्योतिष-शास्त्र प्रसिद्ध वर्ष-विशेष (ठा ६)।

णक्खत्त वि [नक्षत्र] १ क्षत्रिय-जाति के अयोग्य कार्य करनेवाला (धर्मवि ८)। २ पुन एक देव-विमान (देवेन्द्र १४३)।

णक्खत्त वि [नाक्षत्र] नक्षत्र-सम्बन्धी, नक्षत्र का (ज ७)।

णक्खत्तणेमि पु [दे नक्षत्रनेमि] विष्णु, नारायण (दे ४, २२)।

णक्खन्नण न [दे] नख और कण्टक निका-लने का शस्त्र-विशेष (बृह १)।

टक्क पुं [दे] लकड़ी आदि के आघात की आवाज (कुप्र ३०६)।

टट्टइआ स्त्री [दे] जवनिका, परदा (दे ४, १)।

टप्पर वि [दे] विकराल कर्णवाला, भयंकर कानवाला (दे ४, २, सुपा ५२०, कप्पू)।

टमर पुं [दे] केश-चय, बाल-समूह (दे ४, १)।

टयर देखो टगर (कुमा)।

टलटल अक [टलटलाय्] 'टल-टल' आवाज करना। वकृ. टलटलत (प्रासू १६३)।

टलटलिय वि [टलटलित] 'टल-टल' आवाज वाला (उप ६४८ टी)।

टलवल अक [दे] १ तडफडाना, तडपना। २ घबराना, हैरान होना। टलवलति (धर्मवि ३८)। वकृ. टलवलत (सरि ६०८)।

टलिअ वि [दे] टला हुआ, हटा हुआ (सिरि ६८३)।

टसर न [दे] विमोटन, मोड़ना (दे ४, १)।

टसर पुं [त्रसर] टसर, एक प्रकार का सूता (हे १, २०५, कुमा)।

टसरोट्ट न [दे] शेखर, अवतंस (दे ४, १)।

टहरिय वि [दे] ऊँचा किया हुआ, 'टहरिय-कन्नो जाओ मिगुव्व गीइ कहं सोउं (धर्मवि १४७, सम्मत्त १५८)।

टार पु [दे] अधम, अश्व, हठी घोडा (दे ४, २), 'अइसिक्खिओवि न मुणइ, अएाय टारव्व टारत्त' (श्रा २७)। २ टट्टू, छोटा घोडा (उप १५५)।

टाल न [दे] कोमल फल, गुठली उत्पन्न होने के पहले की अवस्था वाला फल (दस ७)।

टिंट° } [दे] देखो टेंटा (भवि)। °साला
टिंटा } स्त्री [°शाला] जुआखाना, जुआ खेलने का अड्डा (सुपा ४६५)।

टिंवरु } पुन [दे] वृक्ष-विशेष, तेंदू का पेड
टिंवरुअ } (दे ४, ३, उप १०३१ टी, पाअ)।

टिंवरुणी स्त्री [दे] ऊपर देखो (पि २१८)।

टिक्क न [दे] १ टीका, तिलक। २ सिर का स्तवक, मस्तक पर रक्खा जाता गुच्छा (दे ४, ३)।

टिक्किद (शौ) वि [दे] तिलक विभूषित (कप्पू)।

टिग्घर वि [दे] स्थविर, वृद्ध, बूढा (दे ४, ३)।

टिट्टिभ पु [टिट्टिभ] १ पक्षि-विशेष, टिटिहरी, टिटिहा। २ जल-जन्तु विशेष (सुर १०, १८५)। स्त्री. °भी (विपा १, ३)।

टिट्टियाव सक [दे] बोलने की प्रेरणा करना, 'टि-टि' आवाज करने को सिखलाना। टिट्टियावेइ (णाया १, ३)। कवकृ. टिट्टिया-वेज्जमाण (णाया १, ३—पव ६४)।

टिप्पणय न [टिप्पनक] विवरण, छोटी टीका (सुपा ३२४)।

टिप्पी स्त्री [दे] तिलक, टीका (दे ४, ३)।

टिरिटिल्ल सक [भ्रम्] घूमना, फिरना, चलना। टिरिटिल्लइ (हे ४, १६१)। वकृ. टिरिटिल्लत (कुमा)।

टिल्लिक्किय वि [दे] विभूपित (धर्मवि ५१)।

टिविडिक्क सक [मण्डय्] मण्डित करना, विभूषित करना। टिविडिक्कइ (हे ४, ११५, कुमा)। वकृ. टिविडिक्कत (सुपा २८)।

टिविडिक्किअ वि [मण्डित] विभूपित, अलकृत (पाअ)।

टुंट वि [दे] छिन्न-हस्त, जिसका हाथ कटा हुआ हो वह (दे ४, ३, प्रासू १४२, १४३)।

टुंटुण्ण अक [टुण्टुणाय्] 'टुन टुन' आवाज करना। वकृ टुंटुण्णत (गा ६८५, काप्र ६६५)।

टुवय पुं [दे] आघात-विशेष, गुजराती में 'ठुवो' (सुर १२, ६७)।

टुट्ट अक [त्रुट्] टूटना, कट जाना। टुट्टइ (पिंग)। वकृ टुट्टत (से ६, ६३)।

टुप्परग न [दे] जैन साधु का एक छोटा पात्र (कुलक ११)।

टूवर पु [तूवर] १ जिसको दाढ़ी-मूंछ न उगी हो ऐसा चपरासी। २ जिसने दाढ़ी-मूँछ कटवा दी हो ऐसा प्रतिहार (हे १, २०५, कुमा)।

टेंट पुं [दे] १ मध्य-स्थित मणि-विशेष। वि. भीषण (कप्पू)।

टेंटा स्त्री [दे] जुआखाना, जुआ खेलने का अड्डा (दे ४, ३)।

टेंटा स्त्री [दे] १ अक्षि-गोलक। २ छाती का शुष्क व्रण (कप्पू)।

टेंवरूय न [दे] फल-विशेष (आचा २, १, ८, ६)।

टेक्कर न [दे] स्थल, प्रदेश (दे ४, ३)।

टोकण } न [दे] दारू नापने का बरतन
टोकणखड } (दे ४, ४)।

टोपिआ स्त्री [दे] टोपी, सिर पर रखने का सिला हुआ एक प्रकार का वस्त्र (सुपा २६३)।

टोप्प पुं [दे] श्रेष्ठि-विशेष (स ४५१)।

टोप्पर पुंन [दे] शिरस्त्राण विशेष, टोपी (पिंग)।

टोल पु [दे] १ शलभ, जन्तु-विशेष। २ पिशाच (दे ४, ४, प्रासू १६२)। °गइ स्त्री [°गति] गुरु-वन्दन का एक दोष (पव २)। °गइ स्त्री [°कृति] प्रशस्त आकारवाला (राज)।

टोल पु [दे] १ टिड्डी, टिड्डी (पव २)। २ यूथ (कुप्र ५८)।

टोलंब पुं [दे] मधूक, वृक्ष-विशेष, महुआ का पेड (दे ४, ४)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि टयाराइसद्दसकलणो
अट्ठारहमो तरगो समत्तो ॥

णडी स्त्री [नटी] १ नट की स्त्री (गा ६, ठा ६)। २ लिपि विशेष (विसे ४६४ टी)। ३ नाचनेवाली स्त्री (बृह ३)।

णडुली स्त्री [दे] कच्छप, कछुआ (दे ४,२०)।

णडूल न [नड्डुल] १ नगर विशेष (मोह ८८)। २ पुं देश-विशेष (ती १५)।

णड्डुरी स्त्री [दे] भेक, मेढक, बेंग (दे ४,२०)।

णड्डुल न [दे] १ रत, मैथुन। २ दुर्दिन, मेघाच्छन्न दिवस (दे ४, ४७)।

णड्डुली देखो णडुली (दे ४, २०)।

णणंदा स्त्री [ननान्द] पति की बहिन, ननद (षड्, हे ३, ३५)।

णणु अ [ननु] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ अवधारण, निश्चय (प्रासू १६१, निचू १)। २ आशंका। ३ वितर्क। ४ प्रश्न (उव, सण, प्रति ५५)।

णण्ण पुं [दे] १ कूप, कुआँ। २ दुर्जन, खल। ३ बडा भाई (दे ४, ४६)।

णत्त न [नक्त] रात्रि, रात (चद १०)।

णत्त देखो णत्तु, 'अकनिवेसियनियनियपुत्तपडिपुत्तनत्तपुत्तीय' (सुपा ६)।

णत्तचर देखो णक्कचर (कुमा, पि १७०)।

णत्तण न [नर्तन] नाच, नृत्य (नाट—शकु ८०)।

णत्ति स्त्री [ज्ञप्ति] ज्ञान (धर्मसं ८२८, णदि ६७ टी)।

णत्तिअ पु [नप्तृक] १ पौत्र, पुत्र का पुत्र पोता। २ दौहित्र, पुत्री का पुत्र, नाती (हे १, १३७, कुमा)।

णत्तिआ, णत्ती } स्त्री [नप्त्री] १ पुत्र की पुत्री, पौत्री (कुमा)। २ पुत्री की पुत्री, नातिन, नतिनी (राज)।

णत्तु, णत्तुअ } पुं [नप्तृ, °क] देखो णत्तिअ (निर २, १, हे १, १३७, सुपा १६२, विपा १, ३)।

णत्तुआ देखो णत्तिआ (बृह १, विपा १,३)।

णत्तुइणी स्त्री [नप्तृकिनी] १ पौत्र की स्त्री। २ दौहित्र की स्त्री (विपा १, ३)।

णत्तुई देखो णत्ती (विपा १, ३, कप्प)।

णत्तुणिअ पु [नप्तृ] १ पौत्र, पोता। २ प्रपौत्र, परपोता (दस ७, १८)।

णत्तुणिआ देखो णत्तिआ (दस ७, १५)।

णत्थ वि [न्यस्त] स्थापित, निहित (णाया १, १, ३, विसे ९१६)।

णत्थण न [दे] नाक में छिद्र करना (सुर १४, ४१)।

णत्था स्त्री [दे] नासा-रज्जु, नाथा या नाथ (दे ४, १७, उवा)।

णत्थि अ [नास्ति] अभाव-सूचक अव्यय (कप्प, उवा, सम्म ३९)।

णत्थिअ वि [नास्तिक] १ परलोक आदि नही माननेवाला (प्रारू)। २ पुं नास्तिक-मत का प्रवर्त्तक, चार्वाक। °वाय पुं. [°वाद] नास्तिक-दर्शन (उप १३२ टी)।

णत्थियवाइ वि [नास्तिकवादिन्] आत्मा आदि के अस्तित्व को नही माननेवाला (धर्मवि ४)।

णद सक [नद्] नाद करना, आवाज करना। वक्र णदत (सम ५०, नाट—मृच्छ १५५)।

णद पु [नद] नाद, आवाज, शब्द, 'गद्दहेव्व गवा मज्भे विस्सर नयई नद' (सम ५०)।

णदी देखो णई (से ६, ६५, पएण ११)।

णद्दिअ वि [दे] दुःखित (दे ४, २०)।

णद्दिअ न [नर्दित] घोष, आवाज, शब्द (राज)।

णद्ध वि [नद्ध] १ परिहित, आच्छादित (गा ५२०, पउम ७,६२, सुपा ३५५)। २ नियन्त्रित, बँधा हुआ (सुपा ३५५)।

णद्ध वि [नद्ध] कवचित, वर्मित (धर्मवि ४)।

णद्ध वि [दे] आरूढ (दे ४, १८)।

णद्धंवव्य न [दे] १ अघृणा, घृणा या घिन का अभाव। २ निन्दा (दे ४, ४७)।

णपहुत्त वि [अप्रभूत] अपर्याप्त, अपरिपूर्ण, यथेष्टरहित (गउड)।

णपहुप्पत वि [अप्रभवत्] अपर्याप्त होता (गउड)।

णपुंस, णपुंसग, णपुंसय } पुन [नपुंसक] नपुंसक, क्लीव, नामर्द, षड (ओघ २१, श्रा १६, ठा ३, १, सम ३७, महा)। °वेय पुं [°वेद] कर्म-विशेष, जिसके उदय से स्त्री और पुरुष दोनो के स्पर्श की वाञ्छा होती है (ठा ६)।

णप्प सक [ज्ञा] जानना। णप्पइ (प्राप्र)।

णभ देखो णह = नभस् (हे १, १८७, कुमा, वसु)।

णभसूरय पु [नभःशूरक] कृष्ण पुद्गल-विशेष, राहु (सुज्ज २०)।

णम सक [नम्] नमन करना, प्रणाम करना। णमामि (भग)। वकृ. णमत, णममाण (पि ३६७, आचा)। कवकृ. णमिज्जंत (से ६, ३५)। संकृ णमिऊण, णमिऊणं, णमेऊण (जो १, पि ५८५, महा)। कृ. णमणिज्ज, णमियव्व (रयण ४६, उप २११ टी, पउम ६६, २१)। संकृ णमिअ (कम्म ४, १)।

णमंस सक [नमस्य्] नमन करना, नमस्कार करना। णमंसइ (भग)। वकृ. णमंसमाण (णाया १, १, भग)। संकृ णमंसित्ता (ठा ३, १, भग)। हेकृ. णमंसित्तए (उवा)। कृ णमंसणिज्ज, णमंसियव्व (औप, सुपा ६३८, पउम ३५, ४६)।

णमंसण न [नमस्यन] नमन, नमस्कार (अजि ५, भग)।

णमंसणआ, णमंसणा } स्त्री [नमस्यना] प्रणाम, नमस्कार (भग, सुपा ६०)।

णमंसिय वि [नमस्यित] जिसको नमन किया गया हो वह (पएह २, ४)।

णमक्कार देखो णमोक्कार (गउड, पि ३०६)।

णमण न [नमन] प्रणति, प्रणाम, नमना (दे ७, १६, रयण ४६)।

णमसिअ न [दे] उपयाचितक, मनौती (दे ४, २२)।

णमि पु [नमि] १ स्वनाम-ख्यात एक्कीसवें जिन-देव (सम ४३)। २ स्वनाम-प्रसिद्ध राजर्षि (उत्त ३६)। भगवान् ऋषभदेव का एक पौत्र (धरण १४)।

णमिअ वि [नत] प्रणत, जिसने नमन किया हो वह, 'पडिवक्खरायाणो तस्स राइणो नमिया' (महा)।

णमिअ वि [नमित] नमाया हुआ (गा ६६०)।

णमिअ देखो णम।

ठाणग न [स्थानक] शरीर की चेष्टा-विशेष (पचा १८, १५)।

ठाणि वि [स्थानिन्] स्थानवाला, स्थान-युक्त (सूत्र १, २, उव)।

ठाणिज्ज देखो ठा।

ठाणिज्ज वि [दे] १ गौरवित, सम्मानित (दे ४, ५)। २ न. गौरव (षड्)।

ठाणुक्कडिय } वि [स्थानोत्कटुक] १ उत्क-
ठाणुक्कुडुय } टुक आसनवाला (पण्ह २, १, भग)। २ न. आसन-विशेष (इक)।

ठाणु देखो खाणु। °खंड न [°खण्ड] १ स्थाणु का अवयव। २ वि. स्थाणु की तरह ऊँचा और स्थिर रहा हुआ, स्तम्भित शरीर-वाला (णाया १, १—पत्र ६६)।

ठाम } (अप)। देखो ठाण (पिंग, सण)।
ठाय }

ठाय पुं [स्थाय] स्थान, आश्रय (सुख २, १७)।

ठाव सक [स्थापय्] स्थापन करना, रखना। ठावइ, ठावेइ (पि ५५३, कप्प, महा)। वकृ. ठावंत, ठाविंत (चउ २०, सुपा ८८)। संकृ. ठावइत्ता, ठावेत्ता (कस; महा) कृ. ठाएयव्व (सुपा ५४५)।

ठावण न [स्थापन] स्थापन, धारण (पंचा १३)।

ठावणया } देखो ठवणा (उप ६८६ टी, ठा
ठावणा } १, बृह ५)।

ठावय [स्थापक] स्थापन करनेवाला (णाया १, १८, सुपा २३४)।

ठावर वि [स्थावर] रहनेवाला, स्थायी (अच्चु १३)।

ठाविअ वि [स्थापित] स्थापित, रखा हुआ (ठा ३, १, श्रा १२, महा)।

ठावित्तु वि [स्थापयितृ] ऊपर देखो (ठा ३, १)।

ठिअअ न [दे] ऊर्ध्व, ऊँचा (दे ४, ६)।

ठिइ स्त्री [स्थिति] १ व्यवस्था, क्रम, मर्यादा, नियम, 'जयट्ठिई एसा' (ठा ४, १, उप ७२८ टी)। २ स्थान, अवस्थान (सम २)। ३ अवस्था, दशा (जी ४८)। ४ आयु, उम्र, काल-मर्यादा (भग १४, ५, नव ३१, पण्ण ४, औप)। °क्खय पुं [°क्षय] आयु का क्षय, मरण (विपा २, १)। °पडिया देखो °वडिया (कप्प)। °बंध पुं [°बन्ध] कर्म-बन्ध की काल-मर्यादा (कम्म ४, ८२)। °वडिया स्त्री [°पतिता] पुत्र-जन्म-सम्बन्धी उत्सव-विशेष (णाया १, १)।

ठिक्क न [दे] पुरुष-चिह्न (दे ४, ५)।

ठिक्करिआ स्त्री [दे] ठिकरी, घड़ा का टुकड़ा (श्रा १४)।

ठिय वि [स्थित] १ अवस्थित (ठा २, ४)। २ व्यवस्थित, नियमित (सूत्र १, ६)। ३ खड़ा (भग ६, ३३)। ४ निषण्ण, बैठा हुआ (निचू १, प्राप्र, कुमा)।

ठिर देखो थिर (अच्चु १, गा १३१ अ)।

ठिविअ न [दे] १ ऊर्ध्व, ऊँचा। २ निकट, समीप। ३ हिक्का, हिचकी (दे ४, ६)।

ठिव्व सक [वि + घुट्] मोड़ना। संकृ. ठिव्विऊण (सुपा १६)।

ठीण वि [स्त्यान] १ जमा हुआ (घृत आदि) (कुमा)। २ ध्वनि-कारक, आवाज करने-वाला। ३ न जमाव। ४ आलस्य। ५ प्रति-ध्वनि (हे १, ७४, २, ३३)।

ठुंठ पुन [दे] ठूँठा, ठूँठ, स्थाणु (ज १)।

ठुक्क सक [हा] त्याग करना। ठुक्कइ (प्राकृ ६३)।

ठेर पुस्त्री [स्थविर] वृद्ध, बूढ़ा (गा ८८३ अ, पि १६६),

'पउरजुवाणो गामो, महुमासो
जोअणं पई ठेरो।
जुण्णसुरा साहीणा, असई
मा होउ किं मरउ?'

(गा १९७)। स्त्री. °री (गा ६५४ अ)।

ठोड पुं [दे] १ जोतिषी, दैवज्ञ। २ पुरोहित (सुपा ५५२)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि ठयाराइसद्दसकलणो
एगूणवीसइमो तरंगो समत्तो ॥

ड

ड पुं [ड] मूर्द्ध-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्रामा, प्राप)।

डओयर न [दकोदर] पेट का रोग-विशेष, जलोदर (निचू १)।

डंक पु [दे] १ डक, वृश्चिक (विच्छू) आदि का काँटा (पण्ह १,१)। २ दंश-स्थान, जहाँ पर वृश्चिक आदि डसा हो; 'जह सव्वसरीरगयं विस निरुंभित्तु डंकमाणिति' (सुपा ६०६)।

डंकिय देखो डक्क = दष्ट (वै ८६)।

डंगा स्त्री [दे] डाँग, लाठी, यष्टि (सुपा २३८, ३८८, ५४६)।

डंड देखो दंड (हे १, १२७, प्राप्र)।

डंड न [दे] वस्त्र के सीए हुए टुकड़े (दे ४,७)।

डंडगा स्त्री [दण्डका] दक्षिण देश का एक प्रसिद्ध अरण्य—जंगल (सुख)।

डंडय पुं [दे] रथ्या, महल्ला (दे ४, ८)।

डंडारण्ण न [दण्डारण्य] दक्षिण का एक

णराच } पुंन [नाराच] १ लोहमय बाण। णराअ } २ संहनन-विशेष, शरीर की रचना का एक प्रकार (हे १, ६७)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)।

णरायण पुं [नारायण] श्रीकृष्ण, विष्णु (पिंग)।

णरिंद पुं [नरेन्द्र] १ राजा, नरेश (सम १५३, प्रासू १०७, कप्प)। २ गारुडिक, सर्प के विष को उतारनेवाला (स २१६)। °कन न [°कान्त] देव-विमान-विशेष (सम २२) °पह पु [°पथ] राज-मार्ग, महापथ (पउम ७६, ८)। °वसह पु [°वृषभ] श्रेष्ठ राजा (उत्त ६)।

णरिंदुत्तरवडिंसग न [नरेन्द्रोत्तरावतंसक] देव-विमान-विशेष (सम २२)।

णरीस पु [नरेश] राजा, नरपति, 'सो भरहद्धनरीसो होही पुरिसो न सदेहो' (सुर १२, ८०)।

णरीसर पु [नरेश्वर] राजा, नरपति (अजि ११)।

णरुत्तम पुं [नरोत्तम] श्रीकृष्ण (सिरि ४२)।

णरुत्तम पु [नरोत्तम] उत्तम पुरुष (पउम ४८, ७५)।

णरेंद देखो णरिंद (पि १५६, पिंग)।

णरेसर देखो णरीसर (उप ७२८ टी, सुपा ५५, ५६१)।

णल न [नड] तृण-विशेष, भीतर से पोला शराकार तृण (हे २, २०२, ठा ८)।

णल न [नल] १ ऊपर देखो (पराण १, उप १०३१ टी, प्रासू ३३)। २ पुं राजा रामचन्द्र का एक सुभट (से ८,१८)। ३ वैश्रमण का एक स्वनाम-ख्यात पुत्र (अत ५)। °कुब्बर, °कूवर पु [°कूवर] १ दुर्लंघपुर का एक स्वनाम-ख्यात राजा (पउम १२, ७२)। २ वैश्रमण का एक पुत्र (आवम)। °गिरि पु [°गिरि] चण्डप्रद्योत राजा का एक स्वनाम-ख्यात हाथी (महा)।

णलय न [दे] उशीर, खस का तृण (दे ४, १६, पाअ)।

णलाड देखो णडाल (हे २, १२३, कुमा)।

णलाडतव वि [ललाटन्तप] ललाट को तपानेवाला (कुमा)।

णलिअ न [दे] गृह, घर, मकान (दे ४, २०, षड्)।

णलिण न [नलिन] १ लगातार तेईस दिन का उपवास (सबोध ५८)। २ पुन. एक देव-विमान (देवेन्द्र १३२)।

णलिण न [नलिन] १ रक्त कमल (राय, सद १०, पाअ)। २ महाविदेह वर्ष का एक विजय, प्रदेश-विशेष (ठा २, ३)। ३ 'नलिनाग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो सख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४, इक)। ४ देव-विमान विशेष (सम ३३, ३५)। ५ रुचक पर्वत का एक शिखर (दीव)। °कूड पु [°कूट] वक्षस्कार-पर्वत-विशेष (ठा २, ३)। °गुम्म न [°गुल्म] १ देव-विमान-विशेष (सम ३५)। २ नृप-विशेष (ठा ८)। ३ अध्ययन-विशेष (आव ४)। ४ राजा श्रेणिक का एक पुत्र (राज)। °वई स्त्री [°वती] विदेह वर्ष का एक विजय, प्रदेश विशेष (ठा २, ३)।

णलिणग न [नलिनाङ्ग] सख्या-विशेष, पद्म को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४, इक)।

णलिणि° } स्त्री [नलिनी] कमलिनी, पद्मिनी णलिणी } (पाअ, णाया १, १)। °गुम्म देखो णलिण-गुम्म (निर २, १, विमे)। °वण न [°वन] उद्यान-विशेष (णाया २)।

णलिणोदग पु [नलिनोदक] समुद्र-विशेष (दीव)।

णल्हय न [दे] १ वृति विवर, वाड का छिद्र। २ प्रयोजन। ३ निमित्त, कारण। ४ त्रि कर्दमित, कीचवाला (दे ४, ४६)

णव देखो णम। णवइ (षड्, हे ४, १५८, २२६)।

णव वि [नव] नया, नूतन, नवीन (गउड, प्रासू ७१)। °वहुया, °वहू स्त्री [°वधू] नवोढा, दुलहिन (हेका ५१, सुर ३, ५२)।

णव त्रि व [नवन्] सख्या-विशेष, नव, ९ (ठा ९)। °इ स्त्री [°ति] सख्या-विशेष नव्वे, ९० (सण)। °ग न [°क] नव का समुदाय (दे ३८)। °जोयणिय वि [°योजनिक] नव योजन का परिमाणवाला (ठा ९)। °णउइ, °नउइ स्त्री [°नवति] संख्या-विशेष, निन्यानवे, ९९ (सम ९९, १००)। °नउय वि [°नवत] ९९ वाँ (पउम ९९, ७५)। °नवइ देखो °णउइ (कम्म २, ३०)। °नवमिया स्त्री [°नवमिका] जैन साधु का व्रत-विशेष (सम ८८)। °म वि [°म] नववाँ (उवा)। °मी स्त्री [°मी] तिथि-विशेष, पक्ष का नववाँ दिवस (सम २९)। °मीपक्ख पु [°मीपक्ष] आठवाँ दिन, अष्टमी (ज ३)।

णवकार देखो णमोक्कार (सट्टि १, चैत्य ३०, मण)।

णवकारसी स्त्री [नमस्कारसहित] प्रत्याख्यान-विशेष, व्रत-विशेष (सबोध ५७)।

णवल्ल (अप) वि [नव] अनोखा, नूतन, नया (हे ४, ४२२)। स्त्री °ल्ली (हे ४, ४२०)।

णवणीअ पुंन [नवनीत] नयनू मक्खन, मसका (कप्प औप, प्रामा), 'अणलहओव्व नवणीओ' (पउम ११८, २३)।

णवणीइया स्त्री [नवनीतिका] वनस्पति-विशेष (पराण १)।

णवपय न [नवपद] नमस्कार-मन्त्र (सिरि ५७६)।

णवमालिया स्त्री [नवमालिका] पुष्प-प्रधान वनस्पति-विशेष, वसती नेवारी, नेवार (कप्प)।

णवमिया स्त्री [नवमिका] १ रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८)। २ सत्पुरुष-नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १)। ३ शक्रेन्द्र की एक पटरानी (ठा ८)।

णवय देखो णव-ग (पचा १७, ३०)।

णवय देखो णवय (णाया १, १७)।

णवयार देखो णवकार (पंचा १, पि ३०६)।

णवर सक [कथ्] कहना। कर्म णवरिज्जइ (प्राकृ ७७)।

णवर } अ १ केवल, सिर्फ फक्त (हे २,१८७, णवरं } कुमा, षड् उवा; सुपा ८, जी २७, गा १५)। २ अनन्तर, बाद मे (हे २, १८८, प्राप्र)।

णवरंग } पुं [नवरङ्ग, °क] १ नूतन रंग, णवरंगय } नया वर्ण (सुर ३, ५२)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। ३ कौसुम्भ रंग का वस्त्र (गउड, गा २४१, सुर ३, ५२, पाअ)।

डाग पुंन [दे] भाजी, पत्राकार तरकारी (भग ७, १०२, दसा १, पव २)।
डाग न [दे] डाल, शाखा (आचा २,१०,२)।
डागिणी देखो डाइणी (१, ३, ४)।
डामर वि [डामर] भयंकर, 'डमडमियडमरुया-डोवडामरो' (सुपा १५१)। २ पुं. स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि (पउम २०, २१)।
डामरिअ वि [डामरिक] लड़ाई करनेवाला, विग्रह-कारक (पण्ह १, २)।
डाय न [दे] देखो डाग (राज)।
डायाल न [दे] हर्म्य-तल, प्रासाद भूमि, छत (आचा २, २, १)।
डाल स्त्रीन [दे] १ डाल, शाखा, टहनी (सुपा १४०, पचा १६, हे ४, ४४५)। २ शाखा का एक देश (आचा २, १, १०)। स्त्री. °ला (महा, पाथ, वज्जा २६), °ली (दे ४, ६, पच्च १०, सण, निचू १)।
डाव पु [दे] वाम हस्त, बाँया हाथ, गुजराती मे 'डावो' (दे ४, ६)।
डाह देखो दाह (हे १, २१७, गा २२६, ५३५, कुमा)।
डाहर पु [दे] देश-विशेष (पिंग)।
डाहाल पु [दे] देश-विशेष (सुपा २६३)।
डाहिण देखो दाहिण (गा ७७७, पिंग)।
डिअली स्त्री [दे] स्थूणा, खम्भा, खूँटी (दे ४, ६)।
डिंडव वि [दे] जल में पतित (षड्)।
डिंडि पुं [दण्डिन्] राजकर्मचारी-विशिष्ट अधिकार-संपन्न (भव० वृ० कथा पत्र-४७०, श्लोक ४)।
डिंडिम न [डिण्डिम] डुगडुगी, डुग्गी, वाद्य-विशेष (सुर ६, १८१)।
डिंडिम न [डिण्डिम] कांसे का पात्र (आचा २, १, ११, ३)।
डिंडिल्लिअ न [दे] १ खलि-खचित वस्त्र, तैल-किट्ट से व्याप्त कपड़ा। २ स्खलित हस्त (दे ४, १०)।
डिंडि स्त्री [दे] सिले हुए वस्त्र खण्ड (दे ४, ७)। °वध पु [°वन्ध] गर्भ-संभव (निचू ११)।
डिंडीर पुंन [डिण्डीर] समुद्र का फेन, समुद्र-कफ (उप ७२८ टी, सुपा २२२)।
डिंडुयाण न [डिण्डुयाण] नगर-विशेष (कुप्र १८)।
डिंफिअ वि [दे] जल-पतित, पानी में गिरा हुआ (दे ४, ६)।
डिंब पुंन [डिम्ब] १ भय, डर (से २, १६)। २ विघ्न, अन्तराय (णाया १, १—पत्र ६, औप)। ३ विप्लव, डमर (ज २)।
डिंब पुं [डिम्ब] शत्रु-सैन्य का भय, पर-चक्र का भय (सूअ २, १, १३)।
डिंभ अक [स्रस्] १ नीचे गिरना। २ ध्वस्त होना, नष्ट होना। डिंभइ (हे ४,१६७, षड्)। वकृ डिंभंत (कुमा ७, ४२)।
डिंभ पुंन [डिम्भ] बालक, बच्चा, शिशु (पाअ, हे १, २०२, महा, सुपा १६), 'अह दुक्खियाइ तह भुक्खियाइजह चिंतियाई डिंभाइ' (विवे १११)।
डिंभिया स्त्री [डिम्भिका] छोटी लड़की (णाया १, १८)।
डिक्क अक [गर्ज्] साँढ का गरजना। डिक्कइ (षड्)।
डिड्डुर पुं [दे] भेक, मण्डूक, मेढक, बेंग (दे ४, ६)।
डित्थ पुं [डित्थ] १ काष्ठ का बना हुआ हाथी। २ पुरुष-विशेष, जो श्याम, विद्वान्, सुन्दर, युवा और देखने में प्रिय हो ऐसा पुरुष (भास ७७)।
डिप्प अक [दीप्] दीपना, चमकना। डिप्पइ, डिप्पए (षड्)।
डिप्प अक [वि + गल्] १ गल जाना, सड़ जाना। २ गिर पड़ना। डिप्पइ, डिप्पए (षड्)।
डिमिल न [दे] वाद्य-विशेष (विक्र ८७)।
डिल्ली स्त्री [दे] जल-जन्तु-विशेष (जीव १)।
डिव सक [डिप्] उल्लङ्घन करना। डिव (वव १)।
डीण वि [दे] अवतीर्ण (दे ४, १०)।
डीणोवय न [दे] उपरि, ऊपर (दे ४, १०)।
डीर न [दे] कन्दल, नवीन अंकुर (दे ४,१०)।
डुंगर पुं [दे] शैल, पर्वत, गुजराती में 'डुंगर' (दे ४, ११, हे ४, ४४५, जं २)।
डुघ पु [दे] नारियल का बना हुआ पात्र-विशेष, जो पानी निकालने के काम में आता है (दे ४, ११)।
डुडुअ पुं [दे] १ पुराना घण्टा (दे ४, ११)। २ फटा घण्टा (गा १७२)।
डुडुक्का स्त्री [दे] वाद्य-विशेष (विक्र ८७)।
डुडुल्ल अक [भ्रम्] घूमना, फिरना, चक्कर लगाना। डुडुल्लइ (षड्)।
डुंब पुं [दे] डोम, चाण्डाल, श्वपच (दे ४, ११, २, ७३, ७, ७६)। देखो डोंब (पव ६)।
डुज्जय न [दे] कपड़े का छोटा गट्ठा, वस्त्र-खण्ड, 'खिविउं वयणम्मि डुज्जय अहयं, वद्धा रुक्खस्स घुडे' (सुपा ३६६)।
डुल अक [दोलय्] डोलना, काँपना, हिलना। डुलइ (पिंग)।
डुलि पु [दे] कच्छप, कछुआ (उप पृ १३६)।
डुहुडुहुडुह अक [डुहडुहाय्] 'डुह-डुह' आवाज करना, नदी के वेग का खलखलाना। वकृ 'डुहुडुहुडुहुहंतनइसलिल' (पउम ६४, ४३)।
डेकुण पु [दे] मत्कुण, खटमल, क्षुद्र कीट-विशेष (षड्)।
डेड्डुर पु [दे] दर्दुर, भेक, मण्डूक, मेढक, बेंग (षड्)।
डेर वि [दे] केकटाक्ष, नीची-ऊँची आँखवाला (पिंग)।
डेव सक [डिप्] उल्लङ्घन करना, कूद जाना, अतिक्रमण करना। वकृ. डेवमाण (राज)।
डेवण न [डिपन] उल्लंघन, अतिक्रमण (ओघ ३६)।
डोअ पु [दे] काष्ठ का हाथा, दाल, शाक आदि परोसने का काष्ठ पात्र-विशेष, गुजराती मे 'डोयो' (दे ४, ११, महा)।
डोअण न [दे] लोचन, आँख (दे ४, ६)।
डोंगर देखो डुंगर (ओघभा २० टी)।
डोंगिली स्त्री [दे] १ ताम्बूल रखने का भाजन विशेष। २ ताम्बूलिनी, पान बेचनेवाले की स्त्री, तमोलिन (दे ४, १२)।
डोंगी स्त्री [दे] १ हस्तबिम्ब, स्थासक। २ पान रखने का भाजन विशेष (दे ४, १३)।
डोंब पु [दे] १ म्लेच्छ देश-विशेष। २ एक

णाइ (अप) देखो इव (कुमा)।

णाइ (अप) नीचे देखो (भवि)।

णाइ देखो ण = न (हे २, १९०, उवा)।

णाइणी (अप) स्त्री [नागी] नागिन, सर्पिणी (भवि)।

णाइत्त } पुं [दे] जहाज द्वारा व्यापार
णाइत्तग } करनेवाला सौदागर (उप पृ १०१, उप ५६२)।

णाइय वि [नादित] १ उक्त, कथित, पुकारा हुआ (णाया १, १; औप)। २ न आवाज, शब्द (णाया १, १)। ३ प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि (राय)।

णाइल पु [नागिल] १ स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि (कप्प)। २ जैन मुनियो का एक वश (पउम ११८ ११७)। ३ एक श्रेष्ठी (महानि ४)।

णाइला } स्त्री [नागिला] जैन मुनियो की
णाइली } एक शाखा (कप्प)।

णाइल्ल देखो णाइल (विचार ५३४)।

णाइव वि [ज्ञातिमत्] स्वजन-युक्त, नातेदार (उत्त ४)।

णाउ वि [ज्ञातृ] जानकार, जाननेवाला (द्र ६)।

णाउड्ड पु [दे] १ सद्भाव, सन्निष्ठा। २ अभिप्राय। ३ मनोरथ, वाञ्छा (दे ४, ४७)।

णाउल्ल वि [दे] गोमान्, जिसके पास अनेक गैया हो (दे ४, २३)।

णाउ
णाऊण } देखो णा = ज्ञा।
णाऊण

णाग पुंन [नाक] स्वर्ग, देवलोक (उप ७१२)।

णाग पु [नाग] १ सर्प, साँप (पउम ८, १७८)। २ भवनपति देवो की एक अवान्तर जाति, नाग-कुमार देव (णदि)। ३ हस्ती, हाथी (औप)। ४ वृक्ष-विशेष (कप्प)। ५ स्वनाम-ख्यात एक गृहस्थ (अत ४)। ६ एक प्रसिद्ध वश। ७ नाग-वश मे उत्पन्न (राज)। ८ एक जैन आचार्य (कप्प)। ९ स्वनाम-ख्यात एक द्वीप। १० एक समुद्र (सुज्ज १९)। ११ वक्षस्कार-पर्वत विशेष (ठा २, ३)। १२ न. ज्योतिष-प्रसिद्ध एक स्थिर करण (विसे ३३५०)। °कुमार पुं [°कुमार] भवनपति देवो की एक अवान्तर जाति (सम ६६)। °केसर पु [°केसर] पुष्प-प्रधान वनस्पति-विशेष (राज)। °ग्गह पुं [°ग्रह] नाग देवता के आवेश से उत्पन्न ज्वर आदि (जीव ३)। °जण्ण, °जन्न पु [°यज्ञ] नाग पूजा, नाग देवता का उत्सव (णाया १, ८)। °ज्जुण पु [°र्जुन] एक स्वनाम-ख्यात जैत आचार्य (णदि)। °दंत पु [°दन्त] खूँटी (जीव ३)। °दत्त पुं [°दत्त] १ एक स्वनाम-ख्यात राज पुत्र (ठा ३, ४, सुपा ५३५)। २ एक श्रेष्ठि-पुत्र (आक)। °पइ पुं [°पति] नाग कुमार देवो का राजा, नागेन्द्र (औप)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (पउम २०, १०)। °बाण पु [°बाण] दिव्य अस्त्र-विशेष (जीव ३)। °भद्द पु [°भद्र] नाग द्वीप का अधिष्ठाता देव (सुज्ज १९)। °भूय न [°भूत] जैन मुनियो का एक कुल (कप्प)। °महाभद्द पु [°महाभद्र] नागद्वीप का एक अधिष्ठायक देव (सुज्ज १९)। °महावर पुं [°महावर] नाग समुद्र का अधिपति देव (सुज्ज १९, इक)। °मित्त पु [°मित्र] स्वनाम ख्यात एक जैन मुनि, जो आर्य महागिरि के शिष्य थे (कप्प)। °राय पु [°राज] नागकुमार देवो का स्वामी, इन्द्र-विशेष (पउम ३, १४७)। °रुक्ख पु [°वृक्ष] वृक्ष-विशेष (ठा ८)। °लया स्त्री [°लता] वल्ली-विशेष, ताम्बूली लता (पण्ण १)। °वर पु [°वर] १ श्रेष्ठ सर्प। २ उत्तम हाथी (औप)। ३ नाग समुद्र का अधिपति देव (सुज्ज १९)। °वल्ली स्त्री [°वल्ली] लता-विशेष (सण)। °सिरी स्त्री [°श्री] द्रौपदी के पूर्व जन्म का नाम (उप ६४८ टी)। °सुहुम न [°सूक्ष्म] एक जैनेतर शास्त्र (अणु)। °सेण पु [°सेन] एक स्वनाम ख्यात गृहस्थ (आवम)। °हत्थि पुं [°हस्तिन्] एक प्राचीन जैन ऋषि (णंदि)।

णागणिय न [नाग्न्य] नग्नता, नगापन (सूअ १, ७)।

णागदत्ता स्त्री [नागदत्ता] चौदहवें जिनदेव की दीक्षा-शिविका (विचार १२९)।

णागपरियावणिया स्त्री [नागपरियापनिका] एक जैन शास्त्र (णदि २०२)।

णागर वि [नागर] १ नगर-सम्बन्धी। २ नगर का निवासी, नागरिक (सुर ३, ६६, महा)।

णागरिअ पुं [नागरिक] नगर का रहनेवाला (रंभा)।

णागरिआ स्त्री [नागरिका] नगर में रहनेवाली स्त्री (महा)।

णागरी स्त्री [नागरी] १ नगर मे रहनेवाली स्त्री। २ लिपि विशेष, हिन्दी लिपि (विसे ४६४ टी)।

णागिंद पुं [नागेन्द्र] १ नाग देवो का इन्द्र। २ शेषनाग (सुपा ७७, ६३६)।

णागिणी स्त्री [नागी] १ नागिन। २ एक वणिक्-पुत्री (कुप्र ४०८)।

णागिल देखो णाइल (राज)।

णागी स्त्री [नागी] नागिन, सर्पिणी (आव ४)।

णागेंद देखो णागिंद (णाया १, ८)।

णागोद पु [नागोद] एक समुद्र (सुज्ज १९)।

णाड देखो णट्ट = नाट्य (णाया १, १ टी—पत्र ४३)।

णाडइज्ज वि [नाटकीय] नाटक-सम्बन्धी, नाटक मे भाग लेनेवाला पात्र (णाया १, १, कप्प)।

णाडइणी स्त्री [नाटकिनी] १ नर्तकी, नाचनेवाली स्त्री (वृह ३)।

णाडग } न [नाटक] १ नाटक, अभिनय,
णाडय } नाट्य-क्रिया (वृह १, सुपा १,३५६, सार्ध ६५)। २ रग-शाला मे खेलने में उपयुक्त काव्य (हे ४, २७०)।

णाडाल देखो णडाल (गउड)।

णाडि स्त्री [नाडि] १ रज्जु, वरत्रा। २ नाडी, नस, सिरा (कुमा)।

णाडी स्त्री [नाडी] ऊपर देखो (हे १, २०२)।

णाडीअ पुं [नाडीक] वनस्पति-विशेष (भग १०, ७)।

णाण न [ज्ञान] ज्ञान, बोध, चैतन्य, बुद्धि (भग ८, २; हे २, ४२, कुमा, प्रासू २८)। °धर वि [°धर] ज्ञानी, जानकार, विद्वान् (सुपा ५०८)। °प्पवाय न [°प्रवाद]

ढंढसिअ पु [दे] १ ग्राम का यक्ष। २ गाँव का वृक्ष (दे ४, १५)।

ढंढुल्ल देखो ढंढल्ल। ढढुल्लइ (सरण)।

ढंढोल सक [गवेषय्] खोजना, अन्वेषण करना। ढंढोलइ (हे ४, १८९)। संकृ. ढंढोलिअ (कुमा)।

ढंढोल्ल देखो ढुंढुल्ल। संकृ ढंढोल्लिवि (सण)।

ढंस अक [वि+वृत्] धसना, धसकर रहना, गिर पडना। ढंसइ (हे ४, ११८)। वकृ, ढसमाण (कुमा)।

ढंसय न [दे] अयश, अपकीर्ति (दे ४, १४)।

ढक्क सक [छादय्] १ ढकना, आच्छादन करना, बन्द करना। ढक्कइ (हे ४, २१)। भवि ढक्किस्स (गा ३१४)। कर्म 'ढक्किज्जउ कूवाई' (सुर १२, १०२)। संकृ. 'तत्थ ढक्किउं दार', ढक्किऊण, ढक्केऊण (सुपा ६४०, महा, पि २२१)। कृ. ढक्केयव्व (दस २)।

ढक्क पुं [ढक्क] १ देश-विशेष। २ देश-विशेष मे रहनेवाली एक जाति (भवि)। ३ भाट की एक जाति (उप पृ ११२)।

ढक्कय न [दे] तिलक (दे ४, १४)।

ढक्करि वि [दे] अद्भुत, आश्चर्य-जनक (हे ४, ४२२)।

ढक्कवत्थुल देखो ढंक-वत्थुल (पव ४)।

ढक्का स्त्री [ढक्का] वाद्य-विशेष, ढका, नगाडा, डमरू (गा ५२६, कुमा, सुपा २४२)।

ढक्किअ वि [छादित] बन्द किया हुआ, आच्छादित (स ४६९, कुमा)।

ढक्किअ न [दे] बैल की गर्जना (अणु २१२, सुपा ९, १)।

ढग्गढग्गा स्त्री [दे] 'ढग-ढग' आवाज, पानी वगैरह पीने की आवाज, 'सोणियं ढग्गढग्गाए घोट्टयतो' (स २५७)।

ढज्जत देखो डज्झन्त (पि २१२, २१९)।

ढड्ढ पु [दे] भेरी, वाद्य-विशेष (दे ४, १३)।

ढड्ढर पुं [दे] राहु (सुज्ज २०)।

ढड्ढर पुं [दे] १ बडी आवाज, महान् ध्वनि (ओघ १५६)। २ न. गुरु-वन्दन का एक दोष, बडे स्वर से प्रणाम करना (गुभा २५)। ३ वि. वृद्ध, बूढ़ा, 'ढड्ढर-सड्ढाए मग्गेण' (सार्ध ३८)।

ढणिय वि [ध्वनित] शब्दित, ध्वनित (सुर १३, ८४)।

ढमर न [दे] १ पिठर, स्थाली या थाली (दे ४, १७, पाअ)। २ गरम पानी, उष्ण जल (दे ४, १७)।

ढयर पु [दे] १ पिशाच (दे ४, १६, पाअ)। २ ईर्ष्या, द्वेष (दे ४, १६)।

ढल अक [दे] टपकना, नीचे पडना, गिरना। २ झुकना। वकृ ढलत (कुमा), 'ढलतसेयचामरुप्पीलो' (उप ९८६ टी)।

ढलिय वि [दे] झुका हुआ (उप पृ ११८)।

ढाल सक [दे] १ ढालना, नीचे गिराना। २ झुकाना, चामर वगैरह का वीजना। ढालए (सुपा ४७)।

ढलहल्लय वि [दे] मृदु, कोमल, मुलायम (वज्जा ११४)।

ढलिय वि [दे] गिरा हुआ, स्खलित (वज्जा १००)।

ढालिअ वि [दे] नीचे गिराया हुआ, 'सीसाओ ढालिओ सूरो' (सुर ३, २२८)।

ढाय पुं [दे] आग्रह, निर्बन्ध (कुमा)।

ढिंक पु [ढिङ्क] पक्षि-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८)।

ढिंकण } पुं [दे] क्षुद्र जन्तु-विशेष, गौ
ढिंकुण } आदि को लगनेवाला कीट-विशेष **(राज, जी १८)।**

ढिंकलीआ स्त्री [दे] पात्र-विशेष (सिरि ४२६)।

ढिंग देखो ढिंक (राज)।

ढिंढय वि [दे] जल मे पतित (दे ४, १५)।

ढिक्क अक [गर्ज्] साँड का गरजना। ढिक्कइ (हे ४, ९९)। वकृ ढिक्कमाण (कुमा)।

ढिक्कय न [दे] नित्य, हमेशा, सदा (दे ४, १५)।

ढिक्किय न [गर्जित] साँड की गर्जना (महा)।

ढिड्ढिस न [ढिड्ढिस] देव-विमान-विशेष (इक)।

ढिल्ल वि [दे] ढीला, शिथिल (पि १५०)।

ढिल्ली स्त्री [ढिल्ली] भारतवर्ष की प्राचीन और अद्यतन राज-धानी, दिल्ली शहर (पिंग)। °नाह पुं [°नाथ] दिल्ली का राजा (कुमा)।

ढुढुल्ल सक [भ्रम्] घूमना, फिरना, चलना। ढुढुल्लइ (हे ४, १६१)। ढुढुल्लन्ति (कुमा)।

ढुढुल्ल सक [गवेषय्] ढूँढना, खोजना, अन्वेषण करना। ढुढुल्लइ (हे ४, १८९)।

ढुढुल्लग न [गवेषग] खोज, अन्वेषण (कुमा)।

ढुढुल्लिअ वि [गवेषित] अन्वेषित, ढूँढा हुआ (पाअ)।

ढुक्क सक [ढौक्] १ भेंट करना, अर्पण करना। २ उपस्थित करना। ३ अक लगना, प्रवृत्ति करना। ४ मिलना। वकृ. ढुक्कत (पिंग)। कवकृ ढुक्कत (उप ९८६ टी, पिंग)।

ढुक्क सक [प्र+विश] ढुकना, घुसना, प्रवेश करना। ढुक्कइ (प्राकृ ७४)।

ढुक्क वि [दे ढौकिन] १ उपस्थित, हाजिर (स २५१)। २ मिलित (पिंग)। ३ प्रवृत्त, 'चिंतिउं ढुक्को' (श्रा २७, सण, भवि)।

ढुक्कलुक्क न [दे] चमडे से मढ़ा हुआ वाद्य विशेष (सिरि ४२६)।

ढुक्किअ वि [ढौकित] ऊपर देखो (पिंग)।

ढुम } सक [भ्रम्] भ्रमण करना, घूमना।
ढुस } ढुमइ, ढुसइ (हे ४, १६१, कुमा)।

ढुरुढुल्ल देखो ढुढुल्ल = भ्रम्। वकृ ढुरुढुल्लत (वज्जा १२८)।

ढेंक पु [ढेङ्क] एक जल पक्षी, पक्षि विशेष (वज्जा ३४)।

ढेंका स्त्री [दे] १ हर्ष, खुशी। २ ढेंकुवा, ढेंकली, कूप-तुला (दे ४, १७)।

ढेंकिय देखो ढिक्किय (राज)।

ढेंकी स्त्री [दे] बलाका, बक-पंक्ति (दे ४, १५)।

ढेंकुण पुं [दे] मत्कुण, खटमल (दे ४, १४)।

ढेढिअ वि [दे] धूपित, धूप दिया हुआ (दे ४, १६)।

ढेणियालग } पुंस्त्री [ढेणिकालक] पक्षि-
ढेणियालय } विशेष (पण्ह १, १)। स्त्री. °लिया (अनु ४)।

ढेल्ल वि [दे] निर्धन, दरिद्र (दे ४, १६)।

ढोअ देखो ढुक्क = ढौक। ढोएज्जह (महा)।

णारंग पुं [नारङ्ग] १ वृक्ष-विशेष, सतरे का वृक्ष। २ न. फल-विशेष, कमला नीबू, सतरा (पउम ४१, ६, सुपा २३०, ५६३, गउड, कुमा)।

णारग देखो णारय = नारक (विसे १६००)।

णारद देखो णारय (प्रयौ ५१)।

णारदीअ वि [नारदीय] नारद-सम्बन्धी, नारद का (प्रयौ ५१)।

णारय पु [नारद] १ मुनि-विशेष, नारद ऋषि (सम १५४ उप ६४८ टी)। २ गन्धर्व सैन्य का अधिपति देव-विशेष (ठा ७)।

णारय वि [नारक] १ नरक मे उत्पन्न, नरक-सबन्धी, नरक का, 'जायए नारय दुक्ख' (सुपा १६२)। २ पुं नरक मे उत्पन्न प्राणी, नरक का जीव (भग)।

णारसिह वि [नारसिंह] नरसिंह सम्बन्धी (उप ६४८ टी)।

णाराय पु [नाराच] तौलने की छोटी तराजू, काँटा, 'नाराय निरक्खर लोहवत दोमुह य तुज्झ कि भणिमो। गुंजाए सम कणय तोलतो कह न लज्जे सि ?' (वज्जा १५८, १५६)।

णाराय देखो णराअ (हे १, ६७, उवा, सम १४६, अजि १४)। तुला, गु० ताजूडी (पुष्पमाला ४६, ८६)। °वज्ज न [°वज्र] संहनन-विशेष (पउम ३, १०६)।

णारायण पु [नारायण] १ विष्णु, श्रीकृष्ण (कुमा, स ६२२)। २ अर्ध-चक्रवर्त्ती राजा (पउम ५, १२२, ७३, २०)।

णारायण पुं [नारायण] एक ऋषि (सूअ १, ३, ४, २)।

णारायणी स्त्री [नारायणी] देवी-विशेष, गौरी, दुर्गा (गउड)।

णारि° देखो णारी (कप्प, राज)। °कंता स्त्री [°कान्ता] नदी-विशेष (सम २७, ठा २, ३)। २ नदी-विशेष (इक)। °कतप्पवाय पुं [°कान्ताप्रपात] द्रह-विशेष (ठा २, ३)। देखो णारि°।

णारिएर } पु [नारिकेल] १ नारियल का
णारिएल } पेड। २ न. नारियल या नरियर का फल (अभि १२७, पि १२८)। देखो णालिअर।

णारिंग न [नारिङ्ग] नारंगी का फल, मीठा नीबू, कमला नीबू (कप्पू)।

णारी स्त्री [नारी] १ स्त्री, औरत, जनाना, महिला (हेका २२८, प्रासू ६२, १५६)।

णारुट्ट पु [दे] कूसार, गर्त्ताकार स्थान (पाअ)।

णारोट्ट पुं [दे] १ बिल, साँप आदि का रहने का स्थान, विवर। २ कूसार, गर्त्ताकार स्थान (दे ४, २३)।

णाल न [नाल] १ कमल-दण्ड (से १, २८)। २ गर्भ का आवरण (उप ६७४)।

णालदइज्ज वि [नालन्दीय] १ नालन्दा-संबन्धी। न नालदा के समीप मे प्रतिपादित अध्ययन-विशेष, 'सूत्रकृताग' सूत्र का सातवाँ अध्ययन (सूअ २, ७)।

णालदा स्त्री [नालन्दा] राजगृह नगर का एक मुहल्ला (कप्प, सूअ २, ७)।

णालपिअ न [दे] आक्रन्दित, आक्रन्द-ध्वनि (दे ४, २४)।

णालवि पुं [दे] कुन्तल, केश कलाप (दे ४, २४)।

णालय न [नालक] द्यूत-विशेष (मोह ८६)।

णाला } स्त्री [नाडि] नाडी, नस, सिरा (से १,
णालि } २८, कुमा)।

णालि स्त्री [नाल] परिमाण-विशेष, अजली (श्रावक ३५)।

णालि वि [दे] स्रस्त, गिरा हुआ (षड्)।

णालिअ वि [दे] मूढ, मूर्ख, अज्ञान (से ४, ४२२)।

णालिअर देखो णारिएर (दे २, १०, पउम १, २०)। °दीव पु [°द्वीप] द्वीप-विशेष (कम्म १, १६)।

णालिआ } स्त्री [नालिका] १ नाल, डडी,
णालिगा } कमल की डडी (दस ५, २, १८)। २ परिमाण-विशेष, दंड, धनुष (अणु १५७)। ३ अर्ध मुहूर्त का समय, 'दो नालिया मुहुत्तो' (तंदु ३२)। ४ नली, 'जह उ किर नालिगाए घणिय मिदुरूयपोम्हमरियाए' (धर्मस ६८०)। °खेड्ड न [°खेल] द्यूत-विशेष (जं २ टी—पत्र १३६)।

णालिआ स्त्री [नालिका] १ वल्ली-विशेष (दे २, ३)। २ घटिका, घडी, काल नापने का एक तरह का यन्त्र (पाअ, विसे ६२७)। ३ अपने शरीर मे चार अंगुल लम्बी लाठी (ओघ ३६)। ४ द्यूत-विशेष, एक तरह का जुआ (औप, भग ६, ७)। °खेड्डा स्त्री [°क्रीडा] एक तरह की द्यूत-क्रीडा (औप)।

णालिएर देखो णारिएर (णाया १, ६)।

णालिएरी स्त्री [नारिकेली] नरियर का गाछ (गउड, पि १२६)।

णाली स्त्री [नाली] १ वनस्पति-विशेष, एक लता (पण्ण १)। २ घटिका, घडी (जीव ३)।

णाली स्त्री [नाली] १ द्यूत-विशेष (दस ३, ४)। २ तीन हाथ और सोलह अगुल लंबी लट्ठी या लग्गी (बाँस) (पव ८१)।

णाली स्त्री [नाडी] नाडी नस, सिरा (विपा १, १)।

णालीअ त्रि [नालीय] नाल-सबन्धी (आचा)।

णालीया देखो णालिआ (सूअ १, ६, १८)।

णावइ (अप) देखो इव (हे ४, ४४४, भवि)।

णावण न [दे] दान, वितरण (पण्ह १, ३—पत्र ५३)।

णावा स्त्री [दे] प्रसृति, अजली, परिमाण-विशेष (पव १०६ टी)।

णावा स्त्री [नौ] नौका, जहाज, नाव (नग, उवा)। °वाणिय पुं [°वाणिज] समुद्र मार्ग से व्यापार करनेवाला वणिक् (णाया १,८)।

णावापूरय पु [दे] चुलुक, चुल्लू; 'तिहिं णावापूरएहिं आयामइ' (वृह १)।

णाविअ पु [नापित] नाई, हजाम (हे १, २३०, कुमा, षड्)। °साला स्त्री [°शाला] नाइयो का अड्डा (श्रा १२)।

णाविअ पु [नाविक] जहाज चलानेवाला, नौका या नाव हाँकनेवाला, मल्लाह, केवट, माँझी (णाया १, ६, सुर १३, ३१)।

णास देखो णस्स। णासइ (षड्, महा)। वकृ. णासत (सुर १, २०२, २, २५)। कृ. णासियव्व (सुर ७, १२६)।

णास सक [नाशय्] नाश करना। णासइ (हे ४, ३१)। णासइ (महा, उव)।

णास पुं [नाश] नाश, ध्वंस (प्रासू १५३, पाअ)। °यर वि [°कर] नाश-कारक (सुर १२, १६४)।

णास पुं [न्यास] १ स्थापन (गा ६६, उप ३०२)। २ धरोहर या अमानत, रखने योग्य धन आदि (उप ७६८ टी, धर्म २)।

णगअ वि [दे] रुद्ध, रोका हुआ (षड्)।
णगर पुं [दे] लंगर, जहाज को जल-स्थान में थामने के लिए पानी मे जो रस्सी आदि डाली जाती है वह (उप ७२८ टी, सुर १३,१६३, स २०२)।
णगर } न [लाङ्गल] हल, जिसमे खेत जोता
णंगल } और बोया जाता है (पउम ७२, ७३, पण्ह १, ४, पाअ)।
णगल पुन [दे] चञ्चु, चांच, चोच, 'जडाउणो रुट्ठो। नहणंगलेसु पहरइ, दसाणणं विउल-वच्छयले' (पउम ४४, ४०)।
णगल पुन [लाङ्गल] एक देव-विमान (देवेन्द्र १३३)।
णगलि पु [लाङ्गलिन्] बलभद्र, हली (कुमा)।
णगलिय पुं [लाङ्गलिक] हल के आकारवाले शस्त्र-विशेष को धारण करने वाला सुभट (कप्प, औप)।
णगूल न [लाङ्गूल] पुच्छ, पूँछ (ठा ४, २, हे १, २५६)।
णगूलि वि [लाङ्गूलिन्] १ लम्बी पूँछवाला २ पु वानर, बन्दर (कुमा)।
णगूलि देखो णगोलि (पव २६२)।
णगोल देखो णगूल (णाया १, ३, पि १२७)।
णंगोलि } पुं [लाङ्गूलिन्, °क] १ अन्त-
णगोलिय } द्वीप-विशेष। २ उसका निवासी मनुष्य (पि १२७, ठा ४, २)।
णंतग न [दे] वस्त्र, कपडा (कस, आव ५)।
णंद अक [नन्द्] १ खुश होना, आनन्दित होना। २ समृद्ध होना। णदइ, णंदए (षड्)। कवकृ णंदिज्जमाण (औप)। कृ. णदि-अव्व, णदेअव्व (षड्)।
णद पुं [नन्द] १ स्वनाम-प्रसिद्ध पाटलिपुत्र नगर का एक राजा (मुद्रा १६८, णदि)। २ भरत-क्षेत्र के भावी प्रथम वासुदेव (सम १५४)। ३ भरत-क्षेत्र में होने वाले नववें तीर्थंकर का पूर्व-भवीय नाम (सम १५४)। ४ स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन मुनि (पउम २०, २०)। ५ स्वनाम-ख्यात एक श्रेष्ठी (सुपा ६३८)। ६ न. देव-विमान विशेष (सम २६)। ७ लोहे का एक प्रकार का वृत्त आसन (णाया १, १—पत्र ४३ टी)। ८ वि. समृद्ध होने वाला (औप)। °कंत न [°कान्त] देव-विमान-विशेष (सम २६)। °कूड न [°कूट] एक देव-विमान (सम २६)। °ज्झय न [°ध्वज] एक देव-विमान (सम २६)। °प्पभ न [°प्रभ] देव-विमान-विशेष (सम २६)। °मई स्त्री [°मती] एक अन्तकृत् साध्वी (अन्त २५, राज)। °मित्त पु [°मित्र] भरतक्षेत्र में होने वाला द्वितीय वासुदेव (सम १५४)। °लेस न [°लेश्य] एक देव-विमान (सम २६)। °वई स्त्री [°वती] १ सातवें वासुदेव की माता (पउम २०, १८६)। २ रतिकर पर्वत पर स्थित एक देव नगरी (दीव)। °वण्ण न [°वर्ण] देव-विमान-विशेष (सम २६)। °सिंग न [°शृङ्ग] एक देवविमान (सम २६)। °सिट्ठ न [°सृष्ट] देव-विमान-विशेष (सम २६)। °सिरी स्त्री [°श्री] स्वनाम-ख्यात एक श्रेष्ठि-कन्या (ती ३७)। °सेणिया स्त्री [°सेनिका] एक जैन साध्वी (अंत २५)।
णद पुं [नन्द] गोप-विशेष, श्रीकृष्ण का पालक गोपाल (वज्जा १२२)।
णद पुस्त्री [नन्दा] पक्ष की पहली (प्रतिपदा), षष्ठी और एकादशी तिथि (सुज्ज १०, १५)।
णद न [दे] १ ऊख पीलने या पेरने का काण्ड। २ कुण्डा, पात्र-विशेष (दे ४,४५)।
णदग पुं [नन्दक] वासुदेव का खड्ग (पण्ह १, ४)।
णदण पुं [नन्दन] १ पुत्र, लडका (गा ६०२)। २ राम का एक स्वनाम-ख्यात सुभट (पउम ६७, १०)। ३ स्वनाम-ख्यात एक बलदेव (सम ६३)। ४ भरतक्षेत्र का भावी सातवाँ वासुदेव (सम १५४)। ५ स्वनाम-प्रसिद्ध एक श्रेष्ठी (उप ५५०)। ६ श्रेणिक राजा का एक पुत्र (निर १,२)। ७ मेरु पर्वत पर स्थित एक प्रसिद्ध वन (ठा २, ३, इक)। ८ एक चैत्य (भग ३, १)। ९ वृद्धि (पण्ह १, ४)। १० नगर विशेष (उप ७२८ टी)। °कर वि [°कर] वृद्धि-कारक। °कूड न [°कूट] नन्दन वन का शिखर (राज)। °भद्द पुं [°भद्र] एक जैन मुनि (कप्प)। °वण न [°वन] १ स्वनाम-ख्यात एक वन जो मेरु पर्वत पर स्थित है (सम ९२)। २ उद्यान-विशेष (निर १, ५)।
णदण पुं [दे] भृत्य, नौकर, दास (दे ४, १९)।
णदण पुन [नन्दन] एक देव-विमान (देवेन्द्र १४३)। २ न सतोष (णदि ४५)।
णदणा स्त्री [नन्दना] लडकी, पुत्री (पाअ)।
णदणी स्त्री [नन्दनी] पुत्री, लडकी (सिरि १४०)।
णदतणय पुं [नन्दतनय] श्रीकृष्ण (प्राकृ २७)।
णदमाणग पु [नन्दमानक] पक्षी की एक जाति (पण्ह १, १)।
णदयावत्त } पुन [नन्द्यावर्त्त] १ एक देव-
णदावत्त } विमान (देवेन्द्र १३३)। २ पु चतुरिन्द्रिय जीव की एक जाति (उत्त ३६, १४८)। ३ न लगातार एक्कीस दिनो का उपवास (सबोध ५८)।
णदा स्त्री [नन्दा] १ भगवान् ऋषभदेव की एक पत्नी (पउम ३,११६)। २ राजा श्रेणिक की एक पत्नी और अभयकुमार की माता (णाया १,१)। ३ भगवान् श्री शीतलनाथ की माता (सम १५१)। ४ भगवान् महावीर के अचलभ्रातृ नामक गणधर की माता (आवम)। ५ रावण की एक पत्नी (पउम ७४, १०)। ६ पश्चिम रुचक-पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८)। ७ ईशानेन्द्र की एक अग्रमहिषी की राजधानी (ठा ४, २)। ८ स्वनाम-ख्यात एक पुष्करिणी (ठा ४, ३)। ९ ज्योतिष-शास्त्र में प्रसिद्ध तिथि विशेष—प्रतिपदा, षष्ठी और एकादशी तिथि (चद १०)।
णदा स्त्री [दे] गो, गैया (दे ४ १८)।
णदावत्त पुं [नन्दावर्त्त] १ एक प्रकार का स्वस्तिक (सुपा ५२)। २ क्षुद्र जन्तु की एक जाति (जीव १)। ३ न देव-विमान-विशेष (सम २६)।
णंदि पुस्त्री [नन्दि] १ बारह प्रकार के वाद्यो का एक ही साथ आवाज (पण्ह २, ५, णदि)। २ प्रमोद, हर्ष (ठा ५, २)। ३ मतिज्ञान आदि पाँचो ज्ञान (णदि)। ४ वाञ्छित अर्थ की प्राप्ति। ५ मगल (बृह १, अजि ३८)। ६ समृद्धि (अणु)। ७ जैन

णिअस सक [नि + वस्] पहनना। णियसइ (महा)। सक्र णियसित्ता (जीव ३, पि ७४)। प्रयो. णियसावेइ (पि ७४)।

णिअसण न [दे निवसन] वस्त्र, कपडा (दे ४, ३८, गा ३५१, पाअ, गउड, पण्ह १, ३, सुपा १५१, हेका ३१)।

णअंसणि स्त्री [निवसनी] वस्त्र, कपडा (पव ६२)।

णिअक्क सक [दृश्] देखना। णिअक्कइ (प्राप्र)।

णिअक्कल वि [दे] वर्तुल, गोलाकार पदार्थ (दे ४, ३९, पाअ)।

णिअग वि [निजक] आत्मीय, स्वकीय (उवा)।

णिअच्छ सक [दृश्] देखना। णिअच्छइ (हे ४, १८१)। वकृ. णिअच्छन, णिअच्छमाण (गा २३८, गउड, गा ५००)। सकृ णिअच्छिऊण, णिअच्छिअ (सुर १, १५७, कुमा)। कृ णिअच्छियव्व (गउड)।

णिअच्छ सक [नि + यम्] १ नियमन करना, नियन्त्रण करना। २ अवश्य प्राप्त करना। ३ जोडना। सकृ णिअच्छइत्ता (सूअ १, १, १, २)।

णिअच्छ अक [नि + गम्] १ सगत होना, युक्त होना। २ सक अवश्य प्राप्त करना। नियच्छइ (सूअ १, १, १, १०, १, १, २, १७, १, १, २, १८)।

णिअच्छिअ वि [दृष्ट] देखा हुआ (पाअ)।

णिअट्ट अक [नि + वृत्] निवृत्त होना, पीछे हटना, रुकना। णिअट्टइ (सण)। वकृ. णियट्टमाण (आचा)।

णिअट्ट सक [निर् + वृत्] बनाना, रचना, निर्माण करना (औप)।

णिअट्ट सक [नि + अर्द्] अनुसरण करना (औप)।

णिअट्ट पुं [निवर्त्त] व्यावर्तन, निवृत्ति, 'अणियट्टगामीणं' (आचा)।

णिअट्ट वि [निवृत्त] व्यावृत्त, पीछे हटा हुआ (धर्म २)।

णिअट्टि वि [निवर्त्तिन्] निवृत्त होनेवाला (धर्मसं ७९४)।

णिअट्टि स्त्री [निवृत्ति] १ निवर्त्तन, पीछे हटना (आचू १)। २ अध्यवसाय-विशेष (सम २६)। ३ मोह-रहित अवस्था (सूअ १, ११)। °बायर न [°बादर] १ गुण-स्थानक-विशेष (सम २६)। २ पु गुण-स्थानक-विशेष में वर्त्तमान जीव (आव ४)।

णिअट्टिय वि [निवर्त्तित] व्यावर्तित, पीछे हटाया हुआ (औप)।

णिअट्टिय वि [निर्वर्तित] रचित, निर्मित, बनाया हुआ (औप)।

णिअट्टिय वि [न्यर्दित] अनुगत, अनुसृत (औप)।

णिअड न [निकट] १ निकट, समीप, नजदीक, पास (गा ४०२, पाअ, सुपा ३५२)। २ वि पास का, समीप का (पाअ)।

णिअडि वि [निकृतिन्] मायावी, कपटी (दस ६, २३)।

णिअडि स्त्री [निकृति] की हुई ठगाई को ढकना—छिपाना (राय ११४)।

णिअडि स्त्री [दे निकृति] माया, कपट (दे ४, २६, पण्ह १, २, सम ५१, भग १२, ५, सूअ २, २, णाया १, १८, आव ५)।

णिअडिअ वि [निगडित] नियन्त्रित, जकडा हुआ (गा ५५६, उप पृ ५२, सुपा ६३)।

णिअडिअ त्रि [निकटिक] समीप-वर्त्ती, पार्श्व मे स्थित (कप्पू)।

णिअडिल्ल वि [निकृतिमत्] कपटी, मायावी (ठा ४, ८, औप, भग ८, ६)।

णिअड्ढ सक [नि + कृप्] खीचना। सकृ नियड्ढिऊण (सम्मत्त २२७)।

णिअण वि [नग्न] नगा, वस्त्र-रहित (पव २७१)।

णिअत्त वि [निकृत्त] काटा हुआ, छिन्न (भग ६, ३३)।

णिअत्त वि [नित्य] शाश्वत, अविनश्वर, 'सुक्ख जमनियत्त' (तदु ३३, सूअ १, १, १, १६)।

णिअत्त देखो णिअट्ट = नि + वृत्। णिअत्तइ (महा, पि २८६)। वकृ णिअत्तंत, णिअत्तमाण (गा ७६, ५३७, से ५, ६७, नाट)। प्रयो णिअत्तावेहि (पि २८६)।

णिअत्त देखो णिअट्ट = निवृत्त (पउम २२, ६२, गा ६५८, सुपा ३१७)।

णिअत्तण न [निवर्त्तन] १ भूमि का एक नाप (उवा)। २ निवृत्ति, व्यावर्त्तन (आव ४)।

णिअत्तणिय वि [निवर्त्तनिक] निवर्त्तन परिमाणवाला (भग ३, १)।

णिअत्ति देखो णिअट्टि (उत्त ३१)।

णिअत्थ वि [दे] १ परिहित, पहना हुआ (दे ४, ३३, आवम, भवि)। २ परिधापित, जिसको वस्त्र आदि पहनाया गया हो वह, 'णियत्था तो गणियाए' (विसे २६०७)।

णिअद सक [नि + गद्] कहना, बोलना। णिअदि (शौ) (नाट—चैत ४५)। वकृ णिअंदत (नाट)।

णिअद्दिय देखो णिअट्टिय = न्यर्दित (राज)।

णिअद्धण न [दे] परिधान, पहनने का वस्त्र (षड्)।

णिअम सक [नि + यमय्] नियन्त्रित करना, नियम में रखना। संकृ. णिअमेऊण (पि ५८६)।

णिअम सक [नि + यमय्] १ रोकना। २ वचन से कराना। ३ शरीर से कराना। निअमे (आचा २, १३, १)।

णिअम पु [नियम] १ निश्चय (जी १४)। २ ली हुई प्रतिज्ञा, व्रत, 'परिवाविज्जइ णिअमा णिअमसमत्ती तुमे मज्झ' (उप ७२८ टी)। ३ प्रायोपवेशन, सकल्प-पूर्वक अनशन-मरण के लिए उद्यम (से ५, २)। °सा अ [°सात्] नियम से (औप)। °सो अ [°शस्] निश्चय से (आ १४)।

णिअमण न [नियमन] नियन्त्रण सयमन (विसे १२५८)।

णिअमिय वि [नियमित] नियम मे रखा हुआ, नियन्त्रित (से ४, ३७)।

णिअय न [दे] १ रत, मैथुन। २ शयनीय, शय्या। ३ घट, घडा, कलश (दे ४, ४८)। ४ वि शाश्वत, नित्य (दे ४, ४८, पाअ, सूअ १, ८ राय)।

णिअय वि [निजक] निजका, स्वकीय, आत्मीय, अपना (पाअ)।

णिअय वि [नियत] नियम-बद्ध, नियमानुसारी (उवा)।

णक्खि वि [नखिन्] सुन्दर नखवाला (बृह १)।
णख देखो णक्ख (कुप्र ५८)।
णग देखो णय = नग (पण्ह १, ४, उप ३५६ टी, सुर ३, ३४)। °राय पुं [°राज] मेरु पर्वत (ठा ६)। [°वर] पु [°वर] श्रेष्ठ पर्वत (णाया १, १)। °वरिंद पु [°वरेन्द्र] मेरु-पर्वत (पउम ३, ७६)।
णगर न [नकर, नगर] शहर, पुर (बृह १, कप्प, सुर ३, २०) °गुत्तिय, °गोत्तिय पु [°गुप्तिक] नगर रक्षक, कोटपाल, कोतवाल, दरोगा (णाया १, १८, औप, पण्ह १, २, णाया १, २)। °घाय पु [°घात] शहर में लूट-पाट (णाया १, १८)। °णिद्धमण न [°निर्धमन] नगर का पानी जाने का रास्ता, मोरी, खाल (णाया १, २)। °रक्खिय पु [°रक्षिक] देखो °गुत्तिय (निचू ४)। °वास पु [°ग्राम] राजधानी, पाटनगर (ज १—पत्र ७४)।
णगरी देखो णयरी (राज)।
णगाणिआ स्त्री [नगाणिका] छन्द-विशेष (पिंग)।
णगिंद पु [नगेन्द्र] १ श्रेष्ठ पर्वत (पउम ६७, २७)। २ मेरु पर्वत (सूअ १, ६)।
णगिण वि [नग्न] नगा, वस्त्र-रहित (आचा, उप पृ ३६३)।
णग्ग देखो णग (तंदु ४५)।
णग्ग वि [नग्न] नगा, वस्त्र-रहित (प्राप्र, दे ४, २८)। °इ पु [°जित्] गन्धार देश का एक स्वनाम-ख्यात राजा (औप, महा)।
णग्गठ वि [दे] निर्गत, बाहर निकला हुआ (षड्—पृष्ठ १८१)।
णग्गोह पुं [न्यग्रोध] वृक्ष-विशेष, बड का पेड (पाअ, सुर १, २०५)। °परिमंडल न [°परिमण्डल] सस्थान-विशेष, शरीर का आकार-विशेष (ठा ६)।
णघुस पु [नघुप] स्वनाम-ख्यात एक राजा (पउम २२, ५५)।
णचिरा देखो अइरा = अचिरात् (पि ३६६)।
णच्च अक [नृत्] नाचना, नृत्य करना। णच्चइ (षड्) वकृ णच्चंत, णच्चमाण (सुर २, ७५, ३, ७७)। हेकृ. णच्चिउ (गा ३६१) कृ णच्चियव्व (पउम ८०, ३२)। प्रयो कवकृ णच्चाविज्जंत (स २६)।
णच्च न [ज्ञत्व] जानकारी, पण्डिताई (कुमा)।
णच्च न [नृत्य] नाच, नृत्य (दे ५, ८)।
णच्चग वि [नर्तक] १ नाचनेवाला। पु नट, नचवैया (वव ६)।
णच्चण न [नर्तन] नाच, नृत्य (कप्पू)।
णच्चणी स्त्री [नर्तनी] नाचनेवाली स्त्री (कुमा, कप्पू, सुपा १६६)।
णच्चा } देखो णा = ज्ञा।
णच्चाण }
णच्चाविअ वि [नर्त्तित] नचाया हुआ (ओघ २६५, ठा ६)।
णच्चासन्न न [नात्यासन्न] अति समीप मे नही (णाया १, १)।
णच्चिर वि [नर्त्तितृ] नचवैया, नाचनेवाला, नर्तन-शील (गा ४२०, सुपा ५४, कुमा)।
णच्चिर वि [दे] रमण-शील (दे ४, १८)।
णच्चुण्ह वि [नात्युष्ण] जो अति गरम न हो (ठा ५, ३)।
णज्ज सक [ज्ञा] जानना। णज्जइ (प्राप्र)।
णज्ज वि [न्याय्य] न्याय-सगत (प्राकृ १९)।
णज्जत } देखो णा = ज्ञा।
णज्जमाण }
णज्जर वि [दे] मलिन, मैला (दे ४, १९)।
णज्झर वि [दे] विमल, निर्मल (दे ४, १९)।
णट्ट अक [नट्] १ नाचना। २ सक. हिंसा करना। णट्टइ (हे ४, २३०)।
णट्ट पु [नट] नर्तको की एक जाति, 'णच्चति णट्टा पभणति विप्पा' (रंभा, सण, कप्प)।
णट्ट न [नाट्य] नृत्य, गीत और वाद्य, नट-कर्म (णाया १, ३, सम ८३)। °पाल पुं [°पाल] नाट्य-स्वामी, सूत्रधार (आचू १)। °मालय पु [°मालक] देव विशेष, खण्डप्रपात गुहा का अधिष्ठायक देव (ठा २ ३)। °अरिअ पुं [°चार्य] सूत्रधार (मा ४)।
णट्ट [नृत्य] नाच, नृत्य (से १, ८, कप्पू)।
णट्टअ न [नाट्यक] देखो णट्ट = नाट्य (मा ४)।
णट्टअ } वि [नर्त्तक] नाचनेवाला, नचवैया
णट्टग } (प्राप्र, णाया १, १, औप)। स्त्री. °ई (प्राप्र, हे २, ३०, कुमा)।
णट्टार पु [नाट्यकार] नाट्य करनेवाला (सण)।
णट्टावअ वि [नर्त्तक] नचानेवाला (कप्पू)।
णट्टिया स्त्री [नर्त्तिका] नटी, नर्त्तकी, नाचनेवाली स्त्री (महा)।
णट्टुमत्त पुं [नर्त्तुमत्त] स्वनाम-ख्यात एक विद्याधर (महा)।
णट्ठ पु [नष्ट] एक नरक स्थान (देवेन्द्र २८)। २ न पलायन (कुप्र ३७)।
णट्ठ वि [नष्ट] १ नष्ट, अपगत, नाश-प्राप्त (सूअ १, ३, ३, प्रासू ८६)। २ पुन अहोरात्र का सतरहवाँ मुहूर्त्त (राज)। °सुइअ वि [°श्रुतिक] १ जो वधिर—बहरा हुआ हो (णाया १, १—पत्र ६३)। २ शास्त्र के वास्तविक ज्ञान से रहित (राज)।
णट्ठव वि [नष्टवत्] १ नाश प्राप्त। २ न. अहोरात्र का एक मुहूर्त (राज)।
णड अक [गुप्] १ व्याकुल होना। २ सक खिन्न करना। णडइ, णडति (हे ४, १५०, कुमा)। कर्म णडिज्जइ (गा ७७)। कवकृ णडिज्जत (सुपा ३३८)।
णड देखो णट्ट = नट्। णडइ (प्राकृ ६९)।
णड देखो णल = नड (हे २, १०२)।
णड पु [नट] १ नर्तको की एक जाति, नट (हे १, १९५, प्राप्र)। °खाइया स्त्री [°खादिता] दीक्षा-विशेष, नट की तरह कृत्रिम साधुपन (ठा ४, ४)।
णडाल न [ललाट] भाल, कपाल (हे १, ४७, २५७, गउड)।
णडालिआ स्त्री [ललाटिका] ललाट-शोभा, कपाल में चन्दन आदि का विलेपन (कुमा)।
णडाविअ वि [गोपित] १ व्याकुल किया हुआ। खिन्न किया हुआ (सुपा ३२५)।
णडिअ वि [गुपित] व्याकुल (से १०, ७०, सण)।
णडिअ वि [दे] १ वञ्चित, विप्रतारित (दे ४, १९)। २ खेदित, खिन्न किया हुआ (दे ४, १९, पाअ, णाया १, ९)।

णिउत्त वि [निवृत्त] विरत, उपरत, विमुख, विरक्त (प्राकृ ८)।

णिउत्त वि [निर्वृत्त] निष्पन्न, सिद्ध (उत्तर १०४)।

णिउत्तव्व देखो णिउज = नि + युज्।

णिउत्ति स्त्री [निवृत्ति] विराम (प्राकृ ८)।

णिउद्ध न [नियुद्ध] बाहु युद्ध, कुस्ती (उप २६२)।

णिउर पु [निकुर] वृक्ष-विशेष (णाया १, ९ पत्र १६०)।

णिउर न [नूपुर] स्त्री के पाव का एक आभरण, पैंजनी, पायल (हे १,१२३, कुमा)।

णिउर वि [दे] १ छिन्न, काटा हुआ। २ जीर्ण, पुराना (षड्)।

णिउरब न [निकुरम्ब] समूह, जत्था (पाअ, सुर ३, ९१, गा ४६५, सुपा ४५४)।

णिउरुंब न [निकुरुम्ब] समूह, जत्था (स ४३७, गा ४६५ अ, पि १७७)।

णिउल पु [दे] गांठ, गठरी, 'एवं बहु भणिऊण समप्पिओ दविणनिउलोत्ति' (महा)।

णिऊढ वि [निगूढ] गुप्त, प्रच्छन्न, छिपा हुआ (अच्चु ४५)।

णिएअ वि [नियत] नियम-युक्त, 'अणिएअचारी' (सूअ १, ६, ६)।

णिएल्ल देखो णिअल्ल = निज (आवम)।

णिओअ सक [नि + योजय्] किसी कार्य में लगाना। णिओएदि (शौ) (नाट—विक्र ५)।

णिओअ देखो णिओग (से ८, २६, अभि २७, सण, से ३४८)। १० आज्ञा, आदेश (स २१४)।

णिओइअ वि [नियोजित] नियुक्त किया हुआ, किसी कार्य मे लगाया हुआ (स ४४२, अभि ९९)।

णिओइअ वि [नैयोगिक] नियोग-सम्बन्धी (प्राकृ ९)।

णिओग पु [नियोग] मोक्ष, मुक्ति (सूअ १, १, १६, ५)।

णिओग पु [नियोग] १ नियम, आवश्यक कर्तव्य (विसे १८७६, पचव ४)। २ सम्बन्ध, नियोजन (बृह १)। ३ अनुयोग, सूत्र की व्याख्या (विसे) ४ व्यापार, कार्य (वव २)। ५ अधिकार-प्रेरण (महा)। ६ राजा, नृप, आज्ञा-विधाता (जीत)। ७ गाँव, ग्राम, ८ क्षेत्र, भूमि (बृह १)। ९ सयम, त्याग (सूअ १, १६)। देखो णिओअ। °पुर न [°पुर] १ राजधानी। २ देश, राष्ट्र। ३ राज्य (जीत)।

णिओगि वि [नियोगिन्] नियोग विशिष्ट, नियुक्त आज्ञाप्राप्त, अधिकारी (सुपा ३७१)।

णिओजिय देखो णिओइअ (आवम)।

णिंत
णितूण } देखो णी = गम्।

णिंद सक [निन्द्] निन्दा करना, बुराई करना, जुगुप्सा करना। णिंदामि (पडि)। वकृ णिंदत (श्रा ३९)। कवकृ णिंदिज्जत (सुपा ३६३)। संकृ णिंदित्ता, णिंदिअ (आचा २, ३, १, १, श्रा ४०)। हेकृ णिंदिउ, णिंदित्तए (महा, ठा २, १)। कृ णिंदियव्व, णिंदणिज्ज (पण्ह २, १, उप १०३१ टी, णाया १, ३)।

णिंद वि [निन्द्य] निन्दा-योग्य, निन्दनीय (आचू १)।

णिंद (अप) स्त्री [निद्रा] नीद निद्रा (भवि)।

णिंदण न [निन्दन] निन्दा, घृणा, जुगुप्सा (उप ४४६, ७२८ टी)।

णिंदणया देखो णिंदणा (उत्त २९, १)।

णिंदणा स्त्री [निन्दना] निन्दा, जुगुप्सा (औप, ओघ ७९१, पण्ह २, १)।

णिंदय वि [निन्दक] निन्दा करनेवाला (पउम ९०, २१)।

णिंदा स्त्री [निन्दा] घृणा, जुगुप्सा (श्राव ४)।

णिंदिअ वि [निन्दित] जिसकी निन्दा की गई हो वह, बुरा (गा २६७, प्रासू १५८)।

णिंदिणी स्त्री [दे] कुत्सित तृणो का उन्मूलन (दे ४, ३५)।

णिंदु स्त्री [निन्दु] मृत-वत्सा स्त्री, जिसके बच्चे जीवित न रहते हो ऐसी स्त्री (अंत ७, श्रा १६)।

णिंब पु [निम्ब] नीम का पेड़ (हे १, २३०, प्रासू २६)।

णिंबोलिया स्त्री [निम्बगुलिका] नीम का फल (णाया १, १६)।

णिकर पु [निकर] समूह, जत्था, राशि, ढेर, (कप्पू)।

णिकरण न [निकरण] १ निश्चय, निर्णय। २ निकार, दुःख-उत्पादन (आचा)।

णिकरिय वि [निकरित] सारीकृत, सर्वथा सशोधित (औप)।

णिकस देखो णिहस (अणु २१२)।

णिकाइय वि [निकाचित] १ व्यवस्थापित, नियमित (णदि)। २ अत्यन्त निबिड रूप से हुआ (कर्म) (उव, सुपा ५७६)। न कर्मो का निबिड रूप से बन्धन (ठा ४, २)।

णिकाम सक [नि + कामय्] अभिलाष करना। णिकामएज्जा (सूअ १, १०, ११)। वकृ णिकामयत (सूअ १, १०, ११)।

णिकाम न [निकाम] हमेशा परिमाण से ज्यादा खाया जाता भोजन (पिंड ६४५)।

णिकाम न [निकाम] १ निश्चय, निर्णय। २ अत्यन्त, अतिशय (सूअ १, १०)।

णिकाममीण वि [निकाममीण] अत्यन्त प्रार्थी (सूअ १, १०, ८)।

णिकाय सक [नि + काचय्] १ नियमन करना, नियन्त्रण करना। २ निबिड रूपसे बाँधना। ३ निमन्त्रण देना। णिकाइति (भग)। भूका णिकाइसु (भग, सूअ २, १)। भवि णिकाइस्सति (भग)। सकृ णिकाय (आचा)।

णिकाय पु [निकाय] १ समूह, जत्था, यूथ, वर्ग, राशि (ओघ ४०७, विसे ९००, द २८)। २ मोक्ष, मुक्ति (आचा)। ३ आवश्यक, अवश्य करने योग्य अनुष्ठान-विशेष (अणु)। °काय पु [°काय] जीव राशि, छओं प्रकार के जीवों का समूह (दस ४)।

णिकाय पु [निकाच] निमन्त्रण, न्यौता (सम २१)।

णिकाय देखो णिकाइय, 'जेण खमासहिएण कएणा कम्माणवि निकायाण' (सिरि १२९२)।

णिकायण न [निकाचन] निमन्त्रण (पिंड ४७५)।

णिकायणा स्त्री [निकाचना] १ कारण-विशेष, जिससे कर्मो का निबिड बन्ध होता है (विसे २५१५ टी, भग)। २ निबिड बन्धन। ३ दापन, दिलाना (राज)।

णमिआ स्त्री [नमिता] १ स्वनाम-ख्यात एक स्त्री। २ 'ज्ञाताधर्मकथासूत्र' का एक अध्ययन (णाया २)।

णमिर वि [नम्र] नमन करनेवाला (कुमा, सुपा २७, सण)।

णमुइ पु [नमुचि] स्वनाम-ख्यात एक मन्त्री (महा)।

णमुदय पु [नमुदय] आजीविक मत का एक उपासक (भग ७, १०)।

णमेरु पुं [नमेरु] वृक्ष विशेष (सुर ७, १६, स ६३३)।

णमो अ [नमस्] नमस्कार, नमन (भग, कुमा)।

णमोक्कार पुं [नमस्कार] १ नमन, प्रणाम (हे १, ६२, २, ४)। २ जैन-शास्त्र में प्रसिद्ध एक सूत्र—मन्त्र-विशेष (विसे २८०५)। °सहिय न [°सहित] प्रत्याख्यान-विशेष, व्रत-विशेष (पडि)।

णमोयार देखो णमोक्कार (चड)।

णम्म पुंन [नर्मन्] १ हाँसी, उपहास। २ क्रीडा, केलि (हे १, ३२, श्रा १४, दे २, ६४, पाअ)।

णम्मया स्त्री [नर्मदा] १ स्वनाम प्रसिद्ध नदी (सुपा ३८०)। २ स्वनाम-ख्यात एक राजपत्नी (स ५)।

णय देखो णद = नद, 'विस्सरं नयई नद' (सम ५०)।

णय पु [नग] १ पहाड, पर्वत (उप पृ २५६, सुपा ३४८)। २ वृक्ष, पेड (हे १, १७७)। देखो णग।

णय अ [नच] नही (उप ७६८ टी)।

णय [नत] १ नमा हुआ, झुका हुआ, प्रणत, नम्र (णाया १, १)। २ जिसको नमस्कार किया गया हो वह, 'नीसेसवियडपडिवक्खनयक्कमो विक्कमो राया' (सुपा ५६६)। ३ न देवविमान-विशेष (सम ३७)। °सच्च पु [सत्य] श्रीकृष्ण, नारायण (अच्चु ७)।

णय पुं [नय] १ न्याय, नीति (विसे ३३९५, सुपा ३४८, स ५०१)। २ युक्ति (उप ७६८)। ३ प्रकार, रीति, 'जलणा वि घेप्पई पवणा भुयगो य केणइ नएण' (स ४५४)। ४ वस्तु के अनेक धर्मो मे किसी एक को मुख्य रूप से स्वीकार कर अन्य धर्मो की उपेक्षा करनेवाला मत, एकांश-ग्राहक बोध (सम्म २१, विसे ६१४, ठा ३, ३)। ५ विधि (विसे ३३९५)। °चंद पुं [°चन्द्र] स्वनाम ख्यात एक जैन ग्रन्थकार (रंभा)। °त्थि वि [°र्थिन्] न्याय चाहनेवाला (श्रा १४)। °व, °वत वि [°वत्] नीतिवाला, न्याय-परायण (सम ५०, सुपा ५४२)। °विजय पुं [°विजय] विक्रम की सतरहवी शताब्दी के एक जैन मुनि, जो सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री यशोविजयजी के गुरु थे (उवर २०२)।

णयचक्क न [नयचक्र] एक प्राचीन जैन प्रमाण-ग्रन्थ (सम्मत्त ११७)।

णयण न [नयन] १ ले जाना, प्रापण (उप १३४)। २ जानना, ज्ञान। ३ निश्चय (विसे ६१४)। ४ वि ले जानेवाला, 'वयणाइं सुपहनयणाइं' (सुपा ३७७)। ५ पुन. आंख, नेत्र, लोचन (हे १, ३३, पाअ)। °जल न [°जल] अश्रु, आंसू (पाअ)।

णयय पु [दे नवत] ऊन का बना हुआ आस्तरण-विशेष (णाया १, १—पत्र १३)।

णयर देखो णगर (हे १, १७७, सुर ३, २० औप, भग)।

णयरंगणा स्त्री [नगराङ्गना] वेश्या, गणिका (श्रा २७)।

णयरी स्त्री [नगरी] शहर, पुरी (उपा, पउम ३६ १००)।

णर पुं [नर] १ मनुष्य, मानुष, पुरुष (हे १, २२६, सूअ १, १ ३)। २ अर्जुन, मध्यम पाण्डव (कुमा)। °उसभ पुं [°वृषभ] श्रेष्ठ मनुष्य, अंगीकृत कार्य का निर्वाहक पुरुष (औप)। °कंतप्पवाय पु [°कान्तप्रपात] ह्रद-विशेष (ठा २, ३)। °कंता स्त्री [°कान्ता] नदी-विशेष (ठा २, ३, सम २७)। °कंता-कूड न [°कान्ताकूट] रुक्मि पर्वत का एक शिखर (ठा ८)। °दत्ता स्त्री [°दत्ता] १ मुनि-सुव्रत भगवान् की शासनदेवी (राज) २ विद्यादेवी-विशेष (संति ५)। °देव पु [°देव] चक्रवर्त्ती राजा (ठा ५, १) °नायग पु [°नायक] राजा, नरपति (उप २११ टी)। °नाह पु [°नाथ] राजा, भूपाल (सुपा ६, सुर १, ६१)। °पहु पुं [°प्रभु] राजा, नरेश (उप ७२८ टी, सुर २, ८४)। °पौरुसि पुं [°पौरुषिन्] राज-विशेष (उप ७२८ टी)। °लोअ पुं [°लोक] मनुष्य लोक (जी २२, सुपा ४१३)। °वइ पुं [°पति] नरेश, राजा (सुर १, १०४)। °वर पुं [°वर] १ राजा, नरेश (सुर १, १३१, १५, १४)। २ उत्तम पुरुष (उप ७२८ टी)। °वरिंद पुं [°वरेन्द्र] राजा, भूमि-पति (सुपा ५६, सुर २, १७६)। °वरीसर पु [°वरेश्वर] श्रेष्ठ राजा (उत्त १८)। °वसभ, °वसह पु [°वृषभ] १ देखो °उसभ (पण्ह १, ४, सम १५३)। २ राजा, नृपति (पउम ३, १४)। ३ पु. हरिवंश का एक स्वनाम-प्रसिद्ध राजा (पउम २२, ६७)। °वाल पुं [°पाल] राजा, भूपाल (सुपा २७३)। °वाहण पु [°वाहन] स्वनाम-ख्यात एक राजा (श्राक १, सण)। °वेय पु [°वेद] पुरुष वेद, पुरुष को स्त्री के स्पर्श की अभिलाषा (कम्म ४)। °सिंघ, °सिंह, °सीह पुं [°सिंह] १ उत्तम पुरुष, श्रेष्ठ मनुष्य (मम १५३, पउम १००, १६)। २ अर्ध भाग मे पुरुष का और अर्ध भाग मे सिंह का आकारवाला, श्रीकृष्ण, नारायण (णाया १, १६) °सुंदर पु [°सुन्दर] स्वनाम-ख्यात एक राजा (धम्म)। °ाहिव पुं [°ाधिप] राजा, नरेश (गा ३६४, सुपा २५)।

णरइंदय पु [नरकेन्द्रक] नरक-स्थान-विशेष (देवेन्द्र १)।

णरकंठ पुं [नरकण्ठ] रत्न की एक जाति (राय ६७)।

णरसिंह पु [नरसिंह] १ बलदेव, 'तत्तो लोयम्मि बलदेवो नरसिंहो त्ति पसिद्धो' (कुप्र १०३)। २ एक राजकुमार (कुप्र १०६)।

णरग, णरय पु [नरक] नारक जीवो का स्थान (विपा १, १, पउम १४, १६, श्रा ३, प्रासू २८, उव)। °वाल, °वालय पुं [°पाल, °क] परमाधार्मिक देव, जो नरक के जीवो को यातना (पीडा) देते हैं (पउम २६, ५१, ८, २३७)।

णिक्किट्ठ वि [निकृष्ट] अधम, नीच, हीन, जघन्य, 'अइनिक्किट्ठपाविट्ठयावि अहा' (श्रा १४, २७, सुपा ५७१, सट्ठि १५८)।

णिक्किण सक [निर् + क्री] निष्क्रय करना, खरीदना। णिक्किणासि (मुच्छ ६१)।

णिक्कित्तिम वि [निष्कृत्रिम] अकृत्रिम, असली, स्वाभाविक (उप ९८६ टी)।

णिक्किय वि [निष्क्रिय] क्रिया-रहित, अक्रिय (पराह १, २)।

णिक्किव वि [निष्कृप] कृपा-रहित, निर्दय (पाग्र, गा ३०, सुपा ४०६)।

णिक्कीलिय वि [निष्क्रीडित] गमन, गति (पव २७१)।

णिक्कुड पु [निष्कुट] तापन, तपाना (राज)।

णिक्कूइल स्त्री [दे] जीता हुआ, विनिर्जित (दे १, ४)।

णिक्कोडण न [निष्कोटन] बन्धन-विशेष (पराह १, ३—पत्र ५३)।

णिक्कोर सक [निर् + कोरय्] १ दूर करना। २ पात्र वगैरह के मुँह का बन्द करना। ३ पात्र आदि का तक्षण करना। णिक्कोरेइ (बृह १)।

णिक्कोरण न [निष्कोरण] १ पात्र आदि के मुँह का बन्द करना। २ पात्र आदि का तक्षण (बृह १)।

णिक्ख पुं [दे] १ चोर। २ सुवर्ण, काञ्चन (दे २, ४७)।

णिक्ख पुंन [निष्क] दीनार, मोहर, मुद्रा, अशर्फी, रुपया (हे २, ४)।

णिक्खत देखो णिक्कत (सूत्र १, ८, सम १५१, कस)।

णिक्खध वि [नि स्कन्ध] स्कन्ध-रहित, डाली-रहित (गा ४६८ अ)।

णिक्खणण न [निखनन] गाडना (कुप्र १६१)।

णिक्खत्त वि [नि क्षत्र] क्षत्र-रहित, क्षत्रिय-रहित (पि ३१६)।

णिक्खम अक [निर् + क्रम्] १ बाहर निकलना। २ दीक्षा लेना, संन्यास लेना। णिक्खमइ (भग)। णिक्खमंति (कप्प)। भूका. णिक्खमिंसु (कप्प)। भवि. णिक्खमिस्सति (कप्प)। वकृ. णिक्खममाण (णाया १, ५, पउम २२, १७)। संकृ. णिक्खम्म (कप्प)। हेकृ. णिक्खमित्तए (कप्प, कस)।

णिक्खम पुंन [निष्क्रम] १ निर्गमन। २ दीक्षा-ग्रहण (ठा १०, दस १०)।

णिक्खमण न [निष्क्रमण] ऊपर देखो (सुज्ज १३, णाया १, १६, पउम २३, ४)।

णिक्खय वि [निखात] गाडा हुआ (कुप्र २५)।

णिक्खय वि [दे. निक्षत] निहत, मारा हुआ (दे ४, ३२, पाग्र)।

णिक्खविअ वि [निक्षपित] नष्ट किया हुआ, विनाशित (अच्चु ३१)।

णिक्खसरिअ वि [दे] मुषित, जो लूट लिया गया हो, अपहृत-सार (दे ४, ४१)।

णिक्खाविअ वि [दे] शान्त, उपशम-प्राप्त (षड्)।

णिक्खित्त वि [निक्षिप्त] १ न्यस्त, स्थापित (पाग्र, पराह १, ३)। २ मुक्त, परित्यक्त (णाया १, १, वव २)। ३ पाक-भाजन में स्थित (पराह २, १)। °चर वि [°चर] पाक-भाजन में स्थित वस्तु को भिक्षा के लिए खोजनेवाला (पराह २, १, औप)।

णिक्खिप्पमाण नीचे देखो।

णिक्खिव सक [नि + क्षिप्] १ स्थापन करना, स्वस्थान मे रखना। २ परित्याग करना। णिक्खिवइ (महा)। णिक्खिवंत (निचू १६)। कवकृ. णिक्खिप्पमाण (आचा)। संकृ णिक्खिवित्ता, णिक्खिविअ, णिक्खिविउ (कस, पि ३१६, नाट—विक्र १०३, वव १)। कृ णिक्खिविअव्व, णिक्खेत्तव्व (पराह १, १, विसे ९१७)।

णिक्खिव सक [नि + क्षिप्] नाम आदि भेदों से वस्तु का निरूपण करना। निक्खिवे (अणु १०)। भवि निक्खिविस्सामि (अणु १०)।

णिक्खिव पु [निक्षेप] १ स्थापन। २ न्यास-स्थापन, धरोहर, धन आदि जमा रखना (श्रा १४)।

णिक्खिवण न [निक्षेपण] १ स्थापन। २ डालना (सुपा ६२६, पडि)।

णिक्खुड वि [दे] अकम्प, स्थिर (दे ४, २८)।

णिक्खुड पुंन [निष्कुट] १ कोटर, खोखला, विवर (तंदु २६)। २ पृथिवी-खण्ड (विसे १५३८, पंच २, ३२)। ३ गृहाराम, उपवन, घर के पास का बगीचा (राय २५)।

णिक्खुड पुं [निष्कुट] भूमि-खण्ड (विसे १५३८)।

णिक्खुत्त न [दे] निश्चित, नक्की, चोक्कस, अवश्य, 'पत्ते विणासकाले नासइ बुद्धी नराण निक्खुत्त' (पउम ५३, १३८), 'वत्ता दाहामि निक्खुत्त' (पउम १०, ८५)।

णिक्खुरिअ वि [दे] अदृढ, अस्थिर (दे ४, ४०)।

णिक्खेड पु [निष्खेट] अधमता, नीचता, दुष्टता (सुपा २७६)।

णिक्खेत्तव्व देखो णिक्खिव = नि + क्षिप्।

णिक्खेव पुं [निक्षेप] १ न्यास, स्थापन (अणु)। २ परित्याग, मोचन (आचा २, १, १, १)। ३ धरोहर, धन आदि जमा रखना (पउम ६२, ६)।

णिक्खेवण न [निक्षेपण] १ निक्षेप, स्थापन (पव ६)। २ व्यपस्थापन, नियमन (विसे ९१२)।

णिक्खेवणया } स्त्री [निक्षेपणा] स्थापना,
णिक्खेवणा } विन्यास (उवा, कप्प)।

णिक्खेवय पु [निक्षेपक] निगमन, उपसहार (बृह १)।

णिक्खेविय वि [निक्षिप्त] १ न्यस्त, स्थापित। २ मुक्त, परित्यक्त (सण)।

णिक्खेविय वि [निक्षेपित] ऊपर देखो (भवि)।

णिक्खोभ } पुं [नि क्षोभ] क्षोभ-रहित,
णिक्खोह } निष्कम्प (सम १०६, चउ ४७)।

णिखय देखो णिक्खय (कुप्र २२३)।

णिखव्व न [निखर्व] संख्या-विशेष, सौ खर्व, सौ अरब (राज)।

णिखिल वि [निखिल] सर्व, सकल, सब (अणु, नाट—महावीर ९७)।

णिगंठ देखो णिअंठ (विसे १३३२)।

णिगड सक [निगडय्] नियन्त्रित करना, बाँधना। संकृ. निगडिऊण (कुप्र १८७)।

णवरत्ति स्त्री [नवरात्रि] नव दिनों का आश्विन मास का एक पर्व (सट्ठि ७८)।

णवरि अ [दे] शीघ्र, जल्दी, (प्राकृ ८१)।

णवरि } देखो णवर (हे २, १८८, से १,
णवरिअ } ३६, प्रामा, सुर, २६, पड्, गा १७२)।

णवरिअ न [दे] सहसा, जल्दी, तुरन्त (दे ४, २२, पाअ)।

णवरु देखो णवर (चड)।

णवलया स्त्री [दे] वह व्रत, जिसमें पति का नाम पूछने पर उसे नहीं बतानेवाली स्त्री पलाश की लता से ताडित की जाती है (हे ४, २१)।

णवल्ल देखो णव = नव (हे २, १६५, कुमा, उप ७२८ टी)।

णवसिअ न [दे] उपयाचितक, मनौती (दे ४, २२, पाअ, वज्जा ८६)।

णवा स्त्री [नवा] १ नवोढा, दुलहिन। २ युवति स्त्री (सूअ १, ३, २)। ३ जिसको दीक्षा लिए तीन वर्ष हुए हों ऐसी साध्वी (वव ४)। ४ अ प्रश्नार्थक अव्यय, अथवा नहीं? (रयण ६७)।

णवि अ. १ वैपरीत्य-सूचक अव्यय, 'णवि हा वणे' (हे २, १७८, कुमा)। २ निषेधार्थक अव्यय (गउड)।

णविअ देखो णमिअ = नत (हे ३, १५६, भवि)।

णविअ वि [नव्य] नूतन, नया (आचा २, २, ३)।

णवीण वि [नवीन] नूतन, नया (मोह ८३, धर्मवि १३०)।

णवुत्तरसय वि [नवोत्तरशततम] एक सौ नववाँ (पउम १०९, २७)।

णवुल्लडय (अप) देखो णव = नव (कुमा)।

णवोढा स्त्री [नवोढा] नव-विवाहिता स्त्री, दुलहिन (काप्र १९७)।

णवोद्धरण न [दे] उच्छिष्ट, जूठा (दे ४, २३)।

णव्व पु [दे] आयुक्त, गाँव का मुखिया (दे ४, १७)।

णव्व वि [नव्य] नूतन, नया, नवीन (श्रा २७)।

णव्व° देखो णा = ज्ञा।

णव्वाउत्त पुं [दे] १ ईश्वर, धनाढ्य, भोगी। २ नियोगी का पुत्र, सूबेदार का लड़का (दे ४, २२)।

णस सक [नि + अस्] स्थापन करना। नसेज्ज (विसे ९४३)। कर्म. नस्सए (विसे ९७०)। सकृ नसिऊण (स ६०८)।

णस अक [नश्] भागना, पलायन करना। णसइ (पिंग)।

णसण न [न्यसन] न्यास, स्थापन (जीव १)।

णसा स्त्री [दे] नस, नाडी, 'असुईरसनिज्झरणे हड्डुक्करडम्मि चम्मनसनद्धे' (सुपा ३५५)।

णसिअ वि [नष्ट] नाश-प्राप्त (कुमा)।

णस्स देखो नस = नश्। णस्सइ, णस्सए, (पड्, कुमा)। वकृ. नस्संत, नस्समाण (श्रा १६, सुपा २१५)।

णस्सर वि [नश्वर] विनश्वर, भंगुर, नाश पानेवाला, 'खणनस्सराइ स्वाइं' (सुपा २४३)।

णस्सा स्त्री [नासा] नासिका, घ्राणेन्द्रिय (नाट मृच्छ ९२)।

णह देखो णक्ख (सम ६०, कुमा)।

णह न [नभस्] १ आकाश, गगन (प्राप्र, हे १, ३२)। २ पु. श्रावण मास (दे ४, १९)। °अर वि [°चर] १ आकाश में विचरनेवाला (से १४, ३८)। २ पु विद्याधर, आकाश-विहारी मनुष्य (सुर ६, १८६)। °केउमडिय न [°केतुमण्डित] विद्याधरों का एक नगर (इक)। °गमा स्त्री [°गमा] आकाश-गामिनी विद्या (सुर १०, १८६)। °गामिणी स्त्री [°गामिनी] आकाश गामिनी विद्या (सुर ३, २८)। °चर देखो °अर (उप ५९७ टी)। °च्छेदणय न [°च्छेदनक] नख उतारने का शस्त्र (आचा २, १, ७, १)। °तिलय न [°तिलक] १ नगर-विशेष। २ सुभट-विशेष (पउम ५५, १८)। °वाहण पु [°वाहन] नृप-विशेष (सुर ६, २६)। °सिर न [°शिरस्] नख का अग्र भाग (भग ५, ४)। °सिहा स्त्री [°शिखा] नख का अग्र भाग (कप्प)। °सेण पु [°सेन] राजा उग्रसेन का एक पुत्र (राज)। °हरणी स्त्री [°हरणी] नख उतारने का शस्त्र (बृह ३)।

णहंसि वि [नखवत्] नखवाला (दस ६, ६५)।

णहमुह पु [दे] घूक, उल्लू (दे ४, २०)।

णहर पुं [नखर] नख, नाखून (सुपा ११, ६०६)।

णहरण पुं [दे] नखी, नखवाला जन्तु, श्वापद (वज्जा १२)।

णहरणी स्त्री [नखहरणी] नहरनी, नख उतारने का शस्त्र (पंचव ३)।

णहराल पु [नखरिन्] नखवाला श्वापद जंतु (उप ५३० टी)।

णहरी स्त्री [दे] क्षुरिका, छुरी (दे ४, २०)।

णहवल्ली स्त्री [दे] विद्युत्, बिजली (दे ४, २२)।

ण्हारु न [स्नायु] स्नायु, रग, नस, नाडी।

णहि पुं [नखिन्] नख-प्रधान जन्तु, श्वापद जन्तु (अणु)।

णहि वि [नखिन्] ऊपर देखो (अणु १४२)।

णहि अ [नहि] निषेधार्थक अव्यय, नहीं (स्वप्न ४१, पिंग, सण)।

णहु अ [नखलु] ऊपर देखो (नाट—मृच्छ २९१, णाया १, ९)।

णा सक [ज्ञा] जानना, समझना। भवि. णाहिइ (विसे १०१३)। णाहिमि (पि ५३४)। कर्म णव्वइ, णज्जइ (हे ४, २५२)। कवकृ णज्जंत, णज्जमाण (से १३, ११, उप १००१ टी)। सकृ णाउं, णाऊण, णाऊणं, णच्चा, णच्चाण (महा, पि ५८६, औप, सूअ १, २, ३, पि ५८७)। कृ णायव्व, णेअ (भग, जी ६, सुर ४, ७०, द २, हे २, १९३, नव ३१)।

णा अ [न] निषेध-सूचक अव्यय (गउड)।

णाअअ } देखो णायग (प्राकृ २६)।
णाअक्क }

णाअक्क (अप) देखो णायग (पिंग)।

णाइ पु [ज्ञाति] इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न क्षत्रिय-विशेष। °पुत्त पुं [°पुत्र] भगवान् श्री महावीर (आचा)। °सुय पुं [°सुत] भगवान् श्री महावीर (आचा)।

णाइ स्त्री [ज्ञाति] १ नात, समान जाति (पउम १००, ११, औप, उवा)। २ माता-पिता आदि स्वजन, सगा (णाया १, १)। ३ ज्ञान, बोध (आचा; ठा ५, ३)।

णग्गिण्ह देखो णिगिण्ह। णिग्गिण्हामि (विसे २४८२)।

णिग्गिलिय वि [निर्गलित] वान्त, वमन किया हुआ (स ३५८)।

णिग्गुंडी स्त्री [निर्गुण्डी] औषधि-विशेष, वनस्पति सभालू (पण्ण १)।

णिग्गुण वि [निर्गुण] गुण-रहित, गुण-हीन (गा २०३, उव, पण्ह १, २, उप ७२८टी)।

णिग्गुण्ण } न [नैर्गुण्य] गुण-रहितपन, णिग्गुन्न } गुण-हीनता, निर्गुणत्व (वसु, भत्त १४)।

णिग्गूढ वि [निर्गूढ] स्थिर रूप से स्थापित (सूअ २, ७)।

णिग्गोह पु [न्यग्रोध] वृक्ष-विशेष, वरगद, वड का पेड (पउम २०, ३६, पड्)। °परिमडल न [°परिमण्डल] शरीर-संस्थान-विशेष, वटाकार शरीर का आकार (सम १४६, ठा ६)।

णिग्घट } देखो णिघंटु (कप्प)।
णिग्घटु }

णिग्घट्ट वि [दे] कुशल, निपुण, चतुर (दे ४, ३४)।

णिग्घण देखो णिग्घिण (विक्र १०२)।

णिग्घत्तिअ वि [दे] क्षिप्त, फेंका हुआ (पाअ)।

णिग्घाइय वि [निर्घातित] १ आघात-प्राप्त, आहत। २ व्यापादित, विनाशित (णाया १, १३)।

णिग्घाय पुं [निर्घात] राक्षस-वंश का एक राजा (पउम ६, २२४)।

णिग्घाय पु [निर्घात] १ आघात, 'रंगिरतुरगतुरगमखुरग्गनिग्घायविहुरियं धरणि' (सुपा ३)। २ विजली का गिरना (स ३७५, जीव १)। ३ व्यन्तर-कृत गर्जना (ठा १०)। ४ विनाश (सूअ १, १५)।

णिग्घायण न [निर्घातन] नाश, विनाश, उच्छेदन (पडि, सुपा ५०३)।

णिग्घिण वि [निर्घृण] निर्दय, करुणा-रहित (गा ४५२, पण्ह १, १, सुर २, ६१)।

णिग्घेतुं देखो णिगिण्ह।

णिग्घोर वि [दे] निर्दय, दया-हीन (दे ४, ३७)।

णिग्घोस पुं [निर्घोष] महान् अव्यक्त शब्द (पण्ह १, सम १५३)।

णिघंटु पुं [निघण्टु] शब्द-कोश, नाम संग्रह (औप, भग)।

णिघस पु [निकष] १ कसौटी का पत्थर (अणु)। २ कसौटी पर की जाती सुवर्ण की रेखा (सुपा ३६१)।

णिचय पुं [निचय] संग्रह, सचय (सूअ १, १०, ६)।

णिचय पुं [निचय] १ समूह, राशि। २ उपचय, पुष्टि (ओघ ४०७, स ३६६, आचा, महा)।

णिचिअ वि [निचित] १ व्याप्त, भरपूर (अजि ५)। २ निविड, पुष्ट (भग)।

णिचुल पुं [निचुल] वृक्ष-विशेष, वजुल वृक्ष (स १११, कुमा)।

णिच्च वि [नित्य] १ अविनश्वर, शाश्वत (आचा, औप)। २ न. निरन्तर, सर्वदा, हमेशा (महा, प्रासू १४, १०१)। °च्छणिय वि [°क्षणिक] निरन्तर उत्सववाला (णाया १, ४)। °मंडिया स्त्री [°मण्डिता] जम्बू वृक्ष-विशेष (इक)। °वाय पुं [°वाद] पदार्थों को नित्य माननेवाला मत, 'सुहदुक्खसपओगो न जुज्जइ निच्चवायपक्खम्मि' (सम १८)। °सो अ [°शस्] सदा, सर्वदा, निरन्तर (महा)। °लोअ, °लोग, °लोव पु [°लोक] १ एक विद्याधर-राजा (पउम ६, ५२)। २ ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३)। ३ न. नगर-विशेष (पउम ६, ५२, इक)। ४ वि. सर्वदा प्रकाशवाला (कप्प)।

णिच्च देखो णीय = नीच (सम ५५)।

णिच्चक्खु वि [निश्चक्षुस्] चक्षु-रहित, नेत्र हीन, अन्धा (पउम ८२, ५१)।

णिच्चट्ट (अप) वि [गाढ] गाढ़, निविड (हे ४, ४२२)।

णिच्चय देखो णिच्छय (प्रयौ २१, पि ३०१)।

णिच्चर देखो णिव्वर। णिच्चरइ (हे ४, ३ टि)।

णिच्चल सक [क्षर्] झरना, टपकना, चूना। णिच्चलइ (हे ४, १७३)। प्रयो णिच्चलावेइ (कुमा)।

णिच्चल सक [मुच्] दु ख को छोड़ना, दु ख का त्याग करना। णिच्चलइ (हे ४, ९२ टि)। भूका. णिच्चलीअ (कुमा)।

णिच्चल वि [निश्चल] स्थिर, दृढ, अचल (हे २, २१, ७७)। °पय न [°पद] मुक्ति, मोक्ष (पचव ४)।

णिच्चिंत वि [निश्चिन्त] चिन्ता-रहित, वेफिक्र (विक्र ४३, प्रासू २७, सुपा २२५)।

णिच्चिट्ठ वि [निश्चेष्ट] चेष्टा-रहित (सुपा १४)।

णिच्चिद (शौ) देखो णिच्छिय (पि ३०१)।

णिच्चुज्जोअ पुं [नित्योद्द्योत] नन्दीश्वर द्वीप के मध्य की दक्षिण दिशा में स्थित एक अजनगिरि (पव २६६)।

णिच्चुज्जोअ } वि [नित्योद्द्योत] १ सदा णिच्चुज्जीव } प्रकाशयुक्त। २ पुं. ग्रह-विशेष ज्योतिष्क देव-विशेष (ठा २, ३)। ३ न. एक विद्याधर-नगर (इक)।

णिच्चुड्ड वि [दे] १ उद्वृत्त, बाहर निकला हुआ (षड्)। २ निर्दय, दया-हीन (पाअ)।

णिच्चुव्विग्ग वि [नित्योद्विग्न] सदा खिन्न (दस ५, २)।

णिच्चेट्ठ देखो णिच्चिट्ठ (णाया १, २, सुर ३, १७२)।

णिच्चेयण वि [निश्चेतन] चेतना-रहित (महा)।

णिच्चोउया स्त्री [नित्यर्तुका] हमेशा रजस्वला रहनेवाली स्त्री (ठा ५, २)।

णिच्चोय सक [दे] निचोड़ना। निच्चोयइ (कुप्र २१५)।

णिच्चोरिक्क न [निश्चौर्य] १ चोरी का अभाव। २ वि चोरी-रहित (उप १३६ टी)।

णिच्छइय वि [नैश्चयिक] १ निश्चय-सम्बन्धी। २ पुं. निश्चय नय, द्रव्यार्थिक नय, परिणाम-वाद (विसे)।

णिच्छउम वि [निश्छद्मन्] १ कपट-रहित, माया-वर्जित (गण ८, सुपा ३५०)। २ क्रिवि. विना कपट (सार्ध ५१)।

णिच्छक्क वि [दे] १ निर्लज्ज, वेशरम, धृष्ट, ढीठ (बृह १, वव ५)। २ अवसर को नहीं जाननेवाला, असमयज्ञ (राज)।

जैन ग्रन्थांश-विशेष, पाँचवाँ पूर्व (सम २६)। °मायार देखो °यार (पडि)। °व, वंत वि [°वत्] ज्ञानी, विद्वान् (पि ३४८, आचा, अचु ४६)। °वि वि [°वित्] ज्ञान-वेत्ता (आचा)। °यार पु [°चार] ज्ञान-विषयक शास्त्रोक्त विधि (राज)। °वरण न [°वरण] ज्ञान का आच्छादक कर्म (घण ४४)। °वरणिज्ज न [°वरणीय] अनन्तर उक्त अर्थ (सम ६६, औप)।

णाणक } न [दे] सिक्का, मुद्रा (मृच्छ १७, णाणग } राज)।

णाणत न [नानात्व] भेद, विशेष, अन्तर (ओघ ६१८)।

णाणता स्त्री [नानाता] ऊपर देखो (विसे २१६१)।

णाणा अ [नाना] अनेक, जुदा-जुदा (उवा, भग, सुर १, ८६)। °विह वि [°विध] अनेक प्रकार का, विविध (जीव ३, सुर ४, २४५, दं १३)।

णाणि वि [ज्ञानिन्] ज्ञानी, जानकार, विद्वान् (आचा, उव)।

णादिय देखो णाइय (कप्प)।

णाभि पु [नाभि] १ स्वनाम ख्यात एक कुलकर पुरुष, भगवान् ऋषभदेव का पिता (सम १५०)। २ पेट का मध्य भाग। ३ गाड़ी का एक अवयव (दस ७)। °नंदण पु [°नन्दन] भगवान् ऋषभदेव (पउम ४,६८)।

णाम सक [नमय्] १ नमाना, नीचा करना। २ उपस्थित करना। ३ अर्पण करना। णामेइ (हेका ४६)। वकृ. णामयंत (विसे २६६०)। संकृ णामित्ता (निचू १)।

णाम पुं [नाम] १ परिणाम, भाव (भग २५, ५)। २ नमन (विसे २१७६)।

णाम अ [नाम] संभावना सूचक अव्यय (सूअ १, १२, ३)।

णाम अ [नाम] इन अर्थों का सूचक अव्यय—संभावना (से ५, ४)। २ आमन्त्रण, संबोधन (बृह ३, ज १)। ३ प्रसिद्धि, ख्याति (कप्प)। ४ अनुज्ञा, अनुमति (विसे)। ५—६ वाक्यालंकार पाद-पूर्ति में भी इसका प्रयोग होता है (ठा ४, १, राज)।

णाम न [नामन्] नाम, आख्या, अभिधान (विपा १, १, विसे २५)। °कम्म न [°कर्मन्] कर्म-विशेष, विचित्र परिणाम का कारण-भूत कर्म (स ६७)। °धिज्ज, °धेज्ज °धेय न [°धेय] नाम, आख्या (कप्प, सम ७१, पउम ४, ८०)। °पुर न [°पुर] एक विद्याधर-नगर (इक)। °मुद्दा स्त्री [°मुद्रा] नाम से अंकित मुद्रा (पउम ५, ३२)। °सच्च वि [°सत्य] नाम-मात्र से सच्चा, नामधारी (ठा १०)। °हेअ देखो °धेय (पउम २०, १७६, स्वप्न ४३)।

णामण न [नमन] नमाना, नीचा करना (विसे ३००८)।

णाममतक्ख पु [दे] अपराध, गुनाह (गउड)।

णामागोत्त न [नामगोत्र] १ यथार्थ नाम। २ नाम तथा गोत्र (सुज १६)।

णामिय वि [नमित] नमाया हुआ (सार्ध ८०)।

णामिय न [नामिक] वाचक शब्द, पद (विसे १००३)।

णामुक्कसिअ } न [दे] कार्य, काम, काज णामोक्कसिअ } (हे २, १७४, दे ४, २५)।

णाय वि [दे] गर्विष्ठ, अभिमानी (दे ४, २३)।

णाय देखो णाग (काप्र ७७७, कप्पू, औप; गउड, वज्जा १४, सुपा ६३६, पउम २१, ४६)।

णाय पु [नाद] शब्द, आवाज, ध्वनि (औप, पउम २२, ३८, स २१३)।

णाय पुं [न्याय] १ अक्षपाद—प्रणीत न्याय-शास्त्र (सुख ३,१, धर्मवि ३८)। २ सामयिक आदि षट्-कर्म (अणु ३१)।

णाय पुं [नाद] अनुनासिक वर्ण, अर्धचन्द्राकार अक्षर-विशेष (सिरि १९६)।

णाय वि [न्याय्य] न्याय-युक्त (सूअ १, १३, ६)।

णाय पुं [न्याय] १ न्याय, नीति (औप, स १५६, आचा)। २ उपपत्ति, प्रमाण (पचा ४, विसे)। °कारि वि [°कारिन्] न्याय-कर्ता (आचू १) °गर वि [°कर] १ न्याय-कर्ता। पु. न्यायाधीश (श्रा १४)। °ण्ण वि [°ज्ञ] न्याय का जानकार (उप ३४६)।

णाय पु [नाक] स्वर्ग, देव-लोक (पाअ)।

णाय पुं [ज्ञात] १ भगवान् महावीर (सूअ १, २,२,३१)। २ वि. प्रसिद्ध (सूअ १,६,२१)।

णाय वि [ज्ञात] १ जाना हुआ, विदित (उव, सुर २, ३६)। २ ज्ञाति संबन्धी, सगा, एक बिरादरी का (कप्प, आउ ६)। ३ वंश-विशेष में उत्पन्न (औप)। ४ पुं वंश-विशेष (ठा ६)। ५ क्षत्रिय-विशेष (सूअ १, ६, कप्प)। ६ न. उदाहरण, दृष्टान्त (उव, सुपा १२८)। °कुमार पुं [°कुमार] ज्ञात-वंशीय राज-पुत्र (णाया १, ८)। °कुल न [°कुल] वंश-विशेष (पण्ह १, ३)। °कुलचंद पु [°कुलचन्द्र] भगवान् श्री महावीर (आचा)। °कुलनंदण पुं [कुलनन्दन] भगवान् श्री महावीर (पण्ह १,१)। °पुत्त पुं [°पुत्र] भगवान् श्री महावीर (आचा)। °मुणि पुं [°मुनि] भगवान् श्री महावीर (पण्ह २,१)। °विहि पुंस्त्री [°विधि] माता या पिता के द्वारा संबन्ध, संबन्धिपन (वव ६)। °संड न [°षण्ड] उद्यान-विशेष, जहाँ भगवान् श्रीमहावीर देव ने दीक्षा ली थी (आचा २, ३, १)। °सुय पुं [°सुत] भगवान् श्रीमहावीर। °सुय न [°श्रुत] 'ज्ञाताधर्मकथा' नामक जैन आगम-ग्रन्थ (णाया २, १)। °धम्मकहा स्त्री [°धर्मकथा] जैन आगम-ग्रंथ-विशेष (सम १))

णायग पु [नायक] हार के बीच की मणि, सुमेरु (स ६८६)।

णायग पु [नायक] नेता, मुखिया, अगुआ (उप ६४८ टी, कप्प, सम १, सुपा २२)।

णायत्त पु [दे] समुद्र मार्ग से व्यापार करने-वाला वणिक्, 'पवहणवाणिज्जपरा सुहंकरा आसि नाम नायत्ता' (उप ५६७ टी)।

णायर देखो णागर (महा, सुपा १८८)।

णायरिय देखो णागरिय (सुर १४, १३३)। स्त्री. °या (भवि)।

णायरी देखो णागरी (भवि)।

णायव्व देखो णा = ज्ञा।

णार पुं [नार] चतुर्थ नरक-पृथिवी का एक प्रस्तर (इक)।

णारइअ वि [नारकिक] १ नरक पृथिवी में उत्पन्न, नारकी। २ पु. नरक का जीव (हे १, ७९)।

णिज्जाण न [निर्याण] १ बाहर निकलना, निर्गम (ठा ५, ३)। २ आवृत्ति-रहित गमन (औप)। ३ मोक्ष, मुक्ति (आव ४)।

णिज्जाणिय वि [नैर्याणिक] निर्याण-सबन्धी, निर्गम-सबन्धी (भग १३, ६, निचू ८)।

णिज्जामग } पु [निर्यामक] कर्णधार, णिज्जामय } जहाज का नियन्ता (विसे २६५६, णाया १, १७, औप, सुर १३, ४८)।

णिज्जामण न [निर्यापन] बदला चुकाना, 'वेरणिज्जामण' (वव १)।

णिज्जामय पु [निर्यामक] १ बीमार की सेवा-शुश्रूषा करनेवाला मुनि (पव ७१)। २ वि. आराधना-कारक (पव-गाथा १७)।

णिज्जामिय वि [निर्यामित] पार पहुँचाया हुआ, तारित (महा)।

णिज्जाय पुं [दे] उपकार (दे ४, ३४)।

णिज्जाय वि [निर्यात] निर्गत, नि सृत (वसु, उप पृ २८६)।

णिज्जायण न [निर्यातन] वैर-शुद्धि, बदला (महा)।

णिज्जायणा स्त्री [निर्यातना] ऊपर देखो (उप ४३१ टी)।

णिज्जावय देखो णिज्जामय (भवि)।

णिज्जास पुं [निर्यास] वृक्षों का रस, गोंद, (सूअ २, १)।

णिज्जिअ वि [निर्जित] जीता हुआ, पराभूत (ओघ १८ भा टी, सुर ६, ३६, औप)।

णिज्जिण सक [निर् + जि] जीतना, पराभव करना। निज्जिणइ (भवि) सक्. निज्जिणिऊण, (महा)।

णिज्जिणिय देखो णिज्जिअ (सुपा २६)।

णिज्जिण्ण } वि [निर्जीर्ण] नाश-प्राप्त, णिज्जिन्न } क्षीण (भग, ठा ४, १)।

णिज्जीव वि [निर्जीव] जीव-रहित, चैतन्य वर्जित (औप, श्रा २०, महा)।

णिज्जुज [निर् + युज्] उपकार करना (पिंड २६ टी)।

णिज्जुत्त वि [निर्युक्त] १ संबद्ध, सयुक्त (विसू १०८५, ओघ १ भा)। २ खचित, जड़ित (औप)। ३ प्ररूपित, प्रतिपादित (आवम)।

णिज्जुत्ति स्त्री [निर्युक्ति] व्याख्या, विवरण, टीका (विसे ६६५, ओघ २, सम १०७)।

णिज्जुद्ध देखो णिउद्ध (स ४७०)।

णिज्जूढ वि [निर्यूढ] १ निस्सारित, निष्का-सित (णाया १, १—पत्र ६४) २ अमनोज्ञ, असुन्दर (ओघ ५४८)। ३ उद्धृत, ग्रन्थान्तर से अवतारित (दसनि १)।

णिज्जूढ वि [निर्यूढ] रहित, 'निट्ठाण रस-निज्जूढ' (दस ८, २२)।

णिज्जूह सक [निर् + यूह्] १ परित्याग करना। २ रचना, निर्माण करना। कर्म. णिज्जूहिज्जइ (पि २२१)। हेकृ णिज्जूहित्तए (वव २)। कृ णिज्जूहियव्व (कप्प)।

णिज्जूह पु [दे निर्यूह] १ नीव्र, छदि, गृहाच्छादन, पाटन (दे ४, २८, स १०६)। २ गवाक्ष, गोख, 'इय जाव चिंतए मंती णिज्जूहट्ठिओ' (धम्म ६ टी, वव १)। ३ द्वार के पास का काष्ठ-विशेष (णाया १, १—पत्र १२, पण्ह १, १)। ४ द्वार, दरवाजा (सुर २, ८३)।

णिज्जूहग वि [निर्यूहक] ग्रन्थान्तर से उद्धृत करनेवाला (दसनि १, १४)।

णिज्जूहण न [निर्यूहण] देखो णिज्जूहणा (उत्त ३६, २५१, पव २)।

णिज्जूहणया } स्त्री [निर्यूहणा] १ निस्सा-णिज्जूहणा } रण, बाहर निकालना (वव १)। परित्याग (ठा ४, २)। ३ विरचना, निर्माण (विसे ५५१)।

णिज्जूहिअ देखो णिव्वूढ (दसनि १, १५)।

णिज्जूहिअ वि [निर्यूहित] रहित (पव १३४)।

णिज्जोअ पु [दे] १ प्रकार, राशि। २ पुष्पो का अवकर (दे ४, ३३)।

णिज्जोअ } पुं [नियोग] १ उपकरण, णिज्जोग } साधन (राय ४५, ४६, पिंड २६)। २ उपकार (पिंड २६)।

णिज्जोअ } पुं [दे. निर्योग] परिकर, णिज्जोग } सामग्री, 'पायणिज्जोगो' (ओघ ६६८, णाया, १, १—पत्र ५४)।

णिज्जोमि पुं [दे] रज्जू, रस्सी (दे ४, ३१)।

णिज्झ अक [स्निह्] स्नेह करना। णिज्झइ (प्राक्ट २८)।

णिज्झर अक [क्षि] क्षीण होना। णिज्झरइ (हे ४, २०, षड्)। वकृ. णिज्झरत (कुमा ६, १३)।

णिज्झर वि [दे] जीर्ण, पुराना (दे ४, २६)।

णिज्झर पुं [निर्झर] झरना, पहाड से गिरता पानी का प्रवाह (हे १, ६८, २, ६०)।

णिज्झरण न [निर्झरण] ऊपर देखो (पउम ६४, ५२, सुर ६, ६४, सुपा ३५५)।

णिज्झरणी स्त्री [निर्झरणी] नदी, तरगिणी (कुमा)।

णिज्झा सक [नि+ध्यै] देखना, निरीक्षण करना। णिज्झाइ, णिज्झाअइ (हे ४, ६)। वकृ. णिज्झाअंत, णिज्झाएमाण (मा ४, आचा २, ३, १)। सकृ. णिज्झाइऊण, णिज्झाइत्ता (महा; आचा)।

णिज्झा सक [निर् + ध्यै] विशेष चिन्तन करना। संकृ. णिज्झाइत्ता (आचा)।

णिज्झाइ वि [निध्यायिन्] देखनेवाला (आचा)।

णिज्झाइत्तु वि [निध्यातृ] देखनेवाला, निरीक्षक (उत्त १६, सम १५)।

णिज्झाइत्तु वि [निर्ध्यातृ] अतिशय चिन्तन करनेवाला (ठा ६)।

णिज्झाइय वि [निध्यात] १ दृष्ट, विलोकित (स ३५२, धण ४५)। २ न. दर्शन, निरी-क्षण (महा—पृष्ठ ५८)।

णिज्झाडिय वि [निर्धाटित] विनाशित (उप ६४८ टी)।

णिज्झाय वि [दे] निर्दय, दया-रहित (दे ४, ३७)।

णिज्झाय वि [निध्यात] दृष्ट, विलोकित (सुर ६, १८८, सुपा ४४८)।

णिज्झूर वि [दे] जीर्ण, पुराना (दे ४, २६)।

णिज्झोड सक [छिद्] छेदना, काटना। णिज्झोडइ (हे ४, १२४)।

णिज्झोडण न [छेदन] छेदन, कर्त्तन (कुमा)।

णिज्झोसइत्तु वि [निर्झोषयितृ] क्षय करने-वाला, कर्मों का नाश करनेवाला (आचा)।

णिट्टक वि [दे] १ टक-च्छिन्न। २ विषम, असमान (४, ५०)।

णिट्टंकिय वि [निष्टङ्कित] निश्चित, अव-धारित (सुपा २६०)।

णासग वि [नाशक] नाश करनेवाला (सुर २, ५८)।
णासण न [नाशन] १ पलायन, अपक्रमण भागना (धर्म २)। २ वि नाश करनेवाला (से ३,२७, गण २२)। स्त्री णी (से ३, २७)।
णासण न [न्यासन] स्थापन, रखना, व्यवस्थापन (अणु)।
णासणा स्त्री [नासना] विनाश (विसे ६३६)।
णासव सक [नाशय्] नाश करना। णासवइ (हे ४, ३१)।
णासविय वि [नाशित] नष्ट किया हुआ, भगाया हुआ (उप ३५७ टी, कुमा)।
णासा स्त्री [नासा] नाक, घ्राणेन्द्रिय (गा २२, आचा, कुपा)।
णासि वि [नाशिन्] विनश्वर, नष्ट होनेवाला (विसे १६८१)।
णासिक्क देखो णासिक्क (णदि १६५)।
णासिक्क न [नासिक्य] दक्षिण भारत का एक स्वनाम प्रसिद्ध नगर, जो आजकल भी 'नासिक' नाम से प्रसिद्ध है, जहाँ शूपर्णखा की नाक कटी थी, पंचवटी (उप पृ २१३, १४१ टी)।
णासिगा स्त्री [नासिका] नाक, घ्राणेन्द्रिय (महा)।
णासिय वि [नाशित] नष्ट किया हुआ (महा)।
णासियव्व देखो णास = नश्।
णासिर वि [नशितृ] नष्ट होनेवाला, विनश्वर (कुमा)।
णासीकय वि [न्यासीकृत] धरोहर या अमानत रूप से रखा हुआ (श्रा १४)।
णासेक्क देखो णासिक्क (उप १४१)।
णाह पुं [नाथ] स्वामी, मालिक (कुमा, प्रासू १२, ६६)।
णाहड पु [नाहट] एक राजा का नाम (ती १५)।
णाहल पुं [लाहल] म्लेच्छ की एक जाति (हे १, २५६, कुमा)।
णाहि देखो णाभि (कुमा; कप्पू)। °रुह पु [°रुह] ब्रह्मा, चतुर्मुख (अच्चु ३६)।
णाहिं (अप) अ [नहि] नही, नाही (हे ४, ४१६, कुमा, भवि)।

णाहिणाम न [दे] वितान के बीच की रस्सी (दे ४, २४)।
णाहिय वि [नास्तिक] १ परलोक आदि को नहीं माननेवाला। २ पुं नास्तिक मत का प्रवर्त्तक। °वाइ, °वादि वि [°वादिन्] नास्तिक मत का अनुयायी (सुर ६, २०, स १६४)। °वाय पुं [°वाद] नास्तिक-दर्शन (गच्छ २)।
णाहिविच्छेअ, णाहीए-विच्छेअ पु [दे] जघन, कटी के नीच का भाग (दे ४, २४)।
णि अ [नि] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ निश्चय (उत्त १)। २ नियतपन, नियम (ठा १०)। ३ आधिक्य, अतिशय (उत्त १, विपा १, ६)। ४ अधोभाग, नीचे (सण)। ५ नित्यपन। ६ संशय। ७ आदर। ८ उपरम, विराम। ९ अन्तर्भाव, समावेश। १० समीपता, निकटता। ११ क्षेप, निन्दा। १२ बन्धन। १३ निषेध। १४ दान। १५ राशि, समूह। १६ मुक्ति, मोक्ष (हे २, २१७, २१८)। १७ अभिमुखता, संमुखता (सूअ १, ६)। १८ अल्पता, लघुता (पण्ह १, ४)।
णि अ [निर्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ निश्चय (उत्त ६)। २ आधिक्य, अतिशय। (उत्त १)। ३ प्रतिषेध, निषेध (सम १३७, सुपा १६८)। ४ बहिर्भाव। ५ निर्गमन, निष्क्रमण (ठा ३, १, सुपा १३)।
णिअ सक [दृश्] देखना। णिअइ (षड्, हे ४, १८१)। वकृ णिअंत (कुमा, महा, सुपा २६६)। संकृ णिएउ (भवि)।
णिअ वि [निज] आत्मीय, स्वकीय (गा १५०, कुमा, सुपा ११)।
णिअ वि [नीत] ले जाया गया (से ५, ६, सण)।
णिअ वि [नीच] नीच, जघन्य, निकृष्ट (कम्म ३, ३)।
णिअ देखो णिव (सूअ २, ६, ४५)।
णिअइ स्त्री [निकृति] माया, कपट, छल, धोखा (पण्ह १, २)।
णिअइ स्त्री [नियति] १ नियतपन, भवितव्यता, होनी, भाग्य, नियमितता (सूअ १,१, ३)। २ अवश्य-भाविता (ठा ४,४, सूअ १,१, २)। °पव्वय पु [°पर्वत] पर्वत विशेष (जीव ३)। °वाइ वि [°वादिन्] 'सब कुछ भवितव्यता के अनुसार ही हुआ करता है, प्रयत्न वगैरह अकिञ्चित्कर हैं' ऐसा माननेवाला, भाग्यवादी या दैववादी (राज)।
णिअटिअ वि [नियन्त्रित] १ नियमित। २ न. प्रत्याख्यान-विशेष, हृष्ट मे या रोगी से अमुक दिन मे अमुक तप करने का किया हुआ नियम (पव ४)।
णिअटिय वि [नियन्त्रित] १ बँधा हुआ, जकडा हुआ। २ न अवश्य-कर्त्तव्य नियम-विशेष (ठा १०)।
णिअंठ वि [निर्ग्रन्थ] १ धन रहित। २ पुं जैनमुनि, संयत, यति (भग, ठा ३, १, ५, ३)। ३ जिन भगवान् (सूअ १, ६)।
णिअठ पु [निर्ग्रन्थ] भगवान् बुद्ध (कुप्र ४४२)।
णिअंठि देखो °णिग्गंथी। °पुत्त पु [°पुत्र] १ एक विद्याधर-पुत्र, जिसका दूसरा नाम सत्यकि था (ठा १०)। २ एक जैनमुनि, जो भगवान् महावीर का शिष्य था (भग ५, ८)।
णिअंठिय वि [नैर्ग्रन्थिक] १ निर्ग्रन्थ-संबन्धी। २ जिन देव-संबन्धी। स्त्री. °या, 'एसा आणा णियंठिया' (सूअ १, ६)।
णिअंठी देखो णिग्गंथी (ठा ६)।
णिअत वि [नियत] स्थिर (सूअ १, ८, १२)।
णिअत वि [निर्यत्] बाहर निकलता (सम्मत्त १५६)।
णिअतिय वि [नियन्त्रित] संयमित, जकडा हुआ, बँधा हुआ (महा, सण)।
णिअंवण न [दे] वस्त्र, कपडा (दे ४, २८)।
णिअंब पु [नितम्ब] १ पर्वत का एक भाग, पर्वत का वसति-स्थान (ओघ ४०)। २ स्त्री की कमर का पीछला भाग, कमर के नीचे का भाग, चूतड (कुमा, गउड)। ३ मूल भाग (से ८,१०१)। ४ कटी-प्रदेश, कमर (जं ४)।
णिअंबिणी स्त्री [नितम्बिनी] १ सुन्दर नितम्बवाली स्त्री। २ स्त्री, महिला (कप्पू, पाअ, सुपा ५३८)।

कर्म णिएहवीग्रदि (शौ) (नाट—रत्ना ३६)। वकृ णिण्हवत, णिण्हवेमाण (उप २११ टी, सुर ३, २०१)।
णिण्हवग वि [निह्नावक] अपलाप करनेवाला (ओघ ४८ भा)।
णिण्हवण न [निह्नवन] अपलाप (विपा १, २, उव)।
णिण्हवण वि [निह्नवन] अपलाप-कर्त्ता (सवोध ५)।
णिण्हविद देखो णिण्हुविद (नाट—शकु १२६)।
णिण्हुय वि [निह्नुत] अपलपित (सुपा २६८)।
णिण्हुव देखो णिण्हव = नि + ह्नु। कर्म. णिएहुविज्जति (पि ३३०)।
णिण्हुविद (शौ) वि [नि + ह्नुत] अपलपित (पि ३३०)।
णितिय देखो णिच्च (आचा, ठा १०)।
णितुडिअ वि [नितुडित] टूटा हुआ, छिन्न (अच्चु ५४)।
णित्त देखो णेत्त (पाअ, सुपा २६१, लहुअ १४)।
णित्तम वि [निस्तमस्] १ अन्धकार-रहित। २ अज्ञान-रहित (अजि ८)।
णित्तल वि [दे] अनिवृत्त (भग १५)।
णित्ति (अप) देखो णीइ (भवि)।
णित्तिंस वि [निस्त्रिंश] निर्दय, करुणा-हीन (सुपा ३१५)।
णित्तिरडि वि [दे] निरन्तर, अव्यवहित (दे ४, ४०)।
णित्तिरडिअ वि [दे] त्रुटित, टूटा हुआ (दे ४, ४१)।
णित्तुप्प वि [दे] स्नेह-रहित, घृत आदि से वर्जित (वृह १)।
णित्तुल वि [निस्तुल] १ निरुपम, असाधारण (उप पृ ५३)। २ क्रिवि. असाधारण रूप से, 'अरणहा नित्तुलं मरसि' (सुपा ३४५)।
णित्तुस वि [निस्तुष] तुष-रहित, भूसा से रहित, विशुद्ध (पराह २, ४, उप १७६ टी)।
णित्तेय वि [निस्तेजस्] तेज-रहित (णाया १, १)।
णित्थणण न [निस्तनन] विजय-सूचक ध्वनि (सुर २, २३३)।
णित्थर सक [निर् + तॄ] पार करना, पार उतरना। णित्थरेइ (सुपा ४४६), 'णित्थरंति खलु कायरावि पायनिज्जामयगुणेण महएणव' (स १६३)। कवकृ णित्थरिज्जंत (राज)। कृ णित्थरियव्व (णाया १, ३, सुपा १२६)।
णित्थरण न [निस्तरण] पार-गमन, पार-प्राप्ति (ठा ४, ४, उप १३४ टी)।
णित्थरिअ देखो णित्थिण्ण (उप १३४ टी)।
णित्थाण वि [नि स्थान] स्थान-रहित, स्थान-भ्रष्ट (णाया १, १८)।
णित्थाम वि [नि स्थामन्] निर्बल, कमजोर, मन्द (पाअ, गउड, सुपा ४८६)।
णित्थार सक [निर् + तारय्] १ पार उतारना, तारना। २ बचाना, छुटकारा देना। णित्थारसु (काल)।
णित्थार पुं [निस्तार] १ छुटकारा, मुक्ति। २ बचाव, रक्षा। ३ उद्धार (णाया १, ६ टी—पत्र १६६, सुर २, ५१, ७, २०१, सुपा २६६)।
णित्थारग वि [निस्तारक] पार जानेवाला, पार उतरनेवाला (स १८३)।
णित्थारणा स्त्री [निस्तारण] पार-प्रापण, पार पहुँचाना (ज ३)।
णित्थारिय वि [निस्तारित] बचाया हुआ, रक्षित, उद्धृत (भग, सुपा ४४६)।
णित्थिण्ण } वि [निस्तीर्ण] १ उत्तीर्ण, पार-प्राप्त, 'णित्थिएणो समुद्दं' (स ३६७)। २ जिसको पार किया हो वह, 'णित्थिन्ना आवया गरुई' (सुर ८, ८६), 'नित्थिएणभवसमुद्दो' (स १३६)।
णित्थिन्न
णिदंस सक [नि + दर्शय्] १ उदाहरण बतलाना, दृष्टान्त दिखाना। २ दिखाना। णिदंसेइ (पिंग)। वकृ. णिदसंत (सुपा ८६)।
णिदंसण न [निदर्शन] १ उदाहरण, दृष्टान्त (अभि २०३)। २ दिखाना (ठा १०)।
णिदंसिअ वि [निदर्शित] प्रदर्शित, दिखाया हुआ, 'एव विचिंतिऊणं निदंसिओ नियकरो मए तीए' (सुर ६, ८२, उप ६६७, साध ४०)।
णिदरिसण देखो णिदंसण (उव, उप ३८४)।
णिदरिसिम वि [निदर्शित] उपदर्शित, बतलाया हुआ (धर्मसं १०००)।
णिदा स्त्री [दे] १ वेदना-विशेष, ज्ञान-युक्त वेदना (भग १६, ५)। २ जानते हुए भी की जाती प्राणि-हिंसा (पिंड)।
णिदाण देखो णिआण (विपा १, १, अत १५, नाट—वेणी ३३)।
णिदाया देखो णिदा (पएण ३५)।
णिदाह पुं [निदाघ] १ घर्म, घाम, उष्ण। २ ग्रीष्म-काल, गरमी का मौसिम। ३ जेठ मास (आव ५)।
णिदाह पुं [निदाघ] तीसरा नरक का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ८)।
णिद्दाह पुं [निदाह] असाधारण दाह (आव ५)।
णिद्देस पुं [निदेश] आज्ञा, हुकुम (कुप्र ४२६)।
णिद्देसिअ वि [निदेशित] १ प्रदर्शित। २ उक्त, कथित (पउम ५, १४५)।
णिद्दोच्च न [दे] १ भय का अभाव। २ स्वास्थ्य, तंदुरस्ती (पव २६८)।
णिद्दज्झाण न [निद्राध्यान] निद्रा में होता ध्यान, दुर्ध्यान-विशेष (आउ)।
णिद्दद वि [निर्द्वन्द्व] द्वन्द्व-रहित, क्लेश-वर्जित (सुपा ४५५)।
णिद्दंभ वि [निर्दम्भ] दम्भ रहित, कपट-रहित (सुपा १४७)।
णिद्दडी (अप) देखो णिद्दा = निद्रा (पि ५६६)।
णिद्दड्ढ वि [निर्दग्ध] १ जलाया हुआ, भस्म किया हुआ (सुर १४, २६, अंत १५)। २ पुं. नृप-विशेष (पउम ३२, २२)। ३ रत्नप्रभा-नामक नरक-पृथिवी का एक नरकावास (ठा ६)। °मज्झ पुं [°मध्य] नरकावास-विशेष, एक नरक-प्रदेश (ठा ६)। °वत्त पुं [°वर्त] नरकावास-विशेष (ठा ६)। °विसिट्ठ पुं [°विशिष्ट] नरक-प्रदेश-विशेष (ठा ६)।
णिद्दय वि [निर्दय] दया-हीन, करुणा-रहित, निष्ठुर (पराह १, १, गउड)।

णिअया स्त्री [नियता] जम्बू-वृक्ष विशेष, जिससे यह जम्बू-द्वीप कहलाता है (इक)।

णिअर पुं [निकर] राशि, समूह, जत्था, ढेर (गा ५६६, पात्र (गउड)।

णिअरण न [दे] दण्ड, शिक्षा (स ४२६)।

णिअरिअ वि [दे] राशि रूप मे स्थित (दे ४, ३८)।

णिअल न [दे] नूपुर, पैंजनी या पावजेव, स्त्री का पादाभरण-विशेष (दे ४, २८)।

णिअल पुं [निगड] वेडी, सांकल (मे ३, ८, विपा १, ६)। देखो णिगल।

णिअलाइअ | णिअलाविअ | णिअलिअ वि [निगडित] साकल से नियन्त्रित, जकडा हुआ (गा ४५४, ५००, पाग्र, गउड, से ५, ४८)।

णिअल्ल पु [दे नियल्ल] ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३)।

णिअल्ल वि [निज] स्वकीय, ग्रात्मीय (महा)।

णिअस देखो णिअस। नियसइ (सुपा ६२)।

णिअसण देखो णिअंसण (हेका ५६, काप्र २०१)।

णिअसिय वि [निवसित] परिहित, पहना हुआ (सुपा १५३)।

णिअह देखो णिवह (नाट—मालती १३८)।

णिआ स्त्री [निदा] प्राणि-हिंसा (पिंड १०३)।

णिआ° देखो णिअय = (दे)। °वाइ वि [°वादिन्] नित्यवादी, पदार्थ को नित्य माननेवाला (ठा ८)।

णिआइय देखो णिकाइय (सूम १, ६)।

णिआग पु [नियाग] १ नियत योग। २ निश्चित पूजा। ३ मोक्ष, मुक्ति (ग्राचा, सूग्र १, १, २)। ४ न ग्रामन्त्रण देकर जो भिक्षा दी जाय वह (दस ३)।

णिआग देखो णाय = न्याय (ग्राचा)।

णिआण न [निदान] १ ग्रारम्भ, सावद्य व्यापार (सूग्र १, १०, १)। २ रोग-कारण, रोग की पहचान (पिंड ४५६)।

णिआण न [निदान] १ कारण, हेतु; 'ग्रहो ग्रप्प नियाण महतो विवाग्रो' (स ३६०, पाग्र, णाया १, १३)। २ किसी व्रतानुष्ठान की फल-प्राप्ति का ग्रभिलाष संकल्प-विशेष (श्रा ३३, ठा १०)। ३ मूल कारण (ग्राचा)। °कड वि [°कृत्] जिसने ग्रपने शुभानुष्ठान के फल का ग्रभिलाष किया हो वह (सम १५३)। °कारि वि [°कारिन्] वही ग्रनन्तर उक्त ग्रर्थ (ठा ६)।

णिआण न [निपान] कूप या तालाब के पास पशुग्रो के जल पीने के लिए बनाया हुग्रा जल-कुण्ड, ग्राहाव, हौदी, चरही, 'पइभवण पइहट्टं पइमग्गं पइसह पइनियाण' (उप ७२८ टी)।

णिआणिआ स्त्री [दे] खराब तृणो का उन्मूलन (दे ४, ३५)।

णिआम देखो णिअम = नियमय्। सक्र. उवसग्गा णिआमित्ता ग्रामोक्खाए परिव्वए' (सूग्र १, ३, ३)।

णिआम देखो णिकाम (सूग्र १, १०, ८)।

णिआमग } णिआमय } वि [नियामक] नियम-कर्त्ता, नियन्ता (सुपा ३१६)। २ निश्चायक, विनिगमक (विसे ३४७०, स १७०)।

णिआमिअ वि [नियमित] नियम मे रखा हुग्रा, नियन्त्रित (स २६३)।

णिआय पुं [नियाग] प्रशस्त धर्म (सूग्र १, १, २, २०)।

णिआर सक [काणेक्षित कृ] कानी नजर से देखना। णिग्रारइ (हे ४, ६६)।

णिआरिअ वि [काणेक्षितीकृत] १ कानी नजर से देखा हुग्रा, ग्राधी नजर से देखा हुग्रा। २ न ग्राधी नजर से निरीक्षण (कुमा)।

णिआह पुं [निदाघ] १ ग्रीष्म काल, ग्रीष्म ऋतु। २ उष्ण, घर्म, गरमी (गउड)।

णिइअ वि [नैत्यिक] नित्य का, 'निइए पिंडे दिज्जइ' (ग्राचा २, १, १, ६)।

णिइग } णिइय } वि [दे. नित्य, नैत्यिक] नित्य, शाश्वत, ग्रविनश्वर (पण्ह २, ४—पत्र १४१, सूग्र १, १, ४, २, ४, णदि, ग्राचा, सम १३२)।

णिइव वि [निष्कृप] निर्दय, कठोर (प्राकृ २६)।

णिउअ वि [निवृत] परिवेष्टित, परीक्षित (हे १, १३१)।

णिउअ वि [नियुत] सुसगत, सुश्लिष्ट (णाया १, १८)।

णिउंचिअ वि [निकुञ्चित] संकुचित, सकुचा हुग्रा, थोडा मुडा हुग्रा (गा ५६३, मे ६, १६, पाग्र, म ३३५)।

णिउंज सक [नि + युज्] जोडना, सयुक्त करना, किसी कार्य मे लगाना। कर्म णिउंजीग्रमि (पि ५४६)। वक्र णिउंजमाण (सूग्र १,१०)। संक्र निउंजिऊण, निउंजिय (स १०४, महा)। कृ. णिउंजियव्व, णिउत्तव्व (उप पृ २०, कुमा)।

णिउंज पुं [निकुञ्ज] १ गहन, लता ग्रादि से निविड स्थान (कुमा, गा २१७)। २ गह्वर (दे ६, १२३)।

णिउंभ पु [निकुम्भ] कुम्भकर्ण का एक पुत्र (से १२, ६२)।

णिउंभिला स्त्री [निकुम्भिला] यज्ञ-स्थान (से १५, ३६)।

णिउक्क वि [दे] तूष्णीक, मौन रहनेवाला (दे ४, २७, पाग्र)।

णिउक्कण पुं [दे] १ वायस, काक, कौग्रा। २ वि मूक, वाक्-शक्ति से हीन (दे ४, ५१)।

णिउज्ज न [न्युब्ज] ग्रासन-विशेष (णदि १२८ टी)।

णिउज्जम वि [निरुद्यम] उद्यम-रहित, ग्रालसी (सूग्र २, २)।

णिउड्ड ग्रक [मस्ज्, नि + ब्रुड्] मज्जन करना, डूबना। णिउड्डइ (हे १, १०१)। वक्र णिउड्डमाण (कुमा)।

णिउड्ड वि [मग्न, निब्रुडित] डूबा हुग्रा, निमग्न (से १०, १५, १५, ७४)।

णिउण वि [निपुण] १ दक्ष, चतुर, कुशल (पाग्र, स्वप्न ५३, प्रासू ११, जी ६)। २ सूक्ष्म, जो सूक्ष्म बुद्धि से जाना जा सके (जो २, राय)। ३ क्रिवि दक्षता से, चतुराई से, कुशलता से (जीव ३)।

णिउण वि [निपुण] १ नियत गुणवाला। २ निश्चित गुण से युक्त (राज)। ३ सुनिश्चित, विनिर्णीत (पचा ४)।

णिउणिय वि [नैपुणिक] निपुण, दक्ष, चतुर (ठा ६)।

णिउत्त वि [नियुक्त] १ व्यापारित, कार्य में लगाया हुग्रा (पचा ८)। २ निबद्ध (विसे ३८८)।

णिद्धूय देखो णिद्धुय (जीव ३)।

णिद्धोअ वि [निर्धौत] १ धोया हुआ (गा ६३६, से १४, १६, स १६१)। २ निर्मल, स्वच्छ, 'निद्धोयउदयकखिर—' (वज्जा १५८)।

णिद्धोभास वि [स्निग्धावभास] चमकीला, स्निग्धपन से चमकता (णाया १,१—पत्र ४)।

णिधण न [निधन] विनाश, मृत्यु, मौत (नाट—मृच्छ २५२)।

णिधत्त वि [निधत्त] निकाचित, निश्चित (ठा ८—पत्र ४३४)।

णिधत्त न [निधत्त] १ कर्मों का एक तरह का अवस्थान, बघे हुए कर्मों का तप्त सूची-समूह की तरह अवस्थान। २ वि. निविड भाव को प्राप्त कर्म-पुद्गल (ठा ४, २)।

णिधत्ति स्त्री [निधत्ति] करण-विशेष, जिससे कर्म-पुद्गल निबिड रूप से व्यवस्थापित होता है (पंच ५)।

णिधम्म देखो णिद्धम्म = निर्धर्मन् (ओघ ३७ भा)।

णिधाण देखो णिहाण (नाट—महावीर १२०)।

णिधूय देखो णिद्धुण।

णिन्नाम सक [निर् + नमय्] नमाना, झुकाना। णिन्नामए (सूम १, १३, १५)।

णिन्नीय देखो णिण्णीअ (धर्मवि ५)।

णिपट्ट न [दे] गाढ (प्राकृ ३८)।

णिपडिय वि [निपतित] नीचे गिरा हुआ (सण)।

णिपा सक [नि + पा] पीना। सकृ. निपीय (सम्मत्त २३०)।

णिपाइ वि [निपातिन्] १ नीचे गिरने-वाला। २ सामने गिरनेवाला (सूम १, ५)।

णिपूर पुं [निपूर] नन्दीवृक्ष (आचा २, १, ८, ३)।

णिप्पअंप देखो णिप्पकंप (से ६, ७८)।

णिप्पएस वि [निष्प्रदेश] १ प्रदेश-रहित। २ पुं. परमाणु (विसे)।

णिप्पंक वि [निष्पङ्क] कर्दम-रहित, पाँक-रहित (सम १३७, भग)।

णिप्पंकिय वि [निष्पङ्किन्] पंक-रहित (भवि)।

णिप्पक्ख सक [निर् + पक्षय्] पक्ष-रहित करना, पख तोडना। णिप्पक्खेंति (विपा १, ८)।

णिप्पंद वि [निष्पन्द] चलन-रहित, स्थिर (से २, ४२)।

णिप्पकंप वि [निष्प्रकम्प] कम्प-रहित, स्थिर (सम १०६, पण्ह २, ४)।

णिप्पक्ख वि [निष्पक्ष] पक्ष-रहित (गउड)।

णिप्पगल वि [निष्प्रगल] टपकनेवाला, झरने-वाला, चूनेवाला (ओघ ३५, ओघ ३४ भा)।

णिप्पच्चवाय वि [निष्प्रत्यवाय] १ प्रत्यवाय-रहित, निर्विघ्न (ओघ २४ टी)। २ निर्दोष, विशुद्ध, पवित्र, 'णिप्पच्चवायचरणा कज्जं साहंति' (सार्ध ११७)।

णिप्पच्छिम वि [निष्पश्चिम] १ अन्तिम, अन्त का (से १२, २१)। २ परिशिष्ट, अवशिष्ट, बाकी का, 'णिप्पच्छिमाइं असई दुक्खालोआइं महुअपुप्फाइं' (गा १०४)।

णिप्पट्ठ वि [दे] अधिक (दे ४, ३१)।

णिप्पट्ठ वि [निःस्पष्ट] अस्पष्ट, अव्यक्त। °पसिणवागरण वि [°प्रश्नव्याकरण] निरुत्तर किया हुआ (भग १५, णाया १, ५, उवा)।

णिप्पट्ठ वि [निःस्पृष्ट] नही छूआ हुआ। °पसिणवागरण वि [°प्रश्नव्याकरण] निरुत्तर किया हुआ (भग १५)।

णिप्पडिकम्म वि [निष्प्रतिकर्मन्] संस्कार-रहित, परिष्कार-वर्जित, मलिन (सम ५७, सुपा ४८५)।

णिप्पडियार वि [निष्प्रतिकार] निरुपाय, प्रतिकार-वर्जित (पण्ह २, ४)।

णिप्पणिअ वि [दे] जल-धौत, पानी से धोया हुआ (षड्)।

णिप्पण्ण देखो णिप्फण्ण (गा ६८६)।

णिप्पण्ण वि [निष्प्रज्ञ] बुद्धि-रहित, प्रज्ञा-शून्य (उप १७६ टी)।

णिप्पत्त वि [निष्पत्र] पत्र-रहित (गा ८८७, वव १)।

णिप्पत्ति } देखो णिप्फत्ति (पंचा १८, सक्षि
णिप्पद्दि } ६)।

णिप्पन्न देखो णिप्पण्ण (कुप्र २०८)।

णिप्पभ वि [निष्प्रभ] निस्तेज, फीका (महा)।

णिप्परिग्गह वि [निष्परिग्रह] परिग्रह-रहित (उत्त १४)।

णिप्पलिवयण वि [निष्प्रतिवचन] निरुत्तर, उत्तर देने मे असमर्थ (सम ६०)।

णिप्पसर वि [निष्प्रसर] प्रसर-रहित, जिसका फैलाव न हो (पि ३०५)।

णिप्पह देखो णिप्पभ (से १०, १२, हे २, ५३)।

णिप्पाइय देखो णिप्फाइय (कुप्र १६६)।

णिप्पाण वि [निष्प्राण] प्राण-रहित, निर्जीव (णाया १, २)।

णिप्पाल देखो णेपाल (धर्मवि ६६)।

णिप्पाव पुं [निष्पाप] एक दिन का उपवास (संबोध ५८)।

णिप्पाव देखो णिप्फाव (पि ३०५)।

णिप्पिच्छ वि [दे] १ ऋजु, सरल। २ दृढ, मजबूत (दे ४, ४६)।

णिप्पिट्ठ वि [निष्पिष्ट] पीसा हुआ (दे ८, २०, सण)।

णिप्पिट्ठ न [निष्पिष्ट] पेषण की समाप्ति (पिंड ६०२)।

णिप्पिवास वि [निष्पिपास] पिपासा-रहित, तृष्णा-वर्जित, निःस्पृह (पण्ह १, १, णाया १, १, सुर १, १३)।

णिप्पिवासा स्त्री [निष्पिपासा] स्पृहा का अभाव (वि १८)।

णिप्पिह वि [निःस्पृह] स्पृहा-रहित, निर्मम (हे २, २३, उप ३२० टी)।

णिप्पीडिअ वि [निष्पीडित] दबाया हुआ (से ५, २५)।

णिप्पीलण न [निष्पीडन] दबाव, दबाना (आचा)।

णिप्पीलिय देखो णिप्पीडिअ। २ निचोडा हुआ, 'निप्पीलियाइं पोत्ताइं' (स ३३२)।

णिप्पुंसण न [निष्पुंसन] १ पोछना, मार्जन। २ अभिमर्दन (हे२, ५३)।

णिप्पुन्न वि [निष्पुण्य] पुण्य-रहित (कुप्र ३१८)।

णिप्पुन्नग वि [निष्पुण्यक] १ पुण्य-रहित। २ पु. स्वनाम-ख्यात एक कुलपुत्र (सुपा ५४५)।

णिप्पुलाय पुं [निष्पुलाक] आगामी चौबीसी मे होनेवाले एक स्वनाम-ख्यात जिन-देव (सम १५३)।

णिकिंत सक [नि + कृत्] काटना, छेदना। णिकिंतइ (पुप्फ ३३७, उव)। णिकिंतए, (उव, काल)।

णिकिंतय वि [निकर्तक] काट डालनेवाला (काल)।

णिकुट्ट सक [नि + कुट्ट] १ कूटना। २ काटना। णिकुट्टेइ, णिकुट्टेमि (उवा)।

णिकूणिय वि [निकूणित] टेढ़ा किया हुआ, वक्र किया हुआ (दे १, ८८)।

णिकेय पुं [निकेत] गृह, आश्रय, निवास-स्थान (णाया १, १६, उत्त २, आचा)।

णिकेयण न [निकेतन] ऊपर देखो (सुर १३, २१, महा)।

णिकोय पुं [निकोच] सकोच, सिमट (दे ७, १५)।

णिक्क वि [दे] सुनिर्मल, सर्वथा मल-रहित (णाया १, १)।

णिक्क देखो णिक्ख = निष्क (प्राकृ २१)।

णिक्कइअव वि [निष्कैतव] १ कपट-रहित, निर्माय (कुमा)। २ कपट का अभाव, निष्कपटपन (गा ८५)।

णिक्कंकड वि [निष्कङ्कट] १ आवरण-रहित (औप)। २ उपघात-रहित (सम १३७)।

णिक्कंखि वि [निष्काङ्क्षिन्] अभिलाषा-रहित (उत्त १९, ३४)।

णिक्कंखिय न [निष्काङ्क्षित] १ आकाक्षा का अभाव। २ दर्शनान्तर की अनिच्छा (उत्त २, पडि)।

णिक्कंखिय वि [निष्काङ्क्षित, °क] १ आकाक्षा-रहित। २ दर्शनान्तर के पक्षपात से रहित (सूअ २, ७, औप, राय)।

णिक्कंचण वि [निष्काञ्चन] सुवर्ण-रहित, धन-रहित, नि स्व, निर्धन (सुपा १६८)।

णिक्कंटय वि [निष्कण्टक] कण्टक-रहित, बाधारहित, शत्रु-रहित (सुपा २०८)।

णिक्कंड वि [निष्काण्ड] १ काण्ड रहित, स्कन्ध-वर्जित, २ अवसर-रहित (गा ४६८)।

णिक्कंत वि [निष्क्रान्त] १ निर्गत, बाहर निकला हुआ (से १, ५६)। २ जिसने दीक्षा ली हो वह, गृहस्थाश्रम से निर्गत (आचा)।

णिक्कंतार वि [निष्कान्तार] अरण्य से निर्गत, (ठा ३, १)।

णिक्कंति स्त्री [निष्क्रान्ति] निष्क्रमण, बाहर निकलना (प्राकृ २१)।

णिक्कंतु वि [निष्क्रमितृ] बाहर निकलने-वाला (ठा ३, १)।

णिक्कंद सक [नि + कन्द्] उन्मूलन करना। निक्कंदइ (सम्मत्त १७४)।

णिक्कंप वि [निष्कम्प] कम्प-रहित, स्थिर (हे २, ४, अभि २०१)।

णिक्कज्ज वि [दे] अनवस्थित, चचल (दे ४, ३३, पाअ)।

णिक्कट्ठ वि [निष्कृष्ट] कृश, दुर्बल, क्षीण (ठा ४, ४—पत्र २७१)।

णिक्कड वि [दे] १ कठिन (दे ४, २६)। २ पु. निश्चय, निर्णय (षड्)।

णिक्कड्ढिय वि [निष्कृष्ट, निष्कर्षित] बाहर खींचा हुआ, बाहर निकाला हुआ (स ६०, २१५)।

णिक्कण वि [निष्कण] धान्य-कण-रहित, अत्यन्त गरीब (विपा १, ३)।

णिक्कम अक [निर् + क्रम्] १ बाहर निकलना। २ दीक्षा लेना, सन्यास लेना। णिक्कमामि (पि ४८१)। वकृ. णिक्कमंत (हेका ३३२, मुद्रा, ८२)।

णिक्कम पु [निष्क्रम] नीचे देखो (नाट—मुद्रा २२४)।

णिक्कमण न [निष्क्रमण] १ निर्गमन, बाहर निकलना (मुद्रा २२४)। २ दीक्षा, सन्यास (आचा)।

णिक्कम्म वि [निष्कर्मन्] कर्मरहित, मुक्ति-प्राप्त, मुक्त (द्रव्य १४)।

णिक्कम्म वि [निष्कर्मन्] १ कार्य रहित, निकम्मा (गा १६९)। २ मोक्ष, मुक्ति। ३ संवर, कर्मों का निरोध, (आचा)।

णिक्कय पुं [निष्क्रय] १ बदला, उत्क्रयणपन (सुपा ३४१, पउम ७, १२६)। २ भृति, वेतन, मजूरी (हि २, ४)।

णिक्करण न [निकरण] १ तिरस्कार। २ परिभव। ३ विनाश (संबोध १६)।

णिक्करुण वि [निष्करुण] करुणा-रहित, दया वर्जित (नाट—मालती ३२)।

णिक्कल वि [निष्कल] कला-रहित (सुपा १)।

णिक्कल वि [दे] पोलापन से रहित (सुपा १, भग १५)।

णिक्कलंक वि [निष्कलङ्क] कलक-रहित, बेदाग (स ४१८, महा, सुपा २५३)।

णिक्कलुण देखो णिक्करुण (पण्ह १, १)।

णिक्कलुस वि [निष्कलुष] १ निर्दोष, निर्मल। २ निरुपद्रव, उपद्रव-रहित (से १२, ३४)।

णिक्कवड वि [निष्कपट] कपट-रहित (उप पृ १६०)।

णिक्कवय वि [निष्कवच] कवच-रहित, वर्म-वर्जित (ठा ४, २)।

णिक्कस अक [निर् + कस्] बाहर निक-लना। णिक्कसे (सूअ १, १४, ४)।

णिक्कस सक [निर + कस्] निकासना, बाहर निकालना। कर्म णिक्कसिज्जइ (उत्त १)।

णिक्कसण न [निष्कसन] निर्गमन (राज)।

णिक्कसाय वि [निष्कषाय] १ कषाय-रहित, क्रोधादि वर्जित (आउ)। २ पु भरत-क्षेत्र के एक भावी तीर्थंकर-देव (सम १५३)।

णिक्का स्त्री [नीका] वाम-नासिका (कुमा)।

णिक्काम वि [निष्काम] अभिलाषा-रहित

णिक्कारण वि [निष्कारण] १ कारण-रहित, अहेतुक (सुर २, ३६)। २ क्रिवि. विना कारण (आव ६)।

णिक्कारण वि [निष्कारण] निरुपद्रव, 'नेस निक्कारणो दहो' (पिंड ५१९)।

णिक्कारणिय वि [निष्कारणिक] कारण-रहित, हेतु-शून्य (ओघ ५)।

णिक्कारिम वि [निष्कारण] विना कारण (आख्यानक० २३ अधिकार, भावदेयाकथा, पद्य ५२५)।

णिक्काल सक [निर् + कासय्] बाहर निकालना। सकृ निक्कालेउ (सुपा १३)।

णिक्कालिअ देखो णिक्कासिय (ती १५)।

णिक्कास पु [निष्कास] नीकास, बाहर निका-लना (धर्मवि १४९)।

णिक्कासिय वि [निष्कासित] बाहर निकाला हुआ (राज)।

णिक्किंचण वि [निष्किञ्चन] निर्धन, घर-रहित, नि स्व, गरीब (आवम)।

णिब्भच्छिअ वि [निर्भर्त्सित] अपमानित, अवहेलित (गा ८९८, सुपा ४७७)।
णिब्भय वि [निर्भय] भय-रहित, निडर (णाया १, ४, महा)।
णिब्भर सक [निर् + भृ] भरना, पूर्ण करना। कवकृ णिब्भरेंत (से १५, ७४)।
णिब्भर वि [निर्भर] १ पूर्ण, भरपूर (से १०, १७)। २ व्यापक, फैलनेवाला (कुमा)। ३ क्रिवि पूर्ण रूप से 'मेघो य णिब्भर वरिसइ' (आवम)।
णिब्भिद सक [निर् + भिद्] ताडना, विदारण करना। कवकृ णिब्भिज्जंत, णिब्भिज्जमाण (से १४, २६, भग १८, २, जीव ३)।
णिब्भिच्च वि [निर्भीक] भय-रहित, निडर (सुपा १४३, २४६, २७५)।
णिब्भिज्जंत, णिब्भिज्जमाण देखो णिब्भिद।
णिब्भिट्ट वि [दे] आक्रान्त (भवि)।
णिब्भिण्ण वि [निर्भिन्न] १ विदारित, तोडा हुआ (पाअ)। २ विद्ध (से ५, ३४)।
णिब्भीअ वि [निर्भीक] भय-रहित, निडर (से १३, ७०)।
णिब्भुग्ग वि [दे] भग्न, खण्डित (दे ४, ३२)।
णिब्भुअ देखो णिभुअ (चेइय ५८६)।
णिब्भेअ पुं [निर्भेद] भेदन, विदारण (सुपा ३२७)।
णिब्भेयण न [निर्भेदन] ऊपर देखो (सुर २, ६९)।
णिब्भेरिय वि [निर्भेरित] प्रसारित, फैलाया हुआ (उत्त १२, २९)।
णिभ देखो णिह = निभ (उव, ज ३)।
णिभच्छण देखो णिब्भच्छण (पिंड २१०)।
णिभग पु [निभङ्ग] भञ्जन, खण्डन, त्रोटन (राज)।
णिभाल सक [नि + भालय्] देखना, निरीक्षण करना। णिभालेहि (आवम)। वकृ णिभालयंत (उप पृ ५३)। कवकृ णिभालिज्जंत (उप ९८६ टी)।
णिभालिय वि [निभालित] दृष्ट, निरीक्षित (उप पृ ५८)।

णिभिअ, णिभुअ देखो णिहुअ (पण्ह २, ३, गा ८००)।
णिभेल सक [निर् + भेलय्] बाहर करना। कवकृ णिभेल्लंत (पण्ह १, ३—पत्र ४५)।
णिभेलण न [दे] गृह, घर, स्थान (कप्प)।
णिम सक [नि + अम्] स्थापन करना। णिमइ (हे ४, १९९, षड्)। णिमेइ (पि ११८)। वकृ णिमेंत (से १, ४१)।
णिमंत सक [नि + मन्त्रय्] निमन्त्रण देना, न्यौता देना। णिमन्तेइ (महा)। वकृ णिमंतेमाण (आचा २, २ ३)। संकृ णिमंतिऊण (महा)।
णिमंतण न [निमन्त्रण] निमन्त्रण, न्यौता, बुलावा (उप पृ ११८)।
णिमंतणा स्त्री [निमन्त्रणा] ऊपर देखो (पचा १२)।
णिमंतिय वि [निमन्त्रित] जिसको न्यौता दिया गया हो वह (महा)।
णिमग्ग वि [निमग्न] डूबा हुआ (पउम १०९, ४, औप)। °जला स्त्री [°जला] नदी-विशेष (ज ३)।
णिमज्ज अक [नि + मस्ज्] डूबना, निमज्जन करना। णिमज्जइ (पि ११८)। वकृ णिमज्जंत (गा ६०६, सुपा ९४)।
णिमज्जग वि [निमज्जक] १ निमज्जन करनेवाला। पु वानप्रस्थाश्रमी तापस-विशेष, जो स्नान के लिए थोडे समय तक जलाशय में निमग्न रहते हैं (औप)।
णिमज्जण न [निमज्जन] डूबना, जल-प्रवेश (सुपा ३५४)।
णिमाणिअ देखो णिम्माणिअ = निर्मानित (भवि)।
णिमि सक [नि + युज्] जोटना। णिमेइ (प्राकृ ६७)।
णिमिअ वि [न्यस्त] स्थापित, निहित (कुमा, से १, ४२, स ९, ७६०, मण)।
णिमिअ वि [दे] आघ्रात, सूँघा हुआ (षड्)।
णिमिण देखो णिम्माण = निर्माण (कम्म १, २५)।
णिमित्त न [निमित्त] १ कारण, हेतु (प्रासू १०४)। २ कारण-विशेष, सहकारि कारण (सूअ २, २)। ३ शास्त्र-विशेष, भविष्य आदि जानने का एक शास्त्र (ओघ १९, भा ८)। ४ अतीन्द्रिय ज्ञान में कारण-भूत पदार्थ (ठा ८)। ५ जैन साधुओं की भिक्षा का एक दोष (ठा ३, ४)। °पिंड पु [°पिण्ड] भविष्य आदि बतला कर प्राप्त की हुई भिक्षा (आचा २, १, ९)।

णिमित्ति वि [निमित्तिन्] निमित्त-शास्त्र का जानकार (कुप्र ३७८)।
णिमित्तिअ देखो णेमित्तिअ (सुपा ४०२)।
णिमिल्ल अक [नि + मील्] आँख मूँदना, आँख मीचना। णिमिल्लइ (हे ४, २३२)।
णिमिल्ल वि [निर्मालिन्] जिसने नेत्र बंद किया हो, मुद्रित-नेत्र (से ६, ६१, ११, ५०)।
णिमिल्लण देखो णिमीलण (राज)।
णिमिस अक [नि + मिष्] आँख मूँदना। निमिसंति (तंदु ५३)।
णिमिस पु [निमिष] नेत्र-संकोच, अक्षि-मीलन, पलक मारने भर का समय (गा ३८५, सुपा २१९, गउड)।
णिमीलण न [निमीलन] अक्षि-संकोच (गा ३६७, सूअ १, ५, १, १२ टी)।
णिमीलिअ वि [निमीलित] मुद्रित (नेत्र) (गा १३३, से ६, ८९, महा)।
णिमीस न [निमिश्र] एक विद्याधर-नगर (इक)।
णिमे सक [नि + मा] स्थापन करना। णिमेसि (गउड)।
णिमेण न [दे] स्थान, जगह (दे ४, ३७)।
णिमेल स्त्रीन [दे] दन्त-मास (दे ४, ३०)। स्त्री °ला (दे ४, ३०)।
णिमेस पु [निमेष] निमीलन, अक्षि संकोच, पलक का गिरना, पलक (श्रा १६, उव)।
णिमेसि देखो णिमे।
णिमेसि वि [निमेषिन्] आँख मूँदनेवाला (सुपा ४४)।
णिम्म सक [निर् + मा] बनाना, निर्माण करना। णिम्मइ (षड्)। णिम्मेइ (धम्म १२ टी)। कवकृ णिम्माअंत (नाट—मालती ५४)।
णिम्म पुस्त्री [नैम] जमीन से ऊँचा निकलता प्रदेश (राय २७)।

णिगडिय वि [निगडित] नियन्त्रित (हम्मीर ३०)।

णिगढ पुं [दे] घर्म, घाम, गरमी (दे ४, २७)।

णिगण वि [नग्न] नंगा, वस्त्र-रहित (सूअ १, २, १, ९)।

णिगद सक [नि + गद्] १ कहना। २ पढ़ना, अभ्यास करना। वकृ. णिगदमाण (विसे ८५०)।

णिगम पु [निगम] १ प्रकृष्ट बोध (विसे १२८७)। २ व्यापार-प्रधान स्थान, जहाँ व्यापारी, विशेष संख्या मे रहते हो ऐसा शहर आदि (पण्ह १, ३, औप; आचा)। ३ व्यापारि-समूह (सम ५१)।

णिगमण न [निगमन] अनुमान प्रमाण का एक अवयव, उपसंहार (दसनि १)।

णिगमिअ वि [दे] निवासित (षड्)।

णिगर पुं [निकर] समूह, राशि, जत्था (विपा १, ६, उवा)।

णिगरण न [निकरण] कारण, हेतु (भग ७, ७)।

णिगरिय वि [निकरित] सर्वथा शोधित (पण्ह १, ४)।

णिगल देखो णिअल। २ वेढी के आकार का सौवर्ण आभूषण-विशेष (औप)।

णिगलिय देखो णिगरिय (जं २)।

णिगाम देखो णिकाम = निकाम (पिंड ६४५)।

णिगाम न [निकाम] अत्यन्त, अतिशय (ठा ५, २, आ १६)।

णिगास पुं [निकर्ष] परस्पर सयोजन, मिलाना, जोड (भग २५, ७)।

णिगिज्झिय देखो णिगिण्ह।

णिगिट्ठ देखो णिक्किट्ठ (सुपा १८३)।

णिगिण वि [नग्न] नग्न, नंगा (आचा २, २, ३, २, ७, १, पि १३३)।

णिगिणिण न [नाग्न्य] नंगापन, नग्नता (उत्त ५, २१, सुख ५, २१)।

णिगिण्ह सक [नि + ग्रह्] १ निग्रह करना, दण्ड करना, शिक्षा करना। २ रोकना। ३ अक बैठना, स्थिति करना। सकृ. णिगिज्झिय, णिग्घेत्तुं (ठा ७, कप्प; राज)। कृ णिगिण्हियव्व (उप पृ २३)।

णिगुंज अक [नि + गुञ्ज्] १ गूँजना, अव्यक्त शब्द करना। २ नीचे नमना। वकृ. णिगुंजमाण (णाया १, ९—पत्र १५७)।

णिगुंज देखो णिउञ्ज = निकुञ्ज (आवम)।

णिगुण वि [निगुण] गुण-रहित (पण्ह १, २)।

णिगुरंब देखो णिउरंब (पण्ह १, ४)।

णिगूढ वि [निगूढ] १ गुप्त, प्रच्छन्न (कप्प)। २ मौनी, मौन रहनेवाला (राज)।

णिगूह सक [नि + गुह्] छिपाना, गोपन करना। णिगूहइ (उव, महा)। णिगूहंति (सट्ठि ३२)। संकृ. णिगूहिऊण (स ३३५)।

णिगूहण न [निगूहन] गोपन, छिपाना (पचा १५)।

णिगूहिअ वि [निगूहित] छिपाया हुआ, गोपित (सुपा ५१८)।

णिगोअ पुं [निगोद] अनन्त जीवो का एक साधारण शरीर-विशेष (भग, पण्ण १)। °जीव पुं [°जीव] निगोद का जीव (भग २५, ६, कम्म ४, ८५)।

णिग्ग देखो णिग्गम = निर् + गम्। वकृ णिग्गंत (भवि)।

णिग्गठिद (शौ) वि [निग्रथित] गुम्फित, ग्रथित (पि ५१२)।

णिग्गंतुं } णिग्गतूण } देखो णिग्गम = निर् + गम्।

णिग्गंथ देखो णिअंठ (औप, ओघ ३२८, प्रासू १३९, ठा ५, ३)।

णिग्गथ वि [नैर्ग्रन्थ] निर्ग्रन्थ-सम्बन्धी (णाया १, १३, उवा)।

णिग्गथी स्त्री [निर्ग्रन्थी] जैन साध्वी (णाया १, १, १४, उवा, कप्प, औप)।

णिग्गच्छ } णिग्गम } अक [निर् + गम्] वाहर निकलना। णिग्गच्छइ (उवा, कप्पू)। वकृ. णिग्गच्छंत, णिग्गच्छमाण, णिग्गममाण (सुपा ३३०, णाया १, १, सुपा ३५१)। संकृ. णिग्गच्छित्ता, णिग्गंतूण (कप्प, स १७)। हेकृ. णिग्गंतुं (उप ७२८ टी)।

णिग्गम पुं [निर्गम] १ उत्पत्ति, जन्म (विसे १५३९)। २ वाहर निकलना (से ६, ३९, उप पृ ३३२)। ३ द्वार, दरवाजा (से २, २)। ४ वाहर जाने का रास्ता (से ८, ३३)। ५ प्रस्थान, प्रयाण (वृह १)।

णिग्गमण न [निर्गमन] १ नि सरण, वाहर निकलना (णाया १, २, सुपा ३३२, भग)। २ पलायन, भाग जाना। ३ अपक्रमण (वव १)।

णिग्गमिअ वि [निर्गमित] वाहर निकाला हुआ, निस्सारित (आ १६)।

णिग्गमिय वि [निर्गमित] गमाया हुआ, पसार किया हुआ (सम्मत्त १२३)।

णिग्गय वि [निर्गत] नि सृत, वाहर निकला हुआ (विसे १५४०, उवा)। °जस वि [°यशस्] जिसका यश वाहर मे फैला हो (णाया १, १८)। °मोअ वि [°मोद] जिसकी सुगन्ध खूब फैली हो (पाअ)।

णिग्गय वि [निर्गज] हाथी-रहित (भवि)।

णिग्गह देखो णिगिण्ह। कृ. णिग्गहियव्व (सुपा ५८०)।

णिग्गह पुं [निग्रह] १ दण्ड, शिक्षा (प्रासू १७०, आव ६)। २ निरोध, अवरोध, रुकावट (भग ७, ९)। ३ वश करना, काबू में रखना, नियमन (प्रासू ४८)। °ट्ठाण न [°स्थान] न्याय-शास्त्र-प्रसद्धि प्रतिज्ञा-हानि आदि पराजय-स्थान (ठा १, सूअ १, १२)।

णिग्गहण न [निग्रहण] १ निग्रह, शिक्षा, दण्ड (सुर १६, ७)। २ दमन, नियमन, नियन्त्रण (प्रासू १३२)।

णिग्गहिय वि [निगृहीत] १ जिसका निग्रह किया गया हो वह (सं ११५)। २ पराजित पराभूत (आवम)।

णिग्गहीय देखो णिग्गहिय (सुख १, १)।

णिग्गा स्त्री [दे] हरिद्रा, हलदी (दे ४, २५)।

णिग्गाल पुंन [निर्गाल] निचोड, रस, 'सीसघडीनिग्गाल' (तदु ४१)।

णिग्गालिय वि [निर्गालित] गलाया हुआ (उप पृ ८४)।

णिग्गाहि वि [निग्राहिन्] निग्रह करनेवाला (उत्त २५, २)।

णिग्गिण्ण वि [दे. निर्गीर्ण] १ निर्गत, वाहर निकला हुआ (दे ४, ३६, पाअ)। २ वान्त, वमन किया हुआ (से ५, २९)।

णिम्मोडण न [निर्मोटन] विनाश (मै ६१)।
णिम्मोल्ल वि [निर्मूल्य] मूल्य-रहित (कुमा)।
णिम्मोह वि [निर्मोह] मोह-रहित (कुमा; श्रा १२)।
णिरइ स्त्री [निर्ऋति] मूल-नक्षत्र का अधिष्ठायक देव (ठा २ ३)।
णिरइयार वि [निरतिचार] अतिचार-रहित दूषण-वर्जित (सुपा १००)।
णिरइसय वि [निरतिशय] अत्यन्त, सर्वाधिक (काल)।
णिरईआर देखो णिरइयार (सुपा १००, रयण १८)।
णिरंकुस वि [निरङ्कुश] अंकुश-रहित, स्वच्छन्दी (कुमा श्रा २८)।
णिरंगण वि [निरङ्गण] निर्लेप लेप-रहित (औप, उव, णाया १, ११—पत्र १७१)।
णिरंगी स्त्री [दे] सिर का अवगुण्ठन, घूँघट (दे ४, ३१ २, २०)।
णिरंजण वि [निरञ्जन] निर्लेप, लेप-रहित (स ५८२, कप्प)।
णिरंतय वि [निरन्तक] अन्त-रहित (उप १०३१ टी)।
णिरंतर वि [निरन्तर] अन्तर-रहित, व्यवधान-रहित (गउड, हे १, १४)।
णिरंतराय वि [निरन्तराय] १ निर्विघ्न, निर्बाध। २ व्यवधान-रहित, सतत, 'धम्मं करेह विमलं च निरन्तराय' (पउम ४४, ६७)।
णिरंतरिय वि [निरन्तरित] अन्तर रहित, व्यवधान-रहित (जीव ३)।
णिरंध वि [नीरन्ध्र] छिद्र रहित (वज्जा ६७)।
णिरंबर वि [निरम्बर] वस्त्र-रहित, नग्न (आवम)।
णिरंभा स्त्री [निरम्भा] एक इन्द्राणी, वैरोचन इन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ५, १ इक)।
णिरंस वि [निरंश] अंश-रहित, अखण्ड, सम्पूर्ण (विसे)।
णिरह° वि [निरहम्] निर्मल, पवित्र, 'मइयं व वाहिओ सो निरंहमा तेण जलपवाहेण' (धर्मवि १४६)।

णिरक्क पुं [दे] १ चोर, स्तेन। २ पृष्ठ, पीठ। ३ वि स्थित (दे ४, ४६)।
णिरक्किय वि [निराकृत] अपाकृत, निरस्त (उत्त ६, ५६)।
णिरक्ख सक [निर् + ईक्ष्] निरीक्षण करना देखना। णिरक्खइ (हे ४, ४१८), 'तोवि ताव दिट्ठीए णिरक्खिज्जा' (महा)।
णिरक्खर वि [निरक्षर] मूर्ख, ज्ञान-रहित (कप्पू, वज्जा १५८)।
णिरगार वि [निराकार] आकार-रहित, 'निरगारपच्चक्खाणेवि अरहंताईणमुज्झित्वा' (सबोध ३८)।
णिरग्गल वि [निरर्गल] १ रुकावट से रहित (सुपा १६२, ४७१)। २ स्वच्छन्दी. स्वैरी, निरकुश (पाक्ष)।
णिरच्चण वि [निरर्चन] अर्चन-रहित (उव)।
णिरट्ठ, णिरट्ठग वि [निरर्थ, °क] १ निरर्थक, निष्प्रयोजन, निकम्मा (उत्त २०)। २ न. प्रयोजन का अभाव, 'णिरट्ठगम्मि विरओ, मेहुणाओ सुसवुडो' (उत्त २ ४२)।
णिरण वि [निर्ऋण] ऋण-रहित, करज से मुक्त (सुपा ५६३, ५६६)।
णिरणास देखो णिरिणास = नश्। णिरणासइ (हे ४, १७८)।
णिरणुकंप वि [निरनुकम्प] अनुकम्पा-रहित, निर्दय (णाया १, २, बृह १)।
णिरणुक्कोस वि [निरनुक्रोश] निर्दय,, दया-शून्य (णाया १, २, प्रासू ६८)।
णिरणुताव वि [निरनुताप] पश्चात्ताप-रहित (णाया १, २)।
णिरणुतावि वि [निरनुतापिन] पश्चात्ताप-वर्जित (पव २७४)।
णिरत्थ वि [निरस्त] अपास्त, निराकृत (वव ८)।
णिरत्थ, णिरत्थग, णिरत्थय वि [निरर्थ, °क] अनार्थक, निकम्मा, निष्प्रयोजन (दे ४, १६, पउम ६५, ४, पण्ह १, २ उव, स ४१)।
णिरन्नय पुं [निरन्वय] अन्वय रहित (धर्मसं ४६६)।
णिरप्प अक [स्था] बैठना। णिरप्पइ (हे ४, १६)। भूका. णिरप्पीअ (कुमा)।

णिरप्प पुं [दे] १ पृष्ठ, पीठ। २ वि. उद्वेष्टित (दे ४, ४६)।
णिरप्पण वि [निरात्मीय] अस्वकीय, परकीय (कुप्र ८६)।
णिरभिग्गह वि [निरभिग्रह] अभिग्रह-रहित (आव ६)।
णिरभिराम वि [निरभिराम] असुन्दर, अचारु (पण्ह १, ३)।
णिरभिलप्प वि [निरभिलाप्य] अनिर्वचनीय, वाणी से बतलाने को अशक्य (विसे ८८८)।
णिरभिस्संग वि [निरभिष्वङ्ग] आसक्ति-रहित, निःस्पृह (पंचा २ ६)।
णिरय पुं [निरय] १ नरक, पाप-भोग-स्थान (ठा ४, १, आचा सुपा १४०)। २ नरक-स्थित जीव, नारक (ठा १०) °पाल पु [°पाल] देव-विशेष (ठा ८, १)। °वलिया स्त्री [°वलिका] १ जैन आगम-ग्रन्थ विशेष (निर १, १)। २ नरक-विशेष (पण्ण २)।
णिरय वि [निरत] आसक्त, तत्पर, तल्लीन (उप ६७६ उव, सुपा २६)।
णिरय वि [नीरजस्] रजो-रहित, निर्मल (भग, गा ८७८)।
णिरव सक [बुभुक्ष्] खाने की इच्छा करना। णिरवइ (षड्)।
णिरव सक [आ + क्षिप्] आक्षेप करना। णिरवइ (षड्)।
णिरवइक्ख वि [निरपेक्ष] अपेक्षा रहित निरीह, निःस्पृह (विसे ७ टी)।
णिरवकख वि [निरवकाङ्क्ष] स्पृहा रहित निःस्पृह (औप)।
णिरवकंखि वि [निरवकाङ्क्षिन] निःस्पृह (णाया १ ६)।
णिरवगाह वि [निरवगाह] अवगाहन-रहित (षड्)।
णिरवग्गह वि [निरवग्रह] निरकुश, स्वच्छन्दी, स्वैरी (पाम)।
णिरवच्च वि [निरपत्य] अपत्य-रहित, निःसंतान (भग, सम १५०)।
णिरवज्ज वि [निरवद्य] निर्दोष, विशुद्ध (दस ५, १, सुर ८, १८३)।

णिच्छम्म देखो णिच्छउम (उव, सार्धं १४५)।

णिच्छय सक [निर् + चि] निश्चय करना, निर्णय करना। वकृ णिच्छयमाण (उप ७२८ टी)।

णिच्छय पुं [निश्चय] १ निश्चय, निर्णय (भग, प्रासू १७७)। २ नियम, अविनाभाव (राज)। ३ नय-विशेष, द्रव्यार्थिक नय, वास्तविक पदार्थ को ही माननेवाला मत, परिणाम-वाद (बृह ४, पंचा १३)। °कहा स्त्री [°कथा] अपवाद (निचू ५)।

णिच्छल्ल सक [छिद्] छेदना, काटना। णिच्छल्लइ (हे ४, १२४)।

णिच्छल्लिअ वि [छिन्न] काटा हुआ (कुमा, स २५८, गउड)।

णिच्छाय वि [निश्छाय] कान्ति-रहित, शोभा-हीन (पराह १, २)।

णिच्छारय वि [निस्सारक] सार-रहित, 'निच्छारयछारयधूलीए' (श्रा २७)।

णिच्छिड्ड वि [निश्छिद्र] छिद्र-रहित (णाया १, ६, उप २११ टी)।

णिच्छिण्ण वि [निच्छिन्न] पृथक्-कृत, अलग किया हुआ, काटा हुआ (विसे २७३)।

णिच्छिद्द देखो णिच्छिड्ड (स ३५०)।

णिच्छिन्न देखो णिच्छिण्ण (पुप्फ ४६३, महा)।

णिच्छिय वि [निश्चित] निश्चित, निर्णीत, असंदिग्ध (णाया १, १, महा)।

णिच्छीर वि [नि क्षीर] क्षीर रहित, दुग्ध-वर्जित (पराण १)।

णिच्छुड वि [दे] निर्दय, करुणा-रहित (दे ४, ३२)।

णिच्छुट्ट वि [निश्छुटित] निर्मुक्त, छूटा हुआ (सुर ६, ७२)।

णिच्छुभ सक [नि + क्षिप्] १ बाहर निकालना। फेंकना। णिच्छुभइ (भग)। कर्म णिच्छुब्भइ (पि ६६)। कवकृ. णिच्छुब्भमाण (विपा १,२)। संकृ णिच्छुभित्ता, णिच्छुभिउं (भग, निर १, १)। प्रयो. णिच्छुभावेइ (णाया १, ८)।

णिच्छुभ पुं [निक्षेप] निष्कासन (पिंड ३७५)।

णिच्छुभण न [निक्षेपण] नि सारण, निष्कासन (निचू १)।

णिच्छुभाविय वि [निक्षेपित] निस्सारित, बाहर निकाला हुआ (णाया १, ८)।

णिच्छुह सक [नि + क्षिप्] डालना। निच्छुहइ (सुख ७, ११)।

णिच्छुहणा स्त्री [निक्षेपणा] बाहर निकलने की आज्ञा, निर्भर्त्सना (णाया १, १६ टी—पत्र २००)।

णिच्छूढ वि [निक्षिप्त] १ उद्वृत्त, निर्गत (हे ४, २५८)। २ फेंका हुआ, निक्षिप्त (प्रामा)। ३ निस्सारित, निष्कासित (णाया १, ८—पत्र १४६, १, १६—पत्र १९६)।

णिच्छूढ न [निष्ठ्यूत] थूक, खखार (विसे ५०१)।

णिच्छोड सक [निर् + छोटय्] १ बाहर निकलने के लिए धमकाना। २ निर्भर्त्सन करना। ३ छुड़वाना। णिच्छोडेइ; णिच्छोडेंति (णाया १, १६, १८)। णिच्छोडेज्जा (उवा)। संकृ. णिश्छोडइत्ता (भग १५)।

णिच्छोडग न [निश्छोटन] निर्भर्त्सन, बाहर निकालने की धमकी (उव)।

णिच्छोडणा स्त्री [निश्छोटना] ऊपर देखो (णाया १, १६—पत्र १९६)।

णिच्छोडिअ वि [निश्छोटित] सफा किया हुआ (पिंड २७६)।

णिच्छोल सक [निर् + तक्ष्] छीलना, छाल उतारना। निच्छोलेइ (निचू १)। वकृ. णिच्छोलत (निचू १)। सकृ. निच्छोलिऊण (महा)।

णिजंतय वि [नियन्त्रित] नियमित, अकुंशित (सुर ३, ४)।

णिजिण्ण देखो णिज्जिण्ण (ठा ४, १)।

णिजुंज देखो णिउज = नि + युज्। निजुंजइ (कुप्र ३४८)।

णिजुद्ध देखो णिउद्ध (निचू १२)।

णिजोजण न [नियोजन] नियुक्ति, कार्य मे लगाना, भारअर्पण (उप १७६ टी)।

णिजोजिय देखो णिओइय (उप १७९ टी)।

णिज्ज वि [दे] सुप्त, सोया हुआ (दे ४, २५, षड्)।

णिज्जंत देखो णी = नी।

णिज्जण वि [निर्जन] १ विजन, मनुष्य-रहित, सुनसान। २ न एकान्त स्थान (गउड)।

णिज्जप्प वि [निर्याप्य] १ निर्वाह-कारक। २ निर्बल, बल को नहीं बढ़ानेवाला, 'अरम-विरससीयलुक्खणिज्जप्पपाणभोयणाइ' (पराह २, ५)।

णिज्जर सक [निर् + जॄ] १ क्षय करना, नाश करना। २ कर्म-पुद्गलों को आत्मा से अलग करना। णिज्जरेइ, णिज्जरए, णिज्जरेंति (भग, ठा ४, १)। भूका. णिज्जरिंसु, णिज्ज-रेंसु (पि ५७६, भग)। भवि. णिज्जरिस्सति (ठा ४, १)। वकृ. णिज्जरमाण (भग १८, ३)। कवकृ णिज्जरिज्जमाण (ठा १०, भग)।

णिज्जरण न [निर्जरण] नीचे देखो (औप)।

णिज्जरणा स्त्री [निर्जरणा] १ नाश, क्षय। २ कर्म-क्षय, कर्म-नाश। ३ जिससे कर्मों का विनाश हो ऐसा तप (नव १, सुर १४, ६५)।

णिज्जरा स्त्री [निर्जरा] कर्म-क्षय, कर्म-विनाश (आचा, नव २४)।

णिज्जरिय वि [निर्जीर्ण] क्षीण, विनाश-प्राप्त (तदु)।

णिज्जव वि [निर्याप] निर्वाह करानेवाला (पचा १५, १४)।

णिज्जवग वि [निर्यापक] १ निर्वाह करने-वाला। २ आराधक, आराधन करनेवाला (ओघ २८ भा)। ३ पुं. जैनमुनि-विशेष, जो शिष्य के भारी प्रायश्चित्त का भी ऐसी तरह से विभाग कर दे कि जिससे वह उसे निवाह सके (ठा ८, भग २५, ७)।

णिज्जवणा स्त्री [निर्यापना] १ निगमन, दर्शित अर्थ का प्रत्युच्चारण (विसे २६३२)। २ हिंसा (पराह १, १)।

णिज्जवय देखो णिज्जवग (ओघ २८ भा टी, द्र ४६)।

णिज्जविउ वि [निर्यापयितृ] ऊपर देखो (पव ६४)।

णिज्जा अक [निर् + या] बाहर निकालना। णिज्जायति (भग)। भवि. णिज्जाइस्सामि (औप)। वकृ. णिज्जायमाण (ठा ५, ३)।

णिरालंबण वि [निरालम्बन] आलम्बन-रहित (औप; णाया १, ६)।
णिरालवण वि [निरालम्बन] आशंसा-रहित, संशय-रहित, प्रार्थना-रहित, इच्छारहित, अनुमान-रहित (आचा २, १६, १२)।
णिरालय वि [निरालय] स्थान-रहित, एकत्र स्थिति नहीं करनेवाला (औप)।
णिरालोय वि [निरालोक] प्रकाश-रहित, (निर १, १)।
णिरावकंखि वि [निरवकाङ्क्षिन्] आकांक्षा-रहित, निःस्पृह (सूअ १, १०)।
णिरावयक्ख वि [निरपेक्ष] अपेक्षा-रहित, निरीह (णाया १, १, ६; भत्त १४८)।
णिरावरण वि [निरावरण] १ प्रतिबन्धक-रहित (औप)। २ नग्न (सुर १४, १७८)।
णिरावराह वि [निरपराध] अपराध-रहित (सुपा ४२३)।
णिराविक्ख } देखो णिरावयक्ख; 'विसएसु णिरावेक्ख } णिराविक्खा तरंति संसार-कंतारं' (भत्त ४६, पउम ६, ८, १००, ११)।
णिरास वि [निराश] १ आशा-रहित, हताश (पउम ४४, ५६; दे ४, ४८; संक्षि १६)। २ न आशा का अभाव (पण्ह १, ३)।
णिरास वि [दे] नृशंस, क्रूर (षड्)।
णिरासंस वि [निराशंस] आकांक्षा-रहित, निरीह (सुपा ६२१)।
णिरासय वि [निराश्रय] निराधार (वज्जा १५२)।
णिरासव वि [निराश्रव] आश्रव-रहित, कर्म-बन्धन के कारणों से रहित (पण्ह २, ३)।
णिरासस देखो णिरासंस (आचा २,१६,६)।
णिराह वि [दे] निर्दय, निष्करुण (दे ४, ३७)।
णिरिअ वि [दे] अवशेषित, बाकी रखा हुआ (दे ४, ४८)।
णिरिइ देखो णिरइ (सुज्ज १०, १२)।
णिरिक वि [दे] नत, नमा हुआ (दे ४, ३०)।
णिरिंगी [दे] देखो णीरंगी (गउड)।
णिरिंधण वि [निरिन्धन] इन्धन-रहित (भग ७, १)।
णिरिक्ख सक [निर् + ईक्ष्] देखना, अवलोकन करना। णिरिक्खइ, णिरिक्खए (सण, महा)। वकृ. णिरिक्खंत, णिरिक्खमाण (सण; उप २११ टी)। संकृ. णिरिक्खिऊण (सण)। कृ णिरिक्खणिज्ज (कप्पू)।
णिरिक्खण न [निरीक्षण] अवलोकन (गा १५०)।
णिरिक्खणा स्त्री [निरीक्षणा] अवलोकन, प्रतिलेखना (ओघ ३)।
णिरिक्खिअ वि [निरीक्षित] आलोकित, दृष्ट (कप्पू; पउम ४८, ४८)।
णिरिग्घ सक [नि + ली] १ आश्लेष करना, आलिंगन करना। २ अक छिपना। णिरिग्घइ (हे ४, ५५)।
णिरिग्घिअ वि [निलीन] आश्लिष्ट, आलिंगित (कुमा)।
णिरिण वि [निर्ऋण] ऋण-मुक्त, उऋण (ठा ३, १; टी—पत्र १२०)।
णिरिणास सक [गम्] गमन करना। णिरिणासइ (हे ४, १६२)।
णिरिणास सक [पिष्] पीसना। णिरिणासइ (हे ४, १८५)।
णिरिणास अक [नश्] पलायन करना। भागना। णिरिणासइ (हे ४ १७८; कुमा)।
णिरिणासिअ वि [गत] गया हुआ, यात (कुमा)।
णिरिणासिअ वि [पिष्ट] पीसा हुआ (कुमा)।
णिरिणिज्ज सक [पिष्] पीसना। णिरिणिज्जइ (हे ४, १८५)।
णिरिणिज्जिअ वि [पिष्ट] पीसा हुआ (कुमा)।
णिरित्ति स्त्री [निरिति] एक रात्रि का नाम (कप्प)।
णिरीह वि [निरीह] निष्काम, निःस्पृह (कुमा; ४२१)।
णिरु (अप) अ निश्चित, नक्की (हे ४, ३४४; सुपा ८६; सण, भवि)।
णिरुअ देखो णिरुज (विसे १५८५, सुपा ४४६)।
णिरुइय [निरुईजीकृत] नीरोग किया गया (उप ५९७ टी)।
णिरुंभ सक [नि + रुध्] निरोध करना। णिरुंभइ (औप)। कवकृ णिरुब्भमाण, णिरुब्भंत (स ५३१, महा)। संकृ. णिरुंभइत्ता (सूअ १,४,२)। कृ. णिरुंभियव्व, णिरुद्धव्व (सुपा ४०४, विसे ३०८१)।
णिरुंभण न [निरोधन] अटकाव, रुकावट (सूअ १, ५; भवि)।
णिरुक्कंठ वि [निरुत्कण्ठ] उत्कण्ठा-रहित, निरुत्साह (नाट)।
णिरुग्घ देखो णिरिग्घ। णिरुग्घइ (षड्)।
णिरुच्चार वि [निरुच्चार] १ उच्चार—पुरीषोत्सर्ग के लिए लोगों के निर्गमन में वर्जित (णाया १, ८—पत्र १४६)। २ पाखाना जाने से जो रोका गया हो (पण्ह १, ३)।
णिरुच्छव वि [निरुत्सव] उत्सव-रहित (अभि १८६)।
णिरुच्छाह वि [निरुत्साह] उत्साह-हीन (से १४, ३५)।
णिरुज वि [निरुज] १ रोग-रहित। २ न. रोग का अभाव। °सिह न [°शिख] एक प्रकार की तपश्चर्या (पव २७१)।
णिरुज्जम वि [निरुद्यम] उद्यम-रहित, आलसी (उव, स ३१०, सुपा ३८४)।
णिरुट्ठाइ वि [निरुत्थायिन्] नहीं उठनेवाला (उत्त १, ३०)।
णिरुत्त वि [निरुक्त] १ उक्त, कथित (सत्त ७१)। २ न. निश्चित उक्ति (अणु)। ३ व्युत्पत्ति। (विसे २, ६६३)। ४ वेदाङ्ग शास्त्र-विशेष, जिसमें वैदिक शब्दों की व्याख्या है (औप)।
णिरुत्त वि [निरुक्त] १ अनुक्त, अकथित, दृष्टान्त 'किंनु निरुत्तो भावो परस्स नज्जइ कवित्तेण' (सिरि ८४६)। २ व्युत्पत्ति-युक्त (सिरि ३१)।
णिरुत्त क्रिवि [दे] १ निश्चित, नक्की, चोक्स (दे ४, ३०, पउम ३५, ३२, कुमा, (सण; भवि), 'तहवि हु मरइ निरुत्त पुरिसो संपत्तिए काले' (पउम ११, ६१)। २ वि निश्चिन्त, चिन्ता रहित (कुमा)।
णिरुत्तत्त वि [निरुत्तप्त] विशेष ताप-युक्त, संतप्त (उव)।
णिरुत्तम वि [निरुत्तम] अत्यन्त श्रेष्ठ (काल)।
णिरुत्तर वि [निरुत्तर] उत्तर-रहित किया हुआ, परास्त (सुर १२, ६६)।
णिरुत्ति स्त्री [निरुक्ति] व्युत्पत्ति (विसे ६६२)।

णिट्टुअ अक [क्षर्] टपकना, चूना। णिट्टुअइ (हे ४, १७३)।

णिट्टुइअ वि [क्षरित] टपका हुआ (पाअ)।

णिट्टुह अक [वि + गल्] गल जाना, नष्ट होना। णिट्टुहइ (हे ४, १७५)।

णिट्ठ देखो णिट्ठा = नि + स्था। निट्ठइ (भवि)।

णिट्ठव } सक [नि + स्थापय्] १ समाप्त करना, पूर्ण करना। २ अन्त करना, खतम करना। ३ विशेष रूप से स्थापन करना, स्थिर करना। भूका. णिट्ठवसु (भग २६. १)। संकृ. णिट्ठविअ (पिंग)। कृ णिट्ठयणिज्ज (उप ५६७ टी)।

णिट्ठवण न [निष्ठापन] १ अन्त करना, समाप्ति। २ वि नाश-कारक, खतम करने-वाला (सुपा १६१, गउड)। ३ समाप्त करने-वाला (जी ५)।

णिट्ठवय वि [निष्ठापक] समाप्त करनेवाला (आव ६)।

णिट्ठविअ वि [निष्ठापित] १ समाप्त किया हुआ (पंचव २)। २ विनाशित (से ६, १)।

णिट्ठा अक [नि + स्था] खतम होना, समाप्त होना। णिट्ठाइ (विसे ६२७)।

णिट्ठा स्त्री [निष्ठा] १ अन्त, अवसान, समाप्ति (विसे २८३३, सुपा १३)। २ सद्भाव (आचू १)। °भासि वि [°भाषिन्] निष्ठा-पूर्वक बोलनेवाला, निश्चय-पूर्वक भाषण करनेवाला (आचा)।

णिट्ठाण न [निष्ठान] सर्व-गुण-युक्त भोजन (दस ८, २२)।

णिट्ठाण न [निष्ठान] १ दही वगैरह व्यञ्जन (ठा ४, २, पण्ह २, ५)। २ समाप्ति (निचू १)। °कहा स्त्री [°कथा] भक्त-कथा-विशेष, दही वगैरह व्यञ्जन की बात-चीत (ठा ४, २)।

णिट्ठावण देखो णिट्ठवण (सुपा ३५७)।

णिट्ठिय वि [निष्ठित] १ समाप्त किया हुआ, पूर्ण किया हुआ (उप १०३१ टी, कम्म ४, ७४)। २ नष्ट किया हुआ, विनाशित (सुपा ४४६)। ३ स्थिर (से ५, ७)। ४ निष्पन्न, सिद्ध (आचा २, १, ६)। ५ पु. मोक्ष, मुक्ति (आचा)। °ट्ठ वि [°र्थ] कृतकृत्य (पण्ण ३६)। °ट्ठि वि [°र्थिन्] मुमुक्षु, मोक्ष का इच्छुक (आचा)।

णिट्ठिय वि [नैष्ठिक] निष्ठा-युक्त, निष्ठावाला (पण्ह २, ३)।

णिट्ठीव पुं [निष्ठीव] थूक, मुँह का पानी (रंभा)।

णिट्ठीवण स्त्रीन [निष्ठीवन] थूक, खखार। २ थूकना (मल्लि ७८ टी)। स्त्री °णा (वव १)।

णिट्ठुअ न [निष्ठ्यूत] थूक (कुलक ३०)।

णिट्ठुभय वि [निष्ठीवक] थूकनेवाला (पण्ह २, १, औप)।

णिट्ठुयण देखो निट्ठीवण (चेइय ६३)।

णिट्ठुर } वि [निष्ठुर] निष्ठुर, परुष, कठिन
णिट्ठुल } (प्राप्र, हे १,२५४, पाअ, गउड)।

णिट्ठुवण न [निष्ठीवन] १ थूक, खखार (वव १)। २ वि. थूकनेवाला (ठा ५, १)।

णिट्ठुह अक [नि + स्तम्भ्] निष्टम्भ करना, निश्चेष्ट होना, स्तब्ध होना। णिट्ठुहइ (हे ४, ६७, षड्)।

निट्ठुह अक [नि + ष्ठीव्] थूकना निट्ठुहमी (तंदु ४१)।

णिट्ठुह वि [दे] स्तब्ध, निश्चेष्ट (दे ४, ३३)।

णिट्ठुहण न [दे निष्ठीवन] थूक, मुँह का पानी, खखार (महा)।

णिट्ठुहावण वि [निष्टम्भक] निश्चेष्ट करने-वाला, स्तब्ध करनेवाला (कुमा)।

णिट्ठुहिअ न [दे] थूक, निष्ठीवन, खखार (दे ४, ४१)।

णिड पुं [दे] पिशाच, राक्षस (दे ४, २५)।

णिडल } न [ललाट] भाल, ललाट (पि
णिडाल } २६०, पउम १००, ५७, सुपा २८)।

णिड्ड न [नीड] पक्षि-गृह (पाअ)।

णिड्डहण न [निर्दहन] जला देना (उप ५६३ टी)।

णिड्डुह देखो णिट्ठुअ। णिड्डुहइ (कुमा; षड्)।

णिणाय पु [निनाद] शब्द, आवाज, ध्वनि (णाया १,१, पउम २, १०३, से ६, ३०)।

णिण्ण वि [निम्न] १ नीचा, अधस्तन (उत्त १२, उव १०३१ टी)। २ क्रिवि. नीचे, अध (हे २, ४२)।

णिण्णक्खु क्रि [निस्सारयति] बाहर निका-लता है, 'ठाणाओ ठाणं साहरति, बहिया वा णिण्णक्खु' (आचा २, २, १)।

णिण्णगा स्त्री [निम्नगा] नदी, स्रोतस्विनी (पण्ण १, पण्ह २, ४)।

णिण्णट्ठ वि [निर्नष्ट] नाश-प्राप्त (सुर ६, ६२)।

णिण्णय पु [निर्णय] १ निश्चय, अवधारण (हे १, ९३)। २ फैसला (सुपा ६६)।

णिण्णया देखो णिण्णगा (पाअ)।

णिण्णार वि [निर्नगर] नगर से निर्गत (भग १५)।

णिण्णाल स्त्री [दे] चञ्चु, चोंच (दे ४, ३६)।

णिण्णास सक [निर + नाशय] विनाश करना। वकृ. निन्नासित (सुपा ६५४)।

णिण्णास पुं [निर्णाश] विनाश (भवि)।

णिण्णासिय वि [निर्णाशित] विनाशित (सुर ३, २३१, भवि)।

णिण्णिद्द वि [निर्निद्र] निद्रा-रहित (गा ६५६)।

णिण्णिमेस वि [निर्निमेष] १ निमेष-रहित, बिना पलक झपकाये, एक-टक। २ चेष्टा-रहित। ३ अनुपयोगी (ठा ५, २)।

णिण्णी सक [निर् + णी] निश्चय करना। संकृ णिण्णइउ (धर्मवि १३६)।

णिण्णीअ वि [निर्णीत] निश्चित, नक्की किया हुआ (श्रा १२)।

णिण्णुण्णअ वि [निम्नोन्नत] ऊँचा-नीचा, विषम (अभि २०६)।

णिण्णेह वि [नि स्नेह] स्नेह-रहित (हे ४, ३६७, सुर ३, २२२, महा)।

णिण्हइया स्त्री [निह्नविका] लिपि-विशेष (सम ३५)।

णिण्हग } पुं [निह्नव] १ सत्य का अपलाप
णिण्हय } करनेवाला, मिथ्यावादी (ओघ
णिण्हव } ८० भा, ठा ७, औप) २ अप-लाप (सं‌धि ४१)।

णिण्हव सक [नि + ह्नु] अपलाप करना। णिण्हवइ (विसे २२९९, हे ४, २३३)।

णिलिंत णिलिज्जमाण, णिलीअत, णिलीअमाण (कप्प, सूअ २,२, कुमा, उप ४७४)।

णिलीइर वि [निलेतृ] आश्लेष करनेवाला, भेंटनेवाला (कुमा)।

णिलुक्क देखो णिलीअ। णिलुक्कइ (हे ४, ५५, षड्)। वक्र णिलुक्कंत (कुमा)।

णिलुक्क सक [तुड्] तोड़ना। णिलुक्कइ (हे ४, ११६)।

णिलुक्क वि [दे. निलीन] १ निलीन, खूब छिपा हुआ, प्रच्छन्न, गुप्त, तिरोहित (णाया १, ८ से १५, २, गा ६४, सुर ६, ५, उव, सुपा ६४०)। २ लीन, आसक्त (विवे ६०)।

णिलुक्कण न [निलयन] छिपना (कुप्र २५२)।

णिल्लक्क [दे] देखो णिलक्क (दे ४, ३१)।

णिल्लछण न [निर्लाञ्छन] शरीर के किसी अवयव का छेदन (उवा, पडि)।

णिल्लच्छ देखो णेल्लच्छ (पि ६६)।

णिल्लच्छण वि [निर्लक्षण] १ मूर्ख, बेवकूफ (उप ७६७ टी)। २ अपलक्षणवाला, खराब (श्रा १२)।

णिल्लज्ज वि [निर्लज्ज] लज्जा-रहित (हे २, १९७, २००)।

णिल्लज्जिम पुस्त्री [निर्लज्जिमन्] निर्लज्जपन, बेशरमी (हे १, ३५)। स्त्री °मा (हे १, ३५)।

णिल्लस अक [उत् + लस्] उल्लसना, विकसना। णिल्लसइ (हे ४, २०२)।

णिल्लसिज वि [उल्लसित] उल्लास-युक्त, विकसित (कुमा)।

णिल्लसिअ वि [दे] निर्गत, निःसृत, निर्यात (दे ४, ३६)।

णिल्लालिअ वि [निर्लालित] निःसारित, बाहर निकाला हुआ (णाया १, १, ८—पत्र १३३, सुर १२, २३५, महा)।

णिल्लिह सक [निर् + लिख्] घिसना। णिल्लिहिज्जा (आचा २, ३, २, ३)।

णिल्लुंछ सक [मुच्] छोड़ना, त्याग करना। णिल्लुंछइ (हे ४, ९१)।

णिल्लुंछिअ वि [मुक्त] त्यक्त, छोड़ा हुआ (कुमा)।

णिल्लुत्त वि [निर्लुप्त] विनाशित (विक्र २५)।

णिल्लूर सक [छिद्] छेदन करना, काटना। णिल्लूरइ (हे ४, १२४)। णिल्लूरह (आरा ६८)।

णिल्लूरण न [छेदन] छेद, विच्छेद (कुमा)।

णिल्लूरिय वि [छिन्न] काटा हुआ, विच्छिन्न, 'आवत्तविद्दुमाहयनिल्लूरियदवियसखउल' (पउम ८, २५८)।

णिल्लेव वि [निर्लेप] लेप-रहित (विसे ३०८३)।

णिल्लेवग पु [निर्लेपक] रजक, धोबी (आचू ४)।

णिल्लेवण न [निर्लेपन] १ मल को दूर करना (वव १)। २ वि निर्लेप, लेप-रहित (ओघ १६ भा)। °काल पु [°काल] वह काल, जिस समय नरक में एक भी नारक जीव न हो (भग)।

णिल्लेविअ वि [निर्लेपित] १ लेप-रहित किया हुआ। २ बिलकुल खूट गया हुआ (भग)।

णिल्लेहण न [निर्लेखन] उद्वर्तन, पोंछना (आचा २, ३, २)।

णिल्लोभ } वि [निर्लोभ] लोभ-रहित, अ-
णिल्लोह } लुब्ध (सुपा ३६१, श्रा १२, भवि)।

णिव पुं [नृप] राजा, नरेश (कुमा, रयण ४७)। °तणय वि [°संबन्धिन्] राज-संबन्धी, राजकीय (सुपा ५३९)।

णिवइ पु [नृपति] ऊपर देखो (ठा ३, १, पउम ३०, ९)। °मग्ग पुं [°मार्ग] राज-मार्ग, जाहिर रास्ता (पउम ७९, १९)।

णिवइअ वि [निपतित] १ नीचे गिरा हुआ (णाया १, ७)। २ एक प्रकार का विष (ठा ४, ४)।

णिवइत्तु वि [निपतितृ] नीचे गिरनेवाला (ठा ४, ४)।

णिवच्छण न [दे] अवतारण, उतारना (दे ४, ४०)।

णिवज्ज अक [निर् + पद्] निष्पन्न होना, नीपजना, बनना। णिवज्जइ (षड्)।

णिवज्ज अक [नि + सद्] बैठना। णिवज्जसु (स ५०९)। वक्र. णिवज्जमाण (स ५०३)। प्रयो. णिवज्जावेइ (निर १, १)।

णिवज्ज अक [नि + सद्] सोना। णिवज्जइ (उत्त २७, ५)।

णिवट्ट सक [नि + वर्तय्] निवृत्त करना। निवट्टएज्जा (सूअ १, १०, २१)।

णिवट्ट अक [नि + वृत्] १ निवृत्त होना, लौटना, हटना। २ रुकना। वक्र णिवट्टंत (सुपा १६२)।

णिवट्ट वि [निवृत्त] १ निवृत्त हटा हुआ, प्रवृत्ति-विमुख। २ न. निवृत्ति (हे ४, ३३२)।

निवट्टण न [निवर्तन] १ निवृत्ति, प्रवृत्ति-निरोध। २ जहाँ रास्ता बन्द होता हो वह स्थान (णाया १, २—पत्र ७९)।

णिवट्टिम वि [निर्वर्तित] पका हुआ, फलित, सिद्ध (आचा २, ४, २, ३)।

णिवड अक [नि + पत्] नीचे पडना, नीचे गिरना। णिवडइ (उव, षड्, महा)। वक्र णिवडंत, णिवडमाण (गा ३४, सुर ३, १२७)। संक्र णिवडिऊण, णिवडिअ (दस ३, महा)।

णिवडण न [निपतन] अधः पतन (राज)।

णिवडिअ वि [निपतित] नीचे गिरा हुआ (से १४, ३४ गा २३४, उप पृ २६)।

णिवडिर वि [निपतितृ] नीचे गिरनेवाला (सुपा ४९, सण)।

णिवण्ण वि [निषण्ण] १ बैठा हुआ (महा, सण ६५, ७३)। २ पुं. कायोत्सर्ग-विशेष, जिसमें धर्म आदि किसी प्रकार का ध्यान न किया जाता हो वह कायोत्सर्ग (आव ५)। °णिवण्णग पु [°निषण्ण] जिसमें आर्त और रौद्र ध्यान किया जाय वह कायोत्सर्ग (आव ५)।

णिवण्णुस्सिय पु [निषण्णोत्सृत] कायोत्सर्ग-विशेष, जिसमें धर्म ध्यान और शुक्ल ध्यान किया जाता हो वह कायोत्सर्ग (आव ५)।

णिवत्त देखो णिवट्ट = नि + वृत्। वक्र. णिवत्तमाण (वव १)। कृ णिवत्तणीअ (नाट—शकु १०८)। प्रयो णिवत्तावेमि (पि ५५२)।

णिवत्त देखो णिवट्ट = निवृत्त (षड्, कप्प)।

णिवत्तण देखो णिवट्टण (महा; हे २, ३०, कुमा)।

णिद्दलण न [निर्दलन] १ मर्दन, विदारण (आचा)। २ वि. मर्दन करनेवाला (वज्जा ४२)।

णिद्दलिअ वि [निर्दलित] मर्दित, विदारित (पाअ, सुर ५, २२२, सार्ध ७६)।

णिद्दह सक [निर् + दह्] जला देना, भस्म करना। निद्दहइ (महा, उप)। णिद्दहेज्जा (पि २२२)।

णिद्दा अक [नि + द्रा] निद्रा लेना, नीद करना। णिद्दाइ (षड्)। वकृ. णिद्दाअंत (से १, ५६)।

णिद्दा स्त्री [निद्रा] १ निद्रा, नींद (स्वप्न ५६, कप्पू)। २ निद्रा-विशेष, वह निद्रा जिसमें एकाव आवाज देने पर ही आदमी जाग उठे (कम्म १,११)। °अत वि [°वत्] निद्रा-युक्त, निद्रित्त (से १, ५६)। °करी स्त्री [°करी] लता-विशेष (दे ७, ३४)। °णिद्दा स्त्री [°निद्रा] निद्रा-विशेष, वह निद्रा जिसमें बडी कठिनाई से आदमी उठाया जा सके (कम्म १, ११, सम १५)। °ल, °लु वि [°वत्] निद्रावाला (संक्षि २०, पि ५६५, प्राप्र)। °वअ वि [°प्रद] निद्रा देनेवाला (से ६, ४३)।

णिद्दाअ वि [निद्रात] जो नीद मे हो (से १, ५६)।

णिद्दाअ वि [निर्दाव] अग्नि-रहित (से १, ५६)।

णिद्दाअ वि [निर्दाय] दाय-रहित, पैतृक घन से वर्जित (से १, ५६)।

णिद्दाइअ वि [निद्रित] निद्रा-युक्त (महा)।

णिद्दाणी स्त्री [निद्राणी] विद्यादेवी-विशेष (पउम ७, १४४)।

णिद्दाया देखो णिदा (पएण ३५)।

णिद्दारिअ वि [निर्दारित] खण्डित, विदारित (से ५, ८३, १३, ६५)।

णिद्दाव वि [निर्दाव] १ दावनल-रहित। २ जंगल-रहित (से ६, ४३)।

णिद्दिट्ठ वि [निर्दिष्ट] १ कथित, उक्त (भग)। २ प्रतिपादित, निरूपित (पचा ३, दंस)।

णिद्दिट्ठु वि [निर्देष्टृ] निर्देश करनेवाला (विसे १५०४, विक्र ६४)।

णिद्दिस सक [निर् + दिश्] १ उच्चारण करना, कथन करना। २ प्रतिपादन करना, निरूपण करना। निद्दिसइ (विसे १५२६)। कर्म. णिद्दिस्सइ (नाट—मालवि ५३)। हेकृ. निद्देट्ठु (पि ५७६)। कृ णिद्दिस्स, णिद्देस (विसे १५२३)।

णिद्दुक्ख वि [निर्दुःख] दुःख-रहित, सुखी (सुपा ५३७)।

णिद्दुर पुं [दे नेत्तर] देश-विशेष (इक)।

णिद्दूसण वि [निर्दूषण] निर्दोष (धर्मवि २०)।

णिद्देस पु [निर्देश] १ लिग या अर्थ-मात्र का कथन (ठा ८—पत्र ४२७)। २ विशेष का अभिधान, 'अविसेसियमुद्देसो विसेसिओ होइ निद्देसो' (विसे, १४६७, १५०३)। ३ निश्चय पूर्वक कथन (विसे १५२६)। ४ प्रतिपादन, निरूपण (उत्त १, णंदि)। ५ आज्ञा, हुकुम (पाअ, दस ६, २)। ६ वि जिसको देश-निकाले की आज्ञा हुई हो वह (पउम ४, ८२)।

णिद्देसग } वि [निर्देशक] निर्देश करने-
णिद्देसय } वाला (विसे १५०८, १५००)।

णिद्दोत्थ न [निर्दौःस्थ्य] १ दुःस्थता का अभाव (वव ४)। २ वि स्वस्थ, दुःस्थता-रहित (वव ७)।

णिद्दोस वि [निर्दोष] दोष-रहित, दूषण-वर्जित, विशुद्ध (गउड, सुर १, ७३)।

णिद्ध न [स्निग्ध] स्नेह, रस-विशेष (ठा १, अणु)। २ वि. स्नेह-युक्त, चिकना (हे २, १०६, उव, षड्)। ३ कान्ति-युक्त, तेजस्वी (वृह ३)।

णिद्धंत वि [निध्मात] अग्नि-संयोग से विशोधित, मल-रहित (पण्ह १, ४, औप)।

णिद्धंधस वि [दे] १ निर्दय, निष्ठुर (दे ४, ३७, ओघ ४४५, पाअ, पुप्फ ४५४, सट्ठि २६, सुपा २४५, श्रा ३६)। २ निर्लज्ज, बेशरम (विवे १२८)।

णिद्धण वि [निर्धन] धन-रहित, अकिंचन (हे २, ६०, णाया १, १८, दे ४, ५, उप ७६ टी, महा)।

णिद्धण्ण वि [निर्धान्य] धान्य-रहित (तंदु)।

णिद्धम वि [दे] अविभिन्न-गृह, एक ही घर में रहनेवाला (दे ४, ३८)।

णिद्धमण न [दे] खाल, मोरी, पानी जाने का रास्ता (दे ४, ३६, उर २, १०, ठा ५, १, आवम, तंदु, उव, णाया १, २)।

णिद्धमण न [निध्मान] १ तिरस्कार, अवहेलना (उप पृ ३४६)। २ पुं. यक्ष-विशेष (आव ४)।

णिद्धमाय वि [दे] अविभिन्न-गृह, एक ही घर में रहनेवाला (दे ४, ३८)।

णिद्धम्म वि [दे] एकमुख-यायी, एक ही तरफ जानेवाला (दे ४, ३५)।

णिद्धम्म वि [निर्धर्मन्] धर्म-रहित, अधर्मी (श्रा २७)।

णिद्धय वि [दे] देखो णिद्धम (दे ४, ३८)।

णिद्धाइऊण देखो णिद्धाव।

णिद्धाड सक [निर् + धाटय्] बाहर निकाल देना। कर्म. निद्धाडिज्जई (संबोध १६)।

णिद्धाडण न [निर्धाटन] निस्सारण, निष्कासन, बाहर निकालना (पण्ह १, १)।

णिद्धाडाविय वि [निर्धाटित] अन्य द्वारा बाहर निकलवाया हुआ, अन्य द्वारा निस्सारित (महा)।

णिद्धाडिय वि [निर्धाटित] निस्सारित, निष्कासित (पाअ, भवि)।

णिद्धारण न [निर्धारण] १ गुण या जाति आदि को लेकर समुदाय से एक भाग का पृथक्करण। २ निश्चय, अवधारण (विसे ११६८)।

णिद्धाव सक [निर् + धाव्] दौडना। संकृ. णिद्धाइऊण (महा)।

णिद्धाविय वि [निर्धावित] दौडा हुआ, धावित (महा)।

णिद्धुण सक [निर् + धू] १ विनाश करना। २ दूर करना। सकृ. निद्धुणे, णिधूय (दस ७, ५७, सूअ १, ७)।

णिद्धुणिय } वि [निर्धूत] १ विनाशित,
णिद्धुय } नष्ट किया हुआ। २ अपनीत (सुपा ५६६; औप)।

णिद्धूम वि [निर्धूम] १ धूम-रहित (कप्प, पउम ५३, १०)। २ एक तरह का अपलक्षण (वव २)।

णिवुड्ढि स्त्री [निवृद्धि] १ वृद्धि का अभाव (ठा २, ३)। २ दिन की छोटाई (भग)।
णिवुण देखो णिउण (अच्चु ९९)।
णिवुत्त देखो णिवट्ट = निवृत्त (स ५८८)।
णिवुदि स्त्री [निवृति] परिवेष्टन (प्राकृ १२)।
णिवूढ देखो णिव्वूढ (सूत्र २, ७, ३८)।
णिवेअ सक [नि + वेदय्] १ सम्मान-पूर्वक ज्ञापन करना, अर्ज करना। २ अर्पण करना। ३ मालूम करना। कर्म णिवेइज्जइ (निचू १)। संकृ णिवेइऊण (स ५६९)। हेकृ णिवेएउ (पंचा १५)। कृ णिवेयणीअ (स १२०)।
णिवेअग वि [निवेदक] सम्मान पूर्वक ज्ञापन करनेवाला, प्रार्थी (सुपा २६८)।
णिवेअण } न [निवेदन] १ सम्मान-पूर्वक
णिवेअणय } ज्ञापन, विनय (पचा १, निचू ११)। २ नैवेद्य, देवता को अर्पित अन्न आदि (पउम ३२, ८३)।
णिवेअणा स्त्री [निवेदना] ऊपर देखो (णाया १,५)। °पिंड पुं [°पिण्ड] देवता को अर्पित अन्न आदि, नैवेद्य (निचू ११)।
णिवेअय देखो णिवेअग (सुपा २२५, स ५१६)।
णिवेइय वि [निवेदित] सम्मान-पूर्वक ज्ञापित (महा, भवि)।
णिवेदइत्तअ वि [निवेदयितृ] निवेदन करनेवाला (अभि १३९)।
णिवेस सक [नि + वेशय्] स्थापना करना, बैठाना। णिवेसइ, णिवेसेइ (सण, कप्प)। संकृ णिवेसइत्ता, णिवेसिउ णिवेसिऊण णिवेसित्ता, णिवेसिय (उत्त ३२, महा, सण, कप्प, महा)। कृ णिवेसियव्व (सुपा ३६४)।
णिवेस पु [निवेश] १ स्थापन, आधान (ठा ६ उप पृ २३०)। २ प्रवेश (निचू ४)। ३ आवास-स्थान, डेरा (वृह १)।
णिवेस पु [नृपेश] १ महान् राजा, चक्रवर्त्ती राजा (सुपा ४६३)।
णिवेसण न [निवेशन] १ स्थान, बैठना (आचा)। २ एक ही दरवाजेवाले अनेक गृह (आव ४)।
णिवेसण न [निवेशन] गृह, घर (उत्त १३, १८)।
णिवेसाविय वि [निवेशित] बैठाया हुआ (महा)।
णिव्व न [नीव्र] छदि, पटल-प्रान्त (दे ४, ४८, पाअ)।
णिव्व न [नीव्र] छप्पर के ऊपर का खपरैल (णदि १५९)।
णिव्व न [दे] १ ककुद, चिह्न। २ व्याज, बहाना (दे ४, ४८)।
णिव्वक्क वि [दे] परिहास-रहित, सत्य (कुप्र १६७)।
णिव्वक्कल वि [निर्वल्कल] वल्कल-रहित, (पि ६२)।
णिव्वट्ट देखो णिव्वत्त = निर् + वर्त्तय्। संकृ णिव्वट्टित्ता (ठा २, ४)।
णिव्वट्ट (अप) देखो णिव्वट्ट (हे ४,४२२ टि)।
णिव्वट्टग वि [निवर्तक] बनानेवाला, कर्त्ता (आव ४)।
णिव्वट्टिम देखो णिवट्टिम (दस ७, ३३)।
णिव्वट्टिय वि [निर्वर्तित] निष्पादित, बनाया हुआ (आचा २, ४, २)।
णिव्वड सक [मुच्] दुःख को छोड़ना। णिव्वडइ (षड्)।
णिव्वड अक [भू] १ पृथक् होना, जुदा होना। २ स्पष्ट होना। णिव्वडइ (हे ४, ६२)।
णिव्वड देखो णिव्वल = निर् + पद् (सुपा १२२)।
णिव्वडिअ वि [भूत] १ पृथग्-भूत, जो जुदा हुआ हो (से ६, ८८)। २ स्पष्टीभूत, जो व्यक्त हुआ हो (सुर ७, १०४)।
णिव्वडिअ वि [निष्पन्न] सिद्ध, कृत, निर्वृत्त (पाअ), 'सुकुलुप्पन्नी य गुणन्नुया य सम्मं इमीए णिव्वडिया' (सुपा १२२)।
णिव्वढ वि [दे] नग्न, नगा (दे ४, २८)।
णिव्वण वि [निर्व्रण] व्रण-रहित, क्षत-वर्जित, विना घाव का (णाया १,३, औप)।
णिव्वण्ण सक [निर् + वर्णय्] १ श्लाघा करना, प्रशंसा करना। २ देखना। वकृ णिव्वण्णत (से ३, ४४, उप १०३१ टी, महा)।
णिव्वत्त सक [निर् + वर्त्तय्] बनाना, करना, सिद्ध करना। णिव्वत्तेइ (महा)। संकृ णिव्वत्तिऊण, णिव्वत्तेऊण (महा)।
णिव्वत्त सक [निर् + वृत्तय्] गोल बनाना, वर्तुल करना। कवकृ णिव्वत्तिज्जमाण (भग)।
णिव्वत्त वि [निर्वृत्त] निष्पन्न, रचित, निर्मित (महा, औप)।
णिव्वत्त वि [निर्वर्त्त्य] बनाने योग्य, साध्य (प्राकृ २०)।
णिव्वत्तण न [निर्वर्त्तन] निष्पत्ति, रचना, बनावट (उप पृ १८०)। °धिकरणिया, °हिगरणिया स्त्री [°धिकरणकी] शस्त्र बनाने की क्रिया (ठा २, १, भग ३, ३)।
णिव्वत्तणया } स्त्री [निर्वर्त्तना] ऊपर देखो
णिव्वत्तणा } (पण्ण ३४, उत्त ३)।
णिव्वत्तय वि [निर्वर्त्तक] निष्पन्न करनेवाला, बनानेवाला (विसे ११४२, स ५६३, हे २, ३०)।
णिव्वत्ति स्त्री [निर्वृत्ति] निष्पत्ति, विनिर्माण (विसे ३००२)। देखो णिव्वित्ति।
णिव्वत्तिय वि [निर्वर्तित] निष्पादित, बनाया हुआ (स ३३६, सुर १५, २२१, सक्षि १०)।
णिव्वत्तिय वि [निर्वृत्तित] गोलाकार किया हुआ (भग)।
णिव्वमिअ वि [दे] परिभुक्त (दे ४, ३९)।
णिव्वय अक [निर् + वृ] शान्त होना, उपशान्त होना। कृ णिव्वयणिज्ज (स ३०१)।
णिव्वय वि [निर्वृत] १ उपशान्त, शम-प्राप्त (सूत्र १, ४, २)। २ परिणत, परिणाम-प्राप्त (दसनि १)।
णिव्वय वि [निर्व्रत] व्रत-रहित, नियम रहित (पउम २, ८८, उप २६४ टी)।
णिव्वयण न [निर्वचन] १ निरुक्ति, शब्दार्थ कथन (आवम)। २ उत्तर, जवाब (ठा १०)। ३ वि. निरुक्ति करनेवाला, निर्वाचक, 'जाव दविओवओगो, अपच्छिमवियप्पनिव्वयणो' (सम्म ८)।
णिव्वयणिज्ज देखो णिव्वय = निर् + वृ।
णिव्वर सक [कथय्] दुःख कहना।

णिप्पुलाय वि [निष्पुलाक] चारित्र-दोष से रहित (दस १०, १६)।

णिप्फद देखो णिप्पद (हे २, ७७; णाया १, २; सुर ३, १७२)।

णिप्फंस वि [दे] निस्त्रिंश, निर्दय (पड्)।

णिप्फज्ज अक [निर् + पद्] नीपजना, उपजना, सिद्ध होना। णिप्फज्जइ (स ६१६)। वकृ णिप्फज्जमाण (पण्ह १, ४)।

णिप्फडिअ वि [निस्फटित] १ विशीर्ण। २ जिसका मिजाज ठिकाने पर न हो। ३ अंकुश-रहित (उप १२८ टी)।

णिप्फण्ण वि [निष्पन्न] नीपजा हुआ, बना हुआ, सिद्ध (से २, १२; महा)।

णिप्फत्ति वि [निष्पत्ति] निष्पादन, सिद्धि (उव, उप २८० टी; सार्ध १०६)।

णिप्फन्न देखो णिप्फण्ण (कप्प; णाया १, १६)।

णिप्फरिस वि [दे] निर्दय, दया-हीन (दे ४, ३७)।

णिप्फल वि [निष्फल] फल-रहित, निरर्थक (से १४, २६; गा १३६)।

णिप्फाअ देखो णिप्फाव (प्राप्र)।

णिप्फाइऊण देखो णिप्फाय।

णिप्फाइय वि [निष्पादित] नीपजाया हुआ, बनाया हुआ, सिद्ध किया हुआ (विसे ७ टी, उप २११ टी, महा)।

णिप्फाय सक [निर् + पादय्] नीपजाना, बनाना, सिद्ध करना। संकृ णिप्फाइऊण (पचा ७)।

णिप्फायग वि [निष्पादक] नीपजानेवाला, बनानेवाला, सिद्ध करनेवाला (विसे ४८३, ठा ६, उप ८२८)।

णिप्फायण न [निष्पादन] नीपजाना, निर्माण, कृति (श्राव ४)।

णिप्फाव पु [निष्पाव] धान्य-विशेष, वल्ल (हे २, ५३; पण्ण १; ठा ५, ३; श्रा १८)।

णिप्फाव पुं [निष्पाव] एक माप, बाँट-विशेष (अणु १५५)।

णिप्फिड अक [नि + स्फिट्] बाहर निकलना। वकृ णिप्फिडंत (स ५७४)।

णिप्फिडिअ वि [निस्फिटित] निर्गत, बाहर निकला हुआ (पउम ६, २२७; ८०, ६०)।

णिप्फुर पु [निस्फुर] प्रभा, तेज (गउड)।

णिप्फेड पु [निस्फेट] निर्गमन, बाहर निकलना (उप पृ २५२)।

णिप्फेडय वि [निस्फेटक] बाहर निकालनेवाला (सूअ २, २, ८५)।

णिप्फेडय वि [निस्फेटित] १ निस्सारित, निष्कासित (सूअ २, २)। २ भगाया हुआ, नसाया हुआ (पुप्फ १२५)। ३ अपहृत, छीना हुआ (ठा ३, ४)।

णिप्फेडिया स्त्री [निस्फेटिका] अपहरण, चोरी; 'एसा पढमा सीमनिप्फेडिया' (सुख २, १३; पव १०७)।

णिप्फेस पुं [दे] शब्द-निर्गम, आवाज निकलना (दे ४, २६)।

णिप्फेस पु [निष्पेष] १ पेषण, पीसना। २ संघर्ष (हे २, ५३)।

णिबध सक [नि + बन्ध्] १ बाँधना। २ करना। निबधइ (भग)।

णिबध सक [नि + बन्ध्] उपार्जन करना। णिबधंति (पचा ७, २२)।

णिबध पुंन [निबन्ध] १ संबन्ध, संयोग (विसे ६६८)। २ आग्रह, हठ (महा); 'णिबन्धाणि' (पि ३५८)।

णिबधण न [निबंधन] कारण, प्रयोजन, निमित्त (पाअ, प्रासू ६६)।

णिबद्ध वि [निबद्ध] १ बँधा हुआ (महा)। २ संयुक्त, संबद्ध (से ६, ४४)।

णिबिड वि [निबिड] सान्द्र, घना, गाढ (गउड; कुमा)।

णिबिडिय वि [निबिडित] निबिड किया हुआ (गउड)।

णिबुक [दे] देखो णिब्बुक (पण्ह १, ३—पत्र ४६)।

णिबुड्ड अक [नि + मस्ज्] निमज्जन करना, डूबना। वकृ णिबुड्डिज्जंत, निबुड्डमाण (अच्चु ६३; उवा)।

णिबुड्ड वि [निमग्न] डूबा हुआ, निमग्न (गा ३७; सुर ३, ५१; ४, ८०)।

णिबुड्डण न [निमज्जन] डूबना, निमज्जन (पउम १०, ४३)।

णिबोल देखो णिबुड्ड = नि + मस्ज्। वकृ णिबोलिज्जमाण (राज)।

णिबोह पु [निबोध] १ प्रकृष्ट बोध, उत्तम ज्ञान। २ अनेक प्रकार का बोध (विसे २१८७)।

णिबोहण न [निबोधन] प्रबोध, समझाना (पउम १०२, ६२)।

णिब्बंध पु [निर्बन्ध] आग्रह (गा ६७५; महा; सुर ३, ८)।

णिब्बंधण न [निर्बन्धन] निबन्धन, हेतु, कारण; 'सारीरियवेयणनिब्बंधण वण' (काल)।

णिब्बल देखो णिब्बल = निर् + पद्। णिब्बलइ (प्राकृ ६४)।

णिब्बल वि [निर्बल] बल रहित, दुर्बल (आचा)।

णिब्बहि अ [निर्बहिस्] अत्यन्त बाहर (ठा ६—पत्र ३५२)।

णिब्बाहिर वि [निर्बाह्य] बाहर का, बाहर गया हुआ; 'संजमनिब्बाहिरा जाया' (उवा)।

णिब्बुक वि [दे] १ निर्मूल, मूल रहित। २ क्रिवि. मूल से; 'णिब्बुकछिण्णणायय—' (पण्ह १, ३—पत्र ४५)।

णिब्बुड्ड देखो णिबुड्ड = निमग्न (स ३६०, गउड)।

णिब्भछण देखो णिब्भन्छण (उव ३०३)।

णिब्भजण न [दे] पक्वान्न के पकाने पर जो शेष घृत रहता है वह (पभा ३३)।

णिब्भंत वि [निर्भ्रान्त] निःसंदेह, संशय-रहित (ति १४)।

णिब्भग्ग न [दे] उद्यान, बगीचा (दे ४, ३४)।

णिब्भग्ग वि [निर्भाग्य] भाग्य रहित, कमनसीब, अभागा (उप ७२८ टी; सुपा ३८५)।

णिब्भन्छ सक [निर् + भर्त्स्] १ तिरस्कार करना, अपमान करना, अवहेलना करना, आक्रोश-पूर्वक अपमान करना। णिब्भच्छेइ, णिब्भच्छेज्जा (णाया १, १८; उवा)। संकृ णिब्भन्छिअ (नाट—मालती १७१)।

णिब्भन्छण न [निर्भर्त्सन] तिरस्कार, अपमान, परुष वचन से भर्त्सना (पण्ह १, ३; गउड)।

णिब्भन्छणा स्त्री [निर्भर्त्सना] ऊपर देखो (भग १५; णाया १, १६)।

णिव्विइगिच्छा स्त्री [निर्विचिकित्सा] फल-प्राप्ति मे शका का अभाव (ओप, पडि)।
णिव्विद सक [निर्+विन्द्] अच्छी तरह विचारना। निव्विदए (दस ४ १६, १७)।
णिव्विद सक [निर्+विद्] घृणा करना। णिव्विदेज्ज (सूअ १, २, ३, १२)।
णिव्विकप्प } वि [निर्विकल्प] १ सन्देह-रहित, नि सशय (कुमा, गच्छ २)। २ भेद-रहित (सम्म ३३)।
णिव्विगप्प }
णिव्विगइय देखो णिव्विइय (सवोघ ५८)।
णिव्विगप्पग न [निर्विकल्पक] बौद्ध-प्रसिद्ध प्रत्यक्ष ज्ञान-विशेष (धर्मस ३१३)।
णिव्विगिअ देखो णिव्विइअ (पव २)।
णिव्विग्घ वि [निर्विघ्न] विघ्न-रहित- वाधा-वर्जित (सुपा १८७, सण)।
णिव्विचित वि [निर्विचिन्त] चिन्ता-रहित, निश्चिन्त (सुर ७, १२३)।
णिव्विज्ज अक [निर्+विद्] निर्वेद पाना, विरक्त होना। णिव्विज्जेज्जा (उव)।
णिव्विज्ज वि [निर्विद्य] मूर्ख (उत्त ११,२)।
णिव्विट्ठ वि [निर्वृष्ट] उपार्जित, 'नानिव्विट्ठ लब्भई (पिंड ३७०)।
णिव्विट्ठ वि [दे] उचित, योग्य (दे ४,३४)।
णिव्विट्ठ वि [निर्विष्ट] उपभुक्त, आसेवित, परिपालित (पात्र, अणु)। °काइय न [°कायिक] जैन शास्त्र मे प्रतिपादित एक तरह का चारित्र (अणु, इक)।
णिव्विण्ण वि [निर्विण्ण] निर्वेद-प्राप्त, खिन्न (महा)।
णिव्वित्त वि [दे] सो कर उठा हुआ (दे ४, ३२)।
णिव्वित्ति देखो णिव्वत्ति। २ इन्द्रिय का आकार, द्रव्येन्द्रिय-विशेष (विसे २९९४)।
णिव्विद देखो णिव्विद=निर्+विद् (सूअ १, २, ३, १२)।
णिव्विदुगुछ वि [निर्विजुगुप्स] घृणा-रहित (धर्म १)।
णिव्विन्न देखो णिव्विण्ण (उव)।
णिव्विभाग वि [निर्विभाग] विभाग-रहित (दंस ५)।
णिव्विय देखो णिव्विइअ (सवोघ ५७, कुलक १२)।
णिव्वियण वि [निर्विजन] १ मनुष्य-रहित। २ न एकान्त स्थल (सुर ९, ४२)।
णिव्विर वि [दे] चिपट, बैठा हुआ, 'अइणिव्विरनासाए' (गा ७२८ टि)।
णिव्विराम वि [निर्विराम] विराम-रहित (उप पृ १८३)।
णिव्विलब क्रिवि [निर्विलम्ब] विलम्ब-रहित, शीघ्र (सुपा २५५, कुप्र ५२)।
णिव्विवेअ वि [निर्विवेक] विवेक-शून्य (सुपा ३२३, ५००, गउड, सुर ८, १८१)।
णिव्विस सक [निर्+विश्] त्याग करना। निव्विसेज्जा (कस)। वक्र णिव्विसत (राज)।
णिव्विस सक [निर्+विश्] उपभोग करना (पिंड ११९ टी)।
णिव्विस वि [निर्विष] विष-रहित (ओप)।
णिव्विसक वि [निर्विशङ्क] शका-रहित, निर्भय (सुर १२, १९)।
णिव्विसमाण न [निर्विशमान] १ चारित्र-विशेष (ठा ३, ४)। २ वि उस चारित्र को पालनेवाला (ठा ६)। °कप्पट्ठिइ स्त्री [°कल्पस्थिति] चारित्र-विशेष की मर्यादा (कस)।
णिव्विसय वि [निर्वेशक] उपभोग-कर्ता (पिंड ११९)।
णिव्विसय वि [निर्विषय] १ विषयो की अभिलाषा से रहित (उत्त १४)। २ अनर्थक, निरर्थक (पचा १२, उप ९२५)। ३ देश मे बाहर किया हुआ, जिसको देशनिकाले की सजा हुई हो वह (सुर ९, ३९, सुपा ५६६)।
णिव्विसिट्ठ वि [निर्विशिष्ट] विशेष-रहित, समान, तुल्य (उव ५३० टी)।
णिव्विसी स्त्री [निर्विषी] एक महौषधि (ती ५)।
णिव्विसेस वि [निर्विशेष] १ विशेष-रहित, समान, साधारण (स २३, सम्म ९९, प्रासू ९८)। २ अभिन्न, जो जुदा न हो (से १५, ६५)।
णिव्वी स्त्री [निर्विकृति] तप-विशेष (संवोघ ५७)।
णिव्वीय देखो णिव्विइअ (सवोघ ५७)।
णिव्वीरा स्त्री [निर्वीरा] पुत्र-रहित विधवा स्त्री (मोह ४९)।
णिव्वुअ वि [निर्वृत] निर्वृति-प्राप्त (स ५९३, कप्प)।
णिव्वुइ स्त्री [निर्वृति] १ निर्वाण, मोक्ष, मुक्ति (कुमा, प्रासू १६४)। २ मन की स्वस्थता, निश्चिन्तता (सुर ४, ८९)। ३ सुख, दु ख-निवृत्ति (भाव ४)। ४ जैन साधुओ की एक शाखा (कप्प)। ५ एक राजकन्या (उप ९३६)। °कर वि [°कर] निर्वृतिजनक (पण्ण १)। °जणय वि [°जनक] निर्वृति का उत्पादक (गा ४२१)।
णिव्वुइकरा स्त्री [निर्वृतिकरा] भगवान् सुमतिनाथ की दीक्षा-शिविका (विचार १२९)।
णिव्वुड देखो णिव्वुअ (कुमा, आचा)।
णिव्वुड वि [निर्वृत्त] अचित्त किया हुआ (दस ३, ६, ७)।
णिव्वुड्ड देखो णिवुड्ड=नि+मस्ज्। वकृ. णिव्वुड्डमाण (राज)।
णिव्वुड्ढ देखो णिवुड्ढ। वकृ. णिव्वुड्ढेमाण (सुज्ज ६—पत्र ८०)। संकृ. णिव्वुड्ढेत्ता (सुज्ज ६)।
णिव्वुड्ढ वि [निर्व्यूढ] निर्वाहित, निभाया हुआ (गा ३२)।
णिव्वुत्त देखो णिवुत्त (गा १५५)।
णिव्वुत्त देखो णिव्वत्त=निर्वृत्त (पिंग)।
णिव्वुत्ति देखो णिव्वत्ति (गा ८२८)।
णिव्वुद देखो णिव्वुअ (संक्षि ९)।
णिव्वुदि देखो णिव्वुइ (प्राकृ ८)।
णिव्वुब्भ° देखो णिव्वह=निर्+वह्।
णिव्वूढ वि [निर्व्यूढ] १ जिसका निर्वाह किया गया हो वह। २ कृत, विहित निर्मित (गा २५५, से १, ४६)। ३ जिसने निर्वाह किया हो वह, पार-प्राप्त (विवे ४४)। ४ त्यक्त, परिमुक्त (से ५, ६२)। ५ बाहर निकाला हुआ, निस्सारित, 'निव्वूढा य पएसा तत्तो गाढप्पओसमावन्ना' (उप १३१ टी)।
णिव्वूढ वि [दे] १ स्तब्ध (दे ४, ३३)। न. घर का पश्चिम आँगन (दे ४, २९)।
णिव्वूढ वि [निर्व्यूढ] किसी ग्रंथ से उद्धृत कर बनाया हुआ ग्रन्थ (दसनि १, १२)।

णिम्मइअ वि [निर्मित] रचित, कृत (गा ५००, ६०० अ)।

णिम्मथण न [निर्मथन] १ विनाश। २ वि. विनाशक, 'तह य पयट्टमु सिग्घं गात्यनिम्मयणं तित्थ' (सुपा ७१)।

णिम्मस वि [निर्मांस] मांस-रहित, शुष्क (गाया १, १, भग)।

णिम्मसा स्त्री [दे] देवी-विशेष, चामुण्डा (दे ४, ३५)।

णिम्मसु वि [दे. नि श्मश्रु] तरुण, जवान, युवा (दे ४, ३२)।

णिम्मक्खिअ देखो णिम्मच्छिअ = निर्मक्षिक (नाट)।

णिम्मच्छ सक [नि + म्रक्ष] विलेपन करना। णिम्मच्छइ (भवि)।

णिम्मच्छण न [निम्रक्षण] विलेपन (भवि)।

णिम्मच्छर वि [निर्मात्सर्य] मात्सर्य-रहित, ईर्ष्या-शून्य (उप पृ ८४)।

णिम्मच्छिय वि [निम्रक्षित] विलिप्त (भवि)।

णिम्मच्छिअ न [निर्मक्षिक] १ मक्षिका का अभाव। २ विजन, निर्जनता (अभि ६८)।

णिम्मज्जाय वि [निर्मर्याद] मर्यादा-रहित, बेहया (दे १, १३३)।

णिम्मज्जिय वि [निर्माजित] उपलिप्त (स ७५)।

णिम्मण वि [निर्मनस्] मन रहित (द्रव्य १२)।

णिम्मणुय वि [निर्मनुज] मनुष्य-रहित (सण)।

णिम्मद्दग वि [निर्मर्दक] १ निरन्तर मर्दन करनेवाला। २ पुं चोरों की एक जाति (पण्ह १, ३)।

णिम्मद्दिय वि [निर्मर्दित] जिसका मर्दन किया गया हो (पण्ह १, ३)।

णिम्मम वि [निर्मम] १ ममता-रहित, निस्पृह (अच्चु ६६, सुपा १४०)। २ पुं भारत-वर्ष के एक भावी जिनदेव (सम १५४)।

णिम्मय वि [दे] गत, गया हुआ (दे ४, ३४)।

णिम्मल वि [निर्मल] मल-रहित, विशुद्ध (स्वप्न ७०, प्रासू १३१)। २ पु. ब्रह्म-देव-लोक का एक प्रस्तर (ठा ६)।

णिम्मल्ल न [निर्माल्य] देव का उच्छिष्ट द्रव्य, देवता पर चढाई हुई वस्तु का बचा-खुचा (हे १, ३८, षड्)।

णिम्मव सक [निर् + मा] बनाना, रचना, करना। णिम्मवइ (हे ४, १९, षड्)। कर्म निम्मविज्जति (वज्जा १२२)।

णिम्मव सक [निर् + मापय्] बनवाना, कराना (ठा ४, ४, कुमा)।

णिम्मवइत्तु वि [निर्मापयितृ] बनवानेवाला (ठा ४, ४)।

णिम्मवण न [निर्माण] रचना, कृति (उप ६४८ टी, सुपा ४३, ६५, ३०५)।

णिम्मवण न [निर्मापण] बनवाना, कराना (कप्पू)।

णिम्मविअ वि [निर्मित] बनाया हुआ, रचित (कुमा; गा १०१, सुर १६, ११)।

णिम्मविअ वि [निर्मापित] बनवाया हुआ (कुमा)।

णिम्मह सक [गम्] १ जाना, गमन करना। २ अक फैलना। णिम्महइ (हे ४, १६२)। वक्र णिम्महन्त णिम्महमाण (से ७, ६२, १५, ५३, स १२६)।

णिम्मह पु [निर्मथ] १ विनाश। २ वि विनाशक (भवि)।

णिम्महण न [निर्मथन] १ विनाश। २ वि विनाश-कारक (सुपा ७५) स्त्री °णी (सुर १६, १८४)।

णिम्महिअ वि [गत] गया हुआ (कुमा)।

णिम्महिअ वि [निर्मथित] विनाशित (हेका ५०)।

णिम्मा देखो णिम्म। णिम्माइ (प्राकृ ६४)।

णिम्माअंत देखो णिम्म।

णिम्माइअ देखो णिम्माय (पि ५९१)।

णिम्माण सक [निर् + मा] बनाना, करना, रचना णिम्माणइ (हे ४,१९, षड्, प्राप्र)।

णिम्माण न [निर्माण] १ रचना, बनावट, कृति। २ कर्म-विशेष, शरीर के अंगोपांग के निर्माण मे नियामक कर्म-विशेष (सम ६७)।

णिम्माण वि [निर्मान] मान-रहित (से ३, ४५)।

णिम्माणअ वि [निर्मायक] निर्माण-कर्ता, बनानेवाला (से ३, ४५)।

णिम्माणिअ वि [निर्मित] रचित, बनाया हुआ (कुमा)।

णिम्माणिअ वि [निर्मानित] अपमानित, तिरस्कृत (भवि)।

णिम्माणुस वि [निर्मानुप] मनुष्य-रहित (सुपा ४४४)। स्त्री °सी (महा)।

णिम्माय वि [निर्मात] १ रचित, विहित, कृत (उव, पाअ, वज्जा ३४)। २ निपुण, अभ्यस्त, कुशल (औप, कप्प), 'नाहियसत्थेनु निम्माया परिवाइया' (सुर १२, ४२)।

णिम्माय न [निर्माय] तप-विशेष, निर्वि-कृतिक तप (संबोध ५८)।

णिम्मालिअ देखो णिम्मल्ल (प्राकृ १९)।

णिम्माव सक [निर् + मापय्] बनवाना, करवाना। णिम्मावइ (सण)। कृ. णिम्मा-वित्त (सूअ २, १, २२)।

णिम्माविय वि [निर्मापित] बनवाया हुआ, कारित, कराया हुआ (सुपा २६७)।

णिम्मिअ वि [निर्मित] रचित, बनाया हुआ (ठा ८, प्रासू १२७)। °वाइ वि [°वादिन्] जगत् को ईश्वरादि कृत माननेवाला (ठा ८)।

णिम्मिस्स वि [निर्मिश्र] १ मिला हुआ, मिश्रित। °वल्ली स्त्री [°वल्ली] अत्यन्त नज-दीक का स्वजन, जैसे माता, पिता, भाई, भगिनी, पुत्र और पुत्री (वव १०)।

णिम्मीस वि [निर्मिश्र] मिश्रण-रहित (देवेन्द्र २९०)।

णिम्मीसुअ वि [दे] श्मश्रु-रहित, दाढी-मूँछ वर्जित (षड्)।

णिम्मुक्क वि [निर्मुक्त] मुक्त किया गया (सुपा १७३)।

णिम्मुक्ख पु [निर्मोक्ष] मुक्ति, छुटकारा (विसे २४६८)।

णिम्मूल वि [निर्मूल] मूल-रहित, जिसका मूल काटा गया हो वह (सुपा ५०५)।

णिम्मेर वि [निर्मर्याद] मर्यादा-रहित, निर्लज (ठा ३, १, औप, सुपा ६)।

णिम्मोअ पुं [निर्मोक] कञ्चुक, कॅचुल, सर्प की त्वचा (हे २, १८२, भत्त ११०, से १, ६०)।

णिम्मोअणी स्त्री [निर्मोचनी] कञ्चुक, निर्मोक (उत्त १४, ३५)।

णिसाम वि [नि श्याम] मालिन्य-रहित, निर्मल (से ६, ४७)।

णिसामण देखो णिसमण (सुपा २३)।

णिसामिअ वि [दे निशमित] १ श्रुत, आकर्णित (दे ४, २७, गा २९)। २ उपशमित, दवाया हुआ। ३ सिमटाया हुआ, सकोचित, 'नस्सामिओ फणाभोओ' (स ३५८)।

णिसामिर वि [निशमयितृ] सुननेवाला (कुमा)।

णिसाय वि [दे] प्रसुप्त (दे ४, ३५)।

णिसाय वि [निशात] शान दिया हुआ, तीक्ष्ण (पाअ)।

णिसाय पु [निषाद] १ चाण्डाल, एक प्राचीन जाति (दे ४,३५)। २ स्वर-विशेष (ठा ७)।

णिसायंत वि [निशातान्त] तीक्ष्ण धारवाला (पाअ)।

णिसास सक [निर् + श्वासय्] नि श्वास डालना। वकृ णिस्सासएत (पउम ६१, ७३)।

णिसास देखो णीसास (पिंग)।

णिसि° देखो णिसा (हे १, ८, ७२, पड्, सुर १, २७)। °पालअ पु [°पालक] छन्द-विशेष (पिंग)। °भत्त न [°भक्त] रात्रि-भोजन (ओघ ७८७)। °भुत्त न [°भुक्त] रात्रि भोजन (सुपा ४९१)।

णिसिअ देखो णिसीअ णिसिअइ (सण, कप्प)। सकृ णिसिइत्ता (कप्प)।

णिसिअ वि [निशित] शान दिया हुआ, तीक्ष्ण (से ५, ४९, महा, हे ४, ३३०)।

णिसिंच सक [नि + सिच्] प्रक्षेप करना, डालना। सकृ णसिंचिय (आचा)।

णिसिज्जा देखो णिसज्जा (कप्प, सम ३५, ठा ५, १)। ३ उपाश्रय, साधुओं का स्थान (पच ४)।

णिसिज्झमाण देखो णिसेह = नि + षिध्।

णिसिट्ठ वि [निसृष्ट] १ बाहर निकाला हुआ (भाम १०)। २ दत्त, प्रदत्त (आच)। ३ अनुज्ञात (वृह १)। ४ वनाया हुआ। 'निविं 'आमयहगइ पउमो निहो निसिट्ठ' उवएणमेइ' (उप ९८६ टी)।

णिसिद्ध वि [निषिद्ध] प्रतिषिद्ध, निवारित (पचा १२)।

णिसिय वि [न्यस्त] स्थापित (धर्म ७३)।

णिसियण न [निषदन] उपवेशन (पव)।

णिसिर सक [नि + सृज्] १ बाहर निकालना। २ देना, त्याग करना। ३ करना। णिसिरइ (भास ५, भग), 'णिरवराहाए। निसिरति जे न दड, तेवि हु पाविति निव्वाए' (सुर १५, २३४)। कर्म निसिरिज्जइ, निसिरिज्जए (विसे ३५७०)। वकृ निसिरत (पि २३५)। कवकृ निसिरिज्जमाण (पि २३५)। सकृ णिसिरित्ता (पि २३५)। प्रयो निसिरावेंति (पि २३५)।

णिसिरण न [निसर्जन] १ निस्सारण (भास २)। २ त्याग (णाया १, १६)।

णिसिरणया } स्त्री [निसर्जना] १ त्याग, णिसिरणा } दान (आचा २, १, १०)। २ निस्सारण, निष्कासन (भग)।

णिसीअ अक [नि + षद्] बैठना। णिसीअइ (भग)। वकृ णिसीअत, णिसीअमाण (भग १३, ६, सूअ १, १, २)। सकृ णिसीइत्ता (कप्प)। हेकृ णिसीइत्तए (कस)। कृ णिसीइयव्व (णाया १, १, भग)।

णिसीअण न [निषदन] उपवेशन, बैठना (उप २६४ टी, स १८०)।

णिसीआवण न [निषादन] बैठाना (कर्म ४, २ टी)।

णिसीढ देखो णिसीह = निशीथ (हे १, २१६, कुमा)।

णिसीदण देखो णिसीअण (औप)।

णिसीह पुंन [निशीथ] १ मध्य रात्रि (हे १, २१६, कुमा)। २ प्रकाश का अभाव (निचू ३)। ३ न जैन आगम-ग्रन्थ विशेष (णदि)।

णिसीह पुं [नृसिंह] उत्तम पुरुष, श्रेष्ठ मनुष्य (कुमा)।

णिसीहिअ वि [नैशीथिक] निज के लिए लाया गया है ऐसा नही जाना हुआ भोजनादि पदार्थ (पिंड ३३६)।

णिसीहिआ स्त्री [नैषेधिकी] १ शव-परिष्ठापन-भूमि, स्मशान-भूमि (अणु २०)। २ बैठने की जगह (राय ६३)।

णिसीहिआ स्त्री [निशीथिका] १ स्वाध्याय-भूमि, अध्ययन स्थान (आचा २, २, २)। २ थोडे समय के लिए उपात्त स्थान (भग १४, १०)। ३ आचाराङ्ग सूत्र का एक अध्ययन (आचा २, २, २)।

णिसीहिआ स्त्री [नैषेधिकी] १ स्वाध्याय-भूमि (सम ४०)। २ पाप-क्रिया का त्याग (पडि, कुमा)। ३ व्यापारान्तर के निषेध रूप आचार (ठा १०)। देखो णिसेहिया।

णिसीहिणी स्त्री [निशीथिनी] रात्रि, रात (उप पृ १२७)। °नाह पुं [°नाथ] चन्द्रमा (कुमा)।

णिसुअ वि [दे निश्रुत] श्रुत, आकर्णित (दे ४, २७, सुर १, १९९, २, २२९, महा, पाअ)।

णिसुंद पु [निसुन्द] रावण का एक सुभट (पउम ५६, २९)।

णिसुंभ सक [नि + शुम्भ्] मार डालना, व्यापादन करना। कवकृ णिसुंभत, णिसुब्भत (से ५, ६९, १४, ३, पि ५३५)।

णिसुंभ पु [निशुम्भ] १ स्वनाम ख्यात एक राजा, एक प्रतिवासुदेव (पउम ५, १५६, पव २११)। २ दैत्य-विशेष (पिंग)।

णिसुंभण न [निशुम्भन] १ मर्दन, व्यापादन, विनाश। २ वि मार डालनेवाला (सूअ १, ५, १)।

णिसुंभा स्त्री [निशुम्भा] स्वनाम-ख्यात एक इन्द्राणी (णाया २, इक)।

णिसुंभिय वि [निशुम्भित] निपातित, व्यापादित (सुपा ४९०)।

णिसुट्ट } वि [दे] ऊपर देखो (हे ४, णिसुट्टिअ } २५८, से १०, ३९)।

णिसुड देखो णिसुढ = नम्। निसुडइ (षड्)।

णिसुड्ढ देखो णिसुट्ट (हे ४, २५८ टि)।

णिसुढ अक [नम्] भार से आक्रान्त होकर नीचे नमना, झुकना। णिसुढइ (हे ४,१५८)।

णिसुढ सक [नि + शुम्भ्] मारना, मार कर गिराना। कवकृ णिसुढिज्जत (से ३,

णिसुढिअ वि [नत] भार से नमा हुआ (पाअ)।

णिसुढिअ वि [निशुम्भित] निपातित (से १२, ९१)।

णिरवणाम देखो णिरोणाम (उव)।

णिरवयक्ख देखो णिरवइक्ख (णाया १, ९, पउम २ ९३)।

णिरवयव वि [निरवयव] अवयव-रहित, निरंश (विसे)।

णिरवयास वि [निरवकाश] अवकाश-रहित (गउड)।

णिरवराह वि [निरपराध] अपराध रहित, बेगुनाह (महा)।

णिरवराहि वि [निरपराधिन्] ऊपर देखो (आव ६)।

णिरवलंब वि [निरवलम्ब] सहारा रहित, असहाय (पण्ह १, ३)।

णिरवलाव वि [निरपलाप] १ अपलाप-रहित। गुप्त बात को प्रकट नहीं करनेवाला, दूसरे को नहीं कहनेवाला (सम ५७)।

णिरवसंक वि [निरपशङ्क] दुःशंका-वर्जित (भवि)।

णिरवसर वि [निरवसर] अवसर-रहित (गउड)।

णिरवसाण वि [निरवसान] अन्त-रहित (गउड)।

णिरवसेस वि [निरवशेष] सब, सकल (हे १, १४, षड्, से १, ३७)।

णिरवह सक [निर् + वह्] निर्वाह करना, निबाहना। निरवहेज्जा (सबोध ३९)।

णिरवाय वि [निरपाय] १ उपद्रव रहित, विघ्न वर्जित। २ निर्दोष, विशुद्ध (श्रा १६, सुपा २७५)।

णिरविक्ख
णिरवेक्ख
णिरवेच्छ } देखो णिरवइक्ख (श्रा ६, उव, पि ३४१, से ६, ७५, सूअ १, ९, पंचा ४, निचू २०, नाट—चैत २५७)।

णिरस सक [निर् + अस्] अपास्त करना। णिरसइ (सण)।

णिरसण वि [निरशन] आहार-रहित, उपोषित (उप, सुपा १८१)।

णिरसण न [निरसन] निराकरण, हटा देना, दूर करना, खंडन (चेइय ७२४)।

णिरसि वि [निरसि] खड्ग-रहित (गउड)।

णिरसिअ वि [निरस्त] परास्त, अपास्त (दे ५, ५९)।

णिरस्साय वि [निरास्वाद] स्वाद-रहित (उत्त १९, ३७)।

णिरस्साति वि [निरास्राविन्] नहीं टपकने-वाला, छिद्र रहित। स्त्री °णी (उत्त २३, ७१, सुख २३, ७१)।

णिरहंकार वि [निरहंकार] गर्व-रहित (उव)।

णिरहारि वि [निराहारिन्] आहार-रहित, उपोषित, 'हवउ व वक्कलधारी, निरहारी बंभचेरवयधारी' (सुपा २५२)।

णिरहिगरण वि [निरधिकरण] अधिकरण-रहित, हिंसा-रहित, निर्दोष (पंचा १९)।

णिरहिगरणि वि [निरधिकरणिन्] ऊपर देखो (भग १६, १)।

णिरहिलास वि [निरभिलाष] इच्छा-रहित, निरीह (गउड)।

णिरहेउ
णिरहेउग
णिरहेउग } वि [निर्हेतु, °क] निष्कारण, कारणरहित (धर्मसं ४४३, ४१७, ४००)।

निराइअ वि [निरायत] लम्बा किया हुआ, विस्तारित (से ४, ५२, ७, ३६)।

णिराउस वि [निरायुष्] आयु-रहित (प्राकृ ३१)।

णिराउह वि [निरायुध] आयुध-वर्जित, निःशस्त्र (महा)।

णिराकर
णिरागर } सक [निरा + कृ] १ निषेध करना। २ दूर करना, हटाना। ३ विवाद का फैसला करना। निराकरिमो (कुप्र २१५)। संकृ णिराकिच्च (सूअ १, १, १, १, ३, ३, १, ११)।

णिराकरिअ वि [निराकृत] निषिद्ध (धर्मवि १४६)।

णिरागरण न [निराकरण] निरास, निवारण, निषेध, रोक (पंचा १७, १९)।

णिरागरण न [निराकरण] १ निषेध, प्रतिषेध (पंचा १७)। २ फैसला, निपटारा (स ४०९)।

णिरागरिय वि [निराकृत] हटाया हुआ, दूर किया हुआ (पउम ४६, ५१, ६१, ५३)।

णिरागस वि [निराकर्ष] निर्धन, रंक (निचू २)।

णिरागार वि [निराकार] १ आकृति-रहित २ अपवाद-रहित (धर्म २)।

णिराणंद वि [निरानन्द] आनन्द-रहित, शोकातुर (महा)।

णिराणिउ (अप) अ निश्चित, नक्की (कुमा)।

णिराणुकंप देखो णिरणुकंप, 'णिक्किवणिराणु-कंपो आसुरियं भावणं कुणइ' (ठा ४,४), 'अह सो णिराणु कंपो (सथा ८४, पउम २६, २५)।

णिराणुवत्ति वि [निरनुवर्तिन्] १ अनुसरण नहीं करनेवाला। २ सेवा नहीं करनेवाला (उव)।

णिराद वि [दे] नष्ट, विनाश-प्राप्त (दे ४, ३०)।

णिराबाध
णिराबाह } वि [निराबाध] आबाधा-रहित, हरकत-रहित (अभि १११, सुपा २५३, ठा १० आव ४)।

णिरामगंध वि [निरामगन्ध] दूषण रहित, निर्दोष चारित्रवाला (आचा, सूअ १, ६)।

णिरामय वि [निरामय] रोग-रहित, नीरोग (सुपा ५७५)।

णिरामिस वि [निरामिष] आसक्तिहीन, निरीह, निरभिष्वङ्ग, 'आमिसं सव्वमुज्झित्ता विहरिस्सामो णिरामिसा' (उत्त १४, ४६)।

णिराय वि [दे] १ ऋजु, सरल। (दे ४, ५०, पाअ)। २ प्रकट, खुला। ३ पुं. रिपु, शत्रु (दे ४, ५०)। ४ वि. लम्बा किया हुआ (से २, ५०)।

णिराय वि [दे] अत्यन्त, प्रचुर, अधिक (सुख २, ७)।

णिरायंक वि [निरातङ्क] आतङ्क रहित, नीरोग (औप)।

णिरायरिय देखो णिरागरिय (पउम ६१, ४६)।

णिरायव वि [निरातप] आतप-रहित (गउड)।

णिरायार देखो णिरागार (पउम ६, ११८)।

णिरायास वि [निरायास] परिश्रम-रहित (पण्ह २, ४)।

णिरारंभ वि [निरारम्भ] आरम्भ-वर्जित (सुपा १४०, गउड)।

णिरालंब वि [निरालम्ब] आलम्ब-रहित (गा ९५, आरा ८)।

णिस्मार सक [निर् + सारय्] बाहर निकालना। निम्मारइ (कुप्र १५४)।

णिस्सार } वि [नि सार] १ सार-हीन,
णिस्सारग } निरर्थक (अणु, सूत्र १, ७, आचा)। २ जीर्ण, पुराना (आचा)।

णिस्सारय वि [नि सारक] निकालनेवाला (उप २८० टी)।

णिस्सारिय वि [नि सारित] १ निकाला हुआ। २ च्यावित, भ्रष्ट किया हुआ (सूअ १, १४)।

णिस्सास पु [नि श्वास] नि श्वास, नीचा श्वास (भग)। २ काल-मान-विशेष (इक)। ३ प्राण-वायु, प्रश्वास (प्राप्र)।

णिस्साहार वि [नि स्वाधार] निराधार, आलम्बन-रहित (सण)।

णिस्सिंग वि [नि शृङ्ग] शृंग-रहित (सुपा ३१३)।

णिस्सिंघिय न [नि शिङ्घित] अव्यक्त शब्द-विशेष (विसे ५०१)।

णिस्सिंच अक [निर् + सिच्] प्रक्षेप करना, डालना, फेंकना। वकृ णिस्सिंचमाण (राज)। सकृ णिस्सिंचिआ (दस ५, १)।

णिस्सिणेह वि [नि स्नेह] स्नेह-रहित (पि १४०)।

णिस्सिय वि [निश्रित] १ आश्रित, अवलम्बित (ठा १०, भास ३८)। २ आसक्त, अनुरक्त, तल्लीन (सूअ १, १, १, ठा ५, २)। ३ न. राग, आसक्ति (ठा ५, २)।

णिस्सिय वि [निश्रित] १ निश्चय से बद्ध (सूअ २, ६, २३)। २ पक्षपाती, रागी (वव १)।

णिस्सिय वि [नि.सृत] निर्गत, निर्यात (भास ३८)।

णिस्सील वि [निःशील] सदाचार-रहित, दु शील (पउम २, ८८, ठा ३, २)।

णिस्सूग वि [नि शूक] निर्दय, निष्करुण (आ १२)।

णिस्सेज्जा देखो णिसेज्जा (पव १२७)।

णिस्सेणि स्त्री [नि श्रेणि] सीढी (पण्ह १, १, पाअ)।

णिस्सेयस न [नि श्रेयस] १ कल्याण, मंगल, क्षेम (ठा ४, ४, णाया १, ८)। २ मुक्ति, मोक्ष, निर्वाण (औप, णादि)। ३ अभ्युदय, उन्नति (उत्त ८)।

णिस्सेयसिय वि [नै श्रेयसिक] मुमुक्षु, मोक्षार्थी (भग १५)।

णिस्सेस वि [नि शेष] सर्व, सब, सकल (उप २००)।

णिह वि [निभ] १ समान, तुल्य, सदृश (से १, ५८, गा ११४, दे १, ५१)। २ न. बहाना, व्याज, छल (पाअ)।

णिह वि [निह] १ मायावी, कपटी (सूअ १, ६)। २ पीडित (सूअ १, २, १)। ३ न. आघात-स्थान (सूअ १, ५, २)।

णिह त्रि [स्निह] रागी, राग-युक्त (आचा)।

णिहतव्व देखो णिहण = नि + हन्।

णिहस पुं [निघर्ष] घर्षण (गउड)।

णिहसण न [निघर्षण] घर्षण, रगड (से ५, ४६, गउड)।

णिहट्टु अ. १ जुदा कर, पृथक् करके (आचा)। २ स्थापन कर (णाया १, १६)।

णिहट्ठ वि [निघृष्ट] घिसा हुआ (हे २, १७४)।

णिहण सक [नि + हन्] १ निहत करना, मारना। २ फेंकना। णिहणामि (कुप्र २६२)। णिहणाहि (कप्प)। भूका— णिहणिसु (आचा)। वकृ. निहणंत (सण)। संकृ. णिहणित्ता (पि ५८२)। कृ णिहंतव्व (पउम ६, १७)।

णिहण सक [नि + खन्] गाडना। 'निहणंति धरा धरणीयलम्मि' (वज्जा ११८)। हेकृ 'चोरो दव्व निहणि उम् आरद्धो' (महा)।

णिहण न [दे] कूल, तीर, किनारा (दे ४, २३)।

णिहण त [निधन] १ मरण, विनाश (पाअ, जी ४६)। २ पु रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३२)।

णिहणण न [निहनन] निहति, मारना (महा, स १६३)।

णिहणिअ वि [निहत] मारा हुआ (सुपा १५८, सण)।

णिहत्त सक [निधत्तय्] कर्म को निबिड रूप से बाँधना। भूका णिहत्तिंसु (भग)। भवि णिहत्तेस्संति (भग)।

णिहत्त देखो णिवत्त (भग)।

णिहत्तण न [निधत्तन] कर्म का निबिड बन्धन (भग)।

णिहत्ति देखो णिधत्ति (राज)।

णिहम्म सक [नि + हम्म्] जाना, गमन करना। णिहम्मइ (हे ४, १६२)।

णिहय वि [निहत] मारा हुआ (गा ११८, सुर ३, ४६)।

णिहय वि [निखात] गाडा हुआ (स ७५६)।

णिहर अक [नि + हृ] पाखाना जाना (प्रामा)।

णिहर अक [आ + क्रन्द्] चिल्लाना। णिहरइ (षड्)।

णिहर अक [निर् + सृ] बाहर निकलना। णिहरइ (षड्)।

णिहरण देखो णीहरण (णाया १, २— पत्र ८६)।

णिहव देखो णिहुव। णिहवइ (नाट, पि ४१३)।

णिहव वि [दे] सुप्त, सोया हुआ (षड्)।

णिहव पुं [निवह] समूह (षड्)।

णिहस सक [नि + घृष्] घिसना। संकृ. णिहसिऊण (उव)।

णिहस पु [निकष] १ कषपट्टक, कसौटी का पत्थर (पाअ)। २ कसौटी पर की जाती रेखा (हे १, १८६, २६०, प्राप्र)।

णिहस पुं [निघर्ष] घर्षण, रगड (से ६, ३३)।

णिहस पुं [दे] वल्मीक, सर्प आदि का बिल (दे ४, २५)।

णिहसण न [निघर्षण] घर्षण, रगड (से ६, १०, गा १२१, गउड, वज्जा ११८)।

णिहसिय वि [निघर्षित] घिसा हुआ (वज्जा १५०)।

णिहा स्त्री [निहा] माया, कपट (सूअ १, ८)।

णिहा सक [नि + धा] स्थापना करना। निहेउ (स ७३८)। कवकृ णिहिप्पंत (से ८, ६७)। संकृ. णिहाय (सूअ १, ७)।

णिहा सक [नि + हा] त्याग करना। संकृ. णिहाय (सूअ १, १३)।

णिहा } सक [दृश्] देखना। णिहाइ,
णिहाआ } णिहाआइ (षड्)।

णिरुत्तिअ वि [नैरुक्तिक] व्युत्पत्ति के अनुसार जिसका अर्थ किया जाय वह शब्द (अरण)।

णिरुत्तिय न [नैरुक्तिक] निरुक्ति, व्युत्पत्ति, 'नो कत्थवि नाणिति निरुत्तियं चेइसद्दस्स' (संबोध—१२)।

णिरुदर वि [निरुदर] छोटा पेटवाला, अनुदर। स्त्री. °रा (पराह १, ४)।

णिरुद्ध वि [निरुद्ध] १ रोका हुआ (णाया १, १)। २ आवृत, आच्छादित (सूत्र १, २, ३)। ३ पुं मत्स्य की एक जाति (कप्प)।

णिरुद्ध वि [निरुद्ध] थोडा, सक्षिप्त (सूत्र १, १४, २३)।

णिरुद्धव्व / णिरुब्भन्त } देखो णिरुंभ।

णिरुलि पुस्त्री [दे] कुम्भीर—नक्र की आकृतिवाला एक जन्तु (दे ४, २७)।

णिरुवकिट्ठ देखो णिरुवक्किट्ठ (भग)।

णिरुवक्कम वि [निरुपक्रम] १ जो कम न किया जा सके वह (आयुष्य) (सुर २, १३२, सुपा २०४)। २ विघ्नरहित, अवाध, 'निय-निरुवक्कमविक्कमअक्खंतसमग्गरिउचक्को' (सुपा ३६)।

णिरुवक्कय वि [दे] अकृत, नही किया हुआ (दे ४, ४१)।

णिरुवक्किट्ठ वि [निरुपक्लिष्ट] क्लेश-वर्जित, दुःखरहित (भग २५, ७)।

णिरुवक्केस वि [निरुपक्लेश] शोक आदि क्लेशों से रहित (ठा ७)।

णिरुवक्ख वि [निरुपाख्य] शब्द से न कहा जा सके वह, अनिर्वचनीय (धर्मसं २४१, १३००)।

णिरुवग वि [निरुपक] प्रतिपादक (सम्मत्त १६०)

णिरुवगारि वि [निरुपकारिन्] उपकार को नही माननेवाला, प्रत्युपकार नही करनेवाला (आत्म)।

णिरुवग्गह वि [निरुपग्रह] उपकार नही करनेवाला (ठा ४, ३)।

णिरुवट्ठाणि वि [निरुपस्थानिन्] निरुद्यमी, आलसी (आचा)।

णिरुवद्दव वि [निरुपद्रव] उपद्रव-रहित, आबाधा वर्जित (औप)।

णिरुवम वि [निरुपम] असमान, असाधारण (औप, महा)।

णिरुवयरिय वि [निरुपचरित] वास्तविक, तथ्य (णाया १, ५)।

णिरुवयार वि [निरुपकार] उपकार-रहित (उव)।

णिरुवलेव वि [निरुपलेप] लेप वर्जित, अलिप्त (कप्प), 'रयणमिव णिरुवलेवा' (पउम १४, ६४)।

णिरुवसग्ग वि [निरुपसर्ग] १ उपसर्ग-रहित, उपद्रव-वर्जित (सुपा २८७)। २ पु मोक्ष, मुक्ति (पडि, धर्म २)। ३ न. उपसर्ग का अभाव (वव ३)।

णिरुवहय वि [निरुपहत] १ उपघात-रहित, अक्षत (भग ७, १)। २ रुकावट से शून्य, अप्रतिहत (सुपा २६८)।

णिरुवहि वि [निरुपधि] माया-रहित, निष्कपट (दसनि १)।

णिरुवार सक [ग्रह्] ग्रहण करना। णिरुवारइ (हे ४, २०६)।

णिरुवारिअ वि [गृहीत] उपात्त, गृहीत (कुमा)।

णिरुवालंभ वि [निरुपालम्भ] उपालम्भ-शून्य (गउड)।

णिरुव्विग्ग वि [निरुद्विग्न] उद्वेग-रहित (णाया १, १—पत्र ६)।

णिरुस्साह वि [निरुत्साह] उत्साह-हीन (सूत्र १, ४, १)।

णिरूव सक [नि + रूपय्] १ विचार कर कहना। २ विवेचन करना। ३ देखना। ४ दिखलाना। ५ तलाश करना। निरूवेइ (महा)। वकृ णिरूविंत, निरूवमाण (सुर १५, २०५, कुप्र २७५)। सकृ णिरूविऊण (पचा ८)। कृ. णिरूवियव्व (पचा ११)। हेकृ. निरूवेउ (कुप्र २०८)।

णिरूवण न [निरूपण] १ विलोकन, निरीक्षण (उप ३३७)। २ वि. दिखलानेवाला स्त्री °णी (पउम ११, २२)।

णिरूवणया स्त्री [निरूपणा] निरूपण (उप ६३०)।

णिरूवाविअ वि [निरूपित] गवेषित, जिस की खोज कराई गई हो वह (स ५३६.७४२)।

णिरूविअ वि [निरूपित] १ देखा हुआ (से १२, १३, सुपा ५२३)। २ आलोचना कर कहा हुआ। ३ विवेचित, प्रतिपादित (हे २, ४०)। ४ दिखलाया हुआ। ५ गवेषित (प्रारू)।

णिरूसुअ वि [निरुत्सुक] उत्कण्ठा-रहित (गउड)।

णिरूह पु [निरूह] अनुवासना-विशेष, एक तरह का विरेचन (णाया १, १३)।

णिरेय वि [निरेजस्] निष्कम्प, स्थिर (भग २५, ४)।

णिरेयण वि [निरेजन] निश्चल, स्थिर (कप्प, औप)।

णिरोणाम पुं [निरवनाम] नम्रता-रहित, गर्वित उद्धत (उव)।

णिरोय वि [नीरोग] रोग-रहित (औप, णाया १, १)।

णिरोव पु [दे] आदेश, आज्ञा, रुक्का (सुपा २२४)।

णिरोवयार वि [निरुपकार] उपकार को नही माननेवाला (ओघ ११३ भा)।

णिरोवयारि वि [निरुपकारिन्] ऊपर देखो (उव)।

णिरोविअ देखो णिरूविअ (सुपा ४५६, महा)।

णिरोह पु [निरोध] रुकावट, रोकना (ठा ४, १, औप, पात्र)।

णिरोहग वि [निरोधक] रोकनेवाला (रभा)।

णिरोहण न [निरोधन] रुकावट (पराह १, १)।

णिलक पु [दे] पतद्ग्रह, पीकदान, ष्ठीवन-पात्र, थूकने का पात्र (दे ४, ३१)।

णिलय पु [निलय] घर, स्थान, आश्रय (से २, २, गा ८२१, पात्र)।

णिलयण न [निलयन] वसति, स्थान (विसे)।

णिलाड न [ललाट] भाल, कपाल (कुमा)।

णिलिअ देखो णिलीअ। णिलिअइ (षड्)।

णिलिंत नीचे देखो।

णिलिज्ज / णिलीअ } सक [नी + ली] १ आश्लेष करना, भेंटना, गले से लगाना। २ दूर करना। ३ अक. छिप जाना। णिलिज्जइ णिलीअइ (हे ४,५५)। णिलिज्जिजा (कप्प)। वकृ.

णीजूह देखो णिज्जूह = दे. निर्यूह (राज)।

णीड देखो णिड्ड (गा १०२, हे १, १०६)।

णीण सक [गम्] जाना, गमन करना। णीणइ (हे ४, १६२)। णीणति (कुमा)।

णीण सक [नी] १ ले जाना। २ बाहर ले जाना, बाहर निकालना, 'सारभंडाणि णीणेइ, असार अवउज्झइ' (उत्त १९, २२)। भवि णीणेहिइ (महा)। वकृ णीणेमाण। कवकृ नीणिज्जत णीणिज्जमाण (पि ९२, आचा)। सकृ णीणेऊण, णीणेत्ता (महा, उवा)।

णीणाविय वि [नायित] दूसरे द्वारा ले जाया गया, अन्य द्वारा आनीत (उप १३९ टी)।

णीणिअ वि [गत] गया हुआ (पाअ)।

णीणिअ वि [नीत] १ ले जाया गया (उप ५९७ टी, सुपा २६१)। २ बाहर निकाला हुआ (णाया १, ४), 'उयरप्पविट्ठछुरिआए नीणिओ अंतपब्भारो' (सुपा ३८१))

णीणिआ स्त्री [नीनिका] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति (जीव १)।

णीम पुं [नीप] १ वृक्ष-विशेष, कदंब का पेड। २ न. फल-विशेष (दस ५, २, २१)।

णीम पुं [नीप] वृक्ष-विशेष, कदम्ब का पेड (पराग १, औप, हे १, २३४)।

णीमम वि [निर्मम] ममत्व-रहित (अज्झ १०९)।

णीमी देखो णीवी (कुमा, षड्)।

णीय वि [नीच] १ नीच, अधम, जघन्य (उवा, सुपा १०७)। २ वि. अधस्तन (सुपा ६००)। °गोय न [°गोत्र] १ क्षुद्र गोत्र। २ कर्म-विशेष, जो क्षुद्र जाति मे जन्म होने का कारण है (ठा २, ४, आचा)। ३ वि नीच गोत्र मे उत्पन्न (सूअ २, १)।

णीय वि [नीत] ले जाया गया (आचा, उव, सुपा ६)।

णीय देखो णिच्च = नित्य (उव)।

णीयगम वि [नीचंगम] नीचे जानेवाला (पुप्फ ४४३)।

णीयंगमा स्त्री [नीचंगमा] नदी, तरंगिणी (भत्त ११६)।

णीर न [नीर] जल, पानी (कुमा, प्रासू ६७)। °निहि पुं [°निधि] समुद्र, सागर (सुपा २०१)। °रुह न [°रुह] कमल (ती ३)। °वाह पुं [°वाह] मेघ, अभ्र (उप पृ ६२)। °हर पु [°गृह] समुद्र, सागर (उप पृ ११९)। °हि पुं [°धि] समुद्र (उप ९८६ टी)। °कर पु [°कर] समुद्र (उप ५३० टी)।

णीरंगी स्त्री [दे नीरङ्गी] सिर का अवगुण्ठन, शिरोवस्त्र, घूँघट (दे ४, ३१, पाअ)।

णीरज सक [भञ्ज्] तोडना, भंगना। णीरजइ (हे ४, १०६)।

णीरंजिअ वि [भग्न] तोडा हुआ, छिन्न (कुमा)।

णीरंध वि [नीरन्ध्र] निश्छिद्र (कप्पू)।

णीरण न [दे] घास, चारा, 'विमलो पंजलमग्गं नीरंधणनीरणाइसजुत्त' (सुपा ५०१)।

णीरय वि [नीरजस्] १ रजो-रहित, निर्मल, शुद्ध, सिद्धि गच्छइ णीरओ' (गुरु १६, पराग ३६, सम १३७, पउम १०३, १३४, सार्ध ११२)। २ पुं. ब्रह्म-देवलोक का एक प्रस्तट (ठा ६)।

णीरव सक [आ + क्षिप्] आक्षेप करना। णीरवइ (हे ४, १४५)।

णीरव सक [बुभुक्ष्] खाने को चाहना। णीरवइ (हे ४, ५)। भूका. णीरवीअ (कुमा)।

णीरव वि [आक्षेपक] आक्षेप करनेवाला (कुमा)।

णीरस वि [नीरस] रस-रहति, शुष्क (गउड, महा)।

णीरसजल न [नीरसजल] आयंबिल तप (सवोध ५८)।

णीराग } वि [नीराग] राग-रहित, वीतराग
णीराय } (गउड, कुप्र १२५, कुमा)।

णीरेणु वि [नीरेणु] रजो-रहित, धूल-रहित (गउड)।

णीरोग वि [नीरोग] रोग-रहित, तंदुरुस्त (जीव ३)।

णील अक [निर् + सृ] बाहर निकलना। णीलइ (हे ४, ७९)।

णील पुं [नील] १ हरा वर्ण, नीला रंग (ठा १)। २ ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३)। ३ रामचन्द्र का एक सुभट, वानर-विशेष (से ४, ५)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। ५ पर्वत-विशेष (ठा २, ३)। ६ न. रत्न की एक जाति, नीलम (णाया १, १)। ७ वि. हरा वर्णवाला (पराग १, राय)। °कंठ पुं [°कण्ठ] १ शक्रेन्द्र का एक सेनापति, शक्रेन्द्र के महिष-सैन्य का अधिपति देव-विशेष (ठा ५, १, इक)। २ मयूर, मोर (पाअ; कुप्र २४७)। ३ महादेव, शिव (कुप्र २४७)। °कणवीर पुं [°करवीर] हरे रग के फूलोवाला कनेर का पेड (राय)। °गुफा स्त्री [°गुफा] उद्यान-विशेष (आवम)। °मणि पुस्त्री [°मणि] रत्न विशेष, नीलम, मरकत (कुमा)। °लेस वि [°लेश्य] नील लेश्यावाला (पराग १७)। °लेसा स्त्री [°लेश्या] अशुभ अध्यवसाय-विशेष (सम ११, ठा १)। °लेस्स देखो °लेस (पराग १७)। °लेस्सा देखो °लेसा (राज)। °वंत पुं [°वत्] १ पर्वत-विशेष (ठा २, ३, सम १२)। २ द्रह-विशेष (ठा ५, २)। ३ न. शिखर-विशेष (ठा २, ३)।

णील वि [नील] कच्चा, आर्द्र (आचा २, ४, २, ३)। °केसी स्त्री [°केशी] तरुणी, युवति (वव ४)।

णीलकंठी स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष, बाण-वृक्ष (दे ४, ४२)।

णीला स्त्री [नीला] १ लेश्या-विशेष, एक तरह का आत्मा का अशुभ परिणाम (कम्म ४, १३, भग)। २ नीलवर्णवाली स्त्री (षड्)।

णीलिअ वि [निःसृत] निर्गत, निर्यात (कुमा)।

णीलिअ वि [नीलित] नील वर्ण का (उप पृ ३२)।

णीलिआ देखो णीला (भग)।

णीलिम पुस्त्री [नीलिमन्] नीलत्व, नीलापन, हरापन (सुपा १३७)।

णीली स्त्री [नीली] १ वनस्पति-विशेष, नील (पराग १, उर ६,५)। २ नील वर्णवाली स्त्री (षड्) ३ आंख का रोग (कुप्र २१३)।

णीलुंछ सक [कृ] १ निष्पतन करना। २ आच्छोटन करना। णीलुंछइ (हे ४, ७१, षड्)। वकृ णीलुंछत (कुमा)।

णिवत्तय वि [निवर्त्तक] १ वापस आनेवाला, लौटनेवाला। २ लौटानेवाला, वापस करनेवाला (हे २, ३०, प्राप्र)।
णिवत्ति स्त्री [निवृत्ति] निवर्त्तन (उव)।
णिवत्तिअ वि [निवर्त्तित] रोका हुआ, प्रतिषिद्ध (स ३६४)।
णिवत्तिअ वि [निर्वर्त्तित] निष्पादित, 'निवत्तिया सवपूया' (स ७६३)।
णिवद्दि देखो णिवत्ति (संक्षि ६)।
णिवन्न देखो णिवण्ण (स ७६०)।
णिवय अक [नि + पत्] समाना, अन्तर्भूत होना। निवयत्ति (पव ८४ टी)।
णिवय देखो णिवड। णिवइज्जा, णिवएज्जा (कप्प, ठा ३,४)। वकृ णिवयंत, णिवयमाण (उप १४२ टी, सुर ४, ६५, कप्प)।
णिवय पुं [निपात] नीचे गिरना, अव-पतन (सुर १३, १६७)।
णिवरुण पु [निवरुण] वृक्ष-विशेष (उप १०३१ टी)।
णिवस अक [नि + वस्] निवास करना, रहना। णिवसइ (महा)। वकृ णिवसत (सुपा २२५)। हेकृ णिवसिउ (सुपा ४६३)।
णिवसण न [निवसन] वस्त्र, कपड़ा (अभि १३६, महा; सुपा २००)।
णिवसिय वि [निवसित] जिसने निवास किया हो वह (महा)।
णिवसिर वि [निवसितृ] निवास करनेवाला (गउड)।
णिवह सक [गम्] जाना, गमन करना। णिवहइ (हे ४, १६२)।
णिवह अक [नश्] भागना, पलायन करना। णिवहइ (हे ४, १७८)।
णिवह सक [पिष्] पीसना। णिवहइ (हे ४, १८५; षड्)।
णिवह पुन [निवह] समूह, राशि, जत्था (से २, ४२, सुर ३, ३५, प्रासू १४४), 'अच्छउ ता फलनिवह' (वज्जा १५२)।
णिवह पुन [दे] समृद्धि, वैभव (दे ४,२६)।
णिवहिअ वि [नष्ट] नाश-प्राप्त (कुमा)।
णिवहिअ वि [पिष्ट] पीसा हुआ (कुमा)।
णिवाइ वि [निपातिन्] गिरनेवाला (आचा)।

णिवाड सक [नि + पातय्] नीचे गिराना। निवाडेइ (स ६६०)। वकृ. निवाडयंत (स ६८६)। संकृ. णिवाडेइत्ता (जीव ३)।
णिवाडिय वि [निपातित] नीचे गिराया हुआ (महा)।
णिवाडिर वि [निपातयितृ] नीचे गिरानेवाला (सण)।
णिवाण न [निपान] कूप या तालाब के पास पशुओं के जल पीने के लिए बनाया हुआ जल-कुण्ड, चरही (स ३१२)। °साला स्त्री [°शाला] पशुओं का पानी पिलाने का स्थान (महा)।
णिवाय देखो णिवाड। णिवायइ (कुमा)। णिवाएज्जा (पि १३१)।
णिवाय पु [दे] स्वेद, पसीना (दे ४, ३४, सुर १२, ८)।
णिवाय पु [निपात] १ पतन, अध-पतन, गिरना (गा २२२, सुपा १०३)। २ संयोग, सबन्ध, 'दिट्ठिणिवाओ ससिमुहीए' (गा १४८, उत्त २, गउड)। ३ च, प्र आदि व्याकरण-प्रसिद्ध अव्यय (पण्ह २, २, सुपा २०३)। ४ विनाश (पिंड)।
णिवाय वि [निवात] पवन-रहित, स्थिर (पण्ह २, ३, स ४०३, ७४३)।
णिवायण न [निपातन] १ गिराना, निपातन, ढाहना (पण्ह १, २)। २ व्याकरण-प्रसिद्ध शब्द-सिद्धि, प्रकृति आदि के विना विभाग किये ही अखण्ड शब्द की निष्पत्ति (विसे २३)।
णिवार सक [नि + वारय्] निवारण करना, निषेध करना, रोकना। णिवारेइ (उव, महा)। वकृ णिवारेंत (महा)। कवकृ णिवारीअत, णिवारिज्जमाण (नाट—मृच्छ १५४, १३५)। कृ. णिवारियव्व, णिवारेयव्व (सुपा ४८२, महा)।
णिवारग वि [निवारक] निषेध करनेवाला, रोकनेवाला (सुर १, १२६, सुपा ६३६)।
णिवारण न [निवारण] १ निषेध, रुकावट (भग ६.३३)। २ शीत आदि को रोकनेवाला, गृह, वस्त्र आदि, 'न मे निवारणं अत्थि, छवित्ताए न विज्जइ' (उत्त २, ७)। ३ वि निवारण करनेवाला, रोकनेवाला, 'उवसग्ग-निवारणो एसो' (अजि ३८)।
णिवारय देखो णिवारग (उप ५३० टी)।
णिवारि वि [निवारिन्] निवारक, प्रतिषेधक। स्त्री °रिणी (महा)।
णिवारिय वि [निवारित] रोका हुआ, निषिद्ध (भग, प्रासू १६६)।
णिवास पु [निवास] १ निवसन रहना। २ वास-स्थान, डेरा (कुमा महा)।
णिवासि वि [निवासिन्] निवास करनेवाला रहनेवाला (महा)।
णिविअ देखो णिमिअ = न्यस्त (से १२ ३०)।
णिविट्ट देखो णिवट्ट = निवृत्त (सण)।
णिविट्ठ वि [निविष्ट] १ स्थित, बैठा हुआ (महा)। २ आसक्त, लीन (राज)।
णिविट्ठि वि [निर्विष्ट] लब्ध, उपात्त गृहीत (ठा ५,२)। °कप्पट्ठिइ स्त्री [°कल्पस्थिति] जैन साधुओं का एक तरह का आचार (ठा ५, २)।
णिविड देखो णिविड (षड्, हे १, २४०)।
णिविडिअ देखो णिविडिय (गउड, पि २४०)।
णिवित्ति स्त्री [निवृत्ति] १ निवर्त्तन उपरम, प्रवृत्ति का अभाव (विसे २७९८, स १५४)। २ वापस लौटना, प्रत्यावर्त्तन (सुपा ३३२)।
णिविद्ध वि [दे] १ सोकर उठा हुआ। २ निराश, हताश। ३ उद्भट। ४ नृशस, निर्दय (दे ४, ४८)।
णिविन्न वि [निर्विज्ञ] विशिष्ट ज्ञान से रहित (तंदु ५५)।
णिविस अक [नि + विश्] बैठना। वकृ. णिविसत (श्रा १२)।
णिविस (अप) देखो णिमिस (भवि)।
णिविसिर वि [निवेष्टृ] बैठनेवाला (सण)।
णिवुज्झमाण वि [न्युह्यमान] नीयमान, जो ले जाया जाता हो वह (आचा २, ११, ३)।
णिवुट्ठ वि [निवृष्ट] बरसा हुआ (आचा २, ४, १, ४)।
णिवुड्ढ सक [नि + वर्धय्] १ त्याग करना, छोड़ना। २ हानि करना। वकृ. णिवुड्ढेमाण (सुज्ज १, १)। संकृ. णिवुड्ढित्ता (सुज्ज १)।

णीहम्म अक [निर् + हम्म्] निकलना। णीहम्मइ (हे ४, १६२)।
णीहम्मिअ वि [निर्हम्मित] निर्गत, निस्सृत (दे ४, ४३)।
णीहर अक [निर् + सृ] १ बाहर निकलना। णीहरइ (हे ४, ७६)। वकृ. नीहरत (सुपा ४८२)। संकृ णीहरिअ (निचू ६)। कृ. णीहरियव्व (सुपा ५६०)।
णीहर अक [आ + क्रन्द्] आक्रन्द करना, चिल्लाना। णीहरइ (हे ४, १३१)।
णीहर अक [निर् + ह्लद्] प्रतिध्वनि करना। वकृ णीहरत, णीहरिअत (से ५, ११, २, ३१)।
णीहर सक [निर् + सारय्] बाहर निकालना। हेकृ णीहरित्तए (भग ५, ४)। कृ. णीहरियव्व (सुपा ४८२)।
णीहर अक [निर् + हृ] पाखाना जाना, पुरीषोत्सर्ग करना। नीहरइ (हे ४, २५६)।
णीहरण न [निस्सरण, निर्हरण] १ निर्गमन, निर्गम, बाहर निकालना (विपा १, ३; णाया १, १४)। २ परित्याग (निचू १)। ३ अपनयन (सूअ २, २)।
णीहरिअ देखो णीहर = निर् + सृ।
णीहरिअ वि [नि सृत] निर्गत, निर्यात (सुर १, १५५, ३, ७५, पाअ)।
णीहरिअ वि [निर्ह्लदित] प्रतिध्वनित (से ११, १२२)।
णीहरिअ न [दे] शब्द, आवाज, ध्वनि (दे ४, ४२)।
णीहरिअत देखो णीहर = निर् + ह्लद्।
णीहार पुं [नीहार] १ हिम, तुषार (अच्चु ७२, स्वप्न ५२, कुमा)। २ विष्ठा या मूत्र का उत्सर्ग (सम ६०)।
णीहारण न [निस्सारण] निष्कासन (ठा २, ४)।
णीहारि वि [निर्हारिन्] १ निकलनेवाला। २ फैलनेवाला, 'जोयणणीहारिणा सरेण' (आवम, सम ६०)।
णीहारि वि [निर्ह्लादिन्] घोष करनेवाला, गूंजनेवाला (ठा १०, पि ४०५)।
णीहारिम देखो णिहारिम (ठा २, ४, औप, णाया १, १)।

णीहास वि [निर्हास] हास-रहित (उत्त २२, २८)।
णीहूय वि [दे] अकिञ्चित्कर, कुछ भी नहीं कर सकनेवाला, 'पवयणणीहूयाए' (आवनि ७८७)। देखो णिहुअ।
णु अ [नु] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ व्यंग्य ध्वनि। २ वक्रोक्ति (स ३८६)। ३ वितर्क (सण)। ४ प्रश्न। ५ विकल्प। ६ अनुनय। ७ हेतु, प्रयोजन। ८ अपमान। ६ अनुताप, अनुराग। १० अपदेश, बहाना (गउड, हे २, २१७, २१८)।
णु अ [तु]। १ निन्दासूचक अव्यय (दस २, १)। २ विशेष (सिरि ६५१)।
°णुअ वि [ज्ञक] जानकार (गा ४०५)।
णुक्कार पुं [नुक्कार] 'नुक्' ऐसी आवाज (राय)।
णुज्जिय वि [दे] बन्द किया हुआ, मुद्रित, 'कड्ढिया णेण छुरिया, णुज्जियं से वयणं, छिन्ना य हत्था' (स ५८६)।
णुत्त वि [नुत्त] १ प्रेरित। २ क्षिप्त, फेंका हुआ (से ३, १५)।
णुम सक [नि + अस्] स्थापन करना। णुमइ (हे ४, १६६)।
णुम सक [छादय्] ढकना, आच्छादन करना। णुमइ (हे ४, २१)।
णुमज्ज अक [नि + सद्] बैठना। णुमज्जइ (षड्)।
णुमज्ज अक [नि + मस्ज्] डूबना। णुमज्जइ (हे १, ६४)।
णुमज्ज अक [शी] सोना, सूतना। णुमज्जइ (प्राकृ ७४)।
णुमज्जण न [निमज्जन] डूबना (राज)।
णुमण्ण वि [निषण्ण] बैठा हुआ, उपविष्ट (षड्, हे १, १७४)।
णुमण्ण, णुमन्न } वि [निमग्न] डूबा हुआ, लीन (हे १, ६४, १७४)।
णुमिअ वि [न्यस्त] स्थापित (कुमा)।
णुमिअ वि [छादित] ढका हुआ (कुमा)।
णुल्ल देखो णोल्ल। णुल्लइ (पि २४४)।
णुवण्ण वि [दे] सुप्त, सोया हुआ (दे ४, २५)।

णुवण्ण वि [निषण्ण] बैठा हुआ, उपविष्ट (गउड, णाया १, ५, स २४२), 'पासम्मि नुवण्णा' (उप ६४८ टी)।
णुव्व सक [प्र = काशय्] प्रकाशित करना। णुव्वइ (हे ४, ४५)। वकृ. णुव्वंत (कुमा)।
णुसा स्त्री [स्नुषा] पुत्र-वधू, पुत्र की भार्या (प्रयौ १०५)।
णूउर देखो णिउर = नूपुर (षड, हे १, १२३)।
णूण वि [न्यून] कम, ऊन (उप पृ ११६)।
णूण, णूणं } अ [नूनम्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ निश्चय, अवधारण। २ तर्क विचार। ३ हेतु, प्रयोजन। ४ उपमान। ५ प्रश्न (हे १, २६, प्राप्र, कुमा, भग, प्रासू १२, वृह १, श्रा १२)।
णूतण वि [नूतन] नया, नवीन (मन ३०)।
णूपुर देखो णूउर (चारु ११)।
णूम सक [छादय्] १ ढकना, छिपाना। णूमइ (हे ४, २१)। णूमति (णाया १, १६)। वकृ णूमत (गा ८५६)।
णूम न [दे] १ प्रच्छादन, छिपाना। २ असत्य, झूठ (पण्ह १, २)। ३ माया, कपट (सम ७१)। ४ प्रच्छन्न स्थान, गुफा वगैरह (सूअ १, ३, ३, भग १२, ५)। ५ अन्धकार, गाढ अन्धकार (राज)।
णूम न [दे] कर्म (सूअ १, ३, ३, २)। °गिह न [°गृह] भूमि-गृह (आचा २, ३, ३, १)।
णूमिअ वि [छादित] ढका हुआ, छिपाया हुआ, (से १, ८२, पाअ, कुमा)।
णूमिअ वि [दे] पोला किया हुआ (उप पृ ३६३)।
णूला स्त्री [दे] शाखा, डाल (दे ४, ४३)।
णे अ पाद-पूर्ति में प्रयुक्त होता अव्यय (राज)।
णेअ देखो णा = ज्ञा।
णेअ देखो णी = नी।
णेअ वि [नैक] अनेक, बहुत (पउम ६४, ५१)। °विह वि [°विध] अनेक प्रकार का (पउम ११३, ५२)।
णेअ अ [नैव] नहीं ही, कदापि नहीं, कभी नहीं (से ४, ३०, गा १३६, गउड, सुर २, १८६, सण)।

णिव्वरइ (हे ४, ३)। भूका णिव्वरही (कुमा)। कर्म

'कह तम्मि निव्वरिज्जइ,
दुक्ख कंडुज्जुएण हिअएण।
अद्दाए पडिबिंबं व, जम्मि
दुक्खं न संकमइ (स ३०६)।

णिव्वर सक [छिद्] छेदन करना, काटना। णिव्वरइ (हे ४, १२४)।

णिव्वरण न [कथन] दुःख-निवेदन (गा २५५)।

णिव्वरिअ वि [छिन्न] काटा हुआ, खण्डित (कुमा)।

णिव्वल सक [मुच्] दुःख को छोड़ना। णिव्वलेइ (हे ४, ९२)।

णिव्वल अक [निर् + पद्] निष्पन्न होना, सिद्ध होना, बनना। णिव्वलइ (हे ४, १२८)।

णिव्वल देखो णिच्चल=क्षर्। णिव्वलइ (हे ४, १७३ टि)।

णिव्वल देखो णिव्वह=भू। वकृ णिव्वलंत, णिव्वलमाण (से १, ३६, ७, ४३)।

णिव्वलिअ वि [दे] १ जल-धौत, पानी से धोया हुआ। २ प्रविगणित। ३ विघटित, वियुक्त (दे ४, ५१)।

णिव्वव सक [निर् + वापय्] ठंढा करना, बुझाना। णिव्ववेहि (स ४५५)। णिव्ववमु (काल)। वकृ. णिव्ववंत (सुपा २२५)। कृ णिव्ववियव्व (सुपा २६०)।

णिव्ववण न [निर्वापण] १ बुझाना, शान्त करना। २ वि शान्त करनेवाला, ताप को बुझानेवाला (सुर ३, २३७)।

णिव्ववविअ वि [निर्वापित] बुझाया हुआ, ठंढा किया हुआ (गा ३१७, सुर २, ७४)।

णिव्वह अक [निर् + वह्] १ निभना, निर्वाह करना, पार पड़ना। २ आजीविका चलाना। णिव्वहइ (स १०५, वज्जा ६)। कर्म. णिव्वुब्भइ (पि ५४१)। वकृ णिव्वहंत (श्रा १२, कुप्र ३३)। कृ. निव्वहियव्व (कुप्र ३७५)।

णिव्वह सक [उद् + वह्] १ धारण करना। २ ऊपर उठाना। णिव्वहइ (षड्)।

णिव्वहण न [निर्वहण] निर्वाह, अन्त, नाटक की एक संधि (सुपा १७५, कुप्र ३७५)।

णिव्वहण न [दे] विवाह, शादी (दे ४, ३९)।

णिव्वा अक [वि + श्रम्] विश्राम करना। णिव्वाइ (हे ४, १५९)। वकृ णिव्वाअंत (से ८, ८)।

णिव्वाघाइम वि [निर्व्याघातिम] व्याघात-रहित, स्खलना-रहित (औप)।

णिव्वाघाय वि [निर्व्याघात] १ व्याघात-वर्जित (णाया १, १, भग, कप्प)। २ न व्याघात का अभाव (पण्ण २)।

णिव्वाघाया स्त्री [निर्व्याघाता] एक विद्या-देवी (पउम ७ १४५)।

णिव्वाण न [निर्वाण] १ मुक्ति, मोक्ष, निर्वृति (विसे १९७५)। २ सुख, चैन, शान्ति, दुःख-निवृत्ति, 'निउणमणो निव्वाणं सुंदरि निस्ससय कुणइ' (उप ७२८ टी, पउम ४६, १६)। ३ बुझाना, विध्यापन (आव ४)। ४ वि बुझा हुआ, 'जह दीवो णिव्वाणो' (विसे १९९१, कुप्र ५१)। ५ पुं ऐरवत वर्ष मे होनेवाले एक जिन-देव का नाम (सम १५४)।

णिव्वाण न [निर्वाण] तृप्ति (दस ५, २, ३८)।

णिव्वाण न [दे] दुःख-कथन (दे ४, ३३)।

णिव्वाणि पु [निर्वाणिन्] भारतवर्ष में अतीत उत्सर्पिणी-काल में संजात एक जिन-देव (पव ७)।

णिव्वाणी स्त्री [निर्वाणी] भगवान् श्री शान्तिनाथ की शासन-देवी (संति १, १०)।

णिव्वाय वि [निर्वाण] बीता हुआ, व्यतीत (से १४, १४)।

णिव्वाय वि [विश्रान्त] १ जिसने विश्राम किया हो वह (कुमा)। २ सुखित, निर्वृत (से १३, २३)।

णिव्वाय वि [निर्वात] वायु-रहित (णाया १, १, औप)।

णिव्वालिय वि [भावित] पृथक् किया हुआ (से १४, ५४)।

णिव्वाव देखो णिव्वव। णिव्वावेमि (स ३५२)। संकृ णिव्वाविऊण (निचू १)।

णिव्वाव पु [निर्वाप] घी, शाक आदि का परिमाण (निचू १)। °कहा स्त्री [°कथा] एक तरह की भोजन कथा (ठा ४, २)।

णिव्वावइत्तअ (शौ) वि [निर्वापयितृक] ठढा करनेवाला (पि ६००)।

णिव्वावण न [निर्वापण] बुझाना, विध्यापन (दस ४)।

णिव्वावणा न [निर्वापणा] बुझाना, ठढा करना, उपशान्ति (गउड)।

णिव्वावय वि [निर्वापक] आग बुझानेवाला (सूअ १ ७, ५)।

णिव्वाविय वि [निर्वापित] ठढा किया हुआ (णाया १, १, दस ५, १)।

णिव्वासण न [निर्वासन] देश निकाला (स ५३४, कुप्र ३४३)।

णिव्वासणा स्त्री [निर्वासना] ऊपर देखो (पउम ६६, ४१)।

णिव्वाह पुं [निर्वाह] १ निभाना, पार-प्राप्ति। २ आजीविका, जीवन-सामग्री, 'निव्वाहं किंपि दाउं च' (सुपा ४८८)।

णिव्वाहग वि [निर्वाहक] निर्वाह करने-वाला (रंभा)।

णिव्वाहण न [निर्वाहण] १ निर्वाह, निभाना (सुपा ३६४)। २ निस्सार करना (राज)।

णिव्वाहिअ वि [निर्वाहित] अतिवाहित, विताया हुआ, गुजारा हुआ (से ६, ४२)।

णिव्वाहिअ वि [निर्व्याधिक] व्याधि-रहित, नीरोग (से ६, ४२)।

णिव्विअप्प देखो णिव्विगप्प (सम्म ३३)।

णिव्विआर वि [निर्विकार] विकार-रहित (गा ५०६)।

णिव्विइअ वि [निर्विकृतिक] १ घृत आदि विकृति-जनक पदार्थों से रहित (औप)। २ न प्रत्याख्यान-विशेष, जिसमें घृत आदि विकृतियो का त्याग किया जाता है (पव ४, पंचा ५)।

णिव्विइगिच्छ वि [निर्विचिकित्स] फल-प्राप्ति मे शका-रहित (कस, धर्म २)।

णिव्विइगिच्छ न [निर्विचिकित्स्य] फल-प्राप्ति मे सन्देह का अभाव (उत्त २८)।

णेवत्थ न [नेपथ्य] १ वस्त्र आदि की रचना, वेष की सजावट, नाटक आदि मे परदे के भीतर का स्थान जिसमें नट-नटी नाना प्रकार का वेश सजाते हैं, रंगशाला, नाट्यशाला (णाया १, १)। २ वेष (विसे २५८७, सुर ३, ६२, सण, सुपा १५३)।

णेवत्थण न [दे] निरुञ्छन, उत्तरीय वस्त्र का अञ्चल (कुमा)।

णेवत्थिय वि [नेपथ्यित] जिसने वेष-भूषा की हो वह, 'पुरिसनेवत्थिया' (विपा १, ३)।

णेवाइय वि [नैपातिक] निपात-निष्पन्न नाम, अव्यय आदि (विसे २८४०, भग)।

णेवाल पुं [नेपाल] १ एक भारतीय देश, नेपाल (उप पृ ३६३, कुप्र ४५८)। २ वि नेपाल-देशीय, नेपाली (पउम ६६, ५५)।

णेविज्ज, णेवेज्ज न [नैवेद्य] देवता के आगे धरा हुआ अन्न आदि (स १२२, श्रा १६)।

णेव्वाण देखो णिव्वाण = निर्वाण (आचा, सुर ६, २०, स ७४४)।

णेव्वुअ देखो णिव्वुअ (उप ७३० टी)।

णेव्वुइ देखो णिव्वुइ (उप ४६८ टी)।

णेसग्गिय देखो णिसग्गिय (सुपा ६)।

णेसज्जि वि [नैषद्यिन्] आसन-विशेष से उपविष्ट (पव ६७, पंचा १८)।

णेसज्जिअ वि [नैषधिक] ऊपर देखो (ठा ५ १, औप, पण्ह २, १, कस)।

णेसत्थि पु [दे] वणिग् मन्त्री, वणिक् प्रधान (दे ४, ४४)।

णेसत्थिया, णेसत्थी स्त्री [नैसृष्टिकी, नैशस्त्रिकी] १ निसर्जन, निक्षेपण। २ निसर्जन से होनेवाला कर्म-बन्ध (ठा २, १, नव १८)।

णेसप्प पुं [नैसर्प] निधि विशेष, चक्रवर्ती राजा का एक देवाधिष्ठित निधान (ठा ६, (उप ६८६ टी)।

णेसर पु [दे] रवि, सूर्य (४, ४४)।

णेसाय देखो णिसाय = निषाद (राज)।

णेहु पुन [दे] १ ओष्ठ, ओठ, होठ। २ पाँव; 'तह निक्खिवतमता कूवम्मि निहित्तणेसुजुग (उप ३२० टी)।

णेह पुं [स्नेह] १ राग, अनुराग, प्रेम (पाअ)। २ तैल आदि चिकना रस-पदार्थ। ३ चिकनाई, चिकनाहट (हे २, ७७, ४, ४०६, प्राप्र)।

णेहर देखो णेहुर (पण्ह १, १)।

णेहल पु [स्नेहल] छन्द-विशेष (पिंग)।

णेहल वि [स्नेहल] स्नेही, स्नेह युक्त, 'पियराइ नेहलाइ, अणुरत्ताओ गिहिणीओ' (धर्मवि १२५)।

णेहालु वि [स्नेहवत्] स्नेह-युक्त, स्निग्ध (हे २, १५९)।

णेहुर पु [नेहुर] १ देश-विशेष, एक अनार्य देश। २ उसमे वसनेवाली अनार्य जाति (पण्ह १, १—पत्र १४)।

णो अ [नो] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ निषेध, प्रतिषेध, अभाव (ठा ९, कम, गउड)। २ मिश्रण, मिश्रता, 'नोसद्दो मिस्सभावम्मि' (विसे ५०)। ३ देश, भाग, अंश, हिस्सा (विसे ८८८)। ४ अवधारण, निश्चय (राज)। °आगम पु [°आगम] १ आगम का अभाव। २ आगम के साथ मिश्रण। ३ आगम का एक अंश (आवम, विसे ४९, ५०, ५१)। ४ पदार्थ का अपरिज्ञान (णदि)। °इंदिय न [°इन्द्रिय] मन, अन्त करण, चित्त (ठा ६, सम ११, उप ५९७ टी)। °कसाय पुं [°कषाय] कषाय के उद्दीपक हास्य वगैरह नव पदार्थ, वे ये हैं—हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पुवेद, स्त्रीवेद और नपुंसकवेद (कम्म १, १७, ठा ९)। °केवलनाण न [°केवलज्ञान] अवधि और मन पर्यव ज्ञान (ठा २, १)। °गार पु [°कार] 'नो' शब्द (राज)। °गुण वि [°गुण] अयथार्थ, अवास्तविक (अणु)। °जीव पु [°जीव] १ जीव और अजीव से भिन्न पदाथ, अवस्तु। २ अजीव, निर्जीव। ३ जीव का प्रदेश (विसे)। °तह वि [°तथ] जो वैसा ही न हो (ठा ४, २)।

णो अ [दे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ खेद। २ आमन्त्रण। ३ विचित्रता। ४ वितर्क। ५ प्रकोप (प्राकृ ८०)।

णो° पुं [नृ] पुरुष, नर, 'णोवावाराभावम्मि अण्णहा खम्मि चेव उवलद्धी' (धर्मसं १२५३, १२५६)।

णोक्ख वि [दे] अनोखा, अपूर्व (पिंग)।

णोगोण्ण वि [नोगौण] अयथार्थ (नाम) (अणु १४०)।

णोजुग न [नोयुग] न्यून युग (सुज्ज ११)।

णोदिअ देखो णोल्लिअ (राज)।

णोमल्लिआ स्त्री [नवमल्लिका] सुगन्धि फूल-वाला वृक्ष-विशेष, नेवारी, वासंती (नाट, पि १५४)।

णोमालिआ स्त्री [नवमालिका] ऊपर देखो (हे १, १७०, गा २८१, षड्, कुमा, अभि २६)।

णोमि पु [दे] रस्सी, रज्जु (दे ४, ३१)।

णोलइआ, णोलच्छा स्त्री [दे] चञ्चु, चोच, चाँच (दे ४, ३६)।

णोल्ल सक [क्षिप्, नुद्] १ फेंकना। प्रेरणा करना। णोल्लइ (हे ४, १४३, षड्)। णाल्लेइ (गा ८७५)। कवकृ. णोल्लिज्जंत (सुर १३, १९९)।

णोल्लिअ वि [नोदित] प्रेरित (से ६, ३२, णाया १, ९, पण्ह १, ३, स ३४०)।

णोव्व पु [दे] आयुक्त, सूबा या सूबेदार राज-प्रतिनिधि (दे ४, १७)।

णोहल पुं [लोहल] अव्यक्त शब्द-विशेष (षड् पि २६०, सक्षि ११)।

णोहलिआ स्त्री [नवफलिका] १ ताजी फली, नवोत्पन्न फली (हे १, १७०)। २ नूतन फलवाली (कुमा)। ३ नूतन फल का उद्गम, 'णोहलिअमप्पणो किं ण मग्गसे, मग्गसे, कुरवअस्स' (गा ६)।

णोहा स्त्री [स्नुषा] पुत्र की भार्या, पुत्रवधू, पतोहू, वहू (पि १४८, सक्षि १५)।

°ण्णअ वि [ज्ञक] जानकार (गा २०३)।

°ण्णास देखो णास = न्यास (स्वप्न १३४)।

°ण्णुअ देखो °ण्णअ (गा ४०५)।

ण्हं अ. १-२ वाक्यालकार और पादपूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय (कप्प, कस)।

ण्हव सक [स्नपय्] नहलाना, स्नान कराना। ण्हवेइ (कुप्र ११७)। कवकृ ण्हविज्जंत (सुपा ३३)। सकृ ण्हविऊण (पि २१३)।

ण्हवण न [स्नपन] स्नान कराना, नहलाना (कुमा)।

ण्हविअ वि [स्नपित] जिसको स्नान कराया गया हो वह (सुर २, ५८, भवि)।

ण्हा, ण्हाण अक [स्ना] स्नान करना, नहाना। ण्हाइ (हे ४, १४)। ण्हाणेइ, ण्हाणेंति (पि ३१३)। भवि. ण्हाइस्सं

णिव्वेअ पु [निर्वेद] मुक्तिकी इच्छा (सम्मत्त १६६)।

णिव्वेअ पु [निर्वेद] १ खेद, विरक्ति (कुमा, द्र ६२)। २ संसार की निर्गुणता का अवधारण—निश्चय (ज्ञान) करना (उप ६८६)।

णिव्वेअण न [निर्वेदन] १ खेद, वैराग्य। २ वि वैराग्यजनक। स्त्री °णी (ठा ४, २)।

णिव्वेट्ठ सक [निर् + वेष्टय्] १ नाश करना, क्षय करना। २ घेरना। ३ बांधना। वकृ णिव्वेट्टंत (विसे २७४५, आचा २, ३, २)।

णिव्वेढ सक [निर् + वेष्टय्] त्याग करना। णिव्वेढेइ (सुज्ज २, १)।

णिव्वेढ सक [निर् + वेष्टय्] मजबूती से वेष्टन करना। णिव्वेढिज्ज, णिव्वेढेज्ज (आचा २, ३, २, पि ३०४)।

णिव्वेढ वि [दे] नग्न, नंगा (दे ४, २८)।

णिव्वेद देखो णिव्वेअ (उत्त २६, २)।

णिव्वेर वि [निर्वैर] वैर-रहित (अच्चु ५६)।

णिव्वेरिस वि [दे] १ निर्दय, निष्करुण। २ अत्यन्त, अधिक (दे ४, ३७)।

णिव्वेल्ल अक [निर् + वेल्ल्] फुरना, सत्य ठहरना, साबित होना। णिव्वेल्लइ (पि १०७)।

णिव्वेल्लिअ वि [निर्वेल्लित] प्रस्फुरित, स्फूर्ति-युक्त (से ११, १६)।

णिव्वेस वि [निर्द्वेष] द्वेष-रहित (से १५, ६५)।

णिव्वेस पु [निर्वेश] १ लाभ, प्राप्ति (ठा ५, २)। २ व्यवस्था; 'कम्माण कप्पिआण काही कम्मतरेसु को णिव्वेस' (अच्चु १८)।

णिव्वेहणिया स्त्री [निर्वेधनिका] वनस्पति-विशेष (सूत्र २, ३, १६)।

णिव्वोढव्व वि [निर्वोढव्य] निर्वाह-योग्य, वहन करने योग्य, निभाने लायक (श्राव ४)।

णिव्वोल सक [कृ] क्रोध से होठ को मलिन करना। णिव्वोलइ (हे ४, ६६)।

णिव्वोलण न [करण] क्रोध से होठ को मलिन करना (कुमा)।

णिस° देखो णिसा (कुमा, पउम १२, ६५)।

णिस सक [नि + अस्] स्थापन करना। णिसेइ (धीप)।

णिसंत वि [निशान्त] १ श्रुत, सुना हुआ (णाया १, १, ४, उवा)। २ अत्यन्त ठंढा (आवम)। ३ रात्रि का अवसान, प्रभात, 'जहा णिसंते तवणच्चिमाली, पभासई केवलभारहं तु' (दस ६, १, १४)।

णिसस वि [नृशंस] क्रूर, निर्दय (सुपा ४०६)।

णिसग्ग पुं [निसर्ग] १ स्वभाव, प्रकृति (ठा २, १, कुप्र १४८)। २ निसर्जन, त्याग (विसे)।

णिसग्ग वि [नैसर्ग] स्वभाव से होनेवाला, स्वाभाविक (सुपा ६४८)।

णिसग्ग न [नैसर्ग] जात्यन्ध की तरह स्वभाव से अज्ञता (सूत्र २, ३, १६)।

णिसग्गिय वि [नैसर्गिक] स्वाभाविक (सण)।

णिसज्ज पु देखो णिसज्जा 'निसज्जे वियडणाए' (वव १)।

णिसज्जा स्त्री [निषद्या] १ आसन (दस ६)। २ उपवेशन, बैठना (वव ४)। देखो णिसिज्जा।

णिसट्ठ वि [निसृष्ट] १ निकाला हुआ, त्यक्त १, १६)। २ दत्त, दिया हुआ (णाया १, १—पत्र ७१)।

णिसट्ठ वि [दे] प्रचुर, बहुत (ओघ ८७)।

णिसट्ठ (अप) वि [निषण्ण] बैठा हुआ (सण)।

णिसढ पुं [निषध] १ हरिवर्ष क्षेत्र से उत्तर में स्थित एक पर्वत (ठा २, ३)। २ स्वनाम-ख्यात एक वानर, राम सैनिक (से ४, १०)। ३ बैल, सांढ (सुज्ज ४)। ४ बलदेव का एक पुत्र (निर १,५, कुप्र ३७२)। ५ देश-विशेष। ६ निषध देश का राजा (कुमा)। ७ स्वर-विशेष (हे १, २२६, प्राप्र)। °कूड न [°कूट] निषध पर्वत का एक शिखर (ठा २, ३)। °दह पुं [°द्रह] द्रह-विशेष (ज ४)।

णिसण्ण वि [निषण्ण] १ उपविष्ट, स्थित (गा १०८, ११६, उत्त २०)। २ कायोत्सर्ग का एक भेद (आव ५)।

णिसण्ण वि [निःसंज्ञ] सञ्ज्ञा-रहित (से ६, ३८)।

णिसत्त वि [दे] मनुग मनाग-उक्त (दे ४, ३०)।

णिसन्न देखो णिसण्ण (उव, णाया १, १)।

णिसम सक [नि + शमय्] सुनना। वकृ णिसमेंत (आवम)। कवकृ. णिसम्मंत (गउड) संकृ. णिसमिअ, णिसम्म (नाट. वेणी ६८, उवा, आचा)।

णिसमण न [निशमन] श्रवण, आकर्णन (हे १, २६६, गउड)।

णिसम्म अक [नि+सद्] १ बैठना। २ सोना, शयन करना। णिसम्मउ (से ६, १७)। हेकृ णिसम्मिउ (से ५, ४२)।

णिसर देखो णिसिर कवकृ निसरिज्जमाण (भग)।

णिसल्ल देखो णिस्सल्ल (श्रा ४०)।

णिसह देखो णिसढ (इक)।

णिसह देखो णिस्सह (पड्)।

णिसह सक [नि + सह्] सहन करना। णिसहइ (प्राकृ ७२)।

णिसा स्त्री [निशा] अन्धकारवाली नरक-भूमि (सूत्र १, ५, १, ५)।

णिसा [निशा] १ रात्रि, रात (कुमा, प्रासू ५५)। २ पीसने का पत्थर, शिलौट, सिलवट (उवा)। °अर पु [°कर] चन्द्र, चाँद (हे १, ८, षड्)। °अर पु [°चर] राक्षस (कप्पू, से १२, ६६)। °अरेंद पुं [°चरेन्द्र] राक्षसों का नायक, राक्षस-पति (से ७, ५६)। °नाह पुं [°नाथ] चन्द्रमा (सुपा ४१६)। °लोढ न [°लोष्ट] शिला-पुत्रक, पीसने का पत्थर, लोढा (उवा)। °वइ पु [°पति] चन्द्र, चाँद, चन्द्रमा (गउड)। देखो णिसि°।

णिसाण सक [नि + शाणय्] शान पर चढाना, पैनाना, तीक्ष्ण करना। संकृ निसाणिऊण (स १४३)।

णिसाण न [निशाण] शान, एक प्रकार का पत्थर, जिस पर हथियार तेज किया जाता है (गउड, सुपा २८)।

णिसाणिअ वि [निशाणित] शान दिया हुआ, पैनाया हुआ, तीक्ष्ण किया हुआ, पैना, धारदार, नुकीला (सुपा ५६)।

णिसाम देखो णिसम। णिसामेइ (महा)। वकृ. णिसामेंत (गुर ३ ७८)। संकृ. णिसामिऊण, णिसामित्ता (महा, उत्त २)।

त अ [तत्] इन अर्थो को बतलानेवाला अव्यय—१ कारण, हेतु (भग १५)। २ वाक्य-उपन्यास, 'त तिअसवदिमोक्ख' (हे २, १७६, षड्), 'तं मरणमणारंभे वि होइ, लच्छी उण न होइ' (गा ४२)। °जहा अ [°यथा] उदाहरण-प्रदर्शक अव्यय (आचा, अणु)।

तंआ देखो तया=तदा (गउड)।

तंट न [दे] पृष्ठ, पीठ (दे ५, १)।

तंड न [दे] लगाम मे लगी हुई लार। २ वि. मस्तक-रहित। ३ स्वर से अधिक (दे ५, १६)।

तडव (अप) देखो तड्डव। तडवहु (भवि)।

तडव अक [ताण्डवय्] नृत्य करना। तडवेंति (आवम)।

तंउव न [ताण्डव] १ नृत्य, उद्धत नाच (पाअ, जीव ३, सुपा ८६)। २ उद्धताई, 'पासंडिलुंडअइचडतडवाडवरेहि किं मुद्धे' (धम्म ८ टी।

तडविय वि [ताण्डवित] नचाया हुआ, नर्तित (गउड)।

तंडविय (अप) देखो तड्डविअ (भवि)।

तडुल पु [तण्डुल] चावल (गा ६६१)। देखो तदुल।

तत न [तन्त्र] १ देश, राष्ट्र (सुर १६, ४८)। २ शास्त्र, सिद्धान्त (उवर ५)। ३ दर्शन, मत (उप ६२२)। ४ स्वदेश-चिन्ता। ५ विष का औषध विशेष (मुद्रा १०८)। ६ सूत्र, ग्रन्थाश-विशेष, 'सुत्त भणियं तंत भणिज्जए तम्मि व जमत्थो' (विसे)। ७ विद्या-विशेष (सुपा ४६६)। °न्नु वि [°ज्ञ] तन्त्र का जानकार (सुपा ५७६)। °वाइ पुं [°वादिन्] विद्या-विशेष से रोग आदि को मिटानेवाला (सुपा ४६६)।

तत वि [तान्त] खिन्न, क्लान्त (णाया १, ४, विपा १, १)।

ततडी स्त्री [दे] करम्ब, दही और चावल का बना भोजन-विशेष (दे ५, ४)।

ततवग } पुं [तान्त्रवक] चतुरिन्द्रिय जंतु की एक जाति (सुख ३६, १४६, उत्त ३६, १४६)।
तंतवय }

ततिय पुं [तान्त्रिक] वीणा बजानेवाला (अणु)।

ततिसम न [तन्त्रीसम] तन्त्री-शब्द के तुल्य या उमसे मिला हुआ गीत, गेय काव्य का एक भेद (दसनि २, २३)।

तती स्त्री [तन्त्री] १ वीणा, वाद्य-विशेष (कप्प, औप, सुर १६, ४८)। २ वीणा-विशेष (पराह २, ५)। ३ तांत, चमडे की रस्सी (विपा १, ६, सुर ३, १३७)।

तती स्त्री [दे] चिन्ता, 'कामस्स तत्ततंति' (गा २)।

ततु पुं [तन्तु] सूत, तागा, धागा (पउम १, १३)। °अ, °ग पुं [°क] जलजन्तु-विशेष (पउम १४, १७, कुप्र २०६)। °ज, °य न [°ज] सूती कपडा (उत्त २, ३५)। °वाय पु [°वाय] कपडा बुननेवाला, जुलाहा (आ २३)। °साला स्त्री [°शाला] कपडा बुनने का घर, तांत-घर (भग १५)।

तंतुक्खोडी स्त्री [दे] तन्तुवाय का एक उपकरण (दे ५, ७)।

तंदुल देखो तडुल (पउम १२, १३८)। २ मत्स्य-विशेष (जीव १)। °वेयालिय न [°वैचारिक] जैन ग्रन्थ-विशेष (णंदि)।

तदुलेज्जग पुं [तन्दुलीयक] वनस्पति विशेष (पराण १)।

तंदूसय देखो तिंदूसय (सुर १३, १६७)।

तव पुं [स्तम्ब] तृणादि का गुच्छा (हे २, ४५, कुमा)।

तव न [ताम्र] १ धातु-विशेष, तांबा (विपा १, ६, हे २, ४५)। २ पु वर्ण-विशेष। ३ वि अरुण वर्णवाला, लाल (पराण १७, औप)। °चूल पुं [चूड] कुक्कुट, मुर्गा (सुर ३, ६१)। °वण्णी स्त्री [°पर्णी] एक नदी का नाम (कप्पू)। °सिह पुं [°शिख] कुक्कुट, मुर्गा (पाअ)।

तंवकरोड पुंन [दे] ताम्र वर्णवाला द्रव्य-विशेष (पराण १७)।

तवकिमि पुं [दे] कीट-विशेष, इन्द्रगोप (दे ५, ६, षड्)।

तवकुसुम पुन [दे] वृक्ष-विशेष, कुरुवक, कटसरैया (दे ५, ६, षड्)।

तंवक्क न [दे] वाद्य-विशेष, 'अणाहयतंवक्केसु वज्जतेसु' (ती १५)।

तंवच्छिवाडिया स्त्री [दे] ताम्र वर्ण का द्रव्य-विशेष (पराण १७)।

तंवटकारी स्त्री [दे] शेफालिका, पुष्प प्रधान लता-विशेष (दे ५, ४)।

तवरत्ती स्त्री [दे] गेहूँ में कुंकुम की छाया (दे ५, ५)।

तंवा स्त्री [दे] गौ, धेनु, गैया (दे ५, १, गा ४६०, पाअ, वज्जा ३४)।

तवाय पुं [तामाक] भारतीय ग्राम-विशेष (राज)।

तविम पुंस्त्री [ताम्रत्व] अरुणता, ईषद् रक्तता (गउड)।

तंविय न [ताम्रिक] परिव्राजक का पहनने का एक उपकरण (औप)।

तविर वि [दे] ताम्र वर्णवाला (हे २, ५६, गउड, भवि)।

तविरा [दे] देखो तंवरत्ती (दे ५, ५)।

तवुक्क न [दे] वाद्य-विशेष, 'वुक्कतंवुक्कसद्दुक्कडं' (सुपा ५०)।

तंवरेम पुं [स्तम्बेरम] हस्ती, हाथी (उप पृ ११७)।

तवेही स्त्री [दे] पुष्प-प्रधान वृक्ष-विशेष, शेफालिका (दे ५, ४)।

तवोल न [ताम्बूल] पान (हे १, १२४, कुमा)।

तवोलिअ पुं [ताम्बूलिक] १ तमोली, पान वेचनेवाला (श्रा १२)। २ पान मे होनेवाला तंवोलिआ नाग।

तवोली स्त्री [ताम्बूली] पान का गाछ (पड्, जीव ३)।

तंभ देखो थभ (षड्)।

तंस पुं [त्र्यश] तीसरा हिस्सा (पंच ५, ३७, ३६, कम्म ५, ३४)।

तंस वि [त्र्यस्र] त्रि-कोण, तीन कोनवाला (हे १, २६, गउड, ठा १, गा १०, प्राप्र, आचा)।

तक्क सक [तर्क्] तर्क करना, अनुमान करना, अटकल करना। तक्केमि (मै १३)। संक्. तक्कियाण (आचा)।

तक्क न [तक्र] मट्ठा छाछ (ओघ ८७, सुपा ५८३ उप पृ ११६)।

णिसुढिर वि [नम्र] भार से नमा हुआ (कुमा)।

णिसुण सक [नि+श्रु] सुनना, श्रवण करना। निसुणइ, णिसुणेइ, णिसुणेमि (सण, महा, सट्टि १२८)। वकृ. निसुणत, निसुणमाण सुपा १०६, सुर १२, १७४)। कवकृ. निसुणिज्जत (सुपा ४५, रयण ६४)। संकृ निसुणिउ, निसुणिऊण, णिसुणिऊण (सुपा १४, महा, पि ५८५)।

णिसुद्ध वि [दे] १ पातित, गिराया हुआ (दे ४, ३६, पाअ, से ५, ६८)।

णिसुम्भन देखो णिसुंभ = नि + शुम्भ्।

णिसूग देखो णिस्सूग (सुपा ३७०)।

णिसुड देखो णिसुढ = नि + शुम्भ्। हेकृ निसुढिउ (सुपा ३६६)।

णिसूढ देखो णिसह = नि + सह्। निसूढइ (प्राकृ ७२)।

णिसेग देखो णिसेअ (पंच ५, ४६)।

णिसेज्जा स्त्री [निषद्या] वस्त्र, कपड़ा (पव १२७ टी)।

णिसेज्जा देखो णिसज्जा (उत्त, पव ६७)।

णिसेज्झ वि [निषेध्य] निषेध-योग्य (धर्मसं ६६३)।

णिसेणि देखो णिस्सेणि (सुर १३, १६०)।

णिसेअ पु [निषेक] १ कर्म पुद्गलों की रचना-विशेष (ठा ६)। २ सेचन, सींचना, 'ता सपइ जिणवरविवदसणामयनिएण पीणिज्जउ नियदिट्ठि' (सुपा २६६), 'कात्रावि कुणति सिरिखडरसनिसेय' (सुपा २०)।

णिसेव सक [नि + सेव्] १ सेवा करना, आदर करना। २ आश्रय करना। निसेवइ, निसेवए (महा, उत्त)। वकृ णिसेवमाण (महा)। कवकृ णिसेविज्जत (ओघ ७६)। कृ निसेवणिज्ज (सुपा ३७)।

णिसेव सक [नि + सेव्] आचरना। णिसेवए (अज्झ १७६)।

णिसेवग देखो णिसेवय (सूअ २, ६, ५)।

णिसेवणा स्त्री [निषेवणा] सेवा, भजना (उत्त ३२, ३)।

णिसेवय वि [निषेवक] १ सेवा करनेवाला, सेवक। २ आश्रय करनेवाला (पुप्फ २५१)।

णिसेवा स्त्री [निषेवा] ऊपर देखो (सम्मत्त १५५, सबोध ३४)।

णिसेवि वि [निषेविन्] ऊपर देखो (स १०)।

णिसेविय वि [निषेवित] १ सेवित, आदृत (आवम)। २ आश्रित (उत्त २०)।

णिसेह सक [नि + षिध्] निषेध करना, निवारण करना। निसेहइ (हे ४, १३४)। कवकृ. निसिज्झमाण (सुपा ५७२)। हेकृ निसेहिउ (स १६८)। कृ 'निसेहियव्वा सययपि माया' (सत ३५)।

णिसेह पुं [निषेध] १ प्रतिषेध, निवारण (उव, प्रासू १८१)। २ अपवाद (ओघ ५५)।

णिसेहण न [निषेधन] निवारण (आवम)।

णिसेहणा स्त्री [निषेधना] निवारण (आव १)।

णिसेहिया देखो णिसीहिआ = नैषेधिकी। १ मुक्ति, मोक्ष। २ श्मशान-भूमि। ३ बैठने का स्थान। ४ नितम्ब, द्वार के समीप का भाग (राज)।

णिस्स वि [नि स्व] निर्धन, धन-रहित (पाअ)। °यर वि [°कर] १ निर्धन-कारक। २ कर्म को दूर करनेवाला (आचा २, १६, ६)।

णिस्सक पुं [दे] निर्भर (दे ४, ३२)।

णिस्सक वि [नि शङ्क] १ शङ्का-रहित (सूअ २, ७, महा)। २ न शङ्का का अभाव (पचा ६)।

णिस्सकिअ वि [नि शङ्कित] १ शङ्का-रहित (ओघ ५६ भा, णाया १, ३)। २ न शङ्का का अभाव (उत्त २८)।

णिस्सग वि [नि सङ्ग] सङ्ग-रहित (सुपा १४०)।

णिस्सचार वि [नि सचार] सचार-रहित, गमनागमन-वर्जित (णाया १, ८)।

णिस्सजम वि [निस्सयम] सयम-रहित (पउम २७, ५)।

णिस्सत वि [नि शान्त] प्रशान्त, अतिशय शान्त (राय)।

णिस्सद देखो णीसद (पण्ह १, १, नाट—मालती ५१)।

णिस्सदेह वि [निस्सदेह] संदेह-रहित, निश्चय, नि सशय (काल)।

णिस्सधि वि [निस्सन्धि] सन्धि-रहित, साँधा से रहित (पण्ह १, १)।

णिस्सस वि [नृशंस] क्रूर, निर्दय (महा)।

णिस्ससं वि [नि शस] श्लाघा-रहित (पण्ह १, १)।

णिस्ससय वि [नि सशय] १ सशय-रहित। २ क्रिवि नि सदेह, निश्चय (अभि १८४, आवम)।

णिस्सक्क सक [नि + ष्वष्क्] कम करना, घटाना। सकृ निस्सक्किय (आचा २, १, ७, २)।

णिस्सण पु [नि स्वन] शब्द आवाज (कुप्र २७)।

णिस्सण्ण वि [नि संज्ञ] संज्ञा-रहित (सूअ १, ५, १)।

णिस्सत्त वि [नि सत्त्व] धैर्य-रहित, सत्त्व-हीन (सुपा ३५६)।

णिस्सन्न देखो णिसण्ण (रयण ५)।

णिस्सम्म अक [निर् + श्रम्] बैठना। वकृ णिससम्मत (सि ६, ३८)।

णिस्सय पु [निश्रय] देखो णिस्सा (सबोध १६)।

णिस्सर अक [निर् + सृ] बाहर निकलना। णिस्सरइ (कप्प)। वकृ णिस्सरत (नाट—चेत ३८)।

णिस्सरण वि [नि सरण] निर्गमन, बाहर निकलना (ठा ४, २)।

णिस्सरण वि [नि शरण] शरण-रहित, त्राण-वर्जित (पउम ७३, ३२)।

णिस्सरिअ वि [दे] त्रस्त, खिसका हुआ (दे ४, ४०)।

णिस्सल्ल वि [नि शल्य] शल्य-रहित (उप ३२० टी, द्र ५७)।

णिस्सस अक [निर् + श्वस्] नि श्वास लेना। निस्ससइ, णिस्ससति (भग)। वकृ णिस्ससिज्जमाण (ठा १०)।

णिस्सह वि [नि सह] मन्द, अशक्त (हे १, १३, ६३, कुमा)।

णिस्सा स्त्री [निश्रा] १ आलम्बन, आश्रय, सहारा (ठा ५, ३)। २ अधीनता (उप १३० टी)। ३ पक्षपात (वव ३)।

णिस्साण न [निश्राण] निश्रा, अवलम्बन (पण्ह १, ३)। °पय न [°पद] अपवाद (बृह १)।

णिस्साण पुंन [दे] वाद्य-विशेष, निशान, 'वज्जिरनिस्साणतूररवगज्जो' (धर्मवि ५६)।

तडकडिअ वि [दे] अनवस्थित (षड्) ।

तडक्कार पुं [तटत्कार] चमकारा, 'तडित्-डक्कारो' (सुपा १३३) ।

तडतडा अक [तडतडाय्] तड-तड आवाज होना। वकृ. तडतडत, तडतडेंत, तड-तडयत (राज, णाया १, ६, सुपा १७६) ।

तडतडा स्त्री [तडतडा] तड-तड आवाज (स २५७) ।

तडप्फड } अक [दे] तडफना, छटपटाना,
तडफड } तडफडाना, व्याकुल होना । तड-प्फडइ (कुमा, हे ४, ३६६, विवे १०२) । तडफडसि (सुर २,१४८)। वकृ तडप्फडत, डतफडत (उप ७६८ टी, सुर १२, १६४, सुपा १७६, कुप्र २६) ।

तडफडिअ वि [दे] १ सब तरफ से चलित, तडफडाया हुआ, व्याकुल (दे ५, ६, स ५८६) ।

तडमड वि [दे] क्षुभित, क्षोभ प्राप्त (दे ५, ७) ।

तडयड वि [दे] क्रिया-शील, सदाचार-युक्त (सट्ठि १०७) ।

तडयडत देखो तडतडा ।

तडवडा स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष, आउली का पेड (दे ५, ५) ।

तडाअ } न [तडाग] तालाव, सरोवर (गा
तडाग } ११०, पि २३१, २४०) ।

तडि स्त्री [तडित्] विजली (पाअ) । °डड पु [°दण्ड] विद्युद्दंड (महा) । °केस पु [°केश] राक्षस-वशीय एक राजा, एक लंका-पति (पउम ६, ६६) । °वेअ पुं [°वेग] विद्याधर वश का एक राजा (पउम ५, १८) ।

तडिअ वि [तत] विस्तृत, फैला हुआ (पाअ, णाया १, ८—पत्र १३३) ।

तडिआ स्त्री [तडित्] बीजली (प्रामा) ।

तडिण वि [दे] विरल, अत्यल्प (से १३, ५०) ।

तडिणी स्त्री [तटिनी] नदी, तरंगिणी (सण) ।

तडिम न [तडिम] १ भित्ति, भीत। २ कुट्टिम, पाषाण आदि से वँधा हुआ भूमितल (से २, २)। ३ द्वार के ऊपर का भाग (से १२, ६०) ।

तडी स्त्री [तटी] तट, किनारा (विपा १, १, अनु ६) ।

तड्ड } सक [तन्] १ विस्तार करना। २
तड्डव } करना। तड्डइ, तड्डवइ (हे ४, १३७)। भूका—तड्डवीअ (कुमा) ।

तड्डविअ } वि [तत] विस्तीर्ण, फैला हुआ
तड्डिअ } (पाअ, महा, कुमा, सुर ३, ७२) ।

तड्डु स्त्री [तर्दु] काठ की करछी (प्राकृ २०) ।

तण सक [तन्] १ विस्तार करना। २ करना। तणइ, तणए (षड्) । कर्म. तणि-ज्जए (विसे १३८३) ।

तण न [दे] उत्पल, कमल (दे ५, १) ।

तण न [तृण] तृण, घास (प्राप्र, उव) । °इल्ल वि [°वत्] तृणवाला (गउड) । °जीवि वि [°जीविन्] घास खाकर जीनेवाला (सुपा ३७०) °राय पु [°राज] ताल-वृक्ष, ताड का पेड (गउड) । °विंटय, °वेंटय पुं [°वृन्तक] एक क्षुद्र जतु-जाति, त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (राज) ।

तणग वि [तृणक] तृण का बना हुआ (आचा २, २, ३, १४) ।

तणय पुं [तनय] पुत्र, लडका (सुपा २४७, ४२४) ।

तणय वि [दे] सवन्धी, 'मह तणए' (सुर ३, ८७, हे ४, ३६१) ।

तणयमुद्दिआ स्त्री [दे] अगुलीयक, अगूठी (दे ५, ६) ।

तणया स्त्री [तनया] लडकी, पुत्री (कुमा) ।

तणरासि } वि [दे] प्रसारित फैलाया
तणरासिअ } हुआ (दे ५, ६) ।

तणवरडी स्त्री [दे] उडुप, डोंगी, छोटी नौका (दे ५, ७) ।

तणसोल्लि } स्त्री [दे] १ मल्लिका, पुष्प-
तणसोल्लिया } प्रधान वृक्ष-विशेष (दे ५, ६, णाया १, १६) । २ वि. तृण-शून्य (षड्) ।

तणहार } पुं [तृणहार] १ त्रीन्द्रिय जन्तु
तणहारय } की एक जाति (उत्त ३६, १३८) । २ वि. घास काटकर वेचनेवाला, घसियारा (मणु १४६) ।

तणिअ वि [तत] विस्तीर्ण, फैला हुआ (कुमा) ।

तणु वि [तनु] १ पतला (जी ७) । २ कृश, दुर्बल (पचा १६) । ३ अल्प, थोडा (दे ३, ५१) । ४ लघु, छोटा (जीव ३) । ५ सूक्ष्म (कप्प) । ६ स्त्री शरीर, काय (दे २, ५६, जी ८) । °तणुई, तणू स्त्री [°तन्वी] ईषत्प्राग्भारा-नामक पृथ्वी (ठा ८, इक) । °पज्जत्ति स्त्री [°पर्याप्ति] उत्पन्न होते समय जीव द्वारा ग्रहण किये हुए पुद्गलों को शरीर रूप मे परिणत करने की शक्ति (कम्म ३, १२) । °ब्भव वि [°उद्भव] १ शरीर से उत्पन्न । २ पुं लडका (भवि) । °ब्भवा स्त्री [°उद्भवा] लडकी (भवि) । °भू पुंस्त्री [°भू] १ लडका । २ लडकी (प्राक) । °य वि [°ज] देखो °ब्भव (उत्त १४) । °रुह पुंन [°रुह] १ केश, बाल (रंभा) । २ पु. पुत्र, लडका (भवि) । °वाय पुं [°वात] सूक्ष्म वायु-विशेष (ठा ३, ४) ।

तणुअ वि [तनुक] ऊपर देखो (पउम १६, ७, आव ५, भग १५, पाअ) ।

तणुअ सक [तनय्] १ पतला करना । २ कृश करना, दुर्वल करना । तणुएइ (गा ६१, काप्र १७४) ।

तणुआ } अक [तनुकाय्] दुर्बल होना,
तणुआअ } कृश होना । तणुआइ, तणुमा-अइ, तणुआअए (गा ३०, २६२, ५६) वकृ. तणुआअत (गा २६८) ।

तणुआअरअ वि [तनुत्वकारक] कृशता उपजानेवाला, दौर्बल्य-जनक (गा ३४८) ।

तणुइअ वि [तनूकृत] दुर्बल किया हुआ, कृश किया हुआ (गा १२२, पउम १६, ४) ।

तणुई स्त्री [तन्वी] १ पृथ्वी-विशेष, सिद्ध-शिला (सम २२) । २ पतला शरीरवाली, कृशांगी, कोमलांगी स्त्री (षड्) ।

तणुईकय वि [तनूकृत] पतला किया हुआ (पाअ) ।

तणुग देखो तणुअ (जं २, ३) ।

तणुज देखो तणु-य (धर्मवि १२८) ।

तणुजम्म पुं [तनुजन्मन्] पुत्र, लडका (धर्मवि १४८) ।

तणुभव देखो तणु-ब्भव (धर्मवि १४२) ।

णिहाण न [निधान] वह स्थान जहां पर धन आदि गाडा गया हो, खजाना, भण्डार (उवा, गा ३१८, गउड)।

णिहाय पुं [दे] १ स्वेद, पसीना (दे ४, ४९)। २ समूह, जत्था (दे ४, ४९, से ४, ३८, स ४४९, भवि, पाम्र, गउड, सुर ३, २३१)।

णिहाय पुं [निघात] आघात, आस्फालन (से १५, ७०, महा)।

णिहाय देखो णिहा = नि + धा, नि + हा।

णिहाय पु [निह्राद] अव्यक्त शब्द (सुख ४, ६)।

णिहार पुं [निहार] निर्गम (पण्ह १, ५, ठा ८)।

णिहारिम न [निर्हारिम] जिसके मृतक शरीर को बाहर निकालकर सस्कार किया जाय उसका मरण (भग)। २ वि दूर जानेवाला, दूर तक फैलनेवाला (पण्ह २, ५)।

णिहाल देखो णिभाल। णिहालेहि (स १००)। वकृ णिहालंत, णिहालयत (उप ६८८ टी, ६८६ टी)। संकृ. णिहालेउं (गच्छ १)। कृ. णिहालेयव्व (उप १००७)।

णिहालण न [निभालन] निरीक्षण, अवलोकन (उप पृ ७२, सुर ११, १२, सुपा २३)।

णिहालिअ वि [निभालित] निरीक्षित (पाम्र, स १००)।

णिहि वि [निधि] १ खजाना, भडार (णाया १, १३)। २ धन आदि से भरा हुआ पात्र। (हे १, ३५, ३, १६, ठा ५, ३), 'अच्छेरंव णिहिं विम्र सग्गे रज्ज व अमग्रपाणं व' (गा १२५)। ३ चक्रवर्ती राजा की संपत्ति-विशेष, नैसर्प आदि नव निधि (ठा ९)। °नाह पुं [°नाथ] कुवेर, धनेश (पाम्र)।

णिहि पुंस्री [निधि] लगातार नव दिन का उपवास (संबोध ५८)।

णिहिअ वि [निहित] स्थापित (हे २, ९९, प्राप्र)।

णिहिण्ण वि [निर्भिन्न] विदारित (अच्चु १९)।

णिहित्त देखो णिहिअ (गा ५६५, काप्र ६०६, प्राप्र)।

णिहिप्पंत देखो णिहा = नि + धा।

णिहिल वि [निखिल] सब, सकल (अच्चु ६, आरा ५५)।

णिहिल्लय देखो णिहिअ (सुख २, ४३)।

णिही स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष (राज)।

णिहीण वि [निहीन] न्यून (कुप्र ४५४)।

णिहीण वि [निहीन] तुच्छ, खराब, हलका, क्षुद्र, 'अत्थि निहीणे देहे कि रागनिवघणं तुज्झ ?' (उप ७२८ टी)।

णिहु स्त्री [स्निहु] औषधि-विशेष (जीव १)।

णिहुअ वि [निभृत] १ गुप्त, प्रच्छन्न, छिपा हुआ (से १३,१५, महा)। २ विनीत, अनुद्धत (से ४, ५६)। ३ मन्द, धीमा (पाम्र, महा)। ४ निश्चल, स्थिर (उत्त १९)। ५ असम्भ्रान्त, संभ्रमरहित (दस ६)। ६ धृत, धारण किया हुआ। ७ निर्जन, एकान्त। ८ अस्त होने के लिए उपस्थित (हे १, १३१)। ९ उपशान्त (पण्ह २, ५)।

णिहुअ वि [दे] १ व्यापार रहित, अनुद्युक्त, निश्चेष्ट (दे ४, ५०, से ४, १, सूम्र १, ८, बृह ३)। २ तूष्णीक, मौन (दे ४, ५०, सुर ११, ८४)। ३ न सुरत, मैथुन (दे ४, ५०, षड्)।

णिहुअण देखो णिहुवण (गा ४८३)।

णिहुआ स्त्री [दे] कामिता, संभोग के लिए प्रार्थित स्त्री (दे ४, २६)।

णिहुण न [दे] व्यापार, धन्धा (दे ४. २६)।

णिहुत्त वि [दे] निमग्न, डूबा हुआ (पउम १०२, १९७)।

णिहुत्थिभगा स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३५)।

णिहुव सक [कामय्] संभोग का अभिलाष करना। णिहुवइ (हे ४, ४४)।

णिहुवण न [निधुवन] सुरत, संभोग (कप्पू; काप्र १९४), 'णिहुवणचुविग्रणाहिकूविग्रा' (मै ४२)।

णिहूअ न [दे] १ सुरत, मैथुन (दे ४,२६)। २ वि. अकिञ्चित्कर (विसे २६१७)। देखो णीहूय।

णिहेलण न [दे] १ गृह, घर, मकान (दे ४, ५१, हे २, १७४, कुमा, उप ७२८ टी, स १८०, पाम्र; भवि)। २ जघन, स्त्री के कमर के नीचे का भाग (दे ४, ५१)।

णिहो अ [न्यग्] नीचे (सूम्र १, ५,१, ५)।

णिहोड सक [नि + वारय्] निवारण करना, निषेध करना।

णिहोडइ (हे ४, २२)। वकृ. णिहोडत (कुमा)।

णिहोड सक [पातय्] १ गिराना। २ नाश करना। णिहोडइ (हे ४, २२)।

णिहोडिय वि [पातित] १ गिराया हुआ (दस ३)। २ विनाशित (उव ५६७ टी)।

णी सक [गम्] जाना, गमन करना। णीइ (हे ४, १६२, गा ४९ अ) भवि णीहिमि (गा ७४९)। वकृ. णित, णेंत (से ३, २, गउड, गा ३३४, उप २६४ टी, गा ४२०)। संकृ णिंतूण, नीउ (गउड, विसे २२२)।

णी सक [नी] १ ले जाना। २ जानना। ३ ज्ञान कराना, वतलाना। णेइ, णयइ (हे ४, ३३७, विसे ९१४)। वकृ, णेंत (गा ५०, कुमा)। कवकृ णिज्जत, णीअमाण (गा ६८२ अ, से ६, ८१, सुपा ४७६)। सकृ. णइअ, णेउ, णेउआण, णेऊण (नाट—मृच्छ २६४, कुमा, षड्, गा १७२)। हेकृ णेउ (गा ४६७, कुमा)। कृ. णेअ, णेअव्व (पउम ११६, १७, गा ३३९)। प्रयो. णेयावइ (सण)।

णीअअ वि [दे] समीचीन, सुन्दर (पिंग)।

णीआरण न [दे] वलि-घटी, वली रखने का छोटा कलश (दे ४, ४३)।

णीइ स्त्री [नीति] १ न्याय, उचित व्यवहार, न्याय्य व्यवहार (उप १८६, महा)। २ नय, वस्तु के एक धर्म को मुख्यतया माननेवाला मत (ठा ७)। °सत्थ न [°शास्त्र] नीति-प्रतिपादक शास्त्र (सुर ६, ९५, सुपा ३४०, महा)।

णीका स्त्री [नीका] कुल्या, नहर, सारणि (कुमा)।

णीखय वि [नि क्षत] निखिल, सपूर्ण, 'नय नीखयवक्खाण तीरइ काऊण सुत्तस्स' (विचार ८)।

णीचअ न [नीचैस्] १ नीचे, अध (हे १, १५४)। २ वि. नीचा, अध -स्थित (कुमा)।

णीच्छूढ देखो णिच्छूढ (णादि)।

तब्भव पु [तद्भव] वही जन्म, इस जन्म के समान पर-जन्म। °मरण न [°मरण] वह मरण, जिससे इस जन्म के समान हो परलोक में भी जन्म हो, यहाँ मनुष्य होने से आगामी जन्म मे भी जिससे मनुष्य हो ऐसा मरण (भग २१, १)।

तब्भारिय पु [तद्भार्य] दास, नौकर, कर्मचारी, कर्मकर (भग ३, ७)।

तब्भाग्गिय पु [तद्भागिक] ऊपर देखो (भग ३, ७)।

तब्भूम वि [तद्भौम] उसी भूमि मे उत्पन्न (बृह १)।

तब्भत्ति अ [दे] शीघ्र, जल्दी (प्राकृ ८१)।

तम अक [तम्] १ खेद करना। २ सक इच्छा करना। तमइ (प्राकृ. ६९)।

तम पुं [दे] शोक, अफसोस (दे ५, १)।

तम पुन [तमस्] १ अन्धकार। २ अज्ञान (हे १, ३२, पि ४०९, औप, धर्म २)। °तम पु [°तम] सातवीं नरक-पृथिवी का जीव (कम्म ५, पंच ५)। °तमप्पभा स्त्री [°तमःप्रभा] सातवीं नरक-पृथिवी (अणु)। °तमा स्त्री [°तमा] सातवीं नरक-पृथिवी (सम ६६, ठा ७)। °तिमिर न [°तिमिर] १ अन्धकार (बृह ४)। २ अज्ञान (पडि)। ३ अन्धकार-समूह (बृह ४)। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] छठवीं नरक-पृथिवी (पण्ण १)।

तमग पु [तमङ्ग] मतवारण, घर का वरण्डा, छज्जा (सुर १३, १५९)।

तमंधयार पु [तमोन्धकार] प्रबल अन्धकार (पउम १७, १०)।

तमण न [दे] चूल्हा, जिसमे आग रखकर रसोई की जाती है वह (दे ५, २)।

तमणि पुस्त्री [दे] १ भुज, हाथ। २ भूर्ज, वृक्ष-विशेष की छाल, भोजपत्र (दे २, २०)।

तमय पु [तमक] १ चौथा नरक का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र १०)। २ पांचवीं नरक-भूमि का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ११)।

तमस न [तमस्] अन्धकार, 'तमसाउ मे दिसा य' (पउम ३६, ८)।

तमस वि [तामस] अन्धकारवाला (दस ५, १, २०)।

तमस देखो **तम** = तमस्, 'अतरिओ वा तमसे वा न वदई, वदई उ दीसतो' (पव २)।

तमसई स्त्री [तमस्वती] घोर अन्धकारवाली रात (बृह १)।

तमा स्त्री [तमा] १ छठवीं नरक-पृथिवी (सम ६६, ठा ७)। २ अधोदिशा (ठा १०)।

तमाड सक [भ्रमय्] घुमाना, फिराना। तमाडइ (हे ४, ३०)। वकृ. **तमाडत** (कुमा)।

तमाल पुं [तमाल] १ वृक्ष-विशेष (उप १०३१ टी, भत्त ४२)। २ न तमाल वृक्ष का फूल (से १, ६३)।

तमिस पु [तमिस्र] पाँचवाँ नरक का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ११)।

तमिस न [तमिस्र] १ अन्धकार (सूअ १, ५, १)। °गुहा स्त्री [°गुहा] गुफा-विशेष (इक)।

तमिसंधयार पु [तमिस्रान्धकार] प्रबल अन्धकार, घोर अंधेरा (सूअ १, ५, १)।

तमिस्स देखो **तमिस** (दे २, २६)।

तमी स्त्री [तमी] रात्रि, रात (गउड)।

तमुक्काय देखो **तमुक्काय** (भग ६, ५—पत्र २, ६८)।

तमुक्काय पु [तमस्काय] अंधकार-प्रचय (ठा ४, २)।

तमुय वि [तमस्] १ जन्मान्ध, जात्यन्ध। २ अत्यन्त अज्ञानी (सूअ २, २)।

तमोकसिय वि [तमःकाषिक] प्रच्छन्न क्रिया करनेवाला (सूअ २, २)।

तम्म अक [तम्] खेद करना। (गा ४८३)।

तम्म देखो **तम** = तम्। तम्मइ (प्राकृ ६९)।

तम्मण वि [तन्मनस्] तल्लीन, तच्चित्त (विपा १, २)।

तम्मय वि [तन्मय] १ तल्लीन, तत्पर। २ उसका विकार (पण्ह १, १)।

तम्मि न [दे] वस्त्र, कपडा (गउड)।

तम्मिर वि [तमिन्] खेद करनेवाला (गा ५८९)।

तय वि [तत] विस्तार-युक्त (दे १, ४९, से २, ३१, महा)। २ न वाद्य-विशेष (ठा २, २)।

तय न [त्रय] तीन का समूह, त्रिक, 'कालतए वि न मय' (चउ ४५, श्रा २८)।

तय° देखो **तया** = तदा। °प्पभिइ अ [°प्रभृति] तब से (स ३१८)।

तय° देखो **तया** = त्वच्। °क्खाय वि [°खाद] त्वचा को खानेवाला (ठा ४, १)।

तया अ [तदा] उस समय (कुमा)।

तया स्त्री [त्वच्] १ त्वचा, छाल, चमडी (सम ३९)। २ दालचीनी (भत्त ८१)। °मंत वि [°मत्] त्वचा वाला (णाया १, १)। °विस पुं [°विष] सर्प की एक जाति (जीव १)।

तयाणंतर न [तदनन्तर] उसके बाद (औप)।

तयाणि } **तयाणिं** } अ [तदानीम्] उस समय (पि ३५८, हे १, १०१)।

तयाणुग वि [तदनुग] उसका अनुसरण करनेवाला (सूअ १, १, ४)।

तर अक [तृ] कुशल रहना, नीरोग रहना। तरई (पिंड ४१७)।

तर अक [त्वर्] त्वरा होना, जल्दी होना, तेज होना। तर (विसे २६०१)।

तर अक [शक्] समर्थ होना, सकना। तरइ (हे ४, ८६)। वकृ. **तरंत** (ओघ ३२४)।

तर सक [तृ] तैरना, तरइ (हे ४, ८६)। कर्म तरिज्जइ, तीरइ (हे ४, २५०, गा ७१)। वकृ **तरंत, तरमाण** (पाअ, सुपा १८२)। हेकृ **तरिउं तरीउं** (णाया १, १४, हे २, १९८)। कृ **तरिअव्व** (श्रा १२, सुपा २७९)।

तर न [तरस्] १ वेग। २ बल, पराक्रम। °मल्लि वि [°मल्लिन्] १ वेगवाला। २ बलवाला। °मल्लिहायण वि [°मल्लिहायन] तरुण, युवा (औप)।

तरंग पु [तरङ्ग] १ कल्लोल, वीचि, लहर (पण्ह १, ३, औप)। °णंदण न [°नन्दन] नृप-विशेष (दंस ३)। °मालि पुं [°मालिन्] समुद्र, सागर (पाअ)। °वई स्त्री [°वती] १ एक नायिका। २ कथा-ग्रन्थ-विशेष (दस ३)।

तरंगलोला स्त्री [तरङ्गलोला] वप्पभट्टिसूरि-कृत एक अद्भुत प्राकृत जैन कथा-ग्रन्थ (सम्मत्त १३८)।

णीलुक्क सक [गम्] जाना, गमन करना। णीलुक्कइ (हे ४, १६२)।

णीलुप्पल न [नीलोत्पल] नील रंग का कमल (हे १, ८४, कुमा)।

णीलुय पुं [दे] अश्व की एक उत्तम जाति (सम्मत्त २१६)।

णीलोभास पु [नीलावभास] १ ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३)। २ वि. नीलच्छाय, जो नीला मालूम देता हो (णाया १, १)।

णीव पुं [नीप] वृक्ष-विशेष, कदम्ब का पेड (हे १, २३४, कप्प णाया १, ९)।

णीवार पु [नीवार] वृक्ष-विशेष, तिन्नी का पेड (गउड)।

णीवार पुं [नीवार] व्रीहि-विशेष (सूत्र १, ३, २, १६)।

णीवी स्त्री [नीवी] मूल-धन, पूँजी। २ नारा, इजारबन्द (षड्, कुमा)।

णीसंक देखो णिस्संक = निःशंक (गा ३४५, कुमा)।

णीसक पु [दे] वृषभ, बैल (षड्)।

णीसकिअ देखो णिस्सकिअ (विसे ५६२, सुर ७, १५५)।

णीसख वि [नि संख्य] सख्या-रहित, असख्य (सुपा ३५५)।

णीसचार देखो णिस्सचार (पउम ३२, १)।

णीसद पुं [निःष्यन्द] रस-स्नुति, रस का झरन (गउड)।

णीसदिअ वि [नि.ष्यन्दित] झरा हुआ, टपका हुआ (पाअ)।

णीसदिर वि [नि'ष्यन्दितृ] झरनेवाला, टपकनेवाला (सुपा ५६)।

णीसपाय वि [दे] जहाँ जनपद परिश्रान्त हुआ हो वह (दे ४, ४२)।

णीसट्ठ वि [नि सृष्ट] १ विमुक्त (पराह १, १ - पत्र १८)। २ प्रदत्त (बृह २)। ३ क्रिवि. अतिशय, अत्यन्त, 'णीसट्ठमचेयणो ए वा झरइ' (उव)।

णीसण पुं [नि'स्वन] आवाज, शब्द, ध्वनि (सुर १३, १८२, कुप्र ५६)।

णीसणिआ } स्त्री [दे] नि श्रेणि, सीढी (दे
णीसणी } ४, ४३)।

णीसत्त वि [नि सत्त्व] सत्त्व-हीन, बल-रहित (पउम २१, ७५, कुमा)।

णीसद्द वि [नि शब्द] शब्द-रहित (दे ७, २८, भवि)।

णीसर अक [रम्] क्रीडा करना, रमण करना। णीसरइ (हे ४, १६८) कृ णीसरणिज्ज (कुमा)।

णीसर अक [निर् + सृ] बाहर निकलना। णीसरइ (हे ४, ७९)। वकृ नीसरत (ओघ ४५८ टी)।

णीसरण न [नि सरण] फिसलन, रपटन (वव ४)।

णीसरण न [नि सरण] निर्गमन (से ९, १८)।

णीसरिअ वि [नि सृत] निर्गत, निर्यात (सुपा २४७)।

णीसल वि [नि शल] १ निश्चल, स्थिर। २ वक्रता-रहित, उत्तान, सपाट, 'नीसलतड्डियचदायएहि मडियचउक्कियादेस' (सुर ३,७२)।

णीसल्ल वि [नि शल्य] शल्य-रहित (भवि)।

णीसव सक [नि + श्रावय्] निर्जरा करना, क्षय करना। वकृ. नीसवमाण (विसे २७४६)।

णीसवग देखो णीसवय (श्रावम)।

णीसवत्त वि [नि सपत्न] शत्रु-रहित, विपक्ष-रहित (मुच्छ ८, पि २७६)।

णीसवय वि [नि.श्रावक] निर्जरा करनेवाला (विसे २७४६)।

णीसस अक [निर् + श्वस्] नीसास लेना, श्वास को नीचा करना। णीससइ (षड्)। वकृ णीससत, णीससमाण (गा ३३, कुप्र ४३, आचा २, २, ३)। संकृ. णीससिअ, णीससिऊण (नाट, महा)।

णीससण न [नि श्वसन] नि श्वास (कुमा)।

णीससिअ न [नि श्वसित] नि श्वास (से १, ३८)।

णीसह वि [नि.सह] मन्द, अशक्त (हे १, १३, कुमा)।

णीसह वि [नि'शाख] शाखा-रहित (गा २३०)।

णीसा स्त्री [दे] पीसने का पत्थर (दस ५, १)।

णीसा देखो णिस्सा (कप्प)।

णीसाइ वि [नि स्वादिन्] स्वाद-रहित (प्रवि १०)।

णीसाण देखो णिस्साण = (दे) धर्मवि ८०)।

णीसामण्ण } वि [नि सामान्य] १ असा-
णीसामन्न } धारण (गउड, सुपा ६१, हे २, २१२)। २ गुरु (पाअ)।

णीसार सक [निर् + सारय्] बाहर निकालना। णीसारइ (भवि)। कर्म नीसारिज्जइ (कुप्र १४०)।

णीसार पु [दे] मण्डप (दे ४, ४१)।

णीसार वि [नि सार] सार-रहित, फल्गु (से ३, ४८)।

णीसारण न [नि सारण] निष्कासन, बाहर निकालना (सुर १५, २०३)।

णीसारय वि [नि सारक] बाहर निकालने वाला (से ३, ४८)।

णीसारिय वि [नि सारित] निष्कासित (सुर ५, १८८)।

णीसास देखो णिस्सास (हे १, ९३, कुमा, प्राप्र)।

णीसास } वि [नि श्वास, °क] नि श्वास
णीसासय } लेनेवाला (विसे २७१५,२७१४)।

णीसाहार देखो णिस्साहार, "नीसाहारा य पडइ भूमीए' (सुर ७, २३)।

णीसित्त वि [निष्पिक्त] अत्यन्त सिक्त (षड्)।

णीसीमिअ वि [दे] निर्वासित, देश-बाहर किया हुआ (दे ४, ४२)।

णीसेयस देखो णिस्सेयस (जीव ३)।

णीसेणि स्त्री [नि श्रेणि] सीढी (सुर १३, १५८)।

णीसेस देखो णिस्सेस (गउड, उव)।

णीहट्टु अ निकाल कर (आचा २, ६, २)।

णीहट्टु अ [नि + सृत्य] बाहर निकल कर (आचा २, १, १०, ४)।

णीहड वि [निर्हृत] १ निर्गत, निर्यात (आचा २, १, १)। २ बाहर निकाला हुआ (बृह १, कस)।

णीहडिया स्त्री [निर्हृतिका] अन्य स्थान में ले जाया जाता द्रव्य (बृह २, सू० १८)। गु० भाणु ।

तलहट्ट सक [सिच्] सींचना। तलहट्टइ, तलहट्टए (सुपा ३६३)। वकृ तलहट्टत (सुपा ३६३)।

तलहट्टिया स्त्री [दे] पर्वत का मूल, पहाड के नीचे की भूमि, तलहटी, तराई, गुजराती में—'तळेटी' (सम्मत्त १३७)।

तलाई स्त्री [तडागिका] छोटा तालाव (कुमा)।

तलाग } न [तड़ाग] तालाव, सरोवर (ग्रौप, तलाय } हे १, २०३, प्राप्र, णाया १, ८, उव)।

तलार पुं [दे] नगर-रक्षक, कोतवाल (दे ५, ३, सुपा २३३, ३६१, षड्, कुप्र १५५)।

तलारक्ख पु [दे तलारक्ष] ऊपर देखो (श्रा १२)।

तलाव देखो तलाग (उवा; पि २३१)।

तलिअ वि [तलित] भूना हुआ, तला हुआ (विपा १, २)।

तलिआ } न [दे] उपानह, जूता, (ओघ तलिगा } ३६, ६८, बृह १)।

तलिण वि [तलिन] १ प्रतल, सूक्ष्म, वारीक (पगह १, ४, ग्रौप, दे ५, ६)। २ तुच्छ, क्षुद्र (से १०, ७)। ३ दुर्बल (पाग्र)।

तलिम पुन [दे] १ शय्या, विछौना (दे ५, २०, पाग्र, णाया १, १६—पत्र २०१, २०२, गउड)। २ कुट्टिम, फरस-बन्द जमीन (दे ५, २०, पाग्र)। ३ घर के ऊपर की भूमि। ४ वास-भवन, शय्या-गृह। ५ भ्राष्ट्र, भूनने का भाजन—वरतन (दे ५, २०)।

तलिमा स्त्री [तलिमा] वाद्य-विशेष (विसे ७८ टी, णदि टी)।

तलुण देखो तरुण (णाया १, १६, राय; वा १५)।

तलेर [दे] देखो तलार (भवि)।

तल्ल न [दे] १ पल्वल, छोटा तालाव (दे ५, १६)। २ तृण-विशेष, वरू (दे ५, १६, पगह २, ३)। ३ शय्या, विछौना (दे ५, १६, षड्)।

तल्लक पुं [तल्लक] सुरा-विशेष (राज)।

तल्लड न [दे] शय्या, विछौना (दे ५, २)।

तल्लिच्छ वि [दे] तत्पर, तल्लीन, (दे ५, ३, सुर १, १३, पाग्र)।

तल्लेस } वि [तल्लेश्य] उसी मे जिसका तल्लेस्स } अध्यवसाय हो, तल्लीन, तदासक्त (विपा १, २, राज)।

तल्लोविल्लि स्त्री [दे] तडफडना तडफना, व्याकुल होना, 'थोडइ जलि जिम मच्छलिया तल्लोविल्लि करत' (कुप्र ८६)।

तव अक [तप्] १ तपना, गरम होना। २ सक. तपश्चर्या करना। तवइ (हे १, १३१, गा २२४)। भूका. तविसु (भग)। वकृ. तवमाण (श्रा २७)।

तव सक [तापय्] गरम करना। तवेइ (भग)।

तव पुन [तपस्] तपस्या, तपश्चर्या (सम ११, नव २६, प्रासू २८)। °गच्छ पु [गच्छ] जैन मुनियों की एक शाखा, गण-विशेष (संति १८)। °गण पु [°गण] पूर्वोक्त ही अर्थ (द्र ७०)। °चरण, °चरण न [°चरण] १ तपश्चर्या, तप -करण (सूत्र १, ५, १, उप पृ ३६०, ग्रभि १४७)। २ तप का फल, स्वर्ग का भोग (णाया १, ६)। °चरणि वि [°चरणिन्] तपस्या करनेवाला (ठा ५, ३)। देखो तवो°।

तव देखो थव (हे २, ४६, षड्)।

तव देखो थुण। तवइ (प्राकृ ६७)।

तवग्ग पु [तवर्ग] 'त' से लेकर 'न' तक पाँच अक्षर। °पविभत्ति न [°प्रविभक्ति] नाट्य-विशेष (राय)।

तवण पुं [तपन] १ सूर्य, सूरज (उप १०३१ टी, कुप्र २१५)। २ रावण का एक प्रधान सुभट (से १३, ८५)। ३ न. शिखर-विशेष (दीव)।

तवण पुं [तपन] तीसरी नरक-भूमि का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ८)। °तणया स्त्री [तनया] तापी नदी (हम्मीर १५)।

तवणा स्त्री [तपना] ग्रातापना (सुपा ४१३)।

तवणिज्ज न [तपनीय] सुवर्ण, सोना (पगह १, ४, सुपा ३६)।

तवणिज्ज पुंन [तपनीय] एक देव-विमान (देवेन्द्र १३२)।

तवणी स्त्री [दे] १ भक्ष्य, भक्षण-योग्य कण आदि (दे ५, १, सुपा ५४८, वज्जा ६२)। २ धान्य को खेत मे काटकर भक्षण योग्य वनाने की क्रिया (सुपा ५४६)। ३ तवा, पूग्रा ग्रादि पकाने का पात्र (दे २, ५६)।

तवणीअ देखो तवणिज्ज (सुपा ४८)।

तवमाण देखो तव = तप।

तवय वि [दे] व्यापृत, किसी कार्य में लगा हुआ (दे ५, २)।

तवय पु [तपक] तवा, भूनने का भाजन (विपा १, ३ सुपा ११८, पाग्र)।

तवस्मि देखो तवस्सि, 'पयमित्तंपि न कप्पइ इत्तो तवसीए ज गंतु' (धर्मवि ५३, १६)।

तवस्सि वि [तपस्विन्] १ तपस्या करनेवाला (सम ५१, उप ८३३ टी)। २ पुं साधु, मुनि, ऋषि (स्वप्न १८)।

तविअ वि [तप्त] तपा हुआ, गरम (हे २, १०५, पाग्र)।

तविअ वि [तापित] १ गरम किया हुआ। २ संतापित; 'एयाए कौ न तविग्रो, जयम्मि लच्छीए मच्छंद' (सुपा २०४, महा; पिंग)।

तविअ वि [तपित] तीसरी नरक-भूमि का एक नरक स्थान (देवेन्द्र ८)।

तविआ स्त्री [तापिका] तवा का हाथा (दे १, १६३)।

तवु देखो तउ (पउम ११८, ८)।

तवो देखो तओ (रंभा)।

तवो° देखो तव = तपस्। °कम्म न [°कर्मन्] तप -करण (सम ११)। °धण पुं [°धन] ऋषि, मुनि (प्रारू)। °धर पुं [°धर] तपस्वी, मुनि (पउम २०, १६५, १०३, १०८)। °वण न [°वन] ऋषि का ग्राश्रम (उप ७४५, स्वप्न १६)।

तव्वणिय वि [दे] सौगत, बौद्ध, बुद्ध-दर्शन का अनुयायी, 'तव्वणियाण विर्य विसयसुह-कुसत्थभावणाघणिय' (विसे १०४१)।

तव्वन्निग वि [दे तृतीयवर्णिक] तृतीय आश्रम में स्थित (उप पृ २६८)।

तव्विह वि [तद्विध] उसी प्रकार का (भग)।

तस अक [त्रस्] डरना, त्रास पाना। तसइ (हे ४, १६८)। कृ तसियव्व (उप ३३६ टी)।

तस पुं [त्रस] १ स्पर्श-इन्द्रिय से अधिक इन्द्रियवाला जीव, द्वीन्द्रिय आदि प्राणी (जीव

णेअव्व देखो णी = नी।

णेआइअ } वि [नैयायिक, न्याय्य] न्याय
णेआउअ } से अबाधित, न्यायानुगत, न्यायोचित, 'णेआइअस्स मग्गस्स दुट्ठे अवयरई बहु' (सम ५१, औप, पण्ह २, १)।

णेआउय } वि [नेतृ] १ ले जानेवाला
णेउ } (सूअ १, ८, ११)। २ प्रणेता, रचयिता (सूअ १, ६, ७)।

णेआवण न [नायन] अन्य-द्वारा नयन, पहुँचाना (उप ७४६)।

णेआविअ वि [नायित] अन्य द्वारा ले जाया गया, पहुँचाया हुआ (स ४२, कुप्र २०७)।

णेउ वि [नेतृ] नेता, नायक (पउम १४, ६२, सूअ १, ३, १)।

णेउआण } देखो णी = नी।
णेउ }

णेउड्ढ पु [दे] सद्भाव, शिष्टता (दे ४, ४४)।

णेउण न [नैपुण] निपुणता, चतुराई (अभि १३२)।

णेउणिअ वि [नैपुणिक] १ निपुण, चतुर (ठा ६)। २ न. अनुप्रवाद-नामक पूर्व-ग्रन्थ की एक वस्तु (विसे २३६०)।

णेउणिअ देखो णेउण्ण (दस ६, २, १३)।

णेउण्ण } न [नैपुण्य] निपुणता, चतुराई
णेउन्न } (दस ६, २, सुपा २६३)।

णेउर न [नूपुर] स्त्री के पाँव का एक आभूषण, पायल (हे १, १२३, गा १८८)।

णेउरिल्ल वि [नूपुरवत्] नूपुरवाला (पि १२६, गउड)।

णेऊण } देखो णी = नी।
णेंत }

णेंत देखो णी = गम्।

णेक्कंत देखो णिक्कंत (गा ११)।

णेग देखो णेअ = नैक (कुमा, पण्ह १, ३)।

णेगम पु [नैगम] १ वस्तु के एक अंश को स्वीकारनेवाला पक्ष-विशेष, नय-विशेष (ठा ७)। २ वणिक्, व्यापारी, 'जिणधम्मभाविएणं, न केवलं धम्मओ धणाओवि। नेगमअडहियसहस्सो, जेण कओ अप्पणो सरिसो' (श्रा २७)। ३ न व्यापार का स्थान (आचा २, १, २)।

णेगुण्ण न [नैर्गुण्य] निर्गुणता, निःसारता (भत्त १६३)।

णेचइय पुं [नैचयिक] धान्य आदि का थोकबन्द व्यापारी (वव ४)।

णेच्छइअ वि [नैश्चयिक] निश्चयनय-सम्मत, निरुपचरित, शुद्ध (विसे २८०)।

णेच्छंत वि [नेच्छत्] नहीं चाहता हुआ (हेका ३०६)।

णेच्छिय वि [नैच्छिक] इच्छा का अविषय, अनभिलषित (जीव ३)।

णेट्ठिअ वि [नैष्ठिक] पर्यन्त-वर्ती (पण्ह २, ३)।

णेड देखो णिड्ड (कुमा, हे १, १०६)।

णेडाली स्त्री [दे] सिर का भूषण-विशेष (दे ४, ४३)।

णेड्ड देखो णिड्ड (हे २, ९९, प्राप्र, षड्)।

णेड्ढरिआ स्त्री [दे] भाद्रपद मास की शुक्ल दशमी का एक उत्सव (दे ४, ४५)।

णेत्त पुन [नेत्र] नयन, आँख, चक्षु (हे १, ३३, आचा)।

णेत्त पु [नेत्र] वृक्ष-विशेष (सूअ २,२,१८)।

णेद्दा देखो णिद्दा (पि १६२, नाट)।

णेपाल देखो णेवाल (उप पृ ३६७)।

णेम स [नेम] १ अर्ध, आधा (प्रामा)। २ न. मूल, जड (पण्ह १, ३, भग)।

णेम न [दे] कार्य, काज (राज)।

णेम पुन [दे] कार्य, काम, काज (पिंड ७०)।

णेम देखो णेम्म = दे (पण्ह २, ४ टी—पत्र १३३)।

णेमाल पुं. व [नेपाल] एक भारतीय देश, नेपाल (पउम ९८, ६४)।

णेमि पु [नेमि] १ स्वनाम-ख्यात एक जिनदेव, बाइसवें तीर्थंकर (सम ४३, कप्प)। २ चक्र की धारा (ठा ३, ३, सम ४३)। ३ चक्र परिधि, चक्के का घेरा (जीव ३)। ४ आचार्य हेमचन्द्र के मातुल—मामा का नाम (कुप्र २०)। °चंद पुं [°चन्द्र] एक जैनाचार्य (सार्ध ६२)।

णेमित्त देखो णिमित्त (आवम)।

णेमित्ति वि [नैमित्तिन्] निमित्त-शास्त्र का जानकार (सुर १, १४४, सुपा १५४)।

णेमित्तिअ } वि [नैमित्तिक] १ निमित्त-
णेमित्तिग } शास्त्र से सबन्ध रखनेवाला (सुर ९, १७७)। २ कारणिक, निमित्त से होनेवाला, कारण से किया जाता, कदाचित्क, 'उववासो णेमित्तिगमो जओ भणिओ' (उप ६८३, उवर १०७)। ३ निमित्त शास्त्र का जानकार (सुर १, २३८)। ४ न निमित्त शास्त्र (ठा ६)।

णेमी स्त्री [नेमी] चक्र धारा (दे १, १०६)।

णेम्म वि [दे निभ] तुल्य, सदृश, समान (पण्ह २, ४—पत्र १३०)।

णेम्म देखो णेम = नेम (पण्ह १, ५—पत्र ९४)।

णेरइअ वि [नैरयिक] १ नरक-सबन्धी, नरक में उत्पन्न (हे १, ७९)। २ पु. नरक का जीव, नरक में उत्पन्न प्राणी (सम २, विपा १, १०)।

णेरइअ वि [नैर्ऋतिक] नैर्ऋत कोण, दक्षिण-पश्चिम विदिशा (अणु २१५)।

णेरई स्त्री [नैर्ऋती] दक्षिण और पश्चिम के बीच की दिशा (सुपा ९८, ठा १०)।

णेरुत्त न [नैरुक्त] १ व्युत्पत्ति के अनुसार अर्थ का वाचक शब्द (अणु)। २ वि निरुक्त शास्त्र का जानकार (विसे २४)।

णेरुत्तिय वि [नैरुक्तिक] व्युत्पत्ति-निष्पन्न (विसे ३०३७)।

णेरुत्ती स्त्री [नैरुक्ति] व्युत्पत्ति (विसे २१८२)।

णेल वि [नैल] नील का विकार (भग, औप)।

णेलच्छग देखो णिल्लच्छग (स ६६६)।

णेलच्छ पु [दे] नपुसक, षंड (दे ४, ४४, पाअ, हे २, १७४)। २ वृषभ, बैल (दे ४, ४४)।

णेलय पु [दे नेलक] रुपया (पव १११)।

णेलिच्छी स्त्री [दे] कूपतुला, टेंकवा (दे ४, ४४)।

णेल्लच्छ देखो णेलच्छ (पि ६६)।

णेव देखो णेअ = नैव (उव, पि १७०)।

णेवच्छ देखो णेवत्थ (से १२, ६७, प्रति ६, औप, कुमा, पि २८०)।

णेवच्छण न [दे] अवतारण, नीचे उतारना (दे ४, ४०)।

णेवच्छिय देखो णेवत्थिय (पि २८०)।

जिसका गुणाकार किया हो वह, 'इक्कासीई सा करणकारणाणुमइताडिआ होइ' (श्रा ६)।

ताडिअय न [दे] रोदन, रोना (दे ५, १०)।

ताडिज्जमाण देखो ताड = ताडय्।

ताडी स्त्री [ताडी] वृक्ष-विशेष (गउड)।

ताडीअंत } देखो ताड = ताडय्
ताडीअमाण }

ताण न [त्राण] १ शरण, रक्षण कर्ता (सुपा ५७४)। २ रक्षण (सम ५१)।

ताण पुं [तान] संगीत-प्रसिद्ध स्वर-विशेष, 'ताणा एगूणपरणास' (अणु)।

ताणव न [तानव] कृशता, दुर्बलता (किरात १५)।

ताणिअ वि [तानित] ताना हुआ (ती १५)।

ताद देखो ताअ = तात (प्राकृ १२)।

तादत्थ न [तादर्थ्य] तदर्थभाव, उसके लिए (श्रावक १२४, १२७)।

तादवत्थ न [तादवस्थ्य] स्वरूप का अपभ्रंश वही अवस्था, अभिन्नरूपता (धर्मसं ४०४, ४०५, ४१६)।

तादिस देखो तारिस (गा ७३८, प्रासू ३४)।

ताम देखो तम्म = तम्। तामइ (गा ८५३)।

ताम (अप) देखो ताव = तावत् (हे ४, ४०६, भवि)।

तामर वि [दे] रम्य, सुन्दर (दे ५, १०, पाअ)।

तामरस न [तामरस] कमल, पद्म (दे ५, १०, पाअ)।

तामरस न [दे] पानी मे उत्पन्न होनेवाला पुष्प (दे ५, १०)।

तामलि पुं [तामलि] स्वनाम-ख्यात एक तापस (भग ३, १, श्रा ६)।

तामलित्ति स्त्री [ताम्रलिप्ति] एक प्राचीन नगरी, वंग देश की प्राचीन राजधानी (उप ६८८, भग ३, १, पएण १)।

तामलित्तिया स्त्री [ताम्रलिप्तिका] जैनमुनि-वश की एक शाखा (कप्प)।

तामस न [तामस] १ अन्धकार। २ अन्धकार-समूह (चेइय ३२३)।

तामस वि [तामस] तमोगुणवाला (पउम ८, ५०, कुप्र ४२८)। °त्थ न [°स्त्र] कृष्ण वर्ण का अस्त्र-विशेष (पउम ८, ५०)।

तामहिं } (अप) देखो ताव = तावत् (पड्; तामहिँ } भवि, पि २६१, हे ४, ४०६)।

तायण न [त्राण] रक्षण (धर्मवि १२८)।

तायत्तीसग पुं [त्रायस्त्रिंशक] गुरु-स्थानीय देव-जाति (ठा ३, १, कप्प)।

तायत्तीसा स्त्री [त्रयस्त्रिंशत्] १ संख्या-विशेष, तेत्तीस। २ तेत्तीस संख्यावाला, तेत्तीस, 'तायत्तीसा लोगपाला' (ठा, पि ४४७, कप्प)।

तायव्व देखो ताअ = त्रै।

तार पुं [तार] १ चौथी नरक का एक स्थान (देवेन्द्र १०)। २ शुद्ध मोती। ३ प्रणव, ओंकार। ४ मायाबीज, 'ह्रीं' अक्षर। ५ तरण, तैरना (हे १, १७७)।

तार वि [तार] १ निर्मल, स्वच्छ (से ६, ४२)। २ चमकता, देदीप्यमान (पाअ)। ३ अति ऊँचा (से ६, ४)। ४ अति ऊँचा स्वर (राय, मा ४६४)। ५ न चांदी (ती २)। ६ पुं वानर-विशेष (से १, ३४)। °वई स्त्री [°वती] एक राज-कन्या (आचू ४)।

तारंग न [तारङ्ग] तरंग-समूह (से ६, ४२)।

तारग वि [तारक] तारनेवाला, पार उतारने-वाला (उप पृ ३२)। २ पुं. नृप-विशेष, द्वितीय प्रतिवासुदेव (पउम ५, १५६)। ३ सूर्य आदि नव ग्रह (ठा ६) देखो तारय।

तारगा स्त्री [तारका] १ नक्षत्र (सूअ २, ६)। २ एक इन्द्राणी, पूर्णभद्र-नामक इन्द्र की एक पटरानी (ठा ४, १)। देखो तारया।

तारण न [तारण] १ पार उतारना (सुपा २५७)। २ वि. तारनेवाला (सुपा ४१७)।

तारत्तर पुं [दे] मुहूर्त (दे ५, १०)।

तारय देखो तारग (सम १, प्रासू १०१)। ४ न. छन्द-विशेष (पिंग)।

तारया देखो तारगा। ३ आँख की तारा (गउड, गा १४८, २५४)।

तारा स्त्री [तारा] १ आँख की पुतली (गा ४११, ४३५)। २ नक्षत्र (ठा ५, १, से १, ३४)। ३ सुग्रीव की स्त्री (से १, ३४)। ४ सुभूम चक्रवर्ती की माता (सम १५२)। ५ नदी-विशेष (ठा १०)। ६ बौद्धों की शासन-देवी (कुप्र ४४२)। °उर न [°पुर] तारंगा-स्थान (कुप्र ४४२)। °चंद पुं [°चन्द्र] एक राज-कुमार (धम्म ७२ टी)। °तणय पुं [°तनय] वानर-विशेष, अङ्गद (से १३, ६७)। °पह पु [°पथ] आकाश, गगन (अणु)। °पहु पुं [°प्रभु] चन्द्रमा (उप ३२० टी)। °मेत्ती स्त्री [°मैत्री] नि स्वार्थ मित्रता (कप्पू)। °यण न [°यन] कनीनिका का चलना, आँख की पुतली का हिलन, 'भग्गं तारायणं नियइ' (सुपा १८७)। °वइ पुं [°पति] चन्द्रमा (गउड)।

तारि वि [तारिन्] तारनेवाला, तारक (सम्मत्त २३०)।

तारिम वि [तारिम] तरणीय, तैरने योग्य (भास ६३)।

तारिय वि [तारित] पार उतारा हुआ (भवि)।

तारिया स्त्री [तारिका] तारा के आकार की एक प्रकार की विभूषा, टिकली, टिकिया; 'विचित्तलंबततारियाइन्न' (सुर ३, ७१)।

तारिस वि [तादृश] वैसा, उस तरह का (कप्प, प्राप्र, कुमा)। स्त्री. °सी (प्रासू १२५)।

तारी स्त्री [तारी] तारकजातीय देवी (पव १६, ४)।

तारुअ वि [तारक] तारनेवाला (चेइय ५२१)।

तारुण्ण } न [तारुण्य] तरुणता, यौवन
तारुन्न } (गउड, कप्पू, कुमा, सुपा ३१६)।

ताल देखो ताड = ताडय्। तालेइ (पि २४०)। वकृ. तालेमाण (विपा १, १)। कवकृ. तालिज्जंत, तालिज्जमाण (पउम ११८, १०, पि २४०)।

ताल सक [तालय्] ताला लगाना, बन्द करना। सकृ. तालेवि (सुपा ४२८)।

ताल पुं [ताल] १ वृक्ष-विशेष (पण्ह १, ४)। २ वाद्य-विशेष, कंसिका (पण्ह २, ५)। ३ ताली (दस २)। ४ चपेटा, तमाचा (से ६, ५६)। ५ वाद्य-समूह (राज)। ६ आजीवक मत का एक उपासक (भग ८, ५)। ७ न. ताला, द्वार बन्द करने की कल (उप ३३३)। ८ ताल वृक्ष का फल (दे ६, १०२)। °उड न [°पुट] तत्काल प्राण-नाशक विष-विशेष (णाया १, १४; सुपा १३७, ३१६)। °जंघ पुं [°जङ्घ] १ नृप-विशेष (धर्म १)। २ वि.

(पि ३१३)। वकृ. ण्हायमाण (णाया १, १३)। संकृ. ण्हाइत्ता, ण्हाणित्ता (पि ३१३)।

ण्हाण न [स्नान] नहाना, नहान (कप्प, प्राप्र)। °पीढ पुंन [°पीठ] स्नान करने का पट्टा (णाया १, १)।

ण्हाणमल्लिया स्त्री [स्नानमल्लिका] स्नान-योग्य पुष्प-विशेष, मालती-पुष्प (राय ३४)।

ण्हाणिआ स्त्री [स्नानिका] स्नान-क्रिया (पण्ह २, ४—पत्र १३१)।

ण्हाणिय वि [स्नानित] जिसने स्नान किया हो वह (पव ३८)।

ण्हाय वि [स्नात] जिसने स्नान किया हो वह, नहाया हुआ (कप्प, औप)।

ण्हायमाण देखो ण्हा

ण्हारु न [स्नायु] १ अस्थि-बन्धनी सिरा, नस, धमनी (सम १४६, पण्ह १, १, ठा २,१, आचा)। २ अष्टादश श्रेणी में की एक श्रेणी, कुम्हार, पटेल आदि (लोकप्रकाश ४६४ पत्र, मर्ग ३१)।

ण्हाव देखो ण्हव। ण्हावइ, ण्हावेइ (भवि, पि ३१३)। वकृ. ण्हावअन (पि ३१३)। संकृ. ण्हाविऊण (महा)।

ण्हाविअ वि [स्नपित] नहलाया हुआ, जिसको स्नान कराया गया हो वह (महा भवि)।

ण्हाविअ पुं [नापित] हजाम, नाई (हे १, २३०, कुमा), 'घेत्तूण ण्हावियं आगएण मुंडाविओ कुमरो' (उप ६ टी)। °पसेवय पुं [°प्रसेवक] नाई की अपने उपकरण रखने की थैली (उत्त २)।

ण्हु अ [दे] निश्चय-सूचक अव्यय (जीवम १८०)।

ण्हुसा स्त्री [स्नुषा] पुत्र वधू, पुत्र की भार्या, पतोहू (आवम, पि ३१३)।

ण्हुहा देखो ण्हुसा (सिरि २५१)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे णआराइसद्दसंकलणो, अइएसेण नआराइसद्दसंकलणो बाईसइमो तरंगो समत्तो ॥

त

त पुं [त] दन्त-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्राप्र, प्रामा)।

त स [तद्] वह (ठा ३, १, हे १, ७, कप्प, कुमा)।

त° स [त्वद्°] तू। °कय वि [°कृत] तेरा किया हुआ (स ६८०)।

त° देखो तया = त्वच्। °दोसि वि [°दोषिन्] १ चर्म-रोगी। २ कुष्ठी (पिंड ४७५)।

तअ देखो तव = तपस् (हास्य १३५)। तइ वि [तति] उतना (वव १)।

तइ (अप) अ [तत्र] वहाँ, उसमें (षड्)।

तइ अ [तदा] उस समय (प्राप्र)।

तइअ वि [तृतीय] तीसरा (हे १, १०१, कुमा)।

तइअ (अप) वि [त्वदीय] तुम्हारा (भवि)।

तइअ अ [तदा] उस समय;

'भणिओ रन्ना मंती,
महसागर तइय पव्वयंतेण।
ताएण अहं भणिओ,
भगिणी ठाणम्मि दायव्वा'
(सुर १, १२३)।

तइअहा (अप) अ [तदा] उस समय (भवि, सण)।

तइआ अ [तदा] उस समय (हे ३, ६५, गा ६२)।

तइआ स्त्री [तृतीया] तिथि-विशेष, तीज (सम २६)।

तइया स्त्री [तृतीया] तीसरी विभक्ति (चेइय ६८३)।

तइल देखो तेल्ल (उप ६२६)।

तइलोई स्त्री [त्रिलोकी] तीन लोक—स्वर्ग, मर्त्य और पाताल (सुपा ६८)।

तइलोक, तइलोय न [त्रैलोक्य] ऊपर देखो (पउम ३, १०५, ८, २०२, स ५७१, सुर ३, २०, सुपा २८२, ३५, ४४८)।

तइस (अप) वि [तादृश] वैसा, उस तरह का (हे ४, ४०३, षड्)।

तई स्त्री [त्रयी] तीन का समुदाय (सुपा ५८)।

तईअ देखो तइअ = तृतीय (गा ४११, भग)।

तउ, तउअ न [त्रपु] धातु-विशेष, सीसा, रांगा (सम १२५, औप, उप ६८६ टी, महा)। °वट्टिआ स्त्री [°पट्टिका] कान का आभूषण विशेष (दे ५, २३)।

तउस न [त्रपुष] देखो तउसी (राज)। °मिंजिया स्त्री [°मिञ्जिका] क्षुद्र कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (जीव १)।

तउस न [त्रपुष] खीरा, ककड़ी (दे ८,३१)।

तउसी स्त्री [त्रपुषी] ककड़ी-वृक्ष, खीरा का गाछ (गा ५३४)।

तए अ [ततस्] उससे, उस कारण से। २ बाद में (उत्त १, विपा १, १)।

तग्गारिस वि [त्वादृश] तुम जैसा, तुम्हारे तरह का (स ५२)।

तओ देखो तए (ठा ३, १, प्रासू ७८)।

ति देखो तइअ = तृतीय (कम्म २, १६)। °भाग, °भाय, °हाअ पु [°भाग] तृतीय भाग, तीसरा हिस्सा (कम्म २, णाया १, १६—पत्र २१८, कप्पू)।

ति देखो थी, 'उलूलु गायंति भुणि समत्तिपुत्ता तिम्रो चच्चरियाउदिति' (रभा)।

ति त्रि व [त्रि] तीन, दो और एक (नव ४, महा)। °अणुअ न [°अणुक] तीन परमाणुओं से बना हुआ द्रव्य, 'अणुअतएहि आरद्धदव्वे तिअणुअ ति निद्देसो' (सम्म १३६)। °उण वि [°गुण] १ तीनगुना। २ सत्व रजस् और तमस् गुणवाला (अच्चु ३०)। °उणिय वि [°गुणित] तीनगुना (भवि)। °उत्तरसय वि [°उत्तरशततम] एक सौ तीसरा, १०३ वाँ (पउम १०३, १७६)। °उल वि [°तुल] १ तीन को जीतनेवाला। २ तीन को तौलनेवाला (णाया १, —पत्र ६४)। °ओय न [°ओजस्] विषम राशि-विशेष (ठा ४, ३)। °कंड, °कंडग वि [°काण्ड, °क] तीन काण्डवाला, तीन भागवाला (कप्पू, सूअ १, ६)। °कडुअ न [°कटुक] सोंठ, मरीच और पीपल (अणु)। °करण देखो °गरण (राज)। °काल न [°काल] भूत, भविष्य और वर्त्तमान काल (भग, सुपा ८८)। °क्काल देखो °काल (सुपा १६६)। °खंड वि [°खण्ड] तीन खण्डवाला (उप ६८६ टी)। °खंडाहिवइ पुं [°खण्डाधिपति] अर्ध चक्रवर्त्ती राजा, वासुदेव (पउम ६१, २६)। °गडु, °गडुअ देखो °कडुअ (स २५८ २६३)। °गरण न [°करण] मन, वचन और काया (द्र २०)। °गुण देखो °उण (अणु)। °गुत्त वि [°गुप्त] मनोगुप्ति आदि तीन गुप्तिवाला, संयमी (स ८)। °गोण वि [°कोण] तीन कोनेवाला (राज)। °चत्ता स्त्री [°चत्वारिंशत्] तेतालीस (कम्म ४, ५५)। °जय न [°जगत्] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक (ति १)। °णयण पुं [°नयन] महादेव, शिव (से १५, ५८, सुपा १३८, ५६६, गउड)। °तुल देखो °उल (णाया १, १ टी—पत्र ६७)। °त्तिस (अप) देखो °त्तीस। °त्तीस स्त्रीन [त्रयस्त्रिंशत्] १ संख्या-विशेष, ३३। २ तेतीस संख्यावाला, तेत्तीस (कप्प, जी ३६, सुर १२, १३६, दं २७)। °दंड न [°दण्ड] १ हथियार रखने का एक उपकरण (महा)। २ तीन दण्ड (औप)। °दंडि पु [°दण्डिन्] सन्यासी, साख्य मत का अनुयायी साधु (उप १३६ टी, सुपा ४३६ महा)। °नवइ स्त्री [°नवति] १ सख्या विशेष, तिरानवे। २ तिरानवे संख्यावाला (कम्म १, ३१)। °पंच त्रि व. [°पञ्चन्] पद्रह (ओघ १४)। °पंचासइम वि [°पञ्चाश] त्रिपनवाँ (पउम ५३, १५०)। °पह न [°पथ] जहाँ तीन रास्ते एकत्रित होते हो वह स्थान (राज)। °पायण न [°पातन] १ शरीर, इन्द्रिय और प्राण इन तीनो का नाश। २ मन, वचन और काया का विनाश (पिंड)। °पुंड न [°पुण्ड्र] तिलक-विशेष (स ६)। °पुर पुं [°पुर] १ दानव-विशेष। २ न तीन नगर (राज)। °पुरा स्त्री [°पुरा] विद्या-विशेष (सुपा ३६७)। °भंगी स्त्री [°भङ्गी] छन्द-विशेष (पिंग)। °महुर न [°मधुर] घी, शक्कर और मधु (अणु)। °मासिआ स्त्री [त्रैमासिकी] जिसकी अवधि तीन मास की है ऐसी एक प्रतिमा, व्रत-विशेष (सम २१)। °मुह वि [°मुख] १ तीन मुखवाला (राज)। २ पुं भगवान् संभवनाथजी का शासन-देव (संति ७)। °रत्त न [°रात्र] तीन रात (स ३४२), 'धम्मपरस्स मुहुत्तोवि दुल्लहो किंपुण तिरत्त' (कुप्र ११८)। °रासि न [°राशि] जीव, अजीव और नोजीव रूप तीन राशियाँ (राज)। °लोअ न [°लोकी] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक (कुमा, प्रासू ८६, स १)। °लोअण पुं [°लोचन] महादेव, शिव (श्रा २८, पउम ५, १२२, पिंग)। °लोअपुज्ज पुं [°लोकपूज्य] धातकीषण्ड के विदेह में उत्पन्न एक जिनदेव (पउम ७५, ३१)। °लोई स्त्री [°लोकी] देखो °लोअ (गउड, भत्त १५२)। °लोग देखो °लोअ (उप पृ ३) °वई स्त्री [°पदी] १ तीन पदो का समूह। २ भूमि में तीन वार पाँव का न्यास (औप)। ३ गति-विशेष (अत १६)। °वग्ग पुं [°वर्ग] १ धर्म, अर्थ और काम ये तीन पुरुषार्थ (ठा ४, ४—पत्र २८३, स ७०३, उप पृ २०७)। २ लोक, वेद और समय इन तीन का वर्ग। ३ सूत्र, अर्थ और उन दोनो का समूह (आचू १, आवम)। °वण्ण पु [°पर्ण] पलाश वृक्ष (कुमा)। °वरिस वि [°वर्ष] तीन वर्ष की अवस्थावाला (वव ३)। °वलि स्त्री [°वलि] चमड़ी की तीन रेखाएँ (कप्पू)। °वलिय वि [°वलिक] तीन रेखावाला (राय)। °वली देखो °वलि (गा २७८, औप)। °वट्ठ पुं [°पृष्ठ] भरतक्षेत्र के भावी नवम वासुदेव (सम १५४)। °वय न [°पद] तीन पाँववाला (दे ८, १)। °वहआ स्त्री [°पथगा] गगा नदी (से ६, ८, अच्चु ३)। °वायणा स्त्री [°पातना] देखो °पायण (पण्ह १, १)। °विट्ठु, °विट्ठु पुं [°पृष्ठ, °विष्टु] भारतक्षेत्र में उत्पन्न प्रथम अर्ध-चक्रवर्त्ती राजा का नाम (सम ८८, पउम ५, १५५)। °विह वि [°विध] तीन प्रकार का (उवा, जी २०, नव ३)। °विहार पु [°विहार] राजा कुमारपाल का बनवाया हुआ पाटण का एक जैन मन्दिर (कुप्र १४४)। °संकु पु [°शङ्कु] सूर्यवंशीय एक राजा (अभि ८२)। °संझ न [°सन्ध्य] प्रभात, मध्याह्न और सायंकाल का समय (सुर ११, १०६)। °सट्ठ वि [°षष्ट] तिरसठवाँ, ६३ वाँ (पउम ६३, ७३)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] तिरसठ, ६३ (भवि)। °सत्त त्रि.व [°सप्तन्] एक्कीस (श्रा ६)। °सत्तखुत्तो अ [°सप्तकृत्वस्] एक्कीस वार (णाया १, ६, सुपा ४४६)। °समइय वि [°सामयिक] तीन समय मे उत्पन्न होनेवाला, तीन समय की अवधिवाला (ठा ३,४)। °सरय न [°सरक] तीन सरा या लडीवाला हार (णाया १, १, औप, महा)। २ वाद्य-विशेष (पउम ६६, ४४)। °सरा स्त्री [°सरा] मच्छली पकडने का जाल-विशेष (विपा १, ८)। °सरिय न [°सरिक] १ तीन सरा या लडी वाला हार (कप्प)। २ वाद्य-विशेष (पउम ११३,११)। ३ वि. वाद्य-विशेष-संबन्धी (पउम १०२, १२३)। °सीस पु [°शीर्ष] देव-विशेष (दीव)। °सूल न [°शूल] शस्त्र-विशेष (पउम

तक्क पुं [तर्क] १ विमर्श, विचार, अटकल-ज्ञान (श्रा १२, ठा ६)। २ न्याय-शास्त्र (सुपा २८७)।

तक्कणा स्त्री [दे] इच्छा, अभिलाष (दे ५, ४)।

तक्कय वि [तर्कक] तर्क करनेवाला (पएह १, ३)।

तक्कर पु [तस्कर] चोर (हे २, ४, औप)।

तक्कलि स्त्री [दे] कदली-वृक्ष, केले का गाछ (आचा २, १, ८, ६)।

तक्कलि } स्त्री [दे] वलयाकार वृक्ष-विशेष
तक्कली } (पएए १)।

तक्का स्त्री [तर्क] देखो न =तर्क (ठा १ सूत्र १, १३, आचा)।

तक्काल क्रिवि [तत्काल] उसी समय (कुमा)।

तक्किअ वि [तार्किक] तर्कशास्त्र का जानकार (अच्चु १०१)।

तक्कियाण देखो तक्क = तर्क।

तक्कु पुं [तर्कु] सूत बनाने का यन्त्र, तकुआ, तकला, चरखा (दे ३, १)।

तक्कुय पुं [दे] स्वजन-वर्ग, 'सम्माणिया सामंता, अहिणंदिया नायरया, परिओसिआ तक्कुयजणा त्ति' (स ५२०)।

तक्ख सक [तक्ष्] छिलना, काटना। तक्खइ (षड्, हे ४, १९४)। कर्म तक्खिज्जइ (कुप्र १७)। वकृ. तक्खमाण (अणु)।

तक्ख पुं [तार्क्ष्य] गरुड पक्षी (पाअ)।

तक्ख पु [तक्षन्] १ लकडी काटनेवाला, बढई। २ विश्वकर्मा, शिल्पी-विशेष (हे ३, ५६, षड्)। °सिला स्त्री [°शिला] प्राचीन ऐतिहासिक नगर, जो पहले बाहुबलि की राजधानी थी, यह नगर पंजाब में है (पउम ४, ३८, कुप्र ५३)।

तक्खग पु [तक्षक] १-२ ऊपर देखो। ३ स्वनाम-प्रसिद्ध सर्प-राज (उप ६२५)।

तक्खण न [तत्क्षण] १ तत्काल, उसी समय (ठा ४, ४)। २ क्रिवि शीघ्र, तुरन्त (पाअ)।

तक्खय देखो तक्खग (स २०६, कुप्र १३६))।

तक्खाण देखो तक्ख = तक्षन् (हे ३, ५६, षड्)।

तगर देखो टगर (पएह २, ५)।

तगरा स्त्री [तगरा] संनिवेश-विशेष (स ४६८)

तगरा स्त्री [तगरा] एक नगरी का नाम (सुख २, ८)।

तग्ग न [दे] सूत्र-कंकण, धागे का कंकण (दे ५, १, गउड)।

तग्गंधिय वि [तद्गन्धिक] उसके समान गंधवाला (प्रासू ३४)।

तच्च वि [तृतीय] तीसरा (सम ८, उवा)।

तच्च न [तत्त्व] सार, परमार्थ (आचा, आरा ११५)। °वाय पु [°वाद] १ तत्त्व-वाद, परमार्थ-चर्चा। २ दृष्टिवाद, जैन अंग-ग्रंथ-विशेष (ठा १०)।

तच्च न [तथ्य] १ सत्य, सचाई (हे २, २१, उत्त २८)। २ वि वास्तविक, सत्य (उत्त ३)। °त्थ पुं [°ार्थ] सत्य, हकीकत (पउम ३, १३) °वाय पुं [°वाद] देखो ऊपर °वाय (ठा १०)।

तच्चं अ [त्रि.] तीन वार (भग, सुर २, २६)।

तच्चित्त वि [तच्चित्त] उसी में जिसका मन लगा हो वह, तल्लीन (विपा १, २)।

तच्छ सक [तक्ष्] छिलना, काटना। तच्छइ (हे ४, १९४, षड्)। सकृ तच्छिय (सूअ १, ४, १)। कवकृ. तच्छिज्जंत (सुर १, २८)।

तच्छ } वि [तष्ट] छिला हुआ, तनूकृत,
तच्छिअ } 'ते भिन्नदेहा फलगं तच्छा' (सूअ १, ५, २, १४, १, ४, १, २१, उत्त १९, ६६)।

तच्छण ओन [तक्षण] छिलना, कर्तन (पएह १, १) स्त्री णा (णाया १, १३)।

तच्छिड वि [दे] कराल, भयंकर (दे ५, ३)।

तच्छिज्जंत देखो तच्छ।

तच्छिल वि [दे] तत्पर (षड्)।

तजा देखो तया = त्वच् (दे १, १११)।

तज्ज सक [तर्जय्] तर्जन करना, भर्त्सन करना। तज्जइ (भवि)। तज्जेइ (णाया १, १८) वकृ तज्जंत, तज्जित तज्जयत, तज्जमाण, तज्जेमाण (भवि, सुर १२, २३३, णाया १, ८, राज, विपा १, १— पत्र ११)। कवकृ तज्जिज्जंत (उप पृ १३४, उप १४९ टी)।

तज्जण न [तर्जन] भर्त्सन, तिरस्कार (औप, उव, पउम ६५, ५३)।

तज्जणा स्त्री [तर्जना] ऊपर देखो (पएह २, १, सुपा १)।

तज्जणी स्त्री [तर्जनी] दूसरी अगुली, अँगूठे के पासवाली अगुली, प्रदेशिनी (सुपा १, कुमा)।

तज्जाय वि [तज्जात] समान जातिवाला, तुल्य-जातीय (आव ४)।

तज्जाविअ } वि [तर्जित] [illegible], भर्त्सित
तज्जिअ } (स १२२, सुपा २६२, भवि)।

तज्जित }
तज्जिज्जत } देखो तज्ज।
तज्जेमाण }

तट्टवट्ट न [दे] आभरण, आभूषण,
'सरिणयं सरिणय बालत्तणाओ
तणुयाइं तट्टवट्टाइं।
अवहरिवि नियघराओ
हारेइ रहम्मि खिल्लंतो'
(सुपा ३९९)।

तट्टिगा स्त्री [दे तट्टिका] दिगंबर जैन साधु का एक उपकरण (धर्मसं १०४६, १०४८)।

तट्टी स्त्री [दे] वृति, वाड (दे ५, १)।

तट्ठ वि [त्रस्त] १ डरा हुआ, भीत (हे २, १३६, कुमा)। २ न. मुहूर्त-विशेष (सम ५१)।

तट्ठ वि [तष्ट] छिला हुआ (सूअ १, ७)।

तट्ठव न [त्रस्तप] मुहूर्त-विशेष (सम ५१)।

तट्ठि वि [तष्टिन्] तनूकृत, कृशतावाला (सूअ १, ७, ३०)।

तट्ठि } पु [त्वष्टृ] १ तक्षक, विश्वकर्मा
तट्ठु } (गउड)। २ नक्षत्र-विशेष का अधिष्ठायक देव (ठा २, ३)।

तट्ठु पु [त्वष्टृ] अहोरात्र का बारहवाँ मुहूर्त (सुज्ज १०, १३)।

तड सक [तन्] १ विस्तार करना। २ करना। तडइ (हे ४, १३७)।

तड पुंन [तट] किनारा, तीर (वाअ, कुमा)। °त्थ वि [°स्थ] १ मध्यस्थ, पक्षपात-हीन। २ समीप स्थित (कुमा, दे ३, ६०)।

तडउडा [दे] देखो तडवडा (जीव ३, जं १)।

तिंदूस } पुन [तिन्दूस, °क] १ वृक्ष विशेष
तिंदूसग } (पएण १)। २ कन्दुक, गेंद
तिंदूसय } (णाया १, १८, सुपा ५३)। ३ क्रीडा-विशेष (श्रावम)।

तिकल्ल न [त्रैकाल्य] तीनो काल का विषय (पएह २, २)।

तिकूड पु [त्रिकूट] १ लका के समीप का एक पहाड, सुवेल पर्वत (पउम ५. १२७)। २ शीता महानदी के दक्षिण किनारे पर स्थित पर्वत-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)। °सामिन पु [°स्वामिन्] सुवेल पर्वत का स्वामी, रावण (पउम ६५, २१)।

तिक्ख वि [तीक्ष्ण] १ तेज तीखा, पैना (महा, गा ५०४)। २ सूक्ष्म। ३ चोखा, शुद्ध (कुमा)। ४ परुष, निष्ठुर (भग १६, ३)। ५ वेग-युक्त, क्षिप्र-कारी (ज २)। ६ क्रोधी, गरम प्रकृतिवाला। ७ तीता, कडुवा ८ उत्साही। ९ आलस्य-रहित। १० चतुर, दक्ष। ११ न. विष, जहर। १२ लोहा। १३ युद्ध, सग्राम। १४ शस्त्र, हथियार। १५ समुद्र का नोन। १६ यवक्षार। १७ श्वेत-कुष्ठ। १८ ज्योतिष-प्रसिद्ध तीक्ष्ण गण, यथा अश्लेषा, आर्द्रा, ज्येष्ठा और मूल नक्षत्र (हे २, ७५, ८२)।

तिक्ख सक [तीक्ष्णय्] तीक्ष्ण करना, तेज करना। तिक्खेइ (हे ४, ३४४)।

तिक्खण न [तीक्ष्णन] तेज-करण, उत्तेजन (कुमा)।

तिक्खाल सक [तीक्ष्णय्] तीक्ष्ण करना। कर्म तिक्खालिज्जति (सुर १२, १०६)।

तिक्खालिअ वि [दे] तीक्ष्ण किया हुआ (दे ५, १३, पाअ)।

तिक्खुत्तो अ [त्रिस्] तीन बार (विपा १, १, कप्प, औप, राय)।

तिग देखो तिअ = त्रिक (जी ३२, सुपा ३१, णाया १, १)। °वस्सि वि [°वशिन्] मन, वचन और शरीर को काबू मे रखनेवाला, 'नरस्स तिगवस्सिस्स विसं तालउड जहा' (सुपा १६७)।

तिगसपुण्ण न [त्रिकसपूर्ण] लगातार तीस दिन का उपवास (सबोध ५८)।

तिगिंछ पु [तिगिञ्छ] द्रह-विशेष (इक)।

तिगिंछायण न [तिगिञ्छायन] गोत्र-विशेष (सुज्ज १०, १६ टी)।

तिगिंछि पु [तिगिञ्छि] १ पर्वत-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७०, इक, सम, ३३)। २ द्रह-विशेष, निषध पर्वत पर स्थित एक ह्रद (ठा २, ३—पत्र ७२)।

तिगिच्छ सक [चिकित्स्] प्रतीकार करना, इलाज करना, दवा करना। तिगिच्छइ (उत्त १९, ७९, पि २१५, ५५५)।

तिगिच्छ पुं [चिकित्स] वैद्य, हकीम (वव ५)।

तिगिच्छ पु [तिगिच्छ] १ द्रह-विशेष, निषध पर्वत पर स्थित एक द्रह (इक)। २ न देवविमान-विशेष (सम ३८)।

तिगिच्छ न [चैकित्स] चिकित्सा-शास्त्र (सिरि ५६)।

तिगिच्छग } वि [चिकित्सक] प्रतीकार
तिगिच्छय } करनेवाला। २ पुं. वैद्य, हकीम (ठा ४, ४, पि २१५, ३२७)।

तिगिच्छण न [चिकित्सन] चिकित्सा (पिंड १८८)।

तिगिच्छय न [चैकित्स्य] चिकित्सा-कर्म (ठा ९—पत्र ४५१)।

तिगिच्छा स्त्री [चिकित्सा] प्रतीकार, इलाज, दवा (ठा ३, ४)। °सत्थ न [°शास्त्र] आयुर्वेद, वैद्यकशास्त्र (राज)।

तिगिच्छायण न [तिगिच्छायन] गोत्र-विशेष (सुज्ज १०, १६)।

तिगिच्छि देखो तिगिंछि (ठा २, ३—पत्र ८०, सम ८४, १०४, पि ३५४)।

तिगिच्छिय पुं [चैकित्सिक] वैद्य, चिकित्सक (पउम ८, १२४)।

तिग्ग वि [तिग्म] तीक्ष्ण, तेज (हे २, ६२)।

तिग्घ वि [त्रिघ्न] तिगुना, तीन-गुना (राज)।

तिचूड पु [त्रिचूड] विद्याधर वश का एक राजा (पउम ५, ४५)।

तिजड पु [त्रिजट] १ विद्याधर वश के एक राजा का नाम (पउम १०, २०)। २ राक्षस वश का एक राजा (पउम ५, २६२)।

तिजामा } स्त्री [त्रियामा] रात्रि, रात (कुप्र
तिजामी } २४७, रभा)।

तिज्ज वि [तार्य] तैरने योग्य (भास ९३)।

तिड्ड पुस्त्री [दे] अन्न-नाश करनेवाला कीट, टिड्डी (जी १८)। स्त्री °ड्डी (सुपा ५८६)।

तिड्डव सक [ताडय्] ताडन करना। तिड्डवइ (प्राकृ ७६)।

तिण न [तृण] तृण, घास (सुपा २३८, श्रभि १७५, स १७९)। °सूय न [°शूक] तृण का अग्र भाग (भग १५)। °हत्थय पु [°हस्तक] घास का पूला (भग ३, ३)।

तिणिस पुं [तिनिश] वृक्ष-विशेष, वेंत (ठा ४, २, कम्म १, १९, औप)।

तिणिम न [दे] मधु-पाल, मधपुडा (दे ५, ११, ३, १२)।

तिणिम वि [तैनिश] तिनिश-वृक्ष-संबधी, वेंत का (राय ७४)।

तिणीकय वि [तृणीकृत] तृण-तुल्य माना हुआ (कुप्र ५)।

तिण्ण } अक [तिम्] १ आर्द्र होना।
तिण्णाअइ } २ सक आर्द्र करना। तिण्णा-अइ (प्राकृ ७४)।

तिण्ण वि [तीर्ण] १ पार पहुँचा हुआ (औप)। २ शक्त, समर्थ (से १९, २१)।

तिण्ण न [स्तैन्य] चोरी, 'तिलतिण्णतप्परो' (उप ५९७ टी)।

तिण्ण° देखो ति = त्रि। °भग वि [°भङ्ग] त्रि-खण्ड, तीन खण्डवाला (श्रभि २२४)। °विह वि [°विध] तीन प्रकार का (नाट—चैत ४३)।

तिण्णिअ पु [तिन्निक] देखो तित्तिअ = तित्तिक (इक)।

तिण्ह देखो तिक्ख (हे २, ७५, ८२, पि ३१२)।

तिण्हा देखो तण्हा (राज, वज्जा ९०)।

तितउ पु [तितउ] चालनी या चलनी, आला, आटा या मैदा छानने का पात्र (प्रामा)।

तितय देखो तिअय (वव १)।

तितिक्ख देखो तिइक्ख। तितिक्खइ, तितिक्खए (कप्प, पि ४५७)। वकृ. तितिक्खमाण (राज)।

तितिक्खण न [तितिक्षण] सहन करना (ठा ६)।

तितिक्खया देखो तितिक्खा (पिंड ६६६)।

तणुवी } देखो तणुई (हे २, ११३;
तणुवीआ } कुमा)।

तणू स्त्री [तनू] शरीर, काया (गा ७८, पाअ, द ५)। २ ईषत्प्राग्भारा नामक पृथिवी (ठा ८)। °अ वि [°ज] १ शरीर से उत्पन्न। २ पुं. लडका, पुत्र (उप ६८६)। °अतरा स्त्री [°कतरा] ईषत्प्राग्भारा-नामक पृथिवी, जिसपर मुक्त जीव रहते हैं, सिद्ध-शिला (सम २२)। °रुह पुन [°रुह] केश, रोम, बाल (उप ५६७ टी)।

तणूइय देखो तणुइअ (गउड)।

तणेण (अप) अ लिए, वास्ते (हे ४, ४२५, कुमा)।

तणेसि पुं [दे] तृण-राशि (दे ५,३, पड्)।

तण्णय पुं [तर्णक] वत्स, बछडा (पाअ, गा १६, गउड)।

तण्णाय वि [दे] आर्द्र, गीला (दे ५, २, पाअ, गउड; से १, ३१, ११, १२६)।

तण्हा स्त्री [तृष्णा] १ प्यास, पिपासा (पाअ)। २ स्पृहा, वाञ्छा, इच्छा (ठा २, ३, औप)। °लु, °लुअ वि [°वत्] तृष्णा-वाला, प्यासा, 'समरतण्हालू' (पउम ८, ८७, ८, ४७)।

तण्हाइअ वि [तृष्णित] तृषातुर, अति प्यासा (धर्मवि १४१)।

तत देखो तय = तत (ठा ४, ४)।

तत्त न [तत्त्व] सत्य स्वरूप, तथ्य, परमार्थ (उप ७२८ टी, पुष्फ ३२०)। °ओ अ [°तस्] वस्तुत (उप ६८६)। °ण्णु वि [°ज्ञ] तत्व का जानकार (पचा १)।

तत्त पुं [तप्त] १ तीसरी नरक-भूमि का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ८)। २ प्रथम नरक-भूमि का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ४)।

तत्त वि [तप्त] गरम किया हुआ (सम १२५, विपा १, ६, दे १, १०५)। °जला स्त्री [°जला] नदी-विशेष (ठा २, ३)।

तत्त अ [तत्र] वहाँ। °भव, °होंत वि [°भवत्] पूज्य ऐसे आप (पि २६३, अभि ५६)।

तत्तट्ठसुत्त न [तत्त्वार्थसूत्र] एक प्रसिद्ध जैन दर्शन-ग्रन्थ (अज्झ ७७)।

तत्तडिअ न [दे] रँगा हुआ कपडा (गच्छ २, ४६)।

तत्ति स्त्री [तृप्ति] तृप्ति, सतोष (कुमा, करु २६)। °ल्ल वि [°मत्] तृप्ति-युक्त, तृप्त, सतुष्ट (राज)।

तत्ति स्त्री [दे] १ आदेश, हुकुम (दे ५, २०, सण)। २ तत्परता (दे २०)। ३ चिन्ता, विचार (गा २, ५१, २७३ अ, सुपा २३७, २८०)। ४ वार्ता, बात (गा २, वज्जा २)। ५ कार्य, प्रयोजन (पराह १, २, वव १)।

तत्तिय वि [तावत्] उतना (प्रासू १५६)।

तत्तिल } वि [दे] तत्पर (षड्, दे ५, ३,
तत्तिल्ल } गा ५५७, प्रासू ५६)।

तत्तु (अप) देखो तत्थ = तत्र (हे ४, ४०४, कुमा)।

तत्तुडिल्ल न [दे] सुरत, संभोग (दे ५, ६)।

तत्तुरिअ वि [दे] रञ्जित (षड्)।

तत्तो देखो तओ (कुमा, जी २६)। °मुह वि [°मुख] जिसका मुँह उस तरफ हो वह (सुर २, २३४)।

तत्तोहुत्त न [दे] तदभिमुख, उसके सामने (गउड)।

तत्थ अ [तत्र] वहाँ, उसमें (हे २, १६१)। °भव वि [°भवत्] पूज्य ऐसे आप (पि २६३)। °त्थ वि [°स्थ] वहाँ का रहनेवाला (उप ५६७ टी)।

तत्थ वि [त्रस्त] भीत, डरा हुआ (हे २,१६१, कुमा)।

तत्थ देखो तच्च = तथ्य (धर्मसं ३०४, णंदि ५३)।

तत्थरि पुं [त्रस्तरि] नय-विशेष, 'तत्थरिनएण ठविआ सोहउ मज्झ थुई' (अच्चु ४)।

तदा देखो तया = तदा (गा ६६६)।

तदीय वि [त्वदीय] तुम्हारा (महा)।

तदो देखो तओ (हे २, १६०)।

तद्दीअचय न [दे] नृत्य, नाच (दे ५, ८)।

तद्दिअस }
तद्दिअसिअ } न [दे] प्रतिदिन, अनुदिन, हररोज (दे ५, ८, गउड, पाअ)।
तद्दिअह }

तद्दोसि देखो त-द्दोसि = त्वग्दोषिन्।

तद्धिय पुं [तद्धित] १ व्याकरण-प्रसिद्ध प्रत्यय-विशेष (पराह २, २, विसे १००३)। २ तद्धित प्रत्यय की प्राप्ति का कारण-भूत अर्थ (अणु)।

तधा देखो तहा (ठा ३, १, ७)।

तन्नय देखो तण्णय (सुर १४, १७४)।

तन्हा देखो तण्हा (सुर १, २०३, कुमा)।

तप देखो तव = तपस् (चंड)।

तप्प सक [तप्] १ तप करना। २ अक. गरम होना। तप्पइ, तप्पति (पिंग, प्रासू ५:)।

तप्प सक [तर्पय्] तृप्त करना। वकृ तप्पमाण (सुर १६, १६)। हेकृ 'न इमो जीवो सक्को तप्पेउ कामभोगेहिं' (आउ ५०)। कृ तप्पेयव्व (सुपा २३२)।

तप्प न [तल्प] शय्या, बिछौना (पाअ)। °अ त्रि [°ग] शय्या पर जानेवाला, सोनेवाला (पराह १, २)।

तप्प पुंन [तप्र] डोंगी, छोटी नौका (पराह १, १, विसे ७०६)।

तप्प पुन [तप्र] नदी में दूर से बहकर आता हुआ काष्ठ समूह (णंदि ८८ टी)।

तप्पक्खिअ वि [तत्पाक्षिक] उस पक्ष का (श्रा १२)।

तप्पज्ज न [तात्पर्य] तात्पर्य, मतलब (राज)।

तप्पण न [तर्पण] १ सक्तु, सतुआ, सत्तू (पराह २, ५)। २ स्नेन तृप्ति-करण, प्रीणन (सुपा ११३)। ३ स्निग्ध वस्तु से शरीर की मालिश (णाया १, १३)।

तप्पणग न [दे] जैन साधु का पात्र-विशेष, तरपणी (कुलक १०)।

तप्पणाडुआलिआ स्त्री [दे] सक्तुमिश्रित भोजन (दश वै० चू०, वसुदेवहिंडी, धम्मिलहिंडी)।

तप्पभिइ अ [तत्प्रभृति] तबसे, तबसे लेकर (कप्प, णाया १, १)।

तप्पमाण देखो तप्प = तर्पय्।

तप्पर वि [तत्पर] आसक्त (दे ५, २०)।

तप्पुरिस पु [तत्पुरुष] व्याकरण-प्रसिद्ध समास-विशेष (अणु)।

तप्पेयव्व देखो तप्प = तर्पय्।

तब्भत्तिय वि [तद्भाक्तिक] उसका सेवक (भग ५, ७)।

तिम्म अक [स्तीम्] भीजना, आर्द्र होना। वकृ तिम्ममाण (पउम ३५, २०)।

तिम्म सक [तिम्] १ आर्द्र करना। २ अक गीला होना। तिम्मइ (प्राकृ ७४)। सकृ. तिम्मेउ (पिंड ३५०)।

तिम्म देखो तिग्ग (हे २, ६२)।

तिम्मिअ वि [स्तीमित] आर्द्र, गीला, (दे १, ३७)।

तिया स्त्री [स्त्रिका] स्त्री, महिला, 'होही तुय तियवज्झा फुड जग्रो एात्थिमे जीय' (सुख ४, ६)।

तियाल देखो ते-आलीस (कम्म ६, ६०)।

तिरक्कर सक [तिरस् + कृ] तिरस्कार करना, अवधीरणा करना। कृ. तिरक्करणीअ (नाट)।

तिरक्कार पु [तिरस्कार] तिरस्कार, अपमान, अवहेलना (प्रवो ४१, सुपा १४४)।

तिरक्करिणी } स्त्री [तिरस्करिणी] यवनिका,
तिरक्खरिणी } परदा (पि ३०६, अभि १८६)।

तिरन्च्छ देखो तिरिच्छ (प्राकृ १६, ३८)।

तिरि } अ [तिर्यक्] तिरछा, टेढा (प्राकृ
तिरिअ } ८०, १६)।

तिरिअ वि [तैरश्च] तिर्यंच का, 'तिरिया मणुया य दिव्वगा उवसग्गा तिविहाहियासिया (सूअ १, २, २, १५)।

तिरिअ } वि [तिर्यच्] १ वक्र कुटिल,
तिरिअच } बांका (चद २, उप पृ ३६६,
तिरिक्ख } सुर १३, १६३)। २ पु. पशु,
तिरिन्छ } पक्षी आदि प्राणी, देव, नारक और मनुष्य से भिन्न योनि में उत्पन्न जन्तु (घण ४४, हे २, १४३, सूअ १, ३, १, उप पृ १८६, प्रासू १७६, महा, आरा ४६, पउम २, ५६, जी २०)। ३ मर्त्यलोक, मध्य लोक (ठा ३, २,)। ४ न. मध्य, बीच, (अणु, भग १४, ५), 'तिरिय असंखेजाए दीवसमुद्दाए मज्झ मज्झेए जेऐव जवुद्दीवे दीवे' (कप्प)। °गइ स्त्री [°गति] १ तिर्यंग्-योनि (ठा ५, ३)। २ वक्र गति, टेढी चाल, कुटिल गमन (चद २)। °जभग पु [°जृम्भक] देवो की एक जाति (कप्प)। °जोणि स्त्री [°योनि] पशु, पक्षी आदि का उत्पत्ति-स्थान (महा)। °जोणिअ वि [°योनिक] तिर्यंग्-योनि मे उत्पन्न (सम २, भग, जीव १, ठा ३, १)। °जोणिणी स्त्री [°योनिका] तिर्यंग्-योनि मे उत्पन्न स्त्री जन्तु, तिर्यक् स्त्री (पएण १७—पत्र ५०३)। °दिसा °दिसि स्त्री [°दिश्] पूर्व आदि दिशा (आवम, उवा)। °पव्वय पुं [°पर्वत] बीच मे पडता पहाड, मार्गावरोधक पर्वत (भग १४, ५)। °भित्ति स्त्री [°भित्ति] बीच की भीत (आचा)। °लोग पु [°लोक] मर्त्य लोक, मध्य लोक (ठा ५, ३)। °वसइ स्त्री [°वसति] तिर्यंग्-योनि (पएह १, १)।

तिरिच्छ वि [तिरश्चीन] १ तिर्यग् गत टेढा गया हुआ (राज)। २ तिर्यग्-संबन्धी (उत्त २१, १६)।

तिरिच्छि देखो तिरिअ (हे २, १४३, षड्)।

तिरिन्छिय देखो तेरिच्छिय (आचा २, १५, ५)।

तिरिच्छी स्त्री [तिरश्ची] तिर्यक्-स्त्री (कुमा)।

तिरिड पुं [दे] एक जाति का पेड, तिमिर वृक्ष (दे ५, ११)।

तिरिडिअ वि [दे] १ तिमिर-युक्त। २ विचित (दे ५, २१)।

तिरिड्डि पु [दे] उष्ण वात गरम पवन (दे ५, १२)।

तिरिश्चि (मा) देखो तिरिच्छि (हे ४,२६५)।

तिरीड पुन [किरीट] मुकुट, सिर का आभूषण (पएह १, ४, सम १५३)।

तिरीड पु [तिरीट] वृक्ष-विशेष (बृह २)। °पट्टय न [°पट्टक] वृक्ष-विशेष की छाल का बना हुआ कपडा (ठा ५, ३—पत्र ३३८)।

तिरीडि वि [किरीटिन्] मुकुट-युक्त, मुकुट-विभूषित (उत्त ६, ६०)।

तिरोभाव पु [तिरोभाव] लय, अन्तर्धान (विसे २६६६)।

तिरोवइ वि [दे] वृति से अन्तर्हित, वाड से व्यवहित (दे ५, १३)।

तिरोहा सक [तिरस्+धा] अन्तर्हित करना, लोप करना, अदृश्य करना। तिरोहति (धर्मवि २४)।

तिरोहिअ वि [तिरोहित] लुप्त, अन्तर्हित, अदृश्य, आच्छादित, ढका हुआ (राज)।

तिल पु [तिल] १ स्वनाम प्रसिद्ध अन्न-विशेष, तिल (गा ६६५, एाया १, १, प्रासू ३४, १०८)। २ ज्योतिष्क देव-विशेष, ग्रह-विशेष (ठा २,३)। °कुट्टी स्त्री [°कुट्टी] तिल की बनी हुई एक भोज्य वस्तु, तिलकुट (धर्म २)। °पप्पडिया स्त्री [°पर्पटिका] तिल की बनी हुई एक खाद्य चीज, तिल पापड (पएण १)। °पुप्फवण्ण पु [°पुष्पवर्ण] ज्योतिष्क देव-विशेष, ग्रह-विशेष (ठा २, ३)। °मल्ली स्त्री [°मल्ली] एक खाद्य वस्तु (धर्म २)। °संगलिया स्त्री [°संगलिका] तिल की फली (भग १५)। °सक्कुलिया स्त्री [°शष्कुलिका] तिल की बनी हुई खाद्य वस्तु-विशेष, तिलखुजिया (राज)।

तिलइअ वि [तिलकित] तिलक की तरह आचरित, विभूषित, 'जयजयसद्दतिलइग्रो मंगलज्झुणी' (धर्मा ६)।

तिलग पु [तिलङ्ग] देश-विशेष, एक भारतीय दक्षिण देश, आन्ध्र प्रांत (कुमा, इक)।

तिलगकरणी स्त्री [तिलककरणी] १ तिलक करने की सलाई। २ गोरोचना, पीले रंग का एक सुगंधित द्रव्य, जो गाय के पित्ताशय से निकलता है (सूअ १, ४, २, १०)।

तिलग } पु [तिलक] १ वृक्ष-विशेष (सम
तिलय } १५२, औप, कप्प, एाया १, ६, उप ६८६ टी, गा १६)। २ एक प्रतिवासुदेव राजा, भरतक्षेत्र मे उत्पन्न पहला प्रति-वासुदेव (सम १५४)। ३ द्वीप-विशेष। ४ समुद्र-विशेष (राज)। ५ न पुष्प-विशेष (कुमा)। ६ टीका, ललाट में किया जाता चन्दन आदि का चिह्न (कुमा धर्मा ६)। ७ एक विद्याधर-नगर (इक)।

तिलवट्टी स्त्री [तिलपर्पटी] तिल की बनी हुई एक खाद्य वस्तु, तिलपट्टी (पव ४ टी)।

तिलितिलिय पुं [दे] जल-जन्तु विशेष (कप्प)।

तिलिम स्त्रीन [दे] वाद्य-विशेष (सुपा २४२, सए)। स्त्री. °मा (सुर ३, ६८)।

तिलुक्क न [त्रैलोक्य] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक (द २३)।

तिलुत्तमा देखो तिलोत्तमा (सम्मत्त १८८)।

तिलेल्ल न [तिलतैल] तिल का तेल (कुमा)।

तिलोक्क देखो तिलुक्क (सुर १, ६२)।

तरंगि वि [तरङ्गिन्] तरंग-युक्त (गउड, कप्पू)।

तरंगिअ वि [तरङ्गित] तरंग युक्त (गउड, से ८, ११, सुपा १५७)।

तरंगिणी स्त्री [तरङ्गिणी] नदी, सरिता (प्रासू ६६, गउड, सुपा ५३८)।

तरंगिणीनाह पुं [तरङ्गिणीनाथ] समुद्र, सागर (वज्जा १५६)।

तरंड } पुंन [तरण्ड, °क] डोंगी, नौका
तरंडय } (सुपा २७२, ५००, सुर ८, १०६, पुप्फ १०५)।

तरग वि [तर, °क] तैरनेवाला, तैराक (ठा ४, ४)।

तरच्छ पुस्त्री [तरक्ष] श्वापद जन्तु-विशेष, व्याघ्र की एक जाति (पण्ह १, १, णाया १, १, स २५७)। स्त्री °च्छी (पि १२३)। °भल्ल पुस्त्री [°भल्ल] श्वापद जन्तु-विशेष (पउम ४२, १२)।

तरट्ट वि [दे] प्रगल्भ, धृष्ट, समर्थ, चतुर, हानिरजवाव 'तरट्टो' (प्राकृ ३८)।

तरट्टा } स्त्री [दे] प्रगल्भ स्त्री, प्रौढा नायिका,
तरट्टी } होशियार स्त्री, 'झाणेण ट्टुट्टदि चिरं तरुणी तरट्टी' (कप्पू, काप्र ५६६), 'अट्ठेव आगयाओ तरुणतरट्टाओ एयाओ' (सुपा ४२)।

तरण न [तरण] १ तैरना (श्रा १४ स ३५६, सुपा २६२)। २ जहाज, नौका (विसे १०२७)।

तरणि पु [तरणि] १ सूर्य, रवि (कुमा)। २ जहाज, नौका। ३ घृतकुमारी का पेड, घीकुँआर का पेड। ४ अर्क वृक्ष, अकवन वृक्ष (हे १, ३१)।

तरतम वि [तरतम] न्यूनाधिक, 'तरतम-जोगजुत्तेहिं' (कप्प)।

तरमाण देखो तर = तृ।

तरल वि [तरल] चंचल, चपल (गउड, पाअ, कप्पू, प्रासू ६६, सुपा २०४, सुर २, ८६)।

तरल सक [तरलय्] चंचल करना, चलित करना। तरलेइ (गउड)। वकृ. तरलंत (सुपा ४७०)।

तरलण न [तरलन] तरल करना, हिलाना, 'कएणाडीणं कुणंता कुरलतरलणं' (कप्पू)।

तरलाविअ वि [तरलित] चंचल किया हुआ, चलायमान किया हुआ (गउड, भवि)।

तरलि त्रि [तरलिन्] हिलानेवाला (कप्पू)।

तरलिअ वि [तरलित] चंचल किया हुआ (गा ७८, उप पृ ३३, सार्ध ११५)।

तरवट्ट पु [दे] वृक्ष-विशेष, चकवड, पमाड, पवार (दे ५, ५, पाअ)।

तरस न [दे] मांस (दे ५, ४)।

तरसा अ [तरसा] शीघ्र, जल्दी (सुपा ५८२)।

तरा स्त्री [त्वरा] जल्दी, शीघ्रता (पाअ)।

तरिअव्व देखो तर = तृ।

तरिअव्व न [दे] उडुप, एक तरह की छोटी नौका (दे ५, ७)।

तरिउ वि [तरीतृ] तैरनेवाला (विसे १०२७)।

तरिउ देखो तर = तृ।

तरिया स्त्री [दे] दूध आदि का सार, मलाई (प्रभा ३३)।

तरिहिं अ [तर्हि] तो, तब (सुर १, १३२, ११, ७१)।

तरी स्त्री [तरी] नौका, डोंगी (सुवा १११, दे ६, ११०, प्रासू १४६)।

तरु पु [तरु] वृक्ष, पेड, गाछ (जी १४, प्रासू २६)।

तरुण त्रि [तरुण] जवान, मध्य वयवाला (पउम ५, १६८)।

तरुणग } वि [तरुणक] बालक, किशोर
तरुणय } (सूअ १, ३, ४)। २ नवीन, नया (भग १५)। स्त्री °णिगा, °णिया (आचा २, १)।

तरुणरहस पुन [दे] रोग, बीमारी (ओघ १३६)।

तरुणिम पुस्त्री [तरुणिमन्] यौवन, जवानी (कप्प)।

तरुणी स्त्री [तरुणी] युवति स्त्री, जवान स्त्री (गउड, स्वप्न ८२, महा)।

तल सक [तल्] तलना, भूजना, तेल आदि में भूनना। तलेज्जा (पि ४६०)। वकृ. तलेंत (विपा १, ३)। हेकृ तलिज्जिउं (स २५८)।

तल न [दे] १ शय्या, बिछौना (दे ५, १६, षड्)। २ पुं. ग्रामेश, गाँव का मुखिया (दे ५, १६)।

तल पु [तल] १ वृक्ष-विशेष, ताड का पेड (णाया १, १ टी—पत्र ४३, पउम ५३, ७६)। २ न. स्वरूप, 'धरणितलसि' (कप्प), 'कासवितलम्मि' (कुमा)। ३ हथेली (जं १)। ४ तला, भूमिका, 'सत्ततले पासाए' (सुर २, ८१)। ५ अधोभाग, नीचे (णाया १, १)। ६ हाथ, हस्त (कप्प, पण्ह २, ५)। ७ मध्य खण्ड (ठा ८)। ८ तलवा, पानी के नीचे का भाग या सतह (पण्ह १,३)। °ताल पुन [°ताल] १ हस्त-ताल, ताली। २ वाद्य-विशेष (कप्प)। °प्पहार पुं [°प्रहार] तमाचा, चपेटा (दे)। °भंगय न [°भङ्गक] हाथ का आभूषण-विशेष (औप)। °वट्ट न [°पट्ट] बिछौने की चद्दर (वज्जा १०४)। °वट्ट न [°पत्र] ताड वृक्ष का पत्ता (वज्जा १०४)।

तल पुंन [तल] १ वाद्य-विशेष (राय ४६)। २ हथेली, 'अयमाउसो करतले' (सूअ २, १, १६)। ताल वृक्ष की पत्ती (सूअ १, ५, १२)। °वर पुं [°वर] राजा ने प्रसन्न होकर जिसको रत्न जटित सोने का पट्टा दिया हो वह (अणु २२)।

तलअट सक [भ्रम्] भ्रमण करना, घूमना, फिरना। तलअंटइ (हे ४, १६१)।

तलआगत्ति पु [दे] कूप, इनारा (दे ५, ८)।

तलओडा स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष (पण्ण १)।

तलण न [तलन] तलना, भर्जन (पण्ह १, १)।

तलप्प अक [तप्] तपना, गरम होना। तलप्पइ (पिंग)।

तलप्फल पु [दे] शालि, व्रीहि, धान (दे ५,७)।

तलवत्त पु [दे] १ कान का आभूषण-विशेष (दे ५, २१, पाअ)। २ वराग, उत्तमाग (दे ५, २१)।

तलवर पु [दे तलवर] नगर-रक्षक, कोतवाल (णाया १, १, सुपा ३, ७३, औप, महा, ठा ६, कप्प, राय, अणु, उवा)।

तलविंट }
तलवेंट } न [तालवृन्त] व्यजन, पंखा (हे
तलवोंट } १, ६७, प्राप्र)।

तलसारिअ वि [दे] १ गालित। २ मुग्ध, मूर्ख (दे ५, ६)।

तुगिया स्त्री [तुङ्गिका] नगरी-विशेष (भग)।
तुगियायण न [तुङ्गिकायन] एक गोत्र का नाम (कप्प)।
तुगी स्त्री [दे] १ रात्रि, रात (दे ५, १४)। १ आयुध-विशेष, 'असिपरसुकुंततुगीसघट्ट—' (काल)।
तुगीय पु [तुङ्गीय] पर्वत-विशेष (सुर १, २००)।
तुड स्त्रीन [तुण्ड] १ मुख, मुँह (गा ४०२)। २ अग्र-भाग (निचू १)। स्त्री °डी, 'किं कोवि जीविग्रत्थी कडुयइ अहिस्स तुंडीए' (सुपा ३२२)।
तुडीर न [दे] मधुर बिम्बी-फल (दे ५, १४)।
तुडूअ पुं [दे] जीर्ण घट, पुराना घडा (दे ५, १५)।
तुतुक्खुडिअ वि [दे] त्वरा-युक्त (दे ५, १६)।
तुद न [तुन्द] उदर, पेट (दे ५, १४, उप ७२८ टी)।
तुदिल } वि [तुन्दिल] बडा पेटवाला, तोदैल
तुंदिल्ल } (कप्पू, पि ५९५, उत्त ७)।
तुब न [तुम्ब] तुम्बी, अलाबू, लौकी (पउम २६, ३८, ओघ ३८, कुप्र १३६)। २ गाडी की नाभि 'न हि तुबम्मि विणट्ठे अरया साहारया हुंति' (आवम)। ३ 'ज्ञाताधर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन (सम)। °वण न [°वन] सनिवेश-विशेष, एक गाव का नाम (सार्ध २५)। °वीण वि [°वीण] वीणा-विशेष को बजानेवाला (जीव ३)। °वीणिय वि [°वीणिक] वही पूर्वोक्त अर्थ (औप, पण्ह २, ४, णाया १, १)।
तुब न [तुम्ब] पहिए के बीच का गोल अवयव (णंदि ४३)। °वीणा स्त्री [°वीणा] वाद्य-विशेष (राय ४६)।
तुबरु देखो तुंबुरु (इक)।
तुबा स्त्री [तुम्बा] लोकपाल देवो की एक अभ्यन्तर परिषद् (ठा ३, २)।
तुंबाग पुन [तुम्बक] कद्दू, लौकी (दस ५,१ ७०)।
तुंबिणी स्त्री [तुम्बिनी] वल्ली-विशेष (हे ४, ४२७, राज)।

तुंबिल्ली स्त्री [दे] १ मधु पटल, मधपुडा। २ उदूखल, ऊखल (दे ५, २३)।
तुबी स्त्री [तुम्बी] १ तुम्बी, अलाबू, लौकी, कद्दू (दे ५, १४)। २ जैन साधुओ का एक पात्र, तपरनी (सुपा ६४१)।
तुंबुरु पु [तुम्बुरु] १ वृक्ष-विशेष, टिंबरू का पेड (दे ४, ३)। २ गन्धर्व देवो की एक जाति (पण्ण १, सुपा २६४)। ३ भगवान् सुमतिनाथ का शासनाधिष्ठायक देव (संति ७)। ४ शक्रेन्द्र के गन्धर्व-सैन्य का अधिपति देव-विशेष (ठा ७)।
तुक्खार पु [दे] एक उत्तम जाति का अश्व या घोडा, 'अन्न च तत्थ पत्ता तुक्खारतुरगमा बहुविहीया' (सुर ११, ४६, भवि)। देखो तोक्खार।
तुच्छ पुस्त्री [तुच्छा] रिक्ता तिथि, चतुर्थी, नवमी तथा चतुर्दशी तिथि (सुज्ज १०, १५)।
तुच्छ वि [दे] अवशुष्क, सूखा, नीरस (दे ५, १४)।
तुच्छ वि [तुच्छ] १ हलका, जघन्य, निकृष्ट, हीन (णाया १, ५, प्रासू ६६)। २ अल्प, थोडा (भग ६, ३३)। ३ शून्य, रिक्त, खाली (आचा)। ४ असार, निःसार (भग १८, ३)। ५ अपूर्ण (ठा ४, ४)।
तुच्छइअ } वि [दे] रञ्जित, अनुराग-प्राप्त
तुच्छय } (दे ५, १५)।
तुच्छिम पुस्त्री [तुच्छत्व] तुच्छता (वज्जा १५६)।
तुज्ज न [तूर्य] वाद्य, वाजा (सुज्ज १०)।
तुट्ट अक [त्रुट्, तुड्] १ टूटना, छिन्न होना, खण्डित होना। २ खूटना, घटना, बीतना। तुट्टइ (महा, सण, हे ४, ११६), 'अणवरयं देंतस्सवि तुट्टंति न सायरे रयणाइ' (वज्जा १५६)। वकृ. तुट्टत (सण)।
तुट्ट वि [त्रुटित] टूटा हुआ, छिन्न, खण्डित (स ७१८, सूक्त १७, दे १, ६२)।
तुट्टण न [त्रोटन] विच्छेद, पृथक्करण (सूअ १, १, १, वज्जा ११६)।
तुट्टिअ वि [त्रुटित, तुडित] छिन्न, खण्डित (कुमा)।

तुट्टिर वि [त्रुटितृ] टूटनेवाला (कुमा, सण)।
तुट्ठ वि [तुष्ट] तोष-प्राप्त, तृप्त, सतुष्ट खुश (सुर ३, ४१, उवा)।
तुट्ठि स्त्री [तुष्टि] १ खुशी, आनन्द, संतोष (स २००, सुर ३, २५, सुपा २४६, निर १, १)। २ कृपा, मेहरबानी (कुप्र १)।
तुड अक [तुड्] टूटना, अलग होना। तुडइ (हे ४, ११६)।
तुडि स्त्री [त्रुटि] १ न्यूनता, कमी। २ दोष, दूषण (हे ४, ३६०)। ३ सशय, सदेह (सुर ३, १६१)।
तुडिअ न [तुटिक] अन्तःपुर, रनवास, 'तुटिकमन्तःपुरमपदिश्यते' (जीवाभि॰ चू०)।
तुडिअ न [तुटिक] अन्तःपुर, जनानखाना (सुज्ज १८—पत्र २६५)।
तुडिअ वि [त्रुटित] टूटा हुआ, विच्छिन्न (अच्चु २३, दे १, १५६, सुपा ८५)।
तुडिअ न [दे. त्रुटित] १ वाद्य, वादित्र, वाजा (औप, राय, ज ३, पण्ह २, ५)। २ बाहु-रक्षक, हाथ का आभरण-विशेष (औप, ठा ८, पउम ८२, १०४, राय)। ३ सख्या-विशेष; 'तुडिअंग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (इक, ठा २,४)। ४ सांधा, फटे हुए वस्त्र आदि मे लगायी जाती पट्टी, पेवन (निचू २)।
तुडिअंग न [दे त्रुटिताङ्ग] १ सख्या-विशेष, 'पूर्व' को चौरासी लाख से गुणने पर जो सख्या लब्ध हो वह (इक, ठा २, ४)। २ पुं वाद्य देनेवाला कल्प-वृक्ष (ठा १०, सम १७, पउम १०२, १२३)।
तुडिआ स्त्री [तुडिता] लोकपाल देवो के अग्र महिषियो की मध्यम परिषद् (ठा ३, २)।
तुडिआ स्त्री [दे तुटिका] बाहु-रक्षिका, हाथ का आभरण-विशेष (पण्ह १, ४, णाया १, १, टी—पत्र ४३)।
तुणय पुं [दे] वाद्य-विशेष (दे ५, १६)।
तुण्णग देखो तुण्णाग (राज)।
तुण्णण न [तुन्नन] फटे हुए वस्त्र का सन्धान (उप पृ ४१३)।
तुण्णाग } पुं [तुन्नवाय] वस्त्र को साँधनेवाला, रफू करनेवाला, शिल्पी
तुण्णाय } (णंदि, उप पृ २१०, महा)।

१, जी २)। २ एक स्थान से दूसरे स्थान में जाने-आने की शक्तिवाला प्राणी (निचू १२)। °काइय पुं [°कायिक] जंगम प्राणी, द्वीन्द्रियादि जीव (पराह १, १)। °काय पुं [°काय] १ त्रस समूह (ठा २, १)। २ जगम प्राणी (आचा)। °णाम, °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, जिसके प्रभाव से जीव त्रसकाय में उत्पन्न होता है (कम्म १; सम ६७)। °रेणु पुं [°रेणु] परिमाण-विशेष, बत्तीस हजार सात सौ अड़सठ परमाणुओ का एक परिमाण (अणु, पव २५४)। °वाइया स्त्री [°पादिका] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (जीव)।

तसण न [त्रसन] १ स्पन्दन, चलन, हिलन (राज)। २ पलायन (सूअ १, ७)।

तसनाडी स्त्री [त्रसनाडी] त्रस जीवो के रहने का प्रदेश, जो ऊपर-नीचे मिलाकर चौदह रज्जू परिमित है (पव १४३)।

तसर देखो टसर (कप्पू)।

तसिअ वि [दे] शुष्क, सूखा (दे ५, २)।

तसिअ वि [तृषित] तृषातुर, पिपासित, प्यासा हुआ (रयण ८४)।

तसिअ वि [त्रस्त] भीत, डरा हुआ (जीव ३, महा)।

तसियव्व देखो तस = त्रस्।

तसेयर वि [त्रसेतर] एकेन्द्रिय जीव, स्थावर प्राणी (सुपा १६८)।

तह अ [तथा] १ उसी तरह (कुमा, प्रासू १६, स्वप्न १०)। २ और, तथा (हे १, ६७)। ३ पाद-पूर्ति मे प्रयुक्त किया जाता अव्यय (निचू १)। °कार पु [°कार] 'तथा' शब्द उच्चारण (उत्त २६)। °णाण वि [°ज्ञान] प्रश्न के उत्तर को जाननेवाला (ठा ६)। २ न सत्य ज्ञान (ठा १०)। °त्ति अ [इति] स्वीकार-द्योतक अव्यय—वैसा ही (जैसा आप फरमाते हैं) (णाया १, १)। °य अ [°च] १ उक्त अर्थ की दृढ़ता-सूचक अव्यय। २ समुच्चय-सूचक अव्यय (पंचा २)। °वि अ [°पि] तो भी (गउड)। °विह वि [°विध] उस प्रकार का (सुपा ४५६)। देखो तहा।

तह वि [तथ्य] तथ्य, सत्य, सच्चा (सूअ १, १३)।

तह पुं [तथ] आज्ञाकारक, दास, नौकर (ठा ४, २—पत्र २१३)।

तह, तहीय न [तथ्य] १ स्वभाव, स्वरूप (सूअनि १२२)। २ सत्य वचन (सूअ १, १४, २१)।

तह देखो तह = तथा (औप)।

तहरी स्त्री [दे] पङ्कवाली सुरा (दे ५, २)।

तहल्लिआ स्त्री [दे] गो-वाट, गौओ का वाडा, गोशाला (दे ५, ८)।

तहा देखो तह = तथा (कुमा, गउड, आचा, सुर ३, २७)। °गय पु [°गत] १ मुक्त आत्मा। २ सर्वज्ञ (आचा)। °भूय वि [°भूत] उस प्रकार का (पउम २२, ६५)। °रूव वि [°रूप] उस प्रकार का (भग १५)। °वि वि [°विन्] १ निपुण, चतुर २ पु सर्वज्ञ (सूअ १, ४, १)। °हि अ [°हि] वह इस प्रकार (उप ६८६ टी)।

तहि देखो तह = तथा (गा ८७८, उत्त ६)।

तहिं, तहि अ [तत्र] वहां, उसमे (गा २०६, प्राप्र, गा २३४, ऊरु १०५)।

तहिय वि [तथ्य] सत्य, सच्चा, वास्तविक (णाया १, १२)।

तहियं अ [तत्र] वहाँ, उसमें (विसे २७८)।

तहेय, तहेव अ [तथैव] उसी तरह, उसी प्रकार (कुमा, षड्)।

ता अ [तद्] उससे, उस कारण से (हे ४, २७८, गा ४६, ६७, उव)।

ता देखो ताव = तावत् (हे १, २७१, गा १४१, २०१)।

ता अ [तदा] तब, उस समय (रंभा, कुमा, सण)।

ता अ [तर्हि] तो, तब (रभा, कुमा)।

ता स्त्री [ता] लक्ष्मी (सुर १६, ४८)।

ता° स [तद्] वह। °गंध पु [°गन्ध] १ उसका गन्ध। २ उसके गन्ध के समान गन्ध (पराण १७)। °फास पुं [°स्पर्श] १ उसका स्पर्श। २ वैसा स्पर्श (पराण १७)। °रस पुं [°रस] १ वह स्पर्श। २ वैसा स्पर्श (पराण १७)। °रूव न [°रूप] १ वह रूप। २ वैसा रूप (पराण १७—पत्र ५२२)।

ताअ देखो ताव = ताप (गा ७९७, ८१४, हका ५०)।

ताअ पुं [तात] १ तात, पिता, बाप (सुर १, १२३, उत्त १४)। २ पुत्र, वत्स (सूअ १, ३, २)।

ताअ सक [त्रै] रक्षण करना। कृ तायव्व (श्रा १२)।

ताअप्प न [तादात्म्य] तद्रूपता, अभेद, अभिन्नता (प्राकृ २४)।

ताइ वि [त्यागिन्] त्याग करनेवाला (गा २३०)।

ताइ वि [तायिन्] रक्षक, परिपालक (उत्त ८)।

ताइ वि [तापिन्] ताप-युक्त (सूअ १, १५)।

ताइ वि [त्रायिन्] रक्षक, रक्षण करनेवाला (उत्त २१, २२)।

ताइ वि [तायिन्] उपकारी (सूअ १, २, २, १७)।

ताइ पुं [त्रायिन्] मुनि, साधु (दसनि २, ६)।

ताइअ वि [त्रात] रक्षित (उव)।

ताउ (अप) देखो ताव = तावत् (कुमा)।

ताठा (चूपै) देखो दाढा (हे ४, ३२५)।

ताड सक [ताडय्] १ ताडन करना, पीटना। २ प्रेरणा करना, आघात करना। ३ गुणाकार करना। ताडइ (हे ४, २७)। भवि ताडइस्सं (पि २४०)। वकृ. ताडिंत (काल)। कवकृ. ताडिज्जमाण, ताडीअंत, ताडीअमाण (सुपा २६, पि २४०, अभि १५१) हेकृ ताडिउ (कप्पू)। कृ. ताडिअ (उत्त १६)।

ताड पु [ताल] ताड का पेड (स २५६)।

ताडंक पुं [ताडङ्क] कान का आभूषण-विशेष, कुण्डल (दे ६, ६३, कप्पू; कुमा)।

ताडण न [ताडन] १ ताडन, पीटना (उप ६८६ टी, गा ५४६)। २ प्रेरणा, आघात (से १२, ८३)।

ताडाविय वि [ताडित] पिटवाया गया (सुपा २८८)।

ताडिअ देखो ताड = ताडय्।

ताडिअ वि [ताडित] १ जिसका ताडन किया गया हो वह, पीटा हुआ (पाअ)। २

तुलग्गा स्त्री [दे] यदृच्छा, स्वैरिता, स्वेच्छा, अपनी मरज़ी (विक्र ३५)।

तुलण न [तुलन] तौलना, तोलन (कप्पू, वज्जा १५७)।

तुलणा स्त्री [तुलना] तौलना, तोलन (उप पृ २७८, स ६६२)।

तुलणा स्त्री [तुलना] तौल, वजन (धर्मवि ६)।

तुलय वि [तोलक] तौलनेवाला (सुपा १६७)।

तुलसिआ स्त्री [तुलसिका] नीचे देखो (कुमा)।

तुलसी स्त्री [दे तुलसी] लता-विशेष, तुलसी (दे ५, १४, पएण १, ठा ८; पाअ)।

तुला स्त्री [तुला] १ राशि-विशेष (सुपा ३६)। २ तराज़ू, तौलने का साधन (सुपा ३६०, गा १६१)। ३ उपमा, सादृश्य (सूअ २, २)। °सम वि [°सम] राग द्वेपसे रहित, मध्यस्थ (बृह ६)।

तुला स्त्री [तुला] १०५ या ५०० पल का एक नाप (अणु १५४)।

तुलिअ वि [तुलित] १ उठाया हुआ, ऊँचा किया हुआ (से ६, २०)। २ तौला हुआ (पाअ)। गुना हुआ (राज)।

तुलेअव्व देखो तुल।

तुल्ल वि [तुल्य] समान, सरीखा (भग, प्रासू १२, १४६)।

तुवट्ट देखो तुयट्ट। तुवट्टे (वव ४)।

तुवट्ट पु [त्वग्वर्त] शयन, लेटना (वव ४)।

तुवर अक [त्वर्] त्वरा होना, शीघ्र होना, तेज होना। तुवरइ (हे ४, १७०)। वकृ तुवरत (हे ४,१७०)। प्रयो वकृ तुवराअत (नाट—मालती ५०)।

तुवर पुन [तुवर] १ रस-विशेष, कषाय रस (दे ५, १६)। २ वि कषाय रसवाला, कसैला (से ८, ५५)।

तुवरा देखो तुरा (नाट—महावीर २७)।

तुवरी स्त्री [तुवरी] अन्न-विशेष, अरहर (श्रा १८, गा ३५८)।

तुस पु [तुष] १ कोद्रव—कोदव या कोदो आदि तुच्छ धान्य (ठा ८)। २ धान्य का छिलका, भूसी (दे २, ३६)।

तुसणीअ वि [तूष्णीक] मौनी (अच्चु १७६)।

तुसली स्त्री [दे] धान्य-विशेष, 'त तत्थवि तो तुसलिं वावइ सो किंणिवि वरवीयं' (सुपा ५४५), 'देवगिहे जतीए तुज्झ तुसली अणुएणाया' (सुपा १३ टि)।

तुसार न [तुषार] हिम, बर्फ, पाला (पाअ)। °कर पु [°कर] चन्द्र, चन्द्रमा (सुपा ३३)।

तुसारअर देखो तुसार-कर (त्रि १०३)।

तुसिण देखो तुसणीअ (सबोध १७)।

तुसिणिय, तुसिणीय वि [तूष्णीक] मौनी, चुप, वचन-रहित (णाया १, १—पत्र २८, ठा ३, ३)।

तुसिणी अ [तूष्णीम्] मौन, चुप्पी, 'तइआ तुसिणीए भुजए पढमो' (पिंड १२२, ३१३)।

तुसिय पु [तुषित] लोकान्तिक देवों की एक जाति (णाया १, ८, सम ८५)।

तुसेअजभ न [दे] दारु, लकडी, काष्ठ (दे ५, १६)।

तुसोदग, तुसोदय न [तुषोदक] व्रीहि आदि का धौत-जल—धोवन (राज, कप्प)।

तुस्स देखो तूस = तुष्। तुस्सइ (विसे ६३२)।

तुह° स [त्वत्°] तुम। °तणय वि [°सम्बन्धिन्] तुम्हारा, तुमसे संबन्ध रखनेवाला (सुपा ५५३)।

तुहग पु [तुहग] कन्द की एक जाति (उत्त ३६, ६६)।

तुहार (अप) वि [त्वदीय] तुम्हारा (हे ४, ४३४)।

तुहिण न [तुहिन] हिम, तुषार, बर्फ (पाअ)। °इरि पुं [°गिरि] हिमाचल पर्वत (गउड)। °कर पु [°कर] चन्द्रमा (कप्पू)। °गिरि देखो °इरि (सुपा ६५८)। °लय पु [°लय] हिमालय पर्वत (सुपा ८८)।

तुहिणायल पु [तुहिनाचल] हिमालय पर्वत (धर्मवि २४)।

तूअ पु [दे] ईख का काम करनेवाला (दे ५, १६)।

तूण पु न [तूण] इषुधि, भाथा, तरकस, तूणीर (हे १, १२५, षड्, कुमा)।

तूणइल्ल पुं [तूणावत्] तूणा नामक वाद्य बजानेवाला (पएह २, ४, औप, कप्प)।

तूणय पुं [तूणक] वाद्य-विशेष (अचा २, ११, १)।

तूणा, तूणि° स्त्री [तूणा] १ वाद्य-विशेष (राय, अणु)। २ इपुधि, भाथा (ज ३, पि १२७)।

तूअरी स्त्री [तूवरी] रहर, अरहर (पिंड ६२३)।

तूर देखो तुरव। तूरइ (हे ४, १७१, षड्)। वकृ. तूरत, तूरंत, तूरमाण, तूरेमाण (हे ४, १७१, सुपा २६१, षड)।

तूर पु न [तूर्य] वाद्य, बाजा, तुरही (हे २,६३, षड्, प्राप्र)। °वइ पु [°पति] नटों का नटों का मुखिया (बृह १)।

तूरत, तूरमाण देखो तूर = तुरव।

तूरविअ वि [त्वरित] जिसको शीघ्रता कराई गई हो वह (से १२, ८३)।

तूरिय पुं [तौर्यिक] वाद्य बजानेवाला, बजनियां (स ७०५)।

तूरी स्त्री [दे] एक प्रकार की मिट्टी (जी ४)।

तूरंत, तूरेमाण देखो तूर = तुरव।

तूल न [तूल] रुई, रूआ, बीज-रहित कपास (औप, पाअ भवि)।

तूलिअ न. नीचे देखो, 'नणु विणासिज्जइ महग्घिय तूलिय गड्डुयमाइय' (महा)।

तूलिआ स्त्री [तूलिका] १ रूई से भरा मोटा बिछौना, गद्दा, तोशक (दे ५, २२)। २ तसवीर—चित्र बनाने की कलम (णाया १,८)।

तूलिणी स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष, शालमली का पेड (दे ५, १७)।

तूलिल्ल वि [तूलिकावत्] तसवीर बनाने की कलमवाला, कूर्चिका-युक्त (गउड)।

तूली स्त्री [तूली] देखो तूलिआ (सुर २, ८२, पउम ३५, २४, सुपा २६२)।

तूवर देखो तुवर (विपा १, १—पत्र १६)।

तूस अक [तुष्] खुश होना। तूसइ, तूसए (हे ४, २३६, सक्षि ३६, षड्)। कृ. तूसियव्व (पएह २, ५)।

तूह देखो तित्थ (हे १, १०४, २, ७२, कुमा, दे ५, १६)।

ताल की तरह लम्बी जाँघवाला (णाया १, ८)। °ज्झय पुं [°ध्वज] १ बलदेव (आवम)। २ नृप-विशेष (दंस १)। ३ शत्रुञ्जय पहाड (ती १)। °पलंब पुं [°प्रलम्ब] गोशालक का एक उपासक (भग ८, ५)। °पिसाय पुं [°पिशाच] दीर्घ-काय राक्षस (पराह १)। °पुड देखो °उड (श्रा १२)। °यर पु [°चर] एक मनुष्य-जाति, चारण (ओघ ७६६)। °विंट, °विंत, °वेंट, °वोंट न [°वृन्त] व्यजन, पखा (पि ५३, नाट—वेणी १०४, हे १, ६७, प्राप्र)। °संवुड पुं [°संपुट] ताल के पत्रों का सपुट, ताल-पत्र संचय (सूअ १, ५, १)। °सम वि [°सम] ताल के अनुसार स्वर, स्वर-विशेष (ठा ७)।

तालंक पुं [ताडङ्क] १ कुण्डल, कान का आभूषण-विशेष। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

तालंकि पुस्त्री [तालङ्किन्] छन्द-विशेष। स्त्री. °णी (पिंग)।

तालग न [तालक] ताला, द्वार बन्द करने का यन्त्र (उप ३३९ टी)।

तालण देखो ताडण (औप)।

तालणा स्त्री [ताडना] चपेटा आदि का प्रहार (पराह २, १, औप)।

तालप्फली स्त्री [दे] दासी, नौकरानी (दे ५, १)।

तालय देखो तालग (सुपा ४१४, कुप्र २५२)।

तालसम न [तालसम] गेय काव्य का एक भेद (दसनि २, २३)।

तालहल पु [दे] शालि, व्रीहि (दे ५, ७)।

ताला अ [तदा] उस समय, 'ताला जाअंति गुणा, जाला ते सहिअएहिं घिप्पंति' (हे ३, ६५, काप्र ५२१)।

ताला स्त्री [दे] लाजा, खोई, धान का लावा (दे ५, १०)।

तालाचर पुं [तालचर] ताल (वाद्य) बजाने-वाला (निचू १५)।

तालाचर } पु [तालाचर] १ प्रेक्षक-विशेष, तालायर } ताल देनेवाला प्रेक्षक (णाया १, १)। १ नट, नर्त्तक आदि मनुष्य-जाति (बृह ३)।

तालिअ वि [ताडित] आहत, पीटा हुआ (णाया १, ५)।

तालिअंट सक [भ्रमय्] घुमाना, फिराना। तालिअंटइ (हे ४, ३०)।

तालिअंट न [तालवृन्त] व्यजन, पंखा (स ३०८)।

तालिअंटिर वि [भ्रमयितृ] घुमानेवाला (कुमा)।

तालिज्जंत देखो ताल = ताडय्।

तालिस देखो तारिस (उत्त ५, ३१)।

ताली स्त्री [ताली] १ वृक्ष-विशेष (चारु ६३)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। °पत्त न [°पत्र] ताल-वृक्ष के पत्ता का बना हुआ पंखा (चारु ६३)।

तालु } न [तालु, °क] तालु, मुँह के अन्दर तालुअ } का ऊपरी भाग, तलुआ (सत्त ४९, णाया १, १६)।

तालुग्घाडणी स्त्री [तालोद्धाटनी] विद्या-विशेष, ताला खोलने की विद्या (वसु)।

तालुर पुं [दे] १ फेन, फीण। २ कपित्थ वृक्ष, कैथ का पेड (दे ५, २१)। ३ पानी का आवर्त्त (दे ५, २१, गा ३७, पाअ)। ४ पु पुष्प का सत्व (विक्र ३२)।

तालेंत देखो ताल = तालय्।

ताव सक [तापय्] १ तपाना, गरम करना। २ सताप करना, दु ख उपजाना। तावेंति (गा ८५०)। कर्म. ताविज्जति (गा ७)। कृ. तावणिज्ज (भग १५)।

ताव पुं [ताप] १ गरमी, ताप (सुपा ३८६, कप्पू)। २ सताप, दु ख (आव ४)। ३ सूर्य, रवि। °दिसा स्त्री [°दिश्] सूर्य-तापित दिशा (राज)।

ताव अ [तावत्] इन अर्थों का सूचक अव्यय। १ तवतक (पउम ६८, ५०)। २ प्रस्तुत अर्थ (आवम)। ३ अवधारण, निश्चय। ४ अवधि, हद। ५ पक्षान्तर। ६ प्रशंसा। ७ वाक्य-भूषा। ८ मान। ९ साकल्य, सपूर्णता। १० तव, उस समय (हे १, ११)।

तावअ वि [तावक] त्वदीय, तुम्हारा (अच्चु ५३)।

तावइअ वि [तावत्] उतना (सम १४४, भग)।

ताव देखो ताव = तावत् (भग)।

तावँ } (अप) देखो ताव = तावत् तावँहिं } (कुमा)।

तावण पुं [तापन] चौथी नरकभूमि का एक नरकस्थान (देवेन्द्र ८)। २ वि तपानेवाला (त्रि ९७)।

तावण न [तापन] १ गरम करना, तपाना (निचू १)। २ पु. इक्ष्वाकु वश का एक राजा (पउम ५, ५)।

तावणिज्ज देखो ताव = तापय्।

तावत्तीस } देखो तायत्तीसग (औप, तावत्तीसग } पि ४४५, ४३८, काल)। तावत्तीसय }

तावत्तीसा देखो तायत्तीसा (पि ४३८)।

तावस पु [तापस] १ तपस्वी, योगी, सन्यासि-विशेष (औप)। २ एक जैनमुनि (कप्प)। °गेह न [°गेह] तापसो का मठ (पाअ)।

तावसा स्त्री [तापसा] जैन मुनियो की एक शाखा (कप्प)।

तावसी स्त्री [तापसी] तपस्विनी, योगिनी (गउड)।

ताविअ वि [तापित] तपाया हुआ, गरम किया हुआ (गा ५३, विपा १, ३, सुर ३, २२०)।

ताविआ स्त्री [तापिका] तवा, पूआ आदि पकाने का पात्र (दे २, ५९)। २ कडाही, छोटा कडाह (आवम)।

ताविच्छ पुंन [तापिच्छ] वृक्ष-विशेष, तमाल का पेड (कुमा, दे १, ३७, सुपा ५८)।

तावी स्त्री [तापी] नदी-विशेष (पउम ३५, १, गा २३९)।

तास पु [त्रास] १ भय, डर (उप पृ ३५)। २ उद्वेग, सताप (पराह १, १)।

तासण वि [त्रासन] त्रास उपजानेवाला (पराह १, १)।

तासि वि [त्रासिन्] १ त्रास-युक्त, त्रस्त। २ त्रास-जनक (ठा ४, २, कप्पू)।

तासिअ वि [त्रासित] जिसको त्रास उप-जाया गया हो वह (भवि)।

ताहे अ [तदा] उस समय, तव (हे ३, ६५)।

ति अ [त्रि] तीन वार (ओघ ५४२)।

तेउ देखो तेअय (पव २३१)।
तेंडुअ न [दे] वृक्ष-विशेष, टीवरू का पेड (दे ५, १७)।
तेंदु | तेंदुअ | तेंदुग पु [तिन्दुक] १ वृक्ष-विशेष, तेंदु का पेड (पण्ण १, ठा ८, पउम ४२, ७)। २ गेंद, कन्दुक (पउम १५, १३)।
तेंदुसय पु [दे] कन्दुक, गेंद (णाया १, ८)।
तेंवरु पु [दे] क्षुद्र कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (जीव १)।
तेगिच्छ देखो तेइच्छ (सुर १२, २११)।
तेगिच्छग वि [चिकित्सक] १ चिकित्सा करनेवाला। २ पु वैद्य, हकीम (उप ५६४)।
तेगिच्छा देखो तेइच्छा (सुर १२, २११)।
तेगिच्छायण देखो तिंगिच्छायण (राज)।
तेगिच्छि देखो तिगिंछि (राज)।
तेगिच्छिय वि [चैकित्सिक] १ चिकित्सा करनेवाला। २ पु. वैद्य, हकीम। ३ न. चिकित्सा-कर्म, प्रतीकार-करण। °साला स्त्री [°शाला] दवाखाना, चिकित्सालय (णाया १, १३—पत्र १७९)।
तेचत्तालीस देखो ते-आलीस (प्राकृ ३१)।
तेज देखो तेज = तेज्य। तेजई, (प्राकृ ७५)।
तेज पु [नेज] देश-विशेष (सम्मत्त २१६)।
तेजसि देखो तअसि (पि ७४)।
तेजपाल पु [तेजपाल] गुजरात के राजा वीरधवल का एक यशस्वी मन्त्री (ती २)।
तेजलपुर न [तेजलपुर] गिरनार पर्वत के पास मन्त्री तेजपाल का वसाया हुआ एक नगर (ती २)।
तेजस्सि देखो तेअसि (वव १)।
तेज्ज (अप) देखो चय = त्यज्। तेजइ (पिंग)। सकृ. तेज्जिअ (पिंग)।
तेज्जिअ (अप) वि [त्यक्त] छोड़ा हुआ (पिंग)।
तेड सक [दे] बुलाना। तेडति (सम्मत्त १६१)।
तेड्डु पु [दे] १ शलभ, अन्न-नाशक कीट, टिड्डी। २ पिशाच, राक्षस (दे ५, २३)।
तेण अ [तेन] १ लक्षण-सूचक अव्यय, 'भमररुअ तेण कमलवणं' (हे २, १८३, कुमा)। २ उस तरफ (भग)।
तेण | तेणग | तेणय पुं [स्तेन] चोर, तस्कर (ओघ ११, कस, गच्छ ३, ओघ ४०२)। °प्पओग पु [°प्रयोग] १ चोर को चोरी करने के लिए प्रेरणा करना। २ चोरी के साधनों का दान या विक्रय (वमं २)।
तेणिअ | तेणिक्क न [स्तैन्य] चोरी, अदत्त वस्तु का ग्रहण (श्रा १४, ओघ ५६९; पण्ह १, ३)।
तेणिस वि [तैनिश] तिनिशवृक्ष-सबन्धी, येंत का (भग ७, ९)।
तेणा स्त्री [स्तेना] चोर स्त्री (सम्मत्त १६१)।
तेण्ण न [स्तैन्य] चोरी, पर द्रव्य का अपहरण (निचू १)।
तेण्हाइअ वि [तृष्णित] तृष्णा-युक्त, प्यासा (से १३, ३९)।
तेतलि पुं [तेतलिन्] १ धरणेन्द्र के गन्धर्व-सेना का नायक (इक)। २ देखो तेअलि (णाया १, १४—पत्र १९०)।
तेतिल देखो तीइल (ज ७)।
तेत्तिअ वि [तावत्] उतना (प्राप्र, गउड, गा ७१, कुमा)।
तेत्तिक (शौ) देखो तेत्तिअ (प्राकृ ९५)।
तेत्तिर देखो तित्तिर (जीव १)।
तेत्तिल वि [तावत्] उतना (हे २, १५७, कुमा)।
तेत्तिल न [तैतिल] ज्योतिष-प्रसिद्ध करण-विशेष (सुज्ज्ञनि ११)।
तेत्तुल | तेत्तुल्ल (अप) ऊपर देखो (हे ४, ४०७, कुमा, हे ४, ४३५ टि)।
तेत्थु (अप) देखो तत्थ = तत्र (हे ४, ४०४, कुमा)।
तेद्दह देखो तेत्तिल (हे २, १५७, प्राप्र, षड्, कुमा)।
तेन्न देखो तेण्ण (कस)।
तेम (अप) देखो तह = तथा (पिंग)।
तेमासिअ वि [त्रैमासिक] १ तीन महीने में होनेवाला (भग)। २ तीन मास-संबन्धी (सुर ६, २११, १४, २२८)।
तेम्व देखो तेम (हे ४, ४१८)।
तेर वि [त्रयोदश] तेरहवाँ (कम्म ६, १६)।
तेर (अप) वि [त्वदीय] तेरा, तुम्हारा (प्राकृ १२०)।
तेर | तेरस त्रि व [त्रयोदशन्] तेरह, दस और तीन (श्रा ४४, द २१, कम्म २, २९, ३३)।
तेरच्छ देखो तिरिच्छ = तिर्यंच् (प्राकृ १९)।
तेरम देखो तेरसम (कम्म ६, १६, पव ४६)।
तेरसम वि [त्रयोदश] तेरहवाँ (सम २५, णाया १, १—पत्र ७२)।
तेरसया स्त्री [दे] जैन मुनिओं की एक शाखा (कप्प)।
तेरसी स्त्री [त्रयोदशी] १ तेरहवीं। २ तिथि-विशेष, तेरस (सम २९, सुर ३, १०५)।
तेरसुत्तरसय त्रि [त्रयोदशोत्तरशततम] एक सौ तेरहवाँ, ११३ वाँ (पउम ११३, ७२)।
तेरह देखो तेरस (हे १, १६५, प्राप्र)।
तेरासि पुं [त्रैराशिक] नपुंसक (पिंड ५७३)।
तेरासिअ वि [त्रैराशिक] १ मत विशेष का अनुयायी, त्रैराशिक मत—जीव, अजीव और नोजीव इन तीन राशियों को मानने वाला (औप; ठा ७)। २ न. मत विशेष (सम ४०, विसे २४५१, ठा ७)।
तेरिच्छ देखो तिरिच्छ = तिर्यंच् (पव ३८)।
तेरिच्छ देखो तिरिच्छ = तिरश्चीन; 'दिव्वं व मणुस्सं वा तेरिच्छं वा सरागहिमएणं' (आप २१)।
तेरिच्छ न [तिर्यक्त्व] तिर्यंचपन, पशु-पक्षिपन (उप १०३१ टी)।
तेरिच्छिअ वि [तैरश्चिक] तिर्यक्-सबन्धी (ओघ २९९, भग)।
तेल न [तैल] १ गोत्र-विशेष, जो माण्डव्य गोत्र की एक शाखा है (ठा ७)। २ तिल का विकार, तेल (सक्षि १७)।
तेलग पु. व [तैलङ्ग] १ देश-विशेष। २ पुस्त्री. देश-विशेष का निवासी मनुष्य, तैलंगी (पिंग)।
तेलाडी स्त्री [तैलाटी] कीट-विशेष, गधोली (दे ७, ८४)।
तेलुक्क | तेलोअ | तेलोक्क न [त्रैलोक्य] तीन जगत—स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक (प्रासू ९७, प्राप्र, णाया १, ४, पउम ८ ७६, हे १, १४८, २, ९७, षड्, सक्षि १७)। °दंसि वि [°दर्शिन्] सर्वज्ञ, सर्वदर्शी

१२,३४, स ६६६)। °सूलपाणि पु [°शूलपाणि] १ महादेव, शिव। २ त्रिशूल का हाथ में रखनेवाला सुभट (पउम ५६, ३५)। °सूलिया स्त्री [°शूलिका] छोटा त्रिशूल (सूत्र १, ५, १)। °हत्तर वि [°सप्तत] तिहत्तरवाँ, ७३ वाँ (पउम ७३, ८६)। °हा अ [°धा] तीन प्रकार से (पि ४५१, अणु)। °हुअण, °हुण, °हुवण न [°भुवन] १ तीन जगत्, स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक (कुमा, सुर १, ८, प्रासू ४६, अच्चु १६)। २ पु. राजा कुमारपाल के पिता का नाम (कुप्र १४४)। °हुअणपाल पु [°भुवनपाल] राजा कुमारपाल का पिता (कुप्र १४४)। °हुअणालंकार पु [°भुवनालंकार] रावण के पट्टहस्ती का नाम (पउम ८१, १२२)। °हुणविहार पुं [°भुवनविहार] पाटण (गुजरात) में राजा कुमारपाल का बनवाया हुआ एक जैन मन्दिर (कुप्र १४४)। देखो ते°।

°ति देखो इअ = इति (कुमा, कम्म २, १२, २३)।

तिअ (अप) अक [तिम्, स्तिम्] १ आर्द्र होना। २ सक आर्द्र करना। तिअइ (प्राकृ १२०)।

तिअ न [त्रिक] १ तीन का समुदाय (श्रा १, उप ७२८ टी)। २ वह जगह जहाँ तीन रास्ते मिलते हो (सुर १, ६३)। °संजअ पुं [°संयत] एक राजर्षि (पउम ५, ५१)। देखो तिग।

तिअ वि [त्रिज] तीन से उत्पन्न होनेवाला (राज)।

तिअंकर पुं [त्रिकंकर] स्वनाम-ख्यात एक जैनमुनि (राज)।

तिअग न [त्रिकक] तीन का समुदाय (विसे २६४३)।

तिअडा स्त्री [त्रिजटा] स्वनाम-ख्यात एक राक्षसी (से ११, ८७)।

तिअभंगी स्त्री [त्रिभङ्गी] छन्द-विशेष (पिंग)।

तिअय न [त्रितय] तीन का समूह (विसे १४३२)।

तिअलुक्क, तिअलोय न [त्रैलोक्य] तीन जगत्—स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक (धर्मा ६०, लहुअ ६)।

तिअस पु [त्रिदश] देव, देवता (कुमा, सुर १, ६)। °गअ पुं [°गज] ऐरावत या ऐरावण हाथी, इन्द्र का हाथी (से ६, ६१)। °नाह पुं [°नाथ] इन्द्र (उप ६८६ टी, सुपा ४४)। °पहु पु [°प्रभु] इन्द्र, देव-नायक (सुपा ४७, १७६)। °रिसि पुं [°ऋषि] नारद मुनि (कुप्र २७३)। °लोग पु [°लोक] स्वर्ग (उप १०१६)। °विलया स्त्री [°वनिता] देवी, स्त्री देवता (सुपा २६७)। °सरि स्त्री [°सरित्] गगा नदी (कुप्र)। °सेल पु [°शैल] मेरु पर्वत (सुपा ४८)। °लय पुन [°लय] स्वर्ग (कुप्र १६, उप ७२८ टी; सुर १, १७२)। °हिव पुं [°धिप] इन्द्र (सुपा ३४)। °हिवइ पु [°धिपति] इन्द्र (सुपा ७६)।

तिअससूरि पु [त्रिदशसूरि] बृहस्पति (सम्मत्त १२०)।

तिअसिंद पु [त्रिदशेन्द्र] इन्द्र, देव-पति (वज्जा १५४)।

तिअसेंद देखो तिअसिंद (चेइय ६१०)।

तिअसीस पु [त्रिदशेश] इन्द्र, देव-नायक (हे १, १०)।

तिआमा स्त्री [त्रियामा] रात्रि, रात (अच्चु ४६)।

तिइक्ख सक [तितिक्ष्] सहन करना। तिइक्खए (आचा)। वकृ. तिइक्खमाण (आचा)।

तिइक्खा स्त्री [तितिक्षा] क्षमा, सहिष्णुता (आचा)।

तिइज्ज, तिइय वि [तृतीय] तीसरा पि ४४६, सक्षि २०)।

तिउक्खर न [त्रिपुष्कर] वाद्य-विशेष (अजि ३१)।

तिउट्ट सक [त्रोटय्] १ तोडना। २ परित्याग करना। तिउट्टिज्जा (सूअ १, १, १, १)।

तिउट्ट अक [त्रुट्] १ टूटना। २ मुक्त होना, 'सव्वदुक्खा तिउट्टइ' (सूअ १, १५, ५)।

तिउट्ट वि [त्रुट्ट, त्रुटित] १ टूटा हुआ। २ अपसृत (आचा)।

तिउड पु [दे] कलाप, मोर-पिच्छ (पाअ)।

तिउडग पुन [त्रिपुटक] धान्य विशेष (दसनि ६, ८, पव १५६)।

तिउडय न [दे] १ मालव देश मे प्रसिद्ध धान्य-विशेष (श्रा १८)। २ लौंग, लवग (श्रा पत्र ६६)।

तिउर न [त्रिपुर] एक विद्याधर-नगर (इक)।

तिउर पु [त्रिपुर] असुर-विशेष (त्रि ६४)। °णाह पु [°नाथ] वही (त्रि ८७)।

तिउरा स्त्री [त्रिपुरी] नगरी-विशेष, चेदि देश की राजधानी (कुमा)।

तिउल वि [दे] मन, वचन और काया को पीडा पहुँचानेवाला, दु ख का हेतु (उत्त २)।

तिऊड देखो तिकूड (से ८, ८३, ११, ६८)।

तिंगिआ स्त्री [दे] कमल-रज (दे ५, १२)।

तिंगिन्छ देखो तिगिन्छ (इक)।

तिंगिन्छायण न [चिकित्सायन] नक्षत्र-गोत्र-विशेष (इक)।

तिंगिच्छि स्त्री [दे] कमल-रज, पद्म का रज, पराग (दे ५,१२, गउड, हे २,१७४, ज ४)।

तिंत वि [तीमित] भीजा हुआ (स ३३२, हे ४, ४३१)।

तिंतिण, तिंतिणिअ वि [दे] बडबड करनेवाला, बडबडानेवाला, वाञ्छित लाभ न होने पर खेद से मन मे जो आवे सो बोलनेवाला (वव १, ठा ६—पत्र ३७१, कस)।

तिंतिणी स्त्री [तिन्त्रिणी] १ चिंचा, इमली का पेड (अभि ७१)।

तिंतिणी स्त्री [दे] बडबडाना (वव ३)।

तिंदुइणी स्त्री [तिन्दुकिनी] वृक्ष-विशेष (कुप्र १०२)।

तिंदुग, तिंदुय पु [तिन्दुक] १ वृक्ष-विशेष, तेंदू का पेड (पाअ, पउम २०, ३७, सम १५२, पणण १७)। २ न. फल-विशेष (पणण १७)। ३ श्रावस्ती नगरी का एक उद्यान (विसे २३०७)।

तिंदुग, तिंदुय पुं [तिन्दुक] त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, १३६, सुख ३६, १३९)।

°पुत्त [°पुत्र] एक प्रक प्रसिद्ध जैन ग्राचार्य (ग्रावम)।

तोसलिय पुं [तोसलिक] तोसलि-ग्राम का ग्रधीश क्षत्रिय (ग्रावम)।

तोसविअ } वि [तोषित] खुश किया हुग्रा, तोसिअ } संतोषित (हे ३, १५०, पउम ७७, ८८)।

तोहार (ग्रप) देखो तुहार (पिंग; पि ४३४)।

°त्त वि [°त्र] त्राण-कर्ता, राक्षक, 'सकलत्तं संतुट्ठो सकल त्तो सो नरो होइ' (सुपा ३६६)।

°त्तण देखो तण (से १, ६१)।

°त्ति ग्र [इति] उपालम्भ-सूचक ग्रव्यय (प्राकृ ७८)।

°त्ति देखो इअ = इति (कप्प, स्वप्न १०, सण)।

°त्थ देखो एत्थ (गा १३२)।

°त्थ वि [°स्थ] स्थित, रहा हुग्रा (ग्राचा)।

°त्थ देखो अत्थ (वाग्र १५)।

°त्थअ देखो थय = स्तृत (से १, १)।

°त्थउड देखो थउड (गउड)।

°त्थव देखो थव (चारु २०)।

°त्थभ देखो थभ (कुमा)।

°त्थभण देखो थंभण (वा १०)।

°त्थरु देखो थरु (पि ३२७)।

°त्थल देखो थल (काप्र ८७)।

°त्थली देखो थली (पि ३८७)।

°त्थव देखो थव = स्तु। वकृ °त्थवंत (नाट)।

°त्थवअ देखो थवय (से १, ४०, नाट)।

°त्थाण देखो थाण (नाट)।

°त्थाल देखो थाल (कुमा)।

°त्थिअ देखो थिअ (गा ४२१)।

°त्थिर देखो थिर (कुमा)।

°त्थोअ देखो थोअ (नाट—वेणी २४)।

॥ इग्र सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि तयाराइसद्दसकलणो
तेवीसइमो तरगो समत्तो ॥

थ

थ पु [थ] दन्त-स्थानीय व्यञ्जन-विशेष (प्राप, प्रामा)।

थ ग्र १-२ वाक्यालंकार ग्रौर पाद-पूर्ति में प्रयुक्त किया जाता ग्रव्यय, 'किं थ तय पम्हुट्ठ जं थ तया भो जयंत पवरम्मि' (णाया १, १—पत्र १४८, पचा ११)।

°थ देखो एत्थ (गा १३१, १३२, सण)।

थइअ वि [स्थगित] ग्राच्छादित, ढका हुग्रा (से ५, ४३, गा ५७०)।

थइअ° } स्त्री [स्थगिका] पानदानी, पान थइआ } रखने का पात्र, पानदान (महा)। °इत्त पुं [°वत्] ताम्बूल-पात्र-वाहक नौकर (कुप्र ७१)। °वर पु [°धर] ताम्बूल-पात्र का वाहक नौकर (सुपा १०७)। °वाहक पु [°वाहक] पानदानी का वाहक नौकर (सुपा १०७)। देखो थगिय°।

थइआ स्त्री [दे] थेली, थैली, कोथली या वसनी—कमर मे बांधने की रुपयो की थैली 'संवलथइग्रासणाहो', 'दसिया संवलत्थई (? इ) या' (कुप्र १२, ८०)।

थइउं देखो थय = स्थगय्।

थउड न [स्थपुट] १ विपम ग्रौर उन्नत प्रदेश (दे २, ७८)। २ वि नीचा-ऊँचा (गउड)।

थउडिअ वि [स्थपुटित] १ विपम ग्रौर उन्नत प्रदेशवाला। २ नीचा-ऊँचा प्रदेशवाला (गउड)।

थउड्ड न [दे] भल्लातक, वृक्ष-विशेष, भिलावा (दे ५, २६)।

थग सक [उद् + नामय्] ऊँचा करना, उन्नत करना। थंगइ (प्राकृ ३५)।

थंडिल न [स्थण्डिल] १ शुद्ध भूमि, जन्तु-रहित प्रदेश (कस, निचू ४)। २ क्रोध, गुस्सा (सूग्र १, ९)।

थडिल्ल पुं [स्थण्डिल] क्रोध, गुस्सा (सूग्र १, ९, १३)।

थंडिल्ल न [स्थण्डिल] शुद्ध भूमि (सुपा ५५८, ग्राचा)।

थडिल्ल न [दे] मण्डल, वृत्त प्रदेश (दे ५, २५)।

थंत देखो था।

थंव वि [दे] विपम, ग्रसम (दे ५, २४)।

थंव पुं [स्तम्ब] तृण ग्रादि का गुच्छ (दे ८, ४६, ग्रोघ ७७१, कुप्र २२३)।

थंभ ग्रक [स्तम्भ्] १ रुकना, स्तब्ध होना, स्थिर होना, निश्चल होना। २ सक. क्रिया-निरोध करना, ग्रटकाना, रोकना, निश्चल करना। थंभइ (भवि)। कर्म थभिज्जइ (हे २, ९)। संकृ. थंभिउ (कुप्र ३८५)।

थभ पुं [स्तम्भ] घेरा, 'थंभतित्थत्थभत्थं एइ रोसप्पसरकलुसिग्रो नाह सगामसीहो' (हम्मीर २२)। °तित्थ न [°तीर्थ] एक जैन तीर्थ (हम्मीर २२)।

थंभ पु [स्तम्भ] १ स्तम्भ, थम्भा, खम्भा (हे २, ९, कुमा, प्रासू ३३)। २ ग्रभिमान, गर्व, ग्रहकार (सूग्र १, १३, उत्त ११)। °विज्जा स्त्री [°विद्या] स्तब्ध—बेहोश या निश्चेष्ट करने की विद्या (सुपा ४९३)।

थंभण न [स्तम्भन] १ स्तब्ध-करण, थमांना (विसे ३००७, सुपा ५९९)। २ स्तब्ध करने का मन्त्र (सुपा ५९९)। ३

तितिक्खा देखो तिइक्खा (सम ५७)।

तित्त वि [तृप्त] तृप्त, संतुष्ट, खुश (विसे २४०६, औप, दे १, १६, सुपा १६३)।

तित्त वि [तिक्त] १ तीता, कडुआ (णाया १६)। २ पुं तीता रस (ठा १)।

तित्ति देखो तत्ति = दे (सिरि २७, संबोध ६)।

तित्ति स्त्री [तृप्ति] तृप्ति, सतोष (उत्त ५६७ टी, दे १, ११७, सुपा ३७५, प्रासू १४०)।

तित्ति [दे] तात्पर्य, सार (दे ५, ११, षड्)।

तित्तिअ त्रि [तावत्] उतना (हे २, १५६)।

तित्तिअ पुं [तित्तिक] १ म्लेच्छ देश-विशेष। २ उस देश मे रहनेवाली म्लेच्छ जाति (पण्ह १, १)। देखो तिणिगअ।

तित्तिर, तित्तिर पुं [तित्तिरि] पक्षि-विशेष, तीतर या तित्तिर (हे १,६०, कुप्र ४२७)।

तित्तिरिअ वि [दे] स्नान से आर्द्र (दे ५, १२)।

तित्तिल वि [तावत्] उतना (षड्)।

तित्तिल्ल पु [दे] द्वारपाल, प्रतीहार (गा ५५६)।

तित्तुअ वि [दे] गुरु, भारी (दे ५, १२)।

तित्तुल (अप) देखो तित्तिल (हे ४, ४३५)।

तित्थ पुं [त्रिस्थ] साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका का समुदाय, जैनसंघ (विसे १०३५)।

तित्थ पुं [त्र्यर्थ] ऊपर देखो (विसे १३०६)।

तित्थ न [तीर्थ] प्रथम गणधर (णंदि १३० टी)।

तित्थ न [तीर्थ] १ ऊपर देखो (विसे १०३३; ठा १)। २ दर्शन, मत (सम्म ८, विसे १०४८)। ३ यात्रा स्थान, पवित्र जगह (धर्म २, राय, अभि १२७)। ४ प्रवचन, शासन, जिन-देव प्रणीत द्वादशाङ्गी (धर्म ३)। ५ पुन अवतार, घाट, नदी वगैरह में उतरने का रास्ता (विसे १०२६, विक्र ३२, प्रति ८२, प्रासू ६०)। °कर, °गर देखो °यर (सम ६७, कप्प; पउम २०, ८, हे १, १७७)। °जत्ता स्त्री [°यात्रा] तीर्थ-गमन (धर्म २)। °णाह, °नाह पुं [°नाथ] जिन-देव (स ७६१, उप पृ ३५०, सुपा ६५६, सार्घ ४३, सं ३५)। °यर वि [°कर] १ तीर्थ का प्रवर्तक। २ पुं. जिन-देव, जिन भगवान् (णाया १,८, हे १,१७७, सं १०१) स्त्री. °री (णदि)। °यरणाम न [°करनामन्] कर्म-विशेष, जिसके उदय से जीव तीर्थंकर होता है (ठा ६)। °राय पुं [°राज] जिन-देव (उप पृ ४००)। °सिद्ध पु [°सिद्ध] तीर्थ-प्रवृत्ति होने पर जो मुक्ति प्राप्त करे वह जीव (ठा १,१)। °ाहिनायग पुं [°ाधिनायक] जिनदेव (उप ६८६ टी)। °ाहिव पु [°ाधिप] सघनायक, जिन-देव (उप १४२ टी)। °ाहिवइ पु [°ाधिपति] जिनदेव, जिन भगवान् (पाअ)।

तित्थकर पु [तीर्थङ्कर] देखो तित्थ-यर (चेइय ६५१)।

तित्थि वि [तीर्थिन्] १ दार्शनिक, दर्शन-शास्त्र का विद्वान्। २ किसी दर्शन का अनुयायी (गु ३)।

तित्थिअ वि [तीर्थिक] ऊपर देखो (प्रवो ७४)।

तित्थीय वि [तीर्थीय] ऊपर देखो (विसे ३१६६)।

तित्थेसर पुं [तीर्थेश्वर] जिन-देव, जिन भगवान् (सुपा ५१, ८६, २६०)।

तिदस देखो तिअस (नाट—विक्र २८)।

तिदिव न [त्रिदिव] स्वर्ग, देवलोक (सुपा १४२, कुप्र ३२०)।

तिध (अप) देखो तहा (हे ४, ४०१, कुमा)।

तिन्न देखो तिण्ण (सम १)।

तिन्न वि [दे] स्तोमित, आर्द्र, गीला (णाया १, ६)।

तिपन्न देखो ते-वण्ण (पच ५, १८)।

तिप्प सक [तिप्] देना। तिप्पइ (पिंड २६७)।

तिप्प अक [तृप्] तृप्त होना। वकृ. तिप्पत (पिंड ६४७)।

तिप्प सक [तर्पय्] तृप्त करना, हेकृ 'न इमा जीवो सक्को तिप्पेउ कामभोगेहिं' (पच्च ५५)। कृ. तिप्पियव्व (पउम ११, ७३)।

तिप्प अक [तिप्] १ झरना, चूना। २ अफसोस करना। ३ रोना। ४ सक, सुख-च्युत करना। तिप्पामि, तिप्पति (सूअ २, १, २, २, ५५)। वकृ. तिप्पमाण (णाया १, १—पत्र ४७)। प्रयो. वकृ. तिप्पयंत (सम ५१)।

तिप्प पुंन [त्रेप] अपान आदि धोने की क्रिया, शौच (गच्छ २, ३२)।

तिप्प वि [तृप्त] संतुष्ट, खुश (हे १, १२८)।

तिप्पण न [तेपन] पीडन, हैरानी (सूअ २, २, ५५)।

तिप्पणया स्त्री [तेपनता] अश्रु-विमोचन, रोदन (ठा ४, १, औप)।

तिप्पाय न [त्रिपाद] तप-विशेष, नीवी (सवोघ ५८)।

तिम (अप) देखो तहा (हे ४, ४०१, भवि, कम्म १)।

तिमि पु [तिमि] मत्स्य की एक जाति (पण्ह १, १)।

तिमिंगिल पु [दे] मत्स्य, मछली, तिमि (मत्स्य) को निगलनेवाला मत्स्य (दे ५,१३)।

तिमिंगिल पु [तिमिङ्गिल] मत्स्य की एक जाति (दे ५, १३, से ७, ८, पण्ह १, १)। °गिल पु [°गिल] एक प्रकार का महान् मत्स्य, बडी भारी मछली (सूअ २, ६)।

तिमिगिलि पु [तिमिङ्गिलि] मत्स्य की एक जाति (पउम २२, ८३)।

तिमिगिल देखो तिमिंगिल = तिमिङ्गिल (उप ५१७)।

तिमिच्छय, तिमिच्छाह पुं [दे] पथिक, मुसाफिर (दे ५, १३)।

तिमिण न [दे] गीला काष्ठ (दे ५, ११)।

तिमिर न [तिमिर] १ अन्धकार, अँधेरा (पडि, कप्प)। २ निकाचित कर्म (धर्म २)। ३ अल्प ज्ञान। ४ अज्ञान (आचू ५)। ५ पुं. वृक्ष-विशेष (स २०६)।

तिमिरिच्छ पुं [दे] वृक्ष विशेष, करज का पेड (दे ५, १३)।

तिमिरिस पु [दे] वृक्ष विशेष (पण्ण १—पत्र ३३)।

तिमिल स्त्रीन [तिमिल] वाद्य-विशेष (पउम ५७, २२)। स्त्री. °ला (राज)।

तिमिस पु [तिमिष] एक प्रकार का पौधा, पेठा, कुम्हडा (कप्पू)।

तिमिसा, तिमिस्सा स्त्री [तिमिस्रा] वैताढ्य पर्वत की एक गुफा (ठा २, ३, पण्ह १, १—पत्र १४)।

थर पु [दे] दही की तर, दही के ऊपर की मलाई (दे ५, २४)।

थरत्थर } अक [दे] थरथरना, काँपना। थरथर } थरत्थरइ, थरथरेइ, थरहरइ (सुड्डि थरहर } ६६, पि २०७, सुर ७, ६, गा १६५)। वकृ. थरथरत, थरथराअत, थरथराअमाण, थरथरेंत (ग्रोघ ४७०, पि ५५८, नाट—मालती ५५, पउम ३१, ४४)।

थरहरिअ वि [दे] कम्पित (दे ५, २७, भवि, सुर १, ७, सुपा २१, जय १०)।

थरु पु [दे त्सरु] खड्ग-मुष्टि, तलवार की मूठ (दे ५, २४)।

थरुगिण पु [थरुक्तिन] १ देश-विशेष। २ पुंस्त्री उस देश का निवासी। स्त्री °गिणिआ (इक)।

थल न [स्थल] १ भूमि, जगह, सूखी जमीन (कुमा, उप ६८६ टी)। २ ग्रास लेते समय खुले हुए मुँह की फाँक, खुले हुए मुँह की खाली जगह (वव ७)। °इल्ल वि [°वत्] स्थल-युक्त (गउड)। °कुक्कुडियंड न [°कुक्कुट्यण्ड] कवल प्रक्षेप के लिए खुला हुआ मुख (वव ७)। °चार पु [°चार] जमीन में चलना (ग्राचा)। °नलिणी स्त्री [°नलिनी] जमीन मे होनेवाला कमल का गाछ (कुमा)। °य वि [°ज] जमीन मे उत्पन्न होनेवाला (पएण १, पउम १२, ३७)। °यर वि [चर] १ जमीन पर चलनेवाला। २ जमीन पर चलनेवाला पचेन्द्रिय तिर्यंच प्राणी (जीव ३, जी २०, ग्रौप)। स्त्री °री (जीव ३)।

थलय पु [दे] मंडप, तृणादि-निर्मित गृह (दे ५, २५)।

थलहिगा } स्त्री [दे] मृतक-स्मारक, शव को थलहिया } गाडकर उस पर किया जाता एक प्रकार का चबूतरा (स ७५६, ७५७)।

थली स्त्री [स्थली] जल शून्य भू-भाग (कुमा, पाग्र)। °घोडय पु [°घोटक] पशु-विशेष (वव ७)।

थली स्त्री [स्थली] ऊँची जमीन (उत्त ३०, १७, सुख ३०, १७)।

थल्लिया स्त्री [दे स्थालिका] थलिया, छोटा थाल, भोजन करने का बरतन (पउम २०, १६६)।

थव सक [स्तु] स्तुति करना। वकृ. थवत (नाट)।

थव देखो थय=स्तव (हे २, ४६, सुपा ४४६)।

थव पुं [दे] पशु, जानवर (दे ५, २४)।

थवइ पु [स्थपति] वर्धकि, बढई (दे २, २२)।

थवइअ वि [स्तबकित] स्तवकवाला, गुच्छ-युक्त (णाया १ १ ग्रौप)।

थवइल्ल वि [दे] जाँघ फैलाकर बैठा हुआ (दे ५, २६)।

थवक्क पु [दे] थोक, समूह, जत्था, 'लब्भइ कुलवहुसुरए थवक्कग्रो सयलसोक्खाण' (वज्जा ६६)।

थवण देखो थयण (ग्राव २)।

थवणिया स्त्री [स्थापनिका] न्यास, जमा रखी हुई वस्तु, 'कन्नगोभूमालियथवणियग्रवहारकूडसक्खिज्जं' (सुपा २७५)।

थवय पुं [स्तवक] फूल ग्रादि का गुच्छ (दे २, १०३, पाग्र)।

थविआ स्त्री [दे] प्रसेविका, वीणा के ग्रन्त मे लगाया जाता छोटा काष्ठ-विशेष (दे २, २५)।

थविय वि [स्थापित] न्यस्त, निहित (भवि)।

थविय वि [स्तुत] जिसकी स्तुति की गई हो वह, श्लाघित (सुपा ३४३)।

थविर वि [स्थविर] वृद्ध, बूढा (धर्मवि १३४)।

थवी [दे] देखो थविआ (दे २, २५)।

थस } वि [दे] विस्तीर्ण (दे ५, २५)। थसल }

थह पुं [दे] निलय, ग्राश्रय, स्थान (दे ५, २५)।

था देखो ठा। थाइ (भवि)। भवि. थाहिइ (पि ५२४)। वकृ थत (पउम १४, १३४, भवि)। सकृ. थाऊण (हे ४, १६)।

थाइ वि [स्थायिन्] रहनेवाला। °णी स्त्री [°नी] वर्ष-वर्ष पर प्रसव करनेवाली घोडी (राज)।

थागत्त न [दे] जहाज के भीतर घुसा हुआ पानी (सिरि ४, २५)।

थाण देखो ठाण (हे ४, १६, विमे १८५६, उप पृ ३३२)।

थाणय न [स्थानक] ग्रालवाल, कियारी (दे ५, २७)।

थाणय न [दे] १ चौकी, पहरा, 'भयाणया ग्रडवि त्ति निविट्ठाइं थाणयाइं', 'तग्रो वहुवोलियाए रयणीए थाणयनिविट्ठा तुरियतुरियं मागया सवरपुरिसा' (स ५३७, ५४६)। २ पु. चौकीदार, चौकी करनेवाला ग्रादमी, पहरेदार, 'पहायसमए य विससरिएसु थाणएसुं' (स ५३७)।

थाणिज्ज वि [दे] गौरवित, सम्मानित (दे ४, ५)।

थाणीय वि [स्थानीय] स्थानापन्न (स ६६७)।

थाणु पुं [स्थाणु] १ महादेव, शिव (हे २, ७, कुमा, पाग्र)। २ ठूठा वृक्ष (गा २३२, पाग्र), 'दवदड्ढथाणुसरिसं' (कुप्र १०२)। ३ खीला। ४ स्तम्भ (राज)।

थाणेसर न [स्थानेश्वर] समुद्र के किनारे पर का एक शहर (उप ७२८ टी, स १४८)।

थाम वि [दे] विस्तीर्ण (दे ५, २५)।

थाम न [स्थामन्] १ वल, वीर्य, पराक्रम (हे ४, २६७, ठा ३, १)। २ वि. वल-युक्त (निचू ११)। °व वि [°वत्] वलवान् (उत्त २)।

थाम पुंन [स्थामन्] १ वल। २ प्राण, 'था (? था) मो वा परिहायइ गुणणु (? गुणणणु) प्पेहासु ग्र ग्रसत्तो' (पिंड ६६४)।

थाम न [दे स्थान] स्थान, जगह (सुपा ४७, स ४६, ७४३), 'सेवालियभूमितले फिल्लुसमाणा य थामथामम्मि' (सुर २, १०५)।

थार पुं [दे] घन, मेघ (दे ५, २७)।

थारुणय वि [थारुकिन] देश-विशेष मे उत्पन्न। स्त्री. °णिया (ग्रौप)। देखो थरुगिण।

थाल पुंन [स्थाल] वडी थलिया, भोजन करने का पात्र (दे ६, १२, ग्रंत ५, उप पृ २५७)।

थालइ वि [स्थालकिन्] १ थालवाला। २ पु. वानप्रस्थ का एक भेद (ग्रौप)।

थाला स्त्री [दे] धारा (षड्)।

तिलोत्तमा स्त्री [तिलोत्तमा] एक स्वर्गीय अप्सरा (उप ७६८ टी, महा)।

तिलोदग } न [तिलोदक] तिल का धोवन — तिलोदय } जल (आचा, कप्प)।

तिल्ल न [तैल] तैल, तेल (सूक्त ३५, कुप्र २४०)।

तिल्ल न [तिल्ल] छन्द-विशेष (पिंग)।

तिल्लग वि [तैलक] तेल बेचनेवाला, तेली (बृह १)।

तिल्लहडी स्त्री [दे] गिलहरी, गु० खीसकोली (नंदी टि पत्र. १३३ मुद्रित) मारवाडी मे तालोडी, ताली।

तिल्लोदा स्त्री [तैलोदा] नदी-विशेष (निचू १)।

तिवँ (अप) देखो तहा (हे ४, ३९७)।

तिवण्णी स्त्री [त्रिवर्णी] एक महौषधि (ती ५)।

तिवाय सक [त्रि + पातय्] मन, वचन और काय से नष्ट करना, जान से मार डालना। तिवायए (सूअ १, १, १, ३)।

तिविक्कम पु [त्रिविक्रम] जैनमुनि; 'गहिया नियएहि (? तिपएहि) मही, तिविक्कमो तेण विक्खाओ' (धर्मवि ८६)।

तिविडा स्त्री [दे] सूची, सूई (दे ५, १२)।

तिविडी स्त्री [दे] पुटिका, छोटा पुडवा (दे ५, १२)।

तिव्व वि [तीव्र] १ प्रबल, प्रचण्ड, उत्कट (भग १५, आचा)। २ रौद्र, भयानक, डरावना (सूअ १, ५, १)। ३ गाढ़, निबिड (पण्ह १, १)। ४ तिक्त, कडुआ (भग ६, ३४)। ५ प्रकृष्ट, उत्तम, प्रकर्ष-युक्त (णाया १, १—पत्र ४)।

तिव्व वि [दे तीव्र] १ दु सह, जो कठिनता से सहन हो सके (दे ५, ११, सूअ १, ३, ३, १, ५, १, २, ६, आचा)। २ अत्यन्त अधिक, अत्यर्थ (दे ५, ११, धर्म २, औप, पण्ह १, ३, पचा १५, आव ६, उवा)।

तिसंथ वि [त्रिसंस्थ] तीन वार सुनने से अच्छी तरह याद कर लेने की शक्तिवाला (धर्मसं १२०७)।

तिसला स्त्री [त्रिशला] भगवान् महावीर की माता का नाम (सम १५१)। °सुअ पुं [°सुत] भगवान् महावीर (पउम १, ३३)।

तिसा स्त्री [तृषा] प्यास, पिपासा (सुर ६, २०६, पात्र)।

तिसाइय } वि [तृषित] तृषातुर, प्यासा तिसिय } (महा, उत्त, पण्ह १, ४, सुर १, १९६)।

तिसिर पु व. [त्रिशिरस्] १ देश-विशेष (पउम ९८, ६५) २ पु नृप-विशेष (पउम ६६, ४६)। ३ रावण का एक पुत्र (मे १२, ५६)।

तिस्सगुत्त देखो तीसगुत्त (राज)।

तिह (अप) देखो तहा (कुमा)।

तिहि पुंस्त्री [तिथि] पचदश चन्द्र-कला से युक्त काल, दिन, तारीख (चंद १०, पि १८०)।

तीअ वि [तृतीय] तीसरा (सम १५०, सक्षि २०)।

तीअ नि [अतीत] १ गुजरा हुआ, बीता हुआ (सुपा ४४६, भग) २ पुं भूतकाल (ठा ३, ४)।

तीइल पु [तैतिल] ज्योतिष-प्रसिद्ध करण-विशेष (विसे ३३४८)।

तीमण न [तीमन] कढी, खाद्य-विशेष, झोर (दे २, ३५, सण)।

तीमिअ वि [तीमित] आर्द्र, गीला (कुप्र ३७३)।

तीय वि [तैन] तीन (सूअ, १, २, २, २३)।

तीर अक [शक्] समर्थ होना। तीरइ (हे ४, ८६)।

तीर सक [तीरय्] समाप्त करना, परिपूर्ण करना। तीरइ, तीरेइ (हे ४, ८६, भग)। संकृ तीरित्ता (कप्प)।

तीर पुन [तीर] किनारा, तट, पार (स्वप्न ११९, प्रासू ६०, ठा ४, १, कप्प)।

तीरगम वि [तीरगम] पार-गामी, पार जानेवाला (आचा)।

तीरट्ठ पुं [तीरस्थ, तीरार्थ] साधु, मुनि, श्रमण (दसनि २, ६)।

तीरिय वि [तारित] समापित, परिपूर्ण किया हुआ (पव ५)।

तीरिया स्त्री [दे] शर या तीर रखने का थैला, तरकश, तूणीर, बाणधि (?), 'गहियमणेण पासत्थं धणुवरं, सचिओ तीरियासरो' (स २६७)।

तीस न [त्रिंशत्] १ संख्या-विशेष, तीस, ३०। २ तीस-सख्यावाला (महा, भवि)।

तीसआ } स्त्री [त्रिंशत्] ऊपर देखो (सक्षि तीसइ } २१)। °वरिस वि [°वर्ष] तीस वर्ष की उम्र का (पउम २, २८)।

तीसइम वि [त्रिंश] १ तीसवां (पउम ३०, ९८)। २ न लगातार चौदह दिनो का उपवास (णाया १, १)।

तीसग वि [त्रिंशक] तीस वर्ष की उम्रवाला (तदु १७)।

तीसगुत्त पु [तिष्यगुप्त] एक प्राचीन आचार्य-विशेष, जिसने अन्तिम प्रदेश में जीव की सत्ता का पन्थ चलाया था (ठा ७)।

तीसभद्द पु [तिष्यभद्र] एक जैनमुनि (कप्प)।

तीसम वि [त्रिंश] तीसवाँ (भवि)।

तीसा स्त्री देखो तीस (हे १, ९२)।

तीसिया स्त्री [त्रिंशिका] तीस वर्ष के उम्र की स्त्री (वव ७)।

तु अ [तु] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ भिन्नता, भेद, विशेषण (श्रा २७, विसे ३०३५)। २ अवधारण, निश्चय (सूअ १, २, २)। ३ समुच्चय (सूअ १, १, १)। ४ कारण, हेतु (निचू १)। ५ पाद-पूरक अव्यय (विसे ३०३५, पंचा ४)।

तुअ सक [तुद्] व्यथा करना, पीडा करना। तुयइ (षड्)। प्रयो. सकृ तुयावइत्ता (ठा ३, २)।

तुअर पुं [तुवर] धान्य-विशेष, रहर (जं १)।

तुअर अक [त्वर्] त्वरा होना, शीघ्र होना, जल्दी होना। तुअर (गा ६०९)।

तुंग वि [तुङ्ग] १ ऊँचा, उच्च (गा २५६, औप)। २ पु छन्द-विशेष (पिंग)।

तुंगार पु [तुङ्गार] अग्नि कोण का पवन (आवम)।

तुंगिम पुस्त्री [तुङ्गिमन्] ऊँचाई, उच्चत्व (सुपा १२४, वज्जा १५०, कप्पू, सण)।

तुंगिय पु [तुङ्गिक] १ ग्राम-विशेष (आवम)। २ पर्वत-विशेष, 'तुंगे तुंगियसिहरे गंतु तिव्व तव तवइ' (कुप्र १०२)। ३ पुस्त्री गात्र-विशेष में उत्पन्न, 'जसभद्दं तुंगियं वंदे' (णदि)।

थुक्क अक [थूत्+कृ] १ थूकना। २ सक. तिरस्कार करना, थुतकारना, अनादर के साथ निकालना। थुक्केइ (वज्जा ४६)। संकृ. थुक्किऊण (सुपा ३४६)।

थुक्क न [थूत्कृत] थूक, कफ, खखार (दे ४, ४१)।

थुक्कार पु [थूत्कार] तिरस्कार (राय)।

थुक्कार सक [थूत्कारय्] तिरस्कार करना। कवकृ थुक्कारिज्जमाण (पि ५६३)।

थुक्किअ वि [दे] उन्नत, ऊँचा (दे ५, २८)।

थुक्किअ वि [थूत्कृत] थूका हुआ (दे ५,२८, सुपा ३४६)।

थुड न [दे स्थुड] वृक्ष का स्कन्ध, 'चीरीउ करेऊरण वद्धा ताए थुडेसुं' (सुपा ५८४, ३६६)।

थुडकिअय न [दे] रोष-युक्त वचन (पाअ)।

थुडुकिअ न [दे] १ अल्प-कुपित मुँह का सकोच, थोडा गुस्सा होने से होता मुँह का संकोच। २ मौन, चुपकी (दे ५, ३१)।

थुडुहीर न [दे] चामर (दे ५, २८)।

थुण सक [स्तु] स्तुति करना, गुण-वर्णन करना। थुणइ (हे ४, २४१)। कर्म. थुव्वइ, थुरिणज्जइ (हे ४, २४२)। वकृ. थुणंत (भवि)। कवकृ. थुव्वत, थुव्वमाण (सुपा ८८, सुर ४, ६६, स ७०१)। सकृ. थोऊण (काल)। हेकृ. योत्तुं (मुणि १०८७५)। कृ थुव्व, थोअव्व (भवि, चैत्य ३५, से ७१०)।

थुणण न [स्तवन] गुण-कीर्तन, स्तुति (सुपा ३७)।

थुणिर वि [स्तोतृ] स्तुति करनेवाला (काल)।

थुण्ण वि [दे] हप्त, अभिमानी (दे ५, २७)।

थुत्त न [स्तोत्र] स्तुति, स्तुति-पाठ (भवि)।

थुत्थुक्कारिय वि [थुथुत्कारित] थुतकारा हुआ, तिरस्कृत, अपमानित (भवि)।

थुथूकार पु [थुथूत्कार] तिरस्कार (प्रयौ ८१)।

थुरुणुल्लणय न [दे] शय्या, बिछौना (दे ५, २८)।

थुलम्म पु [दे] पट-कुटी, तवू, वस्त्र-गृह, कपड-कोट, खेमा (दे ५, २८)।

थुल्ल वि [दे] परिवर्तित, वदला हुआ (दे ५, २७)।

थुल्ल वि [स्थूल] मोटा (हे २, ९९, प्रामा)।

थुल्ल वि [स्थूल] मोटा, तगडा। स्त्री. °ल्ली (पिंड ४२६)।

थुव देखो थुण। थुवइ (प्राकृ ६७)।

थुवअ वि [स्तावक] स्तुति करनेवाला (हे १, ७५)।

थुवण न [स्तवन] स्तुति, स्तव (कुप्र ३५१)।

थुव्व, थुव्वंत } देखो थुण।

थू अ निन्दा-सूचक अव्यय, 'थू निल्लज्जो लोओ' (हे २, २००, कुमा)।

थूण पुं [दे] अश्व, घोडा (दे ५, २९)।

थूण देखो तेण = स्तेन (हे २, १४७)।

थूणा स्त्री [स्थूणा] खम्भा, खूँटी (पड्, पराग १५)।

थूणाग पु [स्थूणाक] सन्निवेश विशेष, ग्राम-विशेष (आवम)।

थूथू अ [दे] घृणा-सूचक अव्यय (चड)।

थूभ पु [स्तूप] थूहा, टीला, ढूह, स्मृति स्तम्भ (विसे ९९८, सुपा २०६, कुप्र १६५, आचा २, १, २)।

थूभिया, थूभियागा } स्त्री [स्तूपिका] १ छोटा स्तूप (ओघ ४३९, औप)। २ छोटा शिखर (सम १३७)।

थूरी स्त्री [दे] तन्तुवाय का एक उपकरण (दे ५, २८)।

थूल देखो थुल्ल (पाअ, पउम १४, ११३, उवा)। °भद्द पुं [°भद्र] एक सुप्रसिद्ध जैन महर्षि (हे १, २५५, पडि)।

थूलघोण पुं [दे] सूकर, वराह (दे ५,२९)।

थूव, थूह } देखो थूभ (दे ७, ४०, सुर १, ५८)।

थूह पुं [दे] १ प्रासाद का शिखर (दे ५, ३२, पाअ)। २ चातक पक्षी। ३ वल्मीक, दीमक (दे ५, ३२)।

थेअ वि [स्थेय] १ रहने योग्य। २ जो रह सकता हो। ३ पुं. फैसला करनेवाला, न्यायाधीश (हे ४, २६७)।

थेग पुं [दे] कन्द-विशेष (श्रा २०, जी ९)।

थेज्ज न [स्थैर्य] स्थिरता (विसे १४)।

थेज्ज देखो थेअ (वव ३)।

थेण पु [स्तेन] चोर, तस्कर (हे १,१४७)।

थेणिल्लिअ वि [दे] १ हृत, छीना हुआ। २ भीत, डरा हुआ (दे ५, ३२)।

थेप्प देखो थिप्प। थेप्पइ (पि २०७, संक्षि ३४)।

थेर वि [स्थविर] १ वृद्ध, वूढ़ा (हे १,१६६। २, ८९; भग ६, ३३)। २ पु जैन साधु (ओघ १७, कप्प)। °कप्प पुं [°कल्प] १ जैन मुनियो का आचार-विशेष, गच्छ मे रहनेवाले जैन मुनियो का अनुष्ठान। २ आचार-विशेष का प्रतिपादक ग्रन्थ (ठा ३, ४; ओघ ६७०)। °कप्पिय पु [°कल्पिक] आचार-विशेष का आश्रय करनेवाला, गच्छ मे रहनेवाला जैन मुनि (पव ७०)। °भूमि स्त्री [°भूमि] स्थविर का पद (ठा ३, २)। °ावलि स्त्री [°ावलि] १ जैन मुनियो का समूह। २ क्रम से जैन मुनि-गए के चरित्र का प्रतिपादक ग्रंथ-विशेष (णदि, कप्प)।

थेर पु [दे. स्थविर] ब्रह्मा, विधाता (दे ५, २९, पाअ)।

थेरासण न [दे. स्थविरासन] पद्म, कमल (दे ५, २९)।

थेरिअ न [स्थैर्य] स्थिरता (कुमा)।

थेरिया, थेरी } स्त्री [स्थविरा] १ वृद्धा, बुढिया (पाअ, ओघ २१ टी)। २ जैन साध्वी (कप्प)।

थेरोसण न [दे. स्थविरासन] अम्बुज, कमल, पद्म (पड्)।

थेव पुं [दे] विन्दु (दे ५,२९, पाअ, पड्)।

थेव देखो थोव (हे २, १२५, पाअ, सुर १, १८१)। °कालिय वि [°कालिक] अल्प काल तक रहनेवाला (सुपा ३७५)।

थेवरिअ न [दे] जन्म-समय मे बजाया जाता वाद्य (दे ५, २९)।

थोअ देखो थोव (हे २, १२५, गा ४६, गउड; संक्षि १)।

थोअ पुं [दे] १ रजक, धोबी। २ मूलक, मूला, कन्द-विशेष (दे ५, ३२)।

थोअव्व, थोऊण } देखो थुण।

थोक देखो थोक्क (प्राकृ ३८)।

थोक्क, थोग } देखो थोव (दे २, १२५, जो १)।

तुण्णिय वि [तुन्नित] रफू किया हुआ, साँधा हुआ (वृह १)।

तुण्हि अ [तूष्णीम्] मौन, चुप्पी, चुपकी, चुपचाप, चुपकेसे, मौन होकर (भवि)।

तुण्हि पुं [दे] सूकर, सूअर (दे ५, १४)।

तुण्हिं देखो तुण्हि = तूष्णीम् (प्राक ३२)।

तुण्हिअ, तुण्हिक्क } वि [तूष्णीक] मौन रहा हुआ, मौन रहनेवाला, चुप रहनेवाला (प्राप्र, गा २८४, सुर ४, १४८)।

तुण्हिक्क वि [दे] मृदु-निश्चल (दे ५, १५)।

तुण्हीअ देखो तुण्हिअ (स्वप्न ४२)।

तुत्त देखो तोत्त (सुपा २३७)।

तुद देखो तुअ। तुदए (षड्)। वकृ तुदं (विसे १४७०)।

तुद पु [तोद] प्रतोद, अरदार डंडा, चाबुक (सूअ १, ५, २, ३)।

तुन्नण न [तुन्नन] रफू करना (गच्छ ३, ७)।

तुन्नाय देखो तुण्णाय (णदि १६४)।

तुन्नार पु [तुन्नकार] रफू करनेवाला शिल्पी (धर्मवि ७३)।

तुप्प पुं [दे] १ कौतुक। २ विवाह, शादी। ३ सर्षप, सरसो, धान्य-विशेष। ४ कुतुप, घी आदि भरने का चर्म-पात्र (दे ५, २२)। ५ वि. अक्षित, चुपड़ा हुआ, घी आदि से लिप्त (दे ५, २२, कप्प, गा २२, २८६, हे १, २००)। ६ स्निग्ध, स्नेह-युक्त (दे ५, २२, श्रोघ ३०७ भा)। ७ न घृत, घी (से १५, ३८, सुपा ६३४, कुमा)।

तुप्प वि [दे] वेष्टित (अणु २६)।

तुप्पइअ, तुप्पलिअ, तुप्पविअ | वि [दे] घी से लिप्त (गा ५२० अ)।

तुमतुम पुं [दे] क्रोध-कृत मनो-विकार विशेष (ठा ८—पत्र ४४१)।

तुमतुम पुं [दे] १ तूकारवाला वचन, तिरस्कार वचन, तू, तू (सूअ १, ६, २७)। २ वाक्-कलह, 'अप्पतुमतुमे' (उत्त २६, ३६)। ३ वि. तूकारे से बात कहनेवाला (संबोध १७)।

तुमुल पुं [तुमुल] १ लोम-हर्षण युद्ध, भयानक संग्राम (गउड)। २ न. शोरगुल (पाअ)।

तुम्ह स [युष्मत्] तुम, आप (हे १, २४६)।

तुम्हकेर वि [त्वदीय] तुम्हारा (कुमा)।

तुम्हकेर वि [युष्मदीय] आपका, तुम्हारा (हे १, २४६, २, १४७)।

तुम्हार (अप) ऊपर देखो (भवि)।

तुम्हारिस वि [युष्मादृश] आपके जैसा, तुम्हारे जैसा (हे १, १४२, गउड, महा)।

तुम्हेच्चय वि [यौष्माक] आपका, तुम्हारा (हे २, १४६, कुमा, षड्)।

तुयट्ट अक [त्वग् + वृत्] पार्श्व को घुमाना, करवट फिराना। तुयट्टइ, (कप्प, भग)। तुयट्टेज, तुयट्टेजा (भग, औप)। हेकृ. तुयट्टित्तए (आचा)। कृ. तुयट्टियव्व (णाया १, १, भग, औप)।

तुयट्टण न [त्वग्वर्तन] पार्श्व-परिवर्तन, करवट फिराना (ओघ १५२ भा, औप)।

तुयट्टावण न [त्वग्वर्तन] करवट बदलवाना। (आचा)।

तुयावइत्ता देखो तुअ।

तुर अक [त्वर्] त्वरा होना, जल्दी होना, शीघ्र होना। वकृ तुरंत, तुरेत, तुरमाण, तुरेमाण (हे ४, १७२, प्रासू ५८, षड्)।

तुर°, तुरा } स्त्री [त्वरा] शीघ्रता, जल्दी (दे ५, १६)। °वंत वि [°वत्] त्वरा-युक्त, त्वरावाला, जल्दबाज (से ४, ३०)।

तुरग पु [तुरङ्ग] अश्व, घोडा (कुमा, प्रासू ११७)। २ रामचन्द्र का एक सुभट (पउम ५६, ३८)।

तुरगम पु [तुरङ्गम] अश्व, घोडा (पाअ, पिंग)।

तुरंगिआ स्त्री [तुरङ्गिका] घोडी (पाअ)।

तुरंत देखो तुर।

तुरक्क पु [दे तुरुष्क] १ देश-विशेष, तुर्किस्तान। २ अनार्य जाति-विशेष, तुर्क (ती १४)।

तुरग देखो तुरय (भग ११, ११, राय)। °मुह पु [°मुख] अनार्य देश-विशेष (सूअ १, ५ टी)। °मेढग पुं [°मेढ़क] अनार्य देश-विशेष (सूअ १, ५, १ टी)।

तुरमणी देखो तुरुमणी (सट्ठि ५७ टी)।

तुरमाण देखो तुर।

तुरय पु [तुरग] १ अश्व, घोडा (पराह १, ४)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। °देहपिञ्जरण न [°देहपञ्जरण] अश्व को सिंगारना, सँवारना, शृंगार करना (पाअ)। देखो तुरग।

तुरयमुह देखो तुरग-मुह (पव २७४)।

तुरिअ वि [त्वरित] १ त्वरा-युक्त, उतावला (पाअ, हे ४, १७२, औप, प्राप्र)। २ क्रिवि. शीघ्र जल्दी (सुपा ४६४ भवि)। °गइ वि [°गति] १ शीघ्र गतिवाला। २ पु अमितगति नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १)।

तुरिअ वि [तुर्य] चौथा, चतुर्थ (सुर ४, २५०, कम्म ४, ६६, सुपा ४६४)। °निद्दा स्त्री [°निद्रा] मरणदशा (उप पृ १४३)।

तुरिअ न [तूर्य] वाद्य, वादित्र, बाजा, 'तुरियाण सनिनाएण, दिव्वेण गगण फुसे' (उत्त २२, १२)।

तुरिमिणी देखो तुरुमणी (राज)।

तुरी स्त्री [दे] १ पीन, पुष्ट। २ शय्या का उपकरण (दे ५, २२)।

तुरु न [दे] वाद्य-विशेष (विक्र ८७)।

तुरुक्क न [तुरुष्क] सुगन्धि द्रव्य-विशेष, जो धूप करने में काम आता है, लोबान, सिल्हक (सम १३७, णाया १, १, पउम २, ११, औप)।

तुरुक्क पु [तुरुष्क] १ देश-विशेष, तुर्किस्तान। २ वि तुर्किस्तान का (स १३)।

तुरुक्की स्त्री [तुरुष्की] लिपि-विशेष (विसे ४६४ टी)।

तुरुमणी स्त्री [दे] नगरी-विशेष (भत्त ६२)।

तुरेंत, तुरेमाण } देखो तुर।

तुल सक [तोलय्] १ तौलना। २ उठाना। ३ ठीक-ठीक निश्चय करना। तुलइ, तुलेइ (हे ४, २५, उव, वज्जा १५८)। वकृ. तुलंत (पिंग)। सकृ. तुलेऊण (वृह १)। कृ. तुलेअव्व (से ६, २६)।

तुल° देखो तुला (सुपा ३६)।

तुलग्गा देखो तुलग्ग (अच्चु ८०)।

तुलग्ग न [दे] काकतालीय न्याय (दे ५, १५, से ४, २७)।

[°नायक] १ दण्ड-दाता, अपराधविचार-कर्ता। २ सेनापति, सेनानी, प्रतिनियत सैन्य का नायक (पण्ह १, ४, औप, कप्प, णाया १, १)। °णीइ स्त्री [°नीति] नीति-विशेष, अनुशासन (ठा ६)। °पह पुं [°पथ] मार्ग-विशेष, सीधा मार्ग (सूअ १, १३)। °पासि पु [°पार्श्विन्, °पाशिन्] १ दण्ड दाता। २ कोतवाल (राज, श्रा २७)। °पुंछणय न [प्रोञ्छनक] दण्डाकार झाड़ू (ज ५)। °भी वि [°भी] दण्ड से डरनेवाला, दण्ड-भीरु (आचा)। °लत्तिय वि [°लात] दण्ड लेनेवाला (वव १)। °वइ पुं [°पति] सेनानी, सेनापति (सुपा ३२३)। °वासिग, °वासिय पु [दाण्डपाशिक] कोतवाल (कुप्र १५५, स २६५, उप १०३१ टी)। °वीरिय पु [°वीर्य] राजा भरत के वंश का एक राजा जिसको आदर्श-गृह मे केवलज्ञान उत्पन्न हुआ था (ठा ८)। °रास पुं [°रास] एक प्रकार का नाच (कप्पू)। °ाइय वि [°ायत] दण्ड की तरह लम्बा (कस, औप)। °ाइय वि [°ायतिक] पैर को दण्ड की तरह लम्बा फैलानेवाला (औप, कस, ठा ५, १)। °ारक्खिग पु [°ारक्षिक] दण्डधारी प्रतीहार (निचू ९)। °ारण्ण न [°ारण्य] दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध जगल (पउम ४१, १, ७६, ५)। °ासणिय वि [°ासनिक] दण्ड की तरह पैर फैला कर बैठनेवाला (कस)। देखो दंडग, दंडय।

दंड पु [दण्ड] १ दण्ड-नायक, सेनापति (वव १)। २ उबाल, उफान, 'उसिणोदग तिदडुक्कलियं फासुअजलत्ति जइ कप्प' (पव १३६, पिंड १८, विचार २५७)।

दंडग } पु [दण्डक] १ कर्ण कुण्डल नगर
दंडय } का एक राजा (पउम १, १६)। २ दण्डाकार वाक्य-पद्धति, ग्रन्थाश-विशेष (राज)। ३ भवनपति आदि चौबीस दण्डक पद-विशेष (द १)। ४ न दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध जगल (पउम ३१, २५)। °गिरि पु [°गिरि] पर्वत विशेष (पउम ४२, १४)। देखो दंड (उप ८९१, बृह १, सूअ २, २, पउम ४०, १३)।

दंडण न [दण्डन] दण्ड-करण, शिक्षा (सूअ २, २, ८२, ८३)।

दंडपासिग पुं [दाण्डपाशिक] कोतवाल (मोह १२७)।

दंडलइअ वि [दण्डलातिक] दण्ड लेनेवाला, अपराधी (वव १)।

दंडावण न [दण्डन] सजा कराना, निग्रह कराना (श्रा १४)।

दंडाविअ वि [दण्डित] जिसको दण्ड दिलाया गया हो वह (ओघ ५९७ टी)।

दंडि वि [दण्डिन्] १ दण्ड-युक्त। २ पुं दण्डधारी प्रतीहार, दरवान (कुमा, ज ३)।

दंडि° देखो दंडी (कुप्र ४४)।

दंडिअ पु [दण्डिक] १ सामन्त राजा (पव २६८)। २ राज कुलानुगत पुरुष (पव ६१)। ३ दाण्डपाशिक, कोतवाल (धर्मसं ९९६)।

दंडिअ वि [दण्डित] जिसको सजा दी गई हो वह, कैदी (सुपा ४६२)।

दंडिअ वि [दण्डिक] १ दण्डवाला। २ पुं. राजा, नृप (वव ४)। ३ दण्ड-दाता, अपराध-विचार-कर्त्ता (वव १)।

दंडिआ स्त्री [दे] लेख पर लगाई जाती राज-मुद्रा, ठप्पा, मोहर (बृह १)।

दंडिक्किअ वि [दे] अपमानित, 'दंडिक्किओ समाणो तमवद्दारेण नीणेइ' (उप ६४८ टी)।

दंडिणी स्त्री [दे दण्डिनी] रानी, राज-पत्नी (पिंड ५००)।

दंडिम वि [दण्डिम] १ दण्ड से निर्वृत्त। २ न सजा करके वसूल किया हुआ द्रव्य (णाया १, १—पत्र ३७)।

दंडी स्त्री [दे] १ सूत्र-कनक। २ सांधा हुआ वस्त्र युग्म (दे ५, ३३)। ३ सांधा हुआ जीर्ण वस्त्र (णाया १, १६—पत्र १९९, पण्ह १, ३—पत्र ५३)।

दंत वि [ददत्] दान कर्त्ता, दाता (पिंड ५६४)।

दंत पुं [दान्त] दो उपवास, बेला (सबोध ५८)।

दंत वि [दान्त] दो उपवास (संबोध ५८)।

दंत पुं [दे] पर्वत का एक देश (दे ५, ३३)।

दंत वि [दान्त] १ जिसका दमन किया गया हो वह, वश मे किया हुआ, 'दंतेण चित्तेण चरति धीरा' (प्रामू १६५)। २ जितेन्द्रिय (णाया १, १४, दस १०)।

दंत पु [दन्त] दांत, दशन (कुमा, कप्पू)। °कुडी स्त्री [°कुटी] दंष्ट्रा, दाढ (तंदु)। °च्छअ पुं [°च्छद] ओष्ठ, ओठ, होठ (पाअ)। °धावण न [°धावन] १ दांत साफ करना, दतवन करना। २ दांत साफ करने का काष्ठ, दतवन (पण्ह २,४, निचू ३)। °पक्खालण न [°प्रक्षालन] वही पूर्वोक्त अर्थ (सूअ १, ४,२)। °पाय न [°पात्र] दांत का बना हुआ पात्र (आचा २ ६,१)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (वव १)। °पहोयण न [°प्रधावन] देखो °धावण (दस ३)। °माल पु [°माल] वृक्ष-विशेष (ज २)। °वक्क पु [°वक्र] दन्तपुर नगर का एक राजा (वव १)। °वलहिया स्त्री [°वलभिका] उद्यान-विशेष (स ७०)। °वाणिज्ज न [°वाणिज्य] हाथी-दांत वगैरह दांत का व्यापार (धर्म २)। °ार पुं [°कार] दांत का काम करनेवाला शिल्पी (पण्ण १)।

दंतकार पुं [दन्तकार] दांत बनानेवाला शिल्पी (अणु १४९)।

दंतकुंडी स्त्री [दन्तकुण्डी] दाढ, दंष्ट्रा (तंदु ४१)।

दंतवक्क पुं [दान्तवाक्य] चक्रवर्त्ती राजा (सूअ १, ६, २२)।

दंतवण न [दे दन्तपवन] १ दन्त-शुद्धि। २ दतवन, दांत साफ करने का काष्ठ (दे २, १२, ठा ९—पत्र ४६०, उवा, पव ४)।

दंतवण्ण पुन [दे दन्तपवन] दतवन (दस ३, ९)।

दंतसोहण न [दन्तशोधन] दतवन (उत्त १९, २७)।

दंताल पुस्त्री [दे] शस्त्र-विशेष, घास काटने का हथियार (सुपा ५२६)। स्त्री °ली (कम्म १, ३६)।

दंति पु [दन्तिन्] १ हस्ती, हाथी (पाअ)। २ पर्वत-विशेष (पउम १५, ९)।

दंतिअ पुं [दे] शशक, खरगोश, खरहा (दे ५, ३४)।

दंतिंदिअ वि [दान्तेन्द्रिय] जितेन्द्रिय, इन्द्रिय-निग्रही (ओघ ४९ भा)।

तूहण पुं [दे] पुरुष, आदमी (दे ५, १७)।

ते° देखो ति = त्रि। °आलीस स्त्रीन [°चत्वारिंशत्] १ संख्या-विशेष, चालीस और तीन की संख्या। २ तेआलीस की संख्यावाला (सम ६८)। °आलीसइम वि [°चत्वारिंश] तेआलीसवाँ, ४३वाँ (पउम ४३, ४६)। °आसी स्त्री [°अशीति] १ संख्या-विशेष, अस्सी और तीन। २ तिरासी की संख्यावाला (पि ४४६)। °आसीइम वि [°अशीतितम] तिरासीवाँ (सम ८६, पउम ८३, १४)। °इंदिय पुं [°इन्द्रिय] स्पर्श, जीभ और नाक इन तीन इन्द्रियवाला प्राणी (ठा २, ४, जी १७)। °ओय पु [°ओजस्] विषम राशि-विशेष (ठा ४, ३)। °णउइ स्त्री [°नवति] तिरानवे, नव्वे और तीन, ९३ (सम ९७)। °णउय वि [°नवत] तिरानवेवाँ, ९३ वां (कप्प, पउम ९३, ४०)। °णवइ देखो °णउइ (सुपा ६५४)। °तीस, °त्तीस स्त्रीन [त्रयस्त्रिंशत्] तेतीस, तीस और तीन (भग, सम ५८)। स्त्री °सा (हे १, १६५, पि ४४७)। °त्तीसइम वि [त्रयस्त्रिंश] तेतीसवाँ (पउम ३३, १४८)। °वट्ठि स्त्री [षष्टि] तिरसठ, साठ और तीन, ६३ (पि २६५)। °वण्ण, °वन्न स्त्रीन [°पञ्चाशत्] त्रेपन, पचास और तीन, ५३ (हे २, १७४, षड्, सम ७२)। °वत्तरि स्त्री [°सप्तति] तिहत्तर (पि २६५)। °वीस स्त्रीन [त्रयोविंशति] तेइस, वीस और तीन, २३ (सम ४२, हे १, १६५)। °वीस, °वीसइम वि [त्रयोविंश] तेईसवाँ (पउम २०, ८२, २३, २६, ठा ६)। °सम्झ न [°सन्ध्य] प्रात, मध्याह्न और सायकाल का समय (पउम ६६, ११)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] देखो °वट्ठि (सम ७७)। °सीइ स्त्री [°अशीति] तिरासी, अस्सी और तीन (सम ८६, कप्प)। °सीइम वि [°अशीत] तिरासीवाँ (कप्प)।

तेअ सक [तेजय्] तेज करना, पैनाना, धार तेज करना, तीक्ष्ण करना। तेइय (षड्)।

तेअ देखो तइअ = तृतीय (रंभा)।

तेअ पुं [तेजस्] १ कान्ति, दीप्ति, प्रकाश, प्रभा (उवा; भग, कुमा, ठा ८)। २ ताप, अभिताप (कुमा, सूअ १, ५, १)। ३ प्रताप। ४ माहात्म्य, प्रभाव। ५ वल, पराक्रम (कुमा)। °मत वि [°विन्] तेजवाला, प्रभा-युक्त (पण्ह २, ४)। °वीरिय पु [°वीर्य] भरत चक्रवर्ती के प्रपौत्र का पौत्र, जिसको आदर्श भवन मे केवलज्ञान हुआ था (ठा ८)।

तेअ न [स्तेय] चोरी (भग २, ७)।

तेअ देखो तेअय (भग)।

तेअ पु [?] टेक, स्तम्भ।

तेअसि वि [तेजस्विन्] तेजवाला, तेज-युक्त (औप, रयण ४, भग, महा, सम १५२, पउम १०२, १४१)।

तेअग देखो तेअय (जीव)।

तेअण न [तेजन] १ तेज करना, पैनाना। २ उत्तेजन (हे ४, १०४)। ३ वि. उत्तेजित करनेवाला (कुमा)।

तेअय न [तैजस] शरीर-सहचारी सूक्ष्म शरीर-विशेष (ठा २, १, ५, १, भग)।

तेअलि पु [तेतलिन्] १ मनुष्य जाति-विशेष (जं १, इक)। २ एक मन्त्री के पिता का नाम (णाया १, १४)। °पुत्त पुं [°पुत्र] राजा कनकरथ का एक मन्त्री (णाया १, १४)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (णाया १, १४)। °सुय पु [°सुत] देखो °पुत्त (राज)। देखो तेतलि।

तेअव अक [प्र + दीप्] १ दीपना, चमकना। २ जलना। तेअवइ (हे ४, १५२, षड्)।

तेअवाल देखो तेजपाल (हम्मीर २७)।

तेअविय वि [प्रदीप्त] जला हुआ (कुमा)। २ चमका हुआ, उद्दीप्त (पाअ)।

तेअविय वि [तेजित] तेज किया हुआ (दे ८, १३)।

तेअस्सि पुं [तेजस्विन्] इक्ष्वाकु वश के एक राजा का नाम (पउम ५, ५)।

तेआ स्त्री [तेजा] पक्ष की तेरहवी रात (सुज्ज १०, १४)।

तेआ स्त्री [तेजस्] त्रयोदशी तिथि (जो ४, जं ७)।

तेआ स्त्री [त्रेता] युग-विशेष, दूसरा युग; 'तेआजुगे य दासरही रामो सीयालक्खण-सजुओवि' (ती २६)।

तेआ° देखो तेअय (सम १४२, पि ६४)।

तेआलि पु [दे] वृक्ष-विशेष (पण्ण १, १—पत्र ३४)।

तेइच्छ न [चैकित्स्य] चिकित्सा-कर्म, प्रतीकार (दस ३)।

तेइच्छा स्त्री [चिकित्सा] प्रतीकार, इलाज, दवा (आचा, णाया १, १३)।

तेइच्छिय देखो तेगिच्छिय (विपा १, १)।

तेइच्छी स्त्री [चिकित्सा, चैकित्सी] प्रतीकार, इलाज (कप्प)।

तेइज्जग वि [तार्तीयीक] १ तीसरा। २ ज्वर-विशेष, जाडा देकर तीसरे-तीसरे दिन पर आनेवाला ज्वर, तिजारा (उत्तनि ३)।

तेइल्ल देखो तेअसि (सुर ७, २१७, सुपा ३३)।

तेउ पुं [तेजस्] १ आग, अग्नि (भग, दं १३)। २ लेश्या-विशेष, तेजो-लेश्या (भग; कम्म ४, ५०)। ३ अग्निशिख नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १)। ४ ताप, अभिताप (सूअ १, १, १)। ५ प्रकाश, उद्योद (सूअ २, १)। °आय देखो °काय (भग)। °कत पु [°कान्त] लोकपाल देव-विशेष (ठा ४, १)। °काइय पुं [°कायिक] अग्नि का जीव (ठा ३, १)। °काय पुं [°काय] अग्नि का जीव (पि ३५५)। °क्काइय देखो °काइय (पण्ण १, जीव १)। °प्पभ पुं [°प्रभ] अग्निशिख नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १)। °प्फास पुं [°स्पर्श] उष्ण स्पर्श (आचा)। °लेस वि [°लेश्य] तेजो-लेश्यावाला (भग)। °लेसा स्त्री [°लेश्या] तप विशेष के प्रभाव से होनेवाली शक्ति-विशेष से उत्पन्न होती तेज की ज्वाला (ठा ३, १, सम ११)। °लेस्स देखो °लेस (पण्ण १७)। °लेस्सा देखो °लेसा (ठा ३, ३)। °सिह पु [°शिख] एक लोकपाल (ठा ४, १)। °सोय न [शौच] भस्म आदि से किया जाता शौच (ठा ५, २)।

कर्म का पारितोषिक, दान, भेंट (कप्पू, सूत्र २, ५)। °कंखि वि [°काङ्क्षिन्] दक्षिणा का अभिलाषी (पउम ३०, ६३)। °यण न [°यन] १ सूर्य का दक्षिण दिशा मे गमन। २ कर्क की संक्रान्ति से धन की संक्रान्ति तक के छ मास का काल (जो १)। °वध, °वह पु [°पथ] दक्षिण देश (कप्पू, १४२ टी)।

दक्खिणापुव्वा देखो दक्खिण पुव्वा (पव १०६)।

दक्खिणिल्ल वि [दाक्षिणात्य] दक्षिण दिशा मे उत्पन्न या स्थित (मम १००, पउम ६, १५६)।

दक्खिणेय वि [दाक्षिणेय] जिसको दक्षिणा दी जाती हो वह (विसे ३२७१)।

दक्खिण्ण, दक्खिन्न न [दाक्षिण्य] १ मुलाहजा, मुरव्वत, 'दक्खिण्णेण वि एंतो सुहअ सुहावेसि अम्ह हिअआइं' (गा ८५, स्वप्न ६८)। २ उदारता, औदार्य। ३ सरलता, मार्दव (सुर १, ६५, २, ६२, प्रासू ८)। ४ अनुकूलता (दस २)।

दक्खिय वि [दर्शित] दिखलाया हुआ (भवि)।

दक्खु देखो दक्ख = दृश्।

दक्खु देखो दक्ख = दक्ष (सूत्र १, २, ३)।

दक्खु वि [पश्य, द्रष्टृ] १ देखनेवाला। २ पु सर्वज्ञ, जिन-देव (सूत्र १, २, ३)।

दक्खु वि [दृष्ट] १ विलोकित। २ पु सर्वज्ञ, जिन-देव (सूत्र १, २, ३)।

दग न [दक] १ पानी, जल (स ५१, दं ३४, कप्प)। २ पुं ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३)। ३ लवण-समुद्र में स्थित एक आवास पर्वत (सम ६८)। °गब्भ पुं [°गर्भ] अभ्र, बादल (ठा ४, ४)। °तुंड पुं [°तुण्ड] पक्षि-विशेष (पण्ह १, १)। °पंचवन्न पुं [°पञ्चवर्ण] ज्योतिष्क देव-विशेष, एक ग्रह का नाम (ठा २, ३)। °पासाय पुं [°प्रासाद] स्फटिक रत्न का बना हुआ महल (जं १)। °पिप्पली स्त्री [°पिप्पली] वनस्पति-विशेष (पण्ण १)। °भास पुं [°भास] वेलन्धर नागराज का एक आवास-पर्वत (सम ७३)। °मंचग पुं [°मञ्चक] स्फटिक रत्न का मञ्च (जं १)। °मंडव पुं [°मण्डप] १ मण्डप-विशेष, जिसमें पानी टपकता हो (पण्ह २, ५)। २ स्फटिक रत्न का बनाया हुआ मण्डप (ज १)। °मट्टिया, °मट्टी स्त्री [°मृत्तिका] १ पानीवाली मिट्टी (बृह ४, पडि)। २ कला-विशेष (जं २)। °रक्खस पुं [°राक्षस] जल-मानुष के आकार का जंतु-विशेष (सूत्र १, ७)। °रय पुंन [°रजस्] उदक-बिन्दु, जल-कणिका (कप्प)। °वण्ण पुं [°वर्ण] ज्योतिष्क ग्रह-विशेष (सुज्ज २०)। °वारग, °वारय पु [°वारक] पानी का छोटा घड़ा (राय, णाया १, २)। °सीम पु [°सीमन्] वेलंधर नागराज का एक आवास-पर्वत (राज)।

दग न [दक] स्फटिक रत्न (राय ७५)। °सोयरिअ वि [°शौकरिक] सांख्य मत का अनुयायी (पिंड ३१४)।

दच्चा देखो दा।

दच्छ देखो दक्ख = दृश्। भवि. दच्छं, दच्छसि, दच्छिहिसि (प्राप्र, उत्त २२, ४४, गा ८१६)।

दच्छ देखो दक्ख = दक्ष, 'रोगसमदच्छ ओसहं' (उप ७२८ टी, पण्ह २, ३—पत्र ४५, हे २, १७)।

दच्छ वि [दे] तीक्ष्ण, तेज (दे ५, ३३)।

दज्झन्त, दज्झमाण देखो दह = दह।

दट्ठ वि [दष्ट] जिसको दाँत से काटा गया हो वह (पड्, महा)।

दट्ठ वि [दृष्ट] देखा हुआ, विलोकित (राज)।

दट्ठंतिय वि [दार्ष्टान्तिक] जिसपर दृष्टान्त दिया गया हो वह अर्थ (उप पृ १४३)।

दट्ठव्व, दट्ठु देखो दक्ख = दृश्।

दट्ठु वि [द्रष्टृ] देखनेवाला, प्रेक्षक, दर्शक (विसे १८६५)।

दट्ठुआण, दट्ठु, दट्ठूण, दट्ठूणं देखो दक्ख = दृश्।

दडवड पुं [दे] १ धाटी, दर्रा, अवस्कन्द (दे ५,३५, हे ४,४२२; भवि)। २ शीघ्र, जल्दी (चंड)।

दड्ढि स्त्री [दे] वाद्य-विशेष (भवि)।

दड्ढ वि [दग्ध] जला हुआ (हे १, २१७, भग)।

दडढालि स्त्री [दे] दव-मार्ग (पड्)।

दढ वि [दृढ] १ मजबूत, बलवान्, पोढ (औप, मे ८, ६०)। २ निश्चल, स्थिर, निष्कम्प (सूत्र १, ४, १, आ २८)। ३ समर्थ, क्षम (सूत्र १, ३, १)। ४ अति-निविड, प्रगाढ (राय)। ५ कठोर, कठिन (पंचा ४)। ६ क्रिवि. अतिशय, अत्यन्त (पंचा १, ७)। °केउ पुं [°केतु] ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिन-देव का नाम (पव ७)। °णेमि देखो °नेमि (राज)। °धणु [°धनुष्] १ ऐरवत क्षेत्र के एक भावी कुलकर का नाम (सम १५३)। २ भरत-क्षेत्र के एक भावी कुलकर का नाम (राज)। °धम्म वि [°धर्मन्] १ जो धर्म में निश्चल हो (बृह १)। २ देव-विशेष का नाम (आवम)। °धिईय वि [°धृतिक] अतिशय धैर्यवाला (पउम २६, २२)। °नेमि पुं [°नेमि] राजा समुद्रविजय का एक पुत्र, जिसने भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा ली थी और सिद्धाचल पर्वत पर मुक्ति पाई थी (अंत १४)। °पइण्ण वि [°प्रतिज्ञ] १ स्थिर-प्रतिज्ञ, सत्य-प्रतिज्ञ। २ पुं. सूर्याभ देव का आगामी जन्म में होनेवाला नाम (राय)। °प्पहारि वि [°प्रहारिन्] १ मजबूत प्रहार करनेवाला। २ पुं जैनमुनि-विशेष, जो पहले चोरो का नायक था और पीछे से दीक्षा लेकर मुक्त हुआ था (णाया १, १८, महा)। °भूमि स्त्री [°भूमि] एक गाँव का नाम (आवम)। °मूढ वि [°मूढ] नितान्त मूर्ख (दे १, ४)। °रह पुं [°रथ] १ एक कुलकर पुरुष का नाम (सम १५०)। २ भगवान् श्री शितलनाथजी के पिता का नाम (सम १५१)। °रहा स्त्री [°रथा] लोकपाल आदि देवो के अग्र-महिषियो की बाह्य परिषद् (ठा ३, १—पत्र १२७)। °उ पुं [°ायुष्] भगवान् महावीर के समय

(ओघ ५६६)। °णाह पु [°नाथ] तीनों जगत् का स्वामी, परमेश्वर (पड्)। °मंडण न [°मण्डन] १ तीनों जगत् का भूषण। २ पु. रावण का पट्ट-हस्ती (पउम ८०, ६०)।

तेल्ल न [तैल] तेल, तिल का विकार, स्निग्ध द्रव्य विशेष (हे २, ९८, अणु पव ४)। °केला स्त्री [°केला] मिट्टी का भाजन विशेष (राज)। °पल्ल न [°पल्य] तैल रखने का मिट्टी का भाजन-विशेष (दसा १०)। °पाइया स्त्री [°पायिका] क्षुद्र जन्तु-विशेष (श्रावम)।

तेल्लग न [तैलक] सुरा-विशेष (जीव ३)।

तेल्लिअ पुं [तैलिक] तेल वेचनेवाला (वव ६)।

तेल्लोअ, तेल्लोक्क } देखो तेलुक्क (पि १६६, प्राप्र)।

तेवँ, तेवँइ } (अप) देखो तह=तथा (हे ४, ३९७, कुमा)।

तेवट्ठ वि [त्रिषष्ट] तिरसठ की सख्यावाला, जिसमें तिरसठ अधिक हो ऐसी सख्या; 'तिन्नि तेवट्ठाइं पावादुयसयाइं' (पि २६५)।

तेवड (अप) वि [तावत्] उतना (हे ४, ४०७, कुमा)।

तेवण्णासा स्त्री [त्रिपञ्चाशत्] त्रेपन, ५३ (प्राकृ ३१)।

तेवीसइ स्त्री [त्रयोविंशति] तेईस (प्राकृ ३१)।

तेवुत्तरि देखो ते-वत्तरि (कम्म ५, ४)।

तेह (अप) वि [तादृश] उसके जैसा, वैसा (हे ४, ४०२, पड्)।

तेहिं (अप) अ वास्ते, लिए (हे ४, ४२५, कुमा)।

तेहिय वि [त्र्याहिक] तीन दिन का (जीवस ११६)।

तेहुत्तरि देखो ते-वत्तरि (अणु १७६)।

तो देखो तओ (आचा, कुमा)।

तो अ [तदा] तब, उस समय (कुमा)।

तोअय पु [दे] चातक पक्षी (दे ५, १८)।

तोंड देखो तुंड (हे १, ११६, प्राप्र)।

तोंतडि स्त्री [दे] करम्ब, दही-भात की बनी हुई एक खाद्य वस्तु (दे ५, ४)।

तोक्कय वि [दे] विना ही कारण तत्पर होनेवाला (दे ५, १८)।

तोक्खार देखो तुक्खार, 'खुरखुरखयखोणीयलग्गसंखतोक्खारलक्खजुओ' (सुर १२, ६१)।

तोटअ न [त्रोटक] छन्द-विशेष (पिंग)।

तोड सक [तुड्] १ तोडना, भेदन करना। २ अक. टूटना। तोडइ (हे ४, ११६)। वकृ. तोडत (भवि)। सकृ. तोडिउ (भवि), तोडित्ता (ती ७)।

तोड पुं [त्रोड] त्रुटि (उप पृ १८)।

तोडग वि [दे] असहन, असहिष्णु (दे ५, १८)।

तोडण न [तोदन] व्यथा, पीडा-करण (राज)।

तोडर न [दे] टोडर, माल्य-विशेष (सिरी १०२३)।

तोडहिआ स्त्री [दे] वाद्य-विशेष (आचा २, ११)।

तोडिअ वि [त्रोटित] तोडा हुआ (महा, सण)।

तोड्ड पु [दे] क्षुद्र कोट-विशेष, चतुरिन्द्रिय जीव की एक जाति (राज)।

तोण पुंन [तूण] शरधि, भाथा, तरकस, तूणीर (पाअ, औप, हे १, १२५, विपा १, ३)।

तोणीर पुंन [तूणीर] शरधि, भाथा (पाअ, हे १, १२४, भवि)।

तोत्त न [तोत्र] प्रतोद, बैल को मारने या हाँकने का बाँस का आयुध-विशेष, पैना, सोटा, चाबुक (पाअ, दे ३, १६, सुपा २३७, सुर १४, ५१)।

तोत्तडि [दे] देखो तोंतडि (पाअ)।

तोदग वि [तोदक] व्यथा उपजानेवाला, पीडा-कारक (उत्त २०)।

तोमर पुंन [दे तोमर] मधपुडा, मधुमक्खी का घर या छत्ता, 'अह उड्डियाउ तोमर मुहाउ महुमक्खियाउ सव्वत्तो' (धर्मवि १२४)।

तोमर पुं [तोमर] १ बाण-विशेष, एक प्रकार का बाण (पण्ह १, १, सुर २, २८; औप)। २ न छन्द-विशेष (पिंग)।

तोमरिअ पुं [दे] १ शस्त्र का प्रमार्जन करनेवाला (दे ५, १८)। २ शस्त्र-मार्जन (पड्)।

तोमरिगुंडी स्त्री [दे] वल्ली-विशेष (पाअ)।

तोमरी स्त्री [दे] वल्ली, लता (दे ५, १७)।

तोम्हार (अप) देखो तुम्हार (पि ४३४)।

तोय न [तोय] पानी, जल (पण्ह १, ३, वज्जा १४, दे २, ४७)। °धरा, धारा, स्त्री [°धारा] एक दिक्कुमारी देवी (इक, ठा ८)। °पट्ठ, °पिट्ठ न [°पृष्ठ] पानी का उपरि-भाग (पण्ह १, ३, औप)।

तोय पुं [तोद] व्यथा, पीडा (ठा ४, ४)।

तोरण न [तोरण] १ द्वार का अवयव-विशेष, बहिर्द्वार (गा २६२)। २ वन्दनवार, फूल या पत्तो की माला (झालर) जो उत्सव में लटकाई जाती है (औप)। °उर न [°पुर] नगर-विशेष (महा)।

तोरविअ वि [दे] उत्तेजित (पाअ, कुप्र १६२)।

तोरामदा स्त्री [दे] नेत्र का रोग-विशेष (महानि ३)।

तोल देखो तुल=तोलय्। तोलइ, तोलेइ (पिंग, महा)। वकृ तोलत (वज्जा १५८)। कवकृ तोलिज्जमाण (सुर १५, ९४)। कृ. तोलियव्व (स १६२)।

तोल पुंन [दे] मगध-देश प्रसिद्ध पल, परि-माण-विशेष (तंदु)।

तोलण पुं [दे] पुरुष, आदमी (दे ५; १७)।

तोलण न [तोलन] तौल करना, तौलना, नाप करना (राज)।

तोलिय वि [तोलित] तौला हुआ (महा)।

तोल्ल न [तौल्य, तौल] तौल, वजन (कुप्र १४९)।

तोवट्ट पु [दे] १ कान का आभूषण-विशेष। कमल की कर्णिका (दे ५, २३)।

तोस सक [तोषय्] खुशी करना, सन्तुष्ट करना। तोसइ (उव)। कर्म तोसिज्जइ (गा ५०८)।

तोस पुं [तोष] खुशी, आनन्द, संतोष (पाअ, सुपा २७५)। °यर वि [°कर] संतोष-कारक (काल)।

तोस न [दे] धन, दौलत (दे ५, १७)।

तोसलि पुं [तोसलिन्] १ ग्राम-विशेष। २ देश-विशेष। ३ एक जैन आचार्य (राज)।

३)। ४ पशुओं को दी जाति शिक्षा (पउम १०३, ७१)।

दमणक, दमणग, दमणय पुन [दमनक] १ दौना, सुगन्धित पत्रवाली वनस्पति-विशेष (पण्ह २, ५, पएण १, गउड)। छन्द-विशेष (पिंग)। ३ गन्ध-द्रव्य-विशेष (राज)।

दमदमा अक [दमदमाय्] आडम्बर करना। दमदमाइ, दमदमाअइ (हे ३, १३८)।

दमय वि [दे द्रमक] दरिद्र, रक, गरीब (दे ५, ३४, विसे २८४५)।

दमयती स्त्री [दमयन्ती] राजा नल की पत्नी का नाम (पडि, कुप्र ५४, ५६)।

दमि वि [दमिन्] जितेन्द्रिय (उत्त २२)।

दमिअ वि [दमित] निगृहीत, रोका हुआ (गा ८२३, कुप्र ४८)।

दमिल पु [द्रविड] १ एक भारतीय देश। २ पुस्त्री उसके निवासी मनुष्य, द्राविड (कुप्र १७२, इक, औप)। स्त्री °ली (णाया १, १, इक, औप)।

दमेयव्व, दम्म } देखो दम = दमय्।

दम्म पुं [द्रम्म] सोने का सिक्का, सोना-मोहर (उप पृ ३८७, हे ४, ४२२)।

दम्मत देखो दम = दमय्।

दय सक [दय्] १ रक्षण करना। २ कृपा करना। ३ चाहना। ४ देना। दयइ (आचा)। वकृ दअत, दअमाण। (से १२, ६४, ३, १२, अभि १२)।

दय न [दे दक] जल, पानी (दे ५, ३३, बृह १)। °सीम पुं [°सीमन्] लवण-समुद्र में स्थित एक आवास-पर्वत (सम ६८)।

दय न [दे] शोक, अफसोस, दिलगीरी (दे ५, ३३)।

दय देखो दव = दव (से १, ५१, १२, ६५)।

°दय वि [°दय] देनेवाला (कप्प, पडि)।

दया स्त्री [दया] करुणा, अनुकम्पा, कृपा (दस ६, १)। °वर वि [°पर] दयालु (पउम २६, ४०, उप पृ १६१)।

दयाइअ वि [दे] रक्षित (दे ५, ३५)।

दयालु वि [दयालु] दयावाला, करुण (हे १, १७७, १८०, पउम १६, ३१, सुपा ३४०, श्रा १६)।

दयावण, दयावन्न } वि [दे] दीन, गरीब, रक (दे ५, ३५, भवि, पउम ३३, ८६)।

दर सक [दृ] आदर करना। दरइ (षड्)।

दर पुन [दर] भय, डर (कुमा)। २ अ. ईषत्, थोडा, अल्प (हे २, २१५)।

दर पुन [दर] १ गुफा, कन्दरा। २ गर्त, गड्ढा, गढा या गढहा, दरार, 'ते य दरा मिंढया ते य' (धर्मवि १४०)।

दर न [दे] अर्द्ध, आधा (दे ५, ३३, भवि, हे २, २१५, बृह ३)।

दरदर पु [दे] उल्लास (दे ५, ३७)।

दरमत्ता स्त्री [दे] बलात्कार, जबरदस्ती (दे ५, ३७)।

दरमल सक [मर्दय्] १ चूर्ण करना, विदारना। २ आघात करना। दरमलइ (भवि)। वकृ. दरमलत (भवि)।

दरमलिय वि [मर्दित] आहत, चूर्णित (भवि)।

दरवलिअ वि [दे] उपभुक्त (कुमा)।

दरवल्ल पुं [दे] ग्राम-स्वामी, गाँव का मुखिया (दे ५, ३६)। °णिहेल्लण न [दे] शून्य गृह, खाली घर (दे ५, ३७)। °वल्लह पुं [वल्लभ] १ दयित, प्रिय (दे ५, ३७)। २ कातर, डरपोक (षड्)। °विंदर वि [दे] १ दीर्घ, लम्बा। २ विरल (दे ५, ५२)।

दरस (शौ) देखो दरिस। दरसेदि (प्राकृ ६६)।

दरि न [दरी] कन्दरा, गुफा, 'दरीणि वा' (आचा २, १०, २)।

दरि° देखो दरी। °अर पुं [°चर] किंनर (से ६, ४४)।

दरिअ वि [दृप्त] गर्विष्ठ, अभिमानी (हे १, १४४, पाअ)।

दरिअ वि [दीर्ण] १ डरा हुआ, भीत (कुमा, सुपा ६४५)। २ फाडा हुआ, विदारित (अत ७)।

दरिअ (अप) पुं [दरिद्र] छन्द विशेष (पिंग)।

दरिआ स्त्री [दरिका] कन्दरा, गुफा (नाट—विक्र ८४)।

दरिद्द वि [दरिद्र] १ निर्धन, नि स्व, धन-रहित। २ दीन, गरीब (पाअ, प्रासू २३, कप्पू)।

दरिद्दि, दरिद्दिय } वि [दरिद्रिन्, °क] ऊपर देखो; 'अम्हे दरिद्दिणो, कह विवाहमंगलं रन्नो य पूयं करेमो' (महा, सण, पि २५७)।

दरिद्दिय वि [दरिद्रित] दु स्थित, जो धन-रहित हुआ हो (महा, पि २५७)।

दरिद्दीहूय वि [दरिद्रीभूत] जो निर्धन हुआ हो (ठा ३, १)।

दरिस सक [दर्शय्] दिखलाना, बतलाना। दरिसइ, दरिसेइ (हे ४, ३२, कुमा, महा)। वकृ. दरिसत (सुपा २४)। कृ. दरिसणिज्ज, दरिसणीय (औप, पि १३५, सुर १०, ६)।

दरिसण देखो दसण = दर्शन (हे २, १०५)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (इक)। °आवरणी स्त्री [°वरणी] विद्या-विशेष (पउम ५६, ४०)।

दरिसणिज्ज न [दर्शनीय] १ आकृति, रूप। २ अवलोकन (तदु ३६)।

दरिसणिज्ज, दरिसणीय } देखो दरिस। २ न भेंट, उप-हार, 'गहिऊण दरिसणीय संपत्तो राइणो मूल' (सुर १०, ६)।

दरिसाव देखो दरिस। वकृ. दरिसावत (उप पृ १८८)।

दरिसाव पुं [दर्शन] दर्शन, साक्षात्कार, 'एसो य महप्पा कइवयघरेसु दरिसाव दाऊण पडिनियत्तइ' (महा), 'पईव इव दाउ खणमेग दरिसाव पुणोवि अद्दसणीहोइ' (सुपा ११५)।

दरिसाव पुं [दर्शन] दिखावा (वव १)।

दरिसावण न [दर्शन] १ दर्शन, साक्षात्कार (आव १)। २ वि. दर्शक, दिखलानेवाला (भवि)।

दरिसि वि [दर्शिन्] देखनेवाला (उवा, पि १३५, स ७२७)।

दरिसिअ वि [दर्शित] दिखलाया हुआ (कुमा, उव)।

दरी स्त्री [दरी] गुफा, कन्दरा (णाया १, १, से ६, ४४; उप पृ २६८, स ४१३)।

दरुम्मिल्ल वि [दे] घन, निबिड (दे ५, ३७)।

दल सक [दा] देना, दान करना, अर्पण करना। दलइ (कप्प; कस), 'ज तस्स मोल्लं तमह दलामि' (उप २११ टी)। वकृ. दल-माण, दलेमाण (कप्प, णाया १, १६—पत्र २०४, ठा ४, २—पत्र २१६) सकृ. दलित्ता (कप्प)।

गुजरात का एक नगर, जो आजकल 'खभात' नाम से प्रसिद्ध है (ती ५१)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष, खभात (सिग्घ १)।

थंभणया स्त्री [स्तम्भना] स्तब्ध-करण (ठा ४, ४)।

थंभणिआ स्त्री [स्तम्भनिका] विद्या-विशेष (धर्मवि १२४)।

थंभणी स्त्री [स्तम्भनी] स्तम्भन करनेवाली विद्या-विशेष (णाया १, १६)।

थंभय देखो थभ = स्तम्भ (कुमा)।

थंभिय वि [स्तम्भित] १ स्तब्ध किया हुआ, थमाया हुआ (कुप्र १४१, कुमा, कप्प, औप)। २ जो स्तब्ध हुआ हो, अवष्टब्ध (स ४६४)।

थक्क अक [स्था] रहना, वैठना, स्थिर होना। थक्कइ (हे ४, १६, पिंग)। भवि. थक्किस्सइ (पि ३०६)।

थक्क अक [फक्क्] नीचे जाना। थक्कइ (हे ४, ८७)।

थक्क अक [श्रम्] थकना, श्रान्त होना। थक्कंति (पिंग)।

थक्क वि [स्थित] रहा हुआ (कुमा, वज्जा ३८, सुपा २३७, आरा ७७, सट्ठि ६)।

थक्क पुं [दे] १ अवसर, प्रस्ताव, समय (दे ५, २४, वव ६, महा; विसे २०६३)। २ वि. थका हुआ, श्रान्त, 'थक्क सव्वसरीर हियए सूलं सुदूसह एइ' (सुर ७, १८५, ४ १६५)।

थक्किअ वि [श्रान्त] थका हुआ (पिंग)।

थक्कव सक [स्थापय्] स्थापन करना, रखना। थक्कवइ (प्राकृ १२०)।

थग देखो थय = स्थगय्। भवि. थगइस्स (पि २२१)।

थगण न [स्थगन] पिधान, ढकना, सवरण, आवरण, आच्छादन, पर्दा (दे २, ८३, ठा ४, ४)।

थगथग अक [थगथगाय्] धडकना, काँपना। वकृ. थगथगिंत (महा)।

थगिय वि [स्थगित] पिहित, आच्छादित, आवृत (दस ५, १, श्रावम)।

थगिय° देखो थइअ°। °ग्गाहि पुं [°ग्राहिन्] ताम्बूल-वाहक नौकर (सुपा ३३६)।

थग्गया स्त्री [दे] चञ्चु, चोंच (दे ५, २६)।

थग्घ सक [स्ताघ्] जल की गहराई को नापना। कर्म. थग्घिज्जए (पव ८१)।

थग्घ पु [दे] थाह, तला, पानी के नीचे की भूमि, गहराई का अन्त, सीमा (दे ५,२४)।

थग्घा स्त्री [दे] ऊपर देखो (पाअ)।

थट्ट पुन [दे] १ ठठ, भीड, झुण्ड, समूह, यूथ, जत्था, 'दुद्धरतुरंगथट्टा' (सुपा २८८), 'विहडइ लहु दुट्ठनिट्ठदोघट्टथट्ट' (लहुअ ४)। २ ठाठ, ठाट, तडक-भडक, सजधज, आडम्बर (भवि)।

थट्टि स्त्री [दे] पशु, जानवर (दे ५, २४)।

थड्ड पुन [दे] ठठ, यूथ, समूह (भवि)।

थड्ढ वि [स्तब्ध] १ निश्चल। २ अभिमानी गर्विष्ठ (सुपा ४३७, ५८२)।

थड्ढिअ वि [स्तम्भित] १ स्तब्ध किया हुआ। २ स्तब्ध, निश्चल। ३ न. गुरु-वन्दन का एक दोष, अकड कर गुरु को किया जाता प्रणाम (गुभा २३)।

थण अक [स्तन्] १ गरजना। २ आक्रन्द करना, चिल्लाना। ३ आक्रोश करना। ४ जोर से नीसास लेना। वकृ. थणत (गा २६०)।

थण पुं [स्तन] थन, कुच, पयोधर, चूची (आचा, कुमा, काप्र १६१)। °जीवि वि [°जीविन्] स्तन-पान पर निभनेवाला बालक (श्रा १४)। °वई स्त्री [°वती] वडे स्तनवाली (गउड)। °विसारि वि [°विसारिन्]। स्तन पर फैलनेवाला (गउड)। °सुत्त न [°सूत्र] उर -सूत्र (दे)। °हर पु [°भर] स्तन का भार या वोझ (हे १, १८६)।

थणंधय पुं [स्तनन्धय] स्तन-पान करनेवाला बालक, छोटा बच्चा, 'नियय थणं धयंतं थणधयं हदि पिच्छति' (सुर १०, ३७, अच्चु ६३)।

थणण न [स्तनन] १ गर्जन, गरजना (सूअ १, ५, २)। २ आक्रन्द, चिल्लाहट (सूअ १, ५, १)। ३ आक्रोश, अभिशाप (राज)। ४ आवाजवाला नीसास (सूअ १, २, ३)।

थणय पुं [स्तनक] दूसरी नरक-भूमि का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ६)।

थणलोलुअ पु [स्तनलोलुप] दूसरी नरक-भूमि का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ७)।

थणिअ पुं [स्तनित] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ६, २६)।

थणिय न [स्तनित] १ मेघ का गर्जन (वज्जा १२, दे ५, २७)। २ आक्रन्द, चिल्लाहट (सम १५३)। ३ पुं भवनपति देवो की एक जाति (औप, पण्ह १, ४)। °कुमार पु [°कुमार] भवनपति देवो की एक जाति (ठा १, १)।

थणिल्ल सक [चोरय्] चुराना, चोरी करना। थणिल्लइ (प्राकृ ७२)।

थणिल्ल वि [स्तनवत्] स्तनवाला (कप्पू)।

थणुल्लअ पु [स्तनक] छोटा स्तन (गउड)।

थण्णु देखो थाणु (गा ४२२)।

थत्तिअ न [दे] विश्राम (दे ५, २६)।

थद्ध देखो थड्ढ (सम ५१, गा ३०४, वज्जा १०)।

थन्न न [स्तन्य] स्तन का दूध। °जीवि वि [°जीविन्] छोटा वच्चा (सुपा ६१६)।

थप्प सक [स्थापय्] रखना, थप्पी करना। थप्पइ (सिरि ८६७)।

थप्पण न [स्थापन] न्यास, न्यसन (कुप्र ११७)।

थप्पिअ वि [स्थापित] रक्खा हुआ, न्यस्त (पिंग)।

थब्भ अक [स्तभ्] अहंकार करना। थब्भइ (सूअ १, १३, १०)।

थब्भर पु [दे] अयोध्या नगरी के समीप का एक ह्रद-दह या झील (ती ११)।

थमिअ वि [दे] विस्मृत (दे ५, २५)।

थय सक [स्थगय्] आच्छादन करना, आवृत करना, ढकना। थएइ, थएसु (पि ३०६, गा ६०५)। भवि. थइस्सं (गा ३१४)। हेकृ. थइउ (गा ३६४)।

थय वि [स्तृत] व्याप्त, भरपूर (से १, १)।

थय पु [स्तव] स्तुति, स्तवन, गुण-कीर्तन (अजि ३६, सं ४४)।

थयण न [स्तवन] ऊपर देखो, 'थुइथयण-वंदणनमसणाणि एगट्ठिआणि एयाइ' (आव २)।

पक्ष, नय-विशेष, 'दव्वट्ठियस्स सव्वं सया अणुप्पन्नमविणट्ठं' (सम्म ११, विसे ४५७)। °लिंग न [°लिङ्ग] बाह्य वेष (पचा ४)। °लिंगि वि [°लिङ्गिन्] भेषधारी साधु (गु १०)। °लेस्सा स्त्री [°लेश्या] शरीर आदि पौद्गलिक वस्तु का रंग, रूप (भग)। °वेय पुं [°वेद] पुरुष आदि का बाह्य आकार (राज)। °ायरिय पु. [°ाचार्य] अप्रधान आचार्य, आचार्य के गुणों से रहित आचार्य (पचा ६)।

दव्व न [द्रव्य] योग्यता, 'समयम्मि दव्व-सद्दो पाय ज जोग्गयाए रुढो त्ति, णिरुवचरिणो' (पवा ६, १०)।

दव्वहलिया स्त्री [द्रव्यहलिका] वनस्पति-विशेष (पण्ण १ —पत्र ३५)।

दव्वि° देखो दव्वी (पड्)।

दव्विंदिअ न [द्रव्येन्द्रिय] स्थूल इन्द्रिय (भग)।

दव्वी स्त्री [दर्वी] १ कर्छी, कलछी, चमची, डोई (पाम)। २ सांप की फन (दे ५, ३७)। °अर °कर पुं [°कर] सांप, सर्प (दे ५, ३७, पण्ण १)।

दव्वी स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३४)।

दस त्रि व [दशन्] दस, नो और एक (हे १, १६२, ठा ३, १—पत्र ११६, सुपा २६७)। °उर न [°पुर] नगर-विशेष (विसे २३०३)। °कंठ पुं [°कण्ठ] रावण, एक लंका-पति (से १५, ६१)। °कंधर पुं [°कन्धर] राजा रावण (गउड) °कालिय न [°कालिक] एक जैन आगम-ग्रंथ (दसनि १)। °ग न [°क] दश का समूह (दं ३८, नव १२)। °गुण वि [°गुण] दस गुना (ठा १०)। °गुणिअ वि [°गुणित] दस-गुना (भग, श्रा १०)। °ग्गीव पु [°ग्रीव] रावण (पउम ७३, ८)। °दसमिया स्त्री [°दशमिका] जैन साधु का एक धार्मिक अनुष्ठान, प्रतिमा-विशेष (सम १००)। °दिवसिय वि [°दिवसिक] दस दिन का (णाया १, १—पत्र ३७)। °द्ध पुंन [°ार्ध] पाँच, ५ (सम ६०, णाया १, १)। °धणु पु [°धनुष्] ऐरवत क्षेत्र के एक भावी कुलकर पुरुष (सम १५३)। °पएसिय वि [°प्रादेशिक] दस अवयव-वाला (ठा १०)। °पुर देखो °उर (महा)। °पुव्वि वि [°पूर्विन्] दस पूर्व-ग्रन्थों का अभ्यासी (ओघ १)। °बल पु [°बल] भगवान् बुद्ध (पाम, हे १ २६२)। °म वि [°म] १ दसवाँ (राज)। २ चार दिनों का लगातार उपवास (आचा, णाया १, १, सुर ४, ५५)। °मभत्तिय वि [°मभक्तिक] चार दिनो का लगातार उपवास करनेवाला (पण्ह २, ३)। °मासिअ वि [°मासिक] दस मासे का तौलवाला, दस मासे का परि-माणवाला (कप्पू)। °मी स्त्री [°मी] १ दसवीं। २ तिथि-विशेष (सम २६)। °मुद्दि-याणतग न [°मुद्रिकानन्तक] हाथ की उंगलियों की दस अंगूठियाँ (ओप)। °मुह पु [°मुख] रावण, राक्षस-पति (हे १, २६२, प्राप्र, हेका ३३४)। °मुहसुअ पुं [°मुखसुत] रावण का पुत्र, मेघनाद आदि (से १३, ६०)। °य देखो °ग (ठा १०)। °रत्त न [°रात्र] दस रात (विपा १, ३)। °रह पु [°रथ] १ रामचन्द्रजी के पिता का नाम (सम १५२, पउम २०, १८३)। २ अतीत उत्सर्पिणी-काल मे उत्पन्न एक कुलकर पुरुष (ठा ६—पत्र ४४७)। °रहसुय पुं [°रथसुत] राजा दशरथ का पुत्र—राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न (पउम ४६, ८७)। °वअण पु [°वदन] राजा रावण (से १०, ५)। °वल देखो °बल (प्राप्र)। °विह वि [°विध] दस प्रकार का (कुमा)। °वेआलिअ न [°वैकालिक] जैन आगम-ग्रन्थ-विशेष (दसनि १, णदि)। °हा अ [°धा] दस प्रकार से (जी २४)। °ाणण पु [°ानन] राक्षसेश्वर रावण (से ३, ६३)। °ाहिया स्त्री [°ाहिका] पुत्र-जन्म के उपलक्ष्य में किया जाता दस दिनों का एक उत्सव (कप्प)।

दसग वि [दशक] दस वर्ष की उम्र का (तंदु १७)।

दसण पुं [दशन] १ दाँत, दन्त (भग, कुमा)। २ न. दंश, काटना (पव ३८)। °च्छय पु [°च्छद] होठ, अधर, ओठ (सुर १२,२३४)।

दसण्ण पु [दशार्ण] देश-विशेष (उप २११ टी, कुमा)। °कूड न [°कूट] शिखर-विशेष (आवम)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (ठा १०)। °भद्द पुं [°भद्र] दशार्णपुर का एक विख्यात राजा, जो अद्वितीय आडम्बर से भगवान् महावीर को वन्दन करने गया था और जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (पडि)। °वइ पु [°पति] दशार्ण देश का राजा (कुमा)।

दसतीण न [दे] धान्य विशेष (पण्ण १—पत्र ५४)।

दसन्न देखो दसण्ण (सत्त ६७ टी)।

दसा स्त्री [दशा] १ स्थिति, अवस्था (गा २२७; २८४, प्रासू ११०)। २ सौ वर्ष के प्राणी की दस-दस वर्ष की अवस्था (दसनि १)। ३ सूत या ऊन का छोटा और पतला धागा (ओघ ७२५)। ४ ब. जैन आगम-ग्रन्थ-विशेष (अणु)।

दसार पुं [दशार्ह] १ समुद्रविजय आदि दश यादव (सम १२६; हे २, ८५, अंत २, णाया १, ४—पत्र ६६)। २ वासुदेव, श्रीकृष्ण (णाया १, १६)। ३ बलदेव (आवम)। ४ वासुदेव की संतति (राज)। °णेउ पुं [°नेतृ] श्रीकृष्ण (उव)। °नाह पुं [°नाथ] श्रीकृष्ण (पाम)। °वइ पु [°पति] श्रीकृष्ण (कुमा)।

दसिया देखो दसा (सुपा ६४१)।

दसु पुं [दे] शोक, दिलगीरी (दे ५, ३४)।

दसुत्तरसय न [दशोत्तरशत] १ एक सौ दस। २ वि एक सौ दसवाँ, ११० वाँ (पउम ११०, ४५)।

दसुय पुं [दस्यु] लुटेरा, डाकू, चोर, तस्कर (उत्त १०, १६)।

दसेर पु [दे] सूत्र-कनक (दे ५, ३३)।

दस्स देखो दस = दर्शय्। कृ. दस्सणीअ (स्वप्न ६५)।

दस्सण देखो दसण (मै २१)।

दस्सु पु [दस्यु] चोर, तस्कर (श्रा २७)।

दह सक [दह्] जलना, भस्म करना। दहइ (महा)। कर्म. दहिज्जइ (हे ४, २४६), दज्झइ (मात्रा)। वकृ. दहंत (श्रा २८)।

थाली स्त्री [स्थाली] पाक पात्र, हांडी, वटलोही (ठा ३, १, सुपा ४८७)। °पाग वि [°पाक] हाँडी में पकाया हुआ (ठा ३, १)।

थाव सक [स्थापय्] १ स्थिर करना। २ रखना। थावए (उत्त २, ३२)।

थावच्चा स्त्री [स्थापत्या] द्वारका-निवासी एक गृहस्थ स्त्री (णाया १,५)। °पुत्त पु [°पुत्र] स्थापत्या का पुत्र, एक जैन मुनि (णाया १, ५, अंत)।

थावण न [स्थापन] न्यास, आधान (स २१३)।

थावय पु [स्थापक] समर्थ हेतु, स्वपक्ष-साधक हेतु (ठा ४, ३—पत्र २५४)।

थावर वि [स्थावर] १ स्थिर रहनेवाला। २ पुं. एकेन्द्रिय प्राणी, केवल स्पर्शेन्द्रियवाला—पृथिवी, पानी और वनस्पति आदि का जीव (ठा ३, २, जी २)। ३ एक विशेष नाम, एक नौकर का नाम (उप २१७ टी)। °काय पुं [°काय] एकेन्द्रिय जीव (ठा २, १)। °णाम, °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, स्थावरत्व-प्राप्ति का कारण-भूत कर्म (पंच ३, सम ६७)।

थासग [दे] कुदाल (आव० टिप्पण—पत्र ५६, १)।

थासग } थासय } पु [स्थासक] १ दर्पण, आदर्श, शीशा (विपा १, २—पत्र २४)। २ दर्पण के आकार का पात्र-विशेष (औप, अनु, णाया १, १ टी)। ३ अश्व का आभरण-विशेष (राज)।

थाह पुं [दे] १ स्थान, जगह। २ वि. अस्ताघ, गभीर जल-वाला। ३ विस्तीर्ण। ४ दीर्घ, लम्बा (दे ५, ३०)।

थाह पुं [स्थाघ] थाह, तला, गहराई का अन्त, सीमा (पाअ, विसे १३३२, णाया १, ९, १४, से ८, ४०)।

थाहिअ पु [दे] आलाप, स्वर विशेष (सुपा १६)।

थिअ वि [स्थित] रहा हुआ (स २७०, विसे १०३५, भवि)।

थिइ देखो ठिइ (से २, १८, गउड)।

थिंदिणी स्त्री [दे] छन्द-विशेष, 'थिंदिणिच्छंद-रासेण' (सम्मत्त १४१)।

थिंप अक [तृप्] तृप्त होना, सतुष्ट होना। थिंपइ (प्राप्र)। भवि थिंपिहिति (प्राप्र ८, २२ टी)। सक्. थिंपिअ (प्राप्र ८, २२ टी)।

थिग्गल न [दे] १ भित्ति-द्वार, भीत में किया हुआ दरवाजा (दस ५, १, १५)। २ फटे-फुटे वस्त्र मे किया जाता सधान, वस्त्र आदि के खडित भाग मे लगाई जाती जोड (पण्ण १७, विसे १४३९ टी)।

थिग्गल पुन [दे] १ छिद्र। २ गिरने के बाद दुरुस्त (ठीक) किया हुआ गृह-भाग (आचा २, १, ६, २)।

थिज्ज देखो थेज्ज = स्थैर्य (सबोध ४९)।

थिण्ण वि [स्त्यान] कठिन जमा हुआ (हे १, ७४, २, ९९, से २, ३०)। देखो थीण।

थिण्ण वि [दे] १ स्नेह-रहित दयावाला। २ अभिमानी, गर्व-युक्त (दे ४, ३०)।

थिन्न वि [दे] गर्वित, अभिमानी (पाअ)।

थिप्प देखो थिप। थिप्पइ (हे ४, १३८)।

थिप्प अक [वि + गल्] गल जाना। थिप्पइ (हे ४, १७५)।

थिबुक्क पुं [स्तिबुक] कन्द विशेष (सुख ३६, ९९)।

थिम सक [स्तिम्] आर्द्र करना, गीला करना। हेकृ. थिमिउ (राज)।

थिमिअ वि [दे स्तिमित] स्थिर, निश्चल (दे ५, २७, से २, ४३, ८, ६१, णाया १, १, विपा १, १, पण्ह १, ४, २, ५, औप, सुज्ज १, सूअ १, ३, ४)। २ मन्थर, धीमा (पाअ)।

थिमिअ पु [स्तिमित] राजा अन्धकवृष्णि के एक पुत्र का नाम (अंत ३)।

थिम्म सक [स्तिम्] १ आर्द्र करना। अक. आर्द्र होना। थिम्मइ (प्राकृ १२०)।

थिर वि [स्थिर] १ निश्चल, निष्कम्प (विपा १, १, सम ११९, णाया १, ८)। २ निष्पन्न, संपन्न (दस ७, ३५)। °णाम, °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, जिसके उदय से दन्त, हड्डी आदि अवयवों की स्थिरता होती है (कम्म १, ४९, सम ६७)। °वलिया स्त्री [°वलिका] जन्तु-विशेष, सर्प की एक जाति (जीव २)।

थिरणाम वि [दे] चल-चित्त, चंचल-मनस्क (दे ५, २७)।

थिरण्णेस वि [दे] अस्थिर, चचल (पड्)।

थिरसीस वि [दे] १ निर्भीक, निडर। २ निर्भर। ३ जिसने सिर पर कवच बांधा हो वह (दे ५, ३१)।

थिरिम पु स्त्री [स्थैर्य] स्थिरता (सण)।

थिरीकरण न [स्थिरीकरण] स्थिर करना, दृढ़ करना, जमाना (श्रा ६, रयण ६९)।

थिल्ल वि [दे] शुभ्र (चउपन्न० विबुधानद)।

थिल्लि स्त्री [दे] यान-विशेष—१ दो घोडे की बग्घी। २ दो खच्चर आदि मे वाह्य यान (सूअ २, २, ६२, णाया १, १ टी—पत्र ४३, औप)।

थिविथिव अक [थिवथिवाय्] 'थिव-थिव' आवाज करना। वकृ. थिविथिवंत (विपा १, ७)।

थिबुग } थिबुअ } पुं [स्तिबुक] जल-बिन्दु (विसे ७०४, ७०५, सम १४९)। °संकम पुं [°संक्रम] कर्म-प्रकृतियो का आपस मे संक्रमण-विशेष (पचा ५)।

थीहु पुस्त्री [दे] कन्द-विशेष (उत्त ३६, ९९)।

थिहु पु [स्तिभु] वनस्पति-विशेष (राज)।

थी स्त्री [स्त्री] स्त्री, महिला, नारी, औरत (हे २, १३०, कुमा, प्रासू ६५)।

थीण देखो थिण्ण (हे १, ७४, दे १, ६१, कुमा, पाअ)। °गिद्धि स्त्री [°गृद्धि] निकृष्ट निद्रा-विशेष (ठा ९, विसे २३४, उत्त ३३, ५)। °द्धि स्त्री [°र्द्धि] अधम निद्रा-विशेष (सम १५)। °द्धिय वि [°र्द्धिक] स्त्यानर्द्धि निद्रा वाला (विसे २३५)।

थु अ. तिरस्कार-सूचक अव्यय (प्रति ८१)।

थुअ वि [स्तुत] जिसकी स्तुति की गई हो वह, प्रशसित (दे ८, २७, धण ५०, अजि १८)।

थुअ देखो थुण। थुअइ (प्राकृ ६७)।

थुइ स्त्री [स्तुति] स्तव, गुण-कीर्तन (कुमा, चैत्य १, सुर १०, १०३)।

थुइवाय पु [स्तुतिवाद] प्रशंसा-वचन (चेइय ७४४)।

दाणव पु [दानव] दैत्य, असुर, दनुज (दे १, १७७, अच्चु ४१, प्रासू ८६)।

दाणविंद पु [दानवेन्द्र] असुरों का स्वामी (णाया १ ८, पउम ६२, २६, प्रासू १०७)।

दाणि स्त्री [दे] शुल्क, चुंगी (सुपा ३६०, ५४८)।

दाणि | दाणिं | दाणीं अ [इदानीम्] इस समय, अभी (प्रति ३६, स्वप्न २०, हे १, २६, ४, २७७, अभि ३७, स्वप्न ३३)।

दाथ वि [द्वास्थ] १ द्वार पर स्थित। २ पु प्रतीहार, द्वारपाल, चपरासी (दे ६,७२)।

दादलिआ स्त्री [दे] अंगुली, उंगली (दे ५, ३८)।

दापण न [दापन] दिलाना, 'अब्भुट्ठाण अंजलिकरणं तहेवासणदापणं' (सत्त २६ टी)।

दाम न [दामन्] १ माला, स्रज् (पण्ह १, ४, कुमा)। २ रज्जु, रस्सी (गा १७२, हे १, ३२)। ३ पु वेलन्धर नागराज का एक आवास-पर्वत (राज)। °वंत वि [°वत्] मालावाला (कुमा)।

दामड्ढि पु [दामस्थि] सौधर्म देवलोक के इन्द्र के वृषभ-सैन्य का अधिपति देव (इक)।

दामड्ढि पु [दामर्द्धि] ऊपर देखो (ठा ५, १—पत्र ३०३)।

दामण न [दामन] बन्धन, पशुओं का रस्सी से नियन्त्रण (पव ३८)।

दामण स्त्रीन [दामनी] पशु को बाँधने की डोरी—रस्सी, पगहा (धर्मवि १४८)। स्त्री. °णी (सुज्ज १०, ८)।

दामणी स्त्री [दामनी] १ पशुओं को बाँधने की रस्सी (भग १६, ६)। २ भगवान् कुन्थुनाथ की मुख्य शिष्या (तित्थ)। ३ स्त्री और पुरुष का रज्जु के आकारवाला एक शुभ लक्षण (पण्ह २, ४ टी—पत्र ८४, पण्ह २, ४—पत्र ६८, ७६, ज २)।

दामणा स्त्री [दे] १ प्रसव, प्रसूति। २ नयन, आँख (दे ५, ५२)।

दामिय वि [दामित] संयमित, नियन्त्रित (सण)।

दामिली स्त्री [द्राविडी] द्रविड देश की लिपि में निबद्ध एक मन्त्र-विद्या (सूअ २, २)।

दामी स्त्री [दामी] लिपि-विशेष (सम ३५)।

दामोअर पु [दामोदर] १ श्रीकृष्ण वासुदेव (ती ४)। २ अतीत उत्सर्पिणी काल में भरत-क्षेत्र में उत्पन्न नववाँ जिनदेव (पव ७)।

दायग वि [दायक] दाता, देनेवाला (उप ७२८ टी महा, सुर २, ४८, सुपा ३७८)।

दायण न [दान] देना, 'दायणे अ निकाए अ अब्भुट्ठाणेत्ति आवरे' (सम २१), 'तवोविहाणं तह दाणदाप (? य) णं' (सत्त २६)।

दायणा स्त्री [दापना] पृष्ट अर्थ का व्याख्या (विसे २६३२)।

दायय देखो दायग, 'अजिअमतिपायया हुतु मे सिवसुहाण दायया' (अजि ३४)।

दायव्व देखो दा = दा।

दायाद पु [दायाद] पैतृक संपत्ति का भागीदार, पुत्र, सपिंड कुटुम्बी (आचा)।

दायार वि [दायार] याचक, प्रार्थी (कप्प)।

दार सक [दारय्] विदारना, तोड़ना, चूर्ण करना। वकृ. दारत (कुमा)।

दार पु [दे] कटी-सूत्र, काँची (दे ५, ३८)।

दार पुंन [दार] कलत्र, स्त्री, महिला (सम ५०, स १३७, सुर ७, २०१, प्रासू ६५), 'दव्वेण अप्पकालं गहिया वेसावि होइ परदार' (सुपा २८०)।

दार न [द्वार] दरवाजा, निकलने का मार्ग (औप, सुपा ३६७)। °ग्गला स्त्री [°र्गला] दरवाजे का आगल (गा ३२२)। °ट्ठ, °त्थ वि [°स्थ] १ द्वार पर स्थित। २ पुं. दरवान, प्रतीहार (बृह ?, दे २, ५२)। °पाल, °वाल पुं [°पाल] दरवान, द्वार-रक्षक (उप ५३० टी, सुर १०, १३६, महा)। °वालय, °वालिय पु [°पालक, पालिक] दरवान, प्रतीहार (पउम १७ १६ सुपा ४६६)।

दार | दारग पु [दारक] शिशु, बालक, बच्चा (उप पृ ३०८, सुर १५, ११६, कप्प)। देखो दारय।

दारद्धता स्त्री [दे] पेटी, सदूक (दे ५, ३८)।

दारय वि [दारक] करनेवाला, विध्वसक (कुप्र १३०)। २ देखो दारग (कप्प)।

दारिअ वि [दारित] विदारित, फाड़ा हुआ (पाअ)।

दारिआ स्त्री [दारिका] लड़की (स्वप्न १५, णाया १, १६, महा)।

दारिआ स्त्री [दे] वेश्या, वारांगना (दे ५, ३८)।

दारिद्द न [दारिद्र्य] १ निर्धनता। २ दीनता (गा ६७१, महा, प्रासू १७३)। ३ आलस्य (प्रामा)।

दारिद्दिय वि [दारिद्रित] दरिद्रता-प्राप्त, दरिद्र (पउम ५७, २५)।

दारु न [दारु] काष्ठ, लकड़ी (सम ३६, कुप्र १०५; स्वप्न ७०)। °ग्गाम पु [°ग्राम] ग्राम-विशेष (पउम ३०, ६०)। °डंडय पुन [°दण्डक] काष्ठ दण्ड, साधुओं का एक उपकरण (कस)। °पव्वय पु [°पर्वत] पर्वत-विशेष (जीव ३)। °पाय न [°पात्र] काष्ठ का बना हुआ भाजन (ठा ३, ३)। °पुत्तय पु [°पुत्रक] कठपुतला (अच्चु ८२)। °मड पुं [°मड] भरत-क्षेत्र के एक भावी जिन-देव के पूर्व जन्म का नाम (सम १५४)। °संकम पुं [°संक्रम] काष्ठ का बना हुआ पुल, सेतु (आचा)।

दारुअ पु [दारुक] १ श्रीकृष्ण वासुदेव का एक पुत्र, जिसने भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा लेकर उत्तम गति प्राप्त की थी (अंत ३)। २ श्रीकृष्ण का एक सारथि (णाया १, १६)। ३ न काष्ठ, लकड़ी (पउम २६, ६)।

दारुइज्ज वि [दारुकीय] काष्ठ-निर्मित लकड़ी का बना हुआ। °पव्वय पु [पर्वत] काष्ठ का बना हुआ मालूम पड़ता पर्वत (राय ७५)।

दारुण वि [दारुण] १ विषम, भयंकर, भीषण (णाया १, २, पाअ, गउड)। २ क्रोध-युक्त रौद्र (वव १)। ३ न कष्ट, दु ख (स ३२?)। ४ दुर्भिक्ष, अकाल (उप १३६ टी)।

दारुणी स्त्री [दारुणी] विद्यादेवी-विशेष (पउम ७, १४०)।

दालण न [दारण] विदारण, खण्डन (पण्ह १, १)।

दालि स्त्री [दे दालि] १ दाल, दला हुआ चना, अरहर, मूँग आदि अन्न (सुपा ११, सण)। २ राजि, रेखा, लकीर (ओघ ३२३)।

दालिअ न [दे] नेत्र, आँख (दे ५, ३८)।

थोडेरुय देखो धाडेरुय (उप ७२८ टी)।

थोणा देखो थूणा (हे १, १२५)।

थोत्त न [स्तोत्र] स्तुति, स्तव (हे २, ४५, सुपा २६६)।

थोत्तु देखो थुण।

थोभ } पु [स्तोभ, °क] 'च', 'वै' आदि
थोभय } निरर्थक अव्यय का प्रयोग, 'उय-वइकारा हुत्ति य अकारणा थोभया हुंति' (वृह १, विसे ६६६ टी)।

थोर देखो थुल्ल (हे १, २५५, २, ६६, पउम २, १६, से १०, ४२)।

थोर वि [दे] क्रम से विस्तीर्ण श्रथ च गोल (दे ५, ३०, वज्जा ३६)।

थोल पुं [दे] वस्त्र का एक देश (दे ५,३०)।

थोव } वि [स्तोक] १ अल्प, थोड़ा (हे
थोवाग } २, १२५, उव, श्रा २७, श्रोघ २५६, विसे ३०३०)। २ पु. समय का एक परिमाण (ठा २, ३, भग)।

थोह न [दे] बल, पराक्रम (दे ५, ३०)।

थोहर पु स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष, थूहर का पेड़, सेहुँड (सुपा २०३)। स्त्री. °री (उप १०३१ टी, जी १०, धर्म ३)।

॥ इश्र सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि थयाराइसद्दसंकलणो
चउव्वीसइमो तरंगो समत्तो ॥

द

द पुं [दे] दन्त स्थानीय व्यञ्जन-वर्ण विशेष (प्राप, प्रामा)।

दअच्छर पुं [दे] ग्राम-स्वामी, गाँव का अधिपति (दे ५, ३६)।

दअरी स्त्री [दे] सुरा, मदिरा, दारू (दे ५, ३४)।

दइ स्त्री [दृति] मशक, चर्म-निर्मित जल-पात्र (श्रोघ ३८)।

दइअ वि [दे] रक्षित (दे ५, ३५)।

दइअ पुंस्त्री [दृतिका] मशक, चर्म-निर्मित जल-पात्र, चमड़े का बना हुआ वह थैला जिसमें पानी भरकर लाते हैं, 'दइएण वत्थिणा वा' (पिंड ४२)। स्त्री. °आ (अणु १५२, पिंडमा १४)।

दइअ वि [दयित] १ प्रिय, प्रेम-पात्र; 'जाओ वरकामिणीदइओ' (सुर १, १८३)। २ अभीष्ट, वाञ्छित, 'अम्हाण मणोदइय दंसणमवि दुल्लहं मन्ने' (सुर ३, २३८)। ३ पुं पति, स्वामी, भर्ता (पाअ, कुमा)। °यम वि [°तम] १ अत्यन्त प्रिय। २ पुं. पति, भर्ता (पउम ७७, ६२)।

दइआ स्त्री [दयिता] स्त्री, प्रिया, पत्नी (कुमा, महा, सुर ४, १२६)।

दइच्च पुं [दैत्य] दानव, असुर (हे १, १५१, कुमा, पाअ)। °गुरु पुं [°गुरु] शुक्र, शुक्राचार्य (पाअ)।

दइन्न न [दैन्य] दीनता, गरीबपन, गरीबी (हे १, १५१)।

दइव पु न [दैव] दैव, भाग्य, अदृष्ट, प्रारब्ध, पूर्व-कृतकर्म (हे १, १५३, कुमा, महा; पउम २८, ६०), 'अहवा कुविओ दइवो पुरिसं किं हणइ लउडेण' (सुर ८, ३४)। °ज्ज, °ण्णु पुं [°ज्ञ] ज्योतिषी, ज्योति-शास्त्र का विद्वान् (हे २, ८३, षड्)। देखो देव = दैव।

दइवय न [दैवत] देव, देवता (पण्ह २, १, हे १, १५१, कुमा)।

दइविग वि [दैविक] देव-सबन्धी, दिव्य, उत्तम (स ५०६)।

दइव्व देखो दइव (हे १, १५३, २, ६६, कुमा, पउम ६३, ४)।

दउत्ति (शौ) अ [द्राग्] शीघ्र, जल्दी (प्राकृ ६५)।

दउदर } न [दकोदर] रोग-विशेष,
दओदर } जलोदर, पानी से पेट का फूलना (णाया १, १३, विपा १, १)।

दओभास पुं [दकावभास] लवण-समुद्र मे स्थित वेलधर-नागराज का एक आवास-पर्वत (इक)।

दठा देखो दाढा (नाट—मालती ५६)।

दंठि वि [दंष्ट्रिन्] बडे दाँतवाला, हिंसक जन्तु (नाट—वेणी २४)।

दंड सक [दण्डय्] सजा करना, निग्रह करना। कवकृ दंडिज्जंत (प्रासू ६६)।

दंड पु [दण्ड] १ जीव-हिंसा, प्राण-नाश (सम १, णाया १, १, ठा १)। २ अपराधी को अपराध के अनुसार शारीरिक या आर्थिक दण्ड, सजा, निग्रह, दमन (ठा ३, ३, प्रासू ६३, हे १, १२७)। ३ लाठी, यष्टि (उप ५३० टी, प्रासू ७४)। ४ दुःख-जनक, परिताप-जनक (आचा)। ५ मन, वचन और शरीर का अशुभ व्यापार (उत्त १६, द ४६)। ६ छन्द विशेष (पिंग)। ७ एक जैन उपासक का नाम (संथा ६१)। ८ पुन. परिमाण-विशेष, १६२ अंगुल का एक नाप (इक)। ६ आज्ञा (ठा ५, ३)। १० पुंन. सैन्य, लश्कर, फौज (पण्ह १,४, ठा ५,३)। °अल पुं [°कल] छन्द-विशेष (पिंग)। °जुज्झ न [°युद्ध] यष्टि-युद्ध (आचा)। °णायग पुं

दिअलिअ वि [दे] मूर्ख, अज्ञानी (दे ५, ३६)।

दिअली स्त्री [दे] स्थूणा, खम्भा, खूँटी (पाअ)।

दिअस पुन [दिवस] दिन, दिवस (गउड, पि २६४)। °कर पु [°कर] सूर्य, रवि (से १, ५३)। °नाह पु [°नाथ] सूर्य, सूरज (पउम १४, ८३)। °यर देखो °कर (पाअ)। देखो दिवस।

दिअसिअ न [दे] १ सदा-भोजन (दे ५, ४०)। २ अनुदिन, प्रतिदिन (दे ५, ४०, पाअ)।

दिअह देखो दिअस (प्राप्र, पाअ)।

दिअहुत्त न [दे] पूर्वाह्ण का भोजन, दुपहर का भोजन (दे ५, ४०)।

दिआ अ [दिवा] दिन, दिवस (पाअ, गा ६६, सम १६, पउम २६, २६)। °णिस न [°निश] दिन-रात, सदा (पिंग)। °राअ न [°रात्र] दिन-रात, सर्वदा (सुपा ३१८)। देखो दिवा।

दिआहम पु [दे] भास पक्षी (दे ५, ३६)।

दिआइ देखो दुआइ (पाअ)।

दिइ स्त्री [दृति] मशक, चमडे का जल-पात्र (अनु ५, कुप्र १४६)।

दिउण वि [द्विगुण] दूना, दुगुना (पि २६८)।

दिंत देखो दा = दा।

दिक्काण पुं [द्रेष्काण] मेष आदि लग्नो का दसवां हिस्सा (राज)।

दिक्ख सक [दीक्ष्] दीक्षा देना, प्रव्रज्या देना, सन्यास देना, शिष्य करना। दिक्खे (उव)। वकृ दिक्खत (सुपा ५२६)।

दिक्ख देखो देक्ख। दिक्खइ (पि ६६)।

दिक्खा स्त्री [दीक्षा] १ प्रव्रज्या देना, दीक्षण (ओघ ७ भा)। २ प्रव्रज्या, सन्यास (धर्म २)।

दिक्खिअ वि [दीक्षित] जिसको प्रव्रज्या दी गई हो वह, जो साधु बनाया गया हो वह (उव)।

दिगछा देखो दिगिछा (पि ७४)।

दिगंबर देखो दिअंबर (इक, आवम)।

दिगिछा स्त्री [जिघत्सा] बुभुक्षा, भूख (सम ४०, विसे २५६४, उत्त २, आचू)।

दिगिन्छ सक [जिघत्स्] खाने को चाहना। वकृ दिगिच्छंत (आचा, पि ५५५)।

दिगु पु [द्विगु] व्याकरण-प्रसिद्ध एक समास (अणु, पि २६८)।

दिग्गु देखो दिगु (अणु १४७)।

दिग्घ देखो दीह (हे २, ६१, प्राप्र, संक्षि १७, स्वप्न ६८, विसे ३४६७)। °णगूल, लंगूल वि [°लाङ्गूल] १ लम्बी पूँछवाला २ पु वानर (षड्)।

दिग्घिआ स्त्री [दीर्घिका] वापी, सीढ़ीवाला कूप-विशेष (स्वप्न ५६, विक्र १३६)।

दिच्छा स्त्री [दित्सा] देने की इच्छा (कुप्र २६६)।

दिज देखो दिअ = द्विज (कुमा)।

दिज्ज वि [देय] १ देने योग्य। २ जो दिया जा सके। ३ पुन कर-विशेष (विपा १, १)।

दिज्जत, दिज्जमाण } देखो दा = दा।

दिट्ठ वि [दिष्ट] कथित, प्रतिपादित, कहा हुआ (उप ७६८ टी)।

दिट्ठ वि [दृष्ट] १ देखा हुआ, विलोकित (ठा ४, ४, स्वप्न २८, प्रासू १११)। २ अभिमत (अणु)। ३ ज्ञात, प्रमाण से जाना हुआ (उप ८८२, बृह १)। ४ न दर्शन, विलोकन (ठा २, १)। °पाढि वि [°पाठिन्] चरक-सुश्रुतादि का जानकार (ओघ ७४)। °लाभिय पु [°लाभिक] दृष्ट वस्तु को ही ग्रहण करनेवाला जैन साधु (पण्ह २, १)।

दिट्ठ न [दृष्ट] प्रत्यक्ष या अनुमान प्रमाण से जानने योग्य वस्तु (धर्म सं ५१८, ५१६)। °साहम्मव न [साधर्म्यवत्] अनुमान का एक भेद (अणु २१२)।

दिट्ठंत पुं [दृष्टान्त] उदाहरण, निदर्शन (ठा ४, ४, महा)।

दिट्ठंतिअ वि [दार्ष्टान्तिक] १ जिस पर उदाहरण दिया गया हो वह (विसे १००५ टी)। २ न. अभिनय-विशेष (ठा ४, ४—पत्र २८५)।

दिट्ठव्व देखो दक्ख = दृश्।

दिट्ठि स्त्री [दृष्टि] १ नेत्र, आंख, नजर (ठा ३, १, प्रासू १६, कुमा)। २ दर्शन, मत (पण्ण १६, ठा ४, १)। ३ दर्शन, अवलोकन, निरीक्षण (अणु)। ४ बुद्धि, मति (सम २५, उत्त २)। ५ विवेक, विचार (सूअ २,२)। °कीव पुं [°क्लीव] नपुसक-विशेष (निचू ४)। °जुद्ध न [°युद्ध] युद्ध-विशेष, आंख की स्थिरता की लड़ाई (पउम ४, ४४)। °बंध पुं [°बन्ध] नजर बांधना (उप ७२८ टी)। °म, °मत वि [°मत्] प्रशस्त दृष्टिवाला, सम्यग्-दर्शी (सूअ १, ४, १, आचा)। °राय पुं [°राग] १ दर्शन-राग, अपने धर्म पर अनुराग (धर्म २)। २ चाक्षुप-स्नेह (अभि ७४)। °ल्ल वि [°मत्] प्रशस्त दृष्टिवाला (पउम २८, २२)। °वाय पुं [°पात] १ नजर डालना (से १०, ५)। २ बारहवां जैन अग ग्रथ (ठा १०—पत्र ४६१)। °वाय पु [°वाद] बारहवां जैन अग-ग्रन्थ (ठा १०, सम १)। °विपरिआसिआ स्त्री [°विपर्यासिका, °सिता] मति भ्रम (सम २५)। °विस पुं [°विष] जिसकी दृष्टि में विष हो ऐसा सर्प (से ४, ५०)। °सूल न [°शूल] नेत्र का रोग-विशेष (णाया १, १३—पत्र १८१)।

दिट्ठि स्त्री [दृष्टि] तारा, मित्रा आदि योग-दृष्टि (सिरि ६२३)।

दिट्ठिआ अ [दिष्ट्या] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ मगल। २ हर्ष, आनन्द, खुशी। ३ भाग्य से (हे २, १०४, स्वप्न १६, अभि ६५, कुप्र ६५)।

दिट्ठिआ स्त्री [दृष्टिका, °जा] १ क्रिया-विशेष—दर्शन के लिए गमन। २ दर्शन से कर्म का उदय होना (ठा २, १—पत्र ४०)।

दिट्ठीआ स्त्री [दृष्टीया] ऊपर देखो (नव १८)।

दिट्ठीवाओवएसिआ स्त्री [दृष्टिवादोपदेशिकी] सज्ञा-विशेष (दं ३३)।

दिट्ठेल्लय वि [दृष्ट] देखा हुआ, निरीक्षित (आवम)।

दिड्ढ, दिढ } देखो दढ (नाट—मालती १७, से १, १४, स्वप्न २०५, प्रासू ६२)।

दिण पुन [दिन] दिवस (सुपा ५६, द २७, जी ३५, प्रासू ६५)। °इंद पुं [°इन्द्र] सूर्य, रवि (सण)। °कय पु [°कृत्] सूर्य, रवि (राज)। °कर पुं [°कर] सूर्य, सूरज (सुपा ३१२)। °नाह पुं [°नाथ] सूर्य, रवि (महा)। °बंधु पुं [°बन्धु] सूर्य, रवि (पुप्फ ३७)। °मणि पुं [°मणि]

दंतिक्क न [दे] चावल का आटा (बृह १)।
दंतिक्कग न [दे] माम (धर्मसं ६६१)।
दंतिया स्त्री [दन्तिका] एक वृक्ष विशेष, बड़ी सतावर (पएण १—पत्र ३२)।
दंती स्त्री [दन्ती] स्वनाम ख्यात वृक्ष (पएण १—पत्र ३६)।
दंतुक्खलिय पु [दन्तोलूखलिक] तापस-विशेष, जो दाँतो से ही व्रीहि या धान वगैरह को निस्तुप कर खाते है (निर १, ३)।
दंतुर वि [दन्तुर] उन्नत दाँतवाला, जिसके दाँत उभड-खाबड हो। २ ऊँचा-नीचा स्थान, विषम स्थान (दे २, ७७)। ३ आगे आया हुआ, आगे निकल आया हुआ (कप्पू)।
दंतुरिय वि [दन्तुरित] ऊपर देखो, 'विचित्त-पामायपतिदंतुरिय' (उप १०३१ टी, सुपा २००)।
दंद पु [द्वन्द्व] १ व्याकरण-प्रसिद्ध उभयपद-प्रधान समास (अणु)। २ न परस्पर-विरुद्ध शीत-उष्ण, सुख-दुःख आदि युग्म। ३ कलह, क्लेश। ४ युद्ध, संग्राम (सुपा १४७, कुमा)।
दंपइ पु व [दम्पति] स्त्री पुरुष युगल—जोडा, पति-पत्नी, 'ते दंपईउ तह तह धम्मम्मि समुज्जमा निच्च' (सिरि २४८)।
दंभ पुं [दम्भ] १ माया, कपट (हे १, १२७)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। ३ ठगाई, वञ्चना (पव २)।
दंभग वि [दम्भक] दम्भी, पाखंडी, ठग, धूर्त, 'दंभगो त्ति निब्भच्छिओ' (सुख २, १७)।
दंभोलि पु [दम्भोलि] वज्र (कुप्र २७०)।
दंस सक [दर्शय्] दिखलाना, बतलाना। दंसइ (हे ४,३२, महा)। वकृ दंसंत, दंसित, दंसअंत (भग, सुपा ६२, अभि १८४)। कवकृ दंसिज्जंत (सुर २, १६६)। संकृ दंसिअ (नाट)। कृ दंसियव्व (सुपा ४५४)।
दंस सक [दंश्] काटना, दाँत से काटना। दंसइ (नाट—साहित्य ७३)। दंसतु (आचा)। वकृ. दंसमाण (आचा)।
दंस पु [दंश] १ डांस, बडा मच्छड (भग, आचा)। २ दन्त-क्षत, सर्प या अन्य किसी विषैले कीडे से काटा हुआ घाव (हे १, २६० टि)।
दंस पु [दर्श] सम्यक्त्व, तत्त्व-श्रद्धा (श्रावम)।
दंसग वि [दर्शक] दिखलानेवाला (स ४८१)।
दंसण पुन [दर्शन] १ अवलोकन, निरीक्षण (पुप्फ १२४, स्वप्न २६)। २ चक्षु, नेत्र, आँख (से १, १७)। ३ सम्यक्त्व, तत्त्व-श्रद्धा (ठा १, ५ ३)। ४ सामान्य ज्ञान, 'जं सामन्नग्गहणं दंसणमेअं' (सम्म ५५)। ५ मत, धर्म। ६ शास्त्र-विशेष (ठा ७, ८, पंचा १२)। °मोह न [°मोह] तत्त्व-श्रद्धा का प्रतिबन्धक कर्म-विशेष (कम्म १, १४)। °मोहणिज्ज न [°मोहनीय] कर्म-विशेष (ठा २, ४, भग)। °वरण न [°वरण] कर्म-विशेष, सामान्य-ज्ञान का आवरक कर्म (ठा ६)। °वरणिज्ज न [°वरणीय] पूर्वोक्त ही अर्थ (सम १५)। देखो दरिसण।
दंसण न [दशन] दाँत से काटना (से १, १७)।
दंसणि वि [दर्शनिन्] १ किसी धर्म का अनुयायी (सुपा ४६६)। २ दार्शनिक, दर्शन-शास्त्र का जानकार (कुप्र २६, कुम्मा २१)। ३ तत्व-श्रद्धालु (अणु)।
दंसणिआ स्त्री [दर्शनिका] दर्शन, अवलोकन, 'चंदसूरदंसणिया' (औप, णाया १, १)।
दंसणिज्ज } वि [दर्शनीय] देखने योग्य,
दंसणीअ } दर्शन-योग्य (सूअ २, ७, अभि ६८, महा)।
दंसाव सक [दर्शय्] दिखलाना। दंसावेइ (प्राकृ ७१)।
दंसावण न [दर्शन] दिखाना (उप २११ टी)।
दंसाविअ वि [दर्शित] दिखलाया हुआ (सुपा ३८६)।
दंसि वि [दर्शिन्] देखनेवाला (आचा, कुप्र ४१, दं २३)।
दंसिअ वि [दर्शित] दिखलाया हुआ (पाअ)।
दंसिअ, दंसिंत, दंसिज्जंत, दंसियव्व — देखो दंस = दर्शय्।
दक्क वि [दष्ट] जो दाँत से काटा गया हो वह (षड्)।
दक्ख सक [दृश्] देखना, अवलोकन करना। दक्खामि, दक्खिमो (अभि ११६, विक्र २७)। प्रयो दक्खावइ (पि ५५४)। कर्म दीसइ (उव)। कवकृ दिस्समाण, दीसंत, दीसमाण (आव ५, गा ७३, नाट—चैत ७१)। संकृ दक्खु, दट्ठु, दट्ठुआण, दट्ठुं, दट्ठूण, दट्ठूण, दिस्स, दिस्स, दिस्सा (कप्प, षड्, कुमा, महा, पि ५८५, सूअ १, ३, २, १, पि ३३४)। हेकृ दट्ठुं (कुमा)। कृ दट्ठव्व, दिट्ठव्व (महा, उत्तर १०७)।
दक्खव सक [दर्शय्] दिखलाना, 'सोवि हु दक्खइ बहुकोउयमततताइ (सुपा २३२)।
दक्ख वि [दक्ष] १ निपुण, चतुर, होशियार (कप्प, सुपा २८६, श्रा २८)। २ पु भूतानन्द नामक इन्द्र के पदाति-सैन्य का अधिपति देव (ठा ५, १, इक)। ३ भगवान् मुनिसुव्रत-स्वामी का एक पौत्र (पउम २१, २७)।
दक्ख° देखो दक्खा (पउम ५३, ७६, कुमा)।
दक्खज्ज पु [दे] गृध्र, गीध, पक्षि-विशेष (दे ५, ३४)।
दक्खण न [दर्शन] १ अवलोकन, निरीक्षण। २ वि. देखनेवाला, निरीक्षक (कुमा)।
दक्खव सक [दर्शय्] दिखलाना, बतलाना। दक्खवइ (हे ४, ३२)।
दक्खविअ वि [दर्शित] दिखलाया हुआ (पाअ, कुमा)।
दक्खा स्त्री [द्राक्षा] १ वल्ली-विशेष, दाख या अंगूर का पेड। २ फल-विशेष, दाख, अंगूर (कप्पू, सुपा २६७, ५३६)।
दक्खायणी स्त्री [दाक्षायणी] गौरी, शिव-पत्नी (पाअ)।
दक्खिण वि [दक्षिण] १ दक्षिण दिशा मे स्थित (सुर ३, १८, गउड)। २ निपुण, चतुर (प्रामा)। ३ हितकर, अनुकूल। ४ अपसव्य, वामेतर, दाहिना (कुमा, औप)। °पच्छिमा स्त्री [°पश्चिमा] दक्षिण और पश्चिम के बीच की दिशा, नैर्ऋत कोण (श्रावम)। °पुव्वा स्त्री [°पूर्वा] अग्नि-कोण (चंद १)। देखो दाहिण।
दक्खिणत्त वि [दाक्षिणात्य] दक्षिण दिशा में उत्पन्न (राज)।
दक्खिणा स्त्री [दक्षिणा] १ दक्षिण दिशा (जो १)। २ दक्षिण देश (कप्पू)। ३ धर्म-

न [°मानुष] देव और मनुष्य संबन्धी हकीकतो का जिसमे वर्णन हो ऐसी कथा-वस्तु (स २)।

दिव्व न [दिव्य] १ तेला, तीन दिन का लगातार उपवास (संबोध ५८)। २ वि देव-सम्बन्धी, 'तिरिया मणुया य दिव्वगा, उवसग्गा तिविहाहियासिया' (सूअ १, २, २, १५)।

दिव्व देखो दइव (सुपा १६१)।

दिव्व देखो देव, 'अमोह दिव्वदसणंति' (कुप्र ११२)।

दिव्वाग पु [दिव्याक] सर्प की एक जाति (पराण १)।

दिव्वासा स्त्री [दे] चामुण्डा, देवी-विशेष (दे ५, ३६)।

दिस सक [दिश्] १ कहना। २ प्रतिपादन करना। दिसइ (भवि)। कवकृ दिस्समाण (राज)।

दिस पु [दिश] एक देव-विमान (देवेन्द्र १३१)।

दिस वि [दिश्य] दिशा मे उत्पन्न (से ६, ५०)।

दिसआ स्त्री [दृपद्] पत्थर, पाषाण (षड्)।

दिसाइ देखो दिसा-दि (सुज्ज ५ टी—पत्र ७८)।

दिसा, दिसि, दिसी° स्त्री [दिश्] १ दिशा, पूर्व आदि दस दिशाएँ (गउड, प्रासू ११३, महा, सुपा २६७, पराह १, ४, द ३१, भग)। २ प्रौढा स्त्री (से १, १९)। °अक्क न [°चक्र] दिशाओ का समूह (गा ५३०)। °कुमरी स्त्री [°कुमारी] देवी-विशेष (सुपा ४०)। °कुमार पुं [°कुमार] भवनपति देवो की एक जाति (पराण २; औप)। °कुमारी देखो °कुमरी (महा, सुपा ४१)। °गअ पुं [°गज] दिग्-हस्ती (से २, ३, १०, ४६)। °गइंद पुं [°गजेन्द्र] दिग्-हस्ती (पि १३६)। °चक्क देखो °अक्क (सुपा ५२३, महा)। °चक्कवाल न [°चक्रवाल] १ दिशाओ का समूह। २ तप-विशेष (निर १, ३)। °चर पुं [°चर] देशाटन करनेवाला भक्त (भग १५)। °जत्ता देखो °यत्ता (उप ७६८ टी)। °जत्तिअ देखो °यत्तिय (उवा)। °डाह पु [°दाह] दिशाओ मे होनेवाला एक तरह का प्रकाश, जिसमें नीचे अन्धकार और ऊपर प्रकाश दीखता है, यह भावी उपद्रवो का सूचक है (भग ३, ७)। °णुवाय पुं [°अनुपात] दिशा का अनुसरण (पराण ३)। °दंति पुं [°दन्तिन्] दिग्-हस्ती (सुपा ४८)। °दाह देखो °डाह (भग ३,७)। °दि पु [°आदि] मेरु पर्वत (सुज्ज ५)। °देवया स्त्री [°देवता] दिशा की अधिष्ठात्री देवी (रभा)। °पोक्खि पुं [°प्रोक्षिन्] एक प्रकार का वानप्रस्थ (औप)। °भाअ पुं [°भाग] दिग्भाग (भग, औप, कप्पू, विपा १, १)। °मत्त न [°मात्र] अत्यल्प, सक्षिप्त (उप ७४६)। °मोह पुं [°मोह] दिशा का भ्रम (निचू १६)। °यत्ता स्त्री [°यात्रा] देशाटन, मुसाफिरी (स १६५)। °यत्तिय वि [°यात्रिक] दिशाओ मे फिरनेवाला (उवा)। °लोय पु [°आलोक] दिशा का प्रकाश (विपा १, ६)। °वह पुं [°पथ] दिशा-रूप मार्ग (पउम २, १००)। °वाल पु [°पाल] दिक्पाल, दिशा का अधिपति (म ३६६)। °वेरमण न [°विरमण] जैन गृहस्थ को पालने का एक नियम—दिशा मे जाने-आने का परिमाण करना (धम्म २)। °व्वय न [°व्रत] देखो °वेरमण (औप)। °सोत्थिय पु [°स्वस्तिक] स्वस्तिक-विशेष (औप)। °सोवत्थिय पु [°सौवस्तिक] १ स्वस्तिक-विशेष, दक्षिणावर्त्त स्वस्तिक (पराह १, ४)। २ न. एक देव-विमान (सम३८)। ३ रुचक पर्वत का एक शिखर (ठा ८)। °हत्थि पुं [°हस्तिन्] दिग्गज, दिशाओ मे स्थित ऐरवत आदि आठ हस्ती। °हत्थिकूड पुन [°हस्तिकूट] दिशा मे स्थित हस्ती के आकारवाला शिखर-विशेष, वे आठ हैं—पद्मोत्तर, नीलवन्त, सुहस्ती, अञ्जनगिरि, कुमुद, पलाश, अवतंस और रोचनगिरि (जं ४)।

दिसेभ पुं [दिगिभ] दिग्गज, दिग्-हस्ती (गउड)।

दिस्स वि [दृश्य] देखने योग्य, प्रत्यक्ष ज्ञान का विषय (धर्मसं ४२८)।

दिस्स, दिस्स, दिस्समाण } देखो दक्ख = दृश्।

दिस्समाण देखो दिस।

दिस्सा देखो दक्ख = दृश्।

दिहा अ [द्विधा] दो प्रकार (हे १, ९७)।

दिहि स्त्री [धृति] धैर्य, धीरज (हे २, १३१, कुमा)। °म वि [°मत्] धैर्य-शाली, धीर (कुमा)।

दीअ देखो दीव = दीप (गा १३५, ५४७)।

दीअअ देखो दीवय (गा १३५)।

दीअमाण देखो दा = दा।

दीण वि [दीन] १ रंक, गरीब (प्रासू २३)। २ दु खित, दु स्थ (णाया १, १)। ३ हीन, न्यून (ठा ४, २)। ४ शोक ग्रस्त, शोकातुर (विपा १, २, भग)।

दीणार पुं [दीनार] सोने का एक सिक्का (कप्प, उप पृ ६४, ५६७ टी)।

दीपअ, दीपक } (अप) पुंन [दीपक] छन्द-विशेष (पिंग)।

दीव देखो दिव = दिव्। वकृ. 'अक्खेहि कुसुलेहि दीवय (सूअ १, २, २, २३)।

दीव सक [दीपय्] १ दीपाना, शोभाना। २ जलाना। ३ तेज करना। ४ प्रकट करना। ५ निवेदन करना। दीवइ (ओघ ४३४)। दीवेइ (महा)। वकृ दीवयत (कप्प)। सकृ दीवेत्ता (ओघ ४३४, कस)। कृ. दीवणिज्ज (कप्प)।

दीव पु [दीप] १ प्रदीप, दिया चिराग, आलोक (चारु १९, णाया १, १)। २ कल्पवृक्ष की एक जाति, प्रदीप का कार्य करनेवाला कल्पवृक्ष (सम १७)। °चंपय न [°चम्पक] दिया का ढकना, दीप-पिधान (भग ८, ६)। °ालि स्त्री [°ालि] १ दीप-पंक्ति। २ दीवाली, पर्व-विशेष, कार्तिक वदी अमावस (दे ३, ४३)। °ावली स्त्री [°ावली] पूर्वोक्त ही अर्थ (ती १९)।

दीव पुं [द्वीप] १ जिसके चारो ओर जल भरा हो ऐसा भूमि-भाग (सम ५१, ठा १०)। २ भवनपति देवो की एक जाति, द्वीपकुमार देव (पराह १,४, औप)। ३ व्याघ्र (जीव १)।

मे तीर्थंकर-नामकर्म उपार्जन करने वाला एक मनुष्य (ठा ६—पत्र ४५५)। २ भरत-क्षेत्र के एक भावी कुलकर पुरुष का नाम (सम १५४)।

दढगालि स्त्री [दे] वस्त्र-विशेष, धोया हुआ सदश वस्त्र (पव ८४, दसनि १, ४६ टी) देखो दाढगालि।

दढिअ वि [दृढिन] दृढ किया हुआ (कुमा)।

दणु ⎫ पु [दनुज] दैत्य, दानव (हे १, दणुअ ⎭ २६७, कुमा, षड्)। °इंद, °एंद पुं [°इन्द्र] १ दानवों का अधिपति (गउड, से १, २)। २ रावण, लंकापति (पउम ६६, १०)। °वइ पुं [°पति] देखो °इंद (पउम १, १, ७२, ६० सुपा ४५)।

दत्त वि [दत्त] १ दिया हुआ, दान किया हुआ, वितीर्ण (हे १, ४६)। २ न्यस्त, स्थापित (जं १)। ३ पुं स्व नाम-ख्यात एक श्रेष्ठि-पुत्र (उप ५६२, ७६८ टी)। ४ भरत-वर्ष के एक भावी कुलकर पुरुष (सम १५३)। ५ चतुर्थ बलदेव के पूर्व-जन्म का नाम (सम १५३)। ६ भरत-क्षेत्र में उत्पन्न एक अर्ध-चक्रवर्त्ती राजा, एक वासुदेव (सम ६३)। ७ भरत-क्षेत्र में अतीत उत्सर्पिणी काल में उत्पन्न एक जिन-देव (पव ७)। ८ एक जैनमुनि (आक)। ९ नृप-विशेष (विपा १, ७)। १० एक जैन आचार्य (कुप्र ६)। ११ न. दान, उत्सर्ग (उत्त १)।

दत्त न [दात्र] दाँती, घास काटने का हँसिया (दे १, १४)।

दत्ति स्त्री [दत्ति] एक बार में जितना दान दिया जाय वह, अविच्छिन्न रूप से जितनी भिक्षा दी जाय वह (ठा ५, १, पंचा १८)।

दत्तिय पुस्त्री [दत्तिका] ऊपर देखो, 'सखो दत्तियस्स' (वव ६)।

दत्तिय पुं [दत्रिक] वायु पूर्ण चर्म (राज)।

दत्तिया स्त्री [दात्रिका] १ छोटी दाँती, घास काटने का शस्त्र-विशेष (राज)। २ देनेवाली स्त्री, दान करनेवाली स्त्री (चारु २)।

दत्थर पुं [दे] हस्त-शाटक, कर-शाटक (दे ५, ३४)।

ददत देखो दा।

दद्दर पुं [दे. दर्दर] कुतुप आदि के मुँह पर बाँधा जाता कपडा (पिंड ३४७, ३५६, राय ६८, १००)।

दद्दर वि [दे दर्दर] १ घना, प्रचुर, अत्यन्त, 'गोसीससरसरत्तचदणदद्दरदिण्णपचंगुलितला' (सम १३७)। २ पुं. चपेटा, हस्त-तल का आघात (सम १३७, औप, णाया १, ८)। ३ आघात, प्रहार, 'पायदद्दरएणं कपयतेव मेइणितल' (णाया १, १)। ४ वचनाटोप (पण्ह १, ३—पत्र ४४)। ५ सोपान-वीथी, सीढी (सम १३७)। ६ वाद्य-विशेष (ज २)।

दद्दरिगा देखो दद्दरिया (राय ४६)।

दद्दरिया स्त्री [दे दर्दरिका] १ प्रहार, आघात (णाया १, १६)। २ वाद्य-विशेष (राय)।

दद्दु पुं [दद्रु] दाद, क्षुद्र कुष्ठ-रोग (भग ७, ६)।

दद्दुर पुं [दर्दुर] प्रहार, आघात (धर्मवि ८५)।

दद्दुर पुं [दर्दुर] १ भेक, मेढक, बेंग (सुर १०, १८७, प्रासू ४५)। २ चमडे से अवनद्ध मुँहवाला कलश (पण्ह २, ५)। ३ देव-विशेष (णाया १, १३)। ४ राहु, ग्रह-विशेष (सुज्ज १६)। ५ पर्वत-विशेष (णाया १, १६)। ६ वाद्य-विशेष (दे ७, ६१, गउड)। ७ न दर्दुर देव का सिंहासन (णाया १, १३)। °वडिंसय न [°ावतंसक] देव-विशेष, सौधर्म देवलोक का एक विमान (णाया १, १३)।

दद्दुरी स्त्री [दर्दुरी] स्त्री-मेढक, भेकी (णाया १, १३)।

दद्दुल वि [दद्रुमत्] दाद-रोगवाला (सिरि ११६)।

दधि देखो दहि (सम ७७, पि ३७९)।

दद्ध देखो दड्ढ (सुर २, ११२, पि २२२)।

दप्प पु [दर्प] १ अहंकार, अभिमान, गर्व (प्रासू १३२)। २ बल, पराक्रम, जोर (से ४, ३)। ३ धृष्टता, ढिठाई (भग १२, ५)। ४ अरुचि से काम का आसेवन (निचू १)।

दप्पण पुं [दर्पण] १ काच, शीशा, आदर्श (णाया १, १, प्रासू १६१)। २ वि. दर्प-जनक (पण्ह २, ४)।

दप्पणिज्ज वि [दर्पणीय] बल-जनक, पुष्टि-कारक (णाया १, १, पण्ण १७, औप, कप्प)।

दप्पि वि [दर्पिन्] अभिमानी, गर्विष्ठ (कप्पू)।

दप्पिअ वि [दर्पिक] दर्प-जनित (उत्तर १३१)।

दप्पिअ वि [दर्पित] अभिमानी, गर्वित (सुर ७, २००, पण्ह १, ४)।

दप्पिट्ठ वि [दर्पिष्ठ] अत्यन्त अहंकारी (सुपा २२)।

दप्पुल्ल वि [दर्पवत्] अहंकारवाला (हे २, १५९, षड्)।

दब्भ पुं [दर्भ] तृण विशेष, डाभ, काश, कुशा (हे १, २१७)। °पुप्फ पु [°पुष्प] साँप की एक जाति (पण्ह १, १—पत्र ८)।

दब्भायण ⎫ न [दार्भायन, दार्भियायन] दब्भियायण ⎭ चित्रा-नक्षत्र का गोत्र (इक, सुज्ज १०)।

दब्भिय न [दार्भिक] गोत्र-विशेष (सुज्ज १०, १६ टी)।

दम सक [दमय्] निग्रह करना, दमन करना, रोकना। दमेइ (स २८९)। कर्म. दम्मइ (उव)। कवकृ दम्मत (उव)। सकृ दमिऊण (कुप्र ३९३)। कृ दमियव्व, दम्म, दमेयव्व (काल, आचा २, ४, २, उव)।

दम पु [दम] १ दमन, निग्रह। २ इन्द्रिय-निग्रह, बाह्य वृत्ति का निरोध (पण्ह २, ४, णादि)। °घोस पु [°घोष] चेदि देश के एक राजा का नाम (णाया १, १६)। °दंत पुं [°दन्त] १ हस्तिशीर्ष नगर के एक राजा का नाम (उप ६४८ टी)। २ एक जैन मुनि (विसे २७९९)। °धर पुं [°धर] एक जैन मुनि का नाम (पउम २०, १९३)।

दमग देखो दमय (णाया १, १६, सुपा ३८५, वव ३, निचू १५, बृह १, उव)।

दमग वि [दमक] दमन करनेवाला (निचू ६)।

दमण देखो दमणक (राय ३४, १२१)।

दमण न [दमन] १ निग्रह, दान्ति। २ वश मे करना, काबू में करना, 'पचिंदियदमणपरा' (आप ४०)। ३ उपताप, पीडा (पण्ह १,

दु देखो तु (दे २, ८४)।

दु देखो दव = द्रु। कर्म—दुयए (विसे २८)।

दु वि ब. [द्वि] दो, सख्या-विशेषवाला (हे १, ६४, कम्म १, उवा)।

दु पु [द्रु] १ वृक्ष, पेड, गाछ (उर ५)। २ सत्ता, सामान्य (विसे २८)।

दु अ [द्विस्] दो वार, दो दफा (सुर १६, ५५)।

दु अ [दुर्] इन अर्थों का सूचक अव्यय— १ अभाव। २ दुष्टता, खराबी। ३ मुश्किल, कठिनाई। ४ निन्दा (हे २, २१७, प्रासू १५८, सुपा १४३, णाया १, १, उवा)।

दुअ न [द्रुत] अभिनय-विशेष (राय ५३)।

दुअ न [द्विक] युग्म, युगल, जोडा (मे ६२१)।

दुअ वि [द्रुत] १ पीडित, हैरान किया हुआ (उप ३२० टी)। २ वेग-युक्त। ३ क्रिवि शीघ्र, जल्दी (सुर १०,१०१, अणु)। °विल-विअ न [°विलम्बित] १ छन्द विशेष। २ अभिनय-विशेष (राय)।

दुअक्खर पु [दे] षण्ड, नपुंसक (दे ५, ४७)।

दुअक्खर वि [द्व्यक्षर] १ अज्ञान, मूर्ख, अल्पज्ञ (उप १२६ टी)। २ पुस्त्री. दास, नौकर (पिंड)। स्त्री °रिया (श्रावम)।

दुअणुअ पु [द्व्यणुक] दो परमाणुओं का स्कन्ध (विसे २१६२)।

दुअर वि [दुष्कर] मुश्किल, कठिनाई से जो किया जा सके वह (प्राकृ २६)।

दुअल्ल न [दुकूल] १ वस्त्र, कपडा। २ महिन वस्त्र, सूक्ष्मवस्त्र (हे १, ११६, प्राप्र)। देखो दुकूल।

दुआइ पु [द्विजाति] ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ये तीन वर्ण (हे १, ६४, २, ७६)।

दुआइक्ख वि [दुराख्येय] दु ख से कहने योग्य (ठा ५, १—पत्र २६६)।

दुआर न [द्वार] दरवाजा, प्रवेश-मार्ग (हे १, ७६)।

दुआराह वि [दुराराध] जिसका आराधन कठिनाई से हो सके वह (पण्ह १, ४)।

दुआरिआ स्त्री [द्वारिका] १ छोटा द्वार। २ गुप्त द्वार, अपद्वार (णाया १, २)।

दुआवत्त न [द्व्यावर्त] दृष्टिवाद का एक सूत्र (सम १४७)।

दुइअ, दुइज्ज, दुईअ वि [द्वितीय] दूसरा (हे १, १०१, २०६, कुमा, कप्पू, रयण ४)।

दुइल्ल (अप) वि [द्विचतुर] दो-चार, दो या चार (प्राकृ १२०)।

दुउंछ, दुउच्छ सक [जुगुप्स्] निन्दा करना, घृणा करना। दुउंछइ, दुउच्छइ (हे ४, ४)।

दुउण वि [द्विगुण] दूना, दुगुना (दे ५, ५२, हे १, ६४)। °अर वि [°तर] दूने मे भी विशेष, अत्यन्त (से ११, ५७)।

दुउणिअ वि [द्विगुणित] ऊपर देखो (कुमा)।

दुऊल देखो दुअल्ल (प्राप्र, गा ५६६, षड्)।

दुडुह, दुडुभ पु [दुन्दुभ] १ सर्प की एक जाति (दे ७, ५१)। २ ज्योतिष्क-विशेष, एक महाग्रह (ठा २, ३—पत्र ७८)।

दुडुभि देखो दुडुहि (भग ६, ३३)।

दुडुमिअ न [दे] गले की आवाज (दे ५, ४५, षड्)।

दुडुमिणी स्त्री [दे] रूपवाली स्त्री (दे ५, ४५)।

दुंदुहि पुस्त्री [दुन्दुभि] वाद्य-विशेष (कप्प, सुर ३, ६८, गउड, कुप्र ११८)।

दुअवती स्त्री [दे] सरित्, नदी (दे ५, ४८)।

दुकड देखो दुक्कड (द्र ४७)।

दुकप्प देखो दुक्कप्प (पचू)।

दुकम्म न [दुष्कर्मन्] पाप, निन्दित काज या काम (श्रा २७, भवि)।

दुकाल पु [दुष्काल] अकाल, दुर्भिक्ष (सिरि ४१)।

दुकिय देखो दुक्कय (भवि)।

दुकूल पु [दुकूल] १ वृक्ष-विशेष। २ वि. दुकूल वृक्ष की छाल मे बना हुआ वस्त्र आदि (णाया १, १ टी—पत्र ४३)।

दुकंदिर वि [दुष्क्रन्दिन्] अत्यन्त आक्रन्द करनेवाला (भवि)।

दुक्कड न [दुष्कृत] पाप कर्म, निन्द्य आचरण (सम १२५, हे १, २०६, पडि)।

दुक्कडि, दुक्कडिय वि [दुष्कृतिन्, °क] दुष्कृत करनेवाला, पापी (सूअ १, ५, १, पि २१६)।

दुक्कप्प पु [दुष्कल्प] शिथिल साधु का आचरण, पतित साधु का आचार (पचभा)।

दुक्कम्म न [दुष्कर्मन्] दुष्ट कर्म, असदाचरण (सुपा २८, १२०, ५००)।

दुक्कय न [दुष्कृत] पाप-कर्म (पण्ह १, १, पि ४६)।

दुक्कर वि [दुष्कर] जो दु ख से किया जा सके, मुश्किल, कष्ट-साध्य (हे ४, ४१४, पचा १३)। °आरअ वि [°कारक] मुश्किल कार्य को करनेवाला (गा १७६, हे २, १०४)। °करण न [°करण] कठिन कार्य को करना (द्र ५७)। °कारि वि [°कारिन्] देखो °आरअ (उप पृ १६०)।

दुक्कर न [दे] माघ मास मे रात्रि के चारो प्रहर मे किया जाता स्नान (दे ५ ४२)।

दुक्करकरण न [दुष्करकरण] पाँच दिन का लगातार उपवास (सवोध ५८)।

दुक्कह वि [दे] अरुचिवाला, अरोचकी (सुर १, ३६, जय २७)।

दुक्काल पुं [दुष्काल] अकाल, दुर्भिक्ष (साध ३०)।

दुक्किय देखो दुक्कय (भवि)।

दुक्कुकणिआ स्त्री [दे] पीकदान, पीकदानी (दे ५, ४८)।

दुक्कुल न [दुष्कुल] निन्दित कुल (धर्म १)।

दुक्कुह वि [दे] १ असहन, असहिष्णु, चिड-चिडा। २ रुचि-रहित (दे ५, ४४)।

दुक्ख पु न [दुःख] १ असुख, कष्ट, पीडा, क्लेश, मन का क्षोभ (हे १, ३३), 'दुक्खा सारीरा माणसा व ससारे' (सया १०१, आचा, भग, स्वप्न ५१, ५८, प्रासू ६६, १५२, १८२)। २ क्रिवि. कष्ट से, मुश्किल से, कठिनाई से (वसु)। ३ वि दु खवाला, दु खित, दु खयुक्त (वै ३३)। स्त्री. °क्खा (भग)। °कर वि [°कर] दु ख जनक (सुपा १६५)। °त्त वि [°र्त्त] दु ख से पीडित (सुपा १६१, स ६४२, प्रासू १४४)। °त्तगवेसण न [°र्त्तगवेषण] दु ख से पीडित की सेवा, आर्त्त शुश्रूषा (पचा १६)। °मज्जिय वि [अर्जितदु ख] जिसने दु ख उपार्जन किया हो वह (उत्त ६)। °राह वि [°राध्य] दु ख से आराधन-योग्य (वज्जा

दल अक [दल्] १ विकसना। २ फटना, खण्डित होना, द्विधा होना, 'अहिसअरकिरणणिउरंवचु विश्रं दलइ कमलवणं' (गा ४६५), 'कुडयं दलइ' (कुमा)। वकृ दलंत (से १, ५८)।

दल सक [दलय्] चूर्ण करना, टुकडे-टुकडे करना, विदारना। वकृ. 'निम्मूल दलमाणो सयलतरसत्तुसिन्नवलं' (सुपा ८५)। कवकृ. दलिज्जंत (से ६, ६२)। सकृ. दलिऊण (कुमा)।

दल न [दल] १ सैन्य, लश्कर, फौज (कुमा)। २ पत्र पत्ता, पंखडी या पँखुडी, 'तूहवल्लहस्स गोसम्मि आसि अहरो मिलाणकमलदलो' (हेका ५१, गा ८; १८०, २५७, ३६६, ५६२, ५६१, सुपा ६३८)। ३ धन, सम्पत्ति। ४ समूह, समुदाय, गरोह (सुपा ६३८)। ५ खण्ड, भाग, अंश (से ६, ६२)।

दलण न [दलन] १ पीसना, चूर्णन (सुपा १४, ६१६)। २ वि. चूर्ण करनेवाला (सुपा २३४, ४६७, कुप्र १३२, ३८३)।

दलमाण देखो दल = दा।

दलमाण देखो दल = दलय्।

दलमल देखो दरमल। वकृ. दलमलंत (भवि)।

दलय देखो दल = दा। दलयइ (औप)। भवि. दलइस्सति (औप)। वकृ दलयमाण (णाया १, १—पत्र ३७, ठा ३, १—पत्र ११७)। सकृ. दलइत्ता (औप)।

दलय सक [दापय्] दिलाना दलयइ (कप्प)।

दलवट्ट देखो दरमल। दलवट्टइ (भवि)।

दलवट्टिय देखो दलमलिय (भवि)।

दलाव सक [दापय्] दिलाना। दलावेइ (पि ५५२)। वकृ. दलावेमाण (ठा ४, २)।

दलिअ वि [दलित] १ विकसित, खिला हुआ (से १२, १)। २ पीसा हुआ (पाअ), 'दलिअनपसालितंडुलधवलमि अकासु राईसु' (गा ६६१)। ३ विदारित, खण्डित (दे १, १५६, सुर ४, १५२)।

दलिअ न [दलिक] १ चीज, वस्तु, द्रव्य (ओघ ५५), 'जह जोगम्मिवि दलिए सव्वम्मि न कीरए पडिमा' (विसे १६३४)। २ पण्डित (बृह० क० भा० उ० ४)।

दलिअ वि [दे] १ निकूणिताक्ष, जिसने टेढी नजर की हो वह। २ न उँगली (दे ५, ५२)। काष्ठ, लकडी (दे ५, ५२, पाअ)।

दलिज्जंत देखो दल = दलय्।

दलिद्द देखो दरिद्द (हे १,२५४, गा २३०)।

दलिद्दा अक [दरिद्रा] दुर्गत होना, दरिद्र होना। दलिद्दाइ (हे १, २५४)। भूका. दलिद्दाईअ (सक्षि ३२)।

दलिल्ल वि [दलवत्] दल-युक्त, दलवाला (सण)।

दलेमाण देखो दल = दा।

दव सक [द्रु] १ गति करना। २ छोडना। दवए (विसे २८)।

दव पुं [दव] १ जंगल का अग्नि, वन की आग (दे ५, ३३)। २ वन, जंगल। °ग्गि पुं [°ाग्नि] जंगल का अग्नि (हे १, १७७, प्राप्र)।

दव पु [द्रव] १ परिहास (दे ५, ३३)। २ पानी, जल (पचव २)। ३ पनीली वस्तु, रसीली चीज (विसे १७०७)। ४ वेग, 'दवदवचारी' (सम ३७)। ५ संयम, विरति (आचा)। °कर वि [°कर] परिहासकारक (भग ६, ३३)। °कारी, °गारी स्त्री [°कारी] एक प्रकार की दासी, जिसका काम परिहास-जनक बातें कर जी बहलाना होता है (भग ११, ११, णाया १, १ टी पत्र ४३)।

दवण न [दवन] यान, वाहन (सूअनि १०८)।

दवणय देखो दमणय (भवि)।

दवदव } अ [द्रवद्रवम्] शीघ्र, जल्दी;
दवदवस्स } 'दवदवचरा पमत्तजणा' (संबोध १४, उत्त १७,८), 'दवदवस्स न गच्छेज्जा' (दस ५, १, १४), 'जह वणदवो वणं दवदवस्स जलिओ खणेण निद्दहइ' (धर्मवि ८६)।

दवदवा स्त्री [द्रवद्रवा] वेगवाली गति, 'नाऊण गय खुहिय नयरजणो धाविओ दवदवाए' (पउम ८, १७३)।

दवर पु [दे] १ तन्तु, डोरा, धागा (दे ५, ३५, ओवम)। २ रज्जु, रस्सी (णाया १, ८)।

दवरिया स्त्री [दे] छोटी रस्सी (विसे)।

दवहुत्त न [दे] ग्रीष्म-मुख, ग्रीष्म काल का प्रारम्भ (दे ५, ३६)।

दवाव सक [दापय्] दिलाना। दवावेइ (महा)। वकृ. दवावेमाण (णाया १,१४)। सकृ दवावेऊण (महा)। हेकृ दवावेत्तए (कस)।

दवावण न [दापन] दिलाना (निचू २)।

दवाविअ वि [दापित] दिलाया हुआ (सुपा १३०, स १६३, महा, उप पृ ३८५, ७२८ टी)।

दविअ पुन [द्रव्य] १ अन्वयी वस्तु, जीव आदि मौलिक पदार्थ, मूल वस्तु (सम्म ६, विसे २०३१)। २ वस्तु, गुणाधार पदार्थ (ओघ ५, आचा, कप्प)। ३ वि. भव्य, मुक्ति के योग्य (सूअ १, २, १)। ४ भव्य, सुन्दर, शुद्ध (सूअ १, १६)। ५ राग-द्वेष से विरहित, वीतराग (सूअ १, ८)। °णुओग पुं [°ानुयोग] पदार्थ विचार, वस्तु की मीमासा (ठा १०)। देखो दव्व।

दविअ वि [द्रविक] संयम वाला, संयम युक्त, संयमी (आचा)।

दविअ वि [द्रवित] द्रव-युक्त, पनीली वस्तु (ओघ)।

दविड देखो दविल (सुपा ५८०)।

दविडी स्त्री [द्राविडी] लिपि-विशेष, तामिल भाषा (विसे ४६४ टी)।

दविण न [द्रविण] धन, पैसा, संपत्ति (पाअ, कप्प)।

दविय न [द्रव्य] १ घास का जंगल, वन में घास के लिए सरकार से अवरुद्ध भूमि (आचा २, ३, ३, १)। २ तृण आदि द्रव्य-समुदाय (सूअ २, २, ८)।

दविल पु [द्रविड] १ देश-विशेष, दक्षिण देश-विशेष, मद्रास प्रांत। पुंस्त्री द्रविड देश का निवासी मनुष्य, द्राविड (पण्ह १, १—पत्र १४)।

दव्व देखो दविअ = द्रव्य (सम्म १२, भग, विसे २८, अणु, उत्त २८)। ६ धन, पैसा, संपत्ति (पाअ, प्रासू १३१)। ७ भूत या भविष्य पदार्थ का कारण (विसे २८, पचा ६)। ८ गौण, अप्रधान। ९ बाह्य, अतथ्य (पचा ४, ६)। °ट्ठिय पुं [°ार्थिक, °स्थित, °ास्तिक] द्रव्य को ही प्रधान माननेवाला

दुग्गम्म' (सुर ६, १३५)। २ न कठिनाई, मुश्किल (ठा ५ १)।

दुग्गय वि [दुर्गत] १ दरिद्र, धन-हीन (ठा ३, ३ गा १८)। २ दुःखी, विपत्ति ग्रस्त (पाग्र, ठा ४, १—पत्र २०२)।

दुग्गय न [दुर्गत] १ दरिद्रता। २ दुःख, 'दोहतो जिणदव्व दोहिच्चं दुग्गय लहइ' (सबोध ४)।

दुग्गह वि [दुर्ग्रह] जिसका ग्रहण दुःख से हो सके वह (उप पृ ३६०)।

दुग्गा स्त्री [दुर्गा] १ पार्वती, गौरी शिव-पत्नी (पाग्र, सुपा १४८)। २ देवी-विशेष (चड)। ३ पक्षि-विशेष (श्रा १६)।

दुग्गाई, दुग्गाएवी, दुग्गादेई, दुग्गावी स्त्री [दुर्गादेवी] १ पार्वती, शिव-पत्नी, गौरी। २ देवी-विशेष (षड्, हे १ २७०, कुमा)। °रमण पु [°रमण] महादेव, शिव (षड्)।

दुग्गास न [दुर्ग्रास] दुर्भिक्ष ग्रकाल (पिंड-भा ३३)।

दुग्गिज्झ वि [दुर्ग्राह्य, दुर्ग्रह] जिसका ग्रहण दुःख से हो सके वह (सुपा २५५)।

दुग्गूढ वि [दुर्गूढ] ग्रत्यन्त गुप्त, ग्रति प्रच्छन्न (वव ७)।

दुग्गेज्झ देखो दुग्गिज्झ (से १, ३)।

दुग्घट्ट वि [दुर्घट्ट] जिसका ग्राच्छादन दुःख से हो सके वह, 'पारद्धसीउएहतएहवेग्रणदुग्घ-ट्टघट्टिया' (पएह १, ३—पत्र ५४)।

दुग्घड वि [दुर्घट] जो दुःख से हो सके वह, कष्ट-साध्य (सुपा ६३, ३६५)।

दुग्घड वि [दुर्घट] ग्रसगत (धर्मवि २७०)।

दुग्घडिअ वि [दुर्घटित] १ दुःख से सयुक्त। २ खराब रीति मे बना हुग्रा, 'दुग्घडिग्रमच-ग्रस्स व खणे खणे पाग्रपडणेणं' (गा ६१०)।

दुग्घर न [दुर्गृह] दुष्ट घर (भवि)।

दुग्घास पुं [दुर्ग्रास] दुर्भिक्ष, ग्रकाल (बृह ३)।

दुग्घट्ट, दुग्घोट्ट पुं [दे] हस्ती, हाथी, करी (दे ५, ४४, षड्, भवि)।

दुघण पुं [दुघण] एक प्रकार का मुद्गर, मोंगरी, मुँगरा (पएह १,३—पत्र ४४)।

दुचक्क न [द्विचक्र] गाडी, शकट (ग्रोघ ३८३ भा)। °वइ पु [°पति] गाडी का ग्रधिपति या मालिक (ग्रोघ ३८३ भा)।

दुचिण्ण देखो दुच्चिण्ण (पि ३४०, ग्रौप)।

दुच्च न [दौत्य] दूत-कर्म, समाचार पहुँचाने का कार्य (पाग्र)।

दुच्च देखो दोच्च = द्वितीय, द्विस् (कप्प)।

दुच्चडिअ वि [दे] १ दुर्ललित। २ दुर्विदग्ध, दुःशिक्षित (दे ५, ५५, पाग्र)।

दुच्चंवाल वि [दे] १ कलह-निरत, झगडाखोर। २ दुश्चरित, दुष्ट ग्राचरणवाला। ३ परुष-भाषी, कडा बोलनेवाला (दे ५, ५४)।

दुच्चज्ज, दुच्चय वि [दुस्त्यज] दुःख से त्यागने योग्य (कुमा, उप ७६८ टी)।

दुच्चर, दुच्चरिअ वि [दुश्चर] १ जिसमें दुःख से जाया जाय वह (ग्राचा)। २ दुःख से जो किया जाय वह (उप ६४८ टी, पउम २२, २०)। °लाढ पुं [°लाढ] ऐसा ग्राम या देश जिसमें दुःख से जाया जा सके (ग्राचा)।

दुच्चरिअ न [दुश्चरित] १ खराब ग्राचरण, दुष्ट वर्तन (पउम ३८, १२, उप पृ १११)। २ वि दुराचारी (दे ५, ४५)।

दुच्चार वि [दुश्चार] दुराचारी (भवि)।

दुच्चारि वि [दुश्चारिन्] दुराचारी, दुष्ट ग्राचरणवाला (स ५०३)। स्त्री. °णी (महा)।

दुच्चिंतिय वि [दुश्चिन्तित] १ दुष्ट चिन्तित (पउम ११८, ६७)। २ न खराब चिन्तन (पडि)।

दुच्चिगिच्छ वि [दुश्चिकित्स्य] जिसका प्रती-कार मुश्किल से हो वह (स ७६१)।

दुच्चिण्ण न [दुश्चीर्ण] १ दुष्ट ग्राचरण, दुश्चरित। २ दुष्ट कर्म—हिंसा ग्रादि। ३ वि. दुष्ट सचित, एकत्रित की हुई दुष्ट वस्तु (विपा १, १, णाया १, १६)।

दुच्चेट्ठिय न [दुश्चेष्टित] खराब चेष्टा, शारी-रिक दुष्ट ग्राचरण (पडि, सुर ६, २३२)।

दुच्छक्क वि [द्विषट्क] बारह प्रकार का, 'मूल दारं पइट्ठाएां, ग्राहारो भायणं निही। दुच्छक्कस्सावि धम्मस्स, सम्मत्तं परिकित्तियं' (श्रा ६)।

दुच्छड्ड वि [दुश्छर्द] दुस्त्यज, दुःख से छोडने योग्य, 'दुच्छड्डा जीवियासा ज' (धर्मवि १२४)।

दुच्छेज्ज वि [दुश्छेद] जिसका छेदन दुःखसे हो सके वह (पउम ३१,५६)।

दुछक्क देखो दुच्छक्क (धर्म २)।

दुजडि पुं [द्विजटिन्] ज्योतिष्क देव-विशेष, एक महाग्रह (ठा २, ३)।

दुजय देखो दुज्जय (महा)।

दुजीह पुं [द्विजिह्व] १ सर्प, साँप। २ दुर्जन खल पुरुष (भट्टि ६३, कुमा)।

दुज्जंत देखो दुज्जित (राज)।

दुज्जण पुं [दुर्जन] खल, दुष्ट मनुष्य (प्रासू २०, ४०, कुमा)।

दुज्जय त्रि [दुर्जय] जो कष्ट से जीता जा सके (उप १०३१ टी, सुर १२, १३८, सुपा २६)।

दुज्जाय न [दे] व्यसन, कष्ट, दुःख, उपद्रव (दे ५, ४४, से १२, ६३, पाग्र)।

दुज्जाय वि [दुर्जात] दुःख से निकलने योग्य (से १२, ६३)।

दुज्जाय न [दुर्यात] दुष्ट गमन, कुत्सित गति (ग्राचा)।

दुज्जित पुं [दुर्यन्त] एक प्राचीन जैनमुनि (कप्प)।

दुज्जीव न [दुर्जीव] ग्राजीविका का भय (विसे ३४५२)।

दुज्जीह देखो दुजीह (वज्जा १५०)।

दुज्जेअ वि [दुर्जेय] दुःख से जीतने योग्य (सुपा २४८, महा)।

दुज्जोहण पुं [दुर्योधन] धृतराष्ट्र का ज्येष्ठ पुत्र (ठा ४, २)।

दुज्झ वि [दोह्य] दोहने योग्य (दे १, ७)।

दुज्झाण न [दुर्ध्यान] दुष्ट चिन्तन (धर्म २)।

दुज्झाय वि [दुर्ध्यात] जिसके विषय में दुष्ट चिन्तन किया गया हो वह (धर्म २)।

दुज्झोसय वि [दुर्जोष] जिसकी सेवा कष्ट से हो सके ऐसा (ग्राचा)।

दुज्झोसय वि [दुःक्षप] जिसका नाश कष्ट-साध्य हो वह (ग्राचा)।

दुज्झोसिअ वि [दुर्जोषित] दुःख से सेवित (ग्राचा)।

कवकृ. दज्झंत, दज्झमाण (नाट—मालती ३०, पि २२२)।

दह पुं [द्रह] ह्रद, बड़ा जलाशय, झील, सरोवर (भग; उवा, णाया १, ४—पत्र ९६, सुपा १३७)। °फुल्लिया स्त्री [°फुल्लिका] वल्ली-विशेष (पएण १)। °वई, °वई स्त्री [°वती] नदी-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०, जं ४)।

दह देखो दस (हे १, २६२, दं १२, पि २६२, पउम ७८, २५, से १३, ९४, प्राप्र; से १४, १६, ३, ११, १०, ४, पउम ८, ४४, प्राप्र)।

दहण न [दहन] १ दाह, भस्मीकरण। २ पु. अग्नि, वह्नि (पएह १, १, उप पृ २२, सुपा ४७४, श्रा २८)।

दहणी स्त्री [दहनी] विद्या-विशेष (पउम ७ १३८)।

दहवोल्ली स्त्री [दे] स्थाली, थलिया, थरिया (दे ५, ३६)।

दहावण वि [दाहक] जलानेवाला (मण)।

दहि न [दधि] दही, दूध का विकार (ठा ३ १, णाया १, १, प्राप्र)। °घण पुं [°घन] दधि-पिण्ड, अतिशय जमा हुआ दही (पएण १७—पत्र ५२९)। °मुह पु [°मुख] १ द्वीप-विशेष (पउम ५१, १)। २ एक नगर (पउम ५१, २)। ३ पर्वत-विशेष (राज)। °वण्ण, °वन्न पुं [°पर्ण] १ एक राजा, नृप-विशेष (कुप्र ६६)। २ वृक्ष-विशेष (औप, सम १५२, पएण १—पत्र ३१)। °वासुया स्त्री [°वासुका] वनस्पति-विशेष (जीव ३)। °वाहण पु [°वाहन] नृप-विशेष (महा)। ° सर पुं [°सर] खाद्य-द्रव्य-विशेष, मलाई, (दे ३, २९, ५, ३६)।

दहि त्रि [दधि] १ दही, 'जुन्हादहीय महणेण' (धर्मवि ५५), 'अयं तु दही' (सूअ २,१,१६)। २ तेला, लगातार तीन दिन का उपवास (सबोध ५८)।

दहिउप्फ न [दे] नवनीत, नैनूँ, मक्खन (दे ५, ३५)।

दहिट्ठ पुं [दे] वृक्ष विशेष, कपित्थ, कैथ या कैथ का पेड़ (दे ५, ३५)।

दहिण देखो दाहिण (नाट—वेणी ६७)।

दहित्थर } पु [दे] दधिसर, दही पर की
दहित्थार } मलाई, खाद्य-विशेष (दे ५, ३६)।

दहिमुह पु [दे] कपि, वानर (दे ५, ४४)।

दहिय पु [दे] पक्षि-विशेष, 'ज लावयतित्ति-रिदहियमोरं मारत्ति अद्दोस वि के वि घोर' (कुप्र ४२७)।

दा सक [दा] देना, उत्सर्ग करना। दाइ, देइ (भवि, हे २, २०६, आचा, महा, कस)। भवि दाह, दाहामि, दाहिमि (हे ३, १७०, आचा)। कर्म दिज्जइ (हे ४, ४३८)। वकृ दित, देंत, दंत, देयमाण (सुर १, २१२, गा २३, ४६४, हे ४, ३७९, बृह १, णाया १, १४—पत्र १८९)। कवकृ दिज्जत, दिज्जमाण, दीअमाण (गा १०१, सुर ३, ७९, १०, ५, सम ३९, सुपा ५०२, मा ३३)। सकृ. दच्चा, दाउ, दाऊण (विपा १, १, पि ५८७, कुमा, उव)। हेकृ दाउ (उवा)। कृ. दायव्व, देय (सुर १, ११०, सुपा २३३, ४४४, ५३२)। हेकृ देव (अप) (हे ४, ४४१)।

दा° देखो दग। °थालग न [°स्थालक] जल से गीला थाल (भग १५—पत्र ६८०)। कलस पु [°कलश] पानी का छोटा घड़ा। °कुंभ [°कुम्भ] जल का घड़ा। °वरग पु [°वारक] जल का पात्र-विशेष (भग १५—पत्र ६८०)।

दा देखो ता = तावत् (से ३, १०)।

दाअ देखो दाव = दर्शय्। दाएइ (विसे ८४४)। कर्म. दाइज्जइ (विसे ४६०)। कवकृ दाइ-ज्जमाण (कप्प)।

दाअ पुं [दे] प्रतिभू, जामिनदार, जमानत करनेवाला (दे ५, ३८)।

दाअ पुं [दाय] दान, उत्सर्ग (णाया १, १—पत्र ३७)।

दाइ वि [दायिन्] दाता, देनेवाला (उप पृ १६२)।

दाइअ वि [दर्शित] दिखलाया हुआ (विसे १०१२)।

दाइअ पु [दायिक] १ पैतृक संपत्ति का हिस्सेदार (उप पृ ४७, महा)। २ गोत्रिक, समान-गोत्रीय (कप्प)।

दाइज्जमाण देखो दाअ = दर्शय्।

दाइज्ज न [देयक] पाणिग्रहण के समय वर-वधू को दिया जाता द्रव्य (सिरि ४६९)।

दाउ वि [दातृ] दाता, देनेवाला (महा सं १, सुपा १९१)।

दाउ देखो दा = दा।

दाओयरिय वि [दाकोदरिक] जलोदर रोग-वाला (विपा १, ७)।

दाक्खव (अप) देखो दक्खव। दाक्खवइ (प्राकृ ११९)।

दाघ देखो दाह (हे १, २६४)।

दाडिम न [दाडिम] फल-विशेष, अनार (महा)।

दाडिमी स्त्री [दाडिमी] अनार का पेड़ (पि २४०)।

दाढगालि देखो दढगालि (दसनि १,४६ टी)।

दाढा स्त्री [दंष्ट्रा] बड़ा दाँत, दन्त विशेष, चौभड़, चहू, दाढ (हे २, १३०, गउड)।

दाढि वि [दंष्ट्रिन्] १ दाढावाला। २ पुं, हिंसक पशु (वेणी ४६)। सूअर, वराह, 'किं दाढीमयभीओ नियमं गुहं केसरी रिगइ' (पउम ७, १८)।

दाढिआ स्त्री [दे] दाढी, मुख के नीचे का भाग, श्मश्रु, ठुड्डी के नीचे या ठुड्डी पर के बाल (दे २, १०१)।

दाढिआलि } स्त्री [दंष्ट्रिकावलि] १ दाढ़ा
दाढिगालि } की पंक्ति। २ वस्त्र-विशेष (बृह ३, जीत)।

दाण पुंन [दान] १ दान, उत्सर्ग, त्याग, 'एए हवति दाणा' (पउम १४, ५४, कप्प, प्रासू ४८, ९७, १७२)। २ हाथी का मद (पाअ, षड्, गउड)। ३ जो दिया जाय वह (गउड)। °विरय पु [°विरत] एक राजा (सुपा १००)। °साला स्त्री [°शाला] सत्रागार (ती ८)।

दाणतराय न [दानान्तराय] कर्म-विशेष, जिसके उदय से दान देने की इच्छा नहीं होती है (राय)।

दाणपारमिआ स्त्री [दानपारमिता] दान, उत्सर्ग, समर्पण, 'देतस्स हिरन्नादी अप्पमासा देहमादिय चेव। अग्गहविणिवित्ती जा सेट्ठा सा दाणपारमिया' (धर्मसं ७३७)।

दुद्धोअहि } पुं [दुग्धोदधि] समुद्र-विशेष,
दुद्धोदहि } जिसका पानी दूध की तरह स्वादिष्ट है, क्षीरसमुद्र (गा ४७५, उप २११ टी)।

दुद्धोलणी स्त्री [दे] गो-विशेष, जिसको एक वार दोहने पर फिर भी दोहन किया जा सके ऐसी गाय, कामधेनु (दे ५, ४६)।

दुधा देखो दुहा (अभि १६१)।

दुनिमित्त देखो दुण्णिमित्त (श्रा २७)।

दुन्नय पुं [दुर्नय] १ दुष्ट नीति, कुनीति। २ अनेक धर्मवाली वस्तु मे किसी एक ही धर्म को मानकर अन्य धर्म का प्रतिवाद करनेवाला पक्ष (सम्म १५)। ३ वि दुष्ट नीति, अन्याय-कारी (उप ७६८ टी)। °कारि वि [°कारिन्] अन्याय करनेवाला (सुपा ३४६)।

दुन्निक्कम देखो दोनिक्कम (भग ७, ६ टी—पत्र ३०७)।

दुन्निग्गह वि [दुर्निग्रह] जिसका निग्रह दु:ख से हो सके वह, अनिवार्य (उप पृ १५३)।

दुन्निवोह वि [दुर्निवोध] १ दु:ख से जानने योग्य। २ दुर्लभ (सूअ १, १५, २५)।

दुन्निमित्त देखो दुण्णिमित्त (श्रा २७)।

दुन्निय न [दुर्नीत] दुष्ट कर्म, दुष्कृत, 'वधति वेदति य दुन्नियाणि' (सूअ १, ७, ४)।

दुन्नियत्थ वि [दे] विट का भेपवाला, निन्दनीय वेष को धारण करनेवाला, केवल जघन पर ही वस्त्र-पहिना हुआ, 'लोए वि कुसंसग्गीपिय जणं दुन्नियत्थमइवसणं निंदइ' (उव)।

दुन्निरिक्ख वि [दुर्निरीक्ष्य] जो कठिनाई से देखा जा सके वह (कप्प, भवि)।

दुन्निवार वि [दुर्निवार] रोकने के लिए अशक्य, जिसका निवारण मुश्किल से हो सके वह (सुपा १२३, महा)।

दुन्निवारणीअ वि [दुर्निवारणीय, दुर्निवार] ऊपर देखो (स ३४३, ७४१)।

दुन्निसण्ण वि [दुर्निषण्ण] खराव रीति से वैठा हुआ (ठा ५, २—पत्र ३१२)।

दुप देखो दिअ=द्विप (राज)।

दुपएस वि [द्विप्रदेश] १ दो अवयववाला। २ पुं. द्व्यणुक (उत्त १)।

दुपएसिय वि [द्विप्रदेशिक] दो प्रदेशवाला (भग ५, ७)।

दुपक्ख पु [दुष्पक्ष] दुष्ट पक्ष (सूअ १, ३, ३)।

दुपक्ख न [द्विपक्ष] १ दो पक्ष (सूअ १, २, ३)। २ वि. दो पक्षवाला (सूअ १, १२, ५)।

दुपडिग्गह न [द्विप्रतिग्रह] दृष्टिवाद का एक सूत्र (सम १५७)।

दुपडोआर वि [द्विपदावतार] दो स्थानो में जिसका समावेश हो सके वह (ठा २, १)।

दुपडोआर वि [द्विप्रत्यवतार] ऊपर देखो (ठा २, १)।

दुपमज्जिय देखो दुप्पमज्जिय (सुपा ६२०)।

दुपय वि [द्विपद] १ दो पैरवाला। २ पुं मनुष्य (णाया १, ८, सुपा ४०६)। ३ न गाडी, शकट (ओघ २०५ भा)।

दुपय पुं [द्रुपद] कांपिल्यपुर का एक राजा (णाया १, १६)।

दुपरिच्चय वि [दुष्परित्यज] दुस्त्यज, दु:ख से छोडने योग्य (उप ७६८ टी, रयण ३४)।

दुपरिच्चयणीय वि [दुष्परित्यजनीय, दुष्परित्यज] ऊपर देखो (काल)।

दुपस्स देखो दुप्पस्स (ठा ५, १—पत्र २९६)।

दुपुत्त पुं [दुष्पुत्र] कुपुत्र, कपूत (पउम २६, २३)।

दुपेच्छ वि [दुष्प्रेक्ष] दुर्दर्श, अदर्शनीय (भवि)।

दुप्पइ पुं [दुष्पति] दुष्ट स्वामी (भवि)।

दुप्पउत्त वि [दुष्प्रयुक्त] १ दुरुपयोग करनेवाला (ठा २, १—पत्र ३९)। २ जिसका दुरुपयोग किया गया हो वह (भग ३, १)।

दुप्पउलिय } वि [दुष्प्रज्वलित] ठीक-ठीक
दुप्पउल्ल } नहीं पका हुआ, अधपका (उवा, पचा १)।

दुप्पओग पुं [दुष्प्रयोग] दुरुपयोग (दस ४)।

दुप्पओगि वि [दुष्प्रयोगिन्] दुरुपयोग करनेवाला (पण्ह १, १—पत्र ७)।

दुप्पक्क वि [दुष्पक्व] देखो दुप्पउल्ल (सुपा ४७२)।

दुप्पक्खाल वि [दुष्प्रक्षाल] जिसका प्रक्षालन कष्टसाध्य हो वह (सुपा ६०८)।

दुप्पच्चुप्पेक्खिय वि [दुष्प्रत्युत्प्रेक्षित] ठीक-ठीक नहीं देखा हुआ (पव ६)।

दुप्पजीवि वि [दुष्प्रजीविन्] दु:ख से जीनेवाला (दसचू १)।

दुप्पडिक्कंत वि [दुष्प्रतिक्रान्त] जिसका प्रायश्चित ठीक-ठीक न किया गया हो वह (विपा १, १)।

दुप्पडिगर वि [दुष्प्रतिकर] जिसका प्रतीकार दु:ख से किया जा सके (बृह ३)।

दुप्पडिपूर वि [दुष्प्रतिपूर] पूरने के लिए अशक्य (तदु)।

दुप्पडियाणंद वि [दुष्प्रत्यानन्द] १ जो किसी तरह सतुष्ट न किया जा सके। २ अति कष्ट से तोषणीय (विपा १, १—पत्र ११, ठा ४, ३)।

दुप्पडियार वि [दुष्प्रतिकार] जिसका प्रतीकार दु:ख से हो सके वह (ठा ३, १—पत्र ११७, ११६, म १८४, उव)।

दुप्पडिलेह वि [दुष्प्रतिलेख] जो ठीक-ठीक न देखा जा सके वह (पव ८४)।

दुप्पडिलेहण न [दुष्प्रतिलेखन] ठीक-ठीक नही देखना (श्राव ४)।

दुप्पडिलेहिय वि [दुष्प्रतिलेखित] ठीक से नही देखा हुआ (सुपा ६१७)।

दुप्पडिवूह वि [दुष्प्रतिवृंह] १ बढाने को अशक्य। २ पालने को अशक्य (आचा)।

दुप्पडिवूहग वि [दुष्प्रतिवृंहण] ऊपर देखो (आचा)।

दुप्पणिहाण न [दुष्प्रणिधान] दुष्प्रयोग, अशुभ प्रयोग, दुरुपयोग (ठा ३, १, सुपा ५४०)।

दुप्पणिहिय वि [दुष्प्रणिहित] दुष्प्रयुक्त, जिसका दुरुपयोग किया गया हो वह (सुपा ५५८)।

दुप्पणीहाण देखो दुप्पणिहाण, 'कयसामइओवि दुप्पणीहाए' (सुपा ५५३)।

दुप्पणोल्लिय वि [दुष्प्रणोद्य] दुस्त्यज, छोडने को अयोग्य (सूअ १, ३, १)।

दुप्पण्णवणिज्ज वि [दुष्प्रज्ञापनीय] कष्ट से प्रबोधनीय (आचा २, ३, १)।

दुप्पतर वि [दुष्प्रतर] दुस्तर (सूअ १, ५, १)।

दालिद्द देखो दारिद्द (हे १, २५४, प्रासू ७०)।

दालिद्दिय देखो दारिद्दिय (सुर १३, ११६, वज्जा १३८)।

दालिम देखो दाडिम (प्राप्र)।

°दालियंब न [दालिकाम्ल] दाल का बना हुआ खाद्य-विशेष (पराह २, ५)।

दालिया स्त्री [दालिका] देखो दालि (उवा)।

दाली देखो दालि (ओघ ३२३)।

दाव सक [दर्शय्] दिखलाना, बतलाना। दावइ, दावेइ (हे ४, ३२, गा ३१५)। वकृ. दावंत (गा ६२०)।

दाव सक [दापय्] दिलाना, दान करवाना। दावेइ (कम)। वकृ दावेंत (पउम ११७, २६, सुपा ६१८)। हेकृ. दावेत्तए (कप्प)।

दाव देखो ताव = तावत् (से ३, २६, स्वप्न १०, अभि ३६)।

दाव पु [दाव] १ वन, जंगल। २ देव, देवता (से ६, ४३)। ३ जंगल का अग्नि (पाअ)। °ग्गि पुं [°ाग्नि] जगल की आग (हे १, ६७)। °णल, °ानल पुं [°ानल] जंगल की आग (सण, सुपा १६७, पडि)।

दावण न [दामन] छान, पशुओं को पैर में बाँधने की रस्सी (कुप्र ४३६)।

दावण न [दापन] दिलाना (सुपा ४६६)।

दावणया स्त्री [दापना] दिलाना (स ५१, पडि)।

दावद्दव पु [दावद्रव] वृक्ष-विशेष (णाया १, ११—पत्र १७१)।

दावर पु [द्वापर] १ युग-विशेष, तीसरा युग। २ न द्विक, दो, 'नो तिय नो चेव दावरं' (सूअ १, २, २, २३)। °जुम्म पु [°युग्म] राशि-विशेष (ठा ४, ३—पत्र २३७)।

दावाव सक [दापय्] दिलाना। संकृ. दावावेउ (महा)।

दाविअ वि [दर्शित] दिखलाया हुआ, प्रदर्शित (पाअ, से ९, ५३, ५, ८०)।

दाविअ वि [दापित] दिलाया हुआ (सुपा २४१)।

दाविअ वि [द्रावित] १ झराया हुआ, टपकाया हुआ। २ नरम किया हुआ (अच्चु ८८)।

दावेंत देखो दाव = दापय्।

दास पु [दर्श] दर्शन, अवलोकन (षड्)।

दास पु [दास] १ नौकर, कर्मकर (हे २, २०६, सुपा १२२, प्रासू १७५, स १८, कप्पू)। २ धीवर, मल्लाह, 'केवट्टो धीवरो दासो' (पाअ)। °चेड, °चेडग पुं [°चेट] १ छोटी उम्र का नौकर। २ नौकर का लडका (महा, णाया १, २)। °सच्च पु [°सत्य] श्रीकृष्ण (अच्चु १७)।

दासरहि पुं [दाशरथि] राजा दशरथ का पुत्र रामचन्द्र (से १, १८)।

दासी स्त्री [दासी] नौकरानी (औप, महा)।

दासीखब्बडिया स्त्री [दासीकर्वटिका] जैन मुनियों की एक शाखा (कप्प)।

दाह पुं [दाह] १ ताप, जलन, गरमी। २ दहन, भस्मीकरण (हे १, २६४, प्रासू १८)। ३ रोग-विशेष (विपा १, १)। °ज्जर पुं [°ज्वर] ज्वर-विशेष (सुपा ३११)। °वक्कंतिय वि [°व्युत्क्रान्तिक] जिसको दाह उत्पन्न हुआ हो वह (णाया १, १—पत्र ६४)।

दाह देखो दा = दा।

दाहग वि [दाहक] जलानेवाला (उवर ८१)।

दाहण न [दाहन] जलाना, भस्म कराना (पउम १०२, १६१)।

दाहविय वि [दाहित] जलवाया हुआ, आग लगवाया हुआ (हम्मीर २७)।

दाहिण देखो दक्खिण (भग, कस, हे १, ४५ २, ७२, गा ४२३, ८१६)। °दारिय वि [°द्वारिक] दक्षिण दिशा में जिसका द्वार हो वह। २ न अश्विनी-प्रमुख सात नक्षत्र (ठा ७)। °पच्चत्थिम वि [°पश्चिमीय] दक्षिण और पश्चिम दिशा के बीच का भाग, नैर्ऋत कोण (भग)। °पह पु [°पथ] १ दक्षिण देश की ओर का रास्ता। २ दक्षिण देश, 'गच्छामि दाहिणपहं' (पउम ३२, १३)। °पुरत्थिम वि [°पूर्वीय] दक्षिण और पूर्व दिशा के बीच का भाग, अग्नि-कोण (भग)। °वत्त वि [°ावर्त] दक्षिण में आवर्तवाला (शंख आदि) (ठा ४, २—पत्र २१६)।

दाहिणा देखो दक्खिणा (ठा ६, सुज्ज १०)।

दाहिणिल्ल देखो दक्खिणिल्ल (पउम ७, १७, विपा १, ७)।

दाहिणी स्त्री [दक्षिणा] दक्षिण दिशा (कुमा)।

दि वि. ब. [द्वि] दो, दो की संख्यावाला (हे १, ६४, से ६, ५३)।

दि° देखो दिसा (गा ८६६)। °क्करि पुं [°करिन्] दिग्-हस्ती (कुमा)। °ग्गइंद पुं [°गजेन्द्र] दिग्-हस्ती (गउड)। °ग्गय पुं [°गज] दिग् हस्ती (स ११३)। °च्चक्कसार न [°चक्रसार] विद्याधरों का एक नगर (इक)। °म्मोह पु [°मोह] दिशा-भ्रम (गा ८८६)। देखो दिसा।

दिअ पुंन [दे] दिवस, दिन (दे ५, ३६), 'राउदिआइं' (कप्प)।

दिअ पु [द्विज] १ ब्राह्मण, विप्र (कुमा; पाअ, उप ७६८ टी)। २ दन्त, दाँत। ३ ब्राह्मण आदि तीन वर्ण—ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य। ४ अण्डज, अण्डे से उत्पन्न होनेवाला प्राणी। ५ पक्षी। ६ वृक्ष-विशेष, टिंबरू का पेड (हे १, ६४)। °राय पुं [°राज] १ उत्तम द्विज। २ चन्द्रमा (सुपा ४१२, कुप्र १६)।

दिक्क पु [द्विक] काक, कौआ (उप ७६८टी)।

दिअ पु [द्विप] हस्ती, हाथी (हे २, ७६)।

दिअ न [दिव] स्वर्ग, देवलोक (पिंग)। °लोअ, °लोग पुं [°लोक] स्वर्ग, देवलोक (पउम २२, ४५, सुर ७, १)।

दिअ वि [दित] छिन्न, काटा हुआ (धम्मो १)।

दिअ वि [द्रुत] हत, मार डाला हुआ, 'चंदेण व दियराएण जेण आणंदिय भुवणं' (कुप्र १६)।

दिअंत पु [दिगन्त] दिशा का प्रान्त भाग (महा)।

दिअंबर वि [दिगम्बर] १ नग्न, नंगा, वस्त्र-रहित। २ पु. एक जैन संप्रदाय (भवि, उवर १२२, कुप्र ४४३)।

दिअज्झ पु [दे] सुवर्णकार, सोनार (दे ५, ३६)।

दिअधुत्त पुं [दे] काक, कौआ (दे ५, ४१)।

दिअर पु [देवर] पति का छोटा भाई (गा ३५, प्राप्र, पाअ, हे १, १४६, सुपा ४८७)।

जस्स मुहं जोइज्जइ, सो पुरिसो महीयले विरलो' (रयण ३२)।
२ भिक्षा का अभाव (ठा ५, २)। ३ वि. जहाँ पर भिक्षा न मिल सके वह देश आदि (ठा ३, १—पत्र ११८)।

दुब्भिज्ज देखो दुब्भेज्ज (पउम ८०, ६)।

दुब्भूइ स्त्री [दुर्भूति] अशिव, अमंगल (बृह ३)।

दुब्भूय पुन [दुर्भूत] १ नुकशान करनेवाला जन्तु—टिड्डी वगैरह (भग ३, २)। २ न. अशिव, अमगल (जीव ३)।

दुब्भूय वि [दुर्भूत] दुराचारी (उत्त १७, १७)।

दुब्भेज्ज वि [दुर्भेद्य] तोड़ने को अशक्य (पि ८४, २८७, नाट—मृच्छ १३३)।

दुब्भेय वि [दुर्भेद] ऊपर देखो (राय)।

दुभग देखो दुब्भग (नव १५)।

दुभव न [द्विभव] वर्तमान और आगामी जन्म, 'दुभवहइसज्जो' (श्रा २७)।

दुभाग पुं [द्विभाग] आधा, अर्ध (भग ७, १)।

दुम सक [धवलय्] १ सफेद करना। २ चूना आदि से पोतना। दुमइ (हे ४, २४)। दुमसु (गा ७४७)। वकृ दुमंत (कुमा)।

दुम पुं [द्रुम] १ वृक्ष, पेड़, गाछ (कुमा, प्रासू ६, १४६)। २ चमरेन्द्र के पदाति-सैन्य का एक अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०२, इक)। ३ राजा श्रेणिक का एक पुत्र, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर देवलोक की गति प्राप्त की थी (अनु २)। ४ न एक देव-विमान (सम ३५)। °कंत न [°कान्त] एक विद्याधर-नगर (इक)। °पत्त न [°पत्र] १ वृक्ष का पत्ता। २ 'उत्तराध्ययन' सूत्र का एक अध्ययन (उत्त १०)। °पुप्फिया स्त्री [°पुष्पिका] 'दशवैकालिक' सूत्र का पहला अध्ययन (दस १)। °राय पु [°राज] उत्तम वृक्ष (ठा ४, ४)। °सेण पुं [°सेन] १ राजा श्रेणिक का एक पुत्र, जिसने भगवान महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर देवलोक में गति प्राप्त की थी (अनु २)। २ नववें बलदेव और वासुदेव के पूर्व-जन्म के धर्म-गुरु (सम १५३, पउम २०, १७७)।

दुमतय पु [दे] केश-बन्ध, धम्मिल्ल—बँधी चोटी, जूड़ा (दे ५, ४७)।

दुमण न [धवलन] चूना आदि से लेपन, सफेद करना (पण्ह २, ३)।

दुमणी स्त्री [दे] सुधा, मकान आदि पोतने का श्वेत द्रव्य-विशेष, चूना (दे ५, ४४)।

दुमत्त वि [द्विमात्र] दो मात्रावाला स्वर-वर्ण (हे १, ९४)।

दुमासिय वि [द्वैमासिक] दो मास का, दो मास-सम्बन्धी (सण)।

दुमिअ वि [धवलित] चूना आदि से पोता हुआ, सफेद किया हुआ (गा ७४९, सुज्ज २०)।

दुमिल देखो दुम्मिल (पिंग)।

दुमुह पुं [द्विमुख] एक राजर्षि (उत्त ९)।

दुमुह देखो दुम्मुह = दुर्मुख (पि ३४०)।

दुमुहुत्त पुंन [दुर्मुहूर्त] खराब मुहूर्त, दुष्ट समय (सुपा २३७)।

दुमोक्ख वि [दुर्मोक्ष] जो दुःख से छोड़ा जा सके (सूअ १, १२)।

दुम्म देखो दूम = दावय्। दुम्मइ (भवि)। दुम्मेंति, दुम्मेसि (गा १७७, ३४०)। कर्म. दुम्मिज्जइ (गा ३२०)।

दुम्मइ वि [दुर्मति] दुर्बुद्धि, दुष्ट बुद्धिवाला (श्रा २७, सुपा २५१)।

दुम्मइणी स्त्री [दे] झगड़ाखोर स्त्री (दे ५, ४७, षड्)।

दुम्मण वि [दुर्मनस्] १ दुर्मना, खिन्न-मनस्क, उद्विग्न-चित्त, उदास (विपा १, १, सुर ३, १४७)। २ दीन, दीनतायुक्त। ३ द्विष्ट, द्वेष-युक्त (ठा ३, २—पत्र १३०)।

दुम्मण अक [दुर्मनाय्] उद्विग्न होना, उदास होना। वकृ दुम्मणाअत, दुम्मणा-यमाण (नाट—महावी ९९, मालती १२८, रयण ७६)।

दुम्मणिअ न [दौर्मनस्य] उदासी, उद्वेग, चिन्ता, बेचैनी (दस ९, ३)।

दुम्मणिअ न [दौर्मनस्य] दुष्ट मनो-भाव, मन का दुष्ट विकार, दुर्जनता (दस ९, ३, ८)।

दुम्मय पुं [द्रुमक] भिखारी, भीखमंगा (दस ७, १४)।

दुम्महिला स्त्री [दुर्महिला] दुष्ट स्त्री (ओघ ४९४ टी)।

दुम्माण पुं [दुर्मान] झूठा अभिमान, निन्दित गर्व (अच्चु ५४)।

दुम्मार पु [दुर्मार] विषम मार, भयंकर ताडन, 'दुम्मारेण मओ सोवि' (श्रा १२)।

दुम्मारि स्त्री [दुर्मारि] उत्कट मारी-रोग (सबोध २)।

दुम्मारुय पुं [दुर्मारुत] दुष्ट पवन (भवि)।

दुम्मिअ वि [दून] उपतापित, पीड़ित (गा ७४, २२४, ४२३, भवि, काप्र ३०)।

दुम्मिल स्त्रीन [दुर्मिल] छन्द-विशेष। स्त्री °ला (पिंग)।

दुम्मुह देखो दुमुह = द्विमुख (महा)।

दुम्मुह पु [दुर्मुख] बलदेव का धारणी देवी से उत्पन्न एक पुत्र, जिसने भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पाई थी (अंत ३, पण्ह १, ४)।

दुम्मुह पु [दे] मर्कट, वानर, बन्दर (दे ५, ४४)।

दुम्मेह वि [दुर्मेधस्] दुर्बुद्धि, दुर्मति (पण्ह १, ३)।

दुम्मोअ वि [दुर्मोक] दुःख से छोड़ाने योग्य (अभि २४४)।

दुयणु देखो दुअणुअ (धर्मसं ६४०)।

दुरइक्कम वि [दुरतिक्रम] दुर्लंघ्य, जिसका उल्लघन दुःख-साध्य हो वह (आचा)।

दुरइक्कमणिज्ज वि [दुरतिक्रमणीय] ऊपर देखो (णाया १, ५)।

दुरंत वि [दुरन्त] १ जिसका परिणाम—विपाक खराब हो वह, जिसका पर्यन्त दुष्ट हो वह (णाया १, ८, पण्ह १, ४—पत्र ६५, स ७५०, उवा)। २ जिसका विनाश कष्ट-साध्य हो वह (तदु)।

दुरदर वि [दे] दुःख से उत्तीर्ण (दे ५, ४६)।

दुरक्ख वि [दरक्ष] जिसकी रक्षा करना कठिन हो वह (सुपा १४३)।

दुरक्खर वि [दुरक्षर] परुष, कठोर, कड़ा (वचन) (भवि)।

दुरग्गह पु [दुराग्रह] कदाग्रह (कुप्र ३७९)।

दुरज्झवसिय न [दुरध्यवसित] दुष्ट चिन्तन (सुपा ३७७)।

सूर्य, दिवाकर (पाअ, से १, १८, सुपा २३)। °मुह न [°मुख] प्रभात, प्रात काल (पाअ)। °यर देखो °कर (गउड, भवि)। °रयणिकरि स्त्री [°रजनिकरी] विद्या-विशेष (पउम १३८)। °वइ पु [°पति] सूर्य, रवि (पि ३७९)।

दिणिंद पु [दिनेन्द्र] सूर्य, रवि (सुपा २४०)।

दिणेस पु [दिनेश] १ सूर्य, सूरज (कप्पू)। २ बारह की संख्या (विवे १४४)।

दिण्ण वि [दत्त] १ दिया हुआ, वितीर्ण (हे १, ४६, प्राप्र, स्वप्न, प्रासू १६४)। २ निवेशित, स्थापित (पण्ह १, १)। ३ पु. भगवान् पार्श्वनाथ के प्रथम गण-धर (सम १५२)। ४ भगवान् श्रेयांसनाथ का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५१)। ५ भगवान् चन्द्रप्रभ का प्रथम गणधर (सम १५२)। ६ भगवान् नमिनाथ को प्रथम भिक्षा देनेवाला एक गृहस्थ (सम १५१)। देखो दिन्न।

दिण्ण देखो दइन्न (राज)।

दिण्णेल्लय वि [दत्त] दिया हुआ (ओघ २२ भा. टी)।

दित्त वि [दीप्त] १ ज्वलित, प्रकाशित (सम १५३, अजि १४, लहुअ ११)। २ कान्ति-युक्त, भास्वर, तेजस्वी (पउम ९४, ३५, सम १२२)। ३ तीक्ष्णभूत, निशित (सम १५३, लहुअ ११)। ४ उज्ज्वल, चमकीला (णदि)। ५ पुष्ट, परिवृद्ध (उत्त ३४)। ६ प्रसिद्ध (भग २६, ३)। ७ मारनेवाला (ओघ ३०२)। °चित्त वि [°चित्त] हर्ष के अतिरेक से जिसको चित्त-भ्रम हो गया हो वह (बृह ३)।

दित्त वि [दृप्त] १ गर्वित, गर्व-युक्त (औप)। २ मारनेवाला। ३ हानि-कारक (ओघ ३०२)। °इत्त वि [°चित्त] २ जिसके मन मे गर्व हो। २ हर्ष के अतिरेक से जो पागल हो गया हो वह (ठा ५, ३—पत्र ३२७)।

दित्ति स्त्री [दीप्ति] कान्ति, तेज, प्रकाश (पाअ, सुर ३, ३२, १०, ४६, सुपा ३७८)। °म वि [°मत्] कान्ति-युक्त (गच्छ १)।

दित्ति स्त्री [दीप्ति] उद्दीपन (उत्त ३२, १०)। °ल्ल वि [°मत्] प्रकाशवाला (सम्मत्त १५६)।

दिदिक्खा } स्त्री [दिदृक्षा] देखने की इच्छा
दिदिच्छा } (राज, सुपा २९४)।

दिद्ध वि [दिग्ध] लिप्त (निचू १)।

दिन्न देखो दिण्ण (महा, प्रासू ५७)। ७ श्री गौतम स्वामी के पास पाँच सौ तापसो के साथ जैन दीक्षा लेनेवाला एक तापस (उप १४२ टी, कुप्र २९३)। ८ एक जैन आचार्य (कप्प)।

दिन्नय पुं [दत्तक] गोद लिया हुआ पुत्र (ठा १०—पत्र ५१६)।

दिप्प अक [दीप्] १ चमकना। २ तेज होना। ३ जलना। दिप्पइ (हे १, २२३)। वकृ. दिप्पंत, दिप्पमाण (से ४, ८, सुर १४, ५६, महा, पण्ह १, ४, सुपा २४०), 'दिप्पमाणे तवतेएण' (म ६७५)।

दिप्प अक [तृप्] तृप्त होना, सन्तुष्ट होना। दिप्पइ (षड्)।

दिप्प वि [दीप्र] चमकनेवाला, तेजस्वी (से १, ६१

दिप्प (अप) पुं [दीप] १ दीपक। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

दिप्पंत पुं [दे] अनर्थ (दे ५, ३९)।

दिप्पंत } देखो दिप्प = दीप्।
दिप्पमाण }

दिप्पिर देखो दिप्प = दीप्र (कुमा)।

दियाव सक [दा] देना। दियावेइ (पचा १३, १२)।

दिरय पु [द्विरद] हस्ती, हाथी (हे १, ९४)।

दिलंदिलिअ [दे] देखो दिल्लिदिलिअ (गा ७४१)।

दिलिदिल अक [दिलदिलाय्] 'दिल् दिल्' आवाज करना। वकृ. दिलिदिलंत (पउम १०२, २१)।

दिलिवेढय पुं [दिलिवेष्टक] एक प्रकार का ग्राह, जल-जन्तु की एक जाति (पण्ह १, १)।

दिल्लिदिलिअ पु [दे] बालक, शिशु, लडका (दे ५, ४०)। स्त्री. °आ, बाला, लडकी (गा ७४१)।

दिव उभ [दिव्] १ क्रीडा करना। २ जीतने की इच्छा करना। ३ लेन-देन करना। ४ चाहना, वाञ्छना। ५ आज्ञा करना। दिवइ, दिवए (षड्)।

दिव न [दिव्] स्वर्ग, देवलोक (कुप्र ४३६, भवि)।

दिवड्ढ वि [द्व्यपार्ध] डेढ, एक और आधा (विसे ६९३, स ५५, सुर १०, २०८, सुपा ५८०, भवि, सम ९९, सुज्ज १,१०, ठा ६)।

दिवस } देखो दिअस (हे १, २६३, उव,
दिवह } प्रासू १२, सुपा ३०७, वेणी ४७)। °पुहुत्त न [°पृथक्त्व] दो से लेकर नव दिन तक का समय (भग)।

दिवा देखो दिआ (णाया १, ४, प्रासू ९०)। °इत्ति पुं [°कीर्त्ति] चाण्डाल, भगी (दे ५, ४१)। °कर पुं [°कर] सूर्य, सूरज (उत्त ११)। °कित्ति पु [°कीर्त्ति] नापित, हजाम (कुप्र २८८)। °गर देखो °कर (णाया १, १, कुप्र ४१५)। °मुह न [°मुख] प्रभात (गउड)। °यर देखो °कर (सुपा ३९, ३१४)। °यरत्थ न [°करास्त्र] प्रकाश-कारक अस्त्र-विशेष (पउम ६१, ४४)।

दिवायर पुं [दिवाकर] १ सिद्धसेन नामक विख्यात जैन कवि और तार्किक। २ पूर्वधर मुनि (सम्मत्त १४१)।

दिवि देखो देव, 'दिविणावि काणपुरिसे-णव्व एसा दासी अहं च विप्पवरो एगया दिट्ठीए दिस्सामो' (रंभा)।

दिविअ पुं [द्विविद] वानर-विशेष (से ४, ८, १३, ८२)।

दिविज वि [दिविज] १ स्वर्ग मे उत्पन्न। २ पुं देव, देवता (अजि ७)।

दिविट्ठ देखो दुविट्ठु (राज)।

दिवे (अप) देखो दिवा (हे ४, ४१९, कुमा)।

दिव्व वि [दिव्य] १ स्वर्ग-सम्बन्धी, स्वर्गीय (स २, ठा ३, ३)। २ उत्तम, सुन्दर, मनोहर (पउम ८, २६१, सुर २, २४२, प्रासू १२८)। ३ प्रधान, मुख्य (औप)। ४ देव-सम्बन्धी (ठा ४, ४, सूअ १, २, २)। ५ न. शपथ-विशेष, आरोप की शुद्धि के लिए किया जाता अग्नि-प्रवेश आदि (उप ८०४)। ६ प्राचीन काल में अपुत्रक राजा की मृत्यु हो जाने पर जिस चमत्कार-जनक घटना से राज-गद्दी के लिए किसी मनुष्य का निर्वाचन होता था वह हस्ति-गर्जन, अश्व-हेषा आदि अलौ-किक प्रमाण (उप १०३१ टी)। °माणुस

दुलंघ देखो दुल्लंघ (भवि)।

दुलभ देखो दुल्लभ (भवि)।

दुलह वि [दुर्लभ] १ जिसकी प्राप्ति दु ख मे हो सके वह (कुमा, गउड, प्रासू १३८)। २ पुं. एक वणिक्-पुत्र (सुपा ६१७)। देखो दुल्लह।

दुलि पुस्त्री [दे] कच्छप, कछुआ (दे ५, ४२, उप पृ १३५)।

दुल्ल न [दे] वस्त्र, कपडा (दे ५, ४१)।

दुल्लघ वि [दुर्लङ्घ] जिसका उल्लघन कठिनाई से हो सके वह अलघनीय (पउम १२, ३८, ४१, हेका ३१, सुर २, ७८)।

दुल्लभ वि [दुर्लभ] दुराप, दुष्प्राप्य (उप पृ १३६, सुपा १६३, सण)।

दुल्लक्ख वि [दुर्लक्ष्य] १ दुर्विज्ञेय, जो दु ख से जाना जा सके, अलक्ष्य (से ८, ५, स ६६, वज्जा १३६, श्रा २८)। २ जो कठिनाई से देखा जा सके (कप्पू)।

दुल्लग्ग वि [दे] अघटमान, अयुक्त (दे ५, ४३)।

दुल्लग्ग न [दुर्लग्न] दुष्ट लग्न, दुष्ट मुहूर्त (मुद्रा २१५)।

दुल्लभ } देखो दुल्लह, 'कि दुल्लभ जणो
दुल्लभ } गुणग्गाही' (गा ९७५, निचू ११)।

दुल्लिअ वि [दुर्ललित] १ दुष्ट आदतवाला। २ दुष्ट इच्छावाला, विलसइ वेसाण गिहे विविहविलासेहि दुल्ललिओ', 'कीलइ दुल्ललियवालकोलाए' (सुपा ४८५, ३२८)। ३ व्यसनी आदतवाला,

वन्ना सा पुन्नुकरिसनिम्मिया
तिहुयणेवि तुह जणणी।
जोइ पसूग्गे मि तुम दीणुद्धरणिक्क-
दुल्ललिओ' (सुपा २१६)।

४ दुर्विदग्ध, दु शिक्षित (पाअ)। ५ न दुराशा, दुर्लभ वस्तु की अभिलाषा (महानि ६)।

दुल्लसिआ स्त्री [दे] दासी, नौकरानी (दे ५, ४६)।

दुल्लह वि [दुर्लभ] १ दुराप, जिसकी प्राप्ति कठिनाई से हो वह (स्वप्न ४६, कुमा, जी ५०, प्रासू ११, ४६, ४७)। २ विक्रम की ग्यारहवी शताब्दी का गुजरात का एक प्रसिद्ध राजा (गु १०)। °राय पु [°राज] वही अर्थ (सार्ध ६६, कुप्र ४)। °लंभ वि [°लम्भ] जिसकी प्राप्ति दु ख से हो सके वह (पउम ३५, ४७, सुर ४, २२६, वै ६८)।

दुवई स्त्री [द्रुपदी] छन्द-विशेष (म ७१)।

दुवण न [दावन] उपताप, पीडन (पण्ह १, २)।

दुवण्ण } वि [दुर्वर्ण] खराब रूपवाला (भग,
दुवन्न } ठा ८)।

दुवय पु [द्रुपद] एक राजा, द्रौपदी का पिता (णाया १, १६, उप ६४८ टी)। °सुया स्त्री [°सुता] पाण्डव-पत्नी, द्रौपदी (उप ६४८ टी)।

दुवयगया स्त्री [द्रुपदाङ्गजा] राजा द्रुपद की लडकी, द्रौपदी, पाण्डवो की पत्नी (उप ६४८ टी)।

दुवयगरुहा स्त्री [द्रुपदाङ्गरुहा] ऊपर देखो (उप ६४८ टी)।

दुवयण न [दुर्वचन] खराब वचन, दुष्ट उक्ति (पउम ३५, ११)।

दुवयण न [द्विवचन] दो का बोधक व्याकरण-प्रसिद्ध प्रत्यय, दो सख्या की वाचक विभक्ति (हे १, ९४, ठा ३, ४—पत्र १५८)।

दुवार } देखो दुआर (हे २, ११२, प्रति
दुवाराय } ४१, सुपा ४८७), 'एगदुवाराए' (कस)। °पाल पुं [°पाल] दरवान, प्रतीहार (सुर १, १३४, २, १४८)। °वाहा स्त्री [°वाहा] द्वार-भाग (आचा २, १, ५)।

दुवारि वि [द्वारिन्] १ द्वारवाला। २ पुं. दरवान, प्रतीहार, 'बहुपरिवारो पत्तो रायदुवारी तहिं वरुणो' (सुपा २९५)।

दुवारिअ वि [द्वारिक] दरवाजावाला, 'अवगुयदुवारिए' (कस)।

दुवारिअ पुं [दौवारिक] दरवान, द्वारपाल (हे १, १६०, सक्षि ६, सुपा २९०)।

दुवालस त्रि व. [द्वादशन्] बारह, १२ (कप्प, कुमा)। °मुहुत्तिअ वि [°मौहूर्तिक] बारह मुहूर्तो का परिमाणवाला (सम २२)। °विह वि [°विध] बारह प्रकार का (सम २१)। °हा अ [°धा] बारह प्रकार (सुर १४, ६१)। °वित्त न [°वर्त] बारह आवर्तवाला वन्दन, प्रणाम-विशेष (सम २१)।

दुवालसग स्त्रीन [द्वादशाङ्गी] बारह जैन आगम-ग्रन्थ, 'आचाराग' आदि बारह सूत्र ग्रन्थ (सम १, हे १, २५४)। स्त्री. °गी (राज)।

दुवालसंगि वि [द्वादशाङ्गिन्] बारह अग-ग्रन्थो का जानकार (कप्प)।

दुवालसम वि [द्वादश] १ बारहवाँ। २ न. लगातार पाँच दिनो का उपवास (आचा; णाया १,१, ठा ६, सण)। स्त्री. °मी (णाया १, ६)।

दुविट्ठ } पुं [द्विपृष्ठ, द्विविष्टप] १ भरत-
दुविट्ठु } क्षेत्र में इस अवसर्पिणी काल में उत्पन्न द्वितीय अर्ध-चक्री राजा (सम १५८ टी, पउम ५, १५५)। २ भरत-क्षेत्र में उत्पन्न होनेवाला आठवाँ अर्ध-चक्री राजा, एक वासुदेव (सम १५४)।

दुविभज्ज वि [दुर्विभाज्य] जिसका विभाग करना कठिन हो वह—परमाणु (ठा ५,१—पत्र २९६)।

दुविभव्व देखो दुव्विभव्व (ठा ५, १ टी)।

दुवियड्ढ वि [दुर्विदग्ध] दुशिक्षित, जानकारी का झूठा अभिमान करनेवाला (उप ८३३ टी)।

दुवियप्प पु [दुर्विकल्प] दुष्ट वितर्क (भवि)।

दुविलय पुं [दुविलक] एक अनार्य देश, 'दु (? दु) विलय-लउसबुक्कस—' (पव २७४)।

दुविह वि [द्विविध] दो प्रकार का (हे १, ९४, नव ३)।

दुवीस स्त्रीन [द्वाविंशति] बाईस, २२ (नव २०, पड्)।

दुव्वण्ण } देखो दुवण्ण (पउम ४१, १७,
दुव्वन्न } पण्ह १, ४)।

दुव्वय न [दुर्व्रत] १ दुष्ट नियम। २ वि दुष्ट व्रत करनेवाला। ३ व्रत-रहित, नियम-वर्जित (ठा ४, ३, विपा १, १)।

दुव्वयण न [दुर्वचन] दुष्ट उक्ति, खराब वचन (पउम ३३, १०६, विसे ५२०, उव गा २९०)।

दुव्वल देखो दुब्बल (महा)।

दुव्वसण न [दुर्व्यसन] खराब आदत, बुरी आदत (सुपा १८४, ४८९, भवि)।

°कुमार पुं [°कुमार] एक देव-जाति (भग १६, १३)। °ण्णु वि [°ज्ञ] द्वीप के मार्ग का जानकार (उप ५६५)। °सागरपन्नत्ति स्त्री [°सागरप्रज्ञप्ति] जैन ग्रन्थ-विशेष, जिसमे द्वीपो और समुद्रो का वर्णन है (ठा ३, २—पत्र १२६)।

दीव पुं [द्वीप] सौराष्ट्र का एक नगर, दीव (पव ११?)।

दीवअ पुं [दे] कृकलास, गिरगिट (दे ५, ४१)।

दीवअ पु [दीपक] १ प्रदीप, दिया, चिराग, आलोक (गा २२२; महा)। २ वि दीपक, प्रकाशक, शोभा-कारक (कुमा)। ३ न छन्द-विशेष (अजि २६)।

दीवग पुं [दीपाङ्ग] प्रदीप का काम देनेवाले कल्पवृक्ष की एक जाति (ठा १०)।

दीवग देखो दीवअ = दीपक (श्रा ६, आवम)।

दीवड पुं [दे] जलजन्तु-विशेष, 'फुरंतसिप्पि-सपुड ममतमीनदीवडं' (सुर १०, १८८)।

दीवण न [दीपन] प्रकाशन (ओघ ७४)।

दीवणा स्त्री [दीपना] प्रकाश, 'श्रुओ सतगुण-दीवणाहिं' (स ६७५)।

दीवणिज्ज वि [दीपनीय] १ जठराग्नि को बढानेवाला (णाया १, १—पत्र १६)। २ शोभायमान, देदीप्यमान (पराण १७)।

दीवयं देखो दीव = दिव्।

दीवयत देखो दीव = दीपय्।

दीवायण पुं [द्वीपायन, द्वैपायन] एक प्राचीन ऋषि, जिसने द्वारका नगरी जलाने का निदान किया था, और जो आगामी उत्सर्पिणी काल में भरत-क्षेत्र में एक तीर्थंकर होगा (अत १५; सम १५४, कुप्र ६३)।

दीवि, दीविअ पुं [द्वीपिन्] व्याघ्र की एक जाति, चीता (गा ७६१, णाया १, १—पत्र ६५, पराह १, १)।

दीविअ वि [दीपित] १ जलाया हुआ (पउम २२, १७)। २ प्रकाशित (ओघ)।

दीविअग पुं [दीपिकाङ्ग] कल्प-वृक्ष की एक जाति जो अन्धकार को दूर करता है (पउम १०२, १२५)।

दीविआ स्त्री [दे] १ उपदेहिका, क्षुद्र कीट-विशेष। २ व्याध की हरिणी, जो दूसरे हरिणो के आकर्षण करने के लिए रखी जाती है (दे ५, ५३)। ३ व्याध-सबन्धी पिंजडे मे रखा हुआ तितिर पक्षी (णाया १, १७—पत्र २३२)।

दीविआ स्त्री [दीपिका] छोटा दिया, लघु प्रदीप (जीव ३)।

दीविच्चग वि [द्वैप्य] द्वीप में उत्पन्न, द्वीप मे पैदा हुआ (णाया १, ११—पत्र १७१)।

दीवी (अप) देखो देवी (रंभा)।

दीवी स्त्री [दीपिका] लघु प्रदीप, छोटा दिया, 'दीवि व्व तीइ वुद्धी' (श्रा १६)।

दीवूसव पु [दीपोत्सव] कार्तिक वदी अमावस, दीवाली, दीपावली (ती १६)।

दीसत, दीसमाण देखो दक्ख = दृश्।

दीह वि [दीर्घ] १ आयत, लम्बा (ठा ४, २, प्राप्र, कुमा)। २ पुं दो मात्रावाला स्वर-(पिंग)। ३ कोशल देश का एक राजा (उप पृ ५८)। °काय [°काय] अग्निकाय (आचा०अध्य० १—१—४)। °कालिगी स्त्री [°कालिकी] सज्ञा-विशेष, बुद्धि-विशेष, जिससे सुदीर्घ भूतकाल की बातो का स्मरण और सुदीर्घ भविष्य का विचार किया जा सकता है (दं ३२, विसे ५०८)। °कालिय वि [°कालिक] १ दीर्घ काल से उत्पन्न, चिरतन; 'दीहकालिएण रोगातकेण' (ठा ३, १)। २ दीर्घकाल-सम्बन्धी (आवम)। °जत्ता स्त्री [°यात्रा] १ लम्बी सफर। २ मरण, मौत (स ७२६)। °डक्क वि [°दष्ट] जिसको साँप ने काटा हो वह (निचू १)। °णिद्दा स्त्री [°निद्रा] मरण, मौत (राज)। °दंत पुं [°दन्त] १ भारतवर्ष का एक भावी चक्र-वर्त्ती राजा (सम १५४)। २ एक जैनमुनि (अंत)। °दंसि वि [°दर्शिन्] दूरदर्शी, दूरन्देशी (सुर ३, ३, सं ३२)। °दसा स्त्री व. [°दशा] जैन ग्रथ-विशेष (ठा १०)। °दिट्ठि वि [°दृष्टि] १ दूरदर्शी, दूरन्देशी। २ स्त्री दीर्घ-दर्शिता (धर्म १)। °पट्ठ पुं [°पृष्ट] १ सर्प, साँप (उप पृ २२)। २ यवराज का एक मन्त्री (बृह १)। °पास पुं [°पार्श्व] ऐरवत क्षेत्र के सोलहवें भावी जिन-देव (पव ७)। °पेहि वि [°प्रेक्षिन्] दूर-दर्शी (पउम २६, २२, ३१, १०६)। °बाहु पुं [°बाहु] १ भरत-क्षेत्र मे होनेवाला तीसरा वासुदेव (मम १५४)। २ भगवान् चन्द्रप्रभ का पूर्व जन्मीय नाम (सम १५१)। °भद्द पुं [°भद्र] एक जैन मुनि (कप्प)। °मद्ध वि [°ध्व] लम्बा रास्तावाला (णाया १, १८, ठा २, १, ५, २—पत्र २४०)। °मद्ध वि [°द्ध] दीर्घकाल से गम्य (ठा ५,२—पत्र २४०)। °माउ न [°ायुष्] लम्बा आयुष्य (ठा १०)। °रत्त, °राय पुन [°रात्र] १ लम्बी रात। २ बहु रात्रिवाला, चिर-काल (सहि १७ राज)। °राय पु [°राज] एक राजा (महा)। °लोग पु [°लोक] वनस्पति का जीव (आचा)। °लोगसत्थ न [°लोक-शस्त्र] अग्नि, वह्नि (आचा)। °वेयड्ढ पुं [°वैताढ्य] स्वनाम ख्यात पर्वत (ठा २, ३—पत्र ६६)। °सुत्त न [°सूत्र] १ बडा सूता (निचू ५)। २ आलस्य, 'मा कुणसु दीहसुत्त परकज्जं सीयल परिगणतो' (पउम ३०, ६)। °सेण पु [°सेन] १ अनुत्तर-देवलोक-गामी मुनि-विशेष (अनु २)। २ इस अवसर्पिणी काल में उत्पन्न ऐरवत क्षेत्र के आ॰वें जिन-देव (पव ७)। °उ, °उय वि [°युष्, °युष्क] लम्बी उम्रवाला, बडी आयुवाला, चिरंजीवी (हे १, २०, ठा ३, १, पउम १४, ३०) °सण न [°सन] शय्या (ज १)।

दीह देखो दि॰॰ (कुमा)।

दीहंध वि [दिवसान्ध] दिन को देखने मे असमर्थ, 'रत्तिधा दीहंधा' (प्रासू १७६)।

दीहजीह पुं [दे] शख (दे ५, ४१)।

दीहपिट्ठ देखो दीह-पट्ठ (सिरि ६०५)।

दीहर देखो दीह = दीर्घ (हे २, १७१, सुर २, २१८, प्रासू ११३)। °च्छ वि [°क्ष] लम्बी आंखवाला, बड़े नेत्रवाला (सुपा १४७)।

दीहरिय वि [दीर्घित] लम्बा किया हुआ (गउड)।

दीहिया स्त्री [दीर्घिका] वापी, जलाशय-विशेष (सुर १, ६३, कप्पू)।

दीहीकर सक [दीर्घी + कृ] लम्बा करना। दीहीकरेंति (भग)।

दुस्सहिय वि [दुस्सोढ] दु ख से सहन किया हुआ (सूअ १, ३, १)।

दुस्सासण पुं [दुश्शासन] दुर्योधन का एक छोटा भाई, कौरव-विशेष (चारु १२, वेणी १०७)।

दुस्साहड वि [दुस्संहृत] दु ख से एकत्रित किया हुआ, 'दुस्साहड धरण हिच्चा बहु सचिणिया रय ' (उत्त ७, ८)।

दुस्साहिअ त्रि [दौस्साधिक] दुस्साध्य कार्य को करनेवाला (पि ८४)।

दुस्सिक्ख वि [दुश्शिक्ष] दुष्ट शिक्षावाला, दुश्शिक्षित, दुर्विदग्ध (उप १४६ टी, कुप्र २८३)।

दुस्सिक्खिअ पि [दुश्शिक्षित] ऊपर देखो (गा ६०३)।

दुस्सिज्जा स्त्री [दुश्शय्या] खराब शय्या (दस ८)।

दुस्सिलिट्ठ वि [दुश्श्लिष्ट] कुत्सित श्लेष-वाला (पि १३६)।

दुस्सील वि [दुश्शील] दुष्ट स्वभाववाला। २ व्यभिचारी (पराह १, १, सुपा ११०)। स्त्री °ला (पाम्र)।

दुस्सुमिण पुन [दुस्स्वप्न] दुष्ट स्वप्न, खराब स्वप्न—सपना (पराह १, २)।

दुस्सुय न [दुश्श्रुत] १ दुष्ट शास्त्र। २ वि. श्रुति-कटु (पराह १, २)।

दुस्सेज्जा देखो दुस्सिज्जा (उव)।

दुह सक [दुह्] दूहना, दूध निकालना। दुहेज्जह (महा)। कर्म दुहिज्जइ, दुब्भइ (हे ४, २४५) भवि दुहिहिइ, दुब्भिहिइ (हे ४, २४५)।

दुह सक [द्रुह्] द्रोह करना, द्वेष करना, वैर करना। दुहइ (विचार ६४७)।

दुह देखो दोह = दोह (राज)।

दुह देखो दुक्ख = दु ख (हे २, ७२, प्रासू २६, २८, १६२)। °अ वि [°द] दु ख देनेवाला, दु ख-जनक (सुपा ४३४)। °ट्ट वि [°आर्त] दु ख से पीडित (विपा १, १, सुपा ३३८)। °ट्टिय वि [°आर्तित] दु ख से पीडित (औप)। °ट्ट पु [°आर्थ] नरक-स्थान (सूअ १, ५, १)। °त्त देखो °ट्ट (उप पृ ७६, ७२८ टी)। °फास पु [°स्पर्श] दु ख-जनक स्पर्श (णाया १, १२)। °भागि वि [°भागिन्] दु ख मे भागीदार (सुपा ४३१)। °मच्चु पु [°मृत्यु] अपमृत्यु, अकाल मौत (सुर ८, ५३)। °विवाग पु [°विपाक] दु ख रूप कर्म-फल (विपा १, १)। °सिज्जा, °सेज्जा स्त्री [°शय्या] दु ख-जनक शय्या (ठा ४, ३)। °वह वि [°वह] दु ख-जनक (पउम ८२, ६१, सुर ८, १६२, प्रासू १६६)।

दुह° देखो दुहा (भग ८, ८)।

दुहअ वि [दे] चूर्णित, चूर-चूर किया हुआ (दे ५, ४५)।

दुहअ वि [दुर्हत] खराब रीति से मारा हुआ (आचा)।

दुहअ वि [द्विहत] दो से मारा हुआ (आचा)।

दुहअ देखो दुब्भग (षड्)।

दुहओ अ [द्विधातस्] दोनो तरफ से, उभय प्रकार से (आचा, ठा ५, ३, कस, भग, पुप्फ ४७०, श्रा २७)।

दुहड वि [द्विखण्ड] दो टुकडेवाला, 'किच्चेव विव (? णो) दुहड' (रभा)।

दुहग देखो दुब्भग (कम्म ३, ३)।

दुहट्ट वि [दुर्घट्ट] दुर्निरोध, दुर्वार (णाया १, ८)।

दुहण देखो दुघण (पराह १, १—पत्र १८)।

दुहण पु [द्रुहण] प्रहरण-विशेष, 'चम्मेट्ठ-°घणमोट्ठियमोग्गरवरफलिहजतपत्थरदुहणतोण-कुवेणी—' (पराह १, ३—पत्र ४४)।

दुहण न [दोहन] दोह, दोहना (पराह १, २)।

दुहदुहग पु [दुहदुहक] 'दुह-दुह' आवाज (राय १०१)।

दुहव देखो दूहव (पि ३४०, हे १, ११५ टी)। स्त्री. वी° (पि २३१)।

दुहा अ [द्विधा] दो प्रकार, दो तरफ, उभयथा (जी ८, प्रासू १४४)। °इअ वि [°कृत] जिसको दो खण्ड किये गये हो वह (प्राप्र, कुमा)।

दुहाकर सक [द्विधा + कृ] दो खण्ड करना। कर्म दुहाइज्जइ, दुहाकिज्जइ (प्राप्र, हे १, ९७)। वकृ. °कज्जमाण, °किज्जमाण (पि ५४७, ४३६)। सकृ °काउ (महा)।

दुहाव सक [छिद्] छेदना, छेदा करना, खण्डित करना। दुहावइ (हे ४, १२४)।

दुहाव सक [दुःखय्] दु खी करना, दुभाना, दुखाना (प्रामा)।

दुहावण वि [दुःखन] दु खी करनेवाला (सण)।

दुहाविअ वि [छिन्न] खण्डित (पाम्र, कुमा)।

दुहाविअ वि [दुःखित] दु खी किया हुआ (गउड)।

दुहि वि [दुःखिन्] दु खी, व्यथित, पीडित (उप ९८६ टी)। स्त्री °णी (कुमा)।

दुहिअ वि [दुःखित] पीडित, दु खयुक्त (हे २, १६४, कुमा, महा)।

दुहिअ वि [दुग्ध] जिसका दोहन किया गया हो वह (दे १, ७)। °दुज्झ वि [°दोह्य] एक बार दोहने पर फिर भी दोहने योग्य, फिर-फिर दोहने योग्य (दे १, ७, ५, ४६)।

दुहिआ [दुहितृ] लडकी, पुत्री (सुपा १७६, हे ३, ३५)। °दइअ पु [°दयित] जामाता (सुपा ४५७)।

दुहिण पुं [द्रुहिण] ब्रह्मा, चतुर्मुख, 'भवि दुहिणप्पमुहेहिं आणत्ती तुह अलघणिज्जपहावा' (अच्चु १६)।

दुहित्त पुं [दौहित्र] लडकी का लडका, नाती (उप पृ ७४)।

दुहित्तिया स्त्री [दौहित्रिका] लडकी की लडकी, नतिनी (उप पृ ७४)।

दुहित्ती स्त्री [दौहित्री] लडकी की लडकी, नतिनी या नातिन, 'पुत्तो तह दुहित्ती होइ य भज्जा सवक्की य' (श्रु ११७)।

दुहिदिआ (शौ) स्त्री [दुहितृ] लडकी, कन्या (प्राकृ ९५)।

दुहिल वि [द्रुहिल] द्रोही, द्रोह करनेवाला (विसे ९९९ टी)।

दू सक [दू] १ उपताप करना। २ काटना। कर्म 'दुज्जतु उच्छू' (पराह १, २)।

दूअ पु [दूत] दूत, संदेश-हारक (पाम्र, पउम ५३, ४३, ४६)।

११२)। °विह वि [°विह] दुःख-प्रद (पउम १५, १००)। °ासिया स्त्री [°ासिका] वेदना, पीडा (ठा ३, ४)। देखो दुह = दुःख।

दुक्ख न [दे] जघन, स्त्री के कमर के पीछे का भाग चूतड़ (दे ५, ४२)।

दुक्ख अक [दुःखाय्] १ दुखना, दर्द होना। २ सक. दुःखी करना, 'सिरं में दुक्खेइ' (स ३०४)। दुक्खामि (से ११, १२७)। दुक्खति (सूत्र २, २, ५५)।

दुक्खड देखो दुक्कर (चारु २३)।

दुक्खण न [दुःखन] दुखना, दर्द होना (उप ७५१, सूत्र २, २, ५५)।

दुक्खम वि [दुःक्षम] १ असमर्थ। २ अशक्य (उत्त २०, ३१)।

दुक्खर देखो दुक्कर (स्वप्न ६६)।

दुक्खरिय पुं [दुष्करिक] दास, नौकर (निचू १६)।

दुक्खरिया स्त्री [दुष्करिका] १ दासी, नौकरानी (निचू १६)। २ वेश्या, वाराङ्गना (निचू १)।

दुक्खल्लिय (अप) वि [दुःखित] दुःख-युक्त (भवि)।

दुक्खविअ वि [दुःखित] दुःखी किया हुआ (उप ६३४, भवि)।

दुक्खाव सक [दुःखय्] दुःख उपजाना, दुःखी करना। दुक्खावेइ (पि ५५६)। वकृ दुक्खावेंत (पउम ५८, १८)। कवकृ दुक्खाविज्जंत (श्रावम)।

दुक्खावणया स्त्री [दुःखना] दुःखी करना, दर्द उपजाना (भग ३, ३)।

दुक्खि वि [दुःखिन्] दुःखी, दुःखयुक्त (आचा)।

दुक्खिअ वि [दुःखित] दुःख-युक्त, दुखिया (हे २, ७२, प्राप्र, प्रासू ६३, महा, सुर ३, १६१)।

दुक्खुत्तर वि [दुःखोत्तार] जो दुःख से पार किया जाय, जिसको पार करने में कठिनाई हो (पण्ह १, १)।

दुक्खुत्तो अ [द्विस्] दो वार, दो दफा (ठा ५, २—पत्र ३०८)।

दुक्खुर देखो दुखुर (पि ४३६)।

दुक्खुल देखो दुकुल (प्रवि २१)।

दुक्खोह पुं [दुःखौघ] दुःख-राशि (पउम १०३, १५५, सुपा १६१)।

दुक्खोह वि [दुःक्षोभ] कष्ट-क्षोभ्य, सुस्थिर (सुपा १६१, ६२६)।

दुखड वि [द्विखण्ड] दो टुकडेवाला (उप ९८६ टी, भवि)।

दुखुत्तो देखो दुक्खुत्तो (कस)।

दुखुर पुं [द्विखुर] दो खुरवाला प्राणी, गौ, भैंस आदि (पण्ण १)।

दुग न [द्विक] दो, युग्म, युगल, जोडा (नव १०, सुर ३, १७, जी ३३)।

दुगंछ देखो दुगुंछ। वकृ दुगंछमाण (उत्त ४, १३)। कृ दुगछणिज्ज (उत्त १३, १९, पि ७४)।

दुगंछणा स्त्री [जुगुप्सना] घृणा, निन्दा (पउम ९५, ६५)।

दुगछा स्त्री [जुगुप्सा] घृणा, निन्दा (पाअ; कुप्र ४०७)। देखो दुगुछा।

दुगध देखो दुग्गंध (पउम ४१, १७)।

दुगच्छ } सक [जुगुप्स्] घृणा करना,
दुगुंछ } निन्दा करना। दुगच्छइ, दुगुंछइ (षड्, हे ४, ४)। वकृ. दुगुछत, दुगुंछ-माण (कुमा, पि ७४, २१५)। संकृ. दुगुछिउ (धर्म २)। कृ. दुगुंछणीय (पउम ४६, ६२)।

दुगसंपुण्ण न [द्विगसपूर्ण] लगातार वीस दिन का उपवास (सबोध ५८)।

दुगुंछग वि [जुगुप्सक] घृणा करनेवाला (आव ३)।

दुगुछण न [जुगुप्सन] घृणा, निन्दा (पि ७४)।

दुगुछणा देखो दुगंछणा (आचा)।

दुगुछा देखो दुगंछा (भग)। °कम्म न [°कर्मन्] देखो पीछे का अर्थ (ठा १०)। °मोहणीय न [°मोहनीय] कर्म-विशेष, जिसके उदय से जीव को अशुभ वस्तु पर घृणा होती है (कम्म १)।

दुगुछि वि [जुगुप्सिन्] घृणा करनेवाला, नफरत करनेवाला (उत्त २, ४, ६, ८)।

दुगुछिय वि [जुगुप्सित] घृणित, निन्दित (ओघ ३०२)।

दुगुदुग पुं [दौगुन्दुक] एक समृद्धि शाली देव (सुपा ३२८)।

दुगुच्छ देखो दुगुछ। दुगुच्छइ (हे ४, ४, षड्)। वकृ दुगुच्छत (पउम १०५, ७५)। कृ दुगुच्छणीय (पउम ८०, २०)।

दुगुण देखो दुउण (ठा २, ४, णाया १, १, दं ६, सुर ३, २१९)।

दुगुण सक [द्विगुणय्] दुगुना करना। दुगुणेइ (कुप्र २८५)।

दुगुणिअ देखो दुउणिअ (कुमा)।

दुगुल्ल } देखो दुअल्ल (हे १, ११९, कुमा,
दुगूल } सुर २, ८०, जं २)।

दुगोत्ता स्त्री [द्विगोत्रा] वल्ली विशेष (पण्ण १)।

दुग्ग न [दे] १ दुःख, कष्ट (दे ५, ५३, षड्, पण्ह १, ३)। २ कटी, कमर (दे ५, ५३)। ३ रण, संग्राम, युद्ध, 'आढत्तं च णेणिमं दुग्गं' (स ६३६)।

दुग्ग वि [दुर्ग] १ जहाँ दुःख से प्रवेश किया जा सके वह, दुर्गम स्थान (भग ७, ६ विपा १, ३)। २ जो दुःख से जाना जा सके (सूत्र १, ५, १)। ३ पुन. किला, गढ, कोट (सुपा १४८)। °नायग पु [°नायक] किले का मालिक (सुपा ४६०)।

दुग्गइ स्त्री [दुर्गति] १ कुगति, नरक आदि कुत्सित योनि (ठा ३, ३, ५, १, उत्त ७, १८, आचा)। २ विपत्ति, दुःख। ३ दुर्दशा, बुरी अवस्था। ४ कगालियत, दरिद्रता (पण्ह १, १, महा, ठा ३, ४, गच्छ २)।

दुग्गंठि स्त्री [दुर्ग्रन्थि] दुष्टग्रन्थि, गिरह, कठिन गाठ (पि ३३३)।

दुग्गंध पुं [दुर्गन्ध] १ खराब गन्ध। २ वि. खराव गन्धवाला, दुर्गन्धि (ठा ८—पत्र ४१८, सुपा २१, महा)।

दुग्गंधि वि [दुर्गन्धिन्] दुर्गन्धवाला (सुपा ४८७)।

दुग्गम वि [दुर्गम] जो कठिनाई से जाना जा सके वह (धर्मवि ४)।

दुग्गम } वि [दुर्गम] १ जहाँ दुःख से
दुग्गम्म } प्रवेश किया जा सके वह (पउम ४०, १३, ओघ ७५ भा), 'पडिवक्खनरिंद-

दूसिअ वि [दूषित] १ दूषण-युक्त, कलङ्क-युक्त (महा; भवि)। २ पु एक प्रकार का नपुंसक (वृह ४)।
दूसिआ स्त्री [दूषिका] आँख का मैल (कुमा)।
दूसुमिण देखो दुस्सुमिण (कुमा)।
दूहअ वि [दुःखक] दुःख-जनक, 'असईएं दूहओ चंदो' (वज्जा ९८)।
दूहट्ट वि [दे] लज्जा से उद्विग्न (दे ५, ४८)।
दूहय देखो दोधअ (सिरि ६६१)।
दूहल वि [दे] दुर्भग, मन्दभाग्य (दे ५, ४३)।
दूहव देखो दुब्भग (हे १, ११५, १९२; कुमा, सुपा ५९७, भवि)।
दूहव सक [दुःखय्] दूभाना, दुःखी करना। दूहवेइ (सिरि १६७)।
दूहविअ वि [दुःखित] दुःखी किया हुआ दूभाया हुआ, 'किं केणवि दूहविया' (कुम्मा १२)।
दूहिअ वि [दुःखित] दुःख-युक्त (हे १, १३, संक्षि १७)।
दे अ इन अर्थों का सूचक अव्यय। १ संमुख-करण। २ सखी को आमन्त्रण (हे २, १९२)।
दे अ [दे] पाद-पूरक अव्यय (प्राकृ ८१)।
देअ देखो देव (मुद्रा १९१, चंड)।
देअर देखो दिअर (कुमा, काप्र २२४, महा)।
देअराणी स्त्री [देवरपत्नी] देवरानी, पति के छोटे भाई की वहू (दे १, ५१)।
देई देखो देवी (नाट—उत्त १८)।
देउल न [देवकुल] देव-मन्दिर (हे १, १७१, कुमा)। °णाह पु [°नाथ] मन्दिर का स्वामी (पड्)। °वाडय पुन [°पाटक] मेवाड का एक गाँव, 'देउलवाडयपत्तं तुट्टण-सीलं च अइमहग्घं' (वज्जा ११६)।
देउलिअ वि [दैवकुलिक] देव स्थान का परिपालक (ओघ ४० भा)।
देउलिआ स्त्री [देवकुलिका] छोटा देव-स्थान (उप पृ ३९९, ३२० टी)।
देंत देखो दा = दा।
देक्ख सक [दृश्] देखना, अवलोकन करना। देक्खइ (हे ४, १८१)। वकृ देक्खत (अभि १४१)। संकृ. देक्खिअ (अभि १६६)।
देक्खालिअ वि [दर्शित] दिखाया हुआ, बतलाया हुआ (सुर १, १५२)।
देख (अप) देखो देक्ख। देखइ (भवि)।
देट्ठ देखो दिट्ठ = दृष्ट (प्रति ४०)।
देण्ण देखो दइण्ण (णाया १, १—पत्र ३३)।
देपाल पु [देवपाल] एक मन्त्री का नाम (ती २)।
देप्प देखो दिप्प = दीप्। वकृ—देप्पमाण (कुप्र ३४४)।
देय }
देयमाण } देखो दा = दा।
देर देखो दार = द्वार (हे १, ७९, २, १७२; दे ६, ११०)।
देव उभ [दिव्] १ जीतने की इच्छा करना। २ पण करना। ३ व्यवहार करना। ४ चाहना। ५ आज्ञा करना। ६ अव्यक्त शब्द करना। ७ हिंसा करना। देवइ (संक्षि ३३)।
देव पुंन [देव] १ अमर, सुर, देवता, 'देवाणि, देवा' (हे १, ३४, जी १९, प्रासू ८६)। २ मेघ। ३ आकाश। ४ राजा, नरपति, 'तहेव मेहं व नहं व माणवं न देव देवत्ति गिरं वएज्जा' (दस ७, ५२, मास ९६)। ५ पु. परमेश्वर, देवाधिदेव (भग १२, ९, दस ५, सुपा १३)। ६ साधु, मुनि, ऋषि (भग १२, ९)। ७ द्वीप-विशेष। ८ समुद्र विशेष (पण्ण १५)। ९ स्वामी, नायक (आचू ५)। १० पूज्य, पूजनीय (पचा १)। °उत्त वि [°उप्त] देव से बोया हुआ। २ देव-कृत, 'देवउत्ते अय लोए' (सूअ १, १, ३)। °उत्त वि [°गुप्त] १ देव से रक्षित (सूअ १, १, ३)। २ ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिनदेव (स १५४)। °उत्त पु [°पुत्र] देव-पुत्र (सूअ १, १, ३)। °उल न [°कुल] देव-गृह, देव-मन्दिर (हे १, २७१, सुपा २०१)। °उलिया स्त्री [°कुलिका] देहरी, छोटा देव-मन्दिर (कुप्र १४४)। °कन्ना स्त्री [°कन्या] देव-पुत्री (णाया १, ८)। °कहकहय पु [°कहकहक] देवताओं का कोलाहल (जीव ३)। °किब्बिस पु [°किल्बिष] चाण्डाल-स्थानीय देव-जाति (ठा ४, ४)। °किब्बिसिय पु [°किल्बिषिक] एक अधम देव-जाति (भग ९, ३३)। °किब्बिसीया स्त्री [°किल्बिषीया] देखो देवकिब्बिसिया (वृह १)। °कुरा स्त्री [°कुरा] क्षेत्र विशेष, वर्ष-विशेष (इक)। °कुरु पुं [°कुरु] वही अर्थ (पण्ह १, ४, सम ७०, इक)। °कुल देखो °उल (पि १६८, कप्प)। °कुलिय पु [°कुलिक] पुजारी (आवम)। °कुलिया देखो °उलिआ (कुप्र १४४)। °गइ स्त्री [°गति] देवयोनि (ठा ५, ३)। °गणिया स्त्री [°गणिका] देव-वेश्या, अप्सरा (णाया १, १६)। °गिह न [°गृह] देव-मन्दिर (सुपा, १३, ३४८)। °गुत्त पु [°गुप्त] १ एक परिव्राजक का नाम (औप)। २ एक भावी जिनदेव (तित्थ)। °चंद पु [°चन्द्र] एक जैन उपासक का नाम (सुपा ६३२)। सुप्रसिद्ध श्री हेमचन्द्राचार्य के गुरु का नाम (कुप्र १९)। °च्चय वि [°ार्चक] १ देव की पूजा करनेवाला। २ पु मन्दिर का पुजारी (कुप्र ४४१, ती १५)। °च्छंदग न [°च्छन्दक] जिनदेव का आसन (जीव ३, राय)। °जस पुं [°यशस्] एक जैन मुनि (अंत ३, सुपा ३४२)। °जाण न [°यान] देव का वाहन (पचा २)। °जिण पु [°जिन] एक भावी जिनदेव का नाम (पव ७)। °ड्ढि देखो देविड्ढि (ठा ३, ३, राज)। °णाअअ पु [°नायक] नीचे देखो (अच्चु ३७)। °णाह पु [°नाथ] १ इन्द्र। २ परमेश्वर, परमात्मा (अच्चु ६७)। °तम न [°तमस्] एक प्रकार का अन्धकार (ठा ४, २)। °त्थुइ, °थुइ स्त्री [°स्तुति] देव का गुणानुवाद (प्राप्र)। °दत्त पु [°दत्त] व्यक्तिवाचक नाम (उत ६, पिंड, पि ५६६)। °दत्ता स्त्री [°दत्ता] व्यक्ति-वाचक नाम (विपा १, १, ठा १०)। °दव्व न [°द्रव्य] देव-सम्बन्धी द्रव्य (कम्म १, ५६)। °दार न [°द्वार] देव-गृह विशेष का पूर्वीय द्वार, सिद्धायतन का एक द्वार (ठा ४, २)। °दारु पुं [°दारु] वृक्ष-विशेष, देवदार का पेड (पउम ५३, ७९)। °दाली स्त्री [°दाली] वनस्पति-विशेष, रोहिणी

दुज्झोसिअ वि [दुःक्षपित] कष्ट से नाशित (आचा)।

दुट्ठ वि [दुष्ट] दोष-युक्त, दूषित (ओघ १६२, पाअ, कुमा)। °प्प पु [°ात्मन्] दुष्ट जीव, पापी प्राणी (पउम ६, १३६, ७५, १२)।

दुट्ठ वि [दे. द्विष्ट] द्वेष-युक्त (ओघ ७५७, कस), 'अरत्तदुट्ठस्स' (कुप्र ३७१)।

दुट्ठाण न [दु स्थान] दुष्ट जगह (भग १६, २)।

दुट्ठु अ [दुष्ठु] खराब, असुन्दर (उप ५२० टी, निर १, १ सुपा ५१८, हे ४, ४०१)।

दुण्णय देखो दुन्नय (विक्र २७, आत्म)।

दुण्णाम न [दुर्नामन्] १ अपकीर्ति, अपयश। २ दुष्ट नाम, खराब आख्या। ३ एक प्रकार का गर्व (भग १२, ५)।

दुण्णिअ वि [दून] पीडित, दु खित (गा ११)।

दुण्णिअ देखो दुन्निय (राज)।

दुण्णिअत्थ न [दे] १ जघन पर स्थित वस्त्र। २ जघन, स्त्री के कमर के नीचे का भाग (दे ५, ५३)।

दुण्णिक्क वि [दे] दुश्चरित, दुराचारी (दे ५, ४५)।

दुण्णिक्कम वि [दुर्निष्क्रम] जहाँ से निकलना कष्ट-साध्य हो वह (राज ७, ६)।

दुण्णिक्खित्त वि [दे] १ दुराचारी। २ कष्ट से जो देखा जा सके (दे ५, ४५)।

दुण्णिक्खेव वि [दुर्निक्षेप] दु ख से स्थापन करने योग्य (गा १५४)।

दुण्णिवोह देखो दुन्निवोह (राज)।

दुण्णिमिअ वि [दुर्नियोजित] दु ख से जोडा हुआ (से १२, १६)।

दुण्णिमित्त न [दुर्निमित्त] खराब शकुन, अपशकुन (पउम ७०, ५)।

दुण्णिविट्ठ वि [दुर्निविष्ट] दुराग्रही, हठी, जिद्दी (निचू ११)।

दुण्णिसीहिया स्त्री [दुर्निषद्या] कष्ट-जनक स्वाध्याय-स्थान (पण्ह २, ५)।

दुण्णेय वि [दुर्ज्ञेय] जिसका ज्ञान कष्ट-साध्य हो वह (उवर १२८, उप ३२८)।

दुतितिक्ख वि [दुस्तितिक्ष] दुस्सह, जो दु ख से सहन किया जा सके वह (ठा ५,१)।

दुत्तर वि [दुस्तर] दुस्तरणीय, दुर्लंघ्य (सुपा ४७, ११५, मार्व ६१)।

दुत्तडी स्त्री [दुस्तटी] १ नदी। २ खराब किनारा वाली नदी (वम्म १२ टी)।

दुत्तव वि [दुस्तप] कष्ट से तपने योग्य, दु ख से करने योग्य (तप) (धर्मा १७)।

दुत्तार वि [दुस्तार] दु ख से पार करने योग्य, दुस्तर (से ३, २५, ६, १०)।

दुत्ति अ [दे] शीघ्र, जल्दी (दे ५, ४१, पाअ)।

दुत्तिइक्ख } दुत्तितिक्ख } देखो दुतितिक्ख (आचा, राज)।

दुत्तुड पु [दुस्तुण्ड] दुर्मुख, दुर्जन, (सुपा २८८)।

दुत्तोस वि [दुस्तोष] जिसको संतुष्ट करना कठिन हो वह (दस ५)।

दुत्थ न [दे] जघन, स्त्री की कमर के नीचे का भाग (दे ५, ४२)।

दुत्थ वि [दु स्थ] दुर्गत, दु स्थित (ठा ३, ३, भवि)।

दुत्थ न [दौ स्थ्य] दुर्गति, दु स्थता (सुपा २४४), 'नहि विधुरसहावा हुंति दुत्थेवि धीरा' (कुप्रा ५४)।

दुत्थिअ वि [दु स्थित] १ दुर्गत, विपत्ति-ग्रस्त (रयण ७५, भवि, सण)। २ निर्धन, गरीब (कुप्र १४६)।

दुत्थुरुहंड पुंस्त्री [दे] झगडाखोर, कलह-शील (दे ५, ४७)। स्त्री °डा (दे ५, ४७)।

दुत्थोअ पु [दे] दुर्भग, अभागा (दे ५, ४३)।

दुद्दंत वि [दुर्दान्त] उद्धत, दमन करने को अशक्य, दुर्दम, 'विसयपसत्ता दुद्दंतइंदिया देहिणो वहवे' (सुर ८, १३८, णाया १, ५, सुपा ३८०, महा)।

दुद्दस वि [दुर्दर्श] दुरालोक, जो कठिनाई से देखा जा सके (उत्तर १४१)।

दुद्दंसण वि [दुर्दर्शन] जिसका दर्शन दुर्लभ हो वह (गा ३०)।

दुद्दम वि [दुर्दम] १ दुर्जय, दुर्निवार (सुपा २४), 'दुद्दमकद्दमे' (श्रा १२)। २ पु राजा अश्वग्रीव का एक दूत (आक)।

दुद्दम पु [दे] देवर, पति का छोटा भाई (दे ५, ४४)।

दुद्दिट्ठ वि [दुर्दृष्ट] १ बुरी तरह से देखा हुआ। २ वि. दुष्ट दर्शनवाला (पण्ह १, २—पत्र २६)।

दुद्दिण न [दुर्दिन] बादलों से व्याप्त दिवस (ओघ ३६०)।

दुद्देय वि [दुर्देय] दु ख से देने योग्य (उप ६२४)।

दुद्दोलना स्त्री [दे] गौ, गैया (षड्)।

दुद्दोली स्त्री [दे] वृक्ष-पंक्ति, पेडों की कतार (दे ५, ४३, पाअ)।

दुद्ध न [दुग्ध] दूध, क्षीर (विपा १, ७)। °जाइ स्त्री [°जाति] मदिरा-विशेष, जिसका स्वाद दूध के जैसा होता है (जीव ३)। °समुद्द पु [°समुद्र] क्षीर-समुद्र, जिसका पानी दूध की तरह स्वादिष्ट है (गा ३८८)।

दुद्धंस वि [दुर्ध्वंस] जिसका नाश मुश्किल से हो (सुर १, १२)।

दुद्धगधिअमुह पु [दे] बाल, शिशु, छोटा लडका (दे ५, ४०)।

दुद्धगधिअमुही स्त्री [दे] छोटी लडकी (पाअ)।

दुद्धट्टी } दुद्धट्ठी } स्त्री [दे] १ प्रसूति के बाद तीन दिन तक का गो-दुग्ध (पभा ३२)। २ खट्टी छाछ से मिश्रित दूध (पव ४—गा २२८)।

दुद्धर वि [दुर्धर] १ दुर्वह, जिसका निर्वाह मुश्किल से हो सके वह (पण्ण १—पत्र ४, सुर १२, ५१)। २ गहन, विषम (ठा ६, भवि)। ३ दुर्जय (कुमा)। ४ पुं. रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३०)।

दुद्धरिस वि [दुर्धर्ष] १ जिसका सामना कठिनता से हो सके, जीतने को अशक्य (पण्ह २, ५, कप्प)।

दुद्धवलेही स्त्री [दे] चावल का आटा डालकर पकाया जाता दूध (पव ४—गाया २२८)।

दुद्धसाडी स्त्री [दे] द्राक्षा मिलाकर पकाया जाता दूध (पव ४—गाया २२८)।

दुद्धिअ न [दे] कद्दू, लौकी; गुजराती में 'दूधी', (पाअ)।

दुद्धिणिआ } दुद्धिणी } स्त्री [दे] १ तैल आदि रखने का भाजन। २ तुम्बी (दे ५, ५४)।

देवकी देखो देवई। °णंदण पु [°नन्दन] श्रीकृष्ण (वेणी १८३)।
देवय वि [दैव्य] देव-सम्बन्धी (पव १२५)।
देवय न [दैवत] देव, देवता (सुपा १५७)।
देवय देखो देव = देव (महा, णाया १, १८)।
देवया स्त्री [देवता] १ देव, अमर (अभि ११७, अणु)। २ परमेश्वर, परमात्मा (पचा १)।
देवर देखो दिअर (हे १, १८६ सुपा ४८५)।
देवराणी देखो देअराणी (दे १, ५१)।
देवसिय वि [दैवसिक] दिवस-सम्बन्धी (ओघ ६३६, ६३६, सुपा ४१६)।
देवसिआ स्त्री [देवसिका] एक पतिव्रता स्त्री, जिसका दूसरा नाम देवसेना था (पुप्फ ६७)।
देविंद पु [देवेन्द्र] १ देवो का स्वामी, इन्द्र (हे ३, १६२, णाया, १, ८, प्रासू १०७)। २ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य और ग्रन्थकार (भाव २१)। °सूरि पु [°सूरि] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य और ग्रन्थकार (कम्म ३, २४)।
देविंदय पुं [देवेन्द्रक] देवविमान-विशेष (देवेन्द्र १२८)।
देविड्ढि स्त्री [देवर्द्धि] १ देव का वैभव। २ पु एक सुप्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार (कप्प)।
देविय वि [दैविक] देव-सम्बन्धी (सुर ४, २३६)।
देविल पु [देविल] एक प्राचीन ऋषि (सूअ १, ३, ४, ३)।
देवी स्त्री [देवी] १ देव-स्त्री (पचा २)। २ रानी, राज-पत्नी (विपा १, १, ५)। ३ दुर्गा, पार्वती (कप्पू)। ४ सातवें चक्रवर्त्ती और अठारहवें जिन-देव की माता (सम १५१, १५२)। ५ दशवें चक्रवर्ती की अग्र-महिषी (सम १५२)। ६ एक विद्याधर-कन्या (पउम ६, ४)।
देवीकय वि [देवीकृत] देवी से बनाया हुआ, 'अणिमिसणअणो सअलो जीए देवीकओ लोओ' (गा ५६२)।
देवुक्कलिआ स्त्री [देवोत्कलिका] देवो की ठठ, देवो की भीड़ (ठा ४, ३)।
देवेसर पु [देवेश्वर] इन्द्र, देवो का राजा (कुमा)।
देवोद पु [देवोद] समुद्र-विशेष (जीव ३, इक)।
देवोववाय पुं [देवोपपात] भरतक्षेत्र मे आगामी उत्सर्पिणी काल मे होनेवाले तेईसवें जिन-देव (सम १५४)।
देव्व देखो दिव्व = दिव्य (उप ९८६ टी)।
देव्व देखो दइव (गा १३२, महा, सुर ११, ४, अभि ११७), 'एमो य देव्वो णाम अणाराहणीओ विणएण' (म १२८)। °ज्ज, °ण्ण, °ण्णु वि [°ज्ञ] जोतिषी, ज्योतिष-शास्त्र को जाननेवाला (पड्, कप्पू)।
देव्वजाणुअ } देव्वण्णुअ } देखो देव्व-ज्ज (प्राकृ १८)।
देस पु [देश] एक सौ हाथ परिमित जमीन, 'हत्थसयं खलु देसो' (पिंड ३४८)। °देस पु [°देश] सौ हाथ से कम जमीन (पिंड ३४४)। °राग पु [°राग] देश-विशेष (आचा २, ५, १, ७)।
देस सक [देशय्] १ कहना, उपदेश देना। २ बतलाना। वकृ. देसयंत (सुपा ४८५, सुर १५, २४८)। संकृ. देसित्ता (हे १, ८८)।
देस पुं [देश] १ अंश, भाग (ठा २ २, कप्प)। २ देश, जनपद (ठा ५, ३, कप्प, प्रासू ४२)। ३ अवसर (विसे २०६३)। ४ स्थान, जगह (ठा ३, ३)। °कहा स्त्री [°कथा] जनपद-वार्ता (ठा ४, २)। °काल देखो °याल (विसे २०६३)। °जइ पुं [°यति] श्रावक, उपासक, जैन गृहस्थ (कम्म २ टी, श्राउ)। °ण्णु वि [°ज्ञ] देश की स्थिति को जाननेवाला (उप १७६ टी)। °भासा स्त्री [°भाषा] देश की बोली (बृह ६)। °भूसण पुं [°भूषण] एक केवलज्ञानी महर्षि (पउम ३९, १२२)। °याल पुं [°काल] प्रसग, अवसर, योग्य समय (पउम ११, ६३)। °राय वि [°राज] देश का राजा (सुपा ३५२)। °वगासिय देखो °विगासिय (सुपा ५६६)। °विरइ स्त्री [°विरति] श्रावक धर्म, जैन गृहस्थ का व्रत, अणुव्रत, हिसा आदि का आशिक त्याग (पंचा १०)। °विरय वि [°विरत] श्रावक, उपासक। २ न पांचवाँ गुण-स्थानक (पव २२)। °विराहय वि [°विराधक] व्रत आदि में आशिक दूषण लगानेवाला (भग ८, ६)। °विराहि वि [°विराधिन्] वही अर्थ (णाया १, ११—पत्र १७१)। °विगास न [°विकाश] श्रावक का एक व्रत (सुपा ५६२)। °विगासिय न [°विकाशिक] वही अर्थ (औप, सुपा ५६६)। °हिव पु [°धिप] राजा (पउम ६६ ५३)। °हिवइ पु [°धिपति] राजा (बृह ४)।
देस देखो वेस = द्वेष (रयण ३६)।
देसंतरिअ वि [देशान्तरिक] भिन्न देश का, विदेशी (उप १०३१ टी, कुप्र ४१३)।
देसग देखो देसय (द्र २६)।
देसण न [देशन] कथन, उपदेश, प्ररूपण (दं १)। २ वि. उपदेशक, प्ररूपक। स्त्री °णी (दस ७)।
देसणा स्त्री [देशना] उपदेश, प्ररूपण (राज)।
देसय वि [देशक] १ उपदेशक, प्ररूपक (सम १)। २ दिखलानेवाला, बतलानेवाला (सुपा १८६)।
देसराग वि [देशराग] 'देशराग' देश में बना हुआ, 'देसरागाणि वा' (आचा २, ५, १, ७)।
देसि वि [द्वेषिन्] द्वेष करनेवाला (रयण ३६)।
देसि } देसिअ } वि [देशिन्] १ अशी, आशिक, भागवाला (विसे २२४७)। २ दिखलानेवाला। ३ उपदेशक (विसे १४२५, भाम २८)।
देसिअ वि [देश्य, दैशिक] देश मे उत्पन्न, देश संबन्धी (उप ७६८ टी; अच्चु ६)। °सद्द पु [°शब्द] देशीभाषा का शब्द (वज्जा ६)।
देसिअ वि [देशित] १ कथित, उपदिष्ट। २ उपदर्शित (दं २२, प्रासू ५२, १३३, भवि)।
देसिअ वि [दैशिक] बृहत्क्षेत्र-व्यापी, विस्तीर्ण (आचा २, १, ३, ७)।
देसिअ वि [देशिक] १ पथिक, मुसाफिर (पउम २४, १६, उप पृ ११५)। २ उपदेष्टा, गुरु (विसे १४२५)। ३ प्रोषित, प्रवास

दुप्पधस वि [दुष्प्रधर्ष] दुर्धर्ष, दुर्जय (उत्त ६, पि ३०५)।

दुप्पमज्जण न [दुष्प्रमार्जन] ठीक-ठीक सफा नहीं करना (धर्म ३)।

दुप्पमज्जिय वि [दुष्प्रमार्जित] अच्छी तरह से सफा नहीं किया हुआ (सुपा ६१७)।

दुप्पय देखो दुपय = द्विपद (सम ६०)।

दुप्पयार वि [दुष्प्रचार] जिसका प्रचार दुष्ट माना जाता है वह, अन्याय-युक्त (कप्प)।

दुप्परक्कन वि [दुष्पराक्रान्त] बुरी तरह से आक्रान्त (आचा)।

दुप्परिअल्ल वि [दे] १ अशक्य (दे ५, ५५, पाअ, से ४, २६, ६, १८, गा १२२)। २ द्विगुण, दुगुना। ३ अनभ्यस्त, अभ्यास-रहित (दे ५, ५५)।

दुप्परिइअ वि [दुष्परिचित] अपरिचित (से १३, १३)।

दुप्परिच्चिचय देखो दुपरिच्चिचय (उत्त ८)।

दुप्परिणाम वि [दुष्परिणाम] जिसका परिणाम खराब हो, दुर्विपाक (भवि)।

दुप्परिमास वि [दुष्परिमर्ष] कष्ट-साध्य स्पर्शवाला (से ६, २४)।

दुप्परियत्तण देखो दुप्परिवत्तण (तंदु)।

दुप्परिल्ल वि [दे] दुराकर्ष, 'आलिहिअ दुप्परिल्लपि णेह रएणं धणु वाहो' (गा १२२)।

दुप्परिवत्तण वि [दुष्परिवर्त्तन] १ जिसका परिवर्तन दु ख से हो सके वह। २ न दु ख से पीछे लौटना (तदु)।

दुप्पवंच पु [दुष्प्रपञ्च] दुष्ट प्रपच (भवि)।

दुप्पवण पुं [दुष्पवन] दुष्ट वायु (भवि)।

दुप्पवेस वि [दुष्प्रवेश] जहाँ कष्ट से प्रवेश हो सके वह (णाया १, १, पउम ४३, १२, स २५०, सुपा ४५५)। °तर वि [°तर] प्रवेश करने को अशक्य (पण्ह १, ३—पत्र ४५)।

दुप्पसह पु [दुष्प्रसह] पञ्चम आरे के अन्त में होनेवाला एक जैन आचार्य, एक भावी जैन सूरि (उप ८०६)।

दुप्पस्स वि [दुर्दर्श] जो मुश्किल से दिखलाया जा सके वह (ठा ५, १ टी—पत्र २६६)।

दुप्पहस वि [दुष्प्रध्वंस्य] जिसका नाश कठिनाई से हो सके वह (णाया १, १८—पत्र २३६)।

दुप्पहंस वि [दुष्प्रधृष्य] अजेय, दुर्जय (णाया १, १८)।

दुप्पह वि [दुष्प्रभ] जो दु ख से सूझ सके वह, दुर्गम (मोह ७२)।

दुप्पाय न [दुष्प्राप] तप-विशेष, आयंबिल तप (सबोध ५८)।

दुप्पिउ पु [दुष्पितृ] दुष्ट पिता (सुपा ३८७, भवि)।

दुप्पिच्छ देखो दुपेच्छ (सुर २, ५, सुपा ६२)।

दुप्पिय वि [दुष्प्रिय] अप्रिय। °भासि वि [°भाषिन्] अप्रिय-वक्ता (सुपा ३१४)।

दुप्पुत्त देखो दुपुत्त (पउम १०५, ७२, भवि, कुप्र ४०५)।

दुप्पूर वि [दुष्पूर] जो कठिनाई से पूरा किया जा सके (स १२३)।

दुप्पेक्ख देखो दुपेच्छ (सण)।

दुप्पेक्खणिज्ज वि [दुष्प्रेक्षणीय] कष्ट से दर्शनीय (नाट—वेणी २५)।

दुप्पेच्छ देखो दुपेच्छ (महा)।

दुप्पोलिय देखो दुप्पउलिअ (श्रा २१)।

दुप्फड वि [दुष्फट्] मुश्किल से फटने योग्य (श्रि ८३)।

दुप्फरिस, दुप्फास, दुफास वि [दुःस्पर्श] जिसका स्पर्श खराब हो वह (पउम २६, ४६, १०१, ७१, ठा ८, भग)।

दुफास वि [द्विस्पर्श] स्निग्ध और शीत आदि अविरुद्ध दो स्पर्शों से युक्त (भग)।

दुब्बद्ध वि [दुर्बद्ध] खराब रीति से बँधा हुआ (आचा २, ६, ३)।

दुब्बल वि [दुर्बल] निर्बल, बल-हीन (विपा १, ७, सुपा ६०३, प्रासू २३)। °पच्चय-मित्त पुन [°प्रत्ययमित्र] दुर्बल को मदद करनेवाला (ठा ६)।

दुब्बलिय वि [दुर्बलिक] दुर्बल, निर्बल (भग १२, २)। °पूसमित्त पुं [°पुष्यमित्र] स्वनाम प्रसिद्ध एक जैन आचार्य (ठा ७, ती ७)।

दुब्बलिय न [दौर्बल्य] श्रम, थाक, थकावट (आचा २, ३, २, ३)।

दुब्बुद्धि वि [दुर्बुद्धि] १ दुष्ट बुद्धिवाला, खराब नियतवाला (उप ७२८, सुपा ४४, ३७६)। २ स्त्री खराब बुद्धि, दुष्ट नियत (श्रा १४)।

दुब्बोल्ल पुं [दे] उपालम्भ उलहना या उलाहना (दे ५ ४२)।

दुब्भ वि [दुग्ध] दोहा हुआ। २ न दोहन (प्राकृ ७७)।

दुब्भ° देखो दुह = द्रुह्।

दुब्भग वि [दुर्भग] १ कमनसीब, अभागा। २ अप्रिय अनिष्ट (पण्ह १, २, प्रासू १४३)। °णाम, °नाम न [°नामन] कर्म-विशेष जिसके उदय से उपकार करनेवाला भी लोगो को अप्रिय होता है (कम्म १, सम ६७)। °करा स्त्री [°करा] दुर्भग बनानेवाली विद्या-विशेष (सूअ २, २)।

दुब्भग्ग न [दौर्भाग्य] दुर्भगता, लोक मे अप्रियता (पिंड ५०२)।

दुब्भरणि स्त्री [दुर्भरणि] दु ख से निर्वाह, 'होउ अजणणी तेसिं दुब्भरणी पडउ तद्-दरस्सावि' (सुपा ३७०)।

दुब्भाव पुं [दुर्भाव] १ हेय पदार्थ (पउम ८६, ६६)। २ असद्-भाव, खराब-अभर, 'पिसुणेण व जेण कओ दुब्भावो' (सुर ३, १६)।

दुब्भाव पुं [द्विभाव] विभाग, जूदाई (सुर ३, १६)।

दुब्भाव पुं [द्विर्भाव] द्वित्व, दुगुनापन (चेइय ६६०)।

दुब्भासिय न [दुर्भाषित] खराब वचन (पउम ११८, ६७, पडि)।

दुब्भि पुंन [दुरभि] १ खराब गन्ध (सम ४१)। २ वि अशुभ, खराब अमुन्दर (ठा १)। ३ वि खराब गन्धवाला, दुर्गन्धि (आचा)। °गंध [°गन्ध] पूर्वोक्त ही अर्थ (ठा १, आचा, णाया १, १२)। °सद्द पुन. [°शब्द] खराब शब्द (णाया १, १२)।

दुब्भिक्ख पुन [दुर्भिक्ष] १ दुष्काल, अकाल, वृष्टि का अभाव (सम ६०, सुपा ३५८), 'आसन्ने रणरगे, मूढे मंते तहेव दुब्भिक्खे।

दोमणसिय वि [दौर्मनस्यिक] खिन्न, शोक-ग्रस्त (ठा ५, २—पत्र ३१३)।

दोमणस्स न [दौर्मनस्य] वैमनस्य, द्वेष, मन की दुष्टता (सूम्र २, २, ८२, ८३)।

दोमासिअ वि [द्वैमासिक] दो मास का (भग, सुर १४, २२८)। स्त्री. °आ (सम २१)।

दोमिय (अप) देखो दूमिअ = दावित (भवि)।

दोमिली स्त्री [दोमिली] लिपि-विशेष (राज)।

दोमुह त्रि [द्विमुख] १ दो मुँहवाला। २ पुं नृप-विशेष (महा)। ३ दुर्जन (गा २५३)।

दोर पु. [दे] १ डोरा, धागा, सूत (पउम ४, ५०, कुप्र २२६, सुर ३, १४१)। २ छोटी रस्सी (ओघ २३२, ६४ भा)। ३ कटि-सूत्र (दे ५, ३८)।

दोरिया देखो दोरी (सिरि ६३)।

दोरी स्त्री [दे] छोटी रस्सी (श्रा १६)।

दोल अक [दोलय्] १ हिलना। २ झूलना। दोलइ (हे ४, ४८)। दोलति (कप्पू)।

दोलणय न [दोलनक] झूलन, अन्दोलन (दे ८, ४३)।

दोलया } स्त्री [दोला] झूला, हिंडोला (सुपा
दोला } २८६, कुमा)।

दोलाइय वि [दोलायित] १ हिला हुआ। २ सशयित (हेका ११६)।

दोलायमाण वि [दोलायमान] १ हिलता हुआ। २ संशय करता हुआ (सुपा ११७, गउड)।

दोलिया देखो दोला (सुर ३, ११६)।

दोलिर वि [दोलयितृ] झूलनेवाला (कुमा)।

दोव पु [दोव] एक अनार्य जाति (राज)।

दोवई स्त्री [द्रौपदी] राजा द्रुपद की कन्या, पाण्डव-पत्नी (णाया १, १६, उप ६४८ टी, पडि)।

दोवयण देखो दुवयण = द्विवचन (हे १, ६४, कुमा)।

दोवार (अप) देखो दुवार (सण)।

दोवारिअ } पु [दौवारिक] द्वारपाल, दर-
दोवारिय } वान, प्रतीहार (निचू ६, णाया १, १, भग ६, ५, सुपा ४२६)।

दोविह देखो दुविह (उत्त २, नव ३)।

दोवेली स्त्री [दे] सायकाल का भोजन (दे ५, ५०)।

दोव्वल देखो दोव्वल (से ४, ४२, ८, ८७)।

दोस देखो दूस = दूष्य (औप, उप ७६८ टी)।

दोस पुं [दोष] दूषण, दुर्गुण, ऐब (औप, सुर १, ७३, स्वप्न ६०, प्रासू १३)। °न्नु वि [°ज्ञ] दोष का जानकार, विद्वान् (पि १०५)। °ह वि [°घ] दोष-नाशक, 'कुव्वंति पोसह दोसह सुद्धं' (सुपा ६२१)।

दोस पुं [दे] १ अर्ध, आधा (दे ५, ५६)। २ कोप, क्रोध, गुस्सा (दे ५, ५६, पड्)। ३ द्वेष, द्रोह (औप, कप्प, ठा १, उत्त ६, सूम्र १, १६, पण्ण २३, सुर १, ३३, सण, भवि, कुप्र ३७१)।

दोस पुं [दोस] हाथ, हस्त, बाहु (से २, १)।

दोसणिज्जत पुं [दे] चन्द्र, चन्द्रमा, चांद (दे ५, ५१)।

दोसा स्त्री [दोषा] रात्रि, रात (सुर १, २१)।

दोसाकरण न [दे] कोप, क्रोध (दे ५, ५१)।

दोसाणिअ त्रि [दे] निर्मल किया हुआ (दे ५, ५१)।

दोसायर पु [दोषाकर] १ चन्द्र, चाँद (उप ७२८, टी, सुपा २७५)। २ दोषो की खान, दुष्ट (सुपा २७५)।

दोसारअण पुं [दे दोषारत्न] चन्द्र, चाद (पड्)।

दोसासय पुं [दोषाश्रय] दोष-युक्त, दुष्ट (पउम ११७, ४१)।

दोसि वि [दोषिन्] दोषवाला, दोषी (कुप्र ४३८)।

दोसिअ पु [दौष्यिक] वस्त्र का व्यापारी (श्रा १२, वज्जा १६२)।

दोसिण [दे] देखो दोसीण (पण्ह २, ५)।

दोसिणा [दे] नीच देखो (ठा २, ४—पत्र ८६)। °भा स्त्री [°भा] चन्द्र की एक पट-रानी (ठा ४, १, इक, णाया २)।

दोसिणी स्त्री [दे दोषिणी] ज्योत्स्ना, चन्द्र-प्रकाश (दे ५, ५०), 'ससिजुण्हा दोसिणी जत्थ' (कुप्र ४३८)।

दोसियण्ण न [दोषिकान्न] बासी अन्न (राज)।

दोसिल्ल वि [दोषवत्] दोष-युक्त (धम्म ११ टी)।

दोसिल्ल वि [दे] द्वेष-युक्त, द्वेषी (विसे १११०)।

दोसीण न [दे] रात का बासी अन्न (पण्ह २, ५, ओघ १४५)।

दोसील वि [दुश्शील] दुष्ट स्वभाववाला (पव ७३)।

दोसोलह त्रि व. [द्विषोडशन्] बत्तीस, ३२ (कप्पू)।

दोह सक [द्रुह्] द्रोह करना। वकृ दोहंत (संबोध ४)।

दोह पं. [दोह] दोहन (दे २, ६४)।

दोह वि [दोह्य] दोहने योग्य (भाम ८६)।

दोह पुं [द्रोह] ईर्ष्या, द्वेष (प्राप्र, भवि)।

दोहग्ग न [दौर्भाग्य] दुष्ट भाग्य, दुरदृष्ट, कमनसीबी (पण्ह १, ४ सुर ३, १७४, गा २१२)।

दोहग्गि वि [दौर्भागिन्] दुष्ट भाग्यवाला, कमनसीब, मन्द-भाग्य (श्रा १६)।

दोहण न [दोहन] दोहना, दूध निकालना (पण्ह १, १)। °वाडण न [°पाटन] दोहन-स्थान (निचू २)।

दोहणहारी स्त्री [दे] १ दोहनेवाली स्त्री (दे १, १०८, ५, ५६)। २ पनिहारी, पानी भरनेवाली स्त्री, पनहारिन (दे ५, ५६)।

दोहणी स्त्री [दे] पंक, कादा, कर्दम (दे ५, ४८)।

दोहय वि [दोहक] दोहनेवाला, (गा ४६२)।

दोहय वि [द्रोहक] द्रोह करनेवाला, ईर्ष्यालु (उप ३५७ टी, भवि)।

दोहल पुं [दोहद] गर्भिणी स्त्री का मनोरथ (हे १, २१७; २२१, कप्प)।

दोहा अ [द्विधा] दो प्रकार (हे १, ६७)।

दोहाइअ वि [द्विधाकृत] जिसका दो खण्ड किया गया हो वह (हे १, ६७ कुमा)।

दोहासल न [दे] कटी-तट, कमर (दे ५, ५०)।

दोहि वि [दोहिन्] झरनेवाला, टपकनेवाला (गा ६३६)।

दुरणुचर वि [दुरनुचर] जिसका अनुष्ठान कठिनता से हो सके वह, दुष्कर 'एसो जईण धम्मो दुरणुचरो मदसत्ताण' (सुर १४, ७५, ठा ५, १—पत्र २६६, णाया १, १)।

दुरणुपाल वि [दुरनुपाल] जिसका पालन कष्ट-साध्य हो (उत्त २३)।

दुरप्प पुं [दुरात्मन्] दुष्ट आत्मा, दुर्जन (उव, महा)।

दुरब्भास पुं [दुरभ्यास] खराब आदत (सुपा १६७)।

दुरभि देखो दुब्भि (अणु, पउम २६, ५०, १०२, ४४, पण्ह २, ५, आचा)।

दुरभिगम वि [दुरभिगम] १ जहाँ दु ख से गमन हो सके वह, कष्ट-गम्य (ठा ३, ४)। २ दुर्बोध, कष्ट से जो जाना जा सके (राज)।

दुरमच्च पुं [दुरमात्य] दुष्ट मंत्री (कुप्र २६१)।

दुरवगम वि [दुरवगम] दुर्बोध (कुप्र ४८)।

दुरवगम्म देखो दुरवगम (चेइय २५६)।

दुरवगाह वि [दुरवगाह] दुष्प्रवेश, जहाँ प्रवेश करना कठिन हो वह (हे १, २६, सम १४५)।

दुरस वि [दूरस] खराब स्वादवाला (भग, णाया १, १२, ठा ८)।

दुरसण पु [द्विरसन] १ सर्प, साँप। २ दुर्जन, दुष्ट मनुष्य (सुपा ५१७)।

दुरहि देखो दुरभि (उप ७२८ टी, तदु)।

दुरहिगम देखो दुरभिगम (सम १४५, विसे ६०६)।

दुरहिगम्म वि [दुरभिगम्य] दु ख से जानने योग्य, दुर्बोध, 'अत्थगई वि अ नयवायगहणलीणा दुरहिगम्मा' (सम्म १६१)।

दुरहियास वि [दुरध्यास, दुरधिसह] दुस्सह, जो कष्ट से सहन किया जा सके (णाया १, १, आचा, उप १०३१ टी, स ६५७)।

दुराणण पु [दुरानन] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, ४५)।

दुराणुवत्त वि [दुरनुवर्त] जिसका अनुवर्तन कष्ट-साध्य हो वह (वव ३)।

दुराय न [द्विरात्र] दो रात (ठा ५, २, कस)।

दुरायार वि [दुराचार] १ दुराचारी, दुष्ट आचरणवाला (सुर २, १६३, १२, २२६, वेणी १७१)। २ पुं. दुष्ट आचरण (भवि)।

दुरायारि वि [दुराचारिन्] ऊपर देखो (भवि)।

दुराराह वि [दुराराध] जिसका आराधन दु ख से हो सके वह (कप्प)।

दुरारोह वि [दुरारोह] जिस पर दु ख से चढा जा सके वह, दुरध्यास (उत्त २३, गा ४६८)।

दुरालोअ पु [दे] तिमिर, अन्धकार (दे ५, ४६)।

दुरालोअ वि [दुरालोक] जो दु ख से देखा जा सके, देखने को अशक्य (से ४, ८, कुमा)।

दुरालोयण वि [दुरालोकन] ऊपर देखो, 'दुरालोयणो दुम्मुहो रत्तनेत्तो' (भवि)।

दुरावह वि [दुरावह] दुर्धर, दुर्वह (पउम ६८, ६)।

दुरास वि [दुराश] १ दुष्ट आशावाला। २ खराब इच्छावाला (भवि, सक्षि १६)।

दुरासय वि [दुराशय] दुष्ट आशयवाला (सुपा १३१)।

दुरासय वि [दुराश्रय] दु ख से जिसका आश्रय किया जा सके वह, आश्रय करने को अशक्य (पण्ह १, ३, उत्त १)।

दुरासय वि [दुरासद] १ दुष्प्राप्य, दुर्लभ। २ दुर्जय। ३ दु सह (दस २, ६, राज)

दुरिअ न [दुरित] पाप (पाअ, सुपा २४३)।

दुरिअ न [दे] द्रुत, शीघ्र, जल्दी (षड्)।

दुरिआरि स्त्री [दुरितारि] भगवान् सभवनाथ की शासनदेवी (सति ६)।

दुरिक्ख वि [दुरीक्ष] देखने को अशक्य (कुमा)।

दुरिट्ठ न [दुरिष्ट] खराब नक्षत्र (दसनि १, १०५)।

दुरिट्ठ न [दुरिष्ट] खराब यज्न—याग (दसनि १, १०५)।

दुरुक्क वि [दे] थोडा पीसा हुआ, ठीक ठीक नही पीसा हुआ (आचा २, १, ८)।

दुरुदुल्ल सक [भ्रम्] १ भ्रमण करना, घूमना। २ गँवाई हुई चीज की खोज में घूमना। वकृ. दुरुदुल्लंत (सुर १५, २१२)।

दुरुत्त न [दुरुक्त] दुष्टोक्ति, दुष्ट वचन (सार्ध १०१)।

दुरुत्त वि [द्विरुक्त] १ दो वार कहा हुआ, पुनरुक्त। २ दो वार कहने योग्य (रभा)।

दुरुत्तर वि [दुरुत्तर] १ दुस्तर, दुर्लंघ्य (सूअ १, ३, २)। २ न. दुष्ट उत्तर, अयोग्य जवाब (हे १, १४)।

दुरुत्तर वि [द्वि-उत्तर] दो से अधिक। °सय वि [°शततम] एक सौ दो वाँ, १०२ वाँ (पउम १०२, २०४)।

दुरुत्तार वि [दुरुत्तार] दु ख से पार करने योग्य (सुपा २६७)।

दुरुद्धर वि [दुरुद्धर] जिसका उद्धार कठिनाई से हो वह (सूअ १, २, २)।

दुरुवणीय वि [दुरुपनीत] जिसका उपनय दूषित हो ऐसा (उदाहरण) (दसनि १)।

दुरुवयार वि [दुरुपचार] जिसका उपचार कष्ट-साध्य हो वह (तदु)।

दुरुव्वा स्त्री [दूर्वा] तृण विशेष, दूब (स १२४, उप ३१८)।

दुरुह सक [आ + रुह्] आरूढ होना, चढना। दुरुहइ (पि ११८, १३६)। वकृ दुरुहमाण (आचा २, ३, १)। सकृ दुरुहित्ता, दुरुहित्ताण, दुरुहेत्ता (भग, महा, पि ५८३, ४८२)।

दुरूढ वि [आरूढ] अधिरूढ, ऊपर चढा हुआ (णाया १, १, २, १, औप)।

दुरूव वि [दूरूप] १ खराब रूपवाला, कुरूप, कुडौल (ठा ८, श्रा १६)। २ मलमूत्र का कर्दम (सूत्रकृ० चूर्णी गा० ३१७)।

दुरूव वि [दूरूप] अशुचि आदि खराब वस्तु (सूअ १, ५, १, २०)।

दुरूह देखो दुरुह। सकृ दुरूहित्तु, दुरूहिया (सूअ १, ५, २, १५), 'जहा आसाविणिं नाव जाइअवो दुरूहिया' (सूअ १, ११, ३०)।

दुरूहण न [आरोहण] अधिरोहण, ऊपर चढ बैठना (स ५१)।

दुरेह पु [द्विरेफ] भ्रमर, भौंरा (पाअ, हे १, ९४)।

दुरोअर न [दुरोदर] जुआ, द्यूत (पाअ)।

दुरोदर देखो दुरोअर (कर्पूर २५)।

दव्व दुगुणं धणणंदी भणणइ' (दस १)। °णिहि पु [°निधि] खजाना, भण्डार (ठा ५ ३)। °त्थि वि [°र्थिन्] धन का अभिलाषी (रयण ३८)। °दत्त पु [°दत्त] १ एक सार्थवाह। २ तृतीय वासुदेव के पूर्व-जन्म का नाम (सम १५३, णंदि, आवम)। °देव पुं [°देव] १ एक सार्थवाह, मण्डिक-गणधर का पिता (आवम, आचू १)। २ धन्य सार्थवाह का एक पुत्र (णाया १, १८)। °पइ देखो °वइ (विपा २ १)। °पवर पु [°प्रवर] एक श्रेष्ठी (महा)। °पाल पु [°पाल] धन्य सार्थवाह का एक पुत्र (णाया १, १८)। देखो °वाल। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] कुण्डलवर द्वीप की राजधानी (दीव)। °मंत, °मग वि [°वत्] धनी, धनवान् (पिंग, हे २, १५६, चड)। °मित्त पु [°मित्र] एक जैनमुनि (पउम २०, १७१)। °य पु [°द] १ एक सार्थवाह (सुपा ५०६)। २ एक विद्याधर राजा, जो राजा रावण की मौसी का लड़का था (पउम ८, १२४)। ३ कुबेर (महा)। ४ वि धन देनेवाला, 'धणओ धणत्थिआण' (रयण ३८)। °रक्खिय पु [°रक्षित] धन्य सार्थवाह का एक पुत्र (णाया १, १८)। °वइ पु [°पति] १ कुबेर (णाया १, ४—पत्र ६६, उप पृ १८०, सुपा ३८)। २ एक राजकुमार (विपा २, ६)। °वई स्त्री [°वती] एक सार्थवाह-पुत्री (दस १)। °वंत, °वत्त देखो °मत (हे २, १५६, चड)। °वह पु [°वह] १ एक श्रेष्ठी (दस १)। २ एक राजा (विपा २, २)। °वाल देखो °पाल। २ राजा भोज के समकालिक एक जैन महाकवि (धण ५०)। °सचया स्त्री [°सचया] एक वणिग्-महिला (महा)। °सम्म पु [°शर्मन्] एक वणिक् (गच्छ ७)। °सिरी स्त्री [°श्री] एक वणिग्-महिला (आव ४)। °सेण पु [सेन] एक राजा (दस ४)। °ाल वि [°वत्] धनी (प्राप्र)। °विह वि [°विह] १ धन को धारण करनेवाला, धनी। २ पुं एक श्रेष्ठी (दस ४)। ३ एक राजा (विपा २, २)।

धणंजय पु [धनञ्जय] १ अर्जुन, मध्यम पाण्डव (वेणी ११०)। २ वह्नि, अग्नि। ३ सर्प-विशेष। ४ वायु-विशेष, शरीर-व्यापी पवन। ५ वृक्ष-विशेष (हे १, १७७, २, १८५, पड्)। ६ उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र का गोत्र (इक)। ७ पक्ष का नववाँ दिन (जो ४)। ८ श्रेष्ठि-विशेष (आव ४)। ९ एक राजा (आवम)।

धणि पुं [ध्वनि] शब्द, आवाज (विसे १५०)।

धणि स्त्री [ध्राणि] १ तृप्ति, सन्तोष (औप)। २ अतृप्ति उत्पन्न करने की शक्ति, भमिधणि-वितण्हयाई' (विसे १६५३)।

धणि वि [धनिन्] धनिक, धनवान् (हे २, १५६)।

धणिअ पुं [धनिक] यवन-मत का प्रवर्त्तक पुरुष-विशेष (मोह १०१, १०२)।

धणिअ वि [धनिक] १ पैसादार, धनी (दे १, १४८)। २ पु. मालिक, स्वामी (श्रा १४)।

धणिअ न [दे] अत्यन्त, गाढ, अतिशय (दे ५, ५८, औप, भग, महा, कप्प, सुर १, १७५, भत्त ७३, पच्च ८२, जीव ३, उत्त १, वव २, स ६६७)।

धणिअ वि [धन्य] धन्यवाद के योग्य, प्रशंसनीय, स्तुतिपात्र, 'जाण धणियस्स पुरओ निवडति रणम्मि असिघाया' (पउम ५६ २५, अच्चु ४२)।

धणिआ स्त्री [दे] १ प्रिया, भार्या, पत्नी (दे ५, ५८, गा ५८२, भवि)। २ धन्या, स्तुति-पात्र स्त्री (पड्)।

धणिट्ठा स्त्री [धनिष्ठा] नक्षत्र-विशेष (सम १०, १३, सुर १६, २४६, इक)।

धणी स्त्री [दे] भार्या, पत्नी। २ पर्याप्ति। ३ जो बँधा हुआ होने पर भी भय-रहित हो वह (दे ५, ६२), 'मयमेव मकणीए धणीए तं कंकणी बद्धा' (कुप्र १८५)।

धणु पुंन [धनुष्] १ धनुष, चाप, कार्मुक (षड्, हे १, २२)। २ चार हाथ का परिमाण (अणु, जी २६)। ३ पु. परमाधार्मिक देवों की एक जाति (सम २६)। °कुडिल न [कुटिलधनुष्] वक्र धनुष (राय)। °ग्गह पुं [°ग्रह] वायु-विशेष (बृह ३)। °द्धय पु [°ध्वज] नृप-विशेष (ठा ८)। °द्धर वि [°धर] धनुर्विद्या में निपुण, धानुष्क (राज, पउम ६, ८७)। °पिट्ठ न [°पृष्ट] १ धनुष का पृष्ठ-भाग। २ धनुष के पीठ के आकारवाला क्षेत्र (सम ७३)। °पुहत्तिया स्त्री [°पृथक्त्विका] दो कोस, गव्यूति (पण्ण १)। °वेअ, °व्वेअ पु [°वेद] धनुर्विद्या बोधक शास्त्र इषु-शास्त्र (उप ९८६ टी, सुपा २७०, जं ७)। °हर देखो °वर (भवि)।

धणु पुन [धनुस्] ज्योतिष प्रसिद्ध एक राशि (विचार १०६, सबोध ५४)। °ल्ल वि [°मन्] धनुषवाला (प्राकृ ३५)।

धणुक्क } ऊपर देखो (णंदि, अणु, हे १,
धणुह } २२, कुमा)।

धणुही स्त्री [धनुष] कार्मुक, 'विसाओ व धणुहीओ गुणवद्धाओवि पयइकुडिलाओ' (कुप्र २७४, स ३८१)।

धणेसर पु [धनेश्वर] एक प्रसिद्ध जैनमुनि और ग्रन्थकार (सुर १, २४६, १६, २५०)।

धण्ण पु [धन्य] १ एक जैनमुनि। २ 'अनुत्तरोपपातिकदशा' सूत्र का एक अध्ययन (अनु २)। ३ यक्ष-विशेष (विपा २, २)। ४ त्रि कृतार्थ। ५ धन-लाभ के योग्य। ६ स्तुति-पात्र, प्रशंसनीय। ७ भाग्यशाली, भाग्यवान् (णाया १, १, कप्प, औप)।

धण्ण देखो धन्न = धान्य (श्रा १८, ठा ५, ३, वव १)।

धण्णंतरि पु [धन्वन्तरि] १ राजा कनकरथ का एक स्वनाम ख्यात वैद्य (विपा १, ८)। २ देव-वैद्य (जय २)।

धण्णाउस वि [दे] १ जिसको आशीर्वाद दिया जाता हो वह। २ पु आशीर्वाद (दे ५, ५८)।

धत्त वि [दे] १ निहित, स्थापित (आवम)। २ पु वनस्पति-विशेष (जीव १)।

धत्त वि [धात्त] निहित, स्थापित (राज)।

धत्तरट्ठग पु [धार्तराष्ट्रक] हंस की एक जाति, जिसके मुँह और पाँव काले होते हैं (पण्ह १, १)।

दुव्वसु वि [दुर्वसु] अभव्य, खराब द्रव्य (आचा)। °मुणि पुं [°मुनि] मुक्ति के लिए अयोग्य साधु (आचा)।

दुव्वह वि [दुर्वह] दुर्धर, जिसका वहन कठिनाई से हो सके वह (स १६१, सुर १, १४)।

दुव्वा देखो दुरुव्वा (कुमा, सुर १, १३८)।

दुव्वाइ वि [दुर्वादिन्] अप्रियवक्ता (दस ६, २)।

दुव्वाय पुं [दुर्वाक्] दुर्वचन, दुष्ट उक्ति; 'वयणेणवि दुव्वाओ न य कायव्वो परस्स पीडयरो' (पउम १०३, १४३)।

दुव्वाय पु [दुर्वात] दुष्ट पवन (णमि ४)।

दुव्वार वि [दुर्वार] दुःख से रोकने योग्य, अवार्य (से १२, ६३, उप ६८६ टी, सुपा १९७, ४७१, अभि ११६)।

दुव्वारिअ देखो दुवारिअ = दौवारिक (प्राप्र)।

दुव्वाली स्त्री [दे] वृक्ष-पंक्ति (पाअ)।

दुव्वास पुं [दुर्वासस्] एक ऋषि (अभि ११८)।

दुव्विअड वि [दुर्विवृत] परिधान-वर्जित, नग्न, नगा (ठा ५, २—पत्र ३१२)।

दुव्विअड्ढ } वि [दुर्विदग्ध] ज्ञान का भूठा
दुव्विअड्ढ } अभिमान करनेवाला, दुरिशक्षित (पाअ, गा ६५)।

दुव्विजाणय वि [दुर्विज्ञेय] दुःख से जानने योग्य, जानने को अशक्य, 'अकुसलपरिणाममंदबुद्धिजणदुव्विजाणए' (पण्ह १, १)।

दुव्विढप्प वि [दुरर्ज] दुःख से अर्जन करने योग्य, कठिनाई से कमाने योग्य (कुप्र २३८)।

दुव्विणीअ वि [दुर्विनीत] अविनीत, उद्धत (पउम ६६, ३५, काल)।

दुव्विण्णाय वि [दुर्विज्ञात] असत्य रीति से जाना हुआ (आचा)।

दुव्विभज देखो दुविभज्ज (राज)।

दुव्विभव्व वि [दुर्विभाव्य] दुर्लक्ष्य, दुःख से जिसकी आलोचना हो सके वह (ठा ५, १ टी—पत्र २९६)।

दुव्विभाव वि [दुर्विभाव] ऊपर देखो (विसे)।

दुव्विलसिय न [दुर्विलसित] १ स्वच्छन्दी विलास। २ निकृष्ट कार्य्य, जघन्य काम, नीच काम (उप १३९ टी)।

दुव्विसह वि [दुर्विषह] अत्यन्त दुःसह, असह्य (गा १४८, सुर ३, १४४, १४, २१०)।

दुव्विसोज्झ वि [दुर्विशोध्य] शुद्ध करने को अशक्य (पंचा १७)।

दुव्विहिअ न [दुर्विहित] दुष्ट अनुष्ठान (दसचू १, १२)।

दुव्विहिय वि [दुर्विहित] १ खराब रीति से किया हुआ, 'दुव्विहियविलासिय विहिणो' (सुर ४, १५, ११, १४३)। २ अमुविहित, अयशस्वी (आव ३)।

दुव्वोज्झ वि [दुर्वाह्य] दुर्वह, दुःख से ढोने योग्य (से ३, ५, ४, ४४, १३, ६३, वज्जा ३८)।

दुव्वोज्झ वि [दे] दुर्घात्य, दुःख से मारने योग्य (से ३, ५)।

दुसंकड न [दुःसंकट] विषम विपत्ति (भवि)।

दुसचर देखो दुस्संचर (भवि)।

दुसथ वि [द्विःसस्थ] दो बार सुनने से ही उसे अच्छी तरह याद कर लेने की शक्तिवाला (धर्मसं १२०७)।

दुसन्नप्प वि [दुस्संज्ञाप्य] दुर्बोध्य (ठा ३, ४—पत्र १६५)।

दुसमदुसमा देखो दुस्समदुस्समा (भग ६, ७)।

दुसमसुसमा देखो दुस्समसुसमा (ठा १)।

दुसमा देखो दुस्समा (भग ६, ७, भवि)।

दुसह देखो दुस्सह (हे १, ११५, सुर १२, १३७, १३९)।

दुसाह वि [दुस्साध] दुःसाध्य, कष्ट-साध्य (पउम ८६, २२)।

दुसिक्खिअ वि [दुश्शिक्षित] दुर्विदग्ध (पउम २५, २१)।

दुसुमिण देखो दुस्सुमिण (पडि)।

दुसुरुल्लय न [दे] गले का आभूषण-विशेष (स ७६)।

दुस्स सक [द्विष्] द्वेष करना। वकृ. दुस्समाण (सूअ १, १२, २२)।

दुस्सउण न [दुश्शकुन] अपशकुन (णमि २०)।

दुस्संचर वि [दुस्संचर] जहाँ दुःख से जाया जा सके, दुर्गम (स २३१, सक्षि १७)।

दुस्सचार वि [दुस्संचार] ऊपर देखो (सुर १, ६६)।

दुस्संत पुं [दुष्यन्त] चन्द्रवंशीय एक राजा, शकुन्तला का पति (पि ३२९)।

दुस्सबोह वि [दुस्सबोध] दुर्बोध्य (आचा)।

दुस्सज्झ वि [दुस्साध्य] दुष्कर (सुपा ८, ५९९)।

दुस्सणप्प देखो दुसन्नप्प (वृह ४)।

दुस्सत्त वि [दुस्सत्त्व] दुरात्मा, दुष्ट जीव (पउम ८७, ९)।

दुस्सन्नप्प देखो दुसन्नप्प (कस)।

दुस्समदुस्समा स्त्री [दुष्षमदुष्षमा] काल-विशेष, सर्वाधम काल, अवसर्पिणी काल का छठवाँ और उत्सर्पिणी काल का पहला आरा, इसमे सब पदार्थों के गुणो की सर्वोत्कृष्ट हानि होती है, इसका परिमाण एक्कीस हजार वर्षो का है (ठा १, ६, इक)।

दुस्समदुसुसमा स्त्री [दुष्षमसुषमा] वेयालीस हजार कम एक कोटाकोटि सागरोपम का परिमाणवाला काल-विशेष, अवसर्पिणी काल का चतुर्थ और उत्सर्पिणी काल का तीसरा आरा (कप्प, इक)।

दुस्समा स्त्री [दुष्षमा] १ दुष्ट काल। २ एक्कीस हजार वर्षो के परिमाणवाला काल-विशेष, अवसर्पिणी-काल का पाँचवाँ और उत्सर्पिणी काल का दूसरा आरा (उप ६४८, इक)।

दुस्समाण देखो दुस्स।

दुस्सर पुं [दुःस्वर] १ खराब आवाज, कुत्सित कण्ठ। २ कर्म-विशेष, जिसके उदय से स्वर कर्ण-कटु होता है (कम्म १, २७; नव १५)। °णाम, °नाम न [°नामन्] दुःस्वर का कारण-भूत कर्म (पच, सम ६७)।

दुस्सल वि [दुश्शल] दुर्विनीत, अविनीत (वृह १)।

दुस्सह वि [दुस्सह] जो दुःख से सहन हो सके, असह्य (स्वप्न ७३, हे १, १३, ११५, पड्)।

धुरा (णाया १, ८)। °नायग देखो °णायग (भग)। °पडिमा स्त्री [°प्रतिमा] १ धर्म की प्रतिज्ञा। २ धर्म का साधन-भूत शरीर (ठा १)। °पण्णत्ति स्त्री [°प्रज्ञप्ति] धर्म की प्ररूपणा (उवा)। °पदिणी (शौ) स्त्री [°पत्नी] धर्म-पत्नी, स्त्री, भार्या (श्रभि २२२)। °पिवासय वि [°पिपासक] धर्म के लिए प्यासा (भग)। [°पिवासिय] वि [°पिपासित] धर्म की प्यासवाला (तदु)। °पुरिस पुं [°पुरुष] धर्म-प्रवर्तक पुरुष (ठा ३, १)। °पलज्जण वि [°प्ररञ्जन] धर्म में आसक्त (णाया, १, १८)। °प्पवाइ वि [°प्रवादिन्] धर्मोपदेशक (आचानि १, ४, २)। °प्पह पु [°प्रभ] एक जैन आचार्य (रयण ५८)। °प्पावाउय वि [°प्रावादुक] धर्म-प्रवादी, धर्मोपदेशक (आचानि १,१४,१)। °बुद्धि वि [°बुद्धि] धार्मिक, धर्म-मति। २ पृ एक राजा का नाम (उप ७२८ टी)। °मित्त पु [°मित्र] भगवान् पद्मप्रभ का पूर्वभवीय नाम (सम १५१)। °य वि [°द] धर्म-दाता, धर्म देशक (सम १)। °रुइ स्त्री [°रुचि] १ धर्म-प्रीति (धर्म २)। २ वि धर्म मे रुचि-वाला (ठा १०)। ३ पु. एक जैन मुनि (विपा १, १, उप ६४८ टी)। ४ वाराणसी का एक राजा (आवम)। °लाभ पुं [°लाभ] १ धर्म की प्राप्ति। २ जैन साधु द्वारा दिया जाता आशीर्वाद (सुर ८, १०६)। °लाभिअ वि [°लाभित] जिसको 'धर्मलाभ' रूप आशीर्वाद दिया गया हो वह (स ९६)। °लाह देखो °लाभ (स ३९)। °लाहण न [°लाभन] धर्मलाभ-रूप आशीर्वाद देना, 'कयं धम्मलाहणं' (स ४६९)। °लाहिअ देखो °लाभिअ (स १४८)। °वत वि [°वत्] धर्मवाला (आचा)। °वय पुं [°व्यय] धर्मार्थ दान, धर्मादा (सुपा ६१७)। °वि, °विउ वि [°वित्] धर्म का जानकार (आचा)। °विज्ज पुं [°वैद्य] धर्माचार्य (पचव १)। °व्वय देखो °वय (सुपा ६१७)। °सद्धा स्त्री [°श्रद्धा] धर्म-विश्वास (उत्त २९)। °सण्णा देखो °सन्ना (भग ७, ६)। °सत्थ न [°शास्त्र] धर्म प्रतिपादक शास्त्र (दस ४)। °सन्ना स्त्री [°संज्ञा] १ धर्म-विश्वास। २ धर्म-बुद्धि (पण्ह १, ३)। °सारहि पु [°सारथि] धर्मरथ का प्रवर्तक, धर्म-देशक (धण २७, पडि)। °साला स्त्री [°शाला] धर्म-स्थान (कप्प ३३)। °सील वि [°शील] धार्मिक (सूअ २, २)। °सीह पुं [°सिंह] १ भगवान् अभिनन्दन का पूर्व-भवीय नाम (सम १५१)। २ एक जैन मुनि (संथा ६९)। °सेण पुं [°सेन] एक बलदेव का पूर्वभवीय नाम (सम १५३)। °ाइगर वि [°ादिकर] धर्म का प्रथम प्रवर्तक। २ पु. जिन-देव (धर्म २)। °ाणुट्ठाण न [°ानुष्ठान] धर्म का आचरण (धर्म १)। °ाणुण्ण वि [°ानुज्ञ] धर्म का अनुमोदन करनेवाला (सूअ २, २, णाया १, १८)। °ाणुय वि [°ानुग] धर्म का अनुसरण करने-वाला (औप)। °ायरिय पु [°ाचार्य] धर्म-दाता गुरु (सम १२०)। °ावाय पु [°वाद] १ धर्म-चर्चा। २ बारहवां जैन अग-ग्रन्थ, दृष्टिवाद (ठा १०)। °ाहिगरणिय पुं [°ाधिकरणिक] न्यायाधीश, न्यायकर्त्ता (सुपा ११७)। °ाहिगारि वि [°ाधिका-रिन्] धर्म-ग्रहण के योग्य (धर्म १)।

धम्म वि [धर्म्य] धर्म-युक्त धर्म-सगत, 'जं पुण तुम कहेसि तमेव धम्मं' (महानि ४, द्र ४१)।

धम्मण पुं [दे] वृक्ष-विशेष (उप १०३१ टी, पउम ४२, ६)।

धम्ममाण देखो धम।

धम्मय पुं [दे] १ चार अगुल का हस्त-व्रण। २ चण्डी देवी की नर-बलि (दे ५, ६३)।

धम्मि वि [धर्मिन्] १ धर्म-युक्त, द्रव्य, पदार्थ। २ धार्मिक, धर्म-परायण (सुपा २९, ३३६, ५०९, वज्जा १०६)।

धम्मि वि [धर्म्मिन्] तर्कशास्त्र-प्रसिद्ध पक्ष (धर्मसं ९८)।

धम्मिअ } वि [धार्मिक] १ धर्म-तत्पर, धर्म-
धम्मिग } परायण (गा १६७, उप ८९२, पण्ह २, ४)। २ धर्म-सम्बन्धी (उप २६४, पचा ९)। ३ धार्मिक-सबन्धी (ठा ३, ४)।

धम्मिट्ठ वि [धर्मिष्ठ] अतिशय धार्मिक (औप सुपा १४०)।

धम्मिट्ठ वि [धर्मेष्ट] धर्म-प्रिय (औप)।

धम्मिट्ठ वि [धर्मीष्ट] धार्मिक जन को प्रिय (औप)।

धम्मिल्ल } पुंन [धम्मिल्ल] १ संयत केश,
धम्मेल्ल } बँधा हुआ केश, स्त्रियों के बांधे हुए बाल की 'पटिया या जूडा', बीच मे फूल रखकर ऊपर से मोतियो की या अन्य किसी रत्न की लडियो से बँधा हुआ केश-कलाप (प्राप्र, षड्, सक्षि ३)। २ पु. एक जैन मुनि (आव ६)।

धम्मीसर पु [धर्मेश्वर] अतीत उत्सर्पिणीकाल मे भरतवर्ष मे उत्पन्न एक जिन-देव (पव ७)।

धम्मुत्तर वि [धर्मोत्तर] १ गुणी, गुणो से श्रेष्ठ (आचू ५)। २ न धर्म का प्राधान्य, 'धम्मुत्तर वड्ढउ' (पडि)।

धम्मोवएसग } वि [धर्मोपदेशक] धर्म का
धम्मोवएसय } उपदेश देनेवाला (णाया १, १६, सुपा १७२, धर्म २)।

धय सक [धे] पान करना, स्तन-पान करना। वकृ धयंत (सुर १०, ३७)।

धय पुंस्त्री [ध्वज] ध्वजा, पताका (हे २, २७, णाया १, १६, पण्ह १, ४, गा ३४)। स्त्री. °या (पिंग)। °वड पु [°पट] ध्वजा का वस्त्र (कुमा)।

धय पु [दे] नर, पुरुष (दे ५, ५७)।

धयण न [दे] गृह, घर (दे ५, ५७)।

धयरट्ठ पुं [धृतराष्ट्र] हस पक्षी (पाअ)।

धर सक [धृ] १ धारण करना। २ पकड़ना। धरइ, धरेइ (हे ४, २३४, ३३६)। कर्म. धरिज्जइ (पि ५३७)। वकृ धरत, धरमाण (सण, भवि, गा ७९१)। कवकृ. धरत, धरेंत, धरिज्जत, धरिज्जमाण (से ११, १२७, १४, ८१, राज, पण्ह १, ४, औप)। संकृ धरिउं (कुप्र ७)। कृ. धरियव्व (सुपा २७२)।

धर सक [धरय्] पृथिवी का पालन करना। वकृ. धरंत (सुर २, १३०)।

धर न [दे] तूल, रूई (दे ५, ५७)।

धर पु [धर] १ भगवान् पद्मप्रभ का पिता (सम १५०)। २ मथुरा नगरी का एक राजा (णाया १, १६)। ३ पर्वत, पहाड (से ८, ६३, पाअ)।

°धर वि [°धर] धारण करनेवाला (कप्प)।

दूआ देखो धूआ (षड्)।

दूइ° देखो दूई। °पलासय न [°पलाशक] एक चैत्य (उवा)।

दूइज्ज सक [द्रु] गमन करना, विहरना, जाना। दूइज्जइ (श्राचा)। वकृ दूइज्जत, दूइज्जमाण (श्रौप, णाया १, १, भग, श्राचा, महा)। हेकृ दूइज्जित्तए (कस)।

दूइत्त न [दूतीत्व] दूती का कार्य, दूतीपन (पउम ५३, ४५)।

दूई स्त्री [दूती] १ दूत के काम मे नियुक्त की हुई स्त्री, समाचार-हारिणी, कुटनी (हे ४, ३६७)। २ जैन साधुओं के लिये भिक्षा का एक दोष (ठा ३, ४—पत्र १६६)। °पिंड पु [°पिण्ड] समाचार पहुँचाने से मिली हुई भिक्षा (श्राचा २. १, ६)। देखो दूइ°।

दूण वि [दून] हैरान किया हुआ, 'हा पिय-वयस दूढो (? णो) मए तुम' (स ७६३)।

दूण पुं [दे] हस्ती, हाथी (दे ५, ४४, षड्)।

दूण (अप) देखो दुउण (पिंग)।

दूणावेढ वि [दे] १ अशक्य। २ तडाग, तलाव, तालाव (दे ५, ५६)।

दूभ श्रक [दुःखय्] दूभना, दुःखित होना, 'तम्हा पुत्तोवि दूभिज्जा पहमिज्ज व दुज्जणो' (श्रा १२)।

दूभग देखो दुब्भग (णाया १, १६—पत्र १६६)।

दूभग्ग न [दौर्भाग्य] दुष्ट भाग्य, खराब नसीब (उप पृ ३१)।

दूम सक [दू, दावय्] परिताप करना, सताप करना। दूमइ, दूमेइ (सुपा ८, प्राप्र; हे ४, २३)। कर्म दूमिज्जइ (भवि)। वकृ. दूमेत (से १०, ६३)। कवकृ. दूमिज्जत (सुपा २६६)।

दूम देखो दुम = धवलय् (हे ४, २४)।

दूमक } वि [दावक] उपताप-जनक, पीडा-
दूमग } जनक (पण्ह १, ३, राज)।

दूमण वि [दावक] उपताप करनेवाला (सूम १, २, २, २७)।

दूमण न [दवन, दावन] परिताप, पीडन (पण्ह १, १)।

दूमण न [धवलन] सफेद करना (वव ४)।

दूमण देखो दुम्मण = दुर्मनस् (सूम १, २, २)।

दूमणाइअ वि [दुर्मनायित] जो उदास हुआ हो, उद्विग्न-मनस्क (नाट—मालती ६६)।

दूमिअ [दून, दावित] संतापित, पीडित (सुपा १०, १३३, २३०)।

दूमिअ वि [धवलित] सफेद किया हुआ (हे ४, २४, कप्प)।

दूयाकार न [दे] कला-विशेष (स ६०३)।

दूर न [दूर] १ अनिकट, असमीप, 'रुमेव जस्स कित्ती गया दूर' (कुमा)। २ अतिशय, अत्यन्त, 'दूरमहरं डसते' (कुमा)। ३ वि दूरस्थित, असमीपवर्ती (सूम १, २, २)। ४ व्यवहित, अन्तरित (गउड)। °ग वि [°ग] दूरवर्ती, असमीपस्थ (उप ६४८ टी, कुमा)। °गइ, °गइअ वि [°गतिक] १ दूर जानेवाला। सौधर्म श्रादि देवलोक मे उत्पन्न होनेवाला (ठा ८)। °तराग वि [°तर] अत्यन्त दूर (पण्ण १७)। °त्थ वि [°स्थ] दूरस्थित, दूरवर्ती (कुमा)। °भविय पुं [°भव्य] दीर्घ काल मे मुक्ति को प्राप्त करने की योग्यतावाला जीव (उप ७२८ टी)। °य देखो °ग (सूम १, ५, २)। °वत्ति वि [°वर्तिन्] दूर में रहनेवाला (पि ६४)। °ालइय वि [°ालयिक] मुक्ति-गामी (श्राचा)। °ालय पुं [°ालय] १ दूर-स्थित श्राश्रय। २ मोक्ष। ३ मुक्ति का मार्ग (श्राचा)।

दूरगइअ देखो दूर-गइअ (श्रौप)।

दूरतरिअ वि [दूरान्तरित] अत्यन्त व्यवहित (गा ६५८)।

दूरचर वि [दूरचर] दूर रहनेवाला (धम्मो १०)।

दूराय सक [दूराय्] दूरस्थित की तरह मालूम होना, दूरवर्ती मालूम पडना। वकृ दूरायमाण (गउड)।

दूरीकय वि [दूरीकृत] दूर किया हुआ (श्रा २८)।

दूरीहूअ वि [दूरीभूत] जो दूर हुआ हो (सुपा १५८)।

दूरुल्ल वि [दूरवत्] दूरस्थित, दूरवर्ती (श्राव ४)।

दूलह देखो दुल्लह (सक्षि १७)।

दूस श्रक [दुष्] दूषित होना, विकृत होना। दूसइ (हे ४, २३५, सक्षि ३६)।

दूस सक [दूषय्] दोषित करना, दूषण—दोष लगाना। दूसइ (भवि), दूसेइ (बृह ४)।

दूस न [दूष्य] १ वस्त्र, कपडा (सम १५१, कप्प)। २ तंबू, पट-कुटी (दे ५, २८)। °गणि पुं [°गणिन्] एक जैन आचार्य (णदि)। °मित्त पुं [°मित्र] मौर्यवंश के नाश होने पर पाटलिपुत्र मे अभिषिक्त एक राजा (राज)। °हर न [°गृह] तबू, पट-कुटी (स २६७)।

दूसअ वि [दूषक] दोष प्रकट करनेवाला (वज्जा ६८)।

दूसग वि [दूषक] दूषित करनेवाला (सुपा २७५, सं १२४)।

दूसग वि [दूषक] दूषण निकालनेवाला, दोष देखनेवाला (धर्मवि ८५)।

दूसण न [दूषण] दूषित करना (अज्झ ७३)।

दूसण न [दूषण] १ दोष, अपराध। २ कलक, दाग (तदु)। ३ पुं. रावण की मौसी का लडका (पउम १६, २५)। ४ वि. दूषित करनेवाला (स ५२८)।

दूसम वि [दुष्षम] १ खराब, दुष्ट। २ पु. काल-विशेष, पाँचवाँ आरा, 'दूसमे काले' (सट्ठि १५६)। °दूसमा देखो दुस्सम-दुस्समा (सम ३६, ठा १, ६)। °सुसमा देखो दुस्समसुसमा (ठा २, ३, सम ६४)।

दूसमा देखो दुस्समा (सम ३६, उप ८३३ टी, सं ३४)।

दूसर देखो दुस्सर (राज)।

दूसल वि [दे] दुर्भग, अभागा (दे ५, ४३, षड्)।

दूसह देखो दुस्सह (हे १, १३, ११५)।

दूसहणीअ वि [दुस्सहनीय] दुस्सह, असह्य (पि ५७१)।

दूसासण देखो दुस्सासण (हे १, ४३)।

दूसाहिअ वि [दौस्साधिक] दुसाध जाति मे उत्पन्न, अस्पृश्य जाति का (प्राकृ १०)।

दूसि पुं [दूषिन्] नपुसक का एक भेद, 'दोसुवि वेएसु सज्जए दूसी' (बृह ४)।

धसिअ वि [धसित] धसा हुआ (हम्मीर १३)।

धा सक [धा] धारण करना। धाइ, धाअइ धाअए (षड्)। कर्म, धीयए (पिंड)।

धा सक [ध्यै] ध्यान करना, चिन्तन करना। धाअंति (सक्षि ७६)।

धा सक [धाव्] १ दौड़ना। २ शुद्ध करना, धोना। धाइ, धाअइ (हे ४, २४०)। भवि धाहिइ (षड्)।

धाइअ वि [धावित] दौड़ा हुआ (से ८, ६८, भवि)।

धाइअसड देखो धायइ-संड, (महा)।

धाई देखो धत्ती (हे २, ८१, पव ६७)। ४ धाई का काम करने से प्राप्त की हुई भिक्षा (ठा ३, ४)। ५ छन्द-विशेष (पिंग)। °पिंड पुं [°पिण्ड] धाई का काम कर प्राप्त की हुई भिक्षा (पव ६७)।

धाई देखो धायई, (उप ६४८ टी)।

धाउ पुं [धातु] १ सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा, राँगा, सीसा और जस्ता ये सात वस्तु (जी ३)। २ गेरु, मनसिल आदि पदार्थ (से ४, ४, पण्ह १, २)। ३ शरीर-धारक वस्तु—कफ, वात, पित्त, रस, रक्त, माँस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र (औप, कुप्र १५८)। ४ पृथिवी, जल, तेज और वायु ये चार महाभूत (सूअ १, १, १)। ५ व्याकरण प्रसिद्ध शब्द-योनि, 'भू', 'पच्' आदि (अणु)। ६ स्वभाव, प्रकृति (स २४१)। ७ नाट्य-शास्त्र-प्रसिद्ध आलत्तिका-विशेष (कुमा २, ६६)। °य वि [°ज] १ धातु से उत्पन्न। २ वस्त्र-विशेष (पचभा)। ३ नाम, शब्द (अणु)। °वाइअ वि [°वादिक] औषधि आदि के योग से ताम्र आदि को सोना वगैरह बनानेवाला, किमियागर (कुप्र ३६७)।

धाउ पुं [धातृ] पणपन्नि नामक व्यन्तर देवों का एक इन्द्र (ठा २, ३)।

धाउसोसण न [धातुशोषण] आयंबिल तप (सवोध ५८)।

धाड अक [निर् + सृ] बाहर निकलना। धाडइ (हे ४, ७९)।

धाड सक [निर् + सारय्] बाहर निकालना। सक्र धाडिऊण (कुप्र ८३)। कवकृ. धाडिज्जंत (पउम १७, २८, ३१, ११६)।

धाड सक [ध्राट्] प्रेरणा करना। २ नाश करना। धाडेंति (सूअनि ७०)। कवकृ. धाडीयंत (पण्ह १, ३—पत्र ५४)।

धाडण न [ध्राटन] बाहर निकालना (वव ४)।

धाडण न [ध्राटन] १ प्रेरणा। २ नाश (औप)।

धाडय वि [दे ध्राटक] डाका डालनेवाला, 'धाडयपुरिसा हया तत्थ' (सिरि ११४६)।

धाडाविअ वि [निस्सारित] बाहर निकाली हुआ, निर्वासित (पउम २२, ८)।

धाडि वि [दे] निरस्त, निराकृत (दे ५, ५९)।

धाडिअ वि [निःसृत] बाहर निकला हुआ (कुमा)।

धाडिअ पुं [दे] आराम, बगीचा (दे ५, ५९)।

धाडिअ वि [निस्सारित] निर्वासित, बाहर निकाला हुआ (पउम १०१, ६०, स २९८, उप ७२८ टी)।

धाडी स्त्री [धाटी] १ डाकुओं का दल (सुर २, ४, प्रासू)। २ हमला, आक्रमण, धावा (कप्पू)।

धाण देखो धण्ण = धन्य (वज्जा ९०)।

धणा स्त्री [धाना] धनिया, एक प्रकार का मसाला (दे ७, ६९, प्रासू)।

धाणुक्क वि [धानुष्क] धनुर्धर, धनुर्विद्या मे निपुण (उप पृ ८६, सुर १३, १६२, वेणी ११४, कुप्र ४५२)।

धाणूरिअ न [दे] फल-भेद (दे ५, ६०)।

धाम पुन [धामन्] अहंकार, गर्व। २ रस आदि में लम्पटता। ३ वि. गर्व-युक्त। ४ रस आदि मे लम्पट (सवोध १६)।

धाम न [धामन्] बल, पराक्रम (आरा ९३, सण)।

धाय वि [ध्रात] १ तृप्त, संतुष्ट (ओघ ७७ भा, सुर २, ९७)। २ न. सुभिक्ष, सुकाल (बृह ५)।

धायइ° } स्त्री [धातकी] वृक्ष-विशेष, धाय
धायई } का पेड़ (पण्ण १, पउम ५३, ७९, ठा २, ३, सम १५२)। °खंड पुं [°खण्ड] स्वनाम-ख्यात एक द्वीप (ठा २, ३, अणु)। °संड पुं [°षण्ड] स्वनाम-ख्यात एक द्वीप (जीव ३, ठा ८, इक)।

धार सक [धारय्] १ धारण करना। २ करजा रखना। धारेइ (महा)। वकृ. धारंत, धारअंत, धारेमाण, धारयमाण, धारिंत (सुर ३, १८६, नाट—विक्र १०९, भग, सुपा २५४, २६४)। हेकृ. धारिउं, धारेत्तए, धारित्तए, (पि ५७३, कम, ठा ५, ३)। कृ. धारणिज्ज, धारणीय, धारेयव्व (णाया १, १, भग ७, ९, सुर १४, ७७, सुपा ४८२)।

धार न [धार] १ धारा-सबन्धी जल। २ वि धारण करनेवाला (राज)।

धार वि [दे] लघु, छोटा (दे ५, ५९)।

धारग वि [धारक] धारण करनेवाला (कप्प; उप पृ ७५, सुपा २५४)।

धारण न [धारण] १ धारने की अवस्था। २ ग्रहण। ३ रक्षण, रखना। ४ परिधान करना। ५ अवलम्बन (औप, ठा ३, ३)।

धारणा स्त्री [धारणा] १ मर्यादा, स्थिति (आवम)। २ विषय ग्रहण करनेवाली बुद्धि (ठा ८, दस ५)। ३ ज्ञात विषय का अविस्मरण (विसे २९१)। ४ अवधारण, निश्चय (आवम)। ५ मन की स्थिरता। ६ घर का एक अवयव, धरनी या धरन (भग ८, २)। °ववहार पुं [°व्यवहार] व्यवहार-विशेष (ठा ५, २)।

धारणा स्त्री [धारणा] मकान का खंभा, धरन (आचा २, २, ३, १ टी, पव १३३)।

धारणिज्ज देखो धार = धारय्।

धारणी स्त्री [धारणी] १ धारण करनेवाली (औप)। २ ग्यारहवें जिनदेव की प्रथम शिष्या (सम १५२)। ३ वसुदेव आदि अनेक राजाओं की रानी का नाम (अंत, आचू १, विपा २, १, णाया १, १)।

धारणीय देखो धार = धारय्।

धारय देखो धारग (ओघ १, भवि)।

धारयमाण देखो धार = धारय्।

(पराण १७—पत्र ५३०)। °दिण्ण, °दिन्न पु [°दत्त] व्यक्ति-वाचक नाम, एक सार्थवाह-पुत्र (राज, णाया १, २—पत्र ८३)। °दीव पु [°द्वीप] द्वीप-विशेष (जीव ३)। °दूस न [°दूष्य] देवता का वस्त्र, दिव्य वस्त्र (जीव ३)। °देव पुं [°देव] १ परमेश्वर, परमात्मा, (सुपा ५००)। २ इन्द्र, देवों का स्वामी (आचू ५)। °नट्टिया स्त्री [°नर्तिका] नाचनेवाली देवी, देव-नटी (अजि ३१)। °नयरी स्त्री [°नगरी] अमरावती, स्वर्ग-पुरी (पउम ३२, ३५)। °पडिक्खोभ पुं [°प्रति-क्षोभ] तमस्काय अन्धकार (भग ६, ५)। °पलिक्खोभ पु [°परिक्षोभ] कृष्ण-राजि (भग ६, ५)। °पव्वय पु [°पर्वत] पर्वत-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)। °प्पसाय पु [°प्रसाद] राजा कुमारपाल के पितामह का नाम (कुप्र ५)। °फलिह पुं [°परिघ] तमस्काय, अन्धकार (भग ६, ५)। °भद्द पुं [°भद्र] १ देव-द्वीप का अधिष्ठाता देव (जीव ३)। २ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य (सार्ध ८३)। °भूमि स्त्री [°भूमि] १ स्वर्ग, देवलोक। २ मरण, मृत्यु, 'अह अन्नया य सिट्ठी थिरदेवो देवभूमिमणुपत्तो' (सुपा ५८२)। °महाभद्द पु [°महाभद्र] देव-द्वीप का अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °महावर पु [°महावर] देव नामक समुद्र का अधिष्ठायक देव-विशेष (जीव ३, इक)। °रइ पु [°रति] एक राजा (भत्त १२२)। °रक्ख पु [°रक्ष] राक्षस-वंशीय एक राज-कुमार (पउम ५, १६६)। °रण्ण न [°अरण्य] तमस्काय, अन्धकार (ठा ४, २)। °रमण न [°रमण] १ सौभाञ्जनी नगरी का एक उद्यान (विपा १, ४)। २ रावण का एक उद्यान (पउम ४६, १७)। °राय पु [°राज] इन्द्र (पउम २, ३८, ४६, ३९)। °रिसि पु [°ऋषि] नारद मुनि (पउम ११, ६८, ७८, १०)। °लोअ, °लोग पु [°लोक] १ स्वर्ग (भग, णाया १, ४, सुपा ६१५, श्रा १६)। २ देव-जाति, 'कइविहा ण भंते देवलोगा पण्णत्ता? गोयमा चउव्विहा देवलोगा पण्णत्ता, तं जहा—भवणवासी, वाणमंतरा, जोइसिया, वेमाणिया' (भग ५, ९)। °लोगगमण न [°लोकगमन] स्वर्ग में उत्पत्ति, 'पाओवगमणाइ देवलोगगमणाइं कुसुलपच्चायाया पुणो बोहिलाभो' (सम १४२)। °वर पु [°वर] देव-नामक समुद्र का अधिष्ठायक एक देव (जीव ३)। °वहू स्त्री [°वधू] देवाङ्गना, देवी (अजि ३०)। °सणत्ती स्त्री [°संज्ञप्ति] १ देव-कृत प्रतिबोध। २ देवता के प्रतिबोध से ली हुई दीक्षा (ठा १०—पत्र ४७३)। °सण्णिवाय पुं [°सन्निपात] १ देव-समागम (ठा ३, १)। २ देव-समूह। ३ देवों की भीड़ (राय)। °सम्म पुं [°शर्मन्] १ इस नाम का एक ब्राह्मण (महा)। २ ऐरवत क्षेत्र मे उत्पन्न एक जिनदेव (सम १५३)। °साल न [°शाल] एक नगर का नाम (उप ७६८ टी)। °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] देवाङ्गना, देवी (अजि २८)। °सुय देखो °स्सुय (पव ७)। °सेण पु [°सेन] १ शतद्वार नगर का एक राजा, जिसका दूसरा नाम महापद्म था (ठा ९—पत्र ४५९)। २ ऐरवत क्षेत्र के एक जिनदेव (पव ७)। ३ भरत-क्षेत्र के एक भावी जिनदेव के पूर्वभव का नाम (ती १९)। ४ भगवान् नेमिनाथ का एक शिष्य, एक अन्तकृद् मुनि (अंत)। °स्स न [°स्व] देव-द्रव्य, जिन-मन्दिर-सम्बन्धी धन (पंचा ५)। °स्सुय पु [°श्रुत] भरत-क्षेत्र के छठवें भावी जिन-देव (सम १५३)। °हर न [°गृह] देव-मन्दिर (उप ४११)। °इदेव पुं [°अतिदेव] अर्हन् देव, जिन भगवान् (भग १२, ९)। °णंद पु [°आनन्द] ऐरवत क्षेत्र मे आगामी उत्सर्पिणी काल मे उत्पन्न होनेवाले चौवीसवें जिनदेव (सम १५४)। °णंदा स्त्री [°आनन्दा] १ भगवान् महावीर की प्रथम माता (आचा २, १५, १)। २ पक्ष की पनरहवी रात्रि का नाम (कप्प)। °णुप्पिय पु [°अनुप्रिय] भद्र, महाशय, महानुभाव, सरल-प्रकृति (औप, विपा १, १, महा)। °यरिअ पु [°आचार्य] एक सुप्रसिद्ध जैन आचार्य (गु ७)। °रन्न देखो °रण्ण (भग ६, ५)। २ देवों का क्रीडा-स्थान (जो ६)। °लय पुन [°आलय] स्वर्ग (उप २६४ टी)। °हिदेव पुं [°अधिदेव] परमेश्वर, परमात्मा, जिनदेव (सम ४३, स ५)। °हिवइ पु [°अधिपति] इन्द्र, देव-नायक (सूअ १, ६)।

देव पुन [देव] एक देव-विमान (देवेन्द्र १३३)। °कुरु स्त्री [°कुरु] भगवान् मुनि-सुव्रत स्वामी की दीक्षा-शिविका का नाम (विचार १२९)। °च्छंदय पुन [°च्छन्दक] कमानदार घूमटवाला दिव्य आसन-स्थान (आचा २, १५, ५)। °तमिस्स पुन [°तमिस्र] अन्धकार-राशि, तमस्काय (भग ६, ५—पत्र २६८)। °दिन्ना स्त्री [°दत्ता] भगवान् वासुपूज्य की दीक्षा-शिविका (विचार १२९)। °पलिक्खोभ पुं [°परिक्षोभ] कृष्णराजि, कृष्णवर्ण पुद्गलो की रेखा (भग ६, ५—पत्र २७०)। °रमण पु [°रमण] नन्दीश्वर द्वीप के मध्य मे पूर्व-दिशा स्थित एक अञ्जनगिरि (पव २६९ टी)। °वूह पु [°व्यूह] तमस्काय (भग ६, ५—पत्र २६८)।

देव देखो दइव (उप ३५६ टी, महा, हे १, १५३ टी)। °न्नु वि [°ज्ञ] जौतिष-शास्त्र का जानकार (सुपा २०१)। °पर वि [°पर] भाग्य पर ही श्रद्धा रखनेवाला (षड्)।

देवइ स्त्री [देवकी] श्रीकृष्ण की माता, आगामी उत्सर्पिणी काल में होनेवाले एक तीर्थंकर-देव का पूर्व भव (पउम २०, १८५, सम १५२, १५४)। देखो देवकी।

देवउप्फ न [दे] पक्व पुष्प, पका हुआ फल (दे ५, ४९)।

देव देखो दा = दा।

देवंग न [दे दिव्याङ्ग] देवदूष्य वस्त्र (उप ७३८)।

देवंगण न [देवाङ्गण] स्वर्ग, 'दिक्खं गहिउं च देवगणे रमइ' (सम्मत्त १६०)।

देवंधकार देखो देवंधगार (भग ६, ५—पत्र २६८)।

देवंधगार पु [देवान्धकार] तिमिर-निचय, अन्धकार का समूह (ठा ४, २)।

देवकिव्विस पु [देवकिल्बिष] एक अधम देव जाति (ठा ४, ४—पत्र २७४)।

देवकिव्विसिया स्त्री [देवकिल्बिषिकी] भावना-विशेष, जो अधम देव-योनि मे उत्पत्ति का कारण है (ठा ४, ४)।

धी स्त्री [धी] बुद्धि, मति (पाअ, णाया १, १६, कुप्र ११६, २४७, प्रासू २०)। °धण वि [°धन] १ बुद्धिमान, विद्वान्। २ पु एक मन्त्री का नाम (उप ७२८ टी)। °म, °मन वि [°मत्] बुद्धिशाली, विद्वान् (उप ७२८ टी, कप्प, राज)।

धी अ [धिक्] धिक्कार, छी (उव, वै ५५)।

धीआ स्त्री [दुहितृ] लडकी, पुत्री (मृच्छ १०६, पि ३६२, महा, भवि, पच्च ४२)।

धीइ देखो धिइ, 'तुच्छा गारवकलिया चलिंदिया दुव्वला य धीईए' (पव ९२ टी)।

धीउल्लिया स्त्री [दे] पुतली (स ७३७)।

धीमल न [धिङ्मल] निन्दनीय मैल (तंदु ३८)।

धीर अक [धीरय्] १ धीरज धरना। २ सक धीरज देना, आश्वासन देना। धीरेंत (गउड)।

धीर वि [धीर] १ धैर्यवाला, सुस्थिर, अचञ्चल (से ४, ३०, गा ३६७, ठा ४, २)। २ बुद्धिमान्, पण्डित, विद्वान् (उप ७६८ टी, धर्म २)। ३ विवेकी, शिष्ट (सूअ १, ७)। ४ सहिष्णु (सूअ १, ३, ४)। ५ पु. परमेश्वर, परमात्मा, जिन-देव। ६ गणधर-देव (आचा, आव ४)।

धीर न [धैर्य] धीरज, धीरता (हे २, ६४, कुमा)।

धीरव सक [धीरय्] सान्त्वना देना, दिलासा देना। कर्म धीरविज्जति (कुप्र २७३)।

धीरवण न [धीरण] धीरज देना, सान्त्वना (वव १)।

धीरविय वि [धीरित] जिसको सान्त्वना दी गई हो वह, आश्वासित (स ६०४)।

धीराअ अक [धीराय्] धीर होना, धीरज धरना। वकृ धीराअत (से १२, ७०)।

धीराविअ देखो धीरविय (पि ५५६)।

धीरिअ देखो धीर = धैर्य (हे २, १०७)।

धीरिअ देखो धीरविय (भवि)।

धीरिम पुस्त्री [धीरत्व] धैर्य, धीरज (उप पृ ६२, सुपा १०६, भवि; कुप्र १५०)।

धीवर पु [धीवर] १ मछलीमार, मछुआ, मल्लाह, जालजीवी (कुमा, कुप्र २४७)। २ वि. उत्तम बुद्धिवाला (उप ७२८ टी, कुप्र २४७)।

धुअ देखो धुव = धाव्। धुअइ (गा १३०)

धुअ सक [धु] १ कंपाना। २ फेंकना। ३ त्याग करना। वकृ धुअमाण (से १४, ६६)।

धुअ वि धुव = ध्रुव (भवि)। छन्द-विशेष (पिंग)।

धुअ वि [धूत] १ कम्पित। २ न. कम्प (प्राकृ ७०)।

धुअ वि [धुत] १ कम्पित (गा ७८, दे १, १७३)। २ त्यक्त (औप)। ३ उच्छलित (से ४, ४)। ४ न कर्म (सूअ २, २)। ५ मोक्ष, मुक्ति (सूअ १, ७)। ६ त्याग, संग त्याग, सयम (सूअ १, २, २, आचा)। °वाय पु [°वाद] कर्म-नाश का उपदेश (आचा)।

धुअगाय पु [दे] भ्रमर, भौंरा, भमरा (दे ५, ५७, पाअ)।

धुअण देखो धुवण (पव १०१)।

धुअराय पु [दे] ऊपर देखो (षड्)।

धुंधुमार पुं [धुन्धुमार] नृप-विशेष (कुप्र २६३)।

धुंधुमारा स्त्री [दे] इन्द्राणी, शची (दे ५, ६०)।

धुक्क अक [क्षुध्] भूख लगना। धुक्कइ (प्राकृ ६३)।

धुक्काधुक्क अक [कम्प्] कांपना, 'धुक्‌धुक्' होना। धुक्काधुक्कइ (गा ५८३)।

धुक्कुद्धुअ, धुक्कुद्धुगिअ } वि [दे] उल्लसित, उल्लास-युक्त (दे ५, ६०)।

धुक्कुधुअ देखो धुक्काधुक्क। वकृ धुक्कुधुअत (भवि)।

धुक्कोडिअ न [दे] संशय, संदेह (वज्जा ९०)।

धुगुधुग अक [धुगधुगाय्] 'धुग् धुग्' आवाज करना। वकृ धुगुधुगंत (पण्ह १, ३—पत्र ४५)।

धुट्टुअ देखो धुद्धुअ। धुट्टुअइ (हे ४, ३९५)।

धुण सक [धू] १ कँपाना, हिलाना। २ दूर करना, हटाना। ३ नाश करना। धुणइ, धुणाइ (हे ४,५९, आचा, पि १२०)। कर्म. धुव्वइ, धुणिज्जइ (हे ४, २४२)। वकृ. धुणत (सुपा १८५)। संकृ. धुणिऊण, धुणिया, धुणेऊण (षड्; दस ९ ३)। हेकृ धुणित्तए (सूअ १, २, २)। कृ धुणेज्ज (आचू १)।

धुणण न [धूनन] १ अपनयन। २ परित्याग, छोटना (राज)।

धुणणा स्त्री [धूनना] कम्पन, हिलना (ओघ १६५ भा)।

धुणा देखो धुणगा (उत्त २६, २७)।

धुणाव सक [धूनय्] कँपाना, हिलाना। धुणावइ (वज्जा ६)।

धुणाविअ वि [धूनित] कँपाया हुआ (उप ७६८ टी)।

धुणि देखो झुणि (षड्)।

धुणिऊण, धुणित्तए } देखो धुण।

धुणिअ वि [धूत] कम्पित, हिलाया हुआ, 'मत्थयं धुणिय' (सुपा ३२०, २०१)।

धुणिया, धुणेज्ज } देखो धुण।

धुण्ण वि [धाव्य] १ दूर करने योग्य। २ न. पाप। ३ कर्म (दस ९, १, दसा ६)।

धुत्त वि [धूर्त्त] १ ठग, वञ्चक, प्रतारक (प्रासू ४०, श्रा १२)। २ जुआ खेलनेवाला। ३ पुं धतूरे का पेड। ४ लोहे की काट—मैल। ५ लवण-विशेष, एक प्रकार का नोन (हे २, ३०)।

धुत्त वि [दे] १ विस्तीर्ण (दे ५, ५८)। २ आक्रान्त (षड्)।

धुत्त, धुत्तार } सक [धूर्त्तय्] ठगना। धुत्तारसि (सुपा ११४)। वकृ धुत्तयत (श्रा १२)।

धुत्तारिअ वि [धूर्त्तित] ठगा हुआ, वञ्चित (उप ७२८ टी)।

धुत्ति स्त्री [धूर्त्ति] जरा, बुढ़ापा (राज)।

धुत्तिअ वि [धूर्त्तित] वञ्चित, प्रतारित (सुपा ३२४, श्रा १२)।

धुत्तिम पुस्त्री [धूर्त्तत्व] धूर्त्तता, धूर्त्तपन, ठगाई (हे १, ३५, कुमा, श्रा १२)।

धुत्ती स्त्री [धूर्त्ता] धूर्त्त स्त्री (वज्जा १०६)।

मे गया हुआ (सुर १० १९२)। °सहा स्त्री [°सभा] धर्मशाला (उप पृ ११५)।

देसिअ देखो देसम्मिअ, 'पडिक्कमे देसिअं सव्व' (पडि, श्रा ६)।

देसिअव वि [देशितवत्] जिसने उपदेश दिया हो वह (सूअ १, ६, २४)।

देसिक्क देखो देसिअ = देश्य (बृह ३)।

देसी स्त्री [देशी] भाषाविशेष, अत्यन्त प्राचीन प्राकृत भाषा का एक भेद (दे १, ४)। °भासा स्त्री [°भाषा] वही अर्थ (णाया १, १, औप)।

देसूण वि [देशोन] कुछ कम, अंश की कमी-वाला (सम २, १०३, दं २८)।

देस्स वि [द्रश्य] १ देखने योग्य। २ देखने को शक्य (स १६६)।

देह देखो देक्ख। देहई, देहए (उत्त १६, ६, पि ६६)। वकृ देहमाण (भग ६, ३३)।

देह पुंन [देह] १ शरीर, काय (जी २८, कुप्र १५३ प्रासू ६५)। २ पुं पिशाच-विशेष (इक, पण्ण १)। °रय न [°रत] मैथुन (वज्जा १०८)।

देहवलिया स्त्री [देहवलिका] भिक्षा-वृत्ति, भीख की आजीविका (णाया १, १६—पत्र १६६)।

देहणी स्त्री [दे] पंक, कर्दम, कादा, काँदो (दे ५, ४८)।

देहरय (अप) न [देवगृहक] देव-मन्दिर (वज्जा १०८)।

देहली स्त्री [देहली] चौखट, द्वार के नीचे की लकडी (गा ५२५, दे १, ६५, कुप्र १८३)।

देहि पु [देहिन्] आत्मा, जीव (स १६५)।

देहुर (अप) न [देवकुल] देव-स्थान, मन्दिर (भवि)।

दो अ [द्विधा] दो प्रकार से, दो तरह (सुपा २३३, ३१२)।

दो त्रि. ब. [द्वि] दो, उभय, युग्म (हे १, ६४)।

दो पुं [दोस्] हाथ, बाहु (विक्र ११३, रंभा, कप्पू)।

दोअई स्त्री [द्विपदी] छन्द-विशेष (पिंग)।

दोआल पुं [दे] वृषभ, बैल (दे ५, ४६)।

६१

दोइ देखो दो = द्विधा (बृह ३)।

दोंवुर [दे] देखो दोवुर (षड्)।

दोकिरिय वि [द्विक्रिय] एक ही समय में दो क्रियाओं के अनुभव को माननेवाला (ठा ७)।

दोक्कर देखो दुक्कर (भवि)।

दोक्खर पुं [द्वि-अक्षर] षण्ड, नपुसक (बृह ४)।

दोखंड देखो दुखंड (भवि)।

दोखंडिअ वि [द्विखण्डित] जिसके दो टुकडे किए गए हो वह (भवि)।

दोगंछि वि [जुगुप्सिन्] घृणा करनेवाला (पि ७४)।

दोगच्च न [दौर्गत्य] १ दुर्गति, दुर्दशा (पचव ४)। २ दारिद्रय, निर्धनता (सुपा २३०)।

दोगुछि देखो दोगंछि (पि २१५)।

दोगुंदय पुन [दोगुन्दक] एक देव-विमान (देवेन्द्र १४५)।

दोगुंदुय पुं [दौगुन्दक] उत्तम-जातीय देव-विशेष (सुपा ३३)।

दोग्ग न [दे] युग्म, युगल (दे ५, ४६, षड्)।

दोग्गइ देखो दुग्गइ (सुर ८, १११)। °कर वि [°कर] दुर्गति जनक (पउम ७३, १०)।

दोग्गच्च देखो दोगच्च (गा ७६)।

दोग्घट्ट } दोग्घोट्ट } दोघट्ट } पु [दे] हाथी, हस्ती (पि ४३६, षड्, पाअ, महा, लहुअ ४, स ४६१)।

दोचूड पु [द्विचूड] विद्याधर वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ४५)।

दोच्च वि [द्वितीय] दूसरा (सम २, ८, विपा १, २)।

दोच्च न [दौत्य] दूतपन, दूत-कर्म (णाया १, ८, गा ८४)।

दोच्च अ [द्विस्] दो वार, दो वक्त, 'एवं च निसामित्ता दोच्चं तच्चं समुल्लवतस्स' (सुर २, २६)।

दोच्चग न [द्वितीयाङ्ग] १ दूसरा अग। २ पकाया हुआ शाक (बृह १)। ३ तीमन, कढ़ी (ओघ २६७ भा)।

दोजीह पुं [द्विजिह्व] १ दुर्जन। २ साँप (सुर १, २०)।

दोज्झ वि [दोह्य] दोहने योग्य (आचा २, ४, २)।

दोण पु [द्रोण] १ धनुर्वेद के एक सुप्रसिद्ध आचार्य, जो पाण्डव और कौरवो के गुरू थे (णाया १ १६ वेणी १०४)। २ एक प्रकार का परिमाण (जो २)। °मुह न [°मुख] नगर, जल और स्थल के मार्गवाला शहर (पण्ह १, ३, कप्प, औप)। °मेह पुं [°मेघ] मेघ-विशेष, जिसकी धारा से बडी कलशी भर जाय वह वर्षा (विसे १४५८)। °सुया स्त्री [°सुता] लक्ष्मण की स्त्री का नाम, विशल्या (पउम ६४, ४४)।

दोगअ पु [दे] १ आयुक्त, गाँव का मुखिया। २ हालिक हलवाह, हल जोतनेवाला, हरवाहा (दे ५, ५१)।

दोणक्का स्त्री [दे] सरघा, मधुमक्खी (दे ५, ५१)।

दोणी स्त्री [द्रोणी] १ नौका, छोटा जहाज (पण्ह १, १, दे २, ४७, धम्म १२ टी)। २ पानी का बडा कुँडा (अणु, कुप्र ४४१)।

दोत्तडी स्त्री [दुस्तटी] दुष्ट नदी, 'एकत्तो सद्दूलो अन्नत्तो दोत्तडी वियडा' (उप ५३० टी, सुपा ४६३)।

दोत्थ न [दौस्थ्य] दुस्थता, दुर्दशा, दुर्गति (वव ४, ७)।

दोदाण वि [दुर्दान] दुःख से देने योग्य (संक्षि ४)।

दोदिअ पु [दे] चर्म-कूप, चमडे का बना हुआ भाजन-विशेष (दे ५, ४६)।

दोद्धु वि [दोग्धृ] दोहन-कर्ता (दस १,१ टी)।

दोधअ } दोधक } न [दोधक] छन्द-विशेष (पिंग)।

दोधार पु [द्विधाकार] द्विधाकरण, दो भाग करना (ठा ५, ३—पत्र ३४६)।

दोनिक्कम वि [दुर्निक्रम] अत्यन्त कष्ट से चलने योग्य (भग ७, ६—पत्र ३०५)।

दोवुर पुं [दे] तुम्बुरु, स्वर्ग-गायक (षड्)।

दोव्वलिय देखो दुव्वलिय (आचा २, ३, २, ३)।

दोव्वल्ल न [दौर्बल्य] दुर्बलता (पि २८७, काप्र ८५)।

दोभाय वि [द्विभाग] दो भागवाला, दो खण्डवाला (उप १४७ टी)।

धूमाअंति (से ८,१६, गउड)। वकृ धूमायत (गउड, से १, ८)।

धूमाभा स्त्री [धूमाभा] पाँचवी नरक पृथिवी (पउम ७५ ४७)।

धूमिअ वि [धूमित] १ धूमयुक्त (पिंड)। २ छौंका हुआ (शाक आदि) (दे ६, ८८)।

धूमिआ स्त्री [दे] नीहार, कुहासा (दे ५, ६१, पाअ, ठा १०, भग ३, ७, अणु)।

धूयरा देखो धूआ (सूअ १, ८, १, १३)।

धूरिअ वि [दे] दीर्घ, लम्बा (दे ५ ६२)।

धूरिअवट्ट पु [दे] अश्व, घोडा (दे ५, ६१)।

धूलडिआ (अप) देखो धूलि (हे ४, ४३२)।

धूलि } स्त्री [धूलि, °ली] धूल, रज, रेणु
धूली } (गउड, प्रासू २८, ८४)। °कंब, °कलंब पु [°कदम्ब] ग्रीष्म ऋतु मे विकसनेवाला कदम्ब-वृक्ष (कुमा)। °जंघ वि [°जङ्घ] जिसके पाँव में धूल लगी हो वह (वव १०)। °धूसर वि [°धूसर] धूल से लिप्त (गा ७७४, ८२६)। °धोव वि [°धोत] धूल को साफ करनेवाला (सुपा ३३६)। °पथ पु [°पथ] धूलि-बहुल मार्ग (ओघ २४ टी)। °वरिस पु [°वर्ष] धूल की वर्षा (आवम)। °हर न [°गृह] वर्षा ऋतु मे लडके लोग जो धूल का घर बनाते हैं वह (उप ५९७ टी)।

धूलिहडी स्त्री [दे] पर्व-विशेष, होली, 'धूलिहडीरायनगणसरिसा मन्नेमि हसणिज्जा' (कुलक ५)।

धूलीवट्ट पु [दे] अश्व, घोडा (दे ५, ६१)।

धूव सक [धूपय्] धूप करना। धूवेज (आचा २, १३)। वकृ धूवेंत (पि ३९७)।

धूव पुं [धूप] १ सुगन्धि द्रव्य से उत्पन्न धूम। २ सुगन्धि द्रव्य-विशेष, जो देव-पूजा आदि में जलाया जाता है (णाया १, १, सुर ३, ६५)। °घडी स्त्री [°घटी] धूप-पात्र, धूप से भरी हुई कलशी (जं १)। °जंत न [°यन्त्र] धूप-पात्र (दे ३, ३५)।

धूवण न [धूपन] १ धूप देना। २ धूम-पान, रोग की निवृत्ति के लिए किया जाता धूम का पान 'धूवणे त्ति वमणे य वत्थीकम्मविरेयणे' (दस ३, ९)। °वट्टि स्त्री [°वर्त्ति] धूप की बनी हुई वर्तिका, अगरबत्ती (कप्पू)।

धूविअ वि [धूपित] १ तापित, गरम किया हुआ। २ हीग आदि से छौंका हुआ (चारु ६)। ३ धूप दिया हुआ (औप, गच्छ १)।

धूसर पु [धूसर] १ हलका पीला रंग, ईषत् पाण्डु वर्ण। २ वि धूसर रंगवाला, ईषत् पाण्डु वर्णवाला (प्रासू ८४, गा ७७४, से ६, ८२)।

धूसरिअ वि [धूसरित] धूसर वर्णवाला (पाअ, भवि)।

धे सक [धा] धारण करना। धेइ (सक्षि ३३), 'धेहि धीरत्त' (कुप्र १००)।

धेअ } वि [ध्येय] ध्यान योग्य (अजि
धेज्ज } १४, णाया १, १)।

धेउल्लिया देखो धीउल्लिया (सुख ३, १)।

धेज्ज वि [धेय] धारण करने योग्य (णाया १, १)।

धेज्ज न [धैर्य] धीरज, धीरता (पण्ह २, २)।

धेणु स्त्री [धेनु] १ नव-प्रसूता गौ। २ सवत्सा गौ। ३ दूधार गाय (हे ३, २९, चंड)।

धेर देखो धीर = धैर्य (विक्र १७)।

धेवय पु [धैवत] स्वर-विशेष, 'धेवयस्सरसपण्णा भवति कलहप्पिया' (ठा ७—पत्र ३९३)।

धोअ सक [धाव्] धोना, शुद्ध करना, पखारना। धोएज्जा (आचा)। वकृ धोयत (सुपा ८५)।

धोअ वि [धौत] धोया हुआ, प्रक्षालित (से १, २५, ७, २०, गा ३६९)।

धोअग वि [धावक] १ धोनेवाला। २ पु. धोबी (उप पृ ३३३)।

धोअण वि [धावन] धोना, प्रक्षालन (श्रा २०, रयण १८ ओघ ३४७)।

धोइअ देखो धोअ = धौत (गा १८)।

धोज्ज वि [धुर्य] १ धुरीण, भार-वाहक। २ अगुआ, नेता धुरन्धर (वव १)।

धोरण न [दे] गति-चातुर्य (औप)।

धोरणि } स्त्री [धोरणि, °णी] पंक्ति, कतार
धोरणी } (सुपा ४९, भवि, पड्)।

धोरिय देखो धोज्ज (सुपा २८२)।

धोरुगिणी स्त्री [धोरुकिनिका] देश-विशेष में उत्पन्न स्त्री (णाया १, १—पत्र ३७)।

धोरेय वि [धौरेय] देखो धोज्ज (सुपा ६५०)।

धोव देखो धोअ = धाव्। धोवइ (स १५७, पि ७८)। धोवेजा (आचा)। वकृ धोवत (भवि)। कवकृ. धोव्वत, धोव्वमाण (पउम १०, ४४, णाया १, ८)। कृ धोवणिय (णाया १, १६)।

धोवण देखो धोअण (पिंड २३)।

धोवय देखो धोवग (दे ८, ३९)।

ध्रुवु (अप) अ [ध्रुवम्] अठन, स्थिर (हे ४, ४१८)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि धआराइसद्दसंकलणो छव्वीसइमो तरंगो समत्तो ॥

दोहि वि [द्रोहिन्] द्रोह करनेवाला (भवि)।

दोहिण्ण वि [द्विभिन्न] द्विखण्ड, जिसका दो टुकडा किया गया हो वह (प्राकृ ५१)।

दोहित्त पुं [दौहित्र] लडकी का लडका, नाती (दे ६, १०६, सुपा ३६४)।

दोहित्ती स्त्री [दौहित्री] लडकी की लडकी, नतिनी (महा)।

दोहूअ पु [दे] शव, मृतक मुरदा (दे ५, ४६)।

°द्दोस देखो दोस = (दे), 'वज्जियरागद्दोसो (कुप्र ३०)।

द्रवक्क (अप) न [दे. भय] भय, डर, भीति (हे ४, ४२२)।

द्रह पु [ह्रद] बडा जलाशय, सरोवर, झील (हे २, ८०, कुमा)।

द्रेहि (अप) स्त्री [दृष्टि] नजर (हे ४, ४२२)।

द्रोह देखो दोह = द्रोह (पि २६८)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि दआराइसद्दसंकलणो

पंचवीसइमो तरंगो समत्तो ॥

ध

ध पुं [ध] दन्त-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्राप, प्रामा)।

धअ देखो धव (गा २०)।

धख पु [ध्वाङ्क्ष] काक, कौआ (उप ८२३, पंचा ११)।

धंग पु [दे] भौंरा, भ्रमर, भमरा (दे ५,५७)।

धंत न [ध्वान्त] अन्धकार, अँधेरा (सुर १, १२, करु ११)।

धंत न [ध्वान्त] अज्ञान (देवेन्द्र १)।

धंत न [दे] अति, अतिशय, अत्यन्त, 'धंतं-पि सुअसमिद्धा' (पव २६, विसे ३०१६, बृह १)।

धंत वि [ध्मात] १ अग्नि में तपाया हुआ (णाया १, १, औप, पण्ण १, १७, विसे २०२६, अजि १४)। २ शब्द-युक्त, शब्दित (पिंड)।

धंधा स्त्री [दे] लज्जा, शरम (दे ५, ५७)।

धंधुक्कय न [धन्धुक्कय] गुजरात का एक नगर, जो आज कल 'धंधुका' नाम से प्रसिद्ध है (सुपा ६५८, कुप्र २०)।

धंधोलिय (अप) वि [भ्रमित] घुमाया हुआ (सण)।

धंस अक [ध्वंस्] नष्ट होना। धंसइ, धंसए (षड्)।

धंस सक [ध्वसय्] १ नाश करना। २ दूर करना। धंसइ (सूअ १, २, १)। धंसेइ (सम ५०)।

धंसाड सक [मुच्] त्याग करना, छोडना। धंसाडइ (हे ४, ६१)।

धंसाडिअ वि [मुक्त] परित्यक्त, छोडा हुआ (कुमा)।

धंसाडिअ वि [दे] व्यपगत, नष्ट (दे ५, ५६)।

धगधग अक [धगधगाय्] १ 'धग्-धग्' आवाज करना। २ जलना, अतिशय जलना। वकृ धगधगत (णाया १, १, पउम १२, ५१, भवि)।

धगधगाइअ वि [धगधगायित] 'धग्-धग्' आवाजवाला (कप्प)।

धगधग्ग देखो धगधग। वकृ धगधग्गअ-माण (पि ५५८)।

धग्गीकय वि [दे] जलाया हुआ, अत्यन्त प्रदीपित, 'अग्गी धग्गीकओ व्व पवणेण' (श्रा १४)।

धज देखो धय = ध्वज (कुमा)।

धट्ठ देखो धिट्ठ (हे १, १३०, पउम ४६, २६, कुमा १, ८२)।

धट्ठज्जुण } पु [धृष्टद्युम्न] राजा द्रुपद का
धट्ठज्जुण्ण } एक पुत्र (हे २, ९४, णाया १, १६, कुमा, षड्, पि २७८)।

धड न [दे] धड, गले से नीचे का शरीर (सुपा २४१)।

धडहडिय न [दे] गर्जना, गर्जारव (सुपा १७६)।

धण न [धन] १ वित्त, विभव, स्थावर-जंगम सम्पत्ति (उत्त ६, सूअ २, १, प्रासू ५१, ७६, कुमा)। २ गणिम, धरिम, मेय, या परिच्छेद्य द्रव्य—गिनती से और नाप आदि से क्रय-विक्रय योग्य पदार्थ (कप्प)। ३ पुं कुबेर, धन-पति, 'सुव णो सिट्ठी धणोव्व धणकलिओ' (सुपा ३१०)। ४ स्वनाम-ख्यात एक श्रेष्ठी (उप ५५२)। ५ धन्य सार्थवाह का एक पुत्र (णाया १, १८)। °इत्त, °इल्ल वि [°वत्] धनी, धनवाला (कुप्र २४५, पि ५९५, संक्षि ३०)। °गिरि पु [°गिरि] एक जैन महर्षि, जो वज्रस्वामी के पिता थे (कप्प, उप १४२ टी)। °गुत्त पु [°गुप्त] एक जैन मुनि (आवम)। °गोव पुं [°गोप] धन्य सार्थवाह का एक पुत्र (णाया १, १८)। °ड्ढ पुं [°ाढ्य] एक जैनमुनि (कप्प)। °णंदि पुस्त्री [°नन्दि] दुगुना देव-द्रव्य, 'देव-

पइट्ठा स्त्री [प्रतिष्ठा] १ आदर, सम्मान। २ कीर्त्ति, यश। ३ व्यवस्था (हे १, २०६)। ४ स्थापना, संस्थापन (णदि)। ५ अवस्थान, स्थिति (पंचा ८)। ६ मूर्त्ति मे ईश्वर के गुणो का आरोपण, 'जिणबिंवाण पइट्ठ कइया वि हु आइसतस्स' (सुर १६, १३)। ७ आश्रय, आधार (औप)।

पइट्ठा स्त्री [प्रतिष्ठा] १ धारणा, वासना (णदि १७६)। २ समाधान, शका निरास-पूर्वक स्वपक्ष-स्थापन (चेइय ५३५)।

पइट्ठाण पु [प्रतिष्ठान] मूल प्रदेश (राय २७)।

पइट्ठाण न [प्रतिष्ठान] १ स्थिति, अवस्थान, 'काऊण पइट्ठाण रमणिज्जे एत्थ अच्छामो' (पउम ४२, २७, ठा ६)। २ आधार, आश्रय (भग)। ३ महल आदि की नीव (पव १४८)। ४ नगर-विशेष (आक २१)।

पइट्ठाण न [दे] नगर, शहर (दे ६, २६)।

पइट्ठावक, पइट्ठावग देखो पइट्ठावय (णाया १, १६ राज)।

पइट्ठावण न [प्रतिष्ठापन] १ सस्थापन (पचा ७)। २ व्यवस्थापन (पचा ७)।

पइट्ठावय वि [प्रतिष्ठापक] प्रतिष्ठा करनेवाला (औप, पि २२०)।

पइट्ठाविय वि [प्रतिष्ठापित] सस्थापित (स ६२, ७०५)।

पइट्ठिअ वि [प्रतिष्ठित] प्रतिबद्ध, रुका हुआ (आचा २, १६, १२)।

पइट्ठिय वि [प्रतिष्ठित] १ स्थित, अवस्थित (उवा)। २ आश्रित, 'रयणायरतीरपइट्ठियाण पुरिसाण ज च दालिद्दं' (प्रासू ७०)। ३ व्यवस्थित (आचा २, १, ७)। ४ गौरवान्वित (हे १, ३८)।

पइणियय वि [प्रतिनियत] नियम-सगत, नियमित (धर्मवि २९६)।

पइण्ण जि [दे] विपुल, विस्तृत (दे ६, ७)।

पइण्ण वि [प्रतीर्ण] प्रकर्ष से तीर्ण (आचा)।

पइण्ण, पइण्णग वि [प्रकीर्ण, °क] १ विक्षिप्त फेंका हुआ, 'रत्थापइण्णणअणु-प्पला तुम सा पडिच्छए एंत' (गा १४०)। २ अनेक प्रकार से मिश्रित (पंचू)। ३ विखरा हुआ (ठा ६)। ४ विस्तारित (वृह १)। ५ न. ग्रथ-विशेष, तीर्थंकर-देव के सामान्य शिष्य द्वारा वनाया हुआ ग्रंथ (णदि)। °कहा स्त्री [°कथा] उत्सर्ग, सामान्य नियम, 'उस्सग्गो पइण्णकहा भण्णइ अववादो नियच्छकहा भण्णइ' (निचू ५)। °तव पु [°तपस्] तपश्चर्या-विशेष (पचा १९)।

पइण्णा स्त्री [प्रतिज्ञा] १ प्रण, शपथ (नाट—मालती १०६)। २ नियम (औप, पचा १८)। ३ तर्कशास्त्र प्रसिद्ध अनुमान-प्रमाण का एक अवयव, साध्य वचन का निर्देश (दसनि १)।

पइण्णाद (शौ) वि [प्रतिज्ञात] जिसकी प्रतिज्ञा की गई हो वह (मा १५)।

पइण्णि वि [प्रतिज्ञावत्] प्रतिज्ञावाला, 'बधमोक्खपइण्णिणो' (उत्त ६, १०, सुप, १०)।

पइत्त देखो पउत्त = प्रवृत्त (भवि)।

पइत्त वि [प्रदीप्त] जला हुआ, प्रज्वलित (से १५ ७३)।

पइत्त देखो पवित्त = पवित्र (सुपा ७४)।

पइदि (शौ) देखो पगइ (नाट—शकु ६१)।

पइदिण न [प्रतिदिन] हर रोज (काल)।

पइद्धिय वि [प्रदिग्ध] विलिप्त (सूअ १, ५, १)।

पइदियह न [प्रतिदिवस] प्रतिदिन, हर रोज (सुर १, ५०)।

पइनियय वि [प्रतिनियत] मुकररं किया हुआ, नियुक्त किया हुआ (श्रावम)।

पइन्न देखो पइण्ग = प्रतीर्ण (पण्ह २, १ टी—पत्र १०५)।

पइन्न, पइन्नग देखो पइण्ग (उव, भवि, श्रा ६)।

पइन्नय देखो पइन्नग (चेइय १६)।

पइन्ना देखो पइण्णा (सुर १, १)।

पइप्प देखो पलिप्प। वकृ पइप्पमाण (गा ४१६)।

पइप्पईय न [प्रतिप्रतीक] प्रत्यंग, हर अग (रभा)।

पइभय वि [प्रतिभय] प्रत्येक प्राणी को भय उपजानेवाला (णाया १, २, पण्ह १, १, औप)।

पइभा स्त्री [प्रतिभा] बुद्धि-विशेष, प्रत्युत्पन्न-मति (पुप्फ ३३१)।

पइभाणाण न [प्रतिभाज्ञान] प्रतिभा से उत्पन्न होता ज्ञान, प्रातिभ प्रत्यक्ष (धर्मस १२०९)।

पइमुह वि [प्रतिमुख] समुख (उप ७४४)।

पइर सक [वप्] बोना, वपन करना। पइरिंति (आचा २, १०, २)। भूका पइरिंसु (आचा २, १०, २)। भवि. पइरिस्संति (आचा २, १०, २)। कर्म. पइरिज्जति (स ७१३)।

पइरिक्क वि [दे प्रतिरिक्त] १ शून्य, रहित (दे ६, ७१, से २, १५)। २ विशाल, विस्तीर्ण (दे ६, ७१)। ३ तुच्छ, हलका (से १, ५८)। ४ प्रचुर, विपुल (ओघ २४९—पत्र १०३)। ५ नितान्त, अत्यन्त 'पइरिक्कसुहाए मणाणुकूलाए विहारभूमीए' (कप्प)। ६ न एकान्त स्थान, विजन स्थान, निर्जन जगह (दे ६, ७१, स २३५, ७५५, गा ८८, उप २६३)।

पइल (अप) देखो पढम (पि ४४९)।

पइलाइया स्त्री [प्रतिलाटिका] हाथ के बल चलनेवाली सर्प की एक जाति (राज)।

पइल्ल पु [दे पदिक] १ ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३)। २ रोग-विशेष, श्लीपद (पण्ह २, ५)।

पइव पुं [प्रतिव] एक यादव का नाम (राज)।

पइवरिस न [प्रतिवर्ष] हरएक वर्ष (पि २२०)।

पइवाइ वि [प्रतिवादिन्] प्रतिवादी, प्रतिपक्षी (विसे २४८८)।

पइविसिट्ठ वि [प्रतिविशिष्ट] विशेष-युक्त, विशिष्ट (उवा)।

पइविसेस पुं [प्रतिविशेष] विशेष, भेद, भिन्नता (विसे ५२)।

पइस देखो पविस। पइसइ (भवि)। पइसति (दे १, ६४ टि)। कर्म. पइसिज्जइ (भवि)। वकृ. पइसंत (भवि)। कृ पइसियव्व (स २३४)।

पइसमय न [प्रतिसमय] हर समय, प्रतिक्षण (पि २२०)।

पइसर देखो पविस। पइसरइ (भवि)।

धत्ती स्त्री [धात्री] १ धाई, उपमाता, दाई (स्वप्न १२२)। २ पृथिवी, भूमि। ३ आमलकी-वृक्ष, आँवले का पेड़ (हे २,८१)। देखो धाई।

धत्तूर पुं [धत्तूर] १ वृक्ष-विशेष, धतूरा। २ न धतूरा का पुष्प (सुपा १२४)।

धत्तूरिअ वि [धात्तूरिक] जिसने धतूरा का नशा किया हो वह (सुपा १२४, १७६)।

धत्थ वि [ध्वस्त] ध्वंस-प्राप्त, नष्ट, नाश हुआ (हे २, ७६, मण)।

धन्न देखो धण्ण = धन्य (कुमा, प्रासू ५३, ८४ १५५, उवा)।

धन्न न [धान्य] १ धान अनाज, अन्न (उवा, सुर १, ४६)। २ धान्य विशेष, 'कुलत्थ तह धन्नय कलाया' (पव १५६)। ३ धनिया (दसनि ६)। °कीड पु [°कीट] नाज मे होनेवाला कीट, कीट-विशेष (जी १७)। °णिहि पुस्त्री [°निधि] धान रखने का घर, कोष्ठागार, भंडार (ठा ५,३)। °पत्थय पुं [°प्रस्थक] धान का एक नाप (वव १)। °पिडग न [°पिटक] नाज का एक नाप (वव १)। °पुंजिय न [पुञ्जितधान्य] इकट्ठा किया हुआ अनाज (ठा ४, ४)। °विक्खित्त न [विक्षिप्तधान्य] विकीर्ण अनाज (ठा ४, ४)। °विरल्लिय न [विरल्लितधान्य] वायु से इकठ्ठा किया हुआ अनाज (ठा ४ ४)। °संकट्टिय न [°संकर्षितधान्य] खेत मे काटकर खले—खलिहान मे लाया गया धान्य (ठा ४, ४)। °गार न [°गार] कोष्ठागार, धान रखने का गृह (निचू ८)।

धन्ना स्त्री [धान्य] अन्न, अनाज, 'सालिजवाईयाओ धन्नाओ सव्वजाईओ (उप ६८६ टी)।

धन्ना स्त्री [धन्या] एक स्त्री का नाम (उवा)।

धम सक [ध्मा] १ धमना, धौंकना, आग में तपाना। २ शब्द करना। ३ वायु पूरना। धमइ (महा)। धमेइ (कुप्र १४६)। वकृ धमत (निचू १)। कवकृ. धम्ममाण (उवा, णाया १, ६)।

धमग वि [ध्मायक] धमनेवाला (औप)।

धमण न [धमन] १ आग मे तपाना (आचानि १, १, ७)। २ वायु-पूरण (पण्ह १, १)। ३ वि. भस्त्रा, धमनी, भाथी (राज)।

धमणि } स्त्री [धमनि, °नी] १ भस्त्रा,
धमणी } धमनी, धौंकनी। २ नाडी, सिरा (विपा १, १, उवा, अत २७)।

धमधम अक [धमधमाय्] 'धम्-धम्' आवाज करना, 'धमधमइ सिरं धणियं जायइ सूलपि भज्जए दिट्ठी' (सुपा ६०३)। वकृ धमधमत, धमधमाअत, धमधमेंत (सुपा ११४ नाट—मालती ११६, णाया १, ८)।

धमास पु [धमास] वृक्ष-विशेष (पण्ण १७)।

धमिअ वि [ध्मात] जिसमे वायु भर दिया गया हो वह, 'धमिओ सखो' (कुप्र १४६)।

धमिय वि [ध्मात] आग मे तपाया हुआ, 'धमियकणय फुकाए हारविदं हुज्ज' (मोह ४७)।

धम्म पु [धर्म] १ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४३)। २ एक दिन का उपवास (संबोध ५८)।

धम्म पुन [धर्म] १ शुभ कर्म, कुशल-जनक अनुष्ठान, सदाचार (ठा १, सम १, २, आचा, सूअ १, ६, प्रासू ५२, ११४, स ५७)। २ पुण्य सुकृत (सुर १, ५४, आव ४)। ३ स्वभाव, प्रकृति (निचू २०)। ४ गुण, पर्याय (ठा २, १)। ५ एक अरूपी पदार्थ, जो जीव को गति क्रिया मे सहायता पहुँचाता है (नव ५)। ६ वर्तमान अवसर्पिणी काल में उत्पन्न पनहरवें जिन-देव (सम ४३, पडि)। ७ एक वणिक् (उप ७२८ टी)। ८ स्थिति, मर्यादा (आचू २)। ९ धनुष, कार्मुक (सुर १, ५४, पाअ)। १० एक जैन मुनि (कप्प)। ११ 'सूत्रकृताङ्ग' सूत्र का एक अध्ययन (सम ४२)। १२ आचार, रीति, व्यवहार (कप्प)। °उत्त पु [°पुत्र] शिष्य (प्राल्ह)। °उर न [°पुर] नगर-विशेष (दस १)। °कखिअ वि [°काङ्क्षित] धर्म की चाहवाला (भग)। °कहा स्त्री [°कथा] धर्म-सम्बन्धी बात (भग, सम १२०, णाया २)। °कहि वि [°कथिन्] धर्म कथा कहनेवाला, धर्म का उपदेशक (ओघ ११५ भा, श्रा ६)। °कामय वि [°कामक] धर्म की चाहवाला (भग)। °काय पु [°काय] धर्म का साधन-भूत शरीर (पचा १९)। °क्खाइ वि [°ख्यायिन्] धर्म-प्रतिपादक (औप)। °क्खाइ वि [°ख्याति] धर्म से ख्यातिवाला, धर्मात्मा (औप)। °गुरु पु [°गुरु] धर्म-दर्शक गुरु, धर्माचार्य (द्र १)। °गुव वि [°गुप्] धर्म-रक्षक (षड्)। °घोस पु [°घोष] कईएक जैन मुनि और आचार्यों का नाम (आचू १, ती ७, आव ४, भग ११, ११)। °चक्क न [°चक्र] जिनदेव का धर्म-प्रकाशक चक्र (पव ४०, सुपा ९२)। °चक्कवट्टि पु [°चक्रवर्त्तिन्] जिन-देव (आचू १)। °चक्कि पु [°चक्रिन्] जिन भगवान् (कुम्मा ३०)। °जणणी स्त्री [°जननी] धर्म की प्राप्ति करानेवाली स्त्री, धर्म-देशिका (पंचा १६)। °जस पुं [°यशस्] जैनमुनि-विशेष का नाम (आव४)। °जागरिया स्त्री [°जागर्या] १ धर्म-चिन्तन के लिए किया जाता जागरण (भग १२, १)। २ जन्म से छठवें दिन मे किया जाता एक उत्सव (कप्प)। °ज्झय पुं [°ध्वज] १ धर्म-द्योतक ध्वज, इन्द्र-ध्वज (राय)। २ ऐरवत क्षेत्र के पाँचवें भावी जिन-देव (सम १५४)। °ज्झाण न [°ध्यान] धर्म-चिन्तन, शुभ ध्यान-विशेष (सम ९)। °ज्झाणि वि [°ध्यानिन्] धर्म ध्यान से युक्त (आव ४)। °ट्ठि वि [°र्थिन्] धर्म का अभिलाषी (सूअ १, २, २)। °णायग वि [°नायक] १ धर्म का नेता (सम १, पडि)। °ण्णु वि [°ज्ञ] धर्म का ज्ञाता (दस ४)। °तित्थयर पु [°तीर्थकर] जिनभगवान् (उत्त २३, पडि)। °त्थ न [°स्त्र] अस्त्र-विशेष, एक प्रकार का हथियार (पउम ७१, ६३)। °त्थि देखो °ट्ठि (पचव ४)। °त्थिकाय पु [°स्तिकाय] गति-क्रिया मे सहायता पहुँचाने वाला एक अरूपी पदार्थ (भग)। °दय वि [°दय] धर्म की प्राप्ति करानेवाला, धर्म देशक (भग)। °दार न [°द्वार] धर्म का उपाय (ठा ४, ४)। °दार पुंब [°दार] धर्म-पत्नी (कप्पू)। °दास पुं [°दास] भगवान् महावीर का एक शिष्य और उपदेशमाला का कर्ता (उव)। °देव पु [°देव] एक प्रसिद्ध जैन आचार्य (सार्ध ७८)। °देसग, °देसय वि [°देशक] धर्म का उपदेश करनेवाला (राज, भग, पडि)। °धुरा स्त्री [°धुरा] धर्मरूप

(ठा २, ४, इक)। ४ गन्ध द्रव्य-विशेष (औप, जीव ३)। ५ सुधर्मा सभा का एक सिंहासन (णाया २)। ६ दिन का नववाँ मुहूर्त्त (जो २)। ७ दक्षिण रुचक-पर्वत का एक शिखर (ठा ८)। ८ पु राजा रामचन्द्र, सीता-पति (पउम १, ५, २५, ८)। ९ आठवाँ बलदेव, श्रीकृष्ण के बडे भाई। १० इस अवसर्पिणीकाल में उत्पन्न नववाँ चक्रवर्ती राजा राजा पद्मोत्तर का पुत्र (पउम ५, १५३, १५४)। ११ एक राजा का नाम (उप ६४८ टी)। १२ माल्यव नामक पर्वत का अधिष्ठाता देव (ठा २, ३)। १३ भरतक्षेत्र मे आगामी उत्सर्पिणी मे उत्पन्न होनेवाला आठवाँ चक्रवर्त्ती राजा (सम १५४)। १४ भरत क्षेत्र का भावी आठवाँ बलदेव (सम १५४)। १५ चक्रवर्त्ती राजा का निधि, जो रोग-नाशक सुन्दर वस्त्रो की पूर्ति करता है (उप ९८६ टी)। १६ राजा श्रेणिक का एक पौत्र (निर २, १)। १७ एक जैन मुनि का नाम (कप्प)। १८ एक ह्रद (कप्प)। १९ पद्म-वृक्ष का अधिष्ठाता देव (ठा २, ३)। २० महापद्म नामक जिनदेव के पास दीक्षा लेनेवाला एक राजा, एक भावी राजर्षि (ठा ८)। °गुम्म न [°गुल्म] १ आठवें देवलोक मे स्थित एक देव-विमान का नाम (सम ३५)। २ प्रथम देवलोक में स्थित एक देव-विमान का नाम (महा)। ३ पु. राजा श्रेणिक का एक पौत्र (निर २, १)। ४ एक भावी राजर्षि, महापद्म नामक जिनदेव के पास दीक्षा लेनेवाला एक राजा (ठा ८)। °चरिय न [°चरित] १ राजा रामचन्द्र की जीवनी—चरित्र। २ प्राकृत भाषा का एक प्राचीन ग्रंथ, जैन रामायण (पउम ११८, १२१)। °णाभ पु [°नाभ] १ वासुदेव, विष्णु (पउम ४०, १) २ आगामी उत्सर्पिणी-काल में भरतक्षेत्र में होनेवाला प्रथम जिन-देव का नाम (पव ४६)। ३ कपिल-वासुदेव के एक माण्डलिक राजा का नाम (णाया १, १६—पत्र २१३)। °दल न [°दल] कमल-पत्र (प्राकृ)। °द्दह पुं [°द्रह] विविध प्रकार के कमलो से परिपूर्ण एक महान् ह्रद का नाम (सम १०४, कप्प, पउम १०२, ३०)। °द्धय पुं [°ध्वज] एक भावी राजर्षि, जो महापद्म नामक जिनदेव के पास दीक्षा लेगा (ठा ८)। °नाह देखो °णाभ (उप ६४८ टी)। °पुर न [°पुर] एक दक्षिणात्य नगर, जो आजकल 'नासिक' नाम से प्रसिद्ध है (राज)। °प्पभ पु [°प्रभ] इस अवसर्पिणी काल मे उत्पन्न षष्ठ जिन-देव का नाम (कप्प)। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] एक पुष्करिणी का नाम (इक)। °प्पह देखो °प्पभ (ठा ५, १, सम ४३, पडि)। °भद्द पु [°भद्र] राजा श्रेणिक का एक पौत्र (निर २, १)। °मालि पु [°मालिन्] विद्याधर-वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ४२)। °मुह देखो पउमाणण (पड्)। °रह पु [°रथ] १ विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, ४३)। २ मथुरा नगरी के राजा जयसेन का पुत्र (महा)। °राय पुं [°राग] रक्त-वर्ण मणि-विशेष (१३६, १६६)। °राय पुं [°राज] धातकीखण्ड की अपरकंका नगरी का एक राजा, जिसने द्रौपदी का अपहरण किया था (ठा १०)। °रुक्ख पुं [°वृक्ष] १ उत्तर-कुरुक्षेत्र मे स्थित एक वृक्ष (ठा २, ३)। २ वृक्ष सदृश बडा कमल (जीव ३)। °लया स्त्री [°लता] १ कमलिनी, पद्मिनी (जीव ३, भग, कप्प)। २ कमल के आकारवाली वल्ली (णाया १,१)। °वडिसय, °वडेंसय न [°वतंसक] पद्मावती देवी का सौधर्म नामक देवलोक में स्थित एक विमान (राज, णाया २—पत्र २५३)। °वरवेइया स्त्री [°वरवेदिका] १ कमलो की श्रेष्ठ वेदिका (भग) २ जम्बू द्वीप की जगती के ऊपर रही हुई देवो की एक भोग-भूमि (जीव ३)। °वूह पुं [°व्यूह] सैन्य की पद्माकार रचना (पण्ह १, ३)। °सर पु [°सरस्] कमलो से युक्त सरोवर (णाया १, १, कप्प, महा)। °सिरी स्त्री [°श्री] १ अष्टम चक्रवर्त्ती सुभूमराज की पटरानी (सम १५२)। २ एक स्त्री का नाम (कुमा)। °सेण पुं [°सेन] १ राजा श्रेणिक के एक पौत्र का नाम, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (निर १, २)। २ नागकुमार-जातीय एक देव का नाम (दीव)। °सेहर पु [°शेखर] पृथ्वीपुर नगर के एक राजा का नाम (धम्म ७)। °गर पु [°कर] १ कमलो का समूह। २ सरोवर (उप १३३ टी)। °सण न [°सन] पद्माकार आसन (ज १)।

पउमग पुन [पद्मक] केसर (दस ६, ६४)।

पउमप्पह पु [पद्मप्रभ] विक्रम की तेरहवीं शताब्दी का एक जैन आचार्य (विपा ३)।

पउमा स्त्री [पद्मा] १ लक्ष्मी। २ देवी-विशेष। ३ लौंग, लवँग। ४ पुष्प-विशेष, कुसुम्भ-पुष्प (प्राकृ २८)।

पउमा स्त्री [पद्मा] १ बीसवें तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रतस्वामी की माता का नाम (सम १५१)। २ सौधर्म देवलोक के इन्द्र की एक पटरानी का नाम (ठा ८—पत्र ४२६, पउम १०२, १५९)। ३ भीम नामक राक्षसेन्द्र की एक पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४)। ४ एक विद्याधर कन्या का नाम (पउम ६, २४)। ५ रावण की एक पत्नी (पउम ७४, १०)। ६ लक्ष्मी (राज)। ७ वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३६)। ८ चौदहवें तीर्थंकर श्रीअनन्तनाथ की मुख्य शिष्या का नाम (पव ९)। ९ सुदर्शना-जम्बू की उत्तर दिशा मे स्थित एक पुष्करिणी (इक)। १० दूसरे बलदेव और वासुदेव की माता का नाम। ११ लेश्या-विशेष (राज)।

पउमाड पुं [दे] वृक्ष विशेष, पमाड का पेड चकवड (दे ५, ५)।

पउमाणण पुं [पद्मानन] एक राजा का नाम (उप १०३१ टी)।

पउमाभ पुं [पद्माभ] षष्ठ तीर्थंकर का नाम (पउम १, २)।

पउमार [दे] देखो पउमाड (दे ५ ५ टि)।

पउमावई स्त्री [पद्मावती] १ जम्बूद्वीप के सुमेरु पर्वत के पूर्व तरफ के रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी-देवी (ठा ८)। २ भगवान् पार्श्वनाथ की शासन-देवी, जो नागराज धरणेन्द्र की पटरानी है (सति १०)। ३ श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम (अंत १५)। ४ भीम-नामक राक्षसेन्द्र की एक पटरानी (भग १०, ५)। ५ शक्रेन्द्र की एक

धरग्ग पुं [दे] कपास (दे ५, ५८)।

धरण पु [धरण] १ नाग-कुमार देवों का दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३, औप)। २ यदुवंशीय राजा अन्धक-वृष्णि का एक पुत्र (अंत ३)। ३ श्रेष्ठि-विशेष (उप ७२८ टी, सुपा ५५९)। ४ न. धारण करना (से ३, ३, सार्ध ६, वज्जा ४८)। ५ सोलह तोले का एक परिमाण (जो २)। ६ धरना देना, लंघन-पूर्वक उपवेशन (पव ३८)। ७ तौलने का साधन (जो २)। ८ वि धारण करनेवाला (कुमा)। °प्पभ पुं [°प्रभ] धरणेन्द्र का उत्पात-पर्वत (ठा १०)।

धरणा स्त्री [धरणा] देखो धारणा (णदि)।

धरणि स्त्री [धरणि] १ भूमि, पृथिवी (औप, कुमा)। २ भगवान् अरनाथ की शासन-देवी (संति १०)। ३ भगवान् वासुपूज्य की प्रथम शिष्या (सम १५२, पव ६)। °खील पुं [°कील] मेरु पर्वत (सुज्ज ५)। °चर पुं [°चर] मनुष्य (पउम १०१, ४७)। °धर पु [°धर] १ पर्वत, पहाड (अजि १७)। २ अयोध्या नगरी का एक सूर्य-वंशीय राजा (पउम ५,५०)। °धरप्पवर पुं [°धरप्रवर] मेरु पर्वत (अजि १५)। °धरवइ पुं [°धर-पति] मेरु पर्वत (अजि १७)। °धरा स्त्री [°धरा] भगवान् विमलनाथ की प्रथम शिष्या (सम १५२)। °यल न [°तल] भूमि-तल, भू-तल (णाया १, २)। वइ पु [°पति] भू-पति, राजा (सुपा ३३४)। °वट्ठ न [°पृष्ठ] मही-पीठ, भूमि-तल (महा)। हर देखो धर (से ६, ३६)।

धरणिंद पु [धरणेन्द्र] नाग-कुमारो की दक्षिण दिशा का इन्द्र (पउम ५, ३८)।

धरणिसिंग पु [धरणिशृङ्ग] मेरु पर्वत (सुज्ज ५)।

धरणी देखो धरणि (प्रासू २३, पि ५३, से २, २४, कुप्र २२)।

धरा स्त्री [धरा] पृथिवी, भूमि (गउड, सुपा २०१)। °धर, °हर पुं [°धर] पर्वत, पहाड (से ६, ७६, ३८, स २६६, ७०३, उप ७६८ टी)।

धराधीस पु [धराधीश] राजा (मोह ४३)।

धराविअ वि [धारित] पकडा हुआ (स २०६, सुपा ३२५, सक्षि ३४)। २ स्थापित, 'धराविय मडय' (कुप्र १४०)।

धरिअ वि [धृत] १ धारण किया हुआ (गा १०१, सुपा १२२)। २ रोका हुआ (स २०६)।

धरिज्जंत } देखो धर = धृ।
धरिज्जमाण }

धरिणी स्त्री [धरिणी] पृथिवी, भूमि (पाअ)।

धरित्ती स्त्री [धरित्री] पृथिवी, भूमि (श्रु १२७, सम्मत्त २२६)।

धरिम न [धरिम] १ जो तराजू मे तौल कर बेचा जाय वह (श्रा १८, णाया १, ८)। २ ऋण, करजा (णाया १, १)। ३ एक तरह की नाप, तौल (जो २)।

धरियव्व देखो धर = धृ।

धरिस अक [धृष्] १ सहत होना, एकत्रित होना। २ प्रगल्भता करना, ढीठाई करना। ३ मिलना, सबद्ध होना। ४ सक हिंसा करना, मारना। ५ अमर्ष करना, सहन नही करना। धरिसइ (राज)।

धरिस सक [धर्षय्] क्षुब्ध करना, विचलित करना। धरिसेइ (उत्त ३२, १२)।

धरिसण न [धर्षण] १ परिभव, अभिभव। २ सहति, समूह। ३ अमर्ष, असहिष्णुता। ४ हिंसा, ५ बन्धन, योजन (निचू १, राज)। ६ प्रगल्भता, धृष्टता, ढीठाई (औप)।

धरेंत देखो धर = धृ।

धव पुं [धव] १ पति, स्वामी (णाया १, १, वव ७)। २ वृक्ष-विशेष (पण्ण १, उप १०३१ टी, औप)।

धवक्क अक [दे] धडकना, भय से व्याकुल होना, धुकधुकाना। धवक्कइ (सण)।

धवक्किय वि [दे] धडका हुआ, भयसे व्याकुल बना हुआ (सण)।

धवण न [धावन] धौन, चावल आदि का धावन-जल (सूक्त ८८)।

धवल पु [दे] स्व-जाति मे उत्तम (दे ५, ५७)।

धवल न [धवल] लगातार सोलह दिन का उपवास (संबोध ५८)।

धवल वि [धवल] १ सफेद, श्वेत (पाअ, सुपा २८५)। २ पुं. उत्तम बैल (गा ६३८)। ३ पु न. छन्द-विशेष (पिंग)। °गिरि पुं [°गिरि] कैलास पर्वत (ती ४६)। °गेह न [°गेह] प्रासाद, महल (कुमा)। °चंद पु [°चन्द्र] एक जैन मुनि (दं ४७)। °रव पु [°रव] मंगलगीत (सुपा २६५)। °हर न [°गृह] प्रासाद, महल (श्रा १२, महा)।

धवल सक [धवलय्] सफेद करना। धवलइ (पि ५५७)। कवकृ धवलिज्जंत (गउड)।

धवलक्क न [धवलार्क] ग्राम-विशेष, जो आजकल 'धोलका' नाम से गुजरात में प्रसिद्ध है (ती ३)।

धवलण न [धवलन] सफेद करना, श्वेती-करण (कुमा)।

धवलसउण पुं [दे] हंस (दे ५, ५९, पाअ)।

धवला स्त्री [धवला] गौ, गैया (गा ६३८)।

धवलाअ अक [धवलाय्] सफेद होना। धवलाअंत (गा ६)।

धवलाइअ वि [धवलायित] १ उत्तम बल की तरह जिसने कार्य किया हो वह। २ न. उत्तम वृषभ की तरह आचरण (सार्ध ६)।

धवलिम पुस्त्री [धवलिमन्] सफेदपन, शुक्लता, सफेदी (सुपा ७४)।

धवलिय वि [धवलित] सफेद किया हुआ (भवि)।

धवली स्त्री [धवली] उत्तम गौ, श्रेष्ठ गैया (गउड)।

धव्व पु [दे] वेग (दे ५, ५७)।

धस अक [धस्] १ धसना। २ नीचे जाना। ३ प्रवेश करना। धसइ, धसउ (पिंग)।

धस पुं [धस्] 'धस्' ऐसा आवाज, गिरने की आवाज, 'धसत्ति महिमंडले पडिओ' (महा, णाया १, १—पत्र ४७)।

धसक्क पुं [दे] हृदय की घबराहट की आवाज, गुजराती में 'धासको', 'तो जायहिअवसक्का' (श्रा १४, कुप्र ४३५)।

धसक्किअ वि [दे] खूब घबडाया हुआ (श्रा १४)।

धसल वि [दे] विस्तीर्ण, फैला हुआ (दे ५, ५८)।

पओग पुं [प्रयोग] १ शब्द-योजना (भास ६३)। २ जीव का व्यापार, चेतन का प्रयत्न, 'उप्पाओ दुविगप्पो पओगजणिओ य विस्ससो चेव' (सम २५, ठा ३, १, सम्म १२६, म ५२४)। ३ प्रेरणा (श्रा १४)। ४ उपाय (श्राच १)। ५ जीव के प्रयत्न में कारण-भूत मन आदि (ठा ३, ३)। ६ वाद-विवाद, शास्त्रार्थ (दसा ४)। °कम्म न [°कर्मन्] मन आदि की चेष्टा से आत्म-प्रदेशों के साथ बँधनेवाला कर्म (राज)। °करण न [°करण] जीव के व्यापार द्वारा होनेवाला किसी वस्तु का निर्माण, 'होइ उ एगो जीवव्वावारो तेण ज विणिम्माण पओगकरण तय वहुहो' (विसे)। °किरिया स्त्री [°क्रिया] मन आदि की चेष्टा (ठा ३, ३)। °फड्डय न [°स्पर्धक] मन आदि के व्यापार-स्थान की वृद्धि द्वारा कर्म-परमाणुओ में बढनेवाला रस (कम्मप २३)। °बंध पु [°बन्ध] जीव-प्रयत्न द्वारा होनेवाला बन्धन (भग १८, ३)। °मइ स्त्री [°मति] वाद-विषयक-परिज्ञान (दसा ४)। °सपया स्त्री [°संपत्] आचार्य का वाद-विषयक सामर्थ्य (ठा ८)। °सा अ [प्रयोगेण] जीव-प्रयत्न से (पि ३६४)।

पओज देखो पउज = प्र + युज्। पओजए (पव ६४)।

पओजग वि [प्रयोजक] विनिश्चायक, निर्णायक, गमक (धर्मसं १२२३)।

पओट्ठ देखो पउट्ठ = प्रकोष्ठ (प्राप्र, औप, पि ८४)।

पओत्त न [प्रतोत्र] प्रतोद, प्राजन-यष्टि, पेना। °धर पु [°धर] बैलगाडी होकनेवाला, बहल-वान या गाडीवान (णाया १, १)।

पओद पु [प्रतोद] ऊपर देखो (औप)।

पओप्पय पु [प्रपौत्रक] १ प्रपौत्र, पौत्र का पुत्र। २ प्रशिष्य का शिष्य, 'तेण कालेण तेण समएण विमलस्स अरहओ पओप्पए धम्मधोसे नाम अणगारे' (भग ११, ११—पत्र ५४८)।

पओप्पिय पुं [दे प्रपौत्रिक] १ वंश-परम्परा। २ शिष्य-सतति, शिष्य-संतान (भग ११, ११—पत्र ५४८ टी)।

पओरासि पुं [पयोराशि] समुद्र (सम्मत्त १७४)।

पओल पु [पटोल] पटोल, परवर, परोरा (पण्ण १)।

पओली स्त्री [प्रतोली] १ नगर के भीतर का रास्ता (अणु)। २ नगर का दरवाजा, 'गोउर पओली य' (पाअ, सुपा २६१, श्रा १२, उप पृ ८५, भवि)।

पओवट्ठाव देखो पज्जवत्थाव। पओवट्ठावेहि (पि २८४)।

पओवाह पु [पयोवाह] मेघ बादल (पउम ८, ४६, से १, २८, सुर २, ८५)।

पओस सक [प्र + द्विष्] द्वेष करना, वैर करना। पओसइ (सुख १, १४)।

पओस पु [दे प्रद्वेष] प्रद्वेष, प्रकृष्ट द्वेष (ठा १०, अंत, राय, आव ४, सुर १५, ५८, पुप्फ ४६५, कम्म १, महानि ४, कुप्र १०, स ६९६)।

पओस पुंन [प्रदोष] १ सन्ध्याकाल, दिन और रात्रि का सन्धि-काल (स १, ३४, कुमा)। २ वि प्रभूत दोषों से युक्त (से २, ११)।

पओहण (अप) देखो पवहण (भवि)।

पओहर पुं [पयोधर] १ स्तन, थन (पाअ, से १, २८, गउड, सुर २, ८५)। २ मेघ, बादल (वज्जा १००)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)।

पक पुन [पङ्क] १ कर्दम, कीचड, कादा, कादो, कीच, 'धम्ममितपि नो लग्गइ पकव्व गयणगणे' (श्रा २८, हे १, ३०, ४, ३५७, प्रासू २५), 'सुसइ व पक' (वज्जा १३४)। २ पाप (सूअ २, २)। ३ असयम, इन्द्रिय वगैरह का अनिग्रह (निचू १)। °आवलिआ स्त्री [°आवलिका] छन्द-विशेष (पिंग)। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] चौथी नरक-भूमि (ठा ७, इक)। °बहुल वि [°बहुल] १ कर्दम-प्रचुर (सम ९०)। २ पाप-प्रचुर (सूअ २, २)। ३ पुन. रत्नप्रभा नामक नरक-भूमि का प्रथम काण्ड (जीव ३)। °य न [°ज] कमल, पद्म (हे ३, २६, गउड, कुमा)। °वई स्त्री [°वती] नदी-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)।

पकज देखो पंक-य (सम्मत्त ११८)।

पंका स्त्री [पङ्का] चौथी नरक-भूमि (इक, कम्म ३, ५)।

पकाभा स्त्री [पङ्काभा] चौथी नरक-पृथिवी (उत्त ३६, १५८)।

पंकावई स्त्री [पङ्कावती] पुष्कल नामक विजय के पश्चिम तरफ की एक नदी (इक, ज ४)।

पंकिय वि [पङ्कित] पक-युक्त, कीचवाला (भग ६, ३, भवि)।

पंकिल वि [पङ्किल] कर्दमवाला (श्रा २८, गा ७६६, कप्पू, कुप्र १८७)।

पकेरुह न [पङ्केरुह] कमल, पद्म (कप्पू, कुप्र १४१)।

पक्ख पुंस्त्री [पक्ष] १ पख, पाँखि, पाँख, पक्ष (पि ७४, राय, पउम ११, ११८, श्रा १८)। २ पनरह दिन, पखवाडा (राज)। °ासण न [°ासन] आसन विशेष (राय)।

पक्खि पुंस्त्री [पक्षिन्] पक्षी, चिडिया, पक्षी (श्रा १४)। स्त्री °णी (पि ७४)।

पंखुडिआ } स्त्री [दे] पख, पत्र (कुप्र २६,
पखुडी } दे ६, ८)।

पंग सक [ग्रह्] ग्रहण करना। पगइ (हे ४, ४०९)।

पगण न [प्राङ्गण] आँगन (कुप्र २५०)।

पगु वि [पङ्गु] पाद विकल, खञ्ज, लंगडा, लूला, खोडा (पाअ, पि ३८०, पिंग)।

पगुर सक [प्रा + वृ] ढकना, आच्छादन करना। पगुरइ (भवि)। सकृ पगुरिवि (भवि)।

पगुरण न [प्रावरण] वस्त्र, कपडा (हे १, १७५, कुमा, गा ७८२)।

पगुल वि [पङ्गुल] देखो पगु (विपा १ १, स ७५, पाअ)।

पच त्रि व [पञ्चन्] पाच, ५ (हे ३ १२३, कप्प, कुमा)। °उल न [°कुल] पंचायत (स २२२)। °उलिय पुं [°कुलिक] पचायत में बैठ कर विचार करनेवाला (स २२२)। °कत्तिय पुं [°कृत्तिक] भगवान् कुन्थुनाथ, जिनके पाँचो कल्याणक कृत्तिका नक्षत्र में हुए थे (ठा ५, १)। °कप्प पु [°कल्प] श्रीभद्रबाहुस्वामि-कृत प्राचीन ग्रन्थ का नाम (पचभा)। °कल्लाणय न [कल्याणक] १ तीर्थंकर का च्यवन, जन्म, दीक्षा,

धारा स्त्री [दे] रण-मुख, रण-भूमि का अग्रभाग (दे ५, ५६)।

धारा स्त्री [धारा] १ अस्त्र के आगे का भाग, धार (गउड, प्रासू ६२)। २ प्रवाह, णाली (महा)। ३ अश्व की गति-विशेष (कुमा, महा)। ४ जल धारा, पानी की धारा। ५ वर्षा, वृष्टि। ६ द्रव पदार्थों का प्रवाह रूप से पतन (गउड)। ७ एक राज-पत्नी (आवम)। °कयंब पु [°कदम्ब] कदम्ब की एक जाति, जो वर्षा में फलती-फूलती है (कुमा)। °धर पु [°धर] मेघ (सुपा २०१)। °वारि न [°वारि] धारा से गिरता जल (भग १३ ६)। °वारिय वि [°वारिक] जहाँ धारा से पानी गिरता हो वह (भग १३, ६)। °हय वि [°हत] वर्षा से सिक्त (कप्प)। °हर देखो °धर (सुर १३, १९५)।

धारा स्त्री [धारा] मालव देश की एक नगरी (मोह ८८)।

धारावास पु [दे] १ भेक, मेढक, बेंग (दे ५, ६३, षड्)। २ मेघ (दे ५, ६३)।

धारि वि [धारिन्] धारण करनेवाला (औप, कप्प)।

धारित देखो धार = धारय्।

धारिट्ठ न [धार्ष्ट्य] धृष्टता, उद्दण्डता, गर्व, साहस (आख्या० म० कोश० अ० २३ भावटीका कथा पत्र ५२६)।

धारिणी देखो धारणी (औप)।

धारित्तए देखो धार = धारय्।

धारिय वि [धारित] धारण किया हुआ (भवि, आचा)।

धारी देखो धत्ती (हे २, ८१)।

धारी देखो धारा (कुमा)।

धारेत्तए } देखो धार = धारय्।
धारेयव्व }

धाव सक [धाव्] १ दौड़ना। २ शुद्ध करना, धोना। धावइ (हे ४, २२८, २३८)। वकृ धावंत, धावमाण (प्रासू ८४, महा, कप्प)। संकृ. धाविऊण (महा)।

धावण न [धावन] १ वेग से गमन, दौड़ना। (सूअ १, ७)। २ प्रक्षालन, धोना, (कुप्र १६४)।

धावणय पु [धावनक] दौड़ते हुए समाचार पहुँचाने का काम करनेवाला, हरकारा, सदेसिया (सुपा १०५, २९५)।

धावणया स्त्री [धान] स्तन-पान करना (उप, ८३३)।

धावमाण देखो धाव।

धाविअ वि [धावित] दौड़ा हुआ (भवि)।

धाविर वि [धावितृ] दौड़नेवाला (सण, सुपा ५४)।

धावी देखो धाई = धात्री (उप १३९ टी, म ६६, सुर २, ११२, १६, ९८)।

धाहा स्त्री [दे] धाह, पुकार, चिल्लाहट (पउम ५३, ८८ सुपा ३१७, ३४०)।

धाहाविय न [दे] धाह, पुकार, चिल्लाहट (स ३७०, सुपा ३८०, ४६६, महा)।

धाहिय वि [दे] पलायित, भागा हुआ (धम्म ११ टी)।

धि अ [धिक्] धिक्कार, छी (रंभा)।

धिइ स्त्री [धृति] १ धैर्य, धीरज (सूअ १, ८, षड्)। २ धारण (आवम)। ३ धारणा, ज्ञात विषय का अविस्मरण (विसे)। ४ धरण, अवस्थान (सूअ १, ११)। ५ अहिंसा (पण्ह २, १)। ६ धैर्य की अधिष्ठायिका देवी। ७ देवी की प्रतिमा-विशेष (राज, णाया १, १ टी—पत्र ४३)। ८ तिगिञ्छि-द्रह की अधिष्ठायिका देवी (इक, ठा २३)। °कूड न [°कूट] धृति-देवी का अधिष्ठित शिखर-विशेष (ज ४)। °धर पु [°धर] १ एक अन्तकृद् महर्षि। २ 'अंतगड-दसा' सूत्र का एक अध्ययन (अंत १८)। °म, °मंत वि [°मत्] धीरजवाला (ठा ८, पण्ह २, ४)।

धिइ स्त्री [धृति] तेला, लगातार तीन दिन का उपवास (संबोध ५८)।

धिक्कय वि [धिक्कृत] १ धिक्कारा हुआ (वव १)। २ न धिक्कार, तिरस्कार (बृह ६)।

धिक्करण न [धिक्करण] तिरस्कार, धिक्कार (णाया १, १६)।

धिक्करिअ वि [धिक्कृत] धिक्कारा हुआ (कुप्र १५७)।

धिक्कार पु [धिक्कार] १ धिक्कार, तिरस्कार (पण्ह १, ३, द्र २६)। २ युगलिक मनुष्यों के समय की एक दण्ड-नीति (ठा ७—पत्र ३९८)।

धिक्कार सक [धिक् + कारय्] धिक्कारना, तिरस्कार करना। कवकृ धिक्कारिज्जमाण (पि ५६३)।

धिज्ज न [धैर्य] धीरज, धृति (हे २, ६४)।

धिज्ज वि [धेय] धारण करने योग्य (णाया १, १)।

धिज्ज वि [ध्येय] ध्यान योग्य, चिन्तनीय (णाया १, १)।

धिज्जाइ पुस्त्री [द्विजाति, धिग्जाति] ब्राह्मण, विप्र। स्त्री. 'तत्थ भद्दा नाम धिज्जाइणी' (आवम)।

धिज्जाइय } पुस्त्री [द्विजातिक, धिग्जा-
धिज्जाईय } तीय] ब्राह्मण, विप्र (महा, उप १२९, आव ३)।

धिज्जीविय न [धिग्जीवित] निन्दनीय जीवन (सूअ २, २)।

धिट्ठ वि [धृष्ट] ढीठ, प्रगल्भ। २ निर्लज्ज, बेशरम (हे १, १३०, सुर २, ९, गा ६२७, श्रा १४)।

धिट्ठज्जुण्ण देखो धट्ठज्जुण्ण (पि २७८)।

धिट्ठिम पुस्त्री [धृष्टत्व] धृष्टता, ढीठाई (सुपा १२०)।

धिद्धी } अ [धिक् धिक्] छी छी (उव,
धिधी } व ९१, रंभा)।

धिप्प अक [दीप्] दीपना, चमकना। धिप्पइ (हे १, २२३)।

धिप्पिर वि [दीप्र] देदीप्यमान, चमकीला (कुमा)।

धिय अ [धिक्] धिक्कार, छी, 'वेइ गिरं धिय मुंडिय' (उप ६३४)।

धिरत्थु अ [धिगस्तु] धिक्कार हो (णाया १, १६, महा, प्रारू)।

धिसण पु [धिषण] बृहस्पति, सुर-गुरु (पाअ)।

धिसि अ [धिक्] धिक्कार, छी (सुपा ३९५, सण)।

धी देखो धीआ, 'जं मंगल कुंभनिवस्स धीए मल्लीइ राईसरवंदि आए' (मंगल १२, २०)।

पंचगुलिआ स्त्री [पञ्चाङ्गुलिका] वल्ली-विशेष (पराण १—पत्र ३३)।

पंचग वि [पञ्चक] पाँच (रुपया आदि) की कीमत का (दमनि ३, १३)।

पंचग न [पञ्चक] पाँच का समूह (आचा)।

पंचजण्ण पुं [पाञ्चजन्य] श्रीकृष्ण का शङ्ख (काप्र ८६२, गा ९७४)।

पंचत्त } न [पञ्चत्व] १ पाँचपन, पञ्च-पंचत्तण } रूपता (सुर १, ५)। २ मरण, मौत (सुर १, ५, सण, उप पृ १२४)।

पंचपुंड वि [पञ्चपुण्ड्र] पाँच स्थानो मे पुण्ड्र-चिह्न (सफेदी) वाला (पिंड भा ४३)।

पंचपुल पुन [दे] मत्स्य-बन्धन विशेष, मछली पकड़ने का जाल-विशेष (विपा १, ८—पत्र ८५ टी)।

पंचम वि [पञ्चम] १ पाँचवाँ (उवा)। २ पु. स्वर-विशेष (ठा ७)। °धारा स्त्री [°धारा] अश्व की एक तरह की गति (महा)।

पंचमहब्भूइअ वि [पाञ्चमहाभूतिक] पाँच महाभूतो को माननेवाला, साख्यमत का अनुयायी (सूअ २, १, २०)।

पंचमासिअ वि [पाञ्चमासिक] १ पाँच मास की उम्र का। २ पाँच मास मे पूर्ण होनेवाला (अभिग्रह आदि)। स्त्री. °आ (सम २१)।

पंचमिय वि [पाञ्चमिक] पाँचवाँ, पंचम (ओघ ६१)।

पंचमी स्त्री [पञ्चमी] १ पाँचवी (प्रामा)। २ तिथि-विशेष, पंचमी तिथि (सम २९, श्रा २८)। ३ व्याकरण-प्रसिद्ध अपादान विभक्ति (अणु)।

पंचयन्न देखो पञ्चजण्ण (गाया १, १६, सुपा २६४)।

पंचलोइया स्त्री [पञ्चलौकिका] भुजपरिसर्प-विशेष, हाथ से चलनेवाले सर्प-जातीय प्राणी की एक जाति (जीव २)।

पंचवडी स्त्री [पञ्चवटी] पाँच वट-वृक्षवाला एक स्थान, जहाँ श्रीरामचन्द्रजी ने अपने वनवास के समय आवास किया था, इस स्थान का अस्तित्व कई लोग 'नासिक' नगर के पास गोदावरी नदी के किनारे मानते हे, जब कि आधुनिक गवेषक लोग वस्तर रजवाड़े के दक्षिणी छोर पर, गोदावरी के किनारे, इसका होना सिद्ध करते है (उत्तर ८१)।

पंचवयण पुं [पञ्चवदन] सिंह, मृगराज (सम्मत्त १३८)।

पंचामय न [पञ्चामृत] ये पाँच वस्तु—दही, दूध, घी, मधु तथा शक्कर (सिरि २१८)।

पंचाल पुं [पाञ्चाल] कामशास्त्र-प्रणेता एक ऋषि (सम्मत्त १३७)।

पञ्चाल पुं. व [पञ्चाल, पाञ्चाल] १ देश-विशेष, पञ्जाब देश (णाया १, ८, महा, पराण १)। २ पुं. पञ्जाब देश का राजा (भवि)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)।

पंचालिआ स्त्री [पञ्चालिका] पुतली, काष्ठादि-निर्मित छोटी प्रतिमा (कप्पू)।

पंचालिआ स्त्री [पाञ्चालिका] १ द्रुपद-राज की कन्या, द्रौपदी (वेणी १५८)। २ गान का एक भेद (कप्पू)।

पंचावण्ण } स्त्रीन [दे.पञ्चपञ्चाशत्] १ पंचावन्न } सख्या-विशेष, पचपन, ५५। २ जिनकी सख्या पचपन हो वे (हे २, १७४, दे २, २७, दे २, २७ टि)।

पंचावन्न वि [दे पञ्चपञ्चाश] पचपनवाँ (पउम ५५, ६१)।

पंचिंदिय } वि [पञ्चेन्द्रिय] १ वह जीव पंचिंद्रिय } जिसको त्वचा, जीभ, नाक, आँख और कान ये पाँचो इन्द्रियाँ हो (पराण १, कप्प, जीव १, भवि)। २ न. त्वचा आदि पाँच इन्द्रियाँ (धर्म ३)।

पंचिया स्त्री [पञ्चिका] १ पाँच की संख्या-वाला। २ पाँच दिन का (वव १)।

पंचुंबर स्त्रीन [पञ्चोदुम्बर] वट, पीपल, उदुम्बर, प्लक्ष और काकोदुम्वरी का फल (भवि)। स्त्री. °री (श्रा २०)।

पंचुत्तरसय वि [पञ्चोत्तरशततम] एक सौ पाँचवाँ, १०५ वाँ (पउम १०५, ११५)।

पंचेडिय वि [दे] विनाशित, 'जेण लोयस्स लोहत्तणं फेडियं दुट्ठकंदप्पदप्पं च पंचेडियं' (भवि)।

पंचेसु पुं [पञ्चेषु] कामदेव, कंदर्प (कप्पू; रंभा)।

पंछि पु [पक्षिन्] पक्षी, पखी, पखेरू, चिड़िया (उप १०३१ टी)।

पंजर पुन [पञ्जर] १ आचार्य, उपाध्याय, प्रवर्त्तक आदि मुनि-गण। २ उन्मार्ग-गमन-निषेध, सन्मार्ग-प्रवर्तन। ३ स्वच्छन्दता-प्रति-षेध (वव १)।

पंजर न [पञ्जर] पिंजरा, पिंजड़ा (गउड, कप्पू, अच्चु २)।

पंजरिअ पु [दे] जहाज का कर्मचारी-विशेष (सिरि ४२७)।

पंजरिय वि [पञ्जरित] पिंजरे में बंद किया हुआ (गउड)।

पंजल वि [प्राञ्जल] सरल, सीधा, ऋजु (सुपा ३९४; वज्जा ३०)।

पंजलि पुंस्त्री [प्राञ्जलि] प्रमाण करने के लिए जोड़ा हुआ कर-संपुट, हस्त न्यास-विशेष, संयुक्त कर-द्वय (उवा)। °उड पुं [°पुट] अञ्जलि-पुट, संयुक्त कर-द्वय (सम १५१, औप)। °उड, °कड वि [कृतप्राञ्जलि] जिसने प्रणाम के लिए हाथ जोड़ा हो वह (भग, औप)।

पंजिअ न [दे] यथेच्छ दान, मुँह-माँगा दान; 'रायकुलेपु भमंतो पंजिअदाएण पणिएहेइं' (सिरि ११८)।

पंड वि [पाण्ड्य] देश-विशेष मे उत्पन्न। स्त्री. °डी, 'पंडीणं गंडवालीपुलमणवला' (कप्पू)।

पंड } पुं [पण्ड, °क] १ नपुंसक, क्लीब पंडग } (ओघ ४६७, सम १५, पाम)। २ पंडय } न. मेरु पर्वत का एक वन (ठा २, ३, इक)।

पंडय देखो पंडव (हे १, ७०)।

पंडर पु [पाण्डर] १ क्षीरवर नामक द्वीप का अधिष्ठाता देव (राज)। २ श्वेत वर्ण, सफेद रंग। ३ वि. श्वेतवर्णवाला, सफेद (कप्प)। °भिक्खु पुं [°भिक्षु] श्वेताम्बर जैन सप्रदाय का मुनि (स ५५२)।

पंडर देखो पंडुर (स्वप्न ७१)।

पंडरंग पुं [दे] रुद्र, महादेव, शिव (दे ६, २३)।

पंडरंगु पुं [दे] ग्रामेश, गाँव का अधिपति (षड्)।

पंडरिय देखो पंडुरिअ (भवि)।

धुत्तीरय न [धत्तूरक] घतूरे का पुष्प (वज्जा १०६)।

धुदुधुअ (अप) अक [शब्दाय्] आवाज करना। धुद्धुअइ (हे ४, ३९५)।

धुप्प देखो धिप्प। धुप्पइ (प्राकृ ७०)।

धुम्म पु [धूम्र] १ धूम, धुआं। २ वर्ण-विशेष, कपोत-वर्ण। ३ वि कपोत वर्ण-वाला। °क्ख पु [°क्ष] एक राक्षस (मि १२, ६०)।

धुर न देखो धुरा (उप पृ ६३)।

धुर पुं [धुर] १ ज्योतिष्क ग्रह-विशेष (ठा २, ३)। २ कर्जदार, ऋणी, 'जस्स कल-सम्मि वहियाखडाइं तस्स धुरधण लब्भं, पुणरवि देउं धुराण' (सुपा ४२६)।

धुरंधर वि [धुरन्धर] १ भार को वहन करने में समर्थ, किसी कार्य को पार पहुँचाने में शक्तिमान्, भार-वाहक (से ३, ३६)। २ नेता, मुखिया, अगुआ (सण, उत्तर २०)। ३ पु गाडी, हल आदि खीचनेवाला बैल (दे ८, ४४)।

धुरा स्त्री [धुर्] १ गाडी वगैरह का अग्र भाग, धुरी (उव)। २ भार, बोझा। ३ चिंता (हे १, १६)। °धार वि [°धार] धुरा को वहन करनेवाला, धुरन्धर (पउम ७, १७१)।

धुरी स्त्री [धुरी] अक्ष, धुरा, गाडी का जूआ (अणु)।

धुरीण वि [धुरीण] धुरन्धर, मुखिया, अगुआ (धर्मवि १३६, सम्मत्त ११८)।

धुव सक [धाव्] धोना, शुद्ध करना। धुवइ, धुवति (हे ४, २३८, गा ४३३, पिंड २८)। वकृ. धुवंत (से ८, १०२)। कवकृ धुव्वंत, धुव्वमाण (गा ५६३, से ६, ४५, वज्जा २४, पि ५३८)।

धुव सक [धू] कँपाना, हिलाना। धुवइ (हे ४, ५६, षड्)। कर्म. धुव्वइ (कुमा)। कवकृ धुव्वत (कुमा)।

धुव वि [ध्रुव] १ निश्चल, स्थिर (जीव ३)। २ नित्य, शाश्वत, सर्वदा-स्थायी (ठा ५, ३, सूअ २, ४)। ३ अवश्यभावी (सूअ २, १)। ४ निश्चित, नियत (आचा)। ५ पु. अश्व के शरीर का आवर्त्त (कुमा)। ६ मोक्ष, मुक्ति। ७ सयम, इन्द्रियादि-निग्रह (सूअ १, २, १)। ८ ससार (अणु)। ९ न मुक्ति का कारण, मोक्ष-मार्ग (आचा)। १० कर्म (अणु)। ११ अत्यन्त, अतिशय, 'धुवमो-गिण्हइ' (ठा ६)। °कम्मिय पुं [°कर्मिक] लोहार आदि शिल्पी (वव १)। °चारि वि [°चारिन्] मुमुक्षु, मुक्ति का अभिलाषी (आचा)। °णिग्गह पुं [°निग्रह] आव-श्यक, अवश्य करने योग्य अनुष्ठान-विशेष (अणु)। °मग्ग पुं [°मार्ग] मुक्ति-मार्ग, मोक्ष-मार्ग (सूअ १, ४, १)। °राहु पुं [°राहु] राहु-विशेष (सम २९)। °वण्ण पुं [°वर्ण] १ सयम। २ मोक्ष, मुक्ति। ३ शाश्वत यश (आचा)। देखो धुअ = ध्रुव।

धुवण न [धावन] १ प्रक्षालन (ओघ ७२, ३४७, स २७२)। २ वि कँपानेवाला, हिलानेवाला। स्त्री °णी (कुमा)।

धुवण पुन [धूपन] १ धूप देना। धूम-पान (दस ३, ९)।

धुविया स्त्री [ध्रुविता] कर्म-विशेष, ध्रुव-बन्धिनी कर्म-प्रकृति (पंच ५, ६६)।

धुव्व देखो धुव = धाव्। धुव्वइ (सक्षि ३६)।

धुव्वत देखो धव = धू।

धुव्वत } देखो धुव = धाव्।
धुव्वमाण }

धुहअ वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ (षड्)।

धूअ वि [धूत] देखो धुअ = धुत (आचा, दस ३, १३, पि ३१२, ३९२, सूअ १, ४, २)।

धूअ देखो धूव = धूप (सुपा ६५७)।

धूअ न [धूत] पहले बँधा हुआ कर्म, पूर्व-कर्म (सूअ २, २, ६५)।

धूआ स्त्री [दुहितृ] लड़की, पुत्री (हे २, १२६, प्रासू ९४)।

धूण पुं [दे] गज, हाथी (दे ५, ६०)।

धूणिय वि [धूनित] कम्पित (कुप्र ६८)।

धूम पुं [धूम] १ हींग आदि वघार (पिंड २५०)। २ क्रोध, गुस्सा। ३ वि. क्रोधी (संबोध १६)।

धूम पु [धूम] १ धूम, धुआं, अग्नि-चिह्न (गउड)। २ द्वेष, अप्रीति (पण्ह २, १)। °इंगाल पुं व [°ाङ्गार] द्वेष और राग (ओघ २८८ भा)। °केउ पुं [°केतु] १ ज्योतिष्क ग्रह-विशेष (ठा २, ३, पण्ह १, ५, औप)। २ वह्नि, अग्नि, आग (उत्त २२)। ३ अशुभ उत्पात का सूचक तारा-पुञ्ज (गउड)। °चारण पुं [°चारण] धूम के अवलम्बन से आकाश में गमन करने की शक्तिवाला मुनि-विशेष (गच्छ २)। °जोणि पु [°योनि] बादल, मेघ (पाअ)। °ज्झय देखो °द्धय (राज)। °दोस पु [°दोष] भिक्षा का एक दोष, द्वेष से भोजन करना (आचा २, १, ३)। °द्धय पु [°ध्वज] वह्नि, अग्नि (पाअ, उप १०३१ टी)। °प्पभा, °प्पहा स्त्री [°प्रभा] पाचवी नरक-पृथिवी (ठा ७, प्रासू)। °ल वि [°ल] धुआँ वाला (उप २६४ टी)। °वडल पुंन [°पटल] धूम-समूह (हे २, १९८)। °वण्ण वि [°वर्ण] पाण्डुर वर्णवाला (णाया १, १७)। °सिहा स्त्री [°शिखा] धुएँ का अग्रभाग (ठा ४, २)।

धूमग पु [दे] भ्रमर, भौंरा, भमरा (दे ५,५७)।

धूमण न [धूमन] धूम-पान (सूअ २, १)।

धूमद्दार न [दे] गवाक्ष, वातायन, झरोखा (दे ५)।

धूमद्धय पुं [दे] १ तडाग, तलाव, तालाब २ महिष, भैंसा (दे ५, ६३)।

धूमद्धयमहिसी स्त्री व [दे] कृत्तिका नक्षत्र (दे ५ ६२)।

धूमपलियाम वि [दे] गर्त्त मे डालकर आग लगाने पर भी जो कच्चा रह जाय वह (निचू १५)।

धूममहिसी स्त्री [दे] नीहार, कुहरा, कुहासा (दे ५ ६१, पाअ)।

धूमरी स्त्री [दे] १ नीहार, कुहासा (दे ५, ६१)। २ तुहिन, हिम (षड)।

धूमसिहा } स्त्री [दे] नीहार, कुहासा (दे ५,
धूमा } ६१, ठा १०)।

धूमा देखो धूमाअ। धूमाइ (प्राकृ ७१)।

धूमाअ अक [धूमाय्] १ धुआँ करना। २ जलाना। ३ धूम की तरह आचरना।

पंथाण देखो पंथ = पन्थ, पथिन्, 'पंथझाणे पयाणंझाणे' (आउ ११)।

पंथिअ पुं [पन्थिक, पथिक] मुसाफिर, पान्थ, 'पथिअ ण एत्थ सैथर' (काप्र १५८, महा, कुमा, णाया १, ८, वज्जा ६०, १५८)।

पंथुच्छुहणी स्त्री [दे] श्वशुर-गृह से पहली बार आनीत स्त्री (दे ६, ३५)।

पंपुअ वि [दे] दीर्घ, लम्बा (दे ६, १२)।

पफुल्ल वि [प्रफुल्ल] विकसित (पिंग)।

पफुल्लिअ वि [दे] गवेषित, जिसकी खोज की गई हो वह (दे ६, १७)।

पंस सक [पांसय्] मलिन करना। पंसेई (विसे ३०५२)।

पंसण वि [पांसन] कलंकित करनेवाला, दूषण लगानेवाला (हे १, ७०, सुपा ३४५)।

पंसु पुं [पांसु, पांशु] धूली, रज, रेणु (हे २६, पाम, आचा)। °कीलिय, °क्कीलिय वि [°क्रीडित] जिसके साथ बचपन में पांशु-क्रीडा की गई हो वह, बचपन का दोस्त (महा, सण)। °पिसाय पुस्त्री [°पिशाच] जो रेणु-लिप्त होने के कारण पिशाच के तुल्य मालूम पड़ता हो वह (उत्त १२)। °मूलिय पुं [°मूलिक] विद्याधर, मनुष्य-विशेष (राज)।

पंसु पुं [पर्शु] कुठार, फरसा (हे १, २६)।

पंसु देखो पसु (षड्)।

पंसुखार पु [पांशुक्षार] एक तरह का नोन, ऊषर लवण (दस ३, ८)।

पंसुल पु [दे] १ कोकिल, कोयल। २ जार, उपपति (दे ६, ६६)। ३ वि रुद्ध, रोका हुआ (षड्)।

पंसुल पुं [पांसुल] १ पुंश्चल, परस्त्री-लम्पट (गा ५१०, ५६६)। २ वि. धूलि-युक्त (गउड)।

पंसुला स्त्री [पांसुला] कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री (कुमा)।

पंसुलिअ वि [पांसुलित] धूलि-युक्त किया हुआ, 'पंसुलिअकरेण' (गउड)।

पंसुलिआ स्त्री [दे. पांशुलिका] पार्श्व की हड्डी (पव २५३)।

पंसुली स्त्री [पांसुली] कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री (पाअ, सुर १५, २, हे २, १७९)।

पकंथ देखो पगथ (आचा १, ६, २)।

पकंथग पु [प्रकन्थक] अश्व विशेष, एक प्रकार का घोडा (ठा ४, ३—पत्र २४८)।

पकंप पुं [प्रकम्प] कम्प, काँपना (आव ४)।

पकंपण न [प्रकम्पन] ऊपर देखो (सुपा ६५१)।

पकंपिअ वि [प्रकम्पित] प्रकम्प-युक्त, काँपा हुआ (आव २)।

पकंपिर वि [प्रकम्पितृ] काँपनेवाला (उप पृ १३२)। स्त्री. °री (रंभा)।

पकड वि [प्रकृत] १ प्रस्तुत, प्रक्रान्त, उपस्थित, असली, सच्चा (भग ७, १०—पत्र ३२४, १८, ७—पत्र ३५०)। २ कृत, निर्मित (भग १८, ७)।

पकड देखो पगड = प्रकट (भग ७, १०)।

पकड्ढ देखो पगडढ। कवकृ. पकड्ढिज्जमाण (औप)।

पकड्ढ वि [प्रकृष्ट] १ प्रकर्ष-युक्त। २ खींचा हुआ (औप)।

पकड्ढण न [प्रकर्षण] आकर्षण, खींचाव (निचू २०)।

पकत्थ सक [प्र + कत्थ्] श्लाघा करना, प्रशंसा करना। पकत्थइ (सूअ १, ४, १, १९, पि ५४३)।

पकप्प अक [प्र + क्लृप्] १ काम में आना, उपयोग मे आना। २ काटना, छेदना। कृ पकप्प (ठा ५, १—पत्र ३००)। देखो पगप्प = प्र + क्लृप्।

पकप्प सक [प्र + कल्पय्] १ करना, बनाना। २ संकल्प करना; 'वासं वयं वित्ति पकप्पयामो' (सूअ २, ६, ५२)।

पकप्प पु [प्रकल्प] १ उत्कृष्ट आचार, उत्तम आचरण (ठा ४, ३)। २ अपवाद, बाधक नियम (उप ६७७ टी, निचू १)। ३ अध्ययन-विशेष, 'आचारांग' सूत्र का एक अध्ययन। ४ व्यवस्थापन' 'अट्ठावीसविहे आयारपकप्पे' (सम २८)। ५ कल्पना। ६ प्ररूपणा। ७ विच्छेद, प्रकृष्ट छेदन (निचू १)। ८ जैन साधुओं का एक प्रकार का आचार, स्थविर-कल्प (पचभा)। ९ एक महाग्रह, ज्योतिष देव-विशेष (सुज्ज २०)। °गंथ पुं [°ग्रन्थ] एक प्राचीन जैन ग्रन्थ, 'निशीथ' सूत्र (जीव १)। °जइ पुं [°यति] 'निशीथ' अध्ययन का जानकार साधु, 'धम्मो जिणपन्नत्तो पकप्पजइणा कहेयव्वो' (धर्म १)। °धर वि [°धर] 'निशीथ' अध्ययन का जानकार (निचू २०)। देखो पगप्प = प्रकल्प।

पकप्पणा स्त्री [प्रकल्पना] प्ररूपणा, व्याख्या; 'परूवण त्ति वा पकप्पण त्ति वा एगट्ठा' (निचू १)।

पकप्पणा स्त्री [प्रकल्पना] कल्पना (चेइय १४१, अज्झ १४२)।

पकप्पधारि वि [प्रकल्पधारिन्] 'निशीथ' सूत्र का जानकार (वव १)।

पकप्पि वि [प्रकल्पिन्] ऊपर देखो (वव १)।

पकप्पिअ वि [प्रकल्पित] काटा हुआ, 'एसा परजुत्तिलया एएण पकपि (? कप्पि)। आ णेआ' (अज्झ १०२)।

पकप्पिअ वि [प्रकल्पित] १ संकल्पित (द्र २)। २ निर्मित (महा)। ३ न. पूर्वोपार्जित द्रव्य, 'ण णो अत्थि पकप्पियं' (सूअ १, ३, ३, ४)। देखो पगप्पिअ।

पकय वि [प्रकृत] प्रवृत्त, कार्य में लगा हुआ (उप ६२०)।

पकर सक [प्र + कृ] १ करने का प्रारम्भ करना। २ प्रकर्ष से करना। ३ करना। पकरेइ, पकरंति, पकरेंति (भग, पि ५०९)। वकृ पकरेमाण (भग)। संकृ. पकरित्ता (भग)।

पकर देखो पयर = प्रकर (नाट—वेणी ७२)।

पकरणया स्त्री [प्रकरणता] करण, कृति (भग)।

पकहिअ वि [प्रकथित] जिसने कहने का प्रारम्भ किया हो वह (उप १०३१ टी, वसु)।

पकाम न [प्रकाम] १ अत्यर्थ, अत्यन्त (णाया १, १, महा, नाट—शकु २७)। २ पु. प्रकृष्ट अभिलाष (भग ७, ७)।

पकाव (अप) सक [पच्] पकाना। पकावउ (पिंग, पि ४५४)।

न देखो ण

१ प्राकृत भाषा में नकरादि सब शब्द णकारादि होते हैं, अर्थात् आदि के नकार के स्थान में नित्य या विकल्प से 'ण' होनेका व्याकरणों का सामान्य नियम है (प्राप्र २, ४२, दे ५, ६३ टी, हे १, २२९, षड् १, ३, ५३), और प्राकृत-साहित्य-ग्रन्थो मे दोनो तरह के प्रयोग पाए जाते हैं। इससे ऐसे सब सब शब्द णकार के प्रकरण मे आ जाने से यहाँ पर पुनरावृत्ति कर व्यर्थ मे पुस्तक का कलेवर बढाना उचित नही समझा गया है। पाठकगण णकार के प्रकरण मे आदि के 'ण' के स्थान मे सर्वत्र 'न' समझ लें। यही कारण है कि नकारादि शब्दो के भी प्रमाण णकारादि शब्दो मे ही दिए गए हैं।

प

प पुं [प] १ ओष्ठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्राप)। २ पाप-त्याग, 'पत्ति य पाववज्जणे' (आवम)।

प अ [प्र] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रकर्ष, 'पओस' (से २, ११)। २ प्रारम्भ, 'पणमिअ', 'पकरेइ' (ज १, भग १, १)। ३ उत्पत्ति। ४ ख्याति, प्रसिद्धि। ५ व्यवहार। ६ चारो ओर से (निचू १, हे २, २१७)। ७ प्रस्रवण, मूत्र (विसे ७८१)। ८ फिर-फिर (निचू ३, १७)। ९ गुजरा हुआ, विनष्ट, 'पासुअ' (ठा ४, २—पत्र २१३ टी)।

प° वि [प्राच्] पूर्व तरफ स्थित (भवि)।

पअंगम पु [प्लवङ्गम] छन्द-विशेष (पिंग)।

पअंघ पुं [प्रजङ्घ] राक्षस-विशेष (से १२, ८३)।

पअब्भ देखो पगब्भ = प्रगल्भ (प्राकृ ७८)।

पइ अ [प्रति] १ अपेक्षा-सूचक (दसनि ३, १)। २ लक्ष्य, तरफ, ओर, 'भरुयच्छ पइ चलियं (सम्मत्त १४१, धर्मवि ५९)।

पइ पु [पति] १ धव, भर्ता, परवरिश करनेवाला (पाअ, गा १५९, कप्प)। २ मालिक। ३ रक्षक, 'भूवई', 'तिअसगणवई', 'नरवइ' (सुपा ३६, अजि १७, १९)। ४ श्रेष्ठ, उत्तम, धरणिधरवई' (अजि १७)। °घर न [°गृह] ससुराल (षड्)। °वया, °व्वया स्त्री [°व्रता] पति-सेवा-परायण स्त्री, कुलवती स्त्री, सती (गा ४१७, सुर ६, ९७)। °हर देखो °घर (हे १, ४)।

पइ देखो पडि (ठा २, १, काल, उवर २१)।

पइअ वि [दे] १ भर्त्सित, तिरस्कृत। २ न. पहिया, रथ चक्र (दे ६, ६८)।

पइइ देखो पगइ = प्रकृति (से २, ४५)।

पइउ देखो पय = पच्।

पइउवचरण न [प्रत्युपचरण] प्रत्युपचार, प्रति-सेवा (रंभा)।

पइऊल देखो पडिकूल (नाट—विक्र ४५)।

पइचया देखो पइ-व्वया (णाया १, १६—पत्र २०४)।

पइक्क (अप) देखो पाइक्क (पिंग)।

पइकिदि देखो पडिकिदि (नाट—शकु ११६)।

पइक्क देखो पाइक्क (पिंग, पि १९४)।

पइगिइ देखो पडिकिदि (स ६२५)।

पइच्छन्न पु [प्रतिच्छन्न] भूत-विशेष (राज)।

पइज्ज (अप) वि [पतित] गिरा हुआ (पिंग)।

पइज्ज (अप) वि [प्राप्त] मिला हुआ, लब्ध (पिंग)।

पइज्जा देखो पइण्णा (भवि, सण)।

पइट्ठ वि [दे] १ जिसने रस को जाना हो वह। २ विरल। ३ पुं. मार्ग, रास्ता (दे ६, ६६)।

पइट्ठ देखो पगिट्ठ (सट्टि ५ टी)।

पइट्ठ वि [दे] प्रेषित, भेजा हुआ, 'जह अह-कुमर मिच्छो अभयपइट्ठ जिणस्स पडिबिंब' (सबोध ३)।

पइट्ठ पु [प्रतिष्ठ] भगवान् सुपार्श्वनाथ के पिता का नाम (सम १५०)।

पइट्ठ वि [प्रविष्ट] जिसने प्रवेश किया हो वह (स ४२६)।

पइट्ठव सक [प्रति-स्थापय्] मूर्ति आदि की विधि-पूर्वक स्थापना करना। पइट्ठवेज्जा (पंचा ७, ४३)।

पइट्ठवण देखो पइट्ठावण (राज)।

पक्खतर न [पक्षान्तर] अन्य पक्ष, भिन्न पक्ष, दूसरा पक्ष (नाट—महावी २५)।

पक्खद सक [प्र + स्कन्द्] १ आक्रमण करना। २ दौडकर गिरना। ३ अध्यवसाय करना 'पक्खंदे जलियं जोइं धूमकेउं दुरासयं' (राज), 'अगणि व पक्खंद पयंगसेणा' (उत्त १२, २७)।

पक्खदण न [प्रस्कन्दन] १ आक्रमण। २ अध्यवसाय। ३ दौडकर गिरना (निचू ११)।

पक्खदोलग पु [पक्ष्यन्दोलक] पक्षी का हिंडोला, झूला (राय ७५)।

पक्खज्जमाण वि [प्रखाद्यमान] जो खाया जाता हो वह (सूअ १, ५, २)।

पक्खडिअ वि [दे] प्रस्फुरित, विजृम्भित, समुत्पन्न, 'पक्खडिए सिहिपडिल्यिरे विरहे' (दे ६, २०)।

पक्खर सक [सं + नाहय्] संनद्ध करना, अश्व को कवच से सज्जित करना। पक्खरेह (सुपा २८८)। संकृ पक्खरिअ (पिंग)।

पक्खर पुं [प्रक्षर] क्षरण, टपकना (कर्पूर २६)।

पक्खर पुं [दे] जहाज की रक्षा का एक उपकरण, सामग्री (सिरि ३८७)।

पक्खर न [दे] पाखर, अश्व-संनाह, घोडे का कवच (कुप्र ४४६, पिंग)।

पक्खरा स्त्री [दे] पाखर, अश्व-सनाह (दे ६, १०), 'ओसारिअपक्खरे (विपा १, २)।

पक्खरिअ वि [संनद्ध] कवचित, सनद्ध, कवच से सज्जित (अश्व) (सुपा ५०२, कुप्र १२०, भवि)।

पक्खल अक [प्र + स्खल्] गिरना, पड़ना, स्खलित होना। पक्खलइ (कस)। वकृ. पक्खलत, पक्खलमाण (दस ५, १, पि ३०६, नाट—मृच्छ १७, बृह ६)।

पक्खाउज्ज न [पक्षातोद्य] पखाउज, पखावज, एक प्रकार का वाजा, मृदग (कप्पू)।

पक्खाय वि [प्रख्यात] प्रसिद्ध, विश्रुत (प्राकृ)।

पक्खारिण पुं [प्रक्षारिण] १ अनार्य-देश विशेष। २ पुंस्त्री. उस देश का निवासी मनुष्य। स्त्री. °णी (राय)।

पक्खाल सक [प्र + क्षालय्] पखारना, शुद्ध करना, धोना। कवकृ. पक्खालिज्जमाण (णाया १, ५)। संकृ पक्खालिअ, पक्खालिऊण (नाट—चैत ४०, महा)।

पक्खालण न [प्रक्षालन] पखारना, धोना (स ५२, औप)।

पक्खालिअ वि [प्रक्षालित] पखारा हुआ, धोया हुआ (औप, भवि)।

पक्खासण न [पक्ष्यासन] आसन-विशेष, जिसके नीचे अनेक प्रकार के पक्षियों का चित्र हो ऐसा आसन (जीव ३)।

पक्खि पुंस्त्री [पक्षिन्] पाखी, पक्षी (ठा ४, ४, आचा, सुपा ५९२)। स्त्री. °णी (श्रा १४)। °विराल पुस्त्री [°विराल] पक्षि-विशेष (भग १३, ९)। स्त्री. °ली (जीव १)। °राय पुं [°राज] गरुड (सुपा २१०)। नीचे देखो।

पक्खिअ पुंस्त्री [पक्षिक] १ ऊपर देखो (श्रा २८)। २ वि. पक्षपाती, तरफदारी करनेवाला, 'तप्पक्खिओ पुरणो अण्णो' (श्रा १२)।

पक्खिअ वि [पाक्षिक] स्वजन, ज्ञाति का (पव २६८)।

पक्खिअ वि [पाक्षिक] १ पाख में होनेवाला। २ पक्ष से सम्बन्ध रखनेवाला, अर्धमास-सम्बन्धी (कप्प, धर्म २)। ३ न. पर्व-विशेष, चतुर्दशी (लहुअ १६, द्र ४५)। °पक्खिअ पुं [°पक्षिक] नपुसक-विशेष, जिसको एक पाख मे तीव्र विषयाभिलाष होता हो और एक पक्ष मे अल्प, ऐसा नपुसक (पुप्फ १२७)।

पक्खिकायण न [पाक्षिकायन] गोत्र विशेष, जो कौशिक गोत्र की एक शाखा है (ठा ७)।

पक्खिण देखो पक्खि; 'जह पक्खिणाण गरुडो' (पउम १४, १०४)।

पक्खिणी देखो पक्खि।

पक्खित्त वि [प्रक्षिप्त] फेंका हुआ (महा, पि १८२)।

पक्खिनाह पुं [पक्षिनाथ] गरुड पक्षी (धर्मवि ८४)।

पक्खिप्प
पक्खिप्पमाण } देखो पक्खिव।

पक्खिव सक [प्र + क्षिप्] १ फेंकना, फेंक देना। २ छोडना, त्यागना। ३ डालना। पक्खिवइ (महा, कप्प)। पक्खिवइ (महा, कप्प)। पक्खिवह, पक्खिवेज्जा (आचा २, ३, २, ३)। कवकृ. पक्खिप्पमाण (णाया १, ८—पत्र १२६, १४७)। सकृ. पक्खिऊण, पक्खिप्प (महा, सूअ १, ५, १, पि ३१९)। कृ. पक्खिवेयव्व (उप ६४८ टी)। प्रयो. वकृ. पक्खिवावेमाण (णाया १, १२)।

पक्खीण वि [प्रक्षीण] अत्यन्त क्षीण, 'अहं पक्खीणविभवो' (महा)।

पक्खुडिअ वि [प्रखण्डित] खण्डित, अ-सपूर्ण (सुपा ११९)।

पक्खुब्भ अक [प्र + क्षुभ्] १ क्षोभ पाना। २ वृद्ध होना, बढना। वकृ. पक्खुब्भंत (से २, २४)।

पक्खुब्भंत देखो पक्खोभ।

पक्खुभिय वि [प्रक्षुभित] क्षोभ प्राप्त, प्रक्षुब्ध (औप)।

पक्खेव पु [प्रक्षेप] शास्त्र में पीछे से किसी के द्वारा डाला या मिलाया हुआ वाक्य (धर्मसं १०११)। °हार पुं [°हार] कवलाहार (सूअनि १७१)।

पक्खेव
पक्खेवग } पुं [प्रक्षेप, °क] १ क्षेपण, फेंकना, 'वहिया पोग्गलपक्खेवे' (उवा)। २ पूर्ति करनेवाला द्रव्य, पूर्ति के लिए पीछे से डाली जाती वस्तु, 'अपक्खेवगस्स पक्खेवं दलयइ' (णाया १, १५—पत्र १९३)।

पक्खेवण न [प्रक्षेपण] क्षेपण, प्रक्षेप (औप)।

पक्खेवय देखो पक्खेवग (बृह १)।

पक्खोड सक [वि + कोशय्] १ खोलना। २ फैलाना। पक्खोडइ (हे ४, ४२)। संकृ. पक्खोडिऊण (सुपा ३३८)।

पक्खोड सक [शद्] १ कँपाना। २ झाड़ कर गिराना। पक्खोडइ (हे ४, १३०)। सकृ. पक्खोडिय (उप ५८४)।

पइसार सक [प्र + वेशय्] प्रवेश कराना। पइसारइ (भवि)।

पइसारिय वि [प्रवेशित] जिसका प्रवेश कराया गया हो वह, 'पइसारिओ य नयरिं' (महा, भवि)।

पइहत्त पुं [दे] जयन्त, इन्द्र का एक पुत्र (दे ६, १६)।

पइहा सक [प्रति + हा] त्याग करना। संकृ पइहिऊण (उव)।

पई° देखो पइ = पति (षड्, हे १, ४, सुर १, १७६)।

पईअ वि [प्रतीत] १ विज्ञात। २ विश्वस्त। ३ प्रसिद्ध, विख्यात (विसे ७०६)।

पईअ न [प्रतीक] अंग, अवयव (रंभा)।

पईइ स्त्री [प्रतीति] १ विश्वास। २ प्रसिद्धि (राज)।

पईव देखो पलीव। पईवेइ (कस)।

पईव पु [प्रदीप] दीपक, दिया (पाअ, जी १)।

पईव वि [प्रतीप] १ प्रतिकूल (हे १, २०६)। २ पुं शत्रु, दुश्मन (उप ६४८ टी; हे १, २३१)।

पईस (अप) देखो पइस। पईसइ (भवि)।

पउ (अप) वि [पतित] गिरा हुआ (पिंग)।

पउअ देखो पागय = प्राकृत (प्राकृ ५)।

पाउअ पु [दे] दिन, दिवस (दे ६, ५)।

पउअ न [प्रयुत] सख्या-विशेष, 'प्रयुताङ्ग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो सख्या लब्ध हो वह (इक, ठा २, ४)।

पउअंग न [प्रयुताङ्ग] सख्या-विशेष, 'अयुत' को चौरासी लाख से गुणने पर जो सख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४)।

पउंज सक [प्र + युज्] १ जोडना, युक्त करना। २ उच्चारण करना। ३ प्रवृत्त करना। ४ प्रेरणा करना। ५ व्यवहार करना। ६ करना। पउंजइ (महा, भवि; पि ५०७)। पउंजति (कप्प)। वकृ. पउंजंत, पउंजमाण (औप, पउम ३५, ३६)। कवकृ पउज्जमाण (प्रयौ २३)। कृ पउंजिअव्व, पउज्ज (पण्ह २, ३, उप ७२८ टी, विसे ३३८४), पउइव्व (अप) (कुमा)।

पउंजग वि [प्रयोजक] प्रेरक, प्रेरणा करनेवाला (पचव १)।

पउंजण वि [प्रयोजन] प्रयोग करनेवाला (पउम १४, १०)। देखो पओअण।

पउंजणया } स्त्री [प्रयोजना] प्रयोग (ओघ
पउंजणा } ११४), 'दुक्ख कीरइ कव्वं कव्वम्मि कए पउंजणा दुक्ख' (वज्जा २)।

पउंजिअ वि [प्रयुक्त] जिसका प्रयोग किया गया हो वह (सुपा १४०, ४४७)।

पउंजित्तु वि [प्रयोक्तृ] प्रवृत्ति करनेवाला (ठा ५, १)।

पउंजित्तु वि [प्रयोजयितृ] प्रवृत्ति करनेवाला (ठा ५, १)।

पउज्ज } देखो पउंज।
पउज्जमाण }

पउट्ट अ [परिवृत्य] मार कर। °परिहार पुं [°परिहार] मर कर फिर उसी शरीर मे उत्पन्न होकर उस शरीर का परिभोग करना, 'एवं खलु गोसाला! वणस्सइ-काइयाओ पउट्ट-परिहारं परिहरंति' (भग १५—पत्र ६६७)।

पउट्ट वि [परिवर्त] १ परिवर्त, मर कर फिर उसी शरीर मे उत्पन्न होना। २ परिवर्त-वाद, 'एस णं गोयमा! गोसालस्स मखलि-पुत्तस्स पउट्टे' (भग १५—पत्र ६६७)।

पउट्ठ वि [प्रवृष्ट] बरसा हुआ (हे १, १३१)।

पउट्ठ पुं [प्रकोष्ठ] हाथ का पहुँचा, कलाई और केहुनी के बीच का भाग (पण्ह १, ४—पत्र ७८, कप्प, कुमा)।

पउट्ठ वि [प्रजुष्ट] १ विशेष सेवित। २ न अति उच्छिष्ट (चंड)।

पउट्ठ वि [प्रद्विष्ट] द्वेष-युक्त, 'तो सो पउट्ठ-चित्तो' (सुपा ४७५)।

पउढ न [दे] १ गृह, घर। २ पुं घर का पश्चिम प्रदेश (दे ६, ४)।

पउण अक [प्रगुणय्] तन्दुरुस्त होना, नीरोग होना, 'अन्नस्स चिगिच्छाए पउणइ अन्नो न लोगम्मि' (धर्मसं ११८४)।

पउण पुं [दे] १ व्रण-प्ररोह। २ नियम-विशेष (दे ६, ६५)।

पउण वि [प्रगुण] १ पटु, निर्दोष, 'कह सञ्चरणविहारणं जायइ पउणिंदियाणंपि' (सुपा ४७२, महा)। २ तैयार, तय्यार (दस ३)।

पउणाड पु [प्रपुनाट] वृक्ष-विशेष, पमाड का पेड, चकवड (दे ५, ५ टि)।

पउत्त अक [प्र + वृत्] प्रवृत्ति करना। कृ. पउत्तिदव्व (शौ) (नाट—शकु ८७)।

पउत्त वि [प्रयुक्त] जिसका प्रयोग किया गया हो वह (महा, भवि)। २ न. प्रयोग (णाया १ १)।

पउत्त पु [पौत्र] लडके का लडका, पोता (प्राकृ १०, श्रु ११७)।

पउत्त न [प्रतोत्र] प्रतोद, प्राजन, चाबुक, पैना (दसा १०)।

पउत्त वि [प्रवृत्त] जिसने प्रवृत्ति की हो वह (उवा)।

पउत्ति स्त्री [प्रवृत्ति] १ प्रवर्तन (भग १५)। २ समाचार, वृत्तान्त (पाअ, सुर २, ४८, ३, ८४)। ३ कार्य, काज, काम। °वाउय वि [°व्यापृत] कार्य मे लगा हुआ (औप)।

पउत्ति स्त्री [प्रयुक्ति] बात, हकीकत (उप पृ २२८, राज)।

पउत्तिदव्व देखो पउत्त = प्र + वृत्।

पउत्तु [प्रयोक्तृ] १ प्रयोग-कर्ता। २ प्रेरणा कर्ता। ३ कर्ता, निर्माता। स्त्री °त्ती (तदु ४५)।

पउत्थ न [दे] १ गृह, घर (दे ६, ६६)। २ वि प्रोषित, प्रवास में गया हुआ, 'एहिइ सोवि पउत्थो अहं अ कुप्पेज्ज सोवि अणुणेज्ज' (गा १७, ६६७, हेका ३०, पउम १७, ३, वज्जा ७६, विवे १३२, उव, दे ६, ६६, भवि)। °वइया स्त्री [पतिका] जिसका पति देशान्तर गया हो वह स्त्री (ओघ ४१३, सुपा ५०८)।

पउदव्व देखो पउंज।

पउप्पय देखो पओप्पय (भग ११, ११ टी)।

पउप्पय देखो पओप्पय = प्रपौत्रिक (भग ११, ११ टी)।

पउम न [पद्म] १ सूर्य-विकासी कमल (हे २, ११३, पण्ह १, ३, कप्प, औप, प्रासू ११३)। २ देव-विमान-विशेष (सम ३३, ३५)। ३ सख्या-विशेष, 'पद्माग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो सख्या लब्ध हो वह

पगामसो अ [प्रकामम्] अत्यन्त, अतिशय, 'पगामसो भुच्चा' (उत्त १७, ३)।

पगार पु [प्रकार] १ भेद (आचू १)। २ रीति, 'एएण पगारेण सव्वं, दव्व दवाविओ' (महा)। ३ आदि, वगैरह, प्रभृति (सूअ १, १३)।

पगास देखो **पयास**=प्र+काशय्। वकृ **पगासेंत** (महा)।

पगास पुं [प्रकाश] १ प्रभा, दीप्ति, चमक (णाया १, १), 'एग मह नीलुप्पलगवलगुलियअयसिकुसुमप्पगास असिं सुरधार गहाय' (उवा)। २ प्रसिद्धि, ख्याति (सूअ १, ६)। ३ आविर्भाव, प्रादुर्भाव। ४ उद्द्योत, आतप (राज)। ५ क्रोध, गुस्सा, 'छन्न च पसस णो करे न य उक्कोस पगास माहणे' (सूअ १, २, २६)। ६ वि प्रकट, व्यक्त (निचू १)।

पगासग देखो **पगासय** (राज)।

पगासण देखो **पयासण** (औप)।

पगासणया स्त्री [प्रकाशनता] प्रकाश, आलोक (ओघ ५५०)।

पगासणा स्त्री [प्रकाशना] प्रकटीकरण (उत्त ३२, २)।

पगासय वि [प्रकाशक] प्रकाश करनेवाला (विसे ११५५)।

पगासिय वि [प्रकाशित] उद्द्योतित, दीप्त, 'से मूरियस्स अब्भुग्गमेण मग्ग वियाणाइ पगासियसि' (सूअ १, १४, १२)।

पगिइ देखो **पगइ** (संबोध ३६)।

पगिज्झ अक [प्र+गृध्] आसक्ति का प्रारम्भ होना। पगिज्झिज्जा (उत्त ८, १९, सुख ८, १९)।

पगिज्झिय देखो **पगिण्ह** (कम, औप, पि ५९१)।

पगिट्ठ वि [प्रकृष्ट] १ प्रधान, मुख्य (सुपा ७७)। २ उत्तम, श्रेष्ठ (कुप्र २०, सुपा २२६)।

पगिण्ह सक [प्र+ग्रह्] १ ग्रहण करना। २ उठाना। ३ धारण करना। ४ करना। सकृ. पगिण्हित्ता, पगिण्हित्ताण, पगिज्झिय (पि ५८२, ५८३, औप, आचा २, ३, ४, १, कम)।

पगीअ वि [प्रगीत] १ गाया हुआ (पउम ३७, ४८)। २ जिसकी गीत गाई गई हो वह (उप २११ टी)।

पगीय वि [प्रगीत] जिसने गाने का प्रारम्भ किया हो वह (राय ४६)।

पगुण देखो **पउण** (सूअ १, १, २)।

पगुणीकर सक [प्रगुणी+कृ] प्रगुण करना, तय्यार करना, सज्ज करना। कवकृ **पगुणीकीरंत** (सुर १३, ३१)।

पगे अ [प्रगे] सुबह, प्रभात काल (सुर ७, ७८, कुप्र १५५)।

पग्ग सक [ग्रह्] ग्रहण करना। पग्गइ (षड्)।

पग्गल वि [दे] पागल, उन्मत्त (प्राकृ. १०३)।

पग्गह पुं [प्रग्रह] खाने के लिए उठाया हुआ भोजन-पान (सूअ २, २, ७३)।

पग्गह पुं [प्रग्रह] १ उपधि, उपकरण (ओघ ६६६)। २ लगाम (से ९, २७, १२, ९६)। ३ पशुओ को नाक मे लगाई जाती डोरी, नाक की रस्सी, नाथ। ४ पशुओ को बाँधने की डोरी, रस्सी, पगहा (णाया १ ३, उवा)। ५ नायक, मुखिया (ठा १)। ६ ग्रहण, उपादान। ७ योजन, जोडना, 'अंजलिपग्गहेण' (भग)।

पग्गहिअ वि [प्रगृहीत] १ अभ्युपगत, सम्यक् स्वीकृत (अनु ३)। २ प्रकर्ष से गृहीत (भग, औप)। ३ उठाया हुआ (धर्म ३, ठा ९)।

पग्गहिय वि [प्रग्रहिक] ऊपर देखो (उवा)।

पग्गिम } (अप) अ [प्रायस्] प्राय
पग्गिम्व } बहुधा (षड्, हे ४, ४१४, कुमा)।

पग्गेज्ज पुं [दे] निकर, समूह (दे ६, १५)।

पघस सक [प्र+घृष्] फिर-फिर घिसना। पघंसेज्ज (निचू १७)। प्रयो. वकृ **पघसावत** (निचू १७)।

पघसण न [प्रघर्षण] पुन पुन घर्षण, 'एक्क दिण आघसण, दिणे दिणे पघसण' (निचू ३)।

पघोल अक [प्र+घूर्णय्] मिलना, सगत होना। वकृ 'कठपघोलंतपचमुग्गारो' (कुप्र २२६)।

पघोस पुं [प्रघोष] उच्चै शब्द-प्रकाश, उद्घोषणा (भवि)।

पघोसिय वि [प्रघोषित] घोषित किया हुआ, उच्च स्वर से प्रकाशित किया हुआ (भवि)।

पच सक [पच्] पकाना। पचइ, पचए, पचंति, पचसि, पचसे, पचह, पचत्थ, पचामि, पचामो, पचामु, पचाम, पचिमो, पचिमु (सक्षि ३०, पि ४३६, ४५५)। कवकृ **पच्चमाण**, 'नरए नेरइयाण अहोनिसि पचमाणाण' (सुर १४, ४६, सुपा ३२८)।

पच (अप) देखो **पच**। °आलीस, °तालीस स्त्रीन [°चत्वारिंशत्] १ सख्या-विशेष, पैंतालीस, ४५। २ पैंतालीस सख्या जिनकी हो वे (पि २७३, ४४५, पिंग)।

पचक्कमणग न [प्रचङ्क्रमण, °क] पाँव से चलना (औप)।

पचक्कमावण न [प्रचङ्क्रमण] पाँव से संचारण, पाँव से चलाना (औप १०५ टि)।

पचंड देखो **पयंड** (वव ८)।

पचलिय देखो **पयलिय**=प्रचलित (औप)।

पचार सक [प्र+चारय्] चलाना। पचारेइ (सिरि ४३५)।

पचार पु [प्रचार] विस्तार, फैलाव (मोह २०)। देखो **पयार**=प्रचार।

पचाल सक [प्र+चालय्] अतिशय चलाना, खूब चलाना। वकृ **पचालेमाण** (भग १७, १)।

पचिय वि [प्रचित] समृद्ध (स्वप्न ६९)।

पचीस (अप) स्त्रीन [पञ्चविंशति] १ पचीस, सख्या-विशेष, बीस और पाँच, २५। २ जिनकी सख्या पचीस हो वे (पिंग; पि २७३)।

पचुन्निय वि [प्रचूर्णित] चूर-चूर किया हुआ (सुर २, ८७)।

पचेलिम वि [पचेलिम] पक्व, पका हुआ, 'सइमहुरपचेलिमफलेहिं' (सुपा ८३)।

पचोइअ वि [प्रचोदित] प्रेरित (सूअ १, २, ३)।

पच्चइग देखो **पच्चइय**=प्रत्ययिक (सुख २, १७)।

पटरानी (णाया २—पत्र २५३)। ६ चम्पेश्वर राजा दधिवाहन की एक स्त्री का नाम (आव ४)। ७ राजा कूणिक की एक पत्नी (भग ७, ९)। ८ अयोध्या के राजा हरिसिंह की एक पत्नी (धम्म ८)। ९ तेतलिपुर के राजा कनककेतु की पत्नी (दंस १)। १० कौशाम्बी नगरी के राजा शतानीक के पुत्र उदयन की पत्नी (विपा १, ५)। ११ शैलकपुर के राजा शैलक की पत्नी (णाया १, ५)। १२ राजा कूणिक के पुत्र कालकुमार की भार्या का नाम। १३ राजा महाबल की भार्या का नाम (निर १, १, ५, पि १३९)। १४ बीसवें तीर्थंकर श्रीमुनिसुव्रतस्वामी की माता का नाम (पव ११)। १५ पुण्डरीकिणी नगरी के राजा महापद्म की पटरानी (आचू १)। १६ रम्यनामक विजय की राजधानी (जं ४)।

पउमावत्ती (अप) स्त्री [पद्मावती] छन्द-विशेष (पिंग)।

पउमिणी स्त्री [पद्मिनी] १ कमलिनी, कमल-लता (कप्प, सुपा १५५)। २ एक श्रेष्ठी की स्त्री का नाम (उप ७१८ टी)।

पउमुत्तर पुं [पद्मोत्तर] १ नववें चक्रवर्ती श्रीमहापद्मराज के पिता का नाम (सम १५२)। २ मन्दर पर्वत के भद्रशाल वन का एक दिग्हस्ती पर्वत (इक)।

पउमुत्तरा स्त्री [पद्मोत्तरा] एक प्रकार की शक्कर, खाँड, चीनी (णाया १, १७—पत्र पण्ण २२९, १७)।

पउर वि [प्रचुर] प्रभूत, बहुत (हे १, १८०, कुमा, सुर ४, ७४)।

पउर वि [पौर] १ पुर-संबन्धी, नगर से सबन्ध रखनेवाला। २ नगर में रहनेवाला (हे १, १६२)।

पउरव पुं [पौरव] पुरुनामक चन्द्र-वंशीय नृप का पुत्र (संक्षि ६)।

पउराण (अप) देखो पुराण (भवि)।

पउरिस वि [पौरुषेय] पुरुष-कृत, पुरुष का बनाया हुआ, 'वेदस्स तह यापउरिसभावा' (धर्मसं ८९२)।

पउरिस } पुंन [पौरुष] पुरुषत्व, पुरुषार्थ
पउरुस } वीरता, मरदानी (हे १, १११, १६२), 'पउरुसा' (प्राप्र), 'पउरुस' (संक्षि ६)।

पउल सक [पच्] पकाना। पउलइ (हे ४, ९०, दे ६, २९)।

पउलण न [पचन] पकाना, पाक (पण्ह १, १)।

पउलिअ वि [पक्व] पक्का हुआ (पाम)।

पउलिअ वि [प्रज्वलित] दग्ध, जला हुआ (उवा)।

पउल्ल देखो पउल। पउल्लइ (षड्, हे ४, ९० टि)।

पउल्ल वि [पक्व] पका हुआ (पंचा १)।

पउल्लग न [पचनक] रसोई का पात्र (दशवै० वृ० हारि० पत्र ९७, २)।

पउविय वि [प्रकुपित] विशेष कुपित, क्रुद्ध (महा)।

पउस सक [प्र + द्विष्] द्वेष करना। पउसेज्जा (ओघ २५ भा)।

पउसय वि [दे] देश-विशेष में उत्पन्न। स्त्री. °सिया (औप)।

पउस्स देखो पउस। पउस्ससि (कुप्र ३७७)। वकृ पउस्सत, पउस्समाण (राज, अंत २२)। संकृ पउस्सिऊण (स ५१३)।

पउहण (अप) देखो पवहण (भवि)।

पऊढ न [दे] गृह, घर (दे ६, ४)।

पए अ [प्रगे] पहले, पूर्व, 'तित्थगरवयणकरणे आयरिआणं कयं पए होइ' (ओघ ४७ भा), 'जइ पुण वियालपत्ता पए व पत्ता उवस्सयं न लभे' (ओघ १९८)।

पएणियार पुं [प्रैणीचार] व्याध की एक जाति, जो हरिणों को पकड़ने के लिए हरिणी-समूह को चराते एवं पालते हैं (पण्ह १, १—पत्र १४)।

पएर पुं [दे] १ वृति-विवर, वाड का छिद्र। २ मार्ग, रास्ता। ३ कंठदीनार नामक भूषण-विशेष। ४ गले का छिद्र। ५ दीननाद, आर्त्त-स्वर। ६ वि. दुश्शील, दुराचारी (दे ६, ६७)।

पएस पुं [दे] प्रातिवेश्मिक, पड़ोसी (दे ६, ३)।

पएस पुं [प्रदेश] १ जिसका विभाग न हो सके ऐसा सूक्ष्म अवयव (ठा १, १)। २ कर्म दल का संचय (नव ३१)। ३ स्थान, जगह (कुमा ६, ५९)। ४ देश का एक भाग, प्रान्त (कुमा ६)। ५ परिमाण-विशेष, निरंश-अवयव-परिमित माप। ६ छोटा भाग। ७ परमाणु। ८ द्वयणुक। ९ त्र्यणुक, तीन परमाणुओं का समूह (राज)। °कम्म न [°कर्मन्] कर्म-विशेष, प्रदेश-रूप कर्म (भग)। °ग्ग न [°अग्र] कर्मों के दलिकों का परिमाण (भग)। °घण वि [°घन] निबिड प्रदेश (औप)। °णाम न [°नामन्] कर्म-विशेष (ठा ६)। °णाम पुं [°नाम] कर्म-द्रव्यों का परिणाम (ठा ६)। °बंध पुं [°बन्ध] कर्म-दलों का आत्म-प्रदेशों के साथ सबन्धन (सम ९)। °संकम पुं [°संक्रम] कर्म-द्रव्यों को भिन्न स्वभाव वाले कर्मों के रूप में परिणत करना (ठा ४, २)।

पएसण न [प्रदेशन] उपदेश, 'पएसणाय णाम उवएसो' (आचू १)।

पएसय वि [प्रदेशक] उपदेशक, प्रदर्शक, 'सिद्धिपहपएसए वंदे' (विसे १०२५)।

पएसि पुं [प्रदेशिन्] स्वनाम-ख्यात एक राजा, जो श्री पार्श्वनाथ भगवान् के केशि-नामक गणधर से प्रबुद्ध हुआ था (राय, कुप्र १५५, श्रा ६)।

पएसिणी स्त्री [दे] पड़ोस में रहनेवाली स्त्री, पड़ोसिनी (दे ६, ३ टी)।

पएसिणी स्त्री [प्रदेशिनी] अंगुष्ठ के पास की उंगली, तर्जनी (ओघ ३६०)।

पएसिय देखो पदेसिय (राज)।

पओअ पुं [पयोद] मेघ (दस ७, ५२)।

पओअ देखो पओग (हे १, २४५, अभि ९; सण, पि ८५)।

पओअण न [प्रयोजन] १ हेतु, निमित्त, कारण (सूअ १, १२)। २ कार्य, काम। ३ मतलब (महा, उत्त २३; स्वप्न ४८)।

पओइद (शौ) वि [प्रयोजित] जिसका प्रयोग कराया गया हो वह (नाट—विक्र १०३)।

पओग पुं [प्रयोग] प्रयोजन (सूअ २,७,२)।

पच्चवलोक्क वि [दे] आसक्त-चित्त, तल्लीन-मनस्क (दे ६, ३४)।

पच्चवभास पुं [प्रत्याभास] निगमन, प्रत्युच्चारण (विसे २९३२)।

पच्चभिआण देखो पच्चभिजाण। °णदि॰ श्राणादि (शौ) (पि १७०, ५१०)।

पच्चभिआणिद (शौ) देखो पच्चभिजाणिअ (पि ५६५)।

पच्चभिजाण सक [प्रत्यभि + ज्ञा] पहिचानना, पहिचान लेना। पच्चभिजाणइ (महा)। वकृ पच्चभिजाणमाण (गाया १, १६)। संकृ पच्चभिजाणिऊण (महा)।

पच्चभिजाणिअ वि [प्रत्यभिज्ञात] पहिचाना हुआ (स ३६०)।

पच्चभिणाण न [प्रत्यभिज्ञान] पहिचान (स २१२, नाट—शकु ८४)।

पच्चभिन्नाय देखो पच्चभिजाणिअ (स १००, सुर ६, ७६, महा)।

पच्चमाण देखो पच = पच्।

पच्चय पु [प्रत्यय] १ प्रतीति, ज्ञान, बोध (उव, ठा १, विसे २१४०)। २ निर्णय, निश्चय (विसे २१३२)। ३ हेतु, कारण (ठा २, ४)। ४ शपथ, विश्वास उत्पन्न करने के लिए किया या कराया जाता तप्त माष आदि का चर्वण वगैरह (विसे २१३१)। ५ ज्ञान का कारण। ६ ज्ञान का विषय, ज्ञेय पदार्थ (राज)। ७ प्रत्यय-जनक, प्रतीति का उत्पाक (विसे २१३१, आवम)। ८ विश्वास, श्रद्धा। ९ शब्द, आवाज। १० छिद्र, विवर। ११ आवार, आश्रय। १२ व्याकरण-प्रसिद्ध प्रकृति में लगता शब्द-विशेष (हे २, १३)।

पच्चल वि [दे] १ पक्का, समर्थ, पहुँचा हुआ (दे ६, ६६, सुपा ३४, सुर १, १४, कुप्र ६६, पाअ)। २ असहन, असहिष्णु (दे ६, ६६)।

पच्चलिउ } (अप) अ [प्रत्युत] वैपरीत्य,
पच्चल्लिउ } वरञ्च, वरन् (हे ४, ४२०)।

पच्चवणद (शौ) वि [प्रत्यवनत] नमा हुआ, 'एस म कोवि पच्चवणदसिरोहरं उच्छं विग्र तिएण (?) भग करेदि' (अभि २२४)।

पच्चवत्थय वि [प्रत्यवस्तृत] १ बिछाया हुआ। २ आच्छादित (आवम)।

पच्चवत्थाण न [प्रत्यवस्थान] १ शङ्का-परिहार, समाधान (विसे १००७)। २ प्रतिवचन, खण्डन (बृह १)।

पच्चवर न [दे] मुसल, एक प्रकार की मोटी लकडी जिससे चावल आदि अन्न कूटे जाते हैं (दे ६, १५)।

पच्चवाय पुं [प्रत्यवाय] १ वाधा, विघ्न, व्याघात (णाया १, ६, महा, स २०६)। २ दोष, दूषण (पउम ६५, १२, अच्चु ७०, ओघ २४)। ३ पाप, 'बहुपच्चवायभरिओ गिहवासो' (सुपा १६२)। ४ दुःख, पीडा (कुप्र ५५२)।

पच्चवाय पु [प्रत्यवाय] १ उपघात-हेतु, नाश का कारण (उत्त १०, ३)। २ अनर्थ (पचा ७, ३६),

पच्चवेक्खिद (शौ) वि [प्रत्यवेक्षित] निरीक्षित (नाट—शकु १३०)।

पच्चह न [प्रत्यह] हररोज, प्रतिदिन (अभि ६०)।

पच्चहिजाण } देखो पच्चभिजाण। पच्च-
पच्चहियाण } हिजाणेदि (पि ५१०)। पच्च-हियाणइ (स ४२)। संकृ. पच्चहियाणिऊण (स ४४०)।

पच्चा स्त्री [दे] तृण-विशेष, वल्वज (ठा ५, ३)। °पिच्चियय न [दे] वल्वज तृण की कूटी हुई छाल का बना हुआ रजोहरण—जैन साधु का एक उपकरण (ठा ५, ३—पत्र ३३८)।

पच्चा देखो पच्छा (प्रयौ ३६, नाट—रत्ना ७)।

पच्चाअच्छ सक [प्रत्या + गम्] पीछे लौटना, वापस आना। पच्चाअच्छइ (षड्)।

पच्चाअद (शौ) देखो पच्चागय (प्रयौ २५)।

पच्चाइक्ख देखो पच्चक्ख = प्रत्या + ख्या। पच्चाइक्खामि (आचा २, १५, ५, १)। भवि पच्चाइक्खिस्सामि (पि ५२६)। वकृ पच्चाइक्खमाण (पि ४६२)।

पच्चाउट्टणया स्त्री [प्रत्यावर्त्तनता] अवाय—संशय रहित निश्चयात्मक ज्ञान-विशेष, निश्चयात्मक मति-ज्ञान (णदि १७६)।

पच्चाएस पुंन [प्रत्यादेश] दृष्टान्त, निदर्शन, उदाहरण, 'पच्चाएसोव्व धम्मनिरयाणं' (स ३५, उव, कुप्र ५०), 'पच्चाएसं दिट्ठंतं' (पाअ)। देखो पच्चादेस।

पच्चागय वि [प्रत्यागत] १ वापस आया हुआ (गा ६३३, दे १, ३१, महा)। २ न. प्रत्यागमन (ठा ६—पत्र ३६५)।

पच्चाचक्ख सक [प्रत्या + चक्ष्] परित्याग करना। हेकृ. पच्चाचक्खिदुं (शौ) (पि ४६६, ५७४)।

पच्चाणयण न [प्रत्यानयन] वापस ले आना (मुद्रा २७०)।

पच्चाणि° } सक [प्रत्या + णी] वापस ले
पच्चाणी } आना। कवकृ. पच्चाणिज्जंत (से ११, १३५)।

पच्चाणीद (शौ) वि [प्रत्यानीत] वापस लाया हुआ (पि ८१, नाट—विक्र १०)।

पच्चाथरण न [प्रत्यास्तरण] सामने होकर लडना (राज)।

पच्चादिट्ठ वि [प्रत्यादिष्ट] निरस्त, निराकृत (पि १४५, मृच्छ ६)।

पच्चादेस पुं [प्रत्यादेश] निराकरण (अभि ७२, १७८, नाट—विक्र ३)। देखो पच्चाएस।

पच्चापड अक [प्रत्या + पत्] वापस आना, लौटकर आ पडना। वकृ. 'अग्गपडिहयपुणरविपच्चापडतचंचलमिरिइकवयं (औप)।

पच्चामित्त पुंन [प्रत्यमित्र] अमित्र, दुश्मन (णाया १, २—पत्र ८७, औप)।

पच्चाय सक [ति + आयय्] १ प्रतीति कराना। २ विश्वास कराना। पच्चाअइ (गा ७१२)। पच्चाएमो (स ३२४)।

पच्चाय° देखो पच्चाया।

पच्चायण न [प्रत्यायन] ज्ञान कराना, प्रतीति-जनन (विसे २१३६)।

पच्चायय वि [प्रत्यायक] १ निर्णय-जनक। २ विश्वास-जनक (विक्र ११३)।

पच्चाया अक [प्रत्या + जन्] उत्पन्न होना, जन्म लेना। पच्चायति (औप)। भवि. पच्चायाहिइ (औप, पि ५२७)।

पच्चाया अक [प्रत्या + या] ऊपर देखो। पच्चायंति (पि ५२७)।

पच्चायाइ स्त्री [प्रत्याजाति, प्रत्यायाति] उत्पत्ति, जन्म-ग्रहण (ठा ३, ३—पत्र १४४)।

पच्चायाय वि [प्रत्यायात] उत्पन्न (भग)।

केवलज्ञान और निर्वाण। २ काम्पिल्यपुर, जहाँ तेरहवें जिन-देव श्रीविमलनाथ के पाँचों कल्याणक हुए थे (ती २४)। ३ तप-विशेष (जीत)। °कोट्ठग वि [°कोष्ठक] १ पाँच कोष्ठो मे युक्त। २ पु. पुरुष (तंदु)। °गव्व न [°गव्य] गाय के ये पाँच पदार्थ—दूध, दही, घृत, गोमय और मूत्र, पचगव्य (कप्पू)। °गाह न [°गाथ] गाथाछन्द वाले पाँच पद्य (कस)। °गुण वि [°गुण] पाँचगुना (ठा ५,३)। °चित्त पुं [°चित्र] षष्ठ जिन-देव श्रीपद्मप्रभ, जिनके पाँचो कल्याणक चित्रा नक्षत्र मे हुए थे (ठा ५, १, कप्प)। °जाम न [°याम] १ अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और त्याग ये पाँच महाव्रत। २ वि. जिसमे इन पाँच महाव्रतो का निरूपण हो वह (ठा ६)। °णउइ स्त्री [°नवति] पंचानवे, ९५ (काल)। °णउय वि [°नवत] ९५ वाँ (काल)। °तालीस (अप) स्त्रीन [°चत्वारिंशत्] पैतालीस, ४५ (पिंग, पि ४४५)। °तित्थी स्त्री [°तीर्थी] पाँच तीर्थो का समुदाय (धर्म २)। °तीसइम वि [°त्रिंशत्तम] पैतीसवाँ ३५ वाँ (पराण ३५)। °दस त्रि व. [°दशन्] पनरह, १५ (कप्पू)। °दसम वि [°दशम] पनरहवाँ; १५ वाँ (णाया १, १)। °दसी स्त्री [°दशी] १ पनरहवी, १५ वी (विसे ५७६)। २ पूर्णिमा। ३ अमावास्या (सुज्ज १०)। °दसुत्तरसय वि [°दशोत्तरशततम] एक सौ पनरहवाँ, ११५ वाँ (पउम ११५, २४)। °नउइ देखो °णउइ (पि ४४७), नाणि वि [°ज्ञानिन्] मति, श्रुत, अवधि, मन पर्यव और केवल इन पाँचों ज्ञानो से युक्त, सर्वज्ञ (सम्म ६६)। °पव्वी स्त्री [°पर्वी] मास की दो अष्टमी, दो चतुर्दशी और शुक्ल पंचमी ये पाँच तिथियाँ (रयण २६)। °पुव्वासाढ पुं [°पूर्वाषाढ] दसवें जिनदेव श्रीशीतलनाथ, जिनके पाँचो कल्याणक पूर्वाषाढा नक्षत्र में हुए थे (ठा ५, १)। °पूस पु [°पुष्य] पनरहवें जिनदेव श्रीधर्मनाथ (ठा ५, १)। °बाण पुं [°बाण] कामदेव (सुर ४, २४६, कुमा)। °भूय न न [°भूत] पृथिवी, जल, अग्नि, वायु और आकाश ये पाँच पदार्थ (सूम १, १, १)। °भूयवाइ वि [°भूतवादिन्] आत्मा आदि पदार्थो को न मान कर केवल पाँच भूतो को ही माननेवाला, नास्तिक (सूअ १, १, १)। °महव्वइय वि [°महाव्रतिक] पाँच महाव्रतोवाला (सूअ २, ७)। महव्वय न [°महाव्रत] हिंसा, असत्य, चोरी, मैथुन, और परिग्रह का सर्वथा परित्याग (पराह २, ५)। °महाभूय न [°महाभूत] पृथिवी, जल, अग्नि, वायु और आकाश ये पाँच पदार्थ (विसे)। °मुट्ठिय वि [°मुष्टिक] पाँच मुष्टियो का पाँच मुष्टियों से पूर्ण किया जाता (लाच) (णाया १, १, कप्प, महा)। °मुह पुं [°मुख] सिंह, पंचानन (उप १०३१ टी)। °यसी देखो °दसी (पउम ६६, १४)। °रत्त, °राय पुं [°रात्र] पाँच रात (मा ४३, पराह २, ५—पत्र १४६)। °रासिय न [°राशिक] गणित-विशेष (ठा ४, ३)। °रूविय वि [°रूपिक] पाँच प्रकार के वर्णवाला (ठा ४, ४)। °वत्थुग न [°वस्तुक] आचार्य हरिभद्रसूरि-रचित ग्रन्थ-विशेष (पंचव १, १)। °वरिस वि [°वर्ष] पाँच वर्ष की अवस्थावाला (सुर २, ७३)। °विह वि [°विध] पाँच प्रकार का (अणु)। °वीसइम वि [°विंशतितम] पचीसवाँ (पउम २५, २६)। °संगह पुं [°संग्रह] आचार्य श्रीहरिभद्रसूरिकृत एक जैन ग्रन्थ (पच १)। °संवच्छरिय वि [°सांवत्सरिक] पाँच वर्ष परिमाणवाला, पाँच वर्ष की आयुवाला (सम ७५)। °सट्ठ वि [°षष्ट] पैंसठवाँ, ६५ वाँ (पउम ६५, ५१)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] पैंसठ, ६५ (कप्प)। °समिय वि [°समित] पाँच समितियों का पालन करनेवाला (सं ८)। °सर पुं [°शर] कामदेव (पाअ, सुर २, ९३; सुपा ६०, रंभा)। °सीस पुं [°शीर्ष] देव-विशेष (दीव)। °सुण्ण न [°शून्य] पाँच प्राणिवध-स्थान (सूअ १, १, ४)। °सुत्तग न [°सूत्रक] आचार्य-श्रीहरिभद्रसूरि-निर्मित एक जैन ग्रन्थ (पसू १)। °सेल, °सेलग, °सेलय पुं [°शैल, °क] लवणोदधि में स्थित और पाँच पर्वतों से विभूषित एक छोटा द्वीप (महा, बृह ४)। °सोगंधिअ वि [°सौगन्धिक] इलायची, लवंग, कपूर, कक्कोल और जातीफल—जायफल इन पाँच सुगन्धित वस्तुओ से संस्कृत, 'नन्नत्थ पञ्चसोगंधिएणं तंबोलेणं, अवसेसमुह वासविहिं पच्चक्खामि' (उवा)। °हत्तर वि [°सप्तत] पचहत्तरवाँ, ७५ वाँ (पउम ७५, ८६)। °हत्तरि स्त्री [°सप्तति] १ संख्या विशेष, ७५। २ जिनकी संख्या पचहत्तर हो वे (पि २६४, कप्प)। °हत्थुत्तर पुं [°हस्तोत्तर] भगवान् महावीर, जिनके पाँचो कल्याणक उत्तराफाल्गुनी-नक्षत्र मे हुए थे (कप्प)। °उह पुं [°युध] कामदेव (सण)। °णउइ स्त्री [°नवति] १ संख्या-विशेष, पचानवे, ९५। २ जिनकी संख्या पचानबे हो वे (सम ९७, पउम २०, १०३, पि ४४०)। °णउय वि [°नवत] पचानवाँ, ९५ वाँ (पउम ९५, ६९)। °णण पुं [°नन] सिंह, गजेन्द्र (सुपा १७६, भवि)। °णुव्वइय वि [°णुव्रतिक] हिंसा, असत्य, चोरी, मैथुन और परिग्रह का आंशिक त्यागवाला (उवा, औप, णाया १, १२)। °याम देखो °जाम (बृह ६)। °स स्त्रीन [°शत्] १ संख्या-विशेष, पचास, ५०। २ जिनकी संख्या पचीस हो वे, 'पचास अज्जियासाहस्सीओ' (सम ७०)। °सग न [°शक] आचार्य श्रीहरिभद्रसूरि-कृत एक जैन ग्रन्थ (पचा)। °सीइ स्त्री [°शीति] १ संख्या विशेष, अस्सी और पाँच, ८५। २ जिनकी संख्या पचासी हो वे (सम ९२, पि ४४६)। °सीइम वि [°शीतितम] पचासीवाँ, ८५ वाँ (पउम ८५, ३१, कप्प, पि ४४९)।

पचंअण्ण देखो पचजण्ण (गउड)।

पचग न [पञ्चाङ्ग] १ दो हाथ, दो जानु और मस्तक ये पाँच शरीरावयव। २ वि. पूर्वोक्त पाँच अगवाला (प्रणाम आदि), 'पचगं करिय ताहे पणिवाय' (सुर ४, ६८)।

पंचगुलि पुं [दे] एरण्ड-वृक्ष, रेंडी का गाछ (दे ६, १७)।

पंचंगुलि पु [पञ्चागुलि] हस्त, हाथ (णाया १, १, कप्प)।

पच्चोणियत्त वि [प्रत्यवनिवृत्त] ऊँचा उछल कर नीचे गिरा हुआ (पण्ह १, ३—पत्र ४५)।

पच्चोणिवय अक [प्रत्यवनि + पत्] उछल कर नीचे गिरना। वकृ. **पच्चोणिवयत** (औप)।

पच्चोणी [दे] देखो पच्चोवणी (स २३५, ३०२, सुपा ६१, २२४, २७६)।

पच्चोयड न [दे] १ तट के समीप का ऊँचा प्रदेश (जीव ३)। २ वि आच्छादित (राय)।

पच्चोयर सक [प्रत्यव + तृ] नीचे उतरना। पच्चोयरइ (आचा २, १५, २८)। संकृ. **पच्चोयरित्ता** (आचा २, १५, २८)।

पच्चोरुभ } **पच्चोरुह** } सक [प्रत्यव + रुह्] नीचे उतरना। पच्चोरुभइ (णाया १, १)। पच्चोरुहइ (कप्प)। संकृ. **पच्चोरुहित्ता** (कप्प)।

पच्चोवणिअ वि [दे] संमुख आया हुआ (दे ६, २४)।

पच्चोवणी स्त्री [दे] संमुख आगमन (दे ६, २४)।

पच्चोसक्क अक [प्रत्यव + ष्वष्क्] १ नीचे उतरना। २ पीछे हटना। पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कंति (उवा, पि ३०२, भग)। संकृ. **पच्चोसक्कित्ता** (उवा, भग)।

पच्छ सक [प्र + अर्थय्] प्रार्थना करना। कवकृ. **पच्छिज्जमाण** (कप्प, औप)।

पच्छ वि [पथ्य] १ रोगी का हितकारी आहार (हे २, २१, प्राप्र; कुमा, स ७२४, सुपा ५७६)। २ हितकारक, हितकारी, 'पच्छा वाया' (णाया १, ११—पत्र १७१)।

पच्छ न [पश्चात्] १ चरम, शेष (चंद १)। २ पीछे, पृष्ठ भाग। ३ पश्चिम दिशा, 'पुव्वेण सरो पच्छेण वंजुला दाहिणेण वडविडओ' (वज्जा ६६)। °ओ अ [°तस्] पीछे, पीठ की ओर, 'हत्थी वेगेण पच्छओ लग्गो' (महा), 'वहइ व महीअलमरिओ णोल्लेइ व पच्छओ धरेइ व पुरओ' (से १०, ३०), 'तो चेडयाओ तक्खणमाणावेऊण पच्छओ वाहं वद्धं दसइ' (सुपा २२१)। °कम्म न [°कर्मन्] १ अनन्तर का कर्म, वाद की क्रिया। २ यतियो की भिक्षा का एक दोष, दातृ-कर्तृक दान देने के वाद की पात्र को साफ करने आदि क्रिया (ओघ ५१६)। °त्ताअ पुं [°ताप] अनुताप (वज्जा १४२)। °द्ध न [°अर्ध] पीछला आधा, उत्तरार्ध (गउड, महा)। °वत्थुक्क न [°वास्तुक] पिछला घर, घर का पिछला हिस्सा (पण्ह २, ४—पत्र १३१)। °याव पु [°ताप] पश्चात्ताप, अनुताप (आवम)। देखो **पच्छा** = पश्चात्।

पच्छइ } **पच्छए** } (अप) अ [पश्चात्] ऊपर देखो (हे ४, ४२०; पड्, भवि)। °ताव पुं [°ताप] अनुताप, अनुशय (कुमा)।

पच्छद सक [गम्] जाना, गमन करना। पच्छदइ (हे ४, १६२)।

पच्छंदि वि [गन्तृ] गमन करनेवाला (कुमा)।

पच्छभाग पु [पश्चाद्भाग] १ दिवस का पिछला भाग (राज)। २ पुंन नक्षत्र-विशेष, चन्द्र पृष्ठ देकर जिसका भोग करता है वह नक्षत्र (ठा ६)।

पच्छण स्त्रीन [प्रतक्षण] त्वक् का वारीक विदारण, चाकू आदि से पतली छाल निकालना, 'तच्छणेहि य पच्छणेहि य' (विपा १, १), 'तच्छणाहि य पच्छणाहि य' (णाया १, १३)।

पच्छण्ण वि [प्रच्छन्न] गुप्त, अप्रकट, (गा १८३)। °पइ पुं [°पति] जार, उपपति, यार (सूअ १, ४, १)।

पच्छद देखो पच्छय (औप)।

पच्छदण न [प्रच्छदन] आस्तरण, चादर—शय्या के ऊपर का आच्छादन-वस्त्र, 'सुप्पच्छदणाए सय्याए णिद्दं ण लभामि' (स्वप्न ६०)।

पच्छन्न देखो पच्छण्ण (उव, सुर २, १८४)।

पच्छय पुं [प्रच्छद] वस्त्र-विशेष, दुपट्टा, पिछौरी (णाया १, १६)।

पच्छयण देखो पत्थयण (•••)।

पच्छयण देखो पत्थयण (मोह ८०)।

पच्छलिउ (अप) देखो पच्चलिउ (पड्)।

पच्छा अ [पश्चात्] १ अनन्तर, वाद, पीछे (सुर २, २४४, पाअ, प्रासू ५७), 'पच्छा तस्स विवागे रुअंति कलुणं महादुक्खा' (प्रासू १२६)। २ परलोक, परजन्म, 'पच्छा कडुअविवागा' (राज)। ३ पिछला भाग, पृष्ठ। ४ चरम, शेष (हे २, २१)। ५ पश्चिम दिशा (णाया १, ११)। °उत्त वि [°आयुक्त] जिसका आयोजन पीछे मे किया गया हो वह (कप्प)। °कड पु [°कृत] साधुपन को छोडकर फिर गृहस्थ वना हुआ (द्र ५०, वृह १)। °कम्म देखो °पच्छ-कम्म (पि ११२)। °णिवाइ देखो °निवाइ (राज)। °णुताव पुं [°अनुताप] पश्चात्ताप, अनुताप, 'पच्छाणुतावेण सुभज्झवसाणेण' (आवम)। °णुपुव्वी स्त्री [°आनुपूर्वी] उलटा क्रम (अणु, कम्म ४, ४३)। °ताव पु [°ताप] अनुताप (आव ४)। °ताविय वि [°तापिक] पश्चात्तापवाला (पण्ह २, ३)। °निवाइ वि [°निपातिन्] १ पीछे से गिर जानेवाला। २ चारित्र ग्रहण कर वाद मे उससे च्युत होनेवाला (आचा)। °भाग पुं [°भाग] पिछला हिस्सा (णाया १, १)। °मुह वि [°मुख] परामुख, जिसने मुँह पीछे की तरफ फेर लिया हो वह (श्रा १२)। °यव, °याव देखो °ताव (पउम ६५, ६६, सुर १५, १४५, सुपा १२१, महा)। °यावि वि [°तापिन्] पश्चात्ताप करनेवाला (उप ७२८ टी)। °वाय पुं [°वात] पश्चिम दिशा का पवन। २ पीछे का पवन (णाया १, ११)। °सखडि स्त्री [दे संस्कृति] १ पिछला संस्कार। २ मरण के उपलक्ष्य मे ज्ञाति—कुटुंबी वगैरह प्रभृत मनुष्यों के लिए पकायी जाती रसोई (आचा २, १, ३, २)। °संथव पु [°संस्तव] १ पिछला संवन्ध, स्त्री, पुत्री वगैरह का संवन्ध। २ जैन मुनियो के लिए भिक्षा का एक दोष, श्वशुर आदि पक्ष मे अच्छी भिक्षा मिलने की लालच से पहले भिक्षार्थ जाना (ठा ३, ४)। °संथुय वि [°संस्तुत] पिछले संवन्ध से परिचित (आचा २, १, ४, ५)। °हुत्त वि [°दे] पीछे की तरफ का, 'थलमत्थयम्मि पच्छाहुत्ताइ पयाइं तीए दट्ठूण' (सुपा २८१)।

पच्छा स्त्री [पथ्या] हर्रे, हरीतकी (हे २, २१)।

पच्छाअ सक [प्र + छदय्] १ ढकना। २ छिपाना। वकृ. **पच्छाअंत** (से ६, ४६, ११, ६)। कृ. **पच्छाइज्ज** (वसु)।

पंडव पुं [पाण्डव] राजा पाण्डु का पुत्र—१ युधिष्ठिर, २ भीम, ३ अर्जुन, ४ सहदेव और ५ नकुल (णाया १, १६, उप ६४८ टी)।

पडव पु [दे] अश्व-रक्षक (?), 'सिट्ठि सुहदेहि तासियपडववयणेहिं नरवरो रुट्ठो' (सम्मत्त २१६)।

पडविअ वि [दे] जलार्द्र, पानी से भीजा हुआ (दे ६, २०)।

पडिअ वि [पण्डित] १ विद्वान् शास्त्रों के मर्म को जाननेवाला, बुद्धिमान्, तत्वज्ञ, 'कामज्झया णामं गणिया होत्था बावत्तरीकलापडिया' (विपा १, २, प्रासू ७४, १२६)। २ सयत, साधु (सूअ १, ८, ६)। °मरण न [°मरण] साधु का मरण, शुभ मरण-विशेष (भग, पच्च ४६)। °माण वि [°म्मन्य] विद्याभिमानी, निज को पण्डित माननेवाला, दुर्विदग्ध, अधपका, मूर्ख, अनाडी (ओघ २७ भा)। °माणि वि [°मानिन्] देखो पूर्वोक्त अर्थ (पउम १०५, २१, उप १३४ टी)। °वीरिअ न [°वीर्य] संयत का आत्म-बल (भग)।

पडिअमाणि वि [पाण्डित्यमानिन्] पडिताई का अभिमान रखनेवाला, विद्वत्ता का घमंड रखनेवाला (चेइय १६)।

पंडिच्च } न [पाण्डित्य] पण्डिताई,
पंडित्त } विद्वत्ता, वैदुष्य (उव, सुर १२, ६८, सुपा २६, रंभा, सं ५७)।

पडी देखो पड = पाण्ड्य।

पंडीअ (अप) देखो पंडिअ (पिंग)।

पडु पुं [पाण्डु] १ नृप-विशेष, पाण्डवो का पिता (उप ६४८ टी, सुपा २७०)। २ रोग-विशेष, पाण्डु-रोग (जं १)। ३ वर्ण-विशेष, शुक्ल और पीत वर्ण। ४ श्वेत वर्ण। ५ वि शुक्ल और पीतवर्णवाला (कप्पू, गउड)। ६ सफेद, श्वेत, 'सेअ सिअं वलक्खं अवदाय पड्डु धवलं च' (पाअ, गउड)। ७ शिला-विशेष, पाण्डुकम्बला नामक शिला (ज ४, इक)। कबलसिला स्त्री [°कम्बलशिला] मेरु पर्वत के पाण्डक वन के दक्षिण छोर पर स्थित एक शिला, जिस पर जिन-देवो का जन्माभिषेक किया जाता है (जं ४)। °कबला स्त्री [°कम्बला] वही पूर्वोक्त अर्थ (ठा २, ३)। °तणय पुं [°तनय] पाण्डु-राज का पुत्र, पाण्डव (गउड ४८५)। °भद्द पुं [°भद्र] एक जैन मुनि, जो आर्य संभूति-विजय के शिष्य थे (कप्प)। °मट्टिया, °मत्तिया स्त्री [°मृत्तिका] एक प्रकार की सफेद मिट्टी (जीव १, पण्ण १—पत्र २५)। °महुरा स्त्री [°मथुरा] स्वनाम-ख्यात एक नगरी, पाण्डवों द्वारा बनाई हुई भारतवर्ष के दक्षिण तरफ की एक नगरी का नाम (णाया १, १६—पत्र २२५, अत)। °राय पुं [°राज] राजा पाण्डु, पाण्डवो का पिता (णाया १, १६)। °सुय पु [°सुत] पाण्डव (उप ६४८ टी)। °सेण पुं [°सेन] पाण्डवो का द्रौपदी से उत्पन्न एक पुत्र (णाया १, १६, उप ६४८ टी)।

पडुइय वि [पाण्डुकित] १ श्वेत रंग का किया हुआ (णाया १, १—पत्र २८)।

पडुग } पु [पाण्डक] १ चक्रवर्ती का धान्यों
पडुय } की पूर्ति करनेवाला एक निधि (राज, ठा २, १—पत्र ४४, उप ६८६ टी)। २ सर्प की एक जाति (आचू १)। ३ न. मेरु पर्वत पर स्थित एक वन, पाण्डक-वन (सम ६६)।

पंडुर पुं [पाण्डुर] १ श्वेत वर्ण, सफेद रग। २ पीत-मिश्रित श्वेत वर्ण। ३ वि. सफेद वर्णवाला। ४ श्वेत-मिश्रित पीत वर्णवाला (कप्प; उव, से ८, ४६)। °ज्जा स्त्री [°र्या] एक जैन साध्वी का नाम (आवम)। °त्थिय [°स्थिक] एक गाँव का नाम (आचू १)।

पंडुरग पुं [पाण्डुराङ्ग] सन्यासी की एक जाति, भस्म लगानेवाला संन्यासी (अणु २४)।

पडरग } पु [पाण्डुरक] १ शिव-भक्त
पंडुरय } सन्यासियों की एक जाति (णाया १, १५—पत्र १६३)। २ देखो पडुर; 'केसा पडुरया हवंति ते' (उत्त ३)।

पंडुरिअ } वि [पाण्डुरित] पाण्डुर वर्ण-
पंडुइय } वाला बना हुआ (गा ३८८, विपा १, २—पत्र २७)।

पंत वि [प्रान्त] १ अन्तवर्ती, अन्तिम (भग ६, ३३)। २ अशोभन, असुन्दर (आचा, ओघ १७ भा)। ३ इन्द्रियो के अननुकूल, इन्द्रिय-प्रतिकूल (पण्ह २, ५)। ४ अभद्र, असभ्य, अशिष्ट (ओघ ३६ टी)। ५ अपसद, नीच, दुष्ट (णाया १, ८)। ६ दरिद्र, निर्धन (ओघ ६१)। ७ जीर्ण, फटा-टूटा, 'पत-वत्थ—' (बृह २)। ८ व्यापन्न, विनष्ट, 'णिप्फावचणगमाई अत, पतं च होइ वावन्नं' (बृह १, आचा)। ६ नीरस, सूखा (उत्त ८)। १० भुक्तावशिष्ट, खा लेने पर बचा हुआ। ११ पर्युषित, बासी (णाया १, ५—पत्र १११)। °कुल न [°कुल] नीच कुल, जघन्य जाति। (ठा ८)। °चर वि [°चर] नीरस आहार की खोज करनेवाला तपस्वी (पण्ह २, १)। °जीवि वि [°जीविन्] नीरस आहार से शरीर-निर्वाह करनेवाला (ठा ५, १)। °ाहार वि [°ाहार] रूखा-सूखा आहार करनेवाला (ठा ५, १)।

पताव सक [दे] ताडन करना, मारना। पतावे (पिंड ३२५)।

पंति स्त्री [पङ्क्ति] १ पक्ति, श्रेणी, कतार (हे १,२५, कुमा, कप्प)। २ सेना-विशेष, जिसमे एक हाथी, एक रथ, तीन घोडे और पाँच पदाती हों ऐसी सेना (पउम ५६, ४)।

पंति स्त्री [दे] वेणी, केश-रचना (दे ६, २)।

पंतिय स्त्रीन [पङ्क्ति] पक्ति, श्रेणी, 'सराणि वा सरपंतियाणि वा सरसरपंतियाणि वा' (आचा २, ३, ३, २)। स्त्री. 'पतियाओ' (अणु)।

पंथ पुं [पन्थ, पथिन्] मार्ग, रास्ता, 'पथ किर देसित्ता' (हे १, ८८), 'पंथम्मि पह-परिब्भट्ठ' (सुपा ५५०, हेका ५४, प्रासू १७३)।

पंथ पुं [पान्थ] पथिक, मुसाफिर (हे १, ३०, अच्चु ७४)। °कुट्टण न [°कुट्टन] मार-पीटकर मुसाफिरो को लूटना (णाया १, १८)। °कोट्ट पुं [°कुट्ट] वही अर्थ (विपा १, १—पत्र ११)। °कोट्टि स्त्री [°कुट्टि] वही अर्थ, 'से चोरसेणावई गामघाय वा जाव पंथकोट्टिं वा काउं वच्चति' (णाया १, १८)।

पंथग पुं [पान्थक] एक जैन मुनि (णाया १, ५, धम्म ६ टी)।

[°नामन्] अनन्तर उक्त कर्म-विशेष (राज, सम ६७)।

पज्जत्त न [पर्याप्त] लगातार चौतीस दिन का उपवास (सबोध ५८)।

पज्जत्तर [दे] देखो पज्जतर (षड्—पत्र २१०)।

पज्जत्ति स्त्री [पर्याप्ति] १ शक्ति, सामर्थ्य (सूअ १, १, ४)। २ जीव की वह शक्ति, जिसके द्वारा पुद्गलो को ग्रहण करने तथा उनको आहार, शरीर आदि के रूप मे बदल देने का काम होता है, जीव की पुद्गलो को ग्रहण करने तथा परिणमाने या पचाने की शक्ति (भग, कम्म १, ४६, नव ४, द ४)। ३ प्राप्ति, पूर्ण प्राप्ति (दे ५, ६२)। ४ तृप्ति; 'पियदसणधणजीवियाण को लहइ पज्जत्ति ?' (उप ७६८ टी)।

पज्जत्ति स्त्री [पर्याप्ति] १ पूर्ति, पूर्णता (धर्मवि ३८)। २ अन्त, अवसान (सुख २, ८)।

पज्जन्न पुं [पर्जन्य] मेघ-विशेष, जिसके एक वार वरसने से भूमि मे एक हजार वर्ष तक चिकनाहट रहती है, 'पज्जु- (?ज) न्ने णं महामेहे एगे णं वासेणं दस वाससयाइं भावेति' (ठा ४, ४—पत्र २७०)।

पज्जय पु [दे. प्रार्यक] प्रपितामह, पितामह का पिता, परदादा (भग ६,३, दस ७, सुर १, १७४, २२०)।

पज्जय पु [पर्यय] १ श्रुत-ज्ञान का एक भेद, उत्पत्ति के प्रथम समय मे सूक्ष्म निगोद के लब्धि-अपर्याप्त जीव को जो कुश्रुत का अंश होता है उससे दूसरे समय मे ज्ञान का जितना अंश वढ़ता है वह श्रुतज्ञान (कम्म १, ७)। २—देखो पज्जाय (सम्म १०३, णंदि, विसे ४७८, ४८८, ४९०, ४९१)। °समास पु [°समास] श्रुतज्ञान का एक भेद, अनन्तर उक्त पर्यय-श्रुत का समुदाय (कम्म १, ७)।

पज्जयण न [पर्ययन] निश्चय, अवधारण (विसे ८३)।

पज्जर सक [कथय्] कहना, वोलना। पज्जरइ, पजर (हे ४, २, दे ६, २९, कुमा)।

पज्जरय पु [प्रजरक] रत्नप्रभा-नामक नरक-पृथिवी का एक नरकावास (ठा ६—पत्र ३६५)। °मज्झ पु [°मध्य] एक नरकावास (ठा ६—पत्र ३६७ टी)। °ावट्ट पु [°ावर्त्त] नरकावास-विशेष (ठा ६)। °ासिट्ठ पु [°ावशिष्ट] एक नरकावास, नरक-स्थान-विशेष (ठा ६)।

पज्जल देखो पजल। पज्जलेइ (महा)। वकृ. पज्जलत (कप्प)।

पज्जलण वि [प्रज्वलन] जलानेवाला (ठा ४, १)।

पज्जलिअ पु [प्रज्वलित] तीसरी नरक-भूमि का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ८)।

पज्जलिय वि [प्रज्वलित] १ जलाया हुआ, दग्ध (महा)। २ खूब चमकनेवाला, देदीप्यमान (गच्छ २)।

पज्जलिर वि [प्रज्वलितृ] १ जलनेवाला। २ खूब चमकनेवाला (सुपा ६३८, सण)।

पज्जलीढ वि [पर्यवलीढ] भक्षित (विचार ३२६)।

पज्जव पुं [पर्यव] १ परिच्छेद, निर्णय (विसे ८३, आवम)। २ देखो पज्जाय (आचा, भग, विसे २७५२, सम्म ३२)। °कसिण न [°कृत्स्न] चतुर्दश पूर्व-ग्रन्थ तक का ज्ञान, श्रुतज्ञान-विशेष (पंचभा)। °जाय वि [°जात] १ भिन्न अवस्था को प्राप्त (पण्ह २, ५)। २ ज्ञान आदि गुणोवाला (ठा १)। ३ न. विपयोपभोग का अनुष्ठान (आचा)। °जाय वि [°यात] ज्ञान-प्राप्त (ठा १)। °ट्ठिय पु [स्थित, °र्थिक, °स्तिक] नय-विशेष, द्रव्य को छोडकर केवल पर्यायो को ही मुख्य माननेवाला पक्ष (सम्म ६)। °णय, °नय पु [°नय] वही अनन्तर उक्त अर्थ (राज, विसे ७५), उप्पज्जति वयति अ भावा नियमेण पज्जवनयस्स' (सम्म ११)।

पज्जवण न [पर्यवन] परिच्छेद, निश्चय (विसे ८३)।

पज्जवत्थाव सक [पर्यव + स्थापय्] १ अच्छी अवस्था मे रखना। २ विरोध करना। ३ प्रतिपक्ष के साथ वाद करना। पज्जवत्थावेदु (शौ), (मा ३९)। पज्जवत्थावेहि (पि ५५१)।

पज्जवसाण न [पर्यवसान] अन्त, अवसान (भग)।

पज्जवसिअ न [पर्यवसित] अवसान, अन्त, 'अपज्जवसिए लोए' (आचा)।

पज्जा देखो पण्णा (हे २, ८३)।

पज्जा स्त्री [पद्या] मार्ग, रास्ता, 'भेअ च पडुच समा भावाए पन्नवणपज्जा' (सम्म १५७, दे ६, १, कुप्र १९६)।

पज्जा स्त्री [दे] निःश्रेणि, सीढी (दे ६, १)।

पज्जा स्त्री [पर्याय] अधिकार, प्रबन्ध भेद (दे ६, १, पाअ)।

पज्जा देखो पया, 'अगणिज्जति नामे विज्जा दडिज्जती नासे पज्जा' प्रासू ६६)।

पज्जाअर पु [प्रजागर] जागरण, निद्रा का अभाव (अभि ६६)।

पज्जाउल वि [पर्याकुल] विशेष आकुल, व्याकुल (स ७२, ६७३, हे ४, २६६)।

पज्जाभाय सक [पर्या + भाजय्] भाग करना। सकृ पज्जाभाइत्ता (राज)।

पज्जाय पुं [पर्याय] १ समान अर्थ का वाचक शब्द (विसे २५)। २ पूर्ण प्राप्ति (विसे ८३)। ३ पदार्थ-धर्म, वस्तु-गुण। ४ पदार्थ का सूक्ष्म या स्थूल रूपान्तर (विसे ३२१, ४७९, ४८०, ४८१, ४८२, ४८३, ठा १, १०)। ५ क्रम, परिपाटी (णाया १, १)। ६ प्रकार, भेद (आवम)। ७ अवसर। ८ निर्माण (हे २, २४)। देखो पज्जय तथा पज्जव।

पज्जाय पु [पर्याय] तात्पर्य, भावार्थ, रहस्य (सूअनि १३९)।

पज्जाल सक [प्र + ज्वालय्] जलाना, सुलगाना। पज्जालइ (भवि)। सकृ पज्जालिअ, पज्जालिऊण (दस ५, १, महा)।

पज्जालण न [प्रज्वालन] सुलगाना (उप ५९७ टी)।

पज्जालिअ वि [प्रज्वालित] जलाया हुआ, सुलगाया हुआ (सुपा १५१, प्रासू १८)।

पज्जिआ स्त्री [दे. प्रार्यिका] १ माता की मातामही, परनानी। २ पिता की मातामही, परदादी (दस ७, हे ३, ४१)।

पक्कास देखो पयास = प्रकाश (पिंग)।

पक्किट्ठ देखो पगिट्ठ (राज)।

पक्किण्ण वि [प्रकीर्ण] १ उप्त, बोया हुआ। २ दत्त, दिया हुआ, 'जहिं पकिण्णा (न्ना) विरुहंति पुण्णा' (उत्त १२, १३)। देखो पइण्ण = प्रकीर्ण।

पक्कित्तिअ वि [प्रकीर्त्तित] वर्णित, कथित (श्रु १०८)।

पक्किदि देखो पगइ = प्रकृति (प्राकृ १२)।

पक्किदि (शौ) देखो पइइ = प्रकृति (स्वप्न ६०, अभि ६५)।

पक्किन्न देखो पक्किण्ण (उत्त १२, १३)।

पक्किरण न [प्रकिरण] देने के लिए फेंकना (वव १)।

पक्कुण देखो पकर = प्र + कृ। पकुणइ (कम्म १, ६०)।

पक्कुप्प अक [प्र + कुप्] क्रोध करना, गुस्सा करना। पकुप्पति (महानि ४)।

पक्कुप्पित (चूपै) वि [प्रकुपित] क्रुद्ध, कुपित, गुस्साया हुआ (हे ४, ३२६)।

पक्कुविअ ऊपर देखो (महानि ४)।

पक्कुव्व सक [प्र + कृ, प्र + कुर्व्] १ करने का प्रारम्भ करना। २ प्रकर्ष से करना। ३ करना। पकुव्वइ (पि ५०८)। वकृ. पकुव्वमाण (सुर १६, २४, पि ५०८)।

पक्कुव्वि वि [प्रकारिन्, प्रकुर्विन्] १ करनेवाला, कर्ता। २ पु प्रायश्चित्त देकर शुद्धि कराने में समर्थ गुरु (द्र ४६, ठा ८, पुप्फ ३५६)।

पक्कूविअ वि [प्रकूजित] ऊँचे स्वर से चिल्लाया हुआ (उप पृ ३३२)।

पक्कोट्ठ देखो पओट्ठ (राज)।

पक्कोव पु [प्रकोप] गुस्सा, क्रोध (श्रा १४)।

पक्क वि [पक्व] पका हुआ (हे १, ४७, २, ७६, पाअ)।

पक्क वि [दे] १ दृप्त, गर्वित। २ समर्थ, पक्का, पहुँचा हुआ (दे ६, ६४, पाअ)।

पक्कत वि [प्रक्रान्त] प्रस्तुत, प्रकृत (कुमा २७)।

पक्कग्गाह पु [दे] १ मकर, मगरमच्छ (दे ६, २३)। २ पानी में वसनेवाला सिंहाकार जल-जन्तु (से ५, ५७)।

पक्कण वि [दे] १ असहन, असहिष्णु। २ समर्थ, शक्त (दे ६, ६९)। ३ पुं चाण्डाल (स ६३)। ४ एक अनार्य देश। ५ पुस्त्री अनार्य देश-विशेष में रहनेवाली एक मनुष्य-जाति (औप, राज)। स्त्री. °णी (णाया १,१, औप, इक)। ६ पु एक नीच जाति का घर, शवर-गृह (पउम ५२)। °उल न [°कुल] १ चाण्डाल का घर (बृह ३)। २ एक गर्हित कुल, 'पक्कणउले वसंतो सउणी इयरोवि गरहिओ होइ' (आव ३)।

पक्कणि वि [दे] १ अतिशय शोभमान, खूब शोभता हुआ। २ भग्न, भाँगा हुआ। ३ प्रियवद, प्रियभाषी (दे ६, ६५)।

पक्कणिय पुस्त्री [दे] एक अनार्य देश में रहनेवाली मनुष्य जाति (पण्ह १, १—पत्र १४, इक)।

पक्कन्न न [पक्वान्न] केवल घी मे बनी हुई वस्तु, मिठाई आदि (सुपा ३८७)।

पक्कम सक [प्र + क्रम्] प्रकर्ष से समर्थ होना। पक्कमइ (भग १५—पत्र ६७८)।

पक्कम सक [प्र + क्रम्] १ प्रकर्ष से जाना, चला जाना गमन करना। २ अक. प्रयत्न होना। प्रवृत्ति होना। पक्कमई (उत्त ३, १३)। पक्कमति (उत्त २७, १४, दस ३, १३), 'अणुमासणमेव पक्कमे' (सूअ १, २, १, ११)।

पक्कम पुं [प्रक्रम] प्रस्ताव, प्रसंग (सुपा ३७४)।

पक्कमणी स्त्री [प्रक्रमणी] विद्या-विशेष (सूअ २, २, २७)।

पक्कल वि [दे] १ समर्थ, शक्त (हे २, १७४, पाअ, सुर ११, १०४, वज्जा ३४)। १ दर्प-युक्त, गर्वित (सुर ११, १०४; गा ११८)। ३ प्रौढ, 'चत्तारि पक्कलवइल्ला' (गा ८१२, पि ४३९)।

पक्कस देखो वक्कस (आचा)।

पक्कसावअ पु [दे] १ शरभ। २ व्याघ्र (दे ६, ७५)।

पक्काइय वि [पक्वीकृत] पकाया हुआ, 'पक्काइयमाउलिंगसारिच्छा' (वज्जा ६२)।

पक्किर सक [प्र + कृ] फेंकना। वकृ. 'छारं च धूलिं च कयवरं च उवरिं पक्किरमाणा' (णाया १ २)।

पक्कीलिय वि [प्रक्रीडित] जिसने क्रीडा का प्रारम्भ किया हो वह (णाया १, १, कप्प)।

पक्केल्लय वि [पक्व] पका हुआ (उवा)।

पक्ख पुं [पक्ष] वेदिका का एक भाग (राय ८२)।

पक्ख पु [पक्ष] १ पाख, पखवारा, आधा महीना, पन्द्रह दिन-रात (ठा २, ४—पत्र ८६ कुमा)। २ शुक्ल और कृष्ण पक्ष, उजेला और अँधेरा पाख (जीव २, हे २ १०६)। ३ पार्श्व, पंजर, कन्धा के नीचे का भाग। ४ पक्षियो का अवयव-विशेष, पंख, पर, पतत्र (कुमा)। ५ तर्कशास्त्र-प्रसिद्ध अनुमान-प्रमाण का एक अवयव, साध्यवाली वस्तु (विसे २८२४)। ६ तरफ, ओर। ७ जत्था, दल, टोली। ८ मित्र, सखा। ९ शरीर का आधा भाग। १० तरफदार। ११ तीर का पंख (हे २, १४७)। १२ तरफदारी (वव १)। °ग वि [°ग] पक्ष-गामी, पक्ष पर्यन्त स्थायी (कम्म १, १८)। °पिंड पुंन [°पिण्ड] आसन-विशेष—१ जानु और जाँघ पर वस्त्र बाँध कर बैठना। २ दोनो हाथो से शरीर का बन्धन कर बैठना (उत्त १, १९)। °य पुं [°क] पंखा, ताल-वृन्त (कप्प)। °वत वि [°वत्] तरफदारीवाला (वव १)। °वाइल्ल वि [°पातिन्] पक्षपात करनेवाला, तरफदारी करनेवाला (उप ७२८ टी, धम्म १ टी)। °वाद पुं [°पात] तरफदारी (उप ६७०, स्वप्न ४५)। °वादि (शौ) देखो °वाइल्ल (नाट—विक्र २, मालती ६५)। °वाय देखो °वाद (सुपा २०६, २६३)। °वाय पु [°वाद] पक्ष-सम्बन्धी विवाद (उप पृ ३१२)। °वाह पु [°वाह] वेदिका का एक देश-विशेष (ज १)। °विडिअ वि [°पतित] पक्ष-पाती (हे ४, ४०१)। °वाइया स्त्री [°वापिका] होम-विशेष (स ७५७)।

पक्खंत न [पक्षान्त] अन्यतर इन्द्रिय-जात, 'अन्नयरं इंदियजायं पक्खतं भण्णइ' (निचू ६)।

पट्टा, चकनामा, किसी प्रकार का अधिकार-पत्र (कुप्र ११, जं ३)। ६ रेशम। ७ पाट, सन (गा ५२०, कप्पू)। ८ रेशमी कपडा। ९ सन का कपडा (कप्प, ओप)। १० सिंहासन, गद्दी, पाट (कुप्र २८, सुपा २८५)। १२ कलावत्तू (राज)। १३ पट्टी, फोडा आदि पर बांधा जाता लम्बा वस्त्रांश, पाटा, 'चउरंगुलपमाणपट्टववेण सिरिवच्छालंकिय छाइय वच्छत्थल' (महा, विपा १, १)। १३ शाक-विशेष (सुज्ज २०)। °इल्ल पुं [°वत्] पटेल, गाँव का मुखिया (ज ३)। °उडी स्त्री [°कुटी] तंबू, वस्त्र-गृह (सुर १३, १५७)। °करि पु [°करिन्] प्रधान हस्ती (सुपा ३७३)। °कार पु [°कार] तन्तुवाय, वस्त्र बुननेवाला, जुलाहा (पण्ण १)। °वासिआ स्त्री [°वासिता] एक शिरो-भूषण (दे ४, ४३)। °साला स्त्री [°शाला] उपाश्रय, जैन मुनि के रहने का स्थान (सुपा २८५)। °सुत्त न [°सूत्र] रेशमी सूता (आवम)। °हत्थि पु [°हस्तिन्] प्रधान हाथी (सुपा ३७२)।

पट्टइल } पु [दे] पटेल, गाँव का मुखिया
पट्टइल्ल } (सुपा २७३, ३६१)।

पट्टंसुअ न [पट्टांशुक] १ रेशमी वस्त्र। २ सन का वस्त्र (गा ५२०, कप्पू)।

पट्टग देखो पट्ट (कम्म)।

पट्टण न [पत्तन] नगर, शहर (भग, ओप, प्राप्र कुमा)।

पट्टदेवी स्त्री [पट्टदेवी] पटरानी (सिरि १२१२)।

पट्टय देखो पट्ट (उवा, णाया १, १६)।

पट्टसुत्त न [पट्टसूत्र] रेशमी वस्त्र (धर्मवि ७२)।

पट्टाढा स्त्री [दे] पट्टा, घोडे की पेटी, कसन, 'छोडिया पट्टाढा, ऊसारिय पल्लाणं' (महा; सुख १८, ३७)।

पट्टिय वि [पट्टिक] पट्टे पर दिया जाता गाँव वगैरह, 'पुव्विं पट्टियगामम्मि तुट्ठदव्वत्थं पट्टइलो नरवालो पुव्वि जो आसि गुत्तीए खित्तो' (सुपा २७३)।

पट्टिया स्त्री [पट्टिका] १ छोटा तख्ता, पाटी, 'चित्तपट्टिया' (सुर १, ८८)। २ देखो पट्टी, 'सरामणपट्टिआ' (राज—ज ३)।

पट्टिस पु [दे पट्टिश] प्रहरण-विशेष, एक प्रकार का हथियार (पण्ह १, १, पउम ८, ४५)।

पट्टी स्त्री [पट्टी] १ धनुर्यष्टि। २ हस्तपट्टिका, हाथ पर की पट्टी, 'उप्पीडियसरामणपट्टिए' (विपा १, १—पत्र २४)।

पट्टुअ पुन देखो पट्टुया, 'पट्टुएहिं' (सुख ९, १)।

पट्टुया स्त्री [दे] पाद-प्रहार, लात, गुजराती मे 'पाटू' सिरिवच्छो गोणेण तहाहओ पट्टुयाए हिययम्मि' (सुपा २३७)। देखो पड्डुआ।

पट्टुहिय न [दे] कलुषित जल, गदा जल, "पट्टुहियं जाण कलुमजलं" (पाअ)।

पट्ठ वि [प्रष्ठ] १ अग्रगामी, अग्रसर, अगुआ (णाया १,१—पत्र १६)। २ कुशल, निपुण। ३ प्रधान, मुखिया (ओप, राज)।

पट्ठ वि [स्पृष्ट] जिसका स्पर्श किया गया हो वह (ओप)।

पट्ठ न [पृष्ठ] १ पीठ, शरीर के पीछे का भाग (णाया १, ९, कुमा)। २ तल, ऊपर का भाग, 'तलिम पट्ठ च तलं' (पाअ)। °चर वि [°चर] अनुयायी, अनुगामी (कुमा)।

पट्ठ वि [पृष्ट] १ जिसको पूछा गया हो वह। २ न. प्रश्न, सवाल, 'छव्विहे पट्ठे पण्णत्ते' (ठा ६—पत्र ३७५)।

पट्ठव सक [प्र+स्थापय्] १ प्रस्थान कराना, भेजना। २ प्रवृत्ति कराना। ३ प्रारम्भ करना। ४ प्रकर्ष से स्थापना करना। ५ प्रायश्चित्त देना। पट्ठवइ (हे ४, ३७)। भूका पट्ठवइसु (कप्प)। कृ पट्ठवियव्व (कस, सुपा ६२७)।

पट्ठवग देखो पट्ठवय (कम्म ६, ६६ टी)।

पट्ठवण न [प्रस्थापन] १ प्रकृष्ट स्थापन। २ प्रारम्भ, 'इम पुण पट्ठवणं पडुच्च' (अणु)।

पट्ठवणा स्त्री [प्रस्थापना] १ प्रकृष्ट स्थापना। २ प्रायश्चित्तप्रदान, 'दुविहा पट्ठवणा खलु' (वव १)।

पट्ठवय वि [प्रस्थापक] १ प्रवर्त्तक, प्रवृत्ति करानेवाला (णाया १, १—पत्र ६३)। २ प्रारम्भ करनेवाला (विसे ६२७)।

पट्ठविअ वि [प्रस्थापित] भेजा हुआ (पाअ, कुमा)। २ प्रवर्त्तित (निचू २०)। ३ स्थिर किया हुआ (भग १२, ४)। ४ प्रकर्ष से स्थापित, व्यवस्थापित (पण्ण २१)।

पट्ठविइया } स्त्री [प्रस्थापिता] प्रायश्चित-
पट्ठविया } विशेष, अनेक प्रायश्चित्तों में जिसका पहले प्रारम्भ किया जाय वह (ठा ५, २, निचू २०)।

पट्ठाअ देखो पट्ठाव। वकृ पट्ठाअंत (गा ४४०)।

पट्ठाण न [प्रस्थान] प्रयाण (सुपा १४२)।

पट्ठाव देखो पट्ठव। पट्ठावइ (हे ४, ३७)। पट्ठावेइ (पि ५५३)।

पट्ठाविअ देखो पट्ठविअ (हे ४, १६, कुमा, पि ३०९)।

पट्ठि स्त्री देखो पट्ठ = पृष्ठ (गउड, सण)। °मंस न [°मांस] पीठ का मांस (पण्ह १, २)।

पट्ठिअ वि [प्रस्थित] जिसने प्रस्थान किया हो वह, प्रयात (दे ४, १६, ओघ ८१ भा, सुपा ७८)।

पट्ठिअ वि [दे] अलकृत, विभूषित (पड्)।

पट्ठिउकाम वि [प्रस्थातुकाम] प्रयाण का इच्छुक (श्रा १४)।

पट्ठिसग न [दे] ककुद, बैल के कंधे पर का कूबड, डिल्ला (दे ६, २३)।

पट्ठी देखो पट्ठि (महा, काल)।

पट्ठीवस पु [पृष्ठवंश] घर के मूल दो खंभों पर तिरछा रखा जाता बडा खम्भा (पव १३३)।

पठ देखो पढ। पठदि (शौ) (नाट—मृच्छ १४०)। पठति (पिंग)। कर्म पठाविअइ (पि ३०९, ५५१)।

पठग देखो पाढग (कप्प)।

पड अक [पत्] पडना, गिरना। पडइ (उव, पि २१८, २४४)। वकृ पडत, पडमाण (गा २६४, महा, भवि, बृह ६)। संकृ. पडिअ (नाट—शकु ६७)। कृ. पडणीअ (काल)।

पड पु [पट] वस्त्र, कपडा (ओप, उव, स्वप्न ८५, स ३२६, गा १८) °कार देखो °गार (राज)। °कुडी स्त्री [°कुटी] तंबू, वस्त्र-गृह (दे ६, ६, ती ३)। °गार पुं [°कार]

पक्खोड सक [प्र + छादय्] ढकना, आच्छादन करना। सक्र पक्खोडिय (उप ५८४)।

पक्खोड सक [प्र + स्फोटय] १ खूब झाडना। २ वारम्वार झाडना। पक्खोडिज्जा, वकृ पक्खोडंत (दस ४,१)। प्रयो. पक्खोडाविज्जा (दस ४, १)।

पक्खोड पु [प्रस्फोट] प्रमार्जन, प्रतिलेखन की क्रिया-विशेष (पव २)।

पक्खोडण न [शदन] धूनन, कँपाना (कुमा)।

पक्खोडिअ वि [शदित] निर्झाटित झाड कर गिराया हुआ (दे ६, ७७, पाम्र)।

पक्खोडिअ देखो पक्खोड = शद्, प्र + छादय्।

पक्खोभ सक [प्र + क्षोभय्] क्षुब्ध करना, क्षोभ उत्पन्न कर हिला देना। कवकृ पक्खुब्भत (से २, २४)।

पक्खोलण न [शदन] १ स्खलित होनेवाला। २ वि रुष्ट होनेवाला (राज)।

पखम (पै) देखो = पक्ष्मन्, 'पखमलणअणए' (प्राकृ १२४)।

पखोड देखो पक्खोड = प्रस्फोट (पव २)।

पखल वि [प्रखर] प्रचण्ड, तीव्र, तेज (प्राप्र)।

पगइ स्त्री [प्रकृति] १ प्रकृति, स्वभाव (भग, कम्म १, २, सुर १४, ६६, सुपा ११०)। २ प्रकृत अर्थ, प्रस्तुत अर्थ, 'पडिसेहदुग पगइं गमेइ' (विसे २५०२)। ३ प्राकृत लोक, साधारण जन-समूह, 'दिन्नमुद्धारे बहुदव्वं पगईए' (सुपा ५६७)। ४ कुम्भकार आदि अठारह मनुष्य जातियाँ, अट्ठारसपगइब्भंतराए को सो न जो एइ' (श्राक १२)। ५ कर्मो का भेद (सम ६)। ६ सत्व, रज और तम की साम्यावस्था। ७ वलदेव के एक पुत्र का नाम (राज)। °वध पु [°वन्ध] कर्म पुद्गलो में भिन्न-शक्तियों का पैदा होना (कम्म १, २)। देखो पगडि।

पगठ पु [प्रकण्ठ] १ पीठ-विशेष। २ अन्त का अवनत प्रदेश (जीव ३)।

पगथ सक [प्र + कथय्] निन्दा करना, 'अलियं पगं(कं)थे अदुवा पग(कं)थे' (आचा)।

पगड वि [प्रकट] व्यक्त, खुला, स्पष्ट, प्रत्यक्ष, (पि २१६)।

पगड वि [प्रकृत] प्रविहित, विनिर्मित (उत्त १३)।

पगड पु [प्रगर्त्त] वडा गड्ढा या गड्हा (आचा २, १०, २)।

पगडण न [प्रकटन] प्रकाश करना, खुला करना (राँदि)।

पगडि स्त्री [प्रकृति] १ भेद, प्रकार (भग)। २—देखो पगइ (सम ५६, सुर १४, ६८)।

पगडीकय वि [प्रकटीकृत] व्यक्त किया हुआ, स्पष्ट किया हुआ (सुपा १८१)।

पगड्ढ सक [प्र + कृप्] खीचना। कवकृ. पगड्ढिज्जमाण (विपा १, १)।

पगप्प देखो पकप्प = प्र + कल्पय्। संकृ. पगप्पएत्ता (सूम्र २, ६, ३७)।

पगप्प देखो पकप्प = प्र + क्लृप् (सूम्र १, ८, ५)।

पगप्प वि. [प्रकल्प] १ उत्पन्न होनेवाला, प्रादुर्भूत होनेवाला, 'वहुगुणप्पगप्पाइं कुज्जा अत्तसमाहिए' (सूम्र १, ३, ३, १६)। देखो पकप्प = प्रकल्प (आचा)।

पगप्पिअ वि [प्रकल्पित] प्ररूपित, कथित, 'ए उ एयाहि दिट्ठीहिं पुव्वमासि पगप्पियं' (सूम्र १, ३, ३, १६)। देखो पकप्पिअ।

पगप्पित्तु वि [प्रकल्पयितृ, प्रकर्तयितृ] काटनेवाला, कतरनेवाला; 'हता छेत्ता पगब्भि-(?प्पि)त्ता आयसायाणुगामिणो' (सूम्र १, ८, ५)।

पगब्भ अक [प्र + गल्भ्] १ धृष्टता करना, धृष्ट होना। २ समर्थ होना। पगब्भइ, पगब्भई (आचा, सूम्र १, २, २, २१, १, २, ३, १०, उत्त ५, ७)।

पगब्भ वि [प्रगल्भ] धृष्ट, ढीठ (पउम ३३, ६६)। २ समर्थ (उप २६४ टी)।

पगब्भ न [प्रागल्भ्य] धृष्टता, ढीठाई, 'पगब्भि पाणे वहुणतिवाती' (सूम्र १, ७, ८)।

पगब्भणा स्त्री [प्रगल्भना] प्रगल्भता, धृष्टता (सूम्र १, १०, १७)।

पगब्भा स्त्री [प्रगल्भा] भगवान् पार्श्वनाथ की एक शिष्या (आवम)।

पगब्भिअ वि [प्रगल्भित] धृष्टता-युक्त (सूम्र १, १, १, १३, १, २, ३, ४)।

पगब्भित्तु वि [प्रगल्भितृ] काटनेवाला, 'हता छेत्ता पगब्भित्ता' (सूम्र १, ८, ५)।

पगय न [प्रकृत] १ प्रस्ताव, प्रसग (सुम्रनि ४७)। २ पु. गाँव का अधिकारी (पव २६८)।

पगय वि [प्रगत] सगत (श्रावक १८६)।

पगय वि [प्रकृत] प्रस्तुत, अधिकृत (विसे ८३३, उप ४७६)।

पगय वि [प्रगत] १ प्राप्त (राज)। २ जिसने गमन करने का प्रारम्भ किया हो वह, 'मुणिणोवि जहाभिमय पगया पगएण कज्जेण' (सुपा २३५)। ३ न प्रस्ताव, अधिकार (सूम्र १, ११, १५)।

पगय न [दे] पग, पाँव, पैर, 'एत्थतरम्मि लग्गो चडमारुम्रो। तेण भग्गो तुरयपगयमग्गो' (महा)।

पगर पु [प्रकर] समूह, राशि (सुपा ६५५)।

पगरण न [प्रकरण] १ अधिकार, प्रस्ताव। २ ग्रथ खण्ड-विशेष, ग्रथाश-विशेष (विसे १११५)। ३ किसी एक विषय को लेकर वनाया हुआ छोटा ग्रन्थ (उव)।

पगरिअ त्रि [प्रगलित] गलिकुष्ठ, कुष्ठ-विशेष की बीमारीवाला (पिंड ५७२)।

पगरिस पु [प्रकर्ष] १ उत्कर्ष, श्रेष्ठता (सुपा १०६)। २ आधिक्य, अतिशय (सुर ४, १६६)।

पगरिसण न [प्रकर्षण] ऊपर देखो (यति १६)।

पगल अक [प्र + गल्] झरना, टपकना। वकृ. पगलत (विपा १, ७, महा)।

पगहिय वि [प्रगृहीत] ग्रहण किया हुआ, उपात्त (सुर ३, १६७)।

पगाइय वि [प्रगीत] जिसने गाने का प्रारंभ किया हो वह, 'पगाइयाइं मगलमहेउराइं' (स ७३६)।

पगाढ वि [प्रगाढ] अत्यन्त गाढ (विपा १, १, सुपा ५३०)।

पगाम देखो पकाम (आचा, श्रा १४, सुर ३, ८७, कुप्र ३१५)।

पडिअग्ग सक [प्रति + जागृ] १ सम्हालना। २ सेवा करना, भक्ति करना। ३ शुश्रूषा करना, 'वच्छ। पडियग्गेहि मणिमोत्तियाइय सारदव्वं' (स २८८), पडियग्गह (स ५४८)।

पडिअग्गिअ वि [दे] १ परिभुक्त, जिसका परिभोग किया गया हो वह। २ जिसको बधाई दी गई हो वह। ३ पालित, रक्षित (दे ६, ७४)।

पडिअग्गिअ वि [अनुव्रजित] अनुसृत (दे ६, ७४)।

पडिअग्गिअ वि [प्रतिजागृत] भक्ति से आहृत (स २१)।

पडिअग्गिर वि [अनुव्रजिन] अनुसरण करने की आदत वाला (कुमा)।

पडिअज्झअ पु [दे] उपाध्याय, विद्या-दाता गुरु (दे ६, ३१)।

पडिअट्टलिअ वि [दे] घृष्ट, घिसा हुआ (से ६, ३१)।

पडिअत्त देखो परि + वत्त = परि + वृत्। सक्र पडिअत्तिअ (नाट)।

पडिअत्तण न [परिवर्त्तन] फेरफार, हेरफेर (से ५, ६६)।

पडिअमित्त पु [प्रत्यमित्र] मित्र-शत्रु, मित्र होकर पीछे से जो शत्रु हुआ हो वह (राज)।

पडिअम्मिय वि [प्रतिकर्मित] मण्डित, विभूषित (दे ६, ३५)।

पडिअर सक [प्रति + चर्] १ बीमार की सेवा करना। २ आदर करना। ३ निरीक्षण करना। ४ परिहार करना। संक्र पडियरिऊण (निचू १)।

पडिअर सक [प्रति + कृ] १ बदला चुकाना। २ इलाज करना। ३ स्वीकार करना। हेक्र पडिकाउं (गा ३२०)। सक्र. 'तहत्ति पडिकाऊण ठाविओ एसो' (कुप्र ४०)।

पडिअर पु [दे] चुल्ली-मूल, चुल्हे का मूल भाग (दे ६, १७)।

पडिअर पु [परिकर] परिवार, 'पडियरि (? र)ओ पुरिसो व्व नियत्तो तेहिं चेव पएहिं नलो' (कुप्र ५७)।

पडिअरग वि [प्रतिचारक] सेवा-शुश्रूषा करनेवाला (निचू १, वव १)।

पडिअरण न [प्रतिचरण] सेवा, शुश्रूषा (ओघ ३६ भा, श्रा १, सुपा २६)।

पडिअरणा स्त्री [प्रतिचरणा] १ बीमार की सेवा-शुश्रूषा (ओघ ८३)। २ भक्ति, आदर, सत्कार (उप १३६ टी)। ३ आलोचना, निरीक्षण (ओघ ८३)। ४ प्रतिक्रमण, पाप-कर्म से निवृत्ति। ५ सत्-कार्य में प्रवृत्ति (आव ४)।

पडिअलि वि [दे] त्वरित, वेग-युक्त (दे ६, २८)।

पडिआइय सक [प्रत्या + पा] फिर से पान करना। पडिआइयइ (दस १०, १)।

पडिआइय सक [प्रत्या + दा] फिर से ग्रहण करना। पडिआइयइ (दस १०, १)।

पडिआगय वि [प्रत्यागत] १ वापस आया हुआ, लौटा हुआ (पउम १६, २६)। २ न. प्रत्यागमन, वापस आना (आचू १)।

पडिआयण न [प्रत्यापन] फिर से पान, 'वतस्स य पडिआयणं' (दसचू १, १)।

पडिआयण न [प्रत्यादान] फिर से ग्रहण (दसचू १, १)।

पडिआर पुं [प्रतिकार] १ चिकित्सा, उपाय, इलाज (आव ४, कुमा)। २ बदला, शोध (आचा)। ३ पूर्वाचरित कर्म का अनुभव (सूअ १, ३, १, ६)।

पडिआर पु [प्रत्याकार] तलवार की म्यान (दे २, ५, स २१५), 'न एक्कम्मि पडियारे दोन्नि करवालाइ मायंति' (महा)।

पडिआर पु [प्रतिचार] सेवा-शुश्रूषा (णाया १, १३—पत्र १७६)।

पडिआरय वि [प्रतिचारक] सेवा-शुश्रूषा करनेवाला (णाया १, १३ टी—पत्र १८१)। स्त्री. °रिया (णाया १, १—पत्र २८)।

पडिआरि वि [प्रतिचारिन्] ऊपर देखो (वव १)।

पडिइ सक [प्रति + इ] पीछे लौटना, वापस आना। वक्र. पडिंत (उप ५६७ टी)। हेक्र. पडिएत्तए (कस)।

पडिइ स्त्री [पतिति] पतन, पात (वव ५)।

पडिइंद पु [प्रतीन्द्र] १ इन्द्र, देव-राज (पउम १०५, ६)। २ इन्द्र का सामानिक-देव, इन्द्र के तुल्य वैभववाला देव (पउम १०५, १११)। ३ वानर-वंश के एक राजा का नाम (पउम ६, १५२)।

पडिइंधण न [प्रतीन्धन] अस्त्र-विशेष, इन्धनास्त्र का प्रतिपक्षी अस्त्र (पउम ७१, ६४)।

पडिइक्क देखो पडिक्क (आचा)।

पडिउंचण न [दे] अपकार का बदला (पउम ११, ३८, ४४, १६)।

पडिउंबण न [परिचुम्बन] संगम, संयोग (से २, २७)।

पडिउच्चार सक [प्रत्युत् + चारय्] उच्चारण करना, बोलना (भग, उवा)।

पडिउज्जम अक [प्रत्युद् + यम्] सम्पूर्ण प्रयत्न करना। पडिउज्जमति (चेइय ७८२)।

पडिउट्ठिअ वि [प्रत्युत्थित] जो फिर से खड़ा हुआ हो वह (से १५, ८०, पउम ६१, ४०)।

पडिउण्ण देखो परिपुण्ण (से ५, १६)।

पडिउत्तर न [प्रत्युत्तर] जवाब, उत्तर (सुर २, १५८, भवि)।

पडिउत्तरण न [प्रत्युत्तरण] पार जाना, पार उतरना (निचू १)।

पडिउत्ति स्त्री [दे] खबर, समाचार, 'अम्मापिअरस्स कुसलपडिउत्ती ससिणेह परिपुट्ठा' (महा)।

पडिउत्थ वि [पर्युषित] संपूर्ण रूप से अवस्थित (से ४, ५०)।

पडिउद्ध वि [प्रतिबुद्ध] १ जागृत, जगा हुआ (से १२, २२)। २ प्रकाश-युक्त, 'जलणिहिवहपडिउद्धं आअस्सणामड्ढिअ विब्भमइ व वणं' (से ५, २७)।

पडिउवयार पुं [प्रत्युपकार] उपकार का बदला, प्रतिफल (पउम ४८, ७२, सुपा ११५)।

पडिउस्सस अक [प्रत्युत् + श्वस्] पुनर्जीवित होना, फिर से जीना। वक्र पडिउस्ससंत (से ६, १२)।

पडिऊल देखो पडिकूल (अच्चु ८०, से ३, ३५)।

पडिएत्तए देखो पडिइ।

पडिएल्लिअ वि [दे] कृतार्थ, कृत-कृत्य (दे ६, ३२)।

पच्चइय वि [प्रत्ययिक] १ विश्वासी, विश्वास-वाला (णाया १, १२)। २ ज्ञानवाला, प्रत्ययवाला। ३ न. श्रुत-ज्ञान, श्रागम-ज्ञान (विसे २१३६)।

पच्चइय वि [प्रत्ययित] विश्वासवाला, विश्वस्त (महा सुर १६, १६६)।

पच्चइय वि [प्रात्ययिक] प्रत्यय से उत्पन्न, प्रतीति से सजात (ठा ३, ३—पत्र १५१)।

पच्चंग न [प्रत्यङ्ग] हर एक श्रवयव (गुण १५, कप्पू)।

पच्चंगिरा स्त्री [प्रत्यङ्गिरा] विद्यादेवी-विशेष, 'ईमिवियसत्तवयणा पभणइ पच्चंगिरा श्रह विज्जा' (सुपा ३०६)।

पच्चंत पुं [प्रत्यन्त] १ श्रनार्यदेश (प्रयौ १६)। २ वि. समीपस्थ देश, सन्निकृष्ट प्रान्त भाग (सुर २, २००)।

पच्चंतिग देखो **पच्चंतिय** = प्रत्यन्तिक (श्राचा २, ३, १, ५)।

पच्चंतिय वि [प्रत्यन्तिक] समीप-देश में स्थित (उप २११ टी)।

पच्चंतिय वि [प्रात्यन्तिक] प्रत्यन्त देश से श्राया हुश्रा (धम्म ८ टी)।

पच्चक्ख न [प्रत्यक्ष] १ इन्द्रिय श्रादि की सहायता के बिना ही उत्पन्न होनेवाला ज्ञान (विसे ८९)। २ इन्द्रियों से उत्पन्न होनेवाला ज्ञान (ठा ४, ३)। ३ वि प्रत्यक्ष ज्ञान का विषय, 'पच्चक्खाश्रो श्रणगो एगो तरुणो महाभागो' (सुर ३, १७१)।

पच्चक्ख } सक [प्रत्या + ख्या] त्याग करना, त्याग करने का नियम करना। पच्चक्खाइ (भग)। वक्र पच्चक्खमाण, पच्चक्खाएमाण (पि ५६१, उवा)। सक्र. पच्चक्खाइत्ता (पि ५८२)। कृ. पच्चक्खेय (श्राव ६)।
पच्चक्खा }

पच्चक्खाण न [प्रत्याख्यान] १ परित्याग करने की प्रतिज्ञा (भग, उवा)। २ जैन ग्रन्थांश-विशेष, नववाँ पूर्व-ग्रन्थ (सम २६)। ३ सर्व सावद्य—निन्द्य कर्मों से निवृत्ति (कम्म १, १७)। °वरण पुं [°वरण] कषाय-विशेष, सावद्य-विरति का प्रतिबन्धक क्रोध-श्रादि (कम्म १, १७)।

पच्चक्खाणि वि [प्रत्याख्यानिन्] त्याग की प्रतिज्ञा करनेवाला (भग ६, ४)।

पच्चक्खाणी स्त्री [प्रत्यख्यानी] भाषा-विशेष, प्रतिषेधवचन (भग १०, ३)।

पच्चक्खाय वि [प्रत्याख्यात] त्यक्त, छोड़ दिया हुश्रा (णाया १, १, भग, कप्प)।

पच्चक्खायय वि [प्रत्याख्यायक] त्याग करनेवाला, 'भत्तपच्चक्खायए' (भग १४, ७)।

पच्चक्खाव सक [प्रत्या + ख्यापय्] त्याग कराना किसी विषय का त्याग करने की प्रतिज्ञा कराना। वक्र. **पच्चक्खावित** (श्राव ६)।

पच्चक्खि वि [प्रत्यक्षिन्] प्रत्यक्ष ज्ञानवाला (वव १)।

पच्चक्खिय देखो **पच्चक्खाय** (सुपा ६२४)।

पच्चक्खीकर सक [प्रत्यक्षी + कृ] प्रत्यक्ष करना, साक्षात् करना। भवि. **पच्चक्खीकरिस्सं** (श्रभि १८८)।

पच्चक्खीकिद (शौ) वि [प्रत्यक्षीकृत] प्रत्यक्ष किया हुश्रा, साक्षात् जाना हुश्रा (पि ४९)।

पच्चक्खीभू श्रक [प्रत्यक्षी + भू] प्रत्यक्ष होना, साक्षात् होना। संकृ. **पच्चक्खीभूय** (श्रावम)।

पच्चक्खेय देखो **पच्चक्खा**।

पच्चग्ग वि [प्रत्यग्र] १ प्रधान, मुख्य (स २४)। २ श्रेष्ठ, सुन्दर (उप ९८६ टी, सुर १०, १५२)। ३ नवीन, नया (पाश्र)।

पच्चच्छिम देखो **पच्चत्थिम** (राज, ठा २, ३—पत्र ७९)।

पच्चच्छिमा देखो **पच्चत्थिमा** (राज)।

पच्चच्छिमिल्ल वि [पाश्चात्य] पश्चिम दिशा में उत्पन्न, पश्चिम दिशा-सम्बन्धी (सम ६६, पि ३९५)।

पच्चच्छिमुत्तरा देखो **पच्चत्थिमुत्तरा** (राज)।

पच्चड श्रक [क्षर्] झरना, टपकना। पच्चडइ (हे ४, १७३)। वक्र. **पच्चडमाण** (कुमा)।

पच्चड्ड सक [गम्] जाना, गमन करना। पच्चड्डइ (हे ४, १६२)।

पच्चड्डिअ वि [क्षरित] झरा हुश्रा, टपका हुश्रा (हे २, १७४)।

पच्चड्डिया स्त्री [दे. प्रत्यड्डिका] मल्लों का एक प्रकार का करण (विसे ३३५७)।

पच्चणीय वि [प्रत्यनीक] विरोधी, प्रतिपक्षी, दुश्मन (उप १४६ टी, सुपा ३०७)।

पच्चणुभव सक [प्रत्यनु + भू] श्रनुभव करना। वकृ. **पच्चणुभवमाण** (णाया १, २)।

पच्चणुहो देखो **पच्चणुभव**। पच्चणुहोइ (उत्त १३, २३)।

पच्चत्त वि [प्रत्यक्त] जिसका त्याग करने का प्रारम्भ किया गया हो वह (उप ८२८)।

पच्चत्तर न [दे] चाटु, खुशामद (दे ६, २१)।

पच्चत्थरण न [प्रत्यास्तरण] बिछौना (पि २८५)। देखो **पल्हत्थरण**।

पच्चत्थि वि [प्रत्यर्थिन्] प्रतिपक्षी, विरोधी, दुश्मन (उप १०३१ टी, पाश्र, कुप्र १४१)।

पच्चत्थिम वि [पाश्चात्य, पश्चिम] १ पश्चिम दिशा तरफ का, पश्चिम का। २ न. पश्चिम दिशा, 'पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दे जोयणसाहस्सियं खेत्तं जाणइ, पासइ, एवं दक्खिणेणं, पच्चत्थिमेणं' (उवा, भग, श्राचा, ठा २,३)।

पच्चत्थिमा स्त्री [पश्चिमा] पश्चिम दिशा (ठा १०—पत्र ४७८, श्राचा)।

पच्चत्थिमिल्ल वि [पाश्चात्य] पश्चिम दिशा का (विपा १, ७, पि ५९५, ६०२)।

पच्चत्थिमुत्तरा स्त्री [पश्चिमोत्तरा] पश्चिमोत्तर दिशा, वायव्य कोण (ठा १०—पत्र ४७८)।

पच्चत्थुय वि [प्रत्यास्तृत] श्राच्छादित, ढका हुश्रा (पउम ९४, ९६, जीव ३)। २ बिछाया हुश्रा (उप ६४८ टी)।

पच्चद्ध न [पश्चार्ध] पिछला श्राधा, उत्तरार्ध (गउड)।

पच्चद्धचक्कवट्टि पुं [प्रत्यर्धचक्रवर्तिन्] वासुदेव का प्रतिपक्षी राजा, प्रतिवासुदेव (ती ३)।

पच्चप्पण न [प्रत्यर्पण] वापस देना, लौटा देना (विसे ३०५७)।

पच्चप्पिण सक [प्रति + अर्पय्] १ वापस देना, लौटाना। २ सौंपे हुए कार्य को करके निवेदन करना। पच्चप्पिणइ (कप्प)। कर्म. पच्चप्पिणिज्जइ (पि ५५७)। वकृ. **पच्चप्पिणमाण** (ठा ५, २—पत्र ३११)। सकृ पच्चप्पिणित्ता (पि ५५७)।

पडिक्खाविअ वि [प्रतीक्षित] १ स्थापित। २ कृत, 'विरमालिग्र संसारे जेण पडिक्खाविग्रा समयसत्था' (कुमा)।

पडिक्खिअ वि [प्रतीक्षित] जिसकी प्रतीक्षा की गई हो वह (दे ८, १३)।

पडिक्खित्त वि [परिक्षिप्त] विस्तारित (अंत ७)।

पडिखध न [दे] १ जल-वहन जल भरने का दृति आदि पात्र। २ जलवाह, मेघ, बादल (दे ६, २८)।

पडिखधी स्त्री [दे] ऊपर देखो (दे ६,२८)।

पडिखद्ध वि [दे] हत, मारा हुआ (?), 'किमेइणा सुणहपाएण पडिखद्धेण' (महा)।

पडिखल देखो पडिक्खल (भवि)। कर्म पडिखलियइ (कुप्र २०५)।

पडिखलण देखो पडिक्खलण (धर्मवि ५६)।

पडिखलिअ वि [प्रतिस्खलित] १ रुका हुआ (भवि)। २ रोका हुआ, 'सहसा तत्तो पडिखलिओ अगरक्खेण' (सुपा ५२७)। देखो पडिक्खलिअ।

पडिखिज्ज अक [परि + खिद्] खिन्न होना, क्लान्त होना। पडिखिज्जदि (शौ) (नाट—मालती ३१)।

पडिगमण न [प्रतिगमन] व्यावर्तन, पीछे लौटना (वव १०)।

पडिगय पु [प्रतिगज] प्रतिपक्षी हाथी (गउड)।

पडिगय पुं [प्रतिगत] पीछे लौटा हुआ, वापस गया हुआ (विपा १, १, भग औप, महा, सुर १, १४६)।

पडिगह देखो पडिग्गह (दे ४, ३१)।

पडिगाह सक [प्रति + ग्रह्] ग्रहण करना, स्वीकार करना। पडिगाहइ (भवि)। पडिगाह, पडिगाहेहि (कप्प)। संकृ पडिगाहिया, पडिगाहित्ता, पडिगाहेत्ता (कप्प, आचा २, १, ३, ३)। हेकृ पडिगाहित्तए (कप्प)।

पडिगाहग वि [प्रतिग्राहक] ग्रहण करने वाला (णाया १, १—पत्र ५३, उप पृ २६३)।

पडिगाहिय वि [प्रतिगृहित] लिया हुआ, उपात्त (सुपा १४३)।

पडिग्गह पु [पतद्ग्रह, प्रतिग्रह] १ पात्र, भाजन (पण्ह २, ५, औप, ओव ३६, २५१, दे ५, ४८, कप्प)। २ कर्म प्रकृति-विशेष, वह प्रकृति जिसमें दूसरी प्रकृति का कर्म दल परिणत होता है (कम्मप)। °धारि वि [°धारिन्] पात्र रखनेवाला (कप्प)।

पडिग्गहिअ वि [प्रतिग्रहिन्, पतद्ग्रहिन्] पात्रवाला, 'समणे भगवं महावीरे संवच्छरं साहियं मासं जाव चीवरधारी होत्था, तेण परं अचेलए पाणिपडिग्गहिए' (कप्प)।

पडिग्गहिद (शौ) वि [प्रतिगृहिन्, परिगृहीत] स्वीकृत (नाट—मृच्छ ११०, रत्ना १२)।

पडिग्गाह देखो पडिगाह। पडिग्गाहेइ (उवा)। संकृ पडिग्गाहेत्ता (उवा)। हेकृ. पडिग्गाहेत्तए (कस, औप)।

पडिग्गाह सक [प्रति + ग्राहय्] ग्रहण कराना। कृ. पडिग्गाहिदव्व (शौ) (नाट)।

पडिग्गाहय वि [प्रतिग्राहक] प्रत्यादाता, वापस लेनेवाला (दे ७, ५६)।

पडिग्घाय पुं [प्रतिघात] १ निरोध, अटकाव (दस ६, ५८)। २ विनाश (धर्मवि ५४)।

पडिघाय पुं [प्रतिघात] १ नाश, विनाश। २ निराकरण, निरसन, 'दुक्खपडिघायहेउ' (आचा, सुर ७, २३४)।

पडिघायग वि [प्रतिघातक] प्रतिघात करनेवाला (उप २६४ टी)।

पडिघोलिर वि [प्रतिघूर्णितृ] डोलनेवाला, हिलनेवाला (से ६, ५१)।

पडिचंद पुं [प्रतिचन्द्र] द्वितीय चन्द्र, जो उत्पात आदि का सूचक है (अणु)।

पडिचक्क न [प्रतिचक्र] अनुरूप चक्र—समुदाय (राज)। देखो पडियक्क = प्रतिचक्र।

पडिचर देखो पडिअर = प्रति + चर्। संकृ. पडिचरिय (दस ६, ३)। कृ. 'संजमो पडिचरियव्वो' (आव ४)।

पडिचर सक [प्रति + चर्] परिभ्रमण करना। पडिचरइ (सुज्ज १, ३)।

पडिचरग पुं [प्रतिचरक] जासूस, चर पुरुष (बृह १)।

पडिचरणा देखो पडिअरणा (राज)।

पडिचार पुं [प्रतिचार] कला विशेष—१ ग्रह आदि की गति का परिज्ञान। २ रोगी की सेवा-शुश्रूषा का ज्ञान (ज २, औप, स ६०३)।

पडिचारय पुंस्त्री [प्रतिचारक] नौकर, कर्मकर। स्त्री. °रिया (सुपा ३०४)।

पडिचोइज्जमाण देखो परिचोय।

पडिचोइय वि [प्रतिचोदित] १ प्रेरित (उप पृ ३६४)। २ प्रतिभणित, जिसको उत्तर दिया गया हो वह (पउम ४४, ४६)।

पडिचोएत्तु वि [प्रतिचोदयितृ] प्रेरक (ठा ३, ३)।

पडिचोय सक [प्रति + चोदय्] प्रेरणा करना। पडिचोएति (भग १५)। कवकृ पडिचोइज्जमाण (भग १५—पत्र ६७६)।

पडिचोयणा स्त्री [प्रतिचोदना] प्रेरणा (ठा ३, ३, भग १५—पत्र ६७६)।

पडिचोयणा स्त्री [प्रतिचोदना] निर्भर्त्सना, निष्ठुरता से प्रेरणा (विचार २३८)।

पडिच्चारग देखो पडिचारय (उप ६८६ टी)।

पडिच्छ देखो पडिक्ख। वकृ. पडिच्छंत, 'अहिनियदिण पडिच्छमाणो चिट्ठइ' (उत्त; स १२५, महा)। कृ. पडिच्छियव्व (महा)।

पडिच्छ सक [प्रति + इष्] ग्रहण करना। पडिच्छइ, पडिच्छति (कप्प, सुपा ३६)। वकृ. पडिच्छमाण, पडिच्छेमाण (औप, कप्प, णाया १, १)। संकृ. पडिच्छइत्ता, पडिच्छिअ, पडिच्छिउ, पडिच्छिऊण (कप्प, अभि १८५, सुपा ८७, निचू २०)। हेकृ. पडिच्छिउं (सुपा ७२)। कृ पडिच्छियव्व (सुपा १२५, सुर ४, १८६)। प्रयो. कर्म. पडिच्छावीअदि (शौ) (पि ५५२, नाट)। वकृ. पडिच्छावेमाण (कप्प)।

पडिच्छंद पुंन [प्रतिच्छन्द] १ मूर्ति, प्रतिबिम्ब (उप ७२८ टी, स १६१, ६०६)। २ तुल्य, समान (से ८, ४६)। °किय वि [°कृत] समान किया हुआ (कुमा)।

पच्चार सक [उपा + लम्भ्] उपालम्भ देना, उलाहना देना। पच्चारइ, पच्चारंति (हे ४, १५६, कुमा)।

पच्चारण न [उपालम्भन] प्रतिभेद (पाग्र)।

पच्चारिअ वि [प्रचारित] चलाया हुआ (सिरि ४३६)।

पच्चारिय वि [उपालब्ध] जिसको उलाहना दिया गया हो वह (भवि)।

पच्चालिय वि [दे प्रत्यार्दित] आर्द्र किया हुआ, गीला किया हुआ, 'पच्चालिया य से अहिययरं वाहसलिलेण दिट्ठी' (स ३०८)।

पच्चालीढ न [प्रत्यालीढ] वाम पाद को पीछे हटा कर और दक्षिण पाँव को आगे रखकर खड़े रहनेवाले धानुष्क की स्थिति धनुर्धारियों का पैतरा (वव १)।

पच्चावड पुं [प्रत्यावर्त्त] आवर्त्त के सामने का आवर्त्त, पानी का भँवर (राय ३०)।

पच्चावरण्ह पु [प्रत्यापराह्ण] मध्याह्न के बाद समय, तीसरा पहर (विपा १, ३ टि, पि ३३०)।

पच्चासण्ण वि [प्रत्यासन्न] समीप में स्थित, सन्निकट, बहुत पास (विसे २६३१)।

पच्चासत्ति स्त्री [प्रत्यासत्ति] समीपता, सामीप्य (मुद्रा १६१)।

पच्चासन्न देखो **पच्चासण्ण**, 'निच्चं पच्चासन्नो परिसक्कइ सव्वओ मच्चू' (उप ६ टी)।

पच्चासा स्त्री [प्रत्याशा] १ आकांक्षा, वाञ्छा, अभिलाषा। २ निराशा के बाद की आशा (स ३६८)। ३ लोभ, लालच (उप पृ ७६)।

पच्चासि वि [प्रत्याशिन्] वान्त या क्य किया हुआ वस्तु का भक्षण करनेवाला (आचा)।

पच्चाह सक [प्रति + ब्रू] उत्तर देना। पच्चाह (पिंड ३७८)।

पच्चाहर सक [प्रत्या + हृ] उपदेश देना। वकृ. 'पच्चाहरओ वि ण हिययगमणीओ जोयणनीहारी सरो' (सम ६०)।

पच्चाहुत्त क्रिवि [पश्चान्मुख] पीछे, पीछे की तरफ, 'जाव न सत्तट्ठ पए पच्चाहुत्तं नियत्तो सि' (धर्मवि ५४)।

पच्छिम देखो **पच्छिम** (पिंग, पि ३०१)।

पच्चुअ (दे) देखो **पच्चुहिअ** (दे ६, २५)।

पच्चुअआर देखो **पच्चुवयार** (चारु ३६, नाट—मृच्छ ५७)।

पच्चुग्गच्छणया स्त्री [प्रत्युद्गमनता] अभिमुख गमन, (भग १४, ३)।

पच्चुच्चार पु [प्रत्युच्चार] अनुवाद, अनुभाषण (स १८४)।

पच्छुच्छुहणी स्त्री [दे] नूतन सुरा, ताजा दारू (दे २, ३५)।

पच्चुज्जीविअ वि [प्रत्युज्जीवित] पुनर्जीवित (गा ६३१, कुप्र ३१)।

पच्चुट्ठिअ वि [प्रत्युत्थित] जो सामने खड़ा हुआ हो वह (सुर १, १३४)।

पच्चुण्णम अक [प्रत्युद् + नम्] थोड़ा ऊँचा होना। पच्चुण्णमइ (कप्प)। संकृ पच्चुण्णमित्ता (कप्प, औप)।

पच्चुत्त वि [प्रत्युप्त] फिर से बोया हुआ (दे ७, ७७, गा ६१८)।

पच्चुत्तर सक [प्रत्यव + तॄ] नीचे आना। पच्चुतरइ (पि ४४७)। संकृ पच्चुत्तरित्ता (राज)।

पच्चुत्तर न [प्रत्युत्तर] जवाब, उत्तर (श्रा १२, सुपा २१, १०४)।

पच्चुत्थ वि [दे] प्रत्युप्त, फिर से बोया हुआ (दे ६, १३)।

पच्चुत्थय } वि [प्रत्यवस्तृत] आच्छादित
पच्चुत्थुय } (णाया १, १—पत्र १३, २०, कप्प)।

पच्चुद्धरिअ वि [दे] समुखागत, सामने आया हुआ (दे ६, २४)।

पच्चुद्धार पुं [दे] समुख आगमन (दे ६, २४)।

पच्चुप्पण्ण } वि [प्रत्युत्पन्न] वर्त्तमान काल-
पच्चुप्पन्न } संबन्धी (पि ५१६, भग, णाया १, ८, सम्म १०३)। °नय पु [°नय] वर्त्तमान वस्तु को ही सत्य माननेवाला पक्ष, निश्चय नय (विसे ३१६१)।

पच्चुप्पन्न पु [प्रत्युत्पन्न] वर्त्तमान काल (सूअ १, २, ३, १०)।

पच्चुप्फलिअ वि [प्रत्युत्फलित] वापस आया हुआ (से १४, ८१)।

पच्चुब्भड वि [प्रत्युद्भट] अतिशय प्रबल (संबोध ५३)।

पच्चुरस न [प्रत्युरस] हृदय के सामने (राज)।

पच्चुल्लं अ [दे· प्रत्युत] प्रत्युत, उलटा, 'न तुमं रुट्ठो, पच्चुल्लं ममं पूएसि' (वज्जा १)।

पच्चुवआर देखो **पच्चुवयार** (नाट—मृच्छ २५५)।

पच्चुवगच्छ सक [प्रत्युप + गम्] सामने जाना। पच्चुवगच्छइ (भग)।

पच्चुवगार } पुं [प्रत्युपकार] उपकार के
पच्चुवयार } बदले उपकार (ठा ४, ४, पउम ४६, ३६, स ४४०, प्रासू)।

पच्चुवयारि वि [प्रत्युपकारिन्] प्रत्युपकार करनेवाला (सुपा ५६५)।

पच्चुवेक्ख सक [प्रत्युप + ईक्ष्] निरीक्षण करना। पच्चुवेक्खेइ (औप)। संकृ. पच्चुवेक्खित्ता (औप)।

पच्चुवेक्खिय वि [प्रत्युपेक्षित] अवलोकित, निरीक्षित (स ४४१)।

पच्चुहिअ वि [दे] प्रस्नुत, प्रक्षरित, अच्छी तरह चूने या टपकनेवाला (दे ६, २५)।

पच्चूढ न [दे] थाल, थार, भोजन करने का पात्र, बड़ी थाली (दे ६, १२)।

पच्चूस [दे] देखो **पच्चूह** = (दे), 'किइएहिं पयत्तेणवि छाइज्जइ कह णु पच्चूसो ?' (सुर ३, १३४)।

पच्चूस } पु [प्रत्यूष] प्रभात काल (हे २
पच्चूह } १४, णाया १, १, गा ६०४)।

पच्चूह पुंन [प्रत्यूह] विघ्न, अन्तराय (पाग्र, कुप्र ५२)।

पच्चूह पुं [दे] सूर्य, रवि (दे ६, ५, गा ६०४, पाग्र)।

पच्चेअ न [प्रत्येक] प्रत्येक, हर एक (षड्)।

पच्चेड न [दे] मुसल (दे ६, १५)।

पच्चेल्लिउ (अप) देखो **पच्चल्लिउ** (भवि)।

पच्चोगिल सक [प्रत्यव + गिल्] आस्वादन करना, रस या स्वाद लेना। वकृ. पच्चोगिलमाण (कस ५, १०)।

पच्चोणामिणी स्त्री [प्रत्यवनामिनी] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से वृक्ष आदि फल देने के लिए स्वयं नीचे नमते हैं (उप पृ १५५)।

पडिणिवुत्त देखो पडिणिअत्त = प्रतिनि + वृत् । वकृ पडिणिवुत्तमाण (वेणी २३) ।

पडिणिवुत्त देखो पडिणिअत्त = प्रतिनिवृत्त (अभि ११८) ।

पडिणिवेस देखो पडिनिवेस (राज) ।

पडिणिव्वत्त देखो पडिणिअत्त = प्रतिनि + वृत् । वकृ. पडिणिव्वत्तन (हेका ३३२) ।

पडिणिसंत वि [प्रतिनिश्रान्त] १ विश्रान्त । २ निलीन (णाया १, ४—पत्र ९७) ।

पडिणीय न [प्रत्यनीक] १ प्रतिसैन्य, प्रति पक्ष की सेना (भग ८, ८) । २ वि प्रतिकूल, विपक्षी, विपरीत आचरण करनेवाला (भग ८, ८, णाया १, २, सम्म १६८, औप, ओघ ६३, द्र ३३) ।

पडिण्णत्त वि [प्रतिज्ञप्त] उक्त, कथित, 'जस्स ण भिक्खुस्स अय पगप्पे, अहं च खलु पडिण्ण (न्न) त्तो अपडिण्ण (न्न) त्तेहिं' (आचा १, ८, ५, ४) ।

पडिण्णा देखो पइण्णा (स्वप्न २०७, सूअ १, २, २, २०) ।

पडिण्णाद देखो पइण्णाद (पि २७६, ५६५, नाट—मालवि १२) ।

पडितत वि [प्रतितन्त्र] स्व-शास्त्र ही मे प्रसिद्ध अर्थ, 'जो खलु सततसिद्धो न य पर-ततेसु सो उ पडितंतो' (बृह १) ।

पडितणु स्त्री [प्रतितनु] प्रतिमा, प्रतिबिम्ब (चेइय ७५) ।

पडितप्प सक [प्रतितर्पय्] भोजनादि से तृप्त करना । पडितप्पह (ओघ ५३५) ।

पडितप्प अक [प्रति + तप्] १ चिन्ता करना । २ खबर रखना । पडितप्पई (उत्त १७, ५) ।

पडितप्पिय वि [प्रतितर्पित] भोजन आदि से तृप्त किया हुआ (वव १) ।

पडितुट्ठ देखो परितुट्ठ (नाट—मृच्छ ८१) ।

पडितुल्ल वि [प्रतितुल्य] समान, सदृश (पउम ५, १४६) ।

पडित्त देखो पलित्त = प्रदीप्त (से १, ५, ५, ८७) ।

पडित्ताण देखो परित्ताण (नाट—शकु १४) ।

पडित्थिर वि [दे] समान, सदृश (दे ६, २०) ।

पडित्थिर वि [परिस्थिर] स्थिर, 'गुप्पंत-पडित्थिरे' (से २, ४) ।

पडिथद्ध वि [प्रतिस्तब्ध] गर्वित (उत्त १२, ५) ।

पडिदंड पु [प्रतिदण्ड] मुख्य दण्ड के समान दूसरा दण्ड, 'सपडिदंडेण धरिज्जमाणेण आयवत्तेण विरायते (औप) ।

पडिदंस सक [प्रति + दर्शय्] दिखलाना । पडिदंसेइ (भग, उवा) । सकृ. पडिदंसेत्ता (उवा) ।

पडिदा सक [प्रति + दा] पीछे देना, दान का बदला देना । पडिदेइ (विसे ३२४१) । कृ पडिदायव्व (कस) ।

पडिदाण न [प्रतिदान] दान के बदले में दान, 'दाणपडिदाणउचियं' (उप ५९७ टी) ।

पडिदासिया स्त्री [प्रतिदासिका] दासी (दस ३, १ टी) ।

पडिदिसा } स्त्री [प्रतिदिश्] विदिशा,
पडिदिसि } विदिक् (राज, पि ४१३) ।

पडिदुगंछि वि [प्रतिजुगुप्सिन्] १ निन्दा करनेवाला । २ परिहार करनेवाला, 'सीओ-दगपडिदुगंछिणो' । (सूअ १, २, २ २०) ।

पडिदुवार न [प्रतिद्वार] १ हर एक द्वार (पण्ह १, ३) । २ छोटा द्वार (कप्प, पण्ण २) ।

पडिधि देखो परिहि, 'सूरियपडिधीतो बहित्ता' (सुज्ज ६) ।

पडिनमुक्कार पुं [प्रतिनमस्कार] नमस्कार के बदले मे नमस्कार—प्रणाम (रंभा) ।

पडिनिक्खंत वि [प्रतिनिष्क्रान्त] बाहर निकला हुआ (णाया १, १३) ।

पडिनिक्खम देखो पडिणिक्खम । पडिनि-क्खमइ (कप्प) । सकृ पडिनिक्खमित्ता, (कप्प, भग) ।

पडिनिग्गच्छ देखो पडिणिग्गच्छ । पडिनि-ग्गच्छइ (उवा) । पडिनिग्गच्छति (भग) । संकृ पडिनिग्गच्छित्ता (उवा, पि ५८२) ।

पडिनिभ देखो पडिणिभ (दसनि १) ।

पडिनियत्त देखो पडिणिअत्त = प्रतिनि+वृत् । पडिनियत्तइ (महा) । हेकृ. पडिनियत्तए (कप्प) ।

पडिनियत्त देखो पडिणिअत्त = प्रतिनिवृत्त (णाया १, १४, महा) ।

पडिनियत्ति स्त्री [प्रतिनिवृत्ति] वापस लौटना प्रत्यावर्तन (मोह ६३) ।

पडिनिवेस पुं [प्रतिनिवेश] १ आग्रह, कदाग्रह, दुराग्रह, अनुचित हठ (पंच ६) । २ गाढ अनुशय, पश्चात्ताप (विसे २२९६) ।

पडिनिसिद्ध वि [प्रतिनिषिद्ध] निवारित, हटाया हुआ (उप पृ ३३३) ।

पडिन्नत्त देखो पडिण्णत्त (आचा १, ८, ५, ४) ।

पडिन्नव सक [प्रति + ज्ञपय्] कहना । सकृ पडिन्नवित्ता (कप्प) ।

पडिन्नव सक [प्रति + ज्ञापय्] १ प्रतिज्ञा कराना । २ नियम दिलाना । पडिन्नविज्ञा, पडिन्नवेज्जा (दसचू २, ८) ।

पडिन्ना देखो पडिण्णा (आचा) ।

पडिपथ पुं [प्रतिपथ] १ उलटा मार्ग विपरीत मार्ग । २ प्रतिकूलता (सूअ १, ३, १, ९) ।

पडिपंथि वि [प्रतिपन्थिन्] प्रतिकूल, विरोधी, 'अप्पेगे पडिभासति पडिपंथियमागता' (सूअ १, ३, १, ९) ।

पडिपक्ख देखो पडिवक्ख (ओघ १३) ।

पडिपडिय वि [प्रतिपतित] फिर से गिरा हुआ, 'सत्थो निवत्तिएणो चालियावि पडिपडिया भवारण्णे' (सार्ध ९४) ।

पडिपत्ति } देखो पडिवत्ति (नाट—चैत
पडिपदि } ३४, सक्षि ९) ।

पडिपह पुं [प्रतिपथ] १ उन्मार्ग, विपरीत रास्ता (स १४७, पि ३६६ ए) । २ न अभिमुख, संमुख (सूअ २, २, ३१ टी) ।

पडिपहिअ वि [प्रातिपथिक] समुख आने-वाला (सूअ २, २, २८) ।

पडिपाअ सक [प्रति + पादय्] प्रतिपादन करना, कथन करना । कृ. पडिपाअणीअ (नाट—शकु ६५) ।

पडिपाय पुं [प्रतिपाद] मुख्य पाद को सहा-यता पहुँचानेवाला पाद (राय) ।

पच्छाअ वि [प्रच्छाय] प्रचुर छायावाला (अभि ३९)।

पच्छाइअ वि [प्रच्छादित] १ ढका हुआ, आच्छादित। २ छिपाया हुआ (पाअ, भवि)।

पच्छाइज्ज देखो पच्छाअ = प्र + छादय्।

पच्छाग पुं [प्रच्छादक] पात्र बांधने का कपडा (ओघ २६५ भा)।

पच्छाडिद (शौ) वि [प्रक्षालित] धोया हुआ (नाट—मृच्छ २५५)।

पच्छाणिअ [दे] देखो पच्चोवणिअ (षड्)।

पच्छाणुताविअ वि [पश्चादनुतापिक] पश्चात्ताप-युक्त, पछतावा करनेवाला (राय १४१)।

पच्छादो (शौ) देखो पच्छा = पश्चात् (पि ६९)।

पच्छायण न [पथ्यदन] पाथेय, रास्ते में खाने का भोजन, 'वहणं करिय पच्छायणस्स भारियं' (महा)।

पच्छायण न [प्रच्छादन] १ आच्छादन, ढकना। २ वि आच्छादन करनेवाला। °आ स्त्री [°ता] आच्छादन, 'परगुणपच्छायणया' (उव)।

पच्छाल देखो पक्खाल। पच्छालेइ (काल)।

पच्छि स्त्री [दे] पिटिका, पिटारी, वेत्रादि-रचित भाजन-विशेष (दे ६, १)। °पिडय न [°पिटक] 'पच्छी' रूप पिटारी (भग ७, ८ टी—पत्र ३१३)।

पच्छि (अप) देखो पच्छइ (हे ४, ३८८)।

पच्छिज्जमाण देखो पच्छ = प्र + अर्थय्।

पच्छित्त न [प्रायश्चित्त] १ पाप की शुद्धि करनेवाला कर्म, पाप का क्षय करनेवाला कर्म (उव सुपा ३६६, द्र ५२)। २ मन को शुद्ध करनेवाला कर्म (पंचा १६, ३)।

पच्छित्ति वि [प्रायश्चित्तिन्] प्रायश्चित्त का भागी, दोषी (उप ३७९)।

पच्छिम न [पश्चिम] १ पश्चिम दिशा (उपा ७४ टि)। २ वि पश्चिम दिशा का, पाश्चात्य (महा, हे २, २१, प्राप्र)। ३ पिछला, बाद का, 'दियसस्स पच्छिमे भाए' (कप्प)। ४ अन्तिम, चरम, 'पुरिमपच्छिमगाणं तित्थ-गराणं' (सम ४४)। °द्ध न [°ार्ध] उत्तरार्ध, उत्तरी आधा हिस्सा (महा, ठा २, ३—पत्र ८१)। °सेल पुं [°शैल] अस्ताचल पर्वत (गउड)।

पच्छिमा स्त्री [पश्चिमा] पश्चिम दिशा (कुमा, महा)।

पच्छिमिल्ल वि [पाश्चात्य] पीछे से उत्पन्न, पीछे का (विसे १७९५)।

पच्छियापिडय देखो पच्छि-पिडय (राय १४०)।

पच्छिल (अप) देखो पच्छिम (भवि)।

पच्छिल्ल } वि [पश्चिम, पाश्चात्य] १
पच्छिल्लय } पश्चिम दिशा का। २ पिछला, पूर्ववर्ती (पि ५९५, ५९५ टि ४)।

पच्छुत्ताव पुं [पश्चादुत्ताप] पछतावा, पश्चात्ताप (सम्मत्त १६०, धर्मवि ३५, १२२, १३०)।

पच्छुत्ताविअ (अप) वि [पश्चात्तापित] जिसको पश्चात्ताप हुआ हो वह (भवि)।

पच्छेकम्म देखो पच्छ-कम्म (हे १, ७९)।

पच्छेणय न [दे] पाथेय, रास्ते में निर्वाह करने की भोजन सामग्री, कलेवा (दे ६, २४)।

पच्छोववण्णग } वि [पश्चादुपपन्न] पीछे
पच्छोववन्नक } से उत्पन्न (भग)।

पजप सक [प्र + जल्प्] बोलना, कहना। पजपइ (पि २९६)।

पजंपावण न [प्रजल्पन] बोलाना, कथन कराना (औप, पि २९६)।

पजपिअ वि [प्रजल्पित] कथित, उक्त, कहा हुआ (गा ६४९)।

पजणण वि [प्रजनन] उत्पादक, उत्पन्न करनेवाला (राय ११४)।

पजणण न [प्रजनन] लिंग, पुरुष-चिह्न (विसे २५७९ टी, ओघ ७२२)।

पजल अक [प्र + ज्वल्] १ विशेष जलना, अतिशय दग्ध होना। २ चमकना। वकृ. पजलंत (भवि)।

पजलिर वि [प्रज्वलितृ] अत्यन्त जलनेवाला, 'मियज्झाणानलपजलिरकम्मकतारधूमलइउव्व' (सुपा १)।

पजह सक [प्र + हा] त्याग करना। पजहामि (पि ५००)। कृ. पजहियव्व (आचा)।

पजाला स्त्री [प्रज्वाला] अग्नि-शिखा, आग की लौ या लपट (कुप्र ११७)।

पजीवण न [प्रजीवन] आजीविका, जीवनोपाय, रोजी (पिंड ४७८)।

पजुत्त देखो पउत्त = प्रयुक्त (चड)।

पजूहिअ वि [प्रयूथिक] यूथ या समूह को दिया हुआ, याचक गण को अर्पित (आचा २, १, ४, २)।

पजेमण न [प्रजेमन] भोजन-ग्रहण, भोजन लेना (राय १४६)।

पज्ज सक [पायय्] पिलाना, पान कराना। पज्जेइ (विपा १, ६)। कवकृ. 'तण्हाइया ते तउ तंब तत्तं पज्जिज्जमाणाट्टतरं रसंति' (सूअ १, ५, १, २५)। कृ. पज्जेयव्व (भत्त ४०)।

पज्ज न [पद्य] छन्दो-बद्ध वाक्य (ठा ४, ४—पत्र २८७)।

पज्ज न [पाद्य] पाद-प्रक्षालन जल, 'अग्घं च पज्जं च गहाय' (णाया १, १६—पत्र २०९)।

पज्ज देखो पज्जत्त (द ३३, कम्म ३, ७)।

पज्जंत पुं [पर्यन्त] अन्त, सीमा, प्रान्त भाग (हे १, ५८, २, ६५, सुर ४, ११६)।

पज्जग न [दे] पान, पीना (दे ६, ११)।

पज्जण न [पायन] पिलाना, पान कराना (भग १४, ७)।

पज्जण्ण देखो पज्जणण (सूअनि ५७)।

पज्जणुओग } पु [पर्यनुयोग] प्रश्न (धर्मसं
पज्जणुजोग } १७९, २६२)।

पज्जण्ण पु [पर्जन्य] मेघ, बादल (भग १४, २, नाट मृच्छ १७५)। देखो पज्जन्न।

पज्जतर वि [दे] दलित, विदारित (षड्)।

पज्जत्त वि [पर्याप्त] १ 'पर्याप्ति' से युक्त, 'पर्याप्ति' वाला (ठा २, १, पण्ह १, १, कम्म १, ४९)। २ समर्थ, शक्तिमान्। ३ लब्ध, प्राप्त। ४ काफी, यथेष्ट, उतना जितने से काम चल जाय। ५ न. तृप्ति। ६ सामर्थ्य। ७ निवारण। ८ योग्यता (हे २, २४, प्राप्र)। ९ कर्म-विशेष, जिसके उदय से जीव अपनी अपनी 'पर्याप्तियों' से युक्त होता है वह कर्म (कम्म १, २६)। °णाम, °नाम न

पडवोधिअ देखो पडिबोहिय (अभि ५६)।

पडिबोह सक [प्रति+बोधय्] १ जगाना। २ बोध देना, समझाना, ज्ञान प्राप्त कराना। पडिबोहेइ (कप्प, महा)। कवकृ. पडिबोहिज्जंत (अभि ५६)। संकृ. पडिबोहिअ (नाट—मालती १३६)। हेकृ. पडिबोहिउ (महा)। कृ पडिबोहियव्व (स ७०७)।

पडिबोह पु [प्रतिबोध] १ बोध, समझ। २ जागृति, जागरण (गउड, पि १७१)।

पडिबोहग वि [प्रतिबोधक] १ बोध देनेवाला। २ जगानेवाला (विसे २४७ टी।

पडिबोहण न [प्रतिबोधन] देखो पडिबोह=प्रतिबोध (काल, स ७०८)।

पडिबोहि वि [प्रतिबोधिन्] प्रतिबोध प्राप्त करनेवाला (आचा २, ३, १, ८)।

पडिबोहिय वि [प्रतिबोधित] जिसको प्रतिबोध किया गया हो वह (णाया १, १, काल)।

पडिभग पु [प्रतिभंग] भग, विनाश (से ५, १६)।

पडिभज अक [प्रति+भञ्ज्] भागना, टूटना। हेकृ पडिभजिउ (वव ४)।

पडिभंड न [प्रतिभाण्ड] एक वस्तु को वेचकर उसके वदले में खरीदी जाती चीज (स २०५, सुर ६, १५८)।

पडिभंस सक [प्रति+भ्रंशय्] भ्रष्ट करना च्युत करना, 'पयाओ य पडिभंसइ' (स ३६३)।

पडिभग्ग वि [प्रतिभग्न] भागा हुआ, पलायित (ओघ ५३३)।

पडिभड पुं [प्रतिभट] प्रतिपक्षी योद्धा (से १३, ७२, अारा ५६, भवि)।

पडिभण सक [प्रति+भण्] उत्तर देना, जवाव देना। पडिभणइ (महा, उवा, सुपा २१५), पडिभणामि (महानि ४)।

पडिभणिय वि [प्रतिभणित] प्रत्युत्तरित, जिसका उत्तर दिया गया हो वह (महा, सुपा ६०)।

पडिभणिय वि [प्रतिभणित] १ निराकृत (धर्मसं ६५०)। २ न. प्रत्युत्तर, निराकरण (धर्मसं ६१)।

पडिभम सक [प्रति, परि+भ्रम्] घूमना, पर्यटन करना। संकृ 'कत्थइ कडुआविय गयह पति पडिभमिय सुहडसीसइँ दलति' (भवि)।

पडिभमिय वि [प्रतिभ्रान्त, परिभ्रान्त] घूमा हुआ (भवि)।

पडिभय न [प्रतिभय] भय, डर (पउम ७३, १२)।

पडिभा अक [प्रतिभा] मालूम होना। पडिभादि (शौ) (नाट—रत्ना ३)।

पडिभाग पु [प्रतिभाग] १ अंश, भाग (भग २५, ७)। २ प्रतिबिम्ब (राज)।

पडिभास अक [प्रति+भास्] मालूम होना। पडिभासदि (शौ) (नाट—मृच्छ १४१)।

पडिभास सक [प्रति+भाष्] १ उत्तर देना। २ वोलना, कहना, 'अप्पेगे पडिभासंति' (सूत्र १, ३, १, ६)।

पडिभिण्ण वि [प्रतिभिन्न] सवद्ध, सलग्न (से ४, ५)।

पडिभिन्न वि [प्रतिभिन्न] भेद-प्राप्त (पव—गाथा १६, चेइय ६४२)।

पडिभुअग पुं [प्रतिभुजङ्ग] प्रतिपक्षी भुजंग—वेश्या लपट (कप्पूर २७)।

पडिभू पु [प्रतिभू] जामिनदार, जमानत करनेवाला, मनौतिया (नाट—चैत ७५)।

पडिभेअ पु [दे प्रतिभेद] उपालम्भ, निंदा, 'पडिभेओ पच्चारणं' (पाअ)।

पडिभोइ वि [प्रतिभोगिन्] परिभोग करनेवाला, 'अकालपडिभोईणि' (आचा २, ३, १, ८, पि ४०५)।

पडिम वि [प्रतिम] समान, तुल्य (मोह ३५)।

पडिम° देखो पडिमा। °ट्ठाइ वि [°स्थायिन्] १ कायोत्सर्ग में रहनेवाला। २ नियम विशेष मे स्थित (पण्ह २, १—पत्र १००, ठा ५, १—पत्र २६६)।

पडिमंत सक [प्रति+मन्त्रय्] उत्तर देना। पडिमंतेइ (उत्त १८, ६)।

पडिमल्ल पुं [प्रतिमल्ल] प्रतिपक्षी मल्ल (भवि)।

पडिमा स्त्री [प्रतिमा] १ मूर्त्ति, प्रतिबिम्ब, 'जिणपडिमादंसणेण पडिवुद्ध' (दसनि १, पाअ, गा १, ११४)। २ कायोत्सर्ग। ३ जैन-शास्त्रोक्त नियम-विशेष (पणण २, १, मम १६, ठा २, ३, ५, १)। °गिह न [°गृह] मन्दिर (निचू १२)। देखो पडिम°।

पडिमाण न [प्रतिमान] जिससे सुवर्ण आदि का तौल किया जाता है वह रत्ती, मासा आदि परिमाण (अणु)।

पडिमाण न [प्रतिमान] प्रतिमा, प्रतिबिम्ब (चेइय ७५)।

पडिमि } सक [प्रति+मा] १ तौल
पडिमिण } करना, माप करना। २ गिनती करना। कर्म. पडिमिणिज्जइ (अणु)। कवकृ. पडिमिज्जमाण (राज)।

पडिमुच सक [प्रति+मुच्] छोड़ना। हेकृ. पडिमुचिउ (से १४, २)।

पडिमुडणा स्त्री [प्रतिमुण्डना] निषेध, निवारण (बृह १)।

पडिमुक्क वि [प्रतिमुक्त] छोडा हुआ (से ३, १२)।

पडिमोअणा स्त्री [प्रतिमोचना] छुटकारा (से १, ४६)।

पडिमोक्खण न [प्रतिमोचन] छुटकारा (स ४१)।

पडिमोयग वि [प्रतिमोचक] छुटकारा करनेवाला (राज)।

पडिमोयण देखो पडिमोक्खण (औप)।

पडियक्क देखो पडिक्क (आचा)।

पडियक्क न [प्रतिचक्र] युद्धकला-विशेष, 'तेण पुणो विव निप्फाइत्तो ईसत्थे पडियक्के जन्तुमुक्के य अन्नासुवि कलासु' (महा)।

पडियग्गण न [प्रतिजागरण] सम्हाल, खवर (धर्मसं १०१३)।

पडियच्च देखो पत्तिअ=प्रति+इ।

पडियरण न [प्रतिकरण] प्रतीकार, इलाज (पिंड ३६६)।

पडियरिअ वि [प्रतिचरित] सेवित, सेवा किया हुआ (मोह १०५)।

पडिया स्त्री [प्रतिज्ञा] १ उद्देश्य, 'पिंडवायपडियाए' (कस, आचा)। २ अभिप्राय (ठा ५, २—पत्र ३१४)।

पडिया स्त्री [पटिका] वस्त्र-विशेष,

'सुपमाणा य सुसुत्ता,
बहुरूवा तह य कोमला सिसिरे।

पज्जिज्जमाण देखो पज्ज = पायय्।

पज्जुट्ठ वि [पर्युष्ट] फडफडाया हुआ (?), 'भिउडी ण कआ, कडुअं णालविअं अहरअं ण पज्जुट्ठ' (गा ६२१)।

पज्जुच्छुअ वि [पर्युत्सुक] अति उत्सुक (नाट)।

पज्जुणसर न [दे] ऊख के तुल्य एक प्रकार का तृण (दे ६, ३२)।

पज्जुण्ण पु [प्रद्युम्न] १ श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम (अत)। २ कामदेव (कुमा)। ३ वैष्णव शास्त्र में प्रतिपादित चतुर्व्यूह रूप विष्णु का एक अंश (हे २, ४२)। ४ एक जैनमुनि (निचू १)। देखो पज्जुन्न।

पज्जुत्त वि [प्रयुक्त] जटित, खचित, 'माणिक्क-पज्जुत्तकणयकडयसणाहेहिं' (स ३१२), 'दिव्व-खग्गचामरपज्जुत्तकुडंतरालाइं' (स ५६, भवि)। देखो पज्झुत्त।

पज्जुदास पु [पर्युदास] निषेध, प्रतिषेध (विसे १८३)।

पज्जुन्न देखो पज्जुण्ण (णाया १, ५, अंत १४, कुप्र १८, सुपा ३२)। ५ वि धनी, श्रीमन्त, प्रभूत धनवाला, 'पज्जुन्नओवि पडिपुन्नसयलगो' (सुपा ३२)।

पज्जुवट्ठा सक [पर्युप + स्था] उपस्थित होना। हेकृ. पज्जुवट्ठादुं (शौ) (नाट—वेणी २५)।

पज्जुवट्ठिय वि [पर्युपस्थित] उपस्थित, मौजूद, हाजिर, तत्पर (उत्त १८, ४५)।

पज्जुवास सक [पर्युप + आस्] सेवा करना, भक्ति करना। पज्जुवासइ, पज्जुवासति (उव, भग)। वकृ. पज्जुवासमाण (णाया १, १, २)। कवकृ. पज्जुवासिज्जमाण (सुपा ३७८)। संकृ. पज्जुवासित्ता (भग)। कृ. पज्जुवासणिज्ज (णाया १, १, औप)।

पज्जुवासण न [पर्युपासन] सेवा, भक्ति, उपासना (भग, स ११६, उप ३५७ टी, अभि ३८)।

पज्जुवासणया } स्त्री [पर्युपासना] ऊपर
पज्जुवासणा } देखो (ठा ३, ३, भग, णाया १, १३, औप)।

पज्जुवासय वि [पर्युपासक] सेवा करनेवाला (काल)।

पज्जुसण }
पज्जुसवण }
पज्जुस्सवण } न देखो पज्जुसणा (धर्मवि २१, विचार ५३१)।
पज्जूसण }

पज्जुसणा स्त्री [पर्युषणा] देखो पज्जोसवणा, 'परिवसणा पज्जुसणा पज्जोसवणा य वासवासो य' (निचू १०)।

पज्जुस्सुअ } वि [पर्युत्सुक] अति उत्सुक,
पज्जूसुअ } विशेष उत्कण्ठित (अभि १०६, पि ३२७ ए)।

पज्जोअ पु [प्रद्योत] १ प्रकाश, उद्द्योत। २ उज्जयिनी नगरी का एक राजा (उव)। °गर वि [°कर] प्रकाश-कर्ता (सम १, (कप्प, औप)।

पज्जोइय वि [प्रद्योतित] प्रकाशित (उप ७२८ टी)।

पज्जोय सक [प्र + द्योतय्] प्रकाशित करना। वकृ. पज्जोयंत (चेइय ३२४)।

पज्जोयण पु [प्रद्योतन] एक जैन आचार्य (राज)।

पज्जोसव अक [परि + वस्] १ वास करना, रहना। २ जैनागम-प्रोक्त पर्युषणा-पर्व मनाना। पज्जोसवेइ, पज्जोसविंति, पज्जोसवेंति (कप्प)। वकृ. पज्जोसवंत, पज्जोसवेमाण (निचू १०, कप्प)। हेकृ. पज्जोसवित्तए, पज्जोसवेत्तए (कप्प, कस)।

पज्जोसवण न देखो पज्जोसवणा (पचा १७, ६)।

पज्जोसवणा स्त्री [पर्युषणा] १ एक ही स्थान में वर्षा-काल व्यतीत करना (ठा १०, कप्प)। २ वर्षा-काल (निचू १०)। ३ पर्व-विशेष, भाद्रपद के आठ दिनों का एक प्रसिद्ध जैन पर्व, 'काराविओ अमारिं पज्जोसवणाईसु तिहीसु' (मुणि १०९००, सुर १६, १६१)। °कप्प पुं [°कल्प] पर्युषणा में करने योग्य शास्त्र-विहित आचार, वर्षाकल्प (ठा ५, २)।

पज्जोसवणा स्त्री [पर्योसवना पर्युपशमना] ऊपर देखो (ठा १०—पत्र ५०६)।

पज्जोसविय वि [पर्युषित] स्थित, रहा हुआ (कप्प)।

पज्झंझ अक [प्र + झञ्झ्] शब्द करना, आवाज करना। वकृ. पज्झंझमाण (राज)।

पज्झट्टिआ स्त्री [पज्झट्टिका] छन्द-विशेष (पिंग)।

पज्झर अक [क्षर्, प्र + क्षर्] झरना, टपकना। पज्झरइ (हे ४, १७३)।

पज्झर पु [प्रक्षर] प्रवाह-विशेष (पउम २)।

पज्झरण न [प्रक्षरण] टपकना (वज्जा १०८)।

पज्झरिअ वि [प्रक्षरित] टपका हुआ (पाअ, कुमा महा, संक्षि १५)।

पज्झल देखो पज्झर = क्षर्। पज्झलइ (पिंग)।

पज्झलिआ देखो पज्झट्टिआ (पिंग)।

पज्झाय न [प्रध्यात] अतिशय चिन्तन (अणु १३६)।

पज्झाय वि [प्रध्यात] चिन्तित, सोचा हुआ (अणु)।

पज्झुत्त वि [दे] खचित, जडित, जडा हुआ (पाअ)। देखो पज्जुत्त

पझुंझ देखो पज्झुंझ। वकृ पझुंझमाण (राय ८३)।

पटउडी स्त्री [पटकुटी] तंबू, वस्त्र-गृह, कपड़-कोट (सुर १३, ६)।

पटल देखो पडल = पटल (कुमा)।

पटह देखो पडह (प्रति १०)।

पटिमा (पै चूपै) देखो पडिमा (पड्, पि १६१)।

पटोला स्त्री [पटोला] वल्ली-विशेष, कोशातकी, क्षारवल्ली (सिरि ६६६)।

पट्ट सक [पा] पीना, पान करना। पट्टइ (हे ४, १०)। भूका पट्टीअ (कुमा)।

पट्ट पु [पट्ट] १ पहनने का कपड़ा, 'पट्टो वि होइ इक्को देहपमाणेण सो य भइयव्वो' (बृह ३, ओघ ३४)। २ रथ्या, मुहल्ला, 'तेणवि मालियपट्टे गतूण करे कया माला' (सुपा ३७३)। ३ पाषाण आदि का तख्ता, फलक, 'मणिसिलापट्टअसणाहो माहवीमंडवो' (अभि २००), 'पिअंगुसिलापट्टए उवविट्ठा' (स्वप्न ५२), 'पट्टसठियपसत्थवित्थिण्णपिहुलसोणीओ' (जीव ३)। ४ ललाट पर से बँधी जाती एक प्रकार की पगड़ी, 'तप्पभिइ पट्टबद्धा नयाणो जाया पुव्व मउडबद्धा आसी' (महा)। ५

पडिलेहिय वि [प्रतिलेखित] निरीक्षित, देखा हुआ (उवा)।

पडिलेहियव्व देखो पडिलेह।

पडिलोम वि [प्रतिलोम] प्रतिकूल (भग)। २ विपरीत, उलटा (आचा २, २, २)। ३ न पश्चादानुपूर्वी, उलटा क्रम, 'वत्थ दुहाणुलोमेण तह य पडिलोमओ भवे वत्थ' (सुर १६, ४८, निचू १)। ४ उदाहरण का एक दोष (दसनि १)। ५ अपवाद (राज)।

पडिलोमइत्ता अ [प्रतिलोमयित्वा] वाद-विशेष, वादसभा के सदस्य या प्रतिवादी को प्रतिकूल बनाकर किया जाता वाद—शास्त्रार्थ (ठा ६)।

पडिल्ली स्त्री [दे] १ वृति, वाड। २ यवनिका, परदा (दे ६, ६५)।

पडिव देखो पलीव = प्र + दीपय्। पडिवेइ (से ५, ६७)।

पडिवइर न [प्रतिवैर] वैर का बदला (भवि)।

पडिवई देखो पडिवया (पव २७१)।

पडिवंचण न [प्रतिवञ्चन] बदला, 'वेर-पडिवंचणट्ठ' (पउम २६, ७३)।

पडिवथ देखो पडिपथ (से २, ४६)।

पडिवय देखो पडिवंय (भवि)।

पडिवस पु [प्रतिवंश] छोटा वांस (राय)।

पडिवक्क सक [प्रति + वच्] प्रत्युत्तर देना, जवाब देना। पडिवक्कइ (भवि)।

पडिवक्ख पु [प्रतिपक्ष] १ रिपु, दुश्मन, विरोधी (पाअ, गा १५२, सुर १, ५६, २, १२६, से ३, १५)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। ३ विपर्यय, वैपरीत्य (सण)।

पडिवक्खिअ वि [प्रतिपक्षिक] विरुद्ध पक्ष-वाला विरोधी (सण)।

पडिवच्च सक [प्रति + व्रज्] वापस जाना। पडिवच्चइ (पि ५६०)।

पडिवच्छ देखो पडिवक्ख, 'अह एवरमस्स दोसो पडिवच्छेहिंपि पडिवरणो' (गा ६७६)।

पडिवज्ज सक [प्रति + पद्] स्वीकार करना, अंगीकार करना। पडिवज्जइ, पडिवज्जए (उव, महा, प्रासू १४१)। भवि. पडिवज्जिस्सामि, पडिवज्जिस्सामो (पि ५२७, औप)। वकृ. पडिवज्जमाण (पि ५६२)। संकृ. पडिवज्जिऊण, पडिवज्जित्ताण, पडिवज्जिय (पि ५८६, ५८३, महा, रभा)। हेकृ. पडिवज्जिउं, पडिवज्जित्तए, पडिवत्तुं (पंचा १८, ठा २, १, कस, रंभा)। कृ. पडिवज्जियव्व, पडिवज्जेयव्व (उत्त ३२, उप ६८४, १००१)।

पडिवज्जण न [प्रतिपदन] स्वीकार, अंगीकार (कुप्र १४७)।

पडिवज्जण न [प्रतिपादन] अंगीकारण, स्वीकार करवाना (कुप्र १४७, ३८६)।

पडिवज्जणया स्त्री [प्रतिपदना] स्वीकार (णंदि २३२)।

पडिवज्जणया स्त्री [प्रतिपादना] प्रतिपादन (णंदि २३२)।

पडिवज्जय वि [प्रतिपादक] स्वीकार करनेवाला, 'एस ताव कसणधवलपडिवज्जओ त्ति' (स ५०५)।

पडिवज्जावण न [प्रतिपादन] स्वीकारण, स्वीकार कराना (कुप्र ६६)।

पडिवज्जाविय वि [प्रतिपादित] स्वीकार कराया हुआ (महा)।

पडिवज्जिय वि [प्रतिपन्न] स्वीकृत (भवि)।

पडिवट्टअ न [प्रतिपट्टक] एक प्रकार का रेशमी कपडा (कप्पू)।

पडिवड्ढावअ वि [प्रतिवर्धापक] १ बधाई देने पर उसे स्वीकार कर धन्यवाद देनेवाला। २ बधाई के बदले में बधाई देनेवाला। स्त्री. °विआ (कप्पू)।

पडिवण्ण वि [प्रतिपन्न] १ प्राप्त, (भग)। २ स्वीकृत, अंगीकृत (पड्)। ३ आश्रित (औप, ठा ७)। ४ जिसने स्वीकार किया हो वह (ठा ४, १)।

पडिवत्त पु [परिवर्त्त] परिवर्त्तन (नाट. मृच्छ ३१८)।

पडिवत्तण देखो पडिअत्तण (नाट)।

पडिवत्ति स्त्री [प्रतिपत्ति] १ परिच्छित्ति। २ प्रकृति, प्रकार (विसे ५७८)। ३ प्रवृत्ति, खबर (पउम ४७, ३०, ३१)। ४ ज्ञान (सुर १४, ७४)। ५ आदर, गौरव (महा)। ६ स्वीकार, अंगीकार (णंदि)। ७ लाभ, प्राप्ति, 'धम्मपडिवत्तिहेउत्तणेण' (महा)। ८ मतान्तर। ९ अभिग्रह-विशेष (सम १०६)। १० भक्ति, सेवा (कुमा, महा)। ११ परिपाटी, क्रम (आव ४)। १२ श्रुत विशेष, गति, इन्द्रिय आदि द्वारों में से किसी एक द्वार के जरिये समस्त संसार के जीवों को जानना (कम्म २, ७)। °समास पु [°समास] श्रुत-ज्ञान विशेष—गति आदि दो चार द्वारों के जरिये जीवों का ज्ञान (कम्म १, ७)।

पडिवत्तुं देखो पडिवज्ज।

पडिवद्दि देखो पडिवत्ति (प्राप्र)।

पडिवद्धावअ देखो पडिवड्ढावअ। स्त्री. °विआ (रंभा)।

पडिवन्न देखो पडिवण्ण, 'पडिवन्नपालणे सुपुरिसाण ज होइ त होउ' (प्रासू ३, णाया १, ५, उवा, सुर ४, ५७, स ६५६, हे २, २०६, पाअ)।

पडिवन्निय (अप) देखो पडिवण्ण (भवि)।

पडिवय अक [प्रति + पत्] ऊँचे जाकर गिरना। वकृ. पडिवयमाण (आचा)।

पडिवय सक [प्रति + वच्] उत्तर देना। भवि. पडिवक्खामि (सूअ १, ११, ६)।

पडिवयण न [प्रतिवचन] १ प्रत्युत्तर, जवाब (गा ४१६, सुर २, १२३, भवि)। २ आदेश, आज्ञा, 'देहि मे पडिवयण' (आवम)। ३ पु. हरिवंश के एक राजा का नाम (पउम २२, ६७)।

पडिवया स्त्री [प्रतिपत्] पडवा, पक्ष की पहली तिथि (हे १, ४४, २०६, षड्)।

पडिवविय वि [प्रत्युप्त] फिर से बोया हुआ (दे ६, १३)।

पडिवस अक [प्रति + वस्] निवास करना। वकृ पडिवसंत (पि ३९७, नाट—मृच्छ ३२१)।

पडिवसभ पु [प्रतिवृषभ] मूल स्थान से दो कोस की दूरी पर स्थित गाँव (पव ७०)।

पडिवह सक [प्रति + वह्] वहन करना, ढोना। कवकृ. पडिवुज्झमाण (कप्प)।

पडिवह देखो पडिपह (से ३, २४, ८, ३३, पउम ७३, २४)।

पडिवह पुं [प्रतिवध, परिवध] वध, हत्या (पउम ७३, २४)।

पडिवा देखो पडिवया (सुज्ज १०, १४)।

तन्तुवाय, कपडा बुननेवाला (पण्ह १, २—पत्र २८)। °वुड्ढि वि [°वुद्धि] प्रभूत सूत्रार्थों को ग्रहण करने मे समर्थ बुद्धिवाला (औप)। °मडव पुं [°मण्डप] तम्बू, वस्त्र-मण्डप (आक)। °मा वि [°वत्] पटवाला, वस्त्रवाला (पड्)। °वास पु [°वास] वस्त्र मे डाला जाता कुकुम-चूर्ण आदि सुगन्धित पदार्थ (गउड, स ७३-)। °साडय पुं [°शाटक] १ वस्त्र, कपडा। २ धोती, पहनने का लम्बा वस्त्र (भग ६, ३३)। ३ धोती और दुपट्टा (णाया १, १—पत्र ५३)।

पडन्ना स्त्री [दे. प्रत्यञ्चा] ज्या, धनुष का चिल्ला या डोरी (दे ६, १४ पाअ)।

पडसुअ देखो पडिसुद (पि ११५)।

पडसुआ स्त्री [प्रतिश्रुत्] १ प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि (हे १, ८८)। २ प्रतिज्ञा (कुमा)।

पडंसुआ स्त्री [दे] ज्या, धनुष का चिल्ला (दे ६, १४)।

पडंसुत्त देखो पडिसुद (प्राकृ ३२)।

पडक्खर पुं [दे] साला जैसा विदूषक आदि (दे ६, २५)।

पडच्चर पुं [पटच्चर] चोर, तस्कर (नाट—मृच्छ १३८)।

पडज्झमाण देखो पडह = प्र + दह्।

पडण न [पतन] पात, गिरना (णाया १, १, प्रासू १०१)।

पडणीअ वि [प्रत्यनीक] विरोधी, प्रतिपक्षी, वैरी (स ४६६)।

पडणीअ देखो पड = पत्।

पडपुत्तिया स्त्री [पटपुत्रिका] छोटा वस्त्र, रुमाल (संबोध ५)।

पडम देखो पढम (पि १०४, नाट—शकु ६८)।

पडल न [पटल] १ समूह, सघात, वृन्द (कुमा)। २ जैन साधुओ का एक उपकरण, भिक्षा के समय पात्र पर ढका जाता वस्त्र-खण्ड (पण्ह २, ५—पत्र १४८)।

पडल न [दे] नीव्र, नरिया, मिट्टी का बना हुआ एक प्रकार का खपडा जिससे मकान छाए जाते हैं (दे ६, ५, पाअ)।

पडलग } स्त्रीन [दे. पटलक] गठरी, गाँठ,
पडलय } गुजराती में 'पोटलु', 'पोटली', 'पुप्फपडलगहत्थाओ' (णाया १, ८)। स्त्री. °लिगा, °लिया (स २१३, सुपा ६)।

पडवा स्त्री [दे] पट-कुटी, पट-मण्डप, वस्त्र-गृह, तम्बू (दे ६, ६)।

पडह सक [प्र + दह्] जलाना, दग्ध करना। कवकृ पडज्झमाण (पण्ह १, २)।

पडह पुं [पटह] वाद्य-विशेष, नगाडा, ढोल (औप, णादि, महा)।

पडहत्थ वि [दे] पूर्ण भरा हुआ (स १८०)।

पडहिय पुं [पाटहिक] ढोल बजानेवाला, ढोली, ढोलकिया (पउम ४८, ८६)।

पडहिया स्त्री [पटहिका] छोटा ढोल (सुर ३, ११५)।

पडाअ देखो पलाय = परा + अय्। कृ. पडाइअव्व (से १४, १२)।

पडाइअ वि [पलायित] जिसने पलायन किया हो वह, भागा हुआ (से १५, १५)।

पडाइअव्व देखो पडाअ।

पडाइया स्त्री [पताकिका] छोटी पताका, अन्तर-पताका (कुप्र १४५)।

पडाग पुं [पटाक, पताक] पताका, ध्वजा (कप्प, औप)।

पडागा } स्त्री [पताका] ध्वजा, ध्वज (महा,
पडाया } पाअ, हे १, २०६, प्राप्र, गउड)। °इपडाग पुं [°तिपताक] १ मत्स्य की एक जाति (विपा १, ८—पत्र ८३)। २ पताका के ऊपर की पताका (औप)। °हरण न [°हरण] विजय-प्राप्ति (संथा)।

पडागार न [ ] नौका मे लगनेवाला वस्त्र (दशवै० चू० १ प्रारम्भ और अग० १११)।

पडायाण देखो पल्लाण (हे १, २५२)।

पडायाणिय वि [पर्याणित] जिस पर पर्याण बांधा गया हो वह (कुमा २, ६३)।

पडाली स्त्री [दे] १ पंक्ति, श्रेणी (दे ६, ६)। २ घर के ऊपर की चटाई आदि की कच्ची छत (वव ७)।

पडास देखो पलास (नाट—मृच्छ २४३)।

पडि वि [पटिन्] वस्त्रवाला (अणु १४४)।

पडि अ [प्रति] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रकर्ष (वव १)। २ सम्पूर्णता (चेइय ७८२)।

पडि अ [प्रति] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ विरोध, 'पडिवक्ख', 'पडिवासुदेव' (गउड, पउम २०, २०२)। २ विशेष, विशिष्टता, 'पडिमंजरिवडिसय' (औप)। ३ वीप्सा, व्याप्ति, 'पडिदुवार', 'पडिपेल्लण' (पण्ह १,३, से ६, ३२)। ४ वापस, पीछे, 'पडिगय' (विपा १, १, भग, सुर १, १४६)। ५ आभिमुख्य, सम्मुखता, 'पडिविरद्ध,' 'पडिबद्ध' (पण्ह २, २, गउड)। ६ प्रतिदान, बदला, 'पडिदेइ' (विसे ३२४१)। ७ फिर से, 'पडिपडिय', 'पडिवविय' (सार्ध ६४, दे ६, १३)। ८ प्रतिनिधित्व, पडिच्छंद (उप ७७८ टी)। ९ प्रतिषेध, निषेध, 'पडियाइक्खिय' (भग, सम ५६)। १० प्रतिकूलता, विपरीतता, 'पडिवय' (से २, ४६)। ११ स्वभाव, 'पडिवाइ' (ठा २,१)। १२ सामीप्य, निकटता, 'पडिवेसिअ' (सुपा ५५२)। १३ आधिक्य, अतिशय, 'पडियाणद' (औप)। १४, सादृश्य, तुल्यता, 'पडिइंद' (पउम १०५, १११)। १५ लघुता, छोटाई, 'पडिदुवार' (कप्प, पण्ण २)। १६ प्रशस्तता, श्लाघा, 'पडिरूव' (जीव ३)। १७ साप्रतिकता, वर्त्तमानता (ठा ३, ४—पत्र १५८)। १८ निरर्थक भी इसका प्रयोग होता है, 'पडिइद' (पउम १०५, ६), 'पडिच्चारेयव्व' (भग)।

पडि देखो परि (से ४, ५०, ५, १६, ६६, अंत ७)।

पडिअ वि [दे] विघटित, वियुक्त (दे ६ १२)।

पडिअ वि [पतित] १ गिरा हुआ (गा ११, प्रासू ५, १०१)। २ जिसने चलन को प्रारम्भ किया हो वह, 'आगयमग्गए य पडिओ' (वसु)।

पडिअ देखो पड = पत्।

पडिअंकिअ वि [प्रत्यङ्कित] १ विभूषित। २ उपलिप्त, 'बहुघणवुसिणपंकि पडियंकिओ' (भवि)।

पडिअतअ पुं [दे] कर्मकर, नौकर (दे ६, ३२)।

पडिअग्ग सक [अनु + व्रज्] अनुसरण करना, पीछे जाना। पडिअग्गइ (हे ४, १०७, षड्)।

३ अनुकूल करना। पडिसंधए (उत्त २७, १)। पडिसंधयाइ (सूअ २, ६. ३)। संक्र. पडिसधाय (सूअ २, २, २६)।

पडिसध } सक [प्रतिस + धा] १ आदर पडिसधा } करना। २ स्वीकार करना। पडिसधए (पञ्च ७)। सक्र पडिसधाय (सूअ २, २, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५)।

पडिसमुह न [प्रतिसंमुख] समुख, सामने, 'गग्रो पडिसंमुह पज्जोयस्स' (महा)।

पडिसलाव पु [प्रतिसंलाप] प्रत्युत्तर, जवाव (से १, २६, ११, ३४)।

पडिसलीण वि [प्रतिसंलीन] १ सम्यक् लीन, अच्छी तरह लीन। २ निरोध करनेवाला (ठा ४, २, औप)। °पडिमा स्त्री [°प्रतिमा] क्रोध आदि के निरोध करने की प्रतिज्ञा (औप)।

पडिसविक्ख सक [प्रतिसवि + ईक्ष्] विचार करना। पडिसविक्खे (उत्त २, ३१)।

पडिसंवेद } सक [प्रतिस + वेदय्] पडिसंवेय } अनुभव करना। पडिसवेदेइ, पडिसंवेययति (भग, पि ४९०)।

पडिसंसाहणया स्त्री [प्रतिससाधना] अनुव्रजन, अनुगमन (औप, भग १४, ३, २५, ७)।

पडिसहर सक [प्रतिसं + हृ] १ निवृत्त करना। २ निरोध करना। पडिसंहरेज्जा (सूअ १, ७, २०)।

पडिसक्क देखो परिसक्क। पडिसक्कइ (भवि)।

पडिसडण न [प्रतिशदन, परिशदन] १ सड जाना। २ विनाश, 'निरन्तरपडिसडणसीलाणि आउदलाणि' (काल)।

पडिसडिय वि [परिशटित] जो सड गया हो, जो विशेष जीर्ण हुआ हो वह (पिंड ५१७)।

पडिसत्तु पुं [प्रतिशत्रु] प्रतिपक्षी, दुश्मन, वैरी (सम १५३, पउम ५, १५६)।

पडिसत्थ पुं [प्रतिसार्थ] प्रतिकूल यूथ (निचू ११)।

पडिसद्द पु [प्रतिशब्द] १ प्रतिध्वनि (पउम १६, ५३, भवि)। २ उत्तर, प्रत्युत्तर, जवाव (पउम ६, ३५)।

पडिसद्दिय वि [प्रतिशब्दित] प्रतिध्वनियुक्त (सम्मत्त २१८)।

पडिसम अक [प्रति + शम्] विरत होना। पडिसमइ (से ६, ४५)।

पडिसमाहर सक [प्रतिसमा + हृ] पीछे खीच लेना 'दिट्ठिं पडिसमाहरे' (दस ८, ५५)।

पडिसय पु [प्रतिश्रय] उपाश्रय, साधु का निवास-स्थान (दस २, १, टी)।

पडिसर पु [प्रतिसर] १ सैन्य का पश्चाद्भाग (प्राप्र)। २ हस्त-सूत्र, वह धागा जो विवाह से पहले वर-वधू के हाथ मे रक्षार्थ वांधते हैं, ककरण (धर्म २)।

पडिसरण न [प्रतिसरण] ककरण (पंचा ८, १५)।

पडिसरीर न [प्रतिशरीर] प्रतिमूर्त्ति, 'पट्टविग्रो पडिसरीरं व' (धर्मवि ३)।

पडिसलागा स्त्री [प्रतिशलाका] पल्य-विशेष (कम्म ४, ७३)।

पडिसव सक [प्रति + शप्] शाप के वदले मे शाप देना, 'अहमाहग्रो त्ति न य पडिहणंति सत्तावि न य पडिसवंति' (उव)।

पडिसव सक [प्रति + श्रु] १ प्रतिज्ञा करना। २ स्वीकार करना। ३ आदर करना। कृ पडिसवणीअ (सरण)।

पडिसवत्त वि [प्रतिसपत्न] विरोधी शत्रु (दसनि ६, १८)।

पडिसा अक [शम्] शान्त होना। पडिसाइ (हे ४, १६७)।

पडिसा अक [नश्] भागना, पलायन होना। पडिसाइ, पडिसति (हे ४, १७८, कुमा)।

पडिसाइल्ल वि [दे] जिसका गला वैठ गया हो, घर्घर कण्ठवाला (दे ६, १७)।

पडिसाड सक [प्रति + शादय्, परिशाटय्] १ सडाना। २ पलटाना। ३ नाश करना। पडिसाडेंति (आचा २, १५, १८)। संक्र. पडिसाडित्ता (आचा २, १५, १८)।

पडिसाडणा स्त्री [परिशाटना] च्युत करना, भ्रष्ट करना (वव १)।

पडिसाम अक [शम्] शान्त होना। पडिसामइ (हे ४, १६७, षड्)।

पडिसाय वि [शान्त] शान्त, शम-प्राप्त (कुमा)।

पडिसाय पुं [दे] घर्घर कण्ठ, वैठा हुआ गला (दे ६, १७)।

पडिसार सक [प्रतिस्मारय्] याद दिलाना। पडिसारेउ (भग १५)।

पडिसार सक [प्रति + सारय्] सजाना, सजावट करना। पडिसारेदि (शौ), कर्म. पडिसारीअदि (शौ) (कप्पू)।

पडिसार सक [प्रति+ सारय्] खिसकाना, हटाना, अन्य स्थान मे ले जाना। पडिसारेइ (से १०, ७०)।

पडिसार पु [दे] १ पटुता। २ वि. निपुण, पटु, चतुर (दे ६, १६)।

पडिसार पुं [प्रतिसार] १ सजावट। २ अपसरण। ३ विनाश। ४ पराङ्मुखता (हे १, २०६, दे ६, ७६)।

पडिसार पुं [प्रतिसार] अपसारण (हे १, २०६)।

पडिसारण न [प्रतिस्मारण] याद दिलाना (वव १)।

पडिसारणा स्त्री [प्रतिस्मारणा] सस्मारण (भग १५)।

पडिसारिअ वि [दे] स्मृत, याद किया हुआ (दे ६, ३३)।

पडिसारिअ वि [प्रतिसारित] १ दूर किया हुआ, अपसारित (से ११, १)। २ विनाशित (से १४, ५८)। ३ पराङ्मुख (से १३, ३२)।

पडिसारी स्त्री [दे] जवनिका, परदा (दे ६, २२)।

पडिसाह सक [प्रति + कथय्] उत्तर देना। पडिसाहिज्जा (सूअ १, ११, ४)।

पडिसाहर सक [प्रतिसं + हृ] निवृत्त करना। पडिसाहरेज्जा (सूअ २, २, ८५)।

पडिसाहर सक [प्रतिसं + हृ] १ सकेलना, समेटना। २ वापस ले लेना। ३ ऊँचे ले जाना। पडिसाहरइ (औप, णाया १, १—पत्र ३३)। संक्र. पडिसाहरित्ता, पडिसाहरिय (णाया १, १, भग १४, ७)।

पडिसाहरण न [प्रतिसंहरण] १ समेट, सकोच। २ विनाश, 'सीयतेयलेस्सापडिसाहरणट्ठयाए' (भग १५—पत्र ६६६)।

पडिओसह न [प्रत्यौषध] एक औषध का प्रतिपक्षी औषध (सम्मत्त १४२)।

पडिंसुआ देखो पडसुआ = प्रतिश्रुत् (औप)।

पडिंसुद वि [प्रतिश्रुत] अंगीकृत, स्वीकृत (प्राप्र; पि ११५)।

पडिकंटय वि [प्रतिकण्टक] प्रतिस्पर्धी (राय)।

पडिकंत देखो पडिक्कंत (उप २२० टी)।

पडिकत्तु वि [प्रतिकर्तृ] इलाज करनेवाला (ठा ४, ४)।

पडिकप्प सक [प्रति + कृप्] १ सजाना, सजावट करना; 'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया। कूणियस्स रण्णो भिंभिसारपुत्तस्स आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेहि' (औप), पडिकप्पेइ (औप)।

पडिकप्पिअ वि [प्रतिक्लृप्त] सजाया हुआ (विपा १, २—पत्र २३; महा; औप)।

पडिकम देखो पडिक्कम। कृ 'पडिकमणं पडिकमओ पडिकमिअव्वं च आणुपुव्वीए' (आनि ४)।

पडिकमय न देखो पडिक्कमय (आनि ४)।

पडिकम्म न [प्रतिकर्मन्, परिकर्मन्] देखो परिकम्म (औप; सण)।

पडिकय वि [प्रतिकृत] १ जिसका बदला चुकाया गया हो वह। २ न. प्रतिकार, बदला (ठा ४, ४)

पडिकाउ
पडिकाऊण } देखो पडिअर = प्रति + कृ।

पडिकामणा देखो पडिक्कामणा (ओघभा ३९ टी)।

पडिकाय पु [प्रतिकाय] प्रतिबिम्ब, प्रतिमा (चेइय ७५)।

पडिकिदि स्त्री [प्रतिकृति] १ प्रतिकार, इलाज। २ बदला (दे ६, १६)। ३ प्रतिबिम्ब, मूर्त्ति (अभि १९९)।

पडिकिय न [प्रतिकृत] ऊपर देखो (चेइय ७५)।

पडिकिरिया स्त्री [प्रतिक्रिया] प्रतीकार, बदला; 'कयपडिकिरिया' (औप)।

पडिकुट्ठ
पडिकुट्ठिल्लग } वि [प्रतिकुष्ट] १ निषिद्ध, प्रतिषिद्ध (ओघ ४०३, पञ्च ८; सुपा २०७), 'पडिकुट्ठिल्लगदिवसे वज्जेज्जा अट्ठमिं च नवमिं च' (वव १)। २ प्रतिकूल (स २७०), 'अन्नोन्न पडिकुट्ठा दोन्निवि एए असव्वाया' (सम्म १५३)।

पडिकुट्ठेल्लग देखो पडिकुट्ठिल्लग (वव १)।

पडिकूड देखो पडिकूल = प्रतिकूल (सुर ११, २०१)।

पडिकूल सक [प्रतिकूलय्] प्रतिकूल आचरण करना। वकृ 'पडिकूलतस्स मज्झ जिणवयणं' (सुपा २०७; २०९)। कृ पडिकूलेयव्व (कुप्र २४२)।

पडिकूल वि [प्रतिकूल] १ विपरीत, उलटा (उत्त १२)। २ अनिष्ट, अनभिमत (आचा)। ३ विरोधी, विपक्ष (हे २, ९७)।

पडिकूलणा स्त्री [प्रतिकूलना] १ प्रतिकूल आचरण। २ प्रतिकूलता, विरोध (धर्मवि ५८)।

पडिकूलिय वि [प्रतिकूलित] प्रतिकूल किया हुआ (राज)।

पडिकूवग पुं [प्रतिकूपक] कूप के समीप का छोटा कूप (स १००)।

पडिकेसव पु [प्रतिकेशव] वासुदेव का प्रतिपक्षी राजा, प्रतिवासुदेव (पउम २०, २०४)।

पडिकोस सक [प्रति + क्रुश्] आक्रोश करना, कोसना, शाप या गाली देना। पडिकोसह (सूअ २, ७, ९)।

पडिकोह पु [प्रतिक्रोध] गुस्सा (दस ६, ५८)।

पडिक्क न [प्रत्येक] प्रत्येक, हरएक (आचा)।

पडिक्कंत वि [प्रतिक्रान्त] पीछे हटा हुआ, निवृत्त (उवा; पण्ह २, १; श्रा ४३; स १०९)।

पडिक्कम अक [प्रति+क्रम्] निवृत्त होना, पीछे हटना। पडिक्कमइ (उव; महा)। पडिक्कमे (श्रा ३, ५; पच १०)। हेकृ. पडिक्कमिउं, पडिक्कमित्तए (धर्म २, कस; ठा २, १)। सकृ पडिक्कमित्ता (आचा २, १५)। कृ पडिक्कमणव्व, पडिक्कमियव्व (आवम; ओघ ८००)।

पडिक्कम पु [प्रतिक्रम] देखो पडिक्कमण, 'गिहिपडिक्कमाइयाराणं' (पव—गाथा २)।

पडिक्कमण न [प्रतिक्रमण] १ निवृत्ति, व्यावर्त्तन। २ प्रमाद-वश शुभ योग से गिर कर अशुभ योग को प्राप्त करने के बाद फिर से शुभ योग को प्राप्त करना। ३ अशुभ व्यापार से निवृत्त होकर उत्तरोत्तर शुद्ध योग में वर्तन (पण्ह २, १; औप; चउ ५; पडि)। ४ मिथ्या-दुष्कृत-प्रदान, किए हुए पाप का पश्चात्ताप (ठा १०)। ५ जैन साधु और गृहस्थों का सुबह और शाम को करने का एक आवश्यक अनुष्ठान (श्रा ४८)।

पडिक्कमय वि [प्रतिक्रामक] प्रतिक्रमण करनेवाला, 'जीवो उ पडिक्कमओ असुहाणं पावकम्मजोगाणं' (आनि ४)।

पडिक्कमिउं देखो पडिक्कम। °काम वि [°काम] प्रतिक्रमण करने की इच्छावाला (णाया १, ५)।

पडिक्कय पु [दे] प्रतिक्रिया, प्रतीकार (दे ६, १९)।

पडिक्कामणा स्त्री [प्रतिक्रमणा] देखो पडिक्कमण (ओघ ३९ भा)।

पडिक्कूल देखो पडिकूल (हे २, ९७; षड्)।

पडिक्ख सक [प्रति + ईक्ष्] १ प्रतीक्षा करना, बाट देखना, बाट जोहना। २ अक स्थिति करना। पडिक्खइ (षड्; महा)। वकृ. पडिक्खंत (पउम ५, ७२)।

पडिक्खअ वि [प्रतीक्षक] प्रतीक्षा करनेवाला, बाट जोहनेवाला (गा ५५७ अ)।

पडिक्खंभ पु [प्रतिस्तम्भ] अर्गला, अरगला, आगल, अगरी, ब्योंडा (से ६, ३३)।

पडिक्खण न [प्रतीक्षण] प्रतीक्षा, बाट, राह (दे १, ३४; कुमा)।

पडिक्खर वि [दे] १ क्रूर, निर्दय (दे ६, २५)। २ प्रतिकूल (षड्)।

पडिक्खल अक [प्रति + स्खल्] १ हटना। २ गिरना। ३ रुकना। ४ सक रोकना। वकृ पडिक्खलत (भवि)।

पडिक्खलण न [प्रतिस्खलन] १ पतन। २ अवरोध (आवम)।

पडिक्खलिअ वि [प्रतिस्खलित] १ परावृत्त, पीछे हटा हुआ (से १, ७)। २ रुका हुआ (से १, ७; भवि)। देखो पडिखलिअ।

पडिस्सुया देखो पडंसुआ (गाया १, ५)।

पडिस्सुया देखो पडिसुया = प्रतिश्रुता (ठा १०—पत्र ४७३)।

पडिहच्छ वि [दे] पूर्ण (सण)। देखो पडिहत्थ।

पडिहट्टु अ [प्रतिहृत्य] अर्पण करके (कस, बृह ३)।

पडिहड पु [प्रतिभट] प्रतिपक्षी योद्धा (से ३, ५३)।

पडिहण सक [प्रति + हन्] प्रतिघात करना, प्रतिहिंसा करना। पडिहणति (उव)।

पडिहणण न [प्रतिहनन] १ प्रतिघात। २ वि. प्रतिघातक (कुप्र ३७)।

पडिहणणा स्त्री [प्रतिहनन] प्रतिघात (ओघ ११०)।

पडिहणिअ देखो पडिहय (सुपा २३)।

पडिहणिय देखो पडिभणिय (धर्मसं ७०८)।

पडिहत्थ वि [दे] १ पूर्ण, भरा हुआ (दे ६, २८, पाअ, कुप्र ३४, वज्जा १२६; उप पृ १८१, सुर ४, २३६, सुपा ४८८), 'पडिहत्थविवगहवड्ढवअणे ता वज्ज उज्जाए' (वाअ १५)। २ प्रतिक्रिया, प्रतिकार, वदला। ३ वचन, वाणी (दे ६, १६)। ४ अतिप्रभूत (जीव ३)। ५ अपूर्व, अद्वितीय (षड्)।

पडिहत्थ सक [दे] प्रत्युपकार करना, उपकार का वदला चुकाना। पडिहत्थेइ (से १२, ६६)।

पडिहत्थ वि [प्रतिहस्त] तिरस्कृत (चड)।

पडिहत्था स्त्री [दे] वृद्धि (दे ६, १७)।

पडिहम्म देखो पडिहण। पडिहम्मेज्जा (पि ५४०)। भवि. पडिहम्मिहिइ (पि ५४६)।

डिहय वि [प्रतिहत] प्रतिघात-प्राप्त (औप, कुमा, महा, सण)।

पडिहर सक [प्रति + हृ] फिर से पूर्ण करना। पडिहरइ (हे ४, २५९)।

पडिहा अक [प्रति + भा] मालूम होना, लगना। पडिहाइ (वज्जा १६२, पि ४८७)।

पडिहा स्त्री [प्रतिभा] बुद्धि-विशेष, नूतन-नूतन उल्लेख करने में समर्थ बुद्धि (कुमा)।

पडिहा देखो पडिहाय = प्रतिघात, 'पचविहा पडिहा पन्नत्ता, तं जहा, गतिपडिहा' (ठा ५, १—पत्र ३०३)।

पडिहाण देखो पणिहाण, 'मणदुप्पडिहाणे' (उवा)।

पडिहाण न [प्रतिभान] प्रतिभा, बुद्धि-विशेष। °व वि [°वत्] प्रतिभावाला (सूअ १, १३, १४)।

पडिहाय देखो पडिहा = प्रति + भा। पडिहायइ (स ४६१, स ७५६)।

पडिहाय पु [प्रतिघात] १ प्रतिहनन, घात का वदला। २ निरोध, अटकाव, रोक (पउम ६, ५३)।

पडिहार पु [प्रतिहार] इन्द्र-नियुक्त देव (पव ३६)।

पडिहार पुस्त्री [प्रतिहार] द्वारपाल, दरवान (हे १, २०६, गाया १, ५; स्वप्न २२८, अभि ७७)। स्त्री. °री (बृह १)।

पडिहारिय देखो पाडिहारिय (कस, आचा २, २, ३, १७ १८)।

पडिहारिय वि [प्रतिहारिन्] अवरुद्ध, रोका हुआ (स ५४६)।

पडिहास अक [प्रति + भास्] मालूम होना, लगना। पडिहासेदि (शौ) (नाट)।

पडिहास पु [प्रतिभास] प्रतिमास, प्रतिभान (हे १, २०६ षड्)।

पडिहासिय वि [प्रतिभासित] जिसका प्रतिभास हुआ हो वह (उप ६८६ टी)।

पडिहुअ, पडिहू पु [प्रतिभू] जामीन, जामीनदार, मनौतिया (पाअ, दे ५, ३८)।

पडिहू अक [परि + भू] पराभव करना, हराना। कवकृ. पडिहूअमाण (अभि ३६)।

पडी स्त्री [पटी] वस्त्र, कपड़ा (गउड, सुर ३, ४१)।

पडीआर पु [प्रतीकार] देखो पडिआर = प्रतिकार (वेणी १७७, कुप्र ६१)।

पडीकर सक [प्रति + कृ] प्रतिकार करना। पडीकरेमि (मै ६६)।

पडीकार देखो पडिआर (पण्ह १, १)।

पडीछ देखो पडिच्छ = प्रति = इष्। पडीछंति (पि २७५)।

पडीण वि [प्रतीचीन] पश्चिम दिशा से संबन्ध रखनेवाला (आचा, औप, ठा ५, ३)। °वाय पुं [°वात] पश्चिम का वायु (ठा ७)।

पडीणा स्त्री [प्रतीची] पश्चिम दिशा (ठा ६—पत्र ३५६, सूअ २, २, ५८)।

पडीर पुं [दे] चोर-समूह, चोरो का यूथ (दे ६, ८)।

पडीव वि [प्रतीप] प्रतिकूल, प्रतिपक्षी, विरोधी (भवि)।

पडु वि [पटु] निपुण, चतुर, कुशल (औप, कुमा, सुर २, १४५)।

पडु (अप) देखो पडिअ = पतित (पिंग)।

पडुआलिअ वि [दे] १ निपुण वनाया हुआ। २ ताडित, पिटा हुआ। ३ धारित (दे ६, ७३)।

पडुक्खेव पु [प्रत्युत्क्षेप] १ वाद्य ध्वनि। २ उत्थापन, उठान (अणु १३१)।

पडुक्खेव पुं [प्रत्युत्क्षेप, प्रतिक्षेप] १ वाद्य-ध्वनि। क्षेपण, फेंकना; 'समतालपडुक्खेव' (ठा ७—पत्र ३६४)।

पडुच्च अ [प्रतीत्य] १ आश्रय करके (आचा; सूअ १, ७, सम ३६, नव ३६)। २ अपेक्षा करके (भग)। ३ अधिकार करके, 'पडुच्च ति वा पप्प त्ति वा अहिकिच्च त्ति वा एगट्ठा' (आचू १, अणु)। °करण न [°करण] किसी की अपेक्षा से जो कुछ करना, आपेक्षिक कृति (बृह १)। °भाव पु [°भाव] सप्रतियोगिक पदार्थ, आपेक्षिक वस्तु (भास २८)। °वयण न [°वचन] आपेक्षिक वचन (सम्म १००)। °सच्चा स्त्री [°सत्या] सत्य भाषा का एक भेद, अपेक्षा-कृत सत्य वचन (पण्ण ११)।

पडुच्चा ऊपर देखो, 'जे हिंसति आयसुह पडुच्चा' (सूअ १, ५, १, ४)।

पडुजुवइ स्त्री [दे] युवति, तरुणी (दे ६, ३१)।

पडुत्तिया स्त्री [प्रत्युक्ति] प्रत्युत्तर, जवाब (भवि)।

पडुप्पण्ण, पडुप्पन्न पुं [प्रत्युत्पन्न] १ वर्तमान काल (ठा ३, ४)। २ वि वार्त्तमानिक, वर्त्तमान काल मे विद्यमान (ठा १०, भग ८, ५, सम १३२; उवा)। ३ प्राप्त, लब्ध (ठा ४, २), 'न पडुप्पन्नो य से जहोचिओ आहारो' (स २६१)। ४ उत्पन्न,

पडिच्छद पुं [दे] मुख, मुँह (दे ६, २४)।

पडिच्छग वि [प्रत्येषक] ग्रहण करनेवाला (निचू ११)।

पडिच्छण न [प्रतीक्षण] प्रतीक्षा, वाट, राह (उप ३७८)।

पडिच्छण न [प्रत्येषण] १ ग्रहण, आदान, लेना। २ उत्सारण, विनिवारण, 'कुलिसपडिच्छणजोग्गा पच्छा कइया महिहराण' (गउड)।

पडिच्छणा [प्रत्येषणा] ग्रहण, आदान (निचू १६)।

पडिच्छण्ण } वि [प्रतिच्छन्न] आच्छादित, पडिच्छन्न } ढका हुआ (णाया १, १—पत्र १३, कप्प)।

पडिच्छय पुं [दे] समय, काल (दे ६, १६)।

पडिच्छय देखो पडिच्छग (औप)।

पडिच्छयण न [प्रतिच्छदन] देखो पडिच्छायण (राज)।

पडिच्छा स्त्री [प्रतीच्छा] ग्रहण, अंगीकार (द्र ३३, मण)।

पडिच्छायण न [प्रतिच्छादन] आच्छादन-वस्त्र, प्रच्छादन-पट, 'हिरिपडिच्छायणं च नो सचाएमि अहियासित्तए' (आचा, णाया १, १—पत्र १५ टी)।

पडिच्छायण न [प्रतिच्छादन] आच्छादन, आवरण (सुज्ज २०)।

पडिच्छाया स्त्री [प्रतिच्छाया] प्रतिबिम्ब, परछाँई (उप ५९३ टी)।

पडिच्छावेमाण देखो पडिच्छ = प्रति + इष्।

पडिच्छिअ वि [प्रतीष्ट, प्रतीप्सित] १ गृहीत, स्वीकृत (स ७, ५४, उवा, औप, सुपा ८४)। २ विशेष रूप से वाञ्छित (भग)।

पडिच्छिअ देखो पडिच्छ = प्रति + इष्।

पडिच्छिआ स्त्री [दे] १ प्रतिहारी। २ चिरकाल से व्यायी हुई भैंस (दे ६, २१)।

पडिच्छिउं, पडिच्छिऊण, पडिच्छियव्व — देखो पडिच्छ = प्रति + इष्।

पडिच्छिर वि [प्रतीक्षितृ] प्रतीक्षा करनेवाला, वाट देखनेवाला (वज्जा ३६)।

पडिच्छिय वि [प्रातीच्छिक] अपने दीक्षा-गुरु की आज्ञा लेकर दूसरे गच्छ के आचार्य के पास उनकी अनुमति से शास्त्र पढ़नेवाला मुनि (णंदि ५४)।

पडिच्छिर वि [दे] सदृश, समान (हे २, १७४)।

पडिछंद देखो पडिच्छंद; 'वडिय निपयडिछंद' (उप ७२८ टी)।

पडिछा स्त्री [प्रतीक्षा] प्रतीक्षण, वाट (ओघ १७५)।

पडिछाया देखो पडिच्छाया (चेइय ७५)।

पडिजंप सक [प्रति + जल्प्] उत्तर देना। पडिजंपइ (भवि)।

पडिजग्ग देखो पडिजागर = प्रति + जागृ। पडिजग्गइ (बृह ३)।

पडिजग्गय वि [प्रतिजागरक] सेवा-शुश्रूषा करनेवाला (उप ७६८ टी)।

पडिजग्गिय वि [प्रतिजागृत] जिसकी सेवा-शुश्रूषा की गई हो वह (सुर ११, २४)।

पडिजागर सक [प्रति + जागृ] १ सेवा-शुश्रूषा करना, निर्वाह करना, निभाना। २ गवेषणा करना। पडिजागरंति (कप्प)। वकृ पडिजागरमाण (विपा १, १, उवा, महा)।

पडिजागर पु [प्रतिजागर] १ सेवा-शुश्रूषा। २ चिकित्सा, 'भणिओ मिट्ठी आणसु विज्ज पडिजागरट्ठाए' (सुपा ५७९)।

पडिजागरण न [प्रतिजागरण] ऊपर देखो (वव ६)।

पडिजागरिय देखो पडिजग्गिय (दे १, ४१)।

पडिजायणा स्त्री [प्रतियातना] प्रतिबिम्ब, प्रतिमा, परछाई (चेइय ७५)।

पडिजुवइ स्त्री [प्रतियुवति] १ स्व-समान अन्य युवति। २ सपत्नी (कुप्र ४)।

पडिजोग पु [प्रतियोग] कार्मण आदि योग का प्रतिघातक योग, चूर्ण-विशेष (सुर ८, २०४)।

पडिट्ठ वि [पटिष्ठ] अत्यन्त निपुण, बहुत चतुर (सुर १, १३५, १३, ६६)।

पडिट्ठविअ वि [परिस्थापित] संस्थापित (से ५, ५२)।

पडिट्ठविअ वि [प्रतिष्ठापित] जिसकी प्रतिष्ठा की गई हो वह (अच्चु ६४)।

पडिट्ठा देखो पइट्ठा (नाट—मालती ७०)।

पडिट्ठाव सक [प्रति + स्थापय्] प्रतिष्ठित करना। पडिट्ठावेहि (पि २२०, ५५१)।

पडिट्ठावअ देखो पइट्ठावय (नाट—वेणी ११२)।

पडिट्ठाविद (शौ) देखो पइट्ठाविय (अभि १८७)।

पडिट्ठिअ देखो पइट्ठिय (पद्, पि २२०)।

पडिठाण न [प्रतिस्थान] हर जगह (धर्मवि ४)।

पडिण देखो पडीण (पि ८२, ६६)।

पडिणव वि [प्रतिनव] नया, नूतन, 'तुरम-पडिणवखुरघाद णिरंतरखंडिद' (विक्र २६)।

पडिणिअसण न [दे] रात में पहनने का वस्त्र (दे ६, ३६)।

पडिणिअत्त अक [प्रतिनि + वृत्] पीछे लौटना, पीछे वापस जाना। पडिणियत्तई (औप)। वकृ पडिणिअत्तंत, पडिणिअत्तमाण (से १३, ७५, नाट—मालती २६)। संकृ. पडिणियत्तित्ता (औप)।

पडिणिअत्त } वि [प्रतिनिवृत्त] पीछे लौटा पडिणिउत्त } हुआ (गा ६८ अ, विपा १,५, उवा, से १, २६, अभि १२४)।

पडिणिकास वि [प्रतिनिकाश] समान, तुल्य (राय ६७)।

पडिणिक्खम अक [प्रतिनिर् + क्रम्] बाहर निकलना। पडिणिक्खमइ (उवा)। संकृ. पडिणिक्खमित्ता (उवा)।

पडिणिग्गच्छ अक [प्रतिनिर् + गम्] बाहर निकलना। पडिणिग्गच्छइ (उवा)। संकृ. पडिणिग्गच्छित्ता (उवा)।

पडिणिज्जाय सक [प्रतिनिर् + यापय्] अर्पण करना। पडिणिज्जाएमि (णाया १, ७—पत्र ११८)।

पडिणिभ वि [प्रतिनिभ] १ सदृश, तुल्य, बराबर। २ हेतु-विशेष, वादी की प्रतिज्ञा का खडन करने के लिए प्रतिवादी की तरफ से प्रयुक्त समान हेतु—युक्ति (ठा ४, ३)।

पडिणिवत्त देखो पडिणिअत्त = प्रतिनि + वृत्। वकृ. पडिणिवत्तमाण (नाट रत्ना ५४)।

पडिणिवुत्त देखो पडिणिअत्त = प्रतिनिवृत्त (काल)।

पडिणिविट्ठ वि [प्रतिनिविष्ट] द्विष्ट, द्वेष-युक्त (पण्ह १, १—पत्र ७)।

पण देखो पच्च (सुपा १, नव १०, कम्म २,६,२६, ३१)। °णउइ स्त्री [°नवति] पचानवे, नव्वे और पांच (पि ४४६)। °तीस स्त्रीन [°त्रिंशत्] पैंतीस, तीस और पांच (श्रौप, कम्म ४, ५३, पि २७३, ४४५)। °नुवइ देखो °णउइ (सुपा ६७)। °रस त्रि व [°दशन्] पनरह (सण)। °वन्निय वि [°वर्णिक] पांच रंग का (सुपा ४०२)। °व्वीस स्त्रीन [°विंशति] पचीस, बीस और पांच (सम ४४; नव १३, कम्म २)। °वीसइ स्त्री [विंशति] वही अर्थ (पि ४४५)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] पैंसठ, साठ और पाच (सम ७८, पि २७३)। °सय न [°शत] पांच सौ (दं ६)। °सीइ स्त्री [°ाशीति] पचासी, अस्सी और पांच (कम्म २)। °सुन्न न [°सून] पाँच हिंसा-स्थान (राज)।

पण पुं [पण] १ शर्त, होड, 'लक्खपणेण जुज्झावेंतस्स' (महा)। २ प्रतिज्ञा (श्राक)। ३ धन। ४ विक्रेय वस्तु, क्रयाणक, 'तत्थ विढप्पिश्र पणगण' (तो ३)

पण पुं [प्रण] पन, प्रतिज्ञा (नाट—मालती १२४)।

पण } न [पञ्चक] १ पाँच का समूह (पंच
पणग } ३, १६)। २ तप-विशेष, नीवी तप (सवोघ ५७)।

पणअत्तिअ वि [दे] प्रकटित, व्यक्त किया हुआ (दे ६, ३०)।

पणअन्न देखो पणपन्न (हे २, १७४ टि, राज)।

पणइ स्त्री [प्रणति] प्रणाम, नमस्कार (पउम ६६, ६६, सुर १२, १३३, कुमा)।

पणइ वि [प्रणयिन्] १ प्रणयवाला, स्नेही, प्रेमी। २ पु पति, स्वामी (पाअ; गउड ८३७)। ३ याचक, अर्थी, प्रार्थी (गउड २४६, २५१, सुर १, १०८)। ४ भृत्य, दास, 'वप्पइराओत्ति पणइलवो' (गउड ७९७)।

पणइणी स्त्री [प्रणयिनी] पत्नी, भार्या, प्रिया, जोरू (सुपा २१६)।

पणइय वि [प्रणयिक, प्रणयिन्] देखो पणइ=प्रणयिन् (सण)।

पणगणा स्त्री [पणाङ्गना] वेश्या, वारांगना (उप १०३१ टी, सुपा ४६०, कुप्र ५)।

पणग न [पञ्चक] पांच का समूह (सुर ६, ११२, सुपा ६३६, जी ६; द ३१, कम्म २, ११)।

पणग पु [दे पनक] १ शैवाल, सेवार या सिवार, तृण-विशेष जो जल मे उत्पन्न होता है (बृह ४, दस ८, पण्ण १ णदि)। २ काई, वर्षा-काल मे भूमि, काष्ठ आदि में उत्पन्न होनेवाला एक प्रकार का जल-मैल (श्राचा, पडि, ठा ८—पत्र ४२६; कप्प)। ३ कर्दम-विशेष, सूक्ष्म पंक (बृह ६, भग ७ ६)। देखो पणय (दे)। °मट्टिया, °मत्तिया स्त्री [°मृत्तिका] नदी आदि के पूर के खतम होने पर रह जाती कोमल चिकनी मिट्टी (जीव १, पण्ण १—पत्र २५)।

पणच्च श्रक [प्र+नृत्] नाचना, नृत्य करना। वकृ पणच्चमाण (णाया १, ८—पत्र १३३, सुपा ४७२)। स्त्री °णी (सुपा २४२)।

पणच्चण न [प्रनर्तन] नृत्य, नाच (सुपा१५४)।

पणच्चिअ वि [प्रनृत्तित] नाचा हुआ, जिसका नाच हुआ हो वह (णाया १, १—पत्र २५)।

पणच्चिअ वि [प्रनृत्त] नाचा हुआ, 'अन्नया रायपुरओ पणच्चिया देवदत्ता' (महा, कुप्र १०)।

पणच्चिअ वि [प्रनर्त्तित] नचाया हुआ (भवि)।

पणट्ठ वि [प्रनष्ट] प्रकर्ष से नाश को प्राप्त (सूअ १, १, २, से ७, ८, सुर २, २४७, ३, ६६, भवि, उव)।

पणद्ध वि [प्रणद्ध] परिगत (श्रौप)।

पणपण्ण देखो पणपन्न (कप्प १४७ टि)।

पणपण्णइम देखो पणपन्नइम (कप्प १७४ टि, पि २७३)।

पणपन्न स्त्रीन [दे. पञ्चपञ्चाशत्] पचपन, पचास और पाँच (हे २, १७४, कप्प, सम ७२, कम्म ४, ५४, ५५, ति ५)।

पणपन्नइम वि [दे पञ्चपञ्चाश] पचपनवाँ, ५५ वाँ (कप्प)।

पणपन्निय देखो पणवन्निय (इक)।

पणपन्निय पुं [पंचप्रज्ञप्तिक] व्यन्तर देवों की एक जाति (पव १९४)।

पणम सक [प्र+नम्] प्रणाम करना, नमन करना। पणमइ, पणमए (स ३४४; भग)। वकृ. पणमत (सण)। कवकृ. पणमिज्जत (सुपा ८८)। संकृ. पणमिअ, पणमिऊण पणमिऊण, पणमित्ता, पणमित्तु (अभि ११८, प्राकृ पि ५६०, भग, काल)।

पणमण न [प्रणमन] प्रणाम, नमस्कार (उव, सुपा २७, ५६१)।

पणमिअ देखो पणम।

पणमिअ वि [प्रणत] १ नमा हुआ (भग, श्रौप)। २ जिसने नमने का प्रारम्भ किया हो वह (णाया १, १—पत्र ५)। ३ जिसको नमन किया गया हो वह, 'पणमिओ मणेण राया' (स ७३०)।

पणमिअ वि [प्रणमित] नमाया हुआ (भवि)।

पणमिर वि [प्रणम्र] प्रणाम करनेवाला, नमनेवाला (कुमा; कुप्र ३५०; सुण)।

पणय सक [प्र+णी] १ स्नेह करना, प्रेम करना। २ प्रार्थना करना। वकृ. पणअंत (से २, ६)।

पणय वि [प्रणत] १ जिसको प्रणाम किया गया हो वह, 'नरनाहपणयपयकमल' (सुपा २४०)। २ जिसने नमस्कार किया हो वह, 'पणयपडिवक्ख' (सुर १, ११३, सुपा ३६१)। ३ प्राप्त (सूअ १, ४, १)। ४ निम्न, नीचा (जीव ३, राय)।

पणय पु [प्रणय] १ स्नेह, प्रेम (णाया १, ९, महा, गा २७)। २ प्रार्थना (गउड)। °वत वि [°वन्] स्नेहवाला, प्रेमी (उप १३१)।

पणय पुं [दे] पंक, कर्दम (दे ६, ७)।

पणय पु [दे पनक] १ शैवाल, सेवार, तृण-विशेष। २ काई, जल-मैल (श्रोघ ३४६)। ३ सूक्ष्म कर्दम (पणह १, ४)।

पणयाल वि [दे. पञ्चचत्वारिंश] पैंतालीसवाँ, ४५ वाँ (पउम ४५, ४६)।

पणयाल } स्त्रीन [दे पञ्चचत्वारिंशत्]
पणयालीस } पैंतालीस, चालीस और पाँच, ४५ (सम ६६, कम्म २, २७; ति ३, भग, सम ६८, श्रौप, पि ४४५)।

पडिपाहुड न [प्रतिप्राभृत] बदले की भेंट (सुपा १४५)।
पडिपिंडिअ वि [दे] प्रवृद्ध, बढ़ा हुआ (दे ६, ३४)।
पडिपिल्ल सक [प्रति + क्षिप्, प्रतिप्र + ईरय्] प्रेरणा करना। पडिपिल्लइ (भवि)।
पडिपिल्लण न [प्रतिप्रेरण] १ प्रेरणा (सुर १५, १४१)। २ ढक्कन, पिधान। ३ वि. प्रेरणा करनेवाला, 'दीवसिहापडिपिल्लणमल्ले मिल्लति नीसासे' (कुप्र १३१)।
पडिपिहा देखो पडिपेहा। संकृ पडिपिहित्ता (पि ५८२)।
पडिपीलण न [प्रतिपीडन] विशेष पीडन, अधिक दबाव (गउड)।
पडिपुच्छ सक [प्रति + प्रच्छ्] १ पृच्छा करना, पूछना। २ फिर से पूछना। ३ प्रश्न का जवाब देना। पडिपुच्छइ (उव)। वकृ. पडिपुच्छमाण (कप्प)। कृ पडिपुच्छणिज्ज, पडिपुच्छणीय (उवा, णाया १, १, राय)।
पडिपुच्छण न [प्रतिप्रच्छन] नीचे देखो (भग, उवा)।
पडिपुच्छणया } स्त्री [प्रतिप्रच्छना] १
पडिपुच्छणा } पूछना, पृच्छा। २ फिर से पृच्छा (उत्त २९, २०, औप)। ३ उत्तर, प्रश्न का जवाब (वृह ४, उप पृ ३९८)।
पडिपुच्छणिज्ज }
पडिपुच्छणीय } देखो पडिपुच्छ।
पडिपुच्छा स्त्री [प्रतिपृच्छा] देखो पडिपुच्छणा (पचा २, वव २, वृह १)।
पडिपुच्छिअ वि [प्रतिपृष्ट] जिससे प्रश्न किया गया हो वह (गा २८९)।
पडिपुज्जिय वि [प्रतिपूजित] पूजित, अर्चित, 'वदणवरकणगकलससुविणिम्मियपडिपुजि (? पुज्जि, पूइ) यसरसपउमसोहतदारभाए' (णाया १, १—पत्र १२)।
पडिपुण्ण देखो पडिपुन्न (उवा, पि २१८)।
पडिपुत्त पुं. [प्रतिपुत्र] प्रपुत्र, पुत्र का पुत्र, पोता, 'अकनिवेसियनियनियपुत्तयपडिपुत्तनत्तपुत्तीय' (सुपा ६)। देखो पडिपोत्तय।
पडिपुन्न वि [प्रतिपूर्ण] परिपूर्ण, सपूर्ण (णाया १, १, सुर ३, १८, ११४)।

पडिपूइय देखो पडिपुज्जिय (राज)।
पडिपूयग } वि [प्रतिपूजक] पूजा करने-
पडिपूयय } वाला (राज, सम ५१)।
पडिपूयय वि [प्रतिपूजक] प्रत्युपकार-कर्ता (उत्त १७, ५)।
पडिपूरिय वि [प्रतिपूरित] पूर्ण किया हुआ (पउम १००, ५०, ११५, ७)।
पडिपेल्लण देखो पडिपिल्लण (गउड, से ६, ३२)।
पडिपेल्लण न [परिप्रेरण] देखो पडिपिल्लण (से २, २४)।
पडिपेल्लिय वि [प्रतिप्रेरित] प्रेरित, जिसको, प्रेरणा की गई हो वह (सुर १५, १८०, महा)।
पडिपेहा सक [प्रतिपि + धा] ढकना, आच्छादन करना। सकृ. पडिपेहित्ता (सूअ २, २, ५१)।
पडिपोत्तय पु [प्रतिपुत्रक] नप्ता, कन्या का पुत्र, लडकी का लडका, नाती (सुपा १९२)। देखो पडिपुत्तय।
पडिप्पह देखो पडिपह (उप ७२८ टी)।
पडिप्फद्धि वि [प्रतिस्पर्धिन्] स्पर्धा करनेवाला (हे १, ४४, २, ५३, प्राप्र, संक्षि १६)।
पडिप्फलणा स्त्री [प्रतिफलना] १ स्खलना। २ संक्रमण, 'पडिसद्दपडिप्फलणावज्जिरनीसेससुरघंट' (सुपा ८७)।
पडिप्फलिअ } वि [प्रतिफलित] १ प्रति-
पडिफलिअ } बिम्बित, सक्रान्त (से १५, ३१, दे १, २७)। २ स्खलित (पाअ)।
पडिबध सक [प्रति + बन्ध्] रोकना, अटकाना। पडिबघइ (पि ५१३)। कृ. पडिबधेयव्व (वसु)।
पडिबध सक [प्रति + बन्ध्] १ वेष्टन करना। २ रोकना। पडिबंधइ, पडिबंधंति (सूअ १, ३, २, १०)।
पडिबध पुं [प्रतिबन्ध] व्याप्ति, नियम (धर्मस १११)।
पडिबध पुं [प्रतिबन्ध] १ रुकावट (उवा, कप्प)। २ विघ्न, अन्तराय (उप ८८७)। ३ अत्यादर, बहुमान (उप ७७६, ठवर १४६)। ४ स्नेह, प्रीति, राग (ठा ६, पचा १७)। ५ आसक्ति, अभिष्वग (णाया १, ५, कप्प)। ६ वेष्टन (सूअ १, ३, २)।

पडिबंधअ } वि [प्रतिबन्धक] प्रतिबन्ध
पडिबधग } करनेवाला, रोकनेवाला (अभि २५३, उप ६४५)।
पडिबधण न [प्रतिबन्धन] प्रतिबन्ध, रुकावट (पि २१८)।
पडिबंधेयव्व देखो पडिबध = प्रति + बन्ध्।
पडिबद्ध वि [प्रतिबद्ध] १ रोका हुआ, सरुद्ध, 'वायुरिव अप्पडिबद्धे' (कप्प, पराह १, ३)। २ उपजनित, उत्पादित (गउड १८२)। ३ ससक्त, सबद्ध, सलग्न, 'नरिआए तरगियपकवडलपडिबद्धवालुयामसिणा पुलिणवित्थारा' (गउड, कुप्र ११५, उवा)। ४ सामने बँधा हुआ, 'पडिबद्ध नउर तुमे नरिंदचक्क पयाववियडपि' (गउड)। ५ व्यवस्थित (पचा १३)। ६ वेष्टित (गउड)। ७ समीप में स्थित, 'तं चेव य सागरिय जस्स अदूरे स पडिबद्धो' (वृह १)।
पडिबद्ध वि [प्रतिबद्ध] नियत, व्याप्त (पचा ७, २)।
पडिबाह सक [प्रति + बाध्] रोकना। हेकृ. पडिबाहिदु (शौ) (नाट—महावी ९९)।
पडिबाहिर वि [प्रतिबाह्य] अनधिकारी, अयोग्य (सम ५०)।
पडिबिंब न [प्रतिबिम्ब] १ परछाँही, प्रतिच्छाया (सुपा २६९)। २ प्रतिमा, प्रतिमूर्त्ति (पाअ, प्रामा)।
पडिबिंबिअ वि [प्रतिबिम्बित] जिसका प्रतिबिम्ब पडा हो वह (कुमा)।
पडिबुज्झ अक [प्रति + बुध्] १ बोध पाना। २ जागृत होना। पडिबुज्झइ (उवा)। वकृ पडिबुज्झंत, पडिबुज्झमाण (कप्प)।
पडिबुज्झणया } स्त्री [प्रतिबोधना] १ बोध,
पडिबुज्झणा } समझ। २ जागृति (स १५९, औप)।
पडिबुद्ध वि [प्रतिबुद्ध] १ बोध-प्राप्त (प्रासू १३५, उव)। २ जागृत (णाया १, १)। ३ न प्रतिबोध (आचा)। ४ पु एक राजा का नाम (णाया १, ८)।
पडिबूहणया स्त्री [प्रतिबृंहणा] उपचय, पुष्टि (सूअ २, २, ८)।
पडिबोध देखो पडिबोह = प्रतिबोध (नाट—मालती ५६)।

'संकाथाणाणि सव्वाणि वज्जेज्जा पणिहाणव' (उत्त १६, १४)।

पणिहाय देखो पणिहा।

पणिहि पुंस्त्री [प्रणिधि] १ एकाग्रता, अवधान (पण्ह २, ५)। २ कामना, अभिलाष (स ८७)। ३ पु. चरपुरुष, दूत (पण्ह १, ३, पाअ, सुर ३, ४, सुपा ४६२)। ४ चेष्टा, व्यापार (दसनि १)। ५ माया, कपट (आव ४)। ६ व्यवस्थापन (राज)।

पणिहि पुस्त्री [प्रणिधि] बड़ा निधि (दस ८, १)।

पणिहिय वि [प्रणिहित] १ प्रयुक्त, व्यापृत (दसनि ८)। २ व्यवस्थित (आव ४)।

पणीय वि [प्रणीत] १ निर्मित, कृत, रचित, 'वइसेसिय पणीय' (विसे २५०७, सुर १२, ६२, सुपा २८, १६७)। २ स्निग्ध, घृत आदि स्नेह की प्रचुरतावाला, 'विभूसा इत्थी-समग्गी पणीयरसभोयणं' (दस ८, ५७, उत्त १६, ७, ओघ १५० भा, औप, बृह ५)। ३ निरूपित, प्ररूपित, आख्यात (अणु, आव ३)। ४ मनोज्ञ, सुन्दर (भग ५, ४)। ५ सम्यग् आचरित (सूअ १, ११)।

पणीहाण देखो पणिहाण (आत्म ८, हित १५)।

पणुल्ल देखो पणोल्ल। वक्र पणुल्लेमाण (पि २२४)।

पणुल्लिअ देखो पणोल्लिअ (पाअ, सुपा २४, प्रासू १६६)।

पणुवीस स्त्रीन [पञ्चविंशति] सख्या-विशेष, पचीस, बीस और पाँच। २ जिनकी सख्या पचीस हो वे (स १०६, पि १०४, २७३)।

पणुवीसइम वि [पञ्चविंशतितम] पचीसवाँ, २५ वाँ (विसे ३१२०)।

पणोल्ल सक [प्र+णुद्] १ प्रेरणा करना। २ फेंकना। ३ नाश करना। पणोल्लइ (प्राप्र), 'पावाइं कम्माइं पणोल्लयामो' (उत्त १२, ४०)। कवकृ. पणोलिज्जमाण (णाया १, १, पण्ह १, ३)। सकृ. पणोल्ल (सूअ १, ८)।

पणोल्लण न [प्रणोदन] प्रेरणा (ठा ८, उप पृ ३४१)।

पणोल्लय वि [प्रणोदक] प्रेरक (आचा)।

पणोल्लि वि [प्रणोदिन्] १ प्रेरणा करनेवाला। २ पु प्राजन दण्ड, बैल इत्यादि हाँकने की लकड़ी (पण्ह १, ३—पत्र ५४)।

पणोल्लिअ वि [प्रणोदित] प्रेरित (औप, पि २४४)।

पण्ण वि [प्रज्ञ] जानकार, दक्ष, निपुण (उत्त १, ८, सूअ १, ६)।

पण्ण वि [प्राज्ञ] १ प्रज्ञावाला, बुद्धिमान्, दक्ष (हे १, ५६, उप ६२३)। २ त्रि. प्राज्ञ-सम्बन्धी (सूअ २, १)।

पण्ण न [पर्ण] पत्र पत्ता, पत्ती (कुमा)।

पण्ण देखो पणिअ = पण्य (नाट)।

पण्ण स्त्रीन [दे] पचास, ५०। स्त्री. °ण्णा (षड्)।

पण्ण देखो पच, पण (पि २७३, ४४०, ४४५)। °रस त्रि. व. [°दशन्] पनरह, १५ (सम २६, उवा)। °रसम वि [°दश] पनरहवाँ (उवा)। °रसी स्त्री [°दशी] १ पनरहवी। २ तिथि-विशेष (पि २७३, कप्प)। °रह देखो °रस (प्राप्र)। °रह वि [°दश] पनरहवाँ, १५ वाँ (प्राप्र)। देखो पन्न = पच।

पण्ण वि [पार्ण] पर्ण सम्बन्धी, पत्ते का, पत्ती से सबन्ध रखनेवाला (राज)।

पण्ण° देखो पण्णा°। °व वि [°वन्] प्रज्ञा-वाला (उप ६१२ टी)।

पण्णई [पन्नगा] भगवान् धर्मनाथ की शासन-देवी (पव २७)।

पण्णग पु [पन्नग] सर्प, साँप (उप ७२८ टी)। °सन पुं [°शन] गरुड पक्षी (पिंग)। देखो पन्नय।

पण्णग वि [दे पन्नक] दुर्गन्धी। °तिल पु [°तिल] दुर्गन्धी तिल (राज)।

पण्णट्ठि स्त्री [पञ्चषष्टि] पैंसठ, साठ और पाँच, ६५ (कप्प)।

पण्णत्त वि [प्रज्ञप्त] निरूपित, उपदिष्ट, कथित (औप, उवा, ठा ३, १, ४, १, २, विपा १, १, प्रासू १२१)। २ प्रणीत, रचित (आवम, चंद २०, भग ११, ११, औप)।

पण्णत्ति स्त्री [प्रज्ञप्ति] १ विद्यादेवी-विशेष (ज १)। २ जैन आगम ग्रंथ विशेष, सूर्य-प्रज्ञप्ति आदि उपाग-ग्रंथ (ठा ३, १, ४, १)। ३ विद्या-विशेष (आचू १)। ४ प्ररूपण, प्रतिपादन (उवा, वव ३)। °क्खेवणी स्त्री [°क्षेपणी] कथा का एक भेद (ठा ४, २)। °पक्खेवणी स्त्री [°प्रक्षेपणी] कथा का एक भेद (राज)।

पण्णपण्णिय पु [पण्णपर्णि] व्यन्तर देवो की एक जाति (इक)।

पण्णय देखो पण्णग (से ४, ४)।

पण्णव सक [प्र+ज्ञापय्] प्ररूपण करना, उपदेश करना, प्रतिपादन करना। पण्णवेइ, पण्णवेंति (उवा, भग)। वकृ. पण्णवयत पण्णवेमाण (भग, पि ५५१)। कृ. पण्ण-वणिज्ज (द्र ७)।

पण्णवग वि [प्रज्ञापक] प्ररूपक, प्रतिपादक (विसे ५४६)।

पण्णवण न [प्रज्ञापन] १ प्ररूपण, प्रति-पादन। २ शास्त्र, सिद्धान्त (विसे ८६४)।

पण्णवण वि [प्रज्ञापन] ज्ञापक, निरूपक (सबोध ५)।

पण्णवणा स्त्री [प्रज्ञापना] १ प्ररूपणा, प्रति-पादन (णाया १, ६, उवा)। २ एक जैन आगम ग्रंथ, 'प्रज्ञापना' सूत्र (भग)।

पण्णवणिज्ज देखो पण्णव।

पण्णवणी स्त्री [प्रज्ञापनी] भाषा विशेष, अर्थ-बोधक भाषा (भग १०, ३)।

पण्णवण्ण स्त्रीन [दे. पञ्चपञ्चाशत्] पच-पन, पचास और पाँच (दे ६, २७, षड्)।

पण्णवय देखो पण्णवग (विसे ५४७)।

पण्णवयत देखो पण्णव।

पण्णविय वि [प्रज्ञापित] प्रतिपादित, प्ररू-पित (अणु, उत्त २६)।

पण्णवेत्तु वि [प्रज्ञापयितृ] प्रतिपादक, प्ररू-पण करनेवाला (ठा ७)।

पण्णवेमाण देखो पण्णव।

पण्णा सक [प्र+ज्ञा] १ प्रकर्ष से जानना। २ अच्छी तरह जानना। कर्म. पण्णायंति (भग)।

पण्णा देखो पण्ण (दे)।

पण्णा स्त्री [प्रज्ञा] मनुष्य की दस अवस्थाओ मे पाँचवी अवस्था (तंदु १६)।

पण्णा स्त्री [प्रज्ञा] १ बुद्धि, मति (उप १५४, ७२८ टी; निचू १)। २ ज्ञान (सूअ १,

कत्तो पुण्णेहि विणा,
वेसा पडियव्व संपडइ,
(वज्जा ११६)।

पडियाइक्ख सक [प्रत्या + ख्या] त्याग करना। पडियाइक्खे (पि १६६)।

पडियाइक्खिय वि [प्रत्याख्यात] त्यक्त, परित्यक्त, छोड़ा हुआ, (ठा २, १, भग, उवा कस; विपा १, १, ग्रौप)।

पडियाणय न [दे. पर्याणक] पर्याण के नीचे दिया जाता चर्म ग्रादि का एक उपकरण (णाया १, १७—पत्र २३०)।

पडियाणंद पुं [प्रत्यानन्द] विशेष ग्रानन्द, प्रभूत ग्राह्लाद, बहुत ग्रानद (ग्रोप)।

पडियाणय न [दे पटतानक, पर्याणक] पर्याण के नीचे रखा जाता वस्त्र ग्रादि का एक घुडसवारी का उपकरण (णाया १, १७—पत्र २३२ टी)।

पडियारणा स्त्री [प्रतिवारणा] निषेध (पचा १७, ३४)।

पडियासूर ग्रक [दे] चिढना, गुस्सा होना। कृ 'पडियासूरेयव्वं न कयाइवि पाण-घाएवि' (ग्राक २५, १४)।

पडिर वि [पतितृ] गिरनेवाला (कुमा)।

पडिरअ देखो पडिरव (गा ५५ ग्र, से ७, १६)।

पडिरजिअ वि [दे] भग्न, टूटा हुग्रा (दे ६, ३२)।

पडिरक्खिय वि [प्रतिरक्षित] जिसकी रक्षा की गई हो वह (मवि)।

पडिरव पु [प्रतिरव] प्रतिध्वनि, प्रतिशब्द (गउड, गा ५५, सुर १, २४४)।

पडिराय पु [प्रतिराग] लाली, रक्तपन, 'उव्वहइ दइयगहियाहरोट्ठभिज्जतरोसपडिराय। पाणोसरतमइर व फलिहचसय इमा वयण' (गउड)।

पडिरिग्गअ [दे] देखो पडिरजिअ (षड्)।

पडिरु ग्रक [प्रति + रु] प्रतिध्वनि करना, प्रतिशब्द करना। वकृ. पडिरुअत (से १२ ६, पि ४७३)।

पडिरुंध } सक [प्रति + रुध्] १ रोकना,
पडिरुंभ } ग्रटकाना। २ व्याप्त करना। पडि-रुमइ (से ८, ३६)। वकृ. पडिरुधंत (से ११, ५)।

पडिरुद्ध वि [प्रतिरुद्ध] रोका हुग्रा, ग्रटकाया हुग्रा (सुपा ८५, वज्जा ५०)।

पडिरूअ } वि [प्रतिरूप] १ रम्य, सुन्दर,
पडिरूव } चारु, मनोहर (सम १३७, उवा, ग्रौप)। २ रूपवान्, प्रशस्त रूपवाला, श्रेष्ठ ग्राकृतिवाला (ग्रौप)। ३ ग्रसाधारण रूपवाला। ४ नूतन रूपवाला (जीव ३)। ५ योग्य, उचित (स ८७, भग १५, दस ६, १)। ६ सदृश, समान (णाया १, १—पत्र ६१)। ७ समान रूपवाला, सदृश ग्राकारवाला (उत्त २६, ४२)। ८ न प्रतिबिम्ब, प्रतिमूर्ति, 'कइयावि चित्तफलए कइया वि पडम्मि तस्स पडिरूव लिहिऊण' (सुर ११, २३८, राय)। ६ समान रूप, समान ग्राकृति, 'तुम्हपडिरूव-धारि पासइ विज्जाहरसुदाढ' (सुपा २६८)। १० पुं. इन्द्र-विशेष, भूत-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। ११ विनय का एक भेद (वव १)।

पडिरूवसि वि [प्रतिरूपिन्] रमणीय, सुन्दर (ग्राचा २, ४, २, १)।

पडिरूवग पुन [प्रतिरूपक] प्रतिबिम्ब, प्रतिमा, 'तिदिसिं पडिरूवगा य देवकया' (ग्राव, बृह)।

पडिरूवणया स्त्री [प्रतिरूपणता] १ समानता, सदृशता या सादृश्य। २ समान वेष-धारण (उत्त २६, १)।

पडिरूवा स्त्री [प्रतिरूपा] एक कुलकर पुरुष की पत्नी का नाम (सम १५०)।

पडिरोव पुं [प्रतिरोप] पुनरारोपण (कुप्र ५५)।

पडिरोह पुं [प्रतिरोध] रुकावट (गउड, गा ७२४)।

पडिरोहि वि [प्रतिरोधिन्] रोकनेवाला (गउड)।

पडिलंभ सक [प्रति + लभ्] प्राप्त करना। सकृ. पडिलंभिय (सूग्र १, १३)।

पडिलंभ पु [प्रतिलम्भ] प्राप्ति, लाभ (सूम २, ५)।

पडिलग्ग वि [प्रतिलग्न] लगा हुग्रा, सम्बद्ध (से ६, ८६)।

पडिलग्गल न [दे] वल्मीक, कीट-विशेष-कृत मृत्तिका-स्तूप (दे ६, ३३)।

पडिलभ सक [प्रति + लभ्] प्राप्त करना। पडिलभेज्ज (उत्त १, ७)। संकृ. पडिलब्भ (सूग्र १, १३, २)।

पडिलाभ } सक [प्रति + लाभय्, लम्भय्]
पडिलाह } साधु ग्रादि को दान देना। पडि-लाहेज्जह (काल)। वकृ पडिलाभेमाण (णाया १, ५, भग; उवा)। सकृ. पडिला-भित्ता (भग ८, ५)।

पडिलाहण न [प्रतिलाभन] दान देना (रमा)।

पडिलिहिअ वि [प्रतिलिखित] लिखा हुग्रा, 'सम्म मत दुवारि पडिलिहिग्र' (ति १४)।

पडिलीण वि [प्रतिलीन] ग्रत्यन्त लीन (धर्मवि ५३)।

पडिलेह सक [प्रति + लेखय्] १ निरीक्षण करना, देखना। २ विचार करना। पडिलेहेइ उव, कस, भग), 'एतेसु जाणे पडिलेह साय, एतेण काएण य ग्रायदडे' (सूग्र १, ७, २)। सकृ भूएहिं जाणं पडिलेह साय' (सूग्र १, ७, १६), पडिलेहित्ता (भग)। हेकृ पडि-लेहित्तए, पडिलेहेत्तए (कप्प)। कृ पडि-लेहियव्व (ग्रोघ ४, कप्प)।

पडिलेह पुं [प्रतिलेख] देखो पडिलेहा (चेइय, २६६)।

पडिलेहग देखो पडिलेहय (राज)।

पडिलेहण न [प्रतिलेखन] निरोक्षण (ग्रोघ ३ भा, श्रत)।

पडिलेहणया देखो पडिलेहणा (उत्त २६, १)।

पडिलेहणा स्त्री [प्रतिलेखना] निरीक्षण, निरूपण (भग)।

पडिलेहणी स्त्री [प्रतिलेखनी] साधु का एक उपकरण, 'पुजणी' (पव ६१)।

पडिलेहय वि [प्रतिलेखक] निरीक्षक, देखनेवाला (ग्रोघ ४)।

पडिलेहा स्त्री [प्रतिलेखा] निरीक्षण, ग्रव-लोकन (ग्रोघ ३, ठा ५, ३, कप्प)।

पडिलेहि वि [प्रतिलेखिन्] निरीक्षक (सूम १, ३, ३, ५)।

८१, सुपा १२६, भग १४, १, पाअ)। २ समर्थ (जीवस २८५)।

पत्तट्ठ वि [दे] सुन्दर, मनोहर (दे ६, ६८)।

पत्तण देखो पट्टण (राज)।

पत्तण न [दे. पत्त्रण] १ इषु-फलक, वाण का फलक। २ पुंख, वाण का मूल भाग (दे ६, ६४, गा १०००)।

पत्तणा स्त्री [दे पत्त्रणा] १—२ ऊपर देखो (गउड, से १५, ७३)। ३ पुंख में की जाती रचना-विशेष (से ७, ५२)।

पत्तणा स्त्री [प्रापणा] प्राप्ति (पचू ४)।

पत्तपसाइआ स्त्री [दे] पत्तियों की एक की पगडी, जिसे भील लोग पहनते हैं (दे ६, २)।

पत्तपिसालस न [दे] ऊपर देखो (दे ६, २)।

पत्तय न [पत्रक] एक प्रकार का गेय (ठा ४, ४)।

पत्तय देखो पत्त (महा)।

पत्तरक न [दे प्रतरक] आभूषण-विशेष (पण्ह २, ५—पत्र १४९)।

पत्तल वि [दे] १ तीक्ष्ण, तेज (दे ६, १४), 'नयणाइं समाणियपत्तलाइं परपुरिसजीवहरणाइं। असियसियाइं व मुद्धे खग्गा इव कं न मारंति ?' (वज्जा ६०)। २ पतला, कृश (दे ६, १४, वज्जा ४६)।

पत्तल वि [पत्रल] १ पत्र समृद्ध, बहुत पत्तीवाला (पाअ, से १, ६२, गा ५३२; ६३५, दे ६, १४)। २ पक्ष्मवाला (औप, जं २)।

पत्तल न [पत्र] पत्ती, पर्ण (हे २, १७३, प्रामा, सण, हे ४, ३८७)।

पत्तलण न [पत्रलन] पत्र-समृद्ध होना, पत्र-बहुल होना, 'वाउलिआपरिसोसणकुडंगपत्तलणसुलहसंकेअ' (गा ६२६)।

पत्तली स्त्री [दे] कर-विशेष, एक प्रकार का राज-देय, 'गिण्हह तद्देसपत्तलि-भत्ति' (सुपा ४६३)।

पत्तहारय वि [पत्रहारक] पत्तो को बेचने का काम करनेवाला (अणु १४९)।

पत्ताण सक [दे] पताना, मिटाना, 'पुच्छउ अन्नु कोवि जो जाणइ सो तुम्हह विवाउ पत्ताणइ' (भवि), पत्ताणहि (भवि)।

पत्तामोड पुंन [आमोटपत्र] तोडा हुआ पत्र, 'दब्भे य कुसे य पत्तामोडं च गेण्हइ' (अंत ११)।

पत्ति स्त्री [प्राप्ति] लाभ (दे १, ४२, उप २२६, चेइय ८६४)।

पत्ति पुं [पत्ति] १ सेना-विशेष, जिसमें एक रथ, एक हाथी, तीन घोडे और पाँच पैदल हो। २ पैदल चलनेवाली सेना (उप ७२८ टी)।

पत्ति } सक [प्रति + इ] १ जानना। २ पत्तिअ } विश्वास करना। ३ आश्रय करना। पत्तिअइ, पत्तियति, पत्तिअसि, पत्तिआमि (से १३, ४४; पि ४८७, से ११, ९०, भग)। पत्तिएज्जा, पत्तिअ, पत्तिहि, पत्तिसु (राय, गा २१६, ६६६; पि ४८७)। वकृ. पत्तिअंत, पत्तियमाण (गा २१६, ६७८, आचा २, ३, २, १०)। संकृ. पडियच्च, पत्तियाइत्ता (सूअ १, ६, २७; उत्त २९, १)।

पत्तिअ वि [पत्रित] सजात-पत्र, जिसमें पत्र उत्पन्न हुए हो वह (णाया १, ७, ११—पत्र १७१)।

पत्तिअ वि [प्रतीति, प्रत्ययित] प्रतीतिवाला, विश्वस्त (ठा ६—पत्र ३५५, कप्प, कस)।

पत्तिअ न [प्रीतिक] प्रीति, स्नेह (ठा ४, ३, ठा ६—पत्र ३५५)।

पत्तिअ पुंन [प्रत्यय] प्रत्यय, विश्वास (ठा ४, ३—पत्र २३५, धर्म २)।

पत्तिअ न [पत्रिक] मरकत-पत्र (कप्प)।

पत्तिआ स्त्री [पत्रिका] पत्र; पर्ण, पत्ती (कुमा)।

पत्तिआअ देखो पत्तिअ = प्रति + इ। पत्तिआअइ (प्राकृ ७५), पत्तिआअति (पि ४८७)।

पत्तिआव सक [प्रति + आयय्] विश्वास कराना, प्रतीति कराना। पत्तिआवेइ (भास २३)।

पत्तिग देखो पत्तिअ = प्रीतिक (पचा ७, १०)।

पत्तिज्ज देखो पत्तिअ = प्रति + इ। पत्तिज्जसि, पत्तिज्जामि (पि ४८७)।

पत्तिज्जाव देखो पत्तिआव। पत्तिज्जावइ (सुपा ३०२)। पत्तिज्जावेमि (धर्मवि १३४)।

पत्तिसमिद्ध वि [दे] तीक्ष्ण (दे ६, १४)।

पत्ती स्त्री [दे] पत्तो की बनी हुई एक तरह की पगडी जिसे भील लोग सिर पर पहनते हैं (दे ६, २)।

पत्ती स्त्री [पत्नी] स्त्री, भार्या (उप पृ १६३, श्राप ६६, महा, पाअ)।

पत्ती स्त्री [पात्री] भाजन, पात्र (उप ६३२, महा, धर्मवि १२९)।

पत्तु देखो पाव = प्र + आप्।

पत्तुवगद (शौ) वि [प्रत्युपगत] १ सामने गया हुआ। २ वापस गया हुआ (नाट—विक्र २३)।

पत्तेअ } न [प्रत्येक] १ हरएक, एक-एक पत्तेग } (हे २, १०, कुमा, निचू १, पि ३४९)। २ एक की तरफ, एक के सामने, 'पत्तेयं पत्तेय वणसंडपरिक्खित्ताओ' (जीव ३)। ३ न कर्म-विशेष, जिसके उदय से एक जीव का एक अलग शरीर होता है, 'पत्तेयतणू पत्तेउदएणं' (कम्म १, ५०)। ४ पृथक् पृथक्, अलग अलग (कम्म १, ५०)। ५ पुं वह जीव जिसका शरीर अलग हो, एक स्वतन्त्र शरीरवाला जीव, 'साहारणपत्तेआ वणस्सइजीवा दुहा सुए भणिया' (जी ८)। °णाम न [°नामन्] देखो ऊपर का तीसरा अर्थ (राज)। °निगोयय पु [°निगोदक] जीव-विशेष (कम्म ४, ८२)। °बुद्ध पु [°बुद्ध] अनित्यतादि भावना के कारणभूत किसी एक वस्तु से परमार्थ का ज्ञान जिसको उत्पन्न हुआ हो ऐसा जैन मुनि (महा, नव ४३)। °बुद्धसिद्ध पु [°बुद्धसिद्ध] प्रत्येकबुद्ध होकर मुक्ति को प्राप्त जीव (धर्म २)। °रस वि [°रस] विभिन्न रसवाला (ठा ४, ४)। °सरीर वि [°शरीर] १ विभिन्न शरीरवाला; 'पत्तेयसरीराणं तह होंति सरीरसंघाया' (पंच ३)। २ न. कर्म-विशेष, जिसके उदय से एक जीव का एक विभिन्न शरीर

पडिवाइ वि [प्रतिवादिन्] प्रतिवाद करनेवाला, वादी का विपक्षी (भवि ५१, ३)।

पडिवाइ वि [प्रतिपादिन्] प्रतिपादन करनेवाला (भवि ५१, ३)।

पडिवाइ त्रि [प्रतिपातिन्] १ विनश्वर, नष्ट होने के स्वभाववाला (ठा २, १, ओघ ५३२, उत्त पृ ३५८)। २ अवधिज्ञान का एक भेद, फूँक से दीपक के प्रकाश के समान एकाएक नष्ट होनेवाला अवधिज्ञान (ठा ६, कम्म १, ८)।

पडिवाइअ वि [प्रतिपातित] १ फिर से गिराया हुआ। २ नष्ट किया हुआ (भवि)।

पडिवाइअ वि [प्रतिपादित] जिसका प्रतिपादन किया हो वह, निरूपित (अच्चु ५, स ४६, ५४३)।

पडिवाइअ वि [प्रतिवाचित] १ लिखने के बाद पढा हुआ। २ फिर से बाँचा हुआ (कुप्र १६७)।

पडिवाइऊण } देखो पडिवाय = प्रति + पडिवाइयव्व } वाचय्।

पडिवाइय देखो पडिवाइ = प्रतिपातिन् (णंदि ८१)।

पडिवाडि देखो परिवाडि (गा ५३०)।

पडिवाद (शौ) सक [प्रति + पादय्] प्रतिपादन करना निरूपण करना। पडिवादेदि (नाट—रत्ना ५७)। कृ पडिवादणिज्ज (अभि ११७)।

पडिवादय वि [प्रतिपादक] प्रतिपादन करनेवाला। स्त्री. °दिआ (नाट—चैत ३४)।

पडिवाय सक [प्रति + वाचय्] १ लिखने के बाद उसे पढ लेना। २ फिर से पढ़ लेना। संकृ. पडिवाइऊण (कुप्र १६७)। कृ. पडिवाइयव्व (कुप्र १६७)।

पडिवाय सक [प्रति + पादय्] प्रतिपादन करना, निरूपण करना। पडिवाययति (सूअ १, १४, २६)।

पडिवाय पु [प्रतिपात] १ पुन-पतन, फिर से गिरना (नव ३६)। २ नाश, ध्वंस (विसे ५७७)।

पडिवाय पु [प्रतिवाद] विरोध (भवि)।

पडिवाय पुं [प्रतिवात] प्रतिकूल पवन (आवम)।

पडिवायण न [प्रतिपादन] निरूपण (कुप्र ११६)।

पडिवारय देखो परिवार, 'पडिवारयपरियरिओ' (महा)।

पडिवाल सक [प्रति + पालय्] १ प्रतीक्षा करना, वाट जोहना। २ रक्षण करना। पडिवालेइ (हे ४, २५९)। पडिवालेदु (शौ), (स्वप्न १००)। पडिवालह (अभि १८५)। वकृ पडिवालअंत, पडिवालेमाण (नाट—रत्ना ४८, णाया १, ३)।

पडिवालण न [प्रतिपालन] १ रक्षण। २ प्रतीक्षा, वाट (नाट—महा ११८, उप ६६६)।

पडिवालिअ वि [प्रतिपालित] १ रक्षित। २ प्रतीक्षित, जिसकी वाट देखी गई हो वह (महा)।

पडिवास पुं [प्रतिवास] औषध आदि को विशेष उत्कट बनानेवाला चूर्ण आदि (उर ८, ५, सुपा ६७)।

पडिवासर न [प्रतिवासर] प्रतिदिन, हर रोज (गउड)।

पडिवासुदेव पु [प्रतिवासुदेव] वासुदेव का प्रतिपक्षी राजा (पउम २०, २०२)।

पडिविक्किण सक [प्रतिवि + क्री] बेचना। पडिविक्किणइ (श्राक ३३, वि ५११)।

पडिविज्जा स्त्री [प्रतिविद्या] प्रतिपक्षी विद्या, विरोधी विद्या (पिंड ४६७)।

पडिवित्थर पु [प्रतिविस्तर] परिकर, विस्तार (सूअ २, २, ६२ टी, राज)।

पडिविद्धंसण न [प्रतिविध्वंसन] विनाश, ध्वंस (राज)।

पडिविप्पिय न [प्रतिविप्रिय] अपकार का बदला, बदले के रूप मे किया जाता अनिष्ट (महा)।

पडिविरइ स्त्री [प्रतिविरति] निवृत्ति (पण्ह २, ३)।

पडिविरय वि [प्रतिविरत] निवृत्त (सम ५१, सूअ २, २, ७५, औप, उव)।

पडिविसज्ज सक [प्रतिवि + सर्जय्] विसर्जन करना, विदा करना। पडिविसज्जेइ (कप्प, औप)। भवि पडिविसज्जेहिंति (औप)।

पडिविसज्जिय वि [प्रतिविसर्जित] विदा किया हुआ, विसर्जित (णाया १, १—पत्र ३०)।

पडिविहाण न [प्रतिविधान] प्रतीकार (स ५६७)।

पडिवुज्झमाण देखो पडिवह = प्रति + वह्।

पडिवुत्त वि [प्रत्युक्त] १ जिसका उत्तर दिया गया हो वह (अनु ३, उप ७२८ टी)। २ न प्रत्युत्तर (उप ७२८ टी)।

पडिवुद (शौ) वि [परिवृत्त] परिकरित (अभि ५७, नाट—मृच्छ २०५)।

पडिवूह पुं [प्रतिव्यूह] व्यूह का प्रतिपक्षी व्यूह, सैन्य-रचना-विशेष (औप)।

पडिवूहण वि [प्रतिबृंहण] १ बढनेवाला (आचा १, २, ५, ५)। २ न वृद्धि, पुष्टि (आचा १, २, ५, ४)।

पडिवेस पु [दे] विक्षेप, फेंकना (दे ६, २१)।

पडिवेसिअ वि [प्रातिवेश्मिक] पडोसी, पडोस मे रहनेवाला (दे ६, ३, सुपा ५५२)।

पडिवोह देखो पडिवोह (सण)।

पडिसंका स्त्री [प्रतिशङ्का] भय, शका (पउम ६७, १५)।

पडिसंखा सक [प्रतिसं + ख्या] व्यवहार करना, व्यपदेश करना। पडिसंखाए (आचा)।

पडिसंखिव सक [प्रतिसं + क्षिप्] संक्षेप करना। सकृ पडिसंखिविय (भग १४, ७)।

पडिसंखेव सक [प्रतिसं + क्षेपय्] सकेलना, समेटना। वकृ. पडिसंखेवेमाण (राय ४२)।

पडिसंचिक्ख सक [प्रतिसम् + ईक्ष्] चिन्तन करना। पडिसंचिक्खे (उत्त २, ३१)।

पडिसंजल सक [प्रतिसं + ज्वालय्] उद्दीपित करना। पडिसंजलेज्जासि (आचा)।

पडिसंत वि [परिशान्त] शान्त, उपशान्त (से ६, ६१)।

पडिसंत वि [प्रतिश्रान्त] विश्रान्त (वृह १)।

पडिसंत वि [दे] १ प्रतिकूल। २ अस्तमित, अस्त-प्राप्त (दे ६, १६)।

पडिसंध } सक [प्रतिसं + धा] १ फिर पडिसंधया } से साँधना। २ उत्तर देना।

पत्थोउ वि [प्रस्तोतृ] १ प्रस्ताव करनेवाला। २ प्रवर्त्तक। स्त्री. °त्थोई (पराह १, ३—पत्र ४२)।

पथम (पै) देखो पढम (पि १६०)।

पद देखो पय = पद (भग, स्वप्न १५, हे ४, २७०, पराह २, १, नाट—शकु ८१)।

पदअ सक [गम्] जाना, गमन करना। पदअइ (हे ४, १६२)। पदअति (कुमा)।

पदसिअ वि [प्रदर्शित] दिखलाया हुआ, बतलाया हुआ (श्रा ३०)।

पदक्खिण वि [प्रदक्षिण] १ जिसने दक्षिण की तरफ से लेकर मराडलाकार भ्रमण किया हो वह। २ न दक्षिणावर्त्त भ्रमण, 'पदक्खिणीकरअतो भट्टार' (प्रयौ ३५)। देखो पदाहिण।

पदक्खिण सक [प्रदक्षिणय्] प्रदक्षिणा करना, दक्षिण से लेकर मराडलाकार भ्रमण करना। हेकृ. पदक्खिणेउ (पउम ४८, १११)।

पदक्खिणा स्त्री [प्रदक्षिणा] दक्षिण की ओर से मराडलाकार भ्रमण (नाट—चैत ३८)।

पदण न [पदन] प्रत्यायन, प्रतीति कराना (उप ८८३)।

पदण (शौ) न [पतन] गिरना (नाट—मालती ३७)।

पदम (शौ) देखो पउम (नाट—मृच्छ १३६)।

पदय देखो पयय = पदग, पदक, पतग, पतंग (इक)।

पदरिसिय देखो पदसिअ (भवि)।

पदहण न [प्रदहन] संताप, गरमी (कुमा)।

पदाइ वि [प्रदायिन्] देनेवाला (नाट—विक्र ८)।

पदाण न [प्रदान] दान, वितरण (औप, अभि ४५)।

पदादि (शौ) पु [पदाति] पैदल चलनेवाला सैनिक (प्रयौ १७, नाट—वेणी ६६)।

पदायग वि [प्रदायक] देनेवाला (विसे ३२००)।

पदाव देखो पयाव (गा ३२६)।

पदाहिण वि [प्रदक्षिण] प्रकृष्ट दक्षिण, प्रकर्ष से दक्षिण दिशा में स्थित (जीव ३)। देखो पदक्खिण।

पदिक्किदि (शौ) देखो पडिक्किदि (मा १०, नाट—विक्र २१)।

पदित्त देखो पलित्त (राज)।

पदिस° स्त्री [प्रदिश्] विदिशा, ईशान आदि कोण, 'तसंति पाणा पदिसो दिसासु य' (आचा)।

पदिस्सा देखो पदेक्ख।

पदीव सक [प्र + दीपय्] १ जलाना। २ प्रकाश करना। पदीवेसि (पि २४४)। वकृ. पदीवेंत (पउम १०२, १०)।

पदीव देखो पईव = प्रदीप (नाट—मृच्छ ३०)।

पदीविआ स्त्री [प्रदीपिका] छोटा दिया (नाट—मृच्छ ५१)।

पदुग्ग पुंन [प्रदुर्ग] कोट, किला (आचा, २, १०, २)।

पदुट्ठ वि [प्रद्विष्ट, प्रदुष्ट] विशेष द्वेष को प्राप्त (उत्त ३२, बृह ३)।

पदुब्भेइय न [पदोद्भेदक] पद-विभाग और शब्दार्थ मात्र का पारायण (राज)।

पदूमिय वि [प्रदावित, प्रदून] अत्यन्त पीडित (बृह ३)।

पदूस सक [प्र + द्विष्] द्वेष करना। पदूसति (पचा २, ३५)।

पदूसणया स्त्री [प्रद्वेषणा, प्रदूषणा] द्वेष, मात्सर्य (उप ४८६)।

पदेक्ख सक [प्र + दृश्] प्रकर्ष से देखना। पदेक्खइ (भवि)। संकृ. 'पदिस्सा य दिस्सा वयमाणा' (भग १८, ८, पि ३३४)।

पदेस देखो पएस = प्रदेश (भग)।

पदेस पुं [प्रद्वेष] द्वेष (धर्मसं ६७)।

पदेसिअ वि [प्रदेशित] प्ररूपित, प्रतिपादित (आचा)।

पदोस देखो पओस = दे, प्रद्वेष (अंत १३, निचू १)।

पदोस देखो पओस = प्रदोष (राज)।

पद्द न [दे] १ ग्राम-स्थान (दे ६, १)। २ छोटा गाँव (पाअ)।

पद्द न [पद्य] श्लोक, वृत्त, काव्य (प्राकृ २१)।

पद्देस देखो पदेस = प्रद्वेष (सूअ १, १६, ३)।

पद्धइ स्त्री [पद्धति] १ मार्ग, रास्ता (सुपा १८६)। २ पंक्ति, श्रेणी (ठा २, ४)। ३ परिपाटी, क्रम (आवम)। ४ प्रक्रिया, प्रकरण (वज्जा २)।

पद्धंस पु [प्रध्वंस] ध्वंस, नाश। °ाभाव पु [°ाभाव] अभाव-विशेष, वस्तु के नाश होने पर उसका जो अभाव होता है वह (विसे १८३७)।

पद्धर वि [दे] ऋजु, सरल, सीधा (दे ६, १०)। २ शीघ्र, गुजराती में 'पाधरु', 'पद्धरपएहिं मुंडे पचारेइ' (सिरि ४३५)।

पद्धल वि [दे] दोनों पार्श्व में अप्रवृत्त (षड्)।

पद्धार वि [दे] जिसका पूँछ कट गया हो वह, पूँछ-कटा (दे ६, १३)।

पधाइय देखो पधाविय (भवि)।

पधाण देखो पहाण (नाट—मृच्छ २०५)।

पधार देखो पहार = प्र + धारय्। भूका पधारेत्थ (औप, णाया १, २—पत्र ८८)।

पधाव सक [प्र + धाव्] दौड़ना, अधिक वेग से जाना। संकृ. पधाविअ (नाट)।

पधावण न [प्रधावन] १ दौड़, वेग से गमन। २ कार्य की शीघ्र सिद्धि (श्रा १)। ३ प्रक्षालन (धर्मसं १०७८)।

पधाविअ वि [प्रधावित] १ दौड़ा हुआ (महा, पराह १, ४)। २ गति-रहित (राज)।

पधाविर वि [प्रधावितृ] दौड़नेवाला (श्रा २८)।

पधूवण न [प्रधूपन] १ धूप देना। २ एक प्रकार का आलेपन द्रव्य (कस)।

पधूविय वि [प्रधूपित] जिसको धूप दिया गया हो वह (राज)।

पधोअ सक [प्र + धाव्] धोना। संकृ. पधोइत्ता (आचा २, १, ६, ३)।

पधोअ वि [प्रधौत] धोया हुआ (औप)।

पधोव सक [प्र + धाव्] धोना। पधोवेंति (पि ४८२)।

पडिसिद्ध वि [दे] १ भीत, डरा हुआ । २ भग्न, त्रुटित (दे ६, ७१) ।

पडिसिद्ध वि [प्रतिषिद्ध] निषिद्ध, निवारित (पाअ, उव, ओघ १ टी, सण) ।

पडिसिद्धि स्त्री [दे] प्रतिस्पर्धा (षड्) ।

पडिसिद्धि स्त्री [प्रतिसिद्धि] १ अनुरूप सिद्धि । २ प्रतिकूल सिद्धि (हे १, ४४, षड्) ।

पडिसिद्धि देखो पडिप्फद्धि (सक्षि १६) ।

पडिसिलोग पु [प्रतिश्लोक] श्लोक के उत्तर में कहा गया श्लोक (सम्मत्त १४६) ।

पडिसिविणअ पु [प्रतिस्वप्नक] एक स्वप्न का विरोधी स्वप्न, स्वप्न का प्रतिकूल स्वप्न (कप्प) ।

पडिसीसअ } न [प्रतिशीर्षक] १ शिरो-
पडिसीसक } वेष्टन, पगडी (कप्पू) । २ सिर के प्रतिरूप सिर, पिसान (आटा) आदि का बनाया हुआ सिर (पण्ह १, २—पत्र ३०) ।

पडिसुइ पुं [प्रतिश्रुति] १ ऐरवत वर्ष के एक भावी कुलकर (सम १५३) । २ भरतक्षेत्र मे उत्पन्न एक कुलकर पुरुष का नाम (पउम ३, ५०) ।

पडिसुण सक [प्रति + श्रु] १ प्रतिज्ञा करना । २ स्वीकार करना । पडिसुणइ, पडिसुणेइ (ओप, कप्प, उवा) । वकृ पडिसुणमाण (वव १, पि ५०३) । संकृ पडिसुणित्ता, पडिसुणेत्ता (माव ४, कप्प) । हेकृ. पडिसुणेत्तए (पि ५७८) ।

पडिसुणण न [प्रतिश्रवण] अंगीकार (उप ४९३) ।

पडिसुणण स्त्री न [प्रतिश्रवण] १ सुनाना, सुनकर उसका जवाब देना, प्रत्युत्तर (पव २) । स्त्री °णा (पव २) । २ श्रवण (पचा १२, १५) ।

पडिसुणणा स्त्री [प्रतिश्रवण] १ अंगीकार, स्वीकार । २ मुनि-भिक्षा का एक दोष, आधाकर्म-दोषवाली भिक्षा लाने पर उसका स्वीकार और अनुमोदन (धर्म ३) ।

पडिसुण्ण वि [प्रतिशून्य] खाली, रिक्त, शून्य, 'नय निलया निच्चपडिसुण्णा' (ठा १ टी—पत्र २६) ।

पडिसुत्ति वि [दे] प्रतिकूल (दे ६, १८) ।

पडिसुद्ध वि [परिशुद्ध] अत्यन्त शुद्ध (चेइय ८०७) ।

पडिसुय त्रि [प्रतिश्रुत] १ स्वीकृत, अंगीकृत (उप पृ १८४) । २ न अंगीकार, स्वीकार (उत्त २६) । देखो पडिस्सुय ।

पडिसुया देखो पडसुआ = प्रतिश्रुत् (पण्ह १, १—पत्र १८) ।

पडिसुया स्त्री [प्रतिश्रुता] प्रव्रज्या-विशेष, एक प्रकार की दीक्षा (ठा १० टी—पत्र ४७४) ।

पडिसुहड पुं [प्रतिसुभट] प्रतिपक्षी योद्धा (काल) ।

पडिसूयग पुं [प्रतिसूचक] गुप्तचरों की एक श्रेणी, नगर-द्वार पर रहनेवाला जासूस (वव १) ।

पडिसूर वि [दे] प्रतिकूल (दे ६, १६, भवि) ।

पडिसूर पु [प्रतिसूर्य] सूर्य के सामने देखा जाता उत्पातादि सूचक द्वितीय सूर्य (अणु १२०) ।

पडिसूर पुं [प्रतिसूर्य] इन्द्र-धनुष (राज) ।

पडिसेज्जा स्त्री [प्रतिशय्या] शय्या-विशेष, उत्तर-शय्या (भग ११, ११, पि १०१) ।

पडिसेग पुं [प्रतिषेक] नख के नीचे का भाग (राय ६४) ।

पडिसेव सक [प्रति + सेव्] १ प्रतिकूल सेवा करना, निषिद्ध वस्तु की सेवा करना । २ सहन करना । ३ सेवा करना । पडिसेवइ, पडिसेवए, पडिसेवंति (कस, वव ३, उव) । वकृ पडिसेवंत, पडिसेवमाण (पचू ५, सम ३९, पि १७), 'पडिसेवमाणो फरुसाइं अचले भगवं रीइत्था' (आचा) । कृ पडिसेवियव्व (वव १) ।

पडिसेवग देखो पडिसेवय (निचू १) ।

पडिसेवण न [प्रतिषेवण] निषिद्ध वस्तु का सेवन (कस) ।

पडिसेवणा स्त्री [प्रतिषेवणा] ऊपर देखो (भग २५, ७, उव, ओघ २) ।

पडिसेवय वि [प्रतिषेवक] प्रतिकूल सेवा करनेवाला, निषिद्ध वस्तु का सेवन करनेवाला (भग २५, ७) ।

पडिसेवा स्त्री [प्रतिषेवा] १ निषिद्ध वस्तु का आसेवन (उप ८०१) । २ सेवा (कुप्र ५२) ।

पडिसेवि वि [प्रतिषेविन्] शास्त्र-प्रतिषिद्ध वस्तु का सेवन करनेवाला (उव, पउम ५, २८) ।

पडिसेविअ वि [प्रतिषेवित] जिस निषिद्ध वस्तु का आसेवन किया गया हो वह (कप्प, औप) ।

पडिसेवेत्तु वि [प्रतिषेवितृ] प्रतिषिद्ध वस्तु की सेवा करनेवाला (ठा ७) ।

पडिसेह सक [प्रति + सिध्] निषेध करना, निवारण करना । कृ. पडिसेहेअव्व (भग) ।

पडिसेह पुं [प्रतिषेध] निषेध, निवारण, रोक (ओघ ९ भा, पचा ६) ।

पडिसेहग त्रि [प्रतिषेधक] निषेध-कर्ता (धर्मस ४०, ९१२) ।

पडिसेहण न [प्रतिषेधन] ऊपर देखो (विसे २७५१, श्रा २७) ।

पडिसेहिय वि [प्रतिषेधित] जिसका प्रतिषेध किया गया हो वह, निवारित (विपा १, ३) ।

पडिसेहेअव्व देखो पडिसेह = प्रति + सिध् ।

पडिसोअ } पुं [प्रतिस्रोतस्] प्रतिकूल
पडिसोत्त } प्रवाह, उलटा प्रवाह (ठा ४, ४, हे, २, ९८, उप २५२, पि ६१) ।

पडिसोत्त वि [दे] प्रतिकूल (षड्) ।

पडिस्सत देखो परिस्संत (नाट—मृच्छ १८८) ।

पडिस्संति स्त्री [परिश्रान्ति] परिश्रम (नाट—मृच्छ ३२१) ।

पडिस्सय पु [प्रतिश्रय] जैन साधुओं को रहने का स्थान, उपाश्रय (ओघ ८७ भा, उप ५७१, स ६८७) ।

पडिस्सर देखो पडिसर (पंचा ८, ४६) ।

पडिस्साव सक [प्रति + श्रावय्] १ प्रतिज्ञा कराना । २ स्वीकार कराना । वकृ पडिस्सावअन्त (नाट—वेणी १८) ।

पडिस्साबि वि [प्रतिस्राविन्] झरनेवाला, टपकनेवाला (राज) ।

पडिस्सुण सक [प्रति + श्रु] १ सुनना । २ अंगीकार करना । पडिस्सुणंति (सूअ २, ६, ३०) । पडिस्सुणेज्जा (सूअ १, १४, ६) । पडिस्सुणे (उत्त १, २१) ।

पडिस्सुय वि [प्रतिश्रुत] १ प्रतिज्ञात । २ स्वीकृत (महा, ठा १०) । देखो पडिसुय ।

'इअ भरिएण रामंगी पप्फुल्लविलोअणा जाआ' (काप्र १६१)।

पप्फुल्लिअ वि [प्रफुल्लित] ऊपर देखो (सम्मत्त १८६, भवि)।

पप्फुल्लिआ स्त्री [प्रफुल्लिका] देखो उप्फुल्लिआ (गा १९६ अ)।

पप्फुसिय न [प्रस्पृष्ट] उत्तम स्पर्श (राय १८)।

पप्फोड देखो पप्फुट्ट। पप्फोडइ, फप्फोडए (धात्वा १४३)।

पप्फोड सक [प्र + स्फोटय्] १ झाडना, झाडकर गिराना। २ आस्फालन करना। ३ प्रक्षेपण करना। पप्फोडइ (गा ४३३)। पप्फोडे (उत्त २६, २४) वकृ पप्फोडत, पप्फोडयंत, पप्फोडेमाण (गा १४५, पि ४९१, ठा ६)। संकृ. 'पप्फोडेऊण सेसयं कम्म' (श्राउ ६७)।

पप्फोडण न [प्रस्फोटन] १ झाडना, प्रकृष्ट धुनन (ओघ भा १६३)। २ आस्फोटन, आस्फालन (पण्ह २, ५—पत्र १४८, पिंड २६३))

पप्फोडणा स्त्री [प्रस्फोटना] ऊपर देखो (ओघ २६६, उत्त २६, २६)।

पप्फोडिअ वि [दे. प्रस्फोटित] निर्झाटित, झाड कर गिराया हुआ (दे ६, २७, पाअ), 'पप्फोडिअमोहजालस्स' (पडि)। २ फोडा हुआ, तोडा हुआ, 'पप्फोडिअसरणिअडगं व ते हुति निस्सारा' (सबोध १७)।

पप्फोडेमाण देखो पप्फोड = प्र + स्फोटय्।

पफुल्ल देखो पप्फुल्ल (षड्)।

पफुल्लिअ देखो पप्फुल्लिअ (हे ४, ३९६, पिंग)।

पबंध सक [प्र + बन्ध्] प्रबन्ध रूप से कहना, विस्तार से कहना। पबंधिज्जा (दस ५, २, ८)।

पबंध पुं [प्रबन्ध] १ सन्दर्भ, ग्रन्थ, परस्पर अन्वित वाक्य-समूह (रंभा ८)। २ अविच्छेद, निरन्तरता (उत्त ११, ७)।

पबंधण न [प्रबन्धन] प्रबन्ध, सन्दर्भ, अन्वित वाक्य-समूह की रचना, 'कहाए य पबंधणे' (सम २१)।

पबल वि [प्रबल] बलिष्ठ, प्रचण्ड, प्रखर (कुमा)।

पबाहा स्त्री [प्रबाधा] प्रकृष्ट बाधा, विशेष पीडा (णाया १, ४)।

पबुद्ध वि [प्रबुद्ध] १ प्रवीण, निपुण (से १२, ३४)। २ जागा हुआ (सुर ५, २२९)। ३ जिसने अच्छी तरह जानकारी प्राप्त की हो वह (आचा)।

पबोध सक [प्र + बोधय्] १ जागृत करना। २ ज्ञान कराना। कर्म पबोधीआमि (पि ५४३)।

पबोधण न [प्रबोधन] प्रकृष्ट बोधन (राज)।

पबोह देखो पबोध। कृ. पबोहणीय (पउम ७०, २८)।

पबोह पुं [प्रबोध] १ जागरण। २ ज्ञान, समझ (चारु ५४, पि १६०)।

पबोहण देखो पबोधण (राज)।

पबोहय वि [प्रबोधक] प्रबोध-कर्ता (विसे १७३)।

पबोहिअ वि [प्रबोधित] १ जगाया हुआ। २ जिसको ज्ञान न कराया गया हो वह (सुपा ३१३)।

पब्बल देखो पबल (से ४, २५, ६, ३३)।

पब्बाल देखो पब्बाल = छादय्। पब्बालइ (हे ४, २१)।

पब्बाल देखो पब्बाल = प्लावय्। पब्बालइ (हे ४, ४१)।

पब्बुद्ध देखो पबुद्ध (पि १९६)।

पब्भ वि [प्रह्व] नम्र (औप, प्राकृ २४)।

पब्भट्ठ, पब्भसिअ वि [प्रभ्रष्ट] १ परिभ्रष्ट, प्रस्खलित, चूका हुआ (पण्ह १, ३, अभि ११९, गा ३१८, सुर ३, १२३, गा ३३, ९५)। २ विस्मृत (से १४, ४२)। ३ पु नरकावास विशेष (देवेन्द्र २८)।

पब्भार पु [दे प्राग्भार] १ संघात, समूह, जत्था (दे ६, ६६, से ४, २०, सुर १, २२३ कप्पू, गउड, कुलक २१)।

पब्भार पुं [दे] गिरि-गुफा, पर्वत-कन्दरा (दे ६, ६६), 'पब्भारकदरगया साहृती अप्पणो अट्ठं' (पच्च ८१)।

पब्भार पुं [प्राग्भार] १ प्रकृष्ट भार, 'कुमरे सकमियरज्जपब्भारो' (धम्म ८ टी)। २ ऊपर का भाग (से ४, २०)। ३ थोडा नमा हुआ पर्वत का भाग (णाया १, १—पत्र ६३, भग ५,७)। ४ एक देश, एक भाग (से १,५८)। ५ उत्कर्ष, परभाग (गउड)। ६ पुंन. पर्वत के ऊपर का भाग (णदि)। ७ वि थोडा नमा हुआ, ईषदवनत (अत ११, ठा १०)।

पब्भारा स्त्री [प्राग्भारा] दशा-विशेष, पुरुष की सत्तर से अस्सी वर्ष तक की अवस्था (ठा १०—पत्र ५१९, तदु १६)।

पब्भूअ वि [प्रभूत] उत्पन्न, 'मडुक्कीए गब्भे, पब्भूओ दद्दुरत्तेण' (धर्मवि ३५)।

पब्भोअ पु [दे प्रभोग] भोग, विलास (दे ६, १०)।

पभ पुं [प्रभ] १ हरिकान्त नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १, इक)। २ द्वीप-विशेष और समुद्र-विशेष का अधिपति देव (राज)।

°पभ त्रि [प्रभ] सदृश, तुल्य (कप्प, उवा)।

°पभइ देखो °पभिइ, 'चडाणं चडरुद्दपभईण' (अज्झ १४१)।

पभंकर पुं [प्रभङ्कर] १ ग्रह विशेष, ज्योतिष-देव-विशेष (ठा २, ३)। २ पुंन. देव-विमान (सम ८, १४, पव २६७)।

पभंकर वि [प्रभाकर] प्रकाशक, 'सव्वलोय-पभंकरो' (उत्त २३, ७६)।

पभंकरा स्त्री [प्रभङ्करा] १ विदेह-वर्ष की एक नगरी का नाम (ठा २, ३)। २ चन्द्र की एक अग्रमहिषी का नाम (ठा ४, १)। ३ सूर्य की एक अग्रमहिषी का नाम (भग १०, ५)।

पभंकरावई स्त्री [प्रभङ्करावती] विदेह वर्ष की एक नगरी (आचू १)।

पभंगुर त्रि [प्रभङ्गुर] अति विनश्वर (आचा)।

पभंजण पुं [प्रभञ्जन] १ वायुकुमार-निकाय के उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३, ४, १, सम ६९)। २ लवण-समुद्र के एक पाताल-कलश का अधिष्ठायक देव (ठा ४, २)। ३ वायु, पवन (से १४, ६६)। ४ मानुषोत्तर पर्वत के एक शिखर का अधिपति देव (राज)। °तणअ पुं [°तनय] हनूमान् (से १४,६६)।

जात (ठा ४, २), 'होति य पड्डुप्पन्नविणास-णम्मि गन्धविया उदाहरणं' (दसनि १)।

पड्डुल न [दे] १ लघु पिठर, छोटी थाली। २ वि चिरप्रसूत (दे ६, ६८)।

पड्डुवइअ वि [दे] तीक्ष्ण, तेज (दे ६, १४)।

पड्डुवत्ती स्त्री [दे] जवनिका, परदा (दे ६, २२)।

पड्डुह देखो पड्डुहुह। पड्डुहइ (हे ४, १५४ टि)।

पडोअ वि [दे] बाल, लघु छोटा (दे ६,६)।

पडोच्छन्न वि [प्रत्यवच्छन्न] आच्छादित, आवृत,'अट्ठविहकम्मतमपडलपडोच्छन्ने'(उवा)।

पडोयार मक [प्रत्युप + चारय्] प्रतिकूल उपचार करना। पडोयारेंति, पडोयारेह (भग १५—पत्र ६७६)। पडोयारेउ (भग १५—पत्र ६७१)। पडोयारे (पि १५५)। कवकृ पडोय (? या) रिज्जमाण, पडोयारेज्ज-माण (पि १६३, भग १५—पत्र ६७६)।

पडोयार पुं [दे] उपकरण (पिंड २८)।

पडोयार पु [प्रत्युपचार] प्रतिकूल उपचार (भग १५—पत्र ६७१, ६७६)।

पडोयार पुं [प्रत्यवतार] १ अवतरण। २ आविर्भाव, 'भरहस्स वासस्स केरिसए आगार-भावपडोयारे होत्था' (भग ६, ७—पत्र २७६, ७, ६—पत्र ३०५, औप)।

पडोयार पुं [पदावतार] किसी वस्तु का पदों में विचार के लिए अवतरण (ठा ४, १—पत्र १८८)।

पडोयार पुं [प्रत्युपकार] उपकार का उपकार (राज)।

पडोयार पुं [दे] १ सामग्री। २ परिकर, 'पायस्स पडोयार' (ओघ ३५२)।

पडोल पुंस्त्री [पटोल] लता विशेष, परवल का गाछ (पराण १—पत्र ३२)।

पडोहर न [दे] घर का पीछला आँगन (दे ६, ३२, गा ३१३, काप्र २२४)।

पड्ड वि [दे] धवल, सफेद (दे ६, १)।

पड्डंस पुं [दे] गिरि गुहा, पहाड की गुफा (दे ६, २)।

पड्डच्छी स्त्री [दे] भैंस, 'पड्डच्छिखीर' (ओघ ८७)।

पड्डत्थी स्त्री [दे] १ बहुत दूधवाली। २ दोहनेवाली (दे ६, ७०)।

पड्डय पुं [दे] भैंसा, पाडा, गुजराती मे 'पाडो', 'सो चेव इमो वसभो पड्डयपरिहट्टणं सहइ' (महा)।

पड्डला स्त्री [दे] चरण-घात, पाद-प्रहार (दे ६, ८)।

पड्डस वि [दे] सुसयमित, अच्छी तरह से सयमित (दे ६, ६)।

पड्डाविअ वि [दे] समापित, समाप्त कराया हुआ (पड्)।

पड्डिया स्त्री [दे] १ छोटी भैंस, पाडी। २ छोटी गौ, बछिया (विपा १,२—पत्र २६)। ३ प्रथमप्रसूता गौ। ४ नव-प्रसूता महिषी (वव ३)। पड्डी स्त्री [दे] प्रथम-प्रसूता (दे ६, १)।

पड्डुआ स्त्री [दे] चरण-घात, पाद-प्रहार (दे ६, ८)।

पड्डुह अक [क्षुभ्] क्षुब्ध होना। पड्डु-हइ (हे ४, १५४, कुमा)।

पढ सक [पठ्] १ पढना, अभ्यास करना। २ बोलना, कहना। पढइ (हे १, १६६, २३१)। कर्म पढीअइ, पढिज्जइ (हे ३, १६०)। वकृ. पढंत (सुर १०, १०३)। कवकृ पढिज्जत, पढिज्जमाण (सुपा २६७, उप ५३० टी)। संकृ. पढित्ता (हे ४, २७१, पड्), पढिअ, पढिऊण (शौ) (हे ४, २७१), पढि (अप) (पिंग)। हेकृ. पढिउ (गा २, कुमा)। कृ पढियव्व, पढेयव्व (पसू १, वज्जा ६)। प्रयो पढावइ (कुप्र १८२)।

पढ पु [पढ] भारतीय देश-विशेष (इक)।

पढग वि [पाठक] पढनेवाला (कप्प)।

पढण न [पठन] पाठ, अभ्यास (विसे १३८४, कप्पू)।

पढम वि [प्रथम] १ पहला, आद्य (हे १, ५५, कप्प, उवा, भग, कुमा, प्रासू ४८, ६८)। २ नूतन, नया (दे)। ३ प्रधान, मुख्य (कप्प)। °करण न [°करण] आत्मा का परिणाम-विशेष (पचा ३)। °कसाय पुं [°कषाय] कषाय-विशेष, अनन्तानुबन्धी कषाय (कम्मप)। °ट्ठाणि, °ठाणि वि [°स्थानिन्] अव्युत्पन्न-बुद्धि, अनिष्णात (पंचा १६)। °पाउस पुं [°प्रावृष्] आषाढ मास (निचू १०)। °समोसरण न [°समवसरण] वर्षा-काल, 'विइयसमोसरणा उदुबद्धं तं पडुच्च वासावासोग्गहो पढमसमो-सरणं भण्णइ' (निचू १)। °सरय पु [°शरत्] मार्गशीर्ष मास (भग १५)। °सुरा स्त्री [°सुरा] नया दारू, शराब (दे)।

पढमा स्त्री [प्रथमा] १ प्रतिपदा तिथि, पडवा (सम २६)। २ व्याकरण-प्रसिद्ध पहली विभक्ति, णिद्देसे पढमा होइ' (अणु)।

पढमालिआ स्त्री [दे प्रथमालिका] प्रथम भोजन (ओघ ४७ भा, धर्म ३)।

पढमिल्ल, पढमिल्लुअ, पढमिल्लुग, पढमुल्लअ, पढमेल्लुय वि [प्रथम] पहला आद्य (भग, श्रा २८, सुपा ५७, पि ४४६, ५६५, विसे १२२६, (णाया १, ६—पत्र १४४, वृह १, पउम ६२, ११, धरण १६, सण)।

पढाइद [शौ] नीचे देखो (नाट—चैत ८६)।

पढाव सक [पाठय्] पढाना। पढावेइ (प्राकृ ६०)। संकृ पढाविऊण, पढावेऊण (प्राकृ ६१)। हेकृ. पढाविउ, पढावेउ (प्राकृ ६१)। कृ पढावणिज्ज, पढाविअव्व (प्राकृ ६१)।

पढावअ वि [पाठक] अध्यापक (प्राकृ ६०)।

पढावण न [पाठन] पढाना (कुप्र ६०)।

पढाविअ वि [पाठित] पढाया हुआ (सुपा ४५३, कुप्र ६१)।

पढाविअवत वि [पाठितवन्] जिसने पढाया हो वह (प्राकृ ६१)।

पढाविउ, पढाविर वि [पाठयितृ] अध्यापक (प्राकृ ६०)।

पढि, पढिअ देखो पढ = पठ्।

पढिअ वि [पठित] पढा हुआ (कुमा, प्रासू १०८)।

पढिज्जत, पढिज्जमाण देखो पढ = पठ्।

पढिर वि [पठितृ] पढनेवाला (मण)।

पढुक्क वि [प्रढौकित] भेंट के लिए उपस्था-पित (भवि)।

पढुम देखो पढम (हे १, ५५, नाट—विक्र २६)।

पढेयव्व देखो पढ = पठ्।

पढे देखो पढाव। पढेइ (प्राकृ ६०)।

उवा)। पमजिया (आचा)। वकृ. पमज्जेमाण (ठा ७)। सकृ पमज्जित्ता (भग, उवा)। हेकृ. पमज्जित्तु (पि ५७७)।

पमज्जण न [प्रमार्जन] मार्जन, भूमि-शुद्धि (ग्रत)।

पमज्जणिया } स्त्री [प्रमार्जनी] झाड़ू, भूमि
पमज्जणी } साफ करने का उपकरण (णाया १, ७, धर्म ३)।

पमज्जय वि [प्रमार्जक] प्रमार्जन करनेवाला (दे ५, १८)।

पमज्जिअ वि [प्रमृष्ट, प्रमार्जित] साफ किया हुआ (उवा, महा)।

पमत्त वि [प्रमत्त] १ प्रमाद-युक्त, असावधान, प्रमादी, बेदरकार (उव, अभि १८५, प्रासू ६८)। २ न छठवाँ गुण-स्थानक (कम्म ४, ४७, ५६)। ३ प्रमाद (कम्म २)। °जोग पु [°योग] प्रमाद-युक्त चेष्टा (भग)। °संजय पु [°संयत] प्रमादी साधु, प्रमाद-युक्त मुनि (भग ३, ३)।

पमद देखो पमय (स्वप्न ५१, कप्पू)।

पमदा देखो पमया (नाट—शकु २)।

पमद्द सक [प्र + मृद्] १ मर्दन करना। २ विनाश करना। ३ कम करना। ४ चूर्ण करना। ५ रुई की पूणी—पूनी बनाना। वकृ पमद्दमाण (पिंड ५७४)।

पमद्द पु [प्रमर्द] १ ज्योतिष शास्त्र में प्रसिद्ध एक योग (सम १३, सुज्ज १०, ११)। २ संघर्ष, समर्द (राज)। ३ वि मर्दन करनेवाला। ४ विनाशक, 'सारं मण्णइ सव्वं पच्चक्खाणं खु भवदुहपमद्द' (संबोध ३७)।

पमद्दण न [प्रमर्दन] १ चूरना, चूर्ण करना (राय)। २ नाश करना। ३ कम करना (सम १२२)। ४ रुई की पूणी करना (पिंड ६०३)। ५ वि विनाश करनेवाला (पचा १४, ४२)।

पमद्दय वि [प्रमर्दक] प्रमर्दन-कर्त्ता (दसनि १०, ३०)।

पमद्दि वि [प्रमर्दिन्] प्रमर्दन करनेवाला (औप, पि २६१)।

पमय पुं [प्रमद] १ आनन्द, हर्ष (काल, श्रा २७)। २ न. धतूरे का फल। °च्छी स्त्री [°क्षी] स्त्री, महिला (सुपा २३०)। °वण न [°वन] राजा का अन्त पुर-स्थित वह वन या बगीचा जहाँ राजा रानियों के साथ क्रीडा करे (से ११, ३७, णाया १, ८, १३)।

पमया स्त्री [प्रमदा] उत्तम स्त्री, श्रेष्ठ महिला (उव, बृह ४)।

पमह पु [प्रमथ] शिव का अनुचर (पाअ)। °णाह पु [°नाथ] महादेव (मुमु १५०)। °हिव पु [°धिप] शिव, महादेव (गा ४४८)।

पमा सक [प्र + मा] सत्य-सत्य ज्ञान करना। कर्म पमीयए (विसे ६४८)।

पमा स्त्री [प्रमा] १ प्रमाण, परिमाण, 'पीअ-लधाउविणिम्मिअविहत्थिपमपाहुलिआाहरण' (कुमा)। २ प्रमाण, न्याय, 'अतिप्पसगो पमामिद्धो' (धर्मसं ६८१)।

पमा° देखो पमाय = प्रमाद (वव १)।

पमाइ वि [प्रमादिन्] प्रमादी, बेदरकार (सुपा ५४३, उव, आचा)।

पमाइअव्व देखो पमाय = प्र + मद्।

पमाइल्ल देखो पमाइ, 'धम्मपमाइल्ले' (उप ७२८ टी)।

पमाण सक [प्र + मानय्] विशेष रीति से मानना, आदर करना। कृ पमाणणिज्ज (श्रा २७)।

पमाण न [प्रमाण] १ यथार्थ ज्ञान, सत्य ज्ञान। २ जिससे वस्तु का सत्य-सत्य ज्ञान हो वह, सत्य ज्ञान का साधन (अणु)। ३ जिससे नाप किया जाय वह, 'अणुप्पमाणंपि' (श्रा २७, भग, अणु)। ४ नाप, माप, परिमाण (विचार ५४४, ठा ५, ३; जीवस ६४, भग, विपा १, २)। ५ संख्या (अणु, जी २६)। ६ प्रमाण शास्त्र, न्याय-शास्त्र, तर्क-शास्त्र, 'लक्खणसाहित्तपमाणजोइसाईणि सा पढइ' (सुपा १०३)। ७ पुंन. सत्य रूप से जिसका स्वीकार किया जाय वह। ८ माननीय, आदरणीय। ९ सच्चा, सही, ठीक-ठीक, यथार्थ, 'कमागओ जो य जेसिं किल धम्मो सो य पमाणो तेसिं' (सुपा ११०, श्रा १४), 'सुचिरंपि अच्छमाणो नलथभो
पिच्छ इच्छुवाडम्मि।
कीस न जायइ महुरो जइ
संसग्गी पमाणं ते' (प्रासू ३३)।
°वाय पुं [°वाद] न्याय-शास्त्र, तर्क-शास्त्र (सम्मत्त ११७)। °संवच्छर पु [°संवत्सर] वर्ष-विशेष (सुज्ज १०, २०)।

पमाण सक [प्रमाणय्] प्रमाण रूप से स्वीकार करना। पमाण, पमाणह (पिंग)। वकृ. पमाणंत (उवर १८६)। कृ पमाणियव्व (सिरि ६१)।

पमाणिअ वि [प्रमाणित] प्रमाण रूप से स्वीकृत (सुपा ११०, श्रा १२)।

पमाणिआ } स्त्री [प्रमाणिका, प्रमाणी]
पमाणी } छन्द विशेष (पिंग)।

पमाणीकर अक [प्रमाणी + कृ] प्रमाण करना, सत्य रूप से स्वीकार करना। कर्म पमाणीकरीअदि (शौ) (पि ३२८)। संकृ. पमाणीकिअ (नाट—मालवि ४०)।

पमाद देखो पमाय = प्र + मद्। कृ पमादेयव्व (णाया १, १—पत्र ६०)।

पमाद देखो पमाय = प्रमाद (भग, औप; स्वप्न १०६)।

पमाय अक [प्र + मद्] प्रमाद करना, बेदरकारी करना। पमायइ, पमायए (उव, पि ४६०)। वकृ पमायंत (सुपा १०)। कृ पमाइअव्व (भग)।

पमाय पुं [प्रमाद] १ कर्तव्य कार्य में अप्रवृत्ति और अकर्तव्य कार्य में प्रवृत्ति रूप असावधानता, बेदरकारी (आचा, उत ४, ३२, महा, प्रासू ३८, १३४)। २ दुःख, कष्ट, 'समग्गलोयाण वि जा विमायासमा समुप्पाइयसुप्पमाया' (सत्त ३५)।

पमार पुं [प्रमार] १ मरण का प्रारम्भ (भग १५)। २ बुरी तरह मारना (ठा ५, १)।

पमारणा स्त्री [प्रमारणा] बुरी तरह मारना (वव ३)।

पमिय वि [प्रमित] परिमित, नापा हुआ, 'अंगुलमूलासंखिअभागप्पमिया उ होंति सेढीओ' (पंच २, २०)।

पमिलाण वि [प्रम्लान] अतिशय मुरझाया हुआ (ठा ३, १, धर्मवि ५५)।

पमिलाय अक [प्र + म्लै] मुरझाना, 'पण्णन्नाय परेण जोणी पमिलायए महिलियाणं' (तंदु ४)।

पणव देखो पणम। पणवइ (भवि)। पणवह (हे २, १९५)। वकृ पणवंत (भवि)।

पणव पुं [प्रणव] ओंकार, 'ओं' अक्षर (सिरि १६६)।

पणव पुं [पणव] पटह, ढोल, वाद्य-विशेष (औप; कप्प, अंत)।

पणवणिय देखो पणवन्निय (औप)।

पणवण्ण } देखो पणपन्न (पि २६५, २७३;
पणवन्न } भग; हे २, १७४ टि)।

पणवन्निय पुं [पणपन्निक] व्यन्तर देवों की एक जाति (पण्ह १, ४)।

पणविय देखो पणमिय = प्रणत (भवि)।

पणवीसी स्त्री [पञ्चविंशतिका] पचीस का समूह (संबोध २५)।

पणस पुं [पनस] वृक्ष-विशेष, कटहल या कटहर (पि २०८; नाट—मृच्छ २१८)।

पणसुंदरी स्त्री [पणसुन्दरी] वेश्या (धर्मवि १२७)।

पणाम सक [अर्पय्] अर्पण करना, देने के लिए उपस्थित करना। पणामइ (हे ४, ३९), 'वंदिमो य पणयाण कल्लाणाइं पणामइ' (सुपा ३६३)।

पणाम सक [प्र + नमय्] नमाना। पणामेइ (महा)।

पणाम सक [उप + नी] उपस्थित करना। पणामेइ (प्राकृ ७१)।

पणाम पुं [प्रणाम] नमस्कार, नमन (दे ७, ९; भवि)।

पणामणिआ स्त्री [दे] स्त्रीविषयक प्रणय (दे ६, ३०)।

पणामय वि [अर्पक] देनेवाला (सूअ १, २, २)।

पणामय वि [प्रणामक] १ नमानेवाला। २ शब्द आदि विषय (सूअ १, २, २, २७)।

पणामिअ वि [अर्पित] समर्पित, देने के लिए धरा हुआ (पाअ; कुमा); 'अपणामियपि गहिअं कुसुमसरेण महुमासलच्छीए मुहं' (हेका ५०)।

पणामिअ वि [प्रणामित] नमाया हुआ (से ४, ३१, गा २२)।

पणामिअ वि [प्रणमित] नत, नमा हुआ, 'पणामिया सायरं' (स ३१६)।

पणायक } वि [प्रणायक] ले जानेवाला,
पणायग } 'निव्वाणगमणसग्गप्पणायकाइं' (पण्ह २, १; पण्ह २, १ टी; वव १)।

पणाल पुं [प्रणाल] मोरी, पानी आदि जाने का रास्ता (से १३, ५४, उर १, ५, ६)।

पणालिआ स्त्री [प्रणालिका] १ परम्परा (सूअ १, १३)। २ पानी जाने का रास्ता (कुमा)।

पणाली स्त्री [प्रणाली] मोरी, पानी जाने का रास्ता (गउड)।

पणाली स्त्री [प्रनाली] शरीर-प्रमाण लम्बी लाठी (पण्ह १, ३—पत्र ५४)।

पणास सक [प्र + नाशय्] विनाश करना। पणासेइ, पणासए (महा)।

पणास पुं [प्रणाश] विनाश, उच्छेदन (श्रावम)।

पणासण वि [प्रणाशन] विनाश करनेवाला; 'सव्वपावप्पणासणो' (पडि; कप्प)। स्त्री. °णी (श्रा ४६)।

पणासिय वि [प्रणाशित] जिसका विनाश किया गया हो वह (कप्प; भवि)।

पणिअ वि [दे] प्रकट, व्यक्त (दे ६, ७)।

पणिअ वि [प्रणीत] रचित (सुर्मनि २१२)।

पणिअ न [पणित] १ वेचने योग्य वस्तु (दे १, ७४; ६, ७; णाया १, १)। २ व्यवहार, लेन-देन, क्रय-विक्रय (भग १५, णाया १, ३—पत्र ९५)। ३ शर्त, होड, एक तरह का जुआ (मास ९२)। °भूमि, °भूमी स्त्री [°भूमि, °भूमी] १ अनार्य देश-विशेष, जहाँ भगवान् महावीर ने एक चौमासा विताया था (राज, कप्प)। २ विक्रेय वस्तु रखने का स्थान (भग १५)। °साला स्त्री [°शाला] हाट, दूकान (बृह २; निचू १६)।

पणिअ न [पण्य] विक्रेय वस्तु (सुपा २७५; औप, आचा)। °गिह, °घर न [°गृह] दूकान, हाट (निचू १२; आचा २, २, २)। °साला स्त्री [°शाला] हाट, दूकान (आचा)। °विण पुं [°पण] दूकान, हाट (आचा)।

पणिअ वि [प्रणीत] सुन्दर, मनोहर। °भूमि स्त्री [°भूमि] मनोज्ञ भूमि (भग १५)।

पणिअट्ठ वि [पणितार्थ] चोर (दस ७, ३७)।

पणिअसाला स्त्री [पण्यशाला] वखार, अन्न या माल रखने का घिरा हुआ स्थान, गोदाम (आचा २, २, २, १०)।

पणिआ स्त्री [दे] करोटिका, सिरकी हड्डी, खोपड़ी (दे ६, ३)।

पणिंदि } वि [पञ्चेन्द्रिय] त्वक्, जीभ,
पणिंदिय } नाक, आँख और कान इन पाँचों इन्द्रियोंवाला प्राणी (कम्म २, ४, १०, १८, १९)।

पणिद्ध वि [प्रस्निग्ध] विशेष स्निग्ध (अणु २१५)।

पणिधाण देखो पडिहाण (अभि १८९; नाट—विक्र ७२)।

पणिधि पुंस्त्री [प्रणिधि] माया, छल, 'पुणो पुणो पणिधि(? धी)ए हरित्ता उवहसे जणं' (सम ५०)। देखो पणिहि।

पणियत्थ वि [प्रणिवसित] पहना हुआ (औप)।

पणिलिअ वि [दे] हत, मारा हुआ (षड्)।

पणिवइअ वि [प्रणिपतित] नत, नमा हुआ, 'पणिवइयवच्छला णं देवाणुप्पिया। उत्तमपुरिसा' (णाया १, १६—पत्र २१६, स ११, उप ७६८ टी)।

पणिवइअ वि [प्रणिपतित] जिसको नमस्कार किया गया हो वह, 'नरपहूहिं पणिवइओ वीरो' (धर्मवि ३७)।

पणिवय सक [प्रणि + पत्] नमन करना, वन्दन करना। पणिवयामि (कप्प, सार्ध ६१)।

पणिवाय पुं [प्रणिपात] वन्दन, नमस्कार (सुर ४, ६८; सुपा २८, २२२, महा)।

पणिहा सक [प्रणि + धा] १ एकाग्र चिन्तन करना, ध्यान करना। २ अपेक्षा करना। ३ अभिलाषा करना। ४ चेष्टा करना, प्रयत्न करना। संकृ. पणिहाय (णाया १, १०, भग १५)।

पणिहाण न [प्रणिधान] १ एकाग्र ध्यान, मनो-नियोग, अवधान (उत्त १६, १४, स ८७, प्रामा)। २ प्रयोग, व्यापार, चेष्टा, 'तिविहे पणिहाणे पण्णत्ते; तं जहा—मणपणिहाणे, वयपणिहाणे, कायपणिहाणे' (ठा ३, १, ४, १; भग १८; उवा)। ३ अभिलाष, कामना;

पम्हस सक [वि + स्मृ] विस्मरण करना, भूल जाना। पम्हसइ (पड्), पम्हसिज्जासु (गा ३४८)।

पम्हसाविय वि [विस्मारित] भुलाया हुआ, विस्मृत कराया हुआ (सुख २, ५)।

पम्हा स्त्री [पद्मा] १ लेश्या-विशेष, पद्म-लेश्या, आत्मा का शुभतर परिणाम-विशेष (कम्म ३, २२, श्रा २६)। २ विजय-क्षेत्र विशेष (राज)।

पम्हार पु [दे] अपमृत्यु, बेमौत मरण (दे ६, ३)।

पम्हावई स्त्री [पक्ष्मावती] १ विजय-विशेष की एक नगरी (ठा २, ३-इक)। २ पर्वत-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)।

पम्हुट्ठ वि [दे] १ नष्ट, नाश प्राप्त (हे ४; २५८)। २ विस्मृत, 'पम्हुट्ठ विम्हरिअ' (पाअ), 'किं थ तय पम्हुट्ठं' (णाया १, ८—पत्र १४८, विचार २३८)।

पम्हुत्तरवडिसग न [पक्ष्मोत्तरावतसक] ब्रह्मलोक मे स्थित एक देव-विमान (सम १५)।

पम्हुस सक [वि + स्मृ] भूलना, विस्मरण करना। पम्हुसइ (हे ४, ७५)।

पम्हुस सक [प्र+मृश्] स्पर्श करना। पम्हुमइ, पम्हुस (हे ४, १८४, कुमा ७, २६)।

पम्हुस सक [प्र+मुष्] चोराना, चोरी करना। पम्हुसइ, पम्हुसेइ, पम्हुसति (हे ४, १८४, सुपा १३७, कुमा ७, २६)।

पम्हुसण न [विस्मरण] विस्मृति (पचा १५, ११)।

पम्हुसिअ वि [विस्मृत] जिसका विस्मरण हुआ हो वह (कुमा, उप ७६८ टी)।

पम्हुह सक [स्मृ] स्मरण करना, याद करना। पम्हुहइ (हे ४, ७४)।

पम्हुहण वि [स्मर्तृ] स्मरण करनेवाला (कुमा)।

पय सक [पच्] पकाना, पाक करना। पयइ (हे ४, ९०)। वक्र पयत (कप्प)। सक्ट. पइउ (कुप्र २६६)।

पय सक [पद्] १ जाना। २ जानना। ३ विचारना। पयइ (विसे ४०८)।

पय पुंन [पयस्] १ क्षीर, दूध, 'पओ' (हे १, ३२, ओघ १२, पाअ)। २ पानी, जल (सुपा १३६, पाअ)। °हर देखो पओहर (पिंग)।

पय पु [प्रज] प्राणी, जन्तु (आचा)।

पय पुंन [पद] १ विभक्ति के साथ का शब्द, 'पयमत्थवायग जोयग च त नामियाइ पचविह' (विसे १००३, प्रासू १३८; श्रा २३)। २ शब्द-समूह, वाक्य, 'उवएसपया इह समक्खाया' (उप १०३८, श्रा २३)। ३ पैर, पाँव, चरण, 'जाण च तज्जणातज्जणीइ लग्गो ठवेमि मदपए, कव्वपहे बालो इव', 'जाव न सत्तट्ठ पए पच्चाहुत्त नियत्तो सि' (सुपा १, धर्मवि ५४, सुर ३, १०७, श्रा २३)। ४ पाद-चिन्ह, पदाङ्क (सुर २, २३२, सुपा ३५४, श्रा २३, प्रासू ५०)। ५ पद्य का चौथा हिस्सा (अणु)। ६ निमित्त, कारण (आचा)। ७ स्थान, 'अवमाणपयं हि सेव त्ति' (सुर २, १९७, श्रा २३)। ८ पदवी, अधिकार; 'जुवरायपए कि नवि अहिसिच्चइ देव मे पुत्तो ?' (सुर २, १७५, महा)। ९ त्राण, शरण। १० प्रदेश। ११ व्यवसाय (श्रा २३)। १२ कूट, जाल-विशेष (सूअ १, १, २, ८)। °खेम न [°क्षेम] शिव, कल्याण, 'कुव्वइ अ सो पयखेममप्पणो' (दस ९, ४, ६)। °त्थ पु [°स्थ] पदाति, पैदल, प्यादा, 'तुरएण सह तुरगो पाइक्को सह पयत्थेण' (पउम ६, १८२)। °पास पुं [°पाश] वागुरा, जाल आदि बन्धन (सूअ १, १, २, ८, ९)। °रक्ख पुं [°रक्ष] पदाति, प्यादा (भवि, हे ४, ४१८)। °विग्गह पु [°विग्रह] पदविच्छेद (विसे १००६)। °विभाग पु [°विभाग] उत्सर्ग और अपवाद का यथा-स्थान निवेश, सामाचारी-विशेष (आव १)। °वीढ देखो पाय-वीढ (पुव ४०, सुपा ६५६)। °समास पुं [°समास] पदो का समुदाय (कम्म १, ७)। °णुसारि वि [°नुसारिन्] एक पद मे अनेक अनुक्त पदो का भी अनुसधान करने की शक्तिवाला (औप, बृह १)। °णुसारिणी स्त्री [°नुसारिणी] बुद्धि-विशेष, एक पद के श्रवण से दूसरे अश्रुत पदों का स्वय पता लगानेवाली बुद्धि (पण्ण २१)।

पय (अप) देखो पत्त = प्राप्त (पिंग)।

पय° देखो पया = प्रजा। °पाल वि [°पाल] १ प्रजा का पालक। २ पुं नृप-विशेष (सिरि ४५)।

°पय वि [°प्रद] देनेवाला, 'पीइप्पयं' (रमा)।

पयइ स्त्री [प्रकृति] सधि का अभाव (अणु ११२)।

पयइ देखो पगइ (गा ३१७, गउड, महा; नव २१, भत्त ११४; कप्पू; कुप्र ३४६)।

पयइंद पुं [पतगेन्द्र, पदकेन्द्र] वानव्यन्तर-जातीय देवो का इन्द्र (ठा २, ३)।

पयई देखो पयवी (गउड)।

पयग पुं [पतङ्ग] १ सूर्य, रवि (पाअ), 'तो हरिसपुलइयगो चक्को इव दिट्ठउग्गयपयगो' (उत्र ७२८ टी)। २ रग-विशेष, रञ्जन-द्रव्य-विशेष (उर ६, ४, सिरि १०५७)। ३ शलभ, फतिगा, उड़नेवाला छोटा कीट (णाया १, १७; पाअ)। ४—५ देखो पयय = पतग, पदक, पदग (पण्ह १, ४—पत्र ६८, राज)। °वीहिया स्त्री [°वीथिका] १ शलभ का उड़ना। २ भिक्षा के लिए पतग की तरह चलना, बीच मे दो चार घरो को छोड़ते हुए भिक्षा लेना (उत्त ३०, १९)। °वीही स्त्री [°वीथी] वही पूर्वोक्त अर्थ (उत्त ३०, १९)।

पयंचुल पुन [प्रपञ्चुल] मत्स्यबन्धन-विशेष, मछली पकड़ने का एक प्रकार का जाल (विपा १, ८—पत्र ८५)।

पयड वि [प्रचण्ड] १ अत्युग्र, तीव्र, प्रखर। २ भयानक, भयकर (पण्ह १, १, ३, ४; उव)।

पयंड वि [प्रकाण्ड] अत्युग्र, उत्कट (पण्ह १, ४)।

पयत देखो पय = पच्।

पयप अक [प्र + कम्प्] अतिशय कांपना। वक्र पयपमाण (स ५९९)।

पयप सक [प्र + जल्प्] १ कहना, बोलना। २ बकवाद करना। पयपए (महा)। सक्र पयंपिऊण, पयपिऊणं (महा, पि ५८५)। कृ पयंपिअव्व (गा ४५०, सुपा ५५२)।

१२)। °परिसह, °परीसह पु [°परिषह, °परीषह] १ बुद्धि का गर्व न करना। २ बुद्धि के अभाव में खेद न करना (भग ८, ८, पव ८६)। °मय पुं [°मद] बुद्धि का अभिमान (सूअ १, १३)। °वंत वि [°वत्] ज्ञानवान् (राज)।

पण्णाग वि [प्रज्ञ] विद्वान् (पचा १७, २७)।

पण्णाड देखो पन्नाड पण्णाडइ (दे ६, २६)।

पण्णाण न [प्रज्ञान] १ प्रकृष्ट ज्ञान। २ सम्यग् ज्ञान (सम ५१)। ३ आगम, शास्त्र (आचा)। °व वि [°वत्] १ ज्ञानवान्। २ शास्त्रज्ञ (आचा)।

पण्णारह (अप) त्रि व [पञ्चदशन्] पनरह (पिंग)।

पण्णावीसा स्त्री [पञ्चविंशति] पचीस, वीस और पांच, २५ (षड्)।

पण्णास स्त्रीन [दे पञ्चाशत्] पचास, ५० (दे ६, २७, षड्, पि २७३, ४४५, कुमा)। देखो पन्नास।

पण्णासग त्रि [पञ्चाशक] पचास वर्ष की उम्र का (तंदु १७)।

पण्णुवीस देखो पणुवीस (स १४६)।

पण्ह पुंस्त्री [प्रश्न] प्रश्न, पृच्छा (हे १, ३५, कुमा)। स्त्री °ण्हा (हे १, ३५)। (हे १, ३५)। °वाहण न [°वाहन] जैन मुनि-गण का एक कुल (ती ३८)। °वागरण न [°व्याकरण] ग्यारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ (पण्ह २, ५, ठा १०, विपा १, १, सम १)। देखो पसिण।

पण्हअ अक [प्र+स्नु] झरना, टपकना, 'एक्को पण्हअइ थणो' (गा ४०६, ४६२ अ)।

पण्हअ } पु [दे प्रस्नव] १ स्तन-धारा,
पण्हव } स्तन से दूध का झरना (दे ६, ३, पि २३१, राज, अत ७, षड्। २ झरन, टपकना, 'दिट्ठिपण्हव' (पिंड ४८७)।

पण्हव पु [पह्लव] १ अनार्य देश-विशेष। २ वि उस देश का निवासी (पण्ह १, १—पत्र १४)।

पण्हवण न [प्रस्नवन] क्षरण, झरना (विपा १, २)।

पण्हविअ देखो पण्हुअ (दे ६, २५)।

पण्हा देखो पण्ह।

पण्हि पुंस्त्री [पार्ष्णि] फीली का अधोभाग, गुल्फ की नीचला हिस्सा, एड़ी (पण्ह १, ३, दे ७, ६२)।

पण्हिया स्त्री [प्रश्निका] एड़ी, गुल्फ का अधोभाग, 'भेलित्तु पण्हियाओ चरणे वित्थारिऊण वाहिरओ' (चेइय ४८६)।

पण्हुअ वि [प्रस्नुत] १ क्षरित, झरा हुआ। २ जिसने झरने का प्रारम्भ किया हो वह, 'पण्हुयपयोहराओ' (पउम ७६, २०, हे २, ७५)।

पण्हुइर वि [प्रस्नोतृ] झरनेवाला, 'हत्थप्फंसेण जरग्गवीवि पण्हअइ दोहअगुणेण। अवलोअणपण्हुइरिं पुत्तअ पुण्णेहि पाविहिसि' (गा ४६२)।

पण्होत्तर न [प्रश्नोत्तर] सवाल-जवाब (सुर १६, ४१, कप्पू)।

पतणु देखो पयणु (राज)।

पतार सक [प्र + तारय्] ठगना। संकृ पतारिअ (अभि १७१)।

पतारग वि [प्रतारक] वञ्चक, ठग (धर्मसं १४७)।

पतिण्ण } वि [प्रतीर्ण] पार पहुँचा हुआ,
पतिन्न } निस्तीर्ण (राज, पण्ह २, १—पत्र ६६)।

पतुण्ण } न [प्रतुन्न] वल्कल का बना हुआ
पतुन्न } वस्त्र (आचा २, ५, १, ७)।

पतेरस } वि [प्रत्रयोदश] प्रकृष्ट तेरहवाँ।
पतेलस } °वास न [°वर्ष] १ प्रकृष्ट तेरहवाँ वर्ष। २ प्रकृत तेरहवाँ वर्ष। ३ प्रस्थित तेरहवाँ वर्ष (आचा)।

पत्त वि [प्राप्त] मिला हुआ, पाया हुआ (कप्प, सुर ४, ७०, सुपा ३५७, जी ४४, द ४६, प्रासू ३१, १६२, १८२, गा २४१)। °काल, °याल न [°काल] १ चैत्य-विशेष (राज)। २ वि अवसरोचित (स ४६०)।

पत्त न [पत्र] १ पत्ती, पत्ता, दल, पर्ण (कप्प, सुर १, ७२, जी १०, प्रासू ६२)। २ पक्ष पंख, पाँख (णाया १, १—पत्र २४)। ३ जिसपर लिखा जाता है वह, कागज, पन्ना (स ६२, सुर १, ७२, से २, १७३)। °च्छेज्ज न [°च्छेद्य] कला-विशेष (औप, स ६५)। °मंत वि [°वत्] पत्रवाला (णाया १, १)। °रह पुं [°रथ] पक्षी (पाअ)। °लेहा स्त्री [°लेखा] चन्दनादि से पत्र के आकृतिवाली रचना-विशेष, भूषा का एक प्रकार (अजि २८)। °वल्ली स्त्री [°वल्ली] १ पत्रवाली लता। २ मुँह पर चन्दन आदि से की जाती पत्र-श्रेणी-तुल्य रचना (कुप्र ३६५)। °विंट न [°वृन्त] पत्र का बन्धन (पि ५३)। °विंटिय वि [°वृन्तक, °वृन्तीय] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष पत्र वृन्त में उत्पन्न होता एक प्रकार का त्रीन्द्रिय जन्तु (पण्ण १—पत्र ४५)। °विच्छुय पु [°वृश्चिक] जीव-विशेष, एक तरह का वृश्चिक, चतुरिन्द्रिय जीवो की एक जाति (जीव १)। °वेंट देखो °विंट (पि ५३)। °सगडिआ स्त्री [°शकटिका] पतो से भरी हुई गाडी (भग)। °समिद्ध वि [°समृद्ध] प्रभूत पत्तेवाला (पाअ)। °हार पुं [°हार] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (पण्ण १—पत्र ४५, उत्त ३६, १३८)। °हार पु [°हार] पत्ती पर निर्वाह करनेवाला वानप्रस्थ (औप)।

पत्त न [पात्र] १ भाजन (कुमा, प्रासू ३६)। २ आधार, आश्रय, स्थान (कुमा)। ३ दान देने योग्य गुणी लोक (उप ६४८ टी, महा)। ४ लगातार वत्तीस उपवास (सवोध ५८)। °विध पु [°वन्ध] पात्रों को बाँधने का कपड़ा (ओघ ६६८)। देखो पाय = पात्र।

पत्त वि [प्रात्त] प्रसारित (कप्प)।

पत्तइअ वि [प्रत्ययित] विश्वस्त (भग)।

पत्तइअ वि [पत्रकित] १ अल्प पत्रवाला। २ कुत्सित पत्रवाला (णाया १, ७—पत्र ११६)।

पत्तउर पुं [दे] वनस्पति-विशेष, एक प्रकार का गाछ (पण्ण १—पत्र ३१)।

पत्तच्छेज्ज न [पत्रच्छेद्य] वाण से पत्ती वेधने की कला (जं २ टी पत्र १३७)। २ नक्काशी का काम, खोदने का काम (आचा २, १२, १)।

पत्तट्ठ वि [दे प्राप्तार्थ] १ वहु-शिक्षित, विद्वान्, अति कुशल (दे ६, ६८, सुर १,

[°तीर्थिक] भिन्न दर्शनवाला (भग)। °एस पु [°देश] विदेश, भिन्न, अन्य देश (भवि)। °ओ अ [°तस्] १ बाद में, परली—दूसरी तरफ, 'अडवीए परओ' (महा)। २ भिन्न मे, इतर मे (कुमा)। ३ इतर से, अन्य से (सूत्र १, १२)। °गणिच्चय वि [°गणीय] भिन्न गण से संबन्ध रखनेवाला। स्त्री °च्चिया (निचू ८)। °गरिहज्झाण न [°गर्हाध्यान] इतर की निन्दा का विचार (आउ)। °घाय पु [°घात] १ दूसरे को आघात पहुँचाना। २ पुन कर्म-विशेष जिसके उदय मे जीव अन्य बलवानो की भी दृष्टि मे अजेय समझा जाता है वह कर्म, 'परघाउदया पाणी परेसि बलीणपि होइ दुद्धरिसो' (कम्म १, ४४)। °चित्तण्णु वि [°चित्तज्ञ] अन्य के मन के भाव को जाननेवाला (उप १७९ टी)। °च्छंद, °छंद पु [°च्छन्द] १ पर का अभिप्राय, अन्य का आशय (ठा ४, ४, भग २५, ७)। २ पराधीन, परतन्त्र (राज, पाग्र)। °जाणुअ वि [°ज्ञ] १ पर को जाननेवाला। २ प्रकृष्ट जानकार (प्राकृ १८)। °ट्ठ पु [°र्थ] परोपकार (राज)। °ट्ठा स्त्री [°र्थ] दूसरे के लिए, 'कड परट्ठाए' (आचा)। °णिदज्झाण न [°निन्दाध्यान] अन्य की निन्दा का चिन्तन (आउ)। °ण्णुअ देखो °जाणुअ (प्राकृ १८)। °तंत वि [°तन्त्र] पराधीन, परायत्त (सुपा २३३)। °तित्थिअ देखो °उत्थिय (भग, सम्म ८५)। °तीर न [°तीर] सामनेवाला किनारा (पाग्र)। °त्त न [°त्व] १ भिन्नत्व, पार्थक्य। २ वैशेषिक दर्शन मे प्रसिद्ध गुण-विशेष (विसे २४९१)। °त्त अ [°त्र] १ जन्मान्तर में, परलोक मे (सुपा ५०८)। २ न जन्मान्तर, 'ते इहअपि परत्ते नरयगइ जंति नियमेण' (सुपा ५२१), 'इह लोए च्चिय दीसइ सग्गो नरओ य किं परत्तेण (वज्जा १३८)। °त्थ अ [°त्र] जन्मान्तर में, 'इहं परत्थावि य जं विरुद्धं न किज्जए तंपि सया निसिद्धं' (सत्त ३७, सुर १४, ३३, उव)। °त्थ देखो °ट्ठ (सुर ४, ७३)। °त्थी स्त्री [°स्त्री] परकीय स्त्री (प्रासू १५५)। °दार पुन [°दार] परकीय स्त्री (पडि), 'जो वज्जइ परदार सो सेवइ नो कयाइ परदारं' (सुपा ३६९), 'दव्वेण अप्पकालं गहिया वेसावि होइ परदारं' (सुपा ३८०)। °दारि वि [°दारिन्] परस्त्री-लम्पट, 'ता एस वसुमईए कएण परदारियाए आयाओ' (सुर ६, १७९)। °पक्ख वि [°पक्ष] वैधर्मिक, भिन्न धर्म का अनुयायी (द्र १७)। °परिवाइय वि [°परिवादिक] इतर के दोषो को बोलनेवाला, पर-निन्दक (ओप)। °परिवाय पुं [°परिवाद] १ पर के गुण-दोषो का विप्रकीर्ण वचन (ओप, कप्प)। २ पर-निन्दा, इतर के दोषो का परिकीर्त्तन (ठा १, ४, ४)। ३ अन्य के सद्‌गुणो का अपलाप (पच्च)। °परिवाय पु [°परिपात] अन्य का पातन, दोषोद्घाटन-द्वारा दूसरे को गिराना (भग १२, ५)। °पुट्ठ देखो °उट्ठ (पण्ण १७, स ४१९)। °भव पु [°भव] आगामी जन्म (ओप, पण्ह १, १)। °भविअ वि [°भविक] आगामी जन्म से सबन्ध रखनेवाला (भग, ठा ६)। °भाग पुं [°भाग] १ श्रेष्ठ अंश। २ अन्य का हिस्सा। ३ अत्यन्त उत्कर्ष (उप पृ ६७)। °महेला स्त्री [°महेला] १ उत्तम स्त्री। २ परकीय स्त्री (सुपा ४७०)। °यत्त देखो °यत्त, 'परयत्तो परछंदो' (पाग्र)। °लोअ, °लोग पु [°लोक] १ इतर जन, स्वजन से भिन्न (उप ९८६ टी)। २ जन्मान्तर (पण्ह १, २, विसे १९५१, महा, प्रासू ७५, सण)। °वस वि [°वश] पराधीन, परतन्त्र (कुमा, सुपा २३७)। °वाइ पुं [°वादिन्] इतर दार्शनिक (ओप)। °वाय पुं [°वाद] १ इतर दर्शन, भिन्न मत (ओप)। २ श्रेष्ठ वादी (श्रा २३)। °वाय पु [°वाच्] १ सज्जन, सुजन। २ वि श्रेष्ठ वाणीवाला (श्रा २३)। °वाय वि [°वाज] १ श्रेष्ठ गतिवाला। २ पुं श्रेष्ठ अश्व (श्रा २३)। °वाय वि [°वाय] जानकार, ज्ञानी (श्रा २३)। °वाय वि [°पाक] १ सुन्दर रसोई बनानेवाला। २ पुं. रसोइया (श्रा २३)। °वाय पु [°पात] १ जुआड़ी, जुए का खेलाड़ी। २ अशुभ समय (श्रा २३)। °वाय पुं [°व्याद] ब्राह्मण, विप्र (श्रा २३)। °वाय पुं [°वाय] धनी जुलाहा, धनाढ्य तन्तुवाय (श्रा २३)। °वाय वि [°व्रात] १ प्रकृष्ट समूहवाला। २ न. सुभिक्ष समय का धान्य (श्रा २३)। °वाय पुं [°वात] ग्रीष्म समय का जलधि-तट (श्रा २३)। °वाय पु [°व्याच] धूर्त्त, ठग (श्रा २३)। °वाय वि [°पाय] अनीतिवाला (श्रा २३)। °वाय वि [°वाक] वेदज्ञ, वेदवित् (श्रा २३)। °वाय वि [°पातृ] १ दयालु, कारुणिक। २ खूब पान करनेवाला। ३ खूब मूतनेवाला। ४ पु प्रावृट् काल का यवास वृक्ष। ५ मद्य-व्यसनी (श्रा २३)। °वाय वि [°वाद] सुस्थिर (श्रा २३)। °वाय वि [°व्यातृ] १ श्रेष्ठ आच्छादक। २ पु वस्त्र, कपड़ा (श्रा २३)। °वाय वि [°वातृ] १ प्रकृष्ट वहन करनेवाला। २ पु. श्रेष्ठ तन्तुवाय, उत्तम जुलाहा। ३ महान् पवन (श्रा २३)। °वाय वि [°व्यागस्] १ अति बड़ा अपराधी, गुरुतर अपराधी (श्रा २३)। °वाय वि [°व्याप] प्रकृष्ट विस्तारवाला (श्रा २३)। °वाय वि [°वाक] १ जहाँ पर प्रकृष्ट बक-समूह हो वह स्थान। २ न. मत्स्य-परिपूर्ण सरोवर (श्रा २३)। °वाय वि [°व्याय] १ श्रेष्ठ वायुवाला। २ जहाँ पर पक्षियो का विशेष आगमन होता हो वह। ३ पु. अनुकूल पवन से चलता जहाज। ४ सुन्दर घर। ५ वनोद्देश, वन प्रदेश (श्रा २३)। °वाय वि [°वाय] १ जहाँ पानी का प्रकृष्ट आगमन हो वह। २ न जलधि मुख, समुद्र का मुँह। ३ पु महासमुद्र, महा सागर (श्रा १३)। °वाय वि [°व्याज] अन्य के पास-विशेष गमन करनेवाला। २ प्रार्थना-परायण (श्रा २३)। °वाय वि [°पाय] १ अत्यन्त हीन-भाग्य। २ नित्य-दरिद्र (श्रा २३)। °वाय वि [°वाप] १ प्रकृष्ट वपनवाला। २ पु. कृषक (श्रा २३)। °वाय वि [°पाप] १ महापापी। २ हत्या करनेवाला (श्रा २३)। °वाय पु [°पाक] १ कुम्भकार, कुम्हार। २ मुक्त जीव। ३ पहली तीन नरक-भूमि (श्रा २३)। °वाय वि [°पाग] वृक्ष-रहित, वृक्ष-वर्जित (श्रा २३)। °वाय वि [°वाज्] शत्रु-नाशक (श्रा २३)। °वाय पु [°पाद] महान् वृक्ष,

होता है (पण्ह १, १)। °सरीरनाम न [°शरीरनामन्] वही पूर्वोक्त अर्थ (सम ६७)।

पत्तेय वि [प्रत्येक] वाह्य कारण (णंदि १३०, १३१ टी)।

पत्थ सक [प्र + अर्थय्] १ प्रार्थना करना। २ अभिलाषा करना। ३ अटकाना, रोकना। पत्थेइ, पत्थेंति (उव, औप)। कर्म पत्थिज्जसि (महा)। वकृ. पत्थत, पत्थित, पत्थेअमाण (नाट—मालवि. २५, सुपा २१३, प्रासू १२०), 'कामे पत्थेमाणा अकामा जंति दुग्गइं' (उप ३५७ टी)। कवकृ. पत्थिज्जत, पत्थिज्जमाण (गा ४००, सुर १, २०, से ३, ३३, कप्प)। कृ. पत्थ, पत्थणिज्ज, पत्थेयव्व (सुपा ३७०, सुर १, ११६, सुपा १४८, पण्ह २, ४)।

पत्थ पुं [पार्थ] १ अर्जुन, मध्यम पाण्डव (स ६१२, वेणी १२६, कुमा)। २ पाञ्चाल देश के एक राजा का नाम (पउम ३७, ८)। ३ भद्दिलपुर नगर का एक राजा (सुपा ६२६)।

पत्थ पुं [प्राथ] १ प्रार्थन, प्रार्थना (राय)। २ दो दिनों का उपवास (संबोध ५८)।

पत्थ देखो पच्छ = पथ्य (गा ८१४, पउम १७, ६४, राज)।

पत्थ देखो पत्थ = प्र + अर्थय्।

पत्थ पु [प्रस्थ] १ कुडव का एक परिमाण (बृह ३, जीवस ८८, तदु २६)। २ सेतिका, एक कुडव का परिमाण (उप पृ ६६), 'पत्थगा उ जे पुरा आसी हीणमाणा उ तेधुणा' (वव १)।

पत्थत देखो पत्थ = प्र + अर्थय्।

पत्थत देखो पत्था।

पत्थग देखो पत्थय (राज)।

पत्थड पुं [प्रस्तर] १ रचना-विशेषवाला समूह (ठा ३, ४—पत्र १७६)। २ भवनो के बीच का अन्तराल भाग (पण्ण २, सम २५)।

पत्थड वि [प्रस्तृत] १ बिछाया हुआ। २ फैला हुआ (भग ६, ८)।

पत्थण न [प्रार्थन] प्रार्थना (महा, भवि)।

पत्थणया } स्त्री [प्रार्थना] १ अभिलाषा, पत्थणा } वाञ्छा (श्राव ४)। २ याचना, माँग। ३ विज्ञप्ति, निवेदन (भग १२, ५, सुर १, २, सुपा २६६, प्रासू २१)।

पत्थय देखो पत्थ = पथ्य (णाया १, १)।

पत्थय वि [प्रार्थक] अभिलाषा करनेवाला (सूअ १, २, २, १६, स २५३)।

पत्थय देखो पत्थ = प्रस्थ (उप १७६ टी, औप)।

पत्थयण न [पथ्यदन] शम्बल, पाथेय, मार्ग में खाने का खुराक, कलेवा (णाया १, १५, स १३०, उर ८, ७, सुपा ६२४)।

पत्थर सक [प्र + स्तृ] १ बिछाना। २ फैलाना। संकृ पत्थरेत्ता (कस, ठा ६)।

पत्थर पुं [प्रस्तर] पत्थर, पाषाण (औप, उव, पउम १७, ३६, सिरि ३३२),
'पत्थरेणाहओ कीवो पत्थरं डक्कुमिच्छई।
मिगारिओ सरं पप्प सरुप्पत्ति विमग्गई' (सुर ६, २०७)।

पत्थर न [दे] पाद-ताडन, लात (पड्)।

पत्थर देखो पत्थार (प्राप्र, संक्षि २)।

पत्थरण न [प्रस्तरण] बिछौना, 'खट्टापत्थरणयं तहा एगं' (धर्मवि १४७)।

पत्थरभल्लिअ न [दे] कोलाहल करना (दे ६, ३६)।

पत्थरा स्त्री [दे] चरण-घात, लात (दे ६, ८)।

पत्थरिअ पुं [दे] पल्लव, कोपल (दे ६,२०)।

पत्थरिअ वि [प्रस्तृत] बिछाया हुआ, 'पत्थरिअं अत्थुअं' (पाअ)।

पत्थव देखो पत्थाव (हे १, ६८, कुमा, पउम ५, २१६)।

पत्था अक [प्र + स्था] प्रस्थान करना, प्रवास करना। वकृ. पत्थत (से ३, ५७)।

पत्थाण न [प्रस्थान] प्रयाण, गमन (अभि ८१, अजि ६)।

पत्थार पुं [प्रस्तार] १ विस्तार (उवर ६६)। २ तृणवन। ३ पल्लवादि-निर्मित शय्या। ४ पिंगल-प्रसिद्ध प्रक्रिया-विशेष (प्राप्र)। ५ प्रायश्चित्त की रचना विशेष (ठा ६—पत्र ३७१, कस)। ६ विनाश (पिंड ५०१, ५११)।

पत्थारी स्त्री [दे] १ निकर, समूह (दे ६, ६६)। २ शय्या, बिछौना, गुजराती में 'पथारी' (दे ६, ६६, पाअ, सुपा ३२०)।

पत्थाव सक [प्र + स्तावय्] प्रारंभ करना। वकृ. पत्थावअन्त (हास्य १२२)।

पत्थाव पु [प्रस्ताव] १ अवसर। २ प्रसग प्रकरण (हे १, ६८, कुमा)।

पत्थिअ वि [प्रस्थित] १ जिसने प्रयाण किया हो वह (से २, १६, सुर ४, १६८)। २ न. प्रस्थान, गति, चाल (अजि ६)।

पत्थिअ वि [प्रार्थित] १ जिसके पास प्रार्थना की गई हो वह। २ जिस चीज की प्रार्थना की गई हो वह (भग, सुर ६, १८, १६, ६, उव)।

पत्थिअ वि [दे] शीघ्र, जल्दी करनेवाला (दे ६, १०)।

पत्थिअ वि [प्रार्थिक] प्रार्थी, प्रार्थना करनेवाला (उव)।

पत्थिअ वि [प्रास्थित] विशेष आस्थावाला, प्रकृष्ट श्रद्धावाला (उव)।

पत्थिअ° } स्त्री [दे] बाँस का बना हुआ पत्थिआ } भाजन-विशेष (ओघ ४७६)। °पिडग, °पिडय न [°पिटक] बाँस का बना हुआ भाजन-विशेष (विपा १, ३)।

पत्थिद देखो पत्थिअ = प्रस्थित, प्रार्थित (प्राकृ २५)।

पत्थिव पुं [पार्थिव] १ राजा, नरेश (णाया १, १६, पाअ)। २ वि. पृथिवी का विकार (राजा)।

पत्थी स्त्री [दे पात्री] पात्र, भाजन, 'अंबफरखोरपत्थि व माउआ मह पई विलुपति' (गा २४० अ)।

पत्थीण न [दे] १ स्थूल वस्त्र, मोटा कपड़ा। २ वि स्थूल, मोटा (दे ६, ११)।

पत्थुय वि [प्रस्तुत] १ प्रकरण-प्राप्त, प्राकरणिक (सुर ३, १६६, महा)। २ प्राप्त, लब्ध (सूअ १, ४, १, १७)।

पत्थुर देखो पत्थर = प्र + स्तृ। संकृ. पत्थुरेत्ता (कस)।

पत्थेअमाण, पत्थेंत, पत्थेमाण, पत्थेयव्व } देखो पत्थ = प्र + अर्थय्।

परग न [दे. परक] १ तृण-विशेष, जिससे फूल गूँथे जाते हैं (आचा २, २, ३, २०, सूअ २, २, ७)। २ धान्य-विशेष (सूअ २, २, ११)।

परग वि [पारग] परग तृण का बना हुआ (आचा २, १, ११, ३, २, २, ३, १४)।

परगासय वि [प्रकाशक] प्रकाश करनेवाला (तंदु ४६)।

परग्घ वि [पराघं] महघं, महँगा, बहुमूल्य (दस ७, ४३)।

परज्ज (अप) सक [परा + जि] पराजय करना, हराना। परज्जइ (भवि)।

परज्जिय (अप) वि [पराजित] पराजय-प्राप्त, हराया हुआ (भवि)।

परज्झ वि [दे] १ पर-वश, पराधीन, परतन्त्र, 'जेसखया, तुच्छपरप्पवाई ते पेज्ज-दोसाणुगया परज्झा' (उत्त ४, १३ बृह ४)। २ पुन. परतन्त्रता, पराधीनता (ठा १०—पत्र ५०५, भग ७, ८—पत्र ३१४)।

परट्ट देखो परिअट्ट = परिवर्त (जीवस २५२, पव १६२, कम्म ५, ५६)।

परडा स्त्री [दे] सर्प-विशेष (दे ६, ५), 'उन्चारं कुणमाणो अपाणदेमम्मि गरुय-परडाए, दट्ठो पीडाए मओ' (सुपा ६२०)।

परदारिअ पु [पारदारिक] परस्त्री-लम्पट (पउम १०५, १०७)।

परद्ध वि [दे] १ पीडित, दुःखित (दे ६, ७०, पाअ, सुर ७, ४, १६, १४४, उप पृ २२०, महा)। २ पतित। ३ भीरु, डरपोक (दे ६, ७०)। ४ व्याप्त, 'जीइ परद्धा जीवा न दोसगुणदमिणो होति' (धम्मो १४)।

परप्पर देखो परोप्पर (पि ३११, नाट—मालती १६८)।

परब्भवमाण देखो पराभव = परा + भू।

परभत्त वि [दे] भीरु, डरपोक (षड्)।

परभाअ पुं [दे] सुरत, मैथुन (दे ६, २७)।

परम वि [परम] १ उत्कृष्ट, सर्वाधिक (सूअ १, ६, जी २७)। २ उत्तम, सर्वोत्तम, श्रेष्ठ (पचव ४, धर्म ३, कुमा)। ३ अत्यर्थ, अत्यन्त (पण्ह १, ३, भग, औप)। ४ प्रधान, मुख्य (आचा, दस ६, ३)। ५ पु. मोक्ष, मुक्ति। ६ सयम, चारित्र (आचा, सूअ १, ६)। ७ न. सुख (दस ४)। ८ लगातार पांच दिनो का उपवास (सबोध ५८)। °ट्ठ पुं [°र्थ] १ सत्य पदार्थ, वास्तविक चीज, 'अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे' (भग, धर्म १)। २ मोक्ष, मुक्ति (उत्त १८, पण्ह १, ३)। ३ सयम, चारित्र (सूअ १, ६)। ४ पुन. देखो नीचे °त्थ = र्थ, 'पर-मट्ठनिट्ठिअट्ठा' (पडि, धर्म २)। °ण्ण देखो °न्न (सम १५१)। °त्थ पुन [°र्थ] १ तत्त्व, सत्य, 'तत्त परमत्थ' (पाअ), 'परम-त्थदो' (अभि ६१)। २—४ देखो °ट्ठ (सुपा २४, ११०, सण, प्रासू १६४, महा)। °त्थ न [°स्त्र] सर्वोत्तम हथियार, अमोघ अस्त्र (से १, १)। °दंसि वि [°दर्शिन्] १ मोक्ष देखनेवाला। २ मोक्ष-मार्ग का जानकार (आचा)। °न्न न [°न्न] १ खीर, दुग्ध-प्रधान मिष्ट भोजन (सुपा ३६०)। २ एक दिन का उपवास (संबोध ५८)। °पय न [°पद] मोक्ष, निर्वाण, मुक्ति (पाअ, भवि, अजि ४०, पंचा १४)। °प्प पुं [°त्मन्] सर्वोत्तम आत्मा, परमेश्वर (कुमा, सुपा ८३, रयण ४३)। °प्पय देखो °पय (सुपा १२७)। °प्पय देखो °प्प (भवि)। °प्पया स्त्री [°त्मता] मुक्ति, मोक्ष, 'सेलेसिं आरुहिउ अरिकेसरिसूरी परमप्पयं पत्तो' (सुपा १२७)। °बोधिसत्त पु [°बोधिसत्त्व] परमार्हत, अर्हन् देव का परम भक्त (मोह ३)। °संखिज्ज न [°संख्येय] सख्या-विशेष (कम्म ४, ७१)। °सोमणस्सिय वि [°सौमनस्यित] सर्वोत्तम मनवाला, सतुष्ट मनवाला (औप, कप्प)। °सोमणसिसय वि [°सौमनस्यिक] वही अर्थ (औप, कप्प)। °हेला स्त्री [°हेला] उत्कृष्ट तिरस्कार (सुपा ४७०)। °उ न [°युस्] १ लम्बा आयुष्य, बडी उमर (पउम १०, ७)। २ जीवित काल, उमर (विपा १,१)। °णु पु [°णु] सर्व-सूक्ष्म वस्तु (भग, गउड)। °हम्मिय [°धार्मिक] असुर-विशेष, नारक जीवो को दुःख देनेवाले देवो की एक जाति (सम २८)। °होहिअ वि [°धोवधिक] अवधिज्ञान-विशेषवाला, ज्ञानि-विशेष (भग)।

परमाहम्मिय वि [परमधार्मिक] सुख का अभिलाषी (दस ४, १)।

परमिट्ठि पु [परमेष्ठिन्] १ ब्रह्मा, चतुरानन (पाअ, सम्मत्त ७८)। २ अर्हन्, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और मुनि (सुपा ६५, आप ६८, गण ६, निसा २०)।

परमुक्क वि [परामुक्त] परित्यक्त (पउम ७१, २६)।

परमुवगारि } वि [परमोपकारिन्] बडा उपकार करनेवाला (सुर २, ४२, २, ३७)।
परमुवयारि }

परमुह देखो परम्मुह (से २, १६)।

परमेट्ठि देखो परमिट्ठि (कुमा, भवि, चेइय ४६६)।

परमेसर पु [परमेश्वर] सर्वैश्वर्य-सपन्न, परमात्मा (सम्मत्त १४४, भवि)।

परम्मुह वि [पराङ्मुख] विमुख, मुँह-फिरा, उदासीन (णाया १, २, काप्र ७२३, गा ६८८)।

परय न [परक] आधिक्य, अतिशय (उत्त ३४, १४)।

परलोइअ वि [पारलौकिक] जन्मान्तर-सवन्धी (आचा, सम ११६, पण्ह १, ५)।

परवाय वि [प्रवाज] १ प्रकृष्ट शब्द से प्रेरणा करनेवाला। २ पुं. सारथि, रथ हाँकनेवाला (श्रा २३)।

परवाय वि [प्रारवाय] १ श्रेष्ठ गाना गानेवाला। २ पुं. उत्तम गवैया (श्रा २३)।

परवाय पुं [प्रपाज] नाज (अन्न) भरने का कोठा, वह घर जहाँ नाज संगृहीत किया जाता है, कोठार, वखार (श्रा २३)।

परवाया स्त्री [प्रवाप्] गिरि-नदी, पहाडी नदी (श्रा २३)।

परस (अप) देखो फास = स्पर्श (पिंग, भवि)। °मणि पु [°मणि] रत्न-विशेष, जिसके स्पर्श से लोहा सुवर्ण होता है (पिंग)।

परसण्ण (अप) देखो पसण्ण (पिंग)।

परसु पुं [परशु] अस्त्र-विशेष, परश्वध, कुठार, कुल्हाडी (भग ६, ३३, प्रासू ६, ६२, काल)। °राम पु [°राम] जमदग्नि ऋषि का पुत्र, जिसने इक्कीस बार नि क्षत्रिय पृथिवी की थी (कुमा, पि २०८)।

पन देखो पच। °र, °रस त्रि. व. [°दशन्] पनरह, दस और पांच, १५ (कम्म १, ४, ५२, ६८, जी २५)।

पनय (पै चूपै) देखो पणय = प्रणय (हे ४, ३२६)।

पन्न देखो पण्ण = पर्ण (सुपा ३३६, कुप्र ४०८)।

पन्न देखो पण्ण = दे (भग, कम्म ४, ५४)।

पन्न देखो पण्ग = प्रज्ञ (आचा, कुप्र ४०८)।

पन्न वि [प्राज्ञ] १ पंडित, जानकार, विद्वान् (ठा ७, उप १५१, धर्मसं ४५२)। २ वि प्रज्ञ-सबन्धी (सूत्र २, १, ५६)।

पन्न देखो पंच। °र, °रस त्रि व [°दशन्] पनरह, १५ (दं २२, सम २६, भग, महा)। °रस, °रसम वि [°दश] पनरहवाँ, १५ वाँ (सुर १५, २५०, पउम १५, १००)। °रसी स्त्री [°दशी] १ पनरहवीं। २ पनरहवीं तिथि (कप्प)।

पन्न देखो पणिअ = पण्य (उप १०३१ टी)।

पन्नंगणा स्त्री [पण्याङ्गना] वेश्या, वाराङ्गना (उप १०३१ टी)।

पन्नग देखो पण्णग = पन्नग (विपा १, ७, सुर २, २३८)।

पन्नट्ठि देखो पण्णट्ठि (कप्प)।

पन्नत्त देखो पण्णत्त (णाया १ १, भग, सम १)।

पन्नत्तरि स्त्री [पञ्चसप्तति] पचहत्तर, ७५ (सम ८५, ति ३)।

पन्नत्ति देखो पण्णत्ति (सुपा १५३, सति ५, महा)। ५ प्रकृष्ट ज्ञान। जिसमें प्ररूपण किया जाय वह (तदु ५४)। ७ पाँचवाँ अंग-ग्रन्थ, भगवतीसूत्र (श्रावक ३३३)।

पन्नत्तु वि [प्रज्ञापयितृ] आख्याता, प्रतिपादक (पि ३६०)।

पन्नपत्तिया स्त्री [प्रज्ञप्रत्यया] देखो पुन्नपत्तिया (कप्प)।

पन्नपन्नइम देखो पणपन्नइम (पि ४४६)।

पन्नय देखो पण्णग (पाम्र)। °रिउ पुं [°रिपु] गरुड पक्षी (पाम्र)।

पन्नया स्त्री [पन्नगा] भगवान् धर्मनाथजी की शासन-देवी (सति १०)।

पन्नव देखो पण्णव। पन्नवेइ (उव)। कर्म. पन्नविज्जइ (उव)। वकृ पन्नवयंत (सम्म १३४)। सकृ पन्नवेऊण (पि ५८५)।

पन्नवग वि [प्रज्ञापक] प्रतिपादक, प्ररूपक (कम्म ५, ८५ टी)।

पन्नवण देखो पण्णवण (सुपा २६६)।

पन्नवणा देखो पण्णवणा (भग, पएण १, ठा ३, ४)।

पन्नवय देखो पण्णवग (सम्म १६)।

पन्नवयंत देखो पन्नव।

पन्ना देखो पण्णा = प्रज्ञा (आचा, ठा ४, १, १०)।

पन्ना देखो पण्णा = दे (पव ५०)।

पन्नाड सक [मृद्] मर्दन करना। पन्नाडइ (हे ४, १२६)।

पन्नाडिअ वि [मृदित] जिसका मर्दन किया गया हो वह (पाम्र, कुमा)।

पन्नाण देखो पण्णाण (आचा, पि ६०१)।

पन्नारस (अप) त्रि. व. [पञ्चदशन्] पनरह, १५ (भवि)।

पन्नास देखो पण्णास (सम ७०, कुमा)। स्त्री °सा (कप्प)। °इम वि [°तम] पचासवाँ, ५० वाँ, (पउम ५०, २३)।

पन्ह देखो पण्ह (कप्प)।

पन्हु (अप) देखो पण्हुअ = दे प्रस्नव (भवि)।

पपच देखो पवंच (सुपा २३५)।

पपलीण वि [प्रपलायित] भागा हुआ (पि ३४६, ३६७, नाट—मृच्छ ५८)।

पपिआमह पुं [प्रपितामह] १ ब्रह्मा, विधाता (राज)। २ पितामह का पिता, परदादा (धर्मसं १४६)।

पपुत्त पु [प्रपुत्र] पौत्र, पुत्र का पुत्र, पोता (सुपा ४०७)।

पपुत्त } पु [प्रपौत्र] पौत्र का पुत्र, पोते
पपोत्त } का पुत्र, परपोता (विसे ८६२, राज)।

पप्प सक [प्र + आप्] प्राप्त करना। पप्पोइ, पप्पोति (पि ५०४, उत्त १४, १४)। पप्पोदि (शौ) (पि ५०४)। सकृ पप्प (पएण १७, औव ५५, विसे ५५१)। कृ पप्प (विसे २६८७)।

पप्पग न [दे. पर्पक] वनस्पति। २, २, ६)।

पप्पड } पुंस्त्री [पर्पट] १ पापड, मूँग या
पप्पडग } उड़द की बहुत पतली एक प्रकार की रोटी (पव ३७, भवि)। २ पापड के आकारवाला शुष्क मृत्खण्ड (निचू १)। °पायय पुं [°पाचक] नरकावास-विशेष (देवेन्द्र ३०)। °मोदय पुं [°मोदक] एक प्रकार की मिष्ट वस्तु (पएण १७—पत्र ५३३)।

पप्पडिया स्त्री [पर्पटिका] तिल आदि की बनी हुई एक प्रकार की खाद्य वस्तु (पएण १, पिंड ५५०)।

पप्पल देखो पप्पड (नाट—विक्र ३१)।

पप्पीअ पु [दे] चातक पक्षी, पपीहा या पपीहरा (दे ६, १२)।

पप्पुअ वि [प्रप्लुत] १ जलार्द्र, पानी मे भीजा हुआ (पएह १, १, णाया १, ८)। २ व्याप्त, 'घरपप्पुयवजणाइं च' (पव ४ टी)। ३ न कूदना, लांघना (गउड १२८)।

पप्पोइ } देखो पप्प।
पप्पोति }

पप्फंदण न [प्रस्पन्दन] प्रचलन, फरकना (राज)।

पप्फाड पुं [दे] अग्नि-विशेष (दे ६, ६)।

पप्फिडिअ वि [दे] प्रतिफलित (दे ६, २२)।

पप्फुअ वि [दे] १ दीर्घ, लम्बा। २ उड्डीयमान, उडता (दे ६, ६४)।

पप्फुट्ट अक [प्र + स्फुट्] १ खिलना। २ फूटना। पप्फुट्टइ (प्राक्ट ७४)।

पप्फुडिअ पु [प्रस्फुटित] नरकावास-विशेष (देवेन्द्र २६)।

पप्फुय देखो पप्पुअ, 'वाहपप्फुयच्छो' (सुख २, २६)।

पप्फुर अक [प्र + स्फुर्] १ फरकना, हिलना। २ कांपना। पप्फुरइ (से १५, ७७, गा ६४७)।

पप्फुरिअ वि [प्रस्फुरित] फरका हुआ (दे ६, १६)।

पप्फुल्ल अक [प्र + फुल्ल्] विकसना। वकृ पप्फुल्लंत (रंभा)।

पप्फुल्ल वि [प्रफुल्ल] विकसित, खिला हुआ (णाया १, १३, उप पृ ११४, पउम ३, ६६, सुर २, ७६, पह ; गा ६३६,

पराहुत्त } वि [पराभूत] अभिभूत, हराया
पराहूअ } हुआ (उप ६४८ टी; पाअ)।

परि अ [परि] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ सर्वतोभाव, समंतात्, चारो ओर (गा २२, सूअ १, ६)। २ परिपाटी, क्रम (पिंग)। ३ पुन पुन, फिर फिर (पण्ह १, १, श्रावक २८४)। ४ सामीप्य, समीपता, (गउड ७७६)। ५ विनिमय, बदला, 'परियाण' = परिदान (भवि)। ६ अतिशय, विशेष (स ७३४)। ७ सपूर्णता, 'परिट्ठिअ' (पव ६६)। ८ बाहरपन (श्रावक २८४)। ६ ऊपर (हे २, २११, सुपा २६६)। १० शेष, बाकी। ११ पूजा। १२ व्यापकता। १३ उपरम, निवृत्ति। १४ शोक। १५ किसी प्रकार की प्राप्ति। १६ आख्यान। १७ सतोष-भाषण। १८ भूषण, अलकरण। १६ आलिगन। २० नियम। २१ वर्जन, प्रतिषेध (हे २, २१७, भवि, गउड)। २२ निरर्थक भी इसका प्रयोग होता है (गउड १०, सण)।

परि देखो पडि = प्रति (ठा ५, १—पत्र ३०२, पण्ण १६—पत्र ७७४, ७८१)।

परि स्त्री [दे] गीति, गीत (कुमा)।

परि सक [क्षिप्] फेंकना। परिइ (षड्)।

परिअंज सक [परि + भञ्ज्] भाँगना, तोडना। परिअंजइ (धात्वा १४३)।

परिअत सक [श्लिष्] १ आलिगन करना। २ ससर्ग करना। परिअतइ (हे ४, १६०)।

परिअत देखो पज्जत (पण्ह १, ३, पउम ६५, १६, सूअ २, १, १५)।

परिअतणा स्त्री [परियन्त्रणा] अतिशय यन्त्रणा (नाट—मालती २८)।

परिअनिअ वि [श्लिष्ट] आलिगित (कुमा)।

परिअभिअ वि [परिजृम्भित] विकसित (से २, २०)।

परिअट्ट अक [परि + वृत्] पलटना, बदलना। वकृ. 'दिट्ठो अपरिअट्टंतीए सहयारच्छायाए एसो' (कुप्र ४५, महा), परियट्टमाण (महा)।

परिअट्ट सक [परि + वर्तय्] १ पलटाना, बदलाना। २ आवृत्ति करना, पठित पाठ को याद करना। ३ फिराना, घुमाना। परियट्टइ, परियट्टेइ (भवि, उव)। हेकृ. 'परियट्टिउमाढत्तो नलिणीगुम्म ति अज्झयणं' (कुप्र १७३)।

परिअट्ट सक [परि + अट्] परिभ्रमण करना, घूमना। परिअट्टइ (हे ४, २३०)। संकृ. परियट्टिवि (अप) (भवि)।

परिअट्ट पु [दे] रजक, धोबी (दे ६, १५)।

परिअट्ट पु [परिवर्त] १ पलटाव, बदला। २ समय का परिणाम-विशेष, अनन्त उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी काल (विपा १,१, सुर १६, १४५, पव १६२)।

परिअट्टग वि [परिवर्तक] परिवर्तन करनेवाला (निचू १०)।

परिअट्टण न [परिवर्तन] १ पलटाव, बदला करना (पिंड ३२४, वै ६७)। २ द्विगुण, त्रिगुण आदि उपकरण (आचा १, २, १, १)।

परिअट्टणा स्त्री [परिवर्तना] १ फिर फिर होना (पण्ह १, १)। २ आवृत्ति, पठित पाठ का आवर्तन (आचा २, १, ४, २, उत्त २६, १, ३०, ३४, औप, ठा ५, ३)। ३ द्विगुण आदि उपकरण (पि २८६)। ४ बदला करना (पिंड ३२५)।

परिअट्टय वि [पर्यटक] परिभ्रमण करनेवाला, 'मेरुगिरिसययपरियट्टयं' (कप्प ३६)।

परिअट्टलिअ वि [दे] परिच्छिन्न (दे ६, ३६)।

परिअट्टविअ वि [दे] परिच्छिन्न (षड्)।

परिअट्टिय वि [परिवर्तित] बदलाया हुआ (ठा ३, ४, पिंड ३२३, पचा १३, १२)। देखो परिअत्तिअ।

परिअड सक [परि + अट्] परिभ्रमण करना। परिअडति (श्रावक १३३)। वकृ. परियडत (सुर २, २)।

परिअडण न [पर्यटन] परिभ्रमण (स ११४)।

परिअडि स्त्री [दे] १ वृति, वाड। २ वि. मूर्ख, बेवकूफ (दे ६, ७३)।

परिअडिअ वि [पर्यटित] परिभ्रान्त, भटका हुआ (सिक्खा १७)।

परिअड्डिअ वि [दे] प्रकटित, व्यक्त किया हुआ (षड्)।

परिअड्ढ अक [परि + वृध्] बढना, 'परिअड्ढइ लायण्णं' (हे ८, २२०)।

परिअड्ढ सक [परि + वर्धय्] बढाना (हे ४, २२०)।

परिअड्ढि स्त्री [परिवृद्धि] विशेष वृद्धि (प्राकृ २१)।

परिअड्ढिअ वि [परिवर्धिन्, °क] बढानेवाला, 'समणगणवदपरियड्डिए' (औप)।

परिअड्ढिअ वि [पर्याढ्यक] परिपूर्ण (औप)।

परिअड्ढिअ वि [परिकर्षिन्, °क] खीचनेवाला, आकर्षक (औप)।

परिअड्ढिअ वि [परिकृष्ट] खीचा हुआ, आकृष्ट, 'जस्स समरेसु रेहइ हयगयमयमिलियपरिमलुग्गारा। दढपरियड्डियजयसिरिकेसकलावो व्व खग्गलया' (सुपा ३१)।

परिअण पुं [परिजन] १ परिवार, कुटुम्ब, पुत्र-कलत्र आदि पालनीय वर्ग। २ अनुचर, अनुगामी (गा २८३, गउड, पि ३५०)।

परिअत्त देखो परिअत = श्लिष्। परिअत्तइ (हे ४, १६० टी)।

परिअत्त देखो परिअट्ट = परि + वृत्। परियत्तइ (भवि), 'नडुव्व परिअत्तए जीवो' (वै ६०), परियत्तए (उत्ता)। वकृ. परियत्तमाण (महा)।

परिअत्त देखो परिअट्ट = परि + वर्तय्। संकृ. परियत्तेउ (तदु ३८)।

परिअत्त देखो परिअट्ट = परिवर्त (औप)।

परिअत्त वि [दे] प्रसृत, फैला हुआ, 'सव्वासणरिउसंभवहो करपरिअत्ता तावँ' (हे ४, ३९५)।

परिअत्त वि [परिवृत्त] पलटा हुआ (भवि)।

परिअत्तण देखो परिअट्टण (गउड), 'चाड्यणकरपरंपरपरियत्तणखेयवसपरिस्सता। अत्था किविणघरत्था सुत्थावत्था सुयति व्व' (सुपा ६३३)।

परिअत्तणा देखो परिअट्टणा (राज)।

परिअत्तमाण देखो परिअत्त।

परिअत्तमाणी स्त्री [परिवर्तमाना] कर्म-प्रकृति-विशेष, वह कर्म-प्रकृति जो अन्य प्रकृति

पभसण न [प्रभ्रंशन] स्खलना (धर्मसं १०७६)।

पभकंत पुं [प्रभक्रान्त] १—२ विद्युत्कुमार देवों के हरिकान्त और हरिस्सह नामक दोनों इन्द्रों के लोकपालों के नाम (ठा ४, १—पत्र १९७, इक)।

पभण सक [प्र + भण्] कहना, बोलना। पभणइ (महा; सण)।

पभणिय वि [प्रभणित] उक्त, कथित (सण)।

पभम सक [प्र + भ्रम्] भ्रमण करना, भटकना। पभमेसि (श्रु १५३)।

पभव अक [प्र + भू] १ समर्थ होना, पहुँचना। २ होना, उत्पन्न होना। पभवइ (पि ४७५)। वकृ. पभवंत (सुपा ८६; नाट—विक्र ४५)।

पभव पुं [प्रभव] १ उत्पत्ति, जन्म, प्रसूति, प्रसव (ठा ९, वसु)। २ प्रथम उत्पत्ति का कारण (णंदि)। ३ एक जैनमुनि, जम्बुस्वामी का शिष्य (कप्प, वसु, णंदि)।

पभवा स्त्री [प्रभवा] तृतीय वासुदेव की पटरानी (पउम २०, १८६)।

पभविय वि [प्रभूत] जो समर्थ हुआ हो, 'सा विज्जा सिट्ठमुए उदरगयम्मि पभविया नेव' (धर्मवि १२३)।

पभा स्त्री [प्रभा] १ कान्ति, तेज (महा; धर्मसं १३३३)। २ प्रभाव, 'निज्जुज्जोया रम्मा, सयंपभा ते विरायति' (देवेन्द्र ३२०)।

पभाइअ } पुंन [प्रभात] १ प्रातःकाल, सुबह
पभाय } (पउम ७०, ५६; सुर ३, ९६, महा; स २४४)। २ वि प्रकाशित, रयणीए पभायाए (उप ६४८ टी)। °तणय वि [°सबन्धिन्] प्राभातिक, प्रभात-सम्बन्धी, सुबह का (सुर ३, २४८)।

पभार पुं [प्रभार] प्रकृष्ट भार (सम १५३)।

पभाव देखो पहाव = प्र + भावय्। पभावेइ, पभावंति (उव, पव १४८)। वकृ. पभावित (सुपा ३७९)।

पभाव देखो पहाव—प्रभाव (स्वप्न ९८)।

पभावई स्त्री [प्रभावती] १ उन्नीसवें जिन-देव की माता का नाम (सम १५१)। २ रावण की एक पत्नी का नाम (पउम ७४, ११)। ३ उदायन राजर्षि की पटरानी और चेडा नरेश की पुत्री का नाम (पडि)। ४ बलदेव के पुत्र निषध की भार्या (आवू १)। ५ राजा बल की पत्नी (भग ११, ११)।

पभावग वि [प्रभावक] प्रभाव बढ़ानेवाला, शोभा की वृद्धि करनेवाला (श्रा ६, द्र २३)। २ उन्नति-कारक। ३ गौरव जनक (कुप्र १६८)।

पभावण न [प्रभावन] नीचे देखो (श्रु ९)।

पभावणा स्त्री [प्रभावना] १ महात्म्य, गौरव। २ प्रसिद्धि, प्रख्याति (णाया १, १६—पत्र १२२, श्रा ६, महा)।

पभावय वि [प्रभावक] गौरव बढानेवाला (सबोध ३१)।

पभावाल पुं [प्रभावाल] वृक्ष-विशेष (राज)।

पभावित देखो पभाव = प्र + भावय्।

पभास सक [प्र + भाष्] बोलना, भाषण करना। पभासति (विसे ४६९ टी)। वकृ. पभासत, पभासयत, पभासमाण (उप पृ २३, पउम ५५, १८, ८६, १०)।

पभास अक [प्र + भास्] प्रकाशित होना। पभासिति (सुज्ज १९)। भूका—पभासिसु (भग, सुज्ज १९)। भवि. पभासिस्संति (सुज्ज १९)। वकृ. पभासमाण (कप्प)।

पभास सक [प्र + भासय्] प्रकाशित करना। पभासेइ (भग)। पभासंति (सुज्ज ३—पत्र ६४)। वकृ. पभासयंत, पभासेमाण (पउम १०८, ३३, रयण ७५, कप्प, उवा; औप, भग)।

पभास पुं [प्रभास] १ भगवान् महावीर के एक गणधर का नाम (सम १९, कप्प)। २ एक विकटापाती पर्वत का अधिष्ठाता देव (ठा २, ३—पत्र ६९)। ३ एक जैन मुनि का नाम (धर्म ३)। ४ एक चित्रकार का नाम (धम्म ३१ टी)। ५ न. तीर्थ-विशेष (जं ३, महा)। ६ देव-विमान-विशेष (सम १३, ४१)। °तित्थ न [°तीर्थ] तीर्थ-विशेष, भारतवर्ष की पश्चिम दिशा में स्थित एक तीर्थ (इक)।

पभासा स्त्री [प्रभासा] अहिंसा, दया (पण्ह २, १)।

पभासिय वि [प्रभाषित] उक्त, कथित (सूम १, १, १, १९)।

पभासेमाण देखो पभास = प्र + भासय्।

पभिइ देखो पभिइ (द्र ५५)।

°पभिइ वि व. [°प्रभृति] इत्यादि, वगैरह (भग, उवा, महा)।

पभिइं } अ [प्रभृति] प्रारम्भ कर, (वहां
पभिई } से) शुरू कर, लेकर, 'बालभावाओ
पभीइ } पभिइ' (सुर ४, १६७, कप्प,
पभीइ } महा, स ७३६, २७५ टि)।

पभीय वि [प्रभीत] अति भीत, अत्यन्त डरा हुआ (उत ५, ११)।

पभु पुं [प्रभु] १ इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ७)। २ स्वामी, मालिक (पउम ९३, २९, बृह २)। ३ राजा, नृप, 'पभू राया अणुप्पभू जुवराया' (निचू २)। ४ वि. समर्थ, शक्तिमान् (श्रा २७, भग १५, उवा, ठा ४, ४)। ५ योग्य, लायक, 'पभुत्ति वा जोग्गोत्ति वा एगट्ठा' (निचू २०)।

पभुज सक [प्र + भुज्] भोग करना। पभुजेदि (शौ) (द्रव्य ९)।

पभुत्ति (पै) देखो पभिइं (कुमा)।

पभुत्त वि [प्रभुक्त] १ जिसने खाने का प्रारम्भ किया हो वह (सुर १०, ५८)। २ जिसने भोजन किया हो वह (स १०४)।

पभूइ } देखो पभिइ (पउम ६, ७६, स
पभूइं } २७५)।

पभूय वि [प्रभूत] प्रचुर, बहुत (भग, पउम ५, ५; णाया १, १, सुर ३, ८१, महा)।

पभोय (अप) देखो उवभोग, 'भोय-पभोयमाणु ज किज्जइ' (भवि)।

पमइल वि [प्रमलित] अति मलिन (णाया १, १)।

पमक्खण न [प्रम्रक्षण] १ अभ्यञ्जन, विलेपन। २ विवाह के समय किया जाता एक तरह का उबटन (स ७४)।

पमक्खिअ वि [प्रम्रक्षित] १ विलिप्त। २ विवाह के समय जिसको उबटन किया गया हो वह (वसु, सम ७५)।

पमज्ज सक [प्र + मृज्, मार्ज्] मार्जन करना, साफ-सुथरा करना, झाड़ू आदि से धूलि वगैरह को दूर करना। पमज्जइ (उव,

परिणामो' (विसे ६२३, सुर १३, १२४), 'तेवि पयट्टा काउ सरीरपरिकम्मणं एव' (कुप्र २७१, कप्प, उत्त)। २ सस्कार का कारण-भूत शास्त्र (णदि)। ३ गणित-विशेष। ४ सस्थान विशेष एक तरह की गणना (ठा १०—पत्र ४६६)। ५ निष्पादन (पव १३३)।

परिकम्मणा स्त्री ऊपर देखो, 'तित्तमरूव निच्च न तस्स परिकम्मणा नय विणासो' (विसे ६२४, सम्म ५४, सवोध ५३, उपप ३४)।

परिकम्मिय वि [परिकर्मित] परिकर्म-विशिष्ट, संस्कारित (कप्प)।

परिकर देखो परिअर=परिकर (पिंग)।

परिकलण न [परिकलन] उपभोग, 'भमर-परिकलणखमकमलभूसियसरो' (सुपा ३)।

परिकलिअ वि [परिकलित] १ युक्त, सहित (सिरि ३८१)। २ व्याप्त (सम्मत्त २१५)। ३ प्राप्त, 'अजलिपरिकलियजलं व गलइ इह जीयं' (धर्मवि २५)।

परिकवलणा स्त्री [परिकवलना] भक्षण, हरियपरिकवलणापुट्ठगोसकुला' (सुपा ३)।

परिकविल वि [परिकपिल] सर्वतोभाव मे कपिल वर्णवाला (गउड)।

परिकविस वि [परिकपिश] अतिशय कपिश रँगवाला (गउड)।

परिकसण न [परिक र्षण] खीचाव (गउड)।

परिकह सक [परि+कथय्] प्ररूपण करना, कहना। परिकहेइ (उवा), परिकहतु (कम्म ६, ७५)। कर्म परिकहिज्जइ (पि ५४३)। हेक्व परिकहेउ (श्रौप)।

परिकहण न [परिकथन] आख्यान, प्ररूपण (सुपा २)।

परिकहणा स्त्री [परिकथना] ऊपर देखो (आवम)।

परिकहा स्त्री [परिकथा] १ वातचीत। २ वर्णन (पिंड १२६)।

परिकहिय वि [परिकथित] प्ररूपित, आख्यात (महा)।

परिकिण्ण देखो परिकिन्न, 'चेडियाचक्कवाल-परिकिण्णा' (उवा)।

परिकित्तिअ वि [परिकीर्त्तित] व्यावर्णित, श्लाघित (श्रु ११०)।

परिकिन्न वि [परिकीर्ण] १ परिवृत, वेष्टित, 'नियपरियणपरिकिन्नो' (धर्मवि ७४)। २ व्याप्त (गुर १, ५६)।

परिकिलन्त वि [परिक्लान्त] विशेष खिन्न (उप २६४ टी)।

परिकिलेस सक [परि+क्लेशय्] दुःखी करना, हैरान करना। परिकिलेसंति (भग)। सक परिकिलेसित्ता (भग)।

परिकिलेस पु [परिक्लेश] दुःख, बाधा, हैरानी (सूत्र २, २, ५५, श्रौप, स ६७५, धर्मस १००४)।

परिकीलिर वि [परिक्रीडितृ] अतिशय क्रीडा करनेवाला (सण)।

परिकुठिय वि [परिकुण्ठित] जडीभूत (विसे १८३)।

परिकुडिल वि [परिकुटिल] विशेष वक्र (सुर १, १)।

परिकुद्ध वि [परिक्रुद्ध] अत्यन्त कुपित (धर्मवि १२४)।

परिकुविय वि [परिकुपित] अतिशय क्रुद्ध (णाया १, ८, उव, सण)।

परिकोमल वि [परिकोमल] सर्वथा कोमल (गउड)।

परिक्कत वि [पराक्रान्त] पराक्रम-युक्त (सूत्र १, ३, ४, १५)।

परिक्कम सक [परि+क्रम्] १ पाँव से चलना। २ समीप मे जाना। ३ पराभव करना। ४ अक पराक्रम करना। परिक्कमदि (रुक्मि ४६)। परिक्कमसि (रुक्मि ५७)। परिक्कमेध (शौ) (पि ४८१)। वकृ परिक्कमत (नाट)। कृ परिक्कमियव्व (णाया १, ५—पत्र १०३)। सकृ परिक्कम्म (सूत्र १, ४, १, २)।

परिक्कम देखो परक्कम=पराक्रम (णाया १, १, सण, उत्त १८, २४)।

परिक्कहिअ देखो परिकहिय (सुपा २०८)।

परिक्काम देखो परिक्कम=परि+कम्। परिक्कामदि (पि ४८१, प्रि ८७)।

परिक्ख सक [परि+ईक्ष] परखना, परीक्षा करना। परिक्खइ, परिक्खए, परिक्खति, परिक्खउ (भवि, महा, वज्जा १५८, स ४५७)। वकृ. परिक्खत, परिक्खमाण (श्रोघ ८० भा, श्रा १४)। सकृ. परिक्खिय (उत्त)। कृ. परिक्खियव्व (काल)।

परिक्खअ वि [परीक्षक] परीक्षा करनेवाला (सुपा ४२७, श्रा १४)।

परिक्खअ वि [परिक्षत] आहत, जिसको घाव हुआ हो वह (से ८, ७३)।

परिक्खअ पु [परिक्षय] १ क्रमश हानि, 'बहुलपक्खनदस्स जोण्हापरिक्खओ विम' (चारु ८)। २ क्षय, नाश (गउड)।

परिक्खण न [परीक्षण] परीक्षा (स ४६६, सण्, सुपा ४४६, णाया १, ७ टी)।

परिक्खणा स्त्री [परीक्षणा] परीक्षा (पउम ६१, ३३)।

परिक्खमाण देखो परिक्ख।

परिक्खल अक [परि+स्खल्] स्खलित होना। वकृ. परिक्खलत (से ४, १७)।

परिक्खलिअ वि [परिस्खलित] स्खलना-प्राप्त (पि ३०६)।

परिक्खा स्त्री [परीक्षा] परख, जाच (नाट—मालवि २२)।

परिक्खाइअ वि [दे] परिक्षीण (षड्)।

परिक्खाम वि [परिक्षाम] अतिशय कृश (उत्तर ७२, नाट—रत्ना ३)।

परिक्खि वि [परिक्षिन्] परखनेवाला, परीक्षक (श्रा १४)।

परिक्खित्त वि [परिक्षिप्त] १ वेष्टित, घेरा हुआ (श्रौप, पाअ, से १,५२, वसु)। २ सर्वथा क्षिप्त (आवम)। ३ चारो ओर से व्याप्त (राय)।

परिक्खिअ वि [परीक्षित] जिसकी परीक्षा की गई हो वह (प्रासू १५)।

परिक्खिव सक [परि+क्षिप्] १ वेष्टन करना। २ तिरस्कार करना। ३ व्याप्त करना। ४ फेंकना, 'एवं खु जरामरणं परिक्खिवइ वग्गुरा व मयजूहं' (तदु ३३, जीवम १८६)। कर्म परिक्खिवीआमो (पि ३१६)।

परिक्खिविय वि [परिक्षित] फेंका हुआ (हम्मीर ३२)।

परिक्खेव वि [परिक्षेप] घेरा, परिधि (भग, सम ५६, कस, श्रौप)।

पमिल्ल अक [प्र + मील्] विशेष संकोच करना, सकुचना। पमिल्लइ (हे ४, २३२, प्राप्र)।

पमीय° देखो पमा = प्र + मा।

पमील देखो पमिल्ल। पमीलइ (हे ४, २३२)।

पमुइअ वि [प्रमुदित] हर्ष-प्राप्त, हर्षित (औप, जीव ३)।

पमुंच सक [प्र + मुच्] छोड़ना, परित्याग करना। पमुंचति (उव)। कर्म पमुच्चइ (पि ५४२)। भवि. पमोक्खसि (प्राचा)। वकृ. पमुंचमाण (राज)।

पमुक्क वि [प्रमुक्त] परित्यक्त (हे २, ६७, पड्)।

°पमुक्ख देखो °पमुह (सुपा १०, गु ११, जी १०)।

पमुच्छिअ पुं [प्रमूर्च्छित] नरकावास-विशेष (देवेन्द्र २७)।

पमुत्त देखो पमुक्क (पि ५६६)।

पमुदिय देखो पमुइअ (सुर ३, २०)।

पमुद्ध वि [प्रमुग्ध] अत्यन्त मुग्ध (नाट—मालती ४४)।

पमुह वि [प्रमुख] १ तल्लीन दृष्टिवाला, 'एगप्पमुहे' (आचा)। २ पुं. ग्रह-विशेष, ज्योतिष्क देव-विशेष (ठा २, ३)। ३ न प्रकृष्ट आरम्भ, आदि, आपात, 'किंपागफल-सरिच्छो भोगा पमुहे हवंति गुणमहुरा' (पउम १०८, ३१, पाअ)।

°पमुह वि व [°प्रमुख] १ वगैरह, आदि। २ प्रधान, श्रेष्ठ, मुख्य (औप, प्रासू १६६)।

पमुहर वि [प्रमुखर] वाचाल, वकवादी (उत्त १७, ११)।

पमेइल वि [प्रमेदस्विन्] जिसके शरीर में चर्बी बहुत हो वह, 'थूले पमेइले वज्झे पाइमेत्ति य नो वए' (दस ७, २२)।

पमेय वि [प्रमेय] प्रमाण-विषय, सत्य-पदार्थ (धर्मसं ११६०)।

पमेह पुं [प्रमेह] रोग-विशेष, मेह रोग, मूत्र-दोष, बहुमूत्रता (निचू १)।

पमोअ पुं [प्रमोद] १ आनन्द, खुशी, हर्ष (सुर १, ७८, महा, गादि)। २ राक्षस-वंश के एक राजा का नाम, एक लंका-पति (पउम ५, २६३)।

पमोक्ख° देखो पमुंच।

पमोक्ख पुन [प्रमोक्ष] १ मुक्ति, निर्वाण (सूअ १, १०, १२)। २ प्रत्युत्तर, जवाब, 'नो सचाएइ किंचिवि पमोक्खमक्खाइउं' (भग)।

पमोक्खण न [प्रमोचन] परित्याग, 'कठा-कंठिय अवयासिय बाहप्पमोक्खणं करेइ' (णाया १, २—पत्र ८८)।

पमोयणा स्त्री [प्रमोदना] प्रमोदन, प्रमोद, आह्लाद, आनंद (चेइय ४११)।

पम्मलाअ अक [प्र + म्लै] अधिक म्लान होना। पम्मलाअदि (शौ), (पि १३६, नाट—मालती ५३)।

पम्माअ } वि [प्रम्लान] १ विशेष म्लान, पम्माइअ } अत्यन्त मुरझाया हुआ, 'पम्माअ-सिरीसाइं व। जह से जायाइ अगाइं' (गा ५६, गा ५६ टि)। २ शुष्क, 'वसहा य जायथामा, गामा पम्मायचिक्खल्ला' (धर्मवि ५३)।

पम्माण वि [प्रम्लान] १ निस्तेज, मुरझाया हुआ। २ न. फीकापन, मुरझाना, 'पम्हा (? म्मा) णरुण्णलिंगो' (अणु १३६)।

पम्मि पु [दे] पाणि, हाथ, कर (पड्)।

पम्मुक्क देखो पमुक्क (हे २, ६७, पड्, कुमा)।

पम्मुह वि [प्राङ्मुख] पूर्व की ओर जिसका मुँह हो वह (भवि, वज्जा १६४)।

पम्ह पुन [पक्ष्मन्] १ अक्षि-लोम, बरवनी, आंख के बाल (पाअ)। ३ पद्म आदि का केसर, किंजल्क (उवा, भग, विपा १, १)। ३ सूत्र आदि का अत्यल्प भाग। ४ पक्ष, पांख (हे २, ७४, प्राप्र)। ५ केश का अग्र-भाग (से ६, २०)। ६ अग्र-भाग, 'णअणड्ड-आसण्णपइत्तपत्तणपम्ह' (से १५, ७३)। ७ महाविदेह वर्ष का एक विजय—प्रदेश (ठा २, ३, इक)। ८ न. एक देव-विमान (सम १५)। °कन न [°कान्त] एक देव-विमान का नाम (सम १५)। °कूड पुं [°कूट] १ पर्वत-विशेष (राज)। २ न ब्रह्मलोक नामक देवलोक का एक देव-विमान (सम १५)। ३ पर्वत-विशेष का एक शिखर (ठा २, ३, ६)। °ज्झय न [°ध्वज] देव-विमान-विशेष (सम १५)। °प्पभ न [°प्रभ] ब्रह्मलोक का एक देवविमान (सम १५)। °लेस, °लेस्स न [°लेश्य] ब्रह्मलोक-स्थित एक देव-विमान (सम १५, राज)। °वण्ण न [°वर्ण] वही पूर्वोक्त अर्थ (सम १५)। °सिंग न [°शृङ्ग] वही अर्थ (सम १५)। °सिट्ठ न [°सृष्ट] वही पूर्वोक्त अर्थ (सम १५)। °वित्त न [°विर्त्त] वही अर्थ (सम १५)।

पम्ह देखो पउम (पण्ह १, ४—पत्र ६७; ७८, जीव ३)। °गंध वि [°गन्ध] १ कमल की गन्ध। २ वि कमल के समान गन्धवाला (जग ६, ७)। °लेस वि [°लेश्य] पद्मा नामक लेश्यावाला (भग)। °लेसा स्त्री [°लेश्या] लेश्या-विशेष, पाँचवीं लेश्या, आत्मा का शुभतर परिणाम-विशेष (ठा ३, १, सम ११)। °लेस्स देखो °लेस (पण्ण १७—पत्र ५११)।

पम्हअ सक [प्र + स्मृ] भूल जाना, विस्मरण होना। पम्हअइ (प्राकृ ६१)।

पम्हगावई स्त्री [पद्मकावती] महाविदेह वर्ष का एक विजय, प्रदेश-विशेष (ठा २, ३, इक)।

पम्हट्ठ वि [प्रस्मृत] १ विस्मृत (से ४, ४२)। २ जिसको विस्मरण हुआ हो वह, 'किं पम्हट्ठ म्हि अहं तुइ चलणुप्पणणतिवह-आपडिउणा (से ६, १२)।

पम्हट्ठ वि [दे] १ प्रभ्रष्ट, विलुप्त (से ४, ४२)। २ फेंका हुआ, प्रक्षिप्त, 'पम्हट्ठं वा परिट्ठविय ति वा एगट्ठं' (वव १)।

पम्हय वि [पक्ष्मज] १ पक्ष्म से उत्पन्न। २ न एक प्रकार का सूता (पंचभा)।

पम्हर पुं [दे] अपमृत्यु, अकाल-मरण (दे ६, ३)।

पम्हल वि [पक्ष्मल] पक्ष्म युक्त, सुंदर अक्षि-लोमवाला (हे २, ७४, कुमा, पड्, औप, गउड, सुर ३, १३६, पाअ)।

पम्हल पु [दे] किंजल्क, पद्म आदि का केसर (दे ६, १३, पड्)।

पम्हलिय वि [दे पक्ष्मलित] धवलित, सफेद किया हुआ, 'लायण्णजोण्हापवाहपम्ह-लियचउद्दिसामोमो' (स ३६)।

परिघट्ट सक [परि + घट्ट्] आघात करना। कवकृ. परिघट्टिज्जंत (महा)।

परिघट्टण न [परिघट्टन] आघात (वज्जा ३८)।

परिघट्टण न [परिघटन] निर्माण, रचना (निचू १)।

परिघट्टिय वि [परिघट्टित] आहत, ताडित (जीव ३)।

परिघट्ठ वि [परिघृष्ट] १ जिसका घर्षण किया गया हो वह, घिसा हुआ, 'मंदरयडपरिघट्ठ' (हे २, १७४)।

परिघाय देखो परीघाय (राज)।

परिघास सक [परि + घासय्] जिमाना, भोजन कराना। हेकृ परिघासेउ (आचा)।

परिघासिय वि [परिघर्षित] परिघर्ष युक्त, 'रयसा वा परिघासियपुव्वे भवति' (आचा २, १, ३, ५)।

परिघुम्मिर वि [परिघूर्णितृ] शनै शनै काँपता हिलता, डोलता (पउम ८, २८३, गा १४८)।

परिघेतव्व, परिघेत्तव्व, परिघेत्तु, परिघेत्तूण देखो परिगेण्ह।

परिघोल सक [परि + घूर्ण्] १ डोलना। २ परिभ्रमण करना। वकृ परिघोलंत, परिघोलेमाण (से १, ३३, औप, णाया १, ४—पत्र ९७)।

परिघोलण न [दे. परिघोलन] विचार (ठा ४, ४—पत्र २८३)।

परिघोलिर वि [परिघूर्णितृ] डोलनेवाला (गउड)।

परिचअ देखो परियय = परिचय (नाट—शकु ७७)।

परिचअ देखो परिच्चअ। संकृ परिचइऊण, परिचइय (महा)।

परिचचल वि [परिचञ्चल] अतिशय चपल (वै १४)।

परिचत्त देखो परिच्चत्त (महा, औप)।

परिचरणा स्त्री [परिचरणा] सेवा, भक्ति (सुपा १५६)।

परिचल सक [परि + चल्] विशेष चलना। परिचलइ (पिंग)।

परिचलिअ वि [परिचलित] विशेष चला हुआ (दे ५, ६)।

परिचारअ वि [परिचारक] सेवा करनेवाला, सेवक (नाट—मालवि ६)। स्त्री °रिआ (नाट)।

परिचारणा स्त्री [परिचारणा] मैथुन प्रवृत्ति (ठा ५, १)।

परिचिंत सक [परि + चिन्तय्] चिन्तन करना, विचार करना। परिचिंतइ, परिचिंतेइ (सण, उव)। कर्म परिचिंतियइ (अप) (सण)। वकृ परिचिंतत, परिचिंतयत (सण, पउम ६६, ४)।

परिचिंतिय वि [परिचिन्तित] जिसका चिन्तन किया गया हो वह (सण)।

परिचिंतिर वि [परिचिन्तयितृ] चिन्तन करनेवाला (सण)।

परिचिट्ठ अक [परि + स्था] रहना, स्थिति करना। परिचिट्ठइ (सण)।

परिचिय वि [परिचित] ज्ञात, जाना हुआ, चिह्ना हुआ, पहिचाना हुआ (औप)।

परिचुंब देखो परिउंब। परिचुंबिज्जमाण (औप)। संकृ परिचुंबिअ (अभि १५०)।

परिचुंबण देखो परिउंबण (पउम १६, ७६)।

परिचुंबिय वि [परिचुम्बित] जिसका चुम्बन किया गया हो वह, 'परिचुंबियनहग्गं' (उप ५६७ टी)।

परिच्चअ सक [परि + त्यज्] परित्याग करना, छोड देना। परिच्चयइ, परिच्चअह (महा, अभि १७७)। वकृ परिच्चअत (अभि १३७)। संकृ परिच्चइअ, परिच्चज्ज, परिच्चइऊण (पि ५९०, उत्त ३५, २, राज)। हेकृ परिच्चइत्तए, परिच्चत्तुं (उवा, नाट)।

परिच्चत्त वि [परित्यक्त] जिसका परित्याग किया गया हो वह (से ८, २०, सुर २, १२०, सुपा ४१८, नाट—शकु १३२)।

परिच्चयण न [परित्यजन] परित्याग (स ३३)।

परिच्चाइ वि [परित्यागिन्] परित्याग करनेवाला (औप, अभि १४०)।

परिच्चाग, परिच्चाय पु [परित्याग] त्याग, मोचन (पंचा ११, १४, उप ७९२, औप, भग)।

परिच्चाय वि [परित्याज्य] त्याग करने लायक, 'अण्णेवि अमुहजोगा सोहिपयाणे परिच्चाया' (सबोध ५४)।

परिच्छिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, ऊपर फेंका हुआ (षड्)।

परिच्छिअ देखो परिचिय (उप १४२ टी)।

परिच्छ देखो परिक्ख, 'मणवयणकायगुत्तो सज्जो मरणं परिच्छिज्जा' (पच ६८, पिंड ३०), परिच्छति (पिंड ३१)।

परिच्छग वि [परीक्षक] परीक्षा-कर्त्ता (धर्मसं ५१६)।

परिच्छण्ण, परिच्छन्न वि [परिच्छन्न] १ आच्छादित, ढका हुआ (महा)। २ परिच्छद-युक्त, परिवार-सहित (वव ४)।

परिच्छय वि [परीक्षक] परीक्षा करनेवाला (सम्म १५९)।

परिच्छा स्त्री [परीक्षा] परख, जाँच, आजमाइश (ओघ ३१ भा, विसे ८४८, उप पृ १०८)।

परिच्छिअ देखो परिक्खिय (श्रा १६)।

परिच्छिंद सक [परि + छिद्] १ निश्चय करना, निर्णय करना। २ काटना, काट डालना। परिच्छिंदइ (धर्मसं ३७१)। संकृ. 'परिच्छिंदिय वाहिरग च साय निक्कम्मदंसी इह मच्चिएहिं' (आचा—टि, पि ५०६, ५९१)।

परिच्छिण्ण वि [परिच्छिन्न] १ काटा हुआ, 'नय सुहतण्हा परिच्छिण्णा' (पच ६५)। २ निर्णीत, निश्चित (आव ४)।

परिच्छित्ति स्त्री [परिच्छित्ति] १ परिच्छेद, निर्णय। २ परीक्षा, जाँच (उप ८६५)।

परिच्छिन्न देखो परिच्छिण्ण (स ५६६, सम्मत्त १४२)।

परिच्छूढ वि [दे परिक्षिप्त] १ उत्क्षिप्त, फेंका हुआ (दे ६, २५, नमि ६)। २ परित्यक्त (से १३, १७)।

परिच्छेअ पुं [परिच्छेद] निर्णय, निश्चय (विसे २२४४, स ६६७)।

परिच्छेअ वि [दे. परिच्छेक] लघु, छोटा (औप)।

पर्यंपण न [प्रजल्पन] कथन, उक्ति (उप पृ २१७)।

पयपिय वि [प्रकम्पित] अति काँपा हुआ (स ३७७)।

पर्यंपिय वि [प्रजल्पित] १ कथित, उक्त। २ न. कथन, उक्ति। ३ बकवाद, व्यर्थ जल्पन (विपा १, ७)।

पयपिर वि [प्रजल्पितृ] १ बोलनेवाला। २ वाचाट, बकवादी (सुर १६, ५८, सुपा ४१५, श्रा २७)।

पयंस सक [प्र + दर्शय्] दिखलाना। पयंसेंति (विसे ६३२)।

पयसण न [प्रदर्शन] दिखलाना (स ६१३)।

पयसिअ वि [प्रदर्शित] दिखलाया हुआ (सुर १, १०१, १२, ३२)।

पयक्क देखो पाइक्क ( )।

पयक्ख सक [प्रत्या + ख्या] प्रत्याख्यान करना, प्रतिज्ञा करना। पयक्खेइ (विचार ७५५)।

पयक्खिण देखो पदक्खिण = प्रदक्षिण (णाया १, १६)।

पयक्खिण देखो पदक्खिण = प्रदक्षिणय्। सक. पयक्खिणिऊण (सुर ८, १०५)।

पयक्खिणा देखो पदक्खिणा (उप १४२ टी; सुर १४ ३०)।

पयग देखो पयय = पतग, पदक, पदग (राज, पव १९४)।

पयच्छ सक [प्र + यम्] देना, अर्पण करना। पयच्छइ (महा)। संकृ पयच्छिऊण (राज)।

पयच्छण न [प्रदान] १ दान, अर्पण (सुर २, १५१)। २ वि. देनेवाला (सण)।

पयट्ट अक [प्र + वृत्] प्रवृत्ति करना। पयट्टइ (हे २, ३०, ४, ३४७, महा)। कृ. पयट्टिअव्व (सुपा १२६)। प्रयो पयट्टावेह (स २२) संकृ पयट्टाविउं (स ७१५)।

पयट्ट वि [प्रवृत्त] १ जिसने प्रवृत्ति की हो वह (हे २, २९, महा)। २ चलित, 'पयट्टय चलिय' (पाअ)।

पयट्टय वि [प्रवर्त्तक] प्रवृत्ति करनेवाला (पएह १, १)।

पयट्टावअ वि [प्रवर्त्तक] प्रवृत्ति करानेवाला (कप्पू)।

पयट्टाविअ वि [प्रवर्त्तित] प्रवृत्त किया हुआ, किसी कार्य में लगाया हुआ (महा)।

पयट्टिअ वि [दे. प्रवर्त्तित] ऊपर देखो (दे ६, २६)।

पयट्टिअ वि [प्रवृत्त] प्रवृत्ति-युक्त (उत्त ४, २, सुख ४, २)।

पयट्ठाण देखो पइट्ठाण (काल, पि २२०)।

पयड सक [प्र + कटय्] प्रकट करना, व्यक्त करना। पयडइ, पयडेइ (मण, महा)। वकृ पयडत (सुपा १, गा ४०६, भवि)। हेकृ पयडित्तु (पि ५७७)। प्रयो. पयडावइ (भवि)।

पयड वि [प्रकट] १ व्यक्त, खुला (कुमा, महा)। २ विख्यात, विश्रुत, प्रसिद्ध, 'विक्खाश्रो विस्सुश्रो पयडो' (पाअ)।

पयडण न [प्रकटन] १ व्यक्त करना, खुला करना (सण)। २ वि. प्रकट करनेवाला, 'जे तुज्झ गुणा बहुनेहपयडणा' (धर्मवि ६६)।

पयडावण न [प्रकटन] प्रकट कराना (भवि)।

पयडाविय वि [प्रकटित] प्रकट कराया हुआ (काल, भवि)।

पयडि देखो पगइ (पएण २३, पि २१९)।

पयडि स्त्री [दे] मार्ग, रास्ता, 'जे पुण सम्मद्दिट्ठी तेसि मणो चडणपयडीए' (सट्ठि १४२)।

पयडिय वि [प्रकटित] प्रकट किया हुआ (सुर ३, ४८, श्रा २)।

पयडिय वि [प्रपतित] गिरा हुआ (णाया १, ८—पत्र १३३)।

पयडीकय वि [प्रकटीकृत] प्रकट किया हुआ (महा)।

पयडीकर सक [प्रकटी + कृ] प्रकट करना। प्रयो. पयडीकरावेमि (महा)।

पयडीभूअ } वि [प्रकटीभूत] जो प्रकट
पयडीहूअ } हुआ हो (सुर ६, १८४, श्रा १६, महा; सण)।

पयड्ढणी स्त्री [दे] १ प्रतिहारी। २ आकृष्टि, आकर्षण। ३ महिषी (दे ६, ७२)।

पयण देखो पवण (गा ७७७)।

पयण देखो पडण (विसे १८५६)।

पयण } न [पचन, °क] १ पाक, पकाना
पयणग } (औप, कुमा)। २ पात्र-विशेष, पकाने का पात्र (सूअनि ८०, जीव ३)। °साला स्त्री [°शाला] एक-स्थान (बृह २)।

पयणु } वि [प्रतनु] १ कृश, पतला। २
पयणुअ } सूक्ष्म, बारीक। अल्प, थोडा (स २४६, सुर ८, १६५, भग ३, ४, जं २; पउम ३०, ९६, से ११, ५६, गा ६८२, गउड)।

पयण्णय देखो पइण्णग (तंदु १)।

पयत्त अक [प्र + यत्] प्रयत्न करना। पअत्तध (शौ) (पि ४७१)।

पयत्त देखो पयट्ट = प्र + वृत (काल)।

पयत्त पुं [प्रयत्न] चेष्टा, उद्यम, उद्योग (सुपा, उव, सुर १, ६, २, १८२, ४, ८१)।

पयत्त वि [प्रदत्त, प्रत्त] १ दिया हुआ (भग)। २ अनुज्ञात, संमत (अनु ३)।

पयत्त देखो पयट्ट = प्रवृत्त (सुर २, १५९, ३, २४८, से ३, २४, ८, ३, गा ४३६)।

पयत्ताविअ वि [प्रवर्त्तित] प्रवृत्त किया हुआ (काल)।

पयत्थ पु [पदार्थ] १ शब्द का प्रतिपाद्य, पद का अर्थ (विसे १००३, चेइअ २७१)। २ तत्व (सम १०६, सुपा २०५)। ३ वस्तु, चीज (पाअ)।

पयन्न देखो पइण्ण = प्रकीर्ण (भवि)।

पयन्ना देखो पइण्णा (उप १४२ टी)।

पयप्पण न [प्रकल्पन] कल्पना, विचार (धर्मसं ३०७)।

पयय देखो पायय = प्राकृत (हे १, ६७, गउड)।

पयय वि [प्रयत] प्रयत्न शील, सतत प्रयत्न करनेवाला (औप, पउम ३, ६५, सुर १, ४, उव), 'इच्छिज्ज न इच्छिज्ज व तहवि पयओ निमतए साहू' (पुप्फ ४२६, पडि)।

पयय पु [पतग, पदक, पदग] १ वान-व्यन्तर देवो की एक जाति (ठा २, ३, पएण १, इक)। २ पतग देवों का दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३)। °वइ पु [°पति] पतग देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)।

पयय न [दे] अनिश, निरन्तर (दे ६, ६)।

परिणममाण (ठा ७, णाया १, १—पत्र ३१)।

परिणमण न [परिणमन] परिणाम (धर्मसं ४७२, उप ८६८)।

परिणमिअ } वि [परिणत] १ परिपक्व
परिणय } (पाअ)। २ वृद्धि-प्राप्त, 'तह परिणमिओ धम्मो जह त खोभंति न सुराविं' (धर्मवि ८)। ३ अवस्थान्तर को प्राप्त (ठा २, १—पत्र ५३, पिंड २६५)। °वय वि [°वयस्] १ वृद्ध, बूढा (णाया १, १—पत्र ४८)।

परिणयण न [परिणयन] विवाह (उप १०१४, सुपा २७१)।

परिणयणा स्त्री ऊपर देखो (धर्मवि १२६)।

परिणव देखो परिणम। परिणवइ (आरा ३१, महा)।

परिणाइ पु [परिज्ञाति] परिचय, 'कह तुज्झ तेण समय परिणाई तक्खणेण उप्पन्नो' (पउम ५३, २५)।

परिणाम सक [परि + णमय्] परिणत करना। परिणामेइ (ठा २, २)। कवकृ परिणामिज्जमाण, परिणामेज्जमाण (भग, ठा १०)। हेकृ परिणामित्तए (भग ३, ४)।

परिणाम पुं [परिणाम] १ अवस्थान्तर-प्राप्ति, रूपान्तरलाभ (धर्मस ४७२)। २ दीर्घ काल के अनुभव से उत्पन्न होनेवाला आत्म-धर्म विशेष (ठा ४, ४—पत्र २८३)। ३ स्वभाव, धर्म (ठा ६)। ४ अध्यवसाय, मनो-भाव (निचू २०)। ५ वि परिणत करनेवाला, 'दिट्ठुता परिणामे' (वव १०, बृह १)।

परिणामणया } स्त्री [परिणामना] परिण-
परिणामणा } माना, रूपान्तरकरण (पएण ३४—पत्र ७७४, विसे २२७८)।

परिणामय वि [परिणामक] परिणत करनेवाला (बृह १)।

परिणामि वि [परिणामिन्] परिणत होनेवाला (दे १, १, श्रावक १८३)। °कारण न [°कारण] कार्य-रूप में परिणत होनेवाला कारण, उपादान कारण (उवर २७)।

परिणामिअ वि [पारिणामिक] १ परिणाम-जन्य, परिणाम से उत्पन्न। २ परिणाम-संबन्धी। ३ पुं. परिणाम। ४ भाव-विशेष, 'सव्वदव्वपरिणइरूवो परिणामिओ सव्वो' (विसे २१७६, ३४९५)।

परिणामिअ वि [परिणमित] परिणत किया हुआ (पिंड ६१२, भग)।

परिणामिआ स्त्री [पारिणामिकी] बुद्धि-विशेष, दीर्घ काल के अनुभव से उत्पन्न होनेवाली बुद्धि (ठा ४, ४)।

परिणाय वि [परिज्ञात] जाना हुआ, परिचित (पउम ११, २७)।

परिणाव सक [परि + णायय्] विवाह कराना। परिणावसु (कुप्र ११६)। कृ. परिणावियव्व, परिणावेयव्व (कुप्र ३३०, १५४)।

परिणावण न [परिणायन] विवाह कराना (सुपा ३९८)।

परिणाविअ वि [परिणायित] जिसका विवाह कराया गया हो वह (सुपा १६५, धर्मवि १३६, कुप्र १४)।

परिणाह पु [परिणाह] १ लम्बाई, विस्तार (पाअ, से ११, १२)। २ परिधि (स ३१२; ठा २, २)।

परिणिऊण देखो परिण।

परिणित देखो परिणी = परि + गम्।

परिणिज्जंत देखो परिणी = परि + णी।

परिणिज्जरा स्त्री [परिनिर्जरा] विनाश, क्षय (पउम ३१, ६)।

परिणिज्जिय वि [परिनिर्जित] पराभूत, पराजय-प्राप्त (पउम ५२, २१)।

परिणिट्ठा स्त्री [परिनिष्ठा] संपूर्णता, समाप्ति (उवर १२५)।

परिणिट्ठाण न [परिनिष्ठान] अवसान, अन्त (विसे ६२६)।

परिणिट्ठिअ वि [परिनिष्ठित] १ पूर्ण किया हुआ, समाप्त किया हुआ (रयण २५)। २ पार-प्राप्त (णाया १, ८, भास ६८, पचा १२, १४)। ३ परिज्ञात (वव १०)।

परिणिट्ठिया स्त्री [परिनिष्ठिता] १ कृषि-विशेष, जिसमे दो या तीन वार तृण-शोधन किया गया हो वह कृषि, अर्थात् दो या तीन वार की सोहनी (निराई) की हुई खेत। २ दीक्षा-विशेष, जिसमे वारवार अतिचारों की आलोचना की जाती हो वह दीक्षा (राज)।

परिणिय वि [परिणीत] जिसका विवाह हुआ हो वह (सण, भवि)।

परिणिव्वव सक [परिनिर् + वापय्] सर्व प्रकार से अतिशय परिणत करना। संकृ. परिणिव्ववियि (कस)।

परिणिव्वा अक [परिनिर् + वा] १ शान्त होना। २ मुक्ति पाना, मोक्ष को प्राप्त करना। परिणिव्वायति (भग)। भूका परिणिव्वाइंसु (पि ५१६)। भाव परिणिव्वाहिति (भग)।

परिणिव्वाण न [परिनिर्वाण] मुक्ति, मोक्ष (आचा, कप्प)।

परिणिव्वुइ स्त्री [परिनिर्वृति] ऊपर देखो (राज)।

परिणिव्वुय देखो परिनिव्वुअ (औप)।

परिणी सक [परि + णी] १ विवाह करना। २ ले जाना। कवकृ. परिणिज्जंत, परिणीयमाण (कुप्र १२७, आचा)।

परिणी अक [परि + गम्] बाहर निकलना। वकृ. परिणित (न ६६१)।

परिणीअ वि [परिणीत] जिसका विवाह किया गया हो वह (महा, प्रासू ६३, सण)।

परिणील वि [परिनील] सर्वथा हरा रग का (गउड)।

परिणे देखो परिणी। परिणेइ (महा, पि ४७४)। हेकृ. परिणेउं (कुप्र ५०)। कृ. परिणेयव्व (सुपा ४५५, कुप्र १३८)।

परिणेविय (अप) वि [परिणायित] जिसका विवाह कराया गया हो वह (सण)।

परिणेव्वुय देखो परिनिव्वुअ (उत्त १८, ३५)।

परिण्ण वि [परिज्ञ] ज्ञाता, जानकार (आचा १, ५, ६, ४)।

परिण्ण° देखो परिण्णा° (आचा १, २, ६, ५)।

परिण्णा सक [परि + ज्ञा] जानना। सकृ परिण्णाय (आचा, भग)। हेकृ. परिण्णादु (शौ) (अभि १८६)।

परिण्णा स्त्री [परिज्ञा] १ ज्ञान, जानकारी (आचा, वसु, पंचा ६, २५)। २ विवेक (आचा)। ३ पर्यालोचन, विचार (सूअ १,

वहा पेड (श्रा २३)। °वाय वि [°पात्] प्रकृष्ट पैरवाला (श्रा २३)। °वाय वि [°वाच] फलित शालि (श्रा २३)। °वाय वि [°व्याप] १ विशेष भाव से शत्रु की चिन्ता करनेवाला। २ पु मन्त्री, श्रमात्य। ३ सुभट, योद्धा (श्रा २३)। °वाय वि [°पात] श्रापात-सुन्दर, जो प्रारम्भ मे ही सुन्दर हो वह (श्रा २३)। °वाय वि [°व्राय] श्रेष्ठ विवाहवाला (श्रा २३)। °वाय वि [°पाय] श्रेष्ठ रक्षावाला, जिसकी रक्षा का उत्तम प्रवन्ध हो वह। २ श्रत्यन्त प्यासा। ३ पु राजा, नरेश (श्रा २३)। °वाय वि [°व्यात] १ इतर के पास विशेष वमन करनेवाला। २ पु. भिक्षुक, याचक (श्रा २३)। °वाय वि [°पायस्] १ दूसरे की रक्षा के लिए हथियार रखनेवाला। २ पु. सुभट, योद्धा (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°व्याजा] वेश्या, वारागना (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°व्यागस्] श्रसती, कुलटा (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°व्यापा] श्रन्तिम समुद्र की स्थिति (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°पाता] धूर्त-मैत्री (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°व्राया] नृप-कन्या (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°पागा] मरु-भूमि (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°वाच्] कश्मीर-भूमि (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°वाज्] नृप-स्थिति (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°पात्] शतपदी, जन्तु-विशेष (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°व्यावा] भेरी, वाद्य-विशेष (श्रा २३)। °विएस पु [°विदेश] परदेश, विदेश (पउम ३२, ३६)। °व्वस देखो °वस (षड्, गा २६५, भवि)। °सतिग वि [°सत्क] पर-संबन्धी, परकीय (पएह १ ३)। °समय पुं [°समय] इतर दर्शन का सिद्धान्त, 'जावइया नयवाया तावइया चेव परसमया' (सम्म १४४)। °हुअ वि [°भृत] १ दूसरे से पुष्ट, श्रन्य से पालित (प्राप्र)। २ पुस्त्री. कोयल, पिक पक्षी (कप्प)। स्त्री. °आ (सुर ३, ५४, पाग्र)। °घाय देखो °घाय (प्रासू १०४, सम ६७)। °धीण देखो °हीण (धर्मवि १३६)। °यत्त वि [°यत्त] पराधीन, परतन्त्र (पउम ६४, ३४, उप पृ १८२, महा)। °हीण वि [°धीन] परतन्त्र, परायत्त (नाट—मालवि २०)।

पर° देखो परा = प्र (श्रा २३, पउम ६१, ८)।

पर श्र [परम्] १ परन्तु किन्तु, 'जं तुमं श्राणवेसित्ति, परं तुह दूरे नयरं' (महा)। २ उपरान्त, 'नो से कप्पइ एत्तो बाहिं, तेण परं, जत्थ नाणदंसणचरित्ताइं उस्सप्पंति त्ति बेमि' (कस १,५१,२,४—७,४,१२—२६)। ३ केवल, फक्त, 'एस मह सत्तावो, पर माणससरमज्जणेण जइ श्रवगच्छइत्ति' (महा)।

परं श्र [परुत्] श्रागामी वर्ष, 'श्रज्ज कल्ल परं परारिं' (वै २), 'श्रज्ज पर परारिं पुरिसा चिंतति श्रत्थसपत्तिं' (प्रासू ११०)।

परग सक [परि + अङ्ग्] चलना, गति करना। कवकृ परगिज्जमाण (श्रौप)।

परगमण न [पर्यङ्गन] पांव से चलना, चक्रमण (श्रौप)।

परंगामण न [पर्यङ्गन] चलाना, चक्रमण कराना (भग ११, ११—पत्र ५४४)।

परंतम वि [परतम] श्रन्य को हैरान करनेवाला (ठा ४, २—पत्र २१६)।

परतम वि [परतमस्] १ श्रन्य पर क्रोध करनेवाला। २ श्रन्य-विषयक श्रज्ञान रखनेवाला (ठा ४, २—पत्र २१६)।

परंतु श्र [परन्तु] किन्तु (सुपा ४६६)।

परदम वि [परन्दम] १ श्रन्य को पीडा पहुँचाने वाला (उत्त ७, ६)। २ श्रन्य को शान्त करनेवाला। ३ श्रश्व श्रादि को सिखानेवाला (ठा ४, २—पत्र २१३)।

परपर, परंपरग, परंपरय वि [परम्पर] १ भिन्न-भिन्न (णदि)। २ व्यवहित, 'परंपरसिद्धा—' (पएण १, ठा २, १, १०)। ३ पु न परम्परा, श्रविच्छिन्न धारा (उप ७३३), 'पुरिसपरंपरएण तेहिं इहुगा श्राणिया', 'एस दव्वपरंपरगो' (श्राव १), 'परंपरेण' (कप्प, धर्मसं ५३१, १३०६)।

परपरा स्त्री [परम्परा] १ श्रनुक्रम, परिपाटी (भग, श्रौप, पाग्र)। २ श्रविच्छिन्न धारा, प्रवाह (णाया १, १)। ३ निरन्तरता, श्रव्यवधान (भग ६, १)। ४ व्यवधान, श्रन्तर, 'श्रणंतरोववण्णगा चेव परंपरोववण्णगा चेव' (ठा २, २, भग १३, १)।

परंभरि वि [परम्भरि] दूसरे का पेट भरनेवाला (ठा ४, ३—पत्र २४७)।

परंमुह वि [पराङ्मुख] मुँह-फिरा, विमुख (पि २६७)।

परकीअ, परकेर, परक्क वि [परकीय] श्रन्य-सम्बन्धी, इतर से सम्बन्ध रखनेवाला (विसे ४१, सुपा ३४६, श्रभि १५१, षड्; स्वप्न ४०, स २०७, षड्), 'न सेवियव्वा पमया परक्का' (गोय १३)।

परक्क न [दे] छोटा प्रवाह (दे ६, ८)।

परक्कत वि [पराक्रान्त] १ जिसने पराक्रम किया हो वह। २ श्रन्य से श्राक्रान्त, 'गामाणुगाम दूइज्जमाणस्स दुज्जाय दुप्परक्कंत भवइ' (श्राचा)। ३ न पराक्रम, बल। ४ उद्यम, प्रयत्न। ५ श्रनुष्ठान, 'जे श्रबुद्धा महाभागा वीरा श्रसम्मत्तदंसिणो, श्रसुद्ध तेसिं परक्कत' (सूत्र १, ८, २२)।

परक्कम श्रक [परा + क्रम्] पराक्रम करना। परक्कमे परक्कमेज्जा, परक्कमेज्जासि (श्राचा)। वकृ परक्कमत, परक्कममाण (श्राचा)। कृ परक्कमियव्व, परक्कम्म (णाया १, १, सूत्र १, १, १)।

परक्कम सक [परा + क्रम्] १ जाना। २ श्रासेवन करना। ३ श्रक. प्रवृत्ति करना। परक्कमे (दस ५, १, ६)। परक्कमिज्जा (दस ८, ४१)। सकृ. परक्कम्म (दस ८, ३२)।

परक्कम पु [पराक्रम] गर्त श्रादि से भिन्न मार्ग (दस ५, १, ४)।

परक्कम पुंन [पराक्रम] १ वीर्य, बल, शक्ति, सामर्थ्य (विसे १०४६, ठा ३, १, कुमा), 'तस्स परक्कम गीयमाण न तए सुय' (सम्मत्त १७६)। २ उत्साह। ३ चेष्टा, प्रयत्न (श्राचू १, प्रासू ६३, श्राचा)। ४ शत्रु का नाश करने की शक्ति (ज ३)। ५ पर-श्राक्रमण, पर-पराजय (ठा ४, १, भावम)। ६ गमन, गति (सूत्र २, १, ६)। ७ मार्ग (दश० श्र० चू० सू० ८६)।

परक्कमि वि [पराक्रमिन्] पराक्रम-संपन्न (धर्मवि १६, १२०)।

परिदेवणया स्त्री [परिदेवना] ऊपर देखो (ठा ४, १—पत्र १८८)।
परिदेवि वि [परिदेविन्] विलाप करनेवाला (नाट—शकु १०१)।
परिदेविअ न [परिदेवित] विलाप (पाअ, से ११, ६६, सुर २, २४१)।
परिदो अ [परितस्] चारो ओर से (गा ४५४ अ)।
परिधम्म पुं [परिधर्म] छन्द-विशेष (पिंग)।
परिधवलिय त्रि [परिधवलित] खूब सफेद किया हुआ (सण)।
परिधाम पुंन [परिधामन्] स्थान (सुपा ४६३)।
परिधाविअ वि [परिधावित] दौड़ा हुआ (हम्मीर ३२)।
परिधाविर वि [परिधावितृ] दौड़नेवाला (सण)।
परिधूणिय वि [परिधूनित] अत्यन्त कँपाया हुआ (सम्मत्त १३६)।
परिधूसर वि [परिधूसर] धूसर वर्णवाला (वज्जा १२८, गउड)।
परिनट्ठ वि [परिनष्ट] विनष्ट (महा)।
परिनिक्खम देखो पडिनिक्खम। परिनिक्खमेड (कप्प)।
परिनिट्ठिय देखो परिणिट्ठिअ (कप्प, रंभा ३०)।
परिनिय मक [परि + दृश्] देखना, अवलोकन करना। वकृ परिनियत (सुपा ५२२)।
परिनिविट्ठ वि [परिनिविष्ट] ऊपर बैठा हुआ (सुपा २६६)।
परिनिविड त्रि [परिनिविड] विशेष निविड या घना (महा)।
परिनिव्वा देखो परिणिव्वा। परिनिव्वाइ (भग), परिनिव्वाइंति (कप्प)। भवि परिनिव्वाइस्सति (भग)।
परिनिव्वाण देखो परिणिव्वाण (णाया १, ८, ठा १, १, भग, कप्प, पव १३८ टी)।
परिनिव्वुअ, परिनिव्वुड वि [परिनिवृत] १ मुक्त, मोक्ष को प्राप्त (ठा १, १; पउम २०, ८४, कप्प)। २ शान्त, ठंढा (सूअ १, ३, ३, २१)। ३ स्वस्थ (सुपा १८३)।
परिन्न देखो परिण्ण (आचा)।
परिन्न° देखो परिण्ण° (आचा)।
परिन्ना देखो परिण्णा (उप ५२५)।
परिन्नाण देखो परिण्णाण (आचा)।
परिन्नाय देखो परिण्णाय = परिज्ञात (सुपा २६२)।
परिन्नाय वि [प्रतिज्ञात] जिसकी प्रतिज्ञा की गई हो वह) (पिंड २८१)।
परिपंडुर, परिपंडुल वि [परिपाण्डुर] विशेष पाण्डुर—धूसर वर्ण वाला (सुपा २५६, कप्पू, गउड, से १०, ३३)।
परिपंथग वि [प्रतिपथक] दुश्मन, विरोधी, प्रतिकूल (न १०५)।
परिपंथिअ, परिपंथिग वि [परिपन्थिक] ऊपर देखो (स ७४६, उप ६३६)।
परिपक्क वि [परिपक्व] पका हुआ (पव ४, भवि)।
परिपडिअ (अप) वि [परिपतित] गिरा हुआ (पिंग)।
परिपाग पु [परिपाक] विपाक, फल, 'पुव्वभवविहिअसुचरिअपरिपागो एस उदयसपत्तो' (रयण ५२, आचा)।
परिपाडल वि [परिपाटल] सामान्य लाल रंगवाला, गुलाबी रंग का (गउड)।
परिपाडिअ वि [परिपाटित] फाड़ा हुआ, विदारित (दे ७, ६१)।
परिपाल मक [परि + पालय्] रक्षण करना। परिपालइ (भवि)। कृ परिपालणीअ (स्वप्न २६)। सकृ. परिपालिउ (सुपा ३४२)।
परिपालण न [परिपालन] रक्षण (कुप्र २२६, सुपा ३०८)।
परिपालिय वि [परिपालित] रक्षित (भवि)।
परिपासय [दे] देखो परिवास (दे) (पाअ)।
परिपिअ सक [परि + पा] पीना, पान करना। कवकृ. परिपिज्जत (नाट—चैत ४०)।
परिपिंजर वि [परिपिञ्जर] विशेष पीत-रक्त वर्णवाला (गउड)।
परिपिंडिय वि [परिपिण्डित] १ एकत्र समुदित, इकट्ठा किया हुआ (पिंड ४६७)। २ न. गुरु-वन्दन का एक दोष (धर्म २)।
परिपिक्क देखो परिपक्क (पि १०१)।
परिपिज्जंत देखो परिपिअ।
परिपिट्टण न [परिपिट्टन] पीटना, ताडन (वव १)।
परिपिरिया स्त्री [दे] वाद्य-विशेष (भग ५, ४—पत्र २१६)।
परिपिल्ल मक [परिप्र + ईरय्] प्रेरणा। परिपिल्लइ (सुपा ६४)।
परिपिहा मक [परिपि + धा] ढकना, आच्छादन करना। सकृ परिपिहित्ता, परिपिहेत्ता (कप्प, पि ५८२)।
परिपीडिय वि [परिपीडित] जिसको पीडा पहुँचाई गई हो वह (भवि)।
परिपील मक [परि + पीडय्] १ पीडना। २ पीलना, दवाना। परिपीलेज्जा (पि २४०)। सकृ. परिपीलइत्ता, परिपीलिय, परिपीलियाण (भग, राज, आचा २, १, ८, १)।
परिपीलिअ देखो परिपीडिअ (राज)।
परिपुंगल वि [दे] श्रेष्ठ, उत्तम (?), 'जंपइ भविसयत्तु परिपुगलु होसइ रिद्धिविद्धिसुहमगलु' (भवि)।
परिपुच्छ सक [परि + प्रच्छ्] प्रश्न करना। परिपुच्छइ (भवि)।
परिपुच्छण न [परिप्रच्छन] प्रश्न, पृच्छा (भवि)।
परिपुच्छिअ, परिपुट्ठ वि [परिपृष्ट] पूछा हुआ, जिज्ञासित (गा ६२३, भवि, सुपा ३८७)।
परिपुण्ण, परिपुन्न वि [परिपूर्ण] संपूर्ण (भग; भवि)।
परिपुस सक [परि + स्पृश्] संस्पर्श करना। परिपुसइ (से ४, ५)।
परिपूज सक [परि + पूजय्] पूजना। परिपूजउ (अप) (पिंग)।
परिपूणग पुं [दे परिपूर्णक] पक्षि-विशेष का नीड, सुघरी नामक पक्षी का घोसला (विसे १४५४, १४६५)।
परिपूणग पुं [दे. परिपूर्णक] घी-दूध गालने का कपडा, छानना (णंदि ५४)।

परसुहत्त पुं [दे] वृक्ष, पेड़, दरख्त (दे ६, २६)।

परस्सर पुंस्त्री [दे पराशर] गेंडा, पशु-विशेष (पण्ह १, राज)। स्त्री °री (पण्ण ११)।

परहुत्त वि [पराभूत] पराजित, हराया गया (पउम ६१, ८)।

परा अ [परा] इन अर्थों का सूचक अव्यय— १ आभिमुख्य, संमुखता। २ त्याग। ३ धर्षण। ४ प्राधान्य, मुख्यता। ५ विक्रम। ६ गति, गमन। ७ भङ्ग। ८ अनादर। ९ तिरस्कार। १० प्रत्यावर्तन (हे २, २१७)। ११ भृश, अत्यन्त (ठा ३, २, श्रा २३)।

परा स्त्री [दे परा] तृण विशेष (पण्ह २, ३—पत्र १२३)।

पराइ सक [परा + जि] हराना, पराजय करना। सकृ. पराइइत्ता (सूअनि १६६)।

पराइअ वि [पराजित] पराभव-प्राप्त (पउम २, ८६, औप, स ६३४, सुर ६, २५, १३, १७१, उत्त ३२, १२)।

पराइअ (अप) वि [परागत] गया हुआ (भवि)।

पराइण देखो पराजिण। पराइणइ (पि ४७३, भग)।

पराई स्त्री [परकीया] इतर से संबन्ध रखनेवाली, वह नायिका जो परपुरुष से प्रेम करे (हे ४, ३५०, ३६७)। देखो पराय = परकीय।

पराकम देखो परक्कम (सूअ २, १, ६)।

पराकय वि [पराकृत] निराकृत, निरस्त (अज्झ ३०)।

पराकर सक [परा + कृ] निराकरण करना। पराकरोदि (शौ) (नाट—चैत ३५)।

पराजय पुं [पराजय] परिभव, अभिभव, हार (राज)।

पराजय } सक [परा + जि] पराजय
पराजिण } करना, हराना। भूका. पराजयित्था (पि ५१७)। भवि पराजिणिस्सइ (पि ५२१)। संकृ. पराजिणित्ता (ठा ४, २)। हेकृ पराजिणित्तए (भग ७, ९)।

पराजिणिअ } देखो पराइअ = पराजित
पराजिय } (उप पृ ५२, महा)।

पराण देखो पाण = प्राण (नाट—चैत ५४, पि १३२)।

पराणग वि [परकीय] अन्य का, दूसरे का, 'जत्थ हिरण्णसुवण्णं हत्थेण पराणगंपि नो छिप्पे' (गच्छ २, ५०)।

पराणिय वि [पराणीत] पहुँचा हुआ (भवि)।

पराणी सक [परा + णी] पहुँचाना। पराणए (भवि)। पराणेमि (स २३४), 'जइ भणसि ता निमेसमित्तेण तुमं तायमंदिर पराणेमि' (कुप्र ६०)।

परानयण न [पराणयन] पहुँचाना, 'नियमगिणीपरानयणे का लज्जा, अवि य ऊसवो एस' (उर ७२८ टी)।

पराभव सक [परा + भू] हराना। कवकृ. पराभविज्जंत, परऽभवमाण (उप ३२० टी, णाया १, २, १८)।

पराभव पु [पराभव] पराजय, हार (विपा १, १)।

पराभविअ वि [पराभूत] अभिभूत, हराया हुआ (धर्मवि ६८)।

परामट्ठ देखो परामुट्ठ (पउम ६८, ७३)।

परामरिस सक [परा + मृश्] १ विचार करना, विवेचन करना। २ स्पर्श करना। परामरिसइ (भवि)। वकृ परामरिसंत (भवि)। सकृ. परामरिसिअ (नाट—मृच्छ ८७)।

परामरिस पु [परामर्श] १ विवेचन, विचार (प्रामा)। २ युक्ति, उपपत्ति। ३ स्पर्श। ४ न्याय- शास्त्रोक्त व्याप्ति-विशिष्ट रूप मे पक्ष का ज्ञान (हे २, १०५)।

परामिट्ठ } वि [परामृष्ट] १ विचारित,
परामुट्ठ } विवेचित। २ स्पृष्ट, छुआ हुआ (नाट—मृच्छ ३३, हे १ १३१, स १००, कुप्र ५१)।

परामुस सक [परा + मृश] १ स्पर्श करना, छूना। २ विचार करना, विवेचन करना। ३ आच्छादित करना। ४ पोछना। ५ लोप करना। परामुसइ (कस)। कर्म 'सूरो परामुसिज्जइ णाभिमुहुक्खित्तधूलिहिं' (उवर १२३)। वकृ 'नियउत्तरिज्जेण नयणाइं परामुसतेण भणियं' (कुप्र ६६)। कवकृ परामुसिज्जमाण (स ३४६)।

परामुसिय देखो परामुट्ठ (महा, पाअ)।

पराय अक [प्र + राज्] विशेष शोभना। वकृ परायत्त (कप्प)।

पराय पुं [पराग] १ धूली, रज, 'रेणू पंसू रओ पराओ य' (पाअ)। २ पुष्प-रज (कुमा, गउड)।

पराय } वि [परकीय] पर-संबन्धी, इतर
परायग } से संबन्ध रखनेवाला, 'नो अप्पणा पराया गुरुणो कइयावि हुंति सुद्धाणं' (सट्ठि १०५, हे ४, ३७६, भग ८, ५)।

परायण वि [परायण] तत्पर (कम्म १, ६१)।

परारिं अ [परारि] आगामी तीसरा वर्ष (प्रासू ११०, वै २)।

पराल देखो पलाल (प्रासू १३८)।

पराव (अप) सक [प्र + आप्] प्राप्त करना। परावहिं (हे ४, ४४२)।

परावत्त अक [परा + वृत्] १ बदलना, पलटना। २ पीछे लौटना। परावत्तइ (उवर ८८)। वकृ परावत्तमाण (राज)।

परावत्त सक [परा + वर्तय्] १ फिराना। २ आवृत्ति करना। परावत्तति (पव ७१), परावत्तेसि (मोह ४७)। सकृ 'तो सागरेण भणिय अरे परावत्तिऊण नियघरह' (कुप्र ३७८)।

परावत्त पुं [परावर्त] परिवर्तन, हेरफेर, हेराफेरी (स ६२, उप पृ २७, महा)।

परावत्ति वि [परावर्तिन्] परिवर्तन करनेवाला, 'वेसपरावत्तिणी गुलिया' (महा)।

परावत्ति स्त्री [परावृत्ति] परिवर्तन, हेराफेरी (उप १०३१ टी)।

परावत्तिय वि [परावर्तित] परिवर्तित, बदला हुआ (महा)।

परासर पु [पराशर] १ पशु-विशेष (राज)। २ ऋषि-विशेष (औप, गा ८९२)।

परासु वि [परासु] प्राण-रहित, मृत (श्रा १४, धर्मंस ६७)।

पराहव देखो पराभव = पराभव (गुण ६)।

पराहुत्त वि [दे पराङ्मुख] विमुख, मुँह-फिरा (ग २४५, से १०, ६४, उप पृ ३८८, ओघ ५१४, वज्जा २६), 'महविणयपराहुत्तो' (पउम ३३, ७४, सुख २, १७)।

माण (राज)। संकृ परिभाइत्ता, परिभायइत्ता (कप्प, औप)। हेकृ परिभाएउ (पि ५७३)।

परिभाइय वि [परिभाजित] विभक्त किया हुआ (आचा २, २, ३, २)।

परिभायत देखो परिभाअ।

परिभायण न [परिभाजन] बँटवा देना (पिंड १६३)।

परिभाव सक [परि + भावय्] १ पर्यालोचन करना। २ उन्नत करना। परिभावइ (महा)। संकृ परिभाविऊण (महा)। कृ. परिभावणीय (राज)।

परिभावइत्तु वि [परिभावयितृ] प्रभावक, उन्नति-कर्ता (ठा ४, ४—पत्र २६५)।

परिभावि वि [परिभाविन्] परिभव करनेवाला (अभि ७१)।

परिभास सक [परि + भाष्] १ प्रतिपादन करना, कहना। २ निन्दा करना। परिभासइ, परिभासति, परिभासेइ, परिभासए (उत्त १८, २०, सूअ १, ३, ३, ८, २, ७, ३६, विसे १४४३)। वकृ. परिभासमाण (पउम ५३, ६७)।

परिभासा स्त्री [परिभाषा] १ संकेत (सबोध ५८, भास १६)। २ तिरस्कार। ३ चूर्णि, टीका-विशेष (राज)।

परिभासि वि [परिभाषिन्] परिभव-कर्ता, 'राइणियपरिभासी' (सम ३७)।

परिभासिय वि [परिभाषित] प्रतिपादित (सूअनि ८८, भास २१)।

परिभिंद सक [परि + भिद्] भेदन करना। कवकृ. परिभिज्जमाण (उप पृ ६७)।

परिभीय वि [परिभीत] डरा हुआ (उव)।

परिभुंज सक [परि + भुज्] १ खाना, भोजन करना। २ सेवन करना, सेवना। ३ वारवार उपभोग मे लेना। कर्म परिभुजिज्जइ परिभुज्जइ (पि ५४६, गच्छ २, ५१)। वकृ परिभुंजंत, परिभुंजमाण (निचू १, णाया १, १, कप्प)। कवकृ. परिभुज्जमाण (औप, उप पृ ६७, णाया १, १—पत्र ३७)। हेकृ परिभोत्तु (दस ५, १)। कृ. परिभोग, परिभोत्तव्व (पिंड ३४, कस)।

परिभुंजण न [परिभोजन] परिभोग (उप १३४ टी।

परिभुंजणया स्त्री [परिभोजना] ऊपर देखो (सम ४४)।

परिभुत्त वि [परिभुक्त] जिसका परिभोग किया गया हो वह (सुपा ३००)।

परिभुत्त } वि [परिवृत] वेष्टित, परिकरित,
परिभुय } लपेटा हुआ, घेरा हुआ (आचा २, ११, ३, २, ११, १६)।

परिभूअ वि [परिभूत] अभिभूत, तिरस्कृत (सूअ २, ७, २, सुर १६, १२६, चेइय ७१४, महा)।

परिभोअ देखो परिभोग (अभि १११)।

परिभोइ वि [परिभोगिन्] परिभोग करनेवाला (पि ४०५, नाट—शकु ३५)।

परिभोग पुं [परिभोग] १ वारवार भोग (ठा ५, ३ टी, आव ६)। २ जिसका वारवार भोग किया जाय वह वस्त्र आदि (औप)। ३ जिसका एक ही वार भोग किया जाय—जो एक ही वार काम मे लाया जाया वह—आहार, पान आदि (उवा)। ४ बाह्य वस्तु का भोग (आव ६)। ५ आसेवन (पण्ह १, ३)।

परिभोग }
परिभोत्तव्व } देखो परिभुंज।
परिभोत्तु }

परिमइल सक [परि + मृज्] मार्जन करना (सक्षि ३५)।

परिमउअ वि [परिमृदुक] १ विशेष कोमल। २ अत्यन्त सुकर, सरल (धर्मस ७६१, ७६२)। स्त्री °उई (विसे ११६६)।

परिमउलिअ वि [परिमुकुलित] चारो ओर मे सकुचित (सण)।

परिमंडण न [परिमण्डन] अलंकरण, विभूषा (उत्त १६, ६)।

परिमंडल वि [परिमण्डल] वृत्त, गोलाकार (सूअ २, १, १५, उत्त ३६, २२, स ३१२, पाअ, औप, पण्ण १, ठा १, १)।

परिमंडिय वि [परिमण्डित] विभूषित, सुशोभित (कप्प, औप, सुर ३, १२)।

परिमंथर वि [परिमन्थर] मन्द, धीमा (गउड, स ७१६)।

परिमथिअ वि [परिमथित] अत्यन्त आलोडित (सम्मत्त २२६)।

परिमंद वि [परिमन्द] मन्द, अशक्त (सुर ४, २४०)।

परिमग्ग सक [परि + मार्गय्] १ अन्वेषण करना, खोजना। २ मांगना, प्रार्थना करना। वकृ. परिमग्गमाण (नाट—विक्र ३०)। सकृ. परिमग्गेउ (महा)।

परिमग्गि वि [परिमार्गिन्] खोज करनेवाला (गा २६१)।

परिमज्जिर वि [परिमज्जितृ] डूबनेवाला (सुपा ६)।

परिमट्ठ वि [परिमृष्ट] १ घिसा हुआ (से ६, २, ८, ४३)। २ आस्फालित, 'परिमट्ठमेरुसिहरो' (से ४, ३७)। ३ मार्जित, शोधित (कप्प)।

परिमद्द सक [परि + मर्दय्] मर्दन करना। वकृ परिमद्दयंत (सुर १२, १७२)।

परिमद्दण न [परिमर्दन] मर्दन, मालिश (कप्प, औप)।

परिमद्दा स्त्री [परिमर्दा] संबाधन, दबाना, वैयावृत्य—पैर दबाना आदि (निचू ३)।

परिमन्न सक [परि + मन्] आदर करना। परिमन्नइ (भवि)।

परिमल सक [परि + मल्, मृद्] १ घिसना। २ मर्दन करना, 'जो मरणयालि परिमलइ हत्थु' (कुप्र ४५२),

'णलिणीसु भमसि परिमलसि
सत्तल मालइपि णो मुअसि।
तरलत्तण तुह अहो महुअर
जइ पाडला हरइ॥'
(गा ६१६)।

परिमल पुं [परिमल] १ कुंकुम-चन्दनादि का मर्दन (से १, ६४)। २ सुगन्ध (कुमा, पाअ)।

परिमलण न [परिमलन] १ परिमर्दन। २ विचार (गा ४२८, गउड)।

परिमलिअ वि [परिमलित, परिमृदित] जिसका मर्दन किया गया हो वह (गा ६३७, से ७, ६२, महा, वज्जा ११८)।

परिमहिय वि [परिमहित] पूजित (पउम १, १)।

के बन्ध या उदय को रोक कर स्वयं बन्ध या उदय को प्राप्त होती है (पंच ३, १४, ३, ४३, कम्म ५, १ टी)।

परिअत्ता स्त्री [परिवर्ता] ऊपर देखो (कम्म ५, १)।

परिअत्तिअ वि [परिवर्तित] १ मोड़ा हुआ, 'वालिअयं परिअत्तिअ' (पाअ)। २ देखो परिअट्टिय (भवि)।

परिअर सक [परि + चर्] सेवा करना। वकृ परिअरत (नाट—शकु १५८)।

परिअर वि [दे] लीन, निमग्न (दे ६, २४)।

परिअर पुं [परिकर] १ कटि-बन्धन, 'सन्नद्धबद्धपरियरभडेहिं' (भवि)। २ परिवार, 'किरणकिलामियपरियरभुयंगविसजलणधूमतिमिरेहिं' (गउड, चेइय ६४)।

परिअर पुं [परिचर] सेवक, भृत्य, 'अणुणिज्जंतं रक्खापरिअरधुअधवलचामरणिहेण' (गउड)।

परिअरण न [परिचरण] सेवा (संबोध ३६)।

परिअरणा स्त्री [परिचरणा] सेवा (सम्मत्त २१५)।

परिअरिय वि [परिकरित, परिवृत] १ परिवार-युक्त; 'हयगयरहजोहसुहडपरियरिओ' (महा, भवि, सण)। २ परिवेष्टित, 'तओ तं समायरिणऊण सुइसुहं ताण गेय समतओ परियरिया सव्वलोगेण' (महा, सिरि १२८२)।

परिअल सक [गम्] जाना, गमन करना। परिअलइ (हे ४, १६२)।

परिअल } पुस्त्री [दे] थाल, थलिया, भोजन-
परिअलि } पात्र (भवि, दे ६, १२)।

परिअलिअ वि [गत] गया हुआ (कुमा)।

परिअल्ल देखो परिअल। परिअल्लइ (हे ४, १६२)। संकृ परिअल्लिऊण (कुमा)।

परिआरअ वि [परिचारक] सेवक, भृत्य (चारु ५३)। स्त्री °रिआ (अभि १६६)।

परिआल सक [वेष्टय्] वेष्टन करना, लपेटना। परिआलेइ (हे ४, ५१)।

परिआल वि [दे] परिवृत, परिवेष्टित, 'सो जयइ जामइल्लायमाण-
मुहलालिवलयपरिआलं।
लच्छिनिवेसंतेउरवइं व
जो वहइ वणमालं' (गउड)।

परिआल देखो परिवार (णाया १, ८; ठा ४, २, औप)।

परिआलिअ वि [वेष्टित] लपेटा हुआ, वेढा हुआ (कुमा, पाअ)।

परिआव देखो परिताव (दस ६, २, १४)।

परिआविअ सक [पर्या + पा] पीना। परिआविएज्जा (सूअ २, १, ४६)।

परिआसमंत (अप) अ [पर्यासमन्तात्] चारो ओर से (भवि)।

परिइ सक [परि + इ] पर्यटन करना। परियति (उत्त २७, १३)।

परिइण्ण वि [परिकीर्ण] व्याप्त (सम्मत्त १५६)।

परिइद (शौ) वि [परिचित] परिचय-विशिष्ट, ज्ञात, पहचाना हुआ (अभि २४५)।

परिउंब सक [परि + चुम्ब्] चुम्बन करना। परिउंबइ (भवि)।

परिउंबण न [परिचुम्बन] सर्वत चुम्बन (गा २२, हास्य १३४)।

परिउंबणा स्त्री [परिचुम्बना] ऊपर देखो, 'गंडपरिउंबणापुलइअग ण पुणो चिराइस्स' (गा २०)।

परिउज्झिय वि [पर्युज्झित] सर्वथा त्यक्त (सण)।

परिउट्ठ वि [परितुष्ट] विशेष तुष्ट (स ७३४)।

परिउत्थ वि [दे] प्रोषित, प्रवास में गया हुआ (दे ६, १३)।

परिउसिअ वि [पर्युषित] वासी, ठण्ढा, भाफ निकला हुआ (भोजन) (दे १, ३७)।

परिऊढ वि [दे परिगूढ] क्षाम, कृश, पतला, 'उप्फुल्लिआइ खेल्लउ मा
णं वारेहि होउ परिऊढा।
मा जहणभारगरुई पुरिसाअंती
किलिम्मिहिइ' (गा १९६)।

परिऊरण न [परिपूरण] परिपूर्त्ति (नाट—शकु ८)।

परिएस देखो परिवेस = परि + विष्। कवकृ. परिएसिज्जमाण (आचा २, १, २, १)।

परिएस देखो परिवेस = परिवेश (स ३१२)।

परिओस सक [परि + तोषय्] संतुष्ट करना, खुशी करना। परिओसइ (भवि, सण)।

परिओस पु [परितोष] आनन्द, सतोष, खुशी (से ११, ३, गा ६८, २०६, स ६, सुपा ३७०)।

परिओस पुं [दे. परिद्वेष] विशेष द्वेष (भवि)।

परिओसिय वि [परितोषित] सतुष्ट किया हुआ (से १३, २५, भवि)।

परिंत देखो परी = परि + इ।

परिकंख सक [परि + काङ्क्ष्] १ विशेष अभिलाषा करना। २ प्रतीक्षा करना। परिकंखए (उत्त ७, २)।

परिकंद पु [परिक्रन्द] आक्रन्द, चिल्लाहट (हम्मीर ३०)।

परिकंपि वि [परिकम्पिन्] अतिशय कँपानेवाला (गउड)।

परिकंपिर वि [परिकम्पितृ] विशेष काँपनेवाला (सण)।

परिकंखिय वि [परिकाङ्क्षित] परिगृहीत (राय)।

परिकट्टलिअ वि [दे] एकत्र पिण्डीकृत (पिंड २३६)।

परिकड्ढ सक [परि + कृष्] १ पार्श्व भाग मे खींचना। २ प्रारम्भ करना। वकृ. परिकड्ढेमाण (राज)। संकृ परिकड्ढिऊण (पचव २)।

परिकढिण वि [परिकठिन] अत्यन्त कठिन (गउड)।

परिकप्प सक [परि + कल्पय्] १ निष्पादन करना। २ कल्पना करना। परिकप्पयति (सूअ १, ७, १३)। संकृ परिकप्पिऊण (चेइय १४)।

परिकप्पिय वि [परिकल्पित] छिन्न, काटा हुआ (पण्ह १, ३)। देखो परिगप्पिय।

परिकब्बुर वि [परिकर्बुर] विशेष कबरा—चितकबरा (गउड)।

परिकम्म } न [परिकर्मन्] १ गुण-विशेष
परिकम्मण } का आधान, संस्कार-करण, 'परिकम्म किरियाए वत्थूणं गुणविसेन-

परियाणिअ पुन [परिगानिक] १ यान, वाहन। २ विमान विशेष (ठा ८)।

परियादि देखो परियाइ। परियादियति (कप्प)। सक्र परियादित्ता (कप्प)।

परियाय देखो पज्जाय (ठा ४, ४, सुपा १६, विसे २७६१, औप, आचा, उवा)। ६ अभिप्राय, मत, 'सएहिं परियाएहिं लोअ बूया कडेति य' (सूत्र १, १, ३, ६)। १० प्रव्रज्या दीक्षा (ठा ३, २—पत्र १२६)। ११ ब्रह्मचर्य (श्राव ४)। १२ जिन-देव के केवल-ज्ञान की उत्पत्ति का समय (णाया १, ८)। °थेर पु [°स्थविर] दीक्षा की अपेक्षा से वृद्ध (ठा ३, २)।

परियायतकरभूमि स्त्री [पर्यायान्तकृद्-भूमि] जिन देव के केवल ज्ञान की उत्पत्ति के समय से लेकर तदनन्तर सर्व प्रथम मुक्ति पानेवाले के बीच के समय का अन्तर (णाया १, ८—पत्र १५४)।

परियार सक [परि+चारय्] १ सेवा-शुश्रूषा करना। २ सभोग करना, विषय-सेवन करना। परियारेइ (ठा ३, १, भग)। वकृ. परियारेमाण (राज)। कवकृ परियारिज्जमाण (ठा १०)।

परियार पु [परिचार] मैथुन, विषय-सेवन (पएण ३४—पत्र ७८०, ठा ३, १)।

परियारग वि [परिचारक] १ विषय-सेवन करनेवाला (पएण २, ठा २, ४)। २ सेवा-शुश्रूषा करनेवाला (विपा १, १)।

परियारण न [परिचारण] १ सेवा-शुश्रूषा (सुज्ज १८—पत्र २६५)। २ काम-भोग (पएण ३४)।

परियारणया } स्त्री [परिचारणा] ऊपर
परियारणा } देखो (पएण ३४, ठा ५, १)। °सद्द पु [°शब्द] विषय-सेवन के समय का स्त्री का शब्द (निचू १)।

परियाल देखो परिवार (राय ५४)।

परियालोयण न [पर्यालोचन] विचार, चिन्तन (सुपा ५००)।

परियाव देखो परिताव = परिताप (आचा, ओघ ५५४)।

परियावज्ज अक [पर्या + पद्] १ पीडित होना। २ रूपान्तर मे परिणत होना। ३ सक, सेवना। परियावज्जइ परियावज्जति (कप्प, आचा)।

परियावज्जण न [पर्यापादन] रूपान्तर-प्राप्ति (पिंड २८०)।

परियावज्जणा स्त्री [पर्यापादन] आसेवन (ठा ३, ४—पत्र १७८)।

परियावण देखो परितावण (सूत्र २, २, ६२)।

परियावणा स्त्री [परितापना] परिताप, सताप (औप)।

परियावणिया स्त्री [परियापनिका] कालान्तर तक अवस्थान, स्थिति (णाया १, १४—पत्र १८६)।

परियावण्ण } वि [पर्यापन्न] स्थित, अव-
परियावन्न } स्थित (आचा २,१,११,७, ८, भग ३४, २, पस)।

परियावन्न वि [पर्यापन्न] लब्ध, प्राप्त (आचा २, १, ६, ६)।

परियावस सक [पर्या + वासय्] आवास कराना। परियावसे (उत्त १८, ५४, सुख १८, ५४)।

परियावसह पु [पर्यावसथ] मठ, सन्यासी का स्थान (आचा २, १, ८, २)।

परियाविय वि [परितापिन] पीडित (पडि)।

परियासिय वि [परियासित] वासी रखा हुआ (वव)।

परिरंज सक [भञ्ज्] भांगना, तोडना। परिरंजइ (प्राकृ ७४)।

परिरंभ सक [परि + रभ्] आलिंगन करना। परिरंभस्सु (शौ) (पि ४६७)। सकृ. परिरंभिउ (कुप्र २४२)।

परिरंभण न [परिरम्भन] आलिङ्गन (पाअ, गा ८३५; सुपा २, ३६६)।

परिरक्ख सक [परि + रक्ष्] परिपालन करना। परिरक्खइ (भवि)। कृ परिक्खणीअ (सिक्खा ३१)।

परिरक्खण न [परिरक्षण] परिपालन (गा ६०१, भवि)।

परिरक्खा स्त्री [परिरक्षा] ऊपर देखो (पउम ५६, ५३, धर्मवि ५३, गउड)।

परिरक्खिय वि [परिरक्षित] परिपालित (भवि)।

परिरद्ध वि [परिरब्ध] आलिङ्गित (गा ३६८)।

परिरय पु [परिरय] १ परिधि, परिक्षेप (उत्त ३६, ५६, पउम ८६, ६१; पव १५८, औप)। २ पर्याय, समानार्थक शब्द, 'एगपरिरय त्ति वा एगपज्जाय त्ति वा एगणामभेद त्ति वा एगट्ठा' (आचू १)। ३ परिभ्रमण, फिर कर जाना, 'महया वेरो, तम्स य अतरा जो रोगस्स य जो ममत्या ते रज्जुएण वयति जो असमत्यो सो परिरएण—समाडेण वयइ' (ओघभा २० टी)।

परिराय अक [परि + राज्] विराजना, शोभना। वकृ. परिरायमाण (कप्प)।

परिरिंख सक [परि + रिङ्ख्] चलना, फरकना, हिलना। वकृ. परिरिंखमाण (उप ५३० टी)।

परिरुंभ सक [परि + रुध्] रोकना, अटकाना। कर्म परिरुज्झइ (गउड ४३४)। संकृ. परिरुंभिऊण (उवकु १)।

परिलंघि वि [परिलङ्घिन्] लघन करनेवाला (गउड)।

परिलंबि वि [परिलम्बिन्] लटकनेवाला (गउड)।

परिलंभिअ वि [परिलम्भित] प्राप्त कराया हुआ, 'सो गयवरो मुणीए (मुणीहिं) वयाणि परिलंभिओ पसन्नप्पा' (पउम ८४, १)।

परिलग्ग वि [परिलग्न] लगा हुआ, व्यापृत (उप ३५६ टी)।

परिलिअ वि [दे] लीन, तन्मय (दे ६, २४)।

परिली अक [परि + ली] लीन होना। वकृ परिलिंत, परिलेंत, परिलीयमाण (णाया १, १—पत्र ५, औप, से ६, ४८, पएह १, ३, राय)।

परिली स्त्री [दे] आतोद्य-विशेष, एक तरह का वाजा (राज)।

परिलीण वि [परिलीन] निलीन (पाअ)।

परिलुंप सक [परि + लुप्] लुप्त करना, अदृष्ट करना। कवकृ परिलुप्पमाण (महा)।

परिलेंत देखो परिली = परि + ली।

परिलोयण न [परिलोचन, परिलोकन] अवलोकन, निरीक्षण। २ वि देखनेवाला, 'जुगतरपरिलोयणाए दिट्ठीए' (उवा)।

परिक्खेवि वि [परिक्षेपिन्] तिरस्कार करनेवाला (उत्त ११, ८)।
परिखअ पुं [दे] काहार, कहार, जलादि-वाहक, नौकर (दे २, २७)।
परिखज्ज सक [परि + खर्ज्] खुजाना, खुजलाना। कवकृ 'परिखज्जमाणमत्थयदेसो' (उप ६८६ टि)।
परिखण न [परीक्षण] परीक्षा-करण, परीक्षा लेने, परखने या जाँच करने का काम (पव ३८)।
परिखविय वि [परिक्षपित] परिक्षीण, 'गुरुअट्टज्झाणपरिखवियसरीरो' (महा)।
परिखाम वि [परिक्षाम] अति दुर्बल, विशेप कृश (गा १६६)।
परिखित्त देखो परिक्खित्त (सण)।
परिखिव देखो परिक्खिव। परिखिवइ (भवि), 'राया त परिखिवई दोहग्गवईए मज्झम्मि' (सम्मत्त २१७, चेइय ६५५)।
परिखिविय देखो परिखित्त (सण)।
परिखुहिय वि [परिक्षुब्ध] अतिशय क्षोभ को प्राप्त (भवि)।
परिखेइय वि [परिखेदित] विशेप खिन्न किया हुआ (सण)।
परिखेद (शौ) पुं [परिखेद] विशेप खेद (स्वप्न १०, ८०)।
परिखेय सक [परि + खेदय्] अतिशय खिन्न करना। परिखेवइ (सण)। सकृ. परिखेइयि (अप) (सण)।
परिखेविय (अप) देखो परिखिविय (सण)।
परिगतु देखो परिगम।
परिगण सक [परि + गणय्] १ गणना करना। २ चिन्तन करना, विचार करना। वकृ–'एस थक्का मम गमणस्स त्ति परि-गणतेण विरणविओ राया' (महा)।
परिगप्पण न [परिकल्पन] कल्पना (धर्मसं ६८१)।
परिगप्पणा स्त्री [परिकल्पना] ऊपर देखो (धर्मसं ३०५)।
परिगप्पिय वि [परिकल्पित] जिसकी कल्पना की गई हो वह (स ११३, धर्मसं ६६६)। देखो परिकप्पिय।
परिगम सक [परि + गम्] १ जाना, गमन करना। २ चारो ओर से वेष्टन करना। ३ व्याप्त करना। संकृ. परिगतु (सण)।
परिगमण न [परिगमन] १ गुण, पर्याय, 'परिगमण पज्जाओ अणेगकरणगुणोत्ति एगत्था' (सम्म १०६)। २ समन्ताद् गमन (निचू ३)।
परिगमिर वि [परिगन्तृ] जानेवाला (सण)।
परिगय वि [परिगत] १ परिवेष्टित, 'मणु-स्सवग्गुरापरिगए' (उवा, गा ६६), 'बहुपरि-यणपरिगया' (सम्मत्त २१७)। २ व्याप्त, 'विसपरिगयाहि दाढाहि' (उवा)।
परिगर पुं [परिकर] परिवार, 'सेसाण तु हरियव्व परिगरविहवकालमादीणि णाउं' (धर्मसं ६२६)।
परिगरिय वि [परिकरित] देखो परिअरिय (सुपा १२७)।
परिगल अक [परि + गल्] १ गल जाना, क्षीण होना। २ झरना, टपकना। परिगलइ (काल)। वकृ. परिगलंत (पउम ११२, १५, वडु ४४)।
परिगलिय वि [परिगलित] गला हुआ, परिक्षीण (कुप्र ७, महा, सुपा ८७, ३६२)।
परिगलिर वि [परिगलितृ] गल जानेवाला, क्षीण होनेवाला (सण)।
परिगह देखो परिगेण्ह। सकृ परिगहिअ (मा ४८)।
परिगह देखो परिग्गह (कुमा)।
परिगहिय देखो परिग्गहिय (वृह १)।
परिगा सक [परि + गै] गान करना। कवकृ. परिगिज्जमाण (णाया १, १)।
परिगालण न [परिगालन] गालन, छानन (पराह १, १)।
परिगिज्जमाण देखो परिगा।
परिगिज्झ } देखो परिगेण्ह।
परिगिज्झिय }
परिगिण्ह देखो परिगेण्ह। परिगिरगहइ (आचू १)। वकृ परिगिण्हत, परिगिण्हमाण (सूअ २, १, ४४, ठा ७—पत्र ३८३)।
परिगिला अक [परि + ग्लै] ग्लान होना। वकृ. परिगिलायमाण (आचा)।
परिगुण सक [परि + गुणय्] परिगणन करना, गिनती करना। परिगुणहु (अप) (पिंग)।
परिगुणण न [परिगुणन] स्वाध्याय (ओघ ६२)।
परिगुअ अक [परि + गुप्] १ व्याकुल होना। २ सक सतत भ्रमण करना। वकृ. परिगुवत (राज)।
परिगुअ सक [परि + गु] शब्द करना। वकृ परिगुवंत (राज)।
परिगुव्व अक [परि + गुप्] १ व्याकुल होना। २ सक. सतत भ्रमण करना। वकृ. परिगुव्वत (ठा १०—पत्र ५००)।
परिगू सक [परि + गू] शब्द करना। कवकृ परिगुव्वत (ठा १०—पत्र ५००)।
परिगेण्ह } सक [परि + ग्रह्] ग्रहण करना, स्वीकार करना (प्रामा)।
परिग्गह } वकृ परिग्गहमाण (आचा १, ८, ३, १)। सकृ परिगिज्झिय, परिघेत्तूण (राज, पि ५८६)। हेकृ परिघेत्तु (पि ५७६)। कृ. परिगिज्झ, परिघेतव्व, परिघेत्तव्व (उत्त १, ४३, सुपा ३३, सूअ २, १, ४८, पि ५७०)।
परिग्गय देखो परिगय (दस ६, २, ८)।
परिग्गह पु [परिग्रह] १ ग्रहण, स्वीकार। २ धन आदि का सग्रह (पराह १, ५, औप)। ३ ममत्व, मूर्च्छा (ठा १)। ४ ममत्व पूर्वक जिसका सग्रह किया जाय वह (आचा, ठा ३, १, धर्म २)। °वेरमण न [°विरमण] परिग्रह से निवृत्ति (ठा १, पराह २, ५)। °वत वि [°वत्] परिग्रह-युक्त (आचा, पि ३६६)।
परिग्गहि वि [परिग्रहिन्] परिग्रह-युक्त (सूअ १, ६)।
परिग्गहिय वि [परिगृहीत] स्वीकृत (उवा, औप)।
परिग्गहिया स्त्री [पारिग्रहिकी] परिग्रह-सम्बन्धी क्रिया (ठा २, १, नव १७)।
परिघग्घर वि [परिघर्घर] बैठी हुई (आवाज), 'हरिणो जयइ चिरं विहयसद्दपरि-घग्घरा वाणी' (गउड)।

परिवाइय त्रि [परिवाचित] पढा हुआ (पउम ३७, १५)।

परिवाई स्त्री [परिवाद] कलंक-वार्ता, 'दइयम्म ताव वत्ता जणपरिवाई लहु पत्ता' (पउम ६५, ४१)।

परिवाड सक [वटय्] १ घटाना, मगत करना। २ रचना, निर्माण करना। परिवाडेइ (हे ४, ५०)।

परिवाडल देखो पारपाडल (गउड)।

परिवाडि स्त्री [परिपाटि] १ पद्धति, रीति (विसे १०८०)। २ पंक्ति, श्रेणि (उत्त १ ३२)। ३ क्रम, परंपरा (सवे ६)। ४ सूत्रार्थ-वाचना, अध्यापन 'थिरपरिवाडी गहियवक्को' (धर्मवि ३६), 'एगत्थीहि वत्ति न करे परिवाडिदाणमवि तामि' (कुलक ११)।

परिवाडिअ वि [वटित] रचित (कुमा)।

परिवाडी देखो परिवाडि, 'परिवाडीआगय हवइ रज्ज' (पउम ३१, १०६, पाअ)।

परिवाद पुं [परिवाद] निन्दा, दोष-कीर्तन (धर्मसं ६५८)।

परिवादिणी स्त्री [परिवादिनी] वीणा-विशेष (राज)।

परिवाय देखो परिवाद (कप्प, औप, पउम ६५, ६०, णाया १, ?, स ३२, आत्महि १५)।

परिवायग } पु [परिव्राजक] सन्यासी, परिवायय } बाबा, (सण, सुर १५, ५)।

परिवायणी स्त्री [परिवादनी] सात तांतवाली वीणा (राय ४६)।

परिवार सक [परि+वारय्] १ वेष्टन करना। २ कुटुम्ब करना। वकृ परिवारयन (उत्त १३, १८)। सकृ परिवारिया (सूअ १, ३, २, २)।

परिवार पुं [परिवार] गृह-लोक, घर के मनुष्य (औप महा, कुमा)। २ न. म्यान (पाअ)।

परिवारण न [परिवारण] १ निराकरण (पण्ह १, १—पत्र १६)। २ आच्छादन, ढकना (दे १, ८६)।

परिवारिअ वि [दे] घटित, रचित (दे ६, ३०)।

परिवारिअ वि [परिवारित] १ परिवार-सपन्न। २ वेष्टित, 'जहा से उडुवई चदे नक्खत्तपरिवारिए' (उत्त ११, २५, काल)।

परिवाल देखो परिआल। परिवालइ (दे ६, ३५ टी)।

परिवाल सक [परि+पालय्] पालन करना। परिवालइ, परिवालेइ (भवि, महा)। वकृ परिवालयत (सुर १, १७१)। संकृ. परिवालिय (राज)।

परिवाल देखो परिवार = परिवार (णाया १, ८—पत्र १३८)।

परिवाविअ वि [परिवापित] उखाड कर फिर से बोया हुआ (ठा ४, ४)।

परिवाविया स्त्री [परिवापिता] दीक्षा-विशेष फिर से महाव्रतो का आरोपण (ठा ४, ४)।

परिवास पु [दे] खेत मे सोनेवाला पुरुष (दे ६, २६)।

परिवास न [परिवासस] वस्त्र, कपडा, 'जगगेरुयगुज्झतरपामरे मुनियत्थई मि झीणपरिवासई' (भवि)।

परिवासि वि [परिवासिन्] वसनेवाला (सुपा ४२)।

परिवासिय वि [परिवासित] सुवासित, सुगन्ध-युक्त, 'मयपरिमलपरिवासियदूरें' (भवि)।

परिवाह सक [परि+वाहय्] १ वहन कराना। २ अश्वादि खेलाना, अश्वादि क्रीडा करना, 'विवरीयमिक्खनुरय परिवाहइ वाहियालीए' (महा)।

परिवाह पु [परिवाह] जल का उछाल, बहाव,

'भरिउच्चरंतपसरिअपिअमरणपिसुणो वराईए।
परिवाहो विअ दुक्खस्स वहइ णअणट्टिओ वाहो'
(गा ३७७)।

परिवाह पुं [दे] दुर्विनय, अविनय (दे ६, २३)।

परिवाहण न [परिवाहन] अश्वादि-खेलन, 'आसपरिवाहणनिमित्त गएण' (स ८१, महा)।

परिविआल सक [परि+विग्_] वेष्टन करना। परिविआलइ (प्राकृ ७५, वात्वा १४४)।

परिविचिट्ठ अक [परिवि+स्था] १ उत्पन्न होना। २ रहना। परिविचिट्ठइ (आचा १, ४, २ २, पि ४८३)।

परिविच्छय वि [परिविक्षत] सर्वथा छिन्न-हत (सूअ १ ३ १ २)।

परिविट्ठ वि [परिविष्ट] परोसा हुआ (स १८६, सुपा ६२३)।

परिवित्तस अक [परिवि+त्रस] डरना। परिवित्तसंति परिवित्तिसेज्जा (आचा १, ६, ५ ५)।

परिवित्ति स्त्री [परिवृत्ति] परिवर्तन (सुपा ५८७)।

परिविद्ध त्रि [परिविद्ध] जो बिंधा गया हो वह (सुपा २७०)।

परिविद्धस सक [परिवि+ध्वसय्] १ विनाश करना। २ परिताप उपजाना। संकृ परिविद्धंसित्ता (भग)।

परिविद्धत्थ वि [परिविध्वस्त] १ विनष्ट। २ परितापित (सूअ २, ३, १)।

परिविप्फुरिय वि [परिविस्फुरित] स्फूर्ति-युक्त (सण)।

परिवियलिय वि [परिविगलित] चुआ हुआ, टपका हुआ (सण)।

परिवियलिर वि [परिविगलितृ] झरनेवाला, चूनेवाला (सण)।

परिविरल वि [परिविरल] विशेष विरल (गउड, गा ३२९)।

परिविलसिर वि [परिविलसितृ] विलासी (सण)।

परिविस सक [परि+विश] वेष्टन करना। परिविसइ (प्राकृ ७५)।

परिविस सक [परि+विष्] परोसना, खिलाना। वकृ परिविस्स (उत्त १४, ६)।

परिवियास पु [परिविषाद] समन्तात् खेद (धर्मवि १२६)।

परिविहुरिय वि [परिविधुरित] अति पीडित, 'मणिसजुयदेविकरपरिविहुरिओ गय मातु' (सुर १५, १५)।

परिवीअ सक [परि+वीजय्] पंखा करना, हवा करना। परिवीएमि (स ६७)।

परिवीइअ वि [परिवीजित] जिसको हवा की गई हो वह (उप २११ टी)।

परिच्छेअग वि [परिच्छेदक] निश्चय करनेवाला (उप ८५३ टी)।

परिच्छेज्ज वि [परिच्छेद्य] वह वस्तु जिसका क्रय-विक्रय परिच्छेद पर निर्भर रहता है—रत्न, वस्त्र आदि द्रव्य (श्रा १८)।

परिच्छेद देखो परिच्छेअ = परिच्छेद (धर्मसं १२३१)।

परिच्छेदग देखो परिच्छेअग (धर्मस ५०)।

परिन्छोय वि [परिस्तोक] थोडा, अल्प (औप)।

परिछेज्ज देखो परिन्छेज्ज (श्रा १८)।

परिजंपिय वि [परिजल्पित] उक्त, कथित (सुपा ३६४)।

परिजज्जर वि [परिजर्जर] अतिजीर्ण (उप २६४ टी, ६८६ टी)।

परिजडिल वि [परिजटिल] अतिशय जटिल (गउड)।

परिजण देखो परिअण (उवा)।

परिजव सक [परि + विच्] पृथक् करना, अलग करना। संकृ. परिजविय (सूअ २, २, ४०)।

परिजव सक [परि + जप्] १ जाप करना। २ बहुत बोलना, बकवाद करना। संकृ. 'स भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे णो पोहिं सद्धिं परिजविया २ गामाणुगाम दूइज्जेज्जा' (आचा २, ३, २, ८)।

परिजवण न [परिजपन] जाप, जपन, मन्त्र आदि का पुन पुन उच्चारण (विसे ११४०, सुर १२, २०१)।

परिजाइय वि [परियाचित] माँगा हुआ (धर्मस १०४५)।

परिजाण सक [परि + ज्ञा] अच्छी तरह जानना। परिजाणइ (उवा)। वकृ परिजाणमाण (कुमा)। कवकृ परिजाणिज्जमाण (णाया १, १, कुमा)। संकृ परिजाणिया (सूअ १, १, १, १, १, ६, ६, १, ६, १०)। कृ. परिजाणियव्व (आचा, पि ५७०)।

परिजिअ वि [परिजित] सर्वथा जीत, जिसपर पूरा काबू किया गया हो वह (विसे ८५१)।

परिजुण्ण वि [परिजीर्ण] १ फटा-टूटा, अत्यन्त जीर्ण (आचा)। २ दुर्बल (उत्त २, १२)। ३ दरिद्र, निर्धन, 'परिजुण्णो य दरिद्दो' (वव ४)।

परिजुण्णा देखो परिजुन्ना (ठा १०—पत्र ४७४ टी)।

परिजुत्त वि [परियुक्त] सहित (सबोध १)।

परिजुन्न देखो परिजुण्ण (उप २६४ टी)।

परिजुन्ना स्त्री [परिजीर्णा, परिद्यूना] प्रव्रज्या, विशेष, दरिद्रता के कारण ली हुई दीक्षा (ठा १०—पत्र ४७३)।

परिजुसिय देखो परिझुसिय (ठा ४, १—पत्र १८७, औप)।

परिजुसिय न [पर्युषित] रात्रि-परिवसन, रात का वासी रहना, वासी (ठा ४, २—पत्र २१९)। देखो परिउसिअ।

परिजूर अक [परि + जॄ] सर्वथा जीर्ण होना, 'परिजूरइ ते सरीरय' (उत्त १०, २६)।

परिजूरिय वि [परिजीर्ण] अतिजीर्ण (अणु)।

परिज्जय पु [दे] कृष्ण पुद्गल-विशेष (सुज्ज २०)।

परिज्जुन्न देखो परिजूरिय (दस ९, २, ८)।

परिज्झामिय वि [परिध्यामित] श्याम (काला) किया हुआ (निचू १)।

परिज्झुसिय, परिझुसिय, परिझूसिय } वि [परिजुष्ट] १ सेवित। २ प्रीत, 'परिज्झुसियकामभोगसपओगसंपउत्ते' (भग २५, ७—पत्र ९२३, ९२५ टी। ३ परीक्षण, ठा ४, १—पत्र १८८ टी, पि २०९)।

परिट्ठव सक [परि + स्थापय्] १ परित्याग करना। २ सस्थापन करना। परिट्ठवेइ, परिट्ठवेज्जा (आचा २, १, ९, ५, उवा)। संकृ. परिट्ठवेऊण, परिट्ठवेत्ता (बृह ४, कस)। हेकृ परिट्ठवेत्तए (कस)। वकृ परिट्ठवत (निचू २)। कृ परिट्ठप्प, परिट्ठवेयव्व (उत्त १४, ९, कस)।

परिट्ठवण न [प्रतिष्ठापन] प्रतिष्ठा कराना (चेइय ७७६)।

परिट्ठवण न [परिष्ठापन] परित्याग (उव, पव १५२)।

परिट्ठवणा स्त्री [परिष्ठापना] ऊपर देखो, 'अविहिपरिट्ठवणाए काउस्सग्गो य गुरुसमीवम्मि' (बृह ४)।

परिट्ठवणा स्त्री [प्रतिष्ठापना] प्रतिष्ठा कराना, 'वेयावच्च जिणगिहरक्खणपरिट्ठवणाइजिणकिच्च' (चेइय ७७६)।

परिट्ठविय स्त्री [प्रतिष्ठापित] सस्थापित (भवि)।

परिट्ठा देखो पइट्ठा (हे १, ३८)।

परिट्ठाइ वि [परिष्ठापिन्] परित्यागी (नाट—साहि १६२)।

परिट्ठाण न [परिस्थान] परित्याग (नाट)।

परिट्ठाव देखो परिट्ठव हेकृ परिट्ठावित्तए (कप्प, पि ५७८)।

परिट्ठावअ वि [परिस्थापक] परित्याग करनेवाला (नाट)।

परिट्ठिअ वि [परिस्थित] सपूर्ण रूप से स्थित (पव ६९)।

परिट्ठिअ देखो पइट्ठिय (हे १, ३८, २, २११, षड्, महा, सुर ३, १३)।

परिठव देखो परिट्ठव। परिठवहु (अप) (पिंग)।

परिठवण देखो परिट्ठवण = परिष्ठापन (पव—गाथा २४)।

परिण देखो परिणी, 'परिणइ बहुयाउ खयरकन्नाओ' (धर्मवि ८२)। वकृ. परिणंत (भवि)। संकृ परिणिऊण (महा, कुप्र ७९, १२७)।

परिणइ स्त्री [परिणति] परिणाम, (गा ५६८, धर्मस ९२३)।

परिणत देखो परिण।

परिणतु वि [परिणन्तृ] परिणाम को प्राप्त होनेवाला, परिणत होनेवाला (विसे ३५३४)।

परिणद सक [परि + नन्द्] वर्णन करना, श्लाघा करना, 'ताए परिणदता (? ति)' (तंदु ४०)।

परिणद्ध वि [परिणद्ध] १ परिगत, वेष्टित, 'उंदुरमालापरिणद्धसुकयचिंधे' (उवा, णाया १, ८—पत्र १३३)। २ न वेष्टन (णाया १, ८)।

परिणम सक [परि + णम्] १ प्राप्त करना। २ अक रूपान्तर को प्राप्त होना। ३ पूर्ण होना, पूरा होना, 'किण्हलेसं तु परिणमे' (उत्त ३४, २२), 'परिणमइ अप्पमाओ' (स ६८४ भग १२, ५)। वकृ. परिणमंत,

परिसड अक [परि + शट्] उपयुक्त होना। परिसडइ (आचा २, १, ६, ६)।

परिसडिय वि [परिशटित] सडा हुआ, विनष्ट (णाया १, २, औप)।

परिसण्ह वि [परिश्लक्ष्ण] सूक्ष्म, छोटा (से १, १,)।

परिसन्न वि [परिपण्ण] जो हैरान हुआ हो, पीडित (पउम १७, ३०)।

परिसप्प सक [परि + सृप्] चलना। परिसप्पेइ (नाट—विक्र ६१)।

परिसप्पि वि [परिसर्पिन्] १ चलनेवाला (कप्पू)। २ पुस्त्री. हाथ और पैर से चलनेवाला जन्तु—नकुल, सर्प आदि प्राणिगण। स्त्री °णी (जीव २)।

परिसम देखो परिस्सम (महा)।

परिसमत्त वि [परिसमाप्त] सम्पूर्ण, जो पूरा हुआ हो वह (से १५, ६५; सुर १५, २५०)।

परिसमत्ति स्त्री [परिसमाप्ति] समाप्ति' पूर्णता (उप ३५७, स ५२)।

परिसमापिय वि [परिसमापित] जो समाप्त किया गया हो, पूरा किया हुआ (विसे ३६०२)।

परिसमाव सक [परिसम् + आप्] पूर्ण करना। सक्र परिसमाविअ (अभि ११६)।

परिसर पुं [परिसर] नगर आदि के समीप का स्थान (औप, सुपा १३०, मोह ७६)।

परिसल्लिय वि [परिशल्यित] शल्य-युक्त (सण)।

परिसव सक [परि + स्रु] झरना, टपकना। वक्र परिसवत (तदु ३६, ४१)।

परिसह पु [परिषह] देखो परीसह (भग)।

परिसा स्त्री [परिषद्] १ सभा, पर्षद् (पाअ, औप, उवा, विपा १, १)। २ परिवार (ठा ३, २—पत्र १२७)।

परिसाइ देखो परिस्साइ (राज)।

परिसाइयाण देखो परिसाव।

परिसाड सक [परि + शाटय्] १ त्याग करना। २ अलग करना। परिसाडेइ (कप्प, भग)। सक्र. परिसाडइत्ता (भग)।

परिसाड सक [परि + शाटय्] १ इधर-उधर फेंकना। २ भरना। ३ रखना, 'परिसाडिज्ज भोअणं' (दस ५, १, २८)। परिसाडिति, भूका. परिसाडिंसु, भवि. परिसाडिस्सति (आचा २, १०, २)।

परिसाडणा स्त्री [परिशाटना] वपन, बोना (वव १)।

परिसाडणा स्त्री [परिशाटना] पृथक्करण (सूअनि ७, २०)।

परिसाडि वि [परिशाटिन्] परिशाटन युक्त (ओघ ३१)।

परिसाडि वि [परिशाटि] परिशाटन, पृथक्करण (पिंड ५५२)।

परिसाडिय स्त्री [परिशातित] गिराया हुआ (दस ५, १, ६६)।

परिसाम अक [शम्] शान्त होना। परिसामइ (हे ४, १६७)।

परिसाम वि [परिश्याम] नीचे देखो (गउड)।

परिसामल वि [परिश्यामल] कृष्ण, काला (गउड)।

परिसामिअ वि [शान्त] शान्त, शम युक्त (कुमा)।

परिसामिअ वि [परिश्यामित] कृष्ण किया हुआ (णाया १, १)।

परिसाव सक [परि + स्रावय्] १ निचोटना। २ गालना। सक्र. परिसावियाण (आचा २, १, ८, १)।

परिसावि देखो परिस्सावि (बृह १)।

परिसाहिय वि [परिकथित] प्रतिपादित, उक्त (सण)।

परिसिंच सक [परि + सिच्] सींचना। परिसिंचिज्जा (उत्त २, ६)। वक्र. परिसिंचमाण (णाया १, १)। कवक्र परिसिच्चमाण (कप्प, पि ५४२)।

परिसिट्ठ वि [परिशिष्ट] अवशिष्ट, बाकी बचा हुआ (आचा १, २, ३, ५)।

परिसिढिल वि [परिशिथिल] विशेष शिथिल, ढीला (गउड)।

परिसित्त वि [परिषिक्त] १ सींचा हुआ (गा १८५; सण)। २ न. परिषेक, सेचन (पण्ह १, १)।

परिसिल्ल वि [पर्षद्वन्] परिषद् वाला (बृह ३)।

परिसील सक [परि + शीलय्] अभ्यास करना, आदत डालना। संकृ. परिसीलिवि (अप) (सण)।

परिसीलण न [परिशीलन] अभ्यास, आदत (रंभा, सण)।

परिसीलिय वि [परिशीलित] अभ्यस्त (सण)।

परिसीसग देखो पडिसीसअ (राज)।

परिसुक्क वि [परिशुष्क] खूब सूखा हुआ (विपा १, ७, गउड)।

परिसुण्ण वि [परिशून्य] खाली, रिक्त, मुग्न (से ११, ८७)।

परिसुत्त वि [परिसुप्त] सर्वथा सोया हुआ (नाट—उत्तर २३)।

परिसुद्ध वि [परिशुद्ध] निर्मल, निर्दोष (उव, गउड)।

परिसुद्धि स्त्री [परिशुद्धि] विशुद्धि, निर्मलता (गउड, द्र ६५)।

परिसुन्न देखो परिसुण्ण (विसे २८५०, सण)।

परिसुस (अप) सक [परि + शोषय्] सुखाना। संकृ. परिसुसिवि (अप) (सण)।

परिसूअणा स्त्री [परिसूचना] सूचना (सुपा ३०)।

परिसेय पुं [परिषेक] सेचन (ओघ ३४७)।

परिसेस पु [परिशेष] १ बाकी बचा हुआ, अवशिष्ट (से १०, २३, पउम ३५, ४०, गा ८८, कम्म ६, ६०)। २ अनुमान-प्रमाण का एक भेद, पारिशेषानुमान (धर्मसं ६८, ६६)।

परिसेसिअ वि [परिशेषित] १ बाकी बचा हुआ (भग)। २ परिच्छिन्न, निर्णीत,

'डज्झसि डज्झसु कड्डसि
कड्डसु अह फुडसि हिअअ ता फुडसु।
तहवि परिसेसिओ च्चिअ
सो हु मए गलिअसब्भावो' (गा ४०१)।

परिसेह पुं [परिषेध] प्रतिषेध, निवारण; 'पावट्ठाणाण जो उ परिसेहो, झाणज्झयणाईण जो य विही, एस धम्मकसो' (काल)।

१, १)। ४ ज्ञान-पूर्वक प्रत्याख्यान (ठा ५, २)।
परिण्णाण वि [परिज्ञान] ज्ञान, जानकारी (धर्मसं १२५३, उप पृ २७४)।
परिण्णाय देखो परिण्णा = परि + ज्ञा।
परिण्णाय वि [परिज्ञात] विदित, जाना हुआ (सम १६, आचा)।
परिण्णि वि [परिज्ञिन्] परिज्ञा युक्त, 'गीय-जुओ उ परिण्णी तह जिणइ परीसहाणीयं' (वव १)।
परितंत वि [परितान्त] सर्वथा खिन्न, निर्विण्ण (णाया १, ४—पत्र ६७, विपा १, १, उव)।
परितंबिर वि [परिताम्र] विशेष ताम्र—अरुण वर्णवाला (गउड)।
परितज्ज सक [परि + तर्जय्] तिरस्कार करना। वकृ परितज्जयंत (पउम ४८, १०)।
परितड्डविय वि [परितत] खूब फैलाया हुआ (भवि)।
परितणु वि [परितनु] अत्यन्त पतला (सुपा ५८)।
परितप्प अक [परि + तप्] १ संतप्त होना, गरम होना। २ पश्चात्ताप करना। ३ दुःखी होना। परितप्पइ (महा, उव), परितप्पंति (सूअ २, २, ५५), 'ता लोहभारवाहगनरुव्व परितप्पमे पच्छा' (धर्मवि ६)। संकृ परित-प्पिऊण (महा)।
परितप्प सक [परि + तापय्] परिताप उपजाना। परितप्पंति (सूअ २, २, ५५)।
परितप्पण न [परितपन] परितप्त होना (सूअ २, २, ५५)।
परितप्पण न [परितापन] परिताप उपजाना (सूअ २, २, ५५)।
परितलिअ वि [परितलित] तला हुआ (ओघ ८८)।
परितविय वि [परितप्त] परिताप युक्त (सण)।
परिताण न [परित्राण] १ रक्षण। २ वागुरादि बन्धन (सूअ १, १, २, ६)।
परिताव देखो परितप्प = परि + तापय्। कृ परितावेयव्व (पि ५७०)।
परिताव पुं [परिताप] १ संताप, दाह। २ पश्चात्ताप। ३ दुःख, पीडा (महा, औप)। °यर वि [°कर] दुःखोत्पादक (पउम ११०, ६)।
परितावण देखो परितप्पण = परितापन (औप)।
परिताविअ वि [परितापित] १ संतापित (औप)। २ तला हुआ (ओघ १४७)।
परितास पुं [परित्रास] अकस्मात् होनेवाला भय (णाया १, १—पत्र ३३)।
परितुट्टिर वि [परित्रुटितृ] टूटनेवाला (सण)।
परितुट्ठ वि [परितुष्ट] तोष-प्राप्त, संतुष्ट (उव, चेइय ७०१)।
परितुलिय वि [परितुलित] तौला हुआ (सण)।
परितेज्झि देखो परित्तज।
परितोल सक [परि + तोलय्] उठाना। वकृ. 'जुगवं परितोलंता खग्गं समरंगणम्मि तो दोवि' (सुपा ५७२)।
परितोस सक [परि + तोषय्] संतुष्ट करना। भवि. परितोसइस्सं (कर्पूर ३२)।
परितोस पुं [परितोष] आनन्द, खुशी (नाट—मालवि २३)।
परितोसिय वि [परितोषित] संतुष्ट किया हुआ (सण)।
परित्त वि [परीत] १ व्याप्त (सिरि १८३)। २ प्रसृष्ट (सूअ २, ६, १८)। ३ संख्येय, जिसकी गिनती हो सके ऐसा (सम १०६)। ४ परिमित, नियत परिमाणवाला (उप ४१७)। ५ लघु, छोटा। ६ तुच्छ हलका (उप २७०, ६६४)। ७ एक से लेकर असंख्येय जीवों का आश्रय, एक से लेकर असंख्येय जीववाला (ओघ ४१)। ८ एक जीववाला (पण्ण १)। °करण न [°करण] लघूकरण (उप २७०)। °जीव पुं [°जीव] एक शरीर में एकाकी रहनेवाला जीव (पण्ण १)। °णंत न [°निन्त] संख्या-विशेष (कम्म ४, ७१, ८३)। °संसारिअ वि [°संसारिक] परिमित संसारवाला (उप ४१७)। °संख न [°संख्यात] संख्या-विशेष (कम्म ४, ७१, ७८)।
परित्तज देखो परिच्चय। संकृ. परिच्चजिअ (स्वप्न ५१), परितेज्झि (अप)। (पिंग)।
परित्ता } सक [परि + त्रै] रक्षण करना।
परित्ताअ } परित्ताइ, परित्ताअसु, परित्ताहि, परित्तायह (प्राकृ ७०, पि ४७६, हे ४, २६८)।
परित्ताइ वि [परित्रायिन्] रक्षण-कर्ता (सुपा ४०५)।
परित्ताण न [परित्राण] रक्षण (से १४, ३५, सुपा ७१, आत्मानु ८, सण)।
परित्ताणंतय पुन [परीतानन्तक] संख्या-विशेष (अणु २३४)।
परित्तास देखो परितास (कप्प)।
परित्तासंखेज्जय पुन [परीतासंख्येयक] संख्या-विशेष (अणु २३४)।
परित्तीकय वि [परीतीकृत] संक्षिप्त किया हुआ, लघूकृत (णाया १, १—पत्र ६६)।
परित्तीकर सक [परीती + कृ] लघु करना, छोटा करना। परित्तीकरेंति (भग)।
परित्थोम न [परिस्तोम] १ मस्तक। २ वि वकृ. 'चितपरित्थोमपच्छद' (औप)।
परिथंभिअ वि [परिस्तम्भित] स्तब्ध किया हुआ (सुपा ४७५)।
परिथु सक [परि + स्तु] स्तुति करना। कवकृ परिथुव्वंत (सुपा ६०७)।
परिथूर } वि [परिस्थूर] विशेष स्थूल,
परिथूल } खूब मोटा (धर्मसं ८३८, चेइय ८५४, श्रा ११)।
परिदा सक [परि + दा] देना। कर्म. परि-दिज्जसु (अप), (पिंग)।
परिदाह पुं [परिदाह] संताप (उत्त २, ८, भग)।
परिदिण्ण वि [परिदत्त] दिया हुआ (अभि १२५)।
परिदिद्ध वि [परिदिग्ध] उपलिप्त (सुख २, ३७)।
परिदिन्न देखो परिदिण्ण (सुपा २२)।
परिदेव अक [परि + देव्] विलाप करना। परिदेवए (उत्त २, १३)। वकृ. परिदेवंत (पउम २६, ६२, ४५, ३६)।
परिदेवण न [परिदेवन] विलाप, 'तस्स कंदणसोयणपरिदेवणताडणाइं लिंगाइं' (संबोध ४६, संवे ८)।

परिहिऊण, परिहित्ता (कुप्र ७२, सूत्र १, ४, १, २५)। कृ परिहियव्व (स ३१५)।

परिहा स्त्री [परिखा] खाई (उर ४, २, पाअ)।

परिहाइअ वि [दे] परिक्षीण (षड्)।

परिहाइवि देखो परिहाव = परि + धापय्।

परिहाण न [परिधान] १ वस्त्र, कपड़ा, (कुप्र ५६, सुपा ५५)। २ वि पहिरनेवाला, पहननेवाला, 'महिविलया सलिलवत्थपरिहाणी' (पउम ११ ११६)।

परिहाणि स्त्री [परिहाणि] ह्रास, नुकसान, क्षति (सम ६७, उप ३२६ जी ३३, प्रासू ३६)।

परिहाय वि [दे] क्षीण, दुर्बल (दे ६, २५, पाअ)।

परिहायंत
परिहायमाण } देखो परिहा = परि + हा।

परिहार पु [परिहार] करण, कृति (वव १)।

परिहार पु [परिहार] १ परित्याग, वर्जन (गउड)। २ परिभोग, आसेवन, 'एवं खलु गोसाला! वणस्सइकाइयाओ पउट्टपरिहार परिहरति' (भग १५)। ३ परिहार विशुद्धि नामक संयम-विशेष (कम्म ४, १२, २१)। ४ विषय (वव १)। ५ तप-विशेष (ठा ५, २, वव १)। °विशुद्धिअ, °विसुद्धीअ न [°विशुद्धिक] चारित्र-विशेष, संयम-विशेष (ठा ५ २, नव २६)।

परिहारि वि [परिहारिन्] परिहार करनेवाला (बृह ४)।

परिहारिअ वि [पारिहारिक] आचारवान् मुनि, उद्युक्त विहारी जैन साधु (आचा २, १, १, ४)।

परिहारिणी स्त्री [दे] देर से व्याई हुई भैंस (दे ६, ३१)।

परिहारिय वि [पारिहारिक] १ परित्याग के योग्य (बृह २)। २ परिहार नामक तप का पालक (पव ६६)।

परिहाल पुं [दे] जल-निर्गम, मोरी (दे ६, २६)।

परिहाव सक [परि + धापय्] पहिराना। सकृ. परिहाइवि (अप) (भवि)।

परिहाव सक [परि + ह्रापय्] ह्रास करना, कम करना, हीन करना। वकृ. परिहावेमाण (णाया १, १—पत्र २८)।

परिहाविअ वि [परिहापित] हीन किया हुआ (वव ४)।

परिहाविअ वि [परिधापित] पहिराया हुआ (महा, सुर १०, १७, स ५२६, सुप्र ६)।

परिहास पु [परिहास] उपहास, हँसी (गा ७७१, पाअ)।

परिहासणा स्त्री [परिभाषणा] उपालम्भ (आव १)।

परिहि पुस्त्री [परिधि] १ परिवेष, 'ससिबिंबं व परिहिणा रुद्ध सिन्नेण तस्स रायगिहं' (पव २५५)। २ परिणाह, विस्तार (राज)।

परिहिअ वि [परिहित] पहिरा हुआ (उवा, भग, कप्प, औप, पाअ, सुर २, ८८)।

परिहिऊण देखो परिहा = परि + धा।

परिहिंड सक [परि + हिण्ड्] परिभ्रमण करना। परिहिंडए (ठा ४, १ टी—पत्र १६२)। वकृ. परिहिंडित, परिहिंडमाण (पउम ८, १६८, ६०, ८, १५५, औप)।

परिहिंडिय वि [परिहिण्डित] परिभ्रान्त, भटका हुआ (पउम ६, १३१)।

परिहित्ता
परिहियव्व } देखो परिहा = + धा।

परिहीअमाण देखो परिहा = परि + हा।

परिहीण वि [परिहीन] १ कम, न्यून (औप)। २ क्षीण, विनष्ट (सुज्ज १)। ३ रहित, वर्जित (उव)। ४ न ह्रास, अपचय (राय)।

परिहुत्त वि [परिभुक्त] जिसका भोग किया गया हो वह (से १, ६४, दे ४, ३६)।

परिहूअ वि [परिभूत] पराजित, अभिभूत (गा १३४, पउम ३, ६, से २८)।

परिहेरग न [दे परिहार्यक] आभूषण-विशेष (औप)।

परिहो सक [परि + भू] पराभव करना। परिहोइ (भवि)।

परिहोअ देखो परिभोग (गउड)।

परिहल्लस (अप) अक [परि + ह्रस्] कम होना। परिहृसइ (पिंग)।

परी सक [परि + इ] जाना, गमन करना। परिंति (पि ४९३)। वकृ. परिंत (पि ४९३)।

परी सक [क्षिप्] फेंकना। परीइ (हे ४, १४३)। परीमि (कुमा)।

परी सक [भ्रम्] भ्रमण करना, घूमना। परीइ (हे ४, १६१)। परेंति (पण्ह १, ३—पत्र ४६)।

परीघाय पु [परिघात] निर्घात, विनाश (पव ६४)।

परीणम देखो परिणम = परि + णम्, 'सस-ग्गओ पण्णवणागुणाओ लोउत्तरत्तेण परीणमति' (उप १ ३५)।

परीभोग देखो परिभोग (सुपा ४६७, श्रावक २८८, पचा ८ ६)।

परीमाण देखो परिमाण (जीवस १२३, १३२, पव १५६)।

परीय देखो परित्त (राज)।

परीयट्ट पु [दे. परिवर्त] वेष्टन, 'तिपरीयल्लमणिस्सट्ठं रयहरणं धारए एगं' (ओघ ७०६)।

परीरंभ पुं [परीरम्भ] आलिंगन (कुमा)।

परीवज्ज वि [परिवर्ज्य] वर्जनीय (कम्म ६, ६ टी)।

परीवाय देखो परिवाय = परिवाद (पउम १०१, ३, पव २३७)।

परीवार देखो परिवार = परिवार (कुमा, चेइय ४८)।

परीसण न [परिवेषण] परोसना (दे २, १४)।

परीसम देखो परिस्सम (भवि)।

परीसह पुं [परीषह] भूत आदि से होनेवाली पीडा (आचा, औप उव)।

परुइय वि [प्ररुदित] जो रोने लगा हो वह (स ७५५)।

परुक्ख देखो परोक्ख (विसे १४०३ टी, सुपा १३३, श्रा १, कुप्र २५)।

परुण्ण
परुन्न } देखो परुइय (से १, ३५, १०, ६८, गा ३५४, ८३८, महा, स २०४)।

परुप्पर देखो परोप्पर (कुप्र ५)।

परुब्भासिद (शौ) वि [प्रोद्भासित] प्रकाशित (प्रयौ २०)।

परुस वि [परुष] कठोर (गा ३४४)।

परूढ वि [प्ररूढ] १ उत्पन्न (धर्मवि १२१)। २ बढा हुआ (औप, पि ४०२)।

परिपूय वि [परिपूत] छाना हुआ (कप्प, तदु ३२)।

परिपूर सक [परि+पूरय्] पूर्ण करना, भरपूर करना। वकृ परिपूरत (पि ५३७)। संकृ परिपूरिअ (नाट—मालवि १५)।

परिपूरिय वि [परिपूरित] भरपूर, व्याप्त (सुर २, ११)।

परिपेच्छ सक [परिप्र+ईक्ष्] देखना। वकृ. परिपेच्छंत (अच्चु ६३)।

परिपेरत पुं [परिपर्यन्त] प्रान्त भाग (णाया १, ४, १३, सुर १५, २०२)।

परिपेरिय वि [परिप्रेरित] जिसको प्रेरणा की गई हो वह (सुपा १८६)।

परिपेलव वि [परिपेलव] १ सुकर, सहज, सहल, आसान (से ३, १३)। २ अदृढ। ३ नि सार। ४ वराक, दीन (राज)।

परिपेल्लिअ देखो परिपेरिय (गा ५७७)।

परिपेस सक [परिप्र+इष्] भेजना। परिपेसइ (भवि)।

परिपेसण न [परिप्रेषण] भेजना (भवि)।

परिपेसल वि [परिपेशल] सुन्दर, मनोहर (सुपा १०६)।

परिपेसिय वि [परिप्रेषित] भेजा हुआ (भवि)।

परिपोस सक [परि+पोषय्] पुष्ट करना। कवकृ. परिपोसिज्जत (राज)।

परिप्पमाण न [परिप्रमाण] परिमाण (भवि)।

परिप्पव सक [परि+प्लु] तैरना, गोता लगाना। वकृ. परिप्पवत (से २, २८, १०, १३, पाअ)।

परिप्पुय वि [परिप्लुत] आप्लुत, व्याप्त (राज)।

परिप्पुया स्त्री [परिप्लुता] दीक्षा-विशेष (राज)।

परिप्फंद पु [परिस्पन्द] १ रचना-विशेष, 'जयइ वायापरिप्फंदो' (गउड)। २ समन्तात् चलन (चारु ४५)। ३ चेष्टा, प्रयत्न, 'घोया रंभेवि विहिम्मि आयमग्गे व्व खडणमुवेंति। स-परिप्फंदेणं चिय णोआ भमिदारुसयल व' (गउड)।

परिप्फुड वि [परिस्फुट] अत्यन्त स्पष्ट (से ११, ६०, सुर ४, २१४, भवि)।

परिप्फुड पुं [परिस्फोट] १ प्रस्फोटन, भेदन। २ वि. फोड़नेवाला, विभेदक, 'तमपडल-परिप्फुडं चेव तेअसा पज्जलतरूवं' (कप्प)।

परिप्फुर अक [परि+स्फुर्] चलना। परिप्फुरदि (शौ) (नाट—उत्तर २८)।

परिप्फुरण न [परिस्फुरण] हिलन, चलन (सण)।

परिप्फुरिअ वि [परिस्फुरित] स्फूर्ति-युक्त, 'वयणु परिप्फुरिउ' (भवि)।

परिफंस पुं [परिस्पर्श] स्पर्श, छूना (पि ७४, ३११)।

परिफसण न [परिस्पर्शन] ऊपर देखो (उप ६८६ टी)।

परिफग्गु वि [परिफल्गु] निस्सार, असार (धर्मसं ६५३)।

परिफासिय वि [परिस्पृष्ट] व्याप्त (दस ५, १, ७२)।

परिफुड देखो परिप्फुड = परिस्फुट (पउम ३, ८, प्रासू ११६)।

परिफुडिय वि [परिस्फुटित] फूटा हुआ, भग्न (पउम ६८, १०)।

परिफुर देखो परिप्फुर। परिप्फुरइ (सण)। वकृ परिफुरंत (सण)।

परिफुरिअ देखो परिप्फुरिय (सण)।

परिफुल्लिअ वि [परिफुल्लित] फूला हुआ, कुसुमित (पिंग)।

परिफुस सक [परि+स्पृश्] स्पर्श करना, छूना। वकृ परिफुसंत (धर्मवि १२६, १३६)।

परिफुसिय वि [परिप्रोञ्छित] पोछा हुआ (उप पृ ६४)।

परिफोसिय वि [परिस्पृष्ट] छूआ हुआ, 'उदगपरिफोसियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए णिसीयति' (णाया १, १६, उप ६४८ टी)।

परिबूहण न [परिबृंहण] वृद्धि, उपचय (सूअ २, २, ६)।

परिब्भंत वि [दे] १ निषिद्ध, निवारित। २ भीरु, डरपोक (दे ६, ७२)।

परिब्भम्मिद (शौ) नीचे देखो (मा ५०)।

परिब्भट्ठ वि [परिभ्रष्ट] पतित, स्खलित (णाया १, १३, सुपा ५०६, अभि १४४)।

परिब्भम सक [परि+भ्रम्] पर्यटन करना, भटकना। परिब्भमइ (प्राकृ ७६, भवि, उव)। वकृ. परिब्भमंत (सुर २, ८७, ३, ४, ४, ७१, भवि)।

परिब्भमण न [परिभ्रमण] पर्यटन (महा)।

परिब्भमिअ वि [परिभ्रान्त] भटका हुआ (वै ६३, सण, भवि)।

परिब्भीअ वि [परिभीत] भय-प्राप्त (पउम ५३, ३६)।

परिब्भूअ वि [परिभूत] पराभव प्राप्त (सुपा २५८)।

परिभग्ग वि [परिभग्न] भांगा हुआ (आत्मानु १४)।

परिभट्ठ देखो परिब्भट्ठ (महा, पि ८५)।

परिभणिर वि [परि+भणितृ] कहनेवाला (सण)।

परिभम देखो परिब्भम। परिभमइ (महा)। वकृ परिभमत, परिभममाण (महा, सण, भवि, सवेग १४)। सकृ परिभमिऊणं (पि ५८५)। हेकृ परिभमिउ (महा)।

परिभमिअ देखो परिब्भमिअ (भवि)।

परिभमिर वि [परिभ्रमितृ] पर्यटन करनेवाला (सुपा २६६)।

परिभव सक [परि+भू] पराजय करना, तिरस्कारना। परिभवइ (उव)। कर्म परिभविज्जामि (मोह १०८)। कृ. परिभवणिज्ज (णाया १, ३)।

परिभव पु [परिभव] पराभव, तिरस्कार (औप, स्वप्न १०, प्रासू १७३)।

परिभवंत पु [परिभवत्] पार्श्वस्थ साधु, शिथिलाचारी मुनि (वव १)।

परिभवण न [परिभवन] ऊपर देखो (राज)।

परिभवणा स्त्री [परिभवन] ऊपर देखो (औप)।

परिभविअ वि [परिभूत] अभिभूत (धर्मवि ३६)।

परिभाअ सक [परि+भाजय्] बांटना, विभाग करना। परिभाएइ (कप्प)। वकृ परिभाइत, परिभायन्त, परिभाएमाण (आचा २, ११, १८, णाया १, ७—पत्र ११७, १, १, कप्प)। कवकृ परिभाइज्ज-

पलविअ } वि [प्रलपित] १ अनर्थक कहा
पलवित } हुआ। २ न. अनर्थक भाषण (चउ, पण्ह १, २)।

पलविर वि [प्रलपितृ] बकवादी (दे ७, ५६)।

पलस न [दे] १ कार्पास-फल। २ स्वेद, पसीना (दे ६, ७०)।

पलस (अप) न [पलाश] पत्र, पत्ती (भवि)।

पलसु स्त्री [दे] सेवा, पूजा, भक्ति (दे ६, ३)।

पलहि पुस्त्री [दे] कपास (दे ६, ४ पाअ, वज्जा १८६, हे २ १७४)।

पलहिअ वि [दे] १ विषम, असम। २ पुन. आवृत जमीन का वास्तु (दे ६, १५)।

पलहिअअ वि [दे उपलहृदय] मूर्ख, पाषाण-हृदय (षड्)।

पलहुअ वि [प्रलघुक] १ स्वल्प, थोडा। २ छोटा (से १, ३३, गउड)।

पला देखो पलाय = परा + अय्, 'जं ज भणामि अहयं सयलपि वहिं पलाइ त तुज्झ' (आत्मानु २३), पलासि, पलामि (पि ५६७)।

पलाअंत } देखो पलाय = परा + अय्।
पलाइअ }

पलाइअ } वि [पलायित] १ भागा हुआ,
पलाण } नष्ट, 'पलाइए हलिए' (गा ३६०), 'रिउणो सिन्न जह पलाणं' (धर्मवि ५६, ५१, पउम ५३, ८४, ओघ ४६७, उप १३६ टी, सुपा २२, ५०३, ती १५, सण, महा)। २ न पलायन (दस ४, ३)।

पलाण न [पलायन] भागना (सुपा ४६४)।

पलाणिअ वि [पलायनित] जिसने पलायन किया हो वह, भागा हुआ, 'तेणवि आगच्छतो विन्नाओ तो पलाणिओ दूरं' (सुपा ४६४)।

पलात वि [प्रलात] गृहीत (चउ)।

पलाय अक [परा + अय्] भाग जाना, नासना। पलायइ, पलाअसि (महा, पि ५६७)। भवि पलाइस्स (पि ५६७)। वकृ पलाअंत, पलायमाण (गा २६१, णाया १८, श्राक १८, उप पृ २६)। संकृ. पलाइअ (नाट, पि ५६७)। हेकृ. पलाइउ (श्राक १६, सुपा ४६४)। कृ पलाइअव्व (पि ५६७)।

पलाय पु [दे] चोर, तस्कर (दे ६, ८)।

पलाय देखो पलाइअ = पलायित (णाया १, ३, स १३१, उप पृ २५७, धण ४८)।

पलायण न [पलायन] भागना (ओघ २६, सुर २, १४)।

पलायणया स्त्री ऊपर देखो (चेइय ४४६)।

पलायमाण देखो पलाय = परा + अय्।

पलाल वि [प्रलाल] प्रकृत लालावाला (अणु १४१)।

पलाल न [पलाल] तृण-विशेष, पुआल (पण्ह २, ३, पाअ, आचा)। °पीढय न [°पीठक] पलाल का आसन (निचू १२)।

पलालग वि [पलालक] पलाल—पुआल का बना हुआ (आचा २, २, ३, १४)।

पलाव सक [नाशय्] भगाना, नष्ट करना। पलावइ (हे ४, ३१)।

पलाव पु [प्लाव] पानी की बाढ (तदु ५० टी)।

पलाव पुं [प्रलाप] अनर्थक भाषण, बकवाद (महा)।

पलावण न [नाशन] नष्ट करना, भगाना (कुमा)।

पलावि वि [प्रलापिन्] बकवादी, 'असबद्ध-पलाविणी एसा' (कुप्र २२२, सबोध ४७, श्रभि ४६)।

पलाविअ वि [प्लावित] डुबाया हुआ, भिगाया हुआ (सुर १३, २०४, कुप्र ६०; ६७, सण)।

पलाविअ वि [प्रलापित] अनर्थक घोषित करवाया हुआ, 'मच्छुड्डु कि दुच्चरिउ पलाविउ सज्जणजणहो नाउं लज्जाविउ' (भवि)।

पलाविर वि [प्रलपितृ] बकवाद करनेवाला, 'अहह असबद्धपलाविरस्स बडुयस्स पेच्छ मह पुरओ' (सुपा २०१), 'दिव्वनाणीव जंपेइ, एसो एव पलाविरो' (सुपा २७७)।

पलास पुं [पलाश] १ वृक्ष-विशेष, किंशुक का वृक्ष, ढाक (वज्जा १५२, गा ३११)। २ राक्षस (वज्जा १३०, गा ३११)। ३ पुन. पत्र, पत्ता (पाअ, वज्जा १५२)। ४ भद्रशाल वन का एक दिग्हस्ती कूट (ठा ८—पत्र ४३६, इक)।

पलासि स्त्री [दे] भल्ली, छोटा भाला, शस्त्र-विशेष (दे ६ १४)।

पलासिया स्त्री [दे पलाशिका] त्वक्काष्ठिका, छाल की बनी हुई लकडी (सूअ १, ४, २, ७)।

पलाहु देखो पलास (सक्षि १६, पि २६२)।

पलि देखो परि (सूअ १, ६, ११, २, ७, ३६, उत्त २६, ३४, पि २५७)।

पलिअ न [पलित] १ वृद्ध अवस्था के कारण बालो का पकना, केशो की श्वेतता। २ वदन की झुर्रियां (हे १, २१२)। ३ कर्म, कर्म-पुद्गल, जे केइ मत्ता पलियं चयंति' (आचा १, ४, ३, १)। ४ घृणित अनुष्ठान, 'से आकुट्टे वा हए वा लुंचिए वा पलियं पकंथे' (आचा १, ६, २, २)। ५ कर्म, काम (आचा १, ८, २, २)। ६ ताप। ७ पक, कादा। ८ वि. शिथिल। ९ वृद्ध, बूढा (हे १, २१२)। १० पका हुआ, पक्व (धर्म २, निचू १५)। ११ जरा-ग्रस्त, 'न हि दिज्जइ आहरण पलियत्तयकरणहत्थस्स' (राज)। °ट्ठाण, °ठाण न [°स्थान] कर्म-स्थान, कारखाना (आचा १, ८, २, २)।

पलिअ न [पल] चार कर्ष या तीन सौ बीस गुञ्जा की नाप (तंदु २६)।

पलिअ देखो पल्ल = पल्य (पव १५८, भग, जी २६, नव ६, दं २७)।

पलिअ (अप) देखो पडिअ (पिंग)।

पलिअंक पुं [पर्यङ्क] पलंग, खाट (हे २, ६८, सम ३५, औप)। °आसण न [°आसन] आसन-विशेष (सुपा ६५५)।

पलिअंका स्त्री [पर्यङ्का] पद्मासन, आसन-विशेष (ठा ५, १—पत्र ३००)।

पलिउंच सक [परि + कुञ्च्] १ अपलाप करना। २ ठगना। ३ छिपाना, गोपन करना। पलिउंचति, पलिउंचयंति (उत्त २७, १३, सूअ १, १३, ४)। संकृ पलिउंचिय (आचा २, १, ११, १)। वकृ. पलिउंचमाण (आचा १, ७, ४, १, २, ५, २, १)।

पलिउंचण न [परिकुञ्चन] माया, कपट (सूअ १, ६, ११)।

पलिउंचणा स्त्री [परिकुञ्चना] १ सच्ची बात को छिपाना। २ माया (ठा ४, १

परिमा (अप) देखो पडिमा (भवि)।

परिमाइ स्त्री [परिमाति] परिमाण, 'जिण-सासणि छज्जीवदयाइ व पडियमरणि सुगइ-परिमाइ वं' (भवि)।

परिमाण न [परिमाण] मान, माप, नाप (औप, स्वप्न ४२, प्रासू ८७)।

परिमास पु [परिमर्श] स्पर्श (णाया १, ९, गउड, मे ६, ४८, ६ ७६)।

परिमास पु [दे] नौका का काष्ठ-विशेष (णाया १, ९—पत्र १५७)।

परिमासि वि [परिमर्शिन्] स्पर्श करनेवाला (पि ६२)।

परिमिज्ज नीचे देखो।

परिमिण सक [परि + मा] नापना, तौलना। वकृ परिमिणत (सुपा ७७)। कृ परिमिज्ज, परिमेय (पव ५६, पउम ४६, २२)।

परिमिअ वि [परिमित] परिमाण-युक्त (कप्प, ठा ५, १, औप, पण्ह २, १)।

परिमिअ वि [परिवृत] परिकरित, वेष्टित (पउम १०१, भवि)।

परिमिला अक [परि + म्लै] म्लान होना। परिमिलादि (शौ) (पि १३६, ४७९)।

परिमिलाण वि [परिम्लान] म्लान, विच्छाय, निस्तेज (महा)।

परिमिल्लिर वि [परिमोक्तृ] परित्याग करने-वाला (सण)।

परिमुअ सक [परि + मुच्] परित्याग करना। परिमुअइ (सण)।

परिमुक्क वि [परिमुक्त] परित्यक्त (सुपा २५२, महा, सण)।

परिमुट्ठ वि [परिमृष्ट] स्पृष्ट (मा ४४)।

परिमुण सक [परि + ज्ञा] जानना। परि-मुणमि (वज्जा १०४)।

परिमुणिअ वि [परिज्ञात] जाना हुआ (पउम १६, ६१, सण)।

परिमुस सक [परि + मुष्] चोरी करना। वकृ परिमुसत (श्रा २७)। संकृ. परिमु-सिऊण (कर्पूर २९)।

परिमुस सक [परि + मृश्] स्पर्श करना, छूना। परिमुसइ (भवि)।

परिमुसण न [परिमोषण] १ चोरी। २ वञ्चना, ठगाई (गा २६)।

परिमुसिअ वि [परिमृष्ट] स्पृष्ट (महानि ४, भवि)।

परिमूसण देखो परिमुसण (गा २६)।

परिमेय देखो परिमिण।

परिमोक्कल वि [दे परिमुक्त] स्वैर, स्वच्छन्दी (भवि)।

परिमोक्ख पुं [परिमोक्ष] १ मोक्ष, मुक्ति (आचा)। २ परित्याग (सूअ १, १२, १०)।

परिमोय सक [परि + मोचय्] छोडाना, छुटकारा कराना। परिमोयह (सूअ २, १, ३९)।

परिमोयण न [परिमोचन] मोक्ष, छुटकारा (गुर ४, २५०, औप)।

परिमोस पु [परिमोष] चोरी (महा)।

परियंच सक [परि + अञ्च्] १ पास मे जाना। २ स्पर्श करना। ३ विभूषित करना। सकृ परिअंचिवि (अप) (भवि)।

परियंच सक [परि + अर्च्] पूजना। सकृ परिअंचिवि (अप) (भवि)।

परियंचण न [पर्यञ्चन] स्पर्श करना (सुख ३, १)। देखो पलियंचण।

परियंचिअ वि [पर्यञ्चित] विभूषित, 'पव-रारामगामपरियंचिउ' (भवि)।

परियंचिअ वि [पर्यर्चित] पूजित (भवि)।

परियंद सक [परि + वन्द्] वन्दन करना, स्तुति करना। कवकृ. परियंदिज्जमाण (औप)।

परियंदण न [परिवन्दन] वन्दन, स्तुति (आचा)।

परियच्छ सक [दृश्] १ देखना। २ जानना। परियच्छइ (भवि, उव), परियच्छति (उव)।

परियच्छिय देखो परिकच्छिय (राज)।

परियच्छी स्त्री [परिकक्षी] परदा (धर्मरत्न वृ० गा० ३१ पत्र २५, २)।

परियत्थि स्त्री [पर्यस्ति] देखो पल्हत्थिया, 'जत्तो वायइ पवणो परियत्थी दिज्जए तत्तो' (चेइय १३०)।

परियप्प सक [परि + कल्पय्] कल्पना करना, चिन्तन करना। वकृ. परियप्पमाण (आचा १, २, १, २)।

परियप्पण न [परिकल्पन] कल्पना (धर्मसं १२०८)।

परियय पु [परिचय] जान-पहचान, विशेष रूप से ज्ञान (गउड, से १५, ६६, अभि १३१)।

परियय वि [परिगत] अन्वित युक्त (स २२)।

परियाइ सक [पर्या + दा] १ समन्ताद् ग्रहण करना। २ विभाग से ग्रहण करना। परियाइयह (सूअ २ १, ३७)। संकृ परियाइत्ता (ठा ७)।

परियाइअ वि [पर्यात्त] सपूर्ण रूप से गृहीत (ठा २ ३—पत्र ६३)।

परियाइअ देखो परियाईय (ठा २, ३—पत्र ६३)।

परियाइणया स्त्री [पर्यादान] समन्ताद् ग्रहण (पण्ण ३४—पत्र ७७४)।

परियाइत्त वि [पर्याप्त] काफी (राज)।

परियाईय वि [पर्यायातीत] पर्याय को अतिक्रान्त (राज)।

परियाग देखो पज्जाय (औप, उवा महा, कप्प)।

परियागय वि [पर्यागत] १ पर्याय से आगत (उत्त ५, २१, सुख ५, २१, णाया १, ३)। २ सर्वथा निष्पन्न (णाया १, ७—पत्र ११६)।

परियाण सक [परि + ज्ञा] जानना। परियाणइ, परियाणाइ (पि १७०, उवा)।

परियाण न [परित्राण] रक्षण (सूअ १, १, २, ६, ७)।

परियाण न [परिदान] १ विनिमय, बदला लेनदेन। २ समन्ताद् दान (भवि)।

परियाण न [परियान] १ गमन (ठा १०)। २ वाहन, यान (ठा ८)। ३ अवतरण (ठा ३, ३)।

परियाणण न [परिज्ञान] जानकारी (स १३)।

परियाणिअ वि [परित्राणित] परित्राण-युक्त (सूअ १, १, २, ७)।

परियाणिअ वि [परिज्ञात] जाना हुआ, विदित (पउम ८८, ३३, रत्न १८, भवि)।

पलीव पु [प्रदीप] दीपक, दीआ (प्राकृ १२, षड्)।

पलीवग वि [प्रदीपक] आग लगानेवाला (पण्ह १, १)।

पलीवण न [प्रदीपन] आग लगाना (श्रा २८ कुप्र २६)।

पलीवणया स्त्री ऊपर देखो (निचू १६)।

पलीविअ देखो पलीव = प्र + दीपय्।

पलीविअ वि [प्रदीप्त] प्रज्वलित (पाअ)।

पलीविअ वि [प्रदीपित] जलाया हुआ (उव)।

पलुपण न [प्रलोपन] प्रलोप (औप)।

पलुट्ट वि [प्रलुठित] लेटा हुआ (दे १, ११६)।

पलुट्ट देखो पलोट्ट = पर्यस्त (हे ४, ४२२)।

पलुट्टिअ देखो पलोट्टिअ = पर्यस्त (कुमा ४, ७५)।

पलुट्ठ वि [प्लुष्ट] दग्ध, जला हुआ (सुर ६, २०६, सुपा ४)।

पलेमाण देखो पली = प्र + ली।

पलेव पु [प्रलेप] एक जाति का पत्थर, पाषाण-विशेष (जी ३)।

पलोअ सक [प्र + लोक्, लोकय्] देखना, निरीक्षण करना। पलोयइ, पलोअए, पलोएइ (सण, महा)। कर्म. पलोइज्जइ (कप्प)। वकृ पलोअन, पलोअअंत पलोएत, पलोएमाण, पलोयमाण (रयण १४, नाट—मालती ३२, महा, पि २६३, सुपा ४४, ३५१)।

पलोअण न [प्रलोकन] अवलोकन (से १४, ३५, गा ३२२)।

पलोअणा स्त्री [प्रलोकना] निरीक्षण (ओघ ३)।

पलोइ वि [प्रलोकिन्] प्रेक्षक (औप)।

पलोइअ वि [प्रलोकित] देखा हुआ (गा ११८, महा)।

पलोइर वि [प्रलोकितृ] प्रेक्षक (गा १८०, भवि)।

पलोएत } देखो पलोअ।
पलोएमाण }

पलोघर [दे] देखो परोहड (गा ३१३ अ)।

पलोट्ट सक [प्रत्या + गम्] लौटना, वापस आना। पलोट्टइ (हे ४, १६६)।

पलोट्ट सक [परि + अस्] १ फेंकना। २ मार गिराना। ३ अक पलटना, विपरीत होना। ४ प्रवृत्ति करना। ५ गिरना। पलोट्टइ, पलोट्टेइ (हे ४, २००, भग, कुमा)। वकृ. पलोट्टत (वज्जा ६६, गा २२२)।

पलोट्ट अक [प्र + लुठ्] जमीन पर लोटना। वकृ पलोट्टत (से ५, ८८)।

पलोट्ट वि [पर्यस्त] १ क्षिप्त, फेंका हुआ। २ हत। ३ विक्षिप्त (हे ४, २५८)। ४ पतित, गिरा हुआ (गा १७०)। ५ प्रवृत्त, 'रेल्लंता वणभागा तओ पलोट्टा जवा जलोघा' (कुमा)।

पलोट्टजीह वि [दे] रहस्य-भेदी, बात को प्रकट करनेवाला (दे ५, ३५)।

पलोट्टण न [प्रलोठन] ढुलकाना, लुढकाना, गिराना (उप पृ ११०)।

पलोट्टिअ देखो पलोट्ट = पर्यस्त (कुमा)।

पलोभ सक [प्र + लोभय्] लुभाना, लालच देना। पलोभेदि (शौ) (नाट—मृच्छ ३१३)।

पलोभविअ वि [प्रलोभित] लुभाया हुआ (धर्मवि ११२)।

पलोभि वि [प्रलोभिन्] विशेष लोभी (धर्मवि ७)।

पलोभिअ देखो पलोभविअ (सुपा ३४३)।

पलोव (अप) देखो पलोअ। पलोवइ (भवि)।

पलोहर [दे] देखो परोहड (गा ६८५ अ)।

पलोहिद (शौ) देखो पलोभिअ (नाट)।

पल्ल पुंन [पल्य] १ गोल आकार का एक धान्य रखने का पात्र (पव १५८, ठा ३, १)। २ काल-परिमाण विशेष, पल्योपम (पउम २०, ६७, द २७)। ३ संस्थान-विशेष, पल्यक संस्थान, 'पल्लासंठाणसंठिया' (सम ७७)।

पल्ल पु [पल्ल] धान्य भरने का बडा कोठा, 'बहवे पल्ला सालीण पडिपुण्णा चिट्ठंति' (णाया १, ७—पत्र ११५)।

पल्लक देखो पलिअक (हे २, ६८, षड्)।

पल्लंक पुं [पल्यङ्क] शाक-विशेष, कन्द विशेष (श्रा २०, जी ६, पव ४, संबोध ४४)।

पल्लंघण न [प्रलङ्घन] १ अतिक्रमण (ठा ७)। २ गमन, गति (उत्त २४, ४)।

पल्लग देखो पल्ल = पल्ल (विसे ७०६)।

पल्लट्ट देखो पलट्ट = परि + अस्। पल्लट्टइ (हे ४, २००, भवि)। सकृ पल्लट्टिउं (पचा १३, १२)।

पल्लट्ट पुं [दे] पर्वत-विशेष (पण्ह १, ४)।

पल्लट्ट पुं [दे परिवर्त] काल-विशेष, अनन्त काल चक्रो का समय (धण ४७)।

पल्लट्ट } देखो पलोट्ट = पर्यस्त (हे २, ४७,
पल्लत्थ } ६८)।

पल्लत्थि स्त्री [पर्यस्ति] आसन-विशेष, पलथी, 'पायपसारण पल्लत्थिबंधणं बिंबपट्ठिदाण च। उच्चासणमेवणाया जिणपुरओ भन्नइ अवन्ना ॥' (चेइय ६०)। देखो पल्हत्थिया।

पल्लल न [पल्वल] छोटा तलाव (प्राकृ १७, णाया १, १, सुपा ६४६, स ४२०)।

पल्लव पुं [पल्लव] १ किसलय, अंकुर (पाअ, औप)। २ पत्र, पत्ता (से २६)। ३ देश-विशेष (भवि)। ४ विस्तार (कप्पू)।

पल्लव देखो पज्जव (सम ११३)।

पल्लवाय न [दे] क्षेत्र, खेत (दे ६, २६)।

पल्लविअ वि [दे] लाक्षा-रक्त (दे ६, १६, पाअ)।

पल्लविअ वि [पल्लवित] १ पल्लवाकार (दे ६, १६)। २ अंकुरित, प्रादुर्भूत, उत्पन्न (दे १, १)। ३ पल्लव-युक्त (रंभा)।

पल्लविल्ल वि [पल्लववत्] पल्लव-युक्त (सुपा ५, धण २४)।

पल्लविल्ल देखो पल्लव (हे २, १६४)।

पल्लस्स देखो पलोट्ट = परि + अस्। पल्लस्सइ (प्राकृ ७२)।

पल्लाण न [पर्याण] अश्व आदि का साज, 'किं करिणो पल्लाणं उव्वोढु रासभो तरइ' (प्रवि १७, प्राप्र)।

पल्लाण सक [पर्याणय्] अश्व आदि को सजाना। पल्लाणेह (स २२)।

पल्लाणिअ वि [पर्याणित] पर्याण-युक्त (कुमा)।

पल्लि स्त्री [पल्लि] १ छोटा गांव। २ चोरो के निवास का गहन स्थान (उप ७२८ टी)।

परिल्ल देखो पर = पर (से ६, १७)।
परिल्लवास वि [दे] अज्ञात-गति (दे ६, ३३)।
परिल्ली देखो परिली = दे (राय ४६)।
परिल्ली देखो परिली। वकृ. परिल्लिंत, परिल्लेंत (औप)।
परिल्हस अक [परि + स्रंस्] गिर पड़ना, सरक जाना। परिल्हसइ (हे ४, १९७)।
परिवइत्तु वि [परिव्रजितृ] गमन करने में समर्थ (ठा ४, ४—पत्र २७१)।
परिवक्कड (अप) वि [परिवक्र] सर्वथा टेढ़ा (भवि)।
परिवच सक [परिवञ्चय्] ठगना। संकृ परिवचिऊण (सम्मत्त ११८)।
परिवंचिअ वि [परिवञ्चित] जो ठगा गया हो (दे ४, १८)।
परिवंथि वि [परिपन्थिन्] विरोधी, दुश्मन (पि ४०५, नाट—विक्र ७)।
परिवदण न [परिवन्दन] स्तुति, प्रशंसा (आचा)।
परिवदिय वि [परिवन्दित] स्तुत, पूजित (पउम १, ६)।
परिवक्खिय देखो परिवच्छिय (औप)।
परिवग्ग पुं [परिवर्ग] परिजन-वर्ग (पउम २३, २४)।
परिवच्छ न [दे] अवधारण, निश्चय, 'सामण्णत्थ परिवच्छे' (कल्पगा० २१४२)।
परिवच्छिय देखो परिकच्छिय, 'उज्जलनेवत्थहव्वपरिवच्छिय' (णाया १, १६ टी—पत्र २२१, औप)। देखो परिवत्थिय।
परिवज्ज सक [प्रति + पद्] स्वीकार करना। परिवज्जइ (भवि)।
परिवज्ज सक [परि + वर्जय्] परिहार करना, परित्याग करना। परिवज्जइ (भवि)। संकृ. परिवज्जिय, परिवज्जियाण (आचा, पि ५९२)।
परिवज्जण न [परिवर्जन] परित्याग (धर्मसं ११२०)।
परिवज्जणा स्त्री [परिवर्जना] ऊपर देखो (उव)।
परिवज्जिय वि [परिवर्जित] परित्यक्त (उवा, भग, भवि)।
परिवट्ट देखो परिवत्त = परि + वर्तय्। परिवट्टइ (भवि)। संकृ. परिवट्टिवि (अप) (भवि)।
परिवट्टण न [परिवर्तन] आवर्तन, आवृत्ति, 'आगमपरिवट्टणए' (सबोध ३९)।
परिवट्टि देखो परिवत्ति (मा ५२)।
परिवट्टिय देखो परिवत्तिय (भवि)।
परिवट्टुल वि [परिवर्तुल] गोलाकार (स ६८)।
परिवड अक [परि + पत्] पड़ना। वकृ. परिवडत, परिवडमाण (पंच ५, ६२, ६७, उप पृ ३)।
परिवडिअ वि [परिपतित] गिरा हुआ (सुपा ३६०, वसु, यति २३, हम्मीर ३०, पचा ३, २४)।
परिवड्ढ अक [परि + वृध्] बढ़ना। परिवड्ढइ (महा, भवि)। भवि. परिवड्ढिस्सइ (औप)। कृ परिवड्ढंत, परिवड्ढमाण, परिवड्ढेमाण (गा ३४९, णाया १, १३, महा, णाया १, १०)।
परिवड्ढण न [परिवर्धन] परिवृद्धि, बढ़ाव (गउड, धर्मस ८७५)।
परिवड्ढि स्त्री [परिवृद्धि] ऊपर देखो (से ५, २)।
परिवड्ढिअ देखो परिअड्ढिअ = परिवर्धिन् (औप १६ टि)।
परिवड्ढिअ वि [परिवर्धित] बढ़ाया हुआ (गा १४२, ४३१)।
परिवड्ढेमाण देखो परिवड्ढ।
परिवण्ण सक [परि + वर्णय्] वर्णन करना। कृ. परिवण्णेअव्व (भग)।
परिवण्णिअ वि [परिवर्णित] जिसका वर्णन किया गया हो वह (आत्म ७)।
परिवत्त देखो परिअट्ट = परि + वृत्। परित्तई (उत्त ३३, १)। परिवत्तसु (गा ८०७)। वकृ परिवत्तत (गा २८३)।
परिवत्त देखो परिअट्ट = परि + वर्तय्। वकृ. परिवत्तेंत, परिवत्तयत (स ६, सूम १, ५, १, १५)। संकृ परिवत्तिऊण (काल)।
परिवत्त देखो परिअट्ट = परिवर्त; 'विहियरूव-परिवत्तो' (कुप्र १३४)। २ संचरण, भ्रमण (राज)।
परिवत्त देखो परिअत्त = परिवृत्त (काल)।
परिवत्तण देखो पडिअत्तण (पि २८९; नाट—विक्र ८३)।
परिवत्तर (अप) वि [परिपक्त्रिम] पकाया गया, गरम किया गया, 'अणु मलेवि सुअवामोएं निमज्जिउ परिवत्तरतोए' (भवि)।
परिवत्ति वि [परिवर्तिन्] बदलानेवाला, 'रूवपरिवत्तिणी विज्जा' (कुप्र १२६, महा)।
परिवत्तिय देखो परिअट्टिय (सुपा २९२)।
परिवत्थ न [परिवस्त्र] वस्त्र, कपड़ा (भवि)।
परिवत्थिय वि [परिवस्त्रित] आच्छादित, 'उज्जलनेवच्छहत्थ (?व्व) परिवत्थिय' (औप)। देखो परिवच्छिय।
परिवद्ध देखो परिवड्ढ। वकृ परिवद्धमाण (राज)।
परिवन्न देखो पडिवन्न (उप १३९ टी)।
परिवय अक [परि + वत्] तिर्यक् गिरना। परिवयति (राय १०१)।
परिवय सक [परि + वद्] निन्दा करना। परिवएज्जा, परिवयति (आचा)। वकृ. परिवयत (पण्ह १, ३)।
परिवरिअ वि [परिवृत] परिकरित, वेष्टित (सुपा १२५)।
परिवलइअ वि [परिवलयित] वेष्टित (सुख १०, १)।
परिवस अक [परि + वस्] बसना, रहना। परिवसइ, परिवसति (भग, महा, पि ४१७)।
परिवसण न [परिवसन] आवास (राज)।
परिवसणा स्त्री [परिवसना] पर्युषणा पर्व (निचू १०)।
परिवसिअ वि [पर्युषित] रहा हुआ, वास किया हुआ (सण)।
परिवह सक [परि + वह्] वहन करना, ढोना। २ अक चालू रहना। परिवहइ (कप्प)। परिवहति (गउड)। वकृ. परिवहत (पिंड ३५६)।
परिवहण न [परिवहन] ढोना (राज)।
परिवा अक [परि + वा] सूखना। परिवायइ (गउड)।
परिवाइ वि [परिवादिन्] निन्दा करनेवाला (उव)।

पवट्ट वि [प्रवृत्त] जिसने प्रवृत्ति की हो वह (षड्, हे २, २६ टि)।
पवट्टय वि [प्रवर्त्तक] प्रवृत्ति करानेवाला (राज)।
पवट्टि स्त्री [प्रवृत्ति] प्रवर्त्तन (हम्मीर १५)।
पवट्टिअ वि [प्रवर्त्तित] प्रवृत्त किया हुआ (भवि, दे)।
पवट्ठ देखो पउट्ठ = प्रकोष्ठ (हे १, १५६)।
पवड अक [प्र + पत्] पडना, गिरना। पवडइ, पवडिज्ज, पवडेज्ज (भग, कप्प, आचा २, २, ३, ३)। वकृ. पवडत, पवडेमाण (णाया १, १, सिरि ६८६, आचा २, २, ३, ३)।
पवडग न [प्रपतन] अध पात (बृह ६)।
पवडणया } स्त्री [प्रपतना] ऊपर देखो (ठा
पवडणा } ४, ४—पत्र २८०, राज)।
पवडेमाण देखो पवड।
पवड्ढ अक [दे] पोढना, सोना, 'जाव राया पवड्ढइ ताव कहेहि किंचि अक्खाणय' (सुख ६, १)।
पवड्ढ अक [प्र + वृध्] वढना। पवड्ढइ (उव)। वकृ पवड्ढमाण (कप्प, सुर १, १८१, श्रु १२४)।
पवड्ढ वि [प्रवृद्ध] वढा हुआ (अज्झ ७०)।
पवड्ढण न [प्रवर्धन] १ वढाव, प्रवृद्धि (सवोध ११)। २ वि. वढानेवाला, 'संसारस्स पवड्ढण' (सूअ १, १, २, २४)।
पवड्ढिय वि [प्रवर्धित] वढाया हुआ (भवि)।
पवण वि [प्रवण] १ तत्पर (कुप्र १३४)। २ तदुरुस्त, स्वस्थ, सुस्थ, 'पडियरिओ तह, पवणो पुव्व व जहा स सजाओ' (उप ५६७ टी, कुप्र ४१८)।
पवण न [प्लवन] १ उच्छल कर गमन (जीव ३)। २ तरण, 'तरिउकामस्स पवहणं (? वण) किच्चं' (णाया १, १४—पत्र १६१)। °किच्च पुं [°कृत्य] नौका, नाव, डोंगी (णाया १, १४)।
पवण पुं [पवन] १ पवन, वायु (पाअ, प्रासू १०२)। २ देव-जाति विशेष, भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति, पवनकुमार (औप, पण्ह १, ४)। ३ हनूमान् का पिता (से १, ४८)। °गइ पुं [°गति] हनूमान का पिता (पउम १५, ३७), वानरद्वीप के राजा मन्दर का पुत्र (पउम ६, ६८)। °चड पु [°चण्ड] व्यक्ति-वाचक नाम (महा)। °तणअ पुं [°तनय] हनूमान् (से १, ४८)। °नंदण पु [°नन्दन] हनूमान (पउम १६, २७, सम्मत्त १२३)। °पुत्त पुं [°पुत्र] हनूमान् (पउम ५२, २८)। °वेग पु [°वेग] १ हनूमान का पिता (पउम १५, ६५)। २ एक जैन मुनि (पउम २०, १६०)। °सुअ पुं [°सुत] हनूमान् (पउम ४६, १३, से ४, १३, ७, ४६)। °णंद पु [°नन्द] हनूमान् (पउम ५२, १)।
पवणजअ पुं [पवनञ्जय] १ हनूमान् का पिता (पउम १५, ६)। २ एक श्रेष्ठि-पुत्र (कुप्र ३७७)।
पवणिय वि [प्रवणित] सुस्थ किया हुआ, तदुरस्त किया हुआ (उप ७६८ टी)।
पवण्ण देखो पवन्न (सण)।
पवत्त देखो पवट्ट = प्र + वृत्। पवत्तइ, पवत्तए (पव २४७, उव)।
पवत्त सक [प्र + वर्त्तय्] प्रवृत्त करना। पवत्तेइ, पवत्तेहि (वव १, कप्प)।
प्रवत्त देखो पवट्ट = प्रवृत्त (पउम ३२, ७०, स ३७६, रंभा)।
पवत्तग वि [प्रवर्त्तक] प्रवृत्ति करानेवाला (उप ३३६ टी, धर्मवि १३२)।
पवत्तण न [प्रवर्त्तन] १ प्रवृत्ति (हे २, ३०, उत्त ३१, २)। २ वि. प्रवृत्ति करानेवाला (उत्त ३१, ३, पण्ह १, ५)।
पवत्तय वि [प्रवर्त्तक] १ प्रवृत्ति करनेवाला (हे २, ३०)। वि. प्रवृत्त करानेवाला, 'तित्थवरप्पवत्तयं' (अजि १८, गच्छ १, १०)।
पवत्ति स्त्री [प्रवृत्ति] प्रवर्त्तन। °वाउय वि [°व्यापृत] प्रवृत्ति मे लगा हुआ (औप)।
पवत्ति वि [प्रवर्त्तिन्] प्रवृत्ति करानेवाला (ठा ३, ३, कस, कप्प)।
पवत्तिणी स्त्री [प्रवर्त्तिनी] साध्वियों की अध्यक्षा, मुख्य जैन साध्वी (सुर १, ४१, महा)।
पवत्तिय देखो पवट्टिअ (काल)।
पवत्तिया स्त्री [दे] संन्यासी का एक उपकरण (कुप्र ३७२)।
पवद देखो पवय = प्र + वद्। वकृ पवदमाण (आचा)।
पवदि स्त्री [प्रवृति] ढकना, आच्छादन (सक्षि ६)।
पवद्ध देखो पवड्ढ = प्र + वृध्। वकृ. पवद्धमाण (चेइय ६१६)।
पवद्ध पुं [दे] घन, हथौडा (दे ६, ११)।
पवद्धिय देखो पवड्ढिय (महा)।
पवन्न वि [प्रपन्न] १ स्वीकृत, अंगीकृत (चेइय ११२, प्रासू २१)। २ प्राप्त, 'गुरुयणगुरुविणयपवन्नमाणसो' (महा)।
पवमाण देखो पव = प्लु।
पवमाण पुं [पवमान] पवन, वायु (कुप्र ४४४, सुपा ८६)।
पवय सक [प्र + वद्] १ वकवाद करना। २ वाद-विवाद करना। वकृ पवयमाण (आचा १, ५, १, ३)।
पवय सक [प्र + वच्] वोलना, कहना। भवि. कवकृ. पवक्खमाण (धर्मसं ६१)। कर्म. पवुच्चइ, पवुचई, पवुचति (कप्प; पि ५४४, भग)।
पवय देखो पवक = प्लवक (उप पृ २१०)।
पवय पु [प्लवग] वानर, कपि (पउम ६५, ५०, हे ४, २२०, पाअ, से २, ३७, १५, १७)। °वइ पुं [°पति] वानरों का राजा सुग्रीव (से २, ३६)। °हिव पुं [°धिप] वही पूर्वोक्त अर्थ (से २, ४०, १२, ७०)।
पवयण पुं [प्राजन] कोडा, चावुक (दे २, ६७)।
पवयण न [प्रवचन] १ जिनदेव-प्रणीत सिद्धान्त, जैन शास्त्र (भग २०, ८, प्रासू १८१)। २ जैन संघ, 'गुणसमुदाओ संघो पवयण तित्थं ति होइ एगट्ठा' (पंचा ८, ३६, विसे ११११, उप ४२३ टी, औप)। ३ आगम-ज्ञान (विसे १११२)। °माया स्त्री [°माता] पाँच समिति और तीन गुप्ति रूप धर्म (सम १३)।
पवर वि [प्रवर] श्रेष्ठ, उत्तम (उवा, सुपा ३१६, ३४१, प्रासू १२६, १५४)।

परिवीढ न [परिपीठ] ग्रासन-विशेष (भवि)।

परिवील सक [परि-पीडय्] दबाना। संकृ. परिवीलियाण (आचा २, १, ८, १)।

परिवुड वि [परिवृत] परिकरित, वेष्टित (णाया १, १४, धर्मवि २४, औप, महा)।

परिवुत्थ वि [पर्युषित] १ रहा हुआ। २ न. वास, निवास (गउड ५४०)। देखो परिवुसिअ।

परिवुद देखो परिवुड (प्राकृ १२)।

परिवुदि स्त्री [परिवृति] वेष्टन (प्राकृ १२)।

परिवुसिअ वि [पर्युषित] स्थित, रहा हुआ, 'जे भिक्खू अचेले परिवुसिए' (आचा १, ८, ७ १, १, ६, २, २)। देखो परिवुत्थ।

परिवुसिअ वि [पर्युषित] गत, गुजरा हुआ (आचा २, ३, १, ३)।

परिवूढ वि [परिवृढ] समर्थ (उत्त ७, २)।

परिवूढ वि [परिवृद्ध] स्थूल (भास ८६, उत्त ७, ६)।

परिवूढ वि [परिवृद्ध] १ बलवान्, बलिष्ठ (दस ७, २३)। २ मांसल, पुष्ट (आचा २, ४, २, ३)।

परिवूढ वि [परिव्यूढ] वहन किया हुआ, ढोया हुआ, 'न चइस्सामि अहं पुण चिरपरिवूढं इम लोहं' (धर्मवि ७)।

परिवूहण देखो परिबूहण (राज)।

परिवेढ सक [परि + वेष्ट्] वेढना, लपेटना। परिवेढइ (भवि)। संकृ परिवेढिय (निचू १)।

परिवेढ पु [परिवेष्ट] वेष्टन, घेरा, 'जा जग्गइ तो पिच्छइ सेवापरसुहडपरिवेढं' (सिरि ६३८)।

परिवेढाविय वि [परिवेष्टित] वेष्टित कराया हुआ (पि ३०४)।

परिवेढिय वि [परिवेष्टित] वेढा हुआ, घेरा हुआ, लपेटा हुआ (उप ७३८ टी, धण २०, पि ३०४)।

परिवेय अक [परि + वेप्] कांपना, 'कायरघरिणि परिवेयइ' (भवि)।

परिवेल्लिर वि [परिवेल्लितृ] कम्पन-शील (गउड)।

परिवेव अक [परि + वेप्] कांपना। वकृ परिवेवमाण (आचा)।

परिवेस सक [परि + विष्] परोसना। परिवेसइ (सुपा ३८६)। कर्म परिवेसिज्जइ (णाया १, ८)। वकृ. परिवेसंत, परिवेसयंत (पिंड १२०, सुपा ११, णाया १, ७)।

परिवेस पु [परिवेश, °ष] १ वेष्टन, (गउड)। २ मंडल, मेघादि में सूर्य-चन्द्र का वेष्टनाकार मंडल, 'परिवेसो अवरे फरुसवयणो' (पउम ६६, ४७, स ३१२ टी, गउड)।

परिवेसण न [परिवेषण] परोसना (स १८७, पिंड ११६)।

परिवेसणा स्त्री [परिवेषणा] ऊपर देखो (पिंड ४४५)।

परिवेसि [परिवेशिन्] समीप में रहनेवाला (गउड)।

परिव्वअ सक [परि + व्रज्] १ समताद् गमन करना। २ दीक्षा लेना। परिव्वए, परिव्वएज्जासि (सूअ १, १, ४, ३, पि ४६०)।

परिव्वअ वि [परिवृत] परिवेष्टित, 'तारापरिव्वओ विव सरयपुण्णिमाचंदो' (वसु)।

परिव्वअ वि [परिव्यय] विशेष व्यय (नाट—मृच्छ ७)।

परिव्वय पु [परिव्यय] खर्चा, खर्च करने का धन (दस ३, १ टी)।

परिव्वह सक [परि + वह्] वहन करना, धारण करना। परिव्वहइ (सवोध २२)।

परिव्वाइया स्त्री [परिव्राजिका] संन्यासिनी (णाया १, ८, महा)।

परिव्वाज (शौ) पुं [परि + व्राज्] संन्यासी (चारु ४३)।

परिव्वाजअ (शौ) पु [परिव्राजक] संन्यासी (पि २८७, नाट—मृच्छ ८५)।

परिव्वाजिआ (शौ) देखो परिव्वाइया (मा २०)।

परिव्वाय देखो परिव्वाज (सूअनि ११२, औप)।

परिव्वायग } पु [परिव्राजक] संन्यासी,
परिव्वायय } साधु (भग)।

परिव्वायय वि [पारिव्राजक] परिव्राजक-सम्बन्धी (कप्प)।

परिस देखो फरिस = स्पर्श (गउड, चारु ४२)।

परिसंक अक [परि + शङ्क्] भय करना, डरना। वकृ परिसंकमाण (सूअ १, १०, २०)।

परिसंकिय वि [परिशङ्कित] भीत (पण्ह १, ३)।

परिसंखा सक [परिसं + ख्या] १ अच्छी तरह जानना। २ गिनती करना। संकृ परिसंखाय (दस ७, १)।

परिसंखा स्त्री [परिसंख्या] संख्या गिनती (पउम २, ४६, जीवस ४०, पव—गाथा १३ तदु ४, सण)।

परिसंग पु [परिषङ्ग] संग, सोहबत (हम्मीर १६)।

परिसंग पुं [परिष्वङ्ग] आलिङ्गन (पउम २१, ५२)।

परिसंगय वि [परिसंगत] युक्त, सहित (धर्मवि १३)।

परिसंठव सक [परिसं + स्थापय्] सम्स्थापन करना। परिसंठवइ (?) (पिंग)। वकृ परिसंठवित (उपपं ४३)।

परिसंठविय वि [परिसंस्थापित] संस्थापित (तदु २८)।

परिसंठिय वि [परिसंस्थित] स्थित, रहा हुआ (महा)।

परिसंत वि [परिश्रान्त] थका हुआ (महा)।

परिसंथविय वि [परिसंस्थापित] आश्वासित (स ५६६)।

परिसक्क सक [परि + ष्वष्क्] चलना, गमन करना, इधर-उधर घूमना। परिसक्कइ (उप ६ टी, कुप्र १७५)। वकृ परिसक्कंत, परिसक्कमाण (काप्र ६१७, स ४१, १३६)। संकृ परिसक्किऊण (सुपा ३१३)। कृ परिसक्कियव्व (स १६२)।

परिसक्कण न [परिष्वष्कण] परिभ्रमण (से ५, ५५, १३, ५६, सुपा २०१)।

परिसक्किअ वि [परिष्वष्कित] १ गत (भवि)। २ न परिक्रमण, परिभ्रमण (गा ६०६)।

परिसक्किर वि [परिष्वष्कितृ] गमन करनेवाला (णाया १, १, पि ५६६)।

परिसज्जिअ (अप) वि [परिष्वक्त] आलिंगित (सण)।

पविज्जल वि [प्रविज्वल] १ प्रज्वलित (सूअ १, ५, २, ५)। २ रुधिरादि से पिच्छिल—व्याप्त (सूअ १, ५, २, १६, २१)।

पविट्ठ वि [प्रविष्ट] घुसा हुआ (उवा, सुर ३, १३६)।

पविणी सक [प्रवि + णी] दूर करना। पविणेति (भग)।

पवित्त पुं [पवित्र] १ दर्भ, कुशा, तृण-विशेष (दे ६,१४)। २ वि निर्दोष, निष्कलङ्क, शुद्ध, स्वच्छ (कुमा, भग, उत्तर ४५)।

पवित्त देखो पवट्ट = प्रवृत्त (से ६, ५७)।

पवित्त सक [पवित्रय्] पवित्र करना। वकृ पवित्तयत (सुपा ८५)। कृ. पवित्तियव्व (सुपा ५८४)।

पवित्तय न [पवित्रक] अगूठी, अंगुलीयक (णाया १, ५, औप)।

पवित्ताविय वि [प्रवर्त्तित] प्रवृत्त किया हुआ (भवि)।

पवित्ति देखो पवत्ति = प्रवृत्ति (सुपा २, ओघ ६३, औप)।

पवित्तिणी देखो पवत्तिणी (कस)।

पवित्थर अक [प्रवि + स्तृ] फैलाना। वकृ. पवित्थरमाण (पव २५५)।

पवित्थर पुं [प्रविस्तर] विस्तार (उवा, सूअ २, २, ६२)।

पवित्थरिअ वि [प्रविस्तृत] विस्तीर्ण (स ७५२)।

पवित्थरिल्ल वि [प्रविस्तरिन्] विस्तारवाला (राज—पण्ह १, ५)। देखो पविरल्लिय।

पवित्थारि वि [प्रविस्तारिन्] फैलनेवाला (गउड)।

पविद्ध देखो पव्विद्ध (पव २)।

पविद्धंस अक [प्रवि + ध्वस्] १ विनाशाभिमुख होना। २ विनष्ट होना, 'तेण पर जोणी पविद्धसइ, तेण परं जोणी विद्धंसइ' (ठा ३, १—पत्र १२३)।

पविद्धत्थ वि [प्रविध्वस्त] विनष्ट (जीव ३)।

पविभत्ति स्त्री [प्रविभक्ति] पृथक्-पृथक् विभाग (उत्त २, १)।

पविभाग पु [प्रविभाग] ऊपर देखो (विसे १६४२)।

पविमुक्क वि [प्रविमुक्त] परित्यक्त (सुर ३, १३६)।

पविमोयण न [प्रविमोचन] परित्याग (औप)।

पविय वि [प्राप्त] प्राप्त, 'भुवि उवहासं पविया दुक्खाए हुति ते णिलया' (आरा ४४)।

पवियभिर वि [प्रविजृम्भितृ] १ उल्लसित होनेवाला। २ उत्पन्न होनेवाला (मण)।

पवियक्किय न [प्रवितर्कित] विकल्प, वितर्क (उत्त २३, १४)।

पवियक्खण वि [प्रविचक्षण] विशेष प्रवीण (उत्त ६, ६३)।

पवियार पु [प्रवीचार] १ काया और वचन की चेष्टा-विशेष (उप ६०२)। २ काम-क्रीडा, मैथुन (देवेन्द्र ३४७, पव २६६)।

पवियारण न [प्रविचारण] सचार, 'वाउपवियारणट्ठा छब्भाय ऊणय कुज्जा' (पिंड ६५०)।

पवियारणा स्त्री [प्रविचारणा] काम-क्रीडा, मैथुन (देवेन्द्र ३४७)।

पवियास सक [प्रवि + काशय्] फाडना, खोलना, 'पवियासइ नियवयणं' (धर्मवि १२४)।

पवियासिय वि [प्रविकासित] विकसित किया हुआ, 'पवियासियकमलवरण खण निहालेइ दिणनाह' (सुपा ३४)।

पविरइअ वि [दे] त्वरित, शीघ्रता-युक्त (दे ६, २८)।

पविरंज सक [भञ्ज्] भाँगना, तोडना। पविरजइ (हे ४, १०६)।

पविरजव वि [दे] स्निग्ध, स्नेह-युक्त (षड्)।

पविरजिअ वि [भग्न] भाँगा हुआ (कुमा, दे ६, ७४)।

पविरजिअ वि [दे] १ स्निग्ध, स्नेह-युक्त। २ कृत-निषेध, निवारित (दे ६, ७४)।

पविरल वि [प्रविरल] १ अनिबिड। २ विच्छिन्न (गउड)। ३ अत्यन्त थोडा, बहुत ही कम, 'परकज्जकरणरसिया दोसति महीए पविरलनरिंदा' (सुपा २४०)।

पविरल्लिय वि [दे] विस्तारवाला (पण्ह १, ५—पत्र ६१)। देखो पवित्थरिल्ल।

पविरिक्क वि [प्रविरिक्त] एकदम शून्य, बिलकुल खाली (गउड ६८५)।

पविरेल्लिय [दे] देखो पविरल्लिय (पण्ह १, ५ टी—पत्र ६२)।

पविलुप सक [प्रवि + लुप्] बिलकुल नष्ट करना। कवकृ. पविलुप्पमाण (महा)।

पविलुत्त वि [प्रविलुप्त] बिलकुल नष्ट (उप ५६७ टी)।

पविलुप्पमाण देखो पविलुप।

पविस सक [प्र + विश्] प्रवेश करना, घुसना। पविसइ (उव, महा)। भवि पविसिस्सामि, पविसिहिइ (पि ५२६)। वकृ पविसत, पविसमाण (पउम ७६, १६, सुपा ४४८, विपा १, ५, कप्प)। सकृ पविसित्ता, पविसित्तु, पविसिअ, पविसिऊण (कप्प, महा, अभि ११६, काल)। हेकृ. पविसित्तए, पवेट्ठु (कस; कप्प, पि ३०३)। कृ पविसिअव्व (ओघ ६१, सुपा ३८१)।

पविसण न [प्रवेशन] प्रवेश, पैठ (पिंड ३७७)।

पविसु सक [प्रवि + सू] उत्पन्न करना। सकृ पविसुइत्ता (सूअ २, २, ६५)।

पविस्स देखो पविस। पविस्सइ (महा)। वकृ. पविस्समाण (भवि)।

पविहर सक [प्रवि + हृ] विहार करना, विचरना। पविहरंति (उव)।

पविहस अक [प्रवि + हस्] हसना, हास्य करना। वकृ पविहसत (पउम ५६, १७)।

पवीइय वि [प्रवीजित] हवा के लिए चलाया हुआ (औप)।

पवीण वि [प्रवीण] निपुण, दक्ष (उप ६८६ टी)।

पवीणी देखो पविणी। पवीणेइ (औप)।

पवील सक [प्र + पीडय्] पीडना, दमन करना। पवीलए (आचा १, ४, ४, १)।

पवुच्च° देखो पवय = प्र + वच्।

पवुट्ठ वि [प्रवृष्ट] १ खूब बरसा हुआ, जिसने प्रभूत वृष्टि की हो वह (आचा २, ४, १, १३)। २ न प्रभूत वृष्टि, वर्षण, 'काले पवुट्ठ' विअ अहिणंदिदं देवस्स सासणं' (अभि २२०)।

परिसोण त्रि [परिशोण] लाल रँग का (गउड)।

परिसोसण न [परिशोषण] सुखाना (गा ६२८)।

परिसोसिअ वि [परिशोषित] सुखाया हुआ (सण)।

परिसोह सक [परि + शोधय्] शुद्ध करना। कवकृ. परिसोहिज्जंत (सण)।

परिस्सअ सक [परि + स्वञ्ज्] आलिंगन करना। परिस्सअदि (शौ) (पि ३१५)। संकृ परिस्सइअ (पि ३१५, नाट—शकु ७२)।

परिस्संत देखो परिसंत (णाया १, १, स्वप्न ४०, अभि २१०)।

परिस्सज (शौ) देखो परिस्सअ। परिस्सजह (उत्तर १७६)। वकृ परिस्सजंत (अभि १३३)। संकृ. परिस्सजिअ (अभि १२५)।

परिस्सम पुं [परिश्रम] मेहनत (धर्मसं ७८८, स्वप्न १०, अभि ३६)।

परिस्सम्म अक [परि + श्रम्] १ मेहनत करना। २ विश्राम लेना। परिस्सम्मइ (विसे ११६७, धर्मसं ७८६)।

परिस्सव सक [परि + स्रु] चूना, झरना, टपकना। वकृ परिस्सवमाण (विपा १, १)।

परिस्सव पुं [परिस्रव] आस्रव, कर्म-बन्ध का कारण (आचा)।

परिस्सह देखो परीसह (आचा)।

परिस्साइ देखो परिस्सावि = परिस्राविन् (ठा ४, ४—पत्र २७६)।

परिस्साव देखो परिसाव। संकृ. परिस्साविआण (पि ५६२)।

परिस्सावि वि [परिस्राविन्] १ कर्म-बन्ध करनेवाला (भग २५, ६)। २ चूनेवाला, टपकनेवाला। ३ गुह्य बात को प्रकट कर देनेवाला (गच्छ १, २२, पंचा १५, १४)।

परिस्सावि वि [परिश्राविन्] सुनानेवाला (द्रव्य ४६)।

परिह सक [परि + धा] पहिरना, पहनना। परिहइ (धर्मवि १५०, भवि), 'सव्वंगीणेवि परिहए जंबू रयणमयालकारे' (धर्मवि १४६)।

परिह पुं [दे] रोष, गुस्सा (दे ६ ७)।

परिह पु [परिघ] अर्गला, आगल (अणु)।

परिहच्छ वि [दे] १ पटु, दक्ष, निपुण (दे ६, ७६, भवि)। २ पुं. मन्यु, रोष, गुस्सा (दे ६, ७१)। देखो परिहत्थ।

परिहच्छ देखो पडिहच्छ (औप)।

परिहट्ट सक [मृद्, परि + घट्टय्] मर्दन करना, चूर करना, कचरना, कुचलना। परिहट्टइ (हे ४, १२६, नाट—माहित्य ११६)।

परिहट्ट सक [वि + लुल्] १ मारना, मार कर गिरा देना। २ सामना करना। ३ लूट लेना। ४ अक. जमीन पर लोटना। परिहट्टइ (प्राकृ ७३)।

परिहट्टण न [परिघट्टन] १ अभिघात, आघात (से १०, ४१)। २ घर्षण, घिसना (से ८, ४३)।

परिहट्टि स्त्री [दे] आकृष्टि, आकर्षण, खींचाव (दे ६, २१)।

परिहट्टिअ वि [मृदित] जिसका मर्दन किया गया हो वह, 'परिहट्टिओ माणो' (कुमा, पाअ)।

परिहण न [दे. परिधान] वस्त्र, कपडा (दे ६, २१, पाअ, हे ४, ३४१, सुर १, २५, भवि)।

परिहत्थ पुं [दे] १ जलजन्तु-विशेष, 'परिहत्थमच्छपुच्छच्छडअच्छोडणपोच्छलंतसलिलोह' (सुर १३, ४१) 'पोक्खरिणी' परिहत्थभमंतमच्छच्छप्पयअणेगसउणगणमिहुणवियरियसद्दुन्नइयमहुरसरनाइया पासाईया' (णाया १, १३—पत्र १७६)। २ वि. दक्ष, निपुण, 'अन्ने रणपरिहत्था सूरा' (पउम ६१, १, पण्ह १, ३—पत्र ५५, पाअ, आव ४)। ३ परिपूर्ण (औप; कप्प)। देखो परिहच्छ, पडिहत्थ।

परिहर सक [परि + धृ] धारण करना। संकृ परिहरिअ (उत्त १२, ८)।

परिहर सक [परि + हृ] १ त्याग करना, छोडना। २ करना। ३ परिभोग करना, आसेवन करना। परिहरइ (हे ४, २५६, उव, महा)। परिहरंति (भग १५—पत्र ६६७)। वकृ. परिहरंत, परिहरमाण (गा १६६, राज)। संकृ. परिहरिअ (पिंग)। हेकृ परिहरित्तए, परिहरिउं (ठा ५ ३, काप्र ४०८)। कृ. परिहरणीअ, परिहरिअव्व (पि ५७१, गा २२७, ओघ ५६, सुर १४, ८३, सुपा ३६६, ५८८, पण्ह २, ५)।

परिहरण न [परिधरण] धारण करना (वव १)।

परिहरण न [परिहरण] १ परित्याग, वर्जन (महा)। २ आसेवन, परिभोग (ठा १०)।

परिहरणा स्त्री [परिहरणा] ऊपर देखो (पिंड १६७), 'परिहरणा होइ परिभोगो' (ठा ५, ३ टी—पत्र ३३८)।

परिहरिअ वि [परिहृत] परित्यक्त, वर्जित (महा, सण, भवि)।

परिहरिअ देखो परिहर = परि + धृ, हृ।

परिहरिअ वि [परिधृत] धारण किया हुआ, 'परिहरिअकणअकुंडलगंडत्थलमणहरेसु सवणेसु। अण्णुअ! समअवसेण परिहिज्जइ तालवेंटजुअं ॥' (गा ३६८ अ)।

परिहलाविअ पुं [दे] जल-निर्गम, मोरी, पनाला (दे ६, २६)।

परिहव सक [परि + भू] पराभव करना। वकृ परिहवंत (वव १)। कृ. परिहवियव्व (उप १०३६)।

परिहव पुं [परिभव] पराभव, तिरस्कार (से १३, ४६, गा ३६६, हे ३, १८०)।

परिहवण न [परिभवन] ऊपर देखो (स ५७२)।

परिहविय वि [परिभूत] पराजित, तिरस्कृत (उप पृ १८०)।

परिहस सक [परि + हस्] उपहास करना, हँसी करना। परिहसइ (नाट)। कर्म परिहसीअदि (शौ) (नाट—शकु २)।

परिहस्स वि [परिह्रस्व] अत्यन्त लघु (स ८)।

परिहा अक [परि + हा] हीन होना, कम होना। परिहाइ, परिहायइ (उव, सुख २, ३०)। भवि परिहाइस्सदि (शौ) (अभि ६)। कवकृ. परिहायंत, परिहायमाण (सुर १०, ६, १२, १४, णाया १, १३, औप, ठा ३, ३), परिहीअमाण (पि ५४५)।

परिहा सक [परि + धा] पहिरना। भवि. परिहिस्सामि (आचा १, ६, ३, १)। संकृ.

कवकृ पव्वहिज्जमाण (णाया १, १६—पत्र १६६)।

पव्वहणा स्त्री [प्रव्यथना] व्यथा, पीडा (ग्रौप)।

पव्वहिय वि [प्रव्यथित] अति दुःखित (ग्राचा १, २, ६, १)।

पव्वा स्त्री [पर्वा] लोकपालों की एक बाह्य परिषद् (ठा ३, २—पत्र १२७)।

पव्वाअ देखो पव्वाय = म्लै।

पव्वाइअ वि [प्रव्राजित] १ जिसको दीक्षा दी गई हो वह (सुपा ५६६)। २ न दीक्षा देना (राज)।

पव्वाइअ वि [म्लान] विच्छाय, शुष्क (कुमा ६, १२)।

पव्वाइआ स्त्री [प्रव्राजिका] परिव्राजिका, सन्यासिनी (महा)।

पव्वाडिअ देखो पव्वालिअ = प्लावित (से ५, ४१)।

पव्वाण वि [म्लान] शुष्क, सूखा (ग्रोघ ४८८)।

पव्वाय देखो पवाय = प्र + वा। पव्वाग्रइ (प्राकृ ७६)।

पव्वाय सक [प्र + व्राजय्] दीक्षित करना (सुपा ५६६)।

पव्वाय ग्रक [म्लै] सूखना। पव्वायइ (हे ४, १८)। वकृ. पव्वाअंत (से ७, ६७)।

पव्वाय वि [म्लान, प्रवाण] शुष्क, सूखा हुआ (पाग्र, ग्राघ ३६३, स २०३, से ४८, ६ ६३, पिंड ४४)।

पव्वाय पु [प्रवात] प्रकृष्ट पवन (गा ६२३)।

पव्वाल सक [छादय्] ढकना, ग्राच्छादन करना। पव्वालइ (हे ४, २१)।

पव्वाल सक [प्लावय्] खूब भिजाना, तराबोर करना। पव्वालइ (हे ४ ४१)।

पव्वालण न [प्लावन] तराबोर करना (से ६, १५)।

पव्वालिअ वि [प्लावित] जल-व्याप्त, सराबोर किया हुआ (पाग्र कुमा, से ६, १०)।

पव्वालिअ वि [छादित] ढका हुआ (कुमा)।

पव्वाव सक [प्र + व्राजय्] दीक्षित करना, संन्यास देना। पव्वावेइ (भग)। संकृ पव्वावेऊण (पंचव २)। हेकृ पव्वावित्तए, पव्वावेत्तए, पव्वावेउं (ठा २, १, कस, पंचभा)।

पव्वावण न [प्रव्राजन] दीक्षा देना (उव, ग्रोघ ४४२ टी)।

पव्वावण न [दे] प्रयोजन (पिंड ५१)।

पव्वावणा स्त्री [प्रव्राजना] दीक्षा देना (ग्रोघ ४४३, पव २५, सूग्रनि १२७)।

पव्वाविय वि [प्रव्राजित] दीक्षित, साधु बनाया हुआ (णाया १, १—पत्र ६०)।

पव्वाह सक [प्र + वाहय्] बहाना, प्रवाह मे डालना। वकृ पव्वाहमाण (भग ५, ४)।

पव्विद्ध वि [दे] प्रेरित (दे ६, ११)।

पव्विद्ध वि [प्रवृद्ध] महान्, बडा (से १४, ५१)।

पव्विद्ध न [प्रविद्ध] गुरु-वन्दन का एक दोष, वन्दन को समाप्त किए विना ही भागना (पव २)।

पव्वीसग न [दे पव्वीसग] वाद्य-विशेष (पराह १, ४—पत्र ६८)।

पसइ स्त्री [प्रसृति] १ नाप-विशेष, दो प्रसृति—पसर का एक परिमाण (तंदु २६)। २ पूर्ण अञ्जलि, दो हस्त-तल—अँजुरी मिला कर भरी हुई चीज (कुप्र ३७४)।

पसंग पुन [प्रसङ्ग] १ परिचय, उपलक्ष (स ३०५)। २ संगति, संबन्ध, 'लोए पलीवणं पिव पलालपूलप्पसंगेणं' (ठा ४, ४, कुप्र २६),

'वरं दिट्ठिविसो सप्पो वरं हालाहलं विसं।
हीणायारागीयत्थवयणपसंगं खु णो भद्दं'

(संबोध ३६)। ३ ग्रापत्ति, अनिष्ट-प्राप्ति (स १७४)। ४ मैथुन, काम-क्रीडा (पराह १, ४)। ५ ग्रासक्ति। ६ प्रस्ताव, ग्रधिकार (गउड, भवि, पंचा ६, २६)।

पसंगि वि [प्रसङ्गिन्] प्रसंग करनेवाला, ग्रासक्त, 'जूयप्पसंगी' (महा, णाया १, २)।

पसंज ग्रक [प्र + सञ्ज्] १ ग्रासक्ति करना। २ ग्रापत्ति होना, अनिष्ट-प्राप्ति होना। पसज्जइ (उव), 'अरिणच्चे जीवलोगम्मि किं हिंसाए पसज्जसि' (उत्त १८, ११, १२)। पसज्जेज्जा (विसे २६६)।

पसंडि न [दे] कनक, सुवर्ण (दे ६, १०)।

पसंत वि [प्रशान्त] १ प्रकृष्ट शान्त, शम-प्राप्त (कप्प, स ४०३, कुप्र)। २ साहित्य-शास्त्र-प्रसिद्ध रस-विशेष, शान्त रस (अणु)।

पसंति स्त्री [प्रशान्ति] नाश, विनाश, 'सव्व-दुक्खप्पसंतीए' (ग्रजि ३)।

पसंधण न [प्रसन्धान] सतत प्रवर्त्तन (पिंड ४६०)।

पसंस सक [प्रशंस्] श्लाघा करना। पसंसइ (महा, भवि)। वकृ पसंसंत, पसंसमाण (पउम २८, १५, २२, ६८)। कवकृ पसंसिज्जमाण (वसु)। संकृ. पसंसिऊण (महा)। कृ. पसंसणिज्ज, पसंस्स, पसंसियव्व (सुपा ४७, ६४५, सुर १, २१६, पउम ७५, ८), देखो पसंस।

पसंस वि [प्रशस्य] १ प्रशंसा-योग्य। २ पुं. लोभ (सूग्र १, २, २, २६)।

पसंसण न [प्रशंसन] प्रशंसा, श्लाघा (उप १४२ टी, सुपा २०६, उप प १७)।

पसंसय वि [प्रशंसक] प्रशंसा करनेवाला (श्रा ६, भवि)।

पसंसा स्त्री [प्रशंसा] श्लाघा, स्तुति, वर्णन (प्रासू १६७, कुमा)।

पसंसिअ वि [प्रशंसित] श्लाघित (उत्त १४, ३८)।

पसज्ज° देखो पसंज।

पसज्झ } ग्र [प्रसह्य] १ खुले तौर से, प्रकट
पसज्झं } रीति से (सूग्र १, २, २, १६)। २ हठात्, बलात्कार से (स ३१)।

पसज्झचेय न [प्रसह्यचेतस्] धर्म-निरपेक्ष चित्त, कदाग्रही मन (दसचू १, १४)।

पसढ वि [प्रसह्य] अनेक दिन रखकर खुला किया हुआ (दस ५, १, ७२)।

पसढ वि [प्रशठ] अत्यन्त शठ (सूग्र २, ४, ३)।

पसढ देखो पसज्झ (दस ५, १, ७२)।

पसढिल वि [प्रशिथिल] विशेष ढीला (हे १, ८६)।

पसण्ण वि [प्रसन्न] १ खुश, स्वस्थ (से ५, ४१, गा ८६५)। २ स्वच्छ, निर्मल (ग्रौप, ग्रोघ ३४५)। °चंद पु [°चन्द्र] भगवान् महावीर के समय का एक राजर्षि (उव, पडि)।

परुव सक [प्र + रूपय्] प्रतिपादन करना। परूवेइ, परूवेंति (औप, कप्प, भग)। संकृ परुवइत्ता (ठा ३, १)।

परूवग वि [प्ररूपक] प्रतिपादक (उव, कुप्र १८१)।

परूवण न [प्ररूपण] प्रतिपादन (अणु)।

परूवणा स्त्री [प्ररूपणा] ऊपर देखो (आचू १)।

परूविअ वि [प्ररूपित] १ प्रतिपादित, निरूपित (पण्ह २, १)। २ प्रकाशित, 'उत्तमकंचणरयणपरूविअभासुरभूसणभासुरि - अंगा' (अजि २३)।

परेअ पुं [दे] पिशाच (दे ६, १२, पाअ, पड्)।

परेण अ [परेण] बाद, अनन्तर (महा)।

परेयम्मण देखो परिकम्मण (कप्प)।

परेवय न [दे] पाद-पतन (दे ६, १६)।

परेव्व वि [परेद्युस्तन] परसों का, परसों होनेवाला (पिंड २४१)।

परो° अ [पर] उत्कृष्ट, 'परोसतेहिं तवेहिं' (उवा)।

परोइय देखो परुइय (उप ७६८ टी)।

परोक्ख न [परोक्ष] १ प्रत्यक्ष-भिन्न प्रमाण, 'पच्चक्खपरोक्खाइं दुन्नेव जओ पमाणाइं' (सुर १२, ६०, णंदि)। २ वि. परोक्ष-प्रमाण का विषय, अप्रत्यक्ष (सुपा ६४७, हे ४, ४१८)। ३ न. पीछे, आँखों की ओट मे, 'मम परोक्खे किं तए अणुभूयं ?' (महा)।

परोट्ट देखो पलोट्ट=पर्यस्त (पड्)।

परोप्पर } वि [परस्पर] आपस मे (हे १, परोप्फर } ६२, कुमा, कप्पू, पड्)।

परोवआर पु [परोपकार] दूसरे की भलाई (नाट—मृच्छ १६८)।

परोवयारि वि [परोपकारिन्] दूसरे की भलाई करनेवाला (पउम ५०, १)।

परोवर देखो परोप्पर (प्राकृ २६, ३०)।

परोविय देखो परुइय (उप ७२८ टी, स ४८०)।

परोह अक [प्र + रुह्] १ उत्पन्न होना। २ बढना। परोहदि (शौ) (नाट)।

परोह पु [प्ररोह] १ उत्पत्ति (कुमा)। २ वृद्धि। ३ अंकुर, बीजोद्भेद (हे १, ४४), 'पुन्नलयाए परोहे रेहइ आवालपत्तिव्व' (धर्मवि १६८)।

परोहड न [दे] घर का पिछला आँगन, घर के पीछे का भाग (ओघ ४१७, पाअ, गा ६८५ अ, वज्जा १०६, १०८)।

पल अक [पल्] १ जीना। २ खाना। पलइ (पड्)। देखो वल = वल्।

पल (अप) अक [पत्] पडना, गिरना। पलइ (पिंग)। वकृ. पलंत (पिंग)।

पल (अप) सक [प्र + कटय्] प्रकट करना। पल (पिंग)।

पल अक [परा + अय] भागना,
'चोराण कामुयाण य
पामरपहियाण कुक्कुडो रडइ।
रे पलह रमह वाहयह,
वहह तणुइज्जए रयणी' (वज्जा १३४)।

पल न [दे] स्वेद, पसीना (दे ६, १)।

पल न [पल] १ एक बहुत छोटी तोल, चार तोला (ठा ३, १, सुपा ४३७, वज्जा ६८, कुप्र ४१६)। २ मास (कुप्र १८६)।

पलंघ सक [प्र + लङ्घ्] अतिक्रमण करना। पलंघेज्जा (ओप)।

पलंघण न [प्रलङ्घन] उल्लंघन (औप)।

पलंड पु [पलगण्ड] राज, चूना पोतने का काम करनेवाला कारीगर, 'पलगंडे पलंडो' (प्राकृ ३०)।

पलंडु पु [पलाण्डु] प्याज (उत्त ३६, ६८)।

पलंब अक [प्र + लम्ब्] लटकना। पलंबए (पि ४५७)। वकृ पलंबमाण (औप, महा)।

पलंब वि [प्रलम्ब] १ लटकनेवाला, लटकता (पण्ह १, ४, राय)। २ लम्बा, दीर्घ (से १२, ५६, कुमा)। ३ पु ग्रह-विशेष, एक महाग्रह (ठा २, ३)। ४ मुहूर्त्त-विशेष, अहोरात्र का आठवाँ मुहूर्त्त (सम ५१)। ५ पुन. आभरण-विशेष (ओप)। ६ एक तरह का धान का कोठा (बृह २)। ७ मूल (कस, बृह १)। ८ रुचक पर्वत का एक शिखर (ठा ८—पत्र ४३६)। ९ पुन फल (बृह १, ठा ४, १—पत्र १८५) १० देव-विमान-विशेष (सम ३८)।

पलंबिअ वि [प्रलम्बित] लटका हुआ (कप्प, भवि, स्वप्न १०)।

पलंबिर वि [प्रलम्बितृ] लटकनेवाला, लटकता (सुपा ११, सुर १, २४८)।

पलक्क वि [दे] लम्पट, 'इय विसयपलक्काओ' (कुप्र ४२७, नाट)।

पलक्ख पुं [प्लक्ष] वड का पेड (कुमा, पि १३२)।

पलग न [पलक] फल-विशेष (आचा २, १, ८, ६)।

पलज्जण वि [प्ररञ्जन] रागी, अनुराग वाला, 'अधम्मपलज्जण —' (णाया १, १८, औप)।

पलट्ट अक [परि + अस्] १ पलटना, बदलना। २ सक पलटाना, बदलाना। पलट्टइ (पिंग), 'कोहाइकारणेवि हु नो वयणसिरि पलट्ट ति' (सबोध १८)। सकृ पलट्टि (अप) (पिंग)। देखो पल्लट्ट।

पलत्त वि [प्रलपित] १ कथित, उक्त, प्रलाप-युक्त (सुपा ११४, से ११, ७६)। २ न प्रलाप, कथन (औप)।

पलय पु [प्रलय] १ युगान्त, कल्पान्त-काल। २ जगत् का अपने कारण मे लय (ते २, २, पउम ७२,३१)। ३ विनाश, 'जायवजाइ-पलए' (ती ३)। ४ चेष्टा-क्षय। ५ छिपना (हे १, १८७)। °क्क पु [°र्क] प्रलय-काल का सूर्य (पउम ७२,३१)। °घण पु [°घन] प्रलय का मेघ (सण)। °ाणल पु [°ानल] प्रलय काल की आग (सण)।

पलल न [पलल] १ तिल-चूर्ण, तिल-क्षोद (पण्ह २, ५, पिंड १६५)। २ मास (कुप्र १८७)।

पललिअ न [प्रललित] १ प्रक्रीडित (णाया १, १—पत्र ६२)। २ अंग-विन्यास (पण्ह २, ४)।

पलव सक [प्र + लप्] प्रलाप करना, बकवाद करना। पलवदि (शौ) (नाट—वेणी १७)। वकृ. पलवंत, पलवमाण (काल, सुर २, १२५, सुपा २५०, ६४१)।

पलवण न [प्लवन] उछलना, उच्छलन, 'सपाइमवाउवहो पलवण आऊवधाओ य' (ओघ ३४८)।

पसाह सक [प्र + साधय्] १ वश में करना। २ सिद्ध करना। पसाहेइ (नाट, भवि)। वकृ. पसाहेमाण (औप)।

पसाहग वि [प्रसाधक] साधक, सिद्ध करनेवाला (धर्मसं २६)। °तम वि [°तम] १ उत्कृष्ट साधक। २ न व्याकरण-प्रसिद्ध कारक-विशेष, करण-कारक (विसे २११२)। देखो पसाहय।

पसाहण न [प्रसाधन] १ सिद्ध करना, साधना, 'विज्जापसाहणुज्जयविज्जाहरसनिरुद्धपरंतो' (सुर ३, १०)। २ उत्कृष्ट साधन 'सव्वुत्तम माणुसत्त दुल्लह भवसमुद्दे पसाहणं निव्वाणस्स न निउंजेति धम्मे' (स ७४४)। ३ अलंकार, भूषण (णाया १, ३, से ३, ४८)। ४ भूषण आदि की सजावट, भूसणपसाहणउत्तरेहिं' (वज्जा ११८, सुपा ६६)।

पसाहय देखो पसाहग (काल)। २ सजानेवाला (भग ११, ११)।

पसाहा स्त्री [प्रशाखा] शाखा की शाखा, छोटी शाखा (णाया १, १, औप महा)।

पसाहाविय वि [प्रसाधित] विभूषित कराया गया, सजाया हुआ (भवि)।

पसाहि वि [प्रसाधिन्] सिद्ध करनेवाला, 'अब्भुदयपसाहिणी' (सबोध ८, ५८)।

पसाहिअ वि [प्रसाधित] अलंकृत किया हुआ, सजाया हुआ (से ४, ६१, पाअ)।

पसाहिल्ल वि [प्रशाखिन्] प्रशाखा-युक्त (सुर ८, १०८)।

पसिअ अक [प्र + सद्] प्रसन्न होना। पसिअ (गा ३८८, ४६६, हे १, १०१)। पसियइ (सण)। सकृ पसिऊण, पसिऊण (सण, सुपा ७)।

पसिअ वि [प्रसृत] फैला हुआ, विस्तीर्ण, 'पसिअच्छि!' (गा ६२०, ६२३)।

पसिअ न [दे] पूग-फल, सुपारी (दे ६, ६)।

पसिंच सक [प्र + सिच्] सेचन करना। वकृ पसिंचमाण (सुर १२, १७२)।

पसिडि (दे) देखो पसडि (पाअ)।

पसिक्खअ वि [प्रशिक्षक] सीखनेवाला (गा ६२९ अ)।

पसिज्जण न [प्रसदन] प्रसन्न होना, 'अत्थकरूसणं खणपसिज्जणं अलिअवअणणिब्बंधो' (गा ६७५)।

पसिढिल देखो पसढिल (हे १, ८९, गा १३३, गउड)।

पसिण पुंन [प्रश्न] १ पृच्छा, प्रश्न (सुपा ११, ४५३)। २ दर्पण आदि में देवता का आह्वान, मन्त्रविद्या-विशेष (सम १२३, वृह १)। °विज्जा स्त्री [°विद्या] मन्त्रविद्या-विशेष (ठा १०)। °ापसिण न [°प्रश्न] मन्त्रविद्या के बल से स्वप्न आदि में देवता के आह्वान द्वारा जाना हुआ शुभाशुभ फल का कथन (पव २ वृह १)।

पसिणिय वि [प्राश्निन] पूछा हुआ (सुपा १६, ६२५)।

पसिद्ध वि [प्रसिद्ध] १ विख्यात, विश्रुत (महा)। २ प्रार्थ में मुक्ति को प्राप्त, मुक्त (सिरि ५६५)।

पसिद्धि स्त्री [प्रसिद्धि] १ ख्याति (हे १, ४४)। २ शंका का समाधान, आक्षेप का परिहार (अणु, चेइय ४६)।

पसिरस देखो पसीस (विसे १४)।

पसीअ देखो पसिअ = प्र + सद्। पसीयइ, पसीयउ (कुप्र १)। संकृ. पसीऊण (सण)।

पसीस पु [प्रशिष्य] शिष्य का शिष्य (पउम ४, ८६)।

पसु पुं [पशु] १ जन्तु-विशेष, सींग पूँछवाला प्राणी, चतुष्पाद प्राणि-मात्र (कुमा, औप)। २ अज, बकरा (अणु)। °भूय वि [°भूत] पशु-तुल्य (सूअ १, ४, २)। °मेह पुं [°मेध] जिसमें पशु का भोग दिया जाता हो वह यज्ञ (पउम ११, १२)। °वइ पुं [°पति] महादेव, शिव (गा १, सुपा ३१)।

पसुत्त वि [प्रसुप्त] सोया हुआ (हे १, ४४, प्राप्र, णाया १, १६)।

पसुत्ति स्त्री [प्रसुप्ति] कुष्ठ रोग विशेष, नखादि-विदारण होने पर भी अचेतनता (राज)। देखो पसूइ।

पसुव (अप) देखो पसु (भवि)।

पसुहत्त पु [दे] वृक्ष, पेड (दे ६, २९)।

पसू सक [प्र + सू] जन्म देना, प्रसव करना। वकृ. पसूअमाण (गा १२३)। संकृ. पसूइत्ता (राज)।

पसू वि [प्रसू] प्रसव-कर्ता, जन्म-दाता (मोह २६)।

पसूअ न [दे] पुष्प, फूल (दे ६, ६, पाअ; भवि)।

पसूअ वि [प्रसूत] १ उत्पन्न, जो पैदा हुआ हो (णाया १, ७, उव, प्रासू १५६)। २ देखो पसविय (महा)।

पसूअण न [प्रसवन] जन्म-दान (सुपा ४०३)।

पसूइ स्त्री [प्रसूति] १ प्रसव, जन्म, उत्पत्ति (पउम २१, ३४, प्रासू १२८)। २ एक प्रकार का कुष्ठ रोग, नखादि से विदारण करने पर भी दुःख का असंवेदन, चमड़ी का मर जाना (पिंड ६००)। °रोग पुं [°रोग] रोग-विशेष (सम्मत्त ५८)।

पसूइय पु [प्रसूतिक] वातरोग-विशेष (सिरि ११७)।

पसूण न [प्रसून] फूल, पुष्प (कुमा, सण)।

पसेअ पु [प्रस्वेद] पसीना (दे ६, १)।

पसेढि स्त्री [प्रश्रेणि] अवान्तर श्रेणि—पंक्ति (पि ६६, राय)।

पसेण पुं [प्रसेन] भगवान् पार्श्वनाथ के प्रथम श्रावक का नाम (विचार ३७८)।

पसेणइ पुं [प्रसेनजित्] १ कुलकर-पुरुष विशेष (पउम ३, ५५, सम १५०)। २ यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र (अंत ३)।

पसेणि स्त्री [प्रश्रेणि] अवान्तर जाति, 'अट्ठारससेणिप्पसेणीओ सद्दावेइ' (णाया १, १—पत्र ३७)।

पसेयग देखो पसेवय (राज)।

पसेव सक [प्र + सेव्] विशेष सेवा करना। वकृ पसेवमाण (श्रु ५५)।

पसेवय पुं [प्रसेवक] कोथला, थैला, 'एहावियपसेवओव्व उरंसि लंबंति दोवि तस्स थणया' (उवा)।

पसेविआ स्त्री [प्रसेविका] थैली, कोथली (दे ५, २५)।

टी—पत्र २००)। ३ प्रायश्चित्त-विशेष (ठा ४, १)।
पलिउंचि वि [परिकुञ्चिन्] मायावी, कपटी (वव १)।
पलिउंचिय वि [परिकुञ्चित] १ वञ्चित। २ न माया, कुटिलता (वव १)। ३ गुरु-वन्दन का एक दोष, पूरा वन्दन न करके ही गुरु के साथ बातें करने लग जाना (पव २)।
पलिउज्जिय देखो परिउज्जिय (भग)।
पलिउच्छन्न देखो पलिओच्छन्न (आचा १, ५, १, ३)।
पलिउच्छूढ देखो पलिओछूढ (ओप—पृ ३० टि)।
पलिउज्जिय वि [परियोगिक] परिज्ञानी, जानकार (भग २, ५)।
पलिऊल देखो पडिऊल (नाट—विक्र १८)।
पलिओच्छन्न वि [पलितावच्छन्न] कर्मा-वष्टब्ध, कुकर्मी (आचा, १, ५, १, ३)।
पलिओच्छिन्न वि [पर्यवच्छिन्न] ऊपर देखो (आचा, पि २५७)।
पलिओछूढ वि [पर्यवक्षिप्त] प्रसारित (ओप)।
पलिओवम पुंन [पल्योपम] समय-मान-विशेष, काल का एक दीर्घ परिमाण (ठा २, ४, भग, महा)।
पलिंचा (शौ) देखो पडिण्णा (पि २७६)।
पलिकुचणया देखो पलिउंचणा (मम ७१)।
पलिक्खीण वि [परिक्षीण] क्षय-प्राप्त (सूत्र २, ७, ११, औप)।
पलिगोव पु [परिगोप] १ पङ्क, कादा, कादो। २ आसक्ति (सूत्र १, २, २, ११)।
पलिच्छण्ण } वि [परिच्छन्न] १ समन्तात्
पलिच्छन्न } व्याप्त (णाया १, २—पत्र ७८, १, ४)। २ निरुद्ध, रोका हुआ, 'एतेहिं पलिच्छन्नेहिं' (आचा १, ४, ४, २)।
पलिच्छाअ सक [परि + छादय्] ढकना, आच्छादन करना। पलिच्छाएइ (आचा २, १, १०, ६)।
पलिच्छिद सक [परि + छिद्] छेदन करना, काटना। संकृ पलिच्छिंदिय, पलि-च्छिंदियाणं (आचा १, ४, ४, ३, १, ३, २, १)।
पलिच्छिन्न वि [परिच्छिन्न] विच्छिन्न, काटा हुआ (सूत्र १, १६, ५, उप ५८५, सुर ६, २०६)।
पलित्त वि [प्रदीप्त] ज्वलित (कुप्र ११६, सं ७७, भग)।
पलिपाग देखो परिपाग (सूत्र २, ३, २१, आचा)।
पलिप्प अक [प्र + दीप्] जलना। पलिप्पइ (षड्, प्राकृ १२)। वकृ. पलिप्पमाण (पि २४४)।
पलिबाहर } वि [परिबाह्य] हमेशा बाहर
पलिबाहिर } होनेवाला (आचा)।
पलिभाग पुं [परिभाग, प्रतिभाग] १ निर्विभागी अंश (कम्म ४, ८२)। २ प्रति-नियत अंश (जीवस १५४)। ३ सादृश्य, समानता (राज)।
पलिभिंद सक [परि + भिद्] १ जानना। २ बोलना। ३ भेदन करना, तोडना। संकृ. पलिभिंदियाण (सूत्र १, ४, २, २)।
पलिभेय पु [परिभेद] चूरना (निचू ५)।
पलिमंथ सक [परि + मन्थ्] बाँधना। पलिमंथए (उत्त ६, २२)।
पलिमथ पुं [परिमन्थ] १ विनाश (सूत्र २, ७, २६, विसे १४५७)। २ स्वाध्याय व्याघात (उत्त २६, ३४, धर्मसं १०१७)। ३ विघ्न, बाधा (सूत्र १, २, २, ११ टी)। ४ मुधा व्यापार, व्यर्थ क्रिया (श्रावक १०६, ११२)।
पलिमथग पुं [परिमन्थक] १ धान्य-विशेष, काला चना (सूत्र २, २, ६३)। २ गोल चना। ३ विलव (राज)।
पलिमथु वि [परिमन्थु] सर्वथा घातक (ठा ६—पत्र ३७१, कस)।
पलिमद्द देखो परिमद्द। परिमद्देज्जा (पि २५७)।
पलिमद्द वि [परिमर्द] मालिश करनेवाला (निचू ६)।
पलिमोक्ख देखो परिमोक्ख (आचा)।
पलियचण न [पर्यञ्चन] परिभ्रमण (सुर ७, २४३)। देखो परियचण।
पलियत पु [पर्यन्त] १ अन्त भाग (सूत्र १, ३, १, १५)। २ वि. अवसानवाला, अन्त-वाला, 'पलियंतं मणुयाण जीवियं' (सूत्र १, २, १, १०)।
पलियंत न [पल्यान्तर्] पल्योपम के भीतर (सूत्र १, २, १, १०)।
पलियस्स न [परिपार्श्व] समीप, पास, निकट (भग ६, ५—पत्र २६८)।
पलिल देखो पलिअ = पलित (हे १, २१२)।
पलिव देखो पलीव। पलिवेइ (पि २४४)।
पलिवग देखो पलीवग (राज)।
पलिविअ वि [प्रदीपित] जलाया हुआ (षड्, हे १, १०१)।
पलिविद्धंस अक [परिवि + ध्वस्] नष्ट होना। पलिविद्धंसिज्जा (अणु १८०)।
पलिसय } सक [परि + स्वञ्ज्] आलिंगन
पलिस्सय } करना, स्पर्श करना, छूना। पलिस्सएज्जा (बृह ४)। वकृ पलिसयमाणे गुरुगा दो लहुगा आणमाईणि' (बृह ४)। हेकृ पलिस्सइउ (बृह ४)।
पलिह देखो परिह = परिघ (राज)।
पलिहअ वि [दे] मूर्ख, बेवकूफ (दे ६, २०)।
पलिहइ स्त्री [दे] क्षेत्र, खेत, 'नियपलिहईइ दोहिवि किसिकम्मं काउमाढत्तं' (सुर १५, २०१)।
पलिहस्स न [दे] ऊर्ध्व दारु, काष्ठ-विशेष (दे ६, १६)।
पलिहाय पुं [दे] ऊपर देखो (दे ६, १६)।
पली सक [परि + इ] पर्यटन करना, भ्रमण करना। पलेइ (सूत्र १, १३, ६), पलिंति (सूत्र १, १, ४, ६)।
पली अक [प्र + ली] लीन होना, आसक्ति करना। पलिंति (सूत्र १, २, २, २२)। वकृ पलेमाण (आचा १, ४, १, ३)।
पलीण वि [प्रलीन] १ अति लीन (भग २५, ७)। २ सबद्ध (सूत्र १, १, ४, २)। ३ प्रलय-प्राप्त, नष्ट (सुर ४, १५४)। ४ छिपा हुआ, निलीन (सुर ६, २८)।
पलीमथ देखो पलिमथ (सूत्र १, ६ १२)।
पलीव अक [प्र + दीप्] जलना। पलीवइ (हे ४, १५२, षड्)।
पलीव सक [प्र + दीपय्] जलाना, सुलगाना। पलीवइ, पलीवेइ (महा, हे १, २२१)। संकृ. पलीविऊण, पलीविअ (कुप्र १६०, गा ३३)।

[°वती] आठवें वासुदेव की पटरानी (पउम २०, १८७)।

पहाड सक [प्र+आटय्] इधर उधर भमाना, घुमाना। पहाडेंति (सूअनि ७० टी)।

पहाण वि [प्रधान] १ नायक, मुखिया, मुख्य, 'अवगन्नइ सव्वेवि हु पुरप्पहाणेवि' (सुपा ३०८), 'तत्थत्थि वणिप्पहाणो सेट्ठी वेसमणनामग्रो' (सुपा ६१७)। २ उत्तम, प्रशस्त, श्रेष्ठ, शोभन (सुर १ ४८, महा, कुमा, पचा ६, १२)। ३ स्त्रीन प्रकृति—सत्त्व, रज और तमोगुण की साम्यावस्था, 'ईसरेण कडे लोए पहाणाइ तहावरे' (सूअ १, १, ३, ६)। ४ पु सचिव, मन्त्री (भवि)।

पहाण पु [पाषाण] पत्थर (चउप्पन्न०)।

पहाण न [प्रहाण] अपगम, विनाश (धर्मसं ८७५)।

पहाणि स्त्री [प्रहाणि] ऊपर देखो (उत्त ३, ७, उप ९८६ टी)।

पहाम सक [प्र+भ्रमय्] फिराना, घुमाना। कवकृ पहामिज्जंत (से ७, ६६)।

पहाय देखो पहा = प्र + हा।

पहाय न [प्रभात] १ प्रात काल, सवेरा (गउड, सुपा ३६, ६०२)। २ वि प्रभा-युक्त (से ६, ४४)।

पहाय देखो पहाव = प्रभाव (हे ४, ३४१, हास्य १३२, भवि)।

पहाया देखो वाहाया (अनु)।

पहार सक [प्र + धारय्] १ चिन्तन करना, विचार करना। २ निश्चय करना। भूका पहारेत्थ, पहारेत्था, पहारिंसु (सूअ २, ७, ३६, औप, पि ५१७, सूअ २, १, २०)। वकृ पहारेमाण (सूअ २, ४, ४)।

पहार देखो पहर = प्रहार (पाअ हे १, ६८)।

पहाराइया स्त्री [प्रहारातिगा] लिपि-विशेष (सम ३५)।

पहारि वि [प्रहारिन्] प्रहार करनेवाला (सुपा २१५, प्रासू ९८)।

पहारिय वि [प्रहारित] जिस पर प्रहार किया गया हो वह (स ५९८)।

पहारिय वि [प्रधारित] विकल्पित, चिन्तित (राज)।

पहारेत्तु वि [प्रधारयितृ] चिन्तन करनेवाला, 'अहाकम्मे अणवज्जेत्ति मण पहारेत्ता भवति' (भग ५, ६)।

पहाव सक [प्र + भावय्] प्रभाव-युक्त करना, गौरवित करना। पहावइ (सण)। संकृ. पहाविऊण (मण)।

पहाव (अप) अक [प्र + भू] समर्थ होना। पहावइ (भवि)।

पहाव पु [प्रभाव] १ शक्ति, सामर्थ्य, 'तुम च तेतलिपुत्तस्स पहावेण' (णाया १, १४, अभि ३८)। २ कोप और दण्ड का तेज। ३ माहात्म्य, 'तायपहावम्रो चेव मे अविग्घं भविस्सइ ति' (स २९८, गउड)।

पहावणा देखो पभावणा (कुप्र २८४)।

पहाविअ वि [प्रधावित] दौडा हुआ (स ५८४, गा ५३५, गउड)।

पहाविर वि [प्रधावितृ] दौडनेवाला (वज्जा ६२, गा २०२)।

पहास सक [प्र + भाष्] बोलना। पहासई (सुख ४, ६), 'नाऊण चुन्निय त पहिट्ठहियया पहासई पावा' (महा)।

पहास अक [प्र + भास्] चमकना, प्रकाशना। वकृ पहासंत (सार्ध ५६)।

पहास पुं [प्रहास] अट्टहास आदि विशेष हास्य (दस १०, ११)।

पहासा स्त्री [प्रहासा] देवी-विशेष (महा)।

पहिअ वि [पान्थ, पथिक] मुसाफिर (हे २, १५२, कुमा, पड्, उव, गउड)। °साला स्त्री [°शाला] मुसाफिरखाना, धर्मशाला (धर्मवि ७०, महा)।

पहिअ वि [प्रथित] १ विस्तृत। २ प्रसिद्ध, विख्यात (ओप)। ३ राक्षस-वंश का एक राजा एक लका-पति (पउम ५, २६२)।

पहिअ वि [प्रहित] भेजा हुआ, प्रेषित (उप पृ ४५, ७६८ टी, धम्म ६ टी)।

पहिअ वि [दे] मथित, विलोडित (दे ६, ६)।

पहिऊण देखो पहा = प्र + हा।

पहिंसय वि [प्रहिंसक] हिंसा करनेवाला (ओघ ७५३)।

पहिज्जमाण देखो पहा = प्र + हा।

पहिट्ठ देखो पहट्ठ = प्रहृष्ट (ओप; सुर ३, २४८, सुपा ६३, ४३७)।

पहिर सक [परि + धा] पहिरना, पहनना। पहिरइ, पहिरति (भवि, धर्मवि ७)। कर्म. पहिरिज्जइ (सबोध १४)। वकृ. पहिरत (सिरि ९८)। संकृ. पहिरिउ (धम्मवि १५)। प्रयो., संकृ पहिरावेऊण, पहिराविऊण (सिरि ४५६, ७७०)।

पहिरावण न [परिधापन] १ पहिराना। २ पहिरावन, भेंट मे—इनाम मे दिया जाता वस्त्रादि, गुजराती मे—'पहिरामणी' (श्रा २८)।

पहिराविय वि [परिधापित] पहिराया हुआ (महा, भवि)।

पहिरिय वि [परिहित] पहिरा हुआ, पहना हुआ (सम्मत्त २२८)।

पहिल वि [दे] पहला, प्रथम (सक्षि ४७, भवि, पि ४४९)। स्त्री °ली (पि ४४९)।

पहिल्ल अक [दे] पहल करना, आगे करना। पहिल्लइ (पिंग)। सकृ पहिल्लिअ (पिंग)।

पहिल्लिर वि [प्रघूर्णितृ] खूब हिलनेवाला, अत्यन्त हिलता (सम्मत्त १८७)।

पहिवी देखो पुहवी = पृथिवी (नाट)।

पहीण वि [प्रहीण] १ परिक्षीण (पिंड ६३१, भग)। २ भ्रष्ट, स्खलित (सूअ २, १, ६)।

पहु पु [प्रभु] १ परमेश्वर, परमात्मा (कुमा)। २ एक राज-पुत्र, जयपुर के विन्ध्यराज का एक पुत्र (वसु)। ३ स्वामी, मालिक (सुर ४, १५६)। ४ वि समर्थ, शक्तिमान, 'दाण दरिद्दस्स पहुस्स खती' (प्रासू ४८)। ५ अधि-पति, मुखिया, नायक (हे ३, ३८)।

°पहुइ देखो °पभिइ (कप्पू)।

पहुई देखो पुहवी (पड्)।

पहुक पु [पृथुक] खाद्य पदार्थ विशेष, चिउडा (दे ६, ४४)।

पहुच्च अक [प्र + भू] पहुँचना। पहुच्चइ (हे ४, ३९०)। वकृ. पहुच्चमाण (ओघ ५०५)।

पहुट्ट देखो पप्फुट्ट। पहुट्टइ (कप्पू)।

पहुडि देखो पभिइ (हे १, १३१, ती १०, पड्)।

पहुण पु [प्राघुण] अतिथि मेहमान (उप ९०२)।

°नाह पु [°नाथ] पल्ली का स्वामी (सुपा ३५१, सुर २, ३३)। °वइ पुं [°पति] वही अर्थ (सुर १, १११, सुपा ३५१)।

पल्लिअ वि [दे] १ आक्रान्त (निचू २)। २ ग्रस्त (निचू १)। ३ प्रेरित, 'पल्लट्टा पल्लिआरद्धट्टव्वं' (वज्जा ४७)।

पल्लित्त वि [दे] पर्यस्त (पड्)।

पल्ली देखो पल्लि (गउड, पचा १०, ३६, सुर २, २०४)।

पल्लीण वि [प्रलीन] विशेष लीन, 'गुत्तिंदिए अल्लीणे पल्लीणे चिट्ठइ' (भग २५, ७, कप्प)।

पल्लोट्टजीह [दे] देखो पल्लोट्टजीह (पड्)।

पल्लत्थ देखो पलोट्ट + परि + अस्। पल्लत्थइ (हे ४, २००)। वकृ पल्लत्थंत (से १०, १०, २, ५)। कवकृ पल्लत्थत (से ८, ८३, ११, ६६)।

पल्लत्थ सक [वि + रेचय्] बाहर निकालना। पल्लत्थइ (हे ४, २०)।

पल्लत्थ देखो पलोट्ट = पर्यस्त, 'करतलपल्लत्थमुहे' (सूअ २, २, १६, हे ४, २५८)।

पल्लत्थण न [पर्यसन] फेंक देना, प्रक्षेपण, 'अन्नदा भुवणपल्लत्थणपवणो समुट्ठिदो दुट्ठपवणो (मोह ६२)।

पल्लत्थरण देखो पच्चत्थरण (से ११, १०८)।

पल्लत्थाविअ वि [विरेचित] बाहर निकलवाया हुआ (कुमा)।

पल्लत्थिअ देखो पलोट्ट = पर्यस्त (से ७, २०, णाया १, ४६—पत्र २१६, सुपा ७६)।

पल्लत्थिया स्त्री [पर्यस्तिका] आसन-विशेष—१ दोनों जानु खड़ा कर पीठ के साथ चादर लपेटकर बैठना (पव ३८)। २ जंघा पर वस्त्र लपेटकर बैठना। ३ जंघा पर पाँव रखकर बैठना (उत्त १, १६)। °पट्ट पुं [°पट्ट] योग-पट्ट (राज)।

पल्हय } पु [पह्लव] १ अनार्य देश-
पल्हव } विशेष (कस, कुप्र ६७)। २ पुंस्त्री पह्लव देश का निवासी (भग ३, २—पत्र १७०, अत)। स्त्री °वी, °विया (पि ३३०, मौप, णाया १, १—पत्र ३७, इक)।

पल्हवि पुंस्त्री [दे पह्लवि] हाथी की पीठ पर बिछाया जाता एक तरह का कपड़ा, 'पल्हवि हत्थत्थरण' (पव ८४)।

पल्हविया } देखो पल्हव।
पल्हवी }

पल्हाय सक [प्र = ह्लाद्] आनन्दित करना, खुशी करना। पल्हायइ (संबोध १२)। वकृ. पल्हायन (उत्त, सुर ३, १२१)। कृ. देखो पल्हायणिज्ज।

पल्हाय पुं [प्रह्लाद] १ आनन्द, खुशी (कुमा)। २ हिरण्यकशिपु नामक दैत्य का पुत्र (हे २, ७६)। ३ आठवाँ प्रतिवासुदेव राजा (पउम ५, १५६)। ४ एक विद्याधर नरेश (पउम १५, ५)।

पल्हायण न [प्रह्लादन] १ चित्त-प्रसन्नता, खुशी (उत्त २६, १७)। २ वि आनन्ददायक (सुपा ५०७)। ३ पु. रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३६)।

पल्हायणिज्ज वि [प्रह्लादनीय] आनन्दजनक (णाया १, १—पत्र १३)।

पल्हीय पुं. व [प्रह्लीक] देश-विशेष (पउम ६८, ६६)।

पव सक [पा] पीना। कृ 'अरसमेहा अप्पवणिज्जो दगा वास वासिहिंति' (भग ७, ६—पत्र ३०५)।

पव अक [प्लु] १ फरकना। २ सक. उछल कर जाना। ३ तैरना। पवेज्ज (सूअ १, १, २, ८)। वकृ पवंत, पवमाण (से ५, ३७, आचा २, ३, २, ४)। हेकृ पविउ (सूअ १, १, ४, २)।

पव पु [प्लव] १ पूर (कुमा)। २ उच्छलन, कूदना। ३ तरण, तैरना। ४ भेक, मेढक। ५ वानर, बन्दर। ६ चाण्डाल, डोम। ७ जल-काक। ८ पाकुड का पेड। ९ कारण्डव पक्षी। १० शब्द, आवाज। ११ रिपु, दुश्मन। १२ मेष, मेंढा। १३ जल-कुक्कुट। १४ जल, पानी। १५ जलचर पक्षी। १६ नौका, नाव (हे २, १०६)।

पव स्त्रीन [प्रपा] पानीयशाला, प्याऊ, 'महाणि वा पवाणि वा' (आचा २, २, २, १०)।

पवग पु [प्लवङ्ग] १ वानर (से ७, ४६, ४, ४७)। २ वानर-वंशीय मनुष्य। °नाह पु [°नाथ] वानर-वंशीय राजा, वाली (पउम ६, २६)। °वइ पु [°पति] वानरराज (पि ३७६)।

पवगम पुं [प्लवगम] १ वानर (पाअ, से ६, १६)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

पवच पुं [प्रपञ्च] १ विस्तार (उप ५३० टी, औप)। २ समार (सूअ १, ७, उव)। ३ प्रतारण, ठगाई (उव)।

पवचण न [प्रपञ्चन] विप्रतारण, वञ्चना, ठगाई (पण्ह १, १—पत्र १४)।

पवचा स्त्री [प्रपञ्चा] मनुष्य की दश दशाओं मे सातवीं दशा—६० से ७० वर्ष की अवस्था (ठा १०, तंदु १६)।

पवचिअ वि [प्रपञ्चित] विस्तारित (श्रा १४, कुप्र ११८)।

पवछ सक [प्र + वाञ्छ्] वाञ्छना, अभिलाषा करना। वकृ पवछमाण (उप पृ १८०)।

पवत देखो पव = प्लु।

पवंपुल पुन [दे] मच्छी पकडने का जाल-विशेष (विपा १, ८—पत्र ८५)।

पवक वि [प्लवक] १ उछल-कूद करनेवाला। २ तैरनेवाला (पण्ह १, १ टी—पत्र २)। ३ पुं. पक्षी। ४ देवजाति-विशेष, सुपर्णकुमार नामक देव-जाति (पण्ह २, ४—पत्र १३०)।

पवक्खमाण देखो पवय = प्र + वच्।

पवग देखो पवक (पण्ह २, ४, कप्प, औप)।

पवज्ज सक [प्र + पद्] स्वीकार करना। पवज्जइ, पवज्जिज्जा (भवि, हित २०)। भवि पवज्जिहिसि (गा ६६१)। वकृ. पवज्जत (श्रा २७)। सकृ. पवज्जिय (मोह १०)। कृ पवज्जियव्व (पंचा १६)।

पवज्जण न [प्रपदन] स्वीकार, अंगीकार (स २७१, पचा १४, ८, श्रावक १११)।

पवज्जा देखो पव्वज्जा (महानि ४)।

पवज्जिय वि [प्रपन्न] स्वीकृत, अंगीकृत (धर्मवि ५३, कुप्र २६५, सुपा ४०७)।

पवज्जिय वि [प्रवादित] जो बजने लगा हो (स ७५६)।

पवज्जिय देखो पवज्ज।

पवट्ट अक [प्र + वृत्] प्रवृत्ति करना। पवट्टइ (महा)।

पाउंछण } न [प्रादप्रोञ्छन, °क] जैन
पाउंछणग } मुनि का एक उपकरण, रजोहरण (पव ११२ टी, ओघ ६३०, पंचा १७, १२)।

पाउकर सक [प्रादुस् + कृ] प्रकट करना। भवि पाउकरिस्सामि (उत्त ११, १)।

पाउक्कर वि [प्रादुष्कर] प्रादुर्भावक (सूत्र १, १५, २५)।

पाउकरण न [प्रादुष्करण] १ प्रादुर्भाव। २ वि जो प्रकाशित किया जाय वह। ३ जैन मुनि के लिए एक भिक्षा-दोष, प्रकाश कर दी हुई भिक्षा 'पकिरणपाउकरणपामिच्चं' (पण्ह २, ५—पत्र १४८)।

पाउकाम वि [पातुकाम] पीने की इच्छा वाला, 'त जो ण णवियाए माउयाए दुद्धं पाउकामे से ण निग्गच्छउ' (णाया १ १८)।

पाउक्क वि [दे] मार्गीकृत मार्गित (दे ६ ४१)।

पाउक्करण देखो पाउक्करण (राज)।

पाउक्खालय न [दे पायुक्षालक] १ पाखाना, टट्टी मलोत्सर्ग-स्थान, 'ठाउ चेव एसा पाउक्खालयम्मि रयणीए' (स २०५, भत्त ११२)। २ मलोत्सर्ग-क्रिया 'रयणीए पाउक्खालयनिमित्तमुट्ठिओ' (स २०५)।

पाउग्ग वि [दे] सभ्य सभासद (दे ६, ४१, सण)।

पाउग्ग वि [प्रायोग्य] उचित, लायक (सुर १५, २३३)।

पाउग्गह पुं [पतद्ग्रह] पात्र (आचानि २८८)।

पाउग्गाल वि [दे] १ जुआ खेलानेवाला। २ सोढ, सहन किया हुआ (दे ६, ४१ पाग्र)।

पाउड देखो पागय (प्राकृ १२, मुद्रा १२०)।

पाउड वि [प्रावृत] १ आच्छादित, ढका हुआ (सूत्र १, ७, २, २२)। २ वस्त्र, कपड़ा (ठा ५, १)।

पाउण सक [प्र + वृ] आच्छादित करना, पहिरना। पाउणइ (पिंड ३१)। सकृ. 'पडं पाउणिऊण रत्ति णिग्गओ' (महा)।

पाउण सक [प्र + आप्] प्राप्त करना। पाउणइ (भग)। पाउणति (औप सूत्र १, ११, २१)। पाउणेज्जा (आचा २,३,१,११) भवि पाउणिस्सामि, पाउणिहिइ (पि ५३१, उवा)। सकृ. पाउणित्ता (औप, णाया १, १, विपा २,१, कप्प, उवा)। हेकृ. पाउणित्तए (आचा २ ३, २, ११)।

पाउण (अप) देखो पावण = पावन (पिंग)।

पाउत्त देखो पउत्त = प्रयुक्त (औप)।

पाउप्पभाय वि [प्रादुष्प्रभात] प्रभा-युक्त, प्रकाश-युक्त 'कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए' (णाया १, १ भग)।

पाउब्भव अक [प्रादुस् + भू] प्रकट होना। पाउब्भवइ (पव ४०)। भूका पाउब्भवित्था (उवा)। वकृ. पाउब्भवंत, पाउब्भवमाण (सुपा ६, कुप्र २६, णाया १, ५)। सकृ. पाउब्भवित्ताण (उवा, औप)। हेकृ पाउब्भवित्तए (पि ५७८)।

पाउब्भव वि [पापोद्भव] पाप से उत्पन्न (उप ७६८ टी)।

पाउब्भवणा स्त्री [प्रादुर्भवन] प्रादुर्भाव (भग ३, १)।

पाउब्भुय (अप) नीचे देखो (सण)।

पाउब्भूय वि [प्रादुर्भूत] १ उत्पन्न, सजात। २ प्रकटित (ओप, भग, उवा, विपा १, १)।

पाउरण न [प्रावरण] वस्त्र, कपड़ा (सूअनि ८६, हे १, १७५, पचा ५, १०, पव ४, षड्)।

पाउरण न [दे] कवच, वर्म (षड्)।

पाउरणी स्त्री [दे] कवच, वर्म (दे ६, ४३)।

पाउरिअ देखो पाउड = प्रावृत (कुप्र ४५२)।

पाउल वि [पापकुल] हलके कुल का, जघन्य कुल मे उत्पन्न, 'दवाविय पाउलाए दविण-जाय' (स ६२६), कलसद्दपउरपाउलमगल-सगीयपवरपेक्खणय' (सुर १०, ५)।

पाउल्ल न देखो पाउआ, 'पाउल्लाइं संकमट्ठाए' (सूअ १, ४, २, १५)।

पाउव न [पादोद] पाद-प्रक्षालन-जल, 'पाउवदाइं च ण्हाणुवदाइं च' (णाया १, ७—पत्र ११७)।

पाउस पुं [प्रावृष्] वर्षा ऋतु (हे १, १९, प्राप्र, महा)। °कीड पुं [°कीट] वर्षा ऋतु मे उत्पन्न होनेवाला कीट-विशेष (दे)। °गम पुं [°गम] वर्षा प्रारम्भ (पाम)।

पाउसिअ वि [प्रावृषिक] वर्षा-सम्बन्धी (राज)।

पाउसिअ वि [प्रोषित, प्रवासिन्] प्रवास में गया हुआ,
'तह मेहागमससियआगमणाए पईए मुद्धाओ।
मग्गमवलोयमाणीउ नियइ पाउसियदइयाओ।' (सुपा ७०)।

पाउसिआ स्त्री [प्राद्वेषिकी] द्वेष—मत्सर से होनेवाला कर्म-बन्ध (सम १०, ठा २, १, भग, नव १७)।

पाउहारी स्त्री [दे. पाकहारी] भक्त को लानेवाली, भात-पानी ले आनेवाली (गा ६६४ अ)।

पाए अ [दे] प्रभृति, (वहां से) शुरू करके (ओघ १६६, बृह १)।

पाए सक [पायय्] पिलाना। पाएइ (हे ३, १४६)। पाएज्जाह (महा)। वकृ. पाइंत, पायअंत (सुर १३, १३४, १२, १७१)। संकृ. पाएत्ता (श्राक ३०)।

पाए सक [पादय्] गति कराना। पाएइ (हे ३, १४६)।

पाए सक [पाचय्] पकवाना। पाएइ (हे ३, १४६)। कर्म. पाइज्जइ (श्रावक २००)।

पाएण } अ [प्रायेण] बहुत करके, प्राय
पाएणं } (विसे ११६६, काल, कप्प, प्रासू ४३)।

पाओ अ [प्रायस्] ऊपर देखो (श्रा २७)।

पाओ अ [प्रातस्] प्रात काल, प्रभात (सुज्ज १, ६, कप्प)।

पाओकरण देखो पाउकरण (पिंड २६८)।

पाओग देखो पाउग्ग (सूअनि ६५)।

पाओगिअ वि [प्रायोगिक] प्रयत्न-जनित, अस्वाभाविक (चेइय ३५३)।

पाओग्ग देखो पाउग्ग (भास १०, धर्मसं ११८०)।

पाओपगम न [पादपोपगम] देखो पाओ-वगमण (वव १०)।

पाओयर पुं [प्रादुष्कार] देखो पाउकरण (ठा ३, ४, पंचा १३, ५)।

पवरग न [दे· प्रवराङ्ग] सिर, मस्तक (दे ६, २८)।

पवरपुंडरीय पुंन [प्रवरपुण्डरीक] एक देव-विमान (आचा २, १५, २)।

पवरा स्त्री [प्रवरा] भगवान् वासुपूज्य की शासनदेवी (पव २७)।

पवरिस सक [प्र + वृष्] बरसना, वृष्टि करना। पवरिसइ (भवि)।

पवल देखो पबल (कप्पू, कुप्र २४७)।

पवस अक [प्र + वस्] प्रयाण करना, विदेश जाना। वकृ. पवसंत (से १, २४, गा ६४)।

पवसण न [प्रवसन] प्रवास, विदेश यात्रा, मुसाफिरी (स १९६, उप १०३१ टी)।

पवसिअ वि [प्रोषित] प्रवास में गया हुआ (गा ४५, ८४०, सुर ५,२११, सुपा ४७३)।

पवह अक [प्र + वह्] १ बहना। २ सक टपकना, झरना। पवहइ (भवि, पिंग)। वकृ पवहंत (सुर २, ७५)। संकृ. पवहित्ता (सम ८४)।

पवह सक [प्र + हन्] मार डालना। वकृ 'पिच्छउ पवहत मज्झ करयल कलिय-करवालं' (सुपा ५७२)।

पवह वि [प्रवह] १ बहनेवाला। २ टपकने-वाला, चूनेवाला, 'अट्ठ णालीओ अब्भतरप्प-वहाओ' (विपा १, १—पत्र १६)।

पवह पु [प्रवाह] १ स्रोत, बहाव, जल-धारा (गा ३९९, ५४१, कुमा)। २ प्रवृत्ति। ३ व्यवहार। ४ उत्तम अश्व (हे १, ६८)। ५ प्रभाव (राज)।

पवहण पुन [प्रवहण] १ नौका, जहाज (णाया १, ३, पि ३५७)। २ गाडी आदि वाहन, 'जुग्गगया गिल्लिगया थिल्लिगया पवहणगया' (औप; वसु; चारु ७०)।

पवहाइअ वि [दे] प्रवृत्त (दे ६, ३४)।

पवहाविय वि [प्रवाहित] बहाया हुआ (भवि)।

पवा स्त्री [प्रपा] जलदान-स्थान, पानी-शाला, प्याऊ (औप, पण्ह १, ३, महा)।

पवाइ वि [प्रवादिन्] १ वाद करनेवाला, वादी। २ दार्शनिक (सूअ १, १, १, चउ ४७)।

पवाइअ वि [प्रवात] बहा हुआ (वायु), 'पवाइया कलंबवाया' (स ६८९, पउम ५७, २७, णाया १, ८, स ३९)।

पवाइअ वि [प्रवादित] बजाया हुआ (कप्प, औप)।

पवाण (अप) देखो पमाण = प्रमाण (कुमा, पि २५१, भवि)।

पवाड सक [प्र + पातय्] गिराना। वकृ पवाडेमाण (भग १७, १—पत्र ७२०)।

पवाढि देखो पवाइ (धर्मसं १३३)।

पवाय अक [प्र + वा] १ सुख पाना। २ बहना (हवा का)। ३ सक. गमन करना। ४ हिंसा करना। पवाअइ (प्राकृ ७६)। वकृ पवायंत (आचा)।

पवाय पुं [प्रवाद] १ किंवदन्ती, जनश्रुति (सुपा ३००, उप पृ २९)। २ परंपरा-प्राप्त उपदेश। ३ मत, दर्शन, 'पवाएण पवायं जाणेज्जा' (आचा)।

पवाय पुं [प्रपात] १ गर्त्त, गड्ढा (णाया १, १४—पत्र १९१, दे १, २२)। २ ऊँचे स्थान से गिरता जल-समूह (सम ८४)। ३ तट-रहित निराधार पर्वत-स्थान। ४ रात में पडनेवाली बाढ, धारा (राज)। ५ पतन (ठा २, ३)। °द्दह पुं [°द्रह] वह कुण्ड, जहाँ पर्वत पर से नदी गिरती हो (ठा २, ३—पत्र ७३)।

पवाय पुं [प्रवात] १ प्रकृष्ट पवन (पण्ह २, ३)। २ वि. बहा हुआ (पवन) (सक्षि ७)। ३ पवन-रहित (बृह १)।

पवायग वि [प्रवाचक] पाठक, अध्यापक (विसे १०६२)।

पवायण न [प्रवाचन] प्रपठन, अध्ययन (सम्मत्त ११७)।

पवायणा स्त्री [प्रवाचना] ऊपर देखो (विसे २८३५)।

पवायय देखो पवायग (विसे १०६२)।

पवाल पुन [प्रवाल] १ नवांकुर, किसलय (पाअ ३४१, णाया १, १, सुपा १२९)। २ मूँगा, विद्रुम (पाअ, कप्प)। °मत, °वत वि [°वत्] प्रवालवाला (णाया १, १, औप)।

पवालिअ वि [प्रपालित] जो पालने लगा हो वह (उप ७२८ टी)।

पवास पुं [प्रवास] विदेश गमन, परदेश-यात्रा (सुपा ६५७, हेका ३७, सिरि ३५६)।

पवासि } वि [प्रवासिन्] मुसाफिर (गा
पवासु } ६८, पड्, पि ११८, हे ४, ३९५)।

पवाह सक [प्र + वाहय्] बहाना, चलाना। पवाहइ (भवि)। भवि पवाहहिंति (विसे २४९ टी)।

पवाह देखो पवह = प्रवाह (हे १. ६८, ८२, कुमा, णाया १, १४)।

पवाह पु [प्रबाध] प्रकृष्ट पीडा (विपा १, ९—पत्र ९०)।

पवाहण न [प्रवाहन] १ जल, पानी (आवम)। २ बहाना, वहन कराना (चेइय ५२३)।

पवि पु [पवि] वज्र, इन्द्र का अस्त्र-विशेष (उप २११ टी, सुपा ४६७, कुमा, धर्मवि ८०)।

पविअंभिअ वि [प्रविजृम्भित] प्रोल्लसित, समुत्पन्न (गा ५३६ अ)।

पविआ स्त्री [दे] पक्षी का पान-पात्र (दे ६, ४, ८, ३२, पाअ)।

पविइण्ण वि [प्रवितीर्ण] दिया हुआ (औप)।

पविइण्ण } वि [प्रविकीर्ण] १ व्याप्त
पविइन्न } (औप, णाया १, १ टी—पत्र ३)। २ विक्षिप्त, निरस्त (णाया १, १)।

पविकत्थ सक [प्रवि + कत्थ्] आत्म-श्लाघा करना। पविकत्थई (सम ५१)।

पविकसिय वि [प्रविकसित] प्रकर्ष से विक-सित (राज)।

पविकिर सक [प्रवि + कृ] फेंकना। वकृ. पविकिरमाण (ठा ८)।

पविक्खिअ वि [प्रवीक्षित] निरीक्षित, अवलोकित (स ७४६)।

पविक्खिर देखो पविकिर, 'नाविअजणे य भडं पविक्खिरंते समुद्दम्मि' (सुर १३, २०९)।

पविग्घ वि [दे] विस्मृत (पड्)।

पविचरिय वि [प्रविचरित] गमन-द्वारा सर्वत्र व्याप्त (राय)।

पाडहिग } वि [पाटहिक] ढोल बजानेवाला,
पाडहिय } ढोलिया, ढोलकिया (स २१६)।

पाडहुक वि [दे] प्रतिभू, मनौतिया, जामिनदार (षड्)।

पाडिअ वि [पाटित] फाडा हुआ, विदारित (स ६६६)।

पाडिअ वि [पातित] गिराया हुआ (पाअ, प्रासू २, भवि)।

पाडिअग्ग पु [दे] विश्राम (दे ६, ४४)।

पाडिअज्झ पु [दे] पिता के घर से वधू को पति के घर ले जानेवाला (दे ६, ४३)।

पाडिआ देखो पाडय = पातक।

पाडिएक्क } न [प्रत्येक] हर एक (हे २,
पाडिक्क } २१०, कप्प, पाअ, णाया १, १६, २, १, सूअनि १२१ टी, कुमा), 'एगे जीवे पाडिक्कएण सरीरएण' (ठा १—पत्र १६)।

पाडिंतिय न [प्रात्यन्तिक] अभिनय-विशेष (राय ५४)।

पाडिचरण न [प्रतिचरण] सेवा, उपासना (उप पृ ३४६)।

पाडिच्छय वि [प्रतीप्सक] ग्रहण करनेवाला (सुख २, १३)।

पाडिज्जंत देखो पाड = पातय्।

पाडिपह न [प्रतिपथ] अभिमुख, सामने (सूअ २, २, ३१)।

पाडिपहिअ देखो पडिपहिअ (सूअ २, २, ३१)।

पाडिपिद्धि स्त्री [दे] प्रतिस्पर्धा (षड्)।

पाडिप्पवग पु [पारिप्लवक] पक्षि-विशेष (पउम १४, १८)।

पाडिप्फद्धि वि [प्रतिस्पर्धिन्] स्पर्धा करनेवाला (हे १, ४४, २०६)।

पाडियंतिय न [प्रात्यन्तिक] अभिनय-विशेष (राज)।

पाडियक्क देखो पाडिएक्क (औप)।

पाडिवय वि [प्रातिपद] १ प्रतिपत्-सबन्धी, पडवा तिथि का, 'जह चंदो पाडिवओ पडिपुन्नो सुक्कपक्खम्मि' (उवर ६०)। २ पुं एक भावी जैन आचार्य (विचार ५०६)।

पाडिवया स्त्री [प्रतिपत्] तिथि-विशेष, पक्ष की पहली तिथि, पडवा (सम २६, णाया १, १०, हे १, १५, ४४)।

पाडिवेसिय वि [प्रातिवेश्मिक] पडोसी स्त्री. °या (सुपा ३६४)।

पाडिसार पुं [दे] १ पटुता, निपुणता। २ वि. पटु, निपुण (दे ६, १६)।

पाडिसिद्धि देखो पडिसिद्धि = प्रतिसिद्धि (हे १, ४४, प्राप्र)।

पाडिसिद्धि स्त्री [दे] १ स्पर्धा (दे ६, ७७, कप्पू, कुप्र ४६)। २ समुदाचार। ३ वि. सदृश, तुल्य (दे ६, ७७)।

पाडिसिरा स्त्री [दे] खलीन-युक्ता (दे ६,४२)।

पाडिस्सुइय न [प्रातिश्रुतिक] अभिनय का एक भेद (राज)।

पाडिहत्थी } स्त्री [दे] शिरो-माल्य, मस्तक-
पाडिहत्थी } स्थित पुष्पमाला (दे ६, ४२, राज)।

पाडिहारिय वि [प्रातिहारिक] वापस देने योग्य वस्तु (विसे ३०५७, औप, उवा)।

पाडिहेर न [प्रातिहार्य] १ देवता-कृत प्रतीहार-कर्म, देवकृत पूजा-विशेष (औप, पव ३६), 'इय सामइए भावा इहइपि नागदत्तनरनाहो। जाओ सपाडिहेरो' (सुपा ५४५)। २ देव-सान्निध्य (भत्त ६६), 'बहूण सुरेहिं कयं पाडिहेरं' (श्रु ६४, महा)।

पाडी स्त्री [दे] भैंस की बछिया; पाडी या पडिया गुजराती में 'पाडी' (गा ६५)।

पाडुंकी स्त्री [दे] व्रणी—जखमवाले की पालकी (दे ६, ३६)।

पाडुगोरि वि [दे] १ विगुण, गुण-रहित। २ मद्य मे आसक्त। ३ स्त्री मजबूत वेष्टनवाली वाड, 'पाडुगोरी च वृत्तिर्दीर्घं यस्या त्रिवेष्टन परित' (दे ६, ७८)।

पाडुक्क पु [दे] समालम्भन, चन्दन आदि का शरीर मे उपलेप। २ वि. पटु, निपुण (दे ६, ७६)।

पाडुच्चिय वि [प्रातीतिक] किसी के आश्रय से होनेवाला, आपेक्षिक। स्त्री °या (ठा २, १, नव १८)।

पाडुच्ची स्त्री [दे] तुरग-मण्डन, घोडे का सिंगार (दे ६, ३६, पाअ)।

पाडुहुअ वि [दे] प्रतिभू, मनौतिया, जामिनदार (दे ६, ४२)।

पाडेक्क देखो पाडिक्क (सम्म ५५)।

पाडोस पु [दे] पडोस, प्रातिवेश्मिकता (श्रा २७)।

पाडोसिअ वि [दे] पडोसी, पडोसिया (सिरि ३१२, श्रा २७, सुपा ५५८)।

पाढ सक [पाठय्] पढाना, अध्ययन कराना। पाढइ, पाटेइ (प्राकृ ६०, प्राप्र)। कर्म पाढिज्जइ (प्राप्र)। सकृ. पाढिऊण, पाढेऊण (प्राकृ ६१)। हेकृ. पाढिउ, पाढेउ (प्राकृ ६१)। कृ. पाढणिज्ज, पाढिअव्व, पाढेअव्व (प्राकृ ६१)।

पाढ पु [पाठ] १ अध्ययन, पठन (ओघभा ७१, विसे १३८४, सम्मत्त १४८)। २ शास्त्र, आगम। ३ शास्त्र का उल्लेख, 'पाढो त्ति वा सत्थ ति वा एगट्ठा' (आचू १)। ४ अध्यापन, शिक्षा (उप पृ ३०८, विसे १३८४)।

पाढ देखो पाडय = पाटक (श्रा ६३ टी)।

पाढंतर न [पाठान्तर] भिन्न पाठ (श्रावक ३११)।

पाढग वि [पाठक] १ उच्चारण करनेवाला, 'पढिय मगलपाढगेहिं' (कुप्र ३२)। २ अभ्यासी, अध्ययन करनेवाला। ३ अध्यापन करनेवाला, अध्यापक, 'वत्थुपाढगा', 'सुमिणपाढगाए', 'लक्खणसुमिणपाढगाए' (धर्मवि ३३, णाया १, १, कप्प)।

पाढण न [पाठन] अध्यापन (उप पृ १२८, प्राकृ ६१, सम्मत्त १४२)।

पाढणया स्त्री [पाठना] ऊपर देखो (पचभा ४)।

पाढय देखो पाढग (कप्प, स ७, णाया १, १—पत्र २०, महा)।

पाढव वि [पार्थिव] पृथिवी का विकार, पृथिवी का, 'पाढवं सरीरं हिच्चा' (उत्त ३, १३)।

पाढा स्त्री [पाठा] वनस्पति-विशेष, पाढ, पाठ का गाछ (पण्ण १७)।

पाढाव सक [पाठय्] पढाना, अध्यापन करना। पाढावेइ (प्राप्र)। सकृ पाढाविऊण, पाढावेऊण (प्राकृ ६१)। हेकृ पाढाविउ, पाढावेउ (प्राकृ ६१)। कृ पाढावणिज्ज, पाढावअव्व (प्राकृ ६१)।

पाढावअ वि [पाठक] अध्यापक (प्राकृ ६०)।

पाढावण न [पाठन] अध्यापन (प्राकृ ६१)।

पवुड्ढ वि [प्रवृद्ध] बढा हुआ, विशेष वृद्ध (दे १, ६)।

पवुड्ढि स्त्री [प्रवृद्धि] बढ़ाव (पंच ५, ३३)।

पवुत्त वि [प्रोक्त] १ जो कहने लगा हो, जिसने बोलना आरम्भ किया हो वह (पउम २७, १६, ६४, २१)। २ उक्त, कथित (धर्मवि ८२)।

पवुत्थ [दे] देखो पउत्थ, 'खुड्डयं पुत्तं घेत्तुं गामे पवुत्था' (आक २३, २५)।

पवुद वि [प्रवृत] प्रकर्ष से आच्छादित (प्राकृ १२)।

पवूढ वि [प्रव्यूढ] १ धारण किया हुआ (स ५११)। २ निर्गत (राज)।

पवेइय वि [प्रवेदित] १ निवेदित, प्रतिपादित, 'तमेव सच्चं नीसंक जं जिणेहिं पवेइयं' (उप ३७४ टी, भग)। २ विज्ञात, विदित (राज)। ३ भेंट किया हुआ (उत्त १३, १३, सुख १३, १३)।

पवेइय वि [प्रवेपित] कम्पित (पउम ५, ७८)।

पवेज्ज सक [प्र + वेदय्] १ विदित करना। २ भेंट करना। ३ अनुभव करना। पवेअए (सूत्र १, ८, २४)।

पवेढिय वि [प्रवेष्टित] घिरा हुआ, वेढ़ा हुआ (सुर १२, १०४)।

पवेय देखो पवेज्ज। पवेयंति (आचा १, ६, २, १२)। हेकृ. पवेइत्तए (कस)।

पवेयण न [प्रवेदन] १ प्ररूपण, प्रतिपादन। २ ज्ञान, निर्णय। ३ अनुभावन (राज)।

पवेविय वि [प्रवेपित] प्रकम्पित (णाया १, १—पत्र ४७, उत्त २२, ३६)।

पवेविर वि [प्रवेपितृ] काँपनेवाला (पउम ८०, ६४)।

पवेस सक [प्र + वेशय्] घुसाना। पवेसेइ (महा)। पवेसआमि (पि ४६०)।

पवेस पुं [प्रवेश] भीत की स्थूलता (ठा ४, २—पत्र २२५)।

पवेस पुं [प्रवेश] १ पैठ, घुसना (कुमा, गउड, प्रासू २२)। २ नाटक का एक हिस्सा (कप्पू)।

पवेस पुं [प्रद्वेष] अधिक द्वेष (भवि)।

पवेसण, पवेसणग, पवेसणय पुंन [प्रवेशन, °क] १ प्रवेश, पैठ (पण्ह १, १, प्रासू ३८, द्रव्य ३२)। २ विजातीय जन्मान्तर में उत्पत्ति, विजातीय योनि में प्रवेश (भग ६, ३२)।

पवेसि वि [प्रवेशिन्] प्रवेश करनेवाला (औप)।

पवेसिय वि [प्रवेशित] घुसाया हुआ (सण)।

पवोत्त पु [प्रपौत्र] पौत्र का पुत्र (आक ८)।

पव्व पुंन [पर्वन्] १ ग्रन्थि, गाँठ (ओघ ४८६, जी १२, सुपा ५०७)। २ उत्सव, त्यौहार (सुपा ५०७, श्रा २८)। ३ पूर्णिमा और अमावास्या तिथि। ४ पूर्णिमा और अमावास्यावाला पक्ष (ठा ६—पत्र ३७०, सुज्ज १०)। ५ अष्टमी, चतुर्दशी, पूर्णिमा और अमावास्या का दिन,

'अट्ठमी चउद्दसी पुण्णिमा य
तहमावसा हवइ पव्व।
मासम्मि पव्वछक्कं तिन्नि य
पव्वाइं पक्खम्मि' (धर्म २)।

६ मेखला, गिरिमेखला। ७ दष्ट्रा-पर्वत (सूत्र १, ६, १२)। ८ सख्या-विशेष (इक)। °वीय पुं [°वीज] इक्षु-आदि वृक्ष, जिसका पर्व—ग्रन्थि—ही उत्पत्ति का कारण होता है (राज)। °राहु पुं [°राहु] राहु विशेष, जो पूर्णिमा और अमावास्या में क्रमश चन्द्र और सूर्य का ग्रहण करता है (सुज्ज १६)।

पव्वइ न [पर्वतिन्] १ गोत्र-विशेष, काश्यप गोत्र की एक शाखा। २ पुंस्त्री. उस गोत्र मे उत्पन्न (राज)। देखो पव्वपेच्छइ।

पव्वइ° देखो पव्वई (गा ८५५)।

पव्वइअ वि [प्रव्रजित] १ दीक्षित, संन्यस्त (औप, दसनि २—गाथा १६४)। २ गत, प्राप्त, 'अगाराओ अणगारियं पव्वइया' (औप, सम, कप्प)। ३ न. दीक्षा, संन्यास (वव १)।

पव्वइंद पुं [पर्वतेन्द्र] मेरु पर्वत (सुज्ज ५ टी)।

पव्वइग देखो पव्वइअ (उप पृ ३३५)। स्त्री. °गा (उप पृ ५४)।

पव्वइसेल्ल न [दे] बाल-मय कंडक—तावीज (दे ६, ३१)।

पव्वई स्त्री [पार्वती] गौरी, शिव-पत्नी (पाअ)।

पव्वंग पुंन [पर्वाङ्ग] सख्या-विशेष (इक)।

पव्वक, पव्वग पुंन [पर्वक] १ वाद्य विशेष (पण्ह २, ५—पत्र १४६)। २ ईख जैसी ग्रन्थिवाली वनस्पति (पण्ण १)। ३ तृण-विशेष (निचू १)।

पव्वग वि [पार्वक] पर्व—ग्रन्थि—गाँठ का बना हुआ (आचा २, २, ३, २०)।

पव्वज्ज पुं [दे] १ नाव। २ शर, वाण। ३ वाल-मृग (दे ६, ६६)।

पव्वज्जा स्त्री [प्रव्रज्या] १ गमन, गति। २ दीक्षा, सन्यास (ठा ३, २, ४, ८, प्रासू १६७)।

पव्वणी स्त्री [पर्वणी] कार्तिकी आदि पर्व-तिथि (णाया १, १—पत्र ५३)।

पव्वपेच्छइ न [पर्वप्रेक्षकिन्] देखो पव्वइ (ठा ७—पत्र ३६०)।

पव्वय सक [प्र + व्रज्] १ जाना, गति करना। २ दीक्षा लेना, सन्यास लेना। पव्वयइ (महा)। भवि. पव्वइस्सामो, पव्वइहिति (औप)। वकृ. पव्वयंत, पव्वयमाण (सुर १, १२३, ठा ३, १)। हेकृ. पव्वइत्तए, पव्वइउ (औप, भग, सुपा २०६)।

पव्वय देखो पव्वग (पण्ण १—पत्र ३३)।

पव्वय देखो पव्वइअ, 'अगारमावसतावि अरण्णा वावि पव्वया' (सूत्र १ १, १, १६)।

पव्वय, पव्वयय पुन [पर्वत, °क] १ गिरि, पहाड (ठा ३, ४, प्रासू १५४, उवा), 'पव्वयाणि वणाणि य' (दस ७, २६ ३०)। २ पु द्वितीय वासुदेव का पूर्व-भवीय नाम (सम १५३, पउम २०, १७१)। ३ एक ब्राह्मण-पुत्र का नाम (पउम ११, ६)। ४ एक राजा (भवि)। ५ एक राज-कुमार (उप ६३७)। °राय पुं [°राज] मेरु पर्वत (सुज्ज ५)। °विदुग्ग पुन [°विदुर्ग] पर्वतीय देश, पहाडवाला प्रदेश (भग)।

पव्वयगिह न [पर्वतगृह] पर्वत की गुफा (आचा २, ३, ३, १)।

पव्वह सक [प्र + व्यथ्] पीडना, दुःख देना। पव्वहेजा (सूत्र १, १, ४, ६)।

पात } देखो पाय = पात्र (सूअ १, ४, २,
पाद } पएह २, ५—पत्र १४८)। °बंधण न [°वन्धन] पात्र बाँधने का वस्त्र-खण्ड, जैन-मुनि का एक उपकरण (पएह २, ५)।

पाद देखो पाय = पाद (विपा १, ३)। °सम वि [°सम] गेय-विशेष (ठा ७—पत्र ३९४)। °ोट्ठपय न [°ौष्ठपद] दृष्टिवाद नामक बारहवें जैन आगम-ग्रन्थ का एक प्रतिपाद्य विषय (सम १२८)।

पादु° देखो पाउ = प्रादुस्। पादुरेसए (पि ३४१)। पादुरकासि (सूअ १, २, २, ७)।

पादो देखो पाओ = प्रातस् (सुज्ज १, ९)।

पादोसिय वि [प्रादोषिक] प्रदोष-काल का, प्रदोष-संबन्धी (ओघ ६५८)।

पादव देखो पायव (गा ५३७ अ)।

पाधन्न देखो पाहन्न (धर्मसं ७८६)।

पाधार सक [स्वा + गम्, पाद + धारय्] पधारना, 'पाधारह निम्रगेहे' (श्रा १६)।

पावद्ध वि [प्रावद्ध] विशेष बँधा हुआ, पाशित (निचू १६)।

पाभाइय } वि [प्राभातिक] प्रभात-
पाभातिय } सबन्धी (ओघभा ३११, अनु ६, धर्मवि ५८)।

पाम सक [प्र + आप्] प्राप्त करना, गुजराती में 'पामवु'।
'कारावेइ पडिम जिणाए जिअरोगदोसमोहाएं।
सो अन्नभवे पामइ भवमलए धम्मवररयणं ॥'
(रयण १२)। कर्म. पामिज्जइ (सम्मत्त १४२)।

पामण्ण न [प्रामाण्य] प्रमाणता, प्रमाणपन (धर्मसं ७५)।

पामद्दा स्त्री [दे] दोनो पैर से धान्य-मर्दन (दे ६, ४०)।

पामन्न देखो पामण्ण (विसे १४६६, चेइय १२४)।

पामर पु [पामर] कृषीवल, कर्षक, खेती का काम करनेवाला गृहस्थ, 'पामरगहवइसेआरण-कासया दोणया हलिमा' (पाअ, वजा १३४, गउड, दे ६, ४१, सुर १६, ५३)। २ हलकी जाति का मनुष्य (कप्पू, गा २३८)। ३ मूर्ख बेवकूफ, अज्ञानी (गा १६४), 'को नाम पामरं मुत्तुं वसइ दुद्दमकद्दमे' (श्रा १२)।

पामा स्त्री [पामा] रोग-विशेष, खुजली, खाज (सुपा २२७)।

पामाड पुं [पद्माट] पमाड, पमार, पवाड, चकवड, वृक्ष-विशेष (पाअ)।

पामिच्च सक [दे] उधार लेना। पामिच्चेज्ज (आचा २, २, २, ३)।

पामिच्च न [दे· अपमित्य] १ धार लेना, वापस देने का वादा कर ग्रहण करना। २ वि जो उधार लिया जाय वह (पिंड ९२, ३१६, आचा; ठा ३, ४, ९, औप, पएह २, ५, पव १२५, पचा १३, ५, सुपा ६४३)।

पामिच्चिय वि [दे] उधार लिया हुआ (आचा १, १०, १)।

पामुक्क वि [प्रमुक्त] परित्यक्त (पाअ, स ६५७)।

पामूल न [पादमूल] पैर का मूल भाग, पाँव का अग्र भाग (पउम ३, ६, सुर ८, १६६, पिंड ३२८)। देखो पायमूल = पादमूल।

पामोक्ख देखो पमुह = प्रमुख (णाया १, ५, ८ महा)।

पामोक्ख पुं [प्रमोक्ष] मुक्ति, छुटकारा (उप ६४८ टी)।

पाय पुं [दे] १ रथ-चक्र, रथ का पहिया (दे ६, ३७)। २ फणी, साँप (षड्)।

पाय पुं [पाक] १ पाचन-क्रिया। २ रसोई (प्राकृ १९, उप ७२८ टी)।

पाय वि [पाक्य] पाक-योग्य (दस ७, २२)।

पाय देखो पाव (चंड)।

पाय पु [पात] १ पतन (पंचा २, २५, से १, १९)। २ सबन्ध, 'पुणो पुणो तरलदिट्ठि-पाएहिं' (सुर ३, १३८)।

पाय पुं [पाय] पान, पीने की क्रिया (श्रा २३)।

पाय पु [पाद] १ गमन, गति (श्रा २३)। २ पैर, चरण, पाँव, 'चलणा कमा य पाया' (पाअ, णाया १, १)। ३ पद्य का चौथा हिस्सा (हे ३, १३४, पिंग)। ४ किरण, 'अंसू रस्सी पाया' (पाअ, अजि २८)। ५ सानु, पर्वत का कटक (पाअ)। ६ एकाशन तप (संबोध ५८)। ७ छ अंगुलो का एक नाप (इक)। °कंचणिया स्त्री [°काञ्चनिका] पैर प्रक्षालन का एक सुवर्ण-पात्र (राज)। °कंबल पुंन [°कम्बल] पैर पोछने का वस्त्र खण्ड (उत्त १७, ७)। °कुक्कुड पु [°कुक्कुट] कुक्कुट-विशेष (णाया १, १७ टी—पत्र २३०)। °घाय पुं [°घात] चरण-प्रहार (पिंग)। °चार पुं [°चार] पैर से गमन (णाया १, १)। °चारि वि [°चारिन्] पैर से यातायात करनेवाला, पाद विहारी (पउम ६१, १६)। °जाल, °जालग न [°जाल, °क] पैर का आभूषण-विशेष (औप, अजि ३१, पएह २, ५)। °त्ताण न [°त्राण] जूता, पगरखी (दे १, ३३)। °पलंब पु [°प्रलम्ब] पैर तक लटकनेवाला एक आभू-षण (णाया १, १—पत्र ५३)। °पीढ देखो °वीढ (णाया १, १; महा)। °पुंछण न [°प्रोञ्छन] रजोहरण, जैन साधु का एक उपकरण (आचा, ओघ ५११, ७०६, भग, उवा)। °प्पडण न [°पतन] पैर पर गिरना, प्रणाम-विशेष (पउम ६३, १८)। °मूल न [°मूल] १ देखो पामूल (कस)। २ मनुष्यों की एक साधारण जाति, नर्तकों की एक जाति; 'समागयाइ पायमूलाइं', 'पुलइज्जमाणो पायमूलेहिं पत्तो रहसमीवे', 'पणच्चियाइ पायमूलाइं', 'सद्दावियाइं पायमूलाइं', 'पण-च्चंतेहिं पायमूलेहिं' (स ७२१, ७२२, ७३४)। °लेहणिआ स्त्री [°लेखनिका] पैर पोछने का जैन साधु का एक काष्ठमय उपकरण (ओघ ३६)। °वंदय वि [°वन्दक] पैर पर गिरकर प्रणाम करनेवाला (णाया १, १३)। °वडण न [°पतन] पैर पर गिरना, प्रणाम-विशेष (हे १, २७०, कुमा, सुर २, १०६)। °वडिया स्त्री [°वृत्ति] पाद पतन, पैर छूना, प्रणाम-विशेष, 'पायवडियाए खेमकुसल पुच्छंति' (णाया १, २, सुपा २५)। °विहार पुं [°विहार] पैर से गति (भग)। °वीढ न [°पीठ] पैर रखने का आसन (हे १, २७०, कुमा; सुपा ९८)। °सीसग न [°शीर्षक] पैर के ऊपर का भाग (राय)। °ाउलअ न [°ाकुलक] छन्द-विशेष (पिंग)।

पाय देखो पत्त = पात्र (आचा, औप, ओघभा ३६, १७४)। °केसरिआ स्त्री [°केसरिका] जैन साधुओं का एक उपकरण, पात्र-प्रमार्जन का कपड़ा (ओघ ६६८, विसे २५५२ टी)।

पसण्णा स्त्री [प्रसन्ना] मदिरा, दारू (गाया १, १६, विपा १, २)।

पसत्त वि [प्रसक्त] १ चिपका हुआ (गउड ५१)। २ आसक्त (गउड ५३१, उव)। ३ आपत्ति-ग्रस्त, अनिष्ट-प्राप्ति के दोष से युक्त (विसे १८५६)।

पसत्ति स्त्री [प्रसक्ति] १ आसक्ति, अभिष्वङ्ग (उप १३१)। २ आपत्ति-दोष (अज्झ ११६)।

पसत्थ वि [प्रशस्त] १ प्रशंसनीय, श्लाघनीय। २ श्रेष्ठ, अच्छा (हे २, ४५, कुमा)।

पसत्थि स्त्री [प्रशस्ति] वंशोत्कीर्तन, वश-वर्णन (गउड, सम्मत्त ८३)।

पसत्थु पु [प्रशास्तृ] १ लेखाचार्य, गणित का अध्यापक (ठा ३, १)। २ धर्म-शास्त्र का पाठक (ठा ३, १, औप)। ३ मन्त्री, अमात्य (सूअ २, १, १३)।

पसन्न देखो **पसण्ण** (महा, भवि, सुपा ६१४)।

पसन्ना देखो **पसण्णा** (पाअ, पउम १०२, १२२, सुख २, २९)।

पसप्प पुं [प्रसर्प] विस्तार, फैलाव (द्रव्य १०)।

पसप्पग वि [प्रसर्पक] १ प्रकर्ष से जाने-वाला, मुसाफिरी करनेवाला। २ विस्तार को प्राप्त करनेवाला (ठा ४, ४—पत्र २६४)।

पसम अक [प्र+शम्] अच्छी तरह शान्त होना। पसमंति (आक १९)।

पसम पु [प्रशम] १ प्रशान्ति, शान्ति (कुमा)। २ लगातार दो उपवास (संबोध ५८)।

पसम पु [प्रश्रम] विशेष मेहनत—खेद (आव ४)।

पसमण न [प्रशमन] १ प्रकृष्ट शमन (पिंड ६६३, सुर १, २४९)। २ वि प्रशान्त करने वाला (स ६९५)। स्त्री. °णी (कुमा)।

पसमाविअ वि [प्रशमित] प्रशान्त किया हुआ (स ६२)।

पसमिक्ख सक [प्रसम्+ईक्ष्] प्रकर्ष से देखना। संकृ. पसमिक्ख (उत्त १४, ११)।

पसमिण वि [प्रशमिन्] प्रशान्त करनेवाला, नाश करनेवाला, 'पावति, पावपसमिण पास-जिण तुह प्पभावेण' (णमि १७)।

पसम्म देखो **पसम**=प्र+शम्। पसम्मइ (गउड)। वकृ **पसम्मत** (से १०, २२, गउड)।

पसय पु [दे] १ मृग-विशेष (दे ६, ४, पगह १, १, भवि, मण, महा)। २ मृग-शिशु (विपा १, ४)।

पसय वि [प्रसृत] फैला हुआ, 'पसयच्छि।' (वज्जा ११२, १४४)। देखो **पसिअ**= प्रसृत।

पसर अक [प्र+सृ] फैलना। पसरइ (पि ४७७, भवि)। वकृ **पसरत** (सुर १, ८९; भवि)।

पसर पु [प्रसर] विस्तार, फैलाव (हे ४, १५७, कुमा)।

पसरण न [प्रसरण] ऊपर देखो (कप्पू)।

पसरिअ वि [प्रसृत] फैला हुआ, विस्तृत (औप, गा ४, भवि, णाया १, १)।

पसरेह पु [दे] किंजल्क (दे ६, १३)।

पसल्लिअ वि [दे] प्रेरित (षड्)।

पसव सक [प्र+सू] जन्म देना, उत्पन्न करना। पसवइ (हे ४, २३३)। पसवति (उत्र)। वकृ. **पसवमाण** (सुपा ४३४)।

पसव (अप) सक [प्र+विश्] प्रवेश करना। पसवइ (प्राकृ ११९)।

पसव पुं [प्रसव] १ जन्म, उत्पत्ति (कुमा)। २ न पुष्प, फूल, 'कुसुम पसव पसूअ च' (पाअ), 'पुप्फाणि अ कुसुमाणि अ फुल्लाणि तहेव होंति पसवाणि' (दसनि १, ३६)।

पसव [दे] देखो **पसय**। 'पसवा हवंति एए' (पउम ११, ७७)। °**नाह** पुं [°नाथ] मृग-राज, सिंह (स ६५७)। °**राय** पु [°राज] सिंह (स ६५७)।

पसवडक्क न [दे] विलोकन (दे ६, ३०)।

पसवण न [प्रसवन] प्रसूति, जन्म दान (भग, उप ७४४, सुर ६, २४८)।

पसवि वि [प्रसविन्] जन्म देनेवाला (नाट—शकु ७४)।

पसविय वि [प्रसूत] जो जन्म देने लगा हो, जिसने जन्म दिया हो वह, 'सयमेव पसविया ह महाकिलेसेण नरनाह' (सुर १०, २३०; सुपा ३९)। देखो **पसूअ**=प्रसूत।

पसविर वि [प्रसवितृ] जन्म देनेवाला (नाट)।

पसस्स देखो **पसस**।

पसस्स वि [प्रशस्य] प्रभूत शस्यवाला (सुपा ६४५)।

पसाइअ वि [प्रसादित] १ प्रसन्न किया हुआ (स ३८६, ५७६)। २ प्रसन्न होने के कारण दिया हुआ, 'अगत्तिलग्गमंसे पसाइयं कडयवत्थाइं' (सुर १, १६३)।

पसाइआ स्त्री [दे] भिल्ल के सिर पर का पर्ण-पुट, भिल्लों की पगड़ी (दे ६, २)।

पसाइयव्व देखो **पसाय**=प्र+सादय्।

पसाम वि [प्रशाम्] शान्त होनेवाला (षड्)।

पसाय सक [प्र+सादय्] प्रसन्न करना, खुश करना। पसाअति, पसाएमि (गा ६१, सिक्खा ६१)। वकृ. **पसाअमाण** (गा ७४५)। हेकृ **पसाइउ**, **पसाएउं** (महा, गा ५७४)। कृ. **पसाइयव्व** (सुपा ३६५)।

पसाय पु [प्रसाद] १ प्रसत्ति, प्रसन्नता, खुशी, 'जणमणपसायजणणो' (वसु)। २ कृपा, मेहरबानी (कुमा)। ३ प्रणय (गा ७१)।

पसायण न [प्रसादन] प्रसन्न करना, 'देव-पसायणपहाणमणो' (कुप्र ५ सुपा ७, महा)।

पसार सक [प्र+सारय्] पसारना, फैलाना। पसारेइ (महा)। वकृ. **पसारेमाण** (णाया १, १, आचा)। संकृ **पसारिअ** (नाट—मृच्छ २५५)।

पसार पुं [प्रसार] विस्तार फैलाव (कप्पू)।

पसारण न [प्रसारण] ऊपर देखो (सुपा ५८३)।

पसारिअ वि [प्रसारित] १ फैलाया हुआ (सण, नाट—वेणी २३)। २ न प्रसारण (सम्मत्त १३३, दस ४ ३)।

पसास सक [प्र+शासय्] १ शासन करना, हुकूमत करना। २ शिक्षा देना। ३ पालन करना। वकृ 'रज्ज **पसासेमाणे** विहरइ' (णाया १, १ टी—पत्र ६, १४—पत्र १८९, औप, महा)।

पार देखो पायार (हे १, २६८, कुमा)।

पारक न [दे] मदिरा नापने का पात्र (दे ६, ४१)।

पारगम वि [पारगम] १ पार जानेवाला। २ पार-गमन (आचा)।

पारंगय वि [पारगत] पार-प्राप्त (कुप्र २१)।

पारंचि वि [पाराञ्चि] सर्वोत्कृष्ट—दशम प्रायश्चित्त करनेवाला, 'पारंचीएं दोएहवि' (बृह ४)।

पारंचिय न [पाराञ्चिक] १ सर्वोत्कृष्ट प्रायश्चित्त, तप-विशेष से अतिचारों की पार-प्राप्ति (ठा ३, ४—पत्र १६२, औप)। २ वि सर्वोत्कृष्ट प्रायश्चित्त करनेवाला (ठा ३, ४)।

पारंचिय [पाराञ्चित] ऊपर देखो (कस, बृह ४)।

पारपज्ज न [पारम्पर्य] परम्परा (रंभा १५)।

पारपर पुं [दे] राक्षस (दे ६, ४४)।

पारपर } न [पारम्पर्य] परम्परा (पउम
पारपरिय } २१, ८०, आरा १६, धर्मसं ११९८, १३१७), 'आयरियपारंपर्यं (? रिए) ण आगयं' (सूअनि १२७—पृष्ठ ४८७)।

पारपरिय वि [पारम्परिक] परपरा से चला आता (उप ७२८ टी)।

पारंभ सक [प्रा + रभ्] १ आरम्भ करना, शुरू करना। २ हिंसा करना, मारना। ३ पीडा करना। पारभेमि (कुप्र ७०)। कवकृ. 'तएहाए पारब्भमाणा' (औप)।

पारंभ पुं [प्रारम्भ] शुरू, उपक्रम (विसे १०२०, पव १६३)।

पारभिय वि [प्रारब्ध] आरब्ध, उपक्रान्त (धर्मवि १४४, सुर २, ७७, १२, १५६, सुपा ५५)।

पारकेर } वि [परकीय] पर का, अन्यदीय
पारक्क } (हे १, ४४, २ १४८, कुमा)।

पारक्किअ देखो पारक्क (माल १६२)।

पारज्झमाण देखो पारभ=प्रा + रभ्।

पारण }
पारणग } न [पारण, °क] व्रत के दूसरे दिन का भोजन, तप की समाप्ति के अनन्तर
पारणय } का भोजन (सण, उवा, महा)।

पारणा स्त्री [पारणा] ऊपर देखो। °इत्त वि [°वत्] पारणवाला (पंचा १२, ३५)।

पारतंत न [पारतन्त्र्य] परतन्त्रता, पराधीनता (उप २५२, पचा ६, ४१, ११, ७)।

पारत्त अ [परत्र] परलोक मे, आगामी जन्म में, 'पारत्त विइज्जओ धम्मो' (पउम ५, १६३)।

पारत्त वि [पारत्र, पारत्रिक] पारलौकिक, आगामी जन्म से सवन्ध रखनेवाला, 'इत्तो पारत्तहियं ता कीरउ देव। वकचूलिस्स' (धर्मवि ६०, ओघ ६२, स २४६)।

पारत्ति स्त्री [दे] कुसुम-विशेष (गउड, कुमा)।

पारत्तिय वि [पारत्रिक] देखो पारत्त=पारत्र (स ७०७)।

पारदारिय वि [पारदारिक] परस्त्री-लम्पट (णाया १, १८—पत्र २३६)।

पारद्ध वि [प्रारब्ध] १ जिसका प्रारम्भ किया गया हो वह, 'पारद्धा य विवाहनिमित्त सयला सामग्गी' (महा)। २ जो प्रारम्भ करने लगा हो वह, 'तओ अवरएहसमए पारद्धो नच्चिउं' (महा)।

पारद्ध न [दे] पूर्व-कृत कर्म का परिणाम, प्रारब्ध। २ वि आखेटक, शिकारी। ३ पीडित (दे ६, ७७)।

पारद्धि स्त्री [पापर्द्धि] शिकार, मृगया (हे १, २३५, कुमा, उप पृ २५७, सुपा २१६)।

पारद्धिअ वि [पापर्द्धिक] शिकारी, शिकार करनेवाला, गुजराती में 'पारधी', 'मयणमहापारद्धियनिसायवाणावलीविद्धा' (सुपा ७१, मोह ७६)।

पारमिया स्त्री [पारमिता] बौद्ध-शास्त्र-परिभाषित प्राणातिपात-विरमणादि शिक्षा-व्रत, अहिंसा आदि व्रत (धर्मसं ६८८)।

पारम्म न [पारम्य] परमता, उत्कृष्टता (अज्झ ११४)।

पारय वि [पारग] समर्थ (आचा २, ३, २, ३)।

पारय पु [पारद] धातु-विशेष, पारा, रस-धातु। °मद्दण न [°मर्दन] आयुर्वेद-विहित रीति से पारा का मारण, रसायन-विशेष, 'अंग-कढिणयाहेउं च सेवति पारयमद्दणं' (स २८६)। २ वि. पार-प्रापक (श्रु १०६)।

पारय न [दे] सुरा-भाण्ड, दारू रखने का पात्र (दे ६, ३८)।

पारय देखो पार-ग (कप्प, भग, अत)।

पारय पु [प्रावारक] १ पट, वस्त्र। २ वि. आच्छादक (हे १, २७१, कुमा)।

पारलोइअ वि [पारलौकिक] परलोक सबन्धी, आगामी जन्म से सवन्ध रखनेवाला (पएह १, ३, ४, सूअ २, ७, २३, कुप्र ३८१, सुपा ४६१)।

पारवस्स न [पारवश्य] परवशता, पराधीनता (रयण ८१)।

पारस पु [पारस] १ अनार्य देश-विशेष, फारस देश, ईरान (इक)। २ मणि विशेष, जिसके स्पर्श से लोहा सुवर्ण हो जाता है (सबोध ५३)। ३ पारस देश मे रहनेवाली मनुष्य-जाति (पएह १,१)। °उल न [°कुल] १ ईरान देश, 'भरिऊण भडस्स वहणाइ पत्तो पारसउलं', 'इओ य सो अयलो पारसउले विढविय बहुय दव्व' (महा)। २ वि. पारस देश का, ईरान का निवासी, 'मागहयपारसउला कालिगा सीहला य तहा' (पउम ६६, ५५)। °कूल न [°कूल] ईरान का किनारा, ईरान देश की सीमा (आवम)।

पारसिय वि [पारसिक] फारस देश का, 'महसा पारसियमुओ समागओ रायपयमूले', 'पारसियकीरमिहुणं' (सुपा २६७, ३६०)।

पारसी स्त्री [पारसी] १ पारस देश की स्त्री (औप, णाया १, १—पत्र ३७, इक)। २ लिपि-विशेष, फारसी लिपि (विसे ४६४ टी)।

पारसीअ वि [पारसीक] फारस देश का निवासी (गउड)।

पाराई स्त्री [दे] लोह-कुशी-विशेष, लोहे की दडाकार छोटी वस्तु, 'चडवेलावज्झपट्टपाराइ (? ई)छिवकमलयवरत्तनेत्तप्पहारसयतालियगमगा' (पएह २, ३)।

पाराय देखो पारावय (प्राप्र)।

पारायण न [पारायण] १ पार-प्राप्ति (विसे ५६५)। २ पुराण-पाठ-विशेष, 'अवीउ (? य)समत्तपरायणो साखापारओ जाओ' (सुख २, १३)।

पारावय देखो पारेवय (पाअ, प्राप्र, गा ६४, कप्प ५६ टि)।

पस्स सक [दृश्] देखना। पस्सइ (षड्, प्राकृ ७१)। वकृ. **पस्समाण** (आचा, औप, वसु, विपा १, १)। कृ. पस्स (ठा ४, ३)।

पस्स (शौ) देखो **पास** = पार्श्व (अभि १८६, अवि २६, स्वप्न ३६)।

पस्स देखो पस्स = दृश्।

पस्सओहर वि [पश्यतोहर] देखते हुए चोरी करनेवाला, सुनार, उचक्का; 'नणु एसो पस्सओहरो तेणो' (उप ७२८ टी)।

पस्सि वि [दर्शिन्] देखनेवाला (पएण ३०)।

पस्सेय देखो **पसेअ** (सुख २, ८)।

पह वि [प्रह्व] १ नम्र। २ विनीत। ३ आसक्त (प्राकृ २४)।

पह पुं [पथिन्] मार्ग, रास्ता (हे १, ८८, पाअ; कुमा, श्रा २८, विसे १०५२, कप्प, औप)। °देसय वि [°देशक] मार्ग-दर्शक (पउम ६८, १७)।

पहएल्ल पुं [दे] अपूप, पूआ, खाद्य-विशेष (दे ६, १८)।

पहकर देखो **पभकर** (उत्त २३, ७६, सुख २३, ७८, इक)।

पहंकरा देखो **पभंकरा** (इक)।

पहंजण पु [प्रभञ्जन] १ वायु, पवन (पाअ)। २ देव-जाति-विशेष, भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति (सुपा ४०)। ३ एक राजा (भवि)।

पहकर [दे] देखो **पहयर** (णाया १, १, कप्प, औप, उप पृ ४७, विपा १, १, राय, भग ६, ३३)।

पहट्ठ वि [दे] १ दृप्त, उद्धत (दे ६, ६, षड्)। २ अचिरतर दृष्ट, थोड़े ही समय के पूर्व देखा हुआ (षड्)।

पहट्ठ वि [प्रहृष्ट] आनन्दित, हर्ष-प्राप्त (औप, भग)।

पहण सक [प्र + हन्] मार डालना। पहणइ, पहणे (महा; उत्त १८, ४९)। कर्म. पहणिज्जइ (महा)। वकृ. **पहणत** (पउम १०५, ६५)। कवकृ. **पहम्मत**, **पहम्ममाण** (पि ५४०, सुर २, १४)। हेकृ. पहणिउं, पहणेउं (कुप्र २५, महा)।

पहण न [दे] कुल, वंश (दे ६, ५)।

पहणि स्त्री [दे] संमुखागत का निरोध, सामने आए हुए का अटकाव (दे ६, ५)।

पहणिय देखो **पहय** = प्रहत (सुपा ४)।

पहत्थ पुं [प्रहस्त] रावण का मामा (से १२, ५५)।

पहद वि [दे] सदा दृष्ट (दे ६, १०)।

पहम्म सक [प्र + हम्म्] प्रकर्ष से गति करना। पहम्मइ (हे ४, १६२)।

पहम्म न [दे] १ सुर-खात, देव-कुण्ड (दे ६, ११)। २ खात-जल, कुण्ड। ३ विवर, छिद्र (से ६, ४३)।

पहम्मत, **पहम्ममाण** } देखो पहण = प्र + हन्।

पहय वि [प्रहत] १ घृष्ट, घिसा हुआ (से १, ५८, बृह १)। २ मार डाला गया, निहत (महा)।

पहय वि [प्रहत] जिस पर प्रहार किया गया हो वह, 'पहया अहिमतियजलेण' (महा)।

पहयर पु [दे] निकर समूह, यूथ (दे ६, १५, जय १३, पाअ)।

पहर सक [प्र + हृ] प्रहार करना। पहरइ (उव)। वकृ पहरत (महा)। संकृ. पहरिऊण (महा)। हेकृ पहरिउ (महा)।

पहर पुं [प्रहार] १ मार, प्रहार (हे १,६८, षड्, प्राप्र, सक्षि २)। २ जहां पर प्रहार किया हो वह स्थान (से २, ४)।

पहर पु [प्रहर] तीन घंटे का समय (गा २८, ३१, पाअ)।

पहरण न [प्रहरण] १ अस्त्र, आयुध (आचा, औप, विपा १, १, गउड)। २ प्रहार-क्रिया (से ३, ३८)।

पहराइया देखो **पहाराइया** (पएण १—पत्र ६४)।

पहराय पुं [प्रभराज] भरतक्षेत्र का छठवाँ प्रतिवासुदेव (सम १५४)।

पहरिअ वि [प्रहृत] १ प्रहार करने के लिए उद्यत (सुर ६, १२६)। २ जिस पर प्रहार किया गया हो वह (भवि)।

पहरिस पु [प्रहर्ष] आनन्द, खुशी, 'आमोओ पहरिसो तोसो' (पाअ, सुर ३, ४०)।

पहलादिद (शौ) वि [प्रह्लादित] आनन्दित (स्वप्न १०६)।

पहल्ल अक [घूर्ण्] घूमना, काँपना, डोलना, हिलना। पहल्लइ (हे ४, ११७, षड्)। वकृ. **पहल्लत** (सुर १, ६६)।

पहल्लिर वि [प्रघूर्णितृ] घूमनेवाला, डोलता (कुमा, सुपा २०४)।

पहव अक [प्र + भू] १ उत्पन्न होना। २ समर्थ होना। पहवइ (पचा १०, १०, स ७०, सक्षि ३६)। भवि. पहविस्स (पि ५२१)। वकृ पहवत (नाट—मालती ७२)।

पहव पु [प्रभव] उत्पत्ति-स्थान (अभि ४१)।

पहव देखो **पहाव** = प्रभाव (स ६३७)।

पहव देखो **पह** = प्रह्व (विसे ३००८)।

पहव पु [प्रभव] एक जैन महर्षि (कुमा)।

पहविय वि [प्रभूत] जो समर्थ हुआ हो, 'मणिकुंडलाणुभावा सत्थ नो पहविय नरिंदस्स' (सुपा ६१५)।

पहस अक [प्र + हस्] १ हसना। २ उपहास करना। पहसइ (भवि, सण)। वकृ पहसत (सण)।

पहसण न [प्रहसन] १ उपहास, परिहास। २ नाटक का एक भेद, हास्य-रस प्रधान नाटक रूपक-विशेष, 'पहसणप्पाय कामसत्थ-वयण' (स ७१३, १७७, हास्य ११६)।

पहसिय वि [प्रहसित] १ जो हसने लगा हो (भग)। २ जिसका उपहास किया हो वह (भवि)। ३ न हास्य (बृह १)। ४ पुं पवनञ्जय का एक विद्याधर-मित्र (पउम १५, ५६)।

पहा सक [प्र + हा] १ त्याग करना। २ अक कम होना, क्षीण होना, 'पहेज्ज लोह' (उत्त ४, १२, पि ५६६)। वकृ पहिज्जमाण, पहेज्जमाण (भग, राज)। संकृ पहाय, पहिऊण (आचा १, ६, १, १, वव ३)।

पहा स्त्री [प्रथा] १ रीति, व्यवहार। २ ख्याति, प्रसिद्धि (षड्)।

पहा स्त्री [प्रभा] कान्ति, तेज, आलोक, दीप्ति (औप, पाअ, सुर २, २३५, कुमा, चेइय ५१४)। °मडल देखो भामडल (पउम ३०, ३२)। °यर पु [°कर] १ सूर्य, रवि। २ रामचन्द्र के भाई भरत से साथ दीक्षा लेनेवाला एक राजर्षि (पउम ८५, ५)। °वई स्त्री

पालंक न [पालङ्क्य] तरकारी-विशेष, पालक का शाक (बृह १)।
पालंगा स्त्री [पालङ्क्या] ऊपर देखो (उवा)।
पालंत देखो पाल = पालय्।
पालंब पुं [प्रालम्ब] १ अवलम्बन, सहारा, 'पावइ तडविडविपालंब' (सुपा ६३५)। २ गले का आभूषण-विशेष (औप, कप्प)। ३ दीर्घ, लम्बा (औप, राय)। ४ पुंन. ध्वजा के नीचे लटकता वस्त्राञ्चल, 'ओऊलं पालंबं' (पाअ)।
पालक्का स्त्री [पालक्या] देखो पालंगा, 'वत्थुलपोरगमज्जारपोइवल्ली य पालक्का' (पण्ण १—पत्र ३४)।
पालग देखो पालय (कप्प, औप, विसे २८५६, संति १, सुर ११, १०८)।
पालण न [पालन] १ रक्षण (महा, प्रासू ३)। २ वि. रक्षण-कर्ता, धम्मस्स पालणी चेव' (सबोध १६, सं ६७)।
पालद्दुद्दुह पु [दे] वृक्ष-विशेष (उप १०३१ टी)।
पालप्प पु [दे] १ प्रतिसार। २ वि. विप्लुत (दे ६, ७६)।
पालय वि [पालक] रक्षक, रक्षण-कर्ता (सुपा २७६, सार्ध १०)। २ पुं. सौधर्मेन्द्र का एक आभियोगिक देव (ठा ८)। ३ श्रीकृष्ण का एक पुत्र (पव ?)। ४ भगवान् महावीर के निर्वाण के दिन अभिषिक्त अवंती (उज्जैन) का एक राजा (विचार ४९२)। ५ देव-विमान-विशेष (सम २)।
पालास पुं [पालाश] पलाश-सम्बन्धी। २ न. पलाश वृक्ष का फल, किंशुक-फल (गउड)।
पालि स्त्री [पालि] १ तालाव आदि का बन्ध (सुर १३, ३२, अत १२, महा)। २ प्रान्त भाग (गा ६४९)। देखो पाली = पाली।
पालि स्त्री [दे] १ धान्य मापने की नाप। २ पल्योपम, समय का सुदीर्घ परिमाण-विशेष (उत्त १८, २८, सुख १८, २८)।
पालिआ स्त्री [दे] खड्ग-मुष्टि, तलवार की मूठ (पाअ)।
पालिआ देखो पाली = पाली, उज्जाणपालि-याहिं कवित्तीहिं व बहुरसड्ढाहिं' (धर्मवि १३)।
पालित्त पुं [पादलिप्त] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य (पिंड ४९८, कुप्र १७८)।
पालित्ताण न [पादलिप्तीय] सौराष्ट्र देश का एक प्राचीन नगर, जो आजकल भी 'पालिताणा' नाम से प्रसिद्ध है (कुप्र १७९)।
पालित्तिआ स्त्री [दे] १ राजधानी। २ मूल-नीवी। ३ भण्डार, निधि। ४ भंगी, प्रकार (कप्पू)।
पालिय वि [पालित] रक्षित (ठा १०, महा)।
पालियाय देखो पारिय = पारिजात (राय ३०)।
पाली स्त्री [पाली] पंक्ति, श्रेणि (गउड)। देखो पालि।
पाली स्त्री [दे] दिशा (दे ६, ३७)।
पालीवध पुं [दे] तालाव, सरोवर (दे ६, ४५)।
पालीहम्म न [दे] वृति, वाड (दे ६, ४५)।
पालेव पुं [पादलेप] पैर में किया हुआ लेप (पिंड ५०३)।
पाव सक [प्र + आप्] प्राप्त करना। पावइ (हे ४, २३९)। भवि पाविहिसि (पि ५३१)। कर्म पाविज्जइ (उव)। वकृ. पावत, पावंत (पिंग; पउम १४, ३७)। कवकृ. पावियंत, पावेज्जमाण (पण्ह १. १, अंत २०)। संकृ. पाविऊण (पि ५८६)। हेकृ. पत्तुं, पावेउं (हास्य ११९, महा)। कृ. पावणिज्ज, पाविअव्व (सुर ६, १४२; स ६८६)।
पाव देखो पव्वाल = प्लावय्। पावेइ (हे ४, ४१)।
पाव पुंन [पाप] १ अशुभ कर्म-पुद्गल, कुकर्म (आचा, कुमा; ठा १, प्रासू २५), 'जम्मंतरकए पावे पाणी मुहुत्तेण निद्दहे' (गच्छ १, ६)। २ पापी, अधर्मी, कुकर्मी (पण्ह १, १; कुमा ७, ६)। °कम्म न [°कर्मन्] अशुभ कर्म (आचा)। °कम्मि वि [°कर्मिन्] कुकर्म करनेवाला (ठा ७)। °दंड पुं [°दण्ड] नरकावास-विशेष (देवेन्द्र २९)। °पगइ स्त्री [°प्रकृति] अशुभ कर्म-प्रकृति (राज)। °यारि वि [°कारिन्] दुराचारी (पउम ६३, ४३, महा)। °समण पुं [°श्रमण] दुष्ट साधु (उत्त १७, ३, ४)। °सुमिण पुंन [°स्वप्न] दुष्ट स्वप्न (कप्प)। °सुय न [°श्रुत] दुष्ट शास्त्र (ठा ६)।
पाव पुं [दे] सर्प, साँप (दे ६, ३८)।
पाव (अप) देखो पत्त = प्राप्त (पिंग)।
पावस वि [पापीयस्] पापी, कुकर्मी (ठा ४, ४—पत्र २६५)।
पावक्खालय न [दे. पापक्षालक] देखो पाउक्खालय (स ७४१)।
पावग वि [पावक] १ पवित्र करनेवाला (राज)। पुं. अग्नि, वह्नि (सुपा १४२)।
पावग वि [प्रापक] पहुँचानेवाला (सुपा ५००)।
पावग देखो पाव = पाप (आचा; धर्मसं ५४३)।
पावज्जा (अप) देखो पव्वज्जा (भवि)।
पावडण देखो पाय-वडण = पाद-पतन (प्राप्र; कुमा)।
पावड्ढि देखो पारद्धि (सिरि ११०८, १११०)।
पावण वि [पावन] पवित्र करनेवाला (अच्चु ४७, सम्मु १५०)।
पावण न [प्लावन] १ पानी का प्रवाह। २ सराबोर करना (पिंड २४)।
पावण न [प्रापण] १ प्राप्ति, लाभ (सुर ४, १११; उपपं ७)। २ योग की एक सिद्धि 'पावणसत्तीए छिवइ मेरुसिरमगुलीए मुणी' (कुप्र २७७)।
पावद्धि देखो पारद्धि (धर्मवि १४८)।
पावय देखो पाव = पाप (प्रासू ७५)।
पावय वि [प्रावृत] आच्छादित, ढका हुआ (सूअ २, ७, ३)।
पावय पुन [दे] वाद्य-विशेष, गुजराती में 'पावो' (पउम ५७, २३)।
पावय देखो पावग = पावक (उप ७२८ टी, कुप्र २८३, सुपा ४, पाअ)।
पावयण देखो पवयण (हे १, ४४, उवा; णाया १, १३)।
पावयणि वि [प्रवचनिन्] सिद्धान्त का जानकार, सैद्धान्तिक (चेइय १२८)।
पावयणिय वि [प्रावचनिक] ऊपर देखो (सम ६०)।
पावरअ देखो पावारय (स्वप्न १०४)।

पहुणाइय न [प्राघुण्य] आतिथ्य, अतिथि-सत्कार, 'न्हाणभोयणवत्थाहरणदाणाइपहु-णाडि (? इ)यं सपाडेइ' (रंभा)।

पहुत्त वि [प्रभूत] १ पर्याप्त, काफी, 'पज्जत्तं च पहुत्तं' (पाअ, गउड, गा २७७)। २ समर्थ (से २, ६)। ३ पहुँचा हुआ (ती १५)।

पहुदि देखो पभिइ (संक्षि ४, प्राकृ १२)।

पहुप्प } अक [प्र + भू] १ समर्थ होना,
पहुव } सकना। २ पहुँचना। पहुप्पइ (हे ४,६३ प्राकृ ६२), 'एयाओ बालियाओ निय-नियगेहेसु जह पहुप्पंति तह कुणह' (सुपा २५०)। पहुप्पामो (काल), पहुप्पिरे (हे ३, १४२)। वकृ 'किं सहइ कोवि कस्सवि पाअ-पहारं पहुप्पंतो', पहुप्पमाण (गा ७, ओघ ५०५, किरात १६)। कवकृ. पहुव्वंत (से १४, २५, वव १०)। हेकृ. पहुविउ (महा)।

पहुवी स्त्री [प्रथिवी] भूमि, धरती (नाट—मालती ७२)। °पहु पु [°प्रभु] राजा (हम्मीर १७)। °वइ पु [°पति] वही अर्थ (हम्मीर १३)।

पहुव्वंत देखो पहुव।

पहूअ वि [प्रभूत] १ बहुत, प्रचुर (स ४५६)। २ उद्गत। ३ भूत। ४ उन्नत (प्राकृ ६२)।

पहेज्जमाण देखो पहा = प्र + हा।

पहेण न [दे] वधू को ले जाने पर पिता के घर दी जाती जमीन (आचा २, १, ४, १)।

पहेण } न [दे] १ भोजनोपायन, खाद्य
पहेणग } वस्तु की भेंट (आचा; सूअ २, १,
पहेणय } ५६, गा ३२८,६०३, पिंड ३३५, पाअ, दे ६, ७३)। २ उत्सव (दे ६, ७३)।

पहेरक न [प्रहेरक] आभरण-विशेष (पण्ह २, ५—पत्र १४६)।

पहेलिया स्त्री [प्रहेलिका] गूढ़ आशयवाली कविता (सुपा १५५, औप)।

पहोअ सक [प्र + धाव्] प्रक्षालन करना, धोना। पहोएज्ज (आचा २, २, १, ११)।

पहोइ वि [प्रधाविन्] धोनेवाला (दस ४, २६)।

पहोइअ वि [दे] १ प्रवर्तित। २ प्रभुत्व (दे ६, २६)।

पहोड सक [वि + लुल्] हिलोरना, अन्दो-लना। पहोडइ (धात्वा १४४)।

पहोयण स्त्रीन [प्रधावन] प्रक्षालन, 'दंतपहो-यण यं' (दस ३, ३)।

पहोलिर वि [प्रघूर्णितृ] हिलनेवाला, डोलता (गा ७८, ६६६, से ३, ४६, पाअ)।

पहोव देखो पधोव। पहोवाहि (आचा २, १, ६, ३)।

पा सक [पा] पीना, पान करना। भवि पाहिसि, पाहामि, पाहामो (कप्प, पि ३१५, कस)। कर्म पिज्जइ (उव), पीअंति (पि ५३६)। कवकृ पिज्जंत (गउड, कुप्र १२०)। पीयमाण (स ३८०), पेंत (अप) (भग)। संकृ पाऊण, पाऊण (नाट—मुद्रा ३६, गउड, कुप्र ६२)। हेकृ पाउ, पायए (आचा)। कृ पायव्व, पिज्ज (सुपा ४३८, पण्ह १, २, कुमा २, ६), पेअ, पेयव्व (कुमा, रयण ६०), पेज्ज (णाया १, १, १७, उवा)।

पा सक [पा] रक्षण करना। पाइ, पाअइ (विसे ३०२५, हे ४, २४०), पाउ (पिंग)।

पा सक [घ्रा] सूँघना, गन्ध लेना। पाइ, पाअइ (प्राप्र ८, २०)।

पाइ वि [पातिन्] गिरनेवाला (पचा ५, २०)।

पाइ वि [पायिन्] पीनेवाला (गा ५६७, हि ६)।

पाइअ न [दे] वदन विस्तार, मुँह का फैलाव (दे ६, ३६)।

पाइअ देखो पागय = प्रकृत (दे १, ४, प्राकृ ८, प्रासू १, वज्जा ८, पाअ, पि ५३), 'अह पाइआओ भासाओ' (कुमा १, १)।

पाइअ वि [पायित] पिलाया हुआ, पान कराया हुआ (कुप्र ७६, सुपा १३०, स ४५४)।

पाइत देखो पाय = पायय्।

पाइक्क पुं [पदाति] प्यादा, पैर से चलनेवाला सैनिक (हे २, १३८, कुमा)।

पाइडि स्त्री [प्रावृति] प्रावरण, वस्त्र (गा २३८)।

पाइण देखो पाईण (पि २१५ टि)।

पाइत्ता (अप) स्त्री [पवित्रा] छन्द-विशेष (पिंग)।

पाइद [शौ] वि [पाचित] पकवाया हुआ (नाट—चैत १२६)।

पाइन्न देखो पाईण (णंदि ४६)।

पइभ न [प्रातिभ] प्रतिभा, बुद्धि-विशेष (कुप्र १५५)।

पाइम वि [पाक्य] १ पकाने योग्य। २ काल-प्राप्त, मृत (दस ७, २२)।

पाइम वि [पात्य] गिराने योग्य (आचा २, ४, २, ७)।

पाई स्त्री [पात्री] १ भाजन विशेष (णाया १, १ टी)। २ छोटा पात्र (सूअ २, २, ७८)।

पाईण त्रि [प्राचीन] १ पूर्वदिशा-सबन्धी, 'ववहार-पादणाई (? ईणाइ)' (पिंड ३६, कप्प मम १०४)। २ न गोत्र विशेष। ३ पुंस्त्री उस गोत्र मे उत्पन्न, 'थेरे अज्जभद्द-बाहू पाईणसगोत्ते (कप्प)।

पाईणा स्त्री [प्राचीना] पूर्व दिशा (सूअ २, २, ५८, ठा ६—पत्र ३५६)।

पाउ देखो पाउ = प्रादुम् (सूअ २, ६, ११, उवा)।

पाउ पुं [पायु] गुदा, गांड (ठा ६—पत्र ४५०, सण)।

पाउ पुंस्त्री [दे] १ भक्त, भात, भोजन। २ इक्षु, ऊख (दे ६, ७५)।

पाउअ न [दे] १ हिम, अवश्याय (दे ६, ३८)। २ भक्त। ३ इक्षु (दे ६, ७५)।

पाउअ देखो पाउड = प्रावृत (गा ५२०, स ३५०, औप, सुर ६, ८, पाअ, हे १ १३१)।

पाउअ देखो पागय (गा २, ६६८, पाअ, कप्पू, पिंग)।

पाउआ स्त्री [पादुका] १ ख[illegible], काष्ठ का जूता (भग, सुख २ २६, पिंड ५७२)। २ जूता, पगरखी (सुपा २५४, औप)।

पाउ देखो पा = पा।

पाउ अ [प्रादुस्] प्रकट व्यक्त, 'तांनि अमंतिं करिस्सामि पाउं' (सूअ १, १, २, १)।

पासाण पुं [पाषाण] पत्थर (हे १, २६२, कुमा)।
पासाणिअ वि [दे] साक्षी (दे ६, ४१)।
पासाद देखो पासाय (औप, स्वप्न ५६)।
पासादिय वि [प्रसादित] १ प्रसन्न किया हुआ। २ न. प्रसन्न करना (णाया १, ६—पत्र १६५)।
पासादीय वि [प्रासादीय] प्रसन्नता-जनक (उवा, औप)।
पासादीय वि [प्रासादित] महलवाला, प्रासाद-युक्त (सूअ २, ७, १ टी)।
पासाय पुन [प्रासाद] महल हर्म्य (पात्र, पउम ८०, ४)। °वडिंसय पुं [°वतंसक] श्रेष्ठ महल (भग, औप)।
पासायवडेंसग पु [प्रासादावतंसक] श्रेष्ठतम महल, प्रासाद-विशेष (राय ६६)।
पासासा स्त्री [दे] भल्ली, छोटा भाला (दे ६, १४)।
पासाव } पुं [दे] गवाक्ष, वातायन, झरोखा
पासावय } (षड्, दे ६, ४३)।
पासि वि [पार्श्विन्] पार्श्वस्थ, शिथिलाचारी साधु, 'पासिसारिच्छो' (संबोध ३५)।
पासिद्धि देखो पसिद्धि (हे १, ४४)।
पासिम वि [दृश्य] दर्शनीय, ज्ञेय (आचा)।
पासिम देखो पास = दृश्।
पासिय वि [पाशिक] फांसे में फँसानेवाला (पण्ह १, २)।
पासिय वि [स्पृष्ट] छुआ हुआ (आचा—पासिम)।
पासिय वि [पाशित] पाश युक्त (राज)।
पासिया स्त्री [पाशिका] छोटा पाश (महा)।
पासिया देखो पास = दृश्।
पासिल्ल वि [पार्श्विक] १ पास मे रहनेवाला। २ पार्श्वशायी (पव ५४, तदु १३, भग)।
पासी स्त्री [दे] चूडा, चोटी (दे ६, ३७)।
पासु देखो पसु (हें १, २६, ७०)।
पासुत्त देखो पसुत्त (गा ३२४, सुर २, ८२, ६, १६८, हे १, ४४, कुप्र २५०)।
पासेइय वि [प्रस्वेदित] प्रस्वेद-युक्त, पसीना-वाला (भवि)।
पासेल्लिय वि [पार्श्ववत्] पार्श्व-शायी, बगल में सोनेवाला (राज)।
पासोअल्ल देखो पासल्ल = तिर्यञ्च्। वकृ. पासोअल्लंत (से ६, ४७)।
पाह (अप) सक [प्र + अर्थय्] प्रार्थना करना। पाहसि (पि ३५६)।
पाहंड देखो पासंड (पि २६५)।
पाहण देखो पाहाण, 'महंतं पाहणं तयं' (श्रा १२), 'चउकोणा समतीरा पाहणवद्धा य निम्मविया' (धर्मवि ३३, महा, भवि)।
पाहणा देखो पाणहा, 'तेगिच्छं पाहणा पाए' (दस ३, ४)।
पाहण्ण } न [प्राधान्य] प्रधानता, प्रधानपन
पाहन्न } (प्रासू ३२, श्रोघ ७७२)।
पाहर सक [प्रा + हृ] प्रकर्ष से लाना, ले आना। पाहराहि (सूअ, ४, २, ६)।
पाहरिय वि [प्राहरिक] पहरेदार (स ५२५, सुपा ३१२, ४५५)।
पाहाउय देखो पाभाइय (सुपा ३५, ५५६)।
पाहाण पुं [पाषाण] पत्थर (हे १, २६२, महा)।
पाहिज्ज देखो पाहेज्ज (पाअ)।
पाहुड न [प्राभृत] १ उपहार, पाहुर, भेंट (हे १,१३१, २०६, विपा १, ३, कर्पूर २७, कप्पू, महा, कुमा)। २ जैन ग्रन्थांश-विशेष, परिच्छेद, अध्ययन (सुज्ज १, २, ३)। ३ प्राभृत का ज्ञान (कम्म १, ७)। °पाहुड न [°प्राभृत] १ ग्रन्थांश-विशेष, प्राभृत का भी एक अंश (सुज्ज १, १, २)। २ प्राभृत-प्राभृत का ज्ञान (कम्म १, ७)। °पाहुडस-मास पुंन [°प्राभृतसमास] अनेक प्राभृत-प्राभृतो का ज्ञान (कम्म १, ७)। °समास पुंन [°समास] अनेक प्राभृतो का ज्ञान (कम्म १, ७)।
पाहुड न [प्राभृत] १ क्लेश, कलह (कस, बृह १)। २ दृष्टिवाद के पूर्वो का अध्याय-विशेष (अणु २३४)। ३ सावद्य कर्म, पाप-क्रिया (आचा २, २, ३, १, वव १)। °छेय पुं [°च्छेद] बारहवें अंग-ग्रन्थ के पूर्वो का प्रकरण-विशेष (वव १)। °पाहुडिआ स्त्री [°प्राभृतिका] दृष्टिवाद का प्रकरण-विशेष (अणु २३४)।
पाहुडिआ स्त्री [प्राभृतिका] १ दृष्टिवाद का छोटा अध्याय (अणु २३४)। २ अर्चनिका, विलेपन आदि (वव ४)।
पाहुडिआ स्त्री [प्राभृतिका] १ भेंट, उपहार (पव ६७)। २ जैन मुनि की भिक्षा का एक दोष, विवक्षित समय से पहले—मन में संकल्पित भिक्षा, उपहार रूप से दी जाती भिक्षा (पंचा १३, ५, पव ६७, ठा ३, ४—पत्र १५६)।
पाहुण वि [दे] विक्रेय, बेचने की वस्तु (दे ६, ४०)।
पाहुण } पुं [प्राघुण, °क] अतिथि, पाहुना,
पाहुणग } मेहमान (ओघभा ५३, सुर ३,८५,
पाहुणय } महा; सुपा १३, कुप्र ४२, औप; काल)।
पाहुणिअ पुं [प्राघुणिक] अतिथि, पहुना, मेहमान (काप्र २२४)।
पाहुणिअ पुं [प्राधुनिक] ग्रह-विशेष, ग्रहा-धिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३)।
पाहुणिज्ज वि [प्राहवनीय] प्रकृष्ट संप्रदान, जिसको दान दिया जाय वह (णाया १, १ टी—पत्र ४)।
पाहुण्ण } न [प्राघुण्य, °क] आतिथ्य,
पाहुण्णग } अतिथि का सत्कार, पहुनाई;
पाहुण्णय } 'कयं मंजरीए पाहुण(? ण्ण)ं' (कुप्र ४२, उप १०३१ टी)।
पाहेअ न [पाथेय] रास्ते मे व्यय करने की सामग्री, मुसाफिरी मे खाने का भोजन (उत्त १६, १८, महा; अभि ७६, स ६८, सुपा ४२४)।
पाहेज्ज न [दे पाथेय] ऊपर देखो (दे ६, २४)।
पाहेणग (दे) देखो पहेणग (पिंड २८८)।
पि देखो अवि (हे २, २१८, स्वप्न ३७, कुमा, भवि)।
पिअ सक [पा] पीना। पिअइ (हे ४, १०, ४१६, गा १६१)। भूका. अपिइत्थ (आचा)। वकृ. पिअंत, पियमाण (गा १३ अ, २४६, से २, ५; विपा १, १)। संकृ पिच्चा, पेच्चा, पिएऊण (कप्प; उत्त १७, ३, धर्मवि २५), पिएविणु (अप) (सण)। प्रयो. पियावए (दस १०, २)।
पिअ पु [प्रिय] १ पति, कान्त, स्वामी (कुमा)। २ वि. इष्ट, प्रीति-जनक (कुमा)। °अम पुं [°तम] पति, कान्त (गा १६,

पाओवगमण न [पादपोपगमन] अनशन-विशेष, मरण विशेष (सम ३३, औप, कप्प, भग)।

पाओवगय वि [पादपोपगत] अनशन-विशेष से मृत (औप, कप्प, अंत)।

पाओस पुं [दे. प्रद्वेष] मत्सर, द्वेष (ठा ४, ४—पत्र २८०)।

पाओसिय देखो पादोसिय (ओघ ६६२)।

पाओसिया देखो पाउसिआ (धर्म ३)।

पांडविअ त्रि [दे] जलार्द्र, पानी से गीला (दे ६, २०)।

पाडु देखो पंडु (पव २४७)। °सुअ पुं [°सुत] अभिनय का एक भेद (ठा ४, ४—पत्र २८५)।

पाक देखो पाग (कप्प)।

पाकम्म न [प्राकाम्य] योग की आठ सिद्धियो में एक सिद्धि, 'पाकम्मगुणेण मुणी भुवि व्व नीरे जलि व्व भुवि चरइ' (कुप्र २७७)।

पाकार पुं [प्राकार] किला, दुर्ग (उप पृ ८४)।

पाकिद (शौ) देखो पागय (प्रयौ २४, नाट—वेणी ३८, पि ५३, ८२)।

पाखड देखो पासंड (पि २६५)।

पाग पुं [पाक] १ पचन-क्रिया (औप, उवा, सुपा ३७४)। २ दैत्य-विशेष (गउड)। ३ विपाक, परिणाम (धर्मसं ६६५)। ४ बलवान् दुश्मन (श्रावम)। °सासण पुं [°शासन] इन्द्र, देव-पति (हे ४, २६५, गउड, पि २०२)। °सासणी स्त्री [°शासनी] इन्द्रजाल-विद्या (सूअ २, २, २७)।

पागइअ वि [प्राकृतिक] १ स्वाभाविक। २ पुं. साधारण मनुष्य, प्राकृत लोक (पव ६१)।

पागड सक [प्र + कटय्] प्रकट करना, खुला करना, व्यक्त करना। वकृ. पागडेमाण (ठा ३, ४—पत्र १७१)।

पागड वि [प्रकट] व्यक्त, खुला (उत्त ३६, ४२, औप, उव)।

पागडण न [प्रकटन] १ प्रकट करना। २ वि. प्रकट करनेवाला (धर्मसं ८२६)।

पागडिअ वि [प्रकटित] व्यक्त किया हुआ (उव, औप)।

पागड्ढि } वि [प्राकर्षिन्, °क] १ अग्र-
पागड्ढिक } गामी, 'पागट्ठी (? ड्ढी) पट्ठवए वूहवई' (णाया १, १)। २ प्रवर्त्तक, प्रवृत्ति करानेवाला (पण्ह १, ३—पत्र ४५)।

पागब्भ न [प्रागल्भ्य] धृष्टता, ढिठाई (सूअ १, ५, १, ५)।

पागब्भि } वि [प्रागल्भिन्, °क] धृष्टता-
पागब्भिय } वाला, धृष्ट, ढीठ (सूअ १,५,१, ५, २, १, १८)।

पागय वि [प्राकृत] १ स्वाभाविक, स्वभाव-सिद्ध। २ आर्यावर्त्त की प्राचीन लोक-भाषा, 'सक्कया पागया चेव' (ठा ७—पत्र ३९३, विसे १४६६ टी, रयण ९४, सुपा १)। ३ पुं. साधारण बुद्धिवाला मनुष्य, सामान्य लोग, 'जेसिं णामागोत्त न पागता पण्णवेहिंति' (सुज्ज १९), 'किंतु महामइगम्मो दुरवगम्मो पागयजणस्स' (चेइय २५९, सुर २, १३०)। °भासा स्त्री [°भाषा] प्राकृत भाषा (श्रा २३)। °वागरण न [°व्याकरण] प्राकृत भाषा का व्याकरण (विसे ३४५५)।

पागार पुं [प्राकार] किला, दुर्ग (उव, सुर ३, ११४)।

पाजावच्च पु [प्राजापत्य] १ वनस्पति का अधिष्ठाता देव। २ वनस्पति (ठा ५, १—पत्र २९२)।

पाटप (चूपै) देखो वाडव (षड्)।

पाठीण देखो पाढीण (पण्ह १, १—पत्र ७)।

पाड देखो फाड = पाटय्, 'असिपत्तधणूहि पाडंति' (सूअनि ७९)।

पाड सक [पातय्] गिराना। पाडेइ (उव)। संकृ. पाडिअ, पाडिऊण (काप्र १९६, कुप्र ४६)। कवकृ. पाडिज्जंत (उप ३२० टी)।

पाड देखो पाडय = पाटक, 'तो सो दिट्ठट्ठाणे सय गओ वेसपाडम्मि' (सुपा ५३०)।

पाडच्चर वि [दे] आसक्त चित्तवाला (दे ६, ३४)।

पाडच्चर पुं [पाटच्चर] चोर, तस्कर (पाअ, दे ६, ३४)।

पाडण न [पाटन] विदारण (आव ६)।

पाडण न [पातन] १ गिराना, पाडना (सूअनि ७२)। २ परिभ्रमण, इधर-उधर घूमना, 'लहुजढरपिढरपडियारपाडणत्ताण कयकीलो' (कुमा २, ३७)।

पाडणा स्त्री [पातना] ऊपर देखो (विपा १, १—पत्र १६)।

पाडय पुं [पाटक] मुहल्ला, रथ्या, 'चंडाल-पाडए गतु' (धर्मवि १३८, विपा १, ८, महा)।

पाडय वि [पातक] गिरानेवाला। स्त्री. °डिआ (मृच्छ २४५)।

पाडल पुं [पाटल] १ वर्ण-विशेष, श्वेत और रक्त वर्ण, गुलाबी रंग। २ वि. श्वेत-रक्त वर्णवाला (पाअ)। ३ न पाटलिका-पुष्प, गुलाब का फूल (गा ४६९, सुर ३, ५२, कुमा)। ४ पाटला वृक्ष का पुष्प, पाढल का फूल (गा ३०)।

पाडल पुं [दे] १ हस, पक्षि-विशेष। २ वृषभ बैल। कमल (दे ६, ७६)।

पाडलसउण पु [दे] हंस, पक्षि-विशेष (दे ६, ४६)।

पाडला स्त्री [पाटला] वृक्ष-विशेष, पाढल का पेड़, पाडरि (गा ४५९, सुर ३, ५२, सम १५२), 'चंपा य पाडलक्खो जया य वसु-पुज्जपरियवो होइ' (पउम २०, ३८)।

पाडलि स्त्री [पाटलि] ऊपर देखो (गा ४६८)। °उत्त, °पुत्त न [°पुत्र] नगर-विशेष, पटना, जो आजकल बिहार प्रदेश का प्रधान नगर है (हे २, १५०, महा, पि २९२, चारु ३९)। °पुत्त वि [°पुत्र] पाटलिपुत्र-संबन्धी, पटना का (पव १११)। °संड न [°षण्ड] नगर-विशेष (विपा १, ७, सुपा ८३)। देखो पाडला।

पाडलिय वि [पाटलित] श्वेत-रक्त वर्णवाला किया हुआ (गउड)।

पाडली देखो पाडल (उप पृ ३९०)। °पुर न [°पुर] पटना नगर (धर्मवि ८०)। °वुत्त न [°पुत्र] पटना नगर (षड्)।

पाडव न [पाटव] पटुता, निपुणता (धम्म १० टी)।

पाडवण न [दे] पाद-पतन, पैर पर गिरना, प्रणाम-विशेष (दे ६, १८)।

२, १४२, कुमा) °सेणकण्हा स्त्री [°सेनकृष्णा] राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत २५)। °स्सया देखो °सिआ (विपा १, ३—पत्र ४१)। °हर देखो °घर (सुर १०, १६, भवि)।

पिउअ देखो पिइय (राज)।

पिउच्छा स्त्री [दे पितृष्वसृ] फूफी, पिता की बहिन (षड्)।

पिउच्छा } स्त्री [दे] सखी, वयस्या(षड् १७५, पिउच्छा } २१०)।

पिउली स्त्री [दे] १ कर्पास, कपास। २ तूललतिका, रूई की पूनी (दे ६, ७८)।

पिउल्ल देखो पिउ (हे २, १६४)।

पिकार पु [अपिकार] १ 'अपि' शब्द। २ अपि शब्द की व्याख्या (ठा १०—पत्र ४९५)।

पिंखा स्त्री [प्रेङ्खा] हिंडोला, डोला (पाअ)।

पिंखोल सक [प्रेङ्खोलय्] झूलना। वकृ. पिंखोलमाण (राज)।

पिंग देखो पंग = ग्रह् (कुमा ७, ४६)।

पिंग पु [पिङ्ग] १ कपिश वर्ण, पीत वर्ण। २ वि पीला, पीत रँग का (पाअ, कुमा, णमि १४)। ३ पुंस्त्री कपिंजल पक्षी। स्त्री °गा (सूअ १, ३, ४, १२)।

पिंगग पुं [दे] मर्कट, बन्दर (दे ६, ४८)।

पिंगल पु [पिङ्गल] १ नील-पीत वर्ण। २ वि नील-मिश्रत पीत-वर्णवाला (कुमा, ठा ४, २, औप)। ३ पु ग्रह विशेष (ठा २, ३)। ४ एक यक्ष (सिरि ६६६)। ५ चक्रवर्त्ती का एक निधि, आभूषणों की पूर्ति करनेवाला एक निधान (ठा ६, उप ६८६ टी)। ६ कृष्ण पुद्गल-विशेष (सुज्ज २०)। ७ प्राकृत-पिंगल का कर्त्ता एक कवि (पिंग)। ८ एक जैन उपासक (भग)। ६ न. प्राकृत का एक छन्द-ग्रंथ (पिंग)। °कुमार पुं [°कुमार] एक राजकुमार, जिसने भगवान् सुपार्श्वनाथ के समीप दीक्षा ली थी (सुपा ६६)। °क्ख वि [°क्ष] १ नीली-पीली आँखवाला (ठा ४, २—पत्र २०८)। २ पु. पक्षि-विशेष (पण्ह १, १, औप)।

पिंगलायण न [पिङ्गलायन] १ गोत्र-विशेष, जो कौत्स गोत्र की एक शाखा है। २ पुंस्त्री. उस गोत्र मे उत्पन्न (ठा ७)।

पिंगलिअ वि [पिङ्गलित] नीला-पीला किया हुआ (से ४, १८, गउड, सुपा ८०)।

पिंगलिअ वि [पैङ्गलिक] पिंगल-संबन्धी (पिंग)।

पिंगा देखो पिंग।

पिंगायण न [पिङ्गायन] मघा-नक्षत्र का गोत्र (इक)।

पिंगिअ वि [गृहीत] ग्रहण किया हुआ (कुमा)।

पिंगिम पुंस्त्री [पिङ्गिमन्] पिंगता, पीलापन (गउड)।

पिंगीकय वि [पिङ्गीकृत] पीला किया हुआ, 'घणथणघुसिणिक्कुप्पंकपिंगीकय व्व' (लहुअ ७)।

पिंगुल पुं [पिङ्गुल] पक्षि-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८)।

पिचु पुंस्त्री [दे] पक्व करीर, पक्का करील (दे ६, ४६)।

पिंछ } देखो पिच्छ (आचा, गउड, सुपा पिंछड } ६४१)।

पिंछी स्त्री [पिच्छी] साधु का एक उपकरण, 'नवि लेइ जिणा पिंछी (?च्छि)' (विचार १२८)।

पिंछोली स्त्री [दे] मुँह के पवन से वजाया जाता तृण-मय वाद्य-विशेष (दे ६, ४७)।

पिंज सक [पिञ्ज्] पीजना, रूई का धुनना। वकृ. पिंजंत (पिंड ५७४, ओघ ४६८)।

पिंजण न [पिञ्जन] पीजना (पिंड ६०३, दे ७, ६३)।

पिंजर पुं [पिञ्जर] १ पीत-रक्त वर्ण, रक्त-पीत मिश्रित रँग। २ वि रक्त-पीत वर्णवाला (गउड, कुप्र ३०७)।

पिंजर सक [पिञ्जरय्] रक्त-मिश्रित पीत-वर्ण-युक्त करना। वकृ. पिंजरयत (पउम ६२, ६)।

पिंजरण न [पिञ्जरण] रक्त-मिश्रित पीत-वर्णवाला करना (सण)।

पिंजरिअ वि [पिञ्जरित] पिञ्जर वर्णवाला किया हुआ (हम्मीर १२, गउड, सुपा ५२४)।

पिंजरुड पुं [दे] पक्षि-विशेप, भारुण्ड पक्षी, जिसके दो मुँह होते हैं (दे ६, ५०)।

पिंजिअ वि [पिञ्जित] पीजा हुआ (दे ७, ६४)।

पिंजिअ वि [दे] विधुत (दे ६, ४६)।

पिंड सक [पिण्डय्] १ एकत्रित करना, संश्लिष्ट करना। २ अक. एकत्रित होना, मिलना। पिंडेइ, पिंडयए (उव, पिंड ६६)। संकृ पिंण्डिऊण (कुमा)।

पिंड पु [पिण्ड] १ कठिन द्रव्यो का संश्लेष (पिण्डभा २)। २ समूह, संघात (ओघ ४०७ विसे ६००)। ३ गुड वगैरह की बनी हुई गोल वस्तु, वर्तुलाकार पदार्थ (पण्ह २, ५)। ४ भिक्षा मे मिलता आहार, भिक्षा (उव, ठा ७)। ५ देह का एक देश। ६ देह, शरीर। ७ घर का एक देश। ८ अन्न का गोला जो पितरो के उद्देश से दिया जाता है। ६ गन्ध-द्रव्य विशेष, सिह्लक। १० जपा पुष्प। ११ कवल, ग्रास। १२ गज-कुम्भ। १३ मदनक वृक्ष, दमनक का पेड। १४ न. आजीविका। १५ लोहा। १६ श्राद्ध, पितरों को दिया जाता दान। १७ वि. संहत। १८ घन, निविड (हे १, ८५)। °कप्पिअ वि [°कल्पिक] सर्वथा निर्दोष भिक्षा लेनेवाला (वव ३)। °गुला स्त्री [°गुला] गुड-विशेष, इक्षुरस का विकार-विशेष, शक्कर बनने के पहले की अवस्था-विशेष (पिंड २८३)। °घर न [°गृह] कर्दम से बना हुआ घर (वव ४)। °त्थ पुं [°स्थ] जिन भगवान् की अवस्था-विशेष, 'न पिंडत्थपयत्थावत्थतरभावणा सम्मं' (संबोध २)। °त्थ पुं [°र्थ] समुदायार्थ (राज)। °दाण न [°दान] पिण्ड देने की क्रिया, श्राद्ध (धर्मवि २६)। °पयडि स्त्री [°प्रकृति] अवान्तर भेदवाली प्रकृति (कम्म १, २५)। °वद्धण न [°वर्धन] आहार-वृद्धि, कवल-वृद्धि, अन्न-प्राशन (अंत)। वद्धावण न [°वर्धन] आहार वढ़ाना (औप) °वाय पुं [°पात] भिक्षा-लाभ, आहार-प्राप्ति (ठा ५, १, कस)। °वास पु [°वास] सुहृज्जन (भवि)। °विसुद्धि, °विसोहि स्त्री [°विशुद्धि] भिक्षा की निर्दोषता (अंत, ओघभा ३)।

पाढाविअ वि [पाठित] अध्यापित (प्राकृ ६१)।

पाढाविअवंत वि [पाठितवत्] जिसने पढाया हो वह (प्राकृ ६१)।

पाढाविउ } वि [पाठयितृ] पढानेवाला
पाढाविर } (प्राकृ ६१, ६०)।

पाढिअ वि [पाठित] पढ़ाया हुआ, अध्यापित (प्राप्र)।

पाढिअवत देखो पाढाविअवन (प्राकृ ६१)।

पाढिआ स्त्री [पाठिका] पढ़नेवाली स्त्री (कप्पू)।

पाढिउ } वि [पाठयितृ] अध्यापक, पढ़ाने-
पाढिर } वाला (प्राकृ ६१)।

पाढीण पुं [पाठीन] मत्स्य-विशेष, 'पोठिया' मछली, मत्स्य की एक जाति (गा ४१४, विक्र ३२)।

पाढोआमास पु [पृथगामर्श] बारहवें अंग-ग्रंथ का एक भाग (णादि २३५)।

पाण सक [प्र + आनय्] जिलाना। वकृ. पाणअंत (नाट—मालती ५)।

पाण पुस्त्री [दे] श्वपच, चण्डाल (दे ६, ३८, उप पृ १५४, महा, पाअ, ठा ४, ४, वव १)। स्त्री °णी (सुख ६, १, महा)। °उडी स्त्री [°कुटी] चाण्डाल की झोपड़ी (गा २२७)। °विलया स्त्री [°वनिता] चाण्डाली (उप ७६८ टी)। °डवर पुं [°डम्बर] यक्ष-विशेष (वव ७)। °हिवइ पु [°धिपति] चाण्डाल-नायक (महा)।

पाण न [पान] १ पीना, पीने की क्रिया (सुर ३, १०)। २ पीने की चीज, पानी आदि (सुज्ज २० टी, पडि; महा, आचा)। ३ पुं. गुच्छ-विशेष, 'सणपाणकासमद्दगअग्घाडगसामसिंदुवारे य' (पणण १)। °पत्त न [°पात्र] पीने का भाजन, प्याला (दे) °गार न [°गार] मद्य-गृह (णाया १, २, म्हा)। °हार पु [°हार] एकाशन तप (सवोध ५८)।

पाण पुन [प्राण] १ जीवन के आधार-भूत ये दश पदार्थ—पाँच इन्द्रियाँ, मन, वचन और शरीर का बल, उच्छ्वास तथा निःश्वास (जी २६, .. १, ६)। २ ममय-'पाणाणि चेवं विणिहंति मंदा' (सूअ १, ७, १६, ठा ६, आचा, कप्प)। ४ जीवित, जीवन (सुपा २६२, ५८३, कप्पू)। °इत्त वि [°वत्] प्राणवाला, प्राणी (पि ६००)। °क्खय पु [°त्यय] प्राण-नाश (सुपा २६८, ६१६) °च्चाय पु [°त्याग] मरण, मौत (सुर ४, १७०)। °जाइय वि [°जातिक] प्राणी, जीव, जन्तु (आचा १, ६, १, १)। °नाह पुं [°नाथ] प्राणनाथ, पति, स्वामी (रंभा)। °प्पिया स्त्री [°प्रिया] स्त्री, पत्नी (सुर १, १०८)। °वह पु [°वध] हिंसा (पण्ह १, १)। °वित्ति स्त्री [°वृत्ति] जीवन-निर्वाह (महा)। °सम पु [°सम] पति, स्वामी (पाअ)। °सुहुम न [°सूक्ष्म] सूक्ष्म जन्तु (कप्प)। °हिय वि [°हृत] प्राण-नाशक (रंभा)। °इत वि [°वत्] प्राणवाला, प्राणी (प्राप्र)। °इवाइया स्त्री [°तिपातिकी] क्रिया-विशेष, हिंसा से होनेवाला कर्म-बन्ध (नव १७)। °इवाय पु [°तिपात] हिंसा (उवा)। °उ पुन [°युस्] ग्रन्थांश विशेष, बारहवाँ पूर्व (सम २५, २६)। °पाण, °पाणु पुंन [°पान] उच्छ्वास और निःश्वास (धर्मसं १०८, ६८)। °याम पु [°याम] योगाङ्ग-विशेष—रेचक, कुम्भक और पूरक नामक प्राणों को दमने का उपाय (गउड)।

पाणतकर वि [प्राणान्तकर] प्राण-नाशक (सुपा ६१४)।

पाणतिय वि [प्राणान्तिक] प्राण-नाशवाला, 'पाणंतियावई पहु!' (सुपा ४५२)।

पाणग पुन [पानक] १ पेय-द्रव्य-विशेष (पचभा १, सुज्ज २० टी, कप्प)। २ वि. पान करनेवाला (?), 'ण पाणगो ज ततो अएणो' (धर्मसं ८२, ७८)।

पाणद्धि स्त्री [दे] रथ्या, मुहल्ला (दे ६, ३९)।

पाणम अक [प्र + अण्] निःश्वास लेना, नीचे सासना। पाणमति (सम २, भग)।

पाणय न [पानक] देखो पाण = पान (विसे २५७८)।

पाणय पु [प्राणत] स्वर्ग-विशेष, दसवाँ देवलोक (सम ३७, भग, कप्प)। २ विमानेन्द्रक, देवविमान-विशेष (देवेन्द्र १३५)। ३ प्राणत स्वर्ग का इन्द्र (ठा ४, ४)। ४ प्राणत देवलोक में रहनेवाला देव (अणु)।

पाणहा स्त्री [उपानह्] जूता, 'पाणहाओ य छत्त च णालीय वालवीयणं' (सूअ १, ६, १८)।

पाणाअअ पुं [दे] श्वपच, चाण्डाल (दे ६, ३८)।

पाणाम पु [प्राण] निःश्वास (भग)।

पाणामा स्त्री [प्राणामी] दीक्षा-विशेष (भग ३, १)।

पाणाली स्त्री [दे] दो हाथों का प्रहार (दे ६, ४०)।

पाणि पुं [प्राणिन्] जीव, आत्मा, चेतन (आचा, प्रासू १३६, १४४)।

पाणि पु [पाणि] हस्त, हाथ (कुमा, स्वप्न ५३, ६०)। °गहण देखो °ग्गहण (भवि)। °ग्गह पुं [°ग्रह] विवाह (सुपा ३७३, धर्मवि १२३)। °ग्गहण न [°ग्रहण] विवाह, शादी (विपा १, ६, स्वप्न ६३, भवि)।

पाणिअ न [पानीय] पानी, जल (हे १, १०१, प्राप्र, पण्ह १, ३, कुमा)। °धारिया स्त्री [°धारिका] पनिहारी, 'जियसत्तुस्स रएणो पाणियघ(? ध)रियं सद्दावेइ' (णाया १, १२—पत्र १७५)। °हारी स्त्री [°हारी] पनिहारी (दे ६, ५६, भवि)। देखो पाणीअ।

पाणिणि पुं [पाणिनि] एक प्रसिद्ध व्याकरणकार ऋषि (हे २, १४७)।

पाणिणीअ वि [पाणिनीय] पाणिनि सबन्धी, पाणिनि का (हे २, १४७)।

पाणी देखो पाण = (दे)।

पाणी स्त्री [पानी] वल्ली-विशेष, 'पाणी सामावल्ली गुंजावल्ली य वत्थाणी' (पणण १—पत्र ३३)।

पणीअ देखो पाणिअ (हे १, १०१, प्रासू १०५)। °धरी स्त्री [°धरी] पनिहारी (णाया १, १ टी—पत्र ४३)।

पाणु पुन [प्राण] १ प्राण वायु। २ श्वासोच्छ्वास (कम्म ५, ४०, औप, कप्प)। ३ समय-परिमाण-विशेष, 'एगे ऊसासनीसासे एस पाणुत्ति वुच्चइ। सत्त पाणूणि से थोवे' (तदु ३२)।

पिट्ट सक [पिट्टय्] पीटना, ताडन करना। पिट्टइ, पिट्टेइ (ग्राचा, पिंग, गा १७१, सिरि ६५५)। वकृ पिट्टंत (पिंग)।

पिट्ट न [दे] पेट, उदर (पचा ३, १६, धर्मवि ६६, चेइय २३८, करु २६, सुपा ५६३, सं २१)।

पिट्टण न [पिट्टन] ताडन, ग्राघात (सूग्र २, २, ६२, पिंड ३४, पराह १, १, ग्रोघ ५६६, उप ५०६)।

पिट्टण न [पीडन] पीडा, क्लेश (सूग्र २, २, ५५)।

पिट्टणा स्त्री [पिट्टना] ताडन (ग्रोघ ३५७)।

पिट्टावणया स्त्री [पिट्टना] ताडन कराना (भग ३, ३—पत्र १८२)।

पिट्टिय वि [पिट्टित] पीटा हुग्रा, ताडित (सुख २, १५)।

पिट्ठ न [पिष्ट] तराडुल ग्रादि का ग्राटा, चूर्ण (गाया १, १, ३, दे १, ७८, गा ३८८)।

पिट्ठ न [पृष्ठ] पीठ, शरीर के पीछे का हिस्सा (ग्रौप, उव)। °ओ ग्र [°तस्] पीछे से, पृष्ठ भाग से (उवा, विपा १, १, ग्रौप)। °करंडग न [°करण्डक] पृष्ठ-वंश, पीठ की बडी हड्डी (तंदु ३५)। °चर वि [°चर] पृष्ठ-गामी, ग्रनुयायी (कुमा)। देखो पिट्ठि।

पिट्ठ वि [स्पृष्ट] १ छुग्रा हुग्रा। २ न स्पर्श (पव १५७)।

पिट्ठ वि [पृष्ट] १ पूछा हुग्रा। २ न प्रश्न, पृच्छा, 'जंपसि विगाग्रं ग जपसे पिट्ठं' (गा ६४३)।

पिट्ठत न [दे पृष्टान्त] गुदा, गाँड (दे ६, ४६)।

पिट्ठखउरा स्त्री [दे] पङ्क, सुरा, कलुष मदिरा (दे ६, ५०)।

पिट्ठखउरिआ स्त्री [दे] मदिरा, दारू (पाग्र)।

पिट्ठव्व वि [प्रष्टव्य] पूछने योग्य, 'नियक-रक्कीदोवि किंकरी किं पिट्ठि (?ट्ठ) व्वा' (रंभा)।

पिट्ठायय पुंन [पिष्टातक] केसर ग्रादि गन्ध-द्रव्य (गउड, स ७३४)।

पिट्ठि स्त्री [पृष्ठ] पीठ, शरीर के पीछे का भाग (हे १, १२६, गाया १, ६, रंभा, कुमा, षड्)। °ग वि [°ग] पीछे चलनेवाला (श्रा १२)। °चम्पा स्त्री [°चम्पा] चम्पा नगरी के पास की एक नगरी (कप्प)। °मंस न [°मांस] परोक्ष में ग्रन्य के दोष का कीर्तन, 'पिट्ठिमस न खाइज्जा' (दस ८, ४७)। °मंसिय वि [°मांसिक] परोक्ष में दोष बोलनेवाला, पीछे निन्दा करनेवाला (सम ३७)। °माइया स्त्री [°मातृका] एक ग्रनुत्तर-गामिनी स्त्री, 'चंदिमा पिट्ठिमाइया' (ग्रनु २)। देखो पिट्ठ = पृष्ठ।

पिट्ठी स्त्री [पैष्टी] ग्राटा की बनी हुई मदिरा (बृह २)।

पिड पुं [पिट] १ वंश-पत्र ग्रादि का बना हुग्रा पात्र-विशेष। २ कब्जा, ग्रधीनता, 'जा ताव तेगां भगियं रे रे रे वाल मह पिडे पडिग्रो' (सुपा १७६)।

पिडग देखो पिडय = पिटक (ग्रौप, उवा, सुज्ज १६)।

पिडच्छा स्त्री [दे] सखी (दे ६, ४६)।

पिडय न [पिटक] १ वंशमय पात्र-विशेष, 'भोयणंपि (? पि) डयं करेति' (गाया १, १—पत्र ८६)। २ दो चन्द्र ग्रौर दो सूर्यो का समूह (सुज्ज १६)।

पिडय वि [दे] ग्राविग्न (षड्)।

पिडव सक [अर्ज्] पैदा करना, उपार्जन करना। पिडवइ (षड्)।

पिडिआ स्त्री [पिटिका] १ वंश-मय भाजन-विशेष (दे ४, ७, ६, १)। २ छोटी मञ्जूषा पेटी, पिटारी (उप ५८७, ५६७ टी)।

पिड्ड सक [पीडय्] पीडना। पिड्डइ (ग्राचा, (पि २७६)।

पिड्ड ग्रक [भ्रंश्] नीचे गिरना। पिड्डइ (षड्)।

पिड्डुइअ वि [दे] प्रशान्त (षड्)।

पिढ ग्र [पृथक्] ग्रलग, जुदा (षड्)।

पिढर पुन [पिठर] १ भाजन-विशेष, स्थाली (पाग्र, ग्राचा, कुमा)। २ गृह-विशेष। ३ मुस्ता, मोथा। ४ मन्थान दराड, मथनिया (हे १; २०१, षड्)।

पिणद्ध सक [पि + नह्, पिनि + धा] १ ढकना। २ पहिनना। ३ पहिराना। ४ बाँधना। पिगाद्धइ, पिगाद्धेइ (पि ५५६)। हेकृ. पिणद्धुं, पिणद्धित्तए (ग्रमि १८५, राज)।

पिणद्ध वि [पिनद्ध] १ पहना हुग्रा (पाग्र; ग्रौप, गा ३२८)। २ बद्ध, यन्त्रित (राय)। ३ पहनाया हुग्रा, 'निगमउडोवि पिगाद्धो तस्स सिरे रयगाचिचइग्रो' (सुपा १२५)।

पिणद्धाविद (शौ) वि [पिनिधापित] पह-नाया हुग्रा (नाट—शकु ६८)।

पिणाइ पुं [पिनाकिन्] महादेव, शिव (पाग्र; गउड)।

पिणाई स्त्री [दे] ग्राज्ञा, ग्रादेश (दे ६, ४८)।

पिणाग पुन [पिनाक] १ शिव-धनुष। २ महादेव का शूलास्त्र (धर्मवि ३१)।

पिणागि देखो पिणाइ (धर्मवि ३१)।

पिणाय देखो पिणाग (गउड)।

पिणाय पु [दे] बलात्कार (दे ६, ४६)।

पिणिद्ध वि [पिनद्ध, पिनिहित] देखो पिणद्ध = पिनद्ध; (पराह २, ४—पत्र १३०, कप्प, ग्रौप)।

पिणिधा सक [पिनि + धा] देखो पिणद्ध = पि + नह्। हेकृ. पिणिधत्तए (ग्रौप; पि ५७८)।

पिण्णाग देखो पिन्नाग (राज)।

पिण्णिया स्त्री [दे पिण्यिका] गन्ध द्रव्य विशेष, ध्यामक, गन्ध-तृण (उत्तनि ३)।

पिण्ही स्त्री [दे] क्षामा, कृश स्त्री (दे ६, ४६)।

पित्त पुंन [पित्त] शरीर-स्थित धातु-विशेष, तिक्त धातु (भग, उव)। °ज्जर पुं [°ज्वर] पित्त से होता बुखार (गाया १, १)। °मुच्छा स्त्री [°मूर्च्छा] पित्त की प्रबलता से होनेवाली बेहोशी (पडि)।

पित्तल न [पित्तल] धातु-विशेष, पीतल (कुप्र १४४)।

पित्तिज्ज, पित्तिय पुं [पितृव्य] चाचा, पिता का भाई (कप्प, सम्मत्त १७२, सिरि २६३, धर्मवि १२७, स ४६५, सुपा ३३४)।

पित्तिय वि [पैत्तिक] पित्त का, पित्त-संबन्धी (तंदु १६, गाया १, १, ग्रौप)।

पिधं ग्र [पृथक्] ग्रलग, जुदा (हे १, १८८, कुमा)।

पिधाण देखो पिहाण (नाट—विक्र १०३)।

पिन्नाग, पिन्नाय पुं [पिण्याक] खली, तिल ग्रादि का तेल निकाल लेने पर जो उसका

°ट्ठवण, °ठवण न [°स्थापन] जैन मुनियों का एक उपकरण, पात्र रखने का वस्त्र-खण्ड (विसे २५५२ टी, ओघ ६६८)। °णिज्जोग, °निज्जोग पुं [°निर्योग] जैन माधु का यह उपकरण-समूह—पात्र, पात्रबन्ध, पात्रस्थापन, पात्रकेसरिका, पटल, रजत्राण और गुच्छक (पिंड २६, बृह ३, विसे २५५२ टी)। °पडिमा स्त्री [°प्रतिमा] पात्र-संबन्धी अभिग्रह—प्रतिज्ञा-विशेष (ठा ४, ३)। देखो पाद = पात्र।

पाय (अप) देखो पत्त = प्राप्त (पिंग)।

पायं° अ [प्रायस्] प्राय, बहुत करके; 'पायप्पाणं वरणेइ त्ति' (पिंड ४४३)।

°पाय पुं. व. [°पाद] पूज्य, 'सधुआ अजिअ-सतिपायया' (अजि ३४)।

पायए देखो पा = पा।

पायं देखो पाय° (स ७६१, सुपा २८, ५६६, श्रावक ७३)।

पाय अ [प्रातस्] प्रभात (सूअ १, ७, १४)।

पायंगुट्ठ पुं [पादाङ्गुष्ठ] पैर का अंगूठा (णाया १, ८)।

पायंजलि पुं [पातञ्जल] पतञ्जलिकृत शास्त्र, पातञ्जल योग-सूत्र (णंदि १९४)।

पायंत न [पादान्त] गीत का एक भेद, पाद-वृद्धगीत (राय ५४)।

पायंदुय पुं [पादान्दुक] पैर बाँधने का काष्ठमय उपकरण (विपा १, ६—पत्र ६६)।

पायक देखो पायय = पातक (वव १)।

पायक्क देखो पाइक्क (सम्मत्त १७६)।

पायक्खिणण न [प्रादक्षिण्य] प्रदक्षिणा (पउम ३२, ९२)।

पायग न [पातक] पाप (श्रावक २४८)।

पायच्छित्त पुंन [प्रायश्चित्त] पाप-नाशन कर्म, पाप-क्षय करनेवाला कर्म, 'पारचिओ नाम पायच्छित्तो सवुत्तो' (सम्मत्त १४४, उवा, औप, नव २९)।

पायड देखो पागड = प्र + कटय्। पायडइ (भवि)। वकृ. पायडंत (सुपा २५६)। कवकृ. पायडिज्जंत (गा ६८५)। हेकृ. पायडिउं (कुप्र १)।

पायड न [दे] अगण, आँगन (दे ६, ४०)।

पायड देखो पागड = प्रकट (हे १, ४४, प्राप्र, ओघ ७३, जी २२, प्रासू ६४)।

पायड देखो पागड = प्राकृत, 'अइपि दाव दिअसे णअरं परिब्भमिअ अलद्धभोआ पाअ-डगणिआ विअ रत्ति पस्सदो सइदु आअच्छामि' (अवि २६)।

पायड वि [प्रावृत] आच्छादित (विसे २५७६ टी)।

पायडिअ वि [प्रकटित] व्यक्त किया हुआ (कुप्र ४, से १, ५३, गा १६६, २६०, गउड, स ४६८)।

पायडिल्ल वि [प्रकट] खुला (वज्जा १०८)।

पायण न [पायन] पिलाना, पान कराना (णाया १, ७)।

पायत्त न [पादात] पदाति-समूह, प्यादों का लश्कर (उत्त १८, २; औप, कप्प)। °ाणिय न [°ानीक] पदाति सैन्य (पि ८०)।

पायपुंछण न [पादपुञ्छन] पात्र-विशेष, शराव, सकोरा।

पायप्पहण पुं [दे] कुक्कुट, मुर्गा (दे ६, ४५)।

पायय न [पातक] पाप (अच्चु ४३)।

पायय देखो पाव = पाप (पाअ)।

पायय देखो पागय (हे १, ६७)।

पायय देखो पायव (सि ६, ७)।

पायय देखो पावय = पावक (अभि १२५)।

पावय देखो पाय = पाद (कप्प)।

पायरास पु [प्रातराश] प्रात काल का भोजन, जलपान, जलखवा (आचा, णाया १ ८)।

पायल न [दे] चक्षु, आँख (दे ६, ३८)।

पायव पुं [पादप] वृक्ष, पेड़ (पाअ)।

पायव्व देखो पा = पा।

पायस पुन [पायस] दूध का मिष्टान्न, खीर, 'पायसो खीरी' (पाअ, सुपा ४३८)।

पायसो अ [प्रायशस्] प्राय, बहुत कर (उप ४४६, पंचा ३, २७)।

पायार पुं [प्राकार] किला, कोट, दुर्ग (पाअ, हे १, २६८, कुमा)।

पायाल न [पाताल] रसा-तल, अधो भुवन (हे १, १८०, पाअ)। °कलश पुं [°कलश] समुद्र के मध्य में स्थित कलशाकार वस्तु (अणु)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (पउम ४५, ३९)। °मंदिर न [°मन्दिर] पाताल-स्थित गृह (महा)। °हर न [°गृह] वही अर्थ (महा)।

पायाल न [पाददल] पादात्य सैन्य, पैदल सैनिक (चउप्पन्न० पत्र० १८५)।

पायालकारपुर न [पाताललङ्कापुर] पाताल-लंका, रावण की राजधानी, 'पायालंकारपुरं सिग्घ पत्ता भउव्विग्गा' (पउम ६, २०१)।

पायावच्च न [प्राजापत्य] अहोरात्र का चौद-हवाँ मुहूर्त (सम ५१)।

पायाविय वि [पायित] पिलाया हुआ (पउम ११, ४१)।

पायाहिण न [प्रादक्षिण्य] १ वेष्टन (पव ६१)। २ दक्षिण की ओर, 'पायाहिणेण तिहि पतिआहिं झाएह लद्धिपए' (सिरि १९९)।

पायाहिणा देखो पयाहिणा, 'पायाहिणं करितो' (उत्त ९, ५९, सुख ९, ५९)।

पार अक [शक्] सकना, करने मे समर्थ होना। पारइ, पारेइ (हे ४, ८६, पाअ)। वकृ. पारत (कुमा)।

पार सक [पारय्] पार पहुँचना, पूर्ण करना। पारेइ (हे ४, ८६, पाअ) हेकृ. पारित्तए (भग १२, १)।

पार पुन [पार] १ तट, किनारा (आचा)। २ पर्ला, किनारा, 'परतीरं पारं' (पाअ), 'किह म्ह होही भवजलहिपारं' (निसा ५)। ३ परलोक, आगामी जन्म। ४ मनुष्य-लोक-भिन्न नरक आदि (सूअ १, ६, २८)। ५ मोक्ष, मुक्ति, निर्वाण, 'पार पुणणुत्तरं बुहा विंति' (बृह ४)। °ग वि [°ग] पार जाने-वाला (औप, सुपा २५४)। °गय वि [°गत] १ पार-प्राप्त (भग, औप)। २ पुं. जिन-देव, भगवान् अर्हन् (उप १३२ टी)। °गामि वि [°गामिन्] पर पहुँचनेवाला (आचा, कप्प, औप)। °पाणग न [°पानक] पेय द्रव्य-विशेष (णाया १, १७)। °विउ वि [°विद्] पार को जाननेवाला (सूअ २, १, ६०)। °ाभोय वि [°ाभोग] पार-प्रापक (कप्प)।

पिसुणिअ वि [कथित] १ कहा हुआ। २ सूचित (सुपा २२३, पात्र, कुप्र २७८)।

पिसुमय (पै) पु [विस्मय] आश्चर्य (प्राकृ १२४)।

पिह सक [स्पृह्] इच्छा करना, चाहना। पिहाइ (भग ३, २—पत्र १७३)। संकृ. पिहाइत्ता (भग ३, २)।

पिह वि [पृथक्] भिन्न, जुदा, 'पिहप्पिहाए' (विसे ८४८)।

पिह अ [पृथक्] अलग (हे १, १३७, षड)।

पिहड पुं [दे] १ वाद्य-विशेष। २ वि. विवर्ण (दे ६, ७६)।

पिहड देखो पिढर (हे १, २०१, कुमा, उवा)।

पिहण न [पिधान] १ ढक्कन, पिहान (सुर १६, १६५)। २ ढकना, आच्छादन (पचा १, ३२, सबोध ४६, सुपा १२१)।

पिहणया स्त्री [पिधान] आच्छादन, ढकना (स ५१)।

पिहय देखो पिह = पृथक् (कुमा)।

पिहा सक [पि + धा] १ ढकना। २ बँद करना। पिहाइ (भग ३,२)। सकृ. पिहाइत्ता, पिहिऊण (भग ३, २, महा)।

पिहाण देखो पिहण (ठा ४, ४, रत्न २५, कप्प)।

पिहाणिआ स्त्री [पिधानिका] ढकनी (पात्र)।

पिहाणी स्त्री [पिधानी] ऊपर देखो (दे)।

पिहिअ वि [पिहित] १ ढका हुआ। २ बँद किया हुआ (पात्र, कस, ठा २, ४—पत्र ६६, सुपा ६३०)। °स्सव वि [°स्रव] १ जिसने आस्रव को रोका हो (दस ४)। २ पु. एक जैन मुनि का नाम (पउम २०, १८)।

पिहिण देखो पिहण, 'आणवणे पेसवणे पिहिणे ववएस मच्छरे चेव' (श्रा ३०, पडि)।

पिहिमि° (अप) स्त्री [पृथिवी] भूमि, धरती। °पाल पुं [°पाल] राजा (भवि)।

पिहीकय वि [पृथक्कृत] अलग किया हुआ (पिंड ३६१)।

पिहु वि [पृथु] १ विस्तीर्ण (कुमा)। २ पुं. एक राजा का नाम (पउम ६८, ३४)। °रोम पुं [°रोम] मीन, मत्स्य (दे ६, ५० टी)।

पिहु देखो पिह = पृथक् (सुर १३, ३६, सण)।

पिहु° देखो पिहुय, 'पिहुखज्ज त्ति नो वए' (दस ७, ३४)।

पिहुंड न [पिहुण्ड] नगर-विशेष (उत्त २१, २)।

पिहुण [दे] देखो पेहुण (आचा २, १, ७, ६)। °हत्थ पु [°हस्त] मयूर-पिच्छ का किया हुआ पँखा (आचा २, १, ७, ६)।

पिहुत्त देखो पुहुत्त (तंदु ४)।

पिहुय पुन [पृथुक] खाद्य-विशेष, चिउडा (आचा २, १, १, ३, ४)।

पिहुल वि [पृथुल] विस्तीर्ण (पण्ह १, ४, औप, दे ६, १४३, कुमा)।

पिहुल न [दे] मुँह के वायु से बजाया जाता तृण-वाद्य (दे ६, ४७)।

पिहे देखो पिहा। पिहेइ, पिहे (उत्त २६, ११, सूअ १, २, २, १३)। संकृ. पिहेऊण (पि ५८६)।

पिहो अ [पृथक्] अलग, भिन्न (विसे १०)।

पिहोअर वि [दे] तनु, कृश, दुर्बल (दे ६, ५०)।

पी सक [पी] पान करना। वकृ. 'तम्मुहस-संककंतिपीऊसपूरं पीयमाणो' (रयण ५१)।

पीअ पु [पीत] १ पीत वर्ण, पीला रँग। २ वि. पीत वर्णवाला, पीला (हे २, १७३, कुमा, प्राप्र)। ३ जिसका पान किया गया हो वह (से १, ४०, दे ६, १४४)। ४ जिसने पान किया हो वह (प्राप्र)।

पीअ वि [प्रीत] प्रीति-युक्त, संतुष्ट (औप)।

पीअर (अप) नीचे देखो (पिंग)।

पीअल देखो पीअ = पीत (हे २, १७३, प्राप्र)।

पीअसी स्त्री [प्रेयसी] प्रेम-पात्र स्त्री (कुमा)।

पीइ पुं [दे] अश्व, घोडा (दे ६, ५१)।

पीइ, पीई° } स्त्री [प्रीति] १ प्रेम, अनुराग (कप्प; महा)। २ रावण की एक पत्नी का नाम (पउम ७४, ११)। °कर पुंन [°कर] एक विमानावास, आठवाँ ग्रैवेयक-विमान (देवेन्द्र १३७, पव १९४)। °गम न [°गम] महाशुक्र देवेन्द्र का एक यान-विमान (इक, औप)। °दाण न [°दान] हर्ष होने के कारण दिया जाता दान, पारितोषिक (औप; सुर ४,६१)। °धम्मिय न [°धार्मिक] जैन मुनियों का एक कुल (कप्प)। °मण वि [°मनस्] १ प्रीति-युक्त चित्तवाला (भग)। २ पु. महाशुक्र देवलोक का एक यान विमान (ठा ८—पत्र ४३७)। °वद्धण पु [°वर्धन] कार्तिक मास का लोकोत्तर नाम (सुज्ज १०, १६; कप्प)।

पीईय पुं [दे] वृक्ष-विशेष, गुल्म का एक भेद, 'पीईयनाणकणइरकुज्जय तह सिन्दुवारे य' (पण्ण १)।

पीऊस न [पीयूष] अमृत, सुधा (पात्र)।

पीड सक [पीडय्] १ हैरान करना। २ दबाना। पीडइ, पीडंतु (पिंग, हे ४, ३८५)। कर्म. पीडिज्जइ (पिंग)। कवकृ. पीडिज्जंत, पीडिज्जमाण (से ११, १०२, गा ५४१, मण)।

पीड° देखो पीडा। °यर वि [°कर] पीड़ा-कारक (पउम १०३, १४३)।

पीडरइ स्त्री [दे] चोर की स्त्री (दे ६, ५१)।

पीडा स्त्री [पीडा] पीडन, हैरानी, वेदना (पात्र)। °कर त्रि [°कर] पीडा-कारक; 'अलियं न भासियव्वं अत्थि हु सच्चंपि जं न वत्तव्वं। सच्चंपि तं न सच्चं जं परपीडाकरं वयणं' (श्रा ११, प्रासू १५०)।

पीडिअ वि [पीडित] १ पीडा से जो दुःखी हो वह, अभिभूत, पराजित, व्याकुल, दुःखित। २ दबाया गया (हे १, २०३, महा, पात्र)।

पीढ पुन [पीठ] १ आसन, पीढा, 'पीढं विट्ठरं आसणं' (पात्र; रयण ६३)। २ आसन विशेष, व्रती का आसन (चड, हे १, १०६, उवा, औप)। ३ तल; 'चत्तूण नेडपीढं' (कुमा)। ४ पुं एक जैन महर्षि (सट्ठि ८१ टी)। °बंध पुं [°बन्ध] ग्रंथ की अवतरणिका, भूमिका, 'नय पीढबन्ध-रहियं कहिज्जमाणंपि देइ भावत्थं' (पउम ३, १६)। °मद्द, °मद्दअ पुस्त्री [°मर्दक] काम-पुरुषार्थ में सहायक नायक का समीपवर्ती पुरुष, राजा आदि का वयस्य विशेष (णाया १, १—पत्र १६, कप्प)। स्त्री. °मद्दिआ (मा १६)। °सप्पि वि [°सर्पिन्] पंगु-विशेष (आचा)।

पारावर पुं [दे] गवाक्ष, वातायन (दे ६, ४३)।

पारावार पुं [पारावार] समुद्र सागर (पाअ, कुप्र ३७८)।

पाराविअ वि [पारित] जिसको पारण कराया गया हो वह (कुप्र २१२)।

पारासर पुं [पाराशर] १ ऋषि-विशेष (सूअ १, ३, ४, ३)। २ न गोत्र-विशेष, जो वशिष्ठ गोत्र की एक शाखा है। ३ वि. उस गोत्र मे उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३९०)। ४ पु भिक्षुक। ५ कर्म-त्यागी सन्यासी, 'अतेवि पारासरा अत्थि' (सुख २, ३१)।

पारिओसिय वि [पारितोषिक] तुष्टि-जनक दान, प्रसन्नता-सूचक दान, पुरस्कार (सम्मत्त १२२, स १९३, सुर १६, १८२, विचार १७१)।

पारिच्छा देखो परिच्छा, 'वयपरिणामे चिंता गिह समप्पेमि तामि पारिच्छा' (उप १७३, उप पृ २७५)।

पारिच्छेज्ज देखो परिच्छेज्ज (णाया १, ८—पत्र १३२)।

पारिजाअ देखो पारिय = पारिजात (कुमा)।

पारिट्ठावणिया स्त्री [पारिष्ठापनिकी] समिति-विशेष, मल आदि के उत्सर्ग मे सम्यक् प्रवृत्ति (सम १०, औप, कप्प)।

पारिडि स्त्री [प्रावृति] प्रावरण, वस्त्र, कपडा, 'विक्किणइ माहमासम्मि पामरो पारिडिं वइल्लेण' (गा २३८)।

पारिणामिअ देखो परिणामिअ = पारिणामिक (अणु, कम्म ४, ६९)।

पारिणामिआ } देखो परिणामिआ (आव पारिणामिगी } १, णाया १, १—पत्र ११)।

पारितावणिया स्त्री [पारितापनिकी] दूसरे को परिताप—दुःख उपजाने से होनेवाला कर्म-बन्ध (सम १०)।

पारितावणी स्त्री [पारितापनी] ऊपर देखो (नव १७)।

पारितोसिअ देखो पारिओसिय (नाट, सुपा २७, प्रामा)।

पारित्त देखो पारत्त = परत्र, 'पारित्त विइज्जओ धम्मो' (तदु ५६)।

पारिप्पव पु [पारिप्लव] पक्षि-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८)।

पारिभद्द पुं [पारिभद्र] वृक्ष-विशेष, फरहद का पेड (कप्पू)।

पारिय वि [पारित] पूर्ण किया हुआ (रयण १६)।

पारिय पु [पारिजात] १ देव-वृक्ष-विशेष, कल्प तरु-विशेष। २ फरहद का पेड, 'कप्पूर-पारियाण य अहिअयरो मालईगंधो' (कुमा ५, १३)। ३ न पुष्प-विशेष, फरहद का फूल जो रक्त वर्ण का और अत्यन्त शोभायमान होता है, 'मुहिए ण विढप्पइ पारियचिछ सुडीरह खडइ वसइ लच्छि' (भवि)।

पारियत्त पुं [पारियात्र] देश-विशेष, 'परिब्भमतो पत्तो पारियत्तविसय' (कुप्र ३६६)।

पारियल्ल न [दे परिवर्त] पहिए के पृष्ठ भाग की बाह्य परिधि (गादि ४३)।

पारियाय देखो पारिय = पारिजात (सुपा ७९, से ९, ५८, महा, स ७५९)।

पारियावणिया देखो पारितावणिया (ठा २, १—पत्र ३९)।

पारियावणिया देखो पारियावणिया (स ५५१)।

पारियासिय वि [पारिवासित] वासी रखा हुआ (कस)।

पारिव्वज्ज न [पारिव्राज्य] सन्यासिपन, संन्यास (पउम ८२, २४)।

पारिव्वाई स्त्री [पारिव्राजी, परिव्राजिका] सन्यासिनी (उप पृ २७९)।

पारिव्वाय वि [पारिव्राज] सन्यासि-सबन्धी (राज)।

पारिसज्ज वि [पारिषद्य] सभ्य, सभासद (धर्मवि ९)।

पारिसाडणिया स्त्री [पारिशाटनिकी] परिशाटन—परित्याग से होनेवाला कर्म-बन्ध (आव ४)।

पारिहच्छी स्त्री [दे] माला (दे ६, ४२)।

पारिहट्टी स्त्री [दे] १ प्रतिहारी। २ आकृष्टि, आकर्षण। ३ चिर-प्रसूता महिषी, बहुत देर से व्यायी हुई भैंस (दे ६, ७२)।

पारिहत्थिय वि [पारिहस्तिक] स्वभाव से निपुण (ठा ९—पत्र ४५१)।

पारिहारिय वि [पारिहारिक] तपस्वी-विशेष, परिहार नामक व्रत करनेवाला (कस)।

पारिहासय न [पारिहासक] कुल-विशेष, जैन मुनियो के एक कुल का नाम (कप्प)।

पारी स्त्री [दे] दोहन-भाण्ड, जिसमे दोहन किया जाता है वह पात्र-विशेष (दे ६, ३७, गउड ५७७)।

पारीण वि [पारीण] पार-प्राप्त, 'धीवरसत्थाण पारीणो' (धर्मवि १३, सिरि ४८६, सम्मत्त ७५)।

पारुअग्ग पु [दे] विश्राम (दे ६, ४४)।

पारुअल्ल पुं [दे] पृथुक, चिउडा (दे ६, ४४)।

पारुसिय देखो फारुसिय (आचा १, ६, ४, १ टि)।

पारुहल्ल वि [दे] मालीकृत, श्रेणी रूप से स्थापित, 'पालीवधं च पारुहल्लोम्मि' (दे ६, ४५)।

पारेवई स्त्री [पारापती] कबूतरी, कबूतर की मादा (विपा १, ३)।

पारेवय पुं [पारापत] १ पक्षि-विशेष, कबूतर (हे १, ८०, कुमा, सुपा ३२८)। २ वृक्ष-विशेष। ३ न फल-विशेष (पण्ण १७)।

पारोक्ख वि [पारोक्ष] परोक्ष-विषयक, परोक्ष-संबन्धी (धर्मसं ५०२)।

पारोह देखो परोह (हे १, ४४, गा ५७५, गउड)।

पारोहि वि [प्ररोहिन्] प्ररोहवाला, अकुरवाला (गउड)।

पाल सक [पालय्] पालन करना, रक्षण करना। पालेइ (भग, महा)। वकृ. पालयत, पालत, पालित, पालेमाण (सुर २, ७१, स ४९, महा, औप, कप्प)। सकृ. पालइत्ता, पालित्ता, पालेऊण (कप्प, महि), पालेवि (अप) (हे ४, ४४१)। कृ पालियव्व, पालेयव्व (सुपा ४३५, ३७९, महा)।

पाल देखो पार = पारय्। सकृ पालइत्ता (कप्प)।

पाल पु [दे] १ कलवार, शराब वेचनेवाला। २ वि. जीर्ण, फटा-टूटा (दे ६, ७५)।

पाल पुंन [पाल] आभूषण-विशेष, 'मुरविं वा पाल वा तिसरय वा कडिसुत्तगं वा' (औप)। २ वि. पालक पालन-कर्ता; 'जो सयलसिंधु-सायरहो पालु' (भवि)। स्त्री. °ला (वव ४)।

पुंछ पुंन [पुच्छ] पूँछ, लाङ्गूल (प्राकृ १२, हे १, २६)।

पुंछण न [प्रोञ्छन] १ मार्जन (कप्प, उवा, सुपा २६०)। २ रजोहरण, जैन मुनि का एक उपकरण (बृह १)।

पुंछणी स्त्री [प्रोञ्छनी] पोछने का एक छोटा तृणमय उपकरण (राय)।

पुंछिअ वि [प्रोञ्छित] पोंछा हुआ, मृष्ट (पाअ; कुमा, भवि)।

पुंज सक [पुञ्ज्, पुञ्जय्] १ इकट्ठा करना। २ फैलाना, विस्तार करना। पुंजइ (हे ४, १०२, भवि)। कर्म. पुंजिज्जइ (कप्पू)। कवकृ. पुंजइज्जमाण (से १२, ८६)।

पुंज पुंन [पुञ्ज] ढेर, राशि (कप्प, कस, कुमा), 'खारिक्कपुंजयाइ ठावइ' (सिरि ११९६)।

पुंजइअ वि [पुञ्जित] १ एकत्रित (से ६, ६३, पउम ८, २६१)। २ व्याप्त, भरपूर (पउम ८, २६१)।

पुंजइज्जमाण देखो पुंज = पुञ्ज्।

पुंजक } वि [पुञ्जक] १ राशि रूप से
पुंजय } स्थित, 'न उण पुंजकपुंजका' (पिंड ८२)। २ देखो पुंज = पुञ्ज।

पुंजय पुंन [दे] कतवार, गुजराती में 'पूंजो', 'काओवि तहिं पुंजयपुंछण-
छउमेण निययपावरयं।
अवणितीओ इव
सारविति जिणमंदिरंगणयं'
(सुपा २६०)।

पुंजाय वि [दे] पिण्डाकार किया हुआ, 'पुंजाय पिंडलइयं' (पाअ)।

पुंजाविय वि [पुञ्जित] एकत्रित कराया हुआ (काल)।

पुंजिअ वि [पुञ्जित] एकत्रित (से ५, ७२, कुमा; कप्पू)।

पुंड पुं [पुण्ड्र] १ देश-विशेष, विन्ध्याचल के समीप का भू-भाग (स २२५, भग १५)। २ इक्षु-विशेष (पउम ४२, ११, गा ७४०)। ३ वि. पुण्ड्र-देशीय (पउम ६६, ५५)। ४ धवल, श्वेत, सफेद (णाया १, १७ टी—पत्र २३१)। ५ पुंन. तिलक (स ६, पिंडभा ४३; कुप्र २६४)। ६ देव-विमान विशेष (सम २२)। °वद्धण न [°वर्धन] नगर-विशेष (स २२५)। देखो पोंड।

पुंडइअ वि [दे] पिण्डीकृत, पिण्डाकार किया हुआ (दे ६, ५४)।

पुंडरिक देखो पुंडरीअ (सूअ २, १, १)।

पुंडरिकि वि [पुण्डरीकिन्] पुण्डरीकवाला (सूअ २, १, १)।

पुंडरिगिणी स्त्री [पुण्डरीकिणी] पुष्कलावती विजय की एक नगरी (णाया १, १६, इक, कुप्र २६५)।

पुंडरिय देखो पुंडरीअ = पुण्डरीक, पौण्डरीक (उव, काल, पि ३५४)।

पुंडरीअ पुं [पुण्डरीक] १ ग्यारह रुद्र पुरुषों में सातवाँ रुद्र (विचार ४७३)। २ एक राजा, महापद्म राजा का एक पुत्र (कुप्र २६५, णाया १, १६)। ३ व्याघ्र, शार्दूल (पाअ)। ४ पुंन. तप-विशेष (पव २७१)। ५ श्वेत पद्म, सफेद कमल (सूअनि १४५)। ६ कमल, पद्म, 'अंबुरुहं सयवत्तं सरोरुहं पुंडरीअमरविंदं' (पाअ, सम १, कप्प)। ६ देव-विमान विशेष (सम ३५)। ७ वि. श्वेत, सफेद (संग १३२)। °गुम्म न [°गुल्म] देव-विमान-विशेष (सम ३५)। °दह, °द्दह पु [°द्रह] शिखरी पर्वत पर का एक महा-ह्रद (ठा २, ३, सम १०४)।

पुंडरीअ वि [पौण्डरीक] १ श्वेत पद्म का, श्वेत-पद्म-संबन्धी (सूअनि १४५)। २ प्रधान, मुख्य। ३ कान्त, श्रेष्ठ, उत्तम (सूअनि १४७, १४८)। ४ न. सूत्रकृताङ्ग सूत्र के द्वितीय श्रुतस्कन्ध का पहला अध्ययन (सूअनि १५७)। देखो पोंडरीग।

पुंडरीया स्त्री [पुण्डरीका] देखो पोंडरी (राज)।

पुंडे अ [दे] जाओ (दे ६, ५२)।

पुंढ देखो पुंड (उप ७६५)।

पुंढ पुं [दे] गर्त, गड्ढा, गडा (दे ६, ५२)।

पुंनाग पुं [पुन्नाग] १ वृक्ष-विशेष, पुष्प-प्रधान एक वृक्ष-जाति, पुन्नाग, पुलाक, सुलतान चम्पक, पाटल का गाछ (उप पृ १८, ७६८ टी, सम्मत्त १७५)। २ श्रेष्ठ पुरुष, उत्तम मर्द (धम्म १२ टी; सम्मत्त १७५)। देखो पुन्नाम।

पुंपुअ पुं [दे] संगम (दे ६, ५२)।

पुंभ पुंन [दे] नीरस, दाडिम का छिलका (?), 'मग्गइ अलत्तयं जा निपीलिय पुंभमप्पए ताव' (धर्मवि ६७), ['अलत्तए मग्गिए नीरस पणामेइ' (महा ५६)]।

पुंवउ पुंन [पुंवचस्] व्याकरणोक्त संस्कार-युक्त शब्द-विशेष, पुंलिंग शब्द (पण्ण ११—पत्र ३६३)।

पुंवेय पुं [पुंवेद] १ पुरुष को स्त्री-स्पर्श का अभिलाष। २ उसका कारण-भूत कर्म (पि ४१२)।

पुंस सक [पुंस्, मृज्] मार्जन करना, पोछना। पुंसइ (हे ४, १०५)।

पुंस° देखो पुं°। °कोइल, °कोइलग पुं [°कोकिल] मरदाना कोयल, पिक (ठा १०—पत्र ५६६, पि ४१२)।

पुंसण न [पुंसन] मार्जन (कुमा)।

पुंसद्द पुं [पुंशब्द] 'पुरुष' ऐसा नाम (कुमा)।

पुंसली स्त्री [पुंश्चली] कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री (वज्जा ६८, धर्मवि १३७)।

पुंसिअ वि [पुंसित] पोंछा हुआ (दे १, ६६)।

पुक्क } सक [पूत् + कृ] पुकारना, हाँकना,
पुक्कर } आह्वान करना। पुक्करेह (धम्म ११ टी)। वकृ. पुक्कंत, पुक्करंत (पण्ह १, ३—पत्र ४५, श्रा १२)। देखो पोक्क।

पुक्करिय वि [पूत्कृत] पुकारा हुआ (सुपा ३८१)।

पुक्कल देखो पुक्खल (पण्ह २, ५—पत्र १५१)।

पुक्का स्त्री. देखो पुक्कार = पूत्कार (पाअ, सुपा ५१७)।

पुक्कार देखो पुक्कर। पुक्कारेंति (राय)। वकृ. पुक्कारंत, पुक्कारिंत, पुक्कारेमाण (सुपा ४१५, ३८१, २४८, णाया १, १८)।

पुक्कार पुं [पूत्कार] पुकार, हाँक, आह्वान (सुपा ५१७, महा, सण)।

पुक्खर देखो पोक्खर = पुष्कर (कप्प; महा; पि १२५)। °कण्णिया स्त्री [°कर्णिका]

पावरण पु [प्रावरण] एक म्लेच्छ जाति (मृच्छ १५२)।

पावरण न [प्रावरण] वस्त्र, कपडा (हे १, १७५)।

पावरिय वि [प्रावृत] आच्छादित (कुप्र ३८)।

पावस देखो पाउस (कुप्र ११७)।

पावा स्त्री [पापा] नगरी विशेष, जो आजकल भी विहार के पास पावापुरी के नाम से प्रसिद्ध है (कप्प, ती ३, पंचा १६, १७, पव ३४, विचार ४६)।

पावाइ त्रि [प्रवादिन्] वाचाट, दार्शनिक (सूत्र २, ६, ११)।

पावाइअ वि [प्राव्राजिक] संन्यासी (रयण २२)।

पावाइअ वि [प्रावादिक] देखो पावाइ (आचा)।

पावाइअ } वि [प्रावादुक] वाचाट, दार्श-
पावादुय } निक (सूत्र १, १, ३, १३, २, २, ८०, पि २६५)।

पावार पु [प्रावार] १ रुँछावाला कपडा। २ मोटा कम्बल (पव ८४)।

पावारय देखो पारय = प्रावारक (हे १ २७१, कुमा)।

पावालिआ स्त्री [प्रपापालिका] प्रपा या प्याऊ पर नियुक्त स्त्री (गा १६१)।

पावासु } वि [प्रवासिन्, °क] प्रवास
पावासुअ } करनेवाला (पि १०५, हे १, ६५, कुमा)।

पाविअ वि [प्राप्त] लब्ध, मिला हुआ (सुर ३, १६, स ६८६)।

पाविअ वि [प्रापित] प्राप्त कराया हुआ (सण, नाट—मृच्छ २७)।

पाविअ वि [प्लावित] सराबोर किया हुआ, खूब भिजाया हुआ (कुमा)।

पाविट्ठ वि [पापिष्ठ] अत्यन्त पापी (उव ७२८ टी, सुर १, २१३, २, २०५, सुपा १६६, श्रा १४)।

पावीढ देखो पाय-वीढ (पउम ३, १, हे १, २७०, कुमा)।

पावीयंस देखो पावस (पि ४०६, ४१४)।

पावुअ वि [प्रावृत] आच्छादित (सक्षि ४)।

पावेज्जमाण देखो पाव = प्र + आप।

पावेस वि [प्रावेश्य] प्रवेशोचित, प्रवेश के लायक (औप)।

पावेस पुं [प्रावेश] वस्त्र के दोनो तरफ लटकता रुंछा (णाया १, १)।

पास सक [दृश्] १ देखना। २ जानना। पासइ, पासेइ (कप्प)। पासिम = 'पश्य' (आचा १, ३, ३, ५)। कर्म. पासिज्जइ (पि ७०)। वकृ. पासत, पासमाण (स ७५, कप्प)। सकृ पासिउ, पासित्ता, पासित्ताण, पासिया (पि ४६५, कप्प, पि ५८३, महा)। हेकृ. पासित्तए, पासिउं (पि ५७८, ५७७)। कृ. पासियव्व (कप्प)।

पास पुं [पार्श्व] १ वर्तमान अवसर्पिणी-काल के तेईसवें जिन-देव (सम १३, ४३)। २ भगवान् पार्श्वनाथ का अधिष्ठायक यक्ष (सति ८)। ३ न. कन्धा के नीचे का भाग, पाँजर (णाया १, १६)। ४ समीप, निकट (सुर ४, १७६)। °वच्चिज्ज वि [°पत्यीय] भगवान् पार्श्वनाथ की परम्परा मे संजात (भग)।

पास पुं [पाश] फाँसा, बन्धन-रज्जू (सुर ४, ३३७; औप, कुमा)।

पास न [दे] १ आँख। २ दाँत। ३ कुन्त, प्रास। ४ वि विशोभ, कुडौल, शोभा हीन (दे ६, ७५)। ५ पुन अन्य वस्तु का अल्प-मिश्रण, 'निच्चुओ तंबोलो पासेण विणा न होइ जह रंगो' (भाव २)।

°पास वि [°पाश] अपसद, निकृष्ट, जघन्य, कुत्सित, 'एस पासंडियपासो कि करिस्सइ' (सम्मत्त १०२)।

पासंगिअ वि [प्रासङ्गिक] प्रसंग-संबन्धी, आनुषंगिक (कुम्मा २७)।

पासंड न [पासण्ड] १ पाखण्ड, असत्य धर्म, धर्म का ढोंग (ठा १०, णाया १, ८, उवा, श्राव ६)। २ व्रत (अणु)।

पासंडि } वि [पासण्डिन्, °क] १
पासंडिय } पाखंडी, लोक मे पूजा पाने के लिए धर्म का ढोंग रचनेवाला (महानि ४, कुप्र २७६, सुपा ६६, १०६, १६२)। २ पुं व्रती, साधु, मुनि, 'पव्वइए अणगारे पासंडे (? डी) चरग तावसे भिक्खू। परिवाइए य समणे' (दसनि २—गाथा १६४)।

पासंदण न [प्रस्यन्दन] झरन, टपकना (वृह १)।

पासग वि [दर्शक] देखनेवाला (आचा)।

पासग पुं [पाशक] १ फाँसा, बन्धन-रज्जु (उप पृ १३, सुर ४, २५०)। २ पासा, जुआ खेलने का उपकरण-विशेष (जं ३)।

पासग न [प्राशक] कला-विशेष (औप)।

पासण न [दर्शन] अवलोकन, निरीक्षण (पिंड ४७५, उप ६७७, ओघ ५४, सुपा ३७)।

पासणया स्त्री. ऊपर देखो (ओघ ६३, उप १४८, णाया १, १)।

पासणिअ वि [दे] साक्षी (दे ६, ४१)।

पासणिअ वि [प्राश्निक] प्रश्न-कर्ता (सूत्र १, २, २, २८, आचा)।

पासत्थ वि [पार्श्वस्थ] १ पार्श्व मे स्थित, निकट-स्थित (पउम ६८, १८, स २६७, सूत्र १, १, २, ५)। २ शिथिलाचारी साधु (उप ८३३ टी, गाहा १, ५, ६,—पत्र २०६, सार्ध ८८)।

पासत्थ वि [पाशस्थ] पाश में फँसा हुआ, पाशित (सूत्र १, १, २, ५)।

पासल्ल न [दे] १ द्वार (दे ६, ७६)। २ वि. तिर्यक्, वक्र (दे ६, ७६, से ६, ६२, गउड)।

पासल्ल देखो पास = पार्श्व (से ६, ३८, गउड)।

पासल्ल अक [तिर्यञ्च्, पार्श्वाय्] १ वक्र होना। २ पार्श्व घुमाना, 'पासल्लति महिहरा' (से ६, ४५)। वकृ पासल्लंत (से ६, ४१)।

पासल्लइअ देखो पासल्लिअ (से ६, ७७)।

पासल्लि वि [पार्श्विन्] पार्श्व-शयित, 'उत्ताण-गपासल्ली नेसज्जी वावि ठाण ठाइत्ता' (पव ६७, पचा १८, १५)।

पासल्लिअ वि [पार्श्वित, तिर्यक्त] १ पार्श्व में किया हुआ। २ टेढा किया हुआ (गउड, पि ५६५)।

पासवण न [प्रस्रवण] मूत्र, पेशाव (सम १०, कस, कप्प, उवा, सुपा ६२०)।

पासाईय देखो पासादीय (सम १३७, उवा)।

पासाकुसुम न [पाशाकुसुम] पुष्प-विशेष, 'छप्पअ गम्मसु सिसिरं पासाकुसुमेहि ताव, मा मरसु' (गा ८१६)।

पुट्ठ वि [पुष्ट] उपचित (णाया १, ३, स ४१६)।

पुट्ठ देखो पिट्ठ = पृष्ठ (प्राप्र, संक्षि १६)।

पुट्ठव वि [स्पृष्टवत्] जिसने स्पर्श किया हो वह (आचा १, ७, ८, ८)।

पुट्ठवई देखो पोट्ठवई (सुज्ज १०, ६)।

पुट्ठवया स्त्री [प्रोष्ठपदा] नक्षत्र-विशेष (सुज्ज १०, ५)।

पुट्ठि स्त्री [पुष्टि] पोषण, उपचय (विसे २२१, चेइय ८)। २ अहिंसा, दया (पण्ह २, १—पत्र ६६)। °म वि [°मत्] १ पुष्टिवाला। २ पु भगवान् महावीर का एक शिष्य (अनु)।

पुट्ठि देखो पिट्ठि = पृष्ठ, 'पाअपडिअस्स पइणो पुट्ठि पुत्ते समारुहतम्मि' (गा ११, ३३, ८७, प्राप्र, संक्षि १६)।

पुट्ठि स्त्री [पृष्टि] पृच्छा, प्रश्न। °य वि [°ज] प्रश्न-जनित (ठा २, १—पत्र ४०)।

पुट्ठि स्त्री [स्पृष्टि] स्पर्श। °य वि [°ज] स्पर्श-जनित (ठा २, १)।

पुट्ठिया स्त्री [पृष्टिका] प्रश्न से होनेवाली क्रिया—कर्मबन्ध (ठा २, १)।

पुट्ठिया स्त्री [स्पृष्टिका] स्पर्श से होनेवाली क्रिया—कर्मबन्ध (ठा २, १)।

पुट्ठिल देखो पोट्टिल (अनु २)।

पुट्ठीया स्त्री [स्पृष्टीया] देखो पुट्ठिया = स्पृष्टिका (नव १८)।

पुट्ठीया स्त्री [पृष्टीया] पृच्छा से होनेवाली क्रिया—कर्मबन्ध (नव १८)।

पुड पुं [पुट] १ परिमाण-विशेष। २ पुट-परिमित वस्तु (राय ३४)।

पुड पुन [पुट] १ मिथ सबन्ध, परस्पर जोडान, मिलाव, मिलान, 'अजलिपुड—', 'ताहे करयलपुडेण नीओ सो' (औप, महा)। २ खाल, ढोल आदि का चमडा, 'दुरुम्मपुड-सठाणसठिया' (उवा ६४ टी, गउड ११६७, कुमा)। ३ सबद्ध दलद्वय, मिला हुआ दो दल, 'सिप्पपुडसठिया' (उवा, गउड ५७६)। ४ ओषधि पकाने का पात्र-विशेष (णाया १, १३)। ५ पत्रादि-रचित पात्र, दोना (रंभा)। ६ आच्छादन, ढक्कन (उवा, गउड)। ७ कमल, पद्म, 'पुडइणी' (विक्र २३)। °भेयण न [°भेदन] नगर, शहर (कस)। °वाय पुं [°पाक] १ पुट-पात्रो से ओषधि का पाक-विशेष। २ पाक-निष्पन्न ओषध-विशेष, 'पुढ (? ड) वाएहिं' (णाया १, १३—पत्र १८१)।

पुड (शौ) देखो पुत्त = पुत्र (पि २६२, प्राप्र)।

पुडइअ वि [दे] पिण्डीकृत, एकत्रित (दे ६, ५४)।

पुडइणी स्त्री [दे पुटकिनी] नलिनी, कम-लिनी (दे ६, ५५, विक्र २३)।

पुडग पुंन [पुटक] देखो पुट = पुट (उवा)।

पुडपुडी स्त्री [दे] मुँह से सीटी बजाना, एक प्रकार की अव्यक्त आवाज (पव ३८)।

पुडम देखो पुढम (प्रति ७१, पि १०४)।

पुडय देखो पुडग (उवा, सुपा ६५६)।

पुडिंग न [दे] मुँह, वदन। २ बिन्दु (दे ६, ८०)।

पुडिया स्त्री [पुटिका] पुडी, पुडिया (दे ५, १२)।

पुड्ड (शौ) देखो पुत्त = पुत्र (प्राप्र)।

पुढ देखो पिहं (षड्)।

पुढम वि [प्रथम] पहला (हे १, ५५, कुमा, स्वप्न २३१)।

पुढवि° देखो पुढवी (आचानि १, १, २, भग १६, ३, पि ६७)। °काइय, °क्काइय वि [°कायिक] पृथिवी शरीरवाला (जीव), (पण्ण १, भग १६, ३, ठा १, आचानि १, १, २)। °क्काय देखो पुढवी-काय (आचानि १, १, २)।

पुढवी स्त्री [पृथिवी] १ पृथिवी, धरती, भूमि (हे १, ८८, १३१, ठा ३, ४)। २ काठि-न्यादि गुणवाला पदार्थ, द्रव्य-विशेष—मृत्तिका पाषाण, धातु आदि (पण्ण १)। ३ पृथिवीकाय का जीव (जी २)। ४ ईशा-नेन्द्र के एक लोकपाल की अग्र-महिषी (ठा ४, १—पत्र २०४)। ५ एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६)। ६ भगवान सुपार्श्वनाथ की माता का नाम (राज)। °काइय देखो पुढवि-काइय (राज)। °काय वि [°काय] पृथिवी शरीरवाला (जीव), (आचानि १, १, २)। °वइ पुं [°पति] राजा (ठा ७)। °सत्थ न [°शस्त्र] १ पृथिवी रूप शस्त्र। २ पृथिवी का शस्त्र, हल, कुद्दाल आदि (आचा)। देखो पुहई, पुहवी।

पुढीभूय वि [पृथग्भूत] जो अलग हुआ हो (सुपा २२६)।

पुढुम वि [प्रथम] पहला, आद्य (हे १, ५५, कुमा)।

पुढो अ [पृथग्] अलग, भिन्न (सुपा ३६२, रयण ३०, श्रावक ४०, आचा)। °छंद वि [°छन्द] विभिन्न अभिप्रायवाला (आचा, पि ७८)। °जण पुं [°जन] प्राकृत मनुष्य, साधारण लोक (सूअ १, ३, १, ६)। °जिय पुं [°जीव] विभिन्न प्राणी (सूअ १, १, २, ३)। °विमाय, °वेमाय वि [°विमात्र] अनेक प्रकार का, बहुविध (राज, ठा ४, ४—पत्र २८०)।

पुढोजग वि [दे पृथग्जक] पृथग्भूत, भिन्न व्यस्थित, 'जमिएा जगती पुढोजगा' (सूअ १, २, १, ४)।

पुढोवम वि [पृथिव्युपम] पृथिवी की तरह सब सहन करनेवाला (सूअ १, ६, २६)।

पुढोसिय वि [पृथिवीश्रित] पृथिवी के आश्रय मे रहा हुआ (सूअ १, १२,१३, आचा)।

पुण सक [पू] १ पवित्र करना। २ धान्य आदि को तुषरहित करना, साफ करना। पुणइ (हे ४, २४१)। पुणति (णाया १, ७)। कर्म. पुणिज्जइ, पुव्वइ (हे ४, २४२)।

पुण अ [पुनर्] इन अर्थो का सूचक अव्यय—१ भेद विशेष (विसे ८११)। २ अवधारण, निश्चय। ३ अधिकार, प्रस्ताव। ४ द्वितीय वार, वारान्तर। ५ पक्षान्तर। ६ समुच्चय (पण्ह २, ३, गउड, कुमा, औप, जी ३७, प्रासू ६, ५२, १६८, स्वप्न ७२, पिंग)। ७ पादपूर्ति में भी इसका प्रयोग होता है (निचू १)। °करण न [°करण] फिर से बनाना। २ वि. जिसकी फिर से बनावट की जाय वह, 'मिर्स्सं सख न होइ पुणकरणं' (उव)। °ण्णव वि [°नव] फिर से नया बना हुआ, ताजा (उप ७६८ टी, कप्पू)। °पुण अ [°पुनर्] फिर-फिर, बारंबार। °पुणकरण न [°पुन करण] फिर फिर बनाना, बारंबार निर्माण (दे १,

कुमा)। °अमा स्त्री [°तमा] पत्नी, भार्या (कुमा)। °अर वि [°कर] प्रीति-जनक (नाट—पिंग)। °कारिणी स्त्री [°कारिणी] भगवान् महावीर की माता का नाम, त्रिशला देवी (कप्प)। °गंथ पु [°ग्रन्थ] एक प्राचीन जैन मुनि, आचार्य सुस्थित और सुप्रतिबद्ध का एक शिष्य (कप्प)। °जाअ वि [°जाय] जिसको पत्नी प्रिय हो वह (गा ५१८)। °जाआ स्त्री [°जाया] प्रेम-पात्र पत्नी (गा १६६)। °दंसण वि [°दर्शन] १ जिसका दर्शन प्रिय—प्रीतिकर हो वह (णाया १, १—पत्र १६, औप)। २ पुं. देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७६)। °दंसणा स्त्री [°दर्शना] भगवान् महावीर की पुत्री का नाम (आवम)। °धम्म वि [°धर्मन्] १ धर्म की श्रद्धावाला (णाया १, ८)। २ पुं. श्री रामचन्द्र के साथ जैन दीक्षा लेनेवाला एक राजा (पउम ८५, ५)। °भाउग पुं [°भ्रातृ] पति का भाई (उप ६४८ टी)। °भासि वि [°भाषिन्] प्रिय-वक्ता (महा ५८)। °मित्त पुं [°मित्र] १ एक जैन मुनि, जो अपने पीछले भव मे पाँचवाँ वासुदेव हुआ था (पउम २०, १७१)। °मेलय वि [°मेलक] १ प्रिय का मेल—संयोग करानेवाला। २ न. एक तीर्थ (स ५५१)। °उय वि [°आयुष्क] जीवित-प्रिय (आचा)। °ायग वि [°ायत, °ात्मक] आत्म-प्रिय (आचा)।

पिअ देखो पीअ, 'पीआपीअ पिआपिअं' (प्राप्र; सण, भवि)।

पिअ° देखो पिउ (प्रासू ७६, १०८)। °हर न [°गृह] पिता का घर, पीहर, नैहर, मैका (पउम १७, ७)।

पिअआ देखो पिआ (श्रा १६)।

पिअइउ (अप) वि [प्रीणयितृ] प्रीति उप-जानेवाला, खुश करनेवाला (भवि)।

पिअउल्लिय (अप) देखो पिआ (भवि)।

पिअंकर वि [प्रियंकर] १ अभीष्ट-कर्ता, इष्ट-जनक (उत्त ११, १४)। २ पु. एक चक्रवर्त्ती राजा (उप ६७२)। ३ रामचन्द्र के पुत्र लव का पूर्व जन्म का नाम (पउम १०४, २६)।

पिअंगु पुं [प्रियङ्गु] १ वृक्ष-विशेष, प्रियगु, ककू दनी का पेड़ (पाम, औप, सम १५२)। २ कगु, मालकाँगनी का पेड़, 'पियंगुणो कंगू' (पाम)। ३ स्त्री. एक स्त्री का नाम (विवा १, १०)। °लइया स्त्री [°लतिका] एक स्त्री का नाम (महा)।

पिअंवय वि [प्रियंवद] मधुर-भाषी (सुर १, ६५, ४, ११८, महा)।

पिअंवाइ वि [प्रियवादिन्] ऊपर देखो (उत्त ११, १४, सुख ११, १४)।

पिअण न [दे] दुग्ध, दूध (दे ६, ४८)।

पिअण न [पान] पीना, 'तुहयन्नपियणनिरय' (धर्मवि १२५, सुख ३, १, उप १३९ टी; स २६३, सुपा २४५, चेइय ५७०)।

पिअणा स्त्री [पृतना] सेना विशेष, जिसमे २४३ हाथी, २४३ रथ, ७२९ घोड़े और १२१५ प्यादें हो वह लश्कर (पउम ५६, ६)।

पिअमा स्त्री [दे] प्रियंगु वृक्ष (दे ६, ४६, पाम)।

पिअमाहवी स्त्री [दे] कोकिला, पिकी (दे ६, ५१, पाम)।

पिअय पु [प्रियक] वृक्ष-विशेष, विजयसार का पेड़ (औप)।

पिअर पुंन [पितृ] १ माता-पिता, मा-बाप, 'सुणउ निणएयमिमं पियरा', 'पियराइ स्य-ताइं' (धर्मवि १२२)। २ पुं पिता, बाप (प्राप्र)।

पिअरंज सक [भञ्ज्] भाँगना, तोड़ना। पिअरंजइ (प्राकृ. ७४)।

पिअल (अप) देखो पिअ = प्रिय (पिंग)।

पिआ स्त्री [प्रिया] पत्नी, कान्ता, भार्या (कुमा, हेका ६६)।

पिआमह पुं [पितामह] १ ब्रह्मा, चतुरानन (से १,१७, पाम, उप ५६७ टी, स २३१)। २ पिता का पिता, दादा (उव)। °तणअ पु [°तनय] जाम्बवान्, वानर-विशेष (से ४, ३७)। °त्थ न [°ास्त्र] अस्त्र-विशेष, ब्रह्मास्त्र (से १५, ३७)।

पिआमही स्त्री [पितामही] पिता की माता, दादी (सुपा ४७२)।

पिआर (अप)। वि [प्रियतर] प्यारा (कुप्र ३२, भवि)।

पिआरी (अप) स्त्री [प्रियतरा] प्यारी, प्रिया, पत्नी (पिंग)।

पिआल पु [प्रियाल] वृक्ष-विशेष, पियाल, चिरौंजी का पेड़ (कुमा, पाम, दे ३, २१; पएण १)।

पिआलु पुं [प्रियालु] वृक्ष-विशेष, खिन्नी, खिरनी का गाछ (उर २, १३)।

पियासा देखो पिवासा (गा ८१४)।

पिइ देखो पीइ, 'तेण पिइए सिट्ठं' (पउम ११, १४)।

पिइ पुं [पितृ] १ पिता, बाप (उप ७२८ टी)। २ मघा-नक्षत्र का अधिष्ठायक देव (सुज्ज १०, १२, पि ३६१)। °मेह पुं [°मेध] यज्ञ-विशेष, जिसमे बाप का होम किया जाय वह यज्ञ (पउम ११, ४२)। °वण न [°वन] श्मशान (सुपा ३५६)। °हर न [°गृह] पिता का घर, पीहर (पउम १८, ७, सुर ६, २३६)। देखो पिउ।

पिइज्ज पुं [पितृव्य] चाचा, बाप का भाई, 'सुपासो वीरजिणपिइज्जो (? ज्ज)' (विचार ४७८)।

पिइय वि [पैतृक] पिता का, पितृ-संबन्धी (भग)।

पिउ } पुं [पितृ] १ बाप पिता (सुर १, पिउअ } १७६, औप, उव, हे १, १३१)। २ पुंन माँ बाप, माता-पिता, 'अन्नया मह पिऊणि गामं पत्ताइं' (धर्मवि १४७ सुपा ३२६)। °कम्म पुं [°क्रम] पितृ-वंश, पितृ-कुल (कुमा)। °कुल न [°कुल] पिता का वंश (पड्)। °घर न [°गृह] पिता का घर, पीहर (सुपा ६०१)। °च्छा, °च्छी स्त्री [°ष्वसृ] पिता की बहिन, फूआ, बूआ, फूफू (गा ११०, हे २, १४२, पाम, णाया १, १६), 'कोंति पिउच्छिय (? च्छि) सक्कारेइ' (णाया १, १६—पत्र २१६)। °पिंड पु [°पिण्ड] मृतक-भोजन, श्राद्ध मे दिया जाता भोजन (आचा २, १, २)। °भगिणी स्त्री [°भगिनी] फूफी, पिता की बहिन (सुर ३, ८२)। °वइ पु [°पति] यम, यमराज (हे १, १३४)। °वण न [°वन] श्मशान (पउम १०५, ५१, पाम, हे १, १३४)। °सिआ स्त्री [°ष्वसृ] फूफी (हे

पुत्ती स्त्री [पोती] १ वस्त्र-खण्ड, मुख-वस्त्रिका (पव ६०, संबोध ५४)। २ साडी, कटी-वस्त्र (धर्मवि १७)। देखो पोत्ती।

पुत्तुल्ल पु [पुत्र] पुत्र, लडका (प्राकृ ३५)।

पुत्थ वि [दे] मृदु, कोमल (दे ६, ५२)।

पुत्थ } पुंन [पुस्त, °क] १ लेप्यादि कर्म पुत्थय } (श्रा १)। २ पुस्तक, पोथी, किताब, 'पुत्थए लिहावेइ' (कुप्र ३४८), 'अवहरिओ पुत्थओ सहसा' (सम्मत्त ११८)। देखो पोत्थ।

पुथवी देखो पुढवी (चड)।

पुथुणी } (पै) देखो पुढवी (प्राकृ १२४, पुथुवी } पि १६०)। °नाथ (पै) पु [°नाथ] राजा (प्राकृ १२४)।

पुध देखो पिह = पृथक् (ठा १०)।

पुधं देखो पिध (हे १, १८८)।

पुधम } (पै) देखो पुढम, पुढुम (पि पुधुम } १०४, हे ४, ३१६)।

पुन्न देखो पुण्ण = पुन्य, 'कह मह इत्तियापुन्ना जं सो दीसिज्ज पच्चक्ख' (सुर १२, ११८, उप ७६८टी, कुमा)। °कंखिअ वि [°काङ्क्षित, °काङ्क्षिन्] पुण्य की चाहवाला (भग)। °कलस पु [°कलश] एक राजा का नाम (उव ७६८ टी)। °जसा स्त्री [°यशस्] एक स्त्री का नाम (उप ७२८ टी) °पत्तिया स्त्री [°प्रत्यया] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)। °पिवासय वि [°पिपासक] पुण्य का प्यासा, पुण्य की चाहवाला (भग)। °भागि वि [°भागिन्] पुण्य का भागी, पुण्य-शाली (सुपा ६४१)। °सम्म पु [°शर्मन्] एक ब्राह्मण का नाम (उप ७२८ टी)। °सार पुं [°सार] एक स्वनाम-ख्यात श्रेष्ठी (उप ७२८ टी)।

पुन्न देखो पुण्ण = पूर्ण (सुर २, ६७, उप ७६८ टी, ठा २, ३, अनु २)। °तल्ल पुं [°तल] एक जैन मुनि-गच्छ (कुप्र ६)। °पाय वि [°प्राय] करीब-करीब संपूर्ण, कुछ कम पूर्ण (उप ७२८ टी)। °भद्द पुं [°भद्र] १ यक्ष-विशेष (सिरि ६६६)। २ यक्ष-निकाय एक इन्द्र (ठा २, ३)। ३ एक अन्तकृद् मुनि (अंत १८)। ४ एक जैन मुनि, आर्य श्री सभूतविजय का एक शिष्य (कप्प)।

पुन्नयण पुं [पुण्यजन] यक्ष, एक देव-जाति (पाअ)।

पुन्नाग } देखो पुंनाग (कप्प, कुमा, पउम पुन्नाम } २१, ४६, पाअ)। ३ न. पुन्नाग का पुन्नाय } फूल (कुमा, हे १, १६०)।

पुन्नालिया } [दे] देखो पुण्णाली (सुपा पुन्नाली } ५६६, ५६७)।

पुन्निमा देखो पुण्णिमा (रंभा)।

पुप्पुअ वि [दे] पीन, पुष्ट, उपचित (दे ६, ५२)।

पुप्फ न [पुष्प] १ फूल, कुसुम (णाया १,१; कप्प, सुर ३,६५, कुमा)। एक विमानावास, देवविमान-विशेष (देवेन्द्र १३५, सम ३८)। ३ स्त्री का रज। ४ विकास। ५ आँख का एक रोग। ६ कुवेर का विमान (हे १, २३६, २, ५३, ६०, १५४)। °गिरि पुं [गिरि] एक पर्वत का नाम (पउम ७६, १०)। °कंत न [°कान्त] एक देव-विमान, 'पुप्फकंत' (सम ३८)। °करडय पु [°करण्डक] हस्तिशीर्ष नगर का एक उद्यान, 'पुप्फकरडए उज्जाणे' (विपा २, १)। °केउ पुं [°केतु] १ ऐरवत क्षेत्र का सातवाँ भावी तीर्थंकर— जिनदेव (सम १५४)। २ ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३)। °ग न [°क] १ मूल भाग, 'भाणस्स पुप्फगतो इमेहिं कज्जेहिं पडिलेहे' (ओघ २८६)। २ पुष्प, फूल (कप्प)। ३ देखो नीचे °य (औप)। °चूला स्त्री [°चूला] १ भगवान् पार्श्वनाथ की मुख्य शिष्या का नाम (सम १५२, कप्प)। २ एक महासती, अन्निकाचार्य की सुयोग्य शिष्या (पडि)। ३ सुवाहुकुमार की मुख्य पत्नी का नाम (विपा २, १)। °चूलिया स्त्री [°चूलिका] एक जैन ग्रन्थ (निर १, ४)। °च्चणिया स्त्री [°र्चनिका] पुष्पों से पूजा (णाया १, २)। °च्चिणिया स्त्री [°चायिनी] फूल विननेवाली स्त्री (पाअ)। °छज्जिया स्त्री [°छादिका] पुष्प-पात्र-विशेष (राज)। °ज्झय न [°ध्वज] एक देव-विमान (सम ३८)। °णंदि पुं [°नन्दिन्] एक राजा का नाम (ठा १०)। °णालिया देखो °नालिया (तंदु)। °दंत पुं [°दन्त] १ नववाँ जिनदेव, श्री सुविधिनाथ (सम ६२, ठा २, ४)। २ ईशानेन्द्र के हस्ति-सैन्य का अधिपति देव (ठा ५, १; इक)। ३ देव-विशेष (सिरि ६६७)। °दंती स्त्री [°दन्ती] दमयन्ती की माता का नाम, एक रानी (कुप्र ४८)। °नालिया स्त्री [°नालिका] पुष्प का बँट—डंठल (तंदु ४)। °निज्जास पुं [°निर्यास] पुष्प-रस (जीव ३)। °पुर न [°पुर] पाटलिपुत्र, पटना शहर (राज)। °पूरय पु [°पूरक] पुष्प की रचना-विशेष (णाया १, १६)। °प्पभ न [°प्रभ] एक देव-विमान (सम ३८)। °बलि पुं [°बलि] उपचार, पुष्प-पूजा (पाअ)। °बाण पुं [°बाण] कामदेव (रंभा)। °भद्द स्त्रीन [°भद्र] नगर-विशेष, पटना शहर (राज)। °मंत वि [°वत्] पुष्पवाला (णाया १, १)। °माल न [°माल] वैताढ्य की उत्तर श्रेणि का एक नगर (इक)। °माला स्त्री [°माल] ऊर्ध्व लोक मे रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७)। °य पुं [°क] १ फेन, डिण्डीर (पाअ)। २ न. ईशानेन्द्र का एक पारियानिक विमान, देव-विमान-विशेष (ठा ८, इक, पउम ७६, २८, औप)। ३ पुष्प, फूल (कप्प)। ४ ललाट का एक पुष्पाकार आभूषण (जं २)। देखो ऊपर °ग। °लाई, °लावी स्त्री [°लावी] फूल विननेवाली स्त्री (पाअ दे १, ६)। °लेस न [°लेश्य] एक देव-विमान (सम ३८)। °वई स्त्री [°वती] १ ऋतुमती स्त्री (दे ६, ६४, गा ४८०)। २ सत्पुरुष नामक किंपुरुषेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १, णाया २)। ३ बीसवें जिनदेव की प्रवर्त्तिनी—प्रमुख साध्वी का नाम (सम १५२, पव ६)। ४ चैत्य-विशेष (भग)। °वण्ण न [°वर्ण] एक देव-विमान (सम ३८)। °सिंग न [°शृङ्ग] एक देव-विमान (सम ३८)। °सिद्ध न [°सिद्ध] देव-विमान-विशेष (सम ३८)। °सुय पुं [°शुक] व्यक्ति-वाचक नाम (उव)। °ावत्त न [°ावर्त्त] एक देव-विमान (सम ३८)।

पुप्फस न [दे] फेफसा, शरीर का एक भीतरी अंग (पउम १०५, ५५)।

पुप्फा स्त्री [दे] फूफी, पिता की बहिन (दे ६, ५२)।

पिंडग पुं [पिण्डक] ऊपर देखो (कस)।

पिंडण न [पिण्डन] १ द्रव्यों का एकत्र संश्लेष (पिंडभा २)। २ ज्ञानावरणीयादि कर्म (पिंड ६६)।

पिंडणा स्त्री [पिण्डना] १ समूह (ओघ ४०७)। २ द्रव्यों का परस्पर संयोजन (पिंड २)।

पिंडय देखो पिंड (ओघभा ३३)।

पिंडरय न [दे] दाडिम, अनार (दे ६, ४८)।

पिंडलइय वि [दे] पिण्डीकृत, पिण्डाकार किया हुआ (दे ६, ५४, पाअ)।

पिंडलग न [दे] पटलक, पुष्प का भाजन (ठा ७)।

पिंडवाइअ वि [पिण्डपातिक, पैण्डपातिक] भक्त-लाभवाला, जिसको भिक्षा में आहार की प्राप्ति हो वह (ठा ५, १, कस, औप, प्राकृ ९)।

पिंडार पुं [पिण्डार] गोप, ग्वाला (गा ७३१)।

पिडालु पु [पिण्डालु] कन्द-विशेष (श्रा २०)।

पिंडि° देखो पिंडी (भग, णाया १, १ टी—पत्र ५)।

पिडिम वि [पिण्डिम] १ पिण्ड से बना हुआ, बहल (पण्ह २, ५—पत्र १५०)। २ पुद्गल-समूहरूप, संघाताकार (णाया १, १ टी—पत्र ५, औप)।

पिंडिय वि [पिण्डित] १ एकत्रित, इकट्ठा किया हुआ (सूअनि १४०, पंचा १४, ७, महा)। २ गुणित (औप)।

पिंडिया स्त्री [पिण्डिका] १ पिण्डी, पिंडली, जानू के नीचे का मांसल अवयव (महा)। २ वर्तुलाकार वस्तु (औप)। देखो पिंडी।

पिंडी स्त्री [पिण्डी] १ लुम्बी, गुच्छा (औप, भग, णाया १, १, उप पृ ३९)। २ घर का आधार-भूत काष्ठ विशेष, पीढा, 'विघडिअपिंडीबंधसविपरिलविवालणिम्मोआ' (गउड)। ३ वर्तुलाकार वस्तु, गोला, 'पिन्नागपिंडी' (सूअ २, ६, २६)। ४ खर्जूर-विशेष (नाट—शकु ३५)। देखो पिंडिया।

पिंडी स्त्री [दे] मञ्जरी (दे ६, ४७)।

पिंडीर न [दे. पिण्डीर] दाडिम, अनार (दे ६, ४८)।

पिंडेसणा स्त्री [पिण्डैषणा] भिक्षा ग्रहण करने की रीति (ठा ७)।

पिंडेसिय वि [पिण्डैषिक] भिक्षा की खोज करनेवाला (भग ९, ३३)।

पिंडोलग, पिंडोलगय, पिंडोलय वि [पिण्डावलगक] भिक्षा से निर्वाह करनेवाला, भिक्षा का प्रार्थी, भिक्षु (आचा, उत्त ५, २२, सुख ५, २२, सूअ १, ३, १, १०)।

पिंध (अप) सक [पि + धा] ढकना। पिंधउ (पिंग)। सकृ पिंधउ (पिंग)।

पिंधण (अप) न [पिधान] ढकना (पिंग)।

पिंसुली स्त्री [दे] मुँह से पवन भरकर बजाया जाता एक प्रकार का तृण-वाद्य (दे ६, ४७)।

पिक पुंस्त्री [पिक] कोकिल पक्षी (पिंग)। स्त्री. °की (दे ६, ५१)।

पिक्क देखो पक्क = पक्व (हे १, ४७, पाअ, गा ५६५)।

पिक्ख सक [प्र + ईक्ष्] देखना। पिक्खइ (भवि)। वकृ पिक्खंत (भवि)। कृ पिक्खेयव्व (सुर ११, १३३)।

पिक्खग वि [प्रेक्षक] निरीक्षक, द्रष्टा (ती १०, धर्मवि १५)।

पिक्खण न [प्रेक्षण] निरीक्षण (राज)।

पिक्खिय वि [प्रेक्षित] दृष्ट (पि ३९०)।

पिग देखो पिक (कुमा)।

पिचु पुं [पिचु] कार्पास, रुई (दे ६, ७८)। °लया स्त्री [°लता] पूनी, रुई की पूनी (दे ६, ५६)।

पिचुमद पु [पिचुमन्द] निम्ब वृक्ष, नीम का पेड (मोह १०३)।

पिच्च, पिच्चा अ [प्रेत्य] पर-लोक, आगामी जन्म (श्रा १४, सुपा ५०६, सूअ १, १, १, ११)। देखो पेच्च।

पिच्चा देखो पिअ = पा।

पिच्चिय वि [दे पिच्चित] कूटी हुई छाल (ठा ५, ३—पत्र ३३८)।

पिच्छ सक [दृश्, प्र + ईक्ष्] देखना। पिच्छइ, पिच्छति, पिच्छ (कप्प, प्रासू १६०, ३३)। वकृ. पिच्छंत, पिच्छमाण (सुपा ३४९, भवि)। कवकृ. पिच्छिज्जमाण (सुपा ९२)। संकृ पिच्छिउ, पिच्छिऊण (प्रासू ९१, भवि)। कृ. पिच्छणिज्ज (कप्प, सुर १३, २२३, रयण ११)।

पिच्छ न [पिच्छ] १ पक्ष का अवयव, पंख का हिस्सा (उवा, पाअ)। २ मयूर-पिच्छ, शिखण्ड (णाया १, ३)। ३ पक्ष, पाँख (उप ७६८ टी, गउड)। ४ पूँछ, लाङ्गूल (गउड)।

पिच्छण न [प्रेक्षण] १ दर्शन, अवलोकन (श्रा १४, सुपा ५५)।

पिच्छण, पिच्छणय न [प्रेक्षण, °क] तमाशा, खेल, नाटक, 'पारद्धं पिच्छणं तहिं ताव' (सुपा ४८५), 'तो जवणियछिड्डेहिं पिच्छइ अंतेउरपि पिच्छणयं' (सुपा २००)।

पिच्छल वि [पिच्छल] १ स्निग्ध, स्नेह-युक्त। २ मसृण (सण)।

पिच्छा स्त्री [प्रेक्षा] निरीक्षण। °भूमि स्त्री [°भूमि] रंग-मण्डप, रंगमंच (पाअ)।

पिच्छि वि [पिच्छिन्] पिच्छवाला (औप)।

पिच्छिर वि [प्रेक्षितृ] प्रेक्षक, द्रष्टा, देखनेवाला (सुपा ७८, कुमा)।

पिच्छिल वि [पिच्छिल] १ स्नेह-युक्त, स्निग्ध। २ मसृण, चिकना (गउड, हास्य १४०, दे ६, ४९)।

पिच्छिली स्त्री [दे] लज्जा, शरम (दे ६ ४७)।

पिच्छी स्त्री [दे] चूडा, चोटी (दे ६, ३७)।

पिच्छी स्त्री [पिच्छिका] पीछी (गा ५७२)।

पिच्छी स्त्री [पृथ्वी] १ पृथ्वी, धरित्री, धरनी (कुमा)। २ बडी इलायची। ३ पुनर्नवा। ४ कृष्ण जीरक। ५ हिंगुपत्री (हे १, १२८)।

पिच्छोला स्त्री [दे] वीन बजाने की कंबिका (सूत्र कृ० चू० पत्र १४६)।

पिज्ज सक [पा] पीना। पिज्जइ (हे ४, १०)। कृ पिज्जणिज्ज (कुमा)।

पिज्ज पुन [प्रेमन्] प्रेम, अनुराग (सूअ १, १६, २, कप्प)।

पिज्ज, पिज्जंत देखो पा = पा।

पिज्जा स्त्री [पेया] यवागू (पिंड ६२४)।

पिज्जाविअ वि [पायित] जिसको पान कराया गया हो वह (सुख २, १७)।

पिट्ट सक [पीडय्] पीडा करना। पिट्टंति (सूअ २, २, ५५)।

पिट्ट अक [भ्रंश्] नीचे गिरना। पिट्टइ (पड्)।

पुराअण वि [पुरातन] पुराना, प्राचीन। स्त्री. °णी (नाट—चैत १३१)।

पुराकर सक [पुरा + कृ] आगे करना। पुराकरति (सूअ १, ५, २, ५)।

पुराण वि [पुराण] १ पुराना, पुरातन (गउड, उत्त ८, १२)। २ न. व्यासादि-मुनि-प्रणीत ग्रन्थ-विशेष, पुरातन इतिहास के द्वारा जिसमे धर्म-तत्त्व निरूपित किया जाता हो वह शास्त्र (धर्मवि ३८, भवि)। °पुरिस पुं [°पुरुष] श्रीकृष्ण (वज्जा १२२)।

पुरिकोवेर पु. ब. [पुरीकौवेर] देश-विशेष (पउम ६८, ६७)।

पुरित्थिमा देखो पुरत्थिमा (सूअ २, १, ६)।

पुरिम देखो पुव्व = पूर्व (हे २, १३५, प्राकृ २८, भग, कुमा), 'पचवओ खलु धम्मो पुरिमस्स य पच्छिमस्स य जिणस्स' (पव ७४, पचा १७, १)। °ड्ढ पुन [°र्ध] १ पूर्वार्ध। २ प्रत्याख्यान-विशेष (पंचा ५, पडि)। ३ तप-विशेष, निर्विकृतिक तप (संबोध ५७)। °ड्ढिय वि [°र्धिक] 'पुरिमड्ढ' प्रत्याख्यान करनेवाला (पण्ह २, १, ठा ५, १)।

पुरिम वि [पौरस्त्य] अग्र-भव, अग्रेतन, आगे का, 'इय पुव्वुत्तचउक्के झाणेसु पढमदुगि खु मिच्छत्तं। पुरिमदुगे सम्मत्त' (संबोध ५२)।

पुरिम पुं [दे] प्रस्फोटन, प्रतिलेखन की क्रिया-विशेष, 'छ प्पुरिमा नव खोडा' (ओघ २६५)।

पुरिमताल न [पुरिमताल] नगर-विशेष (विपा १, ३, औप)।

पुरिमिल्ल वि [पूर्वीय] पहले का, पुरातन, प्राचीन, 'आसि नरा पुरिमिल्ला, ता किं अम्हेवि तह होमो' (वेइय ११५)।

पुरिल पुं [दे] दैत्य, दानव (षड्)।

पुरिल्ल वि [पुरातन] पुरा-भव, पहले का, पूर्ववर्त्ती (विसे १३२६, हे २, १६३)।

पुरिल्ल वि [पौरस्त्य] पुरो-भव, पुरो-वर्त्ती, अग्र-गामी (से १३, २, हे २, १६३, प्राप्र, षड्)।

पुरिल्ल वि [पौर] पुर-भव, नागरिक (प्राकृ ३५, हे २, १६३)।

पुरिल्ल वि [दे] प्रवर, श्रेष्ठ (दे ६, ५३)।

पुरिल्ल देखो पुरिल्ला = पुरा, पुरस्, 'पुरिल्लो' (हे २, १६४ टि, षड्)।

पुरिल्लदेव पु [दे] असुर, दानव (दे ६, ५५)।

पुरिल्लपहाणा स्त्री [दे] साँप की दाढ (दे ६, ५६)।

पुरिल्ला अ [पुरा] १ निरन्तर क्रिया-करण, विच्छेद-रहित क्रिया करना। २ प्राचीन, पुराना। ३ पुराने समय में। ४ भावी। ५ निकट, सन्निहित। ६ इतिहास, पुरावृत्त (हे २, १६४)।

पुरिल्ला अ [पुरस्] आगे, अग्रत. (हे २, १६४)।

पुरिस पुंन [पुरुष] १ पुमान्, नर, मर्द (हे १, १२४, भग, कुमा, प्रासू १२६), 'इत्थीणि वा पुरिसाणि वा' (आचा २, ११, १८)। २ जीव, जीवात्मा (विसे २०६०, सूअ २, १, २६)। ३ ईश्वर (सूअ २, १, २६)। ४ शङ्कु, छाया नापने का काष्ठादि-निर्मित कीलक। ५ पुरुष-शरीर (णंदि)। °कार, °क्कार, °गार पु [°कार] १ पौरुष, पुरुषपन, पुरुष-चेष्टा, पुरुष-प्रयत्न (प्रासू ४३, उवा, सुर २, ३५, उवर ४७)। २ पुरुषत्व का अभिमान (औप)। °जाय पुं [°जात] १ पुरुष। २ पुरुष-जातीय (सूअ २, १, ६; ७, ठा ३, १, २, ४, १)। °जुग न [°युग] क्रम स्थित पुरुष (सम ६८)। °जेट्ठ पु [°ज्येष्ठ] प्रशस्त पुरुष (पचा १७, १०)। °त्त, °त्तण न [°त्व] पौरुष, पुरुषपन, 'नहि नियजुवइसलहिया पुरिसा पुरिसत्तणमुविंति' (सुर २, २४, महा, सुपा ८४)। °त्थ पुं [°र्थ] धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूप पुरुष-प्रयोजन, 'सयलपुरिसत्थकारणमइदुलहो माणुसो भवो एसो' (धर्मवि ८२, कुमा, सुपा १२६)। °पुंडरीअ पु [°पुण्डरीक] इस अवसर्पिणी काल में उत्पन्न षष्ठ वासुदेव (पव २१०)। °प्पणीय वि [°प्रणीत] १ ईश्वर-निर्मित। २ जीव-रचित (सूअ २, १, २६)। °मेह पु [°मेध] यज्ञ विशेष, जिसमें पुरुष का होम किया जाय वह यज्ञ (राज)। °यार देखो °कार (गउड, सुर २, १६, सुपा २७१)। °लक्खण न [°लक्षण] कला-विशेष, पुरुष के शुभाशुभ चिह्न पहचानने की एक सामुद्रिक कला (जं २)। °लिंग, न [°लिङ्ग] पुरुष-चिह्न। °लिंगसिद्ध पुं [°लिङ्गसिद्ध] पुरुष-शरीर से जो मुक्त हुआ हो वह (णंदि)। °वयण न [°वचन] पुलिंग शब्द (आचा २, ४, १, ३)। °वर पुं [°वर] श्रेष्ठ पुरुष (औप)। °वरगंधहत्थि पुं [°वरगन्धहस्तिन्] १ पुरुषों मे श्रेष्ठ गन्धहस्ती के तुल्य। २ जिन-देव (भग, पडि)। °वरपुंडरीय पुं [°वरपुण्डरीक] १ पुरुषों में श्रेष्ठ पद्म के समान। २ जिन-देव, अर्हन् (भग, पडि)। °विजय पुं [°विचय, °विजय] ज्ञान-विशेष (सूअ २, २, २७)। °वेय पुं [°वेद] १ कर्म विशेष, जिसके उदय से पुरुष को स्त्री-संभोग की इच्छा होती है वह कर्म। २ पुरुष को स्त्री-भोग की अभिलाषा (पण्ण २३, सम १५०)। °सिंह, °सीह पु [°सिंह] १ पुरुषों में सिंह के समान, श्रेष्ठ पुरुष। २ पु जिनदेव, जिन भगवान् (भग, पडि)। ३ भगवान् धर्मनाथ के प्रथम श्रावक का नाम (विचार ३७८)। ४ इस अवसर्पिणी काल में उत्पन्न पाँचवाँ वासुदेव (सम १०५, पउम ५, १५५, पव २१०)। °सेण पुं [°सेन] १ भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा लेकर मोक्ष जानेवाला एक अन्तकृद् महर्षि, जो वासुदेव के अन्यतम पुत्र थे (अंत १४)। २ भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर विमान मे उत्पन्न होनेवाले एक मुनि, जो राजा श्रेणिक के पुत्र थे (अनु १)। °ादाणिअ, °ादाणीय पुं [°ादानीय] उपादेय पुरुष, आप्त पुरुष (सम १३, कप्प)।

पुरिसकारिआ स्त्री [पुरुषकारिका, °ता] पुरुषार्थ, प्रयत्न (दस, ५, २, ६)।

पुरिसाअ अक [पुरुषाय्] विपरीत मैथुन करना। वकृ. पुरिसाअंत (गा १९६, ३९१)।

पुरिसाइअ न [पुरुषायित] विपरीत मैथुन (दे १, ४२)।

पुरिसाइर वि [पुरुषायितृ] विपरीत रत करनेवाला, 'दरपुरिसाइरि विसमिरि सुजाण पुरिसाण जं दुक्खं' (गा ५२, ४४६)।

पुरिसुत्तम } पुरिसोत्तम } पुं [पुरुषोत्तम] १ उत्तम पुरुष, श्रेष्ठ पुमान्। २ जिन-

भाग बचता है वह (सूत्र २, ६, २६, २, १, १६, २, ६, २८)।

पिपीलिअ पुं [पिपीलक] कीट-विशेष, चीऊँटा (कप्प)।

पिपीलिआ } स्त्री [पिपीलिका] चीटी, पिपीलिका } चीऊँटी (पराह १, ६, जी १६, णाया १, १६)।

पिप्पड सक [दे] वडवडाना, जो मन मे आवे सो बकना। पिप्पडइ (दे ६, ५० टी)।

पिप्पडा स्त्री [दे] ऊर्णा-पिपीलिका (दे ६, ४८)।

पिप्पडिअ वि [दे] १ जो बड़बड़ाया हो। २ न बड़बड़ाना, निरर्थक उल्लाप, बकवाद (दे ६, ५०)।

पिप्पय पु [दे] १ मशक (दे ६, ७८)। २ पिशाच, भूत (पाअ)। ३ वि. उन्मत्त (दे ६, ७८)।

पिप्पर पु [दे] १ हंस। २ वृषभ (दे ६, ७९)।

पिप्परी स्त्री [पिप्पली] पीपर का गाछ (पराण १)।

पिप्पल पुंन [पिप्पल] १ पीपल वृक्ष, अश्वत्थ (उप १०३१ टी, पाअ, हि १०)। २ छुरा, क्षुरक (विपा १, ६—पत्र ६६, ओघ ३५९)।

पिप्पलग वि [पैप्पलक] पीपल के पान का बना हुआ (आचा २, २, ३, १४)।

पिप्पलि } स्त्री [पिप्पलि, °ली] ओषधि-पिप्पली } विशेष, पीपर, 'महुपिप्पलिसुंठाई अणेगहा साइम होइ' (पंचा ५, ३०, पराण १७)।

पिप्पिडिअ देखो पिप्पडिअ (षड्)।

पिप्पिया स्त्री [दे] दांत का मैल (णंदि)।

पिच देखो पिअ = पा। पिबामो (पि ४८३)। संकृ. पिविता (आचा)।

पिब्ब न [दे] जल, पानी (दे ६, ४६)।

पिम्म पुं [प्रेमन्] प्रेम, प्रीति, अनुराग (पाअ, सुर २, १७२, रंभा)।

पियाल पु [प्रियाल] १ वृक्ष-विशेष, खिरनी का पेड। २ न फल-विशेष, खिरनी, खिन्नी (दस ५, २, २४)।

पियास (अप) स्त्री [पिपासा] प्यास (भवि)।

पिरिडी स्त्री [दे] शकुनिका, चिडिया (दे ६, ४७)।

परिपिरिया देखो परिपिरिया (राज)।

पिरिली स्त्री [पिरिली] १ गुच्छ-विशेष, वनस्पति-विशेष (पराण १)। २ वाद्य-विशेष (राज)।

पिल देखो पील। कर्म पिलिज्जइ (नाट)।

पिलखु } पुं [प्लक्ष] १ वृक्ष-विशेष, पिलक्खु } पिलखन, पाकड का पेड (सम १५२, ओघ २६, पि ७४)। २ एक तरह का पीपल वृक्ष, 'पिलक्खू पिप्पलभेदो' (निचू ३)।

पिलण न [दे] पिच्छिल देश, चिकनी जगह (दे ६, ४९)।

पिला देखो पीला (पि २२६)।

पिलाग न [पिटक] फोडा, फुनसी (सूअ १, ३, ४, १०)।

पिलिंखु देखो पिलंखु (विचार १४८)।

पिलिहा स्त्री [प्लीहा] अंग-विशेष, पिलही, तिल्ली (तंदु ३९)।

पिलुअ न [दे] क्षुत, छीक (षड्)।

पिलुक } देखो पिलखु (पि ७४, पराण पिलुक्ख } १—पत्र ३१)।

पिलुखु देखो पिलखु (आचा २, १, ८, ३)।

पिलुट्ठ वि [प्लुष्ट] दग्ध (हे २, १०६)।

पिलोस पुं [प्लोष] दाह, दहन (हे २, १०६)।

पिल्ल देखो पेल्ल = क्षिप्। पिल्लइ (भवि)।

पिल्ल सक [प्र + ईरय्] १ प्रेरणा करना। २ प्रवृत्त करना। पिल्लेइ (वव १)।

पिल्लग न [दे] पक्षी का बच्चा।

पिल्लण न [प्रेरण] प्रेरणा (जं ३)।

पिल्लणा स्त्री [प्रेरणा] प्रेरणा (कप्प)।

पिल्लि स्त्री [दे] यान-विशेष (दसा ६)।

पिल्लिअ वि [क्षिप्त] फेंका हुआ (पाअ, भवि, कुमा)।

पिल्लिअ वि [प्रेरित] जिसको प्रेरणा की गई हो वह (सुपा ३६१)।

पिल्लिरी स्त्री [दे] १ तृण-विशेष, गण्डूत् तृण। २ चीरी, कीट-विशेष। ३ घर्म, पसीना (दे ६, ७९)।

पिल्लुग (दे) देखो पिलुअ (वव २)।

पिलह न [दे] छोटे पक्षी के तुल्य (दे ६, ४६)।

पिव देखो इव (हे २, १८२, कुमा, महा)।

पिव सक [पा] पीना। पिवइ (पिंग)। भूका. अपिवित्था (आचा)। कर्म पिवीअंति (पि ५३९)। संकृ पिविअ, पिविइत्ता, पिवित्ता (नाट, ठा ३, २, महा)। हेकृ. पिविउं, पिवित्तए (आक ४२, औप)।

पिवण देखो पिअण = (दे) (भवि)।

पिवासय वि [पिपासक] पीने की इच्छा-वाला (भग—अत्थ°)।

पिवासा स्त्री [पिपासा] प्यास, पीने की इच्छा (भग, पाअ)।

पिवासिय वि [पिपासित] तृषित (उवा, वै. .)।

पिवीलिआ देखो पिपीलिआ (उव, स ४२०, भा ४९)।

पिव्व देखो पिव्व (षड्)।

पिस सक [पिष्] पीसना। पिसइ (षड्)।

पिसग पुं [पिशङ्ग] १ पिंगल वर्ण, मठियारा रँग। २ वि पिंगल वर्णवाला (पाअ, कुप्र १०५, ३०६)।

पिसंडि [दे] देखो पसढि (सुपा ६०७, कुप्र ९२, १४५)।

पिसल्ल पुं [पिशाच] पिशाच, व्यन्तर-योनिक देवों की एक जाति (हे १, १९३, कुमा, पाअ, उप २६४ टी, ७६८ टी)।

पिसाजि वि [पिशाचिन्] भूताविष्ट (हे १, १७७, कुमा, षड्, चड)।

पिसाय देखो पिसल्ल (हे १, १९३, पराह १, ४, महा, इक)।

पिसिअ न [पिशित] मांस (पाअ, महा)।

पिसुअ पुस्त्री [पिशुक] क्षुद्र कीट-विशेष। स्त्री °या (राज)।

पिसुण सक [कथय्] कहना। पिसुणइ, पिसुणेइ, पिसुणति, पिसुणेंति, पिसुणसु (हे ४, २, गा ६८५, सुर ६, १९३, गा ५५६; कुमा)।

पिसुण पुं [पिशुन] खल, दुर्जन, पर-निन्दक, चुगलखोर (सुर ३, १६, प्रासू १८, गा ३७७, पाअ)।

पुलासिअ पु [दे] अग्नि-कण (दे ६, ५५)।

पुलिंद पु [पुलिन्द] १ अनार्य देश-विशेष (इक)। २ पुंस्त्री उस देश में रहनेवाला मनुष्य (पण्ह १, १; औप; उव)। स्त्री. °दी (णाया १, १; औप)।

पुलिण न [पुलिन] तट, किनारा; 'पोढपुणो नइपुलिणाओ' (पउम १०, ५४)। २ लगातार बाईस दिनों का उपवास (संबोध ५८)।

पुलिय न [पुलित] गति-विशेष (औप)।

पुलुट्ठ वि [प्लुष्ट] दग्ध (पाअ)।

पुलोअ सक [दृश्, प्र + लोक्] देखना। पुलोए- (हे ४, १८१, सुर १, ८९)। वकृ. पुलअंत, पुलोएंत (पि १०४, सुर ३, ११८)।

पुलोअण न [दर्शन, प्रलोकन] विलोकन (दे ६, ३०, गा ३२२)।

पुलोइअ वि [दृष्ट, प्रलोकित] १ देखा हुआ (सुर ३, १९४)। २ न. अवलोकन (से ७, ५९)।

पुलोएत देखो पुलोअ।

पुलोम पुं [पुलोमन्] दैत्य विशेष। °तणया स्त्री [°तनया] शची, इन्द्राणी (पाअ)।

पुलोमी स्त्री [पौलोमी] इन्द्राणी (प्राकृ १०, हे १, १६०)।

पुलोव देखो पुलोअ। पुलोवेदि (शौ) (पि १०४)।

पुलोस पुं [प्लोष] दाह, दहन (गउड)।

पुल्ल [दे] देखो पोल्ल (सुख ९, १)।

पुल्लि पुंस्त्री [दे] १ व्याघ्र, शेर (दे ६, ७९, पाअ)। २ सिंह, पञ्चानन, मृगेन्द्र (दे ६, ७९)। स्त्री 'को पियइ पय च पुल्लीए' (सुपा ३१२)।

पुव } सक [प्लु] गति करना, चलना।
पुव्व } पुवति (पि ४७३), पुव्वति (भग १५—पत्र ६७०, टी—पत्र ६७३)।

पुव्व° देखो पुण = पू।

पुव्व वि [पूर्व] १ दिशा, देश और काल की अपेक्षा से पहले का, आद्य, प्रथम (ठा ४, ४, जी १, प्रासू १२२)। २ समस्त, सकल। ३ ज्येष्ठ भ्राता (हे २, १३५, षड्)। ४ पुंन. काल-मान विशेष, चौरासी लाख को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो उतने वर्ष (ठा २, ४, सम ७४, जी ३७, इक)। ५ जैन ग्रन्थांश-विशेष, बारहवें अंग ग्रन्थ का एक विशाल विभाग, अध्ययन, परिच्छेद, 'चोद्दसपुव्वी' (विपा १, १)। ६ द्वन्द्व, वधू-वर आदि युग्म, 'पुव्वट्ठाणाणि' (आचा २, ११, १३)। ७ पूर्व-ग्रन्थ का ज्ञान (कम्म १, ७)। ८ कारण, हेतु (णदि)। °कालिय वि [°कालिक] पूर्व काल का, पूर्व काल से संबन्ध रखनेवाला (पण्ह १, २—पत्र २८)। °गय न [°गत] जैन शास्त्रांश-विशेष, बारहवें अंग का विभाग-विशेष (ठा १०—पत्र ४९१)। °ण्ह पुं [°ाह्ण] २ दिन का पूर्व भाग, सुबह से दो पहर तक का समय (हे १, ६७)। २ तप-विशेष, 'पुरिमड्ढ' तप (संबोध ५८)। °तव पुंन [°तपस्] वीतराग अवस्था के पहले का—सराग अवस्था का तप (भग)। °दारिअ वि [°द्वारिक] पूर्व दिशा में गमन करने में कल्याण-कारी (नक्षत्र) (सम १२)। °द्ध पुंन [°ार्ध] पहला आधा (नाट)। °धर वि [°धर] पूर्व-ग्रन्थ का ज्ञान-वाला (पण्ह २, १)। °पय न [°पद] उत्सर्ग-स्थान (निचू १)। °पुट्ठवया स्त्री [°प्रोष्ठपदा] नक्षत्र-विशेष (सुज्ज १०, ५)। °पुरिस पु [°पुरुष] पूर्वज, पुरखा (सुर २, १९४)। °प्पओग पुं [°प्रयोग] पहले की क्रिया, पूर्व काल का प्रयत्न (भग ८, ९)। °फग्गुणी स्त्री [°फाल्गुनी] नक्षत्र-विशेष (राज)। °भद्दवया स्त्री [°भाद्रपदा] नक्षत्र-विशेष (राज)। °भव पुं [°भव] गत जन्म, अतीत जन्म (णाया १, १)। °भविय वि [°भविक] पूर्वजन्म संबंधी (भवि)। °य पुं [°ज] पूर्व पुरुष, पुरखा (सुपा २३२)। °रत्त पु [°रात्र] रात्रि का पूर्व भाग (भग, महा)। °व न [°वत्] अनुमान प्रमाण का एक भेद (अणु)। °विदेह पुं [°विदेह] महाविदेह वर्ष का पूर्वीय हिस्सा (ठा २, ३, इक)। °समास पुन [°समास] एक से ज्यादा पूर्व-शास्त्रों का ज्ञान (कम्म १, ७)। °सुय न [°श्रुत] पूर्व का ज्ञान (राज)। °सूरि पुं [°सूरि] पूर्वाचार्य, प्राचीन आचार्य (जीव १)। °हर देखो °धर (पउम ११८, १२१)। °णुपुव्वी स्त्री [°ानुपूर्वी] क्रम, परिपाटी (भग, विपा १, १, औप, महा)। °ाह देखो °ण्ह (हे १, ६७, षड्)। °ाफग्गुणी देखो °फग्गुणी (सम ७, इक)। °ाभद्दवया देखो °भद्दवया (सम ७)। °ासाढा स्त्री [°ाषाढा] नक्षत्र-विशेष (सम ६)।

पुव्वंग पुंन [पूर्वाङ्ग] १ समय-परिमाण-विशेष, चौरासी लाख वर्ष (ठा २, ४, इक)। २ पक्ष के पहले दिन का नाम, प्रतिपत् (सुज्ज १०, १४)।

पुव्वंग वि [दे] मुण्डित (षड्)।

पुव्वा स्त्री [पूर्वा] पूर्व दिशा (कुमा)।

पुव्वाड वि [दे] पीन, मांसल, पुष्ट (दे ६, ५२)।

पुव्वामेव अ [पूर्वमेव] पहले ही (कस)।

पुव्वावईणय न [पूर्वावकीर्णक] नगर-विशेष (इक)।

पुव्वि वि [पूर्विन्] पूर्व-शास्त्र का जानकार (विपा १, १, राज)।

पुव्विं } क्रिवि [पूर्वम्] पहिले, पूर्व में
पुव्विं } (सण, उवा, सुर १, १९४; ४, १११; औप)। °संथव पुं [°संस्तव] पूर्व में की जाती श्लाघा, जैन मुनि की भिक्षा का एक दोष, भिक्षा-प्राप्ति के पहले दायक की स्तुति करना (ठा ३, ४)।

पुव्विम पुंस्त्री [पूर्वत्व] पहिलापन, प्रथमता (षड्)।

पुव्विल्ल वि [पूर्व, पूर्वीय] पहले का, पूर्व का, 'पुव्विल्लसमं करणं' (चेइय ८८१), 'पुव्विल्लए किंचिवि दुट्ठकम्मे' (निसा ४, सुपा ३४६, सण)।

पुव्वुत्त वि [पूर्वोक्त] पहले कहा हुआ, पूर्व में उक्त (सुर २, २४८)।

पुव्वुत्तरा स्त्री [पूर्वोत्तरा] ईशान कोण (राज)।

पुस सक [प्र + उञ्छ्, मृज्] साफ करना, शुद्ध करना, पोंछना। पुसइ (प्राकृ ६६, हे ४, १०५, गा ४३३)। कवकृ. पुसिज्जंत (गा २०६)।

पुस देखो पुस्स (प्राकृ २६, प्राप्र)।

पीढ न [दे] १ ईख पेरने का यन्त्र (दे ६, ५१)। २ समूह, यूथ, 'उट्ठियं वणगईदपीढं, पणट्ठा दिसो दिसो (?सिं) कप्पडिया' (स २३३)। ३ पीठ, शरीर के पीछे का भाग, 'हत्थिपीढसमारूढो' (त्रि ६६)।

पीढग, पीढय न [पीठक] देखो पीढ = पीठ (कस, गच्छ १, १०, दस ७, २८)।

पीढरखंड न [पीठरखण्ड] नर्मदा-तीर पर स्थित एक प्राचीन जैन तीर्थ (पउम ७७, ६४)।

पीढाणिय न [पीठानीक] अश्व-सेना (ठा ५, १—पत्र ३०२)।

पीढिआ स्त्री [पीठिका] आसन-विशेष, मञ्च, 'आसदी पीढिआ' (पात्र)। देखो पेढिया।

पीढी स्त्री [दे पीठिका] काष्ठ-विशेष, घर का एक आधार-काष्ठ, गुजराती में 'पीढिउं', 'तत्तो नियत्तिऊणं सत्तट्ठ पयाइं जाव पहरेइ। ता उवरिपीढिखलणे खग्गेण खडक्किय तत्थ' (धर्मवि ५६)।

पीण सक [पीनय्] पुष्ट करना। पीणंति (राय १०१)।

पीण सक [प्रीणय्] खुश करना। कृ देखो पीणणिज्ज।

पीण वि [दे] चतुरस्र, चतुष्कोण (दे ६, ५१)।

पीण वि [पीन] पुष्ट, मासल, उपचित (हे २, १५४, पात्र, कुमा)।

पीणण न [प्रीणन] खुश करना (धर्मवि १४८)।

पीणणिज्ज वि [प्रीणनीय] प्रीति-जनक (औप, कप्प; पण्ण १७)।

पीणाइय वि [दे. पैनायिक] गर्व से निर्वृत्त, गर्व से किया हुआ, 'पीणाइयविरसरडियसद्दणं फोडयते व अंबरतल' (णाया १, १—पत्र ६३)।

पीणाया स्त्री [दे पीनाया] गर्व, अहंकार (णाया १, १)।

पीणिअ वि [प्रीणित] १ तोषित (सण)। २ उपचित, परिवृद्ध (दस ७, २३)। ३ पुं ज्योतिष-प्रसिद्ध योग-विशेष, जो पहले सूर्य या चन्द्र का किसी ग्रह या नक्षत्र के साथ होकर बाद मे दूसरे सूर्य आदि के साथ उपचय को प्राप्त हुआ हो वह योग (सुज्ज १२)।

पीणिम पुंस्त्री [पीनता] पुष्टता, मासलता (हे २, १५४)।

पीयमाण देखो पा = पा।

पीयमाण देखो पी = पी।

पीरिपीरिया स्त्री [दे] वाद्य विशेष (राय ४५)।

पील सक [पीडय्] १ पीलना, पेरना, दबाना। २ पीडा करना, हैरान करना। पीलइ, पीलेइ (धात्वा १४५, पि २४०)। कवकृ. पीलिज्जत (श्रा ६)।

पीलण न [पीलन] दबाव, पीलन, पेरना, 'माणंसिणीण माणो पीलणभीअ व्व हिअआहि' (काप्र १६६), 'जंतपीलणकम्मे' (उवा)।

पीला देखो पीडा (उप ४३६, सुपा ३५८)।

पीलावय वि [पीडक] १ पेरनेवाला। २ पुं. तेली, यन्त्र से तेल निकालनेवाला (वज्जा ११०)।

पीलिअ वि [पीडित] पीला या पेरा हुआ (औप, ठा ५, ३, उव)।

पीलिम वि [पीडावत्] दाववाला, दावने से बना हुआ (वस्त्र आदि की आकृति) (दसनि २, १७)।

पीलु पुं [पीलु] १ वृक्ष-विशेष, पीलु का पेड (पण्ण १, वज्जा ४६)। २ हाथी (पात्र, स ७३५)। ३ न. दूध; 'एगट्ठं बहुनामं दुद्ध पओ पीलु खीरं च' (पिंड १३१)।

पीलुअ पुं [दे. पीलुक] शावक, बच्चा, 'तडसठिअणीडेक्कतपीलुआरक्खणेक्कदिण्णम-णा' (गा १०२)।

पीलुट्ठ वि [दे. प्लुष्ट] देखो पिलुट्ठ (दे ६, ५१)।

पीवर वि [पीवर] उपचित, पुष्ट (णाया १, १, पात्र, सुपा २६१)। °गब्भा स्त्री [°गर्भा] जो निकट भविष्य में ही प्रसव करनेवाली हो वह स्त्री (ओघभा ८३)।

पीवल देखो पीअ = पीत (हे १, २१३, २, १७३, कुमा)।

पीस सक [पिष्] पीसना। पीसइ (पि ७६)। वकृ. पीसंत (पिंड ५७४, णाया १, ७)। संकृ. पीसिऊण (कुप्र ४५)।

पीसण न [पेषण] १ पीसना, दलना (पण्ह १, १; उप पृ १४०, स्यण १८)। २ वि. पीसनेवाला (सूअ १, २, १; १२)।

पीसय वि [पेषक] पीसनेवाला (सुपा ६३)।

पीह सक [स्पृह्, प्र + ईह्] अभिलाषा करना, चाहना। पीहति, पीहेज्जा (औप, ठा ३, ३—पत्र १४४)।

पीहग पुं [पीठक] नवजात शिशु को पीलाइ जाती एक वस्तु (उप ३११)।

°पु स्त्री [पुर्] शरीर (विसे २०६५)।

पुअ न [प्लुत] १ तिर्यग् गति। २ झाँपना, झम्प-गति, 'जुज्झामो पू (? पु) यघाएहिं' (विसे १४३१ टी)। °जुद्ध न [°युद्ध] अधम युद्ध का एक प्रकार (विसे १४७७)।

पुअंड पुं [दे] तरुण, युवा (दे ६, ५३, पात्र)।

पुआइ वि. [दे] १ तरुण, युवा (दे ६, ८०)। २ उन्मत्त (दे ६, ८०, षड्)। ३ पु पिशाच (दे ६, ८०, पात्र, षड्)।

पुआइणी स्त्री [दे] १ पिशाच-गृहीत स्त्री, भूताविष्ट महिला। २ उन्मत्त स्त्री। ३ कुलटा, व्यभिचारिणी (दे ६, ५४)।

पुआव सक [प्लावय्] ले जाना। संकृ पुयावइत्ता (ठा ३, २)।

पु° पुं [पुंस्] पुरुष, मर्द (पि ४१२, धम्म १२ टी)। देखो पुंगव, पुंनाग, पुवउ आदि।

पुंख पुं [पुङ्ख] १ बाण का अग्र भाग, 'तस्स य सरस्स पुंखं विद्धइ अन्नेण तिक्खवाणेण' (धर्मवि ६७, उप पृ ३६५)। २ न. देव-विमान-विशेष (सम २२)।

पुंखणग न [दे प्रोङ्खणक] चुमाना, विवाह की एक रीति, गुजराती में 'पोखणु' (सुपा ६५)।

पुंखिअ वि [पुङ्खित] पुंख-युक्त किया हुआ, 'घणुहे तिक्खो सरो पुंखिओ' (कप्पू)।

पुंगल पुं [दे] श्रेष्ठ, उत्तम (भवि)।

पुंगव वि [पुङ्गव] श्रेष्ठ, उत्तम (सुपा ५, ८०, श्रु ४१, गउड)।

पुंछ सक [प्र + उञ्छ्] पोछना, सफा करना। पुंछइ (प्राकृ ६७, हे ४, १०५)। कृ. पुंछणीअ (पि १८२)।

पूइकरणी' (उत १, ४)। ८ वृक्ष-विशेष, एकास्थिक वृक्ष की एक जाति, 'पूई य निंब-करए' (पएण १—पत्र ३१)। °कम्म पुन [°कर्मन्] मुनि-भिक्षा का एक दोष, पवित्र वस्तु मे अपवित्र वस्तु को मिलाकर दी जाती भिक्षा का ग्रहण (ठा ३, ४ टी, श्रौप, पचा १३, ५)। °म वि [°मन्] १ दुर्गन्धी। २ अपवित्र (तदु ३८)।

पूइ वि [पूति] कुथित, सडा हुआ (आचा २, १, ८, ४)। °पिन्नाग पुन [°पिण्याक] सर्षप-खल, सरसो की खली (दस ५, २, २२)।

पूइअ वि [पूयित] ऊपर देखो (राय १८)।

पूइआलुग न [दे पूत्यालुक] जल मे होने-वाली वनस्पति-विशेष (आचा २, १, ८—सूत्र ४७)।

पूइज्जंत देखो पूअ = पूजय्।

पूइम वि [पूज्य] पूजा योग्य, सम्माननीय, 'जया य पूइमो होइ पच्छा होइ अपूइमो' (दसचू १, ४)।

पूइय वि [पूजित] अर्चित, सेवित (श्रौप, उव)।

पूइय वि [पूतिक] १ अपवित्र, अशुद्ध, दूषित (पएह २, ५, उप पृ २१०)। २ दुर्गन्धी, दुष्ट गन्धवाला (णाया १, ८, तदु ४१)। ३ पूति नामक भिक्षा-दोष से युक्त (पिंड २६८)।

पूइय देखो पोइय = (दे), 'वलो गओ पूइया-वए (सुख २, २६, उव)।

पूएअव्व देखो पूअ = पूजय्।

पूडरिअ न [दे] कार्य, काम, काज, प्रयोजन (दे ६, ५७)।

पूग पु [पूग] १ समूह, सघात (मोह २८)। २ देखो पूअ = पूग (स ७०, ७१)।

पूगी स्त्री [पूगी] सुपारी का पेड। °फल न [°फल] सुपारी, कसैली (रयण ५५)।

पूज देखो पूअ = पूजय्। कर्म. पूज्जए (उव)। वकृ. पूजयंत (विसे २८८८)। कृ. पूज्ज, पूज (पउम ११, ६७, सुपा १८०, सुर १, १७, उवर १६६, उव, उप ५६८)।

पूजग देखो पूअय (पचा ४, ४४)।

पूजण देखो पूअण (पचा ६, ३८)।

पूजा देखो पूआ = पूजा (उप १०१६)।

पूजिय देखो पूइय = पूजित (श्रौप)।

पूण पु [दे] हस्ती, हाथी (दे ६, ५६)।

पूणिआ } स्त्री [दे] पूणी, पूनी, रुई की
पूणी } पहल (दे ६, ७८, ६, ५६)।

पूप देखो पूअल (पिंड ५५७)।

पूयइ पुं [पूपकिन्] हलवाई (णदि १६४)।

पूयंत देखो पूअ = पजय्।

पूयली स्त्री [दे] रोटी (आचा २, १ ८, ६)।

पूयावणा स्त्री [पूजना] पूजा कराना (संबोध १५)।

पूर सक [पूरय्] पूर्ति करना, भरना। पूरइ, पूरए (हे ४, १६६, श्रौप, भग, महा, पि ४६२)। वकृ. पूरंत, पूरयंत (कुमा, कप्प, श्रौप)। कवकृ पुज्जंत, पुज्जमाण, पूरिज्जंत, पूरत, पूरमाण (उप पृ १५४, सुपा ६८, उप १३६ टी, भवि, गा ११६, से ११, ६३, ६, ६७)। संकृ पूरित्ता (भग), पूरि (अप), (पिंग)। हेकृ पूरिइत्तए (पि ५७८)। कृ पूरिअव्व (से ११, ४४)।

पूर पुं [पूर] १ जल समूह, जल-प्रवाह, जल-धारा (कुमा)। २ खाद्य-विशेष, 'कप्पूरपूरसहिए तबोले' (सुर २, ६०)। ३ वि. पूरा, पूर्ण, 'पूराणि य से समं पणइमणोरहेहिं अज्जेव सत्त राइदियाइं, भविस्सइ य सुए सामिणी विज्जासिद्धी' (स ३६३)।

पूरइत्तअ (शौ) वि [पूरयितृ] पूर्ण करनेवाला (मा ४३)।

पूरतिया स्त्री [पूरयन्तिका] राजा की एक परिषत्—परिवार (राज)।

पूरग वि [पूरक] पूर्त्ति करनेवाला (कप्प, श्रौप, रयण ७७)।

पूरण न [पूरण] शूर्प, सूप, सिरकी का बना एक पात्र जिससे अन्न पछोरा जाता है (दे ६, ५६)।

पूरण न [पूरण] १ पूर्त्ति, 'समस्सापूरणं' (सिरि ८६८)। २ पालन (आचू ५)। ३ पु यदुवश के राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र (अत ३)। ४ एक गृह-पति का नाम (उवा)। ५ वि. पूर्ति करनेवाला (राज)।

पूरमाण देखो पूर = पूरय्।

पूरय देखो पूरग, 'बत्तीस किर कवला आहारो कुच्छिपूरओ भणिओ' (पिंड ६४२)।

पूरयत } देखो पूर = पूरय्।
पूरिअव्व }

पूरिगा स्त्री [पूरिका] मोटा कपडा (राज)।

पूरिम वि [पूरिम] पूरने से—भरने से होनेवाला (णाया १, १३, पएह २, ५, श्रौप)।

पूरिमा स्त्री [पूरिमा] गान्धार ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७—पत्र ३६३)।

पूरिय वि [पूरित] भरा हुआ (गउड, सण, भवि)।

पूरी स्त्री [पूरी] तन्तुवाय का एक उपकरण (दे ६ ५६)।

पूरेंत देखो पूर = पूरय्।

पूरोट्टी स्त्री [दे] अवकर, कतवार, कूडा (दे ६, ५७)।

पूल पुंन [पूल] पूला, घास की अँटिया (उप ३२० टी, कुप्र २१५)।

पूव } देखो पूअल (कस, दे ६, ११७,
पूवल } निचू १)।

पूवलिआ } देखो पूअलिया (बृह १, निचू
पूविगा } १६)।

पूस अक [पुष्] पुष्ट होना। पूसइ (हे ४, २३६, प्राकृ ६८)।

पूस देखो पुस्स = पुष्य (णाया १, ८, हे १, ४३)। °गिरि पुं [°गिरि] एक जैन मुनि (कप्प)। °फली स्त्री [°फली] वल्ली-विशेष (पएण १)। °माण, °माणग पुं [°माण, °मानव] मागध, मङ्गल-पाठक, '—वद्धमाण-पूसमाणघंटियगणेहिं' (कप्प, श्रौप)। °माणग पुं [°मानक] ज्योतिर्देवता-विशेष, ग्रहाधि-ष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३)। °माणय देखो °माण (श्रौप)। °मित्त पुं [°मित्र] १ स्वनाम-प्रसिद्ध जैन मुनि-त्रय—१ घृत-पुष्यमित्र, २ वस्त्रपुष्यमित्र, ३ दुर्बलिका-पुष्यमित्र, जो आर्य रक्षितसूरि के शिष्य थे (विसे २५१०, २२८६)। २ एक राजा (विचार ४६३)। °मित्तिय न [°मित्रीय] एक जैन मुनि-कुल (कप्प)।

पद्म का बीज-कोश, कमल का मध्य भाग (औप)। °क्ख पुं [°क्ष] १ विष्णु, श्रीकृष्ण। २ कश्मीर के एक राजा का नाम (मुद्रा २४२)। °गय न [°गत] वाद्य-विशेष का ज्ञान, कला-विशेष (औप)। °द्ध न [°र्ध] पुष्करवर नामक द्वीप का आधा हिस्सा (सुज्ज १६)। °वर पुं [°वर] द्वीप-विशेष (ठा २, ३, पडि)। °संवट्टग देखो पुक्खल-सवट्टय (राज)। °विक्त देखो पुक्खलावट्टय (राज)।

पुक्खरिणी देखो पोक्खरिणी (सूअ २, १, २, ३, औप, पाअ)।

पुक्खरोअ } पुं [पुष्करोद] समुद्र-विशेष
पुक्खरोद } (इक, ठा ३,१,७, सुज्ज १६)।

पुक्खल पु [पुष्कर] एक विजय, प्रान्त-विशेष, जिसकी मुख्य नगरी का नाम ओषधि है (इक)। २ पद्म, कमल, 'भिसभिसमुणाल-पुक्खलत्ताए' (सूअ २, ३, १८)। ३ पद्म-केसर (आचा २, १, ८—सूत्र ४७)। °विभग न [°विभङ्ग] पद्म-कन्द (आचा २, १, ८—सूत्र ४७)। °संवट्ट, °संवट्टय पुं [°सवर्त, °क] मेघ-विशेष, जिसके बर-सने से दस हजार वर्ष तक पृथिवी वासित रहती है (उर २, ६, ठा ४, ४—पत्र २७०)। देखो पुक्खर।

पुक्खल पुं [पुष्कल] १ एक विजय, प्रदेश-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)। २ अनार्य देश-विशेष। ३ पुंस्त्री. उस देश मे उत्पन्न, उसमे रहनेवाला, 'सिंघलीहिं पुलिंदिहिं पुक्खलीहिं (?)' (भग ६, ३३—पत्र ४५७), ['सिहलीहिं पुलिंदीहिं पक्कणीहिं (?)' (भग ६, ३३ टी—पत्र ४६०)]। ४ वि. अत्यन्त, प्रभूत (कुप्र ४१०)। ५ सपूर्ण, परिपूर्ण (सूअ २, १, १)।

पुक्खलच्छिभग } पुंन [दे] जलरुह-विशेष,
पुक्खलच्छिभय } जल में होनेवाली वनस्पति-विशेष (सूअ २, ३, १८, १९)। देखो पोक्खलच्छिलय।

पुक्खलावई स्त्री [पुष्करावती, पुष्कलावती] महाविदह वर्ष का विजय—प्रान्त-विशेष (ठा २, ३, इक, महा)। °कूड पुन [°कूट] एक-शैल पर्वत का एक शिखर (इक)।

पुक्खलावट्टय पुं [पुष्करावर्तक, पुष्कलावर्तक] मेघ-विशेष, 'पुक्खल (?ला) वट्टए णं महामेहे एगेणं वासेणं दस वाससहस्साइं भावेति' (ठा ४, ४)।

पुक्खलावत्त पुं [पुष्करावर्त, पुष्कलावर्त] महाविदेह वर्ष का एक विजय—प्रान्त (जं ४)। °कूड पुं [°कूट] एकशैल पर्वत का एक शिखर (इक)।

पुगारिया स्त्री [दे] वस्त्रादि खादक जंतु-विशेष (सूअ० चू० गा० २८२)।

पुग्ग पुंन [दे] वाद्य-विशेष, 'सो पुरम्मि पुग्गाइं वाएई' (कुप्र ४०३)।

पुग्गल पुं [पुद्गल] १ वृक्ष-विशेष। २ न. फल-विशेष। ३ मांस (दस ५, १, ७३)।

पुग्गल देखो पोग्गल (सिक्खा १५, नव ४२, पि १२५)। °परट्ट, °परावत्त पुं [°परावर्त] देखो पोग्गल-परिअट्ट (कम्म ५, ८६, वै ५०, सिक्खा ८)।

पुच्चड देखो पोच्चड, 'सेयमलपुव्व (? च्च) डम्मी' (तदु ४०)।

पुच्छ सक [प्रच्छ्] पूछना, प्रश्न करना। पुच्छइ (हे ४, ९७)। भूका. पुच्छिसु, पुच्छीअ, पुच्छे (पि ५१६; कुमा, भग)। कर्म. पुच्छिज्जइ (भवि)। वकृ पुच्छंत (गा ४७, ३५७, कुमा)। कवकृ. पुच्छिज्जंत (गा ३४७, सुर २. १५१)। सकृ. पुच्छित्ता (भग)। हेकृ. पुच्छिउ, पुच्छित्तए (पि ५७३, भग)। कृ. पुच्छणिज्ज, पुच्छणीअ, पुच्छियव्व, पुच्छेयव्व (श्रा १४, पि ५७१, उप ८६४, कप्प)।

पुच्छ देखो पुछ = प्र + उन्छ्। पुच्छइ (षड्)।

पुच्छ देखो पुछ = पुच्छ (कप्प)।

पुच्छअ } वि [प्रच्छक] पूछनेवाला,
पुच्छग } प्रश्न-कर्ता (ओघभा २८, सुर १०, ६५)। स्त्री· °च्छिआ (अभि १२५)।

पुच्छण न [प्रच्छन, प्रश्न] पृच्छा (सूअनि १९३, धर्मवि ८, श्रावक ९३ टी)।

पुच्छणया } स्त्री [प्रच्छना] ऊपर देखो
पुच्छणा } (उप ४९६, औप)।

पुच्छणी स्त्री [प्रच्छनी] प्रश्न की भाषा (ठा ४, १—पत्र १८२)।

पुच्छल (अप) देखो पुट्ठ = पृष्ट (पिंग)।

पुच्छा स्त्री [पृच्छा] प्रश्न (उवा, सुर ३, ३५)।

पुच्छिअ वि [पृष्ट] पूछा हुआ (औप; कुमा; भग, कप्प, सुर २, १६८)।

पुच्छिर वि [प्रष्टृ] प्रश्न-कर्ता (गा ५९८)।

पुछल देखो पुच्छल (पिंग)।

पुज्ज सक [पूजय्] पूजना, आदर करना। पुज्जइ (कुप्र ४२३, भवि)। कर्म. पुज्जिज्जइ (भवि)। वकृ. पुज्जत (कुप्र १२१)। कवकृ. पुज्जिज्जत (भवि)। संकृ. पुज्जिउ, पुज्जिऊण (कुप्र १०२, भवि)। कृ. पुज्जिअव्व (ती ७)। प्रयो. पुज्जावइ (भवि)।

पुज्ज देखो पूज = पूजय्।

पुज्जत देखो पुज्ज=पूजय्।

पुज्जंत देखो पूर = पूरय्।

पुज्जण न [पूजन] पूजा, अर्चा (कुप्र १२१)।

पुज्जमाण देखो पूर = पूरय्।

पुज्जा स्त्री [पूजा] पूजा, अर्चा (उप पृ २४२)।

पुज्जिय वि [पूजित] सेवित, अर्चित (भवि)।

पुट्ट सक [प्र + उन्छ्] पोछना। पुट्टइ (प्राकृ ६७)।

पुट्ट न [दे] पेट, उदर (श्रा २८, मोह ४१, पव १३५, सम्मत्त २२६, सिरि २४२, सण)।

पुट्टल } पुन [दे] गट्ठर, गाँठ, गुजराती
पुट्टलय } में 'पोटलु', 'सवलपुट्टलय च गहिय' (सम्मत्त ६१)।

पुट्टलिया स्त्री [दे] छोटी गठरी, पोटली, मोटरी (सुपा ४३, ३४४)।

पुट्टिल पुं [पोट्टिल] १ भगवान् महावीर का एक शिष्य, जो भविष्य मे तीर्थंकर होनेवाला है (विचार ४७८)। २ एक अनुत्तर-देवलोक-गामी जैन महर्षि (अनु २)।

पुट्ठ वि [स्पृष्ट] १ छुआ हुआ (भग, औप, हे १, १३१)। २ न. स्पर्श (ठा २, १, नव १८)।

पुट्ठ वि [पृष्ट] १ पूछा हुआ (औप, सण, हे २, ३४)। २ न. प्रश्न (ठा २, १)। °लाभिय वि [°लाभिक] अभिग्रह-विशेष-वाला (मुनि) (औप, पण्ह २, १)। °सेणियापरिकम्म पुंन [°श्रेणिकापरिकर्मन्] दृष्टिवाद का एक प्रतिपाद्य विषय (सम १२८)।

पेच्छय वि [दे] जो देखे उसी को चाहनेवाला, दृष्ट-मात्र का अभिलाषी (दे ६, ५८)।

पेच्छा स्त्री [प्रेक्षा] प्रेक्षणक, तमाशा, खेल, नाटक, 'पेच्छाछणो सिएणविलोअणाण जहा सुचोक्खोवि न किंचिदेव' (उपपं ३७, सुर १३, ३७, औप)। देखो पेक्खा। °घर न [°गृह] देखो °हर (ठा ४, २)। °मंडव पुं [°मण्डप] नाट्य-गृह, खेल आदि में प्रेक्षकों के बैठने का स्थान (पव २६९)। °हर न [°गृह] नाटक-गृह, खेल-तमाशा का स्थान (पउम ८०, ५)।

पेच्छि वि [प्रेक्षिन्] प्रेक्षक, द्रष्टा (चेइय १०९, गा २१४)।

पेच्छिअ त्रि [प्रेक्षित] १ निरीक्षित, अवलोकित (कुमा)। २ न. निरीक्षण, अवलोकन (सुर १२, १८३, गा २२५)।

पेच्छिर वि [प्रेक्षितृ] निरीक्षक, द्रष्टा (गा १७४, ३७१)।

पेज्ज देखो पा = पा।

पेज्ज पुन [प्रेमन्] प्रेम अनुराग (सूअ २, ५, २२, आचा, भग, ठा १, चेइय ६३४)। °दंसि वि [°दर्शिन्] अनुरागी (आचा)।

पेज्ज वि [प्रेयस्] अत्यन्त प्रिय (औप)।

पेज्ज वि [प्रेज्य] पूज्य, पूजनीय (राज)।

पेज्ज देखो पेर = प्र + ईरय्।

पेज्जल न [दे] प्रमाण (दे ६, ५७)।

पेज्जलिअ वि [दे] संघटित (षड्)।

पेज्जा देखो पेआ (ओघ १४६, हे १, २४८)।

पेज्जाल वि [दे] विपुल, विशाल (दे ६, ७)।

पेट } न [दे] पेट, उदर (पिंग, पव १)।
पेट्ट }

पेट्ठ देखो पिट्ठ = पिष्ट (सक्षि ३, प्राकृ ५, प्राप्र)।

पेड देखो पेडय, 'नडपेडनिहा' (सबोध १८)।

पेडइअ पु [दे] धान्य आदि बेचनेवाला वणिक् (दे ६, ५९)।

पेडक } न [पेटक] समूह, यूथ, 'नडपेडक-
पेडय } सनिहा जाण' (सबोध १५, सुपा ५४६, सिरि १६३, महा)।

पेडा स्त्री [पेटा] १ मञ्जूषा, पेटी (दे ५, ३८, महा)। २ पेटाकार चतुष्कोण गृह-पंक्ति मे भिक्षार्थ-भ्रमण (उत्त ३०, १९)।

पेडाल पुं [दे. पेटाल] बड़ी मञ्जूषा, बड़ी पेटी (मुद्रा ११०)।

पेडावइ पुं [पेटकपति] यूथ का नायक (सुपा ५४६)।

पेडिआ स्त्री [पेटिका] मञ्जूषा (मुद्रा २४०)।

पेडु स्त्री पु [दे] महिष, भैंसा (दे ६, ८०)।

पेड्डा स्त्री [दे] १ भित्ति, भीत। २ द्वार, दरवाजा। ३ महिषी, भैंस (दे ६, ८०)।

पेढ देखो पीढ = पीठ (हे १, १०६, कुमा), 'फाऊण पेढं टविया तत्थ एसा पडिमा' (कुप्र ११७)।

पेढाल वि [दे] १ विपुल (दे ६, ७, गउड)। २ वर्तुल, गोलाकार (दे ६, ७, गउड, पाम)।

पेढाल वि [पीठवत्] पीठ-युक्त (गउड)।

पेढाल पु [पेढाल] १ भारत वर्ष का आठवाँ भावी जिनदेव, 'पेढालं अट्ठमयं आणंदजिय नमसामि' (पव ४६)। २ ग्यारह रुद्र पुरुषों में दसवाँ (विचार ४७३)। ३ एक ग्राम, जहाँ भगवान् महावीर का विचरण हुआ था, 'पेढालग्गाममागओ भयवं' (आवम)। ४ न. एक उद्यान, 'तत्तो सामी दढभूमि गओ, तीसे बाहिं पेढाल नाम उज्जाणं' (आव १)। °पुत्त पुं [°पुत्र] १ भारतवर्ष का आठवाँ भावी जिन-देव, 'उदए पेढालपुत्ते य' (सम १५३)। २ भगवान् पार्श्वनाथ के संतान मे उत्पन्न एक जैन मुनि; 'अहे णं उदए पेढालपुत्ते भगवं पासावच्चिज्जे नियंठे मेयज्जे गोत्तेणं' (सूअ २, ७, ५, ८, ९)। ३ भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर विमान में उत्पन्न एक जैन मुनि (अनु २)।

पेढिया देखो पीढिआ, 'चत्तारि मणिपीढियाओ' (ठा ४, २—पत्र २३०)। २ ग्रन्थ की भूमिका, प्रस्तावना (वसु)।

पेढी देखो पीढी (जीव ३)।

पेणी स्त्री [प्रैणी] हरिणी का एक भेद (पण्ह १, ४—पत्र ६८)।

पेदड्ड वि [दे] लुप्त-दण्डक, जुए मे जो हार गया हो वह, जिसका दाव चला गया हो वह (मृच्छ ४९)।

पेम पुन [प्रेमन्] प्रेम, अनुराग, प्रीति, स्नेह (उवा, औप, सं ५, सुपा २०४, रयण ४२)।

पेमालुअ वि [प्रेमिन्] प्रेमी, अनुरागी (उप ९८६ टी)।

पेम्म देखो पेम (हे २, ९८, ३, २५, कुमा, गा १२६, प्रासू ११६)।

पेम्मा स्त्री [प्रेमा] छन्द-विशेष (पिंग)।

पेया स्त्री [पेया] वाद्य-विशेष, बड़ी काहला (राय ४५)।

पेर सक [प्र + ईरय्] १ पठाना, भेजना, प्रेषण करना। २ धक्का लगाना, आघात करना। ३ आदेश करना। ४ किसी कार्य में जोड़ना—लगाना। ५ पूर्वपक्ष करना, प्रश्न करना, सिद्धान्त का विरोध करना। ६ गिराना। पेरइ (धर्मसं ५९०; भवि)। वकृ. पेरंत (कुप्र ७०, पिंग)। कवकृ. पेरिज्जंत (सुपा २५१, महा)। कृ. पेज्ज (राज)।

पेरंत देखो पज्जंत (हे १, ५८, ६३, प्राप्र, औप, गउड)। °चक्कवाल न [°चक्रवाल] बाह्य परिधि, बाहर का घेराव (पण्ह १, ३)। °वच्च न [°वर्चस्] मण्डप, तृणादि-निर्मित गृह (राज)।

पेरग वि [प्रेरक] प्रेरणा करनेवाला, पूर्वपक्षी (धर्मसं ५८७)।

पेरण न [दे] १ ऊर्ध्व स्थान (दे ६, ५९)। २ खेल, तमाशा (स ७२३, ७२५)।

पेरण न [प्रेरण] प्रेरणा (कुप्र ७०)।

पेरणा स्त्री [प्रेरणा] ऊपर देखो (सम्मत्त १५७)।

पेरिअ वि [प्रेरित] जिसको प्रेरणा की गई हो वह (दे ८, १२; भवि)।

पेरिज्ज न [दे] साहाय्य, सहायता, मदद (दे ६, ५८)।

पेरिज्जंत देखो पेर = प्र + ईरय्।

पेरुल्लि वि [दे] पिण्डीकृत, पिण्डाकार किया (दे ६, ५४)।

पेलव वि [पेलव] १ कोमल, सुकुमार, मृदु (पाअ, से २, २७, अभि २६, औप)। २ पतला, कृश। ३ सूक्ष्म, लघु (णाया १, १—पत्र २५, हे १, २३८)।

पेलु स्त्री [पेलु] पूणी, रुई की पहल; 'कंतामि ताव पेलु' (पिंडभा ३५)। °करण न [°करण] पूणी—पूनी बनाने का उपकरण, शलाका आदि (विसे ३३०५)।

३२)। °ब्भव पुं [°भव] फिर से उत्पत्ति, फिर से जन्म-ग्रहण (चेइय ३५७; औप)। °ब्भू स्त्री [°भू] फिर से विवाहित स्त्री, जिसका पुनर्लग्न हुआ हो वह महिला, 'अत्थि पुणब्भूकण्णो त्ति विवाहिया पच्छन्नं' (कुप्र २०८; २०६)। °रवि, °रावि अ [°अपि] फिर भी (उवा, उत्त १०, १६, १६)। °रावित्ति स्त्री [°आवृत्ति] पुन आवर्त्तन (पहि)। °रुत्त वि [°उक्त] फिर से कहा हुआ। २ न पुनरुक्ति (चेइय ५३८)। °वि अ [°अपि] फिर भी (संक्षि १६, प्राकृ ८७)। °व्वसु पुं [°वसु] १ नक्षत्र-विशेष (सम १०, ६६)। २ आठवें वासुदेव के पूर्व जन्म का नाम (सम १५३, पउम २०, १७२)।

पुण (अप) देखो पुण्ण = पुण्य। °मंत वि [°मत्] पुण्यशाली (पिंग)।

पुणअ सक [दृश्] देखना। पुणअइ (धात्वा १४५)।

पुणइ पुं [दे] श्वपच, चाण्डाल (दे ६, ३८)।

पुणण वि [पवन] पवित्र करनेवाला। स्त्री °णी (कुमा)।

पुणरुत्त, पुणरुत्त अ कृत-करण, वारंवार, फिर-फिर, 'अइ सुप्पइ पसुलि णीसहेहिं अंगेहिं पुणरुत्तं' (हे १, १७६, कुमा), 'ण वि तह छेअरआईवि हरंति पुणरुत्तराअरसिआइं' (गा २७४)।

पुणा, पुणाइ, पुणाइं अ. देखो पुण = पुनर् (पि ३४३, हे १, ६५, कुमा, पउम ६, ६७, उवा)।

पुणु (अप) देखो पुण = पुनर् (कुमा, पि ३४२)।

पुणो देखो पुण = पुनर् (औप, कुमा; प्राकृ ८७)।

पुणोत्त देखो पुण-रुत्त, पुणरुत्त (प्राकृ ३०)।

पुणोल्ल सक [प्र + नोदय्] १ प्रेरणा करना। २ अत्यन्त दूर करना। पुणोल्लयामो (उत्त १२, ४०)।

पुण्ण पुन [पुण्य] १ शुभ कर्म, सुकृत (औप, महा; प्रासू ७५, पाअ)। २ दो उपवास, वेला, 'भद्द पुण्णं (? ण्णं) गुही (? हि)य छट्ठमत्तस्स एगट्ठा' (संबोध ५८)। ३ वि पवित्र, 'थाणुपियाजलपुण्णं' (कुमा)। कलसा स्त्री [°कलशा] लाट देश के एक गाँव का नाम (राज)। °घण पुं [°घन] विद्याधरों का एक स्वनाम ख्यात राजा (पउम ५, ६५)। °मत, °मत्त वि [°वन्] पुण्यवाला, भाग्यवान् (हे २, १५६, चड)। देखो पुन्न = पुण्य।

पुण्ण वि [पूर्ण] १ सपूर्ण भरपूर, पूरा (औप, भग, उवा)। २ पु. द्वीपकुमार देवो का दाक्षिणात्य इन्द्र (इक)। ३ इक्षुवर समुद्र का अधिष्ठायक देव (राज)। ४ तिथि-विशेष, पक्ष की पाँचवीं, दसवी और पनरहवी तिथि (सुज्ज १०, १५)। ५ पुंन. शिखर विशेष (इक)। °कलस पुं [°कलश] सपूर्ण घट (जं १)। °घोस पुं [°घोष] ऐरवत वर्ष का एक भावी जिन-देव (सम १५४)। °चंद पुं [°चन्द्र] १ सपूर्ण चन्द्रमा। २ विद्याधर वश के एक राजा का नाम (पउम ५, ४४)। °प्पभ पुं [°प्रभ] इक्षुवर द्वीप का अधिपति देव (राज)। °भद्द पुं [°भद्र] १ स्वनाम-ख्यात एक गृह-पति, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पाई थी (अंत)। २ यक्ष-निकाय का एक इन्द्र (४, १)। ३ पुन. अनेक कूट-शिखरो का नाम (इक)। ४ यक्ष का चैत्य-विशेष (औप, विपा १, १, उवा)। °मासी स्त्री [°मासी] पूर्णिमा तिथि (दे)। °सेण पुं [°सेन] राजा श्रेणिक का पुत्र, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (अनु)। देखो पुन्न = पूर्ण।

पुण्णमासिणी स्त्री [पौर्णमासी] तिथि-विशेष, पूर्णिमा (औप, भग)।

पुण्णवत्त न [दे] आनन्द से हृत वस्त्र (दे ६, ५३, पाअ)।

पुण्णा स्त्री [पूर्णा] १ तिथि-विशेष, पक्ष की ५, १० और १५ वी तिथि (संबोध ५४, सुज्ज १०, १५)। २ पूर्णभद्र और मणिभद्र इन्द्र की एक महादेवी—अग्र-महिषी (इक, णाया २), 'पुण्णभद्दस्स णं जक्खिदस्स जक्खरणो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं जहा—पुत्ता(? ण्णा) बहुपुत्तिआ उत्तमा तारगा, एवं माणिभद्दस्सवि' (ठा ४, १—पत्र २०४)।

पुण्णाग, पुण्णाम देखो पुन्नाग (पउम ४३, ३६, से ६, ५६, हे १, १६०, पि २३१)।

पुण्णाली स्त्री [दे] असती, कुलटा, पुंश्चली (दे ६, ५३, षड्)।

पुण्णाह पुन [पुण्याह] १ पुण्य दिन, शुभ दिवस (गा १६५, गउड)। २ वाद्य-विशेष, 'पुण्णाहतूरेण' (स ४०१, ७३४)।

पुण्णिमसी स्त्री [पूर्णमासी] पूर्णिमा (संबोध ३६)।

पुण्णिमा स्त्री [पूर्णिमा] तिथि-विशेष, पूर्णमासी (काप्र १६४)। °यद पुं [°चन्द्र] पूर्णिमा का चन्द्र (महा, हेका ४८)।

पुण्णिमासिणी देखो पुण्णमासिणी (सम ६६, श्रा २६, सुज्ज १०, ६)।

पुत्त पुं [पुत्र] लडका (ठा १०, कुमा, सुपा ६६, ३३४, प्रासू २७, ७७, णाया १, २)। °वई स्त्री [°वती] लडकावाली स्त्री (सुपा २८१)।

पुत्तजीवय पु [पुत्रजीवक] वृक्ष-विशेष, पुतजीया, जियापोता का पेड, 'पुत्तजीवअरिट्ठे' (पण्ण १—पत्र ३१)। २ न जियापोता का बीज, 'पुत्तजीवयमालालकिएण' (स ३३७)।

पुत्तय पुं [पुत्रक] देखो पुत्त (महा)।

पुत्तरे पुस्त्री [दे] योनि, उत्पत्ति-स्थान, 'पुत्तरे योनौ' (संक्षि ४७)।

पुत्तलय पु [पुत्रक] पूतला (सिरि ८६१, ६२, ६४)।

पुत्तलिया, पुत्तली स्त्री [पुत्रिका] शालभंजिका, पूतली (पाअ, कुम्मा ६, प्रवि १३, सुपा २६६, सिरि ८१५)।

पुत्तह देखो पुत्त (प्राकृ ३५)।

पुत्ताणुपुत्तिय वि [पौत्रानुपुत्रिक] पुत्र-पौत्रादि के योग्य, 'पुत्ताणुपुत्तियं वित्ति कप्पेति' (णाया १, १—पत्र ३७)।

पुत्तिआ स्त्री [पुत्रिका] १ पुत्री, लडकी (अभि १७८)। २ पूतली (दे ६, ६२, कुमा)।

पुत्तिल्ल देखो पुत्त (प्राकृ ३५)।

पुत्ती स्त्री [पुत्री] लडकी (कप्पू)।

पोअ पुं [दे] १ धव वृक्ष, धाय, धौं का पेड़। २ छोटा साँप (दे ६, ८१)।

पोअइआ स्त्री [दे] निद्राकारी लता, लता-विशेष (दे ६, ६३, पाअ)।

पोअड वि [दे] १ भय-रहित, निडर। २ षण्ढ, नामर्द (दे ६, ६१)।

पोअत पुं [दे] शपथ, सौगन (दे ६, ६२)।

पोअण न [प्रवयन, प्रोतन] पिरोना, गुम्फन, गूँथना (भावम)।

पोअणपुर न [पोतनपुर] नगर-विशेष (सुपा ५०६, भवि)।

पोअणा स्त्री [प्रवयना, प्रोतना] पिरोना (उप ३५६)।

पोअय वि [पोतज] पोत से उत्पन्न होनेवाला प्राणी—हस्ती आदि (ठा ३, १)।

पोअय पु [पोतक] देखो पोअ = पोत (उवा, औप)।

पोअलय पुं [दे] १ आश्विन मास का एक उत्सव, जिसमें पत्नी के हाथ से लेकर पति अपूप को खाता है। २ एक प्रकार का अपूप—खाद्य-विशेष, पूआ। ३ वाल वसन्त (दे ६, ८१)।

पोआई स्त्री [पोताकी] १ शकुनि को उत्पन्न करनेवाली विद्या-विशेष २ शकुनिका, पक्षि-विशेष (विसे २४५३)।

पोआउय वि [पोतायुज, पोतज] देखो पोअय (पउम १०२, ६७)।

पोआय पुं [दे] ग्राम-प्रधान, गाँव का मुखिया (दे ६, ६०)।

पोआल पुं [दे] वृषभ, बलीवर्द (दे ६, ६२)।

पोआल [दे पोतक] बच्चा, शिशु, बालक (ओघ ४४७)।

पोइय पु [दे] १ हलवाई, मिठाई बेचनेवाला। २ खद्योत (दे ६, ६३)। ३ निमग्न, डूबा हुआ (ओघ १३६)। ४ स्पन्दित (बृह १)।

पोइअ वि [प्रोत] पिरोया हुआ (दे ७, ४४, उप पृ १०६, पाअ)।

पोइअल्लय देखो पोइअ = प्रोत (ओघ ५३६ टी)।

पोइआ } स्त्री [दे] निद्राकारी लता, वल्ली-
पोई } विशेष (दे ६, ६३, पण्ण १—पत्र ३४)।

पोउआ स्त्री [दे] करीष—सूखा गोवर (गोइँठा) का अग्नि (दे ६, ६१)।

पोंग पुं [दे] पाक, पकना (म १८०)।

पोंगिल्ल वि [दे] पका हुआ, परिपक्व, परि-पाक-युक्त, कच्छी भाषा में 'पोंगेल',
'अन्नेवि सइमहियलनिमीय-
गुप्पन्नकिरिणपोंगिल्ला।
मलिणजरकप्पडोच्छइय-
विग्गहा कहवि हिंडंति ॥'
(म १८०)।

पोंड न [दे] फूल, पुष्प, 'एगं सालियपोंड वद्धो आमेलगो होइ' (उत्तनि ३)।

पोंड देखो पुंड। °वद्धण न [°वर्धन] नगर-विशेष (महा)। °वद्धणिया स्त्री [°वर्धनिका] जैन मुनि-गण की एक शाखा (कप्प)।

पोंड } पुं [दे] यूथ का अधिपति (दे ६,
पोंडय } ६०)। २ फल (पण्ह १, ४—पत्र ७८)। ३ अविकसित अवस्थावाला कमल (विसे १४२५)। ४ कपास का सूता, 'दव्वं तु पोंडयादी भावे सुत्तमिह सूयगं नाणं' (सूअनि ३)।

पोंडरिगिणी देखो पुंडरिगिणी (ठा २, ३)।

पोंडरिय देखो पुंडरीअ = पुण्डरीक (स ४३६)।

पोंडरी स्त्री [पौण्ड्री, पुण्डरीका] जम्बूद्वीप के मेरु के उत्तर रुचक पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८)।

पोंडरीअ देखो पुंडरीअ = पुण्डरीक (औप, णाया १, ५, १६, सम ३३, देवेन्द्र ३१८, सूअनि १४६)।

पोंडरीअ } न [पौण्डरीक] १ गणित-
पोंडरीग } विशेष, रज्जु-गणित (सूअनि १५४)। २ देखो पुंडरीअ = पौण्डरीक (सूअ २, १, १, सूअनि १४६, १५१)।

पोक्क सक [व्या + हृ, पत् + कृ] पुका-रना, आह्वान करना। पोक्कइ (हे ४, ७६)।

पोक्क वि [दे] आगे स्थूल और उन्नत तथा बीच में निम्न (नासिका), 'पोक्कनासे' (उत्त १२, ६)।

पोक्कण पु [पोक्कण] १ अनार्य देश-विशेष। २ उस देश में बसनेवाली म्लेच्छ जाति (पण्ह १, १)।

पोक्कण न [व्याहरण, पूत्करण] १ पुकार, आह्वान। २ वि. पुकारनेवाला (कुमा)।

पोक्कर देखो पुक्कर। पोक्करंति (महा)। वकृ. पोक्करंत (सुपा ३८०)।

पोक्करिअ वि [पूत्कृत] १ पुकारा हुआ (सुर ६, १६४)। २ न पुकार (दंस ३)।

पोक्कार देखो पुक्कार = पूत्कार (उप पृ १८५)।

पोक्किअ देखो पोक्करिअ (उप १०३१ टी)।

पोक्खर न [पुष्कर] १ जल, पानी। २ पद्म, कमल। ३ पद्म-कोष। ४ एक तीर्थ, अजमेर-नगर के पास का एक जलाशय—तीर्थ। ५ हाथी की सूँढ का अग्र भाग। ६ वाद्य-भाण्ड। ७ आपण, दूकान। ८ असि-कोष, तलवार की म्यान। ९ मुख, मुँह। १० कुष्ठ रोग की ओषधि। ११ द्वीप-विशेष। १२ युद्ध, लड़ाई। १३ शर, बाण। १४ आकाश, 'पोक्खर' (हे १, ११६, २, ४; सक्षि ४)। १५ पु. नाग-विशेष। १६ रोग-विशेष। १७ सारस पक्षी। १८ एक राजा का नाम। १९ पर्वत विशेष। २० वरुण पुत्र, 'पोक्खरो' (प्राप्र)। देखो पुक्खर।

पोक्खर वि [पौष्कर] १ पुष्कर-सम्बन्धी। २ पद्माकार रचनावाला, 'पोक्खर पवहण' (चारु ७०)।

पोक्खरिणी स्त्री [पुष्करिणी] १ जलाशय-विशेष, वर्तुल वापी (णाया १, १—पत्र ६३)। २ पद्मिनी, कमलिनी, पद्म-लता, 'जलेण वा पोक्खरिणीपलास' (उत्त ३२, ६०)। ३ वापी (कुमा)। ४ पद्म-समूह। ५ पुष्कर-मूल (हे २, ४)। ६ चौकोना जला-शय, पोखरी, वापी (पण्ह १, १, हे २,४)।

पोक्खल देखो पुक्खल (पण्ण १—पत्र ३५, आचा २, १, ८, ११)।

पोक्खलच्छिउलय } देखो पुक्खलच्छि-
पोक्खलच्छिल्लय } भय (पण्ण १—पत्र ३५, राज)।

पोक्खलि पुंन [पुष्कलिन्] एक जैन उपा-सक, जिसका दूसरा नाम शतक था (राज)।

पोग्गर } पुंन [पुद्गल] १ रूपादि-विशिष्ट
पोग्गल } द्रव्य, मूर्त द्रव्य, रूपवाला पदार्थ 'पोग्गला' (भग ८, १, ठा २, ४, ४, ४,

पुप्फिअ वि [पुष्पित] कुसुमित, संजात-पुष्प (धर्मवि १४८; कुमा, णाया १, ११; सुपा ५८)।

पुप्फिआ स्त्री [दे] देखो पुप्फा (पाअ)।

पुप्फिआ स्त्री [पुष्पिता] एक जैन आगम-ग्रंथ (निर १, ३)।

पुप्फिम पुंस्त्री [पुष्पत्व] पुष्पपन (हे २, १५४)।

पुप्फी [दे] देखो पुप्फा (षड्)।

पुप्फुआ स्त्री [दे] करीष (गोयठा) का अग्नि, 'सुइज्जइ हेमंतम्मि दुग्गओ पुप्फुआसुअवेण' (गा ३२९)।

पुप्फुत्तर न [पुष्पोत्तर] एक विमान (कप्प)। °वडिंसग न [°ावतंसक] एक देव-विमान (सम ३८)।

पुप्फुत्तरा } स्त्री [पुष्पोत्तरा] शक्कर की
पुप्फोत्तरा } एक जाति (णाया १, १७—पत्र २२९; पण्ण १७—पत्र ५३३)।

पुप्फोदय न [पुष्पोदक] पुष्प-रस से मिश्रित जल (णाया १, १—पत्र १९)।

पुप्फोवय } वि [पुष्पोपग] पुष्प प्राप्त
पुप्फोवा° } करनेवाला, फूलनेवाला (वृक्ष) (ठा ३, १—पत्र ११३)।

पुम पुं [पुंस्] १ पुरुष, नर, 'थीअपुमाणं विसुज्झता' (पंच ५, ७२), 'पुमत्तमागम्म कुमार दोवि' (उत्त १४, ३, ठा ८, औप)। २ पुरुष-वेद (कम्म ५, ६०)। °आणमणी स्त्री [°आज्ञापनी] पुरुष को आज्ञा देनेवाली भाषा, भाषा-विशेष (पण्ण ११)। °पन्नावणी स्त्री [प्रज्ञापनी] भाषा-विशेष, पुरुष के लक्षणों का प्रतिपादन करनेवाली भाषा (पण्ण ११—पत्र ३६४)। °वयण न [°वचन] पुंलिंग शब्द का उच्चारण (पण्ण ११—पत्र ३७०)।

पुम्म (अप) सक [दृश्] देखना। पुम्मइ (प्राकृ ११९)।

पुयली स्त्री [दे] पुत-प्रदेश, कमर के नीचे का भाग, 'पुयलि पप्फोडेमाणे' (भग १५—पत्र ६७९)।

पुयावइत्ता देखो पुआव।

पुर (अप) देखो पूर = पूरय्। पुरइ (पिंग)।

पुर न [पुर] १ नगर, शहर (कुमा, कुप्र ४३८)। २ शरीर, देह (कुप्र ४३८)। °चंद पुं [°चन्द्र] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, ४४)। °भेयण वि [°भेदन] नगर का भेदन करनेवाला। स्त्री—°णी (उत्त २०, १८)। °वइ पुं [°पति] नगर का अधिपति (भवि)। °वर न [°वर] श्रेष्ठ नगर, (उवा, पण्ह १, ४)। °वरी स्त्री [°वरा] श्रेष्ठ नगरी (णाया १, ९, उवा, सुर २, १५२)। °वाल पुं [°पाल] नगर-रक्षक, राजा (भवि)।

पुर देखो पुरं, 'पुरकम्मम्मि य पुच्छा' (बृह १)।

पुरएअ } देखो पुरदेव (भवि)।
पुरएव }

पुरओ अ [पुरतस्] १ अग्रत, आगे (सम १५१, ठा ४, २, गा ३५०, कुमा, औप)। २ पहले, पूर्व मे, 'पुरओ कयं जं तु तं पुरेकम्म' (ओघ ४८६)।

पुरं अ [पुरस्] १ पहले, पूर्व में। २ समक्ष, 'तए णं से दरिद्दे समुक्किट्ठे समाणे पच्छा पुरं च णं विउलभोगसमितिसमन्नागते यावि विहरिज्जा' (ठा २, १—पत्र ११७)। ३ अग्रे, आगे। °गम वि [°गम] अग्र-गामी, पुरोवर्त्ती (सूअ १, ३, ३, ६)। देखो पुरे, पुरो।

पुरंजय पुं [पुरञ्जय] एक विद्याधर राजा। °पुर न [°पुर] एक विद्याधर-नगर (इक)।

पुरंदर पुं [पुरन्दर] १ इन्द्र, देवराज। २ गन्ध-द्रव्य-विशेष (हे १, १७७)। ३ वृक्ष-विशेष, चव्य जा पेड़; 'पुरंदरकुसुमदाम-सुविणेण सूइया जाया' (उप ९८६ टी)। ४ एक राजर्षि (पउम २१, ८०)। ५ मन्दर-कुञ्ज नगर का एक विद्याधर राजा (पउम ६, १७०)। °जसा स्त्री [°यशस्] एक राज-कन्या का नाम (उप ९७३)। °दिसि स्त्री [°दिश्] पूर्व दिशा (उप १४२ टी)।

पुरंधि } स्त्री [पुरन्ध्री] १ बहु कुटुम्बवाली
पुरंधी } स्त्री। २ पति और पुत्रवाली स्त्री (कुमा, कुप्र १०७, सुपा २६, पाअ)। ३ अनेक काल पहले व्याही हुई स्त्री (कप्पू)।

पुरकड देखो पुरक्खड (सूअ २, २, १८)।

पुरक्कार पुं [पुरस्कार] १ आगे करना, अग्रत. स्थापन (आचा)। २ सम्मान, आदर (सम ४०)।

पुरक्खड वि [पुरस्कृत] १ आगे किया हुआ (श्रा ६)। २ पुरोवर्त्ती, आगामी, 'गहण-समयपुरक्खडे पोग्गले उदीरेंति' (भग १, १)।

पुरच्छा देखो पुरत्था (राज)।

पुरच्छिम देखो पुरत्थिम (ठा २, ३—पत्र ६७, सुज्ज २०—पत्र २८७, पि ५९५)। °दाहिणा स्त्री [°दक्षिणा] पूर्व-दक्षिण दिशा, अग्निकोण (ठा १०—पत्र ४७८)।

पुरच्छिमा देखो पुरत्थिमा (ठा १०—पत्र ४७८)।

पुरच्छिमिल्ल देखो पुरत्थिमिल्ल (सम ६६)।

पुरत्थ वि [पुर:स्थ] आगे रहा हुआ, अग्र-वर्त्ती, पुरस्सर, 'पुरत्थ होइ सहायं रणे समं तेण' (उप १०३१ टी), 'जेण गहिएणणत्था इत्थ परत्थावि हु पुरत्था' (श्रा १४)।

पुरत्थ } अ [पुरस्तात्] १ पहले, काल
पुरत्थओ } या देश की अपेक्षा से आगे, 'तप्पुर-
पुरत्था } पुरत्थमाए' (सुपा ३९०), 'मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य' (उत्त ३२, ३१), 'आदीणियं दुक्कडियं पुरत्था' (सूअ १, ५, १, २)। २ पूर्वदिशा, 'पुरत्थाभिमुहे' (कप्प, औप, भग, णाया १, १—पत्र १९)।

पुरत्थिम वि [पौरस्त्य, पूर्व] १ पूर्व की तरफ का, 'उत्तर-पुरत्थिमे दिसीभाए' (कप्प; औप)। २ न. पूर्व दिशा, 'पुरतो पुरत्थिमेणं' (णाया १, १—पत्र ५४, उवा)।

पुरत्थिमा स्त्री [पूर्वा] पूर्व दिशा, 'पुरत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ' (आचा, चूर्ण्ण १५८ टि)।

पुरत्थिमिल्ल वि [पौरस्त्य] पूर्व दिशा का, पूर्व दिशा में स्थित (विपा १, ७, पि ५९५)।

पुरदेव पु [पुरादेव] भगवान् आदिनाथ, 'पुरदेवजिणस्स निव्वाणं' (पउम ४, ८७)।

पुरव देखो पुव्व (गउड, हे ४, २७०, ३२३)।

पुरस्सर वि [पुरस्सर] अग्रगामी (कप्पू)।

पुरा स्त्री [पुर्] नगरी, शहर (हे १, १६)।

पुरा देखो पुरिल्ला = पुरा (सूअ १, १, २, २४, विपा १, १)। °इय, °कय वि [°कृत] पूर्व काल मे किया हुआ (भवि, कुप्र ३१९)। °भव पुं [°भव] पूर्व जन्म (कुप्र ४०६)।

पोत्थिया स्त्री [पुस्तिका] पोथी, पुस्तक; 'सरस्सइ व्व पोत्थियावसग्गहत्था' (काल)।

पोप्पय पुंन [दे] हस्त-परिमर्षण, हाथ फिराना (उप पृ ३५३)।

पोप्फल न [पूगफल] सुपारी (हे १, १७०; कुमा)।

पोप्फली स्त्री [पूगफली] सुपारी का पेड़ (हे १, १७०, कुमा)।

पोम देखो पउम; 'जहा पोमं जले जायं' (उत्त २५, २७; सुख २५, २७; पउम ५३, ७६)।

पोमर न [दे] कुसुम्भ-रक्त वस्त्र (दे ६, ६३)।

पोमाड पुं [दे. पद्माट] पमाड, पमार, चकवड का पेड़ (स १४४)। देखो पउमाड।

पोमावई स्त्री [पद्मावती] छन्द-विशेष (पिंग)।

पोमिणी देखो पउमिणी (सुपा ६४६; सम्मत्त १७१)।

पोम्म देखो पउम (हे १, ६१; १, २, ११२; गा ७५; कुमा, प्राकृ २८, कप्पू; पि १६६)।

पोम्मा देखो पउमा (प्राकृ २८; गा ४७१; पि १६६)।

पोम्ह देखो पम्ह = पक्ष्मन्; 'जह उ किर णालिगाए भणियं मिदुरुयपोम्हभरियाए' (धर्मसं १८०)।

पोर पुं [पूतर] जल में होनेवाला क्षुद्र जन्तु (हे १, १७०; कुमा)।

पोर वि [पौर] पुर में—नगर में उत्पन्न, नागरिक (प्राकृ ३५)।

पोर देखो पुर = पुरस्। °कव्व न [°काव्य] शीघ्रकवित्व (राज)।

पोर पुंन [दे पर्वन्] ग्रंथि, गाँठ (ठा ४, १; अनु)। °बीय वि [°बीज] पर्व-बीज से उगनेवाली वनस्पति, इक्षु आदि (ठा ४, १)।

पोरग पुंन [पर्वक] वनस्पति का एक भेद, पर्ववाली वनस्पति (पण्ण १—पत्र ३३)।

पोरच्छ पुं [दे] दुर्जन, खल (दे ६, ६२ पाअ)।

पोरच्छिम देखो पुरच्छिम (सुपा ४१)।

पोरत्थ वि [दे] मत्सरी, ईर्ष्यालु, द्वेषी (षड्)।

पोरय न [दे] क्षेत्र (दे ६, २६)।

पोरव पुं [पौरव] राजा पुरु की सतान (अभि ६५)।

पोरवाड पुं [पौरवाट] एक जैन श्रावक-कुल (ती २)।

पोराण देखो पुराण (पण्ण २८; औप, भग, हे ४, २८७, उव, गा ३४०)।

पोराण वि [पौराण] १ पुराण-सम्बन्धी (राय)। २ पुराण शास्त्र का ज्ञाता (राज)।

पोराणिय वि [पौराणिक] पुराण-शास्त्र-संबन्धी (स १४४)।

पोरिस न [पौरुष] १ पुरुषत्व, पुरुषार्थ (प्रासू १७)। २ पराक्रम (कुमा)।

पोरिस वि [पौरुषेय] पुरुष-जन्य, पुरुष-प्रणीत (धर्मसं ८६२ टी)।

पोरिसिमंडल न [पौरुषीमण्डल] एक जैन शास्त्र (णंदि २०२)।

पोरिसिय देखो पोरिसीय; 'अत्थाहमतारम-पोरिसियंसि उदगंसि अप्पाणं मुयति' (णाया १, १४—पत्र १६०)।

पोरिसी स्त्री [पौरुषी] १ पुरुष-शरीर-प्रमाण छाया। २ जो समय में पुरुष-परिमाण छाया हो वह काल, प्रहर (उवा, विपा २, १, आचा; कप्प, पव ४)। ३ प्रथम प्रहर तक भोजन आदि का त्याग, प्रत्याख्यान-विशेष, तप-विशेष (पव ४; संबोध ५७)।

पोरिसीय वि [पौरुषिक] पुरुष-प्रमाण, पुरुष-परिमित; 'कुंभी महंताहियपोरिसीया' (सूअ १, ५, १, २४)।

पोरुस पुं [पुरुष] अत्यन्त वृद्ध पुरुष (सूअ १, ७, १०)।

पोरुस देखो पोरिस (स २०४; उप ७२८ टी; महा)।

पोरेकच्च } न [पौरस्कृत्य] पुरस्कार, कला-
पोरेगच्च } विशेष (औप, राय, औप १०७ टि)।

पोरेवच्च न [पौरोवृत्य] पुरोवर्तित्व, अग्रेसरता (औप; सम ८६, विपा १, १, कप्प)।

पोलंड सक [प्रोत + लङ्घ्] विशेष उल्लंघन करना। पोलंडेइ (णाया १, १—पत्र ६१)।

पोलच्चा स्त्री [दे] खेटित भूमि, कृष्ट जमीन (दे ६, ६३)।

पोलास न [पोलास] १ नगर-विशेष, पोलासपुर (उवा)। २ उद्यान-विशेष (राज)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (उवा, अंत)।

पोलासाढ न [पोलासाढ] श्वेतविका नगरी का एक चैत्य (विसे २३५७)।

पोलिअ पुं [दे] शौनिक, कसाई (दे ६, ६२)।

पोलिआ स्त्री [दे. पौलिका] खाद्य-विशेष, पूरी (?); 'कुलओ इव पोलियातलो' (उप ७२८ टी, राज)।

पोली देखो पओली; 'बद्देसु पोलिदारेसु, गवेसंतो य धुत्तयं' (श्रा १२, उप पृ ८४; धर्मवि ७७)।

पोल्ल वि [दे] पोला, शुषिर, खाली, रिक्त; 'पोल्लो व्व मुट्ठी जह से असारे' (उत्त २०, ४२; णाया १, १—पत्र ६३; पव ८१), 'वंका कीडक्खइया चित्तलया पोल्लया य दड्ढा य' (महा)।

पोल्लड वि [दे] ऊपर देखो; 'वंका कीडक्खइया चित्तलया पोल्लडा य दड्ढा य' (ओघ ७३५, विचार ३३६)।

पोल्लर न [दे] तप-विशेष, निर्विकृतिक तप (संबोध ५८)।

पोस अक [पुष्] पुष्ट होना। पोसइ (धात्वा १४५, भवि)।

पोस सक [पोषय्] १ पुष्ट करना। २ पालन करना। पोसेइ (पंचा १०, १४), 'मायरं पियरं पोस' (सूअ १, ३, २, ४), पोसाहि (सूअ १, २, १, १६)। कवकृ. पोसिज्जंत (गा १३५)।

पोस वि [पोष] १ पोषक, पुष्टि-कारक; 'अभिक्खणं पोसवत्थं परिहिंति' (सूअ १, ४, १, ३)। २ पुं. पोषण, पुष्टि (संबोध ३६)।

पोस पुं [पोस] १ अपान-देश, गुदा (पण्ह १, ४—पत्र ७८, ओघ ५५६, औप)। २ योनि (निचू ६)। ३ लिंग, उपस्थ, 'णवसो-तपरिस्सवा बोंदी पण्णत्ता, तं जहा, दो सोत्ता, दो णेत्ता, दो घाणा, मुहं, पोसे, पाऊ' (ठा ६—पत्र ४५०)।

पोस पुं [पौष] पौष मास (सम ३५)।

पोसग वि [पोषक] १ पुष्टि-कारक। २ पालन-कर्ता (पण्ह १, २)।

देव, अर्हन् (सम १, भग, पडि)। ३ चौथा त्रिखण्डाधिपति, चतुर्थ वासुदेव (सम ७०, पउम ५, १५५)। ४ भगवान् अनन्तनाथ का प्रथम श्रावक (विचार ३७८)। ५ श्रीकृष्ण (सम्मत्त २२६)।

पुरी स्त्री [पुरी] नगरी, शहर (कुमा)। °नाह पु [°नाथ] नगरी का अधिपति, राजा (उप ७२८ टी)।

पुरीस पुन [पुरीष] विष्ठा (णाया १, ८, उप १३९ टी, ३२० टी, पाअ), 'मुत्तपुरीसे य पिक्खति' (धर्मवि १६)।

पुरु पुं [पुरु] १ स्व-नाम-ख्यात एक राजा (अभि १७६)। २ वि प्रचुर, प्रभूत। स्त्री. °ई (प्राकृ २८)।

पुरुपुरिआ स्त्री [दे] उत्कण्ठा, उत्सुकता (दे ६, ५)।

पुरुमिल्ल देखो पुरिमिल्ल (गउड)।

पुरुव } देखो पुव्व=पूर्व; 'ण ईरिसो
पुरुव्व } दिट्ठपुरुवो' (स्वप्न ५५), 'अमद-माणदगु दलपुरुव्वं' (सुपा २२, नाट—मृच्छ १२१, पि १२५)।

पुरुस (शौ) देखो पुरिस (प्राकृ ८३, स्वप्न २६, अवि ८५, प्रयौ ९६)।

पुरुसोत्तम (शौ) देखो पुरिसोत्तम (पि १२४)।

पुरुहूअ पुं [दे] घूक, उल्लू (दे ६, ५५)।

पुरुहूअ पुं [पुरुहूत] इन्द्र, देव-राज (गउड)।

पुरुरव पुं [पुरूरवस्] एक चद्र-वंशीय राजा (पि ४०८, ४०९)।

पुरे देखो पुर, 'जस्स नत्थि पुरे पच्छा मज्झे तस्स कुओ सिया' (आचा)। °कड वि [°कृत] आगे किया हुआ, पूर्व में किया हुआ (औप, सूअ १, ५, २, १, उत्त १०, ३)। °कम्म न [°कर्मन्] पहले करने का काम, पूर्व में की जाती क्रिया; 'पुरओ कय ज तु तं पुरेकम्मं' (ओघ ४८९, हे १, ५७)। °क्कार पुं [°कार] सम्मान, आदर (उत्त २९, ७, सुख २९, ७)। °क्खड देखो °कड (पराण ३६—पत्र ७९६, पराह १, १)। °वाय पुं [°वात] १ सस्नेह वायु। २ पूर्व दिशा का पवन (णाया १, ११—पत्र १७१)। °संखडि स्त्री [दे. संस्कृति] पहले ही किया जाता जिमनवार —भोजनोत्सव, (आचा २, १, २, ६, २, १ ४, १)। °संथुय वि [°संस्तुत] १ पूर्व-परिचित। २ स्व-पक्ष का सगा (आचा २, १, ४, ५)।

पुरेस पुं [पुरेश] नगर-स्वामी (भवि)।

पुरो देखो पुर (मोह ४६, कुमा)। °अ, °ग वि [°ग] अग्रगामी, अग्रेसर (प्रति ४०, विसे २५४८)। °गम वि [°गम] वही अर्थ (उप पृ ३५१)। °भाइ वि [°भागिन्] दोष को छोड कर गुण-मात्र को ग्रहण करने वाला (नाट—विक्र ६७)।

पुरोकर सक [पुरस् + कृ] १ आगे करना। २ स्वीकार करना। ३ सम्मान करना। सकृ पुरोकरिअ, पुरोकाउ (मा १६, सूअ १, १, ३, १५)।

पुरोत्तमपुर न [पुरोत्तमपुर] एक विद्याधर-नगर का नाम (इक)।

पुरोवग पुं [पुरोपक] वृक्ष-विशेष (औप)।

पुरोह पुं [पुरोधस्] पुरोहित (उप ७२८ टी, धर्मवि १४६)।

पुरोहड वि [दे] १ विषम, असम। २ पच्छोकड (?) (दे ६, १५)। ३ पुंन. आवृत भूमि का वास्तु (दे ६, १५)। ४ अग्रद्वार, दरवाजा का अग्रभाग (ओघ ६२२)। ५ वाडा, वाटक, 'सफासमए पत्ते मज्झ वलद्दा पुरोहडस्सतो। मह दिट्ठीए दंसिवि ठाएयव्वा' (सुपा ५४५, वृह २)।

पुरोहिअ पु [पुरोहित] पुरोधा, याजक, होम आदि से शान्ति-कर्म करनेवाला ब्राह्मण (कुमा, काल)।

पुल पु [दे. पुल] छोटा फोडा, फुनसी, 'ते पुला भिज्जति' (ठा १०—पत्र ५२१)।

पुल वि [पुल] समुच्छ्रित, उन्नत, 'पुलनिप्पुलाए' (दस १०, १६)।

पुल अक [पुल्] उन्नत होना (दस १०, १६)।

पुल } सक [दृश्] देखना। पुलइ, पुलअइ
पुलअ } (प्राकृ ७१, हे ४, १८१, प्राप्र ८, ६९)। पुलएइ (गउड १०६३), पुलएमि (गा ५३१)। वकृ. पुलंत, पुलअंत, पुलएंत (कप्पू, नाट—मालवि ६, पउम ३, ७७, ८, १६०, सुर ११, १२०, १२, २०४, ७, २१२)। सकृ. पुलइअ (स ६८६)।

पुलअ पु [पुलक] १ रोमाञ्च (कुमा)। २ रत्न-विशेष, मणि की एक जाति (पराण १, उत्त ३६, ७७, कप्प)। ३ जलचर जन्तु-विशेष, ग्राह का एक भेद, 'सीमागारपुलु(? ल)-यसुमुमार—' (पराह १, १—पत्र ७)। °कंड पुन [°काण्ड] रत्नप्रभा नरक-पृथिवी का एक काराड (ठा १०)।

पुलअण वि [दर्शन] देखनेवाला, प्रेक्षक (कुमा)।

पुलअण न [पुलकन] पुलकित होना (कप्पू)।

पुलआअ अक [उत् + लस्] उल्लसित होना, उल्लास पाना। पुलआअइ (हे ४, २०२)। वकृ पुलआअमाण (कुमा)।

पुलइअ वि [दृष्ट] देखा हुआ (गा ११८, सुर १४, ११, पाअ)।

पुलइअ वि [पुलकित] रोमाञ्चित (पाअ, कुमा ४, १६, कप्प, महा, गा २०)।

पुलइज्ज अक [पुलकाय्] रोमाञ्चित होना। वकृ पुलइज्जंत (सण)।

पुलइल्ल वि [पुलकिन्] रोमाञ्च-युक्त, रोमाञ्चित (वज्जा १६४)।

पुलएत देखो पुलअ = दृश्।

पुलधअ पु [दे] भ्रमर, भौंरा (षड्)।

पुलपुल न [दे] अनवरत, निरन्तर (पराह १, ३—पत्र ४५, औप)।

पुलक } देखो पुलअ = पुलक (पि २०३ टि;
पुलग } णाया १, १, सम १०४, कप्प)।

पुलय पुंन [पुलक] कीट-विशेष (आचा २, १३, १)।

पुलाग } पुन [पुलाक] १ असार अन्न, 'धन्न-
पुलाय } मसारं भन्नइ पुलायसद्देण' (संबोध २८, पव ९३), 'निस्सारए होइ जहा पुलाए' (सूअ १, ७, २६)। २ चना आदि शुष्क अन्न (उत्त ८, १२, सुख ८, १२)। ३ लह-सुन आदि दुर्गन्ध द्रव्य। ४ दुष्ट रसवाला द्रव्य, 'तिविह होइ पुलाग धराणे गधे यरस-पुलाए य' (वृह ५)। ५ पु अपने सयम को निस्सार बनानेवाला मुनि, शिथिलाचारी साधुओं का एक भेद (ठा ३, २, ५, ३; सबोध २८, पव ९३)।

°प्फालण न [स्फालन] आघात (गउड, गा ५४६)।

°प्फुड देखो फुड (कुमा, रंभा)।

°प्फोडण देखो फोडण (गा ३८१)।

प्रस (अप) देखो परस = दृश्। प्रस्सदि (हे ४, ३९३)।

प्राइम्व, प्राइव, प्राउ } (अप) देखो पाय = प्रायस् (हे ४, ४१४, कुमा)।

प्रिय (अप) देखो पिअ = प्रिय (हे ४, ३९८; कुमा)।

प्रेक्खिअ न [दे] वृष रटित, बैल की चिल्लाहट (षड्)।

प्रेयंड वि [दे] धूर्त्त, ठग (दे १, ४)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि पआराइसद्दसंकलणो
सत्तावीसइमो तरंगो परिसमत्तो ॥

फ

फ पुं [फ] ओष्ठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्राप्र)।

फंद अक [स्पन्द्] थोडा हिलना, फरकना। फंदइ, फदंति (हे ४, १२७, उत्त १४, ४५)। वकृ फदत, फदमाण (सूअ १, ४, १, ९, ठा ७—पत्र ३८३, कप्प)।

फंद पुं [स्पन्द] किञ्चित् चलन (षड्, सण)।

फदण न [स्पन्दन] ऊपर देखो (विसे १८४७, हे २, ५३, प्राप्र)।

फदणा स्त्री [स्पन्दना] ऊपर देखो (सूअनि ८ टी)।

फदिअ वि [स्पन्दित] १ कुछ हिला हुआ, फरका हुआ (पाअ)। २ हिलाया हुआ, ईषत् चालित (जीव ३)।

फफ (अप) अक [उद् + गम्] उछलना। फंफाइ (पिंग १८४, ५)।

फंफसय पु [दे] लता-भेद, वल्ली-विशेष (दे ६, ८३)।

फफाइ (अप) वि [कम्पायित, कम्पित] कँपाया हुआ, कम्प-प्राप्त (पिंग)।

फंस अक [विसम् + वद्] असत्य प्रमाणित होना, प्रमाण-विरुद्ध होना, अप्रमाण सावित होना। फंसइ (हे ४, १२९)। प्रयो, भूका. फंसाविही (कुमा)।

फंस सक [स्पृश्] छूना। फंसइ, फंसेइ (हि ४, १८२, प्राकृ २७)। कर्म. फसिज्जइ (कुमा)।

फंस पु [स्पर्श] स्पर्श, छूना (पाअ; प्राप्र, प्राकृ २७, गा २९९)।

फंसण न [स्पर्शन] छूना, स्पर्श करना (उप ३३० टी; धर्मवि ४३, मोह २९)।

फंसग वि [पांसन] अपसद, अधम, 'कुल-फंसणो' (सुख २, ९, स १९८, भवि)।

फंसण वि [दे] १ युक्त, संयत। २ मलिन, मैला (दे ६, ८७)।

फंसुल वि [दे] मुक्त, त्यक्त (दे ६, ८२)।

फसुली स्त्री [दे] नवमालिका, पुष्प-प्रधान वृक्ष-विशेष (दे ६, ८२)।

फक्किया स्त्री [फक्किका] ग्रन्थ का विषम स्थान, कठिन स्थान (सुर १६, २४७)।

फग्गु वि [फल्गु] १ असार, निरर्थक, तुच्छ (सुर ८, ३, संबोध १६; गा ३६६ अ)। २ स्त्री. भगवान् अजितनाथ की प्रथम शिष्या (सम १५२)। °मित्त पुं [°मित्र] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि (कप्प)। °रक्खिय पुं [°रक्षित] एक जैन मुनि (आव १)। °सिरी स्त्री [°श्री] इस अवसर्पिणी काल के पंचम आरे में होनेवाली अन्तिम जैन साध्वी (विचार ५३४)।

फग्गु पुं [दे. फल्गु] वसन्त का उत्सव, फगुआ (दे ६, ८२)।

फग्गुण पुं [फाल्गुन] १ मास-विशेष, फागुन का महिना (पाअ, कप्प)। २ अर्जुन, मध्यम पाण्डुपुत्र (वज्जा १३०)।

फागुणी स्त्री [फाल्गुनी] १ फागुन मास की पूर्णिमा (इक, सुज्ज १०, ६)। २ फागुन मास की अमावस्या (सुज्ज १०, ६)। ३ एक गृह-पति की स्त्री (उवा)।

फग्गुणी स्त्री [फल्गुनी] नक्षत्र-विशेष (ठा २, ३)।

फट्ट अक [स्फट्] फटना, टूटना। फट्टइ (भवि)।

फड सक [स्फट्] १ खोदना। २ शोधना। वकृ. 'गतं फडमाणीओ' (सुपा ६१३)। हेकृ. फडिउं (सुपा ६१३)।

फड न [दे] साँप का सर्व शरीर (दे ६, ८६)।

फड पुंन [दे. फट] साँप की फरणा (दे ६, ८६, कुप्र ४७२)।

फडही [दे] देखो फलही (गा ५५० अ)।

फडा स्त्री [फटा] साँप की फन, सर्प-फरणा (गाया १, ९, पउम ५२, ५, पाअ, औप)। °ल वि [°वत्] फनवाला (हे २, १५९, चंड)।

पुस पुं [पौष] मास-विशेष, पौष मास, 'पुसो' (प्राकृ १०)।

पुसिअ वि [प्रोञ्छित, मृष्ट] पोंछा हुआ (गउड; से १०, ४२; गा ५४)।

पुसिअ पुं [पृषत] मृग-विशेष (गा ६२१)।

पुस्स पु [पुष्य] १ नक्षत्र-विशेष, कृत्तिका से आठवाँ नक्षत्र (प्राकृ २६; प्राप्र, सम ८, १७, ठा २ ३)। २ रेवती नक्षत्र का अधिपति देव (सुज्ज १०, १२)। ३ ऋषि-विशेष (राज)। °माणअ, °माणव पुं [°मानव] मागध, स्तुति-पाठक, भाट-चारण आदि (णाया १, ८—पत्र १३३, टी—पत्र १३६)। देखो पूस = पुष्य।

पुस्सदेवय न [पुष्यदैवत] जैनेतर शास्त्र-विशेष (णंदि १५४)।

पुस्सायण न [पुष्यायण] गोत्र-विशेष (सुज्ज १०, १६)।

पुह } देखो पिह = पृथक् (हे १, १८८)।
पुहं } °ब्भूय वि [°भूत] अलग, जो जुदा हुआ हो (धम्म ६०)।

पुहइ° } स्त्री [पृथिवी] १ तृतीय वासुदेव की **पुहई** } माता का नाम (पउम २०, १८४)। २ एक नगरी का नाम (पउम २०, १८८)। ३ भगवान् सुपार्श्वनाथ की माता का नाम (सुपा ३६)। ४—देखो पुढवी, पुहवी (कुमा, हे १, ८८, १३१)। °धर पुं [°धर] राजा (पउम; ८५, ४)। °नाह पुं [°नाथ] राजा (सुपा १२२)। °पहु पुं [°प्रभु] राजा (उप ७२८ टी)। °पाल पुं [°पाल] राजा (सुर १, २४३)। °राय पुं [°राज] विक्रम की बारहवीं शताब्दी का शाकम्भरी देश का एक राजा, 'पुहईराएण सयंभरीनरिंदेण' (मुणि १०६०१)। °वइ पु [°पति] राजा (सुपा २०१, २४८; ५१६)। °वाल देखो °पाल (उप ६४८ टी)।

पुहईसर पु [पृथिवीश्वर] राजा (सुपा १०७; २४१)।

पुहत्त न [पृथक्त्व] १ भेद, पार्थक्य (अणु)। २ विस्तार (राज)। ३ बहुत्व (भग १, २, ठा १०)। ४ वि. भिन्न, अलग, 'अत्थपुहत्तस्स' (विसे १०६१)। °वियक्क न [°वितर्क] शुक्ल ध्यान का एक भेद (संबोध ५१)। देखो पुहुत्त, पोहत्त।

पुहत्तिय देखो पोहत्तिय (भग)।

पुहय देखो पिह = पृथक्, 'पुहय देवीएं' (कुमा)।

पुहवि° } देखो पुढवी, पुहई (पि ३८६, श्रा **पुहवी** } १४, प्राप्र, प्रासू ५, ११३; सम १५१, स १५२)। ९ भगवान् श्रेयांसनाथ की दीक्षा-शिविका (विचार १२९)। १० एक छन्द का नाम (पिंग)। °चंद पुं [°चन्द्र] एक राजा (यति ५०)। °पाल पुं [°पाल] १ एक राजकुमार (उप ९८६ टी)। २ देखो पुहई-पाल (सिरि ४५)। °पुर न [°पुर] एक नगर का नाम (उप ८४४)।

पुहवीस पुं [पृथिवीश] राजा (हे १, ६)।

पुहु वि [पृथु] विशाल, विस्तीर्ण। स्त्री. °ई (प्राकृ २८)।

पुहुत्त न [पृथक्त्व] १ दो से नव तक की संख्या (सम ४४, जी ३०, भग)। २—देखो पुहत्त (ठा १०—पत्र ४७१, ४९५)।

पुहुवी देखो पुहु-ई (हे २, ११३)।

पू° देखो पुं°। °सुअ पुं [°शुक] तोता, मर्द पिक-पक्षि (गा ५६३ अ)।

पूअ सक [पूजय्] पूजा करना। पूएइ (महा)। कर्म. पूइज्जसि (गउड)। वकृ. पूयंत (सुपा २२४)। कवकृ. पूइज्जंत (पउम ३२, ९)। कृ. पूअणीअ, पूएअव्व, पूअणिज्ज (नाट—मृच्छ १९५, उवर १९६, औप, णाया १, १ टी, पचा २, ८, उप ३२० टी)। संकृ. पूइऊण (महा)।

पूअ न [दे] दधि, दही (दे ६, ५६)।

पूअ पुं [पूग] १ वृक्ष-विशेष, सुपारी का गाछ (गउड)। २ न. फल-विशेष, सुपारी (स ३४५)। देखो पूग। °प्फली °फली स्त्री [°फली] सुपारी का पेड़ (पउम ५३, ७९, पण्ण १)।

पूअ न [पूर्त] तालाब, कुआँ आदि खुदवाना, अन्न-दान करना, देव-मन्दिर बनाना आदि जन-समूह के हित का कार्य, 'गरहियाणि इट्ठपूयाणि' (स ७१३)।

पूअ वि [पूत] १ पवित्र, शुद्ध (णाया १, ५, औप)। २ न. लगातार छः दिनो का उपवास (संबोध ५८)। ३ वि. सूप आदि से साफ—तुष-रहित किया हुआ (णाया १, ७—पत्र ११६)।

पूअ न [पूय] पीब, दुर्गन्ध रक्त, व्रण से निकला हुआ गन्दा सफेद बिगड़ा हुआ खून (पण्ह १, १, णाया ३, ८)।

पूअण न [पूजन] पूजा, सेवा (कुमा, औप, सुपा ५८४, महा)।

पूअणा स्त्री [पूजना] १ ऊपर देखो (पण्ह २, १, से ७६३, संबोध ६)। २ काम-विभूषा (सूअ १, ३, ४, १७)।

पूअणा } स्त्री [पूतना] १ दुष्ट व्यन्तरी, डाइन, **पूअणी** } डाकिनी (सूअ १, ३, ४, १३, पिंडभा ४१, सुपा २६, पण्ह १, ४)। २ गाडर, भेड़ी, मेषी (सूअ १, ३, ४, १३)।

पूअय वि [पूजक] पूजा करनेवाला (सुर १२, १४३)।

पूअर देखो पोर = पूतर (श्रा १४, जी १५)।

पूअल पुं [पूप] अपूप, पूआ, खाद्य-विशेष (दे ६, १८)।

पूअलिया स्त्री [पूपिका] ऊपर देखो (पव ४)।

पूआ स्त्री [दे] पिशाच-गृहीता, भूताविष्ट स्त्री (दे ६, ५४)।

पूआ स्त्री [पूजा] पूजन, अर्चा, सेवा (कुमा)। °भत्त न [°भक्त] पूज्य के लिए निष्पादित भोजन (बृह ७)। °मह पु [°मह] पूजोत्सव (कुप्र ८५)। °रह पु [°रथ] राक्षस-वंश में उत्पन्न एक राजा का नाम, एक लंका-पति (पउम ५, २५६)। °रिह, °रुह वि [°र्ह] पूजा-योग्य (सुपा ४६१, अभि ११८)।

पूआहिज्ज वि [पूजाहार्य] पूजित-पूजक (ठा ५, ३ टी—पत्र ३४२)।

पूइ वि [पूति] १ दुर्गन्धी, दुर्गन्धवाला (पउम ४४, ५५' उप ७२८ टी, तंदु ४१) २। अप-वित्र (प चा १३, ५)। ३ स्त्री. दुर्गन्ध। ४ अपवित्रता (तंदु ३८)। ५ भिक्षा का एक दोष, पूति-कर्म (पिंड २६८)। ६ रोग विशेष, एक नासिका-रोग, नासा-कोप (विसे २०८)। ७ पूय, पीब, 'गलंतपूइनिवह' (महा), 'पूइ-नसरुहिरपुन्न' (सुर १४, ४६), 'जहा सुणी

कुसाइफलेणं' (आचा १, ६, ३, १०)। °अंत, °व वि [°वत्] फलवाला (णाया १, ४; पंचा ४)। °वद्धिअय, वद्धिय न [°वर्द्धिक] १ नगर-विशेष, फलोधि-नामक मरुदेशीय नगर। २ वहाँ का एक जैन मन्दिर (ती ५२)।

फलअ } पुंन [फलक] १ काष्ठ आदि का फलग } तख्ता (आचा; गा ६५६; संदु २६, सुर १०, १६१, औप)। २ युद्ध का एक उपकरण (औप, भग १२)। ३ ढाल; 'भरिएहिं फलएहिं' (विपा १, ३, कुमा, सार्ध १०१)। ४ देखो फल (आचा)। °सज्जा स्त्री [°शय्या] काष्ठ का तख्ता जिसपर सोया जाय (भग)।

फलण न [फलन] फलना (सुपा ६)।

फलह } पुंन [फलह, °क] फलक, काठ फलहग } आदि का तख्ता; 'असंसंजए भिक्खु-पडियाए पीढं वा फलहगं वा णिस्सेणिं वा उदूहलं वा आहट्टु उस्सविय दुरुहेज्जा' (आचा २, १, ६, १), 'भूमिसेज्जा फलह-सेज्जा' (औप), 'घरफलहे' (दे १, ८; पि २०६), 'पेक्खइ मन्दिराइं फलहट्ठुघाडिय-जालगक्खाइं', 'अह फलहतरेण दरिसिय-गुग्गंतरदेसइं' (भवि),

'पिहुपसासयमयलं गुणमियरनिबद्धफलहसंघायं।
संजमियसयलजोगं बोहित्थं मुणिवरसरिच्छं'
(सुर १३, ३१)।

फलहिआ } स्त्री [फलहिका, फलही] काठ फलही } आदि का तख्ता, 'सूरिए अत्थमिए फलहिम्मं भडेउमाढवइ', 'इत्थ पहाणफलहो चिट्ठइ' (ती ११), 'कलावईए रूवं सिरथं आलिहसु चित्तफलहीए' (सुर १, १५१)।

फलही स्त्री [दे] १ कर्पास, कपास (दे ६, ८२, गा १६५, ३५६)। २ कपास की लता; 'दरफुडिअवेंटभारोणआइ हसिअं व फलहीए' (गा ३६०)।

फलाय सक [फलाय्] फलवान् बनाना, सफल करना; 'तत्तोवि अ भणणतमा निमय-फलेणं फलावंति' (रत्न २१)।

फलावह वि [फलावह] फलप्रद, फल को आरण करनेवाला (पउम १४, ४४)।

फलासव पुं [फलासव] मद्य-विशेष (पएण १७)।

फलि पुं [दे] १ लिंग, चिह्न। २ वृषभ, बैल (दे ६, ८६)।

फलिअ वि [फलित] १ विकसित, 'कुविअम्मि फलिअम्मं व वसिममुहरिअ' (पाम)। २ फल-युक्त, जिसको फल हुआ हो वह (णाया १, ११)।

फलिअ न [दे] वायन, बायन, भोजन आदि का बाँटा जाता उपहार (ठा ३, ३—पत्र १४७)।

फलिआरी स्त्री [दे] दूर्वा, कुश तृण (दे ६, ८३)।

फलिणी स्त्री [फलिनी] प्रियंगु-वृक्ष (दे १, ३२; ६, ४१; पाम, कुमा, गा १६३)।

फलिह पुं [परिघ] १ अर्गला, आगल; 'अग्गला फलिहो' (पाम, औप), 'ऊसिय-फलिहा' (भग २, ५—पत्र १३४)। २ अस्त्र-विशेष, लोहे का मुद्गर आदि अस्त्र। ३ गृह, घर। ४ काच-घट। ५ ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक योग (हे १, २३२, प्राप्र)।

फलिह पुं [स्फटिक] १ मणि-विशेष, स्फटिक मणि (जी ३, हे १, १९७; कप्पू)। २ एक विमानावास, देव-विमान-विशेष (देवेन्द्र १३२; इक)। ३ रत्नप्रभा पृथिवी का एक स्फटिक-मय काण्ड (ठा १०)। ४ गन्धमादन पर्वत का एक कूट (इक)। ५ कुण्डल पर्वत का एक कूट। ६ रुचक पर्वत का एक शिखर (राज)। °गिरि पुं [°गिरि] कैलास पर्वत (पाम)।

फलिह पुं [फलिह] फलक, काठ आदि का तख्ता, 'अवेसिणो फलिहा' (पाम), 'नाणो-मगरणभूयाणं कवलियाफलिहपुत्थियाईणं' (आप ८)।

फलिह पुंन [स्फटिक] आकाश (भग २०, २)।

फलिह न [दे] कपास का टेंटा, टेंट या ढेढ़ी (भणु ३५ टी)।

फलिहंस पुं [फलिहंसक] वृक्ष-विशेष (दे ४, १२)।

फलिहा स्त्री [परिखा] खाई, किले या नगर के चारो ओर की नहर (औप; हे १, २३२; कुमा)।

फलिहि देखो परिहि (प्राकृ १५)।

फलिही देखो फलही=दे (भणु ३५ टी)।

फली स्त्री [फली] काष्ठ आदि की छोटी तख्ती; 'तत्तो फेवणफलीउ वणिमहूमि लिखिकर्ड कहवि (सुपा १८५)।

फलोवय } वि [फलोपग] फल-प्राप्त, फल-फलोवा } सहित (ठा ३, १ पत्र—११३)।

फल्ल वि [फल्य] सूते का वस्त्र, सूती कपड़ा (बृह १)।

फव्वीह सक [लभ्] यथेष्ट लाभ प्राप्त करना, गुजराती में 'फावबुं'। फव्वीहामो (बृह १)। फव्व (दश० अगस्त्य० चू० ३०३)।

फसल वि [दे] १ सार, चितकबरा; 'फसलं सबलं सारं किम्मीरं चित्तलं च सोगिल्लं' (पाम, दे ६, ८७। २ स्वासक (दे ६, ८७)।

फसलाणिअ } वि [दे] कृत-विभूष, जिसने फसलिअ } विभूषा की हो वह, शृङ्गारित (दे ६, ८३), 'फसलियाणि कुंकुमराएण' (स ३१०)।

फसुल वि [दे] मुक्त (दे ६, ८२)।

फाइ स्त्री [स्फाति] वृद्धि (ओघ ४७)।

फाईकय वि [स्फीतीकृत] १ फैलाया हुआ। २ प्रसिद्ध किया हुआ, 'बइसेसियं पणीयं फाईकयमरणामरणेहिं' (विसे २५०७)।

फागुण देखो फग्गुण (पि ६२)।

फाड सक [पाटय्, स्फाटय्] फाड़ना। फाडेइ (हे १, १९८; २३२)। वकृ. फाडंत (कुमा)।

फाडिय वि [फाटित, स्फाटित] विदारित (भवि)।

फाणिअ पुंन [फाणित] १ गुड़, 'फाणिओ गुडो भएणति' (निचू ४)। २ गुड़ का विकार-विशेष, आर्द्र गुड़, पानी से द्रावित गुड़ (औप; कस, पिंड २३१; ६२५, पव ४)। ३ क्वाथ (पएण १७—पत्र ५३०)।

फाय वि [स्फीत] १ वृद्ध। २ विस्तीर्ण। ३ व्याप्त (विसे २५०७)।

फार वि [स्फार] १ प्रचुर, बहुत; 'फारफल-भारभज्जिरसाहासयसंकुलो महासाही' (धर्मवि ५५)। २ विशाल, विपुल। ३ विस्तृत,

पूस पुं [दे] १ राजा सातवाहन (दे ६, ८०)। २ शुक, तोता (दे ६, ८०, गा २६३, वज्जा १३४; पाम)।

पूस पुं [पूषन्] १ सूर्य, रवि (हे ३, ५६)। २ मणि विशेष (पउम ६, ३६)।

पूसा स्त्री [पुष्या] व्यक्ति-वाचक नाम, कुण्ड-कोलिक श्रावक की पत्नी (उवा)।

पूसाण देखो पूस = पूषन् (हे ३, ५६)।

°पूह पुं [अपोह] विचार, मीमांसा, 'ईहापूह-मग्गणगवेसणं करेमाणस्स' (औप, पि १४२, २८६)। देखो अपोह = अपोह।

पृथुम (पै) देखो पढम, 'पृथुमसिनेहो' (प्राकृ १२४)।

पेअ पु [प्रेत] १ व्यन्तर-भेद, एक देव-जाति (सुपा ४६१, ४६२, जय २६)। २ मृतक (पउम ५, ६०)। °कम्म न [°कर्मन्] अन्त्येष्टि क्रिया, मृत का दाहादि कार्य (पउम २३, २४)। °करणिज्ज न [°करणीय] अन्त्येष्टि क्रिया (पउम ७५, १)। °काइय वि [°कायिक] प्रेत योनि में उत्पन्न, व्यन्तर-विशेष (भग ३, ७)। °देवयकाइय वि [°देवताकायिक] प्रेत-देवता का, प्रेत-सम्बन्धी (भग ३, ७)। °नाह पुं [°नाथ] यमराज, जम (स ३१६)। °भूमि, °भूमी स्त्री [°भूमि, °मी] श्मशान (सुपा २६५)। °लोय पुं [°लोक] श्मशान (पउम ८६, ४३)। °वइ पुं [°पति] यम (उप ७२८ टी)। °वण न [°वन] श्मशान (पाअ, सुर १६, २०४, वज्जा २, सुपा ५१२)। °हिव पु [°धिप] यम, जमराज (पाअ)।

पेअ वि [प्रेयस] अतिशय प्रिय। स्त्री. °सी (सम्मत्त १७५)।

पेअ } देखो पा = पा।
पेअव्व }

पेआ स्त्री [पेया] यवागू, पीने की वस्तु-विशेष (हे १, २४८)।

पेआल न [दे] १ प्रमाण (दे ६, ५७, विसे १६६ टी, णंदि, उव)। २ विचार (विसे १३६१)। ३ सार, रहस्य (ठा ४, ४ टी—पत्र २८३, उप पृ २०७। ४ प्रधान, मुख्य (उवा)।

पेआलणा स्त्री [दे] प्रमाण-करण, 'पज्जव-पेयालणा पिंडो' (पिंड ६५)।

पेआलुय वि [दे] विचारित (विसे १४८२)।

पेइअ वि [पैतृक] १ पिता से आया हुआ, पितृ-क्रम-प्राप्त, 'पेइओ धम्मो' (पउम ८२, ३३, सिरि ३४८, स ५६६)। २ न स्त्री के पिता का घर, पीहर, नैहर, मैका, 'ता जा कुले कलंकं नो पयडइ ताव पेइए एयं पेमेमि', 'विमलेण तओ भणियं गच्छ पिए पेइयमियाणिं' (सुपा ६००)।

पेईहर न [पितृगृह, पैतृकगृह] पीहर, स्त्री के पिता का घर, 'इय चिंतिऊण मिग्घं वणसिरिपेईहरम्मि सचलिओ' (सुपा ६०३)।

पेऊस न [पीयूष] अमृत, सुधा (हे १, १०५, गा ६५, कप्पू)। °ासण पुं [°ाशन] देव, सुर (कुमा)।

पेंखिअ वि [प्रेङ्खित] कम्पित (कप्पू)।

पेंखोल अक [प्रेङ्खोलय्] झूलना, हिलना। वकृ पेंखोलमाण (णाया १, १—पत्र ३१)।

पेंड देखो पिंड = पिण्ड (हे १, ८५, प्राकृ ५, प्राप्र, कुमा)।

पेंड न [दे] १ खण्ड, टुकडा। २ वलय (दे ६, ८)।

पेंडधव पुं [दे] खड्ग, तलवार (दे ६, ५६)।

पेंडवाल वि [दे] देखो पेंडलिअ (दे ६, ५४)।

पेंडय पुं [दे] १ तरुण, युवा। २ पण्ढ, नपुसक (दे ६, ५३)।

पेंडल पुं [दे] रस (दे ६, ५८)।

पेंडलिअ वि [दे] पिण्डीकृत, पिण्डाकार किया हुआ (दे ६, ५४)।

पेंडव सक [प्र + स्थापय्] १ रखना, स्थापन करना। २ प्रस्थान कराना। पेंडवइ (हे ४, ३७)।

पेंडविर वि [प्रस्थापयितृ] प्रस्थापन करने-वाला (कुमा)।

पेंडार पु [दे] १ गोप, गो-पाल, ग्वाला। २ महिषी-पाल (दे ६, ५८)।

पेंडोली स्त्री [दे] क्रीडा (दे ६, ५६)।

पेंढा स्त्री [दे] कलुष सुरा, पंकवाली मदिरा (दे ६, ५०)।

पेंत देखो पा = पा।

पेक्ख सक [प्र + ईक्ष्] देखना, अवलोकन करना। पेक्खइ, पेक्खए (सण, पिंग)। वकृ. पेक्खंत (पि ३६७)। कवकृ पेक्खिज्जंत (से १५, ६३)। संकृ. पेक्खिअ, पेक्खिऊण (अभि ४२, काप्र १५८)। कृ. पेक्खणिज्ज (नाट—वेणी ७३)।

पेक्खअ } वि [प्रेक्षक] देखनेवाला, निरीक्षक,
पेक्खग } द्रष्टा (सुर ७, ८०, स ३७६, महा)।

पेक्खण न [प्रेक्षण] निरीक्षण, अवलोकन (सुपा १६६, अभि ५३)।

पेक्खणग } न [प्रेक्षणक] खेल, तमाशा,
पेक्खणय } नाटक (सुर ७, १८२, कुप्र ३०)।

पेक्खणा स्त्री [प्रेक्षणा] निरीक्षण, अवलोकन (ओघ ३)।

पेक्खा स्त्री [प्रेक्षा] ऊपर देखो (पउम ७२, २६)। देखो पेच्छा।

पेक्खिय देखो पेच्छिअ (राज)।

पेखिल (अप) वि [प्रेक्षित] दृष्ट (रंभा)।

पेच्च } अ [प्रेत्य] परलोक, आगामी जन्म
पेच्चा } (भग, औप), 'सव्वोही खलु पेच्च दुल्लहा' (वै ७३)। °भव पु [°भव] आगामी जन्म, परलोक (औप)। °भाविअ वि [°भाविक] जन्मातर-सबन्धी (पण्ह २, २)।

पेच्चा देखो पिअ = पा।

पेच्छ सक [दृश्, प्र + ईक्ष्] देखना। पेच्छइ, पेच्छए (हे ४, १८१, उव, महा, पि ४५७)। भवि पेच्छिहिसि (पि ५२५)। वकृ पेच्छंत (गा ३७३, महा)। संकृ. पेच्छिऊण (पि ५८५)। हेकृ पेच्छिउं, पेच्छित्तए (उप ७२८ टी, औप)। कृ पेच्छणिज्ज, पेच्छिअव्व (गा ६६, औप, पण्ह १, ४, से ३, ३३)।

पेच्छ वि [प्रेक्ष] द्रष्टा, दर्शक, 'अपरमत्थपेच्छो' (स ७१५)।

पेच्छग देखो पेक्खग (भास ४७, धर्मसं ७४३)।

पेच्छण देखो पेक्खण (सुपा ३७)।

पेच्छणग } देखो पेक्खणग (पंचा ६, ११,
पेच्छणय } महा)।

पेच्छय वि [प्रेक्षक] द्रष्टा, निरीक्षक (पउम ८६, ७१, स ३६१, गा ४६८)।

फिरक्क पुंन [दे] खाली गाडी, भार ढोनेवाली खाली गाडी, 'समचित्ता दुवि वसहा सगड कड्ढंति उवलभरियपि। अट्ठवि विभिन्नचित्ता फिरक्कजुत्तावि तम्मनि' (सुपा ४२४)।

फिरिय वि [गत] गया हुआ,
'गोधण्णालएहेउं पुरिसा इह
केवि अग्गओ फिरिया।
जं सुम्मइ आसन्नो
सुन्नेवि हु एस मंखरजो'
(धर्मवि १३९)।

फिलिअ देखो फिडिअ (से ८, ६८)।

फिल्लुस अक [दे] फिसलना, खिसकना, गिरना। वकृ. 'सेवालियभूमितले फिल्लुसमाणा य थामथामम्मि' (सुर २, १०५)। देखो फेल्लुस।

फीअ देखो फाय (सूअ २, ७, १)।

फीणिया स्त्री [दे] एक जात की मीठाई, गुजराती में 'फेणी', (सम्मत्त ५७)।

फुका स्त्री [दे] फूंक, मुंह से हवा निकालना (मोह ६७)।

फुंकार पुं [फुङ्कार] फुफकार, कुपित सर्प आदि की आवाज (सुर २, २३७)।

फुटा स्त्री [दे] केश-बन्ध (दे ६, ८४)।

फुंद देखो फंद = स्पन्द। फुंदइ (से १५, ७७)।

फुफमा, फुंकुआ, फुफुगा स्त्री [दे] करीषाग्नि, वनकण्डे की आग (पाअ, दे ६, ८४, तंदु ४५, जीव २, बृह १, कम्म १, २२)।

फुफुमा स्त्री [दे] १ करीषाग्नि, 'अहवा डज्झउ निहुय निद्धूमं फुंफुम व्व चिरमेसो' (उप ७२८ टी)। २ कचवर-वह्नि, कूडा करकट की आग (सुख १, ८)।

फुंफुल, फुफुल्ल सक [दे] १ उत्पाटन करना। २ कहना। फु फुल्लइ (हे२,१७४)।

फुंस सक [मृज्, प्र + उञ्छ्] पोछना, साफ करना। फुंसदि (प्राकृ ९३)।

फुसण देखो फासण (उप पृ ३४)।

फुक्क अक [फूत् + कृ] १ फुफकारना, फूं फूं आवाज करना। २ सक. मुंह से हवा निकालना, फूंकना। फुक्कइ (पिंग)। वकृ. फुक्कत (गा १७६), फुक्किज्जत (अ) (हे ४, ४२२)।

फुक्का स्त्री [दे] १ मिथ्या (दे ६, ८३)। २ फूंक (कुप्र १५०)।

फुक्कार पुं [फूत्कार] फुफकार, फूं फूं की आवाज (कुप्र ५८, सण)।

फुक्किय वि [फूत्कृत] फुफकारा हुआ (भाव ४)।

फुक्की स्त्री [दे] रजकी, धोबिन (दे ६, ८४)।

फुग्ग स्त्रीन [दे. स्फिच्] शरीर का अवयव-विशेष, कटि-प्रोथ (सूअनि ७९)।

फुग्गफुग्ग वि [दे] विकीर्ण रोमवाला, परस्पर असबद्ध—बिखरे हुए केशवाला, 'तस्स भमुगाओ फुग्गफुग्गाओ' (उवा)।

फुट, फुट्ट अक [स्फुट्, भ्रंश्] १ विकसना, खीलना। २ प्रकट होना। ३ फूटना, फटना, टूटना। ४ नष्ट होना। फुटइ, फुट्टई, फुट्टेइ, फुट्टउ (सक्षि ३६, प्राकृ ६९; हे ४, १७७, २३१, उव, भवि, पिंग, गा २२८)। भवि. 'फुट्टिस्सइ बोहित्थं महिलाजणकहियमत वा'(धर्मवि १३), फुट्टिहिइ (पि ५२९)। वकृ. फुट्टंत, फुट्टमाण (पण्ह १, ३, गा २०४, सुर ४, १५१, णाया १, १—पत्र ३९)।

फुट्ट वि [स्फुटित, भ्रष्ट] १ फूटा हुआ, टूटा हुआ, विदीर्ण (उप ७२८ टी, सम्मत्त १४५, सुर २, ९०, ३, २४३, १३, २१०)। २ भ्रष्ट, पतित (कुमा)। ३ विनष्ट; 'फुट्टहडाहडसीसं' (णाया १, १६, विपा १, १)।

फुट्टण न [स्फुटन] १ फूटना, टूटना (कुप्र ४१७)। २ वि फूटनेवाला, विदीर्ण होनेवाला (हे ४, ४२२)।

फुट्टिअ वि [स्फुटित] विदारित, 'फुट्टिअमोहो' (कुमा ७, ६४)।

फुट्टिर वि [स्फुटितृ] फूटनेवाला (सण)।

फुट्ठ देखो पुट्ठ = स्पृष्ट (पि ३११)।

फुड देखो फुट्ट = स्फुट्, भ्रश्। फुडइ (हे ४, १७७, २३१, प्राकृ ६९), 'फुडंति सव्वंगसंधीओ' (उप ७२८ टी)। वकृ. फुडमाण (सुर ३, २४३)।

फुड देखो पुट्ठ = स्पृष्ट (पराण ३६, ठा ७—पत्र ३८३, जीवस २००, भग)।

फुड वि [स्फुट] स्पष्ट, व्यक्त, साफ, विशद (पाअ, हे ४, २५८, उवा)।

फुडण न [स्फुटन] टूटना, खण्डित होना (पण्ह १, १—पत्र २३)।

फुडा स्त्री [स्फुटा] अतिकाय-नामक महोरगेन्द्र की एक पटरानी, इन्द्राणी-विशेष (ठा ४, १, इक)।

फुडा स्त्री [फटा] सांप की फन, 'उक्कडफुडकुडिलजडिलकक्कसवियडफुडाडोवकरणदच्छं' (उवा)।

फुडिअ वि [स्फुटित] १ विकसित, खिला हुआ (पाअ; गा २६०)। २ फूटा हुआ, विदीर्ण (स ३८१)। ३ विकृत (पण्ह १, २—पत्र ४०)।

फुडिअ (अप) देखो फुरिअ (भवि)।

फुडिआ स्त्री [स्फोटिका] छोटा फोडा, फुनसी (सुपा १३८)।

फुड्ड देखो फुट्ट। फुड्डइ (षड्)।

फुन्न वि [दे स्पृष्ट] छूआ हुआ (पव १५८ टी, कम्म ५, ८५ टी)।

फुप्फुस न [दे] उदरवर्ती अन्त्र-विशेष, फेफडा (सूअनि ७३, पउम २६, ५४)।

फुम सक [भ्रम्] भ्रमण करना। फुमइ (हे ४, १६१)। प्रयो. फुमावइ (कुमा)।

फुम सक [दे. फूत् + कृ] फूंक मारना, मुंह से हवा करना। फुमेज्जा (दस ४, १०)। वकृ फुमत (दस ४, १०)। प्रयो. फुमावेज्जा (दस ४, १०)।

फुर अक [स्फुर्] १ फरकना, हिलना। २ तडफडना। ३ विकसना, खीलना। ४ प्रकाशित होना, प्रकट होना; 'फुरइ अ सीताइ तक्खण वामच्छं' (से १५, ७६, पिंग)। वकृ. फुरत, फुरमाण (गा १६२, सुर २, २२१, महा, पिंग, से ६, २५, १२, २६)। सकृ फुरित्ता (ठा ७)।

फुर सक [अप + हृ] अपहरण करना, छीनना। प्रयो. फुराविंति (वव ३)।

फुर पुं [स्फुर] शस्त्र-विशेष, फुरफलगावरणगहिय—' (पण्ह १, ३—पत्र ४६)।

फुर (अप) देखो फुड = स्फुट (पिंग)।

फुरण न [स्फुरण] १ फरकना, कुछ हिलना, ईषत् कम्पन, 'ज पुण अच्छिप्फुरण मह होही मारिया तेण' (सुर १३, १२७)। २ स्फूर्ति (सुपा ६, वज्जा ३४, सम्मत्त १६१)।

पेल्ल सक [क्षिप्] फेंकना। पेल्लइ (हे ४, १४३)। कर्म. पेल्लिज्जइ (उव)। वकृ. पेल्लंत (कुमा)। संकृ. पेल्लिऊण (महा)।

पेल्ल देखो पेर = प्र + ईरय्। पेल्लेइ (प्राकृ ६०)। कवकृ. पेल्लिज्जंत (से ६, २५)। संकृ. पेल्लि (अप), पेल्लिअ (पिंग)। कृ. पेल्लेयव्व (ओघभा १८ टी)।

पेल्ल सक [पीडय्] पीसना, दबाना, पीड़ना। पेल्लेसि, पेल्लिसि (स ५७४ टि)।

पेल्ल सक [पूरय्] पूरना, भरना। कवकृ. पेल्लिज्जत (से ६, २५)।

पेल्ल } पुन [दे] बच्चा, शिशु, बालक (उप **पेल्लग** } २१६), 'बीयम्मि पेल्लगाइ' (उप २२० टी)।

पेल्लग देखो पेरग (निवू १६)।

पेल्लण देखो पेरण (पण्ह १, ३, गउड)।

पेल्लण न [क्षेपण] फेंकना (धर्म २)।

पेल्लय पुं [दे] देखो पेल्ल = (दे) (विपा १,२—पत्र ३६), 'सपेल्लियं सियालिं' (सुख २, ३३)।

पेल्लय देखो पेरग (बृह १)।

पेल्लय पुं [पेल्लक] भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर विमान में उत्पन्न एक जैन मुनि (अनु २)।

पेल्लव } देखो पेर। पेल्लवइ, पेल्लावइ (प्राकृ **पेल्लाव** } ६०)।

पेल्लिअ वि [दे. पीडित] पीडित (दे ६, ५७), 'बलियवराइयपेल्लिअो' (महा)।

पेल्लिअ देखो पेरिअ (गा २२१, विपा १, १)।

पेल्लेयव्व देखो पेल्ल = प्र + ईरय्।

पेव्वे अ. आमन्त्रण-सूचक अव्यय (षड्)।

पेस सक [प्र + एषय्] भेजना, पठाना। पेसइ, पेसेइ (भवि, महा)। वकृ. पेसअत (पि ४६०, रंभा)। संकृ. पेसिअ, पेसिउं (मा ४०, महा)। कृ. पेसइयव्व, पेसिअव्व, पेसेयव्व (सुपा ३००, २७८, ६३०, उप १३६ टी)।

पेस देखो पीस। वकृ. पेसयंत (राज)।

पेस पुंस्त्री [प्रेष्य] १ कर्मकर, नौकर, दास, चाकर (सम १६, सूअ १, २, २, ३, उवा)। २ वि. भेजने योग्य (हे २, ९२)।

पेस पुं [दे. पेश] १ सिन्ध देश में होनेवाली एक पशु-जाति (आचा २, ५, १, ८)।

पेस वि [दे. पैश] पेश नामक जानवर के चमडे का बना हुआ (वस्त्र) (आचा २, ५, १, ८)।

पेसण न [दे] कार्य, काज, प्रयोजन (दे ६, ५७, भवि, णाया १, ७—पत्र ११७, पउम १०३, २६)।

पेसण न [प्रेषण] १ पठाना, भेजना। २ नियोजन, व्यापारण (कुमा, गउड)। ३ आज्ञा, आदेश (से ३, ५४)।

पेसणआरी } स्त्री [दे] दूती, दूत-कर्म करने-**पेसणआली** } वाली स्त्री (दे ६, ५६, षड्)।

पेसणा स्त्री [पेषण] पीसना, पेषण, 'सिलाए जवगोहूमपेसणाए हेऊए' (उप ५९७ टी)।

पेसल वि [पेशल] १ सुन्दर, मनोज्ञ (आचा, गउड)। २ मधुर, मञ्जु (पाअ)। ३ कोमल (गउड)।

पेसल } न [दे] सिन्ध देश के पेश नामक **पेसलेस** } पशु के चर्म के सूक्ष्म पक्ष्म से निष्पन्न वस्त्र, 'पेसाणि वा पेसलाणि वा' (२ आचा २, ५, १—सूत्र १४५), 'पेसाणि वा पेसलेसाणि वा' (३ आचा २, ५, १, ८, (राज)।

पेसव सक [प्र + एषय्] भेजवाना। कृ. पेसवेयव्व (उप १३६ टी)।

पेसवण न [प्रेषण] भेजवाना, दूसरे के द्वारा प्रेषण (उवा, पडि)।

पेसविअ वि [प्रेषित] भेजवाया हुआ, प्रस्थापित (पाअ, उप पृ ५८)।

पेसाय वि [पैशाच] पिशाच-सबन्धी (बृह २)।

पेसि स्त्री [पेशि] देखो पेसी (सुपा ४८७)।

पेसिअ वि [प्रेषित] १ भेजा हुआ, प्रहित (गा ११२, भवि, काल)। २ प्रेषण (पउम ६, ३५)।

पेसिआ स्त्री [पेशिका] खण्ड, टुकडा, 'अवपेसिया ति वा अबाडगपेसिया ति वा' (अनु ६, आचा २, ७, २, ७, ८, ९)।

पेसिआर पुं [प्रेषितकार] नौकर, भृत्य, कर्मकर (पउम ६, ३५)।

पेसिदवत (शौ) वि [प्रेषितवत्] जिसने भेजा हो वह (पि ५६९)।

पेसी स्त्री [पेशी] मास-खण्ड, मास-पिण्ड (तदु ७)। देखो पेसिआ।

पेसुण्ण } न [पैशुन्य] परोक्ष मे दोष-**पेसुन्न** } कीर्तन, चुगली (औप, सूअ १, १६, २, णाया १, १, भग, सुपा ४२१)।

पेसेयव्व देखो पेस = प्र + एषय्।

पेस्सिदवंत देखो पेसिदवत (पि ५६९)।

पेह सक [प्र + ईक्ष्] १ देखना, निरीक्षण करना, ध्यान-पूर्वक देखना। २ चिन्तन करना। पेहइ, पेहए (पि ८७, उव), पेहति (कुप्र १९२)। भवि पेहिस्सामि (पि ५३०)। वकृ. पेहत, पेहमाण (उपपृ १५४, चेइय २५०, पि ३२३)। संकृ पेहाए, पेहिया (कस, पि ३२३)।

पेह सक [प्र + ईह्] १ इच्छा करना, चाहना। २ प्रार्थना करना। पेहेइ (दस ६, ४, ७)।

पेहण न [प्रेक्षण] निरीक्षण (पंचा ४, ११)।

पेहा स्त्री [प्रेक्षण] १ निरीक्षण (उव, सम ३२)। २ कायोत्सर्ग का एक दोष, कायोत्सर्ग मे वन्दर की तरह ओष्ठ-पुट को हिलाते रहना (पव ५)। ३ पर्यालोचन, चिन्तन (आव ४)। ४ बुद्धि, मति (उत्त १, २७)।

पेहाविय वि [प्रेक्षित] दर्शित, दिखलाया हुआ (उप पृ ३८८)।

पेहि वि [प्रेक्षिन्] निरीक्षक (आचा, उव)। स्त्री. °णी (पि ३२३)।

पेहिय वि [प्रेक्षित] निरीक्षित (महा)।

पेहुण न [दे] १ पिच्छ, पंख (दे ६, ५८, पाअ, गा १७३, ७६५, वज्जा ४४, भत्त १४१, गउड)। २ मयूर पिच्छ, मयूर-पख, शिखण्ड (पण्ह १, १, २, ५, ज १, णाया १, ३) देखो पिहुण।

पोअ सक [प्र + वे] पिरोना, गूँथना। पोअति (गच्छ ३, १८, सुअनि ७४)। वकृ. पोयमाण (स ५१२)। संकृ. पोइऊण (धर्मवि ६७)।

पोअ वि [प्रोत] पिराया हुआ (दे १, ७६)।

पोअ पुं [पोत] १ जहाज, प्रवहण, नौका (पाअ, सुपा ८८, ३६९)। २ बालक, शिशु, बच्चा (दे ६, ८१, पाअ, सुपा ३६९)। ३ न. वस्त्र, कपड़ा (ठा ३, १—पत्र ११४)

फेप्फस } न [दे] देखो फिप्फिस,
फेफस } फुप्फुस (राज तंदु ३६)।

फेरण न [दे] फेरना, घुमाना, 'गुरुफणफेरण-सुंकारएहिं' (सुर २, ८)।

फेल सक [क्षिप्] १ फेंकना। २ दूर करना। फेलदि (शौ) (नाट)। सक्र फेलिअ (नाट)।

फेला स्त्री [दे] भूँठन-भूँठन, जूठन, भोजन से बचा-खुचा, उच्छिष्ट,

'तस्स य अणुकंपाए देवी
दासी य तम्मि कूवम्मि।
निच खिवति फेलं तीए
सो जियइ सुणउव्व।'
'दुग्गधकूववासो गब्भो,
जणणीइ चावियरमेहिं।
ज गब्भपोसण पुण त फेलाहारसंकास।'
(धर्मवि १४६)।

फेलाया स्त्री [दे] मातुलानी, मामी (दे ६, ८५)।

फेल्ल पुं [दे] दरिद्र, निर्धन (दे ६, ८५)।

फेल्लुस सक [दे] फिसलना, खिसकना, खिसककर गिरना। फेल्लुसइ (दे ६, ८६)। सक्र. फेल्लुसिऊण (दे ६, ८६, स ३५५)।

फेल्लुसण न [दे] १ फिसलन, पतन। २ पिच्छिल जमीन, वह जगह जहाँ पाँव फिसल पड़े (दे ६, ८६)।

फेल्हसण देखो फेल्लुसण (वव ४ टी)।

फेस पुं [दे] १ त्रास, डर। २ सद्भाव (दे ६, ८७)।

फोअ पुं [दे] उद्गम (दे ६, ८६)।

फोइअय वि [दे] १ मुक्त। २ विस्तारित (दे ६, ८७)।

फोंफा स्त्री [दे] डराने की आवाज, भयोत्पादक शब्द (दे ६, ८६)।

फोड सक [स्फोटय्] १ फोड़ना, विदारण करना। २ राई आदि से शाक आदि को वघारना। फोडेज्ज (कुप्र ६७)। वकृ फोडंत, फोडेमाण (सुपा २०१, ५६३, औप)।

फोड पुं [स्फोट] १ फोड़ा, व्रण-विशेष (ठा १०—पत्र ५२०)। २ वर्ण-विशेष, शब्द-भेद (राज)। ३ वि. भक्षक, 'बहुफोडो' (ओघभा १६१)।

फोडअ (शौ) पुं [स्फोटक] ऊपर देखो (प्राकृ ८६)।

फोडण न [स्फोटन] १ विदारण (पव ६ टी, गउड)। २ राई आदि से शाक आदि को वघारना (पिंड २५०)। ३ राई आदि संस्कारक पदार्थ (पिंड २५५)। ४ वि. फोड़नेवाला, विदारण करनेवाला, 'कायर-जणहिययफोडण' (णाया १, ८), 'अम्हं मअरणसराहअहिअअव्वरणफाडणं गीअं' (गा ३८१)।

फोडय देखो फोडअ (पउम ६३, २६)।

फोडाव सक [स्फोटय्] १ फोड़वाना। तोड़वाना। २ खुलवाना। संकृ फोडाविऊण (स ४६०)।

फोडाविय वि [स्फोटित] १ तोड़वाया हुआ। २ खुलवाया हुआ, 'फोडाविया सपुडा' (स ४६०)।

फोडि स्त्री [स्फोटि] विदारण, भेदन, 'भाडी-फोडीसु वज्जए कम्मं' (पडि)। °कम्म न [°कर्मन्] १ जमीन आदि का विदारण करने का काम, हल आदि से भूमि-दारण, कूप, तडाग आदि खोदने का काम। २ उक्त काम कर आजीविका चलाना (पडि)।

फोडिअ वि [स्फोटित] १ फोड़ा हुआ, विदारित (णाया १, ७, स ४७२)। २ राई आदि से वघारा हुआ (वव १)।

फोडिअय वि [दे. स्फोटित, °क] राई से वघारा हुआ शाकादि (दे ६, ८८)।

फोडिज्जय न [दे] रात के समय जगल में सिंहादि से रक्षा का एक प्रकार (दे ६, ८८)।

फोडिया स्त्री [स्फोटिका] छोटा फोड़ा (उप ७६८ टी)।

फोडी स्त्री [स्फोटी, स्फौटी] देखो फोडि (उवा, पव ६, पडि)।

फोप्फस न [दे] शरीर का अवयव-विशेष, 'कालिज्जयअंतपित्तजरहिययफोप्फसफेफसपि-लिहोदर—' (तंदु ३६)।

फोफल न [दे] गन्ध द्रव्य विशेष, एक प्रकार की औषधि, 'महुरविरेयणमेसो कायव्वो फोफलाइदव्वेहिं' (भत्त ४२)।

फोफस देखो फोप्फस (पण्ह १, १—पत्र ८)।

फोरण न [स्फोरण] निरन्तर प्रवर्तन, 'विसयम्मि अपत्तेवि हु णियसत्तिप्फोरणेण फलसिद्धी' (उवर ७४)।

फोरविअ वि [स्फोरित] निरन्तर प्रवृत्त किया हुआ, 'तेहिंगि नियनियसत्ती फोरवीया' (सम्मत्त २२७, हम्मीर १४)।

फोस देखो फुस = स्पृश्, 'सव्व फोसति जगं' (जीवस १६६)।

फोस पुं [दे] उद्दाम (दे ६, ८६)।

फोस पुं [दे. पोस] अपान-देश, गुदा (तंदु २०)।

फोसणा स्त्री [स्पर्शना] स्पर्श-क्रिया (जीवस १६६)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे फआराइसद्दसंकलणो
अट्ठावीसइमो तरंगो समत्तो ॥

५, ३; ८), 'पोग्गलाइं' (सुज्ज ६, पंच ३, ४६)। २ न. मास (पव २६८, हे १, ११६)। °त्थिआय पुं [°ास्तिकाय] पुद्गल-स्कन्ध, पुद्गल-राशि (भग, ठा ५, ३)। °परट्ट, °परियट्ट पुं [°परिवर्त] १ समस्त पुद्गल-द्रव्यों के साथ एक-एक परमाणु का सयोग-वियोग। २ समय का उत्कृष्टतम परिमाण-विशेष, अनन्त कालचक्र-परिमित समय (कम्म ५, ८६, भग १२, ४, ठा ३, ४)।

पोग्गलि वि [पुद्गलिन्] पुद्गलवाला, पुद्गल-युक्त (भग ८, १०—पत्र ४२३)।

पोग्गलिय वि [पौद्गलिक] पुद्गल-मय, पुद्गल-संबन्धी, पुद्गल का (पिंडभा ३२४)।

पोच्च वि [दे] सुकुमार, कोमल, गुजराती में 'पोचुं' (दे ६, ६०)।

पोच्चड वि [दे] १ असार, निस्सार (णाया १, ३—पत्र ६४)। २ अतिनिविड (पण्ह १, १—पत्र १४)। ३ मलिन (निचू ११)।

पोच्छल अक [प्रोत् + शल्] उछलना, ऊँचा जाना। वकृ. पोच्छलंत (सुर १३, ४१)।

पोच्छाहण न [प्रोत्साहन] उत्तेजन (वेणी १०५)।

पोच्छाहिअ वि [प्रोत्साहित] विशेष उत्साहित किया हुआ, उत्तेजित (सुर १३, २६)।

पोट्ट पुं [पुत्र] लडका, 'एक्केण चारभड-पोट्टेण' (वव १, टी)।

पोट्ट न [दे] पेट, उदर, मराठी में 'पोट' (दे ६, ६०, णाया १, १—पत्र ६१, ओघभा ७६, गा ८३, १७१, २८५, स ११६, ७३८, उवा, सुख २, १५; सुपा ५४३, प्राकृ ३७, पव १३५, जं २)। °साल पुं [°शाल] एक परिव्राजक का नाम (विसे २४५२, ५५)। °सारणी स्त्री [°सारणी] अतीसार रोग (आव ४)।

पोट्ट, पोट्टल } न [दे] पोटला, गट्ठर, गठरी, 'कामिणिनियंबविंबं कदप्पविलासराय-हाणित्ति। न मुणइ अमेज्झपोट्ट' (सुपा ३५५, दे २, २४, स १००)।

पोट्टलिगा स्त्री [दे] पोटली, गठरी (सुख २, १७)।

पोट्टलिय वि [दे] पोटली उठानेवाला, गठरी-वाहक (निचू १६)।

पोट्टलिया [दे] देखो पोट्टलिगा (उप पृ ३८७, सुर १२, ११, सुख २, १७)।

पोट्टि स्त्री [दे] उदर पेशी (मृच्छ २००)।

पोट्टिल पुं [पोट्टिल] १ भारतवर्ष का भावी नववाँ तीर्थंकर—जिन देव (सम १५३)। २ भारतवर्ष के चौथे भावी जिन-देव का पूर्वभवीय नाम (सम १५४)। ३ भगवान् महावीर का व्युत्क्रम से छठवें भव का नाम (सम १०५)। ४ एक जैन मुनि, जिसने भगवान् महावीर के समय मे तीर्थंकर-नाम-कर्म बँधा था (ठा ६)। ५ एक जैन मुनि (पउम २०, २१)। ६ देव-विशेष (णाया १, १४)। ७ देखो पोट्ठिल (राज)।

पोट्टिला स्त्री [पोट्टिला] व्यक्ति-वाचक नाम, एक स्त्री का नाम (णाया १, १४)।

पोट्टिस पुं [पोट्टिस] एक कवि का नाम (कप्पू)।

पोट्ठवई स्त्री [प्रौष्ठपदी] १ भाद्रपद मास की पूर्णिमा। २ भादो की अमावस्या (सुज्ज १०, ६)।

पोट्ठिल पुं [पुष्ठिल] भगवान महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर-विमान में उत्पन्न एक जैन मुनि (अनु)।

पोडइल न [दे] तृण-विशेष (पण्ण १—पत्र ३३)।

पोढ वि [प्रौढ] १ समर्थ (पाअ)। २ निपुण, चतुर। ३ प्रगल्भ। ४ प्रवृद्ध, यौवन के बाद की अवस्थावाला (उप पृ ८६, सुपा २२४, रंभा, नाट—मालती १३६)। °वाय पुं [°वाद] प्रतिज्ञा-पूर्वक प्रत्याख्यान (गा ५२२)।

पोढा स्त्री [प्रौढा] १ तीस से पचपन वर्ष तक की स्त्री (कुप्र १८५)। २ नायिका का एक भेद, शृङ्गार रस मे काम-कला आदि अच्छी तरह जाननेवाली (प्राकृ १०)।

पोढिम पुंस्त्री [प्रौढमन्] प्रौढता, प्रौढपन (मोह २)।

पोढी स्त्री [प्रौढी] ऊपर देखो (कुप्र ४०७)।

पोणिअ वि [दे] पूर्ण (दे ६, २८)।

पोणिआ स्त्री [दे] सूते से भरा हुआ तकुवा (दे ६, ६१)।

पोत देखो पोअ = पोत (औप, बृह १, णाया १, ८)।

पोतणया देखो पोअणा (उप पृ ४१२)।

पोत्त पुं [पौत्र] पुत्र का पुत्र, पोता (दे २, ७२, श्रा १४)।

पोत्त न [पोत्र] प्रवहण, नौका, 'वेलाउलम्मि ओयारियाणि सव्वाणि तेण पोत्ताणि' (उप ५६७ टी)।

पोत्त, पोत्तग } न [पोत] १ वस्त्र, कपडा (श्रा १२, गोय १६८ कप्पू, स ३३२)। २ धोती, कटी-वस्त्र (गच्छ ३, १८, कस, वव ८४, श्रावक ९३ टी, महा)। ३ वस्त्र-खण्ड (पिंड ३०८)।

पोत्तय पुं [दे] फोता, वृषण, अण्डकोश (दे ६, ६२)।

पोत्तिअ न [पौतिक] वस्त्र, सूती कपडा (ठा ५, ३—पत्र ३३८, कस २, २६ टि)।

पोत्तिअ वि [पोतिक] १ वस्त्र-धारी। २ पुं वानप्रस्थों का एक भेद (औप)।

पोत्तिआ स्त्री [पौत्रिका] पुत्र की लडकी (रंभा)।

पोत्तिआ स्त्री [दे] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, १४७)।

पोत्तिआ, पोत्ती } स्त्री [पोतिका, पोती] १ धोती, पहनने का वस्त्र, साडी (विसे २६०१)। २ छोटा वस्त्र, वस्त्र-खण्ड, 'चउ-प्फालयाए पोत्तीए मुहं बंधेत्ता' (णाया १, १—पत्र ५३, पिंडभा ६), 'मुहपोत्तियाए' (विपा १, १)।

पोत्ती स्त्री [दे] काच, शीशा (दे ६, ६०)।

पोत्तुल्लया देखो पोत्तिआ (णाया १, १८—पत्र २३५)।

पोत्थ, पोत्थग, पोत्थय } पुंन [पुस्त, °क] १ वस्त्र, कपडा (णाया १, १३—पत्र १७६)। २-३ देखो पुत्थ, 'पोत्थकम्मजक्खा विव निच्चिट्ठा' (वसु, श्रा १२, सुपा २८६, विसे १४२५, बृह ३, प्राप्र, औप)।

पोत्था स्त्री [प्रोत्था] प्रोत्थान, मूलोत्पत्ति (उत्त २०, १६)।

पोत्थार पुं [पुस्तककार] पोथी लिखनेवाला, पोथी बनाने का काम करनेवाला शिल्पी, दफ्तरी, जिल्दसाज (जीव ३)।

बधण ण स्त्री [बन्धन] बन्धन (भग)।
वंधणी स्त्री [बन्धनी] विद्या-विशेष (पउम ७ १४१)।
बधय देखो बधग (णदि ४२)।
वंधव पुं [बान्धव] १ भाई, भ्राता। २ मित्र वयस्य दोस्त। ३ नातेदार, संबन्धी, नतैत। ४ माता। ५ पिता। ६ माता-पिता का सम्बन्धी मामा, चाचा आदि (हे १, ३०, प्रासू ७६, उत्त १८, १४)।
वधाव (अप) सक [बन्धय्] बँधाना, बँधवाना। वधापयति (पि ७)।
वधाविअ वि [बन्धित] बँधाया हुआ (सुपा ३२५)।
वधिअ देखो वद्ध (सूअ १, २, १, १८, धर्मवि २३)।
वधु पु [बन्धु] १ भाई, भ्राता। २ माता। ३ पिता। ४ मित्र, दोस्त। ५ स्वजन, नातेदार, नतैत (कुमा, महा, प्रासू १०८, सुपा १६८, २४१)। ६ छन्द विशेष (पिंग)। °जीव पुं [°जीव] वृक्ष-विशेष, दुपहरिया का पेड (स्वप्न ६६, कुमा)। °जीवग पुं [°जीवक] वही अर्थ (णाया १, १, कप्प, भग)। °दत्त पु [°दत्त] १ एक श्रेष्ठी का नाम (महा)। २ एक जैन मुनि का नाम (राज)। °मई, °वई स्त्री [°मती] १ भगवान् मल्लिनाथ की मुख्य साध्वी का नाम (णाया १, ८, पव ६, सम १५२)। २ स्वनाम-ख्यात स्त्री-विशेष (महा, राज)। °सिरी स्त्री [°श्री] श्रीदाम राजा की पत्नी (विपा १, ६)।
वधुर वि [बन्धुर] १ सुन्दर, रम्य (पाअ)। २ नम्र, अवनत (गउड २०५)।
वधुरिअ वि [बन्धुरित] १ पिंडीकृत (गउड ३८३)। २ नम्रीभूत, नमा हुआ (गउड ५५६)। ३ मुकुटित, मुकुटयुक्त। ४ विभूषित (गउड ५३३)।
वंधुल पु [बन्धुल] वेश्या-पुत्र, असती-पुत्र (मृच्छ २००)।
वंधूग पु [बन्धूक] वृक्ष-विशेष, दुपहरिया का पेड़ (स ३१२)।
वंधोल्ल पु [दे] मेलक, मेल, सगति (दे ६, ८६, षड्)।
वंभ पु [ब्रह्मन्] १ ब्रह्मा विधाता (उप १०३१ टी, दे ६, २२, कुप्र २०३)। २ भगवान् शान्तिनाथ का शासनाधिष्ठायक यक्ष (सति ७)। ३ अप्काय का अधिष्ठायक देव (ठा ५, १—पत्र२६२)। ४ पाँचवे देवलोक का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। ५ बारहवें चक्रवर्त्ती का पिता (सम १५२)। ६ द्वितीय बलदेव और वासुदेव का पिता (सम १५२, ठा ६—पत्र ४४७)। ७ ज्योतिष-शास्त्र प्रसिद्ध एक योग (पउम १७, १०)। ८ ब्राह्मण, विप्र (कुलक ३१)। ९ चक्रवर्ती राजा का एक देव-कृत प्रासाद (उत्त १३, १३)। १० दिन का नववाँ मुहूर्त (सम ५१)। ११ छन्द-विशेष (पिंग)। १२ ईषत्प्राग्भारा पृथिवी (सम २२)। १३ एक जैन मुनि का नाम (कप्प)। १४ पुन. एक विमानावास, देव-विमान-विशेष (देवेन्द्र १३१, १३४, सम १६)। १५ मोक्ष, अपवर्ग (सूअ २, ६, २०)। १६ ब्रह्मचर्य (सम १८, ओघभा २)। १७ सत्य अनुष्ठान (सूअ २, ५, १)। १८ निर्विकल्प सुख (आचा १, ३, १, २)। १९ योगशास्त्र-प्रसिद्ध दशम द्वार (कुमा)। °कत न [°कान्त] एक देव-विमान (सम १६)। °कूड पु [°कूट] १ महाविदेह वर्ष का एक वक्षस्कार पर्वत (ज ४)। २ न एक देव-विमान (सम १६)। °चरग न [°चरण] ब्रह्मचर्य (कुप्र १६१)। °चारि वि [°चारिन्] १ ब्रह्मचर्य पालन करनेवाला (णाया १, १, उवा। २ पुं भगवान् पार्श्वनाथ का एक गणधर प्रमुख मुनि (ठा ८—पत्र ४२६)। °चेर, °च्छेर न [°चर्य] १ मैथुन-विरति (आचा, पण्ह २, ४, हे २, ७४, कुमा, भग, स ११, उप पृ ३४३)। २ जिनेन्द्र-शासन, जिन-प्रवचन (सूअ २, ५, १)। °ज्झय न [°ध्वज] एक देव-विमान (सम १६)। °दत्त पुं [°दत्त] भारतवर्ष में उत्पन्न बारहवाँ चक्रवर्त्ती राजा (ठा २, ४, सम १५२, उव)। °दीव पु [°द्वीप] द्वीप-विशेष (राज)। °दीविया स्त्री [°द्वीपिका] जैन-मुनि गण की एक शाखा (कप्प)। °प्पभ न [°प्रभ] एक देव-विमान (सम १६)। °भूइ पुं [°भूति] एक राजा, द्वितीय वासुदेव का पिता (पउम २०, १८२)। °यारि देखो °चारि (णाया १, १, सम १३, कप्प, सुपा २७१, महा, राज)। स्त्री. °णी (णाया १, १४)। °रुइ पुं [°रुचि] स्वनाम-प्रसिद्ध एक ब्राह्मण, नारद का पिता (पउम ११, ५२)। °लेस न [°लेश्य] एक देव-विमान (सम १६)। °लोअ, लोग पुं [°लोक] एक स्वर्ग, पाँचवाँ देवलोक (भग; अनु सम १३)। °लोगवडिंसय न [°लोकावतंसक] एक देव-विमान (सम १७)। °व °वत वि [°वत्] ब्रह्मचर्यवाला (आचा)। °वडिंसय पुं [°वितंसक] सिद्ध-शिला, ईषत्प्राग्भारा पृथिवी (सम २२)। °वण्ण न [°वर्ण] एक देव-विमान (सम १६)। °वय न [°व्रत] ब्रह्मचर्य (णाया १, १)। °वि वि [°वित्] ब्रह्म का जानकार (आचा)। °व्वय देखो °वय (सं ५६, प्रासू १५६)। °सति पुं [°शान्ति] भगवान् महावीर का शासन-यक्ष (गण ११, ती १५)। °सिग न [°शृङ्ग] एक देव-विमान (सम १६)। °सिट्ठ न [°सृष्ट] एक देव-विमान (सम १६)। °सुत्त न [°सूत्र] उपवीत, यज्ञोपवीत (मोह ३०, सुख २, १३)। °हिअ पुं [°हित] एक विमानावास, देव-विमान-विशेष (देवेन्द्र १३४)। °वित्त न [°वर्त] एक देव-विमान (सम १६)। देखो वभाण, वम्ह।
वंभड न [ब्रह्माण्ड] जगत्, ससार (गउड; कुप्र ४, सुपा ३६८, ५६३)।
वंभण पु [ब्राह्मण] ब्राह्मण, विप्र (स २६०, सुर २, १३०, सुपा १६८, हे ४, २८०, महा)।
वभणिआ स्त्री [ब्राह्मणिका] पञ्चेन्द्रिय जन्तु-विशेष (पुप्फ २६७)।
वभणिआ, वभणी स्त्री [दे. ब्राह्मणिका] कीट-विशेष (दे ६, ९०, पाअ, दे ८, ६३, ७५)।
वंभण्ण, वंभण्णय स्त्री [ब्रह्मण्य, ब्राह्मण्य, °क] ब्राह्मण का हित। २ ब्राह्मण-संबन्धी। ३ न. ब्राह्मण-समूह। ४ ब्राह्मण-

पोसण न [पोषण] १ पुष्टि (पएह १, २)। २ पालन। ३ वि. पोषण-कर्ता, 'सोम परं पि जहासिपोसणो' (सुम १, २, १, १६)।
पोसण न [पोसन] अपान, गुदा (अं ३)।
पोसणया स्त्री [पोषणा] १ पोषण, पुष्टि। २ भरण, पालन (उवा)।
पोसय देखो पोस = पोस, 'पोसए त्ति' (ठा ६ टी—पत्र ४५०, बृह ४)।
पोसय देखो पोसग (राज)।
पोसह पुं [पोषध, पौषध] १ अष्टमी, चतुर्दशी आदि पर्वतिथि में करने योग्य जैन श्रावक का व्रत-विशेष, आहार आदि के त्याग-पूर्वक किया जाता अनुष्ठान-विशेष (सम १६, उवा; ओप, महा, सुपा ६१६; ६२०)। २ पर्व-दिवस—अष्टमी, चतुर्दशी आदि पर्व-तिथि, 'पोसहसद्दो रूढीए एत्थ पव्वाणुवायमो भणिओ' (सुपा ६१६)। °पडिमा स्त्री [°प्रतिमा] जैन श्रावक को करने योग्य अनुष्ठान-विशेष, व्रत-विशेष (पंचा १०, ३)। °वय न [°व्रत] वही पूर्वोक्त अर्थ (पडि)। °साला स्त्री [°शाला] पौषध-व्रत करने का स्थान (णाया १, १—पत्र ३१; भत, महा)। °ोववास पुं [°ोपवास] पर्वदिन में उप-वास-पूर्वक किया जाता जैन श्रावक का अनु-ष्ठान-विशेष, जैन श्रावक का ग्यारहवाँ व्रत (ओप; सुपा ६१६)।
पोसहिय वि [पौषधिक] जिसने पोषध-व्रत किया हो वह, पौषध करनेवाला (णाया १, १—पत्र ३०; सुपा ६१६, धर्मवि २७)।
पोम्मिअ वि [दे] दुःस्थ, दरिद्र, दुःखी (दे ६, ६१)।
पोसिअ वि [पुष्ट] पोषण-युक्त (भवि)।
पोसिअ वि [पोषित] १ पुष्ट किया हुआ। २ पालित (उत्त २७, १४)।
पोसिद (शौ) वि [प्रोषित] प्रवास—विदेश में गया हुआ। °भत्तुआ स्त्री [°भर्तृका] जिसका पति प्रवास—परदेश में गया हो वह स्त्री (स्वप्न १३४)।
पोसी स्त्री [पौषी] १ पौष मास की पूर्णिमा। २ पौष मास की अमावस (सुज्ज १०, ६; इक)।

पोह पुं [दे] बैल आदि की विष्ठा का ढेर, कच्छी भाषा में 'पोह' (पिंड २४५)।
पोह पुं [प्रोथ] अश्व के मुख का प्रान्त भाग (गउड)।
पोहण पुं [दे] छोटी मछली (दे ६, ६२)।
पोहत्त न [पृथुत्व] चौड़ाई (भग)।
पोहत्त देखो पुहत्त (पि ७८)।
पोहत्तिय वि [पार्थक्त्विक] पृथक्त्व-संबन्धी (पएण २२—पत्र ६३३, ६४०, २३—पत्र ६६४)।
पोहल देखो पोप्फल (वज्जा)।
°प्प देखो प = प्र; 'विप्पोसहिपत्ताणं' (संति २; गउड)।
°प्पआस देखो पयास = प्रयास (अभि ११७)।
°प्पउत्त देखो पउत्त = प्रवृत्त (मा ३)।
°प्पआअ देखो पआय (अभि १७६)।
°प्पअव (मा) अक [प्र + तप्] गरम होना। प्पअवदि (पि २११)।
°प्पडिआर देखो पडिआर = प्रतिकार (मा ४३)।
°प्पडिहा देखो पडिहा = प्रतिमा (कुमा)।
°प्पणइ देखो पणइ = प्रणयिन् (कुमा)।
°प्पणाम देखो पणाम = प्रणाम (हे ३, १०५)।
°प्पणास देखो पणास = प्रणाश (सुपा ६५७)।
°प्पण्णा देखो पण्णा = प्रज्ञा (कुमा)।
°प्पत्थाण देखो पत्थाण (अभि ८१)।
°प्पदेस देखो पदेस (नाट—विक्र ४)।
°प्पफुरिद (शौ) देखो पप्फुरिअ (नाट—मालती ५४)।
°प्पबंध देखो पबंध (रंभा)।
°प्पभिदि देखो °पभिइ (रंभा)।
°प्पभूद (शौ) देखो पभूय (नाट—वेणी ३६)।
°प्पमत्त देखो पमत्त (अभि १८५)।
°प्पमाण देखो पमाण (पि ३६६ ए)।
°प्पमुक्क देखो पमुक्क (नाट—उत्तर ५६)।
°प्पमुह देखो पमुह (गउड)।
°प्पयर देखो पयर (कुमा)।
°प्पयाव देखो पयाव (कुमा)।

°प्पयास देखो पयास = प्रकाश (सुपा ६५७)।
°प्पलाव देखो पलाव (अभि ४६)।
°प्पवत्तण देखो पवत्तण; 'अविअजिए सुह-प्पवत्तणे' (अभि ४)।
°प्पवह देखो पवह (कुमा)।
°प्पवेस देखो पवेस (रंभा)।
°प्पवेसि देखो पवेसि (अभि १७५)।
°प्पसर देखो पसर = प्र + सृ। वकृ. °प्पसरंत (रंभा)।
°प्पसर देखो पसर = प्रसर।
°प्पसव देखो पसव = (नाट—मालवि ३७)।
°प्पसाय देखो पसाय = प्रसाद (रंभा)।
°प्पसुत्त देखो पसुत्त (रंभा)।
°प्पसूद (शौ) देखो पसूअ = प्रसूत (अभि १४०)।
°प्पहर देखो पहर = प्रहार (से २, ४, पि २६७ ए)।
°प्पहा देखो पहा (कुमा)।
°प्पहाण देखो पहाण (रंभा)।
°प्पहाय देखो पहाय = प्रभाव, 'प्पहाउ' (रंभा)।
°प्पहार देखो पहार (रंभा)।
°प्पहाव देखो पहाव (अभि ११६)।
°प्पहु देखो पहु (रंभा)।
°प्पारंभ देखो पारंभ (रंभा)।
°प्पिअ देखो पिअ = प्रिय (अभि ११८, मा १८)।
°प्पिआ देखो पिआ (कुमा)।
°प्पिव देखो इव (प्राकृ २६)।
°प्पेम देखो पेम (पि ४०४)।
°प्पेम्म देखो पेम्म (कुमा)।
°प्पोढ देखो पोढ (रंभा)।
°प्फंस देखो फंस = स्पर्श (काप्र ७४३, गा ४६२, ५५६)।
°प्फणा देखो फणा (सुपा ५३५)।
°प्फट्टा देखो फट्टा (कुमा)।
°प्फल देखो फल (पि२०८)।
°प्फाल सक [स्फालय्] १ आघात करना। २ पछाड़ना। प्फालइ (पिंग)।

वब्भासा स्त्री [दे] नदी-भेद, वह नदी जिसके पूर से भावित पानी में धान्य आदि बोया जाता हो (राज)।

वब्भिआयण न [वाभ्रव्यायन] गोत्र-विशेष (इक)।

वमाल पुं [दे] कलकल, कोलाहल (दे ६, ९०)।

वम्ह पु [ब्रह्मन्] १ ज्योतिष्क देव विशेष (ठा २, ३—पत्र ७७)। २ देखो बंभ (हे २, ७४, कुमा, गा ८१६, अच्चु १३, वज्जा २६, सम्मत्त ७७, हे १, ५९, २, ६३, ३, ५६)। °चरिअ देखो बंभ-चेर (हे २, ६३, १०७)। °तरु पु [°तरु] पलाश का पेड (कुमा)। °धमणी स्त्री [°धमनी] ब्रह्मनाडी (अच्चु ८४)।

वम्हज्ज (शौ) देखो वभण्ण (प्राकृ ८७)।

वम्हण देखो वभण (अच्चु १७, प्रयौ ३७)।

वम्हणाय देखो वंभणगय (भग)।

वम्हहर [दे] देखो वभहर (षड्)।

वम्हाल पु [दे] अपस्मार, वायु-रोग-विशेष, मृगी रोग (षड्)।

वय पुं [वक] १ पक्षि-विशेष, वगुला। २ कुबेर। ३ महादेव। ४ पुष्प-वृक्ष विशेष, मल्लिका का गाछ (श्रा २३)। ५ राक्षस-विशेष (श्रा २३)। ६ असुर-विशेष, वकासुर (वेणी १७७)।

वयाला देखो वा-याला (पव १९)।

वरठ पु [दे] धान्य-विशेष (पव १५४ टी)।

वरह न [वर्ह] १ मयूर-पिच्छ (म ५००)। २ पत्र। ३ परिवार (प्राकृ २८)। देखो वरिह।

वरहि } पु [वर्हिन्] मयूर, मोर (पाअ, वरहिण } प्राकृ २८, पउम, २८, १२०, णाया १, १, पण्ह १, १, औप)।

वरिह देखो वरह (हे २, १०४)। °हर पु [°धर] मयूर (षड्, प्राकृ २८)।

वरिहि } देखो वरहि (कप्पू, हे ४, ४२२)। वरिहिण }

वरुअ न [दे] तृण-विशेष, इक्षु-सदृश तृण (दे ५, १९, ६, ९१, पाअ)।

वरुड पुं [द] शिल्पी-विशेष, चटाई बनानेवाला शिल्पी (अणु १४९)।

वल अक [ज्वल्] जलना, गुजराती में 'वळवु'। वलति (हे ४, ४१६)।

वल अक [वल्] १ जीना। २ सक. खाना। वलइ (हे ४, २५९)।

वल सक [ग्रह्] ग्रहण करना। वलइ (षड्)। देखो वल = ग्रह्।

वल पुं [वल] १ वलदेव, हलधर, वासुदेव का वडा भाई (पउम २० ८४, पाअ)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। ३ एक क्षत्रिय परिव्राजक (औप)। ४ न. सामर्थ्य, पराक्रम (जी ४२, स्वप्न ४२, प्रासू ६३)। ५ शारीरिक पराक्रम, 'वलवीरियाए जओ भेओ' (अज्झ ९५)। ६ सैन्य, सेना (उत्त ९, ४, कुमा)। ७ खाद्य-विशेष, 'आसाढाहि वलेहि भोज्जा कज्ज सावेति' (सुज्ज १०, १७)। ८ अष्टम तप, लगातार तीन दिनो का उपवास (सवोध ५८)। ९ पर्वत-विशेष का एक कूट—शिखर (ठा ९)। °च्छि वि [°च्छिन्] १ वल का नाशक। २ न. जहर, विष (से २, ११)। °ण्णु देखो °अ (राज)। °देव पुं [°देव] हली, वासुदेव का वडा भाई, राम (सम ७१, औप)। °अ वि [°ज्ञ] वल को जाननेवाला (आचा)। °भद्द पुं [°भद्र] १ भरतक्षेत्र का भावी सातवाँ वासुदेव (सम १५४)। २ राजा भरत का एक प्रपौत्र (पउम ५, ३)। ३ एक विमानावास, देवविमान-विशेष (देवेन्द्र १३३)। देखो °हद्द। °भाणु पुं [°भानु] राजा वलमित्र का भागिनेय (काल)। °महणा स्त्री [°मथनी] विद्या-विशेष (पउम ७, १४२)। °मित्त पुं [°मित्र] इस नाम का एक राजा (विचार ४९४, काल)। °व वि [°वत्] १ वलवान्, वलिष्ठ (विसे ७९८)। २ प्रभूत सैन्यवाला (औप)। ३ पुं. अहोरात्र का आठवाँ मुहूर्त (सुज्ज १०, १३)। °वइ पुं [°पति] सेनापति, सेनाध्यक्ष (महा)। °वत, °वग देखो °व (णाया १, १, औप, णाया १, ५)। °वत्त न [°वत्त्व] वलिष्ठता (ओघमा ६)। °वाउय वि [°व्यापृत] सैन्य में लगाया हुआ (औप)। °हद्द पुं [°भद्र] १ वलदेव। २ छन्द-विशेष (पिंग)। देखो °भद्द।

वलक्कार } पुं [वलात्कार] जवरदस्ती (पउम वलक्कार } ४६, २९, दे ६, ४९, अभि २१७, स्वप्न ७९)।

वलक्कारिद (शौ) वि [वलात्कारित] जिस पर वलात्कार किया गया हो वह (नाट—मालती १२३)।

वलद्द पु [दे] वलद, वैल (सुपा ५४५, नाट—मृच्छ ९०)।

वलमड्डा स्त्री [दे] वलात्कार, जवरदस्ती (दे ६, ९२)।

वलमोडि देखो वलामोडि, 'मग्गिअलद्धे वलमोडिचुंविए अप्पणेण उवणीदे' (गा ८२७)।

वलमोडिअ देखो वलामोडिअ, 'केमेसु वलमोडिअ तेण समरम्मि जअस्सिरी गहिआ' (गा ९७७)।

वलय पुं [दे] वलद, वैल (पउम ८०, १३)।

वलया देखो वलाया (हे १, ६७)।

वलवट्टि स्त्री [दे] १ सखी। २ व्यायाम को सहन करनेवाली स्त्री (दे ६, ९१)।

वलहट्टुया स्त्री [दे] चने की रोटी (वज्जा ११४)।

वला अ स्त्री [वलात्] जवरदस्ती, वलात्कार (से १०, ७८, ओघभा २०), 'वलाए' (उप १०३१ टी)।

वला स्त्री [वला] १ मनुष्य की दश दशाओं मे चौथी अवस्था, तीस से चालीस वर्ष तक की अवस्था (तंदु १६)। २ दृष्टि-विशेष, योग की एक दृष्टि। ३ भगवान् कुन्थुनाथ की शासन-देवी, अच्युता (राज)।

वलाका देखो वलाया (पण्ह १, १—पत्र ८)।

वलाणय न [दे] १ उद्यान आदि मे मनुष्य को वैठने के लिए वनाया जाता स्थान—वेंत्र आदि (धर्मवि ३३, सिरि ५८९)। २ द्वार, दरवाजा, 'पविसतो चेव वलाणयम्मि कुज्जा निनीहिया तिन्नि' (चेइय १८८)।

वलामोडि स्त्री [दे. वलामोटि] वलात्कार (दे ६, ९२)।

वलामोडिअ अ [दे. वलादामोट्य] वलात्कार मे, जवरदस्ती से, 'केसेसु वलामोडिअ तेण अ समरम्मि जयसिरी गहिआ' (काप्र १६७, उत्तर १०३, पि २३८)।

फडिअ वि [स्फटित] खोदा हुआ, 'तो थोवे-सघरेहिं नरेहिं फडिया भडत्ति सा गत्ता' (सुपा ६१३)।

फडिअ } देखो फलिह = स्फटिक (नाट—
फडिग } रत्ना ८३), 'फडिगपाहाणन्निभा' (निचू ७)।

फडिल्ल देखो फडा-ल (चंड)।

फडिह पुं [परिघ] १ अर्गला, आगल (से १३, ३८)। २ कुठार (से ५, ५४)।

फडिहा देखो फलिहा = परिखा (से १२, ७५)।

फड्ड } पुंन [दे. स्पर्ध, °क] १ अंश,
फड्डग } भाग, निस्सा, गुजराती में 'फाडिउ',
फड्ड } 'कम्मियकड्ढमिस्सा चुल्ली उक्खा य
फड्डुग } फड्डगजुया उ' (पिंड २५३)। २ संपूर्ण गण के अधिष्ठाता के वशवर्त्ती गण का एक लघुतर हिस्सा, समुदाय का एक अति छोटा विभाग जो संपूर्ण समुदाय के अध्यक्ष के अधीन हो, 'गच्छागच्छिं गुम्मागुम्मि फड्डाफड्डिं' (औप, वृह १)। ३ द्वार आदि का छोटा छिद्र, विवर। ४ अवधिज्ञान का निर्गम-स्थान, 'फड्डा य असखेज्जा', 'फड्डा य आणुगामी' (विसे ७३८, ७३९)। ५ समुदाय, 'तत्थ पव्वइयगा फड्डुगेहिं एति' (आवम, आचू १)। ६ समुदाय-विशेष, वर्गणा-समुदाय, 'नेहप्पच्चय-फड्डगमेग अविभागवग्गणा णंता' (कम्मप २८, ४४, पंच ३, २८, ५, १८३, १८४, जीवस ७६), 'तं इगिफड्डुं सते', 'तासि खलु फड्डुगाइं तु' (पंच ५, १७६, १७१)। °वइ पुं [°पति] गण के अवान्तर विभाग का नायक (वृह १)।

फण पु [फण] फन, साँप की फणा (से ६, ५५, पात्र, गा २४०, सुपा १, प्रासू ५१)।

फणग पुं [दे. फनक] कघा, केश सवाँरने का उपकरण (उत्त २२, ३०)।

फणज्जुय पु [दे] वनस्पति-विशेष, 'तुलसी कण्ह-ओराले फणज्जुए अज्जए य भूयणए' (पण्ण १—पत्र ३४)।

फणस पु [पनस] कटहर का पेड (पण्ण १, हे १, २३२, प्राप्र)।

फणा स्त्री [फणा] फन (सुर २, २३६)।

फणि पुं [फणिन्] १ साँप, सर्प, नाग (उप ३५७ टी, पात्र, सुपा ५५६, महा, कुमा)। २ दो कला या एक गुरु अक्षर की संज्ञा (पिंग)। ३ प्राकृत-पिंगल का कर्ता, पिंगला-चार्य (पिंग)। °चिंध पुं [°चिह्न] भगवान् पार्श्वनाथ (कुमा)। °पहु पुं [°प्रभु] १ नागकुमार देवो का एक स्वामी, धरणेन्द्र (ती ३)। २ शेष नाग (धर्मवि ५७)। °राय पुं [°राज] १ शेष नाग (कुप्र २७२)। २ पिंगल-कर्ता (पिंग)। °लआ स्त्री [°लता] नागलता, वल्ली-विशेष, (कप्पू)। °वइ पुं [°पति] १ इन्द्र-विशेष, धरणेन्द्र (सुपा ३१)। २ नाग-राज (मोह २६)। ३ पिंगलकार (पिंग)। °सेहर पुं [°शेखर] प्राकृत-पिंगल का कर्ता (पिंग)।

फणिंद पुं [फणीन्द्र] १ नाग-राज, शेष नाग (प्रासू ११३)। २ पिंगलकार (पिंग)।

फणिल्ल सक [चोरय्] चोरी करना। फणिल्लइ (धात्वा १४६)।

फणिह पुं [दे. फणिह] कघा, केश सवाँरने का उपकरण (सूअ १, ४, २, ११)।

फणीसर पुं [फणीश्वर] देखो फणि-वइ (पिंग)।

फणुज्जय देखो फणज्जुय (राज)।

फद्ध पुं [स्पर्ध] स्पर्धा, हिर्स (कुमा)।

फद्धा स्त्री [स्पर्धा] ऊपर देखो (दे ८, १३, कुमा ३, १८)।

फद्धि वि [स्पर्धिन्] स्पर्धा करनेवाला (प्राकृ २३)।

फर } पु [दे. फल, °क] १ काष्ठ आदि
फरअ } का तख्ता। २ ढाल। (दे १,७६,६, ८२, कप्पू, सुर २, ३१)। देखो फल, फलग।

फरअ पुंन [दे. स्फरक] अस्त्र-विशेष, 'फरएहिं छाइऊणं तेवि हु गिण्हंति जीवंत' (धर्मवि ८०)।

फरक्किद वि [दे] फरका हुआ, हिला हुआ, कम्पित (कप्पू)।

फरस देखो फरिस = स्पर्श (रंभा, नाट)।

फरसु पुं [परशु] कुठार, कुल्हाडा, फरसा (भवि, पि २०४)। °राम पुं [°राम] ब्राह्मण-विशेष, जमदग्नि ऋषि का पुत्र (भत्त १५३)।

फरहर अक [फरफराय्] फरफर आवाज करना। वकृ. फरहरंत (भवि)।

फरित देखो फलिह = स्फटिक (इक)।

फरिस सक [स्पृश्] छूना। फरिसइ (षड्), फरिसइ (प्राकृ २७)। कर्म. फरि-सिज्जइ (कुमा)। कवकृ. फरिसिज्जत (धर्मवि १३६)।

फरिस } पुंन [स्पर्श, °क] स्पर्श, छूना
फरिसग } (आचा, पण्ह १, १, गा १३२, प्राप्र, पात्र, कप्र), 'न य कीरइ तणुफरिसं' (गच्छ २, ४४)।

फरिसण न [स्पर्शन] इन्द्रिय-विशेष, त्वगि-न्द्रिय (कुप्र २२४)।

फरिसिय वि [स्पृष्ट] छुआ हुआ (कुप्र १६, ४२)।

फरिहा देखो फलिहा = परिखा (णाया १, १२)।

फरुस वि [परुष] १ कर्कश, कठिन (उवा, पात्र, हे १, २३२, प्राप्र)। २ न कुवचन, निष्ठुर वाक्य, 'ण यावि किंची फरुसं वदेज्जा' (सूअ १, १४, ७, २१)।

फरुस } पुं [दे. परुष, °क] कुम्भकार,
फरुसग } कुम्हार, कोहाँर, कुंभार, 'पोग्गलमो-यगफरुसगदंते' (वृह ४)। °साला स्त्री [°शाला] कुम्भकार-गृह (वृह ३)।

फरुसिया स्त्री [परुषता, पारुष्य] कर्कशता, निष्ठुरता (आचा)।

फल अक [फल्] फलना, फलान्वित होना। फलइ (गा १७, ८६४), फलति (सिरि १२८२)। वकृ. फलत (से ७, ५६)।

फल पुंन [फल] १ वृक्षादि का शस्य (आचा, कप्प; कुमा, ठा ६, जी १०)। २ लाभ, 'पुच्छइ ते सुमिणाणं एएसिं किमिह मह फलो होइ' (उप ६८६ टी)। ३ कार्य, 'हेउफलभा-वओ होति' (पंचव १, धर्म १)। ४ इष्टानिष्ट-कृत कर्म का शुभ या अशुभ फल—परिणाम (सम ७२, हे ४, ३३५)। ५ उद्देश्य। ६ प्रयोजन। ७ त्रिफला। ८ जायफल। ९ बाण का अग्र भाग। १० फाल। ११ दान। १२ मुष्क, अण्डकोष। १३ ढाल। १४ कक्कोल, गन्ध द्रव्य-विशेष (हे १, २३)। १५ अग्र भाग, 'अदु वा मुट्ठिणा अदु

(विपा १, १)। °दत्त पु [°दत्त] देखो अत के दो अर्थ (विपा १, ५)।

वहि अ [वहिस्] वाहर, 'अवहिलेसे परिव्वए' (आचा), 'गामवहिम्मि य त ठाविऊण गामंतरे पविट्ठो सो' (उप ६ टी)। °हुत्त वि [°दे] वहिर्मुख (गउड)।

वहिअ वि [दे] मथित, विलोडित (षड्)।

वहिं देखो वहि (आचा, उव)।

वहिणिआ, वहिणी स्त्री [भगिनी] वहिन (अभि १३७, कप्पू, पाअ, पउम ६, ६, हे २, १२६, कुमा)। २ सखी, वयस्या (सक्षि ४७)। °तणअ पुं [°तनय] भगिनी-पुत्र (दे)। °वइ पुं [°पति] वहनोई (दे)। देखो भइणी।

वहित्ता अ [वहिस्तात्] वाहर (सुज्ज ६)।

वहिद्धा अ [दे] १ वाहर। २ मैथुन, स्त्री-सभोग (हे २, १७४, ठा ४, १—पत्र २०१)।

वहिद्धा अ [वहिर्धा] वाहर की तरफ (दस २, ४)।

वहिया अ [वहिस्, वहिस्तात्] वाहर (विपा १, १, आचा, उवा, औप)।

वहिर वि [वाह्य] वहिर्भूत, वाहर का (प्राकृ ३८)।

वहिर वि [वधिर] वहरा, जो सुन न सकता हो वह (विपा १, १, हे १, १८७, प्रासू १४३)।

वहिरिय वि [वधिरित] वधिर किया हुआ (सुर २, ७५)।

वहु वि [वहु] १ प्रचुर, प्रभूत, अनेक, अनल्प (ठा ३, १, भग, प्रासू ४१, कुमा, श्रा २७)। स्त्री. °हुई (षड्, प्राकृ २८)। २ क्रिवि अत्यन्त, अतिशय (कुमा ५, ६६, काल)। °उदग पु [°उदक] वानप्रस्थ का एक भेद (औप)। °चूड पु [°चूड] विद्याधर वश का एक राजा (पउम ५, ४६)। °जपिर वि [°जल्पितृ] वाचाट, वकवादी (पाअ)। °जण पु [°जन] अनेक लोग (भग)। २ न. आलोचना का एक प्रकार (ठा १०)। °णड देखो °नड (राज)। °णाय न [°नाद] नगर-विशेष (पउम ५५, ५३)। °देसिअ वि [°देश्य] कुछ ज्यादा, थोडा वहुत (आचा २, ५, १, २२)। °नड पु [°नट] नट की तरह अनेक भेष को धारण करने-वाला (आचा)। °पडिपुण्ण, °पडिपुन्न वि [°परिपूर्ण] पूरा पूरा (ठा ६, भग)। °पढिय वि [°पठित] अति शिक्षित, अतिशय शिक्षित (णाया १, १४)। °पलावि वि [°प्रलापिन] वकवादी (उप पृ ३३६)। °पुत्तिअ न [°पुत्रिक] वहु-पुत्रिका देवी का सिंहासन (निर १, ३)। °पुत्तिआ स्त्री [°पुत्रिका] १ पूर्णभद्र नामक यक्षेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १, णाया २)। २ सौधर्म देवलोक की एक देवी (निर १, ३)। °प्पएस वि [°प्रदेश] प्रचुर प्रदेश—कर्म-दल वाला (भग)। °फोड वि [°स्फोट] वहु-भक्षक (ओघभा १६१)। °भगिय न [°भङ्गिक] दृष्टिवाद का सूत्र-विशेष (सम १२८)। °मय वि [°मत] १ अत्यन्त अभीष्ट (जीव १)। २ अनुमोदित, समत, अनुमत (काप्र १७६, सुर ४, १८८)। °माइ वि [°मायिन्] अति कपटी (आचा)। °माण पुं [°मान] अति-शय आदर (आवम, पि ६००, नाट—विक्र ५)। °माय वि [°माय] अति कपटी (आचा)। °मुल्ल, °मोल्ल वि [°मूल्य] मूल्यवान्, कीमती (राज, पड्)। °रय वि [°रत] १ अत्यन्त आसक्त (आचा)। २ जमालि का अनुयायी। ३ न. जमालि का चलाया हुआ एक मत—क्रिया की निष्पत्ति अनेक समयो मे ही माननेवाला मत (ठा १०, औप)। °रय न [°रजस्] खाद्य-विशेष, चिउडा की तरह का एक प्रकार का खाद्य (आचा २, १, १, ३)। °रव वि [°रव] १ प्रभूत यशवाला, यशस्वी (सम ५१)। २ न एक विद्याधर-नगर (इक)। °रूवा स्त्री [°रूपा] सुरूप नामक भूतेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १, णाया २)। °लेव पु [°लेप] चावल आदि के चिकने मांड का लेप (पडि)। °वयण न [°वचन] वहुत्व-बोधक प्रत्यय (आचा २, ४, १, ३)। °विह वि [°विध] अनेक प्रकार का, नानाविध (कुमा, उव)। °विहिय वि [°विध, °विधिक] विविध, अनेक तरह का (सुअनि ६४)। °सपत्त वि [°सप्राप्त] कुछ कम सप्राप्त (भग)। °सच्च पु [°सत्य] अहोरात्र का दशवां मुहूर्त (सुज्ज १०, १३)। °सो अ [°शस्] अनेक वार (उव, श्रा २७, प्रासू ४२, १५६, स्वप्न ५६)। °स्सुअ वि [°श्रुत] शास्त्रज्ञ, शास्त्रो का अच्छा जानकार, पण्डित (भग, सम ५१, ठा ६—पत्र ३५२, सुपा ५६४)। °हा अ [°धा] अनेकधा (उव, भवि)।

वहुअ, वहुअय वि [वहु, °क] ऊपर देखो (हे २, १६४, कुमा, श्रा २७)।

वहुआरिआ, वहुआरी स्त्री [दे] वुहारो, झाड़ू (दे ८, १७ टी)।

वहुई देखो वहु = ई।

वहुखज्ज वि [वहुखाद्य] १ वहु-भक्ष्य, खूव खाने योग्य। २ पृथुक—चिउडा वनाने योग्य (आचा २, ४, २, ३)।

वहुग देखो वहुअ (आचा ७)।

वहुजाण पु [दे] १ चोर, तस्कर। २ धूर्त, ठग। ३ जार, उपपति (षड्)।

वहुण पु [दे] १ चोर, तस्कर। २ धूर्त (दे ६, ६७)।

वहुणाय वि [वाहुनाद] वहुनाद-नगर का (पउम ५५, ५३)।

वहुत्त वि [प्रभूत] वहुत, प्रचुर (हे १, २३३)।

वहुमुह पुं [दे. वहुमुख] दुर्जन, खल (दे ६, ६२)।

वहुराणा स्त्री [दे] खड्ग-धारा, तलवार की धार (दे ६, ६१)।

वहुरावा स्त्री [दे] शिवा, शृगाली (दे ६, ६१)।

वहुरिया स्त्री [दे] वुहारी, झाड़ू (वृह १)।

वहुल वि [वहुल] १ प्रचुर, प्रभूत, अनेक (कुमा, श्रा २८)। २ वहुविध, अनेक प्रकार का (आवम)। ३ व्याप्त (सुपा ६३०)। ४ पु कृष्ण पक्ष (पाअ)। ५ स्वनाम ख्यात एक ब्राह्मण (भग १५)।

वहुल पुं [वहुल] आचार्य महागिरि के शिष्य एक प्राचीन जैन मुनि (णंदि ४६)।

फैला हुआ (सुर २, २३६, काप्र १७०, सुपा १६४, कुप्र ५१)।

फारक्क वि [दे. स्फारक] स्फरक को धारण करनेवाला, 'तं नासंतं दट्ठुं फारक्का मणुस्सवग्गओ मुक्का' (धर्मवि ८०)।

फारुसिय न [पारुष्य] परुषता, कठोरता, कर्कशता, 'फारुसियं समाइयंति' (आचा)।

फाल देखो °प्फाल।

फाल देखो फाड। फालेइ (हे १, १९८; २३२)। कवकृ. फालिज्जंत, फालिज्जमाण (गा १५३, सम्मत्त १७४)। संकृ. फालेऊण (गा ४८१)।

फाल पुंन [फाल] १ लोहमय कुश, एक प्रकार की लोहे की लम्बी कील (उवा)। २ फाल से की जाती एक प्रकार की दिव्य-परीक्षा, शपथ-विशेष (सुपा १८१)। ३ फलांग, फाँक, 'दीवि व्व विहलफालो' (कुप्र १२)।

फालण न [पाटन, स्फाटन] विदारण, "लोणी कि न सहेदि सीरमुहओ तं तारिसं फालणं" (रंभा; सम १२५)।

फालण देखो °प्फालण।

फाला स्त्री [फाला] फलाङ्ग, फाँक (कुप्र २७८; कुलक ३२)।

फालि स्त्री [दे. फालि] १ फली, छीमी, फलियाँ २ शाखा "सिंबलिफालिव्व अग्गिणा दड्ढो" (संथा ८५)। ३ फाँक, टुकड़ा "— नागवल्लीदलपूगीफलफालिपमुह—" (रयण ५५)।

फालिअ वि [पाटित, स्फाटित] विदारित (कुमा, पण्ह १, १—पत्र, पउम ८२, ३१, औप)।

फालिअ न [दे. फालिक] देश-विशेष में होता वस्त्र-विशेष, "अमिलाणि वा गज्जलाणि वा फालियाणि वा कायहाणि वा (आचा २, ५, १, ७)।

फालिअ, फालिग, फालिह } पुं [स्फाटिक] १ रत्न-विशेष (कप्प)। २ वि. स्फटिक-रत्न का (पि २२६; उप ९८६; सुपा ८८)।

फालिहद्द पु [पारिभद्र] १ फरहद का पेड़। २ देवदारु का पेड़। ३ निम्ब का पेड़ (१, २३२)।

फास सक [स्पृश्, स्पर्शय्] १ स्पर्श करना, छूना। २ पालन करना। फासइ, फासेइ (हे ४, १८२; भग)। कर्म. फासिज्जइ (कुमा)। वकृ. फासंत, फासयंत (पंचा १०, ३५; पण्ह २, ३—पत्र १२३)। कवकृ. फासाइज्जमाण (भग—प्र°)। संकृ. फासइत्ता, फासित्ता (उत्त २९, १, सुज्ज २९, १, कप्प; भग)।

फास पुंन [स्पर्श] १ स्पर्श, छूना (भग; प्रासू १०४)। २ ग्रह-विशेष, ज्योतिष्क देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। ३ दुःख-विशेष, "एयाइं फासाइं फुसंति बालं" (सूअ १, ५, २, २२)। ४ शब्द आदि विषय (उत्त ४, ११)। ५ स्पर्श इन्द्रिय, त्वचा (भग)। ६ रोग। ७ ग्रहण। ८ युद्ध, लड़ाई। ९ गुप्त चर, जासूस। १० वायु, पवन। ११ दान। १२ 'क' से लेकर 'म' तक के अक्षर। १३ वि. स्पर्श करनेवाला (हे २, ९२)। °कीव पुं [°क्लीब] क्लीब का एक भेद (निचू ४)। °णाम, °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, कर्कश आदि स्पर्श का कारणभूत कर्म (राज, सम ६७)। °मंत वि [°मत्] स्पर्शवाला (ठा ५, ३; भग)। °मय वि [°मय] स्पर्श-मय, स्पर्श से निवृत्त; 'फासामयाओ सोक्खाओ' (ठा १०)।

फासग वि [स्पर्शक] स्पर्श करनेवाला (अज्झ १०४)।

फासण न [स्पर्शन] १ स्पर्श-क्रिया (श्रा १६)। २ स्पर्शेन्द्रिय, त्वचा (पव ६७)।

फासणया, फासणा } स्त्री [स्पर्शना] १ स्पर्श-क्रिया (ठा ६, स १५९, जीवस १८१)। २ प्राप्ति (राज)।

फासिअ वि [स्पृष्ट] १ छुआ हुआ (भव ४१; विसे २७८३)। २ प्राप्त; 'उचिए काले विहिणा पत्तं जं फासियं तयं भणियं' (पव ४)।

फासिअ वि [स्पर्शिक] स्पर्श करनेवाला (विसे १००१)।

फासिअ वि [स्पर्शित] १ स्पर्श-युक्त, स्पृष्ट। २ प्राप्त (पव ४—गाथा २१२)।

फासिंदिय न [स्पर्शेन्द्रिय] त्वगिन्द्रिय (भग, णाया १, १७)।

फासु, फासुअ, फासुग } वि [प्रासु, °क] अचेतन, जीव-रहित, निर्जीव, अचित्त वस्तु (भग; पंचा १०, ६; औप; उवा; णाया १, ५, पउम ८२, ५)।

फिक्कार अक [फित् + कृ] प्रेत—पिशाच का चिल्लाना; 'तह फिक्करंति पेया' (सुपा ४९२)।

फिक्कि पुंस्त्री [दे] हर्ष, खुशी (दे ६, ८३)।

फिज न [दे. स्फिच्] नितम्ब, चूतर, जंघा का उपरि-भाग (सुज्ज ८, १३)।

फिट्ट अक [भ्रंश्] १ नीचे गिरना। २ टूटना, भाँगना। ३ ध्वस्त होना। ४ पलायन करना, भागना। फिट्टइ (हे ४, १७७; प्राकृ ७६, गा १८३, चेइय ५८७), फिट्टई (उत्त २०, ३०), फिट्टंति (सिरि १२९३)। भवि. फिट्टिहिइ, फिट्टिहिसि (कुप्र १६५, गा ७६८)।

फिट्ट वि [भ्रष्ट] विनष्ट; 'पाणिएण तएह व्विअ न फिट्टा' (गा ९३; भवि)।

फिट्टा स्त्री [दे] १ मार्ग, रास्ता; 'ता फिट्टाए मिलियं कुट्टियनरपेडियं एगं' (सिरि २९१)। २ प्रणाम-विशेष, मार्ग में किया जाता प्रणाम (गुमा १)। °मित्त पुंन [°मित्र] मार्ग में मिलने पर प्रणाम करने तक की अवधिवाली मित्रतावाला (सुपा १८९)।

फिड देखो फिट्ट। फिडइ (हे ४, १७७)।

फिडिअ वि [भ्रष्ट, स्फिटित] १ भ्रंश-प्राप्त, नष्ट, च्युत (ओघ ७, १११, ११२, से ४, ५४, ६४)। २ अतिक्रान्त, उल्लंघित (ओघभा १७४, औप)।

फिड्ड वि [दे] वामन (दे ६, ८४)।

फिप्प वि [दे] कृत्रिम, बनावटी (दे ६, ८३)।

फिप्फिस न [दे] अन्त्र—आँत स्थित मांस-विशेष, फेफड़ा (सूअनि ७२; पण्ह १, १)।

फिर सक [गम्] फिरना, चलना। वकृ. फिरंत (धर्मवि ८१)।

वाल पु [वाल] १ वाल, केश (उप ८३४)। २ बालक, शिशु (कुमा प्रासू ११६)। ३ वि. मूर्ख, अज्ञानी (पाअ)। ४ नया, नूतन (कप्पू)। ५ पु स्वनाम-ख्यात एक विद्याधर राजा (पउम १०, २१)। ६ वि. असयत, सयम-रहित (ठा ४, ३)। °कइ पुं [°कवि] तरुण कवि, नया कवि (कप्पू)। °क्क पुं [°ार्क] उदित होता सूर्य (कुमा)। °ग्गाह पुं [°ग्राह] वालक की सार सम्हाल करनेवाला नौकर (सुर १, १९२)। °ग्गाहि पु [°ग्राहिन्] वही पूर्वोक्त अर्थ (णाया १, २—पत्र ८४)। °घाय वि [°घात] वाल-हत्या करनेवाला (णाया १, २, १८)। °तव पुन [°तपस्] १ अज्ञानी की तपश्चर्या (भग, औप)। २ वि अज्ञान पूर्वक तप करनेवाला (कम्म १, ५९)। °तवस्सि वि [°तपस्विन्] अज्ञान-पूर्वक तप करनेवाला, मूर्ख तपस्वी (पि ४०५)। °पंडिअ वि [°पण्डित] आशिक त्याग करनेवाला, कुछ अंशो मे त्यागी और कुछ में अत्यागी (भग)। °बुद्धि वि [°बुद्धि] अनभिज्ञ (धण ५०)। °मरण न [°मरण] अविरत दशा का मरण, असंयमी की मौत (भग, सुपा ३५७)। °वियण, °वीयण पुस्त्री [°व्यजन] चामर, चँवर (णाया १, ३), स्त्री. 'उवणहाओ वालवीअणी' (ठा ५, १—पत्र ३०३)। °हार पु [°धार] वालक का सार-सम्हाल करनेवाला नौकर (सुपा ४५८)।

वाल देखो वल। °ण्ण, °न्न वि [°ज्ञ] वल को जाननेवाला (आचा १, २, ५, ५, आचा)।

वाल न [वाल्य] वालत्व, वचपन, लडकपन, लपन, मूर्खता (उत्त ७, ३०)। देखो वल्ल।

वालअ देखो वाल = वाल (गा १२६)।

वालअ पु [दे] वणिक्-पुत्र (दे ६, ९२)।

वालग्गपोइआ स्त्री [दे] १ जल-मन्दिर, तलाव आदि में वनवाया जाता छोटा प्रासाद। २ वलभी, अट्टालिका (उत्त ९, २४)।

वाला स्त्री [वाला] १ कुमारी, लडकी (कुमा)। २ मनुष्य की दस अवस्थाओ मे पहली दशा, दस वर्ष तक की अवस्था (तंदु १६)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)।

वालालुवी स्त्री [दे] तिरस्कार, अवहेलना (सुपा १४)।

वालि वि [वालिन्] वाल प्रधान, सुन्दर केशवाला (अणु, वृह १)।

वालिआ स्त्री [वालिका] वाला, कुमारी, लडकी (प्रासू ५१, म्हा)।

वालिआ स्त्री [वालता] १ वालकपन, शिशुता (भग)। २ मूर्खता, वेवकूफी, 'विइया मंदस्सा वालिया' (आचा)।

वालिस वि [वालिश] मूर्ख, वेवकूफ (पाअ, धण २३)।

वाह सक [वाध्] १ विरोध करना। २ रोकना। ३ पीडा करना। ४ विनाश करना। वाहइ, वाहए (पचा ५, १५, हे १, १८७, उव), वाहति (कुप्र ९८)। कवकृ. वाहिज्जत, वाहीअमाण (पउम १८, १९, सुपा ६४५, अभि २४४) कृ वाहणिज्ज (कप्पू)।

वाह पु [वाष्प] अश्रु, आँसू (हे २, ७०, पाअ, कुमा)।

वाह पु [वाध] विरोध (भास ३४)।

वाह देखो वाढ (प्रयौ ३७)।

वाह पुं [वाहु] हाथ, भुजा (संक्षि २)।

वाहग वि [वाधक] १ रोकनेवाला (पचा १, ४९)। २ विरोधी, 'अब्भुवगयवाहगा नियमा' (श्रावक १९२)।

वाहड पुं [वाहड, वाग्भट] राजा कुमारपाल का स्वनाम-प्रसिद्ध मन्त्री (कुप्र ६)।

वाहण न [वाधन] १ वाधा, विरोध (धर्मसं १२७६)। २ विराधन (पंचा १६, ५)।

वाहणा स्त्री [वाधना] ऊपर देखो (धर्मसं १११)।

वाहर देखो वाहिर (आचा)।

वाहल पुं [वाहल] देश-विशेष (आवम)।

वाहल्ल न [वाहल्य] स्थूलता, मोटाई (सम ३५, ठा ८—पत्र ४४०, औप)।

वाहा स्त्री [वाधा] १ हरकत, हरज। २ विरोध (सुपा १२६)। ३ पीडा, परस्पर संश्लेष से होनेवाली पीडा (ज १, भग १४, ८)।

वाहा स्त्री [वाहु] हाथ, भुजा (हे १, ३६, कुमा, महा; उवा, औप)।

वाहा स्त्री [दे. वाहा] नरकावास-श्रेणी (देवेन्द्र ७७)।

वाहि, वाहिं अ [वहिस्] वाहर (सुज्ज १९—पत्र २७१; महा, आचा, कुमा, हे २, १४०, पि ४८१)।

वाहिज्ज न [वाधिर्य] वधिरता, वहरापन (विसे २०८)।

वाहिर अ [वहिस्] वाहर (हे २, १४०, पाअ, आचा; उव)। °ओ अ [°तस्] वाहर मे (कप्प)।

वाहिर वि [वाह्य] वाहर का (आचा, ठा २, १—पत्र ५५, भग २, ८ टी)। °उद्धि पु [°ऊर्ध्विन्] कायोत्सर्ग का एक दोष, दोनो पार्ष्णि मिलाकर और पैर को फैलाकर किया जाता कायोत्सर्ग (चेइय ४८६)।

वाहिरंग वि [वहिरङ्ग] वाहर का, वाह्य (सूअ २, १, ४२)।

वाहिरिय वि [वाहिरिक, वाह्य] वाहर का, वाहर से संवन्ध रखनेवाला (मम ८३, णाया १, १, पिंड ६३६, औप, कप्प)।

वाहिरिया स्त्री [वाहिरिका] किले के वाहर की गृह-पक्ति, नगर के वाहर का मुहल्ला (सूअ २, ७, १, स ९६)।

वाहिरिल्ल वि [वाह्य] वाहर का (भग, पि ५९५)।

वाहु पुस्त्री [वाहु] १ हाथ, भुजा (हे १, ३६, आचा, कुमा)। २ पुं भगवान् ऋषभदेव का पुत्र, वाहुवलि (कुप्र ३१०)। °वलि पु [°वलि] १ भगवान् आदिनाथ का एक पुत्र, तक्षशिला का एक राजा (सम ६०, पउम ४, ५२, उव)। २ वाहुवलि के प्रपौत्र का पुत्र (पउम ५, ११)। °मूल न [°मूल] कक्षा, वगल (कप्पू)।

वाहुअ पुं [वाहुक] स्वनाम ख्यात एक ऋषि (सूअ १, ३, ४, २)।

वाहुडअ वि [दे] लज्जित, शर्मिदा (सुपा ४७४)।

वाहुया स्त्री [वाहुका] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (राज)।

वाहुलग देखो वाहु (तदु ३९)।

वाहुलेय पु [वाहुलेय] गो-वत्स, वैल, वृषभ (आवम)।

फुरफुर अक [पोस्फुराय्] खूब कांपना, थरथराना, तडफडाना । फुरफुरेज्जा (महानि १)। वक्र फुरफुरत, फुरफुरेत (सुर १४, २३३, स ६६६, २५६)।

फुरिअ वि [स्फुरित] १ कम्पित, हिला हुआ, फरका हुआ, चलित (दे ६, ८४, सुर ५, २२६, गा १३७)। २ दीप्त (दे ६, ८४)।

फुरिअ वि [दे] निन्दित (दे ६, ८४)।

फुरुफुर देखो फुरफुर। वक्र. फुरुफुरंत, फुरुफुरेंत (पएह १, ३, पिंड ५६०, सुर ७, २३१, गाया १, ८—पत्र १३३)।

फुल देखो फुड = स्फुट्। फुलइ (नाट)। फुले (अप) (पिंग)।

फुल (अप) देखो फुर = स्फुर्। फुला (पिंग)।

फुल (अप) देखो फुड = स्फुट (पिंग)।

फुल (अप) देखो फुल्ल = फुल्ल (पिंग)।

फुलिअ देखो फुडिअ = स्फुटित (मे ५, ३०)।

फुलिअ (अप) देखो फुल्लिअ (पिंग)।

फुलिंग पु [स्फुलिङ्ग] अग्नि-कण (गाया १, १, दे ६, १२५, महा)।

फुल्ल अक [फुल्ल्] फूलना, पुष्प-युक्त होना, विकसना। फुल्लइ फुल्लए, फुल्लेइ (रंभा, सम्मत्त १४०), फुल्लति (हे २, २६)। भवि. फुल्लिहिमि (गा ८०२)।

फुल्ल देखो कम = क्रम्। फुल्लइ (धात्वा १४६)।

फुल्ल न [फुल्ल] १ फूल, पुष्प (कुमा, धर्मवि २०, सम्मत्त १४३, दसनि १)। २ फूला हुआ, पुष्पित (भग, गाया १, १—पत्र १८; कुमा)। °मालिया स्त्री [°मालिका] फूल वेचनेवाली, मालाकार की स्त्री, मालिन (सुर ३, ७४)। °वल्लि स्त्री [°वल्लि] पुष्प-प्रधान लता (गाया १, १)।

फुल्लंधय पुं [फुल्लन्धय, पुष्पन्धय] भ्रमर, भँवरा (उप ६८६ टी)।

फुल्लधुअ पुं [दे] भ्रमर, भौंरा (दे, ६, ८५, पाअ, कुमा)।

फुल्लग न [फुल्लक] पुष्प की आकृतिवाला ललाट का आभूषण (औप)।

फुल्लण न [फुल्लन] विकास (वज्जा १५२)।

फुल्लया स्त्री [फुल्ला, पुष्पा] वल्ली-विशेष, पुष्पाह्वा, शतपुष्पा, सोया का गाछ, 'दहफुल्लय-कोगलिमा (? मो)गली य तह अक्कवोदीया' (पएह १—पत्र ३३)।

फुल्लवड न [दे] पुष्प-विशेष, मदिरा-वासक फूल (कुप्र ४५३)।

फुल्लविय } वि [फुल्लित] फुलाया हुआ
फुल्लाविय } (सम्मत्त १४०, विक्र २३)।

फुल्लिअ वि [फुल्लित] पुष्पित, विकसित (अत १२, स ३०३, सम्मत्त १४०, २२७)।

फुल्लिम पुंस्त्री [फुल्लता] विकास, फूलन,

'अच्छउ ता फलकाले फुल्लिमसमए
वि कालिमा वयणे।
इय कलिउ व पलासो वत्तो
पत्तेहिं किविग्गो व्व'
(सुर ३, ४४)।

फुल्लिर त्रि [फुल्लितृ] फूलनेवाला, प्रफुल्ल, 'हिययए दराचदराफुल्लिरफुल्लेहिं' (सम्मत्त २१४)।

फुस सक [भ्रम्] भ्रमण करना। फुसइ (हे ४, १६१)।

फुस सक [मृज्] मार्जन करना, पोछना, साफ करना। फुसइ (हे ४, १०५, भवि)। कर्म फुसिज्जइ, फुसिज्जउ (कुमा, सुपा १२४)। वक्र फुसंत, फुसमाण (भवि, कुप्र २८५)। संकृ. फुसिऊण (महा)।

फुस सक [स्पृश्] स्पर्श करना, छूना। फुसइ (भग, औप, उत्त २, ६), फुसति (विसे २०२३), फुसतु (भग)। वक्र. फुसंत, फुसमाण (ओघ ३८६, भग)। संकृ. फुसिअ, फुसित्ता, फुसित्ताणं (पंच २, ३८, भग, औप, पि ५८३)। कृ. फुस्स (ठा ३, २)।

फुसण न [स्पर्शन] स्पर्श-क्रिया (भग, सुपा ५)।

फुसणा स्त्री [स्पर्शना] ऊपर देखो (विसे ४३२, नव ३२)।

फुसिअ देखो फुस = स्पृश्।

फुसिअ वि [स्पृष्ट] छुआ हुआ (जीवस १६६)।

फुसिअ वि [मृष्ट] पोछा हुआ (उप पृ ३४५ सुपा २११, कुप्र २३१)।

फुसिअ पुंन [पृषत] १ विन्दु, वुन्द, वूँद (आचा, कप्प)। २ विन्दु-पात (सम ६०)।

फुसिअ वि [भ्रमित] घुमाया हुआ (कुमा ७, ४)।

फुसिआ स्त्री [दे] वल्ली विशेष, 'सेमविदुगोत्तफुसिया' (पएण १—पत्र ३३)।

फुस्स देखो फुस = स्पृश्।

फूअ पुं [दे] लोहकार, लोहार (दे ६, ८५)।

फूम देखो फुम। वक्र. फूमत (राज)।

फूमिय वि [फूत्कृत] फूँका हुआ (उप पृ १४१)।

फूल देखो फुल्ल = फुल्ल, 'फलफूलछल्लिकट्ठा मूलगपत्ताणि वीयाणि' (जी १३)।

फेक्कार पु [फेत्कार] १ शृगाल की आवाज (सुर ६, २०४)। २ आवाज, चिल्लाहट (कप्पू)।

फेक्कारिय न [फेत्कारित] ऊपर देखो (स ३७०)।

फेड सक [स्फेटय्] १ विनाश करना। २ दूर हटाना। ३ परित्याग करना। ४ उद्घाटन करना। फेडइ, फेडेइ, फेडति (उव, हे ४, ३५८, सवोध ५४, स ४१४)। कर्म. फेडिज्जइ (भवि)।

फेडण न [स्फेटन] १ विनाश। २ अपनयन (पव १३५)।

फेडणया स्त्री [स्फेटना] ऊपर देखो (पिंड ३८७)।

फेडावणिय न [दे] विवाह समय की एक रीति, वधू को प्रथम वार लजा-परिहार के वक्त दिया जाता उपहार (स ७८)।

फेडिअ वि [स्फेटित] १ नष्ट किया हुआ, विनाशित (पउम ३६, २२)। २ त्याजित (सिरि ६५५)। ३ अपनीत (ओघभा ४२)। ४ उद्घाटित (स ७८)।

फेण पुं [फेण, फेन] फेण, झाग, जल-मल, पानी आदि के ऊपर का बुद्बुदाकार पदार्थ (पाअ, गाया १, १—पत्र ६२, कप्प)। °मालिणी स्त्री [°मालिनी] नदी-विशेष (ठा २, ३, इक)।

फेगवध } पुं [दे] वरुण (दे ६, ८५)।
फेगवड }

फेणाय अक [फेणाय्, फेनाय्] फेण—फेन का वमन करना, झाग निकालना। वक्र फेणायमाण (प्रयौ ७४)।

विभेलय देखो बहेडय (पएण १—पत्र ३१)।

विराड पु [विडाल] १ पिंगल-प्रसिद्ध मध्य-लघुक पाच मात्रावाला अक्षर-समूह। २ छंद-विशेष (पिंग)।

विराल देखो बिडाल (सुर १, १८)।

विरालआ } देखो बिडालिआ (सम्मत्त १२३, पाअ)। २ भुजपरिसर्प-विराली } विशेष हाथ से चलनेवाला एक प्रकार का प्राणी (सूत्र २, ३, २५)।

बिरालिया स्त्री [विरालिका] स्थल-कन्द-विशेष (आचा २, १, ८, ३)।

विरुद न [विरुद] इल्काव, पदवी (सम्मत्त १४१)।

बिल न [विल] १ रन्ध्र, विवर, साँप आदि जन्तुओं के रहने का स्थान (विपा १, ७, गउड)। २ कूप, कुआँ (राय)। °कोलीकारक वि [दे. °कोलीकारक] दूसरे को व्यामुग्ध करने के लिए विस्वर वचन बोलनेवाला (पएह १, ३—पत्र ४४)। °पतिया स्त्री [°पङ्क्तिका] खान की पद्धति (पएह २, ५—पत्र १५०)।

विलाड } देखो बिडाल (भग, पि २४१)।
विलाल }

विलालिआ देखो विरालिआ (पि २४१)।

विल्ल पु [विल्व] १ वृक्ष-विशेष, बेल का पेड़ (पएण १, उप १०३१ टी)। २ न. बेल का फल (पाअ)।

विल्लल पु [विल्वल] १ अनार्य देश-विशेष। २ उस देश में रहनेवाली मनुष्य-जाति (पएह १, १—पत्र १४)। देखो चिल्लल = चिल्वल।

विस न [विस] कमल आदि के नाल का तन्तु, मृणाल (णाया १, १३, कुमा, पाअ)। °कंठी स्त्री [°कण्ठी] वलाका, वक पक्षी की एक जाति (दे ६, ९३)। देखो भिस = विस।

विसि देखो विसी (दे १, ८३)।

विसिणी स्त्री [विसिनी] कमलिनी, कमल का गाछ (पि २०९)।

विसी स्त्री [वृषी] ऋषि का आसन (दे १, ८३, पि [illegible])।

विह अक [भी] डरना। विहेइ (प्राकृ ६४, पि २०१)।

विह वि [बृहत्] बड़ा महान्। °ण्णर पु [°नल] छन्द विशेष (पिंग)।

विहप्पइ }
विहप्फइ } देखो बहस्सइ (हे २, १३७, १, १३८, २, ६९, षड्, कुमा)।
विहस्सइ }

विहिअ देखो विहिअ (प्राकृ ८)।

विहेलग देखो विभेलय (दस ५, २, २४)।

वीअ देखो विइअ (हे १, ५, २, ७९, सुर १, ३८, सुपा ४८५)।

वीअ न [बीज] १ बीज, बीया, 'लाउअबीअं इक्कं नासइ भारं गुडस्स जह सहसा' (प्रासू १५१, आचा, जी १३, औप)। २ मूल कारण, 'सारीरमाणसाणेयदुक्खबीयभूयकम्म-वणदहणसह' (महा)। ३ वीर्य, शरीरान्तर्गत सप्त धातुओं में से मुख्य धातु, शुक्र (सुपा ३९०, वव ६)। ४ 'ह्रीं' अक्षर (सिरि १९६)। °बुद्धि वि [°बुद्धि] मूल अर्थ को जानने से शेष अर्थों का निज बुद्धि से स्वयं जाननेवाला (औप)। °मत वि [°वत्] बीजवाला (णाया १, १)। °रुइ स्त्री [°रुचि] एक ही पद से अनेक पद और अर्थों का अनुसधान द्वारा फैलनेवाली रुचि। २ वि उक्त रुचिवाला (पएण १)। °रुह वि [°रुह] बीज से उत्पन्न होनेवाली वनस्पति (पएण १)। °वाय पु [°वाप] क्षुद्र जन्तु-विशेष (राज)। °सुहुम न [°सूक्ष्म] छिलके का अग्र भाग (कप्प)।

वीअऊरय न [बीजपूरक] फल-विशेष, एक तरह का नीबू (मा ३६)।

वीअजमण न [दे] बीज मलने का खल—खलिहान (दे ६, ९०)।

वीअण पु [दे] नीचे देखो (दे ६, ९३ टी)।

वीअय पुन [दे बीजक] वृक्ष-विशेष, असन वृक्ष, विजयसार का गाछ (दे ६, ९३, पाअ)।

वीअवावय पु [बीजवापक] विकलेन्द्रिय जन्तु की एक जाति (अणु १४१)।

बीआ स्त्री [द्वितीया] १ तिथि-विशेष, दूज (सम २९, श्रा २९, रयण २, णाया १, १०, सुपा १७१)। २ द्वितीय विभक्ति (चेइय ५०९)।

बीज देखो बीअ = बीज (कुमा, पएह २, १—पत्र ९९)।

बीडग न [वीटक] बीडा, पान का बीडा, सज्जित ताम्बूल (सुपा ३३९)।

बीडि } स्त्री [वीटि, °टी] ऊपर देखो;
वीडी } 'विल्लदलवीडीओ कीसेवि मुहम्मि पक्खिवइ' (धमवि १४०)।

बीभच्छ पु [बीभत्स] साहित्य प्रसिद्ध एक रस (अणु १३५)।

बीभच्छ } वि [बीभत्स] १ घृणोत्पादक,
बीभत्थ } घृणा-जनक। २ भयंकर, भय-जनक (उवा, तंदु ३८, णाया १, २, सबोध ४८)। ३ पु. रावण का एक सुभट (पउम ५९, २)।

वीयत्तिय वि [दे बीजयितृ] बीज बोनेवाला, वपन करनेवाला। २ पु. पिता, 'वीय वीयत्ति-यम्सेव' (सुपा ३९०, ३९१)।

वीलय पु [दे] ताडक, कर्णभूषण-विशेष, कान का एक गहना (दे ६, ९३)।

वीह अक [भी] डरना। वीहइ, वीहेइ (हे ४, ५३, महा, पि २१३)। वकृ वीहंत (ओघभा १९, उप ७६८ टी, कुमा)। कृ. वीहियव्व (स ६८२)।

वीहच्छ देखो बीभच्छ (पि ३२७)।

वीहण } वि [भीषण, °क] भय-जनक
वीहणग } भयकर (पि २१३, पएह १, १,
वीहणय } पउम ३५, ५४)।

वीहविय वि [भीषित] डराया हुआ (सम्मत्त ११८)।

वीहिअ वि [भीत] १ डरा हुआ (हे ४, ५३)। २ न भय, डर, 'न य वीहिअ ममावि हु' (श्रा १४)।

वीहिर वि [भेतृ] डरनेवाला (कुमा ६, ३५)।

वुआव सक [वाचय्] बुलवाना। सकृ. वुआवइत्ता (ठा ३, २—पत्र १२८)।

वुइअ वि [उक्त] कथित (सूत्र १, २, २, २४, १, १४, २५, पएह २, २)।

वुंदि पुस्त्री [दे] १ चुम्बन। २ सूकर, सूअर (दे ६, ९८)।

वुंदि स्त्री [द] शरीर, देह, 'इह वुंदि चइत्ताण तत्थ गतूण सिज्झइ' (ठा १ टी—पत्र २४; सुज्ज २०, तदु १३, सुपा ६५६, धम्म ९ टी, पाअ)। देखो वोंदि।

वुंदिणी स्त्री [दे] कुमारी-समूह (दे ६, ९४)।

ब

व पुं [व] ओष्ठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्राप)।

वअर (शौ) न [वदर] १ फल-विशेष, वेर। २ कपास का बीज (प्राकृ ८३)।

वइट्ठ (अप) वि [उपविष्ट] वैठा हुआ (हे ४, ४४४; भवि)।

वइल्ल पुं [दे] बैल, वरध, वृषभ (दे ६, ९१; गा २३८; प्राकृ ३८; हे २, १७४; धर्मवि ३; श्रावक २५८ टी; श्रु १५३; प्रासू ५५, कुप्र २७६; ती १५; वै ६; कप्पू)।

वइस (अप) अक [उप + विश्] वैठना, गुजराती में 'वेसवु'। वइसइ (भवि)।

वइसणय (अप) न [उपवेशनक] आसन (ती ७)।

वइसार (अप) सक [उप + वेशय्] वैठाना। वइसारइ (भवि)।

वइस्स देखो वइस्स (पि ३००)।

वईस (अप) देखो वइस। वईसइ (भवि)।

वईस (अप) न [उपवेश] वैठ, वैठन, वैठना, 'तोवि गोट्ठडा कराविआ मुद्धए उट्ठ-वईस' (हे ४, ४२३)।

वउणी स्त्री [दे] कार्पासी, कर्पास-वल्ली (दे ३, ५७)।

वउल पुं [वकुल] १ वृक्ष-विशेष, मौलसरी का पेड़ (सम १५२; पाअ; णाया १, ९)। २ वकुल का पुष्प (से १, ५६)। °सिरी स्त्री [°श्री] १ वकुल का पेड़। २ वकुल का पुष्प (श्रा १२)।

वउस पुं [वकुश] १ अनार्य देश-विशेष। २ पुस्त्री. उस देश का निवासी (पण्ह १, १—पत्र १४)। स्त्री °सी (णाया १, १—पत्र ३७)। ३ वि शवल, चितकवरा। ४ मलिन चरित्रवाला, शरीर के उपकरण और विभूषा आदि से सयम को मलिन करनेवाला (ठा ३, २, ५, ३; सुख ६, १), स्त्री. 'तए ण सा सूमालिया अज्जा सरीरवउसा जाया यावि होत्था' (णाया १, १६)। ४ पुंन मलिन सयम, शिथिल चारित्र-विशेष (सुख ६, १)।

वउहारी स्त्री [दे] वुहारी, समार्जनी, झाडू (दे ६, ९७)।

वंग पुं [वङ्ग] १ भगवान् आदिनाथ के एक पुत्र का नाम (ती १४)। २ देश-विशेष, वंगाल देश (उप ७६५; ती १४)। ३ वंग देश का राजा (पिंग)।

वगल (अप) पुं [वङ्ग] वग देश का राजा (पिंग)।

वंगाल पु [वङ्गाल] वगाल देश 'वगालदेस-वइणो तेणं तुह ससुरयस्स दिन्ना ह' (सुपा ३७७)।

वंभ देखो वम्भ (पि २६९)।

वडि पुं [दे] देखो वदि = वन्दिन् (षड्)।

वद न [दे] कैदी, कारा-बद्ध मनुष्य, 'वंदपि किपि' (स ४२१), 'वदाइ गिन्हइ कयावि', छलेण गिन्हति वदाइ', 'वंदाणं मोयावणकए' (धर्मवि ३२), 'एगत्थवदपग्गहियपहियकीरत-करुणरुन्नमरा' (धर्मवि ५२)। °ग्गह पु [°ग्रह] कैदी रूप से पकडना, 'परदोहवट्ट-वाडणवदग्गहखत्तखणणपमुहाइ' (कुप्र ११३)।

वदण न [दे] कैदी (नदीटिप्प० वैनयि की वुद्धि में १३ वॉ कथानक)।

वदि स्त्री [वन्दि] देखो वदी (हे १, १४२; २, १७६)।

वदि } पुं [वन्दिन्] स्तुति-पाठक, मगल-
वदिण } पाठक, मागध, 'मंगलपाढयमागह-चारणवेआलिआ वदी' (पाअ; उप ७२८ टी; धर्मवि ३०), 'उद्दामसद्दवदिणवद्रसमुग्घुट्ठ-नामाइ' (स ५७६)।

वदिर न [दे] समुद्र-वाणिज्य-प्रधान नगर, वदर (सिरि ४३३)।

वंदी स्त्री [वन्दी] १ हठ-हृत स्त्री, वॉदी (दे २, ८४; गउड १०५, ८४३)। २ कैद किया हुआ मनुष्य (गउड ४२६; गा ११८)।

वदीकय वि [वन्दीकृत] कैद किया हुआ, वॉध कर आनीत (गउड)।

वदुरा स्त्री [वन्दुरा] अश्व-शाला, 'गच्छ निरुवेहि वदुराओ, भूसेहि तुरए' (स ७२५)।

वंध सक [वन्धू] १ वॉधना, नियन्त्रण करना। २ कर्मो का जीव-प्रदेशो के साथ संयोग करना। वंधइ (भग; महा; उव; हे १, १८७)। भूका. वंधिसु (पि ५१६)। कर्म. वविज्झइ, वज्झइ (हे ४, २४७), भवि. वधिहिइ, वज्झिहिइ (हे ४, २४७)। वकृ वंधंत वधमाण (कम्म २, ८; पण्ण २२)। सकृ. ववइत्ता, वाधउं, वंधिऊण, वंधिऊणं, वधित्ता. वधित्तु (भग; पि ५१३, ५८५, ५८२)। हेकृ. वधेउ (हे १, १८१)। कृ. वंधियव्व (पंच १, ३)। कवकृ वज्झत, वज्झमाण (सुपा १९८; कम्म १, ३५; औप)।

वंध पुं [दे] भृत्य, नौकर (दे ६, ८८)।

वध पु [वन्ध] १ कर्म-पुद्गलो का जीव-प्रदेशो के साथ दूध-पानी की तरह मिलना, जीव-कर्म-संयोग (आचा; कम्म १, १५, ३२)। २ वन्धन, नियन्त्रण, सयमन (श्रा १०; प्रासू १५३)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)। °सामि वि [°स्वामिन्] कर्म वन्ध करने-वाला (कम्म ३, १, २४)।

वंधई स्त्री [वन्धकी] पुंश्चली, असती स्त्री (नाट—मालती १०६)।

वधग वि [वन्धक] १ वॉधनेवाला। २ कर्म-वन्ध करनेवाला, आत्म-प्रदेश के साथ कर्म-पुद्गलो का सयोग करनेवाला (पंच ५, ८४; श्रावक ३०६, ३०७; पचा १६, ४०; कम्म ६, ९)।

वधण न [वन्धन] १ वॉधने का—सश्लेष का साधन, जिससे वॉधा जाय वह स्निग्ध-तादि गुण (भग ८, ९—पत्र ३९४)। २ जो वॉधा जाय वह। ३ कर्म, कर्म-पुद्गल। ४ कर्म-बन्ध का कारण (सूअ १, १, १, १)। ५ संयमन, नियन्त्रण (प्रासू ३)। ६ नियन्त्रण का साधन, रज्जु आदि (उत्त)। ७ कर्म-विशेष, जिस कर्म के उदय से पूर्व-गृहीत कर्म-पुद्गलो के साथ गृह्यमाण कर्म-पुद्गलो का आपस मे सम्वन्ध हो वह कर्म (कम्म १, २४; ३१; ३५; ३६; ३७)।

बुल वि [दे] बोड, भदन्त, धर्मिष्ठ (पिंग १६८)।

बुलबुला स्त्री [दे] बुलबुला, बुद्बुद (दे ६, ६५)।

बुलबुल पुं [दे] ऊपर देखो (षड्)।

बुल्ल देखो बोल्ल। बुल्लइ (कुप्र २६, श्रा १४), बुल्लंति (प्रासू ४)। प्रयो. बुल्लावेइ, बुलावेमि, बुल्लावए (कुप्र १२७, सिरि ४४०)।

बुव सक [ब्रू] बोलना। बुवइ (षड्, कुमा)। वकृ बुवंत, बुयाण, बुवाण (उत्त २३, २१, सूग्र १, ७, १०, उत्त २३, ३१)। देखो बू।

बुस न [बुस] १ भूसा, यव आदि का कडंगर, नाज का छिलका (ठा ८—पत्र ४१७)। २ तुच्छ धान्य, फल-रहित धान्य (गउड)।

बुसि स्त्री [बृषि, °सि] मुनि का आसन। °म, °मंत वि [°मत्] संयमी, व्रती, मुनि (सूग्र २, ६, १४, आचा)।

बुसिआ स्त्री [बुसिका] यव आदि का कडगर, भूसा (दे २, १०३)।

बुह पु [बुध] १ ग्रह-विशेष, एक ज्योतिष्क देव (सुर ३, ५३, धर्मवि २४)। २ वि. पण्डित, विद्वान् (ठा ४, ४, सुर ३, ५३, धर्मवि २४, कुमा, पाग्र)।

बुहप्पइ, बुहप्फइ, बुहस्सइ } देखो बहस्सइ (हे २, ५३, १३७, षड्, कुमा)।

बुहुक्ख सक [बुभुक्ष्] खाने की इच्छा करना। बुहुक्खइ (हे ४, ५, षड्)।

बुहुक्खा देखो बुभुक्खा (राज)।

बुहुक्खिअ वि [बुभुक्षित] भूखा (कुमा)।

बू सक [ब्रू] बोलना, कहना। बूम, बूया, बूहि (उत्त २५, २६, सूग्र १, १, ३, ६, १,१,१,२)। बिंति, बेंति, बेमि, बुआ (कम्म ३, १२, महा, कप्प)। भूका. अब्बवी (उत्त २३, २१, २२, २५, ३१, ठा ३, २)। वकृ. बिंत, बेंत (उप ७२८ टी, सुपा ३६०, विसे ११६)। संकृ. बूइत्ता (ठा ३, २) देखो वच, बुव।

बूर पुं [बूर] वनस्पति-विशेष (णाया १, १—पत्र ६, उत्त ३४, १६, कप्प; ओप)। °णालिया, °नालिआ स्त्री [°नालिका] बूर से भरी हुई नली (राज, भग)।

बूल वि [दे] मूक, वाचा-शक्ति से रहित (पिंग १६८ टी)।

बूह सक [बृंह्] पुष्ट करना। बूहए (सूग्र २, ५, ३२)।

बे देखो वि (वज्जा १०, हे ३, ११६, १२०; पिंग)। °आसी (अप) स्त्री [°अशीति] बयासी, ८२ (पिंग)। °इंदिय वि [°इन्द्रिय] त्वचा और जीभ ये दो ही इन्द्रियवाला प्राणी (ठा १, भग, स ८३, जी १५)। °हिय [द्वयाहिक] दो दिन का (जीवस ११६)।

बेंट देखो विंट (महा)।

बेंत देखो बू।

बेंदि देखो बे-इंदिय (पच ५, ५६)।

बेट्ठ देखो विट्ठ (ओघभा १७४)।

बेड, बेडय } पु [दे] नौका, जहाज (दे ६, ६५, सुर १३, ५०)।

बेडा, बेडिया, बेडी } स्त्री [दे] नौका, जहाज (उप ७२८ टी, सिरि ३८२, ४०७, श्रा १२, धम्म १२ टी), 'पाणीहि जलं दारइ अरित्तदंडेहि बेडिव्व' (धर्मवि १३२)।

बेड्डा स्त्री [दे] श्मश्रु, दाढी-मूँछ के बाल (दे ६, ६५)।

बेदोणिय वि [द्वैद्रोणिक] दो द्रोण का, द्रोण-द्वय-परिमित, 'कप्पइ मे बेदोणियाए कसपाईए हिरण्णभरियाए संववहरित्तए' (उवा)।

बेभेल पुं [बेभेल] विन्ध्याचल के नीचे का एक सनिवेश (भाग ३, २—पत्र १७१)।

बेमासिय वि [द्वैमासिक] दो मास का, दो महीने का सवन्ध रखनेवाला (पउम २२, २८)।

बेलि स्त्री [दे] स्थूणा, खूँटा (दे ६, ६५, पाग्र)।

बेल्ल देखो बिल्ल (प्राकृ ५)।

बेल्लग पु [दे] बैल, बलीवर्द (आवम)।

बेस अक [विश्, स्था] बैठना, 'अंततं भोक्खामि त्ति बेसए भुजए य तह चेव' (ओघ ५७१)।

बेसक्खिज्ज न [दे] द्वेष्यत्व, रिपुता, दुश्मनाई (दे ७, ७६ टी)।

बेसण न [दे] वचनीय, लोकापवाद, लोक-निन्दा (दे ७, ७५ टी)।

बेहिम वि [दे. द्वैधिक] दो टुकडे करने योग्य, खण्डनीय (दस ७, ३२)।

बोंगिल्ल नि [दे] १ भूपित, अलङ्कृत। २ पुं. आटोप, आडम्बर (दे ६, ६६)।

बोंटण न [दे] चूचुक, स्तन का अग्र भाग (दे ६, ६६)।

बोंड न [दे] १ चूचुक, स्तन-वृन्त (दे ६, ६६)। २ फल-विशेष, कपास का फल (ओप, तदु २०)। °य न [°ज] सूती वस्त्र, सूती कपडा (सूग्र २, २, ७३, ओप)।

बोंद न [दे] मुख, मुँह (दे ६, ६६)।

बोंदि स्त्री [दे] १ रूप। २ मुख, मुँह (दे ६, ६६)। ३ शरीर, देह (दे ६, ६६, पण्ह १, १, कप्प, ओप, उत्त ३५, २०, स ७१२, विसे ३१६१, पव ५५, पचा १०, ४)।

बोंदिया स्त्री [दे] शाखा (सूग्र २, २, ४६)।

बोकड, बोक्कड } पु [दे] छाग, बकरा; गुजराती में 'बोकडो' (ती २, दे ६, ६६)। स्त्री. °डी (दे ६, ६६ टी)।

बोक्कस पुं [बोक्कस] १ अनार्य देश-विशेष (पव २७४)। २ वर्णसंकर जाति-विशेष, निषाद से अंबट्ठी की कुक्षि मे उत्पन्न (सुग्र ३, ४)।

बोक्कसालिय पु [दे] तन्तुवाय, 'कोट्टागकुलाणि वा गामरक्खकुलाणि वा बोक्कसालियकुलाणि वा' (आचा २, १, २, ३)।

बोक्कार देखो बुक्कार (सुर १०, २२१)।

बोक्किय न [बूत्कृत] गर्जन, गर्जना (पउम ५६, ५४)।

बोगिल्ल वि [दे] चितकबरा, 'फसल सबलं सार किम्मीर चित्तलं च बोगिल्लं' (पाग्र)।

बोट्ट सक [दे] उच्छिष्ट करना, जूठा करना। गुजराती में 'बोटवु', 'रयणीए रयणिचरा चरति बोट्ट ति अन्नमाईय' (सुपा ४६१)।

बोड वि [दे] १ धार्मिक, धर्मिष्ठ। २ तरुण, युवा (दे ६, ६६)। ३ मुण्डित-मस्तक, 'एमेव भडइ बोडो', गुजराती मे 'बोडो' (पिंड २१७)।

धर्म, 'वभएगकज्जेसु सज्जो' (सम्मत्त १४०, कप्प, औप, पि २५०)।

वंभद्दीविग वि [ब्रह्मद्वीपिक] ब्रह्मदीपिका-शाखा मे उत्पन्न (गादि ५१)।

वंभद्दीविगा स्त्री [ब्रह्मद्वीपिका] एक जैन-मुनि-शाखा (गादि ५१)।

वभलिज्ज न [ब्रह्मलीय] एक जैन मुनि-कुल (कप्प)।

वभहर न [दे] कमल, पद्म (दे ६, ९१)।

वंभाण देखो वभ (पउम ५, १२२)। °गच्छ पुं [°गच्छ] एक जैन-मुनि गच्छ (ती २८)।

वभि° } स्त्री [ब्राह्मी] १ भगवान् ऋषभदेव
वंभी } की एक पुत्री (कप्प, पउम ५, १२०, ठा ५, २, सम ६०)। २ लिपि-विशेष (सम ३५, भग)। ३ कल्प-विशेष (सुपा ३२४)। ४ सरस्वती देवी (सिरि ७६४)।

वंभुत्तर पुं [ब्रह्मोत्तर] एक विमानावास, देव-विमान-विशेष (देवेन्द्र १३४)। °वडिंसक न [°ावतसक] एक देव-विमान (सम १६)।

वंहि पुं [वर्हिन्] मयूर, मोर (उत्तर २६)।

वंहिण (अप) ऊपर देखो (पि ४०६)।

वक देखो वय (पराह १, १—पत्र ८)।

वक्कर न [दे. वर्कर] परिहास (दे ६, ८६, कुप्र १६७, कप्पू)।

वक्कस न [दे] अन्न-विशेष, 'वक्कस' मुद्गमापा-दिनपिकानिष्पन्नमन्न' (सुख ८, १२, उत्त ८, १२)।

वग देखो वय (दे २, ६, कुप्र ६६)।

वगदादि पु [वगदादि] देश-विशेष, वगदाद देश, 'वगदादिविसयवसुहाहिवस्स खलीपना-मयेयस्स' (हम्मीर ३४)।

वगी स्त्री [वकी] वगुली, वगुले की मादा (विपा १, ३, मोह ३७)।

वग्गड पु [दे] देश-विशेष (ती १५)।

वज्झ वि [वाह्य] वाहर का, वहिरङ्ग (पराह १, ३, प्रासू १७२)। °ओ अ [°तस्] वाह्य से, वहिरग से, 'किं ते जुज्झेण वज्झओ' (आचा)।

वज्झ न [वन्ध] वन्वन, वांधने का वागुरा आदि सावन, 'अह तं पवेज्ज वज्झ, अहे वज्झस्स वा वए' (सूअ १, १, २, ८)।

वज्झ वि [वद्ध] १ वन्धनाकार व्यवस्थित, 'अह त पवेज्ज वज्झ' (सूअ १, १, २, ८)। २ वँधा हुआ (प्रात १५)।

वज्झत } देखो वन्ध = वन्ध्।
वज्झमाण }

वठर पु [वठर] मूर्ख छात्र (कुप्र १६)।

वड (अप) वि [दे] वडा, महान् (पिंग)। देखो वड्ड।

वडवड अक [वि + लप्] विलाप करना, वडवडाना। वडवडइ (पड्)।

वडहिला स्त्री [दे] धुरा के मूल मे दी जाती कील, कीलक-विशेष (सट्ठि ११६)।

वडिस देखो वलिस (हे १, २०२)।

वडु } पु [वटु, °क] लडका, छोकडा (उप
वडुअ } ७१३, सुपा २००)।

वडुवास [दे] देखो वडुवास (दे ७, ४७)।

वतीस } (अप) देखो वत्तीस (पिंग)।
वत्तिस }

वत्तीस स्त्रीन [द्वात्रिंशत्] १ संख्या-विशेष, वत्तीस, ३२। २ जिनकी सख्या वत्तीस हो वे; 'वत्तीस जोगसंगहा पन्नत्ता' (सम ५७, औप, उव, पिंग)। स्त्री °सा (सम ५७)।

वत्तीसइ° स्त्री. ऊपर देखो (सम ५७)। °वद्धय न [°वद्धक] १ वत्तीस प्रकार रचनाओं से युक्त। २ वत्तीस पात्रों से निवद्ध (नाटक), 'वत्तीसइवद्धएहिं नाडएहिं' (गाया १, १—पत्र ३९, विपा २, १ टी—पत्र १०४)। °विह वि [°विध] वत्तीस प्रकार का (सम ५७)।

वत्तीसइम वि [द्वात्रिंशत्तम] १ वत्तीसवाँ, ३२ वाँ (पउम ३२, ६७, पराग ३२)। २ न पनरह दिनो का लगातार उपवास (गाया १, १)।

वत्तीसा देखो वत्तीस।

वत्तीसिया स्त्री [द्वात्रिंशिका] १ वत्तीस पद्यो का निवन्ध—ग्रन्थ (सम्मत्त १४४)। २ एक प्रकार का नाप (अणु)।

वद्ध वि [वद्ध] १ वँधा हुआ, नियन्त्रित, 'वद्धं सदाणिअ निअलिअ च' (पाअ)। २ सश्लिष्ट, सयुक्त (भग, पाअ)। ३ निवद्ध, रचित (आवम)। °एफल, °फल पुं [°फल] १ करञ्ज का पेड (हे २, ९७)। २ वि. फल-युक्त, फल-संपन्न (गाया १, ७—पत्र ११६)।

वद्धग पु [वद्धक] तूण-वाद्य विशेष (राय ४६)।

वद्धय पुं [दे] कान का एक आभूषण (दे ६, ८९)।

वद्धेल्लग } देखो वद्ध (अणु, महा)।
वद्धेल्लय }

वप्प पुं [दे] १ सुभट, योद्धा (दे ६, ८८)। २ वाप, पिता (दे ६, ८८ दस ७, १८, स ५८१, उप ३२० टी, सुर १, २२१, कुप्र ४३ जय, भवि, पिंग)।

वप्पहट्टि पुं [वप्पभट्टि] एक सुविख्यात जैन आचार्य (विचार ५३३, ती ७)।

वप्पीह पुं [दे] पपीहा, चातक पक्षी (दे ६, ९०, स ६८६, पाअ, हे ४, ३८३)।

वप्पुड वि [दे] वेचारा, दीन, अनुकम्पनीय गुजराती में 'वापडु' (हे ४, ३८७, पिंग)।

वप्फ पुन [वाष्प] १ भाफ, ऊष्मा, 'वप्फो' (हे २, ७०, पड्), 'वप्फ' (प्राकृ २३, विसे १५३५)। २ नेत्र जल, अश्रु, 'वप्फ वाहो य नयणजल' (पाअ), 'वप्फपज्जाउललोअणाहिं' (स ५६१, स्वप्न ८५)।

वाप्फाउल वि [दे वाष्पाकुल] अतिशय उष्ण (दे ६, ९२)।

वव्वर पुं [वर्वर] १ अनार्य देश-विशेष (पउम ९८, ६५)। २ वि. वर्वर देश का निवासी (पराह १, १, पउम, ९९, ५५)। °कूल न [°कूल] वर्वर देश का किनारा (सिरि ४३०)।

वव्वरी स्त्री [दे] केश-रचना (दे ६, ९०)।

वव्वरी स्त्री [ववेरी] वर्वर देश की स्त्री (गाया १, १, औप, इक)।

वव्वूल पुं [वव्वूल] वृक्ष-विशेष, ववूल का पेड (उप ८३३ टी, महा)।

वब्भ पुं [दे] वध्र°, चर्म, चमडे की रज्जु, 'वब्भो वद्धे' (दे ६, ८८), 'वद्धो वद्धो = (? वब्भो वद्धो)' (पाअ)।

वब्भागम वि [वह्वागम] वहु-श्रुत, शास्त्रो का अच्छा जानकार (कस)।

भ

भ पु [भ] १ ओष्ठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्राप, प्रामा)। २ पिंगल-प्रसिद्ध आदि-गुरु और दो ह्रस्व अक्षरों की संज्ञा, भगण (पिंग)। ३ न नक्षत्र (सुर १६, ४३)। °आर पुं [°कार] १ 'भ' अक्षर। २ भगण (पिंग)। °गण पु [°गण] भगण (पिंग)।

भइ देखो भव = भू।

भइ स्त्री [भृति] वेतन, तनखाह (णाया १, ८—पत्र १५०, विपा १, ४, उवा)। देखो भुइ।

भइअ वि [भक्त] १ विभक्त (श्रावक १८५, सम ७६)। २ खण्डित, 'अणुत्तसखासंखप्प-एसभइय पुढो पयर' (पच २, १२, औप)। ३ विकल्पित (वव ६)।

भइअ न [भक्त] भागाकार (वव १)।

भइअ, भइअव्व } देखो भय = भज्।

भइअ, भइग } वि [भृतिक] कर्मकर नौकर, चाकर (राय २१)।

भइणि°, भइणिआ, भइणी | स्त्री [भगिनी] बहिन स्वसा (सुपा १५, स्वप्न १५, १७, विपा १, ४, प्रासू ७८, कुल २३५, कुमा)। °वइ पु [°पति] बहनोई (सुपा १५, ५३२)। °सुअ पु [°सुत] भागिनेय, भानजा (सुपा १७)। देखो बहिणी।

भइरव वि [भैरव] १ भयकर, भीषण, भय-जनक (पाअ, सुपा १८२)। २ पुं नाट्यादि-प्रसिद्ध एक रस, भयानक रस। ३ महादेव, शिव। ४ महादेव का एक अवतार। ५ राग-विशेष, भैरव राग। ६ नद-विशेष (हे १, १५१, प्राप्र)। देखो भेरव।

भइरवी स्त्री [भैरवी] शिव-पत्नी, पार्वती (गउड)।

भइरहि पु [भगीरथि] सगर चक्रवर्त्ती का एक पुत्र, भगीरथ (पउम ५, १७५)।

भइल वि [दे] भया, जात (रभा ११)।

भउम्हा (शौ) देखो भमुहा (पि २५१)।

भउहा (अप) देखो भमुहा (पिंग)।

भएयव्व देखो भय = भज्।

भंकार पुं [भङ्कार] भनकार, अव्यक्त आवाज विशेष (उप पृ ८६)।

भंकारि वि [भङ्कारिन्] भनकार करनेवाला (सण)।

भग पु [भङ्ग] १ भाँगना, खण्ड, खण्डन (ओघ ७८८, प्रामू १७०, जी १२, कुमा)। २ प्रकार, भेद, विकल्प (भग, कम्म ३, ५)। ३ विनाश (कुमा, प्रासू २१)। ४ रचना-विशेष, 'तरगरगतभग—' (कप्प)। ५ पराजय। ६ पलायन (पिंग)। °रय न [°रत] मथुन-विशेष (वज्जा १०८)।

भंग पुं [भृङ्ग] आर्य देश-विशेष जिसकी राजधानी प्राचीन काल मे पावापुरी थी (इक)।

भग (अप) देखो भग्ग = भग्न (पिंग)।

भंगरय पुं [भृङ्गरज, भृङ्गारक] १ पौधा विशेष, भृङ्गराज, भँगरा, भगरैया। २ न. भँगरा का फूल (वज्जा १०८, सुपा ३२४)।

भंगा स्त्री [भङ्गा] १ वनस्पति-विशेष, पाट, कुष्टा, 'कप्पइ णिग्गथाण वा णिग्गथीण वा पच वत्थाइ धारित्तए वा परिहरेत्तए वा, तं जहा—जगिए भगिए साणए पोत्तिए तिरीड-पट्टए णामं पचमए' (ठा ५, ३—पत्र ३३८)। २ वाद्य-विशेष, '—पडहहुडुक्कुडुंडु-क्कामेरीभंगापट्टदिभूरिवज्जभंडतुमुल—' (विक्र ८७)।

भगि स्त्री [भङ्गि] १ प्रकार, भेद (हे ४, ३३६, ४११)। २ व्याज, छल, बहाना, 'सहिभगिभणिअसव्भाविआवराहाए' (गा ६१३)। ३ विच्छित्ति, विच्छेद (राज)। ४ स्त्री. देश विशेष, 'पावा भगी य' (पव २७५, विचार ४६)।

भगिअ न [भङ्गिक, भाङ्गिक] १ भगा मय, एक तरह का वस्त्र, पाट का बना हुआ कपडा (ठा ३, ३, ५, ३—पत्र १३८, कस)। २ शास्त्र-विशेष, 'जोगतिगस्सवि भगियसुत्ते किरिया जओ भणिया' (चेइय २४५)।

भंगिल्ल वि [भङ्गवत्] प्रकारवाला, भेद-पतित, 'पढमभगिल्ला' (सवोघ ३२)।

भंगी स्त्री [भङ्गी] देखो भगि (हे ४, ३३६, गा ६१३, विचार ४६)।

भंगी स्त्री [भृङ्गी] वनस्पति-विशेष,—१ भाँग, विजया। २ अतिविषा, अतिस का गाछ (पण्ण १—पत्र ३६, पण्ण १७—पत्र ५३१)।

भंगुर वि [भङ्गुर] १ स्वयं भाँगनेवाला, विनश्वर, विनाश-शील, 'तडिदडाडवरभगुराइ ही विसयसोक्खाइं' (उप ६ टी, पण्ह १, ४, सुर १०, १८, म ११४, धर्मसं ११७१, विवे ११४)। २ कुटिल, वक्र, 'कुडिल वर्क भंगुर' (पाअ)।

भंछा देखो भत्था (राज)।

भंज सक [भञ्ज्] १ भाँगना, तोडना। २ पलायन कराना, भगाना। ३ पराजय करना। ४ विनाश करना। भजइ, भजए (हे ४, १०६, षड्, पि ५०६)। भवि. भजिस्सइ (पि ५३२)। कर्म भज्जइ (भग, महा)। वकृ. भजंत (गा १६७, सुपा ५६०)। कवकृ भज्जत, भज्जमाण (से ६, ४४, सुर १०, २१७, म ६३)। सकृ. भजिअ, भजिउ, भंजिऊण, भजिऊण, भजेऊण (नाट, पि ५७६, महा, पि ५८५, महा), भज्जिउ (अप) (हे ४, ३९५)। हेकृ भंजित्तए (णाया १, ८), भंजणह (अप) (हे ४, ४४१ टि)।

भंजअ, भजग } वि [भञ्जक] भाँगनेवाला, भंग करनेवाला (गा ५५२, पण्ह १, ४)। २ पु वृक्ष, पेड, 'भजगा इव सनिवेस नो चयति' (आचा)।

भजण न [भञ्जन] १ भग, खण्डन (पव ३८, सुर १०, ६१)। २ विनाश (सुपा ३७६, पण्ह १, १)। ३ वि. भजन करने-वाला, तोडनेवाला, विनाशक, 'भवभंजण' (सिरि ५४६), 'रिउसंगभंजणेण' (कुमा)। स्त्री. °णी (गा ७४५)।

भजणा स्त्री [भञ्जना] ऊपर देखो, 'विणओ-वयारम-(?र मा-) णस्स भंजणा पूयणा गुरुजणस्स' (विसे ३४६६, निचू १)।

वलामोलि देखो वलामोडि (से १०, ६४)।

वलाया स्त्री [वलाका] बक-विशेष, बिसकण्ठिका, बगुले की एक जाति (हे १, ६७, उप १०३१ टी)।

वलाहग पु [वलाहक] मेघ, जीमूत, 'गलियजलवलाहगपडुरं' (वसु)।

वलाहगा देखो वलाहया (ठा ८)।

वलाहय देखो वलाहग (णाया १. ५, कप्प, पात्र)।

वलाहया स्त्री [वलाहका] १ बक-विशेष, बलाका (उप २६४)। २ देवी-विशेष, अनेक दिक्कुमारी देवियों का नाम (इक—पत्र २३१, २३४)।

वलि पु [वलि] १ असुरकुमारों का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३, १०, इक)। २ स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा (गा ४०६)। ३ सातवाँ प्रतिवासुदेव (पउम ५, १५६)। ४ एक दानव, दैत्य-विशेष (कुमा)। ५ पुंस्त्री. उपहार, भेंट (पिंड १६५, दे १, ६६)। ६ पूजोपहार, देवता को धरा जाता नैवेद्य, 'सुरहिविलेवणवरकुसुमदामवलिदीवणेहि च' (पव १ टी), 'वदणपूयणवलिढोयणेसु' (चेइय ५२, पव १३३, सुर ३, ७८, कुप्र १७४)। ७ भूत आदि को दिया जाता भोग, वलिदान, 'भूअवलिव्व' (वे ४६)। ८ पूजा, अर्चा, सपर्या। ९ राज-ग्राह्य भाग। १० चामर का दराड। ११ उपप्लव (हे १, ३५)। १२ छन्द-विशेष (पिंग)। °उट्ठ पु [°पुष्ट] काक, कौआ (पाअ)। °कम्म न [°कर्मन्] १ पूजन, पूजा की क्रिया। २ देवता को उपहार—नैवेद्य धरने की क्रिया (भग, सूअ २, २, ५५, णाया १, १, ८, कप्प, औप)। °चचा स्त्री [°चञ्चा] वलीन्द्र की राजधानी (णाया २, इक)। °मुह पुं [°मुख] वन्दर, कपि (पाअ)। °यम्म देखो °कम्म (पउम ३७, ४६)।

वलि वि [वलिन्] १ वलवान्, वलिष्ठ (सुपा ४५१, कुप्र २७७)। २ पु. रामचन्द्र का एक सुभट (पउम ५६, ३८)।

वलिअ वि [दे] १ पीन, मासल, स्थूल, मोटा (दे ६, ८८, उप १४२ टी, बृह ३)। २ क्रिवि. गाढ, वाढ, अतिशय, अत्यर्थ; 'गाढं वाढं वलिअं धणिअं दढमच्चत्थएणा अत्थत्थ' (पाअ, णाया १, १—पत्र ६४, भग ६, ३३)।

वलिअ वि [वलिन्, बलिक] १ वलवान्, सबल, पराक्रमी; 'कत्थवि जीवो वलिओ कत्थवि कम्माइं हुति वलियाइ' (प्रासू १२३), 'एस अम्ह ताओ वलियदाइयपेल्लिओ इम विसमं पल्लि समस्सिओ' (महा, पउम ४८, ११७, सुपा २७५, औप)। २ प्राणवाला (ठा ४, ३—पत्र २४६)।

वलिअ वि [वलित] जिसको वल उत्पन्न हुआ हो, सबल (कुप्र २७७)। २ पु छन्द-विशेष (पिंग)।

वलिअंक पु [वलिनाङ्क] छन्द-विशेष (पिंग)।

वलिआ स्त्री [दे. वलिका] सूर्प, सूप, अन्न को तुषादि-रहित करने का एक उपकरण (आवम)।

वलिट्ठ वि [वलिष्ठ] वलवान्, सबल (प्रासू १५४)।

वलिद्द पु [दे. वलीवर्द] वलघ, वृषभ, 'दो सारवलिद्दावि हु' (सुपा २३८)।

वलिमड्डा स्त्री [दे] वलात्कार, 'अन्नह वलिमड्डाए गहिउमणो सोम ! एकलिय' (उप ७२८ टी)।

वलिवद्द देखो वलीवद्द (पउम ३३, ११६)।

वलिस न [वडिश] मछली पकडने का कॉंटा (हे १, २०२)।

वलिस्सह पुं [वलिस्सह] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि, आर्य महागिरि का एक शिष्य (कप्प)।

वलीअ वि [वलीयस्] अधिक वलवाला, वलिष्ठ (अभि १०१)।

वलीवद्द पु [वलीवर्द] बैल, वृषभ (विपा १, २)।

वलुल्लड (अप) देखो वल=वल (हे ४, ४३०)।

वले अ. इन अर्थो का सूचक अव्यय—१ निश्चय, निर्णय। २ निर्धारण (हे २, १८५ कुमा)।

वल्ल न [वाल्य] बालत्व, बालकपन, शिशुता (कुमा ३, ३५)। देखो वाल = वाल्य।

वव सक [ब्रू] बोलना, कहना। ववइ, ववए (षड्)। देखो बुव, ब्रू।

वव न [वव] ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक करण (विसे ३३४८, सुज्जनि ११, सुपा १०८)।

वव्वाड पु [दे] दक्षिण हस्त (दे ६, ८६)।

वहड वि [वृहत्] बडा, महान्। °डिच न [°आदित्य] नगर-विशेष (ती ३५)।

वहत्तरी देखो वाहत्तरि (पव २०)।

वहप्पइ } देखो वहस्सइ (हे १, १३८, २,
वहप्फइ } ६६, १३७, षड्, कुमा, सम्मत्त १३७)।

वहरिय देखो वहिरिय, 'तालरववहरियदियतरं' (महा)।

वहल न [दे] पक, कर्दम, कादा (दे ६, ८६)। °सुरा स्त्री [°सुरा] पकवाली मदिरा (दे ५, २)।

वहल वि [वहल] १ निविड, सान्द्र, निरतर, गाढ (गउड, हे २, १७७)। २ स्थूल, मोटा (ठा ४, २, गउड)। ३ पुष्कल, अत्यन्त (कप्पू)।

वहलिम पुंस्त्री [वहलता] १ स्थूलता, मोटाई। २ सातत्य, निरतरता (वज्जा ५२, गा ७५५)।

वहली स्त्री [वहली] १ देश-विशेष, भारतवर्ष का एक उत्तरीय देश, 'तक्खसिलाइ पुरीए वहलीविसयावयसभूयाए' (कुप्र २१२)। २ वहली देश की स्त्री (णाया १, १—पत्र ३७, औप, इक)।

वहलीय वि [वह्लीक] देश-विशेष मे—वहली देश मे रहनेवाला (पणह १, १—पत्र १४)।

वहव देखो वहु, 'काले समइक्कते अइवहवे' (पउम ४१, ३६), 'सोहग्गकप्पतरुवरपमुहतवे सा कुणइ वहवे' (सम्मत्त २१७), 'जायेति वहववेरग्गपल्लवुल्लासिणो झत्ति' (हि ५)।

वहस्सइ पु [वृहस्पति] १ ज्योतिष्क देव-विशेष, एक महाग्रह (ठा २, ३—पत्र ७७, सुज्ज २०—पत्र २९४)। २ सुराचार्य, देव-गुरु (कुमा)। ३ पुष्य नक्षत्र का अधिष्ठाता देव (सुज्ज १०, १२)। ४ राजनीति प्रणेता एक ऋषि। ५ नास्तिक मत का प्रवर्तक एक विद्वान् (हे २, १३७)। ६ एक ब्राह्मण, पुरोहित-पुत्र। ७ विपाकसूत्र का एक अध्ययन

(पउम ८४, ४, सुपा ३७०, णाया १, १०, सुर १४, ३४, श्रा २७)।

भक्ख पु [भक्ष] भक्षण, भोजन, 'भो कीर खीरसक्करदक्खाभक्खं करहि ताव' (सुपा २९७)।

भक्ख देखो भक्ष = भक्षय्।

भक्ख पुन [भक्ष्य] खण्ड-खाद्य, चीनी का बना हुआ खाद्य द्रव्य, मिठाई (सुज्ज २० टी)।

भक्खग वि [भक्षक] भक्षण करनेवाला (कुप्र २९)।

भक्खण न [भक्षण] १ भोजन (पएण २८)। २ वि खानेवाला, 'सव्वभक्खणो' (श्रा २८)।

भक्खणया स्त्री [भक्षणा] भक्षण, भोजन (उवा)।

भक्खर पु [भास्कर] १ सूर्य, रवि (उत्त २३, ७८, लहुअ १०)। २ अग्नि, वह्नि। ३ अर्क वृक्ष (चंड)।

भक्खराभ न [भास्कराभ] १ गोत्र-विशेष, जो गौतम गोत्र की शाखा है। २ पुस्त्री उस गोत्र मे उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३९०)।

भक्खावण न [भक्षण] खिलाना (उप १५० टी)।

भक्खि वि [भक्षिन्] खानेवाला (औप)।

भक्खिय वि [भक्षित] खाया हुआ (भवि)।

भक्खेय देखो भक्ख = भक्षय्।

भग पुन [भग] १ ऐश्वर्य। २ रूप। ३ श्री। ४ यश, कीर्त्ति। ५ धर्म। ६ प्रयत्न, 'इस्सरियरूवसिरिजसधम्मपयत्ता मया भगाभिक्खा' (विसे १०४८, चेइय २८८)। ७ सूर्य, रवि। ८ माहात्म्य। ९ वैराग्य। १० मुक्ति, मोक्ष। ११ वीर्य। १२ इच्छा (कप्प—टी)। १३ ज्ञान (प्रामा)। १४ पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र (अणु)। १५ स्त्री. योनि, उत्पत्ति-स्थान (पराह १, ४—पत्र ६८, सुज्ज १०, ८)। १६ देव-विशेष, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र का अधिष्ठाता देव, ज्योतिष्क देव-विशेष (ठा २, ३, सुज्ज १०, १२)। १७ गुदा और अण्ड-कोश के बीच का स्थान (बृह ३)। °दत्त पुं [°दत्त] नृप-विशेष (हे ४, २९९)। °व देखो °वत (भग, महा)। °वई स्त्री [°वती] १ ऐश्वर्यादि-सम्पन्ना, पूज्या (पडि)। २ भगवती-सूत्र, पाँचवाँ जैन अंग-ग्रन्थ (पच ५, १२५)। °वंत वि [°वत्] ऐश्वर्यादि-गुण-सम्पन्न। २ पुं. परमेश्वर, परमात्मा (कप्प, विसे १०४८, प्रामा)।

भगंदर पुं [भगन्दर] रोग विशेष—गुदा के भीतरी भाग मे होनेवाला एक प्रकार का फोडा (णाया १, १३, विपा १, १)।

भगंदरि वि [भगन्दरिन्] भगन्दर रोगवाला (श्रा १६, सबोध ४३)।

भगंदरिअ वि [भगन्दरिक] ऊपर देखो (विपा १, ७)।

भगंदल देखो भगंदर (राज)।

भगिणी देखो बहिणी (णाया १, ८, कप्प, कुप्र २३६, महा)।

भगिरहि } पु [भगीरथि] सगर चक्रवर्ती
भगीरहि } का एक पुत्र, भगीरथ (पउम ५, १७६, २१५)।

भग्ग वि [भग्न] १ खण्डित, भांगा हुआ (सुर २, १०२, दं ४६, उवा)। २ पराजित। ३ पलायित, भागा हुआ, 'जइ भग्गा पारक्कडा' (हे ४, ३७९, ३५४, महा, वव २)। °इ पुं [°जित्] क्षत्रिय परिव्राजक-विशेष (औप)।

भग्ग वि [दे] लिप्त, पोता हुआ (दे ६, ९९)।

भग्ग न [भाग्य] नसीब, दैव (सुर १३, १०५)।

भग्गव पुं [भार्गव] १ ग्रह-विशेष, शुक्र ग्रह (पउम १७, १०८)। २ ऋषि-विशेष (समु १८१)।

भग्गवेस न [भार्गवेश] गोत्र-विशेष (सुज्ज १०, १६ टी, इक)।

भग्गिअ (अप)। देखो भग्ग = भग्न (पिंग)।

भच्च पुं [दे] भागिनेय, भानजा (षड्)।

भच्छिअ वि [भर्त्सित] तिरस्कृत (दे १, ८०, कुमा ३, ८६)।

भज देखो भय = भज्। वकृ. भजत, भजेंत, भजमाण, भजेमाण (षड्)।

भज्ज सक [भ्रस्ज्] पकाना, भुनना। भज्जति, भज्जेंति (सूअनि ८१, विपा १, ३)। वकृ. भज्जत, भज्जेंत (पिंड ५७४, विपा १, ३)।

भज्ज देखो भज (आचा २, १, १, २)।

भज्ज देखो भय = भज्।

भज्जंत देखो भंज।

भज्जण } न [भ्रज्जन] १ भुनन, भुनना
भज्जणअ } (पएह १, १, अनु ५)। २ भुनने का पात्र (सूअनि ८१; विपा १, ३)।

भज्जमाण देखो भज।

भज्जा स्त्री [भार्या] पत्नी, स्त्री (कुमा, प्रासू ११९)।

भज्जि स्त्री [भर्जिका] देखो भज्जिआ।

भज्जिअ देखो भग्ग = भग्न, 'तरुणियं वा छिवाडि अभिक्कतभज्जिय पेहाए' (आचा २, १, १ २)।

भज्जिअ वि [भृष्ट, भर्जित] भुना हुआ, पकाया हुआ (गा ५५७, आचा २, १, १, ३, विपा १, २, उवा)।

भज्जिआ स्त्री [भर्जिका] १ भाजी, शाक-भेद पत्राकार तरकारी (पव २५९)। २ पथ्यदन, मार्ग-भोजन (कल्पभाष्य गा० ३६१८)।

भज्जिम वि [भ्रज्जिम] भुनने योग्य (आचा २, ४, २, १५)।

भज्जिर वि [भङ्क्तृ] भाँगनेवाला, 'फारफल-भारभज्जिरसाहासयसंकुलो महासाही' (धर्मवि ५५, सण)।

भज्जेंत देखो भज्ज = भ्रस्ज्।

भट्ट पुं [भट्ट] १ मनुष्य-जाति-विशेष, स्तुति-पाठक की एक जाति, भाट, 'जयजयसद्दक-रंतसुभट्ट' (सिरि १५५, सुपा २७१, उप पृ १२०)। २ वेदाभिज्ञ पण्डित, ब्राह्मण, विप्र (उप १०३१ टी)। ३ स्वामित्व, मालिकपन, मालकियत (प्रति ७)।

भट्टारग } पु [भट्टारक] १ पूज्य, पूजनीय
भट्टारय } (आव ३, महा)। २ नाटक की भाषा मे राजा (प्राकृ ९५)।

भट्टि देखो भत्तु = भर्तृ (ठा ३, १, सम ८६, कप्प, स १४४, प्रति ३, स्वप्न १५)।

भट्टिअ पु [दे] विष्णु, श्रीकृष्ण (हे २, १७४, दे ६ १००)।

भट्टिणी स्त्री [भर्त्री] स्वामिनी, मालिकिन (स १३४)।

भट्टिणी स्त्री [भट्टिनी] नाटक की भाषा में वह रानी जिसका अभिषेक न किया गया हो (प्रति ७)।

वहुला स्त्री [वहुला] १ गौ, गैया (पाग्र)। २ इस नाम की एक स्त्री (उवा)। °वण न [°वन] मथुरा नगरी का एक प्राचीन वन (ती ७)।

वहुलि पुं [वहुलिन्] स्वनाम-ख्यात एक राज-पुत्र (उप ६३७)।

वहुली स्त्री [दे] माया, कपट, दम्भ (सुपा ६३०)।

वहुल्लिआ स्त्री [दे] वडे भाई की स्त्री (पड्)।

वहुल्ली स्त्री [दे] क्रीडोचित शालभञ्जिका, खेलने की पुतली (पड्)।

वहुव्वी देखो वहुई (हे २, ११३)।

वहुव्वीहि पु [वहुव्रीहि] व्याकरण-प्रसिद्ध एक समास (अणु १४७)।

वहूअ वि [प्रभूत] वहुत, प्रचुर (गउड)।

वहेडय पुं [विभीतक] १ वहेडा का पेड (हे १, ८८, १०५, २०६)। २ न वहेडा का फल (कुमा)।

वा° वि. व [द्वा°, द्वि] दो, दो की संख्या-वाला। °इस (अप) देखो °वीस (पिंग)। °ईस देखो °वीस (पिंग)। °णउइ स्त्री [°नवति] वानवे, ६२ (सम ६६, कम्म ६, २६)। °णउय वि [°नवत] ६२ वाँ (पउम ६२, २६)। °णुवइ देखो °णउइ (रयण ६२)। °याल, °यालीस स्त्रीन [°चत्वारिंशत्] वयालीस, चालीस और दो, ४२ (उव, नव २, भग, सम ६६, कप्प, ओप), स्त्री. °याला, °यालीसा (कम्म ६, ६, कप्प)। °यालीसइम वि [°चत्वारिंशत्तम] वयालीसवाँ, ४२ वाँ (पउम ४२, ३७)। °र, °रस त्रि. व [°दशन्] वारह, १२, 'वारभिक्खुपडिमधरो' (सबोध २२, कम्म ४, ५, १५, नव २०, दं ७, कप्प, जी २८, उवा)। °रम वि [°दश] वारहवाँ, १२ वाँ (सुख २, १७)। °रसग स्त्रीन [°दशाङ्ग] वारह जैन अग-ग्रन्थ (पि ४११), स्त्री. °गी (राज)। °रसम वि [°दश] वारहवाँ (सूत्र २, २, २१; पव ४६, महा)। °रसमासिय वि [°दशमासिक] वारह मास का, वारह मास-सवन्धी (कुप्र १४१)। °रसय न [°दशक] वारह का समूह (ओघभा १५)। °रसवरिसिय वि [°दशवार्षिक] वारह वर्ष का (मोह १०२, कुप्र ६०)। °रसविह वि [°दशविध] वारह प्रकार का (नव ३०)। °रसाह न [°दशाह, °दशाख्य] १ वारहवाँ दिन। २ जन्म के वारहवें दिन किया जाता उत्सव, वरही (णाया १, १, कप्प, ओप, सुर ३,२५)। °रसी स्त्री [°दशी] वारहवी तिथि, द्वादशी (सम २६, पउम ११७, ३२, ती ७)। °रसुत्तरसय वि [°दशोत्तरशत] एक सौ वारहवाँ (पउम ११२, २३)। °रह देखो °रस = दशन् (हे १, २१६)। °वट्ठि स्त्री [°षष्टि] वासठ, ६२ (सम ७५, पंच ५, १८, सुर १३, २३८, देवेन्द्र १३७)। °वण (अप)। देखो °वन्न (पिंग)। °वण्ण देखो °वन्न (कुमा)। °वत्तर वि [°सप्तत] वहत्तरवाँ, ७२ वाँ (पउम ७२, ३८)। °वत्तरि स्त्री [°सप्तति] वहत्तर, ७२ (सम ८३, भग, ओप, प्रासू १२६)। °वन्न स्त्रीन [°पञ्चाशत्] वावन, पचास और दो, ५२ (सम ७१, महा), 'वावन्नं होंति जिणभवणा' (सुख ६, १)। °वन्न वि [°पञ्चाश] वावनवाँ (पउम ५२, ३०)। °वीस स्त्रीन [°विंशति] वाईस, २२ (भग, जी ३४), स्त्री. °सा (पि ४४७)। °वीस त्रि [°विंश] वाईसवाँ, २२ वाँ (पउम २०, ८२, पत्र ४६) °वीसइ देखो वीस = विंशति (भग, पव १८६)। °वीसइम वि [°विंशतितम] १ वाईसवाँ, २२ वा (पउम २२, ११०, अत २६)। २ लगातार दस दिन का उपवास (णाया १, १—पत्र ७२)। °वीसविह वि [°विंशतिविध] वाईस प्रकार का (सम ४०)। °सट्ठ वि [°षष्ट] वासठवाँ, ६२ वाँ (पउम ६२, ३७)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] वासठ, ६२ (सम ७५, पिंग)। °सी, °सीइ स्त्री [°अशीति] वयासी, ८२ (नव २, सम ८६, कप्प, कम्म ५, १७)। °सीइम वि [°अशीतितम] वयासीवाँ, ८२ वाँ (पउम ८२, १२२)। °हत्तर (अप) देखो °हत्तरि (सण)। °हत्तरि स्त्री [°सप्तति] वहत्तर, ७२ (कप्प, कुमा, सुपा ३१६)।

वाअ पु [दे] वाल, शिशु (पड्)।

वाइया स्त्री [दे] माँ, माता, गुजराती में 'वाई' (कुप्र ८७)।

वाउल्लया | वाउल्लिआ | वाउल्ली | स्त्री [दे] पञ्चालिका, पुतली, 'आलिहियभित्तिवाउल्लय व न हु मुंजिउ तरइ' (वज्जा ११८, कप्पू, दे ६, ६२)।

वाउस देखो वउस (पिंड २४, ओघ ३४८)।

वाउसिय वि [वाकुशिक] 'वकुश' चारित्र-वाला (सुख ६, १)।

वाउसिया स्त्री [वकुशिका] 'वकुश' चारित्र-वाली (णाया १, १६—पत्र २०६)।

वाढ क्रिवि [वाढ] १ अतिशय, अत्यन्त, घना (उप ३२०, पाग्र, महा)। °क्कार पु [°कार] स्वीकार-सूचक उक्ति (निसे ५६५)।

वाण पु [दे] १ पनस वृक्ष, कटहर का पेड। २ त्रि. सुभग (दे ६, ६७)।

वाण पुस्त्री [वाण] १ वृक्ष-विशेष, कटसरैया का गाछ (पण्ण १७—पत्र ५२६, कुमा)। २ पुं. शर, वाण (कुमा, गउड)। ३ पाच की संख्या (सुर १६, २४६)। °वत्त न [°पात्र] तूणीर, शरधि (से १, १८)।

वाध देखो वाह = वाध्। कवक्र वाधीअमाण (पि ५६३)।

वाधा स्त्री [वाधा] विरोध (धर्मसं ११७)।

वाधिय वि [वाधित] विरोधवाला, प्रमाण-विरुद्ध (धर्मसं २५६)।

वाह्मण देखो वम्हण (हे १, ६७, पड्)।

वाय न [वाक] वक समूह (श्रा २३)।

वायर वि [वादर] १ स्थूल, मोटा, असूक्ष्म (पण्ह १, १, पव १६२, दे ४४)। २ नववाँ गुण-स्थानक (कम्म २, ३ ५, ७)। °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, स्थूलता-हेतु कर्म (सम ६७)।

वार न [द्वार] दरवाजा (हे १, ७६)।

वारगा स्त्री [द्वारका] स्वनाम-प्रसिद्ध नगरी, जो आजकल भी काठियावाड में 'द्वारका' के ही नाम से प्रसिद्ध है (उत्त २२, २२, २७)।

वारवई स्त्री [द्वारवती] १ ऊपर देखो (सम १५१, णाया १, ५, उप ६४८ टी)। २ भगवान् नेमिनाथ की दीक्षा शिविका (विचार १२६)।

१६७, प्रासू १६)। २ सुवर्ण, सोना। ३ मुस्तक, मोथा, नागरमोथा (हे २, ८०)। ४ दो उपवास (संबोध ५८)। ५ देव-विमान विशेष (सम ३२)। ६ शरासन, मूठ (णाया १, १ टी—पत्र ४३)। ७ भद्रासन, आसन-विशेष (पावम)। ८ त्रि. साधु, सरल, भला, सज्जन। ९ उत्तम, श्रेष्ठ (भग, प्रासू १६, सुर ३, ४)। १० सुख-जनक, कल्याण-कारक (णाया १ १)। ११ पुं हाथी की एक उत्तम जाति (ठा ४, २—पत्र २०८; महा)। १२ भारतवर्ष का तीसरा भावी वलदेव (सम ६०४)। १३ अगविद्या का जानकार द्वितीय रुद्र पुरुष (विचार ४७३)। १४ तिथि-विशेष—द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी तिथि (सुज्ज १०, १५)। १५ छन्द-विशेष (पिंग)। १६ स्वनाम-ख्यात एक जैन आचार्य (महानि ६, कप्प)। १७ व्यक्ति-वाचक नामक (निर १, ३, श्राव १, धम्म)। १८ भारतवर्ष का चौवीसवाँ भावी जिनदेव (पव ७)। °गुत्त पुं [°गुप्त] स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैनाचार्य (णदि, सार्ध २३)। °गुत्तिय न [°गुप्तिक] एक जैन मुनि-कुल (कप्प)। °जस पुं [°यशस्] १ भगवान् पार्श्वनाथ का एक गणधर (ठा ८—पत्र ४२९)। २ एक जैन मुनि (कप्प)। °जसिय न [°यशस्क] एक जैन मुनि-कुल (कप्प)। °णंदि पुं [°नन्दिन्] स्वनाम-ख्यात एक राज-कुमार (विपा २, २)। °बाहु पुं [°बाहु] स्वनाम-प्रसिद्ध प्राचीन जैनाचार्य और ग्रन्थकार (कप्प, णदि)। °मुत्था स्त्री [°मुस्ता] वनस्पति-विशेष, भद्रमोथा (पण्ण १)। °वया स्त्री [°पदा] नक्षत्र-विशेष (सुर १०, २२४)। °साल न [°शाल] मेरु पर्वत का एक वन (ठा २, ३, इक)। °सेण पुं [°सेन] १ धरणेन्द्र के पदाति-सैन्य का अधिपति देव (ठा ५, १, इक)। २ एक श्रेष्ठी का नाम (श्राव ४)। °स न [°श्व] नगर-विशेष (इक)। °सण न [°सन] आसन-विशेष, सिंहासन (णाया १, १, पण्ह १, ४, पाश्र, औप)।

भद्ददारु न [भद्रदारु] देवदारु, देवदार की लकड़ी (उत्तनि ३)।

भद्दव° } पुं [भाद्रपद] मास-विशेष, भादो
भद्दवय } का महीना (वज्जा ८२, सुर ३, १३८)।

भद्दसिरी स्त्री [दे] श्रीखण्ड, चन्दन (दे ६, १०२)।

भद्दा स्त्री [भद्रा] १ रावण की एक पत्नी (पउम ७४, ९)। २ प्रथम वलदेव की माता (सम १५२)। ३ तीसरे चक्रवर्ती की जननी (सम १५२)। ४ द्वितीय चक्रवर्ती की स्त्री (सम १५२)। ५ मेरु के पूर्व रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८)। ६ एक प्रतिमा, व्रत-विशेष (ठा २, ३—पत्र ६४)। ७ राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत २५)। ८ तिथि-विशेष—द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी तिथि (सवोध ५४)। ९ छन्द-विशेष (पिंग)। १० कामदेव श्रावक की भार्या का नाम। ११ चुलनीपिता नामक उपासक की माता का नाम (उवा)। १२ एक सार्थवाहक स्त्री का नाम (विपा १, ४)। १३ गोशालक की माता का नाम (भग १५)। १४ अहिंसा, दया (पण्ह २, १)। १५ एक वापी (दीव)। १६ एक नगरी (आचू १)। १७ अनेक स्त्रियों का नाम (णाया १, ८, १६, आवम)।

भद्दाकरि वि [दे] प्रलम्ब, अति लम्बा (दे ६, १०२)।

भद्दिआ स्त्री [भद्रिका, भद्रा] १ शोभना, सुन्दर (स्त्री) (ओघभा १७)। २ नगरी-विशेष (कप्प)।

भद्दिज्जिया स्त्री [भद्रीया, भद्रीयिका] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)।

भद्दिलपुर न [भद्दिलपुर] भारतवर्ष का एक प्राचीन नगर (अंत ४, कुप्र ८४, इक)।

भद्दुत्तरवडिंसग न [भद्रोत्तरावतसक] एक देव-विमान (सम ३२)।

भद्दुत्तर° } स्त्री [भद्रोत्तरा] प्रतिमा-
भद्दोत्तर° } विशेष, प्रतिज्ञा का एक भेद,
भद्दोत्तरा } एक तरह का व्रत (औप, अंत ३०, पव २७१)।

भद्र देखो **भद्द** (हे २, ८०, प्राकृ १७)।

भन्नंत } देखो **भण**=भण्।
भन्नमाण }

भप्प देखो **भस्स**=भस्मन् (हे २,५१, कुमा)।

भम सक [भ्रम्] भ्रमण करना, घूमना। भमइ (हे ४, १६१, प्राकृ ६९)। वकृ. **भमत, भममाण** (गा २०२, ३८७, कप्प, औप)। सकृ. **भमिअ, भमिऊण** (षड्, गा ७४६)। कृ. **भमिअव्व** (सुपा ४३८)।

भम पुं [भ्रम] १ भ्रमण (कुप्र ४)। २ भ्रान्ति, मोह, मिथ्या-ज्ञान (से ३, ४८, कुमा)।

भमग न [भ्रमक] लगातार एकतीस दिनों का उपवास (सवोध ५८)।

भमड देखो **भम**=भ्रम्, 'भवम्मि भमडइ एगुच्चिय' (विवे १०८, हे ४, १६१)।

भमडिअ वि [भ्रान्त] १ घूमा हुआ, फिरा हुआ (स ४७३)। २ भ्रान्ति-युक्त (कुमा)। देखो **भमिअ**।

भमण न [भ्रमण] घूमना, चकराना। (दे ४६, कप्प)।

भमसुह पु [दे] आवर्त्त (दे, १०१)।

भमया स्त्री [भ्रू] भौंह, नेत्र के ऊपर की केश-पंक्ति (हे २, १६७, कुमा)।

भमर पु [भ्रमर] १ मधुकर, भौंरा (हे १, २४४, कुमा, जी १८, प्रासू ११३)। २ पु. छन्द-विशेष (पिंग)। ३ विट, रंडीबाज (कप्पू)। °रुअ पु [°रुच] अनार्य देश-विशेष (पव २७४)। °विलि स्त्री [°विलि] १ छन्द-विशेष (पिंग)। २ भ्रमर-पंक्ति (राय)।

भमरटेंटा स्त्री [दे] १ भ्रमर की तरह अक्षि-गोलकवाली। २ भ्रमर की तरह अस्थिर आचरणवाली। ३ शुष्क व्रण के दागवाली (कप्पू)।

भमरिया स्त्री [भ्रमरिका] जन्तु-विशेष, वर्रे (जी १८)। देखो **भमलिया**।

भमरी स्त्री [भ्रमरी] स्त्री-भ्रमर, भौंरी (दे)। नीचे देखो।

भमलिया } स्त्री [भ्रमरीका, °री] १ पित्त
भमली } के प्रकोप से होनेवाला रोग-विशेष, चक्कर, 'भमली पित्तुदयाओ भमंतमहिदसणं' (चेइय ४३५, पडि)। २ वाद्य-विशेष (राय)।

भमस पुं [दे] तृण-विशेष, ईख की तरह का एक प्रकार का घास (दे ६, १०१)।

बाहुलेर पुं [बाहुलेय] काली गाय का बछड़ा (अणु २१७)।

बाहुल्ल न [बाहुल्य] बहुलता, प्रचुरता (पिंड ५६, भग, सुपा २७, उप ६०७)।

बाहुल्ल वि [बाष्पवत्] अश्रुवाला (कुमा, सुपा ४६०)।

बि वि. व [द्वि] दो, २, 'बिन्नि' (हे ४, ४१८, नव ४, ठा २, २, कम्म ४, २, १०, सुख १, १४)। °जडि पुं [°जटिन्] एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष (सुज्ज २०)। °दल न [°दल] चना आदि वह धान्य जिसके दो टुकड़े बराबर के होते हैं, 'जह विदल सूलीए' (वि ३)। °याल देखो बा-याल (कम्म ६, २८)। °यालसय पुंन [°चत्वारिंशच्छत] एक सौ बेयालीस, १४२ (कम्म २, २६)। °विह वि [°विध] दो प्रकार का (पिंग)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] बासठ, ६२ (सुज्ज १०, ६ टी)। °सत्तरि, °सयरि स्त्री [सप्तति] बहत्तर, ७२ (पव १६, जीवस २०६, कम्म ३, ५)।

बि° } वि [द्वितीय] दूसरा (कम्म ३, १६,
बिअ } पिंग)। °कसाय पुं [°कषाय] अप्रत्याख्यानावरण नामक कषाय (कम्म ४, ५६)।

बिअ न [द्विक] दो का समुदाय, युग्म, युगल (भग, कम्म १, ३३, प्रासू १६)।

बिआया स्त्री [दे] कीट-विशेष, सलग्न रहनेवाला कीटन्द्वय (दे ६, ६३)।

बिइअ देखो बिइज्ज (हे १, ५, पव १६४)।

बिइआ देखो बीआ (राज)।

बिइज्ज वि [द्वितीय] १ दूसरा (हे १, २४८, प्रासू ५६)। २ सहाय, मदद करनेवाला (पाअ, सुर ३, १४),

'जे दुहियम्मि न दुहिया,
आवइपत्ते बिइज्जया नेव।
पहुणो न ते उ भिच्चा,
धुत्ता परमत्थओ णेया'
(सुर ७, १४५)।

बिउण वि [द्विगुण] दुगुना (हे १, ९४, २, ७९; गा २८९)। °रय वि [°कारक] दुगुना करनेवाला (भवि)।

बिउण सक [द्विगुणय्] दुगुना करना। बिउणेइ (पि ५५९)।

बिंट न [वृन्त] फलादि का बन्धन, 'बघणं बिंट' (पाअ)। °सुरा स्त्री [°सुरा] मदिरा, दारू, 'बिंटसुरा पिट्ठखउरिया मइरा' (पाअ)।

बिंत देखो बू = ब्रू।

बिंदिय वि [द्वीन्द्रिय] जिसको त्वचा और जीभ ये दो ही इन्द्रियाँ हों वह (औप)।

बिंदु पुन [बिन्दु] १ अल्प अंश। २ बिन्दी, शून्य, अनुस्वार। ३ दोनो भ्रू का मध्य भाग। ४ रेखागणित का एक चिन्ह, 'बिंदुणो, बिंदूई' (हे १ ३४, कप्प, उप १०२२, स्वप्न ३६, कस, कुमा)। °कला स्त्री [°कला] अनुस्वार, बिन्दी (सिरि १९६)। °सार न [°सार] १ चौदहवाँ पूर्व, जैन ग्रन्थांश-विशेष (सम २६, विसे ११२६)। २ पु. मौर्य वंश का एक राजा, राजा चन्द्रगुप्त का पुत्र (विसे ८६२)।

बिंदुइअ वि [बिन्दुकित] बिन्दु-युक्त, बिन्दु-विलिप्त (पाअ, गउड)।

बिंदुइज्जंत वि [बिन्दूयमान] बिन्दुओ से व्याप्त होता (से ११, १२५)।

बिंद्रावण न [वृन्दावन] मथुरा के पास का एक वैष्णव-तीर्थ (प्राकृ १७)।

बिंब सक [बिम्बय्] प्रतिबिम्बित करना। कर्म. बिंबिज्जइ (सूक्त ४६)।

बिंब न [बिम्ब] १ प्रतिमा, मूर्त्ति (कुमा)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। ३ न बिम्बीफल, कुन्दरून का फल (णाया १, ८—पत्र १२६ पाअ, कुमा, दे २, ३९)। ४ प्रतिबिम्ब, प्रतिच्छाया। ५ अर्थ-शून्य आकार, 'अणए जणं पस्सति बिंबभूयं' (सूअ १, १३, ८)। ६ सूर्य तथा चन्द्र का मण्डल (गउड, कप्पू)।

बिंबवय न [दे] फल-विशेष, भिलावाँ, 'बिंबवय भल्लाय' (पाअ)।

बिंबिसार देखो भिंभिसार (अंत)।

बिंबी स्त्री [बिम्बी] लता-विशेष, कुन्दरून का गाछ (कुमा)। °फल न [°फल] कुन्दरून का फल (सुपा २६३)।

बिंबोवणय न [दे] १ क्षोभ। २ विकार। ३ ओसीसा, उच्छीर्षक (दे ६, ९८)।

बिंह सक [बृंह्] पोषण करना। कृ. देखो बिंहणिज्ज।

बिंहणिज्ज वि [बृंहणीय] पुष्टि जनक (ठा ६—पत्र ३७५, णाया १, १—पत्र १९)।

बिंहिअ वि [बृंहित] पुष्ट, उपचित (हे १, १२८)।

बिग्गाइआ } स्त्री [दे] कीट-विशेष, संलग्न
बिग्गाई } रहता कीट-युग्म, गुजराती में 'वगाई' (दे ६, ९३)।

बिज्ज देखो बीज, 'बिज्जं पिव वड्डिया वहवे' (पउम ११, ९६)।

बिज्जउर न [बीजपूर] फल-विशेष, एक तरह का नीबू, 'बिज्जउरचिब्भिडेहिं कुणइ पिहाणाइं सव्वत्थ' (सुपा ६३०)।

बिज्जय (अप) देखो बिइज्ज (भवि)।

बिट्ट पुं [दे] बेटा, लड़का, पुत्र (चंड)।

बिट्टी स्त्री [दे] बेटी, पुत्री, लड़की (चंड, हे ४, ३३०)।

बिट्ठ वि [दे विष्ट] बैठा हुआ, उपविष्ट (ओघ ४७१)।

बिडाल पु [बिडाल] मार्जार, बिलाव, बिलार, बिल्ला (पि २४१)।

बिडालिआ } स्त्री [बिडालिका, °ली]
बिडाली } बिल्ली, मार्जारी, बिलारी, बिलैया (सम्मत्त १२२, पि २४१)। देखो बिरालिआ।

बिडिस देखो वडिस (उप १४२ टी)।

बिदिय देखो बिइअ (उप २७६)।

बिन्ना स्त्री [वेन्ना] भारत की एक नदी (पिंड ५०३)।

बिव्वोअ पुं [बिव्वोक] १ स्त्री की शृंगार-चेष्टा-विशेष, इष्ट अर्थ की प्राप्ति होने पर गर्व से उत्पन्न अनादर-क्रिया (पराह २, ४—पत्र १३१, णाया १, ८—पत्र १४२, भत्त १०९)। २ न. उपधान, तकिया, ओसीसा, 'सयणीअं तूलिअं सबिव्वोअं' (गच्छ ३, ८)।

बिव्वोअ पुं [बिव्वोक] काम-विकार (अणु १३६)।

बिव्वोइअ न [बिव्वोकित] स्त्री की शृंगार-चेष्टा का एक भेद (पराह २, ४—पत्र १३१)।

बिव्वोयण न [दे] उपधान, तकिया, ओसीसा (णाया १, १—पत्र १३)।

(प्रवि १२; सुपा ७, पाअ)। २ भार, बोझ (से ३, ५, प्रासू २९, सा ६)। ३ गुरुतर कार्य, 'भरणित्थरणसमत्था' (विसे १६६ टी, ठा ४, ४ टी—पत्र २८३। ४ प्रचुरता, अतिशय। ५ कर—राजदेय भाग की प्रचुरता, कर की गुरुता, 'करेहि य भरेहि य' (विपा १, १)। ६ पूर्णता, सम्पूर्णता, 'इय चिंताए निद्दं अलहंतो निसिभरम्मि नरनाहो' (कुप्र ६)। ७ मध्य भाग। ८ जमावट, 'भरमुवगए कोलापमोए, (स ५३०)।

भरअ देखो भरह (षड्)।

भरड पु [भरट] व्रती-विशेष, एक प्रकार का बाबा, 'सिवभवणाहिगारिणा भरडएण' (सम्मत्त १४५)।

भरण न [स्मरण] स्मृति (गा २२२, ३७७)।

भरण न [भरण] १ भरना, पूरना (गउड)। २ पोषण (गा ५२७)। ३ शिल्प-विशेष, वस्त्र में वेल-बूटा आदि आकार की रचना, 'सीवणं तुन्नण भरण' (गच्छ ३, ७)।

भरणी स्त्री [भरणी] नक्षत्र-विशेष (सम ८, इक)।

भरध (शौ) देखो भरह (प्राकृ ८५)।

भरह पु [भरत] १ भगवान् आदिनाथ का ज्येष्ठ पुत्र और प्रथम चक्रवर्त्ती राजा (सम ९०, कुमा, सुर २, १३३)। २ राजा रामचन्द्र का छोटा भाई (पउम २५, १४)। ३ नाट्य-शास्त्र का कर्त्ता एक मुनि (सिरि ५६)। ४ वर्ष-विशेष, भारत वर्ष, 'इहेव जंबुद्दीवे दीवे सत्त वासा पन्नत्ता, तं जहा—भरहे हेमवए हरिवासे महाविदेहे रम्मए एरएणवए एरवए' (सम १२, ज १, पडि)। ५ भारतवर्ष का प्रथम भावी चक्रवर्त्ती (सम १५४)। ६ शवर। ७ तन्तुवाय। ८ नृप-विशेष, राजा दुष्यन्त का पुत्र। ९ भरत के वंशज राजा। १० नट (हे १, २१४, षड्)। ११ देव-विशेष (ज ३)। १२ कूट-विशेष, पर्वत-विशेष का शिखर (ज ४, ठा २, ३, ९)। °खित्त न [°क्षेत्र] भारतवर्ष (सण)। °वास न [°वर्ष] भारतवर्ष, आर्यावर्त्त (पण्ह १, ४)। °सत्थ न [°शास्त्र] भरतमुनि-प्रणीत नाट्यशास्त्र (सिरि ५६)। °हिव पुं [°धिप] १ संपूर्ण भारतवर्ष का राजा, चक्रवर्त्ती। २ भरत चक्रवर्त्ती (सण)। °हिवइ पु [°धिपति] वही अर्थ (सण)।

भरहेसर पुं [भरतेश्वर] १ संपूर्ण भारतवर्ष का राजा, चक्रवर्त्ती। २ चक्रवर्त्ती भरत (कुमा २, १७, पडि)।

भरिअ वि [भृत, भरित] भरा हुआ, पूर्ण, व्याप्त (विपा १, ३, ओप, धर्मवि १४४, काप्र १७४, हेका २७२, प्रासू १०)।

भरिअ वि [स्मृत] याद किया हुआ, 'भरिअं लुढिअं सुमरिअं' (पाअ, कुमा, भवि)।

भरिउव्वट्ट वि [दे. भृतोल्लुठित] भर कर खाली किया हुआ (दे ७, ८१, पाअ)।

भरिम वि [भरिम] भर कर बनाया हुआ (अणु)।

भरिया (अप) देखो भारिया (कुमा)।

भरिली स्त्री [भरिली] चतुरिन्द्रिय जन्तु-विशेष (राज)।

भरु पुं [भरु] १ एक अनार्य देश। २ एक अनार्य मनुष्य-जाति (इक)।

भरुअच्छ पुं [भृगुकच्छ] गुजरात का एक प्रसिद्ध शहर जो आजकल 'भडौंच' के नाम से प्रसिद्ध है (काल, मुनि १०८९९, पडि)।

भरोच्छय न [दे] ताल का फल (दे ६, १०२)।

भल देखो भर = स्मृ। भलइ (हे ४, ७४)। प्रयो, वकृ. भलावत (कुमा)।

भल सक [भल्] सम्हालना। भलिज्जासु (सुपा ५४६)। भवि भलिस्सामि (काल)। कृ भलेयव्व (ओघ ३८६ टी)। प्रयो, संकृ. भलाविऊण (सिरि ३१२, ५९९)।

भलत वि [दे] स्खलित होता, गिरता (दे ६, १०१)।

भलाविअ वि [भालित] सौंपा हुआ, सम्हालने के लिये दिया हुआ (श्रा १६)।

भलि पुंस्त्री [दे] कदाग्रह, हठ, 'असुलहमेच्छण जाह भलि ते नवि दूर गणंति' (हे ४, ३५३, चंड)।

भल्ल पुं [भल्ल] १ भालू, रीछ (पण्ह १, १)। २ पुन. अस्त्र-विशेष, भाला, बरछी (गा ५०४, ५८५, ५९४)।

भल्ल, भल्लय } वि [भद्र] भला, उत्तम, श्रेष्ठ, अच्छा (कुमा, हे ४, ३५१, भवि)। °त्तण, °प्पण न [°त्व] भलमनसी, भलाई (कुमा)।

भल्लय [भल्लक] देखो भल्ल = भल्ल (उप पृ ३०, सण श्रावम)।

भल्लाअय, भल्लातक, भल्लाय } पुं [भल्लात, °क] १ वृक्ष-विशेष, भिलावा का पेड़ (पण्ण १, दे १, २३)। २ न भिलावा का फल (दे १, २३, ५, २६, पाअ)।

भल्लि स्त्री [भल्लि] देखो भल्ली (कुमा)।

भल्लिम पुंस्त्री [भद्रत्व] भलाई, भद्रता (सुपा १२३, कुप्र १०८)।

भल्ली स्त्री [भल्ली] भाला, बरछी, अस्त्र-विशेष (सुर २, २८, कुप्र २७४, सुपा ५३०)।

भल्लु पुंस्त्री [दे] भालू, रीछ (दे ६, ९९)।

भल्लुंकी स्त्री [दे] शिवा, शृगाली (दे ६, १०१, सण), 'भल्लुकी रुट्ठिया विकट्टंती' (सथा ६६)।

भल्लोड पुंन [दे] बाण का पुंख, शर का अग्र भाग, गुजराती में 'भालोडु', 'कन्नायड्ढियवणाहपट्ठदीसतभल्लोडा' (सुर २, ७)।

भव अक [भू] १ होना। २ सक. प्राप्त करना। भवइ, भवए (कप्प, महा), भए (भग, ठा ३, १)। भूका. भविंसु (भग)। भवि. भविस्सइ, भविस्सं (कप्प, भग, पि ५२१)। वकृ भवत (गउड ५८८), 'भूयमाविमा (?भ)वमाण भाविहीं' (कुप्र ४३७)। संकृ. भविअ, भवित्ता, भवित्ताण (प्रमि ५७, कप्प, भग, पि ५८३), भइ (अप), (पिंग)। कृ. भवियव्व (णाया १, १, सुर ४, २०७, उव, भग, सुपा १६४)। देखो भव्व।

भव पु [भव] १ संसार (ठा ३, १, उवा; भग, विपा २, १, कुमा, जी ४१)। २ संसार का कारण (सम्म १)। ३ जन्म, उत्पत्ति (ठा ४,३)। ४ नरकादि योनि, जन्म-स्थान (आचा, ठा २, ३, ४, ३)। ५ महादेव, शिव (पाअ)। ६ वि होनेवाला, भावी (ठा १)। ७ उत्पन्न, 'कणयपुर नामेण तत्थ भवो हं महाभाग!' (सुपा ५८४)। ८ न. देव-विमान-विशेष (सम २)। °जिण

बुंदीर पुं [दे] १ महिष, भैंसा। २ वि महान्, बड़ा (दे ६, ९८)।

बुंध न [बुध्न] १ वृक्ष का मूल। २ कोई भी मूल, मूलमात्र (हे १, २६, षड्)।

बुंबा स्त्री [दे] चिल्लाहट, पुकार (सुपा ५९५)।

बुबु पु [दे] ऊपर देखो (कप्प ३१)।

बुंबुअ न [दे] वृन्द, यूथ, समूह (दे ६, ९४)।

बुक्क वि [दे] विस्मृत (वव १)।

बुक्क अक [गर्ज्, बुक्क्] गर्जन करना, गरजना। बुक्कइ (हे ४, ९८)।

बुक्क अक [भष्, बुक्क्] श्वान—कुत्ता का भूँकना। बुक्कइ (षड्)।

बुक्क पुंन [दे] १ तुष, छिलका (सुख १८, ३७)। २ वाद्य-विशेष, 'बुक्कतबुक्कसंबुक्कसंद्दुक्कड' (सुपा ५०)।

बुक्कण पुं [दे] काक, कौआ (दे ६, ९४, पाअ)।

बुक्कस देखो वोक्कस (राज)।

बुक्का स्त्री [दे] १ मुष्टि (दे ६, ९४, पाअ)। २ व्रीहिमुष्टि (दे ६, ९४)। ३ वाद्य-विशेष, 'ढक्काडक्कहुडुक्काबुक्कासंबुक्ककरडिपभिईणं आउज्जाणं' (सुपा १९५)।

बुक्का स्त्री [गर्जना] गर्जन, गर्जारव (पउम ६, १०८, गउड)।

बुक्कार पु [दे वृक्कार] गर्जन, गर्जना (पउम ७, १०५, गउड)।

बुक्कास पुं [दे] तन्तुवाय, जुलाहा (आचा २, १, २, २)।

बुक्कासार वि [दे] भीरु, डरपोक (दे ६, ९५)।

बुक्किअ वि [गर्जित] जिसने गर्जना की हो वह, 'अह बुक्किआ तुह भडा' (कुमा)।

बुज्झ सक [बुध्] १ जानना, ज्ञान करना, समझना। २ जागना। बुज्झइ (उव)। भूका बुज्झिसु (भग)। भवि. बुज्झिहिइ (औप)। वकृ. बुज्झत, बुज्झमाण (पिंग, आचा)। संकृ बुज्झा (हे २, १५)। कृ. बुद्ध, बोद्धव्व, बोधव्व (पिंग, कुमा, नव २३, भग, जी २१)।

बुज्झविय } वि [बोधित] १ जिसको ज्ञान कराया गया हो वह। २ जगाया गया (कुप्र ६४, सुपा ४२५, प्राकृ ६८)।
बुज्झाविअ }

बुज्झिअ वि [बुद्ध] ज्ञात, विदित (पाअ)।

बुज्झिर वि [बोद्धृ] १ जाननेवाला। २ जागनेवाला (प्राकृ ६८)।

बुडबुड अक [बुडबुडय्] बुडबुड आवाज करना, 'सुरा जहा बुडबुडेइ अव्वत्त' (चेइय ४९२)।

बुड्ड अक [ब्रुड्, मस्ज्] डूबना। बुड्डइ (हे ४, १०१, उव, कुमा, भवि)। भवि. बुड्डीसु (अप) (हे ४, ४२३)। वकृ. बुड्डंत, बुड्डमाण (कुमा, उप १०३१ टी)। प्रयो, वकृ. बुड्डावत (संबोध १५)।

बुड्ड वि [ब्रुडित, मग्न] डूबा हुआ, निमग्न (धम्म १२ टी, गा ३७, रंभा २३, सुर १०, १८९, भवि), 'घयत्रुड्डुमडगाई' (पव ४ टी)।

बुड्डण न [ब्रुडन] डूबना (संबे २, कप्पू)।

बुड्डिर पुं [दे] महिष, भैंसा (षड्)

बुड्ढ वि [वृद्ध] बूढ़ा (पिंग)। स्त्री. °ड्ढा, °ड्ढी (काप्र १९७, सिरि १७३)

बुण्ण वि [दे] १ भीत, डरा हुआ। २ उद्विग्न (दे ७, ९४ टी)।

बुत्ती स्त्री [दे] ऋतुमती स्त्री (दे ६, ९४)।

बुद्ध वि [बुद्ध] १ विद्वान्, पण्डित, ज्ञाततत्व (सम १, उप ६१२ टी, श्रा १२, कुप्र ४०, श्रु १)। २ जागा हुआ, जागृत (सुर ६, २४३)। ३ भूत, भविष्य और वर्त्तमान का जानकार (चेइय ७१३)। ४ विज्ञात, विदित (ठा ३, ४)। ५ पुं. जिन-देव, अर्हन्, तीर्थंकर (सम ६०)। ६ बुद्धदेव, भगवान् बुद्ध (पाअ, दे ७, ५१, उर ३, ७, कुप्र ४४०, धर्मसं ६७२)। ७ आचार्य, सूरि (उत्त १, १७)। °पुत्त पु [°पुत्र] आचार्य शिष्य (उत्त १, ७)। °बोहिय वि [°बोधित] आचार्य बोधित (नव ४३)। °माणि वि [°मानिन्] निज को पण्डित माननेवाला (सूअ १, ११, २५)। °लय पुन [°लय] बुद्ध-मन्दिर (कुप्र ४४२)।

बुद्ध वि [बौद्ध] १ बुद्ध-भक्त। २ बुद्ध-संबन्धी, बुद्ध का (ती ७, सम्मत ११९)।

बुद्ध देखो बुज्झ।

बुद्ध देखो बुध (सुज्ज २०)।

बुद्धत पुन [बुध्नान्त] अधो-भाग, नीचे का हिस्सा; 'ता राहू ण देवे चंद वा सूर वा गेण्हमाणे बुद्धंतेणं गिण्हित्ता बुद्धतेणं मुयइ' (सुज्ज २०)।

बुद्धि स्त्री [बुद्धि] १ मति, मेधा, मनीषा, प्रज्ञा (ठा ४, ४, जी ६, कुमा, कप्प, प्रासू ४७)। २ देव प्रतिमा-विशेष (णाया १, १ टी—पत्र ४३)। ३ महापुण्डरीक ह्रद की अधिष्ठात्री देवी (ठा २, ३—पत्र ७२, इक)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। ५ तीर्थंकरी। ६ साध्वी (राज)। ७ अहिंसा, दया (पण्ह २, १)। ८ पुं. इस नाम का एक मन्त्री (उप ८४४)। °कूड न [°कूट] पर्वत-विशेष का शिखर (राज)। °बोहिय वि [°बोधित] १ तीर्थंकरी—स्त्री-तीर्थंकर से प्रतिबोधित। २ सामान्य साध्वी से बोधित (राज)। °मंत वि [°मत्] बुद्धिवाला (उप ३३९, सुपा ३७२, महा)। °ल पु [°ल] १ एक स्वनाम-प्रसिद्ध श्रेष्ठी (महा)। २ देखो °ल्ल (राज)। °ल्ल वि [°ल] बुद्ध, मूर्ख, दूसरे की बुद्धि पर जीनेवाला, 'तस्स पडियमाण(? णि)स्स बुद्धिल्लस्स दुरप्पणो' (ओघभा २६ टी, २७)। °वर्त देखो °मत (भवि)। °सागर, °सायर पु [°सागर] विक्रम की ग्यारहवी शताब्दी का एक सुप्रसिद्ध जैनाचार्य और ग्रन्थकार (सुर १६, २४५, सार्ध ६९, सम्मत्त ७६)। °सिद्ध पुं [°सिद्ध] बुद्धि मे सिद्धहस्त, संपूर्ण बुद्धिवाला (आवम)। °सुदरी स्त्री [°सुन्दरी] एक मन्त्री-कन्या (उप ७२८ टी)।

बुध देखो बुह (पण्ह १, ५, सुज्ज २०)।

बुब्बुअ अक [बुबूय्] 'बु' 'बु' आवाज करना, छाग—बकरा का बोलना। बुब्बयइ (कुप्र २४)। वकृ बुब्बुयत (कुप्र २४)।

बुब्बुअ पुं [बुद्बुद] बुलबुला, पानी का बुलका (दे ६, ९५, औप, पिंड ४९, णाया १, १, वे ४५, प्रासू ९६, २ १३)।

बुभुक्खा स्त्री [बुभुक्षा] भूख, खाने की इच्छा (अभि २०७)।

बुय वि [ब्रुव] बोलनेवाला (सूअ १ ७, १०)।

बुयाण देखो बुव।

का पुत्र (पउम २६, ८७)। °वलय न [°वलय] जिन-देव का एक महाप्रातिहार्य, पीठ के पीछे रखा जाता दीप्ति-मंडल (संबोध २, सिरि १७७)।

भा } अक [भी] डरना, भय करना। भाइ,
भाअ } भाअइ, भाआमि (हे ४, ५३, षड्, महा, स्वप्न ८०), भादि (शौ) (प्राकृ ९३), भायइ (संग)। भवि. भाइस्सदि, भाइस्स (शौ) (पि ५३०)। वकृ. भायत (कुमा)। कृ. भाइयव्व (पण्ह २, २, स ५६२, (सुपा ४१)।

भाअ देखो भा = भा। भाअदि (शौ) (प्राकृ ९३)।

भाअ सक [भायय्] डराना। भाअइ, भाएइ (प्राकृ ६४), भाएसि (कपूंर २४)। वकृ भायमाग (सुपा २४८)।

भाअ देखो भाव = भावय्। कृ. भाएअव्व (नव २५)।

भाअ पुं [भाग] १ योग्य स्थान। २ एक देश (से १३, ६)। ३ अंश, विभाग, हिस्सा (पाअ, सुपा ४०७, पव—गाथा ३०, उवा)। ४ भाग्य, नसीब (सार्ध ८०)। °धेअ, °हेअ पुन [°धेय] १ भाग्य, नसीब (से ११, ८५, स्वप्न ५१, हम्मीर १४, अभि १९७)। २ कर, राज-देय। ३ दायाद, भागीदार, 'भाअहेओ, भाअहेअ' (प्राकृ ८८, नाट—चैत ६०)। देखो भाग।

भाअ पु [दे] ज्येष्ठ भगिनी का पति (दे ६, १०२)।

भाअ देखो भाव (भवि)।

भाआव देखो भाअ = भायय्। भाआवेइ (प्राकृ ६४)।

भाइ देखो भागि, 'सारिव्व वधवहमरणभाइणो जिण ण हुंति तह दिट्ठे' (धण ३२, उप ६८६ टी)।

भाइ } पुं [भ्रातृ] भाई, बन्धु (उप ५१६,
भाइअ } महा, श्रावम)। °बीया स्त्री [°द्वितीया] पर्व-विशेष, भैयादूज, कार्तिक शुक्ल द्वितीया तिथि (ती १९)। °सुअ पु [°सुत] भतीजा (सुपा ४७०)। देखो भाउ।

भाइअ वि [भाजित] १ विभक्त किया हुआ, बाँटा हुआ (पिंड २०८)। २ खण्डित (पच २, १०)।

भाइअ वि [भीत] १ डरा हुआ। २ न. डर, भय (हे ४, ५३)।

भाइणिज्ज } पुस्त्री [भागिनेय] भगिनी-पुत्र,
भाइणेअ } बहिन का लडका, भानजा (धम्म
भाइणेज्ज } १२ टी, नाट—रत्ना ८५, स २७०, णाया १, ८—पत्र १३२, पउम ९६, ३९, कुप्र ४४०, महा)। स्त्री °ज्जी (पउम १७, ११२)।

भाइयव्व देखो भा = भी।

भाइर वि [भीरु] डरपोक (दे ६, १०४)।

भाइल्ल पु [दे] हालिक, कर्षक, कृषीवल, किसान (दे ६, १०४)।

भाइल्ल वि [भागिन्, °क] भागीदार, साझीदार, अंश-ग्राही (सूअ २, २, ६३, पण्ह १, २, ठा ३, १—पत्र ११३, णाया १, १४)। देखो भागि।

भाइहड न [दे भ्रातृभाण्ड] भाई, बहिन आदि स्वजन, गुजराती में 'भांवड' (कुप्र १५६)।

भाईरही स्त्री [भागीरथी] गंगा नदी (गउड, हे ४, ३४७, नाट—विक्र २८)।

भाउ } पु [भ्रातृ] भाई, बन्धु (महा,
भाउअ } सुर ३, ८८, पि ५५, हे १, १३१ उव)। °जाया, °ज्जाइया स्त्री [°जाया] भौजाई, भाई की स्त्री (दे ६, १०३, सुपा २६४)।

भाउअ देखो भाअ = (दे) (दे ६, १०२ टी)।

भाउअ न [दे] आषाढ मास मे मनाया जाता गौरी-पार्वती का एक उत्सव (दे ६, १०३)।

भाउग देखो भाउ (उप १४९ टी, महा)।

भाउज्जा स्त्री [दे] भौजाई, भाई की पत्नी (दे ६, १०३)।

भाउराअण पु [भागुरायण] व्यक्ति-वाचक नाम (मुद्रा २२३)।

भाएअव्व देखो भाअ = भावय्।

भाग पुं [भाग] १ अंश, हिस्सा (कुमा, जी २७, दे १, १६७)। २ अचिन्त्य शक्ति, प्रभाव, माहात्म्य, 'भागोचिता सत्ती स महाभागो महप्पभावो त्ति' (विसे १०५८)। ३ पूजा, भजन (सूअ १, ८, २२)। ४ भाग्य, नसीव, 'धन्ना कयपुन्ना हं महंतभागोदओवि मह अत्थि' (सिरि ८२३)। ५ प्रकार, भंगी (राज)। ६ अवकाश (सुज्ज १०, ३—पत्र १०४)। °धेअ, °धेज्ज °हेअ देखो भाअ-हेअ (पउम ६, ५७, २८, ८९, स १२, सुर १४, ६, पाअ)। देखो भाअ = भाग।

भागवय वि [भागवत] १ भगवान् से संबन्ध रखनेवाला। २ भगवान् का भक्त (धर्मसं ३१२)। ३ न. ग्रंथ-विशेष (णदि)।

भागि वि [भागिन्] १ भजनेवाला, सेवन करनेवाला, 'भारस्स भागी' (उव), 'किं पुण मरणंपि न मे संजाय मदभग्गभागिस्स' (सुपा ५४७)। २ भागीदार, साझीदार, अंश-ग्राही (प्रासा)।

भागिणेज्ज } देखो भाइणेज्ज (महा, कुप्र
भागिणेय } ३७१)।

भागीरही देखो भाईरही (पाअ)।

भाज अक [भ्राज्] चमकना। वकृ. भाजत, भत (विसे ३४४७)।

भाड पुंन [दे] भाड, वह बडा चूल्हा जहाँ अन्न भुना जाता है, भट्ठी, 'जाया भाडसमाणा मग्गा उत्तत्तवालुया अहियं' (धर्मवि १०४, सण)।

भाडय न [भाटक] भाडा, किराया (सुर ६, १५७)।

भाडिय वि [भाटकित] भाडे पर लिया हुआ, 'वोहित्थं भाडिय वियड' (सुर १३, ३५)।

भाडिया } स्त्री [भाटिका, °टी] भाडा,
भाडी } शुल्क, किराया, 'एक्काए देइ भाडिं अन्नाहि सम रमेइ रयणीए', 'विलासिणीए दाऊण इच्छियं भाडिं' (सुपा ३८२, ३८३, उवा)। °कम्म न [°कर्मन्] बैल, गाडी आदि भाडे पर देने का काम—धन्धा, 'भाडियकम्म' (स ५०, श्रा २२, पडि)।

भाण देखो भण = भण्। संकृ. भाणिऊण, भाणिऊण (पिंड ६१५, उव)। कृ भाणियव्व (ठा ४, २, सम ८४, भग, उवा, कप्प, औप)।

भाण देखो भायण (ओघ ६९५, हे १, २६७, कुमा)।

भाणिअ वि [भाणित] १ पढाया हुआ, पाठित, 'नाणासत्थाइं भाणिआ' (रयण

वोडघेर न [दे] गुल्म-विशेष (पाअ)।

वोडिय पु [बोटि] १ दिगम्बर जैन संप्रदाय। २ वि दिगम्बर जैन संप्रदाय का अनुयायी, 'वोडियसिवभूईओ वोडियलिंगस्स होइ उप्पत्ती' (विसे १०४१, २५५२)।

वोडिअ वि [दे] मुण्डित-मस्तक (?), 'वोडिअमसिए धुवं मरणं' (ओघमा ८३ टी)।

वोड्डुर न [दे] श्मश्रु, दाढी-मूँछ (दे ६, ६५)।

वोड्डिआ स्त्री [दे] कपर्दिका, कौडी, 'केसरि न लहइ वोड्डिअवि गय लक्खेंति घेप्पति' (हे ४, ३३५)।

वोदर वि [दे] पृथु, विशाल (दे ६, ६६)।

वोदि देखो बोंदि (औप)।

वोद्दह [दे] देखो वोद्रह (पाअ)।

वोद्ध वि [बौद्ध] बुद्ध-भक्त (सबोध ३४)।

वोद्धव्व देखो बुज्झ।

वोद्रह वि [दे] तरुण, जवान (दे ७, ८०)।

वोधण न [बोधन] बोध, शिक्षा, उपदेश (सम ११६)।

वोधव्व देखो बुज्झ।

वोधि देखो बोहि (ठा २, १—पत्र ४६)। °सत्त पु [°सत्त्व] सम्यग् दर्शन को प्राप्त प्राणी, अर्हन् देव का भक्त जीव (मोह ३)।

वोधिअ वि [बोधित] ज्ञापित, अवगमित (धर्मसं ५०६)।

वोव्वड वि [दे] मूक (दश० अगस्त्य चू० पत्र० २४३)।

वोर न [बदर] फल-विशेष, बेर (गा २००, हे १७०, षड्, कुमा)।

वोरी स्त्री [बदरी] बेर का गाछ (प्राकृ ४, हे १, १७०, कुमा, हेका २५६)।

वोल सक [बोडय्] डुबाना, 'तवोलो तं वोलइ जिणवसहिट्ठिएण जेण खद्धो' (सार्ध ११४), 'डुट्ठुत वोलए अन्नं' (सूक्त ६६), वोलेइ, वोलए (सबोध १३), 'केसि च बंधित्तु गले सिलाओ उदगंसि वोलति महालयंसि' (सूअ १, ५, १०), वोलेमि (सिरि १३८)। 'गुरुनामेण लोए वोलेइ वहुं' (उवर १५२)।

वोल अक [व्यति + क्रम्] १ पसार होना, गुजरना। २ सक. उल्लंघन करना, 'दूई ण एइ, चदोवि उग्गओ, जामिणीवि वोलेइ' (गा ८५४), 'पुणो त वयेण न वोलइ कयाइ' (श्रावक ३३)। वोलए (चंड)। देखो वोल = गम्।

वोल पुं [दे] १ कलकल, कोलाहल (दे ६, ६०, भग, भवि, कप्पू, उप उप ५०६), 'हासवोलबहुला' (औप)। २ समूह, 'कमढासुरेण रइयम्मि भीसणे पलयतुल्लजलवोले' (भाव १; कुलक ३४)।

वोलग पुन [दे ओड] १ मज्जन, डूबना। २ कर्षण, खींचाव, 'उच्चूलं वोलग पज्जेति' (विपा १, ६—पत्र ६८)।

वोलिअ वि [ओडित] डुबाया हुआ (वज्जा ६८)।

वोलिंदी स्त्री [दे] लिपि-विशेष, ब्राह्मी लिपि का एक भेद, 'माहेसरीलिवी दामिलिवी वोलिंदिलीवी' (सम ३५)।

वोल्ल सक [कथय्] बोलना, कहना। वोल्लइ (हे ४, २ प्राकृ ११६, सुर ८, १६७, भवि)। कर्म वोल्लिअइ (अप) (कुमा)। कृ. वोल्लेवय (अप) (कुमा)। प्रयो. वोल्लावइ (कुमा)।

वोल्लअ पुं [कथन] बोल, वचन (गा ६०३)।

वोल्लणअ वि [कथयितृ] बोलने का स्वभाववाला (हे ४, ४४३)।

वोल्ला स्त्री [कथा] वार्ता, बात, 'नीयवोल्लाए' (उप १०१५)।

वोल्लाविय वि [कथित] बुलवाया हुआ (स ४६१, ६६६)।

वोल्लिअ वि [कथित] १ उक्त। २ न. उक्ति (भवि; हे ४, ३८३)।

वोव्व न [दे] क्षेत्र, खेत (दे ६६)।

वोह सक [बोधय्] १ समझाना, ज्ञान कराना। २ जगाना। वोहेइ (उव)। कर्म. वोहिज्जइ (उव)। वकृ वोहिंत, वोहेंत (सुर १५, २४६, महा)। कवकृ. वोहिज्जंत (सुर २, १४५, ८, १६५)। हेकृ. वोहेउ (अज्झ १७६)।

वोह पुं [बोध] १ ज्ञान, समझ (जी १)। २ जागरण (कुमा)।

वोहग देखो वोहय (दं १)।

वोहण देखो वोधण (उप २०६, सुर १, ३७, उवर १)।

वोहय वि [बोधक] बोध देनेवाला, ज्ञानदाता (सम १, णाया १, १, भग, कप्प)।

वोहद्दर पुं [दे] मागध, स्तुति-पाठक (दे ६, ६७)।

वोहारी स्त्री [दे] बुहारी, समार्जनी, झाडू (दे ६, ६७)।

वोहि स्त्री [बोधि] १ शुद्ध धर्म का लाभ, सद्धर्म की प्राप्ति, 'दुल्लहा वोही' (उत्त ३६, २५८), 'वोहो जिणेहि भणिया भवंतरे सुद्धधम्मसपत्ती' (चेइय ३३२, सबोध १४, मम ११६, उप ४८१ टी)। २ अहिंसा, अनुकम्पा, दया (पण्ह २, १)। देखो बोधि।

वोहिअ वि [बोधित] १ ज्ञापित, समझाया हुआ (भग)। २ विकासित, विबोधित, 'रविकिरणतरुणवोहियसहस्सपत्त—' (कप्प)।

वोहिअ पुं [बोधिक] मनुष्य चुरानेवाला चोर (निचू १, चेइय ४४६)।

वोहिंत देखो वोह = बोधय्।

वोहिग देखो वोहिअ = बोधिक (राज)।

वोहित्थ पुन [दे] प्रवहण, जहाज, यानपात्र, नौका (दे ६, ६६, स २०६, चेइय २६४, कुप्र २२२, सिरि ३८३, सम्मत्त १५७, सुपा ६४, भवि)।

वोहित्थिय वि [दे] प्रवहण-स्थित (वज्जा १५८)।

°ब्भस देखो भस (सुपा ५०६)।

°ब्भमर देखो भमर (नाट—मुद्रा ३६)।

°ब्भास देखो अब्भास, 'किंतु अद्दद्रहवा सा दिट्ठिब्भामेत्ति कुणइ न हु कोइ' (सुपा ५६७)।

°ब्भि वि [भित्] भेदन करनेवाला, नाशकर्ता, 'सगडब्भि' (आचा १, ३, ४, १)।

व्रो (अप) देखो वू। व्रोहि (प्राकृ १२१)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि वआराइसद्दसकलणो एगूणतीसइमो तरंगो समत्तो ॥

'सो चेव देवलोगो देवसहस्सोवसोहिओ रम्मो।
तुह विरहियाइ इण्हिं भावइ नरओवमो मज्झ।'
(सुर ७, १६)।
'त चिय इम विमाणं रम्म
मणिकणगरयणविच्छुरिय।
तुमए मुक्कं भावइ
घडियालयसच्छहं नाह।'
(सुर ७, १७)।
'एम्वहिं राहपओहरहं जं भावइ तं होउ'
(हे ४, ४२०)।

भाव पुं [भाव] १ पदार्थ, वस्तु, 'भावो वत्थु पयत्थो' (पाअ, विसे ७०, १६६२)। २ अभिप्राय, आशय (आचा; पचा १, १, प्रासू ४२)। ३ चित्त-विकार, मानस विकृति, 'हावभावपललियविक्खेवविलाससालिणीहिं' (पण्ह २, ४—पत्र १३२)। ४ जन्म, उत्पत्ति, पिंडो कज्जं पइसमयभावाउ' (विसे ७१)। ५ पर्याय, धर्म, वस्तु का परिणाम, द्रव्य की पूर्वापर अवस्था (पण्ह १, ३, उत्त ३०, २३, विसे ६६, कम्म ४, १, ७०)। ६ धात्वर्थ-युक्त पदार्थ विवक्षित क्रिया का अनुभव करनेवाली वस्तु, पारमार्थिक पदार्थ (विसे ४६)। ७ परमार्थ, वास्तविक सत्य (विसे ४६)। ८ स्वभाव, स्वरूप (अणु; णादि)। ९ भवन, सत्ता (विसे ६०, गउड ६७८)। १० ज्ञान, उपयोग (आचू १, विसे ५०)। ११ चेष्टा (णाया १, ८)। १२ क्रिया, धात्वर्थ (अणु)। १३ विधि, कर्तव्योपदेश, 'भावाभावमणंता' (भग ४१—पत्र ६७६)। १४ मन का परिणाम (पचा २, ३३, उव, कुमा ७, ५५)। १५ अन्तरग वहुमान, प्रेम, राग (उव, कुमा ७, ८३, ८५)। १६ भावना, चिन्तन (गउड १२०४, सवोध २४)। १७ नाटक की भाषा मे विविध पदार्थों का चिन्तक पण्डित (अभि १८२)। १८ आत्मा (भग १७, ३)। १९ अवस्था, दशा (कप्पू)। °केउ पुं [°केतु] ज्योतिष्क देव-विशेष, महाग्रह-विशेष (ठा २, ३)। °त्थ पुं [°र्थ] तात्पर्य, रहस्य (स ६)। °न्न °न्नुय वि [°ज्ञ] अभिप्राय को जाननेवाला (आचा, महा)। °पाण पु [°प्राण] ज्ञान आदि आत्मा का अन्तरग गुण (पएण १)। °सजय पुं [°सयत] सच्चा, साधु (उप ७३२)। °साहु पुं [°साधु] वही अर्थ (भग)। °सव पु [°स्रव] वह आत्म-परिणाम, जिससे कर्म का आगमन हो, 'आसवदि जेण कम्म परिणामेणप्पणो स विण्णेओ भावासवो' (द्रव्य २६)।

भाव पु [भाव] महान् वादी, समर्थ विद्वान (दस १, १ टी)।

भावअ वि [भावक] होनेवाला (प्राकृ ७०)। देखो भावग।

भावइआ स्त्री [दे] धार्मिक-गृहिणी (दे ६, १०४)।

भावग वि [भावक] वासक पदार्थ, गुणाधायक वस्तु (आचू ३)। देखो भावअ।

भावड पु [भावक] स्वनाम ख्यात एक जैन गृहस्थ (ती २)।

भावण पुं [भावन] १ स्वनाम-ख्यात एक वणिक् (पउम ५, ८२)। २ नीचे देखो (सवोध २४, वि ६)।

भावणा स्त्री [भावना] १ वासना, गुणाधान, सस्कार-करण (औप)। २ अनुप्रेक्षा, चिन्तन। ३ पर्यालोचन (ओघभा ३, उव, प्रासू ३७)।

भावि वि [भाविन्] भविष्य में होनेवाला (कुमा, सण)।

भाविअ वि [दे] गृहीत, उपात्त (दे ६, १०३)।

भाविअ न [भाविक] एक देव-विमान (सम ३३)।

भाविअ वि [भावित] १ वासित (पण्ह २, ५, उत्त १४, ५२, भग, प्रासू ३७)। २ भाव-युक्त, 'जिणपवयणतिव्वभावियमइस्स' (उव)। ३ शुद्ध, निर्दोष (बृह १)। °प्प वि [°त्मन्] १ वासित अन्त करणवाला (औप, णाया १, १)। २ पुं. मुहूर्त-विशेष, अहोरात्र का तेरहवाँ या अठारहवाँ मुहूर्त (सुज्ज १०, १३, सम ५१)। °प्पा स्त्री [°त्मा] भगवान् धर्मनाथ की मुख्य शिष्या (सम १५२)।

भाविंदिअ न [भावेन्द्रिय] उपयोग, ज्ञान (भग)।

भाविर वि [भाविन्, भवितृ] भविष्य मे होनेवाला, अवश्यभावी, 'अम्ह भाविरदीहरपवासदुहिया मिलाएइ' (सुपा ६), 'एत्यतरम्मि भाविरनियपिउगुरुविरहग्गिदूमियमणेण' (सुपा ७५)।

भाविल्ल वि [भाववत्] भाव-युक्त, पणवीसं भावणाअ भाविल्लो पंचमहव्वयाईण' (सवोध २४)।

भाविस्स देखो भविस्स, 'भाविस्सभूयपभवंतभावआलोयलोयणं विमलं' (सुपा ८६)।

भावुक वि [दे] वयस्य, मित्र (सक्षि ४७)।

भावुग } वि [भावुक] अन्य के संसर्ग को
भावुय } जिस पर असर हो सकती हो वह वस्तु (ओघ ७७३, सवोध ५४)।

भास सक [भाष्] कहना, बोलना। भासइ, भासति (भग, उव)। भवि. भासिस्सामि (भग)। वकृ. भासंत, भासमाण (औप, भग, विपा १, १)। कवकृ. भासिज्जमाण (भग, सम ६०)। सकृ. भासित्ता (भग)। कृ. भासिअव्व (भग, महा)।

भास अक [भास्] १ शोभना। २ लगना, मालूम होना। ३ प्रकाशना, चमकना। भासइ (हे ४, २०३), भासए, भासति, भाससि (मोह २६, भत्त ११०, सुर ७, १६२)। वकृ भासत (अच्चु ५४)।

भास सक [भीषय्] डराना। भासइ (धात्वा १४७)।

भास पुं [भास] १ पक्षि-विशेष (पण्ह १, १, दे २, ६२)। २ दीप्ति, प्रकाश, 'नावरिज्जइ कयावि। उक्कोसावरणम्मिवि जलयच्छन्नकभासो व्व' (विसे ४६८, भवि)।

भास पु [भस्मन्] १ ग्रह-विशेष, ज्योतिष्क देव-विशेष (ठा २, ३, विचार ५०७)। २ भस्म, राख (णाया १, १, पण्ह २, ५)। °रासि पु [°राशि] ग्रह-विशेष (ठा २, ३, कप्प)।

भास न [भाष्य] व्याख्या-विशेष, पद्य-बद्ध टीका (चैत्य १, उप ३५७ टी, विचार ३५२, सम्यक्त्वो ११)।

भास° देखो भासा (कुमा)। °ण्णु वि [°ज्ञ] भाषा के गुण-दोष का जानकार (धर्मस ६२५)। °व वि [°वत्] वही अर्थ (सूअ १, १३, १३)।

भंजाविअ, भंजिअ वि [भञ्जित] १ भँगाया हुआ, तुड़वाया हुआ, (स ५४०)। २ भगाया हुआ (पिंग)। ३ आक्रान्त (तंदु ३८)।

भंजिअ देखो भग्ग = भग्न (कुमा ६, ७०; पिंग, भवि)।

भंड सक [भाण्डय्] भँडारा करना, संग्रह करना, इकट्ठा करना। भंडेइ (सुख २, ४५)।

भंड सक [भण्ड्] भाँडना, भर्त्सना करना, गाली देना। भंडइ (सुण)। वकृ. भंडत (गा ३७९)। सकृ भंडिउ (वव १)।

भंड पुं [भण्ड] १ विट, भड़ुआ (पव ३८)। २ भाँड, बहुरूपिया, मुख आदि के विकार से हँसाने का काम करनेवाला, निर्लज्ज (आव ६)।

भंड न [दे] १ वृन्ताक, बैंगन, भंटा (दे ६, १००)। २ पुं. मागध, स्तुति-पाठक। ३ सखा, मित्र। ४ दौहित्र, पुत्री का पुत्र (दे ६, १०९)। ५ पुंन. मण्डन, आभूषण, गहना (दे ६, १०९, भग, औप)। ६ वि. छिन्न, मूर्धा, सिर-कटा (दे ६, १०९)। ७ न. क्षुर, छुरा। ८ छुरे से मुण्डन (राज)।

भंड, भंडग पुंन [भाण्ड] १ बरतन, वासन, पात्र, 'दुग्गइदुहभंडे घडइ भक्खडे' (संवेग १४, दे ३, २१, श्रा २७, सुपा १९९)। २ क्रयाणक, पण्य, बेचने की वस्तु (णाया १, १—पत्र ६०, औप, पण्ह १, १, उवा; कुमा)। ३ गृह, स्थान (जीव ३)। ४ वस्त्र-पात्र आदि घर का उपकरण (ठा ३, १, कप्प, ओघ ६६६, णाया १, ५)।

भंडण न [दे भण्डन] १ कलह, वाक्-कलह, गाली-प्रदान (दे ६, १०१, उव, महा, णाया १, १६—पत्र २१३, ओघ २१४, गा ६६९; उप ३३६, तंदु ५०)। २ क्रोध, गुस्सा (सम ७१)।

भंडणा स्त्री [भण्डना] भाँडना, गाली-प्रदान (उप ३३६)।

भंडय देखो भंड = भण्ड (हे ४, ४२२)।

भंडय देखो भंडग, 'पायसघयदहियाणं भरिऊण भंडए गरुए' (महा ८०, २४, उत्त २६, ८)।

भंडवेआलिअ वि [भाण्डवैचारिक] करियाना बेचनेवाला (अणु १४९)।

भंडा स्त्री [दे] सम्बोधन-सूचक शब्द (संक्षि ४७)।

भंडाआर, भंडागार पुं [भाण्डागार] भंडार, कोठा या कोठार, वखार (मुद्रा १४१, स १७२, सुपा २२१, २६)।

भंडागारि, भंडागारिअ पुंस्त्री [भाण्डागारिन्, °क] भंडारी, भंडार का अध्यक्ष (णाया १, ८, कुप्र १०८)। स्त्री. °रिणी (णाया १, ८)।

भंडार देखो भंडागार (महा)।

भंडार पु [भाण्डकार] वर्तन बनानेवाला शिल्पी (राज)।

भंडारि, भंडारिअ देखो भंडागारि (स २०७, सुर ४, ६०)।

भंडिअ पुं [भाण्डिक] भंडारी, भंडार का अध्यक्ष (सुख २, ४५)।

भंडिआ स्त्री [भाण्डिका] स्थाली, थलिया (ठा ८—पत्र ४१७)।

भंडिआ, भंडी स्त्री [दे] १ गंत्री, गाड़ी (बृह ३, दे ६, १०९, आवम, निचू ३, वव ६)। २ शिरीष वृक्ष। ३ अटवी, जंगल। ४ असती, कुलटा (दे ६, १०९)।

भंडीर पु [भण्डीर] वृक्ष-विशेष, शिरीष वृक्ष (कुमा)। °वडिंसय, °वडेंसय न [°ावतंसक] मथुरा नगरी का एक उद्यान, 'महुराए णयरीए भंडि (? डीर)वडेंसए उज्जाणे' (राज, णाया २—पत्र २५३)। °वण न [°वन] १ मथुरा का एक वन (ती ७)। २ मथुरा का एक चैत्य (आवम)।

भंडु न [दे] मुण्डन (दे ६, १००)।

भंडुल्ल देखो भंड = भाण्ड (भवि)।

भंत वि [भ्रान्त] १ घुमा हुआ, 'भंतो जसो मेईणी (ए)' (पउम ३०, ९८)। २ भ्रान्ति-युक्त, भ्रमवाला, भूला हुआ (दे १, २१)। ३ अपेत, अनवस्थित (विसे ३४४८)। ४ पुं. प्रथम नरक का तीसरा नरकेन्द्रक—नरकावास-विशेष (देवेन्द्र ३)।

भंत वि [भगवत्] भगवान्, ऐश्वर्य-शाली (ठा ३, १, भग, विसे ३४४८—३४५६)।

भंत वि [भदन्त] १ कल्याण-कारक। २ सुख-कारक। ३ पूज्य (विसे ३४३९, कप्प, विपा १, १, कस, विसे ३४७४)।

भंत वि [भजत्] सेवा करता (विसे ३४४६)।

भंत वि [भात्, भ्राजत्] चमकता, प्रकाशता (विसे ३४४७)।

भंत वि [भवान्त] भव का—संसार का अन्त करनेवाला, मुक्ति का कारण (विसे ३४४९)।

भंत वि [भयान्त] भय-नाशक (विसे ३४४९)।

भंति स्त्री [भ्रान्ति] भ्रम, मिथ्या ज्ञान (धर्मसं ७२१, ७२३, सुपा ३१२, भवि)।

भंति (अप) स्त्री [भक्ति] भक्ति, प्रकार (पिंग)।

भंभल वि [दे] १ अप्रिय, अनिष्ट (दे ६, ११०)। २ मूर्ख, अज्ञान, पागल, बेवकूफ (दे ६, ११०, सुर ८, १९६)।

भंभसार पुं [भम्भसार] भगवान् महावीर के समकालीन और उनके परम भक्त एक मगधाधिपति, ये श्रेणिक और बिम्बसार के नाम से भी प्रसिद्ध थे (णाया १, १३, औप)। देखो भिंभसार, भिंभिसार।

भंभा स्त्री [दे. भम्भा] १ वाद्य-विशेष, भेरी (दे ६ १००, णाया १, १७, विसे ७८ टी; सुर ३, ६९, सम्मत्त १०६, राय, भग ७, ९)। २ 'भाँ' 'भाँ' की आवाज (भग ७,९—पत्र ३०५)।

भंभी स्त्री [दे] १ असती, कुलटा (दे ६, ९९)। २ नीति-विशेष (राज)।

भंस अक [भ्रंश्] १ नीचे गिरना। २ नष्ट होना। ३ स्खलित होना। भंसइ (हे ४, १७७)।

भंस पुं [भ्रंश] १ स्खलना। २ विनाश (सुपा ११३, सुर ४, २३०), 'सपाडइ सपयाभंसं' (कुप्र ४१)।

भंसग वि [भ्रंशक] विनाशक (वव १)।

भंसण न [भ्रंशन] ऊपर देखो, 'को णु उवाओ जिणधम्म-भंसणे होज्ज एईए' (सुपा ११३, सुर ४, १५)।

भंसणा स्त्री [भ्रंशना] ऊपर देखो (पण्ह २, ४ श्रावक ९५)।

भक्ख सक [भक्षय्] भक्षण करना, खाना। भक्खेइ (महा)। कर्म. भक्खिज्जइ (कुमा)। वकृ भक्खंत (स १०२)। हेकृ. भक्खिउं (महा)। कृ. भक्ख, भक्खेय, भक्खणिज्ज

भित्तूणं, भिंदिअ भिंदिऊण, भेत्तुआण, भेत्तण (रंभा, उत्त ६, २२, नाट—विक्र १७, पि ५८६, हे २, १४६, महा)। हेकृ भिंदित्तए, भित्तुं, भेत्तुं (पि ५७८, कप्प, पि ५७४)। कृ भिंदियव्व (पराह २, १), भेअव्व (मे १०, २६)।

भिंदण न [भेदन] खण्डन, विच्छेद (सुर १६, ५६)।

भिंदणया स्त्री [भेदना] ऊपर देखो (सुर १, ७२)।

भिंदिवाल (शौ) देखो भिंडिवाल (प्राकृ ८७)।

भिभल देखो भिब्भल (सुपा ८३, ३९५, पि २०९)।

भिंभलिय वि [विह्वलित] विह्वल किया हुआ, 'ता गज्जइ मायगो विकवणे य (? म) यपवाहभिंभलिओ' (धर्मवि ८०)।

भिंभसार पुं [भिम्भसार] देखो भंभसार (औप)।

भिंभा स्त्री [भिम्भा] देखो भंभा (राज)।

भिंभिसार पुं [भिम्भिसार] देखो भंभसार (ठा ९—पत्र ४५८, पि २०९)।

भिंभी स्त्री [भिम्भी] वाद्य-विशेष, ढक्का (ठा ६ टी—पत्र ४६१)।

भिक्ख सक [भिक्ष्] भीख मांगना, याचना करना। भिक्खइ (संबोध ३१)। वकृ भिक्खमाण (उत्त १४, २६)।

भिक्ख न [भैक्ष] १ भिक्षा, भीख। २ भिक्षा-समूह (ओघभा २१६, २१७), 'न कज्ज मम भिक्खेण' (उत्त २५, ४०)। °जीविअ वि [°जीविक] भीख से निर्वाह करनेवाला, भिखमगा (प्राकृ ९, पि ८४)।

भिक्ख° देखो भिक्खा (पि ९७, कुप्र १८३, धर्मवि ३८)।

भिक्खण न [भिक्षण] भीख माँगना, याचना (धर्मसं १०००)।

भिक्खा स्त्री [भिक्षा] भीख, याचना (उव, सुपा २७७, पिंग)। °यर वि [°चर] भिक्षुक (कप्प)। °यरिया स्त्री [°चर्या] भिक्षा के लिये पर्यटन (आचा, औप, ओघभा ७४, उवा)। °लाभिय पुं [°लाभिक] भिक्षुक-विशेष (औप)।

भिक्खाग } वि [भिक्षाक] भिक्षा माँगनेवाला, भिक्षा से शरीर-निर्वाह करनेवाला (ठा ४, १—पत्र १ ५, आचा २, १, ११, १, उत्त ५, २८, कप्प)।
भिक्खाय }

भिक्खु पुंस्त्री [भिक्षु] १ भीख से निर्वाह करनेवाला, साधु, मुनि, संन्यासी, ऋषि (आचा, सम २१, कुमा, सुपा ३४९, प्रासू १६६), 'भिक्खणसीलो य तओ भिक्खु त्ति निदरिसिओ समए' (धर्मसं १०००)। २ बौद्ध सन्यासी, 'कम्म चय न गच्छइ चउव्विह भिक्खुममयम्मि' (सुअनि ३१)। स्त्री. °णी (आचा २, ५, १, १, गच्छ ३, ३१, कुप्र १८८)। °पडिमा स्त्री [°प्रतिमा] साधु का अभिग्रह-विशेष, मुनि का व्रत-विशेष (भग, औप)। °पडिआ स्त्री [°प्रतिज्ञा] साधु का उद्देश, साधु के निमित्त, 'से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज पुण वत्थ जाणेज्जा असजए भिक्खु-पडियाए कीय वा धोय वा रत्त वा' (आचा २, ५, १, ४)।

भिक्खु ड देखो भिच्छुंड (राज)।

भिक्खोंड देखो भिच्छुंड (अणु २४)।

भिखारि (अप) वि [भिक्षाकारिन्] भिखारी, भीख माँगनेवाला (पिंग)।

भिगु देखो भिउ (पउम ४, ८६, ओघ ३७४)।

भिगुडि देखो भिउडि (पि १२४)।

भिच्च पु [भृत्य] १ दास, सेवक, नौकर (पाअ, सुर २, ६२, सुपा ३०७)। २ वि. अच्छी तरह पोषण करनेवाला (विपा १, ७—पत्र ७५)। ३ वि. भरणीय, पोषणीय (पराह १, २—पत्र ४०)। °भाव पु [°भाव] नौकरी (सुर ४, १५६)।

भिच्छ° देखो भिक्ख° (पि ९७)।

भिच्छा देखो भिक्खा (गा १६२)।

भिच्छुंड वि [दे भिक्षोण्ड] १ भिखारी, भिक्षा से निर्वाह करनेवाला। २ पुं. बौद्ध साधु (णाया १, १५—पत्र १९३)।

भिज्ज न [भेद्य] कर-विशेष, दराड-विशेष (विपा १, १—पत्र ११)।

भिज्जा देखो भिज्झा (ठा २, ३—पत्र ७१, सम ७१)।

भिज्जिय देखो भिज्झिय (भग)।

भिज्झा स्त्री [अभिध्या] गृद्धि, लोभ (कस)।

भिज्झिय वि [अभिध्यित] लोभ का विषय, सुन्दर (भग ६, ३—पत्र २५३)।

भिट्ट सक [दे] भेंटना। कर्म. 'बहुविहभिट्टणएहिं भिट्टिज्जइ लद्धमाणेहिं' (सिरि ६०१)।

भिट्टण न [दे] भेंट, उपहार, गुजराती में 'भेटणु' (सिरि ७५९, ६०१)।

भिट्टा स्त्री [दे] ऊपर देखो (सिरि ३९२)।

भिड सक [दे] भिड़ना—१ मिलना, सटना, सट जाना। २ लड़ना, मुठभेड़ करना। भिडइ (भवि), भिडति (सिरि ४५०)। वकृ भिडत (उप ३२० टी, भवि)।

भिडण न [दे] लड़ाई, मुठभेड़, 'सोंडीरमुहड-भिडणिक्कलंपड' (सुपा ५६६)।

भिडिय वि [दे] जिसने मुठभेड की हो वह, लड़ा हुआ (महा, भवि)।

भिणासि पुं [दे] पक्षि-विशेष (पराह १, १ पत्र ८)।

भिण्ण देखो भिन्न (गउड, नाट—चैत ३४)। °मरट्ठ (अप) पुं [°महाराष्ट्र] छन्द का एक भेद (पिंग)।

भित्त देखो भिच्च (संक्षि ५)।

भित्तग } न [दे. भित्तक] १ खण्ड, टुकड़ा। २ आधा हिस्सा (आचा २, ७, २, ८, ६; ७)।
भित्तय }

भित्तर न [दे] १ द्वार, दरवाजा (दे ६, १०५)। २ भीतर, अंदर (पिंग)।

भित्ति स्त्री [भित्ति] भीत (गउड, कुमा)। °संध न [°सन्ध] भीत—दीवार का सधान, 'जाणवि भित्तिसधे खणिय खत्त सुत्तिक्ख-सत्थेण' (महा)।

भित्तिरूव वि [दे] टंक से छिन्न (दे ६, १०५)।

भित्तिल न [भित्तिल] एक देव-विमान (सम ३८)।

भित्तु वि [भेत्तृ] भेदन करनेवाला (पव २)।

भित्तुं } देखो भिंद।
भित्तूण }

भिद देखो भिंद। भिदति (आचा २, १, ६, ९)। भवि. भिदिस्संति (आचा २, १, ६,

भट्टु (शौ) देखो भट्टारय (प्राकृ ९५)।

भट्ठ वि [भ्रष्ट] १ नीचे गिरा हुआ। २ च्युत, स्खलित (महा; द्र ४३)। ३ नष्ट (सुर ४, २१५, णाया १, ९)।

भट्ठ पुंन [भ्राष्ट्र] भर्जन-पात्र, भुनने का वर्तन (दे ५, २०), 'भट्टट्ठियचणगो विव सयणीए कीस तडफडसि' (सुर ३, १४८)।

भट्ठि } स्त्री [दे] धूलि-रहित मार्ग (ओघ भट्ठी } २३, २४ टी, भग ७, ६ टी—पत्र ३०७)।

भड पु [भट] १ योद्धा, लड़ाका (कुमा)। शूर, वीर (से ३, ६, णाया १, १)। ३ म्लेच्छों की एक जाति। ४ वर्ण-संकर जाति-विशेष, एक नीच मनुष्य-जाति। ५ राक्षस (हे १, १९५)। °खइआ स्त्री [°खादिता] दीक्षा-विशेष (ठा ४, ४)।

भडक्क पुंस्त्री [दे] आडम्बर, तडक-भडक, टीम-टाम, ठाठमाठ (सट्ठि ४४ टी)। स्त्री. °क्का (उव)।

भडग पु [भटक] १ अनार्य देश-विशेष। २ उस देश में रहनेवाली एक म्लेच्छ-जाति (पण्ह १, १—पत्र १४, इक)। देखो भड।

भडारय (अप) देखो भट्टारय (भवि)।

भडित्त न [भटित्र] शूल-पक्व मांसादि, कबाब (स २६२, कुप्र ४३२)।

भडिल वि [दे] संबोधन-सूचक शब्द (संक्षि ४७)।

भण सक [भण्] कहना, बोलना, प्रतिपादन करना। भणइ, भणेइ (हे ४, २३९, कुमा)। कर्म. भण्णइ, भण्णए, भणिज्जई (पि ५४८, षड्, पिंग)। भूका. भणीअ (कुमा)। भवि. भणिहि, भणिस्सं (कुमा)। वकृ. भणत, भणमाण, भणेमाण (कुमा, महा, सुर १०, ११४)। कवकृ भण्णत, भणिज्जत, भणिज्जमाण, भणीअत, भण्णमाण (कुमा, पि ५४८, गा १४५)। संकृ. भणिअ, भणिउ, भणिऊण (कुमा, पि ३४९)। हेकृ भणिउ°, भणिउ (पउम ६४, १३, पि ५७६)। कृ. भणिअव्व, भणेयव्व (अजि ३८, सुपा ६०८)। कवकृ. भन्नत, भन्नमाण (सुर २, १६१, उप पृ २३, उप १०३१ टी)।

भणग वि [भण, °क] प्रतिपादन करनेवाला (णंदि)।

भणण न [भणन] कथन, उक्ति (उप ५५३, सुपा २८३, संबोध ३)।

भणाविअ वि [भाणित] कहलाया हुआ (सुपा ३५८)।

भणिअ वि [भणित] कथित (भग)।

भणिइ स्त्री [भणिति] उक्ति, वचन (सुर ६, १४५, सुपा २१४, धर्मवि ५८)।

भणिर वि [भणितृ] कहनेवाला, वक्ता (गा २९७, कुमा, सुर ११, २४४, श्रा १६)। स्त्री. °री (कुमा)।

भणेमाण देखो भण।

भण्ण सक [भण्] कहना, बोलना। भण्णइ (धात्वा १४७)।

भण्णमाण देखो भण = भण्।

भत्त पुंन [भक्त] १ आहार, भोजन। २ अन्न, नाज (विपा १, १, ठा २, ४, महा)। ३ ओदन, भात (प्रामा)। ४ लगातार सात दिनों का उपवास (संबोध ५८)। ५ वि. भक्ति-युक्त, भक्तिमान्, 'सा सुलसा बालप्पभिर्ति चेव हरिणेगमेसीभत्तया यावि होत्था' (अंत ७, उप पृ ६६, महा, पिंग)। °कहा स्त्री [°कथा] आहार-कथा, भोजन-संबन्धी वार्त्ता (ठा ४, ४)। °च्छद, °छद पु [°च्छन्द] रोग-विशेष, भोजन की अरुचि, 'कच्छू जरो खासो सासो भत्तच्छदो अक्खिदुक्खं' (महा, महा—टि)। °पच्चक्खाण न [°प्रत्याख्यान] आहार-त्याग-रूप अनशन, अनशन का एक भेद, मरण का एक प्रकार (ठा २, ४—पत्र ९४, औप ३०, २)। °परिण्णा, °परिन्ना स्त्री [°परिज्ञा] १ वही पूर्वोक्त अर्थ (भत्त १६९, १०, पव १५७)। २ ग्रन्थ-विशेष (भत्त १)। °पाणय न [°पानक] आहार-पानी, खान-पान (विपा १, १)। °वेला स्त्री [°वेला] भोजन-समय (विपा १, १)।

भत्त वि [भूत] उत्पन्न, संजात (हे ४, ६०)।

भत्ति देखो भत्तु (पिंग)।

भत्ति स्त्री [भक्ति] १ सेवा, विनय, आदर (णाया १, ८—पत्र १२२, उव, औप, प्रासू २९)। २ रचना (विसे १६३१, औप, सुपा ५२)। ३ एकाग्र-वृत्ति-विशेष (श्राव २)। ४ कल्पना, उपचार (धर्मसं ७४२)। ५ प्रकार, भेद (ठा ९)। ६ विच्छित्ति-विशेष (औप)। ७ अनुराग (धर्म १)। ८ विभाग। ९ अवयव। १० श्रद्धा (हे २,१५९)। °मंत, °वंत वि [°मत्] भक्तिवाला, भक्त (पउम ९२, २८, उव, सुपा १६०, ६ २, १५९, भवि)।

भत्तिज्ज पुं [भ्रातृव्य] भतीजा, भाई का पुत्र (सिरि ७१६, धर्मवि १२७)।

भत्ती नीचे देखो।

भत्तु पुं [भर्तृ] १ स्वामी, पति, भतार (णाया १, १६—पत्र २०७), 'णववहू उवरतभत्तुया' (णाया १, ९, पाअ, स्वप्न ५६)। २ अधिपति, अध्यक्ष। ३ राजा, नरेश। ४ वि. पोषक, पोषण करनेवाला। ५ धारण करनेवाला (हे ३, ४४, ४५)। स्त्री—भत्ती (पिंग)।

भत्तोस न [भक्तोष] १ भुना हुआ अन्न (पचा ५, २९, प्रभा १५)। २ सुखादिका, खाद्य-विशेष (पव ३८)।

भत्थ पुंस्त्री [दे] भाथा, तूणीर, तरकस, 'अह धारोवियचावो पिट्ठे दढवन्वभत्थओ अभओ' (धर्मवि १४६)।

भत्था स्त्री [भस्त्रा] चमड़े की धौंकनी, भाथी (उप ३२० टी, धर्मवि १३०)।

भत्थिअ वि [भर्त्सित] तिरस्कृत (सम्मत्त १८९)।

भत्थी स्त्री [भस्त्री] भाथी, चमड़े की धौंकनी, 'भत्थि व्व अनिलपुण्णा वियसियमुदर' (कुप्र २९६)।

भद सक [भद्] १ सुख करना। २ कल्याण करना (विसे ३४३९)। वकृ. भदत, नीचे देखो।

भदत वि [भदन्त] १ कल्याण-कारक। २ सुख-कारक। ३ पूज्य, पूजनीय (विसे ३४३९, ३४७४)।

भद्द न [दे] आमलक, आँवला-फल-विशेष (दे ६, १००)।

भद्द } न [भद्र] १ मंगल, कल्याण, 'भद्दं भद्दअ } मिच्छादसणसमूहमइअस्स अमयसारस्स जिणवयणस्स भगवओ' (सम्मत्त

(पउम ५, २६३)। ६ सगर चक्रवर्त्ती का एक पुत्र (पउम ५, १७५)। ७ दमयती का पिता (कुप्र ४८)। ८ एक कुल-पुत्र (कुप्र १२२)। ६ गुजरात का चालुक्य-वशीय एक राजा—भीमदेव (कुप्र ४)। १० हस्तिनापुर नगर का एक कूटग्राह—राज-पुरुष (विपा १, २)। °एव पुं [°देव] गुजरात का एक चालुक्य राजा (कुप्र ५)। °कुमार पुं [°कुमार] एक राज-पुत्र (धम्म)। °प्पभ पु [°प्रभ] राक्षस-वश का एक राजा, एक लका-पति (पउम ५, २५६)। °रह पु [°रथ] एक राजा, दमयंती का पिता (कुप्र ४८)। °सेण पुं [°सेन] १ एक पाण्डव, भीम (णाया १, १६)। २ एक कुलकर पुरुष (सम १५०)। °विलि पु [°विलि] अग-विद्या का जानकार पहला रुद्र पुरुष (विचार ४७३)। °ासुर न [°ासुर] शास्त्र-विशेष (अणु)।

भीमासुरक्क न [भीमासुरोक्त °रीय] एक जैनेतर प्राचीन शास्त्र (अणु ३६)।

भीरु } वि [भीरु, °क] डरपोक (चेइय भीरुअ } ६६, गउड, उत्त २७, १०, अभि ८२)।

भीस सक [भीषय्] डराना। भीसइ (धात्वा १४७), भीसेइ (प्राकृ ६४)।

भीसण वि [भीषण] भयंकर, भय-जनक (जी ४६, सण, पाअ)।

भीसय देखो भेसग (राज)।

भीसाव देखो भीस। भीसावेइ (धात्वा १४७)।

भीसिद (शौ) वि [भीषित] भय-भीत किया हुआ, डराया हुआ (नाट—माल ५६)।

भीह अक [भी] डरना। भीहइ (प्राकृ ६४)।

भुअ देखो भुज। भुअइ, भुअए (षड)।

भुअ न [दे] भूर्ज-पत्र, वृक्ष-विशेष की छाल (दे ६, १०६)। °रुक्ख पुं [°वृक्ष] वृक्ष-विशेष, भूर्जपत्र का पेड़ (पण्ण १—पत्र ३४)। °वत्त न [°पत्र] भोजपत्र (गउड ६४१)।

भुअ पुंस्त्री [भुज] १ हाथ, कर (कुमा)। २ गणित-प्रसिद्ध रेखा-विशेष (हे १, ४)। स्त्री. °आ (हे १, ४, पिंग, गउड, से १, ३)। °परिसप्प पुंस्त्री [°परिसर्प] हाथ से चलनेवाला प्राणी, हाथ से चलनेवाली सर्प-जाति (जी २१, पण्ण १, जीव २)। स्त्री. °प्पिणी (जीव २)। °मूल न [°मूल] कक्षा, काँख (पाअ)। °मोयग पु [°मोचक] रत्न की एक जाति (भग औप, उत्त ३६, ७६, तंदु २०)। °सप्प पु [°सर्प] देखो °परिसप्प (पव १५०)। °ाळ वि [°वत्] बलवान् हाथवाला (सिरि ७६६)।

भुअअ देखो भुअग (गउड, पिंग, से ७, ३६, पाअ)।

भुअइंद पु [भुजगेन्द्र] १ श्रेष्ठ सर्प (गउड)। २ शेषनाग, वासुकि (अच्चु २७)। °वुरेस पु [°पुरेश] श्रीकृष्ण (अच्चु २७)।

भुअईसर } पु [भुजगेश्वर] ऊपर देखो भुअएसर } (पण्ह १, ४—पत्र ७८, अच्चु ३६)। °णअरणाह पुं [°नगरनाथ] श्री-कृष्ण (अच्चु ३६)।

भुअग पु [भुजग] १ सर्प, साँप (से ५, ६०, गा ६४०, गउड, सुर २, २४५, उव, महा, पाअ)। २ विट, रंडीबाज, वेश्या-गामी (कुमा, वज्जा ११६)। ३ जार, उपपति (कप्पू)। ४ द्यूतकार, जुआड़ी (उप पृ २५२)। ५ चोर, तस्कर, 'देव सलोत्तओ चेव मायापओयकुसलो वाणिययवेसधारी गहिओ महाभुअगो' (स ४३०)। ६ बदमाश, ठग, 'तावसवेसधारिणो गहियनलियापओग-खग्गा विसेणकुमारसतिया चत्तारि महाभुयग त्ति' (स ५२४)। °किच्चि स्त्री [°कृत्ति] कंचुक (गा ६४०)। °पआत (अप) देखो °प्पजाय (पिंग)। °प्पजाय न [°प्रयात] १ सर्प-गति। २ छन्द-विशेष (भवि)। °राअ पु [°राज] शेषनाग (त्रि ८२)। °वइ पु [°पति] शेषनाग (गउड)। °ापआअ (अप) देखो °प्पजाय (पिंग)।

भुअंगम पुं [भुजगम] १ सर्प, साँप (गउड १७८, पिंग)। २ स्वनाम-ख्यात एक चोर (महा)।

भुअंगिणी } स्त्री [भुजङ्गी] १ विद्या-विशेष भुअंगी } (पउम ७, १४०)। २ नागिन (सुपा १८१, भत्त ११७)।

भुअग पुं [भुजग] १ सर्प, साँप (सुर २, २३६, महा, जी ३१)। २ एक देव-जाति, नाग-कुमार देव (पण्ह १, ४)। ३ वानव्यतर देवों की एक जाति, महोरग (इक)। ४ रंडीबाज, 'म कुट्ठणिव्व भुयगं तुमं पयारेसि अलियवयणेहिं' (कुप्र ३०६)। ५ वि. भोगी, विलासी (णाया १, १ टी—पत्र ४, औप)। °परिरिंगिअ न [परिरिङ्गित] छन्द-विशेष (अजि १६)। °वइ स्त्री [°वती] एक इन्द्राणी, अतिकाय नामक महोरगेन्द्र की एक अग्र-महिषी (इक, ठा ४, १, णाया २)। °वर पुं [°वर] द्वीप-विशेष (राज)।

भुअग वि [भोजक] पूजक, सेवा-कारक (णाया १, १ टी—पत्र ४, औप, अत)।

भुअगा स्त्री [भुजगा] एक इन्द्राणी, अतिकाय नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १, णाया २, इक)।

भुअगीसर देखो भुअईसर (तदु २०)।

भुअण देखो भुवण (चड, हास्य, १२२, पिंग, गउड)।

भुअप्पइ } भुअप्फइ } देखो बहस्सइ (पि २१२, षड्)। भुअस्सइ }

भुआ देखो भुअ = भुज।

भुइ स्त्री [भृति] १ भरण। २ पोषण। ३ वेतन। ४ मूल्य (हे १, १३१, षड्)।

भुउडि देखो भिउडि (पि १२४)।

भुंगल न [दे] वाद्य-विशेष (सिरि ४१२)।

भुंज सक [भुज्] १ भोजन करना। २ पालन करना। ३ भोग करना। ४ अनुभव करना। भुंजइ (हे ४, ११०, कस; उवा)। भुंजेज्जा (कप्प), 'निअमुअ भुंजमु सुहेण' (सिरि १०४४)। भूका भुंजित्था (पि ५१७)। भवि भुंजिही, भोक्खसि, भोक्खामि, भोक्खसे, भोच्छं (पि ५३२, कप्प, हे ३, १७१)। कर्म भुज्जइ, भुंजिज्जइ (हे ४, २४६)। वकृ. भुंजत, भुंजमाण, भुंजेमाण, भुंजाण (आचा, कुमा, विपा १, २, सम ३६, कप्प, पि ५०७, धर्मवि १२७)। कवकृ. भुज्जंत (सुपा ३७५)। सकृ भुंजिअ, भुंजिआ, भुंजिऊण, भुंजिऊण, भुंजित्ता, भुंजित्तु, भोच्चा, भोत्तुं, भोत्तूण (पि ५६१, सूअ १, ३, ४, २, सण, पि ५८५,

भमाइअ वि [भ्रमित] घुमाया हुआ, फिराया हुआ (से ३, ६१)।

भमाड सक [भ्रमय्] घुमाना, फिराना। भमाडेइ (हे ४, ३०), भमाडेसु (सुपा ११४)। वकृ. भमाडेंत (पउम १०६, ११)।

भमाड देखो भम = भ्रम्। भमाडइ (हे ४, १६१, भवि)।

भमाड पुं [भ्रम] भ्रमण, घूमना, चक्कर (ओघभा २६ टी, ८३ टी)।

भमाडण न [भ्रमण] घुमाना (उप पृ २७८)।

भमाडिअ देखो भमडिअ (कुमा)।

भमाडिअ वि [भ्रमित] घुमाया हुआ, फिराया हुआ (पउम १६, २५)।

भमाव देखो भमाड = भ्रमय्। भमावइ, भमावेइ (पि ५५३, हे ४, ३०)।

भमास [दे] देखो भमस (दे ६, १०१, पाअ)।

भमि स्त्री [भ्रमि] १ आवर्त्त, पानी का चक्राकार भ्रमण (अच्चु ६३)। २ चित्त-भ्रम करने की शक्ति (विसे १६५३)। ३ रोग-विशेष, चक्कर, 'भमिपरिभमियसरीरो' (हम्मीर २८)।

भमिअ देखो भमडिअ (जी ४८, भवि)। ३ न. भ्रमण, 'भमिभ्रमणिर्कंतदेहलीदेस' (गा ५२५)।

भमिअ देखो भमाइअ (पाअ)।

भमिअव्व } देखो भम = भ्रम्।
भमिआ }

भमिर वि [भ्रमितृ] भ्रमण करनेवाला (हे २, १४५, सुर १, ५५, ३, १८)।

भमुह न [भ्रू] नीचे देखो, 'दीहाइं भमुहाइं' (आचा २, १३, १७)।

भमुहा स्त्री [भ्रू] भौं, आँख के ऊपर की रोम-राजी (पउम ३७, ५०, औप, आचा, पाअ)।

भम्म } देखो भम = भ्रम। भम्मइ (प्राकृ भम्मड } ६६), भम्मसु (गा ४१५, ४४७)। भम्मडइ (हे ४, १६१)। भम्मडेइ (कुमा)।

भम्मर (अप) देखो भमर (पिंग)।

भय देखो भद। वकृ देखो भयंत = भदंत।

भय अक [भज्] १ सेवा करना। २ विकल्प से करना। ३ विभाग करना। ४ ग्रहण करना। भयइ, भअइ (सम्म १२४, कुमा), भए, भएज्जा (बृह १), भयति (विसे १६६०), 'तम्हा भय जीव वेरग्ग' (श्रु ६१)। वकृ. भयत, भयमाण (विसे ३४४६, सूअ १, २, २, १७)। कवकृ. 'सव्वत्तुभदमाणसुहेहिं' (कप्प)। संकृ. भइत्ता (ठा ६)। कृ भइअ, भइअव्व, भएयव्व, भज्ज, भयणिज्ज (विसे ६१८, २०४६, उत्त ३६, २३, २४, २५, कम्म ५, ११, विसे ६१५, उप ६०४, विसे ३२०२, ७४८, १८१, जीवम १४५, पंच ५, ८, विसे ६१६, जीवस १४७)।

भय न [भय] डर, त्रास, भीति (आचा, णाया १, १, गा १०२, कुमा, प्रासू १६, १७३)। °अर वि [°कर] भय-जनक (से ५, ४४, ११, ७५)। °जणणी स्त्री [°जननी] १ त्रास उत्पन्न करनेवाली (बृह १)। २ विद्या-विशेष (पउम ७, १४१)। °वाह पुं [°वाह] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति (पउम ५, २६३)।

भय देखो भव (उव, कुमा, सण, सुपा ४२०, गउड)।

भय देखो भग (औप, पिंग)।

भयंकर वि [भयङ्कर] १ भय-जनक, भीषण (हे ४, ३३१, सण, भवि)। २ प्राणि-वध, हिंसा (पण्ह १, १)।

भयत देखो भय = भज्।

भयंत देखो भत = भगवत् (सूअ १, १६, ६)।

भयंत देखो भदंत (ओघ ४८, उत्त २०, ११, औप)।

भयंत देखो भत = भयान्त (विसे ३४४६, ३४५३, ३३५४)।

भयंत देखो भत = भवान्त (विसे ३४५४, औप)।

भयत वि [भयत्र] भय से रक्षा करनेवाला (औप, सूअ १, १६, ६)।

भयंतु वि [भयत्रातृ] भय से रक्षा करनेवाला 'धम्ममाइक्खणे भयंतारो' (सूअ १, ४, १, २५)।

भयतु वि [भक्तृ] सेवक, सेवा करनेवाला (औप)।

भयक } पु [भृतक] १ नौकर, कर्मकर
भयग } (ठा ४, १, २)। २ त्रि. पोषित (पण्ह १, २, णाया १, २)।

भयण न [भजन] १ सेवा (राज)। २ विभाग (सम्म ११३)। ३ पु लोभ (सूअ १, ६, ११)।

भयण देखो भवण (नाट—चैत ४०)।

भयणा स्त्री [भजना] १ सेवा (निचू १)। २ विकल्प (भग, सम्म १२४, द ३१, उव)।

भयप्पइ } देखो बहस्सइ (हे २, १३७,
भयप्फइ } षड्)।

भयवग्गाम पु [दे] मोढेरक, गुजरात का एक गाँव (दे ६, १०२)।

भयाणय वि [भयानक] भयकर, भय-जनक (स १२१)।

भयालि पु [भयालि] भारतवर्ष के भावी अठारहवें जिनदेव का पूर्व-भवीय नाम (सम १५४)। देखो सयालि।

भयालु वि [भीरु] भीरु, डरपोक (दे ६, १०७, नाट)।

भयावण (अप) देखो भयाणय (भवि)।

भयावह वि [भयावह] भय-जनक, भय-कारक (सूअ १, १३, २१)।

भर सक [भृ] १ भरना। २ धारण करना। ३ पोषण करना। भरइ (भवि, पिंग), भरसु (कम्म ४, ७६)। वकृ. भरंत (भवि)। कवकृ भरत, भरेंत, भरिज्जत (से १, ५८, ४, ८, १, ३७)। संकृ भरेऊणं (आक ६)। कृ भरणिज्ज, भरणीअ, भत्तव्व, भरेअव्व (प्राप्र, नाट राज, से ६, ३)।

भर सक [स्मृ] स्मरण करना, याद करना। भरइ (हे ४, ७४, प्राप्र)। वकृ भरत (गा ३८१, भवि)। संकृ भरिअ, भरिऊणं (कुमा)। प्रयो, वकृ. भरावंत (कुमा)।

भर पुन [भर] १ समूह, प्रकर, निकर, जइअव्व तह एगागिणावि भीमारिदुट्ठभरे'

भुल्ल वि [भ्रष्ट] भूला हुआ, 'कामधम्मो किं पभमेसि भुल्लो' (श्रु १५३, सुपा १२४, ५१६, कप्पू)।

भुल्लविअ वि [भ्रंशित] भ्रष्ट किया हुआ (कुमा)।

भुल्लिर वि [भ्रंशिन्] भूलनेवाला, 'मयण-अभुल्लिरदुल्ललियभल्लिसुमहल्लतिक्खभल्लीहिं' (सुपा १२३)।

भुल्लुकी [दे] देखो भल्लुकी (पाअ)।

भुव देखो हुव = भू। भुवइ (पि ४७५)। भुवदि (शौ) (धात्वा १४७)। भूका. भुवि (भग)।

भुव देखो भुअ = भुज (भवि)।

भुवइद देखो भुअइद (से ५, ७१)।

भुवण न [भुवन] १ जगत्, लोक (जी १, सुपा २१, कुमा २, १५)। २ जीव, प्राणी, 'भुवणाभयदाणललिअम्म' (कुमा)। ३ आकाश (प्रासू १००)। °क्खोहणी स्त्री [°क्षोभनी] विद्या-विशेष (सुपा १७४)। °गुरु पु [°गुरु] जगत् का गुरु (सुपा ७५)। °नाह पु [°नाथ] जगत् का त्राता (उप पृ ३५७)। °पाल पुं [°पाल] विक्रम की बारहवीं शताब्दी का गोपगिरि का एक राजा (मुणि १०८९६)। °बंधु पुं [°बन्धु] १ जगत् का बन्धु। २ जिनदेव (उप २११ टी)। °सोह पुं [°शोभ] सातवें बलदेव के दीक्षक एक जैन मुनि (पउम २०, २०५)। °लंकार पु [°लंकार] रावण का एक पट्ट-हस्ती (पउम ८२, १११)।

भुवणा स्त्री [भुवना] विद्या विशेष (पउम ७, १४०)।

भुश्का (मा) देखो भुक्खा (प्राकृ १०१)।

भुस देखो बुस, 'तुसरासी इवा भुसरासी इवा' (भग १५)।

भुसुंढि स्त्री [दे. भुशुण्डि] शस्त्र-विशेष (सण)।

भू देखो भुव = भू। भोमि (पि ४७६)। सक्त भोत्ता, भोदूण (शौ) (हे ४, २७१)।

भू स्त्री [भ्रू] भौं, आँख के ऊपर की रोम-राजि, 'रम्मा भूसन्नाए' (सुपा ५७९, श्रा १४, सुपा २२६, कुमा)।

भू स्त्री [भू] १ पृथिवी, धरती (कुमा, कुप्र ११६, जीवस २७६, सिरि १०४४)। २ पृथ्वीकाय, पार्थिव शरीरवाला जीव (कम्म ४, १०, १९, ३६)। °आर पुं [°दार] शूकर, सूअर (किरात ९)। °कंत पु [°कान्त] राजा, नर-पति (श्रा २८)। °गोल पु [°गोल] गोलाकार भूमण्डल (कप्पू)। °चंद पु [°चन्द्र] पृथिवी का चन्द्र, भूमि-चन्द्र (कप्पू)। °चर वि [°चर] भूमि पर चलने फिरनेवाला मनुष्य आदि (उप ९८६ टी)। °च्छत्त पुन [°च्छत्र] वनस्पति-विशेष (दे १, ६४)। °तणग देखो °यणय (राज)। °धण पुं [°धन] राजा (श्रा २८)। °धर पुं [°धर] १ राजा, नरपति (धर्मवि ३)। २ पर्वत, पहाड़ (धर्मवि ३, कुप्र २६४)। °नाह पुं [°नाथ] राजा (उप ९८६ टी, धर्मवि १०७)। °मह पुं [°मह] अहोरात्र का सत्ताईसवाँ मुहूर्त्त (सम ५१)। °यणय पुन [°तृणक] वनस्पति-विशेष (पणण १—पत्र ३४)। °रुह पु [°रुह] वृक्ष, पेड़ (गउड, पुप्फ ३९२, धर्मवि १३८)। °व पु [°प] राजा (उप ७२८ टी, ती ३, श्रु ६६, काल)। °वइ पुं [°पति] राजा (सुपा ३६, पिंग)। °वाल पु [°पाल] १ राजा (गउड, सुपा ५६०)। २ व्यक्ति-वाचक नाम (भवि)। °वित्त पु [°वित्त] राजा (श्रा २८)। °वीढ न [°पीठ] भूतल, भूमि-तल (सुपा ५९३)। °हर देखो °धर (सण)।

भूं } पु [भूयस्] कर्म-बन्ध का एक
भूअ } प्रकार (कम्म ५, २२, २३)। °गार पुं [°कार] वही अर्थ (कम्म ५, २२)। देखो भूओगार।

भूअ पुं [दे] यन्त्रवाह, यन्त्र-वाहक पुरुष (दे ६, १०७)।

भूअ वि [भूत] १ वृत्त, सजात, बना हुआ। २ अतीत, गुजरा हुआ (षड्, पिंग)। ३ प्राप्त, लब्ध (णाया १, १—पत्र ७४)। ४ समान, सदृश, तुल्य, 'तसभूएहिं' (सूअ २, ७, ७, ८ टी)। ५ वास्तविक, यथार्थ, सत्य, 'भूअत्थेहिं चिअ गुणेहिं' (गउड), 'भूयत्थयसत्थगयी' (सम्मत्त १३९)। ६ विद्यमान, 'एव जह स द्दव्यो सतो भूमो तदन्नहाभूमो' (विसे २२५१)। ७ उपमा, औपम्य। ८ तादर्थ्य, तदर्थ-भाव, 'ओवम्मे तादत्थे व हुज्ज एसित्थ भूयसद्दो त्ति' (श्रावक १२४)। ९ न. प्रकृत्यर्थ, 'उम्मत्तगभूए' (ठा ५, १)। १० पुं. एक देव-जाति (पणह १, ४, इक, णाया १, १—पत्र ३९)। ११ पिशाच (पाअ; दे ४, २५)। १२ समुद्र-विशेष (देवेन्द्र २५५)। १३ द्वीप-विशेष (सुज्ज १९)। १४ पुन जन्तु, प्राणी, 'पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं', 'भूयाणि वा जीवाणि वा' (आचा १, ६, ५, ४, १, ७, २, १, २, १,१,११, पि ३६७), 'हरियाणि भूआणि विलंवगाणि' (सूअ १, ७, ८, उवर १५९)। १५ पृथिवी आदि पाँच द्रव्य, महाभूत (स १६५), 'किं मन्ने पंच भूया' (विसे १६८९)। १६ वृक्ष, पेड़, वनस्पति (आचा १, १, ६, २)। °इंद पुं [°इन्द्र] भूत-देवों का इन्द्र (पि १६०)। °ग्गह पु [°ग्रह] भूत का आवेश (जीव ३)। °ग्गाम पु [°ग्राम] जीव-समूह (सम २६)। °त्थ वि [°ार्थ] यथार्थ, वास्तविक (गउड, पउम २८, १४)। °दिण्णा देखो °दिन्ना (पडि)। °दिन्न पुं [°दिन्न] १ एक जैन आचार्य (णदि)। २ एक चाण्डाल-नायक (महा)। °दिन्ना स्त्री [°दिन्ना] १ एक अन्त-कृत् स्त्री (अंत)। २ एक जैन साध्वी, महर्षि स्थूलभद्र की भगिनी (कप्प)। °मंडलपविभत्ति न [°मण्डलप्रविभक्ति] नाट्य-विधि का एक भेद (राज)। °लिवि स्त्री [°लिपि] लिपि-विशेष (सम ३५)। °वडिंसा स्त्री [°ावतंसा] १ एक इन्द्राणी (जीव ३)। २ एक राजधानी (दीव)। °वाइ, °वाइय, °वादिय पु [°वादिन्, °वादिक] १ एक देव-जाति (इक, पणह १, ४, औप)। २ वि भूत ग्रह का उपचार करनेवाला, मन्त्र-तन्त्रादि का जानकार (सुख १, १४)। °वाय पु [°वाद] १ यथार्थवाद। २ दृष्टिवाद, बारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ (ठा १०—पत्र ४९१)। °विज्जा, °वेज्जा स्त्री [°विद्या] आयुर्वेद का एक भेद, भूत निग्रह-विद्या (विपा १, ७—पत्र ७५ टी)। °णंद पुं [°नन्द] १ नागकुमार देवों का दक्षिण दिशा का इन्द्र

वि [°जिन] रागादि को जीतनेवाला; 'सासणं जिणाण भवजिणाणं' (सम्म १)। °ट्ठिइ स्त्री [°स्थिति] १ देव आदि योनि मे उत्पत्ति की काल-मर्यादा (ठा २, ३)। २ संसार मे अवस्थान (पंचा १)। °त्थ वि [°स्थ] संसार मे स्थित (ठा २, १)। °त्थकेवलि वि [°स्थकेवलिन्] जीवन्मुक्त (सम्म ८६)। °धारणिज्ज न [°धारणीय] जीवन-पर्यन्त संसार में धारण करने योग्य शरीर (भग, इक)। °पच्चइय वि [°प्रत्ययिक] १ नरकादि योनि-हेतुक। २ न. अवधिज्ञान का एक भेद (ठा २, १, सम १४५)। °भूइ पुं [°भूति] संस्कृत का एक प्रसिद्ध कवि (गउड)। °सिद्धिय, °सिद्धीअ वि [°सिद्धिक] उसी जन्म मे या बाद के किसी जन्म में मुक्त होनेवाला, मुक्ति-गामी (सम २, पएण १८, भग, विसे १२३०, जीवस ७५, श्रावक ७३, ठा १, विसे १२२६)। °ाभिणंदि, °ाभिनंदि, °हिनंदि वि [°ाभिनन्दिन्] ससार को पसंद करनेवाला, ससार को अच्छा माननेवाला (राज, सबोध ८, ५३)। °ोवग्गाहि न [°ोपग्राहिन्] कर्म-विशेष (धर्मस १२६१)।

भव देखो भव्व (कम्म ४, ६)।

भव } पुं [भवत्] तुम, आप (कुमा, भवंत } हे २, १७४)।

भवत देखो भव = भू।

भवॅं (अप) भम = भ्रम्। भवंइ (सण)। वकृ. भवंत (भवि)। संकृ. भवँत्तु (सण)।

भवॅण (अप) देखो भमण (भवि)।

भवण न [भवन] १ उत्पत्ति, जन्म (धर्मसं १७२)। २ गृह, मकान, वसति (पाअ, कुमा)। ३ असुरकुमार आदि देवों का विमान (पएण २)। ४ सत्ता (विसे ६६)। °वइ पुं [°पति] एक देव-जाति (भग)। °वासि पु [°वासिन्] वही पूर्वोक्त अर्थ (ठा १०, औप)। °वासिणी स्त्री [°वासिनी] देवी विशेष (पएण १७, महा ६८, १२)। °ाहिव पु [°ाधिप] एक देव-जाति (सुपा ६२०)।

भवमाण देखो भव = भू।

भवर देखो भमर (चंड)।

भवाणी स्त्री [भवानी] शिव-पत्नी, पार्वती (पाअ, समु १५७)। °कंत पुं [°कान्त] महादेव (पिंग)।

भवारिस वि [भवादृश] तुम्हारे जैसा, आपके तुल्य (हे १, १४२, चंड, सुपा २७६)।

भवि पुं [भविन्] भव्य जीव, मुक्ति-गामी प्राणी (भवि)।

भविअ देखो भव = भू।

भविअ वि [भव्य] १ सुन्दर (कुमा)। २ श्रेष्ठ, उत्तम (सबोध १)। ३ मुक्ति-योग्य, मुक्ति-गामी (पएण १, उव)। ४ भावी, होनेवाला (हे २, १०७, षड्)। देखो भव्व = भव्य।

भविअ वि [भविक] १ मुक्ति-योग्य, मुक्ति-गामी। २ संसारी, संसार में रहनेवाला (सुर ४, ८०)।

°भविअ वि [°भविक] भव-संबन्धी (सण)।

भवित्ती स्त्री [भवित्री] होनेवाली (पिंग)।

भवियव्व देखो भव = भू।

भवियव्वया स्त्री [भवितव्यता] नियति, अवश्यभावी, होनी (महा)।

भविल वि [भविल] निष्ठुर (दश० अगस्त्य चू० पत्र० १६८, सूत्र० ३२६)।

भविस (अप) देखो भवीस। °त्त, °यत्त पुं [°दत्त] एक कथा-नायक (भवि)।

भविस्स पुं [भविष्य] १ भविष्य काल, आगामी समय (पउम ३५, ५६, पि ५६०)। २ वि. भविष्य काल मे होनेवाला, भावी (णाया १, १६—पत्र २१४, पउम ३५, ५६, सुर १, १३५, कप्पू)।

भवीस (अप) ऊपर देखो (भवि)।

भव्व वि [भव्य] १ सुन्दर, 'सव्वं भव्वं करिस्सामि' (सुपा ३३६)। २ उचित, योग्य (विसे २८, ४४)। ३ श्रेष्ठ, उत्तम (वज्जा १८)। ४ होता, वर्तमान, 'एयं भूयं वा भव्वं वा भविस्सं वा' (णाया १, १६—पत्र २१४, कप्प, विसे १३४२)। ५ भावी, होनेवाला (विसे ५८, पंच २, ८)। ६ मुक्ति-योग्य, मुक्ति-गामी (विसे १८२२, ३, ४, ५, दं १)। °सिद्धीय देखो भव-सिद्धीय, 'पज्जत्तापज्जत्ता सुहुमा किचहिया भव्व-सिद्धीया' (पच २, ७८)।

भव्व पुं [दे] भागिनेय, भानजा (दे ६, १००)।

भस सक [भष्] भूँकना, श्वान का बोलना। भसइ (हे ४, १८६, षड्—पत्र २२२), भसति (सिरि ६२२)।

भसग पुं [भसक] एक राज-कुमार, श्रीकृष्ण के बडे भाई जरत्कुमार का एक पौत्र (उव)।

भसण देखो भिसण। भसणेमि (पि ५५६)।

भसण न [भषण] १ कुत्ते का शब्द (श्रा २७)। २ पुं श्वान, कुत्ता (पाअ, सिरि ६२२)।

भसणअ (अप) वि [भषितृ] भूँकनेवाला, 'सुणउ भसणउ' (हे ४, ४४३)।

भसम पु [भस्मन्] १ ग्रह-विशेष, 'भस-मग्गहपीडियं इमं तित्थं' (सढ्ढि ४२ टी)। २ राख, भभूत, 'भसमुद्धूलियगत्तो' (महा, सम्मत ७६)। देखो भास = भस्मन्।

भसल देखो भमर (हे, १, २४४, २५४, कुमा; सुपा ४, (पिंग)।

भसुआ स्त्री [दे] शिवा, शृगाली, सियारिन (दे ६, १०१, पाअ)।

भसुम देखो भसम (प्राकृ ३७)।

भसेल्ल पुन [दे] धान्य आदि का तीक्ष्ण अग्र भाग, 'सालिभसेल्लसरिसा से केसा' (उवा)।

भसोल न [दे भसोल] एक नाट्य-विधि (राज)।

भरथ (मा) देखो भट्ट (षड्)।

भरथालय (मा) देखो भट्टारय (षड्)।

भस्स देखो भंस = भ्रंश्। भस्सइ (प्राकृ ७६)। वकृ. भस्संत (काल)।

भस्स पुं [भस्मन्] १ ग्रह-विशेष। २ राख (हे २, ५१)।

भस्सिअ वि [भस्मित] जलाकर राख किया हुआ, भस्म किया हुआ (कुमा)।

भा अक [भा] चमकना, दीपना, प्रकाशना, 'भा भाजो वा दित्तीए' (विसे ३४४७)। भाइ (कप्पू), भासि (गउड)। वकृ देखो भंत = भात्।

भा स्त्री [भा] दीप्ति, प्रभा, कान्ति, तेज (कुमा)। °मंडल पुं [°मण्डल] राजा जनक

भेअग वि [भेदक] भेद-कारक (औप, भग)।

भेअण न [भेदन] १ विदारण, विच्छेदन, 'कु तस्स सत्तपायालभेयणे नूण सामत्थं' (चेइय ७४६, प्रासू १४०)। २ भेद, फूट करना (पव १०६)। ३ विनाश, 'कुलसयण-मित्तभेयणकारिकाओ' (तंदु ४६)।

भेअय देखो भेअग (भग)।

भेअव्व देखो भिंद।

भेअव्व देखो भी = भी।

भेइल्ल वि [भेदवत्] भेद वाला, 'सम्मत्त-नाणचरणा पत्तेयं अट्ठअट्ठभेइल्ला' (सबोध २२, पच ४, १)।

भेउर देखो भिउर (आचा, ठा २, ३)।

भेंडी स्त्री [भिण्डा, °ण्डी] गुल्म-विशेष, एक जाति की वनस्पति (पण्ह १—पत्र ३२)।

भेंभल देखो भिंभल (से ६, ३७)।

भेंभलिद (शौ) देखो भिंभलिअ (पि २०६)।

भेक देखो भेग (दे १, १४७)।

भेक्खस पु [दे] राक्षस रिपु, राक्षस का प्रतिपक्षी (कुप्र ११२)।

भेग पुं [भेक] मेंढक (दे ४, ६, धर्मसं ५५७)।

भेच्छ° देखो भिंद।

भेज्ज देखो भिज्ज (विपा १, १ टी—पत्र १२)।

भेज्ज, भेज्जलय, भेज्जल्ल वि [दे] भीरु, डरपोक (दे ६, १०७, षड्)।

भेड वि [दे भेर] भीरु, कातर (हे १, २५१, दे ६, १०७, कुमा २, ६२)।

भेडऊ देखो भेलय (मृच्छ १८०)।

भेत्तु वि [भेत्तृ] भेदन-कर्ता (आचा)।

भेत्तुआण, भेत्तु, भेत्तूग देखो भिंद।

भेद देखो भिंद। सक्त भेदिअ (मृच्छ १४३)।

भेद देखो भेअ (भग)।

भेदअ देखो भेअय (वेणी ११२)।

भेदणया देखो भेअण (उप पृ ३२१)।

भेदिअ देखो भेद = भिंद।

भेदिअ वि [भेदित] भिन्न किया हुआ (भग)।

भेरंड पुं [भेरण्ड] देश-विशेष (राज)।

भेरव न [भैरव] १ भय, डर (कप्प)। २ पुं. राक्षस आदि भयंकर प्राणी (सूअ १, २, २, १४, १६)। ३ देखो भइरव (पउम ६, १८३, चेइय १००, औप, महा, पि ६१)। °णद पु [°नन्द] एक योगी का नाम (कप्पू)।

भेरि, भेरी स्त्री [भेरि, °री] वाद्य-विशेष, ढक्का (कप्प, पिंग, औप, सण)।

भेरुंड पु [भेरुण्ड] भारुंड पक्षी, दो मुँह और एक शरीरवाला पक्षि-विशेष (दे ६, ५०)।

भेरुंड पु [दे] १ चित्रक, चीता, श्वापद पशु-विशेष (दे ६, १०८)। २ निर्विष सर्प, 'सविसो हम्मइ सप्पो भेरुंडो तत्थ मुच्चइ' (प्रासू १६)।

भेरुताल पु [भेरुताल] वृक्ष-विशेष (राज)।

भेल सक [भेलय्] मिश्रण करना, मिलाना। गुजराती में 'भेळववुं'। सक्त भेलइत्ता (पि २०६)।

भेलय पुं [दे भेलक] वेडा, उडुप, नौका (दे ६, ११०)।

भेलविय वि [भेलित] मिश्रित, युक्त, 'सो भयभेलवियदिट्ठी जल ति मन्नमाणो' (वसु)।

भेली स्त्री [दे] १ आज्ञा, हुकुम। २ वेडा, नौका। ३ चेटी, दासी (दे ६, ११०)।

भेस सक [भेषय्] डराना। भेसइ, भेसेइ (धात्वा १४८, प्राकृ ६४)। कर्म. भेसिज्जए (धर्मवि ३)। वकृ भेसंत, भेसयंत (पउम ५३, ८६, श्रा १२)। कवकृ. भेसिज्जंत (पउम ४६, ५४)। सक्त भेसेऊण (काल, पि ५८६)। हेकृ भेसेउं (कुप्र १११)।

भेसग पुं [भीष्मक] रुक्मिणी का पिता, कौण्डिन्य-नगर का एक राजा (णाया १, १६, (उप ६४८ टी)।

भेसज न [भैषज] औषध (पउम १४, ५४, ५६)।

भेसज्ज न [भैषज्य] औषध, दवाई (उवा, औप, रंभा)।

भेसण देखो भीसण (भग ७, ६—पत्र ३०७)।

भेसण न [भीषण] डराना, विभासन (ओघ २०१)।

भेसणा स्त्री [भीषणा] ऊपर देखो (पण्ह २, १—पत्र १००)।

भेसयंत देखो भेस।

भेसाव देखो भेस। भेसावइ (धात्वा १४८)।

भेसाविय, भेसिअ वि [भीषित] डराया हुआ (पउम ४६, ५३, से ७, ४५, सुर २, ११०, श्रावक ६३ टी)।

भो देखो भुंज। सक्त भोऊण, भोत्तूण (धात्वा १४८, संक्षि ३७)। हेकृ भोउं (धात्वा १४८, संक्षि ३७)। कृ. भोत्तव्व (संक्षि ३७), भोअव्व (धात्वा १४८)।

भो अ [भोस्] आमन्त्रण-द्योतक अव्यय (प्राकृ ७६, उवा, औप, जी ५०)।

भो° स [भवत्] तुम, आप। स्त्री. भोई (उत्त १४, ३३, स ११६)।

भोअ सक [भोजय्] खिलाना, भोजन कराना। भोयइ, भोयए (सम्मत्त १२५, सूअ २, ६, २६)। सक्त भोइत्ता (उत्त ६, ३८)।

भोअ पु [दे भोग] भाडा, किराया (दे ६, १०८)।

भोअ देखो भोग (स ६५८, पाअ, सुपा ४०४, रंभा ३२)।

भोअ पु [भोज] उज्जयिनी नगरी का एक सुप्रसिद्ध राजा (रंभा)। °राय पु [°राज] वही अर्थ (सम्मत्त ७५)।

भोअ वि [भौत] भस्म से उपलिप्त (धर्मसं ४१)।

भोअग वि [भोजक] १ खानेवाला (पिंड ११७)। २ पालन-कर्ता (बृह १)।

भोअडा स्त्री [दे] कच्छ, लंगोट, 'खेत्तत्थं भोयडादीयं' (निचू १)।

भोअण न [भोजन] १ भक्षण, खाना। २ भात आदि खाद्य वस्तु (आचा, ठा ६, उवा, प्रासू १८०, स्वप्न ६२, सण)। ३ लगातार सतरह दिनो का उपवास (सबोध ५८)। ४ उपभोग, 'विरूवरूवाइं कामभोगाइं समारंभति भोयणाए' (सूअ २, १, १७)। °रुक्ख पु [°वृक्ष] भोजन देनेवाली एक कल्पवृक्ष-जाति (पउम १०२, ११६)।

भोअल (अप) पुं [दे. भोल] छन्द-विशेष (पिंग)।

६८)। २ कहलाया हुआ, 'मयणसिरिनामाए रन्नो भज्जाए भाणिओ मती' (सुपा ५८७)।

भाणु पु [भानु] १ सूर्य, रवि (पउम ४६, ३६, पुष्फ १६४, सिरि ३२)। २ किरण (प्रामा)। ३ भगवान् धर्मनाथ का पिता, एक राजा (सम १५१)। ४ स्त्री. एक इन्द्राणी, शक्र की एक अग्र-महिषी (पउम १०२, १५६)। °कण्ण पुं [°कर्ण] रावण का एक अनुज (पउम ७, ६७)। °मई स्त्री [°मती] रावण की एक पत्नी (पउम ७४, १०)। °मालिणी [°मालिनी] विद्या-विशेष (पउम ७, १३६)। °मित्त न [°मित्र] उज्जयिनी के राजा वलमित्र का छोटा भाई (काल, विचार ४६४)। °वेग पुं [°वेग] एक विद्याधर का नाम (महा, सण)। °सिरी स्त्री [°श्री] राजा वलमित्र की वहिन (काल)।

भाम देखो भमाड = भ्रमय्। भामेइ (हे ४, ३०)। कवकृ भामिज्जत (गा ४५७)। कृ. भामेयव्व (ती ७)।

भामण न [भ्रामण] घुमाना, फिराना (सम्मत्त १७४)।

भामर न [भ्रामर] १ मधु-विशेष, भ्रमरी का वनाया हुआ मधु (पव ४)। २ पुं. दोधक छन्द का एक भेद (पिंग)।

भामरी स्त्री [भ्रामरी] १ वीणा-विशेष (णाया १, १७—पत्र २२६)। २ प्रदक्षिणा (कप्पू, भवि)।

भामिअ वि [भ्रमित] १ घुमाया हुआ (से २, ३२)। २ भ्रान्त किया हुआ, भ्रान्त-चित्त किया हुआ, 'धत्तूरभामिओ इव' (मन २७, धर्मवि २३)।

भामिणी स्त्री [भागिनी] भाग्यवाली (हे १, १९०, कुमा)।

भामिणी स्त्री [भामिनी] १ कोप-शीला स्त्री। २ स्त्री, महिला (श्रा १२, सुर १, ७६, सुपा ४७५; सम्मत्त १६३)।

भाय देखो भाउ (कुमा)।

भायंत देखो भा = भी।

भायण पुंन [भाजन] १ पात्र। २ आधार। ३ योग्य, 'भायणा, भायणाइं' (हे १, ३३, २६७), 'ति चिय धन्ना ते पुन्नभायणा, ताण जीविय सहल' (सुपा ५६७, कुमा)।

भायण न [भाजन] आकाश, गगन (भग २०, २—पत्र ७७६)।

भायणग पुं [भाजनाङ्ग] कल्पवृक्ष की एक जाति, पात्र देनेवाला कल्पवृक्ष (पउम १०२, १२०)।

भायणिज्ज देखो भाइणिज्ज (धर्मवि १२, काल)।

भायमाण देखो भाअ = भायय्।

भायर देखो भाउ (कुमा)।

भायल पु [दे] जात्य अश्व, उत्तम जाति का घोडा (दे ६, १०४, पाअ)।

भार पुं [भार] १ वोझा, गुरुत्व (कुमा)। २ भारवाली वस्तु, वोझवाली चीज (श्रा ४०)। ३ काम सपादन करने का अधिकार, 'भारक्खमेवि पुत्ते जो नियमार ठवित्तु नियपुत्ते, न य साहेइ सकज्ज' (प्रासू २७)। ४ परिमाण-विशेष, 'लाउअवीअ इक्कं नासइ भार गुडस्स जह सहसा' (प्रासू १५१)। ५ परिग्रह, धन-धान्य आदि का सग्रह (पण्ह १, ५)। °ग्गसो अ [°अशस्] भार भार के परिमाण से, 'दसद्धवन्नमल्लं कुम्भग्गसो य भारग्गसो य' (णाया १, ८—पत्र १२५)। °वह वि [°वह] वोझा ढोनेवाला (श्रा ४०)। °विह वि [°विह] वही अर्थ (पउम ६७, २६)।

भारई स्त्री [भारती] भाषा, वाणी, वाक्य, वचन (पाअ)। देखो भारही।

भारदाय } न [भारद्वाज] १ गोत्र-विशेष,
भारद्दाय } जो गोतम गोत्र की एक शाखा है (कप्प, सुज्ज १०, १६)। २ पुं भारद्वाज गोत्र मे उत्पन्न, 'जे गोयमा ते गग्गा ते भारद्दा (? द्दाया), ते अंगिरसा' (ठा ७—पत्र ३६०)। पक्षि-विशेष (ओघमा ८४)। ४ मुनि-विशेष (पि २३६, २६८, ३६३)।

भारय देखो भार (सुपा १४, ३८५)।

भारह न [भारत] १ भारतवर्ष, भरत-क्षेत्र (उवा), 'जहा निसते तवणच्चिमाली पभासई केवलभारहं तु' (दस ६, १, १४)। २ पाण्डव कौरवों का युद्ध, महाभारत (पउम १०५, १६)। ३ ग्रन्थ-विशेष, जिसमें पाण्डव-कौरव युद्ध का वर्णन है, व्यास-मुनि प्रणीत महाभारत (कुमा, उर ३, ८)। ४ भरत मुनि-प्रणीत नाट्य शास्त्र (अणु)। ५ वि. भारतवर्ष-सम्वन्धी, भारतवर्ष का (ठा २, ३—पत्र ६६), 'तत्थ खलु इमे दुवे सूरिया पन्नत्ता, त जहा—भारहे चेव सूरिए, एरवए चेव सूरिए' (सुज्ज १, ३)। °खेत्त न [°क्षेत्र] भारतवर्ष (ठा २, ३ टी—पत्र ७१)।

भारहिय वि [भारतीय] भारत-सवन्धी, 'जा भारहियकहा इव भीमज्जुणनउलसउणि-सोहिल्ला' (सुपा २६०)।

भारही स्त्री [भारती] १ सरस्वती देवी (पि २०७)। २ देखो भारई (स ३११)।

भारिअ वि [भारिक] भारी, भारवाला, गुरु (दे ४, २, णाया १, ६ पत्र—११४)।

भारिअ वि [भारित] १ भारवाला, भारी (उप पृ १३४)। २ जिस पर भार लादा गया हो वह, भार-युक्त किया गया (सुख २, २५)।

भारिआ देखो भज्जा (हे २, १०७, उवा, णाया २)।

भारिल्ल वि [भारवत्] भारी, वोझवाला (धर्मवि १३७)।

भारुड पुं [भारुण्ड] दो मुँह और एक शरीर वाला पक्षी, पक्षि-विशेष (कप्प, औप, महा, दे ६, १०८)।

भाल न [भाल] ललाट (पाअ, कुमा)।

भलुंकी [दे] देखो भल्लुकी (भत्त १६०)।

भाल्ल पुन [दे] मदन-वेदना, काम-पीडा (संक्षि ४७)।

भाव सक [भावय्] १ वासित करना, गुणाधान करना। २ चिन्तन करना। भावेइ (विवे ६८), भाविंति (पिंड १२६), 'भावेज्ज भावण' (हि १६), भावेमु (महा)। कर्म. भाविज्जइ (प्रासू ३७)। वकृ. भावेंत, भावमाण, भावेमाण (सुर ८, १८५, सुपा २६५, उवा)। सकृ. भावेत्ता, भाविऊण (उवा, महा)। कृ. भावणिज्ज, भावियव्व, भावेयव्व (कप्पू, काल, सुर १४, ८४)।

भाव अक [भास्] १ दिखाना, लगना, मालूम होना। २ पसन्द होना, उचित मालूम होना,

भोल्लय न [दे] पाथेय-विशेष, प्रवन्ध-प्रवृत्त पाथेय (दे ६, १०८)।

भोवाल (अप) देखो भू-वाल (भवि)।

भोहा (अप) देखो भू = भ्रू (पिंग)।

भ्रंत्रि (अप) देखो भंति = भ्रान्ति (हे ४, ३६०)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि भआराइसद्दसंकलणो तीसइमो तरंगो समत्तो॥

म

म पु [म] ओष्ठ स्थानीय व्यञ्जन वर्ण विशेष (प्राप)।

म अ [मा] मत, नही (हे ४, ४१८, कुमा, पि ६४, ११४, भवि)।

मअआ स्त्री [मृगया] शिकार (अभि ५५)।

मइ स्त्री [मृति] मौत, मरण (सुर २, १४३)।

मइ स्त्री [मति] १ बुद्धि, मेधा, मनीषा, 'मेहा मई मणीसा' (पाअ, सुर २, ६५, कुमा, प्रासू ७१)। २ ज्ञान-विशेष, इन्द्रिय और मन से उत्पन्न होनेवाला ज्ञान (ठा ४, ४, णंदि, कम्म ३, १८, ४, ११, १४, विसे ६७)। °अन्नाण न [°अज्ञान] विपरीत मति-ज्ञान, मिथ्यादर्शन-युक्त मति-ज्ञान (भग विसे ११४, कम्म ४, ४१)। °णाण, °ण्णाण, °नाण न [°ज्ञान] ज्ञान-विशेष (विसे १०७, ११४, ११७, कम्म १, ४)। °नाणावरण न [°ज्ञानावरण] मति-ज्ञान का आवरक कर्म (विसे १०४)। °नाणि वि [°ज्ञानिन्] मति-ज्ञानवाला (भग)। °पत्तिया स्त्री [°पात्रिका] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)। °ब्भंस पु [°भ्रंश] बुद्धि-विनाश (भग, सुपा १३४)। °म °मंत, °वंत वि [°मत्] बुद्धिमान् (ओघ ६३०, आचा, भवि)।

मइ° देखो मई = मृगी (कुप्र ४४)।

मइअ वि [मत्त] मद-युक्त, उन्मत्त (से ७, ६६, गा ४६८, ७०६, ७६१)।

मइअ देखो मा = मा।

मइअ वि [दे मतिक] १ भर्त्सित, तिरस्कृत (दे ६, ११४)। २ न बोये हुए बीजो के आच्छादन के काम मे लगती एक काष्ठ-मय वस्तु, खेती का एक औजार, 'नगले मइयं सिया' (दस ७, २८, पण्ह १, १—पत्र ८)।

°मइअ वि [°मय] व्याकरण-प्रसिद्ध एक तद्धित-प्रत्यय, निवृत्त, बना हुआ, 'धम्ममइएहि अइसुदरेहिं' (उव), 'जिणपडिम गोसीमचंदणमइय' (महा)।

मइआ स्त्री [मृगया] शिकार (सिरि ११११)।

मइंद पु [मैन्द] राम का एक सैनिक, वानर-विशेष (से ४, ७, १३, ८३)।

मइंद पुं [मृगेन्द्र] १ सिंह, पचानन (प्राकृ ३०, सुर १६, २४२, गउड)। २ छन्द का एक भेद (पिंग)।

मइज्ज देखो मईअ = मदीय (षड्)।

मइत्तो अ [मत्] मुझसे (प्राप्र)।

मइमोहणी स्त्री [दे मतिमोहनी] सुरा, मदिरा, दारू (दे ६, ११३, षड्)।

मइरा स्त्री [मदिरा] ऊपर देखो (पाअ, से २, ११, गा २७०, दे ६, ११३)।

मइरेय न [मैरेय] ऊपर देखो (पाम)।

मइल वि [मलिन] मैला, मल-युक्त, अस्वच्छ (हे २, ३८, पाअ, गा ३४, प्रासू २५, भवि)।

मइल पु [दे] कलकल, कोलाहल (दे ६, १४२)।

मइल वि [दे मलिन] गत-तेजस्क, तेज-रहित, फीका (दे ६, १४२, से ३, ४७)।

मइल सक [मलिनय्] मैला करना, मलिन बनाना। मइलइ, मइलेइ, मइलिंति, मइलेंति (भवि, उव, पि ५५६)। कर्म. मइलिज्जइ (भवि, पि ५५६)। वकृ मइलंत (पउम २, १००)। कृ. मइलियव्व (स ३६६)।

मइल अक [दे. मलिनाय्] तेज-रहित होना, फीका लगना। वकृ. मइलंत (से ३, ४७, १०, २७)।

मइलण न [मलिनना] मलिन करना (गउड)।

मइलणा स्त्री [मलिनना] १ ऊपर देखो (ओघ ७८८)। २ मालिन्य, मलिनता। ३ कलंक, 'लहइ कुलं मइलणं जेण' (सुर ६, १२०), 'इमाए मइलणाए अमुगम्मि नयरुज्जाणासन्ने नग्गोहपायवे उव्वंधणेण अत्ताणय परिच्चइउं ववसिओ चक्कदेवो' (स ६४)।

मइलपुत्ती स्त्री [दे] पुष्पवती, रजस्वला स्त्री (षड्)।

मइलिअ वि [मलिनित] मलिन किया हुआ (श्रावक ६५, पि ५५६, भवि)।

मइल्ल वि [मृत] मरा हुआ। स्त्री °ल्लिया, 'एवं खलु सामी। पउमावती देवी मइल्लियं दारियं पयाया। तए णं कणगरहे राया तीसे मइल्लियाए दारियाए नीहरणं करेंति, बहूणि लोइयाइं मयकिच्चाइं' (णाया १, १४—पत्र १८६)।

मइहर पु [दे] ग्राम-प्रधान, गाँव का मुखिया (दे ६, १२१)। देखो मयहर।

भासग वि [भाषक] बोलनेवाला, वक्ता, प्रतिपादक (विसे ४१०, पंचा १८, ६, ठा २, २—पत्र ५६)।

भासण न [भासन] चमक, दीप्ति, प्रकाश, 'वरमल्लिभासणाणं' (औप)।

भासण न [भाषण] कथन, प्रतिपादन (महा)।

भासणया } स्त्री [भाषणा] ऊपर देखो (उप भासणा } ५१६, विसे १४७, उव)।

भासय देखो भासग (विसे ३७४, पएण १८)।

भासय वि [भासक] प्रकाशक (विसे ११०४)।

भासल वि [दे] दीप्त, प्रज्वलित (दे ६, १०३)।

भासा स्त्री [भाषा] १ बोली, 'अट्ठारसदेसी-भासाविसारए' (औप १०६, कुमा)। २ वाक्य, वाणी, गिरा, वचन (पाअ)। °जड्ड वि [°जड] बोलने की शक्ति से रहित, मूक (आव ४)। °पज्जत्ति स्त्री [°पर्याप्ति] पुद्गलो को भाषा के रूप मे परिणत करने की शक्ति (भग ६, ४)। °विजय पु [°विचय] १ भाषा का निर्णय। २ दृष्टिवाद, बारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ (ठा १०—पत्र ४६१)। °विजय पुं [°विजय] दृष्टिवाद (ठा १०)। °समिअ वि [°समित] वाणी का संयम-वाला (भग)। °समिइ स्त्री [°समिति] वाणी का सयम (सम १०)। देखो भास°।

भासा स्त्री [भास] प्रकाश, आलोक, दीप्ति (पाअ)।

भासि वि [भाषिन्] भाषक, वक्ता (धर्मवि ५२, भवि)।

भासिअ वि [भाषित] १ उक्त, कथित, प्रतिपादित (भग, आचा, सण, भवि)। २ न. भाषण, उक्ति (आवम)।

भासिअ वि [भाषिन्, °क] वक्ता, बोलने-वाला (भवि)।

भासिअ वि [दे] दत्त, अर्पित (दे ६, १०४)।

भासिअ वि [भासित] प्रकाशवाला, प्रकाश-युक्त (निचू १३)।

भासिर वि [भाषितृ] वक्ता (सुपा ५३८, सण)।

भासिर वि [भास्वर] दीप्त, देदीप्यमान (कुमा)।

भासिल्ल वि [भाषावत्] भाषा-युक्त, वाणी-युक्त (उत्त २७, ११)।

भासीकय वि [भस्मीकृत] जलाकर राख किया हुआ (उप ६८६ टी)।

भासुंड अक [दे] बाहर निकलना। भासुडइ (दे ६, १०३ टी)।

भासुंडि स्त्री [दे] निःसरण, निर्गमन (दे ६, १०३)।

भासुर वि [भासुर] १ भास्वर, दीप्तिमान्, चमकता (सुर ६, १८४, सुपा ३३, २७२, कुप्र ६०, धर्मसं १३२६ टी)। २ घोर, भीषण, भयकर, 'घोरा दारुणभासुरभइरव-लक्खकभीमभीसणया' (पाअ)। ३ एक देव-विमान (सम १२)। ४ छन्द-विशेष (अजि ३०)।

भासुरिअ वि [भासुरित] देदीप्यमान किया हुआ, 'भासुरभूसणभासुरिअंगा' (अजि २३)।

भि देखो °ठिभ (आचा)।

भिअप्पइ
भिअप्फइ } देखो बहस्सइ (पि २१२, षड्)।
भिअस्सइ

भिइ देखो भइ = भृति (राज)।

भिउ पु [भृगु] १ स्वनाम-ख्यात ऋषि-विशेष। २ पर्वत-सानु। ३ शुक्र-ग्रह। ४ महादेव, शिव। ५ जमदग्नि। ६ ऊँचा प्रदेश। ७ भृगु का वंशज। ८ रेखा, राजि (हे १, १२८, षड्)। °कच्छ न [°कच्छ] नगर-विशेष, भड़ौच (राज)।

भिउड न [दे] अग-विशेष, शरीर का अवयव-विशेष (?), 'मुत्तूण तुरगभिउडे खग्गं पिट्ठम्मि उत्तरीय च', 'तो तस्सेव य खग्गं भिउडाओ गिण्हिऊण चाणक्को' (धर्मवि ४१)।

भिउडि स्त्री [भृकुटि] १ भौं-भंग, भौं का विकार (विपा १, ३, ४)। २ पु भगवान् नमिनाथ का शासन-देव (सति ८)।

भिउडिय वि [भृकुटित] जिसने भौं चढ़ाई हो वह (णाया १, ८)।

भिउडी देखो भिउडि (कुमा)।

भिउर वि [भिदुर] विनश्वर (आचा)।

भिउव्व पुं [भार्गव] भृगु मुनि का वंशज, परिव्राजक-विशेष (औप)।

भिंग वि [दे] कृष्ण, काला (दे ६, १०४)। २ नील, हरा। ३ स्वीकृत (षड्)।

भिंग पुं [भृङ्ग] १ भ्रमर मधुकर (पउम ३३, १४८, पाअ)। २ पक्षि-विशेष (पएण १७—पत्र ५२६)। ३ कीट-विशेष। ४ विदलित अंगार, कोयला (णाया १, १—पत्र २१, औप)। कल्पवृक्ष की एक जाति (सम १६)। ६ छन्द-विशेष (पिंग)। ७ जार, उपपति। ८ भाँगरा का पेड। ९ पात्र-विशेष, झारी (हे १, १२८)। °णिभा स्त्री [°निभा] एक पुष्करिणी (इक)। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] पुष्करिणी-विशेष (ज ४)।

भिंगा स्त्री [भृङ्गा] एक पुष्करिणी, वापी-विशेष (इक)।

भिंगार
भिंगारक } पुं [भृङ्गार, °क] १ भाजन-विशेष, झारी (पएह १, ४,
भिंगारग } औप)। २ पक्षि-विशेष, 'भिंगा-ररवंतभेरवरवे' (णाया १, १—पत्र ६५), 'भिंगारकदीणकंदियरवेसु' (णाया १, १—पत्र ६३, पएह १ १, औप)। ३ स्वर्ण-मय जल-पात्र (हे १, १२८, जं २)।

भिंगारी स्त्री [दे भृङ्गारी] १ कीट-विशेष, चिरी, झिल्ली (दे ६, १०५, पाअ, उत्त ३६, १४८)। २ मशक, डाँस (दे ६, १०५)।

भिंजा स्त्री [दे] अभ्यंग, मालिश (सूअ १, ४, २, ८)।

भिंटिया स्त्री [दे वृन्ताकी] भंटा का गाछ (उप १०३१ टी)।

भिंडिमाल } पु [भिन्दिपाल] शस्त्र-विशेष
भिंडिवाल } (पएह १, १, औप, पउम ८, १२०, स ३८४, कुमा, हे २, ३८, प्राप्र)।

भिंद सक [भिद्] १ भेदना, तोडना। २ विभाग करना। भिंदइ, भिंदए (महा, षड्)। भवि भेच्छं, भिंदिस्सति (हे ३, १७१, कुमा, पि ५३२)। कर्म. भिज्जइ (आचा, पि ५४६)। वकृ. भिंदंत, भिंदमाण (ग १३६, पि ५०६)। कवकृ भिज्जंत, भिज्जमाण (से ५, ६५, ठा २, ३, श्रा ६, भग, उवा; णाया १, ६, विसे ३११)। सकृ. भित्तूण,

मखलि पुं [मङ्खलि] एक मंख-भिक्षु, गोशालक का पिता। °पुत्त पुं [°पुत्र] गोशालक, आजीवक मत का प्रवर्तक एक भिक्षु जो पहले भगवान् महावीर का शिष्य था (ठा १०, उवा)।

मंग सक [मङ्ग्] १ जाना। २ साधना। ३ जानना। कर्म मंगिज्जए (विसे २२)।

मंग पुं [मङ्ग] १ धर्म (विसे २२)। २ रजन-द्रव्य-विशेष, रग के काम में आता एक द्रव्य (सिरि १०५७)।

मगइय देखो मगइय (निर १. १)।

मगरिया स्त्री [दे] वाद्य विशेष (राय)।

मंगल पुं [मङ्गल] १ ग्रह-विशेष, अगारक ग्रह (इक)। २ न कल्याण, शुभ, क्षेम, श्रेय (कुमा)। ३ विवाह सूत्र-बन्धन (स्वप्न ४६)। ४ विघ्न-क्षय (ठा ३, १)। ५ विघ्न-क्षय के लिए किया जाता इष्टदेव-नमस्कार आदि शुभ कार्य। ६ विघ्न-क्षय का कारण, दुरित-नाश का निमित्त (विसे १२, १३, २२, २३, २४, औप, कुमा)। ७ प्रशसावाक्य, खुशामद (सूअ १, ७, २५)। ८ इष्टार्थ-सिद्धि, वाञ्छित-प्राप्ति (कप्प)। ६ तप-विशेष, आयविल (सवोध ५८)। १० लगातार आठ दिनो का उपवास (सवोध ५८)। ११ वि. इष्टार्थ-साधक, मगल-कारक (आव ४)। °ज्झय पुं [°ध्वज] मागलिक ध्वज (भग)। °तूर न [°तूर्य] मगल-वाद्य (महा)। °दीव पुं [°दीप] मागलिक दीप, देव-मन्दिर मे आरती के वाद किया जाता दीपक (धर्मवि १२३, पचा ८, २३)। °पाढय पु [°पाठक] मागध, चारण (पाअ)। °पाढिया स्त्री [°पाठिका] वीणा-विशेष, देवता के आगे सुवह और सन्ध्या में वजाई जाती वीणा (राज)।

मगल वि [दे] १ सदृश, समान (दे ६, ११८)। २ न. अग्नि, आग। ३ डोरा वूनने का एक साधन। ४ वन्दनमाला (विसे २७)।

मगलग पुन [मङ्गलक] स्वस्तिक आदि आठ मागलिक पदार्थ (सुपा ७७)।

मंगलसज्झ न [दे] वह खेत जिसमें वीज वोना वाकी हो (दे ६, १२६)।

मंगला स्त्री [मङ्गला] भगवान् श्रीसुमतिनाथ की माता का नाम (सम १५१)।

मगलालया स्त्री [मङ्गलालया] एक नगरी का नाम (आचू १)।

मंगलावइ पुं [मङ्गलापातिन्] सौमनस-पर्वत का एक कूट (इक, ज ४)।

मगलावई स्त्री [मङ्गलावती] महाविदेह वर्ष का एक विजय, प्रान्त-विशेष (ठा २, ३, इक)।

मंगलावत्त पुं [मङ्गलावर्त] १ महाविदेह वर्ष का एक विजय, प्रान्त-विशेष (ठा २, ३, इअ)। २ देव-विशेष (ज ४)। ३ न एक देव-विमान (सम १७)। ४ पर्वत-विशेष का एक शिखर (इक)।

मगलिअ } वि [माङ्गलिक] १ मगल-जनक, 'सअलजीवलोअमगलिअ-जम्मलाहस्स' (उत्तर ६०, अच्चु ३६, सुपा ७८)। २ प्रशसा-वाक्य वोलनेवाला, 'सुहमगलीए' (सूअ १, ७, २५)।
मंगलीअ }

मगल्ल वि [मङ्गल्य, माङ्गल्य] मगल-कारी, मगल-जनक, मागलिक, 'पढमाणो जिणगुण-गणनिवद्धमगल्लवित्ताइ' (चेइय १६०, गाया १, १, सम १२२, कप्प, औप, सुर १, २३८, १५, १७३, सुपा ५५)।

मगी स्त्री [मङ्गी] षड्ज ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७—पत्र ३६३)।

मगु पुं [मङ्गु] एक सुप्रसिद्ध जैन आचार्य, आर्यमगु (णदि, ती ७, आत्म २३)।

मगुल न [दे] १ अनिष्ट (दे ६, १४५, सुपा ३३८, सूक्त ८०)। २ पाप (दे ६, १४५, वज्जा ८, गउड, सूक्त ८०)। ३ पुं. चोर, तस्कर (दे ६, १४५)। ४ वि. असुन्दर, खराव (पाअ, ठा ४, ४—पत्र २७१, स ७१३, दस ३)। स्त्री. °ली, 'मंगुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती' (उवा)।

मगुस पुं [दे] नकुल, न्यौला, भुजपरिसर्प-विशेष (दे ६, ११८, सूअ २, ३, २५)।

मंच पु [दे] वन्ध (दे ६, १११)।

मच पु [मञ्च] १ मचान, उच्चासन (कप्प; गउड)। २ गणितशास्त्र प्रसिद्ध दश योगो में तीसरा योग, जिसमे चन्द्रादि मंचाकार से रहते हैं (सुज्ज १२—पत्र २३३)। °इमच पुं [°तिमञ्च] १ मचान के ऊपर का मञ्च, ऊपर ऊपर रखा हुआ मच (औप)। २ गणित-प्रसिद्ध एक योग जिसमे चन्द्र, सूर्य आदि नक्षत्र एक दूसरे के ऊपर रक्खे हुए मंचो के आकार से अपस्थित होते हैं (सुज्ज १२)।

मंची स्त्री [मञ्चा] खटिया, खाट; 'ता आरुह मंचीए' (सुर १०, १६८, १६६)।

मछुडु (अप) अ [मङ्क्षु] शीघ्र, जल्दी (भवि)।

मंजर पुं [मार्जार] मजार, विल्ला, विलाव (हे २, १३२, कुमा)। देखो मज्जर, मज्जार।

मजरि स्त्री [मञ्जरि] देखो मंजरी (औप)।

मजरिअ वि [मञ्जरित] मञ्जरी-युक्त, 'मजरिओ चूयनिकरो' (स ७१६)।

मंजरिआ } स्त्री [मञ्जरिका, °री] नवोत्पन्न सुकुमार पल्लवाकार लता, वौर (कुमा, गउड)। °गुंडी स्त्री [°गुण्डी] वल्ली-विशेष, 'तोमरिगुंडी य मजरीगुडी' (पाअ)।
मजरी }

मजार देखो मंजर (हे १, २६)।

मजिआ स्त्री [दे] तुलसी (दे ६, ११६)।

मजिट्ठ वि [माञ्जिष्ठ] मजीठ रगवाला, लाल। स्त्री. °ट्ठी (कप्पू)।

मजिट्ठा स्त्री [मञ्जिष्ठा] मजीठ, रंग विशेष (कप्पू, हे ४, ४३८)।

मजीर न [मञ्जीर] १ नूपुर, 'हसय नेउरं च मजीर' (पाअ, स ७०४, सुपा ६६)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

मजीर न [दे] शृङ्खलक, सॉकल, जजीर, सिकड (दे ६, ११६)।

मजु वि [मञ्जु] १ सुन्दर, मनोहर (पाअ)। २ कोमल, सुकुमार (औप, कप्प)। ३ प्रिय, इष्ट (राय, ज १)।

मजुआ स्त्री [दे] तुलसी (दे ६, ११६, पाअ)।

मजुल वि [मञ्जुल] १ सुन्दर, रमणीय, मधुर (सम १५२, कप्प, विपा १, ७, पाअ; पिंग)। २ कोमल (णाया १, १)।

मजुसा } स्त्री [मञ्जूषा] १ विदेह वर्ष की एक नगरी (ठा २, ३—पत्र ८०, इक)। २ पिटारी, छोटी संदूक (सुपा ३२१, कप्पू)।
मजूसा }

६)। भवि. भिदिस्सति (आचा २, १, ६ ६, पि ५३२)।

भिन्न वि [भिन्न] १ विदारित, खण्डित (णाया १, ८, उव, भग, पाअ, महा)। २ प्रस्फुटित, स्फोटित (ठा ४, ४, पण्ह २, १)। ३ अन्य विसदृश, विलक्षण (ठा १०)। ४ परित्यक्त, उज्झित, 'जीवजढ भावओ भिन्न' (वृह १, आव ४)। ५ ऊन, कम, न्यून (भग)। °कहा स्त्री [°कथा] मैथुन सबद्ध बात, रहस्यालाप (ओघ ६६)। °पडवाइय वि [°पिण्डपातिक] स्फोटित अन्न आदि लेने की प्रतिज्ञावाला (पण्ह २, १—पत्र १००)। °मास पुं [°मास] पचीस दिन का महीना (जीत)। °मुहुत्त न [°मुहूर्त्त] अन्तर्मुहूर्त्त, न्यून मुहूर्त्त (भग)।

भिप्फ पु [भीष्म] १ स्वनाम-ख्यात एक कुरुवशीय क्षत्रिय, गांगेय, भीष्म पितामह। २ साहित्य-प्रसिद्ध रस-विशेष, भयानक रस। ३ वि. भय-जनक, भयकर (हे २, ५४, प्राकृ ६५, कुमा)।

भिब्भल वि [विह्वल] व्याकुल (हे २, ५८, ९०, प्राकृ २४, कुमा, वज्जा १५६)।

भिब्भलण न [विह्वलन] व्याकुल बनाना (कुमा)।

भिब्भिस अक [भास्+यङ्=बाभास्य] अत्यन्त दीपना। वकृ भिब्भिसमाण, भिब्भिसमीण (णाया १, १—पत्र ३८, राय पि ५५६)।

भिमोर पु [दे हिमोर] हिम का मध्य भाग (?) (हे २, १७४)।

भियग देखो भयग (सण)।

भिलग पु [दे] त्रक्षण। देखो भिलिंज (सूत्र कृताग सूत्र २८५ चूर्णी)।

भिलगा देखो भिलुगा (दस ६, ६२)।

भिलिंग सक [दे] अभ्यंग करना, मालिश करना। भिलिंगेज (आचा २, १३, २, ४, ५, निचू १७)। वकृ. भिलिंगत (निचू १७)। प्रयो भिलिंगावेज्ज (निचू १७) वकृ. भिलिंगावत (निचू १७)।

भिलिंग } पुं [दे] धान्य-विशेष, मसूर
भिलिंगु } (कप्प, पंचा १०, ७३)।

भिलिंज पुं [दे] अभ्यंग, आपाद-मस्तक-तैल-मर्दन (सूत्र १, ४, २, ८ टी)।

भिलुग पुं [दे. भिलुङ्क] हिंसक पक्षी (राय १२४)।

भिलुगा स्त्री [दे] फटी हुई जमीन, भूमि की रेखा—फाट (आचा २, १, ५, ५)।

भिल्ल पुं [भिल्ल] १ अनार्य देश-विशेष (पव २७४)। २ एक अनार्य जाति (सुर २, ४, ६, ३४, महा)।

भिल्लमाल पुं [भिल्लमाल] स्वनाम ख्यात एक प्रसिद्ध क्षत्रिय-वंश (विवे ११४)।

भिल्लायई स्त्री [भल्लातकी] भिलावां का पेड़ (उप १०३१ टी)।

भिल्लिअ वि [भिलित] खण्डित, तोडा हुआ, 'पचमहव्वयतुगो पायारो भिल्लिओ जेण' (उव)।

भिस देखो भास=भास्। भिसइ (हे ४, २०३, षड्)। वकृ. भिसंत, भिसमाण, भिसमीण (पउम ३, १२७, ७५, ३७, णाया १, १, औप, कुमा, णाया १, १, पि ५६२)।

भिस सक [प्लुप्] जलाना (प्राकृ ६५, धात्वा १४७)।

भिस सक [भायय्] डराना। भिसइ, भिसेइ (प्राकृ ६४)।

भिस्म न [भृश] १ अत्यन्त, अतिशय, अतिशयित, 'गलंतभिसमिन्नदेहे य' (पिंड ५८३, उप ३२० टी, सत्त ६१, भवि)।

भिस देखो बिस (प्राकृ १५, पणण १, सूत्र २, ३, १८)। °कदय पुं [°कन्दक] एक प्रकार की खाने की मिष्ट वस्तु (पणण १७—पत्र ५३३)। °मुणाली स्त्री [मृणाली] कमलिनी (पणण १)।

भिसअ पु [भिषज्] १ वैद्य, चिकित्सक (हे १, १८, कुमा)। २ भगवान् मल्लिनाथ का प्रथम गणधर (पव ८)।

भिसत देखो भिस=भास्।

भिसत न [दे] अनर्थ (दे ६, १०५)।

भिसग देखो भिसअ (णाया १, १—पत्र १५४)।

भिसण सक [दे] फेंकना, डालना। भिसणेमि (गा ३१२)।

भिसमाण देखो भिस=भास्।

भिसरा स्त्री [दे] मत्स्य पकडने का जाल-विशेष (विपा १, ८—पत्र ८५)।

भिसाव सक [भायय्] डराना। भिसावेइ (प्राकृ ६४)।

भिसिआ } स्त्री [दे वृषिका] आसन-विशेष,
भिसिगा } ऋषि का आसन (दे ६, १०५, भग, कुप्र ३७२, णाया १, ८, उप ६४८ टी, औप, सूत्र २, २, ४८)।

भिसिण देखो भिसण भिसिणेमि (गा ३१२ अ)।

भिसिणी स्त्री [बिसिनी] कमलिनी, पद्मिनी (हे १, २३८, कुमा, गा ३०८, काप्र ३१; महा, पाअ)।

भिसी स्त्री [वृषी] देखो भिसिआ (पाअ)।

भिसोल न [दे] नृत्य-विशेष (ठा ४, ४—पत्र २८५)।

भिह } अक [भी] डरना। भिहइ (षड्)।
भी } कृ. भेअव्व (सुपा ५८४)।

भी स्त्री [भी] १ भय, 'नो दंडभी डंड समारभेज्जासि' (आचा)। २ वि. डरनेवाला, भीरु (आचा)।

भीअ वि [भीत] डरा हुआ (हे २, १९३, ४, ५३, पाअ, कुमा, उवा)। °भीय वि [°भीत] अत्यन्त डरा हुआ (सुर ३, १६५)।

भीइ स्त्री [भीति] डर, भय (सुर २, २३७, सिरि ८३६, प्रासू २४)।

भीइअ वि [भीत] डरा हुआ (उप ६४०)।

भीइर वि [भेतृ] डरनेवाला, 'ता मरणभीइरं विसज्जेह म, पव्वईस्सं' (वसु)।

भीड [दे] देखो भिड। संकृ. भीडिवि (अप) (भवि)।

भीडिअ [दे] देखो भिडिय (सुपा २९२)।

भीतर [दे] देखो भित्तर (कुमा)।

भीम वि [भीम] १ भयंकर, भीषण (पाअ, उव, पण्ह १, १, जी ४४, प्रासू १४४)। २ पुं. एक पाण्डव, भीमसेन (गा ४४३)। ३ राक्षस-निकाय का दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। ४ भारतवर्ष का भावी सातवाँ प्रतिवासुदेव, 'अपराइए य भीमे महाभीमे य सुग्गीवे' (सम १५४)। ५ राक्षस-वंश का एक राजा, एक लकापति

मड्डुग, मड्डूअ, मड्डूक, मड्डूर पुं [मण्डूक] १ मेढक, दादुर, 'मड्डुगगइसरिसो खलु अहिगारो होइ सुत्तस्स' (वव ७, कुमा)। २ वृक्ष-विशेष, श्योनाक, सोनापाठा। ३ वन्ध विशेष (सक्षि १७), 'मड्डूरो' (प्राप्र)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। °प्पुअ न [°प्लुत] भेक की चाल। २ पु. ज्योषि-प्रसिद्ध योग-विशेष, भेक की गति की तरह होनेवाला योग (सुज्ज १२—पत्र २३३)।

मडोवर न [मण्डोवर] नगर विशेष (ती १५)।

मत सक [मन्त्रय्] १ गुप्त परामर्श करना, मसलहत करना। २ आमंत्रण करना। मतइ (महा, भवि)। भवि मतही (अप) (पिंग)। वकृ मतत, मतयत (सुपा ५३५, ३०७, अभि १२०)। सकृ मतिअ, मतिऊण, मतेऊण (अभि १२४, महा)।

मत पुंन [मन्त्र] १ गुप्त वात, गुप्त आलोचना, 'न कहिज्जइ एसिमेरिस मत' (सिरि ६२५), 'फुट्टिस्सइ वोहित्थ महिलाजणकहिय-मत व' (धर्मवि १३, कुमा)। २ जप्य, जाप करने योग्य प्रणवादिक अक्षर-पद्धति (णाया १, १४, ठा ३, ४ टी—पत्र १५६, कुमा, प्रासू १४)। °जभग पुं [°जृम्भक] एक देव-जाति (भग १४, ८ टी—पत्र ६५४)। °देवया स्त्री [°देवता] मन्त्राधिष्ठायक देव (श्रा १)। °न्नु वि [°ज्ञ] मन्त्र का जानकार (सुपा ६०३)। °वाइ वि [°वादिन्] मान्त्रिक, मन्त्र को ही श्रेष्ठ माननेवाला (सुपा ५६७)। °सिद्ध वि [°सिद्ध] १ सब मन्त्र जिसके स्वाधीन हो वह। २ वहु-मन्त्र। ३ प्रधान मन्त्रवाला, 'साहोणसव्वमतो बहुमतो वा पहाणमंतो वा, नेओ स मतसिद्धो' (आवम)।

मत वि [मान्त्र] मन्त्र-सम्बन्धी, मान्त्रिक। स्त्री 'मती ठक्कारपतिव्व' (धर्मवि २०)।

मंत देखो मा = मा।

मतक्ख न [दे] १ लज्जा, शरम। २ दु ख (दे ६, १४१)। ३ अपराध, 'न लेइ गरुयपि णाम मंतक्ख' (गउड)।

मतण न [मन्त्रण] १ गुप्त आलोचना, गुप्त मसलहत (पउम ५, ६६, ८२, ४६)। २ मसलहत, परामर्श, सलाह, 'मंतणत्थ हक्कारिओ अणेण जिणदत्तसेट्ठी' (कुप्र ११६)। ३ जाप, 'पुणो पुणो मंतमतणं सुहय (चेइय ७६३)।

मतर देखो वतर (कप्प)।

मता अ [मत्वा] जानकार (सूअ १, १०, ६, आचा १, १, ५, १, १, ३, १, ३, पि ५८२)।

मति पुं [मन्त्रिन्] १ मन्त्री, अमात्य, दीवान (कप्प, औप, पाअ)। २ वि मन्त्रो का जानकार (गु १२)।

मति पु [दे] विवाह-गणक, जोशी, ज्योतिर्वित् (दे ६, १११)।

मतिअ वि [मन्त्रित] गुप्त रीति से आलोचित (महा)।

मंतिअ देखो मत = मन्त्रय्।

मंतिअ वि [मान्त्रिक] मन्त्र का ज्ञाता, 'मंतेण मतियस्स व वाणीए ताडिओ तुज्झ' (धर्मवि ६, मन ११)।

मतिण देखो मति = मन्त्रिन्, निगूहिओ मंतिणेहि कुसलेहिं' (पउम २१, ६०, ६५, ८, भवि)।

मंतु वि [मन्तृ] १ ज्ञाता, जानकार। २ पु. जीव, प्राणी (विसे ३५२५)।

मतु देखो मण्णु (हे २, ४४, षड्, निचू २)। °म वि [°मत्] क्रोधवाला, कोप-युक्त। स्त्री. °मई (कुमा)।

मतु पुंन [°मन्तु] अपराध, 'मतुं विलियं विप्पिय' (पाअ)।

मतुआ स्त्री [दे] लज्जा, शरम (दे ६, ११६, भवि)।

मतेल्लि स्त्री [दे] सारिका, मैना (दे ६, ११६)।

मथ सक [मन्थ्] १ विलोडन करना। २ मारना, हिंसा करना। ३ अक क्लेश पाना। मंथइ (हे ४, १२१, प्राकृ. ३३, षड्)। कवकृ मथिज्जत, मंथिज्जमाण, मच्छंत (पउम ११३, ३३, सुपा २५१, १६५, पराह १, ३—पत्र ५३)। सकृ. मंथित्तु (सम्मत्त २२६)।

मंथ पुं [मन्थ] १ दही विलोने—महने का दण्ड, मथनी (पिसे ३८४)। २ केवलि समुद्घात के समय मन्थाकार किया जाता जीव-प्रदेश समूह (ठा ६, औप)।

मथ (अप) देखो मत्थ = मस्त (पिंग)।

मंथण न [मन्थन] १ विलोडन, विलोने की क्रिया, 'खीरोअमंथणुच्छलिअदुद्धसित्तो व्व महुमहणो' (गा ११७)। २ घर्षण, 'मयणजोए अग्गो' (सवोघ १)। ३ पुन मथनी, दही आदि मथने की लकडी (प्राकृ १४)।

मथणिआ स्त्री [मन्थनिका] १ मथनी, महानी, दही मथने की छोटी लकडी (राज)। २ मथानी, दधि-कलशी, दही महने की हँडिया (दे २, ६५)।

मंथणी स्त्री [मन्थनी] ऊपर देखो (दे २, ५५)।

मंथर वि [मन्थर] १ मन्द, धीमा (से १, ३८, गउड, पाअ, सुपा १)। २ विलम्ब से होनेवाला (पचा ६, २२)। ३ पु. मन्थन दण्ड; 'वीसाममथरायमाणसेलवोच्छिएणदूरवडणाओ' (गउड)।

मथर वि [दे मन्थर] १ कुटिल, वक्र, टेढ़ा (दे ६, १४५, भवि)। २ स्त्रीन कुसुम्भ, वृक्ष-विशेष, कुसुम का पेड (दे ६, १४५)। स्त्री. °रा, 'मथरा कुसुंभी' (पाअ)।

मथर वि [दे] बहु, प्रचुर, प्रभूत (दे ६, १४५, भवि)।

मंथरिय वि [मन्थरित] मन्थर किया हुआ (गउड)।

मथाण पु [मन्थान] १ विलोडन-दण्ड, 'तत्तो विसुद्धपरिणाममेरुमथाणमहियभवजलहीं' (धर्मवि १०७, दे ६, १४१, वज्जा ४, पाम, समु १५०)। २ छन्द विशेष (पिंग)।

मथिअ वि [मथित] विलोडित (दे २, ८८, पाअ)।

मथु पुन [दे] १ बदरादि-चूर्ण (पराह २, ५, उत्त ८, १२, सुख ८, १२, दस ५, १, ६८, ५, २, २४, आचा)। २ चूर्ण, चूर, बुकनी (आचा २, १, ८, ८)। ३ दूध का विकार-विशेष, मट्ठा और माखन के बीच की अवस्था वाला पदार्थ (पिंड २८२)।

उत्त ६, ३, पि ५०७, हे २, १५, कुमा, प्राकृ ३४)। हेकृ. भुंजित्तए, भोत्तुं, भोत्तण (पि ५७८, हे ४, २१२, आचा), भुंजण (अप) (कुमा)। कृ. भुज्ज, भुजियव्व, भुजेयव्व, भोत्तव्व, भुत्तव्व, भोज्ज, भोग्ग (तंदु ३३; धर्मवि ४१, उप १३६ टी, श्रा १६; सुपा ४६५; पिडमा ४५, सम्मत्त २१६, गाया १, १, पउम ६४, ६४, हे ४, २१२, सुपा ४६५, पउम ६८, २२, दे ७, २१, ओघ २१४, उप पृ ७५, सुपा १६३, भवि)।

भुंजग वि [भोजक] भोजन करनेवाला (पिंड १२३)।

भुंजण देखो भुंज = भुज्।

भुंजण न [भोजन] भोजन (पिंड ५२१)।

भुंजणा स्त्री. ऊपर देखो (पव १०१)।

भुंजय देखो भुंजग (मरा)।

भुंजाव सक [भोजय्] १ भोजन कराना। २ पालन कराना। ३ भोग कराना। भुंजावेइ (महा)। कवकृ भुंजाविज्जंत (पउम २, ५)। संकृ. भुंजाविऊण, भुंजावित्ता (पि ५८२)। हेकृ. भुंजावेउं (पचा १०, ४८ टी)।

भुंजावय वि [भोजक] भोजन करानेवाला (स २५१)।

भुंजाविअ वि [भोजित] जिसको भोजन कराया गया हो वह (धर्मवि ३८, कुप्र १६८)।

भुंजिअ देखो भुंज = भुज्।

भुंजिअ देखो भुत्त (भवि)।

भुंजिर वि [भोक्तृ] भोजन करनेवाला (सुपा ११)।

भुंड पुंस्त्री [दे] सूकर, वराह; गुजराती में 'भूंड' (दे ६, १०६)। स्त्री °डी, °डिणी (दे ६, १०६ टी, भवि)।

भुंडीर [दे] ऊपर देखो (दे ६, १०६)।

भुंभल न [दे] मद्य-पात्र (कम्म १, ५२)।

भुंहडि (अप) देखो भूमि (हे ४, ३६५)।

भुक्क अक [बुक्] भूँकना, श्वान का बोलना। भुक्कइ (गा ६६४ अ)।

भुक्कण पुं [दे] १ श्वान, कुत्ता। २ मद्य आदि का मान (दे ६, ११०)।

भुक्किअ न [बुक्कित] श्वान का शब्द (पाअ, पि २०६)।

भुक्किर वि [बुक्कितृ] भूँकनेवाला (कुमा)।

भुक्खा स्त्री [दे बुभुक्षा] भूख, क्षुधा (दे ६, १०६, गाया १, १—पत्र २८, महा, उप ३७६, आरा ६६, सम्मत्त १५७)। °लु वि [°वत्] भूखा (धर्मवि ६६)।

भुक्खिअ वि [दे बुभुक्षित] भूखा, क्षुधातुर (पाअ, कुप्र १२६, सुपा ५०१, उप ७२८ टी, स ५८३, वै २६)।

भुगभुग अक [भुगभुगाय्] 'भुग' 'भुग' आवाज करना। वकृ भुगभुगेंत (पउम १०५, ५६)।

भुग्ग वि [भुग्न] १ मोडा हुआ, वक्र, कुटिल (गाया १, ८—पत्र १३३, उवा)। वि. भग्न, टूटा हुआ (गाया १, ८)। ३ दग्ध, जला हुआ; 'किं मज्झ जीविएण एवविहपराभवग्गिभुग्गाए' (उप ७६८ टी)। ४ भूना हुआ, 'चणउव्व भुग्गु' (कुप्र ४३२)।

भुज (अप) देखो भुंज। भुजइ (सण)।

भुजंग देखो भुअग (भवि)।

भुजग देखो भुअग = भुजग (धर्मवि १२४)।

भुज्ज देखो भुंज भुज्जइ (षड्)।

भुज्ज पुं [भूर्ज] १ वृक्ष-विशेष। २ न. वृक्ष-विशेष की छाल (कप्पू; उप पृ १२७, सुपा २७०)। °पत्त, °वत्त न [°पत्र] वही अर्थ (आवम, नाट, विक्र ३३)।

भुज्ज देखो भुंज।

भुज्ज वि [भूयस्] प्रभूत, अनल्प (औप, पि ४१४)।

भुज्जिय वि [दे भुग्न] १ भूना हुआ धान्य। २ पुं धाना, भूना हुआ यव (पराह २ ५—पत्र १४८)।

भुज्जो अक [भूयस्] फिर, पुन (उवा; सुपा २७२)।

भुण्ण पुं [भ्रूण] १ स्त्री का गर्भ। २ बालक, शिशु (सक्षि १७)।

भुत्त वि [भुक्त] १ भक्षित (गाया १, १, उवा, प्रासू ३८)। २ जिसने भोजन किया हो वह, 'ते भायरो न भुत्ता' (सुख १, १५, कुप्र १२)। ३ सेवित। ४ अनुभूत, 'भम्म ताय मए भोगा भुत्ता विसफलोवमा' (उत्त १६, ११, गाया १, १)। ५ न. भक्षरा, भोजन, 'हासभुत्तासियाणि य' (उत्त १६, १२)। ६ विष-विशेष (ठा ६)। °भोगि वि [°भोगिन्] जिसने भोगों का सेवन किया हो वह (गाया १, १)।

भुत्तवत वि [भुक्तवत्] जिसने भोजन किया हो वह (पि ३६७)।

भुत्तव्व देखो भुंज।

भुत्ति स्त्री [भुक्ति] १ भोजन (अच्चु १७; अज्झ ८२)। २ भोग (सुपा १०८)। ३ आजीविका के लिए दिया जाता गाँव, क्षेत्र आदि गिरास, 'उज्जेणी नाम पुरी दिन्ना तस्स य कुमारभुत्तीए' (उप २११ टी, कुप्र १६६)। °वाल पुं [°पाल] गिरासदार (धर्मवि १५४)।

भुत्तु वि [भोक्तृ] भोगनेवाला (श्रा ६, संबोध ३५)।

भुत्तूण पुं [दे] भृत्य, नौकर (दे ६, १०६)।

भुत्थल्ल पुं [दे] बिल्ली को फेंका जाता भोजन (कप्पू)।

भुम देखो भम = भ्रम्। भुमइ (हे ४, १६१, सण)। संकृ. भुमिवि (अप) (सण)।

भुम°, भुमगा, भुमया, भुमा स्त्री [भ्रू] भौं, आँख के ऊपर की रोम राजि (भग; उवा, हे २, १६७, औप, कुमा, पाअ, पव ७३)।

भुमिअ देखो भमिअ = भ्रान्त, 'भुमिअपवणू' (कुमा)।

भुम्मि (अप) देखो भूमि (पिंग)।

भुरंडिआ स्त्री [दे] शिवा, शृगाली, सियारिन (दे ६, १०१)।

भुरुंडिय, भुरुकुंडिअ, भुरुहुंडिअ वि [दे] उद्धूलित, धूलि-लिप्त, 'धूलिभुरुंडियपुत्तेहिं परिगया चितए तत्तो' (सुपा २२६, दे ६, १०६), 'भुहभुर (? रु) कुडियगो' (कुप्र २६३, सूत्र कृ० चूर्णी गा० २८२)।

भुल्ल अक [भ्रंश्] १ च्युत होना। २ गिरना। ३ भूलना; 'भुल्लंति ते मग्गा मग्गा हा पमाओ दुरंतओ' (आत्म १६, हे ४, १७७)।

मक्ख सक [म्रक्ष्] १ चुपड़ना, स्नेहान्वित करना। २ घी, तेल आदि स्निग्ध द्रव्य से मालिश करना। मक्खइ (षड्), मक्खति (उप १४७ टी), मक्खिज्ज, मक्खेज्ज, (आचा २, १३, २, ३)। हेकृ मक्खेत्तए (कम)। कृ. मक्खियव्व (ओघ ३८५ टी)।

मक्खण न [म्रक्षण] १ मक्खन, नवनीत (स २५८, पभा २२)। २ मालिश, अभ्यंग (निचू ३)।

मक्खर पु [मस्कर] १ गति। २ ज्ञान। ३ वंश वाँस। ४ छिद्रवाला वाँस (सक्षि १५, पि ३०६)।

मक्खिअ वि [म्रक्षित] चुपड़ा हुआ (पाअ, दे ८, ६२, ओघ ३८५ टी)।

मक्खिअ न [माक्षिक] मक्षिका-सचित मधु (राज)।

मक्खिआ स्त्री [मक्षिका] मक्खी (दे ६, १२३)।

मगइअ वि [दे] हस्त-पाशित, हाथ में बाँधा हुआ (विपा १, ३—पत्र ४८, ४६)।

मगण पुं [मगण] छन्द शास्त्र-प्रसिद्ध तीन गुरु अक्षरों की संज्ञा (पिंग)।

मगदंतिआ स्त्री [दे] १ मालती का फूल। २ मोगरा का फूल, 'कुमुअं वा मगदंतिअं' (दस ५, २, १४, १६)।

मगदन्तिआ स्त्री [दे मगदन्तिका] १ मेंदी या मेहँदी का गाछ। २ मेंदी की पत्ती (दस ५, २, १४, १६)।

मगर पुं [मकर] १ मगर-मच्छ, जलजन्तु-विशेष (पण्ह १, २, औप, उव, सुर १३, ४२, णाया १, ४)। २ राहु (सुज्ज २०)। देखो मयर।

मगरिया स्त्री [मकरिका] वाद्य-विशेष (राय ४६)।

मगसिर स्त्रीन [मृगशिरस्] नक्षत्र विशेष 'कत्तिय रोहिणी मगसिर अद्दा य' (ठा २, ३—पत्र ७७)। स्त्री. °रा, 'दो मगसिराओ' (ठा २, ३—पत्र ७७)।

मगह देखो मागह। °तित्थ न [°तीर्थ] तीर्थ-विशेष (इक)।

मगह, मगहग पुं. व. [मगध] देश विशेष (कुमा)। °वरच्छ [°वराक्ष] आभरण-विशेष (औप पृ ४८ टि)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (महा)। देखो मयह।

मगा अ [दे] पश्चात्, पीछे, मराठी में 'मग' (दे १, ४, टी)।

मगुंद देखो मउंद = मुकुन्द (उत्तनि ३)।

मग्ग सक [मार्गय्] १ मागना। २ खोजना। मग्गइ, मग्गंति (उव, षड्, हे १, ३४)। वकृ मग्गत, मग्गमाण (गा २०२, उप ६४८ टी; महा, सुपा ३०८)। संकृ मग्गेविणु (अप) (भवि)। हेकृ मग्गिउ (महा)। कृ मग्गिअव्व मग्गेयव्व (से १४, २७, सुपा ५१८)।

मग्ग सक [मग्] गमन करना, चलना। मग्गइ (हे ४ २३०)।

मग्ग पु [मार्ग] १ रास्ता, पथ (ओघ ३४, कुमा, प्रासू ५०, ११७, भग)। २ अन्वेषण, खोज (विसे १३८१)। °ओ अ [°तस्] रास्ते से (हे १ ३७)। °ण्णु वि [°ज्ञ] मार्ग का जानकार (उप ६४४)। °त्थ वि [°स्थ] १ मार्ग में स्थित। २ सोलह से ज्यादा वर्ष की उम्रवाला (सूअ २, १, ६)। °दय वि [°दय] मार्ग-दर्शक (भग, पडि)। °विउ वि [°वित्] मार्ग का जानकार (ओघ ८०२)। °हु वि [°घ्न] मार्ग-नाशक (श्रु ७४)। °णुसारि वि [°ानुसारिन्] मार्ग का अनुयायी (धर्म २)।

मग्ग पुं [मार्ग] १ आकाश (भग २०, २—पत्र ७७५)। २ आवश्यक-कर्म, सामयिक आदि षट्-कर्म (अणु ३१)।

मग्ग, मग्गअ पुं [दे] पश्चात्, पीछे (दे ६, १११, से १, ५१, सुर २, ५६, पाअ, भग)।

मग्गअ वि [मार्गक] मांगनेवाला (पउम ६६, ७३)।

मग्गण पु [मार्गण] १ याचक (सुपा २४)। २ बाण, शर (पाअ)। ३ न अन्वेषण, खोज (विसे १३८१)। ४ मार्गणा, विचारणा, पर्यालोचन (औप, विसे १८०)।

मग्गण°, मग्गणया, मग्गणा स्त्री [मार्गणा] १ अन्वेषण, खोज (उप पृ २७६, उप ६६२, ओघ ३)। २ अन्वय-धर्म के पर्यालोचन द्वारा अन्वेषण, विचारणा, पर्यालोचना (कम्म ४, १, २३, जीवस २)।

मग्गणआ स्त्री [मार्गणा] ईहा-ज्ञान, ऊहापोह (णंदि १७५)।

मग्गणिगर वि [दे] अनुगमन करने की आदतवाला (दे ६, १२४)।

मग्गसिर पुं [मार्गशिर] मास-विशेष, मगसिर मास, अगहन (कप्प, हे ४, ३५७)।

मग्गसिरी स्त्री [मार्गशिरी] १ मगसिर मास की पूर्णिमा। २ मगसिर की अमावस (सुज्ज १०, ६)।

मग्गिअ वि [मार्गित] १ अन्वेषित, गवेषित (से ६, ३६)। २ मांगा हुआ, याचित (महा)।

मग्गिर त्रि [मार्गयितृ] खोज करनेवाला (सुपा ५८)।

मग्गिल्ल वि [दे] पाश्चात्य, पीछे का (विसे १३२६)।

मग्गु पु [मद्गु] पक्षि-विशेष, जल काक (सूअ १, ७, १५, हे २, ७७)।

मघ पुं [मघ] मेघ (भग ३, २, पण्ण २)।

मघमघ अक [प्र + सृ] फैलना, गन्ध का पसरना, गुजराती में 'मघमघवु', मराठी में 'मघमघणें'। वकृ. मघमघंत, मघमघिंत, मघमघेंत (सम १३७, कप्प, औप)।

मघव पुं [मघवन्] १ इन्द्र, देव-राज (कप्प, कुमा ७, ६४)। २ तृतीय चक्रवर्ती राजा (सम १५२, पउम २०, १११)।

मघवा स्त्री [मघवा] छठवीं नरक-भूमि, 'मघव त्ति माघवत्ति य पुढवीए नामधेयाइं' (जीवस १२)।

मघा स्त्री [मघा] १ ऊपर देखो (ठा ७—पत्र ३८८, इक)। २ देखो महा = मघा (राज)।

मघोण पुं [दे मघवन्] देखो मघव (षड्, पि ४०३)।

मच्च अक [मद्] गर्व करना। मच्चइ (षड, हे ४, २२५)।

मच्च (अप) देखो मच, 'मकुणमच्चइ सुत्त वराइं' (भवि)।

मच्च न [दे] मल, मैल (दे ६, १११)।

मच्च, मच्चिअ पुं [मर्त्य] मनुष्य, मानुष (स २०८, रंभा, पाअ, सूअ १, ८, २, आचा)। °लोअ पु [°लोक] मनुष्य-

(इक, ठा २, ३—पत्र ८४)। २ राजा कूणिक का पट्ट-हस्ती (भग १७, १)। °णंदप्पह पुं [°नन्दप्रभ] भूतानन्द इन्द्र का एक उत्पात-पर्वत (राज)। °वाय देखो °वाय (विसे ५५१, पव ६२ टी)।

भूअण्ण पुं [दे] जोती हुई खल-भूमि में किया जाता यज्ञ (दे ६, १०७)।

भूआ स्त्री [भूता] १ एक जैन साध्वी, महर्षि स्थूलभद्र की एक भगिनी (कप्प, पडि)। २ इन्द्राणी की एक राजधानी (जीव ३)।

भूइ स्त्री [भूति] १ संपत्ति, धन, दौलत, 'ता परदेसं गतु विढवित्ता भूरिभूइपब्भार' (सुर १, २२३, सुपा १४८)। २ भस्म, राख, 'जारमसाणसमुब्भवभूइसुहप्फससिज्जिरंगीए' (गा ४०८, स ६, गउड)। ३ महादेव के अंग की भस्म, 'भूइभूसियं हरसरीरं व' (सुपा १४८, ३६३)। ४ वृद्धि (सूअ १, ६, ६)। ५ जीव-रक्षा (उत्त १२, ३३)। °कम्म पुंन [°कर्मन्] शरीर आदि की रक्षा के लिए किया जाता भस्मलेपन-सूत्रवन्धनादि (पव ७३ टी, वृह १)। °पण्ण, °पन्न वि [°प्रज्ञ] १ जीव-रक्षा की वुद्धिवाला (उत्त १२, ३३)। २ ज्ञान की वृद्धिवाला, अनन्त-ज्ञानी (सूअ १, ६, ६)। देखो °भूई।

भूइंद पुं [भूतेन्द्र] भूतों का इन्द्र (पि १६०)।

भूइट्ठ वि [भूयिष्ट] अति प्रभूत, अत्यन्त (विसे २०३६, विक्र १४१)।

भूइट्ठा स्त्री [भूतेष्टा] चतुर्दशी तिथि (प्राकृ)।

भूई° देखो भूइ (पव २—११२)। °कम्मिय वि [°कर्मिक] भूति-कर्म करनेवाला (औप)।

भूओ अ [भूयस्] १ फिर से, पुन (पउम ६८, २८, पच २, १८)। २ वारंवार, फिर फिर, 'भूओ य अहिलसंतं' (उप ६५१)। °गार पु [°कार] कर्म-वन्ध का एक प्रकार, थोडी कर्म-प्रकृति के वन्ध के वाद होनेवाला अधिक-प्रकृति-वन्ध (पच ५, १२)।

भूओद पुं [भूतोद] समुद्र-विशेष (सुज्ज १६)।

भूओवघाइय वि [भूतोपघातिन्, °क] जीवों की हिंसा करनेवाला (सम ३७, औप)।

भूंहडी (अप) देखो भूमि (हे ४, ३६५ टि)।

भूण देखो भुण्ण (सक्षि १७, सम्मत्त ८६)।

भूज देखो भुज्ज = भूर्ज (प्राकृ २६)।

भूप देखो भू-व (वव १)।

भूमआ देखो भुमया (प्राप्र)।

भूमणया स्त्री [दे] स्थगन, आच्छादन (वव १)।

भूमि स्त्री [भूमि] १ पृथिवी, धरती (पउम ६६, ४८, गउड)। २ क्षेत्र (कुमा)। ३ स्थल, जमीन, जगह, स्थान (पाअ, उवा, कुमा)। ४ काल, समय (कप्प)। ५ माल, मजिला, तल्ला, 'सत्तभूमिय पासायभवण' (महा)। °कप पु [°कम्प] भू-कम्प (पउम ६६, ४८)। °गिह, °घर न [°गृह] नीचे का घर, भुँइघरा, तहखाना (श्रा १६, महा)। °गोयरिय वि [°गोचरिक] स्थलचर, मनुष्य आदि (पउम ५६, ५२)। स्त्री. °री (पउम ७०, १२)। °च्छत्त न [°च्छत्र] वनस्पति-विशेष (दे)। °तल न [°तल] धरा-पृष्ठ, भूतल (सुर २, १०५)। °देव पु [°देव] ब्राह्मण (मोह १०७)। °फोड पु [°स्फोट] वनस्पति-विशेष (जी ६)। °फोडी स्त्री [°स्फोटी] एक प्रकार का जहरीला जन्तु, 'पासवणं कुणमाणो दट्ठो गुज्झम्मि भूमिफोडीए' (सुपा ६२०)। °भाग पुं [°भाग] भूमि प्रदेश (महा)। °रुह पुंन [°रुह] भूमिस्फोट, वनस्पति-विशेष (श्रा २०, पव ४)। °वइ पु [°पति] राजा (उप पृ १८८)। °वाल पुं [°पाल] राजा (गउड)। °सुअ पुं [°सुत] मगल-ग्रह (मृच्छ १४६)। °हर देखो °घर (महा)। देखो भूमी।

भूमिआ स्त्री [भूमिका] १ तला, मंजिल, माल (महा)। २ नाटक मे पात्र का वेशान्तर-ग्रहण (कप्पू)।

भूमिद पुं [भूमीन्द्र] राजा, नरपति (सम्मत्त २१७)।

भूमिपिसाय पुं [दे. भूमिपिशाच] ताल वृक्ष, ताड का पेड (दे ६, १०७)।

भूमी देखो भूमि (से १२, ८८, कप्पू, पिंड ४४८, पउम ६४, १०)। °तुडयकूड न [°तुडगकूट] एक विद्याधर-नगर (इक)। °भुयग पुं [°भुजङ्ग] राजा (मोह ८८)।

भूमीस पुं [भूमीश] राजा (श्रा १२)।

भूमीसर पु [भूमीश्वर] राजा (सुपा ५०७)।

भूयिट्ठ देखो भूइट्ठ (हास्य १२३)।

भूरि वि [भूरि] १ प्रचुर, अत्यन्त, प्रभूत (गउड, कुमा, सुर १, २४८, २, ११४)। २ न स्वर्ण, सोना। ३ धन, दौलत (सार्धं ८४)। °स्सव पु [°श्रवस्] एक चन्द्रवंशीय राजा, भूरिश्रवा (नाट—वेणी ३७)।

भूस सक [भूषय्] १ सजावट करना। २ शोभाना, अलकृत करना। भूसेमि (कुमा)। वकृ भूसयत (रभा)। कृ भूस (रंभा)।

भूसण न [भूषण] १ अलकार, गहना (पाअ, कुमा)। २ सजावट। ३ शोभा-करण (पण्ह २, ४, सण)।

भूसा स्त्री [भूषा] ऊपर देखो (दे ३, ८, कुमा)।

भूसिअ वि [भूषित] मण्डित, अलंकृत (गा ५२०, कुमा, काल)।

भूहरी स्त्री [दे] तिलक-विशेष (सिरि १०२२)।

भे अ [भोस्] आमन्त्रण-सूचक अव्यय (औप)।

भेअ पुन [भेद] १ प्रकार, 'पुढविभेआइ इच्चाई' (जी ४, ५)। २ विशेष, पार्थक्य (ठा २, १, गउड, कप्पू)। ३ एक राज-नीति, फूट, 'दाणमाणोवयारेहि सामभेआइएहि य' (प्रासू ६७), 'सामदडभेयवप्पयाणणीइ-सुप्पउत्तणयविहिन्नू' (णाया १, १—पत्र ११)। ४ घाव, आघात, 'वड्ढ ति वम्महविइण्णसरप्पमारा ताण पआसइ ललु चिअ चित्तभेओ' (कप्पू)। ५ मण्डल का अन्तान्तराल, वीच का भाग,

'पडिवत्तीओ उदए तह अत्थमणेसु य।
भेयवा(? घा)ओ कण्णकला
मुहुत्ताण गतीति य ॥'
(सुज्ज १, १)।

६ विच्छेद, पृथक्करण, विदारण (औप, अणु)। °कर त्रि [°कर] विच्छेद-कर्ता (औप)। °घाय पु [°घात] मंडल के वीच मे गमन (सुज्ज १, १))। °समावन्न वि [°समापन्न] भेद-प्राप्त (भग)।

°गेवेज्जय न [°ग्रैवेयक] देवलोक-विशेष (इक)। °ट्ठिअ वि [°स्थित] तटस्थ, मध्यस्थ (रयण ४८)। °ण्ण, °ण्ह पुं [°ाह्न] दिन का मध्य भाग, दोपहर (प्राप्र, प्राकृ १८, कुमा, अभि ५५, हे २, ८४, महा)। २ न. तप विशेष, पूर्वार्ध तप (संबोध ५८)। °ण्हतरु पुं [°ाह्नतरु] वृक्ष-विशेष, मध्याह्न समय में अत्यन्त फूलनेवाले लाल रँग के फूलवाला वृक्ष (कुमा)। °त्थ वि [°स्थ] तटस्थ (उव, उप ६४८ टी, सुर १६, ६५)। २ बीच में रहा हुआ (सुपा २५७)। °देस देखो °एस (सुर ३, १६)। °न्न देखो °ण्ण (हे २, ८४, सण)। °म वि [°म] मध्य का, मझला, बीच का (भग, नाट—विक्र ५)। °रत्त पुं [°रात्र] निशीथ (उप १३६, ७२८ टी)। °रयणि स्त्री [°रजनि] मध्य रात्रि (स ६३६)। °लोग पुं [°लोक] मेरु पर्वत (राज)। °वत्ति वि [°वर्तिन्] अन्तर्गत (मोह ६४)। °वलिअ वि [°वलित] १ बीच में मुड़ा हुआ। २ चित्त में कुटिल (वज्जा १२)।

मज्झअ पुं [दे] नापित, नाई, हजाम (दे ६, ११५)।

मज्झआर न [दे] मझार, मध्य, अन्तराल (दे ६, १२१, विक्र २८, उव, गा ३, विसे २६६१, सुर १, ४५, सुपा ४६, १०३, खा १), 'अमोगवणिग्राइ मज्झयारम्मि' (भाव ७)।

मज्झतिअ न [दे] मध्यन्दिन, मध्याह्न (दे ६, १२४)।

मज्झदिण न [मध्यन्दिन] मध्याह्न (दे ६, १२४)।

मज्झंमज्झ न [मध्यमध्य] ठीक बीच (भग, विपा १, १, सुर १, २४४)।

मज्झगार देखो मज्झआर (राज)।

मज्झण्हिय वि [माध्याह्निक] मध्याह्न-सबन्धी (धर्मवि १०५)।

मज्झत्थ न [माध्यस्थ्य] तटस्थता, मध्यस्थता (उप ६१५, संबोध ४५)।

मज्झिम वि [मध्यम] १ मध्य-वर्ती बीच का (हे १, ४८, सम ४३, उवा, कप्प, श्रौप, कुमा)। २ पुं. स्वर-विशेष (ठा ७—पत्र ३९३)। °रत्त पुं [°रात्र] निशीथ, मध्य-रात्रि (उप ७२८ टी)।

मज्झिमगंड न [दे] उदर, पेट (दे ६, १२५)।

मज्झिमा स्त्री [मध्यमा] १ बीच की उंगली (ओघ ३६०)। २ एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)।

मज्झिमिल्ल वि [मध्यम] मध्य-वर्ती, बीच का (अणु)।

मज्झिमिल्ला देखो मज्झिमा (कप्प)।

मज्झिल्ल वि [माध्यिक, मध्यम] मझला, बीच का (पव ३६, देवेन्द्र २३८)।

मट्ट वि [दे] शृङ्ग-रहित (दे ६, ११२)।

मट्टिआ स्त्री [मृत्तिका] मट्टी, मिट्टी, माटी (णाया १, १, श्रौप, कुमा, महा)।

मट्टी स्त्री [मृत्, मृत्तिका] ऊपर देखो (जी ४, पडि, दे)।

मट्टुहिअ न [दे] १ परिणीत स्त्री का कोप। २ वि. कलुष। ३ अशुचि, मैला (दे ६, १४६)।

मट्ठ वि [दे] अलस, आलसी, मन्द, जड (दे ६, ११२, पाम्र)।

मट्ठ वि [मृष्ट] १ मार्जित, शुद्ध (सूअ १, ६, १२, श्रौप)। २ मसृण, चिकना (सम १३७, दे ८ ७)। ३ घिसा हुआ (श्रौप, हे २, १७४)। ४ न. मिरच, मरिच (हे १, १२८)।

मड वि [दे मृत] १ मरा हुआ, निर्जीव (दे ६, १४१), 'मडोव्व अप्पाणं' (वज्जा १४८), 'मडें' (मा) (प्राकृ १०३)। °इ वि [°ादिन्] निर्जीव वस्तु को खानेवाला (भग)। °ासय पुं [°ाश्रय] श्मशान (निचू ३)।

मड पु [दे] कंठ, गला (दे ६, १४१)।

मडंब पुंन [दे मडम्ब] ग्राम-विशेष, जिसके चारों ओर एक योजन तक कोई गाँव न हो ऐसा गाँव (णाया १, १, भग, कप्प, श्रौप, पराह १, ३, भवि)।

मडक्क पुं [दे] १ गर्व, अभिमान, 'न किउ वयणु संचलिय मडक्कइ' (भवि)। २ मटका, कलश, घड़ा, मराठी में 'मडकें' (भवि)।

मडक्किया स्त्री [दे] छोटा मटका, कलशी (कुप्र ११६)।

मडप्प, मडप्पर, मडप्फर पुं [दे] गर्व, अभिमान, अहंकार; 'अज्जवि कंदप्पमडप्पखंडणे वहइ पडिच्चं' (सुपा २६, कुप्र २२१, २८४, पड्, दे ६, १२०, पाम्र, सुपा ६, प्रासू ८५, कुप्र २५५, सम्मत्त १८६, धम्म ८ टी, भवि, सण)।

मडभ वि [मडभ] कुब्ज, वामन (राज)।

मडमड, मडमडमड अक [मडमडाय] १ मड मड आवाज करना। २ सक. मड मड आवाज हो उस तरह मारना। मडमडमडति (पउम २६, ५३)। भवि. मडमडइस्सं, मडमडाइस्स (मा), (पि ५२८, चारु ३५)।

मडमडाइअ वि [मडमडायिन्] 'मड' 'मड' आवाज हो उस तरह मारा हुआ (उत्तर १०३)।

मडय न [मृतक] मुडदा, मुर्दा, शव (पाम्र, हे १, २०६, सुपा २१६)। °गिह न [°गृह] कब्र (निचू ३)। °चेइअ न [°चैत्य] मृतक के दाह होने पर या गाड़ने पर बनाया गया चैत्य—स्मारक-मन्दिर (आचा २, १०, १६)। °डाह पु [°दाह] चिता, जहाँ पर शव फूंके जाते हो (आचा २, १०, १६)। °थूभिया स्त्री [°स्तूपिका] मृतक के स्थान पर बनाया गया छोटा स्तूप (आचा २, १०, १६)।

मडय पुं [दे] आराम, बगीचा (दे ६, ११५)।

मडवोज्झा स्त्री [दे] शिविका, पालकी (दे ६, १२२)।

मडह वि [दे] १ लघु, छोटा (दे ६, ११७, पाम्र, सण)। २ स्वल्प, थोड़ा (गा १०५, स ८, गउड, वज्जा ४२)।

मडहर पु [दे] गर्व, अभिमान (दे ६, १२०)।

मडहिय वि [दे] अल्पीकृत, न्यून किया हुआ (गउड)।

मडहुल्ल वि [दे] लघु, छोटा, 'मडहुल्लियाए किं तुह इमीए किं वा दलेहिं तलिणेहिं' (वज्जा ४८)।

मडिआ स्त्री [दे] समाहत स्त्री, आहत महिला (दे ६, ११४)।

मड्डुवइअ वि [दे] १ हत, विध्वस्त। २ तीक्ष्ण (दे ६, १४६)।

मड्ड सक [मृद्] मर्दन करना। मड्डइ (हे ४, १२६; प्राकृ ६८)।

भोइ वि [भोजिन्] भोजन करनेवाला (आचा, पिंड १२०, उव)।

भोइ देखो भोगि (सुपा ४०४, संबोध ५०, पिंग, रंभा)।

भोइ } पु [दे भोगिन्, °क] १ ग्रामा-
भोइअ } ध्यक्ष, ग्राम का मुखिया, गाँव का नायक (वव ७, दे ६, १०८, उत्त १५, ६, बृह १, ओघभा ४३, पिंड ४३६, सुख १, ३, पव २६८, भवि, सुपा १६५, गा ५५६)। २ महेश (षड्)।

भोइअ वि [भोगिक] १ भोग युक्त, भोगासक्त, विलासी (उत्त १५, ६, गा ५५६)। २ भोग-वश में उत्पन्न (उत्त १५, ६)।

भोइअ वि [भोजित] जिसको भोजन कराया गया हो वह (सुर १, २१४)।

भोइणी स्त्री [दे भोगिनी] ग्रामाध्यक्ष की पत्नी (पिंड ४३६, गा ६०३, ७३७, ७७६, निचू १०)।

भोइया } स्त्री [भोग्या] १ भार्या, पत्नी,
भोई } स्त्री (बृह १, पिंड ३६८)। २ वेश्या (वव ७)।

भोई देखो भो° = भवत्।

भोंड देखो भुंड (गा ४०२)।

भोक्ख° देखो भुंज।

भोग पुन [भोग] १ स्पर्श, रस आदि विषय, उपभोग्य पदार्थ; 'रूवी भते भोगा अरूवी' (भग ७, ७—पत्र ३१०), 'भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ' (विपा १, २)। २ विषय-सेवा (भग ६, ३३, औप), 'भुंजता बहुविहाइं भोगाइं' (सया २७)। ३ मदन-व्यापार, काम-चेष्टा, 'कामभोगे यं खलु मए अप्पाहट्टु' (सूअ २, १, १२)। ४ विषयेच्छा, विषयाभिलाष (आचा)। ५ विषय-सुख, 'चइत्तु भोगाइं असासयाइं' (उत्त १३, २०), 'तुच्छा य कामभोगा' (प्रासू ६६), 'अहिभोगे विय भोगे निहएव धर्णो मलव कमलपि मन्नता' (सुपा ८३)। ६ भोजन, आहार (पचा ५, ४, उप २०७)। ७ गुरु-स्थानीय जाति-विशेष, एक क्षत्रिय-कुल (कप्प, सम १५१, ठा ३, १—पत्र ११३, ११४)। ८ अमात्य आदि गुरु-स्थानीय लोक, गुरु-वंश में उत्पन्न (औप)। ९ शरीर, देह (तंदु २०)। १० सर्प की फणा (सुपा)। ११ सर्प का शरीर (दे ६, ८६)। °करा देखो भोगकरा (इक)। °कुल न [°कुल] पूज्य-स्थानीय कुल-विशेष (पि ३६७)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (आवम)। °पुरिस पुं [°पुरुष] भोग-तत्पर पुरुष (ठा ३, १—पत्र ११३, ११४)। °भागि वि [°भागिन्] भोग-शाली (पउम ५६, ८८)। °भूम वि [°भूम] भोग-भूमि में उत्पन्न (पउम १०२, १६६)। °भूमि स्त्री [°भूमि] देवकुरु आदि अकर्म-भूमि (इक)। °भाग पुंन [°भोग] भोगार्ह शब्दादि-विषय, मनोज्ञ शब्दादि (भग ७, ७, विपा १, ६)। °मालिणी स्त्री [°मालिनी] अधोलोक मे रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८, इक)। °राय पुं [°राज] भोग-कुल का राजा (दस २, ८)। °वइया स्त्री [°वतिका] लिपि-विशेष (पएण १—पत्र ६२), 'भोगवयता (?इया)' (सम ३५)। °वई स्त्री [°वती] १ अधोलोक मे रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८, इक)। २ पक्ष की दूसरी, सातवी और बारहवी रात्रि-तिथि (सुज्ज १०, १५)। °विस पुं [°विष] सर्प की एक जाति (पएण १—पत्र ५०)।

भोगकरा स्त्री [भोगकरा] अधोलोक मे रहने-वाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८)।

भोगा स्त्री [भोगा] देवी-विशेष (इक)।

भोगि पुं [भोगिन्] १ सर्प, साँप (सुपा ३६६, कुप्र २६८)। २ पुन शरीर, देह (भग २, ५, ७, ७)। ३ वि भोग-युक्त, भोगासक्त, विलासी (सुपा ३६६, कुप्र २६८)।

भोग्ग }
भोच्चा }
भोच्छ° } देखो भुंज।
भोज्ज }

भोट्टत पुं [भोटान्त] १ देश-विशेष, नेपाल के समीप का एक भारतीय देश, भोटान। २ भोटान का रहनेवाला (पिंग)।

भोण देखो भोअण (षड्)

भोत्त देखो भुत्त (षड्, सुख २, ६, सुपा ४६५)।

भोत्तए } देखो भुंज।
भोत्तव्व }

भोत्ता देखो भू = भुव = भू।

भोत्तु वि [भोक्तृ] भोगनेवाला (विसे १५६६, दे २, ४८)।

भोत्तुं } देखो भुंज।
भोत्तूण }

भोत्तूण देखो भुत्तूण (दे ६, १०६)।

भोदूण देखो भू = भुव = भू।

भोम वि [भौम] १ भूमि-सम्बन्धी (सूअ १, ६, १२)। २ भूमि में उत्पन्न (ओघ २८, जी ५)। ३ भूमि का विकार (ठा ८)। ४ पु. मगल-ग्रह (पाअ)। ५ पु नगराकार विशिष्ट स्थान। ६ नगर (सम्म १५, ७८)। ७ निमित्त शास्त्र-विशेष, भूमि-कम्पादि से शुभाशुभ फल बतलानेवाला शास्त्र (सम ४६)। ८ अहोरात्र का सत्ताईसवां मुहूर्त्त, 'अणव च भोग (? म)रिसहे' (सुज्ज १०, १३)। °ालिय न [°ालीक] भूमि सम्बन्धी मृषावाद (पएह १, २)।

भोमिज्ज देखो भोमेज्ज (सम २, उत्त २३६, २०३)।

भोमिर देखो भमिर, 'लब्भइ णाइअणते समारे सुभोमिरो जीवो' (संबोध ३२)।

भोमेज्ज } वि [भौमेय] १ भूमि का विकार,
भोमेयग } पार्थिव (सम १००, सुपा ४८)। २ पु एक देव-जाति, भवनपति नामक देव-जाति (सम २)।

भोरुड पुं [दे] भारुंड पक्षी (दे ६, १०८)।

भोल सक [दे] ठगना (सुपा ५२२)।

भोल वि [दे] भद्र, सरल चित्तवाला, गुजराती मे 'भोळु'। स्त्री. °ला, °लिया (महानि ६, सुपा ५१४)।

भोलग पुं [भोलक] यक्ष-विशेष, 'भोलगनामा जक्खो अभिवंछियसिद्धिदा अत्थि' (धर्मसं १४१)।

भोलव सक [दे] ठगना, गुजराती मे 'भोळववु'। संकृ. भोलविउ (सुपा २६४)।

भोलवण न [दे] वञ्चन, प्रतापण (सम्मत्त २२६)।

भोलविय } वि [दे] वञ्चित, ठगा हुआ
भोलिअ } (कुप्र ४३५, सुपा ५२२)।

विशेष (विपा २, ६)। °चूड पुं [°चूड] एक विद्या-धर नृप (महा)। °जाल न [°जाल] भूषण-विशेष, मणि-माला (औप)। °तोरण न [°तोरण] नगर-विशेष (महा)। °प देखो °व (से ६, ४३)। °पेढिया स्त्री [°पीठिका] मणि-मय पीठिका (महा)। °प्पभ पुं [°प्रभ] एक विद्याधर (महा)। °भद्द पु [°भद्र] एक जैन मुनि (कप्प)। °भूमि स्त्री [°भूमि] मणि खचित जमीन (स्वप्न ५४)। °मइय, °मय वि [°मय] मणि-मय, रत्न निर्वृत्त (सुपा ६२, महा)। °रह पु [°रथ] एक राजा का नाम (महा)। °व पु [°प] १ यक्ष। २ सर्प, नाग (से २, २३)। ३ समुद्र (से ६, ५०)। °वई स्त्री [°मती] नगरी-विशेष (विपा २, ६—पत्र ११४ टि)। °वध पु [°वन्ध] हाथ और प्रकोष्ठ के बीच का अवयव (सण)। °वालय पु [°पालक, °वालक] समुद्र (से २, २३)। °सलागा स्त्री [°शलाका] मद्य-विशेष (राज)। °हियय पु [°हृदय] देव-विशेष (दीव)।

मणिअ न [मणित] संभोग-समय का स्त्री का अव्यक्त शब्द (गा ३६२, रभा)।

मणिअ देखो मणय (षड्, हे २, १६६, कुमा)।

मणिअड (अप) पु [मणि] माला का सुमेर (हे ४, ४१४)।

मणिच्छिअ वि [मनईप्सित] मनोऽभीष्ट (सुपा ३८४)।

मणिज्जमाण देखो मण = मन्।

मणिट्ठ वि [मनइष्ट] मन को प्रिय (भवि)।

मणिणायहर न [दे मणिनागगृह] समुद्र, सागर (दे ६, १२८)।

मणिरइआ स्त्री [दे] कटीसूत्र (दे ६, १२६)।

मणीसा स्त्री [मनीषा] बुद्धि, मेधा, प्रज्ञा (पाअ)।

मणीसि वि [मनीषिन्] बुद्धिमान्, परिडत (कप्पू)।

मणीसिद वि [मनीषित] वाञ्छित (नाट—मृच्छ ५७)।

मणु पु [मनु] १ स्मृति-कर्ता मुनि-विशेष (विसे १५०८, उप १५० टी)। २ प्रजापति-विशेष, 'चोद्दहमणुचोग्गुणाओ' (कुमा, राज)। ३ मनुज, मनुष्य, 'देवत्ताओ मणुत्त' (पउम २१, ६३, कम्म १, १६, २ १३)। ४ न. एक देव-विमान (सम २)।

मणुअ पुं [मनुज] १ मनुष्य, मानव (उवा, भग, हे १,८; पाअ, कुमा, स ८२, प्रासू ४५)। २ भगवान् श्रेयासनाथ का शासन-यक्ष (सति ७)। ३ वि मनुष्य सम्वन्धी, 'तिरिया मणुया य दिव्वगा उवसग्गा तिविहाहिया-सिया' (सूअ १, २, २, १५)।

मणुइंद पु [मनुजेन्द्र] राजा, नरपति (पउम ८५, २२, सुर १, ३२)।

मणुई स्त्री [मनुजी] मनुष्य-स्त्री, नारी, महिला (णदि १२६ टी)।

मणुएसर पु [मनुजेश्वर] ऊपर देखो (सुपा २०४)।

मणुज्ज, मणुण्ण वि [मनोज्ञ] सुन्दर, मनोहर (पाअ, उप १४२ टी, सम १४६, भग)।

मणुस, मणुस्स पुस्त्री [मनुष्य] १ मानव, मर्त्य (आचा, पि ३२०, आचा; ठा ४, २, भग, श्रा २८, सुपा २०३, जी १६, प्रासू २८)। स्त्री °स्सी (भग, पण्ण १८, पत्र २४१)। °खेत्त न [°क्षेत्र] मनुष्य-लोक (जीव ३)। °सेणियापरिकम्म पु [°श्रेणिकापरिकर्मन्] दृष्टिवाद का एक सूत्र (सम १२८)।

मणुस्स वि [मानुष्य] मनुष्य-सम्वन्धी, 'दिव्व व मणुस्सं वा तेरिच्छं वा सरागहियएण' (श्राप २१)।

मणुस्सिंद पुं [मनुष्येन्द्र] राजा, नर-पति (उत्त १८, ३७, उप पृ १४२)।

मणूस देखो मणुस्स (हे १, ४३, औप, उवर १२२, पि ६३)।

मणे अ [मन्ये] विमर्श-सूचक अव्यय (हे २, २०७, षड्, प्राकृ २६, गा १११, कुमा)।

मणो° देखो मण = मनस्। °गम न [°गम] देवविमान-विशेष, 'पालगपुप्फगसोमणससिरि-वच्छनंदियावत्तकामगमपीतिगममणोगमविमल-सव्वओभद्दसरिसनामधेज्जेहिं विमाणेहिं ओ-इण्णा' (अप)। °ज्ज वि [°ज्ञ] १ सुन्दर, मनोहर (हे २, ८३, उप २६४ टी)। २ पुं. गुल्म-विशेष, 'सरियए णोमालियकोरिंटय-वत्थुजीवगमणोज्जे' (पण्ण १—पत्र ३२)। °ण्ण, °न्न वि [°ज्ञ] सुन्दर, मनोहर (हे २, ८३, पि २७६)। °भव पुं [°भव] कामदेव, कन्दर्प (सुपा ६८; पिंग)। °भिरमणिज्ज वि [°भिरमणीय] सुन्दर, चित्ताकर्षक (पउम ८, १४३)। °भू पुं [°भू] कामदेव, कन्दर्प (कप्पू)। °मय वि [°मय] मानसिक; 'सारीरमणोमयाणि दुक्खाणि' (पण्ह १, ३—पत्र ५५)। °माणसिय वि [°मानसिक] मन मे ही रहनेवाला—वचन से अप्रकटित—मानसिक दुःख आदि (णाया १, १,—पत्र ७६)। °रम वि [°रम] १ सुन्दर, रमणीय (पाअ)। २ पुं एक विमानेन्द्रक, देवविमान विशेष (देवेन्द्र १३६)। ३ मेरु पर्वत (सुज्ज ५)। ४ राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति (पउम ५, २६५)। ५ किन्नर-देवों की एक जाति। रुचक द्वीप का अधिष्ठायक देव (राज)। ७ तृतीय ग्रैवेयक-विमान (पव १६४)। ८ आठवें देवलोक के इन्द्र का पारियानिक विमान (इक)। ६ एक देव-विमान (सम १७)। १० मिथिला का एक चैत्य (उत्त ६, ८, ६)। ११ उपवन-विशेष (उप ६८६ टी)। °रमा स्त्री [°रमा] चतुर्थ वासु-देव की पटरानी का नाम (पउम २०, १८६)। २ भगवान् सुपार्श्वनाथ की दीक्षा-शिविका (सुपा ७५, विचार १२६)। ३ शक्र की अञ्जुका नामक इन्द्राणी की एक राजधानी (इक)। °रह पुं [°रथ] १ मन का अभिलाष (औप, कुमा, हे ४, ४१४)। २ पक्ष का तृतीय दिवस (सुज्ज १०, १४—पत्र १४७)। °हंस पुं [°हंस] छन्द-विशेष (पिंग)। °हर पुं [°हर] १ पक्ष का तृतीय दिवस (सुज्ज १०, १४)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। ३ वि. रमणीय, सुन्दर (हे १, १५६, षड्, स्वप्न ५२, कुमा)। °हरा स्त्री [°हरा] भगवान् पद्मप्रभ की दीक्षा-शिविका (विचार १२६)। °हव देखो °भव (स ८१, कप्पू)। °हिराम वि [°भिराम] सुन्दर (सवि)।

मणोसिला देखो मणंसिला (हे १, २६, कुमा)।

मण्ण देखो मण = मन्। मण्णइ (पि ४८८)।

मई स्त्री [दे] मदिरा, दारू (दे ६, ११३)।

मई स्त्री [मृगी] हरिणी, हरिण की मादा, हिरनी (गा २८७, से ६, ८०, दे ३, ४६, कुप्र १०)।

मई° देखो मइ = मति। °म, °व वि [°मत्] बुद्धिवाला (ग़ि ७३, ३६६, उप १४२ टी)।

मईअ वि [मदीय] मेरा, अपना (पड्, कुमा, स ४७७, महा)।

मउ पुं [दे] पर्वत, पहाड़ (दे ६, ११३)।

मउ } वि [°मृदु, °क] कोमल, सुकुमार
मउअ } (हे १, १२७, पड्, सम ४१, सुर ३, ३७, कुमा)। स्त्री. °उई (प्राकृ ८, गउड)।

मउअ वि [दे] दीन, गरीब (दे ६, ११४)।

मउइअ वि [मृदुकित] जो कोमल बना हो (गउड)।

मउई देखो मउ = मृदु।

मउंद पु [मुकुन्द] १ विष्णु, श्रीकृष्ण (राय)। २ वाद्य-विशेष, 'दुंदुहिमउंदमद्दल-तिलिमापमुहेण तूरसद्देण' (सुर ३, ६८), 'महामउंदसठाणसठिए' (भग)।

मउक्क देखो माउक्क = मृदुत्व (पड्)।

मउड पुन [मुकुट] शिरो-भूषण, किरीट, सिरपेंच (पव ३८, हे १, १०७, प्राप्र, कुमा, पाअ, औप)।

मउड } पुं [दे] धम्मिल्ल, कवरी, जूट,
मउडि } जूड़ा (पाअ, दे ६, ११७)।

मउण देखो मोण (हे १, १६२, चड)।

मउर पुंन [मुकुर] १ वाल-पुष्प, फूल की कली, बौर (कुमा)। २ दर्पण, आईना, शीशा। ३ कुलाल-दण्ड। ४ बकुल का पेड़। ५ मल्लिका-वृक्ष। ६ कोली-वृक्ष। ७ ग्रथि-पर्ण-वृक्ष, चोरक (हे १, १०७, प्राकृ ७)।

मउर } पु [दे] वृक्ष-विशेष, अपामार्ग,
मउरंद } ओंगा, लटजीरा, चिरचिरा (दे ६, ११८)।

मउल देखो मउड = मुकुट (से ४, ५१)।

मउल पुंन [मुकुल] थोड़ी विकसित कली, कलिका, बौर (रंभा २६)। २ देह, शरीर। ३ आत्मा, 'मउलं, मउलो' (हे १, १०७, प्राप्र)।

मउल अक [मुकुलय्] सकुचना, संकुचित होना, 'मउलेंति णअणाइं' (गा ५)। वक्र मउलंत, मउलिंत (से ११, ६२, पि ४६१)।

मउलण न [मुकुलन] सकोच, 'जं चेअ मउलणं लोअणाणं' (हे २, १८४, विसे ११०६, गउड)।

मउलाअ अक [मुकुलय्] १ सकुचना। २ सक सकुचित करना। वक्र मउलाअंत (नाट—मालती ५४, पि १२३)।

मउलाइय वि [मुकुलित] सकुचाया हुआ, सकोचित (वज्जा १२६)।

मउलाव देखो मउलाअ। कर्म. मउलाविज्जंति (पि १२३)। वक्र. मउलावेत (पउम १५, ८३)।

मउलावअ वि [मुकुलायक] सकुचित करने-वाला, 'हरिसविसेसो वियसावओ य मउलावओ य अच्छीण' (गउड)।

मउलाविय देखो मउलाइय (उप पृ ३२१, सुपा २००, भवि)।

मउलि पुस्त्री [दे] हृदय रस का उच्छलन (दे ६, ११५)।

मउलि पुं [मुकुलिन्] सर्प-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८, पण्ण १—पत्र ५०)।

मउलि पुस्त्री [मौलि] १ किरीट, मुकुट, शिरो-भूषण (पाअ)। २ मस्तक, सिर (कुप्र ३८६, कुमा, अजि २२, अच्चु ३४)। ३ शिरो-वेष्टन विशेष, एक तरह की पगडी (पव ३८)। ४ चूडा, चोटी। ५ सयत केश। ६ पु अशोक वृक्ष। ७ स्त्री. भूमि, पृथिवी (हे १, १६२, प्राकृ १०)।

मउलिअ वि [मुकुलित] १ सकुचित (सुर ३, ४५, गा ३२३, से १, ६५)। २ मुकुला-कार किया हुआ (औप)। ३ एकत्र स्थित (कुमा)। ४ मुकुल-युक्त, कलिका-सहित (राय)।

मउवी देखो मउई (हे २, ११३, कुमा)।

मऊर पुंस्त्री [मयूर] पक्षि-विशेष, मोर (प्राप्र, हे १, १७१, णाया १, ३)। स्त्री. °री (विपा १, ३)। °माल न [°माल] एक नगर (पउम २७, ६)।

मऊरा स्त्री [मयूरा] एक रानी, महापद्म चक्रवर्ती की माता (पउम २०, १४३)।

मऊह पु [मयूख] १ किरण, रश्मि (पाअ)। २ कान्ति, तेज। ३ शिखा। ४ शोभा (हे १, १७१, प्राप्र)। ५ राक्षस वश के एक राजा का नाम, एक लका-पति (पउम ५, २६५)।

मए मक [मदय्] मद-युक्त करना, उन्मत्त बनाना। वक्र. मएत (से २, १७)।

मएजारिस वि [मादृश] मेरे जैसा, मेरे तुल्य, 'मएजारिसाण पुरिसाहमाण इमं चेवोचियं' (स ३३)।

म (अप) देखो म = मा (पड्, हे ४, ४१८, कुमा)। °कार पु [°कार] 'मा' अव्यय (ठा १०—पत्र ४६५)।

मंकड देखो मक्कड (आचा)।

मंकुण पु [मत्कुण] खटमल, क्षुद्र कीट-विशेष, गुजराती मे 'माकण' (जी १६)।

मकण पुस्त्री [दे मर्कट] वन्दर, वानर। स्त्री °णी, 'सयमेव मकणीए घणीए त ककणी वद्धा' (कुप्र १८५)।

मकाइ पुं [मङ्काति] एक अन्तकृद् महर्षि (अत १८)।

मकार पु [मकार] 'म' अक्षर (ठा १०—पत्र ४६५)।

मकिअ न [मङ्कित] कूद कर जाना (दे ८, १५)।

मकुण देखो मंकुण = मत्कुण (दे, भवि)। °हत्थि पुं [°हस्तिन्] गण्डीपद प्राणि-विशेष (पण्ण १—पत्र ४६)।

मकुस [दे] देखो मगुस (गा ७८१)।

मख देखो मक्ख = म्रक्ष्। वक्र मखत (राज)।

मख पु [दे] अण्ड, वृषण (दे ६, ११२)।

मंख पु [मङ्ख] एक भिक्षुक जाति जो चित्र-पट दिखाकर जीवन-निवाह करता है (णाया १, १ टी, औप, पण्ह २, ४, पिंड ३०६, कप्प)। °फलय न [°फलक] १ मंख का तख्ता। २ निर्वाह-हेतुक चैत्य (पचा ६, ४५ टी)।

मखण न [म्रक्षण] १ मक्खन, 'मखण व सुकुमालकरचरणा' (उप ६४८ टी)। २ अभ्यंग, मालिश (सुर १२, ८)।

मन्न देखो माण = मानय्। कृ. मन्न, मन्नाय मन्नणिज्ज, मन्नियव्व, मन्निय (उप १०३६, धर्मवि ७६, भवि, सुर १०, ३८, सुपा ३६८, ठा १ टी—पत्र २१, सं ३५)।

मन्ना स्त्री [मनन] १ मति, बुद्धि (ठा १—पत्र १६)। २ आलोचन, चिन्तन (सूत्र २ १, ४१, ठा १)।

मन्ना स्त्री [मान्या] अभ्युपगम, स्वीकार (ठा १—पत्र १६)।

मन्नाय देखो मन्न = मानय्।

मन्नाविय वि [मानित] मनाया हुआ (सुपा १५६)।

मन्निय वि [मत] माना हुआ (सुपा ६०५, कुमा)।

मन्नु पु [मन्यु] १ क्रोध, गुस्सा (सुपा ६०४)। २ दैन्य, दीनता, 'सोयसमुब्भूयगरुय-मन्नुवमा' (सुर ११, १४४)। ३ अहंकार। ४ शोक, अफसोस। ५ क्रतु, यज्ञ (हे २, २५, ४४)।

मन्नुइय वि [मन्यवित] मन्यु-युक्त, कुपित (सुख ४, १)।

मन्नुसिय वि [दे] उद्विग्न (स ५६६)।

मन्ने देखो मुण्णे (हे १, १७१, रभा)।

मप्प न [दे] माप, बाँट, 'तेण य सह वरुणेण आणेवि य तस्स हट्टमप्पाणि' (सुपा ३६२)।

मब्भीसडी } (अप) स्त्री [मा भैषी] अभय-
मब्भीसा } वचन (हे ४, ४२२)।

ममकार पुं [ममकार] ममत्व, मोह, प्रेम, स्नेह (गच्छ २, ४२)।

ममच्चय वि [मदीय] मेरा (सुख २, १५)।

ममत्त न [ममत्व] ममता, मोह, स्नेह (सुपा २६)।

ममया स्त्री [ममता] ऊपर देखो (पंचा १५, ३२)।

ममा सक [ममाय्] ममता करना। ममाइ, ममायए (सूत्र २, १, ४२, उव)। वकृ ममायमाण, ममायमीण (आचा, सूत्र २, ६, २१)।

ममाइ वि [ममत्विन्] ममतावाला (सूत्र १, १, १, ४)।

ममाइय वि [ममायित] जिसपर ममता की गई हो वह (आचा)।

ममाय वि [दे] ग्रहण करना। ममायंति (दस ६, ४६)।

ममाय वि [ममाय] ममत्व करनेवाला (निचू १३)।

ममि वि [मामक] मेरा, मदीय, 'ममं वा ममि वा' (सूत्र २, २, ६)।

ममूर सक [चूर्णय्] चूरना। ममूरइ (धात्वा १४८)।

मम्म पुंन [मर्मन्] १ जीवन-स्थान। २ सन्धि-स्थान (गा ४४६, उप ६६१, हे १, ३२)। ३ मरण का कारण-भूत वचन आदि (णाया १, ८)। ४ गुप्त बात (प्रासू ११, सुपा ३०७)। ५ रहस्य, तात्पर्य (धु २८)। °य वि [°ग] मर्म-वाचक (शब्द) (उत्त १, २५, सुख १, २५)।

मम्मक्क पु [दे] गर्व, अहंकार (षड्)।

मम्मक्का स्त्री [दे] १ उत्कण्ठा। २ गर्व (दे ६, १४३)।

मम्मण न [मन्मन] १ अव्यक्त वचन (हे २, ६१, दे ६, १४१, विपा १, ७, वा २६)। २ वि. अव्यक्त वचन बोलनेवाला (श्रा १२)।

मम्मण पुं [दे] १ मदन, कन्दर्प। २ रोष, गुस्सा (दे ६, १४१)।

मम्माणिआ स्त्री [दे] नील मक्षिका (दे ६, १२३)।

मम्मर पुं [मर्मर] शुष्क पत्तों की आवाज (गा ३६५)।

मम्मह पुं [मन्मथ] कामदेव, कन्दर्प (गा ४३०, अभि ६५)।

मम्मी स्त्री [दे] मामी, मातुल-पत्नी (दे ६, ११२)।

मय न [मत] मनन, ज्ञान (सूत्र २, १, ५०)। २ अभिप्राय, आशय (ओघनि १६०; सूत्रनि १२०)। ३ समय, दर्शन, धर्म, 'समओ मयं' (पाअ, सम्मत्त २२८)। ४ वि. माना हुआ (कम्म ४, ४६)। ५ इष्ट, अभीष्ट (सुपा ३७१)। °न्नु वि [°ज्ञ] दार्शनिक (सुपा ५८२)।

मय पु [मय] १ उष्ट्र, ऊँट (सुख ६, १)। २ अश्वतर, खच्चर, 'मयमहिससरहकेसरि—' (पउम ६, ५६)। ३ एक विद्याधर-नरेश (पउम ८, १)। °हर पु [°धर] ऊँटवाला (सुख ६, १)।

मय वि [मृत] मरा हुआ, जीव-रहित (णाया १, १, उव; सुर २, १८, प्रासू १७, प्राप्र)। °किच्च न [°कृत्य] मरण के उपलक्ष में किया जाता श्राद्ध आदि कर्म (विपा १, २)।

मय पुन [मद] १ गर्व, अभिमान, 'एयाइं मयाइं विगिंच धीरा' (सूत्र १, १३, १६, सम १३, उप ७२८ टी, कुमा; कम्म २, २६)। २ हाथी के गण्ड-स्थल से झरता प्रवाही पदार्थ (णाया १, १—पत्र ६५, कुमा)। ३ आमोद, हर्ष। ४ कस्तूरी। ५ मत्तता, नशा। ६ नद, बड़ी नदी। ७ वीर्य, शुक्र (प्राप्र)। °करि पुं [°करिन्] मदवाला हाथी (महा)। °गल वि [°कल] १ मद से उत्कट, नशे मे चूर, 'मयगलकुंजरगमणी' (पिंग)। २ पु. हाथी (सुपा ६०; हे १, १८२, पाअ, दे ६, १२५)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)। °णासणी स्त्री [°नाशनी] विद्या-विशेष (पउम ७, १४०)। °धम्म पु [°धर्म] विद्याधर-वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ४३)। °मंजरी स्त्री [°मञ्जरी] एक स्त्री का नाम (महा)। °वारण पुं [°वारण] मदवाला हाथी, 'मयवारणो व मत्तो निवा-डियालाणवरखंभो' (महा)।

मय पुं [मृग] १ हरिण (कुमा; उप ७२८ टी)। २ पशु, जानवर। ३ हाथी की एक जाति। ४ नक्षत्र-विशेष। ५ कस्तूरी। ६ मकर राशि। ७ अन्वेषण। ८ याचन, माँग। ६ यज्ञ-विशेष (हे १, १२६)। °च्छी स्त्री [°ाक्षी] हरिण के नेत्रों के समान नेत्र-वाली (सुर ४, १६, सुपा ३५५, कुमा)। °णाह पु [°नाथ] सिंह (स १११)। °णाहि पुस्त्री [°नाभि] कस्तूरी (पाअ, सुपा २००, गउड)। °तण्हा स्त्री [°तृष्णा] धूप में जल-भ्रान्ति (दे, से ६, ३५)। °तण्हिआ स्त्री [°तृष्णिका] वही अर्थ (पि ३७५)। °तिण्हा देखो °तण्हा (पि ५४)। °तिण्हिआ देखो °तण्हिआ (पि ५४)। °धुत्त पु [°धूर्त्त] शृगाल, सियार (दे ६, १२५)। °नाभि देखो °णाहि (कुमा)। °राय पुं [°राज]

मठ वि [दे] १ शठ, लुच्चा, बदमाश। २ पु बन्ध (दे ६, १११)।

मड सक [मण्ड] भूषित करना, सजाना। मडइ (पड्), मडंति (पि ५५७)।

मड सक [दे] १ आगे धरना। २ प्रारम्भ करना, गुजराती में 'माडवु', 'जो मडइ रण-भरधुरहो खधु' (भवि)।

मड पुन [मण्ड] रस, 'तयाणतरं च णं घयविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ सारइएण गोघयमडेण' (उवा)।

मडअ देखो मडव = मण्डप (नाट—शकु ६८)।

मडअ } पु [मण्डक] खाद्य-विशेष, मांडा, मडग } एक प्रकार की रोटी (उप पृ ११५, पव ४ टी, कुप्र ४३, धर्मवि ११६)।

मडग वि [मण्डक] विभूषक, शोभा बढाने-वाला, 'ससि च जोइसमुहमडग'। (कप्प)।

मडण न [मण्डन] १ भूषण, भूषा (गउड, प्रासू १३२)। २ वि विभूषक, शोभा बढाने-वाला (गउड, कुमा)। स्त्री. °णी (प्रासू ६४)। °धाई स्त्री [°धात्री] आभूषण पहनानेवाली दासी (णाया १, १—पत्र ३७)।

मंडल पु [दे. मण्डल] श्वान, कुत्ता (दे ६, ११४, पाअ, स ३६८, कुप्र २८०, सम्मत्त १६०)।

मंडल न [मण्डल] १ समूह, यूथ (कुमा, गउड, सम्मत्त १६०)। २ देश (उप १४२ टी, कुप्र ४६, २८०)। ३ गोल, वृत्ताकार पदार्थ (कुमा, गउड)। ४ गोल आकार से वेष्टन (ठा ३, ४—पत्र १६६, गउड)। ५ चन्द्र-सूर्य आदि का चार-क्षेत्र (सम ६६, गउड)। ६ ससार, जगत् (उत्त ३१, ३, ४, ५, ६)। ७ एक प्रकार का कुष्ठ रोग। ८ एक प्रकार की वृत्ताकार दाद—दद्रु (पिंड ६००)। ९ बिम्ब, 'उज्भइ ससिमडलकलस-दिण्णकंठग्गह मयणो' (गउड)। १० सुभटों का स्थान विशेष (राज)। ११ मण्डलाकार परिभ्रमण (सुज्ज १, ७, स ३४६)। १२ इंगित क्षेत्र (ठा ७—पत्र ३६८)। १३ पुं. नरकावास-विशेष (देवेन्द्र २६)। °व वि [°वत्] मण्डल में परिभ्रमण करनेवाला (सुज्ज १, ७)। °ाहिव पुं [°ाधिप] मण्डलाधीश (भवि)। °ाहिवइ पु [°ाधिपति] वही अर्थ (भवि)।

मंडल पुंन [मण्डल] योद्धा का युद्ध समय का आसन (वव १)। °पवेस पु [°प्रवेश] एक प्राचीन जैन शास्त्र (णदि २०२)।

मडलग्ग पुन [मण्डलाग्र] तलवार, खड्ग (हे ३, ३४, भवि)।

मडलय पुं [मण्डलक] एक माप, बारह कर्म-मापकों का एक वांट (अणु १५५)।

मडलि पुं [मण्डलिन्] १ मण्डलाकार चलता वायु, चक्र-वात, बवडर (जी ७)। २ माण्ड-लिक राजा, 'तेवीस तित्थकरा पुव्वभवे मडलिरायाणो होत्था' (सम ४२)। ३ सर्प की एक जाति (पण्ह १—पत्र ५१)। ४ न. गोत्र-विशेष, जो कौत्स गोत्र की एक शाखा है। ५ पुंस्त्री उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०)। °पुरी स्त्री [°पुरी] नगर-विशेष, गुजरात का एक नगर, जो आजकल भी 'माडल' नाम से प्रसिद्ध है (सुपा ६५६)।

मडलिअ वि [मण्डलित] मण्डलाकार बना हुआ, 'मंडलियचंडकोदडमुक्ककंडोलिखडिय-सिरेहिं' (सुपा ४, वज्जा ६२, गउड)।

मडलिअ वि [मण्डलिक, माण्डलिक] १ मण्डलाकारवाला। २ पु मंडल रूप मे स्थित पर्वत विशेष (ठा ३, ४—पत्र १६६, पण्ह २, ४)। ३ मण्डलाधीश, सामान्य राजा (णाया १, १, पण्ह १, ४, कुमा, कुप्र १२०, महा)।

मडली स्त्री [मण्डली] १ पंक्ति, श्रेणी, समूह (से ५, ७६, गच्छ २, ५६)। २ अश्व की एक प्रकार की गति (से १३, ६६, महा)। ३ वृत्ताकार मंडल—समूह (सबोध १७, उव)।

मंडलीअ देखो मडलिअ = मण्डलिक, 'तह तलवरसेणाहिवकोसाहिवमडलीयसामते' (सुपा ७३, ठा ३, १—पत्र १२६)।

मडव पु [मण्डप] १ विश्राम-स्थान। २ वल्ली आदि से वेष्टित स्थान (जीव ३, स्वप्न ३६, महा, कुमा)। ३ स्नान आदि करने का गृह, 'न्हाणमंडवसि', 'भोयणमंडवंमि' (कप्प, औप)।

मडव्व न [माण्डव्य] १ गोत्र-विशेष। २ पुंस्त्री उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०)।

मडविआ स्त्री [मण्डपिका] छोटा मण्डप (कुमा)।

मडव्वायण न [माण्डव्यायन] गोत्र-विशेष (सुज्ज १०, १६, इक)।

मडावण न [मण्डन] सजाना, विभूषित कराना। °धाई स्त्री [°धात्री] सजानेवाली दासी (आचा २, १५, ११)।

मडावय वि [मण्डक] सजानेवाला (निचू ६)।

मडि° } वि [मण्डित] १ भूषित (कप्प, मडिअ } कुमा)। २ पुं. भगवान् महावीर के षष्ठ गणधर का नाम (सम १६, विसे १८०२)। ३ एक चोर का नाम (धर्मवि ७२, ७३)। °कुच्छि पुंन [°कुक्षि] चैत्य-विशेष (उत्त २०, २)। °पुत्त पु [°पुत्र] भगवान् महावीर का छठवां गणधर (कप्प)।

मडिअ वि [दे] रचित, बनाया हुआ। २ बिछाया हुआ,

'ससारे हयविहिणा महिलारूवेण मडिए पासे। वज्झति जाणमाणा अयाणमाणावि वज्झति॥' (रयण ८)।

३ आगे धरा हुआ, 'मइ मडिउ रणभरधुरहो खधु' (भवि)। ४ आरब्ध, 'रणु मडिउ कच्छाहिवेण ताम' (भवि, सण)।

मडिज्ज पु [दे] अपूप, पूआ, पक्वान्न-विशेष (दे ६, ११७)।

मडी स्त्री [दे] १ पिधानिका, ढकनी (दे ६, १११, पाअ)। २ अन्न का अग्र रस, माड। ३ मांडी, कलप, लेई (आव ४)। °पाहुडिया स्त्री [°प्राभृतिका] एक भिक्षा-दोष, अन्न के मांड अथवा मांडी को दूसरे पात्र में रखकर दी जाती भिक्षा का ग्रहण (आव ४)।

मंडुक्क } देखो मडूअ (आ २८, पण्ह १, १, मडुक्क } हे २, ६८, षड्; पाअ)।

मंडुक्कलिया } स्त्री [मण्डूकिका, °की] १ स्त्री मडुक्किया } मेढक, भेकी, दादुरी (उप १४७ मंडुक्की } टी, १३७ टी)। २ शाक-विशेष, वनस्पति-विशेष (उवा, पण्ण १—पत्र ३४)।

मरमाण (गा ३७५, प्रासू ६४, सुपा ४०५, भग, सुपा ६५१, प्रासू ८३)। सक्र. मरिऊण (पि ५८६)। हेकृ. मरिउ, मरेउ (सक्षि ३४)। कृ.-मरियव्व (श्रत २४, सुपा २१५, ५०१, प्रासू १०६), मरिएव्वउं (श्रप) (हे ४, ४३८)।

मर पु [दे] १ मशक। २ उल्लू, घूक (दे ६, १४०)।

मरअद } पुन [मरकत] नील वर्णवाला
मरगय } रत्न-विशेष, पन्ना (सक्षि ६, हे १, १८२, श्रौप, पड् गा ७५, काप्र ३१), 'परिकम्मिश्रोवि बहुसो काश्रो कि मरगश्रो होइ' (कुप्र ४०३)।

मरजीवय पु [दे. मरजीवक] समुद्र के भीतर उतर कर जो वस्तु निकालने का काम करता है वह (सिरि ३८५)।

मरट्ट पु [दे] गर्व, श्रहंकार (दे ६, १२०, सुर ४, १५४, प्रासू ८५, ती ३, भवि, सण, हे ४, ४२२, सिरि ६६२), 'श्रखिलमइ (?र)ट्टक्कदप्पमहणो लद्धजयपडायस्स' (धर्मवि ६७)।

मरट्टा स्त्री [दे] उत्कर्ष,

'एईइ श्रहरहरिश्राहणिममरट्टाइं
(?इ) लज्जमाणाइ।
विवफलाइ उव्वयण व
वल्लीसु विरयंति॥'
(कुप्र २६६)।

मरट्ठ (श्रप) देखो मरहट्ट (पिंग)।

मरढ देखो मरहट्ट। स्त्री °ढी (कप्पू)।

मरण पुन [मरण] मौत, मृत्यु (श्राचा, भग, पाश्र, जी ४३, प्रासू १०७, ११८) 'मिमा मरणा सव्वे तब्भवमरणेण णायव्वा' (पव १५७)।

मरल सक मराल = मराल, हंस (प्राकृ ५)।

मरह सक [मृष्] क्षमा करना, 'खमंतु मरहतु ण देवाणुप्पिया' (णाया १, ८—पत्र १३५)।

मरहट्ट पुन [महाराष्ट्र] १ बडा देश। २ देश-विशेष, महाराष्ट्र, मराठा, 'मरहट्ठो मरहट्ठ' (हे १, ६९, प्राकृ ६, कुमा)। ३ सुराष्ट्र (कुमा ३, ६०)। ४ पु महाराष्ट्र देश का निवासी, मराठा (पण्ह १, १—पत्र १४, पिंग)। ५ छन्द-विशेष (पिंग)।

मरहट्ठी स्त्री [महाराष्ट्री] १ महाराष्ट्र की रहनेवाली स्त्री। २ प्राकृत भाषा का एक भेद (पि ३५४)।

मराल वि [दे] श्रलस, मन्द, श्रालसी (दे ६, ११२, पाश्र)।

मराल पु [मराल] १ हंस पक्षी (पाश्र)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

मराली स्त्री [दे] १ सारसी, सारस पक्षी की मादा। २ दूती। ३ सखी (दे ६, १४२)।

मरिअ वि [मृत] मरा हुआ (सम्मत्त १३६)।

मरिअ वि [दे] १ त्रुटित, टूटा हुआ। २ विस्तीर्ण (पड्)।

मरिअ देखो मिरिअ (प्रयौ १०५, भास ८ टी)।

मरिइ देखो मरीइ, 'श्रह उप्पन्ने नाणे जिणस्स, मरिई तश्रो य निक्खतो' (पउम ८२, २४)।

मरिस सक [मृष्] सहन करना, क्षमा करना। मरिसइ, मरिसेइ, मरिसेउ (हे ४, २३५, महा स ६७०)। कृ मरिसियव्व (स ६७०)।

मरिसावणा स्त्री [मर्पणा] क्षमा (स ६७१)।

मरीइ पु [मरीचि] १ भगवान् ऋषभदेव का एक पौत्र श्रौर भरत चक्रवर्त्ती का पुत्र, जो भगवान् महावीर का जीव था (पउम ११, ९४)। २ पुंश्री किरण (पण्ह १, ४—पत्र ७२, धर्मम ७२२)।

मरीइया स्त्री [मरीचिका] १ किरण-समूह। २ मृग-तृष्णा, किरण में जल भ्रान्ति (राज)।

मरीचि देखो मरीइ (श्रौप सुज्ज १, ९)।

मरीचिया देखो मरीइया (श्रौप)।

मरु पु [मरुत्] १ पवन, वायु। २ देव, देवता। ३ सुगन्धी वृक्ष-विशेष, मरुश्रा, मरुवा (पड्)। ४ हनुमान का पिता (पउम ५३, ७९)। °णदण पुं [°नन्दन] हनुमान् (पउम ५३, ७९)। °सुय पु [°सुत] वही (पउम १०१, १)। देखो मरुअ = मरुत्।

मरु } पु [मरु, °क] १ निर्जल देश
मरुअ } (णाया १, १६—पत्र २०२, श्रौप)। २ देश-विशेष, मारवाड (ती ५, महा, इक, पण्ह १, ४—पत्र ६८)। ३ पर्वत, ऊंचा पहाड (निचू ११)। ४ वृक्ष-विशेष, मरुश्रा, मरुवा (पण्ह २, ५—पत्र १५०)। ५ ब्राह्मण, विप्र (सुख २, २७)। ६ एक नृप वंश। ७ मरु-वंशीय राजा, 'तस्स य पुत्तीए नदो पणपन्नसय च होइ वासाण। मरुयाणं श्रट्ठसयं' (विचार ४९३)। ८ मरु देश का निवासी (पण्ह १, १)। °कतार न [°कान्तार] निर्जल जंगल (श्रन्तु ८५)। °त्थली स्त्री [°स्थली] मरु-भूमि (महा)। °भू स्त्री [°भू] वही (श्रा २३)। °य वि [°ज] मरु देश में उत्पन्न (पण्ह १, ४—पत्र ६८)।

मरुअ देखो मरु = मरुत् (पण्ह १, ४—पत्र ६८)। २ एक देव-जाति (ठा २, ३)। °कुमार पुं [°कुमार] वानरद्वीप के एक राजा का नाम (पउम ६, ६७)। °वसभ पुं [°वृषभ] इन्द्र (पण्ह १, ४—पत्र ६८)।

मरुअअ } पुं [मरुवक] वृक्ष-विशेष, मरुश्रा,
मरुअग } मरुवा (गउड, पण्ण १—पत्र ३४)।

मरुआ स्त्री [मरुता] राजा श्रेणिक की एक पत्नी (श्रत)।

मरुइणी स्त्री [मरुकिणी] ब्राह्मण-स्त्री, ब्राह्मणी (विसे ६२८)।

मरुंड देखो मुरुंड (श्रत, श्रौप, णाया १, १—पत्र ३७)।

मरुकुंद पु [दे. मरुकुन्द] मरुश्रा, मरुवे का गाछ (भवि)।

मरुग देखो मरुअ = मरुक (पण्ह १, १—पत्र १४, इक)।

मरुदेव पुं [मरुदेव] १ ऐरवत क्षेत्र में उत्पन्न एक जिनदेव (सम १५३)। २ एक कुलकर पुरुष का नाम (सम १५०, पउम ३, ५५)।

मरुदेवा } स्त्री [मरुदेवा, °वी] १ भगवान्
मरुदेवी } ऋषभदेव की माता का नाम (उव; सम १५०, १५१)। २ राजा श्रेणिक की एक पत्नी, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पाई थी (श्रत)।

मरुदेवा स्त्री [मरुदेवा] भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पानेवाली राजा श्रेणिक की एक पत्नी (श्रत २५)।

मंद पु [मन्द] १ ग्रह-विशेष, शनिश्चर (सुर १०, २२४)। २ हाथी की एक जाति (ठा ४, २—पत्र २०८)। ३ वि. अलस, धीमा, मृदु (पाअ; प्रासू १३२)। ४ अल्प, थोडा (प्रासू ७१)। ५ मूर्ख, जड, अज्ञानी (सूअ १, ४, १, ३१, पाअ)। ६ नीच, खल, 'मुहमेव अहीएए तह य मंदस्स' (प्रासू १६)। ७ रोग ग्रस्त, रोगी (उत्त ८,७)। °उण्णिया स्त्री [°पुण्यका] देवी विशेष (पंचा १६, २४)। °भग्ग वि [°भाग्य] कमनसीब (सुपा ३७६, महा)। °भाअ वि [°भाग, °भाग्य] वही अर्थ (स्वप्न २२, कुमा)। °भाइ वि [°भागिन्] वही अर्थ (स ७५६; सुपा २२६)। °भाग देखो °भाअ (सुर १०, ३८)।

मंद न [मान्द्य] १ बीमारी, रोग, 'न य मंदेण मरई कोइ तिरिओ अहव मणुओ वा' (सुपा २२६)। २ मूर्खता, बेवकूफी, 'बालस्स मंदय बीय' (सूअ १, ४, १, २६)।

मंदक्ख न [मन्दाक्ष] लज्जा, शरम (राज)।

मंदग, मंदय न [मन्दक] गेय-विशेष, एक प्रकार का गान (राज, ठा ४, ४—पत्र २८५)।

मंदर पुं [मन्दर] १ पर्वत-विशेष, मेरु पर्वत (सुज्ज ५, सम १२, हे २, १७४, कप्प, सुपा ४७)। २ भगवान् विमलनाथ का प्रथम गणधर (सम १५२)। ३ वानरद्वीप का एक राजा, मरुयकुमार का पुत्र (पउम ६, ६७)। ४ छन्द का एक भेद (पिंग)। ५ मन्दर-पर्वत का अधिष्ठायक देव (ज ४)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष, (इक)।

मंदा स्त्री [मन्दा] १ मन्द-स्त्री (वज्जा १०६)। २ मनुष्य की दश अवस्थाओं में तीसरी अवस्था २१ से ३० वर्ष तक की दशा (तंदु १६)।

मंदाइणी स्त्री [मन्दाकिनी] १ गंगा नदी, भागीरथी (पउम १०, ५०, पाअ)। २ रामचन्द्र के पुत्र लव की स्त्री का नाम (पउम १०६, १२)।

मंदायं क्रिवि [मन्द] शनैः, धीमे से, 'मंदायं मंदायं पव्वइयाए' (जीव ३)।

मंदाय न [मन्दाय] गेय-विशेष (ज १)।

मंदार पुं [मन्दार] १ कल्पवृक्ष-विशेष (सुपा १)। २ पारिभद्र वृक्ष। ३ न. मन्दार वृक्ष का फूल; 'मंदारदामरमणिज्जभूय' (कप्प, गउड)। ४ परिभद्र वृक्ष का फूल (वज्जा १०६)।

मंदिअ वि [मान्दिक] मन्दता वाला, मन्द, 'बाले य मंदिए मूढे' (उत्त ८, ५)।

मंदिर न [मन्दिर] १ गृह, घर (गउड, भवि)। २ नगर-विशेष (इक, आचू १)।

मंदिर वि [मान्दिर] मन्दिर-नगर का; 'सीहपुरा सोहा वि य गीयपुरा मंदिरा य बहुणाया' (पउम ५५, ५३)।

मंदीर न [दे] १ शृंखल, सांकल। २ मन्थान-दण्ड (दे ६, १४१)।

मंदुय पुं [दे. मन्दुक] जलजन्तु-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ७)।

मंदुरा स्त्री [मन्दुरा] अश्व-शाला (सुपा ६७)।

मंदोदरी, मंदोयरी स्त्री [मन्दोदरी] १ रावण-पत्नी (से १३, ६७)। २ एक वणिक्-पत्नी (उप ५६७ टी)।

मंदोशण (मा)। वि [मन्दोष्ण] अल्प गरम (प्राकृ १०२)।

मंधाउ पु [मान्धातृ] हरिवंश का एक राजा (पउम २२, ६७)।

मंधादण पु [मन्धादन] मेष, गाडर, 'जहा मंधादए (? णे) नाम थिमिअं भुंजती दगं' (सूअ १, ३, ४, ११)।

मंधाय पुं [दे] आढ्य, श्रीमत (दे ६, ११६)।

मंभीस (अप)। सक [मा + भी] डरने का निषेध करना, अभय देना। संकृ. मंभीसिवि (भवि)।

मंभीसिय देखो माभीसिअ (भवि)।

मंस पुंन [मांस] मास, गोश्त, पिशित, 'अयमाउसो मंसे अयं अट्ठी' (सूअ २, १, १६, आचा, ओघभा २४६, कुमा, हे १, २६)। °इत्त वि [°वत्] मास-लोलुप (सुख १, १५)। °खल न [°खल] मास सुखाने का स्थान (आचा २, १, ४, १)। °चक्खु पुन [°चक्षुस्] १ मास-मय चक्षु। २ वि. मास-मय चक्षुवाला, ज्ञान-चक्षु-रहित, 'अद्दिस्से मंसचक्खुणा' (सम ६०)। °ासण वि [°ाशन] मांस-भक्षक (कुमा)। °ासि, °ासिण वि [°ाशिन्] वही अर्थ (पउम १०५, ४४, महा) 'मंसासिणस्स' (पउम २६, ३७)।

मंस न [मांस] फल का गर्भ, फल का गुद्दा (आचा २, १, १०, ५, ६)।

मंसल वि [मांसल] पीन, पुष्ट, उपचित (पाअ, हे १, २६, पण्ह १, ४)।

मंसी स्त्री [मांसी] गन्ध-द्रव्य-विशेष जटामासी (पण्ह २, ५—पत्र १५०)।

मंसु पुन [श्मश्रु] दाढी-मूँछ—पुरुष के मुख पर का बाल (सम ६०, औप कुमा), 'मंसू' (हे १, २६, प्राप्र), 'मसूइं' (उवा)।

मंसु देखो मंस, 'मंसूणि छिन्नपुव्वाइं' (आचा)।

मंसुंडग न [दे, मांसोन्दुक] मांस-खण्ड (पिंड ५८६)।

मंसुल्ल वि [मांसवत्] मांसवाला (हे २, १५६)।

मकंडेअ पुं [मार्कण्डेय] ऋषि-विशेष (अभि २४३)।

मक्कड पु [मर्कट] १ वानर, बनरा, बन्दर (गा १७१, उप पृ १८८, सुपा ६०६, दे २, ७२, कुप्र ६०, कुमा)। २ मकडा, जाल बनानेवाला कीडा (आचा, कस, गा ६३, दे ६, ११६)। ३ छन्द का एक भेद (पिंग)। °बंध पुं [°बन्ध] बन्ध-विशेष, नाराच-बन्ध (कम्म १, ३६)। °संताण पु [°संतान] मकडा का जाल (पडि)।

मक्कडबंध न [दे] शृंखलाकार ग्रीवा-भूषण (दे ६, १२७)।

मक्कडी स्त्री [मर्कटी] वानरी बनरी (कुप्र ३०३)।

मक्कल (अप) देखो मक्कड (पिंग)।

मक्कार पु [माकार] १ 'मा' वर्ण। २ 'मा' के प्रयोगवाली दण्डनीति, निषेध-सूचक एक प्राचीन दण्ड-नीति (ठा ७—पत्र ३६८)।

मक्कुण देखो मकुण (पव २६२, दे १, ६६)।

मक्कोड पुं [दे] १ यन्त्र-गुम्फनार्थ राशि, जन्तर गठने के लिए बनाई जाती राशि (दे ६, १४२)। २ पुंस्त्री. कीट-विशेष, चींटा, गुजराती में 'मकोडो', 'मंकोडो' (निचू १, आवम, जी १६)। स्त्री °डा (दे ६,१४२)।

मल्ह अक [दे] मौज मानना, लीला करना। वकृ. मल्हंत (दे ६, ११६ टी; भवि)।
मल्हण न [दे] लीला, मौज (दे ६, ११६)।
मव सक [मापय्] मापना, माप करना, नापना। मवति (सिरि ४२५)। कर्म. 'आउयाइं मविज्जति' (कम्म ५, ८५ टी)। कवकृ. मविज्जमाण (विसे १४००)।
मविय वि [मापित] मापा हुआ (तंदु ३१)।
मश्चली (मा) स्त्री [मत्स्य] मछली (पि २३३)।
मस } पुं [मश, °क] १ शरीर पर का
मसअ } तिलाकार काला दाग, तिल (पव २५७)। २ मच्छड, क्षुद्र जन्तु-विशेष (गा ५६०, चारु १०, वज्जा ४६)।
मसक्कसार न [मसक्कसार] इन्द्रों का एक स्वय आभाव्य विमान (देवेन्द्र २६३)।
मसग देखो मसअ (भग, औप, पउम ३३, १०८, जी १८)।
मसण वि [मसृण] १ स्निग्ध, चिकना। २ सुकुमाल, कोमल, अकर्कश। ३ मन्द, धीमा (हे १, १३०; कुमा)।
मसरक्क सक [दे] सकुचना, समेटना। संकृ. 'दसवि करगुलीउ मसरक्किवि (अप)' (भवि)।
मसाण न [श्मशान] मसान, मरघट (गा ४०८, प्राप्र, कुमा)।
मसार पु [दे. मसार] मसृणता-संपादक पाषाण-विशेष, कसौटी का पत्थर (णाया १, १—पत्र ६; ओप)।
मसारगल्ल पु [मसारगल्ल] एक रत्न-जाति (णाया १, १—पत्र ३१; कप्प; उत्त ३६, ७६; इक)।
मसि स्त्री [मसि] १ काजल, कज्जल (कप्पू)। २ स्याही, सियाही (सुर २, ५)।
मसिहार पु [मसिहार] क्षत्रिय-परिव्राजक विशेष (औप)।
मसिण देखो मसण (हे १, १३०; कुमा; औप; से १, ४५; ५, ६४)।
मसिण वि [दे] रम्य, सुन्दर (दे ६, ११८)।
मसिणिअ वि [मसृणित] १ मृष्ट, शुद्ध किया हुआ, मार्जित, 'रोसिणिअ मसिणिअं' (पाअ)। २ स्निग्ध किया हुआ (से ६, ६)। ३ विलुलित, विमर्दित (से १, ५५)।
मसी देखो मसि (उवा)।
मसूर } पु न [मसूर, °क] १ धान्य-विशेष,
मसूरग } मसूरि (ठा ४, ३; सम १४६; पिंड
मसूरय } ६२३)। २ उच्छीर्षक, ओसीसा (सुर २, ८३; कप्प)। ३ वस्त्र या चर्म का वृत्ताकार आसन (पव ८४)।
मस्सु देखो मसु (सक्षि १२; पि ३१२)।
मस्सूरग देखो मसूरग, 'मस्सूरए य थिबुगे' (जीवस ५२)।
मह सक [काङ्क्ष्] चाहना, वाञ्छना। महइ (हे ४, १९२; कुमा; सण)।
मह सक [मथ्] १ मथना, विलोडन करना। २ मारना। महेज्जा (उवा)।
मह सक [मह्] पूजना। महइ (कुमा), महेइ (सिरि ५६६)। संकृ. महिअ (कुमा)। कृ. महणिज्ज (उप पृ १२६)।
मह पुन [मह] उत्सव (विपा १, १—पत्र ५; रंभा; पाअ; सण)।
मह पु [मख] यज्ञ (चड; गउड)।
मह वि [महत्] १ बड़ा, वृद्ध। २ विपुल, विस्तीर्ण। ३ उत्तम, श्रेष्ठ, 'एग मह सत्तुस्सेह' (णाया १, १—पत्र १३; काल; जी ७; हे १, ५)। स्त्री °ई (उव; महा)। °एवी स्त्री [°देवी] पटरानी (भवि)। °कंतजस पुं [°कान्तयशस्] राक्षस वंश का एक राजा, एक लंका-पति (पउम ५, २६५)। °कमलंग न [°कमलाङ्ग] संख्या-विशेष, ८४ लाख कमल की संख्या (जो २)। °कव्व न [°काव्य] सर्ग-बद्ध उत्तम काव्य-ग्रंथ (भवि)। °काल देखो महा-काल (देवेन्द्र २४)। °गइ पु [°गति] राक्षस वंश का एक राजा, एक लंकेश (पउम ५, २६५)। °ग्गह देखो महा-गह (सम ६३)। °ग्घ वि [°अर्घ] महा-मूल्य, कीमती (सुर ३, १०३; सुपा ३७)। °ग्घविअ वि [°अर्घित] १ महँगा, दुर्लभ (से १४, ३७)। २ विभूषित, 'विमलंगोवगगुणमहग्घविया' (सुपा १, ६०)। ३ सम्मानित, 'अच्चियवंदियपूइय-सक्कारियपणमिओ महग्घविओ' (उव)। °ग्घिम (अप) वि [°अर्घित] बहु-मूल्य, महँगा (भवि)। °चंद पु [°चन्द्र] १ राजकुमार-विशेष (विपा २, ५; ६)। २ एक राजा (विपा १, ४)। °च्च वि [°अर्च] १ बड़ा ऐश्वर्यवाला। २ बड़ी पूजा—सत्कार-वाला (ठा ३, १—पत्र ११७; भग)। °च्च वि [°अर्च्य] अति पूज्य (ठा ३, १; भग)। °च्छरिय न [°आश्चर्य] बड़ा आश्चर्य (सुर १०, ११८)। °जक्ख पु [°यक्ष] भगवान् अजितनाथ का शासना-धिष्ठायक देव (पव २६; संति ७)। °जाला स्त्री [°ज्वाला] विद्यादेवी-विशेष (संति ६)। °ज्जुइय वि [°द्युतिक] महान् तेजवाला (भग; औप)। °ड्ढि स्त्री [°ऋद्धि] महान् वैभव (राय)। °ड्ढिय, °ड्ढीअ वि [°ऋद्धिक] विपुल वैभववाला (भग; ओघभा १०)। °ण्णव पुं [°अर्णव] महा-सागर (सुपा ४१७; हे १, २६९)। °ण्णया स्त्री [°अर्णवा] १ बड़ी नदी। २ समुद्र-गामिनी (कस ४, २७ टि; बृह ४)। °तुडियंग न [°त्रुटिताङ्ग] ८४ लाख त्रुटित की संख्या (जो २)। °त्तण न [°त्व] बड़ाई, महत्ता (श्रा २७)। °त्तर वि [°तर] १ बहुत बड़ा (स्वप्न २८)। २ मुखिया, नायक, प्रधान (कप्प; औप; विपा १, ८)। ३ अन्त पुर का रक्षक (औप)। स्त्री. °रिया, °री (ठा ४, १—पत्र १९८; इक)। °त्थ वि [°अर्थ] महान् अर्थवाला (णाया १, ८; श्रा २७)। °त्थ न [°अस्त्र] अस्त्र-विशेष, बड़ा हथियार (पउम ७१, ६७)। °त्थिम पुस्त्री [°अर्थत्व] महार्थता (भवि)। °दलिल्ल वि [°दलिल] बड़ा दलवाला (प्रासू १२२)। °दह पु [°द्रह] बड़ा ह्रद (णाया १, १—पत्र ६४; गा १८६ अ)। °द्दि स्त्री [°अद्रि] १ बड़ी याचना। २ परिग्रह (पण्ह १, ५—पत्र ९२)। °द्दुम पुं [°द्रुम] १ महान् वृक्ष (हे ४, ४४५)। २ वैरोचन इन्द्र के एक पदाति-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०२)। °द्धि वि [°ऋद्धि] बड़ी ऋद्धिवाला (कुमा)। °धूम पुं [°धूम] बड़ा धुआँ (महा)। °न्नव देखो °ण्णव (श्रा २८)। °पाण न [°प्राण] ध्यान-विशेष (सिरि १३३०)। °पुंडरीअ पुं [°पुण्डरीक] ग्रह-विशेष

लोक (कुप्र ४११)। °लोईय वि [°लोकीय] मनुष्य-लोक से सम्बन्ध रखनेवाला (सुपा ५१६)।

मच्चिअ वि [दे] मल-युक्त (दे ६, १११ टी)।

मच्चिर वि [मदितृ] गर्व करनेवाला (कुमा)।

मच्चु पु [मृत्यु] १ मौत, मरण (आचा, सुर २, १३८, प्रासू १०६, महा)। २ यम, यमराज (पड्)। ३ रावण का एक सैनिक (पउम ५६, ३१)।

मच्छ पुं [मत्स्य] १ मछली (णाया १, १, पाअ; जी २०, प्रासू ५०)। २ राहु (सुज्ज २०)। ३ देश-विशेष (इक, सनि)। ४ छन्द का एक भेद (पिंग)। °खल न [°खल] मत्स्यों को सुखाने का स्थान (आचा २, १, ४, १)। °बंध पुं [°बन्ध] मच्छीमार, धीवर (पणह १, १, महा)।

मच्छ पु न [मत्स्य] मत्स्य के आकार की एक वनस्पति (आचा २, १, १०, ५, ६)।

मच्छंडिआ स्त्री [मत्स्यण्डिका] खण्डशर्करा, एक प्रकार की शक्कर (पणह २, ४, णाया १, १७, पणण १७, पिंड २८३, मा ४३)।

मच्छंडी स्त्री [मत्स्यण्डी] शक्कर (अणु १४७)।

मच्छत्थ देखो मथ = मन्थ्।

मच्छंध देखो मच्छ-बंध (विपा १, ८—पत्र ८२)।

मच्छर पुं [मत्सर] १ ईर्ष्या, द्वेष, डाह, पर-संपत्ति की असहिष्णुता (उव)। २ कोप, क्रोध। ३ वि. ईर्ष्यालु, द्वेषी। ४ क्रोधी। कृपण (हे २, २१)।

मच्छर न [मात्सर्य] ईर्ष्या, द्वेष (से ३, १६)।

मच्छरि वि [मत्सरिन्] मत्सरवाला (पणह २, ३, उवा, पाअ)। स्त्री °णी (गा ८४, महा)।

मच्छरिअ वि [मत्सरित, मत्सरिक] ऊपर देखो (पउम ८, ४६, पचा १, ३२, भवि)।

मच्छल देखो मच्छर = मत्सर (हे २, २१, पड्)।

मच्छिअ देखो मक्खिअ = माक्षिक (पव ४—गाथा २२०)।

मच्छिअ वि [मात्स्यिक] मच्छीमार (आ १२, अभि १८७, विपा १, ६, पिंड ६३१)।

मच्छिका (मा) देखो माउ = मातृ (प्राकृ १०२)।

मच्छिगा देखो मच्छिया (पि ३२०)।

मच्छिया } स्त्री [मक्षिका] मक्खी (णाया मच्छी } १, १६, जी १८, उत्त ३६, ६०, प्राप्र, सुपा २८१)।

मज्ज सक [मद्] अभिमान करना। मज्जइ, मज्जई, मज्जेज्ज (उव, सूअ १, २, २, १, धर्मसं ७८)।

मज्ज अक [मस्ज्] १ स्नान करना। २ डूबना। मज्जइ (हे ४, १०१), मज्जामो (महा ५७, ७, धर्मसं ८६४)। वकृ. मज्जमाण (गा २४६, णाया १, १)। संकृ मज्जिऊण (महा)। प्रयो., संकृ मज्जावित्ता (ठा ३, १—पत्र ११७)।

मज्ज सक [मृज्] साफ करना, मार्जन करना। मज्जइ (पड् प्राकृ ६६, हे ४, १०५)।

मज्ज न [मद्य] दारू, मदिरा (औप, उवा, हे २, २४, भवि)। °इत्त वि [°वत्] मदिरा-लोलुप (सुख १, १५)। °व वि [°प] मद्य-पान करनेवाला (पाअ)। °वीअ वि [°पीत] जिसने मद्य-पान किया हो वह (विपा १, ६—पत्र ६७)।

मज्जग वि [माद्यक] मद्य-सम्बन्धी, 'अन्नं वा मज्जगं रसं' (दस ५, २, ३६)।

मज्जण न [मज्जन] १ स्नान। २ डूबना (सुर ३, ७६, कप्पू, गउड, कुमा)। °घर न [°गृह] स्नान-गृह (णाया १, १—पत्र १६)। °धाई स्त्री [°धात्री] स्नान करानेवाली दासी (णाया १, १—पत्र ३७)। °पाली स्त्री [°पाली] वही अर्थ (कप्प)।

मज्जण न [मार्जन] १ साफ करना, शुद्धि (कप्प)। २ वि मार्जन करनेवाला (कुमा)। °घर न [°गृह] शुद्धि गृह (कप्प, औप)।

मज्जर देखो मजर (प्राकृ ५)। स्त्री. °री, 'को जुन्नमज्जरिं कंजिएण पवियारिउ तरइ' (सुर ३, १३३)।

मज्जविअ वि [मज्जित] १ स्नपित। २ स्नात, 'एत्थ सरे रे पथिअ गयवइवहुयाउ मज्जवियां' (वज्जा ६०)।

मज्जा स्त्री [दे. मर्या] मर्यादा (दे ६, ११३, भवि)।

मज्जा स्त्री [मज्जा] धातु-विशेष, चर्बी, हड्डी के भीतर का गूदा (सण)।

मज्जाइल्ल वि [मर्यादिन्] मर्यादावाला (निचू ४)।

मज्जाया स्त्री [मर्यादा] १ न्याय्य-पथ-स्थिति, व्यवस्था, 'रयणायरस्स मज्जाया' (प्रासू ६८, आवम)। २ सीमा, हद, अवधि। ३ कूल, किनारा (हे २, २४)।

मज्जार पुस्त्री [मार्जार] १ बिल्ला, बिलाव (कुमा, भवि)। २ वनस्पति-विशेष, 'वत्थुल-पोरगमज्जारपोइवल्ली य पालक्का' (पणण १—पत्र ३४)। स्त्री °रिआ, °री (कप्पू, पाअ)।

मज्जार पु [मार्जार] वायु-विशेष (भग १५—पत्र ६८६)।

मज्जाविअ वि [मज्जित] स्नपित (महा)।

मज्जिअ वि [दे] १ अवलोकित, निरीक्षित। २ पीत (दे ६, १४४)।

मज्जिअ वि [मज्जित] स्नात, (पिंड ४२३, महा, पाअ)।

मज्जिअ वि [मार्जित] साफ किया हुआ (पउम २०, १२७, कप्प, औप)।

मज्जिआ स्त्री [मार्जिता] रसाला, भक्ष्य-विशेष—दही, शक्कर आदि का बना हुआ और सुगन्ध से वासित एक प्रकार का खाद्य, श्रीखण्ड (पाअ, दे ७, २, पत्र २५६)।

मज्जिर वि [मज्जितृ] मज्जन करने की आदत-वाला (गा ४७३, सण)।

मज्जोक्क वि [दे] अभिनव, नूतन (दे ६, ११८)।

मज्झ न [मध्य] १ अन्तराल, मझार, बीच (पाअ, कुमा; द ३६, प्रासू ५०, १६७)। २ शरीर का अवयव-विशेष (कप्पू)। ३ संख्या-विशेष, अन्त्य और परार्ध्य के बीच की संख्या (हे २, ६०, प्राप्र)। ४ वि. मध्यवर्ती, बीच का (प्रासू १२५)। °एस पु [°देश] देश-विशेष, गंगा और यमुना के बीच का प्रदेश, मध्य प्रान्त (गउड)। °गय वि [°गत] १ बीच का, मध्य में स्थित (आचा, कप्प)। २ पुं अवधिज्ञान का एक भेद (णंदि)।

पुत्र (निर १, १)। °कण्हा स्त्री [°कृष्णा] राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत २५)। °कप्प पु [°कल्प] १ जैन ग्रन्थ-विशेष (णंदि)। २ काल का एक परिमाण (भग १५)। °कमल न [°कमल] सख्या-विशेष, चौरासी लाख महाकमलाग की सख्या (जो २)। °कव्व देखो °मह-कव्व (सम्मत्त १४६)। °काय पु [°काय] १ महोरग देवो का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३, इक)। २ वि महान् शरीरवाला (उवा)। °काल पु [°काल] १ महाग्रह-विशेष, एक ग्रह-देवता (सुज्ज २०, ठा २, ३)। २ दक्षिण लवण-समुद्र के पाताल-कलश का अधिष्ठायक देव (ठा ४, २—पत्र २२६)। ३ एक इन्द्र, पिशाच-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। ४ परमाधार्मिक देवो की एक जाति (सम २८)। ५ वायु-कुमार देवो का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १९८)। ६ वेलम्ब इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १९८)। ७ नव निधियो में एक निधि, जो धातुओं की पूर्त्ति करता है (उप ९८६ टी, ठा ९—पत्र ४४९)। ८ सातवी नरक-भूमि का एक नरकावास (ठा ५, ३—पत्र ३४१, सम ५८)। ९ पिशाच देवो की एक जाति (राज)। १० उज्जयिनी नगरी का एक प्राचीन जैन मन्दिर (कुप्र १७४)। ११ शिव, महादेव (आव ६)। १२ उज्जयिनी का एक श्मशान (अंत)। १३ राजा श्रेणिक का एक पुत्र (निर १, १)। १४ न एक देव-विमान (सम ३५)। °काली स्त्री [°काली] १ [illegible] विद्या-देवी (संति ५)। २ भगवान् सुमतिनाथ की शासन-देवी (संति ९)। ३ राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत २५)। °किण्हा स्त्री [°कृष्णा] एक महा-नदी (ठा ५, ३—पत्र ३५१)। °कुमुद, °कुमुय न [°कुमुद] १ एक देव-विमान (सम ३३)। २ सख्या-विशेष, चौरासी लाख महाकुमुदाग की सख्या (जो २)। °कुमुयअंग न [°कुमुदाङ्ग] संख्या, कुमुद को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (जो २)। °कुम्म पुं [°कूर्म] कूर्मावतार (गउड)। °कुल न [°कुल] १ श्रेष्ठ कुल (निचू ८)। २ वि. प्रशस्त कुल मे उत्पन्न, 'निक्खंता जे महाकुला' (सूअ १, ८, २४)। °गगा स्त्री [°गङ्गा] परिमाण-विशेष (भग १५)। °गह पुं [°ग्रह] १ सूर्य आदि ज्योतिष्क (सार्ध ८७)। °गह वि [°आग्रह] आग्रही, हठी (सार्ध ८७)। °गिरि पु [°गिरि] १ एक जैन महर्षि (उव, कप्प)। २ बडा पर्वत (गउड)। °गोव पु [°गोप] १ महान् रक्षक। २ जिन भगवान् (उवा, विसे २९५९)। °घोस पु [°घोष] १ ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिनदेव (सम १५४)। २ एक इन्द्र, स्तनित कुमार देवो का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। ३ एक कुलकर पुरुष (सम १५०)। ४ परमाधार्मिक देवो की एक जाति (सम २९)। ५ न. देवविमान-विशेष (सम १२, १७)। °चद पु [°चन्द्र] ऐरवत वर्ष के एक भावी तीर्थंकर (सम १५४)। °जणिअ पु [°जनिक] श्रेष्ठी, सार्थवाह आदि नगर के गण्य-मान्य लोग (कुमा)। °जलहि पु [°जलधि] महा-सागर (सुपा ४७४)। °जस पु [°यशस्] १ भरत चक्रवर्ती का एक पौत्र (ठा ८—पत्र ४२९)। २ ऐरवत क्षेत्र के चतुर्थ भावी तीर्थंकर-देव (सम १५४)। ३ वि. महान् यशस्वी (उत्त १२, २३)। °जाइ स्त्री [°जाति] गुल्म-विशेष (पण्ण १)। °जाण न [°यान] १ बडा यान—वाहन। २ चारित्र, संयम (आचा)। ३ एक विद्याधर-नगर का नाम (इक)। ४ पु मोक्ष, मुक्ति (आचा)। °जुद्ध न [°युद्ध] बडी लडाई (जीव ३)। °जुम्म पुं न [°युग्म] महान् राशि (भग ३५)। °ण देखो °यण, 'गामदुआरब्भासे अगडम्मीवे महाणमज्झे वा' (ओघ ६६)। °णई स्त्री [°नदी] बडी नदी (गउड, पउम ४०, १३)। °णदियावत्त पुं [°नन्द्यावर्त] १ घोष नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १९८)। २ न एक देवविमान (सम ३२)। °णगर देखो °नगर (राज)। °णलिण देखो °नलिण (राज)। °णील न [°नील] १ रत्न-विशेष। २ वि अति नील वर्णवाला (जीव ३, औप)। °णीला देखो °नीला (राज)। °णुभाअ, °णुभाग वि [°अनुभाग] महानुभाव, महाशय (नाट—मालती ३९, गच्छ १, ४, भग, सिरि १६)। °णुभाव वि [°अनुभाव] वही अर्थ (सुर २, ३५, द्र ६६)। °तमपहा स्त्री [°तमःप्रभा] सप्तम नरक-पृथिवी (पव १७२)। °तमा स्त्री [°तमा] वही (चेइय ७५६)। °तीरा स्त्री [°तीरा] नदी-विशेष (ठा ५, ३—पत्र ३५१)। °तुडिअ न [°त्रुटित] महात्रुटिताग को चौरासी लाख से गुणने पर जो सख्या लब्ध हो वह, सख्या-विशेष (जो २)। °दामड्ढि पु [°दामर्धि] ईशानेन्द्र के वृषभ-सैन्य का अधिपति (इक)। °दामड्ढि पु [°दामर्द्धि] वही अर्थ (ठा ५, १—पत्र ३०३)। °दुम देखो मह-द्दुम (इक)। २ न एक देव-विमान (सम ३५)। °दुमसेण पु [°द्रुमसेन] राजा श्रेणिक का एक पुत्र जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (अनु २)। °देव पु [°देव] १ श्रेष्ठ देव, जिन-देव (पउम १०९, १२)। २ शिव, गौरी-पति (पउम १०९, १२, सम्मत्त ७६)। °देवी स्त्री [°देवी] पटरानी (कप्पू)। °धण पु [°धन] एक वणिक् (पउम ५५, ३८)। °धणु पु [°धनुष्] बलदेव का एक पुत्र (निर १, ५)। °नई स्त्री [°नदी] बडी नदी (सम २७, कस)। °नदिआवत्त देखो °णदियावत्त (इक)। °नगर न [°नगर] बडा शहर (पण्ह २, ४)। °नग्र पु [°नद] ब्रह्मपुत्रा आदि बडी नदी (आवम)। °नलिण न [°नलिन] १ सख्या-विशेष, महानलिनाग को चौरासी लाख से गुणने पर जो सख्या लब्ध हो वह (जो २)। २ एक देव-विमान (सम ३३)। °नलिणग न [°नलिनाङ्ग] सख्या-विशेष, नलिन को चौरासी लाख से गुणने पर जो सख्या लब्ध हो वह (जो २)। °निज्जामय पु [°निर्यामक] श्रेष्ठ कर्णधार (उवा)। °निद्दा स्त्री [°निद्रा] मृत्यु, मरण (पउम ६, १९८)। °निनाद, °निनाय वि [°निनाद] प्रख्यात, प्रसिद्ध (ओघ ८९, ८९ टी)। °निसीह न [°निशीथ] एक जैन आगम-ग्रन्थ (गच्छ ३, २९)। °नीला स्त्री [°नीला] एक महानदी

मड्डुय पु [दे. मड्डुक] वाद्य-विशेष (राय ४६)।

मड्डा स्त्री [दे] १ बलात्कार, हठ, जबरदस्ती (दे ६, १४०, पाअ, सुर ३, १३६, सुख २, १५)। २ आज्ञा, हुकुम (दे ६, १४०, सुपा २७६)।

मड्डिअ वि [मर्दित] जिसका मर्दन किया गया हो वह (हे २, ३६, षड्, पि २९१)।

मड्डुअ देखो मद्दुअ (राज)।

मढ देखो मड्ड। मढइ (हे ४, १२६)।

मढ पुन [मठ] सन्यासियों का आश्रय, व्रतियों का निवासस्थान, 'मढो' (हे १, १९९, सुपा २३४, वज्जा ३४, भवि), 'मढं' (प्राप्र)।

मढिअ देखो मड्डिअ (कुमा)।

मढिअ वि [दे] १ खचित, गुजराती में 'मढेलु', 'एयाउ श्रोसहीओ तिघाउमढियाउ धारिज्जा' (सिरि ३७०)। २ परिवेष्टित (दे २, ७५, पाअ)।

मढी स्त्री [मठिका] छोटा मठ (सुपा ११३)।

मण सक [मन्] १ मानना। २ जानना। ३ चिन्तन करना। मणइ, मणसि (षड्, कुमा)। कवकृ. मणिज्जमाण (भग १३, ७, विसे ८१३)।

मण पुंन [मनस्] मन, अन्त करण, चित्त (भग १३, ७, विसे ३५२५, स्वप्न ४५, द २२, कुमा, प्रासू ४४, ४८, १२१)। °अगुत्ति स्त्री [°अगुप्ति] मन का असंयम (पि १५६)। °करण न [°करण] चिन्तन, पर्यालोचन (श्रावक ३३७)। °गुत्त वि [°गुप्त] मन को सयम में रखनेवाला (भग)। °गुत्ति स्त्री [°गुप्ति] मन का संयम (उत्त २४, २)। °जाणुअ वि [°ज्ञ] १ मन को जाननेवाला, मन का जानकार। २ सुन्दर, मनोहर (प्राकृ १८)। °जीविअ वि [°जीविक] मन को आत्मा माननेवाला (पराह १, २—पत्र २८)। °जोअ पुं [°योग] मन की चेष्टा, मनो-व्यापार (भग)। °ज्ञ, °ण्णु, °ण्णुअ देखो °जाणुअ (प्राकृ १८, षड्)। °थंभणी स्त्री [°स्तम्भनी] विद्या विशेष, मन को स्तब्ध करनेवाली दिव्य शक्ति (पउम ७, १३७)। °नाण न [°ज्ञान] मन का साक्षात्कार करनेवाला ज्ञान, मन-पर्यंव ज्ञान (कम्म ३, १८, ४, ११, १७, २१)। °नाणि वि [°ज्ञानिन्] मन-पर्यंव नामक ज्ञानवाला (कम्म ४, ४०)। °पज्जत्ति स्त्री [°पर्याप्ति] पुद्गलों को मन के रूप में परिणत करने की शक्ति (भग ६, ४)। °पज्जव पुं [°पर्यव] ज्ञान-विशेष, दूसरे के मन की अवस्था को जाननेवाला ज्ञान (भग, औप, विसे ८३)। °पज्जवि वि [°पर्यविन] मन पर्यंव ज्ञानवाला (पव २१)। °पसिण-विज्जा स्त्री [°प्रश्नविद्या] मन के प्रश्नों का उत्तर देनेवाली विद्या (सम १२३)। °बलिअ वि [°बलिन्, °क] मनो-बलवाला, दृढ मनवाला (पराह २, १, औप)। °मोहण वि [°मोहन] मन को मुग्ध करनेवाला, चित्ताकर्षक (गा १२८)। °योगि वि [°योगिन्] मन की चेष्टावाला (भग)। °वग्गणा स्त्री [°वर्गणा] मन के रूप मे परिणत होनेवाला पुद्गल-समूह (राज)। °वज्ज न [°वज्र] एक विद्याधर नगर (इक)। °समिइ स्त्री [°समिति] मन का संयम (ठा ८—पत्र ४२२)। °समिय वि [°समित] मन को सयम में रखनेवाला (भग)। °हंस पुं [°हंस] छन्द-विशेष (पिंग)। °हर वि [°हर] मनोहर, सुन्दर, चित्ताकर्षक (हे १, १५६, औप, कुमा)। °हरण पुंन [°हरण] पिंगल-प्रसिद्ध एक मात्रा-पद्धति (पिंग)। °भिराम, °भिरा-मेल्ल वि [°अभिराम] मनोहर (सम १४९, औप, उप पृ ३२२, उप २२० टी)। °म वि [°आप] सुन्दर, मनोहर (सम १४९, विपा १, १, औप, कप्प)। देखो मणो°।

मणं देखो मणय (प्राकृ ३८)।

मणसि वि [मनस्विन्] प्रशस्त मनवाला (हे १, २६)। स्त्री. °णी (हे १, २६)।

मणसिल° } स्त्री [मन शिला] लाल वर्ण
मणंसिला } की एक उपधातु, मनशिल, मैनशिल (कुमा, हे १, २६)।

मणग पु [मनक] एक जैन बाल-मुनि, महर्षि शय्यंभवसूरि का पुत्र श्रौर शिष्य (कप्प, धर्मवि ३८)। देखो मणय।

मणगुलिया स्त्री [दे] पीठिका (राय)।

मणण न [मनन] १ ज्ञान, जानना। २ समझना (विसे ३५२५)। ३ चिन्तन (श्रावक ३३७)।

मणय पु [मनक] द्वितीय नरक-भूमि का तीसरा नरकेन्द्रक—नरकावास-विशेष (देवेन्द्र ६)। देखो मणग।

मणयं श्र [मनाग्] श्रल्प, थोडा (हे २, १६९, पाअ, षड्)।

मणस देखो मण = मनस्, 'पसन्नमणसो करिस्सामि' (पउम ६, ५६), 'लाभो चेव तवस्सिस्स होइ अद्दीणमणसस्स' (ओघ ५३७)।

मणसिल° } देखो मणसिला (कुमा, हे १,
मणसिला } २६, जी ३, स्वप्न ६४)।

मणसीकय वि [मनसिकृत] चिन्तित (पराण ३४—पत्र ७८२ सुपा २४७)।

मणसीकर सक [मनसि + कृ] चिन्तन करना, मन मे रखना। मणसीकरे (उत्त २, २५)।

मणस्सि देखो मणंसि (धर्मवि १४६)।

मणा देखो मणय (हे २, १६९, कुमा)।

मणाउ } (श्रप) ऊपर देखो (कुमा, भवि, पि
मणाउं } ११४, हे ४, ४१८, ४२६)।

मणाग ऊपर देखो (उप १३२, महा)।

मणाल देखो मुणाल (राज)।

मणालिया स्त्री [मृणालिका] पद्म-कन्द का मूल (तंदु २०)। देखो मुणालिआ।

मणासिला देखो मणसिला (हे १, २६, पि ६४)।

मणि पुस्त्री [मणि] पत्थर-विशेष, मुक्ता आदि रत्न (कप्प, औप, कुमा, जी ३, प्रासू ४)। °अंग पुं [°अङ्ग] कल्प-वृक्ष की एक जाति जो आभूषण देती है (सम १७)। °आर पु [°कार] जौहरी, रत्नों के गहनों का व्यापारी (दे ७, ७७, मुद्रा ७९, णाया १, १३, धर्मवि ३६)। °कंचण न [°काञ्चन] रुचिम-पर्वत का एक शिखर (ठा २, ३—पत्र ७०)। °कूड न [°कूट] रुचक पर्वत का एक शिखर (दीव)। °क्खइअ वि [°खचित] रत्न-जटित (पि १९६)। °चइया स्त्री [°चयिता] नारी-

हजार योद्धाओं के साथ अकेला जूझनेवाला (सूत्र १, ३, १, १, गउड)। °रहि वि [°रथिन्] देखो पूर्व का २रा और ३रा अर्थ (उप ७२८ टी)। °राय पुं [°राज] १ बड़ा राजा, राजाधिराज (उप ७६८ टी, रभा, महा)। २ सामानिक देव, इन्द्र-समान ऋद्धिवाला देव (सुर १५, ६)। ३ लोकपाल देव (सम ८६)। °रिट्ठ पुं [°रिष्ट] वलि नामक इन्द्र का एक सेनापति (इक)। °रिसि पुं [°ऋषि] बड़ा मुनि, श्रेष्ठ साधु (उव)। °रिह, °रुह देखो मह-रिह (पि १४०, अभि १८७)। °रोरु पु [°रोरु] अप्रतिष्ठान नरकेन्द्रक की उत्तर दिशा मे स्थित एक नरकावास (देवेन्द्र २४)। °रोरुअ पुं [°रोरुक, °रौरव] सातवीं नरक-भूमि का एक नरकवास —नरक-स्थान (सम ५८, ठा ५, ३—पत्र ३४१, इक)। °रोहिणी स्त्री [°रोहिणी] एक महा-विद्या (राज)। °लंजर पु [°अलञ्जर] बड़ा जल-कुम्भ (ठा ४, २—पत्र २२६)। °लच्छी स्त्री [°लक्ष्मी] १ एक श्रेष्ठि-भार्या (उप ७२८ टी)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। ३ श्रेष्ठ लक्ष्मी। ४ लक्ष्मी-विशेष (नाट)। °लयंग न [°लताङ्ग] संख्या-विशेष, लता नामक संख्या को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (इक, जो २)। °लया स्त्री [°लता] संख्या-विशेष, महालताग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (जो २)। °लोहिअक्ख पुं [°लोहिताक्ष] वलीन्द्र के महिष-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०२, इक)। °वक्क न [°वाक्य] परस्पर-संबद्ध अर्थ वाले वाक्यो का समुदाय (उप ८५६)। °वच्छ पुं [°वत्स] विजय-विशेष, विदेह वर्ष का एक प्रान्त (ठा २, ३, इक)। °वच्छा स्त्री [°वत्सा] वही (इक)। °वण न [°वन] मथुरा के निकट का एक वन (ती ७)। °वण पुंन [°आपण] बड़ी दूकान (भवि)। °वप्प पु [°वप्र] विजयक्षेत्र-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०, इक)। °वय देखो मह-व्वय (सुपा ६५०)। °वराह पुं [°वराह] १ विष्णु का एक अवतार (गउड)। २ बड़ा सूअर (सूत्र १, ७, २५)। °वह देखो °पह (से १, ५८)। °वाउ पुं [°वायु] ईशानेन्द्र के अश्व-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०३, इक)। °वाड पुं [°वाट] बड़ा वाड़ा, महान् गोष्ठ, 'निव्वाणमहावाड' (उवा)। °विगइ स्त्री [°विकृति] अति विकार-जनक ये वस्तु—मधु, मास, मद्य और माखन (ठा ४, १—पत्र २०४, श्रत)। °विजय वि [°विजय] बड़ा विजयवाला, 'महाविजयपुप्फुत्तरपवरपुंडरीयाओ महाविमाणाओ' (कप्प)। °विदेह पुं [°विदेह] वर्ष-विशेष, क्षेत्र-विशेष (सम १२, उवा, औप, अत)। °विमाण न [°विमान] श्रेष्ठ देव-गृह (उवा)। °विल न [°विल] कन्दरा आदि बड़ा विवर (कुमा)। °वीर पु [°वीर] १ वर्तमान समय के अन्तिम तीर्थंकर (सम १, उवा, विपा १, १)। २ वि महान् पराक्रमी (किरात १६)। °वीरिअ पु [°वीर्य] इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ५)। °वीहि, °वीही स्त्री [°वीथि, °थी] बड़ा बाजार (पउम ६६, ३४)। २ श्रेष्ठ मार्ग (आचा)। °वेग पु [°वेग] एक देव-जाति, भूतो की एक प्रकार की जाति (राज, इक)। °वेजयंती स्त्री [°वैजयन्ती] बड़ी पताका, विजय-पताका, (कप्पू)। °सई स्त्री [°सती] उत्तम पतिव्रता स्त्री (उप ७२८ टी, पडि)। °सउणि स्त्री [°शकुनि] एक विद्याधर-स्त्री (पण्ह १, ४—पत्र ७२)। °सड्ढि वि [°श्रद्धिन्] बड़ी श्रद्धावाला (आचा, पि ३३३)। °सत्त वि [°सत्त्व] पराक्रमी (द्र ११, महा)। °समुद्द पु [°समुद्र] महासागर (उवा)। सयग, °सयय पु [°शतक] भगवान् महावीर का एक उपासक (उवा)। °सामाण न [°सामान] एक देव-विमान (सम ३३)। °साल पु [°शाल] एक युवराज (पडि)। °सिलाकंटय पुं [°शिलाकण्टक] राजा कूणिक और चेटकराज की लड़ाई (भग ७, ६—पत्र ३१५)। °सीह पुं [°सिंह] एक राजा, षष्ठ वलदेव और वासुदेव का पिता (ठा ६—पत्र ४४७)। °सीहणिक्कीलिय, °सीहनिकीलिय न [°सिंहनिक्रीडित] तप-विशेष (राज, पव २७१—गाथा १५२२)। °सीहसेण पुं [°सिंहसेन] भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर देवलोक में उत्पन्न राजा श्रेणिक का एक पुत्र (अनु २)। °सुक्क पु [°शुक्र] १ एक देवलोक, सातवाँ देवलोक (सम ३३, विपा २, १)। २ सातवें देवलोक का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। ३ न. एक देव-विमान (सम ३३)। °सुमिण पु [°स्वप्न] उत्तम फल का एक सूचक स्वप्न (णाया १, १—पत्र १३, पि ४४७)। °सुर पुं [°असुर] १ बड़ा दानव। २ दानवो का राजा हिरण्यकशिपु (से १, २, गउड)। °सुव्वय, °सुव्वया स्त्री [°सुव्रता] भगवान् नेमिनाथ की मुख्य श्राविका (कप्प, आवम)। °सूला स्त्री [°शूला] फांसी (श्रा २७)। °सेअ पुं [°श्वेत] एक इन्द्र, कूष्माण्ड नामक वान-व्यन्तर देवो का उत्तर दिशा का इन्द्र (इक, ठा २, ३—पत्र ८५)। °सेण पु [°सेन] १ ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिन-देव (सम १५४)। २ राजा श्रेणिक का एक पुत्र जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (अनु २)। ३ एक राजा (विपा १, ६—पत्र ८८)। ४ एक यादव (णाया १, ५)। ५ न एक वन (विसे २०८६)। देखो मह-सेण। °सेणकण्ह पुं [°सेनकृष्ण] राजा श्रेणिक का एक पुत्र (पि ५२)। °सेणकण्हा स्त्री [°सेनकृष्णा] राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत २५)। °सेल पु [°शैल] १ बड़ा पर्वत (णाया १, १)। २ न नगर-विशेष (पउम ५५, ५३)। °सोआम, °सोदाम पुं [°सौदाम] वैरोचन वलीन्द्र के अश्व-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १, इक)। °हरि पु [°हरि] एक नर-पति, दसवें चक्रवर्ती का पिता (सम १५२)। °हिमव, °हिमवंत पु [°हिमवत्] १ पर्वत-विशेष (पउम १०२, १०५, ठा २, ३, महा)। २ देव-विशेष (जं ४)।

महाअत्त वि [दे] आढ्य, श्रीमन्त (दे ६, ११६)।

महाइय पुं [दे] महात्मा (भवि)।

महाणड पुं [दे. महानट] रुद्र, महादेव (दे ६, ४, १२१)।

महाणस न [महानस] रसोई-घर, पाक-स्थान (णाया १, ८, गा १३, उप २५६ टी)।

कर्म मरिणज्जइ (कुप्र १०६)। वकृ. मण्णमाण (नाट. चैत १३३)।
मण्णण न [मानन] मानना, आदर (उप १५४)।
मण्णा देखो मन्ना (राज)।
मण्णिय देखो मन्निय (राज)।
मण्णु देखो मन्तु (गा ११, ५०८, दे ६, ७१, वेणी १७)।
मण्णे देखो मणे (कप्प)।
मत्त वि [मत्त] १ मद-युक्त, मतवाला (उवा, प्रासू ६४, ६८, भवि)। २ न मद्य, दारू (ठा ७)। ३ मद, नशा (पव १७१)। °जला स्त्री [°जला] नदी-विशेष (ठा २, ३, इक)।
मत्त देखो मेत्त = मात्र, 'वयणमत्तमिट्ठाए' (रंभा)।
मत्त न [अमत्र, मात्र] पात्र, भाजन (आचा २, १, ६, ३, ओघ २५१)। देखो मत्तय।
मत्त (अप) देखो मच्च = मर्त्य (भवि)।
मत्तंगय पु [मत्ताङ्गक, °ग] कल्पवृक्ष की एक जाति, मद्य देनेवाला कल्पतरु (सम १७, पव १७१)।
मत्तंड पु [मार्तण्ड] सूर्य, रवि (सम्मत्त १४५, सिरि १००८)।
मत्तग न [दे] पेशाव, मूत्र (कुलक ६)।
मत्तग } पुन [अमत्र, मात्रक] १ पात्र,
मत्तय } भाजन। २ छोटा पात्र, 'विइज्जओ मत्तओ होइ' (वृह ३, कप्प)।
मत्तय देखो मत्तग = दे (कुलक १३)।
मत्तट्टी स्त्री [दे] बलात्कार (दे ६, ११३)।
मत्तवारण पुंन [मत्तवारण] वरंडा, वरामदा, दालान (दे ६, १२३, सुर ३, १००, भवि)।
मत्तवाल पु [दे] मतवाला, मदोन्मत्त (दे ६, १२२, षड्, सुख २, १७, सुखा ४८६)।
मत्ता स्त्री [मात्रा] १ परिमाण (पिंड ६५१)। २ अंश, भाग, हिस्सा (स ४८३)। ३ समय का सूक्ष्म नाप। ४ सूक्ष्म उच्चारण-कालवाला वर्णावयव (पिंग)। ५ अल्प, लेश, लव (पाअ)।
मत्ता अ [मत्वा] जानकर (सूअ १, २, २, ३२)।
मत्तालव पुं [दे मत्तालम्ब] वरंडा, वरामदा (दे ६, १२३, सुर १, ५७)।
मत्तिया स्त्री [मृत्तिका] मिट्टी (पण्ण १—पत्र २५)। °वई स्त्री [°वती] नारी-विशेष, दशार्णदेश की राजधानी (पव २७५)।
मत्थ } पुन [मस्त, °क] माथा, सिर (से
मत्थग } १, १; स ३८५, औप)। °त्थ वि
मत्थय } [°स्थ] सिर में स्थित (गउड)। °मणि पुं [°मणि] शिरोमणि, प्रधान, मुख्य (उप ६४८ टी)।
मत्थय पुंन [मस्तक] गर्भ, फल आदि का मध्यभाग—अन्त सार (आचा २, १, ८, ६)।
मत्थयधोय वि [दे धौतमस्तक] दासत्व से मुक्त, गुलामी से मुक्त किया हुआ (णाया १, १—पत्र ३७)।
मत्थुलुंग } न [मस्तुलुङ्ग] १ मस्तक-स्नेह,
मत्थुलुय } सिर में से निकलता एक प्रकार का चिकना पदार्थ (पण्ह १, १, तंदु १०)। २ मेद का फिप्फिस आदि (ठा ३, ४—पत्र १७०, भग, तंदु १०)।
मथिय देखो महिअ = मथित (पण्ह २, ४—पत्र १३०)।
मद देखो मय = मद (कुमा, प्रयौ १६, पि २०२)।
मद (मा) देखो मय = मृत (प्राकृ १०२)।
मदण देखो मयण (स्वप्न ६३, नाट—मृच्छ २३१)।
मदणसला(गा) देखो मयणसलागा (पण्ण १—पत्र ५४)।
मदणा देखो मयणा = मदना (णाया २—पत्र २५१)।
मदणिज्ज वि [मदनीय] कामोद्दीपक, मदन-वर्धक (णाया १, १—पत्र १६, औप)।
मदि देखो मइ = मति (मा ३२, कुमा, पि १६२)।
मदीअ देखो मईअ (स २३२)।
मदुवी देखो मउई (चंड)।
मदोली स्त्री [दे] दूती, दूत कर्म करनेवाली स्त्री (षड्)।
मद्द सक [मृद्] १ चूर्ण करना। मालिश करना, मसलना, मलना। मद्दाहि (कप्प)। कर्म. मद्दीअदि (नाट—मृच्छ १३५)। हेकृ. मद्दिउं (पि ५८५)।
मद्दण न [मर्दन] १ अंग-चंपी, मालिश (सुपा २४)। २ हिंसा करना, 'तसथावरभूय मद्दण विविहं' (उव)। ३ वि. मर्दन करने-वाला (ती ३)।
मद्दल पुं [मर्दल] वाद्य-विशेष, मुरज, मृदंग (दे ६, ११६, सुर ३, ६८, सिरि १५७)।
मद्दलिअ वि [मार्दलिक] मृदंग बजानेवाला (सुपा २६४, ५५३)।
मद्दव न [मार्दव] मृदुता, नम्रता, विनय, अहंकार निग्रह (औप, कप्प)।
मद्दवि वि [मार्दविन्] नम्र, विनीत, 'अज्ज-विय मद्दवियं लाघवियं' (सूअ २, १, ५७, आचा)।
मद्दविअ वि [मार्दविक, °त] ऊपर देखो (वृह ४, वव १)।
मद्दिअ देखो मड्डिअ (पाअ)।
मद्दी स्त्री [माद्री] १ राजा शिशुपाल की मा का नाम (सूअ १, ३, १, १ टी)। २ राजा पाण्डु की एक स्त्री का नाम (वेणी १७१)।
मद्दुअ पुं [मद्दुक] भगवान् महावीर का राजगृह-निवासी एक उपासक (भग १८, ७—पत्र ७५०)।
मद्दुग पु [मद्गु, °क] पक्षि-विशेष, जल-वायस (भग ७, ६—पत्र ३०८)। देखो मग्गु।
मद्दुग देखो मुदुग (राज)।
मधु देखो महु (षड्, रंभा, पिंग)।
मधुघाद पु [मधुघात] एक म्लेच्छ-जाति (मृच्छ १५२)।
मधुर देखो महुर (निचू १, प्राकृ ८५)।
मधुसित्थ देखो महुसित्थ (ठा ४, ४—पत्र २७१)।
मधूला स्त्री [दे मधूला] पाद-गण्ड (राज)।
मन अ [दे] निषेधार्थक अव्यय, मत, नहीं (कुमा)।
मनुस्स देखो मणुस्स (चंड, भग)।
मन्न देखो मण्ण मन्नइ, मन्नसि (आचा, महा), मन्नते, मन्नेसि (रंभा)। कर्म, मन्निज्जउ (महा)। वकृ. मन्नंत, मन्नमाण (सुर १४, १७१, आचा, महा, सुपा ३०७, सुर ३, १७४)।

महिस्सर पु [महेश्वर] एक इन्द्र, भूतवादि-देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। देखो महेसर।

मही स्त्री [मही] १ पृथिवी, भूमि, धरती (कुमा, पाअ)। २ एक नदी (ठा ५, २—पत्र ३०८)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)। °नाह पु [°नाथ] राजा (उप पृ ६१)। °पहु पु [°प्रभु] राजा (उप ७२८ टी)। °पाल पु [°पाल] वही अर्थ (उप १८ टी, उव)। °रुह पु [°रुह] वृक्ष पेड (पाअ, सुर ३, ११०, १६, २४८)। °वइ पु [°पति] राजा (श्रा २८, उप १४६ टी सुपा ३८)। °वीढ न [°पीठ] भूमि-तल (सुर २, ७४)। °स पु [°श] राजा (श्रा १४)। °सक्क पु [°शक्र] वही अर्थ (श्रा १४)। देखो महि°।

महु पु [मधु] १ एक दैत्य (से १, १, अच्चु ४०)। २ वसन्त ऋतु, 'सुरही महू वसंतो' (पाअ, कुमा)। ३ चैत्र मास (सुर ३, ४०, १६, १०७ पिंग)। ४ पाचवाँ प्रति-वासुदेव राजा (पउम ५, १५६)। ५ एक राजा (श्रु ६१)। ६ मथुरा का एक राज-कुमार (पउम १२, २)। ७ चक्रवर्त्ती का एक देव-कृत महल (उत्त १३, १३)। ८ मधूक का पेड, महुआ का गाछ (कुमा)। ९ अशोक-वृक्ष (चड)। १० न मद्य, दारू (से २, २७)। ११ क्षौद्र शहद (कुमा, पव ४, ठा ४, १)। १२ पुष्प-रस। १३ मधुर-रस। १४ जल, पानी (प्राप्र, हे ३, २५)। १५ छन्द-विशेष (पिंग)। १६ मधुर, मिट्ट वस्तु (पण्ह २, १)। °अर पुस्त्री [°कर] भ्रमर, भौंरा (पाअ, स्वप्न ७३, औप, कप्प, पिंग)। स्त्री °रिआ °री (अभि १६०, नाट—मृच्छ ५७)। °अरवित्ति स्त्री [°करवृत्ति] माधुकरी, भिक्षा वृत्ति (सुपा ८३)। °अरगीय न [°करगीत] नाट्य-विधि-विशेष (महा)। °आसव वि [°आश्रव] लब्धि-विशेषवाला, जिसके प्रभाव से वचन मधुर लगे ऐसी लब्धिवाला (पण्ह २, १—पत्र १००)। °गुलिया स्त्री [°गुटिका] शहद की गोली (ठा ४, २)। °पडल न [°पटल] मधुपुडा (दे ३, १२)। °भार पुं [°भार] छन्द-विशेष (पिंग)। °मक्खिया, °मच्छिआ स्त्री [°मक्षिका] शहद की मक्खी, 'अह उड्डियाउ तामरमुहाउ महुक्खि (?मक्खि)याउ सव्वत्तो' (धर्मवि १२४, गा ६३४)। °मय वि [°मय] मधु से भरा हुआ (से १, ३०)। °मह पु [°मथ] विष्णु, वासुदेव, उपेन्द्र (पाअ, से १, १७)। २ भ्रमर (से १, १७)। °मह पु [°मह] वसन्त का उत्सव (से १, १७)। °महण पुं [°मथन] १ विष्णु (से १,१ वज्जा २४, गा ११७, हे ४,३८४, पि १४३, पिंग)। २ समुद्र, सागर। ३ सेतु, पुल (से १, १)। °मास पुं [°मास] चैत मास (भवि)। °मित्त पुन [°मित्र] कामदेव (सुपा ५२६)। °मेहण न [°मेहन] रोग-विशेष, मधु-प्रमेह (आचा १, ६, १, २)। °मेहणि वि [°मेहनिन्] मधु-प्रमेह रोगवाला (आचा)। °मेहि पु [°मेहिन्] वही अर्थ (आचा)। °राय पुं [°राज] एक राजा (रयण ७४)। °लट्ठि स्त्री [°यष्टि] १ ओषधि-विशेष, यष्टिमधु, मुलेठी, जेठी मधु। २ इक्षु, ईख (हे १,२४७)। °वक्क पु [°पर्क] १ दधियुक्त मधु, दही और शहद। २ षोडशोप-चार पूजा का छठवाँ उपचार (उत्तर १०३)। °वार पु [°वार] मद्य, दारू (पाअ)। °सिंगी स्त्री [°श्रृङ्गी] वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३५)। °सूयण पुं [°सूदन] विष्णु (गउड, सुपा ७)।

महुअ पु [मधूक] १ वृक्ष विशेष, महुआ का गाछ (गा १०३)। २ न. महुआ का फल (प्राप्र, हे १, १२२)।

महुअ पु [दे] १ पक्षि-विशेष, श्रीवद पक्षी। २ मागध, स्तुति-पाठक (दे ६, १४४)।

महुण सक [मथ्] १ विलोडन करना। २ विनाश करना। वकृ 'विमुक्कट्टहासा जलियजलणपिंगलकेसा महुणिंत-जालाकराल-पिसाया मुक्का' (महा)।

महुत्त (अप) देखो मुहुत्त (भवि)।

महुप्पल न [महोत्पल] कमल, पद्म, 'महुप्पलं पकय नलिणं' (पाअ)।

महुमुह पु [दे. मधुमुख] पिशुन, दुर्जन, खल (दे ६, १२२)।

महुर पुं [महुर] १ अनार्य देश-विशेष। २ उस देश में रहनेवाली अनार्य मनुष्य-जाति (पण्ह १, १—पत्र १४)।

महुर वि [मधुर] १ मीठा, मिट्ट (कुमा, प्रासू ३३, गउड, गा ४०१)। २ कोमल (भग ६, ३१, औप)। °भासि वि [°भाषिन्] प्रिय-भाषी (पउम ६, १३३)।

महुरा स्त्री [मथुरा] भारत की एक प्रसिद्ध नगरी, मथुरा (ठा १०, सम १५३, पण्ह १, ३, ३, २, १०, कुमा, वज्जा १२२)। °मंगु पु [°मङ्गु] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य (सिक्खा ६२)। °हिव पुं [°धिप] मथुरा का राजा (कुमा)।

महुरालिअ वि [दे] परिचित (दे ६, १२५)।

महुरिम पुस्त्री [मधुरिमन्] मधुरता, माधुर्य (सुपा २६४, कुप्र ५०)।

महुरेस पुं [मथुरेश] मथुरा का राजा (कुमा)।

महुला स्त्री [दे] रोग-विशेष, पाद-गण्ड (निचू २)।

महुसित्थ न [मधुसिक्थ] १ मदन, मोम (उप पृ २०६)। २ पङ्क-विशेष, स्त्री के पैर में लगा हुआ अलता तक लगनेवाला कादा (ओघभा ३३)। ३ कला-विशेष (स ६०२)।

महुस्सव देखो महूसव (राज)।

महूअ देखो महुअ=मधूक (कुमा, हे १ १२२)।

महूसव पुं [महोत्सव] वडा उत्सव (सुर ३, १०८, नाट—मृच्छ ५४)।

महेंद देखो महिंद (से ६, २२)।

महेड्डु पु [दे] पङ्क, कादा (दे ६, ११६)।

महेब्भ पुं [महेभ्य] वडा शेठ (श्रा १६)।

महेभ पु [महेभ] वडा हाथी (कुमा)।

महेला स्त्री [महेला] स्त्री, नारी (हे १, १४६, कुमा)।

महेस पु [महेश] नीचे देखो (त्रि ६४, भवि)।

महेसर पुं [महेश्वर] १ महादेव, शिव (पउम ३५, ६४, धर्मवि १२८)। २ जिनदेव, अर्हन् (पउम १०६, १२)। ३ श्रीमन्त, आढ्य (सिरि ४२)। ४ भूतवादि देवों के उत्तर दिशा का इन्द्र (इक)। °दत्त पु [°दत्त] एक पुरोहित (विपा १, ५)।

सिंह, केसरी (पउम २, १७, उप पृ ३०)। °लंछण पुं [°लाञ्छन] चन्द्रमा (पाअ, कुमा, सुर १३, ५३)। °लोअणा स्त्री [°रोचना] गोरोचन, गोरोचना, पीत-वर्ण द्रव्य-विशेष (अभि १२७)। °ारि पुं [°ारि] सिंह (पाअ)। °ारिदमण पुं [°ारिदमन] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति (पउम ५, २६२)। °ाहिव पु [°ाधिप] सिंह, केसरी (पाअ, स ६)। देखो मिअ, मिग = मृग।

मयंक } देखो मिअंक (हे १, १७७, १८०,
मयंग } कुमा, षड्, गा ३६६, रंभा)।

मयग देखो मायग = मातंग, 'कूवर वरुणो भिउडी गोमेहो वामणो मयगो' (पव २६)।

मयंग पुं [मृदङ्ग] वाद्य-विशेष (प्राकृ ८)।

मयगय पुं [मतङ्गज] हाथी, हस्ती (पउम ८०, ६६, उप पृ २६०)।

मयगा स्त्री [मृतगङ्गा] जहाँ पर गंगा का प्रवाह रुक गया हो वह स्थान (णाया १, ४—पत्र ६६)।

मयंतर न [मतान्तर] भिन्न मत, अन्य मत (भग)।

मयंद देखो मइंद = मृगेन्द्र (सुपा ९२)।

मयध वि [मदान्ध] मद के कारण अन्धा बना हुआ, मदोन्मत्त (सुर २, ६६)।

मयग वि [मृतक] १ मरा हुआ। २ न. मुर्दा (णाया १, ११, कुप्र २९, औप)। °किच्च न [°कृत्य] श्राद्ध आदि कर्म (णाया १, २)।

मयड पुं [दे] आराम, बगीचा (दे ६, ११५)।

मयण पुं [मदन] १ कन्दर्प, कामदेव (पाअ, धण २५, कुमा, रंभा)। २ लक्ष्मण का एक पुत्र (पउम ९१, २०)। ३ एक वणिक्-पुत्र (सुपा ६१७)। ४ छन्द का एक भेद (पिंग)। ५ वि. मद-कारक, मादक, 'मयणा दग्गनिव्वलिया निव्वलिया जह कोद्दवा तिविहा' (विसे १२२०)। ६ न. मीन, मोम, 'मयणो मयण व्विअ विलीणो' (धण २५, पाअ, सुर २, २४६)। °घरिणी स्त्री [°गृहिणी] काम-प्रिया, रति (कुप्र १०६)। °तालंक पुं [°तालङ्क] छन्द-विशेष (पिंग)। °तेरसी स्त्री [°त्रयोदशी] चैत्र मास की शुक्ल त्रयोदशी तिथि (कुप्र ३७८)। °दुम पु [°द्रुम] वृक्ष-विशेष (से ७, ६६)। °फल न [°फल] फल-विशेष, मैनफल, 'तओ तेणुप्पल मयणफलेण भाविय मणुस्सहत्थे दिन्नं, एयं वररुइस्स देज्जाहि' (सुख २, १७)। °मंजरी स्त्री [°मञ्जरी] १ राजा चण्डप्रद्योत की एक स्त्री का नाम। २ एक श्रेष्ठि-कन्या (महा)। °रेहा स्त्री [°रेखा] एक युवराज की पत्नी (महा)। °वेय पु [°वेग] पुरुष-विशेष का नाम (भवि)। °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] राजा श्रीपाल की एक पत्नी (सिरि ५३)। °हरा स्त्री [°गृह] छन्द विशेष (पिंग)। °हल देखो °फल, 'मयणहलगंधओ ता उव्वमिया चंद-हाससुरा' (धर्मवि ६४)।

मयणंकुस पु [मदनाङ्कुश] श्रीरामचन्द्र का एक पुत्र, कुश (पउम ६७, ९)।

मयणसलागा } स्त्री [दे मदनशलाका]
मयणसलाया } मैना, सारिका (जीव १ टी—पत्र ४१, दे ६, ११९)।

मयणसाला स्त्री [दे मदनशाला] सारिका-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८)।

मयणा स्त्री [दे. मदना] मैना, सारिका (उप १२९ टी, श्राव १)।

मयणा स्त्री [मदना] १ वैरोचन बलीन्द्र की एक पटरानी (ठा ५, १—पत्र ३०२)। २ शक्र के लोकपाल की एक स्त्री (ठा ४, १—पत्र २०४)।

मयणाय पुं [मैनाक] १ द्वीप-विशेष। २ पर्वत-विशेष (भवि)।

मयणिज्ज देखो मदणिज्ज (कप्प, पण्ण १७)।

मयणिवास पुं [दे] कन्दर्प, कामदेव (दे ६, १२६)।

मयर पुं [मकर] १ जलजन्तु-विशेष, मगर-मच्छ (औप, सुर १३, ४६)। २ राशि-विशेष, मकर राशि (सुर १३, ४६, विचार १०६)। ३ रावण का एक सुभट (पउम ५६, २९)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। °केउ पुं [°केतु] कामदेव, कन्दर्प (कप्पू)। °द्धय पुं [°ध्वज] वही (पाअ; कुमा, रंभा)। °लंछण पुं [°लाञ्छन] वही (कप्पू, पि ५४)। °हर पुंन [°गृह] वही (पाअ, से १, १८; ४, ४८, वज्जा १५४, भवि)।

मयरंद पुं [दे मकरन्द] पुष्प-रज, पुष्प-पराग (दे ६, १२३, पाअ, कुमा ३, ५४)।

मयरंद पु [मकरन्द] पुष्प-रस, पुष्प-मधु (दे ६, १२३, सुर ३, १०, प्रासू ११३, कुमा)।

मयल देखो मइल = मलिन (सुपा २६२)।

मयलणा देखो मइलणा (सुपा १२४, २०६)।

मयलवुत्ती [दे] देखो मइलपुत्ती (दे ६, १२५)।

मयलिअ देखो मलिणिअ (उप ७२८ टी)।

मयल्लिगा स्त्री [मतल्लिका] प्रधान, श्रेष्ठ, 'कूडक्खरविओ(?उ)मयल्लिगाणं' (रंभा १७)।

मयह देखो मगह। °सामिय पुं [°स्वामिन्] मगध देश का राजा (पउम ६१, ११)। °पुर न [°पुर] राज-गृह नगर (वसु)। °ाहिवइ पुं [°ाधिपति] मगध देश का राजा (पउम २०, ४७)।

मयहर पुं [दे] १ ग्राम-प्रधान, ग्राम-प्रवर, गाँव का मुखिया (पव २६८, महा, पउम ६३, १६)। २ वि. वडील, मुखिया, नायक, 'सयलहत्थारोहपहाणमयहरेण' (स २८०, महानि ४, पउम ६३, १७)। स्त्री. °रिगा, °रिया, °री (उप १०३१ टी, सुर १, ४१, महा, सुपा ७९, १२६)।

मयाई स्त्री [दे] शिरो-माला (दे ६, ११५)।

मयार पुं [मकार] १ 'म' अक्षर। २ मका-रादि अश्लील—अवाच्य शब्द, 'जत्थ जयार-मयारं समणी जंपइ गिहत्थपच्चक्खं' (गच्छ ३, ४)।

मयाल (अप) देखो मराल (पिंग)।

मयालि पुं [मयालि] जैन महर्षि-विशेष—१ एक अन्तकृद् मुनि (अंत १४)। २ एक अनुत्तर-गामी मुनि (अनु १)।

मयाली स्त्री [दे] लता-विशेष, निद्राकरी लता (दे ६, ११६, पाअ)।

मर अक [मृ] मरना। मरइ, मरए (हे ४, २३४, भग, उव, महा, षड्), मर (हे ३, १४१)। मरिज्जइ, मरिज्जउ (भवि, पि ४७७)। भूका. मरही, मरीअ (आचा, पि ४६६)। भवि. मरिस्ससि (पि ५२२)। वकृ. मरंत.

मंसुयाहिं माउयाहिं उवसोहियाइं' (गाया १, ६—पत्र १५८)।

माउआपय न [मातृकापद्] मूलाक्षर, 'अ' से 'ह' तक के अक्षर (दसनि १, ८)।

माउक्क वि [मृदु, °क] कोमल, कुमार (हे १, १२७, २, ६६, कुमा)।

माउक्क न [मृदुत्व] कोमलता (हे १, १२७, २, २, कुमा)।

माउच्छा स्त्री [दे मातृष्वसृ] देखो माउ-च्छा (षड्)।

माउच्छा स्त्री [दे] सखी, सहेली (षड्)।

माउच्छ वि [दे] मृदु, कोमल (दे ६, १२६)।

माउत्त, माउत्तण देखो माउक्क = मृदुत्व (कुमा, हे २, २, षड्)।

माउल पु [मातुल] माँ का भाई, मामा (सुर ३, ८१, रंभा, महा)।

माउलिअ देखो मउलिअ (से ११, ६१)।

माउलिंग देखो माहुलिंग (राज)।

माउलिंगा, माउलिंगी स्त्री [मातुलिङ्गा, °ङ्गी] बीजौरे का गाछ (पण्ण १—पत्र ३२, पउम ४२, ६)।

माउलुंग देखो माहुलिंग (हे १, २१४, अनु)।

मागंदिअ पुं [माकन्दिक] माकन्दिकपुत्र नामक एक जैन मुनि (भग १८—१ टी)। °पुत्त पु [°पुत्र] वही अर्थ (भग १८, ३)।

मागसीसी स्त्री [मार्गशीर्षी] १ अगहन मास की पूर्णिमा। २ अगहन की अमावास्या (इक)।

मागह, मागहय वि [मागध, °क] १ मगध-देशीय, मगध देश में उत्पन्न, मगध देश का, मगध-संबन्धी (ओघ ७१३, विसे १४६६, पव ६१, णाया १, ८, पउम ६६, ५५)। २ पु स्तुति-पाठक, वन्दी, चारण (पात्र, औप)। °भासा स्त्री [°भाषा] देखो मागहिआ का पहला अर्थ (राज)।

मागहिआ स्त्री [मागधिका] १ मगध देश की भाषा, प्राकृत भाषा का एक भेद। २ कला-विशेष (औप)। ३ छन्द-विशेष (सुख २, ४५, अजि ४)।

माघवई स्त्री [माघवती] सातवीं नरक-भूमि (पव १४३, इक, ठा ७—पत्र ३८८)।

माघवा, माघवी [माघवा, °वी] ऊपर देखो, 'मघव त्ति माघव त्ति य पुढवीणं नामधेयाइं' (जीवस १२, इक)।

माज्जार देखो मज्जार (संक्षि २)।

माडंबिअ पुं [माडम्बिक] १ 'मडंब' का अधिपति (णाया १, १, औप, कप्प)। २ प्रत्यन्त—सीमा-प्रान्त का राजा (पण्ह १, ५—पत्र ६४)।

माडंबिय वि [माडम्बिक] चित्र मंडप का अध्यक्ष (राय १४१)।

माडिअ न [दे] गृह, घर (दे ६, १२८)।

माढर पुं [माठर] १ सौधर्मेन्द्र के रथ-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०३, इक)। २ न. गोत्र-विशेष (कप्प)। ३ शास्त्र विशेष (णंदि)।

माढर पुंस्त्री [माठर] माठर-गोत्र में उत्पन्न (णंदि ४६)।

माढरी स्त्री [माठरी] वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३६)।

माढिअ वि [माठित] सन्नाह-युक्त, वर्मित (कुमा)।

माढी स्त्री [माठी] कवच, वर्म, बख्तर (दे ६, १२८ टी, पण्ह १, ३—पत्र ४४, पाम्र, से १२, ६२)।

माण सक [मानय्] १ सम्मान करना, आदर करना। २ अनुभव करना। माणइ, माणेइ, माणंति, माणेमि (हे १, २२८, महा, कुमा; सिरि ६६)। वकृ. माणंत, माणेमाण (सुर २, १८२, णाया १, १—पत्र ३३)। कवकृ. माणिज्जंत (गा ३२०)। हेकृ. माणिउ, माणेउं (महा, कुमा)। कृ. माणणिज्ज, माणणीअ माणेयव्व (उव, सुर १२, १६५, अभि १०७, उप १०३१ टी), 'जया य माणिमो होइ पच्छा होइ अ-माणिमो' (दसचू १, ५)।

माण पुन [मान] १ गर्व, अहंकार, अभिमान, 'मउड्ढीकयमाणिणिमाणो' (कुमा), 'पुव्व विवुहसमक्ख गुरुणो एयस्स खडियं माणं' (सम्मत्त ११६)। २ माप, परिमाण। ३ नापने का साधन, बाट—बटखरा आदि (अणु; कप्प, जी ३०, आ १४)। ४ प्रमाण, सबूत (विसे ६४६, धर्मसं ५२५)। ५ आदर, सत्कार (णाया १, १, कप्प)। ६ पुं. एक श्रेष्ठि-पुत्र (सुपा ५४५)। °इंत, °इत्त, °इल्ल वि [°वन्] मान-वाला (षड्, हे २, १५६, हेका ७३, पि ५६५) स्त्री. °त्ता, °त्ती (कुमा, गउड)। °तुंग पु [°तुङ्ग] एक प्राचीन जैन कवि (नमि २१)। °वई स्त्री [°वती] १ मानवाली स्त्री (से १०, ६६)। २ रावण की एक पत्नी (पउम ७४, ११)। °संघ न [°सघ] एक विद्याधर-नगर (इक)। °वाइ वि [°वादिन्] अहंकारी (आचा)।

माण वि [मान] मान-संबन्धी, मान का; 'कोहाए माणाए मायाए' (पडि)।

माण न [दे] परिमाण-विशेष, दस शेर का नाप, गुजराती में 'माणु' (उप १५४)।

माणसि वि [दे] १ मायावी, कपटी (दे ६, १४७, षड्)। २ स्त्री. चन्द्र-वधू (दे ६, १४७)।

माणसि देखो मणसि (काप्र १६६, संक्षि १७, षड्)।

माणण न [मानन] १ आदर, सत्कार (आचा)। २ मानना (रयण ८४)। ३ अनुभव। ४ सुख का अनुभव, 'सुहसमाणणे' (अजि ३१)।

माणणा स्त्री [मानना] ऊपर देखो (पण्ह २, १, रयण ८४)।

माणय देखो माण = (दे) (सुपा ३५८)।

माणव पुं [मानव] १ मनुष्य, मर्त्य (पाअ, सुपा २४३)। २ भगवान् महावीर का एक गण (ठा ६—पत्र ४५१, कप्प)।

माणवग, माणवय पु [मानवक] १ एक निधि, अन्य शास्त्रों की पूर्ति करनेवाला निधि (उप ६८६ टी, ठा ६—पत्र ४४६, इक)। २ ज्योतिष्क ग्रह-विशेष, एक महाग्रह (ठा २, ३, सुज्ज २०)। ३ सौधर्म देवलोक का एक चैत्य-स्तम्भ (सम ६३)।

माणवी स्त्री [मानवी] एक विद्या-देवी (संति ६)।

माणस न [मानस] १ सरोवर-विशेष (पण्ह १, ४, औप, महा, कुमा)। २ मन, अन्तः-करण (पाअ, कुमा)। ३ वि. मन संबन्धी,

मरुल पुं [दे] भूत-पिशाच (दे ६, ११४)।

मरुवय देखो मरुअअ (गा ६७७, कुमा, विक्र २९)।

मरुस देखो मरिस। मरुसिज्ज (भवि)।

मल सक [मल्] धारण करना (भग ६, ३३ टी—पत्र ४८०)।

मल देखो मद्द। मलइ, मलेइ (हे ४, १२६, प्राकृ ६८, भवि), मलेमि (से ३,६३), मलेंति (सुर १, ६७)। कर्म मलिज्जइ (पंचा १६, १०)। वकृ. मलेंत (से ४, ४२)। कवकृ. मलिज्जत (से ३, १३)। संकृ. मलिऊण, मणिऊण (कुमा, पि ५८५)। कृ. मलेव्व (वै ६६, निसा ३)।

मल पु [दे] स्वेद, पसीना (दे ६, १११)।

मल पुंन [मल] १ मैल (कुमा, प्रासू २५)। २ पाप (कुमा)। ३ बँधा हुआ कर्म (चेइय ६२२)।

मलपिअ वि [दे] गर्वी, अहंकारी (दे ६, १२१)।

मलण न [मर्दन, मलन] मर्दन, मलना (सम १२५, गउड, दे ३, ३४, सुपा ४४०, पंचा १६, १०)।

मलय पुं [दे मल्लक] आस्तरण-विशेष (णाया १, १—पत्र १३, १, १७—पत्र २२९)।

मलय पुं [दे मलय] १ पहाड़ का एक भाग (दे ६, १४४)। २ उद्यान, बगीचा (दे ६, १४४, पाम)।

मलय पुं [मलय] १ दक्षिण देश में स्थित एक पर्वत (सुपा ४५६, कुमा, षड्)। २ मलय-पर्वत के निकट-वर्त्ती देश-विशेष (पव २७५, पिंग)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)। ४ देवविमान-विशेष (देवेन्द्र १४३)। ५ न. श्रीखण्ड, चन्दन (जीव ३)। ६ पुंस्त्री मलय देश का निवासी (पण्ह १, १)। °केउ पुं [°केतु] एक राजा का नाम (सुपा ६०७)। °गिरि पुं [°गिरि] एक सुप्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार (इक, राज)। °चंद पुं [°चन्द्र] एक जैन उपासक का नाम (सुपा ६४५)। °द्दि पुं [°द्रि] पर्वत-विशेष (सुपा ४७७)। °भव वि [°भव] १ मलय देश में उत्पन्न। २ न चन्दन (गउड)। °मई स्त्री [°मती] राजा मलयकेतु की स्त्री (सुपा ६०७)। °य [°ज] देखो °भव (राज)। °रुह पु [°रुह] चन्दन का पेड़ (सुर १, २८)। २ न. चन्दन-काष्ठ (पाअ)। °ाचल पु [°ाचल] मलय पर्वत (सुपा ४५६)। °ाणिल पुं [°ानिल] मलयाचल से बहता शीतल पवन (कुमा)। °ायल देखो °ाचल (रंभा)।

मलय वि [मालय] १ मलय देश में उत्पन्न (अणु)। २ न चन्दन (भवि)।

मलवट्टी स्त्री [दे] तरुणी, युवति (दे ६, १२४)।

मलहर पुं [दे] तुमुल-ध्वनि (दे ६, १२०)।

मलि वि [मलिन्] मलवाला, मल-युक्त (भवि)।

मलिअ वि [मृदित] जिसका मर्दन किया गया हो वह (गा ११०, कुमा, हे ३, १३५, औप, णाया १, १)।

मलिअ न [दे] १ लघु क्षेत्र। २ कुण्ड (दे ६, १४४)।

मलिअ वि [मलित] मल-युक्त, मलिन, 'मलमलियदेहवत्था' (सुपा १६६, गउड)।

मलिज्जत देखो मल = मृद्।

मलिण वि [मलिन] मैला, मल-युक्त (कुमा, सुपा ६०१)।

मलिणिय वि [मलिनित] मलिन किया हुआ (उव)।

मलीमस वि [मलीमस] मलिन, मैला (पाअ)।

मलेव्व देखो मल = मृद्।

मलेच्छ देखो मिलिन्छ पि ८४, नाट—चैत १८)।

मल्ल सक [मल्ल्] देखो मल = मल् (भग ६, ३३ टी)।

मल्ल पु [मल्ल] १ पहलवान, कुश्ती लड़नेवाला, बाहु योद्धा (औप, कप्प; पण्ह २, ४, कुमा)। २ पात्र, 'दीवसिहापडिपिल्लण-मल्ले मिल्लति नीसासे' (कुप्र १३१)। ३ भीत का अवष्टम्भन-स्तम्भ। ४ छप्पर का आधार-भूत काष्ठ (भग ८, ६—पत्र ३७६)। °जुद्ध न [°युद्ध] कुश्ती (कप्पू, हे ४, ३८२)। °दिन्न पुंन [°दत्त] एक राजकुमार (णाया १, ८)। °वाइ पु [°वादिन्] एक सुविख्यात प्राचीन जैन आचार्य और ग्रंथकार (सम्मत्त १२०)।

मल्ल न [माल्य] १ पुष्प, फूल (ठा ४, ४)। २ फूल की गुँथी हुई माला (पाअ, औप)। ३ मस्तक-स्थित पुष्पमाला (हे २, ७९)। ४ एक देव-विमान (सम ३६)। ५ बलि, 'मल्ल ति बलीए णाम' (आव० चूर्णि० भा० १ पत्र ३३२)।

मल्लइ पुं [मल्लकि, °किन्] नृप-विशेष (भग, औप, पि ८९)।

मल्लग } न [दे. मल्लक] १ पात्र-विशेष,
मल्लय } शराव (विसे २४७ टी, पिंड २१०, तंदु ४४, महा, कुलक १४, णाया १, ९, दे ६, १४५, प्रयौ ६७)। २ चषक, पानपात्र (दे ६, १४५)।

मल्लय न [दे] अपूप-भेद, एक तरह का पूआ। २ वि. कुसुम्भ से रक्त (दे ६, १४५)।

मल्लाणी स्त्री [दे] मातुलानी, मामी (दे ६, ११२, पाअ, प्राकृ ३८)।

मल्लि वि [मल्लिन्] धारण-कर्ता (भग ६, ३३ टी)।

मल्लि वि [माल्यिन्] माल्य-युक्त, मालावाला (औप)।

मल्लि स्त्री [मल्लि] १ उन्नीसवें जिन-देव का नाम (सम ४३, णाया १, ८, मंगल १२, पडि)। २ वृक्ष-विशेष, मोतिया का गाछ (दे २, १८)। °णाह, °नाह पु [°नाथ] उन्नीसवें जिन-देव (महा, कुप्र ६३)।

मल्लि स्त्री [मल्लि] पुष्प-विशेष (भग ६, ३३ टी)।

मल्लिअज्जुण पुं [मल्लिकार्जुन] एक राजा का नाम (कुमा)।

मल्लिआ स्त्री [मल्लिका] १ पुष्प-वृक्ष-विशेष (णाया १, ६, कुप्र ४६)। २ पुष्प-विशेष (कुमा)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)।

मल्लिहाण न [माल्याधान] १ पुष्प-बन्धन-स्थान। २ केश-कलाप (भग ६, ३३ टी—पत्र ४८०)।

मल्ली देखो मल्लि (णाया १, ८, पउम २० ३५, विचार १४८, कुमा)।

मायह्यि (अप) देखो मागहिया (भवि)।

माया = देखो माइ = मातृ, 'मायाइ अहं भणिओ' (धर्मवि ५, पाअ, तिपा १,६, पड्)। °पिइ, °पिति पुंन [°पितृ] माँ-बाप (पि ३६१, स १८४)। °मह पु [°मह] माँ का बाप (सुर ११, ४६, सुपा ३८४)। °वित्त देखो °पिइ, 'दुहियाण होइ मरण मायावित्तं महिलियाणं' (पउम १७, २१), 'तेणेव देवेण तहिं मायावित्ताइ रोवमाणाइं' (सुर ६, २३५, ९, २३६, धर्मवि २१, महा)।

माया देखो मत्ता = मात्रा, 'नो अइमायाए पाणभोयण आहारेता (उत्त १६, ८, औप, उव कम)।

माया स्त्री [माया] १ कपट, छल, शाठ्य, धोखा (भग, कुमा, ठा ३, ४, पाअ, प्रासू १७५)। २ इन्द्रजाल (दे ३, ५३, उप ८२३)। ३ मन्त्राक्षर-विशेष, 'ह्रीँ' अक्षर (सिरि १९७)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। °णर पुं [°नर] पुरुष-वेश-धारी स्त्री-आदि (धर्मस १२७८)। °वीय न [°बीज] 'ह्रीँ' अक्षर (सिरि ४०१)। °मोस पुन [°मृषा] कपट-पूर्वक असत्य वचन (णाया १, १, पराह १, २, भग, औप)। °वत्तिअ, °वत्तीय वि [°प्रत्ययिक] कपट मे होनेवाला, छल-मूलक (भग, ठा २, १ नव १७)। °वि वि [°विन्] मायायुक्त (पउम ८८, ११)। स्त्री. °विणी (सुपा ६२७)।

मायि वि [मायिन्] माया-युक्त, मायावी (उवा, पि ४०५)।

मार सक [मारय्] १ ताडन करना। २ हिंसा करना। मारइ, मारेइ (आचा, कुमा, भग)। भवि मारेहिसि (पि ५२८)। कर्म. मारिज्जइ (उव)। वकृ. मारत, मारेत (भत्त ६२, पउम १०५, ७६)। कवकृ मारिज्जत (सुपा १५७)। सकृ मारेत्ता (महा), मारि (अप) (हे ४, ४३९)। हेकृ मारेउं (महा)। कृ मारियव्व, मारेयव्व (पउम ११, ४२), मारणिज्ज (उप ३५७ टी)।

मार पु [मार] १ ताडन (सुपा २२६)। २ मरण, मौत (आचा, सूअ २, २, १७, उप पृ ३०८)। ३ यम, जम (सूअ १, १, ३, ७)। ४ कामदेव, कदर्प (उप ७६८ टी)। ५ चौथा नरक का एक नरकावास (ठा ४, ४—पत्र २६५, देवेन्द्र १०)। ६ वि. मारने-वाला (णाया १, १६—पत्र २०२)। °वहू स्त्री [°वधू] रति (सुपा ३०४)।

मार पु [मार] मणि का एक लक्षण (राय ३०)।

मारग वि [मारक] मारनेवाला। स्त्री °रिगा (कुप्र २३५)।

मारण न [मारण] १ ताडन। २ हिंसा (भग, स १२१)।

मारणअ (अप) वि [मारयितृ] मारनेवाला (हे ४, ४४३)।

मारणंतिअ वि [मारणान्तिक] मरण के अन्त समय का (सम ११, ११९, औप, उवा, कप्प)।

मारणया } स्त्री [मारणा] मारना (भग, मारणा } पराह १, १, विपा १, १)।

मारय देखो मारग (उव, सत्तोव ४३)।

मारा स्त्री [मारा] प्राणि-वध का स्थान, सूना (णाया १, १६—पत्र २०२)।

मारि स्त्री [मारि] १ रोग-विशेष, मृत्यु-दायक रोग (स २४२)। २ मारण (आवम)। ३ मौत, मृत्यु (उप ३२९)।

मारि देखो मार = मारय्।

मारि वि [मारिन्] मारनेवाला (महा)।

मारिच्च पुं [मारीच] रावण का एक सुभट (पउम ५९, ७)। देखो मारीअ।

मारिज्जि देखो मरिइ (पउम ८२, २६)।

मारिय वि [मारित] मारा हुआ (महा)।

मारिलग्गा स्त्री [दे] कुत्सित स्त्री (दे ६, १३१)।

मारिव पुन [दे] गौरव, 'गौरवे मारिवे' (सक्षि ४७)।

मारिस वि [मादृश] मेरे जैसा (कुमा)।

मारी स्त्री [मारी] देखो मारि (स २४२)।

मारिअ पु [मारीच] ऋषि-विशेष (अभि २४९)। देखो मारिच्च।

मारीइ } पु [मारीचि] एक विद्याधर मारीजि } सामन्त राजा (पउम ८, १३२)। २ रावण का एक सुभट (पउम ५६, २७)।

मारुअ पु [मारुत] १ पवन, वायु (पाअ, सुपा २०४, सुर ३, ४०, १२, १६४, अाप १४, महा)। २ हनूमान का पिता (से २, ४४)। °तणय पुं [°तनय] हनूमान (से ४४, हे ३, ८७)। °त्थ न [°ास्त्र] अस्त्र-विशेष, वाताश्र (पउम ५९, ६१)।

मारुअ वि [मारुक] मरु देश का, मरु सबन्धी, 'णो अमयवल्लरी मारुयम्मि कत्थइ थले होइ' (उप ९८६ टी)।

मारुइ पुं [मारुति] हनूमान (से १, ३७)।

माल अक [माल्] १ शोभना। २ वेष्टित होना। कृ अक्खिसहम्समालणीय' (णाया १, १—पत्र ३८)।

माल पु [दे] १ आराम, बगीचा (दे ६, १४६)। २ मञ्च, आसन-विशेष (दे ६, १४६, णाया १, १—पत्र ६३, पचा १३, १४)। ३ वि मञ्जु (दे ६, १४६)।

माल पुं [दे. माल] १ देश-विशेष (पउम ९८, ६५)। २ घर का उपरि-भाग, तला, मंजिल, गुजराती मे 'माळो' (णाया १, ९—पत्र ५७, चेइय ४८१, पचा १३, १४, ठा ३, ४—पत्र १५९)। ३ वनस्पति-विशेष (जं १)।

माल° देखो माला। °गार वि [°कार] माली (उप पृ १६६)।

मालइ° } स्त्री [मालती] १ लता विशेष। मालई } २ पुष्प-विशेष (पउम ५३, ७९, पाअ, कुमा)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)।

मालक्कार पुं [मालङ्कार] वेरोचन बलीन्द्र के हस्ति-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०२, इक)।

मालणीय देखो माल = माल्।

मालय देखो माल = दे माल (ठा ३, १—पत्र १२३)।

मालव पु [मालव] १ भारतीय देश-विशेष (इक, उप १४२ टी)। २ मालव देश का निवासी मनुष्य (पराह १, १—पत्र १४)।

मालव पुं [मालव] म्लेच्छ-विशेष, आदमी को उठा ले जानेवाली एक चोर जाति (वव ४)।

(है २, १२०)। °प्प पु [°आत्मन्] महान् आत्मा, महा-पुरुष (पउम ११८ १२१)। °प्फल वि [°फल] महान् फलवाला (सुपा ६२१)। °बाहु पुं [°बाहु] राक्षस वंश का एक राजा, एक लंका-पति (पउम ५, २६५)। °बोह पुं [°अबोध] महा-सागर,

'इय वुत्तंत सोउ रण्णा
निव्वासिया तहा सुगया।
महबोहे जलूणं जह
पुणरवि नागया तत्थ'
(सम्मत १२०)।

°ब्बल पुं [°बल] १ एक राज-कुमार (विपा २, ७, भग ११, ११, अंत)। २ वि. विपुल बलवाला (भग, औप)। देखो महा-बल। °ब्भय वि [°भय] महाभय-जनक (पण्ह १, १)। °ब्भूय न [°भूत] पृथिवी आदि पाँच द्रव्य (सूअ २, १, २२)। °मरुय पुं [°मरुत] एक महर्षि, अन्तकृद् मुनि-विशेष (अंत २५)। °मास पु [°अश्व] महान् अश्व (औप)। °यर देखो °त्तर (णाया १, १—पत्र ३७)। °रव पुं [°रव] राक्षस वंश का एक राजा, एक लंका-पति (पउम ५, २६६)। °रिसि पु [°ऋषि] महर्षि, महा-मुनि (उव, रयण ३७)। °रिह वि [°अर्ह] बड़े के योग्य, बहु-मूल्य, कीमती (विपा १, ३, औप, पि १४०)। °वाय पुं [°वात] महान् पवन (ओघ ३८७)। °व्वइय वि [°व्रतिक] महाव्रतवाला (सुपा ४७४)। °व्वय पु न [°व्रत] महान् व्रत, 'महव्वया पंच हु ति इमे' (पउम ११, २३), 'सेसा महव्वया ते उत्तरगुणसजुयावि न हु सम्म' (सिक्खा ४८, भग, उव)। °व्वय पु [°व्यय] विपुल खर्च (उप पृ १०८)। °सलाग स्त्री [°शलाका] पल्य-विशेष, एक प्रकार की नाप (जीवस १३६)। °सिव पुं [°शिव] एक राजा, षष्ठ बलदेव और वासुदेव का पिता (सम १५२)। °सुक्क देखो महा-सुक्क (देवेन्द्र १३५)। °सेण पुं [°सेन] १ आठवें जिनदेव का पिता (सम १५०)। २ एक राजा (महा)। ३ एक यादव (उप ६४८ टी)। ४ न. वन-विशेष (विसे १४८४)। देखो महा-सेण। देखो महा°।

महअर पुं [दे] गह्वर-पति, निकुञ्ज का मालिक (दे ६, १२३)।

महइ° अ [महाति] १ अति बड़ा। २ अत्यन्त विपुल। °जड वि [°जट] अति बड़ी जटा-वाला (पउम ५८, १२)। °महाइंदइ पु [°महेन्द्रजित्] इक्ष्वाकु-वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ६)। °महापुरिस पुं [°महापुरुष] १ सर्वोत्तम पुरुष, सर्व-श्रेष्ठ पुरुष। २ जिनदेव, जिन भगवान् (पउम १, १८)। °महालय वि [°महत्] अत्यन्त बड़ा, 'महइमहालयसि ससारसि' (उवा, सम ७२)। स्त्री. °लिया (भग, उवा)।

महई देखो मह = महत्।

महंग पुं [दे] उष्ट्र, ऊँट (दे ६, ११७)।

महंत देखो मह = महत् (आचा, औप, कुमा)।

महच्च न [माहत्य] १ महत्त्व। २ महत्त्ववाला (ठा ३, १—पत्र ११७)।

महण न [दे] पिता का घर (दे ६, ११४)।

महण न [मथन] १ विलोडन (से १, ४९, वज्जा ८)। २ घर्षण (कुप्र १४८)। ३ वि. मारनेवाला, 'दरितनागदप्पमहणा' (पण्ह १, ४)। ४ विनाश करनेवाला, 'नाणं च चरणं च भवमहणं' (सबोध ३५, सुर ७, २२५)। स्त्री °णी (श्रा ४६)।

महण पुं [महन] राक्षस वंश का एक राजा, एक लंका-पति (पउम ५, २६२)।

महणिज्ज देखो मह = मह्।

महति° देखो महइ° (ठा ३, ४, णाया १, १, औप)।

महती स्त्री [महती] वीणा-विशेष, सौ ताँत-वाली वीणा (राय ४६)।

महत्थार न [दे] १ भाण्ड, भाजन। २ भोजन (दे ६, १२५)।

महप्फुर पुं [दे] माहात्म्य, प्रभाव, 'तुह मुहचदपहाए फरिसाए महप्फुरो एसो' (रंभा ४३)।

महमह देखो मघमघ। महमहइ (हे ४, ७८, पड्, गा ४९७), महमहेइ (उव)। वकृ महमहंत (काप्र ६१७)। सकृ महमहिअ (कुमा)।

महमहिअ वि [प्रसृत] १ फैला हुआ (हे १, १४६, वज्जा १५०)। २ सुरभित (रंभा)।

महम्मह देखो महमह, 'जिअलोअसिरी महम्म-हइ' (गा ६०४)।

महया° देखो महा°, 'महयाहिमवंतमहंतमलय-मदरहिंदसारे' (णाया १, १ टी—पत्र ६, औप, विपा १, १, भग)।

महर वि [दे] असमर्थ, अशक्त (दे ६, ११३)।

महलयपक्ख देखो महालवक्ख (पड्—पृष्ठ १७६)।

महल्ल वि [दे महत्] १ वृद्ध, बड़ा (दे ६, १४३, उवा, गउड, सुर १, ५४, पचा ५, १६, सबोध ४७, ओघ १३६, प्रासू १४६, जय १२, सुपा ११७)। २ पृथुल, विशाल, विस्तीर्ण (दे ६, १४३, प्रवि १०, स ६६२, भवि)। स्त्री °ल्लिया (औप, सुपा ११३, ५८७)।

महल्ल वि [दे] १ मुखर, वाचाट, बकवादी (दे ६, १४३, पड्)। २ पु जलधि, समुद्र (दे ६, १४३)। ३ समूह, निवह (दे ६, १४३, सुर १, ५४)।

महल्लिर देखो महल्ल, 'हरिनहकढिणमहल्लिर-पयनहरपरंपराए विकरालो' (सुपा ११)।

महव देखो मघव (कुमा, भवि)।

महा स्त्री [मघा] नक्षत्र-विशेष (सम १२, सुज्ज १०, ५, इक)।

महा° देखो मह = महत् (उवा)। °अडड न [°अटट] सख्या-विशेष, ८४ लाख महाअट-टाग की सख्या (जो २)। °अडडग न [°अटटाङ्ग] सख्या-विशेष, ८४ लाख अटट (जो २)। °आल देखो °काल (नाट—चैत ८२)। °ऊह न [°ऊह] सख्या-विशेष, ८४ लाख महाऊहाग की सख्या (जो २)। °कइ पुं [°कवि] श्रेष्ठ कवि, समर्थ कवि (गउड, चेइय ८४३, रभा)। °कदिय पुं [°क्रन्दित] व्यन्तर देवो की एक जाति (पण्ह १, ४, औप, इक)। °कच्छ पुं [°कच्छ] १ महाविदेह वर्ष का एक विजय-क्षेत्र—प्रान्त (ठा २, ३, इक)। २ देव-विशेष (जं ४)। °कच्छा स्त्री [°कच्छा] अतिकाय नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १—पत्र २०४, णाया २, इक)। °कण्ह पुं [°कृष्ण] राजा श्रेणिक का एक

माहव पुं [माधव] १ श्रीकृष्ण, नारायण (गा ४४३, वज्जा १३०)। २ वसन्त ऋतु। ३ वैशाख मास (गा ७७७, रुक्मि ५३)। °पणइणी स्त्री [°प्रणयिनी] लक्ष्मी (स ५२३)।

माहविआ स्त्री [माधविका] नीचे देखो (पाअ)।

माहवी स्त्री [माधवी] १ लता-विशेष (गा ३२२, अभि १६६, स्वप्न ३६)। २ एक राज-पत्नी (पउम ६, १२६, २०, १८४)।

माहारयण न [दे] १ वस्त्र, कपड़ा। २ वस्त्र-विशेष (दे ६, १३२)।

माहिंद पु [माहेन्द्र] १ एक देव-लोक (सम ८)। २ एक इन्द्र, माहेन्द्र देवलोक का स्वामी (ठा २, ३—पत्र ८५)। ३ ज्वर-विशेष, 'माहिंदजरो जाओ' (सुपा ६०६)। ४ दिन का एक मुहूर्त्त (सम ५१)। ५ वि. महेन्द्र-सम्बन्धी (पउम ५५, १६)।

माहिंदफल न [माहेन्द्रफल] इन्द्रयव, कौरैया का बीज (उत्तनि ३)।

माहिल पुं [दे] महिषी-पाल, भैंस चरानेवाला (दे ६, १३०)।

माहिवाय पु [दे] १ शिशिर पवन (दे ६, १३१)। २ माघ का पवन (षड्)।

माहिसी देखो **महिसी** (कप्प)।

माही स्त्री [माघी] १ माघ मास की पूर्णिमा। २ माघ की अमावस्या (सुज्ज १०, ६)।

माहुर वि [माथुर] मथुरा का (भत्त १४५)।

माहुर न [दे] शाक, तरकारी (दे ६, १३०)।

माहुर, माहुरय वि [माधुर, °क] १ मधुर रस-वाला। २ आम्ल रस से भिन्न रसवाला (उवा)।

माहुरिअ न [माधुर्य] मधुरता (प्राकृ १६)।

माहुलिंग पु [मातुलिङ्ग] १ बीजपूर वृक्ष, बीजौरानीबू का पेड़ (हे १, २४४, चंड)। २ न. बीजौरे का फल (षड्, कुमा)।

माहेसर वि [माहेश्वर] १ महेश्वर-भक्त (सिरि ४८)। २ न नगर-विशेष (पउम १०, ३४)।

माहेसरी स्त्री [माहेश्वरी] १ लिपि-विशेष (सम ३५)। २ नगरी-विशेष (राज)।

मि (अप) देखो **अवि**—अपि (भवि)।

मि° स्त्री [मृत्] मिट्टी, मट्टी, 'जह मिल्ले-वावगमादलावुणोवस्समेव गइभावो' (विसे ३१४२)। °पिंड पुं [°पिण्ड] मिट्टी का पिंडा (अभि २००)। °म्मय वि [°मय] मिट्टी का बना हुआ (उप २४२, पिंड ३३४, सुपा २७०)।

मिअ देखो **मग**=मृग, 'सवणिंदियदोसेणं मिओ मओ वाहवाणेण' (सुर ८, १४२, उत्त १, ५, पण्ह १, १, सम ६०, रंभा, ठा ४, २, पि ५४)। °चक्क न [°चक्र] विद्या-विशेष, ग्राम-प्रवेश आदि मे मृगो के दर्शन आदि से शुभाशुभ फल जानने की विद्या (सूअ २, २, २७)। °णअणी, °नयणा स्त्री [°नयना] देखो **मय-च्छी** (नाट, सुर ६, १५३)। °मय पु [°मद] कस्तूरी (रंभा ३५)। °रिउ पुं [°रिपु] सिंह (सुपा ५७?)। °वाहण पु [°वाहन] भरतक्षेत्र के एक भावी तीर्थंकर (सम १५३)।

मिअ पुं [मृग] हरिण के आकार का पशु-विशेष, जो हरिण से छोटा और जिसका पुच्छ लम्बा होता है। °लोमिअ वि [°लोमिक] उसके बालो से बना हुआ (अणु ३५)।

मिअ देखो **मित्त**=मित्र (प्राप्र)।

मिअ वि [दे] अलंकृत, विभूषित (षड्)।

मिअ वि [मित] मानोपेत, परिमित (उत्त १६, ८, सम १५२, कप्प)। २ थोड़ा, अल्प, 'मिअं तुच्छं' (पाअ)। °वाइ वि [°वादिन्] आत्मा आदि पदार्थो को परिमित माननेवाला (ठा ८—पत्र ४२७)।

मिअ देखो **मिव**=इव (गा २०६ अ, नाट)।

मिअ° देखो **मिआ**। °ग्गाम पु [°ग्राम] ग्राम-विशेष (विपा १, १)।

मिअआ स्त्री [मृगया] शिकार (नाट—शकु २७)।

मिअंक पुं [मृगाङ्क] १ चन्द्र, चाँद (हे १, १३०, प्राप्र कुमा, काप्र १६४)। २ चन्द्र का विमान (सुज्ज २०)। ३ इक्ष्वाकु वंश का एक राजा (पउम ५, ७)। °मणि पुं [°मणि] चन्द्रकान्त मणि (कप्पू)।

मिअंग देखो **मयंग**=मृदग (कप्पू)।

मिअसिर देखो **मगसिर** (पि ५४)।

मिआ स्त्री [मृगा] १ राजा विजय की पत्नी (विपा १, १)। २ राजा बलभद्र की पत्नी (उत्त १६, १)। °उत्त, °पुत्त पु [°पुत्र] १ राजा विजय का एक पुत्र (विपा १, १, कर्म १५)। २ राजा बलभद्र का एक पुत्र, जिसका दूसरा नाम बलश्री था (उत्त १६, २)। °वई स्त्री [°वती] १ प्रथम वासुदेव की माता का नाम (सम १५२)। २ राजा शतानीक की पटरानी का नाम (विपा १, ५)।

मिइ स्त्री [मिति] १ मान, परिमाण। २ हद, अवधि, 'किं दुक्करमुवायाण न मिई जमुवायसत्तीए' (धर्मवि १४३)।

मिइ देखो **मिउ**=मृत् (धर्मसं ५५८)।

मिइग देखो **मयग**=मृदग (हे १, १३७, कुमा)।

मिइंद देखो **मइंद**=मृगेन्द्र (अभि २४२)।

मिउ स्त्री [मृद्] मिट्टी, मट्टी, 'मिउदंडचक्क-चीवरसामग्गीवसा कुलालुव्व' (सम्मत्त २२४), 'मिउपिंडो दव्वघडो सुसावगो तह य दव्वसाहु त्ति' (उप २५५ टी)।

मिउ वि [मृदु] कोमल, सुकुमार (औप, कुमा, सण)।

मिउ वि [मृदु] मनोज्ञ, सुन्दर, 'मिउमद्दव-सपन्ने' (णंदि ५२)।

मिंचण न [दे] मीचना, निमीलन (दे ३, ३०)।

मिंज°, मिंजा, मिंजिय स्त्री [मज्जा] १ शरीर-स्थित धातु-विशेष, हाड के बीच का अवयव-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८, महा, उवा, औप)। २ मध्यवर्ती अवयव, 'पेहुण-मिंजिया इवा' (पण्ण १७—पत्र ५२६)।

मिंठ, मिंठिल पुं [दे] हस्तिपक, हाथी का महावत (उप १२८ टी, कुप्र ३६८, महा, भत्त ७६, धर्मवि ८१, १३५, मन १०, उप १३०)। देखो **मेंठ**।

मिंढ, मिंढय पुंस्त्री [मेढ्र] १ मेंढा, भेड, मेष, गाडर (विसे ३०४ टी, उप पृ २०५, कुप्र १६२), 'ते य दरा मिंढया ते य' (धर्मवि

(ठा ५, ३—पत्र ३५१)। °पउम पुं [°पद्म] १ भरतक्षेत्र का भावी प्रथम तीर्थंकर (सम १५३)। २ पुंडरीकिणी नगरी का एक राजा और पीछे से राजर्षि (णाया १, १६—पत्र २४३)। ३ भारतवर्ष में उत्पन्न नववाँ चक्रवर्त्ती राजा (सम १५२, पउम २०, १४३)। ४ भरतक्षेत्र का भावी नववाँ चक्रवर्त्ती राजा (सम १५४)। ५ एक राजा (ठा ६)। ६ एक निधि (ठा ६—पत्र ४४६)। ७ एक द्रह (सम १०४, ठा २, ३—पत्र ७२)। ८ राजा श्रेणिक का एक पौत्र (निर १ १)। ६ देव-विशेष (दीव)। १० वृक्ष-विशेष (ठा २, ३)। ११ न. संख्या-विशेष, महापद्माग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (जो २)। १२ एक देव-विमान (सम ३३)। °पउमअग न [°पद्माङ्ग] सख्या-विशेष, पद्म को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (जो २)। °पउमा स्त्री [°पद्मा] राजा श्रेणिक की एक पुत्र वधू (निर १, १)। °पंडिय वि [°पण्डित] श्रेष्ठ विद्वान् (रंभा)। °पट्टण न [°पत्तन] बड़ा शहर (उवा)। °पण्ण, °पन्न वि [°प्रज्ञ] श्रेष्ठ बुद्धिवाला (उप ७७३, पि २७६)। °पभ न [°प्रभ] एक देव-विमान (सम १३)। °पभा स्त्री [°प्रभा] एक राज्ञी (उप १०३१ टी)। °पम्ह पु [°पक्ष्म] महाविदेह वर्ष का एक विजय—प्रान्त (ठा २, ३)। °परिण्णा, °परिन्ना स्त्री [°परिज्ञा] आचारांग सूत्र के प्रथम श्रुतस्कन्ध का सातवाँ अध्ययन (राज, आक)। °पसु पुं [°पशु] मनुष्य (गउड)। °पह पु [°पथ] बड़ा रास्ता, राज-मार्ग (भग, पण्ह १, ३, औप)। °पाण न [°प्राण] ब्रह्मलोक-स्थित एक देव-विमान (उत्त १८, २८)। °पायाल पु [°पाताल] बड़ा पाताल-कलश (ठा ४, २—पत्र २२६, सम ७१)। °पालि स्त्री [°पालि] १ बड़ा पल्य। २ सागरोपम-परिमित भव-स्थिति—आयु,

'अहमासि महापाणे
जुइम वरिससओवमे।
जा सा पालिमहापाली दिव्वा
वरिससओवमा'
(उत्त १८, २८)।

°पिउ पु [°पितृ] पिता का बड़ा भाई (विपा १, ३—पत्र ४८)। °पीढ पुं [°पीठ] एक जैन महर्षि (सट्ठि ८१ टी)। °पुंख न [°पुङ्ख] एक देव-विमान (सम २२)। °पुंड न [°पुण्ड्र] एक देव-विमान (सम २२)। °पुंडरीय न [°पुण्डरीक] १ विशाल श्वेत कमल (राय)। २ पु. ग्रह-विशेष (सम १०४)। ३ देव-विशेष। ४ देखो °पुंडरीअ (राज)। °पुर न [°पुर] १ एक विद्याधर-नगर (इक)। २ नगर-विशेष (विपा २,७)। °पुरा स्त्री [°पुरी] महापक्ष्म-विजय की राजधानी (ठा २,३—पत्र ८०)। °पुरिस पु [°पुरुष] १ श्रेष्ठ पुरुष (पण्ह २, ४)। २ किंपुरुष-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। °पुरी देखो °पुरा (इक)। °पोंडरीअ न [°पुण्डरीक] एक देव-विमान (स ३३)। देखो °पुंडरीय (ठा २, ३—पत्र ७२)। °फल देखो मह-प्फल (उवा)। °फलिह न [°स्फटिक] शिखरी पर्वत का एक उत्तर-दिशा-स्थित कूट (राज)। °बल वि [°बल] १ महान् बलवाला (भग)। २ पु ऐरवत क्षेत्र का एक भावी तीर्थंकर (सम १५४)। ३ चक्रवर्त्ती भरत के वंश में उत्पन्न एक राजा (पउम ५, ४, ठा ८—पत्र ४२६)। ४ सोमवंशीय एक नर-पति (पउम ५, १०)। ५ पाँचवें बलदेव का पूर्वजन्मीय नाम (पउम २०, १६०)। ६ भारतवर्ष का भावी छठवाँ वासुदेव (सम १५४)। °बाहु पु [°बाहु] १ भारत-वर्ष का भावी चतुर्थ वासुदेव (सम १५४)। २ रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३०)। अपर विदेह-वर्ष में उत्पन्न एक वासुदेव (आव ४)। °भद्द न [°भद्र] तप-विशेष (पव २७१)। °भद्दपडिमा स्त्री [°भद्रप्रतिमा] नीचे देखो (औप)। °भद्दा स्त्री [°भद्रा] व्रत विशेष, कायोत्सर्ग-ध्यान का एक व्रत (ठा २, ३—पत्र ६४)। °भय देखो मह-ब्भय (आचा)। °भाअ, °भाग वि [°भाग] महानुभाव, महाशय (अभि १७४, महा, सुपा १६८, उप पृ ३)। °भीम पु [°भीम] १ राक्षसों का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। २ भारतवर्ष का भावी आठवाँ प्रतिवासुदेव (सम १५४)। ३ वि. बड़ा भयानक (दंस ४)। °भीमसेण पुं [°भीमसेन] एक कुलकर पुरुष का नाम (सम १५०)। °भुअ पु [°भुज] देव-विशेष (दीव)। °भुअग पु [°भुजङ्ग] शेष नाग (से ७, ५६)। °भोया स्त्री [°भोगा] एक महा-नदी (ठा ५, ३—पत्र ३५१)। °मउंद पुन [°मुकुन्द] वाद्य-विशेष (भग)। °मंति पुं [°मन्त्रिन्] १ सर्वोच्च अमात्य, प्रधान मन्त्री (औप, सुपा २२३, णाया १, १)। २ हस्ति-सैन्य का अध्यक्ष (णाया १, १—पत्र १६)। °मंस न [°मांस] मनुष्य का मांस (कप्पू)। °मच्च पु [°अमात्य] प्रधान मन्त्री (कुमा)। °मत्त पु [°मात्र] हस्तिपक, हाथी का महावत,

'तत्तो नरसिंहनिवस्स कुंजरा
सिंहभयविहुरहियया।
अवगणियमहामत्ता मत्तावि
पलाइया झत्ति'
(कुप्र ३६४)।

°मरुया स्त्री [°मरुता] राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत)। °मह पु [°मह] महोत्सव (आव ४)। °महंत वि [°महत्] अति बड़ा (सुपा ५६४, स ६६३)। °माई (अप) स्त्री [°माया] छन्द-विशेष (पिंग)। °माउया स्त्री [°मातृका] माता की बड़ी बहन (विपा १ ३—पत्र ४०)। °माढर पु [°माठर] ईशानेन्द्र के रथ-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०३, इक)। °माणसिआ स्त्री [°मानसिका] एक विद्या-देवी (संति ६)। °माहण पु [°ब्राह्मण] श्रेष्ठ ब्राह्मण (उवा)। °मुणि पु [°मुनि] श्रेष्ठ साधु (कुमा)। °मेह पु [°मेघ] बड़ा मेघ (णाया १, १—पत्र ४, ठा ४, ४)। °मेह वि [°मेध] बुद्धिमान् (उप १४२ टी)। °मोक्ख वि [°मूर्ख] बड़ा बेवकूफ (उप १०३१ टी)। °यण पु [°जन] श्रेष्ठ लोग (सुपा २६१)। °यस देखो °जस (औप, कप्प)। °रक्खस पुं [°राक्षस] लंका नगरी का एक राजा जो घनवाहन का पुत्र था (पउम ५, १३६)। °रह पु [°रथ] १ बड़ा रथ (पण्ह २, ४—पत्र १३०)। २ वि. बड़ा रथवाला। ३ बड़ा योद्धा, दस

मिन्तिवय पुं [दे] ज्येष्ठ, पति का बडा भाई (दे ६, १३२)।

मित्ती स्त्री [मैत्री] मित्रता, दोस्ती (सूम २, ७, ३६, श्रा १४, प्रासू ८)।

मिथुण देखो मिहुण (पउम ६६, ३१)।

मिदु देखो मिउ (अभि १८३, नाट—रत्ना ८०)।

मिरिअ पुन [मिरिच] १ मरिच का गाछ। २ मिरच, मिर्चा (पएण १७—पत्र ५३१, हे १, ४६, ठा ३, १ टी, पव २५६)।

मिरिआ स्त्री [दे] कुटी झोपडी (दे ६, १३२)।

मिरिइ, मिरी, मिरीइ, मिरीअ पुस्त्री [मरीचि] किरण, प्रभा, तेज, 'चवलमिरिइकवय' (औप), 'सप्पहा समिरि (?री) या' (औप), 'निक्ककडच्छाया समिरीया' (औप, ठा ४, १—पत्र २२६), 'विज्जुघणमिरीइसूरदिप्पततेय—' (औप), 'सूरमिरीयकवयं विणिम्मुयतेहिं' (पराह १, ४—पत्र ७२)।

मिल अक [मिल्] मिलना। मिलइ (हे ४, ३३२, रभा, महा)। कर्म. मिलिज्जइ (हे ४, ४३४)। वकृ मिलत (से १०, १६)।

मिलक्खु पुन देखो मिच्छ = म्लेच्छ (ओघ ४४०, धर्मसं ५०८, ती १५, उत्त १०, १६), 'मिलक्खूणि' (पि ३८१)।

मिलण न [मिलन] मेल, मिलना, एकत्रित होना, 'लोगमिलणम्मि' (उप ५७८, सुपा २५०)।

मिलणा स्त्री ऊपर देखो (उप १२८ टी, उप ७०६)।

मिला, मिलाअ अक [म्लै] म्लान होना, निस्तेज होना। मिलाइ, मिलाअइ (दे २, १०६, ४, १८, २४०, षड्)। वकृ. मिलाअत, मिलाअमाण (पि १३६, ठा ३, ३, णाया १, ११)।

मिलाअ, मिलाण वि [म्लान] निस्तेज, विच्छाय (णाया १, १—पत्र ३७, स ४२५, हे २, १०६, कुमा, महा)।

मिलाण न [दे] पर्याण (?) '—थासगमिलाणचमरोगडपरिमंडियकडीण' (औप)।

मिलाणि स्त्री [म्लानि] विच्छायता (उप १४२ टी)।

मिलिअ वि [मिलित] मिला हुआ (गा ४४३, कुमा)।

मिलिअ वि [मेलित] मिलाया हुआ (कुमा)।

मिलिच्छ देखो मिच्छ = म्लेच्छ (हे १, ८४, हम्मीर ३४)।

मिलिट्ठ वि [म्लिष्ट] १ अस्पष्ट वाक्यवाला। २ म्लान। ३ न. अस्पष्ट वाक्य (प्राकृ २७)।

मिलिमिलिमिल अक [दे] चमकना। वकृ. मिलिमिलिमिलिमिलत (पएह १, ३—पत्र ४४)।

मिलिण देखो मिलिअ (ओघभा २२ टी)।

मिल्ल सक [मुच्] छोडना, त्यागना। मिल्लइ (भवि)। वकृ. मिल्लत (सुपा ३१७)। कृ. मिल्लेव (अप) (कुमा)। प्रयो., कवकृ मिल्लाविज्जंत (कुप्र १६२)।

मिल्लाविअ वि [मोचित] छुडाया हुआ (सुपा ३८८, हम्मीर १८, कुप्र ४०१)।

मिल्लिअ (अप) देखो मिलिअ (पिंग)।

मिल्लिर वि [मोक्तृ] छोडनेवाला (कुमा)।

मिल्ह देखो मिल्ल। मिल्हइ (आत्मानु २२), मिल्हति (कुप्र १७)। भवि मिल्हिस्स (कुप्र १०)। कृ. मिल्हियव्व (सिरि ३५७)।

मिल्हिय वि [मुक्त] छोडा हुआ (श्रा २७)।

मिव देखो इव (हे २, २८२, प्राप्र, कुमा)।

मिस सक [मिस्] शब्द करना। वकृ. मिसत (तंदु ४४)।

मिस न [मिष] बहाना, छल, व्याज (चेइय ८३१, सिक्खा २६, रंभा, कुमा)।

मिसमिस अक [दे] १ अत्यन्त चमकना। २ खूब जलना। वकृ. मिसमिसत (णाया १, १—पत्र १६, तंदु २६, उप ६४८ टी)।

मिसल (अप) सक [मिश्रय्] मिश्रण करना, मिलाना। मराठी में 'मिसलणें'। मिसलइ (भवि)।

मिसल (अप) देखो मीस, मीसालिअ (भवि)।

मिसिमिस देखो मिसमिस वकृ मिसिमिसंत, मिसिमिसिंत, मिसिमिसिमाण, मिसिमिसीयमाण, मिसिमिसेंत मिसिमिसेमाण (औप, कप्प, पि ५५८, उवा, पि ५५८, णाया १, १—पत्र ६४)।

मिसिमिसिय वि [दे] उद्दीप्त, उत्तेजित (सुर ३, ५०)।

मिस्स सक [मिश्रय्] मिश्रण करना, मिलाना। मिस्सइ (हे ४, २८)।

मिस्स देखो मीस = मिश्र (भग)।

°मिस्स पुं [°मिश्र] पूज्य, पूजनीय, 'वसिट्ठमिस्सेसु' (उत्तर १०३)।

मिस्साकूर पुन [मिश्राकूर] खाद्य-विशेष, 'अणुराहाहिं मिस्साकूर भोच्चा कज्ज सार्धेति' (सुज्ज १०, १७)।

मिह अक [स्निह्] स्नेह करना। मिहसि (सुर ४, २१)।

मिह देखो मिस = मिष, 'निग्गओ अलियगामंतरगमणमिहेण' (महा)।

मिह देखो मिहो (आचा)।

मिहिआ स्त्री [दे] मेघ-समूह (दे ६, १३२)। देखो महिआ।

मिहिआ स्त्री [मेघिका] अल्प मेघ (से ४, १७)। देखो महिआ।

मिहिर पु [मिहिर] सूर्य, रवि (उप पृ ३५०, सुपा ४१६, धर्मा ५),

'सायरनिसायराणं मेहसिहडीण
मिहिरनलिणीण।
दूरेवि वसताणं पडिवन्न
नन्नहा होइ'
(उप ७२८ टी)।

मिहिला स्त्री [मिथिला] नगरी विशेष (ठा १०, पउम २०, ४५, णाया १, ८—पत्र १२४, इक)।

मिहु, मिहु देखो मिहो (उप ६४७, आचा)।

मिहुण न [मिथुन] १ स्त्री-पुरुष का युग्म, दंपती (हे १, १८७, पाअ, कुमा)। २ ज्योतिष-प्रसिद्ध एक राशि (विचार १०६)।

मिहो अ [मिथस्] परस्पर, आपस मे (उप ६७६, स ५३६, पि ३४७)।

मीअ न [दे] समकाल, उसी समय (दे ६, १३३)।

मीण पुं [मीन] १ मत्स्य, मछली (पाअ, गउड, ओघ ११६, सुर ३, ५३, १३, ४६)। २ ज्योतिष-प्रसिद्ध राशि-विशेष (सुर ३, ५३, विचार १०६, सबोध ५४)।

महाणसि वि [महानसिन्] रसोई बनानेवाला, रसोइया। स्त्री. °णी (णाया १, ७—पत्र ११७)।
महाणसिय वि [महानसिक] ऊपर देखो (विपा १, ८)।
महाबिल न [दे. महाबिल] व्योम, आकाश (दे ६, १२१)।
महामत्ति पुं [महामन्त्रिन्] महावत, हस्तिपक (राय १२१ टी)।
महारिय (अप) वि [मदीय] मेरा (जय ३०)।
महाल पुं [दे] जार, उपपति (दे ६, ११६)।
महालक्ख वि [दे] तरुण, जवान (दे ६, १२१)।
महालय देखो मह = महत् (णाया १,८, उवा, औप), 'मा कासि कम्माइं महालयाइं' (उत्त १३, २६)। स्त्री. °लिया (औप)।
महालय पुंन [महालय] १ उत्सवों का स्थान (सम ७२)। २ बडा आलय। ३ वि बृहत्काय, बडा शरीरवाला (सूअ २, ५, ६)।
महालवक्ख पुं [दे. महालयपक्ष] श्राद्ध-पक्ष, आश्विन (गुजराती भाद्रपद) मास का कृष्ण पक्ष (दे ६, १२७)।
महावल्ली स्त्री [दे] नलिनी, कमलिनी (दे ६, १२२)।
महाविजय पुं [महाविजय] एक देवविमान (आचा २, १५, २)।
महासउण पुं [दे] उल्लू, घूक-पक्षी (दे ६, १२७)।
महासद्दा स्त्री [दे] शिवा, शृगाली (दे ६, १२०, पाअ)।
महासेल वि [माहाशैल] महाशैल नगर से संबन्ध रखनेवाला, महाशैल का (पउम ५५, ५३)।
महि° देखो मही (कुमा)। °अल न [°तल] भू-पीठ, भूमि-पृष्ठ (कुमा, गउड, प्रासू ४५)। °गोयर पुं [°गोचर] मनुष्य (भवि, सण)। °पट्ठ न [°पृष्ठ] भूमि-तल (पड्)। °पाल पुं [°पाल] राजा (उव)। °मंडल न [मण्डल] भू-मण्डल (भवि, हे ४, ३७२)। °रमण पुं [°रमण] राजा (श्रा २७)। °वइ पुं [°पति] राजा (णाया १, १ टी, औप)। °वट्ठ देखो °पट्ठ (हे १, १२९, कुमा)। °वल्लह पुं [°वल्लभ] राजा (गु १०)। °वाल पुं [°पाल] १ राजा, नरपति (हे १, २२९)। २ व्यक्ति वाचक नाम (भवि)। °वेढ पु [°वेष्ट, °पीठ] मही-तल, भू-तल (से १, ४, ४९)। °सामि पुं [°स्वामिन्] राजा (कुमा)। °हर पु [°धर] १ पर्वत (पाअ, से ३, ३८, ४, १७, कुप्र ११७)। २ राजा (कुप्र ११७)।
महिअ वि [मथित] विलोडित (से २, १८, पाअ)।
महिअ वि [महित] १ पूजित, सत्कृत (से १२, ४७, उवा, औप)। २ न. एक देव-विमान (सम ४१)। ३ पूजा, सत्कार (णाया १, १)।
महिअ वि [महीयस] बडा, गुरु, 'राअ-निओओ महिओ को णाम गआगअमिह करेइ' (मुद्रा १८७)।
महिअदुद्धुअ न [दे] घी का किट्ट, घृत-मल (राज)।
महिआ स्त्री [महिका] १ सूक्ष्म वर्षा, सूक्ष्म जल-तुषार (पण्ण १, जी ५)। २ धूमिका, धुंध, कुहरा (ओघ ३०, पाअ)। ३ मेघ-समूह, 'घणनिवहो कालिआ महिआ' (पाअ)। देखो मिहिआ।
महिंद पुं [महेन्द्र] १ बडा इन्द्र, देवाधीश (औप, कप्प, णाया १, १ टी—पत्र ६)। २ पर्वत-विशेष (से ६, ५९)। ३ अति महान्, खूब बडा (ठा ४, २—पत्र २३०)। ४ एक राजा (पउम ५०, २३)। ५ ऐरवत वर्ष का भावी १५ वाँ तीर्थंकर (पव ७)। ६ पुन एक देव-विमान (सम २२, देवेन्द्र १४१)। °कंत न [°कान्त] एक देव-विमान (सम २७)। °केउ पुं [°केतु] हनूमान के मातामह का नाम (पउम ५०, १९)। °ज्झय पु [°ध्वज] १ बडा ध्वज। २ इन्द्र के ध्वज के समान ध्वज, बडा इन्द्र-ध्वज (ठा ४, ४—पत्र २३०)। ३ न एक देव-विमान (सम २२)। °दुहिया स्त्री [°दुहिता] अञ्जनासुन्दरी, हनूमान की माता (पउम ५०, २३)। °विक्कम पु [°विक्रम] इक्ष्वाकु वंश का एक राजा (पउम ५, ६)। °सीह पुं [°सिंह] १ कुरु देश का एक राजा (उप ७२८ टी)। २ सनत्कुमार चक्रवर्ती का एक मित्र (महा)।
महिंद वि [माहेन्द्र] १ महेन्द्र-सम्बन्धी। २ उत्पात-विशेष (अणु २१५)।
महिंदुत्तरवडिंसय न [महेन्द्रोत्तरावतंसक] एक देव-विमान (सम २७)।
महिगा देखो महिआ (जीवस ३१)।
महिच्छ वि [महेच्छ] महत्वाकांक्षी (सूअ २, २, ६१)।
महिच्छा स्त्री [महेच्छा] महत्वाकांक्षा, अपरिमित वाञ्छा (पण्ह १, ५)।
महिट्ठ वि [दे] मट्ठा से सस्पृष्ट, तक्र-संस्कारित (विपा १, ८—पत्र ८३)।
महिड्ढि, महिड्ढिय, महिड्ढीय वि [महर्द्धि, °क] बडी ऋद्धि-वाला, महान् वैभववाला (श्रा २७, भग, ओघभा ६, औप, पि ७३)।
महिम पुंस्त्री [महिमन्] १ महत्व, माहात्म्य, गौरव (हे १, ३५, कुमा, गउड, भवि)। २ योगी का एक प्रकार का ऐश्वर्य (हे १, ३५)।
महिला देखो मिहिला (महा, राज)।
महिला स्त्री [महिला] स्त्री, नारी (कुमा, हे ३, ४१, पाअ)। °थूभ पु [°स्तूप] कूप आदि का किनारा (विसे २०६४)।
महिलिया स्त्री [महिलिका, महिला] ऊपर देखो (णाया १, २, पउम १४, १४५, प्रासू २४)।
महिलिया स्त्री [मिथिलिका, मिथिला] देखो मिहिला (कप्प)।
महिस पुं [महिष] भैंसा (गउड, औप, गा ५४८)। °सुर पु [°ासुर] एक दानव (स ४३७)।
महिसंद पुं [दे] वृक्ष विशेष, शिग्रु का पेड (दे ६, १२०)।
महिसिअ वि [माहिषिक] भैंसवाला, भैंस चरानेवाला (अणु १४४)।
महिसिक्क न [दे] महिषी-समूह (दे ६, १२४)
महिसी स्त्री [महिषी] १ राज-पत्नी (ठा ४, १)। २ भैंस (पाअ, पउम, २६, ४१)।

मुंड पुन [मुण्ड] १ मस्तक, सिर (हे ४, ४४६, पिंग)। २ वि मुण्डित, दीक्षित, प्रव्रजित (कप्प, उत्त, पिंड ३१४)। °परसु पु [°परशु] नंगा कुल्हाडा, तीक्ष्ण कुठार (पण्ह १, ३—पत्र ५४)।

मुंडण न [मुण्डन] केशों का अपनयन (पचा २, २, स २७१, सुर १२, ४५)।

मुंडा स्त्री [दे] मृगी, हरिणी (दे ६, १३३)।

मुंडाविअ वि [मुण्डित] मूँडाया हुआ (भग, महा, णाया १, १)।

मुंडि वि [मुण्डिन्] मुण्डन करनेवाला (उव, औप, भत्त १००)।

मुंडिअ वि [मुण्डित] मुण्डन-युक्त (भग, उप ६३४, महा)।

मुंडी स्त्री [दे] नीरङ्गी, शिरो-वस्त्र, घूँघट (दे ६, १३३)।

मुंढ } **मुंढाण** } पु [मूर्धन्] मूर्धा, मस्तक, सिर (हे १, २६, २, ४१, षड्)। देखो मुद्ध = मूर्धन्।

मुकलाव सक [दे] भेजवाना, गुजराती में 'मोकलाववु'। संकृ. मुकलाविऊण (सिरि ४७४)।

मुकुर पु [मुकुर] दर्पण, आईना (दे १, १४)।

मुक्क (अप) सक [मुच्] छोड़ना, गुजराती में 'मूकवु'। मुक्कइ (प्राकृ ११९)। संकृ. मुक्किअ (नाट—चैत ७६)।

मुक्क वि [मूक] वाक्-शक्ति से रहित, गूँगा (हे २, ९९, सुपा ५५२, षड्)।

मुक्क देखो मुक्कल (विसे ५५०)।

मुक्क वि [मुक्त] १ छोड़ा हुआ, त्यक्त (उवा, सुपा ४७५, महा, पात्र)। २ मुक्ति-प्राप्त, मोक्ष-प्राप्त (हे २, २)। ३ लगातार पाँच दिन का उपवास (संबोध ५८)। देखो मुत्त = मुक्त।

मुक्कय न [दे] दुलहिन के अतिरिक्त अन्य निमन्त्रित कन्याओं का विवाह (दे १, १३५)।

मुक्कल वि [दे] १ उचित, योग्य (दे ६, १४७)। २ स्वैर, स्वतन्त्र, बन्धन-मुक्त (दे ६, १४७, सुर १, २३३, विवे १८, गउड, सिरि ३५३, पात्र, सुपा १९८)।

मुक्कलिअ वि [दे] बन्धन मुक्त किया हुआ; अनियन्त्रित (दे १, १५६ टी)।

मुक्कुडी स्त्री [दे] जूट (दे ६, ११७)।

मुक्कुरुड पु [दे] राशि, ढेर (दे ६, १३६)।

मुक्केज्ज देखो मुक्क = मुक्त (अणु १९८)।

मुक्ख पु [मोक्ष] १ मुक्ति, निर्वाण (सुर १४, ६५, हे २, ८९, सार्ध ८६)। २ छुटकारा, 'रिणमुक्ख' (रयण ६५, धर्मवि २१)।

मुक्ख वि [मूर्ख] अज्ञानी, बेवकूफ (हे २, ११२, कुमा, गा ८२, सुपा २३१)।

मुक्ख वि [मुख्य] प्रधान, नायक (हास्य १२५)।

मुक्ख पुन [मुष्क] १ अण्डकोष। २ वृक्ष-विशेष। ३ चोर, तस्कर। ४ वि मांसल पुष्ट (प्राप्र)।

मुक्खण देखो मोक्खग (सिक्खा ४५)।

मुक्खणी स्त्री [मोक्षणी] स्तम्भन से छुटकारा करनेवाली विद्या-विशेष (धर्मवि १२४)।

मुख देखो मुह = मुख (प्रासू ६, राज)।

मुख पु [मुख] १ एक म्लेच्छ-जाति (मृच्छ १५२)। २ गाडी के ऊपर का ढक्कन (अणु १५१)।

मुग देखो मुग्ग, 'एगमुगभरुव्वहणे असमत्थो किं गिरिं वहइ' (सुपा ४६१)।

मुगुंद देखो मउंद = मुकुन्द (आचा २, १, २, ४, विसे ७८ टी)।

मुगुस पुस्त्री [दे] हाथ से चलनेवाले जन्तु की एक जाति, भुजपरिसर्प-जातीय एक प्राणी (पण्ह १, १—पत्र ८)। स्त्री. °सा (उवा)। देखो मंगुस, मुग्गस।

मुग्ग पुं [मुद्ग] १ धान्य-विशेष, मूँग (उवा)। २ रोग-विशेष (ति १३)। ३ पक्षि-विशेष, जल-काक (प्राप्र)। °पण्णी स्त्री [°पर्णी] वनस्पति विशेष (पण्ण १—पत्र ३६)। °सेल पु [°शैल] पर्वत-विशेष, कभी नहीं भींगनेवाला एक पर्वत (उप ७२८ टी)।

मुग्गड पुं [दे] मोगल, म्लेच्छ-जाति विशेष (हे ४, ४०९)। देखो मोग्गड।

मुग्गर न [मुद्गर] १ पुष्प-विशेष (वज्जा १०६)। २ देखो मोग्गर (प्राप्र, श्राप ३६, कप्प)।

मुग्गरय न [दे. मुग्धारत] मुग्धा के साथ रमण (वज्जा १०६)।

मुग्गल देखो मुग्गड (ती १५)।

मुग्गस पुं [दे] नकुल, न्यौला (दे ६, ११८)।

मुग्गाह अक [प्र + सृ] फैलना। मुग्गाहइ (?) (धात्वा १४८)।

मुग्गिल } **मुग्गिल्ल** } पु [दे] पर्वत-विशेष (ती ७, भत्त १६१)।

मुग्गुसु देखो मुग्गस (दे ६, ११८)।

मुग्घड देखो मुग्गड (हे ४, ४०९)।

मुग्घुरुड देखो मुक्कुरुड (दे ६, १३६)।

मुचकुंद } **मुचुकुंद** } देखो मुउंद (सुर २, ७६, कुमा)।

मुच्छ अक [मूर्च्छ्] १ मूर्छित होना। २ आसक्त होना। ३ बढ़ना। मुच्छइ मुच्छए (कस, सूअ १, १, ४, २)। वकृ. मुच्छंत, मुच्छमाण (गा ५४६, आचा)।

मुच्छणा स्त्री [मूर्च्छना] गान का एक अंग (ठा ७—पत्र ३९५)।

मुच्छा स्त्री [मूर्च्छा] १ मोह (ठा २, ४, प्रासू १७९)। २ अचेतनावस्था, बेहोशी (उव, पडि)। ३ गृद्धि, आसक्ति (सम ७१)। ४ मूर्च्छना, गीत का एक अंग (ठा ७—पत्र ३९३)।

मुच्छाविअ वि [मूर्छित] मूर्छा-युक्त किया हुआ (से १२, ३८)।

मुच्छिअ वि [मूर्छित] १ मूर्च्छा-युक्त (प्रासू ५७, उवा)। २ पु नरकावास-विशेष (देवेन्द्र २७)।

मुच्छिज्जंत वि [मूर्च्छायमान] मूर्च्छा को प्राप्त होता (से १३, ४३)।

मुच्छिम पुं [मूर्च्छिम] मत्स्य विशेष, 'वायाए काएण मणेणहिंआए न दारुण कम्म। जोअणसहस्समाणो मुच्छिममच्छो उआहरणं' (मन ३)।

मुच्छिर वि [मूर्च्छितृ] १ बढ़नेवाला। २ बेहोशीवाला (कुमा)।

मुज्झ अक [मुह्] १ मोह करना। २ घबड़ाना। मुज्झइ (आचा, उव, महा)। भवि मुज्झिहिति (औप)। कृ मुज्झियव्व (पण्ह २, ५—पत्र १४९, उव)।

महेसि देखो मह-रिसि (सम १२३, पण्ह १, १, उप ३५७, ७२८ टी, अभि ११८)।

महोअर पु [महोदर] १ रावण का एक भाई (से १२, ५४)। २ वि बहु-भक्षी (निचू १)।

महोअहि पुं [महोदधि] महासागर (से ५, २, महा)। °रव पुं [°रव] वानर-वंश का एक राजा (पउम ६, ९३)।

महोच्छव देखो महूसव (सुर ६, ११०)।

महोदहि देखो महोअहि (पण्ह २, ४, उप ७२८ टी)।

महोरग पु [महोरग] १ व्यन्तर देवों की एक जाति (पण्ह १, ४—पत्र ६८, इक)। २ बडा सांप। ३ महा-काय सर्प की एक जाति (पण्ह १, १—पत्र ८)। °त्थ न [°ास्त्र] अस्त्र-विशेष (महा)।

महोरगकंठ पुं [महोरगकण्ठ] रत्न-विशेष (राय ६७)।

महोसव देखो महूसव (नाट—रत्ना २४)।

महोसहि स्त्री [महौषधि] श्रेष्ठ औषधि (गउड)।

मा अ [मा] मत, नहीं (चेइय ६८४, प्रासू २१)।

मा स्त्री [मा] १ लक्ष्मी, दौलत (से ३, १५, सुर १६, ५२)। २ शोभा (से ३, १५)।

मा } अक [मा] १ समाना, अटना। २ माअ } सक. माप करना। ३ निश्चय करना, जानना। माइ, माअइ, माइज्जा, माएज्जा (पव ४०, कुमा, प्राकृ ६६, संवेग १८, औप)। वकृ मंत, माअंत (कुमा, ४, ३०, से २, ९, गा २७८)। कवकृ मिज्जंत, मिज्जमाण (से ७, ६६, सम ७६, जीवस १४४)। कृ माअव्व, 'वाया सहस्स-मइया', माइअ (से ९, ३, महा, कप्प)। देखो मेअ = मेय।

माअडि पु [मातलि] इन्द्र का सारथि (से १५, ५१)।

माअरा देखो माइ = मातृ (कुमा; हे ३, ४६)।

माअलि देखो माअडि (से १५, ४९)।

माअलिआ स्त्री [दे] मातृष्वसा, माता की वहन (दे ६, १३१)।

माअही स्त्री [मागधी] काव्य की एक रीति (कप्पू)। देखो मागहिआ।

माआरा } स्त्री [मातृ] १ मां, जननी (षड्, माइ } ठा ४, ३, कुमा, सुपा ३७७)। २ देवता, देवी (हे १, १३५; ३, ४६, सुख ३, ९)। ३ स्त्री, नारी। ४ माया (पंचा १७, ४८)। ५ भूमि। ६ विभूति। ७ लक्ष्मी। ८ रेवती। ९ आखुकर्णी। १० जटामासी। ११ इन्द्र-वारुणी, इन्द्रायण (षड्, हे १, १३५, ३, ४६)। °घर न [°गृह] देवी-मन्दिर (सुख ३, ९)। °ट्ठाण, °ठाण न [°स्थान] १ माया-स्थान (पंचा १७, ४८, सम ३९)। २ माया, कपट-दोष (पंचा १७, ४८, उवर ८४)। °मेह पु [°मेध] यज्ञ-विशेष, जिसमे माता का वध किया जाय वह यज्ञ (पउम ११, ४२)। °हर देखो °घर (हे १, १३५)। देखो माउ, माया = मातृ।

माइ वि [मायिन्] माया-युक्त, मायावी (भग, कम्म ४, ४०)।

माइ अ [मा] मत, नहीं (प्राकृ ७८)।

माइ } वि [दे] १ रोमश, रोमवाला, प्रभूत माइअ } वालो से युक्त (दे ६, १२८, णाया १, १८—पत्र २३७)। २ मयूरित, पुष्प-विशेषवाला (औप, भग, णाया १, १ टी—पत्र ५, अत)।

माइअ वि [मात] समाया हुआ, अटा हुआ (सुख ९, १)।

माइअ वि [मायिक] मायावी (दे ६, १४७, णाया १, १४)।

माइअ वि [मात्रिक] मात्रा-युक्त, परिमित (तदु २०, पन्ह १, ४ पत्र ६८)।

माइअ देखो मा = मा।

माइ देखो माइ = मा (हे २, १९१, कुमा)।

माइगण न [दे] वृन्ताक, भंटा (उप ५९३)।

माइंद [दे] देखो मायंद (प्राप्र, स ४१९)।

माइंद पु [मृगेन्द्र] सिंह, केसरी, 'एक्कसर-पहरदारियमाइंदगइंदजुज्झमाभिडिए' (वज्जा ४२)।

माइंदजाल } न [मायेन्द्रजाल] माया-कर्म, माइंदयाल } बनावटी प्रपंच (सुर २, २२९, स ६९०)।

माइंदा स्त्री [दे] आमलकी, आमला का गाछ (दे ६, १२९)।

माइण्हिआ स्त्री [मृगतृष्णिका] धूप मे जल की भ्रान्ति (उप २२० टी, मोह २३)।

माइलि वि [दे] मृदु, कोमल (दे ६, १२९)।

माइल्ल देखो माइ = मायिन् (सूअ १, ४, १, १८, आचा, भग, ओघ ४१३, पउम ३१, ५१, औप, ठा ८, ४)।

माइवाह } पुंस्त्री [दे मातृवाह] द्वीन्द्रिय माईवाह } जन्तु-विशेष, क्षुद्र कीट-विशेष (उत्त ३६, १२९, जी १५, पुप्फ २६५)। स्त्री °हा (सुख १८, ३५, जी १५)।

माउ देखो माइ = मातृ (भग, सुर १, १७९, औप, प्रामा कुमा, षड्, हे १, १३४; १३५)। °ग्गाम पु [°ग्राम] स्त्री-वर्ग (बृह १)। °च्छा देखो °सिआ (हे २, १४२, गा ६४८)। °पिउ पुं [°पितृ] मां-बाप (सुर १, १७९)। °म्महो स्त्री [°मही] मां की मां, नानी (रंभा २०)। °सिआ, °सी, °स्सिआ स्त्री [°ष्वसृ] मां की वहन, मौसी (हे २, १४२, कुमा, विपा १, ३, सुर ११, २१९, पि १४८, विपा १, ३—पत्र ४१)।

माउ } वि [मातृ, °क] १ प्रमाता, माउअ } प्रमाण-कर्ता, सत्य ज्ञानवाला। २ परिमाण-कर्ता, नापनेवाला। ३ पुं जीव। ४ आकाश, 'माऊ', 'माउओ' (षड्, हे १, १३१, प्राप्र, प्राकृ ८, हे १, १३४)।

माउअ वि [मातृक] माता-सवन्धी (हे १, १३१, प्राप्र, प्राकृ ८, राज)।

माउअ पुन [मातृक, °का] १ अकार आदि छयालीस अक्षर, 'बंभीए णं लिवीए छायालीसं माउयक्खरा' (सम ६९, आव ५)। २ स्वर। ३ करण (हे १, १३१, प्राप्र, प्राकृ ८)। नीचे देखो।

माउआ स्त्री [मातृका] १ माता, मां (णाया १, ९—पत्र १५८)। २ ऊपर देखो (सम ६९)। °पय पुंन [°पद] शास्त्रो के सार-भूत शब्द—उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य (सम ६९)।

माउआ स्त्री [दे मातृका] दुर्गा, पार्वती, उमा (दे ६, १४७)।

माउआ स्त्री [दे] १ सखी, सहेली (दे ६, १४७, पाअ, णाया १, ९—पत्र १५८)। २ ऊपर के होठ पर के वाल, मूँछ, 'रत्तगंड-

चउक्क' (सवोघ २)। ३ शरीर, देह (सुर १, ३, पाअ)। ४ काठिन्य, कठिनत्व (हे २, ३०, प्राप्र)। °मत वि [°मत्] मूर्तिवाला, मूर्त, रूपी (धर्मवि ६, सुपा ३८६, श्रु ६७)।

मुत्ति स्त्री [मुक्ति] १ मोक्ष, निर्वाण (आचा; पाअ, प्रासू १५५)। २ निर्लोभता, सतोष (श्रा ३१)। ३ मुक्त जीवो का स्थान, ईषत्प्राग्भारा पृथिवी (ठा ८—पत्र ४४०)। ४ निस्सगता (आचा)।

मुत्ति वि [मूत्रिन्] बहु-मूत्र रोगवाला, 'उयरिं च पास मुत्तिं च सूणियं च गिलासिणं' (आचा)।

मुत्ति वि [मौक्तिन्, मौक्तिक] मोती पिरोने या गूँथने वाला (उप पृ २१०)।

मुत्तिअ न [मौक्तिक] मुक्ता, मोती (से ५, ४६, कुप्र ३, कुमा, सुपा २४, २४६, प्रासू ३६, १७१)। देखो मोत्तिअ।

मुत्तोली स्त्री [दे] १ मूत्राशय (तदु ४१)। २ वह छोटा कोठा जो ऊपर नीचे सकीर्ण और मध्य मे विशाल हो (राज)।

मुत्थ त्रि [मुस्त] मोथा, नागरमोथा (गउड)। स्त्री. °त्था (मवोघ ४४, कुमा)।

मुदग्ग देखो मुअग्ग (ठा ७—पत्र ३८२)।

मुदा स्त्री [मुद्] हर्ष, खुशी। °गर वि [°कर] हर्षजनक (सूअ १, ६, ६)।

मुदुग पु [दे] ग्राह-विशेष, जल-जन्तु की एक जाति (जीव १ टी—पत्र ३६)।

मुद्द सक [मुद्रय्] १ मोहर लगाना। २ बन्द करना। ३ अकन करना। मुद्देह (धम्म ११ टी)।

मुद्दग पुं [दे] १ उत्सव। २ सम्मान (?) (स ४६३, ४६४)।

मुद्दग } पुं [मुद्रिका] अँगूठी (उवा), 'लद्धो
मुद्दय } भद्द! तुमे कि अह अगुलिमुद्दओ एसो' (पउम ५३, २४)।

मुद्दा स्त्री [मुद्रा] १ मोहर, छाप (सुपा ३२१, वज्जा १५६)। १ अँगूठी (उवा)। ३ अंग-विन्यास-विशेष (चैत्य १४)।

मुद्दिअ वि [मुद्रित] १ जिम पर मोहर लगाई गई हो वह। २ वद किया हुआ (णाया १, २—पत्र ८६, ठा ३, १—पत्र १२३, कप्पू, सुपा १४४, कुप्र ३१)।

मुद्दिअ° } स्त्री [मुद्रिका] अँगूठी (पण्ह १,
मुद्दिआ } ४, कप्प, औप, तदु २६)। °बंध पुं [°बन्ध] ग्रन्थि-बन्ध, बन्ध-विशेष (ओघ ४०२, ४०५)।

मुद्दिआ स्त्री [मृद्वीका] १ द्राक्षा की लता (पएण १—पत्र ३३)। २ द्राक्षा, दाख (ठा ४, ३—पत्र २३६, उत्त ३४, १५, पव १५५)।

मुद्दी स्त्री [दे] चुम्बन (दे ६, १३३)।

मुद्दुय देखो मुदुग (पएण १—पत्र ४८)।

मुद्ध देखो मुढ (औप, कप्प, ओघभा १६, कुमा)। °न्न वि [°न्य] १ मस्तक में उत्पन्न। २ मस्तक-स्थ, अग्रेसर। ३ मूर्धस्थानीय रकार आदि वर्ण (कुमा)। °य पुं [°ज] केश, वाल (पण्ह १, ३—पत्र ५४)। °सूल न [°शूल] मस्तक-पीडा, रोग-विशेष (णाया १, १३)।

मुद्ध वि [मुग्ध] १ मूढ, मोह-युक्त। २ सुन्दर, मनोहर, मोह-जनक (हे २, ७७, प्राप्र, कुमा, विपा १, ७—पत्र ७७)।

मुद्धा स्त्री [मुग्धा] मुग्धा स्त्री, नायिका का एक भेद, काम-चेष्टा-रहित अकुरित यौवना (कुमा)।

मुद्धा (अप) देखो मुहा (कुमा)।

मुद्धाण देखो मुढ (उवा, कप्प, पि ४०२)।

मुब्भ पुं [दे] घर के ऊपर का तिर्यक् काष्ठ, गुजराती मे 'मोभ' (दे ६, १३३)। देखो मोब्भ।

मुमुक्खु वि [मुमुक्षु] मुक्त होने की चाह-वाला (सम्मत्त १४०)।

मुम्मुइ } वि [मूकमूक] १ अत्यन्त मूक।
मुम्मुय } २ अव्यक्तभाषी (सूअ १, १२, ५, राज)।

मुम्मुर सक [चूर्णय्] चूरना, चूर्ण करना। मुम्मुरइ (प्राकृ ७५)।

मुम्मुर पुं [दे] करीष, गोइंठा (दे ६, १४७)।

मुम्मुर पु [दे मुर्मुर] १ करीषाग्नि, गोइंठा की आग (दे ६, १४७, जी ६)। २ तुषाग्नि (सुर ३, १८७)। ३ भस्म-च्छन्न अग्नि, भस्म-मिश्रित अग्नि-कण (उप ६४८ टी, जी ६, जीव १)।

मुम्मुही स्त्री [मुन्मुखी] मनुष्य की दश दशाओ मे नववी दशा—८० से ९० वर्ष तक की अवस्था (ठा १०—पत्र ५१९, तदु १६)।

मुर अक [लड्] १ विलास करना। २ सक. उत्पीडन करना। ३ जीभ चलाना। ४ उपक्षेप करना। ५ व्याप्त करना। ६ वोलना। ७ फेकना। मुरइ (प्राकृ ७३)।

मुर अक [स्फुट्] खीलना। मुरइ (हे ४, ११४, षड्)।

मुर पुं [मुर] दैत्य विशेष। °रिउ पु [°रिपु] श्रीकृष्ण (ती ३)। °वेरिअ पु [°वैरिन्] वही अर्थ (कुमा)। °ारि पु [°ारि] वही अर्थ (वज्जा १५४)।

मुरई स्त्री [दे] असती, कुलटा (दे ६, १३५)।

मुरज } पु [मुरज] मृदग, वाद्य-विशेष (कप्प,
मुरय } पाअ, गा २५३, सुपा ३६३, अत, धर्मवि ११२, कुप्र २८८, औप, उप पृ २३६)। देखो मुरव।

मुरल पु ब. [मुरल] एक भारतीय दक्षिण देश, केरल देश, 'दिअर ण दिट्ठा तुए मुरला' (गा ८७६)।

मुरव देखो मुरय (औप, उप पृ २३६)। २ अंग-विशेष, गल-घण्टिका (औप)।

मुरवि स्त्री [दे. मुरजिन्] आभरण-विशेष (औप)।

मुरिअ वि [स्फुटित] खीला हुआ (कुमा)।

मुरिअ वि [दे] १ त्रुटित, टूटा हुआ (दे ६, १३५)। २ मुडा हुआ, वक्र वना हुआ (सुपा ५४७)।

मुरिअ पुं [मौर्य] १ प्रसिद्ध क्षत्रिय-वंश (उप २११ टी)। २ मौर्य वंश मे उत्पन्न, 'रायगिहे मू(? मु)रियवलभद्दे' (विसे २३५७)।

मुरुंड पुं [मुरुण्ड] १ अनार्य देश-विशेष (इक, पव २७४)। २ पादलिप्तसूरि के समय का एक राजा (पिंड ४६४, ४६८)। ३ पुस्त्री. मुरुण्ड देश का निवासी मनुष्य (पण्ह १, १—पत्र १४)। स्त्री °डी (इक)।

मुरुकि स्त्री [दे] पक्वान्न-विशेष (सण)।

मुरुक्ख देखो मुक्ख = मूर्ख (हे २, ११२, कुमा, सुपा ६११; प्राकृ ९७)।

मुरुमुंड पुं [दे] जूट, केशो की लट (दे ६, ११७)।

मन का (सुर ४, ७५)। ४ पुं. भूतानन्द के गन्धर्व-सैन्य का नायक (इक)।

माणसिअ वि [मानसिक] मन-संबन्धी, मन का (श्रा २४, औप)।

माणसिआ स्त्री [मानसिका] एक विद्या-देवी (संति ६)।

माणि वि [मानिन्] १ मान-युक्त, मानवाला (ठव, कुप्र २७६, कम्म ४, ४०)। स्त्री. °णिणी (कुमा)। २ पुं. रावण का एक सुभट (पउम ५६ २)। ३ पर्वत-विशेष। ४ कूट-विशेष (राज, इक)।

माणिअ वि [दे. मानित] अनुभूत (दे ६, १३०, पाअ)।

माणिअ वि [मानित] सत्कृत (गउड)।

माणिक्क न [माणिक्य] रत्न विशेष, माणिक (सुपा २१७, वज्जा २०, कप्पू)।

माणिग देखो माणि (पउम ७३, २७)।

माणिभद्द पु [माणिभद्र] १ यक्ष-निकाय के उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५, इक)। २ यक्षदेवों की एक जाति (सिरि ६६६, इक)। ३ देव-विशेष। ४ शिखर-विशेष (राज, इक)। ५ एक देव-विमान (राज)।

माणिम देखो माण = मानय्।

माणी स्त्री [मानिका] २५६ पलो का एक माप (अणु १५२)।

माणुस पुन [मानुष] १ मनुष्य, मानव, मर्त्य (सूत्र १, ११, ३, पराह १, १, उव, सुर ३, ५६, प्राप्र, कुमा), 'जं पुण हिययाणंदं जणेइ त माणुसं विरलं' (कुप्र ६), 'मयाणि माइपिइपमुहमाणुसाणि सव्वाणि' (कुप्र २६)। २ वि. मनुष्य-सम्बन्धी, 'तिविहं कहावत्थुं ति पुव्वायरियपवाओ, तं जहा, दिव्वं दिव्वमाणुसं माणुस च' (स २)।

माणुसी स्त्री [मानुषी] १ स्त्री-मनुष्य, मानवी (पव २४१, कुप्र १६०)। २ मनुष्य से संबन्ध रखनेवाली, 'माणुसी भासा' (कुप्र ६७)।

माणुसुत्तर } पुं [मानुषोत्तर] १ पर्वत-विशेष, मनुष्यलोक का सीमा-कारक पर्वत (राज, ठा ३, ४, जीव ३)। २ न. एक देव-विमान (सम २)।
माणुसोत्तर }

माणुस्स देखो माणुस (आचा, औप, धर्मवि १३; उपप २, विसे ३००७), 'माणुस्सं लोग' (ठा ३, ३—पत्र १४२), 'माणुस्सगाइं भोगभोगाइं' (कप्प)।

माणुस्स } न [मानुष्य, °क] मनुष्यत्व, मानुसपन, मनुष्यता (सुपा १६६, स १३१ प्रासू ४७, पउम ३१, ८१)।
माणुस्सय }

माणुस्सी देखो माणुसी (पव २४०)।

माणूस देखो माणुस (सुर २, १७२, ठा ३, ३—पत्र १४२)।

माणेसर पु [माणेश्वर] माणिभद्र यक्ष (भवि)।

माणोरामा (अप) स्त्री [मनोरमा] छन्द-विशेष (पिंग)।

मातग देखो मायग (औप)।

मातजण देखो मायजण (ठा २, ३—पत्र ८०)।

मातुलिंग देखो माहुलिंग (आचा २, १, ८, १)।

मादलिआ स्त्री [दे] माता, जननी (दे ६, १३१)।

मादु देखो माउ = स्त्री (प्राकृ ८)।

माधवी देखो माहवी = माधवी (हास्य १३३)।

माभाइ पुंस्त्री [दे] अभय-प्रदान, अभय-दान, अभय (दे ६, १२६, पड्)।

माभीसिअ न [दे] ऊपर देखो (दे ६, १२६)।

माम अ. कोमल आमन्त्रण का सूचक अव्यय (पउम ३८, ३६)।

माम } पु [दे] मामा, माँ का भाई (सुपा १६, १६५)।
मामग }

मामग } वि [मामक] १ मदीय, मेरा (आचा, अच्चु ७३)। २ ममतावाला (सूत्र १, २, २, २८)।
मामय }

मामय देखो मामग = (दे) (पउम ६८, ५५, स ७३१)।

मामा स्त्री [दे] मामी, मामा की वहू (दे ६, ११२)।

मामाय वि [मामाक] 'मा' 'मा' बोलनेवाला, निवारक (ओघ ४३५)।

मामास पु [मामाष] १ अनार्य देश-विशेष। २ अनार्य देश मे रहनेवाली मनुष्य-जाति (इक)।

मामि अ. सखी के आमन्त्रण मे प्रयुक्त किया जाता अव्यय (हे २, १६५, कुमा)।

मामिया } स्त्री [दे] मामा की वहू (विपा १, ३—पत्र ४१, दे ६, ११२, गा २०४, प्राकृ ३८)।
मामी }

माय वि [मात] समाया हुआ (कम्म ५, ८५ टी, पुप्फ १७२, महा)।

माय वि [मायावत्] कपटवाला, 'कोहाए माणाए मायाए लोभाए' (पडि)।

माय देखो मेत = मात्र, 'लोमुक्खणणमायमवि' (सूअ २, १, ४८)।

माय° देखो माया = माया (आचा)।

माय° देखो मत्ता = मात्रा। °न्न वि [°ज्ञ] परिमाण का जानकार (सूअ २, १, ५७)।

मायइ स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष (पउम ५३, ७६)।

मायंग पु [मातङ्ग] १ भगवान् सुपार्श्वनाथ का शासनयक्ष। २ भगवान् महावीर का शासन यक्ष (संति ७, ८)। ३ हस्ती, हाथी (पाअ, सुर १, ११)। ४ चाण्डाल, डोम (पाअ)।

मायंगी स्त्री [मातङ्गी] १ चाण्डालिन (निचू १)। २ विद्या-विशेष (आचू १)।

मायजण पुं [मातञ्जन] पर्वत-विशेष (इक)।

मायंड पुं [मार्तण्ड] सूर्य, रवि (सुपा २४२, कुप्र ८७)।

मायंद पुं [दे माकन्द] आम्र, आम का पेड़ (हे २, १७४, पाअ, दे ६, १२८, कुप्र ७१, १०६)।

मायंदिअ देखो मागंदिअ (भग १८, १)।

मायंदी स्त्री [माकन्दी] नगरी-विशेष (स ६, कुप्र १०६)।

मायंदी स्त्री [दे] श्वेताम्बर साध्वी (दे ६, १२६)।

मायण्हिया स्त्री [मृगतृष्णिका] किरण में जल की भ्रान्ति, मरु-मरीचिका,

'जह मुद्धमओ मायण्हियाए
तिसिओ करेइ जल-बुद्धिं।
तह निव्विवेयपुरिसो
कुणइ अधम्मेवि धम्ममइं'
(सुपा ५००)।

तस्स मुहिआइ सेवगा जाया' (सिरि ४५७), 'जिणमासणेपि कहमवि लद्धु हारेसि मुहियाए' (सुपा १२४), 'मुह (? हि) याइ गिण्ह लक्खं' (कुप्र २३७)।

मुहु } अ [मुहुस्] वार वार (प्रासू २६,
मुहु } हे ४, ४४४, पि १८१)।

मुहुत्त } पुन [मुहूर्त्त] दो घडी का काल,
मुहुत्तग } अडतालीस मिनिट का समय (ठा २, ४, हे २, ३०, औप, भग, कप्प, प्रासू १०५, इक, स्वप्न ६४, आचा, ओघ ५२१)।

मुहुमुहु देखो मुहुमुह (पाअ)।

मुहुल देखो मुहल = मुखर (पाअ)।

मुहुल्ल देखो मुह = मुख (हे २, १६४, षड्, भवि)।

मूअ देखो मुक्क = मूक (हे २, ६६, आचा, गउड, विपा १, १)।

मूअ देखो मुअ = मृत, 'लज्जाइ कह ण मूओ सेवंतो गामवाहलिय' (वज्जा ५४)।

मूअल } वि [दे मूक] मूक, वाक्-शक्ति
मूअल्ल } से हीन (दे ६, १३७, सुर ११, १५४)।

मूअल्लइअ } वि [दे. मूकायित] मूक बना
मूअल्लिअ } हुआ (से ५, ४१, गउड, पि ५६५)।

मूइगलिया } देखो मुइंगलिया (उप १३४
मूइगा } टी, ओघ ५५८)।

मूइल्लअ } वि [मृत] मरा हुआ,
मूयल्लिअ }

'एण्हि वारेह जणो तइआ
मूइल्लओ, कहिं व गओ।
जाहे विसं व जाअ
सव्वगपहोलिर पेम्म'
(गा ६६६ अ)।

मूड } पु [दे] अन्न का एक दीर्घ परिमाण,
मूढ } 'इगमूडलक्खसमहियमवि धन्न अत्थि तायगिहे' (सुपा ४२७), 'तो तेहि ताडिओ सो गाढं कणमूढउव्व लउडेहिं' (धर्मवि १४०)।

मूढ वि [मूढ] मूर्ख, मुग्ध (प्राप्र, कस, पउम १, २८, महा, प्रासू २६)। °नइय न [°नयिक] श्रुत-विशेष, शास्त्र-विशेष (आवम)। °विसूइया स्त्री [°विसूचिका] रोग-विशेष (सुपा १३)।

मूण न [मौन] चुप्पी (स ४७७, पण्ह २, ४—पत्र १३१)।

मूयग पु [दे मूयक] मेवाड देश मे प्रसिद्ध एक प्रकार का तृण (पण्ह २, ३—पत्र १२३)।

मूर सक [भञ्ज्] भांगना, तोडना। मूरइ (हे ४, १०६)। भूका मूरीअ (कुमा)।

मूरग वि [भञ्जक] भागनेवाला, चूरनेवाला (पण्ह १, ४—पत्र ७२)।

मूल न [मूल] १ जड (ठा ६; गउड, कुमा, गा २३२)। २ निबन्धन कारण (पण्ह १, ३—पत्र ४२)। ३ आदि, आरम्भ (पण्ह २, ४)। ४ आद्य कारण (आचानि १, २, १—गाथा १७३, १७४)। ५ समीप, पास, निकट (ओघ ३८४, सुर १०, ६)। ६ नक्षत्र-विशेष (सुर १०, २२३)। ७ व्रतों का पुन स्थापन (औप, पंचा १६, २१)। ८ पिप्पली-मूल (आचानि १, २, १)। ९ वशीकरण आदि के लिए किया जाता औषधि-प्रयोग, 'अमतमूल वसीकरण' (प्रासू १४)। १० आद्य, प्रथम, पहला। ११ मुख्य (सबोध ३, आवम, सुपा ३६४)। १२ मूलधन, पुजी (उत्त ७, १४, १५)। १३ चरण, पैर। १४ सूरण, कन्द-विशेष, ओल। १५ टीका आदि से व्याख्येय ग्रन्थ (नक्षि २१)। १६ प्रायश्चित-विशेष (विसे १२४६)। १७ पुंन कन्द-विशेष, मूली (अनु ६, श्रा २०)। °छेज्ज वि [°छेद्य] मूल नामक प्रायश्चित्त से नाश-योग्य (विसे १२४६)। °दत्ता स्त्री [°दत्ता] कृष्ण-पुत्र शाम्ब की एक पत्नी (अत १५)। °देव पु [°देव] व्यक्ति वाचक नाम, (महा, सुपा ५२६)। °देवी स्त्री [°देवी] लिपि-विशेष (विसे ४६४ टी)। °नायग पुं [°नायक] मन्दिर की अनेक प्रतिमाओ मे मुख्य प्रतिमा (सबोध ३)। °प्पाडि वि [°उत्पाटिन्] मूल को उखाडनेवाला (सक्षि २१)। °बिंब न [°बिम्ब] मुख्य प्रतिमा (सबोध ३)। °राय पु [°राज] गुजरात का चौलुक्य-वंशीय एक प्रसिद्ध राजा (कुप्र ४)। °वत वि [°वत्] मूलवाला (औप, णाया १, १)। °सिरि स्त्री [°श्री] शाम्ब-कुमार की एक पत्नी (अत १५)।

मूलग } न [मूलक] १ कन्द-विशेष, मूली
मूलय } मूरई (पण्ण १, जी १३)। २ शाक-विशेष (पव १५४, कुमा)।

मूलगत्तिआ स्त्री [मूलगत्तिका] मूले—मूली की पतली फाक (दस ५, २, २३)।

मूलवेल्लि स्त्री [दे. मूलवेल्लि] घर के छप्पर का आधार-भूत-स्तम्भ-विशेष (आचा २, २, ३, १ टी, पव १३३)।

मूलिगा स्त्री [मूलिका] ओषधि विशेष (ठ ६०२)।

मूलिय न [मौलिक] मूलधन, पुजी (उत्त ७, १६; २१)।

मूलिल्ल वि [मूल, मौलिक] प्रधान, मुख्य 'मूलिल्लनाहेणे' (सिरि ४२३)।

मूलिल्ल वि [मूलवत्] मूलधनवाला, पुंजी वाला, 'अत्थि य देवदत्ताए गाटाणुरत्तो मूलिल्लो मित्तसेणो अयलनामा सत्थवाहपुत्तो' (महा)।

मूली स्त्री [मूली] ओषधि-विशेष, वशीकरण आदि के कार्य में लगती ओषधि (महा)।

मूस देखो मुस = मुष्। मूसइ (सक्षि ३६)।

मूसग } पुं [मूषक, मूषिक] मूसा, चूहा
मूसय } (उत्त, सुर १, १८, हे १, ८८, षड्, कुमा)।

मूसरि वि [दे] भग्न, भांगा हुआ (दे ६, १३७)।

मूसल वि [दे] उपचित (दे ६, १३७)।

मूसल देखो मुसल = मुसल (हे १, ११३, कुमा)।

मूसा देखो मुसा (हे १, १३६)।

मूसा स्त्री [मूषा] मूस, धातु गालने—गलाने का पात्र (कप्प, आरा १००, सुर १३, १८०)।

मूसा स्त्री [दे] लघु द्वार, छोटा दरवाजा (दे ६, १३७)।

मू.ाअ न [दे] ऊपर देखो (दे ६, १३७)।

मूसिय देखो मूसय (आचा)। °रि पुं [°रि] मार्जार, बिल्ला (आचा)।

मे अ [मे] १ मेरा। २ मुझसे (स्वप्न १५, ठा १)।

मेअ पुं [मेद] १ अनार्य देश-विशेष (इक)। २ एक अनार्य मनुष्य-जाति (पण्ह १, १—पत्र १४)। ३ पु स्त्री. चाण्डाल (सम्मत्त १७२)। स्त्री. मेई (सम्मत्त १७२)।

मालवंत पु [माल्यवत्] १ पर्वत-विशेष (ठा २, ३—पत्र ६६, ८०, सम १०२)। २ एक रामकुमार (पउम ६, २२०)। °परियाग, °परियाअ पुं [°पर्याय] पर्वत-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०, ६६)।

मालविणी स्त्री [मालविनी] लिपि-विशेष (विसे ४६४ टी)।

माला स्त्री [माला] १ फूल आदि का हार, 'मल्ल माला दाम' (पाअ, स्वप्न ७२, सुपा ३१६, प्रासू २०, कुमा)। २ पङ्क्ति, श्रेणी (पाअ)। ३ समूह, 'जलमालकद्दमाल' (सूअनि १६१)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। °इल्ल वि [°वत्] माला वाला (प्राप्र)। °कारि वि [°कारिन्] माली, पुष्प व्यवसायी। स्त्री. °णी (सुपा ५१०)। °गार वि [°कार] वही अर्थ (उप १४२, टी, अंत १८, सुपा ५६२, उप पृ १५६)। °धर पु [°धर] प्रतिमा के ऊपर के भाग की रचना-विशेष (चेइय ६३)। °यार, °र देखो °कार (अंत १८, उप पृ १५७, गा ५६६)। स्त्री °री (कुमा, गा ५६७)। °हरा स्त्री [°धरा] छन्द-विशेष (पिंग)।

माला स्त्री [दे] ज्योत्स्ना, चन्द्रिका (दे ६, १२८)।

मालाकुकुम न [दे] प्रधान कुंकुम (दे ६, १३२)।

मालि पुस्त्री [मालि] वृक्ष-विशेष (सम १५२)।

मालि पुं [मालिन्] १ पाताल-लंका का एक राजा (पउम ६, २२०)। २ देश-विशेष (इक)। ३ वि माली, पुष्प-व्यवसायी (कुमा)। ४ शोभनेवाला (कुमा)।

मालिअ पु [मालिक] ऊपर देखो (दे २, ८, 'पण्ह १, २, सुपा २७३, उप पृ १५७)।

मालिअ वि [मालित] शोभित, विभूषित, 'परलोए पुण कल्लाणमालिआमालिआ कमेणेव' (सा २३, पाअ, उप २६४ टी)।

मालिआ स्त्री [मालिका, माला] देखो माला = माला (सा २३, स्वप्न ५३, औप, उत्ता)।

मालिज्ज न [मालीय] एक जैन मुनि-कुल (कप्प)।

मालिणी स्त्री [मालिनी] १ माली की स्त्री (कुमा)। २ शोभनेवाली (औप)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)। ४ मालावाली (गउड)।

मालिण्ण } न [मालिन्य] मलिनता (उप
मालिन्न } पृ २२, सुपा ३५२, ५८६)।

मालुग } पुं [मालुक] १ त्रीन्द्रिय जन्तु-
मालुय } विशेष (सुख ३६, १३८)। २ वृक्ष-विशेष (पण्ण १—पत्र ३१, णाया १, २—पत्र ७८)।

मालुया स्त्री [मालुका] १ वल्ली, लता (सूअ १, ३, २, १०)। २ वल्ली-विशेष (पण्ण १—पत्र ३३)।

मालुहाणी स्त्री [मालुधानी] लता-विशेष (गउड)।

मालूर पुं [दे मालूर] कपित्थ, कैथ का गाछ (दे ६, १३०)।

मालूर पु [मालूर] १ बिल्व वृक्ष, बेल का गाछ (दे ३, १६, गा ५७६, गउड, कुमा)। २ न बेल का फल (पाअ, गउड)।

माहव } पु [मातुल] मामा (पुष्पमाला
माम्वह } ३२ श्लो० ८ भवभावना)।

माविअ त्रि [मापित] मापा हुआ (से ६, ६०, दे ८, ४८)।

मास देखो मस = मांस (हे १, २६, ७०, कुमा, उप ७२८ टी)।

मास पुं [मास] १ महिना, तीस दिन का समय (ठा २, ४, उप ७६८ टी, जी ३५)। २ समय, काल, 'कालमासे कालं किच्चा' (विपा १, १, २, कुप्र ३५), 'पमवमासे' (कुप्र ४०४)। ३ पर्व—वनस्पति-विशेष, 'वीरणा- (? णी) तह इक्कडे य मासे य' (पण्ण १—पत्र ३३)। °उस देखो °तुस (राज)। °कप्प पु [°कल्प] एक स्थान में महिना तक रहने का आचार (वृह ६)। °खमण न [°क्षपण] लगातार एक मास का उपवास (णाया १, १, विपा २, १, भग)। °गुरु न [°गुरु] तप-विशेष, एकाशन तप (सबोध ५७)। °तुस पु [°तुष] एक जैन मुनि (विवे ५१)। °पुरी स्त्री [°पुरी] १ नगरी-विशेष, भृंगी देश की राजधानी (इक)। २ 'वर्त' देश की राजधानी, 'पावा भंगी य, मासपुरी वट्टा' (पव २७५)। °पूरिया स्त्री [°पूरिका] एक जैन मुनि शाखा (कप्प)। °लहु न [°लघु] तप-विशेष, 'पुरिमड्ढ' तप (सबोध ५७)।

मास पु [माष] १ अनार्य देश-विशेष। २ देश-विशेष में रहनेवाली मनुष्य-जाति (पण्ह १, १—पत्र १४)। ३ धान्य विशेष, उडद (दे १, ६८)। ४ परिमाण विशेष, मासा (वज्जा १००)। °पण्णी स्त्री [°पर्णी] वनस्पति विशेष (पण्ण १—पत्र ३६)।

मासल देखो मसल (हे १, २६, कुमा)।

मासलिय वि [मांसलित] पुष्ट किया हुआ (गउड, सुपा ४७४)।

मासाहस पु [मासाहस] पक्षि-विशेष, 'मासाहसउणिसमो किं वा चिट्ठामि घघलिओ' (सवे ६, उव, उर ३, ३)।

मासिअ पु [दे] पिशुन, खल, दुर्जन (दे ६, १२२)।

मासिअ वि [मासिक] मास-सम्बन्धी (उवा, औप)।

मासिआ स्त्री [मातृष्वसृ] माँ की बहिन (धर्मवि २२)।

मासु देखो मंसु = श्मश्रु (हे २, ८६)।

मासुरी स्त्री [दे] श्मश्रु, दाढी-मूँछ (दे ६, १३०, पाअ)।

माह पुं [माघ] १ मास-विशेष, माघ का महिना (पाअ, हे ४, ३५७)। २ संस्कृत का एक प्रसिद्ध कवि। ३ एक संस्कृत काव्य-ग्रंथ, शिशुपाल वध काव्य (हे १, १८७)।

माह न [दे] कुन्द का फूल (दे ६, १२८)।

माहण पुस्त्री [माहन, ब्राह्मण] हिंसा से निवृत्त, अहिंसक—१ मुनि, साधु, ऋषि। २ श्रावक, जैन उपासक। ३ ब्राह्मण (आचा, सूअ २, २, ४८, ५४, भग १, ७, २, ५, प्रासू ८०, महा)। स्त्री °णी (कप्प)। °कुंड न [°कुण्ड] मगध देश का एक ग्राम (आचू १)।

माहप्प पुन [माहात्म्य] १ महत्त्व, गौरव। २ महिमा, प्रभाव (हे १, ३३, गउड, कुमा, सुर ३, ५३, प्रासू १७)।

माहप्पया स्त्री ऊपर देखो (उप ७६८ टी)।

माहय पु [दे] चतुरिन्द्रिय कीट-विशेष (उत्त ३६, १४९)।

मेलाय अक [मिल्] एकत्रित होना, 'पडिनिक्खमित्ता एगयओ मेलायंति' (भग)। संकृ. मेलायित्ता (भग)। कृ. मेलाइयव्व (ओघभा २२ टी)।

मेलाव देखो मेलव। मेलावइ (भवि)।

मेलाव पुन [मेल] १ मिलाप, संगम, मिलन (सुपा ४६६), 'निच्च चिय मेलावं सुमग्गनिरयाण अइदुलहं' (सट्ठि १४३)।

मेलावग देखो मेलय (आप्पहि १६)।

मेलावड (अप) देखो मेलय, मणवल्लहमेलावडउ पुण्णिहि लब्भइ एहु' (सिरि ७३)।

मेलावय देखो मेलावग (सुपा ३६१, भवि)।

मेलाविअ वि [मेलित] मिलाया हुआ, इकट्ठा किया हुआ (से १०, २८)।

मेलिअ वि [मिलित] मिला हुआ (ठा ३, १ टी—पत्र ११६, महा, उव),
'एवं सुलीलवंतो असीलवंतेहि मेलिओ संतो।
पावेइ गुणपरिहाणी मेलणदोसाणुसंगेण' (प्रासू ३५)।

मेली स्त्री [दे] संहति, जन-समूह का एकत्रित होना, मेला (दे ६, १३८)।

मेलीण देखो मिलीण (पउम २, ६), 'अएणोएणकडक्खंतरपेनिअमेलीणदिट्ठिपसराइं' (गा ६६६, ७०२ अ)।

मेल्ल देखो मिल्ल। मेल्लइ (हे ४, ९१), मेल्लेमि (कुप्र १६)। वकृ. मेल्लंत (महा)। संकृ. मेल्लाव, मेल्लेप्पिणु (अप) (हे ४, ३५३, पि ५८८)। कृ. मेल्लियव्व (उप ५५५)।

मेल्लण न [मोचन] छोड़ना, परित्याग (प्रासू १०२)।

मेल्लाविय वि [मोचित] छुड़वाया हुआ (सुर ८, ६८, महा)।

मेव देखो एव (पि ३३६)।

मेवाड } देखो मेअवाडय (ती १५, मोह
मेवाढ } ८८)।

मेस पु [मेष] १ मेंढा, भेड़, गाडर (सुर ३, ५३)। २ राशि-विशेष (विचार १०६, सुर ३, ५३)।

मेह पु [मेघ] १ अभ्र, जलधर (औप)। २ कालागुरु, सुगंधी धूप-द्रव्य-विशेष (से ६, ४६)। ३ भगवान् सुमतिनाथ का पिता (सम १५०)। ४ एक जैन महर्षि (अंत १८)। ५ राजा श्रेणिक का एक पुत्र (णाया १, १—पत्र ३७)। ६ एक देव-विमान (देवेन्द्र १३२)। ७ छन्द-विशेष (पिंग)। ८ एक वणिक्-पुत्र (सुपा ६१७)। ९ एक जैनमुनि (कप्प)। १० देश-विशेष (राज)। ११ मुस्तक, ओषधि-विशेष, मोथा। १२ एक राक्षस। १३ राग-विशेष (प्राप्र, हे १, १८७)। १४ एक विद्याधर-नगर (इक)। °कुमार पुं [°कुमार] राजा श्रेणिक का एक पुत्र (णाया १, १, उव)। °ज्झाण पुं [°ध्यान] राक्षसवंश का एक राजा, एक लंकापति (पउम ५, २६६)। °णाअ पुं [°नाद] रावण का एक पुत्र (से १३, ९८)। °पुर न [°पुर] वैताढ्य पर्वत के दक्षिण श्रेणी का एक नगर (पउम ६, २)। °मुह पुं [°मुख] १ देव-विशेष (राज)। २ एक अन्तर्द्वीप। ३ अन्तर्द्वीप-विशेष का निवासी मनुष्य (ठा ४, २—पत्र २२६, इक)। °रव न [°रव] विन्ध्यस्थली का एक जैन तीर्थ (पउम ७७, ६१)। °वाहण पु [°वाहन] १ राक्षस वंश का आदि पुरुष, जो लंका का राजा था (पउम ५, २५१)। २ रावण का एक पुत्र (पउम ८, ६४)। °सीह पुं [°सिंह] विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, ४३)। देखो मेघ।

मेह पुं [मेह] १ सेचन (सूअ १, ४, २, १२)। २ रोग-विशेष, प्रमेह (श्रा २०, सुख १, १५)।

मेहकरा देखो मेघकरा (इक)।

मेहच्छीर न [दे] जल, पानी (दे ६, १३९)।

मेहण न [मेहन] १ झरन, टपकना। २ प्रस्रवण, मूत्र, 'महुमेहण (आचा १, ६, १, २)। ३ पुरुष-लिंग (राज)।

मेहणि वि [मेहनिन्] झरनेवाला (आचा)।

मेहर पुं [दे] ग्राम-प्रवर, गाँव का मुखिया (दे ६, १२१, सुर १५, १९८)।

मेहरि पुंस्त्री [दे] काष्ठ-कीट, घुन (जी १५)।

मेहरिया } स्त्री [दे] गानेवाली स्त्री (सुपा
मेहरी } ३९४)।

मेहलय पुं ब. [मेखलक] देश-विशेष (पउम ९८, ६६)।

मेहला स्त्री [मेखला] काञ्ची, करधनी (पाअ, पण्ह १, ४, औप, गा ४६३)।

मेहलिज्जिया स्त्री [मेखलिया] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)।

मेहा स्त्री [मेघा] एक इंद्राणी, चमरेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ५, १—पत्र ३०२, इक)।

मेहा स्त्री [मेधा] बुद्धि, मनीषा, प्रज्ञा (सम १२५, से १, १६, हास्य १२५)। °अर वि [°कर] १ बुद्धि-वर्धक। २ पुं. छन्द-विशेष (पिंग)।

मेहा स्त्री [मेधा] अवग्रह-ज्ञान (णदि १७४)।

मेहावई देखो मेघ-वई (इक)।

मेहावण्ण न [मेघावर्ण] एक विद्याधर-नगर (इक)।

मेहावि वि [मेधाविन्] बुद्धिमान्, प्राज्ञ (ठा ५, ३, णाया १, १, आचा, कप्प, औप, उप १४२ टी, कुप्र १४०, धर्मवि ९८)। स्त्री °णी (नाट—शकु ११६)।

मेहि देखो मेढि (से ६, ४२)।

मेहि वि [मेहिन्] प्रस्रवण करनेवाला, 'महुमेहिए' (आचा)।

मेहिय न [मेधिक] एक जैन मुनि-कुल (कप्प)।

मेहिल पुं [मेधिल] भगवान् पार्श्वनाथ के वंश का एक जैन मुनि (भग)।

मेहुण } न [मैथुन] रति-क्रिया, संभोग
मेहुणय } (सम १०; पण्ह १, ४; उवा, औप; प्रासू १७९, महा)।

मेहुणय पुं [दे] फूफा का लड़का (दे ६, १४८)।

मेहुणिअ पुं [दे] मामा का लड़का (बृह ४)।

मेहुणिआ स्त्री [दे] १ साली, भार्या की बहिन (दे ६, १४८)। २ मामा की लड़की (दे ६, १४८, बृह ४)।

मेहुन्न देखो मेहुण, 'हिंसालियचोरिक्के मेहुन्नपरिग्गहे य निसिभत्ते' (ओघ ७८७)।

मेरेअ न [मैरेय] मद्य-विशेष (माल १७७)।

मो अ. इन अर्थो का सूचक अव्यय—१ अवधारण, निश्चय (सूअनि ८९, श्रावक १२५)। २ पाद-पूर्ति (पउम १०२, ८९, धर्मसं ६४५, श्रावक ९०)।

१४०)। स्त्री. °ढिया (पाअ)। २ न पुरुष-लिंग, पुरुष-चिह्न (राज)। °मुह पुं [°मुख] १ अनार्य देश-विशेष (पव २७४)। २ न. नगर-विशेष (राज)। देखो मेंढ।

मिंढिय पु [मेण्ढिक] ग्राम-विशेष (कर्म १)।

मिग देखो मय = मृग (विपा १, ७, सुर २, २२७, सुपा १६८, उव), 'सीहो मिगाणं सलिलाण गंगा' (सूअ १, ६, २१)। °गंध पुं [°गन्ध] युगलिक मनुष्य की एक जाति (इक)। °नाह पुं [°नाथ] सिंह (सुपा ६३२)। °वइ पु [°पति] सिंह (पण्ह १, १, सुपा ६३६)। °वालुंकी स्त्री [°वालुङ्की] वनस्पति-विशेष (पण्ण १७—पत्र ५३०)। °ारि पु [°ारि] सिंह (उव, सुर ६, २७०)। °ाहिव पु [°ाधिप] सिंह (पण्ह २, ५)।

मिगया स्त्री [मृगया] शिकार (सुपा २१४, कुप्र २३, मोह ६२)।

मिगव्व न [मृगव्य] ऊपर देखो (उत्त १८, १)।

मिगसिर देखो मगसिर (सम ८, इक, पि ४३६)।

मिगावई देखो मिआ-वई (पउम २०, १८४ २२, ५५, उव, अंत, कुप्र १८३, पडि)।

मिगी स्त्री [मृगी] १ हरिणी (महा)। २ विद्या-विशेष (राज)। °पद न [°पद] स्त्री का गुह्य स्थान, योनि (राज)।

मिच्चु देखो मच्चु (षड्, कुमा)।

मिच्छ (अप) देखो इच्छ = इष्, 'न उ देइ कप्पु मिच्छइ न न दंडु' (भवि)।

मिच्छ पु [म्लेच्छ] यवन, अनार्य मनुष्य (पउम २७, १८, ३४, ४१, ती १५, सबोध १६)। °पहु पुं [°प्रभु] म्लेच्छों का राजा (रंभा)। °पिअ न [°प्रिय] पलाण्डु, प्याज, लशुन, 'मिच्छप्पिय तु भुत्त जा गयो ता न हिंडति' (बृह ५)। °ाहिव पुं [°ाधिप] यवनों का राजा (पउम १२, १४)।

मिच्छ न [मिथ्य] १ असत्य वचन, झूठ। २ वि. असत्य, झूठा, 'मिच्छं ते एवमाहंसु' (भग), 'त तहा, नेव मिच्छं' (पउम २३, २६)। ३ मिथ्यादृष्टि, सत्य पर विश्वास नहीं रखनेवाला, तत्त्व का अश्रद्धालु, 'मिच्छो हियाहियविभागनाणसण्णासमन्निओ कोइ' (विसे ५१६)।

मिच्छ° देखो मिच्छा (कम्म ३, २, ४)। °कार पुं [°कार] मिथ्या-करण (आवम)। °त्त न [°त्व] सत्य तत्त्व पर अश्रद्धा, सत्य धर्म का अविश्वास (ठा ३, ३, आचू ६, भग, औप; उप ५३१, कुमा)। °त्ति वि [°त्विन्] सत्य धर्म पर विश्वास नहीं करनेवाला, परमार्थ का अश्रद्धालु (दं १८)। °दिट्ठि, °दिट्ठीय, °दिट्ठि, °दिट्ठिय वि [°दृष्टि, °क] सत्य धर्म पर श्रद्धा नहीं रखनेवाला, जिन-धर्म से भिन्न धर्म को माननेवाला (सम २६, कुमा, ठा २, २, औप, ठा १)।

मिच्छा अ [मिथ्या] १ असत्य, झूठा (पाअ)। २ कर्म-विशेष, मिथ्यात्व-मोहनीय कर्म (कम्म २, ४, १४)। ३ गुण-स्थानक विशेष, प्रथम गुण-स्थानक (कम्म २, २, ३, १३)। °दसण न [°दर्शन] १ सत्य तत्त्व पर अश्रद्धा (सम ८, भग, औप)। २ असत्य धर्म (कुमा)। °नाण न [°ज्ञान] असत्य ज्ञान, विपरीत ज्ञान, अज्ञान (भग)। °सुअ न [°श्रुत] असत्य शास्त्र, मिथ्यादृष्टि-प्रणीत शास्त्र (णंदि)।

मिज्ज अक [मृ] मरना। मिज्जति (सूअ १, ७, ६)। वकृ. मिज्जमाण (भग)।

मिज्जंत } देखो मा = मा।
मिज्जमाण }

मिज्झ वि [मेध्य] शुचि, पवित्र (उप ७२८ टी)।

मिट सक [दे] मिटाना, लोप करना। मिटिज्जसु (पिंग)। प्रयो. मिटावइ (पिंग)।

मिट्ठ वि [मिष्ट, मृष्ट] मीठा, मधुर, 'मुहमिट्ठा मणदुट्ठा वेसा सिट्ठाण कहमिट्ठा' (धर्मवि ६५, कप्पू, सुर १२, १७, हे १, १२८, रंभा)।

मिण सक [मा, मी] १ परिमाण करना, नापना, तोलना। २ जानना, निश्चय करना। मिणइ (विसे २१८६), मिणसु (पव २५४)।

मिणण न [मान] मान, माप, परिमाण (उप पृ ६७)।

मिणाय न [दे] बलात्कार, जबरदस्ती (दे ६, ११३)।

मिणाल देखो मुणाल (प्राकृ ८, रंभा)।

मित्त पुं [मित्र] १ सूर्य, रवि (सुपा ६४५, सुज्ज ४, ६, पाअ, वज्जा १४४)। २ नक्षत्रदेव-विशेष, अनुराधा नक्षत्र का अधिष्ठायक देव (ठा २, ३—पत्र ७७, सुज्ज १०, १२)। ३ अहोरात्र का तीसरा मुहूर्त (सम ५१, सुज्ज १०, १३)। ४ एक राजा का नाम (विपा १, २)। ५ पुंन. दोस्त, वयस्य सखा, 'मित्तो सही वयसो' (पाअ), 'पहाणमित्ता' (स ७०७), 'तिविहो मित्तो हवइ' (स ७१५, सुपा ६४५, प्रासू ७६)। °केसी स्त्री [°केशी] रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी, 'अलंबुसा मित (?त्त) केसी' (ठा ८—पत्र ४३७, इक)। °गा स्त्री [°गा] वैरोचन बलीन्द्र की एक अग्र-महिषी, एक इन्द्राणी (ठा ४, १—पत्र २०४)। °णंदि पु [°नन्दिन्] एक राजा का नाम (विपा २, १०)। °दाम पु [°दाम] एक कुलकर पुरुष का नाम (सम १५०)। °देवा स्त्री स्त्री [°देवा] अनुराधा नक्षत्र (राज)। °व वि [°वत्] मित्रवाला (उत्त ३, १८)। °सेण पुं [°सेन] एक पुरोहित-पुत्र (सुपा ५०७)।

मित्त देखो मेत्त = मात्र (कप्प, जी ३१, प्रासू १४५)।

मित्तल पुं [दे] कन्दर्प, काम (दे ६, १२६, सुर १३, ११८)।

मित्ति स्त्री मति] १ मान, परिमाण। २ सापेक्षता,

'उस्सग्गववायाणं मित्तीए अह ण भोयणं दुट्ठु।
उस्सग्गववायाणं मित्तीइ तहेव उवगरणं'

(अज्झ ३७)।

मित्तिआ स्त्री [मृत्तिका] मिट्टी, मट्टी (कप्पू २४३)। °वई स्त्री [°वती] दशार्ण देश की प्राचीन राजधानी (विचार ८८)।

मित्तिज्ज अक [मित्रीय्] मित्र को चाहना। वकृ मित्तिज्जमाण (उत्त ११, ७)।

मित्तिय न [मैत्रेय] १ गोत्र-विशेष, जो वत्स गोत्र की एक शाखा है। २ पुंस्त्री. उस गोत्र मे उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३९०)।

पएह २, १—पत्र १००)। °पय न [°पद] संयम, चारित्र (सूत्र १, १३, ६)।

मोणावणा स्त्री [दे] प्रथम प्रसूति के समय पिता की ओर से किया जाता उत्सव-पूर्वक निमन्त्रण (उप ७६८ टी)।

मोणि वि [मौनिन्] मौनवाला (उव, सुपा १४, सवोध २१)।

मोत्त देखो मुत्त = मुक्त (धर्मस ७५)।

मोत्तव्व देखो मुंच।

मोत्ता देखो मुत्ता (से ७, २५, संक्षि ४, प्राकृ ६, षड् ८०)।

मोत्ति देखो मुत्ति = मुक्ति (पएह १, ५—पत्र ६४)।

मोत्तिअ देखो मुत्तिअ (गा ३१०, स्वप्न ६३, औप, सुपा २३१, महा, गउड)। °दाम न [°दाम] छन्द-विशेष (पिंग)।

मोत्तुआण, मोत्तु, मोत्तूण } देखो मुंच = मुच्।

मोत्थ देखो मुत्थ (जी ६, संक्षि ४, पि १२५, प्रामा)।

मोदअ देखो मोअग = मोदक (स्वप्न ६०)। २ न छन्द-विशेष (पिंग)।

मोब्भ [दे] देखो मुब्भ (दे ८, ४)।

मोर पु [दे] श्वपच, चाण्डाल (दे ६, १४०)।

मोर पु [मोर] १ पक्षि विशेष, मयूर (हे १, १७१, कुमा)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। °बंध पुं [°बन्ध] एक प्रकार का बन्धन (सुपा ३४५)। °सिहा स्त्री [°शिखा] एक महौषधि (तो ५)।

मोरउल्ला, मोरकुल्ला } अ. मुधा, व्यर्थ (हे २, २१४, कुमा, चउप्पन्न० पत्र—७७, सुमतिजिन-चरित्र)।

मोरंड पुं [दे] तिल आदि का मोदक, खाद्य-विशेष (राज)।

मोरग वि [मायूरक] मयूर के पिच्छों से निष्पन्न (आचा २, २, ३, १८)।

मोरत्तय पुं [दे] श्वपच, चाण्डाल (दे ६, १४०)।

मोरिय पु [मौर्य] १ एक क्षत्रिय-वंश। २ मौर्य वंश में उत्पन्न (पि १३४)। °पुत्त पु [°पुत्र] भगवान् महावीर का एक गणधर—प्रधान शिष्य (सम १६)।

मोरी स्त्री [मोरी] १ मयूर पक्षी की मादा, मोरनी (पि १६६, नाट—मृच्छ १८)। २ विद्या-विशेष (सुपा ४०१)।

मोल्ल पुं [दे मौल्ल] बाँधने के लिए गाड़ा हुआ खूँटा (उव)।

मोलि देखो मउलि (काल, सम १६)।

मोल्ल देखो मुल्ल (हे १, १२४, उव, उप पृ १०४, णाया १, १—पत्र ६०, भग)।

मोस पु [मोष] १ चोरी। २ चोरी का माल; 'राया जणइ मोसं एसि अप्पमु' (सुप्प २२१, महा)।

मोस पुन [मृषा] झूठ, असत्य भाषण, 'चउव्विहे मोसे पएणत्ते', 'दसविह मोसे पएणत्ते' (ठा ४, १, १०, औप, कप्प)।

मोसण वि [मोषण] चोरी करनेवाला (कुप्र ४७)।

मोसलि, मोसली } स्त्री [दे मुशली, मौशली] वस्त्रादि निरीक्षण का एक दोष, वस्त्र आदि की प्रतिलेखना करते समय मुसल की तरह ऊँचे या नीचे भीत आदि का स्पर्श करना, प्रतिलेखना का एक दोष, 'वज्जेयव्वा य मोसली तइया' (उत्त २६ २६, २५, ओघ २६५, २६६)।

मोसा देखो मुसा (उवा, हे १, १३६)।

मोह सक [मोहय्] १ भ्रम में डालना। २ मुग्ध करना। मोहइ (भवि)। वकृ. मोहंत, मोहेंत (पउम ४, ८६, ११, ६६)। कृ देखो मोहणिज्ज।

मोह देखो मऊह (हे १, १७१, कुमा, कुप्र ४३७)।

मोह वि [मोघ] १ निष्फल, निरर्थक (से १०, ७०, गा ४८२), 'मोहाइ पत्थणाए सो पुण सोएइ अप्पाणं' (अज्झ १७५; आत्म १)। क्रिवि. 'मोहं कओ पयासो' (चेइय ७५०)। २ असत्य, मिथ्या, 'मिच्छा मोहं विहलं अलिअं असच्च असब्भूअं' (पाअ)।

मोह पुं [मोह] १ मूढता, अज्ञता, ? (आचा, कुमा, पएण १, १)। २ वि? ज्ञान (कुमा २, ५३)। ३ चित्त की व्याकु? (कुमा ५, ५)। ४ राग, प्रेम। ५ ? क्रीडा, 'मोहाउरा मणुस्सा तह कामदुह? विंति' (प्रासू २८, पएह १, ४)। ६ ? बेहोशी (स्वप्न ३१, स ६६६)। ७ ? विशेष, मोहनीय कर्म (कम्म ४, ६०, ६? ८ छन्द-विशेष (पिंग)।

मोहण न [मोहन] १ मुग्ध करना। २ ? आदि से वश करना (सुपा ५६६)। ३ ? बेहोशी (निसा ६)। ४ वशीकरण, ? करनेवाला मन्त्रादि-कर्म (सुपा ५६६)। ? काम का एक बाण। ६ प्रेम, अनुराग (? ७ मैथुन, रति-क्रिया (स ७६०, णाया १? जीव ३)। ८ वि व्याकुल बनाने? (स ५५७, ७४४)। ६ मोहक, मुग्ध ? वाला, 'मोहण पसूणपि' (धर्मवि ६५? ३, २६, कर्पूर २५)।

मोहणिज्ज वि [मोहनीय] १ मोह-ज? २ न कर्म-विशेष, मोह का कारण-भूत (सम ६६, भग, अंत, औप)।

मोहणी स्त्री [मोहनी] एक महौषधि (ती?

मोहर न [मौखर्य] वाचाटता, बकवाद (? २, ५—पत्र १४८, पुप्फ १८०)।

मोहर वि [मोखर] वाचाट, बकवादी ? १०—पत्र ५१८)।

मोहरिअ वि [मौखरिक] ऊपर देखो ? ६—पत्र ३७१, औप, सुपा ५२०)।

मोहरिअ न [मौखर्य] वाचालता, बक? (उवा, सुपा ५१४)।

मोहि वि [मोहिन्] मुग्ध करनेवाला (?

मोहणी स्त्री [मोहिनी] छन्द-विशेष (पि?

मोहिय वि [मोहित] १ मुग्ध किया ? (पएह १, ४, द्र १४)। २ न. निधु? मैथुन, रति-क्रीडा (णाया १; ६— १६५)।

मोहुत्तिय वि [मौहूर्त्तिक] ज्योतिष शास्? जानकार (कुप्र ५)।

मौलिअ देखो मोरिय, 'णिवेदेह दाव एवं?

मीत देखो मित्त = मित्र (सक्षि १७)।

मीमस सक [मीमास्] विचार करना। कृ. 'अ-मीमसा गुरू' (स ७३०)।

मीमसा स्त्री [मीमांसा] जैमिनीय दर्शन, पूर्वमीमासा (सुख ३, १, धर्मवि ३८)।

मीमसिय वि [मीमासित] विचारित (उप ६८६ टी)।

मीरा स्त्री [दे] दीर्घ चुल्ली, बडा चुल्हा (सूअनि ७६)।

मील अक [मील्] मीचाना, बन्द होना, सकुचाना। मीलइ (हे ४, २३२, षड्)।

मील देखो मिल (वि ११)।

मीलच्छीकार पु [मीलच्छीकार] १ यवन देश-विशेष, 'मीलच्छीकारदेसोवरि चलिदो खप्परखाणराया' (हम्मीर ३५)। २ एक यवन राजा (हम्मीर ३५)।

मीलण न [मीलन] संकोच (कुमा)।

मीलण देखो मिलण, 'खणजणमणमीलणोवमा विसया' (वि ११, राज)।

मीलिअ देखो मिलिअ = मिलित (पिंग)।

मीस सक [मिश्रय्] मिलाना, मिश्रण करना। कर्म. मीसिज्जइ (पि ६४)।

मीस वि [मिश्र] १ सयुक्त, मिला हुआ, मिश्रित (हे १, ४३, २, १७०, कुमा, कम्म २, १३, १५, ४, १३, १७, २४, भग, औप, द २२)। २ न. लगातार तीन दिनों का उपवास (सबोध ५८)।

मीसालिअ वि [मिश्र] सयुक्त, मिला हुआ (हे २, १७०, कुमा)।

मीसिय वि [मिश्रित] ऊपर देखो (कुमा, कप्प, भवि)।

मुअ सक [मोदय्] खुश करना। कवक्. मुइज्जत (से ७, ३७)।

मुअ सक [मुच्] छोडना। मुअइ (हे ४, ९१), मुअति (गा ३१६)। वकृ. मुअत, मुयमाण (गा ६४१, से ३, ३६, पि ४८५)। संकृ. मुइत्ता (भग)।

मुअ वि [मृत] मरा हुआ (से ३, १२, गा १४२, वज्जा १५८, प्रासू ५७, पउम १८, १६, उप ६४८ टी)। °वहण न [°वहन] शव-यान, ठठरी, अरथी (दे २, २०)।

मुअ वि [स्मृत] याद किया हुआ (सूअ २, ७, ३८, आचा)।

मुअंक देखो मिअक (प्राकृ ८)।

मुअग देखो मिअग (षड्, सम्मत्त २१८)।

मुअगी स्त्री [दे] कीटिका, चीटी (दे ६, १३४)।

मुअग्ग पु [दे] 'आत्मा वाह्य और अभ्यन्तर पुद्गलो से बना हुआ है' ऐसा मिथ्या ज्ञान (ठा ७ टी—पत्र ३८३)।

मुअण न [मोचन] छुटकारा, छोडना (सम्मत्त ७८, विसे ३३१६, उप ५२०)।

मुअल (अप) देखो मुअ = मृत (पिंग)।

मुआ स्त्री [मृत्] मिट्टी (सक्षि ४)।

मुआ स्त्री [मुद्] हर्ष, खुशी, आनन्द, 'सुरयरसाओवि मुयं अहिय उवजणइ तस्स सा एसा' (रंभा)।

मुआइणी स्त्री [दे] डुम्बी, डोमिन, चाण्डालिन (दे ६, १३५)।

मुआविअ वि [मोचित] छुडवाया हुआ (स ४४६)।

मुइ वि [मोचिन्] छोडनेवाला (विसे ३४०२)।

मुइअ वि [मुदित] १ हर्षित, मोद-प्राप्त (सुर ७, २२३, प्रासू १०५, उव, औप)। २ पुं रावण का एक सुभट, (पउम ५६, ३२)।

मुइअ वि [दे] योनि-शुद्ध, निर्दोष मातावाला, 'मुइओ जो होई जोणिसुद्धो' (औप—टी)।

मुइअगा देखो मुअगी, 'उवलिप्पंते काया मुइअगाई नवरि छट्ठे' (पिंड ३५१)।

मुइग देखो मिअग (हे १, ४६, १३७, प्राप्र, उवा, कप्प, सुपा ३६२, पाअ)। °पुक्खर पुंन [°पुष्कर] मृदग का ऊपरवाला भाग (भग)।

मुइंगलिया } स्त्री [दे] कीटिका, चीटी (उप
मुइगा } १३४ टी, सथा ८६, विसे १२०८, पिंड ३५१ टी)।

मुइगि वि [मृदङ्गिन्] मृदग वजानेवाला (कुमा)।

मुइद देखो मइद = मृगेन्द्र (प्राकृ ८)।

मुइज्जत देखो मुअ = मोदय्।

मुइर वि [मोक्तृ] छोडनेवाला (सण)।

मुउ देखो मिउ (काल)।

मुउद पुं [मुचुकुन्द] १ नृप-विशेष (अच्चु ६६)। २ पुष्पवृक्ष-विशेष (कप्पू)।

मुउंद पुं [मुकुन्द] विष्णु, नारायण (नाट—चैत १२६)।

मुउर देखो मउर = मुकुर (षड्)।

मुउल देखो मउल = मुकुल (षड्, मुद्रा ८४)।

मुंगायण न [मृङ्गायण] गोत्र-विशेष, विशाखा नक्षत्र का गोत्र (इक)।

मुच देखो मुअ = मुच्। मुंचइ, मुचए (षड्, कुमा)। भूका मुचो (भत्त ७६)। भवि. मोच्छं, मोच्छिहि, मु चिहिइ (हे ३, १७१, पि ५२६)। कर्म. मुच्चइ, मुचए, मुच्च ति (आचा, हे ४, २०६, महा, भग)। भवि. मुचिहिति (भग)। वकृ मुचन (कुमा)। कवकृ मुच्चत (पि ५४२)। सकृ. मोत्तु, मोत्तुआण, मोत्तूण (कुमा, षड्, प्राकृ ३४)। हेकृ मोत्त (कुमा), मुचणहि (अप) (कुमा)। कृ. मोत्तव्व, मुत्तव्व (हे ४, २१२, गा ६७२, सुपा ५८६)।

मुंज पुंन [मुञ्ज] मूँज, तृण-विशेष, जिसकी रस्सी वनाई जाती है (सूअ २, १, १६, गच्छ २, ३६, उप ६४८ टी)। °मेहला स्त्री [°मेखला] मूँज का कटिसूत्र (णाया १, १६—पत्र २१३)।

मुंजइ न [मौञ्जकिन्] १ गोत्र विशेष। २ पुंस्त्री, गोत्र मे उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०)।

मुजकार पु [मुञ्जकार] मूँज की रस्सी वनानेवाला शिल्पी (अणु १४९)।

मुजायण पु [मौञ्जायन] ऋषि-विशेष (हे १, १६०, प्राप्र)।

मुजि पुं [मौञ्जिन्] ऊपर देखो (प्राकृ १०)।

मुट वि [दे] हीन शरीरवाला,
'जे बंभचेरभट्ठा पाए पाडंति वमयारीणं।
ते हंति टुटमुटा वोहीवि सुदुल्लहा तेसिं'
(संबोध १४)।

मुंड सक [मुण्डय्] १ मूँडना, वाल उखाडना। २ दीक्षा देना, सन्यास देना। मु डइ (भवि), मु डेह (सूअ २, २, ६३)। प्रयो., वकृ. मुंडावेंत (पंचा १०, ४८ टी)। हेकृ. मुंडावेउ, मुडावित्तए, मुडावेत्तए (पंचा १०, ४८, ठा २, १, कस)।

र

र पु [र] मूर्ध-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण विशेष (सिरि १९६, पिंग)। °गण पु [°गण] छन्द शास्त्र-प्रसिद्ध मध्य लघु अक्षरवाले तीन स्वरो का समुदाय (पिंग)।

र अ पाद-पूरक अव्यय (हे २, २१७, कुमा)।

र अ [दे] निश्चय-सूचक अव्यय (दसनि १, १५२)।

रइ स्त्री [रति] १ काम-क्रीडा, सुरत, मैथुन (से १, ३२, कुमा)। २ कामदेव की स्त्री (कुमा)। ३ प्रीति, प्रेम, अनुराग (कुमा, सुपा ५११)। ४ कर्म-विशेष (कम्म २, १०)। ५ भगवान् पद्मप्रभ की मुख्य शिष्या (पव ८)। ६ पुं भूतानन्द नामक इन्द्र का एक सेनापति (इक)। °अर, °कर वि [°कर] १ रति-जनक (गा ३२३)। २ पु पर्वत-विशेष (पराह १, ५, ठा १०, महा)। °कीला स्त्री [°क्रीडा] काम-क्रीडा (महा)। °केलि स्त्री [°केलि] वही अर्थ (काप्र २०१)। °घर न [°गृह] सुरत-मन्दिर, विलास-गृह (पि ३६६ ए)। °णाह, °नाह पु [°नाथ] कामदेव (कुमा, सुर ६, ३१)। °पहु पु [°प्रभु] वही अर्थ (कुमा)। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] किन्नर नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी (इक, ठा ४, १—पत्र २०४)। °प्पिय पु [°प्रिय] १ कामदेव (सुपा ७५)। २ एक इन्द्र। ३ किन्नर देवो की एक जाति (राज)। °प्पिया स्त्री [°प्रिया] वानव्यन्तरो के इन्द्र विशेष की एक अग्र महिषी (णाया २—पत्र २५२)। °भवण न [°भवन] कामक्रीडा-गृह (महा)। °मंत वि [°मत्] १ राग-जनक। २ पुं. कामदेव, कन्दर्प (तदु ४६)। °मंदिर न [°मन्दिर] शयन-गृह (पाग्र)। °रमण पुं [°रमण] कामदेव (सुपा ४, २८६, कप्पू)। °लभ पुं [°लम्भ] १ सुरत की प्राप्ति। २ कामदेव (से ११, ८)। °वइ पु [°पति] कामदेव (कुमा, सुपा २६२)। °विद्धि स्त्री [°वृद्धि] विद्या-विशेष (पउम ७, १४४)। °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] एक राज-कन्या (उप ७२८ टी)। °सुहव पुं [°सुभग] कामदेव (कुमा)। °सेणा स्त्री [°सेना] किन्नरेन्द्र की एक अग्र-महिषी (इक, ठा ४, १—पत्र २०४)। °हर न [°गृह] शयन गृह, सुरतमन्दिर (उप ६४८ टी, महा)।

रइ पु [रवि] सूर्य, सूरज (गा ३४, से १, १४, ३२, कप्पू)।

रइअ वि [रचित] बनाया हुआ, निर्मित (सुर ४, २४४, कुमा, ओप, कप्प)।

रइअ वि [रचित] महल आदि की पीठ-भित्ति (अणु १५४)।

रइआव सक [रचय्] बनवाना। सकृ रइआविअ (ती ३)।

रइगेल्ल वि [दे] अभिलषित (दे ७, ३)।

रइगेल्ली स्त्री [दे] रति-तृष्णा (दे ७, ३)।

रइज्जत देखो रय = रचय्।

रइलक्ख न [दे] जघन, नितम्ब (दे ७, १३, पड्)।

रइलक्ख न [दे. रतिलक्ष] रति-सयोग, मैथुन (दे ७, १३)।

रइल्लिय वि [रजस्वल] रज से युक्त, रजवाला (पि ५६५)।

रइवाडिया देखो राय-वाडिआ, 'सामिय रइवाडियासमग्गो' (सिरि १०६)।

रईसर पुं [रतीश्वर] कामदेव, कन्दर्प (कुमा)।

रउताणिया स्त्री [दे] रोग-विशेष, पामा, खुजली (सिरि ३०६)।

रउद्द देखो रोद्द = रौद्र, 'रउद्दखुद्देहिं अखोह-णिज्जो' (यति ४२, भवि)।

रउरव वि [रौरव] भयकर, घोर। °काल पुं [°काल] माता के उदर मे पसार किया जाता समय-विशेष, 'नवमासहिं नियकुक्खहिं धरियउ पुणु रउरवकालहो नीसरियउ' (भवि)।

रउस्सल वि [रजस्वल] रजो-युक्त, धूलि-युक्त (भग ७, ७—पत्र ३०५)।

रओ° देखो रय = रजस् (पिंड ६ टी, सण)।

रंक वि [रङ्क] गरीब, दीन (पिंग)।

रंखोल अक [दोलय्] १ भूलना। २ हिलना, चलना, कांपना। रंखोलइ (हे ४, ४८, वज्जा ६४)।

रंखोलिय वि [दोलित] कम्पित (गउड)।

रंखोलिर वि [दोलितृ] भूलनेवाला (गउड, कुमा, पाग्र)।

रंग अक [रङ्ग्] इधर-उधर चलना। वकृ. रंगंत (कप्प, पउम १०, ३१, पराह १, ३—पत्र ५५)।

रंग सक [रङ्गय्] रँगना। कर्म. रगिज्जइ (संबोध १७)। वकृ 'रायगिह वरनयरं वर-नय-रंगत-मंदिरं अत्थि' (कुम्मा १८)।

रंग वि [राङ्ग] रँगा हुआ, रंग कर बनाया हुआ (दसनि २, १७)।

रंग न [दे] रांग, राँगा, धातु-विशेष, सीसा (दे ७, १, से २, २६)।

रंग पुं [रङ्ग] १ राग, प्रेम (सिरि ५१५)। २ नाट्यशाला, प्रेक्षा-भूमि (पाग्र, सुपा १, कुमा)। ३ युद्ध-मण्डप, जय-भूमि (धर्मस ७८३)। ४ सग्राम, लड़ाई (पिंग)। ५ रक्त वर्ण, लाली (से २, २६)। ६ वर्ण, रंग (भवि)। ७ रँगना, रंजन, रंग चढाना (गउड)। °अ वि [°द] कुतूहल-जनक (से ६, ४२)। °वलि स्त्री [°आवलि] रंगोली (चउप्पन्न० पत्र ३२६ गा ७१४)।

रंगण न [रङ्गन] १ राग, रँगना। २ पु. जीव, आत्मा (भग २०, २—पत्र ७७६)।

रंगिर वि [रङ्गितृ] चलनेवाला (सुपा ३)।

रंगिल्ल वि [रङ्गवत्] रँगवाला (उर ६, २)।

रंज सक [रञ्जय्] १ रँग लगाना। २ खुशी करना। रंजए, रंजेइ (वज्जा १३६, हे ४, ४६)। कर्म रंजिज्जइ (महा)। वकृ. रंजंत (सवे ३)। सकृ रंजिऊण (पि ५८६)। कृ. रंजियव्व (आत्महि ६)।

रंजग वि [रञ्जक] रञ्जन करनेवाला (रंभा)।

रंजण न [रञ्जन] १ रँगना (विसे २६६१)। २ खुशी करना, 'परचित्तरंजणे' (उप ६८६

मुट्टिम पुंस्त्री [दे] गर्व, अहंकार, गुजराती मे 'मोटाई', 'कयमुट्टिमंगीकारो' (हम्मीर ३५)। देखो मोट्टिम।

मुट्ठ वि [मुष्ट, मुषित] जिसकी चोरी हुई हो वह (पिंड ४६६, सुर २, ११२, सुपा ३६१, महा)।

मुट्ठि पुंस्त्री [मुष्टि] मुट्ठी, मूठी, घूँसा, मुक्का, 'मुट्ठिणा', मुट्ठीअ' (पि ३७९, ३८५, पाअ, रंभा, भवि)। °जुज्झ न [°युद्ध] मुष्टि से की जाती लडाई, मूकामूकी (आचा)। °पुत्थय न [°पुस्तक] १ चार अंगुल लम्बा वृत्ताकार पुस्तक। २ चार अंगुल लम्बा चतुष्कोण पुस्तक (पव ८०)।

मुट्ठिअ पु [मौष्टिक] १ अनार्य देश-विशेष। २ एक अनार्य मनुष्य-जाति (पण्ह १, १—पत्र १४)। ३ मुट्ठी से लडनेवाला मल्ल (पण्ह २, ५—पत्र १४९)। ४ वि मुष्टि-सम्बन्धी (कप्प)।

मुट्ठिअ पु [मुष्टिक] १ मल्ल-विशेष, जिसको बलदेव ने मारा था (पण्ह १, ४—पत्र ७२, पिंग)। २ अनार्य देश-विशेष। ३ एक अनार्य मनुष्य जाति (इक)।

मुट्ठिका स्त्री [दे] हिक्का, हिचकी (दे ६, १३४)।

मुड्ढ देखो मुढ (कुमा)।

मुड्ढ वि [मुग्ध, मूढ] मूर्ख, बेवकूफ (हम्मीर ५१)।

मुण सक [ज्ञा, मुण्] जानना। मुणइ, मुणति, मुणिमो (हे ४, ७, कुमा)। कर्म. मुणिज्जइ (हे ४, २५२), मुणिज्जामि (हास्य १३८)। वकृ. मुणंत, मुणिंत (महा, पउम ४८, ६)। कवकृ मुणिज्जमाण (से २, ३६)। संकृ मुणिय, मुणिउ, मुणिऊण, मुणेऊण (औप, महा)। कृ. मुणिअव्व मुणेअव्व (कुमा, से ४, २४, नव ४२, कप्प, उव, जी ३२)।

मुणण न [ज्ञान मुणन] ज्ञान, जानकारी (कुप्र १८४, संबोध २५, धर्मवि १२५, सण)।

मुणमुण सक [मुणमुणाय्] अव्यक्त शब्द करना, बडबडाना। वकृ. मुणमुणत, मुणमुणित (महा)।

मुणाल पुंन [मृणाल] १ पद्मकन्द के ऊपर की वेल—लता (आचा २, १, ८, ११)। २ विस, पद्मनाल। ३ पद्म आदि के नाल का तन्तु—सूत्र (पाअ, णाया १, १३, औप)। ४ वीरण का मूल। ५ पद्म, कमल, 'मुणालो', 'मुणाल' (प्राप्र, हे १, १३१)।

मुणालि पु [मृणालिन्] १ पद्म-समूह। २ पद्म-युक्त प्रदेश, कमलवाला स्थान, 'मुणाली वाणाली' (सुपा ४१३)।

मुणालिआ } स्त्री [मृणालिका, °ली] १
मुणाली } विस-तन्तु, कमल-नाल का सूता (नाट—रत्ना २६)। २ विस का अंकुर (गउड)। ३ कमलिनी (राज)। देखो मणालिया।

मुणि पु [मुनि] १ राग द्वेष-रहित मनुष्य, संत, साधु, ऋषि, यति (आचा, पाअ, कुमा, गउड)। २ अगस्त्य ऋषि, 'जलहिजल व मुणिणा' (सुपा ४८९)। ३ सात की संख्या। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। °चंद पु [°चन्द्र] १ एक प्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रंथकार, जो वादी देवसूरि के गुरु थे (धम्मो २५)। २ एक राज-पुत्र (महा)। °नाह पु [°नाथ] साधुओं का नायक (सुपा १९०, २५०)। °पुंगव पु [°पुङ्गव] श्रेष्ठ मुनि (सुपा ९७, श्रु ४१)। °राय पु [°राज] मुनि-नायक (सुपा १९०)। °वइ पु [°पति] वही अर्थ (सुपा १८१, २०६)। °वर पु [°वर] श्रेष्ठ मुनि (सुर ४, ५६, सुपा २४४)। °वेजयंत पु [°वैजयन्त] मुनि-प्रधान, श्रेष्ठ मुनि (सूअ १, ६, २०)। °सीह पु [°सिंह] श्रेष्ठ मुनि (पि ४३६)। °सुव्वय पु [°सुव्रत] १ वर्तमान काल मे उत्पन्न भारतवर्ष के बीसवें तीर्थंकर (सम ४३)। २ भारतवर्ष के एक भावी तीर्थंकर (सम १५३)।

मुणि पु [दे. मुनि] वृक्ष-विशेष, अगस्ति-द्रुम (दे ६, १३३, कुमा)।

मुणिअ वि [ज्ञात, मुणित] जाना हुआ (हे २, १९९, पाअ, कुमा, अवि १६, पण्ह १, २, उप १४३ टी)।

मुणिअ वि [दे मुणिक] ग्रह-गृहीत, भूता-विष्ट, पागल (भग १५—पत्र ६६५)।

मुणिंद पुं [मुनीन्द्र] श्रेष्ठ मुनि (हे १, ८४, भग)।

मुणिर वि [ज्ञातृ, मुणितृ] जाननेवाला (सण)।

मुणीश पुं [मुनीश] मुनि-नायक (उप १४१ टी, भवि)।

मुणीसर पु [मुनीश्वर] ऊपर देखो (सुपा ३६६)।

मुणीसिम (अप) पुन [मनुष्यत्व] १ मनुष्यपन। २ पुरुषार्थ (हे ४, ३३०)।

मुत्त सक [मूत्रय्] मूतना, पेशाब करना। मुत्तति (कुप्र ९२)।

मुत्त न [मूत्र] प्रस्रवण, पेशाब (सुपा ६१९)।

मुत्त देखो मुक्क = मुक्त (सम १, से २, ३०, जी २)। °लय पुस्त्री [°लय] मुक्त जीवो का स्थान, ईषत्प्राग्भारा नामक पृथिवी (इक)। स्त्री °या (ठा ८,—पत्र ४४०, सम २२)।

मुत्त वि [मूर्त] १ मूर्तिवाला, रूपवाला, आकारवाला (चैत्य ६१)। २ कठिन। ३ मूढ़। ४ मूर्च्छा युक्त (हे २, ३०)। ५ पुं उपवास, एक दिन का उपवास (सबोध ५८)। ६ एक प्राण का नाम (कप्प)।

मुत्त° देखो मुत्ता (औप, पि ९७, चैत्य १४)।

मुत्तव्व देखो मुच।

मुत्ता स्त्री [मुक्ता] मोती, मौक्तिक (कुमा)। °जाल न [°जाल] मुक्ता-समूह, मोतियो की माला (औप, पि ९७)। °दाम न [°दामन्] मोतियो की माला (ठा ४, २)। °वलि, °वली स्त्री [°वलि, °ली] १ मोती की माला, मोती का हार (सम ४४, पाअ)। २ तप-विशेष (अंत ३१)। ३ द्वीप-विशेष। ४ समुद्र-विशेष (राज)। °सुत्ति स्त्री [°शुक्ति] १ मोती की सीप। २ मुद्रा-विशेष (चेइय २४०, पचा ३, २१)। °हल न [°फल] मोती (हे १, २३६, कुमा, प्रासू २)। °हलिल्ल वि [°फलवत्] मोतीवाला (कप्पू)।

मुत्ति स्त्री [मूर्त्ति] १ रूप, आकार, 'मुत्ति-विमुत्तेसु' (पिंड ५६, विसे ३१८२)। २ प्रतिबिम्ब, प्रतिमूर्त्ति, प्रतिमा, 'चउमुहमुत्ति-

रच्छामय पु [दे रथ्यामृग] श्वान, कुत्ता (दे ७, ४)।

रज देखो रय = रजस् (कुमा)।

रजक } पुस्त्री [रजक] धोबी, कपडा धोने
रजग } का धन्धा करनेवाला (श्रा १२, दे ५, ३२)। स्त्री. °की (दे १, ११४)।

रजय देखो रयय = रजत (इक)।

रज्ज अक [रञ्ज्] १ अनुराग करना, आसक्त होना। २ रँगाना, रँग-युक्त होना। रज्जइ (आचा, उव), रज्जह (णाया १, ८—पत्र १४८)। भवि. रज्जिहिति (औप)। वकृ. रज्जत, रज्जमाण (से १०, २०, णाया १, १७, उत्त २९, ३)। कृ. रज्जियव्व (पराह २, ५—पत्र १४९)।

रज्ज न [राज्य] १ राज, राजा का अधिकृत देश। २ शासन, हुकूमत (णाया १, ८, कुमा, दं ४७, भग, प्रासू)। °पालिया स्त्री [°पालिका] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)। °वइ पु [°पति] राजा (कप्प)। °सिरी स्त्री [°श्री] राज्य लक्ष्मी (महा)। °हिसेय पुं [°भिषेक] राजगद्दी पर बैठाने का उत्सव (पउम ७७, ३६)।

रज्जव पुंन नीचे देखो, 'खररज्जवेसु बद्धा' (पउम ३९, ११६)।

रज्जु स्त्री [रज्जु] १ रस्सी (पाम्र, उवा)। २ एक प्रकार की नाप, 'चउदसरज्जू लोगो' (पव १४३)।

रज्जु वि [दे] लेखक, लिखने का काम करनेवाला (कप्प)। °सभा स्त्री [°सभा] १ लेखक गृह। २ शुल्क-गृह, चूंगी-घर, 'हत्थिपालस्स रन्नो रज्जुसभाए' (कप्प)।

रज्झिय देखो रहिअ = रहित, 'अरज्झिया-भितावा तहवी तविति' (सूम्र १,५,१,१७)।

रट्ठ न [राष्ट्र] देश, जनपद (सुपा ३०७, महा)। °उड, °कूड पुं [°कूट] राज-नियुक्त प्रतिनिधि, सूबेदार (विपा १, १ टी—पत्र ११, विपा १, १—पत्र ११)।

रट्ठिअ वि [राष्ट्रिय] १ देश-सम्बन्धी। २ पुं नाटक की भाषा में राजा का साला (अभि १९४)।

रट्ठिअ पुं [राष्ट्रिक] देश की चिन्ता के लिए नियुक्त राज-प्रतिनिधि, सूबेदार (पराह १, ५—पत्र ९४)।

रड अक [रट्] १ रोना। २ चिल्लाना। रडइ (भवि)। वकृ. रडत (हे ४, ४४५, भवि)।

रडण न [रटन] चिल्लाहट, चीख (पिंड २२५)।

रडिय न [रटित] १ रुदन, रोना (पराह २, ५)। २ आवाज करना, शब्द-करण, 'परहुय-वहूय रडिय कुहूकुहूमहुरसद्देण' (रंभा)। ३ चिल्लाना, चीख (णाया १,१—पत्र ६३)। ४ वि. कलहायित, झगडालू, झगडाखोर, 'कलहाइअ रडिअ' (पाम्र)।

रडरडिय न [रटरटित] शब्द-विशेष, वाद्य-विशेष की आवाज (सुपा ५०)।

रड्ड वि [दे] खिसक कर गिरा हुआ, गुजराती में 'रडेलु' (कुप्र ४५६)।

रड्डा स्त्री [रड्डा] छन्द विशेष (पिंग)।

रण पुन [रण] १ सग्राम, लडाई (कुमा, पाम्र)। २ पु. शब्द, आवाज (पाम्र)। °खभउर न [°स्तम्भपुर] अजमेर के समीप का एक प्राचीन नगर, 'रणखंभउरजिणहरे चडाविया कणयमयकलसा' (मुणि १०९०१)।

रणक्कार पु [रणत्कार] शब्द-विशेष (गउड)।

रणझण अक [रणझणाय्] 'रन् झन्' आवाज करना। रणझणइ (वज्जा १२८)। वकृ. रणझणत (भवि)।

रणझणिर वि [रणझणायितृ] 'रन् झन्' आवाज करनेवाला (सुपा ६४१, धर्मवि ८८)।

रणरण अक [रणरणाय्] 'रन् रन्' आवाज करना। वकृ रणरणत (पिंग)।

रणरण } पु [दे. रणरणक] १ निःश्वास,
रणरणय } नीसास, 'अइउण्हा रणरणया दुप्पेच्छा दूसहा दुरालोया' (वज्जा ७८)। २ उद्वेग, पीडा, अधृति, 'गरुयपियसगमासा-भंससमुच्छलियरणरणाइन्न' (सुर ४, २३०, पाम्र)। ३ उत्कण्ठा, औत्सुक्य (दे १, १३६, गउड, रुक्मि ४८, सवे २)।

रणरणाय देखो रणरण = रणरणाय्। वकृ. रणरणायत (पउम ६४, ३९)।

रणिअ न [रणित] शब्द, आवाज (सुर १, २४८)।

रणिर वि [रणितृ] आवाज करनेवाला (सुपा ३२७, गउड)।

रण्ण न [अरण्य] जगल, अटवी (हे १, ६६, प्राप्र, औप)।

रत्त पु [रक्त] १ लाल वर्ण, लाल रंग। २ कुसुभ। ३ वृक्ष विशेष, हिज्जल का पेड (हे २, १०)। ४ न. कुकुम। ५ ताम्र, तांबा। ६ सिंदूर। ७ हिंगुल। ८ खून, रुधिर। ९ राग (प्राप्र)। १० वि. रँगा हुआ (हेका २७२)। ११ लाल रँगवाला (पाम्र)। १२ अनुराग-युक्त (ओघ ७५७, प्रासू १५५, १६०)। °कंबला स्त्री [°कम्बला] मेरु पर्वत के पण्डक वन मे स्थित एक शिला, जिसपर जिनदेवों का अभिषेक किया जाता है (ठा २, ३—पत्र ८०)। °कूड न [°कूट] शिखर-विशेष (राज)। °कोरिंटय पुं [°कुरण्टक] वृक्ष-विशेष (पउम ५३, ७९)। °क्ख, °च्छ वि [°क्ष] १ लाल आँखवाला (राज, सुर २, ६)। स्त्री °च्छी (ओघभा २२ टी)। २ पुं महिप, भैंसा (दे ७, १३)। °ट्ठ पुं [°ार्ध] विद्याधर वश का एक राजा (पउम ५, ४४)। °धाउ पु [°धातु] कुण्डल पर्वत का एक शिखर (दीव)। °पड पुं [°पट] परिव्राजक, संन्यासी (णाया १, १५—पत्र १९३)। °प्पवाय पुं [°प्रपात] द्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७३)। °प्पह पुं [°प्रभ] कुण्डल-पर्वत का एक शिखर (दीव)। °रयण न [°रत्न] रत्न की एक जाति, पद्म-राग मणि (औप)। °वई स्त्री [°वती] एक नदी (सम २७, ४३, इक)। °वड देखो °पड (सुख ८, १३)। °सुभद्दा स्त्री [°सुभद्रा] श्रीकृष्ण की एक भगिनी (पराह १, ४—पत्र ८५)। °सोग, °सोय पुं [°शोक] लाल अशोक का पेड (णाया १, १, महा)।

°रत्त पुं [°रात्र] रात, निशा (जी ३४)।

रत्तग देखो रत्त = रक्त (महा)।

रत्तदण न [रक्तचन्दन] लाल चन्दन (सुपा १८१)।

मुरुमुरिअ न [दे] रणरणक, उत्सुकता (दे ६, १३६, पाअ)।

मुरुह देखो मुरुक्ख (षड्)।

मुलासिअ पुं [दे] स्फुलिंग, अग्नि-कण (दे ६, १३५)।

मुल्ल (अप) देखो मुंच। मुल्लइ (प्राकृ ११६)।

मुल्ल } पुंन [मूल्य] कीमत, 'को मुल्लो'
मुल्लिअ } (वज्जा १५२, औप, पाअ, कुमा, प्रयौ ७७)।

मुव (अप) देखो मुअ = मुच्। मुवइ (भवि)।

मुव्वह देखो उव्वह = उद् + वह्। मुव्वहइ (हे २, १४७)।

मुस सक [मुष्] चोरी करना। मुसइ (हे ४, २३९, सार्ध ९२)। भवि. मुसिस्सइ (धर्मवि ४)। कर्म मुसिज्जामो (वि ४५५)। वकृ मुसंत (महा)। कवकृ मुसिज्जंत, मुसिज्जमाण (सुपा ४५०, कुप्र २४७)। संकृ. मुसिऊण (स ६९३)।

मुसंढि देखो मुसुंढि (सम १३७, पण्ह १, १—पत्र ८, उत्त ३६, १००, पण्ण १—पत्र ३५)।

मुसण न [मोषण] चोरी (सार्ध ९०, धर्मवि ५६)।

मुसल पुंन [मुसल] १ मूसल या मूसर, एक प्रकार की मोटी लकडी जिससे चावल आदि अन्न कूटे जाते है (औप, उवा, षड्, हे १,११३)। २ मान-विशेष (सम ९८)। °धर पु [°धर] बलदेव (कुमा)। °उह पु [°ायुध] बलदेव (पाअ)।

मुसल वि [दे] मांसल, पुष्ट (षड्)।

मुसलि पु [मुसलिन्] बलदेव (दे १, ११८, सण)।

मुसली देखो मोसली (ओघभा १६१)।

मुसह न [दे] मन की आकुलता (दे ६, १३४)।

मुसा अ स्त्री [मृषा] मिथ्या, अनृत, झूठ, असत्य भाषण (उवा, षड्, हे १, १३६, कस), 'अयाणंता मुसं वए' (सूअ १, १, ३, ८, उव)। °वाद देखो °वाय (सूअ १, ३, ४, ८)। °वादि वि [°वादिन्] झूठ बोलनेवाला (पण्ह १, २, आचा २, ४, १, ८)। °वाय पु [°वाद] झूठ बोलना, असत्य भाषण (सम १०, भग, कस)।

मुसाविअ वि [मोषित] चुरवाया हुआ, चोरी कराया हुआ (ओव २६० टी)।

मुसिय वि [मुषित] चुराया हुआ (सुपा २२०)।

मुसुंढि पुंस्त्री [दे] १ प्रहरण-विशेष, शस्त्र-विशेष (औप)। २ वनस्पति-विशेष (उत्त ३६, १००, सुख ३६, १००)।

मुसुमूर सक [भञ्ज्] भागना, तोडना। मुसुमूरइ (हे ४, १०६)। हेकृ 'तेसिं च केसमवि मुसुमु[? सुमू]रिउमसमत्थो' (सम्मत्त १२०)।

मुसुमूरण न [भञ्जन] तोडना, खण्डन (सम्मत्त १८७)।

मुसुमूराविअ वि [भञ्जित] भँगाया हुआ (सम्मत्त ३०)।

मुसुमूरिअ वि [भग्न] भाँगा हुआ (पाअ, कुमा, सण)।

मुह देखो मुज्झ, 'इय मा मुहसु मरणेण' (जीवा १०)। संकृ. मुहिअ (पिंग)। कवकृ मुहिज्जंत (से ११, १००)।

मुह न [मुख] १ मुँह, वदन (पाअ, हे ३, १३४, कुमा, प्रासू १९)। २ अग्र भाग (सुज्ज ४)। ३ उपाय (उत्त २५, १६, सुख २५, १६)। ४ द्वार, दरवाजा। ५ आरम्भ। ६ नाटक आदि का सन्धि-विशेष। ७ नाटक आदि का शब्द-विशेष। ८ आद्य, प्रथम। ९ प्रधान, मुख्य। १० शब्द, आवाज। ११ नाटक। १२ वेद-शास्त्र (प्राप्र, हे १, १८७)। १३ प्रवेश (निचू ११)। १४ पुं वृक्ष-विशेष, बडहल का गाछ (सुज्ज १०, ८)। °णतग, °णतय न [°ानन्तक] मुख-वस्त्रिका (ओघभा १५८, पव २)। °तूरय न [°तूर्य] मुह से बजाया जाता वाद्य (भग)। °धोवणिया स्त्री [°धावनिका] मुँह धोने की सामग्री, दतवन आदि, 'मुहधोवणिय खिप्प उवणमेहि' (उप ६४८ टी)। °पत्ती स्त्री [°पत्री] मुख-वस्त्रिका (उवा; ओघ ६६६, द्र ५८)। °पुत्तिया, °पोत्तिया, °पोत्ती स्त्री [°पोतिका] मुख-वस्त्रिका, बोलते समय मुँह के आगे रखने का वस्त्र-खण्ड (संबोध ५, विपा १, १, पव १२७)। °फुल्ल न [°फुल्ल] १ बडहल का फूल। २ विशा-नक्षत्र का सस्थान (सुज्ज १०, ८)। °भंडग न [°भाण्डक] मुखाभरण (औप)। °मंगलिय, °मंगलीअ वि [°माङ्गलिक] मुँह मे पर-प्रशंसा करनेवाला, खुशामदी (कप्प, औप, सूअ १, ७, २५)। °मक्कडा, °मक्कडिआ स्त्री [°मर्कटा, °टिका] गला पकड कर मुँह को मोडना मुख-वक्रीकरण (सुर १२, ६७, णाया १, ८—पत्र १४४)। °वंत वि [°वत्] मुँहवाला (भवि)। °वड पु [°पट] मुँह के आगे रखने का वस्त्र (से २, २२, १३, ५९)। °वडण न [°पतन] मुँह मे गिरना (दे ६, १३६)। °वण्ण पु [°वर्ण] प्रशंसा, खुशामद (निचू ११)। °वास पु [°वास] भोजन के अनन्तर खाया जाता पान, चूर्ण आदि मुँह को सुगन्धी बनानेवाला पदार्थ (उवा ४२, उर ८, ५)। °वीणिया स्त्री [°वीणिका] मुँह से विकृत शब्द करना, मुँह मे वाद्य का शब्द करना (निचू ५)। मुहड देखो मुहल। °ासिय न [°ाशय] एक नगर (ती १५)।

मुहत्थडी स्त्री [दे] मुँह मे गिरना (दे ६, १३६)।

मुहर देखो मुहल = मुखर (सुपा २२८)।

मुहरिय वि [मुखरित] वाचाल बना हुआ, आवाज करता (सुर ३, ५४)।

मुहरोमराइ स्त्री [दे] भ्रू, भौं (दे ६, १३६, षड्, १७३)।

मुहल न [दे] मुख, मुँह (दे ६,१३४, षड्)।

मुहल वि [मुखर] १ वाचाट, बकवादी (गा ५७८, सुर ३, १८, सुपा ४)। २ पु. काक, कौआ। ३ शंख (हे १, २५४, प्राप्र)। °रव पुं [°रव] तुमुल, कोलाहल (पाअ)।

मुहा अ स्त्री [मुधा] व्यर्थ, निरर्थक (पाअ, सुर ३. १, धर्मसं ११३२, श्रा २८, प्रासू ९), मुहाइ हारिंति अप्पाणं' (संबोध ४९)। °जीवि वि [°जीविन्] भिक्षा पर निर्वाह करनेवाला (उत्त २५, २८)।

मुहिअ न [दे] मुफत, बिना मूल्य, मुफ्त मे करना (दे ६, १३४)।

मुहिआ स्त्री [दे मुधिका] ऊपर देखो (दे ६, १३४, कुमा, पाअ), 'ति सव्वेवि हु कुमरस्स

रयण वि [रचन] करनेवाला, निर्माता, 'चेडीसर्वितारयण' (सण)।

रयण पु [रदन] दाँत, दशन (उप ९८६ टी, पाग्र, काप्र १८२, गाट दकु १३)।

रयण पुन [रत्न] १ माणिक्य आदि बहुमूल्य पत्थर, मणि, 'दुवे रयणा समुप्पन्ना' (निर १, १, उप ५६३, णाया १, १, सुपा १४७, जी ३, कुमा, हे २, १०१)। २ श्रेष्ठ, स्वजाति मे उत्तम (सण २६, कुमा ३, ४७), 'तहवि हु चंद-सरिच्छा विरला रयणायरे रयणा' (वज्जा १५६)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)। ४ द्वीप-विशेष (णाया १, ६, पउम ५५, १७)। ५ पर्वत-विशेष का एक कूट (ठा ४, २, ८)। ६ पु ब. रत्न-द्वीप का निवासी (पउम ५५, १७)। °उर न [°पुर] नगर-विशेष (सण)। °चित्त पु [°चित्र] विद्याधर वश का एक राजा (पउम ५, ४५)। °दीव पु [°द्वीप] द्वीप-विशेष (णाया १, ९—पत्र १६५)। °निहि पु [°निधि] समुद्र, सागर (सुपा ७, १२६)। °पुढवी स्त्री [°पृथिवी] पहली नरक-भूमि, रत्नप्रभा नामक नरक-पृथिवी (स १३२)। °पुर देखो °उर (कुप्र ६, महा, सण)। °प्पभा, °प्पहा स्त्री [°प्रभा] १ पहली नरक-भूमि (ठा ७—पत्र ३८८, श्रौप, भग)। २ भीम नामक राक्षसेन्द्र की एक पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ रत्न का तेज (स १३३)। °मय त्रि [°मय] रत्नो का बना हुआ (महा)। °माला स्त्री [°माला] छन्द-विशेष (अजि २४)। °मालि पु [°मालिन्] विद्याधर वश में उत्पन्न नमि-राज का एक पुत्र (पउम ५, १४)। °मुस वि [°मुष्] रत्नो को चुरानेवाला (षड्)। °रह पुं [°रथ] विद्याधर वश का एक राजा (पउम ५, १४)। °रासि पु [°राशि] समुद्र (प्राकृ)। °वइ पु [°पति] रत्नो का मालिक, धनी, श्रीमत (सुपा २६९)। °वई स्त्री [°वती] एक रानी (रयण ३)। °वज्ज पु [°वज्र] विद्याधर-वशीय एक राजा (पउम ५, १४)। °वह वि [°वह] रत्न-धारक (गउड १०७१)। °सचय न [°सचय] १ रुचक पर्वत का कूट (इक)। २ एक नगर (इक, सुर ३, २०)। °संचया स्त्री [°सचया] १ मगलावती नामक विजय की राजधानी (ठा २, ३—पत्र ८०)। २ ईशानेन्द्र की वसुन्धरा-नामक इन्द्राणी की एक राजधानी (इक)। °समया स्त्री [°समया] मगलावती नामक विजय की एक राजधानी (इक)। °सार पु [°सार] १ एक राजा (राज)। २ एक शेठ का नाम (उप ७२८ टी)। °सिह पु [°सिह] एक जैन आचार्य, संवेगचूलिकाकुलक कर्त्ता (सवे १२)। °सिह पु [°शिख] एक राजा (उप १०३१ टी)। °सेहर पुं [°शेखर] १ एक राजा (रयण ३)। २ विक्रम की पनरहवी शताब्दी मे विद्यमान एक जैन आचार्य और ग्रथकार (सिरि १३४०)। °ाअर, °ागर पु [°ाकर] १ रत्न की खान (षड्)। २ समुद्र (पाग्र, सुपा ३७, प्रासू ६७, णाया १, १७—पत्र २२८)। °ाभा स्त्री [°ाभा] देखो °प्पभा (उत्त ३६, १५७)। °ामय देखो °मय (महा, श्रौप) °ायरसुअ पु [°ाकरसुत] १ चन्द्रमा। २ एक वणिक्-पुत्र (श्रा १६)। °ावलि, °ावली स्त्री [°ावलि, °ावली] १ रत्नो का हार (सम्म २२)। २ तप-विशेष (अत २५)। ३ ग्रन्थ-विशेष (दे ८, ७७)। ४ एक विद्याधर-राजकन्या (पउम ६, ५२)। °ावह न [°ावह] नगर-विशेष (महा)। °ासव पुं [°ास्रव] रावण का पिता (पउम ७, ५६, ७१) °ासवसुअ पु [°ास्रवसुत] रावण (पउम ८, २२१)। °ाहिय वि [°ाधिक] ज्येष्ठ, अवस्था में बडा (राज)।

रयणप्पभिय वि [रत्नप्रभिक] रत्नप्रभा-सवन्धी (पंच २, ६९)।

रयणा स्त्री [रचना] निर्माण, कृति (उत्त १५, १८, चेइय ८६६, सुपा ३०४, रभा)।

रयणा स्त्री [रत्ना] रत्नप्रभा नामक नरक-भूमि (पव १७५)।

रयणि पुस्त्री [रत्नि] एक हाथ की नाप, बद्ध-मुष्टि हाथ का परिमाण (कस, पव ५८, १७६)।

रयणि स्त्री [रजनि] देखो **रयणी** = रजनी (णाया १, २—पत्र ७९, कप्प)। °अर पुं [°चर] १ राक्षस (से १०, ६६, पाग्र)। °अर, °कर पुं [°कर] चन्द्रमा (हे १, ८ टि, कप्प)। °णाह, °नाह पुं [°नाथ] चन्द्रमा (पाग्र, सुपा ३३)। °भत्त न [°भक्त] रात्रि मे खाना (सुपा ६९५)। °रमण पु [°रमण] चन्द्रमा (सण)। °वल्लह पुं [°वल्लभ] चन्द्रमा (कप्पू)। °विराम पु [°विराम] प्रात काल, सुबह (पाग्र)।

रयणिंद पु [रजनीन्द्र] चन्द्रमा (सण)।

रयणिद्धय न [दे] कुमुद, कमल (दे ७, ४, षड्)।

रयणी स्त्री [रत्नी] देखो **रयणि** = रत्नि (ठा १, सम १२, जीवस १७७, जी ३३, श्रौप)।

रयणी स्त्री [रजनी] १ रात्रि, रात (पाग्र, प्रासू १३६, कुमा)। २ ईशानेन्द्र के लोकपाल की एक पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ चमरेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ५ १—पत्र ३०२)। ४ मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७—पत्र ३९३)। ५ षड्ज ग्राम की एक मूर्च्छना, 'मगी कोरव्वीया हरी य रयतणी(? यणी) सारकता य' (ठा ७—पत्र ३९३)। °भोअण न [°भोजन] रात में खाना (श्रा २०)। °सार न [°सार] सुरत, मैथुन (से ३, ४८)। देखो **रयणि** = रजनि (हे १, ८)।

रयणी स्त्री [रजनी] श्रौपधि-विशेष—१ पिंडदारु। २ हरिद्रा, हलदी (उत्तनि ३)।

रयणुच्चय, **रयणोच्चय** पु [रत्नोच्चय] १ मेरु-पर्वत (सुज्ज ५ टी—पत्र ७७, इक)। २ कूट-विशेष (इक)।

रयणोच्चया स्त्री [रत्नोच्चया] वसुगुप्ता नामक इन्द्राणी की एक राजधानी (इक)।

रयत, **रयद**, **रयय** न [रजत] १ रूप्य, चाँदी (णाया १, १—पत्र ६६, प्राकृ १२, प्राप्र, पाग्र, उवा, श्रौप)। २ एक देव-विमान (देवेन्द्र १३१)। ३ हाथी का दाँत। ४ हार, माला। ५ सुवर्ण, सोना। ६ रुधिर, खून। ७ शैल, पर्वत। ८ धवल वर्ण। ९ शिखर-विशेष। १० वि. सफेद वर्णवाला, श्वेत (प्राकृ १२, प्राप्र, हे १, १७७, १८०, २०९)। °गिरि पु [°गिरि] पर्वत-विशेष (णाया १, १, श्रौप)। °वत्त न [°पात्र]

मेअ वि [मेय] १ जानने योग्य, प्रमेय, पदार्थ, वस्तु (उत्त १८, २३)। २ नापने योग्य (षड्)। °न्न वि [°ज्ञ] पदार्थ-ज्ञाता (उत्त १८, २३, सुख १८, २३)।

मेअ पुंन [मेदस्] शरीर-स्थित धातु-विशेष, चर्बी (तंदु ३८, णाया १, १२—पत्र १७३, गउड)।

मेअज्ज न [दे] धान्य, अन्न (दे ६, १३८)।

मेअज्ज पुं [मेदार्य] मेदार्य गोत्र मे उत्पन्न (सूअ २, ७, ५)।

मेअज्ज पुं [मेतार्य] १ भगवान् महावीर का दसवाँ गणधर (सम १९)। २ एक जैन महर्षि (उव, सुपा ४०९, विवे ४३)।

मेअय वि [मेचक] काला, कृष्ण-वर्ण (गउड ३३६)।

मेअर वि [दे] असहन, असहिष्णु (दे ६, १३८)।

मेअल पुं [मेकल] पर्वत-विशेष। °कन्ना स्त्री [°कन्या] नर्मदा नदी (पाअ)।

मेअवाडय पुन [मेदपाटक] एक भारतीय देश, मेवाड, 'णाव दाहविअं सअलपि मेअ-वाडयं हम्मीरखीरेहिं' (हम्मीर २७)।

मेइणि° } स्त्री [मेदिनी] १ पृथिवी, धरती
मेइणी } (सुपा ३२, कुमा, प्रासू ५२)। २ चाण्डालिन (सुपा १९, सम्मत्त १७२)। °नाह पु [°नाथ] राजा (उप पृ १८९, सुपा १०८)। °पइ पु [°पति] १ राजा। २ चाण्डाल, 'जो विबुहपणयचरणोवि गोत्तभेई न, मेइणिपईवि न हु मायंगो' (सुपा ३२)। °सामि पुं [°स्वामिन्] राजा (उप ७२८ टी)।

मेइणीसर पु [मेदनीश्वर] राजा (उप ७२८ टी)।

मेठ पुं [दे] हस्तिपक, महावत (दे ६, १३८)। देखो मिंठ।

मेंठी स्त्री [दे] मेंढी, मेषी गडरिया (दे ६,१३८)।

मेढ पुंस्त्री [मेढ्र] मेंढा, मेष, भेड, गाडर (ठा ४, २)। स्त्री. °ढी (दे ६, १३८)। °मुह पुं [°मुख] १ एक अन्तर्द्वीप। २ अन्तर्द्वीप-विशेष में रहनेवाली मनुष्य-जाति (ठा ४, २—पत्र २२६, इक)। °विसाणा स्त्री [°विषाणा] वनस्पति-विशेष, मेढाशिंगी (ठा ४, १—पत्र १८५)। देखो मिंढ।

मेखला देखो मेहला (राज)।

मेज्ज न [मेय] मान, तौल, बाट, बटखरा, जिससे मापा जाय वह (अणु १५४)।

मेघ देखो मेह (कुमा, सुपा २०१)। °मालिणी स्त्री [°मालिनी] नन्दन वन के शिखर पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७)। °वई स्त्री [°वती] एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७)। °वाहण पुं [°वाहन] एक विद्याधर राज-कुमार (पउम ५, ६५)।

मेघकरा स्त्री [मेघङ्करा] एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७)।

मेच्छ देखो मिच्छ=म्लेच्छ (ओघ २४, औप, उप ७२८ टी, मुद्रा २६७)।

मेज्ज देखो मेअ=मेय (षड्, णाय १, ८—पत्र १३२, श्रा १८)।

मेज्झ देखो मिज्झ (महा ४, ११, ४०, २४)।

मेट देखो मिट। प्रयो मेटाव (पिंग)।

मेडंभ पुं [दे] मृग-तन्तु (दे ६, १३९)।

मेडय पुं [दे] मजला, तला, गुजराती मे 'मेडो', 'तस्स य सयणट्ठाण सचारिमकट्ठमेड-यस्सुवरिं' (सुपा ३५१)।

मेड्ढ देखो मेढ (उप पृ २२४)।

मेढ पु [दे] वणिक्-सहाय, वणिक् को मदद करनेवाला (दे ६, १३८)।

मेढक पु [दे] काष्ठ-विशेष, काष्ठ का छोटा डंडा (पण्ह १, १—पत्र ८)।

मेढि पुं [मेथि] पशुबन्धन-काष्ठ, खले के बीच का काष्ठ, जहाँ पशु को बांध कर धान्य-मर्दन किया जाता है (हे १, २१५, गच्छ १, ८, णाया १, १—पत्र ११)। २ आधार, स्तम्भ, 'सयस्स वि य ण कुडुवस्स मेढी पमाण आहारे आलवण चक्खू मेढीभूए' (उवा), 'सुत्तत्थविऊ लक्खणजुत्तो गच्छस्स मेढिभूओ अ' (श्रा १, कुप्र २६६, सबोध २४)। °भूअ वि [°भूत] १ आधार-सदृश, आधार-भूत (भग)। २ नाभि-भूत, मध्य में स्थित (कुमा)।

मेणआ } स्त्री [मेनका] १ हिमालय की पत्नी।
मेणका } २ स्वर्ग की एक वेश्या (अभि ४२, नाट—विक्र ४७, पिंग)।

मेत्त न [मात्र] १ साकल्य, सपूर्णता। २ अवधारण, 'मोअणमेत्तं' (हे १, ८१)।

मेत्तल [दे] देखो मित्तल (सुर १२, १५२)।

मेत्ती स्त्री [मैत्री] मित्रता, दोस्ती (से १, ९, गा २७२, स ७१६, उव)।

मेधुणिआ देखो मेहुणिआ (निचू १)।

मेर (अप) वि [मदीय] मेरा (प्राकृ १२०, भवि)।

मेरग पुं [मेरक, मैरेयक] १ तृतीय प्रति-वासुदेव राजा (पउम ५, १५६)। २ पुन. मद्य-विशेष (उवा, विवा १, २—पत्र २७)। ३ वनस्पति का त्वचा-रहित टुकडा, 'उच्छु-मेरगं' (आचा २, १, ८, १०)।

मेरा स्त्री [दे. मिरा] मर्यादा (दे ६, ११३, पाअ, कुप्र ३३५, अज्झ ६७, सण, हे १, ८७, कुमा, औप)।

मेरा स्त्री [मेरा] १ तृण-विशेष, मुञ्ज की सलाई (पण्ह २, ३—पत्र १२३)। २ दशवें चक्रवर्ती की माता (सम १५२)।

मेरु पु [मेरु] १ पर्वत-विशेष (उव, प्रासू १५४)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

मेरु पु [मेरु] पर्वत, कोई भी पहाड (आचा २, १०, २)।

मेल सक [मेलय्] १ मिलाना। २ इकट्ठा करना। मेलइ, मेलति (भवि, पि ४८९)। संकृ. मेलित्ता, मेलिय (पि ४८९, महा)।

मेल पुं [मेल] मेल, मिलाप, सगम, सयोग, मिलन (सूअनि १५, दे ६, ५२, सार्ध १०९), 'दिट्ठो पियमेलगो मए सुविणो' (कुप्र २१०)।

मेलण न [मेलन] ऊपर देखो (प्रासू ३५)।

मेलय पुं [मेलक] १ सवन्ध, सयोग (कुमा)। २ मेला, जन-समूह का एकत्रित होना (दे ७, ८९, भि ८९)।

मेलव सक [मेलय्, मिश्रय्] मिलाना, मिश्रण करना। मेलवइ (हे ४, २८)। भवि. मेलवेहिसि (पि ५२२)। सकृ. मेलवि (अप) (हे ४, ४२९)।

मेलाइयव्व नीचे देखो।

रसिअ वि [रसित] १ रस-युक्त, रसवाला (पव २)। २ न. शब्द, आवाज (गउड, पराह १, १)।

रसिआ स्त्री [दे रसिका] १ पूय, पीब, व्रण से निकलता गंदा सफेद खून, गुजराती में 'रसी' (श्रा १२, विपा १, ७, पराह १, १)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

रसिंद पुं [रसेन्द्र] पारद, पारा (जी ३, श्रु १५८)।

रसिग देखो रसिअ = रसिक (पचा २, ३४)।

रसिर वि [रसितृ] आवाज करनेवाला (सण)।

रसोइ (अप) देखो रस-वई (भवि)।

रस्सि पुंस्त्री [रश्मि] १ किरण, 'भरहं समामियाओ आइच्चं चेव रस्सीओ' (पउम ८०, ६४, पाअ, प्राप्र)। २ रस्सी, रज्जु (प्रासू ११७)।

रह अक [दे] रहना। रहइ, रहए, रहेइ (पिंग, महा, सिरि ८९३), रहसु, रहह (सिरि ३५५, ३५३)।

रह सक [रह्] त्यागना, छोडना (कप्पू, पिंग)।

रह पु [रभस] उत्साह, 'पुणो पुणो ते स-रहं दुहेंति' (सूअ १, ५, १, १८)। देखो रहस = रभस।

रह पुंन [रहस्] १ एकान्त, निर्जन, 'तत्थ रहो त्ति आगच्छं' (कुप्र ८२), 'लहु मे रहं देसु' (सुपा १७४, वज्जा १५२)। २ प्रच्छन्न, गोप्य (ठा ३, ४)।

रह पुन [रथ] १ यान-विशेष, स्यन्दन, 'धम्मस्स निव्वाणपहे रहाणि' (मत्त १८, पाअ; कुमा)। २ पु एक जैन महर्षि (कप्प)। °कार पुं [°कार] रथ निर्माता, वर्धकि, बढई (सुपा ४४४, कुप्र १०४, उत्र)। °चरिया स्त्री [°चर्या] रथ को हांकना, 'ईसत्थसत्थरहचरियाकुसलो' (महा)। °जत्ता स्त्री [°यात्रा] उत्सव-विशेष (सुपा ५४१, सुर १६, १६, सिरि ११७५)। °णेउर न [°नूपुर] नगर-विशेष (पउम २८, ७, इक)। °णेउरचक्कवाल न [°नूपुर-चक्रवाल] वैताढ्य पर्वत पर स्थित एक नगर (पउम ५, ६४, इक)। °नेमि पुं [°नेमि] भगवान् नेमिनाथ का भाई (उत्त २२, ३६)। °नेमिज्ज न [°नेमीय] उत्तराध्ययन सूत्र का बाइसवाँ अध्ययन (उत्त २२)। °मुसल पुं [°मुसल] भारतवर्ष की एक प्राचीन लडाई, राजा कोणिक और राजा चेटक का सग्राम (भग ७, ९)। °यार देखो °कार (पाअ)। °रेणु पुं [°रेणु] एक नाप, आठ त्रसरेणु का एक परिमाण (इक)। °वीरउर, °वीरपुर न [°वीरपुर] एक नगर (राज, विसे २५५०)।

रहइ अ [रभसा] वेग से (स ७६२)।

रहंग पुंस्त्री [रथाङ्ग] १ चक्रवाक पक्षी, चकवा (पाअ, सुर ३,२४७, कुमा)। स्त्री. °गी (सुपा ४६८, सुर १०, १८५, कुमा)। २ न. चक्र, पहिया (पाअ)।

रहट्ट देखो अरहट्ट (गा ४९०, पि १४२)।

रहण न [दे] रहना, स्थिति, निवास (धर्मवि २१, रयण ६)।

रहण न [रहन] १ त्याग। २ विरति, विराम, 'रसरहणं' (पिंग)।

रहमाण पुं [दे] १ यवन मत का एक तत्त्व-वेत्ता (मोह १००)। २ खुदा, अल्ला, परमेश्वर (ती १५)।

रहस पुं [रभस] १ औत्सुक्य, उत्कण्ठा (कुमा)। २ वेग। ३ हर्ष। ४ पूर्वापर का अविचार (सक्षि ७, गउड)।

रहस देखो रहस्स = रहस्य, 'रहसाभक्खाणे' (उवा, सवोध ४२, सुपा ४५४)।

रहसा अ [रभसा] वेग से (गउड)।

रहस्स वि [रहस्य] १ गुह्य, गोपनीय (पाअ, सुपा ३१८)। २ एकान्त मे उत्पन्न, एकान्त का (हे २, २०४)। ३ न तत्त्व, तात्पर्य, भावार्थ (ओव ७६०, रंभा १९)। ४ अपवाद-स्थान (बृह ६)।

रहस्स वि [ह्रस्व] १ लघु, छोटा (विपा १, ८—पत्र ८३)। २ एक मात्रावाला स्वर (उत्त २९, ७२)।

रहस्स न [ह्रास्व] १ लाघव, छोटाई। °मंत वि [°वत्] लघु, छोटा (सूअ २, १, १३)।

रहस्सिय वि [राहस्यिक] प्रच्छन्न, गुप्त (विपा १, १—पत्र ५)।

रहाविअ वि [दे] स्थापित, रखवाया हुआ (हम्मीर १३)।

रहि वि [रथिन्] १ रथ से लडनेवाला योद्धा (उप ७२८ टी)। २ रथ को हांकनेवाला (कुप्र २८७, ४६०, धर्मवि १११)।

रहिअ वि [रथिक] उपर देखो, 'रहिएहिं महारहिणो' (उप ७२८ टी, पराह २, ४—पत्र १३०, धर्मवि २०)।

रहिअ वि [रहित] परित्यक्त, वर्जित, शून्य (उवा, दं ३२)।

रहिअ वि [रहित] एकाकी, अकेला (वव १)।

रहिअ वि [दे] रहा हुआ, स्थित (धर्मवि २२)।

रहु पुं [रघु] १ सूर्य वंश का एक स्वनाम-ख्यात राजा (उत्तर ५०)। २ पु. व रघु-वंश मे उत्पन्न क्षत्रिय (से ४, १६)। ३ पु. श्रीरामचन्द्र, 'ताहे कयंतउरिसो देइ रहु रिवुवले दिट्ठी' (पउम ११३, २१)। ४ कालिदास-प्रणीत एक संस्कृत काव्य-ग्रन्थ (गउड)। °आर पु [°कार] रघुवश नामक संस्कृत काव्य-ग्रन्थ का कर्त्ता, कवि कालिदास (गउड)। °णाह पु [°नाथ] १ श्रीरामचन्द्र (से १४, १६, पउम ११३, ५५)। २ लक्ष्मण (से १४, ६२)। °तणय पुं [°तनय] वही अर्थ (से २, १, १४, २६)। °तिलय पुं [°तिलक] श्रीरामचन्द्र (सुपा २०४)। °त्तम पुं [°उत्तम] वही अर्थ (पउम १०२, १७६)। °पुंगव पुं [°पुङ्गव] वही (से ३, ५, हे २, १८८, ३, ७०)। °सुअ पु [°सुत] वही (से ५, १६)।

रहो° देखो रह = रहस् (कप्प, औप)। °कम्म न [°कर्मन्] एकान्त-व्यापार (ठा ९—पत्र ४६०)।

रा सक [रा] देना, दान करना। राइ (वाला १४९)।

रा अक [रै] शब्द करना, आवाज करना। राइ (प्राकृ ६६)।

रा अक [ली] श्लेष करना, चिपकना। राइ (षड्)।

राअल स्त्री [दे] प्रियंगु, मालकाँगनी (दे ७, १)।

मोअ सक [मुच्] छोडना, त्यागना। मोअइ (प्राकृ ७०; ११६)। वकृ मोअंत (से ८, ६१)।

मोअ सक [मोचय्] छुड़वाना, त्याग कराना। मोअग्रदि (शौ) (नाट—मालवि ४१)। कवकृ. मोइज्जत (गा ६७२)।

मोअ पुं [मोद] हर्ष, खुशी (रयण १५, महा, भवि)।

मोअ वि [दे] १ अधिगत। २ पु. चिर्भट आदि का बीजकोश (दे ६, १४८)। ३ मूत्र, पेशाब (सूअ १, ४, २, १२, पिंड ४६८, कस, पभा १५)। °पडिमा स्त्री [°प्रतिमा] प्रस्रवण-विषयक नियम-विशेष (ठा ४, २—पत्र ६४, औप, वव ६)।

मोअइ पुं [मोचकि] वृक्ष-विशेष, 'सल्लइ-मोयइमालुयवउलपलासे करंजे य' (पराण १—पत्र ३१)।

मोअग वि [मोचक] मुक्त करनेवाला (सम १, पडि, सुपा २३४)।

मोअग पुं [मोदक] लड्डू, मिष्टान्न-विशेष (अत ६, सुपा ४०६)। देखो मोदअ।

मोअण न [मोचन] नीचे देखो (स ५७५, गउड)।

मोअणा स्त्री [मोचना] १ परित्याग (श्रावक ११५)। २ मुक्ति, छुटकारा (सूअ १, १४, १८)। ३ छुड़वाना, मुक्त कराना (उप ५१०)।

मोअय देखो मोअग (भग, पउम ११५, ६, सुपा ४०६, नाट—विक २१)।

मोआ स्त्री [मोचा] कदली वृक्ष, केला का गाछ (राज)।

मोआव सक [मोचय्] छुड़वाना। मोआ-वेमि, मोआवेहि (नाट—शकु २५, मृच्छ ३१६)। भवि. मोआवइस्ससि (पि ५२८)। कर्म. मोयाविज्जइ (कुप्र २६१)। वकृ. मोयावत (सुपा १८६)।

मोआवण न [मोचन] छुटकारा कराना (सिरि ६१८, स ४७)।

मोआविअ } वि [मोचित] छुड़वाया हुआ
मोइअ } (पि ५५२, नाट—मृच्छ ८६, सुर १०, ६, सुपा ४७७, महा; सुर २, ३६, ६, ७८, सुपा २३२, भवि)।

मोइल पुं [दे] मत्स्य-विशेष (नाट)।

मोंड देखो मुंड = मुण्ड (हे १, ११६, २०२)।

मोक पुं [मोक] सर्प-कंचुक, साँप का केंचुल।

मोकल्ल सक [दे] भेजना, गुजराती में 'मोकलवु', मराठी मे 'मोकलणें'। मोकल्लइ (भवि)।

मोक्क देखो मुक्क = मुक्त (षड्)।

मोक्कणिआ } स्त्री [दे] कृष्ण कर्णिका, कमल
मोक्कणी } का काला मध्य भाग (दे ६, १४०)।

मोक्कल देखो मोकल्ल, 'नियपियर भणसु तुमं मोक्कलइ जेण सिग्घपि' (सुपा ६१२)।

मोक्कल देखो मुक्कल (सुपा ५८०, हे ४, ३६६)।

मोक्कलिय वि [दे] १ प्रेषित, भेजा हुआ (सुपा ५२१)। २ विसृष्ट (सुपा १४०)।

मोक्ख देखो मुक्ख = मोक्ष (औप, कुमा, हे २, १७६, उप २६४ टी, भग, वसु)।

मोक्ख देखो मुक्ख = मूर्ख (उप ५५५)।

मोक्ख न [दे] वनस्पति-विशेष (सूअ २, २, ७)।

मोक्खण न [मोक्षण] मुक्ति, छुटकारा (स ४१८, सुर २, १७)।

मोग्गड पु [दे] व्यन्तर-विशेष (सुपा ४०८)। देखो मुग्गड।

मोग्गर पुं [दे] मुकुल, कलिका, बौर (दे ६, १३६)।

मोग्गर पु [मुद्गर] मुगरा, मोगरी। २ कमरख का पेड़ (हे १, ११६, २, ७७)। ३ पुष्पवृक्ष-विशेष, मोगरा का गाछ (पराण १—पत्र ३२)। ४ देखो मुग्गर। °पाणि पुं [°पाणि] एक जैन महर्षि (अत १८)।

मोग्गरिअ वि [दे] संकुचित, मुकुलित (दे ६, १३६ टी)।

मोग्गलायण } न [मौद्गलायन, °ल्या°]
मोग्गल्लायण } १ गोत्र-विशेष (इक, ठा ७, सुज्ज १०, १६)। २ पुस्त्री. उस गोत्र मे उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०)।

मोग्गाह देखो मुग्गाह। मोग्गाहइ (?) (धात्वा १४६)।

मोघ देखो मोह = मोघ; 'मोघमणोरहा' (पराह १, ३—पत्र ५५)।

मोच देखो मोअ = मोचय्। संकृ. मोचिअ (अभि ४७)।

मोच न [दे] अर्धजंघी, एक प्रकार का जूता (दे ६, १३६)।

मोच्च देखो मोअ = (दे) (सूअ १, ४, २, १२)।

मोचग देखो मोअग = मोचक (वसु)।

मोट्टाय अक [रम्] क्रीडा करना। मोट्टायइ (हे ४, १६८)।

मोट्टाइअ न [रत] रति-क्रीडा, रत, मैथुन (कुमा)।

मोट्टाइअ न [मोट्टायित] चेष्टा-विशेष, प्रिय-कथा आदि में भावना से उत्पन्न चेष्टा (कुमा)।

मोट्टिम न [दे] बलात्कार (पि २३७)। देखो मुट्टिम।

मोड सक [मोटय्] १ मोड़ना, टेढ़ा करना। २ भाँगना। मोडसि (सुर ७, ६)। वकृ. मोडंत, मोडिंत, मोडयंत (भवि, महा, स २५७)। कवकृ मोडिज्जमाण (उप पृ ३४)। संकृ. मोडेउ (सुपा १३८)।

मोड पुं [दे] जूट, लट (दे ६, ११७)।

मोडग वि [मोटक] मोड़नेवाला (पराह १, ४—पत्र ७२)।

मोडण न [मोटन] मोड़न, मोड़ना (वज्जा ३८)।

मोडणा स्त्री [मोटना] ऊपर देखो (पराह १, ३—पत्र ५३)।

मोडिअ वि [मोटित] १ भग्न, भाँगा हुआ (गा ५४६, णाया १, ६—पत्र १५७, पराह १, ३—पत्र ५३)। २ आम्रेडित, मोड़ा हुआ (विपा १, ६—पत्र ६८, स ३३५)।

मोढ पु [मोढ] एक वणिक्-कुल (कुप्र २०)।

मोढेरय न [मोढेरक] नगर-विशेष (दे ६, १०२, ती ७)।

मोण न [मौन] मुनिपन, वाणी का संयम, चुप्पी (औप, सुपा २३७, महा)। °चर वि [°चर] मौन व्रतवाला, वाणी का सयम-वाला, वाचंयम (ठा ५, १—पत्र २६६,

ईशानेन्द्र की एक पटरानी (ठा ८—पत्र ४२६, इक)।

रामणिज्जअ न [रामणीयक] रमणीयता, सौन्दर्य (विक्र २८)।

रामा स्त्री [रामा] १ स्त्री, महिला, नारी (तदु ५०, कुमा, पाअ, वज्जा १०६, उप ३५७ टी)। २ नववें जिनदेव की माता (सम १५१)। ३ ईशानेन्द्र की एक पटरानी (ठा ८—पत्र ४२६, इक)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)।

रामायण न [रामायण] १ वाल्मीकि-कृत एक संस्कृत काव्यग्रन्थ (पउम २, ११६, महा)। २ रामचन्द्र तथा रावण की लडाई (पउम १०५, १६)।

रामिअ वि [रमित] रमण कराया हुआ (गा ५६, पउम ८०, १६)।

रामेसर पु [रामेश्वर] दक्षिण भारत का एक हिन्दू तीर्थ (सम्मत्त ८४)।

राय अक [राज्] चमकना, शोभना। रायइ (हे ४, १००)। वकृ राय°, रायमाण (कप्प)।

राय देखो रा = रै। राअइ (प्राकृ ६६)।

राय पु [राग] १ प्रेम, प्रीति (प्रासू १८०)। २ मत्सर, द्वेष, 'न पेमराइल्ला' (देवेन्द्र २७८)। ३ रँगना, रजन। ४ वर्णन। ५ अनुराग। ६ राजा, नरपति। ७ चन्द्र, चाँद। ८ लाल वर्ण। ९ लाल रँगवाली वस्तु। १० वसन्त आदि स्वर (हे १, ६८)।

राय पु [राजन्] १ राजा, नर-पति, नरेश (आचा, उवा, श्रा २७, सुपा १०३)। २ चन्द्र, चन्द्रमा (श्रा २७, हम्मीर ३, धर्मवि ३)। ३ एक महाग्रह (सुज्ज २०)। ४ इन्द्र। ५ क्षत्रिय। ६ यक्ष। ७ शुचि, पवित्र। ८ श्रेष्ठ, उत्तम (हे ३, ४९, ५०)। ९ इच्छा, अभिलाषा (से १, ९)। १० छन्द-विशेष (पिंग)। °इअ वि [°कीय] राज-सम्बन्धी (प्राकृ ३५)। °उत्त पुं [°पुत्र] राज-पूत, राजःकुमार (सुर ३, १९५)। °उल देखो राउल (हे १, २६७, कुमा, षड्, प्राप्र, अभि १८४)। °कीअ देखो °ईअ (नाट—शकु १०४)। °कुल देखो °उल (महा)। °केर, °क्क वि [°कीय] राज-संबन्धी (हे २, १४८, कुमा, षड्)। °गिह न [°गृह] मगध देश की प्राचीन राजधानी, जो आजकल 'राजगीर' नाम से प्रसिद्ध है (ठा १०—पत्र ४७७, उवा, अत)। °गिहि स्त्री [°गृही] वही अर्थ (ती ३)। °चपय पुं [°चम्पक] वृक्ष-विशेष, उत्तम चम्पक-वृक्ष (श्रा १२)। °धम्म पुं [°धर्म] राजा का कर्तव्य (नाट—उत्तर ४१)। °धाणी स्त्री [°धानी] राज-नगर, राजा का मुख्य नगर, जहा राजा रहता हो (नाट—चैत १३२)। °पत्ती स्त्री [°पत्नी] रानी (सुर १३, ५, सुपा ३७५)। °पसेणीय वि [°प्रश्नीय] एक जैन आगम-ग्रन्थ (राय)। °पह पु [°पथ] राज-मार्ग (महा, नाट—चैत १३०)। °पिंड पुं [°पिण्ड] राजा के घर की भिक्षा—आहार (सम ३९)। °पुत्त देखो °उत्त (गउड)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (पउम १,८)। °पुरिस पु [°पुरुष] राजा का आदमी, राज-कर्मचारी (पउम २८, ४)। °मग्ग पु [°मार्ग] राजपथ, सडक (औप; महा)। °मास पु [°माष] धान्य-विशेष, बरवटी (श्रा १८, सबोध ४३)। °राय पु [°राज] राजाओ का राजा, राजेश्वर (सुपा १०७)। °रिसि देखो राएसि (णाया १, ५—पत्र १११, उप ७२८ टी, कुमा, सण)। °रुक्ख पुं [°वृक्ष] वृक्ष-विशेष (औप)। °लच्छी स्त्री [°लक्ष्मी] राज-वैभव (अभि १३१, महा)। °ललिय पु [°ललित] आठवें बलदेव के पूर्व जन्म का नाम (सम १५३)। °वट्टय न [°वार्तक] राज-सबधी वार्त्ता-समूह (हे २, ३०)। °वल्ली स्त्री [°वल्ली] लता-विशेष (पण्ण १—पत्र ३६)। °वाडिआ, °वाडी स्त्री [°पाटिका, °पाटी] चतुरंग सैन्य-श्रम-करण, राजा की चतुर्विध सेना के साथ सवारी (कुमा, कुप्र ११९, १२०, सुपा २२२)। °सद्दूल पु [°शार्दूल] चक्रवर्त्ती राजा, श्रेष्ठ राजा (सम १५२)। °सिट्ठि पु [°श्रेष्ठिन्] नगर-सेठ (भवि)। °सिरी स्त्री [°श्री] राज-लक्ष्मी (से १, १३)। °सुअ पुं [°सुत] राजकुमार (कप्पू, उप ७२८ टी)। °सुअ पु [°शुक] उत्तम तोता (उप ७२८ टी)। °सुअ पुं [°सूय] यज्ञ-विशेष, 'पिइमेहमाइमेहे रायसुए आसमेहपमुमेहे' (पउम ११, ४२)। °सेण पुं [°सेन] छन्द-विशेष (पिंग)। °सेहर पु [°शेखर] १ महादेव, शिव। २ एक राजा (सुपा ५२९)। ३ एक कवि, कर्पूरमजरी का कर्त्ता (कप्पू)। °हंस पुंस्त्री [°हंस] १ उत्तम हंस पक्षी। २ श्रेष्ठ राजा (सुर १२, ३४, गा ६२४, गउड, सुपा १३६, रंभा, भवि)। स्त्री. °ंसी (सुपा ३३४, नाट—रत्ना २३)। °हर न [°गृह] राजा का महल (पउम ८२, ८९, हे २, १४४)। °हाणी देखो °धाणी। (सम ८०, पउम २०, ८)। °हिराय, °ाहिराय पु [°अधिराज] राजाओ का राजा, चक्रवर्त्ती राजा (काल, सुपा १०५)। °ाहिव पु [°ाधिप] वही अर्थ (सुपा १०५)।

राय देखो राव = राव (से ६, ७२)।

राय पु [दे] चटक, गौरैया पक्षी (दे ७, ४)।

राय पुं [रात्र] रात्रि, रात (आचा)।

राय° देखो राय = राज्।

रायंबुअ } **रायंबु** } पुंन [दे] १ वेतस या बेंत का पेड (पाअ, दे ७, १४)। २ पुं. शरभ (दे ७, १४)।

रायंस पुं [राजांस] राज-यक्ष्मा, क्षय का व्याधि (आचा)।

रायंसि वि [राजांसिन्] राजयक्ष्मावाला, क्षय का रोगी (आचा)।

रायगइ स्त्री [दे] जलौका, जोक (दे ७, ५)।

रायग्गल पुं [राजार्गल] ज्योतिष्क ग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)।

रायणिअ देखो राइणिअ = रात्निक (उव, ओघभा २२३)।

रायणी स्त्री [राजादनी] खिन्नी, खिरनी का पेड (पउम ५३, ७९)।

रायण्ण देखो राइण्ण (ठा ३,१—पत्र ११४, उप ३५६ टी)।

रायनीइ स्त्री [राजनीति] राजा की शासन करने की रीति (राय ११७)।

रायमइया स्त्री [राजीमतिका] देखो राई-मई (कुप्र १)।

रायस देखो राजस (स ३, से ३, १५)।

णगकुलिसम्त मौलिअकुलपब्लिट्टावकस्स अञ्ज- चाणक्कस्स' (मुद्रा ३०६)।

म्मि अ. पाद-पूर्त्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय (पिंग)।

न्मिव देखो इव (प्राकृ २६)।

म्हस देखो भस=भ्रंश्। म्हसइ (प्राकृ ७६)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि मयाराइसद्दसकलणो एगतीसइमो तरंगो समत्तो ॥

य

य पु [य] तालु-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष, अन्तस्थ यकार (प्राप्र, प्रामा)।

य अ [च] १ हेतु-सूचक अव्यय (धर्मसं ३८५)। २ देखो च=अ (ठा ३, १, ८, पउम ६, ८४, १५, २, श्रा १२, प्राचा, रंभा, कम्म २, ३३, ४, ६, १०, देवेन्द्र ११, प्रासू २७)।

°य देखो °ज (प्राचा)।

°य वि [°द] देनेवाला (औप, राय, जीव ३)।

यउणा देखो जँउणा (संक्षि ७)।

°यच सक [अञ्च्] १ गमन करना। २ पूजा करना। संकृ. °यंचिय (ठा ५, १—पत्र ३००)।

°यंत वि [यत] प्रयत्नशील, उद्योगी, 'अ-यंते' (सूअ २, २, ६३)।

°यद देखो चद (सुपा २२६)।

°यक्क देखो चक्क, 'दिसा-यक्कं' (पउम ६, ७१)।

°यड देखो तड=तट (गउड)।

°यण देखो जण=जन (सुर १, १२१)।

यणद्दण (अप) देखो जणद्दण, 'तो वि ण देउ यणद्दणउ गोअरीहोइ मणस्सु' (पि १४ टि)।

°यण्ण देखो कण्ण=कर्ण (पउम ६६, २८)।

°यत्तिअ वि [यात्रिक] यात्रा करनेवाला, भ्रमण करनेवाला, 'सगडसएहिं दिसायत्तिएहिं' (उवा, बृह १)।

यदावि अ [यद्यपि] अभ्युपगम-सूचक अव्यय, स्वीकार-द्योतक निपात (पचा १४, ३६)।

यन्नोवइय देखो जण्णोवईय (उप ६४८ टी)।

यम देखो जम=यम, 'दो असमा दो यमा' (ठा २, ३—पत्र ७७)।

°यर देखो कर=कर (गउड)।

°यल देखो तल=तल (उवा)।

या देखो जा=या, 'सुरनारगा य सम्मद्दिट्ठी जं यंति सुरमणुएसु' (विसे ४३१, कुमा ८, ८)।

याण सक [ज्ञा] जानना। याणइ, याणाइ, याणेइ, याणति, याणामो, याणिमो (पि ५१०, उव, भग, धर्मवि १७, वै ६३, प्रासू १०२)।

याण देखो जाण=यान (सम २)।

°याल देखो काल (पउम ६, २४३)।

याव (अप) देखो जाव=यावत् (कुमा)।

°यावदट्ठ वि [यावदर्थ] यथेष्ट, जितने की आवश्यकता हो उतना (दस ५, २, २)।

°युत्त देखो जुत्त=युक्त, 'एयम् अयुत्तं जम्हा' (भज्फ १६७, रंभा)।

येव } येव्व } (पै. मा) देखो एव (पि ६०, ६५)।

यूचिश (मा) } यूचिश्त (पै) } देखो चिट्ठ=स्था। यूचि-शदि (शाकारी भाषा) (प्राकृ १०५)। यूचिश्तदि (पै) (प्राकृ १२६)।

य्येव (शौ) देखो एव (हे ४, २८०)।

य्येव्व देखो येव (पि ६५)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि यआराइसद्दसंकलणो बत्तीसइमो तरंगो समत्तो ॥

रिक्ख वि [दे] १ वृद्ध, बूढा। २ पुं. वय-परिणाम, वृद्धता (दे ७, ६)।

रिक्ख पुं [ऋक्ष] १ भालू, श्वापद प्राणि-विशेष (हे २, १९)। २ न. नक्षत्र (पाअ, सुर ३, २६, ८, ११९)। °पह पु [°पथ] आकाश (सुर ११, १७१)। °राय पुं [°राज] वानर-वंश का एक राजा (पउम ८, २३४)।

रिक्खण न [दे] १ उपलम्भ, अधिगम। २ कथन (दे ७, १४)।

रिक्खा देखो रेहा = रेखा (ओघ १७९)।

रिंग } अक [रिङ्ग्] १ रेंगना, धीरे-धीरे
रिग्ग } और जमीन से रगड खाते हुए चलना। २ प्रवेश करना। रिंगइ, रिग्गइ (हे ४, २५९; टि)।

रिग्ग पुं [दे] प्रवेश (दे ७, ५)।

रिच स्त्रीन देखो रिउ = ऋच् (पि ५६, ३१८)। स्त्री °चा (नाट—रत्ना ३८)।

रिच्छ वि [दे] वृद्ध, बूढा (दे ७, ६)।

रिच्छ देखो रिक्ख = ऋक्ष (हे १, १४०, २, १९, पाअ)। °ाहिव पुं [°ाधिप] जाम्बवान्, राम का एक सेनापति (से ४, १८, ४५)।

रिच्छभल्ल पु [दे] भालू, रीछ (दे ७, ७)।

रिजु देखो रिउ = ऋच् (भग)।

रिजु देखो रिउ = ऋजु (विसे ७८४)।

रिज्ज देखो रिअ = री। रिज्जइ (आचा)।

रिज्जु देखो रिउ = ऋजु (हे १, १४१, संक्षि १७, कुमा)।

रिज्झ अक [ऋध्] १ बढना। २ रीझना, खुशी होना। रिज्झइ (भवि)।

रिट्ठ पु [दे. अरिष्ट] १ अरिष्ट, दुरित (पड्, पि १४२)। २ दैत्य-विशेष (पड्; से १, ३)। ३ काक, कौआ (दे ७, ६, णाया १, १—पत्र ६३, पड्, पाअ)। °नेमि पुं [°नेमि] बाईसवें जिनदेव (पि १४२)।

रिट्ठ पुं [रिष्ट] १ देव-विशेष, रिष्ट नामक विमान का निवासी देव (णाया १, ८—पत्र १५१। २ वेलम्ब और प्रभञ्जन नामक इन्द्रों के लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १९८)। ३ एक दृप्त साँढ, जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था (पण्ह १, ४—पत्र ७२)। ४ पक्षि-विशेष (पउम ७, १७)। ५ न. रत्न-विशेष (चेइय ६१५; औप; णाया १, १ टी)। ६ एक देव-विमान (सम ३५)। ७ पुंन. फल-विशेष, रीठा (उत्त ३४, ४, सुख ३४, ४)। °पुरी स्त्री [°पुरी] कच्छावती-विजय की राजधानी (ठा २, ३—पत्र ८०, इक)। °मणि पु [°मणि] श्याम रत्न-विशेष (सिरि ११९०)।

रिट्ठा स्त्री [रिष्टा] १ महाकच्छ विजय की राजधानी (ठा २, ३—पत्र ८०, इक)। २ पाँचवीं नरक-भूमि (ठा ७—पत्र ३८८)। ३ मदिरा, दारू (राज)।

रिट्ठाभ न [रिष्टाभ] १ एक देव-विमान (सम १४)। २ लोकान्तिक देवों का एक विमान (पव २६७)।

रिट्ठि स्त्री [रिष्टि] १ खड्ग, तलवार (दे ७, ६)। २ अशुभ। ३ पु. रन्ध्र, विवर (सक्षि ३)।

रिड सक [मण्डय्] विभूषित करना। रिडइ (पड्)।

रिण न [ऋण] १ करजा या कर्ज, उधार लिया हुआ धन (गा ११३, कुमा, प्रासू ७७)। २ जल, पानी। ३ दुर्ग, किला। ४ दुर्ग भूमि। ५ आवश्यक कार्य, फरज। ६ कर्म (हे १, १४१, प्राप्र)। देखो अण = ऋण।

रिणिअ वि [ऋणित] करजदार, अधमर्ण (कुप्र ४३६)।

रिते अ [ऋते] सिवाय, विना (पिंड ३७०)।

रित्त वि [रिक्त] १ खाली, शून्य (से ७, ११, गा ४९०, धर्मवि ६; ओघभा १६६)। २ न. विरेक, अभाव (उत्त २८, ३३)।

रित्तूडिअ वि [दे] शातित, झडवाया हुआ (दे ७, ८)।

रित्थ न [रिक्थ] धन, द्रव्य (उप ५२०, पाअ, स ६०, सुख ४, ६, महा)।

रिद्ध वि [ऋद्ध] ऋद्धि-संपन्न (णाया १, १, उवा, औप)।

रिद्ध वि [दे] पक्व, पक्का (दे ७, ६)।

रिद्धि पुंस्त्री [दे] समूह, राशि (दे ७, ६)।

रिद्धि स्त्री [ऋद्धि] १ सपत्ति, समृद्धि, वैभव (पाअ; विपा २, १, कुमा, सुर २, १९८, प्रासू १२, ६२)। २ वृद्धि। ३ देव-विशेष। ४ ओषधि-विशेष (हे १, १२८, २, ४१, पंचा ८)। ५ छन्द-विशेष (पिंग)। °म, °ल्ल वि [°मत्] समृद्ध, ऋद्धि-सम्पन्न (ओघ ६८४, पउम ५, ५६, सुर २, ६८, सुपा २२३)। °सुन्दरी स्त्री [°सुन्दरी] एक वणिक्-कन्या (उप ७२८ टी)।

रिपु देखो रिवु (कप्प)।

रिप्प न [दे] पृष्ठ, पीठ (दे ७, ५)।

रिभिय न [रिभित] १ एक प्रकार का नाट्य (ठा ४, ४—पत्र २८५)। २ स्वर का घोलन। ३ वि. स्वर घोलना से युक्त (राज, णाया १, १—पत्र १३)।

रिमिण वि [दे] रोने की आदतवाला (दे ७, ७, पड्)।

रिरंसा स्त्री [रिरंसा] रमण की चाह, मैथुनेच्छा (अज्झ ७९)।

रिरिअ वि [दे] लीन (दे ७, ७)।

रिल्ल अक [दे] शोभना। वकृ. रिल्लंत (भवि)।

रिवु देखो रिउ = रिपु (पउम १२, ४१, ४४, ५०, स १३८, उप पृ ३२१)।

रिसभ } पु [ऋषभ] १ स्वर-विशेष (ठा
रिसह } ७—पत्र ३९३)। २ अहोरात्र का अठाइसवाँ मुहूर्त (सम ५१, सुज्ज १०, १३)। ३ संहत अस्थि-द्वय के ऊपर का वलयाकार वेष्टन-पट्ट; 'रिसहो य होइ पट्टो' (जीवस ४९)। देखो उसभ (औप; हे १, १४१, सम १४९, कम्म २, १९, सुपा २६०)।

°रिसह पुं [°ऋषभ] श्रेष्ठ, उत्तम (कुमा)।

रिसि पुं [ऋषि] मुनि, सत, साधु (औप; कुमा, सुपा ३१, भवि १०१, उप ७६८ टी)। °घाय पुं [°घात] मुनि हत्या (उप ४६६)।

रिह सक [प्र + विश्] प्रवेश करना, पैठना। रिहइ (पड्)।

री } अक [री] जाना, चलना। रीयइ,
रीअ } रीयए, रीयते, रीइज्जा (आचा, सूअ १, २, २, ५, उत्त २४, ७)। भूका. रीइत्था (आचा)। वकृ. रीयत, रीयमाण (आचा)।

रीइ स्त्री [रीति] प्रकार, ढग, पद्धति; 'तं जणं विडवति निच्चं नवनवरीईइ' (धर्मवि ३२, कप्पू)।

टी, संवे ५)। ३ पुं छन्द-विशेष (पिंग)। ४ वि खुशी करनेवाला, रागजनक (कुमा)।

रंजण पुं [दे] १ घडा, कुम्भ (दे ७, ३)। २ कुण्डा, पात्र-विशेष (दे ७, ३, पाग्र)।

रंजविय } वि [रञ्जित] राग-युक्त किया
रंजिअ } हुआ (सण, से ६, ४८, गउड, महा, हेका २७२)।

रंडा स्त्री [रण्डा] रॉड, विधवा (उप पृ ३१३, वज्जा ४४ कप्पू पिंग)।

रंढुअ न [दे] रज्जु, रस्सी, गुजराती मे 'राढवु' (दे ७, ३)।

रंध सक [रध्, राधय्] रांधना, पकाना। 'रवो राधयते स्मृत' रंधइ (प्राकृ ७०), रंधेहि (स २४६)। वकृ. रंधत (णाया १, ७—पत्र ११७) । सकृ. रंधिऊण (कुप्र २०५)।

रंध न [रन्ध्र] छिद्र, विवर (गा ६५२, रंभा, भवि)।

रंधण न [रन्धन, राधन] रांधना, पचन, पाक (गा १४, पव ३८, सुग्रनि १२१ टी, सुपा १२, ४०१)। °घर न [°गृह] पाक-गृह (रयण ३१)।

रंघण न [रन्धन] पाक-गृह, रसोईघर (आचा २, १०, १४)।

रंप सक [तक्ष्] छिलना, पतला करना। रंपइ (हे ४, १९४, प्राकृ ६५, षड्)।

रंपण न [तक्षण] तनू-करण, पतला करना (कुमा)।

रंफ देखो रंप। रंफइ, रफए (हे ४, १९४, षड्)।

रफण देखो रपण (कुमा)।

रंभ सक [गम्] जाना, गति करना। रंभइ (हे ४, १६२), रमति (कुमा)।

रभ देखो रफ। रंभइ (धात्वा १४९)।

रभ सक [आ+रभ्] आरम्भ करना। रभइ (षड्)।

रभ पु [दे] अन्दोलन-फलक, हिंडोले का तख्ता (दे ७, १)।

रभा स्त्री [रम्भा] १ कदली, केला का गाछ (सुपा २५४, ६०५, कुप्र ११७; पाग्र)। २ देवागना-विशेष, एक अप्सरा (सुपा २५४, रयण ५)। ३ वैरोचन नामक बलीन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ५, १—पत्र ३०२, णाया २—पत्र २५१)। ४ रावण की एक पत्नी (पउम ७४, ८)।

रक्ख सक [रक्ष्] रक्षण करना, पालन करना। रक्खइ (उव, महा)। भूका रक्खीअ (कुमा)। वकृ. रक्खत (गा ३८, औप, मा ३७)। कवकृ रक्खीअमाण (नाट—मालती २८)। कृ. रक्ख, रक्खणिज्ज, रक्खियव्व, रक्खेयव्व (से ३, ५, सार्ध १००, गउड, सुपा २४०)।

रक्ख पुंन [रक्षस्] राक्षस (पाग्र, कुप्र ११३, सुपा १३०, सट्ठि ९ टी, संबोध ४४)।

रक्ख वि [रक्ष] १ रक्षक, रक्षा करनेवाला (उप पृ ३६८, कप्प)। २ पु. एक जैन मुनि (कप्प)।

रक्ख देखो रक्ख = रक्ष्।

रक्खअ } वि [रक्षक] रक्षण-कर्ता (नाट—
रक्खग } मालवि ५३, रंभा, कुप्र २३३, सार्ध ६६)।

रक्खण न [रक्षण] रक्षा, पालन (सुर १३, १६७, गउड, प्रासू २३)।

रक्खणा स्त्री [रक्षणा] ऊपर देखो (उप ८५०, स ६६)।

रक्खणिया स्त्री [दे] रखी हुई स्त्री, रखेलिन, रखनी, रखात (सुपा ३८३)।

रक्खवाल वि [दे] रखवाला, रक्षा करनेवाला (महा)।

रक्खस पुं [राक्षस] १ देवो की एक जाति (पराह १,४—पत्र ६८)। २ विद्याधर-मनुष्यो का एक वश (पउम ५, २५२)। ३ वंश-विशेष मे उत्पन्न मनुष्य, एक विद्याधरजाति, 'तेरा चिय खयराएां रक्खसनाम कयं लोए' (पउम ५, २५७)। ४ निशाचर, क्रव्याद (से १५, १७, नाट—मृच्छ १३२)। ५ अहोरात्र की तीसवां मुहूर्त (सम ५१, सुज्ज १०, १३)। °उरी स्त्री [°पुरी] लका नगरी (से १२, ८४)। °णअरी स्त्री [°नगरी] वही अर्थ (से १२, ७८)। °णाह पुं [°नाथ] राक्षसों का राजा (से ८, १०४)। °त्थ न [°अस्त्र] अस्त्र-विशेष (पउम ७१, ६३)। °दीव पु [°द्वीप] सिहल द्वीप (पउम ५, १२६)। °नाह देखो °णाह (पउम ६, ३६)। °वइ पुं [°पति] राक्षसो का मुखिया (पउम ५, १२३ मे १७, १)। °ाहिव पु [°ाधिप] वही अर्थ (से १५, ८७, ६१)।

रक्खसिंद पु [राक्षसेन्द्र] राक्षसो का राजा (पउम १२, ४)।

रक्खसी स्त्री [राक्षसी] १ राक्षस की स्त्री (नाट—मृच्छ २३८)। २ लिपि-विशेष (विसे ४६४ टी)।

रक्खसेद देखो रक्खसिंद (से १२, ७७)।

रक्खा स्त्री [रक्षा] १ रक्षण, पालन (श्रा १०, सुपा १०३, ११३)। २ राख, भस्म, 'सो चंदण रक्खकए दहिव्वा' (सत्त २८, सुपा ६५७)।

रक्खिअ वि [रक्षित] १ पालित (गउड, गा ३३३)। २ पु. एक प्रसिद्ध जैन महर्षि (कप्प, विसे २२८८)।

रक्खिआ देखो रक्खसी (रभा १७)।

रक्खी स्त्री [रक्षी] भगवान् अरनाथ की मुख्य साध्वी (सम १५२, पव ८)।

रक्खोवग वि [रक्षोपग] रक्षण में तत्पर (राय ११३)।

रगिल्ल [दे] देखो रइगेल्ल (षड्)।

रग्ग देखो रत्त = रक्त (हे २, १०, ८६, षड्)।

रग्गय न [दे] कुसुम्भ-वस्त्र (दे ७, ३, पाग्र, गउड)।

रघुस पु [रघुप] हरिवंश का एक राजा (पउम २२, ६६)।

रच्च अक [दे रञ्ज्] राचना, आसक्त होना, अनुराग करना। रच्चइ, रच्चंति, रच्चेह (कुमा, वज्जा ११२)। कर्म. 'रत्ते रच्चिज्जए जम्हा' (कुप्र १३२)। वकृ. रच्चत (भवि)। प्रयो. रच्चावति (वज्जा ११२)।

रच्चण न [दे रञ्जन] १ अनुराग। २ वि. अनुराग करनेवाला, राचनेवाला (कुमा)।

रच्चिर वि [दे. रञ्जितृ] राचनेवाला (कुमा)।

रच्छा देखो रक्खा (रंभा १६)।

रच्छा स्त्री [रथ्या] मुहल्ला (गा ११६, औप, कस)।

रुंजिय न [रवण] शब्द, आवाज, गर्जना (स ४२०)।
रुंट देखो रुंज। रुंटइ (हे ४, ५७, षड्)। वकृ. रुटंत (स ६२, पउम १०५, ५५, गउड)।
रुंटणया स्त्री [दे] अवज्ञा, अनादर (पिंड २१०)।
रुंटणिया स्त्री [दे रवणिका] रोदन-क्रिया (णाया १, १६—पत्र २०२)।
रुंटिअ न [रुत] गुञ्जारव, आवाज, 'रुंटिअं अलिविरुअं' (पाअ, कुमा)।
रुंड पुंन [रुण्ड] बिना सिर का धड, कवन्ध, 'पडिया य मुंडरुंडा' (कुप्र १३५, गउड, भवि, मरण)।
रुंढ पु [दे] आक्षिक, कितव, जूआडी (दे ७, ८)।
रुंढिअ वि [दे] सफल (दे ७, ८)।
रुंद वि [दे] १ विपुल, प्रचुर (दे ७, १४, गा ४०२, सुपा २६८, वज्जा १२८, १६२)। २ विशाल, विस्तीर्ण (विमे ७१०, स ७०२, पव ६१, श्रौप)। ३ स्थूल, मोटा, पीन (पाअ)। ४ मुखर, वाचाल (दे ७, १४)।
रुंदी स्त्री [दे] विस्तीर्णता, लम्बाई (वज्जा १६४)।
रुंध सक [रुध्] रोकना, अटकाना। रुंधइ (हे ४, १३३, २१८)। कर्म. रुंधिज्जइ, रुब्भइ, रुब्भए (हे ४, २४५, कुमा)। वकृ. रुंधंत (कुमा)। कवकृ. रुब्भंत, रुब्भमाण, रुज्झंत (पउम ७३, २६, से ४, १७, भवि)। कृ रुंधिअव्व (अभि ५०)।
रुंधिअ वि [रुद्ध] रोका हुआ (कुमा)।
रुंप पुन [दे] १ त्वचा, सूक्ष्म छाल (गा ११६, १२०, वज्जा ४२)। २ उल्लिखन (वज्जा ४२)।
रुंपण न [रोपण] रोपाना, वपन कराना, वापन (पिंड १६२)।
रुंफ देखो रुंप (पि २०८)।
रुंभ देखो रुंध। रुंभइ (हे ४, २१८, प्राप्र)। वकृ रुंभंत (पि ५३५)। कृ. रुंभिअव्व (से ६, ३)।
रुंभण न [रोधन] रोक, अटकाव, अवरोध (पण्ह १, १, कुप्र ३७७, गा ६६०)।
रुंभय वि [रोधक] रोकनेवाला (स ३८१)।
रुंभाविअ वि [रोधित] रुकवाया हुआ, बंद किया हुआ (श्रा २७)।
रुंभिअ वि [रुद्ध] रोका हुआ (हेका ६६, सुपा १२७)।
रुक्क न [दे] बैल आदि की तरह शब्द करना (अणु २६)।
रुक्किणी देखो रुप्पिणी (पि २७७)।
रुक्ख पुन [वृक्ष] पेड, गाछ, पादप (णाया १, १, हे २, १२७, प्राप्र, उव, कुमा, जी २७, प्रति ६, प्रासू १६८), 'रुक्खाइ, रुक्खाणि' (पि ३५८)। २ सयम, विरति (सूअ १, ४, १, २५)। °मूल न [°मूल] पेड की जड (कस)। °मूलिय पु [°मूलिक] वृक्ष के मूल मे रहनेवाला वानप्रस्थ (श्रौप)। °सत्थ न [°शास्त्र] वनस्पति-शास्त्र (स ३११)। °उवेद पुं [°ायुर्वेद] वही अर्थ (विसे १७७५)।
रुक्खड ऊपर देखो (षड्)।
रुक्खिम पुंस्त्री [वृक्षत्व] वृक्षपन (षड्)।
रुग्ग वि [रुग्ण] भग्न, भाँगा हुआ (पाअ, गउड, ५६१)।
रुच } सक [दे] पीसना। रुचति, रुच्चति,
रुच्च } भूका. रुचिसु, रुच्चिसु, भवि. रुचिस्सति, रुचिस्संति (आचा २, १, ६, ५)।
रुचिर देखो रुइर (दे १, १४६)।
रुच्च अक [रुच्] रुचना, पसन्द पडना। रुच्चइ, रुच्चए (वज्जा १०६, महा, सिरि १०६, भवि। वकृ रुच्चंत, रुच्चमाण (भवि; उप १४३ टी)।
रुच्च सक [दे] व्रीहि आदि को यन्त्र मे निस्तुष करना। वकृ. रुच्चंत (णाया १, ७—पत्र ११७)।
रुच्चि देखो रुइ = रुचि (कप्पू)।
रुच्छ देखो रुक्ख (संक्षि १५)।
रुन्मि देखो रुप्पि (हे २, ५२, कुमा)।
रुज्ज न [रोदन] रुदन, रोना, 'दीहुण्हा णीसासा, रणरणओ, रुज्जगग्गिर गेअं' (गा ८४३)।
रुज्झ देखो रुध। रुज्झइ (हे ४, २१८)।
रुज्झ° देखो रुह = रुह्।
रुज्झंत देखो रुध।
रुज्झिअ वि [रुद्ध] रोका हुआ (कुमा)।
रुट्टिया स्त्री [दे] रोटी (सट्टि ३६)।
रुट्ठ वि [रुष्ट] रोषयुक्त (उवा, सुर २, १२१)। २ पुं. नरकावास-विशेष (देवेन्द्र २८)।
रुणरुण न [दे] करुण क्रन्दन (भवि)।
रुणरुण अक [दे] करुण क्रन्दन करना। रुणरुणइ (वज्जा ५०, भवि)। वकृ. रुणरुणंत (भवि)।
रुणुरुण देखो रुणरुण (पउम १०५, ५८)।
रुणुरुणिय वि [दे] करुण क्रन्दनवाला (पउम १०५, ५८)।
रुण्ण न [रुदित] रोदन, रोना (हे १, २०६, प्राप्र, गा १८)।
रुते देखो रिते (वव ४)।
रुत्थिणी देखो रुप्पिणी (षड्)।
रुदिअ देखो रुण्ण (नाट—मालती १०६)।
रुद्द पु [रुद्र] १ महादेव, शिव (सम्मत्त १४५, हेका ५६)। २ शिव-मूर्ति-विशेष (णाया १, १—पत्र ३६)। ३ जिन देव, जिन भगवान् (पउम १०६, १२)। ४ परमाधार्मिक देवो की एक जाति (सम २८)। ५ नृप-विशेष, एक वासुदेव का पिता (पउम २०, १८२; सम १५२)। ६ ज्योतिष्क देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७७, सुज्ज १०, १२)। ७ अग-विद्या का जानकार पुरुष (विचार ४८४)। ८ वि. भयंकर, भय-जनक (सम्मत्त १४५)। देखो रोद्द = रुद्र।
रुद्द देखो रोद्द = रौद्र (सम ६)।
रुद्दक्ख पु [रुद्राक्ष] वृक्ष-विशेष (पउम ५३, ७६)।
रुद्दाणी स्त्री [रुद्राणी] शिव पत्नी, दुर्गा (मसु १५४)।
रुद्ध वि [रुद्ध] रोका हुआ (कुमा)।
रुद्र देखो रुद्द (हे २, ८०)।
रुन्न दखो रुण्ण (सुर २, १२६)।
रुप्प सक [रोपय्] रोपना, बोना, 'सहयारभरियदेसे रुप्पसि धत्तूरयं तुम वच्छे' (धर्मवि ६७)।
रुप्प न [रुक्म] १ काञ्चन, सोना। २ लोहा। ३ धत्तूरा। ४ नागकेसर (प्राप्र)। ५ चाँदी, रजत (जं ४)।

रत्तक्खर न [दे] सीधु, मद्य-विशेष (दे ७, ४)।

रत्तच्छ पुं [दे] १ हंस। २ व्याघ्र (७, १३)।

रत्तडि (अप) देखो रत्ति = रात्रि (पि ५९९)।

रत्तय न [दे रक्तक] वन्धूक वृक्ष का फूल (दे ७, ३)।

रत्ता स्त्री [रक्ता] एक नदी (सम २७, ४३, इक)। °वइप्पवाय पुं [°वतीप्रपात] द्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७३)।

रत्ति स्त्री [दे] आज्ञा हुकुम (दे ७, १)।

रत्ति स्त्री [रात्रि] रात, निशा (हे २, ७९; कुमा, प्रासू ६०)। °अधय वि [°अन्धक] रात को नहीं देख सकनेवाला (गा ६६७, हेका २६)। °अर वि [°चर] १ रात में विहरनेवाला। २ पुं. राक्षस (पड्)। °दिवह न [°दिवस] रात-दिन, अहर्निश (पि ८८)। देखो राइ = रात्रि।

रत्तिचर देखो रत्ति = अर (धर्मवि ७२)।

रत्तिदिअह न [रात्रिदिवस] रात-दिन, अहर्निश, निरन्तर (अच्चु ७८)।

रत्तिदिय } न [रात्रिन्दिव] ऊपर देखो
रत्तिदिव } (पउम ८, १६४, ७५, ८५)।

रत्तिंध वि [रात्र्यन्ध] जो रात में न देख सकता हो वह (प्रासू १७५)।

रत्तीअ पु [दे] नापित, हजाम (दे ७, २, पाअ)।

रत्तुप्पल न [रक्तोत्पाल] लाल कमल (पण्ह १, ४)।

रत्तोआ स्त्री [रक्तोदा] एक नदी (इक)।

रत्तोप्पल देखो रत्तुप्पल (नाट—मृच्छ १४५)।

रत्था देखो रच्छा (गा ४०, अत १२; सुर १, ६६)।

रद्ध वि [रद्ध, राद्ध] रांधा हुआ, पक्व (पिंड १६५, सुपा ६३६)।

रद्धि वि [दे] प्रधान, श्रेष्ठ (दे ७, २)।

रन्न वि रण्ण (सुपा ४०१, कुमा)।

रप्प सक [आ + क्रम्] आक्रमण करना। रप्पइ (प्राकृ ७३)।

रप्फ पुं [दे] वल्मीक, गुजराती में 'राफडो' (दे ७, १, पाम)। २ रोग-विशेष, 'करि कंपु पायमूलिसु रप्फय' (सण)।

रप्फडिआ स्त्री [दे] गोधा, गोह (दे ७, ४)।

रब्बा वि [दे] राव, यवागू (श्रा १४, उर २, १२, धर्मवि ४२)।

रभस देखो रहस = रभस (गा ८७२, ८९४, ९३४)।

रम अक [रम्] १ क्रीडा करना। २ सभोग करना। रमइ, रमए, रमते, रमिज्ज, रमेज्जा (कुमा)। भवि रमिस्सदि, रमिहिइ (कुमा)। कर्म रमिज्जइ (कुमा)। वकृ. रमत, रम-माण (गा ४४, कुमा)। सकृ रमिअ, रमिउ, रमिऊण, रतूण (हे २, १४६, ३, १३६, महा, पि ३१२), रमेप्पि, रम्मेप्पिणु, रमेवि (अप) (पि ५८८)। हेकृ. रमिउ (उप पृ ३८)। कृ. रमिअव्व (गा ४६१), देखो रमणिज्ज, रमणीअ, रम्म। प्रयो रमावेंति (पि ५५२)।

रमण न [रमण] १ क्रीडा, क्रीडन। २ सुरत, संभोग, रति-क्रीडा (पव ३८, कुमा, उप पृ १८७)। ३ स्मर-कूपिका, योनि (कुमा)। ४ पु. जघन, नितम्ब (पाअ)। ५ पति, वर, स्वामी (पउम ५१, १६, पिंग)। ६ छन्द-विशेष (पिंग)।

रमणिज्ज वि [रमणीय] १ सुन्दर, मनोहर, रम्य (प्राप्र, पाअ, अभि २००)। २ न. एक देव-विमान (सम १७)। ३ पु नन्दीश्वर द्वीप के मध्य में उत्तर दिशा की ओर स्थित एक अञ्जन-गिरि (पव २६९ टी)। ४ एक विजय, प्रान्त-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)।

रमणी स्त्री [रमणी] १ नारी, स्त्री (पाअ, उप पृ १८७, प्रासू १५५, १८०)। २ एक पुष्करिणी (इक)।

रमणीअ वि [रमणीय] रम्य, मनोरम (प्राप्र, स्वप्न ४०, गउड, सुपा २५५, भवि)।

रमा स्त्री [रमा] लक्ष्मी, श्री (कुम्मा ३)।

रमिअ देखो रम।

रमिअ वि [रत] १ क्रीडित, जिसने क्रीडा की हो वह (कुमा ४, ५०)। २ न. रमण, क्रीडा (णाया १, ९—पत्र १६५, कुमा, सुपा ३७६, प्रासू ६५)।

रमिअ वि [रमित] रमाया हुआ (कुमा ३, ८९)।

रमिर वि [रन्तृ] रमण करनेवाला (कुमा)।

रम्म वि [रम्य] १ मनोरम, रमणीय, सुन्दर (पाअ, से ९, ४७, सुर १, ६६, प्रासू ७१)। २ पुं. विजय-विशेष, एक प्रान्त (ठा २, ३—पत्र ८०)। ३ चम्पक का गाछ (से ९, ४७)। ४ न. एक देव-विमान (सम १७)।

रम्मग } पुं [रम्यक] १ एक विजय, प्रान्त-
रम्मय } विशेष (ठा २ ३—पत्र ८०)। २ एक युगलिक-क्षेत्र, जबू-द्वीप का वर्ष-विशेष (सम १२, ठा २, ३—पत्र ६७, इक)। ३ न. एक देव-विमान (सम १७)। ४ पर्वत-विशेष का एक कूट (जं ४)।

रम्ह देखो रंफ। रम्हइ (प्राकृ ६५)।

रय सक [रज्] रँगना, 'नो धोएजा, नो रएज्जा, नो धोयरत्ताइं वत्थाइं धारेज्जा' (आचा)।

रय सक [रचय्] बनाना, निर्माण करना। रयइ, रएइ (हे ४,९४, षड्, महा)। कवकृ. रइज्जत (से ८, ८७)।

रय पुंन [रजस्] १ रेणु, धूल (ओप, पाअ, कुप्र २१)। २ पराग, पुष्प-रज (से ३, ४८)। ३ सांख्य-दर्शन मे उक्त प्रकृति का एक गुण (कुप्र २१)। ४ बध्यमान कर्म (कुमा ७, ५८, चेइय ६२२, उव)। °त्ताण न [°त्राण] जैन मुनि का एक उपकरण (ओघ ६६८, पण्ह २, ५—पत्र १४८)। °स्सला स्त्री [°स्वला] ऋतुमती स्त्री (दे १, १२५)। °हर पुंन [°हर] जैन मुनि का एक उपकरण (सबोध १५)। °हरण न [°हरण] वही अर्थ (णाया १, १, कस)।

रय वि [रत] १ अनुरक्त, आसक्त (ओप; उव, सुर १, १२, सुपा ३०६, प्रासू १६६)। २ स्थित (से ९, ४२)। ३ न रति-कर्म, मैथुन (सम १५, उव, गा १५५, स १८०, वज्जा १००, सुपा ४०३)।

रय पुं [रय] वेग (कुमा, से २, ७, सण)।

रय देखो रव (पउम ११४, १७)।

रयग देखो रयय = रजक (श्रा १२; सुपा ५८८)।

रयण न [रजन] रँगना, रँग-युक्त करना (सूअ १, ९, १२)।

रूढ वि [रूढ] उगा हुआ, उत्पन्न (दस ७, ३५)।

रूढि स्त्री [रूढि] परम्परा से चली आती प्रसिद्धि, 'पोसहसद्दोरूढीए एत्थ पव्वाणुवायओ भणिओ' (सुपा ६१९, कप्पू)।

रूप पु [रूप] पशु, जानवर (मृच्छ २००)।

रूअ = रूप (ठा ६—पत्र ३६१)।

रूपि पु [रूपिन्] सौनिक, कसाई (मृच्छ २००)।

रूरुइय न [दे] उत्सुकता, रणरणक (पाम्र)।

रूव पुन [रूप] १ आकृति, आकार (णाया १, १; पाम्र)। २ सौन्दर्य, सुन्दरता (कुमा; ठा ४, २; प्रासू ४७, ७१)। ३ वर्ण, शुक्ल आदि रँग (औप; ठा १, २, ३)। ४ मूर्त्ति (विसे १११०)। ५ स्वभाव (ठा ६)। ६ शब्द, नाम। ७ श्लोक। ८ नाटक आदि दृश्य काव्य (हे १, १४२)। ९ एक की सख्या, एक (कम्म ४, ७७, ७८, ७९, ८०; ८१)। १०-११ रूपवाला, वर्णवाला (हे १, १४२)। १२—देखो रूअ, रूप = रूप। °कता देखो रूअ-कता (ठा ६—पत्र ३६१; इक)। °जक्ख पु [°यक्ष] धर्मपाठक (व्यव० भा० गा० ६१४)। °धार वि [°धार] रूप-धारी, 'जलयरमज्झगएण अणेगमच्छाइरूवधारेण' (सा ६)। °प्पभा देखो रूअ-प्पभा (इक)। °मंत देखो °वत (पउम १२, ५७, ६१, २६)। °वई स्त्री [°वती] १ भूतानन्द नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ६—पत्र ३६१)। २ सुरूप नामक भूतेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ एक दिक्कुमारी महत्तरिका (ठा ६)। °वत, °स्सि वि [°वत्] रूपवाला, सुरूप (श्रा १०; उवा; उप पृ ३३२; सुपा ४७४; उव)।

रूवग पुन [रूपक] १ रुपया (उप पृ २८०, धम्म ८ टी; कुप्र ४१४) २ साहित्य-प्रसिद्ध एक अलकार (सुर १, २९; विसे ९९९ टी)। देखो रूअग = रूपक।

रूवमिणी स्त्री [दे] रूपवती स्त्री (दे ७, ९)।

रूवय देखो रूवग (कुप्र १२३, ४१३; भास ३४)।

रूवसिणी देखो रूवमिणी (षड्)।

रूवा देखो रूआ (इक)।

रूवि वि [रूपिन्] रूपवाला (आचा; भग; स ८३)।

रूवि पुस्त्री [दे] गुच्छ विशेष, अर्क-वृक्ष, आक का पेड (पण्ण १—पत्र ३२, दे ७, ९)।

रूस अक [रुष्] गुस्सा करना। रूसइ, रूसए (उव, कुमा; हे ४, २३६; प्राकृ ६८; षड्)। कर्म. रूसिज्जइ (हे ४, ४१८)। हेकृ रुसिउं, रुसेउं (हे २, १४१; पि ५७३)। कृ. रूसिअव्व, रूसेयव्व (गा ४६६; पण्ह २, ५—पत्र १५०; सुर १६, ६४)। प्रयो, सकृ रूसविअ (कुमा)।

रूसण न [रोषण] १ रोष, गुस्सा (गा ६७५; हे ४, ४१८)। २ वि. गुस्साखोर, रोष करनेवाला (सुख १, १४; सबोध ४८)।

रूसिअ वि [रुष्ट] रोष-युक्त (सुख १, १३, १६)।

रे अ [रे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ परिहास। २ अधिक्षेप (सक्षि ४७)। ३ सभाषण (हे २, २०१; कुमा)। ४ आक्षेप (संक्षि ३८)। ५ तिरस्कार (पत्र ३८)।

रेअ पुं [रेतस्] वीर्य, शुक्र (राज)।

रेअव सक [मुच्] छोडना, त्यागना। रेअवइ (हे ४, ९१)।

रेअविअ वि [मुक्त] छोडा हुआ, त्यक्त (कुमा, दे ७, ११)।

रेअविअ वि [दे. रेचित] क्षणीकृत, शून्य किया हुआ, खाली किया हुआ (दे ७, ११; पाम्र; से ११, २)।

रेआ स्त्री [रे] १ धन। २ सुवर्ण, सोना (षड्)।

रेइअ वि [रेचित] रिक्त किया हुआ (से ७, ३१)।

रेंकिअ वि [दे] १ आक्षिप्त। २ लोन। ३ व्रीडित, लज्जित (दे ७, १४)।

रेकार पुं [रेकार] 'रे' शब्द, 'रे' की आवाज (पव ३८)।

रेट्ठि देखो रिट्ठि (सक्षि ३)।

रेणा स्त्री [रेणा] महर्षि स्थूलभद्र की एक भगिनी, एक जैन साध्वी (कप्प; पडि)।

रेणि पुस्त्री [दे] पङ्क, कर्दम (दे ७, ९)।

रेणु पुंस्त्री [रेणु] १ रज, धूली (कुमा)। २ पराग (स्वप्न ७६)।

रेणुया स्त्री [रेणुका] ओषधि-विशेष (पण्ण १—पत्र ३६)।

रेभ पु [रेफ] १ 'र' अक्षर, रकार (कुमा)। २ वि. दुष्ट। ३ अधम, नीच। ४ क्रूर, निर्दय। ५ कृपण, गरीब (हे १, २३६; षड्)।

रेरिज्ज अक [राराज्य्] अतिशय शोभना। वकृ. रेरिज्जमाण (णाया १, २—पत्र ७८; १, ११—पत्र १७१)।

रेल्ल सक [प्लावय्] सराबोर करना। वकृ. रेल्लंत (कुमा)।

रेल्लि स्त्री [दे] रेल, स्रोत, प्रवाह (राज)।

रेवइनक्खत्त पु [रेवतीनक्षत्र] आर्य नागहस्ती के शिष्य एक जैन मुनि (णदि ५१)।

रेवइय पुं [रैवतिक] स्वर-विशेष, रैवत स्वर (अणु १२८)।

रेवइय न [रैवतिक] एक उद्यान का नाम (कप्प)।

रेवइआ स्त्री [रेवतिका] भूत-ग्रह विशेष (सुख २, १६)।

रेवई स्त्री [रेवती] १ बलदेव की स्त्री (कुमा)। २ एक श्राविका का नाम (ठा ६—पत्र ४५५; सम १५४)। ३ एक नक्षत्र (सम ५७)।

रेवई स्त्री [दे. रेवती] मातृका, देवी (दे ७, १०)।

रेवत पुं [रेवन्त] सूर्य का एक पुत्र, देव-विशेष, 'रेवंततणुभवा इव अस्सकिसोरा सुलक्खणिणो' (धर्मवि १४२; सुपा ५९)।

रेवज्जिअ वि [दे] उपालब्ध (दे ७, १०)।

रेवण पुं [रेवण] व्यक्ति-वाचक नाम, एक साधारण काव्य-ग्रंथ का कर्त्ता (धर्मवि १४२)।

रेवय न [दे] प्रणाम, नमस्कार (दे ७, ९)।

रेवय पुं [रैवत] गिरनार पर्वत (णाया १, ५—पत्र ९९; अंत; कुप्र १८)।

रेवय पु [रैवत] स्वर विशेष (अणु १२७)।

रेवलिआ स्त्री [दे] वालुकावर्त्त, धूल का आवर्त (दे ७, १०)।

रेवा स्त्री [रेवा] नदी-विशेष, नर्मदा (गा ५७८; पाम्र; कुमा; प्रासू ६७)।

चाँदी का बरतन (गउड)। °मय वि [°मय] चाँदी का बना हुआ (णाया १, १—पत्र ५४, पि ७०)।

रयय पुं [रजक] धोबी (स २८६, पाअ)।

रयवली स्त्री [दे] शिशुत्व, बाल्य (दे ७, ३)।

रयवाडी देखो राय-वाडिआ (सिरि ७५८)।

रयाव सक [रचय्] बनवाना, निर्माण कराना। रयावेइ, रयाविति, रयावेह (कप्प)। संकृ रयावेत्ता (कप्प)।

रयाविय वि [रचित] बनवाया हुआ (स ४३५)।

रल्ला स्त्री [दे] प्रियंगु, मालकाँगनी (दे ७, १)।

रल्लि पुस्त्री [दे] लम्बा मधुर शब्द (माल ६०)।

रव सक [रु] १ कहना, बोलना। २ वध करना। ३ गति करना। ४ अक. रोना। ५ शब्द करना, 'सुद्धं रवति परिसाए' (सूअ १, ४, १, १८), रवइ (हे ४, २३३, सक्षि ३३)। वकृ रवत, रवंत (णाया १, १—पत्र ६५, पिंग, औप)।

रव सक [रावय्] बुलवाना, आह्वान करना। वकृ रवेंत (औप)।

रव सक [दे] आर्द्र करना। भवि—रवेहिइ (णदि)।

रव पुं [रव] १ शब्द, आवाज (कप्प; महा, सण, भवि)। २ वि मधुर शब्दवाला, 'रवं अलसं कलमंजुलं' (पाअ)।

रव (अप) देखो रय = रजस् (भवि)।

रवॅण } (अप) देखो रमण (भवि)।
रवण }

रवण न [रवण] आवाज करना, 'पचासन्ने य करेणुया सया रवणसीला आसी' (महा)।

रवण्ण } (अप) देखो रम्म = रम्य (हे ४,
रवन्न } ४२२, भवि)।

रवय पुं [दे] मन्थान-दण्ड, विलोने की लकड़ी. गुजराती में 'रवैयो' (दे ७, ३)।

रवरव अक [रोरूय्] १ खूब आवाज करना। २ बारंबार आवाज करना। वकृ. रवरवंत (औप)।

रवि वि [रविन्] आवाज करनेवाला (से २, २६)।

रवि न [रवि] १ सूर्य, सूरज (से २, २६, गउड, सण)। २ राक्षस-वंश का एक राजा (पउम ५, २६२)। ३ अर्क वृक्ष, आक का पेड़ (हे १, १७२)। °तेअ पुं [°तेजस्] १ इक्ष्वाकु वंश का एक राजा (पउम ५, ४)। २ राक्षस वंश का एक राजा, एक लंकेश (पउम ५, २६५)। °तेया स्त्री [°तेजा] एक विद्या (पउम ७, १४१)। °नंदण पु [°नन्दन] शनि-ग्रह (श्रा १२)। °प्पभ पुं [°प्रभ] वानरद्वीप का एक राजा (पउम ६, ६८)। °भत्ता स्त्री [°भक्ता] एक महौषधि (ती ५)। °भास पु [°भास] खड्ग-विशेष, सूर्यहास खड्ग (पउम ५५, २६)। °वार पु [°वार] दिन-विशेष, रविवार (कुप्र ४११)। °सुअ पुं [°सुत] १ शनिश्चर ग्रह (से ८, २८, सुपा ३६)। २ रामचन्द्र का एक सेनापति, सुग्रीव (से १५, ५६)। °हास पुं [°हास] सूर्यहास खड्ग (पउम ५३, २७)।

रविगय न [रविगत] जिसपर सूर्य हो वह नक्षत्र (वव १)।

रविय वि [दे] आर्द्र किया हुआ, भिजाया हुआ (विसे १४५६)।

रव्वारिअ पुं [दे] दूत, संदेश-हारक, 'जेण अवञ्भो रव्वारिओ त्ति' (सुपा ४२८)।

रस सक [रस्] चिल्लाना, आवाज करना। रसइ (गा ४३६)। वकृ. रसत (सुर २, ७४, सुपा २७३)।

रस पुन [रस] १ जिह्वा का विषय—मधुर, तिक्त आदि, 'एगे रसे', 'एव गवाइं रसाइं फासाइं' (ठा १०—पत्र ४७१, प्रासू १७४)। २ स्वभाव, प्रकृति (से ४,३२)। ३ साहित्य-शास्त्र-प्रसिद्ध शृंगार आदि नव रस (उत्त १४, ३२, धर्मवि १३, सिरि ३६)। ४ जल, पानी (से २, २७, धर्मवि १३)। ५ सुख (उत्त १४, ३१)। ६ आसक्ति, दिलचस्पी (सत्त ५३, गउड)। ७ अनुराग, प्रेम (पाअ)। ८ मद्य आदि द्रव पदार्थ (पण्ह १, १, कुमा)। ९ पारद, पारा (निचू १३)। १० भुक्त अन्न का प्रथम परिणाम, शरीरस्थ धातु-विशेष (गउड)। ११ कर्म-विशेष (कम्म २, ३१)। १२ छन्द शास्त्र-प्रसिद्ध प्रस्तार-विशेष (पिंग)। १३ माधुर्य आदि रसवाला पदार्थ (सम ११, नव २८)। °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष (सम ६७)। °न्न वि [°ज्ञ] रस का जानकार (सुपा २६१)। °भेइ वि [°भेदिन्] रसवाली चीजों का भेल-सेल करनेवाला (पउम ७५, ५२)। °मंत वि [°वत्] रस-युक्त (भग, ठा ५, ३—पत्र ३३३)। °वई स्त्री [°वती] रसोई (सुपा ११)। °ल, °लु वि [°वत्] रसवाला (हे २, १५६, सुख ३, १)। °वण पुं [°ापण] मद्य की दूकान (पव ११२)।

रस पुन [रस] निष्यन्द, निचोड, सार (दसनि ३, १६)।

रसण न [रसन] जिह्वा, जीभ (पण्ह १, १—पत्र २३, आचा)।

रसणा स्त्री [रसना] १ मेखला, काची (पाअ, गउड, से १, १८)। २ जिह्वा, जीभ (पाअ)। °ल वि [°वत्] रसनावाला (सुपा ५५६)।

रसद्द न [दे] चुल्ली-मूल, चूल्हे का मूल भाग (दे ७, २)।

रसा स्त्री [रसा] पृथिवी, धरती (हे १, १७७, १८०, कुमा)।

रसाउ पुं [दे रसायुप्] भ्रमर, भौंरा (दे ७, २, पाअ)।

रसाय पुं [दे] ऊपर देखो (दे ७, २)।

रसायण न [रसायन] वैद्यक-प्रसिद्ध औषध-विशेष (विपा १, ७, प्रासू १६२, भवि)।

रसाल पुं [रसाल] आम्र-वृक्ष, आम का गाछ (सम्मत्त १७३)।

रसाला स्त्री [दे रसाला] मार्जिता, पेय-विशेष (दे ७, २, पाअ)।

रसालु पुं [दे. रसालु] मज्जिका, राज-योग्य पाक-विशेष—दो पल घी, एक पल मधु, आधा आढक दही, बीस मिरचा तथा दस पल चीनी या गुड से बनता पाक (ठा ३, १—पत्र ११८, सुज्ज २० टी, पव २५६)।

रसि देखो रस्सि (प्राकृ २६)।

रसिअ वि [रसिक] १ रसज्ञ, रसिया, शौकीन (से १, ६)। २ रस-युक्त, रसवाला (सुपा २६, २१७, पउम ३१, ४६)।

रोमथ पु [रोमन्थ] पगुराना, चबाई हुई वस्तु का पुन चवाना, पागुर (से ६, ८७, पाअ, सण)।

रोमंथ } अक [रोमन्थय्] चबाई हुई
रोमथाअ } चीज का फिर से चवाना, पगुराना, जुगाली करना। रोमथइ (हे ४,४३)। वक्र रोमथाअमाण (चारु ७)।

रोमग } पु [रोमक] १ अनार्य देश-विशेष,
रोमय } रोम देश (पव २७४)। २ रोम देश मे रहनेवाली मनुष्य-जाति (पण्ह १, १—पत्र १४)।

रोमय पु [रोमज] पक्षि-विशेष, रोम की पाँखवाला पक्षी (जी २२)।

रोमराइ स्त्री [दे] जघन, नितम्ब (दे ७, १२)।

रोमलयासय न [दे] पेट, उदर (दे ७, १२)।

रोमस वि [रोमश] रोम-युक्त, रोमवाला (दे ३, ११, पाअ)।

रोमूसल न [दे] जघन, नितम्ब (दे ७, १२)।

रोर पु [रोर] चौथी नरक-भूमि का एक नरकावास (ठा ४, ४—पत्र २६५)।

रोर वि [दे] रक, गरीब, निर्धन (दे ७, ११, पाअ सुर २, १०५, सुपा २६६)।

रोरु पु [रोरु] सातवी नरक पृथिवी का एक नरकावास (देवेन्द्र २४, इक)।

रोरुअ पु [रोरुक, रौरव] १ रत्नप्रभा नरक-पृथिवी का दूसरा नरकेन्द्रक—नरकावास-विशेष (देवेन्द्र ३)। २ रत्नप्रभा का तेरहवाँ नरकेन्द्रक (देवेन्द्र ५)। ३ सातवी नरकपृथिवी का एक नरकावास - नरक-स्थान (ठा ५, ३—पत्र ३४१, सम ५८, इक)। ५ चौथी नरक-भूमि का एक नरकावास (ठा ४, ४—पत्र २६५)।

रोल पु [दे] १ कलह, झगडा (दे ७, १५)। २ रव, कोलाहल, कलकल आवाज (दे ७, १५, पाअ, कुमा, सुपा ५७६, चेइय १८४, मोह ५)।

रोलब पु [दे रोलम्ब] भ्रमर, मधुकर (दे ७, २, कुप्र ५८)।

रोला स्त्री [रोला] छन्द-विशेष (पिंग)।

रोव देखो रुअ=रुद्। रोवइ (हे ४, २२६, सक्षि ३६, प्राकृ ६८, षड्, महा, सुर १०, १७१, भवि)। वकृ रोवत, रोवमाण (पउम १७, ३७, सुर २, १२४, ६, २३५, पउम ११०, ३५)। सकृ. रोविऊण (पि ५८६)। हेकृ. रोविउं (स १००)।

रोव पु [दे रोप] पौधा, गुजराती में 'रोपो' (सम्मत्त १४४)।

रोवण न [रोदन] रोना (सुर ६, ७६)।

रोवण न [रोपण] वपन, बीज बोना (वव १)।

रोवाविअ देखो रोआविअ (वज्जा ६२)।

रोविअ वि [रोपित] १ बोया हुआ। २ स्थापित (से १३, ३०)।

रोविंदय न [दे] गेय-विशेष, एक प्रकार का गान (ठा ४, ४—पत्र २८५)।

रोविर देखो रोइर (दे ७, ७, कुमा, हे २, १४५)।

रोविर वि [रोपयितृ] बोनेवाला (हे २, १४५)।

रोस देखो रूस। रोसइ (?) (धात्वा १५०)।

रोस पु [रोष] गुस्सा, क्रोध (हे २, १६०, १६१)। °इत्त, °इत वि [°वत्] रोष-(सक्षि २०, प्राप्र)।

रोसण वि [रोषण] रोष करनेवाला, गुस्साखोर (उप १४७ टी, सुख १, १३)।

रोसविअ त्रि [रोषित] कोपित, कुपित किया हुआ (पउम ११०, १३)।

रोसाण सक [मृज्] मार्जन करना, शुद्ध करना। रोसाणइ (हे १, १०५, प्राकृ ६६, षड्)।

रोसाणिअ वि [मृष्ट] शुद्ध किया हुआ, मार्जित (पाअ, कुमा, पिंग)।

रोसिअ देखो रोसविअ (पउम ६६, ११, भवि)।

रोह अक [रुह्] उत्पन्न होना। रोहति (गउड)।

रोह देखो रुध। सकृ. रोहिऊण, रोद्धुं (काल, बृह ३)।

रोह पुं [रोध] १ घेरा, नगर आदि का सैन्य से वेष्टन (णाया १, ८—पत्र १४६, उप पृ ८४, कुप्र १५८)। २ रुकावट, रोक, अटकाव (कुप्र १, द्रव्य ४६)। ३ कैद (पुप्फ १८६)।

रोह पु [रोधस्] तट, किनारा (पाअ)।

रोह पुं [रोह] १ एक जैन मुनि (भग)। २ प्ररोह, व्रण आदि का सूख जाना (दे ६, ६५)। ३ वि. रोहक, रोहण-कर्ता (भवि)।

रोह पु [दे] १ प्रमाण। २ नमन। ३ मार्गण (दे ७, १६)।

रोहग वि [रोधक] घेरा डालनेवाला, अटकाव करनेवाला, 'रोहगसज्जुत्तीए रोहिओ कुमारेण' (म ६३५), 'रोहगसंजुत्ती उण कीरउ' (सुर १२, १०१)।

रोहग देखो रोह=रोध (म ६३५, सुर १२, १०१)।

रोहग पुं [रोहक] एक नट-कुमार (उप पृ २१५)।

रोहगुत्त पु [रोहगुप्त] १ एक जैन मुनि (कप्प)। २ त्रैराशिक मत का प्रवर्तक एक आचार्य (विसे २४५२)।

रोहण न [रोधन] १ अटकाव (आचा ७२)। २ वि. रोकनेवाला (द्रव्य ३४)।

रोहण व [रोहण] १ चढना, आरोहण (सुपा ४३८, कुप्र ३६६)। २ उत्पत्ति (विसे १७५३)। ३ पुं. पर्वत-विशेष (सुपा ३२, कुप्र, ६)। ४ एक दिग्हस्ति-कूट, (इक)।

रोहिअ [दे] देखो रोज्झ (दे ७, १२, पाअ, पण्ह १, १—पत्र ७)।

रोहिअ वि [रोधित] घेरा हुआ, 'रोहिय पाडलिपुर तेण' (धर्मवि ८२, कुप्र ३६६, स ६३५)।

रोहिअ वि [रोहित] १ सुखाया हुआ (घाव) (उप पृ ७६)। २ पुं. द्वीप-विशेष (ज ४)। ३ पु मत्स्य विशेष (स २५८)। ४ न. तृण-विशेष (पण्ण १—पत्र ३३)। ५ कूट-विशेष (ठा २, ३, ८)।

रोहिअंस पु [रोहितांश] एक द्वीप (ज ४)।

रोहिअंस° } स्त्री [रोहितांशा] एक नदी
रोहिअसा } (सम २७, इक)। °पवाय पुं [°प्रपात] द्रह-विशेष (ठा २, ३, ज ४)।

रोहिअप्पवाय पु [रोहिताप्रपात] द्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७२)।

रोहिआ स्त्री [रोहित्, रोहिता] एक नदी (सम २७, इक, ठा २, ३—पत्र ७२, ८०)।

रोहिंसा स्त्री [रोहिदंशा] एक नदी (इक)।

रोहिणिअ पुं [रौहिणेय] एक प्रसिद्ध चोर का नाम (श्रा २७)।

राइ देखो रत्ति (हे २, ८८, काप्र १८६, महा, षड्)। २ चमरेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ५, १—पत्र ३०२)। ३ ईशानेन्द्र के सोम लोकपाल की एक पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४)। °भत्त न [°भक्त] रात्रि-भोजन, रात मे खाना (सुपा ४८५)। °भोअग न [°भोजन] वही अर्थ (सम ३६, कस)। देखो राई = रात्रि।

राइ स्त्री [राजि] पंक्ति, श्रेणी (पाअ, औप)। २ रेखा, लकीर (कम्म १, १६, सुपा १६७)। ३ राई, राज-सर्षप, एक प्रकार का मसाला (दे ६, ८८)।

राइ वि [रागिन] राग-युक्त, रागवाला (दमा ६)। स्त्री °णी (महा)।

राइ वि [राजिन्] शोभनेवाला (निचू १६)।

राइ° देखो राय = राजन् (हे २ १४८, ३, ५२, ५३, कुमा)।

राइअ वि [राजित] शोभित (से १, ५६, कुमा, ६, ६३)।

राइअ वि [रात्रिक] रात्रि-सम्बन्धी (उत्त २६, ४६, औप, पडि)।

राइआ स्त्री [राजिका] राई का गाछ, 'गोलाणईअ कच्छे चक्खंतो राइआइ पत्ताइं' (गा १७१ अ)। देखो राइगा।

राइंद पु [राजेन्द्र] बडा राजा (कुमा)।

राइंदिअ पु [रात्रिन्दिव] रात-दिन, अहोरात्र (भग, आचा, कप्प, पव ७८, सम २१)।

राइक्क वि [राजकीय] राज-सम्बन्धी (हे २, १४८, कुमा)।

राइगा स्त्री [राजिका] राई, राज-सरसो (कुप्र ४५)।

राइणिअ वि [रात्निक] १ चारित्रवाला, सयमी (पचा १२, ६)। २ पर्याय से ज्येष्ठ, साधुत्व-प्राप्ति की अवस्था से वडा (सम ३७, ५८, कप्प)।

राइणिअ वि [राजकल्प] राजा के समान वैभववाला, श्रीमन्त (सूअ १, २, ३, ३)।

राइण्ण, राइन्न पुं [राजन्य] राजवंशीय, क्षत्रिय (सम १५१, कप्प, औप, भग)।

राइलेऊण संकृ. चीरकर (नदीटिप्पनक अ थिम पादलिप्तकथा वैनयिकी बुद्धि विषयक)।

राइल्ल वि [रागिन्] राग-युक्त (देवेन्द्र २७८)।

राई स्त्री [राजी] देखो राइ = राजि (गउड, सुपा ३४, आसू ६२, पव २५६)।

राई स्त्री [रात्रि] देखो राइ = रात्रि (पाअ, णाया २—पत्र १५०, औप, सुपा ४६१, कस)। °दिवस न [°दिवस] रात्रिदिवस, अहर्निश (सुपा १२७)।

राईमई स्त्री [राजीमती] राजा उग्रसेन की पुत्री और भगवान् नेमिनाथ की पत्नी (पडि)।

राईव न [राजीव] कमल, पद्म (पाअ, हे १, १८०)।

राईसर पुं [राजेश्वर] १ राजाओ के मालिक, महाराज। २ युवराज (औप, उवा, कप्प)।

राउत्त पुं [राजपुत्र] राजपूत, क्षत्रिय (प्राकृ ३०)।

राउल पुं [राजकुल] १ राजाओ का यूथ, राज-समूह (कुमा, हे १, २६७, प्राप्र)। २ राजा का वंश (षड्)। ३ राज-गृह, दरबार, 'ए ईदिसस्स राउलस्स दूरेण पणामो कीरदि, जत्थ वंभणावि एवं विडंविज्जति' (मोह ११)। देखो राओल।

राउलिय वि [राजकुलिक] राजकुल-सम्बन्धी (सुख २, [illegible])।

राउल्ल देखो राइक्क (प्राकृ ३५)।

राएसि पुं [राजर्षि] १ श्रेष्ठ राजा। २ ऋषि-तुल्य राजा, सयतात्मा भूपति (अभि ३६, विक्र ६८, मोह ३)।

राओ अ [रात्रौ] रात मे (णाया १, १—पत्र ६१, सुपा ४६७, कप्प)।

राओल देखो राउल,

'तो किंपि घण सयणेहिं
विलसियं किंपि वाणिपुत्तेहिं।
किंपि गयं राओले एस
अपुत्तत्ति भणिऊण॥'
(धर्मवि १४०)।

राग देखो राय = राग (कप्प, सुपा २४१)।

रागि देखो राइ = रागिन् (पउम ११७, ४१)।

राघव देखो राहव। °घरिणी स्त्री [°गृहिणी] सीता, जानकी (पउम ४६, ५७)।

राच, राचि° [चूपै पै] देखो राय = राजन् (हे ४, ३२५, ३०४, प्राप्र)।

राज देखो राय = राजन् (हे ४, २६७, पि १६८)।

राजस वि [राजस] रजो-गुण-प्रधान, 'राज-सचित्तस्स पुरस्स' (कुप्र ४२८)।

राडि स्त्री [राटि] बूम, चिल्लाहट (सुख २, १५)।

राडि स्त्री [दे राटि] सग्राम, लड़ाई (दे ७, ४)।

राढा स्त्री [राढा] १ विभूषा (धर्मस १०१८, कप्पू)। २ भव्यता (वज्जा १८)। ३ वगाल का एक प्रान्त। ४ वगाल देश का एक नगरी (कप्पू)। °इत्त वि [°वत्] भव्य आत्मा, 'गंजणरहिओ धम्मो राढाइत्ताण संपडइ' (वज्जा १८)। °मणि पु [°मणि] काच-मणि (उत्त २०, ४२)।

राण सक [वि + नम्] विशेष नमना। राणइ (?) (धात्वा १४६)।

राण पु [राजन्] राणा, राजा (चंड, सिरि ११४)।

राणय पुं [राजक] १ राणा, राजा (ती १५, सिरि १२३, १२५)। २ छोटा राजा (सिरि ९८६, १०४०)।

राणिआ, राणी स्त्री [राज्ञिका, °ज्ञी] रानी, राज-पत्नी (कुमा ३, श्रावक ९३ टी, सिरि १२५, २६७)।

राम सक [रमय्] रमण कराना। कृ. रामेयव्व (भत्त ८५)।

राम पुं [राम] १ श्री रामचन्द्र, राजा दशरथ का वडा पुत्र (गा ३५, उप पृ ३७५, कुमा)। २ परशुराम (कुमा १, ३१)। ३ क्षत्रिय परिव्राजक-विशेष (औप)। ४ वलदेव, वलभद्र, वासुदेव का वडा भाई (पाअ)। ५ वि. रमनेवाला (उप पृ ३७५)। °कण्ह पु [°कृष्ण] राजा श्रेणिक का एक पुत्र (राज)। °कण्हा स्त्री [°कृष्णा] राजा श्रेणिक की एक पत्नी (भत २५)। °गिरि पु [°गिरि] पर्वत-विशेष (पउम ४०, १६)। °गुत्त पुं [°गुप्त] एक राजर्षि (सूअ १, ३, ४, २)। °देव पुं [°देव] श्रीरामचन्द्र (पउम ४५, २६)। °पुत्त पुं [°पुत्र] एक जैन मुनि (अनु २)। °पुरी स्त्री [°पुरी] अयोध्या नगरी (ती ११)। °रक्खिआ स्त्री [रक्षिता]

लंछण न [लाञ्छन] १ चिह्न, निशानी (पाअ)। २ नाम। ३ अंकन, चिह्न करना (हे १, २५, ३०)।

लंछणा स्त्री [लाञ्छना] चिह्न करना (उप ५२२)।

लंछिअ वि [लाञ्छित] चिह्नित, कृत-चिह्न (पव १५४, णाया १, २—पत्र ८६, ठा ३, १, कम्म, कप्पू)।

लंडुअ वि [दे लण्डित] उत्क्षिप्त, 'चडप्प-वादलड्डुओ विअ वरडो पव्वदादो दूरं आरोविअ पाडिदो म्हि' (चारु ३)।

लंतक, लंतग, लंतय पु [लान्तक] १ एक देवलोक, छठवाँ देवलोक (भग औप, अंत, इक)। २ एक देवविमान (सम २७, देवेन्द्र १३४)। ३ षष्ठ देवलोक के निवासी देव। ४ षष्ठ देवलोक का इन्द्र (राज, ठा २, ३—पत्र ८५)।

लंद पुन [लन्द] काल, समय (कप्प, पव ७०)।

लंदय पुन [दे] कलिन्दक, गो आदि का खादन-पात्र (पव २)।

लंपड वि [लम्पट] लोलुप, लालची, लुब्ध (पाअ, सुपा १०७, ५६६, सुर ३, १०)।

लंपाग पु [लम्पाक] देश विशेष (पउम ६८, ५६)।

लंपिक्ख पु [दे] चोर, तस्कर (दे ७, १६)।

लंब सक [लम्ब] १ सहारा लेना, आलम्बन करना। २ अक लटकना। लंबेइ (महा)। वकृ लंबत, लंबमाण (औप, सुर ३,७१,४, २४२, कप्प, वसु)। संकृ लंबिऊण (महा)।

लंब वि [लम्ब] लम्बा, दीर्घ, 'उट्ठा उट्टस्स चेव लंबा' (उवा, णाया १, ८—पत्र १३३)।

लंब पु [दे] गोवाट, गो वाडा (दे ७, २६)।

लंबअ न [लम्बक] ललन्तिका, नाभि-पर्यन्त लटकती माला आदि (स्वप्न ६३)।

लंबणा स्त्री [लम्बना] रज्जु, रस्सी (स १०१)।

लंबा स्त्री [दे] १ वल्लरी, लता (षड्)। २ केश, बाल (षड्, दे ७, २६)।

लंबाली स्त्री [दे] पुष्प-विशेष (दे ७, १६)।

लंबि वि [लम्बिन्] लटकता (गउड)।

लंबिअ, लंबिअय वि [लम्बित] १ लटकता हुआ (गा ५३२, सुर ३, ७०)। २ पुं वानप्रस्थ का एक भेद (औप)।

लंबिर वि [लम्बितृ] लटकनेवाला (कुमा, गउड)।

लंबुअ वि [लम्बुक] १ लम्बी लकडी के अन्त भाग मे बँधा हुआ मिट्टी का ढेला। २ भीत मे लगा हुआ इंटो का समूह (मृच्छ ६)।

लंबुत्तर पुन [लम्बोत्तर] कायोत्सर्ग का एक दोष, चोलपट्टे को नाभि मडल से ऊपर रख-कर और जानु को चोलपट्ट से नीचे रख कर कायोत्सर्ग करना (चेइय ४८४)।

लंबूस पुन [दे लम्बूष] कन्दुक के आकार का एक आभरण, 'छत्त चमर-पडाया दप्पण-लंबूसया वियाणं च' (पउम ३२, ७६, ६६, १२)।

लंबोदर, लंबोयर वि [लम्बोदर] १ बड़ा पेटवाला (सुख १, १४, उवा)। २ पु. गणपति, गणेश (श्रा १२, कुप्र ६७)।

लंभ सक [लभ्] प्राप्त करना, 'अजेवाह न लंभामि अवि लाभो सुए सिया' (उत्त २, ३१)। भवि. लंभिस्सं (पि ५२५)। कर्म. लंभीअदि, लंभीआमो (शौ) (पि ५४१)। संकृ. लंभिअ, लंभित्ता (मा १६, नाट—चैत ६१, ठा ३, २)।

लंभ सक [लम्भय्] प्राप्त करना। संकृ. लंभिअ (नाट—चैत ४४)। कृ लंभइदव्व (शौ), लंभणिज्ज लंभणीअ (मा ५१, नाट—मालती ३६, चैत १२५)।

लंभ पुं [लाभ] प्राप्ति (पउम १००, ४३, से ११, ३१, गउड, सिरि ८२२, सुपा ३६४)। देखो लाह = लाभ।

लंभण पुं [लम्भन] मत्स्य की एक जाति (विपा १, ८ टी—पत्र ८४)।

लंभिअ देखो लंभ = लभ्, लम्भय्।

लंभिअ वि [लब्ध] प्राप्त (नाट—चैत १२५)।

लंभिअ वि [लम्भित] प्राप्त कराया हुआ, प्रापित (सूअ २, ७, ३७, स ३१०, अच्चु ७१)।

लंकुड न [दे. लकुट] लकडी, यष्टि, छडी, लाठी (दे ७, १६, पाअ)।

लक्ख सक [लक्षय्] १ जानना। २ पहचानना। ३ देखना। लक्खइ (महा)। कर्म. लक्खिज्जए, लक्खीयमि (विसे २१४६, महा, काल)। कवकृ लक्खिज्जंत (से ११, ४५)। कृ लक्खणीअ (नाट—शकु २४), देखो लक्ख = लक्ष्य।

लक्ख पुन [दे] काय, शरीर, देह (दे ७, १७)।

लक्ख पुन [लक्ष] संख्या-विशेष, लाख, सौ हजार (जी ४५, सुपा १०२, २४८, कुमा, प्रासू ६६)। °पाग पु [°पाक] लाख रुपयों के व्यय से बनता एक तरह का पाक (ठा ६)।

लक्ख वि [लक्ष्य] १ पहचानने योग्य, 'चिर-लक्खगो' (पउम ८२, ८४)। २ जिससे जाना जाय वह, लक्षण, प्रकाशक, 'भुअदप्पवी-अलक्खं चाव' (से ५, १७)। ३ वेध्य, निशाना, 'लक्खविंधण—' (धर्मवि ५२, दे २, २६, कुमा)।

लक्ख° देखो लक्खा (पडि)।

लक्खग वि [लक्षक] पहचाननेवाला (पउम ८२, ८४ कुप्र ३००)।

लक्खण पुन [लक्षण] १ इतर से भेद का बोधक चिह्न। २ वस्तु-स्वरूप (ठा ३, ३, ४, १, जी ११, विसे २१४६, २१४७, २१४८)। ३ चिह्न, 'लक्खणपुण्ण' (कुमा)। ४ व्याकरण-शास्त्र, 'लक्खणमाहित्तपमाण-जोइमाईणि सा पढइ' (सुपा १४१, ६५७)। ५ व्याकरण आदि का सूत्र। ६ प्रतिपाद्य, विषय (हे २, ३)। ७ पु लक्ष्मण। ८ सारस पक्षी, 'लक्खणो' (प्राकृ २२)। °संवच्छर पु [°संवत्सर] वर्ष-विशेष (सुज्ज १०, २०)।

लक्खण पुं [लक्ष्मण] श्रीराम का छोटा भाई (से १, ४८)। देखो लखमण।

लक्खण न [लक्षण] कारण, हेतु (दसनि १, १४)।

लक्खणा स्त्री [लक्षणा] १ शब्द-वृत्ति विशेष, शब्द की एक शक्ति, जिससे मुख्य अर्थ के बाध होने पर भिन्न अर्थ की प्रतीति होती है (दे १, ३)। २ एक महौषधि (ती ५)।

लक्खणा स्त्री [लक्ष्मणा] १ आठवें जिनदेव की माता (सम १५१)। २ उसी जन्म में मुक्ति

रायाण देखो राय = राजन्, (हे ३, ५६, षड्)।

राल, रालग, रालय पुन [राल, °क] धान्य-विशेष, एक प्रकार की कंगु (सूअ २, २, ११, ठा ७—पत्र ४०५, पिंड १६२, वज्जा ३४)।

राला स्त्री [दे] प्रियगु, मालकाँगनी (दे ७, १)।

राव सक [दे] आर्द्र करना। भवि. रावेहिति (विसे २४६ टी)।

राव देखो रंज = रञ्जय्। रावेइ (हे ४, ४६)। हेकृ. राविउ (कुमा)।

राव सक [रावय्] पुकारना, आह्वान करना। वकृ. रावेंत (औप)।

राव पुं [राव] १ रोला, कलकल (पाअ)। २ पुकार, आवाज (सुपा ३४८, कुमा)।

रावण पु [रावण] १ एक स्वनाम प्रसिद्ध लका-पति (पि ३६०)। २ गुल्म-विशेष (पण्ण १—पत्र १२)।

राविअ वि [रञ्जित] रँगा हुआ (दे ७, ५)।

राविअ वि [दे] आस्वादित (दे ७, ५)।

रास, रासग पु [रास, °क] एक प्रकार का नृत्य, जिसमें एक दूसरे का हाथ पकडकर नाचते-नाचते और गान करते-करते मडलाकार फिरना होता है (दे २, ३८, पाअ, वज्जा १२२, सम्मत्त १४१, धर्मवि ८१)।

रासभ देखो रासह (सुर २, १०२)।

रासय देखो रासग (सुर १, ४६, सुपा ५०, ४३३)।

रासह पुंस्त्री [रासभ] गर्दभ, गदहा (पाअ, प्राप्र, रमा)। स्त्री °ही (काल)।

रासाणंदिअय न [रासानन्दितक] छन्द-विशेष (अजि १२)।

रासालुद्धय पुं [रासालुब्धक] छन्द-विशेष (अजि १०)।

रासि देखो रस्सि (संक्षि १७)।

रासि पुस्त्री [राशि] १ समूह, ढग, ढेर (ओघ ४०७, औप, सुर २, ५, कुमा)। २ ज्योतिष्क-प्रसिद्ध मेष आदि बारह राशि (विचार १०६)। ३ गणित-विशेष (ठा ४, ३)।

राह पुं [राध] १ वैशाख मास। २ वसन्त ऋतु (से १, १३)। ३ एक जैन आचार्य (उप २८५, सुख २, १५)।

राह पु [दे] १ दयित, प्रिय। २ वि. निरन्तर। ३ शोभित। ४ सनाथ। ५ पलित, सफेद केशवाला (दे ७, १३)। ६ रुचिर, सुन्दर (पाअ)।

राहअ, राहव पु [राघव] १ रघुवश में उत्पन्न (उत्तर २०)। २ श्रीरामचन्द्र (से १२, २२, १, १३, ४७)।

राहा स्त्री [राधा] १ वृन्दावन की एक प्रधान गोपी, श्रीकृष्ण की पत्नी (वज्जा १२२, पिंग)। २ राधावेध में रखी जाती पुतली (उप पृ १३०)। ३ शक्ति-विशेष। ४ कर्ण का पालन करनेवाली माता (प्राकृ ४२)। °मडव पुं [°मण्डप] जहां पर राधावेध किया जाय वह स्थान (सुपा २६६)। °वेह पु [°वेध] एक तरह की वेध-क्रिया, जिसमें चक्राकार घूमती पुतली की वाम चक्षु वींधी जाती है (उप ६३५, सुपा २५५)।

राहिआ, राही स्त्री [राधिका] ऊपर देखो (गा ८६, हे ४, ४४२, प्राकृ ४२)।

राहु पुं [राहु] १ ग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८, पाअ)। २ कृष्ण पुद्गल-विशेष (सुज्ज २०)। ३ विक्रम की पहली शताब्दी के एक जैन आचार्य (पउम ११८, ११७)।

राहुहय न [राहुहत] जिसमें सूर्य और चन्द्र का ग्रहण हो वह नक्षत्र (वव १)।

राहेअ पुं [राधेय] राधा-पुत्र, कर्ण (गउड)।

रि अ [रे] संभाषण-सूचक अव्यय (तंदु ५०, ५२ टी)।

रि सक [ऋ] गमन करना। कर्म. अज्जए (विसे १३६६)।

रिअ सक [री] गमन करना। रियइ, रियति, रिए (सूअ २, २, २०, सुपा ४४५, उत्त २४, ४)। वकृ. रियंत (पउम २८, ४)।

रिअ सक [प्र + विश्] प्रवेश करना, पैठना। रिअइ (हे ४, १८३, कुमा)।

रिअ न [ऋत] १ गमन, 'पुरओ रियं सोहमाणे' (भग)। २ सत्य (भग ८, ७)।

रिअ वि [दे] लून, काटा हुआ (षड्)।

रिउ देखो उउ (हे १, १४१, कुमा, पव १४१)।

रिउ वि [ऋजु] १ सरल, सीधा (सुपा ३४६)। २ न. विशेष पदार्थ, सामान्य-भिन्न वस्तु (पव २७०)। °सुत्त पुं [°सूत्र] नय-विशेष (विसे २२३१, २६०८)। देखो उज्जु।

रिउ पु [रिपु] शत्रु, वैरी, दुश्मन (सुर २, ६६, कुमा)। °महण पु [°मथन] राक्षस-वश का एक राजा (पउम ५, २६३)।

रिउ स्त्री [ऋच्] वेद का नियत अक्षर-पादवाला अश। °व्वेय पु [°वेद] एक वेद-ग्रंथ (णाया १, ५, कप्प)।

रिंखण न [रिङ्खण] सर्पण, गति, चाल (पउम २५, १२)।

रिंखि वि [रिङ्खिन्] चलनेवाला, 'गिद्धावरिंखि हदृग्गए (?गिद्धु व्व रिंखी हदग्गए)' (पिंड ४७१)।

रिंग देखो रिंग। रिंगइ, रिंगए (हे ४, २५६ टि, षड्, पिंग)। वकृ. रिंगत (हास्य १४६)।

रिंगण न [रिङ्गण] चलना, सर्पण (पव २)।

रिंगणी स्त्री [दे] वल्ली-विशेष, कण्टकारिका, गुजराती मे 'रिंगणी' (दे २, ४, उर २, ८)।

रिंगिअ न [दे] भ्रमण (दे ७, ६)।

रिंगिअ न [रिङ्गित] १ रेंगना, कच्छप की तरह हाथ के बल चलना। २ गुरु-वन्दन का एक दोष (गुभा २४)।

रिंगिसिया स्त्री [दे] वाद्य-विशेष (राज)।

रिंछ (अप) देखो रिच्छ = ऋक्ष (भवि)।

रिंछोली स्त्री [दे] पक्ति, श्रेणी (दे ७, ७, सुर ३, ३१, विसे १४३६ टी, पाअ, चेइय ४४, सम्मत्त १८८, धर्मवि ३७, भवि)।

रिंडी स्त्री [दे] कन्थाप्राया, कन्था की तरह का फटा-टूटा आच्छादन-वस्त्र (दे ७, ५)।

रिक्क वि [दे] स्तोक, थोडा (दे ७, ६)।

रिक्क देखो रित्त = रिक्त (आचा, पाअ, पउम ८, ११८, सुपा ४२२, चउ ३६)।

रिक्किअ वि [दे] शटित, सड़ा हुआ (दे ७, ७)।

रिक्ख अक [रिङ्ख्] चलना। वकृ. 'गिरिव्व अच्छिन्नपक्खो अंतरिक्खे रिक्खतो लक्खिज्जइ' (कुप्र ६७)।

लज्जु वि [लज्जावत्] लज्जावाला, 'एसणासमिओ लज्जू गामे अनियओ चरे' (उत्त ६, १७)।

लज्जु देखो रिज्जु = ऋजु (भग)।

लज्झ° देखो लभ।

लट्ट } न [दे] १ खसखस आदि का तेल
लट्टय } (पभा ३१)। २ कुसुम्भ, 'लट्टयवसणा' (दे ७, १७)।

लट्टा स्त्री [दे लट्टा] धान्य विशेष, कुसुम्भ धान्य (पव १५४)।

लट्टा स्त्री [लट्वा] १ वृक्ष-विशेष (कुमा)। २ कुसुम्भ (बृह १)। ३ गौरैया, पक्षि-विशेष। ४ भ्रमर, भौंरा। ५ वाद्य-विशेष (दे २, ५५)।

लट्ठ वि [दे] १ अन्यासक्त (दे ७, २६)। २ मनोहर, सुन्दर, रम्य (दे ७, २६, पाअ, णाया १, १, पण्ह १, ४, सुर १, २६, कुप्र ११, श्रु ६, पुप्फ ३४, सार्ध २१, धण ५, सुपा १५६)। ३ प्रियवद, प्रिय-भाषी (दे ७, २६)। ४ प्रधान, मुख्य, 'खमियव्वो अवराहो ममावि पाविट्ठलट्ठस्स' (उप ७२८ टी)। °दंत पुं [°दन्त] १ जैन मुनि (अनु १)। २ द्वीप-विशेष, एक अन्तर्द्वीप। ३ द्वीप-विशेष मे रहनेवाला मनुष्य (ठा ४, २—पत्र २२६, इक)।

लट्ठुरी स्त्री [दे] सुन्दर, रमणीय (कुप्र २१०)।

लट्ठि स्त्री [यष्टि] लाठी, छडी (औप, कुमा)।

लट्ठिअ न [दे] खाद्य-विशेष, 'जेट्ठाहि लट्ठिएण भोच्चा कज्ज साहिति' (सुज्ज १०, १७)।

लडह वि [दे] १ रम्य, सुन्दर (७, १७, सुपा ६, सिरि ४७, ८७५, गउड, औप, कप्प, कुमा, हेका २६५, सण, भवि)। २ सुकुमार, कोमल (काप्र ७६५, भवि)। ३ विदग्ध, चतुर (दे ७,१७)। ४ प्रधान, मुख्य (कुमा)।

लडहक्खमिअ वि [दे] विघटित, वियुक्त (दे ७, २०)।

लडहा स्त्री [दे] विलासवती स्त्री (षड्)।

लडाल देखो णडाल (प्राकृ ३७, पि २६०)।

लड्डिय न [दे] लाड, छोह, प्यार (भवि)।

लड्डुअ } पु [लड्डुक] लड्डू, मोदक
लड्डुग } (गा ६४१, प्रयौ ८३, कुप्र २०६, भवि, पउम ८४, ४, पिंड ३७७)।

लड्डुयार वि [लड्डुककार] लड्डू वनानेवाला, हलवाई (कुप्र २०६)।

लढ सक [स्मृ] स्मरण करना, याद करना। लढइ (हे ४, ७४)। वकृ. लढंत (कुमा)।

लढिअ वि [स्मृत] याद किया हुआ (पाअ)।

लण्ह वि [श्लक्ष्ण] १ चिकना, मसृण (सम १३७, ठा ४, २, औप, कप्पू)। २ अल्प, थोडा। ३ न लोहा, धातु-विशेष (हे २, ७७, प्राकृ १८)।

लत्त वि [लप्त, लपित] उक्त, कथित (सुपा २३४)।

लत्ता } स्त्री [दे] १ लात, पार्ष्णि-प्रहार
लत्तिआ } (सुपा २३८, ठा २, ३—पत्र ६३)। २ आतोद्य-विशेष (ठा २, ३, आचा २, ११, ३)।

लदण } (मा) देखो रयण = रत्न (अभि
लदन } १८४, प्राकृ १०२)।

लद्द सक [दे] भार भरना, बोझ डालना, लादना, गुजराती मे 'लादवु'। हेकृ. लद्देउं (सुपा २७५)।

लद्दण न [दे] भार-क्षेप लादना (स ५३७)।

लद्दी स्त्री [दे] हाथी आदि की विष्ठा, गुजराती मे 'लीद' (सुपा १३७)।

लद्ध वि [लब्ध] प्राप्त (भग, उवा, औप, हे ३, २३)।

लद्धि स्त्री [लब्धि] १ क्षयोपशम, ज्ञान आदि के आवारक कर्मो का विनाश और उपशान्ति (विसे २६६७)। २ सामर्थ्य-विशेष, योग आदि से प्राप्त होती विशिष्ट शक्ति (पव २७०, सबोध २८)। ३ अहिंसा (पण्ह २, १—पत्र ६६)। ४ प्राप्ति, लाभ (भग ८, २)। ५ इन्द्रिय और मन से होनेवाला विज्ञान, श्रुत ज्ञान का उपयोग (विसे ४६६)। ६ योग्यता (अणु)। °पुलाअ पु [°पुलाक] लब्धि-विशेष सपन्न मुनि, 'संघाइयाण कज्जे चुण्णिज्जा चक्कवट्टिमवि जीए। तीए लद्धीइ जुओ लद्धिपुलाओ' (संबोध २८)।

लद्धिअ वि [लब्ध] प्राप्त (वै ६६)।

लद्धिल्ल वि [लब्धिमत्] लब्धि-युक्त (पंच १, ७)।

लद्धु } देखो लभ।
लद्धूण }

लप्पसिया स्त्री [दे] लपसी, एक प्रकार का पक्वान्न (पव ४)।

लब्भ नीचे देखो।

लभ सक [लभ्] प्राप्त करना। लभइ, लभए (आचा, कस, विसे १२१५)। भवि लच्छिमि, लभिस्सं, लभिस्सामि (उव, महा, पि ५२५)। कर्म लज्झइ, लब्भइ (महा ६०, १६, हे १, १८७, ४, २४६, कुमा)। सकृ लभिय, लद्धु, लद्धूण (पच ५, १६४, आचा, काल)। हेकृ. लद्धु (काल)। कृ लब्भ (पण्ह २, १, विसे २८३७, सुपा ११, २३३, स १७५; सण)।

लय सक [ला] ग्रहण करना। लएइ, लयति (उव)। कर्म—लइज्जइ, लिज्जइ (भवि, सिरि ६६३)। वकृ. लयत (वज्जा २८, महा, सिरि ३७५)। सकृ लइ, लग्गवि, लएविणु (अप) (पिंग, भवि)। देखो ले = ला।

लय न [दे] नव-दम्पति का आपस मे नाम लेने का उत्सव (दे ७, १६)।

लय देखो लव = लव (गउड, से ५, १४)।

लय पु [लय] १ श्लेष। २ मन की साम्यावस्था (कुमा)। ३ लीनता, तल्लीनता। ४ तिरोभाव (विसे २६६६)। ५ सगीत का एक अंग, स्वर-विशेष (न ७०४, हास्य १२३)।

लय° देखो लया। °हरय न [°गृहक] लता-गृह (सुपा ३८१)।

लय पु [लय] तन्त्री का स्वन—ध्वनि-विशेष। °सम न [°सम] गेय काव्य का एक भेद (दसनि २, २३)।

लयग न [लताङ्ग] संख्या-विशेष, चौरासी लाख पूर्व, 'पुव्वाण सयसहस्स चुलसीइगुण लयंगमिह होइ' (जो २)।

लयण वि [दे] १ तनु, कृश, क्षाम (दे ७, २७, पाअ)। २ मृदु, कोमल। ३ न वल्ली, लता (दे ७, २७)।

लयण न [लयन] १ तिरोभाव, छिपना (विसे २८१७, दे ७, २४) २ अवस्थान (सुर ३, २०६)। ३ देखो लेण (राज)।

लयणी स्त्री [दे] लता, वल्ली (पाअ, षड्)।

रीड सक [मण्डय्] अलंकृत करना । रीडइ (हे ४, ११५) ।

रीडण न [मण्डन] अलंकरण (कुमा) ।

रीढ स्त्रीन [दे] अवगणन, अनादर (दे ७, ८) । स्त्री. °ढा (पाअ, धम्म ११ टी, पचा २, ८, वृह १) ।

रीण वि [रीण] १ क्षरित, स्तुत । २ पीडित (भत्त २) ।

रीर अक [राज्] शोभना, चमकना, दीपना । रीरइ (हे ४, १००) ।

रीरिअ वि [राजित] शोभित (कुमा) ।

रीरी स्त्री [रीरी] धातु-विशेष, पीतल (कुप्र ११, सुपा १४२) ।

रु स्त्री [रुज्] रोग, बीमारी, 'अरु (? रु) उवसग्गो' (तंदु ४६) ।

रुअ अक [रुद्] रोना । रुग्रइ (पड्, सक्षि ३६, प्राकृ ६८, महा) । भवि. रोच्छं (हे ३, १७१) । वकृ. रुअ°, रुअंत, रुयमाण (गा २१६, ३७६, ४००, सुर २, ६६, ११२, ४, १२६) । संकृ. रोत्तूण (कुमा, प्राकृ ३४) । हेकृ रोत्तुं (प्राकृ ३४) । कृ. रोत्तव्व (हे ४, २१२, से ११, ६२) । प्रयो. रुयावेइ (महा), रुआवति (पुप्फ ४४७) ।

रुअ न [रुत] शब्द, आवाज (से १, २८, णाया १, १३, पव ७३ टी) ।

रुअ देखो रूअ = रूप (इक) ।

रुअ देखो रूअ = (दे) (औप) ।

रुअती स्त्री [रुदती] वल्ली-विशेष (संबोध ४७) ।

रुअस देखो रुअस (इक) ।

रुअग पुं [रुचक] १ कान्ति, प्रभा (पराह १, ४—पत्र ७८, औप) । २ पर्वत-विशेष, 'नगुत्तमो होइ पव्वओ रुयगो' (दीव) । ३ द्वीप-विशेष (दीव) । ४ एक समुद्र (सुज्ज १६) । ५ एक विमानावास—देव-विमान (देवेन्द्र १३२) । ६ न. इन्द्रों का एक आभाव्य विमान (देवेन्द्र २६३) । ७ रत्न-विशेष (उत्त ३६, ७६, सुख ३६, ७६) । ८ रुचक पर्वत का पाँचवाँ कूट (दीव) । ९ निषध पर्वत का आठवाँ कूट (इक) । °प्पभ न [°प्रभ] महाहिमवत पर्वत का एक कूट (ठा २, ३) । °वर पु [°वर] १ द्वीप-विशेष (सुज्ज १६) । २ पर्वत-विशेष (पराह २, ४—पत्र १३०) । ३ समुद्र-विशेष । ४ रुचकवर समुद्र का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३—पत्र ३६७) । °वरभद्द पुं [°वरभद्र] रुचकवर द्वीप का अधिष्ठायक एक देव (जीव ३—पत्र ३६६) । °वरमहाभद्द पु [°वर-महाभद्र] वही अर्थ (जीव ३) । °वरमहावर पुं [°वरमहावर] रुचकवर समुद्र का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३) । °वरावभास पुं [°वरावभास] १ द्वीप-विशेष । २ समुद्र-विशेष (जीव ३) । °वरावभासभद्द पुं [°वरावभासभद्र] रुचकवरावभास द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३) । °वरावभास-महाभद्द पुं [°वरावभासमहाभद्र] वही अर्थ (जीव ३) । °वरावभासमहावर पु [°वरावभासमहावर] रुचकवरावभास नामक समुद्र का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३) । °वरावभासवर पु [°वरावभासवर] वही अर्थ (जीव ३—पत्र ३६७) । °वरोद पुं [°वरोद] समुद्र-विशेष (सुज्ज १६) । °वरोभास देखो °वरावभास (सुज्ज १६) । °विई स्त्री [°विनी] एक इन्द्राणी (णाया २—पत्र २५२) । °ोद पु [°ोद] समुद्र-विशेष (जीव ३—पत्र ३६६) ।

रुअगिंद पुं [रुचकेन्द्र] पर्वत-विशेष (सम ३३) ।

रुअगुत्तम न [रुचकोत्तम] कूट-विशेष (इक) ।

रुअण न [रोदन] रुदन, रोना (संबोध ४) ।

रुअय देखो रुअग (सम ६२) ।

रुअरुइआ स्त्री [दे] उत्कण्ठा (दे ७, ८) ।

रुआ स्त्री [रुज्] रोग, बीमारी (उव, धर्मसं ५६८) ।

रुआविअ वि [रोदित] रुलाया हुआ (गा ३८६) ।

रुइ स्त्री [रुचि] १ कान्ति, प्रभा, तेज (सुर ७, ४, कुमा) । २ अनुराग, प्रेम (जो ५१) । ३ आसक्ति (प्रासु १६६) । ४ स्पृहा, अभि-लाप । ५ शोभा । ६ बुभुक्षा, खाने की इच्छा । ७ गोरोचना (षड्) ।

रुइअ वि [रुचित] १ अभीष्ट, पसंद (सुर ७, २४३, महा) । २ पुंन. विमानावास-विशेष, एक देव-विमान (देवेन्द्र १३२) ।

रुइअ देखो रुण्ण = रुदित (स १२०) ।

रुइर वि [रुचिर] १ सुन्दर, मनोरम (पाअ) । २ दीप्र, कान्ति-युक्त (तंदु २०) । ३ पुंन. एक विमानेन्द्रक, देवविमान-विशेष (देवेन्द्र १३१) ।

रुइर वि [रोदितृ] रोनेवाला । स्त्री. °री (पि ५६६, गा २१६ अ) ।

रुइल वि [°रुचिर, °ल] १ शोभन, सुन्दर (औप, णाया १, १ टी, तंदु २०) । २ दीप्त, चमकता हुआ (पराह १, ४—पत्र ७८, सूअ २, १, ३) । ३ पुन. एक देव-विमान (सम ३८) ।

रुइल्ल न [रुचिर, रुचिमत्] एक देव-विमान (सम १५) । °कंत न [°कान्त] एक देव-विमान (सम १५) । °कूड न [°कूट] एक देव-विमान (सम १५) । °ज्झय न [°ध्वज] देवविमान-विशेष (सम १५) । °प्पभ न [°प्रभ] एक देवविमान (सम १५) । °लेस न [°लेश्य] एक देवविमान (सम १५) । °वण्ण न [°वर्ण] देवविमान-विशेष (सम १५) । °सिंग न [°शृङ्ग] एक देवविमान (सम १५) । °सिट्ठ न [°सृष्ट] एक देवविमान (सम १५) । °विक्त न [°विर्त्त] एक देवविमान (सम १५) ।

रुइल्लुत्तरवडिंसग न [रुचिरोत्तरावतंसक] एक देवविमान (सम १५) ।

रुंच सक [रुञ्च्] रुई से उसके बीज को अलग करने की क्रिया करना । वकृ रुंचत (पिंड ५७४) ।

रुंचण न [रुञ्चन] रुई से कपास को अलग करने की क्रिया (पिंड ५८८) ।

रुंचणी स्त्री [दे] घरट्टी, दलने का पत्थर-यन्त्र (दे ७, ८) ।

रुंज अक [रु] आवाज करना । रुंजइ (हे ४, ५७, षड्) ।

रुंजग पुं [दे रुञ्जक] वृक्ष, पेड, गाछ 'कुट्टा महीरुहा वच्छा रोवगा रुंजगाइ अ' (दसनि १) ।

लह्ग पु [दे] वासी अन्न में पेदा होनेवाला द्वीन्द्रिय कीट-विशेष (जी १५)।

लह्ण न [लभन] १ लाभ, प्राप्ति। २ ग्रहण, स्वीकार (श्रा १४)।

लहर पुं [लहर] एक वणिक् पुत्र (सुपा ६१७)।

लहरि } स्त्री [लहरि, °री] तरंग, कल्लोल
लहरी } (सण, प्रासू ६६, कुमा)।

लहाविअ वि [लम्भित] प्रापित, प्राप्त कराया हुआ (कुप्र २३२)।

लहिअ देखो लद्ध (कप्प, पिंग)।

लहिम देखो लघिम (षड्)।

लहु } वि [लघु] १ छोटा, जघन्य (कुमा,
लहुअ } सुपा ३६०, कम्म ४, ७२, महा)। २ हलका (से ७, ४४, पाअ)। ३ तुच्छ, निःसार (पण्ह १, २—पत्र २८, पण्ह २, २—पत्र ११६)। ४ श्लाघनीय, प्रशंसनीय (से १२, ५३)। ५ थोडा, अल्प (सुपा ३५४)। ६ मनोहर सुन्दर (हे २, १२२)। स्त्री °ई, °वी (षड्, प्राकृ २८, गउड, हे २, ११३)। ७ न. कृष्णागुरु, सुगन्धि धूप-द्रव्य विशेष। ८ वीरण-मूल (हे २, १२२)। ९ शीघ्र जल्दी (द्र ४६, पण्ह २, २—पत्र ११६)। १० स्पर्श-विशेष (अणु)। ११ लघुस्पर्श नामक एक कर्मभेद (कम्म १, ४१)। १२ पुं एक मात्रावाला अक्षर (हे ३, १३४)। °कम्म वि [°कर्मन्] जिनके अल्प ही कर्म अवशिष्ट रहे हो, शीघ्र मुक्ति-गामी (सुपा ३५४)। °करण न [°करण] दक्षता, चातुरी (णाया १, ३—पत्र ९२, उवा)। °परक्कम पु [°पराक्रम] ईशानेन्द्र का एक पदाति-सेनापति (ठा ५, १—पत्र ३०३, इक)। °सखिज्ज न [°सख्येय] सख्या-विशेष, जघन्य संख्यात (कम्म ४, ७२)।

लहुअ सक [लघय्, लघु + कृ] लघु करना, छोटा करना। लहुअति, लहुएमि (श्रा २०, गा ३४५)। वकृ. लहुअत (से १५, २७)।

लहुअवड पुं [दे] न्यग्रोध वृक्ष, वरगद का पेड (दे ७, २०)।

लहुआइअ } वि [लघूकृत] लघु किया
लहुइअ } हुआ (से ६, ४, १२, ५४, स २०७, गउड)।

लहुई देखो लहु।

लह्ग देखो लहु (कप्प, द्र ५८)।

लहुवी देखो लहु।

लाइअ वि [लागित] लगाया हुआ (से २, २६, वज्जा ५०)।

लाइअ वि [दे] १ गृहीत, स्वीकृत (दे ७, २७)। २ घृष्ट (से २, २६)। ३ न. भूषा, मण्डन (दे ७, २७)। ४ भूमि को गोवर आदि से लीपना (सम १३७, कप्प, औप, णाया १, १ टी—पत्र ३)। ५ चर्मार्ध, आधा चमडा (दे ७, २७)।

लाइअव्व देखो लाय = लावय्।

लाइज्जंत देखो लाय = लागय्।

लाइम वि [लव्य] काटने योग्य (दस ७, ३४)।

लाइम वि [दे] १ लाजा के योग्य, खोई के योग्य। २ रोपण के योग्य, बोने लायक (आचा २, ४, २, १५)।

लाइल्ल पु [दे] वृषभ, बैल (दे ७, १९)।

लाउ देखो अलाउ (हे १, ६६, भग, कस, औप)।

लाउल्लोइय न [दे] गोमय आदि से भूमि का लेपन और खडी आदि से भीत आदि का पोतना (राय ३५)।

लाऊ देखो अलाऊ (हे १, ६६, कुमा)।

लाख (अप) देखो लक्ख = लक्ष (पिंग)।

लाग पु [दे] चुंगी, एक प्रकार का सरकारी कर, लगान, गुजराती मे 'लागो' (सिरि ४३३, ४३४)।

लाघव न [लाघव] लघुता, छोटाई, लघुपन (भग, कप्प, सुपा १०३, कुप्र २७७, किरात १६)।

लाघवि वि [लाघविन्] लघुता-युक्त, लाघव-वाला (उत्त २९, ४२, आचा)।

लाघविअ न [लाघविक] लघुता, छोटापन, लाघव (ठा ५, ३—पत्र ३४२, विसे ७ टी, सूअ २, १, ५७, भग)।

लाज देखो लाय = लाज (दे ५, १०)।

लाड पुं [लाट] देश-विशेष (सुपा ६५८, कुप्र २५४, सत्त ६७ टी, भवि, सण, इक)।

लाडी स्त्री [लाटी] लिपि विशेष (विसे ४६४ टी)।

लाढ पुं [लाढ] देश-विशेष, एक आर्य देश (आचा, पव २७५, विचार ४९)।

लाढ वि [दे] १ निर्दोष आहार से आत्मा का निर्वाह करनेवाला, संयमी, आत्म-निग्रही (सूअ १, १०, ३, सुख २, १८)। २ प्रधान, मुख्य (उत्त १५, २)। ३ पुं एक जैन आचार्य (राज)।

लाढ वि [दे] श्रेष्ठ, उत्तम (आचा २, ३, १, ५)।

लाण न [लान] ग्रहण, आदान (से ७, ६०)।

लावू देखो लाऊ (षड्)।

लाभ पु [लाभ] १ नफा, फायदा (उव, सुख ८, १३)। २ प्राप्ति (ठा ३, ४)। ३ सूद, व्याज (उप ९५७)।

लाभतराइय न [लाभान्तरायिक] लाभ का प्रतिबन्धक कर्म (धर्मसं ९४८)।

लाभिय } वि [लाभिक] लाभ-युक्त, लाभ-
लाभिल्ल } वाला (औप, कर्म १७)।

लाम वि [दे] रम्य, सुन्दर (औप)।

लामजय न [दे] तृण-विशेष, उशीर तृण, खस—गाँडर घास की जड (पाअ)।

लामा स्त्री [दे] डाकिनी, डाइन (दे ७, २१)।

लाय सक [लागय्] लगाना, जोडना। लाएसि (विसे ४२३)। वकृ लायंत (भवि)। कवकृ. लाइज्जत (से १३, १३)। संकृ. लाइवि (अप) (हे ४, ३३१, ३७८)।

लाय सक [लावय्] १ कटवाना। २ काटना, छेदना। कृ लाइअव्व (से १५, ७५)।

लाय देखो लाइअ = (दे), 'लाउल्लोइय' (औप)।

लाय वि [लात] १ आत्त, स्वीकृत, गृहीत। २ न्यस्त, स्थापित (औप)। ३ न. लग्न का एक दोष, 'लायाइदोसमुक्कं नरवर ग्रहलोहण लग्गं' (सुपा १०८)।

लाय पुस्त्री [लाज] १ आर्द्र तण्डुल। २ व. भ्रष्ट धान्य, भुंजा हुआ नाज, खोई (कप्पू)।

लायण न [लागन] लगवाना (गा ४५८)।

लायण्ण न [लावण्य] १ शरीर-सौन्दर्य विशेष, शरीरकान्ति (पाअ, कुमा, सण, पि १८६)। २ लवणत्व, क्षारत्व (हे १, १७७, १८०)।

लाल सक [लालय्] स्नेह-पूर्वक पालन करना। लालंति (तंदु ५०)। कवकृ. लालिज्जंत (सुर २, ७३, सुपा २४)।

रुप्प न [रूप्य] चाँदी, रजत (औप, सुर ३, ६, कप्पू)। °कूड पु [°कूट] रुक्मि पर्वत का एक कूट (राज)। °कूलप्पवाय पुं [°कूलप्रपात] द्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७३)। °कूला स्त्री [°कूला] १ एक महानदी (ठा २, ३—पत्र ७२, ८०, सम २७, इक)। २ एक देवी। ३ रुक्मि पर्वत का एक कूट (जं ४)। °मय वि [°मय] चाँदी का बना हुआ (णाया १, १—पत्र ५२, कुमा)। °भास पुं [°भास] एक ज्योतिष्क महा-ग्रह (ठा २, ३—पत्र ७८)।

रुप्प वि [रौप्य] रूपा का, चाँदी का (णाया १, १—पत्र २४, उर ८, ४)।

रुप्पय देखो रुप्प = रूप्य, 'रुप्पयं रययं' (पाअ, महा)।

रुप्पि पुं [रुक्मिन्] १ कौण्डिन्य नगर का एक राजा, रुक्मिणी का भाई (णाया १, १६—पत्र २०६, कुमा, रुक्मि ४२)। २ कुणाल देश का एक राजा (णाया १, ८—पत्र १४०)। ३ एक वर्षधर-पर्वत (ठा २, ३—पत्र ६६, सम १२, ७२)। ४ एक ज्योतिष्क महा-ग्रह (ठा २, ३—पत्र ७८)। ५ देव-विशेष (ज ४)। ६ रुक्मि पर्वत का एक कूट (ज ४)। ७ त्रि सुवर्णवाला। ८ चाँदी वाला (हे २, ५२, ८९)। °कूड पुन [°कूट] रुक्मि पर्वत का एक कूट (ठा २, ३, सम ६३)।

रुप्पिणी स्त्री [रुक्मिणी] १ द्वितीय वासुदेव की एक पटरानी (पउम २०, १८६)। २ श्रीकृष्ण वासुदेव की एक अग्र-महिषी (पउम २०, १८७, पडि)। ३ एक श्रेष्ठि-पत्नी (सुपा ३३४)।

रुप्पोभास पुं [रूप्यावभास] १ एक महाग्रह (सुज्ज २०)। २ वि. रजत की तरह चमकता (जं ४)।

रुब्भत, रुब्भमाण देखो रुंध।

रुम्मिणी देखो रुप्पिणी (षड्)।

रुम्ह सक [म्लापय्] म्लान करना, मलिन करना। 'प-रुम्हाइ जसं' (से ३, ४)।

रुरु पु [रुरु] १ मृग-विशेष (पउम ६, ५६, पएह १, १—पत्र ७)। २ वनस्पति-विशेष (पएण १—पत्र ३५)। ३ एक अनार्य देश। ४ एक अनार्य मनुष्य-जाति (पएह १, १—पत्र १४)।

रुरुअ अक [रोरूय्] १ खूब आवाज करना। २ बारंबार चिल्लाना। वकृ. रुरुवेंत (स २१३)।

रुल अक [लुठ्] लेटना। वकृ. रुलंत, रुलिंत (पएह १, ३—पत्र ४५, 'पडियगय-घडतुरयं रुलंतवरसुहडघडसयाइन्नं' (धर्मवि ८०)।

रुलुघुल अक [दे] नीचे साँस लेना, निःश्वास डालना। वकृ. रुलुघुलत (भवि)।

रुव देखो रुअ = रुद्। रुवइ (हे ४, २२६; प्राकृ ६८, संक्षि ३६, भवि, महा), रुवामि (कुप्र ६६)। कर्म. रुव्वइ, रुविज्जइ (हे ४, २४६)।

रुवण न [रोदन] रोना (उप ३३५)।

रुवणा स्त्री. ऊपर देखो (ओघभा ३०)।

रुवणा स्त्री [रोवणा] आरोपणा, प्रायश्चित्त का एक भेद (वव १)।

रुविल देखो रुइल (औप)।

रुव्व देखो रुअ = रुद्। रुव्वइ (संक्षि ३६, प्राकृ ६८)।

रुसा स्त्री [रोष] रोष, गुस्सा (कुमा)।

रुसिय देखो रुसिअ (पउम ५५, १५)।

रुह अक [रुह्] १ उत्पन्न होना। २ सक. घाव को सुखाना। रुहइ (नाट)। कर्म 'जेण विदारियट्ठीवि खग्गाइपहारो इमीए पक्खालणोयएणंपि पणट्ठवेयणो तक्खणा चेव रुज्झइ त्ति' (स ४१३)।

रुह वि [रुह] उत्पन्न होनेवाला (आचा)।

रुहण न [रोधन] निवारण (वव १)।

रुहरुह अक [दे] मन्द मन्द बहना, 'वामगि सुत्ति रुहरुहइ वाउ' (भवि)।

रुहुरुहय पुं [दे] उत्कण्ठा (भवि)।

रूअ न [दे रूत] रुई, तूल (दे ७, ६, कप्प, पव ८४, देवेन्द्र ३३२, धर्मसं ६८०, भग, संबोध ३१)।

रूअ पु [रूप] १-२ पूर्णभद्र और विशिष्ट नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६७)। ३ आकृति, आकार (गा १३२)। ४ वि. सदृश, तुल्य (दे ६, ४६)। °कंत पुं [°कान्त] १-२ पूर्णभद्र और विशिष्ट नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १)। °कंता स्त्री [°कान्ता] १ भूतानन्द नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी (णाया २—पत्र २५२)। २ एक दिक्कुमारी-महत्तरिका (राज)। °प्पभ पु [°प्रभ] पूर्णभद्र और विशिष्ट नामक एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६७, १६८)। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] १ भूतानन्द इन्द्र की एक अग्र-महिषी [णाया २—पत्र २५२)। २ एक दिक्कुमारी देवी (ठा ६—पत्र ३६१)। देखो रूव = रूप (गउड)।

रूअस पु [रूपांश] १-२ पूर्णभद्र और विशिष्ट इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६७, १६८)।

रूअंसा स्त्री [रूपांशा] १ भूतानन्द इन्द्र की एक अग्र-महिषी (णाया २—पत्र २५२)। २ एक दिक्कुमारी देवी (ठा ६—पत्र ३६१)।

रूअग, रूअय पुंन [रूपक] १ रुपया (हे ४, ४२२)। २ पु. एक गृहस्थ (णाया २—पत्र २५२)। ३ रूपा देवी का सिंहासन (णाया २—पत्र २५२)। °वडिंसय न [°वतंसक] रूपा देवी का भवन (णाया २)। °सिरी स्त्री [°श्री] एक गृहस्थ स्त्री (णाया २)। °वई स्त्री [°वती] भूतानन्द नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी (णाया २)। देखो रूवय = रूपक।

रूअरूइआ [दे] देखो रुअरुइआ (षड्)।

रूआ स्त्री [रूपा] १ भूतानन्द इन्द्र की एक अग्र-महिषी (णाया २—पत्र २५२)। २ एक दिक्कुमारी देवी (ठा ४, १—पत्र १६८)।

रूआमाला स्त्री [रूपमाला] छन्द-विशेष (पिंग)।

रूआर वि [रूपकार] मूर्त्ति बनानेवाला, 'मोत्तुमजोग्गं जोग्गे दलिए रूवं करेइ रूआरो' (विसे १११०)।

रूआवई स्त्री [रूपवती] एक दिक्कुमारी देवी (ठा ४, १—पत्र १६८)।

रूढ वि [रूढ] १ परंपरागत, रूढि-सिद्ध। २ प्रसिद्ध, 'रूढक्कमेण सव्वे नराहिवा तत्थ उवविट्ठा' (उप ६४८ टी)। ३ प्रगुण, तंदुरुस्त (पाअ)।

लिव पुं [निम्ब] वृक्ष-विशेष, नीम का पेड, मराठी में 'लिंव' (हे १, २३०, कुमा, स ८५)।

लिंव वि [दे] १ कोमल। २ नम्र (राय ३५)।

लिंव पुं [दे. लिम्ब] आस्तरण-विशेष (णाया १, १—पत्र १३)।

लिंवड (अप) देखो लिंव = निम्ब, गुजराती में 'लिवडो' (हे ४, ३८७, पि २४७)।

लिंवोहली स्त्री [दे] निम्ब-फल (सूक्त ८६)।

लिकार देखो लिआर (पि ५६)।

लिक्क अक [नि + ली] छिपना। लिक्कइ (हे ४, ५५, षड्)। वकृ लिक्कत (कुमा)।

लिक्ख न [लेख्य] लेखा, हिसाव, 'लिक्ख गरिणऊरण चितए सिट्ठी' (सिरि ४१८, सुपा ४२५)। देखो लेक्ख।

लिक्ख स्त्रीन [दे] छोटा स्रोत (दे ७, २१)। स्त्री. °क्खा (दे ७ २१)।

लिक्खा स्त्री [लिक्षा] १ लघु यूका, छोटा जूँ, लीख—सर के वालो में होता कीडा (दे ८, ६६, स ६७)। २ परिमाण-विशेष (इक)।

लिखाप (अशो) सक [लेखय्] लिखवाना। भवि लिखापयिस्सं (पि ७)।

लिखापित (अशो) वि [लेखित] लिखवाया हुआ (पि ७)।

लिच्छ सक [लिप्स्] प्राप्त करने को चाहना। लिच्छइ (हे २, २१)।

लिच्छ देखो लिंछ (ठा ८—पत्र ४३७)।

लिच्छवि देखो लेच्छइ = लेच्छकि (अत)।

लिच्छा स्त्री [लिप्सा] लाभ की इच्छा (उप ६३०, प्राकृ २३)।

लिच्छु वि [लिप्सु] लाभ की चाहवाला (सुख ६, १, कुमा)।

लिज्जिअ (अप) वि [लात] गृहीत (पिंग)।

लिट्टिअ न [दे] १ चाटु, खुशामद (दे ७, २२)। २ वि लम्पट, लोलुप (सुपा ५६३)।

लिट्टु देखो लेट्टु (वसु)।

लित्त वि [लिप्त] १ लेप-युक्त, लिपा हुआ (हे १, ६, कुमा, भवि)। २ सवेष्टित (सूत्र १, ३, ३, १३)।

लित्ति पुंस्त्री [दे] खड्ग आदि का दोष (दे ७, २२)।

लिप्प देखो लित्त (गा ५१६, गउड)।

लिप्प देखो लेप्प (कुप्र ३८४)।

लिप्पत } देखो लिंप।
लिप्पमाण }

लिप्पासण न [लिप्यासन] मसी-भाजन, दोत, दोमात, दावात (राय ६६)।

लिब्भत देखो लिह = लिह्।

लिल्लिर वि [दे] १ हरा, आर्द्र। २ हरा रँगवाला, 'अइलिल्लिरपट्टवघणमिसेण चोरसु पट्टवधं व जो फुड तत्य उव्वहइ' (धर्मवि ७३)।

लिवि } स्त्री [लिपि, °पी] अक्षर-लेखन प्रक्रिया (सम ३५, भग)।
लिवी }

लिस अक [स्वप्] सोना, सूतना, शयन करना। लिसइ (हे ४, १४६)।

लिस सक [श्लिष्] आलिंगन करना। भवि. लिसिस्सामो (सूत्र २, ७, १०)।

लिसय वि [दे] तनूकृत, क्षीण (दे ७, २२)।

लिस्स देखो लिस = श्लिष्। लिस्सति (सूत्र १, ४, १, २)।

लिह सक [लिख्] १ लिखना। २ रेखा करना। लिहइ (हे १, १८७, प्राकृ ७०)। कर्म लिक्खइ (उव)। प्रयो. लिहावेइ, लिहावंति (कुप्र २४८, सिरि १२७८)।

लिहि सक [लिह्] चाटना। लिहइ (कुमा, प्राकृ ७०)। कर्म. लिहिज्जइ, लिब्भइ (हे ४, २४५)। वकृ. लिहंत (भत्त १४२)। कवकृ लिब्भंत (से ६, ४१)। कृ. लेज्झ (णाया १, १७—पत्र २३२)।

लिहण न [लेहन] चाटन (उर १, ८, षड्, रंभा १६)।

लिहण न [लेखन] १ लिखना, लेख (कुप्र ३६८)। २ रेखा करण (तंदु ५०)। ३ लिखवाना, 'पवयणलिहरण सहस्से लक्खे जिणभवणकारवण' (सबोध ३६)।

लिहा स्त्री [लेखा] देखो रेहा = रेखा, 'इक्क चिय मह भइणी मयणा धन्नाण धू (? धु)रि लहइ लिह' (सिरि ६७७)।

लिहावण न [लेखन] लिखवाना (उप ७२४)।

लिहाविय वि [लेखित] लिखवाया हुआ (स ६०)।

लिहिअ वि [लिखित] १ लिखा हुआ (प्रासू ५८)। २ उल्लिखित (उवा)। ३ रेखा किया हुआ, चित्रित (कुमा)।

लिहुणअ (अप) वि [लात] लिया हुआ, गृहीत (पिंग)।

लीढ वि [लीढ] १ चाटा हुआ (सुपा ६५१)। २ स्पृष्ट, 'नरिंदसिरि (? सिर) कुसुमलीढपायवीढ' (कुप्र ५)। ३ युक्त (पव १२५)।

लीण वि [लीन] लय-युक्त (कुमा)।

लील पु [दे] यज्ञ (दे ७, २३)।

लीला स्त्री [लीला] १ विलास, मौज। २ क्रीडा (कुमा, पाअ, प्रासू ६१)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)। °वई स्त्री [°वती] १ विलासवती स्त्री (प्रासू ६१)। २ छन्द विशेष (पिंग)। °वह वि [°वह] लीला-वाहक (गउड)।

लीलाइअ न [लीलायित] १ क्रीडा, केलि (कप्पू)। २ प्रभाव, 'धम्मस्स लीलाइय' (उप १०३१ टी)।

लीलाय सक [लीलाय्] लीला करना। वकृ लीलायत (णाया १, १—पत्र १३, कप्प)। कृ लीलाइयव्व (गउड)।

लीव पु [दे] वाल, वालक (दे ७, २२, सुर १५, २१८)।

लीहा देखो लिहा (णाया १, ८—पत्र १४५, कुमा, भवि, सुपा १०६, १२४)।

लुअ सक [लू] छेदना, काटना। लुएज्जा (पि ४७३)।

लुअ देखो लुंप। लुअइ (प्राकृ ७१)।

लुअ वि [लून] काटा हुआ, छिन्न (हे ४, २५८, गा ८, गा ८, से ३, ४२, दे ७, २३, सुर १३, १७५, सुपा ५२४)।

लुअ वि [लुप्त] १ जिसका लोप किया गया हो वह। २ न. लोप (प्राकृ ७७)।

लुअत वि [लूनवत्] जिसने छेदन किया हो वह (धात्वा १५१)।

लुंक वि [दे] सुप्त, सोया हुआ (दे ७, २३)।

लुकणी स्त्री [दे] लुकना, छिपना (दे ७, २४)।

लुंख पु [दे] नियम (दे ७, २३)।

लुंखाय पुं [दे] निर्णय (दे ७, २३)।

रेसणिआ } स्त्री [दे] १ करोटिका, एक
रेसणी } प्रकार का कास्य-भाजन (पाअ, दे ७, १५)। २ अक्षि-निकोच (दे ७, १५)।

रेसम्मि देखो रेसंम्मि, 'जो उण सद्धा-रहिओ दाणं देइ जसकित्तिरेसम्मि' (स १५७)।

रेसि (अप) देखो रेसिं (हे ४, ४२५, सण)।

रेसिअ वि [दे] छिन्न, काटा हुआ (दे ७, ६)।

रेसिं (अप) नीचे देखो (हे ४ ४२५)।

रेसिम्मि अ निमित्त, लिए, वास्ते, 'दसरण-नाणचरित्ताण एस रेसिम्मि मुपसत्थो' (पचा १६, ४०)।

रेह अक [राज्] दीपना, शोभना, चमकना। रेहइ, रेहए (हे ४, १००, धात्वा १५०, महा)। वकृ रेहंत (कप्प)।

रेहा स्त्री [रेखा] १ चिह्न-विशेष, लकीर (ओघ ४८६, गउड, सुपा ४१, वज्जा ६४)। २ पंक्ति, श्रेणि (कप्पू)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)।

रेहा स्त्री [राजना] शोभा, दीप्ति (कप्पू)।

रेहिअ न [दे] छिन्न पुच्छ, कटी हुई पूँछ (दे ७, १०)।

रेहिअ वि [राजित] शोभित (सुर १०, १८६)।

रेहिर वि [रेखावत्] रेखावाला (हे २, १५६)।

रेहिर } वि [राजितृ] शोभनेवाला (सुर
रेहिल्ल } १, ५०, सुपा ५६), 'नयरे नयरेहिल्ले' (उप ७२८ टी)।

रेहिल्ल देखो रेहिर = रेखावत् (उप ७२८ टी)।

रोअ देखो रुअ = रुद्। रोअइ (संक्षि ३६, प्राकृ ३८)। वकृ. रोअंत, रोयमाण (गा ५४६, उप पृ १२८, सुर २, २२६)। हेकृ रोउ (संक्षि ३७)। कृ रोअव्वअ, रोइअव्व (से ३, ४८, गा ३४८, हेका ३३)।

रोअ देखो रुच्च = रुच्। रोयइ, रोयए (भग, उव), 'रोएइ ज पहूण त चेव कुणाति सेवगा निच्चं' (रंभा)। वकृ रोयंत (श्रा ६)।

रोअ सक [रोचय्] १ रुचि करना। २ पसन्द करना, चाहना। रोयइ, रोएमि, रोएहि (उत्त १८, ३३, भग)। संकृ. रोयइत्ता (उत्त २६, १)।

रोअ सक [रोचय्] निर्णय करना। रोअए (दस ५, १, ७७)।

रोअ पुं [रोच] रुचि,
'दुक्कररोया विउमा बाला
मणियेपि नेव बुज्झति।
तो मज्झिमबुद्धीण हियत्थमेसो
पयासो मे' (चेइय २६०)।

रोअ पु [रोग] आमय, बीमारी (पाअ)।

रोअग वि [रोचक] १ रुचि-जनक। २ न. सम्यक्त्व का एक भेद (संबोध ३५, सुपा ५५१)।

रोअण न [रोदन] रोना, रुदन (दे ५, १०; कुप्र २३५, २८६)।

रोअण पु [रोचन] १ एक दिग्हस्ति-कूट (इक)। २ न. गोरोचन (गउड)।

रोअणा स्त्री [रोचना] गोरोचन (से ११, ४५, गउड)।

रोअणिआ स्त्री [दे] डाकिनी, डाइन (दे ७, १२, पाअ)।

रोअत्तअ देखो रोअ = रुद।

रोआविअ वि [रोदित] रुलाया हुआ (गा ३५७, सुपा ३१७)।

रोइ वि [रोगिन्] रोगवाला, बीमार (गउड)।

रोइ देखो रुइ = रुचि, 'अवि सुदरेवि दिण्णे दुक्कररोई कलहमाई' (पिंड ३२१)।

रोइअ वि [रोचित] १ पसद आया हुआ (भग)। २ चिकीर्षित (ठा ६—पत्र ३५५)।

रोइर वि [रोदितृ] रोनेवाला (गा ३८६, पड्)।

रोंकण वि [दे] रंक, गरीब (दे ७, ११)।

रोंच सक [पिष्] पीसना। रोंचइ, (हे ४, १८५)।

रोक्कअ वि [दे] प्रोक्षित, अति सिक्त (पड्)

रोक्कणि } वि [दे] १ शृगी, शृंगवाला।
रोक्कणिअ } २ नृशंस, निर्दय (दे ७, १६)।

रोग पु [रोग] १ बीमारी, व्याधि (उवा, पण्ह १, ४)। २ एक ब्राह्मण-जातीय श्रावक (उप ५३६)।

रोगि वि [रोगिन्] बीमार (सुपा ५७६)।

रोगिअ वि [रोगिक, °त] ऊपर देखो (सुख १, १४)।

रोगिणिआ स्त्री [रोगिणिका] रोग के कारण ली जाती दीक्षा (ठा १०—पत्र ४७३)।

रोगिल्ल देखो रोगि (प्रामा)।

रोघस वि [दे] रक, गरीब (दे ७, ११)।

रोच्च देखो रोंच। रोच्चइ (पड्)।

रोज्झ पुं [दे] ऋश्य, पशु-विशेष; गुजराती मे 'रोझ' (दे ७, १२, विपा १, ४, पाअ)।

रोट्ट पुंन [दे] १ तदुल पिष्ट, चावल आदि का आटा, पिसान, गुजराती मे 'लोट' (दे ७, ११, ओघ ३६३, ३७४, पिंड ४४, बृह १)।

रोट्टग पु [दे] रोटी, रोट (महा)।

रोड सक [दे] १ रोकना, अटकाना। २ अनादर करना। ३ हेरान करना। रोडिसि (स ५७५)। कवकृ. रोडिज्जत (उप पृ १३३)।

रोड न [दे] घर का मान, गृह-प्रमाण (दे ७, ११)।

रोडी स्त्री [दे] १ इच्छा, अभिलाषा। २ व्रणी की शिबिका (दे ७, १५)।

रोत्तव्व देखो रुअ = रुद।

रोद्द पु [रौद्र] १ अहोरात्र का पहला मुहूर्त (सम ५१)। २ एक नृपति, तृतीय बलदेव और वासुदेव का पिता (ठा ६—पत्र ४४७)। ३ अलंकार-शास्त्र-प्रसिद्ध नव रसो मे एक रस (अणु)। ४ वि. दारुण, भयंकर, भीषण (ठा ४, ४, महा)। ५ न ध्यान-विशेष, हिंसा आदि क्रूर कर्म का चिन्तन (औप)।

रोद्द पु [रुद्र] अहोरात्र का पहला मुहूर्त (सुज्ज १०, १३)। देखो रुद्द = रुद्र।

रोद्ध वि [दे] १ कूणिताक्ष। २ न मल (दे ७, १५)।

रोम पुंन [रोमन्] लोम, बाल, रोंआ (औप, पाअ, गउड)। °कूव पु [°कूप] लोम का छिद्र (णाया १, १—पत्र १३, सुर २, १०१)।

रोम न [रोम] खान मे होता लवण (दस ३, ८)।

रोमंच पु [रोमाञ्च] रोंओ का खडा होना, भय या हर्ष से रोंओ का उठ जाना, पुलक (कुमा, काल, भवि, सण)।

रोमंचइअ } वि [रोमाञ्चित] पुलकित,
रोमंचिअ } जिसके रोम खडे हुए हो वह (पउम ३, १०४, १०२, २०३, पाम, भवि)।

लूड वि [लुण्ट] लूटनेवाला। स्त्री °डी,
'सो नत्थि एत्थ गामे जो
एयं महमहंतलायण्णं।
तरुणाण हिययलूडि
परिसक्कंतिं निवारेइ ॥'
(हेका २६०, काप्र ६१७)।

लूडण न [लुण्टन] लूट, चोरी (स ४४१)।

लूडिअ वि [लुण्टित] लूटा हुआ (स ५३६, पउम ३०, ६२, सुपा ३०७)।

लूण देखो लूअ = लून (दे ७, २३, सुपा ५२२, कुमा)।

लूण न [लवण] १ लून, नून, नोन, नमक (जी ४)। २ पु वनस्पति विशेष (श्रा २०, धर्म २)। देखो लवण।

लूण न [लवण] लावण्य, सुन्दरता, शरीर-कान्ति (सुपा २६३)।

लूर सक [छिद्] काटना। लूरइ (हे ४, १२४)।

लूरिअ वि [छिन्न] काटा हुआ (कुमा ६, ८३)।

लूस सक [लूषय्] १ वध करना, मार डालना। २ पीडना, कदर्थन करना, हैरान करना। ३ दूषित करना। ४ चोरी करना। ५ विनाश करना। ६ अनादर करना। ७ तोडना। ८ छोटे को बडा और बडे को छोटा करना। लूसति, लूसयति, लूसएज्जा (सूअ १, ३, १, १४; १, ७, २१; १, १४ १६; १, १४, २५)। भूका. लूसिंसु (आचा)। संकृ लूसिउ (श्रा १२)।

लूसअ } वि [लूषक] १ हिंसक, हिंसा करनेवाला। २ विनाशक (सूअ २, १, ५०; १, २, ३, ६)। ३ प्रकृति-क्रूर, निर्दय। ४ भक्षक (सूअ १, ३, १, ८)। ५ दूषित करनेवाला (सूअ १, १४, २६)। ६ विराधक आज्ञा नहीं माननेवाला (सूअ १, २, २, ६, आचा)। ७ हेतु-विशेष (ठा ४, ३—पत्र २५४)।
लूसग }

लूसण वि [लूषण] ऊपर देखो (आचा, औप)।

लूसय वि [लपक] १ परिताप-कर्ता (आचा २, १, ६, ४)। २ चोर, तस्कर (वव ४)।

लूसिअ वि [लूषित] १ लुण्टित, लुटा गया (श्रा १२)। २ उपद्रुत, पीडित (सम्मत्त १७५)। ३ विनाशित (संबोध १०)। ४ हिंसित (आचा)।

लूह सक [मृज्, रूक्षय्] पोंछना। लूहेइ, लूहेति (राय, णाया १, १—पत्र ५३)। संकृ लूहित्ता (पि २५७)।

लूह पुं [रूक्ष] मुनि, साधु श्रमण (दसनि २, ६)।

लूह वि [रूक्ष] १ लूखा, रूखा, स्नेह-रहित (आचा, पिंड २६, उत्त)। २ पु. संयम, विरति, चारित्र (सूअ, १, ३, १, ३)। ३ न तप-विशेष, निर्विकृतिक तप (संबोध ५८)। देखो लुक्ख।

लूहिय वि [रूक्षित] पोंछा हुआ (णाया १, १—पत्र १६, कप्प, औप)।

ले सक [ला] लेना, ग्रहण करना। लेइ (हे ४ २३८, कुमा)। वकृ लिंत (सुपा २५२, पिंग)। संकृ लेवि (अप) (हे ४, ४४०)। हेकृ. लेविणु (अप) (हे ४, ४४१)।

लेक्ख न [लेख्य] १ व्यवहार, व्यापार (सुपा ४२४)। २ लेखा, हिसाब (कुप्र २३८)।

लेक्खा देखो लिहा (गउड)।

लेख देखो लेह = लेख (सम ३५)।

लेखापित देखो लिखापित (पि ७)।

लेच्छइ पु [लेच्छकि] १ क्षत्रिय-विशेष। २ एक प्रसिद्ध राज-वंश (सूअ १, १३, १०, भग, कप्प, औप, अंत)।

लेच्छइ पु [लिप्सुक, लेच्छकि] १ वणिक्, वैश्य। २ एक वणिग्-जाति (सूअ २, १, १३)।

लेच्छारिय वि [दे] खरण्टित, लिप्त (पिंड २१०)।

लेज्झ देखो लिह = लिह्।

लेट्ठु पु न [लेष्टु] रोडा, ईंट, पत्थर आदि का टुकडा (विसे २४६६, औप, उव, कप्प, महा)।

लेडु } पु न [दे लेष्टु] ऊपर देखो (पाअ, दे ७, २४)।
लेडुअ }

लेडुक्क पुं [दे] १ रोडा, लोष्ट। २ वि. लम्पट (दे ७, २६)।

लेढिअ न [दे] स्मरण, स्मृति (दे ७, २५)।

लेडुक्क पु [दे] रोडा, लोष्ट (दे ७, २५, पाअ)।

लेण न [लयन] १ गिरि-वर्ती पाषाण-गृह (णाया १, २—पत्र ७६)। २ बिल, जन्तु-गृह (कप्प)। °विहि पुंस्त्री [°विधि] कला-विशेष (औप)। देखो लयण = लयन।

लेप्प न [लेप्य] भित्ति, भीत (धर्मसं २६, कुप्र ३००)।

लेप्पगार पु [लेप्यकार] शिल्पी-विशेष, राज, राजगीर (अणु १४६)।

लेप्पा स्त्री [लेप्या] लेपन-क्रिया (उत्त १६, ६५)।

लेलु देखो लेडु (आचा, सूअ २, २, १८, पिंड ३४६)।

लेव पु [लेप] १ लेपन (सम ३६, पउम २, २८)। २ नाभि-प्रमाण जल (ओघभा ३४)। ३ पु भगवान् महावीर के समय का नालंदा-निवासी एक गृहस्थ (सूअ २, ७, २)। °कड, °ड वि [°कृत] लेप-मिश्रित (ओघ ५६५, पत्र ४ टी—पत्र ४६, पडि)।

लेवण न [लेपन] लेप-करण (पव १३३)।

लेवाड वि [लेपकृत्] लेप कारक (वव १)।

लेस पु [लेश] १ अल्प, स्तोक, लव, थोडा (पाअ, दे ७, २८)। २ संक्षेप (द १)।

लेस वि [दे] १ लिखित। २ आश्वस्त। ३ नि शब्द, शब्द-रहित। ४ पु निद्रा (दे ७, २८)।

लेस पु [श्लेष] संश्लेष, संबन्ध, मिलान (राय)।

लेसण न [श्लेषण] ऊपर देखो (विसे ३००७)।

लेसणया } स्त्री [श्लेषणा] ऊपर देखो (औप, ठा ४, ४—पत्र २८०, राज)।
लेसणा }

लेसणी स्त्री [श्लेषणी] विद्या-विशेष (सूअ २, २, २७, णाया १, १६—पत्र २१३)।

लेसा स्त्री [लेश्या] १ तेज, दीप्ति। २ मंडल, बिम्ब, 'चंदस्स लेस आवरेत्ताणं चिट्ठइ' (सम २६)। ३ किरण (सुज्ज १६)। ४ देह-सौन्दर्य (राज)। ५ आत्मा का परिणाम-विशेष, कृष्णादि द्रव्यों के सान्निध्य से उत्पन्न होनेवाला आत्मा का शुभ या अशुभ परिणाम। ६ आत्मा के शुभ या अशुभ परिणाम की उत्पत्ति

रोहिणी स्त्री [रोहिणी] १ नक्षत्र-विशेष (सम १०)। २ चन्द्र की पत्नी (श्रा १६)। ३ ओषधि-विशेष (उत्त ३४, १०, सुर १०, २२३)। ४ भविष्य मे भारतवर्ष में तीर्थंकर होनेवाली एक श्राविका (सम १५४)। ५ नववें वलदेव का माता का नाम (सम १५२)। ६ एक विद्या देवी (सति ५)। ७ शक्रेन्द्र की एक पटरानी (ठा ८—पत्र ४२६)। ८ सत्पुरुष नामक किंपुरुषेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १—पत्र २०४)। ९ शक्रेन्द्र के एक लोकपाल की पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४)। १० तप-विशेष (पव २७१, पचा १९ २३)। ११ गो, गैया (पाअ)। °रमण पु [°रमण] चन्द्रमा (पाअ)। रोहीडग न [रोहीतक] नगर-विशेष (संथा ६८)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि रआराइसद्दसंकलणो तेत्तीसइमो तरंगो समत्तो ॥

ल

ल पु [ल] मूर्ध-स्थानीय अन्तस्थ व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्राप्र)।

लइ अ ले, अच्छा, ठीक (भवि)।

लइ देखो लग = ला।

लइअ वि [दे लगित] १ परिहित, पहना हुआ। २ अग मे पिनद्ध (दे ७, १८, पिंड ५६१, भवि)।

लइअल्ल पु [दे] वृषभ, वैल (दे ७, १९)।

लइआ स्त्री [लतिका, लता] देखो लया (नाट—रत्ना ७, गउड, उप ७६८ टी)।

लइणा } स्त्री [दे] लता, वल्ली (पड्, दे लइणी } ७, १८)।

लउअ पु [लकुच] वृक्ष-विशेष, वडहल का गाछ (औप, पि ३६८)।

लउड } पु [लकुट] लकडी, लाठी, डंडा, लउर, लउल } यष्टि (दे ७, १९, सुर २, ८, औप)।

लउस } पु [लकुश] १ अनार्य देश-विशेष लउसय } (पव २७४, इक)। २ पुस्त्री. लकुश देश का निवासी मनुष्य। स्त्री °सिया (णाया १, १—पत्र ३७, औप, इक)।

लंका स्त्री [लङ्का] नगरी-विशेष, सिंहलद्वीप की राजधानी (नि ३, ६२, पउम ४६, १९, कप्पू)। °लय वि [°लय] लका-निवासी (वज्जा १३०)। °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] हनूमान की एक पत्नी (पउम ५२, २१)। °सोग पुं [°शोक] राक्षस वंश का एक राजा (पउम ५, २६५)। °हिव पुं [°धिप] लका का राजा (उप पृ ३७५)। °हिवइ पु [°धिपति] वही अर्थ (पउम ४६, १७)।

लंका स्त्री [दे] शाखा (वज्जा १३०)।

लंख } पुंस्त्री [लङ्ख] वडे वाँस के ऊपर खेल लंखग } करनेवाली एक नट-जाति (णाया १, १—पत्र २, पण्ह २, ५—पत्र १३२, औप, कप्प)। स्त्री °खिगा (उप १०१४)।

लंगल न [लाङ्गल] हल, 'खित्तेसु वहंति लंगलाए सया' (धर्मवि २४, हे १, २५६, पड् ८०)।

लंगलि पु [लाङ्गलिन्] बलभद्र, बलदेव (कुमा)।

लंगलि° } स्त्री [लाङ्गली] वल्ली-विशेष, लंगली } शारदी लता (कुमा)।

लंगिम पुस्त्री [दे] १ जवानी, यौवन। २ ताजापन, नवीनता, 'पिसुणइ तणुलट्ठी लंगिमं चंगिमं च' (कप्पू)।

लंगूल न [लाङ्गूल] पुच्छ, पूँछ (हे १, २५६, पाअ, कप्प; कुमा)।

लंगूलि वि [लाङ्गूलिन्] पुच्छवाला, पशु (कुमा)।

लंगोल देखो लंगूल (सुज्ज १०, ८)।

लंघ सक [लङ्घ्, लङ्घय्] १ लाँघना, अतिक्रमण करना। २ भोजन नहीं करना। लंघइ, लंघेइ (महा, भवि)। कर्म लंघिज्जइ (कुमा)। वकृ. लंघंत, लंघयंत (सुपा २७१, पउम ६७, २१)। सकृ लंघित्ता, लंघिऊण (महा)। हेकृ लंघेउं (पि ५७३)। कृ लंघणिज्ज (से २, ४४), लंघ (कुमा १, १७)।

लंघण न [लङ्घन] १ अतिक्रमण (सुर ५, १९२)। २ अ भोजन (उप १३५ टी)।

लंघि वि [लङ्घिन्] लंघन करनेवाला (कप्पू)।

लंघिअ वि [लङ्घित] जिसका लंघन किया गया हो वह (गउड)।

लंच पुं [दे] कुक्कुट, मुर्गा (दे ७, १७)।

लंचा स्त्री [लञ्चा] घूस, रिश्वत, उत्कोच (पाअ, पण्ह १, ३—पत्र ५३, दे १, ९२, ७, १७, सुपा ३०८)।

लंचिल्ल त्रि [लाञ्चिक] घूसखोर, रिश्वत ले कर काम करनेवाला (वव १)।

लंछ सक [लञ्छ्] १ भाँगना, तोडना। २ कलंकित करना। कर्म लंछिज्जइ (दसनि ८, १४)।

लंछ पु [लञ्छ] चोरो की एक जाति (विपा १, १—पत्र ११)।

°वाल देखो °पाल (कुप्र १३५)। °वीर पुं [°वीर] भगवान् महावीर (उव)। °सिंग न [°श्रृङ्ग] एक देव-विमान (सम २५)। °सिट्ठ न [°सृष्ट] एक देव-विमान (सम २५)। °हिअ न [°हित] एक देव-विमान (सम २५)। °ायय न [°ायत] नास्तिक-प्रणीत शास्त्र, चार्वाक-दर्शन (णदि)। °ालोग पुन [°ालोक] परिपूर्ण आकाश-क्षेत्र, संपूर्ण जगत् (उव, पि २०२)। °ावत्त न [°ावर्त्त] एक देव-विमान (सम २५)। °ाहाण न [°ाख्यान] लोकोक्ति, जन-श्रुति (उप ५३० टी)। लोगातिय देखो लोअंतिय (पि ४६३)।

लोगिग देखो लोइअ = लौकिक (धर्मसं १२४८)।

लोगुत्तर देखो लोउत्तर। °वडिंसय न [°ावतंसक] एक देव-विमान (सम २५)।

लोगुत्तर पुं [लोकोत्तर] मुनि, साधु। २ जिन-शासन, जैन सिद्धान्त (अणु २६)।

लोगुत्तरिअ वि [लोकोत्तरिक] १ साधु का। २ जिन शासन का (अणु २६)।

लोगुत्तरिय देखो लोउत्तरिय (ओघ ७६५)।

लोट्ट अक [स्वप्] लोटना, सोना। लोट्टइ (हे ४, १४६)। वकृ. लोट्टय° (पाअ)।

लोट्ट अक [लुठ्] १ लेटना। २ प्रवृत्त होना। लोट्टइ, लोट्टती (प्राकृ ७२, सूअ १, १५, १४)। वकृ. लोट्टंत (सुपा ४६६)।

लोट्ट } पु [दे] १ कच्चा चावल (निचू
लोट्टय } ४)। २ पुस्त्री हाथी का छोटा बच्चा (णाया १, १—पत्र ६३), स्त्री. °ट्टिया (णाया १, १)।

लोट्टिअ त्रि [दे] उपविष्ट (दे ७, २५)।

लोट्ठ वि [दे] स्मृत (षड्)।

लोट्ठ पु [लोष्ट] रोडा, ढेला (दे ७, २४)।

लोडाविअ वि [लोटित] घुमाया हुआ (गा ७६६)।

लोढ सक [दे] कपास निकालना, लोढना, गुजराती मे 'लोढवुं'। वकृ. लोढयत (राज)।

लोढ पुं [दे] १ लोढा, शिलापुत्रक, पीसने का पत्थर (दस ५, १, ४५, उवा)। २ ओषधि-विशेष, पद्मिनीकन्द (पव ४, श्रा २०, सवोध ४४)। ३ वि. स्मृत। ४ शयित (दे ७,७२६)।

लोढय पु [दे. लोठक] कपास के बीज निकालने का यन्त्र (गउड)।

लोढिअ वि [लोठित] लेटवाया हुआ, सुलाया हुआ (पउम ६१, ६७)।

लोण न [लवण] १ लून, नमक। २ लावण्य, शरीर-कान्ति (गा ३१६, कुमा)। ३ पुं. वृक्ष-विशेष (पउम ४२, ७, श्रा २०, पव ४)। ४—देखो लवण (हे १, १७१, प्राप्र, गउड, औप)।

लोणिय वि [लावणिक] लवण-युक्त, लवण-सम्बन्धी (ओघ ७७६)।

लोण्ण न [लावण्य] शरीर-कान्ति (प्राकृ ५)।

लोत्त न [लोप्त्र] चोरी का माल (स १७३)।

लोद्ध पुं [लोध्र] वृक्ष-विशेष (णाया १, १—पत्र ६५, पण्ण १, सूअ १, ४, २, ७, औप, कुमा)। देखो लुद्ध = लोध्र।

लोद्ध देखो लुद्ध = लुब्ध (पाअ, सुर ३, ४७, १० २२३, प्राप्र)।

लोप्प देखो लुंप, 'जो एगं वायं लोप्पइ सो तिन्निवि लोप्पयंतो कि केणावि धरिउ पारीयइ' (स ४६२)।

लोभ सक [लोभय्] लुभाना, लालच देना। कवकृ. लोभिज्जंत (सुपा ६१)।

लोभ पु [लोभ] लालच, तृष्णा (आचा, कप्प, औप, उव, ठा ३, ४)। २ वि लोभ-युक्त (पडि)।

लोभणय वि [लोभनक] लोभी, लालची (आचा २, १५, ५)।

लोभि } व [लोभिन्] लोभवाला (कम्म
लोभिल्ल } ४, ४०, पउम ४, ४६)।

लोम पुन [लोम] रोम, रोआँ, रूँगटा (उवा)। °पक्खि पु [°पक्षिन्] रोम के पँखवाला पक्षी (ठा ४, ४—पत्र २७१)। °स वि [°श] लोम-युक्त (गउड)। °हत्थ पुं [°हस्त] पीछी, रोमो का बना हुआ झाडू (विपा १, ७—पत्र ७८, औप, णाया १, २)। °हरिस पु [°हर्ष] १ नरकावास-विशेष (देवेन्द्र २७)। २ रोमाञ्च, रोमो का खडा होना (उत्त ५, ३१)। °हार पुं [°हार] मार कर धन लूटनेवाला चोर (उत्त ९, २८)। °ाहार पुं [°ाहार] रूँगटो से लिया जाता आहार, त्वचा से ली जाती खुराक (भग, सूअनि १७१)।

लोमंथिअ पुं. [दे] नट (नदि टिप्पण वैनयिक बुद्धिगत १३ वाँ कथानक)।

लोमसी स्त्री [दे] १ ककडी, खीरा (उप पृ २५२)। २ वल्ली विशेष, ककडी का गाछ (वव १)।

लोय न [दे] सुन्दर भोजन, मिष्टान्न (आचा २, १, ४, ३)।

लोर पुन [दे] १ नेत्र, आँख। २ अश्रु, आँसू (पिंग)।

लोल अक [लुठ्] १ लेटना। २ सक. विलोडन करना। लोलइ (पिंड ४२२, पिंग), 'लोलेइ खखसवल' (पउम ७१, ४०)। वकृ. लोलत, लोलमाण (कप्प, पिंग, पउम ५३, ७९)।

लोल सक [लोठय्] लेटाना। लोलेइ, लोलेमि (उवा)।

लोल वि [लोल] १ लम्पट, लुब्ध, आसक्त (णाया १, १ टी—पत्र ५, औप, पाअ, कप्प, सुपा ३६५)। २ पु. रत्न-प्रभा नरक का एक नरकावास (ठा ६—पत्र ३६५, देवेन्द्र ३०)। ३ शर्कराप्रभा नामक द्वितीय नरक-पृथिवी का नववाँ नरकेन्द्रक—नरक स्थान (देवेन्द्र ७)। °मज्झ पुं [°मध्य] नरकावास-विशेष (ठा ६ टी—पत्र ३६७)। °सिट्ठ पुं [°शिष्ट] नरकावास-विशेष (ठा ६ टी)। °ावत्त पु [°ावर्त्त] नरकावास-विशेष (ठा ६ टी, देवेन्द्र ७)।

लोलट्ठिअ न [दे] चाटु, खुशामद (दे ७, २२)।

लोलण न [लोठन] १ लेटना, घोलन (सूअ १, ५, १, १७)। २ लेटवाना (उप ५१८)।

लोलपच्छ पु [लोलपाक्ष] नरक स्थान विशेष (देवेन्द्र ३०)।

लोलिक्क न [लौल्य] लम्पटता, लोलुपता (पण्ह १, ३—पत्र ४३)।

लोलिम पुस्त्री [लोलत्व] ऊपर देखो (कुमा)।

लोलुअ वि [लोलुप] १ लम्पट, लुब्ध (पउम १, ३०, २६, ४७; पाअ, सुर १४, ३३)। २ पु. रत्नप्रभा नरक का एक नरकावास

पानेवाली श्रीकृष्ण की एक पत्नी (अंत १५)। ३ एक अमात्य की स्त्री (उप ७२८ टी)।

लक्खणिअ वि [लाक्षणिक, लाक्षण्य] १ लक्षणों का जानकार। २ लक्षण-युक्त (सुपा १३६)।

लक्खमण } पु [लक्ष्मण] विक्रम की बार-
लक्खमण } हवी शताब्दी का एक जैन मुनि और ग्रथाकार (सुपा ६५८)।

लक्खा स्त्री [लाक्षा] लाख, लाह, जतु, चपड़ा (णाया १, १—पत्र २४, पराह २, ५)। °रुणिय वि [°रुणित] लाख से रँगा हुआ (पाअ)।

लक्खिअ वि [लक्षित] १ जाना हुआ। २ पहचाना हुआ। ३ देखा हुआ (गउड, नाट—रत्ना १४)।

लग्ग न [दे] निकट, पास (पिंग)।

लगड न [लगण्ड] वक्र काष्ठ (पचा १८, १६, स ५६६)। °साइ वि [°शायिन्] वक्र काष्ठ की तरह सोनेवाला (पराह २, १—पत्र १००, औप, कस, पंचा १८, १६, ठा ५, १—पत्र २६६)। °सण न [°सन] आसन-विशेष (सुपा ८५)।

लगुड देखो लउड (कुप्र ३८६)।

लग्ग सक [लग्] लगना, संग करना, सबंध करना। लग्गइ (हे ४, २३०, ४२०, ४२२, प्राकृ ६८, प्राप्र, उव)। भवि. लग्गिस्स, लग्गिहिइ (पि ५२७)। लग्गत, लग्गमाण (चेइय ११२, उप ६६६, गा १०५)। सक्र लग्गूण (कुप्र ६६), लग्गिवि (अप) (हे ४, ३३६)। कृ. लग्गिअव्व (सुर १०, ११२)।

लग्ग न [दे] १ चिह्न। २ वि अघटमान, असम्बद्ध (दे ७, १७)।

लग्ग न [लग्न] १ मेष आदि राशि का उदय (सुर २, १७०, मोह १०१)। २ वि. संसक्त, संबद्ध (पाअ, कुमा, सुर २, ५६)। ३ पु स्तुति-पाठक (हे २, ६८)।

लग्गण न [लगन] संग, संबन्ध, 'वडपाय-वसाहालग्गणेण' (सुर १५, १४, उप १३४, ५३८)।

लग्गणय पु [लग्नक] प्रतिभू, जमानत करनेवाला, जामीन (पाअ)।

लग्गूण देखो लग्ग=लग्।

लघिम पुस्त्री [लघिमन्] १ लघुता, लाघव। २ योग की एक सिद्धि, जिसके प्रभाव से मनुष्य छोटा बन सकता है, 'लंघिज्ज लघिमगुणओ अनिलस्सवि लाघवं साहू' (कुप्र २७७)। ३ विद्या-विशेष (पउम ७, १३६)।

लचय न [दे] तृण-विशेष, गण्डुत् तृण (दे ७, १७)।

लच्छ देखो लक्ख=लक्ष्य (नाट)।

लच्छ° देखो लभ।

लच्छण देखो लक्खण=लक्षण (सुपा ६४, प्राकृ २२, नाट—चैत ५५)।

लच्छि° } स्त्री [लक्ष्मी] १ सपत्ति, वैभव। २
लच्छी } धन, द्रव्य। ३ कान्ति। ४ औषध-विशेष। ५ फलिनी वृक्ष। ६ स्थल-पद्मिनी। ७ हरिद्रा। ८ मुक्ता, मोती। ९ शटी नामक ओषधि (कुमा, प्राकृ ३०, हे २, १७)। १० शोभा (से २, ११)। ११ विष्णु-पत्नी (पाअ, से २, ११)। १२ रावण की एक पत्नी (पउम ७४, १०)। १३ षष्ठ वासुदेव की माता (पउम २०, १८४)। १४ पुंडरीक द्रह की अधिष्ठात्री देवी (ठा २, ३—पत्र ७२)। १५ देव-प्रतिमा विशेष (णाया १, १ टी—पत्र ४३)। १६ छन्द-विशेष (पिंग)। १७ एक वणिक्-पत्नी (७२८ टी)। १८ शिखरी पर्वत का एक कूट (इक)। °निलय पु [°निलय] वासुदेव (पउम ३७, ३७)। °मई स्त्री [°मती] १ छटवें वासुदेव की माता (सम १५२)। २ ग्यारहवें चक्रवर्ती का स्त्री-रत्न (सम १५२)। °मंदिर न [°मन्दिर] नगर-विशेष (सुपा ६३२)। °वइ पु [°पति] लक्ष्मी का स्वामी, श्रीकृष्ण (प्राकृ ३०)। °वई स्त्री [°वती] दक्षिण रुचक पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६, इक)। °हर पु [°धर] १ वासुदेव (पउम ३८, ३४)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। ३ न नगर-विशेष (इक)।

लज्जुक (अशो) देखो रज्जु=(दे) (कप्प—रज्जु)।

लज्ज अक [लस्ज्] शरमाना। लज्जइ (उव, महा)। कर्म लज्जिज्जइ (हे ४, ४१९)। वकृ लज्जत, लज्जमाण (उप पृ ५५, महा, आचा)। कृ लज्जणिज्ज (से ११, २६, णाया १, ८—पत्र १४३)।

लज्जण } न [लज्जन] १ शरम, लाज
लज्जणय } (सा ८, राज)। २ वि लज्जा-कारक, 'किं एत्तो लज्जणय जं पह-रिज्जइ दीणे पलायमाणे पमत्ते वा' (सुपा २१५, भवि)।

लज्जा स्त्री [लज्जा] १ लाज, शरम (औप, कुमा, प्रासू ६६, गा ६१०)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। ३ सयम (भग २, ५, औप)।

लज्जापइत्तअ (शौ) वि [लज्जयितृ] लजाने-वाला, 'जुवइवेसलज्जापइत्तअ' (मा ४२)।

लज्जालु वि [लज्जालु] लज्जावान्, शरमिंदा (उप १७६ टी)।

लज्जालु } स्त्री [लज्जालु] १ लता-विशेष,
लज्जालुआ } लाजवती, लजवनी, छुईमुई
लज्जालुइणी } (षड्, हे २, १५९, १७४)। २ लज्जावाली स्त्री (षड्, हे २, १५९, १७४, सुर २, १५६, गा १२७, प्राकृ ३५)।

लज्जालुइणी स्त्री [दे] कलह-कारिणी स्त्री (षड्)।

लज्जालुइर } वि [लज्जालु] लज्जाशील,
लज्जालुर } शरमिंदा। स्त्री °री (गा ४८२, ६१२ अ)।

लज्जाव सक [लज्जय्] शरमिंदा बनाना, लजवाना। लज्जावेदि (शौ) नाट—मृच्छ ११०)। कृ. लज्जावणिज्ज (स ३६८, भवि)।

लज्जावण वि [लज्जन] शरमिन्दा करनेवाला (पराह १, ३—पत्र ५४)।

लज्जाविय वि [लज्जित] लजवाया हुआ (पराह १, ३—पत्र ५४)।

लज्जिअ वि [लज्जित] १ लज्जा-युक्त (पाअ)। २ न लज्जा, शरम, 'न लज्जिअं अप्पणोवि पलिआणं' (श्रा १४)।

लज्जिर वि [लज्जितृ] लज्जा-शील (हे २, १४५, गा १५०, कुमा, वज्जा ८, भवि)। स्त्री °री (पि ५९६)।

लज्जु स्त्री [रज्जु] १ रस्सी, लजुरी, लेजुरी या लेजुर। २ वि रस्सी की तरह सरल, सीधा, 'चाई लज्जू धन्ने तवस्सी' (पराह २, ५—पत्र १४९, भग)।

व

व पुं [व] १ अन्तस्थ व्यञ्जन वर्ण-विशेष, जिसका उच्चारणस्थान दन्त और ओष्ठ हैं (प्राप, प्रामा)। २ पुन. वरुण (से १, १, २, ११)।

व अ [व] देखो इव (से २, ११, गा १८, ६३, ६४, ७६, कुमा, हे २, १८२, प्रासू २)।

व देखो वा = अ (हे १, ६७, गा ४२, १६४, कुमा, प्राकृ २६, भवि)।

व° देखो वाया = वाच्। °क्खेवअ वि [°क्षेपक] वचन का निरसन—खण्डन (गा १४२ अ)। °प्पइराय पुं [°पतिराज] एक प्राचीन कवि, 'गउडवहो' काव्य का कर्त्ता (गउड)।

वअणीआ स्त्री [दे] १ उन्मत्त स्त्री। २ दुःशील स्त्री (षड्)।

वअल अक [प्र + सृ] पसरना, फैलना। वअलइ (षड्)।

वआड देखो वायाड = वाचाट (संक्षि २)।

वइ अ [वै] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ अवधारण, निश्चय (विसे १८००)। २ अनुनय। ३ संबोधन। ४ पादपूर्त्ति (चंड)।

वइ अ [दे] वदि, कृष्ण पक्ष, 'फग्गुणवइ-छट्ठीए' (सुपा ८६)।

वइ वि [व्रतिन्] व्रतवाला, संयमी (उव, सुपा ४३६)। स्त्री. °णी (उप ५७१)।

वइ स्त्री [वाच्] वाणी, वचन (सम २५, कप्प, उप ६०४, श्रा ३१, सुपा १८४, कम्म ४, २४, २७, २८)। °गुत्त वि [°गुप्त] वाणी का संयमवाला (आचा, उप ६०४)। °गुत्ति स्त्री [°गुप्ति] वाणी का संयम (आचा)। °जोअ, °जोग पु [°योग] वचन-व्यापार (भग, पण्ह १ २)। °जोगि वि [°योगिन्] वचन-व्यापारवाला (भग)। °मत वि [°मत्] वचनवाला (आचा २, १, ६, १)। °मेत्त न [°मात्र] निरर्थक वचन (धर्मसं २८४, २८५, ८४४)। देखो वई।

वइ स्त्री [वृति] बाड, काँटे आदि से बनाई जाती स्थानपरिधि, घेरा, 'धन्नाणं रक्खट्ठा कीरति वईओ' (श्रा १०, गउड, गा ६६, उप ६४८, पउम १०३, १११, वज्जा ८६), 'उच्छू वोलंति वइ' (धर्मवि ५३, सबोध ४२)।

°वइ देखो पइ = पति (गा ६६, से ४, ३४, कप्प, कुमा)।

वइ° देखो वय = वद्।

वइ° देखो वय = व्रज्।

वइअ वि [दे] १ पीत, जिसका पान किया गया हो वह (दे ७, ३४)। २ आच्छादित, ढका हुआ, 'पच्छाइअत्तूमिआइ वइआइ' (पाअ)।

वइअ वि [व्ययित] जिसका व्यय किया गया हो वह, 'किमिह दव्वेण वइएण वहुएण' (सुपा ५७८, ७३, ४१०)।

वइअब्भ पु [वैदर्भ] १ विदर्भ देश का राजा। २ वि. विदर्भ देश मे उत्पन्न (षड्)।

वइअर पु [व्यतिकर] प्रसङ्ग, प्रस्ताव (सुर ४, १३६, महा)।

वइअव्व देखो वय = व्रज्।

वइआ स्त्री [व्रजिका] छोटा गोकुल (पिंड ३०६, सुख २, ५' ओघ ८४)।

वइआलिअ वि [वैतालिक] मंगल स्तुति आदि से राजा को जगानेवाला मागध आदि (हे १, १५२)।

वइआलीअ पुन [वैतालीय] छन्द-विशेष (हे (हे १, १५१)।

वइएस वि [वैदेश] विदेश संबन्धी, परदेशी (पउम ३३, २४, हे १, १५१, प्राकृ ६)।

वइएह पुं [वैदेह] १ वणिक्, वैश्य। २ शूद्र पुरुष और वैश्य स्त्री से उत्पन्न जाति-विशेष। ३ राजा जनक। ४ वि देह-रहित से सबन्ध रखनेवाला। ५ मिथिला देश का (हे १, १५१, प्राकृ ६)।

वइगण न [दे] बैंगन, वृन्ताक, भंटा (दे ६, १००)।

वइकच्छ पुं [वैकक्ष] उत्तरासंग (औप)।

वइकल्लिअ न [वैकल्य] विकलता (पाअ)।

वइकुंठ पु [वैकुण्ठ] १ उपेन्द्र, विष्णु (पाअ)। २ लोक-विशेष, विष्णु का धाम (उप १०३१ टी)।

वइक्कंत वि [व्यतिक्रान्त] व्यतीत, गुजरा हुआ (पउम २, ७४, उवा, पडि)।

वइक्कम पुं [व्यतिक्रम] विशेष उल्लंघन, व्रत-दोष-विशेष (ठा ३, ४—पत्र १५६, पव ६, टी, पउम ३१, ६१)।

वइगरणिय पुं [वैकरणिक] राज कर्मचारि-विशेष (सुपा ५४८)।

वइगा देखो वइआ (सुख २, ५, बृह ३)।

वइगुण्ण न [वैगुण्य] १ वैकल्य, अपरि-पूर्णता, असंपन्नता (धर्मसं ८८४)। २ विप-रीतपन, विपर्यय (राज)।

वइचित्त न [वैचित्र्य] विचित्रता (विसे ३११, धर्मसं ६५)।

वइजवण वि [वैजवन] गोत्र-विशेष मे उत्पन्न (हे १, १५१)।

वइणी देखो वइ = व्रतिन्।

वइतुलिय वि [वैतुलिक] तुल्यता-रहित (निचू ११)।

वइत्तए, वइत्ता देखो वय = वद्।

वइत्ता देखो वय = वच्।

वइत्तु वि [वदितृ] बोलनेवाला, 'मुसं वइत्ता भवति' (ठा ७—पत्र ३८६)।

वइदब्भ देखो वइअब्भ (हे १, १५१)।

वइदिस पुं [वैदिश] १ अवन्ती देश, मालव देश, 'वइदिस उज्जेणीए जियपडिमा एलगच्छं च' (उप २०२)। २ वि. विदिशा संबन्धी (बृह ६)।

वइदेस देखो वइएस (प्राप्र)।

वइदेसिअ वि [वैदेशिक] विदेशीय, परदेशी (संक्षि ५, कुप्र ३८०, सिरि ३९३, पि ६१)।

वइदेह देखो वइएह (प्राप्र)।

लया स्त्री [लता] १ वल्ली, वल्लरी (पएण १, गा २८, काप्र ७२३, कुमा, कप्प)। २ प्रकार, भेद, 'सघाडो त्ति वा लय त्ति वा पगारो त्ति वा एगट्ठा' (बृह १)। ३ तप-विशेष (पव २७१)। ४ सख्या-विशेष, चौरासी लाख लताग-परिमित सख्या (जो २)। ५ कम्बा, छडी, यष्टि, 'कसप्पहारे य लयप्पहारे य छिवापहारे य' (णाया १. २—पत्र ८६, विपा १, ६—पत्र ६६)। °जुद्ध न [°युद्ध] लडने की एक कला, एक तरह का युद्ध (औप)।

लयापुरिस पु [दे] वह स्थान, जहां पद्म-हस्त स्त्री का चित्रण किया जाय, 'पउमकरा जत्थ वहू लिहिज्जए सो लयापुरिसो' (दे ७, २०)।

लल अक [लु, लड्] १ विलास करना, मौज करना। २ झूलना। ललइ, ललेइ (प्राकृ ७३, सण, महा, सुपा ४०३)। वकृ. ललत, ललमाण (गा ४४६, सुर २, २३७, भवि, औप, सुपा १८१, १८७)।

ललणा स्त्री [ललना] स्त्री, महिला, नारी (तदु ५०, सुपा ४.७)।

ललाड देखो णडाल (औप, पि २६०)।

ललाम न [ललामन्] प्रधान, नायक (अभि ६५)।

ललिअ न [ललित] १ विलास, मौज, लीला (पाअ, पव १६६, औप)। २ अग-विन्यास-विशेष (पएह १, ४)। ३ प्रसन्नता, प्रसाद (विपा १, २ टी—पत्र २२)। ४ वि. क्रीडा-प्रधान, मौजी (णाया १, १६—पत्र २०५)। ५ शोभा-युक्त, सुन्दर, मनोहर (णाया १, १, औप, राय)। ६ मंजु, मधुर (पाअ)। ७ ईप्सित, अभिलषित (णाया १, ६)। °मित्त पुं [°मित्र] सातवें वासुदेव का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५३, पउम २०, १७१)। °वित्थरा स्त्री [°विस्तरा] आचार्य श्रीहरिभद्रसूरि का बनाया हुआ एक जैन ग्रन्थ (चेइय २५६)।

ललिअंग पु [ललिताङ्ग] एक राज-कुमार (उप ६८६ टी)।

ललिअय न [ललितक] छन्द-विशेष (अजि १८)।

ललिआ स्त्री [ललिता] एक पुरोहित-स्त्री (उप ७२८ टी)।

लल्ल वि [दे] १ सस्पृह, स्पृहावाला। २ न्यून, अधूरा (दे ७, २६)।

लल्ल वि [लल्ल] अव्यक्त आवाजवाला (पएह १, २)।

लल्लक्क पु [लल्लक्क] छठवी नरक-पृथिवी का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र १२)।

लल्लक्क वि [दे] १ भीम, भयकर (दे ७, १८, पाअ, सुर १६, १४८), 'लल्लक्कनरयविअणाओ' (भत्त ११०)। २ पुं ललकार, लडाई आदि के लिए आह्वान (उप ७६८ टी)।

लल्लि स्त्री [दे] खुशामद (धर्मवि ३८, जय १६)।

लल्लिरी स्त्री [दे] मछली पकडने का जाल-विशेष (विपा १, ८—पत्र ८५)।

लव सक [लू] काटना। सकृ लविऊण। हेकृ. लविउ। कृ लविअव्व (प्राकृ ६६)।

लव सक [लप्] बोलना, कहना। लवइ (कुमा, सबोध १८, सण), लवे (भास ६६)। वकृ लवत, लवमाण (सुपा २६७, सुर ३, ६१)।

लव सक [प्र+वर्तय्] प्रवृत्ति कराना, 'णो विज्जू लवति' (सुज्ज २०)।

लव वि [लप] वाचाट, बकवादी (सूअ २, ६, १५)।

लव पु [लव] १ समय का एक सूक्ष्म परि-माण, सात स्तोक, मुहूर्त का सतरहवां अश (ठा २, ४—पत्र ८६, सम ८५)। २ लेश, अल्प, थोडा (पाअ, प्रासू ६६, ११८, सण)। ३ न. कर्म (सूअ १, २, २, २०, २, ६, ६)। °सत्तम पु [°सप्तम] अनुत्तरविमान निवासी देव, सर्वोत्तम देव-जाति (पएह २, ४, उत्त, सूअ १, ६, २४)।

लवअ पुं [दे. लवक] गोद, लासा, चेप, निर्यास, 'लवओ गुंदो' (पाअ)।

लवइअ वि [दे. लवकित] नूतन दल से युक्त, अङ्कुरित, पल्लवित (औप, भग, णाया १, १ टी—पत्र ५)।

लवग पुन [लवङ्ग] १ वृक्ष-विशेष, लौंग का पेड (पएण १—पत्र ३४, कुप्र २४६)। २ वृक्ष-विशेष का फूल, लौंग (णाया १, १—पत्र १२, पएह २, ५)।

लवण न [लवन] छेदन, काटना (विसे ३२०६)।

लवण न [लवण] १ लोन, नून, नोन, नमक (कुमा)। २ पु. रस विशेष, क्षार रस (अणु)। ३ समुद्र विशेष (सम ६७, णाया १,६, पउम ६६, १८)। ४ सीता का एक पुत्र, लव (पउम ६७, १६)। ५ मधुराज का एक पुत्र (पउम ८६, ४७)। °जल पु [°जल] लवण समुद्र (पउम ५७, २७)। °य पुं [°द] लवण समुद्र (पउम ६४,१३)। देखो लोण।

लवणिम पुस्त्री [लवणिमन्] लावण्य (कुमा)।

लवल न [लवल] पुष्प-विशेष (कुमा)।

लवली स्त्री [लवली] लता-विशेष (सुपा ३८, कुप्र २४६)।

लवव वि [दे] सुप्त, सोया हुआ (षड्)।

लविअ वि [लपित] उक्त, कथित (सूअ १, ६, ३५, कुमा, सुपा २६७)।

लवित्त न [लवित्र] दात्र, दाँती हँसुआ या हँसिया, घास काटने का एक औजार (दे १, ८२)।

लविर वि [लपितृ] बोलनेवाला (सण)। स्त्री °रा (कुमा)।

लस अक [लस्] १ श्लेष करना। २ चमकना। ३ क्रीडा करना। लसइ (प्राकृ ७२)। वकृ लसत (सण)।

लसइ पु [दे] काम, कन्दर्प (दे ७, १८)।

लसक न [दे] तरु-क्षीर, पेड का दूध (दे ७, १८)।

लसण देखो लसुण (सूअ १, ७, १३)।

लसिर वि [लसितृ] १ श्लिष्ट होनेवाला। २ चमकनेवाला, दीप्र (से ८, ४४)।

लसुअ न [दे] तैल, तेल (दे ७, १८)।

लसुण न [लशुन] लहसुन, कन्द-विशेष (श्रा २०)।

लह देखो लभ। लहइ, लहेइ, लहए (महा, पि ४५७)। भवि लहिस्सामो (महा)। कर्म लहिज्जइ (हे ४, २४६)। वकृ लहंत (प्रारू)। सकृ लहिउ, लहिऊण (कुप्र १, महा) लहेप्पि, लहेप्पिणु, लहेवि (अप, पि ५८८)। कृ. लहणिज्ज, लहिअव्व (श्रा १४, सुर ६, ५३, सुपा ४२७)।

वइस्स वि [द्वेष्य] अप्रीतिकर (उत्त ३२, १०३)।

वइस्सदेव पुं [वैश्वदेव] वैश्वानर, अग्नि (निर ३, १)।

वइस्साणर पु [वैश्वानर] १ वह्नि, अग्नि। २ चित्रक वृक्ष। ३ सामवेद का अवयव-विशेष (हे १, १५१)।

वई देखो वइ = वाच् (आचा)। °मय वि [°मय] वचनात्मक (दस ६, ३, ६)।

वईअ वि [व्यतीत] अतीत, गुजरा हुआ। °सोग पुं [°शोक] एक जैन मुनि (पउम २०, २०)।

वईवय सक [व्यति + व्रज्] जाना, गमन करना। वकृ. 'कोल्लायस्स सनिवेसस्स अदूर-सामंतेण वईवयमाणे बहुजणसद्द निसामेइ (उवा)।

वईवाय देखो वइवाय (राज)।

वउ पुस्त्री [दे] लावण्य, शरीर-कान्ति, 'वऊ अ लायण्णे' (दे ७, ३०)।

वउ न [वपुष्] शरीर, देह (राज)।

वउलिअ वि [दे] शूल-प्रोत (दे ७, ४४)।

वएमाण देखो वय = वद्।

वओ° देखो वय = वचस् (आचा)। °मय न [°मय] वाङ्मय, शास्त्र (विसे ५५१)।

वओ° देखो वय = वयस् (पउम ४८, ११५)।

वओवत्थ्फ } पुंन [दे] विषुवत्, समान
वओवत्थ } रात और दिनवाला काल (दे ७, ५०)।

व° देखो वाया = वाच्। °नियम पु [°नियम] वाणी की मर्यादा (उप ७२८ टी)।

वक्क वि [वङ्क, वक्र] १ बाँका, टेढा, कुटिल (कुमा, सुपा १७२, पि ७४)। २ नदी का बाँक (हे १, २६, प्राप्र)।

वक्क पु [दे] कलक, दाग (दे ७, ३०)।

°वक देखो पक (से ६, २६, गउड)।

वकचूल पु [वङ्कचूल] एक प्रसिद्ध राज-कुमार (धर्मवि ५२, पडि)।

वंकचूलि पु [वङ्कचूलि] ऊपर देखो, तओ गया वकचूलिणो गेहें' (धर्मवि ५३, ५६, ६०)।

वंकण न [वङ्कन, वक्रण] वक्रीकरण, कुटिल बनाना (ठा २, १—पत्र ४०)।

वंकिअ वि [वक्रित] बाँका किया हुआ (से ६, ५६)।

°वंकिअ वि [पङ्कित] पंक-युक्त (से ६, ५६)।

वंकिम पुस्त्री [वक्रिमन्] वक्रता, कुटिलता (पि ७४, हे ४, ३४४, ४०१)।

वकुड } देखो वक्र = वक, 'विविहविसविड-
वंकुण } विनिग्गयवकुडतिक्खग्गकटइए। एया-रिसम्मि य वणे' (स २५६, हे ४, ४१८, भवि, पि ७४)।

°वंकुभ (शौ) ऊपर देखो (प्राकृ ६७)।

वग न [दे] वृन्ताक, भंटा (दे ७, २९)।

वंग वि [व्यङ्ग] विकृत अग, 'ववगय-वलीपलियवगदुव्वन्नवाविदोहग्गसोयमुक्काओ' (पण्ह १, ४—पत्र ७९)।

वगच्छ पु [दे] प्रमथ, शिव का अनुचर-विशेष (दे ७, ३९)।

वगण न [व्यङ्गन] क्षत (राज)।

वगिय वि [व्यङ्गित] विकृत शरीरवाला (राज)।

वगेवडु पु [दे] सूकर, सूअर (दे ७, ४२)।

वच सक [वञ्च्] ठगना। वंचइ (हे ४, ९३, पड, महा)। कर्म वचिज्जइ (भवि)। सकृ वचिऊण (महा)। कृ. वंचणीअ (प्राप्र)। प्रयो, वकृ 'तो सो वचावितो कुमरपहार वएइ पुरबाहिं' (सुपा ५७२)।

वंच (अप) देखो वच्च = व्रज्। वचइ (प्राकृ ११९)। सकृ वंचिवि (भवि)।

वच सक [उद् + नमय्] ऊँचा उठाना। वंचइ (?) (धात्वा १५१)।

वच वि [वञ्च] ठगनेवाला, धूर्त, 'कुडिलत्तण च वकत्तण च वंचत्तणं असच्च च' (वज्जा ११६, हे ४, ४१२)।

वचअ } वि [वञ्चक] ऊपर देखो (नाट—
वंचग } मालवि, श्रा २८)।

वंचण न [वञ्चन] १ प्रतारण, ठगई (सम्मत्त २१७)। २ वि. ठगनेवाला, ठग (सबोध ४१)। °चण वि [°चण] ठगने मे चतुर (सम्मत्त २१७)।

वंचणा स्त्री [वञ्चना] प्रतारणा (उव, कप्पू)।

वंचिअ वि [वञ्चित] १ प्रतारित (पाअ)। २ रहित्त, वर्जित (गउड)।

वछा स्त्री [वाञ्छा] इच्छा, चाह (सुपा ४०४)।

वज सक [वि + अञ्ज्] व्यक्त करना, प्रकट करना। कर्म. वजिज्जइ (विसे १९४, ४६३, धर्मसं ५३)।

वज देखो वच = उद् + नमय्। वजइ (?) (धात्वा १५१)।

वंज देखो वंद = वन्द्।

वजग देखो वजय (राज)।

वजण न [व्यञ्जन] १ वर्ण, अक्षर, 'अणक्खर होज्ज वजणक्खरओ' (विसे १७०), 'तो नत्थि अत्थमेओ वजणरयणा पर भिन्ना' (चेइय ८९६)। २ स्वर-भिन्न अक्षर, क से ह तक वर्ण (विसे ४६१, ४६२)। ३ शब्द, पद, 'सो पुण समासओ चिअ वंजणणिअओ य अत्थनिअओ अ' (सम्म ३०, सुअनि ६, पडि, विसे १७०)। ४ तरकारी, कढी आदि रस-व्यञ्जक वस्तु (सुपा ६२३, ओघ ३५९)। ५ शुक्र, वीर्य (विसे २२८)। ६ शरीर का मसा आदि चिह्न (पव २५७, औप)। ७ मसा आदि शरीर चिह्नों के फल का उपदेशक शास्त्र (सम ४९)। ८ कक्षा आदि के बाल (राज)। ९ प्रकाशन, व्यक्तीकरण (विसे ४६१)। १० श्रोत्रादि इन्द्रिय। ११ शब्द आदि द्रव्य। १२ द्रव्य और इद्रिय का सबन्ध (णदि, विसे २५०)। °वग्गह, °ोग्गह पुं [°विग्रह] ज्ञान-विशेष, चक्षु और मन को छोड कर अन्य इन्द्रियों से होनेवाला ज्ञान-विशेष (कम्म १, ४, ठा २, १)।

वजय वि [व्यञ्जक] व्यक्त करनेवाला (भास २९)।

वजर पु [मार्जार] बिल्ला, बिलार (हे २, १३२; कुमा)।

वंजर न [दे] नीवी, कटी-वस्त्र (दे ७, ४१)।

वंजिअ वि [व्यञ्जित] व्यक्त किया हुआ, प्रकटित (कुमा १, १८, २, ६९)।

वंजुल पुं [वञ्जुल] १ अशोक वृक्ष (गा ४२२, स १११)। २ वेतस वृक्ष (पाअ), 'वजुलसरणेण विस व पन्नगो मुयइ सो पाव' (धम्म ११ टी, वज्जा ९६, उप ७२८ टी)। ३ पक्षि-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८)।

लालप अक [वि + लप्] विलाप करना, विकल होकर रोना । लालपइ (प्राकृ ७३) ।

लालपिअ न [दे] १ प्रवाल । २ खलीन । ३ आक्रन्दित (दे ७, २७) ।

लालभ देखो लालंप । लालभइ (प्राकृ ७३) ।

लालण न [लालन] स्नेह-पूर्वक पालन (पउम २६, ८८) ।

लालप्प देखो लालप । लालप्पइ (प्राकृ ७३) ।

लालप्प सक [लालप्य्] १ खूब बकना । २ बारबार बोलना । ३ गर्हित बोलना । लालप्पइ (सूअ १, १०, १६) । वकृ. लालप्पमाण (उत्त १४, १०, आचा) ।

लालप्पण न [लालपन] गर्हित जल्पन (पण्ह १, ३—पत्र ४३) ।

लालम्भ } देखो लालप । लालम्भइ, लालम्हइ
लालम्ह } (प्राकृ ७३, धात्वा १५०) ।

लालय न [लालक] लाला, लार (दे ५, १६) ।

लालस वि [दे] १ मृदु, कोमल । २ स्त्रीन इच्छा (दे ७, २१) ।

लालस वि [लालस] लम्पट, लोलुप (पाअ, हे ४, ४०१) ।

लाला स्त्री [लाला] लार, मुँह से गिरता जल-लव (औप, गा ५५१, कुमा, सुपा २२६) ।

लालिअ देखो ललिअ, 'कुसुमिअहरिअदण-कणयदडपरिरभलालिअगोओ' (गउड) ।

लालिअ वि [लालित] स्नेह पूर्वक पालित (भवि) ।

लालिच (अप) पु [नालिच] वृक्ष-विशेष (पिंग) ।

लालिल्ल वि [लालावत्] लारवाला (सुपा ५३१) ।

लाव सक [लापय्] बुलवाना, कहलाना । लावएज्जा (सूअ १, ७, २४) ।

लाव देखो लावग (उप ५०७) ।

लावज न [दे] सुगन्धी तृण विशेष, उशीर, खस (दे ७, २१) ।

लावक } पुं [लावक] १ पक्षि-विशेष (विपा
लावग } १, ७—पत्र ७५, पण्ह १, १—पत्र ८) । २ वि. काटनेवाला (विसे ३२०६) ।

लावणिअ वि [लावणिक] लवण से संस्कृत (विपा १, २—पत्र २७) ।

लावण्ण } देखो लायण्ण (औप, रभा, काल,
लावन्न } अभि ९२, भवि) ।

लावय देखो लावग (उवा) ।

लाविय (अप) वि [लात] लाया हुआ (भवि) ।

लाविया स्त्री [दे] उपलोभन (सूअ १, २, १, १८) ।

लाविर वि [लवितृ] काटनेवाला (गा ३५५) ।

लास सक [लासय्] नाचना । लासति (राय १०१) ।

लास न [लास्य] १ भरतशास्त्र-प्रसिद्ध गेयपद आदि (कुमा) । २ नृत्य, नाच (पाअ) । ३ स्त्री का नाच । ४ वाद्य, नृत्य और गीत का समुदाय (हे २, ९२) ।

लासक } पु [लासक] १ रास गानेवाला ।
लासग } २ जय शब्द बोलनेवाला, भाण्ड (णाया १, १ टी—पत्र २, औप, पण्ह २, ४—पत्र १३२, कप्प) ।

लासय पुं [लासक, ह्लासक] १ अनार्य देश-विशेष । २ पु स्त्री अनार्य देश-विशेष का रहनेवाला । स्त्री °सिआ (औप, णाया १, १—पत्र ३७, इक, अत) । देखो ल्हासिय ।

लासयविहय पु [दे लासकविहग] मयूर, मोर (दे ७, २१) ।

लाह सक [श्लाघ्] प्रशंसा करना । लाहइ (हे १, १८७) ।

लाह देखो लाभ (उव, हे ४, ३९०, श्रा १२, णाया १, ९) ।

लाहण न [दे] भोज्य भेद, खाद्य वस्तु की भेंट (दे ७, २१, ६, ७३, सट्ठि ७८ टी, रंभा १३) ।

लाहल देखो णाहल (से १, २५६, कुमा) ।

लाहव देखो लाघव (किरात १७) ।

लाहवि देखो लाघवि (भवि) ।

लाहविय देखो लाघविअ (राज) ।

लिअ सक [लिप्] लेपन करना, लीपना । लिअइ (प्राकृ ७१) ।

लिअ वि [लिप्त] १ लीपा हुआ (गा ५२८) । २ न लेप (प्राकृ ७७) ।

लिआर पु [लृकार] 'लृ' वर्ण (प्राकृ ६) ।

लिंक पु [दे] बाल, लड़का (दे ७, २२) ।

लिंकिअ वि [दे] १ आक्षिप्त । २ लीन (दे ७, २८) ।

लिंखय देखो लख (सुपा ३५६) ।

लिंग सक [लिङ्ग्] १ जानना । २ गति करना । ३ आलिंगन करना । कर्म. लिंगिज्जइ (सबोध ५१) ।

लिंग न [लिङ्ग] १ चिह्न, निशानी (प्रासू २४, गउड) । २ दार्शनिकों का वेष-धारण, साधु का अपने धर्म के अनुसार वेष (कुमा, विसे १५८५ टि, ठा ५, १—पत्र ३०३) । ३ अनुमान प्रमाण का साधक हेतु (विसे १५५०) । ४ पुंश्चिह्न, पुरुष का असाधारण चिह्न (गउड) । ५ शब्द का धर्म-विशेष, पुंलिंग आदि (कुमा, राज) । °द्धय पुं [°ध्वज] वेषधारी साधु (उप ४८६) । °जीव पु [°जीव] वही अर्थ (ठा ५, १) ।

लिंगि वि [लिङ्गिन्] १ साध्य, हेतु से जानी जाती वस्तु (विसे १५५०) । २ किसी धर्म के वेष को धारण करनेवाला साधु, सन्यासी (पउम २२,३, सुर २,१३०) । स्त्री °णी (पुप्फ ४५४) ।

लिंगिय वि [लैङ्गिक] १ अनुमान प्रमाण (विसे ९५) । २ किसी धर्म के वेष को धारण करनेवाला साधु, सन्यासी (मोह १०१) ।

लिछ न [दे] १ चुल्ली-स्थान, चुल्हा का आश्रय । २ अग्नि-विशेष (ठा ८ टी—पत्र ४१६) । देखो लिच्छ ।

लिड न [दे] १ हाथी आदि की विष्ठा, गुजराती में 'लीद' (णाया १, १—पत्र ६३, उप २६४ टी, ती २) । २ शैवल-रहित पुराना पानी (पण्ह २, ५—पत्र १५१) ।

लिडिया स्त्री [दे] अज—बकरा आदि की विष्ठा, लेंडी, गुजराती में 'लिंडी' (उप पृ २३७) ।

लिन देखो ले = ला ।

लिप सक [लिप्] लीपना, लेप करना । लिपइ (हे ४, १४९, प्राकृ ७१) । कर्म लिप्पइ (आचा) । वकृ लिंपेमाण (णाया १, ६) । कवकृ लिप्पत, लिप्पमाण (ओघभा १६५, रयण २६) ।

लिंपण न [लेपन] लेप, लीपना (पिंड २४६, सुपा ६१६) ।

लिंपाविय वि [लेपित] लेप कराया हुआ (कुप्र १४०) ।

लिंपिय वि [लिप्त] लीपा हुआ (कुमा) ।

वसा स्त्री [वंशा] द्वितीय नरक-पृथिवी (ठा ७—पत्र ३८८, इक)।
वसि° देखो वसी = वश (कम्म १, २०)।
वसिअ वि [वांशिक] वंश वाद्य बजानेवाला (हे १, ७०, कुमा)।
वसिअ वि [व्यमित] छलित, प्रतारित (राज)।
वसी स्त्री [वांशी] १ सुरा-विशेष (बृह २)। २ बाँस की जाली (ठा ३, १—पत्र १२१)। °कलंका स्त्री [°कलङ्का] बाँस की जाली की बनी हुई बाड (विपा १, ३—पत्र ३८)। °पत्तिया स्त्री [°पत्रिका] योनि-विशेष, वंशजाली के पत्र के आकार की योनि (ठा ३, १)।
वसी स्त्री [वशी] वाद्य-विशेष, मुरली (बृह २)। °णहिया स्त्री [°नखिका] वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३८)। °मुह पु [°मुख] द्वीन्द्रिय जीव-विशेष (जीव १ टी—पत्र ३१)।
वसी स्त्री [वश] बाँस। °मूल न [°मूल] बाँस की जड (कस)।
वसी स्त्री [दे] मस्तक पर स्थित माला (दे ७, ३०)।
वक्क न [वाक्य] पद-समुदाय, शब्द-समूह (उव, उप ८३३, ८५६)।
वक्क न [वल्क] त्वचा, छाल (उप ८३६, औप)। °बंध पु [°बन्ध] वल्क-बन्धन (विपा १, ८)।
वक्क देखो वंक = वंक (णाया १, ८—पत्र १३३, स ६११, धर्मसं ३४८, ३४६)।
वक्क न [वक्त्र] मुख, मुँह (पउम १११, १७, गा १६४)।
वक्क न [दे] पिष्ट, पिसान, आटा (षड्)।
वक्कंत पुन [वक्रान्त] प्रथम नरक-भूमि का दसवाँ नरकेन्द्रक—नरकावास-विशेष (देवेन्द्र ५)।
वक्कंत वि [अवक्रान्त] उत्पन्न (कप्प, पि १४२)।
वक्कंति स्त्री [अवक्रान्ति] उत्पत्ति (कप्प, सम २, भग)।
वक्कड न [दे] १ दुर्दिन। २ निरन्तर वृष्टि (दे ७, ३५)।
वक्कडबंध न [दे] कर्णाभरण, कान का आभूषण (दे ७, ५१)।
वक्कम अक [अव + क्रम्] उत्पन्न होना। वक्कमइ (भग, कप्प)। भूका. वक्कमिंसु (कप्प)। भवि. वक्कमिस्सति (कप्प)। वकृ. वक्कममाण (भग, णाया १, १—पत्र २०)।
वक्कर (अप) देखो वक्क = वक (भवि)।
वक्कल न [वल्कल] वृक्ष की छाल (प्राप्र, सुपा २५२, हे ४, ३४१, ४११, प्रति ५)। °चीरि पु [°चीरिन्] एक महर्षि, जो राजा प्रसन्नचन्द्र के छोटे भाई थे (कुप्र २८६)।
वक्कलि } वि [वल्कलिन] वृक्ष की छाल वक्कलिण } पहननेवाला (तापस), (कुमा, भत्त १००, सबोध २१, पउम ३६, ८४)।
वक्कल्लय वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ (दे ७, ४६)।
वक्कस न [दे] १ पुराना धान का चावल। २ पुरातन सक्तु-पिण्ड। ३ बहुत दिनों का वासी गोरस। ४ गेहूँ का माँड (आचा १, ६, ४, १३)
वक्किद (शौ) देखो वक्किअ (पि ७४)।
वक्ख देखो वच्छ = वृक्ष (चंड, उप ८८५)।
वक्ख देखो वच्छ = वक्षस् (संक्षि १५; प्राकृ २२, नाट—मृच्छ १३३)।
°वक्ख देखो पक्ख (गा ४४२, से ३, ४२, ४, २३, स ६५१)।
वक्खमाण देखो वय = व्।
वक्खल वि [दे] आच्छादित, ढका हुआ (षड्)।
वक्खा सक [व्या + ख्या] १ विवरण करना। २ कहना। कृ. वक्खेय (विसे १३७०)।
वक्खा स्त्री [व्याख्या] विवरण, विशद रूप से अर्थ प्ररूपण (विसे ६६४)।
वक्खाण न [व्याख्यान] १ ऊपर देखो (चेइय २७१, विसे ६६५)। २ कथन (हे २, ६०)।
वक्खाण सक [व्याख्यानय्] १ विवरण करना। २ कहना। वक्खाणइ (भवि)। भवि. वक्खाणइस्स (शौ) (पि २७६)। कर्म. वक्खाणिज्जइ (विसे ६८४)। वकृ. वक्खाणयंत (उवर ६८, रयण २१)। संकृ. वक्खाणेउ (विसे ११)। कृ वक्खाणेअव्व (राज)।
वक्खाणि वि [व्याख्यानिन] व्याख्यान-कर्त्ता (धर्मसं १२६१)।
वक्खाणिय वि [व्याख्यानित] व्याख्यात (विसे १०८७)।
वक्खाणीअ (अप) ऊपर देखो (पिंग ५०६)।
वक्खाय वि [व्याख्यात] १ विवृत, वर्णित (स १३२, चेइय ७७१)। २ पुं. मोक्ष, मुक्ति (आचा १, ५, ६, ८)।
वक्खार पु [दे] वखार, अन्न आदि रखने का मकान, गोदाम (उप १०३१ टी)।
वक्खार पु [वक्षार, वक्षस्कार] १ पर्वत-विशेष, गज-दन्त के आकार का पर्वत (सम १०१, इक)। २ भू-भाग, भू-प्रदेश (पउम २, ५४, ५५; ५६, ५८)।
वक्खारय न [दे] १ रति-गृह। २ अन्त:पुर (दे ७, ४५)।
वक्खाव सक [व्या + ख्यापय्] व्याख्यान कराना। वक्खावइ (प्राकृ ६१)।
वक्खित्त वि [व्याक्षिप्त] १ व्यग्र, व्याकुल (ओघ १३, कुप्र २७)। २ किसी कार्य में व्यापृत (पव २)।
वक्खेय देखो वक्खा = व्या + ख्या।
वक्खेव पु [व्याक्षेप] १ व्यग्रता, व्याकुलता (उवा, उप १३६ टी, १४०)। २ कार्य-बाहुल्य (सुख ३, १)।
वक्खेव पु [अवक्षेप] प्रतिषेध, खण्डन (गा २४२ अ)।
वक्खो° देखो वच्छ = वक्षस्। °रुह पुं [°रुह] स्तन, थन (सुपा ३८६)।
वक्नु (शौ) देखो वक्क = वल्क (प्राकृ ६७)।
वखाण (अप) देखो वक्खाण = व्याख्यानय्। वखाणउ (पिंग)।
वखाणिअ (अप) देखो वक्खाणिय (पिंग)।
वगडा स्त्री [दे] वाड, परिक्षेप (कस, वव ६)।
वग्ग सक [वल्ग्] १ जाना, गति करना। २ कूदना। ३ बहु-भाषण करना। ४ अभिमान-सूचक शब्द करना, खूँखारना। वग्गइ (भवि, सण, पि २६६), वग्गंति (सुपा २८८)। कर्म. वग्गीअदि (शौ) (किरात १७)। वकृ. वग्गंत (स ३८३, सुपा ४६३, भवि)। संकृ. वग्गित्ता (पि २६६)।

लुंखिअ वि [दे] कलुष, मलिन (से १५, ४२)।

लुंच सक [लुञ्च] १ बाल उखाड़ना। २ अपनयन करना, दूर करना। लुंचइ (भवि)। भूका. लुंचिसु (आचा)।

लुंचिअ वि [लुञ्चित] केश-रहित किया हुआ, मुण्डित (कुप्र २९२, सुपा ६४१)।

लुंछ सक [मृज्, प्र+उञ्छ्] मार्जन करना, पोछना। लुंछइ (हे ४, १०५, प्राकृ ६७, धात्वा १५१)। वकृ. लुंछत (कुमा)।

लुंट सक [लुण्ट्] लूटना। लुंटंति (सुपा ३५२)। वकृ लुंटत (धर्मवि ११३)। कवकृ लुंटिज्जत (सुर २, १४)।

लुंटण न [लुण्टन] लूट (सुर २, ४९, कुमा)।

लुंटाक त्रि [लुण्टाक] लूटनेवाला, लुटेरा (धर्मवि १२३)।

लुंठग वि [लुण्ठक] खल, दुर्जन, 'चडवद-वेढिआ उवहसिज्जमाणा लुंठगलोएण, अणु-कपिज्जती धम्मिअजणेण' (सुख २, ९)।

लुंठिअ वि [लुण्ठित] बलाद् गृहीत, जबर-दस्ती से लिया हुआ (पिंग)।

लुंप सक [लुप्] १ लोप करना, विनाश करना। २ उत्पीडन करना। लुंपइ, लुंपहा (प्राकृ ७१, सूअ १, ३, ४, ७)। कर्म लुप्पइ (अचा), लुप्पए (सूअ १, २, १, १३)। कवकृ. लुपंत, लुप्पमाण (पि (पि ५४२, उवा)। सकृ लुंपित्ता (पि ५८२)।

लुपइत्तु वि [लोपयितृ] लोप करनेवाला (आचा, सूअ २, २, ६)।

लुंपणा स्त्री [लोपना] विनाश (पण्ह १, १—पत्र ६)।

लुपित्तु वि [लोप्तृ] लोप करनेवाला (आचा)।

लुंबी स्त्री [दे. लुम्बी] १ स्तवक, फलों का गुच्छा (दे ७, २८, कुमा, गा ३२२, कुप्र ४९०)। २ लता, वल्ली (दे ७, २८)।

लुक्क अक [नि+ली] लुकना, छिपना। लुक्कइ (हे ४, ५५, षड्)। वकृ. लुक्कंत (कुमा, वज्जा ५६)।

लुक्क अक [तुड्] टूटना। लुक्कइ (हे ४, ११६)।

लुक्क वि [दे] सुप्त, सोया हुआ (षड्)।

लुक्क वि [निलीन] लुका हुआ, छिपा हुआ (गा ४९, ५५८, पिंग)।

लुक्क वि [रुग्ण] १ भग्न (कुमा)। २ बीमार, रोगी (हे २, २)।

लुक्क वि [लुञ्चित] मुण्डित, केश-रहित (कप्प, पिंड २१७)।

लुक्कमाण देखो लोअ = लोक्।

लुक्किअ वि [तुडित] टूटा हुआ, खण्डित (कुमा)।

लुक्किअ वि [निलीन] लुका हुआ, छिपा हुआ (पिंग)।

लुक्ख पु [रूक्ष] १ स्पर्श विशेष, लूखा स्पर्श (ठा १, सम ४१) २ वि रूक्ष स्पर्शवाला, स्नेह रहित, लूखा, रूखा (णाया १, १—पत्र ७३, कप्प, औप)। देखो लूह = रूक्ष।

लुग्ग वि [दे. रुग्ण] १ भग्न, भांगा हुआ (दे ७, २३, हे २, २, ४, २५८)। २ रोगी, बीमार (हे २, २, ४, २५८ षड्)।

लुच्छ देखो लुंछ = मृज्। लुच्छइ (षड्)।

लुट्ट सक [लुण्ट्] लूटना। लुट्टइ (षड्)।

लुट्ट देखो लोट्ट = स्वप्। लुट्टइ (कुमा ६, १००)।

लुट्ट वि [लुण्टित] लूटा गया (धर्मवि ७)।

लुट्ठ पु [लोष्ट] रोडा, ढेला, ईंट आदि का टुकड़ा (दे ७, २९)।

लुड्ढ देखो लुद्ध (प्राकृ २१)।

लुढ अक [लुठ्] लुढकना, लेटना। वकृ लुढमाण (स २५४)।

लुढिअ वि [लुठित] लेटा हुआ (सुपा ५०३, स ३६९)।

लुण देखो लुअ = लू। लुणइ (हे ४, २४१)। कर्म. लुणिज्जइ, लुव्वइ (प्राप्र, हे ४, २४२)। सकृ लुणिऊण, लुणेऊण (प्राकृ ६९, षड्), लुणेप्पि (अप) (पि ५८८)।

लुणिअ वि [लून] काटा हुआ (धर्मवि १२९, सिरि ४०४)।

लुत्त वि [लुप्त] लोप-प्राप्त, 'करेइ लुत्तो इकारो त्थ' (चेइय ६७७)।

लुत्त न [लोप्त्र] चोरी का माल (श्रावक ९३ टी)।

लुद्ध पुं [लुब्ध] १ व्याध (पण्ह १, २, निचू ४)। २ वि लोलुप, लम्पट (पाअ, विपा १, ७—पत्र ७९, प्रासू ७६)। ३ न लोभ (बृह ३)।

लुद्ध न [लोध्र] गन्ध-द्रव्य विशेष, 'मिणाए अदुवा कक्क लुद्धं पउमगाणि अ' (दस ६, ६४)। देखो लोद्ध = लोध्र।

लुद्ध पुन [लोध्र] क्षार-विशेष (आचा २, १३, १)।

लुप्पत } देखो लुंप।
लुप्पमाण }

लुब्भ } अक [लुभ्] १ लोभ करना।
लुभ } २ आसक्ति करना। लुब्भइ, लुब्भसि (हे ४, १५३, कुमा), लुभइ (षड्)। कृ. लुभियव्व (पण्ह २, ५—पत्र १४९)।

लुभ देखो लुह = मृज्। लुभइ (मक्षि ३५)।

लुरणी स्त्री [दे] वाद्य-विशेष (दे ७, २४)।

लुल देखो लुढ। लुलइ (पिंग)। वकृ. लुलत, लुलमाण (सुपा ११, सुर १०, २३१)।

लुलिअ वि [लुठित] लेटा हुआ (सुर ४, ६८)।

लुलिअ वि [लुलित] घूर्णित, चलित (उवा, कुमा, काप्र ८९३)।

लुव देखो लुअ = लू। लुवइ (धात्वा १५१)।

लुव्व° देखो लुण।

लुह सक [मृज्] मार्जन करना, पोंछना। लुहइ (हे ४ १०५, षड्, प्राकृ ६६, भवि)।

लुहण न [मार्जन] शुद्धि (कुमा)।

लूअ देखो लुअ = लून (षड्)।

लूआ स्त्री [दे] मृग-तृष्णा, सूर्य-किरण में जल की भ्रान्ति (दे ७, २४)।

लूआ स्त्री [लूता] १ वातिक रोग विशेष (पचा १८, २७, सुपा १४७, लहुअ १५)। २ जाल बनानेवाला कृमि, मकड़ी (ओघ ३२३, दे)।

लूड [लुण्ट्] लूटना, चोरी करना। लूडइ, लूडेइ, लूडेह (धर्मवि ८०, संवेग २९, कुप्र ५९)। हेकृ. लूडेउं (सुपा ३०७, धर्मवि १२४)। प्रयो., वकृ. लूडावत (सुपा ३५२)।

वच्चंसि वि [वचस्विन्] प्रशस्त वचनवाला (णाया १, १—पत्र ६)।

वच्चंसि वि [वर्चस्विन] तेजस्वी (णाया १, १, सम १५२, औप, पि ७४)।

वच्चय पु [व्यत्यय] विपर्यास, उलट-पुलट (उपपृ २६६, पव १०४)। देखो वत्तअ।

वच्चरा (अप) देखो वचा (भवि)।

वच्च। देखो वग = वच्।

वच्चामेलिय देखो विच्चामेलिय (विसे १४८१)।

वच्चास पुं [व्यत्यास] विपर्यास, विपर्यय (ओघ २७१, कम्म ५, ८६)।

वच्चासिय वि [व्यत्यासित] उलटा किया हुआ (विसे ८५३)।

वच्चीसग पुं [वच्चीसक] वाद्य-विशेष (अनु)।

वच्चो° देखो वच्च = वर्चस् (सुर ६, २८)।

वच्छ न [दे] पार्श्व, समीप (दे ७, ३०)।

वच्छ पुंन [वक्षस्] छाती, सीना (हे २ १७, सक्षि १५, प्राप्र, गा १५१, कुमा)। °त्थल न [°स्थल] उर -स्थल, छाती (कुमा, महा)। °सुत्त न [°सूत्र] आभूषण-विशेष, वक्ष स्थल में पहनने की सँकली—सिकडी या सिकरी (भग ६, ३३ टी—पत्र ४७७)।

वच्छ पु [वृक्ष] पेड, शाखी, द्रुम (प्राप्र, कुमा, हे २, १७, पाअ)।

वच्छ पुं [वत्स] १ वछडा (सुर २, ६५, पाअ)। २ शिशु, बच्चा। ३ वत्सर, वर्ष। ४ वक्ष स्थल, छाती (प्राप्र)। ५ ज्योतिषशास्त्र-प्रसिद्ध एक चक्र (गण १६)। ६ देश-विशेष (ती १०)। ७ विजय-क्षेत्र-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)। ८ न गोत्र-विशेष। ९ वि उस गोत्र मे उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३९०, कप्प)। °दर पुस्त्री [°तर] क्षुद्र वत्स। २ दमनीय वछडा आदि। स्त्री. °री (प्राकृ २३)। °मित्ता स्त्री [°मित्रा] १ अधोलोक मे रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७, इक)। २ ऊर्ध्वलोक मे रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (इक, राज)। °यर देखो °दर (दे २, ६, ७, ३७)। °राय पु [°राज] एक राजा (ती १०)। °वाल पुस्त्री [°पाल] गोप, ग्वाला (पाअ)। स्त्री °री (श्रावम)।

वच्छ वि [वात्स्य] वात्स्य गोत्र का (णंदि ४८)।

वच्छगावई स्त्री [वत्सकावती] एक विजय-क्षेत्र (ठा २, ३—पत्र ८०, इक)।

वच्छर पुंन [वत्सर] साल, वर्ष (प्राप्र, सिरि ६३५)।

वच्छल वि [वत्सल] स्नेही, स्नेह-युक्त (गा ३, कुमा, सुर ६, १३७)।

वच्छल्ल न [वात्सल्य] स्नेह, अनुराग, प्रेम (कुमा, पडि)।

वच्छा स्त्री [वत्सा] १ विजय-क्षेत्र विशेष। २ एक नगरी (इक)। ३ लडकी (कप्पू)।

वच्छाण पुं [उक्षन्] बैल, बलीवर्द, 'उक्खा वसहा य वच्छाणा' (पाअ)।

वच्छावई स्त्री [वत्सावती] विजय-क्षेत्र विशेष (ज ४)।

वच्छि° देखो वय = वच्।

वच्छिउड पु [दे] गर्भाशय (दे ७, ४४ टी)।

वच्छिम पुस्त्री [वृक्षत्व] वृक्षपन (षड्)।

वच्छिमय पु [दे] गर्भ शय्या (दे ७, ४४)।

वच्छीउत्त पुं [दे] नापित, हजाम (दे ७, ४७, पाअ, न ७५)।

वच्छीव पु [दे] गोप, ग्वाला (दे ७, ४१, पाअ)।

वच्छुद्धलिअ वि [दे] प्रत्युद्धत (षड्)।

वच्छोम न [वच्छोम] नगर-विशेष, कुन्तल देश की प्राचीन राजधानी (कप्पू)।

वच्छोमी स्त्री [दे] काव्य की एक रीति (कप्पू)।

वज्ज अक [त्रस्] डरना। वज्जइ, वज्जए (हे ४, १९८, प्राकृ ७५, धात्वा १५१)।

वज्ज देखो वच्च = व्रज्। वज्जइ (नाट—मृच्छ १९३), वज्जमि (पि ४८८)।

वज्ज सक [वर्जय्] त्याग करना। कवकृ. वज्जिज्जंत (पंचा १०, २७)। सकृ. वज्जिय, वज्जेवि, वज्जिऊण, वज्जेत्ता (महा, काल, पंचा १२, ६)। कृ वज्ज, वज्जणिज्ज, वज्जेयव्व (पिंड ५९२, भग, पण्ह २, ४, सुपा ४८५, महा, पण्ह १, ४, सुपा ११०, उप १०३७)।

वज्ज अक [वद्] वजना, वाद्य आदि की आवाज होना। वज्जइ (हे ४, ४०६; सुपा ३३४)। वकृ. वज्जंत, वज्जमाण (सुर ३, ११५, सुपा ६५६)।

वज्ज न [वाद्य] वाजा, वादित्र (दे ३, ५८, गा ४२०)।

वज्ज वि [वर्य] १ श्रेष्ठ, उत्तम (सुर १०, २)। २ प्रधान, मुख्य (हे २, २४)।

वज्ज वि [वर्ज] १ रहित, वर्जित, 'जिणवज्ज-देवयाणं न नमइ जो तस्स तणुसुद्धी' (श्रा ६), 'सहजनिग्रोगजवज्जा पायं न घडति आगारी' (चेइय ४७१), 'लोयववहारवज्जा तुब्भे परमत्थमूढा य' (धर्मवि ८४५, विसे २८४७, श्रावक ३०७, सुर १४, ७८)। २ न. छोडकर, विना, सिवाय (श्रा ६, द १७, कम्म ४, ३४, ५३)। ३ पु. हिंसा, प्राणि-वध (पण्ह १, १—पत्र ६)।

वज्ज देखो अवज्ज (सूअ १, ४, २, १९, वृह १)।

वज्ज देखो वइर = वज्र (कुमा, सुर ४, १५२, गु ५, हे १, १७७, २, १०५, षड्, कम्म १, ३९, जीवस, ४९, सम २५)। १७ पुं. विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, १६, १७, ८, १३३)। १८ हिंसा, प्राणि-वध (पण्ह १, १—पत्र ६)। १९ कन्द-विशेष (पण्ण १—पत्र ३६, उत्त, ३६, ९९)। २० न कर्म-विशेष, बँधाता हुआ कर्म (सूअ २, २, ६५, ठा ४, १—पत्र १९७)। २१ पाप (सूअ १, ४, २, १९)। °कंठ पु [°कण्ठ] वानर-द्वीप का एक राजा (पउम ६, ६०)। °कंत न [°कान्त] एक देव-विमान (सम २५)। °कंद पु [°कन्द] एक प्रकार का कन्द, वनस्पति-विशेष (श्रा २०)। °कूड न [°कूट] एक देव-विमान(सम २५)। °क्ख पु [°ाक्ष] एक विद्याधर वंशीय राजा (पउम ८, १३२)। °चूड पुं [°चूड] विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, ४६)। °जंघ पु [°जङ्घ] विद्याधर-वंशीय एक नरेश (पउम ५, १५)। °णाभ पु [°नाभ] भगवान अभिनन्दन-स्वामी के प्रथम गणधर (सम १५२)। देखो °नाभ। °दत्त पु [°दत्त] १ विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, १५)। २ एक जैन मुनि (पउम २०,१८)। °द्धय पुं [°ध्वज] एक विद्याधर-

में निमित्त-भूत कृष्णादि द्रव्य (भग, उवा, औप, पव १५२, जीवस ७४, संबोध ४८, पएण १७, कम्म ४, १, ३१)।
लेसा स्त्री [लेश्या] ज्वाला (राय ५६, ५७)।
लेसिय वि [श्लेपित] श्लेष-युक्त (स ७६२)।
लेसुरुडयतरु पुं [दे] लसोडा; गु० गूदा (चउप्पन्न० पत्र २४३)।
लेस्सा देखो लेसा (भग)।
लेह देखो लिह = लिख्। लेहइ (प्राकृ ७०)।
लेह देखो लिह = लिह्। लेहइ (प्राकृ ७०)।
लेह (अप) देखो लह = लभ्। लेहइ (पिंग)।
लेह पुं [लेह] अवलेह, चाटन (पउम २, २८)।
लेह पु [लेख] १ लिखना, लेखन, अक्षर-विन्यास (गा २४४, उवा)। २ पत्र, चिट्ठी (कप्पू)। ३ देव, देवता। ४ लिपि। ५ वि लेख्य, जो लिखा जाय (हे २, १८६)। ६ लेखक, लिखनेवाला, 'अज्जवि लेहत्तणे तएहा' (वज्जा १००)। °वाह वि [°वाह] चिट्ठी ले जानेवाला, पत्र-वाहक (पउम ३१, १, सुपा ५११)। °वाहग, °वाहय वि [°वाहक] वही अर्थ (सुपा ३३१, ३८२)। °साला स्त्री [°शाला] पाठशाला (उप ७२८ टी)। °ारिय पुं [°ाचार्य] उपाध्याय, शिक्षक (महा)।
लेहड वि [दे] लम्पट, लुब्ध (दे ७, २५, उव)।
लेहण न [लेहन] चाटन, आस्वादन (पउम ३, १०७)।
लेहणी स्त्री [लेखनी] कलम, लेखनी (पउम २६, ५, गा २४४)।
लेहल देखो लहड (गा ४६१)।
लेहा देखो लिहा (औप, कप्प, कप्पू, कुप्र ३६६, स्वप्न ५२)।
लेहिय वि [लेखित] लिखवाया हुआ (ती ७)।
लेहुड पु [दे] लोष्ठ, रोडा, ढेला (दे ७, २४)।
लोअ देखो रोअ = रोचय्। सकृ लोएया (कस)।
लोअ सक [लोक्, लोकय्] देखना। वकृ. लोअअत (नाट)। कवकृ. लुक्कमाण (उप १४२ टी)। सकृ लोइउ (कुप्र ३)।

लोअ पु [लोक] १ धर्मास्तिकाय आदि द्रव्यो का आधार-भूत आकाश-क्षेत्र, जगत्, संसार, भुवन। २ जीव, अजीव आदि द्रव्य। ३ समय, आवलिका आदि काल। ४ गुण, पर्याय, धर्म। ५ जन, मनुष्य आदि प्राणि-वर्ग (ठा १—पत्र १३, टी—पत्र १४, भग, हे १, १८०, कुमा, जी १४, प्रासू ५२, ७१, उव, सुर १, ६६)। ६ आलोक, प्रकाश (वज्जा १०६)। °ग्ग न [°ाग्र] १ ईषत्प्राग्भारा नामक पृथिवी, मुक्त-स्थान (णाया १, ५—पत्र १०५, इक)। २ मुक्ति, मोक्ष, निर्वाण (पाअ)। °ग्गथूभिआ स्त्री [°ाग्रस्तूपिका] मुक्त-स्थान, ईषत्प्राग्भारा पृथिवी (इक)। °ग्गपडिवुज्झणा स्त्री [°ाग्रप्रतिबोधना] वही अर्थ (इक)। °णाभि पु [°नाभि] मेरु पर्वत (सुज्ज ५)। °प्पवाय पुं [°प्रवाद] जन-श्रुति, कहावत (सुर २, ४७)। °मज्झ पु [°मध्य] मेरु पर्वत (सुज्ज ५)। °वाय पुं [°वाद] जन-श्रुति, लोकोक्ति (स २६०, मा ४८)। °ागास पुं [°ाकाश] लोक-क्षेत्र, आलोक-मिश्र आकाश (भग)। °ाहाणय न [°ाभाणक] कहावत, लोकोक्ति (भवि)। देखो लोग।
लोअ पु [लोच] लुञ्चन, नोचना केशो का उत्पाटन, उखाडना (सुपा ६४१, कुप्र १७३, णाया १, १—पत्र ६०, औप, उव)।
लोअ पु [लोप] अदर्शन, विध्वंस (चेइय ६६१)।
लोअंतिय पु [लोकान्तिक] एक देव-जाति (कप्प)।
लोअग न [दे लोचक] गुण-रहित अन्न, खराब नाज (कम)।
लोअडी (अप) स्त्री [लोमपटी] कम्बल (हे ४, ४२३)।
लोअण पुन [लोचन] आंख, चक्षु, नेत्र (हे १, ३३, २, १८४, कुमा, पाअ, सुर २, २२२)। °वत्त न [°पत्र] अक्षि लोम, बरवनी, पक्ष्म (से ६, ६८)।
लोअणिल्ल वि [लोचनवत्] आँखवाला (सुपा २००)।
लोआणी स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष (पएण १—पत्र ३६)।

लोइअ वि [लोकित] निरीक्षित, दृष्ट (गा २७१, स ७१३)।
लोइअ वि [लौकिक] लोक-संबन्धी, सांसारिक (आचा, विपा १, २—पत्र ३०, णाया १, ६—पत्र १६६)।
लोउत्तर वि [लोकोत्तर] लोक-प्रधान, लोक-श्रेष्ठ, असाधारण, 'लोउत्तर चरिअ' (श्रा १६, विसे ८७०)। देखो लोगुत्तर।
लोउत्तरिय वि [लोकोत्तरिक] ऊपर देखो (श्रा १)।
लोंक वि [दे] सुप्त, सोया हुआ (दे ७, २३)।
लोग पुं [लोक] मान-विशेष, श्रेणी से गुणित प्रतर (अणु १७३)। °ायत देखो °ायय (अणु ३६)।
लोग देखो लोअ = लोक (ठा ३, २, ३, ३—पत्र १४२, कप्प, कुमा, सुर १, ७६, हे १, १७७, प्रासू २५, ४७)। ७ न एक देव-विमान (सम २५)। °कन न [°कान्त] एक देव-विमान (सम २५)। °कूड न [°कूट] एक देव-विमान (सम २५)। °ग्गचूलिआ स्त्री [°ाग्रचूलिका] मुक्त-स्थान, सिद्धि-शिला (सम २२)। °जत्ता स्त्री [°यात्रा] लोक-व्यवहार, रोजी (णाया १, २—पत्र ८८)। °ट्ठिइ स्त्री [°स्थिति] लोक-व्यवस्था (ठा ३, ३)। °दव्व न [°द्रव्य] जीव, अजीव आदि पदार्थ-समूह (भग)। °नाभि पु [°नाभि] मेरु पर्वत (सुज्ज ५ टी—पत्र ७७)। °नाह पु [°नाथ] जगत् का स्वामी, परमेश्वर (सम १, भग)। °परिपूरणा स्त्री [°परिपूरणा] ईषत्प्राग्भारा पृथिवी मुक्त-स्थान (सम २२)। °पाल पु [°पाल] इन्द्रो के दिक्पाल, देव-विशेष (ठा ३, १, औप)। °प्पभ पुं [°प्रभ] एक देव-विमान (सम २५)। °बिंदुसार पुंन [°बिन्दुसार] चौदहवाँ पूर्व-ग्रन्थ (सम ४४)। °मज्झावसिअ पुन [°मध्यावसित] अभिनय-विशेष (ठा ४, ४—पत्र २८५)। °मज्झावसाणिअ पुन [°मध्यावसानिक] वही अर्थ (राय)। °रूव न [°रूप] एक देव-विमान (सम २५)। °लेस न [°लेश्य] एक देव-विमान (सम २५)। °वण्ण न [°वर्ण] एक देव-विमान (सम २५)।

वट्ट सक [वर्त्तय्] १ वरतना। २ पिंड रूप से बाँधना। ३ परोसना। ४ ढकना, आच्छादन करना। वट्टति (पिंड २३९)। कवक्र वट्टिज्जमाण (औप)।

वट्ट वि [वृत्त] १ वर्तुल, गोलाकार (सम ६३, औप, उवा)। २ अतीत, गुजरा हुआ। ३ मृत। ४ सजात, उत्पन्न। ५ अधीत। ६ दृढ। ७ पुं कूर्म, कछुआ (हे २, २९)। ८ न. वर्तन, वृत्ति, प्रवृत्ति (सूअ १, ४, २, ७)। °क्खुर °खुर पु [°खुर] श्रेष्ठ अश्व (ओघ ४३८, राज)। °खेड, खेड्ड न [खेल] कला-विशेष (णाया १, १—पत्र ३८, स ६०३, अत ३१ टि), देखो वत्थ-खेड्ड। देखो वत्त, वित्त = वृत्त। °वेयड्ढ पुं [°वैताढ्य] पर्वत विशेष (ठा १०)।

वट्ट पुंन [वर्त्मन्] वाट, मार्ग, रास्ता, 'पडिसोएण पवट्टा चत्ता अणुसोअगामिणो वट्टा' (सार्ध ११८, सुर १०,४, सुपा ३३०), 'वट्ट' (प्राकृ २०)। °वाडण न [°पातन] मुसाफिरो को रास्ते मे लुटना, 'परदोहवट्टवाडण-वदग्गहखत्तखणणपमुहाइ' (कुप्र ११३), 'सो वट्टपाडणेहि वदग्गहणेहि खत्तखणणेहि' (धर्मवि १२३)।

वट्ट पुन [दे] १ प्याला, गुजराती मे 'वाटको', 'पढमघु टम्मि खलिग्रा जीहा, हत्थाउ निवडिय वट्ट' (सुपा ४९६)। २ पु हानि, नुकसान, गुजराती में 'वट्टो', 'अन्नह उवक्खएणवि मूला वट्टो इह होहि' (सुपा ४४५)। ३ लोट्टक, शिला-पुत्रक, लोढा, 'वट्टावरएण' (भग १९, ३—पत्र ७६६)। ४ खाद्य-विशेष, गाढी कढी (पण्ह २, ५—पत्र १४८)।

वट्ट पु [वर्त] देश-विशेष (सत्त ६७ टी)।

°वट्ट पुं [पट्ट] प्रवाह (कुमा)। देखो पट्ट (से ५, १४, भवि, गउड)।

वट्टत देखो वट्ट = वृत।

वट्टक, वट्टग देखो वट्टय = वर्तक (पण्ह १, १—पत्र ८, विपा १, ७—पत्र ७५, सूअ २, २, १०, २६, ४३)।

वट्टण देखो वत्तण (रंभा)।

वट्टणा देखो वत्तणा (राज)।

वट्टमग न [वर्त्मक] मार्ग, रास्ता (आचा, ओप)।

वट्टमाण देखो वट्ट = वृत्।

वट्टमाण न [दे] १ अंग, शरीर। २ गन्ध-द्रव्य का एक तरह का अधिवास (दे ७, ८९)।

वट्टय देखो वट्ट = दे (पउम १०२, १२०)।

वट्टय पु [वर्तक] १ पक्षि-विशेष, वटेर (सूअ १, २, १, २, उवा)। २ बालकों को खेलने का एक तरह का चपडे का बना हुआ गोल खिलौना (अनु ५, णाया १, १८—पत्र २३५)।

°वट्टय देखो पट्ट (गउड)।

वट्टा स्त्री [दे. वर्त्मन्] देखो वट्ट = वर्त्मन् (दे ७ ३१)।

वट्टा स्त्री [वार्त्ता] वात कथा (कुमा)।

वट्टाव सक [वर्तय्] वरताना, काम में लगाना। वट्टावेइ (उव)।

वट्टावण न [वर्तन] वरताना, कार्य लगाना (उव)।

वट्टावय वि [वर्तक] वरतानेवाला, प्रवर्त्तक (उव, णाया १, १४—पत्र १८९)।

वट्टावय वि [वर्तक] प्रतिजागरक, शुश्रूषाकर्त्ता (वव १)।

वट्टि स्त्री [वर्ति] १ वत्ती, दीपक मे जलनेवाली वाती। २ सलाई, आँख मे सुरमा लगाने की सली या सलाई। ३ शरीर पर किया जाता एक तरह का लेप। ४ लेख, लिखना। ५ कलम, पीछी (हे २, ३०)। देखो वत्ति, वित्ति।

वट्टिअ वि [वर्त्तित] १ परिवर्त्तित (दे ५, २७)। २ वलित (पत्र २१६ टी)। ३ वर्तुल, गोल (पण्ह १, ४—पत्र ७८, तदु २०)। ४ प्रवर्तित (भवि)।

वट्टिआ स्त्री [वर्तिका] देखो वट्टि (अभि २१७, नाट—रत्ना २१, स २३९)।

वट्टिम वि [दे] अतिरिक्त (दे ७, ३४)।

वट्टिय वि [दे] चूर्ण किया हुआ, पिसा हुआ, गुजराती मे 'वाटेलु', 'पक्खित्तं साहिणवट्टिय लोण' (स २६४)।

वट्टिव न [दे] पर-कार्य (दे ७, ४०)।

वट्टी स्त्री [वर्त्ती] देखो वट्टि (हे २, ३०)।

°वट्टी स्त्री [पट्टी] पट्टा, 'ताव य कडिवट्टीओ पडिया रयणावली झत्ति' (सुपा ३४४, १५४)।

वट्टु न [दे] पात्र-विशेष (बृह १)। °कर पुं [°कर] यक्ष-विशेष (राज)। °करी स्त्री [°करी] विद्या-विशेष (राज)।

वट्टुल वि [वर्तुल] १ गोल, वृत्ताकार (पाअ)। २ पुंन. पलाण्डु—प्याज के समान एक तरह का कन्द-मूल (हे २, ३०, प्राप्र)।

°वट्ठ देखो पट्ठ = पृष्ठ (गउड, गा १५०, हे १, ८४, १२९)।

°वट्ठि देखो सट्ठि, 'बा-वट्ठी' (सम ७५, पव ५, १८, पि २६५, ४४६)।

वड पुं [दे] १ द्वार का एक देश, दरवाजे का एक भाग। २ क्षेत्र (दे ७, ८२)। ३ मत्स्य की एक जाति (पण्ण १—पत्र ४७)। ४ विभाग (निचू २)। देखो वड्डु, 'वडसफर-पवहणाण' (सिरि ३८२)।

वड पुं [वट] १ वृक्ष-विशेष, वरगद, वड का पेड (पण्ण १—पत्र ३१, गा ६४, कप्पू)। २ न. वस्त्र विशेष, 'वडजुगपट्टजुगाइं' (णाया १, १ टी—पत्र ४३)। °नयर न [°नगर] नगर-विशेष (पउम १०५, ८८)। °वद्द न [°पद्र] १ गुजरात का एक नगर, जो आज कल 'वडौदा' नाम से प्रसिद्ध है (उप ५१६)। २ एक गोकुल (उप ५९७ टी)। °सावित्ती स्त्री [°सावित्री] एक देवी (कप्पू)।

वड देखो पड = पत्। वकृ. 'उअहिम्मि उण वडंता' (से ७, ७)।

°वड देखो पड = पट, 'पवणाहयवडचचलाओ लच्छीओ तह य मणुयाण' (सुर ४, ७६, से १०, १९, सुर १, ६१, ३, ६७, गा ३२९)।

वडग न [वटक] खाद्य-विशेष, वडा (पिंड ६३७)।

वडग देखो वड = वट (अत)।

°वडण देखो पडग (गा ५६७, गउड, महा)।

वडप्प न [दे] १ लता-गहन। २ निरन्तर वृष्टि (दे ७, ८४)।

वडभ वि [वडभ] १ वामन, ह्रस्व (ओघमा ८२)। २ जिसका पृष्ठ-भाग बाहर निकल आया हो वह (आचा)। ३ नाभि के ऊपर का भाग जिसका टेढ़ा हो वह (पण्ह १, १—पत्र २३)। ४ पीछे का या आगे का

(ठा ६—पत्र ३६५)। °च्चुअ पु [°च्युत] रत्नप्रभा-नरक का एक नरक-स्थान (उवा)।

लोलुंचाविअ वि [दे] रचित-तृष्ण, जिसने तृष्णा की हो वह (दे ७, २५)।

लोलुय देखो लोलुअ (सूअ २, ६, ४४)।

लोव सक [लोपय्] लोप करना, विध्वंस करना। लोवेइ (महा)।

लोव पुन [लोप] विध्वस, विनाश, अदर्शन, 'कम-लोवकारया' (कुप्र ४), 'आ दुट्ठे जासु वहिं लोवं व तुम अदसणा होसु' (धर्मवि १३३)।

लोह देखो लोभ = लोभ (कुमा, प्रासू १७६)।

लोह पुंन [लोह] १ धातु-विशेष, लोहा (विपा १, ६—पत्र ६६, पाअ, कुमा)। २ धातु, कोई भी धातु, 'जह लोहाण सुवन्न तणाण घन्न धणाण रयणाइं' (सुपा ६३६)। °कार पु [°कार] लोहार (कुप्र १८८)। °जघ पुं [°जङ्घ] १ भारत में उत्पन्न द्वितीय प्रतिवासुदेव राजा (सम १५४)। २ राजा चण्डप्रद्योत का एक दूत (महा)। °जघवण न [°जङ्घवन] मथुरा के समीप का एक वन (ती ७)।

लोह वि [लौह] लोहे का, लोह-निर्मित (सि १४, २०)।

लोहंगिणी स्त्री [लोहाङ्गिनी] छन्द-विशेष (पिंग)।

लोहल पुं [लोहल] शब्द-विशेष, अव्यक्त शब्द (पड्)।

लोहार पु [लोहकार] लोहार, लोहे का काम करनेवाला शिल्पी (दे ८, ७१, ठा ८—पत्र ४१७)।

लोहि° } देखो लोही, 'कुंभीसु य पयणेसु
लोहिअ° } य लोहियसु य कंदुलोहिकुंभीसु' (सूअनि ८०, ७६)।

लोहिअ पुं [लोहित] १ लाल रँग, रक्त-वर्ण। २ वि रक्त वर्णवाला, लाल (से २, ४, उवा)। ३ न रुधिर, खून (पउम ५, ७६)। ४ गोत्र-विशेष, जो कौशिक गोत्र की एक शाखा है (ठा ७—पत्र ३९०)।

लोहिअक पु [लोहित्यक, लोहिताङ्क] अठासी महाग्रहो मे तीसरा महाग्रह (सुज्ज २०)।

लोहिअक्ख पुं [लोहिताक्ष] १ एक महाग्रह (ठा २, ३—पत्र ७७)। २ चमरेन्द्र के महिष-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०२, इक)। ३ रत्न की एक जाति (णाया १, १—पत्र ३१, कप्प, उत्त ३६, ७६)। ४ एक देव विमान (देवेन्द्र १३२, १४४)। ५ रत्नप्रभा पृथिवी का एक काण्ड (सम १०४)। ६ एक पर्वत-कूट (इक)।

लोहिआ } अक [लोहिताय्] लाल
लोहिआअ } होना। लोहिआइ, ओहिआअइ (हे ३, १३८, कुमा)।

लोहिआमुह पु [लोहितामुख] रत्नप्रभा का एक नरकावास (स ८८)।

लोहिच्च पु [लौहित्य] आचार्य भूतदिन्न के शिष्य एक जैन मुनि (णदि ५३)।

लोहिच्च } न [लौहित्यायन] गोत्र-विशेष
लोहिच्चायण } (सुज्ज १०, १६ टी, इक, सुज्ज १०, १६)।

लोहिणी } स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष, कन्द-
लोहिणीहू } विशेष (पण्ण १—पत्र ३५), 'लोहिणीहू य थीहु य' (उत्त ३६, ९९, सुख ३६, ९९)।

लोहिल्ल वि [दे लोभिन्] लम्पट, लुब्ध (दे ७, २५, पउम ८, १०७, गा ४८४)।

लोही स्त्री [लौही] लोहे का बना हुआ भाजन-विशेष, कराह (उप ८३३, चारु १)।

ल्हस देखो लस = लस्। ल्हसइ (प्राकृ ७२)।

ल्हस अक [स्रस्] खिसकना, सरकना, गिर पडना। ल्हसइ (हे ४, १९७, पड्)। वकृ ल्हसत (वज्जा ९०)।

ल्हसण न [स्रसन] खिसकना, पतन (सुपा ५५)।

ल्हसाव सक [स्रसय्] खिसकाना। सकृ. ल्हसाविअ (सुपा ३०८)।

ल्हसाविअ वि [स्रसित] खिसकाया हुआ (कुमा)।

ल्हसिअ वि [स्रस्त] खिसक कर गिरा हुआ (कुप्र १८७, वज्जा ८४)।

ल्हसिअ वि [दे] हर्षित (चड)।

ल्हसुण देखो लसुण (पण्ण १—पत्र ४०, पि २१०)।

ल्हादि स्त्री [ह्लादि] आह्लाद, प्रमोद, खुशी (राज)।

ल्हाय पु [ह्लाद] ऊपर देखो (धर्मसं २१६)।

ल्हासिय पु [ल्हासिक] एक अनार्य मनुष्य-जाति (पण्ह १, १—पत्र १४)।

ल्हिक्क अक [नि + ली] छिपना। ल्हिक्कइ (हे ४, ५५, पड् २०६)। वकृ ल्हिक्कत (कुमा)।

ल्हिक्क वि [दे] १ नष्ट (हे ४, २५८)। २ गत (पड्)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि लआराइसद्दसकलणो
चउत्तीसइमो तरगो समत्तो ॥

वड्ढविअ वि [वर्धित, वर्धापित] जिसको बधाई दी गई हो वह (दे ६, ७४)।

वड्ढार (अप) सक [वर्धय्] वढाना, गुजराती मे 'वधारवु'। वड्ढारइ (भवि)।

वड्ढाव देखो वड्ढव। वड्ढावेमि (प्राकृ ६१, पि ५५२)।

वड्ढावअ देखो वड्ढवअ (प्राकृ ६१, कप्पू, उवा)।

वड्ढाविअ वि [दे] समापित, समाप्त किया हुआ (दे ७, ४५)।

वड्ढि वि [वर्धिन्] वढनेवाला (से १, १)।

वड्ढि स्त्री [वृद्धि] वढती, वढाव (उवा, देवेन्द्र ३६७, जीवस २७४)।

वड्ढिअ वि [वृद्ध] वढा हुआ (कुमा ७, ५८, गा ४१०, महा)।

वड्ढिअ वि [वर्धित] १ वढाया हुआ, 'महिवीढे नइवड्ढियनीरो उयहिव्व वित्थरइ' (सिरि ६२७)। २ खण्डित किया हुआ, काटा हुआ (से १, १)।

वड्ढिआ स्त्री [दे] कूपतुला, ढेंकुवा (दे ७, ३६)।

वड्ढिम पुस्त्री [वृद्धिमन्] वृद्धि, वढाव; 'पत्ता दिए वड्ढिमा' (प्राकृ ३३, कप्पू)।

वढ देखो वड = वट (हे २, १७४, पि २०७)।

वढ वि [दे] मूक, वाक्-शक्ति से रहित (सक्षि ३६)।

वढर } पु [वठर] १ मूर्ख छात्र। २
वढल } ब्राह्मण पुरुष और वैश्य स्त्री से उत्पन्न सतान, अम्बष्ठ। ३ वि. शठ, धूर्त। ४ मन्द, अलस (हे १, २५४, वड्)।

वण सक [वन्] मांगना, याचना करना। वणेइ (पिंड ४४३)।

वण पु [दे] १ अधिकार। २ श्वपच, चाँडाल (दे ७, ८२)।

वण पुन [व्रण] घाव, प्रहार, क्षत, 'जस्सेअ वणो तस्सेअ वेअणा (काप्र ८७१, गा ३८१, ४२७, पाअ)। °वट्ट पुं [°पट्ट] घाव पर वाँधी जाती पट्टी (गा ४५८)।

वण न [वन] १ अरण्य, जगल (भग; पाअ; उवा, कुमा, प्रासू ६२, १४५)। २ पानी, जल (पाअ, वजा ८८)। ३ निवास। ४ आलय (हे ३, ८८, प्राप्र)। ५ वनस्पति (कम्म ४, १०, १६, ३६, द १३)। ६ उद्यान, वगीचा (उप ६८६ टी)। ७ पु. देवो की एक जाति, वानव्यतर देव (भग, कम्म ३, १०)। ८ वृक्ष-विशेष (राय)। °कम्म पुंन [°कर्मन्] जगल को काटने या वेचने का काम (भग ८, ५—पत्र ३७०, पडि)। °कम्मत न [°कर्मान्त] वनस्पति का कारखाना (आचा २, २, २, १०)। °गय पुं [°गज] जगली हाथी (से ३, ६३)। °ग्गि पुं [°ग्नि] दावानल (पाअ)। °चर वि [°चर] वन मे रहनेवाला, जंगली (पण्ह १, १—पत्र १३)। स्त्री. °री (रयण ६०), देखो °यर। °छिंद वि [°च्छिद्] जगल काटनेवाला (कुप्र १०४)। °त्थली स्त्री [°स्थली] अरण्य-भूमि (से ३, ६३)। °दव पु [°दव] दवानल (णाया १, १—पत्र ६५)। °पव्वय पुन [°पर्वत] वनस्पति से व्याप्त पर्वत, 'वणाणि वा वणपव्वयाणि वा' (आचा २, ३, ३, २)। °विराल पु [°विडाल] जंगली विल्ला (सण)। °माल न [°माल] एक देव-विमान (सम ४१)। °माला स्त्री [°माला] १ पैर तक लटकनेवाली माला (औप, अच्चु ३६)। २ एक राज-पत्नी (पउम ११, १४)। ३ रावण की एक पत्नी (पउम ३६, ३२)। °य वि [°ज] वन में उत्पन्न, जगली (वज्जा १२८)। °यर वि [°चर] १ वन मे रहनेवाला, वनैला (णाया १, १—पत्र ६२, गउड)। २ पुस्त्री व्यन्तर देव (विसे ७०७, पव १६०)। स्त्री. °री (उप पृ ३३०)। °राइ स्त्री [°राजि] तरु-पक्ति, वृक्ष-समूह (चंड, सुर ३, ४२, अभि ५५)। °राज, °राय पुं [°राज] १ विक्रम की आठवी शताब्दी का गुजरात का एक प्रसिद्ध राजा (मोह १०८)। २ सिंह, केसरी (चड)। °लइया, °लया स्त्री [°लता] १ एक स्त्री का नाम (महा)। २ वह वृक्ष जिसको एक ही शाखा हो (कप्प, राय)। °वाल वि [°पाल] उद्यान-पालक, माली (उप ६८६ टी)। °वास पुं [°वास] अरण्य में रहना (पि ३५१)। °वासी स्त्री [°वासी] नगरी-विशेष (राज)। °विदुग्ग न [°विदुर्ग] नानाविध वृक्षों का समूह (सूअ २, २, ८, भग)। °विरोहि पु [°विरोहिन्] आषाढ मास (सुज्ज १०, १९)। °संड पुंन [°षण्ड] अनेकविध वृक्षों की घटा—समूह (ठा २, ४, भग, णाया १, २, औप)। °हत्थि पु [°हस्तिन्] जंगल का हाथी (से ८, ३६)। °ालि, °ाली स्त्री [°ालि] वन पक्ति (गा ५७९, हे २, १७७)।

वणइ स्त्री [दे] वन-राजि, वृक्ष पंक्ति (दे ७, ३८, षड्)।

वणण न [वनन] वछडे को उसकी माता से भिन्न दूसरी गाय से लगाना (पण्ह १, २—पत्र २६)।

वणण न [दे. व्यान] बुनना। °साला स्त्री [°शाला] बुनने का कारखाना (दस १, १ टी)।

वणद्धि स्त्री [दे] गो-वृन्द, गो-समूह (दे ७, ३८)।

वणत्तडिअ वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ (षड्)।

वणपक्कसावअ पुं [दे] शरभ, श्वापद-विशेष (दे ७, ५२)।

वणप्फइ पु [वनस्पति] १ वृक्ष-विशेष, फूल के विना ही जिसमें फल लगता हो वह वृक्ष (हे २, ६९, कुमा)। २ लता, गुल्म, वृक्ष आदि कोई भी गाछ, पेड मात्र (भग)। ३ न. फल (कुमा ३, २६)। °काइअ वि [°कायिक] वनस्पति का जीव (भग)।

वणय पुं [वनक] दूसरी नरक-पृथिवी का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ६)।

वणरसि (अप) देखो वाणारसी (पिंग, पि ३५४)।

वणव पुं [दे] दावानल (दे ७, ३७)।

वणसवाई स्त्री [दे] कोकिला, कोयल (दे ७, ५२, पाअ)।

वणस्सइ देखो वणप्फइ (हे २, ६९, जी २, उव, पण्ण १)।

वणाय वि [दे] व्याध से व्याप्त (दे ७, ३५)।

वणार पु [दे] दमनीय वछडा (दे ७, ३७)।

वणि वि [व्रणिन्] घाववाला, जिसको घाव हुआ हो वह (दे ६, ३९, पंचा १६, ११)।

वणि } पुं [वणिज्] वनिया, व्यापारी,
वणिअ } वैश्य (औप, उप ७२८ टी, सुर

वइदेही स्त्री [वैदेही] १ राजा जनक की स्त्री, सीता की माता (पउम २६, ७५)। २ जनकात्मजा, सीता। ३ हरिद्रा, हल्दी। ४ पिप्पली, पीपल। वणिक्-स्त्री (सक्षि ५)।

वइधम्म न [वैधर्म्य] विरुद्धधर्मता, विपरीतपन (विसे ३२२८)।

वइमिस्स वि [व्यतिमिश्र] संमिलित (ग्राचा २, १, ३, २)।

वइर देखो वेर = वैर (हे १, १५२)।

वइर पुंन [वज्र] १ रत्न-विशेष, हीरक, हीरा (सम ६३, ग्रौप, कप्प, भग, कुमा)। २ इन्द्र का अस्त्र (षड्)। ३ एक देव-विमान (देवेन्द्र १३३, सम २५)। ४ विद्युत्, विजली (कुमा)। ५ पुं. एक सुप्रसिद्ध जैन महर्षि (कप्प, हे १, ६, कुमा)। ६ कोकिलाक्ष वृक्ष। ७ श्वेत कुशा। ८ श्रीकृष्ण का एक प्रपौत्र। ९ न. बालक, शिशु। १० धात्री। ११ काँजी। १२ वज्रपुष्प। १३ एक प्रकार का लोहा। १४ अभ्र-विशेष। १५ ज्योतिष-प्रसिद्ध एक योग (हे २, १०५)। १६ कीलिका, छोटी कील (सम १४९)। °कंड न [°काण्ड] रत्नप्रभा पृथिवी का एक वज्ररत्न-मय काण्ड (राज)। °कंत न [°कान्त] एक देव-विमान (सम २५)। °कूड न [°कूट] १ एक देव-विमान (सम २५)। २ देवी विशेष का आवासभूत एक शिखर (राज)। °जंघ पुं [°जङ्घ] १ भरत-क्षेत्र में उत्पन्न तृतीय प्रतिवासुदेव (सम १५४)। २ पुष्कलावती विजय के लोहार्गल नगर का एक राजा (आव)। °प्पभ न [°प्रभ] एक देव-विमान (सम २५)। °मज्झा स्त्री [°मध्या] प्रतिमा-विशेष, एक प्रकार का व्रत (ठा ४, १—पत्र १९५)। °रूव न [°रूप] एक देव-विमान (सम २५)। °लेस न [°लेश्य] एक देव विमान (सम २५)। °वण्ण न [°वर्ण] देवविमान-विशेष (सम २५)। °सिंग न [°शृङ्ग] एक देव-विमान का नाम (सम २५)। °सिंह पु [°सिंह] एक राजा (काल, पि ४००)। °सिट्ठ न [°सृष्ट] एक देव-विमान (सम २५)। °सीह देखो सिंह (काल)। °सेण पुं [°सेन] एक प्राचीन जैन महर्षि, जो वज्रस्वामी के शिष्य थे (कप्प)। °सेणा स्त्री [°सेना] १ एक इन्द्राणी, दाक्षिणात्य वानव्यन्तरेन्द्र की एक अग्र-महिषी (णाया २—पत्र २५२)। २ एक दिक्कुमारी देवी (इक)। °हर पुं [°धर] इन्द्र (षड्)। °मय वि [°मय] वज्र रत्नों का बना हुआ (सम ६३, ग्रौप, पि ७०, १३५), स्त्री °मई, °मती (जीव ३, पि २०३ टि ४)। °वित्त, न [°वित्त] एक देव-विमान (सम २५)। °ोसभनाराय न [ऋषभनाराच] संहनन-विशेष (सम १४९, भग)। देखो वज्ज = वज्र।

वइरा स्त्री [वज्रा] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)।

वइराग न [वैराग्य] विरक्ति, उदासीनता (पउम २६, २०)।

वइराड पु [वैराट] १ एक आर्य देश। २ न. प्राचीन भारतीय नगर-विशेष, जो मत्स्य देश की राजधानी थी, 'वइराड मच्छ वरुणा अच्छा' (पव २७५)।

वइराय देखो वइराग (भवि)।

वइरि, वइरिअ वि [वैरिन्] दुश्मन, रिपु (सुर १, ७, काल, प्रासू १७४)।

वइरिक्क न [दे] विजन, एकान्त स्थान, देखो पइरिक्क, 'अहिअ सुराणाइ निरजणाइ वइरिक्करणपुसिआइ' (गा ८७०)।

वइरित्त वि [व्यतिरिक्त] भिन्न, अलग (सुर १२, ४४, चेइय ५६४)।

वइरी स्त्री [वज्रा] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)।

वइरुट्टा स्त्री [वैरोट्या] १ एक विद्या-देवी (संति ६)। २ भगवान् मल्लिनाथजी की शासन-देवी (संति १०)।

वइरुत्तरवडिंसग न [वज्रोत्तरावतंसक] एक देव-विमान (सम २५)।

वइरेअ, वइरेग पु [व्यतिरेक] १ अभाव (धर्मसं ११२)। २ साध्य के अभाव में हेतु का नितान्त अभाव (धर्मसं ३९२, उप ४१३, विसे २९०, २२०४)।

वइरोअण पुं [वैरोचन] १ अग्नि, वह्नि (सूअ १, ६, ६)। २ बलि नामक इन्द्र (देवेन्द्र ३०७)। ३ उत्तर दिशा में रहनेवाले असुर-निकाय के देव (भग ३, १, सम ७४)। ४ पुन एक लोकान्तिक देव-विमान (पव २६७, सम १४)।

वइरोअण पु [दे] बुद्ध देव (दे ७, ५१)।

वइरोड पु [दे] जार, उपपति (दे ७, ४२)।

वइवलय पुं [दे] साँप की एक जाति, दुन्दुभ सर्प (दे ७, ५१)।

वइवाय पुं [व्यतीपात] ज्योतिष-प्रसिद्ध एक योग (राज)।

वइवेला स्त्री [दे] सीमा (दे ७, ३१)।

वइस्स देखो वइस्स = वैश्य,

'वाणिज्जकरिसणाइगोरक्खणपालणेसु उज्जुत्ता।
ते होंति वइसनामा वावारपरायणा धीरा'
(पउम ३, ११६)।

वइसइअ वि [वैषयिक] विषय से उत्पन्न, विषय-सम्बन्धी (सक्षि ५)।

वइसंपायण पु [वैशम्पायन] एक ऋषि, जो व्यास का शिष्य था (हे १, १५१, प्राप्र)।

वइसम्म पुन [वैषम्य] विषमता, 'वइसम्मो' (सक्षि ५, पि ६१)।

वइसवण पु [वैश्रवण] कुवेर (हे १, १५२, भवि)।

वइसस न [वैशस] रोमाञ्चकारी पाप-कृत्य (उप ५७५)।

वइसाणर देखो वइस्साणर (धम्म १२ टी)।

वइसाल देखो [वैशाल] विशाला में उत्पन्न (हे १, १५१)।

वइसाह पुं [वैशाख] १ मास-विशेष (सुर ४, १०१, भवि)। २ मन्थन-दण्ड। ३ पुन. योद्धा का स्थान-विशेष (हे १, १५१, प्राप्र)।

वइसाही देखो वेसाही (राज)।

वइसिअ वि [वैशिक] वेष से जीविका उपार्जन करनेवाला (हे १, १५२, प्राप्र)।

वइसिट्ठ न [वैशिष्ट्य] विशिष्टता, भेद (धर्मसं ६९)।

वइसेसिअ न [वैशेषिक] १ दर्शन-विशेष, कणाद-दर्शन (विसे २५०७)। २ विशेष, 'जोएज्ज भावओ वा वइसेसियलक्खण चरहा' (विसे २१७८)।

वइस्स पुंस्त्री [वैश्य] वर्ण-विशेष, वणिक्, महाजन (विपा १, ५)।

२८)। २ आवृत्ति, परावर्तन (पचा १२, ४३)। ३ स्थिति। ४ स्थापन। ५ वर्तन, होना। ६ वि. वृत्तिवाला। ७ रहनेवाला (संक्षि १०)।

वत्तणा स्त्री [वर्त्तना] ऊपर देखो, 'वत्तणा-लक्खणो कालो' (उत्त २६, १०, आवम)।

वत्तणी स्त्री [वर्त्तनी] मार्ग, रास्ता (पण्ह १, ३—पत्र ५४, विसे १२०७, सूअनि ६१ टी, सुपा ५१८)।

वत्तड्ढ वि [दे] १ सुन्दर। २ बहु-शिक्षित (दे ७, ८५)।

वत्तमाण पुं [वर्त्तमान] १ काल-विशेष, चलता काल (प्राप्र, संक्षि १०)। २ वि वर्त्तमान-कालीन, विद्यमान। ३ पुं विद्यमानता (धर्मसं ५७३)।

°**वत्तरि** देखो सत्तरि (सम ८३, प्रासू १२६, पि ४४६)।

वत्तव्व देखो वय = वच्।

वत्ता स्त्री [दे] सूत्र-वलनक, सूत्र वेष्टन-यन्त्र (पण्ह १, ४—पत्र ७८, तदु २०)। देखो चत्ता = (दे)।

वत्ता स्त्री [वार्त्ता] १ वात, कथा (से ६, ३८; सुपा ३८७, प्रासू १, कुमा)। २ वृत्तान्त, हकीकत (पाअ)। ३ वृत्ति। ४ दुर्गा। ५ कृषि-कर्म, खेती। ६ जनश्रुति, किंवदन्ती। ७ गन्ध का अनुभव। ८ काल-कर्तृक भूत-नाश (हे २ ३०)। °**लाव** पु [°लाप] वातचीत (सिरि २८२)।

वत्तार वि [दे] गर्वित, गर्व-युक्त (दे ७, ४१)।

वत्ति स्त्री [दे] सीमा (दे ७, ३१)।

वत्ति देखो वट्टि (गा २३२, ६५८, विसे १३६८)।

वत्ति वि [वर्त्तिन्] वर्तनेवाला (महा)।

वत्ति स्त्री [वृत्ति] प्रवृत्ति (सूअ २, ४, २)। देखो वित्ति।

वत्ति स्त्री [व्यक्ति] अमुक एक वस्तु, एकाकी वस्तु। °**पइट्ठा** स्त्री [°प्रतिष्ठा] प्रतिष्ठा-विशेष, जिस समय मे जो तीर्थंकर विद्यमान हो उसके बिम्ब की विधि-पूर्वक स्थापना (चेइय ३५)।

वत्तिअ वि [वार्त्तिक] कथाकार, 'वत्तिओ' (हे २, ३०)। २ पुंन. टीका की टीका (सम ४६, विमे १४२२)। ३ ग्रंथ की टीका—व्याख्या (विसे १३८५)।

वत्तिअ वि [वर्त्तित] १ वृत—गोल किया हुआ (णाया १, ७)। २ आच्छादित (पडि)।

°**वत्तिअ** देखो पच्चय = प्रत्यय (औप)।

वत्तिआ देखो वट्टिआ (प्राप्र)।

वत्तिणी स्त्री [वर्त्तिनी] मार्ग, रास्ता (पाअ, स ४, सुर १२, १३६)।

°**वत्ती** देखो पत्ती = पत्नी (गा ७६, १०६, १७३)।

वत्तु देखो वय = वच्।

वत्तुकाम त्रि [वक्तुकाम] वोलने की चाह-वाला (स ३१८, अभि ४४, स्वप्न १०; नाट—विक्र ४०)।

वत्तुल देखो वट्टुल (राज)।

वत्थ पुंन [वस्त्र] कपडा (आचा २, १४, २२, उवा, पण्ह १, १, उप पृ ३३३, सुपा ७२, ४६१, कुमा, सुर ३, ७०)। °**खेड्ड** न [°खेल] कला विशेष (जं २ टी—पत्र १३७)। °**धोव** वि [°धाव] वस्त्र धोनेवाला (सूअ १, ४, २ १७)। °**पूस** पु [°पुष्य] एक जैन मुनि (कुलक २२)। °**पूसमित्त** पुं [°पुष्यमित्र] एक जैन मुनि (ती ७)। °**विज्जा** स्त्री [°विद्या] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से वस्त्र स्पर्श कराने से ही बीमार अच्छा हो जाय (वव ५)। °**सोहग** वि [°शोधक] वस्त्र धोनेवाला (स ४१)।

वत्थ वि [व्यस्त] पृथग्, भिन्न, जुदा (सुर १६, ५५)।

वत्थउड पुं [दे वस्त्रपुट] तंबू, कपड-कोट, वस्त्र-गृह (दे ७, ४५)।

वत्थए देखो वस = वस्।

वत्थग पुं [वस्त्राङ्ग] कल्पवृक्ष की एक जाति, जो वस्त्र देने का काम करता है (पउम १०२, १२१)।

°**वत्थर** देखो पत्थर = प्रस्तर (गा ५५१)।

वत्थलिज्ज न [वस्त्रलिय] दो जैन मुनि-कुलो के नाम (कप्प)।

वत्थव्व वि [वास्तव्य] रहनेवाला, निवासी (पिंड ४२७, सुर ३, ६१, सुपा ३६५, महा)।

वत्थाणी स्त्री [दे] वल्ली-विशेष (पण्ण १—पत्र ३३)।

वत्थाणीअ पुंन [दे] खाद्य-विशेष, 'हत्थेण वत्थाणीएण भोच्चा कज्ज साहेंति' (सुअ १०, १७)।

वत्थि पु [वस्ति] २ दृति, मसक (भग १, ६, १८, १०, णाया १, १८), 'वत्थिव्व वायपुण्णो भत्तुक्करिसेण जहा तहा लवइ' (संबोध १८)। २ अपान, गुदा, 'वत्थी अवाणं' (पाअ, पण्ह १, ३—पत्र ५३)। ३ छाते मे शलाका—सली—सनाई बैठने का स्थान, छत्र का एक अवयव (औप) °**कम्म** न [°कर्मन्] १ सिर आदि मे चर्म-वेष्टन द्वारा किया जाता तैल आदि का पूरण। २ मल साफ करने के लिए गुदा में वत्ती आदि का किया जाता प्रक्षेप (विपा १, १—पत्र १४, णाया १, १३)। °**पुडग** पुन [°पुटक] पेट का भीतरी प्रदेश (निर १, १)।

वत्थिय पुं [वास्त्रिक] वस्त्र वनानेवाला शिल्पी (अणु)।

वत्थी स्त्री [दे] उटज, तापसो को पर्ण कुटी (दे ७, ३१)।

वत्थु न [वस्तु] १ पदार्थ, चीज (पाअ, उवा, सम्म ८, सुपा ४०१, प्रासू ३०, १६१, ठा ४, १ टी—पत्र १८८)। २ पुन पूर्व-ग्रन्थो का अध्ययन—प्रकरण, परिच्छेद (सम २५, णंदि, अणु, कम्म १, ७)। °**पाल**, °**वाल** पुं [°पाल] राजा वीरधवल का एक सुप्रसिद्ध जैन मन्त्री (ती २, हम्मीर १२)।

वत्थु न [वास्तु] १ गृह, घर, 'खेत्तवत्थुविहि-परिमाणं करेइ' (उवा)। २ गृहादि-निर्माण-शास्त्र (णाया १, १३)। ३ शाक-विशेष (उवा)। °**पाढग** वि [°पाठक] वास्तु-शास्त्र का अभ्यासी (णाया १, १३, धर्मवि ३३)। °**विज्जा** स्त्री [°विद्या] गृह-निर्माण-कला (औप, ज २)।

वत्थुल पुं [वस्तुल] गुच्छ और हरित वनस्पति-विशेष, शाक-विशेष (पण्ण १—पत्र ३२, ३४, पव २५६)।

वत्थूल पुं [वस्तूल] ऊपर देखो, 'वत्थु (?त्थू) ला पेगपल्लका' (जी ६)।

वंजुलि वि [वञ्जुलिन्] वेतस वृक्षवाला। स्त्री °णी (गउड)।

वंझ वि [वन्ध्य] शून्य, वर्जित (कुमा)।

वंझा स्त्री [वन्ध्या] बाँझ स्त्री, अपुत्रवती स्त्री (पउम २६, ८३, सुपा ३२४)।

वंट न [वृन्त] फल या पत्तों का बन्धन (पिंड ४५)।

वंटग पुं [वण्टक] बाँट, विभाग (निचू १६)।

वंठ पु [दे] १ अकृत-विवाह, अविवाहित, गुजराती में 'वाढो' (दे ७, ८३, ओघ २१८)। २ खण्ड, टुकड़ा। ३ गण्ड (दे ७, ८३)। ४ भृत्य, दास (दे ७, ८३, सुर २, १६८, रयण ८३, सिरि १११५)। ५ वि. निः स्नेह, स्नेह-रहित (दे ७, ८३)। ६ धूर्त्त, ठग (श्रा १२)।

वंठ वि [व्रण्ठ] खर्व, वामन, नाटा, बौना (हे ४, ४४७)।

वंठण (अप) न [वण्टन] बाँटना, विभाजन (पिंग)।

वंडइअ वि [दे] पीडित (षड्)।

°वंडु देखो पंडु (गा २६५)।

वंडुअ न [दे] राज्य (दे ७, ३६)।

°वंडुर देखो पंडुर (गा ३७४)।

वंढ पु [दे] बन्ध (दे ७, २६)।

वंत वि [वान्त] पतित, गिरा हुआ (दस ३, १ टी)।

वंत पुं [वान्त] १ जिसका वमन किया गया हो वह (उव)। २ पुन वमन, 'वंते इ वा पित्ते इ वा' (भग)।

वंतर पु [व्यन्तर] एक देव-जाति (दं २७, महा)।

वंतरिअ पु [व्यन्तरिक] ऊपर देखो (भग)।

वंतरिणी स्त्री [व्यन्तरी] व्यन्तर-जातीय देवी (सुपा ६१३)।

वंता देखो वम।

°वंति देखो पंति (गा २७८, ४६३)।

°वंथ देखो पन्थ (से १, १६, ३, ४२, १३, २०, पि ४०३)।

वंद सक [वन्द्] १ प्रणाम करना। २ स्तवन करना। वंदइ (उव, महा, कप्प)। वकृ. वन्दमाण (ओघ १८, सं १०, अभि १७२)। कवकृ वन्दिज्जमाण (उप ६८६ टी, प्रासू १६५)। संकृ. वन्दिअ, वन्दिओ, वन्दिऊण, वन्दित्ता, वन्दित्तु, वंदेवि (कम्म १, १, चउ, कप्प, षड्, हे ३, १४६, चउ)। हेकृ. वंदित्तए (उवा)। कृ. वंज, वंद, वंदणिज्ज, वंदणीअ, वंदिम (राज, अजि १४, द्रव्य १, णाया १, १, प्रासू १६२, नाट—मृच्छ १३०, दसचू १)।

वंद न [वृन्द] समूह, यूथ (पउम १, १, औप, प्राप्र)।

वंदअ } वि [वन्दक] वन्दन करनेवाला
वंदग } (पउम ६, ५८, १०१, ७३, महा, औप, सुख १, ३)।

वंदण न [वन्दन] १ प्रणमन, प्रणाम। २ स्तवन, स्तुति (कप्प, सुर ४, ६२, उव)। °कलस पुं [°कलश] मांगलिक घट (औप)। °घड पुं [°घट] वही अर्थ (औप)। °माला, °मालिआ स्त्री [°माला] घर के द्वार पर मंगल के लिए बँधी जाती पत्र-माला (सुपा ५४, सुर १०, ४, गा २६२)। °वडिआ, °वत्तिआ स्त्री [°प्रत्यय] वन्दन-हेतु (सुपा ४३२, पडि)।

वंदणा स्त्री [वन्दना] १ प्रणाम। २ स्तवन (पचा ३, २, पण्ह २, १—पत्र १००, अत)।

वंदणिया स्त्री [दे] मोरी, नाला, पनाला, 'अत्थि कवलो, गणियाए नेमि। मुक्को। तओ तीमे दिन्नो। तीए च (? व) दणियाए छूढो' (सुख २, १७)।

वंदर देखो वंद = वृन्द (प्राप्र)।

वंदाप (अशो) देखो वंदाव। वंदापयति (पि ७)।

वंदारय पु [वृन्दारक] १ देव, देवता (पाअ, कुमा)। २ वि मनोहर (कुमा)। ३ मुख्य, प्रधान (हे १, १३२)।

वंदारु वि [वन्दारु] वन्दन करनेवाला (चेइय ६२१, लहुअ)।

वंदाव सक [वन्दय्] वन्दन करवाना। वंदावइ (उव)।

वंदावणग न [वन्दन] वन्दन, प्रणाम (श्रावक ३७४)।

वंदिअ देखो वंद = वन्द्।

वंदिअ वि [वन्दित] जिसको वन्दन किया गया हो वह (कप्प, उव)।

वंदिम देखो वंद = वन्द्।

वंदुरा स्त्री [मन्दुरा] वाजिशाला, घुडसाल, अस्तबल।

वंद्र न [वन्द्र] समूह, यूथ (हे १, ५३, २, ७६, पउम ११, १२०, स ६६६)।

वंध पुं [वन्ध्य] एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष (सुज्ज २०)।

वंफ सक [काङ्क्ष्] चाहना, अभिलाष करना। वंफइ, वंफए, वंफति (हे ४, १९२, कुमा)।

वंफ अक [वल्] लौटना। वंफइ (हे ४, १७६, षड्)।

वंफि वि [वलिन्] १ लौटनेवाला। २ नीचे गिरनेवाला (कुमा)।

वंफिअ वि [काङ्क्षित] अभिलषित (कुमा)।

वंफिअ वि [दे] भुक्त, खाया हुआ (दे ७, ३५, पाअ)।

वंस पु [दे] कलंक, दाग (दे ७, ३०)।

वंस पुं [वंश] १ बाँस, वेणु (पण्ह २, ५—पत्र १४६, पाअ)। २ वाद्य-विशेष, 'वाइओ वंसो' (कुमा २, ७०, राय)। ३ कुल, 'कुलुगवंसदीवओ' (कुमा २, ६१)। ४ सन्तान, संतति। ५ पृष्ठावयव, पीठ का भाग। ६ वर्ग। ७ इक्षु, ऊख। ८ वृक्ष-विशेष, सालवृक्ष (हे १, २६०)। °इरि पुं [°गिरि] पर्वत-विशेष (पउम ३६, ४)। °करिल्ल, °गरिल्ल पुन [°करीर] वंशांकुर, बाँस का कोमल नवावयव (श्रा २०, पव ४)। °जाली, °याली स्त्री [°जाली] बाँसों का गहन घटा (सुर १२, २००, उप पृ ३६)। °रोअणा स्त्री [°रोचना] वंशलोचन (कप्पू)।

वंसकवेल्लुय पुंन [दे. वंशकवेल्लुक] छत के नीचे दोनो तरफ तिरछा रखा जाता बाँस (जीव ३, राय)।

वंसग देखो वंसय (राज)।

वंसप्फाल वि [दे] १ प्रकट, व्यक्त। २ ऋजु, सरल (दे ७, ४८)।

वंसय वि [व्यंसक] १ धूर्त, ठग। २ पु. दुष्ट हेतु-विशेष (ठा ४, ३—पत्र २५४)।

चक्रवर्ती राजा हरिषेण की माता का नाम (पउम ८, १४४, सम १५२)।

वप्पिअ पु [दे] १ केदार, खेत (षड्)। २ नपुंसक विशेष (पुप्फ १२६)। ३ वि रक्त, राग-युक्त (षड)।

वप्पिण पुन [दे] १ केदार, खेत (दे ७, ८५, औप, णाया १, १ टी—पत्र २, पाअ, पउम २, १२, पण्ह १, १, २, ५)। २ वि उपित, जिसने वाम किया हो वह (दे ७, ८५)।

वप्पिण पुन [दे] १ केदारवाला देश। २ तटवाला देश (भग ५, ७—पत्र २३८)।

वप्पी देखो वप्पा = वप्र (भग १५—पत्र ६६६)।

वप्पीअ पु [दे] चातक पक्षी (दे ७, ३३)।

वप्पीडिअ न [दे] क्षेत्र, खेत (दे ७, ४८)।

वप्पीह पु [दे] स्तूप, मिट्टी आदि का कूट (दे ७, ४०)।

वप्पु देखो वउ = वपुस् (भग १५—पत्र ६६६)।

वप्पे अ [दे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ उपहास-युक्त उल्लापन। २ विस्मय, आश्चर्य (सक्षि ४७)।

वप्फाउल देखो वप्फाउल (दे ६, ९२ टी)।

वफर न [दे] शस्त्र-विशेष (सुर १३, १५६)।

वब्भ° देखो वह = वह्।

वब्भ पुं [वभ्र] पशु-विशेष (स ४३७)।

वब्भय न [दे] कमलोदर, कमल का मध्य भाग (दे ७, ३८)।

वभिचरिअ वि [व्यभिचरित] व्यभिचार दोष से दूषित (श्रा १४)।

वभिचार देखो वहिचार (स ७११)।

वभिचारि वि [व्यभिचारिन्] १ न्याय-शास्त्रोक्त दोष-विशेष से दूषित, ऐकान्तिक (धर्मसं १२२७, पंचा २, ३७)। २ परस्त्री-लम्पट (वव ६, ७)।

वभियार देखो वहिचार (उवर ७९)।

वम सक [वम्] उलटी करना, कै करना। वकृ वमंत, वममाण (गउड, विपा १,७)। संकृ वंता (आचा, सूअ १, ६, २६)। कृ. वम्म (उर १, ७)।

वमग वि [वामक] उलटी करनेवाला (चेइय १०३)।

वमण न [वमन] उलटी, वान्ति, कै (आचा, णाया १, १३)।

वमाल सक [पुञ्जय्] १ इकट्ठा करना। २ विस्तारना। वमालइ (हे ४, १०२, षड्)।

वमाल पु [दे] कलकल, कोलाहल (दे ६, ९०, पाअ स ४३५, ५२०, भवि)।

वमाल पुं [पुञ्ज] राशि, ढग (सण)।

वमालण न [पुञ्जन] १ इकट्ठा करना। २ विस्तार। ३ वि इकट्ठा करनेवाला। ४ विस्तारनवाला (कुमा)।

वम्म पुंन [वर्मन्] कवच, सनाह, वरूतर (प्राप्र, कुमा)।

वम्म देखो वम।

वम्मथ, वम्मह पुं [मन्मथ] कामदेव, कंदर्प (चड, प्राप्र, हे १, २४२, २, ६१, पाअ)।

वम्मा देखो वामा (कप्प, पउम २०, ४६; सुख २३, १, पत्र ११)।

वम्मिअ वि [वर्मित] कवचित, संनाह-युक्त (विपा १, २—पत्र २३)।

वम्मिअ, वम्मीअ पु [वल्मीक] कीट-विशेष-कृत मिट्टी का स्तूप, दूह या भीटा, दीमको के रहने की वांबी (सूअ २, १, २६, हे १, १०१, षड्, पाअ, स १२३, सुपा ३१७)।

वम्मीइ पुं [वाल्मीकि] एक प्रसिद्ध ऋषि, रामायण-कर्ता मुनि (उत्तर १०३)।

वम्मीसर पु [दे] काम, कन्दर्प (दे ७, ४२)।

वम्ह न [दे] वल्मीक (दे ७, ३१)।

वम्ह पुं [ब्रह्मन्] १ वृक्ष-विशेष, पलाश का पेड, 'नग्गोहवम्हा तरू' (पउम ५३, ७९)। २ देखो बम्ह (प्राप्र)।

वम्हल न [दे] केसर, किंजल्क (दे ७, ३३, हे २, १७४)।

वम्हाण देखो वभण (कुमा)।

वय सक [वच्] बोलना, कहना। वअइ, वअए (षड्)। भवि. वच्छिहिइ, वच्छिइ, वच्छिहिति, वच्छिति, वोच्छिइ, वोच्छिहिइ, वोच्छिति, वोच्छिहिति, वोच्छ (सक्षि ३२, षड्, हे ३, १७१, कुमा)। कर्म वुच्चइ (कुमा)। कर्म. भवि. वकृ. वक्खमाण (विसे १०५३)। संकृ. वइत्ता, वत्रा, वोत्तूण (ठा ३, १—पत्र १०८, सूअ २, १, ६, हे ४, २११, कुमा)। हेकृ वत्तए, वत्तुं, वोत्तु (आचा, अभि १७२, हे ४, २११, कुमा)। कृ वच्च, वत्तव्व, वोत्तव्व (विसे २, उप १३६ टी, ६४८ टी, ७६८ टी, पिंड ८७, धर्मसं ९२२, सुर ४, ६७, सुपा १५०, औप, उत्त, हे ४,२११)। देखो वयणिज्ज।

वय सक [वद्] बोलना, कहना। वयइ, वयसि (कस, कप्प), वइज्जा, वएज्जा (कप्प)। भूका वयासि, वयासी (औप; कप्प, भग; महा)। वकृ. वयंत, वयमाण, वएमाण (कप्प, काल, ठा ४, ४—पत्र २७४, सुम्म ९९, ठा ७)। सकृ. वइत्ता (आचा)। हेकृ. वइत्तए (कप्प)।

वय सक [व्रज्] जाना, गमन करना। वयइ (सुर १, २८८)। वयउ (महा), वइज्ज (गच्छ २, ६१)। कृ. वयंत (सुर ३, ३७, सुपा ४३२)। कृ. वइयव्व (राजा)।

वय पुं [वृक] पशु विशेष, भेड़िया (पउम ११८, ७)।

वय पु [दे] गृध्र पक्षी (दे ७, २९, पाअ)।

वय पुं [वज] १ संस्कार-करण। २ गमन (श्रा २३)।

वय पुं [व्रज] १ देश-विशेष (गा ११२)। २ गोकुल, दस हजार गौओ का समूह (णाया १, १ टी—पत्र ४३ श्रा २३)। ३ मार्ग, रास्ता। ४ संस्कार-करण। ५ गमन, गति (श्रा २३)। ६ समूह, यूथ (श्रा २३, स २६७, सुपा २८८, ती ३)।

वय पुं [व्यय] १ खर्च (स ५०३)। २ हानि, नुक्सान (उव, प्रासू १८१)। देखो विअ = व्यय।

वय न [वचस्] वचन, उक्ति (सूअ १, १, २, २३, १, २, २, १३, सुपा १९४, भास ६१, द २२)। °समिअ वि [°समित] वचन का सयमी (भग)।

वय पुं [वद] कथन, उक्ति (श्रा २३)।

वय पुन [व्रत] नियम, धार्मिक प्रतिज्ञा (भग, पचा १०, ८, कुमा; उप २११ टी, ओघमा

वग्ग पु [वर्ग] १ सजातीय समूह (णदि, सुर ३, ४, कुमा)। २ गणित-विशेष, दो समान संख्या का परस्पर गुणन (ठा १०—पत्र ४९६)। ३ ग्रन्थ-परिच्छेद, अध्ययन, सर्ग (हे १, १७७, २, ७९)। °मूल न [°मूल] गणित-विशेष, वह अंक जिसका वर्ग किया गया हो, जैसे ४ का वर्ग करने से १६ होता है, १६ का वर्गमूल ४ होता है (जीवस १५७)। °वग्ग पु [°वर्ग] गणित-विशेष, वर्ग से वर्ग का गुणन, जैसे २ का वर्ग ४, ४का वर्ग १६, यह २ का वर्गवर्ग कहलाता है (ठा १०)।

वग्ग सक [वर्गय्] वग करना, किसी अंक को समान अंक से गुणना। वग्गसु (कम्म ४, ८४)।

वग्ग वि [व्यग्र] व्याकुल (उत्त १५, ४, रयण ८०)।

वग्ग देखो वक्क = वल्क (विसे १५४)।

वग्ग देखो वक्क = वाक्य, 'मुद्धा भणंति अहलं वहु वग्गजालं' (रंभा)।

वग्ग वि [वाल्क] वृक्ष त्वचा—छाल का बना हुआ (णाया १, १ टी—पत्र ४३)।

वग्गसिअ न [दे] युद्ध, लड़ाई (दे ७, ४६)।

वग्गचूलिआ स्त्री [वर्गचूलिका] एक प्राचीन जैन ग्रन्थ (णदि २०२)।

वग्गण न [वल्गन] कूदना (औप, कुप्र १०७, कप्प, णाया १, १—पत्र १९, प्राप)।

वग्गण न [वल्गन] वकवाद (रंभा)।

वग्गणा स्त्री [वर्गणा] सजातीय समूह (ठा १—पत्र २७)।

वग्गय न [दे] वार्ता, वात (दे ७, ३८)।

वग्गा स्त्री [वल्गा] लगाम (उप ७६८ टी)।

वग्गावग्गिं अ वर्ग रूप से (औप)।

वग्गि वि [वाग्मिन्] १ प्रशस्त वाक्य बोलनेवाला। २ पुं. बृहस्पति (प्राप्र, पि २७७)।

वग्गिअ वि [वर्गित] वर्ग किया हुआ (कम्म ४, ८०)।

वग्गिअ न [वल्गित] १ वहु भाषण, वकवाद (सम्मत्त २२७)। २ वड़ाई की आवाज (मोह ८७)। ३ गति, चाल (सण)।

वग्गिर वि [वल्गितृ] १ खूँखार आवाज करनेवाला। २ गति-विशेषवाला (सुर ११, १७१)।

वग्गु देखो वाया = वाच्, 'वग्गूहिं' (औप, कप्प, सम ५०, कुम्मा १९)।

वग्गु देखो वग्ग = वर्ग, 'वग्गूहिं' (औप)।

वग्गु वि [वल्गु] १ सुन्दर, शोभन (सूअ १, ४, २, ४)। २ कल, मधुर (पाअ)। ३ पुं विजय-क्षेत्र-विशेष, प्रान्त विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)। ४ पुंन. एक देव-विमान, वैश्रमण लोकपाल का विमान (देवेन्द्र १३१, २७०)।

वग्गुरा न [वागुरा] १ मृग-बन्धन, पशु फँसाने का जाल, फन्दा (पण्ह १, १, विपा १, २—पत्र ३५)। २ समूह, समुदाय, 'मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते' (उवा, प्राप)।

वग्गुरिय वि [वागुरिक] १ मृग-जाल से जीविका निर्वाह करनेवाला, व्याध, पारधि (ओघ ७६६)। २ पुं. नर्त्तक-विशेष (राज)।

वग्गुलि पुंस्त्री [वल्गुलि] १ पक्षि-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८)। २ रोग-विशेष (ओघभा २७७, श्रावक ९१ टी)।

वग्गोज्ज वि [दे] प्रचुर, प्रभूत (दे ७, ३८)।

वग्गोअ पु [दे] नकुल न्यौला (दे ७, ४०)।

वग्गोरमय वि [दे] रूक्ष, लूखा (दे ७, ५२)।

वग्गोल सक [रोमन्थय्] पगुराना, चवी हुई वस्तु का पुन चबाना, गुजराती में 'वागोळ्वु'। वग्गोलइ (हे ४, ४३)।

वग्गोलिर वि [रोमन्थयितृ] पगुरानेवाला (कुमा)।

वग्घ वि [वैयाघ्र] व्याघ्र-चर्म का बना हुआ (आचा २, ५, १, ५)।

वग्घ पुं [व्याघ्र] १ बाघ, शेर (पाअ, स्वप्न ७०, सुपा ४६३)। २ रक्त एरण्ड का पेड़। ३ करञ्ज वृक्ष (हे २, ९०)। °मुह पुं [°मुख] १ एक अन्तर्द्वीप। २ उसमें रहनेवाली मनुष्य-जाति (ठा ४, २—पत्र २२६, इक)।

वग्घाअ पुं [दे] १ साहाय्य, मदद। २ वि. विकसित, खिला हुआ (दे ७, ८६)।

वग्घाडी स्त्री [दे] उपहास के लिये की जाती एक प्रकार की आवाज, 'अप्पेगइया वग्घाडीओ करेंति' (णाया १, ८—पत्र १४४)।

वग्घारिअ वि [व्याघारित] १ बघारा हुआ, छौंका हुआ (नाट—मृच्छ २२१)। २ व्याप्त, 'सीतोदयवियडवग्घारियपाणिणा' (सम ३९)। ३ पिघला हुआ (दश० वै० वृ० चू० अ० ३ नि० गा० १६७)।

वग्घारिअ वि [दे] प्रलम्बित, पडिवद्धसरीर-वग्घारियसोणिसुत्तगमल्लदामकलावे' (सूअ २, २, ५५), 'वग्घारियपाणी' (णाया १, ८—पत्र १५४, कप्प, औप, महा)।

वग्घावच्च न [व्याघ्रापत्य] एक गोत्र, जो वाशिष्ठ गोत्र की एक शाखा है (ठा ७—पत्र ३९०, सुज्ज १०, १६, कप्प, इक)।

वग्घी स्त्री [व्याघ्री] १ बाघ की मादा (कुमा)। २ एक विद्या (विसे २४५४)।

वघाय देखो वाघाय, 'आउस्स कालाइचर वघाए, लद्धाणुमाणे य परस्स अट्ठे' (सूअ १, १३, २०)।

वचा स्त्री [वचा] १ पृथिवी, धरती (से २, ११)। २ ओषधि-विशेष, वच (मृच्छ १७०)। देखो वया = वचा।

वच्च सक [व्रज्] जाना, गमन करना। वच्चइ (हे ४, २२५, महा)। भवि. वच्चिहिसि (महा)। वकृ वच्चत, वच्चमाण (सुर २, ७२, महा, गा १९)।

वच्च सक [काङ्क्ष्] चाहना, अभिलाष करना। वच्चइ, वच्चउ (हे ४, १९२, कुमा)।

वच्च देखो वय = वच्।

वच्च पुंन [वर्चस्] १ पुरीष, विष्ठा (पाअ, ओघ १९७, सुपा १७६, तदु १४)। २ कूड़ा-करकट, 'भोगो तंबोलाइ कुणतो जिणगिहे कुणइ वच्च' (संबोध ८)। ३ चौथा नरक का चौथा नरकेन्द्रक—नरकस्थान-विशेष (देवेन्द्र १०)। ४ तेज, प्रभाव (णाया १, १—पत्र ६)। °घर, °हर न [°गृह] पाखाना, टट्टी (सूअ १, ४, २, १३, स ७४१)।

वच्च देखो वय = वचस् (णाया १, १—पत्र ६)।

वरग न [वरक] महामूल्य पात्र, कीमती भाजन (आचा २, १, ११, ३)।

वरट्ट पु [दे] धान्य-विशेष (पव १५४)।

वरडा } स्त्री [दे वरटा] १ तैलाटी, कीट-
वरडी } विशेष, गधोली। २ दश भ्रमर, जन्तु-विशेष (मृच्छ १२, दे ७, ८४)।

वरण पु [वरण] १ सगाई, विवाह-सबन्ध (सुपा ३५४, सुर १,१२६, ४ १०)। २ तट, किनारा (गउड)। ३ पूल, सेतु (ओघ ३०)। ४ प्राकार, किला (गा २४५)। ५ स्वीकार, ग्रहण (राज)। देखो वीर-वरण। ६ पुं. देश-विशेष, एक आर्य देश, 'वइराड वच्छ वरणा अच्छा' (सूअनि ६६ टी, इक), देखो वरुण।

वरणअ न [वरणक] तृण-विशेष (गउड)।

वरणसि (अप) देखो वाराणसी (पि ३५४)।

वरणा स्त्री [वरणा] १ काशी की एक नदी, वरुणा (राज)। २ अच्छ देश की प्राचीन राजधानी (सूअनि ६६ टी)। देखो वरुणा।

वरणीअ देखो वर = वृ।

वरत्त वि [दे] १ पीत। २ पतित। ३ पेट्टित, संहत (षड्)।

वरत्ता स्त्री [वरत्रा] रज्जु, रस्सी (पाअ, विपा १, ६, सुपा ५६२)।

वरय पु [वरक] सगाई करनेवाला, विवाह का प्रार्थक पुरुष (सुर ६, ११५)।

वरय पु [दे] शालि विशेष, एक तरह का धान्य (दे ७, ३६)।

वरय वि [वराक] दीन, गरीब, वेचारा, रक (पाअ, सुर २, १३, ६, १६५, सुपा ६३, गा ५३३)। स्त्री °रई (सक्षि २, पि ८०)।

वरला स्त्री [वरला] हसी, हंसपक्षी की मादा (पाअ)।

वरसि देखो वरिसि (मोह ३०)।

वरहाड अक [निर् + सृ] वाहर निकलना। वरहाडइ (हे ४, ७९)।

वरहाडिअ वि [नि सृत] वाहर निकला हुआ, निर्गत (कुमा)।

वराग देखो वराय (रंभा)।

वराड } पु [वराट, °क] १ दक्षिण का
वराडग } एक देश, जो आजकल भी 'वरार'
वराडय } नाम से प्रसिद्ध है (कुप्र २५५, सुख १८, ३५, राज)। २ कपर्दक, कौडा—वडी कौडी (उत्त ३६, १३०, ओघ ३३४, श्रा १)। ३ न. कौडियो का जूआ जिसे वालक खेलते हैं (मोह ८६)।

वराडिया स्त्री [वराटिका] कपर्दिका, कौडी (सुपा २०३)।

वराय देखो वरय = वराक (गा ९१, ९६, १४१, महा)। स्त्री °राइआ, °राई (गा ४९२, पि ३५०)।

वरावड पु. व [वरावट] देश-विशेष (पउम ९८, ६४)।

वराह पु [वराह] १ शूकर, सूअर (पाअ)। २ भगवान् सुविधिनाथ का प्रथम शिष्य (सम १५२)।

वराही स्त्री [वराही] विद्या-विशेष (विसे २४५३)।

वरि अ [वरम्] अच्छा, ठीक,
'वरि मरण मा विरहो,
विरहो अइदूसहो म्ह पडिहाइ।
वरि एक्क चिय मरण,
जेण समप्पति दुक्खाइं॥'
(सुर ४, १८२, भवि)।

वरिअ देखो वज्ज = वर्य (हे २, १०७, षड्)।

वरिअ वि [वृत] १ स्वीकृत (से १२, ८८)। २ सेवित (भवि)। ३ जिसकी सगाई की गई हो वह (वसु, महा)। ४ न. सगाई करना, 'सुवरियं ति' (उप ६४८ टी)।

वरिट्ठ पुं [वरिष्ठ] १ भरत-क्षेत्र का भावी वारहवाँ चक्रवर्ती राजा (सम १५४)। २ अति श्रेष्ठ (औप, कप्प, उप पृ ३८४, सुपा ४०३, भवि)।

वरिल्ल न [दे] वस्त्र विशेष (कप्पू)।

वरिस सक [वृष्] वरसना, वृष्टि करना। वरिसइ (हे ४, २३५, प्राप्र)। वकृ. वरिसंत, वरिसमाण (सुपा ६२४, ६२३)। हेकृ. वरिसिउं (पि १३५)।

वरिस पुन [वर्ष] १ वृष्टि, वर्षा (कुमा, कप्पू, भवि)। २ सवत्सर, साल (कुमा, सुपा ४५२, नव ९, द २७, कप्पू, कम्म १, १८)। ३ जबूद्वीप का अश-विशेष, भारत आदि क्षेत्र। ५ मेघ (हे २, १०५)। °अ वि [°ज] वर्षा मे उत्पन्न (षड्)। °कण्ह न [°कृष्ण] १ एक गोत्र। २ पुस्त्री उस गोत्र मे उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३९०)। °धर पुं [°धर] अन्त पुर-रक्षक पण्ड-विशेष (णाया १, १—पत्र ३७, कप्पू, औप ५५ टि)। °वर पुं [°वर] वही अनन्तरोक्त अर्थ (औप)। देखो वास = वर्ष।

वरिसविअ वि [वर्षित] वरसाया हुआ (सुपा २२३)।

वरिसा स्त्री [वर्षा] १ वृष्टि, पानी का वरसना (हे २, १०५)। २ वर्षा-काल, श्रावण और भादो का महीना (प्रयौ ७४)। °काल पु [°काल] वर्षा ऋतु, प्रावृट् (कुप्र ७५)। °रत्त पु [°रात्र] वही अर्थ (ठा ६, णाया १, १—पत्र ६३)। °ल देखो °काल (पव ८५, महा)। देखो वासा।

वरिसि वि [वर्षिन्] वरसनेवाला (वेणी १११)।

वरिसिणी स्त्री [वर्षिणी] विद्या-विशेष (पउम ७, १४२)।

वरिसोल्लक पु [दे वर्षोलक] पक्वान्न-विशेष, एक प्रकार का खाद्य (पव ४ टी)।

°वरिहरिअ देखो परिहरिअ (से ७, ३८)।

वरु } पुन [दे] देखो वरुअ, 'चंपयतरुणो
वरुअ } वरुणो फुल्लति सुरहिजलसित्ता (? त्ता)' (संवोध ४७)।

वरुंट पुं [वरुण्ट] एक शिल्पि-जाति (राज)।

वरुड पुं [वरुड] एक अन्त्यज-जाति (दे २, ८४)।

वरुण पुं [वरुण] १ चमर आदि इन्द्रो का पश्चिम दिशा का लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १९७, १९८, इक)। २ वलि-आदि इन्द्रो का उत्तर दिशा का लोकपाल (ठा ४, १)। ३ लोकान्तिक देवो की एक जाति (णाया १, ८—पत्र १५१)। ४ भगवान् मुनिसुव्रत का शासनाधिष्ठायक यक्ष (सति ८)। ५ शतभिषक् नक्षत्र का अधिष्ठाता देव (सुज्ज १०, १२)। ६ एक देव विमान (देवेन्द्र १३१)। ७ वृक्ष की एक जाति (पव ४)। ८ अहोरात्र का पनरहवाँ मुहूर्त (सुज्ज १०, १३, सम ५१)। ९ एक विद्याधरनरपति (पउम ६, ४४, १६, १२)। १० एक श्रेष्ठि-पुत्र (सुपा ५५९)। ११ छन्द-विशेष (पिंग)। १२ वरुणवर द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव

वंशीय राजा (पउम ५, १५)। °घर देखो °हर (पउम १०२, १५६, विचार १००)। °नागरी स्त्री [°नागरी] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)। °नाभ पुं [°नाभ] एक जैन मुनि (पउम २०, १९)। देखो °णाभ। °पाणि पु [°पाणि] १ इन्द्र (उत्त ११, २३, देवेन्द्र २८३, उप २११ टी)। २ एक विद्याधर-नरपति (पउम ५, १७)। °प्पभ न [°प्रभ] एक देव-विमान (सम २५)। °बाहु पुं [°बाहु] एक विद्याधर-वंशीय राजा (पउम ५, १६)। °भूमि स्त्री [°भूमि] लाट देश का एक प्रदेश (आचा १, ९, ३, २)। °म (अप) देखो मय (हे ४, ३९५)। °मज्झ पुं [°मध्य] १ राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंकेश (पउम ५, २६३)। २ रावणाधीन एक सामन्त राजा (पउम ८, १३२)। °मज्झा स्त्री [°मध्या] एक प्रतिमा, व्रत-विशेष (औप २४)। °मय वि [°मय] वज्र का बना हुआ (पउम ६२, १०)। स्त्री °मई (नाट—उत्तर ४५)। °रिसहनाराय न [°ऋषभनाराच] सहनन-विशेष, शरीर का एक तरह का सर्वोत्तम बन्ध (कम्म १, ३८)। °रूव न [°रूप] एक देव-विमान (सम २५)। °लेस न [°लेश्य] एक देव-विमान (सम २५)। °वँ (अप) देखो °म (हे ४, ३९५)। °वण्ण न [°वर्ण] एक देव-विमान (सम २५)। °वेग पुं [°वेग] एक विद्याधर का नाम (महा)। °सिंखला स्त्री [°श्रृङ्खला] एक विद्या-देवी (संति ५)। °सिंग न [°श्रृङ्ग] एक देव-विमान (सम २५)। °सिट्ठ न [°सृष्ट] एक देव-विमान (सम २५)। °सुंदर पु [°सुन्दर] विद्याधर-वंश में उत्पन्न एक राजा (पउम ५, १७)। °सुजणहु पुं [°सुजह्नु] विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, १७)। °सेण पु [°सेन] १ एक जैन मुनि, जो भगवान् ऋषभदेव के पूर्व जन्म में गुरु थे (पउम २०, १७)। २ विक्रम की चौदहवीं शताब्दी के एक जैन आचार्य (सिरि १३४९)। °हर पु [°धर] १ इन्द्र, देवराज (से १५, ४८, उव)। २ वि. वज्र को धारण करने-वाला (सुपा ३३४)। °उह पुं [°युध] १ इन्द्र (पउम ३, १३७, ४१, १८)। २ विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, १६)। °भ पुं [°भ] एक विद्याधर-वंशीय राजा (पउम ५, १६)। °वत्त न [°वर्त्त] एक देव-विमान (सम २५)। °स पुं [°श] एक विद्याधर-राजा (पउम ५, १७)।

वज्जंक पुं [वज्राङ्क] विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, १६)।

वज्जंकुसी स्त्री [वज्राङ्कुशी] एक विद्या-देवी (संति ५)।

वज्जंत देखो वज्ज = वद्।

वज्जंधर पु [वज्रन्धर] विद्याधर-वश का एक राजा (पउम ५, १६)।

वज्जवट्टिता स्त्री [दे] मन्द-भाग्य स्त्री (संक्षि ४७)।

वज्जण न [वर्जन] परित्याग, परिहार (सुर ४, ८२, स २७१, सुपा २४५, श्रु ६)।

वज्जणअ (अप) वि [वदितृ] बजनेवाला, 'पडहु वज्जणउ' (हे ४, ४४३)।

वज्जणया } स्त्री [वर्जना] परित्याग (सम
वज्जणा } ४४, उत्त १६, ३०, उव)।

वज्जमाण देखो वज्ज = वद्।

वज्जय वि [वर्जक] त्यागनेवाला (उवा)।

वज्जर सक [कथय्] कहना, बोलना। वज्जरइ, वज्जरेइ (हे ४, २, षड्, महा)। वकृ वज्जरंत (हे ४, २, चेइय १४६)। संकृ. वज्जरिऊण (हे ४, २)। कृ वज्जरिअव्व (हे ४, २)।

वज्जर देखो वंजर = मार्जार (चड)।

वज्जर पु [वर्जर] १ देश-विशेष। २ वि देश-विशेष मे उत्पन्न, 'परिवाहिया य तेणं वहवे वल्हीयतुरुक्कवज्जराइया आसा' (स १३)।

वज्जरण न [कथन] उक्ति, वचन (हे ४, २)।

वज्जरा स्त्री [दे] तरंगिणी, नदी (दे ७, ३७)।

वज्जरिअ वि [कथित] कहा हुआ, उक्त (हे ४, २, सुर १, ३२, भवि)।

वज्जा स्त्री [दे] अधिकार, प्रस्ताव (दे ७, ३२, वज्जा २)।

वज्जाव (अप) सक [वाचय्] वचवाना, पढ़ाना। वज्जावइ (प्राकृ १२०)।

वज्जाव सक [वादय्] बजाना। वज्जावइ (भवि)।

वज्जाविय वि [वादित] बजाया हुआ (भवि)।

वज्जि पुं [वज्रिन्] इन्द्र (सबोध ८)।

वज्जिअ वि [दे] अवलोकित, दृष्ट (दे ७, ३९; महा)।

वज्जिअ वि [वादित] बजाया हुआ (सिरि ५२५)।

वज्जिअ वि [वर्जित] रहित (उवा, औप, महा, प्रासू ७९)।

वज्जियाव पु [दे] शेलडी (व्यव० भाष्य०)।

वज्जियावग पुं [दे] इक्षु, ऊख (वव १)।

वज्जिर वि [वदितृ] बजनेवाला (सुर ११, १७२, सुपा ४५, ८७, सिरि १५५, सण), 'गहिर(?रव)ज्जिराउज्जगज्जिजज्जरियवंभडभडो-यरो' (कुप्र २२४)।

वज्जुत्तरवडिसग न [वज्रोत्तरावतंसक] एक देव-विमान (सम २५)।

वज्जोयरी स्त्री [वज्रोदरी] विद्या-विशेष (पउम ७, १३८)।

वज्झ वि [वध्य] वध के योग्य (सुपा २४८, गा २९, ४९६, दे ८, ४९)। °नेवत्थिय वि [°नेपथ्यिक] मृत्यु-दंड-प्राप्त को पहनाया जाता वेष वाला (पराह १, ३—पत्र ५४)। °माला स्त्री [°माला] वध्य को पहनाई जाती माला, कनेर के फूलो की माला (भत्त १२०)।

वज्झ वि [वाह्य] १ वहन करने योग्य (प्राप्र, उप १५० टी)। २ न अश्व आदि यान (स ६०३)। °खेड्ड न [°खेल] कला-विशेष, यान की सवारी का इल्म (स ६०३)।

वज्झा स्त्री [हत्या] वध, घात (सुख ४, ६, महा)।

वज्झियायण न [वध्यायन] गोत्र-विशेष (सुज्ज १०, १६)।

वव्व (अप) देखो वच्च = व्रज्। वव्वइ, वव्वदि (षड्)।

वट्ट सक [वृत्] १ वर्त्तना, होना। २ आच-रण करना। वट्टइ, वट्टए, वट्टंति (सुर ३, ३९, उव, कप्प)। वकृ. वट्टंत, वट्टमाण (गा ४१०, कम्म ३, २०, चेइय ७१३, भवि; उवा, पडि, कप्प, पि ३५०)। हेकृ. वट्टेउ (चेइय ३६८)। कृ. वट्टियव्व (उव)।

वलवाडी स्त्री [दे] वृति, वाड (दे ७ ४३)।
वलविअ न [दे] शीघ्र, जल्दी (दे ७, ४८)।
वलहि स्त्री [दे] कर्पास, कपास (दे ७, ३२)।
वलहि } स्त्री [वलभि, °भी] १ गृह-चूडा,
वलही } छज्जा, वरामदा। २ महल का अग्रस्थ भाग (प्राप्र)। ३ काठियावाड का एक प्राचीन नगर, जिसको आजकल 'वळा' कहते हैं (ती १५, सम्मत्त ११६)।
वलाअ देखो पलाय = परा + अय्। वकृ 'दीसइ वि वलाअतो' (से ६, ८६)।
वलाअ देखो पलाव = प्रलाप (से ६, ४६)।
°वलाअ देखो वल = वल्। °मरण देखो वलय-मरण; 'सजमजोग विसन्ना मरति जे त वलायमरणं तु' (पव १५७ ठा २, ४—पत्र ६३)।
वलि स्त्री [वलि] १ पेट का अवयव-विशेष, 'उयरवलिमसेहिं' (निर १, १)। २ त्रिवलि, नाभि के ऊपर पेट की तीन रेखाएँ (गा ४२५, भवि)। ३ जरा आदि से होती शिथिल चमडी (णाया १, १—पत्र ६६)।
वलिअ वि [दे] भुक्त, भक्षित (दे ७, ३५)।
वलिअ वि [वलित] १ मुडा हुआ (गा ६, २७०, औप)। २ जिमको वल चढाया गया हो वह (रस्सि आदि) (उत्त २६, २५)।
वलिअ देखो विलिअ = व्यलीक (प्राप्र)।
वलिआ स्त्री [दे] ज्या, धनुष की डोरी (दे ७, ३४)।
°वलिच्छन्न देखो परिच्छन्न (औप)।
वलिज्जत देखो वल = वल्।
°वलित्त देखो पलित्त (उप ७२८ टी)।
वलिमोडय पु [वलिमोटक] वनस्पति मे ग्रन्थि का चक्राकार वेष्टन (पराण १—पत्र ४०)।
वलिर वि [वलितृ] लौटनेवाला (सुपा ५६)।
वली स्त्री [वली] देखो वलि (निर १, १)।
वलुण देखो वरुण (हे १, २५४)।
वले अ सबोधन-सूचक अव्यय (प्राकृ ८०)। २-३ देखो वले (पड्)।
वल्ल देखो वल = वल्। वल्लइ (धात्वा १५२)।
वल्ल अक [वल्ल्] चलना, हिलना (कुप्र ८४)।
वल्ल पुं [दे] शिशु, वालक (दे ७, ३१)।
वल्ल पु [दे. वल्ल] अन्न-विशेष, निष्पाव, गुजराती मे 'वाल' (सुपा १३, ६३१, सम्मत्त ११८, सण)।
वल्लई स्त्री [वल्लवी] गोपी (दे ७, ३६ टी)।
वल्लई स्त्री [दे] गो, गैया (दे ७, ३६)।
वल्लई } स्त्री [वल्लकी] वीणा (पाअ, दे
वल्लकी } ७, ३६ टी, णाया १, १७—पत्र २२६)।
वल्लट्ट वि [दे] पुनरुक्त, फिर से कहा हुआ (पड्)।
वल्लभ देखो वल्लह (गा ६०४)।
वल्लर न [दे वल्लर] १ वन, गहन (दे ७, ८६, पाअ, उत्त १६, ८१)। २ क्षेत्र, खेत (दे ७, ८६, पराह १, १—पत्र १४)। ३ अरण्य क्षेत्र (पाअ)। ४ वालुका-युक्त क्षेत्र (गा ८१२)।
वल्लर न [दे] १ अरण्य अटवी। २ निर्जन देश। ३ पुं. महिष, भैंसा, ४ समीर, पवन। ५ वि युवा, तरुण (दे ७, ८६)। ६ वेष्टन-शील। ७ वेष्टित नामक आलिगन-विशेष करने की आदत वाला। स्त्री. °री (गा ५३४)।
वल्लरी स्त्री [वल्लरी] वल्ली, लता (पाअ, गउड, सुपा ५२६)।
वल्लरी स्त्री [दे] केश, वाल (दे ७, ३२)।
वल्लव पुस्त्री [वल्लव] गोप, अहीर, ग्वाला (पाअ)। स्त्री °वी (गा ८६)।
वल्लवाय न [दे] क्षेत्र, खेत (दे ६, २६)
वल्लविअ वि [दे] लाक्षा से रँगा हुआ (पड्)।
वल्लह पुं [वल्लभ] १ दयित, पति, भर्त्ता, वालम (गउड, कप्पू, गा १२३, हे ४, ३८३)। २ वि प्रिय, स्नेह-पात्र, 'अहं जाया वल्लहा अईव पिउणो' (महा, गा ४२, ६७, कुमा पउम १५, ७३, रयण ७६)। °राय पुं [°राज] १ गुजरात का एक चौलुक्य-वशीय राजा (कुप्र ४)। २ दक्षिण के कुन्तल देश का एक राजा (कप्पू)।
वल्लहा स्त्री [वल्लभा] दयिता, पत्नी (गा ७२)।
वल्लादय न [दे] आच्छादन, ढकने का वस्त्र (दे ७, ४५)।
वल्लाय पुं [दे] १ श्येन पक्षी। २ नकुल, न्यौला (दे ७, ८४)।
वल्लि स्त्री [वल्लि] लता, वेल (कुमा)।
वल्लिर वि [वल्लितृ] हिलनेवाला, 'न विरायइ वल्लिरपल्लवा वि वल्लिव्व फलहीणा' (कुप्र ८४)।
वल्ली स्त्री [वल्ली] लता, वेल (कुमा, वि ३८७)।
वल्ली स्त्री [दे] केश, वाल (दे ७, ३२)।
वल्हीअ पु [वाह्लीक] १ देश-विशेष (स १३, नाट)। २ वि. वाह्लीक देश मे उत्पन्न, वाह्लीक देश का (स १३)।
वव सक [वप्] वोना, 'जे खत्तखित्तेसु ववति वित्त' (सत्त ७२)। वकृ ववंत (आत्महि ७)। कवकृ. वविज्जत (गा ३५८)।
वव सक [वप्] देना। ववइ (वव १)। कर्म. उप्पइ (कुप्र ४१)।
ववइस सक [व्यप + दिश्] १ कहना, प्रतिपादन करना। २ व्यवहार करना। ववइसति (धर्मस ४५२ सूअनि १४१)।

अण्णे अकालमरणस्सभावओ
वहनिवित्तिमो मोहा।
वक्कासुअपिनियासण-
निवित्तितुल्लं ववइसति ॥'
(श्रावक १६२)।

ववएस पुं [व्यपदेश] १ कथन, प्रतिपादन। २ व्यवहार (से ३, २६)। ३ कपट, वहाना, छल (महा)।
ववगम पुं [व्यपगम] नाश (आवम)।
ववगय वि [व्यपगत] १ दूर किया हुआ (सुपा ४१)। २ मृत (पराह २, ५—पत्र १४८)। ३ नाश प्राप्त, नष्ट; 'ववगयविग्घा सिग्घं पत्ता हिअइच्छिअं ठाणं' (णमि ११, औप, कप्प)।
ववट्ठंभ पु [व्यवष्टम्भ] अवलम्बन, सहारा (से ४, ४६)।
ववट्ठावण देखो ववत्थावण (राज)।
ववट्ठिअ वि [व्यवस्थित] व्यवस्था-प्राप्त (से १२, ५२)।

अग जिसका वाहर निकल आया हो वह (पव ११०)। ५ जिसका पेट बड़ा होकर आगे निकल आया हो वह। स्त्री. °भी (णाया १, १—पत्र ३७, औप, पि ३८७)।

वडय देखो वडग = वटक (सुपा ४८५)।

°वडल देखो पडल (गउड)।

वडवग्गि पु [वडवाग्नि] वडवानल, समुद्र के भीतर की आग (गा ४०३)।

वडवड अक [वि + लप्] विलाप करना। वडवडइ (हे ४, १४८), वडवडति (कुमा)।

वडवा स्त्री [वडवा] घोडी (पाअ, धर्मवि १४५)। °णल, नल पुं [°नल] समुद्र के भीतर की आग, वडवाग्नि (पि २४०, श्रा १६)। °मुह न [°मुख] १ वही अर्थ (से १, ८)। २ एक महा-पाताल (इक)। °हुआस पुं [°हुताश] वडवानल (समु १५४)।

वडह देखो वडभ (आचा १, २, ३, २)।

वडह पुं [दे] पक्षि-विशेष (दे ७, ३३)।

°वडह देखो पडह (से १२, ४७)।

वडही देखो वलही (गउड)।

°वडाआ देखो पडाया (गा १२०)।

°वडालि स्त्री [दे] पंक्ति, श्रेणि (दे ७, ३६)।

°वडाहा देखो पडाया, धवलधयवडाहो' (महा)।

°वडिअ देखो पडिअ (से ५, १०, कुप्र १८१, उवा)।

वडिअ वि [गृहीत] ग्रहण किया हुआ (सुर १, १६६)।

वडिंस पुं [वतंस] १ मेरु पर्वत (सुज ५ टी—पत्र ७८)। २ भूषण, 'रायकुलवडिंसगा वि मुणिवसभा' (उव, कप्प)। ३ एक दिग्हस्ति-कूट (इक)। ४ प्रधान, मुख्य। ५ श्रेष्ठ, उत्तम (कप्प, महा)। ६ कर्णपूर, कान का आभूषण (णाया १, १—पत्र ३१)। देखो वडेंस, अवयस।

वडिणाय पुं [दे] घर्घर कण्ठ, बैठा हुआ गला (पड्)।

वडिया स्त्री [वृत्तिता] वर्त्तन, 'भयवतदंसण-वडियाए' (स ६८३; आचा २, ७, १)।

°वडिया देखो पडिया = प्रतिज्ञा (आचा २, ७, १)।

वडिसर न [दे] चूल्ली-मूल, चूल्हे का मूल (दे ७, ४८)।

वडिवस्सअ वि [वरिवस्यक] पूजक, पूजा करनेवाला (चारु १)।

वडिसाअ वि [दे] स्रुत, टपका हुआ (षड्)।

वडी स्त्री [दे] वडी, एक प्रकार का खाद्य (पव ३८)।

वडुमग } देखो वट्टमग (औप, आचा)।
वड्डमग }

वडेंस पुं [वतंस] शेखर, मुकुट (भग, णाया १, १ टी—पत्र ५)। देखो वडिंस।

वडेंसा स्त्री [वतंसा] किंनर नामक किंनरेन्द्र की एक अग्रमहिषी (ठा ४, १—पत्र २०४, णाया २—पत्र २५२)।

वडेंसिया स्त्री [वतंसिका] अवतंस की तरह करना, मुकुटस्थानापन्न करना, 'अट्ठारसवंजणाउलं भोयणं भोयावेत्ता जावज्जीव पिट्ठिवडेंसियाए परिवहेज्जा' (ठा ३, १—पत्र ११७)।

वड्ड वि [दे] वडा, महान् (दे ७, २९, तंदु ५५, सुपा १२४, णाया २—पत्र २४८, सम्मत्त १७३, भवि, हे ४, ३६६, ३६७, ३७१)। °अत्थरग पुं [°आस्तरक] ऊँट की पीठ पर रखा जाता आसन (पव ८४ टी)। °त्तण न [°त्व] वड्प्पन, महत्ता (हे ४, ३८४; कप्पू)। °प्पण (अप) न [°त्व] वही (हे ४, ३६६, ४३७, पि ३००)। °यर वि [°तर] विशेष वडा (हे २, १७४)।

वड्डवास पुं [दे] मेघ, अभ्र (दे ७, ४७, कुमा)।

वड्डहुल्लि पुं [दे] मालाकार, माली (दे ७, ४२)।

वड्डार (अप) देखो वड्ड-यर (भवि)।

वड्डिम वि [दे] स्रुत, टपका हुआ (षड्)।

वड्डिल [दे] देखो वड्ड,

'नयणाण पडउ वज्जं अहवा
वज्जस्स वड्डिलं किंपि।
अमुणियजणेवि दिट्ठे अणुबंध
जाणि कुव्वंति'
(सुर ४, २०, वज्जा ६२)।

वड्डकुअर देखो वड्ड-यर (षड्)।

वड्ढ अक [वृध्] वढना। वड्ढइ (हे ४, २२०, महा, काल)। भूका. वड्ढित्था (कप्प)। वकृ वड्ढत, वड्ढमाण (सुर १, ११६, महा, गा ११३)। हेकृ. वड्ढिउ (महा)।

वड्ढ सक [वर्धय] १ वढाना, विस्तारना। २ वधाई देना। वड्ढंति (उव)। वकृ. वड्ढअंत (नाट—मृच्छ १८)। कर्म. वड्ढिज्जति (सिरि ४५४)। देखो वद्ध = वर्धय्।

वड्ढइ पु [वर्धकि] वढई, सुतार (सम २७, उप पृ १५३, पाअ, धर्मसं ४८६, दे ७, ४४)।

वड्ढइअ पुं [दे] चर्मकार, मोची (दे ७, ४४)।

वड्ढण न [वर्धन] १ वृद्धि, वढाव (कप्पू)। २ वि वृद्धि-जनक (महा, सुर १३, १३६)।

वड्ढणमिर वि [दे] पीन, पुष्ट (दे ७, ५१)।

वड्ढणसाल वि [दे] जिसकी पूँछ कट गई हो वह (दे ७, ४६)।

वड्ढमाण देखो वड्ढ = वृध्।

वड्ढमाण } न [वर्धमान, °क] १ गुजरात का एक नगर, जो
वड्ढमाणय }
आजकल 'वढवाण' के नाम से प्रसिद्ध है, 'सिरिवड्ढमाणनयरं पत्ता गुज्जरवरावलय' (सम्मत्त ७५)। २ अवधिज्ञान का एक भेद, उत्तरोत्तर वढ़ता जाता एक प्रकार का परोक्ष रूपी द्रव्यो का ज्ञान (ठा ६—पत्र ३७०, कम्म १, ८)। ३ पुं. भगवान् महावीर (भवि)। देखो वद्धमाण।

वड्ढय देखो वट्ट = दे, 'पाणभरियं वड्ढयं पियावयणसमप्पिय पीयमाणं पि तीए सुट्ठुयर भरियमसुएहिं' (स ३८२)।

वड्ढव सक [वर्धय्, वर्धापय्] १ वढ़ाना, वृद्धि करना। २ वधाई देना, अभ्युदय का निवेदन करना। वड्ढवइ (प्राकृ ६०)।

वड्ढवअ वि [वर्धक] १ वढ़ानेवाला २ वधाई देनेवाला (प्राकृ ६१)।

वड्ढवण न [दे] वस्त्र का आहरण (दे ७, ८७)।

वड्ढवण न [दे. वर्धापन] वधाई, अभ्युदय-निवेदन (दे ७, ८७)।

वव्वीस देखो वव्वीसग, वद्धीसक (पउम ११३, ११)।

वशधि (मा) देखो वसहि = वसति (प्राकृ १०१)।

वश्च (म) देखो वच्छ = वृक्ष (प्राकृ १०१)।

वस अक [वस्] १ वास करना, रहना। २ सक बाँधना। वसइ (कप्प, महा)। भूका वसीय (उत्त १३, १८)। वकृ वसत, वसमाण (सुर २, २१६; ६, १२०, कुप्र १४, कप्प)। संकृ वसित्ता, वसित्ताण (आचा, कप्प, पि ५८३)। हेकृ. वत्थए वसिउ (कप्प, पि ५७८, राज)। कृ. वसियव्व (ठा ३, ३, सुर १४, ८७, सुपा ४३८)।

वस वि [वश] १ आयत्त, अधीन (आचा, से २, ११)। २ पुन. अधीनता, परतन्त्रता (कुमा, कम्म १, ४४)। ३ प्रभुत्व, स्वामित्व। ४ आज्ञा (कुमा)। ५ बल, सामर्थ्य (णाया १, १७, औप)। °अ, °ग वि [°ग] वशीभूत, पराधीन (पउम ३०, २०, अच्चु ६१, सुर २, २३१, कुमा, सुपा २५७)। °ट्ट वि [°र्त] पराधीनता से पीडित, इन्द्रिय आदि की परवशता के कारण दुःखित (आचा, विपा १, १—पत्र ८, औप)। °ट्टमरण न [°र्तमरण] इन्द्रियादि-परवश की मौत (ठा २, ४—पत्र ६३, भग)। °वत्ति वि [वर्तिन्] वशीभूत, अधीन (उप १३६ टी, सुपा २३८)। °इत्त वि [°ायत्त] अधीन, परतन्त्र (धर्मवि ३१)। °ाणुग वि [°ानुग] वही अर्थ (पउम १४, ११)।

वस पु [वृष] १ धर्म (चेइय ५४१)। २ बैल, वृषभ (स ६५४, कम्म १, ४३)। देखो विस = वृष।

वसइ स्त्री [वसति] १ स्थान, आश्रय (कुमा)। २ रात्रि, रात (दे ७, ४१)। ३ गृह, घर (गा १६६)। ४ वास, निवास (हे १, २१४)।

वसत देखो वस = वस्।

वसंत पु [वसन्त] १ ऋतु-विशेष, चैत्र और वैशाख मास का समय (णाया १, १—पत्र ६४, पाअ, सुर ३, ३६, कुमा, कप्पू, प्रासू ३४, ६२)। २ चैत्र मास (सुज्ज १०, १६)। °उर न [°पुर] नगर-विशेष (महा)। °तिलअ पु [°तिलक] १ हरिवंश में उत्पन्न एक राजा (पउम २२, ६८)। २ न एक उद्यान, जहाँ भगवान् ऋषभदेव ने दीक्षा ली थी (पउम ३, १३४)। °तिलआ स्त्री [°तिलका] छन्द-विशेष (पिंग)।

वसवय वि [वशवद] निज को अधीन कहनेवाला (धर्मवि ६)।

वसण न [वसन] १ वस्त्र, कपड़ा (पाअ, सुपा २४४, चेइय ४८२, धर्मवि ६)। २ निवास, रहना (कुप्र ४८)।

वसण पुं [वृषण] अण्ड-कोष, पोता (सम १२५, भग, पण्ह १, ३, विपा १, २, औप, कुप्र ३६५)।

वसण न [व्यसन] १ कष्ट, विपत्ति, दुःख (पाअ, सुर ३, १६२, महा, प्रासू २३)। २ राजादि-कृत उपद्रव (णाया १, २)। ३ खराब आदत—द्यूत, मद्य-पान आदि खोटी आदत (बृह १)।

वसणि वि [व्यसनिन्] खोटी आदतवाला (सुपा ४८८)।

वसभ पुं [वृषभ] १ ज्योतिष-प्रसिद्ध राशि-विशेष, वृष राशि (पउम १७, १०८)। २ भगवान् ऋषभदेव (चेइय ५४१)। ३ एक जैन मुनि, जो चतुर्थ बलदेव के पूर्व जन्म में गुरु थे (पउम २०, १९२)। ४ गीतार्थ मुनि, ज्ञानी साधु (बृह १, ३)। ५ बैल, बलीवर्द (उव)। ६ उत्तम, श्रेष्ठ, 'मुणिवसभा' (उव)। °करण न [°करण] वह स्थान जहाँ बैल बाँधे जाते हों (आचा २, १०, १४)। °क्खेत्त न [°क्षेत्र] स्थान-विशेष, जहाँ पर वर्षा-काल में आचार्य आदि रहते हों वह स्थान (वव १०, निचू १७)। °गाम पुं [°ग्राम] ग्राम-विशेष, कुत्सित देश में नगर-तुल्य गाँव, 'अत्थि हु वसभग्गामा कुदेसनगरोवमा सुहविहारा' (वव १०)। °ाणुजाय पुं [°ानुजात] ज्योतिशास्त्र-प्रसिद्ध दश योगों में प्रथम योग, जिसमें चन्द्र, सूर्य और नक्षत्र बैल के आकार से स्थित होते हैं (सुज्ज १२—पत्र २३३)। देखो उसभ, रिसभ, वसह।

वसभुद्ध पुं [दे] काक, कौआ (दे ७, ४६)।

वसम देखो वसिम (महा)।

वसमाण देखो वस = वस्।

वसल वि [दे] दीर्घ, लम्बा (दे ७, ३३)।

वसह पुं [वृषभ] वैयावृत्त्य करनेवाला मुनि (ओघ १५०)। २ लक्ष्मण का एक पुत्र (पउम ६,२०)। ३ बैल, साँढ, साँड (पाअ)। ४ कान का छिद्र। ५ औषध-विशेष (प्राप्र)। °इंध पु [°चिह्न] शंकर, महादेव (गउड)। °केउ पु [°केतु] इक्ष्वाकु-वंश का एक राजा (पउम ५, ७)। °वाहण पु [°वाहन] १ ईशान देवलोक का इन्द्र (ज २—पत्र १५७)। २ महादेव, शंकर (वज्जा ६०)। °वीही स्त्री [°वीथी] शुक्र ग्रह का एक क्षेत्रभाग (ठा ६—पत्र ४६८)।

वसहि देखो वसइ (हे १, २१४; कुमा, गा ५८२, पि ३८७)।

वसा स्त्री [वसा] १ शरीरस्थ धातु-विशेष, 'मेयवसामस—' (पण्ह १, १—पत्र १४, णाया १, १२)। २ मेद, चरबी (आचा)।

°वसारअ वि [प्रसारक] फैलानेवाला (से ६, ४०)।

°वसारअ देखो पसाहय (से ६, ४०)।

°वसाहा स्त्री [प्रसाधा] अलंकार, आभूषण (से १, १६)।

वसि देखो वसइ, 'जत्थ न नज्जइ पहि पहि अडविवसिठाणयविसेसो' (सुर १, ५२)।

वसिअ वि [उषित] १ रहा हुआ, जिसने वास किया हो वह (पाअ, स २६५, सुपा ४२१, भत्त ११२, वै ७)। २ वासी, पर्युषित, 'अवणेइ रयणिवसिय निम्मल्लं लोमहत्थेण' (सवोध ६)।

वसिट्ठ पु [वशिष्ठ] १ भगवान् पार्श्वनाथ का एक गणधर (ठा ८—पत्र ४२६, सम १३)। २ एक ऋषि (नाट—उत्तर ८२)।

वसिट्ठ पुं [वशिष्ट] द्वीपकुमार देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र (इक)।

वसित्त न [वशित्व] योग की एक सिद्धि, योग-जन्य एक ऐश्वर्य, 'साहुवसित्तगुणेणं पसम कूरावि जंतुणो जंति' (कुप्र २७७)।

वसिम न [दे. वसिम] वसतिवाला स्थान (सुर १,५२, सुपा १६४, कुप्र २२४, महा)।

१४, ६६, सुपा २७६, सुर १, ११६, प्रासू ८०, कुमा, महा)।

वणिअ वि [व्रणित] व्रण-युक्त, घाववाला (गा ४५८, ६४६, पउम, ७५, १३)।

वणिअ पु [वनीपक] भिक्षुक, भिखार, 'वणि जायणि त्ति वणिओ पायप्पाणं वणेइत्ति' (पिंड ४४३)।

वणिअ न [वणिज] ज्योतिष-प्रसिद्ध एक करण (विसे ३३४८, सुज्ञानि ११)।

वणिआ स्त्री [वनिका] वाटिका, बगीचा, 'असोयवणिआइ मज्झयारम्मि' (भाव ७, उवा)।

वणिआ स्त्री [वनिता] स्त्री, महिला, नारी (गा १७, कुमा, तदु ५०, सम्मत्त १७५)।

वणिज देखो वणिअ = वणिज् (चारु ३४)।

वणिज्ज } न [वाणिज्य] व्यापार, वैपार,
वणिज्ज } 'एत्तियकालं हट्टे जइ तं चिट्ठेसि वणिजकइ' (सुपा ५१०, २५२), 'उज्जेणी-आगओ वणिज्जेण' (पउम ३३, ६३, स ४४३, सुर १, ६०, कुप्र ३६५, सुपा ३८४, प्रासू ८०, भवि, श्रा १२)। °रय वि [°कारक] व्यापारी (सुपा ३४३, उप पृ १०४)।

वणिम } देखो वणीमय (दस ५, १, ५१)।
वणीमग } २ दरिद्र, निर्धन (दस ५, २, १०)।

वणी स्त्री [वनी] १ भीख से प्राप्त धन (ठा ५, ३—पत्र ३४१)। २ फली-विशेष, जिससे कपास निकलता है (राज)।

वणीमग } पु [वनीपक] याचक, भिक्षुक,
वणीमय } भिखारी (ठा ५, ३, सुपा १६८, सण, ओघ ४३६)।

वणे अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ निश्चय (हे २, २०६, कुमा)। २ विकल्प। ३ अनुकम्पनीय। ४ संभावना (हे २, २०६)।

वणेचर देखो वण-यर (रयण ५६)।

वण्ण सक [वर्णय्] १ वर्णन करना। २ प्रशंसा करना। ३ रँगना। वण्णआमो (पि ४६०)। कर्म वण्णिज्जइ (सिरि १२८८), वण्णिअइ (अप) (हे ४, ३४५)। वकृ. वण्णत (गा ३५०)। हेकृ. वण्णिउ (पि ५७३)। कृ. वण्णणिज्ज, वण्णेअव्व (हे ३, १७६, भग)।

वण्ण पुं [वर्ण] १ प्रशंसा, श्लाघा (उप ६०७)। २ यश, कीर्त्ति (ओघ ६०)। ३ शुक्ल आदि रँग (भग, ठा ४, ४, उवा)। ४ अकार आदि अक्षर। ५ ब्राह्मण, वैश्य आदि जाति। ६ गुण। ७ अंगराग। ८ सुवर्ण, सोना। ९ विलेपन की वस्तु। १० व्रत-विशेष। ११ वर्णन। ११ विलेपन क्रिया। १३ गीत का क्रम। १४ चित्र (हे १, १७७, प्राप्र)। १५ कर्म-विशेष, शुक्ल आदि वर्ण का कारण-भूत कर्म (कम्म १, २४)। १६ संयम। १७ मोक्ष, मुक्ति (आचा)। १८ न. कुंकुम (हे १, १४२)। °णाम, °नाम पुंन [°नामन्] कर्म-विशेष (राज, सम ६७)। °मंत वि [°वत्] प्रशस्त वर्णवाला (भग)। °वाइ वि [°वादिन्] श्लाघा-कर्त्ता, प्रशंसक (वव १)। °वाय पुं [°वाद] प्रशंसा, श्लाघा (पंचा ६, २३)। °वास पु [°वास] वर्णन-प्रकरण, वर्णन-पद्धति (जीव ३, उवा)। °वास पुं [°व्यास] वर्णन-विस्तार (भग, उवा)।

वण्ण पुं [वर्ण] पंचम आदि स्वर। °सम न [°सम] गेय काव्य का एक भेद (दसनि २, २३)।

वण्ण वि [दे] १ अच्छ, स्वच्छ। २ रक्त। (दे ७, ८३)।

°वण्ण देखो पण्ण (गा ६०१, गउड)।

वण्णग देखो वण्णय (उवा, औप)।

वण्णण न [वर्णन] १ श्लाघा, प्रशंसा (कप्पू)। २ दिवेचन, विवरण, निरूपण (रयण ४)।

वण्णणा स्त्री [वर्णना] ऊपर देखो (दे १, २१, सार्ध ४५)।

वण्णय पुन [दे वर्णक] १ चन्दन, श्रीखण्ड (दे ७, ३७, पंचा ८, २३)। २ पिष्टातक-चूर्ण, अंगराग (दे ७, ३७, स्वप्न ६१)।

वण्णय पुं [वर्णक] वर्णन-ग्रन्थ, वर्णन-प्रकरण (विपा १, १, उवा, औप)।

वण्णिअ वि [वर्णित] जिसका वर्णन किया गया हो वह (महा)।

वण्णिआ देखो वन्निआ (गा ६२०)।

वण्हि पु [वृष्णि] १ एक राजा, जो अन्धक-वृष्णि नाम से प्रसिद्ध था, 'वण्हि पिया धारिणी माया' (अंत ३)। २ एक अन्तकृद् महर्षि, 'अक्खोभ पसेणई वण्ही' (अंत)। ३ अन्धकवृष्णि-वंश में उत्पन्न, यादव (णदि)। °दसा स्त्री व [°दशा] एक जैन आगम-ग्रन्थ (निर ५)। °पुंगव पु [°पुंगव] यादव-श्रेष्ठ (उत्त २२, १३, णाया १, १६—पत्र २१?)।

वण्हि पुं [वह्नि] १ अग्नि, आग (पाअ, महा)। २ लोकान्तिक देवों की एक जाति (णाया १, ८—पत्र १५१)। ३ चित्रक वृक्ष। ४ भिलावाँ का पेड। ५ नीबू का गाछ (हे २, ७५)।

वत देखो वय = व्रत (चड)।

वति देखो वइ = व्रतिन् (उप ३८१)।

वति देखो वइ = वृति (चड)।

वतु पुं [दे] निवह, समूह (दे ७, ३२)।

वत्त देखो वट्ट = वृत्। वत्तइ (भवि), वत्तदि (शौ) (स्वप्न ६०)।

वत्त देखो वट्ट = वर्तय्। वत्तइ (भवि)। वत्तेज्ज (आचा २, १५, ४२)। वत्तेज्जासि, वत्तेहामि (उवा, पि ५२८)।

वत्त न [वार्त्त] आरोग्य (उत्त १८, ३८)।

वत्त वि [व्याप्त] फैला हुआ, भरपूर (कप्प, विसे ३०३६)।

वत्त देखो वट्ट = वृत्त (स ३०८, महा, सुर १, १७८, ३, ७६, औप, हे १, १४५)।

वत्त वि [व्यक्त] प्रकट, खुला (धर्मसं ५५५)।

वत्त न [वक्त्र] मुख, मुँह (हे १, १८, भवि)।

°वत्त देखो पत्त = पत्र (गा ६०४, हेका ५०, गउड)।

°वत्त देखो पत्त = पात्र (गउड, गा ३००)।

वत्त° देखो वत्ता (भवि)। °यार वि [°कार] वार्त्ता कहनेवाला (भवि)।

वत्तअ पुं [व्यत्यय] १ विपर्यय, विपर्यास। २ व्यतिक्रम, उल्लंघन (प्राकृ २१)।

वत्तए देखो वय = वच्।

वत्तडिआ } (अप) देखो वत्ता (कुमा, हे ४,
वत्तडी } ४३२, सण)।

वत्तण न [वर्त्तन] १ जीविका, निर्वाह, 'किं न तुम मच्छएहिं कुडु ववत्तण करेसि' (कुप्र

वह सक [वध्, हन्] मार डालना। वहेइ, वहति (उत्त १८, ३, ५, स ७२८, सबोध ४१)। कर्म वहिज्जति (कुप्र २५)। वकृ वहन्त, वहमाण (पउम २६, ७७, सुपा ६५१ श्रावक १३६)। कवकृ वहिज्जत, वज्झमाण (पउम ४६, २०, श्राचा)। सकृ वहिऊण (महा)।

वह सक [व्यथ्] १ पीडा करना। २ प्रहार करना। कृ वहेयव्व (पण्ह २, १—पत्र १००)।

वह (श्रप) देखो वरिस = वृष्। वहदि (प्राकृ १२१)।

वह पुंस्त्री [वध] घात, हत्या (उवा, कुमा, हे ३ १३३, प्रासू १३६, १५३)। स्त्री. °हा (सुख १, ३, म २७)। °कारी स्त्री [°करी] विद्या-विशेष (पउम ७, १३७)।

वह पु [दे] १ कन्धे पर का व्रण। २ व्रण, घाव (दे ७, ३१)।

वह पुं [वह] १ वृषस्कन्ध, बैल का कन्धा (विपा १, २—पत्र २७)। २ परीवाह, पानी का प्रवाह (दे १, ५५)।

वह पुं [व्यथ] लकुट आदि का प्रहार (सूश्र १, ५, २, १४, उत्त १, १६)।

°वह देखो पह = पथिन् (से १, ६१,३, १४, कुमा)।

वहइअ वि [दे] पर्याप्त (षड् १७७)।

वहग वि [वधक] घातक, हिंसक, मार डालनेवाला (उव, स २१३, सुपा ५६४, उप पृ ८०, श्रावक २१२ श्रा २३)।

वहग वि [व्यथक] ताडना करनेवाला (ज २)।

वहड पु [दे] दमनीय बछडा (दे ७, ३७)।

वहढोल पु [दे] वात्या, वात-समूह (दे ७, ४०)।

वहण न [वधन] वध, घात, हत्या, 'अजओ छज्जीवकायवहणम्मि' (सुपा ५२२, धर्मवि १७, मोह १०१, महा, श्रावक १४४, २३७, उप पृ ३५७, सुपा १८४, पउम ४३, ४६)।

वहण न [वहन] १ ढोना (धर्मवि ७२)। २ पोत, जहाज, यानपात्र (पाश्र, उप ५६६, कुम्मा १५)। ३ शकट आदि वाहन (उत्त २७, २, सुपा १८२)। ४ वि. वहन करनेवाला (से ३, ६, ती ३)।

वहण (शौ) देखो पगय = प्रकृत (प्राकृ ६७)।

वहण (श्रप) देखो वसण = वसन (भवि)।

वहणया स्त्री [वहना] निर्वाह (णाया १ २—पत्र ६०)।

वहणा स्त्री [वधना] वध, घात, हिंसा (पण्ह १, १—पत्र ५)।

वहणु पु [व्यधन] एक नरक-स्थान, 'उव्वेयणए विज्जलविमुहे तह विच्छवी वि (?व) हणगू य' (देवेन्द्र २८)।

वहय देखो वहग = वधक (सूश्र २, ४, ४, पउम २६ ४७, श्रावक २०८, सण)।

वहलीअ देखो वहलीय (इक)।

वहा देखो वह = वध।

वहाव सक [वाहय्] वहन कराना। कर्म. वहाविज्जइ (श्रावक २५८ टी)।

वहाविअ वि [वधित] मरवाया हुआ (खा २४)।

°वहाविअ देखो पहाविअ (से ६, १)।

वहिअ वि [व्यथित] पीडित (पचा ५, ४४)।

वहिअ वि [ऊढ] वहन किया हुआ (धात्वा १५२)।

वहिअ वि [वधित] जिसका वध किया गया हो वह (श्रावक १७०, पउम ५, १६५, विपा १, ५, उव, खा २३, २४)।

वहिअ वि [दे] अवलोकित, निरीक्षित, 'तेलोक्कवहियमहियपूइए' (उवा)।

वहिइअ देखो वहइअ (षड्)।

वहिचर अक [व्यभि + चर्] १ पर-पुरुष या पर-स्त्री से सभोग करना। २ सक. नियम-भग करना। वकृ वहिचरत (म ७११)।

वहिचार पु [व्यभिचार] १ पर-स्त्री या पर-पुरुष से सभोग (म ७११)। २ न्यायशास्त्र-प्रसिद्ध एक हेतु-दोष (धर्मस ६३)।

वहिज्जत देखो वह = वध्।

वहिया स्त्री [दे] वही, हिसाव लिखने की किताब (सम्मत्त १४२, सुपा ३८५, ३८६ ३८७, ३६१)।

वहियाली देखो वाहियाली, 'गुरुउज्जाणतडट्ठियवहियालिं नेइ तं निवइ' (धर्मवि ४)।

वहिलग पुं [दे वहिल्लक] ऊँट, बैल आदि पशु (राज)।

वहिल्ल वि [दे] शीघ्र, शीघ्रता-युक्त, गुजराती मे 'वहेलो' (हे ८, ४२२, कुमा, वज्जा १२८)।

वहु पुंस्त्री [दे] चिविडा, गन्ध-द्रव्य विशेष (दे ७, ३१)।

वहु° देखो वहू (हे १, ४, षड्, प्राप्र)।

वहुघारिणी स्त्री [दे] नवोढा, दुलहिन (दे ७, ५०)।

वहुण्णी स्त्री [दे] ज्येष्ठ-भार्या, पति के बडे भाई की बहू (दे ७, ४१)।

वहुमास पुं [दे] रमण-विशेष, क्रीडा विशेष, जिसमें खेलता हुआ पति नवोढा के घर से बाहर नहीं निकलता है (दे ७, ४६)।

वहुरा स्त्री [दे] शिवा, सियारिन (दे ७,४०)।

वहुलिआ (श्रप) स्त्री [वधूटिका] अल्प वय वाली स्त्री, बहुरिया (पिंग)।

वहुव्वा स्त्री [दे] छोटी सास (दे ७, ४०)।

वहुहाडिणी स्त्री [दे] एक स्त्री के रहते हुए व्याही जाती दूसरी स्त्री (दे ७, ५०, षड्)।

वहू स्त्री [वधू] बहू भार्या, नारी (स्वप्न ४२, पाश्र, हे १, ४)।

वहोल पुं [दे] छोटा जल-प्रवाह, गुजराती मे 'वहेगो' (दे ७, ३६)।

वहोलिया स्त्री [दे] देखो वहोल (चउप्पन्न० पत्र २१४)।

वा सक [वा] गति करना, चलना। वइ (से ६, ५२, गा ५४३, कुमा)।

वा अक [वै. म्लै] सूखना। वाइ (से ६, ५२, हे ८, १८)।

वा सक [व्ये] बुनना। कृ वाइम, 'गथिमपूरिमवेढिमवाइमसघाइम छेज्ज' (दमनि २)।

वा श्र [वा] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ विकल्प, अथवा, या (आचा, कुमा)। २ समुच्चय, और, तथा (उत्त ८, १२, सुख ८, १२)। ३ अपि भी (कुमा, कप्प, सुख ५, २२)। ४ अवधारण, निश्चय (ठा ८)। ५ सादृश्य, समानता (विसे १८६४)। ६

वद देखो वय = वद्। वदसि, वदह (उवा; भग, कप्प)। भूका. वदामी (भग)। हेकृ. वदित्तए (कप्प)।
वद देखो वय = व्रत (प्राकृ १२, नाट—विक्र ५६)।
वदिंसा देखो वडेंसा (इक)।
वदिक्कलिअ वि [दे] वलित, लौटा हुआ (दे ७, ५०)।
वदूमग देखो वड्डुमग (आचा)।
वद्दल न [दे वार्दल] १ वद्दल, वादल, मेघ-घटा, दुर्दिन (दे ७, ३५, हे ४, ४०१, सुपा ६५५, राय, आवम, ठा ३, ३—पत्र १४१)। २ पुं. छठवीं नरक का दूसरा नरकेन्द्रक—नरक-स्थान (देवेन्द्र १२)।
वद्दलिया स्त्री [दे वार्दलिका] वदली, छोटा वद्दल, दुर्दिन (भग ६, ३३—पत्र ४६७, औप)।
वद्ध देखो वड्ढ = वर्धय्। कर्म. वद्धसि (सुपा ६०)।
वद्ध पुन [वध्र्] चर्म-रज्जु, 'वज्झो वद्धो (? वज्झो वद्धो)' (पाअ; दे ६, ८८, पव ८३, सम्मत्त १७४)।
वद्ध देखो विद्ध = वृद्ध (प्राप्र, प्राकृ ७)।
वद्धण न [वर्धन] १ वृद्धि, बढती (णाया १, १, कप्प)। २ वि. बढानेवाला (उप ६७३, महा)।
वद्धणिआ } स्त्री [वर्धनिका, °नी] संमार्जनी,
वद्धणी } भाडू (दे ८, १७, ७, ४१ टी)।
वद्धमाण पुं [वर्धमान] १ भगवान् महावीर (आचा २, १५, १०, सम ४३, अंत, कप्प, पडि)। २ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य (सार्ध ६३, विचार ७६, ती १५, गु ८)। ३ स्कन्धा-रोपित पुरुष, कन्धे पर चढाया हुआ पुरुष (अंत, औप)। ४ एक शाश्वत जिन-देव। ५ एक शाश्वती जिन-प्रतिमा (पव ५६)। ६ न गृह-विशेष (उत्त ६, २४)। ७ राजा रामचन्द्र का एक प्रेक्षा-गृह—नाट्य-शाला (पउम ८०, ५)। देखो वड्ढमाण।
वद्धमाणग } पुं [वर्धमानक] १ अठासी
वद्धमाणय } महाग्रहो मे एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष (ठा २, ३—७८)। २ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४०)। ३ न. पात्र-विशेष, शराव (णाया १, १—पत्र ५४, पउम १०२, १२०)। ४ पु पुरुष पर आरूढ पुरुष, पुरुष के कन्धे पर चढा हुआ पुरुष। ५ स्वस्तिक-पञ्चक। ६ प्रासाद-विशेष, एक तरह का महल (णाया १, १—पत्र ५४, टी—पत्र ५७)। ७ न. एक गाँव का नाम, अस्थिक ग्राम, अट्ठियगामस्स पढमं वद्धमाणय ति नाम होत्था' (आवम)। ८ त्रि. कृता-भिमान, अभिमानी, गर्वित (औप)।
वद्धय वि [दे] प्रधान, मुख्य (दे ७, ३६)।
वद्धार सक [वर्धय्] बढाना, गुजराती में 'वधारवुं'। वकृ. वद्धारत (सट्ठि १२, सबोध ४, द्र ८)।
वद्धारिय वि [वर्धित] बढाया हुआ (भवि)।
वद्धाव सक [वर्धय्, वर्धापय्] वधाई देना। वद्धावेइ, वद्धावेंति (कप्प)। कर्म वद्धावीअसि (रंभा)। वकृ वद्धावित (सुपा २२०)। संकृ. वद्धावित्ता (कप्प)।
वद्धावण न [वर्धन, वर्धापन] वधाई, अभ्युदय-निवेदन (भवि, सुर ३, २४, महा, सुपा १२२, १३४)।
वद्धावणिया स्त्री [वर्धनिका, वर्धापनिका] ऊपर देखो (सिरि १३१६)।
वद्धावय वि [वर्धक, वर्धापक] वधाई देने-वाला (सुर १५, ७६, स ५७०, सुपा ३६१)।
वद्धाविअ वि [वर्धित, वर्धापित] जिसको वधाई दी गई हो वह (सुपा १२२, १६५)।
वद्धिअ पु [दे] १ षण्ढ, नपुसक (दे ७, ३७)। २ नपुसक-विशेष, छोटी उम्र में ही छेद दे कर जिसका अण्डकोष गलाया गया हो वह, वधिया (पव १०६ टी)।
वद्धिअ देखो वड्ढिअ = वृद्ध (भवि)।
वद्धी स्त्री [दे] अवश्य-कृत्य, आवश्यक कर्तव्य (दे ७, ३०)।
वद्धीसक } पुन [दे. वद्धीसक] वाद्य-विशेष,
वद्धीसग } एक प्रकार का वाजा (पण्ह २, ५—पत्र १४६, अनु ६)।
वध देखो वह = वध (कुमा)।
वधय देखो वहय (भग)।
वधू देखो वहू (औप)।
वन्न देखो वण्ण = वर्णय्। वन्नेहि (कुमा, उव)। हेकृ. वन्निउ (कुमा)। कृ. वन्नणिज्ज (सुर २, ६७, रयण ५४)।
वन्न देखो वण्ण = वर्ण (भग, उव, सुपा १०३, सत्त ५६, कम्म ४, ४०, ठा ५ ३)।
वन्नग देखो वण्णय (कप्प, श्रा २३)।
वन्नण देखो वण्णण (उप ७६८ टी, सिरि ७२७)।
वन्नणा देखो वण्णणा (रंभा)।
वन्नय देखो वण्णय (पिंड ३०८, कप्प)।
वन्निअ देखो वण्णिअ (भग)।
वन्निआ स्त्री [वर्णिका] १ वानगी, नमूना, 'सग्गस्स वन्निया मिव नयर इह अत्थि पाडली-पुत्तं' (धर्मवि ६४)। २ लाल रंग की मिट्टी (जी ३)।
वन्हि देखो वण्हि = वृष्णि (उत्त २२, १३)।
वन्हि देखो वण्हि = वह्नि (चंड)।
वपु देखो वउ = वपुस् (वव १)।
वप्प सक [त्वच् ?] ढकना, आच्छादन करना। वप्पइ (धात्वा १५१)।
वप्प पुं [वप्र] १ विजयक्षेत्र-विशेष, जम्बूद्वीप का एक प्रान्त, जिसकी राजधानी विजया है (ठा २, २—पत्र ८०, ज ४)। २ पुन. किला, दुर्ग, कोट (ती ८)। ३ केदार, खेत, 'केआरो वप्पिणं वप्पो' (पाअ, आचा २, १, ५, २, दे ७, ८३ टी)। ४ तट, किनारा, 'रोहो वप्पो य तडो' (पाअ)। ५ उन्नत भू-भाग, ऊँची-जमीन, 'वप्पाणि वा फलिहाणि वा पागाराणि वा' (आचा २, १, ५, २)।
वप्प वि [दे] १ तनु, कृश। २ बलवान्, बलिष्ठ। ३ भूत-गृहीत, भूताविष्ट (दे ७, ८३)।
वप्पइराय देखो व-प्पइराय।
वप्पगा देखो वप्पा (राज)।
वप्पगावई स्त्री [वप्रकावती] जम्बूद्वीप का एक विजय क्षेत्र, जिसकी राजधानी का नाम अपराजिता है (ठा २, ३—पत्र ८०, इक)।
वप्पा स्त्री [वप्र] उन्नत भू-भाग, टेकडा, ऊँची जमीन (भग १५—पत्र ६६६)।
वप्पा स्त्री [वप्रा] १ भगवान् नमिनाथजी की माता का नाम (सम १५१)। २ दशवें

वाउल्ल वि [दे वातूल] वाचाट, प्रलाप-शील, वकवादी (दे ७, ५६, पाअ, षड्)
वाउल्लअ पुन [दे] पूतला गुजराती में 'वावलु', 'आलिहिअभित्तिवाउल्लओ व्व ण परम्मुहो ठाइ' (गा २१७), 'आलिहियभित्ति-वाउल्लय व न परम्मुह ठाइ' (वज्जा १४)।
वाउल्लआ } स्त्री [ ] देखो वाउल्लया,
वाउल्ली } वाउल्ली, 'आलिहिअभित्तिवाउ-ल्लिअ व्व ण समुह ठाइ' (गा २१७ अ, दे ६, ६०)।
वाऊल देखो वाउल=वातूल, 'अभिवायण-वाऊलो हसिज्जए नयरलोएण' (धर्मवि १११, प्राकृ ३०)।
वाऊल देखो वाउल=व्याकुल (प्राकृ ३०)।
वाऊलिअ वि [वातूलित] १ वातूल वना हुआ। २ नास्तिक (सम्मनि १, ६६)।
वाए सक [वादय्] वजाना। वाएइ (महा)। वकृ वाएत (महा)। कवकृ वाइज्जत (कुप्र १६)। हेकृ वाइउ (महा)।
वाए सक [वाचय्] १ पढाना। २ पढना। वाएइ, वाएति (भग, कप्प)। कवकृ वाइ-ज्जत (सुपा ३३८, कुप्र १६)।
वाएरिअ वि [वातेरित] पवन-प्रेरित, हवा से हिलाया या कंपाया हुआ (गा १७६)।
वाएसरी स्त्री [वागीश्वरी] सरस्वती देवी, 'वाएसरी पुत्थयवग्गहत्था' (पडि, सम्मत्त २१५)।
वाओलि } स्त्री [वातालि, °ली] पवन-
वाओली } समूह, 'किं अयलो चालिज्जइ पयडवाउ (? ओ) लिमएहिंवि' (धर्मवि २७, गउड, णाया १, १—पत्र ६३)।
वाक } देखो वक्क=वल्क (औप, विसे ६७,
वाग } विपा १, ६—पत्र ६६)।
वागड पु [वागड] गुजरात का एक प्रान्त, जो आजकल भी 'वागड' नाम से ही प्रसिद्ध है (कुप्र ६)।
वागडिअ त्रि [व्याकृत] प्रकट किया हुआ (वव १)।
वागर सक [व्या + कृ] प्रतिपादन करना, कहना। वागरेइ, वागरेज्जा (कप्प, पि ५०६)। वकृ वागरमाण, वागरेमाण (सुर ७, ४१, सुपा ५११, औप)। संकृ वागरित्ता (सम ७२)। हेकृ वागरिउ, वागरित्तए (कुप्र २३८, उवा)।
वागरण न [व्याकरण] १ कथन, प्रतिपादन, उपदेश (विसे ५५०, कुप्र २, पण्ह १, १ टी)। २ निर्वचन, उत्तर (औप, उवा, कप्प)। ३ शब्दशास्त्र (धर्मवि ३८, मोह २)।
वागरणि त्रि [व्याकरणिन्] प्रतिपादन करनेवाला (सम्म २)।
वागरणी स्त्री [व्याकरणी] भाषा का एक भेद, प्रश्न के उत्तर की भाषा, उत्तर रूप वचन (ठा ४, १—पत्र १८३)।
वागरिय त्रि [व्याकृत] उक्त, कथित (उवा, अंत ६ उप १४२ टी, पव ७३ टी)। देखो वायड=व्याकृत।
वागल न [वल्कल] वृक्ष की छाल (णाया १, १६—पत्र २१३)।
वागल वि [वाल्कल] वृक्ष की त्वचा—छाल से वना हुआ, 'वागलवत्थनियत्थे' (भग ११, ६—पत्र ५१६)।
वागली स्त्री [दे] वल्ली-विशेष (पण्ण १—पत्र ३३)।
वागिल्ल वि [वाग्मिन्] बहु-भाषी, वाचाल (वव ७)।
वागुर पु [वागुरा] मृग-बन्धन, जाल, फन्दा, 'रे रे रएह वागुरे' (मोह ७६)।
वागुरि } वि [वागुरिन्, °रिक] देखो
वागुरिय } वाउरिय, गुजराती में 'वाघरी', 'सकयपसयरोहिए य साहिंति वागुरा (?री) ण' (पण्ह १, २—पत्र २६, सूअ २, २, ३६, विपा १, ८—पत्र ८३)।
वाघाइअ त्रि [व्याघातिक] व्याघात से उत्पन्न (ज ७—पत्र ५३१)।
वाघाइम वि [व्याघातिम] व्याघात से होने-वाला (सुज्ज १८—पत्र २६५)। २ न मरण-विशेष—सिंह, दावानल आदि से होने वाली मौत (औप)।
वाघाय पु [व्याघात] १ स्खलना (सुज्ज १८)। २ विनाश (उत्त ६७६)। ३ प्रतिबन्ध, रुकावट (भग, ओघभा १८)। ४ सिंह, दावानल आदि से अभिभव (औप)।
वाघारिय वि [व्याघारित] प्रलम्ब, लम्बा (पंचा १८, १८, पव ६७)।
वाघुण्णिय वि [व्याघूर्णित] दोलायमान, डोलता (णाया १, १—पत्र ३१)।
वाघेल पुं [दे] एक क्षत्रिय-वंश (ती २६)।
वाच देखो वाय=वाचय्। कवकृ. वाचीअमाण (नाट—मालवि ६१)। संकृ. वाचिऊण (हम्मीर १७)।
वाचय देखो वायग=वाचक (द्रव्य ४६)।
वाचिय देखो वाइअ=वाचित (स ६२१)।
वाज देखो वाय=व्याज (कुप्र २०१)।
वाजि पु [वाजिन्] अश्व, घोड़ा (विपा १, ७)।
वाजीकरण न [वाजीकरण] १ वीर्य-वर्धक औषध-विशेष। २ उसका प्रतिपादक शास्त्र, आयुर्वेद का एक अंग (विपा १, ७—पत्र ७५)।
वाड पु [वाट] १ वाड, कंटक आदि से की जाती गृहादि की परिधि (उत्त २२, १४, माल १६५)। २ वाडा, वाडवाली जगह, वृतिवाला स्थान, 'निव्वाणमहावाड साहूरिय सपावेइ' (उवा, गा २२७, दे ७, ५३ टि, गउड), 'अंते सो साहूण गोवाडनिरोहण करेज्ज' (विचार ५०६)। ३ वृति आदि से परिवेष्टित गृह-समूह, रथ्या, मुहल्ला (उत्त ३०, १८); 'अहो गणिआवाडस्स सस्सिरीअआ' (चारु ७६)।
वाडंतरा स्त्री [दे] कुटीर, झोपडा या झोपड़ी (दे ७, ५८)।
वाडग देखो वाड (पिंड ३३४, विपा १, ४—पत्र ५५, उप पृ २८६)।
°वाडण देखो पाडण, 'परदोहवट्टवाडणवद्दग-हत्तत्तखणणपमुहाइं' (कुप्र ११३)।
वाडव पुं [वाडव] वडवानल, समुद्र-स्थित अग्नि (सण)।
वाडहाणग पुन [वाटधानक] १ एक छोटा गाँव। २ वि उस गाँव का निवासी, 'ताहे तेण वाडहाणगा हरिएसा चिज्जाइया कया' (सुख ६, १, महा)।
वाडि° देखो वाडी=वाटी (गा ८, णाया १, ७—पत्र ११६)।
वाडिआ स्त्री [वाटिका] वगीचा, उद्यान, 'सणवाडिआ' (गा ६, चारु ५६, दे ७, ३५, रंभा)।

२, प्रासू १५४)। °मंत वि [°वत्] व्रती (प्राचा २, १, ६, १)।
वय पुन [वयस्] १ उम्र, आयु (ठा ३, ३, ४, ४, गा २३२, उप पृ १८, कुमा, प्रासू ४८, श्रा १४)। २ पक्षी (गउड, उप पृ १८)। °त्थ वि [°स्थ] तरुण, युवा (सुख १, १६)। °परिणाम पु [°परिणाम] वृद्धता, बुढापा (से ४, २३, पात्र)।
°व्रय पु [पच] पचन, पाक (श्रा २३)।
°वय देखो पय = पद (स ३४५, श्रा २३, गउड कप्पू, से १, २४)।
°वय देखो पय = पयस् (कुमा)।
वयग न [दे] फल-विशेष (सिरि ११६८)।
वयतरिअ वि [वृत्यन्तरित] वाड़ से तिरोहित (दे २, ६३)।
वयंस पु [वयस्य] समान उमरवाला मित्र (ठा ३, १—पत्र ११४, हे १, २६, महा)।
वयसि देखो वञ्चसि = वचस्विन् (राज)।
वयंसी स्त्री [वयस्या] सखी, सहेली (कप्पू)।
वयड पु [दे] वाटिका, वगीचा (दे ७, ३५)।
वयण न [दे] १ मन्दिर, गृह। २ शय्या, बिछौना (दे ७, ८५)।
वयण पुंन [वदन] १ मुख, मुंह, 'वश्रणो, वश्रणं' (प्राकृ ३३, पि ३५८, सुर २, २४३, ३, ४४; प्रासू ६२)। २ न. कथन, उक्ति (विसे २७६४)।
वयण पुन [वचन] १ उक्ति, कथन, 'वयणा, वयणाइं' (हे १, ३३, पव २; सुर ३, ६४, प्रासू १४, १३४, १५०, कुमा)। २ एकत्व आदि संख्या का वोधक व्याकरण-शास्त्रोक्त प्रत्यय (पण्ह २, २ टी—पत्र ११८)।
वयणिज्ज वि [वचनीय] १ वाच्य, कथनीय, अभिधेय, 'वत्थु दव्वट्ठिअस्स वयणिज्जं' (सम्म ८, सूअ २, १, ६०)। २ निन्दनीय (सुपा ३००)। ३ उपालम्भनीय, उलहना देने योग्य (कुप्र ३)। ४ न. वचन, शब्द (से ४, १३, सम्म ५३, काप्र ८६६)। ५ लोकापवाद, निन्दा (स ५३२)।
वयर वि [दे] चूर्णित (दे ७, ३४)।
वयर देखो वइर = वज्र (कप्प, उव, ओघभा ८, सार्धं ३५, भग, औप)।
°वयर देखो पयर = प्रकर (से १, २२)।
वयराड देखो वइराड (सत्त ६७ टी)।
वयल वि [दे] १ विकसता, खिलता (दे ७, ८४)। २ पु कलकल, कोलाहल (दे ७, ८४, पात्र)।
वयली स्त्री [दे] लता-विशेष, निद्राकरी लता (दे ७, ३४, पात्र)।
°वयस देखो वय = वयस्, 'सवयस' (आचा १, ८, २, २)।
वयस्स देखो वयस (स ३१४, मोह ४७, अभि ५५, स्वप्न ७६)।
वया स्त्री [वपा] १ विवर, छिद्र। २ मेद, चरवी (श्रा २३)।
वया स्त्री [वचा] १ ओषधि विशेष। २ मैना, सारिका (श्रा २३)। देखो वचा।
वया स्त्री [व्यजा] १ मार्ग-विशेष, ऊप को खीचने के लिए रज्जुवद्ध घट आदि डालने का मार्ग। २ प्रेरण-दण्ड (श्रा २३)।
वर सक [वृ] १ सगाई करना, सबन्ध करना। २ आच्छादन करना, ढकना। ३ याचना करना। ४ सेवा करना। वरइ (हे ४, २३४, सुज्ज १६, प्राप्र, षड्), 'वर वरेहिं' (कुप्र ८०), 'वरं वरसु इच्छिअं' (श्रा १२)। भवि. वरिस्सइ (सिरि ८१६)। कृ वरणीअ (पउम २८, १०४)।
वर सक [वरय्] १ प्राप्त करने की इच्छा करना। २ सस्पृष्ट करना। वरइ, वरयति (भवि, सुज्ज ७), 'के सूरियं वरयते' (सुज्ज १, १)। वकृ. वरिंत (सुज्ज ७)।
वर पु [वर] १ पति, स्वामी, दुलहा (स ७८, स्वप्न ४१, गा ४०४, ४७६, भवि)। २ वरदान, देव आदि का प्रसाद (कुमा, श्रा १२, २७, कुप्र ८०, भवि)। ३ वि. श्रेष्ठ, उत्तम (कप्प, महा, कुमा, प्रासू ५२, १७५)। ४ अभीष्ट (श्रा १२, कुप्र ८०)। ५ न. कुछ अभीष्ट, अच्छा, 'वर मे अप्पा दतो' (उत्त १, १६, प्रासू २२, ३८, १०६)। °दत्त पुं [°दत्त] १ भगवान् नेमिनाथजी का प्रथम शिष्य (सम १५२, कप्प)। २ एक राजकुमार (विपा २, १, १०)। °दाम न [दामन्] एक तीर्थ (ठा ३, १—पत्र १२२, इक, सण)। °धणु पुं [°धनुष्] एक मन्त्रिकुमार, ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती का वालमित्र (महा)। °पुरिस पुं [°पुरुष] वासुदेव (पउम १७—पत्र ५२६, राय, आवम, जीव ३)। °माल पु [°माल] एक देवविमान (देवेन्द्र १३३)। °माला स्त्री [°माला] वर को पहनायी जाती माला, वरत्व-सूचक माला (कुप्र ४०७)। °रुइ पु [°रुचि] राजा नन्द के समय का एक विद्वान् ब्राह्मण (कुप्र ४४७)। °वरिया स्त्री [°वरिका] अभीष्ट वस्तु मांगने के लिए की जाती घोषणा, ईप्सित वस्तु के दान देने की घोषणा (णाया १, ८—पत्र १५१, आवम, स ४०१, सुर १६, १८, सुपा ७२)। °सरक्र न [°सरक] खाद्य-विशेष (पण्ह २, ५—पत्र १४८)। °सिट्ठ पुन [°शिष्ट] यम लोकपाल का एक विमान (भग ३, ७—पत्र १६७, देवेन्द्र २७०)।
वर देखो वार। °विलया स्त्री [°वनिता] वेश्या (कुमा)। °वर देखो पर, 'जीवाणमभयदाणं जो देइ दयावरो नरो निच्चं' (कुप्र १८२)।
वरइअ वि [दे] धान्य-विशेष (दे ७, ४६)।
वरइत्त पु [दे वरयितृ] अभिनव वर, दुलहा (दे ७, ४४, षड्; भवि)।
वरई देखो वराय = वराक।
वरउप्फ वि [दे] मृत (दे ७, ४७)।
वर देखो पर = परम्, 'अदो वर विरुद्धमम्हाण इत्य अवत्थाणं' (मोह ६२, स्वप्न २०६)।
वरंड पु [वरण्ड] १ दीर्घ काष्ठ, लम्बी लकडी। २ भित्ति, भीत (मृच्छ ६)।
वरड पुं [दे] १ तृण-पुञ्ज, तृण सचय (चारु ३)। २ प्राकार, किला (दे ७, ८६, षड्)। ३ कपोतपाली, गाल पर लगाई जाती कस्तूरी आदि की छटा (दे ७, ८६)। ४ समूह (गा ६३०)।
वरडिया स्त्री [दे] छोटा वरडा, वरामदा, दालान (सुपा २०३)।
वरक्ख न [वराख्य] गन्ध-द्रव्य विशेष, सिल्हक (से ६, ४४)।
वरक्ख पुं [वराक्ष] १ योगी। २ यक्ष। ३ वि. श्रेष्ठ इन्द्रियवाला (से ६, ४४)।
वरक्खा स्त्री [वराख्या] त्रिफला (से ६, ४४)।

हाथ, पैर आदि अवयव छोटे हो और छाती, पेट आदि पूर्ण या उन्नत हो वह शरीर (ठा ६—पत्र ३५७, सम १४९, कम्म १, ४०)। २ वि उक्त आकार के शरीरवाला, ह्रस्व, खर्व (पव ११०, से २, ९, पाअ)। स्त्री °णी (औप, णाया १, १—पत्र ३७)। ३ पु श्रीकृष्ण का एक अवतार (से २, ९)। ४ देव-विशेष एक यक्ष-देवता (सिरि ६६७)। ५ न कर्म विशेष, जिसके उदय से वामन शरीर की प्राप्ति हो वह कर्म (कम्म १, ४०)। °थली स्त्री [°स्थली] देश-विशेष (ती १५)।

वामणिअ वि [दे] नष्ट वस्तु—पलायित को फिर से ग्रहण करनेवाला (दे ७, ५९)।

वामणिआ स्त्री [दे] दीर्घ काष्ठ की वाड (दे ७, ५८)।

वामद्दण न [व्यामर्दन] एक तरह का व्यायाम, हाथ आदि अंगो का एक दूसरे से मोडना (णाया १, १—पत्र १९, कप्प, औप)।

वामरि पु [दे] सिंह, मृगेन्द्र (दे ७, ५४)।

वामलूर पु [वामलूर] वल्मीक, दीमक (पाअ, गउड)।

वामा स्त्री [वामा] भगवान् पार्श्वनाथजी की माता का नाम (सम १५१)।

वामिस्स देखो वामीस (पउम ९३, ३९)।

वामी स्त्री [दे] स्त्री महिला (दे ७, ५३)।

वामीस वि [व्यामिश्र] मिश्रित, युक्त, सहित (पउम ७२ ४, तदु ४४)।

वामीसिय वि [व्यामिश्रित] ऊपर देखो (भवि)।

वामुत्तय वि [व्यामुक्तक] १ परिहित, पहना हुआ। २ प्रलम्बित, लटका हुआ (औप)।

वामूढ वि [व्यामूढ] विमूढ, भ्रान्त (सुर ६, १२९, १२, १८३, सुपा ७०)।

वामोह पु [व्यामोह] मूढता, भ्रान्ति (उप पृ ३२९, सुपा ६५, भवि)।

वामोहण वि [व्यामोहन] भ्रान्ति जनक (भवि)।

वाय सक [वाचय्] १ पढ़ना। २ पढाना। वाएइ, वाएसि (कुप्र १६६), 'सावक्का सुयजणणी पासत्था गहिय वायए लेह' (धर्मवि ४७), 'सुत्त वाए स्वज्झाओ' (सबोध २५)। वकृ वायत (सुपा २२३)। संकृ वाइऊण (कुप्र १६६)। कृ वायणिज्ज (ठा ३, ४)।

वाय सक [वा] वहना, गति करना, चलना। वायति (भग ५, २)। वकृ वायत (पिंड ८२, सुर ३, ४०, सुपा ४५०, दस ५, १, ८)।

वाय अक [वै, म्लै] सूखना। वाअइ (सक्षि ३६, प्राप्र)। वकृ वायत (गउड ११६५)।

वाय सक [वादय्] बजाना। वकृ. वायंत, वायमाण (सुपा २६३, ४३२)। कृ. वाइयव्व (स ३१४)।

वाय वि [वान] शुष्क, सूखा, म्लान (गउड, से ५, ५७, पाअ, प्राप्र, कुमा)।

वाय पु [दे] १ वनस्पति-विशेष (सूअ २, ३, १६)। २ न गन्ध (दे ७, ५३)।

वाय पु [व्रात] समूह, सघ (श्रा २३, भवि)।

वाय वि [व्यातृ] संवरण करनेवाला (श्रा २३)।

वाय वि [व्यागस्] प्रकृष्ट अपराधी (श्रा २३)।

वाय पु [वातृ] १ पवन, वायु। २ कपडा बुननेवाला, जुलाहा (श्रा २३)।

वाय वि [व्याप] प्रकृष्ट विस्तारवाला (श्रा २८)।

वाय पुं [वाक] ऋग्वेद आदि वाक्य (श्रा २३)।

वाय पु [व्याय] १ गति, चाल। २ पवन, वायु। ३ पक्षी का आगमन। ४ विशिष्ट लाभ (श्रा २३)।

वाय पु [व्याच] वचन, ठगाई (श्रा २३)।

वाय पु [वाज] १ पक्ष, पँख। २ मुनि, ऋषि। ३ शब्द, आवाज। ४ वेग। ५ न घृत, घी। ६ पानी, जल। ७ यज्ञ का धान्य (श्रा २३)।

वाय न [वाच] शुक-समूह (श्रा २३)।

वाय वि [वाज्] १ फेंकनेवाला। २ नाशक (श्रा २३)।

वाय पुं [व्याज] १ कपट, माया। २ बहाना, छल। ३ विशिष्ट गति (श्रा २३)।

वाय देखो वाग = वल्क (विपा १, ६—पत्र ६६)।

वाय पु [व्राय] विवाह, शादी (श्रा २३)।

वाय पु [व्यात] विशिष्ट गमन (श्रा २३)।

वाय पुं [वाप] १ वपन, बोना। २ क्षेत्र, खेत (श्रा २३)।

वाय पु [वाय] १ गमन, गति। २ सूंघना। ३ जानना, ज्ञान। ४ इच्छा। ५ खाना, भक्षण। ६ परिणयन विवाह (श्रा २३)।

वाय वि [व्याद] विशेष ग्रहण करनेवाला (श्रा २३)।

वाय वि [वाच्] वक्ता, बोलनेवाला (श्रा २३)।

वाय पुं [वात] १ पवन, वायु (भग, णाया १, ११, जी ७, कुमा)। २ उत्कर्ष (उत्त ५५ टि)। ३ पुन एक देव-विमान (सम १०)। °कंत पुंन [°कान्त] एक देव-विमान (सम १०)। °कम्म न [°कर्मन] अपान वायु का सरना, पादना, पाद, पर्दन (ओघ ६२२ टी)। °कूड पुन [°कूट] एक देव-विमान (सम १०)। °खंध पुं [°स्कन्ध] घनवात आदि वायु (ठा २, ४—पत्र ८६)। °ज्झय पुन [°ध्वज] एक देव-विमान (सम १०)। °णिसग्ग पुं [°निसर्ग] अपान वायु का सरना, पर्दन (पडि)। °पलिक्खोभ पु [परिक्षोभ] कृष्णराजि, काले पुद्गलो की रेखा (भग ६, ५—पत्र २७१)। °प्पभ पुन [°प्रभ] देव-विमान विशेष (सम १०)। °फलिह पु [°परिघ] कृष्णराजि (भग ६, ५)। °रुह पु [°रुह] वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३६)। °लेस्स पुन [°लेश्य] एक देव-विमान (सम १०)। °वण्ण पुन [°वर्ण] एक देव-विमान (सम १०)। °सिंग पुन [°श्रृङ्ग] एक देव विमान (सम १०)। °सिट्ठ पुन [°सृष्ट] एक देव-विमान (सम १०)। °वित्त पुन [°विर्त] एक देव-विमान (सम १०)।

वाय पु [वाद] १ तत्त्व-विचार, शास्त्रार्थ (ओघभा १७, धर्मवि ८०, प्रासू ६३)। २ उक्ति, वचन (औप)। ३ नाम, आख्या:

३—पत्र ३४८)। १३ पुं. व. एक आर्य-देश (पव २७५)। °काइय पुं [°कायिक] वरुण लोकपाल के भृत्य-स्थानीय देवों की एक जाति (भग ३. ७—पत्र १९९)। °देवकाइय पु [°देवकायिक] वही अर्थ (भग ३, ७)। °प्पभ पुं [°प्रभ] १ वरुणवर द्वीप का एक अधिष्ठायक देव (जीव ३—पत्र ३४८)। २ वरुण लोकपाल का उत्पात-पर्वत (ठा १०—पत्र ४८२)। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] वरुणप्रभ पर्वत की दक्षिण दिशा में स्थित वरुण लोकपाल की एक राजधानी (दीव)। °वर पु [°वर] एक द्वीप का नाम (जीव २—पत्र ३४८, सुज्ज १९)।

वरुणा स्त्री [वरुणा] १ अच्छ देश की प्राचीन राजधानी (पव २७५)। २ वरुणप्रभ पर्वत की पूर्व दिशा में स्थित वरुण नामक लोक-पाल की एक राजधानी (दीव)। ३ एक राज-पत्नी (पउम ७, ४४)।

वरुणी स्त्री [वरुणी] विद्या-विशेष (पउम ७, १४०)।

वरुणोअ } वरुणोद } पु [वरुणोद] एक समुद्र (ठा पत्र ४०५, इक, सुज्ज १९)।

वरुल पु व [वरुल] देश-विशेष (पउम ९८, ६४)।

वरूहिणी स्त्री [वरूथिनी] सेना, सैन्य (पाअ)।

वरेइत्य न [दे] फल (दे ७, ४७)।

वल अक [वल्] १ लौटना, वापस आना। २ मुड़ना, टेढा होना, गुजराती में 'वळवु'। ३ उत्पन्न होना। ४ सक. ढकना। ५ जाना, गमन करना। ६ साधना। वलइ (हे ४, १७६, षड्, गा ४४९, धात्वा १५२)। भवि. वलिस्सं (गहा)। वकृ. वलत, वलय, वलाय, वलमाण (हे ४, ४२२, गा २५, से ५, ४७, ५, ४२, औप, ठा २, ४, पव १५७)। कवकृ. वलिज्जत (से ४, २९)। संकृ वलिऊण (काल)। हेकृ. वलिउं (गा ४८४, पि ५७६)। कृ वलियव्व (महा, सुपा ६०१)।

वल सक [आ + रोपय्] ऊपर चढाना। वलइ (दे ४, ४७, दे ७, ८६)।

वल सक [ग्रह्] ग्रहण करना। वलइ (हे ४, २०९, दे ७, ८६)। वलणिज्ज (कुमा)।

वल पु [वल] रस्सी आदि को मजबूत करने के लिए दिया जाता वल (उत्त २९, २५)।

वलअगी स्त्री [दे] वृतिवाली, वाडवाली (दे ७, ४३)।

वलइय वि [वलयित] १ वलय—कगन की तरह गोलाकार किया हुआ, वलय की तरह मुडा हुआ (पउम २८,१२४, कप्पू)। २ वेष्टित (कप्पू)।

वलग्गणिआ स्त्री [दे] वाडवाली (दे ७, ४३)।

वलक्किअ वि [दे] उत्संगित, उत्संग-स्थित (षड् १८३)।

वलक्ख वि [वलक्ष] श्वेत, सफेद (पाअ)।

वलक्ख न [वलाक्ष] आभूपण-विशेष एक तरह का गले में पहनने का गहना (औप)।

वलग्ग सक [आ + रुह्] आरोहण करना, चढना। गुजराती में 'वळगवु'। वलग्गइ (हे ४, २०६, षड्, भवि)।

वलग्ग वि [आरूढ] जिसने आरोहण किया हो वह, चढा हुआ (पाअ)।

वलग्गगणी स्त्री [दे] वृति, वाड (दे ७, ४३)।

वलग्गिअ देखो वलग्ग = आरूढ (कुमा)।

वलण न [वलन] १ मोडना, वक्र करना (दे १, ४२)। २ प्रत्यावर्तन, पीछे लौटना (से ८, ९, गउड)। ३ वाँक, वक्रता (हे ४, ४२२)।

वलण (शौ मा) देखो वरण (प्राकृ ८५, हे २९३)।

वलणा स्त्री [वलना] देखो वलण = वलन (गउड)।

वलत्थ वि [दे] पर्यस्त (भवि)।

वलमय न [दे] शीघ्र, जल्दी, 'वच्च वलमय तत्थ' (दे ७, ४८)।

वलय पुंन [वलय] १ कंकण, कडा (औप, गा १३३, कप्पू, हे ४, ३५२)। २ पृथिवी-वेष्टन, घनवात आदि (ठा २, ४—पत्र ८६)। ३ वेष्टन, वेठन। ४ वर्तुल, गोलाकार (गउड, कप्पू, ठा ५, १)। ५ नदी आदि के वाँक से वेष्टित भू-भाग (सूअ २, २, ८, भग)। ६ माया, प्रपंच (सूअ १, १२, २२, सम ७१)। ७ असत्य वचन, मृषा झूठ (पण्ह १, २—पत्र २६)। ८ वलयकार वृक्ष, नारि-केल, नारियल आदि (पण्ण १, उत्त ३६,९६, सुख ३६ ९६)। °आर, °रअ पु [°कार, °कारक] कंकण बनानेवाला शिल्पी (दे ७,५४)।

वलय वि [वलक] मोडनेवाला, 'छगलग-गल-वलया' (पिंड ३१४)।

वलय न [दे] १ क्षेत्र, खेत। २ गृह, घर (दे ७, ८४)।

वलय देखो वल = वल्। °मयग वि [°मृतक] १ संयम से भ्रष्ट होकर जिसका मरण हुआ हो वह। २ भूख आदि से तडफता हुआ जो मरा हो वह (औप)। °मरण न [°मरण] संयम से च्युत होनेवाले का मरण (भग २, १)।

वलयणी स्त्री [दे] वृति, वाड (दे ७, ४३)।

वलयवाहा } वलयवाहु } स्त्री [दे] १ दीर्घ काष्ठ, जिसपर ध्वजा आदि वाँधा जाता है वह लम्बा काष्ठ, 'संसारियासु वलयवाहासु ऊसिएसु सिएसु झयग्गेसु' (णाया १,८—पत्र १३३)। २ हाथ का एक आभूपण, चूडा, कडा (दे ७, ५२, पाअ)।

वलया देखो वडवा। °णल पु [°नल] वड-वाग्नि (हे १, १७७, षड्)। °मुह न [°मुख] १ वडवानल (हे १, २०२, प्राकृ, पि २४०)। २ पुं एक वडा पाताल-कलश (ठा ४, २—पत्र २२६, टी—पत्र २२८, सम ७१)।

वलया स्त्री [दे] वेला, समुद्र-कूल। °मुह न [°मुख] वेला का अग्र भाग,

'ति वलागमुहुम्मुक्को, तिक्खुत्तो वलयामुहं।
ति सत्तक्खुत्तो जालेण, सइ छिन्नोदए दहे॥
एयारिस मम सत्त, सढ घट्टियघट्टण।
इच्छसि गलेण घेत्तु, अहो ते अहिरीयया॥'
(पिंड ६३२, ६३३)।

वलयाइअ वि [वलयायित] जो वलय की तरह गोल हुआ हो वह (कुमा)।

वलवट्टि [दे] देखो वलवट्टि (दे ६, ९१)।

वलवा देखो वडवा, 'गोमहिसिकरहतुरगाणं' (पउम २, २, दे ७, ४१, इक, पि २४०)

वार पु [वार] १ समूह, यूथ (सुपा २१४, सुर १४, २४, सार्ध ४६, कुमा, सम्मत्त १७५)। २ अवसर, वेला, दफा (उप ६२८, सुपा २६० भवि)। ३ सूर्य आदि ग्रह से अधिकृत दिन, जैसे रविवार, सोमवार आदि (गा २६१)। ४ चौथा नरक का एक नरक-स्थान (ठा ६—पत्र ३६५)। ५ वारी, परिपाटी (उप ६४८ टी)। ६ कुम्भ घडा (दस ५, १, ४५)। ७ वृक्ष-विशेष। ८ न फल-विशेष (पराण १७—पत्र ५३१)। °जुवइ स्त्री [°युवति] वारांगना, वेश्या (कुमा)। °जोव्वणी स्त्री [°यौवना] वही अर्थ (प्राकृ १४)। °तरुणी स्त्री [°तरुणी] वही (सण)। °वहू स्त्री [°वधू] वही अर्थ (कुप्र ४४३)। °विलया स्त्री [°वनिता] वही पूर्वोक्त अर्थ (कुमा, सुपा ७८, २००)। °विलासिणी स्त्री [°विलासिनी] वही (कुमा सुपा २००)। °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] वही अर्थ (सुपा ७६)।

वार न [द्वार] दरवाजा (प्राकृ २६, कुमा, गा ८८०)। °वई स्त्री [°वती] द्वारका नगरी (कुप्र ६३)। °वाल पुं [°पाल] दरवान, प्रतीहार (कुमा)।

वारत देखो वार—वारय्।

वारवार न [वारवार] फिर फिर (से ६, ३२, गा २६४)।

वारग पु [वारक] १ वारी, क्रम (उप ६४८ टी)। २ छोटा घडा, लघु कलश (पिंड २७८)। ३ वि निवारक, निषेधक (कुप्र २६, धर्मवि १३२)।

वारडिय न [दे] रक्त वस्त्र, लाल कपडा (गच्छ २, ४६)।

वारड्ड वि [दे] अभिपीडित (षड्)।

वारण न [वारण] १ निषेध, रोक, अटकाव, निवारण (कुमा, श्रोघ ४४८)। २ छत्र, छाता, 'वारणयचामरेहिं नज्जति फुड महा-सुहडा' (सिरि १०२३)। ३ वि. रोकनेवाला, निवारक (कुप्र ३१२)। ४ पुं हाथी (पाम्र, कुमा, कुप्र ३१२)। ५ छन्द का एक भेद (पिंग)।

वारण देखो वागरण (हे १, २६८, कुमा, षड्)।

वारणा स्त्री [वारणा] निवारण, अटकाव (बृह १)।

वारत्त पु [वारत्त] १ एक अन्तकृद् मुनि (अंत १८)। २ एक ऋषि (उव)। ३ एक अमात्य। ४ न एक नगर (धम्म ६ टी)।

वारवाण पु [वारबाण] कञ्चुक, चोली (पाअ)।

वारय देखो वारग (रभा, णाया १, १६—पत्र १६६, उप पृ ३४२, उवा, अत)।

वारसिआ स्त्री [दे] मल्लिका, पुष्प-विशेष (दे ७, ६०)।

वारसिय देखो वारिसिय, 'वारसियमहादाण' (सुपा ७१)।

वारा स्त्री [वारा] १ देरी, विलम्ब, 'अम्मो किमज्ज कज्ज ज लग्गा एत्तिया वारा' (सुपा ४५६)। २ वेला, दफा, 'तो पुणरवि निज्झायइ वाराओ दुन्नि तिन्नि वा जाव' (सट्ठि ६ टी), 'कह महई वाराणिग्गयस्स' (विबुधानन्द)।

वाराणसी देखो वाणारसी (अन्त, पि ३५४)।

वाराविय वि [वारित] जिसका निवारण कराया गया हो वह (कुप्र १४०)।

वाराह पु [वाराह] १ पाँचवें बलदेव का पूर्वभवीय नाम (सम १५३)। २ वि. शूकर के सदृश (उवा)।

वाराही स्त्री [वाराही] १ विद्या-विशेष (पउम ७, १४१)। २ वराहमिहिर का बनाया हुआ एक ज्योतिष-ग्रन्थ, वराह-संहिता (सम्मत्त १२१)।

वारि न [वारि] १ पानी, जल (पाअ, कुमा, सण)। २ स्त्री हाथी को फँसाने का स्थान, 'वारी करिधरणट्ठाण' (पाअ, स १७७, ६७८)। °भद्दग पु [°भद्रक] भिक्षुक की एक जाति शैवलाशी भिक्षुक (सूअनि ६०)। °मय वि [°मय] पानी का बना हुआ। स्त्री °ई (हे १ ४, पि ७०)। °मुअ पु [°मुच्] मेघ, जलधर (षड्)। °य पु [°द] पानी देनेवाला भृत्य (स ७४१)। °रासि पु [°राशि] समुद्र, सागर (सम्मत्त १६०)। °वाह पुं [°वाह] मेघ, अभ्र (उप २६४ टी)। °सेण पुं [°षेण] १ एक अन्तकृद् महर्षि, जो राजा वसुदेव के पुत्र थे और जिन्होंने भगवान् अरिष्टनेमि के पास दीक्षा ली थी (अन्त १४)। २ एक अनुत्तर-गामी मुनि, जो राजा श्रेणिक के पुत्र थे (अनु १)। ३ ऐरवत वर्ष में उत्पन्न चौवीसवें जिनदेव (सम १५३)। ४ एक शाश्वती जिन-प्रतिमा (पव ५६, महा)। °सेणा स्त्री [°षेणा] १ एक शाश्वती जिन प्रतिमा (ठा ४, २—पत्र २३०)। २ अधोलोक में रहने-वाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७, इक २३१ टि)। ३ एक महानदी (ठा ५, ३—पत्र ३५१, इक)। ४ ऊर्ध्वलोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (इक २३२)। °हर पु [°धर] मेघ (गउड)।

वारिअ पु [दे] हजाम, नापित (दे ७, ४७)।

वारिअ वि [वारित] १ निवारित, प्रतिषिद्ध (पाअ, से २, २३)। २ वेष्टित (से २, २३)।

वारिआ स्त्री [द्वारिका] छोटा दरवाजा, वारी (ती २),

'वप्पस्स चा(?वा)रियाए परिखित्तो
खाइयामज्झे।'
'जो जलपूरियविट्ठाकूवाओ
चा(? वा)रियाइ निक्कासो।
सो उवचियगब्भाओ जोणीए निग्गमो इत्थ।'
(धर्मवि १४६)।

वारिज्ज पुन [दे] विवाह, शादी (दे ७, ५५, पाअ, उप पृ ८०)।

वारिसा देखो वरिसा (विक्र १०१)।

वारिसिय त्रि [वार्षिक] १ वर्ष-सबन्धी (राज)। २ वर्षा-सबन्धी, 'चिट्ठइ चउरो मासा वारिसिया विवुहपरिमहिओ' (पउम ८२, ६५)।

वारी स्त्री [द्वारिका] वारी, छोटा दरवाजा (ती २)।

वारी स्त्री [वारी] देखो 'वारि' का दूसरा अर्थ; 'बद्धो वारीवचे फासेण गओ निहण' (सुर ८, १३६, श्रोघ ४४६ टी)।

वारि° न [वारि] जल, पानी (हे १, ४, पि ७०)।

वारुअ न [दे] १ शीघ्र, जल्दी। २ वि. शीघ्रता-युक्त, 'ण वारुआ अम्हे' (दे ७, ४८)।

ववण न [वपन] बोना (वव १, श्रु ६)।

ववण स्त्रीन [दे] कार्पास, तूला, रूई, 'पलही ववण तूलो रूवो' (पात्र)। स्त्री. °णी (दे ६, ८२, ७, ३२)।

ववत्थभ पुं [दे] बल, पराक्रम (दे ७, ४६)।

ववत्था स्त्री [व्यवस्था] १ मर्यादा, स्थिति (स १३, कुप्र ११४)। २ प्रक्रिया, रीति। ३ इतजाम, प्रबन्ध (सुपा ४१)। ४ निर्णय (स १३)। °पत्तय न [°पत्रक] दस्तावेज (स ४१०)।

ववत्थावण न [व्यवस्थापन] व्यवस्था करना, 'जीववववत्थावणादिणा' (धर्मसं ५२०)।

ववत्थावणा न [व्यवस्थापना] ऊपर देखो (धर्मसं ५२०)।

ववत्थिअ वि [व्यवस्थित] व्यवस्था युक्त (स ४६, ७२७, सुर ७, २०५, सण)।

ववत्थिअ वि [व्यवस्थित] जिसने व्यवस्था की हो वह (दसनि ४, ३५)।

ववदेस देखो ववएस (उवा, स्वप्न १३२)।

ववदेसि वि [व्यपदेशिन्] व्यपदेश करनेवाला (नाट—शकु ६६)।

ववधाण न [व्यवधान] अन्तर, दो पदार्थो के बीच का अन्तर (अभि २२२)।

ववरोव सक [व्यप + रोपय्] विनाश करना, मार डालना। ववरोवेसि, ववरोवेजसि, ववरोवेज्जा (उवा)। कर्म. ववरोविज्जसि (उवा)। सक्र ववरोवित्ता (उवा)।

ववरोवण न [व्यपरोपण] विनाश, हिंसा (सण)।

ववरोविअ वि [व्यपरोपित] विनाशित, मार डाला गया, 'जीविआओ ववरोविआ' (पडि)।

ववस सक [व्यव + सो] १ करना। २ करने की इच्छा करना। ववसइ (राय १०८)।

ववस सक [व्यव + सो] १ प्रयत्न करना, चेष्टा करना। २ निर्णय करना। ववसइ (स २०२)। वक्र ववसत, ववसमाण (सुपा २३८, स ५६२)। संकृ. ववसिऊण (सुपा ३३६)। कवकृ ववसिज्जमाण (पउम ५७, ३६)। हेकृ. ववसिदु (शौ) (नाट—शकु ७१)।

ववसाय पुं [व्यवसाय] १ निर्णय, निश्चय। २ अनुष्ठान (ठा ३, ३—पत्र १५१, णादि)। ३ उद्यम, प्रयत्न (से ३, १४, सुपा ३५२, स ६८३, हे ४, ३८५, ४२२, कुप्र २६)। ४ व्यापार, कार्य, काम (औप, राय)।

ववसायसभा स्त्री [व्यवसायसभा] कार्य करने का स्थान, कार्यालय (राय १०४)।

ववसिअ न [दे] बलात्कार (दे ७, ४२)।

ववसिअ, ववस्सिअ वि [व्यवसित] १ उद्यत, उद्यम-युक्त, 'सेणिओ नाम राया पयासुहे सुहं ववसिओ' (वसु, उत्त २२, ३०, उव)। २ त्यक्त, 'अवि जीवियं ववसिय न चेव गुरुपरिभवो सहिओ' (उव)। ३ निश्चयवाला। ४ पराक्रमी (ठा ४, १—पत्र १७६)। ५ न. व्यवसाय, कर्म (णाया १, १—पत्र ५०)। ६ चेष्टित (स ७५६)। ७ उद्यम, प्रयत्न (से ३, २२)।

ववहर सक [व्यव + हृ] १ व्यापार करना। २ अक. वर्तना, आचरण करना। ववहरई, ववहरए (उत्त १७, १८; स १०८, विसे २२१२)। वकृ ववहरंत, ववहरमाण (उत्त २१, २, ३, भग ८, ८, सुपा १५, ४४६)। हेकृ ववहरिउं (स १०५)। कृ. ववहरणिज्ज, ववहरियव्व (उप २११ टी, वव १, सुपा ५८५)।

ववहरग वि [व्यवहारक] व्यापार करनेवाला, व्यापारी (कुप्र २२४)।

ववहरण न [व्यवहरण] व्यवहार (णाया १, ८—१३५, स ५८५, उप ५३० टी, सुपा ४६७, विसे २२१२)।

ववहरय देखो ववहरग (सुपा ५७८)।

ववहरियव्व देखो ववहर।

ववहार पु [व्यवहार] १ वर्तन, आचरण (वव १, भग ८, ८, विसे २२१२, ठा ५, २, पव १२६)। २ व्यापार, धन्धा, रोजगार (सुपा ३३४)। ३ नय-विशेष, वस्तु-परीक्षा का एक दृष्टिकोण (विसे २२१२, ठा ७—पत्र ३६०)। ४ मुमुक्षु की प्रवृत्ति-निवृत्ति का कारण-भूत ज्ञान-विशेष (भग ८, ८—पत्र ३८३, वव १, पव १२६, द्र ४६)। ५ जैन आगम-ग्रंथ विशेष (वव १)। ६ दोष के नाशार्थ किया जाता प्रायश्चित्त, 'आयारे ववहारे पन्नत्ती चेव दिट्ठिवाए य' (दसनि ३)। ७ विवाद, मामला, मुकद्दमा, 'ववहारवियारणं कुणइ' (पउम १०५, १००, स ४६०, चेइय ५६०, उप ५६७ टी)। ८ विवाद-निर्णय, फैसला, चुकादा (उप पृ २८३)। ९ व्यवस्था (सूअ २, ५, ३)। १० काम काज (विसे २२१२, २२१४)। ११ जीवराशि-विशेष (सक्खा ६)। °व वि [°वन्] व्यवहार-युक्त (द्र ४६)। °रासिय वि [°राशिक] जीवराशि-विशेष मे स्थित (सिक्खा ६)।

ववहार पु [व्यवहार] १ पूर्व-ग्रंथ। २ जीतकल्प सूत्र। ३ कल्पसूत्र। ४ मार्ग, रास्ता। ५ आचरण। ६ ईप्सितव्य (वव १)।

ववहारि पु [व्यवहारिन्] १ ऐरवत क्षेत्र मे उत्पन्न एक जिन-देव (सम १५३)। २ वि व्यापारी, वणिक् (मोह ६४, श्रा १४, सुपा ३३४)। ३ व्यवहार-क्रिया-प्रवर्तक (वव १)।

ववहारिअ वि [व्यावहारिक] व्यवहार-सम्बन्धी (ओघ २८१, अणु)।

ववहिअ वि [व्यवहित] व्यवधान-युक्त (अणु, आवम)।

ववहिअ वि [दे] मत्त, उन्मत्त (दे ७, ४१)।

ववॉल देखो वमाल (मण)।

वविअ वि [उप्त] बोया हुआ (उप ७२८ टी, प्रासू ६)।

वविज्जंत देखो वव।

ववेअ वि [व्यपेत] व्यपगत (सूअ २, १, ४७)।

ववेक्खा स्त्री [व्यपेक्षा] विशेष अपेक्षा, परवाह (धर्मसं ११६७)।

वव्वय पु [वल्वज] तृण-विशेष, 'मूययवक्क (? व्व) यपुप्फफल—' (पण्ह २, ३—पत्र १२३, कस २, ३०)।

वव्वर वि [वर्वर] १ पामर। २ [illegible] (कमा)।

वव्वा° देखो वव्वय (कस २, ३०)।

वव्वाड पु [दे] अर्थ, धन (दे ७, ३६)।

वावड पु [दे] कुटुम्बी, किसान (दे ७, ५४)।

वावड वि [व्यापृत] १ व्याकुल (दे ७, ५४ टी)। २ किसी कार्य में लगा हुआ (हे १, २०६, प्राप्र, कस, सुर १, २९)।

वावड वि [व्यावृत्त] लौटाया हुआ, वापस किया हुआ (उप ५३४)।

वावडअ स्त्रीन [दे] विपरीत मैथुन (दे ७, ५८)। स्त्री. °या (पाअ)।

वावण न [व्यापन] व्याप्त करना (विसे ८९)।

वावणग वि [वामनक] ठिगणो, ठिंगना, बौना, छोटे कद का (चउप्पन० पत्र १६१)।

वावणी स्त्री [दे] छिद्र, विवर (दे ७, ५५)।

वावण्ण देखो वावन्न (णाया १, १२)।

वावत्ति स्त्री [व्यापत्ति] विनाश, मरण (णाया १, ९—पत्र १६६, उप ५०९, स ३६५, ४३२, धर्मसं ६३४, ९७९)।

वावत्ति स्त्री [व्यापृति] व्यापार (उप ५०९)।

वावत्ति स्त्री [व्यावृत्ति] निवृत्ति (ठा ३, ४—पत्र १७४)।

वावन्न वि [व्यापन्न] विनाश-प्राप्त (ठा ५, २—पत्र ३१३, स २४१, सम्मत्त २८, स ६०)।

वावय पुं [दे] आयुक्त, गाँव का मुखिया (दे ७, ५५)।

वावर अक [व्या + पृ] १ काम मे लगना। २ सक. काम मे लगाना। वावरेइ (हे ४, ८१), वावरइ (भवि), 'सय गिह परिच्चज्ज परिगिहम्मि वावरे' (उत्त १७, १८, सुख १७, १८)। वकृ वावरत (कुमा ६, ५१)। प्रयो, हेकृ वावरावेउ (स ७६२)।

वावरण न [व्यापरण] कार्य मे लगाना (भवि)।

वावल्ल देखो वावड = व्यापृत (उप पृ ८७)।

वावल्ल पुन [दे. वावल्ल] शस्त्र-विशेष (सण)।

वावहारिअ वि [व्यावहारिक] व्यवहार से सम्बन्ध रखनेवाला (इक, विसे ६५९, जीवस ६५)।

वावाअ (?) अक [अव + काश्] अवकाश पाना, जगह प्राप्त करना। वावाअइ (धात्वा १५२)।

वावाअ सक [व्या + पादय्] मार डालना, विनाश करना। वावाएइ (स ३१, महा)। कर्म. वावाइज्जइ, वावाईयइ (स ६७३), भवि वावाइज्जिस्सइ (पि ५४९)। सकृ. न.वाइऊण (स ७५५)। कृ. वावाइयव्व (स १३५)।

वावाइअ वि [व्यापादित] मार डाला गया, विनाशित (सुपा २४१), 'अवावावि(?इ)ओ चेव विउत्तो खु एसो' (स ४११)।

वावायग वि [व्यापादक] हिंसक, विनाश-कर्ता (स २९७)।

वावायण न [व्यापादन] हिंसा, मार डालना, विनाश (स ३३, १०२, १०३, ६८५, सुर १२, २१६)।

वावायय देखो वावायग (स ७५०)।

वावार सक [व्या + पारय्] काम मे लगाना। वकृ वावारेंत (गउड २४४)। कृ वावारियव्व (सुपा १९२)।

वावार पु [व्यापार] व्यवसाय (ठा ३, १ टी—पत्र ११४, प्रासू ९१, १२१, नाट—विक्र १७)।

वावारण न [व्यापारण] कार्य मे लगाना (विसे ३०७१, उप पृ ७१)।

वावारि वि [व्यापारिन्] व्यापारवाला (से १४ ६९, हम्मीर १३)।

वावारिद (शौ) वि [व्यापारित] कार्य मे लगाया हुआ (नाट—शकु १२०)।

वावि अ [वापि] १ अथवा, या (पव ६७)। २ स्त्री देखो वावी (पण्ह १, १—पत्र ८)।

वावि वि [व्यापिन्] व्यापक (विसे २१५, श्रा २८४, धर्मसं ५२५)।

वाविअ वि [दे] विस्तारित (दे ७, ५७)।

वाविअ वि [वापित] १ प्रापित, प्राप्त करवाया हुआ (से ६, ६२)। २ बोया हुआ, गुजराती मे 'वावेलु', 'जं आसी पुव्वभवे धम्मबीय वाविय तए जीव' (आत्महि ८, दे ७, ८९)।

वाविअ वि [व्याप्त] भरा हुआ (कुमा ६, ९५)।

वावित्त वि [व्यावृत्त] व्यावृत्तिवाला, निवृत्त (धर्मसं ३२१)।

वावित्ति स्त्री [व्यावृत्ति] व्यावर्तन, निवृत्ति (धर्मसं १०५)।

वाविद्ध देखो वाइद्ध = व्यादिग्ध, व्याविद्ध (ठा ५, २—पत्र ३१३)।

वाविर देखो वावर। वाविरइ (षड्)।

वावी स्त्री [वापी] चतुष्कोण जलाशय-विशेष (औप, गउड, प्रामा)।

वावुड } (शौ) देखो वावड = व्यापृत (नाट—
वावुद } मृच्छ २०१, पि २१८, चारु ६)।

वावोणय न [दे] विकीर्ण, बिखरा हुआ (दे ७, ५६)।

वाशू (मा) स्त्री [वास्नू] नाटक की भाषा मे बाला (मृच्छ २७)।

वास देखो वरिस = वृष्। वासति (भग)। भूका वासिसु (कप्प)। कृ वासिउ (ठा ३, ३—पत्र १४१, पि ६२, ५७७)।

वास अक [वाश्] १ तिर्यंचों का—पशु पक्षियो का बोलना। २ आह्वान करना, 'खीरदुमम्मि वासइ वामत्थो वायसो चलियपक्खो' (पउम ५५, ३१), वासइ, वासए (भवि, कुप्र २२३)। वकृ वासत (कुप्र २२३, ३८७)।

वास सक [वासय्] १ संस्कार डालना। २ सुगन्धित करना। ३ वास करवाना। वासइ (भवि)। वकृ. वासंत, वासयत (औप, कप्प)। कृ वासणिज्ज (विसे १६७७, धर्मसं ३२९)।

वास देखो वरिस = वर्ष (सम २, कप्प, जी ३४, गउड, कुमा, भग ३, ६, सम १२, हे १, ४३, २, १०५, षड् ४९, सुपा ९७)। °त्ताण न [°त्राण] छत्र, छाता (धर्म ३, ओघ ३०)। °धर, °हर पु [°धर] पर्वत-विशेष (उवा ८४, २५३, ठा २, ३, सम १२, इक)।

वास पु [वास] १ निवास, रहना (आचा, उप ४८६, कुमा, प्रासू ३८)। २ सुगन्ध (कुमा, भवि)। ३ सुगन्धी द्रव्य-विशेष (गउड)। ४ सुगन्धी चूर्ण-विशेष, 'पणवन्नवासवास विहिय तोमाउ तियसेहिं' (सुपा ९७, दस २)। ५ द्वीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (पण्ण १—पत्र ४४)। °घर न [°गृह] शयन-गृह (णाया १, १९—पत्र

वसियव्व देखो वस = वस् ।

वसिर वि [वसितृ] वास करनेवाला, रहने-वाला (सुपा ६४७, सम्मत्त २१७)।

वसीकय वि [वशीकृत] वश मे किया हुआ, अधीन किया हुआ (सुपा ५२०, महा)।

वसीकरण न [वशीकरण] वश मे करने के लिए किया जाता मन्त्र आदि का प्रयोग (णाया १, १४, प्रासू १४, महा)।

वसीयरणी स्त्री [वशीकरणी] वशीकरण-विद्या (सुर १३, ८१)।

वसीहूअ वि [वशीभूत] जो अधीन हुआ हो वह (उप ९८६ टी)।

वसु न [वसु] १ धन, द्रव्य (आचा, सूअ १, १३, १८, कुमा)। २ सयम, चारित्र (आचा, सूअ १, १३, १८)। ३ पु. जिनदेव। ४ वीतराग, राग-रहित। ५ सयत, सयमी, साधु (आचा १, ६, २, १)। ६ आठ की सख्या (विवे १४४, पिंग)। ७ धनिष्ठा नक्षत्र का अधिपति देव (ठा २, ३, सुज्ज १०, १२)। ८ एक राजा का नाम (पउम ११, २१, भत्त १०१)। ९ एक चतुर्दश-पूर्वी जैन महर्षि (विसे २३३४)। १० एक छन्द का नाम (पिंग)। ११ स्त्री. ईशानेन्द्र की एक पटरानी (इक)। १२ न लोकान्तिक देवों का एक विमान (इक)। १३ सुवर्ण, सोना (कप्प ९८, भग १५, उत्त १२, ३६)। °गुत्ता स्त्री [°गुप्ता] ईशानेन्द्र की एक पटरानी (ठा ८—पत्र ४२६, इक, णाया २—पत्र २५३)। °देव पु [°देव] नववें वासुदेव श्रीकृष्ण और वलदेव का पिता (ठा ९, सम १५२, अत, उव)। °नंदय पु [°नन्दक] एक तरह की उत्तम तलवार (सुर २, २२, भवि)। °पुज्ज पुं [°पूज्य] एक राजा, भगवान् वासुपूज्य का पिता (सम १५१)। °वल पु [°वल] इक्ष्वाकु-वश में उत्पन्न एक राजा (पउम ५, ८)। °भाग पुं [°भाग] एक व्यक्ति-वाचक नाम (महा)। °भागा स्त्री [°भागा] ईशानेन्द्र की एक पटरानी (इक)। °भूइ पु [°भूति] एक जैन मुनि का नाम (पउम २०, १७६, आवम)। °म, °मत वि [°मत्] १ द्रव्यवान्, धनी, श्रीमत (सूअ १, १३, ८, १, १५, ११, आचा)। २ सयमी, साधु (सूअ १, १३, ८, आचा)। °मित्ता स्त्री [°मित्रा] १ ईशानेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ८—पत्र ४२६, णाया २, इक)। °सद्द पुं [°शब्द] छन्द-विशेष (पिंग)। °हारा स्त्री [°धारा] १ आकाश से देव-कृत सुवर्ण-वृष्टि (भग १५, कप्प ९८, उत्त १२, ३६, विपा १, १०)। २ एक श्रेष्ठिनी (उप ७२८ टी)।

वसुआ } अक [उद् + वा] शुष्क होना,
वसुआअ } सूखना। वसुआइ, वसुआअइ (हे ४, ११, ३, १४५, प्राकृ ७४)। वकृ. वसुअंत (कुमा)। प्रयो, कवकृ वसुआइज्ज-माण (गउड)।

वसुआअ वि [उद्वात] शुष्क (पाअ, से १, २०, गउड, प्राकृ ७७)।

वसुआइअ वि [उद्वापित] शुष्क किया गया, सुखाया गया (से ९, २५)।

वसुआइज्जमाण देखो वसुआ।

वसुंधर पु [वसुन्धर] एक जैन मुनि (पउम २०, १९१)।

वसुंधरा स्त्री [वसुन्धरा] १ पृथिवी, धरती (पाअ, धर्मवि ४१, प्रासू १४२)। २ ईशा-नेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ८—पत्र ४२६, णाया २, इक)। ३ चमरेन्द्र के सोम आदि चारो लोकपालो की एक पटरानी का नाम (ठा ४, १—पत्र २०४, इक)। ४ एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६, इक)। ५ नववें चक्रवर्त्ती राजा की पटरानी (सम १५२)। ६ रावण की एक पत्नी (पउम ७४, १०)। ७ एक श्रेष्ठि-पत्नी (उप ७२८ टी)। °वइ पुं [°पति] राजा, भूपति (सुपा २८८)।

वसुधा (शौ) देखो वसुहा (स्वप्न ९८)।

वसुपुज्ज देखो वासुपुज्ज, 'वसुपुज्जमल्ली नेमी पासो वीरो कुमारपव्वइया' (विचार ११५, पंचा १९, १३, १७), 'वसुपुज्जजिणो जगु-त्तमो जाओ' (पव ३५)।

वसुमइ° } स्त्री [वसुमती] १ पृथिवी, धरती
वसुमई } (उप ७६८ टी, पाअ, सुपा २६०, ४७१)। २ भीम नामक राक्षसेन्द्र की एक अग्र-महिषी, एक इन्द्राणी (ठा ४, १—पत्र २०४, णाया २—पत्र २५२, इक)। °णाह, °नाह पुं [°नाथ] राजा (उप ७६८ टी, पउम ७४, २९)। °भवण न [°भवन] भूमि-गृह, भोयरा (सुख ४, ६)। °वइ पुं [°पति] राजा (पउम ६६, २)।

वसुल पुंस्त्री [दे वृषल] १ निष्ठुरता-बोधक आमन्त्रण-शब्द, 'होलि त्ति वा गोलि त्ति वा वसुलि त्ति वा' (आचा २, ४, २, ३), 'तहेव होले गोलि त्ति साणे वा वसुलि त्ति य' (दस ७, १४)। २ गौरव और कुत्सा-बोधक आमन्त्रण शब्द, 'होल वसुल गोल णाह दइय पिय रमण' (णाया १, ९—पत्र १६५)। स्त्री. °ली (दस ७, १६, आचा २, ४, २, ३)।

वसुहा स्त्री [वसुधा] पृथिवी, धरती (पाअ, कुमा)। °हिव पुं [°धिप] राजा (सुपा ८७)।

वसू स्त्री [वसू] ईशानेन्द्र की एक पटरानी (ठा ८—पत्र ४२६, इक, णाया २—पत्र २५३)।

वसेरी स्त्री [दे] गवेषणा, खोज (सुपा ४७३)।

वस्स (शौ) देखो वरिस। वस्सदि (नाट—मृच्छ १५५)।

वस्स वि [वश्य] अधीन, आयत्त (विसे ८७५)।

वस्सोक न [दे] एक प्रकार की क्रीडा, 'अन्नया य वस्सोक्केण रमति राय (?या) णं राणियाउ पोत्तेण वाहिंति' (श्रावक ९३ टी)।

वह सक [वह्] १ पहुँचाना। २ धारण करना। ३ ले जाना, ढोना। ४ अक. चलना, 'परिमलवहलो वहइ पवणो' (कुमा, उव, महा), 'गंगा वहइ पाडल' (सुख २, ४५), वहसि (हे २, १९४)। कर्म वहिज्जइ, वब्भइ, वुब्भइ (कुमा, धात्वा १५, पि ५४१, हे ४, २४५) वकृ वहंत, वहमाण (महा, सुर ३, ११, औप)। कवकृ, वुज्झमाण (उत्त २३, ६५, ६८)। हेकृ. वहित्तए, वोढु (धात्वा १५२, कस, ठा १५)। कृ. वाहिअव्व, वोढव्व (धात्वा १५२, प्रवि ३)।

आठ सो आढक का एक मान (तदु २६)। ५ शाकटिक, गाडी हाँकनेवाला (सूत्र १, २, ३, ५)। °वाहिया स्त्री [°वाहिका] घुड-सवारी (धर्मवि ४)।

वाहगण } पु [दे] मन्त्री, अमात्य, प्रधान
वाहगणय } (दे ७, ६१)।

वाहड वि [दे] भृत, भरा हुआ, 'बहुवाहडा अगाहा' (दस ७, ३६)।

वाहडिया स्त्री [दे] कावर, बहँगी (उप पृ ३३७)।

वाहण पुन [वाहन] १ रथ आदि यान, 'जह भिच्चवाहणा लोए' (गच्छ १, ३८, उवा, औप, कप्प)। २ जहाज, नौका, यानपात्र, गुजराती में 'वहाण' (उवा, सिरि ४२३, कुम्मा १६)। ३ न चलाना, 'वाहवाहण-परिस्सतो' (कुप्र १४७)। ४ शकट, बोझ आदि ढोआना, भार लाद कर चलाना (पण्ह १, २—पत्र २६, द्र २६)। °साला स्त्री [°शाला] यान रखने का घर (औप)।

वाहणा स्त्री [वाहना] वहन कराना, बोझ आदि ढोआना (श्रावक २५८ टी)।

वाहणा स्त्री [दे] ग्रीवा, डोक, गला (दे ७ ५४)।

वाहणा स्त्री [उपानह्] जूता (औप, उवा, पि १४१)।

वाहणिय वि [वाहनिक] वाहन सबन्धी (उप ७२८ टी)।

वाहणिया स्त्री [वाहनिका] वहन कराना, चलाना, आसवाहणियाए' (स ३००)।

वाहत्तुं देखो वाहर।

वाहय वि [वाहक] चलानेवाला, हाँकनेवाला (उत्त १, ३७)।

वाहय वि [व्याहत] व्याघात-प्राप्त (मोह १०७, उव)।

वाहर सक [व्या + हृ] १ बोलना, कहना। २ आह्वान करना। वाहरइ (हे ४, २५६, सुपा ३२२, महा)। कर्म वाहिप्पइ, वाहरिज्जइ (हे ४, २५३), 'वाहिप्पति पहाणा गारुडिया' (सुर १६, ६१)। कवकृ वाहिप्पत (कुमा)। वकृ. वाहरत (गा ५०३, सुर ६, १६६)। संकृ वाहरिउ (वव ४)। हेकृ वाहत्तुं (से ११, ११६)।

वाहरण न [व्याहरण] १ उक्ति, कथन (कुमा)। २ आह्वान (स २५२, ५०६)।

वाहराविय वि [व्याहारित] बुलवाया हुआ (कुप्र १५, महा)।

वाहरिअ देखो वाहित्त = व्याहृत (सुर १, १५० ४, ६, सुपा १३२, महा)।

वाहल्लार वि [दे. वात्सल्यकार] १ स्नेही, अनुरागी। २ सगा गुजराती में 'वाहलेसरी'; 'अह सत्थानो तमन्नजायपि। नियतणुज मन्नतो लालेइ वाहलारुव्व' (धर्मवि १२८)।

वाहलिया } स्त्री [दे] क्षुद्र नदी, छोटा जल-
वाहली } प्रवाह (वज्जा २२, ५४, दे ७, ३६)।

वाहा स्त्री [दे] वालुका, रेत (दे ७, ५४)।

वाहाया स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष, 'समिसंगलिया ति वा वाहायासगलिया ति वा अगत्थिसगलिया ति वा' (अनु ५)।

वाहाविय वि [वाहित] चलाया हुआ (महा)।

वाहि देखो वाहर। संकृ वाहित्ता (आक ३८, पि ५८२)।

वाहि पुस्त्री [व्याधि] रोग, बीमारी, 'चउव्विहे वाही पन्नत्ते' (ठा ४, ४—पत्र २६५, पाअ, सुर ४, ७५, उवा, प्रासू १३३, महा), 'एयाओ सत्त वाहीओ दारुणाओ' (महा)।

वाहि वि [वाहिन्] वहन करनेवाला, ढोनेवाला, 'जहा खरो चदणभारवाही' (उव)।

वाहिअ वि [वाहित] चलाया हुआ, 'वाहिय तम्मि वसकुडगे त खग्ग' (महा), 'तो तेण तेण खग्गेण कोसखित्तेण वाहिओ घाओ' (सुपा ५२७)।

वाहिअ देखो वाहित्त = व्याहृत (हे २, ६६, षड्, महा, णाया १, १—पत्र ६३)।

वाहिअ वि [व्याधित] रोगी, बीमार (सिरि १०७८, णाया १, १३—पत्र १७६, विपा १, ७—पत्र ७५, पण्ह १, ३—पत्र ५४, कस)।

वाहिणी स्त्री [वाहिनी] १ नदी (धर्मवि ३)। २ सेना, लश्कर, 'सेणा वरूहिणी वारिणी अणीअ चमू सिन्न' (पाअ)। ३ सेना-विशेष, जिसमें ८१ हाथी, ८१ रथ, २४३ घोडे और ४०५ प्यादें हो वह सैन्य (पउम ५६, ६)। °णाह पुं [°नाथ] सेना-पति (किरात १३)। °स पु [°श] वही (किरात ११)।

वाहित्त वि [व्याहृत] १ उक्त, कथित (हे १, १२८, २, ६६, प्राप्र)। २ आहूत, शब्दित (पाअ, उत्त १, २०)।

वाहित्ति स्त्री [व्याहृति] १ उक्ति, वचन। २ आह्वान (अच्चु २)।

वाहिप्प° देखो वाहर।

वाहिम देखो वाह = वाहय।

वाहियाली स्त्री [वाह्याली] अश्व खेलने की जगह (स १३, सुपा ३२७, महा)।

वाहिल्ल वि [व्याधिमत्] रोगी (धम्म ८ टी)।

वाही देखो वाह = व्याध।

वाहुडिअ वि [दे] गत, चलित, 'तो वाहुडिउ जवेण' (कुप्र ४५८)। देखो वाहुडिअ।

वाहुय देखो वाहित्त = व्याहृत (औप)।

वि देखो अवि = अपि (हे २, २१८, कुमा, गा ११, १७, २३; कम्म ४, १६, ६०, ६६, रंभा)।

वि अ [वि] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ विरोध, प्रतिपक्षता, 'विगह', 'विओग' (ठा ४, २, गच्छ १, ११, सुर २, २१५)। २ विशेष, 'विउस्सिय' (सूअ १, १, २, २३, भग १, १ टी)। ३ विविधता, 'वियक्खमाण', 'विउम्मग' (ओघभा १८८, भग १, टी, आवम)। ४ कुत्सा, खराबी, 'विरूव' (उप ७२८ टी)। ५ अभाव, 'विइण्ह' (से २,१०)। ६ महत्त्व, 'विणअ' (गउड)। ७ भिन्नता, 'विएस' (महा)। ८ ऊँचाई, ऊर्ध्वता, 'विक्खेव' (ओघभा १६३)। ९ पादपूर्ति (पउम १७,६७)। १० पुं. पक्षी (से १,१, सुर १६,४३)। ११ वि. उद्दीपक, उत्तेजक। १२ अवबोधक, ज्ञापक, 'सम्म सम्मत्तवियासउ वर दिसउ भवियाण' (विवे १४३)।

वि देखो वि = द्वि, 'ते पुण होज्ज विहत्था कुम्मापुत्तादओ जहन्नेण' (विसे ३१६६)।

वि वि [विद्] जानकार, विज्ञ (आचा, विसे ५००)। °उच्छा स्त्री [°जुगुप्सा] विद्वान् की निन्दा, साधु की निन्दा (श्रा ६ टी—पत्र ३०)।

वि° स्त्री [विष्] पुरीष, विष्ठा (पण्ह २, १—६६, सति २, औप, विसे ७८१)।

उवमा, 'कप्पद्दुम तरुणेव्व काणकब्बहुं ेण कामवेणु वा' (हि १७, सूअ १, ४, २, १५, मुल २, ६, वत्र १)। ७ पाद-पूर्त्ति (उत्त १८, १८)।

वाअड पु [दे] शुक, तोता (षड्)।

वाअड देखो वावड = व्यापृत, 'रइवाअडा रुअत पिअपि पुत्त सवइ माआ' (गा ४००)।

वाइ वि [वादिन्] १ बोलनेवाला, वक्ता (आचा, भग, उव, ठा ४, ४)। २ वाद-कर्त्ता, शास्त्रार्थ में पूर्वपक्ष का प्रतिपादन करनेवाला (सम १०२, विसे १७२१, कुप्र ४४०, चेइय १२८, सम्मत्त १४१, श्रा ६)। ३ दार्शनिक, तीर्थिक, इतर धर्म का अनुयायी (ठा ४, ४)।

वाइ वि [वाचिन्] वाचक, अभिधायक, कहनेवाला (विसे ८७४)।

वाइ देखो वाजि (राज)।

वाइअ वि [वाचिक] वचन-सबन्धी (औप, गा २४ पडि)।

वाइअ वि [वाचित] १ पाठित, पढाया हुआ (उत्त २७, १४, विसे २३५८)। २ पढा हुआ, 'नामम्मि वाइए तत्थ' (सुपा २७०), 'अलाहि किं वाइएण लेहेण' (हि २, १८९)।

वाइअ वि [वातिक] १ वात से उत्पन्न, वायु-जन्य (राग आदि) (भग, णाया १,१—पत्र ५०, तदु १६)। २ वायु से फूला हुआ, वात-रोगवाला (विसे २५७९ टी, पव ६१)। ३ उत्कर्षवाला, 'सपरक्कमराउलवाइएण सीसे पलीविए नियए' (उव), 'चिंतइ सूरी एसो निवमन्नो वाइउव्व दुट्ठमणो' (धर्मवि ७९)। ४ पु नपुंसक का एक भेद (पुप्फ १२७, धर्म २)।

वाइअ वि [वादित] १ बजाया हुआ (गा ५५७, कुमा २, ८, ६९, ७०)। २ वन्दित, अभिवादित, चलणेसु निवडिऊण वाइआ वंभणा' (स २६०)।

वाइअ न [वाद्य] १ बाजा, वादित्र (कप्प)। २ बाजा बजाने की कला (सम ८३, औप)।

वाइअ वि [वात] बहा हुआ, चला हुआ, 'मुचकुंदकुडयसंदियरयगब्भिणवाइयसमीरो' (सुर २, ७६)।

वाइंगण न [दे] बैंगन, वृन्ताक, भंटा (उप ५९७ टी, दे ७, २६)।

वाइंगणी } स्त्री [दे] बैंगन का गाछ,
वाइंगिणी } वृन्ताकी (राज पणण १७—पत्र ५२७)।

वाइगा [दे] देखो वाइया (उप १०३१ टी)।

वाइज्जंत देखो वाए = वाचय्।

वाइज्जंत देखो वाए = वादय्।

वाइत्त न [वादित्र] वाद्य, बाजा (कुप्र ११०, भवि)।

वाइद्ध वि [व्याविद्ध] विपर्यय से उपन्यस्त, उलट-पुलट रखा हुआ (विसे ८५३)।

वाइद्ध वि [व्यादिग्ध] १ उपदिग्ध, उपलिप्त। २ वक्र, टेढ़ा (भग १६, ४—पत्र ७०४)।

वाइम देखो वा = व्ये।

वाइयव्व देखो वाय = वादय्।

वाईकरण देखो वाजीकरण (राज)।

वाउ पुं [वायु] १ पवन, वात (कुमा)। २ वायु-शरीरवाला जीव (अणु, जी २, द १३)। ३ मुहूर्त्त-विशेष (सम ५१)। ४ सौधर्मेन्द्र के अश्व-सैन्य का अधिपति देव (ठा ५, १—पत्र ३०२)। ५ नक्षत्र-देव विशेष, स्वाति-नक्षत्र का अधिपति देवता (ठा २, ३—पव ७७, सुज्ज १०, १२ टी)। °आय पु [°काय] १ प्रचण्ड पवन (ठा ३, ३—पत्र १४१)। २ वायु शरीरवाला जीव (भग)। °काइय पुं [°कायिक] वायु शरीरवाला जीव (ठा ३, १—पत्र १२३, पि ३५५)। °काय देखो °आय (जी ७, पि ३५५)। °कुमार पुं [°कुमार] १ एक देव-जाति, भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति (भग)। २ हनूमान का पिता (पउम १६, २)। °क्कलिया स्त्री [°उत्कलिका] वायु-विशेष, नीचे बहनेवाला वायु (पणण १—पत्र २९)। °क्काइय देखो °काइय (भग)। °क्काय देखो °आय (राज)। °त्तरवडिंसग पुन [°उत्तरावतंसक] एक देव-विमान (सम १०)। °पवेस पु [°प्रवेश] गवाक्ष झरोखा वातायन (ओघभा ५८)। °प्पइट्ठाण वि [°प्रतिष्ठान] वायु के आधार से रहनेवाला (भग)। °भूइ पुं [°भूति] भगवान् महावीर का एक गणधर—मुख्य शिष्य (कप्प)।

वाउ पु [दे] इक्षु, ऊख (दे ७, ५३)।

°वाउड वि [प्रावृत] १ आच्छादित, ढका हुआ (भग २, १, पव ६१)। न. कपडा, वस्त्र (ठा ५, ३—पत्र ३३६)।

वाउत्त पु [दे] १ विट। २ जार, उपपति (दे ७, ८८)।

वाउप्पइया स्त्री [द वातोत्पतिका] भुज-परिसर्प की एक जाति, हाथ से चलनेवाले जन्तु की एक जाति, 'णउलमरडजाहगमुगुस-खाडहिलवाउप्पि (?प्पइ) यघीरोलियमिरीमि-वगणे य' (पणह १, १—पत्र ८)।

वाउब्भाम पु [वातोद्भ्राम] अनवस्थित पवन, 'वाउब्भा (?ब्भा) मे वाउक्कलिया' (पणण १—पत्र २९)।

वाउय वि [व्यापृत] किसी कार्य में लगा हुआ (णाया १, ८—पत्र १४६, औप)।

वाउरा स्त्री [वागुरा] मृग-बन्धन, पशु फँसाने का जाल, फन्दा (पउम ३३, ६७, हेका ३१, गा ६५७)। देखो वग्गुरा।

वाउरिय वि [वागुरिक] जाल में फँसाने का काम करनेवाला, व्याध (पणह १, १, विपा १, ५—पत्र ६४)।

वाउल वि [व्याकुल] १ घबडाया हुआ (उव, उप पृ २२०, करु ३४, हे २, ९९)। २ पुं क्षोभ (पणह १, ३—पत्र ४४)। °हूअ वि [°भूत] व्याकुल बना हुआ (उप २२० टी)।

वाउल वि [वातूल] १ वात-रोगी, उन्मत्त। २ पुं वातसमूह (हे १, १२१, प्राकृ ३०)।

वाउलग्ग न [दे] सेवा, भक्ति 'निच्चं पिय वाउलग्ग कुणंति' (राज)।

वाउलण न [व्यापरण] व्यावृत क्रिया, व्यापार (वव १)।

वाउलणा स्त्री [व्याकुलना] व्याकुल करना (वव ४)।

वाउलिअ वि [व्याकुलित] १ व्याकुल बना हुआ (सण)। २ विलोलित, क्षोभ-प्राप्त (पणह १, ३—पत्र ४५)।

वाउलिआ स्त्री [दे] छोटी खाई (गा ६२६)।

वाउल्ल देखो वाउल = व्याकुल (हे २, ९९, षड्)।

विअड न [दे] १ प्रासुक जल, जीव-रहित पानी (सूअ १, ७, २१, ठा ३, ३—पत्र १३८, ५, २—पत्र ३१३, सम ३७, उत्त २, ४, कप्प)। २ मद्य, दारू (पिंड २३६)। ३ प्रासुक आहार, निर्दोष आहार, 'ज किंचि पावग भगवं त अकुव्व वियड भुंजित्था' (आचा १, ६, १, १८), 'वियडगं भोच्चा' कप्प)।

विअड वि [विकृत] विकार-प्राप्त (आचा, उत्त २, ४, कस, पि २१६)।

विअड वि [विकट] १ प्रकट, खुला (सूअ १, २, २, २२, पचा १०, १८, पव १५३)। २ विशाल, विस्तीर्ण, '—अकोसायतपउम-गभीरवियडनाभे' (उवा, औप, गा १०३, गउड)। ३ सुन्दर, मनोहर (गउड)। ४ प्रभूत, प्रचुर (सूअ २, २, १८)। ५ पु एक ज्योतिष्क महाग्रह (ठा २, ३—पत्र ७८, सुज्ज २०)। ६ एक विद्याधर-राजा (पउम १०, २०)। °भोइ वि [°भोजिन्] प्रकाश में भोजन करनेवाला, दिन में ही भोजन करनेवाला (सम १६)। °वइ, °वाइ पु [°पातिन्] पर्वत-विशेष (ठा ४, २—पत्र २२३, इक ठा २, ३—पत्र ६६, ८०)।

विअड अक [विकटय्] विस्तीर्ण होना। वियडइ (गउड ११६८)।

विअडण स्त्रीन [विकटन] १ अतिचारों की आलोचना। २ स्वाभिप्राय-निवेदन (पचा २, २७)। स्त्री. °णा (ओघ ६१३, ७६१, पिंडभा ४१ श्रावक ३७६, पचा १६, १६)।

विअड्डी स्त्री [वितर्दी] १ खराब किनारा। २ अटवी, जगल (णाया १ १—पत्र ६३)।

विअड्डि स्त्री [वितर्दि] वेदिका, हवन-स्थान, वेदी, चौतरा (हे २, ३६, कुमा, प्राप्र)।

विअड्ढ वि [विदग्ध] १ निपुण, कुशल। २ पण्डित, विद्वान् (हे २, ४०, गउड, महा)।

विअड्ढग वि [विकर्षक] खींचनेवाला 'महाधणुवियट्ट (ड्ढ)का' (पराह १, ४—पत्र ७२)।

विअड्ढा स्त्री [विदग्धा] नायिका का एक भेद (कुमा)।

विअड्ढिम पुस्त्री [विदग्धता] १ निपुणता। २ पाण्डित्य (कुप्र ४०५ वज्जा १३४)।

विअण पुन [व्यजन] वेना, पखा (प्राप्र, हे १, ४६, पराह १, १—पत्र ८)।

विअण वि [विजन] निर्जन, जन-रहित, 'लघति वियणकाणणं' (भवि)।

विअणा स्त्री [वेदना] १ ज्ञान। २ सुख-दुःख आदि का अनुभव। ३ विवाह। (प्राप्र, हे १, १४६)। ४ पीडा, दुःख, संताप (पाअ, गउड, कुमा)।

विअणिय वि [वितनित, वितत] विस्तीर्ण (भवि)।

विअणिय वि [विगणित] अनादृत, तिरस्कृत (भवि)।

विअण्ण वि [विपन्न] मृत (गा ५४६)।

विअण्ह वि [वितृष्ण] तृष्णा-रहित (गा ६३)।

विअत्त सक [वि + वर्त्तय्] घूम कर जाना। संकृ वियत्तूण, वियइत्ता, विउत्ता (आचा १ ८, १, २)।

विअत्त वि [व्यक्त] १ परिस्फुट (सूअ १, १, २, २५)। २ अमुग्ध, विवेकी (सूअ १, १, २, ११)। ३ वृद्ध, परिणत-वयस्क, 'णिग्गयाए सखुड्डुयविअत्ताए' (सम ३५)। ४ पु भगवान् महावीर का चतुर्थ गणधर—प्रमुख शिष्य (सम १६)। ५ गीतार्थ मुनि (ठा ४ १ टी—पत्र २००)। °किच्च न [°कृत्य] गीतार्थ का कर्तव्य—अनुष्ठान (ठा ४, १ टी)।

विअत्त वि [विदत्त] विशेष रूप से दिया हुआ (ठा ४, १ टी—पत्र २००)।

विअत्त पु [विवर्त] एक ज्योतिष्क महाग्रह (ठा २ ३ टी—पत्र ७६, सुज्ज १६ टी—पत्र २६६)।

विअद्द वि [वितर्द] हिंसक (आचा १, ६, ४, ५)।

विअद्ध देखो विअड्ढ = विदग्ध (पच ६०, नाट—मालती ५४)।

विअन्नु देखो विन्नु (सट्टि ८)।

विअप्प सक [वि + कल्पय्] १ विचार करना। २ सशय करना। वियप्पइ, विअप्पेइ (भवि, गा ४७६)। वकृ. विअप्पत (महा)। कृ. विअप्प (उप ७२८ टी)।

विअप्प पु [विकल्प] १ विविध तरह की कल्पना, 'तं जयइ विरुद्ध पिव विअप्पजालं कइदाण' (गउड)। २ वितर्क, विचार (महा)। ३ भेद, प्रकार, 'दव्वट्टिओ अ पज्ज-वणओ अ, सेसा विअप्पा सिं' (सम्म ३)। देखो विगप्प = विकल्प।

विअप्पण न [विकल्पन] ऊपर देखो, 'एगतुच्छेअम्मि वि मुहदुक्खविअप्पणमजुत्त (सम्म १८, स ६८८)।

विअप्पणा स्त्री [विकल्पना] ऊपर देखो (धर्मस २१०)।

विअब्भ देखो विदब्भ (प्राकृ ३८, पउम २६, ८)।

विअम्ह देखो विअंभ = वि + जृम्भ्। विअ-म्हइ (प्राकृ ६४)।

विअय देखो विजय = विजय (औप, गउड)।

विअय वि [वितत] १ विस्तीर्ण, विशाल (महा)। २ प्रसारित, फैलाया हुआ (विसे २०६१, श्रावक २०३)। °पक्खि पु [°पक्षिन्] मनुष्य-लोक से बाहर रहनेवाले पक्षी की एक जाति 'नरलोगाओ वाहिं समुग्गपक्खी विअयपक्खी' (जी २२)। देखो वितत = वितत।

विअर सक [वि + चर्] विहरना, घूमना-फिरना। विअरइ (गउड ३८८)।

विअर सक [वि + तृ] देना, अर्पण करना। वियरइ (कस, भवि), वियरेज्जा (कप्प)। कर्म वियरिज्जइ (उत्त १२, १०)। वकृ वियरत (काल)।

विअर पुं [दे] १ नदी आदि जलाशय सूख जाने पर पानी निकालने के लिए उसमें किया जाता गर्त्त, गुजराती मे 'वियडो' (ठा ४, ४—पत्र २८१, णाया १, १—पत्र ६३, १, ५—पत्र ६६)। २ गर्त्त, खड्डा, 'तत्थ गुलस्स जाव अन्नेसिं च बहूण जिब्भिदिय-पाउग्गाण दव्वाण पुजे य निकरे य करेंति, करेत्ता वियरए खणंति...वियरे भरंति' (णाया १, १७—पत्र २२६)।

विअरण न [विचरण] विहार, चलना-फिरना (अजि १६)।

वाडिम पु [दे] पशु-विशेष, गण्डक, गेंडा (दे ७, ५७)।

वाडिल्ल पु [दे] कृमि, कीट (दे ७, ५६)।

वाडी स्त्री [दे] वृति, वाड, 'घरवारे कारिया कंटएहिं वाडी' (कुप्र २६, दे ७, ४३, ५८, पड्)।

वाडी स्त्री [वाटी] बगीचा, उद्यान (धर्मसं ४१)।

वाढि } पु [दे] वणिक्-सहाय, वैश्य-मित्र
वाढिअ } (दे ७, ५३)।

वाण सक [वि + नम्] विशेष नमना—नत होना। वाणइ (?) (धात्वा १५२)।

वाण वि [वान] वन में उत्पन्न, वन-सम्बन्धी (औप, सम १०३)। °पत्थ, °प्पत्थ पुं [°प्रस्थ] वन मे रहनेवाला तापस, तृतीय आश्रम में स्थित पुरुष (औप, उप ३७७)। °मंत, °मंतर, °वंतर पुंस्त्री [°व्यन्तर] देवो की एक जाति (भग, ठा २, २; सुर १, १३७, औप, जी २४, महा, पि २५१)। स्त्री °री (पण्ण १७—पत्र ४९६, जीव २)। °वासिआ स्त्री [°वासिका] छन्द-विशेष (अजि ३३)।

°वाण देखो पाण = पान। °वत्त न [°पात्र] पीने का प्याला (से १, १८)।

वाणय पुं [दे] वलयकार, ककरण वनानेवाला शिल्पी (दे ७, ५४)।

वाणर पुन [वानर] १ बन्दर, कपि, मर्कट (पण्ह १, १, पाअ)। २ विद्याधर मनुष्यो का एक वंश। ३ वानर-वंश में उत्पन्न मनुष्य (पउम ६ १)। °उरी स्त्री [°पुरी] किष्किन्धा नामक एक भारतीय प्राचीन नगरो (से १४, ७०)। °केउ पु [°केतु] वानर-वंश का कोई भी राजा (पउम ८, २३५)। °दीव पु [°द्वीप] एक द्वीप (पउम ६, ३४)। °द्धय पु [°ध्वज] हनूमान (पउम ५३, ४३)। °वइ पु [°पति] सुग्रीव, रामचन्द्र का एक सेनापति (से २, ४१, ३, ५२)। देखो वानर।

वाणरिंद पु [वानरेन्द्र] वानर-वंशीय पुरुषो का राजा, वाली (पउम ६, ४०)।

वाणवाल पु [दे] इन्द्र, पुरन्दर (दे ७, ६०)।

वाणहा देखो पाणहा, वाहणा = उपानह् (पि १४१)।

वाणा देखो वायणा = वाचना। °यरिअ पु [°चार्य] अध्यापन करनेवाला साधु, शिक्षक, 'एसो च्चिय ता कीरउ वाणायरिओ, तओ गुरू भणइ' (उप १४२ टी)।

वाणारसी स्त्री [वाराणसी] भारतवर्ष की एक प्राचीन नगरी, जो आज कल 'बनारस' नाम से प्रसिद्ध है (हे २, ११६, णाया १, ४, उवा, इक, उत्त धर्मवि ५, पि ३५४)।

वाणि देखो वणि = वणिज् (भवि)। °उत्त, °पुत्त पुं [°पुत्र] वैश्य-कुमार, बनिया का लड़का (कुप्र ३६, ८८, २२१, ४०४, सिरि ३८४, धर्मवि १०४)।

वाणि स्त्री [वाणि] देखो वाणी (सनि ४)।

वाणिअ पु [वाणिज] १ बनिया, व्यापारी, वैश्य (श्रा १२, सुर १, २४८, १३, २६, नाट—मृच्छ ५५, वसु, सिरि ४०)। २ एक गाँव का नाम (उवा, अत, विपा १, २)।

वाणिअ (अप) देखो वाणिज्ज (सण)।

°वाणिअ देखो पाणिअ = पानीय (गा ६८२, सिरि ४०, सुपा २२६)।

वाणिअय पु [वाणिजक] बनिया, वैश्य, व्यापारी (पाअ, काप्र ८६३, गा ९५१, उव, सुपा २२६, २७५ प्रासू १८१)।

वाणिज्ज न [वाणिज्य] १ व्यापार, बैपार (सुपा ३४३, पडि)। २ एक जैन मुनि कुल का नाम (कप्प)।

वाणिज्जा स्त्री [वणिज्या] व्यापार, 'अहिच्छत्त नगर वाणिज्जाए गमित्तए' (णाया १, १५)।

वाणिज्जिय वि [वाणिजिक] वाणिज्य-कर्ता, व्यापारी (भवि)।

वाणी स्त्री [वाणी] १ वचन, वाक्य (पाअ)। २ वाग्देवता, सरस्वती देवी (कुमा, सति ४)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)।

°वाणीअ देखो पाणीअ (काप्र ९२५)।

वाणीर पुं [दे] जम्बू वृक्ष, जामुन का पेड (दे ७, ५६)।

वाणीर पु [वानीर] वेतस-वृक्ष, बेंत का पेड (पाअ, गा ५९९)।

वाणुज्जुअ पु [दे] वणिक्, वैश्य, 'एमो हला नवल्लो दीसइ वाणुज्जुओ कोवि' (उप ७२८ टी)।

वात देखो वाय = वात (ठा २, ४—पत्र ८६)।

वातिक } देखो वाइअ = वातिक (पण्ह १,
वातिय } २—पत्र २८, ओघ ७२२)।

वाद देखो वाय = वाद (राज)।

वादि देखो वाइ = वादिन् (उवा)।

वानर देखो वाणर (विपा १, २—पत्र ३६, विमे ८६३, सुपा ६१८), 'पुव्वभवजाणराणि व ताइ विलसंति सिच्छाए' (धर्मवि १३१)।

वापफ देखो वावफ। वापफइ (षड्)।

वापिद (शौ) देखो वावड = व्यापृत (नाट—वेणी ६७)।

वाबाहा स्त्री [व्याबाधा] विशेष पीडा (णाया १, ४, चेइय ३५५)।

वाम सक [वमय्] वमन कराना, कै कराना। वामेइ वामेज्ज (भग, पिंड ६४६)। सक्र वामेत्ता (भग, उवा)।

वाम वि [दे] १ मृत (दे ७, ४७)। २ आक्रान्त (षड्)।

वाम वि [वाम] १ सव्य, बाँया (ठा ४, २—पत्र २१६, कुमा, सुर ४, ५, गउड)। २ प्रतिकूल, अननुकूल (पाअ, पण्ह १, २—पत्र २८, गउड ८८९, ९९४, कुमा)। ३ सुन्दर मनोहर, 'वामलोअणा' (पाअ)। ४ न. सव्य पक्ष, 'वामत्थो' (पउम ५५, ३१)। ५ बाँया शरीर (गा ३०३)। °लोअणा स्त्री [°लोचना] सुंदर नेत्रवाली स्त्री, रमणी (पाअ)। °लोकवादि, °लोगवादि पु [°लोकवादिन्] दार्शनिक-विशेष, जगत् को असद् माननेवाले मत का प्रतिपादक दार्शनिक (पण्ह १, २—पत्र २८)। °वट्ट वि [°वर्त] प्रतिकूल आचरण करनेवाला (बृह १)। °वत्त वि [°वर्त] वही अर्थ (ठा ४, २—पत्र २१६)।

वाम पु [व्याम] परिमाण-विशेष, नीचे फैलाए हुए दोनो हाथो के बीच का अन्तराल (पव २१२, औप)।

वामण पु न [वामन] १ सस्थान-विशेष, शरीर का एक तरह का आकार, जिसमे

विआरणा स्त्री [वितारणा] विप्रतारणा, ठगाई (उप ६१६)।
विआरय वि [विचारक] विचार करनेवाला (पउम ८, ५)।
विआरि वि [विचारिन्] ऊपर देखो (औप)।
विआरिअ वि [विचारित] जिसका विचार किया गया हो वह (दे १, १६८)।
विआरिअ वि [विदारित] १ खोला हुआ, फाड़ा हुआ, 'दूरविआरिअमुह महाकाय—सीह' (रणमि १२)। २ विदीर्ण किया हुआ, चीरा हुआ (भवि)।
विआरिअ वि [वितारित] १ अर्पित, दिया गया, 'वालि या मिरोहरा वियारिया दिट्ठी' (स ३३७)। २ ठगा हुआ, विप्रतारित, 'जइ पुण धुत्तेण अहं वियारिओ' (सुपा ५२४)।
विआरिआ स्त्री [दे] पूर्वाह्न का भोजन (दे ७, ७१)।
विआरिल्ल } वि [विकारवत्] विकारवाला,
विआरुल्ल } विकारयुक्त (प्राप्र, हे २, १५९)। स्त्री. °ल्ला (सुपा १६४)।
विआल देखो विआल = वि + चारय्। वकृ. वियालन्त (उवर ८२)।
विआल देखो विआर = वि + दारय्। कृ. वियालणिय (सूअनि ३६, ३७)।
विआल पुं [विकाल] सन्ध्या, साँझ, सायकाल (दे ७, ९१, कप्पू, विपा १, ५—पत्र ६३, हे ४, ३७७, ४२४, कस, भवि। °चारि वि [°चारिन्] विकाल मे घूमनेवाला (णाया १, १—पत्र ३८, १, ४, औप)।
विआल पु [दे] चोर, तस्कर (दे ७, ९०)।
विआल वि [व्याल] दुष्ट, 'मोणं वियाल पडिपहे पेहाए, महिसं वियाल पडिपहे पेहाए चिताचिल्लरद वियालं पडिपहे पेहाए' (आचा २, १, ५, ४)। देखो वाल = व्याल।
विआल देखो विचाल (राज)।
विआलग देखो विआलय = विकालक (ठा २, ३—पत्र ७७)।
विआलण देखो विआरण = विचारण (ओघ ६६, विसे १७६, पिंड ५६७)।
विआलणा देखो विआरणा = विचारणा (विसे ६४७ टी, पिंड ५६७)।

विआलय वि [विदारक] विदारण-कर्त्ता (सूअनि ३६)।
विआलय पु [विकालक] एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष (सुज्ज २०)।
विआलिअ न [दे] व्यालू, सायंकाल का भोजन, 'जा महु पुत्तह करयलि लग्गइ सा अमिएण वियालिउ मग्गइ' (भवि)।
विआलुअ वि [दे] असहन, असहिष्णु (दे ७, ६८)।
विआव सक [वि + आप्] व्याप्त करना (प्रामा)।
विआवड देखो वावड = व्यापृत (ओघभा १९९, पउम २, ६)।
विआवत्त पुं [व्यावर्त्त] १ घोष और महाघोष इन्द्रो के दक्षिण दिशा के लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १९८, इक)। २ ऋजुवालिका नदी के तीर पर स्थित एक प्राचीन चैत्य (कप्प)। ३ पुन एक देव-विमान (सम ३२)।
विआवाय पु [व्यापात] भ्रंश, नाश (आचा १, ६, ५, ६ टि)।
विआविअ देखो वावढ = व्यापृत (धर्मसं ६७६)।
विआस पुं [विकाश] १ मुँह आदि की फाड—खुलापन, 'थूल वियासं मुहे' (सूअ १, ५, २, ३)। २ अवकाश (गउड २०१)।
विआस पु [विकास] प्रफुल्लता (पि १०२, भवि)।
विआस देखो वास = व्याम (राज)।
विआसइत्तअ (शौ) वि [विकासयितृक] विकसित करनेवाला (पि ६००)।
विआसग वि [विकासक] ऊपर देखो (सुपा ६५८)।
विआसर वि [विकस्वर] विकसनेवाला, प्रफुल्ल (षड्)।
विआसि } वि [विकासिन्] ऊपर देखो
विआसिल्ल } (पि ४०५, सुपा ४०२, ६)।
विआह सक [व्या + ख्या] व्याख्या करना। कर्म. विआहिज्जति (णंदि २२६)।
विआह पु [विवाह] १ व्याह, परिणयन, शादी (गा ८७६, नाट—मालती ६)। २ विविध प्रवाह। ३ विशिष्ट प्रवाह। ४ वि. विशिष्ट सतानवाला (भग १, १ टी)।

°पण्णत्ति स्त्री [°प्रज्ञप्ति] पाँचवाँ जैन अग-ग्रन्थ (भग १, १ टी)।
विआह वि [विबाध] बाध-रहित (भग १, १ टी)। °पण्णत्ति स्त्री [°प्रज्ञप्ति] पाँचवाँ जैन अग-ग्रन्थ (भग १, १ टी)।
विआह° स्त्री [व्याख्या] १ विशद रूप से अर्थ का प्रतिपादन। २ वृत्ति, विवरण। °पण्णत्ति स्त्री [°प्रज्ञप्ति] पाँचवाँ जैन अग-ग्रन्थ (भग १, १ टी)।
विआहिअ वि [व्याख्यात] १ जिसकी व्याख्या की गई हो वह, वर्णित (आ २२)। २ उक्त, कथित, 'स एव भव्वसत्ताण चक्खुभूए विआहिए' (गच्छ १, २६, भग)।
विइ स्त्री [वृति] रज्जु बन्धन (औप)। देखो वइ = वृति।
विअइ वि [विदित] ज्ञात, जाना हुआ (पाअ, पिंड ८२, संबोध ४६, स १६२, महा)।
विइइन्न देखो विइकिण्ण (भग १, १ टी—पत्र ३७)।
विइचिअ वि [विविक्त] विनाशित (स १३५)।
विइंत सक [वि + कृत्] काटना, छेदना। विइंतेइ (णाया १, १४ टी—पत्र १८७)।
विइत देखो विचिंत। वकृ. विइतत (गउड ६७८)।
विइकिण्ण वि [व्यतिकीर्ण] व्याप्त, फैला हुआ (भग १, १—पत्र ३६)।
विइक्कंत वि [व्यतिक्रान्त] व्यतीत, गुजरा हुआ (ठा ६—पत्र ४४५, उवा, कप्प)।
विइगिंछा } देखो वितिगिंछा (आचा,
विइगिच्छा } कस, उवा)।
विइगिट्ठ वि [व्यतिकृष्ट] दूर-स्थित, विप्रकृष्ट (वृह १)।
विइगिण्ण देखो विइकिण्ण (कस)।
विइज्जत देखो वीअ = वीजय्।
विइज्जत देखो विकिर।
विइण्ण वि [विकीर्ण] १ बिखरा हुआ, 'विइण्णकेसी' (उवा)। २ विक्षिप्त, फेंका हुआ (से १०, ३)। देखो विकिण्ण, विकिन्न।
विइण्ण वि [वितीर्ण] दिया हुआ, अर्पित (गा ३४६, ९१७, से ८, ६५, १०, ३; हे ४, ४४४, महा)।

'वल्लहवाएण अल मम' (गा १२३)। ४ बजाना, 'मद्दलवायचउप्फलोयं' (सिरि १५७)। ५ स्थैर्य, स्थिरता (श्रा २३)। °त्थ पु [°ार्थ] तत्त्व-चर्चा, 'तेहि समं कुणइ वायत्थं' (पउम ४१, ५०)। °त्थि वि [°ार्थिन्] शास्त्रार्थ की चाहवाला (पउम १०५, २६)।

°वाय पु [पाक] १ रसोई। २ बालक। ३ दैत्य, दानव (श्रा २३)। देखो पाग।

°वाय पु [°पात] १ पतन (स ६५७, कुमा)। २ गमन। ३ उत्पतन, कूदन (से १, ५५)। ४ पक्षी। ५ न पक्षि-समूह (श्रा २३)।

°वाय वि [पातृ] १ रक्षा करनेवाला। २ पीनेवाला। ३ सूखनेवाला (श्रा २३)।

°वाय देखो °वाय (श्रा २३)।

°वाय पु [°पाद] १ पर्यन्त। २ पर्वत। ३ पूजा। ४ मूल। ५ किरण। ६ पैर। ७ चौथा भाग (श्रा २३)। देखो पाय = पाद।

°वाय देखो पाव = पाप (श्रा २३)।

°वाय पु [पाय] १ रक्षा, रक्षण। २ वि. पीनेवाला (श्रा २३)।

°वाय देखो अवाय = अपाय; 'बहुवायम्मि वि देहे विसुज्झमाणस्स वर मरणं' (उव)।

वायउत्त पु [दे] १ विट, भँडुआ। २ जार, उपपति (दे ७, ८८)।

वायंगण न [दे] बैंगन, वृन्ताक, भंटा (श्रा २०, सबोध ४४, पव ४)।

वायंतिय वि [वागन्तिक] वचन-मात्र मे नियमित (राज)।

वायग पु [वाचक] १ अभिधायक, अभिधा-वृत्ति से अर्थ का प्रकाशक शब्द (सम्मत्त १४३)। २ उपाध्याय, सूत्र-पाठक मुनि (गण ५, सबोध २५, सार्ध १४७)। ३ पूर्व-ग्रन्थो का जानकार मुनि (पण्ण १—पत्र ४, सम्मत्त १४१, पचा ६, ४५)। ४ एक प्राचीन जैन महर्षि और ग्रन्थकार, तत्त्वार्थ सूत्र का कर्ता श्री उमास्वातिजी (पंचा ६, ४५)। ५ वि. कथक, कहनेवाला। ६ पढानेवाला (गण ५)।

वायग वि [वादक] बजानेवाला (कुमा ६, महा)।

वायग पु [वायक] तन्तुवाय, जुलाहा (दे ६, ५६)।

वायगवंस पु [वाचकवंश] एक जैन मुनि-वंश (णंदि ५०)।

वायड पु [दे] एक श्रेष्ठि-वंश (कुप्र १४३)।

वायड वि [व्याकृत] स्पष्ट, प्रकट अर्थवाला (दसनि ७)। देखो वागरिय।

वायडघड पुं [दे] वाद्य-विशेष, दर्दुर नामक बाजा (दे ७, ६१)।

वायडाग पुं [दे] सर्प की एक जाति (पण्ण १—पत्र ५१)।

वायण न [वाचन] देखो वायणा (नाट—रत्ना १०)।

वायण न [वादन] १ बजाना (सुपा १६, २६३, कुप्र ४१, महा, कप्पू)। २ वि बजानेवाला (दे ७, ६१ टी)।

वायण न [दे] भोज्योपायन, खाद्य पदार्थ का बाँटा जाता उपहार, बायन (दे ७, ५७, पाअ)।

वायणया } स्त्री [वाचना] १ पठन, गुरु-
वायणा } समीपे अध्ययन (उप २६, १)। २ अध्यापन, पढाना (सम १०६, उव)। ३ व्याख्यान (पव ६४)। ४ सूत्र-पाठ (कप्प)।

वायणिअ वि [वाचनिक] वचन-संबन्धी (नाट—विक्र ३५)।

वायय देखो वायग = वायक (दे ५, २८)।

वायरण देखो वागरण (हे १, २६८, कुमा, भवि, षड्)।

वायव वि [वायव] वायु रोगवाला, वात-रोगी (विपा १, १—पत्र ५)।

°वायव देखो पायव (से ७, ६७)।

वायव्व वि [वायव्य] वायव्य कोण का (अणु २१५)।

वायव्व पु [वायव्य] १ वायुदेवता-संबन्धी, 'वारुणवायव्वाइं पट्ठवियाइं कमेण सत्थाइं' (सुर ८, ४५, महा)। २ न. गौ के खुर मे उडी हुई धूलि—रज, 'वायव्वण्हाणण्हाया' (कुमा)।

वायव्वा स्त्री [वायव्या] पश्चिम और उत्तर के बीच की दिशा, वायव्य कोण (ठा १०—पत्र ४७८, सुपा ९८, २६०)।

वायस पु [वायस] १ काक, कौआ (उवा, प्रासू १६६, हे ४, ३५२)। २ कायोत्सर्ग का एक दोष, कायोत्सर्ग में कौए की तरह दृष्टि को इधर-उधर घुमाना (पव ५)। °परिमंडल न [°परिमण्डल] विद्या-विशेष, कौए के स्वर और स्थान आदि से शुभाशुभ फल बतलानेवाली विद्या (सूअ २, २, २७)।

वाया स्त्री [वाच्] १ वाचन, वाणी (पाअ, प्रासू ९, पडि, स ४६२, से १, ३७, गा ३२, ४०८)। २ वाणी की अधिष्ठायिका देवी, सरस्वती (श्रा २३)। ३ व्याकरण-शास्त्र (गउड ८०२)। देखो वइ = वाच्।

वायाड पुं [दे वाचाट] शुक, तोता (दे ७, ५६)।

वायाड वि [वाचाट] वाचाल, बकवादी (सुपा ३६०, चेइय ११७, सक्खि २)।

वायाम पुं [व्यायाम] कसरत, शारीरिक श्रम (ठा १—पत्र १९, णाया १, १—पत्र १९, कप्प, औप, स्वप्न ३९)।

वायाम सक [व्यायामय्] कसरत करना, शारीरिक श्रम करना। वकृ 'मुट्ठु वि वायामेंतो काय न करेइ किंचि गुणं' (उव)।

वायायण पुन [वातायन] १ गवाक्ष, झरोखा (पउम ३९, ९१, स २४१, पाअ, महा)। २ पु राम का एक सैनिक (पउम ६७, १०)।

वायार पुं [दे] शिशिर-वात, गुजराती मे 'वायरो' (दे ७, ५६)।

वायाल वि [वाचाल] मुखर, बकवादी (श्रा १२, पाअ, सुपा ११३)।

°वायाल देखो पायाल (से ५, ३७)।

वायाविअ वि [वादित] बजवाया हुआ (स ५२७, कुप्र १३६)।

वायु देखो वाउ = वायु (सुज्ज १०, १२, कुमा, सम १६)।

वार सक [वारय्] रोकना, निषेध करना। वारेइ (उव, महा)। वकृ वारंत (सुपा १८३)। कवकृ. वारिज्जंत (काप्र १९१, महा)। हेकृ. वारेउं (सूअ १, ३, २, ७)। कृ वारियव्व, वारेयव्व (सुपा ५५२, २७२)।

वार पु [दे वार] चषक, पान-पात्र (दे ७, ५४)।

विउआय पु [व्युत्पात] हिंसा, प्राणि-वध (सूअ २, ४, ३)।
विउव्व सक [वि + कृ, वि + कुर्व्] १ बनाना—दिव्य सामर्थ्य से उत्पन्न करना। २ अलंकृत करना, मण्डित करना। विउव्वइ, विउव्वए (भग, कप्प, महा, पि ५०८)। भूका विउव्विसु। भवि. विउव्विस्सति (भग ३, १—पत्र १५६), विउव्विस्सामि (पि ५३३)। वकृ विउव्वमाण (सुज्ज २०)। कवकृ विउव्विज्जमाण (ठा १०—पत्र ४७२)। संकृ विउव्विऊण, विउव्विऊणं, विउव्वित्ता, विउव्विउ (महा, पि ५८५, भग, कस, सुपा ४७)। हेकृ विउव्वित्तए (पि ५७८)।
विउव्व न [वैक्रिय] १ शरीर-विशेष, अनेक स्वरूपों और क्रियाओं को करने में समर्थ शरीर (पउम १०२, ६८, पव १६२, कम्म १, ३७)। २ कर्म-विशेष, वैक्रिय शरीर की प्राप्ति का कारण-भूत कर्म (कम्म १, ३३)। ३ वि. वैक्रिय शरीर से संबन्ध रखनेवाला (कम्म ४, २६)।
विउव्वणया, विउव्वणा स्त्री [विक्रिया, विकुर्वणा] १ बनावट, शक्ति-विशेष से किया जाता वस्तु-निर्माण (सूअनि १६३, औप, पउम ११७, ३१, पव २३०)। २ शक्ति-विशेष, वैक्रिय-करण शक्ति (देवेन्द्र २३०)।
विउव्वाढ वि [दे] १ विस्तीर्ण। दुःख-रहित (दे १, १२६)।
विउव्वि वि [वैक्रियिन्, विकुर्विन्] १ विकुर्वणा करनेवाला (उप ३५७ टी)। २ वैक्रिय-शरीरवाला (उत्त १३, ३२, सुख १३, ३२)।
विउव्विअ वि [विकृत, विकुर्वित] १ निर्मित, बनाया हुआ (भग, महा, औप, सुपा ८८)। २ अलंकृत, विभूषित (बृह १)।
विउव्विअ वि [वैक्रियिक] वैक्रिय शरीर से संबन्ध रखनेवाला (कम्म ४, २४)। देखो वेउव्विअ।
विउस सक [व्युत् + सृज्] फेंकना। विउसिज्जा (आचा २, ३, २, ५), विउसिरे (आचा २, १६, १)।
विउस वि [विद्वस्] विज्ञ, पण्डित (पाअ, उप पृ १०६, सुपा १०७, प्रासू ६३, भवि, महा), 'विउसेहिं' (चेइय ७७४), 'विउसाण' (सम्मत्त २१६)।
विउसग्ग देखो विओसग्ग (हे २, १७४, षड्)।
विउसमण न [व्युपशमन, व्यवशमन] १ उपशम, उपक्षय। २ सुरत का अवसान, 'ता मे णं पुरिसे विउसमणकालसमयंसि केरिसए सायासोक्खं पच्चणुब्भवमाणे विहरति' (सुज्ज २०, भग १२, ६—पत्र ५७८)। ३ वि विनाशक, 'सव्वदुक्खपावाण विउसमणं' (पण्ह २, १—पत्र १००)।
विउसमणया स्त्री [व्यवशमना] उपशम, क्रोध-परित्याग (भग १७, ३—पत्र ७२६)।
विउसमिय देखो विओसमिय (राज)।
विउसरण न [व्युत्सर्जन] परित्याग (दंस १)।
विउसरणया स्त्री [व्युत्सर्जना] ऊपर देखो (भग, णाया १, १—पत्र ४६)।
विउसव देखो विओसव। संकृ. विउसवेत्ता (कस १, ३५ टि)।
विउसवण देखो विउसमण (पण्ह २, ४—पत्र १३१)।
विउसविय देखो विओसविय (ठा ६—पत्र ३७०)।
विउसिज्जा देखो विओसिज्जा (आचा १, ६, २, २)।
विउसिरणया देखो विउसरणया (राय १२८)।
विउस्स सक [वि + उश्] विशेष बोलना। विउस्सति (सूअ १, १, २, २३)।
विउस्स अक [विद्वस्य्] विद्वान् की तरह आचरण करना। विउस्संति (सूअ १, १, २, २३)।
विउस्सग्ग देखो विओसग्ग (भग १, ६, उत्त ३०, ३०)।
विउस्सित्त वि [व्युत्सित, व्युत्सिक्त] अभिनिविष्ट, कदाग्रह-युक्त (सूअ १, १, १, ६)।
विउस्सिय वि [व्युषित] विशेष रूप से रहा हुआ (सूअ १, १, २, २३)।
विउस्सिय वि [व्युच्छ्रित] विविध तरह से आश्रित, 'संसारं ते विउस्सिया' (सूअ १, १, २, २३)।
विउह सक [व्यूह्] प्रेरणा करना। संकृ विउहित्ताण (दस ५, १, २२)।
विउह वि [विबुध] १ पण्डित, विद्वान्। २ पु. देव, सुर (हे १, १७७)। देखो विबुह।
विऊरिअ वि [दे] नष्ट, नाश-प्राप्त (दे ७, ७२)।
विऊसिर सक [व्युत् + सृज्] परित्याग करना, 'विऊसिरे विन्नु अगारबंधणं' (आचा २, १६, १)।
विऊह पु [व्यूह] रचना-विशेष (पचा ८, ३०)।
विएअ वि [वितेजस्] महान् प्रकाश, 'अर्चतविएएणवि गरुयाए ण
णिव्वडति सप्पा।
विज्जुज्जुओ वहलत्तेण मोहेइ अच्छीइं'
(गउड)।
विएऊण अ [दे] चुनकर, 'सुयसागरा विएऊण जेण सुयरयणमुत्तमं दिण्णं' (पण्ण १—पत्र ४)।
विएस पुं [विदेश] १ देशान्तर, परदेश (सिरि ४६७, महा)। २ कुत्सित ग्राम, खराब गाँव। ३ बन्धन-स्थान (गा ७६)।
विओअ पु [वियोग] जुदाई, बिछोह, विरह (स्वप्न ६३, अभि ४६, हे १, १७७, सुर ४, १५२, महा)।
विओइअ वि [वियोजित] जुदा किया हुआ (से ६, ७१, गा १३२, स ६८, सुर १५, २१७)।
विओग देखो विओअ (सुर २, २१५, ४, १५१, महा)।
विओगिय वि [वियोगित] वियोग-प्राप्त (धर्मवि १३१)।
विओज सक [वि + योजय्] अलग करना। विओजयंति (सूअ १, ५, १, १६)।
विओजय वि [वियोजक] वियोग-कारक (स ७५०)।
विओदर पु [वृकोदर] भीमसेन, एक पाण्डव (नाट—वेणी ३६)।
विओयण न [वियोजन] वियोग, बिछोह (सुर ११, ३२)।

वारुण न [वारुण] १ जल, पानी, 'निम्मल-वारुणमंडलमंडिअससिचारपाणसुपवेसे' (सिरि ३६१)। २ वि. वरुण-सम्बन्धी (पउम १२, १२७, सुर ८, ४५, महा)। °त्थ न [°ास्त्र] वरुणाधिष्ठित अस्त्र (महा)। °पुर न [पुर] नगर-विशेष (इक)।

वारुणी स्त्री [वारुणी] १ मदिरा, सुरा, दारू (पाअ, से २, १७, सुर ३, ५५, पण्ह २, ५—पत्र १५०)। २ लता-विशेष, इन्द्र-वारुणी, इन्द्रायन (कुमा)। ३ पश्चिम दिशा (ठा १०—पत्र ४७८, सुपा २५५)। ४ भगवान् सुविधिनाथ की प्रथम शिष्या का नाम (सम १५२, पव ९)। ५ एक दिक्कु-मारी देवी (इक)। ६ कायोत्सर्ग का एक दोष—१ निष्पन्न होती मदिरा की तरह कायोत्सर्ग में 'बुड-बुड' आवाज करना। २ कायोत्सर्ग मे मतवाला की तरह डोलते रहना (पव ५)।

वारुया } स्त्री [दे] हस्तिनी, हथिनी (स ७३५;
वारूया } ६४)।

वारेज्ज देखो वारिज्ज (स ७३४)।

वारेयव्व देखो वार = वारय्।

वाल सक [वालय्] १ मोडना। २ वापस लौटाना। वालइ, वालेइ (हे ४, ३३०, भवि, सिरि ४४२)। कवकृ वालिज्जत (सुर ३, १३६)। संकृ. वालेऊण (महा)।

वाल पु [व्याल] १ सर्प, साँप (गउड, णाया १, १ टी—पत्र ६, औप)। २ दुष्ट हाथी (सुर १०, २१९, चेइय ५८)। ३ हिंसक, पशु, श्वापद (णाया १, १ टी—पत्र ६, औप)। देखो विआल = व्याल।

वाल न [वाल] १ एक गोत्र, जो कश्यप-गोत्र की एक शाखा है। २ पुंस्त्री उस गोत्र मे उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३९०)।

वाल देखो वाल = वाल (औप, पाअ)। °य वि [°ज] केशो से बना हुआ (पउम १०२, १२१)। °वीयणी स्त्री [°वीजनी] १ चामर 'पंच रायककुहाई, त जहा—खग्ग छत्तं उप्फेस वाहणाओ वालवीयणि' (औप)। २ छोटा व्यजन—पंखा, 'सेयचामरवाल-वीयणीहिं वीइज्जमाणी' (णाया १, १—पत्र ३२; सूअ १, ९, १८)। °हि पु [°धि] वही अर्थ (पाअ, सुपा २८१)।

°वाल देखो पाल = पाल (काल, भवि, कुमा १, ६६)।

वालफोस न [दे] कनक, सोना (दे ७, ६०)।

वालग न [वालक] पात्र-विशेष, गौ आदि के वालो का बना हुआ पात्र (आचा २, १, ८, १)।

वालगपोतिया } स्त्री [दे] देखो वालग्ग-
वालग्गपोइया } पोइआ (सुज्ज ४—पत्र ७०, उत्त ९, २४, सुख ९, २४)।

वालण न [वालन] लौटाना (सुर १, २४६)।

वालप्प न [दे] पुच्छ, दुम, पूँछ (दे ७, ५७)।

वालय पु [वालक] गन्ध-द्रव्य-विशेष (पाअ)।

वालवास पुं [दे] मस्तक का आभूषण (दे ५९)।

वालवि पुं [व्यालपिन्] मदारी, साँपो को पकडने आदि का व्यवसाय करनेवाला, सँपेरा (पण्ह १, २—पत्र २९)।

वालहिल्ल पु [वालखिल्य] ऋतु से उत्पन्न पुलस्त्य कन्या के साठ हजार पुत्र, जो अंगुष्ठ-पर्व के देह-मानवाले थे (गउड)। देखो वालिखिल्ल।

वाला पुंस्त्री [वाला] कंगु, अन्न-विशेष, 'संपण्ण वालावल्लरअ' (गा ८७२)।

वालि पुं [वालि] एक विद्याधर-राजा, कपिराज (पउम ९, ६, से १, १३)। °तणअ पुं [°तनय] राजा वालि का पुत्र, अगद (से १३, ८३)। °सुअ पुं [°सुत] वही अर्थ (से ४, १२, १३, ६२)।

वालि वि [वालिन्] वक्र, टेढा (से १, १३)।

वालि वि [वालिन्] १ केशवाला। २ पुं कपिराज (अणु १४२)।

वालिअ वि [वालित] मोडा हुआ (पाअ, स ३३७)।

वालिआफोस न [दे] कनक, सुवर्ण (दे ७, ६०)।

वालिंद पुं [वालीन्द्र] विद्याधर वश का एक राजा (पउम ५, ४५)।

वालिखिल्ल पु [वालिखिल्य] एक राजर्षि (पउम ३४, १८)। देखो वालिहिल्ल।

वालिहाण न [वालधान] पुच्छ, पूँछ (णाया १, ३, उवा)।

वालिहिल्ल देखो वालहिल्ल (गउड ३२०)।

वाली स्त्री [दे] वाद्य विशेष, मुँह के पवन से बजाया जाता तृण वाद्य (दे ७, ५३)।

°वाली स्त्री [पाली] रचना विशेष, गाल आदि पर की जाती कस्तूरी आदि की छटा (कप्पू)। देखो पाली।

वालुअ पुं [वालुक] १ परमाधार्मिक देवो की एक जाति, जो नरक-जीवो को तप्त वालुका—वालू मे चने की तरह भुनते हैं (सम २९)। २ धूली-सम्बन्धी (उप पृ २०५)।

वालुअ° } स्त्री [वालुका] धूलि, वालू, रेत, रज
वालुआ } (गउड)। °पुढवी स्त्री [°पृथिवी] तीसरी नरक-पृथिवी (पउम ११८, २)। °प्पभा, °प्पहा स्त्री [°प्रभा] तीसरी नरक-भूमि (ठा ७—पत्र ३८८, इक, अत १५)। °भा स्त्री [°भा] वही अर्थ (उत्त ३६, १५७)।

वालुंक न [दे] पक्वान्न-विशेष, एक तरह का खाद्य, 'खीरदहिसूवकट्टरलभे गुडसप्पिवडग-वालु के' (पिंड ६३७)।

वालुंक न [वालुङ्क] ककडी, खीरा (अनु ६, कुप्र ५८)।

वालुंकी } स्त्री [वालुङ्की] ककडी का गाछ
वालुकी } (गा १०, गा १० अ)।

वालुग° देखो वालुअ° (स १०२)।

वाव सक [वि + आप्] व्याप्त करना। वावेइ (हे ४, १४१)।

वाव अ [वाव] अथवा या (विसे २०२०)।

वाव पुं [वाप] वपन बोना (दे ६, १२६)।

वावइज्ज देखो वावज्ज। वावइज्जामि (स ७४१)।

वावंफ अक [दे] श्रम करना। वावफइ (हे ४, ६८)।

वावफिर वि [दे+इरणु] श्रम करनेवाला (कुमा)।

वावज्ज अक [वि + आ + पद्] मर जाना। वावज्जति (भग)।

विकच वि [विकच] विकसित, प्रफुल्ल (दे ७, ८६)।
विकट्ट सक [वि + कृत्] काटना। वकृ. विकट्टत (सथा ६)।
विकट्टिय वि [विकृत्त] काटा हुआ (तदु ४४)।
विकट्ठ देखो विअट्ठ (राज)।
विकड्ढ सक [वि + कृष्] खींचना। विकड्ढ (पएह १, १—पत्र १८)। वकृ. विकड्ढमाण (उवा)।
विकत्त देखो विकट्ट। विकत्तति (सूअ १, ५, २, २), विकत्ताहि (पएह १,१—पत्र १८)।
विकत्तु वि [विकर्तृ] विक्षेपक, विनाशक, 'अप्पा कत्ता विकत्ता य दुक्खाएा य सुहाए य' (उत्त २०, ३७)।
विकत्थ देखो विकथ। विकत्थइ, विकत्थसि (उव, कुप्र १२५)। वकृ. विकत्थंत (सुपा ३१६)।
विकत्थण न [विकत्थन] १ प्रशसा, श्लाघा। २ वि प्रशसा-कर्ता (पुप्फ ३३०, धर्मवि ३६)।
विकत्थणा स्त्री [विकत्थना] प्रशसा, श्लाघा (पिंड १२८)।
विकप्प देखो विअप्प (कस, पचभा)।
विकप्पण न [विकल्पन] छेदन, काटना; 'पओउ(?पउ)लण-विकप्पणाणि य' (पएह १, १—पत्र १८)।
विकप्पणा. देखो विअप्पणा (णाया १, १६—पत्र २१८)।
विकप्पिय देखो विगप्पिअ (राज)।
विकय देखो विगय = विकृत (पएह १, १—पत्र २३, १, ३—पत्र ४५)।
विकय देखो विकच (पिंग)।
विकर सक [वि + कृ] विकार पाना। कवकृ. विकीरत (अच्चु ४७)।
विकरण न [विकरण] विक्षेपण, विनाश, 'कम्मरयविकरणकर' (णाया १, ८—पत्र १५२)।
विकराल देखो विगराल (दे, राज)।
विकल देखो विअल = विकल, 'कला अविकला तुज्झ' (कुप्र ८, सिरि २२३, पंचा ६, ३६)। देखो विगल = विकल।
विकस देखो विअस। विकसइ (षड्)।
विकसिय देखो विअसिअ (कप्प)।
विकहा देखो विगहा (सम ४६)।
विकारिण वि [विकारिन्] विकार-युक्त, 'बालो अविकारिणो अबुद्धीओ' (पउम २६, ६०)।
विकासर देखो विआसर (हे १, ४३)।
विकिइ देखो विगइ = विकृति (विसे २९६८)।
विकिंचण देखो विगिंचण (ओघभा २०६ टी)।
विगिंचणया देखो विगिंचणया (ओघभा २०६ टी, ठा ८ टी—पत्र ४४१)।
विकिट्ठ वि [विकृष्ट] १ उत्कृष्ट, 'विकिट्ठतवसोसियंगो' (महा)। २ न लगातार चार दिनो का उपवास (सबोध ५८)। देखो विगिट्ठ।
विकिण सक [वि + क्री] बेचना। विकिणइ (हे ४, ५२)।
विकिणण न [विक्रयण] विक्रय, बेचना (कुमा)।
विकिण्ण वि [विकीर्ण] १ व्याप्त, भरा हुआ (भग)। २—देखो विइण्ण, विकिन्न = विकीर्ण (दे)।
विकिदि देखो विगइ = विकृति (प्राकृ १२)।
विकिन्न वि [विकीर्ण] १ आकृष्ट (पएह १, १—पत्र १८)। २ देखो विइण्ण = विकीर्ण (पएह १, ३—पत्र ४५)।
विकिय देखो विगिय (ओघभा २८६ टी)।
विकिर अक [वि + कृ] १ बिखरना। २ सक फेंकना। ३ हिलाना। कवकृ. विइज्जत, विकिरिज्जमाण (गउड ३३४, राज)।
विकिरण देखो विकरण (तदु ४१)।
विकिरिया स्त्री [विक्रिया] १ विविध क्रिया। २ विशिष्ट क्रिया (राजा)। देखो विक्किरिया।
विकीण देखो विकिण। विकीणइ, विकीणए (षड्)।
विकीरत देखो विकर।
विकुच्छिअ वि [विकुत्सित] खराब, दुष्ट (भवि)।
विकुज्ज सक [विकुब्जय्] कुब्ज करना, दबाना। सकृ. विकुज्जिय (आचा २, ३, २, ६)।
विकुप्प अक [वि + कुप्] कोप करना। विकुप्पए (गा ६६७)।
विकुव्व देखो विउव्व = वि + कृ, कुर्व्। विकुव्वति (पि ५०८)। भूका विकुव्विसु (पि ५१६)। भवि. विकुव्विसति (पि ५३३)। वकृ विकुव्वमाण, (ठा ३, १—पत्र १२०)।
विकुस पु [विकुश] वल्वज आदि तृण (औप, णाया १, १ टी—पत्र ६)।
विकूड सक [वि + कूटय्] प्रतिघात करना। विकूडे (विसे ६३३)।
विकूण सक [वि + कूणय्] घृणा से मुह मोड़ना। विकूणेइ (विवे १०६)।
विकोअ पु [विकोच] विस्तार, फैलाव (धर्मसं ३६५, भग ५, ७ टी—पत्र २३६)।
विकोव देखो विगोव, 'जो पवयएा विकोवइ सो नेओ दीहससारी' (चेइय ८३०)।
विकोवण न [विकोपन] विकास, प्रसार, फैलाव, 'सीसमइविकोवणट्ठाए' (पिंड ६७)।
विकोवणया स्त्री [विकोपना] विपाक, 'दुविहत्थविकोवणयाए' (ठा ६—पत्र ४४६)।
विकोविय वि [विकोविद] कुशल, निपुण (पिंड ४३१)।
विकोस वि [विकोश] कोश-रहित (तंदु २०)।
विकोस } अक [विकोशय्] १ कोश विकोसाय } रहित होना, विकसना। २ फैलना। विकोसइ (हे ४, ४२)। वकृ. विकोसायत (पएह १, ४—पत्र ७८)।
विकोसिअ वि [विकोशित] १ विकसित (कुमा)। २ कोश-रहित, नगा (णाया १, ८—पत्र १३३)।
विक्क सक [वि + क्री] बेचना। वकृ. विक्कंत (पउम २६,६)। कवकृ. विक्कायमाण (दस ५, १, ७२)।
विक्कअ पु [विक्रय] बेचना (अभि १८४, गउड; सं ४६)।
विक्कअ देखो विक्कव (षड्)।
विक्कइ वि [विक्रयिन्] बेचनेवाला (दे २, ६८)।

२०१)। °भवण न [°भवन] वही अर्थ (महा)। °रेणु पु [°रेणु] सुगन्धी रज (ग्रौप)। °हर न [°गृह] शयन-गृह (सुर ६ २७ सुपा ३१२ प्रति)।

वास पु [व्यास] १ ऋषि-विशेष, पुराण-कर्त्ता एक मुनि (हे , ५, कप्पू)। २ विस्तार (भग २, ८ टी)।

वास न [वासस्] वस्त्र, कपडा (पाग्र, वज्जा १६०, नाट)।

°वास देखो पास = पाश (गउड)।

°वास देखो पास = पार्श्व (प्राकृ ३०, गउड)।

वासंग पु [व्यासङ्ग] ग्रासक्ति, तत्परता, 'वाहे सा पडिबुद्धा विसं व मोत्तूण विसय-वासगं' (उप १३१ टी कुप्र ११८, उप पृ १२७)।

वासंठ } (ग्रप) पु [वसन्त] छन्द का एक
वासंत } भेद (पिंग १६३, १६३ टि)।

वासंत पुं [वर्षान्त] वर्षा-काल का अन्त-भाग (उप ४८८)।

वासंतिअ वि [वासन्तिक] वसन्त सम्बन्धी (मै ३)।

वासन्तिअ } स्त्री [वासन्तिका, °न्ती] लता-
वासंतिआ } विशेष (ग्रौप, कप्प, कुमा, पण्ण
वासंती } १—पत्र ३२, गाया १, ६—पत्र १६०, पण्ह १, ४—पत्र ७६)।

वासंदी स्त्री [दे] कुन्द का पुष्प (दे ७, ५५)।

वासग वि [वासक] १ रहनेवाला (उप ७६८ टी)। २ वासना-कर्त्ता, संस्काराधायक (धर्मसं ३२६)। ३ शब्द करनेवाला। ४ पु द्वीन्द्रिय ग्रादि जन्तु (ग्राचा)।

वासण न [दे] पात्र, बरतन, गुजराती मे 'वासण'; 'दिट्ठं च पयत्तट्ठाविय चलणनामं-किय हिरण्णवासणं' (स ६१, ६२)।

वासण न [वासन] वासित करना (दसनि ३, ३)।

वासणा स्त्री [वासना] संस्कार (धर्मसं ३२६)। °वासणा स्त्री [दर्शन] ग्रवलोकन, निरीक्षण (विसे १६७७, उप ४९७)। देखो पासणया।

वासय देखो वासग। °सज्जा स्त्री [°सज्जा] नायिका का एक भेद, वह नायिका जो नायक की प्रतीक्षा मे सज धज कर बैठी हो (कुमा)।

वासर पुन [वासर] दिवस, दिन (पाग्र, गउड, महा)।

वासव पु [वासव] १ इन्द्र, देव-पति (पाग्र, सुपा ३०४, चेइय ५८०)। २ एक राज-कुमार (विपा १, १—पत्र १०३)। °केउ पु [°केतु] हरिवंश का एक राजा, राजा जनक का पिता (पउम २१, ३२)। °दत्त पुं [°दत्त] विजयपुर नगर का एक राजा (विपा २ ४)। °दत्ता स्त्री [°दत्ता] एक ग्राख्यायिका (राज)। °धणु पुन [°धनुष्] इन्द्र धनुष (कुप्र ४५६)। °नयर न [°नगर] ग्रमरावती, इन्द्र-नगरी (सुपा ६०६)। °पुरी स्त्री [°पुरी] वही ग्रर्थ (उप पृ १७६)। °सुअ पुं [°सुत] इन्द्र का पुत्र, जयन्त (पाग्र)।

वासवदत्ता स्त्री [वासवदत्ता] राजा चंड प्रद्योत की पुत्री ग्रौर उदयन—वीणावत्सराज की पत्नी (उत्तनि ३)।

वासवार पुं [दे] १ तुरग, घोडा (दे ७, ५६)। २ श्वान, कुत्ता, 'विट्टालिज्जइ गगा कयाइ कि वासवारेहिं' (चेइय १३४)।

वासवाल पु [दे] श्वान, कुत्ता (दे ७, ६०)।

वासस न [वासस्] वस्त्र, कपडा, 'कुमोयणा कुवाससा' (पण्ह १, २—पत्र ४०)।

वासा देखो वरिसा (कुमा, पाग्र, सुर २, ७८, गा २०१)। °रत्ति स्त्री. देखो वरिसा रत्त (हे ४, ३९५)। °वास पु [°वास] चतुर्मास मे एक स्थान मे किया जाता निवास (ग्रोघ, काल, कप्प)। °वासिग्र वि [°वार्षिक] वर्षाकाल सबन्धी (ग्राचा २, २, २, ८, ६)। °हू पु [°भू] भेक, मेढक (दे ७, ५६)।

वासाणिया स्त्री [दे वासनिका] वनस्पति-विशेष (सूग्र २, ३, १६)।

वासाणी स्त्री [दे] रथ्या, मुहल्ला (दे ७, ५५)।

वासि वि [वासिन्] १ निवास करनेवाला, रहनेवाला (सूग्र १, ०, ६, उवा, सुपा ६१८, कुप्र ४६, ग्रौप)। २ वासना-कारक, संस्कार-स्थापक (विसे १६७७)।

वासि स्त्री [वासि] वसूला, बढई का एक ग्रस्त्र—ग्रौजार, 'न हि वासिवड्ढईण इह ग्रभेदो कहचिदवि' (धर्मसं ४८६)। देखो वासी।

वासिक } वि [वार्षिक] वर्षाकाल-भावी
वासिक्क } (सुज्ज १२—पत्र २१६)।

वासिट्ठ न [वाशिष्ट] १ गोत्र-विशेष (ठा ७—पत्र ३६०, कप्प, सुज्ज १०, १६)। २ पुस्त्री. वाशिष्ठ गोत्र मे उत्पन्न (ठा ७)। स्त्री °ट्ठा, °ट्ठी (कप्प उत्त १४, २९)।

वासिट्ठिया स्त्री [वाशिष्ठिका] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)।

वासित्तु वि [वर्षितृ] बरसनेवाला (ठा ४, ४—पत्र २६६)।

वासिद } वि [वासित] १ बसाया हुआ,
वासिय } निवासित (मोह २१)। २ वासी रखा हुआ (अन्न ग्रादि) (सुपा १२, ५३२)। ३ सुगन्धित किया हुआ (कप्प, पव १३३, महा)। ४ भावित, संस्कारित (ग्राव)।

वासी स्त्री [वासी] वसूला, बढई का एक ग्रस्त्र (पण्ह १, १, पउम १४, ७८, कप्प; सुर १, २८, ग्रौप)। °मुह पु [°मुख] वसूले के तुल्य मुँहवाला एक तरह का कीट, द्वीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, १३६)।

वासुइ } पु [वासुकि] एक महा-नाग,
वासुगि } सर्पराज (से २, १३, गा ६६, गउड, ती ७, कुमा, सम्मत्त ७६)।

वासुदेव पुं [वासुदेव] १ श्रीकृष्ण, नारायण (पण्ह १, ४—पत्र ७२)। २ ग्रर्ध-चक्रवर्त्ती राजा, त्रिखण्ड भूमि का ग्रधीश (सम १७, १५२, १५३, ग्रत)।

वासुपुज्ज पु [वासुपूज्य] भारतवर्ष मे उत्पन्न बारहवें जिन भगवान् (सम ४३, कप्प, पडि)।

वासुली स्त्री [दे] कुन्द का फूल (दे ७, ५५)।

वाह सक [वाहय्] वहन कराना, चलाना। वाहइ, वाहेइ (भवि, महा)। कवकृ. वाहिज्जमाण (महा)। हेकृ वाहिउं (महा)। कृ वाह, वाहिग्र (हे २, ७८ ग्राचा २, ४, २, ६)।

वाह पुस्त्री [व्याध] लुब्धक, बहेलिया (हे १, १८७, पाग्र)। स्त्री. °ही (गा १२१, पि ३८५)।

वाह पुं [वाह] १ ग्रश्व, घोडा (पाग्र, सूग्र १, २, ३, ५, उप ७२८ टी, कुप्र १४७, हम्मीर १८)। २ जहाज, नौका, 'वाहोडुवाइ तरणं' (विसे १०२७)। ३ भारवहन, बोझ ढोना (सूग्र १ ३, ४, ५)। ४ परिमाण-विशेष,

विक्खेविया स्त्री [विक्षेपिका] व्याक्षेप, विक्षेप (वव ६)।

विक्खोड सक [दे] निन्दा करना, गुजराती मे 'वखोडवु''। विक्खोडेइ (सिरि ८२५)।

विखंडिय वि [विखण्डित] खण्डित किया हुआ (पउम २२, ६२)।

विग देखो विअ = वृक (पण्ह १, १—पत्र ७, सण, णाया १, १—पत्र ६५)।

विगइ स्त्री [विकृति] १ विकार-जनक घृत आदि वस्तु (णाया १, ८—पत्र १२२, उव, स ७२, श्रा २०)। २ विकार (उत्त ३२, १०१)।

विगइ स्त्री [विगति] विनाश (विसे २१४६)।

विगइगाल वि [विगताङ्गार] राग-रहित (ओघ ५७६)।

विगइच्छ वि [विगतेच्छ] इच्छा-रहित, नि स्पृह (उप १३० टी, ६१३)।

विगच देखो विगिंच। संकृ विगंचिउं, विगचिऊण (वव २, संबोध ५७)।

विगचण देखो विगिंचण, 'काए कंडूयणं वज्जे तहा खेलविगंचणं' (संबोध ३)।

विगचिअ देखो विइंचिअ (स १३५ टि)।

विगच्छ अक [वि + गम्] नष्ट होना। वकृ. विगच्छत (सम्म १३४)।

विगज्झ देखो विगह = वि + ग्रह्।

विगड देखो विअग = विकट (पण्ह १, ४—पत्र ७८, औप)।

विगड देखो विअड = विवृत (ठा ३, १ टी—पत्र १२२)।

विगण सक [वि + गणय्] १ निन्दा करना। २ घृणा करना। कवकृ विगणिज्जत (तंदु १४)।

विगत्त सक [वि + कृत्] काटना, छेदना। संकृ. विगत्तिऊणं (सूअ १, ५, २, ८)।

विगत्त वि [विकृत्त] काटा हुआ, छिन्न (पण्ह १, १—पत्र १८)।

विगत्तग वि [विकर्तक] काटनेवाला (सूअ २, २, ६२)।

विगत्तणा स्त्री [विकर्तना] छेदन (उव)।

विगत्थय वि [विकत्थक] प्रशसा करनेवाला, आत्मश्लाघा करनेवाला (भवि)।

विगप्प देखो विअप्प = वि + कल्पय्। वकृ. विगप्पयत, विगप्पमाण (सुर ६, २२४, ३, १२४)।

विगप्प पु [विकल्प] १ एक पक्ष मे प्राप्ति, 'चसद्दो विगप्पेणं' (पंच ३, ४४)। २ देखो विअप्प = विकल्प (णाया १, १६—पत्र २१८, सुर ३, १०२, ४, २२२, सुपा १२६, जी २५)।

विगप्पण देखो विअप्पण (उत्तर २३, ३२, महा)।

विगप्पिअ वि [विकल्पित] १ उत्प्रेक्षित, कल्पित (पव २, उव)। २ चिन्तित, विचारित (पव १४५)। ३ काटा हुआ, छिन्न, 'हत्थपायपडिच्छिन्नं कन्ननासविगप्पिअं' (दस ८,५६)।

विगम पुं [विगम] विनाश (सुर ७, २२६, १२, १६)।

विगय वि [विकृत] विकार-प्राप्त (णाया १, २—पत्र ७६, १, ८—पत्र १३३)।

विगय वि [विगत] १ नाश-प्राप्त, विनष्ट (सम्म १३४, विसे ३३७७, पिंड ६१०)। २ पु. एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २६)। °धूम वि [°धूम] द्वेष-रहित (ओघ ५७६)। °सोग पु [°शोक] एक महा-ग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८), देखो वीअ-सोग। °सोगा स्त्री [°शोका] विजय-विशेष की एक नगरी (ठा २, ३—पत्र ८०)।

विगरण न [विकरण] परिष्ठापन, परित्याग (कस)।

विगरह सक [वि + गर्ह्] निन्दा करना। वकृ विगरहमाग (सूअ २, ६, १२)।

विगराल वि [विकराल] भीषण, भयकर (सुपा १८२, ५०५, सण)।

विगल सक [वि + गल्] टपकना, चूना। विगलइ (षड्)।

विगल पु [विकल] १ विकलेन्द्रिय—दो, तीन या चार ज्ञानेन्द्रियवाला जन्तु (कम्म ३, १९, ४, ३, १५, १६, जी ४१)। २ देखो विअल = विकल (उव, उप पृ १८१, पचा १४, ४७)। °दिस पु [°दिश] नय-वाक्य (अज्झ ६२)।

विगलिंदिय पु [विकलेन्द्रिय] दो, तीन या चार इन्द्रियवाला जन्तु (ठा २, २, ३, १—पत्र १२१)।

विगस अक [वि + कस्] खिलना, फूलना। विगसंति (तंदु ५३)। वकृ. विगसत (णाया १, १—पत्र १६)।

विगह सक [वि + ग्रह्] १ लडाई करना। २ वर्ग-मूल निकालना। ३ समास आदि का समानार्थक वाक्य बनाना। संकृ. 'मूलो मूलो विगज्झ मूलतिगं' (पचा २, १८)।

विगह देखो विग्गह, 'हाजदवविववुिए विगहमुक्के' (गच्छ २, ३३)।

विगहा स्त्री [विकथा] शास्त्र-विरुद्ध वार्ता, स्त्री आदि की अनुपयोगी वात (भग, उव, सुर १४ ८८, सुपा २५२ गच्छ १, ११)।

विगाढ वि [विगाढ] १ विशेष गाढ, अतिशय निविड (उत्त १०, ४ टी)। २ चारो ओर से व्याप्त (राज)।

विगाण न [विगान] १ वचनीय, लोकापवाद (दे ३, ३)। २ विप्रतिपत्ति, विरोध (धर्मसं २६६, चेइय ७५६)।

विगार पु [विकार] विकृति, प्रकृति का अन्यथा परिणाम (उप ६८६ टी, विसे १६८८)।

विगारि वि [विकारिन्] विकृत होनेवाला (पिंड २८०, पउम १०१ ४८)।

विगाल देखो विआल = विकाल (सुर १, ११७)।

विगालिय वि [विगालित] विलम्बित, प्रतीक्षित, 'एत्तियमेत्त काल विमा (?गा)लियं जेण आसाए' (सुर ६ २३)।

विगाह सक [वि + गाह्] १ अवगाहन करना। २ प्रवेश करना। संकृ विगाहिआ (सम ५०)।

विगिंच सक [वि + विच्] १ पृथक् करन, अलग करना। २ परित्याग करना। ३ विनाश करना। विगिंचइ, विगिंचए, विगिंचंति (आचा, कस, श्रावक २६२ टी, सूअ १, १, ४, १२, पिंड ३६६), विगिंच (सूअ १, १३, २१ उत्त ३, १३, पिंड ३६५)। वकृ. विगिंचत, विगिंचमाण (श्रावक २६२ टी, आचा)। संकृ विगिंचिऊणं, विगिंचित्ता (पिंड ३०५, आचा)।

विअ सक [विद्] जानना। वियसि (विसे १६००)। भवि. विच्छं, वेच्छं (पि ५२३, ५२६, प्राप्र, हे ३, १७१)। वकृ. विअंत (रंभा)। संकृ विइत्ता, विइत्ताणं, विइत्त (प्राचा, दस १०, १८)।

विअ न [वियत्] आकाश, गगन (से ६, ४८)। °च्चर वि [°च्चर] आकाश-विहारी। °च्चरपुर न [°च्चरपुर] एक विद्याधर-नगर (इक)।

विअ वि [विद्] १ जानकार, विद्वान्, 'तं च भिक्खू परिन्नाय विय तेसु न मुच्छए' (सूअ १, ९, ४, २)। २ विज्ञान, जानकारी (राज)।

विअ देखो इव (हे २, १८२, प्राप्र, स्वप्न २७, कुमा, पउम ११, ८१, महा)।

विअ पुं [वृक] श्वापद जन्तु-विशेष, भेड़िया (नाट—उत्तर ७१)।

विअ पु [व्यय] विगम, विनाश, 'पचविहे छेयणे पन्नत्ते, तं जहा—उप्पाछेयणे वियच्छे दणे' (ठा ५, ३—पत्र ३४६)।

विअ वि [विगत] विनष्ट, मृत। °च्चा स्त्री [°र्चा] मृत आत्मा का शरीर (ठा १—पत्र १९)।

विअ देखो अविअ = अपिच (जीव १)।

विअइ वि [विजयिन्] जिसकी जीत हुई हो वह (मा २२)।

विअइ स्त्री [विगति] विगम, विनाश (ठा १—पत्र १९)।

विअइ देखो विगइ = विकृति (ठा १—पत्र १९, राज)।

विअइत्ता देखो विअत्त = वि + वर्त्तय्।

विअइल्ल पु [विचकिल] १ पुष्प-वृक्ष विशेष। २ न पुष्प-विशेष (हे १, १६६, कप्पू, वा २३, कुमा)। ३ वि. विकच, विकसित (सरण)।

विअओलिअ वि [दे] मलिन (दे ७, ७२)।

विअंग सक [व्यङ्गय्] अंग से हीन करना—हाथ, कान आदि को काटना। वियंगेइ (णाया १, १४—पत्र १८५)।

विअंग वि [व्यङ्ग] अंग हीन, 'वियंगमंगा' (पराह १, १—पत्र १८)।

विअंगिअ वि [दे] निन्दित (दे ७, ६६)।

विअंगिअ वि [व्यङ्गित] खण्डित, छिन्न (पराह १, ३—पत्र ४५, टी—पत्र ४६)।

विअंजण देखो वंजण = व्यञ्जन (प्राकृ ३१, सम्म ७२)।

विअंजिअ वि [व्यञ्जित] व्यक्त किया हुआ, प्रकट किया हुआ (सूअ २, १, २७, ठा ५, २—पत्र ३०८)।

विअंटूल वि [दे] १ अवरोपित। २ मुक्त (षड् १७७)।

विअंति स्त्री [व्यन्ति] अन्त क्रिया। °कारय वि [°कारक] अन्त-क्रिया करनेवाला, कर्मो का अन्त करनेवाला, मुक्ति-साधक (णाया १, ८, ४, २)।

विअंभ अक [वि + जृम्भ्] १ उत्पन्न होना। २ विकसना। ३ जँभाई खाना। विअंभइ (हे ४, १५७, षड्, भवि)। वकृ. विअंभंत, विअंभमाण (धात्वा १५२, से १, ४३, गा ४२५, महा)।

विअंभ वि [विदम्भ] निष्कपट, सत्य, 'अयाणाय वियंभसुहस्स' (स ६६०)।

विअंभण न [विजृम्भण] १ जँभाई, जम्हाई (स ३३६, सुपा १४६)। २ विकाश। ३ उत्पत्ति (भवि, माल ८४)।

विअंभिअ वि [विजृम्भित] १ प्रकाशित (गा ५६४)। २ उत्पन्न (माल ८६)। ३ न. जँभाई (गा ३५२)।

विअंसण वि [विवसन] वस्त्र-रहित, नग्न (प्राकृ ३२)।

विअसय पु [दे] व्याध, बहेलिया (दे ७, ७२)।

विअक्क सक [वि + तर्कय्] विचारना, विमर्श करना, मीमांसा करना। वकृ. वियक्कंत, वियक्कमाण (सुपा २६४, उप २२० टी)।

विअक्क पुस्त्री [वितर्क] विमर्श, मीमांसा (औप, सम्मत्त १४१)। स्त्री. °क्का (सूअ १, १२, २१, पउम ६३, ६)।

विअक्किय वि [वितर्कित] विमर्शित, विचारित (सरण)।

विअक्ख सक [वि + ईक्ष्] देखना। वकृ. वियक्खमाण (ओघभा १८८)।

विअक्खण वि [विचक्षण] विद्वान्, पण्डित, दक्ष (महा, प्रासू ४१, भवि, नाट—वेणी २४)।

विअग्ग वि [व्यग्र] व्याकुल (प्राकृ ३१)।

विअग्घ देखो वग्घ = व्याघ्र, '—महिसवि (?विय)ग्घछगलदीविया—' (पराह १, १—पत्र ७, पि १३४)।

विअग्घ पु [वैयाघ्र] व्याघ्र-शिशु (पराह १, १—पत्र १८)।

विअज्जास देखो विवज्जास (नाट—मृच्छ ३२६)।

विअट्ट सक [विस + वद्] अप्रमाणित करना, असत्य साबित करना। विअट्टइ (हे ४, १२६)।

विअट्ट अक [वि + वृत्] विचरना, विहरना। वकृ, 'गिम्हसमयसि पत्ते वियट्टमाणे (सु?) वणेसु वणकरेणुविविहदिरणकयपंसुघाओ तुमं' (णाया १, १—पत्र ६५)।

विअट्ट वि [विवृत्त] निवृत्त, व्यावृत्त, 'विअट्टछउमेणं जिणेणं' (सम १, भग, कप्प, औप, पडि)। °भोइ वि [°भोजिन्] प्रतिदिन भोजन करनेवाला (भग)।

विअट्ट पुं [विवर्त] प्रपञ्च (स १७८)।

विअट्ट, विअट्टिअ } वि [विसंवदित] संवाद-रहित, अप्रमाणित, 'विअट्टं विसंवइअं' (पाअ, कुमा ६, ८८)।

विअट्ठ वि [विकृष्ट] १ दूर-स्थित। २ क्रिवि. दूर (णाया १, १ टी—पत्र १)।

विअड सक [वि + कटय्] १ प्रकट करना। २ आलोचना करना। वियडेइ (ठा १० टी—पत्र ४८५)। कवकृ. वियडिज्जंत (राज)।

विअड वि [व्यर्द] लज्जित, लज्जा-युक्त णाया १, ८—पत्र १४३)।

विअड वि [विवृत] खुला हुआ, अनावृत (ठा ३, १—पत्र १२१, ५, २—पत्र ३१२)। °गिह न [°गृह] चारों तरफ खुला घर, स्थान-मण्डपिका (कप्प, कस)। °जाण न [°यान] खुला वाहन, ऊपर से खुला यान (णाया १, १ टी—पत्र ४३)।

विचिंतण न [विचिन्तन] विचार, विमर्श (श्रु ६)।
विचिंतिअ वि [वि चिन्तित] विचारित (सुर ८, ३)।
विचिंतिर वि [विचिन्तयितृ] विचार-कर्ता (श्रा १२, सण)।
विचिक्की स्त्री [दे] वाद्य-विशेष (राय ४६)।
विचिगिच्छा स्त्री [विचिकित्सा] संशय, धर्म कार्य के फल की तरफ संदेह (सम्मत्त ६५)।
विचिट्ठिअ वि [विचेष्टित] १ जिसकी कोशिश की गई हो वह (सुपा ४७०)। २ न चेष्टा, प्रयत्न (उप ३२० टी)।
विचिण } सक [वि + चि] १ खोज
विचिण्ण } करना। २ फूल आदि चुनना। विचिणंति (पि ५०२)। वकृ विचिण्णंत (मा ४६)।
विचित्त वि [विचित्र] १ विविध, अनेक तरह का, 'विचित्ततवो कम्मेहिं' (महा, राय, प्रासू ४२)। २ अद्भुत, आश्चर्यकारक, 'विहिणो विचित्तय जाणिऊण' (सुर १३, ४)। ३ अनेक रँगवाला, शबल (णाया १, ६, कप्प)। ४ अनेक चित्रों से युक्त (कप्प, सुज्ज २०)। ५ पु. पर्वत विशेष (पण्ह १, ५—पत्र ६४)। ६ वेणुदेव और वेणुदारि नामक इन्द्रों का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६७)। °कूड पुं [°कूट] शीतोदा नदी के किनारे पर स्थित पर्वत विशेष (इक)। °पक्ख पु [°पक्ष] १ वेणुदेव और वेणुदारि नामक इन्द्रों का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६७, इक)। २ चतुरिन्द्रिय जंतु की एक जाति (पण्ण १—पत्र ४६)।
विचित्ता स्त्री [विचित्रा] ऊर्ध्व लोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ७—पत्र ४३७)। २ अधोलोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (राज)।
विचित्तिय वि [विचित्रित] विचित्रता से युक्त (सण)।
विचुणिद (शौ) देखो विचिअ (नाट—मालती १४१)।
विचुन्नण न [विचूर्णन] चूर-चूर करना, टुकडा-टुकडा करना (द्र ३०)।
विचेयण वि [विचेतन] चैतन्य-रहित, निर्जीव (उप पृ ४६)।
विचेल वि [विचेल] वस्त्र-वर्जित, नंगा (पिंड ४७८)।
विच्च सक [वि + अय्] व्यय करना। विच्चेइ (ती ८)। देखो विव्व।
विच्च पुंन [दे] व्यूत, बुनने की क्रिया (राय ६२)।
विच्च न [दे. वर्त्मन्] १ बीच, मध्य, 'विच्चम्मि य सज्झाओ कायव्वो परमपयहेऊ' (पुप्फ ४२७), 'ठिओ अहं कूडकवाडविच्चे' (निसा १६)। २ मार्ग, रास्ता (हे ४, ४२१, कुमा, भवि)।
विच्च सक [दे] समीप में आना। विच्चइ (भवि)।
विच्चवण न [विच्यवन] भ्रंश, विनाश (विसे २६१)।
विच्चामेलिय वि [व्यत्याम्रेडित] १ भिन्न भिन्न अंशों से मिश्रित। २ अस्थान में ही छिन्न हो कर फिर ग्रथित, तोड कर साँधा हुआ (विसे ८५५)।
विच्चाय पुं [वित्याग] परित्याग, 'पूयम्मि वीयरायं भावो विप्फुरइ विसयविच्चाया' (संबोध ८)।
विच्चि स्त्री [वीचि] तरंग, कल्लोल (पउम १०६, ४१)।
विच्चु } देखो विंचुअ (उप ५६३, पि
विच्चुअ } ५०, पण्ण १—पत्र ४६)।
विच्चुइ स्त्री [विच्युति] भ्रंश, विनाश (विसे १८०)।
विच्चोअय न [दे] उपधान, ओसीसा (दे ७, ६८)।
विच्छ° देखो विअ = विद्।
विच्छड्ड सक [वि + छर्दय्] परित्याग करना। वकृ. विच्छड्डेमाण (णाया १, १८—पत्र २३६)। संकृ विच्छड्डइत्ता (कप्प)।
विच्छड्ड पुं [विच्छर्द] १ ऋद्धि, वैभव, संपत्ति (पाअ, दे ७, ३२ टी, हे २, ३६, षड्)। २ विस्तार (कुमा, सुपा १६२)।
विच्छड्ड पुं [दे] १ निवह, समूह (दे ७, ३२, गउड, से २, २, ६, ७२, गा ३८७)। २ ठाटबाट, सजधज, धूमधाम; 'महया विच्छड्डेण सोहणलग्गम्मि गुरुपमोएण। कमलावई उ रन्ना परिणीया' (सुर १, १६६; कुप्र ४१, सम्मत्त १६३, धर्मवि ८२)।
विच्छड्डि स्त्री [विच्छर्दि] १ विशेष वमन। २ परित्याग (प्राप्र)। ३ विस्तार, 'निम्मलो केवलालोअलच्छिविच्छि-(?च्छ)ड्डिकारओ' (सिरि १०६१)।
विच्छड्डिअ वि [विच्छर्दित] १ परित्यक्त, 'पामुक्कं विच्छड्डिअं अवहत्थिअं उज्झिअं चत्त' (पाअ, णाया १, १, ठा ८, औप)। २ विक्षिप्त, फेंका हुआ (से १०, ४६)। ४ विच्छादित, आच्छादित (हम्मीर १७)।
विच्छड्डेमाण देखो विच्छड्ड = वि + छर्दय्।
विच्छड्डिअ देखो विच्छड्डिअ (नाट—मालती १२६)।
विच्छय वि [विक्षत] विविध तरह से पीडित (सूअ १, २, ३, ५)। देखो विक्खय।
विच्छल देखो विब्भल (षड् ४०)।
विच्छवि वि [विच्छवि] १ विरूप आकृति-वाला, कुडौल (पण्ह १, ३—पत्र ५४)। २ पुं. एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २८)।
विच्छाइय वि [विच्छायित] निस्तेज किया हुआ (सुपा १६६)।
विच्छाय वि [विच्छाय] निस्तेज, कान्ति-रहित, फीका (सुर ४, १०६, कप्पू, प्रासू १३७, महा, गउड)।
विच्छाय सक [विच्छायय्] निस्तेज करना, 'विच्छाएइ मियंकं तुसारवरिसो अणुगुणोवि' (गउड)। वकृ. विच्छाअंत (कप्पू)।
विच्छिअ वि [दे] १ पाटित, विदारित। २ विचित, चुना हुआ। ३ विरल (दे ७, ६१)।
विच्छिअ देखो विंछिअ (उत्त ३६, १४८; पि ५०, ११८, ३०१)।
विच्छिंद सक [वि + छिद्] तोडना, अलग करना। विच्छिंदइ (पि ५०६)। भवि. विच्छिंदिहिति (पि ५३२)। वकृ.विच्छिंद-माण (भग ८, ३—पत्र ३६५)।
विच्छिण्ण वि [विच्छिन्न] अलग किया हुआ (विपा १, २ टि—पत्र २८, नाट—मृच्छ ८६)।

विअरण न [विनरण] प्रदान, अर्पण, (पंचा ७, ६, उप ५९७ टी; सण)।
विअरिअ वि [विचरित] जिसने विचरण किया हो वह विहृत (महा), 'विमलीकयम्ह चक्खू जहत्थया वियरिया गुणा तुज्झ' (पिंड ४९३)।
विअल अक [भुज्] मोडना, वक्र करना। विअलइ (धात्वा १५२)।
विअल अक [वि + गल्] १ गल जाना, क्षीण होना। २ टपकना, झरना। वकृ. विअलंत (गा ३६८; सुर ५, १२७)।
विअल अक [ओजय्] मजबूत होना (संक्षि ३५)।
विअल वि [विकल] १ हीन, असंपूर्ण (पण्ह १, ३—पत्र ४०)। २ रहित, वर्जित, वन्ध्य (सा २)। ३ विह्वल, व्याकुल, 'विअलुद्धरणमहावा हुवंति जइ केवि सप्पुरिसा' (गा २८५)। देखो विगल = विकल।
विअल सक [विकलय्] विकल बनाना। वियलई (सण)।
विअल देखो विअड = विकट (से ८, २१)।
विअल देखो विदल = द्विदल (संबोध ४४)।
विअलनल वि [दे] दीर्घ, लम्बा (दे ७, ३३)।
विअलिअ वि [विगलित] १ नाश-प्राप्त, नष्ट (से २, ४५; सण)। २ पतित, टपक कर गिरा हुआ, 'विअलिअं उच्चत' (पाअ)।
विअल्ल अक [वि + चल्] १ क्षुब्ध होना। २ अव्यवस्थित होना, 'खलइ जीहा, मुहवयणु वियल्लइ' (भवि)।
विअस अक [वि + कस्] खिलना। विअसइ (प्राकृ ७६; हे ४, १९५)। वकृ. विअसंत, विअसमाण (औप; सुपा २०)।
विअसावय वि [विकासक] विकसित करनेवाला (गउड)।
विअसाविअ वि [विकासित] विकसित किया हुआ (सुपा २२५)।
विअसिअ वि [विकसित] विकास-प्राप्त (गा १३; पाअ; सुर २, २२२; ४, ५८; औप)।
विअह देखो विजह = वि + हा। संकृ वियहित्तु (आचा १, १, ३, २)।
विआइआ स्त्री [विपादिका] रोग-विशेष, विवाई, या बेवाई (दे ८, ७१)।
विआउरी स्त्री [विजनयित्री] व्यानेवाली, प्रसव करनेवाली (णाया १, २—पत्र ७९)।
विआगर देखो वागर। वियागरेइ, वियागरंति (आचा २, २, ३, १; सूअ १, १४, १८), वियागरे, वियागरेज्जा (सूअ १, ९, २५; विसे ३३६; सूअ १, १४, १९)। वकृ वियागरेमाण (आचा २, २, ३, १)।
विआघाय देखो वाघाय (आचा)।
विआण सक [वि + ज्ञा] जानना, मालूम करना। वियाणइ, विआणंति (भग, गा ४८), वियाणासि (पि ५१०), वियाणाहि, वियाणेहि (पण्ण १—पत्र ३९; महा)। कर्म वियाणिज्जइ (सट्ठि १६)। वकृ. वियाणंत, वियाणमाण (औप; उत्त)। संकृ. वियाणिआ, वियाणिऊण, वियाणित्ता (दसचू १, १८; महा; औप, कप्प)। कृ. वियाणियव्व (उप पृ ६०)।
विआण न [विज्ञान] जानकारी, ज्ञान, 'एक्कंपि भाय ! दुलह जिणमयविहिरियणसुवियाण' (सट्ठि १६)। देखो विन्नाण।
विआण न [वितान] १ विस्तार, फैलाव (गउड १७६; ३८६; ५६२)। २ वृत्ति-विशेष। ३ अवसर। ४ यज्ञ (हे १, १७७; प्राप्र)। ५ पुंन चन्द्रातप, चँदवा, आच्छादन-विशेष (गउड २००, ११८०; हे १, १७७; प्राप्र)।
विआणग वि [विज्ञायक] जानकार, विज्ञ (उप पृ ११६)।
विआणण न [विज्ञान] जानना, मालूम करना (स २६७; सुर ३, ७)।
वियाणय देखो विआणग (मम्म १६०; भग; औप; सुर ६, २१; मण)।
विआणिअ वि [विज्ञात] जाना हुआ, विदित (स २६७; सुपा ३९१; महा; सुर ४, २१४; १२, ७१; पिंग)।
विआय सक [वि + जनय्] जन्म देना, प्रसव करना, 'गुजराती मे 'वियावु', 'वियायइ पढमं ज पिउगिहे नारी' (उप ९६८ टी)। सकृ विआय (राज)।
विआर सक [वि + कारय्] विकृत करना। विआरेदि (शौ) (मा ५१)।
विआर सक [वि + चारय्] विचारना, विमर्श करना। विआरेइ (प्राकृ ७१; भग), वियारिज्ज (सत्त ३९)। वकृ विआरयंत (आ १६)। कवकृ. वियारिज्जंत (सुपा १४८)। संकृ. विआरिअ (अभि ४८)। कृ विआरणिज्ज (श्रा १४)।
विआर सक [वि + दारय्] फाडना, चीरना। विआरे (अप) (पिंग)। संकृ. वियारिऊण (श २६०)।
विआर पु [विकार] विकृति, प्रकृति का भिन्न रूपवाला परिणाम (हे १, २३ गउड; सुर ३, २९; प्रासू ४९)।
विआर पु [विचार] १ तत्त्व-निर्णय (गउड; विचार १; द १)। २ तत्त्व-निर्णय के अनुकूल शब्द रचना (जी ५१)। ३ ख्याल, सोच, 'अण्णो वक्करकालो अण्णो कज्जविआरकालो' (कप्पू)। ४ दिशा-फरागत के लिए बाहर जाना (पव २; १०१)। ५ गमन की अनुकूलता (पव १०४)। ६ विचरण। ७ अवकाश, 'अंतेउरे य दिण्णवियारे जाते यावि होत्था' (विपा १, ५—पत्र ६३)। ८ विमर्श, मीमांसा। ९ मत, अभिप्राय (भवि)। °धवल पु [धवल] एक राजा का नाम (उप ७२८ टी; महा)। °भूमि स्त्री [°भूमि] दिशा-फरागत जाने का स्थान (कप्प; उप १४२ टी)।
विआरण न [विचारण] १ विचार करना (सुपा ४९४; सार्ध ६०)। २ वि. विचार करनेवाला, 'जय जिणनाह समत्थवत्थुपरमत्थवियारण' (सुपा ५२)। ३ वि विचरण करनेवाला, 'अंबरतरविआरणिआहिं' (अजि २६)।
विआरण न [विदारण] चीरना, फाडना (सार्ध ४९; त २४१)।
विआरण देखो वागरण (कुप्र २४५)।
विआरण वि [वैदारण] विदारण-संबन्धी, विदारण से उत्पन्न होनेवाला। स्त्री °णिआ (नव १९)।
विआरणा स्त्री [विचारणा] विचार, विमर्श (उप ७२८ टी; स २४७; पचा ११, ३४)।

२२६, इक)। १६ क्षेत्र-विशेष, महाविदेह वर्ष का प्रान्त-तुल्य प्रदेश (ठा ८—पत्र ४३५, इक, जं ४)। २० उत्कर्ष, 'जएण विजएण वद्धावेइ (णाया १, १—पत्र ३०, औप, राय)। २१ पराभव करके ग्रहण करना (कुमा)। २२ विक्रम की प्रथम शताब्दी के एक जैन आचार्य (पउम ११८, ११७)। २३ अभ्युदय (राय)। २४ समृद्धि (राज)। २५ धात की खण्ड का पूर्व द्वार (इक)। २६ कालोद समुद्र, पुष्कर वरद्वीप तथा पुष्करोद समुद्र का पूर्व द्वार (राज)। २७ रुचक पर्वत का एक कूट (ठा ८—पत्र ४३६, इक)। २८ एक राजकुमार (धम्म ११)। २९ छन्द-विशेष (पिंग)। ३० त्रि जीतनेवाला, 'वरतुरए विहगाहिवविजयवेगधरे' (सम्मत्त २१६)। °चरपुर न [°चरपुर] एक विद्याधर-नगर (इक)। °जत्ता स्त्री [°यात्रा] विजय के लिए किया जाता प्रयाण (धर्मवि ५६)। °ढक्का स्त्री [°ढक्का] विजय-सूचक भेरी (सुपा २६८)। °देव पु [°देव] अठारहवीं शताब्दी का एक जैन आचार्य (अज्झ १)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (इक २२३, २२४, ३२६)। °पुरा, पुरी स्त्री [°पुरी] पक्ष्मकावती नामक विजय-क्षेत्र की राजधानी (ठा २, ३—पत्र ८०, इक)। °माण पुं [°मान] एक जैन आचार्य (द्र ७०)। °वत वि [°वत्] विजयी, विजेता (ति १४)। °वित्त न [°ावर्त] चैत्य-विशेष (कल्पटिप्पनक)। °वद्धमाण पुन [°वर्धमान] ग्राम-विशेष (विपा १, १)। °वेजयंती स्त्री [°वैजयन्ती] विजय सूचक पताका (औप)। °सायर पुं [°सागर] एक सूर्यवंशी राजा (पउम ५, ६२)। °सिंह, °सीह पु [°सिंह] १ सुप्रसिद्ध प्राचीन जैनाचार्य (सुपा ६५८)। २ एक विद्याधर राज-कुमार (पउम ६, १५७)। °सूरि पु [°सूरि] चन्द्रगुप्त के समय का एक जैन आचार्य (धर्मवि ४४)। °सेण पुं [°सेन] एक प्रसिद्ध जैन आचार्य जो आम्रदेव सूरि के शिष्य थे (पव २७६—गाथा ८५६)।

विजयंता } स्त्री [वैजयन्ती] १ पक्ष की विजयंती } आठवीं रात (सुज्ज १०, १४)। २ एक रानी का नाम (उप ७२८ टी)।

विजया स्त्री [विजया] भगवान् शान्तिनाथ की दीक्षा-शिविका (विचार १२६)।

विजया स्त्री [विजया] १ भगवान अजित-नाथजी की माता का नाम (सम १५१)। २ पाँचवें बलदेव की माता (सम १५२)। ३ अंगारक आदि ग्रहों की एक पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४)। ४ विद्या-विशेष (पउम ७, १४१)। ५ पूर्व-रुचक पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६)। ६ पाँचवें चक्रवर्ती राजा की पटरानी—स्त्री-रत्न (सम १५२)। ७ विजय नामक देव की राजधानी (सम २१)। ८ वप्रा नामक विजय की राजधानी (ठा २, ३—पत्र ८०, इक)। ९ पक्ष की सातवीं रात (सुज्ज १०, १४)। १० एक श्रेष्ठिनी (सुपा ६२९)। ११ भगवान् विमलनाथजी की शासन-देवी (पव २७, सति १०)। १२ भगवान् सुमतिनाथजी की दीक्षा-शिविका (सम १५१)। १३ एक पुष्करिणी (इक)।

विजल वि [विजल] १ जल-रहित (गउड)। २ न. जल-रहित पक (दस ५, १, ४)। देखो विज्जल।

विजह सक [वि + हा] परित्याग करना। विजहइ (पि ५७७)। सक्. विजहित्तु (उत्त ८, २)।

विजहणा स्त्री [विहान] परित्याग (ठा ३, ३—पत्र १३९)।

विजाइय वि [विजातीय] भिन्न जाति का, दूसरी तरह का (उप १२८ टी)।

विजाण देखो विआण = वि + ज्ञा। सक्. विजाणित्ता, विजाणिय (कप्प)।

विजाणग } वि [विज्ञायक] जाननेवाला, विजाणय } विज्ञ (आचा, सूअनि १४५)।

विजाणुअ वि [विज्ञ, विज्ञायक] ऊपर देखो (प्राकृ १८)।

विजादीअ (शौ) देखो विजाइय (नाट—चैत ८८)।

विजाय न [दे] लक्ष्य, निशाना, 'लक्खं विजाय' (पाअ)।

विजिअ वि [विजित] पराभूत, हारा हुआ (सुर ६, २५, स ७००)।

विजुत्त वि [वियुक्त] विरहित (धर्मसं १७४)।

विजुरि (अप) स्त्री [विद्युत्] बिजली (पिंग)।

विजेट्ठ वि [विज्येष्ठ] मध्यम, 'जेट्ठ विजेट्ठा कणिट्ठा य' (चेइय १५३)।

विजेतव्व देखो विजय = वि + जि।

विजोज सक [वि + योजय्] वियोग करना, अलग करना। संकृ विजोजिय (पच ५, १२६)।

विजोजण न [वियोजन] वियोग, विरह (मोह ९८)।

विजोजिअ वि [वियोजित] जुदा किया हुआ (कुप्र २८८)।

विजोयावइत्तु वि [वियोजयितृ] वियोजक, अलग करनेवाला (ठा ४, ३—पत्र २३८, २३९)।

विजोहा स्त्री [विज्जोहा] छन्द-विशेष (पिंग)।

विज्ज अक [विद्] होना। विज्जइ, विज्जए (षड्, कस, भग, महा), विज्जई (सूअ १, ११, ६)। वकृ. विज्जत, विज्जमाण (सुर २, १७६, पंचा ९, ४७)।

विज्ज सक [वीजय्] पंखा चलाना, हवा करना। कर्म. विज्जिज्जइ (भवि)। कवकृ. विज्जिज्जत (पउम ६१, ३७, वज्जा ३६)।

विज्ज पुं [वैद्य] चिकित्सक, हकीम (सुर १२, २४, नाट—विक्र ६५)।

विज्ज पु व. [दे] देश-विशेष (पउम ९८, ६५)।

विज्ज पुं [विद्वस्, विज्ञ] पण्डित, जानकार (हे २, १५, कुमा, प्राकृ १८, सूअ १, ६, ५)।

विज्ज देखो वीरिअ (पउम ३७, ७०)।

विज्ज° देखो विज्जा। °ज्झर (अप) देखो विज्जा-हर (पि २१६)। °त्थि वि [°र्थिन्] छात्र, अभ्यासी (सम्मत्त १४३)।

विज्ज° देखो विज्जु (कुप्र ३६९)।

°विज्जतअ देखो विज्जत (से २, २४, पि ६०३)।

विज्जय न [वैद्यक] चिकित्सा (उर ८, १०, भवि)।

विइण्ह वि [वितृष्ण] तृष्णा-रहित, निःस्पृह (से २, १०; प्राप्र; गा ६३; १७६)।

विइत्त देखो विचित्त (गउड स २३६, ७४०)।

विइत्त देखो विवित्त (स ७४०)।

विइत्ता } देखो विअ = विद्।
विइत्ताणं }

विइत्तिद (शौ) देखो विचिन्तिय (स्वप्न ३६)।

विइत्तु देखो विअ = विद्।

विइन्न देखो विइण्ण = वितीर्ण (सुर ४, ११)।

विइमिस्स वि [व्यतिमिश्र] मिश्रित, मिला हुआ (आचा)।

विउ वि [विद्, विद्वस्] विद्वान्, पण्डित, जानकार (णाया १, १६; उप ७६८ टी; सुर १, १३५; सूअ २, १, ६०; रंभा)। °प्पकड स्त्री [°प्रकृत] १ विद्वान् द्वारा प्रकान्त। २ विद्वान् द्वारा किया हुआ (भग ७, १० टी—पत्र ३२५; १८, ७—पत्र ७५०)।

विउअ वि [वियुत] वियुक्त, रहित, 'दव्वं पज्जवविउअं दव्व-विउत्ता य पज्जवा नत्थि' (सम्म १२)।

विउअ वि [विवृत] १ विस्तृत। २ व्याख्यात (हे १, १३१)।

विउअ (अप) देखो विओअ = वियोग (हे ४, ४१६)।

विउचिआ स्त्री [दे. विचर्चिका] रोग-विशेष, पामा रोग का एक भेद, 'केवि विउचिअपामासमन्निया सेवगा तस्स' (सिरि ११७)।

विउज सक [वि + युज्] विशेष रूप से जोड़ना। विउजति (सूअ २, २, २१)।

विउक्कंति स्त्री [व्युत्क्रान्ति] उत्पत्ति, 'अविउक्कंतियं चयमाणे' (भग १, ७)।

विउक्कंति स्त्री [व्युत्क्रान्ति, व्यवक्रान्ति] मरण, मौत (भग १, ७)।

विउक्कम सक [व्युत् + क्रम्] १ परित्याग करना। २ उल्लंघन करना। ३ अक. च्युत होना, नष्ट होना, मरना। ४ उत्पन्न होना। विउक्कमंति (भग; ठा ३, ३—पत्र १४१)। संकृ विउक्कम्म (सूअ १, १, १, ६; उत्त ५, १५; आचा १, ८, १, २)।

विउक्कस सक [व्युत् + कर्षय्] गर्व करना, बड़ाई करना। विउक्कसेज्जा, (सूअ १, १३, ६), विउक्कसे (आचा १, ६, ४, २)।

विउक्कस्स पुं [व्युत्कर्ष] गर्व, अभिमान (सूअ १, १, २, १२)।

विउच्छा देखो वि-उच्छा = विद्-जुगुप्सा।

विउच्छेअ पु [व्यवच्छेद] विनाश (पचा १७, १८)।

विउज्जम अक [व्युद् + यम्] विशेष उद्यम करना। वकृ. 'वणियपि विउज्जमताण' (पउम १०२, १३७)।

विउज्झ अक [वि + बुध्] जागना। विउज्झइ (भवि; सण)।

विउट्ट सक [वि + कुट्टय्] विच्छेद करना, विनाश करना। हेकृ. विउट्टित्तए (ठा २, १—पत्र ५६; कस)।

विउट्ट सक [वि + त्रोटय्] तोड़ डालना। विउट्टइ (सूअ २, २, २०)। हेकृ. विउट्टित्तए (ठा २, १—पत्र ५६)।

विउट्ट अक [वि + वृत्] १ उत्पन्न होना। २ निवृत्त होना। विउट्टति (सूअ २, ३, १), विउट्टेज्जा (ठा ८ टी—पत्र ४१८)।

विउट्ट सक [वि + वर्तय्] १ विच्छेद करना। २ घूमकर जाना। विउट्टंति (स १७८)। संकृ. विउट्टाण (आचा १, ८, १, २)। हेकृ विउट्टित्तए (ठा २, १—पत्र ५६)।

विउट्ट देखो विअट्ट = विवृत्त (कप्प)।

विउट्टण न [विवर्तन] निवृत्ति (ओघ ७९१)।

विउट्टण न [विकुट्टन] १ विच्छेद। २ आलोचना, अतिचार विच्छेद (ओघ ७९१)। ३ वि. विच्छेद-कर्ता (धर्मसं ६६६)।

विउट्टणा स्त्री [विकुट्टना] १ विविध कुट्टन। २ पीड़ा, सताप (सूअ १, १२, २१)।

विउट्ठिअ वि [व्युत्थित] जो विरोध मे खड़ा हुआ हो वह, विरोधी बना हुआ (सूअ १, १४, ८)।

विउड सक [वि + नाशय्] विनाश करना। विउडइ (हे ४, ३१)। कर्म. विउडिज्जंति (स ६७६)।

विउडण न [विनाशन] १ विनाश (स २७, ६९१)। २ वि विनाश-कर्ता (स ३७, २८२)।

विउडिअ वि [विनाशित] नष्ट किया गया (पाअ; कुमा, उप ७२८ टी)।

विउण वि [विगुण] गुण रहित, गुण-हीन (दे ६, ७८)।

विउत्त वि [वियुक्त] विरहित, वियोग प्राप्त (सुर ३, १२३; १०, १४५; सुपा ११०; काल, सण)।

विउत्ता देखो विअत्त = वि + वर्तय्।

विउत्थिअ देखो विउट्ठिअ (कुप्र २२४, ३६६)।

विउद देखो विउअ = विवृत (प्राप्र)।

विउद्ध वि [विबुद्ध] १ जागृत (सुपा १४०)। २ विकसित (स ७६८)।

विउप्पकड वि [व्युत्प्रकट] अतिशय प्रकट—व्यक्त (भग ७, १० टी—पत्र ३२५)।

विउब्भाअ अक [व्युद् + भ्राज्] शोभना, दीपना, चमकना। वकृ विउब्भाएमाण (भग ३, २—पत्र १७३)।

विउब्भाअ सक [व्युद् + भ्राजय्] शोभित करना। वकृ विउब्भाएमाण (भग ३, २)।

विउम वि [विद्वस्] विद्वान्, विज्ञ, 'विउमं ता पयहिज्ज सयवं' (सूअ १, २, २, ११)।

विउर देखो विदुर (वेणी १३४)।

विउल वि [विपुल] १ प्रभूत, प्रचुर। २ विस्तीर्ण, विशाल (उवा, औप)। ३ उत्तम, श्रेष्ठ (भग ६, ३३)। ४ अगाध, गम्भीर (प्राप्र)। ५ पुं. राजगिर के समीप का एक पर्वत (पउम २, ३८)। °जस पु [°यशस्] एक जिनदेव का नाम (उप ९८६ टी)। °मइ स्त्री [°मति] मन पर्यव नामक ज्ञान का एक भेद (कम्म १, ८; आवम)। २ वि. उक्त ज्ञानवाला (कप्प, औप)। °अरी स्त्री [°करी] विद्या-विशेष (पउम ७, १३८)। देखो विपुल।

विउव देखो विउव्व = वैक्रिय (कम्म ३, ७)।

विउवसिय देखो विओसिय = व्यवशमित (राज)।

विज्झ सक [व्यध्] वींधना, वेध करना, भेदना। विज्झंति (सूअ १, ५, १, ६), विज्झमे (गा ४४१) सकृ विद्धूण (सूअ १, ५, १, ६)। कृ विज्झ (षड्)।

विज्झ अक [वि + घट्] अलग होना। विज्झइ (धात्वा १५२)।

विज्झ न [दे] वीझ, धक्का, ठेला, 'तो हत्थी तम्मि पडे विज्झ दाऊण कुमरमणु-मग्गो' (धर्मवि ८१),

'ताव वणवारणेण य विज्झाइ
(? इं) नर अपावमाणेण
कुविएण विइण्णाइ घणियं
नग्गोहरुक्खम्मि' (स ११३)।

विज्झ वि [विद्ध] विधा हुआ, 'जइ तपि तेण बाणेण विज्झमे जेण हु विज्झा' (गा ४४१)।

विज्झ देखो विज्झ = व्यध्।

विज्झडिय वि [दे] १ मिश्रित, व्याप्त, 'सीउण्हखरफरुसवायविज्झडिया' (भग ७, ६—पत्र ३०७, उव)।

विज्झल देखो विब्भल = विह्वल (भग ७, ६ टी—पत्र ३०८)।

विज्झव सक [वि + ध्यापय्] बुझाना, दीपक आदि को गुल करना, ठंढा करना। विज्झवइ (गउड, कुप्र ३६७)। कर्म विज्झविज्जइ (गा ४०७, स ४८६)। संकृ. विज्झवेऊणं, विज्झविय (धर्मंस ६५८, स ४६६)। कृ. विज्झवियव्व (पउम ७८, ३७)।

विज्झवण स्त्रीन [विध्यापन] बुझाना, उप-शान्ति (स ४८६, सम्मत्त १६२, कुप्र २७०)। स्त्री. °णा (सथा १०६)।

विज्झविअ वि [विध्यापित] बुझाया हुआ, गुल किया हुआ, ठढा किया हुआ (से ८, १६, १२, ७७, गा ३३३, पउम २०, ६२)।

विज्झा } अक [वि + ध्यै] बुझना, ठढा
विज्झाअ } होना, गुल होना। विज्झाइ (गा ४३०, हे २, २८)। वकृ. विज्झाअत (गा १०६)।

विज्झाअ } वि [विध्यात] १ बुझा हुआ,
विज्झाण } उपशान्त (से १, ३१, णाया १, १—पत्र ६६, १, १४—पत्र १६०, गउड, सुपा ४४८, प्रासू १३७, पउम ५, १८२)। २ संक्रम-विशेष, 'विज्झायनाम-गेणं संकममेत्तेण सुज्झति' (सम्यक्त्वो २१)।

विज्झाव देखो विज्झव। विज्झावेइ (गा ८३६)।

विज्झावण देखो विज्झवण (उप २६४ टी)।

विज्झाविअ देखो विज्झविअ (महा)।

विज्झिडिय पुं [दे] मत्स्य की एक जाति (पण्ण १—पत्र ४७)।

विटक देखो विडक (माल २३४, राज)।

विट्टाल सक [दे] अस्पृश्य करना, उच्छिष्ट करना, विगाडना, दूषित करना, अपवित्र करना। विट्टालिंति (सुख १, १५)। कर्म 'विट्टालिज्जइ गंगा कयाइ किं वासवारेहिं' (चेइय १३४)। वकृ. विट्टालयंत (सिरि ११३२)।

विट्टाल पु [दे] अस्पृश्य-संसर्ग, उच्छिष्टता, अपवित्रता, 'तुह घरम्मि चंडाली, विट्टालं कुणइ', 'सा घरबाहि विट्ठइ भुंजइ य, न तेण देव विट्टालो' (कुप्र २४३, हे ४, ४२२)।

विट्टालण न [दे] ऊपर देखो (स ७०१)।

विट्टालि वि [दे] विगाडनेवाला, अपवित्र करनेवाला। स्त्री °णी (कप्पू)।

विट्टालिअ वि [दे] उच्छिष्ट किया हुआ, अपवित्र किया हुआ, विगाडा हुआ (धर्मवि ४५, सिरि ७१६, सुपा ११५, ३६०, महा)।

विट्टी स्त्री [दे] गठरी, पोटली (ओघ ३२४)। देखो विंटिया।

विट्ठ वि [वृष्ट] वरसा हुआ (हे १, १३७, षड्)।

विट्ठ वि [विष्ट] १ प्रविष्ट, पैठा हुआ (सूअ १, ३, १, १३)। २ उपविष्ट, वैठा हुआ (पिंड ६००)।

विट्ठ वि [दे] सुप्तोत्थित, सो कर उठा हुआ (षड्)।

विट्ठअ न [विष्टप] भुवन, जगत् (मुच्छ १०६)।

विट्ठंभ सक [वि + ष्टम्भय्] १ रोकना। २ स्थापित करना, रखना। विट्ठंभंति (औप)। संकृ. विट्ठभित्ता (औप)।

विट्ठंभणया स्त्री [विष्टम्भना] स्थापना (औप)।

विट्ठर पुंन [विष्टर] आसन, 'विट्ठरो' (प्राप्र, पउम ८०, ७, पाअ, सुपा ६०)।

विट्ठा स्त्री [विष्ठा] बीट, पुरीष, मल (पाअ, ओघभा २६६, प्रासू १२८)। °हर न [°गृह] मलोत्सर्ग-स्थान, टट्टी (पउम ७४, ३८)।

विट्ठि स्त्री [विष्टि] १ कर्म, काज, काम (दे २, ४३)। २ ज्योतिष-प्रसिद्ध एक करण, अर्ध तिथि (विसे ३३४८, स २६५, गण १६)। ३ भद्रा नक्षत्र (सुर १६, ६०)। ४ वेगार, मजूरी दिए बिना ही जबरदस्ती या वेमन का कराया जाता काम (उर ६, ११)।

विट्ठि स्त्री [वृष्टि] वर्षा, वारिश (हे १, १३७, प्राकृ ८, सक्षि ५, पउम २०, ८७, कुमा, रभा)। देखो वुट्ठि।

विट्ठित वि [दे] अर्जित (षड्)।

विट्ठिय न [विस्थित] विशिष्ट स्थिति (भग ६, ३२ टी—पत्र ४६६)।

विड पु [विट] १ भँडुआ (कुमा, सुर, ३, ११६, रंभा)।

विड न [विड] लवण-विशेष, एक तरह का नमक (दस ६, १८)।

विडंक पुन [विटङ्क] कपोतपाली, प्रासाद आदि के आगे की ओर काठ का बना हुआ पक्षियो के रहने का स्थान, छतरी (णाया १, १—पत्र १२, दे ७, ८६, गउड)।

विडंकिआ स्त्री [दे] वेदिका, वेदी, चौतरा (दे ७, ६७)।

विडंग देखो विडंक (पण्ह १, १—पत्र ८)।

विडंग पुंन [विडङ्ग] १ औषध-विशेष। २ वि अभिज्ञ, विदग्ध,

'विज्ज न एसो जरओ न
य वाही एस कोवि समूओ।
उवसमइ सलोणेण विडंगजोया-
मयरसेण' (वज्जा १०४)।

विडंब सक [वि + डम्बय्] १ तिरस्कार करना, अपमान करना। २ दु ख देना। ३ नकल करना। विडंबइ, विडबति, विडंवेमि (भवि, कुप्र १६४, स ६६३)। वकृ.

विओरमण न [व्युपरमण] विराधना, विनाश, 'छक्कायविओरमणं' (ओघभा १६०, ओघ ३२६)।
विओल वि [दे] अनिग्न, उद्वेग युक्त (दे ७, ६३)।
विओवाय पुं [व्यवपात] भ्रंश, नाश (आचा, सूअ १, ३, ३, ४)।
विओसग्ग पुं [व्युत्सर्ग] १ परित्याग। २ तप-विशेष, निरीहपन से शरीर आदि का त्याग (औप)।
विओसमण देखो विउसमण (पण्ह २, २—पत्र ११८, २, ५—पत्र १४६)।
विओसमिय वि [व्यवशमित] उपशान्त किया हुआ (कस ६, १ टि)।
विओसरणया देखो विउसरणया (औप)।
विओसव सक [व्यव + शमय्] उपशान्त करना, ठण्ढा करना, दबा देना। संकृ. 'तं अहिगरणं अ- विओसवेत्ता' (कस)।
विओसविय } देखो विओसमिय, 'अवि-
विओसिय } ओसवियपाहुडे' (कस १, ३५, ४, ५), 'विओसविय वा पुणो उदीरित्तए' (कस ६, १, ४, ५ टि)।
विओसिज्जा अ [व्युत्सृज्य] परित्याग कर (आचा १, ६, २, १)।
विओसिय वि [व्यवसित] पर्यवसित, समाप्त किया हुआ (सूअ १, १, ३, ५)।
विओसिय वि [विकोशित] कोश-रहित, निरावरण, नंगा, 'विउ(?ओ)सियवरासि—' (पण्ह १, ३—पत्र ४५)।
विओसिर देखो विऊसिर (पि २३५)।
विओह पु [विबोध] जागरण, जागृति (भवि)।
विंख न [दे] वाद्य-विशेष (राज)।
विंचिणिअ वि [दे] १ पाटित, विदारित। २ धारा (दे ७, ६३)।
विंचुअ पु [वृश्चिक] जन्तु-विशेष, बिच्छू (हे १, १२८, २, १६, ८६)।
विंछ अक [वि + घट्] अलग होना। विंछइ (प्राकृ ७१)।
विंछिअ } देखो विंचुअ (हे १, २६, २,
विंछुअ } १६, सुख ३६, १४८, पउम ३६, १७, प्राप्र, प्राकृ २३, गा २३७ अ)।

विंजण देखो वजण, 'तेत्तीसविंजणाइं' (चंड)।
विंजण देखो विअण = व्यजन, गुजराती मे 'विंजणो' (रंभा २०)।
विंझ पुं [विन्ध्य] १ पर्वत विशेष, विन्ध्याचल (गा ११५, णाया १, १—पत्र ६४)। २ व्याध, बहेलिया (हे १, २५, २, २६, प्राप्र)। ३ एक जैन मुनि (विसे २५१२)। ४ एक श्रेष्ठि-पुत्र (सुपा ५७८)।
विंट सक [वेष्टय्] वेष्टन करना, लपेटना, गुजराती में 'विंटवु', 'विंटइ त उज्जाणं हयगयरहसुहडकोडीहिं' (सुपा ५७३)। प्रयो, सकृ विंटाविउ (सुपा १८६)।
विंट न [वृन्त] फल-पत्र आदि का बन्धन (हे १, १३६, प्राकृ ४, रंभा, प्रासू १०२)।
विंटल } न [दे] १ वशीकरण विद्या,
विंटलिअ } 'अन्नाइंपि कुडलविं(?टलविं)-टलाइं करलाघवाइं कम्माइं' (सिरि ५७)। २ निमित्त आदि का प्रयोग (बृह १), 'विंटलि-आणि पउंजति' (गच्छ ३, १३)।
विंटलिआ स्त्री [दे] गठरी, पोटली, गुजराती में 'विंटलु', 'ताव कुमरेण खित्ता तप्पुरओ वत्थविंटलिया', 'तीए विंटलियाए' (सुपा २६१)।
विंटिया स्त्री [दे] १ गठरी, पोटली (सुख २, ५, उप १४२ टी)। २ मुद्रिका, अंगुलीयक, गुजराती में 'वींटी', 'उच्चारोवरि मुक्का कणयमयविंटिया नियया' (सुपा ६११), 'पडिवन्नाओ मणिविंढि(?टि)याहिं तह अंगु-लीओ त्ति' (स ७६)।
विंतर पुं [व्यन्तर] १ बिच्छू आदि दुष्ट जन्तु (उप ५६४), 'दुट्ठाण को न बीहइ विंतर-सप्पाण व खलाणं' (वज्जा १२)। २ एक देव-जाति, 'निस्सूगाण नराणं हि विंतरा अवि किंकरा' (श्रा १२, दं २)।
विंताणी स्त्री [वृन्ताकी] बैंगन का गाछ
विंद सक [विद्] १ जानना। २ प्राप्त करना, 'धम्मं च जे विंदति तत्थ तत्थ' (सूअ १, १४, २७)। वकृ विंदमाण (णाया १, १—पत्र २८, विपा १, २—पत्र ३४)।
विंद देखो वंद = वृन्द (भवि, पि ३६८)।
विंदारग } देखो वंदारय (सुपा ५०३, नाट—
विंदारय } शकु ८८)। °वर पु [°वर] इन्द्र (सम्मत्त ७५)।

विंदावण पुंन [वृन्दावन] मथुरा का एक वन (ती ७)।
विंदुरिल्ल वि [दे] १ उज्ज्वल, देदीप्यमान। २ मंजुल घोषवाला, मधुर कंठ। ३ दिद्राण, म्लान। ४ विस्तृत, 'घटाहिं विंदुरिल्लासुर-तरुणीविमाणाणुसारं लहंती (कप्पू)।
विंद्र देखो वद्र (प्राकृ ३६)।
विंद्रावण देखो विंदावण (प्राकृ ३६)।
विंध सक [व्यध्] बीधना, छेदना, वेधना। विंधइ, विंधेज्जा (पि ४८६, भग)। वकृ. विंधंत (सुर २, ६३)। संकृ. विंधिअ (नाट—मृच्छ २१३)। हेकृ विंधिउ (स ६२)। कृ. विंधेयव्व (सुपा २६६)।
विंधण न [व्यधन] छेदन, वेधना, 'लक्ख-विंधण'—(धर्मवि ५२)।
विंधिअ वि [विद्ध] जो वेधा गया हो वह, छिन्न (सम्मत्त १५८)।
विंभय देखो विम्हय = विस्मय (भवि)।
विंभर देखो विम्हर। विंभरइ (पि ३१३)।
विंभल वि [विह्वल] व्याकुल, घबड़ाया हुआ, 'विसविंभल' (उप ५९७ टी, कुप्र ६०, ५६८, भवि, ओघ ७३)।
विंभिअ वि [विस्मित] आश्चर्य-चकित 'ओधुणइ दीवओ विंभ (?भि)ओ व्व पवणा-हओ सीस' (वज्जा ६६, भवि)।
विंभिअ देखो विअंभिअ, 'सोहग्गविंभियासाए' (वज्जा ८६)।
विंसदि (शौ) स्त्री [विंशति] बीस, २० (प्रयौ २०)।
विकंथ सक [वि + कत्थ्] प्रशंसा करना। विकथइज्जा (सूअ १, १४, २१)।
विकंप अक [वि + कम्प्] हिल जाना, चलित होना। वकृ. विकंपमाणो (सूअ १, १४, १४)।
विकंप सक [वि + कम्पय्] १ हिलाना, चलाना। २ त्याग करना, छोड़ना। ३ अपने मंडल से बाहर निकलना। ४ भीतर प्रवेश करना। विकंपइ (सुज्ज १, १)। संकृ विकंपइत्ता (सुज्ज १, ६)।
विकंप वि [विकम्प] कम्प, हिलन (पचा १८, १५)।

विणमिअ वि [विनत] विशेष रूप से नत (भग, औप, णाया १, १ टी—पत्र ५)।

विणमिअ वि [विनमित] नमाया हुआ (गउड)।

विणय पु [विनय] १ अभ्युत्थान, प्रणाम आदि भक्ति, शुश्रूषा, शिष्टता, नम्रता (आचा, ठा ४, ४ टी—पत्र २८३, कुमा, उवा, औप, गउड, महा, प्रासू ८)। २ संयम, चारित्र (सम ५१)। ३ नरकावास विशेष, एक नरक स्थान (देवेन्द्र २९)। ४ अपनयन, दूरीकरण। ५ शिक्षा, सीख। ६ अनुनय। ७ वि विनय-युक्त, विनीत। ८ निभृत, शान्त। ९ क्षिप्त, फेंका हुआ। १० जितेन्द्रिय, सयमी (हे १, २४५)। ११ पु शास्त्रानुसार प्रजा का पालन (गउड ६७)। °मत वि [°वत्] विनय युक्त (उप पृ १६६)।

विणय वि [विनत] १ विशेष रूप से नमा हुआ (औप)। २ पुन. एक देव-विमान (सम ३७)।

विणय° देखो विणया। °तणय पु [°तनय] गरुड पक्षी (वज्जा १२२)। °सुअ पु [°सुत] वही अर्थ (पाअ)।

विणयइत्तु देखो विणइत्तु (सुख २९, ४)।

विणयधर पु [विनयन्धर] एक शेठ का नाम (उप ७२८ टी)।

विणयण न [विनयन] विनय-शिक्षा, शिक्षण, 'आयारदेसणाओ आयरिया, विणयणादुवज्झाया' (विसे ३२००)।

विणया स्त्री [विनता] गरुड की माता का नाम (गउड)। °तणय पु [°तनय] गरुड पक्षी (से १४, ६१, सुपा ३५४)।

विणस्स देखो विणस्स। विणसइ (उर ७, ३, कुमा ८, २१)।

विणसिर वि [विनश्वर] विनाश-शील, नश्वर (दे १, ६०)।

विणस्स अक [वि + नश्] नष्ट होना, विध्वस्त होना। विणस्सइ, विणस्सए, विणस्से (उव, महा, धर्मसं ४०१)। भवि विणस्सिहिसि (महा)। वकृ विणस्समाण (उवा)। कृ. विणस्स (धमस ४०२, ४०३)।

विणस्सर देखो विणसिर (पि ३१५)।

विणा अ [विना] सिवाय, बिना (गउड, प्रासू १०; १५६, द १७)।

विणामिद (शौ) देखो विणमिअ = विनमित (नाट—मृच्छ २१८)।

विणायग पु [विनायक] यक्ष, एक देव-जाति, 'तत्थेव आगओ सो विणायगो पूयणो नाम' (पउम ३५, २२)। २ गणपति, गणेश (सट्ठि ७८ टी)। ३ गरुड (पउम ७१, ६७)। °त्थ न [°स्त्र] अस्त्र विशेष, गरुडास्त्र (पउम ७१, ६७)।

विणास देखो विणस्स। विणासइ (भवि)।

विणास सक [वि + नाशय्] ध्वंस करना, नष्ट करना। विणासेइ (उव, महा)। भवि. विणासिही, विणासेहामि (पि ५२७, ५२८)। कर्म. विणासिज्जइ (महा)। कवकृ विणासिज्जंत (महा)। कृ. विणासियव्व (सुपा १४५)।

विणास पुं [विनाश] विध्वंस (उव, हे ४, ४२४)।

विणासग वि [विनाशक] विनाश-कर्ता (द्र १७)।

विणासण न [विनाशन] १ विनाश, विध्वंस (भवि)। २ वि विनाश-कर्ता (पण्ह २ १—पत्र ९६, दस ८, ३८)।

विणासिअ वि [विनाशित] विनाश-प्राप्त (पाअ, महा, भवि)।

विणि° देखो विणी।

विणिअसण न [विनिदर्शन] खास उदाहरण, विशेष दृष्टान्त (से १२, ६९)।

विणिअसण वि [विनिवसन] वस्त्र-रहित, नगा (गा १२५)।

विणिइत्तु देखो विणइत्तु (उत्त २९, ४)।

विणिउत्त वि [विनियुक्त] कार्य मे प्रवर्त्तित (उप पृ ७५)।

विणिओग पु [विनियोग] १ उपयोग, ज्ञान (विसे २४३७)। २ कार्य मे लगाना (पचा ७, ६)। ३ विनिमय, लेनदेन (कुप्र २०६)।

विणिओय सक [विनि + योजय्] जोडना, लगाना। विणिओयइ (भवि)।

विणित देखो विणी = विनिर् + इ।

विणिकुट्टिय वि [विनिकुट्टित] कूट कर बैठाया हुआ, 'अभविणिकुट्टियाहिं पवराहिं सालहजीहिं' (सुपा १८८)।

विणिक्कम देखो विणिक्खम। विणिक्कमइ (गउड २७५, पि ४८१)।

विणिकस सक [विनि + कृष्] खींच कर निकालना। संकृ. विणिकस्स (सूअ १, ५, १, २२)।

विणिक्खंत वि [विनिष्क्रान्त] १ बाहर निकला हुआ। २ जिसने गृह-त्याग किया हो वह, सन्यस्त (उप १८७ टी, कुप्र ३६, महा)।

विणिक्खम अक [विनिस् + क्रम्] १ बाहर निकलना। २ सन्यास लेना। विणिक्खमइ (गउड ८५१, ११८१)। संकृ. विणिक्खमित्ता (भग)।

विणिक्खमण न [विनिष्क्रमण] १ बाहर निकलना। २ सन्यास लेना (पचा १८, २१)।

विणिक्खित्त वि [विनिक्षिप्त] फेंका हुआ (नाट—मृच्छ ११६)।

विणिगिण्ह सक [विनि + ग्रह्] निग्रह करना, दंड देना। वकृ विणिगिण्हत (उप पृ २३)।

विणिगूह सक [विनि + गूहय्] गुप्त रखना, ढकना। विणिगूहिज्जा (आचा २, १, १०, २)।

विणिग्गम पु [विनिर्गम] निःसरण, बाहर निकलना (गउड)।

विणिग्गय वि [विनिर्गत] बाहर निकला हुआ, बाहर गया हुआ (से २, ५, महा, भवि)।

विणिघाय पु [विनिघात] १ मरण, मौत। २ ससार, भव-भ्रमण (ठा ५, १—पत्र २९१)।

विणिच्छ सक [विनिस् + चि] निश्चय करना। विणिच्छइ (सण)। संकृ विणिच्छिऊण (सण)।

विणिच्छय पु [विनिश्चय] निश्चय, निर्णय, परिज्ञान (पण्ह १, १—पत्र १, ठा ३, ३, उव)।

विणिच्छिअ वि [विनिश्चित] निश्चित, निर्णीत (भग, उवा, कप्प सुर २, २०२)।

विक्कंत देखो विक्क।

विक्कंत वि [विक्रान्त] १ पराक्रमी, शूर (णाया १, १—पत्र २१, विसे १०५६, प्रासू १०७, कप्प)। २ पुं पहली नरक-भूमि का बारहवाँ नरकेन्द्रक—नरक-स्थान विशेष (देवेन्द्र ५)।

विक्कंति स्त्री [विक्रान्ति] विक्रम, पराक्रम (णाया १, १६—पत्र २११)।

विक्कंभ देखो विक्खंभ = विष्कम्भ (देवेन्द्र ३०६)।

विक्कणण न [विक्रयण] विक्रय, बेचना (सुपा ६०६, सट्ठि ६ टी)।

विक्कम अक [वि + क्रम्] पराक्रम करना, शूरता दिखलाना। भवि. विक्कमिस्सदि (शौ) (पार्थ ६)।

विक्कम पु [विक्रम] १ शौर्य, पराक्रम (कुमा)। २ सामर्थ्य (गउड)। ३ एक राजा का नाम (सुपा ५६६)। ४ राजा विक्रमादित्य (रमा ७)। °जस पु [°यशस्] एक राजा (महा)। °पुर न [°पुर] एक नगर का नाम (ती २१)। °राय पु [°राज] एक राजा (महा)। °सेण पु [°सेन] एक राज-कुमार (सुपा ५६२)। °इच्च, °इत्त पुं [°आदित्य] एक सुप्रसिद्ध राजा (गा ४६४ अ, सम्मत्त १४६, सुपा ५६२, गा ४६४)।

विक्कमण पुं [दे] चतुर चालवाला घोड़ा (दे ७, ६७)।

विक्कमि वि [विक्रमिन्] पराक्रमी, शूर (कुमा)।

विक्कव वि [विक्लव] व्याकुल, बेचैन (पव १६६, प्राप्र, सबोध २१)।

विक्कायमाण देखो विक्क।

विक्कि देखो विक्कइ, 'ते नाणविक्किणो पुण मिच्छत्तपरा, न ते मुणिणो' (सबोध १६)।

विक्किअ वि [दे] संस्कृत, सुधारा हुआ (दस ७, ४३)।

विक्कित वि [विकृत्त] छिन्न, काटा हुआ (पण्ह १, ३—पत्र ५४)।

विक्किट्ठ देखो विकिट्ठ (संबोध ५८)।

विक्किण सक [वि + क्री] बेचना। विक्किणइ (प्राप्र)। कर्म. विक्किणीअंति (पि ५४८)। वकृ. विक्किणंत, विक्किणित (पि ३६७, सुपा २७६)। संकृ. विक्किणिअ (नाट—मृच्छ ६५)।

विक्किणिअ } वि [विक्रीत] बेचा हुआ (सुपा
विक्किय } ६४२, भवि)।

विक्किय देखो विउव्व = वैक्रिय, 'कयदिक्कियरूवो सुरो व्व लक्खियसि' (सुपा १८७), 'कयविक्किय-काओ देवुव्व' (सम्मत्त १०४)।

विक्किर सक [वि + कृ] बिखेरना, छितराना, फैलाना। कवकृ विक्किरिज्जमाण (राय १४)।

विक्किरिया स्त्री [विक्रिया] विकृति, विकार, 'तीए नयणाइएहिं विक्किरियं कुणइ' (सुपा ५१४)। देखो विकिरिया।

विक्कीय देखो विक्किय = विक्रीत (सुर ६, १६५, सुपा ३८५)।

विक्के सक [वि + क्री] बेचना। विक्केइ, विक्केअइ (हे ४, ५२, प्राप्र, धात्वा १५२)। कृ विक्केज्ज (दे ६, ४०, ७, ६६)।

विक्केणुअ वि [दे] विक्रेय, बेचने योग्य (दे ७, ६६)।

विक्कोण पुं [विकोण] विकूणन, घृणा से मुँह सिकुड़ना (दे ३, २८)।

विक्कोस सक [वि + क्रुश्] चिल्लाना। विक्कोश (मा) (मृच्छ २७)।

विक्खंभ पुं [दे] १ स्थान, जगह (दे ७, ८८)। २ अंतराल, बीच का भाग (दे ७, ८८, से ६, ५७)। ३ विवर, छिद्र (से ३, १४)।

विक्खंभ पुं [विष्कम्भ] १ विस्तार (पण्ण १—पत्र ५२, ठा ४, २—पत्र २२६, दे ७, ८८, पाअ)। २ चौड़ाई, 'जंबुद्दीवे दीवे एगं जोयणसहस्सं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते' (सम २)। ३ बाहुल्य, स्थूलता, मोटाई (सुज्ज १, १—पत्र ७)। ४ प्रतिबन्ध, निरोध (सम्यक्त्वो ८)। ५ नाटक का एक अंग (कप्पू)। ६ द्वार के दोनों तरफ के बीच का अन्तर (ठा ४, २—पत्र २२५)।

विक्खंभिअ वि [विष्कम्भित] निरुद्ध, रोका हुआ (सम्यक्त्वो ८)।

विक्खण न [दे] कार्य, काम, काज (दे ७, ६४)।

विक्खय वि [विक्षत] व्रण-युक्त, कृत-व्रण (भग ७, ६—पत्र ३०७)।

विक्खर सक [वि + कृ] १ छितराना, तितर-बितर करना। २ फैलाना। ३ इधर उधर फेंकना। विक्खरइ (कप्पू), विक्खरेज्जा (उत्त २०० टि)। कवकृ. विक्खरिज्जमाण (राज)।

विक्खवण न [विक्षपण] १ विनाश। २ वि विनाशक, 'वज्जं अमक्खपडिवक्खविक्खवणं' (सुपा ४७)।

विक्खाइ स्त्री [विख्याति] प्रसिद्धि (भवि)।

विक्खाय वि [विख्यात] प्रसिद्ध, विश्रुत (पाअ, सुर १, ४६, रमा, महा)।

विक्खास वि [दे] विरूप, खराब, कुत्सित (दे ७, ६३)।

विक्खिण्ण वि [दे] १ आयत, लम्बा। २ अवतीर्ण। ३ न. जघन (दे ७, ८८)।

विक्खिण्ण देखो विकिण्ण (कस)।

विक्खित्त वि [विक्षिप्त] १ फेंका हुआ (पाअ, कस, गउड)। २ भ्रान्त, पागल, 'पमुत्तविक्खित्तजणे परियणे' (उप ७२८ टी, दे १, १३३, महा)।

विक्खिर देखो विक्खर। विक्खिरेज्जा (उत्त)।

विक्खिरिअ वि [विकीर्ण] बिखरा हुआ, छितरा हुआ, फैला हुआ (सुर ५, २०६, सुपा २४६, गउड)।

विक्खिव सक [वि + क्षिप्] १ दूर करना। २ प्रेरना। ३ फेंकना। विक्खिवइ (महा)।

विक्खिवण न [विक्षेपण] १ दूरीकरण। २ प्रेरणा (पव ६४)।

विक्खेव पुं [विक्षेप] १ क्षोभ, 'छोहो विक्खेवो' (पाअ)। २ उचाट, ग्लानि, खेद (से ५, ३)। ३ ऊँचा फेंकना, ऊर्ध्व-क्षेपण (ओघभा १६३)। ४ फेंकना, क्षेपण (गा ५८२)। ५ शृंगार-विशेष, अवज्ञा से किया हुआ मण्डन (पण्ह २, ४—पत्र १३२)। ६ चित्त-भ्रम (स २८२)। ७ विलंब, देरी (स ७३५)। ८ सैन्य, लश्कर (स २४; ५७३)।

विक्खेवणी स्त्री [विक्षेपणी] कथा का एक भेद (ठा ४, २—पत्र २१०)।

विणिव्ववण न [विनिर्वपन] शान्ति, दाहोपशम (गउड)।

विणिस्सरिय वि [विनि सृत] बाहर निकला हुआ (सण)।

विणिस्सह वि [विनिस्सह] श्रान्त, थका हुआ, 'कइयावि घणुपरिस्सम विणिस्सहो दीहींयासु मज्जेइ' (सुपा ५६)।

विणिह° देखो विणिहण।

विणिहट्टु देखो विणिहा।

विणिहण सक [विनि + हन्] मार डालना। विणिहणेज्जा, विणिहति (सूत्र १, ११, ३७; १, ७, १६)। कर्म विणिहम्मति (उत्त ३, ६)।

विणिहय वि [विनिहत] जो मार डाला गया हो, व्यापादित (महा)।

विणिहा सक [विनि + धा] १ व्यवस्था करना। २ स्थापन करना। संकृ. विणिहट्टु, विणिहाय, विणिहित्तु (चेइय २६८, सूत्र १, ७, २१, कप्प)।

विणिहाय देखो विणिघाय (णाया १, १४—पत्र १८६)।

विणिहिअ, विणिहित्त } वि [विनिहित] स्थापित (गा ३६१, सुपा ६२)।

विणिहित्तु देखो विणिहा।

विणी अक [विनिर् + इ] बाहर निकलना। विणिति, विणेति (गा ६५४, पि ४६३)। वकृ. विणित (गउड १३८)।

विणी सक [वि + नी] १ दूर करना, हटाना। २ विनय-ग्रहण कराना। विणिति (णाया १, १—पत्र २६, ३०), विणिज्जामि, विणइज्ज, विणएज्ज, विणेउ (णाया १, १—पत्र २६, सूत्र १, १३, २१, वि ४६०, णाया १, १—पत्र ३२)। भूका. विणइंसु (सूत्र १, १२, ३)। भवि. विणेहिइ (पि ५२१)। वकृ विणेमाण (णाया १, १—पत्र ३३)। कवकृ विणिज्जमाण (णाया १, १—पत्र २६)। हेकृ. विणएत्तु (प्राचा १, ५, ६, ४, पि ५७७)।

विणीअ वि [विनीत] १ अपनीत, दूर किया हुआ, हटाया हुआ (णाया १, १—पत्र ३३), 'सव्वदव्वेसु विणीयतण्हे' (उत्त २६, १३)। २ विनय-युक्त, नम्र, शिष्ट (ठा ४, ४—पत्र २८५, सुपा ११६, उव)। ३ शिक्षित, 'भद्दो विणीअविणओ' (उव ६)।

विणीआ स्त्री [विनीता] अयोध्या नगरी (सम १५१, कप्प, पउम ३२, ५०, ती १)।

विणील वि [विनील] विशेष हरा रँग का (गउड)।

विणु (अप) देखो विणा (हे ४, ४२६, पड्; हम्मीर २८, कुलक १२; भवि, कम्म २, ६, २६, २७, ३, ५, कुमा।

विणेअ वि [विनेय] शिक्षणीय, शिष्य, अन्तेवासी, चेला (सार्ध ७०, उप १०३१ टी)।

विणेमाण देखो विणी = वि + नी।

विणोअ सक [वि + नोदय्] १ खण्डित करना। २ दूर करना, हटाना। ३ खेल करना। ४ कुतूहल करना। विणोएइ, विणोयति (गउड), विणोदेमि (शौ) (स्वप्न ५१)। भवि. विणोदइस्सामो (शौ) (पि ५२८)। वकृ विणोदअत (शौ) (नाट—उत्तर ६५)। कवकृ. विणोदीअमाण (शौ) (नाट—मालवि ४५)।

विणोअ पुं [विनोद] १ खेल, क्रीडा। २ कौतुक, कुतूहल (गउड, सिरि ५६, सुर ४, २१६, हे १, १४६)।

विणोइअ वि [विनोदित] विनोद-युक्त किया हुआ (सुर ११, २३८, सण)।

विणोदअत देखो विणोअ = वि + नोदय्।

विणोयक, विणोयग } वि [विनोदक] कुतूहल-जनक (रंभा)।

विणोयण न [विनोदन] १ अपनयद, दूर करना, 'परिस्समविणोयणत्थं' (उप १०३१ टी, कुप्र १४७)। २ कुतूहल, कौतुक (गा ४८७)।

विण्ण देखो विण्णु (सक्षि १६)।

विण्णइदव्व देखो विण्णव।

विण्णत्त वि [विज्ञप्त] निवेदित (सुपा २२)।

विण्णत्ति स्त्री [विज्ञप्ति] १ निवेदन, प्रार्थना (कुमा)। २ ज्ञान (सूत्र १, १२, १७)।

विण्णत्ति स्त्री [विज्ञप्ति] विज्ञान, विनिर्णय (णदि १३४)।

विण्णय देखो विणइय (ठा १०—पत्र ५१६)।

विण्णय देखो विण्ण (विपा १, २—पत्र ३६, १, ८—पत्र ८४)।

विण्णव सक [वि + ज्ञपय्] १ बिनती करना, प्रार्थना करना। २ मालूम करना, विदित करना। ३ कहना। विण्णवइ, विण्णवेमि, विण्णवेमो (पि ५५३, ५५१)। भवि. विण्णविस्सं (रुक्मि ४१)। वकृ. विण्णवत (काल)। संकृ. विण्णविअ (नाट—मृच्छ २६४)। हेकृ. विण्णविदुं (शौ) (अभि ५३)। कृ. विण्णइदव्व (शौ) (पि ५५१)।

विण्णवणा स्त्री [विज्ञापना] विज्ञापन, निवेदन (उवा)। देखो विन्नवणा।

विण्णा सक [वि + ज्ञा] जानना। संकृ. विण्णाय (दस ८, ५६)। कृ विण्णेय (काल)।

विण्णाउ देखो विन्नाउ (राज)।

विण्णाण देखो विन्नाण (उवा, महा, पड्)।

विण्णाण न [विज्ञान] अवाय-ज्ञान, निश्चयात्मक ज्ञान (णदि १७६)।

विण्णाणि वि [विज्ञानिन्] निपुण, विचक्षण (कुमा)।

विण्णाय वि [विज्ञात] १ जाना हुआ, विदित (पाअ, गउड १२०)। २ न विज्ञान (कप्प)।

विण्णाव देखो विण्णव। विण्णावेमि, विण्णावेहि (मा ३८, ३६)।

विण्णास वि [वि + न्यासय्] स्थापना करना, रखना। वकृ. विण्णासत (पउम ४३, २६)।

विण्णास देखो विन्नास (मा ५१)।

विण्णासणा स्त्री [विन्यासना] स्थापना (उप ३५४)।

विण्णु, विण्णुअ } वि [विज्ञ] पण्डित, जानकार, विद्वान् (भग, प्राकृ १८)।

विण्णेय देखो विण्णा।

विण्हावणक न [विस्नापनक] मन्त्र आदि द्वारा संस्कृत जल से कराया जाता स्नान (पण्ह १, २—पत्र ३०)।

हेक्ट विगिंचिउ (पिंड ३९८)। कृ. विगिंचियव्व (पि ५७०)।

विगिंचण न [विवेचन] परिष्ठापन, परित्याग (पिंड ४८३, कस)।

विगिंचणआ, विगिंचणा, विगिंचाणआ } स्त्री [विवेचना] १ निर्जरा, विनाश (ठा ८—पत्र ४४१)। २ परित्याग (ओघभा २०९, स ५१, ओघ ६०६, ८७)।

विगिच्छा स्त्री [विचिकित्सा] संदेह, सशय, वहम (श्रा ३, पडि)।

विगिट्ठ देखो विकिट्ठ, 'अन्ने तवं विगिट्ठं काउ थोवावसेससंसारा' (पउम २, ८३, ४, २७, गच्छ २, २५, उत्त ३६, २५३)। °खमग पु [°क्षपक] तपस्वी साधु (राज)। °भत्तिय वि [°भक्तिक] लगातार चार या उससे अधिक दिनो का उपवास करनेवाला (कप्प)।

विगिय देखो विगय = विकृत (ओघभा २८६)।

विगिला, विगिलाअ } अक [वि + ग्लै] विशेष ग्लान होना, खिन्न होना। विगिलाइ, विगिलाएज्जा (पि १३६, आचा २, २, ३, २८)।

विगुण वि [विगुण] १ गुण-रहित (सिरि १२३३ प्रासू ७१)। २ अननुगुण, प्रतिकूल (पंचा ६, ३२)।

विगुत्त वि [विगुप्त] १ तिरस्कृत, अवधीरित (श्रा १२)। २ जो खुला पड गया हो वह, जिसकी पोल खुल गई हो वह, जिसकी फजीहत हुई हो वह, 'सदुक्कयविगुत्तो' (श्रा १८, धर्मवि ७७)।

विगुप्प° देखो विगोव।

विगुव्वणा देखो विउव्वणा (ठा १—पत्र १९)।

विगुव्विय देखो विउव्विअ (पउम ३९, ३२)।

विगोइय वि [विगोपित] जिसका दोष प्रकट किया गया हो वह (सण)।

विगोव सक [वि + गोपय्] १ प्रकाशित करना। २ तिरस्कार करना। ३ फजीहत करना। भवि. 'न खु न खु चउवेयपुत्तगो भोदुं सुद्दविक्ख पव्वजियं अप्पाणं विगोविम्सं' (मोह १०)। कर्म. विगुप्पसु (धर्मवि १३४), विगुप्पहि (अप) (भवि)। संकृ विगोवित्ता, विगोवइत्ता (कप्प, णाया १, १९—पत्र २४४)।

विगोवण न [विकोपन] विकास, 'तहवि य दसिज्जतो सीसमइविगोवणमदुट्ठो' (श्रावक २२८)।

विग्गह पु [विग्रह] १ वक्रता, बांक (ठा २, ४—पत्र ८६)। २ शरीर, देह (पाअ, स ७२९, सुपा १९)। ३ युद्ध, लडाई (स ६३४)। ४ समास आदि के समान अर्थवाला वाक्य (विसे १००२)। ५ विभाग (ठा १०)। ६ आकृति, आकार, 'वरवइरविग्गहए' (भग २, ८)। °गइ स्त्री [°गति] बांकवाली गति, वक्र गति (ठा २, १—पत्र ५५, भग)।

विग्गहिय वि [वैग्रहिक] शरीर के अनुरूप, 'विग्गहिय उन्नयकुच्छी' (पण्ह १, ४—पत्र ७८)।

विग्गहीअ वि [विग्रहिक] युद्ध-प्रिय, 'जे विग्गहीए अनायमामी' (सूअ १, १३, ६)।

विग्गाहा (अप) स्त्री [विगाथा] छन्द-विशेष (पिंग)।

विग्गुत्त वि [दे] व्याकुल किया हुआ (भवि)।

विग्गुत्त देखो विगुत्त (धर्मवि ५८, ६८)।

विग्गोव देखो विगोव। संकृ विग्गोवित्ता (कप्प, औप)

विग्गोव पुं [दे] आकुलता, व्याकुलता (दे ७, ६४, भवि, वज्जा २३)।

विग्गोवणया स्त्री [विगोपना] १ तिरस्कार। २ फजीहत (उव)।

विग्घ पुन [विघ्न] १ अन्तराय, व्याघात, प्रतिबन्ध (सुपा ३९५, कुमा, प्रासू ५४, १३५, कप्प, कम्म १, ६१, पड्)। २ कर्म-विशेष, आत्मा के वीर्य, दान आदि शक्तियो का घातक कर्म (कम्म १, ५२, ५३)। °कर वि [°कर] प्रतिबन्ध-कर्त्ता (कम्म १, ६१)। °ह वि [°घ] विघ्न-नाशक (श्रु ७५)। °वह वि [°वह] विघ्नवाला (सुर १, ४३)।

विग्घर वि [विगृह] गृह-रहित, 'तह उग्घर-विग्घरनिरंगणोवि न य इच्छिय लहइ' (णाया १, १० टी—पत्र १७१)।

विग्घिय वि [विघ्नित] विघ्न-युक्त (हम्मीर १४)।

विग्घुट्ठ वि [विघुष्ट] चिल्लाया हुआ (विपा १, २—पत्र २९)। देखो विघुट्ठ।

विघट्ट सक [वि + घट्टय्] १ वियुक्त करना। २ विनाश करना। विघट्टेइ (नव)।

विघट्टण न [विघट्टन] विनाश (नाट)।

विघडण देखो विहडण (राज)।

विघत्थ वि [विघस्त विग्रस्त] १ विशेष रूप से भक्षित। २ व्याप्त, 'वाहिविघत्थस्स मत्तम्म' (महा, प्राप्र)।

विघर देखो विग्घर (उव)।

विघाय पु [विघात] विनाश (कुमा)।

विघायग वि [विघातक] विनाश-कर्ता (धर्मसं ५२९)।

विघुट्ठ न [विघुष्ट] विरूप आवाज करना (पण्ह १, ३—पत्र ४५)। देखो विग्घुट्ठ।

विघुम्म अक [वि + घूर्णय्] डोलना। वकृ विघुम्ममाण (सुर ३, १०९)।

विचक्खु वि [विचक्षुष्क] चक्षु रहित, अन्धा (उप ७२८ टी)।

विचच्चिया स्त्री [विचर्चिका] रोग-विशेष, पामा (राज)।

विचलिर वि [विचलितृ] चलायमान होने-वाला (सण)।

विचल्लिय वि [विचलित] चचल बना हुआ (भवि)।

विचार देखो विआर = वि + चारय्। विचारेंति (मृच्छ १०४)।

विचारग वि [विचारक] विचार-कर्ता (रंभा)।

विचारण देखो विआरण = विचारण (कुप्र ३९७)।

विचारणा देखो विआरणा = विचारणा (धर्मसं ३०६)।

विचाल न [विचाल] अन्तराल (दे ७, ८८)।

विचिअ वि [विचित] चुना हुआ (दे ७, ६१)।

विचिंत सक [वि + चिन्तय्] विचार करना। विचिंतेइ (महा)। वकृ. विचिंतेंत (सुर १२, १६६)। कृ विचिंतियव्व, विचिंतिज्ज (पचा ६, ४६, द्रव्य ५०)।

वित्ती° देखो वित्त = वृत्त। °कप्प वि [°कल्प] सिद्धप्राय, पूर्ण-प्राय (तदु ७)।

वित्ती° देखो वित्ति = वृत्ति। °संखेव पुं [°संक्षेप] बाह्य तप का एक भेद—खाने, पीने और भोगने की चीजों को कम करना (सम ११)। °संखेवण न [°संक्षेपण] वही अर्थ, 'वित्तीसंखेवण रसच्चाओ' (नव २८, पडि)।

वित्तेस वि [वित्तेश] धनी, श्रीमंत (उव ७२८ टी)।

वित्थ पुन [वित्त] सुवर्ण, सोना (से १, १)।

वित्थक्क अक [वि + स्था] १ स्थिर होना। २ विलम्ब करना। ३ विरोध करना। वकृ. वित्थक्कंत (से ३, ४, १३, ७०, ७४)।

वित्थक्क देखो विथक्क (स ६३४ टि)।

वित्थड } वि [विस्तृत] १ विस्तार-युक्त,
वित्थय } विशाल (भग, ओप, पाअ, वसु, भवि, गा ४०७)। २ संबद्ध, घटित (से १, १)।

वित्थर अक [वि + स्तृ] १ फैलना। २ बढ़ना। वित्थरइ (प्राकृ ७६, स २०१, ६८४, सिरि ६२७, मन २५)। वकृ. वित्थरंत (से ३, ३१, स ६८६)। हेकृ वित्थरिउ (पि ५०५)।

वित्थर पुन [विस्तर] १ विस्तार, प्रपंच (गउड)। २ शब्द-समूह (गउड ८६)।

वित्थर देखो वित्थड, 'तत्थ वित्थरा कज्ज-धुरा' (से ४, ४६), 'वित्थर व्व तलवट्टं' (वज्जा १०४)।

वित्थरग वि [विस्तरण] १ फैलानेवाला। २ वृद्धिजनक (कुमा)।

वित्थरिअ देखो वित्थड (सुर ३, ५४, सुपा ३६८, पि ५०५, भवि, सण)।

वित्थार सक [वि + स्तारय्] फैलाना। वित्थारइ (भवि), वित्थारेदि (शौ) (नाट—शकु १०८)।

वित्थार पुं [विस्तार] फैलाव, प्रपञ्च (गउड, हे ४, २६५, नाट—शकु ६)। °रुइ वि [°रुचि] सम्यक्त्व विशेष वाला, सब पदार्थों को विस्तार से जानने की चाहवाला सम्यक्त्वी (पव १४६)।

वित्थारइत्तअ (शौ) वि [विस्तारयितृ] फैलानेवाला (अभि २८, पि ६००)।

वित्थारग वि [विस्तारक] फैलानेवाला (रंभा)।

वित्थारण न [विस्तारण] फैलाव, 'सीसमइ-वित्थारणमित्तत्थोय कओ समुल्लावो' (सम्म १२२, सिरि १२०७)।

वित्थारिय वि [विस्तारित] फैलाया हुआ (राय, दे)।

वित्थिण्ण } वि [विस्तीर्ण] विस्तार-युक्त,
वित्थिन्न } विशाल (नाट—मृच्छ ६४, पाअ, भवि)।

वित्थिय देखो वित्थड (स ६६७, गा ४०७ अ)।

वित्थिर न [दे] विस्तार, फैलाव (षड्)।

वित्थुय देखो वित्थड (स ६१०)।

विथक्क वि [विस्थित] जो विरोध में खड़ा हुआ हो, विरोधी बना हुआ (स ४६७, ६३४)।

विद देखो विअ = विद्। वकृ. विदंत (उप २८० टी)। संकृ विदित्ता, विदित्ताणं (सूअ १, ६, २८, पि ५८३)।

विदंड पुं [विदण्ड] कक्षा तक लम्बी लट्ठी (पव ८१)।

विदंसग देखो विदंसय (पण्ह १, १ टी—पत्र १५)।

विदंसण न [विदर्शन] अन्धकार-स्थित वस्तु का प्रकाशन (पण्ह १, १—पत्र ८)। देखो विदरिसण।

विदंसय वि [विदंशक] श्येन आदि हिंसक पक्षी (उत्त १६, ६५, सुख १६, ६५)।

विदड्ढ } वि [विदग्ध] १ पण्डित, विच-
विदद्ध } क्षण (सक्षि ८)। २ विशेष दग्ध (पव १२५)। ३ अजीर्ण का एक भेद (राज)। देखो विदड्ढ।

विदब्भ पुस्त्री [विदर्भ] १ देश-विशेष, 'इओ य विदब्भदेसमंडणं कुंडिणं नयरं' (कुप्र ४८, गा ८६)। २ भगवान् सुपार्श्वनाथ के गणधर—मुख्य शिष्य का नाम (सम १५२)। ३ पुस्त्री. विदर्भ देश की प्राचीन राजधानी, कुण्डिनपुर, जो आजकल 'नागपुर' के नाम से प्रसिद्ध है, 'दूरे विदब्भा' (कुप्र ७०)।

विदरिसण न [विदर्शन] जिसके देखने से भय उत्पन्न हो वह वस्तु, विरूप आकारवाली विभीषिका आदि, 'एस ण तए विदरिसणे दिट्ठे' (उवा)। देखो विदंसण।

विदल न [विदल] वंश, बाँस (सुज्ज १०, १, ठा ४, ४—पत्र २७१)।

विदल न [द्विदल] १ चना आदि वह शुष्क धान्य जिसके दो टुकड़े समान होते हैं,

'जम्मि हु पीलिज्जंते नेहो न
हु होइ विंति तं विदलं।
विदलेवि हु उप्पन्नं नेहजुयं
होइ नो विदलं' (सबोध ४४)।

२ वि. जिसके दो टुकड़े किए गए हो वह (सूअनि ७१)।

विदलिद (शौ) वि [विदलित] खण्डित, चूर्णित (नाट—वेणी २६)।

विदाअ देखो विद्दाय = विद्रुत (से १३, २५)।

विदारग } वि [विदारक] विदारण कर्ता;
विदारय } 'कम्मरयविदारगाइं' (पण्ह २, १—पत्र ६६, राज)।

विदालण न [विदारण] विविध प्रकार से चीरना, फाड़ना (पण्ह १, १—पत्र १४)।

विदिअ देखो विइअ (उनि १२२, पउम ३६, ६८)।

विदिण्ण देखो विइण्ण = वितीर्ण (विपा १, २—पत्र २२)।

विदिण्ण वि [विदीर्ण] फाड़ा हुआ, चीरा हुआ (नाट—मृच्छ २५५)।

विदित्ता } देखो विद = विद्।
विदित्ताणं }

विदिन्न देखो विइण्ण = वितीर्ण (विपा १, २ टी—पत्र २२, सुर ५, १८७)।

विदिस (अप) स्त्री [विदिशा] एक नगरी का नाम (भवि)।

विदिसा } स्त्री [विदिश्] १ विदिशा,
विदिसि° } उपदिशा, कोण (आचा, पि ४१३, पउण १—२६)। २ विपरीत दिशा, असयम (आचा)।

विदु देखो विउ (पचा १६, ७)।

विदुगुंछा देखो विउगुंछा (राज)।

विदुग्ग न [विदुर्ग] समुदाय (भग १, ८)

विच्छित्ति स्त्री [विच्छित्ति] १ विन्यास, रचना (पाअ, स ६१५ सुपा ५४, ८३, २६०, गउड)। २ प्रान्त भाग (सुर ३, ७०)। ३ अंगराग (गा ७८०)।

विच्छिन्न देखो विच्छिण्ण (विपा १, २ टी—पत्र २८)।

विच्छिव सक [वि + स्पृश्] विशेष रूप से स्पर्श करना। कवकृ विच्छिप्पमाण (कप्प, औप)।

विच्छिव सक [वि + क्षिप्] फेंकना। संकृ विच्छिविअ (नाट—चैत ३८)।

विच्छु } देखो विंचुअ (गा २३७, जी
विच्छुअ } १८, उत्त ३६, १४८, प्रासू १६, णाया १, ८—पत्र १३३)।

विच्छुडिअ वि [विच्छुटित] १ विछुड़ा हुआ, जो अलग हुआ हो, विरहित, 'जहवि हु कालवसेणं ससी समुद्दाओ कहवि विछु (?च्छु)डिओ' (वज्जा १५६)। २ मुक्त (राज)।

विच्छुरिअ वि [दे] अपूर्व, अद्भुत (षड्)।

विच्छुरिअ वि [विच्छुरित] १ खचित, जड़ा हुआ, 'खचिअं विच्छुरिअयं जडिअं' (पाअ)। २ संबद्ध, जोड़ा हुआ (से १४, ७६)। ३ व्याप्त (पउम २, १०१, सुपा ६, २१२, सुर २, २२१)।

विच्छुह सक [वि + क्षिप्] फेंकना, दूर करना। विच्छुहइ (से १०, ७३, गा ४२४ अ)। कृ. विच्छूढव्व (से १०, ५३)।

विच्छुह अक [वि + क्षुभ्] विक्षोभ करना, चचल हो उठना। विच्छुहिरे (हे ३, १४२)।

विच्छूढ वि [विक्षिप्त] १ फेंका हुआ, दूर किया हुआ (से ६, १६)। २ प्रेरित (पाअ)।

विच्छूढ वि [दे] वियुक्त, विरहित, विघटित, 'विच्छूढा जूहाओ' (स ६७८)।

विच्छूढव्व देखो विच्छुह = वि + क्षिप्।

विच्छेअ पुं [दे] १ विलास। २ जवन (दे ७, ६०)।

विच्छेअ पु [विच्छेद] १ विभाग, पृथक्करण (विसे १००६)। २ वियोग (गा ६१३)। ३ अनुबन्ध विनाश, प्रवाह-निरोध (कप्पू)।

विच्छेअण न [विच्छेदन] ऊपर देखो (राज)।

विच्छेअय वि [विच्छेदक] विच्छेद-कर्ता (भवि)।

विच्छेइ वि [विच्छेदिन्] ऊपर देखो (कुप्र २२)।

विच्छेइअ वि [विच्छेदित] विच्छिन्न किया हुआ (नाट—विक्र ८२)।

विछोइय वि [दे] विरहित (भवि)।

विच्छोड देखो विच्छोल। संकृ विच्छोडिवि (अप) (हे ४, ४३६)।

विच्छोम पु [दे. विदर्भ] नगर-विशेष, 'विदर्भे विच्छोमो' (प्राकृ ३८)।

विच्छोय पुं [दे] विरह, वियोग (भवि)। देखो विच्छोह।

विच्छोल सक [कम्पय्] कँपाना। विच्छोलइ (हे ४, ४६)। वकृ. विच्छोलंत, विच्छोलित (कप्पू, सुर १०, १०७, १५, १३)।

विच्छोलिअ वि [कम्पित] कँपाया हुआ (कुमा, गउड)।

विच्छोलिअ वि [विच्छोलित] धौत, धोया हुआ, 'धोअ विच्छोलिअं' (पाअ)।

विच्छोव सक [दे] वियुक्त करना, विरहित करना,

'कालेण रूढपेम्मे परोप्परं
हिययनिव्वडियभावे।
अकलुणहियओ एसो
विच्छोवइ सत्तसंघाए'
(स १८६)।

विच्छोह पु [दे] विरह, वियोग (दे ७, ६२, हे ४, २६६)।

विच्छोह पु [विक्षोभ] १ विक्षेप, 'जे संमुहागअवोलतवलिअपिअपेसिअच्छिविच्छोहा' (गा ७१०), 'पुलइयकवोलमूला विमुक्ककडक्खविच्छोहा' (सम्मत्त १६१)। २ चचलता (उप पृ १५८)।

विछल सक [वि + छलय्] छलित करना, ठगना। कर्म. विछलिज्जइ (महा)।

विछोय देखो विच्छोव। विछोयइ (स १८६ टि)।

विजइ वि [विजयिन्] विजेता, जीतनेवाला (कप्पू, नाट—विक्र ५)।

विजंभ देखो विअंभ = वि + जृम्भ्। वकृ. विजंभत (काप्र १८६)।

विजढ वि [वित्यक्त] परित्यक्त (उत्त ३६, ८३, सुख ३६, ८३, ओघ २४६)।

विजण देखो विअण = विजन। 'लक्खण! देसो इमो विजणो' (पउम ३३, १३, हे १, १७७, कुमा)।

विजय सक [वि + जि] १ जीतना, फतह करना। २ अक. उत्कर्ष में वर्त्तना, उत्कर्ष-युक्त होना। विजयइ (पव २७६—गाथा १५६६), 'विजयतु ते पएसा विहरेइ जत्थ वीरजिणनाहो' (धर्मवि २२)। कृ. विजेतव्व (पै) (कुमा)।

विजय पु [विजय] १ निर्णय, शास्त्र के अर्थ का ज्ञान-पूर्वक निश्चय (ठा ४, १—पत्र १८८, सुज्ज १०, २२)। २ अनुचिन्तन, विमर्श (औप)।

विजय पुं [विजय] आश्रय, स्थान (दस ६, ५६)।

विजय पुं [विजय] १ जय, जीत, फतह (कुमा, कम्म १, ५५, अभि ८१)। २ एक देव-विमान (अनु, सम ५७, ५८)। ३ विजय-विमान-निवासी देवता (सम ५६)। ४ एक मुहूर्त, अहोरात्र का बारहवाँ या सतरहवाँ मुहूर्त (सम ५१, सुज्ज १०, १३, कप्प, णाया १, ८—पत्र १३३)। ५ भगवान् नमिनाथजी का पिता (सम १५१)। ६ भारतवर्ष के बीसवें भावी जिनदेव (सम १५४, पव ४६)। ७ तृतीय चक्रवर्ती के पिता का नाम (सम १५२)। ८ आश्विन मास (सुज्ज १०, १६)। भारतवर्ष में उत्पन्न द्वितीय बलदेव (सम ८४, १५८ टी; अनु, पव २०६)। १० भारतवर्ष का भावी दूसरा बलदेव (सम १५४)। ११ ग्यारहवें चक्रवर्ती राजा का पिता (सम १५२)। १२ एक राजा (उप ७६८ टी)। १३ एक क्षत्रिय का नाम (विपा १, १—पत्र ४)। १४ भगवान् चन्द्रप्रभ का शासन-देव (संति ७)। १५ जंबूद्वीप का पूर्व द्वार। १६ उस द्वार का अधिष्ठाता देव (ठा ४, २—पत्र २२५)। १७ लवण समुद्र का पूर्व द्वार। १८ उस द्वार का अधिपति देव (ठा ४, २—पत्र

विद्धंसण न [विध्वंसन] विनाश (णाया १, १—पत्र ४८, पराह १, ३—पत्र ५५, सूत्र १, २, २, १०, चेइय ६६४, उप पृ १८७)।

विद्धंसणया स्त्री [विध्वंसना] विनाश (भग)।

विद्धंसित वि [विध्वंसित] विनाशित (चड ३, ५)।

विद्धंसिय } वि [विध्वस्त] विनष्ट (पउम
विद्धत्थ } ८, २३७, १६, ३०, पव १५५)।

विद्धि स्त्री [वृद्धि] १ बढाव, बढती (उप ७२८ टी, सुर ४, ११५)। २ समृद्धि (ठा १०—पत्र ५२५, विसे ३४०८)। ३ अभ्युदय। ४ संपत्ति। ५ अहिंसा (पराह २, १—पत्र ६६)। ६ कलान्तर, सूद (विपा १, १—पत्र ११)। ७ व्याकरण-प्रसिद्ध स्वर का विकार (विसे ३४८२)। ८ ओषधि-विशेष (राज)।

विद्धूण देखो विद्ध = व्यध्।

विधम्म देखो विहम्म (राज)।

विधम्मिय वि [विधर्मित] तिरस्कृत (विसे २३४६)।

विधवा देखो विहवा (निचू ८)।

विधा अ [वृथा] मुधा, निरर्थक, व्यर्थ (धर्मसं ४११)।

विधाण देखो विहाण = विधान (बृह १)।

विधाय देखो विहाय = विधातृ (राज)।

विधार सक [वि + धारय्] निवारण करना। संकृ. विधारेउं (पिंड १०२)।

विधि (शौ) देखो विहि (हे ४, २८२, ३०२)।

विधुर वि [विधुर] १ व्याकुल, विह्वल, 'नहि विधुरसहावा हुंति दुत्थेवि धीरा' (कुप्र ५४)। २ विषम, असमान (धर्मसं १२२३, १२२४)। देखो विहुर।

विधुव (शौ) देखो विहुण = वि + धू। विधुवेदि (पि ५०३)।

विधूण देखो विहुण = वि + धू। संकृ. विधूणित्ता (सूत्र २, ४, १०)।

विधूम पु [विधूम] अग्नि, वह्नि (सूत्र १, ५, २, ८, वसु)।

विधूय वि [विधूत] क्षुण्ण, सम्यक् स्पृष्ट, 'विधूयकप्पे' (आचा १, २, ३, ३, १, ६, ३, १)। देखो विहूअ।

विनड देखो विणड। विनडइ (भवि), 'अइ हिअअ पसिअ विरमसु दुल्लहपेम्मेण किं नु विनडेसि' (रुक्मि ५८)। कवकृ. विनडिज्जत, विनडिज्जमाण (सुपा ६५५, १३४)।

विनडण न [विनटन] १ व्याकुल करना। २ विडम्बना (सुपा २०८)।

विनडिअ वि [विनटित] १ व्याकुल बना हुआ। २ विडम्बित, 'तण्हाछुहाविनडिओ फलजलरहियम्मि सेलम्मि' (सम्मत्त १५६, सुपा २६०)।

विनमि पु [विनमि] भगवान् ऋषभदेव का एक पौत्र (धण १४)।

विनास देखो विणास = वि + नाशय्। विनासए (महा)।

विनिज्झा सक [विनि + ध्यै] देखना। विनिज्झाए (दस ५, १, १५)।

विनिबद्ध वि [विनिबद्ध] संबद्ध, बँधा हुआ (महा)।

विनिमय पुं [विनिमय] व्यत्यय, 'इअ सव्वमासविनिमयपरिहिं' (कुमा)।

विनियट्ट देखो विणिवट्ट। वकृ. विनियट्टमाण (आचा १, ५, ४, ३)।

विनियट्टण न [विनिवर्त्तन] निवृत्ति, विराम (आचा)।

विनिरय वि [विनिरत] लीन, आसक्त (कुप्र ६६)।

विनिहन्न सक [विनि + हन्] मार डालना, विनाश करना। विनिहन्निज्जा (उत्त २, १७)।

विनिहाय देखो विणिधाय (विपा १, २—पत्र ३१)।

विनीय देखो विणीअ (कस)।

विन्नत्त देखो विण्णत्त (काल)।

विन्नत्ति देखो विण्णत्ति (दं ४७, कुमा)।

विन्नप्प देखो विन्नव।

विन्नव देखो विण्णव। विन्नवइ, विन्नवेइ (पउम ३६, ११४, महा), विन्नवेज्जा (कप्प)। वकृ. विन्नवेमाण (कप्प)। संकृ विन्नविउ, विन्नवित्ता (सुपा ३२३, पि ५८२)। कृ. विन्नप्प, विन्नवणीय, विन्नवियव्व (पउम ४६, ४६, मोह ८२, सुपा १६२, २१६, ३२१)।

विन्नवण न [विज्ञपन] निवेदन, विज्ञापन (सुपा २६७)।

विन्नवणा स्त्री [विज्ञापना] १ प्रार्थना, विनती (सूत्र १, ३, ४, १०)। २ महिला, नारी (सूत्र १, २, ३, २)। देखो विण्णवणा।

विन्नविय वि [विज्ञापित] निवेदित (महा)।

विन्ना देखो विण्णा = वि + ज्ञा। कृ विन्नेय (भग, उप ३३६ टी)।

विन्ना देखो विन्ना। °यड न [°तट] एक नगर का नाम (उप पृ ११२)।

विन्नाउ वि [विज्ञातृ] जाननेवाला (आचा)।

विन्नाण न [विज्ञान] १ सद्बोध, ज्ञान (भग, आचा)। २ कला, शिल्प, 'तं नत्थि किंपि विन्नाणं जेण धरिज्जइ काया' (वै ७), 'कुसुमविन्नाणं' (कुमा, प्रासू ४३, ११२)। ३ मेधा, मति, बुद्धि, 'मेहा मई मणीसा विन्नाणं धी चिई बुद्धी' (पाअ)।

विन्नाणिय } देखो विण्णाय (उप १५० टी,
विन्नाय } सुर २, १३१, पि १०६, पाअ)।

विन्नाविय देखो विन्नविय (सुपा १४४)।

विन्नास पुं [विन्यास] १ रचना, विच्छित्ति, 'विन्नासो विच्छित्ती' (पाअ), 'वयणविन्नासो' (स ३०१, सुपा १७, २६६, महा)। २ स्थापना (भवि)।

विन्नासण न [विन्यासन] संस्थापन (स ३१८)।

विन्नासिअ वि [विन्यासित] संस्थापित (स ५६०)।

विन्नासिअ (अप) देखो विणासिअ (हे ४, ४१८)।

विन्नु देखो विण्णु (आचा), 'एगा विन्नू' (ठा १—पत्र १६)।

विन्नेय देखो विन्ना = वि + ज्ञा।

विन्हु पुं [विष्णु] एक जैन मुनि, जो आर्य-जेहिल के शिष्य थे (कप्प)। देखो विण्हु। °पअ न [°पद] आकाश (समु १५०)। °पदी स्त्री [°पदी] गंगा नदी (समु १५०)।

विज्जल पु [विजल] १ नरकावास-विशेष, एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २८)। २ वि जल-रहित (निचू १)।

विज्जल } न [दे विजल] कर्दम, पंक, विज्जुल } काँदो, कादा (आ २, १, ५, ३, २ १०, २)।

विज्जलिया स्त्री [विद्युत्] बिजली (कुप्र २८५)।

विज्जा स्त्री [विद्या] १ शास्त्र ज्ञान, यथार्थ ज्ञान, सम्यग् ज्ञान (उत्त २३, २, णदि, धर्मवि ३६, कुमा, प्रासू ४३)। २ मन्त्र, देवी-अधिष्ठित अक्षर पद्धति। ३ साधनावाला मन्त्र (पिंड ४६४, औप ठा ३, ४ टी—पत्र १५६)। °अणुप्पवाय न [°अनुप्रवाद] जैन अंग ग्रन्थांश विशेष, दसवाँ पूर्व (सम २६)। °चारण पु [°चारण] शक्ति-विशेष-संपन्न मुनि (भग २०, ६—पत्र ७६३)। °चारणलद्धि स्त्री [°चारणलब्धि] शक्ति-विशेष (भग २०, ६)। °णुप्पवाय देखो °अणुप्पवाय (राज)। °णुवाय न [°नुवाद] दसवाँ पूर्व (सिरि २०७)। °पिंड पु [°पिण्ड] विद्या के बल से अर्जित भिक्षा (निचू १३)। °मंत वि [°वत्] विद्या-संपन्न (उप ४२५)। °लय पुन [°लय] पाठशाला (प्रामा)। °सिद्ध वि [°सिद्ध] १ सर्व विद्याओं का अधिपति, सभी विद्याओं से संपन्न। २ जिसको कम से कम एक महाविद्या सिद्ध हो चुकी हो वह, 'विज्जाण चक्कवट्टी विज्जासिद्धो स, जस्स वेगावि सिज्झेज्ज महाविज्जा' (आवम)। °हर पुं [°धर] १ क्षत्रियों का एक वंश (पउम ५, २)। २ पुंस्त्री उस वंश में उत्पन्न (महा)। स्त्री. °री (महा, उव)। ३ वि विद्या-धारी, शक्ति विशेष-संपन्न (औप, राय, ज ४)। °हरगोवाल पुं [°धरगोपाल] एक प्राचीन जैन मुनि, जो सुस्थित और सुप्रतिबुद्ध आचार्य के शिष्य थे (कप्प)। °हरी स्त्री [°धरी] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)। °हार (अप) न [°धर] छन्द-विशेष (पिंग)।

विज्जावच्च (अप) देखो वेयावच्च (भवि)।

विज्जाहर वि [वैद्याधर] विद्याधर-सम्बन्धी, स्त्री 'एसा विज्जाहरी माया' (महा)।

विज्झाडिय देखो विज्झिाडिय (राज)।

विज्जु पु [विद्युत्] १ विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, १८)। २ देवों की एक जाति, भवनपति देवों का एक भेद (पण्ह १, ४—पत्र ६८)। ३ आमलकप्पा नगरी का निवासी एक गृहस्थ (णाया २—पत्र २५१)। ४ एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २६)। ५ स्त्री ईशानेन्द्र के सोम आदि लोकपालों की एक-एक अग्रमहिषी—पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४)। ६ चमर नामक इन्द्र की एक पटरानी (ठा ५, १—पत्र ३०२, णाया २—पत्र २५१)। ७ पुस्त्री बिजली, 'विज्जुणा, विज्जूए' (हे १, ३३, कुमा, गा १३५)। ८ सन्ध्या, शाम (हे १, ३३)। ६ वि विशेष रूप में चमकनेवाला, 'विज्जुमोयामणिप्पभा' (उत्त २२, ७)। °कार देखो °यार (जीव ३—पत्र ३४२)। °कुमार पुं [°कुमार] एक देव-जाति (भग, इक)। °कुमारी स्त्री [°कुमारी] विदिग्रुचक पर रहनेवाली दिक्कुमारी देवी, 'चत्तारि विज्जुकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ' (ठा ४, १—पत्र १९८)। °जिब्भ (?), °जिब्भ पु [°जिह्व] अनुवेलंधर नागराज का एक आवास पर्वत (इक, राज)। °तेअ पु [°तेजस्] विद्याधरवंश का एक राजा (पउम ५, १८)। °दंत पु [°दन्त] १ एक अन्त-र्द्वीप। २ उसमें रहनेवाली मनुष्य-जाति (ठा ४, २—पत्र २२६)। °दत्त पु [°दत्त] विद्याधरवंश का एक राजा (पउम ५, १८)। °दाढ पु [°दंष्ट्र] विद्याधर-वंश में उत्पन्न एक राजा का नाम (पउम ५, १८)। °पह, °प्पभ, °प्पह पु [°प्रभ] १ एक वक्षस्कार पर्वत का नाम (सम १०२ टी, ठा २, ३—पत्र ६६, ५, २—पत्र ३२६, ज ४, सम १०२, इक)। २ कूट-विशेष, विद्युत्प्रभ वक्षस्कार का एक शिखर (ज ४, इक)। ३ देव-विशेष, विद्युत्प्रभ नामक वक्षस्कार पर्वत का अधिष्ठाता देव (ज ४)। ४ अनुवेलंधर नागराज का एक आवास-पर्वत (ठा ४, २—पत्र २२६, इक)। ५ उस पर्वत का निवासी देव (ठा ४, २—पत्र २२६)। ६ देवकुरु वर्ष में स्थित एक महाद्रह (ठा ५, २—पत्र ३२६)। ७ न. एक विद्याधर-नगर (इक ३२६)। °मई स्त्री [°मती] एक स्त्री का नाम (पण्ह १, ४—पत्र ८५)। °मालि पुं [°मालिन्] १ पंचशैल द्वीप का अधिपति एक यक्ष (महा)। २ रावण का एक सुभट (से १३, ८४)। ३ ब्रह्मदेवलोक का इन्द्र (राज)। °मुह पु [°मुख] १ विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, १८)। ३ एक अन्तर्द्वीप। ४ उसका निवासी मनुष्य (ठा ४, २—पत्र २२६, इक)। °मेह पुं [°मेघ] १ विद्युत्प्रधान मेघ, जल-रहित मेघ। २ बिजली गिरानेवाला मेघ (भग ७, ६—पत्र ३०५)। °यार पु [°कार] बिजली करना, विद्युद्-रचना (भग २, ६)। °लआ, °लया स्त्री [°लता] विद्युत्, बिजली (नाट—वेणी ६६, काल)। °ल्हाइद न [°लखायित] बिजली की तरह आचरण (कप्पू)। °विलसिअ न [°विलसित] १ छन्द-विशेष (अजि २१)। २ बिजली का विलास (से ४, ४०)। °सिहा स्त्री [°शिखा] एक रानी का नाम (महा)।

विज्जुआ स्त्री [विद्युत्] १ बिजली (नाट—वेणी ६६)। २ बलि नामक इन्द्र के सोम आदि चारों लोकपालों की एक-एक पटरानी, 'मित्तगा सुभद्दा विज्जुत्ता (? या) असणी' (ठा ४, १—पत्र २०४, इक)। ३ धरणेन्द्र की एक अग्र-महिषी (णाया २—पत्र २५१, इक)।

विज्जुआइत्तु वि [विद्युत्कर्तृ] बिजली करने-वाला (ठा ४, ४—पत्र २६६)।

विज्जुला, विज्जुलिआ, विज्जुली } देखो विज्जु = विद्युत् (हे २ १७३, पड् १६१, कुमा, प्राकृ ३६, प्राप्र, पि २४४)।

विज्जू° देखो विज्जु। °माला स्त्री [°माला] छन्द-विशेष (पिंग)।

विज्जे अ [दे] १ मार्ग में, रास्ता से। २ लिए (भवि)।

विज्जोअ पु [विद्योत] उद्योत, प्रकाश, 'जोव्वणं जीविअं रूव विज्जुविज्जोअचंचल' (हित ६)।

विज्जोइय } वि [विद्योतित] प्रकाशित, विज्जोविय } चमका हुआ (उप पृ ३३, स ५७६)।

विप्पगरिस पु [विप्रकर्ष] दूरी, आसन्नता का अभाव, 'देसाइविप्पगरिसा' (धर्मसं १२१७)।

विप्पगाल सक [नाशय्, वि + गालय्] नाश करना। विप्पगालइ (हे ४, ३१; पि ५५३)।

विप्पगालिअ वि [नाशित, विप्रगालित] नाशित (कुमा)।

विप्पगिट्ठ वि [विप्रकृष्ट] १ दूरवर्त्ती, दूरी पर स्थित (स २२६)। २ दीर्घ, लम्बा, 'णाइ-विप्पगिट्ठेहिं श्रद्धाणेहिं' (णाया १, १५)।

विप्पचय सक [विप्र + त्यज्] छोडना, त्याग करना। कृ. विप्पचइयव्व (तदु ३५)।

विप्पच्चय पु [विप्रत्यय] १ सदेह, संशय (उत्त २३, २४)। २ वि प्रत्यय-रहित, अविश्वसनीय (उव)।

विप्पजढ वि [विप्रहीण] परित्यक्त (णाया १, २—पत्र ८४ पचा १४, ६, पव १२३)।

विप्पजह सक [विप्र + हा] परित्याग करना, छोड देना। विप्पजहइ, विप्पजहंति, विप्पजहे (कस, उवा; सूत्र २, १, ३८, उत्त ८, ४)। भवि विप्पजहिस्सामो (पि ५३०)। वकृ. विप्पजहमाण (ठा २, २—पत्र ५६, पि ५००)। संकृ विप्पजहित्ता, विप्पजहाय (उत्त २६, ७३, भग)। कृ विप्पजहणिज्ज, विप्पजहियव्व (णाया १, १—पत्र ४८, पि ५७१, णाया १, १८—पत्र २४१)।

विप्पजह न [विप्रहाण] परित्याग। °सेणिया स्त्री [°श्रेणिका] बारहवें जैन अग-ग्रन्थ का एक परिकर्म—अश-विशेष (सम १२६)।

विप्पजहणा } स्त्री [विप्रहाणि] प्रकृष्ट
विप्पजहन्ना } त्याग, परित्याग (उत्त २६, ७३, औप, विसे ३०८६, पराए ३६—पत्र ८४७)।

विप्पजहिय वि [विप्रहीण] परित्यक्त (पि ५६५)।

विप्पजोग देखो विप्पओअ (चंड)।

विप्पडिइ अक [विपरि + इ] विपरीत होना, उलटा होना। विप्पडिएइ (सूत्र १,१२,१०)।

विप्पडिघाय पु [विप्रतिघात] प्रतिबन्ध, अटकाव (णाया १, १६—पत्र २४५)।

विप्पडिवह पुं [विप्रतिपथ] विपरीत मार्ग (उप १०३१ टी)।

विप्पडिवण्ण देखो विप्पडिवन्न (पव ७३ टी)।

विप्पडिवत्ति स्त्री [विप्रतिपत्ति] १ विरोध (निसे २४८०)। २ प्रतिज्ञा-भग (उप ५१६)।

विप्पडिवन्न वि [विप्रतिपन्न] १ जिसने विशेष रूप मे स्वीकार किया हो वह, 'मिच्छ-त्तपव्ववेहिं परिवड्ढमाणेहिं २ मिच्छत्तं विप्प-डिवन्ने जाए जाए यावि होत्था' (णाया १, १३—पत्र १७८)। २ विरोध-प्राप्त, विरोधी बना हुआ (आचा १, ८, १, ३, सूत्र १, ३, १, ११)।

विप्पडिवेअ } सक [विप्रति + वेदय्]
विप्पडिवेद } १ जानना। २ विचारना। विप्पडिवेएइ (आचा १, ५, ४, ४), विप्पडि-वेदेंति (सूत्र २, १, १५)।

विप्पडिसिद्ध वि [विप्रतिषिद्ध] आपस मे असमत (उवर ३)।

विप्पडीव वि [विप्रतीप] प्रतिकूल (माल १७७)।

विप्पणट्ठ वि [विप्रनष्ट] पलायित, नाश-प्राप्त (स ३५३, उवा)।

विप्पणम } सक [विप्र + णम्] १ नमना।
विप्पणव } २ अक. तत्पर होना। विप्पणवंति (सूत्र १, १२, १७)। वकृ. विप्पणमत (राज)।

विप्पणस्स अक [विप्र + नश्] नष्ट होना, विनाश-प्राप्त होना। विप्पणस्सइ (कस) भवि विप्पणस्सिहिइ (महानि ४)

विप्पणास पु [विप्रणाश] विनाश (धर्मवि ५७)।

विप्पतार सक [विप्र + तारय्] ठगना। विप्पतारसि (धर्मवि १४७)। कर्म. विप्पता-रीअदि (शौ) (नाट—शकु ७५)।

विप्पदीअ } (शौ) देखो विप्पडीव (नाट—
विप्पदीव } मालती १०६, ११६, मृच्छ ४८)।

विप्पमाय पुं [विप्रमाद] विविध प्रमाद (सूत्र १, १४, १)।

विप्पमुच सक [विप्र + मुच्] छोडना, मुक्त करना। कर्म. विप्पमुच्चइ (उत्त २५, ४१)।

विप्पमुक्क वि [विप्रमुक्त] विमुक्त (औप, सुर २, २३७, सुपा ४४५)।

विप्पय न [दे] १ खल-भिक्षा। २ दान। ३ वि वापित। ४ पु वैद्य (दे ७, ८६)।

विप्पयार सक [विप्र + तारय्] ठगना। विप्पयारंति, विप्पयारेमि (कुप्र ६, त्रि ८८)। कर्म विप्पयारीअइ (कुप्र ४८)। संकृ. विप्पआरिअ (त्रि ८८)।

विप्पयारणा स्त्री [विप्रतारणा] वचना, ठगाई (कुप्र ४४, मोह ६४)।

विप्पयारिअ वि [विप्रतारित] वञ्चित, ठगा हुआ (मोह १०१)।

विप्परद्ध वि [दे] विशेष पीडित, 'करचरण-दंतमुसलप्पहारेहिं विप्परद्धं समाणे त चेव महद्दहं पाणीयं पादेउ (?पाउ) समोयरेंति' (णाया १, १—पत्र ६४)। देखो परद्ध।

विप्परामुस देखो विपरामुस, 'आवती केयावती लोगंसि विप्परामुसति अट्ठाए अणट्ठाए वा, एएसु चेव विप्परामुसंति' (आचा)।

विप्परिणम देखो विपरिणम। भवि विप्परि-णमिस्सति (भग)।

विप्परिणय देखो विपरिणय (भग ५, ७ टी—पत्र २३६, काल)।

विप्परिणाम देखो विपरिणाम = विपरि + णमय्। विप्परिणामंति विप्परिणामेंति (आचा)। संकृ विप्परिणामइत्ता (भग)।

विप्परिणाम देखो विपरिणाम = विपरिणाम (आचा, भग ५, ७ टी—पत्र २३६)।

विप्परिणामिय देखो विपरिणामिय (भग ६, १—पत्र २५०)।

विप्परियास सक [विपरि + आसय्] व्यत्यय करना, उलटा करना। विप्परियासेइ (निचू ११)। वकृ. विप्परियासत (निचू ११)।

विप्परियास पु [विपर्यास] १ व्यत्यय, विपरीतता (आचा, सूम १, ७, ११)। २ परिभ्रमण (सूत्र १, १२, १३, १, १३, १२)।

विडवंत (पउम ८, ३२)। कवकृ विडंविज्जत (सुपा ७०)।
विडव सक [वि + डम्वय्] विवृत करना, फैलाना। विडवेइ (भग ३, २—पत्र १७३)।
विडव पुन [विडम्व] १ तिरस्कार, अपमान (भवि)। २ माया जाल, प्रपच, 'अणिच्चं च कामाण सेवाविडव' (श्रु ६, कप्पू)।
विडवग वि [विडम्वक] विडवना-जनक, 'जइवेसविडवगा नवर' (संवोव १४, उव)।
विडवण न [विडम्वन] नीचे देखो (भवि)।
विडवणा स्त्री [विडम्वना] १ तिरस्कार, अपमान (दे)। २ दुःख, कष्ट (धण ४२)। ३ अनुकरण, नकल। ४ उपहास। ५ कपट-वेष (कप्पू)।
विडंविय वि [विडम्वित] विडम्वना-प्राप्त (कप्प; गउड, ३०२)।
विडज्झमाण वि [विदह्यमान] जो जलाया जाता हो वह, जलता हुआ (आचा १, ६, ४, १)।
विडड्ढ देखो विदड्ढ (गा ६७१)।
विडप्प } पुं [दे] राहु (दे ७, ६५, पाअ,
विडअ } गउड, वज्जा ६८, दे ७, ६५)।
विडव पु [विटप] १ पल्लव (सुर ३, ४५)। २ शाखा (भवि ११०)। ३ पल्लव-विस्तार। ४ स्तम्व गुच्छा (प्राप्र)।
विडवि पु [विटपिन्] वृक्ष, पेड, दरख्त (पाअ, सुपा ८८, गउड, सण)।
विडविड } सक [रचय्] वनाना, निर्माण
विडविड्ड } करना। विडविडइ, विडविड्डइ (हे ४, ९४, षड्)। भूका. विडविड्डीअ (कुमा)।
विडिअ वि [व्रीडित] लज्जित (से ११, ५०, पि ८१)।
विडिंचिअ } वि [दे] विकराल, भीषण,
विडिचिर } भयकर (दे ७, ६९)।
विडिम पुं [दे] १ वाल-मृग (दे ७, ८९)। २ गण्डक, गेंडा (दे ७, ८९, गउड)। ३ वृक्ष, पेड, 'दुमा य पायवा रुक्खा आगमा विडिमा तरू' (दसनि १, ३५)। ४ शाखा (पण्ह २, ४—पत्र १३० औप; तदु २१)।
विडिमा स्त्री [दे] शाखा (पण्ह २, ४, तदु २१, राज)।
विडुच्छअ वि [दे] निषिद्ध, प्रतिषिद्ध (षड्)।
विडुविल्ल वि [दे] भीषण, भयकर (नाट—मालती १३७)।
विडूर पुं [विदूर] १ पर्वत-विशेष। २ देश-विशेष, जहाँ वैदूर्य रत्न पैदा होता है (कप्पू)।
विडोमिअ पुं [दे] गण्डक मृग, गेंडा (दे ७, ५७)।
विड्ड वि [दे] १ दीर्घ, लम्वा (दे ७, ३३)। २ प्रपंच, विस्तार (दे १, ४)।
विड्ड वि [व्रीड, व्रीडित] लज्जित, शरमिन्दा, 'लज्जिया विलिया विड्डा' (निर १, १, पि २४०)।
विड्डर देखो विड्डिर, 'अकडविड्डरमेयं किं देव पारद्धं' (उप ७६८ टी)।
विड्डा स्त्री [व्रीडा] लज्जा, शरम (दे ७, ६१, पि २४०)।
विड्डार न [विद्वार] देखो विड्डेर (राज)।
विड्डिर न [दे] १ आभोग (दे ७, ९०)। २ आटोप, आडम्वर (पाअ)। ३ वि रौद्र भयकर (दे ७, ९०)।
विड्डिरिल्ल स्त्री [दे] रात्रि, निशा (दे ७, ६७)।
विड्डुम देखो विद्दुम (पाअ)।
विड्डुरी स्त्री [दे] आटोप, आडम्वर, 'किं लिंगविड्डुरीधारणेण' (उव)।
विड्डुरिल्ल वि [वैडूर्यवत्] वैडूर्य रत्नवाला (सुपा ५९)।
विड्डेर न [दे. विड्डेर] नक्षत्र-विशेष, पूर्व द्वारवाले नक्षत्रो में पूर्व दिशा से जाने के वदले पश्चिम दिशा से जाने पर पडता नक्षत्र (विसे ३४०९)। देखो विड्डार।
विढज्ज (शौ) सक [वि + दह्] जलाना। संकृ विढज्जिअ (पि २१२)।
विढणा स्त्री [दे] पार्ष्णि, फीली का नीचला भाग (दे ७, ६२)।
विढत्त वि [आर्जित] उपार्जित, पैदा किया हुआ (हे ४, २५८, गउड, श्रा १०, प्रासू ७४, भवि)।
विढत्ति स्त्री [अर्जिति] अर्जन, उपार्जन (श्रा १२)।
विढप्प अक [व्युत् + पद्] व्युत्पन्न होना। विढप्पति (प्राकृ ६४)।
विढप्प° नीचे देखो।
विढव सक [अर्ज्] उपार्जन करना, पैदा करना। विढवइ (हे ४, १०८ महा, भवि)। कर्म विढविज्जइ, विढप्पइ (हे ४, २५१, कुमा, भवि)।
विढवण न [अर्जन] उपार्जन (सुर १, २२१)।
विढविअ वि [अर्जित] पैदा किया हुआ (कुमा, सुपा २८०, महा)।
विढिअ वि [वेष्टित] लपेटा हुआ (सुपा ३८८)।
विणइ वि [विनयिन्] दूर करनेवाला, 'आरभविणईणं' (आचा)।
विणइत्त वि [विनयवत्] विनयवाला, विनय को ही सर्व-प्रधान माननेवाला (सूअनि ११८)।
विणइत्तु वि [विनेतृ] विनीत वनानेवाला, विनय की शिक्षा देनेवाला (उत्त २९, ४)।
विणइत्तु देखो विणी = वि + नी।
विणइय वि [विनयित] शिक्षित किया हुआ, सिखाया हुआ (राज)। देखो विणय।
विणइल्ल देखो विणइत्त (कुमा)।
विणएत्तु देखो विणी = वि + नी।
विणट्ठ वि [विनष्ट] विनाश-प्राप्त (उव, प्रासू ३१, नाट—मृच्छ १५२)।
विणड सक [वि + नटय् , वि + गुप्] १ व्याकुल करना। २ विडम्वना करना। विणडेइ (गउड ६८), विणडति (उव), विणडउ (हे ४, ३८५, पि १००)।
विणडिअ देखो विनडिअ (गा ६३० टी)।
विणण न [वान] वुनना (वृह १)।
विणभ सक [खेदय्] खिन्न करना। विणभइ (धात्वा १५३)।
विणम सक [वि + नम्] विशेष रूप से नमना। वकृ. विणमत (नाट—मालवि ३४)।
विणमि देखो विनमि (राज)।

विप्फुरण न [विस्फुरण] १ विजृम्भण, विकास (श्रावक २४५, सुर २, २३७)। २ स्पन्दन, हिलन (गउड)।

विप्फुरिय वि [विस्फुरित] विजृम्भित (सुपा २०४, मण)।

विप्फुल्ल वि [विफुल्ल] विकसित, प्रफुल्ल, 'तह तह सुण्हा विप्फुल्लगडविवरमुही हसइ' (वज्जा ४४)।

विप्फोडअ पुं [विस्फोटक] फोडा (नाट—शकु २७, पि ३११, प्राप्र)।

विफंद देखो विप्फंद। वकृ विफंदमाण (आचा १, ४, ३, ३)।

विफाल सक [वि + पाटय्] १ विदारण करना। २ उखाडना। संकृ विफालिय (आचा २, ३, २, ६)।

विफुट्ट अक [वि + स्फुट्] फटना। वकृ चितंति किं विफुट्टंत चंडवभडयस्स रवो' (सुपा ४५)।

विफुरण देखो विप्फुरण (सुपा २५)।

विबंधक वि [विबन्धक] विशेष रूप से बाँधनेवाला (पच २, १)।

विबद्ध वि [विबद्ध] १ विशेष बद्ध। २ माहित (सूअ १, ३, २, ६)।

विबाहग वि [विबाधक] विरोधी, बाधक (धर्मसं ४६६)।

विबुद्ध वि [विबुद्ध] जागृत (सिरि ६१५)।

विबुध (शौ) नीचे देखो (पि ३६१)।

विबुह पु [विबुध] १ देव, त्रिदश (पाअ, सुर १, ४५)। २ पण्डित, विद्वान् (सुर १, ४५)। °चंद पु [°चन्द्र] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य (सुपा ६५८)। °पहु पुं [°प्रभु] इन्द्र (सुर १, १७२)। °पुर न [°पुर] स्वर्ग (सम्मत्त १७५)।

विबुहेसर पु [विबुधेश्वर] इन्द्र (श्रावक ५०)।

विबोह पु [विबोध] जागरण (पचा १, ४२)।

विबोहग देखो विबोहय (कप्प)।

विबोहण न [विबोधन] ज्ञान कराना, 'अबुहजणविबोहणकरस्स' (सम १२३)।

विबोहय वि [विबोधक] १ विकासक, 'कुमुयवणविबोहय' (कप्प ३८ टि)। २ ज्ञान-जनक (विसे १७४)।

विब्बोअ पु [बिब्बोक] विलास, लीला, 'हेला ललिअ लीला विब्बोओ विब्भमो विलासो य' (पाअ)। देखो बिब्बोअ।

विब्भंग देखो विभंग (भग, पव २२६, कम्म ४, १४, ४०)।

विब्भंगि वि [विभङ्गिन्] विभंग-ज्ञानवाला (भग)।

विब्भंत वि [विभ्रान्त] १ विशेष भ्रान्त, चक्कर में पडा हुआ (आचा १, ६, ४, ३)। २ पु प्रथम नरक-भूमि का सातवाँ नरक-केन्द्रक—स्थान-विशेष (देवेन्द्र ४)।

विब्भंस पुं [विभ्रंश] अतिपात, हिंसा, प्राण-वियोजन (राज)।

विब्भट्ठ वि [विभ्रष्ट] विशेष भ्रष्ट (प्रति ४०)।

विब्भम पुं [विभ्रम] १ विलास (पाअ, गउड ५५, १९७, कुमा)। २ स्त्री की शृंगार के अंग-भूत चेष्टा-विशेष (गउड, गा ५)। ३ चित्त-भ्रम, पागलपन (राय)। ४ शृंगार-सबन्धी मानसिक अशान्ति (कप्पू)। ५ विशेष भ्रान्ति (सुपा ३२७, गउड)। ६ संदेह। ७ आश्चर्य। ८ शोभा (गउड)। ९ भूषणों का स्थान-विपर्यय (कुमा)। १० रावण का एक सुभट (पउम ५६, २९)। ११ मैथुन, अब्रह्म। १२ काम-विकार (पण्ह १, ४—पत्र ६६)।

विब्भल वि [विह्वल] १ व्याकुल, व्यग्र (सुर ८, ५७, १२, १६८)। २ व्यासक्त, तल्लीन। ३ पुं. विष्णु, नारायण (षड् ४०, हे २, ५८)।

विब्भलिअ वि [विह्वलित] व्याकुल किया हुआ (कुमा)।

विब्भवण न [दे] उपधान, ओसीसा (दे ७, ६८)।

विब्भाडिय वि [दे] नाशित (भवि)।

विब्भार देखो वेब्भार (पि २६६)।

विब्भिडि पु [दे] मत्स्य की एक जाति (विपा १, ८ टी—पत्र ८३)।

विब्भेइअ वि [दे] सूई से विद्ध (दे ७, ६७)।

विभंग पुं [विभङ्ग] १ विपरीत अवधिज्ञान, वितथ अवधिज्ञान, मिथ्यात्व-युक्त अवधिज्ञान (पव २२६ टी)। २ ज्ञान-विशेष (सूअ २, २, २५)। ३ विराधना, खण्डन। ४ मैथुन, अब्रह्म (पण्ह १, ४—पत्र ६६)। देखो विहंग = विभंग।

विभंगु पुंस्त्री [दे] तृण-विशेष, 'एरंडे कुरुविंदे करकरसुंठे तहा विभंगू य' (पण्ण १—पत्र ३३)।

विभंगुर वि [विभङ्गुर] विनश्वर (सुपा ६०५, प्रासू ६६, पुप्फ २२०)।

विभंज सक [वि + भञ्ज्] भंग डालना, तोडना। संकृ. विभंजिऊण (काल)।

विभंतडी (अप) स्त्री [विभ्रान्ति] विशिष्ट भ्रम (हे ४, ४१४)।

विभग्ग वि [विभग्न] भांगा हुआ, खण्डित (पउम ११३, २६)।

विभज सक [वि + भज्] १ बाँटना, विभाग करना। २ विकल्प से प्राप्त करना, पक्षतः प्राप्ति करना—विधान और निषेध करना। कर्म. विभज्जति (तंदु २)। कवकृ. विभज्जमाण (णाया १, १—पत्र ६०, उप २६४ टी)। संकृ. विभजिऊण (धर्मवि १०५)। देखो विभज्ज।

विभजण न [विभजन] विभाग भाग-बँटाई (पव ३८)।

विभज्ज देखो विभज। विभज्ज (कम्म ६, १०)।

विभज्जवाद } पु [विभज्यवाद] स्याद्वाद,
विभज्जवाय } अनेकान्तवाद, जैन दर्शन (धर्मसं ६२१, सूअ १, १४, २२, उवर ६६)।

विभत्त वि [विभक्त] १ विभाग-युक्त, बाँटा हुआ (नाट—शकु ४६, कप्प)। २ भिन्न, अलग, जुदा 'विभत्त धम्म झोसेमाणे' (आचा कप्प, महा)। ३ न विभाग (राज)।

विभत्ति स्त्री [विभक्ति] १ विभाग, भेद (भग १२, ५—पत्र ५७४, सूअनि ६६, उत्तनि ३६), 'लोगस्स पएसेसु अणंतरपरंपराविभत्तीहिं' (पच २, ३६, ४०, ४१)। २ व्याकरण प्रसिद्ध प्रत्यय-विशेष (ओघभा ४, चेइय २६८, सूअनि ६६)।

विभमण न [दे] उपधान, ओसीसा (दे ७ ६८ टी)।

विणिजुज सक [विनि + युज्] जोडना, कार्य में लगाना, प्रवृत्त करना। विणिजुजइ (कुप्र ३६१)।

विणिज्जंतण वि [विनियन्त्रण] १ नियन्त्रण-रहित। २ प्रकटित, खुला। ३ निर्व्याज, कपट-रहित (से ११, २१)।

विणिज्जमाण देखो विणी = वि + नी।

विणिज्जरण न [विनिर्जरण] निर्जरा, विनाश (विसे ३०७६, सबोध ५१)।

विणिज्जरा स्त्री [विनिर्जरा] ऊपर देखो (सबोध ४६)।

विणिज्जिअ वि [विनिर्जित] पराभूत, जिसका पराभव किया गया हो वह (महा, रंभा, नाट—विक्र ६०)।

विणिद्द वि [विनिद्र] खिला हुआ, विकसित (पाअ)।

विणिद्दलिय वि [विनिर्दलित] विदारित, तोड़ा हुआ (सण)।

विणिद्धुण सक [विनिर् + धू] कँपाना। वकृ. विणिद्धुणमाण (पि ५०३)।

विणिप्फन्न वि [विनिष्पन्न] संसिद्ध, संपन्न (उप ३६६)।

विणिप्फिडिअ वि [विनिरिफटित] विनिर्गत, बाहर निकला हुआ, 'सालिग्गामाउ तओ वदणहउ विणिप्फिडिओ' (पउम १०५, २३)।

विणिबुड्ड देखो विणिवुड्ड (पि ५६६)।

विणिब्भिन्न वि [विनिर्भिन्न] विदारित, 'कुतविणिब्भिन्नकरिकलहमुक्कसिक्कारपउरम्मि' (णमि १६)।

विणिमीलिअ वि [विनिमीलित] मीचा हुआ, मूँदा हुआ, 'अलिअपसुत्तअविणिमीलि-अच्छ दे सुहअ मज्झ ओआसं' (गा २०)।

विणिमुक्क देखो विणिम्मुक्क (पि ५६६)।

विणिमुय देखो विणिम्मुय। वकृ. विणिमुयंत (औप, पि ५६०)।

विणिम्मविअ वि [विनिर्मित] विरचित, बनाया हुआ, कृत (उप ७२८ टी)।

विणिम्माण न [विनिर्माण] रचना, कृति (विसे ३३१२)।

विणिम्मिअ देखो विणिम्मविअ (गा १५६, २३५, पाअ, महा)।

विणिम्मुक्क वि [विनिर्मुक्त] परित्यक्त, 'सव्व-कम्मविणिम्मुक्कं त वयं बूम माहणं' (उत्त २५, ३४)।

विणिम्मुय वि [विनिर् + मुच्] छोडना, परित्याग करना। वकृ. विणिम्मुयमाण (णाया १, १—पत्र ५३, पि ४८५)।

विणिय देखो विणीअ (भवि)।

विणियट्ट देखो विणिवट्ट। विणियट्टिज्ज (दस ८, ३४)। वकृ. विणियट्टमाण (आचा १, ५, ४, ३)।

विणियट्ट वि [विनिवृत्त] १ पीछे हटा हुआ। २ प्रणष्ट, 'विणियट्ट ति पणट्ठ' (चेइय ३४६)।

विणियट्टणया स्त्री [विनिवर्तना] निवृत्ति (उत्त २६, १)।

विणियत्त देखो विणियट्ट (सुपा ३३५, भवि, गा ७१, कुप्र १८२)।

विणियत्ति स्त्री [विनिवृत्ति] निवृत्ति, उपरम (कुप्र १८२, गउड)।

विणिरोह पुं [विनिरोध] प्रतिबन्ध, अटकाव (भवि)।

विणिवट्ट अक [विनि + वृत्] निवृत्त होना, पीछे हटना। वकृ. विणिवट्टमाण (आचा १, ५, ४, ३)।

विणिवट्टण देखो विनियट्टण (राज)।

विणिवट्टणया स्त्री [विनिवर्तना] निवर्तन, विराम (भग १७, ३—पत्र ७२७)।

विणिवडिअ वि [विनिपतित] नीचे गिरा हुआ (दे १, १५७)।

विणिवत्ति देखो विणियत्ति (उप ७२८ टी)।

विणिवाइ वि [विनिपातिन्] मार गिराने-वाला (गा ६३०)।

विणिवाइज्जंत देखो विणिवाए।

विणिवाइय न [विनिपातिक] एक तरह का नाटक (राज)।

विणिवाइय वि [विनिपातित] मार गिराया हुआ, व्यापादित (उप ६४८ टी, महा, स ५६, सिक्खा ८२)।

विणिवाए सक [विनि + पातय्] मार गिराना। कवकृ. विणिवाइज्जंत (पउम ४५, ८)।

विणिवाडिअ देखो विणिवाइय (दे १, १३८)।

विणिवाद } पु [विनिपात] १ निपात,
विणिवाय } अन्तिम पतन, विनाश, 'पर-खग्गेण वि दिट्ठो विणिवादो किं न लोगम्मि' (धर्मंस १२५, १२६, स २६५, ७ २)। २ मरण, मौत (से १३, १६, गउड, गा १०२)। ३ संसार (राज)।

विणिवायण न [विनिपातन] मार गिराना (पउम ४, ४८)।

विणिवार सक [विनि + वारय्] रोकना, निवारण करना, निषेध करना। विणिवारइ (भवि)। कवकृ. विणिवारीअंत (नाट—मृच्छ १५४)।

विणिवारण न [विनिवारण] १ निवारण, प्रतिषेध। २ वि निवारण करनेवाला (पचा ७, ३२)।

विणिवारि वि [विनिवारिन्] निवावरण-कर्त्ता (पचा ७, ३२)।

विणिवारिय वि [विनिवारित] प्रतिषिद्ध, निवारित (महा)।

विणिविट्ठ वि [विनिविष्ट] १ उपविष्ट, स्थित (कुप्र १५२), 'सकम्मविणिविट्ठमरिसकयचेट्ठो' (उव, वै ६०)। २ आसक्त, तल्लीन (आचा)।

विणिवित्त देखो विणियट्ट (उप ७८६)।

विणिवित्ति देखो विणियत्ति (विसे २६३६, उवर १२७, श्रावक २५१, २५२, पंचा १, १७)।

विणिवुड्ड वि [विनिमग्न] निमग्न, बूडा हुआ, तराबोर, सराबोर, 'तइया ठिओ सि जं किर पलोट्टसरभसेयविणिवुड्डो' (गउड ४६०)।

विणिवेइअ वि [विनिवेदित] जनाया हुआ, ज्ञापित (से १४, ४०)।

विणिवेस पु [विनिवेश] १ स्थिति, उप-वेशन। २ विन्यास, रचना (गउड)।

विणिवेसिअ वि [विनिवेशित] स्थापित, रखा हुआ (गा ६७४, सुर ३, ६७)।

विणिव्वर न [दे] पश्चात्ताप, अनुशय (दे ७, ६८)।

विमद्द सक [वि + मर्दय्] १ संघर्ष करना। २ मर्दन करना। कवक्र. विमद्दिज्जमाण (गिरि १०३८)।

विमद्द पु [विमर्द] १ विनाश, 'आसत्तपुरिससंतइदालिद्दविमद्दसंजणयं' (सुपा ३८, गउड)। २ संघर्ष (गउड ७२२; कुप्र ४६)।

विमद्दण न [विमर्दन] ऊपर देखो (भवि)।

विमन्न सक [वि + मन्] मानना, गिनना। वक्र. 'सव्वं तुणं व तं विमन्नतो' (सुर ४, २४)।

विमग्ग पुं [दे] पर्व-वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३३)।

विमर (अप) नीचे देखो। विमरह (पिंग)।

विमरिस सक [वि + मृश्] विचारना। कृ. विमरिसिदव्व (शौ) (अभि १८४)।

विमरिस पु [विमर्श] विकल्प, विचार (राज)।

विमल त्रि [विमल] १ मल-रहित, विशुद्ध, निर्मल (कप्प, औप, से ८, ४६, पउम ५१, २७, कुमा, प्रासू २, १५७, १६१)। २ पुं इस अवसर्पिणी-काल में उत्पन्न तेरहवें जिनदेव (सम ४३, पडि)। ३ भारतवर्ष में होनेवाले बाईसवें जिन-भगवान् (सम १५४)। ४ एक प्राचीन जैन आचार्य और कवि जिन्होंने विक्रम की प्रथम शताब्दी में 'पउमचरिअ' नामक जैन रामायण बनाई है (पउम ११८ ११८)। ५ एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। ६ भगवान् अजितनाथ का पूर्वजन्मीय नाम (सम१५१)। ७ पुंन सहस्रार देवलोक के इन्द्र का एक पारियानिक विमान (ठा ८—पत्र ४३७)। ८ ब्रह्म-देवलोक में स्थित एक देव-विमान (सम १३, देवेन्द्र १४०)। ९ एक ग्रैवेयक देव-विमान (सम ४१, देवेन्द्र १४१)। १० लगातार छः दिनों का उपवास। ११ लगातार सात दिनों का उपवास (संबोध ५८)। १२ पुं अहिंसा, दया (पण्ह २, १—पत्र ९९)। °घोस पु [°घोष] एक कुलकर पुरुष (सम १५०)। °चंद पु [°चन्द्र] एक जैन आचार्य (महा)। °प्पहा स्त्री [°प्रभा] भगवान् शीतलनाथजी की दीक्षा-शिविका (विचार १२९)। °वर पु [°वर] आनत-प्राणत देवलोक के इन्द्र का एक पारियानिक विमान (ठा १०—पत्र ५१८)। °वाहण पु [°वाहन] १ भारतवर्ष के भावी प्रथम जिनदेव, जिनके दूसरे नाम देवसेन तथा महापद्म होंगे (ठा ९—पत्र ४५९)। २ कुलकर पुरुष-विशेष (सम १०४, १५०, १५३, पउम, ३, ५५)। ३ भारतवर्ष का एक भावी चक्रवर्ती राजा (सम १५४)। ४ एक जैन, जो भगवान् अभिनन्दन के पूर्व जन्म में गुरु थे (पउम २०, १२, १७)। ५ भगवान् संभवनाथ का पूर्व-जन्मीय नाम (सम १५१)। °सामि पु [°स्वामिन्] सिद्धचक्रजी का अधिष्ठायक देव (सिरि २०४)। °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] षष्ठ वासुदेव की पटरानी (पउम २०, १८६)।

विमलण न [विमर्दन] मणि आदि को शाण पर घिसना, घर्षण (दे १, १४८)।

विमलहर पु [दे] कलकल, कोलाहल (दे ७, ७२)।

विमला स्त्री [विमला] १ ऊर्ध्व दिशा (ठा १०—पत्र ४७८)। २ धरणेन्द्र के लोकपालों की अग्र-महिषियों के नाम (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ गीतरति और गीतयश नाम के गन्धर्वेन्द्रों की अग्र-महिषियों के नाम (ठा ४, १—पत्र २०४)। ४ चौदहवें जिनदेव की दीक्षा-शिविका (सम १५१)।

विमलिअ वि [विमर्दित] जिसका मर्दन किया गया हो वह, घृष्ट (से ६, ७)।

विमलिअ वि [दे] १ मत्सर से उक्त। २ शब्द-सहित, शब्दवाला (दे ७, ७२)।

विमलेसर पु [विमलेश्वर] सिद्धचक्रजी का अधिष्ठायक देव (सिरि ७७३)।

विमलोत्तर पु [विमलोत्तर] ऐरवत वर्ष का एक भावी जिनदेव (सम १५४)।

विमहिद (शौ) वि [विमथित] जिसका मथन किया गया हो वह (नाट—मालवि ४०)।

विमाउ स्त्री [विमातृ] सौतेली माँ (सत्त ३५, १७१)।

विमाण सक [वि + मानय्] अपमान करना, तिरस्कार करना। विमाणेज्जह (महा ५९)।

विमाण पुन [विमान] १ देव का निवास-भवन (सम २, ८, ९, १०, १२, ठा ८, १०, उवा, कप्प देवेन्द्र २५१, २५३, पण्ह १, ४—पत्र ६८, ति १२)। २ देव-यान, आकाश यान, आकाश में गति करने में समर्थ रथ (से ९, ७२, कप्प)। ३ अपमान, तिरस्कार। ४ वि. मान रहित, प्रमाण शून्य (से ९, ७२)। °पविभत्ति स्त्री [°प्रविभक्ति] जैन ग्रन्थ-विशेष (सम ६६)। °भवण न [°भवन] विमानाकार गृह (कप्प)। °वासि पु [°वासिन्] देवों की एक उत्तम जाति, वैमानिक देव (पण्ह १, ४—पत्र ६८, ति १२)।

विमाणणा स्त्री [विमानना] अवगणना, तिरस्कार (चेइय १३२)।

विमाणिअ वि [विमानित] अपमानित (पिंड ४१३, कप्प, महा)।

विमिस्स अ [विमृश्य] विचार करके। °गारि वि [°कारिन्] विचार-पूर्वक करनेवाला (स १८४, ३२४)।

विमिस्स वि [विमिश्र] मिश्रित, मिला हुआ, युक्त (पच २, ७, महा)।

विमिस्सण न [विमिश्रण] मिश्रण, मिलावट (सम्मत्त १७१)।

विमीसिय वि [विमिश्रित] विमिश्र, मिश्रित (भवि)।

विमुउल देखो विमउल (राज)।

विमुच सक [वि + मुच्] १ छोड़ना, बन्धन-मुक्त करना। २ परित्याग करना। विमुचइ (सण)। कर्म विमुचई (आचा २, १, ६, ९)। वक्र. विमुचंत (महा), विमुच [?मुंच] माण (णाया १, ३—पत्र ९५)। कृ. विमोत्तव्व (उप २३४ टी), विमोय (ठा २, १—पत्र ४७)।

विमुकुल देखो विमउल (पण्ह १, ४—पत्र ७२)।

विमुक्क वि [विमुक्त] १ छूटा हुआ, छुट्टा, बन्धन-रहित, 'जवविमुक्केण आसेण' (महा ४९, पाअ आचानि ३४३)। २ परित्यक्त, 'विमुक्कजीयाण' (महा ७७)। ३ नि:संग, संग-रहित (आचा २, १६, ८)।

विण्हि देखो वण्हि = वृष्णि (राज)।

विण्हु पुं [विष्णु] भगवान् श्रेयांसनाथ के पिता का नाम (सम १५१)। २ श्रवण नक्षत्र का अधिष्ठाता देव (ठा २,३—पत्र ७७)। ३ यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि का नववाँ पुत्र (अंत ३)। ४ एक जैन मुनि, विष्णुकुमार नामक मुनि (कुलक ३३)। ५ एक श्रेष्ठी (उप १०१४)। ६ वासुदेव नारायण, श्रीकृष्ण। ७ व्यापक। ८ वह्नि, अग्नि। ९ शुद्ध। १० एक स्मृति-कर्ता मुनि (हे २,७५)। ११ आर्य जेहिल के शिष्य एक जैन मुनि (राज)। १२ स्त्री ग्यारहवें जिनदेव की माता का नाम (सम १५१)। °कुमार पुं [°कुमार] एक विख्यात जैन मुनि (पंडि)। °सिरी स्त्री [°श्री] एक सार्थवाह-पत्नी (महा)। देखो विन्हु।

वितंड देखो वितड्ड (आचा)।

वितण्ह वि [वितृष्ण] तृष्णा-रहित, निःस्पृह (उप २६८ टी)।

वितत पुं [वितत] १ वाद्य का एक प्रकार का शब्द (ठा २, ३—पत्र ६३)। २ एक महाग्रह (सुज्ज २०—पत्र २९५)। देखो विअत्त। ३ देखो विअय = वितत (ठा ४, ४—पत्र २७१)।

वितत न [दे] कार्य, काम काज (दे ७, ६४)।

वितत्त वि [वितृप्त] विशेष तृप्त (पण्ह १, ३—पत्र ६०)।

वितत्थ पुं [वितस्त] १ एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव विशेष (ठा २,३—पत्र ७८)। २ वि भय-भीत, डरा हुआ (महा)।

वितत्था स्त्री [वितस्ता] एक महा-नदी (ठा ५, ३—पत्र ३५१)।

वितद्द वि [वितर्द] १ हिंसक। २ प्रतिकूल (आचा)।

वितर देखो विअर = वि + तॄ। वितराम, वितरामो (पि १०, ४५५)।

वितर (अप) अक [वि + स्तारय्] विस्तार करना। वितर (पिंग)।

वितरण देखो विअरण = वितरण (राज)।

वितल वि [वितल] शबल, चितकबरा (राज)।

वितह वि [वितथ] मिथ्या, असत्य, झूठा (आचा कप्प, मरण)।

वितिकिच्छिअ वि [विचिकित्सित] फल की तरह संदेह वाला (भग)।

वितिकिण्ण देखो विइकिण्ण (निचू १६)।

वितिक्कंत देखो विइक्कंत (भग)।

वितिगिंछ सक [वि + चिकित्स्] १ विचार करना, विमर्श करना। २ संशय करना। ३ निन्दा करना। वितिगिंछइ (सूअ २, २, ४९, ५०, पि ७४, २१५)।

वितिगिछा देखो वितिगिच्छा (आचा १, ३, ३, १ १, ५, ५, २, पि ७४)।

वितिगिछिय देखो वितिकिच्छिअ (पि ७४, २१५)।

वितिगिच्छ देखो वितिगिंछ। वितिगिच्छामि (पि २१५, ३२७)।

वितिगिच्छा स्त्री [विचिकित्सा] १ संशय, शंका, वहम (सूअ १, ३, ३ ५, पि ७४)। २ चित्त-विप्लव, चित्त-भ्रम। ३ निन्दा (सूअ १, १०, ३, पि ७४)।

वितिगिच्छिअ देखो वितिकिच्छिअ (भग)।

वितिगिट्ठ देखो विइगिट्ठ (राज)।

वितिमिर वि [वितिमिर] १ अन्धकार-रहित, विशुद्ध, निर्मल (सम १३७, पण्ण १७—पत्र ५११, ३६—पत्र ८४७, कप्प)। २ अज्ञान-रहित (औप)। ३ पुं ब्रह्म देवलोक का एक विमान-प्रस्तट (ठा ६—पत्र ३६७)।

वितिरिच्छ वि [वितिर्यञ्च्] वक्र, टेढा (स ३३५, पि १५१, भग ३, २—पत्र १७३)।

वित्त वि [दे] दीर्घ, लम्बा (दे ७, ३३)।

वित्त न [वित्त] १ द्रव्य, धन (पाअ, सूअ १, २, १, २२, औप)। २ वि. प्रसिद्ध, विख्यात (सूअ २, ७, २, उत्त १, ४४)। °म वि [°वत्] धनी (द्र ५)।

वित्त न [वृत्त] १ छन्द, पद्य, कविता (सूअनि ३८, सम्मत्त ८३)। २ चरित्र, आचरण (सिरि १०९३)। ३ वृत्ति, वर्त्तन (हे १, १२८)। ४ वि. उत्पन्न, संजात (स ७२७, महा)। ५ अतीत, गुजरा हुआ (महा)। ६ दृढ़, मजबूत। ७ वर्त्तुल, गोल। ८ अधीत, पठित। ९ मृत (हे १, १२८)। १० संसिद्ध, पूर्ण (सुर ४, ३९, महा)। °प्पाय वि [°प्राय] पूर्ण-प्राय (सुर ७, ८४)। देखो वट्ट = वृत्त।

वित्त देखो वेत्त = वत्र (सूअनि १०८)।

°वित्त देखो पित्त (उप ५२२)।

वित्तइ वि [दे] १ गर्वित, अभिमानी। २ पुं विलसित, विलास। ३ गर्व, अहंकार (दे ७, ९१)।

वित्तंत पुं [वृत्तान्त] समाचार, खबर (पउम २३, १८, सुपा २०४, भवि)।

वित्तत्थ देखो वितत्थ (सुख ६, १, नाट—वेणी २९)।

वित्तविय देखो वट्टिअ, वत्तिअ = वर्त्तित (भवि)।

वित्तास सक [वि + त्रासय्] भयभीत करना, डराना। वित्तासए (उत्त २, २०)। वकृ वित्तासंत (पउम २८, २६)।

वित्तास पुं [वित्रास] भय, त्रास, डर (सुपा ४४१)।

वित्तासण न [वित्रासन] भय-प्रदर्शन (आव)।

वित्तासिअ वि [वित्रासित] डरा कर भगाया हुआ (सुपा ६५२)।

वित्ति पुं [वेत्रिन्] दरवान, प्रतीहार (कम्म १, ९)।

वित्ति स्त्री [वृत्ति] १ जीविका, निर्वाह-साधन (णाया १, १—पत्र ३७ स ६७६, सुर २, ४९)। २ टीका, विवरण (सम ४९, विसे १४२२, सार्ध ७३)। ३ वर्त्तन, आचरण। ४ स्थिति। ५ कौशिकी आदि रचना-विशेष। ६ अन्तःकरण आदि का एक तरह का परिणाम (हे १, १२८)। °अ वि [°द] वृत्ति देनेवाला (औप, अंत, णाया १, १ टी—पत्र ३)। °आर वि [°कार] टीका-कार, विवरण-कर्ता (कप्पू)। °च्छेअ, °च्छेय [°च्छेद] जीविका-विनाश (आचा, सूअ १, ११, २०)। देखो वित्ती° = वृत्ति।

वित्तिअ वि [वित्तिक] वित्त से युक्त, धन-वाला, वैभवशाली (औप, अंत, णाया १, १ टी—पत्र ३)।

विरइ स्त्री [विरति] १ विराम, निवृत्ति । २ सावद्य—पाप कर्म से निवृत्ति, संयम, त्याग (उव, आचा) । ३ छन्द शास्त्र-प्रसिद्ध विश्राम-स्थान, यति (चेइय ५०७) ।

विरइअ वि [विरचित] १ कृत, निर्मित, बनाया हुआ । २ सजाया हुआ (पाअ; औप, कप्प, पउम ११८, १२१, कुमा, महा, रभा, कप्पू)।

विरइअ देखो विराइअ (कप्प) ।

विरइयव्व देखो विरय = वि + रचय् ।

विरंचि पु [विरञ्चि] ब्रह्मा, विधाता (कुप्र ४०३, त्रि ८७, सम्मत्त १६२) ।

विरज्ज } अक [वि+रञ्ज्] १ रिक्त होना,
विरज्ज } उदासीन होना । २ रँग-रहित होना। विरज्जइ (उव, उत्त २६, २, महा) । वकृ. विरज्जत, विरज्जमाण, विरज्जमाण (से ४, १४, भवि, उत्त २६, २, गा १४६, २६६) ।

विरत्त वि [विरक्त] १ उदासीन, विराग प्राप्त (सम ५७, प्रासू १५५ १६६, महा) । २ विविध रँगवाला (आचा १, २, ३, ५) ।

विरत्ति स्त्री [विरक्ति] वैराग्य, उदासीनता (उप पृ ३२) ।

विरम अक [वि + रम्] निवृत्त होना, अट-कना । विरमइ (गा ७०८), विरमेज्जा (आचा), विरम, विरमसु (गा ३४५, १४६)। प्रयो , हेकृ. विरमावेउ (गा ३४६) ।

विरम पु [विरम] विराम, निवृत्ति (गउड, गा ४५६, ६०६, सुर ७, १६३) ।

विरमग देखो वेरमग (राज, प्रामा) ।

विरमाण सक [प्रति + पालय्] पालन करना, रक्षण करना । विरमाणइ (धात्वा १५३) ।

विरमाल सक [प्रति + ईक्ष्] राह देखना, वाट जोहना, प्रतीक्षा करना । विरमालइ (हे ४, १६३) । संकृ. विरमालिअ (कुमा) ।

विरमालिअ वि [प्रतीक्षित] जिसकी प्रतीक्षा की गई हो वह (पाअ) ।

विरय सक [वि + रचय्] १ करना, बनाना। २ सजाना, सजावट करना। विरएइ, विरअति, विरअआमि, विरयइ (प्राकृ ७४, कप्पू, पि ५६०, सण) । वकृ. विरयमाण (सुर १६, १५) । सकृ. विरइअ (नाट) । हेकृ. विरइउं (सुपा २) । कृ. विरइयव्व (पउम १६, १६) ।

विरय वि [विरत] १ निवृत्त, रुका हुआ विराम-प्राप्त (उवा, गा ५४१, द ४६) । २ पाप-कर्म से निवृत्त, संयमी, त्यागी (नाट, उव) । ३ न. विरति, विराम । ४ संयम, त्याग (द ४६, कम्म २, २) । °विरय वि [°विरत] आंशिक संयम रखनेवाला, जैन उपासक श्रावक (सम २६) ।

विरय पु [दे] छोटा जल-प्रवाह, छोटी नदी (दे ७, ३६), 'विरया तणुसरिआओ' (पाअ) ।

विरय पु [विरजस्] १ महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष (सुज्ज २०) । २ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४१) ।

विरयण स्त्रीन [विरचन] १ कृति, निर्माण । २ सजावट (नाट—मालती २८, कप्पू)। स्त्री. °णा (सुपा ६५, से १५, ७१), 'पडिवट्टए विअ तमर-विरअणा' (कप्पू) ।

विरया स्त्री [विरजा] १ गो-लोक में स्थित राधा की एक सखी । २ उसके शाप से बनी हुई एक नदी, 'लघिअविरआसरिअ' (अच्चु ८६) ।

विरल वि [विरल] १ अल्प, थोडा, 'परदुक्खे दुक्खिआ विरला' (हे २, ७२, ४, ४१२, षा, प्रासू १८०, गउड) । २ अनिबिड । ३ विच्छिन्न (गउड, उव) ।

विरलि स्त्री [दे] वस्त्र-विशेष, डोरिया, डोरी-वाला कपडा, 'विरलिमाई भूरिभेया' (पव ८४ टी) ।

विरलिअ वि [विरलित] विरल बना हुआ, विरल किया हुआ (गउड) ।

विरली देखो विराली (राज) ।

विरल्ल सक [तन्] विस्तारना, फैलाना । विरल्लइ, विरल्लेइ, विरल्लति (हे ४, १३७, षड् , गउड) ।

विरल्ल पुं [तान] विस्तार, फैलाव, (वव ४) ।

विरल्लण न [तनन] विस्तार, फैलाव, 'अट्ठ-मयविरल्लणे सया रमइ' (उव) ।

विरल्लिअ वि [तत] विस्तारवाला, विस्तारित (दे ७, ७१, पाअ, कुमा, णाया १, १७—पत्र २३२, ठा ४, ४—पत्र २७६), 'जह उल्ला साडीया आसुं सुक्कइ विरल्लिया संती' (विसे ३०३२) ।

विरल्लिअ देखो विरलिअ (राज, भवि) ।

विरल्लिअ वि [दे] जलार्द्र, भींजा हुआ (दे ७, ७१) ।

विरस अक [वि + रस्] चिल्लाना, क्रन्दन करना । वकृ. विरसंत (सण) ।

विरस वि [विरस] रस-रहित, शुष्क (णाया १, ५—पत्र १११, गउड, हे १, ७, सण)। २ विरुद्ध रसवाला (भग ७, ६—पत्र ३०५) । ३ पु. रामभ्राता भरत के साथ जैन दीक्षा लेनेवाला एक राजा (पउम ८५, ३) ४ न. तप-विशेष, निर्विकृतिक तप (संबोध ५८) ।

विरस न [दे] वर्ष, साल, बारह मास (दे ७, ६२) ।

विरसमुह पु [दे] काक, कौआ (दे ७, ४६) ।

विरसिय वि [विरसित] रस-हीन, रस-विरहित (हम्मीर ५१) ।

विरह सक [वि + रह्] १ परित्याग करना । २ अलग करना । कवकृ विरहिज्जंत (नाट—शकु ८२) । कृ विरहियव्व (शौ) (नाट—शकु ११७) ।

विरह पु [विरह] १ वियोग, विछोह, जुदाई (गउड, हे १, ८४, ११५, प्रासू १५६, कुमा, महा) । २ अन्तर, व्यवधान (भग) । ३ पु. वृक्ष-विशेष, फुल्लंति विरहरुक्खा नोऊण पंचमुग्गार' (संबोध ४७, श्रा ३५), 'धरा-विओ पच्चासन्ने विरहो नाम तरू, वाइऊण वीणं फुल्लाविओ सो' (कुप्र १३६), 'फुल्लंति विरहिणो विरहयव्व लहिऊण पंचम वेवि' (कुप्र २४८) । ४ अभाव । ५ विनाश (राज) । ६ हरिवंश में उत्पन्न एक राजा (पउम २२, ६८) ।

विरह वि [विरथ] रथ-रहित (पउम १०, ६३) ।

विदुम वि [विद्वस्] विद्वान्, जानकार (सूअ १, २, ३, १७)।

विदुर वि [विदुर] १ विचक्षण, विज्ञ (कुमा)। २ धीर। नागर, नागरिक (हे १, १७७)। ४ पुं. कौरवों के एक प्रख्यात मन्त्री (णाया १, १६—पत्र २०८)।

विदुलतंग न [विद्युल्लताङ्ग] संख्या-विशेष, हाहाहूहू को चौरासी लाख से गुनने पर जो संख्या लब्ध हो वह (इक)।

विदुलता स्त्री [विद्युल्लता] संख्या-विशेष, विद्युल्लताग को चौरासी लाख से गुनने पर जो संख्या लब्ध हो वह (इक)।

विदुस देखो विदु, 'ण पमाणं अत्थि विदुसाणं' (धर्मसं ८८०)।

विदूसग } पु [विदूषक] मसखरा, राजा के
विदूसय } साथ रहनेवाला मुसाहब (सार्ध ६५, सम्मत्त ३०)।

विदेस देखो विएस=विदेश (णाया १, २—पत्र ७६, औप, पउम १, ६६, विसे १६७१, कुमा, प्रासू ४४)।

विदेसि वि [विदेशिन्] परदेशी (सुपा ७२)।

विदेसिअ वि [वैदेशिक] ऊपर देखो (सिरि ३९४)।

विदेह पु [विदेह] १ राजा जनक (ती ३)। २ पुं. व देश-विशेष, विहार का उत्तरीय प्रदेश जो आजकल 'तिरहुत' के नाम से प्रसिद्ध है, 'इहेव भारहे वासे पुव्वदेसे विदेहा णामं जणवया' (ती १७, अत)। ३ पुंन. वर्ष-विशेष, महाविदेह-क्षेत्र (पव १६३)। ४ वि. विशिष्ट शरीरवाला। ५ निर्लेप, लेप-रहित। ६ पुं अनग, कामदेव। ७ गृह-वास (कप्प ११०)। ८ निषध पर्वत का एक कूट। ९ नीलवत पर्वत का एक कूट (ठा ९—पत्र ४५४)। °जंबू स्त्री [°जम्बू] जम्बूवृक्ष विशेष, जिसके नाम से यह जम्बू-द्वीप कहलाता है (ज ४, इक)। °जच्च पु [°जार्च, °यात्य] भगवान् महावीर (कप्प ११०)। °दिन्ना स्त्री [°दत्ता] भगवान् महावीर की माता, रानी त्रिशला (कप्प)। °दुहिआ स्त्री [°दुहितृ] राजा जनक की पुत्री, सीता (ती ३)। °पुत्त पुं [°पुत्र] राजा कूणिक (भग ७, ८)।

विदेहदिन्न पुं [वैदेहदत्त] भगवान् महावीर (कप्प १० टी)।

विदेहा स्त्री [विदेहा] १ भगवान् महावीर की माता, त्रिशला देवी (कप्प ११० टी)। २ जानकी, सीता (पउम ४६, १०)।

विदेहि पु [वैदेहिन्] विदेह देश का अधिपति, तिरहुत का राजा (सूअ १, ३, ४, २)।

विदेही स्त्री [विदेही] राजा जनक की पत्नी, सीता की माता (पउम २६, २)।

विद्दंडिअ वि [दे] नाशित, नष्ट किया हुआ (दे ७, ७०)।

विद्दड्ढ पुं [विदग्ध] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २७)।

विद्दव सक [वि+द्रावय्] १ विनाश करना। २ हैरान करना, उपद्रव करना। ३ दूर करना, हटाना। ४ झरना, टपकना। विद्दवई (कुप्र २८०)। वकृ. विद्दवयंत (रयण ७२)। कवकृ 'रज्ज रक्खइ न परेहिं विद्दविज्जत' (कुप्र २७, सुर १३, १७०)।

विद्दव पु [विद्रव] १ उपद्रव, उपसर्ग, 'परचक्कचरडचोराइविद्दवा दूरमुवगया सव्वे' (कुप्र २०)। २ विनाश (णाया १, ६—पत्र १५७, धर्मवि २३)।

विद्दविअ वि [विद्रवित] १ विप्लावित (से ४, ६०)। २ दूर किया हुआ, हटाया हुआ (गा ८८)। ३ विनाशित (भवि, सण)।

विद्दा अक [वि+द्रा] खराब होना। विद्दाइ (से ४, २९)।

विद्दाण वि [विद्राण] १ म्लान, निस्तेज, फीका, 'विद्दाणमुहा ससोगिल्ला' (सुर ६, १२४), 'अदीणविद्दाणमुहकमलो' (यति ४३) 'दारिद्दमविद्दाणं नज्जइ आयारमित्तओ तुज्झ' (कुप्र १९५)। २ शोकातुर, दिलगीर, 'विद्दाणो परियणो' (स ४७३, उप ९०४, उप ३२० टी)।

विद्दाय वि [विद्रुत] १ विनष्ट (कुमा)। २ पलायित। ३ द्रव-युक्त, द्रव-प्राप्त (हे १, १०७, षड्)।

विद्दाय अक [विद्वस्य्] खुद को विद्वान् मानना। वकृ विद्दायमाण (आचा)।

विद्दार देखो विद्दार (वव १)।

विद्दारण (अप) वि [विदारण] चीरनेवाला, फाड़नेवाला। स्त्री °णी (भवि)।

विद्दाविद देखो विद्दविअ (भवि)।

विद्दुम पु [विद्रुम] १ प्रवाल, मूँगा (से २९, गउड, जी ३)। २ उत्तम वृक्ष (से २, २९)। °भ पुं [°भ] नववें बलदेव का पूर्व-जन्म का गुरु (पउम २०, १९३)।

विद्दुय वि [विद्रुत] अभिभूत, पीड़ित, 'अग्गिभयविद्दु (?द्द)या (णाया १, १—पत्र ६५)।

विद्दूणा स्त्री [दे] लज्जा, शरम (दे ७, ६५)।

विद्देस पु [विद्वेष] द्वेष, मत्सर (पण्ह १,२—पत्र २६)।

विद्देस वि [विद्वेष्य] द्वेष-योग्य, अप्रिय (पण्ह १, २—पत्र २९)।

विद्देसण न [विद्वेषण] एक प्रकार का अभिचार-कर्म, जिससे परस्पर मे शत्रुता होती है (स ६७८)।

विद्देसि वि [विद्वेषिन्] द्वेष-कर्ता (कुप्र ३६७)।

विद्देसिअ देखो विदेसिअ (श्रा १२)।

विद्देसिअ वि [विद्वेषित] द्वेष-युक्त (भवि)।

विद्ध सक [व्यध्] वीधना, छेद करना। विद्धइ (धात्वा १५३, नाट—रत्ना ७)। कवकृ विद्धिज्जत (स ८८)। संकृ विद्धूण (सूत्र १, ५, १, ९)।

विद्ध वि [विद्ध] वीधा हुआ, वेध किया हुआ (से १, १३, भवि)।

विद्ध देखो वुड्ढ=वृद्ध (उत्त ३२, ३, हे १, १२८, भवि)।

विद्धंस अक [वि+ध्वस्] विनष्ट होना। विद्धसइ (ठा ३, १—पत्र १२३)। वकृ. विद्धसमाण (सूत्र १, ५, १८)।

विद्धस सक [वि+ध्वसय्] विनष्ट करना। भवि. विद्धसेहिति (भग ७, ६—पत्र ३०५)।

विद्धस पु [विध्वंस] १ विनाश (सुर १, १२)। २ वि. विनाश-कर्ता, 'जहा से तिमिरविद्धसे उत्तिट्ठते दिवायरे' (उत्त ११, २४)।

विरुद्ध वि [विरुद्ध] विरोधवाला, विपरीत, प्रतिकूल उलटा (औप, गउड)। °यारि वि [°चारिन्] विपरीत आचरण करनेवाला (उप ७२८ टी)।

विरुअ देखो विरूव (दे ६, ७५)।

विरुह अक [वि + रुह्] विशेष रूप से उगना, अकुरित होना। विरुहति (उत्त १२, १३)।

विरुह देखो विरुढ (पण्ण १—पत्र ३६, श्रा २०)।

विरुअ } वि [विरूप] १ कुरूप, भौंडा, विरूव } कुडौल, खराब, कुत्सित (गा २६३, भवि, स्वप्न ४४, सुर १, २६, उप ७२८ टी)। २ विरुद्ध, प्रतिकूल, उलटा (सुर ११, ८०)। ३ बहुविध, अनेक तरह का, नानाविध (आचा)।

विरुह पुन [विरूढ] अकुरित द्विदल-धान्य (पव ४)।

विरेअ सक [वि + रेचय्] १ मल को नीचे से निकालना। २ बाहर निकालना। विरेअइ (हे ४, २६)। वकृ विरेअत (कुमा ६, १७)।

विरेअण न [विरेचन] १ मल-निस्सारण, जुलाब (उवकु २५, णाया १, १३—पत्र १८१)। २ वि भेदक, विनाशक, 'सयल-दुक्खविरेयण समणत्तणाति' (स २७८, ६६३)।

विरेहिअ देखो विरिंहिअ = तत (णाया १, १७ टी—पत्र २३४, गउड ४३५)।

विरोयण पु [विरोचन] अग्नि, वह्नि (भत्त १२३)।

विरोल सक [मन्थ्] विलोडना, विलोडन करना। विरोलइ (हे ४, १२१, षड)।

विरोल सक [वि + लग्] १ अवलम्बन करना। २ आरोहण करना, चढना। विरोलइ (धात्वा १५३)।

विरोलिअ वि [मथित] विलोडित (पाअ, कुमा, भवि)।

विरोह सक [वि + रोधय्] विरोध करना। विरोहति (सबोध १७)।

विरोह पु [विरोध] विरुद्धता, प्रतीपता, वैर, दुश्मनाई (गउड, नाट—मालती १३८, भवि)।

विरोहय वि [विरोधक] विरोध-कर्ता (भवि)।

विरोहि वि [विरोधिन] दुश्मन, प्रतिपन्थी पि ४०५, नाट—शकु १६)।

विरोहिय वि [विरोधित] विरोध-प्राप्त (वज्जा ७०)।

विल अक [व्रीड्] लज्जा करना, शरमिन्दा होना। सकृ. विलिऊण (स ३७५)।

विल न [विल] नमक-विशेष, एक तरह का नोन (आचा २, १, ६, ६)।

विलइअ वि [दे] १ अधिज्य, धनुष की डोरी पर चढाया हुआ। २ दीन, गरीब (दे ७, ९२)। ३ ऊपर चढाया हुआ, आरोपित 'आणा जस्स विलइआ सीसे सेसव्व हरिहरे-हिंपि' (धण २५), 'पढुम चिअ रहुवइणा उवरि हिअए तुलिओ भरोव्व विलइओ' (से ३, ५)।

विलओलग पु [दे] लुटाक, लुटेरा (राज)।

विलओली स्त्री [दे] १ विस्वर वचन। २ विलोकना, तलाशी (पण्ह १, ३—पत्र ५३)। देखो विलकोली°।

विलंघ सक [वि + लङ्घ्] उल्लघन करना। विलघेंति (धर्मसं ८४२)। वकृ. विलघत (काल)।

विलंघण न [विलङ्घन] उल्लघन, अतिक्रमण, 'ही ही सीलविलघण' (उप ५९७ टी)।

विलवल (अप) देखो विहलवल (भण)।

विलघलिअ (अप) वि [विह्वलाङ्गित] व्याकुल शरीरवाला, 'मुच्छविलघलिउ' (सण)।

विलंब देखो विडंब = वि + डम्बय्। वकृ विलंबमाण (धर्मसं १००५)।

विलंब अक [वि + लम्ब्] १ देरी करना। २ सक लटकाना, धारण करना। कर्म. विलंबीअदि (शौ) (नाट—विक्र ३१)। वकृ. विलबत (से ३, २९)। सकृ विलंबिअ (नाट—वेणी ७३)। कृ विलंबणिज्ज (श्रा १४)।

विलंब पुं [विलम्ब] १ देरी, अशीघ्रता (गा ५८८)। २ तप-विशेष, पूर्वार्ध तप (संबोध ५८)। ३ न नक्षत्र-विशेष, सूर्य के द्वारा परि-भोग कर छोड़ा हुआ नक्षत्र (विसे ३४०९)।

विलंबग वि [विलम्बक] धारण करनेवाला (सूअ १, ७, ८)।

विलंबणा देखो विडंबणा (प्रासू १०३)।

विलंबणा स्त्री [विडम्बना] निर्वर्तना, बनावट, कृति (अणु १३९)।

विलंबि न [विलम्बिन] १ सूर्य के द्वारा भोकर छोड़ा हुआ नक्षत्र। २ सूर्य जिसपर हो उसके पीछे का तीसरा नक्षत्र (वव १)।

विलंबिअ वि [विलम्बित] १ विलम्ब-युक्त (कप्प)। २ न नक्षत्र-विशेष (वव १)। ३ नाट्य-विशेष (राय)।

विलक्ख वि [विलक्ष] १ लज्जित, शरमिन्दा (से १०, ७०, सुर १२, ६६, सुपा १६८, ३२८, महा, भवि)। २ प्रतिभा शून्य, मूढ (से १०, ७०)।

विलक्ख न [वैलक्ष्य] विलक्षता, लज्जा, शरम (सुर ३, १७६)।

विलक्खिम पुंस्त्री ऊपर देखो, 'उवसमियविल-क्खिम—' (भवि)।

विलग्ग सक [वि + लग्] १ अवलम्बन करना, सहारा लेना। २ चढना, आरोहण करना। ३ पकडना। ४ चिपटना। गुजराती में 'वळगवु'। विलग्गसि, विलग्गेज्जासि (महा)। वकृ. विलग्गत (पि ४८८)।

विलग्ग वि [विलग्न] १ लगा हुआ, चिपटा हुआ, संलग्न, 'जह लोहसिला अप्पपि बोलए तह विलग्गपुरिसपि' (सबोध १३, से ४, २, ३, १४२, गा १८८, ५५६, महा)। २ अवलम्बित (सुर १०, ११४)। ३ आरूढ, 'अन्नया आयरिया सिद्धसेल तेण सम वदगा विलग्गा' (सुख १, ३)।

विलज्ज अक [वि + लस्ज्] शरमाना। विलज्जामि (कुप्र ५७)।

विलट्ठि पुंस्त्री [वियष्टि] साढे तीन हाथ में चार अगुल कम लट्ठी, जैन साधुओं का उप-करण-दंड (पव ८१)।

विलद्ध वि [विलब्ध] अच्छी तरह प्राप्त, सुलब्ध, (पिंग)।

विपंची स्त्री [विपञ्ची] वाद्य-विशेष, वीणा (पण्ह १, ४—पत्र ६८, २, ५—पत्र १४९)।

विपक्क वि [विपक्व] पका हुआ (उप पृ २११)। देखो विवक्क।

विपक्ख देखो विवक्ख, 'निजियविपक्ख-लक्खो' (सुपा १०३, २४०)।

विपक्खिय वि [विपक्षिक] विरोधी, दुश्मन (सवोध ५६)।

विपच्चइय न [विप्रत्ययिक] बारहवें जैन अग ग्रन्थ का सूत्र-विशेष (सम १२८)।

विपच्चमाण वि [विपच्यमान] १ जो पकाया जाता हो वह (श्रा २०, स ८६), 'आमासु अप्पक्कासु विपच्चमाणासु मसपेसीसु' (सवोध ४४)। २ दग्ध होता, जलता, 'तव्विरहानलजालाविपच्चमाणस्स मह निच्च' (रयण ४१)।

विपज्जअ देखो विवज्जय (राज)।

विपज्जास देखो विवज्जास (नाट—मृच्छ २२९)।

विपडिवत्ति देखो विप्पडिवत्ति (विसे २६१४, सम्मत्त २२८)।

विपडिसेह सक [विप्रति + सिध्] निषेध करना। कृ. विपडिसेहेयव्व (भग ५, ७—पत्र २३४)।

विपणोल्ल सक [विप्र + नोदय्] प्रेरणा करना। विपणोल्लए (आचा १, ५, २, २, पि २४४)।

विपण्ण देखो विवण्ण = विपन्न (चारु ८)।

विपत्ति देखो विवत्ति = विपत्ति (गा २८२ अ, राज)।

विपत्थाविद (शौ) वि [विप्रस्तावित] आरब्ध, जिसका प्रारंभ किया गया हो वह, 'एदाए चोरिआए एसम्ह घरे कलहो विपत्थाविदो' (हास्य १२१)।

विपरामुस सक [विपरा + मृश्] १ समारम्भ करना, हिंसा करना। २ पीडा उपजाना, हैरान करना। ३ अक उत्पन्न होना, उपजना। विपरामुसइ, विपरामुसंति, विपरामुसह (आचा, पि ४७१)। देखो विप्परामुस।

विपराहुत्त वि [विपराङ्मुख] विशेष पराङ्मुख, अतिशय उदासीन (पउम ११५, २२)।

विपरिकम्म न [विपरिकर्मन्] शरीर की आकुञ्चन-प्रसारण आदि क्रिया (आचा २, ८, १)।

विपरिकुंचि वि [विपरिकुञ्चिन्] विपरिकुचित नामक वन्दन-दोषवाला, 'देसकहावित्तते कहेइ दरवदिए विपरिकुंची' (बृह ३)।

विपरिकुञ्चिय देखो विप्पलिउञ्चिय (राज)।

विपरिखल अक [विपरि + स्खल्] १ स्खलित होना, गिरना। २ भूल करना। वकृ. विपरिखलंत (अच्चु २२)।

विपरिणम अक [विपरि + णम्] १ बदलना, रूपान्तर को प्राप्त होना। २ विपरीत होना, उलटा होना। विपरिणमे (पिंड ३२७)। वकृ. विपरिणममाण (भग ७, १०—पत्र ३२५)।

विपरिणय वि [विपरिणत] रूपान्तर को प्राप्त (पिंड २६५)।

विपरिणाम सक [विपरि + णमय्] १ विपरीत करना, उलटा करना। २ बदलवाना, रूपान्तर को प्राप्त करना। विपरिणामेइ (स ५१३)। हेकृ. विपरिणामित्तए (उवा)।

विपरिणाम पुं [विपरिणाम] १ रूपान्तर-प्राप्ति (आचा, औप)। २ उलटा परिणाम, विपरीत अध्यवसाय (धर्मसं ५११)।

विपरिणामिय वि [विपरिणमित] रूपान्तर को प्राप्त (भग ६, १ टी—पत्र २५१)।

विपरिधाव सक [विपरि + धाव्] इधर उधर दौडना। विपरिधावई (उत्त २३, ७०)।

विपरियास देखो विप्परियास (राज)।

विपरिवसाव सक [विपरि + वासय्] रखना। विपरिवसावेइ (णाया १, १२—पत्र १७५)। वकृ. विपरिवसावेमाण (णाया १, १२)।

विपरीअ देखो विवरीअ (सूअ १, १, ४, ५, गा ५४ अ)।

विपलाअ अक [विपरा + अय्] दूर भागना। वकृ विपलाअंत (गा २९१)।

विपल्हत्थ देखो विवल्हत्थ (पि २८५)।

विपस्सि वि [विदर्शिन्] देखनेवाला (आचा)।

विपाग देखो विवाग (राज)।

विपिक्ख देखो विप्पेक्ख। वकृ विपिक्खंत (राज)।

विपिण देखो विविण (कुमा)।

विपित्त वि [दे] विकसित, खिला हुआ (दे ७, ६१)।

विपुल देखो विउल (णाया १, १—पत्र ७५, कप्प, पण्ह २, १—पत्र ९९)। °वाहण पुं [°वाहन] भारतवर्ष में होनेवाला बारहवाँ चक्रवर्ती राजा (सम १५४)।

विप्प न [दे] पुच्छ, दुम, पूँछ (दे ७, ५७)।

विप्प पुं [विप्र] ब्राह्मण, द्विज (हे १, १७७, महा)।

विप्प पु [विप्रुप्, विप्र] १ मूत्र और विष्ठा के बिन्दु। २ विष्ठा और मूत्र, 'मुत्तपुरीसाण विप्पुसो विप्पा अन्ने विडित्ति विष्ठा भासति य पत्ति पासवण' (विसे ७८१, औप, महा)।

विप्पइट्ठ देखो विप्पगिट्ठ (राज)।

विप्पइण्ण वि [विप्रकीर्ण] बिखरा हुआ, इधर उधर पटका हुआ (से २, ५, कस)।

विप्पइर सक [विप्र + कृ] इधर उधर पटकना, बिखेरना। विप्पइरामि (उवा)। वकृ. विप्पइरमाण (णाया १, ९—पत्र १५७)।

विप्पउज सक [विप्र + युज्] १ विरुद्ध प्रयोग करना। २ विशेष रूप से जोडना, 'अदुवा वायाओ विप्पउजंति' (आचा १, ८, १, ३)।

विप्पओअ, विप्पओग पुं [विप्रयोग] अलहदा, अलग, जुदा, विरह, वियोग (उत्तर १५, स २८१, चंड, पउम ४५, ४६, जी ४३, उत्त १३, ८, महा)।

विप्पकड वि [विप्रकट] विशेष रूप से प्रकट (भग ७, १०—पत्र ३२४)।

विप्पकिर देखो विप्पइर। वकृ. विप्पकिरेमाण (णाया १, १—पत्र ३९)।

विप्पक्ख देखो विपक्ख (पि १९९)।

विप्पगब्भिय वि [विप्रगल्भित] अत्यन्त धृष्ट (सूअ १, १, २, ५)।

विलुंगयाम वि [दे] निर्ग्रन्थ, अकिंचन, साधु, 'एस विलु गयामो भिक्खाए' (आचा २, १, २, ४)।

विलुंचण न [विलुञ्चन] उन्मूलन, जड से उखाड़ना (पण्ह १, १—पत्र २३)।

विलुंप सक [वि + लुप्] १ लूटना। २ काटना। ३ विनाश करना। विलुंपति, विलुपह (आचा; सूअ २, १, १६, पि ४७१), 'अत्थं चोरा विलुंपति' (महा)। वकृ. विलुंपमाण (सुपा ५७४)। कवकृ विलुप्पत, विलुप्पमाण (पउम १६, ३१, सुपा ८०, सुर २, २१, उवा)।

विलुंप सक [काङ्क्ष्] अभिलाष करना, चाहना। विलुंपइ (हे ४, १९२)।

विलुंपइत्तु वि [विलोप्तृ] विलोप-कर्त्ता, काटनेवाला (सूअ २, २, ६)।

विलुंपय पुं [दे] कीट, कीड़ा (दे ७, ६७)।

विलुंपिअ वि [काङ्क्षित] अभिलषित (कुमा ७, ३८, दे. ७, ६६)।

विलुंपिअ पु [दे. विलुप्त] अशित, कवलित, खाया हुआ, 'घत्थ कवलिअ असिअ विलुंपिअ वफिअ खइअ' (पाअ)। देखो विलुत्त।

विलुंपित्तु देखो विलुंपइत्तु (आचा)।

विलुक [दे] छिपा हुआ (भवि)।

विलुक वि [विलुञ्चित] विमुण्डित, सर्वथा केश-रहित किया हुआ (पिंड २१७)।

विलुत्त वि [विलुप्त] १ काटा हुआ, छिन्न, 'विलुत्तकम्मे' (पउम १०२, ५३, पण्ह १, ३—पत्र ५८)। २ लुण्टित, लुटा हुआ, 'इमाइ अडवीइ वाणियगमत्थो। मह पुरिसेहि विलुत्तो, पत्तं वित्त तहिं पउर' (सुर ११, ४८)। ३ विनष्ट, 'तुम उण जलविलुत्तप्पमाएण जेव सुमरसि' (कप्पू)।

विलुत्तहिअअ वि [दे] जो समय पर काम करने को न जानता हो वह (दे ७, ७३)।

विलुप्पत } देखो विलुंप।
विलुप्पमाण }

विलुलिअ वि [विलुलित] उपमर्दित (से ६, १२)।

विलूण वि [विलून] काटा हुआ, छिन्न (सुपा ६)।

विलेवण न [विलेपन] १ शरीर पर लगाने का चन्दन, कुंकुम आदि पिष्ट द्रव्य (कुमा, उवा, पाअ)। २ लेपन-क्रिया (औप)।

विलेविअ वि [विलेपित] विलेपन-युक्त (गउ)।

विलेविआ स्त्री [विलेपिका] पान-विशेष (राज)।

विलेहिअ वि [विलेखित] चित्रित किया हुआ (सुर १२, ११७)।

विलोअ सक [वि + लोक्] देखना। कर्म विलोइज्जति, विलोईअति (पि ११)। कवकृ. विलोइज्जमाण (उप पृ ९७)। संकृ. विलोइऊण (काप्र १९५)।

विलोअ पु [विलोक] आलोक, प्रकाश (उप पृ ३५८)।

विलोअ देखो विलोव (सुपा ४८०)।

विलोअण पुन [विलोचन] आंख, नेत्र (काप्र १९१, गा ९७०, सुपा ५२९)।

विलोअण न [विलोकन] १ देखना, निरीक्षण। २ वि देखनेवाला, 'लोयालोयविलोयणकेवलनाणेण नायमावस्स' (सुर ४, ८६)।

विलोट्ट अक [विसम् + वद्] १ अप्रमाणित होना, झूठा साबित होना। २ उलटा होना, विपरीत होना। विलोट्टइ, विलोट्टए (हे ४, १२९, भवि, स ७१६)।

विलोट्ट } वि [विसंवदित] १ जो झूठा
विलोट्टिअ } साबित हुआ हो (कुमा ६, ८८)। २ जो कहकर फिर गया हो, प्रतिज्ञा-च्युत, 'कमाए मयणमहिलाईलोयवरओ विलोट्टो सो' (उप ५९७ टी)। ३ विरुद्ध बना हुआ, 'चउरो महनरवइणो विलोट्टि (? ट्टि) या चउदिसि पि अइबलिणो' (सुपा ४५२)।

विलोड सक [वि + लोडय्] मथन करना। विलोडेइ (कुप्र ३४७)।

विलोडिय वि [विलोडित] मथित (कुप्र ७८)।

विलोभ सक [वि + लोभय्] १ लुब्ध करना, लुभाना, आसक्त करना। २ लालच देना। ३ विस्मय उपजाना। कृ विलोभणिज्ज (कुप्र १३८)।

विलोल देखो विलोड। वकृ. विलोलत (उप पृ ८७)।

विलोल अक [वि + लुठ्] लेटना, 'विलोलति महीतले विमूरियगमंगा' (पण्ह १, १—पत्र १८)।

विलोल वि [विलोल] चचल, अस्थिर (से २, १६, गउड, कप्पू)।

विलोव पुं [विलोप] लूट, डकैती, सव्वविलोवे जाए' (सुर १५, १८)।

विलोवण न [विलोपन] ऊपर देखो, 'परवणविलोवणाईण' (उव)।

विलोवय वि [विलोपक] लूटनेवाला, लुटेरा, 'अद्धाणम्मि विलोवए' (उत्त ७, ५)।

विलोह देखो विलोभ। हेकृ. विलोहदुं (शौ) (मा ४२)।

विलोहण वि [विलोभन] १ आश्चर्य-कारक। २ लुभानेवाला, 'मुद्धमइविलोहणं नेयं' (श्रावक १३०)।

विल्ल अक [वेल्ल्] चलना, हिलना, 'विल्लंति दुदुमपल्लवा' (रंभा)।

विल्ल देखो विल्ल (हे १, ८५, राज)।

विल्ल वि [दे] १ अच्छ, स्वच्छ। २ विलसित, विलास-युक्त (दे ७, ८८)। ३ पुन. सुगधी द्रव्य-विशेष, जो धूप के काम में आता है, 'उज्झतविल्लगुग्गुलुवंसियमियधूमसंघाय' (स ४३६)।

विल्लय देखो चिल्लअ (औप)।

विल्लय देखो वेल्लग (सुपा २७६)।

विल्लरी स्त्री [दे] केश, बाल (दे ७, ३२)।

विल्लल देखो विज्जल (कुमा)।

विल्लहल देखो वेल्लहल (प्रवि २३)।

विल्ली स्त्री [विल्वी] गुच्छ-वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३२)।

विल्ह वि [दे] धवल, सफेद (दे ७, ६१)।

विव देखो इव (हे २, १८२, गा २९०, ६०९ अ, कुमा)।

विअइ स्त्री [विपद्] विपत्ति, कष्ट, दुःख (उप ७७१, हे ४, ४००)। °गर वि [°कर] दुःख-जनक (कुमा)।

विअड स्त्री [विवृति] व्याख्या, विवरण, टीका (कुप्र १९)। देखो विवदि।

विप्परियासणा स्त्री [विपर्यासना] व्यत्यय करना (निचू ११)।

विप्परुद्ध वि [विप्ररुद्ध] तिरस्कृत, 'हयनिह यविप्परुद्धो तूओ' (पउम ८, ८५)।

विप्पल देखो विप्प = विप्र (प्राकृ ३७)।

विप्पलभ सक [विप्र + लभ्] ठगना। विप्पलभेमि (स ५०६)।

विप्पलम्भ पुं [विप्रलम्भ] १ वञ्चना, ठगाई (उप २४)। २ शृङ्गार की एक अवस्था—जिसमें उत्कृष्ट अनुराग होने पर भी प्रिय समागम नहीं होता (सुपा १६४)। ३ विपर्यास, व्यत्यय, वैपरीत्य (धर्मसं ३०४)। विरह, वियोग (कप्पू)।

विप्पलभअ वि [विप्रलम्भक] प्रतारक, ठगनेवाला (मुच्छ ४७)।

विप्पलंभिअ वि [विप्रलम्भित] १ प्रतारित। २ विरहित (सुपा २१६)।

विप्पलद्ध वि [विप्रलब्ध] वञ्चित, प्रतारित (वाट ४५, स ४१८, ६८०)।

विप्पलय पुन [दे] विविधता, विचित्रता, 'तदट्ठु सो सव्वं जाणइ सवघविप्पलयं' (धर्मवि १२७)।

विप्पलविद (शौ) न [विप्रलपित] निरर्थक वचन, बकवाद (स्वप्न ८१)।

विप्पलाअ देखो विपलाअ। भूका. विप्पलाइत्था (विपा १, २—पत्र २६)। वकृ विप्पलायमाण (णाया १, १—पत्र ६५)।

विप्पलाअ } पु [विप्रलाप] १ परिवेदन,
विप्पलाव } रोना, कन्दन, 'अविओगो विप्पलाओ' (रुदु ८७, रयण ६४)। २ निरर्थक वचन, बकवाद (उत्त १३, ३३)। ३ विरहालाप (पउम ४४, ६८)।

विप्पलिउंचिअ न [विपरिकुञ्चित] गुरु-वन्दन का एक दोष, सपूर्ण वन्दन न करके बीच में बातचीत करने लग जाना (पव २—गाथा १५२)।

विप्पलुंपग वि [विप्रलोपक] लूटनेवाला, लुटेरा (पण्ह १, ३—पत्र ४४)।

विप्पलोहण वि [विप्रलोभन] लुभानेवाला (स ७६३)।

विप्पव पुं [विप्लव] १ देश का उपद्रव, क्रान्ति। २ दूसरे राजा के राज्य आदि से भय (हे २, १०६)। ३ शरीर की विसस्थुलता, अस्वस्थता (कुमा)।

विप्पवर न [दे] भल्लातक, भिलाँवा (दे ७, ६६)।

विप्पवस अक [विप्र + वस्] प्रवास में जाना, देशान्तर जाना। संकृ विप्पवसिय (आचा २, ५, २, ३)।

विप्पवसिय वि [विप्रोषित] देशान्तर में गया हुआ, प्रवास में गया हुआ (णाया १, २—पत्र ७६, १, ७—पत्र ११५)।

विप्पवास पु [विप्रवास] प्रवास, देशान्तर-गमन (प्रति १००)।

विप्पसन्न वि [विप्रसन्न] १ विशेष प्रसन्न, खुश। २ प्रसन्न-चित्त का मरण (उत्त ५, १८)।

विप्पसर अक [विप्र + सृ] फैलना। भूका. 'वहवे हत्थी··· दिसो दिसं विप्पसरित्था' (पि ५१७)।

विप्पसाय सक [विप्र + सादय्] प्रसन्न करना। विप्पसायए (आचा १, ३, ३, १)।

विप्पसीअ अक [विप्र + सद्] प्रसन्न होना। विप्पसीएज्ज (उत्त ५, ३०, सुख ५, ३०)।

विप्पहय वि [विप्रहत] आहत, जखमी (सुर ६, २२१)।

विप्पहाइय वि [विप्रभाजित] विभक्त, बँटा हुआ (औप)।

विप्पहीण } वि [विप्रहीण] रहित, वर्जित
विप्पहूण } (सं ७७, स १६१, पि १२०, ५०३)।

विप्पावग वि [दे] हास्य-कर्ता, उपहास करनेवाला (सुख १, १३)।

विप्पिअ पुन [विप्रिय] १ अप्रिय, अनिष्ट (णाया १, १८—पत्र २१३, गा २५०, से ४, ३६, हे ४, ४२३)। २ अपराध, गुनाह (पाअ)। °आरय वि [°कारक] १ अप्रिय-कर्ता। २ अपराध-कर्ता (हे ४, ३४३)।

विप्पिडिअ वि [दे] नाशित (दे ७, ७०)।

विप्पीइ स्त्री [विप्रीति] अप्रीति (पण्ह १, ३—पत्र ४२)।

विप्पु स्त्री [विप्रुष्] बिन्दु, अवयव, अंश, 'मुत्तपुरीसाण विप्पुसा विप्पा' (औप, विसे ७८१)।

विप्पुअ वि [विप्लुत] उपद्रुत, उपद्रव-युक्त (दे ६, ७६)।

विप्पुस पुंन. देखो विप्पु, 'असुइस्स विप्पुसेणवि' (पिंड १६५)।

विप्पेक्ख सक [विप्र + ईक्ष्] निरीक्षण करना, देखना। वकृ विप्पेक्खंत (पण्ह १, १—पत्र १८)।

विप्पेक्खिअ वि [विप्रेक्षित] निरीक्षित (पण्ह २, ८—पत्र १२१, भग ६, ३३—पत्र ४६६)।

विप्पोसहि स्त्री [विप्रौषधि] आध्यात्मिक-शक्ति-विशेष, जिसके प्रभाव से योगी के विष्ठा और मूत्र का बिन्दु औषधि का काम करता है (पण्ह २, १—पत्र ६६, औप, विसे ७७६, संति २)।

विप्फंद अक [वि + स्पन्द्] इधर-उधर चलना, तड़फना। वकृ विप्फंदमाण (आचा)।

विप्फंदिअ वि [विस्पन्दित] इधर-उधर भटका हुआ, परिभ्रान्त,

'खज्जतेण जलथले सकम्म-
विप्फडि(?दि)एण जीवेणं।
तिरियभवे दुक्खाइं छुहतण्हा-
ईणि भुत्ताइं।' (पउम ६५, ५२)।

विप्फरिस पु [विस्पर्श] विरुद्ध स्पर्श (प्राप्र)।

विप्फाडग वि [विपाटक] चीरनेवाला, विदारक (पण्ह १, ४—पत्र ७२)।

विप्फाडिअ वि [दे विपाटित] नाशित (दे ७, ७०)।

विप्फारिय वि [विस्फारित] १ विस्तारित (उप पृ १५२)। २ विकासित (सुपा ८३)।

विप्फाल सक [दे] पूछना, पृच्छा करना। विप्फालेइ (वव १)।

विप्फाल देखो विप्फाल। सकृ. विप्फालिय (राज)।

विप्फाल पुं [दे] पृच्छा, प्रश्न (वव १ टी)।

विप्फालणा स्त्री [दे] ऊपर देखो (वव १ टी)।

विप्फालिय देखो विप्फारिय (राज)।

विप्फुड वि [विस्फुट] स्पष्ट, व्यक्त (रंभा)।

विप्फुर अक [वि + स्फुर्] १ होना। २ विकसना। ३ तडफडना। ४ फरकना, हिलना। विप्फुरइ (संबोध ३४, काल, भवि)। वकृ विप्फुरंत (उत्त १६, ५४, पउम ६३, ३)।

विवर न [विवर] १ छिद्र (पाअ, गउड, प्रासू ७३)। २ कन्दरा, गुहा (से ६, ४६)। ३ एकान्त, विजन, 'कामज्झयाए गणियाए बहूणि अतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणे विहरति' (विपा १ २—पत्र ३४)। ४ पुन आकाश (भग २०, २)।

विवरमुह वि [विपराङ्मुख] विमुख, पराङ्मुख (पउम ७३, ३०, से ६,४२)।

विवरण न [विवरण] १ व्याख्यान, 'सोऊण सुमिणविवरणं' (सुपा ३८)। २ व्याख्या-कारक ग्रंथ, टीका (विसे ३४२२, पव—गाथा ३६, सम्मत्त ११६)। ३ वाल सँवारना (दे १, १५० पत्र ३८)।

विवरामुह } देखो विवरमुह (भवि, से ११, विवराहुत्त } ८५)।

विवरिअ वि [विवृत] व्याख्यात (विसे १:६६, स ७१७)। देखो विवुअ।

विवरिअ (अप) नीचे देखो (सण)।

विवरीअ वि [विपरीत] उलटा, प्रतिकूल (भग १, १ टी, गउड, कप्पू, जी १२, सुपा ६१०)। °ण्णु वि [°ज्ञ] उलटा, जाननेवाला (धर्मसं १२७४)।

विवरीर } (अप) ऊपर देखो 'घइ विवरीरी विवरेर } बुद्धडी होइ विणासहो कालि' (हे ४, ४२४), 'माइ कज्जु विवरेरओ दीसइ' (भवि)।

विवरुक्ख } वि [विपरोक्ष] परोक्ष, अ-विवरोक्ख } प्रत्यक्ष, 'जावच्चिय दहवयणो विवरोक्खो आवलीए घूयाए' (पउम ६ ११)। २ न अभाव, 'पासम्मि अहकारो होहिइ कह वा गुणाण विवरुक्खे' (गउड ७६)। ३ परोक्षता, अप्रत्यक्षपन,
'इय ताहे भावागयपच्चक्खायतणरवइगुणाण।
विवरोक्खम्मि वि जाया कईण सवोहणालावा'
(गउड १२०४)।

विवल अक [वि + वल्] मुडना, टेढ़ा होना (गउड ४२४)।

विवला } अक [विपरा + अय्] पलायन विवलाअ } करना, भाग जाना। विवलाइ, विवलायइ, विवलाअति (गउड ६३४, ११७६, पि ५६७)। वकृ. विवलाअंत, विवलाअमाण (से ३, ६०, गा २६१, गउड १६६, से १५, १४, गउड ४७२)।

विवलाअ वि [विपलायित] भागा हुआ (से १, २, १४, ३०)।

विवलिअ वि [विवलित] मोड़ा हुआ, परावर्त्तित (गा ६८०, गउड ४२४, काप्र १६५)।

विवलीअ देखो विवरीअ, 'विवलीअभासए' (अणु)।

विवल्हत्थ वि [विपर्यस्त] विपरीत, उलटा (से ६, ८)।

विवस वि [विवश] १ अधीन, परायत्त, परतन्त्र (प्रासू १०७, कुमा, कम्म १, ५७)। २ वाध्य, लाचार (कुप्र १३५)।

विवह सक [वि + वह्] विवाह करना, शादी करना (प्रामा)।

विवहण न [विव्यधन] विनाश (णाया १, १—पत्र ६५)।

विवाइअ व [विपादित] व्यापादित, जो जान से मार डाला गया हो वह, 'छिद्देण विवाइओ वाली' (पउम ३,१०, उत्त १६, ५६, ६३)।

विवाउग वि [विवादक] विवाद-कर्ता (स ४५६)।

विवाग पु [विपाक] १ कर्म—परिणाम, सुख-दुःखादि भोग रूप कर्म-फल (ठा ४, १—पत्र १८८, विपा १, १, उव, सुपा ११०, सण, प्रासू १२२)। २ प्रकर्ष, 'वयविवाग-परिणामा' (ठा ४, ४ टी—पत्र २८३)। ३ पाककाल, ज से पुणो होइ दुह विवागे' (उत्त ३२, ३३)। °विजय पुन [°विचय] धर्मध्यान का एक भेद, कर्म-फल का अनु-चिन्तन (ठा ४, ४—पत्र १८८)। °सुय न [°श्रुत] ग्यारहवाँ जैन अङ्ग-ग्रंथ (सम १, विपा १, १, औप)।

विवागि वि [विपाकिन्] विपाकवाला (अज्झ ११३)।

विवाद } पु [विवाद] झगडा, तकरार, वाक्-विवाय } कलह, जवानी लडाई (उवा, उव, स ३८५, सुपा २८२, ३६१)।

विवाय सक [वि + पादय्] मार डालना। विवाएमि (विसे २३८५)। वकृ. विवाएंत, विवायंत (पउम ५७, ३१, २७, ३७)।

विवाय देखो विवाग (सुर १२, १३६, स २७५, ३२१, स ११८, सण)।
'सव्व चिय सहदुक्ख
पुव्वज्जियसुकयदुक्कयविवाया।
जायइ जियाण ज ता
को खेओ सकयउवभोगे'
(उप ७२८ टी)।

विवायण्ण वि [विवादन्न] विवाद-कर्ता, 'ते दोवि विवायण्ण व रायकुले' (धर्मवि २०)।

विआविड न [दे] अतिशय गौरव (सक्षि ४७)।

विवाह सक [वि + वाहय्] लग्न करना, शादी करना। विवाहेमो (कुप्र १३१)।

विवाह देखो विआह = विवाह (उवा, स्वप्न ५१, नम १, ८८)। °गणय पुं [°गणक] ज्योतिपी, जोशी (दे ६, १११)। °जन्न पुं [°यज्ञ] विवाह-उत्सव (मोह ४४)।

विवाह देखो विआह=विवाघ (सम १, ८८)।

विवाह° देखो विआह° = व्याख्या (सम १, ८८)।

विवाहाविअ वि [विवाहित] जिसकी शादी कराई गई हो वह (महा)।

विवाहिय वि [विवाहित] जिसकी शादी हुई हो वह (महा, सण)।

विविइसा स्त्री [विविदिषा] जानने की इच्छा, जिज्ञासा (अज्झ ६६)।

विविक्क देखो विवित्त (सूअ १, १, २, १७)।

विविच सक [वि + विच्] पृथक् करना, अलग करना। सकृ विविचित्ता (सूअ २, ४, १०)।

विविण न [विपिन] जगल, वन (गउड, नाट—चैत ७२)।

विवित्त वि [विविक्त] १ रहित, वर्जित। २ पृथग्भूत (दस ८, ५३, भग ६, ३३, उत्त २६, ३१, उव)। ३ विविध, अनेकविध, 'आसवेहि विवित्तेहि तिप्पमाणो हियासए। गंथेहि विवित्तेहि आउकालस्स पारए'
(आचा १, ८, ८, ६, १०)।

विभय देखो विभज। विभए, विभयति (कम्म ६, ३१, आचा, उत्त १३, २३)।

विभयणा स्त्री [विभजना] विभाग (सम्म १०१)।

विभर सक [वि + स्मृ] विस्मरण करना, भूल जाना। विभरइ (पि ३१३)।

विभव देखो विहव (उव, महा)।

विभवण न [विभवन] विध्वंस-करण, खराब करना (राज)।

विभाइम वि [विभाज्य] विभाग योग्य (ठा ३, २—पत्र १३४)।

विभाइम वि [विभागिम] विभाग से बना हुआ (ठा ३, २—पत्र १३४)।

विभाग पु [विभाग] अंश, बाँट (काल, सण)।

विभागिम देखो विभाइम = विभागिम (उप पृ १४१)।

विभाय देखो विभाग (रमा)।

विभाय न [विभात] प्रकाश, कान्ति, तेज (सण)।

विभाय पु [विभाव] परिचय, 'कस्स विसमदसाविभाओ न होइ' (स १६८)।

विभाव सक [वि + भावय्] १ विचार करना, ख्याल करना। २ विवेक से ग्रहण करना। ३ समझना। वकृ. विभावत, विभावेंत, विभावेमाण (सुपा ३७७, उप ५९७ टी, कप्प)। कवकृ. विभाविज्जंत, विभाविज्जमाण (से ८, ३२, स ७५०)। हेकृ. विभावेत्तए (कस)। कृ. विभावणीय (पुप्फ २५४)।

विभाव देखो विभव, 'तओ महाविभावेण पूइऊण पेसिया गया य' (महा)।

विभावसु पु [विभावसु] १ सूर्य, रवि। २ रविवार (पउम १७, १७७)। देखो विहावसु।

विभाविय वि [विभावित] विचारित (सण)।

विभास सक [वि + भाष्] १ विशेष रूप से कहना, स्पष्ट कहना। २ व्याख्या करना। ३ विकल्प से विधान करना। विभासइ (पव ७३ टी)। कृ. विभासियव्व (उत्तनि ३६, पिंड १२४)। हेकृ. विभासिउं (विसे १०८५)।

विभासण न [विभाषण] व्याख्या, व्याख्यान (विसे १४२८)।

विभासय वि [विभाषक] व्याख्याता, व्याख्या-कर्त्ता (विसे १४२५)।

विभासा स्त्री [विभाषा] १ विकल्प-विधि, पाक्षिक प्राप्ति, भजना, विधि और निषेध का का विधान (पिंड १४३, १४४, १४५, २३५, ३०२, उप ८१५ टी द्र १६)। २ व्याख्या, विवरण, स्पष्टीकरण (विसे १३८५, १४२१, पिंड ६३७)। ३ विज्ञापन, निवेदन (उप ६८०)। ४ विविध भाषण (पिंड ४३८)। ५ विशेषोक्ति (देवेन्द्र ३६७)। ६ परिभाषा, सङ्केत (कम्म १, २८, २९)। ७ एक महानदी (ठा ५, ३—पत्र ३५१)।

विभासिय वि [विभासित] प्रकाशित, उद्द्योतित (सम्मत्त ६२)।

विभिण्ण } देखो विहिण्ण = विभिन्न (गउड
विभिन्न } ५७०, ११८०, उत्त १६, ५५)।

विभीसण पु [विभीषण] १ रावण का एक छोटा भाई (पउम ८, ६२)। २ विदेह वर्ष का एक वासुदेव (राज)।

विभीसावण वि [विभीषण] भय-जनक, भयंकर (भवि)।

विभीसिया स्त्री [विभिषिका] भय-प्रदर्शन (उव)।

विभु पु [विभु] १ प्रभु, परमेश्वर (पउम ५, ११२)। २ नाथ, स्वामी, मालिक (पउम ७०, १२)। ३ इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ७)। ४ वि व्यापक (विसे १६८५)।

विभूइ स्त्री [विभूति] १ ऐश्वर्य, वैभव (उव, औप)। २ ठाटबाट, धूमधाम, 'महाविभूईए चलिओ जिणजत्ताए' (सुर ३, ६२, महा)। ३ अहिंसा (पण्ह २, १—पत्र ९९)।

विभूसण न [विभूषण] १ अलंकार, गहना। २ शोभा, 'दिव्वालंकारविभूसणाइं' (उव, औप)।

विभूसा स्त्री [विभूषा] १ सिंगार की सजावट, शरीर पर अलंकार-वस्त्र आदि की सजावट (आचा १, २, १, ३, औप, जीव ३)। २ शरीर-शोभा, 'महुणाओ उवसतस्स किं विभूसाइ कारिअं' (दस ६, २, ६५, ६६, ६७, उत्त १६, ९)।

विभूसिय वि [विभूषित] विभूषा-युक्त, अलंकृत, शोभित (भग उत्त १६, ९, महा, विपा १, १—पत्र ७)।

विभेद } पु [विभेद] १ भेदन, विदारण
विभेय } (धर्मसं ८२९), 'जयवारणकुंभविभेयक्खमे' (गउड, उप ७२८ टी)। २ भेद, प्रकार, 'उड्ढाहोतिरियविभेयं तिहुयणंपि' (चेइय ६६४)।

विभेयग वि [विभेदक] भेदनकर्त्ता, 'परमम्मविभेयगो' (धर्मवि ७९)।

विमइ स्त्री [विमति] छन्द-विशेष (पिंग)।

विमइअ वि [दे] भर्त्सित, तिरस्कृत (दे ७, ७१)।

विमउल वि [विमुकुल] विकसित खिला हुआ (णाया १, १ टी—पत्र ३, औप)।

विमंतिय वि [विमन्त्रित] जिसके बारे में ममलहत—गुप्त युक्ति की गई हो वह (सुर ११, ९७)।

विमंसिअ वि [विमृष्ट, विमर्शित] विचारित, पर्यालोचित (सिरि १०४५)।

विमग देखो विमय (राज)।

विमग्ग सक [वि + मार्गय्] १ विचार करना। २ अन्वेषण करना, खोजना। ३ प्रार्थना करना, मांगना। ४ इच्छा करना, चाहना। विमग्गइ, विमग्गहा (उव, उत्त १२, ३८)। वकृ. विमग्गंत, विमग्गमाण (गा ३५१, सुर २, १७, से ४, ३३, महा)।

विमग्गिअ वि [विमार्गित] १ याचित, मांगा हुआ (सिरि १२७ सुर ४, १०७)। २ अन्वेषित, गवेषित (पाअ)।

विमज्झ न [विमध्य] अन्तराल (राज)।

विमण वि [विमनस्] १ विषण्ण, खिन्न, शोक-सन्तप्त (कप्प, सुर ३, १६८, महा)। २ शून्य-चित्त, सुन्न चित्तवाला (विपा १, २—पत्र २७)। ३ निराश, हताश (गा ७६)। ४ जिसका मन अन्यत्र गया हो वह (से ४, ३१, गउड)।

विसंधि पुं [विसन्धि] १ एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। २ वि बन्धन रहित (राज)। °कप्प, °कप्पेल्लय पु [°कल्प] एक महाग्रह (सुज्ज २०)।

विसनिविट्ठ न [विसनिविष्ट] विविध रथ्या, अनेक महल्ला (औप)।

विसंभ देखो वीसंभ (महा)।

विसंभणया देखो विस्संभणया (आचा १, ८, ६, ४)।

विसंभोइअ वि [विसंभोगिक] जिसके साथ भोजन आदि का व्यवहार न किया जाय वह, मंडली-बाह्य, समाज-बाह्य (ठा ५, १—पत्र ३००)।

विसंभोग पु [विसंभोग] साथ बैठकर भोजन आदि का अव्यवहार (ठा ३, ३)।

विसंभोगिय देखो विसंभोइअ (ठा ३, ३—पत्र १३९)।

विसंवइय वि [विसंवदित] १ सबूत रहित, अप्रमाणित (पाअ, स ५७६)। २ विघटित, वियुक्त (से ११, ३९)।

विसंवय अक [विसं + वद्] १ अप्रमाणित होना, असत्य ठहरना, सबूत से सिद्ध न होना। २ विघटित होना, अलग होना। ३ विपरीत होना, अन्यथा होना। विसंवयइ, विसंवयति (हे ४, १२९, उव), 'सो तारिसो धम्मो नियमेण फले विसंवयइ' (स ६४८, ७१६), 'चरिएण कह विसंवयसि' (मन २९), विसंवएज्जा (महानि ४)। वकृ विसंवयंत (उव उप ७६८ टी, धर्मसं ८८३)।

विसंवयण न [विसंवदन] विसंवाद, सबूत का अभाव (उप पृ २९८)।

विसंवाइ वि [विसंवादिन्] १ विघटित होनेवाला, विच्छिन्न होनेवाला (कुमा ६, ८९)। २ अप्रमाणित होनेवाला, सबूत से सिद्ध नहीं होनेवाला, असत्य ठहरनेवाला (कुप्र २९४, सम्मत्त १२३)।

विसंवाइअ वि [विसंवादित] विसंवाद-युक्त (दे १, ११४, से ३, ३०)।

विसंवाद देखो विसंवाय = विसंवाद (धर्मसं १४८)।

विसंवादण देखो विसंवायण (उत्त २९, ४८)।

विसंवादणा देखो विसंवायणा (ठा ४, १—पत्र १९६)।

विसंवाय वि [दे] मलिन, मैला (दे ७, ७२)।

विसंवाय पु [विसंवाद] १ सबूत का अभाव, विरुद्ध सबूत, विपरीत प्रमाण, 'अण्णोण्ण-विसंवाओ' (सबोध १७, सुपा ६०८)। २ व्याघात (गा ६१६)। ३ विचलता (से ३, ३०)।

विसंवायग वि [विसंवादक] १ सबूत रहित, प्रमाण-रहित। २ ठगनेवाला, वंचक (सुपा ६०८)।

विसंवायण न [विसंवादन] नीचे देखो (उत्त २९, ४८, सुख २९, ४८)।

विसंवायणा स्त्री [विसंवादना] १ असत्य कथन। २ वंचना, ठगाई (ठा ४, १—पत्र १९६)।

विससरिय वि [विसंसृत] उठ गया हुआ, 'पहायसमए य विससरिएसु थाणएसु' (स ५३७)।

विसहणा देखो विस्संभणया (आचा)।

विसकल वि [विशकल] नीचे देखो (राज)।

विसकलिय वि [विशकलित] टुकडा-टुकडा किया हुआ, खण्डित (आवम)।

विसग्ग पु [विसर्ग] १ निसर्ग, त्याग, 'सिमि-णेवि सुरयसंगमकिरियासंजणियवजणविसग्गो' (विसे २२८)। २ विसर्जन, छुटकारा, छोड देना (पि २१५)। ३ अक्षर-विशेष, विसर्ज-नीय वर्ण (पिंग)।

विसज्ज सक [वि + सृज्, सर्जय्] १ विदा करना, भेजना। २ त्यागना। विसज्जेह (महा)। संकृ विसज्जिऊण, विसज्जिअ (महा, अभि ४९)। हेकृ विसज्जिदुं (शौ) (अभि ६०)। कृ विसज्जिदव्व (शौ) (अभि ५०)।

विसज्जणा स्त्री [विसर्जना] विदाई (वव ४)।

विसज्जिअ वि [विसृष्ट, विसर्जित] १ विदा किया हुआ, भेजा हुआ (औप, अभि ११६, महा, सुपा १५० ५७)। २ त्यक्त, 'जीवेण जाणि उ विसज्जियाणि जाईसएसु देहाणि' (उव)।

विसट्ट अक [दल्] फटना, टूटना, टुकडे-टुकडे होना। विसट्टइ (हे ४, १७६, षड्) विसट्टति (गउड), 'तम्स विसट्टउ हिअय' (कुमा)। वकृ. विसट्टंत (स ५७६)।

विसट्ट अक [वि + कस्] विकसना, खिलना, फूलना। विसट्टइ (प्राकृ ७६), विसट्टंति (वज्जा १३८)। वकृ. विसट्टंत, विसट्टमाण (वज्जा ६०, ठा ४, ४—पत्र २६४)।

विसट्ट सक [वि + कासय्] विकसित करना, फुलाना, प्रफुल्ल करना। विसट्टइ (धात्वा १५३)।

विसट्ट अक [पत्] गिरना, स्खलित होना। विसट्टंति (सुख २, २९)।

विसट्ट वि [दे] १ विघटित, विश्लिष्ट (पाअ, गउड १००९)। २ विकसित, प्रफुल्ल, खिला हुआ (प्राकृ ७७, गउड ६६७, ८०५, कुमा, सुर ३, ४२, भत्त ३०)। ३ दलित, विशीर्ण, खण्डित, जिसका टुकडा-टुकडा हुआ हो वह (से ६, ३०, गउड ५५९, भवि)। ४ उदित (गउड ७)।

विसट्टण न [विकसन] विकास, प्रफुल्लता, 'देव। पणयजणकल्लाणकदुट्टविसट्टणुग्गतमि-हराणुगारिणो' (धर्म ५)।

विसड } देखो विसम (षड्, हे १, २४१, कुमा, दे ७, ६२), 'ढढेण तहा विसढा, विसढा जह सफलिया जाया' (उव)।
विसढ }

विसढ वि [दे] १ नीराग, राग-रहित। २ नीरोग, रोग-रहित (दे ७, ६२)। ३ विषोढ, सहन किया हुआ (उव)। ४ विशीर्ण, टुकडे-टुकडे किया हुआ (से ६, ६६)। ५ आकुल, व्याकुल (से ११, ८९)।

विसढ वि [विशठ] १ अत्यंत दंभी, अतिशय मायावी, देवेहि पाडिहेरं किं व कयं एत्थ विसढेहिं' (पउम १०२, ५२)। २ पुं. एक श्रेष्ठि-पुत्र (सुपा ५५०)।

विसण देखो वसण = वृषण (दे ६, ६२)।

विसण न [वेशन] प्रवेश (राज)।

विमुक्ख पुं [विमोक्ष] छुटकारा मुक्ति (से ११, ५६, आचानि २५८, २५६, अजि ५)।
विमुक्खण देखो विमोक्खण (उत्त १४, ४, कुप्र ३६६)।
विमुच्छिअ वि [विमूर्च्छित] मूर्छा-प्राप्त (से ११, ५६)।
विमुत्त देखो विमुक्क 'मुत्तिविमुत्तेसुवि' (पिंड ५६)।
विमुत्ति स्त्री [विमुक्ति] १ मोक्ष, मुक्ति (आचानि ३४३, कुप्र १६)। २ आचारांग सूत्र का अन्तिम अध्ययन (आचा २, १६, १२)। ३ अहिंसा (पण्ह २, १—पत्र ६६)।
विमुयण न [विमोचन] परित्याग (सबोध १०)।
विमुह वि [विमुख] १ पराङ्मुख, उदासीन (गउड, सुपा २८, भवि)। २ पु एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २८)। ३ पुन आकाश, गगन (भग २०, २—पत्र ७७६)।
विमुह अक [वि + मुह्] घबराना, व्याकुल होना, बेचैन होना। वकृ विमुहिज्जंत (से २, ४६, ११, ४६)।
विमुहिअ वि [विमुग्ध] घबराया हुआ (से ४, ४४, गा ७६२)।
विमुहिअ वि [विमुखित] पराङ्मुख किया हुआ (पण्ह १, ३—पत्र ५३)।
विमूढ वि [विमूढ] १ घबराया हुआ। २ अस्फुट, अस्पष्ट (गउड)।
विमूरण वि [विभञ्जक] तोड़नेवाला, खण्डन-कर्ता, 'जं मंगलं बाहुबलिस्स आसि तेअस्सिणो माणविमूरणस्स' (मंगल १०)।
विमोइय वि [विमोचित] छुड़ाया हुआ (णाया १, २—पत्र ८८, सण)।
विमोक्ख देखो विमुक्ख (से ३, ८)।
विमोक्खण न [विमोक्षण] १ छुटकारा, छुड़ाना, बन्धन-मोचन (गाचा, सूअ २, ७, १०, पउम १०२, १८८, स ६८, ७४२)। २ वि. छुड़ानेवाला, विमुक्त करनेवाला, 'सव्वदुक्खविमोक्खणं' (सूअ १, ११, २, २, ७, १०)। स्त्री °णी (उत्त २६, १)।
विमोक्खय वि [विमोक्षक] छुटकारा पाने-वाला, 'ते दुक्खविमोक्खया' (सूअ १, १, २, ५)।
विमोडण न [विमोटन] मोड़ना (दे)।
विमोत्तव्व देखो विमुंच।
विमोय सक [वि + मोचय्] छुड़ाना, मुक्त करना। सकृ विमोइऊण (सण)।
विमोत्तु देखो विमुच।
विमोयग वि [विमोचक] छोड़नेवाला, दूर करनेवाला, 'न ते दुक्खविमोयगा' (सूअ १, ६, ३)।
विमोयण न [विमोचन] १ छुटकारा, मुक्ति। २ वि. छुड़ानेवाला, 'दुहसयविमोयणकाइं' (पण्ह २, १—पत्र ६६)।
विमोयणा स्त्री [विमोचना] छुटकारा (सूअ १, १३, २१)।
विमोह सक [वि + मोहय्] मुग्ध करना, मोह उपजाना। विमोहेइ (महा)। सकृ विमोहित्ता, विमोहेत्ता (भग १०, ३—पत्र ४६८)।
विमोह देखो विमोक्ख (आचा)।
विमोह वि [विमोह] १ मोह-रहित (उत्त ५, २६)। २ पु विशेष मोह, घबराहट (सम्मत्त २२६)। ३ आचारांग सूत्र का एक अध्ययन (सम १५, ठा ६ टी—पत्र ४४५)।
विमोहण न [विमोहन] १ मोह उपजाना। (सुर ६, ३८)। २ वि मोह उपजानेवाला (उप ७२८ टी)।
विमोहिअ वि [विमोहित] मोह-प्राप्त (महा २३, ५२)।
विम्ह न [वेश्मन्] गृह, घर (राज)।
विम्हइअ वि [विस्मित] आश्चर्य-चकित, चमत्कृत (सुर १, १६०)।
विम्हय अक [वि + स्मि] चमत्कृत होना, विस्मित होना, आश्चर्यान्वित होना। कृ. विम्हयणिज्ज विम्हयणीअ (हे १, २४८, अभि २०२)।
विम्हय पु [विस्मय] आश्चर्य, चमत्कार (हे २, ७४, षड्, प्राप्र, उव, गउड, अवि १)।
विम्हर सक [स्मृ] याद करना। विम्हरइ (हे ४, ७४)।
विम्हर सक [वि + स्मृ] विस्मरण करना, याद न आना, भूल जाना। विम्हरइ (हे ४, ७५, प्राकृ ६३, षड्)। वकृ. विम्हरंत (श्रा १६)।
विम्हरण न [विस्मरण] विस्मृति (पव ६, सबोध ४३, सूक्त ८०)।
विम्हराइअ वि [दे] १ मूर्छित, मूर्छा-प्राप्त। २ विस्मापित (से ६ ४१)।
विम्हरावण वि [स्मरण] स्मरण करानेवाला, याद दिलानेवाला, 'वावरणवीरकहविम्हरावणा' (कुमा)।
विम्हरिअ वि [विस्मृत] भूला हुआ, याद न किया हुआ (कुमा, पाअ)।
विम्हल देखो विब्भल (उप ५३० टी)।
विम्हलिअ देखो विब्भलिअ (अच्चु २२)।
विम्हारिअ वि [विस्मारित] भुलाया हुआ (कुमा, श्रा २८)।
विम्हारिअ (अप) देखो विम्हरिअ (सण)।
विम्हाव सक [वि + स्मापय्] आश्चर्य-चकित करना। विम्हावेइ (महा, निचू ११)। वकृ विम्हावेंत (उत्त ३६, २६२)।
विम्हावण न [विस्मापन] आश्चर्य उपजाना, विस्मय-करण (औप)।
विम्हावणा स्त्री [विस्मापना] ऊपर देखो (निचू ११)।
विम्हावय वि [विस्मापक] विस्मय-जनक (सम्मत्त १७४)।
विम्हाविअ वि [विस्मापित] आश्चर्यान्वित किया हुआ (धर्मवि १४७)।
विम्हिअ वि [विस्मित] विस्मय-प्राप्त, चमत्कृत (श्रा २८—पत्र १६०, उव)।
विम्हिय (अप) देखो विम्हय। विम्हियइ (सण)।
विम्हिर वि [विस्मेर] विस्मय पानेवाला, चमत्कृत होनेवाला (श्रा १२, २७)।
वियञ्चा देखो विअ-ञ्चा।
वियट्ट अक [वि + वृत्] वरतना, होना। हेकृ वियट्टित्तए (आचा २, २, २, ३)।
वियद्द पु [व्यर्द, व्यट्ट] आकाश, गगन (भग २०, २—पत्र ७७६)।
विर सक [भञ्ज्] भाँगना तोडना। विरइ (हे ४, १०६)।
विर अक [गुप्] व्याकुल होना। विरइ (हे ४, १५०), विरंति (कुमा)।
विर (अप) देखो वीर (सण)।

विसाइ वि [विषादिन्] विषाद-युक्त, शोक-ग्रस्त (सबोध ३६)।

विसाण न [विषाण] १ हाथी का दाँत (पण्ह १, १—पत्र ८, अणु २१२)। २ शृंग, सींग (सुख ६, १, पाअ, औप)। ३ सूअर का दाँत (उवा)। ४ पुं ब. देश-विशेष (पउम ९८, ६५)।

विसाण सक [विशाणय्] घिसना, शाण पर चढ़ाना। कर्म. विसाणीअदि (शौ) (नाट—मृच्छ १३६)।

विसाणि वि [विषाणिन्] १ सींगवाला। २ पुं. हाथी, हस्ती। ३ शृंगाटक, सिंघाड़ा। ४ ऋषभ नामक औषध (अणु १४२)।

विसाय सक [वि + स्वादय्] विशेष चखना, खाना। वकृ. विसाएमाण (णाया १, १—पत्र ३७, कप्प)।

विसाय पुं [विषाद] खेद, शोक, दिलगीरी, अफसोस (उव, गउड, सुपा १०४, हे १, १५५)। °वंत वि [°वत्] खिन्न, शोक-ग्रस्त (श्रा १४)।

विसाय वि [विसात] १ सुख रहित (विवे १३६)। २ पुंन. एक देव-विमान (सम ३८)।

विसाय वि [विस्वाद] स्वाद-रहित, 'आम-यकारि विसाय मिच्छत्तं कयसण व ज भुत्त' (विवे १३६)।

विसार सक [वि + सारय्] फैलाना। वकृ. विसारंत (उत्त २२, ३४)।

विसार पुं [दे] सैन्य, सेना (षड्)।

विसार वि [विसार] सार-रहित, निस्सार (गउड)।

विसारण न [विशारण] खण्डन (पिंड ५९०)।

विसारणिय वि [विस्मारणिक] स्मारणा-रहित, जिसको याद न दिलाया गया हो वह (काल)।

विसारय वि [दे] धृष्ट, ढीठ, साहसी (दे ७, ६६)।

विसारय वि [विशारद] विद्वान्, पण्डित, दक्ष (पण्ह, १, ३—पत्र ५३, भग, औप, सुर १, १३, आत्म १६)।

विसारि वि [विसारिन्] फैलनेवाला, व्यापक (गउड)। स्त्री. °णी (कप्पू)।

विसारि पुं [दे] कमलासन, ब्रह्मा (दे ७, ६२)।

विसाल त्रि [विशाल] १ विस्तृत, बड़ा, विस्तीर्ण, चौड़ा (पाअ, सुर २, ११६, प्रति १०)। २ पुं. एक ग्रह-देवता, अठासी महा-ग्रहों में एक महाग्रह (ठा २, ३—पत्र ७८)। ३ एक इन्द्र, क्रन्दित-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। ४ पुंन. देव-विमान विशेष (सम ३५, देवेन्द्र १३६, पत्र १९४)। ५ न. एक विद्या-धर-नगर (इक)।

विसालय पुं [दे] जलधि, समुद्र (दे ७, ७१)।

विसाला स्त्री [विशाला] १ एक नगरी का नाम, उज्जयिनी, उज्जैन (सुपा १८३, उप ९८८)। २ भगवान् पार्श्वनाथ की दीक्षा-शिविका (विचार १२९)। ३ जंबूवृक्ष विशेष, जिससे यह जंबूद्वीप कहलाता है। ४ राजधानी-विशेष (इक)। ५ भगवान् महावीर की माता का नाम (सूअ १, २, ३, २२)। ६ एक पुष्करिणी (राज)।

विसालिस देखो विसरिस (उत्त ६, १४)।

विसासण वि [विशासन] विघातक, विनाशक, 'कुसुमसरविसासण' (सम्म १)।

विसासिअ वि [विशासित] १ मारित, हिंसित, जिसका वध किया हो वह। २ विशेष रूप से घर्षित। ३ विश्लेषित, वियुक्त किया हुआ। ४ मार भगाया हुआ (से ८, ६३)।

विसाह पुं [विशाख] स्कन्द, कार्तिकेय (पाअ)।

विसाहा स्त्री [विशाखा] १ नक्षत्र-विशेष (सम १०)। २ व्यक्ति-वाचक नाम, एक स्त्री का नाम (वज्जा १२२)। ३ एक विद्याधर-कन्या (महा)।

विसाहिअ वि [विसाधित] १ सिद्ध किया गया। २ न. संसिद्धि, 'खग्गविसाहिउ जहि लहहु पिय तहि देसहि जाहु' (हे ४, ३८६, ४११)।

विसाही स्त्री [वैशाखी] १ वैशाख मास की पूर्णिमा। २ वैशाख मास की अमावस (सुज्ज १०, ६)।

विसिअ स्त्री [दे] करि-शारी, गज-पर्याण (दे ७, ६१)।

विसि देखो बिसि (हे १, १२८, प्राप्र)।

विसिज्जमाण देखो विस = वि + शृ।

विसिट्ठ वि [विशिष्ट] १ प्रधान, मुख्य (सूअ १, ६, ७; पण्ह २, १—पत्र ९९)। २ विशेष-युक्त (महा)। ३ विशेष शिष्ट, सुसभ्य (वज्जा १६०)। ४ युक्त, सहित (पण्ण २३—पत्र ६७१)। ५ व्यवच्छिन्न, भिन्न, विलक्षण (विसे)। ६ पुं. एक इन्द्र, द्वीपकुमार-देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८४)। ७ न. लगातार छः दिनों का उपवास (संबोध ५८)। °दिट्ठि स्त्री [°दृष्टि] अहिंसा (पण्ह २, १)।

विसिट्ठि स्त्री [विसृष्टि] विपरीत क्रम (सिरि ८७८)।

विसिण वि [दे] रोमश, प्रचुर रोमवाला (दे ७, ६४)।

विसिस सक [वि + शिष्] विशेषण-युक्त करना। कर्म. 'किरिया विस(?सि)स्सए पुण नाणाउ, गुणे जओ भणिअं' (अज्झ ५८, ५९)।

विसिह पुं [विशिख] १ बाण, तीर (पाअ, पउम ८, १००, सुपा २२, किरात १३)। २ वि. शिखा रहित (गउड ५३९)।

विसी देखो बिसी (हे १, १२८, प्राप्र)।

विसी स्त्री [विंशति] बीस, बीस का समूह 'केत्ती(?त्ति)आओ भाअवदाए विसीओ' (हास्य १३९)।

विसीअ अक [वि + सद्] १ खेद करना। २ निमग्न होना, डूबना। विसीयइ विसीअति, विसीअए, विसीयह (सूअ १, ३, ४, १, १, ३, ४, ५, ठा ४, ४—पत्र २७८, उव)। वकृ. विसीयंत (पि ३९७)।

विसीइय वि [विशीर्ण] १ जीर्ण, त्रुटित। २ न. टूटना, जर्जरित होना, 'सघीहि विहडिय पिव विसीइय सव्वअगेहिं' (सुर १२, १९९)।

विसीरंत देखो विस = वि + शॄ।

विरह पुन [दे] १ एकान्त, विजन (दे ७, ६१; णाया १, २—पत्र ७६; पुप्फ २४४), 'मामाए देवीए अतराणि य छिद्दाणि य विरहाणि य पडिजागरमाणीओ २ विहरति' (विपा १, ६—पत्र ८६)। २ कुसुंभ से रँगा हुआ कपडा (दे ७, ६१)।

विरहाल न [दे] कुसुम्भ से रँगा हुआ वस्त्र (दे ७, ६८)।

विरहि वि [विरहिन्] वियोगी, विछुडा हुआ (कुमा)।

विरहिअ वि [विरहित] विरह-युक्त (भग, उव, हे ४, ३७७)।

विरा अक [वि + ली] १ नष्ट होना। २ द्रवित होना, पिघलना। ३ अटकना, निवृत्त होना। विराइ (हे ४, ५६)।

विराइ वि [विरागिन्] विरागवाला, विरक्त, उदासीन। स्त्री °णी (नाट)।

विराइ वि [विराजिन्] शोभनेवाला, चमकता (से २, २६)।

विराइ वि [विराविन्] शब्द-युक्त, आवाज-वाला (से २, २६)।

विराइअ देखो विराय = विलीन (से २, २६)।

विराइअ वि [विराजित] सुशोभित (उवा, औप, महा)।

विराग पु [विराग] १ राग का अभाव, वैराग्य, उदासीनता (सुज्ज १३, उप ७२८ टी)। २ वि राग-रहित, वीतराग (पच्च १०४; औप)।

विराड पु [विराट] देश विशेष (उप ६४८ टी)। °नयर न [°नगर] नगर-विशेष (णाया १, १६—पत्र २०६)।

विराध (अप) पु [विराध] एक राक्षस का नाम (पिंग)।

विराम पु [विराम] उपरम, निवृत्ति, अवसान (गउड)।

विरामण न [विरमण] विरत करना, निवर्तन, विरमाना, 'वेरविरामणपज्जवसाणे' (पण्ह २, ४—पत्र १३१)।

विराय अक [वि + राज्] शोभना, चमकना। विरायइ (पाअ)। वकृ विरायंत, विरायमाण (कप्प, औप, णाया १, १ टी—पत्र २, सुर २, ७६)।

विराय वि [विलीन] १ विशीर्ण, विगलित, नष्ट (से ७, ६४, गउड, कुमा ६, ३८)। २ पिघला हुआ (पाअ)।

विराय देखो विराग (पण्ह २, ५—पत्र १४६, कुमा, सुपा २०५, वज्जा ६, कुप्र १११)।

विराल देखो बिराल (णाया १, १—पत्र ६५, पि २४१)।

विरालिआ स्त्री [विरालिका] १ पलाश-कन्द। २ पर्ववाला कन्द (दस ५, २, १८)। देखो बिरालिआ।

विराली स्त्री [विराली] १ वल्ली-विशेष (पव ४, श्रा २०, सबोध ४४)। २ चतुरिन्द्रिय जतु की एक जाति (उत्त ३६, १४८, सुख ३६, १४८)। देखो बिराली।

विराव पु [विराव] शब्द, आवाज (गउड)।

विरावि वि [विराविन्] आवाज करनेवाला (गउड)।

विराह सक [वि + राधय्] १ खण्डन करना, भाँगना, तोडना। विराहति (उव)। वकृ. विराहत, विराहेंत (सुपा ३२८, उव)।

विराहअ } वि [विराधक] खण्डन करनेवाला,
विराहग } तोडनेवाला, भजक (भग, णाया १, ११—पत्र १७१)।

विराहणा स्त्री [विराधना] खण्डन, भग (सम ८, णाया १, ११ टी—पत्र १७३, पण्ह १, १—पत्र ६, ओघ ७८८)।

विराहिअ वि [विराधित] १ खण्डित, भग्न (भग)। २ अपराद्ध, जिसका अपराध किया गया हो वह, 'अविराहियवेरिएहिं' (पण्ह १, ३—पत्र ५३)। ३ पुं. एक विद्याधर नरेश (पउम ७६, ७)।

विरिअ वि [भग्न] भाँगा हुआ, तोडा हुआ (कुमा)।

विरिअ देखो वीरिअ (सुअनि ६१, ६४, ओप)।

विरिंच सक [वि + भज्] विभाग ग्रहण करना, भाग लेना, बाँट लेना, 'मयणो वि य से रोग न विरिंचइ, नेय नासेइ' (स १०७)।

विरिंच पुं [विरिञ्च] ब्रह्मा, विधाता (पाअ)।

विरिंचि पुं [विरिञ्चि] ऊपर देखो (सुर १२, ७८)।

विरिंचिअ वि [दे] १ विमल, निर्मल। २ विरक्त, उदासीन (दे ७, ६३)।

विरिंचिर पुं [दे] १ अश्व, घोडा। २ वि विरल (दे ७, ६३)।

विरिंचिरा स्त्री [दे] धारा, प्रवाह (दे ७, ६३)।

विरिक्क वि [दे] पाटित, विदारित (दे ७, ६४)।

विरिक्क वि [विरिक्त] जो खाली हुआ हो वह (पउम ४५, ३२, सुपा ४२२)।

विरिक्क वि [विभक्त] १ बाँटा हुआ 'जेण चित्तयराण सभा समभागेहि विरिक्का' (महा)। २ जिसने भाग बाँट लिया हो वह, अपना हिस्सा ले कर जो अलग हुआ हो वह, 'एगम्मि सरिएवेसे दो भाउया वणिया; ते य परोप्पर विरिक्का' (ओघ ४६४ टी)।

विरिक्का स्त्री [दे] विन्दु, लव, लेश (सुख २, २७)।

विरिचिर वि [दे] धारा से विरेचन करने वाला (षड्)।

विरिज्जय वि [दे] अनुचर, अनुगत (दे ७, ६६)।

विरिल्ल सक [वि + स्तृ] विस्तारना, फैलाना। विरिल्लइ (प्राकृ ७६)।

विरीअ (अप) देखो विवरीअ (पिंग)।

विरीह सक [प्रति + पालय्] पालन करना, रक्षण करना। विरीहइ (प्राकृ ७५, धात्वा १५३)।

विरु } अक [वि + रु] रोना चिल्लाना।
विरुअ } वकृ विरुयमाण (उप ३३६ टी)।

विरुअ न [विरुत] ध्वनि, पक्षी की आवाज, शब्द (गा ६४, से १, २३, नाट—मृच्छ १३६)।

विरुअ वि [दे विरूप] १ खराब, कुडौल, दुष्ट रूपवाला, कुत्सित (दे ७, ६३, भवि)। २ विरुद्ध, प्रतिकूल (षड्)। देखो विरूअ।

विरुट्ठ पु [विरुष्ट] नरक-स्थान विशेष (देवेन्द्र २८)।

विस्स देखो विस = विश्, 'देवीए जेण समयं अहंपि अग्गीए विस्सामि' (सुर २, १२७)।

विस्स न [विस्र] १ कच्ची गन्ध अपक्व मास आदि की बू। २ वि कच्ची गन्धवाला (प्राप्र; अभि १८४)। °गंधि वि [°गन्धिन्] आमगन्धि, अपक्व मास के समान गंधवाला (अभि १८४)।

विस्स पुं [विश्व] १ एक नक्षत्र-देवता उत्तराषाढा नक्षत्र का अधिष्ठाता देव (ठा २, ३—पत्र ७७, अणु १४५, सुज्ज १०, १२)। २ स सर्व सकल, सब (विसे १६०३, सुर १२, ५६)। ३ पुन. जगत्, दुनियाँ (सुपा १३६, सम्मत्त १६०, रंभा)। °इ पुं [°जिन्] यज्ञ विशेष (प्राकृ ९५)। °कम्म पु [कर्मन्] शिल्पी-विशेष, देव-वर्धकि (स ६००, कुप्र ६)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (सुपा ६३५)। °भूइ पुं [°भूति] प्रथम वासुदेव का पूर्व-भवीय नाम (सम १५३, पउम २०, १७१, भत्त १३७, ती ७)। °यम्म देखो °कम्म (स ६१०)। °वाइअ पुं [°वादिक] भगवान् महावीर का एक गण (ठा ९—पत्र ४५१)। °सेण पुं [°सेन] १ भगवान् शान्तिनाथजी का पिता, एक राजा (पम १५१, १५२)। २ अहोरात्र का एक मुहूर्त्त (सम ५१)। देखो वीस = विश्व।

विस्सअ (मा) देखो विम्हय = विस्मय (षड्)।

विस्सत देखो वीसत (सुपा ५८३)।

विस्सतिअ न [विश्रान्तिक] मथुरा का एक तीर्थ (ती ७)।

विस्संद सक [वि + स्यन्द्] टपकना, झरना, चूना। विस्संदति (ठा ४, ४—पत्र २७९)।

विस्सभ सक [वि + श्रम्भ्] विश्वास करना। कृ विस्संभणिज्ज (श्रा १४, उवप १६)।

विस्सभ पु [विश्रम्भ] विश्वास, श्रद्धा (प्रयौ ६६, महा)। °धाइ वि [°घातिन्] विश्वास-घातक (णाया १, २—पत्र ७९)।

विस्सभण न [विश्रम्भण] विश्वास (माल १६६)।

विस्संभणया स्त्री [विश्रम्भणा] विश्वास (आचा)।

विस्संभर पु [विश्वम्भर] जन्तु-विशेष, भुजपरिसर्प की एक जाति (सूअ २, ३, २५, ओघ ३२३)। २ मूषक, चूहा (ओघ ३२३)। ३ इन्द्र। ४ विष्णु, नारायण (नाट—चैत ३८)।

विस्सभरा स्त्री [विश्वम्भरा] पृथिवी, धरती (कुप्र २१३)।

विस्संभिय वि [विश्रब्ध] विश्वास-प्राप्त, विश्वासी (सुख १, १४)।

विस्सभिय वि [विश्वभृत्] जगत्-पूरक (उत्त ३, २)।

विस्सत्थ देखो वीसत्थ (नाट—शकु ५३)।

विस्सद्ध देखो वीसद्ध (अभि १९३, मुद्रा २२३)।

विस्सम अक [वि + श्रम्] थाक लेना। विस्समइ (प्राकृ २६)। कृ. विस्समिअ (नाट—मालती ११)।

विस्सम पु [विश्रम] विश्राम, विश्रान्ति (स्वप्न १०६)।

विस्समिअ देखो विस्सत (सुपा ३७२)।

विस्सर सक [वि + स्मृ] भूलना। विस्सरइ (वाल्वा १५३)।

विस्सर वि [विस्वर] खराब आवाजवाला (सम ५०, पण्ह १, १—पत्र १८)।

विस्सरण न [विस्मरण] विस्मृति, याद न आना (पमा २४, कुल १४)।

विस्सरिय वि [विस्मृत] भुला हुआ (उप पृ १९३)।

विस्सस सक [वि + श्वस्] विश्वास करना, भरोसा करना। विस्ससइ (प्राकृ २६)। वकृ विस्ससन (श्रा १४)। कृ. विस्ससणिज्ज (श्रा १४, भत्त ९९)।

विस्ससिअ वि [विश्वस्त] विश्वास-युक्त, भरोसा-पात्र (श्रा १४, सुपा १८३)।

विस्साणिय वि [विश्राणित] दिया हुआ, अर्पित (उप १३८ टी)।

विस्साम देखो वीसाम (प्राकृ २६, नाट—शकु २७)।

विस्सामण न [विश्रामण] चप्पी, अग-मर्दन आदि भक्ति, वैयावृत्त्य (ती ८)।

विस्सामणा स्त्री [विश्रामणा] ऊपर देखो (पव ३८, हित २०)।

विस्साव देखो विसाय = वि + स्वादय्। कृ. विस्सायणिज्ज (णाया १, १२—पत्र १७४)।

विस्सार सक [वि + स्मृ] भूल जाना। सकृ. 'कोऊहलपरा विस्सारिऊण रायसासण अगणिऊण नियभूमिं पविट्ठा नयरिं' (महा)।

विस्सार सक [वि + स्मारय्] विस्मरण करवाना (नाट—मालती ११७)।

विस्सारण न [विसारण] विस्तारण, फैलाना (पव ३८)।

विस्सावसु पुं [विश्वावसु] एक गन्धर्व, देव-विशेष (पउम ७२, २९)।

विस्सास पुं [विश्वास] भरोसा, प्रतीति, श्रद्धा (सुख १, १०, सुपा ३५२, प्राप्र)।

विस्सासिय वि [विश्वासिन] जिसको विश्वास कराया गया हो वह (सुपा १७७)।

विस्साहल पुं [विश्वाहल] अग विद्या का जानकार चतुर्थ रुद्र-पुरुष (विचार ४७३)।

विस्सुअ वि [विश्रुत] प्रसिद्ध, विख्यात (पाअ, औप प्रासू १०७)।

विस्सुमरिय देखो विसुमरिअ (उप १२७)।

विस्सेणि } स्त्री [विश्रेणि, °णी] नि श्रेणि,
विस्सेणी } सीढी (आचा)।

विस्सेसर पुं [विश्वेश्वर] काशी-विश्वनाथ, काशी मे स्थित महादेव की एक मूर्त्ति (सम्मत्त ७५)।

विस्सोअसिआ देखो विसोत्तिआ (हे २, ९८)।

विह सक [व्यध्] ताडन करना। वकृ विहमाण (उत्त २७, ३, सुख २७, ३)।

विह देखो विस = विष (आचा, पि २६३)।

विह पुन [दे] १ मार्ग, रास्ता (भाव ६०६)। २ अनेक दिनों मे उल्लघनीय मार्ग (आचा २, ३, १, ११, २, ३, ३, १४)। ३ अटवी-प्राय मार्ग (आचा २, ५, २, ७)।

विह पुंन [विहायस्] आकाश, गगन (भग २०, २—पत्र ७७५, दसनि १, २३), देखो विहग = विहायस्।

विलप्प पु [विलाल्मन्] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २६)।

विलभ सक [खेदय्] खिन्न करना, खेद उपजाना। विलभेइ (प्राक्र ६७)।

विलमा स्त्री [दे] ज्या, धनुष की डोरी (दे ७, ३४)।

विलय पुं [दे] सूर्य का अस्त होना (दे ७, ६३, पाअ)।

विलय पुं [विलय] १ विनाश (कुप्र ५१, सुपा १६७, ती ३)। २ तल्लीनता (ती ३)। ३ पुं एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २६)।

विलया स्त्री [वनिता] स्त्री, महिला, नारी (पाअ, हे २, १२८, पड्, कुमा, रंभा, भवि)।

विलव अक [वि + लप्] रोना, काँदना, चिल्लाना। विलवइ (पड्, महा)। वकृ विलवत, विलवमाण (महा, णाया १, १—पत्र ४७)।

विलवण वि [विलपन] रोनेवाला, चिल्लानेवाला। °या स्त्री [°ता] विलाप, क्रन्दन (औप)।

विलविअ न [विलपित] विलाप, क्रन्दन (पाअ, औप)।

विलविर वि [विलपितृ] विलाप करनेवाला (कुमा, सण)।

विलस अक [वि + लस्] १ मौज करना। २ चमकना। विलसइ, विलसेसु (महा)। वकृ. विलसंत (कप्प, सुर १, २२८)।

विलसण न [विलसन] १ विलास, मौज (उप पृ १८१)। २ वि. मौज करनेवाला (सुर १, २२१ टि)।

विलसिय न [विलसित] १ चेष्टा-विशेष। २ दीप्ति, चमक (महा)।

विलसिर वि [विलसितृ] विलासी, विलास करनेवाला (सुपा २०४, २५४, धर्मवि १६, सण)।

विला देखो विरा, 'मयणं व मणो मुणिणोवि हत सिग्घ चिय विलाइ' (भत्त १२७), 'तावेण व नवणीय विलाइ सो उद्धरिजतो' (कुप्र १०५)।

विलाल देखो विराल (पि २४१)।

विलाव पुं [विलाप] क्रन्दन, विलख-विलख या विकल होकर रोना परिदेवन (उव)।

विलाविअ वि [विलापित] विलाप-युक्त (वै ८६, भवि)।

विलास पु [विलास] १ स्त्री का नेत्र-विकार। २ स्त्री की शृंगार-चेष्टा विशेष, अंग और क्रिया-सबन्धी स्त्री की चेष्टा-विशेष (पण्ह २, ४—पत्र १३२, औप, गउड)। २ दीप्ति, चमक (कुमा, गउड)। ३ चेष्टा-विशेष, मौज (गउड)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (सुपा ६२२)। °वई स्त्री [°वती] स्त्री, नारी, महिला (से १०, ७१, गउड)।

विलासि वि [विलासिन्] १ मौजी, शौकीन (हास्य १३८, गउड)। २ चमकनेवाला। स्त्री. °णी, 'चदविलासिणीओ चदद्धसमललाडाओ' (औप)।

विलासिअ वि [विलासिक, °सित] विलास-युक्त (गा ४०५)।

विलासिणी स्त्री [विसिनी] १ नारी, स्त्री। २ वेश्या (गा २६३, ८०३ अ, गउड, नाट—रत्ना ६, पि ३४६, ३८७)। देखो विलासि।

विलिअ न [व्यलीक] १ कंदर्प-सबन्धी अपराध, वह अपराध जो काम के आवेग के कारण किया जाय, गुनाह (कुमा, गा ५३)। २ अकार्य (गा ५३)। ३ अप्रिय, विप्रिय (गा ५३, पाअ)। ४ अनृत, असत्य। ५ प्रतारणा, ठगाई। ६ गति-विपर्यय। ७ वि अपराधी। ८ अकार्य-कर्ता। ९ विप्रिय-कर्ता। १० झूठ बोलनेवाला (हे १, ४६, १०१)।

विलिअ वि [व्रीडित] लज्जित, शरमिन्दा (पाअ, पड्)।

विलिअ न [दे व्रीडित] लजा, शरम (दे ७, ६५, सण)।

विलिइअ वि [व्यलीकित] व्यलीक-युक्त, 'विलि (?लिइ)ए विड्डे' (भग १५—पत्र ६८१, राज)।

विलिंग सक [वि + लिङ्ग्] आलिङ्गन करना, स्पर्श करना। विलिंगेज (आचा २, ६, ३)।

विलिंजरा स्त्री [दे] धाना, भुने हुए जौ (दे ७, ६६)।

विलिप सक [वि + लिप्] लेप करना, लेपना, पोतना। विलिंपइ (सण)। संकृ. विलिंपिऊण (सण)। हेकृ विलिंपित्तए (कस)। प्रयो., वकृ. विलिंपावत (निचू १७)।

विलिज्ज अक [वि + ली] १ नष्ट होना। २ पिघलना। विलिज्जइ, विलिज्जति, विलिज्ज (हे ४, ५६, ४१८, भवि, अज्झ ५५, सबोध ५२, गच्छ २, २६)। वकृ विलिज्जत, विलिज्जमाण (पउम ६, २०, ३, २१, २२)।

विलित देखो विलिअ = व्रीडित (उप २६६)।

विलित्त वि [विलिप्त] लिपा हुआ, जिसको विलेपन किया गया हो वह (सुर ३, ६२, १०, १७, भवि)।

विलिविली स्त्री [दे] कोमल और निर्बल शरीरवाली स्त्री, नाजुक बदनवाली नारी (दे ७, ७०)।

विलिह सक [वि + लिख्] १ रेखा करना। २ चित्र बनना। ३ खोदना। विलिहइ (भवि)। वकृ विलिहमाण (पउम ७, १२०)। कवकृ विलिहिज्जमाण (कप्प)। हेकृ विलिहिउ (कप्पू)।

विलिह सक [वि + लिह्] १ चाटना। २ चुम्बन करना। विलिहतु (कप्पू)। वकृ. विलिहत (गच्छ १, १७, भत्त १४२)।

विलिहण न [विलेखन] रेखा-करण (तदु ५०)।

विलिहिअ वि [विलिखित] चित्रित (सुर १२, २०)।

विलीअ देखो विलिअ = व्रीडित, 'सोगविवसो विलीओ' (कुप्र १३५)।

विलीअ देखो विलिअ = व्यलीक, 'मज्झ विलीय नरवइस्स परिवसइ किंपि चित्ते' (सुपा ३००)।

विलाइर वि [विलेतृ] द्रवण-शील, पिघलनेवाला (कुमा)।

विलीण वि [विलीन] १ पिघला हुआ, द्रवीभूत। २ विनष्ट, 'सोवि तुह झाणजलणे मयणो मयण विअ विलीणो' (धण २५; पाअ, महा, भवि)। ३ जुगुप्सित (पण्ह १, १—पत्र १४)।

विहरमाण (उत्त २३, ७, सुख २३, ७, ओघ १२४, महा, भग)। सक्. विहरित्ता, विहरिअ (भग, नाट—वक्र १०२)। विहरित्तए, विहरिउ° (भग, ठा २, १—पत्र ५६, उव)। कृ. विहरियव्व (उप १३१ टी)।

विहर सक [प्रति + ईक्ष्] प्रतीक्षा करना, बाट जोहना। विहरइ (षड्)।

विहर देखो विहार (उप ८३३ टी)।

विहरण न [विहरण] विहार (कुप्र २२)।

विहरिअ न [दे] सुरत, संभोग (दे ७, ७०)।

विहरिअ वि [विहृत] जिसने विहार किया हो वह (ओघ २१०, उव, कुप्र १६६)।

विहल अक [वि + ह्वल्] व्याकुल होना। वकृ. विहलन (स ४१५)।

विहल देखो विहड = वि + घट्। वकृ विहलत (से १४, २६)।

विहल वि [विह्वल] व्याकुल, व्यग्र (हे २, ५८, प्राकृ २४, पउम ८, २००, से ५, ५८, गा २८५, प्रासू ५, हास्य १४०, वज्जा २४, षड्, गउड)।

विहल देखो विअल = विकल (संक्षि ८)।

विहल वि [विफल] १ निष्फल, निरर्थक (गउड, सुपा ३६६)। २ असत्य, झूठा, 'मिच्छा मोह विहल अलिअ असच्च असब्भूअं' (पाअ)।

विहल सक [विफलय्] निष्फल बनाना, निरर्थक करना। विहलति (उव)।

विहलखल } वि [विह्वलाङ्ग] व्याकुल
विहलघल } शरीरवाला (काप्र १६६, स २५५, सुख १८, ३५, सुर ६, १७३, सुपा ४४७), 'वियणाविहलघला पडिया' (सुर १५, २०४)।

विहलिअ वि [विह्वलित] व्याकुल किया हुआ (कुमा ३, ४३, प्राप, महा)।

विहलिअ देखो विहडिय (से ७, ४६)।

विहलिअ वि [विफलित] विफल किया हुआ (सण)।

विहल्ल अक [वि + रु, वि + स्तृ ?] १ आवाज करना। २ सक. विस्तार करना। विहल्लइ (धात्वा १४३)।

विहल्ल पु [विहल्ल] राजा श्रेणिक का एक पुत्र (पडि)।

विहव पु [विभव] समृद्धि, संपत्ति, ऐश्वर्य (पाअ, गउड, कुमा, हे ४, ६०, प्रासू ७२, ७६)।

विहवण न [विध्वन] विनाश (राज)।

विहवा स्त्री [विधवा] जिसका पति मर गया हो वह स्त्री, राँड (औप, उव, गा ५३६, स्वप्न ५६, सुर १, ४३)।

विहवि वि [विभविन्] संपत्ति-शाली, धनाढ्य (कुमा, सुपा ४२२, गउड)।

विहव्व देखो विहव = विभव (नाट—मृच्छ ६६)।

विहस अक [वि + हस्] १ विकसना, खिलना, प्रफुल्ल होना। २ हास्य करना, मध्यम प्रकार का हास्य करना। विहसइ, विहसए, विहसेइ, विहसति (प्राकृ २६, सण, कुमा, हे ४, ३६५)। विहसेज, विहसेज्जा (कुमा ५, ८५)। भवि. विहसिहिइ, विहसेहिइ (कुमा ५, ८३)। वकृ विहसंत, विहसेंत (से २, ३६, कुमा ३, ८८, ५, ८४)। सकृ विहसिऊण, विहसिअ, विहसेऊण (गउड ८४५, ६१५, नाट—शकु ६८, कुमा ५, ८२)। हेकृ विहसिउ, विहसेउ (कुमा ५, ८२)।

विहसाव सक [वि + हासय्] १ हँसाना। २ विकसित करना। सकृ विहसाविऊण, विहसावेऊण (प्राकृ ६१)।

विहसाविअ वि [विहासित] १ हँसाया हुआ। २ विकसित किया हुआ (प्राकृ ६१)।

विहसिअ वि [विहसित] १ विकसित, खिला हुआ, प्रफुल्ल, 'विहसियदिट्ठीए विहसियमुहीए' (महा, सम्मत्त ७६)। २ न. मध्यम प्रकार का हास्य (गउड ६६६, ७५१)।

विहसिर वि [विहसितृ] खिलनेवाला, विकसित होनेवाला।

विहसिव्विअ वि [दे] विकसित, खिला हुआ (दे ७, ६१)।

विहस्सइ देखो बिहस्सइ (पाअ, औप)।

विहा अक [वि + भा] शोभना, चमकना। विहादि (शौ) (पि ४८७)।

विहा सक [वि + हा] परित्याग करना। सकृ. विहाय (सूअ १, १४, १)।

विहा अ [वृथा] निरर्थक व्यर्थ, मुधा (पंचा १२, ५)।

विहा स्त्री [विधा] प्रकार, भेद (कप्प, महा, अणु)।

विहा° देखो विहग = विहायस् (धर्मसं ६१६)।

विहाइ वि [विधायिन्] कर्ता, करनेवाला (चेइय ४०३, उप ७६८ टी, धर्मवि १३६)।

विहाउ वि [विधातृ] १ कर्ता, निर्माता (विसे १५६७, पचा ६, ३६)। २ पु. पराणपत्रि-देवो के उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)।

विहाड सक [वि + घटय्] १ वियुक्त करना, अलग करना। २ विनाश करना। ३ खोलना, उघाडना। विहाडेइ, विहाडेंति (राय १०४, महा, भग), 'कम्मसमुग्ग विहाडेंति' (औप, राय)। संकृ. 'समुग्गय तं विहाडेउं' (धर्मवि १५)। कृ. विहाडेयव्व (महा)।

विहाड वि [विघाट] विकट (राज)।

विहाड वि [विहाट] प्रकाश-कर्ता (सम्म २)।

विहाडण न [दे] अनर्थ (दे ७, ७१)।

विहाडिअ वि [विघटित] १ वियोजित, अलग किया हुआ (धर्मसं ७४२)। २ विनाशित (उप ५६७ टी)।

विहाडिअ वि [विघटित] उद्घाति, खोला हुआ (उप पृ ५४, वसु)।

विहाडिर वि [विघटयितृ] अलग करनेवाला वियोजक (सण)।

विहाण पु [दे] १ विधि, विधाता, दैव, भाग्य (दे ७, ६०), 'माणुसमयजूहवह विहाणवाहो करेमाणो' (स १३०, भवि)। २ विहान, प्रभात, सुबह (दे ७, ६०, से ३, ३१, भवि, हे ४, ३३०, ३६२, सिरि ५२५)। ३ पूजन अर्चन, 'अओ चेव कूरदेवयाविहाणनिमित्त पयारिऊण परियणं एयाए वावाइओ हविस्सइ' (स २६६)।

विहाण न [विधान] १ शास्त्रोक्त रीति (उप ७६८, पव ३५)। २ निर्माण, रचना (पंचा

विवइण्ण वि [विप्रकीर्ण] बिखरा हुआ (पउम ७८, २६ से ५, ५२,१३, ८६)।

विवंक वि [विवक्र] विशेष बांका, टेढा (स २५१)।

विवचिआ स्त्री [विपञ्चिका] वाद्य-विशेष, वीणा (पाअ)।

विवक्क वि [विपक्व] १ अच्छी तरह पूर्ण किया हुआ। २ प्रकर्ष को प्राप्त, अत्यन्त पका हुआ। ३ उदय मे आगत, फलाभिमुख, 'विवक्कतवबम्भचेराणं देवाण अवन्नं वदमाणे' (ठा ५, २—पत्र ३२१)।

विवक्ख पु [विपक्ष] १ दुश्मन, रिपु, विरोधी, 'विवक्खदेवीहिं' (गउड, स ५६४, अच्चु ३१)। २ न्याय-शास्त्र-प्रसिद्ध विरुद्ध पक्ष, वह वस्तु जहाँ साध्य आदि का अभाव हो (दसनि १—गाथा १४२)। ३ विपरीत धर्म (अणु)। ४ वैधर्म्य, विसदृशता (ठा १ टी—पत्र १३)।

विवक्खा स्त्री [विवक्षा] कहने की इच्छा (पच १, १० भास ३१, दसनि १, ७१)।

विवग्घ वि [विव्याघ्र] व्याघ्र के चमडे से मढा हुआ, व्याघ्र-चर्म-युक्त (आचा २, ५, १, ५)।

विवच्चास पु [विपर्यास] विपर्यय, विपरीतता, व्यत्यास, उलटा (उत्त ३०, ४, सुख ३०, ४, ओघ २६८)।

विवच्छा स्त्री [विवत्सा] १ एक महानदी (ठा १०—पत्र ४७७)। २ वत्स-रहित स्त्री (राज)।

विवज्ज अक [वि + पद्] मरना, नष्ट होना। विवज्जइ, विवज्जामि (स ११६, पच्च १४, सुख २, ४५)। भवि. विवज्जिही (कुप्र १८६)। वकृ. विवज्जत (नाट—रत्ना ७७)।

विवज्ज सक [वि + वर्जय्] परित्याग करना। विवज्जेइ (उव)। वकृ विवज्जयत, विवज्जमाण (उव, धर्मसं १०३२)। कृ. विवज्जणिज्ज, विवज्जणीअ (उप ५६७ टी, अभि १८३)।

विवज्ज वि [विवर्ज] १ रहित, वर्जित, 'मउडविवज्जाहरणं सव्वं से देइ भट्टस्स' (सुपा २७१)। २ परित्याग, परिहार (पिंड १२६)।

विवज्जग वि [विवर्जक] वर्जन करनेवाला (सूअ २, ६, ५)।

विवज्जण न [विवर्जन] परित्याग (रत्न २२)।

विवज्जणया } स्त्री [विवर्जना] परित्याग,
विवज्जणा } परिहार, वर्जन (सम ४४, उत्त ३२, २, दसचू २, ५)।

विवज्जत्थ वि [विपर्यस्त] विपरीत, उलटा (पचा ११, ३७, कम्म १, ५१)।

विवज्जय पुं [विपर्यय] विपर्यास, व्यत्यास, वैपरीत्य (पाअ, उप १४२ टी, पव १३३, पचा ६, ३०, कम्म १, ५५)।

विवज्जास पुं [विपर्यास] १ विपर्यय, व्यत्यय (पाअ, पचा ८, ११)। २ भ्रम, मिथ्याज्ञान (सुर ६, १५४)।

विवज्जिअ वि [विवर्जित] रहित, वर्जित, परित्यक्त (उव, दं ३६, सुर ३, १५५, रंभा, भवि)।

विवट्ट अक [वि + वृत्] बरतना, रहना। विवट्टइ (हे ४, ११८)। वकृ. विवट्टमाण (कुमा ६, ८०, रंभा)।

विवडिय वि [विपतित] गिरा हुआ (पउम १६, २२, भग ७, ६ टी—पत्र ३१८)।

विवड्ढ अक [वि + वृध्] बढना। वकृ. विवड्ढमाण (णाया १, १० टी—पत्र १७१)।

विवड्ढण वि [विवर्धन] बढानेवाला, 'मयविवड्ढण' (उत्त १६, ७)। स्त्री. °णी (उत्त १६, २)। देखो विवद्धण।

विवड्ढि स्त्री [विवृद्धि] बढाव, वृद्धि (पंचा १८, १३)।

विवड्ढिअ वि [विवृद्ध] बढ़ा हुआ (नाट—पिंग)।

विवणि पुंस्त्री [विपणि] १ बाजार (सुपा ५३०)। २ हाट, दूकान, 'विवणी तह आवणो हट्टो' (पाअ)।

विवणीय वि [व्यपनीत] दूर किया हुआ, हटाया हुआ (कप्प)।

विवण्ण देखो विवन्न=विपन्न (उत्त २०, ४४, गा ५५० अ)।

विवण्ण वि [विवर्ण] १ कुरूप, कुडौल (से ५, ४७, दे ६७६)। २ फीका, निस्तेज, म्लान (णाया १, १—पत्र २८, से ८, ८७)।

विवण्ण वि [द्विपर्ण] १ दो पत्रवाला। २ पुं. वृक्ष, पेड (राज)।

विवत्त पुं [विवर्त्त] एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष (सुज्ज २०)।

विवत्ति स्त्री [विपत्ति] १ विनाश (णाया १, ६—पत्र १५७, विपा १, २—पत्र ३२, सुपा २३५, उव)। २ मरण, मौत (सुर २, ५१, स ११६)। ३ कार्य की असिद्धि (सुपा २३५, उव, वृह १)। ४ आपदा, कष्ट (सुपा २३५)।

विवत्तिअ वि [विवर्त्तित] फिराया हुआ, घुमाया हुआ (से ६, ८०)।

विवत्थ पुं [विवस्त्र] एक महाग्रह (सुज्ज २०)।

विवदि स्त्री [विवृति] १ विवरण, टीका। २ विस्तार (संक्षि ६)।

विवद्धण न [विवर्धन] वृद्धि, बढाव (कप्प)। देखो विवड्ढण।

विवद्धणा स्त्री [विवर्धना] वृद्धि, बढाव (उप ६५५)।

विवद्धि पु [विवर्धि] देव-विशेष (अणु १४५)।

विवन्न देखो विवण्ण = विवर्ण (सुपा ३१६)।

विवन्न वि [विपन्न] १ नाश-प्राप्त, विनष्ट (णाया १, ६—पत्र १५७, स ३४५, सुपा ५०६)। २ मृत, मरा हुआ (पउम ४४, १०, उत्त १०, ४४, स ७५६, सूअनि १६२, धर्मवि १४४)।

विवय अक [वि + वद्] झगडा करना, विवाद करना। वकृ. विवयत (सुपा ५४६, सम्मत्त २१५)।

विवय वि [दे] विस्तीर्ण (षड्)।

विवया स्त्री [विपद्] कष्ट, दुःख (उप ७२८ टी)।

विवर सक [वि + वृ] १ बाल सँवारना। २ विस्तारना। ३ व्याख्या करना। विवरइ (भवि), विवरेहि (स ७१७)। वकृ 'किसे निवसस विवरन्ती' (कुप्र २८५)।

महादेव। ५ वायु, पवन। ६ कपूर (हे ३, १६)।

विहुअ वि [विधुत] कम्पित (गा ६६०, गउड)। २ उन्मूलित, उखाडा हुआ (से १, ५५)। ३ त्यक्त (गउड)।

विहुडुअ पु [दे] राहु, ग्रह-विशेष (दे ७, ६५)।

विहुण सक [वि+धू] १ कँपाना, हिलाना। २ दूर करना, हटाना। ३ त्याग करना। ४ पृथग् करना, अलग करना। विहुणइ, विहुणाति (भवि, पि ५०३), विहुणाहि (उत्त १०, ३)। कर्म विहुव्वइ (पि ५३६)। वकृ विहुणंत, विहुणमाण (सुपा २७२, पउम ६४, ३५)। कवकृ विहुव्वत (से ६, ३५, ७, २१)। संकृ. विहुणिय (सूत्र १, २, १, १५, यति २१, स ३०८)।

विहुणण न [विधूनन] १ दूरीकरण (पउम १०१, १६)। २ व्यजन, पखा (राज)।

विहुणिय वि [विधूत] देखो विहुअ (सुपा २५३, यति २१)।

विहुर वि [विधुर] १ विकल, व्याकुल, विह्वल (स्वप्न ६३, महा, कुमा, दे १, १५, सुपा ६२, गउड मण)। २ क्षीण (गउड १०३६)। ३ विसदृश विलक्षण, विषम, 'अवि-सिट्ठम्मिवि जोगम्मि बाहिरे होइ विहुरया' (ओघ ५१)। ४ विश्लिष्ट, वियुक्त (गउड ८३६)। ३ न व्याकुल-भाव, विह्वलता, 'विलोट्टए विहुरम्मि' (स ७१६, वज्जा ३२, ६४, प्रासू ५८, भवि, सण)।

विहुराइअ वि [विधुरायित] व्याकुल बना हुआ (गउड १११ टी)।

विहुरिज्जमाण वि [विधुरायमाण] व्याकुल बनता (सुपा ४१६)।

विहुरिय वि [विधुरित] १ व्याकुल बना हुआ (सुर २, २१६, ६ ११५, महा)। २ वियुक्त बना हुआ, विछुडा हुआ, विरहित (गउड)।

विहुरीकय वि [विधुरीकृत] व्याकुल किया हुआ (कुमा)।

विहुल देखो विहुर (पात्र)।

विहुल्ल वि [विफुल्ल] १ खिला हुआ। २ उत्साही, 'नियकज्जविहुल्ली' (भवि)।

विहुव्वत देखो विहुण।

विहूअ वि [विधूत] १ कम्पित, (माल १७८)। २ वर्जित, रहित, 'नयविहिवि-हूयबुद्धी' (पउम ५५, ४)। देखो विधूय विहुअ।

विहूइ देखो विभूइ (अच्चु १४, भवि)।

विहूण देखो विहुण। संकृ. विहूणिया (आचा १, ७, ८, २४, सूत्र १, १, २, १२, पि ५०३)।

विहूण देखो विहीण (कुमा, उव)।

विहूणय न [विधूनक] व्यजन, पंखा (सूत्र १, ४, २, १०)।

विहूसण देखो विभूसण (दे ६, १२७, सुपा १६१, कुप्र २६)।

विहूसा स्त्री [विभूषा] १ शोभा (सुपा ६२१, दे ६, ८३)। २ अलकार आदि से शरीर की सजावट (पचा १०, २१)।

विहूसिअ वि [विभूषित] विभूषा-युक्त, अलंकृत (भवि)।

विहे सक [वि + धा] करना, बनाना। विहेइ, विहेंति, विहेसि, विहेमि (धर्मसं १०११, स ६३४, ७१२, गउड, ३३२; कुमा ७, ६७)। संकृ विहेऊण (पि ५८५)। हेकृ विहेउ (हित १)। कृ विहियव्व, विहेअ, विहेअव्व (सुपा १५८, हि २२, धम्मो ४, महा, सुपा १६३, श्रा १२, हि २, पउम ६६, १८, सुपा १५६)।

विहेड सक [वि+हेटय्] १ मारना, हिंसा करना। २ पीडा करना। वकृ विहेडयत (उत्त १२, ३६)। कवकृ. 'विहम्ममणाहिं विहेड (?ट्ठ)यंता' (पण्ण १, ३—पत्र ५३)।

विहेडय वि [विहेठक] अनादर-कर्ता (दस १०, १०)।

विहेडि वि [विहेटिन्] १ हिंसा करनेवाला। २ पीडा करनेवाला, 'अगे मते अहिज्जंति पाणभूयविहेडिणो' (सूत्र १, ८, ४)।

विहेडिय वि [विहेटित] पीडित (भत्त १३३)।

विहेढणा स्त्री [विहेठना] कदर्थना, पीडा (उव)।

विहोड सक [ताडय] ताडन करना। विहोडइ (हे ४, २७)।

विहोडिअ वि [ताडित] जिसका ताडन किया गया हो वह (कुमा)।

विहोय (अप) देखो विहव (भवि)।

वी देखो वि = अपि, वि, 'एक्कं चिय जाव न वी, दुक्ख वोलेइ जणियपियविरहं' (पउम १७, १२)।

वीअ सक [वीजय्] हवा डालना, पखा करना। वीअअति अभि ८६), वीयति (सुर १, ६६)। वकृ. वीअंत (गा ८६, सुर ७, ८८)। कवकृ. विइज्जत, वीइज्जमाण (से ६, ३७, णाया १, १—पत्र ३३)।

वीअ वि [दे] १ विधुर, व्याकुल। २ तत्काल, तात्कालिक, उसी समय का (दे ६, ६३)।

वीअ देखो बीअ = द्वितीय (कुमा; गा ८६, २०६, ४०६, गउड)।

वीअ वि [वीत] विगत, नष्ट (भग, अज्झ ६६)। °कम्ह न [°कश्म ?] १ गोत्र-विशेष। २ पुंस्त्री उम गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०)। °धूम वि [°धूम] द्वेष-रहित (भग ७, १—पत्र २६१)। °भय, °भय न [°भय] १ नगर-विशेष, सिन्धुसौवीर देश की प्राचीन राजधानी (धर्मवि १६, २१, इक, विचार ४८, महा)। २ वि भय-रहित (धर्मवि २१)। °मोह वि [°मोह] मोह-रहित (अज्झ ६६)। °राग, °राय वि [°राग] राग-रहित, क्षीण राग (भग, स ४१)। °सोग पुं [°शोक] एक महाग्रह (सुज्ज २०, ठा २, ३—पत्र ७६)। °सोगा स्त्री [°शोका] सलिलावती नामक विजय-प्रान्त की राजधानी, नगरी-विशेष (णाया १, ८—पत्र १२१, इक, पउम २०, १४२)।

वीअजमण देखो बीअजमण (दे ६, ६३ टी)।

वीअण न [वीजन] १ हवा करना, पंखा से हवा करना (कप्पू)। २ स्त्रीन. पखा, व्यजन (सुर १, ६६, कुप्र ३३३, महा)। स्त्री. °णी (औप; सूत्र १, ६, ८, णाया १, १—पत्र ३२)।

४ न एकान्त, विजन, 'किंतु विवित्तमाइसउ ताओ' (स ७४३)।

विवित्त वि [विविक्त] १ विवेक-युक्त। २ सुन्दित, शान धीर (सन ५)।

विविदिअ वि [विविदित] विशेष रूप से ज्ञात (पराह २, १—पत्र ६६)।

विविदिसा देखो विविइसा (पचा ३, २७)।

विविद्धि पु [विवृद्धि] उत्तर भाद्रपदा नक्षत्र का अधिष्ठाता देव (ठा २, ३—पत्र ७७)।

विविह वि [विविध] अनेक प्रकार का, बहुविध, भाँति भाँति का (आचा, राय, उव, महा)।

विवुअ वि [विवृत] १ विस्तृत। २ व्याख्यात (सक्षि ४)।

विवुज्झ अक [वि + बुध्] जागना। विवुज्झदि (शौ) (प्राप्र)।

विवुड्ढि देखो विवड्ढि (ओघभा १३६, स १३५)।

विवुद देखो विवुअ (प्राकृ ८, १२)।

विवुदि देखो विवदि (प्राकृ १२)।

विवुह देखो विवुह (सण)।

विवेअ देखो विवेग (कुमा, महा ५२, ७७)। °न्नु वि [°ज्ञ] विवेक ज्ञाता (पउम ५३, ३८)।

विवेअ पुं [विवेप] विशेष कंप (सुपा १४)।

विवेइ वि [विवेकिन्] विवेकवाला (सुपा १४८, कुमा, सण)।

विवेग पुं [विवेक] १ परित्याग (सूअ १, २, १, ८, ठा २, ३, औप, आचानि ३०३)। २ ठीक-ठीक वस्तु-स्वरूप का निर्णय, विनिश्चय (औप कुमा)। ३ प्रायश्चित्त (आचा १, ५, ४, ४)। ४ पृथक्करण (औप)।

विवेगि देखो विवेइ (सुपा ५४३, कुप्र ४७)।

विवेच सक [वि + वेचय्] विवेचन करना, ठीक-ठीक निर्णय करना, विवेक करना। कर्म विवेचिज्जइ (धर्मसं १३१०)। हेकृ. विवेचितुं (धर्मसं १३११)।

विवेयण न [विवेचन] विवेक, निर्णय (विसे १६४२)।

विवोल पुं [दे] विशेष कोलाहल, कलकल आवाज, 'विवोलेण सवणसुहय' (स ५७१)।

विवोलिअ वि [दे] व्यतिक्रान्त, गुजरा हुआ, 'कहकहवि विवोलिया मे रयणी' (स ५०६)।

विवोह देखो विबोह (भवि)।

विव्व सक [वि + अय्] व्यय करना, खर्च करना, 'चिंतामणिप्पभावा सपज्जइ तस्स दविणमइपउर। त विव्वइ जिणभवणे' (सुपा ३८२)। कृ 'विव्वेयव्वो' (सुपा ४२४, ५८६)। देखो विच्च = वि = अय।

विव्वाय वि [दे] १ अवलोकित। २ विश्रान्त (दे ७, ८६)।

विव्वोअ देखो विब्वोअ (कुमा)।

विव्वोयण [दे] देखो बिब्बोयण (कप्प)।

विस सक [विश्] प्रवेश करना। विसइ, विसंति (वज्जा २६, सण, गउड)। वकृ विसंत (गउड)। सकृ विसिऊण (गउड)।

विस सक [वि + शृ] १ हिंसा करना। २ नष्ट करना। कवकृ. विसिज्जमाण, विसीरंत (विसे ३४३८, अच्चु ७४)।

विस पुंन [विष] १ जहर, गरल, हलाहल, 'झत्ति नट्ठो दुहावि विमोहविसो' (सम्मत्त २२६, उवा, गउड, प्रासू १२०, कुमा)। २ पानी, जल (से ८, ६३)। °नंदि पुं [°नन्दिन्] प्रथम बलदेव का पूर्वभवीय नाम (सम १५३)। °न्न [°ान्न] विष-मिश्रित अन्न (उप ६४८ टी)। °मइअ, °मय वि [°मय] विष का बना हुआ (हे १, ५०, षड्)। °व वि [°वत्] १ विषवाला, विष-युक्त। २ पु सर्प, साँप (से ७, ६७)। °हर पुं [°धर] साँप, सर्प (से २, २५, सुर १, २४६, महा)। °हरवइ पुं [°धरपति] शेष नाग (से ६, ७)। °हरिंद पुं [°धरेन्द्र] शेष नाग (गउड)। °हारिणी स्त्री [°हारिणी] पनीहारी, पानी भरनेवाली स्त्री (हे ४, ४३६)।

विस देखो विस (गा ६५२, गउड)।

विस पु [वृष] १ बैल, साँड, वृषभ (सुर १, २४८, सुपा ३६३, ५६७, सुख ८, १३)। २ ज्योतिष-प्रसिद्ध एक राशि (सुपा १०८, विचार १०७)। ३ मूषक, चूहा (दे ७, ६१, षड्)। ४ धर्म। ५ बल-युक्त। ६ ऋषभ नामक औषध। ७ पुरुष विशेष (सुपा ३६३)। ८ काम, कन्दर्प। ६ शुक्र-युक्त, वीर्य-युक्त। १० शृङ्गवाला कोई भी जानवर (सुपा ५६७)।

विसइ वि [विषयिन्] विषयवाला, विषय-युक्त (विसे २७६०)।

विसंक वि [विशङ्क] शका-रहित, नि शक (उप १३६ टी)।

विसखल वि [विश्रृङ्खल] स्वच्छन्द, स्वैरी, निरंकुश, उद्धत (पाअ, स १८०, मे ५, ६८)।

विसखल सक [विश्रृङ्खलय्] निरकुश करना, अव्यवस्थित कर डालना। संकृ. विसंखलेऊण (सुख २, १५)।

विसंघट्टिय वि [विसंघट्टित] वियुक्त, विघटित (कुप्र ६)।

विसंघड अक [विस + घट्] अलग होना, जुदा होना। वकृ विसवडत (गा ११५)।

विसघडिय वि [विसघटित] वियुक्त, जो जुदा हुआ हो वह (णाया १, ८—१४१, महा)।

विसंघाइय वि [विसंघातित] संहत किया हुआ (अणु १७६)।

विसघाय सक [विस + घातय्] सहत करना। कर्म. विसघाइज्जइ (अणु १७६)।

विसजुत्त वि [विसंयुक्त] वियुक्त, जो अलग हुआ हो (सम्म २२, सूअनि १२१ टी)।

विसजोअ पु [विसं + योजय्] वियुक्त करना, अलग करना। विसंजोएइ (भग)।

विसजोअ, विसजोग पुं [विसयोग] वियोग, विघटन, पृथग्भाव, जुदाई (कम्म ५, ८२, पच ३, ५४)।

विसठुल वि [विसंस्थुल] १ विह्वल, व्याकुल (पाअ, से १४, ४१, हे २, ३२, ४, ४३६, मोह २२, धम्मो ५)। २ अव्यवस्थित (गा १४६, कुप्र ४१७, दे १, ३४)।

विसतव पु [द्विषन्तप] शत्रु को तपानेवाला, दुश्मन को हैरान करनेवाला (हे १, १७७)।

विसथुल देखो विसठुल (पउम ८, २००, स ५२१)।

विसथुलिय वि [विसंस्थुलित] व्याकुल बना हुआ (सण)।

[°वरणी] प्रतिसुभट से प्रथम शस्त्र-प्रहार की याचना (सिरि १०२४)। °वलय न [°वलय] सुभट का एक आभूषण, वीरत्व-सूचक कड़ा (कप्प, तदु २९)। °विराली स्त्री [°विराली] वल्ली-विशेष (पएण १—पत्र ३३)। °सिंग पुन [°शृङ्ग] एक देव-विमान (सम १२)। सिट्ठ पुन [°सृष्ट] एक देव-विमान (सम १२)। °सेण पुं [°सेन] एक प्रसिद्ध वीर यादव का नाम (णाया १, ५—पत्र १००, अंत, उप ६४८ टी)। °सेणिय पुंन [°सैनिक, श्रेणिक] एक देव-विमान (सम १२)। °ावत्त पुंन [°ावर्त्त] देवविमान विशेष (सम १२)। °ासण न [°ासन] आसन-विशेष, नीचे पैर रखकर सिंहासन पर बैठने के जैसा अवस्थान (णाया १, १—पत्र ७२ भग)। °ासणिय वि [°ासनिक] वीरासन से बैठनेवाला (ठा ५, १—पत्र २९९, कस; औप)।

वीरंगय पु [वीराङ्गद] १ भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेनेवाला एक राजा (ठा ८—पत्र ४३०)। २ एक राजकुमार (उप १०३१ टी)।

वीरण स्त्रीन [वीरण] तृण-विशेष, उशीर, खस (अणु २१२, पाअ)।

वीरल्ल पु [वीरल्ल] श्येन पक्षी (पएह १, १—पत्र ८, १३)।

वीरिअ पु [वीर्य] १ भगवान् पार्श्वनाथ का एक मुनि संघ। २ भगवान् पार्श्वनाथ का एक गणधर (ठा ८—पत्र ४२९)। ३ पुन. शक्ति, सामर्थ्य (उवा, ठा ३, १ टी—पत्र १०६)। ४ अन्तरंग शक्ति, आत्म-बल (प्रासू ४६, अज्झ ६५)। ५ पराक्रम (कम्म १, ५२)। ६ एक देव-विमान (देवेन्द्र १३१)। ७ शरीर-स्थित एक धातु, शुक्र। ८ तेज, दीप्ति (हे २, १०७, प्राप्र)।

वीरुणी स्त्री [वीरुणी] पर्व-वनस्पति विशेष, 'वीरुणा (? णी) तह इक्कडे य मासे य' (पएण १—पत्र ३३)।

वीरुत्तरवडिंसग पुन [वीरोत्तरावतंसक] एक देव-विमान (सम १२)।

वीरुहा स्त्री [वीरुधा] विस्तृत लता (कुप्र ६५, १३६)।

वीलण वि [दे] पिच्छिल, स्निग्ध, मसृण, चिकना (दे ७, ७३)।

वीलय देखो वीलय (दे ६, ९३)।

वीली स्त्री [दे] १ तरंग, कल्लोल (दे ७, ७३)। २ वीथी, पंक्ति, श्रेणी (षड्)।

वीवाह देखो विवाह = विवाह, 'एसा एक्का धूया वल्लहिया ता इमीए वीवाहं' (सुर ७, १२१, महा)।

वीवाहण न [विवाहन] विवाह करण, विवाह क्रिया (उव ९८६ टी, सिरि १५१)।

वीवाहिग वि [वैवाहिक] विवाह-सम्बन्धी (धर्मवि १४७)।

वीवाहिय वि [विवाहित] जिसकी शादी की गई हो वह (महा)।

वीवी स्त्री [दे] वीचि, तरंग (षड्)।

वीस देखो विस्स = विस्र (सूअ २, २, ६६, संक्षि २०)।

वीस देखो विस्स = विश्व (सूअ १, ६, २२)। °उरी स्त्री [°पुरी] नगरी-विशेष (उप ५६२)। °सअ वि [°सृज] जगत्कर्ता (षड्)। °सेण पुं [°सेन] १ चक्रवर्त्ती राजा, 'जोहेसु णाए जह वीससेणे' (सूअ १, ६, २२)। २ पु. अहोरात्र का १८ वाँ मुहूर्त्त (सुज्ज १०, १३)।

वीस° } स्त्री [विंशति] १ संख्या-विशेष,
वीसइ } वीस, २०। २ जिनकी संख्या बीस हो वे (कप्प, कुमा, प्राकृ ३१, संक्षि २१)। °म वि [°म] १ वीसवाँ, २० वाँ (सुपा ४५२, ४५७, पउम २०, २०८, पव ४६)। २ न. लगातार नव दिनो का उपवास (णाया १, १—पत्र ७२)। °हा अ [°धा] बीस प्रकार से (कम्म १, ५)।

वीसंत वि [विश्रान्त] १ विश्राम-प्राप्त, जिसने विश्रान्ति ली हो वह, 'परिस्संता वीसंता नग्गोहतरुतले' (कुप्र ६२, पउम ३३, १३, दे ७, ८९, पाअ, सण, उप ६४८ टी)।

वीसंदण न [विस्यन्दन] दही की तर और आटे से बनता एक प्रकार का खाद्य (पव ४, पभा ३३)।

वीसंभ देखो विस्संभ = वि + श्रम्भ्। वीसभइ (सूअनि २१ टी)।

वीसंभ देखो विस्सभ = विश्रम्भ (उव, प्राप्र, गा ४३७)।

वीसज्जिअ देखो विसज्जिअ (से ६, ७७, १५, ९३, पउम १०, ५२, धर्मवि ४६)।

वीसत्थ वि [विश्वस्त] विश्वास-युक्त (प्राप्र, गा ६०८)।

वीसद्ध वि [विश्रब्ध] विश्वास युक्त (गा ३७६, अभि ११६, भवि, नाट—मृच्छ १६१)।

वीसम देखो विस्सम = वि + श्रम्। वीसमइ, वीसमामो (षड्, महा, पि ४८९)। वकृ. वीसममाण (पउम ३२, ४२, पि ४८९)।

वीसम देखो विस्सम = विश्रम (षड्)।

वीसम देखो वीस-म।

वीसमिर वि [विश्रमितृ] विश्राम करनेवाला (सण)।

वीसर देखो विस्सर = वि + स्मृ। वीसरइ (हे ४, ७५, ४२६, प्राकृ ६३, षड्, भवि), वीसरेसि (रंभा)।

वीसर देखो वीस्सर = विस्वर, 'वीसरसर रसतो जो सो जोणीमुहाओ निप्फिडइ' (तदु १४)।

वीसरणालु वि [विस्मर्तृ] भूल जानेवाला (ओघ ४२५)।

वीसरिअ देखो विस्सरिय (गा ३६१)।

वीसव (अप) सक [वि + श्रमय्] विश्राम करवाना। वीसवइ (भवि)।

वीसस देखो विस्सस। वीससइ (पि ६४, ४९६)। वकृ वीससत (पउम ११३, ५)। कृ. वीससणिज्ज, वीससणीअ (उत्त २९, ४२, नाट—मालवि ५३)।

वीससा अ [विस्रसा] स्वभाव, प्रकृति (ठा ३, ३—पत्र १५२, भग, णाया १, १२)।

वीससिय वि [वैस्रसिक] स्वाभाविक (आवम)।

वीसा देखो वीसइ (हे १, २८, ९२, ठा ३, १—पत्र ११९, षड्)।

वीसा स्त्री [विश्वा] पृथिवी, धरती (नाट)।

वीसाण पुं [विष्वाण] आहार, भोजन (हे १, ४३)।

विसण्ण वि [विसंज्ञ] सज्ञा-रहित, चैतन्य-वर्जित (से ६, ६८)।

विसण्ण देखो विसन्न = विषण्ण (महा, वसु, राज)।

विसत्त नि [विसत्त्व] सत्त्व-रहित (वव ६)।

विसत्थ देखो वीसत्थ (णाया १, १—पत्र १३, स्वप्न १६, उप ७२८ टी)।

विसद देखो विसय = विशद (पण्ह १, ४—पत्र ७२ कप्प, त्रि ६७)।

विसद्द पु [विशब्द] १ विशिष्ट शब्द। २ वि. विशिष्ट शब्दवाला (गउड)।

विसन्न वि [विषण्ण] १ खिन्न, शोक ग्रस्त, विषादयुक्त (पण्ह १, ३—पत्र ५५, सुर ६, १८०, श्रु १२)। २ आसक्त, तल्लीन (सूत्र १, १२, १४)। ३ निमग्न, 'अतरा चेव सेयंसि विसन्ने' (णाया १, १—पत्र ६३)। ४ पु. असंयम (सूत्र १, ४, १, २६)।

विसन्न देखो विस-न्न।

विसन्ना स्त्री [विसज्ञा] विद्या-विशेष (पउम ७, १३६)।

विसप्प अक [वि + सृप्] फैलना, विस्तरना, व्याप्त होना। वकृ विसप्पंत, विसप्पमाण (कप्प, भग, औप, तदु ५३)।

विसप्प पु [विसर्प] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २७)।

विसप्पि वि [विसर्पिन्] फैलनेवाला (सुपा ४४७)।

विसप्पिर वि [विसर्पितृ] ऊपर देखो (सण)।

विसम देखो वीसम = वि + श्रम्। विसमदु (रंभा ३१)।

विसम वि [विषम] १ ऊँचा-नीचा, उन्नतावनत (कुमा, गउड)। २ असम, असमान, अतुल्य (भग, गउड)। ३ अयुग्म, एकी सख्या, जैसे—एक, तीन, पाँच, सात आदि। ४ दारुण, कठिन, कठोर। ५ संकट, संकरा, कम चौडा, सकीर्ण (हे १, २४१, पड्)। ६ पुन आकाश (भग २०, २)। °क्खर वि [°क्षर] अपसिद्धान्तवाला, असत्य निर्णयवाला (से ४, २४)। °लोअण पु [°लोचन] महादेव, शिव (वेणी ११७)। °वाण पु [°वाण] कामदेव (सण)। °सर पु [°शर] वही (स १, सुपा १६३, सण)।

विसमय न [दे] भल्लातक, भिलावाँ (दे ७, ६६)।

विसमय देखो विस-मय।

विसमिअ वि [विषमित] १ वीच-वीच मे विच्छेदित (से ६, ८७)। २ विषम बना हुआ (गउड)।

विसमिअ वि [विस्मृत] भुला हुआ, अस्मृत (से ६, ८७)।

विसमिअ [विश्रमित] विश्रान्त किया हुआ, विश्राम-प्रापित (से ६, ८७)।

विसमिअ वि [दे] १ विमल, निर्मल। २ उत्थित (दे ७, ९२)।

विसमिर वि [विश्रमितृ] विश्राम करनेवाला। स्त्री. °री (गा ५२, प्राकृ ३०)।

विसम्म अक [वि + श्रम्] विश्राम करना, आराम करना। भवि. विसम्मिहिइ (गा ५७५)। कृ. विसम्मिअव्व (से ६, २)।

विसय वि [विशद] १ निर्मल, स्वच्छ (कुप्र ४१५, सट्ठि ७८ टी)। २ व्यक्त, स्पष्ट (पाअ)। ३ धवल, सफेद (औप)।

विसय पुन [विशय] १ गृह, घर (उत्त ७, १)। २ सभव, संभावना (आचू १)।

विसय पु [विषय] १ गोचर, इन्द्रिय आदि से जाना जाता पदार्थ—शब्द, रूप, रस आदि वस्तु (पाअ, कुमा, महा)। २ जनपद, देश (ओघभा ८, कुमा, पउम २७, ११, सुपा ३१, महा)। ३ काम-भोग, विलास, 'भोगपुरिसो समज्जियविसयसुहो' (ठा ३, १ टी—पत्र ११४, कम्म १, ५७, सुपा ३१, महा)। ४ बाबत, प्रकरण, प्रस्ताव, 'जोइसविसए' (उप ६८६ टी, ओघभा ६)। °ाहिव पु [°ाधिपति] देश का मालिक, राजा (सुपा ४६४)।

विसर सक [वि + सृज्] १ त्याग करना। २ विदा करना, भेजना। विसरइ (पड्)।

विसर अक [वि + सृ] सरकना, घसना, नीचे गिरना, खिसकना। वकृ. विसरत (णाया १, ९—पत्र १५७, से १४, ५४)।

विसर सक वि + स्मृ] भूल जाना, याद न आना। विसरइ (प्राकृ ६३)।

विसर पुं [दे] सैन्य, सेना, लश्कर (दे ७, ६२)।

विसर पु [विसर] समूह, यूथ, सघात (सुपा ३, सुर १, १८५, १०, १४)।

विसरण न [विशरण] विनाश (राज)।

विसरय पुन [दे] वाद्य-विशेष (महा)।

विसरा स्त्री [विसरा] मच्छी पकडने का जाल विशेष (विपा १, ८—पत्र ८५)।

विसरिअ वि [विस्मृत] याद नही आया हुआ (पि ३१३)।

विसरिया स्त्री [दे] सरट, कृकलास, गिरगिट (राज)।

विसरिस वि [विसदृश] असमान, विजातीय (सण)।

विसलेस पु [विश्लेष] जुदाई, वियोग, पृथग्भाव (चंड)।

विसल्ल वि [विशल्य] शल्य-रहित (पउम ६३ ११, चेइय ३८७)। °करणी स्त्री [°करणी] विद्या-विशेष (सूत्र २, २, २७)।

विसल्ला स्त्री [विशल्या] १ एक महौषधि (ती ५)। २ लक्ष्मण की एक स्त्री (पउम ६३, २६)।

विसस सक [वि + शस्] वध करना, मार डालना, 'विससेह महिसे' (मोह ७६)। कवकृ विससिज्जंत (गउड ३१६)।

विसस देखो विस्सस = वि + श्वस्। कृ-विससिअव्व (सं १०८)।

विससिय वि [विशसित] वध किया हुआ, जो मार डाला गया हो वह (गउड, ४७५, ससम्मत्त १४०)।

विसह सक [वि + षह्] सहन करना। विसहति (उव)। वकृ विसहत (से १२, २३, सुपा २३३)। हेकृ विसहिउ (स ३४६)।

विसह वि [विषह] सहन करनेवाला, सहिष्णु, 'वसुधरा इव सव्वफासविसहे' (कप्प, औप)।

विसह देखो वसभ (गउड)।

विसहण न [विषहण] १ सहन करना (धर्मसं ८६७)। २ त्रि. सहिष्णु (पव ७३ टी)।

विसहिअ वि [विषोढ] सहन किया हुआ (से ६, ३३)।

विसाअ (अप) स्त्री [विश्वा] छन्द-विशेष (पिंग)।

वुज्झंत वि [उह्यमान] पानी के वेग से खींचा जाता, वह जाता (पउम १०२, २४), 'गिरि-निज्झरणोदगेहि वुज्झंतो' (वे ८२)। देखो वह = वह ।

वुज्झण देखो वुज्झण (धर्मसं १०२१)।

वुज्झमाण देखो वुज्झंत (पउम ८३, ४)।

वुव्व (अप) देखो वच्च = व्रज्। वुव्वइ (हे ४, ३९२, कुमा)। संकृ. वुप्पेप्पि, वुप्पेप्पिणु (हे ४, ३९२)।

वुट्ठ अक [व्युत् + स्था] उठना, खडा होना। वुट्ठए (पि ३३७)।

वुट्ठ वि [वृष्ट] १ वरसा हुआ (हे १, १३७, विपा २, १—पत्र १०८, कुमा १, ८५)। २ न. वृष्टि (दस ८, ६)।

वुट्ठि देखो विट्ठि = वृष्टि (हे १, १३७, कुमा)। °काय पु [°काय] वरसता जल-समूह (भग १४, २—पत्र ६३४, कप्प)।

वुट्ठिय वि [व्युत्थित] जो उठ कर खडा हुआ हो वह (भवि)।

°वुड देखो पुड = पुट, 'जपइ कयजलिवुडो' (पउम ६३, २२)।

वुड्ढ अक [वृध्] वढना (संक्षि ३४)। वुड्ढति (भग ५, ८)।

वुड्ढ सक [वर्धय्] वढाना। वकृ वुड्ढत (द्र २३)।

वुड्ढ वि [वृद्ध] १ जरा अवस्थावाला, वूढ़ा (औप, सुर ३, १०४, सुपा २२७, सम्मत्त १५८, प्रासू ११६, सण)। २ वडा, महान् (कुमा)। ३ वृद्धि-प्राप्त। ४ अनुभवी, कुशल, निपुण। ५ पडित, जानकार (हे १, १३१, २, ४०, ९०)। ६ निभृत, शान्त, निर्विकार (ठा ८)। ७ पुं तापस, सन्यासी (णाया १, १५—पत्र १९३, अणु २४)। ८ एक जैन मुनि का नाम (कप्प)। °त्त, °त्तण न [°त्व] वुढ़ापा, जरावस्था (सुपा ३६०, २४२)। °वाइ पु [°वादिन्] एक समर्थ जैनाचार्य जो सुप्रसिद्ध कवि सिद्धसेन दिवाकर के गुरु थे (सम्मत्त १४०)। °वाय पुं [°वाद] किंवदन्ती, कहावत, जनश्रुति (स २०७)। °सावग पु [°श्रावक] ब्राह्मण (णाया १, १५—पत्र १९३, औप)। °णुग वि [°ानुग] वृद्ध का अनुयायी (सं ३३)।

वुड्ढ वि [दे] विनष्ट (राज)।

वुड्ढि स्त्री [वृद्धि] १ वढाव, वढना (आचा, भग, उवा, कुमा, सण)। २ अभ्युदय, उन्नति। ३ समृद्धि, संपत्ति। ४ व्याकरण-प्रसिद्ध ऐकार आदि वर्णों की एक संज्ञा (सुपा १०३, हे १, १३१)। ५ समूह। ६ कलान्तर, सूद। ७ ओषधि-विशेष। ८ पुं. गन्धद्रव्य-विशेष (हे १, १३१)। °कर वि [°कर] वृद्धि-कर्ता (सुर १ १२९, द्र २४)। °धम्मय त्रि [°धर्मक] वढनेवाला, वर्धन-शील (आचा)। °म वि [°मत्] वृद्धिवाला (विचार ४९७)।

वुणण न [दे] वुनना (सम्मत्त १७३)।

वुणिय वि [दे] वुना हुआ, 'अ-वुणिया खट्टा' (कुप्र २२०)।

वुण्ण वि [दे] १ भीत, त्रस्त (दे ७, ९४, विपा १,२—पत्र २४)। २ उद्विग्न (दे ७, ९४)।

वुत्त वि [उक्त] कथित (उवा, अनु ३, महा)।

वुत्त वि [उप्त] वोया हुआ (उव)।

वुत्त न [वृत्त] छन्द, कविता, पद्य (पिंग)। देखो वट्ट = वृत्त।

°वुत्त देखो पुत्त (प्रयौ २२)।

वुत्तंत पुं [वृत्तान्त] खवर, समाचार, हकीकत, वात (स्वप्न १५३, प्राप्र, हे १, १३१, स ३५)।

वुत्ति देखो वत्ति = वृत्ति, 'जायामायावुत्तिएण' (सूअ २, १, ५०, प्राकृ ८)।

वुत्थ वि [उषित] वसा हुआ, रहा हुआ (पाअ, णाया १, ८—पत्र १४८, उव, घण ४३, उप पृ १२७, सुख २, १७, से ११, ८०, कुप्र १८७)।

वुद देखो वुअ = वृत (प्राकृ ८)।

वुदास पुं [व्युदास] निरास (विसे ३४७५)।

वुदि देखो वइ = वृति (प्राकृ ८)।

वुद्ध देखो वुड्ढ = वृद्ध (षड्)।

वुद्धि देखो वुड्ढि (ठा १०—पत्र ५२५, सम १७, संक्षि ४)।

वुन्न देखो वुण्ण (सुर ६, १२४, सुपा २५०, णमि १०, भवि, कुमा; हे ४, ४२१)।

वुप्पंत वि [उप्यमान] वोया जाता, 'पेच्छइ य मगलसएहि वप्पिए करिसगेहि वुप्पंतं' (आक २५, पि ३३७)।

वुप्पाय वि [व्युत् + पादय] व्युत्पन्न करना, होशियार करना। वकृ. वुप्पाएमाण (णाया १, १२—पत्र १७४, औप)।

वुप्फ न [दे] शेखर, शिर-स्थित (दे ७, ७४)।

वुब्भ° देखो वह = वह्।

वुब्भमाण देखो वुज्झमाण (कुप्र २२३)।

°वुर देखो पुर (अच्चु १६)।

°वुरिस देखो पुरिस = पुरुष (अउम ६५, ४५)।

वुल्लाह पुं [दे] अश्व की एक उत्तम जाति (सम्मत्त २१६)।

वुसह देखो वसभ (चारु ७, गा ४६०, ८२०, नाट—मृच्छ १०)।

वुसि स्त्री [वृषि] मुनि का आसन। °राइ, राइअ वि [राजिन्] सयमी, जितेन्द्रिय, त्यागी, साधु (निचू १६)। देखो वुसि, वुसी।

वुसि वि [वृषिन्] सविग्न, साधु, संयमी, मुनि, 'वुसि सविग्गो भणिओ' (निचू १६)।

वुसिम वि [वश्य] वश मे आनेवाला, अधीन होनेवाला, 'निस्सारियं वुसिमं मन्नमाणा' (निचू १६)।

वुसी स्त्री [वृषी] मुनि का आसन। °म वि [°मत्] सयमी, साधु, मुनि, 'एस धम्मे वुसीमओ' (सूअ १, ८, १९, १, ११, १५, १, १५, ४, उत्त ५, १८, सुख ५, १८)। देखो वुसि।

वुस्सग्ग देखो विओसग्ग, 'सच्चित्ताण पुप्फाइयाण दव्वाण कुणइ वुस्सग्गं' (उप १४२, सवोध ५१, ५२)।

वूढ देखो वुड्ढ = वृद्ध (सुपा ५१०, ५२०)।

वूढ वि [व्यूढ] १ धारण किया हुआ, 'सीआपरिमट्ठेण व वूढो तेणवि णिरंतरं रोमंचो' (से १,४२, धण २०, विचार २२९ णदि ५२)। २ ढोया हुआ, मुणिवूढो सील-भरो विसयपसत्ता तरंति नो वोढुं (प्रवि १७, स १९२)। ३ वहा हुआ, वेग में खिंचा

विसील वि [विशील] १ ब्रह्मचर्य-रहित, व्यभिचारी (वसु, उप ५९७ टी)। २ खराब स्वभाववाला, विरूप आचरणवाला (उत्त ११, ५)।

विसुज्झ अक [वि + शुध्] शुद्धि करना। विसुज्झइ (उव)। वकृ विसुज्झंत, विसुज्झमाण (उप ३२० टी, णाया १, १—पत्र ६४, उवा, औप, सुर १६, १६१)।

विसुणिअ वि [विज्ञात] विज्ञात (पण्ह १, ४—पत्र ८५)।

विसुत्त वि [विस्रोतस्] १ प्रतिकूल। २ खराब, दुष्ट (भवि)।

विसुत्तिया देखो विसोत्तिया (श्रावक ५६, दस ५, १, ६)।

विसुद्ध वि [विशुद्ध] १ निर्मल, निर्दोष (सम ११६, ठा ४, ४ टी—पत्र २८३, प्रासू २२, उव, हे ३, ३८)। २ विशद, उज्ज्वल (पएण १७—पत्र ४८६)। ३ पु. ब्रह्मदेव-लोक का एक प्रतर (ठा ६—पत्र ३६७)।

विसुद्धि स्त्री [विशुद्धि] निर्दोषता, निर्मलता (औप, गा ७३७)।

विसुमर सक [वि + स्मृ] भूल जाना, याद न आना। विसुमरइ, विसुमरामि (महा, पि ३१३), विसुमरेहि (स २०४)।

विसुमरिअ वि [विस्मृत] जिसका विस्मरण हुआ हो वह (स २६५, सुख २, २६, सुर १४, १७)।

विसुराविय वि [खेदित] खिन्न किया हुआ, 'अरईविलासविसुराविया णिव्वडइ सोहग्ग' (गउड १११)।

विसुव न [विषुवत्] रात और दिन की समानतावाला काल, वह समय जब दिन और रात दोनो बराबर होते हैं (दे ७, ५०)।

विसुइया स्त्री [विसूचिका] रोग-विशेष, हैजा (उव, सुर १६, ७२, आचा २, २, १, ४)।

विसूणिय वि [विशूनित] १ फुला हुआ, सुजा हुआ (पण्ह १, १—पत्र १८)। २ काटा हुआ, उत्कृत्त (सूत्र १, ५, २, ६)।

विसूर देखो विसुमर। विसूरइ (प्राकृ ६३)।

विसूर अक [खिद्] खेद करना। विसूरइ (हे ४, १३२, प्राप्र, उव)। वकृ विसूरंत, विसूरमाण (उव, गा ४१४, सुपा ३०२, गउड)। कृ विसूरियव्व (गउड)।

विसूरण न [खेदन] १ खेद। २ पीड़ा (पण्ह १, ५—पत्र ६४)।

विसूरणा स्त्री [खेदना] खेद, अफसोस, दुःख (से ५, ३)।

विसूरिअ वि [खिन्न] खेद-युक्त, दिलगीर (से १०, ७६)।

विसूहिय पुन [विस्वग्हित] एक देव-विमान (सम ४१)।

विसेढि स्त्री [विश्रेणि] १ विदिशा सम्बन्धी श्रेणि, वक्र रेखा। २ वि. विश्रेणि में स्थित (णंदि, पि ६६, ३०४)।

विसेस सक [वि + शेषय्] विशेष-युक्त करना, गुण आदि द्वारा दूसरे से भिन्न करना, विशेषण से अन्वित करना, व्यवच्छेद करना। विसेसइ, विसेसेइ (भवि, सण, सूअनि ६१ टी, भग, विसे ७६, महा)। कर्म विसेसिज्जइ (विसे ३१११)। संकृ विसेसिउं (विसे ३९१४)। कृ विसेसणिज्ज, विसेस्स (विसे २१५६, १०३५)।

विसेस पुन [विशेष] १ प्रभेद, पार्थक्य, भिन्नता, 'ण सपरायंसि विसेसमत्थि' (सूअ २, ६, ४६, भग, विसे १०५, उव)। २ भेद, प्रकार, 'दसविहे विसेसे पन्नत्ते' (ठा १०, महा, उव)। ३ असाधारण, अमुक, व्यक्ति, खास (उव, जी ३६, महा, अभि २१०)। ४ पर्याय, धर्म, गुण (विसे २६७)। ५ अधिक, अतिशय, ज्यादा, 'तओ विसेसेण तं पुज्ज' (भग, प्रासू १७६, महा, जी ३६)। ६ तिलक। ७ साहित्यशास्त्र-प्रसिद्ध अलंकार-विशेष। ८ वैशेषिक-प्रसिद्ध अन्त्य पदार्थ (हे १, २६०)। °न्नु [°ज्ञ] विशेष जानने वाला (स ३२, महा)। °ओ अ [°तस्] खास करके (महा)।

विसेस पुं [विश्लेष] पृथक्करण (वव १)।

विसेसण न [विशेषण] दूसरे से भिन्नता बतानेवाला गुण आदि (उप ४४४, भास ८६, पच १, १२, विसे ११५)।

विसेसणिज्ज देखो विसेस = वि + शेषय्।

विसेसय पुंन [विशेषक] तिलक, चन्दन आदि का मस्तक-स्थित चिह्न (पाअ, से १०, ७४, वेणी ४६, गा ६३८, कुप्र २५५)।

विसेसिअ वि [विशेषित] १ विशेषण-युक्त किया हुआ, भेदित (सम्म ३७, विसे २६८८)। २ अतिशयित (पाअ)।

विसेस्स देखो विसेस = वि + शेषय्।

विसोग वि [विशोक] शोक-रहित (आचा)।

विसोत्तिया स्त्री [विस्रोतसिका] १ विमार्ग-गमन, प्रतिकूल गति। २ मन का विमार्ग में गमन, अपध्यान, दुष्ट चिन्तन (आचा, विसे ३०१२, उव, धर्मसं ८१२)। ३ शंका (आचा)।

विसोपग } पुन [दे विंशोपक] कौड़ी का
विसोवग } बीसवाँ हिस्सा (धर्मवि ५७, पचा ६१, २२)।

विसोह सक [वि + शोधय्] १ शुद्ध करना, मल-रहित करना, निर्दोष बनाना। २ त्याग करना। विसोहइ, विसोहेइ (उव, सण, कस)। विसोहिज्ज (आचा २, ३, २, ३)। हेकृ विसोहित्तए (ठा २, १—पत्र ५६)।

विसोह वि [विशोभ] शोभा-रहित (दे १, ११०)।

विसोहण न [विशोधन] शुद्धि-करण (कस)।

विसोहणया स्त्री [विशोधना] ऊपर देखो (ठा ८—पत्र ४४१)।

विसोहय वि [विशोधक] शुद्धि-कर्ता (सूअ १, ३, ३, १६)।

विसोहि स्त्री [विशोधि] १ विशुद्धि, निर्मलता, विशुद्धता (पउम १०२, १६६, उव, पिंड ६७१, सुपा १६२)। २ अपराध के योग्य प्रायश्चित्त (ओघ २)। ३ आवश्यक, सामयिक आदि षट्-कर्म (अणु ३१)। ४ भिक्षा का एक दोष, जिस दोषवाले आहार का त्याग करने पर शेष भिक्षा या भिक्षा-पात्र विशुद्ध हो वह दोष (पिंड ३६५)। °कोडि स्त्री [°कोटि] पूर्वोक्त विशोधि-दोष का प्रकार (पिंड ३६५)।

विसोहिय वि [विशोधित] १ शुद्ध किया हुआ। २ पु. मोक्ष-मार्ग (सूअ १, १३, ३)।

वेआरणिय वि [दे] प्रतारण-सम्बन्धी, ठगने से उत्पन्न (ठा २, १—पत्र ४०)।

वेआरणिय वि [वैचारणिक] विचार-सबंधी (ठा २, १—पत्र ४०)।

वेआरिअ वि [दे] १ प्रतारित, ठगा हुआ (दे ७, ९५, पउम १४, ४६, सुपा १५२)। २ पु केश, बाल (दे ७, ९५)।

वेआल पु [वेताल] १ भूत-विशेष, विकृत पिशाच, प्रेत (पण्ह १, ३—पत्र ४६, गउड, महा, पिंग)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

वेआल वि [दे] १ अन्धा। २ पु. अंधकार (दे ७, ९५)।

वेआलग वि [विदारक] विदारण-कर्ता (सूअनि ३६)।

वेआलण न [विदारण] फाडना, चीरना (सूअनि ३६)।

वेआलि पु [वैतालिन्] वन्दी, स्तुति-पाठक (उप ७२८ टी)।

वेआलिअ देखो वइआलिअ (पाअ, हे १, १५२, चेइय ७४६)।

वेआलिय वि [वैक्रिय] विक्रिया से उत्पन्न (सूअ १, ५, २, १७)।

वेआलिय वि [वैकालिक] विकाल-सम्बन्धी, अपराह्न मे बना हुआ (दसनि १,६, १५)।

वेआलिय न [विदारक] विदारण-क्रिया (सूअनि ३६)।

वेआलिय देखो वइआलीअ (सूअनि ३८)।

वेआलिया स्त्री [वैतालिकी] वीणा-विशेष (जीव ३)।

वेआली स्त्री [वैताली] १ विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से अचेतन काष्ठ भी उठ खडा होता है—चेतन की तरह क्रिया करता है (सूअ २ २, २७)। २ नगरी-विशेष (णाया १, १६—पत्र २१०)।

वेइ स्त्री [वेदि] परिष्कृत भूमि-विशेष, चौतरा (कुमा, महा)।

वेइ वि [वेदिन्] १ जाननेवाला (चेइय ११९, गउड)। २ अनुभव करनेवाला (पच ५, ११९)।

वेइअ वि [वेदित] १ अनुभूत (भग)। २ ज्ञात, जाना हुआ (दस ४, १, पउम ६६, ३)।

वेइअ देखो वेविअ = वेपित (गा ३९२ अ)।

वेइअ वि [वैदिक] १ वेदाश्रित, वेद-संबन्धी (ठा ३, ३—पत्र १५१)। २ वेदों का जानकार (दसनि ४, ३५)।

वेइअ वि [वेगित] वेलावाला, वेग-युक्त (णाया १, १—पत्र २९)।

वेइअ वि [व्येजित] १ कम्पित, काँपा हुआ (भग १, १ टी—पत्र १८)। २ कँपाया हुआ (राय ७४)।

वेइआ स्त्री [दे] पनीहारी, पानी ढोनेवाली स्त्री (दे ७, ७६)।

वेइआ स्त्री [वेदिका] १ परिष्कृत भूमि-विशेष, चौतरा (भग, कुमा, महा)। २ अंगुलि-मुद्रा, अंगूठी (दे ७, ७६ टी)। ३ वर्जनीय प्रतिलेखन का एक भेद, प्रत्युपेक्षणा का एक दोष (उत्त २६, २६, सुख २६, २६, ओघभा १६३)।

वेइज्ज अक [वि + एज्] काँपना। वकृ वेइज्जमाण (भग १, १ टी—पत्र १८)।

वेइज्जमाण देखो वेअ = वेदय्।

वेइद्ध वि [दे] १ ऊँचा किया हुआ। २ विसंस्थुल। ३ आविद्ध। ४ शिथिल (दे ७, ९५)।

वेइल्ल देखो विअइल्ल (हे १, १६६, २, ९८, कुमा)।

वेउठ देखो वेकुठ (गउड)।

वेउट्टिया स्त्री [दे] पुन पुन, फिर-फिर (कप्प)।

वेउव्व देखो विउव्व = वि + कृ, कुर्व्। सकृ वेउव्विऊण (सुपा ४२)।

वेउव्व वि [वैक्रिय] १ विकृत, विकार-प्राप्त (विसे २५७९ टी)। २ देखो विउव्व = वैक्रिय (कम्म ३, १६)। °लद्धि स्त्री [°लब्धि] शक्ति-विशेष, वैक्रिय शरीर उत्पन्न करने का सामर्थ्य (पउम ७०, २९)।

वेउव्वि देखो विउव्वि (पण्ह २, १—पत्र ९९, कप्प, औप, ओघभा ५७)।

वेउव्विअ देखो विउव्विअ = विकृत, विकुर्वित, 'वेउव्विय असुइजवाल अइचिक्कण फासेण' (स ७६२, सुपा ४७)।

वेउव्विअ वि [वैक्रिय, वैक्रियिक, वैकुर्विक] १ शरीर-विशेष, अनेक स्वरूपो और क्रियाओ को करने मे समर्थ शरीर (सम १४१, भग, दं ८)। २ वैक्रिय शरीर बनाने की शक्तिवाला (सम १०३, पव—गाथा ६)। ३ विकुर्वणा से बनाया हुआ, 'विभगिरिसमीवगय एय वेउव्विय च मह भवण' (सुपा १७८)। ४ वैक्रिय शरीरवाला (विसे ३७५)। ५ वैक्रिय शरीर से सबन्ध रखनेवाला (भग)। ६ विभूषित (भग १८, ५—पत्र ७४६)। °लद्धिअ वि [°लब्धिक] वैक्रिय शरीर उत्पन्न करने की शक्तिवाला (भग)। °समुग्घाय पु [°समुद्घात] वैक्रिय शरीर बनाने के लिए आत्म-प्रदेशो को बाहर निकालना (भत)।

वेउव्विया स्त्री [दे] पुन-पुन, फिर-फिर (कप्प)।

वेंकड पु [वेङ्कट] दक्षिण देश मे स्थित एक पर्वत (अच्चु १)। °णाह पु [°नाथ] विष्णु की वेंकटाद्रि पर स्थित मूर्त्ति (अच्चु १)।

वेंगी स्त्री [दे] वृतिवाली, बाडवाली (दे ७, ४३)।

वेंजण देखो वजण (प्राकृ ३१)।

वेंट देखो विंट = वृन्त (गा ३५९, हे १, १३९, २, ३१, कुमा, प्राकृ ४)।

वेंटल देखो विंटल (ओघ ४२४)।

वेंटली देखो विंटलिआ, 'तओ तेण तस्स (करिणो) पुरओ वेंटलीकाऊण पक्खित्त-मुत्तरीय' (महा)।

वेंटिआ देखो विंटिया (ओघ २०३, ओघभा ७९, उप १४२ टी, धव १)।

वेंड पु [वेतण्ड] हाथी, हस्ती (प्राकृ ३०)। देखो वेयड।

वेंढसुरा स्त्री [दे] कलुष मदिरा (दे ७, ७८)।

वेंढि पु [दे] पशु (दे ७, ७४)।

वेंढिअ वि [दे] वेष्टित, लपेटा हुआ (दे ७, ७६, महा)।

वेंभल देखो विभल (पण्ह १, ३—पत्र ४५, पउम ५, १९२)।

वेकक्ख देखो वेअच्छ, 'वेकक्खउत्तरीआ' (कुमा)।

वेकच्छिआ, वेकच्छी } देखो वेगच्छिआ (ओघभा ३१८, ओघ ६७७)।

वेकिड्डिअ न [दे] रोमन्थ, चवी हुई चीज को फिर से चवाना (दे ७, ८२)।

विहु पुंस्त्री [विध] १ भेद, प्रकार (उवा, कप्प)। २ पुन आकाश, गगन (भग २०, २—पत्र ७७५, आचा १, ८, ४, ५, दसनि १, २३)।

विहुइ स्त्री [दे] वृन्ताकी, बैंगन का गाछ (दे ७, ६३)।

विहुग पुं [विहङ्ग] पक्षी, चिडिया, पखेरू (पाम्र, गउड, कप्प, सुर ३, २४५, प्रासू १७२)। °णाह पुं [°नाथ] गरुड पक्षी (गउड ८२३, ८२४, १०२२)।

विहुग पुं [विभङ्ग] विभाग, टुकडा, अंश (पग्ह १, ३—पत्र ५४, गउड ४०४)। देखो विभग (गउड, भवि)।

विहुगम पुं [विहगम] पक्षी, चिडिया (गउड, मोह ३२, श्रु ७७, सरा)।

विहुज सक [वि + भञ्ज्] भाँगना, तोडना, विनाश करना। सक्र. विहुजिवि (अप) (भवि)।

विहुजिअ वि [विभक्त] बाँटा हुआ, 'आगम-जुत्तिपमाणविहंजिओ' (भवि)।

विहुड सक [वि + खण्डय्] विच्छेद करना, विनाश करना। विहंडइ (भवि)।

विहुडण न [विखण्डन] १ विच्छेद, विनाश (सम्मत्त ३०)। २ वि विच्छेद-कर्ता, विनाशक (सरा)।

विहुडण वि [विभण्डन] भाँडनेवाला, गालि-सूचक, 'भरणसि रे जइ विहंडरा वग्रए' (गा ६१२)।

विहुडिअ वि [विखण्डित] विनाशित (पिंग; सरा)।

विहुग पु [विहग] पक्षी, चिडिया (पउम १४, ८०, स ६६७, उत्त २०, ६०)। °हिव पु [°धिप] गरुड पक्षी (सम्मत्त २१६)।

विहुग पुन [विहायस्] आकाश, गगन। °गइ स्त्री [°गति] १ आकाश में गमन (पचा ३, ६)। २ कर्म-विशेष, आकाश मे गति कर सकने मे कारण-भूत कर्म (सम ६७, कम्म १, २४, ४३)।

विहुट्ट देखो विघट्ट। विहुट्टइ (भवि)।

विहुट्टिअ वि [विघट्टित] खरिडत, द्विधाभूत (से २, ३२)।

विहुड अक [वि + घट्] नियुक्त होना, अलग होना, टूट जाना। विहुडइ, विहुडेइ (महा, प्राकृ ७१)। वकृ. विहुडत (से ३, १४)।

विहुड सक [वि + घटय्] तोडना, खरिडत करना। सकृ विहुडिऊण (सरा)।

विहुड देखो विहुल = विह्वल (से ४, ५४)।

विहुडण न [विघटन] १ अलग होना, वियोग (सुपा ११६, २४३)। २ अलग करना। ३ खोलना, 'तह झीणा जह मउलि-यलोयरणउडविहुडणे वि असमत्था' (वज्जा ८८)।

विहुडण पु [दे] अनर्थ (षड)।

विहुडणा स्त्री [विघटना] वियोजन, अलग करना, 'सघडरणविहुडरणावावडेरण विहिरणा जरणो नडिओ' (धर्मवि ४२)।

विहुडप्फड वि [दे] १ व्याकुल, व्यग्र (हे २, १७४)। २ त्वरित, शीघ्र (भवि)।

विहुडा स्त्री [विघटा] विभेद, अनैक्य, फाट-फुट, 'जह मह कुडु बविहुडा न घडइ कइयावि दतकलहेरण' (सुपा ४२१)।

विहुडाव सक [वि + घटय्] वियुक्त करना, अलग करना। विहुडावइ (महा)।

विहुडावण न [विघटन] वियोजन (भवि)।

विहुडाविय वि [विघटित] वियोजित (सार्ध ७१)।

विहुडिय वि [विघटित] १ वियुक्त, विच्छिन्न (महा ३६, ५)। २ खुला हुआ (महा ३०, ३०)।

विहुण देखो विहुन्न। विहुणति (पि ४६०)। सकृ. विहुत्तु (सूअ १, ५, १, २१)।

विहुणु वि [दे] सपूर्ण, सकल (सरा)।

विहुण्ण न [दे] पिंजन, पीजना, धुनना (दे ७, ६३)।

विहुत्त देखो विभत्त (से ७, १५, चेइय २७४, सुर १, ४७, सुपा ३६६)।

विहुत्ति देखो विभत्ति (पउम २४, ५, उप पृ १४७)।

विहुत्तु देखो विहुण।

विहुत्थ वि [विहस्त] १ व्याकुल, व्यग्र (से १२, ४९, कुप्र ४०६, सिरि ३८६, ८३६, सम्मत्त १६१)। २ कुशल, दक्ष, 'पहररणवि-हत्थहत्था' (कुप्र १०३, २०६)। ३ पुं. विशिष्ट हाथ, किसी वस्तु से युक्त हाथ, 'पढमं उत्तरिऊणं धवलो जा जाइ पाहुडवि-हत्थो' (सिरि ६६१), 'सद्दवभाणविहुत्थो' (उव)। ४ क्लीव (सम्मत्त १६१)।

विहुत्थि पुंस्त्री [वितस्ति] परिमाण-विशेष, बारह अगुल का परिमाण (हे १, २१४, कुमा, अणु १५७)।

विहुदि स्त्री [विधृति] १ विशेष धैर्य। २ वि धैर्य-रहित (सक्षि ६)।

विहुन्न } सक [वि + हन्] १ मारना,
विहुम्म } ताडन करना। २ नाश करना। ३ अतिक्रमण करना। विहुन्नई (उत्त २, २२)। कर्म. विहुन्निज्जा (उत्त २, १)। वकृ विहुम्ममाण, विहुम्माण (पि ५६२, उत्त २७, ३)। कवकृ. विहुम्ममाण (सूअ १, ७, ३०)।

विहुम्म वि [विधर्मन्] भिन्न धर्मवाला, विभिन्न, विलक्षरण, 'मोत्तूणायसहाव वसेज्ज वत्थु विहुम्मम्मि' (विसे २२४१)।

विहुम्म सक [विधर्मय्] धर्म-रहित करना। वकृ. विहुम्मेमाण (विपा १, १—पत्र ११)।

विहुम्म न [वैधर्म्य] १ विधर्मता, विरुद्ध-धर्मता। २ तर्कशास्त्र-प्रसिद्ध उदाहरण-भेद, वैधर्म्य-दृष्टान्त (सम्म १५३)।

विहुम्माणा स्त्री [विधर्मणा, विहनन] कद-र्थना, पीडा (पग्ह १, ३—पत्र ५३, विसे २३५०)।

विहुय वि [दे] पिंजित, धुना हुआ (दे ७, ६४)।

विहुय वि [विहत] १ मारा हुआ, आहत (पउम २७, २८)। २ विनाशित (महा)।

विहुय देखो विहुग = विहग (गउड, सरा)।

विहुय देखो विहुव = विभव (दे ३, २६, नाट—मालवि ३३)।

विहुर अक [वि + हृ] १ क्रीडा करना, खेलना। २ रहना, स्थिति करना। ३ सक. गमन करना, जाना। विहुरइ (हे ४, २५६, उवा, कप्प, उव), विहुरति (भग), विहुरेज्ज (पव १०४)। भूका विहुरिंसु, विहुरित्था (उत्त २३, ६, पि ३५०, ५१७)। भवि. विहुरिस्सइ (पि ५२२)। वकृ विहुरत,

वेढण न [वेष्टन] लपेटना (मे १, ६०, ६, ४३, १२, ६५, गा ५६३ धर्मस ४६७)।

वेढिअ वि [वेष्टित] लपेटा हुआ (उव, पाअ, सुर २, २३८)।

वेढिम वि [वेष्टिम] १ वेष्टन से बना हुआ (पण्ह २, ५—पत्र १५०, णाया १, १३—पत्र १७८, औप)। २ पुंस्त्री खाद्य-विशेष (पण्ह २, ५—पत्र १४८, राज)।

वेण पु [दे] नदी का विषम घाट (दे ७, ७४)।

वेण (अप) देखो वयण = वचन (हे ४, ३२६)।

वेणइअ न [वनयिक] १ विनय, नम्रता (ठा ५ २—पत्र ३३१, दस ६, १, १२, सद्दि १०६ टी)। २ मिथ्यात्व-विशेष, सभी देवों और धर्मों को सत्य मानना (सबोध ५२)। ३ वि विनय-सबन्धी (सम १०६, भग)। ४ विनय को ही प्रधान माननेवाला, विनय-वादी (सूअ १, ६, २७)। °वाद पु [°वाद] विनय को ही मुख्य माननेवाला दर्शन (धर्मसं ६६५)।

वेणइगी } स्त्री [वैनयिकी] विनय से प्राप्त
वेणइया } होनेवाली बुद्धि (उप पृ ३४०, णाया १, १—पत्र ११)।

वेणइया स्त्री [वैणकिया] लिपि-विशेष (सम ३५, पण्ण १—पत्र ६२)

वेणा स्त्री [वेणा] महर्षि स्थूलभद्र की एक भगिनी (कप्प, पडि)।

वेणि स्त्री [वेणी] १ एक प्रकार की केश-रचना, बालो की गूथी हुई चोटी (उवा)। २ वाद्य-विशेष (सण)। ३ गगा और यमुना का सगम-स्थान (राज)। °वच्छराय पुं [°वत्सराज] एक राजा (कुप्र ४४०)।

वेणिअ न [दे] वचनीय, लोकापवाद (दे ७, ७५, पड्)।

वेणी स्त्री [वेणी] देखो वेणि (से १, ३६, गा २७३, कप्पू)।

वेणु पु [वेणु] १ वश, बाँस (पाअ, कुमा, पड्)। २ एक राजा (कुमा)। ३ वाद्य-विशेष, वंसी (हे १, २०३)। °दालि पु [°दालि] एक इन्द्र, सुपर्णकुमार देवो का उत्तरदिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८४, ८५)। °देव पु [°देव] १ सुपर्णकुमार-नामक देव-जाति का दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८४)। २ देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ६७, ७६)। ३ गरुड पक्षी (सूअ १, ६, २१)। °याणुजाय पुं [°यानुजात] गणितशास्त्र-कथित दस योगो मे द्वितीय योग, जिसमें चन्द्र सूर्य और नक्षत्र वशाकार से अवस्थान करते हैं (सुज्ज १२—पत्र २३३)।

वेणुणास } पुं [दे] भ्रमर, भौंरा (दे ७,
वणुसाअ } ७८, पड्)।

वेण्ण वि [दे] आक्रान्त (पड्)।

वेण्णा स्त्री [वेन्ना] नदी-विशेष। °यड न [°तट] नगर-विशेष (पउम ४८, ६३, महा)।

वेण्हु देखो विण्हु (सक्षि ३ प्राकृ ५)।

वेताली स्त्री [दे] १ तट, किनारा, 'जन्न नावा पुव्ववेतालीउ दाहिणवेतालि जलपहेण गच्छति' (पण्ण १६—पत्र ४८०)। २ गली (आव० वृ० पत्र ३५५)।

वेत्त न [दे] स्वच्छ वस्त्र (दे ७, ७५)।

वेत्त पु [वेत्र] वृक्ष-विशेष, बेंत का गाछ (पण्ण १—पत्र ३३, विपा १, ६—पत्र ६६)। °ासण न [°ासन] बेंत का बना हुआ आसन (पउम ६६, १४)।

वेत्तव्व वि [वेत्तव्य] जानने योग्य (प्राप्र)।

वेत्तिअ पु [वैत्रिक] द्वारपाल, चपरासी (सुपा ७३)।

वेद देखो वेअ = वेदय्। वेदेइ, वेदति, वेदेंति (भग, सूअ १, ७, ४, ठा २ ४—पत्र १००), वेदेज्ज (धर्मसं १६६)। भूका. वेदेंसु (ठा २, ४, भग)। भवि. वेदिस्सति (ठा २, ४, भग)। कवकृ वेदेज्जमाण (ठा १०—पत्र ४७२)।

वेद देखो वेअ = वेद (पण्ह १, २—पत्र ४०, धर्मस ८६२)।

वेदत देखो वेअत (धर्मस ८६३)।

वेदक } देखो वेअग (पण्ह १, २—पत्र
वेदग } २८, धर्मसं १६६)।

वेदणा देखो विअणा (भग स्वप्न ८०, नाट—मालवि १४)।

वेदब्भी स्त्री [वैदर्भी] प्रद्युम्न कुमार की एक स्त्री का नाम (अत १४)।

वेदस (शौ) देखो वेडिस (प्राकृ ८३, नाट शकु ६८)।

वेदि देखो वेइ = वेदि (पउम ११, ७३)।

वेदिग पु [वादक] एक इभ्य मनुष्य-जाति,
'अवठ्ठा य कलदा य
वेदेहा वेदिगातिता (? इया)।
हरिता चुचुणा चेव
छप्पेता इब्भजाइओ॥'
(ठा ६—पत्र ३५८)।

वेदिय देखो वेइअ = वेदित (भग)।

वेदिस न [वैदिश] विदिशा की तरफ का नगर (अणु १४६)।

वेदुलिय देखो वेरुलिअ (चंड)।

वेदूणा स्त्री [दे] लज्जा, शरम (दे ७, ६५)।

वेदेसिय देखो वइदेसिअ (राज)।

वेदेह पु [वैदेह] एक इभ्य मनुष्य-जाति (ठा ६—पत्र ३५८)। देखो वइदेह।

वेदेहि पु [विदेहिन्] विदेह देश का राजा (उत्त ६, ६२)।

वेधम्म देखो वइधम्म (धर्मसं १८५)।

वेधव्व देखो वेहव्व (मोह ६६)।

वेन्ना देखो वेण्णा (उप पृ ११५)।

वेप्प वि [दे] भूत आदि से गृहीत, पागल (दे ७, ७४)।

वेप्पुअ न [दे] १ शिशुपन, बचपन। २ वि. भूत-गृहीत, भूताविष्ट (दे ७, ७६)।

वेफल्ल न [वैफल्य] निष्फलता (विसे ४१६, धर्मस २२, अज्झ १३३)।

वेब्भल वि [विह्वल] व्याकुल (प्राप्र)।

वेब्भार } पु [वैभार] पर्वत विशेष, राजगृही
वेभार } के समीप का एक पहाड (णाया १, ८—पत्र ३३, सिरि ४)।

वेम देखो वेमय। वेमइ (प्राकृ ७४)।

वेम पु [वेमन्] तन्तुवाय का एक उपकरण (विसे २१००)।

वेमइअ वि [भग्न] भाँगा हुआ (कुमा ६, ६८)।

वेमणस्स न [वैमनस्य] १ मनमुटाव, भीतरी द्वेष (उव)। २ दैन्य, दीनता (पण्ह १, १—पत्र ५)।

७, ५, रंभा, महा)। ३ प्रकार, भेद (से ३, ३१, पएह १, १, भग)। ४ व्याकरणोक्त विधि-विशेष (पएह २, २—पत्र ११४)। ५ अवस्था-विशेष (सूत्र २, १, ३२)। ६ विशेष, 'विहाणमग्गणं पडुच्च' (भग १, १ टी)। ७ रीति (महा)। ८ क्रम, परिपाटी (वृह १)।

विहाण न [विहान] परित्याग (राज)।

विहाणिय (अप) वि [विधायिन्] कर्ता, करनेवाला (सण)।

विहाय अक [वि+भा] १ शोभना। २ प्रकाशना, चमकना, दीपना। विहायंति (स १२)। वकृ विहायंत (सिरि २९८)।

विहाय पुं [विघात] १ अवसान, अंत (से १, १६)। २ विरोधी, दुश्मन, परिपन्थी (से ८, ५४, स ४१२)।

विहाय देखो विभाग (गउड, से ६, ३२)।

विहाय वि [विभात] १ प्रकाशित, 'निसा विहाय त्ति उट्ठिओ कएहो' (कुप्र २६८)। २ न. प्रभात, प्रात काल (से १२, १६)।

विहाय देखो विहग = विहायस् (श्रा २२)।

विहाय देखो विहा = वि + हा।

विहाय (अप) देखो विहिअ (भवि)।

विहार सक [वि+धारय्] १ अपेक्षा करना। २ विशेष रूप से धारण करना। वकृ विहारंत (पउम ८, १५६)।

विहार पु [विहार] १ विचरण, गमन, गति (पव १०४, उवा)। २ क्रीडा-स्थान (सम १००)। ३ देव-गृह, देव-मन्दिर (उत्त ३०, ७, कुमा)। ४ अवस्थान, अवस्थिति, 'असासयं दट्ठु इमं विहारं' (उत्त १४, ७)। ५ क्रीडा (ठा ८, कप्प)। ६ मुनि-वर्त्तन, मुनि-चर्या, साध्वाचार (वव १, णंदि, उव)। °भूमि स्त्री [°भूमि] १ स्वाध्याय-स्थान (आचा २, १, १, ८, कस, कप्प)। २ विचरण-भूमि (वव ४)। ३ क्रीडा-स्थान। ४ चैत्य की जगह (कप्प, राज)।

विहारि वि [विहारिन्] विहार करनेवाला (आचा; उव, श्रा १४)।

विहालिय देखो विहाडिअ, 'दुवारं विहालिय पासइ' (उप ६४८ टी)।

विहाव देखो विभाव = वि + भावय्। विहावइ, विहावेमि (भवि, रुक्मि ५७)। कवकृ विहाविज्जमाण (स ४१)। कृ. विहावियव्व (उप ३४२)।

विहावण न [विधापन] निर्मापण, करवाना (चेइय ६९)।

विहावण न [विभावन] आलोचना, 'एव विचिंतियव्व गुणदोसविहावणं परमं' (पचा ६, ४६)।

विहावरी स्त्री [विभावरी] रात्रि, निशा (पाअ, उप ७६८ टी, सुपा ३९३)।

विहावसु पु [विभावसु] अग्नि, आग (पाअ)। देखो विभावसु।

विहाविअ वि [विभावित] दृष्ट, निरीक्षत, 'दिट्ठ विहाविअ' (पाअ, गा ५०७)।

विहाविअ वि [विधावित] उल्लसित, प्रस्फुरित (स ६७)।

विहास पु [विहास] हँसी, उपहास (भवि)।

विहास } देखो विहसाव। सकृ. विहा-
विहासाव } सिऊण, विहासेऊण, विहासाविऊण, विहासावेऊण (प्राकृ ६१)।

विहासाविअ } देखो विहासाविअ (प्राकृ
विहासिअ } ६१)।

विहि पुं [विधि] १ ब्रह्मा, चतुरानन, विधाता (पाअ, अच्चु ३७, धर्मसं ९२६, कुमा)। २ प्रकार, भेद (उवा), 'सव्वाहि नयविहीहिं' (पव १४६)। ३ शास्त्रोक्त विधान, अनुष्ठान, व्यवस्था (पचा ६, ४८, औप)। ४ क्रम, सिलसिला, परिपाटी (वृह १)। ५ रीति। ६ नियोग, आदेश, आज्ञा। ७ आज्ञा-सूचक वाक्य। ८ व्याकरण का सूत्र-विशेष। ९ कर्म। १० हाथी को खाने का अन्न (हे १, ३५)। ११ दैव, भाग्य, 'अणुकूलो अहव विही किंवा तं ज न करेइ' (सुर ६, ८१, पाअ, कुमा; प्रासू ५८)। १२ नीति, न्याय। १३ स्थिति, मर्यादा (वृह १)। १४ कृति, करण (पचा ११)। °न्नु वि [°ज्ञ] विधि का जानकार (णाया १, १—पत्र ११, सुर ८, ११८)। °वयण न [°वचन] विधि-वाक्य, विधि-वाद, विध्युपदेश (चेइय ७४४)। °वाय पु [°वाद] वही पूर्वोक्त अर्थ (भास ७५, चेइय ७४४)।

विहिअ वि [विहित] १ कृत, अनुष्ठित, निर्मित (पाअ, महा)। २ चेष्टित (औप)। ३ शास्त्र में जिसका विधान हो वह, शास्त्रोक्त (पचा १४, २७)।

विहिंस सक [वि+हिंस्] विविध उपायो से मारना, वध करना। विहिंसइ (आचा १, १, १, ४)। कृ. विहिंस (पएह १, २—पत्र ४०)।

विहिंस वि [विहिंस] हिंसा करनेवाला, 'अ-विहिंसे सुव्वए दते' (आचा १, ६, ४, ३)।

विहिंसग वि [विहिंसक] वध करनेवाला (आचा, गच्छ १, १०)।

विहिंसण न [विहिंसन] विविध प्रकार से मारना (पएह १, १—पत्र १८)।

विहिंसा स्त्री [विहिंसा] १ विशेष हिंसा (पएह १, १—पत्र ५)। २ विविध हिंसा (सूत्र १, २, १, १४)।

विहिण्ण } वि [विभिन्न] १ जुदा, अलग
विहिन्न } (से ७, ५३, १३, ८६, भवि)। २ खण्डित, भाँग कर टुकडा-टुकडा बना हुआ (से ३, ६०)।

विहिम न [दे] जगल, अरएय (उप ८४२ टी)।

विहिमिहिय वि [दे] विकसित, प्रफुल्ल (पड्)।

विहियव्व देखो विहे = वि + धा।

विहिविल्ल सक [वि + रचय्] बनाना, निर्माण करना। विहिविल्लइ (प्राकृ ७४)।

विहीण वि [विहीन] १ वर्जित, रहित (प्रासू १७२)। २ त्यक्त (कुमा)।

विहीर सक [प्रति + ईक्ष्] प्रतीक्षा करना, बाट जोहना। विहीरइ (हे ४, १९३), विहीरह (स ४१८)।

विहीर वि [प्रतीक्ष] प्रतीक्षा करनेवाला (कुमा ७, ३८)।

विहीरिअ वि [प्रतीक्षित] जिसकी प्रतीक्षा की गई हो वह (पाअ)।

विहीसण देखो विभीसण (से ४, ५५)।

विहीसिया देखो विभीसिया (सुपा ५४१)।

विहु पुं [विधु] १ चन्द्र, चाँद (पाअ)। २ विष्णु, श्रीकृष्ण। ३ ब्रह्मा। ४ शकर,

वासकरिला, वनस्पति-विशेष (दस ५, २, २१)।

वेलुरिअ } देखो वेरुलिअ (प्राप्र पि २४१, वेलुलिअ } दे ७ ७७)।

वेलूणा स्त्री [दे] लज्जा लाज (दे ७, ६५)।

वेल्ल अक [वेल्ल्] १ कांपना। २ लेटना। ३ सक कंपाना। ४ प्रेरना। वेल्लइ (पि १०७)। वेल्लति (गउड)। वकृ वेल्लत, वेल्लमाण (गउड हे १, ६६ पि १०७)।

वेल्ल अक [रम्] क्रीडा करना। वेल्लइ (हे ४, १६८)। कृ वेल्लणिज्ज (कुमा ७, १४)।

वेल्ल पु [दे] १ केश, बाल। २ पल्लव। ३ विलास (दे ७ ६४)। ४ मदन-वेदना, काम-पीडा। ५ वि. अविदग्ध मूर्ख (मल्लि ४७)। ६ न देखो वेल्लग (सुपा २७६)।

वेल्लइअ देखो वेल्लाइअ (पड्)।

वेल्लग न [दे] १ एक तरह की गाडी, जो ऊपर से ढकी हुई होती है, गुजराती में 'वेल'। २ गाडी के ऊपर का तला (श्रा १२)।

वेल्लण न [वेल्लन] प्रेरणा (गउड)।

वेल्लय देखो वेल्लग (सुपा २८१, २८२)।

वेल्लरिअ पुं [दे] केश वाल (पड्)।

वेल्लरिआ स्त्री [दे] वल्ली, लता (पड्)।

वेल्लरी स्त्री [दे] वेश्या, वारागना (दे ७, ७६, पड्)।

वेल्लविअ देखो वेल्लिअ (से १, २६)।

वेल्लविअ वि [दे] विलिप्त पोता हुआ (से १, २६)।

वेल्लहल } वि [दे] १ कोमल, मृदु (दे ७, वेल्लहल्ल } ९६ पड्, गउड, सुपा ५६२, स ७०४)। २ विलासी (दे ७, ९६, पड्, सुपा ५२)। ३ सुन्दर (गा ५६८)।

वेल्ला स्त्री [दे वल्ली] लता, वल्ली (दे ७, ९४)।

वेल्लालअ वि [दे] सकुचित, सकुचा हुआ (दे ७, ७९)।

वेल्लि देखो वल्लि (उव, कुमा)।

वेल्लिअ वि [वेल्लित] १ कँपाया हुआ (से ७, ५१)। २ प्रेरित (से ६, ६५)।

वेल्हिर वि [वेल्लितृ] कांपनेवाला (गउड)।

वेल्ली देखो वल्लि (गा ८८२, गउड)।

वेव अक [वेप्] कांपना। वेवइ (हे ४, १४७, कुमा, पड)। वकृ वेवंत, वेवमाण (रंभा, कप्प, कुमा)।

वेवज्झ न [वैवाह्य] विवाह, शादी (राज)।

वेवण्ण न [वैवर्ण्य] फीकापन (कुमा)।

वेवय पुन [वेपक] रोग-विशेष, कम्प (आचा)।

वेवाइअ वि [दे] उल्लसित, उल्लास-प्राप्त (दे ७, ७६)।

वेवाहिअ वि [वैवाहिक] सबन्धी, विवाह-संबन्धवाला (सुपा ४६६, कुप्र १७७)।

वेविअ वि [वेपित] १ कम्पित (गा ३६२, पाअ)। २ पु एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २७)।

वेविर वि [वेपितृ] कांपनेवाला (कुमा, हे २, १४५, ३, १३५)।

वेव्व अ [दे] आमन्त्रण-सूचक अव्यय (हे २, १९४, कुमा)।

वेव्व अ [दे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ भय, डर। २ वारण, रुकावट। ३ विषाद, खेद। ४ आमन्त्रण (हे २, १९३, १९४, कुमा)।

वेस पुं [वेष] शरीर पर वस्त्र आदि की सजावट (कप्प, स्वप्न ५२, सुपा ३८६, ३८७, गउड, कुमा)।

वेस वि [द्वेष्य] विशेष रूप से वाञ्छनीय (वव ३)।

वेस पु [द्वेष] १ विरोध, वेर। २ घृणा, अप्रीति (गउड, भवि)।

वेस वि [वेष्य] वेषोचित, वेष के योग्य (भग २, ५—पत्र १३७, सुज्ज २०—पत्र २९१)।

वेस वि [द्वेष्य] १ द्वेष करने योग्य, अप्रीतिकर (पउम ८८, १९, गा १२६, सुर २, २०८, दे १, ४१)। २ विरोधी, शत्रु, दुश्मन (सुपा १५२, उप ७६८ टी)।

वेस देखो वइस्स = वैश्य (भवि)।

वेसइअ वि [वैषयिक] विषय से सबन्ध रखनेवाला (पि ६१)।

वेसपायण देखो वइसपायण (हे १, १५२, पड्)।

वेसभ पु [विश्रम्भ] विश्वास (पउम २८, ५४)।

वेसभरा स्त्री [दे] गृहगोधा, छिपकली (दे ७, ७७)।

वेसक्खिज्ज न [दे] द्वेष्यत्व, विरोध, दुश्मनाई (दे ७, ७६)।

वेसण न [दे] वचनीय, लोकापवाद (दे ७, ७५)।

वेसण न [वेषण] जीरा आदि मसाला (पिंड ५४)।

वेसण न [वेसन] चना आदि द्विदल—दाल का आटा, वेसन (पिंड २५६)।

वेसमण पु [वैश्रमण] १ यक्षराज, कुबेर (पाअ, णाया १, १—पत्र ३९, सुपा १२८)। २ इन्द्र का उत्तर दिशा का लोकपाल (सम ८६, भग ३, ७—पत्र १९६)। ३ एक विद्याधर नरेश (पउम ७, ९६)। ४ एक राजकुमार (विपा २, ८)। ५ एक शेठ का नाम (सुपा १२८, ६२७)। ६ अहोरात्र का चौदहवां मुहूर्त (सुज्ज १०, १३, सम ५१)। ७ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४८)। ८ क्षुद्र हिमवान् आदि पर्वतों के शिखरों का नाम (ठा २, ३—पत्र ७०, ८०, ८—पत्र ४३६, ९—पत्र ४५४)। °काइय पुं [°कायिक] वैश्रमण की आज्ञा मे रहनेवाली एक देव-जाति (भग ३, ७—पत्र १९६)। °दत्त पु [°दत्त] एक राजा का नाम (विपा १, ९—पत्र ८८)। °देवकाइय पुं [°देवकायिक] वैश्रमण के अधीनस्थ एक देव-जाति (भग ३, ७—पत्र १९६)। °प्पभ पुं [°प्रभ] वैश्रमण के उत्पात-पर्वत का नाम (ठा १०—पत्र ४८२)। °भद्द पुं [°भद्र] एक जैन मुनि (विपा २, ३)।

वेसम्म न [वैषम्य] विषमता, असमानता (अज्झ ५, पव २१६ टी)।

वेसर पुंस्त्री [वेसर] १ पक्षि-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८)। २ अश्वतर, खच्चर। स्त्री °री (सुर ८, १९)।

वीआविय वि [वीजित] जिसको पंखा से हवा कराई गई हो वह (स ५४६)।

वीइ पुस्त्री [वीचि] १ तरंग, कल्लोल (पाअ, औप)। २ आकाश, गगन (भग २०, २—७७५)। ३ सप्रयोग, सवन्ध (भग १०, २—पत्र ८९)। ४ पृथग् भाव, जुदाई (भग १४, ६ टी—पत्र ६४४)। °दव्व न [°द्रव्य] प्रदेश से न्यून द्रव्य, अवयव-हीन वस्तु (भग १४, ६ टी—पत्र ६४४)।

वीइ स्त्री [विकृति] १ विरूप कृति, दुष्ट क्रिया। २ वि दुष्ट क्रियावाला (भग १०, २—पत्र ४९५)। ३ देखो विगइ (कम्म ४, ५ टी)।

वीइंगाल वि [वीताङ्गार] राग-रहित (भग ७, १—पत्र २९२, पि १०२)।

वीइक्कंत वि [व्यतिक्रान्त] १ व्यतीत, गुजरा हुआ, 'वासीए राइदिएहिं वीइक्कंतेहिं' (सम ८९)। २ जिसने उल्लघन किया हो वह (भग १०, ३ टी—पत्र ४९९)।

वीइक्कम सक [व्यति + क्रम्] उल्लघन करना। वक्त वीइक्कममाण (कस)।

वीइज्जमाण देखो वीअ = वीजय्।

वीइमिस्स वि [व्यतिमिश्र] मिश्रित, मिला हुआ (आचा)।

वीइय वि [वीजित] जिसको हवा की गई हो वह (औप, महा)।

वीइवय सक [व्यति + व्रज्] १ परि-भ्रमण करना। २ गमन करना, जाना। ३ उल्लघन करना। वीइवयइ, वीइवइज्जा, वीइवएज्जा (सुज्ज २० टी, भग १०, ३—पत्र ४९८)। वक्त वीइवयमाण (णाया १, १—पत्र ३१)। संकृ वीइवइत्ता, वीइवएत्ता (भग २, ८, १०, ३—पत्र ४९९)।

वीई स्त्री देखो वीइ = वीचि (पाअ, भग १०, २, २० २)।

वीई अ [विविच्य] पृथग् होकर, जुदा होकर (भग १०, २—पत्र ४९५)।

वीई अ [विचिन्त्य] चिन्तन करके (भग १०, २—पत्र ४९५)।

वीईवय देखो वीइवय। वोईवयइ (भग, सुज्ज २० टी, भग ७, १०—पत्र ३२४)। वकृ वीईवयमाण (राय १९, पि ७०, १५१)।

वीचि देखो वीइ = वीचि (कप्प, भग १४, ६—पत्र ६४४)।

वीचि स्त्री [दे] लघु रथ्या छोटा मुहल्ला (दे ७, ७३)।

वीज देखो वीअ = वीजय्। वीजइ, वीजेमि (हे ४, ५, षड् मै ६६)।

वीजण देखो वीअण (कुमा)।

वीजिय देखो वीइय (स ३०८)।

वीडग } देखो वीडग (स ६७)।
वीडय }

वीडय पु [व्रीडक] लज्जा, शरम (गउड ७३१)।

वीडिअ वि [व्रीडित] लज्जित, शरमिन्दा (णाया १, ८—पत्र १४३)।

वीडिआ स्त्री [वीटिका] सजाया हुआ पान, वीडा (गउड)। देखो वीडी।

°वीढ देखो पीढ (गउड, उत्त पृ २२९, भवि)।

वीण सक [वि + चारय्] विचार करना। वीणइ, वीणेइ (धात्वा १५३, प्राकृ ७१)।

°वीण देखो पीण (सुर १३, १८१)।

वीणण न [दे] १ प्रकट करना (उप पृ ११८)। २ विदित करना, ज्ञापन (उप ७६५)।

वीणा स्त्री [वीणा] वाद्य-विशेष (औप, कुमा, गा ५६१, स्वप्न ६७)। °यरिणी स्त्री [°करी] वीणा-नियुक्त दासी, 'ता लहु वीणायरिणि सद्देहि, सद्दिया वीणायरिणी' (स ३०९)। °वायग वि [°वादक] वीणा बजानेवाला (महा)।

वीत देखो वीअ = वीत (ठा २, १—पत्र ५२, पणण १७—पत्र ४६४, सुज्ज २०—पत्र २९५)।

वीतिकंत } देखो वीइक्कंत (भग १०, ३—पत्र ४९८, णाया, १, १—पत्र २४, २९)।
वीतिक्कंत }

वीतिवय } देखो वीइवय। वीतिवयति (भग)। वीतीवयइ (णाया १, १२—पत्र १७४)। वकृ वीतिवयमाण (कप्प)। संकृ वीतिवइत्ता (औप)।
वीतीवय }

वीमंस सक [वि + मृश्, मीमांस्] विचार करना, पर्यालोचन करना। संकृ वीमंसिय (सम्मत्त ५६)।

वीमंसय वि [विमर्शक, मीमांसक] विचार-कर्ता (उव)।

वीमंसा स्त्री [विमर्श, मीमांसा] विचार, पर्यालोचन निर्णय की चाह (सूअ १, १, २, १७, विसे २८९, ३९९, ५६५, उव ५२०)।

वीमंसिय वि [विमर्शित, मीमांसित] विचारित, पर्यालोचित (सम्मत्त ५४)।

वीर पु [वीर] १ भगवान् महावीर (पण्ह १, १—पत्र २३, १, २, सुज्ज २०, जी १)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। ३ साहित्य-प्रसिद्ध एक रस (अणु १३६)। ४ वि पराक्रमी, शूर (आचा, सूअ १, ८, २३, कुमा)। ५ पुन एक देव-विमान (सम १२, इक)। ६ न वैताढ्य पर्वत की उत्तर श्रेणी में स्थित एक विद्याधर-नगर (इक)। °कंत पुन [°कान्त] एक देव-विमान (सम १२) °कण्ह पु [°कृष्ण] राजा श्रेणिक का एक पुत्र (निर १, १, पि ५२)। °कण्हा स्त्री [°कृष्णा] राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत २५)। °कूड पुन [°कूट] एक देव-विमान (सम १२)। °गत पुन [°गत] एक देव-विमान (सम १२)। °जस पु [°यशस्] भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेनेवाला एक राजा (ठा ८—पत्र ४३०)। °ज्झय पुन [°ध्वज] एक देव-विमान (सम १२)। °धवल पु [°धवल] गुजरात का एक प्रसिद्ध राजा (ती २, हम्मीर १३)। °निहाण न [°निधान] स्थान-विशेष (महा)। °प्पभ न [°प्रभ] एक देव-विमान (सम १२)। °भद्द पु [°भद्र] भगवान् पार्श्वनाथ का एक गण-धर (सम १३ टप्प)। °मई स्त्री [°मती] एक चोर-भगिनी (महा)। °लेस पुंन [°लेश्य] एक देव-विमान (सम १२)। °वण्ण पुंन [°वर्ण] एक देव-विमान (सम १२) °वरण न [°वरण] प्रतिसुभट से युद्ध का स्वीकार, 'इस योद्धा से मैं लडूंगा' ऐसी युद्ध की माग (कुमा ६, ४६, ५२)। °वरणी स्त्री

वोक्क सक [व्या + हृ, उद् + नद्] पुकारना, आह्वान करना। वोक्कइ (पड्, प्राकृ ७४)।

वोक्क सक [उद् + नट्] अभिनय करना। वोक्कइ (प्रा ७४)।

वोक्कंत वि [व्युत्क्रान्त] १ विपरीत क्रम से स्थित (हे १, ११६)। २ अतिक्रान्त, 'पज्जवनयवोक्कंत त वत्थु दव्वट्ठिअस्स वयणिज्ज' (सम्म ८)। देखो वुक्कंत।

वोक्कस सक [व्यप + कृप्] ह्रास प्राप्त करना, कमी करना। कवकृ वोक्कसिज्जमाण (भग ५, ६—पत्र २२८)।

वोक्कस देखो वोक्कम (सूअ १, ६, २)।

वोक्कस देखो वुक्कस = व्युत् + कृप्। वोक्कसाहि (आचा २, २, १, १८)।

वोक्का स्त्री [दे] वाद्य-विशेष, 'डक्कावोक्काए रवो वियभिओ रायपगणए' (सुपा २४२)। देखो वुक्का।

वोक्का स्त्री [व्याहृति] पुकार (उप ७६८ टी)।

वोक्कार देखो वोक्कार (सुर १, २४६)।

वोक्ख देखो वोक्क = उद् + नद्। वोक्खइ (धात्वा १५४)।

वोक्खदग्ग पु [अवस्कन्द] आक्रमण (महा)।

वोक्खारिय वि [दे] विभूषित, 'पवरदेवंगवत्थवोक्खारियकणयखभ' (स २३६)।

वोगड वि [व्याकृत] १ कहा हुआ, प्रतिपादित (सूअ २, ७, ३८, भग, कस)। २ परिस्फुट (आचानि २६२)।

वोगडा स्त्री [व्याकृता] प्रकट अर्थ वाली भाषा (पराण ११—पत्र ३७४)।

वोगसिअ वि [व्युत्कासित] निष्कासित, वाहर निकाला हुआ (तंदु २)।

वोच } सक [वद्] वोलना, कहना। वोचइ,
वोच्च } वोच्चइ (धात्वा १५४)।

वोच्चत्थ वि [व्यत्यस्त] विपरीत, उल्टा, 'हियनिस्सेस (?यस)वुद्धिवोच्चत्थे' (उत्त ८, ५, सुख ८, ५, विसे ८५३)।

वोच्चत्थ न [दे] विपरीत रत (दे ७, ५८)।

वोच्छ° देखो वय = वच्।

वोच्छिंद सक [व्युत्, व्यव + छिद्] १ भाँगना, तोडना, खण्डित करना। २ विनाश करना। ३ परित्याग करना। वोच्छिंदइ (उत्त २६, २)। भवि वोच्छिंदिहिंति (पि ५३२)। कर्म. वुच्छिज्जं, वोच्छिज्जइ, वोच्छिज्जए (कम्म २, ७, पि ५४६, काल)। भवि. वोच्छिज्जिहिति (पि ५४६)। वकृ. वोच्छिंदत, वोच्छिंदमाण (मे १५, ६२, ठा ६—पत्र ३५६)। कवकृ वोच्छिज्जंत, वोच्छिज्जमाण (मे ८, ५, ठा ३, १—पत्र ११६)।

वोच्छिण्ण देखो वोच्छिन्न (विपा १, २—पत्र २८)।

वोच्छित्ति स्त्री [व्यवच्छित्ति] विनाश, 'समारवोच्छित्ती' (विसे १-३३)। °णय पुं [°नय] पर्याय-नय (णंदि)।

वोच्छिन्न देखो वुच्छिन्न (भग, कप्प; सुर ४, ६६)।

वोच्छेअ } पु [व्युच्छेद, व्यवच्छेद]
वोच्छेद } १ उच्छेद, विनाश, 'ससारवोच्छेयकरे' (णाया १, १—पत्र ६०, धर्मसं २२८)। २ अभाव, व्यावृत्ति (कम्म ६, २३)। ३ प्रतिवन्ध, रुकावट, निरोध (उवा, पचा १, १०)। ४ विभाग (गउड ७४०)।

वोच्छेयण न [व्युच्छेदन] १ विनाश (चेइय ५२४, पिंड ६६६)। २ परित्याग (ठा ६ टी—पत्र ३६०)।

वोज्ज देखो वुज्ज। वोज्जइ (हे ४, १९८ टी)।

वोज्ज सक [वीजय्] हवा करना। वोज्जइ (हे ४, ५, पड्)। वकृ वोज्जंत (कुमा)।

वोज्जिर वि [त्रसितृ] डरनेवाला (कुमा)।

वोज्झ देखो वह = वह्। भवि 'तेणं कालेणं तेणं समएणं गगासिंधूओ महानदीओ रहपहवित्थराओ अक्खसोयप्पमाणमेत्त जलं वोज्झिहिंति' (भग ७, ६—पत्र ३०७)। कृ. 'नासानीसासवायवोज्झं असुय' (णाया १, १, १—पत्र २५, राय १०२, प्राप)।

वोज्झ } पु [दे] वोझ, भार, 'असिवोज्झमल्ल } 'वोज्झ फलयवोज्झमल्लं च' (दे ७, ८०)।

वोज्झर वि [दे] १ अतीव। २ भीत, अस्त (दे ७, ९६)।

वोट्टि वि [दे] सक्त, लीन (पड्)।

वोड वि [दे] १ दुष्ट। छिन्न-कर्ण, जिसका कान कट गया हो वह (गा ५४६)। देखो वोड।

वोडही स्त्री [दे] १ तरुणी, युवति। २ कुमारी, 'भिक्खंतु वोडहीओ' (गा ३६२)। देखो वोद्रह।

वोड्ड वि [दे] मूर्ख, वेवकूफ (उव)।

वोढ वि [ऊढ] वहन किया हुआ (धात्वा १५४)।

वोढ वि [दे] देखो वोड (गा ५५० अ)।

वोढव्व देखो वह = वह्।

वोढु वि [वोढृ] वहन-कर्ता (महा)।

वोढुं देखो वह = वह।

वोढूण अ [उढ्ढ्वा] वहन कर (पि ५८६)।

वोत्तव्व देखो वय = वच्।

वोत्तुआण अ [उक्त्वा] कह कर (पड्—पृ १५३)।

वोत्तुं } देखो वय = वच्।
वोत्तूण }

वोदाण न [व्यवदान] १ कर्म-निर्जरा, कर्मो का विनाश (ठा ३, ३—पत्र १५६, उत्त २६, १)। २ शुद्धि, विशेष रूप से कर्म-विशोधन (पचा १५, ४ उत्त २६, १, भग)। ३ तप, तपश्चर्या (सूअ १, १४, १७)। ४ वनस्पति-विशेष (पराण १—पत्र ३४)।

वोद्रह वि [दे] तरुण युवा (दे ७, ८०), 'वोद्रहद्रहम्मि पडिआ' (हे २, ८०)। स्त्री. °ही, 'सिक्खतुवोद्रहीओ' (हे २, ८०)।

वोभीसण वि [दे] वराक, दीन, गरीव (दे ७, ८२)।

वोम न [व्योमन्] आकाश, गगन (पाअ, विसे ६५६)। °विन्दु पु [°विन्दु] एक राजा का नाम (पउम ७, ५३)।

वोमज्झ पुं [दे] अनुचित वेष (दे ७, ८०)।

वोमज्झिअ न [दे] अनुचित वेष का ग्रहण (दे ७, ८० टी)।

वोमिल पुं [व्योमिल] एक जैन मुनि (कप्प)।

वोमिला स्त्री [व्योमिला] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)।

वीसाम पुं [विश्राम] १ विराम, उपरम। २ प्रवृत्त व्यापार का अवसान, चालू क्रिया का अंत (हे १, ४३, से २, ३१, महा)।

वीसामण देखो विस्सामण (कुप्र ३१०)।

वीसामणा देखो विस्सामणा (कुप्र ३१०)।

वीसाय देखो विसाय = वि + स्वादय्। कृ. विसायणिज्ज (पएण १७—पत्र ५२२)।

वीसार देखो विस्सार = वि + स्मृ। वीसारेइ (धर्मवि ५३१)।

विसारिअ वि [विस्मारित] भुलवाया हुआ (कुमा)।

वीसाल सक [मिश्रय्] मिलाना, मिलावट करना। वीसालइ (हे ४, २८)।

वीसालिअ वि [मिश्रित] मिलाया हुआ (कुमा)।

वीसावँ (अप) देखो वीसाम (कुमा)।

वीसास देखो विस्सास (प्राप्र, कुमा)।

वीसिया स्त्री [विंशिका] बीस संख्यावाला (वव १)।

वीसु न [दे] युतक, पृथग्, जुदा (दे ७, ७३)।

वीसु अ [विष्वक्] १ समन्तात्, सब ओर से। २ समस्तपन, सामस्त्य (हे १, २४, ४३, ५२, षड्, कुमा, दे ७, ७३ टी)।

वीसुभ देखो वीसभ = वि + श्रम्भ्। वीसुभेज्जा (ठा ५, २—पत्र ३०८, कस)।

वीसुभ अक [दे] पृथग् होना, जुदा होना। वीसुभेज्जा (ठा ५, २—पत्र ३०८, कस)।

वीसुभण न [दे] पृथग्भाव, अलग होना (ठा ५, २ टी—पत्र ३१०)।

वीसुभण न [विश्रम्भण] विश्वास (ठा ५, २ टी—पत्र ३१०)।

वीसुय देखो विस्सुअ (पण्ह १, ४—पत्र ६८)।

वीसेढि, वीसेणि } देखो विसेढि (भास १०, णंदि १८४)।

वीहि पुंन [व्रीहि] धान, धान्य-विशेष, 'सालीणि वा वीहीणि वा कोद्दवाणि वा कंगूणि वा' (सूअ २, २, ११, कस)।

वीहि, वीहिया, वीही } स्त्री [वीथि, °का, °थी] १ मार्ग, रास्ता (आचा, सूअ १, २, १, २१, प्रयौ १००, गउड ११९८)। २ श्रेणी, पंक्ति (स १४)। ३ क्षेत्र-भाग (ठा ९—पत्र ४६८)। ४ बाजार (उप २८, महा)।

वुअ वि [दे] १ बुना हुआ। २ बुनवाया हुआ, 'जन्न तयट्ठा कीय नेव वुय जं न गहियमन्नेसिं' (पव १२५)। देखो वूय।

वुअ, वुइय } वि [वृत] १ प्रार्थित। २ प्रार्थना आदि से नियुक्त, 'वुओ' (संक्षि ४)। ३ वेष्टित, 'कुकम्मवुइया' (सुपा ६३)।

वुइय वि [उक्त] कथित (उत्त १८, २६)।

वुज (?) सक [उद् + नमय्] ऊँचा करना। वुजइ (धात्वा १५४)।

वुंताकी स्त्री [वृन्ताकी] बैंगन का गाछ (दे ७, ६३)।

वुंद देखो वंद = वृन्द (गा ५५९, हे १, १३१)।

वुंदारय देखो वंदारय (दे १, १३२, कुमा, षड्)।

वुंदावण देखो विंदावण (हे १, १३१, प्राप्र, संक्षि ४, कुमा)।

वुंद्र देखो वंद्र (हे १, ५३, कुमा १, ३८)।

वुक्क देखो वुक्क = दे (सण)।

वुक्कंत वि [व्युत्क्रान्त] १ अतिक्रान्त, व्यतीत, गुजरा हुआ, 'वोलीणं वुक्कंतं अइच्छिअं वोलिअं अइक्कंतं' (पाअ), 'वुक्कंतो बहुकालो तुह पयसेवं कुणंतस्स' (सुपा ५६१)। २ विध्वस्त, विनष्ट (राज)। ३ निष्क्रान्त, बाहर निकला हुआ (निचू १६)। देखो वोकंत।

वुक्कंति स्त्री [व्युत्क्रान्ति] उत्पत्ति (राज)।

वुक्कम पु [व्युत्क्रम] १ वृद्धि, बढ़ाव (सूअ २, ३, १)। २ उत्पत्ति (सूअ २, ३, १, २, ३, १७)।

वुक्कस सक [व्युत् + कृष्] पीछे खींचना, वापस लौटाना। वुक्कसाहि (आचा २, ३, १, ६)।

वुक्कार देखो बुक्कार (सण)।

वुक्कार सक [दे. बूत्कारय्] गर्जन करना। वुक्कारेंति (राय १०१)।

वुक्कारिय न [दे बूत्कारित] गर्जना (स ५४८)।

वुग्गह पु [व्युद्ग्रह] १ कलह, झगड़ा, विग्रह, लड़ाई (ठा ५, १—पत्र ३००, वव १, पव २६८)। २ घाट, डाका (उप पृ २४५)। ३ बहकाव (सबोध ५२)। ४ मिथ्याभिनिवेश, कदाग्रह (राज)।

वुग्गहिअ वि [व्युद्ग्राहिक] कलह-कारक, 'नय वुग्गहिअं कहं कहिज्जा' (दस १०, १०)।

वुग्गहिअ वि [व्युद्ग्राहिक] कलह-सबन्धी (दस १०, १०)।

वुग्गाह सक [व्युद् + ग्राहय्] बहकाना, भ्रान्त-चित्त करना। वुग्गाहेमो (महा)। वकृ. वुग्गाहेमाण (णाया १, १२—पत्र १७४, औप)।

वुग्गाहणा स्त्री [व्युद्ग्राहणा] बहकाव (ओघभा २५)।

वुग्गाहिअ वि [व्युद्ग्राहित] बहकाया हुआ, भ्रान्तचित्त किया हुआ (कस, चेइय ११७, सिरि १०८१)।

वुच्च° देखो वय = वच्।

वुच्चमाण वि [उच्यमान] जो कहा जाता हो वह (सूअ १, ९, ३१, भग, उप ५३० टी)।

वुच्चा अ [उक्त्वा] कह कर (सूअ २, २, ८१, पि ५८७)।

वुच्छ देखो वच्छ = वृक्ष (नाट—मृच्छ १५४)।

वुच्छ° देखो वोच्छ° (कम्म १, १)।

वुच्छ° देखो वोच्छिंद।

वुच्छिण्ण देखो वुच्छिन्न (राज)।

वुच्छित्ति देखो वोच्छित्ति (विसे २४०५)।

वुच्छिन्न वि [व्युच्छिन्न, व्यवच्छिन्न] १ अपगत, हटा हुआ। २ विनष्ट (उव)। ३ न लगातार चौदह दिनों का उपवास (सबोध ५८)।

वुच्छेअ देखो वोच्छेअ (पव २७३, कम्म २, २२, सुपा २५४)।

वुच्छेयण देखो वोच्छेयण (ठा ६—पत्र ३५८)।

वुज्ज अक [त्रस्] डरना। वुज्जइ (प्राप्र)। देखो वोज्ज।

वुज्जण न [दे] स्थगन, आच्छादन, ढकना (धर्मसं १०२१ टी, ११०२)।

श

शिआल (मा) पुं [श्याल] वहू का भाई, साला (प्राकृ १०२, मृच्छ २०४)।

श्चिट (मा) देखो चिट्ठ = स्था। श्चिटदि (धात्वा १५४, प्राकृ १०३)।

॥ इग्र सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि शग्राराइसद्दसंकलणो छत्तीसइमो तरंगो समत्तो ॥

स

स पु [स] व्यञ्जन वर्ण-विशेष, इसका उच्चारण-स्थान दाँत होने से यह दन्त्य कहा जाता है (प्राप्र)। °अण, °गण पु [°गण] पिंगल-प्रसिद्ध एक गण, जिसमें प्रथम के दो ह्रस्व और तीसरा गुरु अक्षर होता है (पिंग)। गार° पुं [°कार] 'स' अक्षर (दर्शान १०, २)।

स देखो सं = सम् (षड्, पिंग)।

स पु [श्वन्] श्वान, कुत्ता (हे १, ५२, ३, ५६, षड्)। °पाग पु [°पाक] चण्डाल (उव)। °मुहि पुस्त्री [°मुखि] कुत्ते की तरह आचरण, कुत्ते की तरह भषण—भूँकना (णाया १, ६—पत्र १६०)। °वच पु [°पच] चाण्डाल (दे १, ६४)। °वाग, °वाय देखो °पाग (वे ५६, पाग्र)।

स ग्र [स्वर्] सुरालय, स्वर्ग (विसे १८८३)।

स वि [सत्] १ श्रेष्ठ, उत्तम (उवा, कुमा, कुप्र १४१)। २ विद्यमान, 'नो य उप्पज्जए अ-स' (सूअ १, १, १, १६)। °उरिस पुं [°पुरुष] श्रेष्ठ पुरुष, सज्जन (गउड)। °क्कय वि [°कृत] संमानित (पण्ह १, ४—पत्र ६८), देखो °क्किअ। °क्कह वि [°कथ] सत्य वक्ता (स ३२)। °क्किअ न [°कृत] सत्कार, संमान (उत्त १५, ५), देखो °क्कय। °ग्गइ स्त्री [°गति] उत्तम गति—१ स्वर्ग। २ मुक्ति, मोक्ष (भवि, राज)। °ज्जण पुं [°जन] भला आदमी, सत्पुरुष (उव, हे १, ११, प्रासू ७)। °त्तम वि [°त्तम] अतिशय साधु, सज्जनों में अतिश्रेष्ठ (सुपा ६५५, श्रा १४, सार्ध ३)। °त्थाम न [°स्थामन्] प्रशस्त बल (गउड)। °धम्मिअ वि [°धार्मिक] श्रेष्ठ धार्मिक (श्रा १२)। °न्नाण न [ज्ञान] उत्तम ज्ञान (श्रा २७)। °प्पभ वि [°प्रभ] सुन्दर प्रभा वाला (राय)। °प्पुरिस पुं [°पुरुष] १ सज्जन, भला आदमी (अभि २०१, प्रासू १२)। २ किंपुरुष-निकाय के दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। ३ श्रीकृष्ण (कुप्र ४८)। °प्फल वि [°फल] श्रेष्ठ फलवाला (अच्चु ३१)। °ब्भाव पु [°भाव] १ सम्भव, उत्पत्ति (उप ७२६)। २ सत्त्व, अस्तित्व (सम्म ३७, ३८, ३९)। ३ सुन्दर भाव, चित्त का अच्छा अभिप्राय, 'सब्भावो पुण उज्जुजणस्स कोडिं विसेसेइ' (प्रासू ६, १७२, उव, हे २, १९७)। ४ भावार्थ, तात्पर्य (सुर ३, १०१)। ५ विद्यमान पदार्थ (अणु)। °ब्भावदायणा स्त्री [°भावदर्शन] आलोचना, प्रायश्चित्त के लिए निज दोष का गुर्वादि के समक्ष प्रकटीकरण (ओघ ७९१)। °ब्भाविअ वि [°भावित] सद्-भाव-युक्त (स २०१, ६९८)। °ब्भूअ वि [°भूत] १ सत्य, वास्तविक, सच्चा, 'सब्भूएहिं भावेहिं' (उवा)। २ विद्यमान (पचा ४, २४)। °याचार पुं [°आचार] प्रशस्त आचरण (रयण १५)। °रूव वि [°रूप] प्रशस्त रूपवाला (पउम ८, ६)। °ल्लग पु [°लग] प्रशस्त सवरण, इन्द्रिय-संयम (सूअ २, २, ५७)। °वाय पुं [°वाद] प्रशस्त वाद (सूअ २, ७, ५)। °वाया स्त्री [°वाच्] प्रशस्त वाणी (सूअ २, ७, ५)।

स पुं [स्व] १ आत्मा, खुद (उवा, कुमा, सुर २, २०९)। २ ज्ञाति, नात (हे २, ११४, षड्)। ३ वि. आत्मीय, स्वीय, निजी (उवा; ओघभा ६, कुमा, सुर ४, ६०)। ४ न धन, द्रव्य (पचा ८, ९, आचा २, १, १, ११)। ५ कर्म (आचा २, १६, ६)। °कडब्भि, °गडब्भि वि [°कृतभिद्] निज के किए हुए कर्मों का विनाशक (पि १९६, आचा १, ३, ४, १, ४)। °जण पुं [°जन] १ ज्ञाति, सगा। २ आत्मीय लोग (स्वप्न ६७, षड्)। °तत वि [°तन्त्र] १ स्वाधीन, स्व-वश (विसे २११२, दे ३, ४३, अच्चु १)। २ न. स्वकीय सिद्धान्त (निचू ११)। °त्थ वि [°स्थ] १ तंदुरुस्त, स्वभाव-स्थित। २ सुख से अवस्थित (पाग्र, पउम २६, ३१, स्वप्न १०६, सुर १०, १०४, सुपा २७६, महा; सण)। °पक्ख पुं [°पक्ष] १ सार्धमिक,

गया (भत्त १२२)। ४ उपचित, पुष्ट (से ६, ५०)। ५ नि सृत, निकला हुआ, 'जम्मुहमहद्दहाओ दुवालसंगी महानई वूढा। ते गणहरकुलगिरिणो सव्वे वंदामि भावेण' (चेइय ४)।

वूणक पुन [दे] बालक बच्चा (राज)।

वूय वि [दे] बुना हुआ, 'ज न तयट्ठा वूयं नय निरिणयं नेय गहियमन्नेहिं' (सुपा ६४३)। देखो वुअ = (दे)।

वूह पुन [व्यूह] १ युद्ध के लिए की जाती सैन्य की रचना विशेष (पण्ह १, ३—पत्र ४४, औप, स ६०३, कुमा)। २ समूह (सम १०६, कुप्र ५६)।

वे देखो वइ = वै (प्राकृ ८०, राज)।

वे अक [वि + इ] नष्ट होना। वेइ (विसे १७६४)।

वे } सक [व्ये] संवरण करना। वेइ,
वेअ } वेअइ, वेअए (षड्)।

वेअ सक [वेदय्] १ अनुभव करना, भोगना। २ जानना। वेअइ, वेएइ, वेएति (सम्यक्त्वो ६, भग)। वकृ वेअंत, वेएमाण, वेयमाण (सम्यक्त्वो ५, पउम ७५, ४५, सुपा २४३, णाया १, १—पत्र ६६, औप, पंच ५, १३२, सुपा ३६६)। कवकृ वेइज्जमाण (भग, पण्ह १, ३—पत्र ५५)। संकृ. वेयइत्ता (सूअ १, ६, २७)। कृ. वेय, वेअव्व, वेइयव्व (ठा २, १—पत्र ४७, रयण २४, सुख ६, १, सुपा ६१४, महा)। देखो वेअ = (वेद्य), वेअणिज्ज, वेअणिय।

वेअ अक [वि + एज्] विशेष काँपना। वेयइ (णदि ४२ टी)। वकृ वेयत (ठा ७—पत्र ३८३)।

वेअ अक [वेप्] काँपना। वकृ. वेअमाण (गा ३१२ अ)।

वेअ पु [वेद] १ शास्त्र-विशेष, ऋग्वेद आदि ग्रंथ (विपा १, ५ टी—पत्र ६०, पाअ; उव)। २ कर्म-विशेष, मोहनीय कर्म का एक भेद, जिसके उदय से मैथुन की इच्छा होती है (कम्म १, २२, उप पृ ३५३)। ३ आचाराग आदि जैन ग्रन्थ (आचा १, ३, १, २)। ४ विज्ञ, जानकार (भग)। °व वि [°वत्] वेदो का जानकार (आचा १, ३, १, २)। °वि, °विउ वि [°विद्] वही अर्थ (पि ४१३, आ २३)। °वत्त न [°व्यक्त] चैत्य-विशेष (आचा २, १५, ३५)। °ावत्त न [°ावर्त] देखो °वत्त (आचा २, १५, ५)।

वेअ न [वेद्य] कर्म-विशेष, सुख तथा दु ख का कारण-भूत कर्म (कम्म १ ३)।

वेअ पुं [वेग] शीघ्र गति, दौड, तेजी (पाअ, से ५, ४३, कुमा महा, पउम ६३, ३६)। २ प्रवाह। ३ रेतस्। ४ मूत्र आदि नि सारण-यन्त्र। ५ संस्कार-विशेष (प्राकृ ४१)। देखो वेग।

वेअंत पु [वेदान्त] दर्शन-विशेष, उपनिषद् का विचार करनेवाला दर्शन (अच्चु १)।

वेअग वि [वेदक] १ भोगनेवाला, अनुभव करनेवाला (सम्यक्त्वो १२, सबोध ३३, श्रावक ३०६)। २ न. सम्यक्त्व का एक भेद (कम्म ३, १६)। ३ वि सम्यक्त्व-विशेष वाला जीव (कम्म ४, १३, २२)। °छिहिय वि [छिन्नवेदक] जिसका पुरुष-चिह्न आदि काटा गया हो वह (सूअ २, २, ६३)।

वेअच्छ न [वैकक्ष] १ उत्तरासग, छाती में यज्ञोपवीत की तरह पहना जाता वस्त्र, माला आदि। २ बन्ध-विशेष, मर्कट-बन्ध। ३ कन्धे के नीचे लटकना (णाया १, ८—पत्र १३३)।

वेअड सक [खच्] जडना। वेअडइ (हे ४, ८६, षड्)।

वेअडिअ वि [खचित] जडा हुआ, जडाऊ (कुमा, पाअ, भवि)।

वेअडिअ वि [दे] प्रत्युप्त, फिर से बोया हुआ (दे ७, ७७)।

वेअडिअ पु [दे वैकटिक] मोती वेधनेवाला शिल्पी, जौहरी (कप्पू)।

वेअड्डि देखो विअड्डि (औप)।

वेअड्ढ न [दे] भल्लातक, भिलावाँ (दे ७, ६६)।

वेअड्ढ पु [वैताढ्य] पर्वत-विशेष (सुर ६, १७, सुपा ६२६, महा, भवि)।

वेअड्ढ न [वैदग्ध्य] विदग्धता, विचक्षणता (सुपा ६२६)।

वेअण न [वेतन] मजूरी का मूल्य, तनखाह (पाअ, विपा १ ३—पत्र ४२, उप पृ ३६८)।

वेअण न [वेपन] १ कम्प, काँपना (चेइय ४३५, नाट—उत्तर ६१)। २ वि काँपनेवाला (चेइय ४३५)।

वेअण न [वेदन] अनुभव, भोग (आचा, कम्म २, १३)।

वेअणा देखो विअणा (उवा, हे १, १४६, प्रासू १०४, १३३, १७४)।

वेअणिज्ज } त्रि [वेदनीय] १ भोगने योग्य।
वेअणिय } २ न कर्म-विशेष, सुख-दु ख आदि का कारण-भूत कर्म (आचा, ठा २, ४, कप्प, कम्म १, १२)।

वेअय देखो वेअग (विसे ५२८)।

वेअरणी स्त्री [वैतरणी] १ नरक नदी (कुप्र ४३२, उव)। २ परमाधार्मिक देवो की एक जाति, जो वैतरणी की विकुर्वणा करके उसमें नरक-जीवो को डालता है (सम २६)। ३ विद्या-विशेष (आवम)।

वेअल्ल देखो वेइल्ल = विचकिल 'वियल्लफुल्लनियरच्छलेण हसइव्व गिम्हरिऊ' (धर्मवि २०)।

वेअल्ल वि [दे] १ मृदु, कोमल (दे ७, ७५)। २ न. असामर्थ्य (दे ७, ७१, पाअ)।

वेअल्ल न [वैकल्य] विकलता, व्याकुलता (गउड)।

वेअव्व देखो वेअ = वेदय्।

वेअस पु [वेतस] वृक्ष-विशेष, बेंत का पेड़ (हे १, २०७, षड्, गा ६४५)।

वेआगरण वि [वैयाकरण] व्याकरण-सबधी, सदेह-निराकरण से सम्बन्ध रखनेवाला (पचभा)।

वेआर सक [दे] ठगना, प्रतारणा करना। वेयारइ (भवि)। कर्म. वेआरिज्जमि (गा ६०६)। हेकृ. वेआरिउ (गा २८६, वज्जा ११८)।

वेआरणिय वि [वैदारणिक] विदारण-सम्बन्धी, विदारण से उत्पन्न (ठा २, १—पत्र ४०)।

°रय वि [°रत] कामो (से १, २७)। °रहस वि [°रभस] वेग-युक्त, उतावला (गा ३५४, सुपा ६३२, कप्पू)। °राग वि [°राग] राग-सहित (ठा २, १—पत्र ५८)। °रागसजत, °रागसजय वि [°रागसयत] वह साधु जिसका राग क्षीण न हुआ हो (पण्ण १७—पत्र ४६४, उवा)। °रूव वि [°रूप] समान रूपवाला (पउम ८, ६)। °लूण वि [°लवण] लावण्य-युक्त (सुपा २६३)। °लोग वि [°लोक] समान, सदृश (सट्ठि २१ टी)। °लोण देखो °लूग (गा ३१६, हे ४, ४४४, कुमा)। स्त्री. °लोणी (हे ४, ४२०)। °वक्ख देखो °पक्ख (गउड, भवि)। °वण वि [°व्रण] घाववाला, व्रण-युक्त (सुपा २८७)। °वय वि [°वयस्] समान उम्रवाला (दे ८, २२)। °वय वि [°व्रत] व्रती (सुपा ४५१)। °वाय वि [°पाद] सवा (स ४४१)। °वाय वि [°वाद] वाद-सहित (सूम २, ७, ५)। °वास वि [°वास] समान वासवाला, एक देश का रहनेवाला (प्रासू ७६)। °विज्ज वि [°विद्य] विद्यावान्, विद्वान् (उप पृ २१५)। °व्वण देखो °वण (गउड, श्रा १२)। °व्वेक्ख वि [°व्यपेक्ष] दूसरे की परवाह रखनेवाला, सापेक्ष (धर्मसं ११६७)। °व्वाव वि [°व्याप] व्याप्ति-युक्त, व्यापक (भग १, ६—पत्र ७७)। °व्विवर वि [°विवर] विवरण-युक्त, सविस्तर (सुपा ३६४)। °संक वि [°शङ्क] शंका-युक्त (दे २, १०६, सुर १६, ५५, कुप्र ४४५, गउड)। °संकिअ वि [°शङ्कित] वही (सुर ८, ४०)। °सत्ता स्त्री [°सत्त्वा] सगर्भा, गर्भिणी स्त्री (उत्त २१, ३)। °सिरिय, °सिरीय वि [°श्रीक] श्री-युक्त, शोभा-युक्त (पि ६८, णाया १, १, राय)। °सिह वि [°स्पृह] स्पृहावाला (कुमा)। °सिह वि [°शिख] शिखा-युक्त (राज)। °सूग वि [°शूक] दयालु (उव)। °सेस वि [°शेष] १ सावशेष, बाकी रहा हुआ (दे ८, ५६, गउड)। २ शेषनाग-सहित (गउड १५)। °सोग, सोगिल्ल वि [शोक] दिलगीर, शोक-युक्त (पउम ६३, ४; सुर ६, १२४)। °स्सिरिअ, °स्सिरीअ देखो °सिरिय (पि ६८, अभि १५६, भग, सम १२७, णाया १, ६—पत्र १५७)।

सअ सक [स्वद्] १ प्रीति करना। २ चखना, स्वाद लेना। सअइ (प्राकृ ७५, धात्वा १५४)।

सअ न [सदस्] सभा (षड्)।

सअअ न [दे] १ शिला, पत्थर का तख्ता। २ वि घूर्णित (दे ८, ४६)।

सअक्खगत्त पु [दे] कितव, जुआरी (दे ८, २१)।

सअज्झिअ, सअज्झिअ पुंस्त्री [दे] प्रातिवेशिमक, पडोसी (गा ३३५)। स्त्री. °आ (गा ३६, ३६ अ), 'सअज्झिअ संठवतीए' (गा ३६, पिंड ३४२)। देखो सइज्झिअ।

सअडिआ देखो सगडिआ (पि २०७)।

सअढ पुं [दे] लम्बा केश (दे ८, ११)।

सअढ पु [शकट] १ दैत्य-विशेष (प्राप्र, संक्षि ७, हे १, १६६)। २ पुंन. यान-विशेष, गाडी (हे १, १७७, १८०)। °रि पुं [°रि] नरसिंह, श्रीकृष्ण (कुमा)। देखो सगड।

सअर देखो स-अर = स-कर, स-गर।

सअर देखो सगर (से २, २६)।

सआ अ [सदा] १ हमेशा, निरन्तर (प्राप्र, हे १, ७२, कुमा, प्रासू ४६)। °चार पुं [°चार] निरन्तर गति (रयण १५)।

सआ स्त्री [स्रज्] माला (षड्)।

सइ देखो सआ = सदा (पाम, हे १, ७२, कुमा)।

सइ अ [सकृत्] एक वार, एक दफा (हे १, १२८, सम ३५, सुर ८, २४४)।

सइ स्त्री [स्मृति] स्मरण, चिन्तन, याद (श्रा १६)। °काल पु [°काल] भिक्षा मिलने का समय (दस ५, २, ६)।

सइ देखो स = स्व, 'सइकारियजिणपडिमाए' (सुपा ५१०, भवि)।

सइ देखो सय = शत, 'असोयव्वं सोयावि फुट्टए जं न सइखंड' (सुर १४, २)। °कोडि स्त्री [°कोटि] एक सौ करोड, एक अब्ज—अरब (षड्)।

सइ देखो सइं = स्वयम् (काल, हे ४, ३६५, ४३०)।

सइ° देखो सई = सती (सुपा ३०१)।

सइअ वि [शतिक] सौ का परिमाणवाला (णाया १, १—पत्र ३७)। देखो सइग।

सइअ वि [शयित] सुप्त, सोया हुआ (दे ७, २८, गा २५४; पउम १०१, ६०)।

सइएल्लय देखो स = स्व; 'ताव य आगओ परिव्वायओ जक्खदेउलाओ सइएल्लए दालिद्द-पुरिमे घेत्तूण' (महा)।

सइं देखो सइ = सकृत् (आचा)।

सइं देखो सयं = स्वयम् (ठा २, ३—पत्र ६३, हे ४, ३३६, ४०२, भवि)।

सइग वि [शतिक] सौ (रुपया आदि) की कीमत का (दसनि ३, १३)।

सइज्झ, सइज्झिअ पुंस्त्री [दे] प्रातिवेशिमक, पडोसी (दे ८, १०)। स्त्री. °आ (सुपा २७८, पिंड ३४२ टी, वज्जा ६४)।

सइज्झिअ न [दे] प्रातिवेश्य, पड़ोसिपन (दे ८, १० टी)।

सइण्ण न [सैन्य] सेना, लश्कर (षड्)।

सइत्तए देखो सय = शी।

सइदंसण वि [दे. स्मृतिदर्शन] मनो-दृष्ट, चित्त में अवलोकित, विचार में प्रतिभासित (दे ८, १६; पाम)।

सइदिट्ठ वि [दे. स्मृतिदृष्ट] ऊपर देखो (दे ८, १६)।

सइन्न देखो सइण्ण (हे १, १५१, कुमा)।

सइम वि [शततम] सौवाँ, १०० वाँ (णाया १, १६—पत्र २१४)।

सइर न [स्वैर] १ स्वेच्छा, स्वच्छन्दता (हे १, १५१, प्राप्र, णाया १, १८—पत्र २३६)। २ वि. मन्द, अलस (पाम)। ३ स्वैरी, स्वच्छन्दी (पाम, प्राप्र)।

सइरवसह पुं [दे. स्वैरवृषभ] स्वच्छन्दी साँढ, धर्म के लिए छोडा जाता बैल (दे २, २५, ८, २१)।

सइरि वि [स्वैरिन्] स्वच्छन्दी, स्वेच्छाचारी (गच्छ १, ३८)।

सइरिणी स्त्री [स्वैरिणी] व्यभिचारिणी स्त्री, कुलटा (पउम ५, १०५)।

सइल देखो सेल (हे ४, ३२६)।

सइलंभ वि [दे स्मृतिलम्भ] देखो सइ-दंसण (दे ८, १६, पाम)।

वेकुंठ पुं [वैकुण्ठ] १ विष्णु, नारायण। २ इन्द्र, देवाधीश। ३ गरुड पक्षी। ४ अर्जक वृक्ष, सफेद बर्बरी का गाछ। ५ लोक-विशेष, विष्णु का धाम (हे १, १९९)। ६ पुन मथुरा का एक वैष्णव तीर्थ (ती ७)।

वेग देखो वेअ = वेग (उवा, कप्प, कुमा)। °वई स्त्री [°वती] एक नदी का नाम (ती १५)। °वत वि [°वत्] वेगवाला (सुर २, १६७)।

वेगच्छ देखो वेअच्छ (उवा)।

वेगच्छिया } स्त्री [वैकक्षिका, °क्षा] कक्षा
वेगच्छी } के पास पहना जाता वस्त्र, उत्तरासग (पव ६२), 'कयतिलग्रो वेगच्छि आणावववहारपरणरूव' (सवोव ६)।

वेगड स्त्रीन [दे] पोत-विशेष, एक तरह का जहाज, 'चउसट्ठी वेगडाए' (सिरि ३८२)।

वेगर पुं [दे] द्राक्षा, लोग आदि से मिश्रित चीनी आदि (उर ५, ६)।

वेगुन्न देखो वइगुण्ण (धर्मसं ८८४, सुपा २६०)।

वेग्ग देखो विअग्ग (प्राकृ ३०)।

वेग्ग देखो वेग (भवि)।

वेग्गल वि [दे] दूर-वर्त्ती, गुजराती मे 'वेगळुं' (हे ४, ३७०)।

वेचित्त देखो वइचित्त (भास ३०, अज्झ ४६)।

वेच्च देखो विच्च = वि + अय्। वेचइ (हे ४, ४१९)।

वेच्छ° देखो विअ = विद्।

वेच्छा देखो वगच्छिया। °सुत्त न [°सूत्र] उपवीत की तरह पहनी जाती साँकली (भग ६, ३३ टी—४७७, राय)।

वेजयत पुन [वैजयन्त] १ एक अनुत्तर देव-विमान (सम ५६, औप, अनु)। २-७ जवू-द्वीप, लवण समुद्र, धातकी खण्ड, कालोद समुद्र, पुष्करवर द्वीप तथा पुष्करोद समुद्र का दक्षिण द्वार (ठा ४, २—पत्र २२५, जीव ३, २—पत्र २६०, ठा ४ २—पत्र २२६, जीव ३, २—पत्र ३२७, ३२६, ३३१, ३४७)। ८-१३ पु जंबूद्वीप, लवण समुद्र आदि के दक्षिण द्वारो के अधिष्ठाता देव (ठा ४, २—पत्र २२५, जीव ३, २—पत्र २६०, ठा ४, २—पत्र २२६, जीव ३, २—पत्र ३२७, ३२६, ३३१, ३४७)। १४ एक अनुत्तर देवविमान का निवासी देव (सम ५६)। १५ जवू-मन्दर के उत्तर रुचक पर्वत का एक शिखर, 'विजए य वि(? वे) जयंते' (ठा ८—पत्र ४३६)। १६ वि प्रधान, श्रेष्ठ (सूम १, ६, २०)।

वेजयती स्त्री [वैजयन्ती] १ ध्वजा, पताका (सम १३७, सूम १, ६, १०, सुर १, ७०, कुमा)। २ षष्ठ वलदेव की माता का नाम (सम १५२)। ३ अगारक आदि महाग्रहो की एक-एक अग्रमहिषी का नाम (ठा ४, १—पत्र २०४)। ४ पूर्व रुचक पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६)। ५ विजय-विशेष की राजधानी (ठा २, ३—पत्र ८०)। ६ एक विद्याधर-नगरी (सुर ५, २०४)। ७ रामचन्द्रजी की एक सभा (पउम ८०, ३)। ८ भगवान् पद्मप्रभ की दीक्षा-शिविका (सम १५१)। ९ उत्तर अजनगिरि की दक्षिण दिशा में स्थित एक पुष्करिणी (ठा ४, २—पत्र २३०)। १० पक्ष की आठवीं रात्रि का नाम, 'विजया य विजयता (? वेजयती' (सुज १०, १४)। ११ भगवान् कुन्थुनाथ की दीक्षा-शिविका (विचार १२९)।

वेज्ज वि [वेद्य] भोगने योग्य, अनुभव करने योग्य (संवोध ३३)।

वेज्ज पु [वैद्य] १ चिकित्सक, हकीम (गा २३७, उव)। २ वृक्ष-विशेष। ३ वि पण्डित, विद्वान् (हे १, १४८, २, २४)। °सत्थ न [°शास्त्र] चिकित्सा-शास्त्र (स १७)।

वेज्जग } न [वैद्यक] १ चिकित्सा-शास्त्र (ओघ
वेज्जय } ६२२ टी, स ७११)। २ वैद्य-सवन्धी क्रिया, वैद्य-कर्म (अणु २३४, कुप्र १८१)।

वेज्झ वि [वेध्य] वीधने योग्य (नाट—साहित्य १५८)।

वेट्ठण देखो वेढग (नाट—मालती ११६)।

वेट्ठणग पु [वेष्टनक] १ सिर पर बांधी जाती एक तरह की पगडी। २ कान का एक आभूषण (राज)।

वेट्ठया देखो विट्ठा (सुर १६, १७५)।

वेट्ठि देखो विट्ठि, 'रायवेट्ठि व मन्नंता' (उत्त २७, १३, प्राकृ ५)।

वेट्ठिद (शौ) देखो वेढिअ (नाट—मृच्छ ६२)।

वेड [दे] देखो वेड (दे ६, ९५, कुमा)।

वेडइअ पुं [दे] वाणिजक, व्यापारी (दे ७, ७८)।

वेडवग देखो विडवग, 'जह वेडवगलिगे' (सवाघ १२)।

वेडस पु [वेतस] वृक्ष-विशेष, वॅत का गाछ (पाअ, सम १५२, कप्प)।

वेडिअ पु [दे] मणिकार, जौहरी (दे ७, ७७)।

वेडिकिल्ल वि [दे] सकट, सकरा, कमचौडा (दे ७, ७८)।

वेडिस देखो वेडस (प्राप्र, हे १, ४६, २०७, कुमा, गा ७६०)।

वेडुंवक } वि [दे] नृपादि कुल मे उत्पन्न
वेडुवग } (आव० परि नि० गा० ७६ आव० दीपिका भा० २ पत्र, ७०, २)।

वेडुज्ज } देखो वेरुलिअ (हे २, १३३,
वेडुरिअ } पाअ, नाट—मृच्छ १३९)।

वेडुल्ल वि [दे] गर्वित, अभिमानी (दे ७, ८१)।

वेड्ढ देखो वेढ = वेष्ट्। वेड्ढइ (प्राप्र)।

वेड्ढय पु [वेष्टक] छन्द-विशेष (अजि ९)।

वेढ सक [वेष्ट्] लपेटना। वेढइ, वेढेइ (हे ४, २२१, उवा)। कर्म वेढिज्जइ (हे ४, २२१)। वकृ वेढत, वेढेमाण (पउम ४९, ७१, णाया १, ६)। कवकृ वेढिज्ज-माण (सुपा ६४)। सकृ वेढित्ता, वढेत्ता, वेढिउ, वेढेउ (पि ३०४, महा)। प्रयो. वेढावेइ (पि ३०४)।

वेढ पु [वेष्ट] १ छन्द-विशेष (सम १०६, अणु २३३, णदि २०६)। २ वेष्टन, लपेटन (गा ९६, २२१, से ६, १३)। ३ एक वस्तु-विषयक वाक्य-समूह, वर्णन-ग्रन्थ (णाया १, १६—पत्र २१८, १, १७—पत्र २२८, अनु)।

°वेढ देखो पीढ (गउड)।

'धन्नाणवि ते धन्ना
पुरिसा निम्मीमसत्तिसजुत्ता ।
जे विसमसकडेसुवि पडियावि
चयति णो धम्मं ।।'
(रयण ७३) ।

सकडिय वि [संकटित] सकीर्ण किया हुआ (कुप्र ३६०) ।

सकडिल्ल वि [दे] निश्छिद्र, छिद्र-रहित (दे ८ १५, सुर ४ १४३) ।

सकड्ढिय वि [संकर्षित] आकर्षित (राज) ।

सकण न [शङ्कन] शका सदेह (दस ६, ५६) ।

संकप्प पु [सकल्प] १ अध्यवसाय, मन-परिणाम, विचार (उवा, कप्प, उप १०३५) । २ सगत आचार, सदाचार (उप १०३५) । ३ अभिलाष, चाह (गउड) । °जोणि पु [°योनि] कामदेव, कदर्प (पाअ) ।

सकम सक [सं + क्रम] १ प्रवेश करना । २ गति करना, जाना । सकमइ, सकमंति (पिंड १०८, सूअ २, ४, १०) । वकृ. सकममाण (सम ३६, सुज्ज २, १, रभा) । हेकृ. सकमित्तए (कस) ।

सकम पुं [सक्रम] १ सेतू, पूल, जल पर से उतरने के लिए काष्ठ आदि से बांधा हुआ मार्ग (से ६, ६५, दस ५, १, ४, पगह १, १) । २ सचार, गमन, गति, 'पाउल्लाइ सकमट्ठाए' (सूअ १, ४, २, १५, श्रावक २२३) । ३ जीव जिस कर्म-प्रकृति को बाधता हो उसी रूप से अन्य प्रकृति के दल को प्रयत्न द्वारा परिणामाना, बँधी जाती कर्म-प्रकृति में अन्य कर्म-प्रकृति के दल को डाल कर उसे बँधी जाती कर्म-प्रकृति के रूप से परिणत करना (ठा ४, २—पत्र २२०) ।

सकमग वि [सक्रामक] सक्रमण-कर्ता (धर्मसं १३३०) ।

सकमण न [सक्रमण] १ प्रवेश, 'नवर मुत्तूण घरं घरसकमण कय तेहिं' (सबोध १४) । २ संचार, गमन (प्रासू १०५) । ३ चारित्र, संयम (आचा) । ४ देखो संकम का तीसरा अर्थ (पंच ३, ४८) । ५ प्रतिबिम्बन (गउड) ।

सकर पु [दे] रथ्या, मुहल्ला (दे ८, ६) ।

संकर पु [शङ्कर] १ शिव, महादेव (पउम ५, १२२, कुमा, सम्मत्त ७६) । २ वि. सुख करनेवाला (पउम ५, १२२, दे १, १७७) ।

संकर पु [सकर] १ मिलावट, मिश्रण (पगह १, ५—पत्र ६२) । २ न्यायशास्त्र-प्रसिद्ध एक दोष (उवर १७६) । ३ शुभाशुभ-रूप मिश्र भाव (सिरि ५०६) । ४ अशुचि-पुज, कचरे का ढेर (उत्त १२, ६) ।

सकरण न [सकरण] अच्छी कृति (सबोध ६) ।

संकरिसण पु [सकर्पण] भारतवर्ष का भावी नववां बलदेव (सम १५४) ।

सकरी स्त्री [शङ्करी] १ विद्या-विशेष (पउम ७, १४२, महा) । २ देवी-विशेष । ३ सुख करनेवाली (गउड) ।

सकल सक [स + कलय्] सकलन करना, जोडना । सकलेइ (उव) ।

सकल पुन [श्रृङ्खल] १ साकल, निगड । २ लोहे का बना हुआ पाद-बन्धन, बेडी (विपा १, ६—पत्र ६६, धर्मवि १३६, सम्मत्त १६०, हे १, १८६) । ३ सिकडी, आभूषण-विशेष (सिरि ८११) ।

सकलण न [सकलन] मिश्रता, मिलावट (माल ८७) ।

संकला स्त्री [श्रृङ्खल] देखो संकल = श्रृङ्खल (स १७१, सुपा २६१, प्राप) ।

संकलिअ वि [सकलित] १ एकत्र किया हुआ (उप पृ ३४१, तदु २) । २ युक्त, 'तत्थ य भमिओ तं पुण कायट्ठिईकालसखस-कलिओ' (सिक्खा १०) । ३ योजित, जोडा हुआ (सिरि १३४०) । ४ संगृहीत (उव) । ५ न. सकलन, कुल जोड (वव १) ।

सकलिआ स्त्री [सकलिका] १ परपरा (पिंड २३६) । २ संकलन । ३ सूत्रकृताग सूत्र का पनरहवां अध्ययन (राज) ।

सकलिआ } स्त्री [श्रृङ्खलिका, °ली] साकल,
सकली } सिकडी, जंजीर, निगड (सूअ १, ५, २, २०, प्रामा) ।

सकहा स्त्री [सकथा] सभापण, वार्तालाप (पउम ७, १५८, १०६, ६, सुर ३, १२६; उप पृ ३७८, पिंड १६४) ।

संका स्त्री [शङ्का] १ सशय, सदेह (पडि) । २ भय, डर (कुमा) । °लुअ वि [°वत्] शकावाला, शंका युक्त (गउड) ।

सकाम देखो संकम = स + क्रम् । सकामइ (सुज्ज २, १, पंच ५, १४७) ।

सकाम सक [स + क्रमय्] सक्रम करना, बँधी जाती कर्म प्रकृति में अन्य प्रकृति के कर्म-दलो को प्रक्षिप्त कर उस रूप मे परिणत करना । संकामेति (भग) । भूका. सकामिसु, (भग) । भवि संकामेस्संति (भग) । कवकृ सकामिज्जमाण (ठा ३, १—पत्र १२०) ।

सकामण न [सक्रमण] १ सक्रम-करण (भग) । २ प्रवेश कराना (कुप्र १४०) । ३ एक स्थान से दूसरे स्थान में ले जाना (पचा ७, २०) ।

सकामणा स्त्री [सक्रमणा] सक्रमण, पैठ (पिंड २८) ।

सकामणी स्त्री [सक्रमणी] विद्या-विशेष, जिससे एक से दूसरे मे प्रवेश किया जा सके वह विद्या (णाया १, १६—पत्र २१३) ।

सकामिय वि [संक्रामित] एक स्थान से दूसरे स्थान मे नीत (राज) ।

संकार देखो सक्कार = सस्कार (धर्मसं ३५४) ।

सकास वि [सकाश] १ समान, तुल्य, सरीखा (पाअ, णाया १, ५, उत्त ३४, ४, ५, ६, कप्प, पंच ३, ४०, धर्मवि १४६) । २ पुं. एक श्रावक का नाम (उप ४०३) ।

सकासिया स्त्री [सकाशिका] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प) ।

सकि वि [शङ्किन्] शंका करनेवाला (सूअ १, १, २, ६, गा ८७३, संबोध ३४, गउड) ।

सकिअ वि [शङ्कित] १ शकावाला, शंका-युक्त (भग, उवा) २ न सशय, सदेह (पिंड ४६३, महा ६८) । ३ भय, डर (गा ३३३), 'सकिअमवि नेव दविअस्स' (श्रा १४) ।

संकिट्ठ वि [सकृष्ट] विलिखित, जोता हुआ, खेती किया हुआ (औप, णाया १, १ टी—पत्र १) ।

वेमय सक [भञ्ज्] भाँगना, तोड़ना। वेमयइ (हे ४, १०६, षड्)।

वेमाउअ } वि [वैमातृक] विमाता की वेमाउग } संतान (सम्मत्त १७१, मोह ८८)।

वेमाणि पस्त्री [विमानिन्] विमान-वासी देवता एक उत्तम देव-जाति (दं २)। स्त्री °णिणी (पण्ण १७—पत्र ५००, पचा २, १८)।

वेमाणिअ पु [वैमानिक] एक उत्तम देव-जाति, विमानवासी देवता (भग, औप, पण्ह १, ४—पत्र ६३, जी २४)।

वेमाया स्त्री [विमात्रा] अनियत परिमाण (भग १, १० टी)।

वेम्मि क्रि [वच्मि] मैं कहता हूँ (चंड)।

वेयड पु [वेतण्ड] हस्ती, हाथी (स ६३०, ७३५)। देखो वेंड।

वेयावच्च } न [वैयावृत्त्य, वैयापृत्य] वेयावडिय } सेवा, शुश्रूषा (उव, कस, णाया १, ५, औप, ओघभा ३२१, आचा, णाया १, १—पत्र ७५, धर्मसं ६६५, श्रु ५३)।

वेर न [वैर] दुश्मनाई, शत्रुता (दे १, १५२, श्रत १२, प्रासू १२३)।

वेर न [द्वार] दरवाजा (षड्)।

वेरग्ग न [वैराग्य] विरागता, उदासीनता (उव, रयण ३०, सुपा १७३, प्रासू ११६)।

वेरग्गिअ वि [वैराग्यिक] वैराग्य-युक्त, विरागी (उव, स १३५)।

वेरज्ज न [वैराज्य] १ वैरि-राज्य, विरुद्ध राज्य (सुख २, ३५, कस)। २ जहाँ पर राजा विद्यमान न हो वह राज्य। ३ जहाँ पर प्रधान आदि राजा से विरक्त रहते हो वह राज्य (कस, वृह १)।

वेरत्तिय वि [वैरात्रिक] रात्रि के तृतीय पहर का समय (उत्त २६, २०, ओघ ६६२)।

वेरमण न [विरमण] विराम, निवृत्ति (सम १०, भग, उवा)।

वेराड पु [वैराट] भारतीय देश-विशेष, अलवर तथा उसके चारो ओर का प्रदेश (भवि)।

वेराय (अप) पुं [विराग] वैराग्य, उदासीनता (भवि)।

वेरि } देखो वइरि (गउड, कुमा, पि वेरिअ } ६१)।

वेरिज्ज वि [दे] १ असहाय, एकाकी। २ न सहायता, मदद (दे ७, ७६)।

वेरुलिअ पुंन [वैडूर्य] १ रत्न की एक जाति, 'सुचिरं पि अच्छमाणो वेरुलिओ काचमणीअ उम्मीसो' (प्रासू ३२, पाअ), 'विरुलिअ' (हे २, १३३, कुमा)। २ विमानावास-विशेष (देवेन्द्र १३२)। ३ शक्र आदि इन्द्रों का एक आभाव्य विमान (देवेन्द्र २६३)। ४ महा-हिमवत पर्वत का एक शिखर (ठा २, ३—पत्र ७०, ठा ८—पत्र ४३६)। ५ रुचक पर्वत का एक शिखर (ठा ८—पत्र ४३६)। ६ वि. वैडूर्य रत्नवाला (जीव ३, ४, राय)। °मय वि [°मय] वैडूर्य रत्नो का बना हुआ (पि ७०)।

वेरोयण देखो वइरोअण=वैरोचन (णाया २, १—पत्र २४७)।

वेल न [दे] दन्त-मास, दाँत के मूल का मास (दे ७, ७४)।

वेलंधर पुं [वेलन्धर] एक देव-जाति, नाग-राज-विशेष (सम ३३)। २ पर्वत-विशेष। ३ न नगर-विशेष (पउम ५४, ३६)।

वेलंवर पु [वैलन्धर] वेलन्धर संबन्धी (पउम ५५, १७)।

वेलंव पुं [वेलम्ब] १ वायुकुमार नामक देवो के दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५, इक)। २ पाताल-कलश का अधिष्ठाता देव-विशेष (ठा ४, १—पत्र १६८, ४, २—पत्र २२६)।

वेलंव पुं [दे. विडम्ब] १ विडम्बना (दे ७, ७५, गउड)। २ वि विडम्बना कारक (पण्ह २, २—पत्र ११४)।

वेलंवग पु [विडम्बक] १ विदूषक, मसखरा (औप, णाया १, १ टी—पत्र २, कप्प)। २ वि. विडम्बना करनेवाला (पुप्फ २२६)।

वेलक्ख न [वैलक्ष्य] लज्जा, शरम (गउड)।

वेलणय न [दे व्रीडनक] १ लज्जा, शरम (दे ७, ६५ टी) २ पु साहित्य-प्रसिद्ध रस-विशेष, लज्जा-जनक वस्तु के दर्शन आदि से उत्पन्न होनेवाला एक रस (अणु १३५)।

वेलंव सक [उपा + लभ्] १ उपालम्भ देना, उलाहना देना। २ कँपाना। ३ व्याकुल करना। ४ व्यावृत्त करना, हटाना। वेलवइ (हे ४, १५६, षड्)। वकृ वेलवंत (से २, ८)। कवकृ. वेलविज्जंत (से १०, ६८)। कृ वेलवणिज्ज (कुमा)।

वेलव सक [वञ्च्] १ ठगना २ पीडा करना। वेलवइ (हे ४, ६३)। कर्म. वेल-विज्जति (सुपा ४८२, गउड)।

वेलविअ वि [वञ्चित] १ प्रतारित, ठगा हुआ (पाअ, वज्जा १५२, विवे ७७, वै २६)। २ पीडित, हैरान किया हुआ (खा ११)।

वेला स्त्री [दे] दन्त-मास, दाँत के मूल का मास (दे ७, ७४)।

वेला स्त्री [वेला] १ समय, अवसर, काल (पाअ, कप्पू)। २ ज्वार, समुद्र के पानी की वृद्धि (पण्ह १, ३—पत्र ५५)। ३ समुद्र का किनारा (से १, ६२; औप, गउड)। ४ मर्यादा (सूअ १, ६, २६)। ५ वार, दफा (पंचा १२, २६)। °उल न [°कुल] वन्दर, जहाजो के ठहरने का स्थान (सुर १३, ३०, उप ५६७ टी)। °वासि पुं [°वासिन्] समुद्र-तट के समीप रहनेवाला वानप्रस्थ (औप)।

वेलाइअ वि [दे] मृदु, कोमल। २ दीन, गरीब (दे ७, ६६)।

वेलाव (अप) सक [वि + लम्बय्] देरी करना, विलम्ब करना। वेलावसि (पिंग)।

वेलिल्ल वि [वेलावत्] वेला-युक्त (कुमा)।

वेल्ली स्त्री [दे] १ लता-विशेष, निद्राकरी लता (दे ७, ३४)। २ घर के चार कोणो मे रखा जाता छोटा स्तम्भ (पव १३३)।

वेलु देखो वेणु (हे १, ४, २०३)।

वेलु पुं [दे] १ चोर, तस्कर। २ मुसल (दे ७, ६४)।

वेलुंक वि [दे] विरूप, खराव, कुत्सित (दे ७, ६३)।

वेलुग } पुन [वेणुक] १ वेल का गाछ। २ वेलुय } वेल का फल (आचा २, १, ८, १४)। ३ वंश, वाँस, वेलुयाणि तणाणि य (पण्ण १—पत्र ४३, पि २४३)। ४

विशेष (पिंग)। °धमग पु [°ध्मायक] वानप्रस्थ की एक जाति (राज)। °धर पु [°धर] श्रीकृष्ण, विष्णु (कुमा)। °पाल देखो °वाल (ठा ४, १—पत्र १६७)। °पुर न [°पुर] १ एक विद्याधर नगर (इक)। २ नगर-विशेष जो आजकल गुजरात में सखेश्वर के नाम से प्रसिद्ध है (राज)। °पुरी स्त्री [°पुरी] कुरुजंगल देश की प्राचीन राजधानी, जो पीछे से अहिच्छत्रा के नाम से प्रसिद्ध हुई थी (सिरि ७८)। °माल पु [°माल] वृक्ष की एक जाति (जीव ३—पत्र १४५)। °वण न [°वन] एक उद्यान का नाम (उवा)। °वण्णाभ पु [°वर्णाभ] ज्योतिष्क महाग्रह-विशेष (सुज्ज २०)। °वन्न पु [°वर्ण] जोतिष्क महाग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। °वन्नाभ देखो °वण्णाभ (ठा २, ३—पत्र ७८)। °वर पु [°वर] १ एक द्वीप। २ एक समुद्र (दीव, इक)। °वरोभास पु [°वरावभास] १ एक द्वीप। २ एक समुद्र (दीव)। °वाल पुं [°पाल] नाग-कुमार-देवों के धरण और भूतानन्द नामक इन्द्रों के एक एक लोकपाल का नाम (इक)। °वालय पु [°पालक] १ जैनेतर दर्शन का अनुयायी एक व्यक्ति (भग ७, १०—पत्र ३२३)। एक आजीविक मत का एक उपासक (भग ८, ५—पत्र ३७०)। °ल्ल वि [°वत्] शखवाला (णाया १, ८—पत्र १३३)। °ावई स्त्री [°ावती] नगरी-विशेष (ती ५)।

संख वि [सख्य] सख्यात, गिना हुआ, गिनती-वाला (कम्म ४, ३९, ४१)।

संख न [साख्य] १ दर्शन-विशेष, कपिलमुनि-प्रणीत दर्शन (णाया १, ५—पत्र १०५, सुपा ५६६)। २ वि साख्य मत का अनुयायी (औप, कुप्र २३)।

संख पुं [दे] मागध, स्तुति-पाठक (दे ८, २)।

संखइम वि [सख्येय] जिसकी सख्या हो सके वह (विसे ६७०, अणु ६१ टी)।

संखड न [दे] कलह, झगडा (पिंड ३२४, ओघ १५७)।

संखडि स्त्री [दे] १ विवाह आदि के उपलक्ष्य मे नात-नातेदार आदि को दिया जाता भोज, जेवनार (आचा २, १,२,४, २,१,३, १, २, ३, पिंड २२८, ओघ १२, ८८, भास ९२)।

संखडि स्त्री [सस्कृति] ओदन-पाक (कप्प)।

संखणग पुं [शङ्खनक] छोटा शख (उत्त ३६, १२९, पण्ण १—पत्र ४४, जीव १ टी—पत्र ३१)।

संखद्रह पुं [दे] गोदावरी ह्रद (दे ८, १४)।

संखवइल्ल पु [दे] कृषक की इच्छानुसार उठ कर खडा होनेवाला वैल (दे ८, १९)।

संखम वि [सक्षम] समर्थ (उप ९८६ टी)।

संखय पु [सक्षय] क्षय, विनाश (से ६, ४२)।

संखय वि [सस्कृत] सस्कार-युक्त, 'णय सखयमाहु जीविय' (सूअ १, २, २, २१, १, २, ३, १०, पि ४९), 'असंखय जीविय मा पमायए' (उत्त ४, १)।

संखलय पुं [दे] शम्बूक, शुक्ति के आकार-वाला जल-जन्तु विशेष (दे ८, १८)।

संखला देखो संकला (गउड, प्रामा)।

संखलि पुस्त्री [दे] कर्ण-भूषण विशेष, शख-पत्र का बना हुआ ताडक (दे ८, ७)।

संखव सक [स + क्षपय्] विनाश करना। सक्. सखवियाण (उत्त २०, ५२)।

संखविअ वि [सक्षपित] विनाशित (अच्चु ८)।

संखा सक [स + ख्या] १ गिनती करना। २ जानना। सक्. संखाय (सूअ १, २, २, २१)। कृ. संखिज्ज, सखेज्ज (उवा, जी ४१, उव, कप्प)।

संखा अक [स + स्त्यै] १ आवाज करना। २ सहत होना, सान्द्र होना, निबिड बनना। संखाइ, संखाअइ (हे ४, १५, षड्)।

संखा स्त्री [सख्या] १ प्रज्ञा, बुद्धि (आचा १, ६, ४, १)। २ ज्ञान (सूअ १, १३, ८)। ३ निर्णय (अणु)। ४ गिनती, गणना (भग, अणु, कप्प, कुमा)। ५ व्यवस्था (सूअ २, ७, १०)। °ईअ वि [°तीत] असख्य (भग १, १ टी, जीव १ टी—पत्र १३, श्रा ४१)। °दत्तिय वि [°दत्तिक] उतनी ही भिक्षा लेने का व्रतवाला सयमी, जितनी कि अमुक गिने हुए प्रक्षेपों मे प्राप्त हो जाय (ठा २, ४—पत्र १००, ५, १—पत्र २९९, औप)।

संखाण न [सख्यान] १ गिनती, गणना, सख्या। २ गणित-शास्त्र (ठा ४, ४—पत्र २९३, भग, कप्प, औप, पउम ८५, ६, जीवस १३५)।

संखाय वि [सस्त्यान] १ सान्द्र, सघन, निबिड (कुमा ६, ११)। २ आवाज करनेवाला। ३ सहत करनेवाला। ४ न. स्नेह। ५ निबिड-पन। ६ सहति, सघात। ७ आलस्य। ८ प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि (हे १, ७४, ४, १५)।

संखाय देखो संखा = स + ख्या।

संखाय वि [सख्याय] संख्या-युक्त (सूअ १, १३, ८)।

संखायण न [शाङ्खायन] गोत्र विशेष (सुज १०, १६, इक)।

संखाल पुं [दे] हरिण की एक जाति, साँबर मृग (दे ८, ६)।

संखालग देखो संखालग = शङ्ख-वत्।

संखावई देखो संखावई = शङ्खावती।

संखाविय वि [सख्यापित] जिसकी गिनती कराई गई हो वह (सुपा ३६२, स ४१९)।

संखिग देखो संखिय = शाङ्खिक (स १७३, कुप्र १४९)।

संखिज्ज देखो संखा = सं + ख्या।

संखिज्जइ वि [सख्येयतम] सख्यातवाँ (अणु ६१)।

संखित्त वि [सक्षिप्त] सक्षेप-युक्त, छोटा किया हुआ (उवा, द ३, जी ५१)।

संखिय वि [शाङ्खिक] १ मगल के लिए चन्दन-गर्भित शख को हाथ में धारण करने-वाला। शख बजानेवाला (कप्प, औप)।

संखिय देखो संख = संख्य (स ४४१, पच २, ११, जीवस १४९)।

संखिया स्त्री [शङ्खिका] छोटा शंख (जीव ३—पत्र १४६, जं २ टी—पत्र १०१, राय ४५)।

संखुड्ड अक [रम्] क्रीडा करना, सभोग करना। संखुड्डइ (हे ४, १६८)।

वेसलग पुं [वृषल] शूद्र, अधम-जातीय मनुष्य (सूअ २, २, ५४)।

वेसवण पु [वैश्रवण] देखो वेसमण (हे १, १५२, चंड, देवेन्द्र २७०)।

वेसवाडिय पुं [वेशवाटिक] एक जैन मुनि-गण (कप्प)।

वेसवार पुं [वेसवार] धनिया आदि मसाला (कुप्र ६८)।

वेसा देखो वेस्सा (कुमा, सुर ३, ११६, सुपा २३५)।

वेसाणिय पु [वैषाणिक] १ एक अन्तर्द्वीप। २ अन्तर्द्वीप विशेष मे रहनेवाली मनुष्य-जाति (ठा ४, २—पत्र २२५)।

वेसानर देखो वइसानर (सट्टि ६ टी)।

वेसायण देखो वेसियायण (राज)।

वेसालिअ वि [वैशालिक] १ समुद्र में उत्पन्न। २ विशालाख्य जाति में उत्पन्न। ३ विशाल, बड़ा, विस्तीर्ण, 'मच्छा वेसालिया चेव' (सूअ १, १, ३, २)। ४ पुं. भगवान् ऋषभदेव (सूअ १, २, ३, २२)। ५ भगवान् महावीर (सूअ १, २, ३, २२, भग)।

वेसाली स्त्री [वैशाली] एक नगरी का नाम (कप्प, ३३०)।

वेसास देखो वीसास, 'को किर वेसासु वेसासो' (धमवि ६५)।

वेसासिअ वि [वैश्वासिक, विश्वास्य] विश्वास-योग्य, विश्वसनीय, विश्वास-पात्र (ठा ५, ३—पत्र ३४२, विपा १, १—पत्र १५, कप्प, औप, तदु ३५)।

वेसाह देखो वइसाह (पाअ, वव १)।

वेसाही स्त्री [वैशाखी] १ वैशाख मास की पूर्णिमा। २ वैशाख मास की अमावस (इक)।

वेसि वि [द्वेषिन्] द्वेष करनेवाला (पउम ८, १८७, सुर ६, ११५)।

वेसिअ देखो वइसिअ (दे १, १५२)।

वेसिअ पुंस्त्री [वैशिक] १ वैश्य, वणिक् (सूअ १, ६, २)। २ न जैनेतर शास्त्र-विशेष, काम-शास्त्र (अणु ३६, राज)।

वेसिअ वि [वैषिक] वेष-प्राप्त, वेष-सबन्धी (सूअ २, १, ५६, आचा २, १, ४, ३)।

वेसिअ वि [व्येषित] १ विशेष रूप से अभिलषित। २ विविध प्रकार से अभिलषित (भग ७, १—पत्र २९३)।

वेसिट्ठ देखो वइसिट्ठ (धर्मस २७१)।

वेसिणी स्त्री [दे] वेश्या, गणिका (गा ४७४)।

वेसिया देखो वेस्सा, 'कामामत्तो न मुणइ गम्मागम्ममपि वेसियाणुव्व' (भत्त ११३, ठा ४, ४—पत्र २७१)।

वेसियायण पुं [वैश्यायन] एक बाल तापस (भग १५—पत्र ६६५, ६६६)।

वेसी स्त्री [वैश्या] वैश्य जाति की स्त्री (सुख ३, ४)।

वेसुम पुं [वेश्मन्] गृह, घर (प्राकृ २८)।

वेस्स देखो वइस्स = वैश्य (सूअ १, ६, २)।

वेस्स देखो वेस = द्वेष्य (उत्त १३, १८)।

वेस्स देखो वेस = वेष्य (राज)।

वेस्सा स्त्री [वेश्या] १ पण्यांगना, गणिका (विसे १०३०, गा १५६, ८६०)। २ ओषधि-विशेष, पाढ का गाछ (प्राकृ २६)।

वेस्सासिअ देखो वेसासिअ (भग)।

वेह सक [प्र + ईक्ष्] देखना, अवलोकन करना, 'जहा संगामकालसि पिट्ठतो भीरु वेहइ' (सूअ १, ३, ३, १)।

वेह सक [व्यध्] वीधना, छेदना। वेहइ (पि ४८९)।

वेह पु [वेध] १ वेधन, छेद (सम १२५, वज्जा १४२)। २ अनुवोध, अनुगम, मिश्रण। ३ द्यूत-विशेष, एक तरह का जुआ (सूअ १, ६, १७)। ४ अनुशय, अत्यन्त द्वेष (पण्ह १, ३—पत्र ४२)।

वेह पुं [वेधस्] विधि, विधाता (सुर ११, ५)।

वेहण न [वेधन] वेधन, छेद करना (राय १४६, धर्मवि ७१)।

वेहम्म देखो वइधम्म (उप १०३१ टी, धर्मस १८५ टी)।

वेहल्ल पुं [विहल्ल] राजा श्रेणिक का एक पुत्र (अनु १, २, निर १, १)।

वेहव सक [वञ्च्] ठगना। वेहवइ (हे ४, ९३, षड)।

वेहव न [वैभव] विभूति, ऐश्वर्य (भवि)।

वेहविअ पुं [दे] १ अनादर, तिरस्कार। २ वि. क्रोधी (दे ७, ९६)।

वेहविअ वि [वञ्चित] प्रतारित (दे ७, ९६ टी)।

वेहव्व न [वैधव्य] १ विधवापन, रँडापा, राँडपन (गा ६३०, हे १, १४८, गउड, सुपा १३६)।

वेहाणस देखो वेहायस (आचा २, १०, २, ठा २ ४—पत्र ९३, सम ३३, णाया १, १६—पत्र २०२, भग)।

वेहाणसिय वि [वैहायसिक] फाँसी आदि मे लटक कर मरनेवाला (औप)।

वेहायस वि [वैहायस] १ आकाश-सम्बन्धी, आकाश में होनेवाला। २ न. मरण-विशेष, फाँसी लगा कर मरना (पव १५७)। ३ पुं. राजा श्रेणिक का एक पुत्र (अनु)।

वेहारिय वि [वैहारिक] विहार-सम्बन्धी, विहार-प्रवण (सुख २, ४५)।

वेहास न [विहायस] १ आकाश, गगन (णाया १, ८—पत्र १३४)। अन्तराल, बीच भाग (सूअ १, २, १, ८)।

वेहास देखो वेहायस (पव १५७, अनु १)।

वेहिम वि [वैधिक, वेध्य] तोड़ने योग्य, दो टुकडे करने योग्य (दस ७, ३२)।

वैंउठ देखो वेकुंठ (समु १५०)।

वैभव देखो वेहव (त्रि १०३)।

वोअस देखो वोक्कस। कवकृ. वोयसिज्जमाण (भग)।

वोइय वि [व्यपेत] वर्जित, रहित (भवि)।

वोंट देखो विंट = वृन्त (हे १, १३९)।

वोकिल्ल वि [दे] गृह-शूर, घर में वीर बननेवाला, झूठा शूर (दे ७, ८०)।

वोक्किल्लिअ न [दे] रोमन्थ, चबी हुई चीज को पुन चबाना (दे ७, ८२)।

वोक्क सक [वि + ज्ञपय्] विज्ञप्ति करना। वोक्कइ (हे ४, ३८)। वकृ वोक्कत (कुमा)।

संगहिअ वि [सग्रहिक] सग्रहवाला, सग्रह-नय को माननेवाला (विसे २८५२)।

संगहिअ वि [सगृहीत] १ जिसका संचय किया गया हो वह (हे २, १६८)। २ स्वीकृत, स्वीकार किया हुआ (सण)। ३ पकडा हुआ, 'संगहिओ हत्थी' (कुप्र ८१)। देखो संगिहीअ।

सगा सक [सं+गै] गान करना। कवकृ सगिज्जमाण (उप ५६७ टी)।

सगा स्त्री [दे] वल्गा, घोडे की लगाम (दे ८, २)।

सगाम सक [सङ्ग्रामय्] लडाई करना। सगामेइ (भग, तदु ११)। वकृ सगामेमाण (णाया १, १६—पत्र २२३, निर १, १)।

सगाम पु [सङ्ग्राम] लडाई, युद्ध (आचा, पाअ, महा)। °सूर पु [°शूर] एक राजा का नाम (श्रु २८)।

सगामिय वि [साङ्ग्रामिक] सग्राम-सबधी, लडाई से सबन्ध रखनेवाला (ठा ५, १—पत्र ३०२, औप)।

सगामिया स्त्री [साङ्ग्रामिकी] श्रीकृष्ण वासुदेव की एक भेरी, जो लडाई की खबर देने के लिए बजाई जाती थी (विसे १४७६)।

सगामुड्डामरी स्त्री [सङ्ग्रामोड्डामरी] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से लडाई में आसानी से विजय मिलती है (सुपा १४४)।

सगार पुं [दे] सकेत (ठा ४, ३—पत्र २४३, णाया १, ३, ओघभा २२, सुख २, १७, सूअनि २६, धर्मसं १३८८ उप ३०६)।

सगाहि वि [सग्राहिन्] सग्रह-कर्ता (विसे १५३०)।

सगि वि [सङ्गिन्] सग-युक्त (भग, सबोध ७, कप्पू)।

सगिज्जमाण देखो सगा = स + गै।

सगिण्ह देखो संगह = स + ग्रह्। सगिण्हइ (विसे २२०३)। कर्म. सगिज्जते (विसे २२०३)। वकृ सगिण्हमाण (भग ५, ६—पत्र २३१)। सकृ सगिण्हित्ताण (पि ५८३)।

सगिण्हण न [संग्रहण] आश्रय-दान (ठा ८—पत्र ४४१)। देखो सगहण।

सगिल्ल वि [सङ्गवत्] बद्ध, सग युक्त (पाअ)।

सगिल्ल देखो सगेल्ल (राज)।

सगिल्ली देखो सगेल्ली (राज)।

सगिहीय वि [सगृहीत] १ आश्रित (ठा ८—पत्र ४४१)। २ देखो सगहिअ = सगृहीत।

सगीअ न [सगीत] १ गाना, गान-तान (कुमा)। २ वि जिसका गान किया गया हो वह, 'तेण संगीओ तुह चेव गुणग्गामो' (सुपा २०)।

सगुण सक [सं+गुणय्] गुणाकार करना। सगुणए (सुज्ज १०, ६ टी)।

सगुण वि [सगुण] गुणित, जिसका गुणाकार किया गया हो वह (सुज्ज १०, ६ टी)।

संगुणिअ वि [सगुणित] ऊपर देखो (ओघ २१, देवेन्द्र ११६, कम्म ५, ३७)।

सगुत्त वि [सगुप्त] १ छिपाया हुआ, प्रच्छन्न रखा हुआ (उप ३३६ टी)। २ गुप्ति-युक्त, अकुशल प्रवृत्ति से रहित (पव १२३)।

सगेल्ल पु [दे] समूह, समुदाय (दे ८, ४, वव १)।

संगेल्ली स्त्री [दे] १ परस्पर अवलम्बन, 'हत्थसगेल्लीए' (णाया १, ३—पत्र ६३)। २ समूह, समुदाय (भग ६, ३३—पत्र ४७४, औप)।

सगोढण वि [दे] व्रणित, व्रण-युक्त (दे ८, १७)।

सगोप्फ } पु [सगोफ] बन्ध-विशेष, मर्कट-सगोफ } बन्ध रूप गुम्फन (उत्त २२, ३५)।

सगोल्ल न [दे] सघात, समूह (पड्)।

संगोल्ली स्त्री [दे] समूह, सघात (दे ८, ४)।

सगोव सक [स + गोपय्] १ छिपाना, गुप्त रखना। २ रक्षण करना। सगोवइ (प्राकृ ६६)। वकृ सगोवमाण, संगोवेमाण (णाया १, ३—पत्र ६१, विपा १, २—पत्र ३१)।

सगोवग वि [सगोपक] रक्षण-कर्ता (णाया १, १८—पत्र २४०)।

सगोवाव देखो सगोव। संगोवावसु (स ८६)।

सगोविअ वि [सगोपित] १ छिपाया हुआ (स ८६)। २ संरक्षित (महा)।

संगोवित्तु } वि [सगोपयितृ] संरक्षण-कर्ता सगोवेत्तु } (ठा ७—पत्र ३८५)।

संघ सक [कथ्] कहना। संघइ (हे ४, २), संघसु (कुमा)।

संघ पुं [सघ] १ साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविकाओं का समुदाय (ठा ४, ४—पत्र २८१, णदि, महानि ४, सिग्घ १, ३, ५)। २ समान धर्मवालों का समूह (धर्मसं ६८८)। ३ समूह, समुदाय (सुपा १८०)। ४ प्राणि-समूह (हे १, १८७)। °दास पु [°दास] एक जैन मुनि और ग्रथ-कर्ता (ती ३, राज)। °पालिय, °वालिय पु [°पालिन] एक प्राचीन जैन मुनि, जो आर्यवृद्ध मुनि के शिष्य थे (कप्प, राज)।

सघअ वि [सहत] निविड, सान्द्र (से १०, २६)।

सघस पु [सघर्ष] १ घिसाव, रगड। २ आघात, धक्का (णाया १, १—पत्र ६५, श्रा २८)।

संघट्ट सक [स + घट्ट] १ स्पर्श करना, छूना। २ अक. आघात लगाना। सघट्टइ (भवि), सघट्टेइ (णाया १, ५—पत्र ११२, भग ५, ६—पत्र २२६), संघट्टए (दस ८, ७)। वकृ सघट्टंत (पिंड ५७५)। सकृ सघट्टिऊण (पव २)।

सघट्ट पु [सघट्ट] १ आघात, धक्का, सघर्ष (उव, कुप्र १६, धर्मवि ५७, सुपा १४)। २ अर्ध जघा तक का पानी (ओघभा ३४)। ३ दूसरा नरक का छठवाँ नरकेन्द्रक—स्थान विशेष (देवेन्द्र ६)। ४ भीड, जमावडा (भवि)। ५ स्पर्श (राय)।

सघट्ट वि [सघट्टित] सलग्न (भवि)।

सघट्टण न [सघट्टन] १ समर्दन, सघर्ष (णाया १, १—पत्र ७१, पिंड ५८६)। २ स्पर्श करना (राज)।

सघट्टणा स्त्री [सघट्टना] संचलन, सचार, 'गब्भे सघट्टणा उ उट्ठतुवेसमाणीए' (पिंड ५८६)।

सघट्टा स्त्री [संघट्टा] वल्ली-विशेष (पण्ण १—पत्र ३३)।

वोय पुं [वोक] एक देश का नाम (पउम ९८, ६४)।

वोरच्छ वि [दे] तरुण, युवा (दे ७, ८०)।

वोरमण न [व्युपरमण] हिंसा, प्राणि-वध (पण्ह १, १—पत्र ५)।

वोरल्ली स्त्री [दे] १ श्रावण मास की शुक्ल चतुर्दशी तिथि में होनेवाला एक उत्सव। २ श्रावण मास की शुक्ल चतुर्दशी (दे ७, ८१)।

वोरविअ वि [व्यपरोपित] जो मार डाला गया हो वह, 'सक्कारित्ता जुयल दिन्न विइएण वोरविश्रो' (वव १)।

वोरुल्ली स्त्री [दे] रुई से भरा हुआ वस्त्र (पव ८४)।

वोल सक [गम्] १ गति करना, चलना। २ गुजारना, पसार करना। ३ अतिक्रमण करना, उल्लंघन करना। ४ अक. गुजरना, पसार होना। वोलइ (प्राकृ ७३, हे ४, १६२, महा; धर्मसं ७५४), 'कालं वोलेइ' (कुप्र २२४), वोलंति (वज्जा १४८, धर्मवि ५३)। वकृ. वोलंत, वोलेंत (कुमा, गा २१०, २२०, पउम ६, ५४, से १४, ७५, सुपा २२४, से ६, ९६)। संकृ. वोलिऊण, वोलेत्ता (महा, श्राव)। कृ. वोलेअव्व (से २,१, स ३६३)। प्रयो., सकृ. वोलाविउ, वोलावेउ (सुपा १४०, गा ३४९ अ?)। देखो वोल = व्यति + क्रम्।

वोल देखो वोल = दे (दे ६, ९०)।

वोलट्ट अक [व्युप + लुट्] छलकना। वकृ. वोलट्टमाण (भग)।

वोलाविअ वि [गमित] अतिक्रामित (वज्जा १४, सुपा ३३४, गा २१)।

वोलिअ } वि [गत] १ गया हुआ (प्राकृ वोलीण } ७७)। २ गुजरा हुआ, जो पसार हुआ हो वह, व्यतीत (सुर ६, १९, महा, पव ३५, सुर ३, २५)। ३ अतिक्रान्त, उल्लंघित (पाअ, सुर २, १, कुप्र ४५, से १, ३, ४, ४८, गा ५७, २५२, ३४०, हे ४, २५८, कुमा, महा)।

वोल्ल सक [आ + क्रम्] आक्रमण करना। वोल्लइ (धात्वा १५४)।

वोल्लाह पुं [वोल्लाह] देश-विशेष (स ८१)।

वोल्लाह वि [वौल्लाह] देश-विशेष में उत्पन्न (स ८१)।

वोवाल पुं [दे] वृषभ, बैल (दे ७, ७९)।

वोसग्ग पु [व्युत्सर्ग] परित्याग (विसे २६०५)।

वोसग्ग } अक [वि + कस्] १ विकसना, वोसट्ट } खिलना। २ बढना। वोसग्गइ, वोसट्टइ (षड्, हे ४, १९५, प्राकृ ७६)। वकृ. वोसट्टमाण (भग, गा ८२८)।

वोसट्ट सक [वि + कासय्] १ विकास करना। २ बढ़ाना। वोसट्टइ (धात्वा १५४)।

वोसट्ट वि [विकसित] विकास-प्राप्त (हे ४, २५८, प्राकृ ७७)।

वोसट्ट वि [दे] भर कर खाली किया हुआ (दे ७, ८१)।

वोसट्टिअ वि [विकसित] विकास-प्राप्त (कुमा)।

वोसट्ठ वि [व्युत्सृष्ट] १ परित्यक्त, छोडा हुआ (कप्प, कस, ओघ ६०५, उत्त ३५, १९, आचा २, ८, १, पचा १८, ६)। २ परिष्कार-रहित, साफसूफ-वर्जित (सूअ १, १६, १)। ३ कायोत्सर्ग में स्थित (दस ५, १, ९१)।

वोसमिय वि [व्यवशमित] उपशमित, शान्त किया हुआ, 'खामिय वोसमियाइं अहिगरणाइं तु जे उदीरेंति। ते पावा नायव्वा' (ठा ६ टी—पत्र ३७१)।

वोसर } सक [व्युत् + सृज्] परित्याग वोसिर } करना, छोडना। वोसरिमो, वोसिरइ, वोसिरामि (पव २३७, महा, भग, औप), वोसिरेज्जा, वोसिरे (पि २३५)। वकृ. वोसिरंत (कुप्र ८१)। सकृ. वोसिज्ज, वोसिरित्ता (सूअ १, ३, ३, ७, पि २३५)। कृ. वोसिरियव्व (पव ४६)।

वोसिर वि [व्युत्सर्जन] छोडनेवाला (उप पृ २६८)।

वोसिरण न [व्युत्सर्जन] परित्याग (हे २, १७४, श्रा १२, श्रावक ३७९, ओघ ८५)।

वोसिरिअ देखो वोसट्ठ (पउम ४, ५२, धर्मसं १०५१, महा)।

वोसेअ वि [दे] उन्मुख-गत (दे ७, ८१)।

वोहित्त न [वहित्र] प्रवहण, जहाज, नौका (गा ७४६)। देखो वोहित्थ।

वोहार न [दे] जल-वहन (दे ७, ८०)।

व्युड पु [दे] विट, भडुआ (षड्)।

व्रद देखो वद = वृन्द (प्राप्र)।

व्रत्त (अप) देखो वय = व्रत (हे ४, ३९४)।

व्राक्रोस (अप) पुं [व्याक्रोश] १ शाप। २ निन्दा। ३ विरुद्ध चिन्तन (प्राकृ ११२)।

व्रागरण (अप) देखो वागरण (प्राकृ ११२)।

व्राडि (अप) पु [व्याडि] संस्कृत व्याकरण और कोष का कर्ता एक मुनि (प्राकृ ११२)।

व्रास देखो वास = व्यास (हे ४, ३९९, प्राकृ ११२, षड्, कुमा)।

व्व देखो इव (हे २, १८२, कप्प, रंभा)।

व्व देखो वा = अ (प्राकृ २६)।

°व्वअ देखो वय = व्रत (कुमा)।

व्ववसिअ देखो ववसिय = व्यवसित (अभि १२४)।

°व्वाज देखो वाय = व्याज (मा २०)।

°व्वावार देखो वावार = व्यापार (मा ३६)।

°व्वावुड देखो वावुड (अभि २४९)।

°व्वाहि देखो वाहि (मा ४४)।

व्विव देखो इव (प्राकृ २६)।

व्वे अ [दे] संबोधन-सूचक अव्यय (प्राकृ ८०)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि वआराइसद्दसंकलणो
पचतीसइमो तरंगो समत्तो ॥

२४, सुर ३, ७६, नाट—चैत १३०)। कृ. संचरणिज्ज, संचरिअव्व (नाट—वेणी १४ से १८, २८)।

संचरण न [संचरण] १ चलना, गति। २ सम्यग् गति (गउड, पि १०२, कप्पू)।

संचरिअ वि [संचरित] चला हुआ, जिसने संचरण किया हो वह (उप पृ ३५८, रुक्मि ५६, भवि)।

संचलण न [संचलन] संचार, गति (गउड)।

संचलिअ वि [संचलित] चला हुआ (सुर ३, १४०, महा)।

संचल्ल सक [सं + चल्] चलना, गति करना। संचल्लइ (भवि)।

संचल्ल (अप) देखो संचलिय (भवि)।

संचल्लिअ देखो संचलिअ (महा)।

संचाइय वि [संशक्ति] जो समर्थ हुआ हो वह (भग ३, २ टी—पत्र १७८)।

संचाय अक [सं + शक्] समर्थ होना। संचाएइ (भग, उवा, कम), संचाएमो (सूअ २, ७, १०, णाया १, १८—पत्र २४०)।

संचाय पुं [संत्याग] परित्याग (पंचा १३, ३४)।

संचार सक [सं + चारय्] संचार कराना। संचारइ (भवि)। सकृ संचारि (अप) (पिंग)।

संचार पुं [संचार] संचरण, गति (गउड, महा, भवि)।

संचारि वि [संचारिन्] गति करनेवाला (कप्पू)।

संचारिअ वि [संचारित] जिसका संचार कराया गया हो वह (भवि)।

संचारिम वि [संचारिम] संचार-योग्य, जो एक स्थान से उठा कर दूसरे स्थान मे रखा जा सके वह (पिंड ३००, सुपा ३५१)।

संचारा स्त्री [दे] दूत-कर्म करनेवाली स्त्री (पाअ, षड्)।

संचाल सक [सं + चालय्] चलाना। संचालइ (भवि)। कवकृ. संचालिज्जंत, संचालिज्जमाण (से ६, ३६, णाया १, ९—पत्र १५६)।

संचालिअ वि [संचालित] चलाया हुआ (से ४, २७)।

संचिअ वि [संचित] संगृहीत (ओघ ३२६ भवि, नाट—वेणी ३७, सुपा ३५२)।

संचिंतण न [संचिन्तन] चिन्तन, विचार (हि २२)।

संचिंतणया स्त्री [संचिन्तना] ऊपर देखो (उत्त ३२. ३)।

संचिक्ख अक [सं + स्था] रहना, ठहरना, अच्छी तरह रहना, समाधि से रहना। संचिक्खइ (आचा १, ६, २, २)। संचिक्खे (उत्त २, ३३, ओघ ६६)।

संचिज्जमाण देखो संचिण।

संचिट्ठ देखो संचिक्ख। संचिट्ठइ (भग, उवा, महा)।

संचिट्ठण न [संस्थान] अवस्थान (पि ४८३)।

संचिण सक [सं + चि] १ संग्रह करना, इकट्ठा करना। २ उपचय करना। संचिणेइ, संचिणइ, संचिणंति (श्रु १०७, वि ५०२)। सकृ संचिणित्ता (सूअ २, २, ६५, भग)। कवकृ संचिज्जमाण (आचा २, १, ३, २)।

संचिणिय वि [संचित] संगृहीत (स ४०३)।

संचिन्न वि [संचीर्ण] आचरित (सण)।

संचुण्ण सक [सं + चूर्णय्] चूर-चूर करना, खड-खड करना, टुकडा-टुकडा करना। कवकृ संचुण्णिज्जंत (पउम ५६, ४४)।

संचुण्णिअ } वि [संचूर्णित] चूर-चूर
संचुन्निअ } किया हुआ (महा, भवि, णाया १, १—पत्र ४७, सुर १२, २४१)।

संचेयणा स्त्री [संचेतना] अच्छी तरह सूध, भान, 'लद्धसंचेयणाउ' (सिरि ६५७)।

संचोइय वि [संचोदित] प्रेरित (ठा ४, ३ टी—पत्र २३८)।

संछइय } वि [संछन्न] ढका हुआ (उप
संछण्ण } पृ १०३, सुर २, २४७, सुपा
संछन्न } ५६२, महा, सण)।

संछाइय वि [संछादित] ढका हुआ (सुपा ५६२)।

संछाय सक [सं + छादय्] ढकना। वकृ. संछायंत (पउम ५६, ४७)।

संछुह सक [सं + क्षिप्] एकत्रित कर छोडना, इकट्ठा करना, 'संछुहई एगगेहम्मि' (पिंड ३११)।

संछोभ पुं [संक्षेप] अच्छी तरह फेंकना, क्षेपण (पच ५, १५६, १८०)।

संछोभग वि [संक्षेपक] प्रक्षेपक (राज)।

संछोभण न [संक्षेपण] परावर्तन (राज)।

संजइ पुस्त्री [संयति] उत्तम साधु, मुनि, 'संजईण दव्वलिंगीणमंतरं मेरुसरिसवसरिच्छं' (संबोध ३६)।

संजई स्त्री [संयती] साध्वी (ओघ १६, महा, द्र २७)।

संजणग वि [संजनक] उत्पन्न करनेवाला (सुर ११, १६६)।

संजणण न [संजनन] १ उत्पत्ति। २ वि. उत्पन्न करनेवाला (सुर ६ १४२, सुपा ३८२)। स्त्री °णी (रत्न २८)।

संजणय देखो संजणग (चेइय ६१५, सुपा ३८, सिक्खा २६)।

संजणिय वि [संजनित] उत्पादित (प्रासू १४६, सण)।

संजत्त सक [दे] तैयार करना। संजत्तेह (स २२)।

संजत्ता स्त्री [संयात्रा] जहाज की मुसाफिरी (णाया १, ८—पत्र १३२)।

संजत्ति स्त्री [दे] तैयारी, 'आणत्ता निय-पुरिसा संजत्तिं कुणह गमणत्थं' (सुर ७, १३०, स ६३५, ७३५, महा)। देखो संजुत्ति।

संजत्तिअ वि [दे] तैयार किया हुआ (स ४४३)।

संजत्तिअ } वि [सांयात्रिक] जहाज से
संजत्तिग } यात्रा करनेवाला, समुद्र-मार्ग का मुसाफिर (सुपा ६५५, ती ६, सिरि ४३१, पव २७६, हे १, ७०, महा, णाया १, ८—पत्र १३५)।

संजत्थ वि [दे] १ कुपित, क्रुद्ध। २ पु. क्रोध दे ८, १०)।

संजद देखो संजय = संयत (प्राप्र, प्राकृ १२, संक्षि ६)।

संजम अक [सं + यम्] १ निवृत्त होना। २ प्रयत्न करना। ३ व्रत-नियम करना। ४ सक. बाँधना। ५ काबू में करना। कर्म.

समान धर्मवाला (द्र १७)। २ तरफदार (कुप्र ११६)। ३ अपना पक्ष (सम्म २१)। °पाय न [°पात्र] निज का नाम, खुद की संज्ञा (राज)। °प्पभ वि [°प्रभ] निज से ही शोभनेवाला (सम १३७)। °भाव, °भाव पुं [°भाव] प्रकृति, निसर्ग, 'कणियारतरू नवकणिआरसुंदेरदरिअसब्भाग्रो' (कुमा ३, ४४, सम्म २१, सुर १, २७, ४, १२५),

'कुवियस्स आउरस्स य
वसणमत्तस्स आयरत्तस्स।
मत्तस्स मरतस्स य
सब्भावा पायडा हुंति"
(प्रासू ६४)।

°भावन्नु वि [°भावज्ञ] स्वभाव का जानकार (पउम ८६, ४१)। °यण देखो °जण (उवा, हे २, ११४, सुर ४, ७६, प्रासू ७६, ६५)। °रूय, °रूव न [°रूप] स्वभाव (गउड, धर्मसं ६१३, कुमा, भवि, सुर २, १४२)। °संवेयण न [°संवेदन] स्वप्रत्यक्षज्ञान (धर्मसं ४४)। °हाअ, °हाव देखो °भाव (से ३, १५, ७, ६७, गउड, सुर ३, २०, प्रासू २, १०३)। °हाववाद पुं [°भाववाद] स्वभाव से ही सब कुछ होता है ऐसा माननेवाला मत (उप १००३)। °हिअ न [°हित] १ निज का भला, स्वीय—अपनी भलाई। २ वि निज का भला करनेवाला, स्वहितकर (सुपा ४१०)।

स° वि [स°] १ सहित, युक्त (सम १३७, भग, उवा, सुपा १६२, सण)। २ समान, तुल्य, 'सगुत्ते', 'सपक्खे' (कप्प, निर १, १)। °अण्ह वि [°तृष्ण] उत्कण्ठित, उत्सुक (से १२, ८८, गा ३४८, गउड, सुपा ३८४)। °अर वि [°कर] कर-सहित (से २, २६)। °अर वि [°गर] विष-युक्त, जहरीला (से २, २६)। °इण्ह देखो °अण्ह (सुपा ४१२)। °उग वि [°गुण] गुण-युक्त (सुपा १८५)। °उण्ण, °उन्न वि [°पुण्य] पुण्य-युक्त, पुण्य-शाली (महा, सुर २, ६८, सुपा ६३५)। °ओस वि [°तोष] सन्तुष्ट (उप ७२८ टी)। °ओस वि [°दोष] दोष-युक्त (उप ६२८ टी)। °काम वि [°काम] १ समृद्ध मनोरथवाला (स्वप्न ३०)। २ मनोरथ-युक्त, इच्छावाला (राज)। °कामणिज्जरा स्त्री [°कामनिर्जरा] कर्म-निर्जरा का एक भेद (राज)। °काममरण न [°काममरण] मरण-विशेष, पण्डित-मरण (उत्त ५, २)। °केय वि [°केत] १ गृहस्थ। २ प्रत्याख्यान-विशेष (पव ४)। °क्खर वि [°अक्षर] विद्वान्, जानकार (वज्जा १५८ सम्मत्त १४३)। °गार वि [°आगार] गृहस्थ (ओघभा २०)। °गार वि [°आकार] आकार-युक्त (वर्मवि ७२)। °गुण त्रि [°गुण] गुणवान्, गुणी (उत्त, सुपा ३४५, सुर ४, १६६)। °ग्ग वि [°अग्र] श्रेष्ठ, उत्तम (से ६, ४७)। °ग्गह वि [°ग्रह] उपरक्त, ग्रहण-युक्त, दुष्ट ग्रह से आक्रान्त (पाअ, वव १)। °घिण वि [°घृण] दयालु (अच्चु ५०)। °चक्खु, °चक्खुअ वि [°चक्षुष्, °चक्षुष्क] नेत्र-वाला, देखता (पउम ६७, २३, वसु, सं ७८, विपा १, १—पत्र ५)। °चित्त वि [°चित्त] चेतनावाला, सजीव (उवा, पडि)। °चेयण वि [°चेतन] वही अर्थ (विसे १७५३)। °च्चित्त देखो °चित्त (ओघ २२, सुपा ६२५, ६२६, पि १६६, ३५०)। °जिय देखो °ज्जीअ (सुर १२, २१०)। °जोइ वि [°ज्योतिष्] प्रकाश-युक्त (पि ४११, सूअ १, ५, १, ७)। °जोणिय वि [°योनिक] उत्पत्ति-स्थानवाला, ससारी (ठा २, १—पत्र ३८)। °ज्जीअ, °ज्जीव वि [°जीव] १ ज्या-युक्त, धनुष की डोरी-वाला। २ सचेतन, जीववाला (पि १६६, से १, ४५)। ३ न कला-विशेष, मृत धातु वगैरह को सजीवन करने का ज्ञान (ओप, राय, ज २ टी—पत्र १३७)। °डुढ वि [°अर्ध] डेढ। °ड्ढकाल पुं [°अर्धकाल] तप-विशेष, पुरिमड्ढ तप (सबोध ५८)। °णप्पय, णप्फइ, °णप्फय वि [°नखपद] नख युक्त पैरवाला, सिंह आदि श्वापद जंतु (सूअ २, ३, २३, ठा ४, ४—पत्र २७१; सूअ १, ५, २, ७, पण्ण १—पत्र ४६, पि १४८)। °णाह वि [°नाथ] स्वामी-वाला, जिसका कोई मालिक हो वह (विपा १, २—पत्र २७, रंभा, कुमा)। °त्तण्ह वि [°तृष्ण] तृष्णा-युक्त, उत्कण्ठित, उत्सुक (से १, ४६)। °त्तर वि [°त्वर] १ त्वरा-युक्त, वेगवाला। २ न. शीघ्र, जल्दी (सुपा १५६)। °द्ध वि [°अर्ध] अर्ध सहित, डेढ (पउम ६८, ५४)। °धवा स्त्री [°धवा] सौभाग्यवती स्त्री, जिसका पति जीवित हो वह स्त्री (सुपा ३६५)। °नय त्रि [°नय] न्याय-युक्त, व्याजबी (सुपा ५०४)। °पक्ख वि [°पक्ष] १ पांखवाला, पाँखों से युक्त (से २, १४)। २ सहायता करनेवाला, सहायक, मित्र (पव २३६, स ३६७)। ३ समान पार्श्ववाला, दक्षिण आदि तरफ से जो समान हो वह (निर १, १)। °पुन्न वि [°पुण्य] पुण्यशाली, पुण्यवान् (सुपा ३८४)। °प्पभ वि [°प्रभ] प्रभा-युक्त (सम १३८, भग)। °प्परिआव, °प्परिताव वि [°परिताप] परिताप—सताप से युक्त (आ ३७, पड्)। °प्पिसल्लग वि [°पिशाचक] पिशाच-गृहीत, पागल (पण्ह २, ५—पत्र १५०)। °प्पिवास वि [°पिपास] तृषातुर, सतृष्ण (हे २, ६७)। °प्पिह वि [°स्पृह] स्पृहावाला (दे ७, २६)। °प्फंद वि [°स्पन्द] चलायमान (दे ८, ८)। °प्फल, °फल वि [°फल] सार्थक (से १५, १४, हे २, २०४, प्राप, उप ७२८ टी)। °ब्बल वि [°बल] बलवान्, बलिष्ठ (पिंग)। °भल देखो °फल (हे १, २३६, कुमा)। °मण वि [°मनस्] १ मनवाला, विवेक-बुद्धिवाला (वण २२)। २ समान मनवाला, राग-द्वेष आदि से रहित, मुनि, साधु (अणु)। °मणस्क वि [°मनस्क] पूर्वोक्त अर्थ (सूअ २, ४, २)। °मय वि [°मद] मद-युक्त (से १, १६, सुपा १८८)। °महिड्ढिअ वि [°महर्द्धिक] महान् वैभव-वाला (प्रासू १०७)। °मिरिईअ, °मिरीय वि [°मरीचिक] किरण-युक्त (भग, ओप, ठा ४, १—पत्र ३२६)। °मेर वि [°मर्याद] मर्यादा-युक्त (ठा ३, २—पत्र १२६)। °यण्ह वि [°तृष्ण] तृष्णा-युक्त (गउड, सुपा ३८४)। °याण वि [°ज्ञान] सयाना, जानकार (सुपा ३८५)। °योगि वि [°योगिन्] १ व्यापार-युक्त, योगवाला। २ न तेरहवां गुण स्थानक (कम्म २, ३१)।

संजोइअ वि [सद्दष्ट] दृष्ट, निरीक्षित (भवि)।

संजोग देखो सजोअ = संयोग (हे १, २४५)।

संजोगि वि [सयोगिन्] सयोग-युक्त, संबन्धी (सबोध ४६)।

सजीगेत्तु वि [सयोजयितृ] जोडनेवाला (ठा ८—पत्र ४२६)।

सजोत्त (अप) देखो सजोअ = स + योजय्। सक्र सजोत्तिवि (भवि)।

सझ° नीचे देखो (णाया १, १—पत्र ४८)। °च्छेयावरण वि [°च्छेदावरण] १ मन्ध्या-विभाग का आवारक। २ पु. चन्द्र चांद (अणु १२० टी)। °प्पभ पुन [°प्रभ] शक्र के सोम-लोकपाल का विमान (भग ३, ७—पत्र १७५)।

सझा स्त्री [सन्ध्या] १ सांझ, साम, सायंकाल (कुमा, गउड, महा)। २ दिन और रात्रि का संधि-काल। ३ युगो का संधि-काल। ४ नदी-विशेष। ५ ब्रह्मा की एक पत्नी (हे १, ३०)। ६ मध्याह्न काल, 'तिसझ' (महा)। °गय न [°गत] १ जिस नक्षत्र मे सूर्य अनन्तर काल में रहनेवाला हो वह नक्षत्र। २ सूर्य जिसमे हो उससे चौदहवां या पनरहवां नक्षत्र। ३ जिसके उदय होने पर सूर्य उदित हो वह नक्षत्र। ४ सूर्य के पीछे के या आगे के नक्षत्र के वाद का नक्षत्र (वव १)। °छेयावरण देखो सझ-च्छेयावरण (पव २६८)। °णुराग पु [°नुराग] सांझ के वादल का रँग (पण्ण २—पत्र १०६)। °वली स्त्री [°वली] एक विद्याधर-कन्या का नाम (महा)। °विगम पु [°विगम] रात्रि, रात (निचू १६)। °विराग पु [°विराग] सांझ का समय (जीव ३, ४)।

संझाअ सक [स + ध्यै] ख्याल करना, चिन्तन करना ध्यान करना। सझाअदि (शौ) (पि ४७९, ५५८)। वकृ सझायंत (सुपा ३०६)।

सझाअ अक [सध्याय] सध्या की तरह आचरण करना। सझायइ (गउड ६३२)।

सटक पुं [सटङ्क] अन्वय, सबन्ध (चेइइ ३६६)।

सठ वि [शठ] धूर्त, मायावी (कुमा, दे ६, १११)।

संठ (चूपै) देखो संढ (हे ४, ३२५)।

सठप्प देखो सठव।

सठव सक [स + स्थापय्] १ रखना, स्थापना करना। २ आश्वासन देना, उद्वेग-रहित करना, सान्त्वना करना। सठवइ, सठवेइ (भवि, महा)। वकृ सटवत (गा ३९)। कवकृ. सटविज्जत (सुर १२, ४१)। सकृ सठवेऊण (महा), सठप्प (उव), संठविअ (पिंग)।

सठवण देखो सठावण (मृच्छ १५४)।

सठविअ वि [सस्थापित] १ रखा हुआ (हे १, ६७, प्राप्र, कुमा)। २ आश्वासित। ३ उद्वेग-रहित किया हुआ (महा)।

संठा अक [स + स्था] रहना, अवस्थान करना, स्थिति करना। सठाइ (पि ३०९, ४८३)।

सठाण न [सस्थान] १ आकृति, आकार (भग, औप, पव २७६, गउड, महा, दं ३)। २ कर्म-विशेष, जिसके उदय से शरीर के शुभ या अशुभ आकार होता है वह कर्म (सम ६७, कम्म १, २४, ४०)। ३ सनिवेश, रचना (प्रासू ८७)।

सठाव देखो सठव। संकृ. सठाविअ (नाट—चैत ७५)।

सठावण न [सस्थापन] रखना, 'तेरिच्छ-सठावण' (पव ३८)। देखो सथावण।

सठावणा स्त्री [सस्थापना] आश्वासन, सान्त्वना (से ११, १२१)। देखो संथावणा।

सठाविअ देखो सठविअ (हे १, ६७, कुमा, प्राप्र)।

सठिअ वि [सस्थित] १ रहा हुआ, सम्यक स्थित (भग, उवा, महा, भवि)। २ न आकार (राय)।

सठिइ स्त्री [सस्थिति] १ व्यवस्था (सुज्ज १, १)। २ अवस्था, दशा, स्थिति (उप १३६ टी)।

सड पु [शण्ड, षण्ड] १ वृष, वैल, सांढ, 'मत्तसडुव्व भमेइ विलसेइ अ' (श्रा १२, सुर १५, १४०)। २ पुन. पद्म आदि का समूह, वृक्ष आदि की निविडता (णाया १, १—पत्र १६, भग, कप्प, औप, गा ८, सुर ३, ३०, महा, प्रासू १४५), 'तियमतसडो' (गउड)। ३ पु. नपुंमक (हे १, २६०)।

संडास पुन [सदंश] १ यन्त्र-विशेष, सँडसी, चिमटा (सुअ १, ४, २, ११, विपा १, ६—पत्र ६८, स ६९६)। २ ऊरु-सधि, जांघ और ऊरु के बीच का भाग (ओघ २०६, ओघभा १५५)। °तोड पु [°तुण्ड] पक्षि-विशेष, सँडसी की तरह मुखवाला पंखी (पण्ह १, १—पत्र १४)।

सडिब्भ } न [दे] वालको का क्रीडा-स्थान
संडिब्भ } (राज, दस ५, १, १०)।

सडिल्ल पु [शाण्डिल्य] १ देश-विशेष (उप १०३१ टी, सत्त ६७ टी)। २ एक जैन मुनि का नाम (कप्प, णदि ४९)। ३ एक ब्राह्मण का नाम (महा)। देखो सडेल्ल।

सडी स्त्री [दे] वल्गा, लगाम (दे ८, २)।

सढेय पुं [षाण्डेय] षढ-पुत्र, षढ, नपुसक, 'कुक्कुडसडेयगामपउरा' (औप, णाया, १, १ टी—पत्र १)।

सडेल्ल न [शाण्डिल्य] १ गोत्र-विशेष। २ पुंस्त्री. उस गोत्र मे उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३९०)। देखो सडिल्ल।

सडेव पु [दे] पानी में पैर रखने के लिए रखा जाता पाषाण आदि (ओघ ३१)।

सडेवय (अप) देखो सडेय, 'गामइ कुक्कुड-सडेवयाइ' (भवि)।

संडोलिअ वि [दे] अनुगत, अनुयात (दे ८, १७)।

सढ पु [षण्ढ] नपुसक (प्राप्र, हे १, ३०, सबोध १९)।

सढो स्त्री [दे] सांढनी, ऊँटनी (सुपा ५८०)।

सढोइय वि [सढौकित] उपस्थापित (सुपा ३२३)।

सण वि [सज्ञ] जानकार, ज्ञाता (आचा १, ५, ६, १०)।

सणक्खर देखो संनक्खर (राज)।

सणज्ज न [सानाय्य] मन्त्र आदि से सस्कारा जाता घी वगैरह (प्राक्ट १९)।

सणज्झ अक [स + नह्] १ कवच धारण करना, वखतर पहनना। २ तैयार होना। सणज्झइ (पि ३३१)।

सइलासअ } पुं [दे] मयूर, मोर (दे ८,
सइलासिअ } २०, पड्)।

सइव पुं [सचिव] १ प्रधान, मन्त्री, अमात्य (पाअ)। २ सहाय, मदद-कर्ता। ३ काला धतूरा (प्राकृ ११)।

सइसिल्लिंव पुं [दे] स्कन्द, कार्तिकेय (दे ८, २०)।

सइसुह वि [दे.स्मृतिसुख] देखो सइदसण (दे ८, १६, पाअ)।

सई स्त्री [शची] इन्द्राणी, शक्रेन्द्र की एक पटरानी (ठा ८—पत्र ४२६, णाया २—पत्र २५३, पाअ, सुपा ६८, ६२२, कुप्र २३)। °स पु [°श] इन्द्र (कुमा)। देखो सची।

सई स्त्री [सती] पतिव्रता स्त्री (कुप्रा २३, सिरि १४३)।

°सई स्त्री [°शती] सौ, १००, 'पंचसई' (धर्मवि १४)।

सईणा स्त्री [दे] अन्न-विशेष, तुवरी, रहर (ठा ५, ३—पत्र ३४३)।

सउ } (अप) देखो सहु (सण, भवि)।
सउं }

सउंत पुं [शकुन्त] १ पक्षी, पाखी (पाअ)। २ पक्षि-विशेष, भास-पक्षी (स ४३६)।

सउंतला स्त्री [शकुन्तला] विश्वामित्र ऋषि की पुत्री और राजा दुष्यंत की गन्धर्व-विवाहिता पत्नी (हे ४, २६०)।

सउंदला (शौ) ऊपर देखो (अभि २६, ३०, पि २७५)।

सउण वि [दे] रूढ, प्रसिद्ध (दे ८, ३)।

सउण पुंन [शकुन] १ शुभाशुभ-सूचक बाहु-स्पन्दन, काक-दर्शन आदि निमित्त, सगुन, 'सुहजोगाई सउणो कंदिअसद्दाई इअरो उ' (धर्म २, सुपा १८५, महा)। २ पुं. पक्षी, पाखी (पाअ, गा २२०, २८५, कप्प ३४, सट्ठि ६ टी)। ३ पक्षि-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८)। °विउ वि [°विद्] सगुन का जानकार (सुपा २६७)। °रुअ न [°रुत] १ पक्षी की आवाज। २ कला-विशेष, सगुन का परिज्ञान (णाया १, १—पत्र ३८, ज २ टी—पत्र १३७)।

सउण देखो स-उण=स-गुण।

सउणि पु [शकुनि] १ पक्षी, पखेरू, पाँखी (औप, हेका १०५, सबोध १७)। २ पक्षि-विशेष, चील पक्षी (पाअ)। ३ ज्योतिष-प्रसिद्ध एक स्थिर करण जो कृष्ण चतुर्दशी की रात में सदा अवस्थित रहता है (विसे ३३५०)। ४ नपुंसक-विशेष, चटक की तरह बारबार मैथुन-प्रसक्त क्लीव (पव १०६, पुप्फ १२७)। ५ दुर्योधन का मामा (णाया १, १६—पत्र २०८, सुपा २६०)।

सउणिअ देखो साउणिअ (राज)।

सउणिआ } स्त्री [शकुनिका, °नी] १
सउणिगा } पक्षिणी, पक्षी की मादा (गा
सउणी } ८१०, श्राव १)। २ पक्षि-विशेष की मादा, 'सउणी जाया तुमं' (ती ८)।

सउण्ण देखो स-उण्ण=सपुण्य।

सउत्ती स्त्री [सपत्नी] एक पति की दूसरी स्त्री, समान पतिवाली स्त्री, सौत, सौतिन (सुपा ६८)।

सउन्न देखो स-उन्न।

सउम पु [सद्मन्] १ गृह, घर। २ जल, पानी (प्राकृ २८)।

सउमार वि [सुकुमार] कोमल (से १०, ३४, पड्)।

सउर पु [सौर] १ ग्रह-विशेष, शनैश्चर। २ यम, जमराज। ३ वृक्ष-विशेष, उदुम्बर का पेड। ४ वि सूर्य का उपासक। ५ सूर्य-सम्बन्धी (चड, हे १, १६२)।

सउरि पुं [शौरि] विष्णु, श्रीकृष्ण (पाअ)।

सउरिस देखो स-उरिस=सत्पुरुष।

सउल पुं [शकुल] मत्स्य, मछली, 'सउला सहरा मीणा तिमी झसा अणिमिसा मच्छा' (पाअ)।

सउलिअ वि [दे] प्रेरित (दे ८, १२)।

सउलिआ } स्त्री [दे. शकुनिका, °नी]
सउली } १ पक्षि-विशेष की मादा, चील पक्षी की मादा (ती ८, अणु १४१, दे ८, ८)। २ एक महौषधि (ती ५)। °विहार पु [°विहार] गुजरात के भरौच शहर का एक प्राचीन जैन मन्दिर (ती ८)।

सउह पु [सौध] १ राज महल, राज-प्रासाद (कुमा)। २ न रूपा, चाँदी। ३ पुं. पाषाण-विशेष। ४ वि. सुधा-सम्बन्धी, अमृत का (चड, हे १, १६२)।

सएज्झिअ देखो सइज्झिअ (कुप्र १६३)।

सओस देखो स ओस=स-तोष- स-दोष।

सं अ [शम्] सुख, शर्म (स ६११, सुर १६, ४२, सुपा ४१६)।

स अ [सम्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रकर्ष। अतिशय (धर्मसं ८६७)। २ सगति। ३ सुन्दरता, शोभनता। ४ समुच्चय। ५ योग्यता, व्याजवीपन (पड्)।

सक सक [शङ्क्] १ संशय करना, सदेह करना। २ अक. भय करना, डरना। संकइ, सकए, सकति, सकसि, संकसे, सकह, सकत्थ, संकामि, संकामो, सकामु, संकाम (संक्षि ३०), 'असकिआइं सकति' (सूअ १, १, २, १०, ११), "ज सम्ममुज्जमताए पाणि (?णी) ए सकए हु विही" (सिरि ६६६)। कर्म संकिज्जइ (गा ५०६)। वकृ. संकत, सकमाण (पव, रंभा ३३)। कृ. सकणिज्ज (उप ७२८ टी)।

सकत वि [सक्रान्त] १ प्रतिबिम्बित (गा १, से १, ५७)। २ प्रविष्ट, घुसा हुआ (ठा ३, ३, कप्प, महा)। ३ प्राप्त। ४ संक्रमण-कर्ता। ५ संक्राति-युक्त। ६ पिता आदि से दाय रूप से प्राप्त स्त्री का धन (प्राप्र)।

सकंति स्त्री [सक्रान्ति] १ संक्रमण, प्रवेश (पव १५५, अज्झ १५३)। २ सूर्य आदि का एक राशि से दूसरी राशि में जाना, 'आरम्भ कक्कसंकतिदिवसओ दिवसनाहु व्व' (धर्मवि ६६)।

सकदण पु [संक्रन्दन] इन्द्र, देवाधीश (उप ५३० टी, उपप १)।

सकट्टिअ वि [सकर्तित] काटा हुआ, 'धन्न-सकट्टितमीणा' (ठा ४, ४—पत्र २७६)।

सकट्ठ वि [सकृष्ट] व्याप्त (राज)।

सकट्ठ देखो सकिट्ठ (राज)।

सकड वि [सकट] १ सकीर्ण, कम-चौडा, अल्प अवकाशवाला (स ३६२, सुपा ४१६, उप ८३३ टी)। २ विषम, गहन (पिंड ६३४)। ३ न. दु ख,

६८१)। कृ संतप्पियव्व (स ६८१)। वकृ. सतप्पमाण (सुज्ज ६)।

सतप्पिअ वि [सतप्त] १ सताप-युक्त (कुमा ६, १४)। २ न. सताप (स २०)।

संतमस न [संतमस] १ अन्धकार, अँधेरा (पाअ, सुपा २०५)। २ अन्ध कूप, अँधेरा कुँआ (सुर १०, १५८)।

सतय देखो सतत्त = सतत (पाअ, भग)।

संतर सक [स + तृ] तैरना, तैर कर पार करना। हेकृ. सतरित्तए (कस)।

सतरण न [सतरण] तैरना, तेर कर पार करना (ओघ ३८, चेइय ७४३, कुप्र २२०)।

संतस अक [स + त्रस्] १ भय-भीत होना। २ उद्विग्न होना। सतसे (उत्त २, ११)।

सता स्त्री [शान्ता] सातवें जिन-भगवान् की शासन-देवता (मति ६)।

सताण पु [सतान] १ वंश (कप्प)। २ अविच्छिन्न धारा, प्रवाह (विसे २३६७, २३६८, गउड, सुपा १६८)। ३ ततु-जाल, मकडी आदि का जाल, 'मक्खडासताणए' (आचा, पडि, कस)।

सताण न [सत्राण] परित्राण, संरक्षण (बृह १)।

सताणि वि [सतानिन्] १ अविच्छिन्न धारा मे उत्पन्न, प्रवाह-वर्ती, 'सताणिणो न भिण्णो जइ सताणो न नाम सताणो' (विसे २३६८, धर्मस २३५)। २ वश मे उत्पन्न, परंपरा मे उत्पन्न, 'देव इह अत्थि पत्तो उज्जाणे पासनाहसताणी। केसी नाम गणहरो' (धर्मवि ३)।

सतार वि [सतार] १ तारनेवाला, पार उतारनेवाला (पउम २, ४४)। २ पु. संतरण, तैरना (पिंग)।

सतारिअ वि [सतारित] पार उतारा हुआ (पिंग)।

सतारिम वि [सतारिम] तैरने योग्य (आचा २, ३, १, १३)।

सताव सक [स + तापय्] १ गरम करना तपाना। २ हैरान करना। सतावेंति (सुज्ज ६)। वकृ. सतावित (सुपा २४८)। कवकृ सताविज्जमाण (नाट—मृच्छ १३७)।

सताव पु [सताव] १ मन का खेद (पण्ह १, ३—पत्र ५५, कुमा, महा)। २ ताप, गरमी (पण्ह १, ३—पत्र ५५, महा)।

संतावण न [सतापन] संताप, संतप्त करना (सुपा २३२)।

सतावणी स्त्री [सतापनी] नरक-कुम्भी (सूअ १, ५, २, ६)।

संतावय वि [सतापक] सताप-जनक (भवि)।

सतावि वि [सतापिन्] सतप्त होनेवाला, जलनेवाला (कप्पू)।

सताविअ वि [सतापित] सतप्त किया हुआ (काल)।

सतास सक [स + त्रासय्] भय-भीत करना, डराना। सतासइ (पिंग)।

सतास पु [सत्रास] भय, डर (स ५४४)।

सतासि वि [सत्रासिन्] त्रास-जनक (उप ७६८ टी)।

सति स्त्री [शान्ति] १ क्रोध आदि का जय, उपशम, प्रशम (आचा १, १, ७, १, चेइय ५६४)। २ मुक्ति, मोक्ष (आचा १, २, ४, ४, सूअ १, १, १, ठा ८—पत्र ४२५)। ३ अहिंसा (आचा १, ६, ५, ३)। ४ उपद्रव-निवारण (विपा १, ६—पत्र ६१, सुपा ३६४)। ५ विषयो से मन को रोकना। ६ चैन, आराम। ७ स्थिरता (उप ७२८ टी, संति १)। ८ दाहोपशम, ठंढाई (सूअ १, ३, ४, २०)। ६ देवी-विशेष (पंचा १६, २४)। १० पु. सोलहवें जिनदेव का नाम (सम ४३, कप्प, पडि)। °उदअ न [°उदक] शान्ति के लिए मस्तक में दिया जाता मन्त्रित पानी (पि १६२)। °कम्म न [°कर्मन्] उपद्रव-निवारण के लिए किया जाता होम आदि कर्म (पण्ह १, २—पत्र ३०, सुपा २६२)। °कम्मत न [°कर्मान्त] जहाँ शान्ति-कर्म किया जाता हो वह स्थान (आचा २, २, २, ६)। °गिह न [°गृह] शान्ति कर्म करने का स्थान (कप्प)। °जल न [°जल] देखो °उदअ (धर्म २)। °जिण पुं [°जिन] सोलहवें जिन-देव (सति १)। °मई स्त्री [°मती] एक श्राविका का नाम (सुपा ६२२)। °य वि [°द] शान्ति-प्रदाता (उप ७२८ टी)। °सूरि पु [°सूरि] एक जैनाचार्य और ग्रन्थकार (जी ५०)। °सेणिय पु [°श्रेणिक] एक प्राचीन जैन मुनि (कप्प)। °हर न [°गृह] भगवान् शान्तिनाथजी का मन्दिर (पउम ६७, ५)। °होम पु [°होम] शान्ति के लिए किया जाता हवन (विपा १, ५—पत्र ६१)।

सतिअ } वि [दे. सत्क] सबन्धी, सबन्ध
सतिग } रखनेवाला, 'अम्मा-पिउसतिए वद्धमाणे' (कप्प), 'नो कप्पइ निग्गथाण वा निग्गथीण वा सागारियसतिय सेज्जासथारयं आयाए अहिगरणं कट्टु सपव्वइत्तए' (कस, उव, महा, स २०६, सुपा २७८, ३२२, पण्ह १, ३—पत्र ४२)।

सतिज्जाघर देखो सति-गिह (महा ६८, ८)।

सतिण्ण वि [सतीर्ण] पार-प्राप्त, पार उतरा हुआ, 'सतिण्णा सव्वभया' (अजि १२)।

सतुट्ठ वि [सतुष्ट] सतोष-प्राप्त (स्वप्न २०, महा)।

सतुयट्ट वि [सत्वग्वृत्त] जिसने पार्श्व घुमाया हो वह, जिसने करवट बदली हो वह, लेटा हुआ (णाया १, १३—पत्र १७६)।

सतुल्णा स्त्री [सतुलना] तुलना, तुल्यता, सरीखाई (सार्ध २०)।

संतुस्स अक [स + तुष्] १ प्रसन्न होना। २ तृप्त होना। सतुस्सइ (सिरि ४०२)।

सतेज्जावर देखो सतिज्जावर (महा ६८, १४)।

सतो अ [अन्तर्] मध्य, बीच, 'अतो सतो च मध्यार्थे' (प्राकृ ७६))।

सतोस सक [स + तोषय्] १ प्रसन्न करना, खुशी करना। २ तृप्त करना। कर्म. सतोसीअदि (शौ) (नाट—रत्ना ४०)।

सतोस पु [सतोष] तृप्ति, लोभ का अभाव, 'हरइ अणूवि परगुणो गरुयम्मिवि णियगुणे न सतोसो' (गउड, कुमा, पण्ह १, ५—पत्र ९३, प्रासू १७७, सुपा ४३६)।

सतोसि स्त्री [सतोषि] सन्तोष, तुष्टि, तृप्ति (उवा)।

संतोसि वि [सतोषिन्] १ सन्तोष-युक्त, लोभ-रहित, निर्लोभी, तृप्त (सूअ १, १२,

संकिट्ठ देखो संकिलिट्ठ (राज)।

संकिण्ण वि [संकीर्ण] १ सँकरा, तंग, अल्पावकाशवाला (पाअ, महा)। २ व्याप्त (राज)। ३ मिश्रित, मिला हुआ (ठा ४, २, भग २५, ७ टी—पत्र ९१९)। ४ पुं. हाथी की एक जाति (ठा ४, २—पत्र २०८)।

संकित देखो संकिअ (णाया १, ३—पत्र ९४)।

संकित्तण न [संकीर्तन] उच्चारण (स्वप्न १७)।

संकिन्न देखो संकिण्ण (ठा ४, २, भग २५, ७)।

संकिर वि [शङ्कितृ] शङ्का करने की आदत वाला, शंकाशील (गा २०६, ३३३, ५८२, सुर १२, १२५, सुपा ४६८)।

संकिलिट्ठ वि [संक्लिष्ट] संक्लेश युक्त, संक्लेशवाला (उत्त औप, पि १३६)।

संकिलिस्स अक [सं + क्लिश्] १ क्लेश-पाना, दुःखी होना। २ मलिन होना। संकिलिस्सइ, संकिलिस्सति (उत्त २९, ३४, भग, औप)। वकृ संकिलिस्समाण (भग १३, १—पत्र ५९९)।

संकिलेस पुं [संक्लेश] १ असमाधि दुःख, कष्ट, हैरानी (ठा १०—पत्र ४८९, उव)। २ मलिनता, अविशुद्धि (ठा ३, ४—पत्र १५९, पंचा १५, ४)।

संकीलिअ वि [संकीलित] कील लगाकर जोड़ा हुआ (से १४, २८)।

संकु पुं [शङ्कु] १ शल्य अस्त्र। २ कीलक, खूँटा, कील, 'अतोनिविट्ठसंकुव्व' (कुप्र ४०२, राय ३०, आवम)। °कण्ण न [°कर्ण] एक विद्याधर-नगर (इक)।

संकुइय वि [संकुचित] १ संकुचा हुआ, संकोच-प्राप्त (औप, रंभा)। २ न. संकोच (राज)।

संकुक पुं [शङ्कुक] वैताढ्य पर्वत की उत्तर श्रेणी का एक विद्याधर-निकाय (राज)।

संकुका स्त्री [शङ्कुका] विद्या-विशेष (राज)।

संकुच अक [सं + कुच्] संकुचना, संकोच करना। संकुचए (आचा, सबोध ४७) वकृ संकुचमाण, संकुचेमाण (आचा)।

संकुचिय देखो संकुइय (दस ४, १)।

संकुड वि [संकुट] सँकरा, संकीर्ण, संकुचित, 'अंतो य संकुडा बाहिं वित्थडा चंदसूराणं' (सुज्ज १९)।

संकुडिअ वि [संकुटित] संकुचा हुआ, संकुचित (भग ७, ६—पत्र ३०७, धर्मसं ३८७, स ३५८, सिरि ७८९)।

संकुद्ध वि [संक्रुद्ध] क्रोध-युक्त (वज्जा १०)।

संकुय देखो संकुच। संकुयइ (वज्जा ३०)। वकृ. संकुयंत (वज्जा ३०)।

संकुल वि [संकुल] व्याप्त, पूर्ण भरा हुआ (से १, ५७, उत्त, महा, स्वप्न ५१, धर्मवि ५५, प्रासू १०)।

संकुलि } देखो सक्कुलि (पि ७४, ठा ४,
संकुली° } ४—पत्र २२६, पव २६२, आचा २, १, ४, ५)।

संकुसुमिअ वि [संकुसुमित] अच्छी तरह पुष्पित (राय ३८)।

संकेअ सक [सं + केतय्] १ इशारा करना। २ मसलहत करना। संकृ संकेइय जोगिणिमेग' (सम्मत्त २१८)।

संकेअ पुं [संकेत] १ इशारा, इंगित (सुपा ४१५, महा)। २ प्रिय-समागम का गुप्त स्थान (गा ६२६, गउड)। ३ वि चिह्न-युक्त। ४ न. प्रत्याख्यान विशेष (आव)।

संकेअ वि [साङ्केत] १ संकेत-सबन्धी। २ न प्रत्याख्यान विशेष (पव ४)।

संकेइअ वि [संकेतित] संकेत-युक्त (श्रा १४, धर्मवि १३४, सम्मत्त २१८)।

संकेल्लिअ वि [दे] संकेला हुआ, संकुचित किया हुआ (गा ६९४)।

संकेस देखो संकिलेस (उप ३१२, कम्म ५, ६३)।

संकोअ सक [सं + कोचय्] संकुचित करना। वकृ. संकोअंत (सम्मत्त २१७)।

संकोअ पुं [संकोच] संकोच, सिमट (राय १४० टी, धर्मसं ३६५, सबोध ४७)।

संकोअण न [संकोचन] संकोच, संकुचाना (दे ५, ३१, भग, सुर १, ७६, धर्मवि १०१)।

संकोइय वि [संकोचित] संकुचित किया हुआ, संकेला हुआ (उप ७२८ टी)।

संकोड पुं [संकोट] संकोडना, संकोच (पण्ह १, ३—पत्र ५३)।

संकोडणा स्त्री [संकोटना] ऊपर देखो (राज)।

संकोडिय वि [संकोटित] संकोडा हुआ, संकोचित (पण्ह १, ३—पत्र ५३, विपा १, ६—पत्र ६८, स ७४१)।

संख पुंन [शङ्ख] १ वाद्य विशेष, शंख (णदि, राय, जी १५, कुमा, दे १, ३०)। २ पुं. ज्योतिष्क ग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। ३ महाविदेह वर्ष का प्रान्त-विशेष, विजय-क्षेत्र विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)। ४ नव निधि में एक निधि, जिसमें विविध तरह के बाजो की उत्पत्ति होती है (ठा ९—पत्र ४४९, उप ९८६ टी)। ५ लवण समुद्र मे स्थित वेलन्धर-नागराज का एक आवास-पर्वत (ठा ४, २—पत्र २२६, सम ९८)। ६ उक्त आवास-पर्वत का अधिष्ठाता एक देव (ठा ४, २—पत्र २२६)। ७ भगवान् मल्लिनाथ के समय का काशी का एक राजा (णाया १, ८—पत्र १४१)। ८ भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेनेवाला एक काशी-नरेश (ठा ८—पत्र ४३०)। ९ तीर्थंकर-नामकर्म उपार्जित करनेवाला भगवान् महावीर का एक श्रावक (ठा ९—पत्र ४५५, सम १५४, पव ४६, विचार ४७७)। १० नववें बलदेव का पूर्वजन्मीय नाम (पउम २०, १९१)। ११ एक राजा (उप ७३६)। १२ एक राज-पुत्र (सुपा ५६९)। १३ रावण का एक सुभट (पउम ५६,३४)। १४ छन्द-विशेष (पिंग)। १५ एक द्वीप। १६ एक समुद्र। १७ शंखवर द्वीप का एक अधिष्ठायक देव (दीव)। १८ पुंन ललाट की हड्डी (धर्मवि १७, हे १, १०)। १९ नखी नामका एक गन्ध-द्रव्य। २० कान के समीप की एक हड्डी। २१ एक नाग-जाति। २२ हाथी के दांत का मध्य भाग। २३ संख्या-विशेष, दस निखर्व की संख्यावाला (हे १, ३०)। २५ आंख के समीप का अवयव (णाया १, ८—पत्र १३३)। °उर देखो °पुर (ती ३, महा)। °णाभ पुं [°नाभ] ज्योतिष्क महाग्रह-विशेष (सुज्ज २०)। °णारी स्त्री [°नारी] छन्द-

भवि)। २ जिसको आज्ञा दी गई हो वह, 'हरिणेगमेसिणा सक्कवयणसंदिट्ठेण' (कप्प)। ३ छँटा हुआ, छिलका निकाला हुआ (चावल आदि) (राय ६७)।

संदिद्ध वि [संदिग्ध] संशय युक्त, संदेह-वाला (पाअ)।

संदिन्न न [संदत्त] उनतीस दिनो का लगातार उपवास (संबोध ५८)।

संदिय वि [स्यन्दित] क्षरित टपका हुआ (सुर २, ७६)।

संदिर वि [स्यन्दितृ] झरनेवाला (सण)।

संदिस सक [सं+दिश्] १ संदेशा देना, समाचार पहुँचाना। २ आज्ञा देना। ३ अनुज्ञा देना, सम्मति देना। ४ दान के लिए संकल्प करना। संदिसइ (पड्, महा), संदिसह (पडि)। कवकृ संदिस्संत (पिंड २३६)। प्रयो., संकृ. संदिसाविऊण (पचा ५, ३८)।

संदिसण न [संदेसन] उपदेश, कथन, 'कुलनी-इट्ठिइभगप्पमुहाणेगप्पओससंदिसण' (संबोध १५)।

संदीण पुं [संदीन] १ द्वीप-विशेष, पक्ष या मास आदि मे पानी से सराबोर होता द्वीप। २ अल्पकाल तक रहनेवाला दीपक। ३ श्रुतज्ञान। ४ क्षोभ्य, क्षोभणीय (आचा १, ६, ३, ३)।

संदीवग वि [संदीपक] उत्तेजक, उद्दीपक, 'कामग्गिसंदीवगं' (रंभा)।

संदीवण न [संदीपन] १ उत्तेजना, उद्दीपन (संबोध ४८, नाट—उत्तर ५६)। २ वि. उत्तेजन का कारण, उद्दीपन करनेवाला (उत्तम ८८)।

संदीविय वि [संदीपित] उत्तेजित, उद्दीपित (भवि)।

संदुक्ख अक [प्र + दीप्] जलना, सुलगना। संदुक्खइ (षड्)।

संदुट्ठ वि [संदुष्ट] अतिशय दुष्ट (संबोध ११)।

संदुम अक [प्र + दीप्] जलना, सुलगना। संदुमइ (हे ४, १५२, कुमा)।

संदुमिअ वि [प्रदीप्त] जला हुआ, सुलगा हुआ (पाअ)।

संदेव पु [दे] १ सीमा, मर्यादा। २ नदी-मेलक, नदी-संगम (दे ८, ७)।

संदेस पु [संदेश] सँदेशा, समाचार (गा ३४२, ८३३, हे ४, ४३४, सुपा ३०१, ५१६)।

संदेह पुं [संदेह] संशय, शंका (स्वप्न ६६, गउड, महा)।

संदोह पु [संदोह] समूह, जत्था (पाअ, सुर २, १४६, सिरि ५६४)।

संध सक [सं + धा] १ साँधना, जोड़ना। २ अनुसंधान करना, खोज करना। ३ वाञ्छना, चाहना। ४ वृद्धि करना, बढ़ाना। ५ करना, 'भग्गं व संधइ रहं सो' (कुप्र १०२), संधइ, संधए (आचा, सूअ १, १४ २१, १, ११, ३४, ३५)। भवि. संधिस्सामि, संधिहिसि (पि ५३०)। वकृ संधंत (ने ५, २४)। कवकृ संधिज्जमाण (भग)। हेकृ संधिउं (कुप्र ३८१)।

संध° देखो संझ° (देवेन्द्र २७०)।

संधण स्त्रीन [संधान] १ साँधा, संधि, जोड़ (धर्मसं १०१७)। २ अनुसंधान (पचा १२, ४३)। स्त्री. °णा (आचानि १७५, सूअनि १६७, ओघ ७२७)।

संधणया स्त्री [संधना] साँधना, जोड़ना (वव १)।

संधय वि [संधक] संधान-कर्ता (दस ६, ४, ५)।

संधया देखो संध=सं + धा। संधयाती (सूअ २, ६, २)।

संधा स्त्री [संधा] प्रतिज्ञा, नियम (श्रा १२, उप पृ ३३३, सम्मत्त १७१)।

संधाण न [संधान] १ दो हाड़ो का संयोग-स्थान (सुर १२, ६)। २ संधि, सुलह (हम्मीर १५)। ३ मद्य, सुरा, दारू (धर्मसं ५६)। ४ जोड़, संयोग, मिलान (आचा, कुमा, भवि)। ५ अचार, नोबू आदि का मसाला दिया खाद्य-विशेष (पव ४)।

संधारण न [संधारण] सान्त्वना, आश्वासन (स ४१६)।

संधारिअ वि [दे] योग्य, लायक (दे ८, १)।

संधारिअ वि [संधारित] रखा हुआ, स्थापित (णाया १, १—पत्र ६६)।

संधाव सक [सं + धाव्] दौड़ना। संधावइ (उत्त २०, ४६)।

संधि पुस्त्री [संधि] १ छिद्र, विवर। २ संधान, उत्तरोत्तर पदार्थ-परिज्ञान (सूअ १, १, १, २०, २१, २२, २३, २४)। ३ व्याकरण-प्रसिद्ध दो अक्षरो के संयोग से होने वाला वर्ण-विकार (पण्ह २, २—पत्र ११४)। ४ सेंध, चोरी के लिए भीत में किया जाता छेद (चारु ६०, महा, हास्य ११०)। ५ दो हाड़ो का संयोग-स्थान, 'धक्काओ सव्व-संधीओ' (सुर ४, १६५, १२, १६६, जी १२)। ६ मत, अभिप्राय, 'अहवा विचित्त-संधिणो हि पुरिमा हवंति' (स २६)। ७ कर्म, कर्म-संतति (आचा, सूअ १, १, १, २०)। ८ सम्यग् ज्ञान की प्राप्ति। ९ चारित्र-मोहनीय कर्म का क्षयोपशम। १० अवसर, समय, प्रसंग। ११ मीलन, संयोग (आचा)। १२ दो पदार्थो का संयोग-स्थान (विपा १, ३—पत्र ३६, महा)। १३ मेल के लिए कतिपय नियमो पर मित्रता-स्थापन, सुलह (कप्पू, कुमा ६, ४०)। १४ ग्रंथ का प्रकरण, अध्याय, परिच्छेद (भवि)। °गिह न [°गृह] दो भीतो के बीच का प्रच्छन्न स्थान (कप्प)। °च्छेयग, °छेयग वि [°च्छेदक] सेंध लगा कर चोरी करनेवाला (णाया १, १८—पत्र २३६, विपा १, ३—पत्र ३६)। °पाल, °वाल वि [°पाल] दो राज्यो की सुलह का रक्षक (कप्प, औप, णाया १, १—पत्र १६)।

संधिअ वि [दे] दुर्गन्धि, दुर्गन्धवाला (दे ८, ८)।

संधिअ वि [संहित] साँधा हुआ, जोड़ा हुआ (से १, ५४, गा ५३, स २६७, तंदु ३६, वज्जा ७०)।

संधिअ वि [संधित] प्रसारित (गउड)।

संधिआ देखो संहिया (ओघ ६२)।

संधिउ देखो संध = सं + धा।

संधित देखो संधिअ = संहित (भग)।

संधिविग्गहिअ पुं [सान्धिविग्रहिक] राजा की संधि और लड़ाई के कार्य में नियुक्त मन्त्री (कुमा)।

सखुड्डुण न [रमण] क्रीडा, सुरत-क्रीडा (कुमा)।

संखुत्त (अप) नीचे देखो (भवि)।

सखुद्ध वि [सक्षुब्ध] क्षोभ-प्राप्त (स ५९८, ६७४, सम्मत्त १५६, सुपा ५१७, कुप्र १७४)।

संखुभिअ } वि [संक्षुब्ध, संक्षुभित] ऊपर देखो (सम १२५, पव
सखुहिअ } २७२, पउम ३३, १०६, पि ३१६)।

सखेज्ज देखो सखा = स + ख्या।

सखेज्जइ } देखो सखिज्जइ (अणु ६१,
सखेज्जइम } विसे ३६०)।

संखेत्त देखो सखित्त (ठा ४ २—पत्र २२६, चेइय ३२५)।

सखेव पु [सक्षेप] १ अल्प, कम, थोडा (जी २५, ५१)। २ पिंड, सघात, सहति (ओघभा १)। ३ स्थान, 'तेरससु जीवसखेत्रएसु' (कम्म ६, ३५)। ४ सामायिक, सम-भाव से अव-स्थान (विसे २७९६)।

सखेवण न [सक्षेपण] अल्प करना, न्यून करना (नव २८)।

सखेविय वि [सचेपिक] संक्षेप-युक्त। °दसा स्त्री व. [°दशा] जैन ग्रन्थ-विशेष (ठा १०—पत्र ५०५)।

संखोभ } सक [स + क्षोभय्] क्षुब्ध
संखोह } करना। सखोहइ (भवि)। कवकृ. संखोभिज्जमाण (णाया १, ६—पत्र १५६)।

संखोह पुं [सक्षोभ] १ भय आदि से उत्पन्न चित्त की व्यग्रता, क्षोभ (उव, सुर २, २२, उपपृ १३१, गु ३, त्रि ६४, गउड)। २ चचलता (गउड)।

सखोहिअ वि [संक्षोभित] क्षुब्ध किया हुआ, क्षोभ-युक्त किया हुआ (से १, ४६, अभि ६०)।

सग न [शृङ्ग] १ सींग, विषाण (धर्मसं ६३, ६४)। २ उत्कर्ष (कुमा)। ३ पर्वत के ऊपर का भाग, शिखर। ४ प्रधानता, मुख्यता। ५ वाद्य-विशेष। ६ काम का उद्रेक (हे १, १३०)। देखो सिंग = शृङ्ग।

सग न [शार्ङ्ग] शृङ्ग-सबन्धी (विसे २८६)।

सग पुन [सङ्ग] १ सपर्क, सबन्ध (आचा, महा, कुमा)। २ सोहबत, 'तह हीणायारज-इजणसगं सङ्काण पडिसिद्ध' (सबोध ३६, आचा, प्रसू ३०)। ३ आसक्ति, विषयादि-राग (गउड, आचा, उव)। ४ कर्म, कर्म-बन्ध (आचा)। ५ बन्धन, 'भोगा इमे सगकरा हवंति' (उत्त १३, २७)।

संगइ स्त्री [सगति] १ औचित्य, उचितता (सुपा ११०)। २ मेल (भवि)। ३ नियति (सूअ १, १, २, ३)।

संगइअ वि [साङ्गतिक] १ नियति-कृत, नियति-सबन्धी (सूअ १, १, २, ३)। २ परिचित, मुही ति वा सहाए ति वा सग(? गइ)ए ति वा' (ठा ४, ३—पत्र २४३, राज)।

सगथ पु [सग्रन्थ] १ स्वजन का स्वजन, सगे का सगा (आचा)। २ सबन्धी, श्वशुर-कुल से जिसका सबन्ध हो वह (पण्ह २, ४—पत्र १३२)।

सगच्छ सक [स + गम्] १ स्वीकार करना। २ अक. सगत होना, मेल रखना। सगच्छइ (चेइय ७७६, षड्), सगच्छह (स १६)। कृ सगमणीअ (नाट—विक्र १००)।

सगच्छण न [सगमन] स्वीकार, अगीकार (उप ६३०)।

सगम पुं [सगम] १ मेल, मिलाप (पाअ, महा)। २ प्राप्ति, 'सग्गापवग्गसगमहेऊ जिण-देसिओ धम्मो' (महा)। ३ नदी-मीलक, नदियो का आपस में मिलान (णाया १, १—पत्र ३३)। ४ एक देव का नाम (महा)। ५ स्त्री-पुरुष का सभोग (हे १, १७७)। ६ एक जैन मुनि का नाम (उव)।

संगमय पुं [संगमक] भगवान् महावीर को उपसर्ग करनेवाला एक देव (चेइय २)।

संगमी स्त्री [संगमी] एक दूती का नाम (महा)।

सगय वि [दे] मसृण, चिकना (दे ८, ७)।

सगय न [सगत] १ मित्रता, मैत्री (सुर ६, २०६)। २ सग, सोहबत (उव, कुप्र १३४)। ३ पुं एक जैन मुनि का नाम (पुप्फ १८२)। ४ त्रि. युक्त, उचित (विपा १, २—पत्र २२)। ५ मिलित, मिला हुआ (प्रासू ३१, पचा १, १, महा)।

सगयय न [सगतक] छन्द विशेष (अजि ७)।

सगर देखो संकर = सकर (विसे २८८४)।

सगर न [स·गर] युद्ध, रण, लडाई (पाअ, काप्र १६३, कुप ७३, धर्मवि ६३, हे ४, ३४५)।

सगरिगा स्त्री [दे] फली-विशेष, जिसकी तरकारी होती है, साँगरी (पव ४—गाथा २२६)।

संगल सक [स + घटय्] मिलना, सघटित करना। सगलइ (हे ४, ११३)। सकृ संगलिअ (कुमा)।

सगल अक [स + गल्] गल जाना, हीन होना। वकृ सगलंत (से १०, ३४)।

सगलिया स्त्री [दे] फली, फलिया, छीमी (भग १५—पत्र ६८०, अनु ४)।

संगह सक [स + ग्रह्] १ सचय करना। २ स्वीकार करना। ३ आश्रय देना। सगहइ (भवि)। भवि. सगहिस्स (मोह ६३)।

सगह पु [दे] घर के ऊपर का तिरछा काठ (दे ८, ४)।

सगह पुं [संग्रह] १ सचय, इकट्ठा करना, बटोरना (ठा ७—पत्र ३८५, वव ३)। २ सक्षेप, समास (पाअ, ठा ३, १ टी—पत्र ११४)। ३ उपधि, वस्त्र आदि का परिग्रह (ओघ ६६६)। ४ नय-विशेष, वस्तु-परीक्षा का एक दृष्टिकोण, सामान्य रूप से वस्तु को देखना (ठा ७—पत्र ३६०, विसे २२०३)। ५ स्वीकार, ग्रहण (ठा ८—पत्र ४२२)। ६ कष्ट आदि मे सहायता करना (ठा १०—पत्र ४६६)। ७ वि सग्रह करनेवाला (वव ३)। ८ न नक्षत्र-विशेष, दुष्ट ग्रह से आक्रान्त नक्षत्र (वव १)।

सगहण न [सग्रहण] सग्रह (विसे २२०३, सबोध ३७, महा)। °गाहा स्त्री [°गाथा] सग्रह-गाथा (कप्प ११८)। देखो सगिण्हण।

सगहणि स्त्री [सग्रहणि] सग्रह-ग्रन्थ, सक्षिप्त रूप से पदार्थ प्रतिपादक ग्रथ, सार-सग्राहक ग्रन्थ (सग १, धर्मसं ३)।

संनिवेस पुं [संनिवेश] १ नगर के बाहर का प्रदेश, जहाँ आभीर वगैरह लोग रहते हों। २ गाँव, नगर आदि स्थान (भग १, १—पत्र ३६)। ३ यात्री आदि का डेरा मार्ग का वास-स्थान, पड़ाव (उत्त ३०, १७)। ४ ग्राम ग.व (निरि ३८)। ५ रचना (उप पृ १४२)।

संनिवेसणया स्त्री [संनिवेशना] संस्थापन (उत्त २६, १)।

संनिवेसिङ्घ वि [संनिवेशिन्] रचनावाला, (उप पृ १४२)।

संनिसन्न वि [संनिषण्ण] बैठा हुआ, सम्यक् स्थित (णाया १ १—पत्र १६ कुप्र १६६ श्रु १२, मण)।

संनिसिज्जा } स्त्री [संनिषद्या] आसन-
संनिसेज्जा } विशेष, पीठ आदि आसन (सम २१, उत्त १६, ३, उव)।

संनिह वि [संनिभ] समान, सदृश (प्रासू ६६, मण)।

संनिहाण न [संनिधान] १ ज्ञानावरणीय आदि कर्म (आचा)। २ कारक विशेष, अधिकरण कारक, आधार (विसे २०६६, ठा ८—पत्र ४२७)। ३ सान्निध्य, निकटता (स ७१८, ७६१)। °सत्थ न [°शस्त्र] संयम, त्याग (आचा)। °सत्थ न [°शास्त्र] कर्म का स्वरूप बतानेवाला शास्त्र (आचा)।

संनिहि पुस्त्री [संनिधि] १ उपभोग के लिए स्थापित वस्तु (आचा १, २, १, ४)। २ संस्थापन। ३ सुन्दर निधि (आचा १, २, ५, १)। ४ समीपता, निकटता (उप पृ १८६, स ६८०, कुप्र १३०)। ५ संचय, संग्रह (उत्त ६, १५, दस ३, ३, ८, २४)।

संनिहिअ पु [संनिहित] अणपन्नि देवों के दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। देखो संणिहिअ (णाया १, १ टी—पत्र ४)।

संनेज्झ देखो संनिज्झ, 'उवगारि त्ति करेइ कुमरस्स संनेज्ज(? ज्झ)' (कुप्र २५, चेइय ७८३)।

संपअ } (अप) देखो संपया (पिंग, पि ४१३,
संपइ } हे ४, ३३५, कुमा)।

संपइ अ [संप्रति] १ इस समय, अधुना, अब (पाअ, महा, जी ५०, द ४६, कुमा)। २ पुं. एक प्रसिद्ध जैन राजा, सम्राट् अशोक का पौत्र (कुप्र २, धर्मवि ८७, पुप्फ २६०)। °काल पु [°काल] वर्तमान काल (सुपा ४४६)। °कालीण वि [°कालीन] वर्तमान-काल-सम्बन्धी (विसे २२२६)।

संपइण्ण वि [संप्रकीर्ण] व्याप्त (राज)।

संपउत्त वि [संप्रयुक्त] संयुक्त, संबद्ध, जोड़ा हुआ (ठा ४, १—पत्र १८३, सूअ २, ७, २, उवा, औप, धर्मसं ६६५ राय १४६)।

संपओग पु [संप्रयोग] संयोग, संबन्ध (ठा ४, १—पत्र १८७, स ६१४, उप ७२८ टी, कुप्र ३७३ औप)।

संपकर देखो संगगर। संपकरेइ (उत्त २१, १६)।

संपक्क पु [संपर्क] सम्बन्ध (सुपा ५८, सम्मत्त १४१)।

संपक्कि वि [संपर्किन्] संपर्कवाला, सबन्धी (कप्पू, काप्र १७)।

संपक्खाल पु [संप्रक्षाल] तापस का एक भेद जो मिट्टी वगैरह घिस कर शरीर का प्रक्षालन करते हैं (औप)।

संपक्खालिय वि [संप्रक्षालित] धोया हुआ (धर्म ३)।

संपक्खित्त वि [संप्रक्षिप्त] प्रक्षिप्त, फेंका हुआ, डाला हुआ (पच ५, १५७)।

संपगर सक [संप्र + कृ] करना। संपगरेइ (उत्त २१, १६)।

संपगाढ वि [संप्रगाढ] १ अत्यन्त आसक्त (उत्त २०, ४५, सूअ २, ६, २२)। २ व्याप्त (सूअ १, ५, १, १७)। ३ स्थित, व्यवस्थित (सूअ १, १२, १२)।

संपगिद्ध वि [संप्रगृद्ध] अति आसक्त (पण्ह १, ४—पत्र ८५)।

संपग्गहिअ वि [संप्रगृहीत] खूब प्रकर्ष से गृहीत, विशेष अभिमान-युक्त (दस ६, ४, २)।

संपज्ज अक [सं + पद्] १ संपन्न होना, सिद्ध होना। २ मिलना। संपज्जइ (षड्, महा)। भवि. संपज्जिस्सइ (महा)।

संपज्जलिअ पु [संप्रज्वलित] तीसरा नरक का नववाँ नरकेन्द्रक, नरकावास-विशेष (देवेन्द्र ६)।

संपट्ठिअ देखो संपत्थिअ = संप्रस्थित (उप १४२ टी, औप, सवोध ५५, सुपा ७७; उपपृ १५८)।

संपड अक [सं + पद्] १ प्राप्त होना, मिलना, गुजराती में 'सांपडवु'। २ सिद्ध होना, निष्पन्न होना। संपडइ संपडति (वज्जा १०६, समु १५८, वज्जा ५०)। वकृ संपडत (से १४, १, सुर १० ८७)।

संपडिअ वि [दे संपन्न] लब्ध मिला हुआ, प्राप्त (दे ८ १८, स २

संपडिवूह सक [संप्रति + बृंह्] प्रशंसा करना तारीफ करना। संपडिवूहंति सूअ २, २, ५५)।

संपडिलेह सक [संप्रति + लेखय्] प्रति-जागरण करना, प्रत्युपेक्षण करना, अच्छी तरह निरीक्षण करना। संपडिलेहए (उत्त २६, ४३)। कृ. संपडिलेहिअव्व (दसचू १, १)।

संपडिवज्ज सक [संप्रति + पद्] स्वीकार करना। संपडिवज्जइ (भग)।

संपडिवत्ति स्त्री [संप्रतिपत्ति] स्वीकार, अंगीकार (विसे २६१४)।

संपडिवाइअ वि [संप्रतिपादित] स्थित (उत्त २२, ४६, सुख २२, ४६)। २ स्थापित (दस २, १०)।

संपडिवाय सक [संप्रति + पादय्] संपादन करना, प्राप्त करना। संपडिवायए (दस ६, २, २०)।

संपणदिय } देखो संपणाइय (राज,
संपणद्दिय } कप्प)।

संपण्णा देखो संपण्णा (दे ८, ८)।

संपणाइय } वि [संप्रणादित] समी-
संपणादिय } चीन शब्दवाला, 'तुडियसद्दसंपणाइया' (जीव ३, ४—पत्र २२४ पत्र २२७ टी)।

संपणाम सक [संप्र + नामय्] अर्पण करना। संपणामए (उत्त २३, १७)।

संपणिपाअ } पुं [संप्रणिपात] प्रणाम,
संपणिवाय } समीचीन नमस्कार (पंचा ३, १८, चेइय २३७)।

संघट्टिय वि [संघट्टित] १ स्पृष्ट, छुआ हुआ (णाया १, ५—पत्र ११२, पडि)। २ सर्घापित, सर्मादित (भग १६, ३—पत्र ७६६, ७६७)।

संघड अक [सं + घट्] १ प्रयत्न करना। २ संबद्ध होना, युक्त होना। कृ संघडियव्व (ठा ८—पत्र ४४१)। प्रयो संघडावेइ (महा)।

संघड वि [संघट] निरन्तर, 'संघडदंसिणो' (आचा १, ४, ४, ४)।

संघडण देखो संघयण (चउ—पृ ४८, भवि)।

संघडणा स्त्री [संघटना] रचना, निर्माण (सम्मु १५८)।

संघडिअ वि [संघटित] १ संबद्ध, युक्त (से ४, २४)। २ गठित, जटित (प्रासू २)।

संघदि (शौ) स्त्री [संहति] समूह (पि २६७)।

संघयण न [दे संहनन] १ शरीर, काय (दे ८, १४, पाअ)। २ अस्थि-रचना, शरीर के हाडों की रचना, शरीर का बांध (भग, सम १४६, १५५, उव, औप, उवा, कम्म १, ३८, पड्)। ३ कर्म-विशेष, अस्थि-रचना का कारण-भूत कर्म (सम ६७, कम्म १, २४)।

संघयणि वि [दे संहननिन्] संहनन-वाला (सम १५५, अणु ८ टी)।

संघरिस देखो संघंस (उप २६४ टी)।

संघरिसिद (शौ) वि [संघर्षित] संघर्ष-युक्त, घिसा हुआ (मा ३७)।

संघस सक [सं + घृष्] संघर्ष करना। संघसिज्ज (आचा २, १, ७, १)।

संघस्सिद देखो संघरिसिद (नाट—मालवि २६)।

संघाइअ वि [संघातित] १ संघात रूप से निष्पन्न (से १३, ६१)। २ जोडा हुआ (आव)। ३ इकट्ठा किया हुआ (पडि)।

संघाइम वि [संघातम] ऊपर देखो (औप, आचा २, १२, १, पि ६०२, अणु १२, दसनि २, १७)।

संघाड देखो संघाय = संघात (ओघभा १०२, राज)।

संघाड } पु [दे संघाट] १ युग्म, संघाडग } युगल (राय ९६, धर्मसं १०६५, उप पृ ३६७, सुपा ६००, ६२३, ओघ ४११, उप २७५)। २ प्रकार, भेद, 'संघाडो त्ति वा लय त्ति वा पगारो त्ति वा एगट्ठा' (निचू)। ३ ज्ञाताधर्म-कथा नामक जैन अंग-ग्रन्थ का दूसरा अध्ययन (सम ३६)।

संघाडग देखो सिंघाडग (कप्प)।

संघाडगा स्त्री [संघटना] १ संबन्ध। २ रचना, 'अक्खरगुणमतिसंघाय (? ड)णाए' (सूअनि २०)।

संघाडी स्त्री [दे. संघाटी] १ युग्म, युगल (दे ८, ७, प्राकृ ३८, गा ४१६)। २ उत्तरीय वस्त्र-विशेष (ठा ४, १—पत्र १८६, णाया १, १६—पत्र २०४, ओघ ६७७, विसे २३२६, पव ६२, कस)।

संघाणय पु [शिङ्घानक] श्लेष्मा, नाक में से बहता द्रव पदार्थ (तंदु १३)।

संघातिम देखो संघाइम (णाया १, ३—पत्र १७६, पण्ह २, ५—पत्र १५०)।

संघाय सक [सं + घातय्] १ संहत करना, इकट्ठा करना, मिलाना। २ हिंसा करना मारना। संघायइ, संघाएइ (कम्म १, ३६, भग ५, ६—पत्र २२६)। कृ. संघायणिज्ज (उत्त २६, ५६)।

संघाय पु [संघात] १ संहति, संहत रूप से अवस्थान, निविडता (भग; दस ४, १)। २ समूह, जत्था (पाअ, गउड, औप, महा)। ३ संहनन-विशेष, वज्रऋषभ-नाराच नामक शरीर-बन्ध, 'संघाएण सठाणेण' (औप)। ४ श्रुतज्ञान का एक भेद (कम्म १, ७)। ५ संकोच, संकुचाना (आचा)। ६ न. नामकर्म-विशेष, जिस कर्म के उदय से शरीर-योग्य पुद्गल पूर्व-गृहीत पुद्गलो पर व्यवस्थित रूप से स्थापित होते हैं (कम्म १, ३१, ३६)। °समास पुं [°समास] श्रुतज्ञान का एक भेद (कम्म १, ७)।

संघायण न [संघातन] १ विनाश, हिंसा (स १७०)। २ देखो 'संघाय' का छठवां अर्थ (कम्म १, २४)।

संघायणा स्त्री [संघातना] संहति। °करण न [°करण] प्रदेशो को परस्पर संहत रूप से रखना (विसे ३३०८)।

संघार पु [संहार] १ बहु-जंतु-क्षय, प्रलय (तंदु ४५)। २ नाश (पउम ११८, ८०, उप १३६ टी)। ३ संक्षेप। ४ विसर्जन। ५ नरक-विशेष। ६ भैरव-विशेष (हे १, २६४, षड्)।

संघार (अप) देखो संहर = सं + हृ। सकृ. संघारि (पिंग)।

संघारिय वि [संहारित] मारित, व्यापादित (भवि)।

संघासय पुं [दे] स्पर्धा, बराबरी (दे ८, १३)।

संघिअ देखो संघिअ = संहित (प्राप)।

संघिल्ल वि [संघवत्] संघ-युक्त, समुदित (राज)।

संघोडी स्त्री [दे] व्यतिकर, संबन्ध (दे ८, ८)।

संच (अप) देखो संचिण। संचइ (भवि)।

संच (अप) पु [संचय] परिचय (भवि)।

संचइ } वि [संचयिन्] संचयवाला, संचइग } संग्रही, संग्रह करनेवाला, (दसनि १०, १०, पव ७३ टी)।

संचइय वि [संचयित] संचय-युक्त (राज)।

संचक्कार पुं [दे] अवकाश, जगह,

'अविगणिय कुलकलंकं इय
कुहियकरंककारणे कीस।
वियरसि संचक्कारं तं
नारयतिरियदुक्खाण ॥''
(उप ७२८ टी)।

संचत्त वि [संत्यक्त] परित्यक्त (अज्झ १७८)।

संचय पुं [संचय] १ संग्रह (पण्ह १, ५—पत्र ९२, गउड, महा)। २ समूह (कप्प, गउड)। ३ संकलन, जोड (वव १)। °मास पुं [°मास] प्रायश्चित्त-संबन्धी मास-विशेष (राज)।

संचर सक [सं + चर्] १ चलना, गति करना। २ सम्यग् गति करना, अच्छी तरह चलना। ३ धीरे धीरे चलना। संचरइ (गउड ४२६, भवि)। वकृ. संचरंत (से २,

संपलत्त वि [संप्रलपित] उक्त, कथित, प्रतिपादित (णाया १, २—पत्र ८६)।

संपललिय वि [संप्रललित] जिसका अच्छी तरह लालन हुआ हो वह 'सुहसंपललिया' (औप)।

संपलिअ पुं [संपलित] एक जैन महर्षि (कप्प)।

संपलिअंक पु [संपर्यङ्क] पद्मासन (भग, औप, कप्प, राय १४५)।

संपलित्त वि [संप्रदीप्त] प्रज्वलित, सुलगा हुआ (णाया १, १—पत्र ६३, पउम २२, १६, धर्मसं ९७०, सुपा २९८, महा)।

संपलिमज्ज सक [संपरि + मृज्] प्रमार्जन करना। वकृ संपलिमज्जमाण (आचा १, ५, ४, ३)।

संपली सक [संपरि + इ] जाना, गति करना। संपलिंति (सूअ १, १, २, ७)।

संपवेय } अक [संप्र + वेप्] काँपना।
संपवेव } संपवेयए, संपव्वेवए (आचा २, १६, ३)।

संपवेस पुं [संप्रवेश] प्रवेश, पैठ (गउड)।

संपव्वय सक [संप्र + व्रज] गमन करना, जाना। वकृ संपव्वयमाण (आचा १, ५, ५, ३, ठा ६—पत्र ३५२)। हेकृ संपव्वइत्तए (कम)।

संपसार पुं [संप्रसार] एकत्रित होना, समवाय (राज)।

संपसारग } वि [संप्रसारक] १ विस्तासंपसारय } रक, फैलानेवाला (सूअ १, २, २, २८)। २ पर्यालोचनकर्ता (आचा १, ५, ४, ५)।

संपसारि वि [संप्रसारिन्] ऊपर देखो (सूअ १, ६, १६)।

संपसिद्ध वि [संप्रसिद्ध] अत्यन्त प्रसिद्ध (धर्मसं ८३७)।

संपस्स सक [सं + दृश्] १ अच्छी तरह देखना। विचार करना। संकृ संपस्सिय (दसचू २, १८)।

संपहार सक [संप्र + धारय्] १ चिंतन करना। २ निर्णय करना, निश्चय करना। संपहारेंति (सुख १, १५)। भूका. संपहारिंसु (सूअ २, १, १४, २६)। संकृ. संपहारिऊण (स १०६)।

संपहार पु [संप्रधार] निश्चय, निर्णय (पउम १६, २६, उप १०३१ टी, भवि)।

संपहार पुं [संप्रहार] युद्ध, लडाई (से ८, ४६)।

संपहारण न [संप्रधारण] निश्चय (पउम ४८, ९८)।

संपहाव सक [संप्र + धाव्] दौडना। संपहावेइ (आचा २, १, ३, ३)।

संपहिट्ठ वि [संप्रहृष्ट] हर्षित, प्रमुदित (उत्त २५, ३)।

संपा स्त्री [दे] काञ्ची, मेखला, करधनी (दे ८, २)।

संपाइअव वि [संपादितवत्] जिसने सम्पादन किया हो वह (हे ४, २६५, विसे ९३४)।

संपाइम वि [संपातिम] १ भ्रमर, कीट, पतंग आदि उडनेवाला जंतु (आचा, पिंड २४, सुपा ४९१, ओघ ३४८)। २ जानेवाला, गति-कर्ता, 'तिरिच्छसंपाइमा वा तसा पाणा' (आचा २, १, ३, ९, २, ३, १, १४)।

संपाइय वि [संपातित] १ आगत, आया हुआ। २ मिलित, मिला हुआ (भवि)।

संपाइय वि [संपादित] साधित, सिद्ध किया हुआ, 'संपाइयइट्ठफलि' (मण)।

संपाउण सक [संप्र + आप्] अच्छी तरह प्राप्त करना। संपाउणइ, संपाउणंति (उत्त २९, ५९, पि ५०४)। भवि. संपाउणिस्सामो (णाया १, १८—पत्र २४१)। प्रयो 'जेणप्पाणं परं चेव सिद्धिं संपाउणेज्जासि' (उत्त ११, ३२)।

संपाओ अ [संप्रातर्] १ जब प्रभात होय तब, प्रातःकाल। २ अति प्रभात, बडी सुबह। ३ हर प्रभात (ठा ३, १ टी—पत्र ११८)।

संपागड वि [संप्रकट] प्रकट, खुला, 'संपागडपडिसेवी' (ठा ४, १—पत्र २०३, उव)।

संपाड सक [सं + पादय्] १ सिद्ध करना, निष्पन्न करना। २ प्रार्थित वस्तु देना, दान करना। ४ प्राप्त करना, 'देइ सो जम्मग्गिय, संपाडेइ वत्थाभरणाइयं' (महा), 'संपाडेमि भयवओ आणं ति' (स ६८४), संपाडेउ (स ९६)। कृ. संपाडेयव्व (स २१४)।

संपाडग वि [संपादक] कर्ता निर्माता, 'ता को अन्नो तम्मुहरईए संपाडगो होज्जा' (उप १४२ टी)।

संपाडण न [संपादन] १ निष्पादन (स ७४८)। २ करण निर्माण (पंचा ६, ३८), 'परत्थसंपाडणिक्करसिअत्त' (सा ११)।

संपाडिअ वि [संपादित] १ सिद्ध किया हुआ, निष्पादित (स २०४, सुर २, २७०)। २ प्राप्त किया हुआ (उप पृ १२४)। ३ दत्त, अर्पित (स २३५)।

संपातो देखो संपाओ (ठा ३, १—पत्र ११७)।

संपाद (शौ) देखो संपाड = सं + पादय्। संपादेदि (नाट—शकु ६५)। कृ. संपादणीअ (नाट—विक्र ६०)।

संपादइत्तअ (शौ)। वि [संपादयितृ] संपादन-कर्ता, संपादक (पि ६००)।

संपादिअवद (शौ) देखो संपाइअव (पि ५६९)।

संपाय पु [संपात] सम्यकपतन, 'सलिलसंपायकयकद्दमुप्पीलय' (सुर ३ ११६)। २ संबन्ध, संयोग, 'सारीरमाणसाणेयदुक्खसंपायकलिय ति' (सुर ४, ७५, गउड) ३ व्यर्थ का झूठ, निरर्थक असत्य-भाषण (पण्ह १, ५—पत्र ९२)। संग, संगति (श्रा ६, पंचा १, ४१)। ५ आगमन (पंचा ७, ७२)। ६ चलन, हिलन (उत्त १८, २३, सुख १८, २३)।

संपाय देखो संपाओ (राज)।

संपायग वि [संपादक] संपादन-कर्ता (उप पृ २६, महा, चेइय ९०५)।

संपायग वि [संप्रापक] १ प्राप्त करनेवाला; 'रिसिगुणसंपायगो होइ' (चेइय ९०५)। २ प्राप्त करानेवाला (उप पृ २६)।

संपायण देखो संपाडण (सुर ४, ७३, सुपा २८, ३४३, चेइय ७६७)।

सजमिव्वति (गउड २८६)। वकृ सजमेत, सजमयंत सजममाण (गउड ८४०, दसनि १, १४८, उत्त १८, २६)। कवकृ संजमीअमाण (नाट—विक्र ११२)। संकृ सजमित्ता (सूम १, १०, २)। हेकृ सजमिउ (गउड ४८७)। कृ. सजमिअव्व, सजमितव्व (भग, णाया १, १—पत्र ६०)।

संजम सक [दे] छिपाना। संजमेसि (दे ८, १५ टी)।

संजम पु [सयम] १ चारित्र, व्रत, विरति हिंसादि पाप-कर्मो से निवृत्ति (भग, ठा ७, ग्रौप कुमा, महा)। २ शुभ अनुष्ठान (कुमा ७, २२)। ३ रक्षा, अहिंसा (णाया १, १—पत्र ६०)। ४ इन्द्रिय निग्रह। ५ बन्धन। ६ नियन्त्रण काबू (हे १, २४५)। °ासजम पु [°ासयम] श्रावक-व्रत (ग्रौप)।

सजमण न [सयमन] ऊपर देखो (धर्मवि १७ गा २६१, सुपा ५५३)।

सजमिअ वि [दे] सगोपित, छिपाया हुआ (दे ८, १५)।

सजमिअ वि [सयमित] बाँधा हुआ बद्ध (गा ६४६ सुर ७, ५, कुप्र १८७)।

सजय अक [सं + यत्] १ सम्यक् प्रयत्न करना। २ सक. अच्छी तरह प्रवृत्त करना। सजयए संजए (पव ७२, उत्त २, ४)।

सजय वि [सयत] साधु मुनि, व्रती (भग, ओघभा १७, काल), 'ममावि मायावित्ताणि सजयाणि' (महा)। °पता स्त्री [°प्रान्ता] साधु को उपद्रव करनेवाली देवी आदि (ओघभा ३७ टी)। °भद्दिगा स्त्री [°भद्रिका] साधु को अनुकूल रहनेवाली देवी आदि (ओघभा १७ टी)। °ासजय वि [°ासयत] किसी अश मे व्रती और किसी अश मे अव्रती, श्रावक (भग)।

सजय पुं [सजय] भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेनेवाला एक राजा (ठा ८—पत्र ४३०)।

सजयत पुं [सजयन्त] एक जैन मुनि (पउम ५, २१)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (इक)।

सजर पुं [सज्वर] ज्वर, बुखार (ग्रच्चु ६७)।

सजल अक [स + ज्वल्] १ जलना। २ आक्रोश करना। ३ क्रुद्ध होना। सजले (सूम १, ६, ३१, उत्त २, २४)।

संजलग वि [सज्वलन] १ प्रतिक्षण क्रोध करनेवाला (सम ३७)। २ पु कषाय-विशेष (कम्म १ १७)।

संजलिअ पु [सज्वलित] तीसरी नरक भूमि का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ६)।

सजलिअ (अप) वि [सज्वलित] आक्रोश-युक्त (भवि)।

सजव देखो सजम = स + यम्। सजवहु (अप) (भवि)।

सजव देखो सजम = (दे)। सजवइ (प्राकृ ६६)।

सजविअ देखो सजमिअ = (दे) (पाम, भवि)।

सजविअ देखो सजमिअ = संयमित (भवि)।

सजा देखो सगा (हे २, ८३)।

सजाणय वि [सज्ञायक] विज्ञ, विद्वान्, जानकार (राज)।

सजात } देखो सजाय = संजात (सुर २,
सजाद } ११४, ४, १६०, प्राप्र, पि २०४)।

सजाय अक [स + जन्] उत्पन्न होना। सजायइ (सण)।

सजाय वि [सजात] उत्पन्न (भग, उवा, महा, सण, पि ३३३)।

सजीवणी स्त्री [सजीवनी] १ मरते हुए को जीवित करनेवाली औषधि (प्रासू ८३)। २ जीवित-दात्री नरक-भूमि (सूम १, ५, २, ६)।

सजीवि वि [सजिविन्] जिलानेवाला, जीवित करनेवाला (कप्पू)।

सजुअ वि [सयुत] सहित, सयुक्त (द्र २२, सिक्खा ४८, सुर ३, ११७, महा)। देखो सजुत।

सजुअ न [सयुग] १ लड़ाई, युद्ध, सग्राम (पाम)। २ नगर-विशेष (राज)।

सजुज सक [सं + युज्] जोडना। कर्म 'अविसिट्ठे सम्भावे जलेण सजुग्र(? ज्ज)ती जहा वत्थं' (धर्मसं १८०)। कवकृ. सजुज्जत (सम्म ५३)।

सजुत न [सयुत] छन्द-विशेष (पिंग)। देखो संजुअ = सयुत।

सजुता स्त्री [सयुता] छन्द-विशेष (पिंग)।

सजुत्त वि [सयुक्त] सयोगवाला, जुडा हुआ (महा, सण पि ४०४, पिंग)।

सजुत्ति स्त्री [दे] तैयारी (सुर ४, १०२, १२, १०१, स १०८, कुप्र २००)। देखो सजत्ति।

सजुद्द वि [दे] स्पन्द-युक्त थोडा हिलने-चलनेवाला, फरकनेवाला (दे ८ ६)।

सजूह पुन [सयूथ] १ उचित समूह (ठा १०—पत्र ४६५)। २ सामान्य, साधारणता। ३ सक्षेप, समास (सूम २, २, १)। ४ ग्रन्थ-रचना, पुस्तक निर्माण (अणु १४६)। ५ दृष्टिवाद के अठासी सूत्रों मे एक सूत्र का नाम (सम १२८)।

सजोअ सक [स + योजय्] सयुक्त करना, सबद्ध करना, मिश्रण करना। सजोएइ, सजोयइ (पिंड ६३८, भग, उव, भवि)। वकृ सजोयंत (पिंड ६३६)। सकृ सजोएऊण (पिंड ६३६)। कृ सजोएअव्व (भग)।

सजोअ सक [स + दृश्] निरीक्षण करना, देखना। सकृ सजोइऊण (श्रु ३२)।

संजोअ पु [सयोग] सबन्ध, मेल-मिलाप, मिश्रण (षड्, महा)।

सजोअण न [सयोजन] १ जोडना, मिलाना (ठा २, १—पत्र २६)। २ वि जोड़नेवाला। ३ कषाय-विशेष, अनन्तानुबन्धि नामक क्रोधादि-चतुष्क (विसे १२२६, कम्म ५, ११ टी)। °धिकरणिया स्त्री [°ाधिकरणिकी] खड्ग आदि को उसकी मूठ आदि से जोडने की क्रिया (ठा २, १—पत्र ३६)।

सजोअणा स्त्री [सयोजना] १ मिलान, मिश्रण (पिंड ६३६)। २ भिक्षा का एक दोष स्वाद के लिए भिक्षा-प्राप्त चीजो को आपस मे मिलाना (पिंड १)।

सजोइय वि [सयोजित] मिलाया हुआ, जोडा हुआ (भग, महा)।

संबल पुंन [शम्बल] १ पाथेय, रास्ते में खाने का भोजन, 'धन्नाणं चिय परलायसंबलो मिलइ नन्नाण' (सम्मत्त १५७, पाअ, सुर १६, ५०, दे ६, १०८, महा, भवि, सुपा ६४)। २ एक नागकुमार देव (आवम)।

संबलि देखो सिंबलि = शिम्बलि (आचा २, १, १०, ४)।

संबलि पुस्त्री [शाल्मलि] वृक्ष-विशेष, सेमल का पेड (सुर २, २३४, ८, ५७)। देखो सिंबलि।

संबाधा देखो संबाहा (पउम २, ८६)।

संबाह सक [सं + बाध्] १ पीडा करना। २ दबाना, चप्पी करना। संबाहज्जा (निचू ३)।

संबाह पुं [संबाध] १ नगर-विशेष, जहाँ ब्राह्मण आदि चारों वर्णों की प्रभूत वस्ती हो वह शहर (उत्त ३०, १६)। २ पीडा, 'संबाहा वहवे भुज्जो दुरइक्कमा अजाणओ अपासओ' (आचा)। ३ वि. संकीर्ण, सकरा, 'संबाहं संकिण्णं' (पाअ)।

संबाहण न [संबाधन] देखो संवाहण (आचा १, ६, ४, २)।

संबाहणा स्त्री [संबाधना] देखो संवाहणा (औप)।

संबाहणी स्त्री [संबाधनी] विद्या-विशेष (पउम ७, १३७)।

संबाहा स्त्री [संबाधा] १ पीडा (आचा १, ५, ४, २)। २ अंग-मर्दन, चप्पी (निचू ३)।

संबाहिय वि [संबाधित] १ पीडित (सूअ १, ५, २, १८)। २ देखो संवाहिय (औप)।

संबुक्क पु [शम्बूक] १ शंख (ठा ४, २—पत्र २१६, सुपा ५०, १६५)। २ रावण का एक भागिनेय—खरदूषण का पुत्र (पउम ४३, १८)। ३ एक गाँव का नाम (राज)। °विट्टा स्त्री [°वर्ता] शंख के आवर्त के समान भिक्षा-चर्या (उत्त ३०, १६)। देखो संबूअ।

संबुज्झ सक [सं + बुध्] समझना, ज्ञान पाना। संबुज्झइ, संबुज्झंति, संबुज्झह (महा, स ४८६, सूअ १, २, १, १, वै ७३)। वकृ. संबुज्झमाण (आचा १, १, २, ५)।

संबुद्ध वि [संबुद्ध] ज्ञान-प्राप्त (उवा, महा)।

संबुद्धि स्त्री [संबुद्धि] ज्ञान, बोध (अज्झ ३६)।

संबूअ पु [शम्बूक] जल-शुक्ति, शुक्ति के आकार का जल-जंतु-विशेष (दे ८, १६, गउड)।

संबोधि स्त्री [संबोधि] सत्य धर्म की प्राप्ति (धर्मसं १३६६)।

संबोह सक [सं + बोधय्] १ समझाना, बुझाना। २ आमन्त्रण करना। ३ विज्ञप्ति करना। संबोहइ, संबोहेइ (भवि, महा)। कवकृ. संबोहिज्जमाण (णाया १, १४)। कृ. संबोहेअव्व (ठा ४, ३—पत्र २४३)।

संबोह पुं [संबोध] ज्ञान, बोध, समझ (आत्म २०)।

संबोहण न [संबोधन] १ ऊपर देखो (विसे २३३२, सुख १०, १, चेइय ७७५)। २ आमन्त्रण (गउड)। ३ विज्ञप्ति (णाया १, ८—पत्र १५१)।

संबोहि देखो संबोधि (उप पृ १७६, वै ७३)।

संबोहिअ वि [संबोधित] १ समझाया हुआ (यति ४८)। २ विज्ञापित (णाया १, ८—पत्र १५१)।

संभंत वि [संभ्रान्त] १ भीत, घबड़ाया हुआ, त्रस्त (उत्त १८, ७, महा; गउड)। २ पुन. प्रथम नरक का पाचवाँ नरकेन्द्रक—नरकस्थान-विशेष (देवेन्द्र ४)। ३ न. भय, घबराहट (महा)।

संभंति स्त्री [संभ्रान्ति] संभ्रम, उत्सुकता (भग १६, ५—पत्र ७०६)।

संभंतिय वि [साम्भ्रान्तिक] संभ्रम से बना हुआ (भग १६, ५—पत्र ७०६)।

संभग्ग वि [संभग्न] चूर्णित (उत्त १६, ६१)।

संभण सक [सं + भण्] कहना। संकृ. संभणिअ (पिंग)।

संभणिअ वि [संभणित] कथित, उक्त (पिंग)।

संभम सक [सं + भ्रम्] १ अतिशय भ्रमण करना। २ अक भय-भीत होना, घबडाना। वकृ. संभमंत (पि २७५)।

संभम पुं [संभ्रम] १ आदर, 'संभमो आयरो पयत्तो य' (पाअ)। २ भय, घबराहट, क्षोभ; 'संखोहो संभमो तासो' (पाअ, प्रासू १०५, महा)। ३ उत्सुकता (औप)।

संभर सक [सं + भृ] १ धारण करना। २ पोषण करना। ३ संक्षेप करना, संकोच करना। वकृ संभरमाण (से ७, ४१)। संकृ संभार (अप) (पिंग)।

संभर सक [सं + स्मृ] स्मरण करना, याद करना। संभरेइ, संभरिमो (महा, पि ४५५)। वकृ. संभरंत, संभरमाण (गा २६, सुपा ३१७, से ७, ४१)। कृ. संभरणिज्ज, संभरणीय (धम्मो १८, उप ५३८ टी)।

संभरण न [संस्मरण] स्मरण, याद (गा २२२, णाया १, १—पत्र ७१, दे ७, २५, उवकु १४)।

संभरणा स्त्री [संस्मरणा] ऊपर देखो (उप ५३० टी)।

संभराविअ वि [संस्मारित] याद कराया हुआ (दे ८, २५, कुप्र ४२१)।

संभरिअ वि [संस्मृत] याद किया हुआ (गउड, कुप्र ८६२)।

संभल सक [सं + स्मृ] याद करना। संभलइ (उप पृ ११३)। कर्म. संभलिज्जइ (वज्जा ८०)। वकृ. संभलि (अप) (पिंग २६७)।

संभल सक [सं + भल्] १ सुनना; गुजराती में 'सांभळ्वुं'। २ अक. सम्भलना, सावधान होना। संभलइ (भवि), 'संभलसु मह पइन्न' (सम्मत्त २१७)। संकृ संभलि (अप) (पिंग २८६)।

संभली स्त्री [दे संभली] १ दूती (दे ८, ६, वव ५)। २ कुट्टनी, पर-पुरुष के साथ अन्य स्त्री का योग करानेवाली स्त्री (कुमा)।

संभव अक [सं + भू] १ उत्पन्न होना। संभावना होना, उत्कट संशय होना। संभवइ

संणडिअ वि [सन्नटित] व्याकुल किया हुआ, विडम्बित (वज्जा ७०)।

सणद्ध वि [सनद्ध] संनाह-युक्त, कवचित (विपा १, २—पत्र २३, गउड)।

सणत्र देखो सनत्र (राज)।

सणवणा स्त्री [सज्ञापना] संज्ञप्ति, विज्ञापन (उवा)।

सगा स्त्री [सज्ञा] १ आहार आदि का अभिलाप (सम ६, भग, पराण १, ३—पत्र ५५, प्रासू १७६)। २ मति, बुद्धि (भग)। ३ संकेत, इशारा (से ११, १३४ टी)। ४ आख्या, नाम। ५ सूर्य की पत्नी। ६ गायत्री (हे २, ४२)। ७ विष्ठा, पुरीष (उप १४२ टी)। ८ सम्यग् दर्शन (भग)। ९ सम्यग् ज्ञान। (राय १३३)। °इअ वि [°कृत] टट्टी फिरा हुआ, फरागत गया हुआ (दस १ १ टी)। °भूमि स्त्री [°भूमि] पुरीषोत्सर्जन की जगह (उप १४२ टी, दस १, १ टी)।

सणामिय वि [सनामित] अवनत किया हुआ (पचा १६, ३६)।

सणाय वि [सज्ञात] १ ज्ञात, नात का आदमी (पंच १०, ३६)। २ स्वजन, सगा (उप ६५३)। देखो सनाय।

सणास पु [सन्यास] संसार-त्याग, चतुर्थ आश्रम (नाट—चैत ६०)।

संणासि वि [सन्यासिन्] संसार-त्यागी, चतुर्थ-आश्रमी, यति, व्रती (नाट—चैत ८८)।

सणाह सक [सं+नाहय्] लडाई के लिए तैयार करना, युद्ध-सज्ज करना। सणाहेहि (औप ४०)।

सणाह पु [संनाह] १ युद्ध की तैयारी (से ११, १३४)। २ कवच, बखतर (नाट—वेणी ६२)। °पट्ट पु [°पट्ट] शरीर पर बांधने का वस्त्र-विशेष (वृह ३)।

सणाहिय वि [सानाहिक] युद्ध की तैयारी से सम्बन्ध रखनेवाला, 'सणाहियाए भेरीए सद्दं सोच्चा' (णाया १, १६—पत्र २१७)।

सणि वि [सज्ञिन्] १ सज्ञावाला, संज्ञा-युक्त। २ मनवाला प्राणी (सम २, भग, औप)। ३ श्रावक, जैन गृहस्थ (ओघ ८)। ४ सम्यग् दर्शनवाला, सम्यक्त्वी, जैन (भग)। ५ न गोत्र-विशेष, जो वासिष्ठ गोत्र की शाखा है। ६ पुत्री उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३९०)।

सणिक्खित्त देखो सनिक्खित्त (राज)।

सणिगास देखो सगियास (णाया १, १—पत्र ३२)।

सणिगास देखो सनिगास = सनिकर्ष (राज)।

सणिचय देखो सनिचय (राज)।

सणिच्चिय देखो सनिच्चिय (आचा २, १, २, ४)।

सणिज्झ देखो सनिज्झ (गउड)।

संणिणाय देखो सनिनाय (राज)।

सणिवाइ देखो सणिहाइ (नाट—मालती २६)।

सणिधाण देखो सनिहाण (नाट—उत्तर ४४)।

सणिपडिअ वि [सनिपतित] गिरा हुआ (विपा १, ६—पत्र ६८)।

सणिभ देखो सनिभ (राज)।

सणिय वि [सज्ञित] जिसको इशारा किया गया हो वह (सुपा ८८)।

सणियास पुं [संनिकाश] समान, सदृश (पउम २०, १८८)। देखो सनियास।

सणिरुद्ध वि [सनिरुद्ध] रुका हुआ, नियन्त्रित (आचा २, १, ४, ४)।

सणिरोह पुं [सनिरोध] अटकाव, रुकावट (से ५, ६४)।

सणिवय अक [सनि+पत्] पडना, गिरना। वकृ सणिवयमाण (आचा २, १, ३, १०)।

सणिवाय पु [सनिपात] सम्बन्ध (पचा ७, १८)।

सणिविट्ठ देखो सनिविट्ठ (णाया १, १ टी—पत्र २)।

सणिवेस देखो सनिवेस (आचा १, ८, ६ ३, भग, गउड, नाट—मालती ५६)।

संणिसिज्जा } देखो सनिसिज्जा (राज)।
सणिसेज्जा }

सणिह देखो सनिह (गा २५८, नाट—मृच्छ ६१)।

सणिहाइ वि [संनिधायिन्] समीप-स्थायी (माल ५२)।

संणिहाण देखो सनिहाण (राज)।

सणिहि देखो सनिहि (आचा २, १, २, ४)।

सणिहिअ वि [सनिहित] सहायता के लिए समीप-स्थित, निकट-वर्ती (महा)। देखो सनिहिअ।

सणेज्झ देखो सनेज्झ (गउड)।

सत देखो स = सत् (उवा, कप्प, महा)।

सत वि [शान्त] १ शम युक्त, क्रोध-रहित (कप्प, आचा १, ८, ५, ४)। २ पुं रस-विशेष, 'विणयता चेव गुणा संततरसा किया उ भावता' (गिरि ८८२)।

सत वि [श्रान्त] थका हुआ (णाया १, ४, उवा १०१, ११२, विपा १, १, कप्प, दे ८, ३६)।

सतइ स्त्री [सतति] १ सतान, अपत्य, लडकावाला, 'दुट्ठुसीला खु इत्थिया विणासेइ सतइ' (म ५०५, सुपा १०४)। २ अविच्छिन्न धारा, प्रवाह (उत्त ३६, ६, उप पृ १८१)।

सतच्छण न [सतक्षण] छिलना (सूअ १, ५, १, १४)।

सतच्छिअ वि [सतक्षित] छिला हुआ (पराह १, १—पत्र १८)।

सतट्ठ वि [सत्रस्त] डरा हुआ, भय-भीत (सुर ६, २०५)।

सतति देखो सतइ (स ६८४)।

सतत्त वि [सतत] १ निरन्तर, अविच्छिन्न। २ विस्तीर्ण,

'अच्छिनिमीलियमित्तं नत्थि सुहं
दुक्खमेव सततं।
नरए नेरइयाणं अहोनिसिं
पच्चमाणाणं।'
(सुर १४, ४६)।

सतत्त वि [सतप्त] संताप युक्त (सुर १४, ५६, गा १३६, सुपा १६, महा)।

सतत्थ देखो सतट्ठ (उव, श्रा १८)।

सतप्प अक [स+तप्] १ तपना, गरम होना। २ पीडित होना। सतप्पइ (हे ४, १४०, स २०)। भवि. सतप्पिस्सइ (स

संभोगि वि [संभोगिन्] देखो संभोइअ (कुप्र १७२)।

संभोगिअ देखो संभोइअ (ठा ३ ३—पत्र १३६)।

समइ स्त्री [संमति] १ अनुमति (सूअ १, ८, १४, विसे २२०६)। २ पु. वायुकाय, पवन। ३ वायुकाय का अधिष्ठाता देव (ठा ५, १—पत्र २६२)।

समज्ज पुं [समार्ज] समार्जन, साफ करना (विसे ६२५)।

समज्जग पुं [समज्जक] वानप्रस्थ तापसों की एक जाति (औप)।

समज्जण न [समार्जन] साफ करना, प्रमार्जन (श्रभि १५६)।

समज्जणी स्त्री [समार्जनी] झाड़ू (दे ६, ६७)।

समज्जिअ वि [समार्जित] साफ किया हुआ (सुपा ५४, औप, भवि)।

समट्ठ वि [समृष्ट] १ प्रमार्जित, सफा किया हुआ (राय १००, औप, पव १३३)। २ पूर्ण भरा हुआ (जीवस ११६, पव १५८)।

समड्ड पुं [समर्द] १ युद्ध, लडाई (हे २, ३६)। २ परस्पर संघर्ष (हे २, ३६, कुमा)।

समड्डिअ वि [समर्दित] संघृष्ट (हे २, ३६)।

समद्द सक [स + मृद्] मर्दन करना। सक्र. समद्दिआ (दस ५, २, १६)।

समद्द देखो समड्ड (उप १३६ टी, पाअ, दे १, ६३, सुपा २२२, प्राकृ ८६)।

समद्दा स्त्री [समर्दा] प्रत्युपेक्षणा-विशेष, वस्त्र के कोनों को मध्य भाग में रखकर अथवा उपधि पर बैठकर जो प्रत्युपेक्षणा—निरीक्षण की जाय वह (ओघ २६६ ओघभा १६२)।

समय वि [समत] १ अनुमत। २ अभीष्ट (उव)।

समप्पिय वि [समापित] नापा हुआ (भवि)।

समा अक [स + मा] समाना, अटना। समाइ (कुप्र २७७)।

समाण सक [स + मानय्] आदर करना, गौरव करना। समाणइ, समाणेइ, समाणिति, समाणेमो (भवि, उवा, महा, कप्प, पि ४७०)। भवि. समाणेहिति (पि ५२८)। वकृ. समाणत, समाणेन (सुपा २२४, पउम १०५, ७६)। संकृ. समाणिऊण, समाणेऊण, समाणित्ता (महा, कप्प)। कवकृ संमाणिज्जमाण (काल)। कृ. समाणणिज्ज (णाया १, १ टी—पत्र ४, उवा)।

समाण पु [समान] आदर, गौरव (उव, हे ४, ३१६, नाट—मालवि ६३)।

समाणण न [समानन] ऊपर देखो (सुपा २०८)।

समाणिअ वि [समानित] जिसका आदर किया गया हो वह (कप्प, महा)।

समिअ (शौ) वि [समित] १ तुल्य, समान। २ समान परिमाणवाला (अभि १८६)।

समिल अक [स + मिल्] मिलना। संमिलइ (भवि)।

समिलिअ वि [समिलित] मिला हुआ (भवि)।

समिल्ल अक [स + मील्] सकुचाना, संकोच करना। समिल्लइ (हे ४, २३२, षड्, धात्वा १५५)।

समिस्स वि [समिश्र] १ मिला हुआ, युक्त (महा)। २ उखड़ी हुई छालवाला (आचा २, १, ८, ६)।

समील देखो समिल्ल। समीलइ (हे ४, २३२, षड्)।

समीलिअ वि [समीलित] संकुचित (से १२, १)।

संमीस देखो समिस्स (सुर २, १११, सण)।

समुइ पु [समुचि] भारतवर्ष में भविष्य मे होनेवाला एक कुलकर पुरुष (ठा १०—पत्र ५१८)।

समुच्छ अक [स + मूर्च्छ्] उत्पन्न होना, 'एतासि ण लेसाण अंतरेसु अण्णतरीओ छिण्णलेसाओ समुच्छंति' (सुज्ज ६)।

समुच्छण स्त्रीन [समूर्च्छन] स्त्री-पुरुष के संयोग के विना ही यूकादि की तरह होती जीवों की उत्पत्ति (धर्मसं १०७७)। स्त्री. °णा (धर्मसं १०३१)।

समुच्छिम ति [समूर्च्छिम] स्त्री-पुरुष के समागम के विना उत्पन्न होनेवाला प्राणी (आचा, ठा ५, ३—पत्र ३३४ सम १४६, जी २३)।

संमुच्छिअ वि [संमूर्च्छित] उत्पन्न (सुत्र ६)।

समुज्झ अक [स + मुह्] मोह करना, मुग्ध होना समुज्झइ (सबोध ५२)।

समुत्त देखो समुत्त (राज)।

समुस सक [सं + मृश्] पूर्ण रूप से स्पर्श करना। वकृ. समुसमाण (भग ८, ३—पत्र ३६५)।

समुह वि [समुख] सामने आया हुआ (हे १, २६, ४, ३६५, ४१४, महा)। स्त्री °ही (काप्र ७२३)।

समूढ वि [संमूढ] जड़, विमूढ (पाअ, सुपा ५४०)।

समेअ पु [संमेत] १ पर्वत विशेष जो आजकल 'पारसनाथ पहाड' के नाम से प्रसिद्ध है (णाया १, ८—पत्र १५४, कप्प, महा; सुपा २११, ५८४; विवे १८)। २ राम का एक सुभट (पउम ५६, ३७)।

संमेल पुं [समेल] परिजन अथवा मित्रों का जिमनवार, प्रीति-भोजन (आचा २, १, ४, १)।

समोह पुं [समोह] १ मूढता, अज्ञान (अणु; स ३५८)। २ मूर्च्छा (सिक्खा ४२)। ३ दुःख, कष्ट (से ३, १३)। ४ सनिपात रोग (उप १६०)।

समोह न [सामोह] १ मिथ्यात्व का एक भेद—रागी को देव, संगी—परिग्रही को गुरु और हिंसा को धर्म मानना (सबोध ५२)। २ वि. सामोह-सम्बन्धी (ठा ४, ४—पत्र २७४)। स्त्री °हा, °ही (ठा ४, ४ टी—पत्र २७४, वृह १)।

समोहण न [समोहन] १ मोहित करना। २ मूर्च्छित करना (कुप्र २५०)।

समोहा स्त्री [समोहा] छन्द-विशेष (पिंग)।

सरंभ पुं [सरम्भ] १ हिंसा करने का संकल्प, 'संकप्पो संरंभो' (सबोध ४१, श्रा ७)। २ आटोप (कुमा १, २१, ६, ६२)। ३ उद्यम (कुमा ५, ७०)। ४ क्रोध, गुस्सा (पाअ)।

१५, सुपा ४३९)। २ आनन्दित, खुशी (कप्पू)।

संतोसिअ पुं [संतोषिक] सतोष, तृप्ति (उवा १६)।

संतोसिअ वि [संतोषित] सतुष्ट किया हुआ (महा; सण)।

संथ वि [संस्थ] सस्थित (विसे ११०१)।

संथड } वि [संस्तृत] १ आच्छादित, संथडिय } परस्पर के सश्लेष से आच्छादित (भग, ठा ४, ४)। २ घन, निविड (आचा २, १, ३, १०)। ३ व्याप्त (उत्त २१, २२, ओघ ७४७)। ४ समर्थ। ५ तृप्त, जिसने पर्याप्त भोजन किया हो वह (कस, आचा २, ४, २, ३, दस ७, ३३)। ६ एकत्रित (आचा २, १, ६, १)।

संथण अक [सं + स्तन्] आक्रन्द करना। संथणती (सूअ १, २, ३, ७)।

संथर सक [सं + स्तृ] १ बिछौना करना, बिछाना। २ निस्तार पाना, पार जाना। ३ निर्वाह करना। ४ अक. समर्थ होना। ५ तृप्त होना। ६ होना, विद्यमान होना। संथरइ (भग २, १—पत्र १२७, उवा, कस), 'ण समुच्छे णो संथरे तण' (सूअ १, ७, २, १३, आचा), संथरिज्ज, संथरे, संथरेज्जा (कप्प, दस ५, २, २, आचा)। वकृ. संथर°, संथरंत, संथरमाण (उवर १४२, ओघ १८२, १८१; आचा २, ३, १, ८)। संकृ संथरित्ता (भग, आचा)।

संथर पुं [संस्तर] निर्वाह (पिंड ३७५, ४००)।

संथर देखो संथार (सुर २, २४७)।

संथरण न [संस्तरण] १ निर्वाह (बृह १)। २ बिछौना करना (राज)।

संथव सक [सं + स्तु] १ स्तुति करना, श्लाघा करना। २ परिचय करना। संथवेज्जा (सूअ १, १०, ११)। कृ. संथवियव्व (सुपा २)।

संथव पुं [संस्तव] १ स्तुति, श्लाघा, 'संथवो थुई' (निचू २, वव ३, पिंड ४८४)। २ परिचय, संसर्ग (उवा, पिंड ३१०, ४८४, ४८५, श्रावक ८८)। ३ वि स्तुति-कर्ता (णाया १, १६ टी—पत्र २२०, राज)।

संथवण न [संस्तवन] ऊपर देखो (सबोध ५६, उप ७६८ टी)।

संथवय वि [संस्तावक] स्तुति-कर्ता (णाया १, १६—पत्र २१३)।

संथविअ देखो संठविअ (पउम ८३, १०)।

संथार } पुं [संस्तार] १ दर्भ—कुश आदि संथारग } की शय्या, बिछौना (णाया १, १— संथारय } पत्र ३०, उवा, उव, भग)। २ अपवरक, कमरा (आचा २, २, ३, १)। ३ उपाश्रय, साधु का वास-स्थान (वव ४)। ४ संस्तार-कर्ता (पव ७१)।

संथाव देखो संठाव। वकृ संथावंत (पउम १०३, २४)।

संथावण न [संस्थापन] सान्त्वना, समाश्वासन (पउम ११, ७०, ४९, ८, ९५, ४७)। देखो संठावण।

संथावणा स्त्री [संस्थापना] संस्थापन, रखना (सा २४)। देखो संठावणा।

संथिद (शौ) देखो संठिअ (नाट—मृच्छ ३०१)।

संथुअ वि [संस्तुत] १ सबद्ध, सगत (सूअ १, १२, २)। २ परिचित (आचा १, २, १, १)। ३ जिसकी स्तुति की गई हो वह, श्लाघित (उत्त १, ४६, भवि)।

संथुइ स्त्री [संस्तुति] स्तुति, श्लाघा, प्रशंसा (चेइय ४६६, सुपा ६५०)।

संथुण सक [सं + स्तु] स्तुति करना, श्लाघा करना। संथुणइ (उव, यति ९)। वकृ संथुणमाण (पउम ८३, १०)। कवकृ संथुणिज्जंत, संथुव्वंत (सुपा १९०, श्राक ७)। संकृ. संथुणित्ता (पि ४९४)।

संथुल वि [सस्थुल] रमणीय, रम्य, सुन्दर (चारु १६)।

संथुव्वंत देखो संथुण।

संद अक [स्यन्द्] १ झरना, टपकना। संदंति (सूअ १, १२, ७)।

संद पुं [स्यन्द] १ झरन, प्रस्रव (से ७, ५९)। २ रथ, 'रवि-संदु(? दु)व्व भमतो (धर्मवि १४४)।

संद वि [सान्द्र] घन, निविड (अच्चु ३७, विक्र २३)।

संदंस पुं [संदंश] दक्षिण हस्त, 'छिंदाविओ निवेणं कोववसा तहवि तस्स संदसो' (कुप्र २३२)।

संदसण न [संदर्शन] दर्शन, देखना, साक्षात्कार (उप ३५७ टी)।

संदट्ठ वि [संदष्ट] जो काटा गया हो वह, जिसको दश लगा हो वह (हे २, ३४, कुमा ३, ८, षड्)।

संदट्ठ } वि [दे] १ सलग्न, सयुक्त, संदट्ठय } सबद्ध (दे ८, १८, गउड; २३६)। २ न. सघट्ट, सघर्ष (दे ८, १८)।

संदड्ढ वि [संदग्ध] अति जला हुआ (सुर ९, २०५, सुपा ५१९)।

संदण पुं [स्यन्दन] १ रथ (पाअ, महा)। २ भारतवर्ष में अतीत उत्सर्पिणी काल में उत्पन्न तेइसवाँ जिनदेव (पव ७)। ३ न. क्षरण, प्रस्रव। ४ वहन, वहना। ५ जल, पानी, 'जत्थ ण नईं निच्चोयगा निच्चसदणा' (कप्प)।

संदब्भ पुं [संदर्भ] रचना, ग्रथन (उवर २०३, सण)।

संदमाणिया } स्त्री [स्यन्दमानिका, °नी] संदमाणी } एक प्रकार का वाहन, एक तरह की पालकी (औप, णाया १, ५—पत्र १०२, १, १ टी—पत्र ४३, औप)।

संदाण सक [कृ] अवलम्बन करना, सहारा लेना। संदाणइ (हे ४, ६७)। वकृ. संदाणत (कुमा)। कवकृ. संदाणिज्जंत (नाट—मालती ११९)।

संदाणिअ वि [संदानित] बद्ध, नियन्त्रित (पाअ, से १, ६०, १३, ७१, सुपा ३, कुप्र ६६, नाट—मालती १६६)।

संदामिय वि [संदामित] ऊपर देखो (स ३१६, सम्मत्त १६०)।

संदाव देखो संताव = सताप (गा ८१७, ९९४, पि २७५, स्वप्न २७, अभि ९१, माल १७६)।

संदाव पुं [सद्भाव] समूह, समुदाय (विसे २८)।

संदिट्ठ वि [संदिष्ट] १ जिसका अथवा जिसको सँदेशा दिया गया हो वह, उपदिष्ट, कथित (पाअ, उप ७२८ टी, ओघभा ३१,

संवत्तय वि [संवर्तक] १ अपवर्तन-कर्ता। २ पु बलदेव। ३ वडवानल (हे २, ३०, प्राप्र)।

संवत्तुवत्त पुं [संवर्तोद्वृत्त] उलट-पुलट (स १७४, २५८)।

संवद्धण न [संवर्धन] १ वृद्धि, बढाव। २ वि वृद्धि करनेवाला (भवि, स ७२७)।

संवय सक [सं + वद्] १ बोलना, कहना। २ प्रमाणित करना, सत्य साबित करना। संवयइ, संवएज्जा (कुप्र १८७, सूअ १, १४, २०)। वकृ. संवयंत (धर्मसं ८८३)।

संवय वि [संवृत] आवृत, आच्छादित (कुप्र ३६)।

संवर सक [सं + वृ] १ निरोध करना, रोकना। २ कर्म को रोकना। ३ बँध करना। ४ ढकना। ५ गोपन करना। संवरइ, संवरसि, संवरेमि (भग, भवि, सण, हास्य १३०, पव २३६ टी), संवरेहि (कुप्र ३११)। वकृ. संवरेमाण (भग)। संकृ. संवरेवि (महा)।

संवर पुं [संवर] १ कर्म-निरोध, नूतन कर्म-बन्ध का अटकाव (भग, पण्ह १, १, नव १)। २ भारतवर्ष में होनेवाले अठारहवें जिनदेव (पव ४६, सम १५४)। ३ चौथे जिनदेव के पिता का नाम (सम १५०)। ४ एक जैन मुनि (पउम २०, २०)। ५ पशु-विशेष (कुप्र १०४)। ६ दैत्य-विशेष। ७ मत्स्य की एक जात (हे १ १७७)।

संवरण न [संवरण] १ निरोध, अटकाव (पचा १, ४४), 'आसवदाराण संवरणं' (श्रु ७)। २ गोपन (गा १६६, सुपा ३०१)। ३ संकोचन समेटन (गा २७०)। ४ प्रत्याख्यान, परित्याग (आव ३७, विसे २६१०, श्रावक ३३३)। ५ श्रावक के बारह व्रतों का अंगीकार (सम्मत्त १५२)। ६ अनशन, आहार परित्याग (उप पृ १७६)। ७ विवाह, लग्न शादी (पउम ४६, २३)। ८ वि रोकनेवाला (पव १२३)।

संवरिअ वि [स[illegible]] १ आनंदित, आराधित, 'एवंमिण संवरन्त [illegible] सम संवरिय होइ' (पण्ह २, १—पत्र १०१)। २ संकोचित (दे ८, १२)। ३ आच्छादित (बृह ३)।

संवलण न [संवलन] मिलन (गउड, नाट—मालती ५७)।

संवलिअ वि [संवलित] १ व्याप्त (गा ७५, सुर ६, ७६, ८, ४३, रुक्मि ६८)। २ युक्त, मिलित, मिश्रित (सुर ३, ७८; धर्मवि १३६), 'सरसा वि दुमा दावाणलेण डज्झंति सुक्खसंवलिया' (वज्जा १४)।

संववहार पु [संव्यवहार] व्यवहार (विसे १८५३)।

संवस अक [सं + वस्] १ साथ मे रहना। २ रहना, वास करना। ३ संभोग करना। संवसइ (कस)। वकृ. संवसमाण (ठा ५, २—३१२, ३१४, गच्छ १, ३)। संकृ संवसित्ता (गच्छ १, २)। हेकृ संवसित्तए (ठा २, १—पत्र ५६)। कृ संवसेयव्व (उप पृ १६)।

संवह सक [सं + वह्] १ वहन करना। २ अक. सज्ज होना, तय्यार होना। वकृ. संवहमाण (सुपा ४६४, णाया १, १३—पत्र १८०)। संकृ. संवहिऊण (सण)।

संवहण न [संवहन] १, ढोना, वहन करना। (राज)। २ वि. वहन करनेवाला (आचा २, ४, २, ३, दस ७, २५)।

संवहणिय वि [सावहनिक] देखो संवाहणिय (उवा)।

संवहिअ वि [संव्यूढ] जो सज्ज हुआ हो वह, तय्यार बना हुआ, 'सामिअ पुरिअपोआ अम्हे सव्वेवि संवहिआ' (सिरि ५६६, सम्मत्त १५७)।

संवाइ वि [संवादिन्] प्रमाणित करनेवाला, सबूत देनेवाला (सुर १२, १७६)।

संवाइय वि [संवादित] १ खबर दिया हुआ, जनाया हुआ (स २६६)। २ प्रमाणित (स ३१५)।

संवाद } पुं [संवाद] १ पूर्वज्ञान को सत्य
संवाय } साबित करनेवाला ज्ञान, सबूत, प्रमाण (धर्मसं १४८, स ३२६, उप ७२८ टी)। २ विवाद, वाक्-कलह, "इय णाओ संवाओ तेसिं पुत्तस्स कारणे गरुओ। त कीरेण भणियं रायसमीवे समागच्छ॥' (सुपा २९०)।

संवाय सक [सं + वादय्] खबर देना, समाचार कहना। संवाएमि, संवाएहि (स २६१, २६६)।

संवायय पु [दे] १ नकुल, न्यौला। २ श्येन पक्षी (दे ८, ४८)।

संवास सक [सं + वासय्] साथ में रहने देना। हेकृ संवासेउं (पंचा १०, ४८ टी)।

संवास पु [संवास] १ सहवास, साथ में निवास (उव २२३, ठा ४, ?—पत्र १६७, ओघ ६७ वृत्ति १७, पत्र ६ १३)। २ मैथुन के लिए स्त्री के साथ निवास (ठा ४, १—पत्र १६३)।

संवासिय (अप) वि [समाश्वासित] जिसको आश्वासन दिया गया हो वह, 'ति वयणेण घणवइ संवासिउ' (भवि)।

संवाह सक [सं + वाहय्] १ वहन करना। २ तय्यारी करना। अंग मर्दन—चप्पी करना। संवाहइ (भवि)। कवकृ. संवाहिज्जंत (सुपा २००, ३४६)।

संवाह पु [संवाह] १ दुर्ग विशेष, जहाँ कृषक-लोग धान्य आदि को रक्षा के लिए ले जाकर रखते हैं (ठा २, ४—पत्र ८६, पण्ह १, ४—पत्र ६८, औप, कस)। २ लग्न, विवाह (सुपा २५५)। ३ गिरिशिखरस्थ ग्राम।

संवाहण न [संवाहन] १ अंग-मर्दन, चप्पी (पण्ह २, ४—पत्र १३१, सुर ४, २४७, गा ४६४)। २ संबाधन, विनाश (गा ४६४)। ३ पुं. एक राजा का नाम (उव)। ४ वि वहन करनेवाला (आचा २, ४, २, १०)।

संवाहणा स्त्री [संवाहना] ऊपर देखो (कप्प, औप)।

संवाहणिय वि [सांवाहनिक] भार-वहन करने के काम में आता वाहन (उवा)।

संवाहय वि [संवाहक] चप्पी करनेवाला (चारु ३६)।

संवाहिअ वि [संवाहित] जिसका अंग-मर्दन—चप्पी किया गया हो वह (कप्प,

संधीर सक [सं + धीरय्] आश्वासन देना, धीरज देना। वकृ. संधीरंत (सुपा ४७६)।

संधीरविय वि [संधीरित] जिसको आश्वासन दिया गया हो वह, आश्वासित (सुर ४, १११)।

संधुक्क अक [प्र + दीप् सं + धुक्ष्] १ जलना, सुलगना। २ सक जलाना। ३ उत्तेजित करना। संधुक्कइ (हे ४, १५२, कुमा)। कर्म संधुक्किज्जइ (वज्जा १३०)।

संधुक्कण न [संधुक्षण] १ सुलगना, जलना। २ प्रज्वालन सुलगाना (भवि)। ३ वि. सुलगानेवाला (स २४१)।

संधुक्किअ वि [संधुक्षित] १ जलाया हुआ, सुलगाया हुआ (सुपा ५०१)। २ जला हुआ, प्रदीप्त, सुलगा हुआ (पाअ, महा, स २७)। ३ उत्तेजित, 'अविवेयपवणसंधुक्किओ पज्ज-लिओ मे मणम्मि कोवाणलो' (स २४१)।

संधुच्छिद (शौ) ऊपर देखो (नाट—मृच्छ २३३)।

संधुम देखो संदुम। संधुमइ (षड्)।

संधे देखो संध=सं+धा। संधेइ, संधेंति, संधेज्जा (आचा १, १, १, ५, पि ५००, सूअ १, ४, १, ५)। वकृ. संधेंत, संधेमाण (पउम ६८, ३१, पचा १४, २७, आचा, पि ५००)।

संन देखो संण (आचा १, ५, ६, ४)।

संनक्खर न [संज्ञाक्षर] अकार आदि अक्षरो की आकृति (णदि १८७)।

संनज्झ देखो संणज्झ। संनज्झइ (भवि)। संकृ. संनज्झिऊण (महा)। हेकृ. संनज्झिउ (स ३७६)।

संनण न [संज्ञान] इशारा करना, संज्ञा करना (उप २६०)।

संनत देखो संनय (पण्ह १, ४—पत्र ७८)।

संनद्ध देखो संणद्ध (औप, विपा १, २ टी—पत्र २३)।

संनय वि [संनत] नमा हुआ, अवनत (औप, वज्जा १५०)।

संनव सक [सं + ज्ञापय्] संभाषण से संतुष्ट करना। संनवेइ (राय १४०)।

संनह देखो संणज्झ। संनहइ (भवि), संनहह (धर्मवि २०)।

संनहण न [संनहन] संनाह (पउम १०, ६४)।

संनहिय देखो संणद्ध (सुपा २२)।

संना देखो संणा (ठा १—पत्र १६, पण्ह १, ३—पत्र ५५, पाअ, सुर ३, ६७, पिंड २४५, उप ७ ??, द ३)।

संनाय वि [संज्ञात] पिछाना हुआ, पहिचाना हुआ, 'संनाया परियणेणं' (महा)। देखो संणाय (पव १५३)।

संनाह देखो संणाह=सं+नाहय्। संनाहेइ (औप, तदु ११)। संकृ. संनाहित्ता (तदु ११)।

संनाह देखो संणाह=संनाह (महा)।

संनाहिय वि [संनाहित] तय्यार किया हुआ, सजाया हुआ (औप)।

संनाहिय देखो संणाहिय (णाया १, १६—पत्र २१७)।

संनि देखो संणि (सम २, ठा २, २—पत्र ५६, जी ४३, कम्म १, ६)।

संनिकास देखो संनिगास (ठा ६—पत्र ४५६, कप्प)।

संनिकिट्ठ वि [संनिकृष्ट] आसन्न, समीप में स्थित (सुख ४, ८)।

संनिक्खित्त वि [संनिक्षिप्त] डाला हुआ, रखा हुआ (कप्प)।

संनिगास वि [संनिकाश] १ समान, तुल्य (भग २, १, णाया १, १—पत्र २५, औप, स ३८१)। २ पु अपवाद (पंचू)। ३ पुन. समीप, पास (पउम ३६, २८)।

संनिगास पु [संनिकर्ष] संयोग, 'संजोग संनिगासो पडुच्च संबंध एगट्ठा' (णदि १२८ टी)।

संनिचय पु [संनिचय] १ निचय, समूह (आचा)। २ संग्रह (आचा १, २, ५, १)।

संनिच्चिय वि [संनिचित] निबिड किया हुआ (पव १५८, जीवस ११६)।

संनिजुज सक [संनि + युज्] अच्छी तरह जोडना। कवकृ. संनिजुज्जंत (पिंड ४५५)।

संनिज्झ न [सांनिध्य] सहायता करने के लिए समीप में आगमन, निकटता (स ३८२)।

संनिनाय पु [संनिनाद] प्रतिध्वनि, प्रतिशब्द (कप्प)।

संनिभ देखो संनिह (णाया १, १—पत्र ४८, उवा, औप १)।

संनिम हिअ वि [संनिमहित] १ व्याप्त, पूर्ण, भरा हुआ। २ पूजित, 'चंपा नाम नयरी पडुरवरभवणसंनिमहिया' (औप, णाया १, १ टी—पत्र ३) 'अत्थि मगहा जणवओ गामसतसंनिमहिओ' (वमु)।

संनिय देखो संणय (सिरि ८६०, भवि)।

संनियत्त वि [संनिवृत्त] रुका हुआ, विरत। °चारि वि [°चारिन्] प्रतिषिद्ध का वर्जन करनेवाला (कप्प)।

संनियास देखो संनिगास (पउम ३३, ११६)।

संनिलयण न [संनिलयन] आश्रय, आधार, 'लोभकलिसकसायमहक्खंधो ... सव्वदुक्खसंनि-लयणं' (पण्ह १, ५—पत्र ६४)।

संनिवइय देखो संणिपडिअ (णाया १, १—पत्र ६५)।

संनिवाइ वि [संनिपातिन्] संयोगी, सम्बन्धी, 'सव्वक्खरसंनिवाइणो' (कप्प, औप, सम्मत्त १४४)।

संनिवाइ वि [संनिवादिन्] संगत बोलने-वाला, न्याजवी कहनेवाला (भग १, १—पत्र ११)।

संनिवाइय वि [सांनिपातिक] संनिपात रोग से सम्बन्ध रखनेवाला (णाया १, १—पत्र ५०, तदु १६, औप ८७)। २ भाव-विशेष, अनेक भावो के संयोग से बना हुआ भाव (अणु ११३, कम्म ४, ६४, ६८)। ३ पु. संनिपात, मेल, संयोग (अणु ११३)।

संनिवाइय वि [संनिपातिक] देखो संनि-वाइ, 'सव्वक्खरसंनिवाइयाए' (औप ५६)।

संनिवाडिय वि [संनिपातित] विध्वस्त किया हुआ (णाया १, १६—पत्र २२३)।

संनिवाय पु [संनिपात] संयोग, सम्बन्ध (कप्प, औप)।

संनिविट्ठ न [संनिविष्ट] १ मोहल्ला, रथ्या (औप)। २ वि. जिसने पडाव डाला हो वह, नगर के बाहर पडाव डालकर पडा हुआ (कस)। ३ संहत और स्थिर आसन से व्यवस्थित—बैठा हुआ (णाया १, ३—पत्र ६१, राय २७)।

सवेल्लिअ वि [सवेष्टित] लपेटा हुआ (गा ६४६)।

सवेह पुं [सवेध] सयोग, 'अन्नन्नवण्णसवेहरमणिज्ज गधव्व' (महा), 'अन्नन्नवन्नसवेहमणहरं मोहण पसूणंपि तग्गीय सोऊण' (धर्मवि ६५)।

सस अक [स्रंस्] खिसकना, गिरना। ससइ (हे ४, १९७, षड्)।

संस सक [शंस्] १ कहना। २ प्रशसा करना। ससइ (चेइय ७३७, भवि) ससति (सिरि १८७)। कृ. ससणिज्ज (पउम ११८, ११४)।

सस वि [साश] अश-युक्त, सावयव (धर्मस ७०९)।

संसइ वि [सशयिन्] सशय-कर्ता, शका-शील (विसे १५५७, सुर १३, ७, सुपा १४७)।

संसइअ वि [सशयित] सशयवाला, सदिग्ध (पाअ, विसे १५५७, सम १०९, सुर १२, १०८)।

ससइअ न [सासयिक] मिथ्यात्व-विशेष (पच ४, २, श्रा ६, सबोध ५२, कम्म ४, ५१)।

ससग्ग पुस्त्री [ससर्ग] संबन्ध, सग, सोहबत (सुपा ३५८, प्रासू ७१, गउड)। स्त्री. °ग्गी (णाया १, १ टी—पत्र १७१, प्रासू ३३, सुपा १७१),

'एएण चिय नेच्छंति
साहवो सज्जणेहिं ससग्गिं।
जम्हा विओगविहुरिय-
हिययस्स, न ओसव अन्न'
(सुर २, २१६)।

ससज्ज अक [स + सञ्ज्] सबन्ध करना, सासर्ग करना। ससज्जति (सम्मत्त २२०)।

संसज्जिम वि [ससक्तिमत्] बीच मे गिरे हुए जीवो से युक्त (पिंड ५३८)।

ससट्ठ वि [ससृष्ट] १ खरण्टित, विलिप्त। २ न. खरण्टित हाथ से दी जाती भिक्षा आदि (औप)। देखो ससिट्ठ।

समण न [शंसन] १ कथन। २ प्रशंसा। ३ आस्वादन, 'सुत्तविहीण पुण सुयमपक्कफलसस्सणसरिच्छं' (उप ६४८ टी, उवकु १६)।

संसणिज्ज देखो संस = शंस्।

संसत्त वि [ससक्त] १ ससर्ग-युक्त, सबद्ध (णाया १, ५—पत्र १११, औप, स ६, उत्त २, १९)। २ श्वापद-जन्तु-विशेष (कप्प)।

ससत्ति स्त्री [ससक्ति] ससर्ग (सम्मत्त १५६)।

संसद्द पु [सशब्द] शब्द, आवाज (सुर २, ११०)।

ससप्पग त्रि [ससर्पक] १ चलने-फिरने-वाला। २ पुं. चीटी आदि प्राणी (आचा १, ८, ८, ९)।

ससप्पिअ न [दे ससर्पित] कूद कर चलना (दे ८, १५)।

ससमण न [सशमन] उपशम, शान्ति (पिंड ४५९)।

ससय पुं [सशय] सदेह, शका (हे १, ३०, भग, कुमा, अभि ११०, महा, भवि)।

ससया स्त्री [ससद्] परिषत्, सभा (उत्त १, ४७)।

ससर सक [स + सृ] परिभ्रमण करना। वकृ ससरत, ससरमाण (प्रवि १, वै ८८, सबोध ११, अच्चु ६७)।

ससरण न [सस्मरण] स्मृति, याद (श्रु ७)।

ससवण न [सश्रवण] श्रवण, सुनना (सुर १ २४२, रंभा)।

ससह सक [स + सह्] सहन करना। ससहइ (धर्मस ६८२)।

संसा स्त्री [शसा] प्रशंसा, श्लाघा (पव ७३ टी, भग)।

ससाअ वि [दे] १ आरूढ। २ चूर्णित। ३ पीत। ४ उद्विग्न (षड्)।

ससार पु [ससार] १ नरक आदि गति में परिभ्रमण, एक जन्म से जन्मान्तर में गमन (आचा, ठा ४, १—पत्र १९८, ४, २—पत्र २१९, दसनि ४, ४९, उत्त २६, १, उव, गउड, जी ४४)। २ जगत्, विश्व (उव, कुमा, गउड, पउम १०३, १४१)। °वत वि [°वत्] ससारवाला, ससार-स्थित जीव, प्राणी (पउम २, ६२)।

ससारि, संमारिण वि [समारिन्] नरक आदि योनि में परिभ्रमण करनेवाला जीव (जी २), 'ससारिणस्स जं पुण जीवस्स सुह तु फरिसमादीण' (पउम १०२, १७४)।

संसारिय वि [समारिक] ऊपर देखो (स ४०२, उव)।

ससारिय वि [संसारिक] ससार से सबन्ध रखनेवाला (पउम १०६, ४३, उप १४२ टी, स १७६, सिक्खा ७१, सण, काल)।

संसारिय वि [संसारित] एक स्थान से दूसरे स्थान मे स्थापित, ससारियासु वलयबाहासु' (णाया १, ८—पत्र १३३)।

ससाहण स्त्रीन [दे] अनुगमन (दे ८, १६; दसनि ३८८)। स्त्री °णा (वव १)।

ससाहण न [सकथन] कथन (सुपा ४१५)।

ससाहिय वि [संसाधित] सिद्ध किया हुआ (सुपा ३९७)।

ससि वि [शसिन्] कहनेवाला (गउड)।

ससिअ वि [शसित] १ श्लाघित (सुर १३, ६८)। २ कथित (उप पृ १६१)।

संसिअ वि [सश्रित] आश्रित (विपा १, ३—पत्र ३८, पण्ह १, ४—पत्र ७२, औप ४८, अणु १५१)।

ससिच सक [स + सिच्] १ पूरना, भरना। २ वढाना। ३ सिंचन करना। कवकृ. संसिच्चमाण (आचा, पि ५४२)। सकृ. संसिचियाणं (आचा १, २, ३, ४)।

ससिज्झ अक [स + सिध्] अच्छी तरह सिद्ध होना। ससिज्झति (स ७६७)।

ससिट्ठ देखो ससट्ठ (भग)। °कप्पिअ वि [°कल्पिक] खरण्टित हाथ अथवा भाजन से दी जाती भिक्षा को ही ग्रहण करने के नियमवाला मुनि (पण्ह २, १—पत्र १००)।

संसित्त वि [ससिक्त] सीचा हुआ (सुर ४, १४, महा, हे ४, ३९५)।

ससिद्धिअ वि [सांसिद्धिक] स्वभाव-सिद्ध (हे १, ७०)।

ससिलेस देखो संसेस (राज)।

संसिलेसिय देखो—ससेसिय (राज)।

ससीव सक [स + सिव्] सीना, सिलाई करना। ससीविज्जा (आचा २, ५, १, १)।

संपणुण्ण वि [सम्प्रनुन्न] प्रेरित, उत्तेजित, 'अक्खडचडानिलसंपणुण्णविलोलजालासयस-कुलम्मि' (उप ४५)।

संपणुल्ल } सक [सम्प्र + नुद्] प्रेरणा
संपणोल्ल } करना। संकृ. संपणुल्लिया, संपणोल्लिया (दस ५, १, ३०)।

संपण्ण देखो संपन्न (णाया १, १—पत्र ६, हेका ३३१, नाट—मृच्छ ६)।

संपण्णा स्त्री [दे] घेवर या घीवर (मिष्टान्न-विशेष) बनाने का आटा, गेहूँ का वह आटा जिसका घृतपूर बनता है (दे ८, ८)।

संपत्त वि [सम्प्राप्त] १ सम्यक् प्राप्त (णाया १, १, उवा, विपा १, १, महा, जी ५०)। २ समागत, आया हुआ (सुपा ४१६)।

संपत्त पुन [सपात्र] सुन्दर पात्र, सुपात्र (सुपा ४१६)।

संपत्ति स्त्री [संपत्ति] १ समृद्धि, वैभव, संपदा (पाअ, प्रासू ६६, १२८)। २ समिद्धि। ३ पूर्त्ति, 'तव दोहलस्स संपत्ती भविस्सइ' (विपा १, २—पत्र २७)।

संपत्ति स्त्री [सम्प्राप्ति] लाभ, प्राप्ति (चेइय ८६४, सुपा २१०)।

संपत्तिआ स्त्री [दे] १ बाला, कुमारी, लड़की (दे ८, १८, वज्जा ११६)। पिप्पली-पत्र, पीपल की पत्ती (दे ८, १८)।

संपत्थिअ न [दे] शीघ्र, जलदी (दे ८, ११)।

संपत्थिय } वि [सम्प्रस्थित] १ जिसने
संपत्थित } प्रयाण किया हो वह, प्रयात, प्रस्थित (श्रत २१, उप ६६६, सुपा १०७, ६५१, णाया १, २—पत्र ३२)। उपस्थित, 'गहियाउहेहि जइवि हु रक्खिज्जइ पंजरोवरुद्धो (? रुद्धो)वि। तहवि हु मरइ निरुत्त पुरिसो संपत्थिए काले ॥"

(पउम ११, ६१)।

संपद अ [साम्प्रतम्] १ युक्त, उचित (प्राकृ १२)। २ अधुना, अब (अभि ५६)।

संपदत्त वि [सम्प्रदत्त] दिया हुआ, अर्पित (महा, प्राप)।

संपदाण देखो संपयाण (णाया १, ८—पत्र १५०, आचा २, १५, ५)।

संपदाय पु [सम्प्रदाय] गुरु परंपरागत उपदेश, आम्नाय (संबोध ५३, धर्मसं १२३७)।

संपदावण न [सम्प्रदापन, सम्प्रदान] कारक-विशेष, 'ततिआ करणम्मि कता चउत्थी संपदावणे' (ठा ८—पत्र ४२७)।

संपदि देखो संपइ = सम्प्रति (प्राकृ १२)।

संपदि देखो संपत्ति = संपत्ति (संक्षि ६, पि २०४)।

संपधार देखो संपहार = संप्र + धारय्। संपधारेदि (शौ) (नाट—मृच्छ २२६)। कर्म संपधारीअदु (शौ) (पि ५४३)।

संपधारणा स्त्री [सम्प्रधारणा] व्यवहार-विशेष, धारणा व्यवहार (वव १०)।

संपधारिय वि [सम्प्रधारित] निश्चित, निर्णीत (सण)।

संपधूमिय वि [सम्प्रधूमित] धूप-वासित, धूप दिया हुआ (कस, कप्प, आचा २, २, १, १)।

संपन्न वि [संपन्न] १ संपत्ति-युक्त (भग, महा, कप्प)। २ संसिद्ध (विपा १, २—पत्र २६)।

संपप्प देखो संपाव।

संपबुज्झ अक [सम्प्र + बुध्] सत्य ज्ञान को प्राप्त करना। संपबुज्झति (पंचा ७, २३)।

संपमज्ज सक [सम्प्र + मृज्] मार्जन करना, झाड़ना, साफ-सूफ करना। संपमज्जेइ (औप ४४)। संकृ. संपमज्जेत्ता, संपमज्जिय (औप, आचा २, १, ४, ५)।

संपमार सक [सम्प्र + मारय्] मूर्च्छित करना। संपमारए (आचा १, १, २, ३)।

संपय वि [साम्प्रत] विद्यमान, वर्तमान, 'पाएण संपए चिय कालम्मि न याइदीहका-लएणं' (विसे ५१६)।

संपय देखो संपद (पाअ, महा, सुपा ५६८)।

संपयट्ट अक [सम्प्र + वृत्] सम्यक् प्रवृत्ति करना। संपयट्टेज्जा (धर्मसं ६३१)। वकृ संपयट्टंत (पंचा ८, १४)।

संपयट्ट वि [सम्प्रवृत्त] सम्यक् प्रवृत्त (सुर ४, ७६)।

संपया स्त्री [संपद्] १ समृद्धि, संपत्ति, लक्ष्मी, विभव (उवा, कुमा, सुर ३, ६८, महा, प्रासू ६६)। २ वाक्यों का विश्राम-स्थान (पव १)। ३ प्राप्ति, 'बाहोलामो जिणधम्मसंपया' (चेइय ६३१, पव ६२)। ६२)। ४ एक वणिक्-स्त्री का नाम (उप ५६७ टी)।

संपयाण न [सम्प्रदान] १ सम्यक् प्रदान, अच्छी तरह देना, समर्पण (आचा २, १५, ५, गा ६८, सुपा २६८)। २ कारक-विशेष, चतुर्थी-कारक, जिसको दान दिया जाय वह (विसे २०६६)।

संपयावण देखो संपदावण, 'चउत्थी संपयावणे' (अणु १३३)।

संपराइग } वि [सांपरायिक] संपराय-
संपराइय } सम्बन्धी, संपराय से उत्पन्न (ठा २, १—पत्र ३६, सूअ १, ८, ८, भग, श्रावक २२६)।

संपराय पु [संपराय] १ संसार, जगत् (सूअ १, ५, २, २३, दस २, ५)। २ क्रोध आदि कषाय (ठा २, १—पत्र ३६)। ३ बादर कषाय, स्थूल कषाय (सूअ १, ८, ८)। ४ कषाय का उदय (औप)। ५ युद्ध, संग्राम, लड़ाई (णाया १, ६—पत्र १५७, कुप्र ४००, विक्र ८८, दस २, ५)।

संपरिकित्ति पुं [संपरिकीर्त्ति] राक्षस वंश का एक राजा, एक लंका-पति (पउम ५, २६०)।

संपरिक्ख सक [संपरि + ईक्ष्] सम्यक् परीक्षा करना। संकृ संपरिक्खाए (संबोध २१)।

संपरिक्खित्त } वि [संपरिक्षिप्त] वेष्टित
संपरिखित्त } (भग, पउम, ३, २२, णाया १, १ टी—पत्र ४)।

संपरिफुड वि [संपरिस्फुट] सुस्पष्ट, अति व्यक्त (पउम ७८, १६)।

संपरिवुड वि [संपरिवृत] १ सम्यक् परि-वृत, परिवार-युक्त (विपा १, १—पत्र १, उवा, औप)। २ वेष्टित (सूअ २, २, ५५)।

संपरी सक [संपरी + इ] पर्यटन करना, भ्रमण करना। संपरीइ (विसे १२७७)।

संपल (अप) अक [सं + पत्] आ गिरना। संपलइ (पिंग)।

संपलग्ग वि [सम्प्रलग्न] १ संयुक्त, मिला हुआ। २ जो लड़ाई के लिए भिड गया हो वह (णाया १, १८—पत्र २३६)।

सक्कणो (शौ) देखो सक्कुण। सक्कणोमि (अभि ६२ पि १४०), सक्कणोदि (नाट—रत्ना १०२)।

सक्कय देखो स-क्कय = सत्कृत।

सक्कय वि [संस्कृत] १ संस्कार युक्त (पिंड १६१)। २ स्त्रीन संस्कृत भाषा (कुमा, हे १, २८, २, ४), 'परमेट्ठिनमोक्कार सक्कइ (?य)भासाए भणइ थुइममए' (चेइय ४६८)। स्त्री. °या, 'सक्कया पायया चेव भणिईओ होंति दोण्णि वा' (अणु १३१)।

सक्कर न [शर्कर] खण्ड टुकडा (उव)।

सक्कर° देखो सक्करा। °पुढवी स्त्री [°पृथिवी] दूसरी नरक-भूमि (पउम ११८, ७)। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] वही अर्थ (ठा ७—पत्र ३८८, इक)।

सक्करा स्त्री [शर्करा] १ चीनी, पक्की खांड (णाया १, १७—पत्र २२६, सुपा ८४, सुर १, १४)। २ उपलखण्ड, पत्थर का टुकडा, कंकड (सूअ २ ३, ३६ अणु)। ३ वालु, रेती (महा)। °भ न [°भ] १ गोत्र-विशेष जो गोतम गोत्र की एक शाखा है। २ पुंस्त्री उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०)। °भा स्त्री [°भा] दूसरी नरक-पृथिवी (उत्त ३६, १५७)।

सक्कार पुं [सत्कार] समान, आदर, पूजा (भग, स्वप्न ८६, भवि हे ४, २६०)।

सक्कार पु [संस्कार] १ गुणान्तर का आधान। २ स्मृति का कारण-भूत एक गुण। ३ वेग। ४ शास्त्राभ्यास से उत्पन्न होती व्युत्पत्ति। ५ गुण-विशेष स्थिति-स्थापक। ६ व्याकरण के अनुसार शब्द-सिद्धि का प्रकार। ७ गर्भाधान आदि समय की जाती धार्मिक क्रिया। ८ पाक, पकाना (हे १, २८, २, ४, प्राकृ २१)।

सक्कार सक [सत्कारय्] सत्कार करना, सम्मान करना। सक्कारेइ, सक्कारिति, सक्कारेमो (उवा, कप्प भग)। संकृ सक्कारित्ता (भग, कप्प)। कृ सक्कारणिज्ज (णाया १, १टी—पत्र , उवा)।

सक्कारण न [सत्कारण] सत्कार, सम्मान (पव १०, १७)।

सक्कारि वि [सत्कारिन्] सत्कार करनेवाला, सम्मानकर्ता (गउड)।

सक्कारिय वि [सत्कारित] सम्मानित (सुख २, १३, महा)।

सक्कारिय वि [संस्कारित] संस्कार-युक्त किया हुआ (धर्मसं ८८३)।

सक्काल देखो सक्कार = संस्कार (हे १, २५४)।

सक्किअ देखो सक्क = शाक्य, 'अहं खु दाव कत्तव्वकरत्थीकिदसकेदो विअ सक्किअसमणओ णिद्दं ण लभामि' (चारु ५६)।

सक्किअ देखो सक्क = शक्।

सक्किअ वि [शक्तिन] जो समर्थ हुआ हो वह (श्रा २८, कुप्र ३)।

सक्किअ वि [स्वकीय] निज का, आत्मीय, 'सि (? स)क्कियमुवहिं च तहा पडिलेहंतो न वेमि सया' (कुलक ७, ६)।

सक्किअ देखो स-क्किअ = सत्कृत।

सक्किरिआ स्त्री [सत्क्रिया] सत्कार, सत्कृति (प्राकृ ३३)।

सक्कुण देखो सक्कुण। सक्कुणदि (शौ) (प्राकृ ६४), सक्कुणोमि (स २४, मोह ७)।

सक्कुलि स्त्री [शष्कुलि] १ कर्ण-विवर कान का छिद्र (णाया १, ८—पत्र १३३)। २ तिलपापडी, एक तरह का खाद्य पदार्थ (पण्ह २, ५—पत्र १४८, दस ५, १, ७१, कस, विसे २६६)। °कण्ण पुं [°कर्ण] एक अन्तर्द्वीप। १ उसमें रहनेवाली मनुष्य-जाति (इक)।

सक्ख° देखो सक्क = शक्।

सक्ख न [सख्य] मैत्री, दोस्ती (उत्त १४, २७)।

सक्ख न [साक्ष्य] साक्षिपन, गवाही (सुपा २७६, सबोध १७)।

सक्ख अ [साक्षात्] प्रत्यक्ष, आँखों के सामने, प्रकट (हे १, २४, पि ११४)।

सक्खय देखो सक्कय = संस्कृत (ज २ टी—पत्र १०४)।

सक्खर देखो स-क्खर = साक्षर।

सक्खा देखो सक्खं (पचा ६, ४०, सुर ५, २२१, १२, ८६, पि ११४)।

सक्खि वि [साक्षिन्] साक्षी साखी, गवाह (पण्ह १, २—पत्र २६, धर्मसं १२००, कप्पू, श्रा १४, स्वप्न १३१)।

सक्खिअ देखो सक्ख = सख्य, 'कादबरी-सक्खिअं अम्हाण पढमसोहिद इच्छीअदि' (अभि १८८)।

सक्खिज्ज न [साक्षित्व] गवाही, साख (श्रावक २६०)।

सक्खिण देखो सक्खि (हे २, १७४, षड्, सुर ६, ४४)।

सग [स्वक] देखो स = स्व (भग, पण्ण २१—पत्र ६२८, पउम ८२, ११७, उत्त २०, २६, २७, सबोध ५०, चेइय ५६१)।

सग देखो सत्त = सप्तन् (रयण ७२, उर ५, ३, २, २३)। °वण्ण, °वन्न स्त्रीन [°पञ्चाशत्] सत्तावन, पचास और सात (कम्म ६, ६०; श्रु १११, कम्म २ २०)। °वीस स्त्रीन [विंशति] सताईस (श्रा २८, रयण ७२, सबोध २६)। °सयरि स्त्री [°सप्तति] सतहत्तर (कम्म २, ६)। °सीइ स्त्री [°शीति] सतासी (कम्म २, १६)।

सग देखो सत्तम (कम्म ४, ७६)।

सग पुं [शक] १ एक अनार्य देश, अफगानिस्तान के उत्तर का एक म्लेच्छ देश (सूअनि ६६, पउम ६८, ६४; इक)। २ उस देश का निवासी (काल)। ३ एक सुप्रसिद्ध राजा जिसका शक-सवत् चलता है (विचार ४६५, ५१३)। °कूल न [°कूल] एक म्लेच्छ-देश का किनारा (काल)।

सग° स्त्री [स्रज्] माला, 'सगचंदणविस-सत्थाइजोगओ तस्स अह य दीसति' (श्रावक १८६)।

सगड न [शकट] १ गाडी (उवा, आचा २, ३, १६)। २ पुं एक सार्थवाह-पुत्र (विपा १, १—पत्र ४, १, ४—पत्र ५५)। °भद्दिआ स्त्री [°भद्रिका] जैनेतर ग्रन्थ-विशेष (णंदि १६४, अणु ३)। °मुह न [°मुख] पुरिमताल नगर का एक प्राचीन उद्यान (कप्प)। °वूह पुं [°व्यूह] कला-विशेष, गाडी के आकार से सैन्य की रचना (औप)। देखो सअढ।

सपायणा स्त्री [सपादना] ऊपर देखो (पंचा १३, १७)।

संपाल सक [स + पालय्] पालन करना। सपालइ (भवि)।

सपाव सक [सप्र + आप्] प्राप्त करना। सपावेइ (भवि)। संकृ. सपप्प (संवेग १२)। हेकृ. सपाविउं° (मम १, भग, सौप)।

सपाव सक [सप्र + आपय्] प्राप्त करवाना। सपावेइ (उवा)।

सपावण न [सप्रापण] प्राप्ति, लाभ (णाया १, १८—पत्र २४१, सुर ४, ५७)।

सपाविअ वि [सप्राप्त] प्राप्त, लब्ध (सुर २, २२६, सुपा १६५, सण)।

सपाविअ वि [सप्रापित] नीत जो ले जाया गया हो वह (राज)।

सपासग वि [दे] दीर्घ, लम्बा (दे ८, ११)।

सपिडग न [सपिण्डन] १ द्रव्यो का परस्पर सयोजन (पिंड ?)। २ समूह (ओघ ४०७)।

संपिंडिअ वि [सपिण्डित] पिण्डाकार किया हुआ, एकत्र किया हुआ (औपृ. जी ४७, सण)।

सपिक्ख देखो सपेह = सप्र + ईक्ष्। सपिक्खई (दसचू २, १२)।

संपिट्ठ वि [सपिष्ट] पिसा हुआ (सूअ १, ४, ८)।

सपिणद्ध वि [सपिनद्ध] नियन्त्रित, 'रज्जु-पिणिद्धो व इंदकेतू विसुद्धणेगगुणसपिणद्धे' (पण्ह २ ४—पत्र १३०)।

सपिहा सक [समपि + धा] आच्छादन करना, ढकना। सकृ सपिहित्ताण (पि ५८३)।

सपीड पु [सपीड] सपीडन, दबाना (गउड)। देखो सपील।

सवीडिअ वि [सपीडित] दबाया हुआ (गउड १४४)।

सपीणिअ वि [सप्रीणित] खुश किया हुआ (सण)।

सपील पु [सपीड] सघात, समूह (उत्त ३२, २६)।

सपीला स्त्री [सपीडा] पीडा, दुःखानुभव (उत्त ३२, ३६, ५२, ६५, ७८)।

सपुच्छ सक [स + प्रच्छ्] पूछना, प्रश्न करना। सपुच्छदि (शौ) (नाट—विक्र २१)।

सपुच्छण स्त्रीन [सप्रच्छन, सप्रश्न] प्रश्न, पृच्छा (सूअ १, ६, २१, सुपा २१)। स्त्री °णी (दस ३, ३)।

सपुच्छणी स्त्री [सपुञ्छनी] झाडू, समार्जनी (राय २१)।

संपुज्ज वि [सपूज्य] समाननीय, आदरणीय (पउम ३३, ४७)।

सपुड पु [सपुट] १ जुडे हुए दो समान अश वाली वस्तु, दो समान अशो का एक दूसरे से जुडना, 'कवाडसपुडघणम्मि' (वण ३), दलसपुडे' (कप्पू, महा, भवि, से ७, ५६)। २ सचय, समूह (सूअ १, ५, १, २३)। °फलग पु [°फलक] दोनो तरफ जिल्द बँधी पुस्तक, हिसाब की वही के समान किताब (पव ८०)।

संपुड सक [सपुटय्] जोडना, दोनो हिस्सो को मिलाना। सपुडइ (भवि)।

सपुडिअ वि [सपुटित] जुडा हुआ (णाया १, १—पत्र ६३)।

सपुण्ण वि [सपूर्ण] १ पूर्ण, पूरा (उवा, महा)। २ न. दश दिनो का लगातार उपवास (सवोध ५८)।

सपूअ सक [स + पूजय्] सम्मान करना, अभ्यर्चना करना। सकृ सपूइऊण (पचा ८, ७)।

सपूजिय वि [सपूजित] अभ्यर्चित (महा)।

सपूयण न [सपूजन] पूजन, अभ्यर्चन (सूअ १, १०, ७, धर्मस ६३४)।

सपूरिय वि [सपूरित] पूर्ण किया हुआ, 'सपूरियदोहला' (महा, सण)।

सपेल्ल पुं [सपीड] दबाव (पउम ८, २७२)।

सपेस सक [सप्र + इष्] भेजना। सपेसइ (महा, भवि)।

सपेस पु [सप्रेष] प्रेषण, भेजना (णाया १, ८—पत्र १४७)।

सपेसण न [सप्रेषण] ऊपर देखो (णाया १, ८—पत्र १४६, स ३७६, गउड, भवि)।

सपेसिय वि [सप्रेषित] भेजा हुआ (सुर १६, ११५)।

सपेह सक [सप्र + ईक्ष्] देखना, निरीक्षण करना। सपेहइ, सपेहेइ (दसचू २, १२, पि ३२३, भग, उवा, कप्प)। सकृ. सपेहाए, सपेहित्ता (आचा १, २, ४, ४, १, ५, ३, २, सूअ २, २, १, भग)।

सपेहा स्त्री [सप्रेक्षा] पर्यालोचन (आचा १, २, २, ६)।

सफ न [दे] कुमुद, चन्द्र-कमल (दे ८, १)।

सफाल सक [स + पाटय्] फाडना, चीरना। सफालइ (भवि)।

सफाली स्त्री [दे] पक्ति श्रेणि (दे ८, ५)।

संफास सक [स + स्पृश्] स्पर्श करना, छूना, 'माइट्ठाण सफासे' (आचा २, १, ३, ३, २, १, ५, ५, २, १, ६ २, ४, ५)।

सफास पु [सस्पर्श] स्पर्श (आचा, उप ६४८ टी, पव २ टी, हे १, ४३, षड्)।

सफासण न [संस्पर्शन] ऊपर देखो, 'आणावीरियसफासणभावतो' (पंचा १०, २८)।

सफिट्ट पुं [दे] सयोग, मेलन (आ १६)।

संफुल्ल वि [सफुल्ल] विकसित (प्राकृ १४)।

सफुसिय वि [संमृष्ट] प्रमार्जित, 'दसणकर-नियरसफुसियदिसिमुहमला' (सुपा २६३)।

सब्ब पु [शाम्ब] १ श्रीकृष्ण वासुदेव का एक पुत्र (णाया १, ५—पत्र १००, अत १४)। २ राजा कुमारपाल के समय का एक सेठ (कुप्र १४३)।

सब पुन [शम्ब] वज्र, इन्द्र का आयुध (सुर १६, ५०)।

सबंध सक [स + बन्ध्] १ जोडना। २ नाता करना। कर्म सबज्झइ (चेइय ७२७)।

सबध पुं [सबन्ध] १ ससर्ग, सग (भवि)। २ सयोग (कम्म १, ३५)। ३ नाता, सगाई, रिश्तेदारी (स्वप्न ४३)। ४ योजना, मेल (वव ५)।

संबधि वि [सबन्धिन्] सम्बन्ध रखनेवाला (उवा, सम्म ११७, स ५३६)।

सब्बर पु [शाम्बर] मृग-विशेष, हरिण की एक जाति (पण्ह १, १—पत्र ७, दे ८, ६, कुप्र ४२६)।

पत्नी, सत्यभामा (कुप्र २५८)। ३ इन्द्राणी (चउप्पन्न० ऋषभ-चरित)। °मोस वि [मृषा] मिश्र-भाषा, सत्य से मिला हुआ झूठ वचन, सच्चामोसाणि भासइ (सम ५०)।

सच्चित्त देखो स-चित्त = स-चित्त।

सच्चिल्लय वि [दे. सत्य] सच्चा, यथार्थ (दे ८, १४)।

सच्चीसय पुं [दे सच्चीसक] वाद्य-विशेष (पउम १०२ १२२)। देखो बद्धीसक।

सच्चेविअ वि [दे] रचित, निर्मित (दे ८, १८)।

सच्छ वि [स्वच्छ] अति निर्मल (सुपा ३०)।

सच्छंद वि [स्वच्छन्द] १ स्वाधीन, स्व-वश (उप ३३६ टी, सुर १४ ८५)। २ न स्वेच्छानुसार (णाया १ ८—पत्र १५२, औप, अभि ४६ प्रासू १७)। °गामि वि [°गामिन्] इच्छानुसार गमन करनेवाला, स्वैरी। स्त्री. °णी (सुपा २३५)। °चारि, °यारि वि [°चारिन्] स्वच्छन्दी, इच्छानुसार विहरण करनेवाला, स्वैरी। स्त्री °णी (स ३६, श्रा १६ गच्छ १, १०)।

सच्छर सक [दृश्] देखना (संक्षि ३६)।

सच्छह वि [दे सच्छाय] सदृश, समान, तुल्य (दे ८, ६, गा ७, ४५, ३०८, ५३३, ५८०, ६८१ ७२१, सुर ३, २४६, धर्मवि ५७)।

सच्छाय वि [सच्छाय] १ समान छायावाला तुल्य (गउड, कुप्र २३)। २ अच्छी कान्तिवाला (कुमा)। ३ सुन्दर छायावाला। ४ कान्ति-युक्त। ५ छाया युक्त (हे १, २४६)।

सच्छाह वि [सच्छाय] जिसकी छाँही सुन्दर हो वह। २ छाँही वाला। ३ समान छायावाला, तुल्य, सदृश (हे १, २४६)।

सच्छत्ता स्त्री [सच्छत्रा] वनस्पति-विशेष (सुम्र २, ३, १६)।

सज्जण देखो स-जण = स्व-जन।

सजिय देखो सज्जीव (सुर १२, २१०)।

सजुत्त देखो संजुत (पिंग)।

सजोइ देखो स-जोइ = स-ज्योतिष्।

सजोगि वि [स-योगिन्] १ मन आदि का व्यापारवाला। २ पुन तेरहवाँ गुण-स्थानक (पि ४११, सम २६, कम्म २, २, २०)।

सजोणिय देखो स-जोणिय = स-योनिक।

सज्ज अक [सञ्ज्] १ आसक्ति करना। २ सक. आलिंगन करना। सज्जइ (उत्त २५, २०), सज्जह (णाया १, ८—पत्र १४८)। वकृ. सज्जमाण (सूअ १, ७, २७, दसचू २, १०, उत्त १४, ६, उवर १२)। कृ. सज्जियव्व (पण्ह २, ५—पत्र १४६)।

सज्ज अक [सस्ज्] १ तय्यार होना। २ सक तय्यार करना, सजाना। सज्जेइ, सज्जेंति (कुमा, णाया १, ८—पत्र १३२)। कर्म. सज्जीअति (कप्पू)। कवकृ. सज्जिज्जत (कप्पू)। सकृ. सज्जिऊण, सज्जेउं (स ६४, महा)। कृ सज्जियव्व, सज्जेयव्व (सत्त ४०, स ७०)। प्रयो, सकृ. सज्जावेऊण (महा)।

सज्ज पु [सर्ज] वृक्ष-विशेष (णाया १, १—पत्र २५, विसे २६८२ स ११९, कुमा)।

सज्ज पुं [षड्ज] स्वर विशेष (कुमा)।

सज्ज वि [सज्ज] तय्यार, प्रगुण (णाया १, ८—पत्र १४६, सुपा १२२, १६७, हेका ४६, पिंग)।

सज्ज } अ [सद्यस्] तुरन्त, जल्दी शीघ्र,
सज्जं } 'सज्जघायए ने कम्मणजोगं पउंजामि' (स १०८, सुख ८, १३, गा ५६७ अ, कस)।

सज्जंभव पु [शय्यम्भव] एक प्रसिद्ध जैन महर्षि (सार्ध १२)।

सज्जण देखो स-ज्जण = सज्जन।

सज्जा देखो सेज्जा (राज)।

सज्जिअ वि [सज्जित] सजाया हुआ, तय्यार किया हुआ (औप, कुमा, महा)।

सज्जिअ वि [सर्जित] बनाया हुआ (द १, १३८)।

सज्जिअ पुं [दे] १ नापित, नाई। २ रजक, धोबी। ३ वि पुरस्कृत, आगे किया हुआ। ४ दीर्घ, लम्बा (दे ८, ४७)।

सज्जिआ स्त्री [सर्जिका] क्षार-विशेष, साजी खार, 'वत्थं सज्जियाखारेण अणुलिंपति' (णाया १, ५—पत्र १०६)।

सज्जीअ } देखो स-ज्जीअ = स-जीव।
सज्जीव }

सज्जीहव अक [सज्जी + भू] सज्ज होना, तय्यार होना। सज्जीहवेइ (श्रा १४)।

सज्जो देखो सज्ज = सद्यस (सुपा ३६७)।

सज्जोक्क वि [दे] प्रत्यग्र, नूतन, ताजा (दे ८, ३)।

सज्झ वि [साध्य] १ साधनीय, सिद्ध करने योग्य। २ वश मे करने योग्य, 'बलिओ हु इमो सत्तू ताव य सज्झो न पुरिसगारस्स' (सुर ८, २६ सा २४)। ३ तर्कशास्त्र-प्रसिद्ध अनुमेय पदार्थ, जैसे धूम से ज्ञातव्य वह्नि (पंचा १४, ३५)। ४ पुं साध्यवाला, पक्ष (विसे १०७७)। ५ देवगण-विशेष। ६ योग-विशेष। ७ मन्त्र-विशेष (हे २, २६)।

सज्झ पु [सह्य] १ पर्वत-विशेष (स ६७६)। २ त्रि. सहन-योग्य (हे २, २६, १२४)।

सज्झंतिय पु [दे] ब्रह्मचारी (राज)।

सज्झंतिया स्त्री [दे] भगिनी, बहिन (राज)।

सज्झंतेवासि पु [स्वाध्यायान्तेवासिन्] विद्या-शिष्य (सुख २. १५)।

सज्झमाण वि [साध्यमान] जिसकी साधना की जाती हो वह (स्यण ४०)।

सज्झव सक [दे] ठीक करना, तन्दुरुस्त करना। सज्झवेहि, सज्झवेमि (सुख २, १५)।

सज्झस न [साध्वस] भय, डर (हे २, २६, कुमा)।

सज्झाइय वि [स्वाध्यायिक] १ जिसमे पठन आदि स्वाध्याय हो सके ऐसा शास्त्रोक्त देश, काल आदि (ठा १०—पत्र ४७५)। २ न स्वाध्याय, शास्त्र-पठन आदि (पव २६८, णंदि २०७ टी)।

सज्झाय पुं [स्वाध्याय] शोभन अध्ययन, शास्त्र का पठन, आवर्तन आदि (औप, हे २, २६, कुमा, नव २६)।

सज्झाराय वि [सह्यराज] सह्याचल के राजा से सम्बन्ध रखनेवाला, सह्याद्रि के राजा का (पउम ५५, १७)।

सज्झिलग पु [दे] भ्राता, भाई (उप २७५, ३७७, पिंड ३२४)।

सज्झिलगा स्त्री [दे] भगिनी, बहिन (पिंड ३१६, उप २०७)।

सज्झिल्लग देखो सज्झिलग (राज)।

(पि ४७५, काल, भवि)। वकृ संभवंत (सुपा ५६)। कृ. संभव्व (श्रा १२, सुग्रनि ६५)।

संभव पु [संभव] १ उत्पत्ति (महा, उव, हे ४, ३६५)। २ संभावना (भवि)। ३ वर्तमान अवसर्पिणी काल में उत्पन्न तीसरे जिनदेव का नाम (सम ४३, पडि)। ४ एक जैन मुनि जो दूसरे वासुदेव के पूर्व-जन्म के गुरु थे (पउम २०, १७६)। ५ कला-विशेष (औप)।

संभव पु [दे] प्रसव-जरा, प्रसूति से होने-वाला बुढापा (दे ८, ४)।

संभव (अप) देखो संभम = संभ्रम (भवि)।

संभवि वि [संभविन्] जिसका सम्भव हो वह (पच ५, २५, भास ३५)।

संभविय देखो संभूअ (चेइय ५५६)।

संभव्व देखो संभव = सं + भू।

संभाणय न [संभाणक] गुजरात का एक प्राचीन नगर (राज)।

संभार सक [सं + भारय्] मसाला से संस्कृत करना, वासित करना। संभारेइ, संभा-रेंति, संभारेह (णाया १, १२—पत्र १७५, १७६)। संकृ संभारिय (पिंड १६३)। कृ. संभारणिज्ज (णाया १, १२)।

संभार पुं [संभार] १ समूह, जत्था, 'उत्तुग-थंभसंभारभासमाणए करावए राया' (उप ६४८ टी, श्रावक १३०)। २ मसाला, शाक आदि में ऊपर डाला जाता मसाला (णाया १, १६—पत्र १९६)। ३ परिग्रह, द्रव्य-संचय (पराह १, ५—पत्र ९२)। ४ अवश्यतया कर्म का वेदन (सूम २, ७, ११)।

संभारिअ वि [संस्मृत] याद किया हुआ (से १४, ६५)।

संभारिअ वि [संस्मारित] याद कराया हुआ (णाया १, १—पत्र ७१, सुर १४, २३५)।

संभाल सक [सं + भालय्] संभालना। संभालइ (भवि)।

संभाल पु [संभाल] खोज, अन्वेषण, 'उदिए सूरम्मि जा न जणणीए पायपणामनिमित्तं समागओ ताव संभालो जाओ तस्स, न कत्थवि जाव ण्उत्ती कहचि उवलद्धा' (उप २२० टी)।

संभालिय वि [संभालित] संभाला हुआ (सण)।

संभाव सक [सं + भावय्] १ संभावना करना। २ प्रसन्न नजर से देखना, 'न संभावसि अवरोह' (मोह ६), संभावेमि (संवेग ४), सम्भावेहि मोह २९)। कर्म संभावीअदि (शौ) (नाट—मृच्छ २०)। वकृ. संभावअंत (नाट—शकु १३४)। संकृ. संभाविअ (नाट—शकु ६७)। कृ संभावणिज्ज, संभावणीअ (उप ७६८ टी, स ६१, श्रा २३)।

संभाव अक [लुभ्] लोभ करना, आसक्ति करना। संभावइ (हे ४, १५३, षड्)।

संभावणा स्त्री [संभावना] संभ्रम (से ८,१९, गउड)।

संभावि वि [संभाविन्] जिसका संभव हो वह (श्रा १४)।

संभाविअ वि [संभावित] जिसकी संभावना की गई हो वह (नाट—विक्र ३४)।

संभास सक [सं + भाष्] बातचीत करना, आलाप करना। कृ. संभासणीय (सुपा ११५)।

संभास पुं [संभाष] संभाषण, वार्तालाप (उप पृ ११२, संबोध २१ सण, काल, सुपा ११५, ५४२)।

संभासण न [संभाषण] ऊपर देखो (भवि)।

संभासा स्त्री [संभाषा] संभाषण, बातचीत (औप)।

संभासि वि [संभाष] संभाषण, 'संभासि-स्साणरिहो' (काल)।

संभासिय वि [संभाषिन्] जिसके साथ संभाषण—वार्तालाप किया गया हो वह (महा)।

संभिंडण न [संभेदन] आघात (गउड)।

संभिण्ण } वि [संभिन्न] १ परिपूर्ण (पव
संभिन्न } १९८)। २ किंचिद् न्यून, कुछ कम (देवेन्द्र ३४२)। ३ व्याप्त। ४ विल-कुल भिन्न—भेदवाला (पराह २, १—पत्र ९९)। ५ खंडित (दसचू १, १३)। °सोअ वि [°श्रोतस् °श्रोतृ] लब्धि विशेषवाला, शरीर के कोई भी अंग से शब्द को स्पष्ट रूप से सुनने की शक्तिवाला (पराह २, १—पत्र ९९, औप)।

संभिन्न न [दे] आघात (गउड ६३४ टी)।

संभिय वि [संभृत] १ पुष्ट, 'आरभसंभिया' (सूअ १, ९, ३)। २ संस्कार-युक्त संस्कृत, 'बहुसंभारसंभिए' (णाया १, १६—पत्र १९६, स ६८ विसे २६३)।

संभु पुं [शम्भु] शिव, शंकर (सुपा २४०, सार्ध १३५, समु १५)। २ रावण का एक सुभट (पउम ५६, २)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)। °घरिणी स्त्री [°गृहिणी] गौरी, पार्वती (सुपा ४४२)।

संभुंज सक [सं + भुज्] साथ भोजन करना, एक मण्डली में बैठकर भोजन करना। संभुंजइ (कस)। हेकृ. संभुंजित्तए (सूअ २, ७, १६, ठा २, १—पत्र ५६)।

संभुंजणा स्त्री [संभोजना] एकत्र भोजन-व्यवहार (पंचू)।

संभुल्ल वि [दे] दुर्जन, खल (दे ८, ७)।

संभूअ वि [संभूत] १ उत्पन्न, संजात (सुपा ८०, ५०७, महा)। २ पु एक जैन मुनि जो प्रथम वासुदेव के पूर्वजन्म में गुरु थे (सम १५३, पउम २०, १७६)। ३ एक प्रसिद्ध जैन महर्षि जो स्थूलभद्र मुनि के गुरु थे (धर्मवि ३८, सार्ध १३)। ४ व्यक्ति-वाचक नाम (महा)। °विजय पु [°विजय] एक जैन महर्षि (कुप्र ४५३, विपा २, ५)।

संभूइ स्त्री [संभूति] १ उत्पत्ति (पउम १७ ९८, गा ६५४, सुर ११, १३५, पव २४८)। २ श्रेष्ठ विभूति (सार्ध १३)।

संभूस सक [सं + भूष्] अलंकृत करना। संभूसइ (सण)।

संभोअ पु [संभोग] सुन्दर भोग (सुपा ४९८, कप्पू)। देखो संभोग।

संभोइअ वि [साभोगिक] समान सामाचारी-क्रियानुष्ठान होने के कारण जिसके साथ खान-पान आदि का व्यवहार हो सके ऐसा साधु (ओघभा २०, पचा ५, ४१, द्र ५०)।

संभोग पुं [संभोग] समान सामाचारीवाले साधुओं का एकत्र भोजनादि-व्यवहार (सम २१, औप, कस)।

सणिद्ध देखो सिणिद्ध (हे २, १०६, कुमा)।
सणिप्पवाय पुं [शनैःप्रपात] जीवों से भरी हुई पौद्गलिक वस्तु-विशेष (ठा २, ४—पत्र ८६)।
सणेह पु [स्नेह] १ प्रेम, प्रीति (अभि २७, कुमा)। २ घृत, तैल आदि स्निग्ध रस। ३ चिकनाई, चिकनाहट (प्राप्र, हे २, १०२)।
सण्ण देखो सन्न (से १३, ७२)।
सण्णज्ज न [सान्नाय्य] मन्त्र आदि से संस्कारा जाता घृत आदि (प्राकृ १६)।
सण्णत्तिअ वि [दे] परितापित (दे ८, २८)।
सण्णविअ वि [दे] १ चिन्तित। २ न. सानिध्य, मदद के लिए समीप-गमन (दे ८, ५०)।
सण्णिअ वि [दे] आर्द्र, गीला (दे ८, ५)।
सण्णिर देखो सन्निर (राज)।
सण्णुमिअ वि [दे] १ सनिहित। २ मापित, नापा हुआ। ३ अनुनीत, अनुनय-युक्त (दे ८, ४८)।
सण्णुमिअ देखो सन्नुमिअ (दे, ८, ४८ टी)।
सण्णेज्झ पु [दे] यक्ष-देवता (दे ८, ६)।
सण्ह वि [श्लक्ष्ण] १ मसृण, चिकना (कप्प, औप)। २ छोटा, बारीक (विपा १, ८—पत्र ८३)। ३ न. लोहा (हे २, ७५, षड्)। ४ पुं. वृक्ष-विशेष (पण्ण १—पत्र ३१)। °करणी स्त्री [°करणी] पीसने की शिला (भग १६, ३—पत्र ७६६)। °मच्छ पुं [°मत्स्य] मछली की एक जाति (विपा १, ८—पत्र ८३, पण्ण १—पत्र ४७)। °सण्हआ स्त्री [°श्लक्ष्णिका] आठ उच्छ्लक्ष्णश्लक्ष्णिका का एक नाप (इक)।
सण्ह वि [सूक्ष्म] १ छोटा, बारीक (कुमा)। २ न. कैतव, कपट। ३ अध्यात्म। ४ अलंकार-विशेष (हे २, ७५)। देखो सुहम, सुहुम।
सण्हाई स्त्री [दे] दूती (दे ८, ६)।
सत देखो सय = शत (गा ३)। °क्कतु पुं [°क्रतु] इन्द्र (कप्प)। °ग्घी स्त्री [°घ्नी] अस्त्र-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८, वसु)। °द्दु स्त्री [°द्रु] एक महानदी (ठा ५, ३—पत्र ३५१)। °भिसया स्त्री [°भिषज्] नक्षत्र-विशेष (सम २६)। °रिसभ पु [ऋषभ] अहोरात्र का इक्कीसवाँ मुहूर्त्त (सम २१)। °वच्छ पु [°वत्स] पक्षि-विशेष (पण्ण १—पत्र ५२)। °वाइया स्त्री [°पादिका] त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (पण्ण १—पत्र ४५)।
सत देखो सत्त = सप्तन् (पिंग)। °र त्रि [°दशन्] सतरह, १७, 'जं चाणतपुण्णंपि हु वण्णिज्जइ सतरभेअदसभेअं' (सिरि १२८८, कम्म २, १, १६)। °रसय न [°दशशत] एक सौ सतरह (कम्म २, १३)।
सतंत देखो स-तंत = स्व-तन्त्र।
सतत देखो सय = सतत (राज)।
सतय देखो सयय = शतक (सम १५४)।
सतर न [सतर] दधि, दही (ओघ ४८)।
सति देखो सइ = स्मृति (ठा ४, १—पत्र १८७, औप)।
सती देखो सई = सती (कुप्र ६०)।
सतीणा देखो सईणा (ठा ५, ३—पत्र ३४३)।
सतेरा स्त्री [शतेरा] विदिग् रुचक पर रहने वाली एक विद्युत्कुमारी देवी (ठा ४, १—पत्र १६८, इक)।
सत्त वि [शक्त] समर्थ (हे २, २, षड्)।
सत्त वि [शप्त] शाप-ग्रस्त, जिसपर आक्रोश किया गया हो वह (पउम ३५, ६०, पव १०६ टी, प्रति ८६)।
सत्त देखो सच्च = सत्य (अभि १८६, पिंग)।
सत्त वि [सक्त] आसक्त, गृद्ध, लोलुप (सूअ १, १, १, ६, सुर ८, १३६, महा)।
सत्त पुन [सत्र] १ सदाव्रत, जहाँ हमेशा अन्न आदि का दान दिया जाता हो वह स्थान (कुप्र १७२)। २ यज्ञ (अजि ८)। °साला स्त्री [°शाला] सदाव्रत-स्थान, दान क्षेत्र (सण)। °गार न [°गार] वही अर्थ (धर्मवि २६)।
सत्त वि [दे] गत, गया हुआ (षड्)।
सत्त पुंन [सत्त्व] १ प्राणी, जीव, चेतन (आचा, सुर २, १३६, सुपा १०३, धर्मसं ११८६)। २ अह रात्र का दूसरा मुहूर्त्त (सम ५१)। ३ न. बल, पराक्रम। ३ मानसिक उत्साह (पिंड ६३३, अणु, प्रासू ७१)। ५ विद्यमानता (धर्मसं १०५)। ६ लगातार सात दिनों का उपवास (संबोध ५८)।
सत्त वि [सप्तन्] सात संख्यावाला, सात (विपा १, १—पत्र २, कप्प, कुमा, जी ३३, ४१)। °खित्ती, °खेत्ती स्त्री [°क्षेत्री] जिन-चैत्य, जिन-बिम्ब, जैन आगम, साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका ये सात धन-व्यय-स्थान (ती ८, श्रु १२६, राज)। °ग न [°क] सात का समुदाय (द ३५, कम्म २, २६, २७, ६, १३)। °चत्ताल वि [°चत्वारिंश] सैंतालीसवाँ, ४७ वाँ (पउम ४७, ५८)। °चत्तालीस स्त्रीन [°चत्वारिंशत्] सैंतालीस, ४७ (सम ६७)। °च्छय पु [°च्छद] वृक्ष-विशेष, सतवन का पेड़, सतौना (पाअ, से १, २३, णाया १, १६—पत्र २११, सण)। °ट्ठि स्त्री [°षष्टि] १ संख्या-विशेष, सड़सठ, ६७। २ सड़सठ संख्या वाला (सम १०६, कम्म १, २३, ३२, २, ६)। °ट्ठिधा अ [°षष्टिधा] सड़सठ प्रकार का (सुज्ज १२—पत्र २२०)। °णउइ देखो °णउइ (राज)। °तीसइम वि [°त्रिंशत्तम] सइतीसवाँ, ३७ वा (पउम ३७, ७१)। °तंतु पुं [°तन्तु] यज्ञ (पाअ)। °दस त्रि [°दशन्] सतरह, १७ (पउम ११७, ४७)। °पण्ण देखो °वण्ण (राज)। °भूम वि [°भूम] सात तलावाला प्रासाद (श्रा १२)। °भूमिय वि [°भूमिक] वही पूर्वोक्त अर्थ (महा)। °म वि [°म] सातवाँ, ७ वाँ (कप्प)। स्त्री. °मा (जी २६)। °मासिअ वि [°मासिक] सात मास का (भग)। °मासिआ स्त्री [°मासिकी] सात मास में पूर्ण होनेवाली एक साधु-प्रतिज्ञा, व्रत-विशेष (सम २१)। °मिया, °मी स्त्री [°मिका, °मी] १ सातवीं, ७ वीं (महा, सम २६, ३०, कम्म ३, ६, प्रासू १२१)। २ सातवीं विभक्ति (चेइय ६८२, राज)। °य देखो °ग (कम्म ६, ६६ टी)। °र वि [°त] सत्तरवाँ, ७० वाँ (पउम ७०, ७२)। °र त्रि [दशन्] सतरह, १७ (कम्म २, ३)। °रत्त पु [°रात्र] सात रातदिन का समय (महा)। °रस त्रि [°दशन्] सतरह, १७ (भग)। °रस, °रसम वि [°दश] सतरहवाँ,

सरक्खग वि [संरक्षक] अच्छी तरह रक्षा करनेवाला (णाया १, १८—पत्र २४०)।

सरक्खण न [संरक्षण] समीचीन रक्षण (णाया १, १४, पि ३६१)।

संरक्खय देखो सरक्खग (उत्त २६, ३१)।

सरद्ध सक [स + राध्] पकाना। कृ संरद्धियव्व (कुप्र ३७)।

सरुंध सक [सं + रुध्] रोकना, अटकाना। कम. सरुधिज्जइ, सरुज्झइ (हे ४, २४८)। भवि. सरुधिहिइ, सरुज्झिहिइ (हे ४, २४८)।

सरोह पुं [सरोध] अटकाव (कुप्र ५१, पव २३८)।

सरोहणी स्त्री [संरोहणी] घाव को रुझानेवाली औषधि-विशेष (सुपा २१७)।

सलक्ख सक [स + लक्षय्] पहिचानना। कर्म. सलक्खीअदि (शौ), (नाट—वेणी ७८)।

सलग्ग वि [सलग्न] लगा हुआ, सयुक्त (सुपा २२६)।

सलग्गिर वि [सलगितृ] सयुक्त होनेवाला, जुडनेवाला (ओघ ६८)।

सलत्त वि [संलपित] समापित, उक्त, कथित (सुर ३, ६१, सुपा ३२६, ३८५, महा)।

सलप्प नीचे देखो।

संलव सक [स + लप्] संभापण करना। सलवइ, सलवेमि (महा, पव १४८)। वकृ. संलवमाण (णाया १, १—पत्र १३, कप्प)। कृ. संलप्प (राज)।

संलव पुं [सलाप] संभापण, वार्तालाप (सूमनि ५८)।

सलाव सक [स + लापय्] वातचीत करना। सलाविति (कप्प)।

संलाव देखो सलव = सलाप (औप, से २, ३६, गउड, श्रा ६)।

सलाविअ वि [संलापित] १ उक्त, कथित। २ कहलवाया हुआ (गा १११)।

संलिट्ठ वि [सश्लिष्ट] संयुक्त (संबोध १६)।

संलिह सक [स + लिख्] १ निर्लेप करना। २ शरीर आदि का शोषण करना, कृश करना। ३ घिसना। ४ रेखा करना। सलिहिज्जा (आचा २, ३, २, ३)। सलिहे (उत्त ३६, २४६, दस ८, ४, ७)। संकृ संलिहिय (कप्प)।

सलिहिय वि [सलिखित] जिसने तपश्चर्या से शरीर आदि का शोषण किया हो वह (स १३०)।

सलीढ वि [सलीढ] संलेखना-युक्त (णदि २०६)।

सलीण वि [सलीन] जिसने इन्द्रिय तथा कषाय आदि को काबू मे किया हो वह, संवृत (पव ६)।

सलीणया स्त्री [सलीनता] तप-विशेष, शरीर आदि का सगोपन (सम ११, नव २८, पव ६)।

सलुंच सक [स + लुञ्च्] काटना। कवकृ सलुचमाणा सुणएहिं (आचा १, ६, ३, ६)। सकृ. सलुंचिआ (दस ५, २, १४)।

सलेहणा स्त्री [सलेखना] शरीर, कषाय आदि का शोषण, अनशन-व्रत से शरीर-त्याग का अनुष्ठान (नह ११६, सुपा ६४८)। °सुअ न [°श्रुत] ग्रन्थ-विशेष (णदि २०२)।

सलेहा स्त्री [सलेखा] ऊपर देखो (उत्त ३६, २५०, सुपा ६४८)।

सलोअ पुं [सलोक] १ दर्शन, अवलोकन (आचा २, १, ६, २, उत्त २४, १६, पव ६१)। २ दृष्टि-पात, दृष्टिप्रचार। ३ जगत्, संपूर्ण लोक। ४ प्रकाश (राज)। ५ वि दृष्टि-प्रचारवाला, जिस पर दृष्टि पड सकती हो वह (उत्त २४, १६)।

सलोक सक [स + लोक्] देखना। कृ संलोकणिज्ज (सूअ १, ४, १, ३०)।

सवइयर पु [सव्यतिकर] व्यतिसवन्ध, विपरीत प्रसग (उव)।

सवग्ग पु [सवर्ग] १ गुणन, गुणाकार (वव १, जीवस १५४)। २ गुणित, जिसका गुणाकार किया गया हो वह (राज)।

संवच्छर पु [सवत्सर] वर्ष, साल (उव, हे २, २१)। °पडिलेहणग न [°प्रतिलेखनक] वर्ष-गाँठ, वर्ष की पूर्णता के दिन किया जाता उत्सव (णाया १, ८—पत्र १३१, भग, अत)।

सवच्छरिय पु [सावत्सरिक] १ ज्योतिषी, ज्योतिष शास्त्र का विद्वान् (स ३४, कुप्र ३२)। २ वि. सवत्सर संबधी, वार्षिक (धर्मवि १२६, पडि)।

सवच्छल देखो सवच्छर (हे २, २१)।

सवट्ट सक [सं + वर्तय्] १ एक स्थान में रखना। २ संकुचित करना। संवट्टेइ (औप)। संवट्टेज्जा (आचा १, ८, ६, ३)। संकृ. संवट्टइत्ता (ठा २, ४—पत्र ८६), सवट्टित्ता (आचा १, ८, ६, ३)।

संवट्ट पु [सवर्त] १ पीडा (उप २६६)। २ भय-भीत लोगों का समवाय—समूह (उत्त ३०, १७)। ३ वायु-विशेष तृण को उडानेवाला वायु (पण्ण १—पत्र २६)। ४ अपवर्तन (ठा २, ३—पत्र ६७)। ५ घेरा। ६ जहाँ पर बहुत गाँवो के लोग एकत्रित हो कर रहें वह स्थान, दुर्ग आदि (राज)। देखो संवत्त।

संवट्टइअ वि [संवर्तकिन] तूफान में फँसा हुआ (उप पृ १४३)।

सवट्टग पुं [सवर्तक] वायु-विशेष (सुपा ४१)। देखो सवट्टय।

सवट्टण न [सवर्तन] १ जहाँ पर अनेक मार्ग मिलते हो वह स्थान (णाया १, २—पत्र ७६)। २ अपवर्तन (विसे २०४५)।

सवट्टय पुं [सवर्तक] अपवर्तन (ठा २, ३—पत्र ६७)। देखो सवट्टग।

सवट्टिअ वि [दे सवर्तित] सवृत, सकोचित (दे ८, १२)।

सवट्टिअ वि [सवर्तित] १ पिंडीभूत, एकत्रित (वव १)। २ सवर्त-युक्त (हे २, ३०)।

सवड्ढ अक [स + वृध्] वढना। सवड्ढइ (महा)।

सवड्ढग देखो सवद्धग (अगि ४१)।

सवड्ढिअ वि [सवृद्ध] वढा हुआ (महा)।

सवड्ढिअ वि [संवर्धित] वढाया हुआ (नाट—रत्ना २२)।

सवत्त पुं [सवर्त] १ प्रलय काल (से ५, ७१, १०, २२)। २ वायु-विशेष, 'जुगन-सरिस संवत्तवाय विठ्ठविऊण' (कुप्र ६६)। ३ मेघ। ४ मेघ का अधिपति विशेष। ५ वृक्ष-विशेष, बहेडा का पेड। ६ एक स्मृतिकार मुनि (नंदि १०)। देखो सवट्ट = सवर्त।

सवत्तण देखो सवट्टण (हे २, ३०)।

[°कोश] शस्त्र—औजार रखने का थैला (गाया १, १३—पत्र १८१)। °वज्झ वि [°वध्य] हथियार से मारने योग्य (णाया १, १६—पत्र १९९)। °विडण न [°विपाटन] शस्त्र से चीरना (णाया १, १६—पत्र २०२, भग)।

सत्थ वि [दे] गत, गया हुआ (दे ८, १)।

सत्थ देखो स-त्थ = स्व-स्थ।

सत्थ न [स्वास्थ्य] स्वस्थता (णाया १, ९—पत्र १६६)।

सत्थ पु [सार्थ] १ व्यापारी मुसाफिरों का समूह (णाया १, १५—पत्र १९३, उत्त ३०, १७, बृह १, अणु, सुर १. २१४)। २ प्राणि-समूह (कुमा हे १, ६७)। ३ वि. अन्वर्थ यथार्थनामा (चेइय ५७२)। °अह, °वाह पुस्त्री [°वाह] सार्थ का मुखिया सघ-नायक (श्रु ५५ उवा विपा १ २—पत्र ३१)। स्त्री °ही (उवा, विपा १, २—पत्र ३१)। °वाहिक पु [°वाहिन्] वही पूर्वोक्त अर्थ (भवि)। °ह देखो °वाह (धर्मवि ४१, सण)। °हिव पु [°धिप] सार्थ-नायक (सुर २, ३२, सुपा ५६४)। °हिवइ पुं [°धिपति] वही अर्थ (सुपा ५६४)।

सत्थ पुन [शास्त्र] हितोपदेशक ग्रन्थ, हित-शिक्षक पुस्तक, तत्त्व-ग्रथ (विसे १३८४, कुमा), 'नाणमत्थे सुणतोवि' (श्रा ४)। °ण्णु वि [°ज्ञ] शास्त्र का जानकार, 'सुमिणसत्थण्णू' (उप ६८६ टी, उप पृ ३२७)। °गार वि [°कार] शास्त्र-प्रणेता (धर्मस १००३, सिक्खा ३१)। °त्थ पुं [°र्थ] शास्त्र-रहस्य (कुप्र ६, २०६, भवि)। °यार देखो °गार (स ४, धर्मस ९८२)। °वि वि [°विद्] शास्त्र ज्ञाता (स ३१२)।

सत्थइअ वि [द] उत्तेजित (दे ८, १३)।

सत्थर पुं [दे] निकर, समूह (दे ८, ४)।

सत्थर } पुन [स्रस्तर] शय्या, बिछौना
सत्थरय } (दे ८, ८ टी, सुपा ५८३, पाअ, षड्, हास्य १३९ सुर ४ २४४)।

सत्थव देखो सथव = सस्तव (प्राकृ ३३, पि ७६)।

सत्थाम देखो स-त्थाम = स-स्थामन्।

सत्थाव देखो सथव = संस्तव (प्राकृ ३३)।

सत्थि अ.स्त्री [स्वस्ति] १ आशीर्वाद, 'सत्थि करेइ कविलो' (पउम ३५, ६२)। २ क्षेम, कल्याण, मंगल। ३ पुण्य आदि का स्वीकार (हे २, ४५, सक्षि २१)। °मई स्त्री [°मती] १ एक विप्र-स्त्री, क्षीरकदम्बक उपाध्याय की स्त्री (पउम ११. ६)। २ एक नगरी (उप ६८२)। ३ सनिवेश-विशेष (स १०३)। देखो सोत्थि।

सत्थिअ पुं [स्वस्तिक] १ माङ्गलिक विन्यास-विशेष, मगल के लिए की जाती एक प्रकार की चावल आदि की रचना-विशेष (श्रा २७, सुपा ५२)। २ स्वस्तिक के आकार का आसन-बन्ध (बृह ३)। ३ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४०)। °पुर न [°पुर] एक नगर का नाम (श्रा २७)। देखो स॰त्थिअ।

सत्थिअ वि [सार्थिक] १ सार्थ-सम्बन्धी, सार्थ का मनुष्य आदि (कुप्र ६२, स १२६, सुर ६, १६६, सुपा ६५१, धर्मवि १२८)। २ पुं. सार्थ का मुखिया (बृह १)।

सत्थिअ न [सक्थिक] ऊरु, जाघ (स २६२)।

सत्थिआ स्त्री [शस्त्रिका] छुरी (प्राप्र)।

सत्थिग देखो सत्थिअ = स्वस्तिक (पचा ८, २३)।

सत्थिल्ल देखो सत्थिअ = सार्थिक (सुर १०, २०८)।

सत्थिल्लय देखो सत्थ = सार्थ (महा, भवि)।

सत्थु वि [शास्तृ] शास्ति-कर्ता, सीख देने-वाला (आचा, सूअ २, ५, ४, १, १३, २)।

सत्थुअ देखो संथुअ (प्राकृ ३३, पि ७६)।

सदा देखो सआ = सदा (राज)।

सदावरी देखो सयावरी = सदावरी (उत्त ३६, १३९)।

सदिस (शौ) देखो सरिस = सदृश (नाट—मृच्छ ११३)।

सद्द अक [शब्दय्] १ आवाज करना। २ सक आह्वान करना, बुलाना। सद्दइ (पिंग)।

सद्द पुन [शब्द] १ ध्वनि, आवाज (हे १, २६०, २, ७९, कुमा, सम १५), 'सद्दाणि विरूवरूवाणि' (सूअ १, ४, १, ६), 'सद्दाइं' (आचा २, ४, २, ४)। २ पु नय-विशेष (ठा ७—पत्र ३९०, विसे २१८१)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)। ४ नाम, आख्या (महा)। ५ प्रसिद्धि (औप, णाया १, १ टी—पत्र ३) °वेहि वि [°वेधिन्] शब्द के अनुसार निशाना मारनेवाला (णाया १, १८—पत्र २३६, गउड)। °वाइ पु [°पातिन्] एक वृत्त वैताढ्य पर्वत (ठा २, ३—पत्र ६९, ८०,८,२—पत्र २२३, इक)।

सद्दल न [शाद्वल] हरित, हरा घास (पाअ, णाया १, १—पत्र २४, गउड)।

सद्दलिअ वि [शाद्वलित] हरा घासवाला प्रदेश (गउड)।

सद्दह सक [श्रद् + धा] श्रद्धा करना, विश्वास करना, प्रतीति करना। सद्दहइ सद्दहामि (हे ४, ९, भग, उवा)। भवि. सद्दहिस्सइ (पि ५३०)। वकृ सद्दहत, सद्दहमाण सद्दहाण (नव ३९, हे ४, ९ श्रु २३)। सकृ. सद्दहित्ता (उत २६, १)। कृ. सद्दहियव्व (उव, स ८६ कुप्र १४९)।

सद्दहग देखो सद्दहाण (हे ४, २३८,कुमा)।

सद्दहणया } स्त्री [श्रद्धान] श्रद्धा, विश्वास,
सद्दहणा } प्रतीति (ठा ६—पत्र ३५५, पंचभा)।

सद्दहा देखो सद्धा = श्रद्धा (सट्ठि १२७)।

सद्दहाण न [श्रद्धान] श्रद्धा विश्वास (श्रावक ६२, पव ११९, हे ४, २३८)।

सद्दहाण देखो सद्दह।

सद्दहिअ वि [श्रद्धित] जिस पर श्रद्धा की गई हो वह, विश्वस्त (ठा ६—पत्र ३५५, पि ३३३)।

सद्दाइद (शौ) वि [शब्दायित] आहूत, बुलाया हुआ (नाट—मृच्छ २८६)।

सद्दाण देखो संदाण। सद्दाणइ (षड्)।

सद्दाल वि [शब्दवत्] शब्दवाला (हे २, १५९, पउम २०, १०, प्राप्र, सुर ३, ६६, पाअ, औप)।

सद्दाल न [दे] नूपुर (दे ८, १०, षड्)। °पुत्त पु [°पुत्र] एक जैन उपासक (उवा)।

सद्दाव सक [शब्दय्, शब्दायय्] आह्वान करना, बुलाना। सद्दावेइ, सद्दाविति, सद्दावेंति (औप, कप्प, भग)। सद्दावेहि

सुर ४, २४२)। २ वहन किया हुआ (भवि)।

संविक्किण्ण वि [संविकीर्ण] अच्छी तरह व्याप्त (पण्ण २—पत्र १००)।

संविक्ख सक [संवि + ईक्ष्] सम भाव से देखना, रागादि-रहित हो कर देखना। वकृ. संविक्खमाण (उत्त १४, ३३)।

संविग्ग वि [संविग्न] संवेग-युक्त, भव-भीरु मुक्ति का अभिलाषी, उत्तम साधु (उव, पंचा ५, ४४ सुर ८, १६६, ओघभा ४६)।

संविण्णि } वि [संविचीर्ण] संविचरित, संविचिन्न } आसेवित (णाया १, ५ टी—पत्र १००, णाया १, ५—पत्र ६६)।

संविज्ज अक [सं + विद्] विद्यमान होना। संविज्जइ (सूअ १, ३, २, १८)।

संविट्ट सक [सं + वेष्टय्] १ वेष्टन करना, लपेटना। २ पोपण करना। सकृ. संविट्टमाग (णाया १, ३—पत्र ६१)।

संविढत्त वि [समर्जित] पैदा किया हुआ, उपार्जित (स ५)।

संविणीअ वि [संविनीत] विनय-युक्त (ओघभा १३४)।

संवित्त देखो संवीअ (सूअ १, ३, १, १७)।

संवित्त वि [संवृत्त] १ संजात, बना हुआ (सुर ६, ८६)। २ वि. अच्छा आचरण-वाला। ३ बिलकुल गोल (सिरि १०६३)।

संवित्ति स्त्री [संवित्ति] संवेदन, ज्ञान (विसे १६२६, धर्मसं २६६)।

संविद सक [सं + विद्] जानना, 'जिच्चमाणो न संविदे' (उत्त ७, २२)।

संविद्ध वि [संविद्ध] १ संयुक्त (उवर १३३)। २ अभ्यस्त। ३ दृष्ट, 'संविद्धपहे' (आचा १, ५, ३, ६)।

संविधा स्त्री [संविधा] संविधान, रचना, बनावट (चारु १)।

संविधुग सक [संवि + धू] १ दूर करना। २ परित्याग करना। ३ अवगणना, तिरस्कार करना। संकृ संविधुणिय, संविधुणित्ताण (आचा १, ८, ६, ५, सूअ १, १६, ४ औप)।

संविभत्त वि [संविभक्त] बाँटा हुआ, 'देवगुरुसंविभत्त भत्त' (कुप्र १५३)।

संविभाअ } पुं [संविभाग] १ विभाग संविभाग } करना, बाँट (णाया १, २—पत्र ८६, उवा, औप)। २ आदर, सत्कार (स ३३४)।

संविभागि वि [संविभागिन्] दूसरे को दे कर भोजन करनेवाला (उत्त ११, ६, दस ६, २, २३)।

संविभाव सक [संवि + भावय्] पर्या-लोचन करना, चिन्तन करना। संकृ. संवि-भाविऊण (राज)।

संविराय अक [संवि + राज्] शोभना। वकृ. संविरायंत (पउम ७, १४६)।

संविल्ल देखो संवेल्ल। वकृ संविल्लंत (वै ४२)। संकृ. संविल्लिऊण (कुप्र ३१५)।

संविल्लिअ वि [संवेल्लित] चालित (उवा)।

संविल्लिअ देखो संवेल्लिअ = संवेष्टित (कुमा)।

संविल्लिअ देखो संवेल्लिअ = (दे) (उवा, ज १)।

संविह पु [संविध] गोशाले का एक उपासक (भग ८, ६—पत्र ३६६)।

संविहाण न [संविधान] १ रचना, बनावट (सुपा ५८६, धर्मवि १२७, माल १५१, १६३)। २ भेद, प्रकार (वै १०)।

संवीअ वि [संवीत] १ व्याप्त (सूअ १, ३, १, १६)। २ परिहित, पहना हुआ, 'संवी-यदिव्ववसणो' (धर्मवि ६)।

संवुअ देखो संवुड (हे १, १३१, संक्षि ४, औप)।

संवुट्ट देखो संवुत्त (रंभा ४४)।

संवुड वि [संवृत] १ संकट, सकडा, अवि-वृत (ठा ३, १—पत्र १२१)। २ संवर-युक्त, सावद्य प्रवृत्ति से रहित (सूअ १, १, २, २६, पचा १४, ६, भग)। ३ निरुद्ध, निरोध-प्राप्त (सूअ १, २, ३, १)। ४ आवृत। ५ संगोपित (हे १, १७७)। ६ न. कषाय और इन्द्रियों का नियन्त्रण (पण्ह २, ३—पत्र १२३)।

संवुड्ढ वि [संवृद्ध] बढ़ा हुआ (सूअ २, १, २६, औप)।

संवुत्त वि [संवृत्त] संजात, बना हुआ, 'पव्वइया ते संसारंतकरा संवुत्ता' (वसु, कुप्र ४३५, किरात १७, स्वप्न १७, अभि ८२, उत्तर १४१, महा, सण)।

संवुद देखो संवुड (प्राकृ ८, १२, प्राप्र)।

संवुदि स्त्री [संवृति] संवरण (प्राकृ ८, १२)।

संवूढ वि [संव्यूढ] १ तय्यार बना हुआ, सज्जित, 'जह इह नगरनरिंदो सव्ववलेणावि एइ संवूढो' (सुपा ५८५, सुर ६, १५२)। २ बह कर किनारे लगा हुआ, बह कर स्थित, 'तए ण ते मागंदियदारगा तेण फलयखंडेणं उवु- (?व्वु)ज्झमाणा २ रयणदीवंतेण संवु-(?वू)ढा यावि होत्था' (णाया १, ६—पत्र १५७)।

संवेअ वि [संवेद्य] अनुभव-योग्य (विसे ३००७)।

संवेअ } पु [संवेग] १ भय आदि के कारण संवेग } से होती त्वरा—शीघ्रता (गउड)। २ भव-वैराग्य, संसार से उदासीनता। ३ मुक्ति का अभिलाष, मुमुक्षा (द्र ६३, सम १२६, भग, उव, सुर ८, १६५, सम्मत्त १६६, १६५, सुपा ५४१)।

संवेयण न [संवेदन] १ ज्ञान (धर्मसं ४४ कुप्र १४६)। २ वि. बोध-जनक। स्त्री. °णी (ठा ४, २—पत्र २१०)।

संवेयण वि [संवेजन] संवेग-जनक। स्त्री. °णी (ठा ४, २—पत्र २१०)।

संवेयग वि [संवेगन] ऊपर देखो (ठा ४, २—पत्र २१०)।

संवेल्ल सक [सं + वेल्] चालित करना, कँपाना (से ७, २६)।

संवेल्ल सक [सं + वेष्ट्] लपेटना। संवेल्लइ (हे ४, २२२, संक्षि ३६)।

संवेल्ल सक [दे] सकेलना, समेटना, संकुचित करना। संवेल्लेइ (भग १६, ६—पत्र ७१२)। वकृ. संवेल्लेंत, संवेल्लेमाण (उव, भग १६, ६)। संकृ संवेल्लेऊण (महा)।

संवेल्लिअ वि [दे] संवृत, संकुचित, 'संवे-ल्लिअ मउलिअ' (पाअ, दे ८, १२, भग १६, ६—पत्र ७१२, राय ४५)।

संवेल्लिअ वि [संवेल्लित] चलित (से ७, २६)।

सप्फल देखो स-प्फल = स-फल।

सप्फल देखो स-प्फल = सत्-फल।

सफर देखो सभर = शफर (वै २०)।

सफर पुन [दे] मुसाफिरी, 'वडसफरपवह-णाए' (सिरि ३८२)।

सफल देखो स-फल = स-फल।

सफल सक [सफलय्] सार्थक करना। वकृ. सफलत (सुपा ३७४)।

सफलिअ वि [सफलित] सफल किया हुआ (सुपा ३५६, उव)।

सब (अप) देखो सव्व = सर्व (पिंग)।

सबर पु [शबर] १ एक अनार्य देश। २ उस देश मे रहनेवाली एक अनार्य मनुष्य-जाति, किरात, भील (पण्ह १, १—पत्र १४, पाग्र, गउड)। °णिवसण न [°निवसन] तमाल-पत्र (उत्तानि ३)। देखो सवर।

सबरी स्त्री [शबरी] १ भिल्ल जाति की स्त्री (णाया १, १—पत्र ३७, अत, गउड, चेइय ४८२)। २ कायोत्सर्ग का एक दोष, हाथ से गुह्य-प्रदेश को ढककर कायोत्सर्ग करना (चेइय ४८२)।

सबल पुं [शबल] १ परमाधार्मिक देवों की एक जाति (सम २८)। २ वि. कर्बुर, चितकबरा (आचा, उप २८२, गउड)। ३ न. दूषित चारित्र। ४ वि. दूषित चरित्रवाला मुनि (सम ३६)।

सबलिय वि [शबलित] कर्बुरित (गउड)।

सबलीकरण न [शबलीकरण] सदोष करना, चारित्र को दूषित बनाना (ओघ ७७८)।

सब्ब (अप) देखो सव्व = सर्व (पिंग)।

सब्बल पुन [दे] शस्त्र-विशेष, 'सरभसरसत्ति-सब्बलकरालकोंतेसु' (पउम ८, ६५, धर्मवि ५६)।

सब्बल देखो स-ब्बल = स-बल।

सब्भ वि [सभ्य] १ सभासद, सदस्य (पाग्र, सम्मत्त ११६)। २ समोचित, शिष्ट, 'असब्भ-भासी' (दस ६, २, ८, सुर ६, २१५, स ६५०)।

सब्भाव देखो स-ब्भाव = सद-भाव।

सब्भाव देखो स-ब्भाव = स्व-भाव।

सब्भाविअ वि [साद्भाविक] पारमार्थिक, वास्तविक (दमनि १, १३५)।

सभ न. देखो सभा, 'सभाणि' (आचा २, १०, २)।

सभर पुस्त्री [शफर] मत्स्य, मछली (कुमा)। स्त्री. °री (हे १, २३६, प्राकृ १४)।

सभर पुं [दे] गृध्र पक्षी (दे ८, ३)।

सभराइअ न [शफरायित] जिसने मत्स्य की तरह आचरण किया हो वह (कुमा)।

सभल देखो स-भल = स फल।

सभा स्त्री [सभा] १ परिषद् (उवा, रयण ८३ धर्मवि ६)। २ गाड़ी के ऊपर की छत—ढक्कन (श्रा १२)।

सभाज सक [सभाजय्] पूजन करना। हेकृ. सभाजइदु (शौ) (अभि १६०)।

सभाव देखो स-भाव = स्व-भाव।

सम अक [शम्] १ शान्त होना, उपशान्त होना। २ नष्ट होना। ३ आसक्त होना। समइ, समति (हे ४, १६७, कुमा), 'जइ नमइ सक्कराए पित्त ता किं पटोलाए' (सिरि ६६६)। वकृ. समेमाण (आचा १, ४, १, ३)।

सम सक [शमय्] १ उपशान्त करना, दबाना। २ नाश करना। वकृ. 'दुट्ठदुरिए समंतो' (धर्म ३)।

सम पु [श्रम] १ परिश्रम, आयास। २ खेद, थकावट (काप्र ८४, सम्मत्त ७७, दे १, १३१, उप पृ ३५, सुपा ५२५, गउड, सण, कुमा)। °जल न [°जल] पसीना (पाम्र)।

सम पु [शम] शान्ति, प्रशम, क्रोध आदि का निग्रह (कुमा)।

सम वि [सम] १ समान, तुल्य, सरिखा (सम ७५, उव, कुमा, जी १२; कम्म ४, ४०, ६२)। २ तटस्थ, मध्यस्थ, उदासीन, राग-द्वेष से रहित (सूम १, १३, ६, ठा ८)। ३ स. सर्व, सब (श्रु १२४)। ४ पुन. एक देव-विमान (सम १३, देवेन्द्र १४०)। ५ सामायिक (संबोध ४५, विसे १४२१)। ६ आकाश, गगन (भग २०, २—पत्र ७७५)। °चउरंस न [°चतुरस्र] संस्थान-विशेष, चारो कोणो के समान शरीर की आकृति-विशेष (ठा ६—पत्र ३५७, सम १४६, भग, कम्म १, ४०)। °चक्कवाल न [°चक्रवाल] वृत्त, गोलाकार (सुज्ज ४)। °ताल न [°ताल] १ कला विशेष (औप)। २ वि. समान तालवाला (ठा ७)। °धम्मिअ वि [°धर्मिक] समान धर्मवाला (उप ५३० टी)। °पादपुत पुंन [°पादपुत] आसन-विशेष, जिसमें दोनों पैर मिलाकर जमीन में लगाए जाते हैं वह आसन-बन्ध (ठा ५, १—पत्र ३००)। °पासि वि [°दर्शिन्] तुल्य दृष्टिवाला, समदर्शी (गच्छ १, २२)। °प्पभ पुन [°प्रभ] एक देव-विमान (सम १३)। °भाव पु [°भाव] समता (सुपा ३२०)। °या स्त्री [°ता] राग-द्वेष का अभाव, मध्यस्थता (उत ४, १०, पउम १४, ४०, श्रा २७)। °वत्ति पुं [°वर्तिन्] यमराज, जम (सुपा ४३३)। °सरिस वि [°सदृश] अत्यन्त तुल्य, सदृश, (पउम ४६, ५७)। °सहिय वि [°सहित] युक्त, सहित (पउम १७, १०५)। °सुद्ध पु [°शुद्ध] एक राजा जो छठवें केशव का पिता था (पउम २०, १८२)।

समइअ वि [सामयिक] समय-संबन्धी, समय का (भग)।

समइअ वि [समयित] संकेतित (धर्मसं ५०५)।

समइअ न [समयिक] सामायिक नामक सयम-विशेष (कम्म ३, १८, ४, २१, २८)।

समइच्छिअ देखो समइच्छिअ (से १२, ७२)।

समइक्कंत वि [समतिक्रान्त] व्यतीत, गुजरा हुआ (सुपा २३)।

समइच्छ सक [समति + क्रम्] १ उल्लंघन करना। २ अक गुजरना, पसार होना। वकृ. समइच्छमाण (औप, कप्प)।

समइच्छिअ वि [समतिक्रान्त] १ गुजरा हुआ। २ उल्लंघित (उप ७२८ टी, दे ८, २०, स ४५)।

समईअ वि [समतीत] १ गुजरा हुआ (पउम ५, १५२)। २ पुं. भूत काल (जीवस १८१)।

समईअ देखो समइअ = समयिक (कम्म ४, ४२)।

संसुद्ध वि [संशुद्ध] १ विशुद्ध, निर्मल (सुपा ५७३)। २ न. लगातार उन्नीस दिन का उपवास (संबोध ५८)।

संसूयग वि [संसूचक] सूचना-कर्ता (रंभा)।

संसेइम वि [संसेकिम] संसेक से बना हुआ (निचू १५)। २ उबाली हुई भाजी जिस ठंढे जल से सिंची जाय वह पानी (ठा ३, ३—पत्र १४७, कप्प)। ३ तिल की धोवन (आचा २, १, ७, ८। ४ पिष्टोदक, आटा की धोवन (दस ५ १ ७५)।

संसेइम वि [संस्वेदिम] १ पसीने से उत्पन्न होनेवाला (पण्ह १, ४—पत्र ८५)।

संसेअ अक [सं + स्विद्] बरसना; 'जावं च णं बहवे उराला बलाहया संसेयंति' (भग)।

संसेय पुं [संस्वेद] पसीना। °य वि [°ज] पसीने से उत्पन्न (सूअ १, ७, १, आचा)।

संसेय पुं [संसेक] सिंचन (ठा ३, ३)।

संसेविय वि [संसेवित] आसेवित (सुपा २२७)।

संसेस पुं [संश्लेष] सम्बन्ध, संयोग (आचा २, १३, १)।

संसेसिय वि [संश्लेषिक] संश्लेषवाला (आचा २, १३, १)।

संसोधण न [संशोधन] शुद्धि-करण (पिंड ४५९)। देखो संसोहण।

संसोधित वि [संशोधित] अच्छी तरह शुद्ध किया हुआ (सूअ १, १४, १८)।

संसोअ सक [सं + शोचय्] शोक करना। कृ संसोयणिज्ज (सुर १४, १८१)।

संसोहण न [संशोधन] विरेचन, जुलाब (आचा १, ६, ४, २)। देखो संसोधण।

संसोहा स्त्री [संशोभा] शोभा, श्री (सुपा ३७)।

संसोहि वि [संशोभिन्] शोभनेवाला (सुपा ४८)।

संसोहिय देखो संसोधित (राज)।

संह देखो संघ (नाट—विक्र २५)।

संहडण देखो संघयण (चंड)।

संहदि स्त्री [संहति] संहार (संक्षि ६)।

संहय वि [संहत] मिला हुआ (पण्ह १, ४—पत्र ७८)।

संहर सक [सं + हृ] १ अपहरण करना। २ विनाश करना। ३ संवरण करना, संकेलना, समेटना। ४ ले जाना। संहरइ (पव २६१, हे १, ३०, ४, २५९)। कवकृ संहरिज्जमाण (णाया १, १—पत्र ३७)।

संहर पुं [संभार] समुदाय, संघात, 'संघाओ संहरो निअरो' (पाअ)।

संहरण न [संहरण] संहार (श्रु ८७)।

संहार देखो संभार = सं + भारय्। कृ. संहारणिज्ज (णाया १, १२—पत्र १७६)।

संहार देखो संघार (हे १, २६४, षड्)।

संहारग न [संधारण] धारण, बनाये रखना, टिकाना, 'कायसंहारणट्ठाए' (आचा)।

संहाव देखो संभाव = सं + भावय्। वकृ. संहावअंत (शौ) (पि २७५)।

संहिदि देखो संहदि (प्राकृ १२)।

संहिच्च अ [संहत्य] साथ में मिलकर, एकत्रित होकर (णाया १, २ टी—पत्र ६३)।

संहिय देखो संधिअ = संहित (कप्प, नाट—महावी २९)।

संहिया स्त्री [संहिता] १ चिकित्सा आदि शास्त्र, 'चिगिच्छासंहियाओ' (स १७)। २ अस्खलित रूप से सूत्र का उच्चारण, 'अक्खलियसुत्तुच्चारणरूवा इह संहिया मुणेयव्वा' (चेइय २७२)।

संहुदि स्त्री [संभृति] अच्छी तरह पोषण (संक्षि ४)।

सक देखो सग = शक (पण्ह १, १—पत्र १४)।

सकण्ग देखो सकन्न (राज)।

सकथ न [सकथ] तापसों का एक उपकरण (निर ३, १)।

सकधा देखो सकहा, 'चेइयखंभेसु जिणसकधा सणिक्खित्ता चिट्ठंति' (सुज्ज १८)।

सकय अ [सकृत्] एक बार, 'किं सक (? क)यं बोलीणं' (सुर १६, ४५)।

सकन्न वि [सकर्ण] विद्वान्, जानकार (सुर ८, १४९, १२, ५४)।

सकल देखो सयल = सकल (पण्ह १, ४—पत्र ७८)।

सकहा स्त्री [सक्थिन्] अस्थि, हाड (सम ६३, सुपा ६५७, राय ८९)।

सकाम देखो स-काम = सकाम।

सकुंत पुं [शकुन्त] पक्षी (कुप्र ६८, अणु १४१)।

सकुण देखो सक्क = शक्। सकुणेमो (स ७६५)।

सकेय देखो स-केय = संकेत।

सक्क अक [शक्] सकना, समर्थ होना। सक्कइ, सक्कए (हे ४, २३०, प्राप्र, महा)। भवि सक्ख, सक्खामो, सक्किस्सामो (आचा, गि ५३१)। कृ सक्क, सक्कणिज्ज, सक्किअ (संक्षि ६, सुर १, १३०, ४, २२७, स ११४, संबोध ४०, सुर १०, ८१)।

सक्क सक [सृप्] जाना, गति करना। सक्कइ (प्राकृ ६५, धात्वा १५५)।

सक्क सक [ष्वष्क्] गति करना, जाना। सक्कइ (पि ३०२)।

सक्क न [शक्र] छाल (दे ३, ३४)।

सक्क वि [शक्त] समर्थ, शक्ति-युक्त, 'को सक्को वेयणाविगमे' (विवे १०२, हे २, २)।

सक्क देखो सक्क = शक्।

सक्क पुं [शक्र] १ सौधर्म नामक प्रथम देवलोक का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५, उवा, सुपा २६९)। २ कोई भी इन्द्र, देव-पति (कुमा)। ३ एक विद्याधरराजा (पउम १२, ८२)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। °गुरु पुं [°गुरु] बृहस्पति (सिरि ४४)। °प्पभ पुं [°प्रभ] शक्र का एक उत्पात-पर्वत (ठा १०—पत्र ४८२)। °सार न [°सार] एक विद्याधर-नगर (इक)। °विदार (शौ) न [°वितार] तीर्थ-विशेष (अभि १८३)। °वियार न [°वितार] चैत्य-विशेष (स ४७७, द्र ६१)।

सक्क पुं [शाक्य] १ बुद्ध देव (पाअ)। २ वि बौद्ध, बुद्ध का भक्त (विसे २४१९, श्रावक ८८, पव ९४, पिंड ४४५)।

सक्क (अप) देखो सग = स्वक (भवि)।

सक्कंदण पुं [संक्रन्दन] इन्द्र (सुर १, ६ टि, ४, १६०)।

समणुवत्त वि [समनुवृत्त] संवृत्त, संजात (पउम १०, १)।

समणुवास सक [समनु + वासय्] १ वासना-युक्त करना। २ सिद्ध करना। ३ परिपालन करना। 'ग्रायट्ठं सम्मं समणुवासेज्जासि' (ग्राचा १, २, १, ५, १, २, ४, ४, १, ५, ४, ५, १, ६, १, ६)।

समणुसट्ठ वि [समनुशिष्ट] अनुज्ञात, अनुमत (ग्राचा २, १, १०, ४)।

समणुसास सक [समनु + शासय्] सम्यग् सीख देना, अच्छी तरह सिखाना। समणुसासयंति (सूत्र १, १४, १०)।

समणुसिट्ठ वि [समनुशिष्ट] अच्छी तरह शिक्षित (वसु)। देखो समणुसट्ठ (ग्राचा २, १, १०, ४)।

समणुहो सक [समनु + भू] अनुभव करना। समणुहोइ (वव १)।

समण्णागय वि [समन्वागत] १ समन्वित, सहित, छत्तीसगुणसमण्णागएण' (गच्छ १, १२)। २ संप्राप्त (राय)।

समण्णाहार पु [समन्वाहार] समागमन (राज)।

समण्णिय देखो समन्निय (काल)।

समतिक्कंत देखो समइक्कंत (णाया १, १—पत्र ६३)।

समतुरंग सक [समतुरंगाय्] समान अश्व की तरह ग्रापस में ग्रारोहण करना, ग्राश्लेष करना। वकृ. **समतुरंगेमाण** (णाया १, ८—पत्र १३४, पव १७४ टी)।

समत्त वि [समस्त] १ संपूर्ण (पण्ह १, ४—पत्र ६८)। २ सकल, सब (विसे ४७२)। ३ समास-युक्त। ४ मिलित, मिला हुआ (हे २, ४५, षड्)।

समत्त वि [समाप्त] पूर्ण, पूरा, सिद्ध, जो हो चुका हो वह (उवा, ग्रौप)।

समत्ति स्त्री [समाप्ति] पूर्णता (उप १४२, ७२८ टी, विसे ४१५, पव—गाथा ६५, स ५३, सुपा २५३, ४३५)।

समत्थ सक [सम् + अर्थय्] १ साबित करना, सिद्ध करना। २ पुष्ट करना। ३ पूर्ण करना। कर्म समत्थीअइ (स १६५),

'उग्रहो त्ति समत्थिज्जइ
दाहेण सरोरुहाण हेमंतो।
चरिएहिं णज्जइ जणो
सगोवंतोवि ग्रप्पाण'
(गा ७३०)।

समत्थ देखो समत्त = समस्त (से ४, २८, सुर १, १८१, १६, ५५)।

समत्थ वि [समर्थ] शक्त, शक्तिमान् (पात्र, ठा ४, ४—पत्र २८३, प्रासू २३, १८२; ग्रौप)।

समत्थि वि [समर्थिन्] प्रार्थक, चाहनेवाला (कुप्र ३५१)।

समत्थिअ वि [समर्थित] १ पूर्ण, पूरा किया हुआ (कुप्र ११५, सुपा २६६)। २ पुष्ट किया हुआ (सुर १६, ६५)। ३ प्रमाणित, साबित किया हुआ (अज्झ १२१)।

समद्धासिय वि [समाध्यासित] अधिष्ठित (स ३५, ६७६)।

समद्धि देखो समिद्धि (गा ४२६)।

समन्नागय देखो समण्णागय (ग्रोघ ७६४, णाया १, १—पत्र ६४, ग्रौप, महा, ठा ३, १—पत्र ११७)।

समन्नि सक [समनु + इ] १ अनुसरण करना। २ अक. एकत्रित होना, मिलना। समन्नेइ, समन्निंति (विसे २५१७, ग्रौप)।

समन्निअ वि [समन्वित] युक्त, सहित (हे ३, ४६, सुर ३, १३०, ४, २२०, गउड)।

समन्ने° देखो समन्नि।

समप्प सक [सम् + अर्पय्] अर्पण करना, दान करना, देना। समप्पेइ (महा)। वकृ समप्पंत, समप्पअंत, समप्पेंत (नाट—मृच्छ १०५, रत्ना ५५, पउम ७३, १४)। संकृ. समप्पिअ, समप्पिऊण (नाट—मृच्छ ३१५, महा)। हेकृ. समप्पिउ (महा)। कृ. समप्पियव्व (सुपा २५६)।

समप्प° देखो समाव = सम् + ग्राप्।

समप्पण न [समर्पण] अर्पण, प्रदान (सुर ७, २२, कुप्र १३, वज्जा ६६)।

समप्पणया स्त्री [समर्पणा] ऊपर देखो (उप १७६)।

समप्पिय वि [समर्पित] दिया हुआ (महा; काल)।

समब्भस सक [समभि + अस्] अभ्यास करना। समब्भसह (द्रव्य ४७)।

समब्भहिअ वि [समभ्यधिक] अत्यन्त अधिक (से १५, ८५)।

समब्भास पुं [समभ्यास] निकट, पास (पउम ३३, १७)।

समब्भिडिय वि [दे] भिड़ा हुआ, लड़ा हुआ (पउम ८६, ४८)।

समभिआवण्ण वि [समभ्यापन्न] संमुख आया हुआ (सूत्र १, ४, २, १४)।

समभिजाण सक [समभि + ज्ञा] १ निर्णय करना। २ प्रतिज्ञा-निर्वाह करना। समभिजाणिया, समभिजाणाहि (ग्राचा)। वकृ. **समभिजाणमाण** (ग्राचा)।

समभिद्दव सक [समभि = द्रु] हैरान करना। समभिद्दवति (उत्त ३२, १०)।

समभिधंस सक [समभि + ध्वंसय्] नष्ट करना। समभिधंसेज, समभिघंसेंति (भग)।

समभिपड सक [समभि + पत्] आक्रमण करना। हेकृ समभिपडित्तए (ग्रत २१)।

समभिभूअ वि [समभिभूत] अत्यन्त पराभूत (उवा, धर्मवि ३४)।

समभिरूढ पुं [समभिरूढ] नय-विशेष (ठा ७—पत्र ३६०)।

समभिलोअ सक [समभि + लोक्] देखना, निरीक्षण करना। समभिलोएइ (भग १५—पत्र ६७०)। वकृ. **समभिलोएमाण** (पण्ण १७—पत्र ५१८)।

समभिलोइअ वि [समभिलोकित] विलोकित, दृष्ट (भग १५—पत्र ६७०)।

समय अक [सम् + अय्] समुदित होना, एकत्रित होना, 'सव्वे समयंति सम्मं चेगवसाओ नया विरुद्धावि' (विसे २२६७)।

समय पु [समय] १ काल, वक्त, अवसर (ग्राचा, सूअनि २६, कुमा)। २ काल-विशेष, सर्व-सूक्ष्म काल, जिसका दूसरा हिस्सा न हो सके ऐसा सूक्ष्म काल (अणु, इक, कम्म २, २३, २४, ३०)। ३ मत, दर्शन (प्राप)। ४ सिद्धान्त, शास्त्र, आगम (ग्राचा, पिंड ६,

सगडब्भि देखो स-गडब्भि = स्वकृतभिद् ।

सगडाल पुं [शकटाल] राजा नन्द का सुप्रसिद्ध मंत्री और महर्षि स्थूलभद्र का पिता (कुप्र ४४३)।

सगडिया स्त्री [शकटिका] छोटी गाडी (भग, विपा १, १—पत्र ८, णाया १, १—पत्र ७४)।

सगडी स्त्री [शकटी] गाड़ी (णाया १, ७—पत्र ११८)।

सगण देखो स-गण = स-गण ।

सगन्न देखो सकन्न (कुप्र ४०३)।

सगय न [दे] श्रद्धा, विश्वास (दे ८, ३)।

सगर पु [सगर] एक चक्रवर्ती राजा (सम ८२, उत्त १७, ३५)।

सगल्ल देखो सयल = सकल (णाया १, १६—पत्र २१३, भग, पंच १, १३, सुर १, ११६, पव २१६, सिक्खा ३७)।

सगसग अक [सगसगाय्] 'सग-सग' आवाज करना। वकृ. सगसगंत (पउम ४२, ३१)।

सगार देखो स-गार = सागार, साकार ।

सगार देखो स-गार = स-कार ।

सगास न [सकाश] पास, निकट, समीप (औप, सुपा ४५२, ४८८, महा)।

सगुण देखो स-गुण = स-गुण ।

सगुणि देखो सउणि (पण्ह १, ४—पत्र ७८)।

सगुत्त वि [सगोत्र] समान गोत्रवाला, एकगोत्रीय (कप्प)।

सगेह न [दे] निकट, समीप (दे ८, ६)।

सगोत्त देखो सगुत्त (कुप्र २१७)।

सग्ग पुंन [स्वर्ग] देवों का आवास-स्थान (णाया १, ५—पत्र १०५, भग, सुपा २६३), 'वेरग्ग चेवमिह सग्गं' (श्रु ५८)। °तरु पु [°तरु] कल्पवृक्ष (से ११, ११)। °सामि पुं [°स्वामिन्] इन्द्र (उप २६४ टी)। °वहू स्त्री [°वधू] देवांगना, देवी (उप ७२८ टी)।

सग्ग पुं [सर्ग] १ मुक्ति, मोक्ष, ब्रह्म (औप)। २ सृष्टि, रचना (रंभा)।

सग्ग देखो स-ग्ग = साग्र ।

सग्ग देखो सग = स्वक (उत्त २०, २६, राज)।

सग्गइ देखो स-ग्गइ = सद्गति ।

सग्गह वि [दे] मुक्त, मुक्ति-प्राप्त (दे ८, ४ टी)।

सग्गह देखो स-ग्गह = स-ग्रह ।

सग्गीय वि [स्वर्गीय] स्वर्ग-सम्बन्धी (विसे १८००)।

सग्गु देखो सिग्गु (उप १०३१ टी)।

सग्गोकस पुं [स्वर्गौकस्] देव, देवता (धर्मा ६)।

सग्घ सक [कथ] कहना। सग्घइ (षड्)।

सग्घ वि [श्लाघ्य] प्रशंसनीय (सूअ १, ३, २, १६, विसे ३५७८)।

सघिण देखो स-घिण = स-घृण ।

सचक्खु } देखो स-चक्खु = स-चक्षुष् ।
सचक्खुअ }

सच्चित्त देखो स-चित्त = स-चित्त ।

सच्चिव देखो सइव (सण)।

सची देखो सई = शची (धर्मवि ६६, नाट—शकु ६७)। °वर पुं [°वर] इन्द्र (सिरि ४२)।

सचेयण देखो स-चेयण = स-चेतन ।

सच्च न [सत्य] १ यथार्थ भाषण, अमृषा-कथन (ठा १०—पत्र ४८६, कुमा, पण्ह २, ५—पत्र १४८, स्वप्न २२, प्रासू १५०, १७७)। २ शपथ, सोगन। ३ सत्य युग। ४ सिद्धान्त (हे २, १३)। ५ वि. यथार्थ, सच्चा, वास्तविक, 'सच्चपरक्कमे' (उत्त १८, ४९, श्रा १२, ठा ४, १—पत्र १९६, कुमा)। ६ पु संयम, चारित्र (आचा, उत्त ६, २)। ७ जिनागम, जैन सिद्धान्त (आचा)। ८ अहोरात्र का दसवाँ मुहूर्त (सम ५१)। ९ एक वणिक्-पुत्र (उप ५१६)। °उर न [°पुर] भारत का एक प्राचीन नगर, जो आजकल 'साचोर' नाम से मारवाड में प्रसिद्ध है (ती ७, सिग्घ ७)। °उरी स्त्री [°पुरी] वही अर्थ (पडि)। °णेमि, °नेमि पु [°नेमि] भगवान् अरिष्टनेमि के पास दीक्षा ले मुक्ति पानेवाला एक मुनि जो राजा समुद्रविजय का पुत्र था (अंत, अंत १४)। °प्पवाय न [°प्रवाद] छठवाँ पूर्व-ग्रंथ (सम २६)। °भामा स्त्री [°भामा] श्रीकृष्ण की एक पत्नी (अंत १५)। °वाइ वि [°वादिन्] सत्य-वक्ता (पउम ११, ३१)। °संध वि [°सन्ध] सत्य प्रतिज्ञावाला, प्रतिज्ञा-निर्वाहक (उप पृ ३३३, सुपा २८३)। °सिरी स्त्री [°श्री] पाँचवें आरे की अन्तिम श्राविका (विचार ५३४)। °सेण पु [°सेन] ऐरवत वर्ष में होनेवाला एक जिनदेव (सम १५४)। °हामा देखो °भामा (पि १४)। °वाइ देखो °वाइ (आचा १, ८, ६, ५, १, ८, ७, ५)।

सच्चइ पुं [सत्यकि] १ आगामी काल में बारहवाँ तीर्थंकर होनेवाला एक साध्वी-पुत्र (ठा ९—पत्र ४५७, सम १५४, पव ४६)। २ विषय लम्पट एक विद्याधर (उव, उर ७, १ टी)। ३ श्रीकृष्ण का सबन्धी एक व्यक्ति (रुक्मि ४६)। °सुय पु [°सुत] ग्यारह रुद्रों में अन्तिम रुद्र पुरुष (विचार ४७३)।

सच्चकार वि [सत्यंकार] सत्य साबित करनेवाला, लेन-देन की सच्चाई के लिए दिया जाता बहाना, 'गहिओ संजमभारो सच्चकारु व्व सिद्धीए' (धर्मवि १४, आप ६६, रयण ३४)।

सच्चव सक [दृश्] देखना। सच्चवइ (हे ४, १८१, षड्, सण)। कर्म सच्चविज्जइ (कुप्र ९८)।

सच्चव सक [सत्यापय्] सत्य साबित करना। सच्चवइ (सुपा २९०)। कर्म. 'अलिअपि सच्चविज्जइ पहुत्तणं तेण रमणिज्जं' (सूक्त ८५)।

सच्चवण न [दर्शन] अवलोकन, निरीक्षण (कुमा, सुपा २२६)।

सच्चवय वि [दर्शक] द्रष्टा (सबोध २४)।

सच्चविअ वि [दृष्ट] देखा हुआ, विलोकित (गा ५३९, ८०६, सुर ४, २२५, पाअ, महा)।

सच्चविअ वि [दे] अभिप्रेत, इष्ट (दे ८, १७, भवि)।

सच्चा स्त्री [सत्या] १ सत्य वचन (पण्ण ११—पत्र ३७६)। २ श्रीकृष्ण की एक

समहिअ त्रि [समधिक] विशेष ज्यादा (प्रासू १७८ महा, कुमा, सुर ४, १६६, मण)।

समहिगय वि [समधिगत] १ प्राप्त, मिला हुआ। २ ज्ञात (सण)।

समहिट्ठ सक [समधि+स्था] काबू में रखना, अधीन रखना। कवकृ. समहिट्ठिज्जमाण (राय १३२)।

समहिट्ठाउ वि [समधिष्ठातृ] अध्यक्ष, मुखी, अधिपति (आचा २, २, ३, ३, २, ७, १, २)।

समहिट्ठिअ वि [समधिष्ठित] आश्रित (उप ७२८ टी सुपा २०६)।

समहिड्ढिय देखो स-महिड्ढिय = स-महर्द्धिक।

समहिणंदिय वि [समभिनन्दित] आनन्दित खुशी किया हुआ (उप ५३० टी)।

समहिल वि [समखिल] सकल, समस्त (गउड)।

समहुत्त वि [दे] समुख, अभिमुख (अणु २२२)।

समा स्त्री [समा] १ वर्ष, बारह मास का समय (जी ४१)। २ काल, समय (सम ६७, ठा २, १—पत्र ४७, कप्प)।

समाअम देखो समागम (अभि २०२, नाट. मालती ३२)।

समाइच्छ सक [समा+गम्] १ सामने आना। २ समादर करना, सत्कार करना। सकृ. समाइच्छिऊण (महा)।

समाइच्छिय वि [समागत] आदत, सत्कृत (स ३७२)।

समाइट्ठ वि [समादिष्ट] फरमाया हुआ (महा)।

समाइद्ध वि [समाविद्ध] वेध किया हुआ (से ६, ३८)।

समाइण्ण वि [समाकीर्ण] व्याप्त (औप, सुर ४, २४१)।

समाइण्ण, समाइन्न वि [समाचीर्ण] अच्छी तरह आचरित (भग, उप ८१३, विचार ८६५)।

समाउट्ट अक [समा+वृत्] नम्र होना, नमना, अधीन होना। भूका. समाउट्टिसु (सूत्र २, १, १८)।

समाउट्ट वि [समावृत्] विनम्र (वव १)।

समाउत्त वि [समायुक्त] युक्त, सहित (औप, सुपा ३०१)।

समाउल वि [समाकुल] १ समिश्र, मिश्रित (राय)। २ व्याप्त (सुपा ३०५)। ३ आकुल, व्याकुल (हे ४, ४४४, सुर ६, १७४)।

समाउलिअ वि [समाकुलित] व्याकुल बना हुआ (स ६६)।

समाएस पुं [समादेश] १ आज्ञा, हुकुम (उप १०२१ टी)। २ विवाह आदि के उपलक्ष मे किए हुए जीमन में बचा हुआ वह खाद्य जिसको निर्ग्रन्थो मे बाँटने का संकल्प किया गया हो (पिंड २२६, २३०)।

समाएसण न [समादेशन] आज्ञा, हुकुम (भवि)।

समाओग पु [समायोग] स्थिरता (तंदु १४)।

समाओसिय वि [समातोषित] सतुष्ट किया हुआ (भवि)।

समाकरिस सक [समा+कृष्] खीचना। हेकृ समाकरिसिउ (पि ५७५)।

समाकरिसण न [समाकर्षण] खींचाव (सुपा ४)।

समाकार सक [समा+कारय्] आह्वान करना, बुलाना। सकृ. समाकारिय (सम्मत्त २२६)।

समागच्छ° देखो समागम = समा+गम्।

समागत देखो समागय (सुर २, ८०)।

समागम सक [समा+गम्] १ सामने आना। २ आगमन करना। ३ जानना। समागच्छइ (महा)। भवि. समागमिस्सइ (पि ५२३)। सकृ समागच्छिअ (पि ५८१), 'विन्नाणेण समागम्म (उत्त २३, ३१)।

समागम पुं [समा+गम्] १ सयोग, सबन्ध (गउड, महा)। २ प्राप्ति (सूत्र १, ७, ३०)।

समागमण न [समागमन] ऊपर देखो (महा)।

समागय वि [समागत] आया हुआ (पि ३६७ ए)।

समागूढ वि [समागूढ] समाश्लिष्ट, आलिंगित (पउम ३१, १२२)।

समाज पुं [समाज] समूह, संघात (धर्मवि १२३)। देखो समाय = समाज।

समाजुत्त न [समायुक्त] सयोजन, जोड़ना (राय ४०)।

समाढत्त वि [समारब्ध] १ आरब्ध, जिसका प्रारम्भ किया गया हो वह (काल, पि २२३, २८६)। २ जिसने आरम्भ किया हो वह; 'एवं भणिउं समाढत्तो' (सुर १, ६६)।

समाण सक [भुज्] भोजन करना, खाना। समाणइ (हे ४, ११०, कुमा)।

समाण सक [सम्+आप्] समाप्त करना, पूरा करना। समाणइ (हे ४, १४२), समाणेमि (स ३७६)।

समाण वि [समान] १ सदृश, तुल्य, सरिखा (कप्प)। २ मान-सहित, अहंकारी (से ३, ४६)। ३ पुन. एक देव-विमान (सम ३५)।

समाण वि [सत्] विद्यमान, होता हुआ (उवा, विपा १, २—पत्र ३४)। स्त्री. °णी (भग, कप्प)।

समाण देखो संमाण = संमान (से ३, ४६)।

समाणअ वि [समापक] समाप्त करनेवाला (से ३, ४६)।

समाणण न [भोजन] भक्षण, खाना, 'तंबोलसमाणणपज्जाउलवयणाए' (स ७२)।

समाणत्त वि [समाज्ञप्त] जिसको हुकुम दिया गया हो वह (महा)।

समाणिअ देखो संमाणिय (से ३, २४)।

समाणिअ वि [समानीत] जो लाया गया हो वह, आनीत (महा, सुपा ५०५)।

समाणिअ वि [समाप्त] पूरा किया हुआ (से ६, ६२, णाया १, ८—पत्र १३३, स ३०१, कुमा ६, ६५)।

समाणिअ वि [दे] म्यान किया हुआ, म्यान मे डाला हुआ, 'विलिएण तक्खण चेव समाणियं मंडलग्गं' (स २४२)।

समाणिअ वि [भुक्त] भक्षित, खाया हुआ (स ३१५)।

समाणिआ स्त्री [समानिका] छन्द-विशेष (पिंग)।

सट्ट पुंस्त्री [दे] १ सट्टा, विनिमय, बदला (सुपा २३३)। स्त्री. °ट्टी (सुपा २७५, वज्जा १४२) २ वि. सटा हुआ; 'पीणुण्णय-सट्टइं थणवट्टइं' (भवि)।

सट्ट } पुंन [सट्टक] १ एक तरह का नाटक
सट्टय } (कप्पू, रंभा १०), 'रमं तं परिणेदि अट्ठमतियं एयम्मि सट्टे वरे' (रंभा १०)। २ खाद्य-विशेष (रंभा ३३)।

सट्ठ न [शाठ्य] शठता, धूर्तता (उप ७२८ टी, गुभा २४)।

सट्ठ (शौ) देखो छट्ठ (चारु ७, प्रबो ७३, पि ४४६)।

सट्ठि स्त्री [षष्टि] १ संख्या-विशेष, साठ, ६०। २ साठ संख्यावाला (सम ७४, कप्प, महा, पि ४४८)। °तन, °तंत न [°तन्त्र] शास्त्र-विशेष, सांख्य-शास्त्र (भग, णाया १, ५—पत्र १०५, औप, अणु ३६)। °म वि [°तम] साठवाँ (पउम ६०, १०)।

सट्ठिक } वि [षष्टिक] १ साठ वर्ष की
सट्ठिय } वयवाला (तंदु १७, राज)। २
सट्ठीअ } पुंन. एक प्रकार का चावल (राज, श्रा १८)।

सड अक [सद्] १ सडना। २ विषाद करना, खिन्न होना। ३ सक गति करना, जाना। सडइ (हे ४, २१६, प्राप्र, षड्, धात्वा १५५)।

सड अक [शट्] १ सडना। २ खेद करना। ३ रोगी होना। ४ सक. जाना। सडइ (विपा १, १—पत्र १६)।

सडंग न [षडङ्ग] शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त छन्द और ज्योतिष। °वि वि [°विद्] छ अंगों का जानकार (भग, औप, पि ३४१)।

सडण न [शटन] विशरण, सडना (पण्ह १, १—पत्र २३, णाया १, १—पत्र ४८)।

सडा देखो सढा (से १, ५०, पि २०७)।

सडिअ वि [सन्न, शटित] सडा हुआ, विशीर्ण (विपा १, ७—पत्र ७३, श्रा १४, कुमा)।

सडिअग्गिअ वि [दे] १ वर्धित, बढाया हुआ। २ प्रेरित (षड्)।

सड्ढ सक [शद्] १ विनाश करना। २ कृश करना। सड्ढइ (धात्वा १५५)।

सड्ढ पुंस्त्री [श्राद्ध] १ श्रावक जैन गृहस्थ (ओघ ६०, महा)। स्त्री. °ड्ढी (सुपा ६५४)। २ वि. श्रद्धेय वचनवाला, जिसका वचन श्रद्धेय हो वह (ठा ३, ३—पत्र १३६)। देखो सड्ढ = श्राद्ध।

सड्ढ देखो स-ड्ढ = सार्ध।

सड्ढइ पुं [श्राद्धकिन्] वानप्रस्थ तापस की एक जाति (औप)।

सड्ढा स्त्री [श्रद्धा] १ स्पृहा, अभिलाष, गाछा (विपा १, १ पत्र २)। २ धर्म आदि में विश्वास, प्रतीति। ३ आदर, सम्मान। ४ शुद्धि। ५ चित्त की प्रसन्नता (हे १, ४१, षड्)। देखो सद्धा।

सड्ढि वि [श्राद्धिन्] १ श्रद्धालु, श्रद्धावान् (ठा ६—पत्र ३५२, उत्त ५, ३१, पिंडभा ३३)। २ पुं. श्रावक, जैन गृहस्थ (कप्प)।

सड्ढिअ वि [श्राद्धिक] देखो सड्ढ = श्राद्ध (पि ३३३, राज)।

सड्ढी देखो सड्ढ = श्राद्ध।

सढ वि [शठ] १ धूर्त, मायावी, कपटी (कुमा, उप २६४ टी, ओघभा ५८, भग, कम्म १, ५८)। २ कुटिल, वक्र (पिंड ६३३)। ३ पुं. धत्तूरा। ४ मध्यस्थ पुरुष (हे १, १९६, संक्षि ८)।

सढ पु [दे] १ पाल, जहाज का बादवान, गुजराती में 'सढ' (सिरि ३८७)। २ केश, बाल (दे ८, ४६)। ३ स्तम्ब, गुच्छा (दे ८, ४६, पाअ)। ४ वि विषम (दे ८, ४६)।

सढय न [दे] कुसुम, फूल (दे ८, ३)।

सढा स्त्री [सटा] १ सिंह आदि की केसरा। २ जटा। ३ व्रती का केश-समूह। ४ शिखा (हे १, १९६)।

सढाल पु [सटाल] सटावाला, सिंह (कुमा)।

सढि पु [दे सटिन्] सिंह (दे ८, १)।

सढिल वि [शिथिल] ढीला (हे १, ८६, कुमा)।

सण पुंन [शण] १ धान्य-विशेष (श्रा १८, पव १५४, पण्ह २, ५—पत्र १४८)। २ तृण-विशेष, पाट, जिसके ततु रस्सी आदि बनाने के काम मे लाए जाते है (णाया १, १—पत्र २४, पण्ण १—पत्र ३२, कप्पू)। °वण न [°वन] सन का पुष्प-वृन्त (औप, णाया १, १ टी—पत्र ६)। °वाडिआ स्त्री [°वाटिका] सन का बगीचा (गा ६)।

सण पु [स्वन] शब्द, आवाज (स ३७०)।

सणकुमार पुं [सनत्कुमार] १ एक चक्रवर्ती राजा (सम १५२)। २ तीसरा देवलोक (अनु, औप)। ३ तीसरे देवलोक का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। °वडिंसय पुन [°वतंसक] एक देव-विमान (सम १३)।

सणप्पय }
सणप्फद } देखो स-णप्पय = स-नखपद।
सणप्फय }

सणा अ [सना] सदा, हमेशा। °तण °यण वि [°तन] सदा रहनेवाला, नित्य शाश्वत (सूअ २, ६, ४७), 'सिद्धाण सणायणओ परिणामिओ दव्वओवि गुणो' (सवोध २)।

सणाण न [स्नान] नहाना, नहान अवगाहन (उवा)।

सणाह देखो स-णाह = स-नाथ।

सणाहि पुं [सनाभि] १ स्वजन, ज्ञाति, 'बंधू समणो सणाही य' (पाअ)। २ समान, सदृश (रंभा)।

सणि पुं [शनि] १ ग्रह-विशेष, शनैश्चर (पउम १७ ८१)। २ शनिवार (सुपा ५३२)।

सणिअ पुं [दे] १ साक्षी, गवाह। २ ग्राम्य, ग्रामीण (दे ८, ४७)।

सणिअ अ [शनैस्] धीरे, हौले (णाया १, १६—पत्र २२६, गा १००, हे २, १६८ गउड, कुमा)।

सणिंचर पुं [शनैश्चर] ग्रह-विशेष, शनि-ग्रह (पि ८४)। °संवच्छर पुं [°संवत्सर] वर्ष-विशेष (ठा ५, ३—पत्र ३४४)।

सणिंचारि } पु [शनैश्चारिन्] युगलिक
सणिचारि } मनुष्यों की एक जाति (इक, भग ६, ७—पत्र २७६)।

सणिच्छर } देखो सणिंचर (ठा २, ३—
सणिच्छर } पत्र ७७, हे १, १४९, औप, कुमा, सुज्ज १०, २०, २०)।

क्षमालोच पुं [समालोच] विचार, विमर्श (उप ३६९)।

समालोयण न [समालोचन] सामान्य अर्थ का दर्शन (विसे २७६)।

समाव सक [सम्+आप्] पूरा करना। समावेइ (हे ४, १४२)। कर्म. समप्पइ (हे ४, ४२२)।

समावज्जिय वि [समावजित] प्रसन्न किया हुआ (महा)।

समावड अक [समा+पत्] १ समुख आकर पडना, गिरना। २ लगना। ३ सम्बन्ध करना। समावडइ (भवि)।

समावडण न [समापतन] पडना, गिरना (गउड)।

समावडिय वि [समापतित] १ संमुख आकर गिरा हुआ (सुर २, ९, सुपा २०३)। २ वद्ध (ओप)। ३ जो होने लगा हो वह, 'समावडिय जुद्ध' (स ३८३, महा)।

समावण्ण वि [समापन्न] संप्राप्त (सम १३४, भग)।

समावत्ति स्त्री [समावाप्ति] समाप्ति, पूर्णता; 'ते य समावत्तीए विहरंता' (सुख २, ७)।

समावद सक [समा+वद्] बोलना, कहना। समावदेज्जा (आचा १, १५, ५४)।

समावन्न देखो समावण्ण (स ४७९; उवा, ठा २, १—पत्र ३८, दस ५, २, २)।

समावय देखो समावद। समावइज्जा (आचा २, १५, ५)।

समावय देखो समावड। वकृ. समावयंत (दस ६, ३, ८)।

समाविअ वि [समापित] पूर्ण किया हुआ (गा ६१, दे ७, ४५)।

समास अक [सम्+आस्] १ बैठना। २ रहना। समासइ (भवि)।

समास सक [समा+अस्] अच्छी तरह फेंकना। कर्म. समासिज्जति (णंदि २२९)।

समास पु [समास] १ संक्षेप, संकोच (जीवस १, जी २१)। २ सामायिक, संयम-विशेष (विसे २७९५)। ३ व्याकरण-प्रसिद्ध एक प्रक्रिया, अनेक पदो के मेल करने की रीति (पण्ह २, २—पत्र ११४, अणु, विसे १००३)। ४ समीप (दश वै० वृद्ध० पत्र)।

समासंग पु [समासङ्ग] संयोग (गा ६६१ ?)।

समासगय वि [समासगत] सगत, सम्बद्ध (रंभा)।

समासज्ज देखो समासाद।

समासत्थ वि [समाश्वस्त] १ आश्वासन-प्राप्त (पउम १८, २८, मे १२, ३७, सुख २, ९)। २ स्वस्थ बना हुआ (स १२०, सुर ६, ९६)।

समासय पुं [समाश्रय] आश्रय, स्थान (पउम ७, १६८, ४२, ३५)।

समासव सक [समा+स्रु] आना, आगमन करना। समासवदि (द्रव्य ३१)।

समासस देखो समस्सस। कृ. समाससि-अव्व (से ११, ९५)।

समासाद (शौ) सक [समा+सादय्] प्राप्त करना। समासादेहि (स्वप्न ३७)। कृ. समासादइदव्व (मा ३९)। संकृ. समासज्ज, समासिज्ज (आचा १, ८, ८, १, पि २१)।

समासादिअ वि [समासादित] प्राप्त (दस १, १ टी)।

समासासिय वि [समाश्वासित] जिसको आश्वासन दिया गया हो वह (महा)।

समासि सक [समा+श्रि] सम्यग् आश्रय करना। कर्म. समासिज्जइ, समासिज्जति (णंदि २२९)।

समासिज्ज देखो समासाद।

समासिय वि [समाश्रित] आश्रय-प्राप्त (पउम ८०, ६४)।

समासिय वि [समासित] उपवेशित, बैठाया हुआ (भवि)।

समासीण वि [समासीन] बैठा हुआ (महा)।

समाहट्टु देखो समाहर।

समाहड वि [समाहृत] १ विशुद्ध, निर्मल, 'असमाहडाए लेस्साए' (आचा २, १, ३, ६)। २ स्वीकृत (राज)।

समाहय वि [समाहत] आघात-प्राप्त, आहत (औप, सुर ४, १२७, सण)।

समाहर सक [समा+हृ] ग्रहण करना। २ एकत्रित करना। संकृ. समाहट्टु (सूअ १, ८, २६, १, १०, १५), समाहरिवि (अप) (भवि)।

समाहविअ वि [समाहूत] आहूत, बुलाया हुआ (धर्मवि ६०)।

समाहाण न [समाधान] १ समाधि (उप ३२० टी)। २ औत्सुक्य-निवृत्ति रूप स्वास्थ्य, मानसिक शान्ति, चित्त-स्वस्थता (अणु १३६, सुपा ५४८)।

समाहार पु [समाहार] १ समूह, 'छद्दव्व-समाहारो भाविज्जइ एस जियलोओ' (श्रु ११५)। °दंद पुं [°द्वन्द्व] व्याकरण-प्रसिद्ध समास-विशेष (चेइय ६६०)।

समाहारा स्त्री [समाहारा] १ दक्षिण रुचक पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६, इक)। २ पक्ष की बारहवीं रात्रि (सुज्ज १०, १४)।

समाहि पुंस्त्री [समाधि] १ चित्त की स्वस्थता, मनोदुःख का अभाव (सम ३७, उत्त १६, १, सुख १६, १, चेइय ७७७)। २ स्वस्थता; 'साहाहि रुक्खो लभते समाहिं छिन्नाहि सहाहि तमेव खाणु' (उत्त १४, २९)। ३ धर्म। ४ शुभ ध्यान, चित्त की एकाग्रता-रूप ध्यानावस्था (सूअ १, १०, १, सुपा ८६)। ५ समता, राग आदि का अभाव (ठा १० टी—पत्र ४७४)। ६ श्रुतज्ञान। ७ चारित्र, संयमानुष्ठान (ठा ४, १—पत्र १९५)। ८ पुं. भरतक्षेत्र के सतरहवें भावी तीर्थंकर (सम १५४, पव ४६)। °पडिमा स्त्री [°प्रतिमा] समाधि-विषयक व्रत-विशेष (ठा ४, १)। °पाण न [°पान] शक्कर आदि का पानी (भत्त ४०)। °मरण न [°मरण] समाधि-युक्त मौत (पडि)।

समाहिअ वि [समाहित] १ समाधि-युक्त (सूअ १, २, २, ४, सूअनि १०६, उत्त १६, १५, पउम ९०, २४, औप; महा)। २ अच्छी तरह व्यवस्थापित। ३ उपशमित (आचा १, ८, ६, ३)। ४ समर्पित (विसे ३५६३)। ५ शोभन, सुन्दर। ६ अबीभत्स। ७ निर्दोष (सूअ १, ३, १, १०)।

(कम्म ६, १६, पउम १७, १२३, पव ४६)। °रह देखो °रस = °दशन् (पड)°रि स्त्री [°ति] सत्तर, ७० (सम ८१, वप्प, पड्)। रिसि पु [°ऋषि] सात नक्षत्रों का मडल-विशेष (सुपा ३५४)। °वण्ण, °वन्न पुं [°पर्ण] १ वृक्ष-विशेष, सतौना (श्रौप, भाग)। २ देव-विशेष (राय ८०)। °वन्नव-डिसय पुं [°पर्णावतंसक] सौधर्म देवलोक का एक विमान (राय ५६)। °विह वि [°विध] सात प्रकार का (जी १६ प्रासू १०४ पि ४५१)। °वीसइ, °वीसा स्त्री [°विंशति] सताईस, २७ (पि ४४५, भग)। °सइय वि [°शतिक] सात सौ की सख्या-वाला (णाया १, १—पत्र ६४)। °सट्ठ वि [°षष्ट] सडसठवाँ, ६७वाँ (पउम ६७, ५१)। °सट्ठि देखो °ट्ठि (सम ७६) °सत्त-मिया स्त्री [°सप्तमिका] प्रतिज्ञा-विशेष, नियम-विशेष (श्रत)। °सिक्खावइय वि [°शिक्षाव्रतिक] सात शिक्षाव्रतवाला (णाया १, १२, श्रौप)। °हत्तर वि [°सप्तत] सतहत्तरवाँ, ७७ वाँ (पउम ७७, ११८)। °हत्तरि स्त्री [°सप्तति] १ सख्या-विशेष, सतहत्तर की सख्या, ७७। २ सतहत्तर सख्या-वाला (सम ८५, भग, श्रा २८)। °हा अ [°धा] सात प्रकार का, सप्तविध (पि ४५१)। °हुत्तरि देखो °हत्तरि (नव ८)। °ईस (अप) देखो °वीसा (पि ४४५)। °णउइ स्त्री [°नवति] सतानवे, ९७ (सम ९८)। °णउय वि [°नवत] १ सतानवेवाँ, ९७ वाँ (पउम ९७, ३०)। २ जिसमें सता-नवे अधिक हो वह, 'सताणउयजोयणसए' (भग)। °रह (अप) देखो °रह (पिंग)। °वण्ण °वन्न स्त्रीन [°पञ्चाशत्] १ सख्या-विशेष, सतावन, ५७। २ सतावन सख्यावाला (पडि, पिंग, सम ७३, नव २)। स्त्री °ण्णा, °न्ना (पिंग, पि २६५, ४४७)। °वन्न वि [°पञ्चाश] सतावनवाँ, ५७वाँ (पउम ५७, ३७)। °वीस न [°विंशति] १ सख्या-विशेष, सताईस। २ सताईस की सख्यावाला, 'एव सत्तावीस भगा णेयव्वा' (भग)। °वीसइ स्त्री [°विंशति] वही पूर्वोक्त अर्थ (कुमा)। °वीसइम वि [°विंशतितम] सताईसवाँ, २७ वाँ (पउम २७, ४२)। °वीसइविह वि [°विंशतिविध] सताईस प्रकार का (पण्ण १७—पत्र ५३४)। °वीसा स्त्री. देखो °वीस (हे १, ४, पड्)। °सीइ स्त्री [°शीति] सतासी, ८७ (सम ९३)। °सीइम वि [°शीतितम] सतासीवाँ, ८७ वाँ; (पउम ८७, २१)।

सत्तग वि [सप्ताङ्ग] १ राजा, मन्त्री, मित्र कोश-भडार, देश, किला तथा सैन्य ये सात राज्याङ्गवाला (कुमा)। २ न. हस्ति-शरीर के ये सात अवयव—चार पैर, सूँढ, पुच्छ और लिंग, 'सत्तगपइट्ठिय' (उवा १०१)।

सत्तण्ह देखो स-त्तण्ह = स तृष्ण।

सत्तत्थ वि [दे] अभिजात, कुलीन (दे ८, १०)।

सत्तम देखो सत्तम = सत्-तम।

सत्तर देखो स-त्तर = स-त्वर।

सत्तर देखो सत्त-र = सप्त-दशन्, दश।

सत्तल न [सप्तल] पुष्प विशेष (गउड)।

सत्तला } स्त्री [सप्तला] लता-विशेष, नव-
सत्तली } मालिका का गाछ (पाअ, गा ६१६, पउम ५३, ७९)।

सत्तली स्त्री [दे सप्तला] लता-विशेष, शेफालिका का गाछ (दे ८, ४)।

सत्तवीसजोयण देखो सत्तावीसजोअग (चड)।

सत्ता स्त्री [सत्ता] १ सद्भाव, अस्तित्व (णदि १३६ टी)। २ आत्मा के साथ लगे हुए कर्मो का अस्तित्व, कर्मो का स्वरूप से अप्रच्यव—अवस्थान (कम्म २, १, २५)।

सत्तावरी स्त्री [शतावरी] कन्द-विशेष, 'सत्ता-वरी विराली कुमारि तह थोहरी गलोई य' (पव ४, सवोध ४४, श्रा २०)।

सत्तावीसजोअण पु [दे] चन्द्र, चन्द्रमा (दे ८, २२), 'सत्तावीसजोअणकरपसरो जाव अज्जवि न होइ' (वाअ १५)।

सत्ति स्त्री [दे] १ तिपाई, तीन पाया वाला गोल काष्ठ विशेष। २ घडा रखने का पलग की तरह ऊँचा काष्ठ-विशेष (दे ८, १)।

सत्ति स्त्री [शक्ति] १ अस्त्र-विशेष (कुमा)। २ त्रिशूल (पण्ह १, १—पत्र १८)। ३ सामर्थ्य (ठा ३, १—पत्र १०६, कुमा, प्रासू २६)। ४ विद्या विशेष (पउम ७, १४२)। °म, °मंत वि [°मत्] शक्तिवाला (ठा ६—पत्र ३५२, सवोध ८, उप १३९ टी)।

सत्ति पु [सप्ति] अश्व, घोडा (पाअ)।

सत्तिअ वि [सात्त्विक] सत्त्व-युक्त, सत्त्व-प्रधान (सुअनि ६२, हम्मीर १६, स ४)।

सत्तिअणा स्त्री [दे] आभिजात्य, कुलीनता (दे ८, १६)।

सात्तवण्ण } देखो सत्त-वण्ण (सम १५२,
सत्तिवन्न } पि १०३, विचार १४८)।

सत्तु पु [शत्रु] रिपु, दुश्मन, वैरी (णाया १, १—पत्र, कप्पू, सुपा ७)। °इ वि [°जित्] १ शत्रु को जीतनेवाला। २ पु. एक राजा का नाम (प्राकृ ९५)। °ग्घ वि [°घ्न] १ रिपु को मारनेवाला (प्राकृ ९५)। २ पुं रामचन्द्र का एक छोटा भाई (पउम २५, १४)। °निहण [°निघ्न] वही पूर्वोक्त अर्थ (पउम १०, ६६)। °मद्दण वि [°मर्दन] शत्रु का मर्दन करनेवाला (सम १५२)। °सेण पु [°सेन] एक अन्तकृद् मुनि (अत ३)। °हण देखो °ग्घ (पउम ८०, ३८)।

सत्तु } पुं [सक्तु] सत्तू, सतुआ, भुजे
सत्तुअ } हुए यव आदि का चूर्ण (पि ३६७, निचू १, स २५३, सुर ५, २०६, सुपा ४०६, महा)।

सत्तुंज न [शत्रुञ्ज] १ एक विद्याधर-नगर (इक)। २ पु. रामचन्द्रजी का एक छोटा भाई, शत्रुघ्न (पउम ३२, ४७)।

सत्तुंजय पु [शत्रुञ्जय] १ काठियावाड में पालीताना के पास का एक सुप्रसिद्ध पर्वत जो जैनो का सर्व-श्रेष्ठ तीर्थ है (सुर ५, २०३)। २ एक राजा का नाम (राज)।

सत्तुंदम पु [शत्रुन्दम] एक राजा का नाम (पउम ३८, ४५)।

सत्तुग देखो सत्तुअ (कुप्र १२)।

सत्तुत्तरि स्त्री [सप्तसप्तति] सतहत्तर, ७७ (कम्म ६, ४८)।

सत्थ वि [शस्त] प्रशस्त, श्लाघनीय (चेइय ५७२)।

सत्थ न [शस्त्र] हथियार, आयुध प्रहरण (आचा उप, भग, प्रासू १०५)। °कोस पु

समीहिय वि [समीहित] इष्ट, वाञ्छित (महा)।

समीहिय देखो समिक्खिअ (वव ३)।

समुआचार पुं [समुदाचार] समीचीन आचरण (दे २, ६४)।

समुइअ वि [समुचित] योग्य, उचित (से १३, ६८, महा)।

समुइअ वि [समुदित] १ परिवृत, 'गुण-समुइओ' (उव, स २८६)। २ एकत्रित (विसे २६२४)।

समुइन्न वि [समुदीर्ण] उदय-प्राप्त (सुपा ६१४)।

समुईर देखो समुदीर। कर्म. 'जह वुड्ढगाण मोहो समुईरइ किंनु तरुणाण' (गच्छ ३, १५)।

समुक्कस देखो समुक्करिस (उत्त २३, ८८)।

समुक्कत्तिय वि [समुत्कर्तित] काट डाला हुआ (सुर १४, ४५)।

समुक्करिस पु [समुत्कर्ष] अतिशय उत्कर्ष (उत्त २३, ८८, सुख २३, ८८)।

समुक्कस सक [समुत् + कृष्] १ उत्कृष्ट बनाना। २ अक. गर्व करना। समुक्कसेज्जा (ठा ३, १—पत्र १९७), समुक्कसंति (प्रासू १६५)।

समुकिट्ठ वि [समुत्कृष्ट] उत्कृष्ट (ठा ३, १—पत्र ११७)।

समुकित्तण न [समुत्कीर्तन] उच्चारण (सुपा १४६)।

समुक्खअ वि [समुत्खात] उखाडा हुआ (गा २७६)।

समुक्खण सक [समुत् + खन्] उखाड़ना। समुक्खणइ (गा ६८४)। वकृ. समुक्खणंत (सुपा ५४१)।

समुक्खणण न [समुत्खनन] उन्मूलन, उत्पाटन (कुप्र १७४)।

समुक्खित्त वि [समुत्क्षिप्त] उठा कर फेंका हुआ (से ११, ७२)।

समुक्खिव सक [समुत् + क्षिप्] उठा कर फेंकना। समुक्खिवइ (पि ३१९, सण)।

समुग्ग पु [समुद्ग] १ डिब्बा, संपुट (सम ६३, कप्पु, णाया १, १७ टी, धर्मवि १५, औप, पण्ण ३६—पत्र ८३७, महा)। २ पक्षि-विशेष (जी २२, ठा ४, ४—पत्र २७१)।

समुग्गद (शौ) वि [समुद्गत] समुद्भूत, समुत्पन्न (नाट—मालती ११९)।

समुग्गम पुं [समुद्गम] समुद्भव (नाट—रत्ना १३)।

समुग्गिअ वि [दे] प्रतीक्षित (दे ८, १३)।

समुग्गिण्ण वि [समुद्गीर्ण] उगामा हुआ, उत्तोलित, ऊपर उठाया हुआ (पउम १५, ७४)।

समुग्गिर सक [समुद् + गृ] ऊपर उठाना, उगामना। वकृ. समुग्गिरत (पउम ६५, ४८)।

समुग्घडिअ वि [समुद्घाटित] खुला हुआ (धर्मवि १५)।

समुग्घाइअ वि [समुद्घातित] विनाशित (प्रासू १६५)।

समुग्घाय पुं [समुद्घात] कर्म-निर्जरा विशेष, जिस समय आत्मा वेदना, कषाय आदि से परिणत होता है उस समय वह अपने प्रदेशों को बाहर कर उन प्रदेशों से वेदनीय, कषाय आदि कर्मों के प्रदेशों की जो निर्जरा—विनाश करता है वह, ये समुद्घात सात हैं—वेदना, कषाय, मरण, वैक्रिय, तैजस, आहारक और केवलिक (पण्ण ३६—पत्र ७९३, भग, औप, विसे ३०५०)।

समुग्घायण न [समुद्घातन] विनाश (विसे ३०५०)।

समुग्घुट्ठ वि [समुद्घोषित] उद्घोषित (सुर ११, २६)।

समुघाय देखो समुग्घाय (दं ३)।

समुच्चय पुं [समुच्चय] विशिष्ट राशि, ढग, समूह (भग ८, ९—पत्र ३९५; भवि)।

समुच्चर सक [समुत् + चर्] उच्चारण करना, बोलना। समुच्चरइ (चेइय ६४१)।

समुच्चलिअ वि [समुच्चलित] चला हुआ (उप पृ ४८, भवि)।

समुच्चिण सक [समुत् + चि] इकट्ठा करना, संचय करना। समुच्चिणइ (गा १०४)।

समुच्छिय वि [समुच्छ्रित] एक क्रिया आदि में अन्वित (विसे ५७९)।

समुच्छ सक [समुत + छिद्] १ उन्मूलन करना, उखाड़ना। २ दूर करना। समुच्छे (सूत्र १, २, २, १३)। भवि. समुच्छिहिति (सूअ २, ५, ४)। सकृ. समुच्छित्ता (सूअ २, ४, १०)।

समुच्छइय वि [समवच्छादित] सतत आच्छादित (पउम ६३, ७)।

समुच्छणी स्त्री [दे] समार्जनी, झाड़ू (दे ८, १७)।

समुच्छल अक [समुत् + शल्] १ उछलना, ऊपर उठना। २ विस्तीर्ण होना। समुच्छले (गच्छ १, १५)। वकृ समुच्छलंत (सुर २, २३६)।

समुच्छलिअ वि [समुच्छलित] १ उछला हुआ। २ विस्तीर्ण (गच्छ १, ६, महा)।

समुच्छारण न [समुत्सारण] दूर करना (अभि ६०)।

समुच्छिअ वि [दे] १ तोषित, सतुष्ट किया हुआ। २ समारचित। ३ न अंजलि-करण, नमन (दे ८, ४९)।

समुच्छिद (शौ) वि [समुच्छ्रित] अति-उन्नत (पि २८७)।

समुच्छिन्न वि [समुच्छिन्न] क्षीण, विनष्ट (ठा ४, १ पत्र—१८७)।

समुच्छुगिय वि [समुच्छृङ्गित] टोच पर चढा हुआ (हम्मीर १५)।

समुच्छुग वि [समुत्सुक] अति-उत्कण्ठित (सुर २, २१५, ४, १७७)।

समुच्छेद } पुं [समुच्छेद] सर्वथा विनाश
समुच्छेय } (ठा ८—पत्र ४२५, राज)।
°वाइ वि [°वादिन्] पदार्थ को प्रतिक्षण सर्वथा विनश्वर माननेवाला (ठा ८—पत्र ४२५, राज)।

समुज्जम अक [समुद + यम्] प्रयत्न करना। वकृ. समुज्जमंत (पउम १०२, १७६, चेइय १५०)।

समुज्जम पुं [समुद्यम] १ समीचीन उद्यम। २ वि. समीचीन उद्यमवाला (सिरि २४८)।

समुज्जल वि [समुज्ज्वल] अत्यन्त उज्ज्वल (गउड, भवि)।

(स्वप्न ६२)। कर्म. सद्दावीअति (अभि १२८)। संकृ. सद्दावित्ता, सद्दावेत्ता (पि ५८२ महा)।

सद्दाविय वि [शब्दित, शब्दायित] आहूत, बुलाया हुआ (कप्प, महा, सुर ८, १३३)।

सद्दिअ वि [शब्दित] १ प्रसिद्ध (औप, णाया १, १ टी—पत्र ३)। २ आहूत (सुपा ८१३, महा)। ३ वार्तित, जिसको बात कही गई हो वह (कुमा ३, ३४)।

सद्दिअ वि [शाब्दिक] शब्द-शास्त्र का ज्ञाता (अणु २३४)।

सद्दूल पु [शार्दूल] १ श्वापद पशु की एक जाति, बाघ (पाअ, पण्ह १, १—पत्र ७, दे १, २४, अभि ५५)। २ छन्द विशेष (पिंग)। °विक्कीडिअ न [°विक्रीडित] उन्नीस अक्षरों के पादवाला एक छन्द (पिंग)। °सट्ट पुन [°साटक] छन्द-विशेष (पिंग)।

सद्ध देखो स-द्ध = सार्धं।

सद्ध न [श्राद्ध] १ पितरों की तृप्ति के लिए तर्पण पिण्ड दानादि (अच्चु १७, पुप्फ १६७)। २ वि. श्रद्धावाला, श्रद्धालु (उप ८६८)। देखो सड्ढ = श्राद्ध (उप १६६)। °पक्ख पुं [°पक्ष] आश्विन मास का कृष्ण पक्ष (दे ६, १२७)।

सद्ध देखो सज्झ = साध्य (नाट—चैत ३५)।

सद्धउ पु [?] व्यक्ति-वाचक नाम (महा)।

सद्धरा स्त्री [स्रग्धरा] एक्कीस अक्षरों के चरणवाला एक छन्द (पिंग)।

सद्धल पु [सद्धल] एक प्रकार का हथियार, कुन्त, बर्छा (पण्ह १, १—पत्र १८)। देखो सब्बल।

सद्धस देखो सज्झस (प्राकृ २१, प्राप्र)।

सद्धा देखो सड्ढा (हे २, ४१, णाया १, १—पत्र ७४, प्रासू ८६, पाअ)। °ल वि [°वत्] श्रद्धावाला (चंड, श्रावक १७५)। °लु वि [°लु] वही अर्थ (सबोध ८)। स्त्री. °लुगा (गा ४ ५)।

सद्धिअ वि [श्राद्धिक] श्रद्धावाला (पण्ह १, ३—पत्र ४४, वसु, ओघभा १६ टी)।

सद्धिं अ [सार्धम्] सहित, साथ (आचा, उवा, उत्त १६३)।

सद्धेय वि [श्रद्धेय] श्रद्धास्पद (विसे ४८२)।

सधम्म वि [सधर्मन्] समान धर्मवाला (स ७१२)।

सधम्मिअ देखो स-धम्मिअ = सद्-धार्मिक।

सधम्मिणी स्त्री [सधर्मिणी] पत्नी (दे २, १०६, सण)।

सधवा देखो स-धवा = स-धवा।

सनय देखो स-नय = स-नय।

सन्न वि [सन्न] १ क्लान्त (पाअ)। २ अवसन्न, मग्न (सूअ १, २, १, १०)। ३ खिन्न (पण्ह १, ३—पत्र ५५)।

सन्नाण देखो स-न्नाण = सज्ज्ञान।

सन्नाम सक [आ + दृ] आदर करना, सम्मान करना। सन्नामइ, सन्नामेइ (षड्, हे ४, ८३)।

सन्नामिअ वि [आदृत] सम्मानित (कुमा)।

सन्निअत्थ वि [दे] परिहित, पहना हुआ (सुपा ३६)।

सन्निउ (अप) देखो सणिअ (भवि)।

सन्निर न [दे] पत्र-शाक, भाजी (दस ५, १, ७०)।

सन्नुम सक [छादय्] आच्छादन करना, ढाँकना। सन्नुमइ (हे ४, २१)।

सन्नुमिअ वि [छादित] ढका हुआ (कुमा)।

सन्ह देखो सण्ह = श्लक्ष्ण (कप्प)।

सप देखो सव = शप्। सपइ (विसे २२२७)।

सपक्ख देखो स-पक्ख = स-पक्ष।

सपक्ख देखो स पक्ख = स्व-पक्ष।

सपक्खिं अ [सपक्षम्] अभिमुख, सामने (अत १४)।

सपक्खी स्त्री [सपक्षी] एक महौषधि (ती ५)।

सपज्जा स्त्री [सपर्या] पूजा (अच्चु ७०)।

सपडिदिसिं अ [सप्रतिदिक्] अत्यन्त संमुख, ठीक सामने (अत १४)।

सपत्तिअ वि [सपत्रित] बाण से अतिव्यथित (दे १, १३५)।

सपह देखो सवह (धर्मवि १२६)।

सपाग देखो स-पाग = श्व-पाक।

सपिसल्लग देखो सप्पिसल्लग (पि २३२)।

सप्प सक [सृप्] १ जाना, गमन करना। २ आक्रमण करना। सप्पइ (धात्वा १५५), 'घोरविसा वि हु सप्पा सप्पंति न बद्धवयणव्व' (सुर २, २४३)। वकृ. सप्पंत, सप्पमाण (गउड, कप्प)। कृ. सप्पणीअ (नाट—शकु १४७)।

सप्प पुस्त्री [सर्प] १ साँप, भुजगम (उवा, सुर २, १४३, जी २१, प्रासू १६, ३८, ११२)। स्त्री. °प्पा (राज)। २ पुं. अश्लेषा नक्षत्र का अधिष्ठाता देव (सुज्ज १०, १२, ठा २, ३—पत्र ७७)। ३ एक नरकस्थान (देवेन्द्र २७)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। °सिर पु [°शिरस्] हस्त-विशेष, वह हाथ जिसकी उंगलियाँ और अंगूठा मिला हुआ हो और तला नीचा हो (दे ८, ७२)। °सुगंधा स्त्री [°सुगन्धा] वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३६)।

सप्पभ देखो स-प्पभ = स्व-प्रभ, सत्-प्रभ, स-प्रभ।

सप्पमाण देखो सप्प = सृप्, सव = शप्।

सप्परिआव } देखो स-प्परिआव = स-
सप्परिताव } परिताप।

सप्पि न [सर्पिस्] घृत, घी (पाअ, पव ४, सुपा १३, सिरि ११८४, सण)। °आसव °यासव वि [°आस्रव] लब्धि-विशेषवाला, जिसका वचन घी की तरह मधुर होता है (पण्ह २, १—पत्र १००)।

सप्पि वि [सर्पिन्] १ जानेवाला, गति करनेवाला (कप्प)। २ रोगि विशेष, हाथ में लकडी के सहारे से चल सकनेवाला रोगि-विशेष (पण्ह २, ५—पत्र १००)।

सप्पिसल्लग देखो स-प्पिसल्लग = स-पिशाचक।

सप्पी देखो सप्प = सर्प।

सप्पुरिस देखो स-प्पुरिस = सत्-पुरुष।

सप्फ न [शष्प] बाल तृण, नया घास (हे २, ५३, प्राप्र)।

सप्फ न [दे] कुमुद, कैरव, 'चंदुज्जय तु कुमुअं गद्दहयं केरवं सप्फं' (पाअ)।

सप्फंद देखो स-प्फंद = स-स्पन्द।

समुद्दणवणीअ न [दे समुद्रनवनीत] १ अमृत, सुधा। २ चन्द्रमा (दे ८, ५०)।

समुद्दव सक [समुद् + द्रावय्] १ भयंकर उपद्रव करना। २ मार डालना। समुद्दवे (गच्छ २, ४)।

समुद्दहर न [दे] पानीय-गृह, पानी-घर (दे ८, २१)।

समुद्दाम वि [समुद्दाम] अति उद्दाम, प्रखर, "थुई समुद्दामसद्देण' (चेइय ६५०)।

समुद्दिस सक [समुद् + दिश्] १ पाठ को स्थिर-परिचित करने के लिए उपदेश देना। २ व्याख्या करना। ३ प्रतिज्ञा करना। ४ आश्रय लेना। ५ अविकार करना। कर्म समुद्दिस्सइ (उवा), समुद्दिस्सिज्जति (अणु ३)। संक्र समुद्दिस्स (आचा १, ८, २, १, २, २, १, ४, ५)। हेक्र. समुद्दिसित्तए (ठा २, १—पत्र ५६)।

समुद्देस पु [समुद्देश] १ पाठ को स्थिर-परिचित करने का उपदेश (अणु ३)। २ व्याख्या, सूत्र के अर्थ का अध्यापन (वव १)। ३ ग्रंथ का एक विभाग, अध्ययन, प्रकरण, परिच्छेद (पउम २, १२०)। ४ भोजन, 'जत्थ समुद्देसकाले' (गच्छ २, ५६)।

समुद्देस वि [सामुद्देश] देखो समुद्देसिय (पिंड २३०)।

समुद्देसण न [समुद्देशन] सूत्रों के अर्थ का अध्यापन (णंदि २०६)।

समुद्देसिय वि [समुद्देशिक] १ समुद्देश-सम्बन्धी। २ विवाह आदि के उपलक्ष्य मे किये गये जीमन में वचे हुए वे खाद्य पदार्थ जिनको सव साधु-सन्यासियों मे बाँट देने का संकल्प किया गया हो (पिंड २२६)।

समुद्धर सक [समुद् + हृ] १ मुक्त करना। २ जीर्ण मन्दिर आदि को ठीक करना। समुद्धरइ (प्रासू ५)। वक्र. समुद्धरत (सुपा ४७०)। संक्र समुद्धरेऊण (सिक्खा ६०)। हेक्र. समुद्धत्तुं (उत्त २५, ८)।

समुद्धरण न [समुद्धरण] १ उद्धार। २ वि. उद्धार करनेवाला (सण)।

समुद्धरिअ वि [समुद्धृत] उद्धार-प्राप्त (गा ५६३, सण)।

समुद्धाइअ वि [समुद्धावित] समुत्थित, उठा हुआ (स ५६६, ५६७)।

समुद्धाय अक [समुद् + धाव्] उठना। वक्र समुद्धायत (पण्ह १, ३—पत्र ४५)।

समुद्धिअ देखो समुद्धरिअ (गच्छ ३, २६)।

समुद्धुर वि [समुद्धुर] दृढ, मजबूत (उप १४२ टी)।

समुद्धुसिअ वि [समुद्धुषित] पुलकित, रोमाञ्चित, 'घणागमे कयवकुसुम व समुग्घु-(?द्धु)सियं सरीरं' (कुप्र २१०, स १८०, धर्मवि ४८)।

समुद्र पु [समुद्र] १ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४३)। २. देखो समुद्द (हे २, ८०)।

समुन्नइ स्त्री [समुन्नति] अभ्युदय (सार्ध ८२)।

समुन्नद्ध वि [समुन्नद्ध] संनद्ध, सज्ज,

'ज नमिया सयलनिवा
जिणस्स अचंतबलसमुन्नद्धा।
तेण विजएण रन्ना
नमित्ति नाम विणिम्मवियं'
(चेइय ६१३)।

समुन्नय वि [समुन्नत] अति ऊँचा (महा)।

समुपेह सक [समुत्प्र + ईक्ष्] १ अच्छी तरह देखना, निरीक्षण करना। २ पर्यालोचन करना, विचार करना। वक्र. समुपेहमाण (सूअ १, १३, २३)। संक्र. सवुपेहिया, समुपेहियाण (दस ७, ५५, महा)।

समुप्पज्ज अक [सपुन् + पद्] उत्पन्न होना। समुप्पज्जइ (भग, महा)। समुप्पजिज्जा (कप्प)। भूका. समुप्पज्जित्था (भग)।

समुप्पण्ण } वि [समुत्पन्न] उत्पन्न (पि
समुप्पन्न } १०२, भग, वसु)।

समुप्पयण न [समुत्पतन] ऊँचा जाना, ऊर्ध्व-गमन, उड्डयन (गउड)।

समुप्पाअअ वि [समुत्पादक] उत्पत्ति-कर्ता (गा १८८)।

समुप्पाड सक [समुत् + पादय्] उत्पन्न करना। समुप्पाडेइ (उत्त २६, ७१)।

समुप्पाय पुं [समुत्पाद] उत्पत्ति, प्रादुर्भाव (सूअ १, १, ३, १०, आचा)।

समुप्पिजल न [दे] अयश, अपकीर्त्ति। २ रज, धूलि (दे ८, ५०)।

समुप्पित्थ वि [दे] उत्त्रस्त, भय-भीत (सुर १३, ४४)।

समुप्पेक्ख } समुपेह। वक्र. समुप्पेक्ख-
समुप्पेह } माण, समुप्पेहमाण (राज, आचा १, ४, ४, ४)। संक्र. समुप्पेह (दस ७, ३)। देखो समुवेक्ख।

समुप्फालय वि [समुत्पाटक] उठाकर लाने-वाला, 'पहए जयसिरिसमुप्फालए मगलतूरे' (स २२)।

समुप्फालिय वि [समुत्फालित] आस्फालित (भवि)।

समुप्फुंद सक [समा + क्रम्] आक्रमण करना। वक्र समुप्फुंदत (से ४, ४१)।

समुप्फोडण न [समुत्स्फोटन] आस्फालन (पउम ६, १८०)।

समुब्भड वि [समुद्भट] प्रचड (प्रासू १०२)।

समुब्भव अक [समुद् + भू] उत्पन्न होना। समुब्भवंति (उवप २५)।

समुब्भव पुं [समुद्भव] उत्पत्ति (उव; भवि)।

समुब्भिय वि [समूच्छ्रित] ऊँचा किया हुआ (सुपा ८८, भवि)।

समुब्भुय (अप) नीचे देखो (सण)।

समुब्भूअ वि [समुद्भूत] उत्पन्न (स ४७६, सुर २, २३५, सुपा २६५)।

समुयाण देखो समुदाण = समुदान (विपा १, २—पत्र २५, ओघ १८४)।

समुयाण देखो समुदाण = समुदानय्। वक्र. समुयाणित (सुख ३, १)।

समुयाणिअ देखो समुदाणिय (ओघ ५१२)।

समुयाय सक समुदाय (राज)।

समुल्लव सक [समुत् + लप्] [illegible] कहना। समुल्लवइ (सण)। वक्र. समु[illegible] (सुर २, २६)। कवक्र. समुल्लविज्जत (सु २, २१७)।

समुल्लवण न [समुल्लपन] कथन, उक्ति (से १२, ७४)।

समुल्लविअ वि [समुल्लपित] उक्त, कथित (सुर २, १५१, ५, २३८, प्रासू ७)।

समउ (अप) नीचे देखो (भवि)।

सम अ [समम्] साथ, सह (गा १०२, १६४, २६५, उत्त १६, ३; महा, कुमा)।

समंजस वि [समञ्जस] उचित, योग्य (आचा, गउड, भवि)।

समत° देखो समता, 'वसिओ अगेसु समत-पीणक्खणकव्वुरो सेओ' (गउड)।

समंत देखो सामन्त (उप पृ ३२७)।

समत (अप) देखो समत्थ = समस्त (पिंग)।

समंतओ अ [समन्ततस्] सर्वत, चारो तरफ (गा ६७३; सुर २, २३८)।

समता } अ [समन्तात्] ऊपर देखो
समतेण } (पाअ, भग, विपा १, २—पत्र २६, से ६, ५१, सुर २, २८, १३, १६५)।

समक्कंत वि [समाक्रान्त] १ जिसपर आक्रमण किया गया हो वह (से ५, ५७)। २ अवरुद्ध, रोका हुआ (से ८, ३३)।

समक्ख न [समक्ष] नजर के सामने, प्रत्यक्ष (गा ३७०, सुपा १५०, महा)। देखो समच्छ।

समक्खाय } वि [समाख्यात] उक्त,
समक्खिअ } कथित (उप २११ टी, ६६४, जी २५, श्रु १३३)।

समगं देखो समय = समकम् (पव २३२, सुपा, ८७, सण)।

समग्ग वि [समग्र] १ सकल, समस्त (सुपा ६६)। २ युक्त, सहित (पण्ह १, ३—पत्र ४४, कुप्र ७)।

समग्गल वि [समर्गल] अत्यधिक (सिरि ८६७, सुपा ३६७, ४२०)।

समग्गल (अप) देखो समग्ग (पिंग)।

समग्घ वि [समर्घ] सस्ता, अल्प मूल्यवाला (सुपा ४४५, ४४७, सम्मत्त १४१)।

समच्चण न [समर्चन] पूजन, पूजा (सुपा ६)।

समच्चिअ वि [समर्चित] पूजित (पउम ११६, ११)।

समच्छ अक [सम् + आस्] १ बैठना। २ सक. अवलम्बन करना। ३ अधीन रखना। वकृ. समच्छंत (उप ६६८ टी)।

समच्छ वि [समक्ष] प्रत्यक्ष का विषय (सक्खि १५)। देखो समक्ख।

समच्छाइअ वि [समाच्छादक] ढकनेवाला (स ६६)।

समज्ज } सक [सम् + अर्ज्] पैदा
समज्जिण } करना, उपार्जन करना। समज्जइ, समज्जिणइ (सण, पव १०, महा)। वकृ. समज्जिणमाण (विपा १, १—पत्र १२)। संकृ. समज्जिवि (अप) (सण)।

समज्जिणिय } वि [समर्जित] उपार्जित
समज्जिय } (सण, ठा ३, १—पत्र ११४, सुपा २०५, सण)।

समज्झासिय वि [समध्यासित] अधिष्ठित (सुज्ज १०, १)।

समट्ठ वि [समर्थ] संगत अर्थ, व्याजवी, न्याय-युक्त (णाया १, १—पत्र ६२, उवा)। देखो समत्थ = समर्थ।

समण न [शमन] १ उपशमन, दबाना, शान्त करना (सुपा ३६६)। २ पथ्यानुष्ठान (उवर १४०)। ३ एक दिन का उपवास (संबोध ५८)। ४ वि. उपशमन करनेवाला, दबाने-वाला (उप ७८२, पचा ४, २६, सुर ४, २३१)।

समण देखो स-मण = स-मनस्।

समण देखो सवण = श्रवण (पउम १७, १०७, राज)।

समण पुं [समण] सर्वत्र समान प्रवृत्तिवाला, मुनि, साधु (अणु)।

समण पुं [श्रमण] १ भगवान् महावीर (आचा २, १५, ३)। २ पुंस्त्री, निर्ग्रन्थ मुनि साधु, यति, भिक्षु, सन्यासी, तापस, 'निग्गथ-सक्कतावसगेरुयआजीव पंचहा समणा' (पव ६४, अणु, आचा, उवा, कप्प, विपा १, १, धण २१, सुर १०, २२४)। स्त्री. °णी (भग, गच्छ १, १५)। °सीह पुं [°सिंह] १ एक जैन मुनि जो दूसरे बलदेव के पूर्वभवीय गुरू थे (पउम २०, १६२)। २ श्रेष्ठ मुनि (पण्ह २, ५—पत्र १४८)। °ोवासग, °ोवासय पुंस्त्री [°ोपासक] श्रावक, जैन गृहस्थ (उवा)। स्त्री. °सिया (उवा, णाया १, १४—पत्र १८७)।

समणतरु (अप) न [समनन्तरम्] अनन्तर, बाद में, पीछे (सण)।

समणक्ख देखो स-मणक्ख = स-मनस्क।

समणुगच्छ } सक [समनु + गम्] १
समणुगम } अनुसरण करना। २ अच्छी तरह व्याख्या करना। ३ अक. संबद्ध होना, जुड़ जाना। वकृ. समणुगच्छमाण (णाया १, १—पत्र २५)। कवकृ. समणुगम्मंत, समणुगम्ममाण (औप, सूअ २, २, ७६, णाया १, १—पत्र ३२, कप्प)।

समणुगय वि [समनुगत] १ अनुगत (स ७२०)। २ अनुविद्ध, जुड़ा हुआ (पंचा ६, ४६)।

समणुचिण्ण वि [समनुचीर्ण] आचरित, विहित, 'तवो समणुचिण्णो' (पउम ६, १६४)।

समणुजाण सक [समनु + ज्ञा] १ अनुमोदन करना, अनुमति देना। २ अधिकार प्रदान करना। समणुजाणइ, समणुजाणाइ समणु-जाणेज्जा (आचा)। वकृ. समणुजाणमाण (आचा)।

समणुजाय वि [समनुजात] उत्पन्न, संजात (पउम १००, २४, सुपा ५७८)।

समणुनाय वि [समनुज्ञात] अनुमत, अनुमोदित (पउम ८, ७)।

समणुन्न वि [समनुज्ञ] अनुमोदन-कर्ता (आचा १, १, १, ५)।

समणुन्न वि [समनोज्ञ] १ सुन्दर, मनोहर। २ सुन्दर वेष आदिवाला (आचा १, ८, १, १)। ३ संविग्न, संवेग-युक्त मुनि (आचा १, ८, २, ६)। ४ समान समाचारीवाला—सांभोगिक मुनि (ठा ३, ३—पत्र १३६, ग्व १)।

समणुन्ना स्त्री [समनुज्ञा] १ अनुमति, संमति २ अधिकार-प्रदान (ठा ३, ३—पत्र १३६)।

समणुन्नाय देखो समणुनाय (आचा २, १, १०, ४)।

समणुपत्त वि [समनुप्राप्त] संप्राप्त (सुर १, १८३, १०, १२०, सिरि ४३०, महा)।

समणुबद्ध वि [समनुबद्ध] निरन्तर रूप से व्याप्त (णाया १, ३—पत्र ६१, औप, उव)।

समणुभूअ वि [समनुभूत] अच्छी तरह जिसका अनुभव किया गया हो वह (वै ६२)।

उतरना। ३ जन्म-ग्रहण करना। समोअरइ (अणु २४६, उव, विसे ६४५), समोअरंति सूअ २, २, ७६, अणु ५६)।

समोआर पु [समवतार] अन्तर्भाव (अणु २४६)।

समोइन्न वि [समवतीर्ण] नीचे उतरा हुआ (सुर ७, १३४)।

समोगाढ वि [समवगाढ] सम्यग् अवगाढ (औप)।

समोच्छइअ वि [समवच्छादित] आच्छादित, अतिशय ढका हुआ (सुर १०, १५७)।

समोणम सक [समव+नम्] सम्यग् नमना—नीचा होना। वकृ समोणमत (औप, सुर ६, २३७)।

समोणय वि [समवनत] अति नमा हुआ (गा २८२)।

समोत्थइअ वि [समवस्थगित] आच्छादित, (से ६, ८४)।

समोत्थय वि [समवस्तृत] ऊपर देखो (उप ७७३ टी)।

समोत्थर सक [समव+स्तृ] १ आच्छादन करना, ढकना। २ आक्रमण करना। वकृ. समोत्थरंत (णाया १, १-पत्र २५, पउम ३, ७८)।

समोयार पुं [समवतार] अन्तर्भाव, समावेश (विसे ६५६, अणु)।

समोयारणा स्त्री [समवतारणा] अन्तर्भाव (विसे ६७३)।

समोयारिय वि [समवतारित] अन्तर्भावित, समावेशित (विसे ६५६)।

समोलइय वि [दे] समुत्क्षिप्त (गउड)।

समोलुग्ग वि [समवरुग्ण] रोगी, रोग-ग्रस्त (से ३, ४७)।

समोवअ सक [समव+पत्] १ सामने आना। २ नीचे उतरना। वकृ समोवयंत, समोवयमाण (स १३६, ३३०)।

समोवइअ वि [समवपतित] नीचे उतरा हुआ (णाया १, १६—पत्र २१३)।

समोसड्ढ } वि [समवसृत] समागत,
समोसढ } पधारा हुआ (सम्मत्त १२०, पि ६७, भग, णाया १, १—पत्र ३६, औप, सुपा ११)।

समोसर सक [समव+सृ] १ पधारना, आगमन करना। २ नीचे गिरना। समोसरेज्जा (औप, पि २३५)। हेकृ समोसरिउं (औप)। वकृ समोसरत (से २, ३६)।

समोसर अक [समप+सृ] १ पीछे हटना। २ पलायन करना। समोसरइ (काप्र १६६), समोसर (हे २, १९७)। वकृ. समोसरत (गा १६२)।

समोसरण पुन [समवसरण] १ एकत्र मिलन, मेलापक, मेला (सूअनि ११७, राय १३३)। २ समुदाय, समवाय, समूह, 'समोसरण निचय उवचय चए य जुम्मे य रासी य' (ओघ ४०७)। ३ साधु-समुदाय, साधु-समूह (पिंड २८५, २८८ टी)। ४ जहाँ पर उत्सव आदि के प्रसग मे अनेक साधु लोग इकट्ठे होते हो वह स्थान (सम २१)। ५ परतीर्थिको का समुदाय, जैनेतर दार्शनिको का समवाय (सूअ १, १२, १)। ६ धर्म-विचार, आगम-विचार (सूअ २, २, ८१, ८२)। ७ 'सूत्रकृताङ्ग सूत्र' के प्रथम श्रुतस्कध का बारहवां अध्ययन (सूअनि १२०)। ८ पधारना, आगमन (उवा, औप, विपा १, ७—पत्र ७२)। ९ तीर्थंकर-देव की पर्षद्। १० जहाँ पर जिन-भगवान् उपदेश देते हैं वह स्थान (आवम, पचा २, १७, ती ४३)। °तव पुं [°तपस्] तप-विशेष (पव २७१)।

समोसरिअ वि [समपसृत] १ पीछे हटा हुआ (गा ६५६, पउम १२, ६३)। २ पलायित (से १०, ५)।

समोसरिअ वि [समवसृत] समायात, समागत (से ७, ४१ उवा)।

समोसव सक [दे] टुकडा टुकडा करना। समोसवेंति (सूअ १, ५, २, ८)।

समोसिअ अक [समव+सद्] क्षीण होना, नाश पाना, नष्ट होना। वकृ. समोसिअत (से ८, ७)।

समोसिअ पुं [दे] १ प्रातिवेश्मिक, पडोसी (दे ८, ४६, पाअ)। २ प्रदोष। ३ वि. वध्य, वध-योग्य (दे ८, ४६)।

समोहण सक [समुद्+हन्] समुद्घात करना, आत्म-प्रदेशो को बाहर निकाल कर उनसे कर्म-निर्जरा करना। समोहणइ, समोहणंति (कप्प, औप, पि ४९६)। संकृ. समोहणित्ता (भग, कप्प, औप)।

समोहय वि [समुद्धत] जिसने समुद्घात किया हो वह (ठा २, २—पत्र ६१)।

समोहय वि [समवहत] आघात-प्राप्त (सुर ७, २८)।

सम्म अक [श्रम्] १ खेद पाना। २ थकना। सम्मइ (उत्त १, ३७)।

सम्म अक [शम्] शान्त होना, ठण्ढा होना। सम्मइ (धात्वा १५५)।

सम्म न [शर्मन्] सुख (हे १, ३२ कुमा)।

सम्म वि [सम्यञ्च्] १ सत्य, सच्चा (सूअ १, ८, २३, कप्प, सम्म ८७, वसु)। २ अविपरीत, अविरुद्ध (ठा १—पत्र २७, ३, ४—पत्र १५९)। ३ प्रशसनीय, श्लाघनीय (कम्म ४, १४, पत्र ६)। ४ शोभन, सुन्दर। ५ संगत, उचित, व्यापवी (सूअ २, ४, ३)। ६ न. सम्यग्दर्शन (कम्म ४, ६, ४५)। °त्त न [°त्व] १ समकित, सम्यग्-दर्शन, सत्य तत्त्व पर श्रद्धा (उवा, उव, पव ६३, जी ५०, कम्म ४, १४)। २ सत्य, परमार्थ, 'सम्मत्तदसिणो' (आचा सूअ १, ८, २३)। °द्दिट्ठिय, °दिट्ठीय वि [°दृष्टिक] सत्य तत्त्व पर श्रद्धा रखनेवाला (ठा १—पत्र २७, २, २—पत्र ५९)। °द्दसण न [°दर्शन] सत्य तत्त्व पर श्रद्धा (ठा १०—पत्र ५०३)। °दिट्ठि वि [°दृष्टि] देखो °दिट्ठिय (सूअनि १२१)। °नाण न [°ज्ञान] सत्य ज्ञान, यथार्थ ज्ञान (सम्म ८७, वसु)। °सुय न [°श्रुत] १ सत्य शास्त्र। २ सत्य शास्त्र-ज्ञान (णदि)। °ामिच्छद्दिट्ठि वि [°मिथ्यादृष्टि] मिश्र दृष्टिवाला, सत्य और असत्य तत्त्व पर श्रद्धा रखनेवाला (सम २६, ठा १—पत्र २८)। °वाय पु [°वाद] १ अविरुद्ध वाद। २ दृष्टिवाद, बारहवाँ जैन अग-ग्रन्थ (ठा १०—पत्र ४९१)। ३ सामायिक, सयम-विशेष, 'सामाइय समइय सम्मावाओ समास सखेवो' (आव १)।

सूअनि २९, कुमा, दं २२)। ५ पदार्थ, चीज, वस्तु (सम्म १ टी. पृष्ठ ११४)। ६ संकेत, इशारा (सूअनि २९, पिंड ६, प्राप, से १, १९)। ७ समीचीन परिणति, सुन्दर परिणाम। ८ आचार, रिवाज। ९ एकवाक्यता (सूअनि २९)। १० सामायिक, संयम-विशेष (विसे १४२१)। °क्खेत्त, °खेत्त न [°क्षेत्र] कालोपलक्षित भूमि, मनुष्य-लोक, मनुष्य-क्षेत्र (भग, सम ६८)। °ज्ज, °ण्ण, °न्न वि [°ज्ञ] समय का जानकार (धण ३९, गा ४०५, पि २७६)।

समय देखो स-मय=स-मद।

समय } अ [समकम्] १ युगपत्, एक
समयं } साथ (पव २१६ टी, विसे १९६६, १९६७, सुर १, ५, महा, गउड ११०६)। २ सह, साथ (गा ६१)।

समया देखो सम-या।

समया अ [समया] पास, नजदीक (सुपा १८८)।

समर सक [स्मृ] याद करना। कृ. समरणीय (चउ २७, नाट. शकु ६), समरियव्व (रयण २८)।

समर देखो सवर (हे १, २५८, षड्)। स्त्री. °री (कुमा)।

समर पुन [समर] १ युद्ध, लड़ाई (से १३, ४७; उप ७२८ टी, कुमा)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। ३ लोहकारशाला (उत्त० अध्य० १ गा० २६)। °इच्च पुं [°ादित्य] अवन्ती-देश का एक राजा (स ५)।

समर वि [स्मार] कामदेव-सबन्धी, कामदेव का (मन्दिर आदि), (उप ४५४)।

समरइत्तु वि [स्मर्तृ] स्मरण-कर्ता (सम १५)।

समरण न [स्मरण] स्मृति, याद (धर्मवि २०, प्राप ६८)।

समरसद्दहय पु [दे] समान उम्रवाला (दे ८, २२)।

समराइअ वि [दे] पिष्ट, पिसा हुआ (षड्)।

समरी देखो समर=शवर।

समरेत्तु देखो समरइत्तु (ठा ६—पत्र ४४४)।

समलंकर सक [समलम्+कृ] विभूषित करना। समलंकरेइ (आचा २, १५, ५)। संकृ समलंकरेत्ता (आचा २, १५, ५)।

समलंकार सक [समलम्+कारय्] विभूषित करना, विभूषा-युक्त करना। समलंकारेइ (औप)। संकृ. समलंकारेत्ता (औप)।

समलद्ध (अप) वि [समालब्ध] विलिप्त (भवि)।

समल्लिअ अक [समा+ली] १ संबद्ध होना। २ लीन होना। ३ सक. आश्रय करना। समल्लियइ (आक ४७)। वकृ समल्लिअत (से १२, १०)।

समल्लीण वि [समालीन] अच्छी तरह लीन (औप)।

समवइण्ण वि [समवतीर्ण] अवतीर्ण (सुपा २२)।

समवट्ठाण न [समवस्थान] सम्यग् अवस्थिति (अज्झ १४७)।

समवट्ठिइ स्त्री [समवस्थिति] ऊपर देखो, 'कोई विंति मुणीए सहावसमवट्ठिई हवे चरणं' (अज्झ १४६)।

समवत्ति देखो सम-वत्ति=सम-वर्तिन्।

समवय° देखो समवे।

समवसर देखो समोसर=समव+सृ (प्रामा)।

समवसरण देखो समोसरण (सूअनि ११६)।

समवसरिअ देखो समोसरिअ=समवसृत (धर्मवि ३०)।

समवसेअ वि [समवसेय] जानने योग्य, ज्ञातव्य (सा ४)।

समवाइ वि [समवायिन्] समवाय संबन्ध का, समवाय-संबन्धी (विसे १९२९, धर्मसं ४८७)।

समवाय पुं [समवाय] १ संबन्ध विशेष, गुण-गुणी आदि का संबन्ध (विसे २१०८)। २ सबन्ध (पउम ३६, २५, धर्मस ४८१; विवे ११६)। ३ समूह, समुदाय (सूअ २, १, २२, ओघ ४०७, अणु २७० टी, पिंड २, मारा २, विसे ३५९३ टी)। ४ एकत्र करना, 'काउं तो संघसमवायं' (विसे २५४६)। ५ जैन अंग-ग्रंथ-विशेष, चौथा अंग-ग्रंथ (सम १)।

समवे अक [समव+इ] १ शामिल होना। २ संबद्ध होना। समवेदि (शौ) (मोह ९३), समवयति (विसे २१०६)।

समवेद (शौ) वि [समवेत] समुदित, एकत्रित (मोह ७८)।

समसम अक [समसमाय्] 'सम्' 'सम्' आवाज करना। वकृ. समसमंत (भवि)।

समसरिस देखो सम-सरिस।

समसाण देखो मसाण, 'सममाणे सुन्नघरे देवउले वावि तं वससु' (सुपा ४०८)।

समसीस वि [दे] १ सदृश, तुल्य। २ निर्भर (दे ८, ५०)। ३ न. स्पर्धा (से ३, ८)।

समसीसिआ } स्त्री [दे] स्पर्धा, बराबरी
समसीसी } (सुपा ७, वज्जा २४, कप्पू, दे ८, १३, सुर १, ८, वज्जा ३२, १५४, विवे ४५, सम्मत्त १४५, कुप्र ३३४)।

समस्सअ सक [समा+श्रि] आश्रय करना। समस्सअइ (पि ४७३)। संकृ. समस्सइअ (पि ४७३)।

समस्सस अक [समा+श्वस्] आश्वासन प्राप्त करना, सान्त्वना मिलना। समस्ससध (शौ) (पि ४७१)। हेकृ. समस्ससिदुं (शौ) (नाट. शकु ११९)।

समस्ससिद (शौ) देखो समासत्थ (नाट—मृच्छ २५८)।

समस्सा स्त्री [समस्या] बाकी का भाग जोड़ने के लिए दिया जाता श्लोक-चरण या पद आदि (सिरि ८६८, कुप्र २७, सुपा १५५)।

समस्सास सक [समा+श्वासय्] सान्त्वना करना, दिलासा देना। समस्सासदि (शौ) (नाट)। वकृ समस्सासअंत (अभि २२२)। हेकृ. समस्सासिदुं (शौ) (नाट—मृच्छ ८१)।

समस्सास पुं [समाश्वास] आश्वासन (विक्र ३५)।

समस्सासण न [समाश्वासन] ऊपर देखो (से ७५)।

समस्सिअ वि [समाश्रित] आश्रय में स्थित, आश्रित (स ६३५, उप पृ ४७, सुर १३, २०४, महा)।

२६६ टी)। ६ न. एक नगर का नाम, राजा रावण के लिए कुवेर द्वारा बनाया हुआ एक नगर (पउम ७, १४६)। १० वि. आप से प्रकाश करनेवाला (पउम ३६, ४)। °पभा स्त्री [°प्रभा] १ प्रथम वासुदेव की पटरानी (पउम २०, १८६)। २ एक रानी का नाम (उप १०३१ टी)। °पहु देखो °पभ (पउम ८, २२)। °बुद्ध वि [°बुद्ध] अन्य के उपदेश के विना ही जिसको तत्त्व-ज्ञान हुआ हो वह (नव ४३)। °भु पुं [°भु] १ ब्रह्मा (पण्ह १, २—पत्र २८)। २ भारत में उत्पन्न तीसरा वासुदेव (सम ६४)। ३ सनरहवें जिनदेव का गणधर—मुख्य शिष्य (सम १५२)। ४ जीव, आत्मा, चेतन (भग २०, २—पत्र ७७६)। ५ एक महा-सागर, स्वयंभूरमण समुद्र, 'जहा सयभू उदहीण सेट्ठे' (सूअ १, ६, २०)। ६ पुंन. एक देव-विमान (सम १२)। देखो °भू। °भुगेहिणी स्त्री [°भुगेहिनी] सरस्वती देवी (अच्चु २)। °भुरमण पुं [°भुरमण] देखो °भूरमण (पण्ह २, ४—पत्र १३०, पउम १०२, ६१, स १०७, सुज्ज १६, जी ३, २—पत्र ३६७, देवेन्द्र २५५)। °भुव, °भू पुं [°भू] १ अनादि-सिद्ध सर्वज्ञ, 'जय जय नाह सयभुव' (स ६४७, उवर १२२)। २ ब्रह्मा (पाअ, पउम २८, ४८, ती ७, से १४, १७)। ३ तीसरा वासुदेव (पउम ५, १५५)। ४ रावण का एक योद्धा (पउम ५६, २७)। ५ भगवान् विमलनाथ का प्रथम श्रावक (विचार ३७८)। ६ कुच, स्तन (प्राकृ ४०)। देखो °भु। °भूरमण पुं [°भूरमण] १ समुद्र-विशेष। २ द्वीप-विशेष (जीव ३, २—पत्र २६७, ३७०)। ३ एक देव-विमान (सम १२)। °भूरमणभद्द पु [°भूरमणभद्र] स्वयंभूरमण द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३, २—पत्र ३६७)। °भूरमणमहाभद्द पु [°भूरमणमहाभद्र] वही अर्थ (जीव ३, २)। °भूरमणमहावर पु [°भूरमणमहावर] स्वयंभूरमण-समुद्र का एक अधिष्ठायक देव (जीव ३, २—पत्र ३६७)। °भूरमणवर पु [°भूरमणवर] वही अनन्तर उक्त अर्थ (जीव ३, २)। °वर पुं [°वर] कन्या का स्वेच्छानुसार वरण, एक प्रकार का विवाह जिसमें कन्या निमन्त्रित विवाहार्थियों में से अपनी इच्छानुसार अपना पति वरण कर ले (उव, गउड, अभि ३१)। °वरी स्त्री [°वरा] अपनी इच्छानुसार वरण करनेवाली (पउम १०६, १७)। °संबुद्ध वि [°संबुद्ध] स्वयं ज्ञात-तत्त्व (सम १)।

सयंजय पु [शतञ्जय] पक्ष का तेरहवाँ दिवस (सुज्ज १०, १४)।

सयंजल पु [शतञ्जल] १ एक कुलकर-पुरुष (सम १५०)। २ वरुण लोकपाल का विमान (भग ३, ७—पत्र १६८) देखो सय-ज्जल। ३ ऐरवत वर्ष मे उत्पन्न चौदहवें जिनदेव (पव ७)।

सयंभरी स्त्री [शाकम्भरी] देश-विशेष (मुणि १०८७३)।

सयग देखो सयय (पव ४६, कम्म ५, १००)।

सयग्घी स्त्री [दे] जांता, चक्की, पीसने का यन्त्र (दे ८, ५)।

सयड पुंन [शकट] १ गाडी (पउम २६, २१), 'सयडो गती' (पाअ)। २ न. नगर-विशेष (पउम ५, २७)। °मुह न [°मुख] उद्यान-विशेष, जहाँ भगवान् ऋषभदेव को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ था (पउम ४, १६)।

सयडाल देखो सगडाल (कुप्र ४४८)।

सयण देखो स-यण = स्व-जन।

सयण न [सदन] १ गृह, घर (गउड, सुपा ३६६)। २ अंग-ग्लानि, शरीर-पीडा (राज)।

सयण न [शयन] १ वसति, स्थान (आचा १, ६, १, ६)। २ शय्या, बिछौना (गउड, कुमा, गा ३३)। ३ निद्रा (कुमा ८, १७)। ४ स्वाप, सोना (पण्ह २, ४, सुपा ३६६)।

सयणिज्ज न [शयनीय] शय्या, बिछौना (णाया १, १४—पत्र १६०, गउड)।

सयणिज्जग देखो स-यण = स्व-जन, 'सेहस्स सयणिज्जगा आगया' (ओघभा ३० टी)।

सयणीअ देखो सयणिज्ज (स्वप्न ६२, ६८, सुर ३, ६०)।

सयण्ण देखो सकण्ण (महा)।

सयण्हु देखो स-यण्हु = स-तृष्ण।

सयत्त वि [दे] मुदित, हर्षित (दे ८, ५)।

सयन्न देखो सकन्न (सुपा २८२)।

सयय वि [सतत] निरन्तर (उव, सुर १, १३, महा)।

सयय पु [शतक] १ वर्तमान अवसर्पिणी-काल में उत्पन्न ऐरवत वर्ष के एक जिन-देव (सम १५३)। २ आगामी उत्सर्पिणी में भारतवर्ष में होनेवाले एक जिनदेव के पूर्वजन्म नाम, जो भगवान् महावीर का श्रावक था (ठा ६—पत्र ४५५)। ३ न. सौ का समुदाय (गा ७०६, अच्चु १०१)।

सयर देखो सायर = सागर (विसे ११८७)।

सयरहं देखो सयराहं (स ७६२)।

सयरा देखो सक्करा, 'सयर दहिं च दूद्धं तुरंतो कुणसु साहीण' (पउम ११५, ८)।

सयराहं } अ [दे] १ शीघ्र, जल्दी (दे ८,
सयराहा } ११, कुमा, गउड, चेइय ६१०)। २ युगपत्, एक साथ (विसे ६५६)। ३ अकस्मात् (औप)।

सयरि देखो सत्त-रि = सप्तति (पि २४५, ४४६)।

सयरी स्त्री [शतावरी] वृक्ष-विशेष, शतावर का गाछ (पण्ण १—पत्र ३१)।

सयल न [शकल] खंड, टुकड़ा (दे १, २८)।

सयल वि [सकल] १ संपूर्ण, पूरा। २ सब, समग्र (गा ५३०; कुमा; सुपा १६७, द ३६, जी १४, प्रासू १०८, १६४)। °चंद पु [°चन्द्र] 'श्रुतास्वाद' का कर्ता एक जैन मुनि (श्रा १६६)। °भूसण पु [°भूषण] एक केवलज्ञानी मुनि (पउम १०२, ५७)। °ादेस पुं [°ादेश] सवपिक्षी वाक्य, प्रमाण-वाक्य (अज्झ ६२)।

सयलि पुं [शकलिन्] मीन, मछली (दे ८, ११)।

सयहत्थिय वि [सौवहस्तिक] १ स्व-हस्त से उत्पन्न। २ न शस्त्र-विशेष, 'महकालोवि नरिंदो मिल्हइ सयहत्थियं सहत्थेण' (सिरि ४५१, ४५२)।

सयाचार देखो स-याचार = सदाचार।

सयाचार देखो सआ-चार = सदा-चार।

सयाण देखो स-याण = स-ज्ञान।

सयालि पुं [शतालि] भारतवर्ष के भावी

समाणी सक [समा + नी] ले आना। समाणेइ (विसे १३२५)।

समाणो देखो समाण = सन्।

समाणु (अप) देखो सम (हे ४, ४१८, कुमा)।

समादह सक [समा + दह्] जलाना, सुलगाना। वकृ समादहमाण (आचा १, ६, २, १४)।

समादा सक [समा + दा] ग्रहण करना। संकृ समादाय (आचा १, २, ६, ३)।

समादाण न [समादान] ग्रहण (राज)।

समादिट्ठ वि [समादिष्ट] फरमाया हुआ (मोह ८९)।

समादिस सक [समा + दिश्] आज्ञा करना। संकृ समादिसिअ (नाट)।

समादेस देखो समाएस (नाट—मालती ४६)।

समाधारणया स्त्री [समाधारणा] समान भाव से स्थापन (उत्त २९, १)।

समाधि देखो समाहि (ठा १०—पत्र ४७३)।

समापणा स्त्री [समापना] समाप्ति (विसे ३५६५)।

समाभरिअ वि [समाभरित] आभरण-युक्त (अणु २५३)।

समाय पु [समाज] १ सभा, परिषत् (उत्त ३०, १७, अच्चु ४)। २ पशु-भिन्न अन्यो का समूह, संघात। ३ हाथी (षड्)।

समाय पु [समाय] सामायिक, संयम-विशेष (विसे १४२१)।

समाय देखो समवाय, 'एते चेव य दोसा पुरिससमाएवि इत्थियाणंपि' (सूअनि ६३, राज)।

समाय देखो समयं (भग २६, १—पत्र ६४०)।

समायण्ण सक [समा + कर्णय्] सुनना। संकृ समायण्णिऊण (महा)।

समायण्णण न [समाकर्णन] श्रवण (गउड)।

समायण्णिय वि [समाकर्णित] सुना हुआ (काल)।

समायय सक [समा + दद्] ग्रहण करना, स्वीकार करना। समाययति (उत्त ४, २)।

समायय देखो समागय (भवि)।

समायर सक [समा + चर्] आचरण करना। समायरइ (उवा, उव), समायरेसि (निमा ५)। कृ समायरियव्व (उवा)।

समायरिअ वि [समाचरित] आचरित (गउड)।

समाया देखो समादा। संकृ. समायाय (आचा १, ३, १, ४)।

समायाय वि [समायात] समागत (उप ७२८ टी)।

समायार पुं [समाचार] १ आचरण (विपा १ १—पत्र १२)। २ सदाचार (अणु १०२)। ३ वि आचरण करनेवाला (णंदि ५२)।

समार सक [समा + रचय्] १ ठीक करना, दुरुस्त करना। २ करना, बनाना। समारइ (हे ४, ९५, महा)। भूका समारीअ (कुमा)। वकृ समारत (पउम ६८, ४०)।

समार सक [समा + रभ्] प्रारंभ करना। समारइ (षड्)।

समार वि [समारचित] बनाया हुआ, 'अद्धसमारम्मि जरकुडीरम्मि' (सुर २, ९६)।

समारंभ सक [समा + रभ्] १ प्रारम्भ करना। २ हिंसा करना। समारंभेज्जा (आचा)। वकृ समारंभत, समारंभमाण (आचा)। प्रयो. समारंभावेज्जा (आचा)।

समारंभ पु [समारम्भ] १ पर-परिताप, हिंसा (आचा, पण्ह १, १—पत्र ५, श्रा ७), 'परितावकरो भवे समारंभो' (संबोध ४१)। २ प्रारंभ (कप्पू)।

समारचण न [समारचन] १ ठीक करना, दुरुस्त करना, 'कारेइ जिण-हराणं समारणं जुण्णभग्गपडियाणं' (पउम ११, ३)। २ वि विधायक, कर्ता (कुमा)।
समारण

समारद्ध देखो समाढत्त (सुर १, १, स ७६४)।

समारभ } देखो समारंभ = समा + रभ्।
समारह } समारभे, समारभेज्जा, समारभेज्जासि, समारहइ (सूअ १, ८, ५, पि ४६०, षड्)। संकृ. समारब्भ (पि ५९०)।

समारिय वि [समारचित] दुरुस्त किया हुआ (कुप्र ३३४)।

समारुह सक [समा + रुह्] आरोहण करना, चढना। समारुहइ (भवि, पि ४८२)। वकृ समारुहंत (गा ११)। संकृ समारुहिय (महा)।

समारुहण न [समारोहण] आरोहण, चढना (सुपा २५३)।

समारूढ वि [समारूढ] चढा हुआ (महा)।

समारोव सक [समा + रोपय्] चढाना। संकृ. समारोविअ (पि ५९०)।

समालंकार } देखो समलंकार = समल + कारय्। समालंकारेइ, समालंकेइ (औप, आचा २, १५, १८)। संकृ समालंकारेत्ता, समालंकेत्ता (औप, आचा २, १५, १८)।
समालंके

समालंब पु [समालम्ब] आलम्बन, सहारा (संबोध ४०)।

समालंभण न [समालम्भन] अलंकरण, विभूषा करना, 'मंगलसमालंभणाणि विरएमि' (अभि १२७)। देखो समालभण।

समालत्त वि [समालपित] उक्त, कथित, 'पवणजओ समालत्तो' (पउम १५, ८८)।

समालभण न [समालभन] विलेपन, अंगराग (सुर १६, १४)। देखो समालंभण।

समालव सक [समा + लप्] विस्तार से कहना। समालवेज्जा (सूअ १, १४, २४)।

समालवणी स्त्री [समालपनी] वाद्य-विशेष, 'वेणुवीणासमालवणिरवसुदरं मज्झरिघोससमी-सखरमुहिमर' (सुपा ५०)।

समालविअ देखो समालत्त (भवि)।

समालह सक [समा + लभ्] १ विलेपन करना। २ विभूषा करना, अलंकार पहनना। संकृ समालहिवि (अप) (भवि)।

समालहण देखो समालभण (सुपा १०८, दस ३, १ टी, नाट—शकु ७३)।

समालाव पुं [समालाप] बातचीत, संभाषण (पउम ३०, ३)।

समालिंगिय वि [समालिङ्गित] आलिंगित, आश्लिष्ट (भवि)।

समालीढ वि [समाश्लिष्ट] ऊपर देखो (भवि)।

सरभेअ वि [दे] स्मृत, याद किया हुआ (दे ८, १३)।

सरमय पुं.ब. [शर्मक] देश-विशेष (पउम ६८, ६५)।

सरय पुंन [शरद्] ऋतु-विशेष, आसोज—आश्विन तथा कार्तिक का महीना (पण्ह २, २—पत्र ११४, गउड, से १,२७, गा ५३४, स्वप्न ७०, कुमा, हे १, १८), 'मुय माणं माण पियं पियसरय जाव वच्चए सरयं' (वज्जा ७४)। °चंद पु [°चन्द्र] शरद ऋतु का चाँद (णाया १, १—पत्र ३')। देखो सर = शरद्।

सरय पुं [शरक] काष्ठ-विशेष, अग्नि उत्पन्न करने के लिए अरणि का काष्ठ जिससे घिसा जाता है वह (णाया १, १८—पत्र २४१)।

सरय पुन [सरक] १ मद्य-विशेष, गुड तथा घातकी का बना हुआ दारू (पण्ह २, ५—पत्र १५०, सुपा ४८५, गा ५५१ अ, कुप्र १०)। २ मद्य-पान (वज्जा ७४)।

सरय देखो स-रय = स-रत।

सरय (अप) पु [सरस] छन्द-विशेष (पिंग)।

सरल पु [सरल] १ वृक्ष-विशेष (पण्ण १—पत्र ३४)। २ ऋजु, माया-रहित (कुमा, सण)। ३ सीधा, अवक्र (कुमा, गउड)।

सरलिअ वि [सरलित] सीधा किया हुआ (कुमा, गउड)।

सरली स्त्री [दे] चीरिका, क्षुद्र कीट-विशेष, झींगुर (दे ८, २)।

सरलीआ स्त्री [दे] १ जन्तु-विशेष, साही, जिसके शरीर में काँटे होते हैं। २ एक जात का कीडा (दे ८, १५)।

सरव पुं [शरप] भुजपरिसर्प की एक प्रकार (सूअ २, ३, २५)।

सरस वि [सरस] रस-युक्त (औप, अंत, गउड)। °रण्ण पु [°रण्य] समुद्र, सागर (से ६, ४३)।

सरसिज } न [सरसिज] कमल, पद्म
सरसिय } (हम्मीर ५१, रंभा)।

सरसिरुह न [सरसिरुह] कमल, पद्म (उप ७२८ टी, सम्मत्त ७६)।

सरसी स्त्री [सरसी] बडा तालाव—तडाग (औप, उप पृ ३८, सुपा ४८५)। °रुह न [°रुह] कमल (सम्मत्त १२०, १३६)।

सरस्सई स्त्री [सरस्वती] १ वाणी, भारती, भाषा (पाअ, औप)। २ वाणी की अधिष्ठात्री देवी (सुर १, १५)। ३ गीतरति नामक इन्द्र की एक पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४, णाया २—पत्र २५२)। ४ एक राज-पत्नी (विपा २, २—पत्र ११२)। ५ एक जैन साध्वी जो सुप्रसिद्ध कालकाचार्य की बहिन थी (काल)।

सरह पु [शरभ] १ शिकारी पशु की एक जाति (सुपा ६३२)। २ हरिवंश का एक राजा (पउम २२, ६८)। ३ लक्ष्मण के एक पुत्र का नाम (पउम ९१, २०)। ४ एक सामन्त नरेश (पउम ८, १३२)। ५ एक वानर (से ४, ९)। ६ छन्द-विशेष (पिंग)।

सरह पुं [दे] १ वृक्ष-विशेष, वेतस या बेंत का पेड (दे ८, ४७)। २ सिंह, पञ्चानन (दे ८, ४७, सुर १०, २२२)।

सरह (अप) वि [श्लाघ्य] प्रशंसनीय (पिंग)।

सरहस देखो स-रहस = स-रभस।

सरहा स्त्री [सरघा] मधु-मक्षिका (दे २, १००)।

सरहि पुस्त्री [शरधि] तूणीर, तीर रखने का भाथा—तरकस (से ७०)।

सरा स्त्री [दे] माला (दे ८, २)।

सराग देखो स राग = स-राग।

सराडि स्त्री [शराटि, शराडि] पक्षी की एक जाति (गउड)।

सराव पु [शराव] मिट्टी का पात्र-विशेष, सकोरा, पुरवा (दे ४, ४७, सुपा २६६)।

सरासण देखो सर-आसण = शरासन।

सराह वि [दे] दर्पोद्धुर, गर्व से उद्धत (दे ८, ५)।

सराहय पुं [दे] सर्प, सांप (दे ८, १२)।

सरि वि [सदृश्] सदृश, सरीखा, तुल्य (भग, णाया १, १—पत्र ३६, अंत ५, हे १, १४२, कुमा)।

सरि स्त्री [सरित्] नदी (से २, २६, सुपा ३५४, कुप्र ४३, भत्त १२३, महा)। °नाह पु [°नाथ] समुद्र (धर्मवि १०१)। देखो सरिआ।

सरिअ वि [स्मृत] याद किया हुआ (पउम ३०, ५४, सुपा २२१, ४६२)।

सरिअ देखो सरि = सदृश्, 'सोमेमाणा सरिय संपत्तियिया थिरजगा देविंदा' (औप)।

सरिअ न [सृतम्] अलं, पर्याप्त, बस, 'बहुभणिएण सरिअं' (रयण ५०)।

सरिआ स्त्री [सरित्] नदी (कुमा, हे १ १५, महा)। °वइ पु [°पति] समुद्र (से ७, ४१, ६, २)।

सरिआ स्त्री [दे] माला, हार (पण्ह १, ४—पत्र ६८, कुप्र ३, सुपा ३४३)।

सरिक्ख } वि [सदृक्ष] सदृश, समान,
सरिच्छ } तुल्य (प्राकृ ८६, प्राप्र, हे १, १४२, २, १७, कुमा)।

सरित्तु वि [स्मर्तृ] स्मरण-कर्ता (ठा ६—पत्र ४४४)।

सरिभरी स्त्री [दे] समानता, सरीखाई, गुजराती में 'सरभर', 'तओ जाया दोण्हवि सरिभरी' (महा १०)।

सरिर देखो सरीर (पव २०५)।

सरिवाय पुं [दे] आसार, वेगवाली वृष्टि (दे ८, १२)।

सरिस वि [सदृश] समान, सरीखा, तुल्य (हे १, १४२, भग, उव, हेका ४८)।

सरिस पुन [दे] १ सह, साथ,

'का समसीसी तियसिंदयाण
वडवालणस्स सरिसम्मि।
उत्तसमियसिहीपसरो
मयरहरो इधण जस्स।'
(वज्जा १५४)।

"आढत्तो संगामो बलवइणा तेण सरिसोत्ति" (महा)। २ तुल्यता, समानता (सक्षि ४७), "अंतेउरसरिसेणं पलोइयं नरवरिंदेण" (महा)।

सरिसरी देखो सरिभरी (महा)।

सरिसव पु [सर्षप] सरसों (चंड, ओघ ४०६, सं ४४, कुमा, कम्म ४, ७४, ७५, ७७, णाया १, ५—पत्र १०७)।

सरिसाहुल वि [दे] समान, सदृश (दे ८, ९)।

सरिस्सव देखो सरीसव (पउम २०, ९२)।

समाहिअ वि [समाहृत] गृहीत (आचा १, ८, ५, ७)।

समाहिअ वि [समाख्यात] सम्यग् कथित (सूअ १, ६, २६, आचा २, १६, ४)।

समाहुत्त (अप) नीचे देखो (भवि)।

समाहूअ वि [समाहूत] बुलाया हुआ, आकारित (मार्व १०५)।

समाहे सक [समा + धा] स्वस्थ करना, 'सुक्कज्झाणं समाहेइ' (सवोध ५१)।

समि स्त्री [शमि] देखो समी (अणु, पाअ)।

समि } वि [शमिन्, °क] १ शम-युक्त। समिअ } २ पुं साधु, मुनि (सुपा ४३६, ६४२, उप १८२ टी)।

समिअ देखो सत = शान्त (सिरि ११०४)।

समिअ वि [समित] सम्यक् प्रवृत्ति करनेवाला, सावधान होकर गति आदि करनेवाला (भग, उप ६०४, कप्प, औप, उव; सूअ १, १६, २, पव ७२)। २ राग-आदि से रहित (सूअ १, ६, ४)। ३ उपपन्न (सुज्ज ६)। ४ सम्यग् गत (सूअ १, ६, ४)। ५ सन्तत (ठा २, २—पत्र ५८)। ६ सम्यग् व्यवस्थित (सूअ २, ५, ३१)।

समिअ वि [सम्यञ्च्] १ सम्यक् प्रवृत्तिवाला (भग २, ५—पत्र १४०)। २ अच्छा, सुन्दर, शोभन, समीचीन (सूअ २, ५, ३१)।

समिअ वि [शमित] शान्त किया हुआ (विसे २४५८, औप, पगह २, ५—पत्र १४८, सण)।

समिअ वि [श्रमित] श्रम-युक्त (भग २, ५—पत्र १४०)।

समिअ वि [समिक] सम, राग-द्वेष-रहित, 'समियभावे' (पगह २, ५—पत्र १४६)।

समिअ न [साम्य] समता, रागादि का अभाव, सम-भाव (सूअ १, १६, ५, आचा १, ८, ८, १४)।

समिअ वि [समित] प्रमाणोपेत (गाया १, १—पत्र ६२, भग)।

समिअ वि [सामित] गेहूँ के आटा का बना हुआ पकान्न-विशेष, मगडक (पिंड २४५)।

समिअ अ [सम्यग्] अच्छी तरह (आचा, पगह २, ३—पत्र १२३)।

समिआ स्त्री. अ ऊपर देखो (भग २, ५—पत्र १४०, आचा १, ५, ५, ४), 'समियाए' (आचा १, ५, ५, ४)।

समिआ स्त्री [समिता] गेहूँ का आटा (णाया १, ८—पत्र १३२, सुख ४, ५)।

समिआ स्त्री [समिका, शमिका, शमिता] चमर आदि सब इन्द्रों की एक अभ्यन्तर परिषद् (भग ३, १० टी—पत्र २०२)।

समिइ स्त्री [समिति] १ सम्यक् प्रवृत्ति, उपयोग पूर्वक गमन-भाषण आदि क्रिया (सम १०, ओघभा ३, उव, उप ६०२, रयण ४)। २ सभा, परिषद्, 'नत्थि किर देवलोगेवि देवसमिईसु ओगासो' (विवे १३६ टी, तदु २५ टी)। ३ युद्ध, लड़ाई (रयण ४)। ४ निरन्तर मिलन (अणु ४२)।

समिइ स्त्री [स्मृति] १ स्मरण। २ शास्त्र-विशेष, मनुस्मृति आदि (सिरि ५५)।

समिइम वि [समितिम] गेहूँ के आटे की बनी हुई मडक आदि वस्तु (पिंड २०२)।

समिंजग पु [समिञ्जक] त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, १३६)।

समिक्ख सक [सम् + ईक्ष्] १ आलोचना करना, गुणदोष-विचार करना। २ पर्यालोचन करना, चिन्तन करना। ३ अच्छी तरह देखना, निरीक्षण करना। समिक्खए (उत्त २३, २५)। संकृ. समिक्ख (सूअ १, ६, ४, उत्त ६, २, महा, उवप २५)।

समिक्खा स्त्री [समीक्षा] पर्यालोचना (सूअ १, ३, ३, १४)।

समिक्खिअ वि [समीक्षित] आलोचित (धर्मसं ११११)।

समिच्च देखो समे।

समिच्छण न [समीक्षण] समीक्षा (भवि)।

समिच्छिय देखो समिक्खिअ (भवि)।

समिज्झ अक [सम् + इन्ध्] चारो तरफ से चमकना। समिज्झाइ (हे २, २८)। वकृ. समिज्झन्त (कुमा ३, ४)।

समिता देखो समिआ = समिका (ठा ३, २—पत्र १२७, भग ३, १०—पत्र ३०२)।

समिद्ध वि [समृद्ध] १ अतिशय संपत्तिवाला (औप, णाया १, १ टी—पत्र १)। २ वृद्ध, बढ़ा हुआ (प्रासू १३)।

समिद्धि स्त्री [समृद्धि] १ अतिशय संपत्ति। २ वृद्धि (हे १, ४४, षड्, कुमा, स्वप्न ६५, प्रासू १२८)। °ल वि [°ल] समृद्धिवाला (सुर १, ४६)।

समिर पु [समिर] पवन, वायु (सम्मत्त १५६)।

समिरिईअ } देखो स-मिरिईअ = समरीसमिरीय } चिक।

समिला स्त्री [शमिला, सम्या] युग-कीलक, गाडी की घोसरी में दोनो ओर डाला जाता लकडी का खीला (उप पृ १३८, सुपा २५८)।

समिल्ल देखो समिल्ल। समिल्लइ (षड्)।

समिहा स्त्री [समिध्] काष्ठ, लकडी (अत ११, पउम ११, ७६, पिंड ४४०)।

समी स्त्री [शमी] १ वृक्ष-विशेष, छोंकर का पेड (सूअ १, २, २, १६ टी, उप १०३१ टी, वज्जा १५०)। २ शिंबा, छिमी, फली (पाअ)। °खलय न [°दे] छोकर की पत्ती, शमी वृक्ष का पत्र-पुट (सूअ १, २, २, १६ टी, बृह १)।

समीअ देखो समीव (नाट—मालवि ५)।

समीकय वि [समीकृत] समान किया हुआ, 'ज किंचि अणगं तात तपि समीकत' (सूअ १, ३, २, ८, गउड)।

समीचीण वि [समीचीन] साधु, सुन्दर, शोभन (नाट—चैत ४७)।

समीर सक [सम् + ईरय्] प्रेरणा करना। समीरए (आचा १, ८, ८, १७)।

समीर पु [समीर] पवन, वायु (पाअ, गउड)।

समीरण पु [समीरण] ऊपर देखो (गउड)।

समील देखो समील। समीलइ (षड्)।

समीव वि [समीप] निकट, पास (पउम ६६, ८, महा)।

समीह सक [सम + ईह्] चाहता, वाञ्छा करना। वकृ. समीहमाण (उप ३२० टी)।

समीहा स्त्री [समीहा] इच्छा, वाञ्छा (उप १०३१ टी)।

सल्लुद्धरण न [शल्योद्धरण] १ शल्य को बाहर निकालना (विपा १, ८—पत्र ८६)। २ आलोचना प्रायश्चित्त के लिए गुरु के पास दूषण-निवेदन (ओघ ७९१)।

सल्लेहणा देखो सलेहणा (आरा ३५, भवि)।

सल्लेहिय वि [संलेखित] क्षीण, 'सल्लेहिया कसाया करंति मुणिणो ण विसखोहं' (आरा ३९)।

सव सक [शप्] १ शाप देना, आक्रोश करना गाली देना। २ आह्वान करना। सवइ (गा ३२४ ४००) सविमो, सवसु (कुमा)। कर्म सप्पए (विसे २२२७)। वकृ सवमाण (उत्त)। कवकृ सप्पमाण (पण्ह १, ३—पत्र ५४)।

सव सक [सू] उत्पन्न करना जन्म देना। सवइ (हे ४, २३३, षड्)।

सव देखो सा = सु। सवइ, सवए (षड्)।

सव सक [स्रु] झरना टपकना, चूना। सवइ (विसे १३६८)।

सव पुं [श्रवस्] १ कान। २ ख्याति, 'सवोमूआ' (प्राप्र)।

सव न [शव] शव, मुरदा मृत शरीर (पाअ, स ७६३, सण)।

सवंती स्त्री [स्रवन्ती] नदी (उप १०३१ टी)।

सवक्क देखो सवक्की (सुपा ३३७, ६०१, सूक्त ४६, महा, कुप्र १७०)।

सवक्ख देखो स-वक्ख = स-पक्ष।

सवग्गीय वि [सावर्गीय] सवर्ग-सबन्धी (हास्य १३०)।

सवच देखो स-वच = श्व-पच।

सवज्झा देखो सपज्झा (वेइय २०४, कप्पू)।

सवडम्मुह } वि [दे] अभिमुख, संमुख,
सवडहुत्त } 'सहसा सवडमुही चलिओ' (महा दे ८, २१, पउम ७२, ३२, भवि), 'उप्पइओ नहयले विमाणत्थो अह ताण सवडहुत्तो रणरसनच्चणुलुओ सहसा' (पउम ८, ४७), 'वच्चइ य दाहिणदिसं लंकानयरी-सवडहुत्ता' (पउम ८, १३४)।

सवण देखो समण = श्रमण (आरा ३९, भवि)।

सवण पुं [श्रवण] १ कर्ण, कान (पाअ, सुपा १२८)। २ नक्षत्र-विशेष (सम ८, १५, सुज्ज १०, ५)। ३ न. आकर्णन, सुनना (भग, सुर १, २४६)। देखो सवन।

सवण न [शपन] आह्वान (विसे २२२७)।

सवण देखो स-वण = स-व्रण।

सवण न [स्रवन] कर्मों मे प्रेरणा (राज)।

सवणता } स्त्री [श्रवणता] १ आकर्णन,
सवणया } श्रवण, सुनना (ठा २, १—पत्र ४६, ६—पत्र ३५५, णाया १, १—पत्र २६, भग, औप)। २ अवग्रह-ज्ञान (णंदि १७४)।

सवण्ण वि [सवर्ण] समान वर्णवाला (पउम २, ८१)।

सवण्ण न [सावर्ण्य] समान-वर्णता (प्रयौ २०)।

सवत्त पुं [सपत्न] १ दुश्मन, शत्रु, रिपु, (से ३, ५७, उप १०३१ टी, गउड)। २ वि. विरुद्ध (ओघ २७६)। ३ समान, तुल्य, 'सयवत्तसवत्तनयणरमणिज्जा' (कुप्र २), 'सयमेव ससिसवत्तं छत्तं उवरिं ठियं तस्स' (कुप्र ११९)।

सवत्तिणी देखो सवत्ती, 'सवि (? व)त्तिणी' (पिंड ५१०)।

सवत्तिणा स्त्री [सपत्निका] नीचे देखो (उवा)।

सवत्ती स्त्री [सपत्नी] पति की दूसरी स्त्री (उवा, काप्र ८७१, स्वप्न ५७ ठा ४, ३—पत्र २८२, हेका ४५)।

सवन (मा) पुं [श्रवण] एक ऋषि का नाम (मोह १०९)। देखो सवण = श्रवण।

सवन्न देखो सवण्ण (हम्मीर १७)।

सवय देखो स-वय = स-वयस, स-व्रत।

सवर देखो सबर (पउम ९८, ६५, इक, कप्पू, पि २५०)।

सवरिआ देखो सपज्झा (नाट—वेणी २६)।

सवल देखो सबल (दे ७, ५५ कुमा हे १, १३ , रंभा)।

सवलिआ स्त्री [दे] भरोच का एक प्राचीन जैन मन्दिर (मुणि १०८९९)।

सवह पुं [शपथ] १ आक्रोश वचन, गाली (णाया १, १—पत्र २६, देवेन्द्र ३५)। २ सोगन्ध, सौह (गा ३३३, महा)। ३ दिव्य, दोषारोप की शुद्धि के लिए किया जाता अग्नि-प्रवेश आदि (पउम १०१, ७)।

सवाय पुं [दे] श्येन पक्षी (दे ८, ७)।

सवाग }
सवाय } देखो स-वाग = श्व-पाक।

सवाय देखो स-वाय = स-पाद, स वाद, सद्-वाच्।

सवार न [दे] सुबह, प्रभात, गुजराती में 'सवार' (बृह १)।

सवास पुं [दे] ब्राह्मण (दे ८, ५)।

सवास देखो स-वास = स वास।

सविअ वि [शप्त] शाप-ग्रस्त, आक्रुष्ट (दे १, १३, पाअ)।

सविउ पुं [सवितृ] १ सूर्य रवि (ओघ ६६७)। २ हस्त-नक्षत्र का अधिपति देव (सुज्ज १०, १२)। ३ हस्त नक्षत्र (अणु)।

सविक्ख वि [सापेक्ष] अपेक्षा रखनेवाला (सम्मत्त ७६)।

सविज्ज देखो स-विज्ज = स-विद्य।

सविट्ठा स्त्री [श्रविष्ठा] नक्षत्र-विशेष, धनिष्ठा नक्षत्र (राज)।

सविण देखो सुमिण = स्वप्न (पव ९८)।

सवितु देखो सविउ (ठा २, ३—पत्र ७७)।

सविस न [दे] सुरा, दारू (दे ८, ४)।

सविह न [सविध] पास, निकट (पाअ)।

सव्व वि [सव्य] वाम, बाया (औप, उप पृ १३०)।

सव्व वि [श्रव्य] श्रवण योग्य, 'सव्वक्खरसंनिवाई' (भग १, १—पत्र ११)।

सव्व न [सर्व] १ सब, सकल, समस्त। २ संपूर्ण (हे ३, ५८, ५९)। °अ, °त्र [°तस्] १ सब से। २ सब ओर से (हे १, ३७, कुमा आचा)। °ओभद्द वि [°तोभद्र] १ सब प्रकार से सुखी। २ न सब प्रकार से सुख (पव्व १)। ३ चक्र-विशेष शुभाशुभ के ज्ञान का साधन-भूत एक चक्र (ति ६)। ४ महाशुक्र देवलोक में स्थित एक विमान (सम ३२)। ५ पाँचवाँ ग्रैवेयक विमान

समुज्जाय वि [समुद्यात] १ निर्गत (विसे २६०६)। २ ऊँचा गया हुआ (कप्प)।

समुज्जोअ अक [सम् + उद् + द्युत्] चमकना, प्रकाशना। वक्र. समुज्जोयत (पउम ११६, १७)।

समुज्जोअ पुं [समुद्द्योत] प्रकाश दीप्ति (सुपा ४० महा)।

समुज्जोवय सक [समुद् + द्योतय्] प्रकाशित करना। वकृ. समुज्जोवयंत (म ३४८)।

समुज्झ सक [सम् + उज्झ्] त्याग करना। सकृ. समुज्झिऊण (वै ८७)।

समुट्ठा अक [समुत् + स्था] १ उठना। २ प्रयत्न करना। ३ ग्रहण करना। ४ उत्पन्न होना। सकृ. समुट्ठिऊण (सण), समुट्ठाए, समुट्ठिऊण (आचा १, २, २, १, १, २, ६, १, सण)।

समुट्ठाइ वि [समुत्थायिन्] सम्यग् यत्न करनेवाला (आचा)।

समुट्ठाइअ देखो समुट्ठिअ (स १२५)।

समुट्ठाण न [समुपस्थान] फिर से वास करना। °सुय न [°श्रुत] जैन शास्त्र विशेष (णंदि २०२)।

समुट्ठाण न [समुत्थान] १ सम्यग् उत्थान। २ निमित्त, कारण (राज)। देखो समुत्थाण।

समुट्ठिअ वि [समुत्थित] १ सम्यक् प्रयत्न-शील (सूअ १, १४, २२)। २ उपस्थित। ३ प्राप्त (सूअ १, ३, ७, ६)। ४ उठा हुआ, जो खड़ा हुआ हो वह (सुर १, ९६)। ५ अनुष्ठित, विहित (सूअ १, २, २, ३१)। ६ उत्पन्न (णाया १, ६—पत्र १५६)। ७ आश्रित (राज)।

समुड्डीण वि [समुड्डीन] उड़ा हुआ (वज्जा ६२, मोह ६३)।

समुण्णइय देखो समुत्तइय (राज)।

समुत्त न [समुक्त] १ गोत्र-विशेष। २ पुंस्त्री उस गोत्र में उत्पन्न, 'समुत्ता (?त्ता)' (ठा ७—पत्र ३९०)। देखो समुत्त।

समुत्तइय वि [दे] गर्वित (पिंड ४६५)।

समुत्तर सक [समुत् + तॄ] १ पार जाना। २ अक नीचे उतरना। ३ अवतीर्ण होना। समुत्तरइ (गउड ६४१, १०६६)। सकृ समुत्तरेवि (अप) (भवि)।

समुत्तारिय वि [समुत्तारित] १ पार पहुँचाया हुआ। २ कूप आदि से बाहर निकाला हुआ (म १०२)।

समुत्तास सक [समुत् + त्रासय्] अति-शय भय उपजाना। समुत्तासेदि (शौ) (नाट—मालती ११९)।

समुत्तिण्ण वि [समवतीर्ण] अवतीर्ण (पउम १०६, ४२)।

समुत्तुंग वि [समुत्तुङ्ग] अति ऊँचा (भवि)।

समुत्तुण वि [दे] गर्वित (गउड)।

समुत्थ वि [समुत्थ] उत्पन्न (स ४८ ठा ४, ४ टी—पत्र २८८, सुर २, २२५, सुपा ४७०)।

समुत्थइअ देखो समुत्थय = समुत् + स्थगय्।

समुत्थण न [समुत्थान] उत्पत्ति (णाया १, ९—पत्र १५७)।

समुत्थय सक [समुत् + स्थगय्] आच्छा-दन करना, ढकना। हेकृ. समुत्थइउ (गा ३६४ अ, पि ३०९)।

समुत्थय वि [समवस्तृत] आच्छादित (कुप्र १६०)।

समुत्थल्ल वि [समुच्छलित] उछला हुआ (स ५७८)।

समुत्थाण न [समुत्थान] निमित्त, कारण (विसे २८२८)। देखो समुट्ठाण।

समुत्थिअ देखो समुट्ठिअ (भवि)।

समुदय पुं [समुदय] १ समुदाय, संहति, समूह (औप, भग, उवर १८९)। २ समुन्नति, अभ्युदय (कुप्र २२)।

समुदाआर } समुदाचार } देखो समुआचार (स्वप्न ४५, नाट—शकु ७७, औप, स ५९५)।

समुदाण न [समुदान] १ भिक्षा (औप)। २ भिक्षा-समूह (भग)। ३ क्रिया-विशेष, प्रयोग-गृहीत कर्मों को प्रकृति-स्थित्यादि-रूप से व्यवस्थित करनेवाली क्रिया (सूअनि १६६)। ४ समुदाय (आव ४)। °चर वि [°चर] भिक्षा की खोज करनेवाला (पण्ह २, १—पत्र १००)।

समुदाण सक [समुदानय्] भिक्षा के लिए भ्रमण करना। सकृ समुदाणेऊण (पण्ह २, १—पत्र १०१)।

समुदाणिअ देखो सामुदाणिय (औप, भग ७, १—पत्र २९३)।

समुदाणिगा स्त्री [सामुदानिकी] क्रिया-विशेष, समुदान-क्रिया (सूअनि १६८)।

समुदाय पुं [समुदाय] समूह (अणु २७० टी, विसे ९०१)।

समुदाहिय वि [समुदाहृत] प्रतिपादित, कथित (उत ३६, २१)।

समुदिअ देखो समुइअ = समुदित (सूअनि १२१ टी, सुर ७, ५६)।

समुदिण्ण देखो समुइन्न (राज)।

समुदीर सक [समुद् + ईरय्] १ प्रेरणा करना। २ कर्मों को खींच कर उदय में लाना, उदीरणा करना। वकृ. समुदी[?दी]रेमाण (णाया १, १७—पत्र २२९)। सकृ. समुदीरिऊण (सम्यक्त्वो ५)।

समुद्द पुं [समुद्र] १ सागर, जलधि (पाअ, णाया १, ८—पत्र १३३, भग, से १,२१, हे २,८०, कप्पू, प्रासू ६०)। २ अन्धकवृष्णि का ज्येष्ठ पुत्र (अंत ३)। ३ आठवें बलदेव और वासुदेव के पूर्व जन्म के धर्म-गुरु (सम १५३)। ४ वेलन्धर नगर का एक राजा (पउम ५४, ३९)। ५ शाण्डिल्य मुनि के शिष्य एक जैन मुनि (णंदि ४९)। ६ वि. मुद्रा-सहित (से १, २१)। °दत्त पुं [°दत्त] १ चौथे वासुदेव का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५३)। २ एक मच्छीमार का नाम (विपा १, ८—पत्र ८२)। °दत्ता स्त्री [°दत्ता] १ हरिषेण वासुदेव की एक पत्नी (महा ४४)। २ समुद्रदत्तमच्छीमार की भार्या (विपा १, ८)। °लिक्खा स्त्री [°लिक्षा] द्वीन्द्रिय जंतु की एक जाति (पण्ण १—पत्र ४४)। °विजय पुं [°विजय] १ चौथे चक्रवर्ती राजा का पिता (सम १५२)। २ भगवान् अरिष्टनेमि का पिता (सम १५१, कप्प, अंत)। °सुआ स्त्री [°सुता] लक्ष्मी (समु १५२)। देखो समुद्र।

सव्विवर देखो स-व्विवर = स-विवर।

सव्वोसहि स्त्री [सर्वौषधि] १ लब्धि-विशेष, जिसके प्रभाव से शरीर की कफ आदि सब चीज औषधि का काम करती है (पण्ह २, १—पत्र ९९)। २ वि लब्धि-विशेष को प्राप्त (राज)।

सस अक [श्वस्] श्वास लेना, साँसना। ससइ (रयण ६)। वकृ ससन्त (णाया १, १—पत्र ६३; गा ५४६, सुर १२, १६४, नाट—मृच्छ २२०)।

सस पुं [शश] खरगोश (णाया १, १—पत्र २४, ६५)। °इंध पुं [°चिह्न] चन्द्रमा (गउड)। °हर पुं [°धर] चन्द्रमा (णाया १, ११; सुर १६, ९०; हे ४, ३, ८५; कुमा, वज्जा १६, रंभा)।

ससंक पुं [शशाङ्क] १ चन्द्रमा, चांद (कप्प, सुर १६, ४५; सुपा २; कप्पू; रंभा)। २ नृप विशेष (पउम ५, ४३; ८५, २)। °धम्म पुं [°धर्म] विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, ४४)।

ससंक देखो स-संक = स-शङ्क।

ससंकिअ देखो स-संकिअ = स-शङ्कित।

ससग देखो ससंक = शशाङ्क।

ससंवेयण देखो स-संवेयण = स्व-संवेदन।

ससक्ख वि [ससाक्ष्य] साक्षीवाला (राय १४०)।

ससग पुं [शशक] देखो सस = शश (उव)।

ससण पुं [श्वसन] १ शुण्डा-दण्ड, हाथी की सूँड (नदु २०; औप)। २ वायु, पवन। ३ न. निश्वास (राज)।

ससत्ता देखो स-सत्ता = स-सत्त्वा।

ससरक्ख वि [सरजस्क, सरक्ष] १ रजो-युक्त, धूलावाला (आचा २, १, ६, ३; २, २, ३, ३३; आव ४)। २ पुं. बौद्ध मत का साधु (सुख १८, ४३; मन्ना)।

ससल्लइअ वि [दे] निष्पिष्ट, पिसा हुआ (दे ८, २)।

ससा स्त्री [स्वसृ] बहन, भगिनी (पिंड ३१७; हे ३, ३५; कुमा)।

ससि पुं [शशिन्] १ चन्द्रमा, चांद (सुज्ज २०—पत्र २९१, उव, कप्प, कुमा; पि ४५)। २ एक विद्याधरी का नाम (पउम ५, ९४)। ३ चन्द्र नाडी, वाम नाडी (सिरि ३६१)। ४ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४३)। ५ छन्द-विशेष (पिंग)। ६ एक राजा का नाम (उप)। ७ दक्षिण रुचक पर्वत का एक कूट (ठा ८—पत्र ४३६)। °कंत पुं [°कान्त] चन्द्रकान्त मणि (गच्छ ५८)। °कला स्त्री [°कला] चन्द्र की कला, सोलहवां भाग (गउड)। °कंत देखो °अंत (कुमा, मण)। °पभ °पह पुं [°प्रभ] १ आठवें जिनदेव, भगवान् चन्द्रप्रभ। २ इक्ष्वाकु वंश का एक राजा (पउम ५, ५)। °प्पहा स्त्री [°प्रभा] एक रानी, कर्पूरमंजरी की माता (पउम ९, ९१, कप्पू)। °मणि पुंस्त्री [°मणि] चन्द्रकान्त मणि (स ६, ६७)। °लेहा स्त्री [°लेखा] चन्द्र की कला (सुपा ६०३)। °वक्कय न [°वल्कक] आभूषण-विशेष (औप)। °वेग पुं [°वेग] एक राज-कुमार (उप १०३१ टी)। °सेहर पुं [°शेखर] महादेव, शिव (सुपा ३३)।

ससिअ न [श्वसित] श्वास, साँस (से १२, ३२)।

ससिण देखो ससि (कप्पू)।

ससिणिद्ध वि [सस्निग्ध, सस्निग्ध] स्नेह-युक्त (आचा २, १, ७, ११; कप्प)।

ससित्थ न [ससिक्थ] आटा आदि से लिप्त हाथ या बरतन आदि का धोवन (पडि)।

ससिरिय, ससिरीय } देखो स-सिरिय = स-श्रीक।

ससिह देखो स-सिह = स-स्पृह, स शिख।

ससुर पुं [श्वशुर] ससुर, पति और पत्नी का पिता (पउम १८, ८; हेका ३२; कुमा; सुपा ३७७)।

ससूग देखो स-सूग = स-शूक।

ससेस देखो स-सेस = स-शेष।

ससोग, ससोगिल्ल } देखो स सोग = स-शोक।

सस्स न [शस्य] १ क्षेत्र-गत धान्य (गा ६८९; महा; सुपा ३२)। २ वि प्रशंसनीय, श्लाघ्य (सुपा ३२)। देखो सास = शस्य।

सस्सवण वि [सश्रवण] सकर्ण, निपुण (सुपा ६४५)।

सस्सिय पुं [शस्यिक] कृषीवल, कृषक (राज)।

सस्सिरिअ देखो स-स्सिरिअ = स-श्रीक।

सस्सिरिली देखो सिस्सिरिली (उत्त ३६, ९८)।

सस्सिरीअ देखो स-स्सिरीअ = स-श्रीक।

सस्सू स्त्री [श्वश्रू] सास, पति या पत्नी की माता (प्राकृ ३८; सिरि ३५५)।

सह अक [राज्] शोभना, विराजना। सहइ (हे ४, १००; पाअ; कुमा; सुपा ८)।

सह अक [सह्] सहन करना। सहइ, सहति (उव; महा; कुमा), सहइरे, सहेइरे (पि ४५८) वकृ. सहंत, सहमाण (महा; पड्)। सकृ सहिअ (महा)। हेकृ सहिउं, सोढुं (महा; धात्वा १५५, १५७)। कृ. सहिअव्व, सोढव्व (धात्वा १५५; सुर १४, ८०; गा १८; कप्पू; उप ७२८ टी; धात्वा १५७)।

सह सक [आ + ज्ञा] हुकुम करना, आदेश करना, फरमाना। सहइ (धात्वा १५५)।

सह वि [दे] १ योग्य, लायक (दे ८, १)। २ सहाय, मदद-कर्ता (सूअ १, ३, २, ६)।

सह वि [स्वक] देखो स = स्व (आचा)। °देस पुं [°देश] स्वदेश, स्वकीय देश (पिंग)। °संबुद्ध वि [°संबुद्ध] १ निज से ही ज्ञान को प्राप्त। २ पुं. जिन-देव (औप)।

सह वि [सह] १ समर्थ, शक्तिमान् (पाअ; से ५, २३)। २ सहिष्णु, सहन कर्ता (आचा)। ३ पुं युगलिक मनुष्य की एक जाति (इक; राज)। ४ अ साथ, संग (स्वप्न ३४; आचा; जी ४३; प्रासू ३८)। ५ युगपत्, एक साथ (राज)। °कार पुं [°कार] १ आम का पेड (कप्प)। २ साथ मिलकर काम करना। ३ मदद, साहाय्य (हे १, १७७)। °कारि वि [°कारिन्] १ साहाय्य-कर्ता (पंचा ११, १२)। २ कारण-विशेष (विसे ११६८; श्रावक २०९)। °गत, °गय वि [°गत] संयुक्त (पण्ण, २२—पत्र ६३७; उव)। °गारि, गारिअ देखो °कारि (धर्मसं ३०९; उप ४७२; उत्तर ७६)। °चर देखो

समुल्लस अक [समुन् + लस्] उल्लसित होना, विकसना। समुल्लसइ (नाट—विक्र. ७१)। वकृ समुल्लसंत (कप्प, सुर २, ८५)।

समुल्लसिय वि [समुल्लसित] उल्लास-प्राप्त (सण)।

समुल्लालिय वि [समुल्लालित] उछाला हुआ (णाया १, १८—पत्र २३७)।

समुल्लाव पुं [समुल्लाप] आलाप, संभाषण (विपा १, ७—पत्र ७७, महा, णाया १, १६—पत्र १९६)।

समुल्लास पुं [समुल्लास] विकास (गउड)।

समुवइट्ठ वि [समुपविष्ट] बैठा हुआ (उप २८८)।

समुवउत्त वि [समुपयुक्त] उपयोग-युक्त, सावधान (जीवस ३६३)।

समुवगय वि [समुपगत] समीप आया हुआ (वव ४)।

समुवज्जिय वि [समुपार्जित] उपार्जित, पैदा किया हुआ (सुपा १००, सण)।

समुवत्थिय वि [समुपस्थित] हाजिर, उपस्थित (उप ४३५)।

समुवयत देखो समुवे।

समुवविट्ठ वि [समुपविष्ट] बैठा हुआ (राय ७५)।

समुवसपन्न वि [समुपसंपन्न] समीप में समागत (धर्म ३)।

समुवहसिअ वि [समुपहसित] जिसका खूब उपहास किया गया हो वह (सण)।

समुवागय वि [समुपागत] समीप में आगत (णाया १, १६—पत्र १९६, सण)।

समुवे सक [समुपा + इ] १ पास में आना। २ प्राप्त करना। समुवेइ, समुवेंति (यति ४२, पि ४९३)। वकृ. समुवयंत (स ३७०)।

समुवेक्ख } सक [समुत्प्र + ईक्ष्] १
समुवेह } निरीक्षण करना। २ व्यवहार करना, काम में लाना। वकृ समुवेक्खमाण, समुवेहमाण (णाया १, १—पत्र ११, आचा १, ५, २, ३)।

समुव्वत्त वि [समुद्वृत्त] ऊँचा किया हुआ (से ११, ५१)।

समुव्वत्तिय वि [समुद्वर्तित] घुमाया हुआ, फिराया हुआ (सुर १३, ४३)।

समुव्वह सक [समुद् + वह्] १ धारण करना। २ ढोना। समुव्वहइ (भवि, सण)। वकृ. समुव्वहंत (से ६, २, नाट—रत्ना ८३)।

समुव्वहण न [समुद्वहन] सम्यग् वहन—ढोना (उव)।

समुव्विग्ग वि [समुद्विग्न] अत्यन्त उद्वेग-वाला (गा ४९२)।

समुव्वूढ वि [समुद्व्यूढ] १ विवाहित (उप पृ १२७)। २ उत्तानित, ऊँचा किया हुआ (से ११, ६०)।

समुव्वेल्ल वि [समुद्वेल्लित] अत्यन्त कँपाया हुआ, सचालित, 'गयजूहसमायड्ढियविसमस-मुव्वेल्लकमलसंघाय' (पउम ९४, ५२)।

समुसरण देखो समोसरण (पिड २)।

समुस्सय पुं [समुच्छ्रय] १ ऊँचाई, ऊर्ध्वता (सूअ २, ४, ७)। २ उन्नति, उत्तमता (सूअ १, १५, ७)। ३ कर्मों का उपचय (आचा)। ४ संघात, समूह, राशि, ढग (दस ६, १७, अणु २०)।

समुस्सविय वि [समुच्छ्रयित] ऊँचा किया हुआ (पउम ४०, ६)।

समुस्ससिय वि [समुच्छ्वसित] १ उल्लास-प्राप्त, 'समुस्ससियरोमकूवा' (कप्प)। २ उच्छ्वास-प्राप्त (पउम ६४, ३८)। देखो समूससिअ।

समुस्सिअ वि [समुच्छ्रित] ऊर्ध्व-स्थित, ऊँचा रहा हुआ (सूअ १,५,१,१५, पि ६४)।

समुस्सिणा सक [समुत् + श्रु] १ निर्माण करना, बनाना। २ सस्कार करना, सँवारना, जीर्ण मन्दिर आदि को ठीक करना। समुस्सि-णासि, समुस्सिणामि (आचा १,८,२,१,२)।

समुस्सुग } देखो समूसुअ (द्र ४८, महा)।
समुस्सुय }

समुह देखो संमुह (हे १, २९, गा ६५६, कुमा, हेका ५१, महा; पाअ)।

समुहय वि [समुद्धत] समुद्घात-प्राप्त (श्रावक ९८)।

समुहि देखो स-मुहि = श्व-मुखि।

समूसण न [समूपण] त्रिकटुक—सूँठ, पीपल तथा मरिच या मिरचा (उत्तनि ३)।

समूसविय देखो समुस्सविय (पण्ह १, ३—पत्र ४५)।

समूसस अक [समुत् + श्वस्] १ ऊँचा जाना। २ उल्लसित होना। ३ ऊर्ध्व श्वास लेना। समूससंति (पि १४३)। वकृ. समू-ससत, समूससमाण (गा ६०४, गउड, से ११, १३२)।

समूससिअ न [समुच्छ्वसित] १ नि श्वास (से ११, ५९)। २ देखो समुस्ससिय (णाया १, १—पत्र १३, कप्प, गउड)।

समूसिअ देखो समुस्सिअ (भग, औप, सूअ १, ५, १, ११ टी, पण्ह १, ३—पत्र ४५)।

समूसुअ वि [समुत्सुक] अति उत्कंठित (सुपा ४७७, नाट—विक्र ९२)।

समूह पुंन [समूह] समुदाय, राशि, सघात, 'मतीहि य उवसमियं भुयगमाणं समूह व' (पउम १०६, १५, ओघ ४०७, गउड, भवि)।

समूह (अप) देखो समुह (भवि)।

समे सक [समा + इ] १ आगमन करना, आना, संमुख आना। २ जानना। ३ प्राप्त करना। ४ अक. संहत होना, इकट्ठा होना। समेइ, समेंति (भवि, विसे २२९६)। वकृ. समेमाण (आचा १, ८, १, २)। संकृ. समिच्च, समेच्च (सूअ १, १२, ११, पि ५९१, आचा १, ९, १, १६, पच ३, ४५)

समेअ } वि [समेत] १ समागत, समायात
समेत } 'सीलवड परिणेउं गिह समेअ महिड्ढीए' (श्रा १६)। २ युक्त, सहित, 'तेहि समेतो अहय वयामि जा कित्तियपि भूमागं (सुर १, १९८, ३, ८८, सुपा २५९ महा)।

समेर देखो स-मेर = स-मर्याद।

समोअर अक [समव + तॄ] १ समान समावेश होना, अन्तर्भाव होना। २ नी

सहिआ देखो सही (महा)।

सहिज्ज वि देखो सहाअ = सहाय, 'हुति सहिज्जा विहुरे कुवियावि सहोयरा चेव' (सुपा ४२७, महा, कुप्र १२)। स्त्री. °ज्जी (सुपा १६ टि)।

सहिण देखो सण्ह + श्लक्ष्ण (आचा २, ५, १, ७, स २६४, ३२६, ३३३)।

सहिण्हु } वि [सहिष्णु] सहन करने की
सहिर } आदतवाला (राज, पि ५६६)। स्त्री °री (गा ४७, पि ५६६)।

सही स्त्री [सखी] सहेली, सगिनी (स्वप्न १४१, कुमा)।

सहो° देखो सहि। °वाय पु [°वाद] मित्रता-सूचक वचन (सूअ १, ६ २७)।

सहीण वि [स्वाधीन] स्वायत्त, स्व-वश (पउम २५, १७, उत्त दस ८, ६)।

सहु वि [सह] समर्थ, शक्तिमान् (ओघ, ७७, ओघभा ६८, उवर १४२, वव ४)।

सहु (अप) देखो सध (सक्षि ३६)।

सहु (अप) अ [सह] साथ, सग (हे ४, ४१६, कुमा)।

सहेज्ज देखो सहिज्ज (महा)।

सहेर (अग) पु [शेखर] पट्पद छन्द का एक भेद (पिंग)।

सहेल वि [सहेल] हेला युक्त, अनायास होनेवाला, सरल, गुजराती मे 'सहेलु' (प्रवि ११)।

सहोअर वि [सहोदर] १ तुल्य, सदृश (से ६, ४)। २ पु. सगा भाई (पाअ, काल)।

सहोअरी स्त्री [सहोदरी] सगी बहिन (राज)।

सहोढ वि [सहोढ] चोरी के माल से युक्त, स-मोष (पिंड ३८०, णाया १, २—पत्र ८६)।

सहोदर देखो सहोअर (सुपा २४०, महा)।

सहोसिअ वि [सहोषित] एक-स्थान-वासी (दे १, १४६)।

साअड्ढ सक [कृष्] १ चाप करना, कृषि करना। २ खीचना। साअड्ढइ (हे ४, १८७ षड्)।

साअड्ढिअ वि [कृष्ट] खीचा हुआ (कुमा ७, ३१)।

साअद (शौ) देखो सागद (अभि १०२; नाट—मृच्छ ४, पि १८५)।

साइ वि [शायिन] सोनेवाला, शयन-कर्ता (सूअ १, ४, १ २८, आचा, दस ४, २६)।

साइ वि [सादि] १ आदि सहित, उत्पत्ति-युक्त (सम्म ६१)। २ न सस्थान-विशेष, शरीर की आकृति-विशेष जिस शरीर मे नाभि से नीचे के अवयव पूर्ण और नाभि के ऊपर के अवयव हीन हो ऐसी शरीराकृति (सम १४६ अणु)। ३ कर्म-विशेष सादि-सस्थान की प्राप्ति का कारण-भूत कर्म (कम्म १, ४०)।

साइ न [साचि] १ सेमल का पेड शाल्मली वृक्ष। २ सस्थान-विशेष, देखो साइ = सादि का दूसरा और तीसरा अर्थ (जीव १ टी—पत्र ४२)।

साइ पुस्त्री [स्वाति] १ नक्षत्र-विशेष (सम २६ कप्प) 'सा साई त च जल पत्तविसेसेण अतर गरुय' (प्रासू ३६)। २ पु. भारतवर्ष मे होनेवाले एक जिनदेव का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५४)। ३ एक जैन मुनि (णदि ४६)। ४ हैमवत-वर्ष के शब्दापाती पर्वत का अधिष्ठायक देव (ठा २, ३—पत्र ६६, ८०)।

साइ पु [सादिन्] घुडसवार (उप ७२८ टी)।

साइ पुस्त्री [साति] १ अच्छी चीज के साथ खराब चीज का मिश्रण, उत्तम वस्तु के साथ हीन वस्तु की मिलावट (सूअ २, २, ६५)। २ अविश्रम्भ, अविश्वास। ३ असत्य वचन, झूठ (पण्ह १, २—पत्र २६)। ४ सातिशय द्रव्य, अपेक्षा-कृत अच्छी चीज (राज ११४)। °जोग पु [°योग] १ मोहनीय कर्म (सम ७१)। २ अच्छी चीज से हीन चीज की मिलावट (राय ११४ टी)। °संपओग पु [°संप्रयोग] वही अर्थ (राय १४)।

साइ पुस्त्री [दे] केसर, 'सालतले सारिठिआ अच्चइ चंडि ससाइपउमेहिं' (दे ८, २२)।

साइज्ज सक [स्वादय्, सात्म् + कृ] १ स्वाद लेना, खाना। २ चाहना, अभिलाष करना। ३ स्वीकार करना ग्रहण करना। ४ आसक्ति करना। ५ अनुमोदन करना। ६ उपभोग करना। साइज्जइ साइज्जामो (आचा कस, कप्प—टी, भग १५—पत्र ६८०, औप), साइज्जेज्ज (णाया २ १, ३ २)। भवि साइज्जिस्सामि (आचा)। हेकृ साइज्जित्तए (औप)।

साइज्जण न [स्वादन] अभिष्वङ्ग, आसक्ति (विसे २६८५)।

साइज्जणया स्त्री [स्वादना] उपभोग, सेवा (ठा ३ ३ टी—पत्र १४७)।

साइज्जिअ वि [दे] अवलम्बित (दे ८, २६)।

साइज्जिअ वि [स्वादित] उपभुक्त (कप्प—टी)। २ उपभुक्त-सम्बन्धी। स्त्री. °या (कप्प)।

साइम वि [स्वादिम] पान, सुपारी आदि मुखवास (ठा ४, २—पत्र २१६, आचा, उवा, औप, सम २६)।

साइय वि [सादिक] आदिवाला (कम्म १, ६, नव ३६)।

साइय देखो सागय = स्वागत (सुर ११, १९७)।

साइय न [दे] सस्कार (दे ८, २५)।

साइयंकार वि [दे] स-प्रत्यय, विश्वस्त (पिडभा ४२)।

साइरेग वि [सातिरेक] साधिक, सविशेष (सम २, भग)।

साइसय वि [सातिशय] अतिशयवाला (महा, सुपा ३६७)।

साई देखो सई = शची (इक)।

साउ वि [स्वादु] स्वादवाला, मधुर (पिंड १२८, उप ६७०, से २, १८, कुमा, हे १, ५)।

साउग वि [स्वादुक] स्वादिष्ठ भोजनवाला, मधुर भोजनवाला, 'कुलाइं जे धावइ साउगाइं' (सूअ १, ७, २३)।

साउज्ज न [सायुज्य] सहयोग, साहाय्य (अच्चु ६५)।

सम्मइ देखो सम्मुइ = सन्मति, स्वमति (उत्त २८, १७, आचा)।

सम्मइग देखो सामाइय (सबोध ४५)।

सम्म अ [सम्यग्] अच्छी तरह (आचा, सूअ १, १४, ११, महा)।

सम्मुइ स्त्री [सन्मति] १ सगत मति। २ सुन्दर बुद्धि, विशद बुद्धि (उत्त २८, १७, सुख २८, १७, कप्प, आचा)। ३ पुं एक कुलकर पुरुष (पउम ३, ५२)।

सम्मुइ स्त्री [स्वमति] स्वकीय बुद्धि (आचा)।

सम्हरिअ वि [संस्मृत] अच्छी तरह याद किया हुआ (अच्चु ३५)।

सय अक [शी, स्वप्] सोना, शयन करना। सयइ, सए, सएज्जा (कप्प, आचा १, ७, ८, १३, २, २, ३, २५, २६), सयति (भग १३, ६—पत्र १७)। वकृ सयमाण (आचा २, २, ३ २६)। हेकृ. सइत्तए (पि ५७८)। कृ देखो सयणिज्ज, सयणीअ।

सय अक [स्वद्] पचना, जीर्ण होना, माफिक आना। सयइ (आचा २, १, ११, १)।

सय अक [स्रु] झरना, टपकना। सयइ (सूअ २, २, ५६)।

सय सक [श्रि] सेवा करना। सयति (भग १३, ६—पत्र ६१७)।

सय देखो स = सत्, 'वदणिज्जो सयाण' (स ६६५)।

सय देखो स = स्व (सूअ १, १, २, २२, णाया १, १४—पत्र १९०, आचा, उवा, स्वप्न १६)।

सय देखो सग = सप्तन्। °हुत्तरि स्त्री [°सप्तति] सतहत्तर, ७७ (श्रा २८)।

सय अ [सदा] हमेशा, निरन्तर, 'असवुडो सय करेइ कदप्प' (उव)। °काल न [°काल] हमेशा, निरन्तर (सुपा ८५)।

सय पुन [शत] १ सख्या-विशेष, सौ, १००। २ सौ की सख्यावाला (उवा, उव, गा १०१, जी २६, द ६)। ३ बहुत, भूरि, अनल्प सख्यावाला (णाया १, १—पत्र ६५)। ४ अध्ययन, ग्रथ प्रकरण, ग्रन्थाश-विशेष, 'विवाहपन्नत्तीए एकासीति महाजुम्मसया पन्नत्ता' (सम ८८)। °कत न [°कान्त] १ रत्न-विशेष। २ वि शतकान्त रत्नो से बना हुआ (देवेन्द्र २६८)। °कित्ति पुं [°कीर्ति] एक भावी जिन-देव (पव ४६), 'सत्त (? य) कित्ती' (सम १५३)। °गुणिअ वि [गुणित] सौगुना (श्रा १०, सुर ३, २३२)। °ग्घी स्त्री [°घ्नी] १ यन्त्र-विशेष, पाषाण-शिला-विशेष (सम १३७, अत, औप)। २ चक्की, जाँता (दे ८, ५, टी)। °ज्जल न [°ज्वल] १ वरुण का विमान (देवेन्द्र २७०)। देखो सयज्जल। २ रत्न की एक जाति। ३ वि. शतज्वल-रत्नो का बना हुआ (देवेन्द्र २६९)। ४ पुंन विद्युत्प्रभ नामक वक्षस्कार पर्वत का एक शिखर (इक)। °दुवार न [°द्वार] एक नगर (अत)। °धणु पुं [°धनुष्] १ ऐरवत वर्ष में होनेवाला एक कुलकर पुरुष (सम १५३)। २ भारत वर्ष मे होनेवाला दसवाँ कुलकर पुरुष (ठा १०—पत्र ५१८)। °पई स्त्री [°पदी] क्षुद्र जन्तु की एक जाति (श्रा २३)। °पत्त देखो °वत्त (णाया १, १—पत्र ३८)। °पाग न [°पाक] एक सौ ओषधिओ से बनता एक तरह का उत्तम तेल (णाया १, १—पत्र १९, ठा ३, १—पत्र ११७)। °पुप्फा स्त्री [°पुष्पा] वनस्पति-विशेष, सोया का गाछ (पण्ण १—पत्र ३४, उत्तनि ३)। °पोर न [°पर्वन्] इक्षु, ऊख (पव १७४ टी)। °बाहु पु [°बाहु] एक राजर्षि (पउम १०, ७४)। °भिसया, °भिसा स्त्री [°भिषज्] नक्षत्र-विशेष (इक, पउम २०, ३८)। °यम वि [°तम] सौवाँ, १०० वाँ (पउम १००, ६४)। °रह पु [°रथ] एक कुलकर पुरुष (सम १५०)। °रिसह पु [°वृषभ] महारात्र का तेईसवाँ मुहूर्त (सुज्ज १०, १३)। °वई देखो °पई (दे २, ६१)। °वत्त न [°पत्र] १ पद्म, कमल (पाअ)। २ सौ पत्तीवाला कमल, पद्म-विशेष (सुपा ४६)। ३ पु पक्षि विशेष, जिसका दक्षिण दिशा मे बोलना अपशुकन माना जाता है (पउम ७, १७)। °सहस्स पुन [°सहस्र] सख्या-विशेष, लाख (सम २, भग, सुर ३, २१, प्रासू ६, १३४)। °सहस्सइम वि [°सहस्रतम] लाखवाँ (णाया १, ८—पत्र १३१)। °साहस्स वि [°साहस्र] १ लाख-सख्या का परिमाणवाला (णाया १, १—पत्र ३७)। २ लाख रुपया जिसका मूल्य हो वह (पव १११, दसनि ३, १३)। °साहस्सिं वि [°सहस्रिन्] लखपति, लक्षाधीश (उप पृ ३१५)। °साहस्सिय वि [°साहस्रिक] देखो °साहस्स (स ३६६, राज)। °साहस्सी स्त्री [°सहस्री] लक्ष, लाख (पि ४४७, ४४८)। °सिक्कर वि [°शर्कर] शत खंडवाला, सौ टुकडावाला (सुर ४, २२, १५३)। °हा अ [°धा] सौ प्रकार से, सौ टुकडा हो ऐसा (सुर १४, २४२)। °हुत्त अ [°कृत्वस्] सौ वार (हे २ १५८, प्राप्र, षड्)। °उ पुं [°आयुष्] १ एक कुलकर पुरुष का नाम (सम १५०)। २ मदिरा-विशेष (कुप्र १६०, राज)। °णिअ, °णीअ पु [°नीक] एक राजा का नाम (विपा १, ५—पत्र ६०, अत, ती १०)।

सय° देखो सग = स्वय, 'सयपालणा य एत्थ' (पचा ५, ३६)।

सय देखो सइ = सकृत् (वै ८८)।

सय अ [स्वयम्] आप, खुद, निज (आचा १, ६, १, ६, सुर २, १८७, भग, प्रासू ७८, अभि ५६, कुमा)। °कड वि [°कृत] खुद किया हुआ (भग)। °गाह पुं [°ग्राह] १ जबरदस्ती ग्रहण करना। २ विवाह-विशेष (ने १, ३४)। ३ त्रि स्वय ग्रहण करनेवाला (वव १)। °पभ पु [°प्रभ] १ ज्योतिष्क ग्रह विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। २ भारतवर्ष मे अतीत उत्सर्पिणी काल मे उत्पन्न चौथा कुलकर पुरुष (सम १५०)। ३ आगामी उत्सर्पिणी काल में भारत में होनेवाला चौथा कुलकर पुरुष (सम १५३)। ४ आगामी उत्सर्पिणी काल मे इस भारतवर्ष मे होनेवाले चौथे जिन-देव (सम १५३)। ५ एक जैन मुनि जो भगवान् संभवनाथ के पूर्व-जन्म मे गुरु थे (पउम २०, १७)। ६ एक हार का नाम (पउम ३६, ४)। ७ मेरु पर्वत (सुज्ज ५)। ८ नन्दीश्वर द्वीप के मध्य मे पश्चिम-दिशा स्थित एक अजन-गिरि (पव

साडी स्त्री [शाटी] वस्त्र, कपडा (कुप्र ४१२)।

साडी स्त्री [शकटी] गाडी। °कम्म पुन [°कर्मन्] गाडी बनाना, बेचना, चलाना आदि शकट-जीविका (उवा, श्रा २२)।

साडीया देखो साडिआ, जह 'उल्ला साडीया आमु सुक्कइ विरल्लिया सती' (विसे ३०३२)।

साडोल्लय देखो साडुल्ल (णाया १, १८—पत्र २३५)।

साण सक [शाणय] शाण पर चढाना, तीक्ष्ण करना। साणिज्जदि (शौ) (नाट)।

साण पुस्त्री [श्वान] १ कुत्ता (पाअ, पण्ह १, १—पत्र ७ प्रासू १६६ हे १, ५२)। स्त्री. °णी। (सुपा ११४)। २ पुं छन्द विशेष (पिंग)।

साण वि [श्यान] निबिड, घनीभूत (गा ६८२)।

साण पु [शाण, शान] शस्त्र को घिस कर तीक्ष्ण करने का यन्त्र (गउड रंभा)।

साण वि [शाण] सन का बना हुआ, पाट का बना हुआ। स्त्री. °णा। (दस ५, १, १८)।

साण देखो सासाण (कम्म ३, २१)।

साणइअ वि [दे शाणित] उत्तेजित (दे ८, १३)।

साणय न [शाणक] सन का बना हुआ वस्त्र (ठा ५, ३—पत्र ३३८, कप्प)।

साणि स्त्री [शाणि] सन का बना हुआ कपडा (दस ५ १, १८)।

साणिअ वि [दे] शान्त (षड्)।

साणी देखो साण = श्वान।

साणी स्त्री [शाणी] देखो साणि, 'साणीपावारपिहियं' (दस ५, १, १८)।

साणु पुंन [सानु] पर्वत पर का समान भूमि-वाला प्रदेश (पाअ, सुर ७, २१४, स ३६५)। °मत पु [°मत्] पर्वत (उप १०३१ टी)। °लट्ठिया स्त्री [°यष्टिका] ग्राम-विशेष (राज)।

साणुक्कोस वि [सानुक्रोश] दयालु (ठा ४, ४—पत्र २८५, पण्ह १, ४—पत्र ७२, स्वप्न २६, ४४, वसु)।

साणुप्पग न [सानुप्रग] प्रात काल, प्रभात-समय (बृह १)।

साणुबंध वि [सानुबन्ध] निरन्तर, अविच्छिन्न प्रवाहवाला (उप ७७२)।

साणुबीय वि [सानुबीज] जिसमे उत्पादन-शक्ति नष्ट न हुई हो वह बीज (आचा २, १, ८, ३)।

साणुवाय वि [सानुवात] अनुकूल पवन-वाला (उव)।

साणुसय वि [सानुशय] अनुताप युक्त (गभि १११ गउड)।

साणूर न [दे] देव गृह, देव-मन्दिर (दे ८, २४)।

सात न [स्वात] १ सुख (ठा २, ४)। २ वि. सुखवाला। स्त्री °ता (पण्ण ३५—पत्र ७८६)। °वेयणिज्ज न [°वेदनीय] सुख का कारण-भूत कर्म (ठा २, ४—पत्र ६६)।

साति देखो साइ = स्वाति, सादि साचि, साति (सम २ ठा २, ३—पत्र ८०, ६—पत्र ३५७, जीव १—पत्र ४२, पण्ह १, २—पत्र २६, सम ७१)।

सातिज्जणया देखो साइज्जणया (ठा ३, ३—पत्र १४७)।

साद पु [साद] अवसाद, खेद (दे १, १६८)।

सादिव्व वि [सदैव] देवता-प्रयुक्त, देव कृत (पव २६८)।

सादिव्व देखो सादेव्व (पिंड ४२७)।

सादीअ देखो साइअ = सादिक (भग, औप)।

सादीणगंगा स्त्री [सादीनगङ्गा] आजीविक मत मे उक्त एक परिमाण (भग १५—पत्र ६७४)।

सादेव्व न [सादिव्य] देव का अनुग्रह—सानिध्य, 'सादेव्वाणि य देवयाओ करेंति सच्चवयणे रयाण' (पण्ह २, २—पत्र ११४, उप ८०३)।

साद्दूलसट्ठ (अप) देखो सद्दूल-सट्ठ (पिंग)।

साध देखो साह = साधय्। साधेंति (सुज्ज १०, १७)।

साधग देखो साहग (धर्मसं १४२ ३२३)।

साधम्म देखो साहम्म (धर्मसं ८७७)।

साधम्मिअ देखो साहम्मिअ (पउम ३५, ७४)।

साधारण देखो साहारण = साधारण (त्रि ८२)।

साधारणा स्त्री [सधारणा] वासना, धारणा, स्मरणशक्ति (णंदि १७६)।

साधीण देखो साहीण (नाट—मालती १११)।

सापद (शौ) देखो सावय = श्वापद (नाट—शकु ३०)।

साफल्ल } देखो साफल्ल (विसे २५३२,
साफल्लया } उप ७६८ टी, धर्मवि ६६, स ७०८, ७०९)।

साबाह वि [साबाध] आबाधा सहित (उप ३३६ टी)।

साभरग पुं [दे साभरक] रुपया, सोलह आने का सिक्का (पव १ १)।

साभव्व देखो साहव्व (विसे १३६)।

साभाविअ } देखो साहाविअ (सुपनि १६,
साभाविय } कप्प श्रावक २५८ टी)।

साम पुन [सामन्] १ शत्रु को वश करने का उपाय-विशेष, एक राजनीति (णाया १, १—पत्र ११, प्रासू ६७)। २ प्रिय वाक्य (कुमा, महा १४)। ३ एक वेद शास्त्र (भग, कप्प)। ४ मैत्री, मित्रता (विसे २४८१)। ५ शर्करा आदि मिष्ट वस्तु, 'महुरपरिणाम साम' (आव १)। ६ सामायिक, संयम-विशेष (संबोध ४५), 'साम समं च सम्मं इगमवि सामाइयस्स एगट्ठा' (आव १)। °कोट्ठ पु [°कोष्ट] ऐरवत वर्ष मे उत्पन्न एकोसवें जिनदेव (सम १५३)। देखो सामि-कुट्ठ।

साम पुं [श्याम] १ कृष्ण वर्ण, काला रंग। २ हरा वर्ण, नीला रंग। ३ वि. काला वर्णवाला। ४ हरा वर्णवाला (आचा, कुमा, सुर ४, ४४)। ५ पु परमाधमी देवो की एक जाति (सम २८, सूअनि ७२)। ६ एक जैन मुनि, श्यामार्य (णदि ४६)। ७ न तृण-विशेष, गन्ध-तृण (सूअ २, २, ११)। ८ पुन. आकाश, गगन (भग २०, २—पत्र ७७६)। °हत्थि पु [°हस्तिन] भगवान् महावीर का शिष्य एक मुनि (भग १०, ४—पत्र ५०१)।

सामइअ वि [प्रतीक्षित] जिसकी प्रतीक्षा की गई हो वह (कुमा)।

अठारहवें जिनदेव का पूर्वजन्मीय नाम (पव ४६, सम १५४)। देखो भयालि।

सयालु वि [शयालु] सोने की आदतवाला, आलसी (कुमा)।

सयावरी स्त्री [सदावरी] श्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, १३६, सुख ३६, १३६)।

सयावरी देखो सयरी = शतावरी (राज)।

सयास देखो सगास = सकाश (काल, अभि १२५, नाट—मृच्छ ५२)।

सयासव वि [शताश्रव, सदाश्रव] सूक्ष्म छिद्रवाला (भग)।

सय्य देखो सज्ज = सद्यस्, 'सय्यंभवुत्ति सय्यं भत्रोयहीपारगो जओ तेण' (धर्मवि ३८)।

सय्यभव देखो सज्जंभव (धर्मवि ३८)।

सय्ह देखो सज्झ = सह्य (हे २, १२४, षड्)।

सर सक [सृ] १ सरना खिसकना। २ अवलम्बन करना, आश्रय लेना। ३ अनुसरण करना। सरइ (हे ४, २३४), सरेज्जा (उपप २५)। कृ. सरणीअ (चउ २७), सरेअव्व (सुपा ४१४)।

सर सक [स्मृ] याद करना। सरइ (हे ४, ७४, गुरु १२, प्राप्र)। वकृ. सरत (सुपा ५६४), सरमाण (णाया १, ६—पत्र १६५, पउम ८, १६४, सुपा ३३६)। हेकृ सरित्तए (पि ५७८)। कृ सरणीअ, सरेअव्व, सरियव्व (चउ २७, धम्मो २०, सुपा ३०७)। प्रयो सरयति (सूअ १, ५, १, १६)।

सर सक [स्वर्] आवाज करना। सरइ, सरति (विसे ४६२)।

सर पुन [शर] १ बाण, 'मज्झे सराणि वरिमयति' (णाया १, १४—पत्र १६१, कुमा, सुर १, ६४, स्वप्न ५५)। २ तृण-विशेष; 'सो सरवणे निलोणो रहिओ तक्खिव्व पच्छन्नो' (धर्मवि ६२, पएण १—पत्र ३३, (कुप्र १०)। ३ छन्द-विशेष। ४ पाँच की संख्या (पिंग)। °पण्णी स्त्री [°पर्णी] तृण-विशेष, = मुञ्ज का घास (राज)। °पत्त न [°पत्र] अस्त्र-विशेष (विसे ५१३)। °पाय न [°पात] धनुष (सूअ १, ४, २, १३) °ासण पुंन [°ासन] धनुष (विपा १, २—पत्र २४, पाअ, औप)। °ासणपट्टी, °ासणवट्टिया स्त्री [°ासनपट्टी, °ासनपट्टिका] १ धनुर्यष्टि, धनुर्दण्ड। २ धनुष खींचने के समय हाथ की रक्षा के लिए बाँधा जाता चर्मपट्ट—चमड़े का पट्टा (विपा १, २—पत्र २४, औप)। °ासरि न [°ाशरि] बाण-युद्ध (सिरि १०३२)।

सर पु [स्मर] कामदेव (कुमा, से ६, ४३)।

सर वि [सर] गमन-कर्ता (दस ६, ३, ६)।

सर पुं [स्वर] १ वर्ण-विशेष, 'अ' से 'औ' तक के अक्षर (पण्ह २, २, विसे ४६१)। २ गीत आदि की ध्वनि; आवाज, नाद (सुपा ५६, कुमा)। ३ स्वर के अनुरूप फलाफल को बतानेवाला शास्त्र (सम ४६)।

सर पुंन [सरस्] तडाग, तालाव (से ३, ६, उवा, कप्प, कुमा, सुपा ३१६)। °पति स्त्री [°पङ्क्ति] तडाग-पद्धति (ठा २, ४—पत्र ८६)। °रुह न [°रुह] कमल, पद्म (प्राप्र, हे १, १५६, कुमा)। °सरपतिया स्त्री [°सर पङ्क्ति] श्रेणि-बद्ध रहे हुए अनेक तालाव (पण्ह २, ५—पत्र १५०)।

सर देखो सरय = शरद् (गा ७१२)। °इंदु पु [°इन्दु] शरद् ऋतु का चन्द्र (सुर २, ७०, १६, २४६)।

सरऊ स्त्री [सरयू] नदी-विशेष (ठा ५, १—पत्र ३०८, ती ११, कस)।

सरग (अप) पु [सारङ्ग] छन्द-विशेष (पिंग)।

सरंव पु [शरम्ब] हाथ से चलनेवाले सर्प की एक जाति (पण्ह १, १—पत्र ८)।

सरक्ख सक [सं + रक्ष्] अच्छी तरह रक्षण करना। सरक्खए (सूअ १, १, ४, ११ टि)।

सरक्ख वि [सरजस्क, सरक्ष] १ शैव-धर्मी, शिव-भक्त, भौत, शैव (ओघ २१८, विसे १०४०, उप ६७७)। २ वि. रजो-युक्त (आव ४)।

सरक्ख पुंन [सद्रजस्] १ धूलि, रज, 'ससरक्खेहि पाएहिं' (दस ५, १, ७)। २ भस्म (पिंड ३७, ओघ ३५६)।

सरग देखो सरय = शरक (णाया १, १८—पत्र २४१)।

सरग वि [शारक] शर-तृण से बना हुआ (शूर्प आदि) (आचा २, १, ११, ३)।

सरग्गिका (अप) स्त्री [सारङ्गिका] छन्द-विशेष (पिंग)।

सरड पुं [सरट] कृकलास, गिरगिट (णाया १, ८—पत्र १३३, ओघ ३२३, पुप्फ २६७, दे ८, ११, उप पृ २६८, सुपा १७७)।

सरडु, सरडुअ } न [शलाटु, °क] वह फल जिसमें अस्थि—गुठली न बँधी हो, कोमल फल (पिंड ४५, आचा २, १, ८, ६, पि ८२, २५६)।

सरण पुन [शरण] १ त्राण, रक्षा (आचा, सम १, प्रासू १५६, कुमा)। २ त्राण-स्थान (आचा कुमा २, ४५)। ३ गृह, आश्रय, स्थान, 'निवायसरणप्पईवमिव चित्त' (सबोध ५१)। °दय वि [°दय] त्राण-कर्ता (भग, पडि)। °ागय वि [°ागत] शरणापन्न (प्रासू ५)।

सरण न [स्मरण] स्मृति, याद (ओघ ८, विसे ५१८, महा, उप ५६२, औप, वि ६)।

सरण न [स्वरण] आवाज करना, ध्वनि करना (विसे ४६१)।

सरण न [सरण] गमन (राज)।

सरणि पुंस्त्री [सरणि] १ मार्ग, रास्ता (पाअ, सुपा २, कुप्र २२), 'सरलो सरणी समग कहिओ' (सार्ध ७५)। २ आलवाल, क्यारी (गउड)।

सरण्ण वि [शरण्य] शरण-योग्य, त्राण के लिए आश्रयणीय (सम १५३, पण्ह १, ४—पत्र ७२, सुपा २६१, अच्चु १५, संबोध ४८)।

सरत्ति अ [दे] शीघ्र, जल्दी, सहसा (दे ८, २)।

सरद देखो सरय = शरत (प्राप्र)।

सरन्न देखो सरण्ण (सुपा १८३)।

सरभ देखो सरह = शरभ (भग, णाया १, १—पत्र ६५, पण्ह १, १—पत्र ७, गा ७४२, पिंग)।

२९ नौ गैया। ३० छाया। ३१ शिंसपा, सीसम का पेड। ३२ पक्षि-विशेष (हे १, २६०)। °स पु [°श] रात्रि-भोजन (सूअ २, १ ५६ आचा १, २, ५, १)।

सामाइअ न [सामायिक] संयम-विशेष, सम भाव, राग-द्वेष-रहित अवस्थान (विसे २६७६, २६८०, २६८१, २६९०, धम्म, औप नव)।

सामाइअ वि [सामाजिक] समाज का, समूह से संबन्ध रखनेवाला, सभ्य (उत्त ११, २६, सुख ११, २६)।

सामाइअ वि [श्यामायित] रात्रि-सदृश (गा ५९०)।

सामाग पु [श्यामाक] भगवान् महावीर के समय का एक गृहस्थ, जिसके ऋजुवालिका नदी के किनारे पर स्थित क्षेत्र में भगवान् महावीर को केवलज्ञान हुआ था (कप्प)। देखो सामाय = श्यामाक।

सामाजिअ देखो सामाइअ = सामाजिक (हास्य ११८)।

सामाण देखो समाण = समान, 'लोहो हलिद्दखंजणकद्दमकिमिरागसामाणो' (कम्म १, २० पुप्फ २८७)।

सामाण पुंन [सामान] एक देव-विमान (सम ३३)।

सामाणिअ वि [सामानिक] १ सनिहित, निकट-वर्ती, नजदीक में स्थित (विसे २६७९)। २ पु इन्द्र के समान ऋद्धिवाले देवों की एक जाति (सम ३७, ठा ३, १—पत्र ११६, उवा, औप, पउम २, ४१)।

सामाय अक [श्यामाय्] काला होना। सामाइ, सामायइ, सामायति (गउड)। वकृ सामायंत (गउड)।

सामाय देखो सामय = श्यामाक (राज)।

सामाय पुं [सामाय] संयम-विशेष, सामायिक (विसे १४२१, संबोध ४५)।

सामायारि वि [समाचारिन्] आचरण करनेवाला (उव)।

सामायारी स्त्री [सामाचारी] साधु का आचार—क्रिया-कलाप (गच्छ १, १५, उव, उप ६६६)।

सामास देखो सामा-स = श्यामा-श।

सामासिय वि [सामासिक] समास-संबन्धी (अणु १४७)।

सामि } वि [स्वामिन्] १ नायक, अधि-
सामिअ } पति। २ ईश्वर, मालिक (सम ८६, विपा १, १ टी—पत्र ११, उव, कुमा प्रासू ८८)। स्त्री. °णी (महा)। ३ पु. प्रभु, भगवान् (कुमा १, २, ७, ३७, सुपा ३५)। ४ राजा, नृप। ५ भर्ता, पति (महा)। °कुट्ठ पुं [°कुष्ट] ऐरवत वर्ष में उत्पन्न एक्कीसवें जिन देव (पव ७)। देखो साम-कोट्ठ। °त्त न [°त्व] मालकियत, आधिपत्य (सम ८६, स २२)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (उप ५९७ टी)।

सामिअ वि [दे] दग्ध, जलाया हुआ (दे ८, २३)।

सामिअ वि [शमित] शान्त किया हुआ (सुपा ३५)।

सामिद्धि स्त्री [समृद्धि] १ अति संपत्ति। २ वृद्धि (प्राप्र, हे १, ४४, कुमा)।

सामिधेय न [सामिधेय] काष्ठ-समूह (अत ११, स ५६१)।

सामिली न [स्वामिलिन्] १ गोत्र-विशेष, जो वत्स गोत्र की एक शाखा है। २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३९०)।

सामिसाल देखो सामि (पउम ८, ६९, सुपा २६३, भवि, सण)। स्त्री °ली (स ३०६)।

सामिहेय देखो सामिधेय (स ३४०, ३८४, महा)।

सामीर वि [सामीर] समीर-संबन्धी (गउड)।

सामुंडुअ पु [दे] तृण-विशेष, वरु तृण, जिसकी कलम की जाती है (पाअ)।

सामुग्ग वि [सामुद्ग] संपुटाकारवाला, 'सामुग्गनिमग्गगूढजाणू' (औप)।

सामुच्छेइय वि [सामुच्छेदिक] वस्तु को एकान्त क्षणिक माननेवाला एक मत और उसका अनुयायी (ठा ७—पत्र ४१०, विसे २३८९)।

सामुदाइय वि [सामुदायिक] समुदाय का, समुदाय से संबन्ध रखनेवाला (णाया १, १६—पत्र २०८)।

सामुदाणिय वि [सामुदानिक] १ भिक्षा-संबन्धी, भिक्षा से लब्ध (ठा ८, १—पत्र २१०, सूअ २, १, ५६)। २ भिक्षा, भैक्ष (भग ७, १ टी—पत्र २९३)।

सामुद्द पुं [दे] इक्षु-समान तृण-विशेष (दे ८, २३)।

सामुद्द } वि [सामुद्र, °क] १ समुद्र-
सामुद्दय } सम्बन्धी, सागर का (णाया १, ८—पत्र १४५, भग ५, २—पत्र २११, दस ३, ८)। २ न. छन्द-विशेष (सुअनि १३९)।

सामुद्दिअ न [सामुद्रिक] १ शास्त्र-विशेष, शरीर पर के चिह्नों का शुभाशुभ फल बतलानेवाला शास्त्र (श्रा १२)। २ शरीर की रेखा आदि चिह्न, 'सामुद्दियलक्खणाए लक्खवि' (सबोध ४२)। ३ वि. सामुद्रिक शास्त्र का ज्ञाता (सुअ ५)।

सामुयाणिय देखो सामुदाणिय (उत्त १७, १९)।

साय देखो साइज्ज = स्वाद्, सात्मी + कृ। सायए (आचा २, १३, १), साएज्जा (वव १)।

साय देखो साग = शाक, 'भोत्तव्वं संजएण समियं न सायसूयाहियं' (पण्ह २, ३—पत्र १२३, पण्ण १—पत्र ३४)।

साय न [सात] १ सुख (भग, उव)। २ सुख का कारण-भूत कर्म (कम्म १, १३; ५५)। ३ एक देव-विमान (सम ३८)। °वाइ वि [°वादिन्] सुख-सेवन से ही सुख की उत्पत्ति माननेवाला (ठा ८—पत्र ४२५)। °वाहण पु [°वाहन] एक प्रसिद्ध राजा (काल)। °गारव पुंन [°गौरव] १ सुख-शीलता (सम ८)। २ सुख का गर्व (राज)। °सुक्ख न [°सौख्य] अतिशय सुख (जीव ३)। देखो साता = सात।

साय पु [स्वाद] रस का अनुभव (विसे ७९९, पउम ३३, १०, उप ७६८ टी)।

साय न [दे] १ महाराष्ट्र देश का एक नगर। २ दूर (दे ८, ५१)।

साय अ [सायम्] १ सन्ध्या-समय, शाम (पाअ, गउड, कप्पू)। २ सत्य, सच्चा (ठा

सरी स्त्री [दे] माला, हार (सुपा २३१)।

सरीर पुंन [शरीर] देह, काय, तनु (सम ६७, उवा, कुमा, जी १२), 'कइ ण भंते सरीरा पण्णत्ता' (पण्ण १२)। °णाम, °नाम पुन °नामन्] कर्म-विशेष, शरीर का कारण-भूत कर्म (राज, सम ६७)। °बंधण न [°बन्धन] कर्म-विशेष (सम ६७)। °संघायण न [°संघातन] नाम कर्म का एक भेद (सम ६७)।

सरीरि पुं [शरीरिन्] जीव आत्मा (पउम ११२, १७)।

सरीसव, सरीसिव पुं [सरीसृप] १ सर्प, सांप (खा ११, सूम , २, २ १४)। २ सर्प की तरह पेट से चलनेवाला प्राणी (सम ६०)।

सरूय, सरूव देखो स-रूय = स्व-रूप।

सरूव देखो स-रूव = सद्-रूप, स रूप।

सरूवि पुं [स्वरूपिन्] जीव, प्राणी (ठा २, १—पत्र ३८)।

सरेअव्व देखो सर = स्मृ, स्मृ।

सरेवय पुं [दे] १ हृन। २ घर का जल-प्रवाह, मोरी (दे ८, ४८)।

सरोअ न [सरोज] कमल, पद्म (कुमा, अच्चु ४२, सुपा ५६, २११, कुप्र २६८)।

सरोरुह न [सरोरुह] ऊपर देखो (प्राप्र, कुमा, कुप्र ३०४)।

सरोवर न [सरोवर] बडा तालाव (सुपा २६०, महा)।

सलभ देखो सलह = शलभ (राज)।

सलली स्त्री [दे] सेवा (दे ८, ३)।

सलह सक [श्लाघ्] प्रशंसा करना। सलहइ (हे ४, ८८)। कर्म. सलहिज्जइ (पि १३२)। कृ. सलहिज्ज (कुमा)। देखो सलाह।

सलह पुं [शलभ] १ पतङ्ग (पाअ, गउड, सुपा १४२)। २ एक वणिक्-पुत्र (सुपा ६१७)।

सलहण न [श्लाघन] प्रशंसा, श्लाघा (गा ११४, पि १३२)।

सलहत्थ पु [दे] कुडछी आदि का हाथा (दे ८, ११)।

सलहिअ वि [श्लाघित] प्रशंसित (कुमा)।

सलहिज्ज देखो सलह = श्लाघ्।

सलाग न [शालाक्य] चिकित्सा शास्त्र—आयुर्वेद का एक अंग, जिसमें श्रवण आदि शरीर के ऊर्ध्व भाग के सम्बन्ध से चिकित्सा का प्रतिपादन हो वह शास्त्र (विपा १, ७—पत्र ७५)।

सलागा, सलाया स्त्री [शलाका] १ सली, सलाई (सूअ १, , २, १०, कप्पू)। २ पल्य-विशेष, एक प्रकार की नाप (जीवस १३६, कम्म ४ ७३ ७५)। °पुरिस पु [पुरुष] २४ जिनदेव, १२ चक्रवर्ती ६ वासुदेव। ६ प्रतिवासुदेव तथा ६ बलदेव ये ६३ महापुरुष (सबोध ११)।

सलाह देखो सलह = श्लाघ्। सलाहइ (प्राकृ २८)। वकृ. सलाहमाण (गा २४६, सम्म १५६)। कृ सलाहणिज्ज सलाहणिय, सलाहणीअ (प्राकृ २८, णाया १, १६—पत्र २०१, सुर ७, १९१, रयण ३५, पउम ८२, ७३, पि १३२)।

सलाहण न [श्लाघन] श्लाघा, प्रशंसा (गा ११४, उप पृ १०६)।

सलाहा स्त्री [श्लाघा] प्रशंसा (प्राप्र, हे २, १०१, षड्)।

सलाहिअ देखो सलहिअ (कुमा)।

सलिल पुन [सलिल] पानी, जल, 'सलिला ण संदति ण वंति वाया' (सूअ १, १२, ७, कुमा, प्रासू ३५)। °णिहि पु [°निधि] सागर, समुद्र (से ६ ६)। °नाह पुं [°नाथ] वही (पउम ६, ६६)। °बिल न [°बिल] भूमि-निर्झर, जमीन से बहता झरना (भग ७, ६—पत्र ३०५)। °रासि पु [°राशि] समुद्र (पाअ)। °वाह पु [°वाह] मेघ (पउम ४२, ३४)। °वर पु [°वर] वही (से ६, ६४)। °वई, °वती स्त्री [°वती] विजय-क्षेत्र-विशेष (राज, णाया १, ८—पत्र १२१)। °वत्त न [°वर्त] वैताढ्य पर्वत पर उत्तर दिशा-स्थित एक विद्याधर-नगर (इक)।

सलिला स्त्री [सलिला] महानदी, बडी नदी (सम १२२)।

सलिलुच्छय वि [सलिलोच्छय] प्लावित, डुबोया हुआ (पाअ)।

सलिस अक [स्वप्] सोना, शयन करना। सलिसइ (षड्)।

सलूण देखो स-लूण = स-लवण।

सलोग पुं [श्लोक] श्लाघा, प्रशंसा (सूअ १, १३, १२)। देखो सिलोग।

सलोग देखो स-लोग = स लोक।

सलोण देखो स-लोण = स-लवण

सलोय देखो सलोग = श्लोक (सूअ १ ६, २२)।

सल्ल पुन [शल्य] १ शस्त्र-विशेष तोमर, साँग, 'तओ सल्ला पण्णत्ता' (ठा ३, ३—पत्र १८२)। २ शरीर में घुसा हुआ काँटा, तीर आदि (सूअ २ २, , पचा ६, १६, प्रासू २०)। ३ पापानुष्ठान, पाप-क्रिया, 'मायासल्लमणुपविट्ठो' (उत्त सूअ १, १५, २४)। ४ पापानुष्ठान से लगनेवाला कर्म (सूअ १, १५, २४ वृत्ति)। ५ पु. भरत के साथ दीक्षा लेनेवाले एक राजा का (पउम ८५, ७)। ६ न. छन्द विशेष (पिंग)। °ग वि [°क] शल्यवाला, शूल आदि शल्य से पीडित (पण्ह २, ५—पत्र १५०)। °ग न [°ग] परिज्ञान, जानकारी (सूअ २, २, ५७)।

सल्ल पुस्त्री [दे] हाथ से चलनेवाले सर्प-जातीय जन्तु की एक जाति (सूअ २, ३, २५)।

सल्लइअ वि [शल्यकित] शल्य-युक्त, जिसको शल्य पैदा हुआ हो वह (णाया १, ७—पत्र ११६)।

सल्लई स्त्री [सल्लकी] वृक्ष-विशेष (णाया १, ७ टी—पत्र ११६, उप १०३१ टी कुमा, धर्मवि १३०, सुपा २६१)।

सल्लग देखो सल्ल-ग = शल्य क, शल्य ग।

सल्लग देखो स-ल्लग = सत्-लग।

सल्लहत्त पुन [शाल्यहत्य] आयुर्वेद का एक अंग, जिसमे शल्य निकालने का प्रतिपादन किया गया हो वह शास्त्र (विपा १, ७—७५)।

सल्ला स्त्री [शल्या] एक महौषधि ती ५)।

सल्लिअ वि [शल्यित] शल्य-पीडित (सुर १२, १५२, सुपा २२७, महा भवि)।

सल्लिह देखो सलिह = स + लिख्। सल्लिहदि (आरा ३५)।

सारक्खेत्तु वि [संरक्षितृ] संरक्षण-कर्ता (ठा ७—पत्र ३८६)।

सारग देखो सारय = स्मारक (आचा, औप)।

सारज्ज न [स्वाराज्य] स्वर्ग का राज्य (विसे १८८३)।

सारण पु [सारण] १ एक यादव-कुमार (अंत ३, कुप्र १०१)। २ रावणाधीन एक सामन्त राजा (पउम ८, १३३)। ३ रावण का मन्त्री (से १२, ६४)। ४ रावण का एक सुभट (से १४, १३)। ५ न ले जाना, प्रापण (ओघ ४४८)।

सारण न [स्मारण] १ याद कराना (ओघ ४४८)। २ वि याद दिलानेवाला। स्त्री °णिया, °णी (ठा १०—पत्र ४७३)।

सारणा न [स्मारणा] १ याद दिलाना (सुर १५, २४८ विचार २०८, काल)।

सारणि } स्त्री [सारणि, °णी] १ आलवाल, सारणी } नीक, कियारी (धण २६, कुप्र ५८); २ परंपरा (सम्मत्त ७७)।

सारत्थ न [सारथ्य] सारथिपन (णाया १, १६, पउम २४, ३८)।

सारदा देखो सारया (रंभा)।

सारदिअ देखो सारइग (अभि ६६)।

सारमिअ वि [दे] स्मारित, याद कराया हुआ (दे ८, २५)।

सारमेअ पु [सारमेय] श्वान, कुत्ता (उव ७६८ टी, कुप्र ३६३, सम्मत्त १८६, प्रासू १५८)।

सारमेई स्त्री [सारमेयी] कुत्ती, शुनी (सुर १४, १५१)।

सारय वि [शारद] शरद् ऋतु का (सम १५३ पण्ह १, ४—पत्र ६८, विसे १४६६, अजि १३, कप्प, औप)।

सारय वि [सारक] १ श्रेष्ठ करनेवाला (से ३, ४८)। २ साधक, सिद्ध करनेवाला (कप्प, से ६, ४०)।

सारय वि [स्मारक] १ याद करनेवाला। २ याद दिलानेवाला (भग, आचा १, ४, ४, १, कप्प)।

सारय वि [स्वारत] आसक्त, खूब लीन (आचा १, ४, ४, १)।

सारय देखो सार-य।

सारया स्त्री [शारदा] सरस्वती देवी (सम्मत्त १४०)।

सारव देखो सार = सारय्। भवि. सारविस्स (वव १)।

सारव सक [समा + रच्] साफ करना, ठीक-ठाक करना, दुरुस्त करना। सारवइ (हे ४, ९५), 'सारवह सयलमरणोओ' (सुर १५, ८२)। वकृ सारवेंत (गउड)। कवकृ. सारविज्जंत (सण)।

सारव सक [समा + रभ्] शुरूआत करना, प्रारम्भ करना। सारवइ (षड्)।

सारवण न [समारचन] समार्जन, साफ करना (ओघ ७३)।

सारविअ वि [समारचित] दुरुस्त किया हुआ, साफ किया हुआ (दे ८, ४९, कुमा, ओघभा ८)।

सारस पु [सारस] १ पक्षि-विशेष (कप्प, औप, स्वप्न ७०, कुमा, सण)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

सारसी स्त्री [सारसी] १ षड्ज ग्राम की एक मूर्छना (ठा ७—पत्र ३९३)। मादा सारस-पक्षी। ३ छन्द-विशेष (पिंग)।

सारस्सय पु [सारस्वत] १ लौकान्तिक देवों की एक जाति (णाया १, ८—पत्र १५१, वि ३५८)।

सारह न [सारघ] मधु शहद (पाअ, दे ८, २७)।

सारहि पु [सारथि] रथ हाँकनेवाला (सम १, पाअ, महा)।

साराडि पुस्त्री [दे] पक्षि-विशेष, शरारि पक्षी (दे ८, २४)।

साराय अक [साराय्] सार-रूप होना। वकृ. सारायंत (उप ७२८ टी)।

साराव सक [सारय्] चिपकवाना, लगवाना, सील कराना। संकृ. 'साराविऊण लक्खं नीरंधत्तं तत्थ कयं' (धर्मवि ५)।

सारि स्त्री [शारि] १ पक्षि-विशेष, मैना (गा ५५२)। २ पासा खेलने का रंग-बिरंगा मांचा (गा १३८)। ३ युद्ध के लिए गज-पर्याण (दे ७, ६१; भवि)।

सारि देखो सारी (दे) (पाअ)।

सारिअ वि [सारिक] सारवाला, 'आरोग्ग-सारिअं माणुसत्तणं सच्चसारिओ धम्मो' (श्रा १८)।

सारिअ वि [सारित] चिपकाया हुआ, सील किया हुआ, 'ततो कुमीए निक्खिविऊण तीए सम्म मुहं पुंगिऊण उवरि लक्खाए सारियाए' (सम्मत्त २२६)।

सारिआ } स्त्री [सारिका] मैना, पक्षि-सारिइआ } विशेष (गा ५८६, पाअ, दे ८, २४)।

सारिक्ख न [सादृक्ष्य] समानता, सरीखाई (हे २, १८, कुमा, धर्मसं ४२५, सम्मु १८०, विसे ४६६)।

सारिक्ख } वि [सदृक्ष] समान, सरीखा, सारिच्छ } 'तारिक्खविप्पलंभा तह नेदे किमिह सारिक्ख' (धर्मसं ४२५, सम्मु १७६, प्राप, हे २, ४४, कुमा, गा ३०, ६४)।

सारिच्छ देखो सारिक्ख = सादृक्ष्य (हे २, १७, सुर १२, १२२)।

सारिच्छिआ स्त्री [दे] दूर्वा, दूब (दे ८, २७)।

सारिज्जंत देखो सार = सारय्।

सारिस देखो सरिस = सदृश (संक्षि २, वज्जा ११४)।

सारिस } न [सादृश्य] समानता, सरीखाई सारिस्स } (राज, नाट — रत्ना ७६)।

सारी स्त्री [दे] वृसी, ऋषि का आसन (दे ८, २२, ६१)। २ मृत्तिका, मिट्टी (दे ८, २२ टी)।

सारी स्त्री [शारी] देखो सारि = शारि, 'सज्जिओ कंचणगुडासारीहिं हत्थी' (कुप्र १२०)।

सारीर वि [शारीर] शरीर का, शरीर-सम्बन्धी (उव, सुर ४, ७५)।

सारीरिय वि [शारीरिक] ऊपर देखो (सुर १२, १०, सण)।

सारुवि } पु [सारूपिन्, °क] जैन साधु सारुविअ } के समान वेष को धारण करनेवाला रजोहरण-वर्जित स्त्री-रहित गृहस्थ,

(पत्र १६४)। ६ एक नगर का नाम (विपा १, ५—पत्र ६१) ७ अच्युतेन्द्र का एक पारियानिक विमान (ठा १०—पत्र ५२८, औप)। ८ दृष्टिवाद का एक सूत्र (सम १२८)। ९ पृ यक्ष की एक जाति (राज)। १० देव-विमान-विशेष (देवेन्द्र १३६, १४१)। °ओभद्दा स्त्री [°तोभद्रा] प्रतिमा-विशेष, एक व्रत (औप ठा २, ३—पत्र ६४, अंत २९)। °कामसमिद्ध पु [°कामसमृद्ध] पक्ष का छठवाँ दिवस, छठी तिथि (सुज्ज १०, १४)। °कामा स्त्री [°कामा] विद्या-विशेष, जिसकी साधना से सर्व इच्छाएँ पूर्ण होती हैं (पउम ७, १०७)। °गत वि [°गत] व्यापक (अच्चु १०)। °गा स्त्री [°गा] उत्तर रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७)। °गुत्त पु [°गुप्त] एक जैन मुनि (पउम २०, १९)। °ज्ज वि [°ज्ञ] १ सर्व पदार्थों का जानकार। २ पुं. जिन भगवान्। ३ बुद्धदेव। ४ महादेव। ५ परमेश्वर (हे २, ८३; षड्; प्राप्र)। °ट्ठ पु [°ार्थ] १ अहोरात्र का उनतीसवाँ मुहूर्त्त (सुज्ज १०, १३)। २ पुन सहस्रार देवलोक का एक विमान (सम १०५)। ३ अनुत्तर देवलोक का सर्वार्थसिद्ध-नामक एक विमान (पव १९०)। ४ पुं. सब अर्थ (आचा १, ८, ८, २५)। °ट्ठसिद्ध पुन [°ार्थसिद्ध] १ अहोरात्र का उनतीसवाँ मुहूर्त्त (सम ५१) २ एक सर्व-श्रेष्ठ देव-विमान, अनुत्तर देवलोक का पाँचवाँ विमान (सम २; भग; अंत; औप)। ३ पु ऐरवत वर्ष में उत्पन्न होनेवाले छठवें जिनदेव (पव ७)। °ट्ठसिद्धा स्त्री [°ार्थसिद्धा] भगवान् धर्मनाथजी की दीक्षा-शिबिका (विचार १२९)। °ट्ठसिद्धि स्त्री [°ार्थसिद्धि] एक देव विमान (देवेन्द्र १३७)। °ण्णु देखो °ज्ज (हे १, ५६; षड्; औप)। °त्त देखो °ट्ठ (सुपु १५०)। °त्तो देखो °ओ (प्राप्र)। °त्थ अ [°त्र] सब स्थान में, सब में (गउड प्रासू ३९, ६८)। °दंसि, °दरिसि वि [°दर्शिन्] १ सब वस्तुओं को देखनेवाला। २ पु जिन भगवान्, अर्हन् (राज; भग; सम १; पडि)। °देव पुं [°देव] १ एक प्रसिद्ध जैन आचार्य (सार्ध ८०)। २ राजा कुमारपाल के समय का एक सेठ (कुप्र १४३)। °दंसि देखो °दंसि (चेइय ३५०)। °द्धा स्त्री [°द्धा] सब काल, अतीत आदि सर्व समय (भग)। °पत्ता स्त्री [°पत्ता] व्यापक, सर्व-ग्राहक (विसे ३४९१)। °पत्तु देखो °ज्ज (सम १; प्रासू १७०; महा)। °प्पग वि [°ात्मक] १ व्यापक। २ पु लोभ (सूअ १ १, २, १२)। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] उत्तर रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (राज)। °भक्ख वि [°भक्ष] सबको खानेवाला, सर्व-भोजी, 'अग्गिमिव सव्वभक्खे' (णाया १, २—पत्र ८९)। °भद्दा स्त्री [°भद्रा] प्रतिज्ञा विशेष, व्रत विशेष (पव २७१)। °भावविउ पुं [°भावविद्] आगामी काल में भारत वर्ष में होनेवाले बारहवें जिन-देव (सम १५३)। °य वि [°द] सब देनेवाला (पण्ह २, १—पत्र ९९)। °या अ [°दा] हमेशा, सदा (रंभा)। °रयण पु [°रत्न] १ एक महा-निधि (ठा ९—पत्र ४४९)। २ पुन पर्वत-विशेष का एक शिखर (इक)। °रयणा स्त्री [°रत्ना] ईशानेन्द्र की वसुमित्रा नामक इन्द्राणी की एक राजधानी (इक)। °रयणामय वि [°रत्नमय] १ सब रत्नों का बना हुआ (पि ७०; जीव ३, ४)। २ चक्रवर्त्ती का एक निधि (उत्त ९८६ टी)। °विग्गहिअ वि [°विग्रहिक] सर्व-संक्षिप्त, सबसे छोटा (भग १३, ४—पत्र ६०६)। °विरइ स्त्री [°विरति] पाप-कर्म से सर्वथा निवृत्ति, पूर्ण संयम (विसे २६८४)। °संगय [°सङ्गत] मृत्यु (पउम—पत्र० ३७१, पर्व ११०, गा० ४४)। °संजम पु [°संयम] पूर्ण संयम (राय)। °सह वि [°सह] सब सहन करनेवाला, पूर्ण सहिष्णु (पउम १४, ७९)। °सिद्धा स्त्री [°सिद्धा] पक्ष की चौथी, नवमी और चौदहवीं रात्रि तिथि (सुज्ज १०, १५)। °सो अ [°शस्] सब ओर से, सब प्रकार से (उत्त १, ८; आचा)। °स्स न [°स्व] सकल द्रव्य, सब धन (स ४५६; अभि ४०; कप्पू)। °हा अ [°था] सब प्रकार से, सब तरह से (गा ८६७; महा; प्रासू ३, १८१)। °ाणंद पुं [°ानन्द] ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिन-देव (सम १५४)। °ाणुभूइ पुं [°ानुभूति] १ भारत वर्ष में होनेवाले पाँचवें जिन भगवान् (सम १५३)। २ भगवान् महावीर का एक शिष्य (भग १५—पत्र ६७८)। °ाण्हा स्त्री [°ाह्ना] विद्या-विशेष (पउम ७, १४०)। °ाव वि [°ाप] संपूर्ण (भग)। °ासण पु [°ाशन] अग्नि, आग (हे ४, ३९५)।

सव्वंकम वि [सर्वङ्कष] १ सर्वातिशायी, सर्व से विशिष्ट (कप्पू)। २ न. पाप (आव)।

सव्वंग वि [सर्वाङ्ग] १ संपूर्ण (ठ ०, —पत्र २०८)। सर्व-शरीर-व्यापी (राज)। °सुंदर वि [°सुन्दर] १ सर्व अंगों से श्रेष्ठ। २ पुन तप-विशेष (राज; पव २७१)।

सव्वंगिअ } वि [सर्वाङ्गीण] सर्व अवयवों
सव्वंगीण } में व्याप्त (हे २, १५१; कुमा; से १५, ५४), 'सव्वंगीणाभरणा पत्तेयं तेण ताण कय' (कुप्र २३८; धर्मवि १४९)।

सव्वण देखो स-व्वण = स व्रण।

सव्वराइअ वि [सार्वरात्रिक] संपूर्ण रात्रि से सम्बन्ध रखनेवाला, सारी रात का (सूअ १, २, ५५; कप्प)।

सव्वरी स्त्री [शर्वरी] रात्रि, रात (पाअ; गा ६५३; सुपा ४९१)।

सव्वल पु [दे शर्वल] कुन्त, बर्छी (राज; काल)। देखो सव्वल्ल।

सव्वल्ला स्त्री [दे शबला] छुरी, लोहे का एक हथियार (दे ८, ६)।

सव्ववक्ख देखो स-व्ववेक्ख = स-व्यपेक्ष।

सव्वाव देखो सव्व व = सर्वाप।

सव्वाव देखो स-व्वाव = स-व्याप।

सव्वावंति अ [दे] सर्व, सब, संपूर्ण, 'एयावंति सव्वावंति लोगंसि' (आचा), सव्वावंति च ण तीसे ण पुक्खरिणीए' (सूअ २, १, ५), 'सव्वावंति च णं लोगंसि' (सूअ २, ३, १), 'सव्व ति सव्वावंति फुसमाणकालसमयंसि जावतियं खेत्तं फुसइ' (भग १, ६—पत्र ७७)।

सव्विड्ढि स्त्री [सर्वर्द्धि] संपूर्ण वैभव (णाया १, ८—पत्र १३१)।

साव सक [श्रावय्] सुनाना। सावेति (औप)। वकृ सावंत, सावित, सावेंत (औप, राज, पउम १०, ५७)।

साव पुं [शाप] १ सराप, आक्रोश (औप, कुमा, प्रति ६६)। २ शपथ, सौगंध (प्राप्र, हे १, २३१)।

साव पु [शाव] बालक, बच्चा (समु १५६, प्राकृ ८५)।

साव पु [स्वाप] स्वपन, शयन, सोना (विसे १७५५)।

साव (अप) देखो सव्व = सर्व (हे ४, ४२०)।

सावइज्ज देखो सावएज्ज (कप्प)।

सावइत्तु वि [श्रावयितृ] सुनानेवाला (सूअ २, २ ७६)।

सावएज्ज न [स्वापतेय] धन, द्रव्य (कप्प)।

सावक्क न [सापत्न्य] सपत्नीपन, सौतिनपन (कुप्र २५५)।

सावक्क वि [सापत्न] सौतेली माँ की संतान (धर्मवि ४७)।

सावक्का स्त्री [सपत्नी] सौतेली माँ, विमाता, गुजराती में 'सावकी', 'सावक्का सुयजणणी पासत्था गहिय वायए लेह' (धर्मवि ४७)।

सावग पुंन [श्रावक] १ जैन उपासक, अर्हद्-भक्त गृहस्थ (ठा १०—पत्र ४६६, उवा, णाया १, २—पत्र ६०)। २ ब्राह्मण। ३ वृद्ध श्रावक (णाया १ १५—पत्र १६३, अणु २८), 'तओ सागरचंदो कमलामेला य गहियाणुव्वयाणि सावगाणि संवुत्ताणि' (श्राक ३१)। ४ वि सुननेवाला। ५ सुनानेवाला (हे १, १७७)। °धम्म पु [°धर्म] प्राणातिपात-विरमण आदि बारह व्रत, जैन गृहस्थ का धर्म (णाया १,१४—पत्र १६१)।

सावज्ज वि [सावद्य] पाप युक्त, पापवाला (भग उव, ओघ ७६३, विसे ३४६६, सुर ४, ८२)।

सावण न [श्रावण] १ सुनाना (उप ७२८ टी सुपा २८८)। २ पु मास-विशेष, सावन का महीना (पउम ६७, ७, कप्प, हे ४, ३५७, ३६६)। ३ वि. श्रवणेन्द्रिय-सम्बन्धी, श्रावण-प्रत्यक्ष का विषय, जो कान से सुना जाय वह (धर्मसं १२८१)।

सावणा स्त्री [श्रावणा] सुनाना (कुप्र ६०)।

सावणी स्त्री [स्वापनी] देखो सावर्णी (ठा १०—पत्र ५१६)।

सावतेज्ज } देखो सावएज्ज (णाया १, १—
सावतेय } पत्र ३६, औप, सूअ २, १, ३६)।

सावत्त देखो सावक्क (दे १, २५, भवि, सिरि ४६, कप्पू)।

सावत्थिगा स्त्री [श्रावस्तिका] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प—पृ ८१)।

सावत्थी स्त्री [श्रावस्ती] कुणाल देश की प्राचीन राजधानी (णाया १, ८—पत्र १४०, उवा)।

सावन्न (अप) देखो सामन्न = सामान्य (भवि)।

सावय देखो सावग (भग, उवा, महा), 'एय कहेहि सुंदर सवित्थर सच्चसावओ तुहय' (पउम ५३, २६)।

सावय पु [श्वापद] शिकारी पशु, हिंसक जानवर (णाया १, १—पत्र ६५, गउड, प्रासू १५४, महा, मण)।

सावय पु [दे] १ शरभ, श्वापद पशु-विशेष (दे ८, २३)। २ बालों की जड़ में होनेवाला एक तरह का क्षुद्र कीट (जी १६)।

सावय पु [शावक] बालक, बच्चा, शिशु (नाट)।

सावरी स्त्री [शाबरी] विद्या-विशेष (सूअ २, २, २७)।

सावसेस वि [सावशेष] अवशिष्ट, बाकी बचा हुआ, 'जावाऊ सावसेस' (उव)।

सावहाण वि [सावधान] अवधान-युक्त, सचेत (नाट, रंभा)।

साविअ वि [शापित] १ जिसको शाप दिया गया हो वह। २ जिसको सौगंध दिया गया हो वह (णाया १,१—पत्र २६, भग १५—पत्र ६८२, स १२६)।

साविअ वि [श्रावित] सुनाया हुआ (भग १५—पत्र ६८२, णाया १, १—पत्र २६, पउम १०२, १५, ६६, सार्ध १८)।

साविआ स्त्री [श्राविका] जैन गृहस्थ-धर्म पालनेवाली स्त्री (भग, णाया १, १६—पत्र २०४, कप्प, महा)।

साविक्ख वि [सापेक्ष] अपेक्षा-युक्त, अपेक्षा-वाला (श्रा ६, सबोध ४१)।

साविगा देखो साविआ (ठा १०—पत्र ४६६, णाया १, २—पत्र ६०, महा)।

साविट्ठी स्त्री [श्राविष्ठी] १ श्रावण मास की पूर्णिमा। २ श्रावण की अमावस (सुज्ज १०, ६, इक)।

सावित्ती स्त्री [सावित्री] ब्रह्मा की पत्नी (उप ५६७ टी, कुप्र ४०३)।

साविह पु [श्वाविध] श्वापद पशु विशेष, साही (दे २, ५० ८, १५)।

सावेक्ख देखो साविक्ख (पउम १००, ११, उप ८७०)।

सास सक [शास्] १ सजा करना। २ सीख देना। ३ हुकुम करना। भूका सासित्था (कुप्र १४)। कर्म सासिज्जइ, सीसइ (नाट—मृच्छ २००, कुप्र ३६६)। वकृ. सास°, सासंत (उत्त १ ३७, श्रौप पि ३६७)। हे. सासणीअ (नाट—विक्र १०४)। कवकृ. सासिज्जंत (उत्त १४६ टी)।

सास सक [कथय्] कहना। सासइ (षड्)। कर्म. सासइ (प्राकृ ७७)।

सास पु [श्वास] १ साँस (गा १४१, १४७)। २ रोग-विशेष, श्वास-रोग (णाया १, १३—पत्र १८१, उवा विपा १, १)। °हरा स्त्री [°धरा] जीवन धारण करनेवाली (दसः वृ० हारि० पत्र ६४, २)।

सास पु न [शस्य, सस्य] १ क्षेत्र गत धान्य (पण्ह १, ४—पत्र ७२, स १३१), 'सासा अकिट्ठजाया' (पउम ३३, १४)। २ वृक्ष आदि का फल। ३ वि. वध योग्य (हे १, ४३)। देखो सस्स = शस्य।

सासग पुन [सस्यक] रत्न की एक जाति, 'पुलगवइरिंदनीलसासगकक्केयणलोहियक्ख—' (कप्प)।

सासग पु [सासक] वृक्ष-विशेष, बीयक नाम का पेड़ (णाया १, १—पत्र २४)।

सासण न [शासन] १ द्वादशांगी वाह्य जैन अंग ग्रन्थ, आगम, सिद्धान्त, शास्त्र, 'अणु-सासणमेव पक्कमे' (सूअ १, २, १, ११, अणु ३८, सम्म १, विसे ८६४)। २ प्रतिपादन (णंदि, उप पृ ३७४)। ३ शिक्षा, सीख

°अर (कुमा)। °चरण न [°चरण] सहचर, साथ रहना, मेलाप, 'रयणनिहाणेहिं भवउ सहचरणं' (श्रु ८४)। °ज पु [°ज] १ स्वभाव (कुमा, पिंग)। २ वि. स्वाभाविक (चेइय ४६१)। °जाय वि [°जात] एक साथ उत्पन्न (णाया १, ५—पत्र १०७)। °देव पु [°देव] १ एक पाण्डव, माद्री-पुत्र (धर्मवि ८१)। २ राजगृह नगर का एक राजा (उप ६४८ टी)। °देवा स्त्री [°देवा] ओषधि-विशेष (धर्मवि ८१)। °देवी स्त्री [°देवी] १ चतुर्थ चक्रवर्त्ती की माता (सम १५२ महा)। २ एक महौषधि (ती ५)। °धम्मआरिणी स्त्री [°धर्मचारिणी] पत्नी, भार्या (प्रति २२)। °पंसुकीलिअ वि [°पांशुक्रीडित] बाल-मित्र (सुपा २५४, णाया १, ५—पत्र १०७)। °य देखो °ज (चेइय ४८६, राज)। °यर वि [°चर] १ सहाय, साहाय्य-कर्ता। २ वयस्य, दोस्त। ३ अनुचर (पाअ, कुप्र २। अच्चु ६०, नाट—शकु ६१)। °यरी स्त्री [°चरी] पत्नी, भार्या (कुप्र २५१, से ८, ६६)। °यार देखो °आर (पाअ, हे १, १७७)। °राग वि [°राग] राग-सहित (पउम १४, ३८)। °र देखो °आर (पउम ५३, ७६)।

सह° देखो सहा = सभा (कुमा)।

सहउत्थिया स्त्री [दे] दूती (दे ८, ६)।

सहगुह पु [दे] घूक, उल्लू, पक्षि-विशेष (दे ८, १६)।

सहडामुह न [शकटामुख] वैताढ्य की उत्तर श्रेणि में स्थित एक विद्याधर-नगर (इक)।

सहण अ [दे] सह, साथ में (सूत्र० चूर्णि० गा० २५७)।

सहण न [सहन] १ तितिक्षा, मर्षण। २ वि. सहिष्णु, सहन करनेवाला (सं २६)।

सहर पुस्त्री [शफर] मत्स्य, मछली (पाअ, गउड)। स्त्री °री (हे १, २३६, गउड)।

सहर वि [दे] साहाय्य-कर्ता, सहाय, 'न तस्स माया न पिया न भाया, कालम्मि तम्मि (?म्मी) सहरा भवंति' (वे ४३)।

सहल वि [सफल] फल-युक्त, सार्थक (उप १०३१ टी, हे १, २३६, कुमा, स्वप्न १६)।

सहस देखो सहस्स (श्रा ४४, पि ६२, ६६)। °किरण पु [°किरण] सूर्य, रवि (सम्मत्त ७६)। °क्ख पु [°अक्ष] १ इन्द्र (सुपा १३०)। २ रावण का एक योद्धा (पउम ५६, २६)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)।

सहसक्कार पु [सहसाकार] १ विचार किए विना करना (आचा)। २ आकस्मिक क्रिया अकस्मात् करना (भग २५, ७—पत्र ६१६)। ३ वि विचार किए विना करनेवाला (आचा)।

सहसत्ति अ अकस्मात्, शीघ्र, जल्दी, तुरन्त (पाअ, प्राकृ ८१)।

सहसा अ [सहसा] अकस्मात्, शीघ्र, जल्दी (पाअ, प्रासू १५१, भवि)। °वित्तासिय न [°वित्रासित] अकस्मात् स्त्री के नेत्र-स्थगन आदि क्रीडा (उत्त १६, ६)।

सहस्स पुन [सहस्र] १ संख्या-विशेष, दस सौ, १०००। २ वि हजार की संख्यावाला (जी २७, ठा ३ १ टी—पत्र ११६, प्रासू ४, कुमा)। ३ प्रचुर बहुत (कप्प, आवम, हे २, १६८)। °किरण पु [°किरण] १ सूर्य, रवि (सुपा ३७)। २ एक राजा (पउम १०, ३४)। °क्ख पु [°अक्ष] इन्द्र, देवाधिपति (कप्प, उत्त ११, २३)। °णयण, °नयण पुं [°नयन] १ इन्द्र (उव, हम्मीर ५, महा)। २ एक विद्याधर राज-कुमार (पउम ५, ६७)। °पत्त अ [°पत्र] हजार दल-वाला कमल (कप्प)। °पाग पुन [°पाक] हजार ओषधि से बनता एक प्रकार का तैल (णाया १, १—पत्र १६, ठा ३, १—पत्र ११७)। °रस्सि पुं [°रश्मि] सूर्य, रवि (णाया १, १—पत्र १७, भग, रयण ८३)। °लोयण पु [°लोचन] इन्द्र (स ६२२)। °सिर वि [°शिरस्] १ प्रभूत मस्तक-वाला। २ पु विष्णु (हे २, १९८)। °वत्त देखो °पत्त (से ६, ३८, सुपा ४६)। °सो अ [°शस्] हजार-हजार, अनेक हजार (श्रा १२) °हा अ [°धा] सहस्र प्रकार से (सुपा ५३)। °हुत्त अ [°कृत्वस्] हजार वार (प्राप्र, हे २, १५८)। देखो सहस, सहास।

सहस्सववण न [सहस्राम्रवण] एक उद्यान, आम के प्रभूत पेडोंवाला वन (णाया, १, ८—पत्र १५२, अंत उवा)।

सहस्सार पु [सहस्रार] १ आठवाँ देवलोक (सम ३५, भग, अंत)। २ आठवें देवलोक का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। ३ एक देव विमान (देवेन्द्र १३५)। °वडिंसय पुन [°वतंसक] एक देव विमान (सम ३५)।

सहा स्त्री [सभा] समिति, परिषत् (कुमा, स १२६, ५१६, सुपा ३८४)। °सय वि [°सद्] सभ्य, सदस्य (पाअ, स ३८५)।

सहा देखो साहा = शाखा (गा २३०)।

सहाअ देखो स-हाअ = स्व-भाव।

सहाअ पु [सहाय] साहाय्य-कर्ता (णाया १, २—पत्र ८८, पाअ, से ३, ३, स्वप्न १०६, महा, भग)।

सहाइ वि [साहाय्यिन्] ऊपर देखो (सिरि ६७, सुपा ५६३)।

सहाइया स्त्री [सहायिका] मदद करनेवाली (उवा)।

सहार देखो सह-यार = सह-कार।

सहाव देखो स-हाव = स्व-भाव।

सहास देखो सहस्स (भवि)। °हुत्तो अ [°कृत्वस्] हजार वार (षड्)।

सहासय देखो सहा-सय = सभा-सद।

सहि वि [सखि] मित्र, दोस्त (पाअ, उर २ ६)। देखो सही°।

सहि° देखो सही (कुमा)।

सहिअ वि [सोढ] सहन किया हुआ (से १, ५५, धात्वा १५५)।

सहिअ वि [सहित] १ युक्त, समन्वित (उव, कुमा, सुपा ६१)। २ हित-युक्त (सूअ १, २ २, २३)। ३ पु. ज्योतिष्क ग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७७)।

सहिअ पु [सभिक] द्यूत-कारक, जुआ खेलनेवाला (दे ६, ४२, पाअ सुपा ४८८)।

सहिअ देखो स-हिअ = स्व हित।

सहिअ देखो सह = सह्।

सहिअ } वि [सहृदय] १ सुन्दर चित्त-
सहिअय } वाला। २ परिपक्व बुद्धिवाला (हे १, २६९, दे १, १, काप्र ५२१)।

साहन्नत देखो साहण = सं + हन् ।

साहम्म न [साधर्म्य] १ समान धर्म, तुल्य धर्म (सम्म १५३, पिंड १३६) । २ सादृश्य, समानता (विसे २५८६, ओघ ४०४, पचा १४, ३५) ।

साहम्मि वि [सधर्मिन्, सार्धर्मिन्] समान धर्मवाला, एक-धर्मी (पिंड १३६, १४६, १४७) स्त्री °णी (आचा २, १, १, १२, महा) ।

साहम्मिअ } वि [सार्धर्मिक] ऊपर देखो
साहम्मिग } (ओघ १५, ७७६, औप, उत्त २६, १, कस सुपा ११२ पचा १६, २२) ।

साहय देखो साहग = साधक (उप ३६०, स ४५, काल) ।

साहय देखो साहग = शासक, कथक (सम्म १४३) ।

साहय वि [संहृत] संक्षिप्त, समेटा हुआ (पण्ह १, ४—पत्र ७८, औप, तदु २८) ।

साहर सक [सं + वृ] संवरण करना । साहरइ (हे ४, ८२) ।

साहर सक [सं + हृ] १ संकोच करना संक्षेप करना, सकेलना, समेटना । २ स्थानान्तर में ले जाना । ३ प्रवेश कराना । ४ छिपाना । ५ व्यापार-रहित करना । साहरइ, साहरे साहरंति (भग ५, ४—पत्र २१८, कप्प, उव, सूअ १, ८, १७, पि ७६) । साहरिज्ज (भग ५, ४) । भवि. साहरिज्जिस्सामि (कप्प) । कवकृ साहरिज्जमाण (कप्प औप) । संकृ साहरित्ता (कप्प) । हेकृ. साहरित्तए (भग ५, ४—पत्र २१८) ।

साहरण न [संहरण] एक स्थान से दूसरे स्थान मे ले जाना, स्थानान्तर-नयन (पिंड ६०६ ६०७) ।

साहरय वि [दे] गत-मोह, मोह-रहित (दे ८, २६) ।

साहरिअ वि [संहृत] १ स्थानान्तर मे नीत (सम ८६, कप्प) । २ अन्यत्र क्षिप्त (पिंड ५२०) । ३ संलीन किया हुआ, संकोचित (औप) ।

साहरिअ वि [संवृत] संवरण-युक्त (कुमा, पाअ) ।

साहल्ल न [साफल्य] सफलता (श्रा ७३) ।

साहव देखो साहु = साधु, 'अह पेच्छइ साहवं तहिं बालिं' (पउम ६, ६१, ७७, ६४) ।

साहव न [साधव] साधुता, साधुपन (पउम १, ६०) ।

साहव्व न [स्वाभाव्य] स्वभावता, स्वभावपन (धर्मसं ६६) ।

साहस न [साहस] १ बिना विचार किया जाता काम (उव, महा) । २ पु. एक विद्याधर नरेन्द्र, साहस गति (पउम ४७, ४७) । °गइ पु [°गति] वही अर्थ (पउम ४७, ४५, महा) ।

साहस देखो साहस्स = साहस्र (राज) ।

साहसि वि [साहसिन्] साहस कर्म करनेवाला साहसिक, 'ते धीरा साहसिणो उत्तमसत्ता' (उप ७२८ टी, किरात १४) ।

साहसिअ वि [साहसिक] ऊपर देखो (औप, सूअ २, २, ६२, चारु ३७, कुप्र ४१६) ।

साहस्स वि [साहस्र] १ जिसका मूल्य हजार (मुद्रा, रुपया आदि) हो वह वस्तु (दसनि ३, १०, उव, महा) । २ हजार का परिमाणवाला, 'जोयणसयसाहस्सो वित्थिण्णो मेरुनाभीओ' (जीवस १८५) । ३ न. हजार (जीवस १८५) । °मल्ल पु [°मल्ल] व्यक्तिवाचक नाम (उव) ।

साहस्सिय वि [साहस्रिक] १ हजार का परिमाणवाला (णाया १, १—पत्र ३७, कप्प) । २ हजार आदमी के साथ लडनेवाला मल्ल (राज) ।

साहस्सी स्त्री [साहस्री] हजार, दस सौ, 'गिहत्थाण अणेगाओ साहस्सीओ समागया' (उत्त २३, १६, सम २६, उवा, औप, उत्त २२, २३, ह ३, १२३) ।

साहा स्त्री [श्लाघा] प्रशंसा (सम ५१) ।

साहा अ [स्वाहा] देवता के उद्देश से द्रव्य-त्याग का सूचक अव्यय, आहुति-सूचक शब्द (ठा ८—पत्र ४२७, ओघभा ५७) ।

साहा स्त्री [शाखा] १ एक ही आचार्य की संतति में उत्पन्न अमुक मुनि की सन्तान-परम्परा, अवान्तर संतति (कप्प) । २ वृक्ष की डाल, डाली (आचा २, १, ७, ६, उव, औप, प्रासू १०२) । ३ वेद का एक देश (मुख ४, ६) । °भंग पु [°भङ्ग] शाखा का टुकड़ा, पल्लव (आचा २, १, ७, ६) । °मय, °मिअ, °मिग पु [°मृग] वानर, बन्दर (पाअ, ती २, सुपा २६२, ६१८) । °र, ल वि [°वत्] १ शाखावाला, शाखा-युक्त (धम्म १२ टी सुपा ४७४) । २ पु. वृक्ष, पेड़ (सुपा ६३८) ।

साहाणुसाहि पु [दे] शक देश का सम्राट, बादशाह, 'पत्तो सगकूलं नाम कूलं, तत्थ जे सामंता ते साहिणो भण्णंति जो सामताहिवई सयलनरिंदवंदचूडामणी सो साहाणुसाही भण्णइ' (काल) ।

साहार सक [सं + धारय्] अच्छी तरह धारण करना । साहारइ (भवि) ।

साहार पु [सहकार] आम का गाछ 'होसइ किल साहारो साहारे अंगणम्मि वड्ढ ते' (वज्जा १३०, सुपा ६३८) ।

साहार पु [दे साधुकार] साहुकार, महाजन (धम्म १२ टी) ।

साहार पु [संधार महकार] अच्छा आधार, सहारा, अवलम्बन, सहायता, मदद, उपकार, 'परचित्तरजणेण न वेसमेत्तेण साहारो' (उव, पुप्फ २२५), भुंजतो आहारं गुणोवयारसरीरसाहारं' (ओघ ५८३, स ८२५, वज्जा १३०, सण) ।

साहार वि [साहकार] आम के गाछ से उत्पन्न, आम्र-वृक्ष-सम्बन्धी (कप्पू) ।

साहार } पुन [साधारण] १ वनस्पति-
साहारण } विशेष, जहाँ एक शरीर में अनन्त जीव हो वह वनस्पति, कन्द आदि । २ कर्म-विशेष, जिसके उदय से साधारण-वनस्पति में जन्म होय वह कर्म (कम्म २, २८, पण्ह १, १—पत्र ८, कम्म १, २७, जी ८, पण्ण १—पत्र ४२) । ३ कारण (आचू १) । ४ पुं. साधारण वनस्पति-काय का जीव (पण्ण १—पत्र ४२) । ५ वि सामान्य । ६ समान, तुल्य (पण्ह १—पत्र ४२) । ७ पुन. उपकार, सहायता, मदद, 'साहारणट्ठा जे केइ गिलाणम्मि उवट्ठिए । पभू ण कुणई किंचि' (सम ५१) । °सरीरनाम न [°शरीर-

साउणिअ वि [शाकुनिक] १ पक्षि-घातक, पक्षियों के वध का काम करनेवाला (पण्ह १, १, २—पत्र २६, अणु १२६ टि, विपा १, ८—पत्र ८३)। २ शकुन शास्त्र का जानकार (सुपा २६७, कुप्र ५)। ३ श्येन पक्षी द्वारा शिकार करनेवाला (अणु १२६ टि)।

साउय देखो साउग (राज)।

साउय वि [सायुष्] आयुवाला, प्राणी (ठा २, १—पत्र ३८)।

साउल वि [सकुल] व्याप्त, भरपूर (सुर १०, १८)।

साउलय वि [साकुलत] आकुलता युक्त, व्याकुल, व्यग्र; 'इयिमुहसाउलओ परिट्ठिउई सोवि समारे' (पउम ०२, १६७)।

साउली स्त्री [दे] १ वस्त्राञ्चल (गा २६६)। २ वस्त्र, कपड़ा (गा ६०५)। देखो साहुली।

साउल्ल पु [दे] अनुराग, प्रेम (हे ८, २८, षड्)।

साएज्ज देखो साइज्ज। साएज्जइ (भवि १०, २)।

साएय न [साकेत] अयोध्या नगरी (इक, सुपा ५५०, पि ६३)। °पुर न [°पुर] वही अर्थ (उप ७२८ टी)। °पुरी स्त्री [°पुरी] वही (पउम ४, ४)। देखो साकेय।

साएया स्त्री [साकेता] अयोध्या नगरी (पउम २०, १०, णाया १, ८—पत्र १३१)।

सातवण न [सान्तपन] व्रत-विशेष (प्रवो ७३)।

साक देखो साग (दे ६, १३०)।

साकेय न [साकेत] १ नगर-विशेष, अयोध्या (ती ९)। २ वि. गृहस्थ-संबन्धी। ३ न प्रत्याख्यान-विशेष (पव ४)।

साकेय वि [साङ्केत] १ सकेत का, सकेत-सबन्धी। २ न प्रत्याख्यान का एक भेद (पव ४)।

साग पु [शाक] १ वृक्ष-विशेष (पउम ४२, ७, दे १, २७)। २ तक्र-सिद्ध वडा आदि खाद्य, 'सागा सो तक्कसिद्ध जं' (पव २५६)। ३ शाक, तरकारी (पि २०२, ३६४)।

सागडिअ वि [शाकटिक] गाड़ीवान, गाड़ी चला कर निर्वाह करनेवाला (सुर १६, २२३, स २६२, उत्त ५, १४, श्रा १२)।

सागय न [स्वागत] १ शोभन आगमन, प्रशस्त आगमन (भग)। २ अतिथि-सत्कार, आदर, बहु-मान (सुपा २५६)। ३ कुशल (कुमा)।

सागर पु [सागर] १ समुद्र (पण्ह १, ३—पत्र ४४, प्रासू १३४)। २ एक राज-पुत्र (उप ६३७)। ३ राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र (अंत ३)। ४ एक वणिक्—व्यापारी (उप ३४८ टी)। ५ सातवें बलदेव तथा वासुदेव के पूर्व भव के धर्म-गुरु (सम १५३)। ६ पुन कूट-विशेष (इक)। ७ समय-परिमाण-विशेष, दश कोटाकोटि-पल्योपम-परिमित काल (नव, ६, जी ३६, पव २०१)। ८ एक देव-विमान (सम २)। °कंत पुन [°कान्त] एक देव विमान (सम २)। °चंद पु [°चन्द्र] १ एक जैन आचार्य (काल)। २ एक व्यक्तिवाचक नाम (उव, पडि, राज)। °चित्त पुन [°चित्र] कूट-विशेष (इक)। °दत्त पुं [°दत्त] १ एक जैन मुनि (सम १५३)। २ तीसरे बलदेव का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५३)। ३ एक श्रेष्ठि-पुत्र (महा)। ४ एक सार्थवाह का नाम (विपा १, ७)। ५ हरिषेण चक्रवर्ती का एक पुत्र (महा ८४)। °दत्ता स्त्री [°दत्ता] १ भगवान् धर्मनाथजी की दीक्षा-शिविका (सम १५)। २ भगवान् विमलनाथजी की दीक्षा-शिविका (विचार १२६)। °देव पु [°देव] हरिषेण चक्रवर्ती का एक पुत्र (महा)। °वूह पु [°व्यूह] सैन्य की रचना विशेष (महा)। देखो सायर = सागर।

सागरिअ देखो सागारिय (पिंड ५६८, पव १९२)।

सागरोवम पुन [सागरोपम] समय-परिमाण विशेष, दस-कोटाकोटि-पल्योपम-परिमित काल (ठा २, ४—पत्र ६०, सम २, ८, ६, १०, ११, उत्त, पि ४४८)।

सागार वि [साकार] १ आकार-सहित, आकृतिवाला। २ विशेषांश को ग्रहण करने की शक्ति, विशेष-ग्रहण, ज्ञान (ओप, भग, सम्म ६५)। २ अपवाद-युक्त (भग ७, २—पत्र २६६, उप ७२८ टी)। °पस्सि वि [°दर्शिन्] ज्ञानवाला (पण्ण ३०—पत्र ७५८)।

सागार वि [सागार] गृह-युक्त गृहस्थ (आवम)।

सागारि } वि [सागारिन्, °रिक] १
सागारिय } गृह का मालिक उपाश्रय का मालिक साधु को स्थान देनेवाला गृहस्थ, शय्यातर (पिंड ३१०, आचा २, २, ३, ५, सूअ १, ६, १६, ओघ १६६)। २ सूतक, प्रसव और मरण की अशुद्धि, अशौच (सूअ १, ६, १६)। ३ गृहस्थ से युक्त, 'सागारिए उवस्सए' (आचा २, २, १, ४, ५)। ४ न. मैथुन (आचा १, ६, १, ६)। ५ वि. शय्यातर गृहस्थ का, उपाश्रय के मालिक से सबन्ध रखनेवाला, 'सागारियं पिंडं भुंजमाणे' (सम ३६)।

सागेय देखो साकेय = साकेत (णाया १, ८—पत्र १३१ उप ७२८ टी)।

साड सक [शाटय्, शातय्] सडाना, विनाश करना। हेकृ साडेत्तए (विपा १, ७—पत्र ७६)।

साड पु [शाट, शात] १ शाटन, विनाश (विसे ३०२१)। २ शाटक, उत्तरीय वस्त्र, चद्दर (पव ३८)। ३ वस्त्र, कपड़ा, 'एगसाडे अदुवा अचेले' (आचा, सुपा ११)।

साडअ } पुन [शाटक] वस्त्र, कपड़ा (सुपा
साडग } १५३, राज)।

साडण न [शाटन, शातन] १ विशरण, विनाश (विसे ३३१६, स ११६)। २ छेदन (सूअनि ७२)।

साडणा स्त्री [शाटना, शातना] खण्ड-खण्ड होकर गिराने का कारण, विनाश-कारण (विपा १, १—पत्र १६)।

साडिअ वि [शाटित, शातित] सडाकर गिराया हुआ, विनाशित (सुर ५, ३, दे ७, ८)।

साडिआ स्त्री [शाटिका] वस्त्र, कपड़ा (ओप, कप्प)।

साडिल्ल देखो साड = शाट, 'नियनियअजाणुमलिणसाडिल्लो' (सुपा ११)।

सिअग पु [दे] वरुण देवता (दे ८, ३१)।
सिअवर पुं [श्वेताम्बर] जैनों का एक सम्प्रदाय, श्वेताम्बर जैन (सुपा ६५८)।
सिअलि पुंस्त्री [दे] वृक्ष-विशेष (स २५६)। देखो सीअलि।
सिआ देखो सिवा = शिवा (से १३, ६५)।
सिआ अ [स्यात्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रशंसा, श्लाघा। २ अस्तित्व, सत्ता। ३ संशय, संदेह। ४ प्रश्न। ५ अवधारण, निश्चय। ६ विवाद। ७ विचारणा (हे २, १०७)। ८ अनेकान्त, अनिश्चय, कदाचित् (सूअ १, १०, २३; बृह १, पएण ५—पत्र १३७)। °वाइ पुं [°वादिन्] जिनदेव, अर्हन् देव (कुमा)। °वाय पु [°वाद] अनेकान्त दर्शन, जैन दर्शन (हे २, १०७; चड; षड्)।
सिआ स्त्री [सिता] १ लेश्या-विशेष, शुक्ल-लेश्या (पव १५२)। २ द्राक्षा आदि का संग्रह (राज)।
सिआल पु [शृगाल, सृगाल] १ पशु-विशेष, सियार, गीदड़ (णाया १, १—पत्र ६५)। २ दैत्य-विशेष। ३ वासुदेव। ४ निष्ठुर। ५ खल, दुर्जन (हे १, १२८; प्राप्र)।
सिअली स्त्री [दे] डमर, देश का भीतरी या बाहरी उपद्रव (दे ८, ३२)।
सिआली स्त्री [शृगाली] मादा सियार (नाट; पि ५०)।
सिआलीस स्त्रीन [षट्चत्वारिंशत्] छेआलीस, चालीस और छ (विसे ३४६ टी)।
सिआसिअ पु [सितासित] १ बलभद्र, बलराम। २ वि श्वेत और कृष्ण (प्राप्र)।
सिइ पु [शिति] १ हरा वर्ण। २ वि हरा वर्णवाला। °पावरण पु [°प्रावरण] बलराम, बलभद्र (कुमा)।
सिइ स्त्री [दे शिति] सीढ़ी, निःश्रेणि (पिंड ४७३; वव १०)।
सिउ (अप) देखो सम (भवि)।
सिउंठा स्त्री [दे असिकुण्ठा] साधारण वनस्पति-विशेष (पएण १—पत्र ३५)।
सिएअर वि [सितेतर] कृष्ण, काला (पाअ)।

सिकला देखो सकला (अच्चु ४०)।
सिखल न [दे] नूपुर (दे ८, १०; कुप्र ६८)।
सिखला देखो सकला (से १, १४; प्राप; नाट—मृच्छ ८६)।
सिग न [शृङ्ग] १ लगातार छव्वीस दिनों के उपवास (संबोध ५८)। २—देखो सग = शृङ्ग (उवा; पाअ; राय ४६; कप्प; उप ५६७ टी; सुपा ४३२; विक्र ८६; गउड; हे १, १३०)। °णाइय न [°नादित] प्रधान काज (पचभा ३)। °पाय न [°पात्र] सींग का बना हुआ पात्र (आचा २, ६, १, ५)। °माल पु [°माल] वृक्ष-विशेष (राज)। °वंदण न [°वन्दन] ललाट से नमन (बृह ३)। °वेर न [°वेर] १ आर्द्रक, आदी। २ शुएठी, सोंठ (उत्त ३६, ९७; दस ५, १, ७०; भास ८ टी; पएण १—पत्र ३५)।
सिग त्रि [दे] कृश, दुर्बल (दे ८, २८)।
सिगय वि [दे] तरुण, जवान (दे ८, ३१)।
सिगरीडी देखो सिगिरीडी (राज)।
सिंगा स्त्री [दे] फली, फलियाँ (भास ८ टी)।
सिगार पु [शृङ्गार] १ नाट्यशास्त्र-प्रसिद्ध रस-विशेष, 'सिंगारो णाम रसो रइसंजोगाभिलाससंजणणो' (अणु)। २ वेष, भूषण आदि की सजावट, भूषण आदि की शोभा (औप; विपा १, २)। ३ लवङ्ग, लौंग। ४ सिन्दूर। ५ चूर्ण, चून। ६ काला अगरु। ७ आर्द्रक, आदी। ८ हाथी का भूषण। ९ अलंकार, भूषण (हे १, १२८; प्राप्र)। १० वि अतिशय शोभावाला, 'तए ण समणस्स भगवओ महावीरस्स वियट्टभोइस्स सरीरयं ओरालं सिंगारं कल्लाणं सिवं धन्नं मंगल्लं अणलंकिअविभूसिअं चिट्ठइ' (भग)।
सिगार सक [शृङ्गारय्] सिंगार करना, सजावट करना। सिंगारइ (भवि)।
सिगारि वि [शृङ्गारिन्] सिंगार करनेवाला, शोभा करनेवाला (सिरि ८४४)।
सिगारिअ वि [शृङ्गारित] सिंगारा हुआ, सजाया हुआ (सिरि १५८)।
सिगारिअ वि [शृङ्गारिक] शृङ्गार-युक्त (उवा)।

सिंगि वि [शृङ्गिन्] १ सींगवाला (सुअ ८, १३; दे ७, १६)। २ पुं. मेष, भेड़। ३ पर्वत। ४ भारतवर्ष का एक सीमा-पर्वत। ५ मुनि-विशेष। ६ वृक्ष (अणु १४२)।
सिंगिणी स्त्री [दे] गौ, गैया (दे ७, ३१)।
सिंगिया स्त्री [शृङ्गिका] पानी छिड़कने का पात्र विशेष, पिचकारी (सुपा ३२८)।
सिंगिरीडी स्त्री [शृङ्गिरीटी] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, १४८)।
सिंगी स्त्री [शृङ्गी] देखो सिंगिया (सुपा ३२८)।
सिंगेरिवम्म न [दे] वल्मीक (दे ८, ३३)।
सिंघ सक [शिङ्घ्] सूँघना। सिंघइ (कुप्र ८०)। सक्र सिंघिउं (धर्मवि ६४)। हेक्र सिंघेउं (धर्मवि ६४)।
सिंघ देखो सिंह (हे १, २६; विपा १, ८—पत्र ५५; षड्)।
सिंघल देखो सिंहल (सुर १३, २९; सुपा १५; पि २६७)।
सिंघाडग } पुन [शृङ्गाटक] १ सिंघाड़ा, सिंघाडय } पानी-फल (पएण १—पत्र ३६; आचा २, १, ८, ५)। २ त्रिकोण मार्ग (पएह १, ३—पत्र ५४; औप; णाया १, १ टी—पत्र ३; कप्प)। ३ पु राहु (सुज्ज २०)।
सिंघाण पुन [शिङ्घाण] १ नासिका-मल, श्लेष्मा (ठा ५, ३—पत्र ३४२; सम १०; पएह २, ५—पत्र १४८; औप; कप्प; कस; दस ८, १८; पि २६७)। २ पुं. काला पुद्गल-विशेष (सुज्ज २०)।
सिंघासण देखो सिंहासण (स ११७)।
सिंघुअ पुं [दे] राहु (दे ८, ३१)।
सिंच सक [सिच्] सींचना, छिड़कना। सिंचइ (हे ४, ९६; महा)। भूका. सिंचिंसु (कुमा)। भवि. सिंचिस्सं (पि ५२६)। कृ. सिंचेयव्व (सुर ७, २३५)। कवकृ. सिंचंत, सिच्चमाण (पि ५४२; उप २११ टी; स ३४९)।
सिंचण न [सेचन] छिड़काव (सूअ १, ४, १, २१; मोह ३१)।
सिंचाण पु [दे] पक्षि-विशेष, श्येन पक्षी, बाज, गुजराती में 'सिंचाणो' (सण)।

सामइअ देखो सामाइअ (विसे २६२४, २६३०, २६३४, २६३६)।

सामइअ } पुं [सामयिक] १ एक गृहस्थ
सामइग } का नाम (सूअनि १९७)। २ वि समय-सम्बन्धी (पंच ५, १६६)। ३ सिद्धान्त का जानकार (पिंडभा ६)। ४ आगम-आश्रित, सिद्धान्त-आश्रित (ठा ३, ३—पत्र १५१)। ५ बौद्ध विद्वान् (दसनि ४, ३५)।

सामइग देखो सामाइअ (विसे २७१६)।

सामइगि वि [सामायिकिन्] सामायिक-वाला (विसे २७१६)।

सामंत पुन [सामन्त] १ निकट, समीप, पास, 'तस्स ण अदूरसामंते' (णाया १, २—पत्र ७८, उवा, कप्प)। २ पुं अधीन राजा (महा, काल)। ३ अपने देश के अनन्तर देश का राजा, समीप देश का राजा (कप्प)।

सामती स्त्री [दे] सम-भूमि (दे ८, २३)।

सामंतोवणिवाइय न [सामन्तोपनिपातिक] अभिनय का एक भेद (राय ५४)।

सामंतोवणिवाइया } स्त्री [सामन्तोपनिपा-
सामंतोवणीआ } तिकी] क्रिया-विशेष, चारो तरफ से इकट्ठे हुए जन-समुदाय में होनेवाली क्रिया—कर्म बन्ध का कारण (ठा २, १—पत्र ४०, नव १८)।

सामंतोवायणिय पुंन [सामन्तोपपातनिक] अभिनय-विशेष (ठा ४, ४—पत्र २८५)।

सामक्ख देखो समक्ख, 'भरिय चिय वयण, 'ज त अणरण्णमित्तसामक्खं। भणिय अईयकाले' (पउम १०, ८४)।

सामग देखो सामय = श्यामाक (राज)।

सामग्ग सक [श्लिष्] आलिङ्गन करना। सामग्गइ (हे ४, १९०)।

सामग्ग } न [सामग्र्य] सामग्री, सम्पू-
सामग्गिअ } र्णता, सकलता (से ६, ४७, आचा २, १, १, ६, महा)।

सामग्गिअ वि [श्लिष्ट] आलिङ्गित (कुमा)।

सामग्गिअ वि [दे] १ चलित। २ अव-लम्बित। ३ पालित, रक्षित (दे ८, ५३)।

सामग्गी स्त्री [सामग्री] १ समस्तता। २ कारण-समूह (सम्मत्त २२४, महा, कप्पू, रंभा)।

सामच्छ सक [दे] मन्त्रणा करना, पर्या-लोचन करना। सक्त. सामच्छिऊण (पउम ४२, ०५)।

सामच्छ न [सामर्थ्य] समर्थता, शक्ति (हे २, २२ कुमा)।

सामच्छण देखो सामत्थण (राज)।

सामज्ज न [साम्राज्य] सार्वभौम राज्य, वडा राज्य (उप ३५७ टी)।

सामण } वि [श्रामण, °णिक] श्रमण-
सामणिय } संबन्धी (राज)।

सामणिय देखो सामण्ण = श्रामण्य (सूअ १, ७, २३, दस ७, ५६)।

सामणेर पुं [श्रामण] श्रमण का अपत्य, साधु की सतान (सूअ १, ४, २, १३)।

सामण्ण न [श्रामण्य] श्रमणता, साधुपन (भग, दस २, १, महा)।

सामण्ण पु [सामान्य] १ अणपन्नी देवो का एक इन्द्र(ठा २, ३—पत्र ८५)। २ न. वैशेपिक दर्शन मे प्रसिद्ध सत्ता पदार्थ (धर्मसं २५६)। ३ वि. साधारण (गा ८६१, ६६६, नाट—रत्ना ८१)।

सामत्थ देखो सामच्छ (दे)। सक्त. सामत्थे-ऊण (काल)।

सामत्थ देखो सामच्छ = सामर्थ्य (हे २, २२, कुमा, ठा ३, १—पत्र १०६, सुपा २८२, प्रासू १८४)।

सामत्थ } न [दे] पर्यालोचन, मन्त्रणा,
सामत्थण } 'कास हरामोत्ति अज्ज दव्व इति सामत्थ करेंति गुज्झ' (पण्ह १, ३—पत्र ४६, पिंड १२१, बृह १)।

सामन्न देखो सामण्ण = श्रामण्य (भग, कप्प, सुर १, १)।

सामन्न देखो सामण्ण = सामान्य (उव, स ६२५, धर्मवि ५६, कम्म १, १०, ३१)।

सामय सक [प्रति + ईक्ष्] प्रतीक्षा करना, वाट जोहना (हे ४, १९३, षड्)।

सामय पु [श्यामाक] धान्य-विशेष, सांवा (हे १, ७१, कुमा)।

सामरि पुस्त्री [दे शाल्मलि] शाल्मली वृक्ष, सेमर का पेड (दे ८, २, पाअ)।

सामरिस वि [सामर्ष] ईर्ष्यालु, असहिष्णु (सुर २, ६०)।

सामल वि [श्यामल] १ काला, कृष्ण वर्ण-वाला (से १, ५६, सुर ३, ६५, कुमा)। २ पुं एक वणिक—बनिया (सुपा ५५५)।

सामलइअ वि [श्यामलित] काला किया हुआ (से ८, ६६)।

सामलय वि [श्यामलक] १ काला। २ काला पानीवाला (से १, ५६)। ३ पु. वनस्पति-विशेष (राज)।

सामला स्त्री [श्यामला] १ कृष्ण वर्णवाली स्त्री। २ सोलह वर्ष की स्त्री, श्यामा (वज्जा १०२)।

सामलि पुस्त्री [शाल्मलि] सेमल का गाछ (सूअ १, ६, १८, उत्त, औप)।

सामलिय देखो सामलइअ (सुर ४, १०७)।

सामली देखो सामला (गउड, गा १२३, २३८, ७६४, सुपा १८५)।

सामलेर पुं [शाबलेय] कावरचित गौ—चित-कवरी गाय का वत्स (अणु २१७)।

साम स्त्री [श्यामा] १ तेरहवें जिनदेव की माता (सम १५१)। २ तृतीय जिनदेव की प्रथम शिष्या (सम १५२)। ३ रात्रि, रात (सूअ २, १, ५६, से १, ५६, ओघ ३८७)। ४ शक्र की एक अग्र-महिषी—पटरानी (पउम १०२, १५९)। ५ प्रियगु वृक्ष (पण्ण १—पत्र ३३, १७—पत्र ५२६, अनु ४)। ६ एक महौषधि (ती ५)। ७ लता-विशेष, साम-लता (औप)। ८ सोम लता (से १, ५६)। ९ नारी, स्त्री (से १, ५६; अणु १३६)। १० श्याम वर्णवाली स्त्री (कुमा)। ११ सोलह वर्ष की उम्रवाली स्त्री (वज्जा १०४) १२ सुन्दर स्त्री, रमणी (से १, ५६, गउड)। १३ यमुना नदी। १४ नील का गाछ। १५ गुग्गुल का गाछ। १६ गुडूची, गला। १७ मुन्द्रा। १८ कृष्णा। १९ अम्बिका। २० कस्तूरी। २१ वटपत्री। २२ वन्दा की लता। २३ हरी पुनर्नवा। २४ पिप्पली का गाछ। २५ हरिद्रा, हलदी। २६ नील दूर्वा। २७ तुलसी। २८ पद्मबीज।

°विलोक पु [°विलोक] १ सिंह की तरह पीछे की तरफ देखना। २ छन्द-विशेष (पिंग)। °सण न [°सन] आसन-विशेष, राजासन, राज-गद्दी (महा)। देखो सीह।

सिंहल पु [सिंहल] १ देश विशेष, सिंहल-द्वीप, लङ्का द्वीप (इक सुर १३, २५, २७)। २ पुस्त्री. सिंहल-द्वीप का निवासी (औप)। स्त्री °ली (औप, णाया १, १—पत्र ३७)।

सिंहलिआ स्त्री [दे] शिखा चोटी (पाअ)।

सिंहिणी स्त्री [सिंहिनी] छन्द-विशेष (पिंग)।

सिंहीभूय न [सिंहीभूत] व्रत-विशेष, चतुर्विध आहार की संलेखना—परित्याग (सबोध ५८)।

सिकता } स्त्री [सिकता] वालू, रेत (अणु
सिकया } २७० टी, पउम १२, १७, विसे १७३६)।

सिक पु [सृक्क] होठ का अन्त भाग (दे १, ८८)।

सिक्कग पुन [शिक्यक] सिकहर, सींका, छीका, रस्सी की बनी डोलनुमा एक चीज जो छत मे लटकायी जाती है और उसमें चीजें रख दी जाती हैं जिससे उसमे चींटियाँ न चढ़ें और उसे बिल्ली न खाय (राय ६३, उवा, निचू १, श्रावक ६३ टी)।

सिक्कड पुन [दे] खटिया, मचिया, 'कोव-भवणम्मि जरजिन्नसिक्कडे पडइ जरियव्व' (सुपा ६)।

सिक्कय देखो सिक्कग (राय ६३, श्रावक ६३ टी, स ५८३)।

सिक्करा स्त्री [शर्करा] खंड, टुकड़ा, 'सय-सिक्करो' (स ६६३)।

सिक्करिअ न [सीत्कृत] अनुराग से उत्पन्न आवाज (गा ३६२)।

सिक्करिआ स्त्री [दे शीकरी] जहाज का आभरण-विशेष (सिरि ३८७)।

सिक्कार पु [सीत्कार] १ अनुराग की आवाज (गा ७२१, भवि, सण, नाट—मृच्छ १३६)। २ हाथी की चिल्लाहट, 'कुंतविणिभिन्नकरि-कलहमुक्कसिक्कारपउरम्मि समरम्मि' (णमि १६)।

सिक्किआ स्त्री [शिक्या, शिक्यिका] रस्सी की बनी हुई एक चीज जो चढ़ने के काम मे आती है (सिरि ४२४)।

सिक्ख सक [शिक्ष्] सीखना, पढ़ना, अभ्यास करना। सिक्खइ (गा ४७७, ५२४), सिक्खतु सिक्खह (गा ३६२, गुण ४)। भवि सिक्खिस्सामि (स्वप्न ६७)। वकृ सिक्खत, सिक्खमाण (नाट—मृच्छ १४१, पि ३६७, सूअ १ १४, १)। संकृ. सिक्खिअ (नाट—रत्ना २१)। हेकृ सिक्खिउ (गा ८६२)।

सिक्ख देखो सिक्खाव। वकृ. सिक्खयंत (पउम ८२, ६२)। कृ सिक्खणीअ (पउम ३२, ५०)।

सिक्खग वि [शिक्षक] शिक्षा-कर्ता, 'दुक्खाण सिक्खग त परिणदमिह मे दुक्कयं (रंभा)।

सिक्खग पु [शैक्षक] नूतन शिष्य (सूअनि १२८)।

सिक्खण न [शिक्षण] १ अभ्यास, पाठ (कुप्र २३०)। २ सीख, उपदेश (सुर ८, ५१)। ३ अध्यापन, पाठन (सिरि ७८१)।

सिक्खव देखो सिक्खाव। सिक्खवेसु (गा ७५०, ६४८)। कवकृ. सिक्खविज्जमाण (सुपा ३१५)। कृ. सिक्खवियव्व (सुपा २०७)।

सिक्खवअ वि [शिक्षक] शिक्षा देनेवाला, पढानेवाला, शिक्षक (प्राकृ ६१)।

सिक्खविअ वि [शिक्षित] १ सिखाया हुआ, पढ़ाया हुआ (गा ३५२)। २ न शिक्षा देना, अभ्यास कराना, अध्यापन (सुपा २५)।

सिक्खा स्त्री [शिक्षा] १ सजा, दण्ड (कुप्र ११०)। २ वेद का एक अङ्ग, वर्णो के उच्चारण सम्बन्धी ग्रन्थ-विशेष, अक्षरो के स्वरूप को बतलानेवाला शास्त्र, 'सिक्खावा-गरणछंदकप्पडढो' (धर्मवि ३८, औप, कप्प, अत)। ३ शास्त्र और आचार सम्बन्धी शिक्षण, अभ्यास, सीख, सिखाई, उपदेश (औप, बृह १, महा, कुप्र १६७)। °वय न [°व्रत] व्रत-विशेष, जैन गृहस्थ के सामायिक आदि चार व्रत (औप, महा, सुपा ५४०)। °वय न [°पद] शिक्षा-स्थान (औप)।

सिक्खा (अप) स्त्री [शिखा] छन्द-विशेष (पिंग)।

सिक्खाण न [शिक्षाण] आचार-सम्बन्धी उपदेश देनेवाला शास्त्र (कप्प)।

सिक्खाव सक [शिक्षय्] सिखाना, पढाना, अभ्यास कराना। सिक्खावेइ (पि ५५६)। भवि. सिक्खाविहिति (औप)। सकृ. सिक्खा-वेत्ता (औप)। हेकृ सिक्खावित्तए, सिक्खावेत्तए, सिक्खावेउ (ठा २, १—पत्र ५६ कस, पचा १०, ४८ टी)।

सिक्खावअ देखो सिक्खवअ (गा ३५८, प्राकृ ६१)।

सिक्खावण न [शिक्षण] सिखाना, सीख, हितोपदेश (सुख २, १६, प्राकृ ६१, कप्पू)।

सिक्खावणा स्त्री [शिक्षणा] ऊपर देखो (सूअनि १२७, उप १५० टी)।

सिक्खाविअ वि [शिक्षित] सिखाया हुआ (भग, पउम ६७, २२, णाया १, १—पत्र ६०, १, १८—पत्र २३६)।

सिक्खिअ वि [शिक्षित] सिखा हुआ, जानकार, विद्वान् (णाया १, १४—पत्र १८७, औप)।

सिक्खिर वि [शिक्षितृ] सीखने की आदतवाला, अभ्यासी (गा ६६१)।

सिखा स्त्री [शिखा] छन्द-विशेष (पिंग)।

सिखि देखो सिहि-शिखिन् (नाट—विक्र ३४)।

सिगया देखो सिकया (राज)।

सिगाल देखो सिआल (मण)।

सिगाली देखो सिआली = शृगाली (चारु ११)।

सिग्ग त्रि [दे] १ श्रान्त, थका हुआ (दे ८, २८, ओघ २३)। २ पुन. परिश्रम, थकावट (वव ४)।

सिग्गु पु [शिग्रु] वृक्ष विशेष, सहिंजना का पेड़ (दे ६, २०, पाअ)।

सिग्घ न [शीघ्र] १ जल्दी, तुरत। २ वि. शीघ्रता-युक्त, त्वरा-युक्त (पाअ, स्वप्न ५४, चउ, कप्पू, महा, सुर १, २१०, ४, ६६, सुपा ५८०)।

सिचय पुं [सिचय] वस्त्र, कपड़ा (पाअ, गा २६१, कुप्र ४३३)।

१०—पत्र ४६५)। °कार पु [°कार] १ सत्य। २ सत्य-करण (ठा १०—पत्र ४६५)। °तण वि [°तन] सन्ध्या-समय का (विक्र १६)।

सायदूर न [दे] नगर-विशेष (दे ८ ५१ टी)।

सायदूला स्त्री [दे] केतकी, केवडे का गाछ (दे ८, २५)।

सायकुभ न [शातकुम्भ] १ सुवर्ण, सोना। २ वि. सुवर्ण का बना हुआ (सुपा २०१)।

सायग पुं [सायक] बाण, तीर (सुपा ६५१)।

सायग वि [स्वादक] स्वाद लेनेवाला (दस ४, २६)।

सायणा स्त्री [शातना] खण्डन, छेदन (सम ५८)।

सायणी स्त्री [शायनी, स्वापनी] मनुष्य की दस दशाओं में दसवीं—६० से १०० वर्ष की उम्रवाली—दशा (तदु १६)।

सायत्त वि [स्वायत्त] स्वाधीन, स्वतन्त्र (स २७६)।

सायय देखो सायग (पाअ, स ५४८)।

सायर पुं [सागर] १ समुद्र (सुपा ५६, ८८, जी ४४, गउड, प्रासू ८७, १४४, प्राप्र, हे २, १८२)। २ ऐरवत वर्ष में होनेवाले चौथे जिन-देव (पव ७)। ३ मृग-विशेष। ४ सख्या-विशेष (प्राप्र)। ५ एक सेठ का नाम (सुपा २८०)। °घोस पुं [°घोष] एक जैन मुनि जो आठवें बलदेव के पूर्वजन्म में गुरु थे (पउम २०, १९३)। °भद्द पु [°भद्र] इक्ष्वाकुवंश का एक राजा (पउम ५, ४)। देखो सागर = सागर।

सायर वि [सादर] आदर युक्त (गउड, सुर २, २४५)।

सायार देखो सागार = साकार (सम्म ६४, पउम ६, ११८)।

सार सक [प्र + हृ] प्रहार करना। सारइ (हे ४, ८४)। वकृ. सारत (कुमा)।

सार सक [स्मारय्] याद दिलाना। सारे (वव १)।

सार सक [सारय्] १ ठीक करना, दुरुस्त करना। २ प्रख्यात करना, प्रसिद्ध करना। ३ प्रेरणा करना। ४ उन्नत करना, उत्कृष्ट बनाना। ५ सिद्ध करना। ६ अन्वेषण करना, खोजना। ७ सरकाना, खिसकाना, एक स्थान से अन्य स्थान में ले जाना। सारइ (सुपा १५४), सारंति, सारयइ (सूअ १, २, २, २६, २, ६, ४), 'सारेहि वीणं' (स ३०६), सारेह (सूअ १, ३, ३, ६)। कर्म 'हंसाण सरेहि सिरि सारिज्जइ अह सराण हंसेहिं' (गा ९५३, काप्र ८६२)। कवकृ सारिज्जत (सुपा ५७)।

सार सक [स्वरय्] १ बुलवाना। २ उच्चारण-योग्य करना। सारंति (विसे ४६२)।

सार वि [शार] १ शबल, चितकबरा (पाअ, गउड ३७८, ५३०)। २ पु सार, पासा, खेलने के लिए काठ आदि का चौपहल रंगबिरंगा साँचा (सुपा १५४)।

सार पुन [सार] १ धन, दौलत (पाअ, से २, १, २६, मुद्रा २६७)। २ न्याय्य, न्याय-युक्त, 'एय खु नाणिणो सारं जं न हिंसइ किंचण' (सूअ १, १, ४, १०)। ३ बल, पराक्रम (पाअ, से ३, २७)। ४ परमार्थ (आचानि २३९)। ५ प्रकर्ष (आचानि २४०)। ६ फल (आचानि २४१)। ७ परिणाम (ठा ४, ४ टी—पत्र २८३)। ८ रस, निचोड (कप्पू)। ९ एक देव विमान (देवेन्द्र १४३)। १० स्थिर अंश (से ३, २७, गउड)। ११ पु. वृक्ष-विशेष (पण्ण १—पत्र ३४)। १२ छन्द विशेष (पिंग)। १३ वि. श्रेष्ठ उत्तम, 'जह चंदो ताराणं गुणाण सारा तहेह दया' (धम्मो ६, से २, २६)। °कता स्त्री [°कान्ता] षड्ज ग्राम की एक मूर्छना (ठा ७—पत्र ३९३)। °य वि [°द] सार देनेवाला (से ६, ४०)। °वई स्त्री [°वती] छन्द विशेष (पिंग)। °वत वि [°वत्] सार-युक्त (ठा ७—पत्र ३९४, गउड)। °वती देखो °वई (पिंग)।

सारइय वि [शारदिक] शरद ऋतु का (उत्त १०, २८, पण्ण १७—पत्र ५२६, ती ५, उवा)।

सारंग वि [शार्ङ्ग] १ सींग का बना हुआ। २ न. धनुष। ३ आर्द्रक, आदी (हे २, १०० प्राप्र)। ४ विष्णु का धनुष (हे २, १००, सुपा ३४८)। °पाणि पुं [°पाणि] विष्णु (प्राकृ २७)।

सारंग पुं [सारङ्ग] १ सिंह, मृगेन्द्र (सुर १, ११, सुपा ३४८)। २ चातक पक्षी (पाअ, से ६, ८२)। ३ हरिण, मृग (से ६, ८२, कप्पू)। ४ हाथी। ५ भ्रमर। ६ छत्र। ७ राजहंस। ८ चित्र मृग, चितकबरा हरिण। ९ वाद्य-विशेष। १० शख। ११ मयूर। १२ धनुष। १३ केश। १४ आभरण, अलंकार। १५ वस्त्र। १६ पद्म, कमल। १७ चन्दन। १८ कपूर। १९ फूल। २० कोयल। २१ मेघ (सुपा ३४८)। °रूअक, °रूपक (अप) पुन [°रूपक] छन्द-विशेष (पिंग)।

सारंग न [साराङ्ग] प्रधान दल, श्रेष्ठ अवयव (पण्ह २, ५—पत्र १५०, सुपा ३४८)।

सारंगि पु [शार्ङ्गिन्] विष्णु, श्रीकृष्ण (कुमा)।

सारंगिआ } स्त्री [सारङ्गिका] छन्द-विशेष
सारंगिक्का } (पिंग)।

सारंगी स्त्री [सारङ्गी] १ हरिणी (पाअ)। २ वाद्य-विशेष (सुपा १३२)।

सारभ देखो सरभ (ठा ७—पत्र ४०१)।

सारकल्लाण पु [सारकल्याण] वलयाकार वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३४)। देखो सालकल्लाण।

सारक्ख सक [स + रक्ष्] परिपालन करना, अच्छी तरह रक्षण करना। सारक्खइ (तदु १३)। वकृ. सारक्खत, सारक्खमाण (पि ७६, उवा)।

सारक्खण न [सरक्षण] सम्यग् रक्षण, त्राण (णाया १, २—पत्र ९०, सूअ १, ११, १८, औप)।

सारक्खणया स्त्री [सरक्षणा] ऊपर देखो (पि ७६)।

सारक्खि वि [संरक्षिन्] सरक्षण-कर्ता (पि ७६)।

सारक्खिअ वि [सरक्षित] जिसका सरक्षण किया गया हो वह (पण्ह २, ४—पत्र १३०)।

सिणेह देखो सणेह (भग, णाया १, १३— पत्र १८१, स्वप्न १५, कुमा, प्रासू ६)।

सिणेहालु वि [स्नेहवत्] स्नेहवाला (स ७६३)।

सिण्ण वि [स्विन्न] स्वेद-युक्त (गा २४४)

सिण्ण देखो सिन्न = शीर्ण (नाट—मृच्छ २१०)।

सिण्ह पुन [शिश्न] पुरुषचिह्न, पुरुष-लिंग (प्राप्र, दे ४, ५)।

सिण्हा स्त्री [दे] १ हिम, आकाश से गिरता जल-कण (दे ८, ५३)। २ अवश्याय, कुहरा, कुहासा (दे ८, ५३, पाअ)।

सिण्हालय पुन [दे] फल विशेष (अनु ६)।

सिति देखो सिइ = (दे) (वव १०)।

सित्त वि [सिक्त] सींचा हुआ (सुर ४, १४५, कुमा)।

सित्तुंज देखो सेत्तुंज (सुक्त ५२)।

सित्थ न [दे] गुण, धनुष की डोरी, 'सित्थ व असोत्तगय मह मण देव दूमेइ' (कुप्र ५४, पाअ)।

सित्थ, सित्थय न [सिक्थ] १ धान्य-कण (पण्ह १, ३—पत्र ५५, कप्प, औप, अणु १४२)। २ मोम (दे १, ५२, पाअ, उप ७२८ टी)। ३ ओषधि विशेष, नीली, नील (हे २, ७७)। ४ पुन. कवल, ग्रास, 'मासे मासे उ जा अज्जा एगसित्थेण पारए' (गच्छ ३, २८, प्राप्र)।

सित्था स्त्री [दे] १ लाला। २ जीवा, धनुष की डोरी (दे ८, ५३)।

सित्थि पु [दे] मत्स्य, मछली (दे ८, २८)।

सिद्द वि [दे] परिपाटित, विदारित, चीरा हुआ (दे ८, ३०)।

सिद्ध वि [सिद्ध] १ मुक्त, मोक्ष-प्राप्त, निर्वाण-प्राप्त (ठा १—पत्र २५, भग, कप्प, विसे ३०२७, २६, सम्म ८६, जी २५, सुपा २४४, ३४२)। २ निष्पन्न, बना हुआ (प्रासू १५)। ३ पका हुआ (सुपा ६३३)। ४ शाश्वत, नित्य (चेइय ६७६)। ५ प्रतिष्ठित, लब्ध-प्रतिष्ठ (चेइय ६७६, सम्म १)। ६ निश्चित, निर्णीत (सम्म १)। ७ विख्यात, प्रसिद्ध (चेइय ६८०)। ८ शब्द-विशेष, साध्य-विलक्षण शब्द (भास ८६)। ९ साधित किया हुआ। १० प्रतीत, ज्ञात (पचा ११, २६)। ११ पुं. विद्या, मन्त्र, कर्म, शिल्प आदि में जिसने पूर्णता प्राप्त की हो वह पुरुष (ठा १—पत्र २५, विसे ३०२८, वज्जा ६८)। १२ समय-परिमाण विशेष, स्तोक-विशेष (कप्प)। १३ न. लगातार पनरह दिनों के उपवास (सबोध ५८)। १४ पुन महाहिमवंत आदि अनेक पर्वतों के शिखरों का नाम (ठा ८—पत्र ४३६, ६—पत्र ४५४, इक)। °क्खर पुन [°क्षर] 'नमो अरिहंताण' यह वाक्य (भत्ति)। °गंडिया स्त्री [°गण्डिका] सिद्ध सबन्धी एक ग्रन्थ-प्रकरण (भग)। °चक्क न [°चक्र] अर्हन् आदि नव पद (सिरि ३४)। °न्न न [°ान्न] पकाया हुआ अन्न (सुपा ६३३)। °पुत्त पु [°पुत्र] जैन साधु और गृहस्थ के बीच की अवस्थावाला पुरुष (सबोध ३१, निचू १)। °मणोरम पुं [°मनोरम] पक्ष का दूसरा दिन (सुज्ज १०, १४)। °राय पु [°राज] विक्रम की बारहवीं शताब्दी का गुजरात का एक सुप्रसिद्ध राजा, जो सिद्धराज जयसिंह के नाम से प्रसिद्ध था (कुप्र २२, वाग्र १५)। °वाल पुं [°पाल] बारहवीं शताब्दी का गुजरात का एक प्रसिद्ध जैन कवि (कुप्र १७६)। °सेण पु [°सेन] एक सुप्रसिद्ध प्राचीन जैन महाकवि और तार्किक आचार्य (सम्मत्त १४१) °सेणिया स्त्री [°श्रेणिया] बारहवें जैन अंग ग्रन्थ का एक अंश (णंदि)। °सेल पु [°शैल] शत्रुंजय पर्वत, सौराष्ट्र देश में पालीताना के पास का जैन महा-तीर्थ (मुख १, ३, सिरि ५५२)। °हेम न [°हेम] आचार्य हेमचन्द्र विरचित प्रसिद्ध व्याकरण-ग्रन्थ (मोह २)।

सिद्धंत पु [सिद्धान्त] १ आगम, शास्त्र (उव, बृह १, णंदि)। २ निश्चय (स १०३)।

सिद्धत्थ पुं [दे] रुद्र, देव-विशेष (दे ८, ३१)।

सिद्धत्थ वि [सिद्धार्थ] १ कृतार्थ, कृतकृत्य (पउम ७२, ११)। २ पु. भगवान् महावीर के पिता का नाम (सम १५१, कप्प, पउम २, २१, सुर १, १०)। ३ ऐरवत वर्ष के भावी दूसरे जिन-देव (सम १५४)। ४ एक जैन मुनि जो नववें बलदेव के दीक्षा-गुरु थे (पउम २०, २०६)। ५ वृक्ष-विशेष (सुपा ७७, पिंड ५६१)। ६ सर्षप, सरसों (अणु २३, कुप्र ४६०, पव १५४, हे ४, ४२३, उप पृ ६६)। ७ भगवान् महावीर के कान में कील निकालनेवाला एक वणिक् (चेइय ६६)। ८ एक देव-विमान (सम ३८, आचा २, १५, २, देवेन्द्र १४५)। ९ यक्ष-विशेष (आक)। १० पाटलिसंड नगर का एक राजा (विपा १, ७—पत्र ७२)। ११ एक गाँव का नाम (भग १५—पत्र ६६८)। °पुर न [°पुर] अंग देश का एक प्राचीन नगर (सुर २, ६८)। °वण न [°वन] वन-विशेष (भग)।

सिद्धत्था स्त्री [सिद्धार्था] १ भगवान् अभि-नन्दन-स्वामी की माता का नाम (सम १५१)। २ एक विद्या (पउम ७, १४५)। ३ भगवान् सम्भवनाथजी की दीक्षा-शिबिका (विचार १२६)।

सिद्धत्थिया स्त्री [सिद्धार्थिका] १ मिष्ट-वस्तु-विशेष (पण्ण १७—पत्र ५३३)। २ आभ-रण-विशेष, सोने की कंठी (औप)।

सिद्धय पुं [सिद्धक] १ वृक्ष-विशेष, सिंदुवार वृक्ष, सम्हालु का गाछ। २ शाल वृक्ष (हे १, १८७)।

सिद्धा स्त्री [सिद्धा] १ भगवान् महावीर की शासन-देवी, सिद्धायिका (संति १०)। २ पृथिवी विशेष, मुक्ति-स्थान, सिद्ध-शिला (सम २२)।

सिद्धाइया स्त्री [सिद्धायिका] भगवान् महा वीर की शासन-देवी (गण १२)।

सिद्धाययण पुंन [सिद्धायतन] १ शाश्वत मन्दिर—देव-गृह। २ जिन-मन्दिर (ठा ४ २—पत्र २२६, इक, सुर ३, १२)। ३ अमुक पर्वतों के शिखरों का नाम (इक, ज ४)।

सिद्धालय पुंन [सिद्धालय] मुक्ति-स्थान, सिद्ध-शिला (औप, पउम ११, १२१, इक)। स्त्री. °या (ठा ८—पत्र ४४०, सम २२)।

सिद्धि स्त्री [सिद्धि] १ सिद्ध-शिला, पृथिवी-विशेष, जहाँ मुक्त जीव रहते हैं (भग, उव, ठा

साधु और गृहस्थ के बीच की अवस्थावाला जैन पुरुष (सबोध ३१, ५४, वृह १ वव ४)।

सारूविअ न [सारूप्य] समान रूपता (सूअ २, ३, २ २१)।

सारेच्छ देखो सारिच्छ = सादृक्ष्य (गउड)।

सारोहि वि [सरोहिन्] सरोहण-कर्ता (पि ७६)।

साल पु [साल, शाल] १ ज्यौतिष्क महाग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। २ वृक्ष-विशेष, साखू का पेड (सम १५२, औप, कुमा)। ३ वृक्ष, पेड। ४ किला, प्राकार (सुपा ४६७)। ५ एक राजा, 'साल महासाल-सालिभद्दो य' (पडि)। ६ पक्षि-विशेष (पण्ह १, १ टी—पत्र १०)। ७ पुन एक देव-विमान (सम ३५)। °कोट्ठय न [°कोष्ठक] चैत्य-विशेष (राज)। °वाहण, °हण [°वाहन] एक सुप्रसिद्ध राजा (विचार ५३१, हे १ २११, प्राप, पि २४८, पड्, कुमा)।

साल देखो सार = सार (सुपा ३८८, णाया १, १६—पत्र १६६)। °इय वि [°चित] सार-युक्त (णाया १, १६)।

साल न [शाला] घर, गृह, 'मायामइसालनपि हु कालेण सयलमुच्छन्नं' (सुपा ३८४)।

साल पुं [श्याल] साला, वहू का भाई (मोह ८८, सिरि ९८८ भवि, नाट मृच्छ २५)।

साल पु देखो साला = (दे), 'जम्म सालम्मि भग्गस्स', 'परित्तजीवे उ से साले' (पण्ण १—पत्र ३७, ठा ८—पत्र ४२९)। °मंत वि [°वत्] शाखावाला (णाया १, १ टी—पत्र ४, औप)।

साल° देखो साला = शाला। °गिह, °घर न [°गृह] १ भित्ति रहित घर (निचू ८)। २ बरामदावाला घर (राय)।

सालइय देखो सारइय = शारदिक (णाया १, १६ पत्र १९९)।

सालंकायण न [शालङ्कायन] १ कौशिक गोत्र का एक शाखा-गोत्र। २ पुंस्त्री उस गोत्रवाला (ठा ७—पत्र ३९०)।

सालंकी स्त्री [दे] सारिका, मैना (दे ८, २४)।

सालग्गी स्त्री [दे] सीढी, निश्रेणी (दे ८, २६, कुप्र १२०)।

सालंब वि [सालम्ब] अवलम्बन युक्त, आश्रय-युक्त (गउड, राज)।

सालकल्लाण पु [शालकल्याण] वृक्ष-विशेष (भग ८ ३ टी—पत्र ३६४)। देखो सारकल्लाण।

सालक्किआ स्त्री [दे] सारिका, मैना (पड्)।

सालग न [दे] १ वृक्ष की बाहरी छाल (निचू १५)। २ लम्बी शाखा (आव १)। ३ रस, 'अवसालग वा अवदालग वा भोत्तए वा पायए वा' (आचा २, ७, २, ७)।

सालणय न [सारणक] कढी के समान एक तरह का खाद्य (भवि)।

सालभंजी देखो सालहंजी (धर्मवि १४७, कुमा)।

सालस वि [सालस] आलस्य-युक्त, अलसी (गउड, सुपा २५१)।

सालहंजिया स्त्री [शालभञ्जिका, सालहंजी °ञ्जी] काठ आदि की बनाई हुई पुतली (सुपा ४३, ५४)।

सालहिआ } स्त्री [दे] सारिका, मैना (पाअ,
सालही } आ २८, दे ८, २४)।

साला स्त्री [शाला] १ गृह, घर। २ भित्ति-रहित घर (कुमा, उप ७२८ टी)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)।

साला स्त्री [दे] शाखा (दे ८, २२, पण्ह १, ३ पत्र ५४ दस ७, ३१, राय ८८)।

सालाइय देखो सलाग (राज)।

सालाणय वि [दे] १ स्तुत, जिसकी स्तुति की गई हो वह। २ स्तुत्य, स्तुति-योग्य (दे ८, २७)।

सालाहण देखो साल-हण = शाल-वाहन।

सालि पुन [शालि] १ व्रीहि, धान, चावल (सूअ २, २, ११, गा ५६६, ६९१, कुमा, गउड)। २ वलयाकार वनस्पति-विशेष, वृक्ष-विशेष (पण्ण १—पत्र ३४)। °भद्द पुं [°भद्र] एक प्रसिद्ध श्रेष्ठि-पुत्र, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (उव, पडि)। °भसेल, °भसेह पुं [दे] धान के कणिश—बाल का तीक्ष्ण अग्रभाग (राज, उवा)। °रक्खिआ स्त्री [°रक्षिका] धान का रक्षण करनेवाली स्त्री, कलम-गोपी (पाअ)। °वाहण पुं [°वाहन] एक सुप्रसिद्ध राजा (सम्मत्त १३७)। देखो साल-वाहण। °सच्छिय पुं [°साक्षिक] मत्स्य की एक जाति (पण्ण १—पत्र ४७)। °सित्थ पु [°सिक्थ] मत्स्य-विशेष (आरा ९३)।

°सालि वि [°शालिन्] शोभनेवाला (गउड, कुमा)।

सालिआ स्त्री [शालिका] घर का कमरा, 'एहिइ सुवति घरमज्झिमसालिआसु' (कप्पू)।

सालिआ देखो गडिआ (राज)।

सालिणिआ } स्त्री [शालिनिका, °नी] १
सालिणी } शोभनेवाली, 'पीणसोणिथ-णसालिणिआहिं' (अजि २६)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

सालिभंजिया स्त्री [शालिभञ्जिका] पुतली (पउम १६, ३७)।

सालिय पु [शालिक] तन्तुवाय, जुलाहा (विसे २६०१)।

सालिय वि [शाल्मलिक] शाल्मलि वृक्ष का, सेमल के गाछ का, 'एग सालियापोड बद्धो आमेलगो होइ' (उत्तनि ३)।

सालिस देखो सारिस = सदृश (णाया १, १—पत्र १३, ठा ४, ४—पत्र २६५, कप्प)।

सालिहीपिउ पु [शालिहीपितृ] एक जैन गृहस्थ (उवा)।

साली स्त्री [श्याली] पत्नी-भगिनी, भार्या की बहन (दे ६, १४८)।

सालुअ पुन [शालूक] जल-कन्द विशेष, कमल कन्द (आचा २, १, ८, ३, दस ५, २, ८)।

सालुअ न [दे] १ शम्बूक, शंख। २ सूखे यव आदि धान्य का अग्र भाग (दे ८, ५२)।

सालूर पुस्त्री [शालूर] १ भेक, मेढक (पाअ, सुर २, ७४, सुपा ६२, सार्घ १०६, सूक्त २)। स्त्री °री (गा ३९१)। २ न छन्द-विशेष (पिंग)।

जिनदेव (सम १५४, पत्र ७)। ३ आठवें बलदेव का पूर्वजन्मीय नाम (पउम २०, १९०)। °चंदा स्त्री [°चन्द्रा] १ एक पुष्करिणी (इक)। २ एक राज-पत्नी (उप ६८६ टी)। °ड्ढ पु [°आढ्य] एक जैन मुनि (कप्प), °णयर न [°नगर] वैताढ्य की दक्षिण-श्रेणी का एक विद्याधरनगर (इक)। देखो °नयर। °णिकेतण न [°निकेतन] वेताढ्य की उत्तर-श्रेणी मे स्थित एक विद्याधर-नगर (इक)। °णिलय न [°निलय] वैताढ्य पर्वत की दक्षिण-श्रेणि मे स्थित एक नगर (इक)। देखो °निलय। °णिलया स्त्री [°निलया] एक पुष्करिणी (इक)। °णिहुवय पु [°कामक] विष्णु, श्रीकृष्ण (कुमा)। °ताली स्त्री [°ताली] वृक्ष-विशेष (कप्पू)। °दत्त पुं [°दत्त] ऐरवत वर्ष मे उत्पन्न पाँचवें जिन-देव (पव ७)। °दाम न [°दामन्] १ शोभावाली माला (जं ५)। २ आभरण-विशेष (आवम)। ३ पु एक राजा (विपा १, ६—पत्र ६४)। °दामकड, °दामगड पुन [°दामकाण्ड] १ शोभावाली मालाओ का समूह (ज ५)। २ एक देव-विमान (सम ३६)। °दामगंड पुन [°दामगण्ड] १ शोभावाली मालाओ का दण्डाकार समूह (ज ५)। °देवी स्त्री [°देवी] १ देवी-विशेष (राज)। २ लक्ष्मी (धर्मवि १४७)। °देवीनंदण पु [°देवीनन्दन] कामदेव (धर्मवि १८७)। °नंदण पु [°नन्दन] १ कामदेव। २ वि. श्री से समृद्ध (सुपा २३४, धम्म १३ टी)। °नयर न [°नगर] दक्षिण देश का एक शहर (कुमा)। देखो °णयर। °निलय पु [°निलय] वासुदेव (पउम २८, ८०)। देखो °णिलय। °पट्ट पु [°पट्ट] नगर-सेठाई का सूचक एक राज-चिह्न (सुपा २८३)। °पव्वय पुं [°पर्वत] पर्वत विशेष (वज्जा ६८)। °पह पु [°प्रभ] एक प्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार (धर्मवि १५२)। °पाल देखो °वाल (सिरि ३४)। °फल पु [°फल] बिल्व-वृक्ष (कुमा)। देखो °हल। °भूइ पु [°भूति] भारतवर्ष मे होनेवाले छठवें चक्रवर्त्ती राजा (सम १५४)। °म देखो °मत (उप पृ ३७४)। °मई स्त्री [°मती] १ इन्द्र-नामक विद्याधर-राज की एक पत्नी (पउम ६, ३)। २ एक राज-पत्नी (महा)। ३ एक सार्थवाह कन्या (महा)। °मंगल पु [°मङ्गल] दक्षिण भारत का एक देश (उप ७६८ टी)। °मंत वि [°मत्] १ शोभावाला, शोभा-युक्त (कुमा)। २ पु. तिलक वृक्ष। अश्वत्थ वृक्ष। ४ विष्णु। ५ शिव, महादेव। ६ श्वान, कुत्ता (हे २, १५९, षड्)। °मलय न [°मलय] वैताढ्य की दक्षिण-श्रेणी मे स्थित एक विद्याधर नगर (इक)। °महिअ पुन [°महिक] एक देव-विमान (सम २७)। °महिआ स्त्री [°महिता] एक पुष्करिणी (इक)। °माल पु [°माल] एक प्रसिद्ध वंश (कुप्र १४३)। °मालपुर न [°मालपुर] एक नगर (ती १५)। °यठ देखो °कठ (गउड)। °यदल देखो °कदलग (पण्ह १, ८—पत्र ७)। °वइ पु [°पति] श्रीकृष्ण, वासुदेव (सम्मत्त ७५)। °वच्छ पु [°वत्स] १ जिनदेव आदि महापुरुषों के हृदय का एक ऊँचा अवयवाकार चिह्न (औप, सम १५३, महा)। २ महेन्द्र देवलोक के इन्द्र का एक पारियानिक विमान (ठा ८—पत्र ४३७)। ३ एक देव-विमान (सम ३६, देवेन्द्र १४०, औप)। °वच्छा स्त्री [°वत्सा] भगवान् श्रेयामनाथजी की शासन-देवी (संति ९)। °वडिसय न [°अवतंसक] सौधर्म देवलोक का एक विमान (राज)। °वण न [°वन] एक उद्यान (अत ४)। °वण्णी स्त्री [°पर्णी] वृक्ष-विशेष (पण्ण १—पत्र ३१)। °वत्त (अप) देखो °मत (भवि)। °वद्धण पु [°वर्धन] एक राजा (पउम ५, २६)। °वय पु [°वद] पक्षि-विशेष (दे १, ६७, ८, ५२ टी)। °वारिसेण पु [°वारिषेण] ऐरवत वर्ष मे होनेवाले चोवीसवें जिनदेव (पव ७)। °वाल पुं [°पाल] १ एक प्रसिद्ध जैन राजा (सिरि ३१७)। २ राजा सिद्धराज के समय का एक जैन महाकवि (कुप्र २१६)। °संभूआ स्त्री [°संभूता] पक्ष की छठवी रात (सुज्ज १०, १४)। °सिचय पु [°सिचय] ऐरवत वर्ष मे उत्पन्न दूसरे जिनदेव (पव ७)। °सेण पुं [°षेण] एक राजा (उप ९८६ टी)। °सेल पुं [°शैल] हनूमान (पउम १७, १२०)। °सोम पु [°सोम] भारतवर्ष मे होनेवाला सातवाँ चक्रवर्त्ती राजा (सम १५४)। °सोमणस पुंन [°सौमनस] एक देव-विमान (सम २७)। °हर न [°गृह] भंडार (श्रा २८)। °हर पुं [°धर] १ भगवान् पार्श्वनाथ का एक मुनि-गण। २ भगवान् पार्श्वनाथ का एक गणधर—मुख्य शिष्य (कप्प)। ३ भारतवर्ष में अतीत उत्सर्पिणी काल मे उत्पन्न सातवें जिनदेव। ४ ऐरवत वर्ष मे वर्तमान अवसर्पिणी काल मे उत्पन्न बीसवें जिनदेव (पव ७, उप ९८६ टी)। ५ वासुदेव (पउम ४७, ४९, षड्)। °हर वि। [°हर] श्री को हरण करनेवाला (कुमा)। °हल न [°फल] बिल्व फल (पाअ), देखो °फल।

सिरिअ पुं [श्रीक, श्रीयक] स्थूलभद्र का छोटा भाई और नन्द राजा का एक मन्त्री (पडि)।

सिरिअ न [स्वैर्य] स्वच्छन्दता (मै ७३)।

सिरिंग पुं [दे] विट, लम्पट, कामुक (दे ८, ३२)।

सिरिंदह पुस्त्री [दे] पक्षियों का पान-पात्र (पाअ, दे ८, ३२)।

सिरिमुह वि [दे] मद-मुख, जिसके मुह में मद हो वह (दे ८, ३२)।

सिरिया देखो सिरी (सम १५१)।

सिरिली स्त्री [दे श्रीली] कन्द-विशेष (उत्त ३६, ९८)।

सिरिवच्छीव पु [दे] गोपाल, ग्वाला (दे ८, ३३)।

सिरिव्वय पुं [दे] हंस पक्षी (दे ८, ३२)।

सिरिव्वय देखो सिरि-व्वय।

सिरिस पु [शिरीष] १ वृक्ष-विशेष, सिरसा का पेड (सम १५२, हे १, १०१)। २ न सिरसा का फूल (कुमा)।

सिरी स्त्री [श्री] १ लक्ष्मी, कमला (पाअ, कुमा)। २ संपत्ति, समृद्धि, विभव (पाअ, कुमा)। ३ शोभा (औप, राय, कुमा)। ४

(श्रणु)। ४ श्राज्ञा हुकुम (पण्ह २, १—पत्र १०१, महा)। ५ ग्रास, निर्वाह-साधन, 'जीवंतसामिपडिमाए सासणं विश्ररिऊण भत्तीए' (कुलक २३)। ६ वि प्रतिपादक, प्रतिपादन-कर्ता (सम्म १, गण २२, णदि ४८)। ७ प्रतिपाद्य, जिसका प्रतिपादन किया जाय वह (पण्ह २ १—पत्र ६६)। °देवी स्त्री [°देवी] शासन की अधिष्ठात्री देवी (कुमा)। °सुरा स्त्री [°सुरी] वही अर्थ (पचा ८, ३२)।

सासण देखो सासायण (कम्म २, २, ५, १४, ४, १८, २६, ५, ११, ६, ५६, पच २, ४२)।

सासणा स्त्री [शासना] शिक्षा (पण्ह २, १—पत्र १००)।

सासणावण न [शासन] श्राज्ञापन (स ४६३)।

सासय वि [शाश्वत] नित्य, अविनश्वर (भग, पाश्र, से २, ३, सुर ३, ५८, प्रासू १४१)।

सासय पुं [स्वाश्रय] निज का श्राधार (से २, ३)।

सासव पु [सर्षप] सरसो (श्राचा २, १, ८, ३)। °नालिया स्त्री [°नालिका] कन्द-विशेष (श्राचा २, १, ८, ३)।

सासवूल पु [दे] कपिकच्छू का पेड, कौंछ, किवांच, कवाछ (दे ८, २५)।

सासाण } न [सास्वादन] १ गुण-स्थानक-
सासायण } विशेष, द्वितीय गुण-स्थान (कम्म ४, १३, ४६)। २ वि द्वितीय गुण-स्थान में वर्तमान जीव (सम्य १६, सम्म २६)।

सासि वि [श्वासिन्] श्वास-रोगवाला (तंदु ५०)।

सासिदु (शौ) वि [शासितृ] शासन-कर्ता, शिक्षा-कर्ता (श्रभि २१४)।

सासिल्ल देखो सासि (विपा १, ७—पत्र ७३)।

सासुया देखो सासू (सुर ६, १५७, ६, २३३, सिरि ६४६)।

सासुर न [श्वाशुर] श्वशुर गृह (सुर ८, १६४)।

सासुर (श्रप) देखो ससुर = श्वशुर (भवि)।

सासू स्त्री [श्वश्रू] सासू, पति तथा पत्नी की माता (पाश्र, पउम १७, ४, गा ३३६)।

सासूय वि [सासूय] श्रसूया-युक्त, मत्सरी (सुर ३, १६७, उप ७२८ टी)।

सासेरा स्त्री [दे] यान्त्रिक नाचनेवाली, यन्त्र की बनी हुई नर्तकी (राज)।

साह सक [कथय्, शास्] कहना। साहइ, साहेइ (हे ४, २, उव, काल, महा)। साहसु, साहेसु (महा)। भवि. साहिस्सइ, साहिस्सामो (महा, श्राचा १, ४, ४, ४)। वकृ. साहेंत, साहयत (हेका ३८, काप्र ३०, सुर ६, १३२)। कवकृ साहिज्जत, साहिप्पत, साहिय्यत, साहियमाण (चड, सुर १, ३०, सुपा २०५, चंड, सुपा २६३, उप पृ ४२, चड)। सकृ. साहिऊण, साहेत्ता (काल)। हेकृ साहिउं (काल, महा)। कृ साहियव्व, साहेअव्व (महा, सुर १, १५४)।

साह देखो सलाह = श्लाघ्। कृ. साहणीअ (प्राप)।

साह सक [साध्] १ सिद्ध करना, बनाना। २ वश में करना। साहइ, साहेइ, साहेति (भग, कप्प, उव, प्रासू २७, महा)। वकृ साहत, साहित, साहेमाण (सिरि ६२८, महा, सुर १३, ८२)। कवकृ. साहिज्जमाण (नाट)। हेकृ. साहिउ (महा)। कृ. साहणिज्ज, साहणीअ, साहियव्व (मा २६, पउम ३७, ३०, सुर ३, २८)।

साह पुं [दे] १ वालुका, बालू। २ उलूक, उल्लू। ३ दधिसर, दही की मलाई (दे ८, ५१)। ४ प्रिय, पति (संक्षि ४७)।

साह (श्रप) देखो सव्व = सर्व (हे ४, ३६६, कुमा)।

साहजण } पु [दे] गोक्षुर, गोखरू (दे
साहजय } ८, २७)।

साहजणी स्त्री [साभाञ्जनी] नगरी विशेष (विपा १, ४—पत्र ५८)।

साहग वि [साधक] सिद्धि करनेवाला, साधना करनेवाला (णाया १, ८ टी—पत्र १५५, कप्प, नव २५, सुपा ८४, धर्मसं ७०, हि २०)।

साहग वि [शासक, कथक] कहनेवाला (सुर १२, ३०, स ३६१)।

साहज्ज न [साहाय्य] सहायता, मदद (विसे २६५८ गण ६ रयण १४, सिरि ३६८, कुप्र १२)।

साहट्ट सक [स + वृ] सवरण करना, समेटना। साहट्टइ (हे ४ ८२)।

साहट्टिअ वि [संवृत] समेटा हुआ, सहत किया हुआ, पिंडीकृत (कुमा)।

साहट्टु श्र [संहृत्य] समेट कर, सकुचित कर 'दाहिणं जाणुं धरणितलंसि साहट्टु' (कप्प), 'साहट्टु पाय रीएज्जा' (श्राचा २, ३, १, ६), 'वियडेण साहट्टु य जे सिणाई' (सूश्र १, ७, २१)।

साहट्ठ वि [संहृष्ट] पुलकित (राज)।

साहण सक [स + हन्] संघात करना, सहत करना, चिपकाना। साहणति (भग)। कर्म साहन्नति (भग १२, ४—पत्र ५६१)। कवकृ. साहण्णत, साहन्नत (राज, ठा २,३—पत्र ६२)। संकृ. साहणित्ता (भग)।

साहण न [साधन] १ उपाय, कारण, हेतु (विसे १७०६)। २ सैन्य, लश्कर (कुमा, सुर १०, १२१)। ३ वि. सिद्ध करनेवाला, 'जह जीवाण पमाश्रो श्रणत्थसयसाहणो होइ' (हि १३, सुर ४, ७०)। स्त्री. °णा, °णी (हे ३ ३१, पड्)।

साहणण न [संहनन] सघात, अवयवो का आपस मे चिपकना (भग ८, ६—पत्र ३६५, १२, ४—पत्र ५६७)।

साहणिअ पु [साधनिक] सेना-पति (सुपा २६२)।

साहणिज्ज देखो साह = साध्।

साहणी देखो साहण = साधन।

साहणीअ देखो साह = श्लाघ्, साध्।

साहण्णत देखो साहण = स + हन्।

साहत्थ श्र [स्वहस्तेन] १ अपने हाथ से। २ साक्षात् (णाया १, ६—पत्र १६३, उवा)।

साहत्थिया } स्त्री [स्वाहस्तिकी] क्रिया-विशेष,
साहत्थी } अपने हाथ से गृहीत जीव आदि द्वारा हिंसा करने से होनेवाला कर्म-बन्ध (ठा २, १—पत्र ४०, नव १८)।

१२ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४३)। १३ छन्द-विशेष (पिंग)। °कर न [°कर] १ शैलेशी अवस्था की प्राप्ति। २ मुक्ति-मार्ग (सूअनि ११५)। °गइ स्त्री [°गति] १ मुक्ति, मोक्ष। २ वि. मुक्त, मुक्ति-प्राप्त (राज)। ३ पु भारतवर्ष मे अतीत उत्सर्पिणी-काल मे उत्पन्न चौदहवें जिन-देव (पव ७)। °तित्थ न [°तीर्थ] काशी, बनारस (हे ४, ४४२)। °नंदा स्त्री [°नन्दा] आनन्द-श्रावक की पत्नी (उवा)। °भूइ पु [°भूति] १ एक जैन महर्षि (कप्प)। २ बोटिक मत—दिगंबर जैन सप्रदाय का स्थापक एक मुनि (विसे २५५१)। °रत्ति स्त्री [°रात्रि] फाल्गुन (गुजराती माघ) मास की कृष्ण चतुर्दशी तिथि (सट्ठि ७८ टी)। °सेण पु [°सेन] ऐरवत वर्ष मे उत्पन्न एक अर्हन (सम १५३)।

सिवंकर पु [शिवङ्कर] पांचवे केशव का पिता (पउम २०, १८२)।

सिवक } पु [शिवक] १ घडा तैयार होने सिवय } के पूर्व की एक अवस्था (विसे २३१६)। २ वेलन्धर नागराज का एक आवास-पर्वत (इक)।

सिवा स्त्री [शिवा] १ भगवान नेमिनाथ जी की माता का नाम (सम १५१)। २ सौधर्म देवलोक के इन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ८—पत्र ४२६, णाया २—पत्र २५३)। ३ पनरहवें जिनदेव की प्रवर्तिनी—मुख्य साध्वी (पव ९)। ४ शृगाली, मादा सियार (अणु, वज्जा ११८)। ५ पार्वती (पाअ)।

सिवाणंदा देखो सिव-नंदा (उवा)।

सिवासि पुं [शिवाशिन्] भरतक्षेत्र मे अतीत उत्सर्पिणी-काल में उत्पन्न बारहवें जिनदेव (पव ७)।

सिविग देखो सुमिग (हे १, ४६, प्राप्र, रंभा, कुमा, कप्पू)।

सिविया स्त्री [शिविका] सुखासन, पालकी, डोली (कप्प, औप, महा)।

सिविर न [शिविर] १ स्कन्धावार, सैन्य-निवास-स्थान, छावनी (कुमा)। २ सैन्य, सेना, लश्कर (सुपा ६)।

सिव्व सक [सीव्] सीना, साँवना। सिव्वइ (षड्, विसे १३६८)। भवि. सिव्विस्सामि (आचा १, ६, ३, १)।

सिव्व देखो सिव = शिव (प्राकृ २६; संक्षि १७)।

सिव्विअ वि [स्यूत] सिया हुआ (पव ६२)।

सिव्विणी } स्त्री [दे] सूची, सूई (दे ८, सिव्वी } २६)।

सिस देखो सिलेस = श्लिष्। सिसइ (षड्)।

सिसिर न [दे] दधि, दही (दे ८, ३१, पाअ)।

सिसिर पु [शिशिर] १ ऋतु-विशेष, माघ तथा फागुन का महिना (उप ७२८ टी, हे ४, ३५७)। २ माघ मास का लोकोत्तर (सुज्ज १०, १९)। ३ फागुन मास, 'सिसिरो फग्गुण-माहो' (पाअ)। ४ वि जड, ठंढा, शीतल (पाअ, उप ७६८ टी)। ५ हलका (उप ७६८ टी)। ६ न हिम (उप ९८६ टी)। °किरण पु [°किरण] चन्द्रमा (धर्मवि ५)। °महीहर पुं [°महीधर] हिमालय पर्वत (उप ९८६ टी)।

सिसिरली देखो सिस्सिरिली (राज)।

सिसु पुन [शिशु] बालक, वच्चा (सुपा ५८८, सम्मत्त १२२), 'सा खाइ पायमेक्कं सिसूणि वीय पढमपहरे' (कुप्र १७३)। °आल पु [°काल] बाल्य, बाल-काल (नाट—चैत ३७)। °नाग पु [°नाग] क्षुद्र कीट-विशेष, अलस (उत्त ५, १०)। °पाल पु [°पाल] एक प्रसिद्ध राजा (णाया १, १६—पत्र २०८, सूअ १, ३, १, १, उप ६४८ टी, कुप्र २५६)। °यव पुंन [°यव] तृण-विशेष (पण्ण १—पत्र ३३)। °वाल देखो °पाल (सूअ १, ३, १, १ टी)।

सिस्स पुस्त्री [शिष्य] १ चेला, छात्र, विद्यार्थी (णाया १, १—पत्र ६०, सूअनि १२७)। स्त्री °स्सा, °स्सिणी (मा ६, णाया १, १४—पत्र १८८)।

सिस्स देखो सीस = शीर्ष (सस ५०)।

सिस्सिरिली स्त्री [दे] कन्द-विशेष (उत्त ३६, ९८)।

सिह सक [स्पृह्] इच्छा करना, चाहना। सिहइ (हे ४, ३४, प्राकृ २३)। कृ सिहणिज्ज (दे ८, ३१ टी)।

सिह पु [दे] भुजपरिसर्प की एक जाति (सूअ २, ३, २५)।

सिहंड पु [शिखण्ड] शिखा, चूला, चोटी (पाअ, अभि १५१)।

सिहंडइल्ल पुं [दे] १ बालक, शिशु। २ दधिसर, दही की मलाई। मयूर, मोर (दे ८, ५४)।

सिहंडहिल्ल पुं [दे] बालक, वच्चा (षड्)।

सिहंडि वि [शिखण्डिन्] १ शिखाधारी (मत्त १००, औप)। २ पुं मयूर-पक्षी, मोर (पाअ, उप ७२८ टी)। ३ विष्णु (सुपा १४२)।

सिहण देखो सिहिण (रंभा)।

सिहर न [शिखर] १ पर्वत के ऊपर का भाग, शृङ्ग (पाअ, गउड, सुर ४, ५६, से ६, २८)। २ अग्रभाग (णाया १, ६)। ३ लगातार अठाईस दिनो के उपवास (संबोध ५८)। °अग वि [°चण] शिखरों से प्रसिद्ध (से ६, १८)।

सिहरि पुं [शिखरिन्] १ पहाड, पर्वत (पाअ, सुपा ४९)। २ वर्षधर पर्वत-विशेष (ठा २, ३—पत्र ६९, सम १२, ४३)। ३ पुन. कूट-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७०)। °वइ पुं [°पति] हिमालय पर्वत (से ८, ६२)।

सिहरिणी } स्त्री [दे शिखरिणी] मार्जिता सिहरिल्ला } खाद्य-विशेष, दही-चीनी आदि से बनता एक तरह का मिष्ट खाद्य (दे १, १५४, ८, ३३, पण्ह २, ५—पत्र १४८, पव ४, पभा ३३, कस, सण)।

सिहली } स्त्री [शिखा] १ चोटी, मस्तक सिहा } पर के बालो का गुच्छा (पचा १०, ३२, पव १५३, पाअ, णाया १, ५—पत्र १०८, संबोध ३१)। २ अग्नि की ज्वाला (पाअ, कुमा, गउड)।

सिहाल वि [शिखावत्] शिखावाला, शिखा-युक्त (गउड)।

सिहि पु [शिखिन्] १ अग्नि, आग (गा १३, पाअ, सुपा ५१९)। २ मयूर, मोर (पाअ, हेका ४५, गा ५२, १७३)। ३ रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३०)। ४ पर्वत। ५ ब्राह्मण। ६ मुर्गा। ७ केतु

नामन्] देखो ऊपर का दूसरा अर्थ (सम ६७)।

साहारण न [संधारण] ठीक तरह से धारण करना, टिकाना, 'अभिक्कमे पडिक्कमे संकुचए पसारए कायसाहारणट्ठाए' (आचा १, ८, ८, १५)।

साहारण न [स्वाधारण] सहारा करना, उपकार करना (सम ५१)।

साहारण न [संहरण] संकोचन, समेटन (विसे ३०५२)।

साहारिअ वि [संधारित] ठीक तरह धारण किया हुआ (भवि)।

साहाविअ वि [स्वाभाविक] स्वभाव सिद्ध, नैसर्गिक, कुदरती (गा २२५, गउड, कप्प, सुपा ४९३)।

साहि पु [शाखिन्] वृक्ष, पेड़ (पाअ, सण, उप पृ १५३)।

साहि पु [दे] १ शक देश का सामन्त राजा, 'पत्तो सगकूलं नाम कूलं। तत्थ जे सामंता ते साहिणो भण्णंति' (भग)। २ देखो साही (दे ८, ६, से १२, ९२)।

साहि (अप) देखो सामि = स्वामिन् (पिंग)।

साहिअ वि [कथित, शासित, स्वाख्यात] कहा हुआ, उक्त, प्रतिपादित (सुपा २७९, सुर १, २०४, काल, पाअ, आचा)।

साहिअ वि [साधित] सिद्ध किया हुआ, निष्पादित (श्रत १३, सुर ६, ९९, भवि)।

साहिअ वि [साधिक] सविशेष, सातिरेक (कप्प, सुपा २७९)।

साहिअ वि [स्वाहित] स्वहित से विरुद्ध, निज का अहित (सुपा २७९)।

साहिकरण वि [साधिकरण] १ अधिकरण-युक्त (निचू १०)। २ कलह करता, झगडता (ठा ३—पत्र ३५२)।

साहिकरणि वि [साधिकरणिन्] अधिकरण-युक्त, शरीर आदि अधिकरणवाला (भग १६, १—पत्र ६९८)।

साहिगरण देखो साहिकरण (राज)।

साहिगरणि देखो साहिकरणि (भग १६, १ टी—पत्र ६९९)।

साहिज्ज देखो साहज्ज (श्रत १३, सुपा २०५, गउड, कुप्र १३)।

साहिज्जंत देखो साह = कथय्।

साहिज्जमाण देखो साह = साध्।

साहिण (अप) वि [कथिन्] कहनेवाला (सण)।

साहित्त न [साहित्य] अलंकार-शास्त्र (सुपा १०३ ४५३)।

साहिप्पंत
साहिस्समाण } देखो साह = कथय्।
साहिय्यंत

साहिर वि [शासितृ, कथयितृ] शासन करनेवाला कहनेवाला (गउड)।

साहिलय न [दे] मधु, शहद (दे ८ २७)।

साही स्त्री [दे] १ रथ्या मुहल्ला (दे ८, ६, से १२, ९२)। २ वर्तनी, मार्ग, रास्ता (पिंड ३३४)। ३ राजमार्ग (से १२, ९२)। ४ खिडकी, छोटा दरवाजा (श्रोघ ६२२)।

साहीण वि [स्वाधीन] स्वायत्त, स्वतन्त्र (पाअ, गा १९७, चारु ४३, सुर ३, ५६, प्रासू ६९)।

साहीय देखो साहिअ = साधिक, 'तित्तीस उयहिनामा साहीया हुंति अजयसम्माए' (जीवम २२३)।

साहु पु [साधु] १ मुनि, यति (विसे ३६००; आचा, सुपा ३४२)। २ सज्जन, सत्पुरुष, 'साहवो सुअणा' (पाअ)। ३ वि सुन्दर, शोभन, अच्छा (आचा, स्वप्न ६७, कुप्र ४५६)। °कम्म न [°कर्मन्] तप-विशेष, निर्विकृतिक तप (सबोध ५८)। °कार, °क्कार पुं [°कार] धन्यवाद, साधुवाद, प्रशंसा (वेणी ११४, ठा ४, ४ टी—पत्र २८३, पउम ५६, २३, से १३, १९, महा, भवि, विक्र १०६)। °नाह पु [°नाथ] श्रेष्ठ मुनि, आचार्य (सुपा ५४५)। °वाअ पुन [°वाद] प्रशंसा, 'जाय च साहुवायं' (सिरि ३३४, स ३८५, सुपा ३७०)।

साहुई स्त्री [साध्वी] १ स्त्री-साधु, श्रमणी, यतिनी। २ सती स्त्री। ३ अच्छी (प्राकृ २८)।

साहुणी स्त्री [साध्वी] स्त्री-साधु, यतिनी (काल; उप १०१४, सुपा ९७, ३३२, साधं २६, कुप्र २१४)।

साहुलिआ } स्त्री [दे] १ वस्त्र कपडा (दे
साहुली } ८, ५२, गा ६०९ अ, कप्पू पाअ, सुपा २२०, २४६)। २ शिरोवस्त्र-खंड (रंभा)। ३ शाखा, डाली (दे ८ ५२ षड्, पाअ)। ४ भ्रू, भौं। ५ भुज, हाथ। ६ पिकी, कोयल। ७ सदृश, समान। ८ सखी, सहचरी (दे ८, ५२)। ९ मयूर-पिच्छ (स ५२३ टि)।

साहेज्ज देखो साहज्ज (दे ७, ८९ सुपा १५२, गउड महा, उपपं २८)।

साहेज्ज वि [दे] अनुगृहीत (दे ८, २६)।

साहेमाण देखो साह = साध्।

सिअ देखो सिव = शिव (सक्ति १७)।

सिअ वि [श्रित] आश्रित (से ६, ८८ उत्त १३, १५, सूअ , ७, ८)।

सिअ देखो सिआ = स्यात् (भग श्रावक १२८, धर्मसं ७५८, ११११, गण ५, कुप्र १५९)।

सिअ वि [सित] तीक्ष्ण धारवाला (सुपा ४७५)।

सिअ वि [सित] अच्छी तरह प्राप्त (विसे ३४४५)।

सिअ पु [सित] १ शुक्ल वर्ण। २ वि श्वेत, सफेद, शुक्ल (औप, उव, नाट—विक्र ७१, सुपा ११ भवि)। ३ बद्ध, बँधा हुआ (विसे ३०२९)। ४ न. नाम-कर्म का एक भेद, श्वेत वर्ण का कारण-भूत कर्म (कम्म १, ४०)। °किरण पु [°किरण] चन्द्र, चांद (उप १३३ टी)। °गिरि पु [°गिरि] वैताढ्य पर्वत की उत्तर श्रेणि में स्थित एक विद्याधर नगर (इक)। °ज्झाण न [°ध्यान] सर्व श्रेष्ठ ध्यान, शुक्ल ध्यान (सुपा १)। °पक्ख पु [°पक्ष] शुक्ल पक्ष (सुपा १७१)। °यर पु [°कर] चन्द्रमा (उप ७२८ टी)। °वड पु [°पट] पाल जहाज का बादबान, 'सकोइओ सियवडो पारद्धा दववाण विन्नत्ती' (उप ७२८ टी)। °वास पु [°वासस्] श्वेताम्बर जैन (ती १५)।

सिअ (अप) देखो सिरी = श्री (भवि)। °वन्त वि [°मत्] लक्ष्मी-संपन्न, धनाढ्य (भवि)।

सिअअ देखो सिचय (गा ८७७ ८९८ कप्पू)।

सीत देखो सीअ = शीत (ठा ३, ४—पत्र १६१)।

सीता देखो सीआ = शीता, सीता (ठा ८—पत्र ४३६, ६—पत्र ४५४)।

सीतालीस देखो सीआलीस (सुज्ज ०, ३—पत्र ५१)।

सीतोद° देखो सीओअ° (ठा २, ३—पत्र ७२)।

सीतोदा } देखो सीओआ (पराह २, ४—
सीतोया } पत्र १३०, सम ८४)।

सीदण न [सदन] शैथिल्य, प्रमत्तता (पचा १२, ४६)।

सीधु देखो सीहु (णाया १, १६—पत्र २०६ उवा)।

सीभर देखो सीअर (प्राप्र, कुमा, हे १, १८४, षड)।

सीभर वि [दे] समान, तुल्य (अणु १३१)।

सीमआ स्त्री [सीमन्] १ मर्यादा। २ अवधि। ३ स्थिति। ४ क्षेत्र। ५ वेला, समय। ६ अण्डकोष, पोता (षड)। देखो सीमा।

सीमंकर पु [सीमङ्कर] १ इस अवसर्पिणी काल में उत्पन्न एक कुलकर पुरुष का नाम (पउम ३, ५३)। २ ऐरवत क्षेत्र के भावी द्वितीय कुलकर (सम १५३)। ३ वि. मर्यादा-कर्ता (सूत्र २, १, १३)।

सीमंत पुं [सीमन्त] १ बालो मे बनाई हुई रेखा-विशेष (से ६, २०, गउड, उप ७२८ टी)। २ अपर काय (गउड ८५)। ३ ग्राम से लगी हुई भूमि का अन्त, सीमा, गाँव का पर्यन्त भाग (गउड २७३, २७७, उप ७२८ टी)। ४ सीमा का अन्त, हद; 'एसो च्चिय सीमंतो गुणाण दूरं फुरंताण' (गउड)।

सीमंत पुं [सीमान्त] १ सीमा का अन्त भाग, गाँव का पर्यन्त भाग (गउड ३६७, ४०५)। २ हद (गउड ८८६)।

सीमंत सक [दे. सीमान्तय्] बेचना। संकृ. सीमंतिऊण (राज)।

सीमंतग } पुं [सीमन्तक] प्रथम नरक-भूमि
सीमंतय } का एक नरका-वास, नरक-स्थान (निचू १; ठा ३, १—पत्र १२६, सम ६८)। °प्पभ पुं [°प्रभ] सीमन्तक नरकावास की पूर्व तरफ स्थित एक नरकावास (देवेन्द्र २०)। °मज्झिम पु [°मध्यम] सीमन्तक की उत्तर तरफ स्थित एक नरकावास (देवेन्द्र २०)। °विसिट्ठ पु [°विशिष्ट] सीमन्तक की दक्षिण दिशा मे स्थित एक नरकावास (देवेन्द्र २१)। °ावत्त पु [°ावर्त] सीमन्तक की पश्चिम तरफ का एक नरकावास (देवेन्द्र २१)।

सीमंतय न [दे] सीमंत—बालो की रेखा-विशेष मे पहना जाता अलंकार-विशेष (दे ८, ३५)।

सीमंतिअ वि [सीमन्तित] खण्डित, छिन्न (पाअ)।

सीमंतिणी स्त्री [सीमन्तिनी] स्त्री, नारी, महिला (पाअ, उप ७२८ टी, सम्मत्त १९१, सुपा ७)।

सीमंधर पुं [सीमन्धर] १ भारतवर्ष मे उत्पन्न एक कुलकर पुरुष (पउम ३, ५३)। २ ऐरवत वर्ष का एक भावी कुलकर (सम १५३)। ३ पूर्व-विदेह मे वर्तमान एक अर्हन् देव (काल)। ४ एक जैन मुनि, जो भगवान् सुमतिनाथ के पूर्व जन्म मे गुरु थे (पउम २०, १७)। ५ भगवान् शीतलनाथ जी का मुख्य श्रावक (विचार ३७८)। ६ वि. मर्यादा को धारण करनेवाला, मर्यादा का पालक (सूत्र २, १, १३)।

सीमा स्त्री [सीमा] देखो सीमआ (पाअ, गा १६८, ७५१, काल, गउड)। °गार पु [°कार] जलजन्तु-विशेष, ग्राह का एक भेद (पराह १, १—पत्र ७)। °धर वि [°धर] मर्यादा धारक (पडि हे ३, १३४)। °ल वि [°ल] सीमा के पास का, सीमा के निकट-वर्ती, 'सीमाला नरवइणो सव्वे ते सेवमावन्ना' (सुपा २२२, ३५२, ४६३, धर्मवि ५६)।

सीर पुंन [सीर] हल, जिससे खेत जोतते हैं (पउम ११३, ३२, कुमा, पडि), 'समयवसुहासीरो' (धर्मवि १६)। °धारि पु [°धारिन्] बलदेव, बलभद्र, राम (पउम २०, १९३)। °पाणि पुं [°पाणि] वही (दे २, २३, कुमा)। °सीमंत पु [°सीमन्त] हल से फाडी हुई जमीन की रेखा (दे)।

सीरि पुं [सीरिन्] बलभद्र, बलदेव (पाअ)।

सीरिअ वि [दे] भिन्न, 'सीरिओ भिन्नो' (पाअ)।

सील सक [शीलय्] १ अभ्यास करना, आदत डालना। २ पालन करना, 'सीलेजा सीलमुज्जल' (हित १६), 'सव्वसील सीलह पव्वज्जगहणेणं' (श्रा १६)। देखो संलाव।

सील न [शील] १ चित्त का समाधान, 'सील चित्तसमाहाणलक्खणं भणणए एयं' (उप ५६७ टी)। २ ब्रह्मचर्य (प्रासू २२, ५१, १५८, १६६, श्रा १६, हित १६)। ३ प्रकृति, स्वभाव, 'सील पयई' (पाअ), 'कलहसील' (कुमा)। ४ सदाचार, चारित्र, उत्तम वर्तन (कुमा, पचा १४, १, पराह २, १—पत्र ६६)। ५ चरित्र, वर्तन (हे २, १८४)। ६ अहिंसा (पराह २, १—पत्र ६६)। °इ पुं [°जित्] क्षत्रिय परिव्राजक का एक भेद (औप)। °ड्ढ वि [°ाढ्य] शील-पूर्ण (ओघ ७८४)। °परिघर पु न [°परिगृह] १ चारित्र-स्थान। २ अहिंसा (पराह २, १—पत्र ६६)। °मंत, °व वि [°वत्] शील-युक्त (आचा, ओघ ७७७, श्रा ३६)। °व्वय न [°व्रत] अणुव्रत, जैन श्रावक के पालने योग्य अहिंसा आदि पाँच व्रत (भग)। °सालि वि [°शालिन्] शील से शोभनेवाला (सुपा २४०)।

सीलाव सक [शीलय्] तदुरुस्त करना। कर्म सीलप्पए (वव १)।

सीलुट्ट न [दे] त्रपुस, खीरा, ककडी (दे ८, ३५, पाअ)।

सीव सक [सीव्] सीना, सिलाई करना, साँधना। भवि सीविस्सामि (आचा)। संकृ सीविऊण (स ३५०)।

सीवणा स्त्री [सीवना] सीना, सिलाई (उप पृ. २६८)।

सीवणी स्त्री [दे] सूची, सूई (गउड)। देखो सिव्विणी।

सीवण्णी } स्त्री [श्रीपर्णी] वृक्ष-विशेष (ओघ
सीवन्नी } ४४६ टी, पिंड ८१, ८२, उप १०३१ टी)।

सीविअ देखो सिव्विअ (से १४, २८, दे ४, ७, ओघभा ३१५)।

सिचाविअ वि [सेचित] छिड़कवाया हुआ (उप १०३१ टी, स २८०, ५४६)।

सिचिअ वि [सिक्त] सींचा हुआ, छिड़का हुआ (कुमा)।

सिंज अक [शिञ्ज्] अस्फुट आवाज करना। वकृ. सिंजत (सुपा ५०, मण)। कृ. सिंजिअव्व (गा ३६२)।

सिंजण न [शिञ्जन] १ अस्पष्ट शब्द, भूषण की आवाज। २ वि. अस्पष्ट आवाज करनेवाला (सुपा ४)।

सिंजा स्त्री [शिञ्जा] भूषण का शब्द (कप्पू, प्राप)।

सिंजिणी स्त्री [शिञ्जिनी] धनुर्गुण, धनुष की डोरी (गा ५४)।

सिंजिय न [शिञ्जित] अव्यक्त आवाज (उप १०३१ टी, कप्पू)।

सिंजिर वि [शिञ्जितृ] अस्फुट आवाज करनेवाला, 'सद्दालं सिंजिरं कणिरं' (पाअ)।

सिंझ पुन [सिध्मन्] कुष्ठ रोग-विशेष (भग ७, ६—पत्र ३०७)।

सिंड वि [दे] मोटित, मोड़ा हुआ (दे ८, २९)।

सिंढ पु [दे] मयूर, मोर (दे ८, २०)।

सिंढा स्त्री [दे] नासिका-नाद, नाक की आवाज (दे ८, २९)।

सिंदाण न [दे] विमान (उप १४२ टी)।

सिंदी स्त्री [दे] खजूरी, खजूर का गाछ (दे ८, २९, पाअ, आवम)।

सिंदीर न [दे] नूपुर (दे ८, १०)।

सिंदु स्त्री [दे] रज्जु, रस्सी (दे ८, २८)।

सिंदुरय न [दे] १ रज्जु, रस्सी। २ राज्य (दे ८, ५४)।

सिंदुवण पु [दे] अग्नि, आग (दे ८, ३२)।

सिंदुवार पु [सिन्दुवार] वृक्ष-विशेष, निर्गुंण्डी, सम्हालु का गाछ (गउड, कुमा, उप १०१६, कुप्र ११७)।

सिंदूर न [दे] राज्य (दे ८, ३०)।

सिंदूर न [सिन्दूर] १ सिंदूर, रक्त-वर्ण, चूर्ण-विशेष (पउम २, ३८, गउड, महा)। २ पु. वृक्ष-विशेष (हे १, ८५, सक्षि ३)।

सिंदूरिअ वि [सिन्दूरित] सिन्दूर-युक्त किया हुआ (गा ३००)।

सिंदोल न [दे] खजूर, फल-विशेष (पाअ)।

सिंदोला स्त्री [दे] खजूरी, खजूर का पेड़ (दे ८, २९)।

सिंधव न [सैन्धव] १ सिंध देश का लवण, सेंधा नोन (गा ६७६, कुमा)। २ पु. घोड़ा (हे १, १४९)।

सिंधविया स्त्री [सैन्धविका] लिपि-विशेष (विसे ४६४ टी)।

सिंधु स्त्री [सिन्धु] १ नदी-विशेष, सिन्धु नदी (धर्मवि ८३, ज ४—पत्र २६० मम २७)। २ नदी, 'सरिआ तरंगिणी निण्णया नई आवगा सिंधू' (पाअ)। ३ सिन्धु नदी की अधिष्ठायिका देवी (ज ४)। ४ पु समुद्र, सागर (पाअ, कुप्र २२, सुपा १, २६४)। ५ देश विशेष, सिन्ध देश (मुद्रा २४२, भवि, कुमा)। ६ द्वीप विशेष। ७ पद्म-विशेष (ज ४—पत्र २६०)। °णद न [°नद] नगर-विशेष (पउम ८, १६८)। °णाह पु [°नाथ] समुद्र (समु १५१) °देवी स्त्री [°देवी] सिन्धु नदी की अधिष्ठायिका देवी (उप ७२८ टी)। °देवीकूड पु [°देवीकूट] क्षुद्र हिमवत पर्वत का एक शिखर (ज ४—पत्र २८५) °प्पवाय पुंन [°प्रपात] कुण्ड-विशेष, जहाँ पर्वत से सिन्धु नदी गिरती है (ठा २, ३—पत्र ७२)। °राय पु [°राज] सिन्ध देश का राजा (मुद्रा २४२)। °वइ पुं [°पति] १ समुद्र, सागर (स २०२)। २ सिन्ध देश का राजा (कुमा)। °सोवीर पु [°सौवीर] सिन्धु नदी के समीप का देश-विशेष (भग १३, ६, महा)।

सिंधुर पु [सिन्धुर] हस्ती, हाथी (सुपा ८३, सम्मत्त १८७, कुमा)।

सिंप देखो सिंच। सिंपइ (हे ४, ९६)। कर्म सिप्पइ (हे ४, २५५) कवकृ सिप्पंत (कुमा ७, ६०)।

सिंपिअ देखो सिंचिअ (कुमा)।

सिंपुअ वि [दे] पागल, भूत-गृहीत, भूताविष्ट (दे ८, ३०)।

सिंबल पुं [शाल्मल] सेमल का गाछ (रंभा २०)।

सिंबलि देखो सबलि = शाल्मलि (हे १, १४६, ८, २३, पाअ, सुर १४, ४३, पि १०९, सथा ८५, उत्त १६, ५२)।

सिंबलि स्त्री [शिम्बलि, शिम्बा] कलाय आदि की फली, छीमी, फलियाँ (भग १५—पत्र ६८०, आचा २, १, १०, ३, दस ५, १, ७३)। °थालग पुंन [°स्थालक] १ फली की थाली। २ फली का पाक (आचा २, १, १०, ३)। देखो सबलि।

सिंबलिका स्त्री [सिम्बलिका] टोकरी (जिनदत्ताख्यान)।

सिंबा स्त्री [शिम्बा] फली, छीमी 'कोसी समी य सिंबा' (पाअ)।

सिंबाडो स्त्री [दे] नाक की आवाज (दे ८, २९)।

सिंबीर न [दे] पलाल, घास (दे ८, २८)।

सिंभ पु [श्लेष्मन्] श्लेष्मा कफ (हे २, ७४, तंदु १४ महा)।

सिंभलि देखो सिंबलि = शाल्मलि (सुपा ८४)।

सिंभि वि [श्लेष्मिन्] श्लेष्म-युक्त, श्लेष्म-रोगी (सुपा ५७६)।

सिंभिय वि [श्लैष्मिक] श्लेष्म-सम्बन्धी (तंदु १६, णाया १, १—पत्र ५०, औप, पि २६७)।

सिंह पु [सिंह] १ श्वापद पशु-विशेष, मृग-राज, केसरी (प्रासू १५४, १६६)। २ एक राज-कुमार (उप ९८६ टी)। ३ एक राजा (रयण २६)। ४ भगवान् महावीर का एक शिष्य, मुनि-विशेष (राज)। ५ व्रत-विशेष, त्रिविधाहार की संलेखना—परित्याग (संबोध ५८)। °अवलोअण (अप) न [°विलोकन] १ सिंह की तरह पीछे देखना। २ छन्द-विशेष (पिंग)। °उर न [°पुर] पंजाब देश का एक प्राचीन नगर (भवि)। °कण्णी स्त्री [°कर्णी] वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३५)। °केसर पुं [°केसर] एक प्रकार का उत्तम मोदक—लड्डू (उप २११ टी)। °दत्त पु [°दत्त] १ व्यक्ति-वाचक नाम। २ वि. सिंह से दिया हुआ (हे १, ९२)। °दुवार न [°द्वार] राज-द्वार (मोह १०३)।

देखना (महा)। °ासण न [°ासन] आसन-विशेष सिंहाकार आसन, सिंहाङ्कित आसन, राजासन (भग)। देखो सिंह।

सीह वि [सैंह] सिंह-संबन्धी। स्त्री. °ही (णाया १, १—पत्र ३१)।

°सीह पुं [°सिंह] श्रेष्ठ, उत्तम (सम १, पडि)।

सीहइय पुं [दे] मत्स्य, मछली (दे ८, २८)।

सीहणही स्त्री [दे] १ वृक्ष-विशेष, करौंदी का गाछ। २ करौंदी का फल (दे ८, ३५)।

सीहपुर वि [सैंहपुर] सिंहपुर सबन्धी (पउम ५५, ५३)।

सीहर देखो सीअर (हे १, १८४, कुमा)।

सीहरय पुं [दे] आसार, जोर की वृष्टि (दे ८, १२)।

सीहल देखो सिंहल (पण्ह १, १—पत्र १४, इक, पउम ६६, ५५)।

सीहलय पु [दे] वस्त्र आदि को धूप देने का यन्त्र (दे ८, ३४)।

सीहलिआ स्त्री [दे] १ शिखा, चोटी। २ नवमालिका, नवारी का गाछ (दे ८, ५५)।

सीहलिपासग पु न [दे] ऊन का बना हुआ ककण, जो वेणी बांधने के काम मे आता है (सूत्र १, ४, २, ११)।

सीही स्त्री [सिंही] स्त्री-सिंह, सिंह की मादा (नाट)।

सीहु पुन [सीधु] १ मद्य, दारू। २ मद्य-विशेष (पण्ह २, ५—पत्र १५०, दे १, ४६, पाअ, गा ५४५ मा ४३)।

सु अ [सु] इन अर्थो का सूचक अव्यय—१ प्रशसा, श्लाघा (विसे ३४४३, सूअनि ८८)। २ अतिशय, अत्यन्तता (श्रु १६)। ३ समीचीनता (सट्ठि १६)। ४ अतिशय योग्यता (पिंग)। ५ पूजा। ६ कष्ट, मुश्किली। ७ अनुमति। ८ समृद्धि (पड् १२२, १२३, १२५)। ९ अनायास (ठा ५, १—पत्र २६६)।

सुअ अक [स्वप्] सोना। सुअइ (हे ४, १४६, प्राकृ ६६, पि ४६७, उव), सुयामि (निसा १), 'खणंपि मा सुय वीसत्थो' (आत्महि ६)। कर्म. सुप्पइ (हे २, १७९)। वकृ सुयत, सुयमाण (सुर ५, २१६, सुपा ५०५, महा ३७, १२, पि ४६७)। हेकृ. सोउ (पि ४६७)। कृ. सोएव्वा (अप) (हे ४, ४३८)।

सुअ सक [श्रु] सुनना। वकृ सुअत (धात्वा १५६)।

सुअ पु [सुत] पुत्र, लडका (सुर १, १०, प्रासू ८६, कुमा, उव)।

सुअ पु [शुक] १ पक्षि-विशेष तोता (पण्ह १, १—पत्र ८, उत्त ३४, ७, सुपा ३१)। २ रावण का मन्त्री (से १२, ६३)। ३ रावणाधीन एक सामत राजा (पउम ८, १३३)। ४ एक परिव्राजक (णाया १, ५—पत्र १०५)। ५ एक अनार्य देश (पउम २७, ७)।

सुअ वि [श्रुत] १ सुना हुआ, आकर्णित (हे १, २०९, भग, ठा १—पत्र ६)। २ न ज्ञान-विशेष, शब्द-ज्ञान, शास्त्र-ज्ञान (विसे ७९, ८१, ८५, ८६, ६४, १०४, १०५, णंदि, अणु)। ३ शब्द, ध्वनि, आवाज। ४ क्षयोपशम, श्रुतज्ञान के आवरक कर्मो का नाश-विशेष। ५ आत्मा, जीव, 'तं तेण तओ तम्मि व सुणेइ सो वा सुअ तेण' (विसे ८१)। ६ आगम, शास्त्र, सिद्धान्त (भग, णंदि, अणु, से ४, २७, कम्म ४ ११, १४, २१, बृह १, जी ८)। ७ अध्ययन, स्वाध्याय (सम ५१, से ४, २७)। ८ श्रवण (प्राकृ ७०)। °केवलि पु [°केवलिन्] चौदह पूर्व ग्रथो का जानकार मुनि (राज)। °क्खध, °खध पु [°स्कन्ध] १ अग-ग्रन्थ का अध्ययन-समूहात्मक महान् अंश—खण्ड (सूअ २, ७, ४०, विपा १, १—पत्र ३)। २ बारह अग-ग्रथो का समूह। ३ बारहवाँ अंग-ग्रथ, दृष्टिवाद (राज)। °णाण देखो °नाण (ठा २, १ टी—पत्र ५१)। °णाणि वि [°ज्ञानिन्] शास्त्र-ज्ञान-संपन्न, शास्त्रो का जानकार (भग)। °णिस्सिय न [°निश्रित] मति-ज्ञान का एक भेद (णंदि)। °तिहि स्त्री [°तिथि] शुक्ल पचमी तिथि (रयण २)। °थेर पु [°स्थविर] तृतीय और चतुर्थ अग-ग्रंथ का जानकार मुनि (ठा ३, २)। °देवया स्त्री [°देवता] जैन शास्त्रो की अधिष्ठात्री देवी (पडि)। °देवी स्त्री [°देवी] वही (सुपा १, कुमा)। °धम्म पुं [°धर्म] १ जैन अग-ग्रथ (ठा २, १—पत्र ५२)। २ शास्त्र-ज्ञान (आवम)। ३ आगमो का अध्ययन, शास्त्राभ्यास (णंदि)। °धर वि [°धर] शास्त्रज्ञ (सुपा ६५२, पण्ह २, १—पत्र ९९)। °नाण पुन [°ज्ञान] शास्त्रज्ञान (ठा २, १—पत्र ४९, भग)। °नाणि देखो °णाणि (वव १०)। °निस्सिअ देखो °णिस्सिय (ठा २, १—पत्र ४९)। °पचमी स्त्री [°पञ्चमी] कार्तिक मास की शुक्ल पचमी तिथि (भवि)। °पुव्व वि [°पूर्व] पहले सुना हुआ (उप १४२ टी)। °सागर पु [°सागर] ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिनदेव (सम १५४)।

सुअ वि [स्मृत] याद किया हुआ (भग)।

सुअंध पुं [सुगन्ध] १ अच्छी गन्ध, खुशबू (गा १४)। २ वि. सुगन्धी (से ८, ६२, सुर १, २८)।

सुअंधि वि [सुगन्धि] सुन्दर गन्धवाला (से १, ६२, दे ८ ८)। देखो सुगंधि।

सुअक्खाय वि [स्वाख्यात] अच्छी तरह कहा हुआ (सूअ २, १, १५, १६, २०, २९)।

सुअच्छ वि [स्वच्छ] निर्मल, विशुद्ध (भवि)।

सुअण पुं [सुजन] सज्जन, भला आदमी (गा २२४, पाअ, प्रासू ८, ४०, सुर २, ४६, गउड)।

सुअण न [स्वपन] सोना, शयन (सूक्त ३१)।

सुअणा स्त्री [दे] अतिमुक्तक, वृक्ष-विशेष (दे ८, ३८)।

सुअणु वि [सुतनु] १ सुन्दर शरीरवाला। २ स्त्री. नारी, महिला (गा २६६, ३८४, ५६६, पि ३४६, गउड)।

सुअण्ण देखो सुवण्ण (प्राकृ ३०)।

सुअम वि [सुगम] सुबोध (प्राकृ ११)।

सुअर वि [सुकर] जो अनायास से हो सके वह, सरल (अभि ६६)।

सुअर पुं [शूकर] सूअर, वराह (विपा १, ७—पत्र ७५, नाट—मृच्छ २२२)।

सिच्चंत } देखो सिच = सिच्।
सिच्चमाण }

सिच्छा स्त्री [स्वेच्छा] स्वच्छन्द (सुपा ३१६)।

सिज्ज अक [स्विद्] पसीना होना। सिज्जइ (पड् २०३)। वकृ. सिज्जंत (नाट—उत्तर ६१)।

सिज्ज° देखो सिज्जा (सम्मत्त १७०)।

सिज्जंभण पु [शय्यंभण] एक सुप्रसिद्ध प्राचीन जैन महर्षि (कप्प—पृ ७८, णंदि)।

सिज्जंस देखो सेज्जंस = श्रेयांस (कप्प, पडि, आचा २, १५, ३)।

सिज्जा स्त्री [शय्या] १ बिछौना (सम १५, उवा, सुपा ५७३)। २ उपाश्रय, वसति (ओघ १६७)। °तरी, °यरी स्त्री [°तरी] उपाश्रय की मालकिन (ओघ १६७, पि १०१)। °वाली स्त्री [°पाली] बिछौना का काम करनेवाली दासी (सुपा ६४१)। देखो सेज्जा।

सिज्जिअ (अप) वि [सृष्ट] उत्पन्न किया हुआ, बनाया हुआ (पिंग)।

सिज्जिर वि [स्वेत्तृ] जिसको पसीना हुआ करता हो वह, पसीनावाला (गा ४०७, ४०८, ७७४, कुमा)। स्त्री °री (हे ४,२२४)।

सिज्जूर न [दे] राज्य (दे ८, ३०)।

सिज्झ अक [सिध्] १ निष्पन्न होना, बनना। २ पकना। ३ मुक्त होना। ४ मंगल होना। ५ सक. गति करना, जाना। ६ शासन करना। सिज्झइ (हे ४, २१७, भग, महा) सिज्झति (कप्प)। भूका. सिज्झिसु (भग, पि ५१६)। भवि सिज्झिहिइ, सिज्झिस्सति, सिज्झिहिंति, सिज्झिही (उवा, भग, पि ५२७, महा)। वकृ सिज्झंत (पिंड २५१)।

सिज्झ देखो सिंभ (राज)।

सिज्झणया } स्त्री [सेधना] १ सिद्धि, मुक्ति, मोक्ष, निर्वाण (सम १४७, उप १३१, ७६६, पव ८८, धर्मवि १५१, विसे ३०३७)। २ निष्पत्ति, साधना,
सिज्झणा }

'सव्वो परोवयारं करेइ
नियकज्जसिज्झणाभिरओ।
निरविक्खो नियकज्जे
परोवयारी हवइ धन्नो॥'
(रयण ४६)।

सिट्ठ वि [श्रेष्ठ] अति उत्तम (उप ८७६)।

सिट्ठ वि [सृष्ट] १ रचित, निर्मित (उप ७२८ टी, रंभा)। २ युक्त। ३ निश्चित। ४ भूषित। ५ बहुल, प्रचुर। ६ त्यक्त (हे १, १२८)।

सिट्ठ वि [शिष्ट] १ कथित, उक्त, उपदिष्ट (सुर १, १६५, २, १८४, जी ५०, वज्जा १३६)। २ सज्जन, भलामानस, प्रतिष्ठित (उप ७६८ टी, कुप्र ६४, सिरि ४५, सुपा ४७०)। °यार पु [°चार] भलमनसी, सदाचार (धर्म १)।

सिट्ठ वि [दे] सो कर उठा हुआ (षड्)।

सिट्ठि स्त्री [सृष्टि] १ विश्व-निर्माण, जगद्-रचना (सुपा १११, महा)। २ निर्माण, रचना। ३ स्वभाव। ४ जिसका निर्माण होता हो वह (हे १, १२८)। ५ सीधा क्रम, अविपरीत क्रम, 'चक्काई जतजोगेण सिट्ठि-विसिट्ठिकमेण एगतरिय भमताइ' (सिरि ८७८)।

सिट्ठि पु [दे श्रेष्ठिन्] नगर सेठ, नगर का मुख्य साहूकार, महाजन (कप्प, सुपा ५८०)। °पय न [°पद] नगर सेठ की पदवी (सुपा ३४२)। देखो सेट्ठि।

सिट्ठिणी स्त्री [श्रेष्ठिनी] श्रेष्ठि-पत्नी, सेठानी (सुपा १२)।

सिड्ढी स्त्री [दे] सीढ़ी, नि श्रेणि (अज्झ ७०)।

सिढिल वि [शिथिर, शिथिल] १ श्लथ, ढीला। २ अदृढ, जो मजबूत न हो वह। ३ मन्द (हे १, २१५, २५४, प्राप्र, कुमा, प्रासू १०२, गउड)।

सिढिल सक [शिथिलय्] शिथिल करना। सिढिलेइ, सिढिलति, सिढिलेंति (उव, वज्जा १०, से ६ ६५) सढिलेहि (वेणी २४३, पि ४६८)। वकृ. सिढिलेंत (से ५, ४२)।

सिढिलाविअ वि [शिथिलित] शिथिल कराया हुआ (प्राकृ ६१)।

सिढिलिअ वि [शिथिलित] शिथिल किया हुआ (कुमा, गउड, भवि)।

सिढिलीकय वि [शिथिलीकृत] शिथिल किया हुआ (सुर २, १६, १७३)।

सिढिलीभूय वि [शिथिलीभूत] शिथिल बना हुआ (पउम ५३, २४)।

सिण देखो सण = शण (जी १०, सुपा १८६, गा ७६८)।

सिणगार देखो सिंगार = शृङ्गार, 'सिणगार-चारुवेसो' (सबोध ४७), 'कारिअसुरसुदरिसि-णगार' (सिरि १५८)।

सिणा अक [स्ना] स्नान करना, नहाना। सिणाइ (सूअ १, ७, २१, प्राकृ २८)। संकृ. सिणाइत्ता (सूअ २, ७, १७)। हेकृ सिणाइत्तए (औप)।

सिणाउ पुंस्त्री [स्नायु] नाड़ी-विशेष, वायु वहन करनेवाली नाड़ी (प्राकृ २८)।

सिणाण उ [स्नान] नहान, अवगाहन (सम ३५, ओघ ४६६, रयण १४)।

सिणात देखो सिणाय = स्नात (ठा ४, १—पत्र १६३, ५, ३—पत्र ३३६)।

सिणाय देखो सिणा। सिणायति (दस ६, ६३)। वकृ सिणायत (दस ६, ६२, पि १३३)।

सिणाय } वि [स्नात, °क] १ प्रधान, श्रेष्ठ (सूअ २, २, ५६)। २ मुनि-विशेष, केवलज्ञान प्राप्त मुनि, केवली भगवान् (भग २५, ६, णंदि १३८ टी, ठा ३, २—पत्र १२६, धर्मसं १३५८, उत्त २५, ३४)। ३ बुद्ध शिष्य, बोधि सत्त्व (सूअ २, ६, २६)।
सिणायग }
सिणायय }

सिणाव सक [स्नपय्] स्नान कराना। सिणावेदि (शौ) (नाट—चैत ४४)। सिणावति, सिणावेंति (आचा २, २, ३, १०, पि १३३)।

सिणि स्त्री [सृणि] अंकुश (सुपा ५३७, सिरि १०५८)।

सिणिज्झ अक [स्निह्] प्रीति करना। सिणिज्झइ (प्राकृ २४)। कर्म. सिप्पइ (हे ४, २५५)। कवकृ. सिप्पंत (कुमा ७, ६०)।

सिणिद्ध वि [स्निग्ध] १ प्रीति-युक्त, स्नेह-युक्त (स्वप्न ५३, प्रासू ६२)। २ आर्द्र, रस-युक्त (कुमा)। ३ मसृण, कोमल। ४ चिकना। ५ न भात का माँड (हे २, १०९, प्राप्र)।

३, १२० वि १८)। ३ रावण की एक पत्नी (पउम ७४, ६)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। ५ मनोहरा शोभना, 'सुदरी ण देवाणुप्पिया गोसालस्स मखलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती' (उवा)।

सुंदेर } न [सौन्दर्य] सुन्दरता, शरीर
सुंदेरिम } का मनोहरपन (प्राप्र, हे १, ५७, कुमा सुपा ४, ६२२, धम्म ११ टी)।

सुंब न [शुम्ब] १ तृण-विशेष (ठा ४, ४—पत्र २७१, सुख १०, १)। २ तृण-विशेष की बनी हुई डोरी—रस्सी (विसे १५४)।

सुंभ पु [शुम्भ] १ एक गृहस्थ जो शुंभा नामक इन्द्राणी का पूर्व-जन्म में पिता था (णाया २, २—पत्र २५१)। २ दानव-विशेष (पि ३६०, ३६७ ए) °वडेंसय न [°वतंसक] शुम्भा देवी का एक भवन (णाया २, २)। °सिरी स्त्री [°श्री] शुम्भा देवी की पूर्व-जन्मीय माता (णाया २, २)।

सुंभा स्त्री [शुम्भा] बलि नामक इन्द्र की एक पटरानी (णाया २, २—पत्र २५१)।

सुंसुमा स्त्री [सुंसुमा] धन सार्थवाह की कन्या का नाम (णाया १, १८—पत्र २३५)।

सुंसुमार पु [सुंसुमार, शिशुमार] १ जलचर प्राणी की एक जाति, सूँस, सोस या सूसर (णाया १,४,पि ११७)। २ द्रह-विशेष (भत्त ६६)। ३ पर्वत-विशेष। ४ न. एक अरण्य (स ८६)। देखो सुसु-मार।

सुअ देखो सुअ = शुक (सुपा २३४)। °प्पहा स्त्री [°प्रभा] भगवान् सुविधिनाथ की दीक्षा-शिविका (विचार १२९)।

सुकइ पुं [सुकवि] अच्छा कवि (गा ५००, ६००, महा)।

सुकंठ वि [सुकण्ठ] १ सुन्दर कण्ठवाला। २ पुं, एक वणिक्-पुत्र (श्रा १६)। ३ एक चोर-सेनापति (महा)।

सुकच्छ पु [सुकच्छ] विजय-क्षेत्र-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०, इक)। °कूड पुंन [°कूट] शिखर-विशेष (इक, राज)।

सुकड देखो सुकय (चउ ५८)।

सुकण्ह पु [सुकृष्ण] एक राज-पुत्र (निर १, १, पि ५२)।

सुकण्हा स्त्री [सुकृष्णा] राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत २५)।

सुकद देखो सुकय (संक्षि ६)।

सुकम्माण वि [सुकर्मन्] अच्छा कर्म करनेवाला (हे ३, ५६, षड्)।

सुकय न [सुकृत] १ पुण्य (पण्ह १, २—पत्र २८, पाअ)। २ उपकार (से १, ४६)। ३ वि. अच्छी तरह निर्मित (राज)। °जाणुअ, °ण्णु, °ण्णुअ वि [°ज्ञ] सुकृत का जानकार, उपकार की कदर करनेवाला (प्राकृ १८, उप ७६८ टी)।

सुकयत्थ वि [सुकृतार्थ] अत्यन्त कृतकृत्य (प्रासू १५५)।

सुकर देखो सुगर (आचा १, ६, १, ८)।

सुकाल पुं [सुकाल] राजा श्रेणिक का एक पुत्र (निर १, १)।

सुकाली स्त्री [सुकाली] राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत २५)।

सुकिअ देखो सुकय (हे ४, ३२९, भवि)।

सुकिट्ठ वि [सुकृष्ट] अच्छी तरह जोता हुआ (पउम ३, ४५)।

सुकिट्ठि पुं [सुकृष्टि] एक देव-विमान (सम ६)।

सुकिदि वि [सुकृतिन्] १ पुण्य-शाली। २ सत्कर्म-कारी (रंभा)।

सुकिल } देखो सुक्क = शुक्ल (हे २, १०६,
सुकिल्ल } पि १३६)।

सुकुमार } वि [सुकुमार] १ अति कोमल।
सुकुमाल } २ सुन्दर कुमार अवस्थावाला (महा, हे १, १७१, पि १२३, १६०)।

सुकुमालिअ वि [दे] सुघटित, सुन्दर बना हुआ (दे ८, ४०)।

सुकुल पुंन [सुकुल] उत्तम कुल (भवि)।

सुकुसुम न [सुकुसुम] १ सुन्दर फूल। २ वि. सुन्दर फूलवाला (हे १, १७७, कुमा)।

सुकुसुमिय वि [सुकुसुमित] जिसको अच्छी तरह फूल आया हो वह (सुपा ५९८)।

सुकोमल पुं [सुकोशल] १ ऐरवत-वर्ष के एक भावी जिनदेव (सम १५४, पव ७)। २ एक जैन मुनि (पउम २२, ३६)।

सुकोसला स्त्री [सुकोशला] एक राज-कन्या (उप १०३१ टी)।

सुक्क अक [शुष्] सूखना। सुक्कइ (विसे ३३२, पव ७०), सुक्कंति (दे ८, १८ टी)।

सुक्क वि [शुष्क] सूखा हुआ (हे २, ५, णाया १, ६—पत्र ११४, उवा, पिंड २७६, सुर ३, ६५, १०, २२३, धात्वा १५६)।

सुक्क न [शुल्क] १ चुंगी, बेचने की वस्तु पर लगता राज-कर (णाया १, १—पत्र ३७, कुमा, श्रा १४, सम्मत्त १५६)। २ स्त्री-धन विशेष। ३ वर पक्ष से कन्या पक्षवालों को लेने योग्य धन। ४ स्त्री को संभोग के लिए दिया जाता धन। ५ मूल्य (हे २ ११)। देखो सुंक।

सुक्क पु [शुक्र] १ ग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८, सम ३६, वज्जा १००)। २ पुन एक देव-विमान (सम ३३, देवेन्द्र १४३)। ३ न वीर्य, शरीरस्थ धातु-विशेष (ठा ३, ३—पत्र १४४, धर्मसं ६८४; वज्जा १००)।

सुक्क पुं [शुक्ल] १ वर्ण-विशेष, सफेद रंग। २ सफेद वर्णवाला, श्वेत (हे २, १०६, कुमा, सम २९)। ३ न. शुभ ध्यान विशेष (औप)। ४ वि. जिसका संसार अर्ध पुद्गल-परावर्त काल से कम रह गया हो वह (पंचा १, २)। °ज्झाण, °झाण न [°ध्यान] शुभ ध्यान-विशेष (सम ९, सुपा ३७, अंत)। °पक्ख पुं [°पक्ष] १ जिसमे चन्द्र की कला क्रमश बढती है वह आधा महीना (सम २९, कुमा)। २ हंस पक्षी। ३ काक, कौआ। ४ बगला, बक पक्षी (हे २, १०६)। °पक्खिय वि [°पाक्षिक] वह आत्मा जिसका ससार अर्ध पुद्गल-परावर्त से कम रह गया हो (ठा २, २—पत्र ५९)। °लेस देखो °लेस्स (भग)। °लेसा देखो °लेस्सा (सम ११, ठा १—पत्र २८)। °लेस्स वि [°लेश्य] शुक्ल लेश्यावाला (पण्ण १७—पत्र ५११)। °लेस्सा स्त्री [°लेश्या] आत्मा का अध्यवसाय-विशेष, शुभतम आत्म-परिणाम (पण्ह २, ४—पत्र १३०)।

सुक्कड } देखो °सुकय (सम १२५, पउम
सुक्कत्र } १५, १००)।

सुक्कव सक [शोषय्] सुखाना। वकृ. सुक्कवेमाण (णाया १, ६—पत्र १४)।

८—पत्र ४४०, औप; इक)। २ मुक्ति, निर्वाण, मोक्ष (ठा १—पत्र २५, पडि, औप, कुमा)। ३ कर्म-क्षय (सूत्र २, ५, २५, २६)। ४ अणिमा आदि योग की शक्ति (ठा १)। ५ कृतार्थता, कृतकृत्यता (ठा १—पत्र २५, कप्प, औप)। ६ निष्पत्ति, 'न कयाइ दुव्विणीओ सकज्जसिद्धि समाणेइ' (उव)। ७ सम्बन्ध (दसनि १, १२२)। ८ छन्द विशेष (पिंग)। °गइ स्त्री [°गति] मुक्ति-स्थान में गमन (कप्प, औप, पडि)। °गंडिया स्त्री [°गण्डिका] ग्रन्थ-प्रकरण-विशेष (भग ११, ९—पत्र ५२१)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (कुप्र २२)।

सिन्न वि [शीर्ण] जीर्ण, गला हुआ (सुपा ११, विवे ७० टी)।

सिन्न देखो सिण्ण = स्विन्न (सुपा ११)।

सिन्न स्त्रीन [सैन्य] १ मिला हुआ हाथी-घोडा आदि। २ सेना का समुदाय (हे १, १५०, कुमा)। स्त्री 'ता अन्नदिणे नयरे पवेढिय सत्तुसिन्नाए' (सुर १२, १०४)।

सिप्प देखो सिंप। सिप्पइ (षड्)।

सिप्प न [दे] पलाल, पुआल, तृण-विशेष (दे ८, २८)।

सिप्प न [शिल्प] कारु-कार्य, कारीगरी, चित्रादि-विज्ञान, कला, हुनर, क्रिया-कुशलता (पण्ह १, ३—पत्र ५५, उवा, प्रासू ८०)। २ तेजस्काय, अग्नि-संघात। ३ अग्नि का जीव। ४ पु तेजस्काय का अधिष्ठाता देव (ठा ५, १—पत्र २६२)। °सिद्ध पुं [°सिद्ध] कला मे अतिकुशल (आवम)। °ाजीव वि [°ाजीव] कारीगर, कला—हुनर से जीविका-निर्वाह करनेवाला (ठा ५, १—पत्र ३०३)।

सिप्पा स्त्री [सिप्रा] नदी-विशेष, जो उज्जैन के पास से गुजरती है (स २६३, उप पृ २१८, कुप्र ५०)।

सिप्पि वि [शिल्पिन्] कारीगर, हुनरी, चित्र आदि कला में कुशल (औप, मा ४)।

सिप्पि स्त्री [शुक्ति] सीप, घोघा (हे २, १३८, उवा, षड्, कुमा, प्रासू ३६, पि ३८५)।

सिप्पिअ वि [शिल्पिक] शिल्पी, कारीगर (महा)।

सिप्पिर न [दे] तृण-विशेष, पलाल, पुआल (पण्ण १—पत्र ३३, गा ३३०)।

सिप्पी स्त्री [दे] सूची, सूई (षड्)।

सिप्पीर देखो सिप्पिर (गा ३३० अ, पि २०१)।

सिबिर देखो सिविर (पउम १०, २७)।

सिब्भ देखो सिंभ (चड)।

सिभा स्त्री [शिफा] वृक्ष का जटाकार मूल (हे १, २३६)।

सिम स [सिम] सर्व, सब (प्रामा)।

सिम° देखो सीमा, 'जाव सिमसनिहाणं पत्तो नगरस्स बाहिरुज्जाणे' (सुपा १६२)।

सिमसिम } अक [सिमसिमाय्] 'सिम
सिमसिमाय } सिम' आवाज करना। सिमसिमायति (वज्जा ८२)। वकृ सिमसिमन (गा ५६१ अ)।

सिमिग देखो सुमिण (हे १, ४६, २५९)।

सिमिर (अप) देखो सिविर (भवि)।

सिमिसिम } देखो सिमसिम। वकृ
सिमिसिमाअ } सिमिसिमन, सिमिसिमाअन (गा ५६०, पि ५५८)।

सिमिसिमिय वि [सिमिसिमित्] 'सिम सिम' आवाज करनेवाला (पउम १०५, ५५)।

सिर सक [सृज्] १ बनाना, निर्माण करना। २ छोडना, त्याग करना। सिरइ (पि २३५), सिरामि (विसे ३५७९)।

सिर न [शिरस्] १ मस्तक, माथा, सिर (पाअ, कुमा, गउड)। २ प्रधान, श्रेष्ठ। ३ अग्र भाग (हे १, ३२)। °क्क न [°क] शिरस्त्राण, मस्तक का बख्तर (दे ५, ३१, कुमा, कुप्र २९२)। °ताण, °त्ताण न [°त्राण] वही पूर्वोक्त अर्थ (कुमा, स ३८५)। °वत्थि स्त्री [°वस्ति] चिकित्सा विशेष, सिर में चर्म-कोश देकर उसमे संस्कृत तैल आदि पूरने का उपचार (विपा १, १—पत्र १४), 'सिरावेढेहि (?सिरवत्थीहि)य' (णाया १, १३—पत्र १८१)। °मणि देखो सिरो मणि (सुपा ५३२)। °य पुं [°ज] केश, बाल (भग, कप्प, औप, स ५७८)। °हर न [°गृह] मकान के ऊपर की छत, चन्द्रशाला (दे ३, ४६)। देखो सिरो°।

सिर° देखो सिरा (जी १०)।

°सिरय } देखो सिर = शिरस् (कप्प, पण्ह
°सिरस } १, ४—पत्र ६८, औप)।

सिरसावत्त वि [शिरसावर्त, शिरस्यावर्त] मस्तक पर प्रदक्षिणा करनेवाला, शिर पर परिभ्रमण करता (णाया १, १—पत्र १३, कप्प, औप)।

सिरा स्त्री [शिरा, सिरा] १ रग, नस, नाडी (णाया १, १३—पत्र १८१, जी १०, जीव १)। २ धारा, प्रवाह (कुमा, उप पृ २६६)।

सिरि° देखो सिरी (कुमा, जी ५०, प्रासू ५२, ८०, कम्म १, १, पि ९८)। °उत्त पुं [°पुत्र] भारतवर्ष मे होनेवाला एक चक्रवर्त्ती राजा (सम १५४)। °उर न [°पुर] नगर-विशेष (उप ५५०)। °कंठ पुं [°कण्ठ] १ शिव, महादेव (कुमा)। २ वानरद्वीप का एक राजा (पउम ६, ३)। °कंत पुन [°कान्त] एक देव-विमान (सम २७)। °कंता स्त्री [°कान्ता] १ एक राज-पत्नी (पउम ८, १८७)। २ एक कुलकर-पत्नी (सम १५०)। ३ एक राज-कन्या (महा)। ४ एक पुष्करिणी (इक)। °कंदलग पु [°कन्दलक] पशु-विशेष, एक-खुरा जानवर की एक जाति (पण्ण १—पत्र ४९)। °करण न [°करण] १ न्याया-यालय, न्याय-मन्दिर। २ फैसला (सुपा ३९१)। °करणीय वि [°करणीय] श्री करण-सबन्धी (सुपा ३९१)। °कूड पुन [°कूट] हिमवत पर्वत का एक शिखर (राज)। °खंड न [°खण्ड] चन्दन (सुर २, ५६, कप्पू)। °गरण देखो °करण (सुपा ४२५)। °गीव पुं [°ग्रीव] राक्षस वंश का एक राजा, एक लंका-पति (पउम ५, २६१)। °गुत्त पु [°गुप्त] एक जैन महर्षि (कप्प)। °घर न [°गृह] भंडार, खजाना (णाया १, १—पत्र ५३, सुअनि ५५)। °घरिअ वि [°गृहिक] भंडारी, खजानची (विसे १४२५)। °चंद पु [°चन्द्र] १ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य और ग्रन्थकार (पव ४६, सुपा ६५८)। २ ऐरवत क्षेत्र मे होनेवाले एक

सुचोइअ वि [सुचोदित] प्रेरित (उत्त १, ४४)।

सुच्च वि [शोच्य] अफसोस करने योग्य, 'सुच्चा ते जियलोए जिणवयणं जे नरा न याणंति' धर्मवि १७)।

सुच्चा देखो सुण = श्रु।

सुजंपिय न [सुजल्पित] आशीर्वाद (णाया १, १—पत्र ३६)।

सुजड पुं [सुजट] एक विद्याधर-नरेश (पउम १०, २०)।

सुजस पुं [सुयशस्] १ एक जिनदेव का नाम (उप १०३१ टी)। २ वि यशस्वी (श्रा १६)।

सुजसा स्त्री [सुयशस्] १ चौदहवें जिन-देव की माता (सम १५१)। २ एक राज-पत्नी (उप ६८६ टी)।

सुजह वि [सुहान] सुख से जिसका त्याग हो सके वह (उत्त ८, ६)।

सुजाइ वि [सुजाति] प्रशस्त जातिवाला, जात्य (महा)।

सुजाण वि [सुज्ञ] सयाना अच्छा जानकार (सिरि ६१ प्रासू १३ सुपा ५८८)।

सुजाय वि [सुजात] १ सुन्दर जाति में उत्पन्न कुलीन, खानदानी (उप ७२८ टी)। २ अच्छी तरह उत्पन्न, सुन्दर रूप से उत्पन्न (ठा ४, ४—पत्र २०८ औप, जीव ३, ४, उवा)। ३ न सुन्दर जन्म (आव)। ४ पु एक राजकुमार (विपा २, ३)। ५ पुन एक एक देव-विमान (देवेन्द्र २७२)।

सुजाया स्त्री [सुजाता] १ कालवाल आदि लोकपालों की पत्रानियों के नाम (ठा ४, १—पत्र २०४, इक)। २ राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत २५)।

सुजिट्ठा स्त्री [सुज्येष्ठा] एक महासती राज-कुमारी, जो चेटकराज की पुत्री थी (पडि)।

सुजुत्ति स्त्री [सुयुक्ति] सुन्दर युक्ति (सुपा १११)।

सुजेट्ठा देखो सुजिट्ठा (राज)।

सुजुसिय वि [सुजुष्ट] अच्छी तरह सेवित (सूअ १, १, २, २६)।

सुजोसिअ वि [सुजोषित] सुष्ठु क्षपित, सम्यग् विनाशित (सूअ १, २, २, २६)।

सुज्ज पुं [सूर्य] १ सूरज रवि। २ आक का पेड। ३ दैत्य-विशेष (हे २, ६४, प्राप्र)। ४ पुन एक देव-विमान (सम १५)। °कंत पुन [°कान्त] एक देव-विमान (सम १५)। °ज्झय पुन [°ध्वज] देव-विमान-विशेष (सम १५)। °प्पभ पुन [°प्रभ] एक देव-विमान (सम १५)। °लेस पुन [°लेश्य] एक देव-विमान (सम १५)। °वण्ण पुंन [°वर्ण] देव विमान विशेष (सम १५)। °सिंग पुन [°शृङ्ग] एक देव-विमान (सम १५)। °सिट्ठ पुन [°सृष्ट] एक देव-विमान का नाम (सम १५)। °सिरी स्त्री [°श्री] एक ब्राह्मण-कन्या (महानि २)। °सिव पु [°शिव] एक ब्राह्मण का नाम (महानि २)। °हास पु [°हास] तलवार की एक उत्तम जाति (पउम ४३, १६)। °भ न [°भ] वैताढ्य की उत्तम-श्रेणि मे स्थित एक विद्याधर-नगर (इक)। °वत्त पुन [°वर्त] एक देव-विमान (सम १५)। देखो °सूर, सूरिअ = सूर, सूर्य।

सुज्जाण वि [सुज्ञान] सुजान, सयाना, सुज्ञ (षड्, पिंग)।

सुज्जुत्तरवडिंसग पुन [सूर्योत्तरावतंसक] एक देव-विमान (सम १५)।

सुज्झ अक [शुध्] शुद्ध होना। सुज्झइ (महा)। सकृ सुज्झिऊण (सम्यक्त्वो ८)।

सुज्झंत वि [दृश्यमान] सूझता, दीख पडता, मालूम होता, 'अन्नरि ज असुज्झंत। सुज्झंत-एण रत्ति' (पउम १०३, २५)।

सुज्झणया स्त्री [शोधना] शुद्धि (उप ८७४)।

सुज्झय न [दे] १ रौप्य, चाँदी। २ पु. रजक, धोबी (दे ८, ५६)।

सुज्झरय पु [दे] रजक, धोबी (दे ८, ३६)।

सुज्झवण न [शोधन] शुद्धि, प्रक्षालन (उप ६८५)।

सुज्झाइ वि [सुध्यायिन्] शुभ ध्यान करने-वाला (संबोध ५२)।

सुज्झाइय वि [सुध्यात] अच्छी तरह चिन्तित (राज)।

सुट्ठिअ वि [सुस्थित] १ सम्यक् स्थित (कप्प)। २ पु लवण समुद्र का अधिष्ठायक देव (णाया १, १६—पत्र २१७)। ३ आर्यसुहस्ति आचार्य का शिष्य एक जैन महर्षि (कप्प)।

सुट्ठु } अ [सुष्ठु] १ अच्छा, शोभन सुन्दर
सुटठु } (आचा, भग, स्वप्न २३, सुर २, १७८)। २ अतिशय, अत्यन्त (सुर ४, २४, प्रासू १३७)।

सुठिअ देखो सुढिअ (पाअ)।

सुढ सक [स्मृ] याद करना। सुढइ (प्राकृ ६३)।

सुढिअ वि [दे] १ श्रान्त, थका हुआ (दे ८, ३६, गउड, सुपा १७६, ५३०; सुर १०, २१८)। २ संकुचित अंगवाला (महा)।

सुण सक [श्रु] सुनना। सुणइ, सुणेइ (हे ४, ५८, २४१, महा)। सुणउ, सुणेउ, सुणाउ (हे ३, १५८)। भवि. सुणिस्सइ, सुणि-स्सामो, सोच्छिइ, सोच्छिहिइ, सोच्छं, सोच्छिमु, सोच्छिमि, सोच्छिहिमि, सोच्छि-स्सामि, सोच्छिहामि (पि ५३१, औप, हे ३, १७२)। कर्म सुणिज्जइ, सुव्वइ, सुव्वए, सुम्मइ, सुणीअइ (हे ४, २४२, कुमा, महा, पि ५३६)। वकृ सुणत, सुणित, सुणमाण, सुणेमाण (हेका १०५, सुर ११, ३७, पि ५६१, विपा १, १, सुर ३, ७६)। कवकृ. सुम्मत, सुव्वत, सुव्वमाण (सुर ११, १६६, ३, ११, से २, १०, ६, ४६)। सकृ. सुणिअ, सुणिऊण, सुणित्ता, सुणेत्ता, सोऊण, सोउआण, सोउआण, सोउ, सोच्चा, सोच्चं, सुच्चा (श्रभि ११६, षड्, हे ४, २४१, पि ५८२, हे ४, २३७, २, १४६, कुमा हे २, १५, पि ११४, ३४६, ५८७)। हेकृ सोउ (कुमा)। कृ. सुणेयव्व, सोअव्व (भग, पण्ह १, १—पत्र ५, से २, १०, गउड, अजि ३८)।

सुणइ देखो सुणय।

सुणंद पु [सुनन्द] १ एक राजर्षि (धम्म)। २ भगवान् वासुपूज्य को प्रथम भिक्षा-दाता गृहस्थ (सम १५१)। ३ पुन एक देव-विमान (सम २६)। देखो सुनंद।

सुणंदा स्त्री [सुनन्दा] १ भगवान् पार्श्वनाथ की मुख्य श्राविका (कप्प)। २ तृतीय चक्रवर्ती

पद्महृद की अधिष्ठात्री देवी (ठा २, ३—पत्र ७२)। ५ उत्तर रुचक पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७)। ६ देव प्रतिमा-विशेष (णाया १, १ टी—पत्र ४३)। ७ भगवान् कुन्थुनाथ जी की माता का नाम (पव ११)। ८ एक श्रेष्ठि-कन्या (कुप्र १५२)। ९ एक श्रेष्ठि पत्नी (कुप्र २२८)। १० देव, गुरु आदि के नाम के पूर्व में लगाया जाता आदर-सूचक शब्द (पव ७, कुमा, पि ९८)। ११ वाणी। १२ वच-रचना। १३ धर्म आदि पुरुषार्थ। १४ प्रकार, भेद। १५ उपकरण, साधन। १६ बुद्धि, मती। १७ अधिकार। १८ प्रभा, तेज। १९ कीर्ति, यश। २० सिद्धि। २१ वृद्धि। २२ विभूति। २३ लवग, लौंग। २४ सरल वृक्ष। २५ बिल्व-वृक्ष। २६ ओषधि विशेष। २७ कमल, पद्म (हे २, १०४) देखो सिअ, सिरि°, सी = श्री।

सिरीस देखो सिरिस (णाया १, ९—पत्र १६०, औप, कुमा)।

सिरीसिव पु [सरीसृप] सर्प, साँप (सूअ १, ७, १५, पि ८१, १७७)।

सिरो° देखो सिर = शिरस्। °धरा (शौ) देखो °हरा (पि ३४७)। °मणि पुं [°मणि] प्रधान, अग्रणी, मुख्य, 'अलससिरोमणी' (गा ९७०, सुपा ३०१, प्रासू २७)। °रुह पु [°रुह] केश, बाल (पाअ)। °विअणा स्त्री [°वेदना] सिर की पीडा (हे १, १५६)। °वत्थि देखो सिर-वत्थि (राज)। °हरा स्त्री [°धरा] ग्रीवा, गला, डोक (पाअ, णाया १, ३, स ८, अभि २२४)।

सिल° देखो सिला (कुमा)। °प्पवाल न [°प्रवाल] विद्रुम (औप)।

सिलंब देखो सिलिंब (पाअ)।

सिलउ पु [दे] उञ्छ, गिरे हुए अन्न-कणों का ग्रहण (दे ८, ३०)।

सिला स्त्री [शिला] १ सिल, चट्टान, पत्थर (पाअ प्राप्र, कप्प, कुमा)। २ श्रोला (दस ८, ६)। °जउ पु न [°जतु] शिलाजित, पर्वतों से उत्पन्न होनेवाला द्रव्य-विशेष, जो दवा के काम में आता है, शिला-रस (उप ७२८ टी, धर्मवि १४१)।

सिलाइच्च पुं [शिलादित्य] वलभीपुर का एक प्रसिद्ध राजा (ती १५)।

सिलागा देखो सलागा (स ८४)।

सिलाघ (शौ) नीचे देखो। कृ सिलाघणीअ (प्रयौ ९७)।

सिलाह सक [श्लाघ्] प्रशंसा करना। कृ. सिलाहणिज्ज (गउड १६)।

सिलाहा स्त्री [श्लाघा] प्रशंसा (मै ८८)।

सिलिंद पु [शिलिन्द] धान्य-विशेष (पव १५६, सबोध ४२, श्रा १८, दसनि ६, ८)।

सिलिंध पु न [शिलीन्ध्र] १ वृक्ष-विशेष, छत्रक वृक्ष, भूमिस्फोट वृक्ष (णाया १, १—पत्र २५, ९—पत्र १६०, औप, कुमा)। २ पु. पर्वत-विशेष (स २५२)। °निलय पु [°निलय] पर्वत-विशेष (स ४२४)।

सिलिंब पुं [दे] शिशु, बच्चा (दे ८, ३०, सुर ११, २०६, सुपा ३४)।

सिलिट्ठ वि [श्लिष्ट] १ मनोज्ञ, सुन्दर, 'अइक्कतविसप्पमाणमउयसुकुमालकुम्मसठिय-सिलिट्ठचरणा' (पण्ह १, ४—पत्र ७९)। २ संगत, सुयुक्त (औप)। ३ आलिङ्गित। ४ सश्लिष्ट। ५ श्लेषालकार-युक्त (हे २, १०६, प्राप)।

सिलिपइ देखो सिलिवइ (राज)।

सिलिम्ह पु स्त्री [श्लेष्मन्] श्लेष्मा, कफ (हे २, ५५, १०६, पि १३६)। देखो सेम्ह।

सिलिया स्त्री [शिलिका] १ चिरैता आदि तृण, ओषधि-विशेष। २ पाषाण-विशेष, शस्त्र को तीक्ष्ण करने का पाषाण (णाया १, १३—पत्र १८१)।

सिलिसिअ देखो सिलिट्ठ (कुमा ७, ३५)।

सिलिवइ वि [श्लीपदिन्] श्लीपद नामक रोगवाला, जिससे पैर फुला हुआ और कठिन हो जाता है उस रोग से युक्त (आचा, बृह १)।

सिलीमुह पु [शिलीमुख] १ बाण, तीर (पाअ, सुर ६, १८)। २ रावण का एक योद्धा (पउम ५६, ३६)।

सिलीस देखो सिलेस = श्लिष्। सिलीसइ (भवि)। सिलीसति (सूअ २, २, ५५)।

सिलुच्चय पु [शिलोच्चय] १ मेरु पर्वत (सुज्ज ५)। २ पर्वत, पाहाड (रंभा)।

सिलेच्छिय पुं [शिलैच्छिक] मत्स्य-विशेष (जीव १ टी पत्र ३६)।

सिलेम्ह देखो सिलिम्ह (षड्)।

सिलेस सक [श्लिष्] आलिङ्गन करना, भेंटना। सिलेसइ (हे ४, १९०)।

सिलेस पु [श्लेष] १ वज्रलेप आदि सधान (सूअनि ८४)। २ आलिङ्गन भेंट (सुर १६, २४३)। ३ ससर्ग। ४ दाह (हे २, १०६ षड्)। ५ एक शब्दालकार (सुर १, ३९ १६, २४३)।

सिलेस देखो सिलिम्ह (अनु ५)।

सिलोअ } पु [श्लोक] १ कविता, पद्य,
सिलोग } काव्य (मुद्रा १९८, सुपा ५६४, अजि ३, महा)। २ यश, कीर्ति (सूअ १, १३, २२, हे २, १०६)। ३ कला-विशेष, कवित्व, काव्य बनाने की कला (औप)।

सिलोच्चय देखो सिलुच्चय (पाअ, सुर १, ७, राज)।

सिल्ल पुं [दे] १ कुन्त, बरछा, शस्त्र-विशेष (सुपा ३११, कुप्र २८, काल, सिरि ४०३)। २ पोत-विशेष, एक प्रकार का जहाज (सिरि ३८३)।

सिल्ला देखो सिला। °र पुं [°कार] शिला-वट, पत्थर गढ़नेवाला शिल्पी (ती १५)।

सिल्हग न [सिह्लक] गन्ध-द्रव्य-विशेष (राज)।

सिल्हा स्त्री [दे] शीत, जाडा (से १२, ७)।

सिव न [शिव] १ मङ्गल, कल्याण। २ सुख (पाअ, कुमा, गउड)। ३ अहिंसा (पण्ह २, १—पत्र ९९)। ४ पुन मुक्ति, मोक्ष (पाअ, सम्मत्त ७६, सम १, कप्प, औप, पडि)। ५ वि मङ्गल-युक्त, उपद्रव-रहित (कप्प, औप, सम १, पडि)। ६ पु महादेव (णाया १, १—पत्र ३९, पाअ, कुमा, सम्मत्त ७६)। ७ जिनदेव, तीर्थंकर, अर्हन् (पउम १०९, १२)। ८ एक राजर्षि, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (ठा ८—पत्र ४३०, भग ११, ९)। ९ पाचवें वासुदेव तथा बलदेव का पिता (सम १५२)। १० देव-विशेष (गय, भग)। ११ पौष मास का लोकोत्तर नाम (सुज्ज १०, १९)।

सुत्थिय देखो सुट्ठिअ (सुपा ६३२)।

सुत्थिर वि [सुस्थिर] अतिशय स्थिर, अति-निश्चल (प्राकृ १६, सुपा ३४८; कुमा)।

सुथेव वि [सुस्तोक] अत्यल्प (पउम ८, १५२)।

सुदंती स्त्री [सुदन्ती] सुन्दर दाँतवाली (उप ७६८ टी)।

सुदंसण पुं [सुदर्शन] १ भगवान् अरनाथ के पिता का नाम (सम १५१)। २ तीसरे वासुदेव तथा बलदेव के धर्म-गुरु (सम १५३)। ३ भारतवर्ष में होनेवाला पाँचवाँ बलदेव (सम १५४)। ४ धरणेन्द्र के हस्ति-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०२)। ५ एक अन्तकृद् मुनि (अंत १८)। ६ मेरु पर्वत (सुज्ज १ ६, ६, सुज्ज ५)। ७ एक विख्यात श्रेष्ठी (पडि वि १६)। ८ देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७६)। ९ विष्णु का चक्र (सुपा ३१०)। १० भगवान् अरनाथ का पूर्वभवीय नाम। ११ भगवान् पार्श्वनाथ का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५१)। १२ पुन. एक देव-विमान (देवेन्द्र १३६)। १३ वि. जिसका दर्शन सुन्दर हो वह (वि १६)। १४ न पश्चिम रुचक पर्वत का एक शिखर (ठा ८—पत्र ४३६)।

सुदंसणा स्त्री [सुदर्शना] १ जम्बू नामक एक वृक्ष, जिससे यह द्वीप जम्बूद्वीप कहलाता है (सम १३; पण्ह २, ४—पत्र १३०)। २ भगवान् महावीर की ज्येष्ठ बहिन का नाम (आचा २ १५, ३ कप्प)। ३ धरण आदि इन्द्रों के कालवाल आदि लोकपालों की एक-एक अग्रमहिषी (ठा ४, १—पत्र २०४)। ४ काल तथा महाकाल-नामक पिशाचेन्द्रों की अग्रमहिषियों के नाम (ठा ४, १—पत्र २०४)। ५ भगवान् ऋषभदेव की दीक्षा-शिबिका (विचार १२६)। ६ चतुर्थ बलदेव की माता (सम १५२)।

सुदक्खिन्न वि [सुदाक्षिण्य] दाक्षिण्यवाला (धम्म १५, स ३१)।

सुदच्छ वि [सुदक्ष] अति चतुर (सुपा ५१७)।

सुदरिसण देखो सुदंसण (हे २, १०५, पउम २०, १७६, १९० पव १६४, इक)।

सुदाम पुं [सुदामन्] अतीत उत्सर्पिणी-काल में उत्पन्न भारतवर्ष का दूसरा कुलकर पुरुष (सम १५०)।

सुदारु न [सुदारु] सुन्दर काष्ठ (गउड)।

सुदारुण पुं [दे] चंडाल (दे ८, ३६)।

सुदिट्ठ वि [सुदृष्ट] सम्यग् विलोकित (गा २२५)।

सुदिप्प अक [सु + दीप्] अतिशय चमकना। वकृ. सुदिप्पंत (सुपा ३५१)।

सुदीह } वि [सुदीर्घ] अत्यन्त लम्बा (सुर
सुदीहर } २, १२५, १६८)। °कालीय वि [°कालिक] सुदीर्घ-काल-सम्बन्धी (सुर १५, २००)। °दंसि वि [°दर्शिन] परिणाम का विचार कर कार्य करनेवाला (स ३०)।

सुदुक्कर वि [सुदुष्कर] जो अत्यन्त दुःख से किया जा सके वह, अति मुश्किल (उप ५ १६०)।

सुदुक्खत्त वि [सुदुःखार्त] अति दुःख से पीडित (सुर ७, ११)।

सुदुक्खिअ वि [सुदुःखित] अत्यन्त दुःखित (सुण ३०४)।

सुदुग्ग वि [सुदुर्ग] जहाँ दुःख से गमन किया जा सके वह (पउम ३०, ४६)।

सुदुच्च वि [सुदुस्त्यज] मुश्किल से जिसका त्याग हो सके वह 'सहावो वि सुदुच्चग्रो' (श्रा १२)।

सुदुत्तार वि [सुदुस्तार] कठिनता से जिसको पार किया जा सके वह (औप, पि ३०७)।

सुदुद्धर वि [सुदुर्धर] अति दुःख से जो धारण किया जा सके वह (श्रा ४६ प्रासू ४८)।

सुदुन्निवार वि [सुदुर्निवार] अति कठिनाई से जिसका निवारण किया जा सके वह (सुपा ६४)।

सुदुप्पेच्छ वि [सुदुर्दर्श] अतिशय मुश्किल से देखने योग्य (सुर १२, १६६)।

सुदुब्भेअ वि [सुदुर्भेद] अति दुःख से जिसका भेदन हो सके वह (उप २५३ टी)।

सुदुम्माणिआ स्त्री [दे] रूपवती स्त्री (दे ८, ४०)।

सुदुल्लह वि [सुदुर्लभ] अत्यन्त दुर्लभ (राज)।

सुदूसह वि [सुदुःसह] अत्यन्त दुःख से सहन करने योग्य (सुर ६, १५८)।

सुदेव पुं [सुदेव] उत्तम देव (सुपा २५६)।

सुद्द पुं [शूद्र] मनुष्य की अधम जाति, चतुर्थ वर्ण (विपा १, ५—पत्र ६१, पउम ३, ११७, श्रु १३)।

सुद्दय पुं [शूद्रक] एक राजा का नाम (मोह १०५, १०६)।

सुद्दिणी (अप) स्त्री [शूद्री] शूद्रजातीय स्त्री (पिंग)।

सुद्ध पुं [दे] गोपाल, ग्वाला (दे ८, ३३)।

सुद्ध वि [शुद्ध] १ शुक्ल, उज्ज्वल, 'वइमार-सुद्धपक्खमिरत्तीए नीहरण लग्ग' (गु. ४, २०१; कुप्र ७०; पचा ६, ३४)। २ पवित्र। ३ निर्दोष। ४ केवल, किसी से अमिश्रित। ५ न सैंधा नून—नमक। ६ मरिच, मिर्चा (ह ४, २६०)। ७ लगातार १८ दिनों के उपवास (संबोध ५८)। ८ पु. छन्द-विशेष (पिंग)। °गंधारा स्त्री [°गन्धारा] गन्धार-ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७—पत्र ३९३)। °दंत पुं [°दन्त] १ भारतवर्ष में होनेवाले चौथे जिनदेव (सम १५४)। २ एक अनुत्तर-गामी जैन मुनि (अनु २)। ३ एक अन्तर्द्वीप। ४ उसमें रहनेवाली एक मनुष्य-जाति (इक)। °पक्ख पुं [°पक्ष] शुक्ल पक्ष (पउम ६, २७)। °प्प पुं [°आत्मन्] पवित्र आत्मा (कप्प)। °प्पवेस वि [°प्रवेश्य] पवित्र और प्रवेश के लिए उचित (भग)। °प्पवेस वि [°त्मवेश्य] पवित्र तथा वेशोचित (भग)। °वाय पुं [°वात] वायु-विशेष, मन्द पवन (जी ७)। °वियड न [°विकट] उष्ण जल (कप्प)। °सज्जा स्त्री [°षड्जा] षड्ज ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७—पत्र ३९३)।

सुद्धंत पुं [शुद्धान्त] अन्तःपुर (उप ७६८ टी, कुप्र ५८, कुम्मा २६, कस)।

सुद्धवाल वि [दे] शुद्ध-पूत, शुद्ध और पवित्र (दे ८, ३८)।

सुद्धि स्त्री [शुद्धि] १ शुद्धता, निर्दोषता, निर्मलता (सम्मत्त २३०, कुमा)। २ पता,

ग्रह। ८ वृक्ष। ९ अश्व। १० चित्रक-वृक्ष। ११ मयूरशिखा-वृक्ष। १८ वकरे का रोम। १३ वि. शिखा-युक्त (अगु १४२)।

सिहि पु [दे] कुक्कुट, मुर्गा (दे ८, २८)।

सिहिअ वि [स्पृहित] अभिलषित (कुमा)।

सिहिण पुन [दे] स्तन, थन (दे ८, ३१; सुर १, ६०; पात्र, षड्; रंभा; सुपा ३२; भवि, हम्मीर ५०, सम्मत्त १६०)।

सिहिणी स्त्री [शिखिनी] छन्द-विशेष (पिंग)।

सिही (अप) स्त्री [शिखी] छन्द-विशेष (पिंग)।

सी (अप) स्त्री [श्री] छन्द-विशेष (पिंग)। देखो सिरी।

सीअ अक [सद्] १ विषाद करना, खेद करना। २ थकना। ३ पीडित होना, दुःखी होना। ४ फलना, फल लगना। सीअइ, सीअति (पि ४८२, गा ८७४) जया सोवर्ष्णि सीयइ' (पिंड ८२), 'सीयंति य सव्वअंगाइं' (सुर १२, २)। वकृ. सीअंत (पात्र ५०७, सुपा ५१०, कुप्र ११८)।

सीअ न [दे] सिक्थक, मोम (दे ८, ३३)।

सीअ वि [स्वीय] स्वकीय, निज का, 'सीयनेयलेस्सापडिसाहरणट्ठयाए', 'सीओसिणा तेयलेस्सा' (भग १५—पत्र ६६६)।

सीअ देखो सिअ = सित, 'सीआसीअ (प्राप्र)।

सीअ पुन [शीत] १ स्पर्श-विशेष, ठंढा स्पर्श (ठा १—पत्र २५, पव ८६)। २ हिम, तुहिन (से ३, ४७)। ३ शीत काल (राज)। ४ ठंढ, जाडा (ठा ४, ४—पत्र २८७, औप, गउड, उत्त २, ६)। ५ कर्म-विशेष, शीत स्पर्श का कारण-भूत कर्म (कम्म १, ४१, ४२)। ६ वि. शीतल, ठंढा (भग, औप, णाया १, १ टी—पत्र ४)। ७ पु. प्रथम नरक का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ४)। ८ न तप-विशेष, आयंबिल तप (संबोध ५८)। ९ वि. अनुकूल (सूअ १, २, २, २२)। १० न सुख (आचा)। °घर न [°गृह] चक्रवर्ती का वर्धकि-निर्मित वह घर, जहाँ सर्व ऋतु में स्पर्श की अनुकूलता होती है (वव ३)। °च्छाय वि [°च्छाय] शीतल छायावाला (औप, णाया १, १ टी—पत्र ४)। °परीसह पु [°परीषह] शीत को सहना (उत्त २, १)। °फास पु [°स्पर्श] ठंढ, जाडा, सर्दी (आचा)। °सोआ स्त्री [°श्रोता, स्रोता] नदी-विशेष (इक, ठा ३, ४—पत्र १६१)। °ालोअअ पु [°ालोकक] १ चन्द्रमा। २ शीतकाल, हिम-ऋतु (से ३, ४७)।

सीअ° देखो सीआ = शीता। °प्पवाय पु [°प्रपात] द्रह-विशेष, जहाँ शीता नदी पहाड पर से गिरती है (ठा २, ३—पत्र ७२)।

सीअ° देखो सीआ = सीता (कुमा)।

सीअउरय पु [दे शीतोरस्क] गुल्म-विशेष, 'पत्तउरसीयउरए हवइ तह जवासए य बोधव्वे' (पण्ण १—पत्र ३२)।

सीअण न [सदन] हैरानी (सम्मत्त १६६)।

सीअणय न [दे] १ दुग्ध-पात्री, दूध दोहने का पात्र। २ श्मशान, मसान (दे ८, ५५)।

सीअर पुं [शीकर] १ पवन से क्षिप्त जल, फुहार जल-कण (हे १, १८४, गउड, कुमा, मण)। २ वायु, पवन (हे १, १८४, प्राकृ ८४)।

सीअरि वि [शीकरिन्] शीकर-युक्त (गउड)।

सीअल पुं [शीतल] १ वर्तमान अवसर्पिणी काल के दसवें जिन-देव (सम ४३, पडि)। २ कृष्ण पुद्गल-विशेष (सुज्ज २०)। ३ वि. ठंढा (हे ३, १० कुमा, गउड, रयण ५७)।

सीअलिया स्त्री [शीतलिका] १ ठंढी, शीतला, 'सीयलियं तेअलेस्सं निसिरामि' (भग १५—पत्र ६६६)। २ लूता-विशेष (राज)।

सीअल्लि पुस्त्री [दे] १ हिमकाल का दुर्दिन। २ वृक्ष-विशेष (दे ८, ५५)।

सीआ स्त्री [शीता] १ एक महा-नदी (सम २७, १०२, इक)। २ ईषत्प्राग्भारा-नामक पृथिवी, सिद्ध-शिला (इक)। ३ शीताप्रपात द्रह की अधिष्ठात्री देवी (ज ४)। ४ नील पर्वत का एक शिखर। ५ माल्यवत् पर्वत का एक कूट (इक)। ६ पश्चिम रुचक पर रहनेवाली दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६)। °मुह न [°मुख] एक वन (जं ४)।

सीआ स्त्री [सीता] १ जनक-सुता, राम-पत्नी (पउम ३८, ५६)। २ चतुर्थ वासुदेव की माता का नाम (पउम २०, १८४, सम १५२)। ३ लाङ्गल-पद्धति खेत मे हल चलाने से होती भूमि-रेखा (दे २, १०४)। ४ ईषत्प्राग्भारा नामक पृथिवी (उत्त ३६, ६२, चेइय ७०५)। ५-६ नील तथा माल्यवत् पर्वतों के शिखर-विशेष (इक)। ७ एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८)।

सीआ देखो सिबिया (कप्प, औप, सम १५१)।

सीआण देखो मसाण = श्मशान (हे २, ८६, वव ७)।

सीआर देखो सिक्कार (णाया १, १—पत्र ६३)।

सीआल स्त्री [सप्तचत्वारिंशत्] सैंतालीस, ४७, (कम्म ६, २१)।

सीआलीस स्त्रीन. ऊपर देखो (पि ४४५, ४४८)। स्त्री °सा (सुज्ज २, ३—पत्र ५१)।

सीआव सक [सादय्] शिथिल करना, 'सीयावेइ विहारं' (गच्छ १, २३)।

सीइआ स्त्री [दे] झडी, निरन्तर वृष्टि (दे ८, ३४)।

सीइय वि [सन्न] खिन्न, परिश्रान्त (स ८५)।

सीई स्त्री [दे] सीढी, निःश्रेणि (पिंड ६८)।

सीउग्गय वि [दे] सुजात (दे ८, ३४)।

सीउट्ट न [दे] हिम-काल का दुर्दिन (षड्)।

सीउण्ह न [शीतोष्ण] १ ठंढा तथा गरम। २ अनुकूल तथा प्रतिकूल (सूअ १, २, २, २२, पि १३३)।

सीउल्ल देखो सीउट्ट (षड्)।

सीओअ° देखो सीओआ। °प्पवाय पुं [°प्रपात] कुण्ड-विशेष, जहाँ शीतोदा नदी पहाड से गिरती है (ज ४—पत्र ३०७)। °दीव पु [°द्वीप] द्वीप-विशेष (ज ४—पत्र ३०७)।

सीओआ स्त्री [शीतोदा] १ एक महा-नदी (ठा २, ३—पत्र ७२, इक, सम २७, १०२)। २ निषध पर्वत का एक कूट (ठा ९—पत्र ४५४)।

सीकोत्तरी स्त्री [दे] नारी, स्त्री, महिला (सिरि ३६०)।

सुपवित्त वि [सुपवित्र] अत्यन्त विशुद्ध (सुपा ३५४)।

सुपवित्तिय [सुपवित्रित] अत्यन्त पवित्र किया हुआ (सुपा ३)।

सुपव्व पुं [सुपर्वन्] १ देव। २ न. सुन्दर पर्व (कुप्र ४०)।

सुपसाइअ वि [सुप्रसादित] अच्छी तरह प्रसन्न किया हुआ (रंभा)।

सुपसिद्ध वि [सुप्रसिद्ध] अति विख्यात (गि)।

सुपस्स वि [सुदर्श] सुख से देखने योग्य (ठा ४, ३—पत्र २५२, ५, १—पत्र २६६)।

सुपह पुं [सुपथ] शुभ मार्ग (उव, सुपा ३७७)।

सुपहाय न [सुप्रभात] माङ्गलिक प्रात काल (हे २, २०४)।

सुपावय वि [सुपापक] अतिशय पापी (उत्त १२, १४)।

सुपास पुं [सुपार्श्व] १ भारतवर्ष में उत्पन्न सातवें जिन भगवान् (सम ४३, कप्प, सुपा २)। २ भगवान् महावीर के पिता का भाई (ठा ६—पत्र ४५५, विचार ४७८)। ३ एक कुलकर पुरुष का नाम (सम १५०)। ४ भारतवर्ष के भावी तीसरे जिनदेव (सम १५३)। ५ ऐरवत क्षेत्र में उत्पन्न एक जिन-देव (सम १५३)। ६ ऐरवत क्षेत्र में आगामि उत्सर्पिणी-काल में होनेवाले अठारहवें जिनदेव (सम १५४, पव ७)। ७ भारतवर्ष के भावी दूसरे जिनदेव का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५४)।

सुपासा स्त्री [सुपार्श्वा] एक जैन साध्वी (ठा ६—पत्र ४५७)।

सुपीअ पुं [सुपीत] अहोरात्र का पाँचवा मुहूर्त (सम ५१)।

सुपुंख पुंन [सुपुङ्ख] एक देव विमान (सम २२)।

सुपुंड पुंन [सुपुण्ड्र] एक देव-विमान (सम २२)।

सुपुप्फ पुंन [सुपुष्प] एक देव-विमान (सम ३८)।

सुपुरिस पुं [सुपुरुष] सज्जन, साधु पुरुष (हे २, १८४, गउड, प्रासू ३)।

सुपेसल वि [सुपेशल] अति मनोहर (उत्त १२, १३)।

सुप्प अक [स्वप्] सोना। सुप्पइ (हे २, १७९)।

सुप्प पुंन [सूर्प] सूप छाज सिरकी का बना एक पात्र जिससे अन्न पछोरा जाता है (उवा, पण्ह १, १—पत्र ८)। °णह वि [°नख] सूप के जैसे नखवाला (णाया १, ८—पत्र १३३)। °ण, °णही स्त्री [°नखी] रावण की बहिन का नाम (प्राकृ ४२)।

सुप्पइट्ठ देखो सुपइट्ठ (राज)।

सुप्पइट्ठिय देखो सुपइट्ठिय (राज)।

सुप्पइण्णा } स्त्री [सुप्रतिज्ञा] दक्षिण रुचक
सुप्पइन्ना } पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (राज इक)।

सुप्पइत्तिय न शीतहारक वस्त्र-विशेष (भव० वृ० पत्र ३६५, श्रा ८०, ४६)।

सुप्पउज्जल वि [सुप्राञ्जल] अत्यन्त ऋजु—सीधा (कप्पू)।

सुप्पडिआणंद वि [सुप्रत्यानन्द] उपकृत पुरुष के किये हुए उपकार को माननेवाला (ठा ४, ३—पत्र २४८)।

सुप्पडिआर न [सुप्रतिकार] उपकार का बदला, प्रत्युपकार (ठा ३, १—पत्र ११७)।

सुप्पडिबुद्ध देखो सुपडिबुद्ध (राज)।

सुप्पडिलग्ग वि [सुप्रतिलग्न] अच्छी तरह लगा हुआ, अवलम्बित (सुपा ५६१)।

सुप्पणिहाण न [सुप्रणिधान] शुभ ध्यान (ठा ३, १—पत्र १२१)।

सुप्पणिहिय देखो सुपणिहिय (पण्ह २, १—पत्र १०१)।

सुप्पन्न वि [सुप्रज्ञ] सुन्दर बुद्धिवाला (सूअ १, ६, ३३)।

सुप्पबुद्ध पुंन [सुप्रबुद्ध] एक ग्रैवेयक-विमान (देवेन्द्र १३६, पत्र १६४)।

सुप्पबुद्धा स्त्री [सुप्रबुद्धा] दक्षिण रुचकपर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६, इक)।

सुप्पभ पुं [सुप्रभ] वर्तमान अवसर्पिणी-काल में उत्पन्न चतुर्थ बलदेव (सम ७१)। २ आगामी उत्सर्पिणी में होनेवाला चौथा बल-देव (सम १५४)। ३ भारतवर्ष का भावी तीसरा कुलकर पुरुष (सम १५३)। ४ हरि-कान्त तथा हरिसह नामक इन्द्रो के एक-एक लोकपाल का नाम (ठा ४, १—पत्र १६७, इक)। ५ पुन एक देव-विमान (देवेन्द्र १४१)। °कंत पुं [°कान्त] हरिकान्त तथा हरिसह नामक इन्द्रो के एक एक लोकपाल का नाम (ठा ४, १—पत्र १६७)।

सुप्पभा स्त्री [सुप्रभा] १ तीसरे बलदेव की माता (सम १५२)। २ धरण आदि दाक्षिण-श्रेणि के कई इन्द्रो के लोकपालो की एक-एक अग्रमहिषी का नाम (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ धनवाहन नामक विद्याधर-नरेश की पत्नी (पउम ५, १४८)। ४ भगवान् अजितनाथ की दीक्षा-शिबिका (विचार १२६, सम १५१)।

सुप्पभूय वि [सुप्रभूत] अति प्रचुर (पउम ५५, ३६)।

सुप्पमत्त } वि [सुप्रमत्त] अत्यन्त प्रमाद
सुप्पमत्त } युक्त (नाट—मालती १६१, भवि)।

सुप्पसार वि [सुप्रसार्य] सुख से पसारने योग्य (सुख २, २६)।

सुप्पसारिय वि [सुप्रसारित] अच्छी तरह पसारा हुआ (औप)।

सुप्पसिद्ध देखो सुपसिद्ध (सम १५१, पि ३५०)।

सुप्पसूय वि [सुप्रसूत] सम्यग् उत्पन्न (औप)।

सुप्पहूय (अप) देखो सुप्पभूय (भवि)।

सुप्पाडोस पुं [दे] अच्छा पड़ोस (श्रा २७)।

सुप्पिय वि [सुप्रिय] अत्यन्त प्रिय (उत्त ११, ८, सुपा ४६५)।

सुप्पुरिस देखो सुपुरिस (रयण २४)।

सुफणि स्त्रीन [सुफणि] जिसमें तक्र आदि उबाला जाय ऐसा बटुवा आदि पात्र (सूअ १, ४, २, १०)।

सुबंधु पुं [सुबन्धु] १ दूसरे बलदेव का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५३)। २ भारतवर्ष का भावी सातवां कुलकर (सम १५३)।

सुबंभ पुंन [सुब्रह्मन्] एक देव-विमान (सम १६)।

सीस सक [शिष्] १ वध करना, हिंसा करना। २ शेष करना, बाकी रखना। ३ विशेष करना। सीसइ (हे ४, २३६, षड्)।

सीस सक [कथय्] कहना। सीसइ (हे ४, २, भवि)।

सीस न [सीस] धातु विशेष, सीसा (दे २, २७)।

सीस देखो सिस्स = शिष्य (हे १, ४३, कुमा, द ४७, णाया १, ५—पत्र १०३)।

सीस पुन [शीर्ष] १ मस्तक, माथा (स्वप्न ६०, प्रासू ३)। २ स्तबक, गुच्छा (आचा २, १, ८, ६)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)। °अ न [°क] शिरस्त्राण (वेणी ११०)। °घडी स्त्री [°घटी] सिर की हड्डी (तदु ३८)। °पकंपिअ न [°प्रकम्पित] सख्या-विशेष, महालता को चौरासी लाख से गुनने पर जो सख्या लब्ध हो वह (इक)। °पहेलिअ स्त्रीन [°प्रहेलिक] सख्या-विशेष, शीर्षप्रहेलिकाग को चौरासी लाख से गुनने पर जो सख्या लब्ध हो वह (इक)। स्त्री. °आ (ठा २, ४—पत्र ८६, सम ६०, अणु ६६)। °पहेलियग न [प्रहेलिकाङ्ग] सख्या-विशेष, चूलिका को चौरासी लाख से गुनने पर जो सख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४—पत्र ८६, अणु ६६)। °पूरग, °पूरय पुं [°पूरक] मस्तक का आभरण (राज, तदु ४१)। °रूपक, °रूअ (अप)। पुन [°रूपक] छन्द-विशेष (पिंग)। °विढ पु [°विष्ट] गोले चमडे आदि से मस्तक को लपेटना (सम ५०)।

सीस° देखो सास = शास्।

सीसक्क न [दे. शीर्षक] शिरस्त्राण, मस्तक का कवच (दे ८, ३४, से १५, ३०)।

सीसम पु न [दे] सीसम का गाछ, शिशपा (उप १०३१ टी)।

सीसय वि [दे] प्रवर, श्रेष्ठ (दे ८, ३४)।

सीसय न [सीसक] देखो सीस = सीस (महा)।

सीसवा स्त्री [शिंशपा] सीसम का गाछ (पण्ण १—पत्र ३१)।

सीह देखो सिग्घ = शीघ्र (राज)।

सीह पुं [सिंह] १ श्वापद जन्तु-विशेष, केसरी, मृग-राज (पण्ह १, १—पत्र ७, प्रासू ५१, १७१)। २ वृक्ष-विशेष, सहिजने का पेड (हे १, १४४, प्राप्र)। ३ राशि-विशेष, मेष से पाँचवी राशि (विचार १०६)। ४ एक अनुत्तर देवलोक गामी जैन मुनि (अनु २)। ५ एक जैन मुनि, जो आर्य-धर्म के शिष्य थे (कप्प)। ६ भगवान् महावीर का शिष्य एक मुनि (भग १५—पत्र ६८५)। ७ एक विद्याधर सामन्त राजा (पउम ८, १३२)। ८ एक श्रेष्ठि-पुत्र (सुपा ५०६)। ६ एक देव-विमान (सम ३३, देवेन्द्र १४०)। १० एक जैन आचार्य, जो रेवतीनक्षत्र नामक आचार्य के शिष्य थे (णदि ५१)। ११ छन्द-विशेष (पिंग) °उर न [°पुर] नगर-विशेष (सण)। °कन्त पुन [°कान्त] एक देव-विमान (सम ३३)। °कडि पु [°कटि] रावण का एक योद्धा (पउम ५६, २७)। °कण्ण पु [°कर्ण] एक अन्तर्द्वीप (इक)। °कण्णी स्त्री [°कर्णी] कन्द-विशेष (उत्त ३६, १००)। °केसर पु [°केसर] १ आस्तरण-विशेष, जटिल कम्बल (णाया १, १—पत्र १३)। २ मोदक-विशेष (अत ६, पिंड ४८२)। °गइ पु [°गति] अमितगति तथा अमितवाहन नामक इन्द्र का एक-एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६८)। °गिरि पुं [°गिरि] एक प्रसिद्ध जैन महर्षि (उव, उप १४२ टी, पडि)। °गुहा स्त्री [°गुहा] एक चोर-पल्ली (णाया १, १८—पत्र २३६)। °चूड पुं [°चूड] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, ४३)। °जस पु [°यशस्] भरत चक्रवर्ती का एक पौत्र (पउम ५, ३)। °णाय पुं [°नाद] सिंहगर्जन, सिंह की गर्जना के तुल्य आवाज (भग)। °णिक्कीलिय न [°निक्रीडित] १ सिंह की गति। २ तप-विशेष (अत २८)। °णिसाइ देखो °निसाइ (राज)। °दुवार न [°द्वार] राज-द्वार, राज-प्रासाद का मुख्य दरवाजा (कुप्र ११६)। °द्धय पु [°ध्वज] १ विद्याधरवश का एक राजा (पउम ५, ४३)। २ हरिषेण चक्रवर्ती के पिता का नाम (पउम ८, १४४)। °नाय देखो °णाय (पण्ह १, ३—पत्र ४५)। °निक्कीलिय, °... देखो °णिक्कीलिय (पव २७१, णाया १, ८—पत्र १२२)। °निस... [°निषादिन्] सिंह की तरह बै... (सुज्ज १०, ८ टी)। °नि... [°निषद्या] भरत चक्रवर्ती द्वारा ... पर बनवाया हुआ जैन मन्दिर (ती... °पुच्छ न [°पुच्छ] पृष्ठ वर्ध्र, चमडी (सूत्रनि ७७)। °पुच्छण न [°पुच्छन] पुरुष चिह्न का तोडना, त्रोटन (पण्ह २, ५—पत्र १५१)। °पुच्छिय वि [°पुच्छित] १ जिसका पुरुष-चिह्न दिया गया हो वह। २ जिसको ... से लेकर पुत-प्रदेश—नितम्ब तक की उखाड कर सिंह के पुच्छ के तुल्य की वह (औप)। °पुरा, °पुरी स्त्री [°पुरी] नगरी-विशेष, विजय-क्षेत्र की एक ... (ठा २, ३—पत्र ८०, इक)। °मुह पु [°मुख] १ अन्तर्द्वीप-विशेष। २ उसमें रहनेवाली मनुष्य-जाति (ठा ४, २—पत्र २२६, इक)। °रव पु [°रव] सिंह-गर्जना, सिंह-नाद, सिंह की तरह आवाज (पउम ४४, ३५)। °रह पु [°रथ] गन्धार देश के पुड्र-वर्धन नगर का एक राजा (महा)। °वाह पु [°वाह] विद्याधर-वश का एक राजा (पउम ५, ४३)। °वाहण पुं [°वाहन] राक्षस-वश का एक राजा (पउम ५, २६३)। °वाहणा स्त्री [°वाहना] अम्बिका देवी (राज)। °विक्कमगइ पुं [°विक्रमगति] अमितगति तथा अमितवाहन नामक इन्द्र का एक-एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १९८, इक)। °वीअ पुंन [°वीत] एक देव-विमान (सम ३३)। °सेण पु [°सेन] चौदहवें जिनदेव का पिता, एक राजा (सम १५१)। २ भगवान् अजितनाथ का एक गणधर (सम १५२)। ३ राजा श्रेणिक का एक पुत्र (अनु २)। ४ राजा महासेन का एक पुत्र (विपा १, ६—पत्र ८६)। ५ ऐरवत क्षेत्र में उत्पन्न एक जिनदेव (राज)। °सोआ स्त्री [°स्रोता] एक नदी (ठा २, ३—पत्र ८०)। °विलोइअ न [°विलोकित] सिंहावलोकन, सिंह की तरह चलते हुए पीछे की तरफ

सुमण } न [सुमनस्] १ पुष्प, फूल (हे १, ३२, सुपा ८६)। २ पुं. देव, सुर (सुपा ८६, ३३४)। ३ वि. सुन्दर मनवाला, सज्जन (सुपा ३३४, पउम ३६, १३०, ७७ १७, रयण ३)। ४ हर्षवान्, आनन्दित, सुखी (ठा ३, २—पत्र १३०)। ५ पुन. एक देव-विमान (देवेन्द्र १३६)। °भद्द पुं [°भद्र] १ भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पाने वाला एक गृहस्थ (अंत १८)। २ आर्य संभूतिविजय के एक शिष्य, एक जैन मुनि (कप्प)।
सुमणस }

सुमणसा स्त्री [सुमनसा] वल्ली-विशेष (पराण १—पत्र ३३)।

सुमणा स्त्री [सुमनस्] १ भगवान् चन्द्रप्रभ की प्रथम शिष्या (सम १५२, पव ६)। २ भूतानन्द आदि इन्द्रों के एक-एक लोकपाल की एक-एक अग्र-महिषी का नाम (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत २५)। ४ एक जम्बू वृक्ष का नाम (इक)। ५ शक्र की पद्मा नामक इन्द्राणी की एक राजधानी (इक)। ६ मालती का फूल (स्वप्न ६१)।

सुमणो° देखो सुमण (उप पृ १८)।

सुमणोहर वि [सुमनोहर] अत्यन्त मनोहर (उप पृ १८)।

सुमर सक [स्मृ] याद करना। सुमरइ (हे ४, ७४)। भवि. सुमरिस्मसि (पि ५२२)। कर्म सुमरिज्जइ (हे ४, ४२६, पि ५३७)। वकृ सुमरंत (सुर ६ ६४, सुपा ४०८, पउम ७८, १६)। कवकृ सुमरिज्जंत (पउम ५ १८६, नाट—मालती ११०)। संकृ सुमरिअ, सुमरिऊण (कुमा, काल)। हेकृ सुमरिउं, सुमरित्तए (पि ४६५, ५७८)। कृ सुमरियव्व, सुमरेयव्व, सुमरणीअ (सुपा १५३, १८२, २१७, अभि १२०)।

सुमर पु [स्मर] कामदेव (नाट—चैत ८१)।

सुमरण पुन [स्मरण] याद, स्मृति (कुमा, हे ४, ४२६, वसु, प्राप, सुपा ७१, १५६, ३६७ नं ३-४)। स्त्री °णा (स ६७०, सुपा २२०)।

सुमराव सक [स्मारय्] याद दिलाना। वकृ सुमरावन (कुप्र ५६)।

सुमराविअ वि [स्मारित] याद कराया हुआ (सुर १४, ४८, २४३)।

सुमरिअ देखो सुमर=स्मृ।

सुमरिअ वि [स्मृत] याद किया हुआ (पाअ)।

सुमरुया स्त्री [सुमरुत्] भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पानेवाला राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत २५)।

सुमहुर वि [सुमधुर] अति मधुर (विपा १, ७—पत्र ७७)।

सुमाणस वि [सुमानस] प्रशस्त मनवाला, सज्जन (पउम १०२, २७)।

सुमाणुस पु [सुमानुष] सज्जन, उत्तम मनुष्य (सुपा २५६)।

सुमालि पु [सुमालिन्] एक राज-कुमार (पउम ६ २२०)।

सुमिण पुन [स्वप्न] १ स्वप्न, सपना (हे १, ४६, कुमा महा, पडि, सुर ३, ६१, ६७)। २ स्वप्न के फल को बतलानेवाला शास्त्र (स्वप्न ४६)। °पाढय वि [°पाठक] स्वप्न के फल बतानेवाले शास्त्रों का जानकार (णाया १, १—पत्र २०)। देखो सुविण।

सुमित्त पुं [सुमित्र] १ भगवान् मुनिसुव्रत-स्वामी का पिता—एक राजा (सम १५१)। २ द्वितीय चक्रवर्त्ती का पिता (सम १५२)। ३ चतुर्थ बलदेव के पूर्व जन्म का नाम (पउम २०, १६०)। ४ छठवें बलदेव के धर्मगुरु—एक जैन मुनि (पउम २०, २०५)। ५ एक वणिक् का नाम (उप ७२८ टी)। ६ अच्छा मित्र, 'सुमित्तो व्व जिणधम्मो' (सुपा २३४)। ७ भगवान् शान्तिनाथ को प्रथम भिक्षा देनेवाले एक गृहस्थ का नाम (सम १५१)।

सुमित्ता स्त्री [सुमित्रा] लक्ष्मण की माता और राजा दशरथ की एक पत्नी (पउम २५, ४)। °तणय पु [°तनय] लक्ष्मण (से ४, १५, १४, ३२)।

सुमित्ति पु [सौमित्रि] सुमित्रा का पुत्र—लक्ष्मण (पउम ४५, ३६)।

सुमुइय वि [सुमुदित] अति हर्षित (औप)।

सुमुखी देखो सुमुही (पिंग)।

सुमुणिअ वि [सुज्ञात] अच्छी तरह जाना हुआ (सुपा २८२)।

सुमुह पुं [सुमुख] १ भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पानेवाला एक राज-कुमार (अंत ३)। २ राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति (पउम ५, २६१)। ३ न छन्द-विशेष (अजि २०)।

सुमुही स्त्री [सुमुखी] छन्द-विशेष (पिंग)।

सुमेघा स्त्री [सुमेघा] ऊर्ध्व लोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७)।

सुमेरु पु [सुमेरु] मेरु पर्वत (पाअ, पउम ७५, ३८)।

सुमेहा देखो सुमेघा (इक)।

सुमेहा स्त्री [सुमेधा] सुन्दर बुद्धि (उप पृ ३६८)।

सुम्मत देखो सुण=श्रु।

सुम्ह पु व [सुह्म] देश-विशेष (हे २, ७४)।

सुर पु [सुर] १ देव, देवता (पण्ह १, ४—पत्र ६८, कप्प, जी ३३, कुमा)। २ एक राजा का नाम (उप ७६५)। °अण न [°वन] नन्दन-वन (से ६, ८६)। °अरु पु [°तरु] कल्प वृक्ष (नाट)। °करडि पु [°करटिन्] ऐरावण हाथी (सुपा १७६)। °करि पु [°करिन्] वही अर्थ (सुपा २६१)। °कुंभि पुं [°कुम्भिन्] वही (सुपा २०१)। °कुमर पु [°कुमार] भगवान् वासुपूज्य का शासन-यक्ष (पव २६)। °कुसुम न [°कुसुम] लवंग, लौंग (पि १४)। °गय पु [°गज] इन्द्र हस्ती, ऐरावण (पाअ, से २, २२)। °गिरि पु [°गिरि] मेरु पर्वत (सुपा २, ३१, ३७४ सण)। °गिह देखो °घर (उप ७६८ टी)। °गुरु पु [°गुरु] १ बृहस्पति (पाअ, सुपा १७६)। २ नास्तिक मत का प्रवर्तक एक आचार्य (मोह १०१)। °गोव पुं [°गोप] कीट-विशेष, इन्द्रगोप (णाया १, ६—पत्र १६०, पाअ)। °घर न [°गृह] १ देव-मन्दिर (कुप्र ४)। २ देव-विमान (सण)। °चमू स्त्री [°चमू] देव-सेना (सुपा ४५)। °चाव पु [°चाप] इन्द्र-धनुष (गा ५८५ ८०८, सुपा १२४)। °जाल न [°जाल] इन्द्रजाल (राज)। °णई स्त्री [°नदी] गंगा नदी (पाअ)। °णाह पु [°नाथ] इन्द्र (गा ८६४, दे)। °तरंगिणि

सुअरिअ न [सुचरित] सदाचार, सद्वर्तन (अभि २५३)।

सुअलंकिय वि [स्वलंकृत] अच्छी तरह विभूषित (णाया १, १—पत्र १९)।

सुआ स्त्री [सुता] पुत्री, लडकी (गा ६०२, ८६३ (कुमा)।

सुआ (शौ) अक [शी] शयन करना, सोना। सुआदि (प्राकृ ९४)।

सुआ स्त्री [स्रुच्] यज्ञ का उपकरण-विशेष, घी आदि डालने की कडछी या कलछी (उत्त १२, ४३, ४४)।

सुआइक्खय वि [स्वाख्येय] सुख से—अनायास से कहने योग्य (ठा ५, १—पत्र २९६)।

सुआउत्त वि [स्वायुक्त] अच्छी तरह ख्याल रखनेवाला (उव)।

सुइ पुं [शुचि] १ पवित्रता, निर्मलता, 'जिणधम्मठिया मुणिणो य वच्छ दीसति सुइरहिया' (सुपा १९६)। २ वि. श्वेत, सफेद (कुमा)। ३ पवित्र, निर्मल (औप, कप्प, आ १२, महा, कुमा)। ४ स्त्री शक्र की एक अग्र-महिषी (इक)।

सुइ स्त्री [श्रुति] १ श्रवण, आकर्णन, सुनना (उत्त ३, १, वनु, विसे १२५)। २ कर्ण, कान (गा ६४१, सुर ११, १७४, सम्मत्त ८४, सुपा ८९, २४७)। ३ वेद शास्त्र (पाअ; अच्चु ४, कुमा)। ४ शास्त्र, सिद्धान्त (सथा ७, प्रासू ४६)।

सुइ स्त्री [स्मृति] स्मरण (विपा १, २—पत्र ३४)।

सुइअ देखो सूइअ = सूचिक (दे १, ६६)।

सुइण देखो सुमिण (सुर ६, ८२, उप ७२८ टी, हे ४, ४०८)।

सुइदि स्त्री [सुकृति] १ पुण्य। २ मङ्गल, कल्याण। ३ सत्-कर्म (प्राप्र, पि २०४)।

सुइयाणिया स्त्री [दे सूतिकारिणी] सूति-कर्म करनेवाली स्त्री (सुपा ५७८)।

सुइर न [सुचिर] अत्यन्त दीर्घ काल, बहु काल (गा १३७, ४९०, सुपा १, १२७, महा)।

सुइल्ल देखो सुक्क = शुक्ल (हे २, १०६)।

सुइव्व वि [श्वस्तन] आगामी कल से संबन्ध रखनेवाला, कल होनेवाला (पिंड २४१)।

सुई स्त्री [दे] बुद्धि, मति (दे ८, ३६)।

सुई स्त्री [शुकी] शुक पक्षी की मादा, मैना (सुपा ३९०)।

सुउज्जुयार वि [सुऋजुकार] अतिशय सयम मे रहनेवाला, सुसयमी (सूअ १, १३, ७)।

सुउज्जुयार वि [सुऋजुचार] अतिशय सरल आचरणवाला (सूअ १, १३, ७)।

सुउमार } देखो सुकुमाल (स्वप्न ६०,
सुउमाल } कुमा)।

सुउरिस पु [सुपुरुष] सज्जन, भला आदमी (प्राप्र, हे १, ८ कुमा)।

सुए अ [श्वस्] आगामी कल (स ३६, वै ४१)।

सुंक न [शुल्क] १ मूल्य (णाया १, ८—पत्र १३४, विपा १, ६—पत्र ६३)। २ चुंगी, विक्रेय वस्तु पर लगता राज-कर (धम्म १२ टी, सुपा ४४७)। ३ वर-पक्ष के पास से कन्या पक्षवालो को लेने योग्य धन (विपा १, ९—पत्र ९४)। °ठाण न [°स्थान] चुंगी-घर (धम्म १२ टी)। °पालय वि [°पालक] चुंगी पर नियुक्त राज-पुरुष (सुपा ४४७)। देखो सुक्क = शुल्क।

सुंकअ } पुंन [दे] किशारु, धान्य आदि का
सुंक्ल } अग्र भाग (दे ८, ३८)।

सुंकलि पुंन [दे] तृण-विशेष (पराण १—पत्र ३३)।

सुंकविय वि [शुल्कित] जिसकी चुंगी दी गई हो वह (सुपा ४४७)।

सुंकाणिअ पु [दे] नाव का डाह खेनेवाला व्यक्ति, पतवार चलानेवाला (सिरि ३८५)।

सुंकार पु [सुत्कार] अव्यक्त शब्द विशेप (सुर २, ८, गउड)।

सुंकिअ वि [शौल्किक] शुल्क लेनेवाला, चुंगी पर नियुक्त पुरुष (उप पृ १२०)।

सुंख देखो सुक्ख = शुष्क (संक्षि १६)।

सुंग देखो सुंक = शुल्क (हे २, ११, कुमा)।

सुंगायण न [शौङ्गायन] गोत्र-विशेष (सुज्ज १०, १६)।

सुंघ सक [दे] सूँघना। वकृ. सुंघंत (सिरि ६२२)।

सुंघिअ वि [दे] घ्रात, सूँघा हुआ (दे ८, ३७)।

सुंचल न [दे] काला नमक, 'सुंठिसुंचलाईय' (कुप्र ४१४)।

सुंठ पुन [शुण्ठ] पर्व-वनस्पति विशेष (पराण १—पत्र ३३)।

सुंठय पुंन [शुण्ठक] भाजन-विशेष, 'मीरासु य सुठएसु य कंडूसु य पयडएसु य पयंति' (सूअनि ७६)।

सुंठी स्त्री [शुण्ठी] सूँठ या सोठ (पभा १५; कुप्र ४१४, पंचा ५, ३०)।

सुंड वि [शौण्ड] १ मत्त, मद्यप, दारू पीने-वाला (हे १, १६०, प्राकृ १०, संक्षि ६)। २ दक्ष, कुशल (कुमा)। देखो सोंड।

सुंडा देखो सोंडा (आचा २, १, ३, २, आवम)।

सुंडिअ पु [शौण्डिक] कलवार, दारू बेचने-वाला (प्राकृ १०, संक्षि ६)।

सुंडिआ स्त्री [शौण्डिका] मदिरा-पान मे आसक्ति (दस ५, २, ३८)।

सुंडिक देखो सुंडिअ (दे ६, ७५)।

सुंडिकिणी स्त्री [शौण्डिकी] कलवार की स्त्री (प्रयौ १०६)।

सुंडीर देखो सोंडीर (भवि)।

सुंद पुं [सुन्द] राजा रावण का एक भागि-नेय, खरदूषण का पुत्र (पउम ४३, १८)।

सुंदर वि [सुन्दर] १ मनोहर, चारु, शोभन (पराह १, ४, सुपा १२८, २९५, कप्पू, काप्र ४०८)। २ पुं एक सेठ का नाम (सुपा ६४३)। ३ तेरहवें जिनदेव का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५१)। ४ न तप-विशेष, तेला, तीन दिनो का लगातार उपवास (सबोध ५८)। °बाहु पु [°बाहु] सातवें जिनदेव का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५१)।

सुंदरिअ देखो सुंदेर (हे २, १०७)।

सुंदरिम पुंस्त्री देखो सुंदेर (कुप्र २२१)।

सुंदरी स्त्री [सुन्दरी] १ उत्तम स्त्री (प्रासू ५७, वि १८)। २ भगवान् ऋषभदेव की एक पुत्री (ठा ५, २—पत्र ३२६, सम ६०, पउम

विद्याधर नरेश (पउम ७, २६)। °दत्त पु [°दत्त] एक राज-कुमार (उप ६३६)।

सुरिंदय पु [सुरेन्द्रक] विमानेन्द्रक, देव-विमान-विशेष (देवेन्द्र १३७)।

सुरी स्त्री [सुरा] देवी (कुमा)

सुरुगा देखो सुरंगा (पउम ८, १५८)।

सुरुग्घ पु [स्रुघ्न] देश-विशेष (हे २ ११३, षड्)। °ज त्रि [°ज] देश विशेष में उत्पन्न (कुमा)।

सुरुट्ठ वि [सुरुष्ट] अत्यन्त रोष युक्त (पउम ६८, २५)।

सुरूया स्त्री [सुरूपा] एक इन्द्राणी (णाया २—पत्र २५२)। देखो सुरूवा।

सुरूव पु [सुरूप] १ भूत-निकाय के दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। २ न सुन्दर रूप। ३ त्रि सुन्दर रूपवाला (उवा, भग)।

सुरूवा स्त्री [सुरूपा] १ सुरूप तथा प्रतिरूप नामक भूतेन्द्रों की एक एक अग्र-महिषी (ठा ४, १—पत्र २०४)। २ भूतानन्द नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी (इक)। ३ एक दिशा-कुमारी देवी (ठा ४, १—पत्र १९८, ६—पत्र ३६१)। ४ एक कुलकर-पत्नी (सम १५०)। ५ सुन्दर रूपवाली (महा)।

सुरेस पु [सुरेश] १ देव पति, इन्द्र। २ उत्तम देव (सुपा ६१८)।

सुरेसर पुं [सुरेश्वर] इन्द्र, देव-राज (सुपा २७, कुप्र ४)।

सुलक्खणि वि [सुलक्षणिन्] उत्तम लक्षण-वाला (धर्मवि १४२)।

सुलग्ग वि [सुलग्न] अच्छी तरह लगा हुआ (महा)।

सुलद्ध वि [सुलब्ध] सम्यक् प्राप्त (णाया १, १—पत्र २४, उवा)।

सुलभ } वि [सुलभ] सुख से प्राप्त हो सके
सुलह } वह (श्रा १२, सुख २, १५, महा)।

सुलस पु [सुलस] पर्वत-विशेष (इक)।

सुलस न [दे] कुसुम्भ-रक्त वस्त्र (दे ८, ३७)।

सुलसमंजरी } स्त्री [दे] तुलसी (दे ८, ४०,
सुलसा } पाअ)।

सुलसा स्त्री [सुलसा] १ नववें जिनदेव की प्रथम शिष्या (सम १५२)। २ भगवान् महावीर की एक श्राविका, जिसका आत्मा आगामि काल में तीर्थंकर होगा (ठा ९—पत्र ४५५, सम १५४)। ३ नाग नामक गृहपति की स्त्री (अंत ४)। ४ शक्र की एक अग्र-महिषी, एक इन्द्राणी (पउम १०२, १५९)। ५ शंखपुर के राजा सुन्दर की पत्नी (महा)।

सुलह देखो सुलभ (स्वप्न ४८, महा, द ४६)।

सुलाह पु [सुलाभ] अच्छा नफा (सुपा ४४६)।

सुली स्त्री [दे] उल्का, आकाश से गिरनी आग (दे ८, ३६)।

सुलुसुल } अक [सुलसुलाय्] 'सुल' 'सुल'
सुलुसुलाअ } आवाज करना। सुलुसुलायइ (तंदु ४१)। वकृ. सुलुसुलिंत, सुलुसुलेंत (तंदु ४४, महा)।

सुलूह वि [सुरूक्ष] अत्यन्त लूखा—रूखा (सूअ १, १३, १२)।

सुलोअ देखो सिलोअ = श्लोक (अवि १६)।

सुलोयण पु [सुलोचन] एक विद्याधर-नरेश (पउम ५, ६६)।

सुलोल वि [सुलोल] अति चपल (कप्पू)।

सुल्ल न [शूल्य] शूला-प्रोत मांस (दे ८, ३६, पाअ)।

सुव अक [स्वप्] सोना। सुवइ, सुवति (हे १, ६४, षड्, महा, रंभा)। भवि. सुविस्स (पि ५२९)। वकृ. सुवत, सुवमाण (पाअ, से १, २१, भग)। संकृ. सुविऊण (कुप्र ५६)।

सुव देखो स = स्व (हे २, ११४, षड्, कुमा)।

सुव (अप) देखो सुअ = श्रुत, सुत (भवि)।

सुवंस पु [सुवंश] १ अच्छा वाँस। २ वि सुन्दर कुल में उत्पन्न, खानदानी (हे ४, ४१९)।

सुवग्गु पुं [सुवल्गु] एक विजय-क्षेत्र, जिसकी राजधानी खड्गपुरी है (ठा २, ३—पत्र ८०, इक)।

सुवच्छ पु [सुवत्स] १ व्यन्तर-देवों का एक इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। २ एक विजय-क्षेत्र, प्रान्त-विशेष, जिसकी राजधानी कुंडला नगरी है (ठा २, ३—पत्र ८०, इक)।

सुवच्छा स्त्री [सुवत्सा] १ अधोलोक में रहनेवाली एक दिशा-कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७)। २ सौमनस पर्वत पर रहनेवाली एक देवी (इक)।

सुवज्ज पुं [सुवज्र] १ एक विद्याधर-वंशीय राजा (पउम ५, १६)। २ पुन. एक देव-विमान (सम २५)।

सुवट्टिय वि [सुवर्तित] अतिशय गोल किया हुआ (राज)।

सुवण न [स्वपन] शयन (ओघ ८७, पचा १, ४५, उप ७६२)।

सुवण्ण पु [सुपर्ण] १ गरुड पक्षी (उत्त १४, ४७)। २ भवनपति देवों की एक जाति (औप)। ३ आदित्य, सूर्य (गउड)। °कुमार पु [°कुमार] भवनपति देवों की एक जाति (इक)।

सुवण्ण पु [दे] अर्जुन वृक्ष (दे ८, ३७)।

सुवण्ण न [सुवर्ण] १ सोना, हेम (उवा, महा, णाया १, १७, गउड)। २ पुं. भवन-पति देवों की एक जाति (भग)। ३ सोलह कर्म-मापक का एक बाँट (अणु १५५)। ४ सुन्दर वर्ण। ५ वि. सुन्दर वर्णवाला (भग)। °आर, °कार पुं [°कार] सोनी, सुनार (दे महा)। °कुंभ पुं [°कुम्भ] प्रथम बलदेव के धर्म-गुरु एक जैन मुनि (पउम २०, २०५)। °कुसुम न [°कुसुम] सुवर्ण-यूथिका लता का फूल (राय ३१)। °कूला स्त्री [°कूला] नदी-विशेष (सम २७, इक)। °गुलिया स्त्री [°गुलिका] एक दासी का नाम (महा)। °सिला स्त्री [°शिला] एक महौषधि (ती ५, राज)। °गर पुं [°कर] सोने की खान (णाया १, १७—पत्र २२८)। °र पु [°कार] सोनी (उप पृ ३५१)। देखो सुवन्न = सुवर्ण।

सुवण्णबिंदु पुं [दे] विष्णु (दे ८, ४०)।

सुवण्णिअ वि [सौवर्णिक] सुवर्ण-मय, सोने का बना हुआ (हे १, १६०, षड्, प्राकृ ३६)।

सुवत्त देखो सुव्वत्त (राज)।

सुक्काणय न [दे] जहाज के आगे का ऊँचा काष्ठ, गुजराती मे 'सुकान' (सिरि ४२४)।

सुक्काभ न [शुक्राभ] १ एक लोकान्तिक देव-विमान (पव २६७)। २ वैताढ्य पर्वत की दक्षिण श्रेणि मे स्थित एक विद्याधर-नगर (इक)।

सुक्किअ देखो सुकय (भवि)।

सुक्किअ देखो सुक्कीअ (राज)।

सुक्किल, सुक्किलय, सुक्किल्ल } देखो सुक्क = शुक्ल (भग, औप, हे २, १०६, पच ५ ३३, अणु १०६), 'मुत्तु सुक्किलवत्थं' (गच्छ २, ४६, कप्प, सम ४१ धर्मसं ४५४)। स्त्री. 'एगो सुक्किलियाणं एगो सवलाणं वग्गो कम्रो' (आक ७)।

सुक्कीअ वि [सुक्रीत] अच्छी तरह खरीदा हुआ 'सुक्कीअं वा सुविक्कीअं (दस ७, ४५)।

सुक्ख देखो सुक्क = शुष्। वकृ सुक्खत (गा ४१४, वज्जा १४६)।

सुक्ख देखो सुक्क = शुष्क (हे २, ५, गा २६३, मा ३१, उप ३२० टी)।

सुक्ख न [सौख्य] सुख (कप्प, कुमा, सार्ध ५१, प्रासू २८, १४५)।

सुक्खव देखो सुक्कव। कर्म सुक्खवीअति (पि ३५६, ५४३)।

सुक्खिअ वि [स्वाख्यात] अच्छी तरह कहा हुआ, प्रतिज्ञात, 'तओ सूइवइयरायपणे जं ते सुक्खियमासि वुद्धिलेण अद्धलक्खं, तन्निमित्त-मेसो पेसिओ चालीससाहस्सो हारो त्ति वोत्तु समप्पिउ च हारकरंडिय गओ दासचेडो' (महा)।

सुखम (पै) देखो सण्ह = सूक्ष्म, 'सुखमवसिो' (प्राकृ १२४)।

सुग देखो सुअ = शुक (उप ६७२, स ८६, उर ५, ७, कुप्र ४३८, कुमा)।

सुगइ स्त्री [सुगति] १ अच्छी गति (ठा ३, ३—पत्र १४६)। २ सन्मार्ग, अच्छा मार्ग (सूअनि ११५)। ३ वि अच्छी गति को प्राप्त (आवम)।

सुगध देखो सुअध (कप्प, कुमा, औप, सुर २, ५८)।

सुगंधा स्त्री [सुगन्धा] पश्चिम विदेह का एक विजयक्षेत्र (इक)।

सुगंधि देखो सुअंधि (औप)। °पुर न [°पुर] वैताढ्य की उत्तर श्रेणि मे स्थित एक विद्या-धर-नगर (इक)।

सुगण वि [सुगण] अच्छी तरह गिननेवाला (षड्)।

सुगम वि [सुगम] १ अल्प परिश्रम से जाया जा सके वैसा सुखगम्य (ओघभा ७५)। २ सुबोध (चेइय ३६३)।

सुगय वि [सुगत] १ अच्छी गतिवाला (ठा ४, १—पत्र २०२, कुप्र १००)। २ सुस्थ। ३ धनी। ४ गुणी (ठा ४, १—पत्र २०२, राज हे १, १७७)। ५ पुं. बुद्धदेव (पाअ, पव ६४)।

सुगय वि [सौगत] बुद्ध-भक्त, बौद्ध (सम्मत्त १२०)।

सुगर वि [सुकर] सुख-साध्य, अल्प परिश्रम से हो सके ऐसा (आचा १, ६, १, ८)।

सुगरिट्ठ वि [सुगरिष्ठ] अति बडा (श्रु १६)।

सुगिज्झ वि [सुग्राह्य] सुख से ग्रहण करने योग्य (पउम ३१, ५४)।

सुगिम्ह पु [सुग्रीष्म] १ चैत्र मास की पूर्णिमा (ठा ५, २—पत्र २१३)। २ फाल्गुन का उत्सव (दे ८, ३६)।

सुगिर वि [सुगिर] अच्छी वाणीवाला (षड्)।

सुगिहिय, सुगिहीय } वि [सुगृहीत] विख्यात, विश्रुत (स ६६, १३)।

सुगी देखो सुई = शुची (कुमा)।

सुगुत्त पु [सुगुप्त] एक मत्री का नाम (महा)।

सुगुरु पु [सुगुरु] उत्तम गुरु (कुमा)।

सुग्ग न [दे] १ आत्म-कुशल (दे ८, ५६, सण)। २ वि निर्विघ्न, विघ्न-रहित। ३ विसर्जित (दे ८, ५६)।

सुग्गइ देखो सुगइ (सुपा १६१, स ८१)।

सुग्गय देखो सुगय = सुगत (ठा ४, १—पत्र २०२)।

सुग्गाह अक [प्र + सृ] फैलना। सुग्गाहइ (धात्वा १५६)।

सुग्गीव पु [सुग्रीव] १ नागकुमार देवों के इन्द्र भूतानन्द के अश्व-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०२)। २ भारतवर्ष में होनेवाला नववाँ प्रतिवासुदेव राजा (सम १५४)। ३ राक्षस-वंश का एक राजा, एक लङ्का-पति (पउम ५, २६०)। ४ नववें जिनदेव के पिता का नाम (सम १५१)। ५ राजा वालि का छोटा भाई (पउम ६, ६, से १, ४६ १४ ३६)। ६ एक राजा का नाम (सुर २ २०४)। ७ न नगर-विशेष (उत्त १६, १)।

सुघ (अप) देखो सुह = सुख (हे ४ ३९६)।

सुघट्ठ वि [सुघृष्ट] अच्छी तरह घिसा हुआ (राय ८० टी)।

सुघरा स्त्री [सुगृहा] मादा-पक्षी की एक जाति जो अपना घोसला खूब सुन्दर बनाती है (आव १)।

सुघोस पु [सुघोष] १ एक कुलकर-पुरुष (सम १५०)। २ एक पुरोहित का नाम (उप ७२८ टी)। ३ पुन सनत्कुमार देवलोक का एक विमान (सम १२)। ४ लान्तक नामक देवलोक का एक विमान (सम १७)। ५ वि सुन्दर आवाजवाला (जीव ३, १, भवि)। ६ एक नगर का नाम (विपा २, ८)।

सुघोसा स्त्री [सुघोषा] १ गीतरति नामक गन्धर्वेन्द्र की एक पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४)। २ गीतयशनामक गन्धर्व की एक पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ सुधर्मेन्द्र की प्रसिद्ध घंटा (पण्ह २, ५—पत्र १४६, सुपा ४५)। ४ वाद्य-विशेष (राय ४६)।

सुचन्द पु [सुचन्द्र] ऐरवत वर्ष मे उत्पन्न दूसरे जिन देव (सम १५३)।

सुचरिअ न [सुचरित] १ सदाचरण, सदा-चार (कप्प, गउड)। २ वि. सदाचरण सपन्न (गउड)। ३ अच्छी तरह आचरित (पउम ७५, १८, गाया १, १६—पत्र २०५)।

सुचिण्ण, सुचिन्न } वि [सुचीर्ण] १ सम्यग् आच-रित, 'तवसजमो सुचिण्णोवि' (पउम ६, ६१ ६४, ३२, ठा ४, २—पत्र २१०)। २ न पुण्य (औप, उत्ता)।

सुचिर न [सुचिर] अत्यन्त चिर काल, सुदीर्घ काल (सुपा २७, महा, प्रासू ३२)।

सुवो देखो सुवे (पड्, प्राप)।

सुव्व न [शुल्व] १ ताँबा, ताम्र (ती २)। २ रज्जु रस्सी। ३ जल समीप। ४ आचार। ५ यज्ञ का कार्य (हे २, ७९)।

सुव्वत देखो सुण।

सुव्वत देखो सुव्वर (ठा २, ३—पत्र ७८)।

सुव्वत्त वि [सुव्यक्त] स्फुट, सुस्पष्ट (श्रत २०, औप, नाट—मृच्छ २८)।

सुव्वमाण देखो सुण।

सुव्वय पु [सुव्रत] १ भारतवर्ष मे उत्पन्न बीसवें जिनदेव, मुनिसुव्रत स्वामी (ती ८, पव ३५)। २ ऐरवत वर्ष के एक भावी जिनदेव (सम १५४)। ३ छठवें जिनदेव के गणधर (१५२)। ४ एक जैन मुनि जो तीसरे बलदेव के पूर्व जन्म मे गुरु थे (पउम २०, १९२)। ५ आठवें बलदेव के धर्म गुरु (पउम २०, २०६)। ६ भगवान् पार्श्वनाथ का मुख्य श्रावक (कप्प)। ७ एक ज्योतिष्क महा-ग्रह (राज)। ८ एक दिवस का नाम (आचा २ १५, ५, कप्प)। ९ न एक गोत्र (कप्प)। १० वि सुन्दर व्रतवाला (पव ३५)। °ग्गि पु [°ग्नि] एक दिवस का नाम (कप्प)।

सुव्वया स्त्री [सुव्रता] १ भगवान् धर्मनाथ की माता (सम १५१)। २ एक जैन साध्वी (सुर १५, २४७, महा)।

सुव्विआ स्त्री [दे] अम्बा, माता (दे ८, ३८)।

सुस देखो सूस, 'सुसइ व पकं न वहति निज्झरा वरहिणो न नच्चति' (वज्जा १३४, भवि)। कृ सुसियव्व (सुर ४, २२९)।

सुसगद वि [सुसगत] अति-संबद्ध (प्राकृ १२)।

सुसु ामिअ वि [सुसयमित] अति-नियन्त्रित (दे)।

सुसढिआ स्त्री [दे] शूला-प्रोत मांस (दे ८, ३९)।

सुस ाय वि [सुसरम] अति सुन्दर, 'अहो जणा कुणह नव मुसतय' (पउम ९८, ५६)।

सुसंनिविट्ठ वि [सुसनिविष्ट] अच्छी तरह स्थित (सुपा १३३)।

सुसंपरिग्गहिय वि [सुसंपरिगृहीत] खूब अच्छी तरह ग्रहण किया हुआ (राय ६३)।

सुसंपिणद्ध वि [सुसपिनद्ध] खूब अच्छी तरह बँधा हुआ (राय)।

सुसभत वि [सुसंभ्रान्त] अतिशय व्याकुल (उत्त २०, १३)।

सुसंसिअ वि [सुसंभृत] अच्छी तरह सस्कृत (स १८९, उप ६४८ टी)।

सुसमय वि [सुसमत] अच्छी तरह समति-युक्त (सुर १०, ८२)।

सुसवुअ } वि [सुसवृत] १ परिगत,
सुसवुड } व्याप्त। २ अच्छी तरह पहना हुआ (णाया १, १—पत्र १९, पि २१९)। ३ जितेन्द्रिय। ४ रुका हुआ (उत्त २, ४२)।

सुसंहय वि [सुसहत] अतिशय सश्लिष्ट (औप)।

सुसज्ज वि [सुसज्ज] अच्छी तरह तय्यार (सुपा २११)।

सुसण्णप्प देखो सुसन्नप्प (राज)।

सुसद्द वि [सुशब्द] १ सुन्दर आवाजवाला। २ प्रसिद्ध, विख्यात (सुपा ५६९)।

सुसन्नप्प वि [सुसंज्ञाप्य] सुख-बोध्य (कम)।

सुसमत्थ वि [सुसमर्थ] सुशक्त, अतिशय सामर्थ्यवाला (सुर १, २३२)।

सुसमदुस्समा } स्त्री [सुषमदुष्षमा] काल-
सुसमदूसमा } विशेष, अवसर्पिणी-काल का तीसरा और उत्सर्पिणी का चौथा आरा (इक, ठा २, ३—पत्र ७९)।

सुसमसुसमा स्त्री [सुषमसुषमा] काल-विशेष, अवसर्पिणी का पहला और उत्सर्पिणी का छठवाँ आरा (इक, ठा १—पत्र २७)।

सुसमा स्त्री [सुषमा] १ काल-विशेष अवसर्पिणी का दूसरा और उत्सर्पिणी का पाँचवा आरा (ठा २, ३—पत्र ७९, इक)। २ छन्द विशेष (पिंग)।

सुसमाहर सक [सुसमा + हृ] अच्छी तरह ग्रहण करना। सुसमाहरे (सूअ १, ८, २०)।

सुसमाहिअ वि [सुसमाहित] अच्छी तरह समाधिसपन्न (दस ५, १, ६, उत्त २०, ४)।

सुसमिद्ध वि [सुसमृद्ध] अत्यन्त समृद्ध (नाट—मृच्छ १५९)।

सुसर पुंन [सुस्वर] १ एक देव-विमान (सम १७)। २ न. नामकर्म का एक भेद, जिसके उदय से सुन्दर स्वर की प्राप्ति हो वह कर्म (सम ६७, कम्म १, २६, ५१)। देखो सुस्सर, सुस्सर।

सुसा स्त्री [स्वसृ] वहिन, भगिनी (सूअ १, ३, १, १ टी)।

सुसा देखो सुण्हा = स्नुषा (कुमा)।

सुसागय न [सुस्वागत] सुन्दर स्वागत (भग)।

सुसागर पुन [सुसागर] एक देव विमान (सम २)।

सुसाण न [श्मशान] मुर्दाघाट, मरघट (णाया १, २—पत्र ७९, हे २, ८६, स ५९७, श्रा १४, महा)।

सुसामण्ण न [सुश्रामण्य] अच्छा साधुपन (उवा)।

सुसाउ वि [सुस्वादु] स्वादिष्ठ, सुन्दर स्वाद-वाला (पउम ८२, ९९, १०२, १२२)।

सुसाल पुन [सुशाल] एक देव-विमान (सम ३५)।

सुसावग } पु [सुश्रावक] अच्छा श्रावक—
सुसावय } जैन गृहस्थ (कुमा, पडि, द्र २१)।

सुसाहय देखो सुसहय (पण्ह १, ४—पत्र ७९)।

सुसाहु पु [सुसाधु] उत्तम मुनि (पण्ह २, १—पत्र १०१, उव)।

सुसिअ वि [शुष्क] सूखा हुआ (सुपा २०४, कुप्र १३)।

सुसिअ वि [शोषित] सुखाया हुआ (महा; वज्जा १५०, कुप्र १३)।

सुसिक्खिअ वि [सुशिक्षित] अच्छी तरह शिक्षा को प्राप्त (मा २०)।

सुसिणिद्ध वि [सुस्निग्ध] अत्यन्त स्नेह-युक्त (सुर ४, १९९)।

सुसित्थ देखो सुत्थ = सौस्थ्य (सक्षि १२)।

सुसिन्न वि [सुशीर्ण] अति सडा हुआ (सुपा ४९९)।

सुसिर वि [शुषिर] १ पोला, खाली। छूँछा (उप ७२८ टी, कुप्र १९२)। २ पुन. एक देव-विमान (सम ३७)।

की पटरानी—तीसरा स्त्री-रत्न (सम १५२, महा)। ३ भूतानन्द आदि इन्द्रो के लोकपालो की अग्रमहिषियो के नाम (ठा ४, १—पत्र २०४ टी)।

सुणक्खत्त पु [सुनक्षत्र] १ एक जैन मुनि (अनु २)। २ भगवान् महावीर का शिष्य एक मुनि (भग १५—पत्र ६७८)।

सुणक्खत्ता स्त्री [सुनक्षत्रा] पक्ष की दूसरी रात (सुज्ज १, १४)।

सुणग देखो सुणय (आचा, पि २०६)।

सुणण न [श्रवण] सुनना (स ५३)।

सुणय, सुणह पुस्त्री [शुनक] १ कुक्कुर, कुत्ता (हे १, ५२, गा ५५०, ६८८, ६६०, णाया १, १—पत्र ६५, गा १३८, १७५, सुर २, १०३, ६, २०४, श्रा १६, कुप्र १५३, रंभा)। स्त्री. सुणई सुणिआ (कुमा, गा ६८६)। २ पु. छन्द-विशेष (पिंग)।

सुणहिल्लया स्त्री [शुनकी] कुत्ती, मादा-कुक्कुर (वज्जा ८६)।

सुणावण न [श्रावण] सुनाना (सिरि २४८५)।

सुणाविअ वि [श्रावित] सुनाया हुआ (सुपा ६०२)।

सुणासीर पु [सुनासीर] इन्द्र, देव-राज (पाअ, हम्मीर १२)।

सुणाह देखो सुनाभ (राज)।

सुणिअ देखो सुण।

सुणिअ वि [श्रुत] सुना हुआ (कुमा, रयण ४४)।

सुणिअ पुं [शौनिक] कसाई (सिरि १०७७)।

सुणिउण देखो सुनिउण (राज)।

सुणिप्पकप देखो सुनिप्पकप (राज)।

सुणिम्मिअ वि [सुनिर्मित] चारु रूप से बना हुआ (कप्प)।

सुणिव्वुअ वि [सुनिर्वृत] अत्यन्त स्वस्थ (णाया १, १—पत्र ३२)।

सुणिसंत वि [सुनिशान्त] अच्छी तरह सुना हुआ, 'इहमेगेसिं आयारगोयरे णो सुणिसंते भवति' (आचा १, ८, १, २, २, २, २, १०, ३, १५)।

सुणुसुणाय नक [सुनसुनाय] 'सुन' 'सुन' आवाज करना। वकृ. सुणुसुणायत (महा)।

सुण्ण न [शून्य] १ निर्जन स्थान (गउड ५२४)। २ वि. रिक्त, रीता, खाली (स्वप्न ३१ गउड)। ३ निष्फल व्यर्थ निष्प्रयोजन (गउड ८४२, ६७२)। ४ न तप-विशेष, एकाशन-व्रत (संबोध ५७)। देखो सुन्न।

सुण्णआर देखो सुण्णार (दे ३, ५८)।

सुण्णइअ, सुण्णविअ वि [शून्यित] शून्य किया हुआ (गा ..., ४२, गउड, गा २६, १६६, ६०६)।

सुण्णार पु [सुवर्णकार] सुनार, सोनी (दे ५, ३६)।

सुण्ह देखो सण्ह = सूक्ष्म (हे १, ११८, कुमा)।

सुण्हसिअ वि [दे] स्वपन शील, सोने की आदतवाला (दे ८, ३२ षड)।

सुण्हा स्त्री [सास्ना] गौ का गल-कम्बल (हे १, ७५, कुमा)। °ल पु [°ल] वृषभ, बैल (कुमा)। °लचिंध पु [°लचिह्न] १ भगवान् ऋषभदेव। २ महादेव (कुमा)।

सुण्हा स्त्री [स्नुषा] पुत्र-वधू (णाया १, ७—पत्र ११७, सुर ८, ६८)।

सुतणु स्त्री [सुतनु] नारी, स्त्री (सुर २, ८६)।

सुतरं अ [सुतराम्] निश्चित अर्थ के अतिशय का सूचक अव्यय (विसे ८६१)।

सुतवसिण न [सुतपस्विन्] सुन्दर तप, तपश्चर्या का सुन्दर अनुष्ठान (राज)।

सुतवस्सि वि [सुतपस्विन्] अच्छा तपस्वी (सम ५१)।

सुतार वि [सुतार] १ अत्यन्त निर्मल। अति-शय ऊँचा। ३ अच्छा तरनेवाला। अत्युच्च आवाजवाला (हे १, १७७)।

सुतारया, सुतारा स्त्री [सुतारा] १ भगवान् सुविधि-नाथजी की शासन-देवी (संति ६)। २ सुग्रीव की पत्नी (पउम १०, ६)। ३ आभूषण विशेष (कुमा)।

सुतितिक्ख वि [सुतितिक्ष] सुख से सहन करने योग्य (ठा ५, १—पत्र २६६)।

सुतोसअ वि [सुतोष्य] सुख से तुष्ट करने योग्य (दस ५, २, ३४)।

सुत्त नक [सूत्रय्] बनाना। सुत्तइ (सुपा २३५)।

सुत्त देखो सुअ = श्रुत, 'पच्चक्खमोहिमण-केवल च पारक्ख मइसुत्त' (जीवस १४१)।

सुत्त देखो सोत्त = स्रोतस् (भवि)।

सुत्त देखो सोत्त = श्रोत्र (रंभा, भवि)।

सुत्त वि [सुप्त] सोया, शयित (ठा ५, २—पत्र ३१६, स्वप्न १०४, प्रासू ६८, श्रा २५)।

सुत्त वि [सूक्त] १ सुचारु रूप से कहा हुआ। २ न सुभाषित, सुन्दर वचन 'सुगइव्व सुत्तउत्तीए' (सुपा ३३)।

सुत्त न [सूत्र] सूता, धागा, तन्तु (णाया १, ८—पत्र १५, सुपा २८०)। २ नाटक का प्रस्ताव (मोह ४८, सुपा १)। ३ शास्त्र-विशेष (भग, ठा ४, ४—पत्र २८८ जी ३६)। °आर पु [°कार] ग्रन्थकार (...)। °कंठ पु [°कण्ठ] ब्राह्मण विप्र (पउम ४, ६५)। °कड न [°कृत] द्वितीय जैन अंग ग्रन्थ (सुपनि २)। °ग न [°क] यज्ञोपवीत (ओघ)। °धार पु [°धार] देखो °हार (सुपा १ मोह ४८)। °फासिअनिज्जुत्ति स्त्री [°स्पर्शिकनिर्युक्ति] सूत्र की व्याख्या (अणु)। °रुइ स्त्री [°रुचि] शास्त्र श्रद्धा (ओघ)। °हार पु [°धार] १ प्रधान नट, नाटक का मुख्य पात्र (प्रासू ६३)। २ सुतार, बढ़ई (कम्म १, ४८)।

सुत्ति स्त्री [शुक्ति] सीप, घोंघा (हे २, १३८, कुमा)। °मई स्त्री [°मती] चदि देश की प्राचीन राजधानी (णाया १, १६—पत्र २०८)।

सुत्ति स्त्री [सूक्ति] सुन्दर वचन, सुभाषित। °वत्तिया स्त्री [°प्रत्यया] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प—पृ ७६ टि राज)।

सुत्तिअ देखो सोत्तिअ = शौत्रिक (जय ६)।

सुत्तिय वि [सूत्रित] सूत्र-निबद्ध (राज)।

सुत्थ वि [सुस्थ] १ स्वस्थ, तन्दुरुस्त। २ सुखी (उत्ति १२, गा ४७८, महा, चेइय २६६ उप १०३१ टी)।

सुत्थ न [स्वास्थ्य] १ तन्दुरुस्ती, स्वस्थता। २ सुस्थिरता (उत्ति १२, कुप्र १०६ सुपा १८, १४८ स १३५ उप ६०२, धर्मवि २२)।

सुहग देखो सुभग (रयण ४०, गा ६, नाट—मालवि २८)।

सुहड पु [सुभट] योद्धा (सुर २, २६, कुमा, प्रासू ७४, सण)।

सुहड वि [सुहृत] अच्छी तरह हरण किया हुआ (दस ७, ४१)।

सुहत्थ वि [सुहस्त] १ अच्छा हाथवाला, हाथ की लघुतावाला हाथ से शीघ्र शीघ्र काम करने में समर्थ (से १०, ५५)। २ दाता, दानशील (भवि)।

सुहत्थि पु [सुहस्तिन्] १ गन्ध हस्ती (णाया १, १—पत्र ७४, उवा)। २ एक जैन महर्षि (कप्प, पडि)।

सुहद्द न [सौहार्द] १ स्नेह। २ मित्रता (भवि)।

सुहम न [सूक्ष्म] १ फूल, पुष्प (दसनि १, ३६)। २ देखो सण्ह, सुहुम = सूक्ष्म (हे २, १०१, चड)।

सुहम्म पुं [सुधर्मन्] १ भगवान् महावीर का पट्टधर शिष्य (विपा १ १—पत्र १)। २ बारहवें जिनदेव का प्रथम शिष्य (सम १५२)। ३ एक यक्ष का नाम (विपा १, १—पत्र ४, १, २—पत्र २१)। °सामि पुं [°स्वामिन्] भगवान् महावीर का पट्टधर शिष्य (भग)। देखो सुधम्म।

सुहम्म° देखो सुहम्मा। °वइ पुं [°पति] इन्द्र (महा)।

सुहम्ममाण वि [सुहन्यमान] जो अच्छी तरह मारा जाता हो वह (पि ५४०)।

सुहम्मा स्त्री [सुधर्मा] चमर आदि इन्द्रों की सभा, देव-सभा (सम १५, भग)।

सुहय देखो सुह-अ = सुख द, शुभ-द।

सुहय देखो सुभग (गउड, सण, हेका २७२, कुमा)।

सुहय वि [सुहत] अच्छी तरह जो मारा गया हो वह (कुप्र २२६)।

सुहर वि [सुभर] सुख से भरने योग्य (दस ८, २५)।

सुहरअ देखो सुहराय (षड्)।

सुहरा स्त्री [दे सुगृहा] पक्षि-विशेष, सुधरी (से ८, ३६)।

सुहराय पुं [दे] १ वेश्या का घर। २ चटक, गौरैया पक्षी (दे ८, ५६)।

सुहल्ली स्त्री [दे] सुख, आनन्द (दे ८, ३६)।

सुहव देखो सुभग (वज्जा ६६, सुज्ञि ६)। स्त्री °वी (प्राकृ ३७)।

सुहा अक [सु + भा] अच्छा लगना, न सुहाइ गोमईए सासू' (कुप्र २५२)।

सुहा देखो छुहा = सुधा (स २८७, कुमा, मण)। °कम्मत न [°कर्मान्त] चूने का कारखाना (आचा २, २, २, ६)। °हार पुं [°हार] देव, देवता (स ७५५)।

सुहा / सुहाअ / सुहाव सक [सुखाय्] १ सुख पाना। २ सक. सुखी करना। सुहाइ, सुहाअई, सुहावइ सुहावेइ (भवि गा ६१७, पि ५५८, से १२, ८६, वज्जा १६४, भवि उव)। वकृ सुहाअंत (से १, २८, नाट—रत्ना ६१)।

सुहाव देखो सहाव = स्वभाव (गा ५०८, वज्जा १०)।

सुहावण वि [सुखायन] सुख-जनक (सण, भवि)।

सुहावय वि [सुखापक] ऊपर देखो (वज्जा ४६४, भवि)।

सुहासिय वि [सुभाषित] १ सम्यग् उक्त (पण्ह १, १—पत्र १)। २ न. सुन्दर वचन, सूक्त (स ७६१, सुपा ५१४)।

सुहि वि [सुखिन्] सुख-युक्त (सुपा ३१२, ४३१)।

सुहि / सुहिअ पु [सुहृद्] मित्र, दोस्त (ठा ४, ३—पत्र २४३, णाया १, २—पत्र ६०, उत्त २०, ६, सुर ४, ७६, सुपा १०७, ४१६, प्रयौ ३६; सुर ३, १५४, भवि)।

सुहिअ वि [सुखित] सुखी, सुख-युक्त (से २, ८, गा ४१८, कुप्र ४०६, उव, कुमा)।

सुहिअ वि [सुहित] १ तृप्त (से २, ८)। २ सुन्दर हितवाला (धर्म २)।

सुहिट्ठ वि [सुहृष्ट] अति हर्षित (उप ७२८ टी)।

सुहिर देखो सुसिर, 'श्रवणानतो पुहहि अंतो सुहिरं व चरणाघाएहिं' (धर्मवि १२४, रंभा)।

सुहिरण्णा / सुहिरण्णिया / सुहिरन्निया स्त्री [सुहिरण्या, °ण्यिका] वनस्पति-विशेष, पुष्प-प्रधान वृक्ष-विशेष (राय ३१, राज, पण्ह १७—पत्र ५२६)।

सुहिरीमण वि [सुह्रीमनस्] अत्यन्त लज्जालु, अतिशय शर्मिन्दा (सूअ १, ८, २, १७, राज)।

सुहिल्लिया देखो सुहेल्लि 'सुहिल्लिय अद्विय रम सुणमो' (भत्त १६२)।

सुही वि [सुधी] पण्डित, विद्वान् (सिरि ४०)।

सुहुम वि [सूक्ष्म] १ बारीक अत्यन्त छोटा। २ तीक्ष्ण (हे १, १ ८, २ ११३, कुमा, जी १४)। ३ पु भारत वर्ष के एक भावी कुलकर पुरुष (सम १५३)। ४ एकेन्द्रिय जीव-विशेष (ठा ८, कम्म ४, २, ५)। ५ न कर्म-विशेष (सम ६)। °संपराग, °संपराय पुन [°संपराय] १ चारित्र विशेष (ठा ५, २—पत्र ३२२)। २ दशवाँ गुण-स्थानक (सम २६)। देखो सण्ह, सुहम = सूक्ष्म।

सुहुय वि [सुहुत] अच्छी तरह होम किया हुआ (ठा २८० टी कप्प, औप)।

सुहेल्लि स्त्री [दे. सुखकेलि] सुख, आनन्द, मजा (दे ८, ३६, गाग्र, गा १०८, २११, २६१ २८८, ३६८, ५५६, ८६४, स ७२)।

सुहेसि वि [सुखैषिन्] सुखाभिलाषी (सुपा २२७)।

सू अ. निन्दा-सूचक अव्यय (नाट)।

सूअ सक [सूचय्] १ सूचना करना। २ जानना। ३ लक्ष करना। सूएइ, सूअति, सूएमो (विसे १३६८, स २४८, गउड, पिंड ४१७)। कर्म. सूइज्जइ (गा ३२६)। वकृ. सूयंत, सूयअंत (गउड, स ३६६)। कवकृ. सूइज्जंत (चेइय ६०५)। कृ सूएअव्व (से १०, २८)।

सूअ पुं [सूद] रसोइया (महा)।

सूअ पु [सूत] १ सारथि, रथ हाँकनेवाला (पाअ)। २ वि प्रसूत, जिसने जन्म दिया हो वह, 'सु(? सू)यगोव्व अदूरए' (सूअ १, ३, २, ११)। °गड पुंन [°कृत] दूसरा जैन अंग-ग्रन्थ (सूअनि २)।

खबर, खोई हुई चीज की प्राप्ति, 'वद्धाविज्जइ पियाइ सूद्धीए' (सुपा ५१७, कुप्र २०२, सम्मत्त १७२, कुम्मा ६)।

सुद्धेसणिअ वि [शुद्धैपणिक] निर्दोष आहार की खोज करनेवाला (पण्ह २, १—पत्र १००)।

सुद्धोअण पु [शुद्धोदन] बुद्धदेव के पिता का नाम। °तणय पु [°तनय] बुद्ध देव (सम्म १४५)। देखो सुद्धोदण।

सुद्धोअणि पु [शौद्धोदनि] बुद्धदेव (पाअ)।

सुद्धोदण देखो सुद्धोअण। °पुत्त पु [°पुत्र] बुद्ध देव (कुप्र ४४०)।

सुधम्म पु [सुधर्मन] १ भगवान् महावीर का पट्टधर शिष्य (कुमा)। २ एक जैन मुनि (विपा २, ४)। ३ तीसरे बलदेव के गुरु—एक जैन मुनि (पउम २०, २०५)। ४ एक जैन मुनि, जो सातवें बलदेव के पूर्व-जन्म में गुरु थे (पउम २०, १९३)। ५ एक जैनाचार्य, 'तह अज्जमगुसूरि अज्जमुधम्म च धम्मरय' (सार्ध २२)। देखो सुहम्म।

सुधा देखो छुहा = सुधा (कुमा)।

सुनंद पु [सुनन्द] १ भारतवर्ष के भावी दसवें जिनदेव के पूर्वभव का नाम (सम १५४)। २ एक जैन मुनि (पउम २०, २०)। देखो सुणंद।

सुनक्खत्त देखो सुणक्खत्त (भग १५—पत्र ६७८, ६८७)।

सुनच्चिरा स्त्री [सुनर्तिनी] अच्छी तरह नृत्य करनेवाली स्त्री (सुपा २८६)।

सुनयण पु [सुनयन] १ राजा रावण के अधीनस्थ एक विद्याधर सामन्त राजा (पउम ८, १३३)। २ वि सुन्दर लोचनवाला (आवम)।

सुनाभ पु [सुनाभ] अमरकंका नगरी के राजा पद्मनाभ का पुत्र (णाया १, १६—पत्र २१४)।

सुनिउण वि [सुनिपुण] १ अत्यन्त सूक्ष्म (सम ११४)। २ अति चतुर (सुर ४, १३६)।

सुनिगुण वि [सुनिगुण] अतिशय निश्चित गुणवाला (सम ११५)।

सुनिग्गल वि [सुनिर्गल] चिर-स्थायी (विसे ७६६)।

सुनिच्छय वि [सुनिश्चय] दृढ निर्णयवाला (सुपा ४६८)।

सुनिप्पकप वि [सुनिष्प्रकम्प] अत्यन्त निश्चल (सुपा ६५३)।

सुनिम्मल वि [सुनिर्मल] अतिशय निर्मल (पउम २८, ६२)।

सुनिरूविय वि [सुनिरूपित] अच्छी तरह तलाशा हुआ (सुपा ५२३)।

सुनिविन्न वि [सुनिर्विण्ण] अतिशय खिन्न (सुर १४, ५८, उत्त)।

सुनिव्वुड देखो सुणिव्वुय (द्र ४७)।

सुनिसाय वि [सुनिशात] अत्यन्त तीक्ष्ण (सुपा ५७८)।

सुनिसिअ वि [सुनिशित] ऊपर देखो (दस १०, २)।

सुनिस्संक वि [सुनिःशङ्क] बिलकुल शङ्का-रहित (सुपा १८८)।

सुनीविआ स्त्री [सुनीविका] सुन्दर नीवी—वस्त्र-ग्रन्थिवाली स्त्री (कुमा)।

सुनेत्ता स्त्री [सुनेत्रा] पाँचवें वासुदेव की पटरानी (पउम २०, १८६)।

सुन्न न [शून्य] १ बिन्दी (सुर १६, १४६)। २—देखो सुण्ण (प्रासू १०, महा, भग, आचा, स ३६, रंभा)। °पत्तिया स्त्री [°प्रत्ययिका, °पत्रिका] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)।

सुन्नयार देखो सुण्णआर (सुपा ५६४, धमवि १२)।

सुन्नार देखो सुण्णार (सुपा ५६२)।

सुन्हा देखो सुण्हा (वा ३७, भवि)।

सुप सक [मृज्] मार्जन करना, शोधन करना। सुपइ (प्राप्र)।

सुपइट्ठ वि [सुप्रतिष्ठ] १ न्याय-मार्ग में स्थित। २ प्रतिज्ञा-शूर (कुमा ? २८)। ३ अतिशय प्रसिद्ध। ४ जिसकी स्थापना विधि-पूर्वक की गई हो वह (कुमा ?, ४०)। ५ पुं भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पानेवाला एक गृहस्थ (अंत १८)। ६ अग-विद्या का जानकार पाँचवाँ रुद्र पुरुष (विचार ४७३)। ७ भगवान् सुपार्श्वनाथ के पिता का नाम (सुपा ३६)। ८ भाद्रपद मास का लोकोत्तर नाम (सुज्ज १०, १९)। ९ पात्र-विशेष (राय)। १० न एक नगर का नाम विपा १, ९—पत्र ८८)। °भ पुन [°भ] एक देव-विमान (सम १४, पत्र २६७)।

सुपइट्ठिय वि [सुप्रतिष्ठित] अच्छी तरह प्रतिष्ठा-प्राप्त (भग, राय)।

सुपक्क वि [सुपक्व] अच्छी तरह पका हुआ (प्रासू १०२, नाट—मृच्छ ५७)।

सुपडाय वि [सुपताक] सुन्दर ध्वजावाला (कुमा)।

सुपडिबुद्ध वि [सुप्रतिबुद्ध] १ सुन्दर रीति से प्रतिबोध को प्राप्त (आचा १, ५, २, ३)। २ पु एक जैन महर्षि (कप्प)।

सुपडिवत्त वि [सुपरिवृत्त] जो अच्छी तरह हुआ हो वह (पउम ६४, ४५)।

सुपणिहिय वि [सुप्रणिहित] सुन्दर प्रणि-धानवाला (पण्ह २, ३—पत्र १२३)।

सुपण्ण देखो सुपन्न (राज)।

सुपण्ण ⎫
सुपन्न ⎭ पु [सुपर्ण] गरुड पक्षी (नाट, कुप्र ६३)।

सुपन्नत्त वि [सुप्रज्ञप्त] १ सुन्दर रूप से कथित (आचा १, ८, १, ३)। २ सम्यग् आसेवित (दस ८, १)।

सुपभ देखो सुप्पभ (राज)।

सुपम्ह पुं [सुपक्ष्मन] १ एक विजय-क्षेत्र (ठा २ ३—पत्र ८०)। २ पुन. एक देव-विमान (सम १५)।

सुपरिक्कम्मिय वि [सुपरिकर्मित] सुन्दर संस्कारवाला (णाया १, ७—पत्र ११६)।

सुपरिक्खिय ⎫
सुपरिच्छिय ⎭ वि [सुपरीक्षित] अच्छी तरह जिसकी परीक्षा की गई हो वह (उव, प्रासू १५)।

सुपरिणिट्ठिय ⎫
सुपरिनिट्ठिअ ⎭ वि [सुपरिनिष्ठित] अच्छी तरह निपुण (राज, भग)।

सुपरिप्फुड वि [सुपरिस्फुट] सुस्पष्ट (पउम ४५, २६)।

सुपरिसंत वि [सुपरिश्रान्त] अतिशय थका हुआ (पउम १०२, ४५)।

सुपरुन्न वि [सुप्ररुदित] जिसने जोर से रोने का प्रारम्भ किया हो वह (णाया १, १८—पत्र २४०)।

°दीव पु [°द्वीप] द्वीप-विशेष (इक)। °देव पुं [°देव] आगामि उत्सर्पिणी-काल मे होनेवाले भारतवर्ष के दूसरे जिनदेव (सम १५३)। °पन्नत्ति स्त्री [°प्रज्ञप्ति] एक जैन उपाङ्ग-ग्रंथ (ठा ३, २—पत्र १२६)। °परिवेस पुं [°परिवेष] मेघ आदि से होता सूर्य का वलयाकार मडल (अणु १२०)। °पव्वय पु [°पर्वत] पर्वत-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)। °पाया स्त्री [°पाका] सूर्य के किरण से होनेवाली रसोई (कुप्र ६६)। °प्पभ पुन [°प्रभ] एक देव-विमान (सम १०)। °प्पभा °प्पहा स्त्री [°प्रभा] १ सूर्य की एक अग्र-महिषी (इक, णाया २—पत्र २५२)। २ ग्यारहवें जिनदेव की दीक्षा-शिविका (सम १५१)। ३ आठवें जिनदेव की दीक्षा-शिविका (विचार १२६)। °मल्लिया स्त्री [°मल्लिका] वनस्पति-विशेष (राय ७६)। °मालिया स्त्री [°मालिका] आभरण-विशेष (औप)। °लेस पुंन [°लेश्य] एक देव-विमान (सम १०)। °वक्कय न [°वक्रण] आभूषण-विशेष (औप)। °वर पुं [°वर] १ एक द्वीप। २ एक समुद्र (सुज्ज १६)। °वरोभास पु [°वरावभास] १ द्वीप-विशेष। २ समुद्र-विशेष (सुज्ज १६)। °वल्ली स्त्री [°वल्ली] लता-विशेष (पएण १—पत्र ३३)। °वेग पुं [°वेग] एक राजकुमार (उप १०३१ टी)। °सिंग पुंन [°शृङ्ग] एक देव-विमान (सम १०)। °सिट्ठ पुन [°सृष्ट] एक देव-विमान (सम १०)। °सिरी स्त्री [°श्री] सातवें चक्रवर्ती की स्त्री (सम १५२)। सुअ पु [°सुत] शनैश्चर-ग्रह (हाट—मृच्छ १६२)। °भ पुन [°भ] एक देव-विमान (सम १४, पव २६७)। °वित्त पुन [°वर्त] एक देव-विमान (सम १०)। देखो सुज्ज।

सूरग पु [दे] प्रदीप दीपक (दे ८, ४१, पड्)।

सूरंगय पु [सुराङ्गज] एक राजा (उप १०३१ टी)।

सूरण पुं [दे. सूरण] कन्द-विशेष, सूरन, ओल (दे ८, ४१, पएण १—पत्र ३६, उत्त ३६ ६६, पंचा ५, २०)।

सूरद्धय पु [दे] दिन दिवस (दे ८, ४२, पड्)।

सूरल्लि पुस्त्री [दे] १ मध्याह्न, दुपहर का समय (दि ८, ५७, पड्)। २ कीट-विशेष, मशक के समान आकृतिवाला कीट (दे ८, ५७)। ३ तृण-विशेष, ग्रामणी नामक तृण (दे ८, ५७, जीव ३, ४, राय)।

सूरि पुं [सूरि] आचार्य (जी १, सण)।

सूरिअ वि [भग्न] भांगा हुआ (कुमा)।

सूरिअ देखो सुज्ज (हे २, १०७, सम ३६, भग, उप ७२८ टी)। °कंत पु [°कान्त] प्रदेशि-नामक राजा का पुत्र (भग ११, ६—पत्र ५१४, कुप्र १४०)। °कंता स्त्री [°कान्ता] प्रदेशी राजा की पत्नी (कुप्र १४६)। °पाग पुस्त्री [°पाक] सूर्य के ताप से होनेवाली रसोई (कुप्र ७०)। स्त्री °गा (कुप्र ६८)। °लेस्सा स्त्री [°लेश्या] सूर्य की प्रभा (सुज्ज ५—पत्र ७६)। °भ पुं [°भ] १ प्रथम देवलोकका एक देव (राय १४, धर्मवि ६)। २ पुन. एक देव विमान। ३ न. सूर्याभ देव का सिंहासन (राय १४)। °वित्त पु [°वर्त] मेरु पर्वत (सुज्ज ५, इक) °विरण पुं [°विरण] मेरु पर्वत (सुज्ज ५, इक)।

सूरिल पुं [दे] श्वशुर पक्ष (?), 'महतं मे सम्रोयण ति साहिऊण सुरिलस्स समागम्रो चप' (स ५७०)।

सूरिस देखो सुउरिस (हे १, ८)।

सूरुत्तरवडिंसग पुन [सूरोत्तरावतंसक] एक देव-विमान (सम १०)।

सूरुल्लि देखो सूराल्ल (राय ८० टी)।

सूरोद पु [सूरोद] एक समुद्र (सुज्ज १६)।

सूरोदय न [सूरोदय] नगर-विशेष (पउम ८, १८६)।

सूरोवराग पु [सूरोपराग] सूर्य-ग्रहण (भग)।

सूल पुन [शूल] १ लोहे का सुतीक्ष्ण कांटा, शूली (विपा १, ३—पत्र ५३, औप)। शस्त्र-विशेष, त्रिशूल (पएह १, १—पत्र १८, कुमा)। ३ रोग-विशेष (प्रासू १०५)। ४ बबूल आदि का तीक्ष्ण अग्र भागवाला कांटा (कुप्र ३७)। पु ब. देश-विशेष (पउम ६८, ६५)। °पाणि पुं [°पाणि] यज-विशेष (कर्म ५)। °वर पु [°वर] शिव, महादेव (पिंग)।

सूलच्छ न [दे] पल्वल, छोटा तालाब (दे ८, ४२)।

सूलत्थारी स्त्री [दे] चण्डी, पार्वती (दे ८, ४२)।

सूला स्त्री [शूला] शूली सुतीक्ष्ण लोह-कंटक (गा ६४, उप ३३६ टी, धर्मवि १२०)। °इय वि [°चित, °गित] शूली पर चढ़ाया हुआ (णाया १, ६—पत्र १५७ १६३, राय १३४)।

सूला स्त्री [दे] वेश्या, वारागना (दे ८, ४१)।

सूलि वि [शूलिन्] १ शूल-रोगवाला, 'जह विरल सूलीए' (वि ३)। २ पुं शिव, महादेव (पाअ)।

सूलिआ स्त्री [शूलिका] शूली, जिसपर वध्य को चढ़ाया जाता है (पएह १, १—पत्र ८)।

सूव पु [सूप] दाल (उत्त, श्रोघ ७१४, चारु ६ पिंड ६२४ पचा १०, ३७)। °यार, °र पु [°कार] रसोइया, रसोई बनानेवाला नौकर (पउम ११३, ७, सुर १६, ३८, उप ३०२)।

सूस अक [शुष्] सूखना। सूसइ, सूसति, सूसइरे (हे ४, २३६, प्राकृ ६८, कुमा ३७४; हे ३, १४२)।

सूसर वि [सुस्वर] १ सुन्दर आवाजवाला (सुर १६, ४६)। २ न नामकर्म का एक भेद, जिसमे सुन्दर स्वर की प्राप्ति हो वह कर्म (धर्मसं ६२०, श्रावक २३, कम्म १, २२)। °परिवादिणी स्त्री [°परिवादिनी] एक तरह की वीणा (पएह २, ५—पत्र १४६)।

सूसास वि [सोच्छ्वास] ऊर्ध्व श्वासवाला (हे १, १५७, कुमा)।

सूसिय वि [शोषित] सुखाया हुआ (सुर १५, २४८)।

सुबंभण पु [सुब्राह्मण] प्रशस्त विप्र (पि २५०)।

सुबद्ध वि [सुबद्ध] अच्छी तरह बँधा हुआ (दस)।

सुबल पु [सुबल] १ सोम-वंश का एक राजा (पउम ५, ११)। २ पहले बलदेव का पूर्व-जन्मीय नाम (पउम २०, १६०)।

सुबलिट्ठ वि [सुबलिष्ट] अतिशय बलवान् (श्रु १८)।

सुबहु वि [सुबहु] अति प्रभूत (उव)।

सुबहुल वि [सुबहुल] ऊपर देखो (कप्पू)।

सुबाहु पु [सुबाहु] १ एक राज-कुमार (विपा २, १—पत्र १०३)। २ स्त्री रुक्मिराज की एक कन्या (णाया १, ८—पत्र १४०)।

सुबुद्धि स्त्री [सुबुद्धि] १ सुन्दर प्रज्ञा (श्रा १४)। २ पुं राम-भ्राता भरत के साथ दीक्षा लेनेवाला एक राजा (पउम ८५, ३)। ३ एक मन्त्री (महा)।

सुब्भ वि [शुभ्र] १ सफेद, श्वेत (सुपा ५०६)। २ न एक प्रकार की चाँदी (राय ७५)।

सुब्भ न [शौभ्रय] सफेदी, श्वेतता (संबोध ५२)।

सुब्भि पुं [सुरभि] १ सुगन्ध, खुशबू (सम ४१, भग, णाया १, १२)। २ वि. सुगन्धी, सुगन्ध-युक्त (उत्त ३६, २८, आचा १, ६, २, ३)। ३ मनोहर, मनोज्ञ, सुन्दर (णाया १, १२—पत्र १७४)।

सुब्भिक्ख न [सुभिक्ष] सुकाल (सुपा ३५८)।

सुब्भु स्त्री [सुभ्रू] नारी, महिला (रंभा)।

सुभ पु [शुभ] १ भगवान् पार्श्वनाथ का प्रथम गणधर (ठा ८—पत्र ४२६, सम १३)। २ भगवान् नमिनाथ का प्रथम गणधर (सम १५२)। ३ एक मुहूर्त्त (पउम १७, ८२)। ४ न नाम कर्म का एक भेद (सम ६७, कम्म १, २६)। ५ मंगल, कल्याण। ६ वि. मंगल-जनक, मांगलिक, प्रशस्त (कप्प, भग, कम्म १ ४०, ८३)। °घोस पु [°घोष] भगवान् पार्श्वनाथ का द्वितीय गणधर (सम १३)। °णुधम्म पुं [°नुधर्मन्] राक्षस-वंश का एक राजा (पउम ५, २६२)। देखो सुह = शुभ।

सुभकर न [शुभकर] वरुण नामक लोकान्तिक देवों का विमान (राज)। देखो सुहंकर।

सुभग वि [सुभग] १ आनन्द-जनक (कप्प)। २ सौभाग्य-युक्त, वल्लभ, जन-प्रिय (सुज्ज २०)। ३ न पद्म-विशेष (सूअ २, ८, १८, राय ८२)। ४ कर्म-विशेष (सम ६७, कम्म १, २६, ५०, धर्मसं ६२० टी)।

सुभगा स्त्री [सुभगा] १ लता-विशेष (पराण १—पत्र ३३)। २ सुरूप नामक भूतेन्द्र की एक पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४ णाया २—पत्र २५३ इक)।

सुभग्ग वि [सुभाग्य] भाग्य-शाली, जिसका भाग्य अच्छा हो वह (उव ०३१ टी)।

सुभड देखो सुहड (नाट—मालती १३८)।

सुभणिय वि [सुभणित] वचन कुशल (उव)।

सुभद्द पु [सुभद्र] १ इक्ष्वाकु-वंश का एक राजा (पउम २८, १३६)। २ दूसरे वासुदेव तथा बलदेव के धर्म-गुरु (सम १५३)। ३ पुन एक देव-विमान (देवेन्द्र १४१)। ४ ४ नगर-विशेष (उप १०३१ टी)।

सुभद्दा स्त्री [सुभद्रा] १ दूसरे बलदेव की माता (सम १५२)। २ प्रथम स्त्री-रत्न, भरत चक्रवर्त्ती की अग्र-महिषी (सम १५२)। ३ बलि नामक इन्द्र के सोम आदि चारों लोक-पालों की एक-एक अग्रमहिषी का नाम (ठा ४, १—पत्र २०४)। ४ भूतानन्द आदि इन्द्रों के कालवाल नामक लोकपाल की एक-एक अग्र-महिषी का नाम (ठा ४, १—पत्र २०४)। ५ प्रतिमा-विशेष, एक व्रत (ठा ४, १—पत्र २०४)। ६ राम के भाई भरत की पत्नी (पउम २८, १३६)। ७ राजा कोणिक की स्त्री (औप)। ८ राजा श्रेणिक की एक स्त्री (अंत २५)। ९ एक सती स्त्री (पडि)। १० एक सार्थवाह-पत्नी (विपा १, २—पत्र २२)। ११ जम्बूवृक्ष-विशेष, जिससे यह द्वीप जंबू द्वीप कहलाता है (इक)।

सुभय देखो सुभग (भग १२, ६—पत्र ५७८)।

सुभरिय वि [सुभृत] अच्छी तरह भरा हुआ, भरपूर, परिपूर्ण (उव)।

सुभा स्त्री [शुभा] १ वैरोचन बलीन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ५ १—पत्र ३०२)। २ एक विजय-क्षेत्र (ठा २, ३—पत्र ८०)। ३ रावण की एक पत्नी (पउम ७४, १)।

सुभासिय देखो सुहासिय (उत्त २०, ५१, दस ९ १ १७)।

सुभासिर वि [सुभाषितृ] सुन्दर बोलने-वाला। स्त्री °रा (सुपा ५९८)।

सुभिक्ख देखो सुब्भिक्ख (उत्त, सार्ध ३६)।

सुभिच्च पु [सुभृत्य] अच्छा नौकर (सुपा ४६५ हु ४, ३३८)।

सुभीम वि [सुभीम] अति भयंकर (सुर ७ २३३)।

सुभीसण पुं [सुभीषण] रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३१)।

सुभूम पु [सुभूम] १ भारतवर्ष में उत्पन्न आठवाँ चक्रवर्त्ती राजा (ठा २, ४—पत्र ६९)। २ भारतवर्ष के भावी दूसरा कुलकर पुरुष (सम १५३)। भगवान् अमरनाथ का प्रथम श्रावक (विचार ३७८)।

सुभूसण पु [सुभूषण] विभीषण का एक पुत्र (पउम ६७, १६)।

सुभोगा स्त्री [सुभोगा] अधोलोक में रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७, इक)।

सुभोयण न [सुभोजन] व्रत विशेष, एकाशन तप (संबोध ५८)।

सुम न [सुम] पुष्प, फूल (सम्मत्त १६०)। °सर पु [°शर] कामदेव (रंभा)।

सुमइ पु [सुमति] १ पाँचवाँ जिन भगवान् (सम ४३)। २ ऐरवत क्षेत्र में होनेवाला दसवाँ कुलकर पुरुष (सम १५३)। ३ एक जैन उपासक (महानि ४)। ४ वि शुभ बुद्धि वाला (गउड)। ५ पु एक नैमित्तिक विद्वान् (सुर ११, १३२)।

सुमंगल पु [सुमङ्गल] ऐरवत वर्ष में होने वाले प्रथम जिनदेव (सम १५४)।

सुमंगला स्त्री [सुमङ्गला] १ भगवान् ऋषभ-देव की एक पत्नी (पउम ३, ११६)। २ सूर्यवंशीय राजा विजयसागर की पत्नी (पउम ५ २)।

सुमग्ग पु [सुमार्ग] अच्छा रास्ता (सुपा ३३०)।

जिसने भगवान् आदिनाथ को इक्षु-रस से प्रथम पारणा कराया था (कप्प, कुप्र २१२)। ३ मार्गशीर्ष मास का लोकोत्तर नाम (सुज्ज १०, १९)। ४ भगवान् महावीर का पिता, राजा सिद्धार्थ (आचा २ १५, ८)। देखो सिज्जंस, सेअस = श्रेयास।

सेज्जस देखो सेजस = श्रेयस् (आवम)।

सेज्जा स्त्री [शय्या] १ सेज, बिछौना (से १, ५७, कुमा)। २ मकान घर, वसति, उपाश्रय (पव १ २ सुख १, १५)। °यर पु [°तर] गृह-स्वामी, उपाश्रय का मालिक, साधु को रहने के लिए स्थान देनेवाला गृहस्थ (ओघ २४२, पव ११२, पचा १७, १७)। °वाल पु [°पाल] शय्या का काम करनेवाला चाकर (सुपा ४८७)। देखो सिज्जा।

सेज्जारिअ न [दे] आन्दोलन, हिंडोले मे भूलना (दे ८, ४३)।

सेट्ठि पु [दे श्रेष्ठिन्] गाँव का मुखिया, सेठ, महाजन (दे ८, ८२, सम ५१, णाया १, १—पत्र १९, उवा)।

सेडिय न [दे] तृण-विशेष (पण्ण १—पत्र ३३)।

सेडिया स्त्री [दे सेटिका] सफेद मिट्टी, खडी (आचा २, १, ६, ३)।

सेढि स्त्री [श्रेणि] देखो सेढी = श्रेणी (सुर ३, १७, ५, १६६)।

सेढिया } देखो सेडिया (दस ५, १, ३४,
सेढी } जी ३)।

सेढी स्त्री [श्रेणी] १ पंक्ति (सम १४२, महा)। २ राशि (अणु)। ३ असख्य योजन-कोटाकोटी की एक नाप (अणु १७३)। देखो सेणि।

सेण पु [श्येन] १ पक्षि-विशेष (पउम ८, ७९, दे ७, ८४, वै ७४)। २ विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, १५)।

सेण देखो सेण्ण, 'मणणरवइणो मरणे मरति सेणाइ इदियमयाइं' (आरा ६०)।

सेणा स्त्री [सेना] १ भगवान् संभवनाथजी की माता (सम १५१)। २ लश्कर, सैन्य (कुमा)। ३ एक जैन साध्वी, जो महर्षि स्थूलभद्र की बहिन थी (कप्प, पडि)। ४ वह लश्कर जिसमे ३ हाथी, ३ रथ, ९ घोडे और १५ प्यादे हो (पउम ५६, ५)। °णिय, °णी, °णीय पु [°नी] सेना-पति, लश्कर का मुखिया, 'सेणाणिओवि ताहे घेत्तूण जिणेसरं सुरवइस्स' (पउम ३ ७७, सुपा ३००, धर्मवि ८४, पउम ६८, २०)। °मुह न [°मुख] वह सेना जिसमें ९ हाथी, ९ रथ, २७ घोडे और ४५ प्यादे हो (पउम ५६, ५)। °वइ पु [°पति] सेना का मुखिया, सेना-नायक (कप्प, पउम ३७, २, सम २७, सुपा २५५)। °हिवइ पु [°धिपति] वही पूर्वोक्त अर्थ (सुपा ७३)।

सेणावच्च न [सैनापत्य] सेनापतिपन, सेना का नेतृत्व (कप्प, औप)।

सेणि स्त्री [श्रेणि] १ पंक्ति। २ समूह (महा)। ३ कुम्भकार आदि मनुष्य-जाति (णाया १, १—पत्र ३७)।

सेणिअ पु [श्रेणिक] १ मगध देश का एक प्रख्यात राजा (णाया १, १—पत्र ११, ३७, ठा ९—पत्र ४५५ सम १५४, उवा, अंत, पउम २, १५, कुमा)। २ एक जैन मुनि (कप्प)।

सेणिआ स्त्री [सेणिका] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)।

सेणिआ } स्त्री [सेनिका] छन्द का एक
सेणिका } भेद (पिंग)।

सेणिग देखो सेणिअ (सबोध ३५)।

सेणिग पु [सैनिक] लश्करी सिपाही (स ३८१)।

सेणी स्त्री [श्रेणी] देखो सेणि (महा, णाया १, १)।

सेण्ण देखो सिन्न = सैन्य (णाया १, ८—पत्र १४६, गउड)।

सेत्त देखो सित्त = सिक्त (कुप्र १६)।

सेत्त (अप) देखो सेअ = श्वेत (पिंग)।

सेत्तुंज पु [शत्रुञ्जय] एक प्रसिद्ध पर्वत (णाया १, १६—पत्र २२६, अंत)।

सेद देखो सेअ = स्वेद (दे ४, ३८, स्वप्न ७९)।

सेध देखो सेह = सेह (जीव २—पत्र ५२)।

सेन्न देखो सिन्न = सैन्य (हे १, १५०, कुमा, सण, सुर १२, १०८ टि)।

सेप्फ } देखो सेम्ह (हे २, ५५, षड्, कुमा,
सेफ } प्राक्ट २१)।

सेफ पुन [शेफ] पुरुष-चिह्न, लिंग (प्राकृ १४)।

सेभालिआ स्त्री [शेफालिका] लता-विशेष (हे १, २३६, प्राकृ १४)।

सेमुसी } स्त्री [शेमुषी] मेधा, बुद्धि (राज,
सेमुही } उप पृ ३३३, हम्मीर १४, २२)।

सेम्ह पुस्त्री [श्लेष्मन्] कफ, सेम्हा गरुई (प्राकृ २२ पि २६७)।

सेर वि [स्वैर] स्वच्छन्दी, स्वतन्त्र, स्वच्छ (स्वप्न ७७, विक्र ३७)।

सेर वि [स्मेर] विकस्वर (हे २, ७८, कुमा)।

सेर पु [दे] सेर, परिमाण-विशेष (पिंग)।

सेरंधी स्त्री [सैरन्ध्री] स्त्री-विशेष, अन्य के घर मे रहकर शिल्प-कार्य करनेवाली स्वतन्त्र स्त्री (कप्पू)।

सेराह पुं [दे] अश्व की एक उत्तम जाति (सम्मत्त २१६)।

सेरिभ पुं [दे] धुर्य वृषभ, गाडी का बैल (दे ८, ४४)।

सेरिभ देखो सेरिह (सुख ८, १३, दे ८, ४४ टी)।

सेरिय पुस्त्री [दे] वाद्य-विशेष, 'करडिभम-सेरियहुडुक्काहिं' (सण)।

सेरियय पुं [दे] गुल्म-विशेष (पण्ण १—पत्र ३२)।

सेरिह पुस्त्री [सैरिभ] भैंसा, महिष (गा १७२, ७४२, नाट—मृच्छ १३५)। स्त्री. °ही (पात्र)।

सेरी स्त्री [दे] १ लम्बी आकृति। २ भद्र आकृति (दे ८, ५७)। ३ रथ्या, मुहल्ला (सिरि ३१८)। ४ यन्त्र निर्मित नर्तकी (राज)।

सेरीस पुन [सेरीश] एक गाँव का नाम (ती ११)।

सेल पुं [शैल] १ पर्वत, पहाड (से २, ११, प्राप्र, सुर ३, २२९)। २ पाषाण, पत्थर (उप १०३१)। ३ न पत्थरों का समूह (से ६, ३१)। °कार पु [°कार] पत्थर घडने-वाला शिल्पी, शिलावट (अणु १४९)। °गिह न [°गृह] पर्वत मे बना हुआ घर (कप्प)। °जाया स्त्री [°जाया] पार्वती

स्त्री [°तरङ्गिणी] गंगा नदी (सण)। °तरु देखो °अरु (सण)। °ताण पुं [°त्राण] यवननृप, सुलतान (ती १५)। °दारु न [°दारु] देवदार की लकड़ी (स ६७३)। °धसी स्त्री [°ध्वंसिनी] विद्या विशेष (पउम ७, १३७)। °धणु, °धणुह न [°धनुष्] इन्द्र-धनुष (कुमा, सण)। °नई देखो °णई (श्रु ७७)। °नाह देखो °णाह (सण)। °पहु पुं [°प्रभु] इन्द्र, देव-राज (सुपा ५८२, उप १४२ टी, सण)। °पुर न [°पुर] देव-पुरी, अमरावती, स्वर्ग (पउम ७०, १ सण)। °पुरी स्त्री [°पुरी] वही अर्थ (पाअ, कुमा)। °प्पिअ पुं [°प्रिय] एक यक्ष (अत)। °वंदी स्त्री [°वन्दी] देवी, देव-स्त्री (से ६, ५०)। °भवण न [°भवन] देव-प्रासाद (भग, सण)। °मंति पुं [°मन्त्रिन्] बृहस्पति (सुपा ३२६)। °मंदिर न [°मन्दिर] १ देहरा, मन्दिर (कुप्र ४)। २ देव-विमान (सण)। °मुणि पु [°मुनि] नारद मुनि (पउम ६०, ८)। °रमण न [°रमण] रावण का एक बगीचा (पउम ४६, ३७)। °राय पुं [°राज] इन्द्र (सुपा ८५, सिरि २४)। °रिउ पुं [°रिपु] दैत्य, दानव (पाअ)। °लोअ पु [°लोक] स्वर्ग (महा)। °लोइय वि [°लौकिक] स्वर्गीय (पुष्फ २५८)। °लोग देखो °लोअ (पउम ५२, १८)। °वइ पुं [°पति] १ इन्द्र, देव-राज (पाअ, सुपा ४४, ४८, ८८, ४०२)। २ इन्द्र नामक एक विद्याधर-नरेश (पउम ७, २७)। °वण्ण पुन [°वर्ण] एक देव विमान (सम १०)। °वधू देखो °वहू (पि ३८७)। °वल्ली स्त्री [°पर्णी] पुंनाग वृक्ष (पाअ)। °वर पु [°वर] उत्तम देव (भग)। °वरिंद पु [°वरेन्द्र] इन्द्र, देव-राज (श्रा ७)। °वहू स्त्री [°वधू] देवाङ्गना, देवी (कुमा)। °वारण पुं [°वारण] ऐरावण हस्ती (उप २११ टी)। °संगीय न [°संगीत] नगर-विशेष (पउम ८, १८)। °सरि स्त्री [°सरित्] भागीरथी, गङ्गा नदी (गउड, उप पृ ३६, सुपा ३३, २८६)। °सिहरि पु [°शिखरिन्] मेरु पर्वत (सण)। °सुंदर पु [°सुन्दर] रथचक्रवाल-नगर का एक विद्याधर-नरेश (पउम ८, ४१)। °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] १ देव-वधू, देवाङ्गना (सुर ११, ११५, सुपा २००)। २ एक राज-पुत्री (सुर १० १४३)। ३ एक राज-कुमारी (सिरि ५०)। °सुरहि स्त्री [°सुरभि] काम-धेनु (रयण १३)। °सेल पु [°शैल] मेरु-पर्वत (सुपा १३)। °हत्थि पु [°हस्तिन्] ऐरावण हाथी (से ६, ६)। °उह न [°ायुध] वज्र (पाअ)। °इंद पुं [°इन्द्र] एक श्रावक का नाम (उवा)। °इंदी स्त्री [°इन्द्री] पश्चिम रुचक पर रहनेवाली एक दिशा-कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६, इक)। °रि पु [°रि] राक्षसवंश का एक राजा, एक लंका-पति (पउम ५, २६२)। °लय पुन [°लय] स्वर्ग (पाअ, सुअ १, ६, ६, सुपा ५६६)। °हिराय पु [°धिराज] इन्द्र (उप १४२ टी)। °हिव पु [°धिप] इन्द्र (से १५, ५३)। °हिवइ पु [°धिपति] वही (सुपा ४६)।

सुरइ स्त्री [°सुरति] सुख (पण्ह १, ४—पत्र ६८)।

सुरइय वि [सुरचित] अच्छी तरह किया हुआ (पण्ह १, ४—पत्र ६८)।

सुरंगणा स्त्री [सुराङ्गना] देव-वधू (सुपा २४६)।

सुरंगा स्त्री [°सुरङ्गा] सुरंग, जमीन के भीतर का मार्ग (उप पृ ३६, महा, सुपा ४५४)।

सुरंगि पुंस्त्री [दे] वृक्ष-विशेष, शिग्रु वृक्ष, सहिजना का गाछ (दे ८, ३७)।

सुरजेट्ठ पु [दे] वरुण देवता (दे ८, ३१)।

सुरट्ठ पु व [सुराष्ट्र] एक भारतीय देश जो आजकल काठियावाड के नाम से प्रसिद्ध है (णाया १, १६—पत्र २०८, हे २, ३४, पिंड २०२)।

सुरणुचर वि [स्वनुचर] सुख से करने योग्य (ठा ५, १—पत्र २६६)।

सुरत } देखो सुरय (पउम १६, ८०, सक्षि
सुरद } ६, प्राकृ १२)।

सुरभि पुंस्त्री [सुरभि] १ वसन्त ऋतु। २ स्त्री गौ, गैया (कुम्मा १४)। ३ वि सुगन्ध-युक्त, सुगंधी (सम ६०, गा ८६१, कप्प, कुम्मा १४)। ४ पुंन. एक देव-विमान (देवेन्द्र १४०)। °गंध वि [°गन्ध] सुगन्धी (आचा)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (राज)। देखो सुरहि।

सुरमणीअ वि [सुरमणीय] अत्यन्त मनोहर (सुर ३, ११२)।

सुरम्म वि [सुरम्य] ऊपर देखो (औप)।

सुरय न [सुरत] मैथुन, स्त्री-संभोग (सुर ३, २०, गा १५५, काप्र ११३)।

सुरयण न [सुरत्न] सुन्दर रत्न (सुपा ३२७)।

सुयरणा स्त्री [सुरचना] सुन्दर रचना (सुपा ३२)।

सुरस त्रि [सुरस] १ सुन्दर रसवाला (णाया १, १७—पत्र १७४)। २ न. तृण विशेष (दे १, ५४)। °लया स्त्री [°लता] तुलसी-लता (दे ५, १४)।

सुरसुर पु [सुरसुर] ध्वनि-विशेष, 'सुर सुर' आवाज (ओघ २८)।

सुरसुर अक [सुरसुराय्] 'सुर सुर' आवाज करना। वकृ सुरसुरत (गा ७४)।

सुरह सक [सुरभय्] सुगन्धित करना। सुरहेइ (कुमा, प्रासू ६)।

सुरह पुन [सौरभ] सुन्दर गन्ध, खूशबू, 'गधोव्विअ सुरहो मालईइ मलणं पुण विणासो' (मत्त १२१)।

सुरह पु [सुरथ] साकेतपुर का एक राजा (महा)।

सुरहि पुंस्त्री [सुरभि] १ वसंत ऋतु (रंभा, पाअ, कप्पू)। २ चैत्र मास (गा १०००)। ३ वृक्ष-विशेष, शतद्रु वृक्ष (आचा २, १, ८, ६)। ४ स्त्री गौ, गैया (रयण १३, धर्मवि ६५, पाअ, प्रासू १६८)। ५ न नाम कर्म का एक भेद, जिसके उदय से प्राणी के शरीर में सुगन्ध उत्पन्न होती है (कम्म १, ४१)। ६ वि. सुगन्ध-युक्त (उवा, कुमा, गा ३१७, ३६६, सुर ३, ३६, हे २, १५५)। देखो सुरभि।

सुरा स्त्री [सुरा] मदिरा, दारू (उवा)। °रस पु [°रस] समुद्र-विशेष (दीव)।

सुरिंद पु [सुरेन्द्र] १ इन्द्र, देव-स्वामी (सुर २, १५३, गउड, सुपा ४४)। २ एक

सेहणा स्त्री [शिक्षणा] शिक्षा, सजा, कदर्थना, 'वहबंधमारणसेहणाओ काओ परिग्गहे नत्थि' (उव)।

सेहर पुं [शेखर] 'शिखा फलसेहरा' (पिंड १६५ पाअ)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। ३ मस्तक-स्थित माला (कुमा)।

सेहरय पुं [दे] चक्रवाक पक्षी (दे ८, ४३)।

सेहालिआ देखो सेफालिआ (स्वप्न ६३, गा ४१२ कुमा, हे १, २३६)।

सेहाली स्त्री [शेफाली] लता-विशेष (दे ५, ४)।

सेहाव देखो सेह = शिक्षय्। सेहावेइ (पि ३२३)। भवि. सेहावेहिति (औप)। वक्र सेहावेंत (पि ५८२)। हेक्र सेहावेत्तए (कस)। क्र. सेहावियव्व (भत्त १६०)।

सेहाविअ वि [शिक्षित] सिखाया हुआ (भग, णाया १, १—पत्र ६ पि ३२३)।

सेहि देखो सिद्धि (आचा)।

सेहिअ वि [सैद्धिक] १ मुक्ति-सम्बन्धी। २ निष्पत्ति-सबन्धी (सूअ १ १ २, २)।

सेहिअ वि [दे] गत, गया हुआ (दे ८, १)।

सो सक [सु] १ दारु बनाना। २ पीडा करना। ३ मन्थन करना। ४ अक स्नान करना। सोइ (षड्)।

सो } अक [स्वप्] सोना, सूतना। सोइ,
सोअ } सोअइ (वात्वा १५७ प्राकृ ६६)।

सोअ सक [शुच्] १ शोक करना। २ शुद्धि करना। सोअइ, सोएइ सोइति सोयति (से १, ३८, हे ३, ७०, आचा, अज्झ १७४, १७५, सूअ २, ७, ५५)। वक्र सोअंत, सोयंत (उप ९८६ टी, पउम ११८ ३५)। कवक्र. सोइज्जंत (नाण)। क्र सोअणिज्ज, सोअणीअ. सोइयव्व (अभि १०५, सुक्त ४७, पउम ३०, ३५)। देखो सोच = शुच्।

सोअ न [शौच] १ शुद्धि, पवित्रता, निर्मलता (आचा, औप, सुर २, ६२, उप ७६८ टी, सुपा २८०)। २ चोरी का अभाव, पर द्रव्य का अहरण (सम १२०, नव २३; आ ३१)।

सोअ पुं [शोक] अफसोस, दिलगीरी (सुर १, ५३, गउड, कुमा, महा)।

सोअ न [श्रोत्र] कान, श्रवणेन्द्रिय (आचा, भग, औप सुर १ ५३)। °मय वि [°मय] श्रोत्रेन्द्रिय-जन्य (ठा १०—पत्र ४७६)।

सोअ पुंन [स्रोतस्] १ प्रवाह (आचा, गा ६९२)। २ छिद्र (औप)। ३ वेग (णाया १, ८)।

सोअण न [स्वपन] शयन (उव)।

सोअण न [शोचन] १ शोक, दिलगीरी (सूअ २, २, ५५, संबोध ४६)। २ शुद्धि, प्रक्षालन (स ३४८)।

सोअणया } स्त्री [शोचना] १ ऊपर देखो
सोअणा } (औप, अज्झ १७८)। २ दीनता, दैन्य (ठा ४ १—पत्र १८८)।

सोअमल्ल न [सौकुमार्य] सुकुमारता, अति-कोमलता (हे १, १०७, प्राप्र, कुमा)।

सोअर पुं [सोदर] सगा भाई (प्रवो २६, सुपा १९३, रंभा)।

सोअरा स्त्री [सोदरा] सगी बहन (कुमा)।

सोअरिअ वि [शौकरिक] १ शूकरों का शिकार करनेवाला (विपा १, ३—पत्र ५४)। २ शिकारी, मृगया करनेवाला। ३ कसाई (पिंड ३१४, उव, सुपा २१४)।

सोअरिअ वि [सोदर्य] सहोदर, एक उदर से उत्पन्न (सूअ १, १, १, ५)।

सोअल्ल देखो सोअमल्ल (सक्षि २)।

सोअविय स्त्रीन [शौच] शुद्धि, पवित्रता (सूअ २, १, ५७)। स्त्री. °या (आचा)।

सोअव्व देखो सुण = श्रु।

सोआमणी } स्त्री [सौदामनी, °मिनी] १
सोआमिणी } विद्युत, बिजली (उत्त २२, ७, पउम ७४, १४, स १२, महा, पाअ)। २ एक दिक्कुमारी देवी (इक ठा ४, १—पत्र १९८)।

सोइअ न [शोचित] चिन्ता, विचार (सुर ८, १४, सुपा २६६)। देखो सोचिय।

सोइंदिय न [श्रोत्रेन्द्रिय] श्रवणेन्द्रिय, कान (भग)।

सोइंधिअ देखो सोगंधिअ (इक)।

सोउ वि [श्रोतृ] सुननेवाला (स ३, प्रासू २)।

सोउणिअ देखो सोयणिअ (सूअ २, २, २८, पि १५२)।

सोउमल्ल देखो सोअमल्ल (अभि २१३, सुर ८, १२५)।

सोंड देखो सुंड (पाअ)। °मगर पुं [°मकर] मगर की एक जाति (पण्ण १—पत्र ४८)।

सोंडा स्त्री [शुण्डा] १ सुरा, दारू (आचा २, १, ३, २)। २ हाथी की नाक, सूँढ (उवा)।

सोंडिअ पुं [शौण्डिक] दारू बेचनेवाला, कलवार (अभि १८८)।

सोंडिया स्त्री [शुण्डिका] दारू का पात्र-विशेष (ठा ८—पत्र ४१७)।

सोंडीर वि [शौण्डीर] १ शूर, वीर, पराक्रमी (कप्प, सुर २, १३४, सुपा ५०)। २ गर्व-युक्त, गर्वित (महा)।

सोंडीर न [शौण्डीर्य] १ पराक्रम, शूरता। २ गर्व (हे २, ६३, षड)।

सोंडीरिम पुंस्त्री [शौण्डीरिमन्] ऊपर देखो (सुपा २९२)।

सोंदज्ज (शौ) देखो सुंदेर (पि ८४)।

सोक देखो सुक = शुष्क (षड्)।

सोक्ख देखो सुक्ख = सौख्य (प्राकृ १०, गा १५८, सुपा ७०, कुमा)।

सोक्ख देखो सुक्ख = शुष्क (षड्)।

सोग देखो सोअ = शोक (पउम २०, ४५, सुर २, १८०, स २५५, प्रासू ८३, उव)।

सोगंध } न [सौगन्ध्य] १ लगातार
सोगंधिअ } चौवीस दिनों के उपवास (संबोध ५८)। २ सुगन्धिपन, सुगन्ध, 'सोगंधिय-परिकलिय तंबोल' (सम्मत्त २२०)।

सोगंधिअ न [सौगन्धिक] १ रत्न-विशेष, रत्न की एक जाति (णाया १, १—पत्र ३१, पण्ण १—पत्र २६, उत्त ३६, ७७, कप्प, कुम्मा १५)। २ रत्नप्रभा नामक नरक-पृथिवी का एक सौगन्धिक-रत्न-मय काण्ड (सम ८६)। ३ कह्लार, पानी में होनेवाला श्वेत कमल (सूअ २, ३, १८, राय ८२)। ४ पुं. नपुंसक का एक भेद, अपने लिंग को सूँघनेवाला नपुंसक (पव १०६, पुप्फ १२८)। ५ पुंन एक देव-विमान (देवेन्द्र १४२)। ६ वि सुगन्धवाला, सुगन्धी (उवा, सम्मत्त २२०)।

सुवन्न न [सुवर्ण] १ सोना (स ५०, प्रासू २, कुप्र १, कुमा)। २ वि सुन्दर अक्षरवाला (कुप्र १)। °कुमार पु [°कुमार] भवनपति देवों की एक जाति (भग, सम ८३)। °कूलप्पवाय पुं [°कूलप्रपात] एक ह्रद जहाँ से सुवर्णकूला नदी बहती है (ठा २, ३—पत्र ७२)। °गार पु [°कार] सोनी (णाया १, ८—पत्र १४०, उप पृ ३५३)। °जूहिया स्त्री [°यूथिका] लता-विशेष (पएण १७—पत्र ५२६)। °यार देखो °गार (सुपा ५६५)। देखो सुवण्ण = सुवर्ण।

सुवन्न वि [सौवर्ण] सोने का बना हुआ (कुप्र ४)।

सुवन्नालुगा स्त्री [दे] दतवन करने का पात्र—लोटा आदि (कुप्र १४०)।

सुवप्प पुं [सुवप्र] एक विजय-क्षेत्र (ठा २, ३—पत्र ८०)।

सुवयण न [सुवचन] सुन्दर वचन (भग)।

सुवर } (अप) देखो सुमर। सुवरह, सुवँरहि
सुवँर } (भवि, पि २५१)।

सुवहु देखो सुबहु (आप)।

सुवाय पुंन [सुवात] एक देव-विमान (सम १०)।

सुवास पुं [सुवर्ष] १ सुन्दर वृष्टि (उप ८४६)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

सुवासणी देखो सुवासिणी (धर्मवि १२३)।

सुवासव पुं [सुवासव] एक राज-कुमार (विपा २, ४)।

सुवासिणी स्त्री [दे सुवासिनी] जिसका पति जीवित हो वह स्त्री (सिरि १५६)।

सुवाहा अ [स्वाहा] देवता को हविष आदि अर्पण का सूचक अव्यय (सिरि १६७)।

सुविआज्जिअ वि [सुव्यर्जित] विशेष रूप से उपार्जित (तदु ५६)।

सुविअड्ढ वि [सुविदग्ध] अत्यन्त चतुर (नाट—रत्ना ६)।

सुविइय वि [सुविदित] अच्छी तरह ज्ञात (उव, सुपा ४०४)।

सुविउ वि [सुविद्] अच्छा जानकार (श्रा २८)।

सुविउल वि [सुविपुल] अति विशाल (उव)।

सुविक्कम पुं [सुविक्रम] भूतानन्द नामक इन्द्र के हस्ति-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०२, इक)।

सुविक्खाय वि [सुविख्यात] सुप्रसिद्ध (सुर ६, ६८)।

सुविगा स्त्री [सुकिका, शुकी] मैना (उप ६७३, ६७५)।

सुविज्जा स्त्री [सुविद्या] उत्तम विद्या (प्रासू ५३)।

सुविण देखो सुमिण (सुर ३, १०१, महा, रंभा)। °न्नु वि [°ज्ञ] स्वप्न-शास्त्र का जानकार (उप पृ ११६, सुर १०, ६८)।

सुविणट्ठ वि [सुविनष्ट] बिलकुल नष्ट (गा ७४०)।

सुविणिच्छिय वि [सुविनिश्चित] अच्छी तरह निर्णीत (उव)।

सुविणिम्मिय वि [सुविनिर्मित] अच्छी तरह बनाया हुआ (णाया १, १—पत्र १२)।

सुविणीय वि [सुविनीत] १ अतिशय दूर किया हुआ (उत्त १, ४७)। २ अत्यन्त विनय-युक्त (दस ६, २, ६)।

सुवित्त न [सुवृत्त] अत्यन्त गोलाकार। २ सदाचार, अच्छा आचरण (सुर १, २१)।

सुवित्थड वि [सुविस्तृत] अति विस्तारयुक्त (अजि ४०, प्रासू १२८, द्र ५८)।

सुवित्थिन्न वि [सुविस्तीर्ण] ऊपर देखो (सुर १, ४५, १२, १)।

सुविधि देखो सुविहि (सम ४३)।

सुविभज्ज वि [सुविभज] जिसका विभाग अनायास हो सके वह (ठा ५, १—पत्र २६६)।

सुविभत्त वि [सुविभक्त] अच्छी तरह विविक्त (णाया १, १ टी—पत्र ५, औप, भग)।

सुविम्हिअ वि [सुविस्मित] अतिशय आश्चर्यान्वित (उत्त २०, १३)।

सुवियक्खण वि [सुविचक्षण] अति चतुर (सुपा १५०)।

सुवियाण न [सुविज्ञान] अच्छा ज्ञान, सुन्दर जानकारी, पडिताई (सट्ठि १६)।

सुविर वि [स्वप्तृ] स्वपन-शील, सोने की आदतवाला (ओघभा १३३, दे ८ ३६)।

सुविरइय वि [सुविरचित] अच्छी तरह घटित, सुघटित (उवा २०६)।

सुविराइय वि [सुविराजित] सुशोभित (सुपा ३१०)।

सुविराहिय वि [सुविराधित] अतिशय विराधित (उव)।

सुविलास वि [सुविलास] सुन्दर विलासवाला (सुर ३, ११४)।

सुविवेइय वि [सुविवेचित] सम्यग् विवेचित (उव)।

सुविवेच सक [सुवि + विच्] अच्छी तरह व्याख्या करना। सक सुविवेचित (?य) (धर्मसं १३११)।

सुविसट्ट वि [सुविकसित] अच्छी तरह विकसित (सुर ३, १११)।

सुविसत्थ पु [दे] व्यभिचारी पुरुष (वज्जा ६८)।

सुविसाय पुंन [सुविसात] एक देव-विमान (सम ३८)।

सुविहाणा स्त्री [सुविधाना] विद्या-विशेष (पउम ७, १३७)।

सुविहि पु [सुविधि] १ नववाँ जिन भगवान् (सम ८५, पडि)। २ पुंस्त्री सुन्दर अनुष्ठान (पएह २, ५ टी—पत्र १४६)। ३ न. रामचन्द्र तथा लक्ष्मण का एक यान, चक्रमणं हवइ सुविहि-नामेणं' (पउम ८०, ८)।

सुविहिअ वि [सुविहित] सुन्दर आचरण-वाला, सदाचारी (मम १२५, भास १, उव, स १३०, माधं ११५, द्र ३२)।

सुवीर पु [सुवीर] १ यदुराज का एक पौत्र (अंत)। २ पुंन एक देव-विमान (सम १२)।

सुवीसत्थ वि [सुविश्वस्त] अच्छी तरह विश्वासप्राप्त (सुर ६, १५६, सुपा २११)।

सुवुण्णा स्त्री [दे] संकेत, इशारा (दे ८, ३७)।

सुवुरिस देखो सुपुरिस (गउड)।

सुवे अ [श्वस्] आगामी कल (हे २, ११४, चउ, कुमा)।

सुवेल पुं [सुवेल] १ पर्वत-विशेष (से ८, ८०)। २ न. नगर-विशेष (पउम ५४,४३)।

सोभिय देखो सोहिअ = शोभित (णाया १, १ टी—पत्र ३)।

सोम पु [सोम] १ चन्द्र, चांद, एक ज्योतिष्क महाग्रह (ठा २, ३—पत्र ७७, विसे १८८३, गउड)। २ भगवान् पार्श्वनाथ का पाँचवां गणधर (सम १३, ठा ८—पत्र ४२९)। ३ एक प्रसिद्ध क्षत्रिय-वंश (पउम ५, २)। ४ चतुर्थ बलदेव और वासुदेव का पिता (ठा ९—पत्र ४४७, पउम २०, १८२)। ५ एक विद्याधर नर-पति, जो ज्योति पुर का स्वामी था (पउम ७, ४३)। ६ एक सेठ का नाम (सुपा ५९७)। ७ एक ब्राह्मण का नाम (णाया १, १६—पत्र १९६)। ८ चमरेन्द्र, बलीन्द्र, सौधर्मेन्द्र तथा ईशानेन्द्र के एक-एक लोकपाल के नाम (ठा ४, १—पत्र २०४, भग ३, ७—पत्र १९४)। ९ लता-विशेष, सोमलता। १० उसका रस। ११ अमृत (पड्)। १२ आर्य-सुहस्ति सूरि का एक शिष्य—जैन मुनि (कप्प)। १३ पुन देव-विमान-विशेष (देवेन्द्र १३३, १४३, १४५)। १४ वि. कीर्त्तिमान्, यशस्वी (कप्प)। °काइय पु [°कायिक] सोम लोकपाल का आज्ञाकारी देव (भग ३, ७—पत्र १९५)। °ग्गहण न [°ग्रहण] चन्द्र-ग्रहण (हे ४, ३९६)। °चंद पु [°चन्द्र] १ ऐरवत क्षेत्र में उत्पन्न सातवें जिन-देव (सम १५३)। २ आचार्य हेमचन्द्र का दीक्षा समय का नाम (कुप्र २१)। °जस पुं [°यशस्] एक राजा (सुर २, १३४)। °णाह देखो °नाह (राज)। °दत्त पुं [°दत्त] १ एक ब्राह्मण का नाम (णाया १, १६—पत्र १९६)। २ एक जैन मुनि, जो भद्र-बाहु-स्वामी का शिष्य था (कप्प)। ३ भगवान् चन्द्रप्रभ स्वामीको प्रथम भिक्षा-दाता गृहस्थ (सम १५१)। ४ राजा शतानीक का एक पुरोहित (विपा १,५—पत्र ६०)। °देव पु [°देव] १ सोम नामक लोकपाल का सामानिक देव (भग ३, ७—पत्र १९५)। २ भगवान् पद्मप्रभ को प्रथम भिक्षा-दाता गृहस्थ (सम १५१)। °नाह पु [°नाथ] सौराष्ट्र देश की सुप्रसिद्ध महादेव-मूर्त्ति (ती १५, सम्मत्त ७५)। °प्पभ, °प्पह पु [°प्रभ] १ क्षत्रियों के सोमवंश का आदि पुरुष, बाहु-बलि का एक पुत्र (पउम ५ १०, कुप्र २१२)। २ तेरहवीं शताब्दी का एक जैन आचार्य और ग्रंथकार (कुप्र ११५)। ३ चमरेन्द्र के सोम लोकपाल का उत्पात-पर्वत (ठा १०—पत्र ४८२)। °भूइ पुं [°भूति] एक ब्राह्मण का नाम (णाया १, १६—पत्र १९६)। भूइय न [°भूतिक] एक कुल का नाम (कप्प)। °य न [°क] एक गोत्र जो कौत्स गोत्र की शाखा है (ठा ७—पत्र ३९०)। °व °वा, वि [°प, °पा] सोम-रस पीनेवाला (पड्)। °सिरी स्त्री [°श्री] एक ब्राह्मणी (अंत)। °सुंदर पुं [°सुन्दर] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य तथा ग्रन्थकार (सति १४, कुलक ४४)। °सूरि पु [°सूरि] एक जैनाचार्य, आराधना-प्रकरण का कर्ता एक जैनाचार्य (आप ७०)।

सोम वि [सौम्य] १ अरौद्र, अनुग्र (ठा ९, भग १२, ६—पत्र ५७८)। २ नीरोग, रोग-रहित (भग १२, ६)। ३ प्रशस्त, श्लाघ्य (कप्प)। ४ प्रिय दर्शन, जिसका दर्शन प्रिय मालूम हो वह। ५ मनोहर, सुन्दर। ६ शान्त आकृतिवाला (ओघभा २२, उव, सुपा १८०, ६२२)। ७ शोभा-युक्त, दीप्तिमान् (जं २)। देखो सोम्म।

सोमइअ वि [दे] सोने की आदतवाला (दे ८, ३९)।

सोमंगल पुं [सौमङ्गल] द्वीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, १२९)।

सोमणंतिअ वि [स्वापनान्तिक, स्वाप्नान्तिक] १ सोने के बाद किया जाता प्रतिक्रमण—प्रायश्चित्त-विशेष। २ स्वप्न-विशेष में किया जाता प्रतिक्रमण (ठा ६—पत्र ३७९)।

सोमणस पुं [सौमनस] १ महाविदेह-वर्ष का एक वक्षस्कार-पवत (ठा २, ३—पत्र ६९, सम १०२, जं ४)। २ उस पर्वत पर रहनेवाला एक महर्द्धिक देव (जं ४)। ३ पक्ष का आठवां दिन (सुज्ज १०, १४) ४ पुंन सनत्कुमार नामक इन्द्र का एक पारियानिक विमान (ठा ८—पत्र ४३७, औप)। ५ एक देव-विमान, छठवां ग्रैवेयक-विमान (देवेन्द्र १३७, १४३ पत्र १९८)। ६ सौमनस-पर्वत का एक शिखर (ठा २, ३—पत्र ८०)। ७ न मेरु-पर्वत का एक वन (ठा २, ३—पत्र ८०)।

सोमणस न [सौमनस्य] १ सुन्दर मन, सतुष्ट मन (राय, कप्प)।

सोमणसा स्त्री [सौमनसा] १ जम्बू-वृक्ष विशेष जिसमें यह द्वीप जम्बूद्वीप कहलाता है (इक)। २ एक राजधानी (इक)। ३ सौमनस वन की एक वापी (जं ४)। ४ पक्ष की पांचवी रात्रि (सुज्ज १०, १४)।

सोमणसिय वि [सौमनस्यित] १ सतुष्ट मनवाला। २ प्रशस्त मनवाला (कप्प)।

सोमणस्स देखो सोमणस = सौमनस्य (कप्प, औप)।

सोमणस्सिय देखो सोमणसिय (कप्प, औप, णाया १, १—पत्र १३)।

सोमल्ल देखो सोअमल्ल (प्राकृ २०, ३०)।

सोमहिंद न [दे] उदर, पेट (दे ८, ४५)।

सोमहिंडु पु [दे] पक, कादा (दे ८, ४३)।

सोमा स्त्री [सोमा] १ शक्र के सोम आदि चारों लोकपालों की एक-एक पटरानी का नाम (ठा ४, १—पत्र २०४)। २ सातवें जिनदेव की प्रथम शिष्या (सम १५२, पव ९)। ३ सोम लोकपाल की राजधानी (भग ३, ७—पत्र १९५)।

सोमा स्त्री [सौम्या] उत्तर दिशा (ठा १०—पत्र ४७८, भग १०, १—४९३)।

सोमाण न [श्मशान] मसान, मरघट (दे ८, ४५)।

सोमाणस पु [सौमानस] सातवां ग्रैवेयक विमान (पव १९४)।

सोमार } देखो सुकुमार (गा १८९, स
सोमाल } ३५६, मै ७, पड्, प्राप्र, हे १, १७१, कुमा, प्राकृ २०, ३८, भवि)।

सोमाल न [दे] मास (दे ८, ४४)।

सोमित्ति पु [सौमित्रि] राम भ्राता लक्ष्मण (गा ३५)।

सोमित्ती स्त्री [सुमित्रा] लक्ष्मण की माता। °पुत्त पु [°पुत्र] लक्ष्मण, 'रामसोमित्तिपुत्ता' (पउम ३८, ५७) °सुय पु [°सुत] वही अर्थ (पउम ७२, ३)।

सुसिलिट्ठ वि [सुश्लिष्ट] सुसंगत, अति सबद्ध (सुर १०, ८२, पंचा १८, २३)।

सुसिस्स पु [सुशिष्य] उत्तम चेला (उप पृ ४०१)।

सुसीअ वि [सुशीत] अति शीतल (कुमा)।

सुसीम न [सुसीम] नगर-विशेष (उप ७२८ टी)।

सुसीमा स्त्री [सुसीमा] १ भगवान् पद्मप्रभ की माता (सम १५१)। २ कृष्ण वासुदेव की एक पत्नी (अंत १५)। ३ वत्स नामक विजय-क्षेत्र की एक राजधानी (ठा २, ३—पत्र ८०)।

सुसील न [सुशील] १ उत्तम स्वभाव (पउम १४, ४४)। २ वि. उत्तम स्वभाववाला, सदाचारी (प्रासू ८)। °वंत वि [°वत्] सदाचारी (पउम १४, ४४, प्रासू ३६)।

सुसु पु [शिशु] बच्चा, बालक। °मार पु [°मार] जलचर प्राणी की एक जाति, महिषाकार मत्स्य-विशेष (पि ११७)। °मारिया स्त्री [°मारिका] वाद्य-विशेष (राय ४६)। देखो सुसुमार।

सुसुज्ज पुन [सुसूर्य] एक देव-विमान (सम १५)।

सुसुमार पु [सुसुमार] जलचर जन्तु की एक जाति (जी २०)। देखो सुसु-मार।

सुसुयंध वि [सुसुगन्ध] १ अत्यन्त सुगन्धी (पउम ६, ४१, गउड)। २ पु अत्यन्त खुशबू (गउड)।

सुसुर देखो ससुर (धर्मवि ११४, सिरि ३३४, ३४५, ३४७, ६८८)।

सुसुहंकर पु [सुशुभङ्कर] छन्द का एक भेद (पिंग)।

सुसूर पुन [सुसूर] एक देव-विमान (सम १०)।

सुसेण पुं [सुषेण] १ सुग्रीव का श्वशुर (ति ४, ११, १३, ८४)। २ एक मंत्री (विपा १, ४—पत्र ५४)। ३ भरत चक्रवर्ती का मन्त्री (राज)।

सुसेणा स्त्री [सुषेणा] एक बड़ी नदी (ठा ५, ३—पत्र ३५१)।

सुसोह वि [सुशोभ] अच्छी शोभावाला (सुपा २७५)।

सुसोहिय वि [सुशोभित] शोभा संपन्न, समलंकृत (उप ७२८ टी)।

सुस्स अक [शुष्] सूखना। सुस्से (सूअ १, २, १, १६)। वकृ. सुस्सत (स १६६)।

सुस्समण पुं [सुश्रमण] उत्तम साधु (उव)।

सुस्सर वि [सुस्वर] सुन्दर आवाजवाला (सुपा २८६)। देखो सुसर।

सुस्सरा स्त्री [सुस्वरा] गीतरति तथा गीतयश नाम के गन्धर्वेन्द्रों की एक एक अग्रमहिषी का नाम (ठा ४, १—पत्र २०४; इक)।

सुस्सार वि [सुसार] सार-युक्त (भवि)।

सुस्सावग } देखो सुसावग (उव, श्रा १२)।
सुस्सावय }

सुस्सील देखो सुसील (सुपा ११०, ५०८)।

सुस्सुअ देखो ससुअ (राज)।

सुस्सुयाय अक [सुसुकाय्, सूत्कारय्] सु सु आवाज करना, सूत्कार करना। संकृ सुस्सुयाइत्ता (उत्त २७, ७)।

सुस्सू स्त्री [श्वश्रू] सासू (बृह २)।

सुस्सूस सक [शुश्रूष्] सेवा करना। सुस्सूसइ (उव, महा)। वकृ सुस्सूसंत, सुस्सूसमाण (कुलक ३४, भग, औप)। हेकृ. सुस्सूसिटुं (शौ) (मा ३६)।

सुस्सूसअ वि [शुश्रूषक] सेवा करनेवाला (कप्पू)।

सुस्सूसण न [शुश्रूषण] सेवा, शुश्रूषा (कुप्र २४७, रत्न २१)।

सुस्सूसणया } स्त्री [शुश्रूषणा] ऊपर देखो
सुस्सूसणा } (उत्त २९, १, औप, णाया १, १३—पत्र १९८)।

सुस्सूसा स्त्री [शुश्रूषा] ऊपर देखो (सुपा १२७)।

सुह देखो सोह=शुभ्। सुहइ (वज्जा १४, पिंग)।

सुह सक [सुखय्] सुखी करना। सुहइ (पिंग), सुहेदि (शौ) (अभि ८९)।

सुह देखो सुभ (हे ३, २६, ३०, कुमा, सुपा ३६०, कम्म १, ५०)। °अ वि [°द] मंगलकारी (कुमा)। °कम्मि वि [°कर्मिक] पुण्यशाली (भवि)। °काम वि [°काम] मङ्गल की चाहवाला (सुपा ३२६)। °गर वि [°कर] मङ्गल-जनक (कुमा)। °णामा स्त्री [°नामा] पक्ष की पाँचवीं, दसवीं तथा पनरहवीं रात्रि-तिथि (सुज्ज १०, १५)। °त्थिय वि [°ार्थिन] १ शुभेच्छक (नाट)। २ शुभ अर्थवाला (णाया १, १—पत्र ७४)। °द देखो °अ (कुमा)।

सुह न [सुख] १ आनन्द चैन, मजा। २ आराम, शान्ति (ठा २, १—पत्र ४७, ३, १—पत्र ११४, भग, स्वप्न २३, प्रासू १३३, हे १, १७७, कुमा)। ३ निर्वाण, मुक्ति। ४ त्रि. जितेन्द्रिय (विसे ३४४३, ३४४४)। ५ सुख-प्रद, सुख-जनक (णाया १, १७—पत्र १७४, आचा, कम्म १, ५१)। ६ अनुकूल (णाया १, १२)। ७ सुखी (हे ३, १६)। °अ वि [°द] सुख-दायक (सुर २, ६५, सुपा ११०, कुमा)। °इत्तअ वि [°वत्] सुखी (पि ६००)। °कर वि [°कर] सुख-जनक (हे १, १७७)। °कामि वि [°कामिन्] सुखाभिलाषी (ओघ ११६)। °त्थि वि [°ार्थिन्] वही अर्थ (आचा)। °द वि [°द] सुख-दाता (वै १०३, कुमा)। °दाय वि [°दाय] वही (पउम १०३, १६२)। °फंस वि [°स्पर्श] कोमल (पाअ)। °यर देखो °कर (हे १, १७७, कुमा, सुपा ३)। °संझा स्त्री [°सन्ध्या] सुख-जनक सायंकाल (कप्पू)। °विह वि [°ावह] १ सुख-जनक (श्रा २८, उव; स ६७)। २ पुन एक पर्वत-शिखर (ठा २, ३—पत्र ८०)। °ासण न [°ासन] आसन-विशेष, पालकी (सुर २, ६०, सुपा २७८, कप्प)। °ासिया स्त्री [°ासिका] सुख से बैठना, सुखी स्थिति (प्रासू ८५)।

सुहउच्छिआ स्त्री [दे] दूती (दे ८, ६)।

सुहंकर वि [सुखङ्कर] सुख-कारक (सिरि ३९, कुमा)।

सुहंकर वि [शुभङ्कर] १ शुभ कारक (कुमा)। २ पु एक वणिक् का नाम (उप ५०७ टी)।

सुहंभर वि [सुखम्भर] सुखी (गउड)।

सोवरी स्त्री [शाम्बरी] विद्या-विशेष (सूअ २, २, २७)।

सोववत्तिअ वि [सोपपत्तिक] सयुक्तिक, युक्ति-युक्त (उप ७२८ टी)।

सोवाअ वि [सोपाय] उपाय-साध्य (गउड)।

सोवाग पु [श्वपाक] चाण्डाल, डोम (आचा, ठा, ४, ४—पत्र २७१, उत्त १३, ६, उव, सुपा ३७०, कुप्र २६२, उर १, ८५)।

सोवागी स्त्री [श्वापाकी] विद्या-विशेष (सूअ २, २, २७)।

सोवाण न [सोपान] सीढ़ी, निसेनी, पैडी (सम १०६, गा ३७८, उव, सुर , ६२)।

सोवासिणी देखो सवासिणी (भवि)।

सोविअ वि [स्वापित] सुलाया हुआ, शायित, 'कमलकिसलयरइए सत्थरए सोविओ तेण' (सुर ४, २४४, उप १०३१ टी)।

सोविदल्ल पुस्त्री [सौविदल्ल] अन्त:पुर का रक्षक (गउड)। स्त्री °ल्ली (सुपा ७)।

सोवीर पु ब [सौवीर] १ देश-विशेष (पव २७५, सूअ , ५ १, १—टी)। २ न काञ्जिक, काजी (ठा , ३—पत्र १४७, पाअ) अञ्जन-विशेष, सौवीर देश में होता सुरमा (जी ४)। ४ मद्य-विशेष (कस)।

सोवीरा स्त्री [सौवीरा] मध्यम ग्राम की एक मूर्छना (ठा ७—पत्र ३९३)।

सोव्व वि [दे] पतित-दन्त, जिसका दांत गिर गया हो वह (दे ८, ४५)।

सोस सक [शोषय्] सुखाना, शोषण करना। सोसइ (भवि)। वकृ सोसयंत (कप्प)।

सोस देखो सुस्स। सोसउ (हे ४, ३६५)।

सोस पु [शोष] १ शोषण (गउड, प्रासू ६४)। २ रोग-विशेष, दाह रोग (लहुअ १५)।

सोसण पु [दे] पवन, वायु (दे ८, ४५)।

सोसण न [शोषण] १ सुखाना। २ कामदेव का एक बाण (कप्पू)। ३ वि. शोषण-कर्ता, सुखानेवाला (पउम २८, ५ , कुप्र ४७)।

सोसणया } स्त्री [शोषणा] शोषण (उवा, सोसणा } उत्त ३ , ५)।

सोसणी स्त्री [दे] कटी, कमर (दे ८, ४५)।

सोसविअ वि [शोषित] सुखाया हुआ (हे ३, १५०, उव)।

सोसाव देखो सोस = शोषय्। हेकृ सोसाविदुं (शौ) (नाट)।

सोसास वि [सोच्छ्वास] ऊर्ध्व श्वास युक्त (पड्)।

सोसिअ देखो सोसविअ (हे ३, १५०, सुर ३, १ ६, महा)।

सोसिअ वि [सोच्छ्रित] ऊँचा किया हुआ (कप्प)।

सोसिल्ल वि [शोफवत्] शोफ युक्त, सूजन रोगवाला (विपा १, ७—पत्र ७३)।

सोह अक [शुभ्] शोभना, चमकना। सोहइ, सोहए सोहति (हे १, १८७ पाअ कुमा)। वकृ सोहंत, सोहमाण (कप्प, सुर ३, १११ नाट—उत्तर ८)।

सोह सक [शोभय्] शोभा युक्त करना। सोहेइ (उवा)।

सोह सक [शोधय्] १ शुद्धि करना। २ खोज करना, गवेषणा करना। ३ संशोधन करना। सोहेइ (उव)। वकृ. 'लूणिअ सगिह दट्ठु सोहिंतो दइअ निअ' (श्रा १२)। सोहेमाण (उवा, विपा १, १—पत्र ७)। कवकृ. सोहिज्जंत (उप ७२८ टी)। कृ सोहणीअ, सोहेयव्व (णाया १, १६—पत्र २०२, नाट—शकु ९६, सुपा ६५७)। संकृ. सोहइत्ता (उत्त २६, ४)।

सोह देखो सउह = सौध (रुक्मि ६१, प्रति ४१; नाट—मालती १३८)।

सोहंजण पु [दे शोभाञ्जन] वृक्ष-विशेष, सहिजने का पेड (दे ८, ३७, कप्पू)।

सोहग देखो सोभग (कप्प ३८ टी)।

सोहग पु [शोधक] धोबी, रजक (उप पृ २८१)। देखो सोहय = शोधक।

सोहग्ग न [सौभाग्य] १ सुभगता, लोक-प्रियता (औप, प्रासू ६६)। २ पति-प्रियता (सुर ३, १८१, प्रासू ८५)। ३ सुन्दर भाग्य (उप पृ ४७, १०८)। °कप्परुक्ख पु [°कल्पवृक्ष] तप-विशेष (पव २७१)। °गुलिया स्त्री [°गुटिका] सौभाग्य-जनक मन्त्र विशेष से संस्कृत गोली (सुपा ५६७)।

सोहग्गंजण न [सौभाग्याञ्जन] सौभाग्य-जनक अंजन (सुपा ५६७)।

सोहग्गिअ वि [सौभागिन] भाग्य शाली, सुन्दर भाग्यवाला (उप पृ ४७, १०८)।

सोहण पु [शोभन] १ एक प्रसिद्ध जैन मुनि (सम्मत्त ७५)। २ वि. शोभा-युक्त, सुन्दर (सुर १, १८७, ३, १८५, प्रासू १३२)। स्त्री. °णा, °णी (प्राकृ ८२)। °वर न [°वर] वैताढ्य की उत्तर श्रेणि का एक विद्याधर-नगर (इक)।

सोहण न [शोधन] १ शुद्धि, सफाई (उप ५६७ टी, सुज्ज १०, ६ टी, कप्प)। २ वि शुद्धि-जनक (श्रा ६)।

सोहणी स्त्री [दे] संमार्जनी, झाडू (दे ८, १७)।

सोहद्द न [सौहृद] १ मित्रता। २ बन्धुता (अभि २१८, अच्चु ५०)।

सोहम्म देखो सुधम्म, सुहम्म = सुधर्मन् (नम १६)।

सोहम्म पु [सौधर्म] प्रथम देवलोक (सम २, राय, अणु)। °कप्प पुं [°कल्प] पहला देवलोक, स्वर्ग-विशेष (महा)। °वइ पु [°पति] प्रथम देवलोक का स्वामी शक्रेन्द्र (सुपा ५१)। °वडिंसय पुन [°वतंसक] एक देव-विमान (सम ८, २५, राय ५६)। °सामि पु [°स्वामिन्] प्रथम देवलोक का इन्द्र (सुपा ५१)।

सोहम्म° देखो सुहम्मा (महा)।

सोहम्मण देखो सोहण = शोधन, 'रयणपि गुणुक्करिसं उवेइ सोहम्मणगुणेण' (कम्म ६, १ टी)।

सोहम्मिंद पु [सौधर्मेन्द्र] शक्र, प्रथम देव-लोक का स्वामी (महा)।

सोहम्मिय वि [सौधर्मिक] सौधर्म-देवलोक का (सण)।

सोहय वि [शोधक] शुद्धि-कर्ता, सफाई करनेवाला (विसे ११६६)। देखो सोहग = शोधक।

सोहय देखो सोहग = शोभक (उप पृ २१६)।

सोहल वि [शोभावत्] शोभा-युक्त (सण, भवि)।

सूअ पु [शूक] धान्य आदि का तीक्ष्ण अग्र भाग (गउड गा ५६८)।

सूअ वि [शून] फुला हुआ, सूजनवाला 'सूय-मुह सूणहत्थ सूयपाय' (विपा १, ७—पत्र ७३)।

सूअ पुं [सूप] दाल (पव ६१, टी, उवा, पराह २, ३—१२३, सुपा ५७)। °गार, °यार, °ार पु [°कार] रसोइया (स १७, कुप्र ६६, २७, श्रावक ६३ टी)। °ारिणी स्त्री [°कारिणी] रसोई बनानेवाली स्त्री (पउम ७७, १०६)।

सूअ देखो सुत्त = सूत्र। °गड पुन [°कृत] दूसरा जैन अंग-ग्रन्थ, 'आयारो सूयगडो' (सूअ २, १, २७ सम १)।

सूअअ, सूअक, सूअग त्रि [सूचक] १ सूचना करनेवाला (वेणी ४५, श्रा ११, सुर २, २२६)। २ पु पिशुन, खल, दुर्जन (पराह १, २—पत्र २८)। ३ गुप्त दूत, जासूस (प्राप्र)।

सूअग, सूअय न [सूतक] सूतक, जनन और मरण की अशुद्धि (पचा १३, २८, वव १)।

सूअण न [सूचन] सूचना (उव, सुर ७, २३३)।

सूअर पु [शूकर] सूअर, वराह (उवा, विपा १, ३—पत्र ५३, प्रयौ ७०)। °वल्ल पु [°वल्ल] अनन्तकाय वनस्पति विशेष (पव ४, श्रा २०)।

सूअरिअ वि [दे] यन्त्र-पीडित (दे ८ ४१ टी)।

सूअरिया, सूअरी स्त्री [दे] यन्त्र-पीडना (सुर १६, १५७, दे ८, ४१)।

सूअल न [दे] किशारु, धान्य का तीक्ष्ण अग्र भाग (दे ८, ३८)।

सूआ स्त्री [सूचा] सूचन, सूचना (पिंड ४३७, उपप ५०, सूअनि २)। °कर वि [°कर] सूचक (उप ७६८ टी)।

सूआ, सूइ स्त्री [सूति] प्रसव, प्रसूति, जन्म (पउम २६, ८५, १, ६१, सुपा २३)। °कम्म न [°कर्मन्] प्रसव-क्रिया (सुर १०, ?, सुपा ४०)। °हर न [°गृह] प्रसूति-गृह (पउम २६, ८५)।

सूइ स्त्री [सूचि] देखो सूई (आचा, सम १४६, राय २७)।

सूइअ वि [सूचित] जिसकी सूचना की गई हो वह (महा)। २ उक्त, कथित (पाअ)। ३ व्यञ्जनादि-युक्त (खाद्य) (दस ५, १, ६८)।

सूइअ वि [सूत] प्रसूत जिसने जन्म दिया हो वह, व्यायी 'साण सूइअ गावि' (दस ५, १ १२)।

सूइअ पु [सूचिक] दरजी (कुप्र ४०१)।

सूइअ पु [दे] चराडाल (दे ८ ३६)।

सूइय न [सुप्त] निद्रा 'सिज्ज अत्थरिऊण अलियसूइय काऊण अच्छइ' (महा)।

सूइय वि [दे सूप्य, सूपिक] भीजा हुआ (खाद्य) 'अवि सूइय वा सुक्कं वा' (आचा)।

सूइया स्त्री [सूतिका] प्रसूति-कर्म करनेवाली स्त्री (सम्मत्त १४५)।

सूई स्त्री [सूची] कपडा सीने की सलाई, सूई (पराह १, ३—पत्र ४४, गा ३६४, ५०२)। २ परिमाण-विशेष, एक अंगुल लम्बी एक प्रदेशवाली श्रेणी (अणु १५८)। ३ दो तख्तो के जोडने के काम में आती एक तरह की पतली कील (राय २७, ८२)। °फलय न [°फलक] तख्ते का वह हिस्सा, जहां सूची-कीलक लगाया गया हो (राय ८२)। °मुह पुं [°मुख] १ पक्षि-विशेष (पराह १ १—पत्र ८)। २ द्वीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (पराण १—पत्र ४४)। ३ न जहाँ सूची-कीलक तख्ते का छेद कर भीतर घुसता है उसके समीप की जगह (राय ८२)।

सूई स्त्री [दे] मजरी (दे ८, ४१)।

सूई° देखो सूइ = सूति (सुपा २६५)।

सूड सक [भञ्ज्, सूद्] भांगना, तोडना, विनाश करना। सूडइ (हे ४, १०६)। कर्म. सूडिज्जइ (पराह १, २—पत्र २६)।

सूडण न [सूदन] १ भञ्जन विनाश (गउड)। २ वि. विनाशक (पव २७१)।

सूण वि [शून] सूजा हुआ, सूजन से फुला हुआ (पउम १०३, १८८, गा ६३६, स ३७१, ८८०)।

सूण°, सूणा स्त्री [सूना] वध-स्थान (निर १, १, मा ३४, कुप्र २७६)। °वइ पुं [°पति] कसाई (दे २, ७०)।

सूणिग वि [शूनिक] १ सूजन का रोगवाला जिसका शरीर सूज गया हो वह। २ न सूजन (आचा)।

सूणु पु [सूनु] पुत्र, लडका (कुप्र ३१६)।

सूतक देखो सूअय = सूतक (वव १)।

सूप देखो सूअ = सूप (पराह २ ५—पत्र १४८)।

सूभग देखो सुभग 'सूभग दूभगनाम सूसर तह दूसरं चेव' (धर्मसं ६२०, श्रावक २३)।

सूभग देखो सोभग्ग (पिंड ५०२)।

सूमाल देखो सुउमाल (पराह १, ४—पत्र ७८, णाया १ १—पत्र ४७, १, १६—पत्र २००, कप्प, सुर १३, ११८ कुप्र ५५)।

सूर सक [भञ्ज्] तोडना, भांगना। सूरइ (हे ४, १०६)।

सूर वि [शूर] १ पराक्रमी, वीर (ठा ४, ३—पत्र २३७, कप्प, सुपा २२२, ४१२, प्रासू ७१)। २ पु. एक राजा (सुपा ६२२)। ३ पुन. एक देव-विमान (देवेन्द्र १४३)। °सेण पु [°सेन] एक भारतीय देश, जिसकी प्राचीन राजधानी मथुरा थी (विचार ४६, पउम ६८, ६६, ती १४, विक्र ६, सत्त ६७ टी)। २ ऐरवत वर्ष के एक भावी जिन-देव (सम १५४)। ३ एक जैनाचार्य (उप ७२८ टी। ४ भगवान् आदिनाथ का एक पुत्र (ती १४)।

सूर पु [सूर, सूर्य] १ सूर्य, रवि (हे २, ६४, ठा २, ३—पत्र ८५, उव, सुपा २२२, ६२२, कप्प, कुमा)। २ सतरहवें जिन-देव का पिता (सम १५१)। ३ इक्ष्वाकु-वंश का एक राजा (पउम ५, ६)। ४ एक लंका-पति (पउम ५, २६३)। ५ एक द्वीप का नाम (सुज्ज १६)। ६ एक राजा (सुपा ५५६)। ७ छन्द का एक भेद (पिंग) ८ पुन एक देव-विमान (सम १०)। °कंत, °कन पु [°कान्त] १ मणि-विशेष (स ६, ५०, पउम ३, ७५, पराण १—पत्र २६, उत्त ७७)। २ पुंन. एक देव-विमान (देवेन्द्र १४४, सम १०)। °कूड पुन [°कूट] एक देव-विमान—देव-भवन (सम १०)। °ज्झय पुन [°ध्वज] एक देव-विमान (सम १०)।

विष्णु। ९ परमेश्वर, परमात्मा। १० मत्सर। ११ मन्त्र-विशेष। १२ शरीर-स्थित वायु की चेष्टा-विशेष। १३ मेरु पर्वत। १४ शिव, महादेव। १५ अश्व की एक जाति। १६ श्रेष्ठ। १७ अगुआ। १८ विशुद्ध। १९ मन्त्र-वर्ण-विशेष (हे २, १८२)। २० पतंग, चतुरिन्द्रिय जन्तु-विशेष (अणु ३४)। °गब्भ पुं [°र्भ] रत्न की एक जाति (णाया १, १—पत्र ३१; १७—पत्र २२९, कप्प, उत्त ३६, ७७)। °तूली स्त्री [°तूली] बिछौने की गद्दी (सुर ३, १८८, ६, १२८)। °दीव पु [°द्वीप] द्वीप-विशेष (पउम ५४, ४५)। °लक्खण वि [°लक्षण] १ शुक्ल, सफेद (अत)। २ विशद, निर्मल (ज २)।

हसय पुन [हंसक] नूपुर (पाअ, सुपा ३२७)।

हसल पु [दे] आभूषण-विशेष (अणु)। देखो हासल।

हसी स्त्री [हंसी] १ हंस पक्षी की मादा (पाअ)। २ छन्द का एक भेद (पिंग)।

हंसुलय पुं [हंस] अश्व की एक उत्तम जाति (सम्मत्त २१६)।

हंहो अ [हंहो] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ संबोधन, आमन्त्रण (सुख २३, १, धर्मवि ५५, उप ५९७ टी)। २ तिरस्कार (धम्म ११ टी)। ३ दर्प, गर्व। ४ दम्भ, कपट। ५ प्रश्न (हे २, २१७)।

हकुव न [हकुव] फल-विशेष (अनु ५)।

हक्क सक [नि + षिध्] निषेध करना, निवारण करना। हक्कइ (हे ४, १३४, षड्)। वकृ. हक्कमाण (कुमा)।

हक्क सक [दे] हांकना—१ पुकारना, आह्वान करना। २ प्रेरणा करना। ३ खदेड़ना। हक्कई (सुपा १८३)। वकृ हक्कंत (सुर १५, २०३, सुपा ५३८)। कवकृ हक्किज्जंत (सुपा २५३)। संकृ हक्किय, हक्किउ, हक्किऊण (सुर २, २३१, सुपा २४८, महा)।

हक्का स्त्री [दे] हांक—१ पुकार, बुलाहट, आह्वान। २ प्रेरणा, 'धवलो धुरम्मि जुत्तो न सहइ उच्चारिय हक्कं' (वज्जा ३८, पिंग, सुपा १५१, सिरि ८१०, उप पृ ७८)।

हक्कार सक [आ + कारय्] पुकारना, आह्वान करना, बुलाना। हक्कारइ (महा; भवि)। हक्कारह (सुपा १८८)। कर्म. हक्कारिज्जतु (सुर १, १२९, सुपा २९२)। वकृ. हक्कारंत, हक्कारेमाण (सुर ३, ६८, णाया १, १८—पत्र २४०)। संकृ हक्कारिऊण, हक्कारेऊण (कुम ५, सुपा २२०)। प्रयो. हक्कारावइ (सुपा ११८)।

हक्कार सक [उद्] ऊंचे फैलाना। कर्म. हक्कारिज्जति (सिरि ४२४)।

हक्कार पु [हाकार] १ युगलिकों के समय की एक दण्डनीति (ठा ७—पत्र ३९८)। २ हांकने की आवाज (सुर १, २४६)।

हक्कारण न [आकारण] आह्वान (स २९४, कुप्र ११९)।

हक्कारिअ वि [आकारित] आहूत (सुपा २९६, ओघ ६२२ टी, महा)।

हक्किअ वि [दे] हांका हुआ—१ खदेड़ा हुआ, 'हक्किओ करी' (महा), 'जेण तओ पामत्थाइतेणमेणावि हक्किया सम्म' (सार्ध १०३)। २ आहूत (कुप्र १४१)। ३ प्रेरित (सुपा २९१)। ४ उन्नत (षड्)।

हक्किअ वि [निषिद्ध] निवारित (कुमा)।

हक्कोद्ध वि [दे] अभिलषित (दे ८, ६०)।

हक्खुत्त वि [दे] उत्पाटित, उठाया हुआ, उत्क्षिप्त (दे ८, ६०, पउम ११७, ५, पाअ, स ६१४)।

हक्खुव सक [उत् + क्षिप्] १ ऊँचा करना, उठाना। २ फेंकना। हक्खुवइ (हे ४, १४४), 'तणुयरदेहो देवो हक्खुवइ व किं महासेलं' (विसे ६६५)।

हक्खुविअ वि [उत्क्षिप्त] उत्पाटित (कुमा)।

हच्चा स्त्री [हत्या] वध, घात (कुप्र १५७, धर्मवि १७)।

हट्ट पुं [हट्ट] १ आपाण, बाजार (गा ७९४, भवि)। २ दूकान (सुपा ११, १८६)। °गाई, °गावी स्त्री [°गवी] व्यभिचारिणी स्त्री, कुलटा (सुपा ३०१, ३०२)।

हट्टिगा } स्त्री [हट्टिका] छोटी दूकान (मोह
हट्टी } ९२, सुपा १८९)।

हट्ठ वि [हृष्ट] १ हर्ष-युक्त, आनन्दित। २ विस्मित (उवा विपा १, १, औप राय)। ३ नीरोग, रोग-रहित, 'हट्ठेण गिलाणेण व अमुगतवो अमुगदिणम्मि नियमेण कायव्वो' (पव ४—गाथा १९२)। ४ शक्तिशाली जवान, समर्थ तरुण (कप्प)। ५ दृढ, मजबूत (ओघ ७५)।

°हट्ठ देखो भट्ठ (गा ६५४ अ)।

हट्ठमहट्ठ वि [दे] १ नीरोग। २ दक्ष, चतुर (दे ८, ६५)। ३ स्वस्थ युवा (षड्)।

हड वि [दे. हृत] जिसका हरण किया गया हो वह (दे ८, ५९, कप्प)।

हडक्क } (मा) देखो हिअअ = हृदय (प्राकृ
हडक्क } १०५, १०२, प्राप, नाट—मृच्छ ६१, पि ५०, १५०)।

हडप्प } पु [दे] १ पात्र-विशेष, द्रम्म
हडप्फ } आदि का पात्र। २ ताम्बूल आदि का पात्र (औप)। ३ आभरण का करण्डक (णाया १, १ टी—पत्र ५७, ५८)।

हडहड पुं [दे] १ अनुराग, प्रेम (दे ८, ७४; षड्)। २ ताप (दे ८, ७४)।

हडहड पु [हडहड] 'हड हड' आवाज (सिरि ७७९)।

हडाहड वि [दे] अत्यर्थ, अत्यन्त (विपा १, १—पत्र ५ णाया १, १६—पत्र १९६)।

हडि पुं [हडि] काष्ठ का बन्धन-विशेष, काठ की बेड़ी (णाया १, २—पत्र ८६, विपा १, ६—पत्र ६६, औप, कम्म १, २३)।

हड्ड न [दे] हाड, अस्थि (दे ८, ५९, तंदु ३८, सुपा ३५५, श्रु १००)।

हढ पुं [हठ] १ बलात्कार (पाअ, पण्ह १, ३—पत्र ४४, दे १, १९)। २ जल में होनेवाली वनस्पति-विशेष, कुम्भी, जलकुम्भी, काई; 'वायाइद्धो व्व हढो अट्ठिअप्पा भविस्ससि' (उत्त २२, ४४, सूअ २, ३, १८, पण्ण १—पत्र ३४)।

हण सक [हन्] १ वध करना। २ जाना, गति करना। हणइ, हणिया (कुमा, आचा)। भूका. हणिसु, हणीअ (आचा, कुमा)। भवि, हणिही (कुमा) कर्म. हणिज्जइ, हणिज्जए, हणए, हन्नइ, हम्मइ (हे ४, २४४, कुमा, प्रासू १६, आचा)।

सूसुअ वि [सुश्रुत] १ अच्छी तरह सुना हुआ। २ अच्छी तरह ज्ञात (वज्जा १०६)। ३ पु. वैद्यक ग्रन्थ-विशेष (वज्जा १०६)।

सूहअ } देखो सुभग (सक्षि २०, हे १, सूहव } ११३, १९२)।

से° देखो सेअ = श्वेत। °वड पु [°पट] श्वेताम्बर जैन (सम्मत्त १३७)।

से अ [दे] इन अर्थों का सूचक अव्यय— १ वाक्य का उपन्यास। २ प्रश्न (भग १, १, उवा)। ३ प्रस्तुत वस्तु का परामर्श (उत्त २, ४०, ज)। ४ अनन्तरता (ठा १०—पत्र ४६५)।

से } अक [शी] सोना। सेइ, सेअइ सेअ } (षड्)।

सेअ सक [सिच्] सींचना। सेअइ (हे ४, ९६)।

सेअ पुं [दे] गणपति, गणेश (दे ८, ४२)।

सेअ पुं [सेय] १ कर्दम, कादो, पंक (सूअ २, १, २, णाया १, १—पत्र ६३)। २ एक अधम मनुष्य-जाति, 'चडाला मुट्ठिया सेया जे अन्ने पावकम्मिणो' (ठा ७—पत्र ३९३)।

सेअ पु [स्वेद] पसीना (गा ५७८, दे ४, ४६, कुमा)।

सेअ पु [सेक] सेचन, सींचना (मै ६५, गा ७९६, हेका ६६, अभि ३३)।

सेअ न [श्रेयस्] १ शुभ, कल्याण (भग)। २ धर्म। ३ मुक्ति, मोक्ष (ह १, ३२)। ४ वि. अति प्रशस्त, अतिशय शुभ, 'इय संजमोवि सेओ' (पचा ७,१४, कुमा, पच ९६)। ५ पु. अहोरात्र का दूसरा मुहूर्त (सुज्ज १०, १३)।

सेअ वि [सैज] सकम्प, कम्प-युक्त (भग ५, ७—पत्र २३४)।

सेअ वि [श्वेत] १ शुक्ल, सफेद (णाया १, १—पत्र ५३, अभि ३३, उव)। २ पु. एक इन्द्र, कुम्भड-निकाय के दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। ३ शक्र की नट-सेना का अधिपति (इक)। ४ आमलकल्पा नगरी का एक राजा, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (ठा ८—पत्र ४३०, राय ६)। °कंठ पु [°कण्ठ] भूतानन्द नामक इन्द्र के महिष-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०२, इक)। °पड, °वड पु [°पट] श्वेताम्बर जैन, जैन का एक संप्रदाय (सुपा ६४१, विसे २५८५, धर्मसं ११०६)।

सेअ वि [एष्यत्] आगामी, भविष्य, 'पभू ण भंते केवली सेयकालंसि वि तेसु चेव आगासपदेसेसु हत्थं वा जाव आगाहित्ताणं चिट्ठित्तए' (भग ५, ४—पत्र २२३ ठा १०—पत्र ४६५ अणु २१)। °ल पुं [°काल] भविष्य काल (भग, उत्त २९, ७१)।

सेअंकर पु [श्रेयस्कर] ज्योतिष्क ग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)।

सेअकार पुं [श्रेयस्कार] श्रेय-करण, 'श्रेयस्' का उच्चारण (ठा १०—पत्र ४६५)।

सेअवर पु [श्वेताम्बर] १ एक जैन सम्प्रदाय (स २, सम्मत्त १२३, सुपा ५६६)। २ न सफेद वस्त्र (पउम ६६, ३०)।

सेअस पु [श्रेयांस] १ एक राज-कुमार (धण १५)। २ चतुर्थ वासुदेव तथा बलदेव के पूर्व जन्म के धर्म गुरु—एक जैन मुनि (सम १५३, पउम २०, १७६)। देखो सेज्जंस।

सेअंस देखो सेअ = श्रेयस् (ठा ४, ४—पत्र २६५)।

सेअण न [सेचन] सेक, सींचना (कुमा, अभि ४७, णाया १, १३—पत्र १८१, सुपा ३०६)। °वह पु [°पथ] नीक (आचा २, १०, २)।

सेअणग } पु [सेचनक] १ राजा श्रेणिक सेअणय } का एक हाथी (उप २६४ टी, णाया १, १—पत्र २५)। २ वि सींचनेवाला (कुमा)। देखो सेचणय।

सेअविअ वि [सेवनीय] सेवा-योग्य, 'ण सिक्खती सेयवियस्स किंचि' (सूअ १, ५, १, ४)।

सेअविआ स्त्री [श्वेतविका] केकयार्ध देश की प्राचीन राजधानी (विचार ५०, पव २७५, इक)।

सेआ स्त्री [श्वेतता] सफेदपन (सुज्ज १, १)।

सेआ देखो सेवा (नाट—चैत ९२)।

सेआल देखो सेवाल = शैवाल (से २, ३१)।

सेआल देखो सेअ-ाल = एष्यत्-काल।

सेआल पु [दे] १ गांव का मुखिया। २ सान्निध्य करनेवाला यक्ष आदि (दे ८, ५८)। ३ कृषक, खेती करनेवाला गृहस्थ (पाअ)।

सेआली स्त्री [दे] दूर्वा, दूब, दूभ (दे ८,२७)।

सेआलुअ पु [दे] मनौती की सिद्धि के लिए उत्सृष्ट बैल (दे ८, ८४)।

सेइअ त [स्वेदित] पसीना (भवि)।

सेइआ } स्त्री [सेतिका] परिमाण-विशेष, सेइगा } दो प्रसृति की एक नाप (तदु २९, उप पृ ३३७, अणु १५१)।

सेउ पु न [सेतु] १ बांध, पुल (से ६ ७७, कुप्र २२०, कुमा)। २ आलवाल क्यारी, थांवला। ३ किवाड़ी के पानी से सींचने योग्य खेत (औप, णाया १, १ टी—पत्र १)। ४ मार्ग (औप, णाया १, १ टी—पत्र १, कप्प ८९)। °बंध पु [°बन्ध] पुल बांधना (से ६, १७)। °वह पु [°पथ] पुलवाला मार्ग (से ८, ०८)।

सेउ वि [सेक्तृ] सेचक, सिंचन करनेवाला (कप्प ८९)।

सेउय वि [सेवक] सेवा-कर्ता (कप्प ६)।

सेंदूर देखो सिंदूर (प्राप्र, सक्षि ३)।

सेंधव देखो सिंधव (विक्र ८९)।

सेंभ देखो सिंभ (उव, पि २६७)।

सेंभिय देखो सिंभिय (भग, पि २६७)।

सेयाडन पुं [दे] चुटकी की आवाज (दे ८, ४३)।

सेचणय न [सेचनक] सिंचन छिड़काव (मोह २७)। देखो सेअणय।

सेचाण (अप) पु [श्येन] छन्द-विशेष (पिंग)। देखो सेण = श्येन।

सेच्च न [शैत्य] शीतपन ठंढापन (प्राप्र)।

सेज्ज° देखो सेज्जा। °वइ पुं [°पति] वसति-स्वामी गृहस्थ (पव ८४)।

सेज्जभव देखो सिज्जंभव (कप्प, दसनि १, १२)।

सेज्जंस पु [श्रेयांस] १ ग्यारहवें जिनदेव का नाम (सम ८८, कप्प)। २ एक राज-पुत्र,

(रथा)। °त्थंभ पु [°स्तम्भ] पाषाण का खंभा (कम्म १, १८)। °पाल, °वाल पुं [°पाल] १ धरण तथा भूतानन्द नामक इन्द्रों का एक एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १९७, इक)। २ एक जैनेतर धर्मावलम्बी पुरुष (भग ७, १०—पत्र ३२३)। °स न [°स] वज्र (से ३, २७)। °सिहर न [°शिखर] पर्वत का शिखर (कप्प)। °सुआ स्त्री [°सुता] पार्वती (पाअ)।

सेलग } पुं [शैलक] १ एक राजर्षि (णाया
सेलय } १, ५—पत्र १०४; १११)। २ एक यक्ष (पि १५६; णाया १ ९—पत्र १६४)। °पुर न [°पुर] एक नगर (णाया १, ५)।

सेलयय न [शैलगज] एक गोत्र (ठा ७—पत्र ३९०, राज)।

सेला स्त्री [शैला] तीसरी नरक-पृथिवी (ठा ७—पत्र ३८८, इक)।

सेलाइच्च पु [शैलादित्य] वलभीपुर का एक प्रसिद्ध राजा (ती १५)।

सेलु पु [शैलु] श्लेष्म-नाशक वृक्ष-विशेष (पएण १—पत्र ३१)।

सेलूस पुं [दे] कितव, जुआडी (दे ८, २१)।

सेलेय वि [शैलेय] पर्वत मे उत्पन्न, पर्वतीय (धर्मवि १४०)।

सेलेस पु [शैलेश] मेरु पर्वत (विसे ३०६५)।

सेलेसी स्त्री [शैलेशी] मेरु की तरह निश्चल साम्यावस्था, योगी की सर्वोत्कृष्ट अवस्था (विसे ३०६५, ३०६७, सुपा ६५५)।

सेलोदाइ पु [शैलोदायिन्] एक जैनेतर धर्मावलम्बी गृहस्थ (भग ७, १०—पत्र ३२३)।

सेल्ल देखो सेल = शैल, 'न हु भिज्जइ ताए मए सेल्लं मिव सलिलपूरेण' (वज्जा ११२)।

सेल्ल पु [दे] १ मृग-शिशु। २ शर, बाण (दे ८, ५७)। ३ कुन्त, बर्छा (कुमा, हे ४, ३८७)।

सेल्ल पु [शैल्य] एक राजा (णाया १, १६—पत्र २०८)।

सेल्लग पु [शैल्यक] भुजपरिसर्प की एक जाति, जन्तु-विशेष (पएह १, १—पत्र ८)।

सेल्लि स्त्री [दे] रज्जु, रस्सी (उत्त २७, ७)।

सेव सक [सेव्] १ आराधन करना। २ आश्रय करना। ३ उपभोग करना। सेवइ, सेवए (आचा, उव, महा)। भूका सेवित्था, सेविसु (आचा)। वकृ सेवमाण (सम ३९, भग)। कवकृ. सेविज्जत, सेविज्जमाण (सुर १२, १३९, कप्प)। संकृ. सेविअ, सेवित्ता (नाट—मृच्छ २८५, आचा)। कृ सेवेयव्व (सुपा ५५७, कुमा), सेवणिज्ज (सुपा १९७)।

सेवग देखो सेवय (पचा ११, ४१)।

सेवड देखो से° = श्वेत।

सेवण न [सेवन] १ सीना, सिलाई करना (उप पृ १२३)। २ सेवा (उत्त ३५, ३)।

सेवणया } स्त्री [सेवना] सेवा (उत्त २९,
सेवणा } १, उप ८०१)।

सेवय वि [सेवक] १ सेवा-कर्ता (कुप्र ४०२)। २ पुं नौकर, भृत्य (पाअ, कुप्र ४०२, सुपा ५३२)।

सेवल न [शैवल] सेवार, सेवाल, एक प्रकार की घास जो नदियों में लगती है (पाअ)।

सेवा स्त्री [सेवा] १ भजन, पर्युपासना, भक्ति। २ उपभोग। ३ आश्रय। ४ आराधन (हे २, ९९, कुमा)।

सेवाड } न [शैवाल] १ सेवार, सेवाल,
सेवाल } घास विशेष (उप पृ १३६, पाअ, जी ६)। २ पु एक तापस, जिसको गौतम स्वामी ने प्रतिबोध किया था (कुप्र २९३)। °दाइ पु [°दायिन्] भगवान् महावीर के समय का एक अजैन पुरुष (भग ७, १०—पत्र ३२३)।

सेवाल पु [दे] पङ्क, कादा, काँदो (दे ८, ४३, पड्)।

सेवालि पु [शैवालिन्] एक तापस, जिसको गौतम स्वामी ने प्रतिबोध किया था (उप १४२ टी)।

सेवालिय वि [शैवालिक, °त] सेवालवाला, शैवाल-युक्त, 'सेवालियभूमितले फिल्लुसमाणा य थामथामम्मि' (सुर २, १०५)।

सेवि वि [सेविन्] सेवा-कर्ता (उवा)।

सेवित्तु वि [सेवितृ] ऊपर देखो (सम १५)।

सेविय वि [सेवित] जिसकी सेवा की गई हो वह (काल)।

सेव्वा देखो सेवा (हे २, ९९, प्राप्र)।

सेस पुं [शेष] १ शेष-नाग, सर्प राज (से १, २८)। २ छन्द का एक भेद (पिंग)। ३ वि. अवशिष्ट, बाकी का (ठा ३, १ टी—पत्र ११४, दमनि १, १३४, हे १, १८२, गउड)। °मई, °वई स्त्री [°वती] १ सातवें वसुदेव की माता (सम १५२)। २ दक्षिण रुचक पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६, इक)। ३ वल्ली-विशेष (पएण १—पत्र ३३)। ४ भगवान् महावीर की दौहित्री—पुत्री की पुत्री (आचा २, १५, १६)। °व न [°वत्] अनुमान का एक भेद (अणु २१२)। °राअ पुं [°राज] छन्द-विशेष (पिंग)।

सेसव न [शैशव] बाल्यावस्था (दे ७, ७६)।

सेसा स्त्री [शेषा] निर्माल्य (उप ७२८ टी, सिरि ५५५)।

सेसिअ वि [शेषित] १ बाकी बचाया हुआ (गा ९६१)। २ अल्प किया हुआ, खतम किया हुआ (विसे ३०२९)।

सेसिअ वि [श्लेषित] सबद्ध किया हुआ, चिपकाया हुआ (विसे ३०३६)।

सेह अक [नश्] पलायन करना, भागना। सेहइ (हे ४, १७८, कुमा)।

सेह सक [शिक्षय्] १ सिखाना, सीख देना। २ सजा करना। सेहति (सूअ १, २, १, १९)। कवकृ सेहिज्जत (सुपा २४५)।

सेह पुं [दे. सेह] भुजपरिसर्प की एक जाति, साही, जिसके शरीर मे काँटे होते है (पएह १, १—पत्र ८, पएण १—पत्र ५३)।

सेह पु [शैक्ष] १ नव-दीक्षित साधु (सूअ १, ३, १, ३, सम ५८, ओघ १९५, ३७८, उव, कस)। २ जिसको दीक्षा दी जानेवाली हो वह (पव १०७)। ३ शिष्य, चेला (सुख १, १३)।

सेह पु [सेध] सिद्धि (उवा)।

सेहव वि [सेधाम्ल] खाद्य-विशेष, वह खाद्य जिसमे पकने पर खटाई का संस्कार किया जाय (उवा, पएह २, ५—पत्र १५०)।

सोगंधिया स्त्री [सौगन्धिका] नगरी-विशेष (णाया १, ५—पत्र १०५)।
सोगमल्ल देखो सोअमल्ल (दस २, ५)।
सोग्गइ देखो सुग्गइ (उत्त २८, ३, पउम २६, ६०, स २५०)।
सोग्गाह (?) अक [प्र + सृ] पसरना, फैलना। सोग्गाहइ (वज्जा १५६)।
सोच देखो सोअ = शुच्। वकृ सोचत, सोचमाण (नाट—मृच्छ २८१, णाया १, १—पत्र ८७)। संकृ 'सोचिऊण हत्थपाए आरोग्गमणिरयणेण ओमज्जिओ राया' (स ५६७)। कृ सोच (उव)।
सोचिअ वि [शोचित] शुद्ध किया हुआ, प्रक्षालित (स ३४८)।
सोच्च देखो सोच।
सोच्चं
सोच्चा } देखो सुण = श्रु।
सोच्छ°
सोच्छिअ देखो सोत्थिअ (इक)।
सोजण्ण } न [सौजन्य] सुजनता, सज्जनता,
सोजन्न } भलमनसी (उप ७२८ टी, सुर २, ६१)।
सोज्ज देखो सोरिअ = शौर्य (प्राकृ १६)।
सोज्झ वि [शोध्य] शुद्धि-योग्य, शोधनीय (मुज्ज १०, ६ टी)।
सोज्झय पु [दे] रजक, धोबी (पाअ)। देखो सुज्झय।
सोडिअ देखो सोंडिअ (कर्पूर ३४)।
सोडीर वि [शौटीर] देखो सोंडीर = शौण्डीर (कप्प, औप, मोह १०४, कप्पू, चारु ६८)।
सोडीर न [शौटीर्य] देखो सोंडीर = शौण्डीर्य (कुमा, से ३, ४, ५, ३, १३, ५६, ८७, प्राकृ १६)।
सोढ वि [सोढ] सहन किया हुआ (उप २६४ टी, वज्जा १५७)।
सोढव्व } देखो सह = सह्।
सोढु }
सोण वि [शोण] लाल, रक्त वर्णवाला (पाअ)।
सोणंद न [दे सौनन्द] त्रिकाष्ठिका, तिपाई (पण्ह १, ४—पत्र ७८, औप, तदु २०)।
सोणहिअ वि [शौनकिक] १ श्वान-पालक। २ कुत्तों से शिकार करनेवाला (स २५३)।
सोणार देखो सुण्णार (गा १६१, पि ६६, १५२)।
सोणि स्त्री [श्रोणि] कटी, कमर (कप्प, उप १५६)। °सुत्तग न [सूत्रक] कटी-सूत्र, करधनी (औप)।
सोणिअ पुं [शौनिक] कसाई (दे ६, ६२)।
सोणिअ न [शोणित] रुधिर, खून (उवा, भवि)।
सोणिम पुंस्त्री [शोणिमन्] रक्तता, लाली (विक्र २८)।
सोणी स्त्री [श्रोणी] देखो सोणि (पण्ह १, ४—पत्र ६८, ७६)।
सोणीअ देखो सोणिअ = शोणित, 'भुजते मससोणीअ ण छणे ण पमज्जए' (आचा १, ८, ८, ६, पि ७३)।
सोण्ण न [स्वर्ण] सोना, सुवर्ण (प्राकृ ३०, संक्षि २१)।
सोण्ह देखो सुण्ह = सूक्ष्म (षड्, गा ७२३)।
सोण्हा देखो सुण्हा = स्नुषा (संक्षि १५, प्राकृ ३७, गा १०७, काप्र ८६३)।
सोत्त न [श्रोत्र] कान, श्रवणेन्द्रिय (आचा, रंभा, विक्र ६८)।
सोत्त देखो सोअ = स्रोतस् (हे २, ६८, गा ५५१, से १, ५८, कुमा)।
सोत्ति देखो सुत्ति = शुक्ति (षड्, उप ६४८ टी)।
सोत्तिअ पु [श्रोत्रिय] वेदाभ्यासी ब्राह्मण (पिंड ४३६, नाट—मृच्छ १३४, प्राप)।
सोत्तिअ वि [सौत्रिक] १ सूत्र-निर्मित, सूते का बना हुआ (ओघभा ८६; ओघ ७०५)। २ सूते का व्यापारी (अणु १४६)।
सोत्तिअ पुं [शौक्तिक] द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष (पण्ण १—पत्र ४८)।
सोत्तिअमई } स्त्री [शुक्तिमती] केकय
सोत्तिअवई } देश की प्राचीन राजधानी (राज, इक)।
सोत्ती स्त्री [दे] नदी (दे ८, ४४, षड्)।
सोत्थि पुंन [स्वस्ति] १ एक देव-विमान (देवेन्द्र १३३)। २—देखो सत्थि (संक्षि २१, गा २८८, अभि १२८, नाट—रत्ना १०)।
सोत्थिअ पु [स्वस्तिक] १ ज्योतिष्क ग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। २ न शाक-विशेष, एक प्रकार की हरित वनस्पति (पण्ण १—पत्र ३४)। ३—देखो सत्थिअ, सोवत्थिअ = स्वस्तिक (पण्ह १, ४—पत्र ६८, णाया १, १—पत्र ५४)।
सोदाम पु [सौदाम] देखो सोदामि (इक)।
सोदामणी देखो सोआमणी (पउम २६, ८१)।
सोदामि पु [सौदामिन्] चमरेन्द्र के अश्व-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०२)।
सोदामिणी देखो सोआमिणी (नाट—मालती ८)।
सोदास पुं [सौदास] एक राजा (पउम २२, ८१)।
सोध (शौ) देखो सउह = सौध (पि ६१ ए)।
सोपार } पुं व. [सोपार, °क] देश-
सोपारय } विशेष (पउम ६८, ६४, सुपा २७५)। २ न. नगर-विशेष (सार्ध ३६, ती ११)।
सोबंधव वि [सौबन्धव] सुबन्धु नामक कवि का बनाया हुआ ग्रंथ (गउड)।
सोभ अक [शुभ्] शोभना, चमकना। सोभति (सुज्ज १६) भूका. सोभिंसु, सोभेंसु (सुज्ज १६)। भवि सोभिस्सति (सुज्ज १६)। वकृ सोभत (णाया १, १—पत्र २५, कप्प, औप)।
सोभ सक [शोभय्] शोभाना, शोभा-युक्त करना। सोभेइ (भग)। वकृ सोभयत (पि ४६०)। संकृ सोभित्ता (कप्प)।
सोभग वि [शोभक] १ शोभनेवाला। २ शोभानेवाला (कप्प)।
सोभग्ग देखो सोहग्ग (स्वप्न ४५)।
सोभण देखो सोहण = शोभन (पउम ७८, ५६, स्वप्न ४६)।
सोभा देखो सोहा = शोभा (प्राकृ १७, उत्त २१, ८, कप्प, सुज्ज १६)।

सोमिल पु [सोमिल] एक ब्राह्मण (अंत ६)।

सोमित्ति देखो सोमित्ति = सौमित्रि (से १२ ८८)।

सोमेसर पु [सोमेश्वर] सौराष्ट्र का सोमनाथ महादेव (सम्मत्त ७५)।

सोम्म वि [सौम्य] १ रमणीय, सुन्दर (से १, २७)। २ ठंढा शीतल (से ४, ८)। ३ शीतल प्रकृतिवाला शान्त स्वभाववाला (से ५, १६, विसे १७३१)। ४ प्रिय-दर्शन, जिसका दर्शन प्रिय लगे वह। ५ जिसका अधिष्ठाता सोम-देवता हो वह। ६ भास्वर, कान्तिवाला। ७ पु. बुध ग्रह। ८ शुभ ग्रह। ९ वृष आदि सम राशि। १० उदुम्बर वृक्ष। ११ द्वीप-विशेष। १२ सोम रस पीनेवाला ब्राह्मण (प्राप्र)। देखो सोम = सौम्य।

सोच्चि (अप) अ [स एव] वही (प्राकृ १२१)।

सोरट्ठ पुं [सौराष्ट्र] १ एक भारतीय देश, सोरठ, काठियावाड़ (इक, ती १५)। २ वि. सोरठ देश का निवासी (श्रावक ९३)। ३ न छन्द-विशेष (पिंग)।

सोरट्ठिया स्त्री [सौराष्ट्रिका] १ एक प्रकार की मिट्टी, फिटकिरी (आचा २, १, ६, ३, दस ५, १, ३४)। २ एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)।

सोरब्भ, सोरभ, सोरभ न [सौरभ] सुगन्ध, खुशबू (विक्र ११३, कुप्र २२८, भवि, उप ९८६ टी)।

सोरसेणी स्त्री [शौरसेनी] शूरसेन देश की प्राचीन भाषा, प्राकृत भाषा का एक भेद (विक्र ६७)।

सोरह देखो सोरभ (गउड)।

सोरिअ न [शौर्य] शूरता, पराक्रम (प्राप्र, प्राकृ १९)।

सोरिअ न [शौरिक] १ कुशावर्त देश की प्राचीन राजधानी (इक)। २ एक यक्ष (विपा १, ८—पत्र ८२)। °दत्त पु [°दत्त] १ एक मच्छीमार का पुत्र (विपा १, १—पत्र ४, विपा १, ८)। २ एक राजा (विपा १, ८—पत्र ८२)। °पुर न [°पुर] एक नगर (विपा १, ८)। °वडिंसग न [°वतंसक] एक उद्यान (विपा १, ८—पत्र ८२)।

सोलस त्रि. व [षोडशन्] १ संख्या-विशेष, सोलह, १६। २ सोलह संख्यावाला (भग ३५, १—पत्र ९६४, ९६७, उवा, सुर १, ३५, प्रासू ७७, पि ४४३)। ३ वि. सोलहवाँ, १६ वाँ (राज)। °म वि [°श] १ सोलहवाँ, १६ वाँ (णाया १, १६—पत्र १९६, सुर १६, २५१, पत्र ४६)। २ लगातार सात दिनों के उपवास (णाया १, १—पत्र ७२)। °य न [°क] सोलह का समूह (उत्त ३१, १३)। °विह वि [°विध] सोलह प्रकार का (पि ४५१)।

सोलसिआ स्त्री [षोडशिका] रस-मान-विशेष, सोलह पलों की एक नाप (अणु १५२)।

सोलह देखो सोलस (नाट, भवि)।

सोलहावत्तय पु [दे] शङ्ख (दे ८, ४६)।

सोल्ल सक [पच्] पकाना। सोल्लइ (हे ४, ९०, धात्वा १५६)। वकृ. सोल्लंत (विपा १, ३—पत्र ४३)।

सोल्ल सक [क्षिप्] फेंकना। सोल्लइ (हे ४, १४३, षड्)। कर्म सोल्लिज्जइ (कुमा)।

सोल्ल सक [ईर्, सम् + ईर्] प्रेरणा करना। सोल्लइ (धात्वा १५६, प्राकृ ६६)।

सोल्ल न [दे] माँस (दे ८, ४४)। देखो सुल्ल = शूल्य।

सोल्ल वि [पक्व] पकाया हुआ (उवा, विपा १, २—पत्र २७, १, ८—पत्र ८५, ८६, औप)।

सोल्लिय वि [पक्व] १ पकाया हुआ, 'इंगालसोल्लिय' (औप)। २ न. पुष्प-विशेष (औप)।

सोव देखो सुव = स्वप्। सोवइ, सोवति (हे १, ६४, उव, भवि, पि १५२)।

सोवक्कम, सोवक्कम वि [सोपक्रम] निमित्त-कारण से जो नष्ट या कम हो सके वह कर्म, आयु, आपदा आदि (सुपा ४५२, ४५९)।

सोवचिय वि [सोपचित] उपचय-युक्त, स्फीत, पुष्ट (कप्प)।

सोवच्चल पुंन [सौवर्चल] एक तरह का नोन, काला नमक (दस ३, ८, चउ)।

सोवण न [स्वपन] शयन, सोना (उप पृ २३७)।

सोवण न [दे] १ वास-गृह, शय्या-गृह, रति-मन्दिर (दे ८, ५८, स ५०३ पाअ)। २ स्वप्न। ३ पुं मल्ल (दे ८, ५८)।

सोवण (अप) देखो सोवण्ण (भवि)।

सोवणिअ वि [शौवनिक] १ श्वान-पालक, कुत्तों को पालनेवाला। २ कुत्तों से शिकार करनेवाला (सूअ २, २, ४२)।

सोवणी स्त्री [स्वापनी] विद्या-विशेष (पि ७८)।

सोवण्ण वि [सौवर्ण] स्वर्ण-निर्मित, सोने का (महा, सम्मत्त १७३)।

सोवण्णमक्खिआ स्त्री [दे] मधुमक्षिका की एक जाति, एक तरह की शहद की मक्खी (दे ८, ४६)।

सोवण्णिअ, सोवण्णिग वि [सौवर्णिक] सोने का, सुवर्ण-घटित (प्रति ७, स ४५८)। °पव्वय पुं [°पर्वत] मेरु पर्वत (पउम २, १८)।

सोवण्णेअ पुस्त्री [सौपर्णेय] गरुडपक्षी। स्त्री °आ, °ई (षड्)।

सोवत्थ न [दे] १ उपकार। २ वि. उपभोग्य, उपभोगयोग्य (दे ८, ४५)।

सोवत्थि, सोवत्थिअ वि [सौवस्तिक] १ माङ्गलिक वचन बोलनेवाला, मागध आदि स्वस्ति-वाचक (ठा ४, २—पत्र २१३, औप)। २ पुं. ज्योतिष्क महाग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। ३ त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (पण्ण १—पत्र ४५)।

सोवत्थिअ पु [स्वस्तिक] १ साथिया, एक मङ्गलचिह्न (औप)। २ पुन विद्युत्प्रभ नामक वक्षस्कार पर्वत का एक शिखर (इक)। ३ पूर्व रुचक-पर्वत का एक शिखर (राज)। ४ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४१)। देखो सत्थिअ, सोत्थिअ = स्वस्तिक।

सोवन्न देखो सोवण्ण (अत १७, श्रा २८, सिरि ८११, भवि)।

सोवन्निअ देखो सोवण्णिअ (णाया १, १—पत्र ५२)।

सोवरिअ देखो सोअरिअ = शौकरिक (सूअ २, २, २८)।

सोहा स्त्री [शोभा] १ दीप्ति, चमक (से १, ४८, कुमा, सुपा ३१, रंभा)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

सोहाव सक [शोधय्] सफा कराना। सोहावेह (स ५१६)।

सोहाविय वि [शोधित] साफ कराया हुआ (स ६२)।

सोहि स्त्री [शुद्धि, शोधि] १ निर्मलता (णाया १, ५—पत्र १०५, सबोध १२)। २ आलोचना, प्रायश्चित्त (ओघ ७९१, ७९७, आचा)।

सोहि वि [शोधिन्] शुद्धि-कर्ता (ओप)।

सोहि वि [शोभिन्] शोभनेवाला (सबोध ४८, कप्पू, भवि)। स्त्री. °णी (नाट—रत्ना १३)।

सोहि पुंस्त्री [दे] १ भूत काल। २ भविष्य काल (दे ८, ५८)।

सोहिअ न [दे] पिष्ट, आटा, चावल आदि का चूर्ण (षड्)।

सोहिअ वि [शोभित] शोभा-युक्त (सुर ३, ७२, महा, ओप, भग)।

सोहिअ वि [शोधित] शुद्ध किया हुआ (पराह २, १, भग)।

सोहिद देखो सोहद (नाट—शकु १०९)।

सोहिर वि [शोभितृ] शोभनेवाला (गा ५११)।

सोहिल्ल वि [शोभावत्] शोभा-युक्त (गा ५४७, सुर ३, ११, ८, १०८, हे २, १५९, चड, भवि, सण)।

सौअरिअ देखो सोअरिअ = सौदर्य (चड)।

सौंअरिअ न [सौन्दर्य] सुन्दरता (हे १, १)।

सौह देखो सउह = सौध (रुक्मि ५९, नाट—मालती १३६)।

°स्स देखो स = स्व (गा २२९)।

°स्सास देखो सास = श्वास (गा ८५९)।

°स्सिरी देखो सिरी = श्री (गा ९७७)।

°स्सेअ देखो सेअ = स्वेद (अभि २१०)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि सयाराइसद्दसंकलणो
सत्ततीसइमो तरंगो समत्तो ॥

ह

ह पुं [ह] १ कण्ठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्राप, प्रामा)। २ अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—संबोधन, 'से-भिक्खू गिलाइ, से हंद ह ण तस्साहरह' (आचा २, १, ११, १, २, पि २७५)। ३ नियोग। ४ क्षेप, निन्दा। ५ निग्रह। ६ प्रसिद्धि। ७ पादपूर्ति (हे २, २१७)।

ह देखो हा = अ. (हे १, ६७)।

हइ स्त्री [हति] हनन, वध, मारण (आ २७)।

हं अ. [हम्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ क्रोध (उवा)। २ असम्मति (स्वप्न २१)।

हंजय पुं [दे] शरीर-स्पर्श-पूर्वक किया जाता शपथ—सौगंध (दे ८, ६१)।

हंजे अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ दासी का आह्वान (हे ४, २८१, कुमा, पिंग)। २ सखी का आमन्त्रण (स ६२२, सम्मत्त १७२)।

°हंड देखो खंड (हम्मीर १७)।

°हंडण देखो भंडण (गा ९१२, पि ५८८)।

हंत देखो हंता (धर्मसं २०२, राय २६, सण, कप्पू, पि २७५)।

हंतव्व, हंता } देखो हण।

हंता अ [हन्त] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ अभ्युपगम, स्वीकार (उवा, ओप, भग, तदु १४, अणु १६०, णाया १, १—पत्र ७४)। २ कोमल आमन्त्रण (भग, अणु १६०, तदु १४, ओप)। ३ वाक्य का आरम्भ। ४ प्रत्यवधारण। ५ संप्रेषण। ६ खेद। ७ निर्देश (राज)। ८ हर्ष। ९ अनुकम्पा (राय)। १० सत्य (उवा)।

हंतु वि [हन्तृ] मारनेवाला (आचा, भग, पउम ५१, १९, ७३, १९, विसे २९१७)।

हंतूण देखो हण।

हंदि अ. 'ग्रहण करो' इस अर्थ का सूचक अव्यय (हे २, १८१, कुमा, आचा २, १, ११, १, २, पि २७५)।

हंदि अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ विषाद, खेद। २ विकल्प। ३ पश्चाताप। ४ निश्चय। ५ सत्य। ६ 'लो', 'ग्रहण करो' (पाअ, हे २, १८०, षड्, कुमा)। ७ आमन्त्रण, संबोधन (पिंड २१०, धर्मसं ४४)। ८ उपदर्शन (पचा ३, १२, दमनि ३, ३७)।

हंभो देखो हंहो (सुर ११, २३४, आचा-सूअ २, २, ८१)।

हंस देखो हस्स = ह्रस्व (प्राप्र)।

हंस पुं [हंस] १ पक्षि-विशेष (णाया १, १—पत्र ५३, पराह १, १—पत्र ८, कुमा, प्रासू १३, १६९)। २ रजक, धोबी, 'वत्थ-धोवा हवति हंसा वा' (सूअ १, ४, २, १७)। ३ संन्यासि विशेष (से १, २६; ओप)। ४ सूर्य, रवि (सिरि ५४७)। ५ मणि-विशेष, हंसगर्भ नामक रत्न की एक-जाति (पराण १—पत्र २६)। ६ छन्द का एक भेद (पिंग)। ७ निर्लोभी राजा। ८